

[महना: 60 t

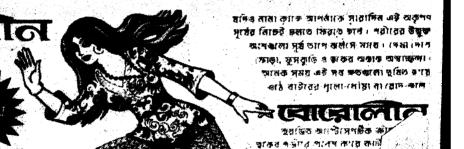
अव्यक्तिसम्बद्धाः स्थानिक

महावाद, ७५ टेकाफे, ५०४५ वन्त्राच्य

गरका]

ा ज्यानिम्मारिक क्यांस

प्रशस्त



শ্রীত্বারকান্তি ঘোষ রচিত ছোট বড় সকলের মনের মত বাংলা সাহিত্যের দ্ব'থানি আশ্চর্য বই

विठित काशिनी

গ্রীকুকারকাশিত যোগ

म्बार-हात होका

(সপ্তথ সংস্করণ চলছে)

হোটদের উপজেপী সরস রচনা কাষ্ট্র সাহিছে ব্র বেশী কেখা হয় নি। বিশেষ করে দালাবিষয়ে সত্য ঘটনা অবলাব্য করে ছোটদের মনের মত বিচিত্র রোজাঞ্চর লেখা খ্র সহজ নয়। 'বিচিত্র কাহিলী'তে লেখক সত্য ঘটনাপ্লিকে নিজের সরস ম্পিসমানা দিয়ে এমন জীবনত আর আকর্ষণ করে ভূজেছেন যে শ্রু থেকে শেষ পর্যন্ত প্রতিটি রচনাই আনবদ্য রস ও রোমাণে টইটাব্র । মোট পনেরোটি কাহিলী ভিল্ল ভিল্ল রসের ফলস্থারায় সিলু, বর্ণনায় লনেক্য্ণেকর।

'আনও বিচিত্র কাহিনী' বইটি কিশোর ও বয়স্কদের
জন্য সমভাবে রচিত। সেখক শ্রে ছাটদের জন্যই
রস পরিবেশন করেনান, বড়রাও এই অমতে
আগবাদন করে প্রাকিভ হবেন। জনবল্য রস
রচনাশোলী এবং প্রতিটি কাহিনীর ভিন্ন ভিন্ন ভিন্ন
আকর্ষণ চুস্বকের হাত পাঠককে টেনে নিয়ে মাবে।
এই বইটিভে দশটি বিভিন্ন রসের কাহিনী রুয়েছে
এবং লেখক তার ব্যক্তিগত অভিজ্ঞতান কাহিনীপ্রটা
অমন স্কেরভাবে রস্বত্ত করে উপিত্যভ করেছেন
যে পাঠককে বিম্পুণ করবে।

আরও বিচিত্র কাহিনী

শ্রীতুষধ্রকাদিত যোষ ম্কঃ--চার টাকা (চতথ নংস্করণ **চলতে**)

এম সি সরকার আশত সমস প্রাইভেট লিলিটেড, ১৪ বিক্সি চাট্রজ্যে স্থীটি, ক্রীক্সাড্র-১২ :কোন ৩৪-১৭৮২



'অম্ত সাক্ষায়ক বাহাৰটোক প্ৰকাশন একটি জনসা সাধানৰ উপন্যাল। চা-বাগাদের পটকুমিনীয় বাংলা ও অসমীয়া ভাৰার সংমিলণে এক নতুন সাহিতা-কীতি, বা অসমীয়া ও বাহালী উভরের কাছে সমভাবে আদ্ত হবে। শীয়ই প্রকাশিত হচ্ছে।

শৃত্কু মহারাজের অনবদ্য প্রমণ-কাহিনী

अश्र-व्यागितः

মহাৰন পৰ্ব ১০ ০০

এই পর্যায়ের রক্তপর্ব (২য় সং) ১০·০০ এবং বনপর্ব ১০·০০ যথারীতি পাওয়া যাক্তে

শ্রীহংস-এর নতুন উপন্যাস

লাস্ট ওয়ার্ড

F-00

হাসপাতাল-বাসের অভিজ্ঞতা-লখ্য লেখকের প্রতিন স্মিট 'ফিমেল ওয়াড' এবং 'গাইনিক ওয়াডে'র শেষ পর্যায় 1

শব্তিপদ রাজগুরুর সম রণীয়তম সাহিত্য-কীতি-

रगांत्रजन वधर

20.00

ফণিভূষণ ভট্টাচার্যের জনলনত অবদান

नो-विद्याद्यं रेजिकथा

A.00

আর এক সাজে

5.00

নিগ্ঢ়োনন্দের নতুন আঞ্গিকের উপন্যাস

আশ্তোষ মুখোপাধ্যায়ের উপন্যাস

श्रमद्य नाविक

A.00

নিখিলচন্দ্র সরকারের নতুন উপনাস

मुःदय मृत्य वांठा

20.00

ब्रह्म अस्तर है

পঞ্চন্যা

য়ারে কলকাজা 🌬

नान रामानामास्य क्रामानास्य नामकाठी टर्छे दिल्ल

बाजक वह सा एस 💮 🖫 🐽

"वाद्य"कम्ब "मर्माकाद**्य के अन्याम**

পিছ, ডাকে

নীলকণ্ঠ বিগ্রচন্ত্রা 🥍

জীবনরঙ্গ গ্রিকোর মল্লারের

অগ্নিলতা

6.0

नादाश भागार**न्त्र** १९४८ छ।

20.**20**

দীপক চৌধ্রীর উপনাম

ক,মারী কন্যা 🕬 মধ,ঋত্

न्ति पर पद

কারা প্রাচীর ১০০০০

षमद्भम्म प्रात्नत वेभन्तान

অন্য তরঙ্গ

A.00

नाव प्रवीनागात्त्रत छन्नाज

নিঃসঙ্গ পদাতিক ৮০০০

बार्न भारक्छास्ट्यब

উত্তরাংশ

2.00

র্বীক্র লাইবেব্রী ১৫।২ শ্যামাচরণ দে স্মীট কাঁদ্কাতা-১২ ॥ ফোনঃ ৩৪-৮৩৫৬



प्रधाप्राप्त यप्रावन्गा

আমর। যারা নির্দিন্ট আরের মানুষ তাদের আনেকের প্রায় প্রত্যেক মাসে একই সমসা। প্রথমে দরাজ হাতে খরচ বা কিছু বাড়তি চাপ, তারপর মাস যেন আর শেষ হতে চায় না। তখন দু'তিনটে বিয়ের নেমস্তম পেলেও মুক্ষিল। কিন্তু হায়! পূজোপাবণ, উৎসব, অতিথিঅভ্যাগত আর লৌকিকতার দায় কখনো মাসের প্রথম বা শেষ বিচার করে আসে না।

সেজনো ইউবিজ্ঞাই-তে একটা জ্যাকাউ°ট খোলা ভালো। মাসের প্রথমে টাকাটা ব্যাক্ষে তারপর পরকারমতো তুলে খরচ করুন। এতে সাম্রয় হবে, ধানে ধারে কিছু টাকা জমেও যাবে। তখন বাড়তি খরচের ধারা নিজের মঞ্জয় থেকেই মেটাতে পারবেন। অসুবিধেয় পড়তে হবেনা।টাকা ইউনিজাই-তে রাখুন, বাড়িতে রাখলে টাকাতো কপুরের মতো উবে যেতে থাকে!



रेंछेनारेएछे जाक चक रेंछिया

(ডারত সরকারের একটি সংস্থা)

Friday, 14th June, 1974 www. os terd. s



স্চীপত্র

भारते विषय क विशिवन ৭ সংগ্রাদকীয় ৮ जान्का भागम

(ক্ৰিডা) -শ্ৰীজাচন্ত্যকুমাৰ সেনগ্ৰেত

a क्रमा श्रवाह

--- শ্লীপ্তরীক (গ্রহণ) — দ্বীদেবল দেববর্মণ

১৮ भाविक दिश्वाहरहेव स्मृत क दाव माहिका ২১ ভালবাসা ভালবাসা

-শীঅদিত। এইদেদার (উপন্যাস) —শ্রীঅন্সন্দ বাগ6ী

२० दिशास्त्रप्त सम्बद्धित कृषात्रकारिक द्यारवत मन्त्र धर्मा

३३ मार्का ७ मान्कीक

--শ্রীজরংকার -- श्रीमिली भक्षात घाषाभाषात

৩৩ দেকালের সংগতিগাৰী ं अलोकिक समिशन

(উপনাস) —শ্রীঅতীন বন্দ্যোপাধাায়

८७ साथिक शतका

—শ্রীশান্তিকাল মুখোপাধায়ে

८० ट्रिडनटस्ट ६ नधकालीन बाहाली समास-

-- শ্রীঅংশ রঞ্জন সেন

85 व्याप्त धवत

-শ্রীতরাণচন্দ্র সিংহ (উপনাস) --গ্রীনিমাই ভটাচার্য

६३ निकास्त्रिकी माकशम ৫৪ পাণ্ডৰ বিজয়ের অভিনৰ কবি

—শ্রীজয়শতক্ষার চরবত*

সাহিত্যক আজো যাঁৱা শিলপক্ষ

মনে করেন অসিত গ্রংত সেই ভোগীর

লেখক। তিনি কম লিখেছেন, তব এক্যুগ ধরে কি গলেপ, কি প্রবংশ

নিজ্ঞ্ব বোধ ও বাজিছে এক প্ৰতন্ত্ৰ

প্রিমন্ডল তিনি রচনা করেছেন। এই

গ্রাম্থের গলপ্যালি বাংলা সাহিতো এক

অসিত গুপ্ত

প্রকাশিত হল

1436/19

कारमञ्जू वादास भागात्वत अरमाक्रमीय ইতিহাস, তার হারানো প্রতিমা, প্রতাক লোকটার, লোকশন্ত প্রব্রাধার করে লেখক সাজিয়েছেন নিরবাধ কালের

अवः कानरामा शस्त्र ।

ACH THE GRAIDA-

माब : **9.00** প্রেক্ষাপটে। প্রায় প্রতিটি গলপ মান্তের বেদনা, বিদ্রোহ, প্রবৃত্তি নিবৃত্তির আশ্চর্য-

প্ৰাছণ : সভ্যাঞ্জিৎ ৰায়

जन वन्ता

कृषिका: विश्वल कर्

এম সি সরকার আত্ত সদস প্রাইডেট লিমিটেড ১৪. वांक्क्स ठाउँ एका न्युंकि कनकारा—वाद्या

অতন্দ সীমানত .40 म भारत मर्भाव 5.00 প্রাণ্ডিম্থান : জাতীয় সাহিত্য পরিষদ্ ১৪, त्रभानाथ मक्तामान भौति कलि-» ॥ काष्ट्रमञ्ज, ১৩১, श्रीतंश श्राश्चार्की (बाह्र) किन-२७। नवशान्य कृतीत. किन-५३।

· & O

देशका शन्ती

ग्रीह्नी दिवत बाह्याव क्रमा था कि थवत।

গৃহিণারা সবসময় বাছায় আগমার্ক গু (ডা মশলাই বাবহার করুন কারণ আগমার্কের জি। নয ১००% था'ि इक

'छोंडो ग'रफा मणवा भ्रम् जाशमार्क गुजरे मह अह **लिक्टन ब्रह्मटक काबरखब ट्राप्ट मगना कारणाव**ी क्षकम्म गर्व (क्क्यी) श्राः লিংর চার প্রেবের অভিক্রতা **का**के ग⁴ (का सनना क्रांक আধ্ননিক কারখানার প্রস্তুত্ত रम अवर शक्त दानहे ল্যাৰরেটারীতে বৈজ্ঞানিক প্রথার পরীক্ষিত হরে বাজারে বিক্ররের জন্য প্রেরিড হয়। কৰে ভাটা গ';জো মলবা দৰ দলম খাটি ও উল্লভ मानयः ।

গাু ড়ো মশলা রামায় ১০০% विदाशम

मनम्बर्ध शहांत्रक विकास्ति।



'ভার' মানেই জরুরী। জার তাই আপনার 'ভার'
অচিরে ঠিকানায় পৌছে দিভে আমরা
বক্ষাসাধা চেন্টা করি।
'ভার' বার্ভায় পুরো ঠিকানা লেখা থাকলে সেটি
বপান্থানে অবিলম্বে পৌছে দিভে আমাদের
সুবিধা হয়। অভঞা অনুগ্রহ ক'রে পুরো ঠিকানা

লিখবেন। তাছাড়া ঠিকানার সঙ্গে 'পিন' বা পোস্টাল ইনডেক্স নম্বরের শেষ তিনটি সংখ্যাও জুড়ে দেবেন কারণ কোমও কোমও লহরে 'তার' বিলি করার একাধিক কেন্দ্র আছে। ঐ তিনটি সংখ্যা ধাক্ষলে যথাযথ 'তার'ব্যক্ষে মাধ্যমে তাড়াতাড়ি 'তার' বিলি করা মান্তে।

ডাক ও তার বিভাগ

. days 23/665 a

७२ गुम्मक ७५ गुम्मक स्थानि गुम्मक ५५ स्मार स्मानकि ५५ मानका ६० मानकार्यक कार्यनका ६२ सम्मान ६३ हरकासम्बद्धका स्थि

de camillais

্গ্ৰণ্ণ — আজিলু ল হক

- আজিলু ল হক

- আজিলু ল আকু বি

- আজিলু ল আকু বি

- আজিলু লি আকু বি

- আজিলু লি লা

- আজিলু না

- আজিলু

প্রকাশিত হইল অদিবতীয় চিরঞ্জ বি লেনের নতুনতম থিলার

रारेजााक

ইংলেন্ডের গরমাণবিক গবেষণা কেন্দ্র থেকে নিউক্লিয়ার শক্তির ফ্রম্না চুরির চাওলাকর কাহিনী। প্রতি গাজার উত্তেজনা।

পারিঞাত রহুমা

٧.

[দাম আট টাকা মাত]

প্রকাশের অপেক্ষায় আগাপূর্ণ) দেবীর নতুন উপম্যাস

হারানো খাতা

প্লকাশত শিকলি কাটা পাথি

न्दार्थीनका आल्मामत्तद প्रदेक्षिकाश ल्यान्य एन्द्र नदक्य श्रन्थ

रयन जूल ना याहे

বিনয়-বাদল-দিনেশ ৫, ক্ষমা নেই ৪, রক্তের অক্ষরে ১

শক্তিপদ রাজগ্রুর নতুন উপন্যাস

कश्रनात तर काटना ४:

মাটির পর্তুল ৬ পথের পানে চে য়ে ৫ তমসা ৬ মূক ত্রিবেণী ৫

সদা প্রকশিত বেদ্ইনে র অবিক্ষরণীয় গ্রন্থ

বিচিত্ৰ এই কলকাতা

আমায় বাঁচতে দাও ৮ বিজ্ঞাভ বিদ্রোহ বিপলব ৮ মোজান্তিক ৬ বজনীতির পটভূমি ৮ কলকাত।র ইতিকথা ৬ নতকীর আত্ত-কথা ৮

শ্রীআশ তোষ ভট্টাচার্যের ন্-তত্বম্লক ভ্রমণ সাহিত্য

দন্ডকারণ্যের অন্ধকারে

(ৰোণ্ডাপৰ্ব) ১০

বিশ্বাস পার্বালশিং হাউস । ৫।১৩, কলেজ রো। কলিকাতা -- ১

কালেবদের মন্ত্র, কাল্ডার, কাল্ডার, কালেবদ্ধ, শব্দব্যাখ্যা বিদ্দৃত্য টীকা। প্রতি কাড় ডিন টাকা; দশ কাড একচে ক্রিনির্জ চিকা।

श्वानिकार्यात । साम्न मामेश्वनि २/১ मात्राक्षत्त्र तम निकेश क्लिकाचा-১२

मारेएको माकार्य म्या गरे

निष्टित क्या छ काास्बी

नन्मलांग घार्रीक

বি, এন-সি, এন-মি, নি-টি ক্লেট্টবের সন বৈদ্ধে স্থিতভার ফাছেড্ড ক্ষাড়ি স্বা করার শক্তে এতাতত মহাড্ড উপবারের উপবোধার সমোরত রাজ্ঞ লোভিত সহিত্ত বাই

(द्रीहाकि अभाग्ठ गर ह

গ্রহিট এজানিকার বংকাদার
'বস্তবা আধুনিক, টেকানিক অভিনব,
চারিকার্যাল ক্ষান্তক, সংক্রাপ রাজনব,
ব্যান্তির দাহিত্য' ——আন্তর্ভ থেক ব্যাহণের নার্যান্তক্তা চবন ক্ষান্তির
টেনে নিয়ে বার্যা, গর্ভাগ্ত ক্লান্তো।'—ক্ষেপ্

জানার প্রকাশ ক্রিছে A.

ক্সমোপজিট্ন স্থাজের উপন্যাল 'ঘুটনা, কাহিনী ও চল্লিরারণে শেপক ক্ষন্ডার পরিচয় রেখেছেন।' — ক্ষাড় আক্রম্পায় কাহিনী, নিশ্চিত্ব কৃতিক্সমে বেশ সংক্ষর।

এবং সীমা

উত্থানপদ বিজ্ঞানীর কাবাগ্রাপ্থ ৩-৫০

मार्वक रशस्त्र क्रित क्षरतम

কোনান ভয়াল / অদ্লীশ বর্ধন

ৰড় আঞ্চাৰে দায় ১৮ বিশ্ববিশ্বাত গোলেনাগ্ৰহেণাল নকুন ৰ্চে ৫ টাকা প্ৰায়ক চালা, ৩০% কমিলন!

बद्ध इनसम्बद्ध नाम्मा बद्ध बहे दहनाहे इनकम्बद्ध-80% क्या नाटम बहे दहना बाह्य। दहनन मानिक-बार्मिक होना नाटम ना। माह्य ५ होन्या क्यांकि बनी गर्छादन विनामदुर्वाद अधि मादम 'क्यांक्वायाना' अहिमाम्य निमान विह्यान गादकमः

অ্যাল ফা-বিটা

बद्ध झारबद्ध नगना हास वह किन्द्रन! ६६-১ वहलझ न्द्रीपे, क्लकाका ३२

इ पश्च वपन अमरका

গত ১০ বর্ষ ৪১ সংখ্যায় াবিজ্ঞানের कथा धरम्य इ.स्थाव भानः अरम्याभन अध्या^मे अधिम विषयां आधार्त अधिका শক্ষে সহজবোধ্য করে সংলরভাবে লেখা इत्युद्ध । मना विकित्सात करे गाउन माथाप्र যে সব সমস্যা দেখা দিয়েছে ভাও খুব सद्भ कामाम रमधा अरमान ।

কিণ্ড সেখা হয়েছে যে সদাম্ভ কোন कांडिय द्वामा ७८म मानारमा १३। कथाएँ। किंक नहा माहा इल्ल का वालित शाम्य बात मानाम क्ष्म मा। दोवाद आमा मार्ट विश्वन रभाक्षित इ.म.स. क्रोंच छ अवस्थार हरें हुआर छ ह्य। माञ्चन विकश्यक धार्यन कार्यन व्य এৰ আৰু বাচা সম্ভব নয়-তখন সেই मामा योक्त रामग्र एटामा रहा।

এদিক থেকে কানটি আমানবিক निष्या वाभव प्रामन श्राम श्राम व रथरक माना দ্নীতির উল্ভব হওয়া বিভিন্ন নয়। সে मम्मादक विक्रिंग स्थाक्त कार्यादलंत कर्मि भरभाव अधारणाहेंना क्या १ (यो ४०)। প्राय ष्ट्रमा अक्षि भरमाश्च **र**ाभ्यम्ब वर्णभास भगन्त भवा भौभावन बाधात উপদেশ (मध्या इस अवर मान्यास्त्र (महारम् वम्न किछीनाउ भौभावश्व ब्रायट वना इत्स्थित। इंस्मान ए अरम्ब्रील्यात स्मीक्टकन आरमा-সিয়েশনের ষ্ট্র এক সভায় মৃত্যুর সংজ্ঞা वम्ल करा द्या आला नियम हिल स्थ आर्छ र भिन्न र राजा ७ म्डब्स साकाल ए व মিনিট নিঃশ্বাস বন্ধ থাকলে তাকে মতে বলা হত। ঐ সভায় নিয়ম হল যে দুইবার बाञ्डलक विमार अवस् याम छोडाकसा (मणा ने यास उत्व टाव्क भे उ वला दत्व। व्यापि षाणीस्कव-अलक्षे वेनवाल भारभावें हैं, हेम्बिशाल बाक्छंब म्हा

কামক বছর আংগ একদল সোভিয়েট তি কংসক ভারতে অসেছিলেন। ত্রারা वर्गन थ्या होता वर्षाच्या स्व-वर्गालत चिद्रक्षेत्री, कालक जानगृष्टक र मध्य । धकाँछै। কুর করণ কেল্ডার বন্ধর কথছেল। কাত হাকৈ প্রায় নেত্র কারণ মানা,ধের কিডান हारी। अक्ष र प्रश्नाद किला थिए कि**ञ्च**ल ও বাকে সঞ্জন উভয়েই দীৰ্ঘটন সংখ बहरेट वॉटीट भारतन अर्थकर्मक अक्स হাং বদক্ষের মত্ত ক্রাপথায় । তার। राजन व्य किएक व समामा एक्टास्म ব্যালয় বহু, প্রাক্ষণ প্র ভারই ভারা इंश्वनाम शास प्रावता

বিজ্ঞানের অনেক শাখানুই প্রথমে অসাকে। বাসে। তাতে বিজ্ঞান থেমে থাকে

না। হাংবদলও থোম থাক্বে না। নরমাান শামগুরে ও ক্রিশিট্যান নার্ণার্ড প্রাতঃস্মার্ণীয় ইয়ে থাকবেন। আমার বর্তা স্কেরল মার ষার হাদ্য নেওয়া হাচ্ছ তার দিক থেকে।

আমি চিকিৎসক নই। প্রখ্যাত শস্যাবদ ও এমেরিটাস সাজেনি ডাঃ মরোরিয়োহন ম্থোপাধ্যায় এম এস এফ আর সি এস মহাশ্যের একটি বছতা থেকে তথাগালি সংগ্রহ কর্বেভি।

প্রভাসকৃষ্ণ গোস্বামী § ১৬া. তাল্য

ব্টেনে ভারতের প্রথম শহীদএর

লেখকের চিঠির উত্তর

১৯শে বৈশাথ 'অমতে' লণ্ডন থেকে লেখা 'ব্টেনে ভারতেরা প্রথম শুহু^নলা এর লেখক বিশ্বনাথ মুখোপাধ্যাহের দেখা আমার চিঠির উত্তর পড়লুম, চিঠিটা পড়ে মনে হোল লেখক মহাশয় এখনত মন্নলাত দিভ্রন্ন কে নন্দলাল বিভ্রান্ত হিসাবে খাড়া कबदाद आञ्चान रहरही हामारक्रम क्यांमना আমার এধারণা ভুল কিংবা ঠিক খাকগো আসল কথায় ফিরে আসি দ্বাধীনতা আন্নোলনের অমর শহীদ বারি বিশ্বয়া ষিত্ত। যে সতি। সতি। মদনলাল ছিলেন ভার সমধানে আমি কিছা যান্ত্রি খাড়া করবার क्षिणी कड़ी इ विश्ववी निक्का अविश्व ম.তাহানি বইটি থেকে কয়েকটা লাইন আমি আমার যাজির সম্পুনে ধরে মিলে ব্যবহার করছি, এই ইইটিতে বিভিন্ন লেখত লেখিকা ভারতের জাতীয় মাজি আন্দো-লনের খনতম শহীদের জীবনের বিভিন্ন দিক তুলে ধরেছেন, এবং আমার মনে হয বিংলবা নিকেলন প্রকাশত এই বছটি ভারতের গাতীয় মাঞ্জি আন্দোলনেব খনতম প্রমাণা দক্ষিল।

ব্রুটিতে ধিঙ্ভা **এবং উধ্ম** সিং मम्बर्ग्य रहाथनात लिख्याह्न कविका स्थान. গ্রেডা (২২৪--২২৮ পাতা) শিরোনামাতেই বায়েছে অদুনলাল বিভ্রা এবং উষ্ণ সিং িংড্ডা সম্বদেধ লিমতে গিয়ে বইটির ২২৮ শাতায় **এ।মতী দাশগ**ুপতা **এ।অরবিফেদর** ্রম সোগিন পত্তিকায় প্রকাশিত **শ্রীঅপহিনের** ^{াত্র} শ্ধীন লিভ্ডা সম্বন্ধীয় কয়েকটি আইন ব্যবহার করেছেন।

আমি 'কম'ফোগিন' এর লাইনক টি ^{এইটিট্র} ২২৮ পাত**েথেকে ত**ুব**হ**ু বসিয়ে ित्र, म। सर्वादनम निर्धाहरलम् "এখানে দেশ তবিই মেদনলাল বিভড়ার) পশ্চতে রাজহে, তার কৃতকমেরি সকল দায়িত্ব বহুন করার সংক্রেপ।"

বিশ্বনাথবাবার লংজন মিউজিয়াম থেকে সংগাহীত দলিল কিংবা তথা থেকে শ্রীঅরবিন্দের লেখা নিঃসন্দেহে প্রাহ্রাণা এবং খুত্তি স্পাত সুত্রাং মাননীয় বিশ্বনাথবাব দয়া করে স্বীকার 44.4 ৮পণ্ট ভাবে ব'টেনে ভারতের প্রথম শচ^নন नम्मलाल धिङ्खा नद्र धमनलाल धिङ्खा सम्भा এবং শ্ভেক্সহ।

—দ^{্বিত}কর রায়, বালী, হাওড়া।

and the second of

'মাদাম কুরী' প্রসঙ্গে

অমতে শ্রীমতী কুমকুম বসুর মাদাম করী সন্বশ্বে লেখ। একটি প্রবাধ ছাপা হয়েছিল।

শ্রীমতী কুমকুম দেবী লিখেছিলে**ন যে** মাদাম কুরীর পাবে বা পরে এ পর্যক্ষে আর কোন মহিলা বা প্রেম্ব দুইবার নোবেল পরেম্কার পান নি। মাদাম কুর ১৯০৩ সালে পদার্থবিদ্যায় এবং ১৯১১ সালে রসায়নবিদ্যায় নোবেল প্রেম্ফার পান। মাদাম ক্রার প্রে কোন প্রেষ বা রুমণী দাইবার নোবেল প্রেশ্কার পানান একথা সতা কিব্ত ত'র পরে পদার্থ'-বিদায়ে দুইবার নোবেল প্রেপ্কার পান জন বার্ডিন।

জন বার্ডিন ১৯৫৬ সালে ট্রান্জিস্টার আবিষ্কারের জনা পদার্থবিদায় নোবেল পরেম্বার পান। অবশা জন বার্যাজনের भारता सह क्रके आविष्यास्त्र क्रमा छहे-লিয়াম সক্বি এবং ওয়ালটার রাটেনও পদার্থবিদ্যায় নোবেল প্রস্কার পান।

জন বার্রাডন থিগুরি অফ স্বপার কনভাকটিভিটি আহিং নরের জন্য ১৯৭২ সালে দিবতীয়বার দাথাবিদ্যায় নোবেস পারস্কার পান অবশ্য এবারেও এই আবিংকারের জনা আগতে দুইজন বিজ্ঞানী নোবেল প্রস্কার পান-এপের নাম ডঃ গিলভন এন কৃপার এবং ডঃ জন শ্রিকার্যার।

মাদাম করী ও জন বার্ডিন ছাড়াও आवल এकशन विख्वानी प्रदेवां तादवल পরেকার পান। এণা নাম ডঃ পাও লিং। ১৯৫৪ সালে রসায়নবিদ্যায় নোবেল প্রিব্যার পান এবং ১৯৬২ সালে দিবতীয়-বার নোবেল পরেকার শাশ্তির জন্য পান।

তবে একথা এখনও প্ৰ*ত সতা যে জন বার্রাডন ছাড়া এখনও কোন বিজ্ঞানী **अक्ट्रे** विवास मृहेवाबू নোবেল পরেকার পান নি।

বৈদ্যনাথ সিংহ, गान्जिनिस्क्जन।



এখন কাজ করার সময়

রেল ধর্মঘট প্রত্যাহতে হওয়ার জননাধারণ ব্যাস্তর নিংশবাস ফেলেছেন। সরকার এবং ফলেকমির্গাণও এক বিরাট জ্বিষ্টাতা থেকে মাজি পেরেছেন। কুড়ি দিন এত বৃহৎ একটি সংক্ষার, বার কমির্সিংখ্যা পনেরো লক্ষের কাছাকছি, এক নগাড়ে ধর্মঘট দেশের বে প্রভূত ক্ষতি করেছে সে বিষয়ে কোনো নিষ্মত নেই। সরকার অনুগত কমির্নির দিরে আংশিকভাবে রেল চলাচল চালা বেংখছিলেন এবং শিলপকারখানার জন্য নিতাপ্রয়োজনীয় কাঁচামাল বা জনালানি এবং অন্যান্য প্রবাহ রাখার চেন্টার ব্রুটি করেন নি। কিন্তু তা সত্ত্বেওধর্মঘটের প্রতিক্রিয়া উপেক্ষনীয় ছিল না। তার প্রেয়া হিসাব পাওয়া গেলে বোঝা বাবে এত বড় একটা ধর্মঘট কী নিদার্শ অর্থনৈতিক বিপর্যার ডেকে আনে। বিশেষ করে ভারতের বর্তমান অর্থনৈতিক প্রিম্থিতিতে রেলের চাকা বৃথ্য হওয়া একটি মুম্ণিতিক দৃত্যিয়া।

সন্ধনার গোড়া থেকেই বলেছিলেন, ধর্মঘটের সিম্ধানত প্রত্যাহতে নাহলে কোনোরকম আলোচনাই সম্ভব নয়। জেলকমী সংগঠন সরকারের সেই প্রশ্নতা গ্রহণ না করে ধর্মঘটের পথে ধন। তার ফলে সরকারের সংগ একটা মুখোর্মান সংঘর্মা শংর, হয়। এই অবাজিত লংঘর্ম এড়াতে পারলে আজ এত সমস্যার স্পিট হত না। শ্রমিকদের অথানৈতিক দাবী নিয়ে আল্পা-আলোচনাল স্মোণ লয় সমরেই খোলা থাকা উচিত। কিল্তু এত বৃহৎ একটি জাতীয় সংশ্থায় স্বাভ্তম ধর্মঘট ভাকার আগে বহুবার চিল্তা করা উচিত। রেলকমী সংগঠনের নেতারা যে বিরাট সংগ্রমের মুখে সাধারণ রেলকমী দের ঠেলে দিয়েছিলেন তার ব্যাপক প্রতিজ্ঞিয়া এখন ধারে বাজে সকলেই উপলব্ধি করতে পারবেন। দেশের বর্তমান প্রিশিশ্বিত স্বাভ্তম ধর্মঘটে নামার আগে বিবেচনা করে দেখা উচিত ছিল যে, এর শ্বাধা সত্যিকারের কল্যাল আসবে কিনা।

সরকার ধর্মঘটীদের বির্দেধ সাধারণভাবে কোনো শান্তি বাবন্ধা নেবেন না। তবে ধর্মঘটের সময়কার বেতন কাটা বাবে। চাকরীতেও ছেদ হবে বলে ঘোষণা করা হয়েছে। এ সমস্ত বাবন্ধাই চ্ডান্ত হ্রতো নয়। কারণ, সরকার সত্যি সতিই প্রামকদের ওপর্স প্রতিহিংসাম্লক বাবন্ধা নিতে চান, এটা মনে করা কঠিন। আগেকার বহু ধর্মঘটের পরেও সরকার প্রামকদের প্রতি উদার বাবহার প্রদর্শন করেছেন। কারণ, রেলপ্রমিকরা কোনো ভূল সিন্ধানত নিয়ে থাকলেও তারা বিনাশতে কাজে যোগ দিয়েছেন। সরকার তাদের প্রতি উদার বাবহার প্রদর্শন করেছেন। কারণ, রেলপ্রমিকরা কোনো ভূল সিন্ধানত নিয়ে থাকলেও তারা বিনাশতে কাজে যোগ দিয়েছেন। সরকার তাদের প্রতি উদারতা প্রদর্শন করবেন তাদের কতবানিন্দা দেখে। রেলের চাকা যত জোগে চলবে ততই প্রমাণিত হবে আমানের প্রমিকদের আন্ত্রতা তাদের কর্মের প্রতি, তার কোনো বাতার ঘটে নি। দেশের সামগ্রিক উয়য়নে রেলকমাণির একটা গার্ম্বেপর্শ হিমিক আছে। ধর্মঘটের আগে যেনন ছিল পরেও তাই থাকবে। সতেরাং এই প্রমিকদের সম্পূর্ণ পরীক্ষিত বা প্রাম্বান্ধ মনোভাব নিয়ে কাজ করতে দেওয়া নিন্দাই সরকারের লক্ষা নয়। ধর্মঘটের ভিততার জের যত তাড়াতাড়ি মাছে ফেলা যায় ততই মঞ্চল। এর ক্ষায় সরকারের এবং প্রমিকদের উভয়ের সহযোগিতা প্রয়েজন। স্থের কথা রেলকমাণি সম্বান্ধ কালিট আবার আলোচনা আরম্ভ ক্যার ছানা আবেদন জানিয়েছেন। আলোচনার পথ সরকার সব সময়েই খোলা রেখেছেন। আলোচনার শ্বারা রেলকমাণিরে গ্রেছিম।

এই ধর্মঘটের ব্যাপারে রেলকর্মী ইউনিয়নের বিভিন্ন নেতাদের মধ্যে, বিশেষ করে এ আই টি উ সি এবং অন্যান্য ধ্যাসপথী ইউনিয়নের মধ্যে মতবিরোধ এবং দ্লিউভাগীর পার্থক্য থবে প্পত হয়ে উঠেছিল। বামপথী রাজনীতিতে যে বিরোধ প্রামিক আন্দোলনে তাগ্রই প্রতিক্রলন ঘটেছে। এর ফলে প্রমিকদের শ্বার্থেরই ক্ষতি হবে। অথনৈতিক আন্দোলনের সপো রাজনীতি ক্রাজ্মিক আন্দোলনের সপো রাজনীতি ক্রাজ্মিকরা তার দ্বারা ক্রাজিকত হবেন এবং প্রামিকদের মধ্যেও পারস্পন্ধিক ভূল যোধাবানি স্থাতি হতে পারে। বামপার্থী নেতাদের এই সত্য উপলন্ধি করা উচিত। ব্রেনে কিছ্মিন আগে এত বড় কয়লার্থনি প্রামিক আন্দোলন হয়ে গোল। কিন্তু তাতে রাজনীতির বিতর্ক ছিল না। আন্ধ সরকারের সপো রেলপ্রামিকদের আলোচনার বসতে হবে। ঐকারম্বভাবে ন্যায়সক্ষতি দাবী-দাওয়ার জিজিতে আলোচনার চালাতে পারলেই জতীতের সব তিস্ততার অবসান ঘটিয়ে একটা স্মুণ্য কাজের আবহাওয়া স্থাতি হতে পারে। এখন প্র্ণ উদামে কাজের সময়। ধর্মঘটের ফলে কয়েক হাজার কোটি টাকার লোকসান হয়েছে সকল দিক প্রকে। জাতীয় অর্থনীতিকে প্রেক্ত্রীবিত করার কাজে রেলপ্রান্তক্ষণ এবার প্রেরাদ্যে কজ করে যাবেন, এটাই আমান্দের প্রত্যাশ্য। এবং সুরকারও এই প্রামিকদের নায়ে বিচারে কুন্তিত হবেন না এ আশাও আমার করি।



আদিত্য-প্রব্ধ।। জচিত্তাকুমার সেনগণেত

শুধুই বেরিয়ে পড়া, চলা আর চলা,
কেবলই এগিয়ে চলা—
শাবার তাগিদ নর, বেগবান হবার তাগিদ
অসীম গইন হতে যেন কোন না-জানা স্হৃদ
বাজায়েছে প্রাণ-বংশী, দেহ-মন হয়েছে উতলা
য়াতি-দিন
একটি সম্বল শুধু পথ সম্মুখীন।

শ্র গিরিগ্র থেকে বেরিয়ে পড়েছে দেখ ক্ষীণা জলধারা দিশাহারা काथा यादा काटन ना ठिकाना কেউ নেই দেবে তাকে পথের নিশানা। একান্ত চলাই তার একমাত্র গন্তব্য জগতে পথ হারালেও ফের পথ পাবে পথে ৰহমানতাই তার একমাত্র স্থিতি বিশা, শ্ব প্রতঃতি। ব্যাকুলতা তার মন্দ্রদাতা **উংসাহ**-উদ্গাতা। অগ্রসর হতে-হতে জলধারা বেগস্ফ্রতা হল নিঝরিণী পাৰ্বতী নটিনী। উচ্চাবচ পথ ভেঙে প্রতিহত হতে হতে উচলে-উপলে ব্যক্তিম-সরলে নিশ্রিণী নদী হল মন্ত তর্রিগানী ।বেগ-বিস্ফারিণী। ভারপরে সেই নদী ক্লঙকষা নির্বারিত স্লোতে **বিশ্তা**রিত হতে-হতে মিশিল সম্দ্রে এসে অবশেষে। **এ কি তার সম্দূরকে পা**ওয়া লীন হয়ে যাওয়া?

না কি তার হয়ে ওঠা সম্দ্র বিপ্ল ? এই এক আক্তি-আকৃষ র্পান্তর বিশ্বনিত্র পথে নয় সম্ভূি , পথে জ্বলন্ত-জাগ্রতে, নদীর সমাশ্তি নয়, উদ্বেশ উত্থান সম্দ্রায়িত শ্রী সেই নদী সাহিত্যে ও রাহিত্যে সমান।

আমরা এখানে কেউ প্রতিগ্রন্ত নহি তো বিপ্রামে
আমাদেরো দিন-রাগ্রি আবর্তিত গতির প্রকামে,
বৃহতের ডাকে মোরা চলেছি বৃহৎ হতে মহৎ বিশ্বাসে
আভাসে-প্রভাসে।
এই প্রাণ নবীনায়মান
শ্বেং এক চেতনার দীর্ঘ অভিযান
প্রোজ্জনল চেতনা,
গতি হতে ইতি তার প্রেমের প্রবাহে উদ্দীপনা
প্রেম শ্বং পরার্থপরতা
পরার্থই পরমার্থ, পদার্থ-প্রতা।
বন্দী আর নহে মতে, স্বন্ধে কুদ্রে নহে,
চলেছি ঈশ্বরায়িত হতে, ক্লড় হতে চিশ্ময় বিগ্রহে।
লোকোন্তর চেতনার ভাস্বর প্রত্যুব



বেলওরে কর্মনিরা, তাদের ধর্মাবট নিঃসর্ভভাবে প্রত্যাহার করে নেওরার পর এখন ২০ দিনের এই ধর্মাবটের মরনা ভূদাত হচ্ছে ও ধর্মাবটের পরের সমস্যাসন্ত্রি বড় হচ্ছে উঠছে।

ভারতবর্ষের শ্রেড ইউনিয়ন আন্দোলনের ইতিহাসে এই বৃহত্তম ধর্মাছি অথানীতি, রাজনীতি প্রমিক-পরিচালক সম্পর্ক ইত্যাদি ক্লেন্তে বেভাবে নাড়া দিয়েছে তাতে এই ঘটনার জের নিশ্চয়ই অনকদিন পর্যাত চলবে।

প্রথমত, প্রায় তিন সংতাহেদ এই রেল ধর্মাঘট সারা দেশের অর্থানীতিতে প্রকাণ্ড আঘাত দিয়ে গেছে।

সরকারি স্তে প্রাণ্ড প্রাথমিক হিসাবে প্রকাশ, ধর্মাঘটের এই কর্মাদনে বাত্রী ও মাক্ষের ভাড়ার দর্ন রেজগুরে ক্যাণীরা বেতুন হারিয়েছেন ২৫ কোটি টাকা আদ সারা দেশে মোট আর্থিক ক্ষতির পরিমাণ ৫০০ কোটি টাকার অঞ্চ ছাডিয়ে গেছে।

অনাদিকে স্নেল্কম[®]দের জাতীর সংগ্রাম সমশ্বর কমিটির ছিসাবে এই ধর্মঘটে দেশের মোট আর্থিক ক্ষতির পরিমাণ ১৫০০ কোটি টাকা করে।

রেল কর্তৃপক্ষ দাবি করেছিলেন, ধর্মাঘটের মধ্যে তাঁরা স্বাভাবিক রেল চলাচলের ৪০ শতাংশ চালু রেখেছিলেন। এই হিশাবে ধর্মাঘটের মধ্যে মোট ৫২০ কোটি টাকার মত মাল চলাচল করতে পারে নি। এই অংক যদি ঠিক হয় তাহলে উৎপাদন্দের মোট ক্রতির পরিমাণ ১৫০০ কোটি টাকার পোশছে যাওয়া কিছু আশ্বরণ ময়।

ধর্ম ঘট মিটবার দুদিন আগে কেন্দ্রীর কৃষি মন্ত্রণালয়ের সেক্টেটার টি পি নিং এক সাংবাদিক সুন্মেলনে ব্রীকার করেন বে, কেলের ধর্ম ঘটের কলে দেশের বন্দরম্ভিতে প্রচুর পরিমাণে খাদাখাসা সার ও শিক্ষের ক্রন্ত্রনা অত্যাবশ্যক কাঁচায়াল জায়ে রয়েছে।

ইন্পাতের কারখানাগ্রিকতে বদিও
ধর্মাঘটের সময় করলার জোগান অবাহত
রাখা হরেছিল ভাহলেও সেগ্রাকতে
ব্যভাবিকের চেয়ে ক্স উৎপাদন হরেছিল।
ওয়াগান না পাওরার এই ক্রাদনে ইন্পাত্ত
ক্রেরানাগ্রিকতে ১১০ কোটি টাকা হুক্যের

কৰিছে নিজৰ এই নিজ চিৰ হ'ং নামৰ হ'ল লাকা লাকানিক লাবে কাৰ সকল ক্ষেত্ৰিক নিজৰ ক্ষেত্ৰিক ইণ্ডিলাসে এক হ'লাক স্থিতি হৈছে। ক্ষেত্ৰিক ক্ষেত্ৰিক ক্ষেত্ৰিক ক্ষেত্ৰিক ক্ষাৰ কৰে ক্ষেত্ৰিক ক্ষাৰ ক্ষাৰ ক্ষেত্ৰিক ক্ষাৰ ক্ষাৰ লাকানিক ক্ষাৰ কৰে ক্ষাৰ ক্ষা



ইম্পাত করে গিরেছিল। ইতিমধ্যে ঘোষণা করা হয়েছে বে, দেশে ইম্পাতের অভাব দরে করম্ম জন্য জাপান থেকে ১৪০ কোটি টাকা মালোর ৪ লক্ষ ৩০ হাজার কর্ম ইম্পাত আমদান করা হবে। বাাঞ্চগালি মেলওয়ে রসিদের উপর আগাম টাকা দেওয়া বাধ করার এবং রেজিস্টার্ড ভোক্তলাচল বাধ থাকায় টাকাপ্যাসার লেনদেন বাাহত হয়েছে এবং প্রশুলির অভাবে উৎপাদনের ক্ষতি হয়েছে।

ক্ষেলওয়ে মৃত্যালয়ের একজন মুখপার বলেছেন ধর্মাঘট প্রত্যাহাত হওয়ার পর এখন তাদের নীতি হবে ম্থাসম্ভব বেশি লোককে কাজে লাগিয়ে যত তাডাতাড়ি সম্ভব বেল চলাচল বাবস্থায় স্বাভাবিক অবস্থা ফিরিয়ে আনা। এই উদেদশ্যে শথে: বাঁদের বিরুদেধ হিংসাত্মক কার্যকলাপ জোরজ্বুম, ভীতিপ্রদর্শন <u>স্যাবোটেজ</u> ইত্যাদির অভিযোগ আছে তাদের ছাও। অন্য কোন ধর্মবাটীকে শাসিত দেওৱা হবে **না বলে স্**রকারি ঘোষণা করা হরেছে। তবে বারা ধর্মাঘটে যোগ দিরেছিলেন তালের সকলেরত চাকাগতে ছেদ সূবে এবং ভারা ধর্মাঘটের সময়ের জন্য বেডেন **कारक** सा।

দেশের বিভিন্ন সাম কাক ইতিহাগে। বেসৰ ধবর পাওয়া য'ছে তাতে দেখা যাছে বে কতকালি ভ্যানে অনুসত ক্ষান্তির
সংশা ধর্মঘটীদের বিরোধের হলে
বাভাবিক অবস্থা ফিলে আসার অস্থিয়
হছে। এই ধরনের সবচেরে মারাক্ষক ধরম
পাওরা গেছে পশিচুমবংপার ক্ষাপ্তর
থেকে। সেখানে ৫৫ জন কর্মচাত রেলগুরে
কর্মী বাইরের লোকের সংশা মিকে
রেলগুরে কারখানার প্রান্ত ৬০ জন অনুসাক্ত
কর্মীকে উলগে করেছে, গারে রঙ মাধারে
দিয়েছে এবং কারখানার চারপাকে
ঘ্রিয়েছে। যাদের এভাবে নিয়ন্ত করা
ভ্রেরেছে তাদের মধ্যে এভাবে নিয়ন্ত করা
ভ্রেরেছ তাদের মধ্যে দুল্লন মহিলা ক্যাণ্ডি
ভ্রেনেছ তাদের মধ্যে দুল্লন মহিলা ক্যাণ্ডি

ধর্মাখ্যটর সময় বাঁদের সামারিকভাবেঁ রেলওরের কাজে নিয়ন্ত করা হরেছিল তাঁদের মধ্যে অনেকে কোঞাও কোঞাও স্থারী কাজ দাবি করে বিক্লেন্ড প্রকর্ণন করেছেন বলে সংবাদ পাওয়া গেছে।

রেলপ্তরে দশ্তরের উপমশ্চী মহশ্দদ শাফ কুরোল বলেছেন, রেল চলাচলে শ্বান্ডাবিক অবস্থা ফিরে জাসতে মাসধামেক সময় লাগাবে।

ইতিমধ্যে দেশের বিভিন্ন আঞ্চলিক বেলভ্রেতে বেল করেক হালের কর্মণী দাটিউ হ'র গেছেন ও করেক লক্ষ কর্মণী নাদরি ছেদ ও অন্যানা সংকেপদ্বিধা নাদরিক ফেদ ও অন্যানা সংকেপদ্বিধা নাদর্যকে কিংবাদত বোষণা করা হরেছে? একয়াত ওার্শ্টার্শ ও শেশীক ক্ষেত্রকেতেই ৮৫০০ দোলকম্বীর চাকরি গেছে এবং এক লক্ষ কম্বীর চাকরিতে ছেদ হয়ে গেছে।

এলিকে সি-পিশ-আই-এর সপ্পে অমানা বামপ্পতী সলের এবং অমানিকে সি-পিশ-আই-এর সপো কংগোস্থে সম্প্রেকার ক্ষেত্রি এই ধ্যাখাট্টর প্রিয়েত্র রাজনৈতিক প্রতিক্রিয়া তথা দিয়েছে।

এক ধ্যাপিটেল নেতাদের মধ্যে পরেতের মান্ত্রের দেখা দিভিত্ন। সোসচলিস্ট নেত য়াধ্য জিয়াহের সংখ্য সি-পি-আই নেতা ও ্ব আই টি-ইট্র-সি নেজা এস এ ডাপ্সের দে পর্যাবনিমার হয়েছিল তাতেই এই মত্যভদ বোঝা গিয়েছিল। শ্রীডাপো প্রমালট আর টেকে নিয়ে না পিলে ভাডাতাডি কাজে ফিরে বাওয়ার একটা গ্রাম্ভা থেজি।ই উপর যেভাবে জার দিচ্ছিলেন তাতে শন্ব হটে আন্যান্য নেতাদের সায়। ছিল না। (o विशाप क्रमासीम मीएगरमात निरक्षय प्रस्तिह শ্ৰী এস এম খ্যানাজি ও ভিনমত প্ৰকাশ क्रावरक्रम ।) श्रीकारकाल महस्त्र क्रमामा ধ্যাপ্টী নেভালের য়াতাভালের একটি বড विषय किया की एवं श्रीफारकार घर বেলওয়ে কল্পীদেশ জাতীয় সংখ্যাল সলবয় সামাত্র ১৩ জন সদসেরে মধ্যে যে পাঁচজন रभाग भाषांच्या रक्षारकात साहैरत किरात्मान फ्रांचाडे সম্মিট্ট প্রান্থাটোরের সিম্বান্ত করান্তে পার্যেন কিশ্যু অনীলে। নেরেরেদ্র মতে এরকম সৈন্ধান্ত করতে ভ্রমে সহিতির সব সদস্যে মিলিভ হয়েই কলভে হবে। শ্রীড়ান্ডে বলাপন বিভিন্ন অঞ্জের ও বিভিন্ন গোঠীৰ বেলকম্বিদৰ আলাদা আলাদা ভাবে ধর্মাঘট্ট ভূলে নিতে দেওয়া হোক সংগ্রম স্থিতি ভাতেও লাজি জলেন না ২৬ মে ভারিখে রাণ্ট্রপতি লিবি জাবেদন জ্ঞানালেন যে কংগ্ৰেস এয়াকিং কাছাড়ি যোগত একটি হাজসংগতে যেত্ন নীতি গ্রহাপের কথা বলেছেন এবং যেছেও বোনাস বিভিট কমিটিল বিপোট ভালপ কিছাদনের মধ্যেই প্রকাশিত হক্ষে সেহেতে রেজকমণীর: েলৈর বহাছিও প্রভাত্তার কলে। নিন্ন : সংগ্রহ সলিভ রাখ্যুপ্তির ও আর্বদ্দ বিধেচন। কৰাত বসলা আগেই জন্প ফানাকেড্ৰের শতীর সারফার কারতে, প্রতিদ্ধা কা**ত** থেকে একটি পত্র পেলেন। সন্মিন্তির **যে** আন্তেজন সদস্য জেলে ছিলেন তায়। ঐ পরের মারফং ধর্মেট প্রভারাবের প্রস্তার করে পাঠিকেছিলেন্ড (উচ্চি ঐ প্রশ্তার প্রবশ্য শ্রীক্তির আবেশনের আগাই গ্রুণ করে-ভিলেন।) করখনে নতাদের তাড়িয়ত স্থানার পর আলোকেছে: অবসানের একটিবস দ্রে হ'লে কেল। জাতীয় সংগ্রাম সন্নাল্য সমিতি কেটালিক সম্প্র পুত্রভাকত সিক্ষাক্র কলেনে চ্চল্ডিয়া ক্রিক মেড় প্রিয় কণ্ডল কে সিংপিংএল বেজা সমত মটেশাকার্যাণ প্রসভাবের বিবাসের ভোট সিকোন :

শ্রীজকা ফানাগেডক অবশা এই ধ্যাঘট প্রত্যাহ্ধা কবে নেওয়ার জনা মিথিল ভারও টোড ইট্টানিয়ন কংগ্রেস্কে দায়ী কংগুন নি।

Transmission in the state of

তিনি বলেছেন, এ-আই-টি-ইউ-সি গোড়া থেকে দেব পর্যাত ধর্মাঘটালের সংজ্য ছিল। কিন্তু সংজ্য সংজ্য তিনি একথাও শ্বীকার করেছেন যে, এই ধর্মাঘট যাঁরা প্রিচালনা কর্মাছালেন তাঁরা এক একজন এক এক রক্ষম ভাষার কথা বলতে থাকার ধর্মাঘট প্রত্যাহার করে নিতে হয়েছে।

দি-পি-এম খোলাখালিভাবেই এই
ধর্মাট সম্পর্কে সি-পি-আই-এর ভূমিকার
স্মালোচনা করেছে। সি-পি-এম পলিট
বারের সন্ডা পি রামম্তি বলেছেন,
প্রেলন্তরে ধর্মাঘটে সি-পি-আই নেতা
ভাপো খনংসাথাক ভূমিকা গ্রহণ করেছিলেন। তিনি বলেছেন, সি-পি-আই
সাধারণভাবে কংগ্রেসকে রাজনৈতিক সম্মথান
দেওয়ার ও কেলে কংগ্রেসের সংগ্রে
কোরালিখন সরকারে যোগ দেওয়ার নাতি
গ্রহণ করে একটা কর্ম্য অবৃশ্যার মধ্যে
প্রেছে।

জনসংখ্যর করেকজন সদস্যও ধর্মাঘটে ।
কার্নিক-আই-এর ভূমিকার সমালোচনা করেছেন। তারা বলেছেন, সি-পি-আই বলতে গেলে সরকারের ভূমিকাই গ্রহণ করেছিল এবং ধর্মাঘট একরকম স্যাবোটেজই করেছিল।

এই ধর্মাঘটে কংগ্রেসের সাপ্যে সি-পি-আই-এর সম্পক্তে টান ধ্রেছে। এই প্রমাণ্ড উপ্রকালক সি-পি-আই যেভাবে সমস্ত কংগ্রেস বিরোধী দলেও সাঙ্গে একটা হকে সরকার-বিরোধী গাজনীতির মঞে গিয়ে দাঁভিয়েছিল সেটা কংগ্ৰেপেণ অনেকেরট পদ্ধান হয়নি। পশ্চিমবংশ সৈ পি আই এর সংগে ঘনিষ্ঠ ক্ষেক্জন কংগ্রেস নেকাত এই ক্ষোভ প্রকাশ করেছেন ০বং প্রতিষ্ঠাল গ্রহাণিকর ছোচা জিটায়ে লখান সাথকিতা সম্প্রে প্রথন তালেছেন। গ্রপর্বাদকে কংগ্রেসের যে 'প্রগতিশীল মংশেব' উপদ সি-পি-ডাই একদিন ভ্রসা বেখে এসেছে ভাঁবাতে স্বকাশের ধ্যাঘাট ^{এম}ানৰ নীজি পাৰপাৰি স্বপ্ৰি কৰে ^{সেংপ-আইকে ভাসাবিধায় ফেলেছেন।}

সি-পি-আই-এর এই দোটানার সাযোগ নিয়ে মাক সবাদী ক্মাটেনস্ট প্রাটি ও সেশ্যালিপ্ট নেতা মধ্য লিমায়ে সি-পি-আইকে এবার কংগ্রেসেল সঙ্গে সর সম্পর্ক ছিল করে বামপাথা শিবিরে 'যাগ দিতে উপ্লান লিয়েছিলেন। কিন্তু স-পি-**আ**ই তাদের কেন্দ্রায় কাষ্যানিবাড়ক সাল্লাভিতে গাজনৈতিক প্রিপিথতি প্রাজেলচুমা করার পর এই প্রান্নশ প্রকাথানে করেছে। যদিও পূগতিশালৈ কংগ্রেসকম্বীর৷ বিভাশত *চা*য়ে গেছেন এবং মদিও কংগ্রেসেল বৈষ্ঠায়ক নীতিতে স্পেন্ট পক্ষিণপ্ৰথী প্ৰৱণ্ড: ^{এসেছে} ভাহলেও বাম্পণ্থী দলগ্ৰিস - ও প্রগতিশীল কংগ্রেমী মেই সমূতে রামপুশ্রী ও গ্রহ^{্ন}ত্তক শক্তিকে একতিত করার নাীতি পরিত্যাগ করণ কারণ সি-পি-আই দেখে না।

বেলওয়ে ধর্মায় উপলক্ষে যে কংগ্রেস-বিরোধী একতা গড়ে উঠেছিল তাম ভবিষাং কি হবে, বামপথী ঐক্যের নতুন কোন চেটা হবে কিনা, কংগ্রেসের সপ্যে সি-পি-আই-এর যে সীমিত বোঝাপড়া ময়েছে সেটা কতদ্রে টিকবে, এসব প্রাণ্ন এখন ধর্মাধটো অভিজ্ঞতার প্রিপ্রেক্ষিতে নতুন করে বিবেচিত হবে।

ধান গাটর পারবর্তী আর একটি প্রদান হল, ভারত্বরের টোড ইউনিয়ন আন্দোদ লানের উপর এই ধুর্মাঘটের প্রতিক্লিয়া কি হবে।

রেল ধর্মানটো বার্থাতার ফলে টেড ইউনিয়ন অ্লানের হাতিয়াল হিসাবে ধর্মানটো নার বাদ ভোঁতা হয়ে গিয়ে থাকে তাহলে প্রমিকদের অভাব অভিযোগ ও বিক্ষোভ সকলেশ্র বিকল্প পথটা কি হবে?

কেন্দ্রীয় সরকারের প্রম মন্দ্রণাশার ইতিমধ্যে সরকান্ধি ও বেসরকান্ধি ক্লেচে সংগঠিত শিশুপর জন্য বেতন নীতি তৈরি করাতে বংশত হয়ে পড়েছেন। তাঁদেখা আশা, এতে শিশুপবিরোধ কমবে। করেণ, হিসাবেই দেখা যায়, এদেশে যত শিশুপবিরোধ হয় ভাশ ৩৫ শভাংশের পিছনেই থাকে মুজ্মবি সংক্রান্ত বিরোধ।

রাগ্রপতি গিরি ইতিমধ্যে ধর্মঘট ও লক-আউট বাধ রাখাল্ল জন্য আর একবার প্রানিক ও মালিকদের প্রতি আবেদন জানিরেছেন। তিনি বলেছেন যে, কুমধর্মমান অস্ত্রেডার দ্রে করাল্ল স্বচেরে কার্যকর উপার হল, জাতীয় জীবনে প্রানিকদের নাফা স্থান দেওয়া। সংগে সংকা প্রানিক প্রাথমিক দায়িত্ব স্ত্রেছা, উৎপাদন ও উৎপাদনের কার বাতে সংগ্রেজন করের কোনে কার্ডারের বৈক্তন বাজাবার চেণ্টা করলে কোন লাভ হবে মা ভাতে ববং মজ্বিও ও দামের মধ্যে প্রভিযোগিতা ভবিত্রপা হবে।

তানাদিকে সি-পি-এম নেতা রামম্তি বলোচন সরকার যে দ্টেতা দেখিয়েছেন তাকে শিলেপ এক ধরনের শান্তি আলতে পারে কিল্ডু শ্মিকদের শেকজ্পপ্রশাদিত সহযোগিতা ছাড়া দেশে শিলেপর সুঠিন পরিচাশনার আনা দিবাস্বন্নই হয়ে থাকরে।

প্রধানমন্ত্রী শ্রীমতী ইন্দিরা গাশ্বী আমেরিকার নিউইয়ক' সাম্তাহিক প্রিকাল সংগ্র এক সাক্ষাংকারে ধর্মাঘট প্রসালেশ বলেছেন, আমরা ধর্মাঘটের বিলোধী নই! আমরা মনে করি, ধর্মাঘট সংগঠিত ছাম্লিকার মনোর একটি বৈধ ছাভিয়ার। কিম্পুর্কান একটি প্রেণীর স্বাহ্যপ্রশালকট বিষয় দেশের বৃহত্তর স্বাহ্রের পরিপ্রেক্তিবিসেনা করার প্ররোজন আছে।...ধনী দেশ-গুলি সব সময়েই স্বিধা পেরে ধাবে, আম্রা ঠিক মানে করি না, তেমনি আমরা মনে করি যে নিচ্তলার মান্যকে আমরা যতক্ষণ প্রশিত্ত কভকটা উপরে তুলতে না প্রায়ীই তভক্ষণ

. 19 - Î. 19 41 (19 1) . - 24 4 년 19 4 . 19 12 - 24 1 25 1 2 2 2 2 2 2 2 2 পর তে শব্দুলাতর মানবরা ভারের দাবি

এই প্রসংশ্য আর একটি প্রদান উঠছে।
প্রদানি হচ্ছে, আরুকের প্রামক আন্দোলনে
বাইরের রাজনৈতিক নেতাদের যে আধিপতা
ররেছে সেটা চলতে দেওয়া উচিত জিনা।
কথা উঠেছে বে, সারা ম্লত রাজনীতিক
তাদের হাতে যদি এভাবে রেলওরে
ধর্মঘটের নেতৃষ চলে না বেত তাহলে
রাজনৈতিক দলাদালির প্রতিজিয়ায় এই
ধর্মঘট এমন ক্ষতিগ্রস্ত হড় শা।
তবিষ্যাতের জনা আমাদের শ্রেড ইউনির্ম্প
নতারা এমন কোন শিক্ষা গ্রহণ করবেন
কিনা সেটা দেখার বিব্রহ্ন হবে।

ভারত তার প্রথম প্রামাণবিক বিক্ষোরণ করার প্রথম দিকে বিদেশে বেস্ব বির্প প্রতিক্রিয়া দেখা গিরেছিল তার ধার্রা এখন কতকটা কেটে গোছে এবং এবিষরে ভারতের মনোভাবের প্রতি কিছু কিছু সহানুভাতির স্ব লক্ষ্য করা বাচ্ছে।

ব্টিশ বামপাথী সাণ্ডাহিক পারক। র্ণনিউ স্টেটসম্যান এ ঐ প্রিকার সম্পাদক লিখেছেন অধিকাংশ ব্টেশ সংবাদপথ যোভাবে গলা চাড়য়ে (ভারতকে) তিরুকার কল্লেছে সেটা অসহনীর।' তিনি আরও লিখেছেন যে, পারমাণবিক শারহণীন দেশপালি বখন দেখতে পাছে পারমাণাবক শাস্ততে যারা সবচেয়ে বেশি শাস্তমান তারাই ঐ শান্ত সংগ্রহ করতে সবচেয়ে বেশি আগ্রহা তখন তারা কেমন করে পার্মাণাবক অন্তের প্রসার রোধ চুক্তির আণ্ডারকভায় বিশ্বাস কথবে? 'আমি ষেম্ম বলি তেমন কর', এই ধরনের কথায় কখন'ই চি'ড়ে ভেক্তে মি। আমাদের মত তোমরাও (প্রধানানিক অস্ত্র) বাদ দিয়ে চল এমন্ত্র কথা অংক্ত আর কিছুটো বেশি বিশ্বাসবোগ্য হত।

সাণ্ডাহিক াস্পর্কেটর'ও ভারতের পারমাণবিক বিস্ফোরণে দোষের কিছা দেখেন নি। ভারত যে তার রাজ-নৈতিক ও সামারিক জাতীয় স্বাথেই পাৰামাণবিক শক্তিগোষ্ঠীকৈ যোগ দিয়েছে সে কথার উল্লেখ করে স্পেকেটর লৈখেছেন, ভারতের এই কাজ সম্পূর্ণ বোধগম্য ও সমর্থনীয়। এতে ভাগত কোন চুক্তিভঙ্গত করে নি। কারণ সে যদিও পারমাণবিক প্রীকা নিষেধ চভিব অংশীদাধ ভাহকেও মাটির নিচে সে যে পারমার্ণনিক বিদেফারণ ঘটিয়েছে তাতে শেই চুভির সত' লা^{ডি}গত হয় নি। আর পারমাণবিক অক্টেম প্রসার রোধ সংক্রাণ্ড সভাগালি ভ সে কখনও মেনেই নেয় নি।

বিশেষ একজন অগ্রগণা রাণ্টনীতিবিদ হিসাবে শ্রীমতী ইণিদ্রা গাংশী যে ক্লমেই অধিক থেকে অধিকতর পণিগত্র-গিগর পরিচয় দিজেন সে কথার উরোধ করে স্পেট্টের জিংখাছন 'এটা পরিব্রার হয়ে উঠেছে, তার পিতার ও বাদ্যং নীতিব নিক্ষক কালের অবসান হছে ও ভারত ব্যক্তর বিশেষর আলোকে বেরিয়ে আসুছে। বুলোশ্লাভিব্নর সংবাদ সরবরাহ সংস্থা ভানব্প'-এর ক্টনৈভিক সম্পাদক তার একটি সংবাদভাবো বলেছেন, শান্তিপ্রির দেশগ্লি শান্তিপ্র্ণ উন্দেশ্যে পারমাণবিব শভিকে কাজে লাগাবার যে চেণ্টা করছে ভাতে ভারতের এই পারমাণবিক বিস্ফোরণ একটি ভাৎপর্যপূর্ণ অবদান বলে গণা হওরা উচিত।'

ভারতকে ডার এই প্রথম পারমাণবিক বিস্ফোরণের জন্য অকুণ্ঠ অভিনন্দন জানিরেছে সেনেগল। সেনেগল বলৈছে, / ভারতের বিজ্ঞানী ও বিশেষজ্ঞানের মান বে কড উ'চু তার প্রমাণ এই বিশ্ফোরণের মধ্য দিয়ে আবাদ্ধ পাঙ্ধা স্থল।

সেনেগলের প্রেসিজেন্ট জিপ্তুপোল্ড সেজার সেক্ষর তাঁর নর্মাদনব্যাপী ভারত সফল শেষ করে প্রধানমন্দ্রী ইন্দিরা গাংধীর সপো বে বাল ইন্ডাহারে প্রাক্ষর করনেন তাতে এই প্রথম আফ্রিকার কোন দেশের

যে বই-এর সব চরিত্রই বাংলা সাহিত্যের অনন্য স্বি**চ্**ট॥

"গাঁয়ের ব্ডোরা বলেছিলঃ বাঁশীর স্বর কিনিস না। তা হলে তোর ঘরে কিছুই থাকবে না।

আমি বলেছিলাম : তুই আমা র বাপ। ভাবনা করিস না, আমি তোকে দেখবো।

আমি আগন্ন জেনুলেছিলাম। ঘর আগলে ছিলাম। তব্ কেন যে আমার বাবা গেল বিদেশে, রোজগার করতে। আমার মা গেল পাহাড়ে, পাতা কুড়োতে! আমার ঘোড়াটা গেল জলার ধারে, ঘাস খেতে।"

"বিশ্লবের পথ কেবলই গার্হ স্থ্যের দিকে বে'কে যায়! বনের সম্যাসী ফিরে আসে ঘরে।...ওরে কুনাল বনের সম্যাসীর চেয়ে ঘরের সম্যাসীই পাগল বেশী।"

"লোকটা ঠাণ্ডা গলায় বলে— আপনি যা বলেছেন তা হ'ল পশ্চাদপসরণের কথা। আমি যা বলছি তা প্রগতির কথা। আমার কথাই ঠিক হনে, কারণ ভারত এখন প্রগতির মেল ট্রেণে উঠে পড়েছে. নামবার উপায় নেই, চেন টানলে আড়াই শোটাকা জরিমানা। তাকে যেতেই হবে। অতএব আগামী পাঁচ বছরের মধ্যেই আমরা আরো িতন তিনটে ওয়েটিং র্ম পেরে যাছি।"……

भीर्सन् यूर्थानाधारमञ्

অসাধারণ নতুন গ্রন্থ

ঘরের পথ ৬০০

এই লেখকের আরও একটি অনবদা উপন্যাস

म्राथत आणाल ७.७०

সাহিত্য সংস্থা, ১৮সি টেমার লেন, কলিঃ-৯

পুক্ষ থেকে ভাষাত্তর পাল্লমাণ্ডিক বিশেষাধনে সমধানের কথা জামান হ'ল।

ভ্রাভর প্রমাণ্যিক বিস্করণে

সিহাণে বিদেশে বেসর সমালোচনা হয়েছে
কেণ্ডিল কিছু কিছু উত্তা ইতিমান প্রশামরাতী ইজিলা গাধো প্রমাণ্যিক লাভি লামিশ্যের চেরারমান ডা এইচ এন প্রেকা ও অম্যান্য সম্বাতি মাুখপাচর লিক্তা ও অম্যান্য সম্বাতি মাুখপাচর

(REA 1-

আপতি (১) ভাষতের এই পদি-মার্শবিক বিদ্যারণ বিদেব নতুন অশাহিত ভোক অন্যাব।

ভাবাব :—'মিউইরক' পরিকার সপ্রে সাক্ষংকায়ে শ্রীমাতী গাঁধী বলেছেন, ভাগত প্রিমাণিক নিরেম অয়ত করলেও সে প্রমাণিক স্পুর্বেটি দেশ মহ! ভারতে রাম পারম গঠিক রামা নেই এবং প্রামাণিক হিলাম সংপ্রে তাব জ্ঞান বা প্রামাণিক শিকাম সংপ্রে তাব জ্ঞান বা প্রামাণিক শিকাম সংস্কৃতি পূর্বা উদ্দেশ্য লাখ সামা কাম উল্লেখ্য কারে লাগাবার ইছ্যা সাবাসক কেট!

ক্সার্গাত (২) এই প্রয়োগরিক লিস্কারণ গৌতা ভাগড় প্রাকিক্সানের উপর অধিপত্য বিস্তার করতে চাইছে।

জনার ঃ—পাকিস্তানের উপর আধিপ্ত: ববার উপেশা ভারতের মেই। প্রতিক্তান त्रष्ट्र प्रदेश উপয়স্থালৈ আপলিক সহাত্ৰিকা একটি মুক্তু ভিডি শাভ তৈ লাউ ভাবেভের ইচ্ছা। দুটো দেশের মধ্যে ক্ষান্ত্ৰ সংপ্ৰ প্ৰাপিত হলে ভারত পাংহ'ণতিক শক্তি সংপ্রকা গাও<mark>য়গা</mark>য় পৰিকাৰ্যকেং সংগ্ৰ স্কুৰ্মণিয়ন্ত **কৰ**ে কজি আছে। পালিককানের সংগো ব্ৰথ বছনি চরি কর্ডেও ছাবত প্রস্তৃত। শক্তিবভাষ্ট বরং ভাষাত্র সংগ্রা ব্রুখ ক্ষাত ^পশাস প্রাক্তিত চারোছ। এই ব্যক্ত जाराहाक भारकार्गातक जन्म तावहार कवाए হর্ষাম। পাকিস্তান ভারতের বিরন্তের 'লস্মাণবিক বাকোম্উল'-এব অভিনৱাণ और तर खालाल तिरुक शहर शाहराम्य এবং ব্যালয় লালে পারহাপরিক অন্য সংগ্রহ कबाट सद्देश

আপরি (৩) ভারতের যান্ত ছেখানে জ্বাপট খাতেই পায় না সেখানে পার-মার্শনিক বিস্ফারণের পিছান নিরাট আর্থা-বায় করা নিত্তক অপচয়।

ক্ষবাব :— ডঃ গোঠনা বালেকেন, এই পাৰমাণবিক বিস্ফোরণে থকাচ চরেছে মাত ৩০ লাখ টাকা। মাটিব নিটা এই পরীক্ষায় যে টাভা থকা করা চরেছে তার সাত্তগাল লিকা পাসমাণবিক মাত্তি কামিলান লোৱ করে আক্রম কবি বৈধা ও ক্যাস্সাবের চিকিৎসা সম্পর্কে গারেলায়।

আর একটি হিলাবে প্রকাশ হে, পালরাশীবক বি্হাহ উৎপাদশস্থ সময় পারমাণারক শান্ত কর্মাস্টোতে ভারত বছরে মাট পরিমাণ অথ্যায় করে সেটা ভার বংসাকুক হাজেটের দুই শভাংশেরও কম।

এই পারমাণাঁবক বিশ্ফোরণ ভারত ঘটিরেছে সংপ্রবাহণে ভার নিভার শক্তি-সামধোন উপর নিভার করে। এজনা এব প্রসার্থ্য বৈদেশিক মাদ্রা থবচ হর্মান।

ভারত গরিব দেশ বলে দে আধ্নিক প্রবৃত্তিবিদাদ ক্রয়ংনিত্রি হওরার চেক্টা করতে পাধ্যরে না, এটা কোন বাত্তি নয়। অতীতে ভারত যথম ভারি শিলপ স্থাপন করতে গোছে, তথমও পাশ্চাতোর কোন কোন দেশা থেকে এই ধ্যানের আপত্তি তোলা হয়েছে। আসলে, গরীবী দরে করার জনাই ভারত আধ্নিক প্রযুত্তিবিদার বাহায়া গুরুণ করতে চায় এবং এ বিষয়ে শাক্তাকর চেন্টার যত্টা ক্ষাণ্ডাত করা

আপতি (৪) ক্যানাতা ভাষতকৈ যে পাক্ষাধনিক ফুলী তৈরী করে দিয়েছে ত' থেকে এই নিক্ষোবাদ্য জন্ম স্পাট্টানিয়াম সংগ্রহ করে ভারত এ বিষয়ে নিষেধাজ্ঞ লগত্য করেছে।

জবাব-ভারত এ বিষয়ে কোন নিষেধাঞা সংখন করে নি। শাণিতপূর্ণ উপ্টেমণা ছাড়া আনা কোন উপ্দেশে পরমাশ্রবিভাজনের শরিকে কারে লাগান হাজে কিনা সেবিবে নজর বাধার জনা ভারত আগত্রুলাতিক পরেমাণিক শত্রি সংখ্যার পরিদেশকের সর করে ভাগতর বাধার জনা কোন বাবার কোনা কোন তার সেই ভুল বোঝারাঝি হাজ থাকাল সরেভাগান এসে সেই ভুল দাোধবাবার জনা ভং শেসমা কামাভিদ্য পরিমাণিক শত্রি বিভাগের প্রধান ভঙ্ক লশ প্রেক বেশ্বাইরে গ্রেমাণিক গারেকণা কেন্দ্র পরিদাশন করে বাবার আমাণ্যক গারেকণা কেন্দ্র পরিদাশন করে বাবার আমাণ্যক জানিরেজন।

২৮ দিনে ১৩ বার দায়াস্কাস আর জের্জালেষের মধ্যে বভারাত কার মার্কিন পররাষ্ট্রসচিত ডঃ হেনরী ফিসিঞ্জাত অব-শেৰে কটেনীতির একটি নতুন ইতিহাস রচনা করেছেন। খিলব ও ইজরারেলের মধ্যে সৈন্যাপসারণ সংক্রান্ত চুত্তি হয়ে যাওরার পরও গতে প্রার চার মাস ধ্রে গোলাম হাইটম অঞ্লে সিরিয়া ও ইজ-রারেকের মধ্যে লড়াই চলছিল সেই লড়াই বংধ করার একটা বাস্তা খাজে বের করে আধ্নিক কালের বাসততম কটমীতিবিদ ডঃ किनिकात क्रकी जनाया नायन करायन । त्रन পররাল্ট্যন্ত্রী আন্দ্রে গ্রোমিকোও তাঁকে এ বিবরে কতকটা সাহাদ্য করেছেন। ক্রেনিভার পশ্চিম এশিয়া সংক্রাণ্ড শাণিত আলোচনার সিরিয়ার যোগ দেওয়ার পথ এখন প্রশানত হল এবং পশ্চিম এশিরায় স্থারী শান্তির সম্পানে দীর্ঘ ও কন্টকং বারার পথে আর একটি ক্রু পদক্ষেপ করা COLOT 1

সিরিয়া-ইভরামেল সীমান্তবর্তী এই
গোলান হাইট্স অঞ্চল নিম্নে দুশেকের
একট মীরাংসা করা আপৌ সহজ্জনারা ছিল
না। আইমত এই পার্বভাভূমি সিরিয়ার
অধিকারজুভ। কিন্তু ইজরামেল ভাষা
নিয়াপতা রক্ষার কনা করাবরই এই
অঞ্চলটিকে তার কবজার মধ্যে রাখতে
চেরালে। এই পার্বভাভূমি যারই প্রথাকে সে বলতে গোলে আন্যা দেশের
ই অঞ্চল নিয়ে দাই দেশের মধ্যে দার্শির্টিত হাত রাখতে পারবে। সেই কার্মান্ট্
বিরোধ চলে আন্যা

স্বা ছিল ইজারারেক সিবিয়ার সিরিয়ার ভালি সম্পূর্ণ ছেড়ে চলে **হাবে।** তার হথে পড়বে ১৯৬৭ সালে ইজরারেলের দ্খল করা কুইনেতা শহর এবং মাউলী হেরমনের তিনটি গরে, ত্বপূর্ণ পাহাড়ী বাটি সহ গত অকটোবরের বুশে**ধ দখল কর** সমগ্র এলাকা। ইক্সমায়েল সিরিরার কাছে গ্যারাণি চেয়েছিল যে সে প্যালেণ্টাইন গোরলাদের সংযন্ত রাখবে। শেষ প্রযুক্ত যে বফা হয়েছে তাতে স্থিম হয়েছে ৰে ইজ-রারেল কুইনেতা শহর ও ছয়-সাডটি গ্রাম ছেড়ে আসবে গত অকটোবরের যুদ্ধে দ্**থক** করা অন্তল সিরিয়াকে ফিরিয়ে দেবে তবে ঘাউণ্ট হেরমনের তিনটি ঘাঁটি নিজেবেৰ प्रथाल वाश्वादा । भारतकोहमी लाजिलाएक শম্পর্কে ইজরাহাল সিরিয়ার কা**ছ থেকে** গাাগাণ্টি আদার করতে পারে নি। সি**রিরার** বস্তব্য প্যালেন্টাইনী গেরিলাদের সমস্যাটা ইজরায়েলেরই সৃষ্টি এবং প্যালেন্টাইনের উদ্বাস্কুদের সংখ্যা এই সমস্যা মিটিয়ে শেওরার দায়িত্ব তেল আভি**ভক্টে গ্রহণ** করতে হবে।

চুলিতে আরও শিংর হারেছে বে গোলান হাইটস বরাবর দুই পক্ষেণ্ড প্রশানের কামানের পালার বাইরে সরে বাবে এবং মার্যানের তৈমী হবে রাখ্যসম্পের সেনা বাহিদীর প্রহরাধীন একটি মুক্ত অঞ্চল। সিনাইতে মিশ্র ও ইজয়ায়েলের মধ্যে যে সিনাসারণ চুক্তি হারেছে ভাতে অদ্বর্শ বাবিশ্যা আছে।

থার পার বাকী থাকল শাঁদচয় এশিরার আর একটি কঠিন সামলা। সেই সমলা।
কটি সকলা
কতান আর ইজনারেলকে নিরে। সেখানে
একটি স্তাম শক্ষ বরেছেন। সার হলেল
পালেলটাইনার। কর্তানের অধিকৃত এলাকা
থোক ইজনারেল যদি সরেও আরে ভারনেও
সেই এলাকা কার পথলে বাবে? পালেল
নীইনা উন্নান্তরের? অথলা কর্তানের
রাজা হোলেনের? এই প্রক্রের
মামাংসা না হওরা প্রক্রের
প্রতিনিধিবনের আসন থালিই থাকলে আর
ওলেন বাল দিরে পশ্চিম এশিরার বালিতর
নাবান পাওরার আলাও স্ক্রেন্স্রারড়ে।

89-5-60



লোকটি বিভিন্ন স্বত্তর কথা বজে লোক কড় কর্মাছল।.....

কাইরের মাঠ থেকে ওকে দেখা বার না। মাইকে গলা শোনা বার, ভারী সংকর, মিডি বলার ভাগো। এই গালনের মেলার স্বী,—দোকানপাট, নালরদোলা এমন ক্ষী প্রিচনের ইম্ফুলবাড়ি প্রগত গুর জাহনান ছাড়িরে প্রহা

জারণাটা চটের পদা দিয়ে খেরা।
গুরুই বন্ধা খেলা দেখালর ব্যবস্থা। দৃশক্ষি-দের ব্যবস্থা জন্ম ব্যবস্থা। দৃশক্ষি-দের ব্যবস্থা জন্ম ব্যবস্থার মাটির আসম। ডাছড়ো খেলার স্থানস্থার। টোবল-চেরার, ডাগ-তবলা, হার্যোসিরাম ডার্মান্ট্রেই ইজালি সব কিছু।

म्प्रोप क्षांत वाहरत नारका अर्डित वाहराका व्यक्त दक्ष वहन क्षा स्टब्स পালেই টেবিল-ভেয়ার পেতে একটি মেরে বসে।। সেই টিকিট বিভি করছে। কালো রঙের মেরেটি। স্বাল্থাবড়ী এবং মোটামট্টি সঞ্জী বশা চলে। রঙগীন কাপড় আর জন্মা পর্যনে, হল বেশ কারাদা করে বাধা। পিছনের খোপাটা উচু আর বড়। চোখে কাজল, কিন্তু দৃশ্টি চগুল, অম্থির।

চটের পার্দার আড়ালে শোকটি তেমাঁন বিচিত্র সারে কথা বলছিল। সামনে এছটা শালখাটির গাল্পে এগ্রাপিকালারারটা বাঁধা ররেছে। শর্শক আকর্বাপ করে জানবার জনাই দাইজের বাবস্থা। বস্তুতা শানে কিছু লোক পারে পারে এদিকে এগ্রিয়ে আসকে। গোটের পালে সাজগোল করা আরেটিকে দেখে থমকে পাঁড়াছে। কেউ টিকিটের পাল্ডি নিরে এটা-সেনী শ্রাম্য করছে। শু-চারজন ভিড় করে নাধ্য মেরেটিকে নেশতে, পদান ভিত্তরের থেশার চেরে ভার আকর্ষণার কিবা কর নয় হ

ক্ষেক্তি বন্ধুতা ক্ষুত্রিক বিশ্বন ব

েটের ভিতরে গুকরার সময় একটি মেয়ে আর একজনকে বলল,—'থেলা দেখার যে হতকাটা লোকটা, সে উই মেয়াটার সোরামী । বুর্বাল ? বরের গলায় রেজ মালা দেয়া । _গছ কি হার ভানাল ?

ভরাশী বিল খিল করে তেলে উঠা। তর্ম বলেছে প্রমালেন উ তো খেলা দেখিই বিশ্বচাহ পরবান। যে মানুষ্টা মৃত্যের কথা ক্রাছে, উ হল বিয়ে দলের ফোন্ডার। ১,বাল :

টিকিট বৈতি করতে গিয়ে এক মুখ্রী থামাল মেয়েটি। আড়চাথে ভাকাল তদের মিকে, এক প্রকের দেন। প্রকাগেই একটা ভাক্তার ভাগা করে ফের কাকে মন দিল।

বেলা শান্ত। মাণ্টার শম্পু এখন দশকিদের সমনে। প্রনে হাংপাণ্ট মার বাংশা
মান । কোনো দ্বাচনায় হাত দুর্টি কাটা
কোন কোনার । হাত নেই, তাই জানার হাত
দুর্ঘট হাত্র কানের মত লাইপট করছে।
মান্তর উপর চেয়ারে মা কালার ছবি
দ্বার পালে সিশ্রে মাখানো। ক্রেকটি
ক্রবা কুল পড়ে আছে এশিকে সেদিকে।
মান্টার শাক্ত প্রাছে এশিকে সাদকে।

আন। তাভক্ষণে কোটোর দরজা বর্ষ হারেছে।
পালে বাল হো আরেছি চিকিট বিক্তি করছিল,
মে উঠে এল মডের উপর। মান্টার শন্তু
শক্ষণ ওকে দেখে। মেয়েটিও হালেণ।
দল কদের মধ্যে পিত্নার সারি থেকে কে
থেম ভাক্ষান্তরে সিটি বাজাণ। তাই শানে
সম্মাদর একজন মাণ্য ঘারিয়ে ইবং
বিক্তির সংগ্র বল উঠল—যো। মরব

মহিক র্থা পালিরে সেই মানেজার লোকাচ- এখন বগাঁছল, — মান্টার শমসূর এই থেলা প্রায়ে শগরে বহুজানের প্রাথমে কুন্টারতে। এর গেলা দেখে ডানোক গেডেলা দিয়েছেন। বাহুবা দিরছেন। প্রথম স্বাধানা হবে গোট আপ্রথমের ব্যাধানা হবে গাঁচ দেখে খ্যাঁশ হয়ে বাধানারের জাঁমান্রবাব্র দ্যাঁ প্রাতিকবা দেবী এক চি সা্দ্র শাল দিয়েছিলন মান্টার বাহুকে।

ক্ষাম গৈলাটি মাজ নেখানে। হাছে। সেই মেনেটি এমজানার কাজ করবার জিনিসপর এনে রাখল শাড়র কাজে। আদ্যান কৌনলা সে পারের সালান। সাজেন কালে কালে কালে কালে হাত কালো কালে কালে কালাকা কালাকা কালাকা কালাকা কালাকা কালাকা সালানা কালাকার সালাকার সালাকার

রেজিষ্ট্রি বিবাহ অফিস

মোট ১৬ টাকায় রেজিস্ট্রি বিবাহ

এন কে ঘোষ, জে-পি ম্যারেজ অফিসার

১৯৭, কেপৰ্যন্ত লেন ল্বীট কলি-৯, ফোন ঃ ৩৫-৩০৪৮ তুলে ধরল। সংখ্যর একটি প্রাথির আকার ২০টে উঠে;ছ কাপড়ের গায়ে।

্ৰান্দভান্ত থেকা। কোকটি বিচিত্ৰ কণ্ঠে ঘোষণা কৱক। তাৰ খেকাটি হক্ষ কংগীন কাগজেৱ ফলে তৈরি করা। হাত নেই অবশা শম্পুর। কিন্তু তাতে কিন্তু, যার আসে না। সে পা দিয়েই ফলে বান্ডব।

মেরোট একটা কটিচ আর খানিকটা রভীন কাগক মাণ্টার শমভূর পারের কাছে এনে রাখণ। খানিকটা সরে মণ্ডের এক কোণে পে দাড়াল। মানেজার লোকটির দিকে ভাকিয়ে ফিক করে হাসল একটা।

আগ্রুত কৌশল। পারে কটি ধরে রঙীন কাগজটাকে নানাভাবে কেটে স্কুলর এক ফুল বানিরেছে শব্দু। গ্রাহ্রা দর্শকের দশ ক্ষেত্রে থা পারে যাদ, আছে নাকি লোকটার হাত থাকলেও লোকে যা পারে না, দটো পারে মাস্টার শব্দু সেই ভেক্কি (দ্বাচ্ছে।

পরের খেলা স্টোভ জনলিয়ে চা করে খাওয়া। অনুশাই পারের সাহায্যে। কসরং করে পারের আঙলে দিরে স্টোভ পাশে দিতে লাগল শৃশ্ভূ। কেংলিটা চাপলে। নিনিট কলেকের মধ্যেই শোঁ শোঁ। জল তৈরি। তারপর দুধ চিনি মিশিয়ে চারের কাপে সে আরেস করে চুমুক দিল।

মাইকে মখে রেখে শোকটি বলক,—

এই খেলা দেখিরে মাস্টার শাস্ত্র অনেক
ভাগ্রায় পা্র্কলার পেরেছে। বেগমপা্র
প্রানের শিক্ষিকা শ্রীমতী প্রভারাণী সরকার

ককে একটি মেডেল দিরেছিলেন। ব্যুপার
থ্যেত্ব। মাস্টার শাস্ত্র স্কামার ডান দিকে
সেটি রয়েছে। ভাকালেই দেখ্তে প্রেন।

ছোট্থাটো আরে৷ কয়েকটি অনুষ্ঠোনের পর শেষের খেলাটি শুরু হল। এটি স্ব-চেয়ে রেলহয় ক এবং রাতিমত উত্তেজক। মাইকের সামনে দাঁড়িয়ে ম্যানেজার সাড়ম্বর বপান। দিভিছল খেশার। লক্ষ্ভেদ্ অজ'ুনের লক্ষ্যভেদ। ভাইলোনেরা, মহাজারত নিশ্চয়ই পড়েছন: অজ্নের লক্ষাভেদের গলপত শ্নেছেন তাহলে। এই খেলার মাল্টার শম্ভু হলেন গাড়ীবধারী পার্থ। লক্ষ্যভেদ তিনি করছেন। তবে তার হাত নেই। শুধু পা দুটি সুম্বল। ভগবানের আনের আশীবাদ না পেলে এই আত্ত ক্ষমতার অধিকারী হওয়া বার না। লক্ষ্যভেদের খেলাটি দেখবার সময় আপনাদের বকে হয়তো কে'পে উঠবে। কিন্তু মাস্টার শম্ভূ নিবিকার। তার কাছে এ ভেলেখেলা, চিল ছেড়ার মত তানারাস এবং **সহজ**।

অবিটাস্টিট কাপড়পুরা সেই সেরেটি
মাজর মানাখানে রইল। তার মাথার উপর
একটি বড় সাইকের কমলালেন্। সে স্থির
ভাগতে লাড়িরো। নড়াচড়া নর। কানেভাসের
কারে আকা ছবির মতা। অবিক্ল। মাসটার
শম্পু পারে তীর তেনে এই কমলালেশ্কে বিশ্ব করবে। একট্, নড়াচড়া হলেই ক্যাসাদ।
ভার কপলে বিশেক্ত পারে। কিংবা দেহের
অন্যা। একটা নুহাটনা অসম্ভব নর। সেই আশাংক্রা দশকের চক্ষ্ম দিশুর। বুকের কাছে জ্বাট সমিথারতা।

নাংক্রাহাসক এই থেলা একমাত দাংসাহস লৈদকের পক্ষেই স্থাতব। মাইকের সামনে দাড়িয়ে মানেকার প্রায়া মানাবগালির নামভাবে মনোরজন করছিল। হাত থেকেও জারর যা পারি না, মাখার শাহতু পারের সাহায়ে তাই সম্ভব করল। দেখারে কমলাকান ভাঙ্কের করলে করেব। শাহতের করলাকান করেব। শাহতের করেব। ভাঙ্কের নাভাঙ্কের করেব। শাহতের করেব। ভাঙ্কের করেব। ভাঙ্কের করেব। ভাঙ্কের করেব। ভাঙ্কির ভাঙ্কের করেব। শাহতের শাহতার শাহতুর মানাবভাগালিয়ে পারিরে দেবে মাহতার শাহতুর স্কারা।

মা কালার পারের জবাকুল গুর মাথার রাখল লোকটি। ধন্কটা দ্-একবার টেনে পর্য করে নিক্ষে শম্ভ। গুলিকে মেরোট পথ্যজ্ঞানে দাড়িরে। মাথার ক্ষালালেন। হাতে মালা। সে হাস্ছে। লক্ষাভেদ হলোই শম্ভুর গুলার মালা প্রিন্ধে দেবে। ভার জন্ম এখনই তৈরি।

দশকেরা শত্রুধ। মেরেদের মুখে <u>হালের</u> রেখা। চোখগ্রিল বড়। শুর আর বিশ্বর মিলিরে ধেমন হয়। মাদটার শদ্ভু পারের আঙ্গেল ভারটা ভুলে নিরে ধন্তি রাখলা। মাদরকার লোকটি ফের মাইকে বলল,— লক্ষা ভেদের এই খেলা মাদটার শদ্ভুর সেরা কার্ন। আপনারা দেখনে, বাড়িতে গল্প কর্ন। বংশ্বাদধব আক্ষান-কৃট্যুব সারা দেখেনি, কাল ভাদের পাঠিরে দিন। হার্ মাদটার শদ্ভু এখন রেডা। ধন্কের ছিলার টান দিছে। এইবার এক, পুই—ভিলা।

আশ্চর্য নিশানা। তীর সবেগে গিরে বেবক্কে বিশ্ব করে ৮%ত পড়ল। আর তথ্নই শিশাখল হেসে উঠল মেরেটি। দম দেওয়া সংস্কার দিল শশ্চুর পলার। থেলে। মালা সারের দিল শশ্চুর পলার। থারপর কুয়ারী মেরের মত সলভ্জ ভশ্চিতে থাক দেকি, পদার আড়ালে গিরে আভা-

দশক্দের মধ্যে কে বেন তালি বাজাল।
একজন ঢাঙা মতন লোক বলে উঠলবাহবা! বলিহারি খেলা মাইরি। তিন-লারজন উৎসাহী ছেলে, মেরেদের মত উলধর্ননি দিল।...

খেলা শেষ। মণ্ডের উপর বসে হিলেব নিকেশ করছিল খরা। মাল্টার শাম্ভু, দলের মানেজার নিবারণ আর সেই মেরেটি। এখন অংগার বসন অটিসাটো নর। অন্যেক শিবিলা উ'চু খোলাটা ভেঙে ছুলের রাশ পিঠের উপর ঝোলের মত জড় হরে আছে। খেলা শরের আগের চোখে কাঞ্জ শরেছিল। তার খানিকটা কালি চোখ কাঞ্জা সর্মুদ্দ গালে লেখেছে।

শম্পু বশল — নিবারণদা, কেলা বেন্দ ভালো হয়েছে। কি বল ?' —ভালো হৈকি। ভিনটে গেডে ছাম্পান টাকা বারো আনা বিক্রি। থক্ষ্পান্ত বাদ দিলেও মন্দ্র থাকে না। ভরে আর করেকটা দিন।

মেরেটি প্রসাগালে গনে শকসে রাখছিল। সে মুখ ভূলে বলল,—'মেলার তো আর তিনটে দিন বাকি। এরপুর কোথার বাবে?'

— কিছুদিন এখন শহরে গিয়ে ডেরা পতিতে হবৈ।'

নিবারণ জানাল। ইদিকে আর মেলাটেলা নেই। দিন দশ বাদে তাড়াজাড়ি গাঁরের বান্ধমেশার হাজির হাঁজি। সেধানে সাত দিন। তারপর—

—'ভারপর কোধার গো?' মেরেটির কোত্রকোর মেন শেষ নেই।

—কোৰার আবার শ মান্টার শান্ত নিজেই জবাৰ দিন। বৈশাদের শেবে বেলে-ডোড়ে ধর্মারাজের জেলা। ভান্তালা,ড়ি থেকে লোজা সেখানে গিয়ে উঠব দ

বিভিন্ন টাকাটার বখরা হয়। থরচণত বাদ দিলে বা থাকে তার দশা আশা অংশ দাক্ষুর। তার আনা পায় নিবারণ। আর বাকি দ্ব-আনা ক্রমনি,—অর্থাৎ গুরু মেরেটির। নিবারণ অবশা তা বলে না। ব্বুমনিকে আড়ালে পেলে মম্করা করে। বলে,—বারো আনা তোদের দ্বী-প্রবেষর। সিকি হথা আহার।

ব্যমনি কৌল করে। আহা! কথার কী ছিরি। রোজ গলার মালা পরিয়ে দিছি। তাই বলে আমি শদ্ভুর বউ হয়েছি মাকি ?

কথাটা অবশ্য ঠিক। ওরা স্বামা-স্থা নয়। কিন্তু ভবিষাতে তেমন একটা নিশ্চিত সম্ভাবনা আছে। অন্তত মাস্টার শম্ভু তাই জানে। প্রথম যথন খেলা দেখাতে শ্রে, করে, তথ্য ব্যানি দলে ছিল না। দল শ্রে, দুক্তনকে নিয়ে। মাস্টার শাস্ভু আরু নিবাংব। দুক্তনের দল।

ক্ষ্যভেদের খেলা তখন চাব্ হয়ন। বক্তেশ্বর গাঁরের মেলার খুমনি তাদের দলে এসে জাটুল। ঠিক দলে নয়। মা-বাপ মরা ভানীথা মেরে। খাওরা-পরা ভোটে না। এসে আশ্রয় চাইল নিবারণের কাছে।

নিবারণ বলল,—'মেরেটা থাকতে চারা। দলের সংগে থাকুক। কি বল শম্ভু?'

শম্পুর অবশা আপত্তি ছিল। আত বড় মেরে নিবারণদা। দ্ব-বছর কাদে আফো ডাগরডোগর হবে তখন?

নিবারণ গারে মাথেনি ওর কগা।
ক্রেয়ালের মত ধাত চোদা দক্ত্র চেমে
অনেক বেদা বোঝে। দাকাপোন্ত বাদিধ। সে
ত্রেনে বললা—ভাগর ডেগের মেরেরও তো
দরকার আছে। ভালো করে দাখে দিকি।
মেরেটাকে মনে ধরে? একট্ থেমে আধার বললা—ভার দেব তোরা। কলাভা ভোল্ল দেখাদানো ক্ষতে কলে একটা মেয়ে চাই বৈকি। জোবাবাল কলে। জাবাবাল কলে। জাবাবাল কলে।

সেই থেকে গলে আছে জুমান। ব্যন এল, তখন রোগা হাড় জিরজিরে চেছান। কিন্তু পু-বছর নর। ছ-মাসের মধ্যেই অনা মৃতি। থেরেপরে বর্ষায় জোলের মত ফুলে ফেলে উচল লরীর। চোথের দৃশ্লিট ঠোটির ইাসি,—স্ব ইল্পান্ডের ছারির মতো মারালো মমে হুর। এখন হাবেভাবে, চলনে-বলনে গাজনের মেলার হানাদলের মানীর মত গার্ডাবনী ভলি।

বক্তেশ্বর থৈকে কীপাহার। সেশান থেকে
আমতোড়। ভারপর প্রত্তিরাক রাস্মেলার বিরেম্ন কথা মূখেই থলেতে নিবারক। কাজে এপোর নি। সমন্ত্র কই? তব্ শক্ত ভূলেতিশ কথাটা। কাল্ডীয়াটে মা কোখার বেন আমানের নিরে বাবে বজোছালে নিবারকা?

ইণিণত বুৰে মুচ্ছি হাসে ক্ষিয়ালন।
বলে, পাড়া কিছুলিন। মেরেটা বড়ুলড়
হোক। হাতের কাছে ময়নাপাঙ্গি তো শ্রইল।
বিষে দিতে কতুক্ষণ লাগে ? ব্যক্তাভ্যা কুমনির দেহটার দিকে তাকিকে কের হাসে।

আমতা আমতা করে লম্ভ উত্তর দেয়'
তা এখনই কয় বড় কি? বেশী দেরী হলে
আবার কোনো লোরেদ—

—কিছ লোবের হবে না। নিবারণ বাঁকা হাসল। তোর দেখাছ ভয় সইছে মা লখ্ড। শান্দু লাফা পোন। বজাল,—ামা, তর পাইবে না কেন? এমান মনে হল। তাই বল-ছিলামাণ

নিবারণ সাম্বানা দেবার চঙে বলে, ক্রান্তের করালেই বউ। ব্রতীল সাক্র নিজের ভারত্রেই পীরিতের রস। মইলে সাত পাকে ধোরাকেও বিয়ে করা বউ আপন হয় না। বস্তু দেখলায় দ

পাশ্রমা পাওরা পোষ। নিস্তম্প মেলা।
দোকানপাতি হানের ভারা বাঁপ বাং করে
ব্যামারার উলোগ করছে। চেন্ত হাজের পের।
বেশ গরুম। লোকে বিন্তানা পেন্তে বাইরে
শ্রেছে। বহুদ্বের কোনে অপসরলোকের
উলানে একরালা উল্জ্বল নক্ষতকুল নাবার
উপর ফুট্টে রয়েছে। আবহা অপনকারে ব্যাহত
মান্—বড্রো বরের সারি সারি চালা অক্সান্ট
চিবে পড়ে।

থেকা দেখানত মধ্যটাত উপায় পাৰেছিল পথায়। রোজ পোয়। নিবার্যালের পারে সহা হয় না। সে বালিল আর মাদৃত পোয়ে আট্র-চালার সিমেনেটর মেধের উপায় প্রামের।

গরমে ছটকট কর্মান্তল লক্ষ্য। তেওঁ এইটা বিভি ধরাবে ভাবল। কিন্তু লেশারাই ? পারের ভুলায় মালুনের নীনে ভারার ক্ষত্য। কিন্তু নেই। বোগচর নিবারল নিরে তেওঁ। দাঁতের সাহাযো ঠোঁট চিপে ক্ষন্ত একটা বির্মান্তল্য কালালীন মন্তব্য ক্ষান্ত। ভারণর বিস্তানা থোকে উঠে সোজা ভিত্তরে এবং চটের পার্লা ছোট একটা কামবার মুন্ত ।

নীহারর জন গ্রুতর

কিরীটী অমনিবাস

১ম খণ্ড ১৯ ৩র খণ্ড ১০ ৪খা খণ্ড ১৪ [দিবতীয় খণ্ড ধাশ্যাশ্য]

खानाग्न क्षतीह

ওরা বড় হয়ে গেল 🤫

নবতম গ্রন্থ প্রকাশিত চুইজ

विभव भारत्र व

ং পরস্ত্রী

20,

হরিনারায়ণ চট্টোপাধ্যায়ের ঃ কামনার ধ্প ৮

বাশুতোষ মখোপাধায়ের : কাঞ্চন রাগিনী ৮

जबब नाहिका शकानंग : ५ टो माब टन्स, केनकाका - ১

উদযানে স্থানি শোলা। দ্বাসত প্রথ। কন্ট ইয় খ্রা কিংকু উপায় কি : জনা কলসীর মত ব্যক্তী নেবোমাণ্য, ও কি বাইকে মান্দ্র বিভিন্নে শ্ক্তে পারে : অসংডে গাংশ্রব ক্ষাপড় সরে গেকে কয় সক্ষার করা।

— শুমান, ঘ্মিরেছিস নাকি?' শমতু ভুজন করল।

— বুষ আনে নি।' কুমনি ছোটু জবাব দিল।

—উঠে দেশলাইটা মানুক্তে দে আমাকে। শক্তম গ্ৰিডি খাবে লাকি?'

भक्छ हुन करत उड़ेन।

ক্ষেপ্রাইটা বলুকে পেতে স্মার লাগান ক্মানির। মধ্যের মধ্যে অভ্যবার। জিনিস্পাতের ক্ষ্যুপ। মাতেতে হুতিতে বেল নিজ্ঞুক্ত পর দেখালাইটার হুদ্বিল পেল। বেরিয়ে এসে ব্যবস্থালকত ক্ষেত্র নিজ্ঞানার শ্রে পড়েছে।

—'দেশলাই খ'ুজজিল যে।' ঝুমনি কাছে এগে দাঁডাল।

—হার্য । ভূই এদিকে আয় । এখনে বস । শুকু ভূমনি শ্রুয়ে বইল।

রাধা হোরের হাত অনুমান এসে বাস্পা। ঠিক বিভাগার উপরে নয়। একটা সরে,---একপালে।

—বিভিন্ন মাথে বাসমে দে। শম্ভ আদেশ জনসং

কুমনি হাসলা। কেন গোঃ তোমার তো পা রয়েছে। মাস্টার শহতুর ছিচ্বণ।



---স্তাটা কর্রছিস ?' শব্দু হৈসে বলল। 'এই দুটি প্রীচরণের দৌলতেই ভোদের শ্রীহুদেতর কাজ চলচছ।'

---'তা বটে কাপু।' ঝুমনি খাড় নেড়ে সাহ দিল।

সেশলাই জনালিয়ে বিভিন্ন মুখে আগুন রাথল কুমনি। শুক্ত্ বার দুই তিন টেনে ঠিক্ষত ধরিয়ে নিল। বলল — আমার মাণাটা টেপ নেখি একট্। হাত ব্লিয়ে দে কপালো। ধূদি তাহলে খুম আসে।

— তুমি গ্রমটার কেন শোও? নিবারণ-দার সংগ্য হাইরে গেলে পার। ঠাল্ডা হাওরার তাড়াতাড়ি ঘুম আসবে।

মানুৰ্টাকে জর বা অস্থানিত লাগে না খুমানির। হাত দুটো নেই বলেই বোশহর। হাত জলা মানুৰ্বালোর জনলা কেশী। সুবিধেয়ত আওতার ভিতরে পেলেই ট্না-টানি করবে। খুমান জানে, খুনেছে কত।

— আমানের বিয়ের কথাটা এবার কলব নিবারবাদাকে। বা্ঝালি ঝামনি ? শগস্থ মান্দ্-ককেট কলল।

কুমনি উত্তর দিল না। আগের মত^ই সপাল টিপতে **লাগল**।

— বিয়ের সময় কি গমনা নিবি কল? আমার অনেক ট্রকা জমেছে। ভাবছি এখন থেকেই গড়িয়ে রাখব।

কুমান সলভজভাবে হাসল একটু। বলল,—অনেক রাত হল। তুমি ঘুমোও এবার। আমি শুই গিয়ে।

—'ধ্যেং! ভীষণ লক্ষ্যা করে আমার।' ব্যুম্মি মুখ্য কিরিয়ে হাসল।

আরো কিছুক্রণ পরে শম্ভুর পাশ থেকে সে উঠে এল। বাইরেটা বেশ ঠান্ডা। ফ্রুন্ন ফ্রের একট্র বাজাসের চেউ ভার গান্থে ফ্রনিকের জন্ম শীভুল শর্মাশ ব্রালিরে গোল। রাত্তির কভ হবে কে জানে? একটা কিংবা দুটো হতে পারে। অপ্যক্তার আকাশে নক্ষার ঠাই দেখে সে সমক্ষের একটা অধ্যাল করবার চেণ্টা করল।

চট দিয়ে ঘেরা নিজের কামরার কাছে এসে থমকে দড়িলে কার্মান। গাদ আংশকারে নিঃশব্দে একটি অন্নিরিক্স জলেছে। ভারই জনো প্রতীক্ষা করছে লোকটা। কার্মানর ভীমণ ভয় করল। শন্দু যদি এখনও জেগে থাকে।

ম্পের বিভিটা পটকাবাজির মৃত দ্রে নিক্ষেপ করে সে ধীরপারে তার কাছে এল। প্রথম করল,—খান্তর কাছে গিরেছিলি ?'

—হা[†]।' কুমনি কুৰ নীচু করে একৰ

পিক। বলল, — কেশলাই খাক্তবিল। আমাকে ডেকে নিকে গেল।

লোকটা হাত বাড়িরে তার বাহ, ছুর বিচেপে দরল। তাকে আকর্ষণ করল। সবলে বুকের সপো আবংধ করে গালে, তৌটে করেক্যার হুয় খেল। বুমান প্রথমটা করের পাখির মত অসহায়, ভারপর এক কটকার, নিজেকে ছাড়িরে নিরে খালের সর্পে কটকার, —ছি, ছি বেহারা কোখালার। সক্ত

—'শাস্ত্র অভ ভর ক্রিনের?' লোকটা ট্রবং দেশবের সংগো বলল। স্থ**ই কি ওর্ন** বিষ্ণে করা শরিবান?'

'—হাাঁ, পরিবার। ভাই হব।' ক্রারীন আহত সাশিলীর মড হিসাহস করে উঠলা। বলল — তুমি তো ভর সপো বিরে নাঞান আলার। নইলে মালাবদল করে হরে বেছা। ডোমার মডলব বৃত্তি না আদি?'

জোকের মুখে বেল নুকের ডেলা পড়ল। লোকটা মুহুতে চুপ। ছার মানল। গলা দিয়ে কথা বেরোল না।

কুর্মান দেমাক করে শোনালা,—"বিবেশ্য কথা শাস্তু বলছিল আমাকে। কি গায়না পইনদ্ ধানতে চাইছিল। শীগগাঁর গড়িরে রাখবে।"

—তাহলে গ্রমনার কথা খুনেই মক্তেছিস বঙ্গ?' লোকটা ভাষ্যবহারে একটা হিংসুটে বিকৃত শব্দ করল। বলল—ভা শব্দুর পরসা হয়েছে। সোনার গ্রমনা গাড়াতে পারে বৈকি। তথ্ন ভারে মত কড় মেরে ছিচরণের ব্যক্তিটা হতে চাইবে।'

রাগে ফুলছিল ঝুমনি। কিন্তু সে কোনো কথা বলার আগেই লোকটা <u>দুক্তপালে অন্ধ</u>-কারে মিলিয়ে গেল।

স্কালে নিবাদ প্ৰশা করছিল। হারী,
শুদ্ধুর নাম-ভাক ্রছে বটে। মেঞ্চার লোক ধন্যি ধন্যি করছে। বিশেষ করে ভোক্সার ঐ ক্ষান্তেদের খেলাটা। বলে কি, শেষ না ছবরা গুদারত ব্যক্তর ভিতরটা বেন ধুক্পপুক করে। খেলার নামে লোকে অজ্ঞান রে ক্র্মান। তুই কি বলিস?

—বাস রে। আমি আবার কি বলব ? হাও না থেকে এত নাম-ডাক। থাকলে না জানি কি—মূখে আঁচল চাপা দিরে ক্যানি থিলাখল করে হাসল।

বিকেলটা মরতে বলেছে। সূর্ব প্রবাহে দোর নেই আরে। সেলপাকুরের গুবারে প্রকাশত বটগাছটার পিছনে সূর্ব আড়ান্স হচ্ছে। আর গ্রকট্ন পরেই খেলা শারু হবে। কিন্তু কি যেন হরেছে পাকুর। মুখ ভার। জ্যেন কোলালে কোলারের দ্বিটা যেন ছাইরের আড়ালে চাপা আলান রয়েছে।

সমস্ত দৃশ্যুর তীরের ফলাটা শারশাব্যার বর্ষাহল শাস্ত্র। আবো তীক্ষা, জারো হ'ফোলো করে তুলারে। শার্মান ক্রারী ক্রারা,—

official and Mallin and Asia

The state of the s

িক্ত পশ্চু চুপ। সে কোনো উত্তর দিল নাঃ

আনজ্মাট মেলা। ছ্যাসাক জালেছে দ্যাক্ষনে। একদল সভিতাল মেরে এসে নাগরদ্যোক্ষনে। একদল সভিতাল মেরে এসে নাগরদ্যোক্ষরে গাল গাইছে। মনোছারী স্পোরের
ছেক্ষো কেকানী ব্যুকী বৃষ্টিটির হাতে ছুডি
পরনোর কাঁকে, ভার কচি চল্চলে মুখখানা
আড়্টেনেথ লেগে নিজা। যে লোকটি পাঁগড়
বেচছিল, সে হুঠাও ভাকিরে দেখল ভার খাড়ি
খুনা হুরে এসেছে।

নিবারণ একবার বলস,—'কি হরেছে রে শুদ্ধ ? শরীয়টা খারাপ নাকি?'

— শ্না, শ্ৰীর খারাপ কিলের? বেশ তো আছি দ

—তৰে ? শৰীর ভাল, ইদিকে মুখ ভার। নেটা কি মনের জন্যে?

বিষয় হয়ে শম্ভূ ব্লাল--'ছেল। ক্যাচ-ফাচ কয়নি বাপ্র।

নিবারণ রসিক্ষতা ক্রুলা,—বিস্নের কথা
শানে মন হল উদাসী। তাই নারে শান্তু?
কের বলাল,—আর তো কটা দিন মধ্যে। মেলার
খেষ হলোই কলকাতার হাব। সেখানে কালীঘটে তোদের মালাবদ্দা করে বিরে হবে।
নিবারণ যেন হেলের বারুনা মেটাতে মিনিট
মোনার লোভ দেখালা।

খেলা শেষ হয়ে আসছে। দুশু শক্ষাতেদ বাকি। তার ধন্ক নিমে তৈরি শক্ষ্। মালা হাতে ব্যনি দাঁড়িয়ে। তার মাধার কমলা-লেখা। আর করেক সেকেন্ড। তারপরই শক্ষা-তেদ। তার হাটিতে পড়বে। ফলার প্রথ শেখাটি নিয়ে।

হঠাৎ ভীষণ হৈ চৈ। প্রথম সারি থেকে কে চেণ্টারে উঠল। ভারপর দিবতীয় সারির লোক। শেষে সব দশকি। অন্য কিছু নয়। লক্ষাভেদ বরতে পারোন লন্ড্। ভীর বার্ধ। কপালের নীচে গলার পাল দিয়ে চলে গেছে। ক্মনির অধ্য স্পর্ল ক্রেনি ভাই রক্ষে।

নিবারণ অবশা ওর বিচিন্ন ভণ্গিতে নানা কথা বংগ শাংত করল সকলকে। ভুল,— নিশানার ভুল। মান্বের চোখ ডো। জনেকটা বাত হরেছে। জংধকারও বোশা। হ্যাসাকের আলোটা আল তেমন পরি-কার নর। কি বেশ দোষ হরেছে ব্যাতিগার। নইলো দ্পানন ধরে তো লক্ষাভেদ করছে। হঠাৎ আলকের খেলাল্ল নিশানা ভুল হবে কেন?

ৰ্ট্যুটে অন্ধ্যান। সম্ভব্ত অমানসা। মন্তের উপর ঘ্নিরেছে শদ্ভ। রোজ ব্যেস শোম। সন্ধা টাল টাল্ ভব্যি। প্যাপ কিরে শাতে পারে না বেচারী। বাহাুমূল থেকে
দ্বটো হাত কাটা। তাই চিং হলে
ঘ্রোয়। বড় বড় নিশ্বাস নিচ্ছে এখন।
ব্লটা কামানের হাগরের মত উঠছে, নামছে।
ভালধকারে কখন এসে দাড়িয়েছিল অ্মনি।
কাঁদেখছিল সেই জানে। নিঃশব্দে লখা পারে
ছিরে গেলা। শাল্ড টের পেলানা।

পিঠের উপর কোমল অথচ উক একটি হাতের স্পার্থ পেয়ে নিবারণ ভাকাল। অন্ধ-নারে ঘুম থেকে উঠে ঠিক ব্রুতে পারেনি। ভারপর মধ্যের রেখা, শরীরেব ছাঁদ, পরণেধ কাপড়টার দিকে চোখ পড়তেই সে উঠে বসল।

তাকে হাতছানি দিয়ে ডাকল কুমনি। মূৰে আপানুৱা মেৰে ইন্মনায় কথা কইতে নিবেশ কৰণ।

ঠিক নিশিপাওরা সান্বের যত হাঁটছিল নিবারণ। সালনে ফুমনি চলেছে। সন্দোনি হিতের মত সে পিছনে। গাজনের মেলা ছাড়িয়ে প্রায়ে প্রায়ের বাইরে এসে মেরেটা থালা।

—কৌ মত্তলৰ বলা দেখি তোর।' নিবারণ ভূবা কু'চকে ভাকাল। দামভূবই বা এত রাগ্য রোধ কিসের? মিছিমিছি লক্ষ্যভেদের খেলাটা মাটি করল।'

— রাগ কিসের বৃত্ততে পার্রান : ক্মান হাসল। অন্ধকারের মত দ্ভোর হাসি। ফিস্ফিস্ করে বলল— রাভিরে আমার কাছে ভূমি এসোছলে সে কথা উ জানতে পেরেতে:

নিবারণ অপরাধীর মত মুখ করে উত্তর দিল—তা আমি তো বলেছি। মেলাটা শেষ হলে ফুলীঘাটে যাব। সেখানে মালাবদ্দ করে বিশ্লে হবে তোদের। তারপর সিশ্দুর দান।' অন্ধবারে খিলখিল করে হেনে উঠল বুমনি। রাজনী নায়কার মত, চোনের একটা তেরছা ভবিগ করে বলল,—মালাবদল ধবে কেমন করে লম্ভুর কি সুন্টা হতে ভাতে?

নিবারণ এক দ্রভিত্ত ওর মাথের দিকে
তাকিরো রইজা কি বলতে চায় ক্রমান দ মুদ্ধির হাত নেই। রাতদ্পুদ্রে এই ক্রমান বলতে তাকে এতদার টোনে এনেছে? নিজে এত চালাক চতুর পাকা শস্তু লোক। কিন্তু এই যাবতী মেয়েটা বেন তার ব্যুম্পিন ভাতীত। নিবারণ ক্রিছুতেই ওকে ব্যুক্তে পারছে না।

তব্ সাহস করে সে হাত বাড়িরে ওকে
কাছে টেনে আনল। আদ্চরণ কালা সাজিবে
ব্যুমিন এক কটকার তার বাহুপালা পেকে
নিক্ষেক ছাড়িরে নিরেছিল। দেয়াক করে
শাশ্রুর সংগা বিরের কথা শুনিরেছিল। আরু
আজা। একটাল কানার মত মেরেট্র কালা
শরীরের সংগা লেপটে আছো। কোনো
নির্বার প্রেক্তি ভাকর বিরের সংগা লেপটে আছো। কালা
নির্বার সংগা লেপটে আছো। কোনো
নির্বার সংগা লেপটে আছো। কালা
স্কিট্রানিবারণ ওকে ইংজ্বেরত ভাকরের
স্ভাতে পারে।

একট ইতস্তত করে বলল নিজারণ দুইটি লল করলি ব্যাল। নাই বা হাত ভাকলা। শুকুর কত প্রাসা। নাম-ঢাক। ওকে বিজে করলে সুধে থাকতিস।

নিবাৰণের হাত দ্টো সাঁড়াশীক মত চেপে বঙ্গেছে ওর নরম দেতে। কী ক্ষৈত্র দ্টো হাতে। ধেন পোহার তৈরি। ক্ষুনি চোগ বধ্য করে বলল—শন্ত ভ্রুমেন্ডে। চল পালিরে যাই এখান থেকে।

- পালৈয়ে হাব?'

—হা। ' ফাস্থিস করে বলল খুম্বি।
সান্ধটাকে বিশ্বাস নেই। এখন জ্বাপা বাধ।
আজ ভয় দেখিয়ে ছেড়ে দিয়েছে। কিল্ছ কাল আর নয়। ছিচরধের তার দিয়ে গোধে ফেল্বে।'



প্যাট্রিক হোয়াইটের দেশ ও তার সাহিত্য

-जामिका अध्यममात

অন্ত্রোলয়ার প্রাণ্ডিক হোয়াইট সাহিতে। নোবেল প্রেক্তার প্রেম্বাতীর দেশ ও তার সাহিত্য সম্প্রেক্তা আমন্ত্রেক কোত্রল জাগিয়ে তেগেলন।

দেশ ও জাতি হিসেবে অন্তের্জনার পরিচয় অতি অলপদিনের। ১৬০৬ খাণ্টাব্দে ওলপদালর। এ৬০৬ খাণ্টাব্দে ওলপদালর। এই দেশের অসিত্র আবিকার করে। ওরা এর নাম দের ক্রিউ হল্যান্ডা। কিন্তু ওই প্রথান্ত। দেশের ভেতরে তোকা সম্ভব হয় নি বস্বাস তো দ্বোর কথা। ওলাক অভিজ্ঞতায় ওখানকার আদিন অবিবাদীরা ভ্রমণ্ডর হিল্প ও নিষ্ট্রের ক্রিছে।

আরো একশ বিরাশি বছর পরে, মধ্যাং ১৭৮৮ খ্টাব্যে শার্ হয়েছে আক্তকের অন্থোলিয়া। কিন্তু তার আরক্তর ইতিযাসটা কল্পক্তনক।

১৭৭৬ শ্টান্দে আন্নেরিকা ইংবেজনের
ইপানবেশিক শৃংখল পেকে মা্ক হয়ে
শ্বামানতা ঘোষণা করলে ইংবেজরা যে সব
মান্দিকলে পড়ে তার মধ্যে একটা হল এই ।—
এ হাদন শ্বীপান্তর বা দাইছিয়ায়ানে দান্তত
শপরাধীনের আর্মোরকায় চালান করা
হাজাশ। এখন আর্মারকায় সংখ্যা য়য়েণ্ড
বাবস্থা। দেশের জেনাপ্লিতে স্থান
সংক্রান হয় না। অত্রব আন্য উপায়
দিখর করার প্রায়াকন দেখা দিল।

ইতিমধ্যে কাণ্ডেনি ক্ক নিউ হল্যাণ্ডের
প্রিদিকের উপক্ল ভূমি প্রিক্সান করে
এপেছেন। তাইতেই দিশা প্রতিয়া গোল।
গ্রেদিকে দান্ডেত অপরাধীদের এবার
থেকে ম্থান হার এই মত্ন দেশে। প্রথম
কিন্তি হিসেবে পাঠানো হল আহাজ ভতি
করে ৭৫০ জন লবিক ও অভিসার। আর দেভয়া
হল এটা ভেড্ হটো হাঁড় এটা গোরু
৪৮টা ভেড্ হটো আল ৭৪টা শ্রেম
৪৮টা নালা জাতের ম্র্লিগ। আর টে
গ্রেম

১৭৮৮ খ্ডাব্দের ২৬শে জনারারি এই জাহাজ অচেন এক সহাদেশের ভীরে নোঙর করল। স্তুপাত হল সভতো ও সংক্ষতির এক নতুন দিগুল্ভের।

ষেধানে বসবাস শাব্হল সে ভারগার নাম বটান বে। এই নামেই গোটা দেশকে তথল চিহ্নিত করা হতে লাগগ। নিউ ইল্যান্ড নাম স্বভাবতই বাতিল হয়ে গেল। ১৮০৪ খণ্টানে কাণ্টেন ক্লিডার্স মহাদেশটির নাম 'অদেট্রলিয়া' রাখার প্রশুতার দেন। সরকারিভাবে এ নাম গ্রহণ করা হয় ১৮১৭ সালে। তবে তা চাল্ফু হয় ১৮২০-র

গ্রাস্থ্রীলয়ার সাণ্ট অতএব ইংরেজদের এক নতুন উপনিবেশ হিসেবে। যারা বাস করতে লাগল বরং বলতে পারি, যদের বাস করতে বাধা করা হল-তাদের ভাষা ইংৰোজ। ইংলন্ডের সংস্কৃতি ও সাহিত্যের আবহাওয়ায় ভারা মান্ত্র। ভারা রাভারাতি বদলে যাবে এমনটা সম্ভব নয়। তারা এই নতন দেশে পেল প্রতিকাল ভলহাওয়া-কাঠফাটা রোদ ছেমো গরম ঊষর মাটি ধ্ধুমরুও আধা মরু ভয়াবহ নিজনিতা। এমন দেশে বসত করতে হল। তার জনো যে পরিশ্রম, কণ্টসহিষ্ট্তা এবং ভারই সংশ্রে উদাম-উল্ভাবন্ জাবন্যাপ্নের নতুন ব্ৰহণা-ত আভজাতা স্বদেশে লভা ছিল ন। তথে তাদের অধিকাংশের কাছে এ আভজ্ঞতা সংখদ ঠেকে নি। তাদের ভালো লাগে নি এই দেশটাকে। জলের মাছ ভাল্যায় থাকার অংক্ষিত ও প্রতিন তারা সরাজীবন ভোগ করছে।

কিন্তু তাদের সন্তান সন্ততি, তাদের উত্তর প**ুর্**ষ্ এরা অস্টোলয়াকে চিমল নিজেদের মাতভাম হিসেবে ৷ স্বাভাবিকভারেই তাদের মধ্যে জেগেছে মাত্ভামর প্রতি মম্বরোধ। উপরুক্ত, ধ্রোপ তথা তাবং ভখণত থেকে ধহ যোজনের দ্রেজনিত বিচ্ছিল্তা এই মন্ত-বোধকে তাঁর করে ভুলেছে। দেশের বিশিষ্ট প্রকৃতি এবং সেই প্রকৃতি-নিভার জীবন ধারণ ও বিয়াক্লাপ কৈ**কটা নিজস্ব**তা একটা বৈশিষ্ট্য স্থান্ট করল। মাইরের ফলত হেফে - বিভি**ন্ন** হ্যা এক বিশতীর্ণ ঊষর দেশে নানা প্রতিক ল অবস্থায় ও ভয়তক্র নিজ'ন্তার মুধ্যে নসবাস করতে গিয়ে ভারা অর্জন করেছে ^{আপ্রতির} প্রতায় ও যু**থবৃন্ধ জ**ীবনচর্চা। এই নিজ্পবতা, এই বৈশিণ্টা থেকে জন্মেছে অস্টেলীয় জ্ঞাতিধোধ। ১৮৫০ **সাল থেকে** এই জাতিরোধ পায় স্বত:স্ফ্রি। জাতি-ব্যেবের অন,প্রেরণা জাগ্রত করল বিরাট ব্যাসজ্ঞের উন্যাদনা। চলল স্বদিক দিয়ে দেশ গড়ার কাজ। স্বা**টি হতে লাগল** নানা গ্রাম, জনপদ, শহর। কুণ্টি ও শিল্পের উর্মাত। এই আমাদের দেশ, এখানে আমরা এক নতুন জাতি, আমাদের নতুন রাণ্ট্র—

এই চেতনায় উদ্দুদ্ধ হল এখানকার আধ্বাসীরা।

কিন্তু একটা বেতালা স্বের ছাও রইল। একদল বাসিন্দার কাছে এই দেশটা বিদেশ হয়েই থাকল। তারা এখানে যেন প্রবাসী। তাদের আসল দেশ হল ইংলন্ড। লাডন হল তাদের মন্ধা। ক্ষীণ হলেও এই সার আজকের অন্টেলিয়াতেও বর্তমান। এয়ন অনেকে আছেন হারা ইংলন্ডে বসবাস করতে পারলে মোক্ষলাভের চরিতার্থাতা বোধ করেন। কিছু লেখকদের মধ্যেও এই প্রবাতা আছে।

ওপ্রে যা বল। হল তা **অস্ট্রেলয়ার** সাহিত্যের সংস্প পরিচিত্তির প্র**ক্ষে** প্রয়োজন। এই সাহিত্যের প্রকৃতি ও প্রব-প্রক্পরা ব্রেত্তে সহজ হয়।

অন্টোল্যার সাহিত্যকে **মোটাম্টি** চারটি কালান্ক্রিক পূর্ব বা **ম্পে ভাগ** করা যায়।

প্রথম পর্যাহল ১৭৮৮ থেকে ১৮৫০ খ্যুটাব্দ প্রযাহত। এই প্রোর সাহিত্যকে বলতে পারি অন্দের্মালয়। এবাসা ইংরেজদের রচিত সাহিতা। কারণ এই সময়ে যারা লিখেছেন তাদের কোনো নাড়ির টান ছিল না এই দেশের সংগণ নতুন একটা দেশে এনে বসবাস কাল হৈ মেজাজ, যে প্রতিক্রিয়া, কিংবা নে কৌত্যল জাগে তারই বলে রচিত হরেছে এই সময়কার সাহিত্য। এ সাহিত্যে বেশির ভাগই তাই বহা বিশরণমালক।

সব দেশের সাহিত্যে যা দেখা গেছে,
আপ্টোলয়ার সাহিত্যেও তার বাতিক্রম
ঘটে নি। অথাং সাহিত্যের প্রথম প্রকাশ
ঘটেছে ছলেশবংধ ভাষায়়। যদিও গদী তথান
সাহিত্যের মাধ্যম হিসেবে রীতিমত প্রকাশ

বসবাসের শ্রুতেই মাইকেল রবিনদন
(১৭৪৭-১৮^{২৬}) নামে এক দশ্ভিত বাজি
থিনি তথন মুজিপ্রশত-প্রতি বছর ইংলন্ডেধরের জন্মতিথি উপলক্ষে কবিতা নচনা
করে আনুষ্ঠানিকভাবে পাঠ করেন ওথানকার প্রস্ভার। ওগালি ছাপা হত ওথানকার প্রস্ভার। ওগালি ছাপা হত ওথানকার পেভেটএ। ১৮১০ থেকে ১৮২১ সাল
প্রশ্ভ এই ভদুলোক এইভাবে কবিত্তা লিখে
অনেকটা যেন রাজকবির ভূমিকা পালন করেন।
এতিহাসিক দিক থেকে এই কবিভাগালি
ইল অনুর্জিরার সাহিত্যের প্রথম নিদ্দন।

তবে বই আকারে প্রথম হার লেখা বার হয় তার নাম ব্যারণ ফটিত (১৭৮৬ভাষ্য ১৯ ১৮৪৬) ইনি ভিনেন্ প্রথিত্যশা চার্লস অস্টেনিয়ার মাটিতে পাওয়া গেল সোনা। তাদেব শ্বীবন্যালার বিভিন্ন ক্রাক্তিন ১ স্থানের বৃদ্ধ। অস্ট্রেলিয়ায় আসেন সংগ্রিছ কোঠের জাজ হিসেবে। তার এই বইটি ক্বিভাগ্রব্ধ। ১৮১১ সালে সিড্রিন থেকে প্রকাশিত হয়। বইয়ের নাম, 'অস্টেশীর কবিতার প্রথম ফসল'। দুটি বড মাপেৰ কবিতা নিয়ে এই ফসল। প্ৰথম ক্ৰিতার বিষয়বস্তু ওখানকার তর্মাতা। িবতীয় কবিতার প্রেরণা ক্যাভার। কবির টোখে ক্যান্তার, হল অদেট্রালয়ার প্রত্যাক।

ব্টটির ম্বিতীয় সংস্করণে ক্ষেক্টি কবিতা সংযোজিত হয়। একটি কবিতার ফীল্ড ব্যক্ত করেন যে এ দেশের প্রকৃতি নিতাশ্তই গদ্মায় এখানে রঙ নেই গৰ্ধ নেই গান নেই। এর মাটিতে নেই অতীতের কোনো ছাপ। তৎকালে এই मांग्डेरक करमगढ़ अस्तरक स्वर्थाधन।

অস্ট্রেলিয়ার কথাসাহিত্যে সুন্টি হল একটি উপনাস। ১৮০১ সালে ত্তিন খণ্ডে প্রকাশত। উপন্যাসটি আত্ম-জারনীয়ালক। হেনার স্যাভোর (১৭১৩-১৮৪২) নামে এক দণিডত ব্যক্তি এর লেখক। স্যাভেরি ভার নিজেরই জীবন–তার বাল্যকাল শিক্ষা কাৰ্যকলাপ বিবাহ, জ্ঞালয়াতি, প্রভারণার দায়ে অভিযাত হওয়া ও তার বিচার—সবই উক্ত উপন্যাসের নায়কের মাধ্যমে বিবৃত করেছেন। সেকালের অপ্রাধ-জীবন ও তৎসংক্রাণ্ড দম্ভাবিচারের ইতিক্থা হিসেবে উপন্যাস্টির মূল্য আজও Si (1

এই যাগের শেষভাগে যারা সাহিত্য-চর্চা করেছেন তাদের অনেকেই অস্ট্রেলিয়ায় ঞ্চনগ্রহণ করেন। এ'রা হলেন অদের্ড্রীলয়া-বাসাদের দিবতীয় প্রাধ। এ'দের মধ্যে ঢাল'স হাপার (১৮১৩-৬৮) বিখ্যাত। ইনি এদেশে জন্মগ্রহণ করেন এবং দেশ ছেড়ে এক পাও নড়েন নি। এরই ফলে সম্ভবত জন্মভূমির দুশ্যাদি ভালো লাগার দ্ভিতে দেখতে পেরেছেন। জৈতে**ঠর দ**্পেরের অস্ট্রেলিয়ার বনভাম-নামে দীর্ঘ কবিভাটি ভার কবিকৃতির নিদশ'ন হিসেবে প্রসিম্ধ। ইনি व्याक्रीयम कावारता करतरहम । প्रदूत निर्धरहम । লেখার মানও বসভব ব্যক্তির ব্যারা দ্বীকৃত। একটি কবিতায় তিনি দেশের চারণ বা জাতীয় কবি হবার আত্মঘোষণা করেছেন। কিন্তু এই আৰ্ঘোষণায় সাধের সংগ্র সিশ্বি মেলে নি। মিলবার কথাও নয়। তথনও দেশে কোনো সংস্কৃতি বা ঐতিহা এমন দানা বাধে নি মাকে অবশম্বন করে চারণকবি হওয়া স্ভব। দেশ তখনো মৃদ্ময়ী চিন্ময়ী হয়ে ওঠে নি। দেশের অন্তলোক গঠিত হয় নি। সতেরাং হাপারের কাবোও অস্ট্রেলিয়ার সত্তা অনুপশ্ভিত। যা আছে ভা ছল দেশের ভৌগোলিক বিবরণ। তবে ত্তীর কাষ্ট্রে পাই জাগামী দিনের পদ্ধর্নি। পরবতশী বুগ থেকে অস্ট্রোলয়ার সত্তা ক্রমণ মূর্ত হতে থাকে এবং সাহিত্যে তার প্রকাশ ঘটতে থাকে।

প্রবছণী পর্ব' হল ১৮৫০ থেকে ১৯১৫ খুন্টাব্দ পর্যস্ত। ১৮৫০ লাগাত करन रम्हणत अर्थामा वर्शन रहान रहान रवरछ ! বহু লোক হন্যে হয়ে এখানে এল সোনার থেডিভা এদের প্রায় সকলেই অন্টোলহার বাসিন্দা হয়ে গেল: যেমন সংখ্যা বাড়ল তেমান অথ'নৈতিক উল্লাভত হল।

১৮৭০ সাজা জাগাড় দেখের জন-সংখ্যার আধ্কাংশ হয়ে গেল ভারাই যার৷ ওখানে জন্মছে ও মানা্য হায়েছে। এবং এই সংখ্যা ক্রমশাই বাড়তে লাগাল। এদের কাছে দেশের প্রাচীনত্ব দাঁড়াল প্রায় শতবর্ষের। এই প্রাচীনত্ব লোকচিত্তে একটা ঐতিহারোধ জাগাবার মতো। আর এই ঐতিহাবোধ ও তার সম্পে অথানৈতিক উল্লিড দেশের লোকের মনে জাগাল বিবাট কম'পতি। দেশ গড়ার কাজে গেগে গেল স্বাই। নতন নতুন জনপদ, শহর তৈরি হতে লাগল। আগে সিডনি ছিল স্বচেয়ে জনঅধ্যয়িত ও গ্রেজপূর্ণ শহর। এখন সোনার খনির অণ্ডল সংগণন হওয়ায় মেলবোল শহর রমর্রমা হয়ে উঠল। অথ্নৈতিক ও সাংশ্কৃতিক কেন্দ্র হয়ে দাঁডোল।

এই সময়কার সাহিত্যচর্চার মাল প্রেরণা-সাজাত্যবোধ। দেশের ক্রমবর্ধমান উল্লাত সাহিত্যপাঠকের সংখ্যাও ক্লমবর্ধমান করে তোলে। এই অনুকলে পরিবেশের সন্দের তাল রেখেই দেখা দিল একটি সাংতাহিক পরিকা। নাম 'দ্য বুলোটন'। সিডান শহর থেকে প্রকাশিত হতে থাকায় 'সিডান বলোটন' নামে এর প্রসিম্পি ঘটে। আমাদের বাংশা সাহিত্য সংবাদ প্রভাকর কিংবা বৃণ্গদশনৈত্র কথা সমর্গ করলে সৈডনি ব্লেটিনের গ্রুপপ্র' ভূমিকা তার সাথ'-কতা, তার মাল্য ব্রাতে সহজ হবে। ১৮৭৯ সালে পাতকাটির উদ্ভব হয়। শ্রেহ থেকেই এর বিখোষিত সংকল্প ও নীতি ছিল খাটি অস্ট্রেলীয় সাহিত্যস্থিত প্তর্পোষকতা করা। এই সাহিত্য রূপ দেবে অস্ট্রেলিয়া দেশ ও অন্তেরলীয় জীবনচয়াকে। দেশে যে নত্ন জাতি গড়ে উঠেছে তার ভাবনা-চিশ্তা আবেগ-আতিকে। যাদ্যাদ ভাবনা, তাদ্যাদ সিন্ধিও ঘটল। পারকাটিকে খিরে অন-প্রাণিত হওয়া তর্ণ শেথকদের এক বিরাট গোড়ী দেখা দিল। এদের লেখার ইংলভের কোনো সংস্লব রইল না একমার ইংরেজি ভাষটো ছাড়া। তাও সে ভাষা**য় যথেণ্ট নতন** নতন শব্দ। বাগধারা ও পরেনো শব্দে নতন অভিধার গ্রন্থাবেশ ঘটিয়ে তাকে অনেকটা আলাদা র'প দেওয়া হল। এ ভাষা এখন ইংরেজের ইংরেজি না হরে অন্টেলীয় ইংরেজি দাঁডাল। একটা ছোটু ও প্রাসন্থিক দুষ্টান্ত দিই। ইংরেজি 'ব'ুশ' শৃষ্দ অন্টেলীয় **অথে** বোঝায় ঘনবসতির বাইরে উন্মৃত্ত প্রাণ্ডর যা আবাদ ও বসবাসের যোগ্য করে ডোলা হবে বাহ চেছ।

সিডনি বুলেটিনের অফিজ প্রভাবেই প্রকৃত অন্টেলীয় সাহিত্যের প্রথম সম্ভার পাওরা গেল। এই সভারের সিংচভাগ হল কাব্য। এই কাব্যের বুপ হল ব্যালাড প্রথাৎ গাথা কবিস্তা। বিষয়বদত বংশ'-कौरम-बन्ना नकुन शाहित्क दनक करवाब

গাথা কবিতাগালি অপ্টেলীয় বাদ ব্যক্ত নামে প্রাসংধা এতে আছে লেক-_ সাহিত্যের বাল্ডি স্পর্যক্তা - সহজ সাম্র সহজ কথা বলার বাশ্তবজা। ধার ভাতে এই জ্বাতের কবিদ্যো সব চেহে ভালো উৎবেচে তিনি হলেন এন্ড্রু বার্টন পাটোরসন (১৮৬৪-১৯৪১)। ইান ব্যাঞ্জে প্রার্জ্য সন নামে অংশয় লোকীপুসূতা অজ'ন করেন। বুদা-জীবনের প্রত্যক্ষ আভ্রক্তা এর ছিল। বাশ-এ ত্রি জন্ম এবং সেখানেই প্রতিপালিত হন। পরে গহরে কান্ত কথে-ছেন বটে কিংত কাজের ফাকৈ বাগ-এ এসে থেকেছেন। বাশ-জীবনের যে চিত্র কিন এ'কেছেন তাতে একথা স্পণ্ট চয়েছে ব এখানকার লোকদের মধো শহরের চেরে চরিত্রেংকর্ষ বেশী দেখা হায়। এবা আরো সাহসী সং কয়নিপাণ ও বাণিধধর।

গাণাকাব্যে প্যাটারসনের যে ভূমিকা সেই ভূমিকা হেনরী লগন (১৮৬৭— ১৯২২) ছোটগণেপ পালন করেছেন। একেরেও সিড্নী ব্রেটিনের প্রভাব। এই পরিকার ছোটগলন লেখকদের ধ্বেই উৎসাহ দেওয়া হত। তবে বলা হত-লেখা হবে ছোট এবং বাস্ত্রভিত্তিক। এই আদলে ল্শন তাঁর গ্রন্থগালি লেখেন। অবশা তিনি গাথাকবিতা ও উপনাসও লিখেছেন। কিন্ত ছোটগণের জনোট তার খ্যাতি আছও অম্লান। অনেকের মাকে তেকৈ গ্রন্থপ্রাক্তি বিশ্বসাহিতো পান পাবার বোগা। ব,শ-জীবনের অভিজ্ঞতা তাঁব ছিল প্রতাক্ষ ও গভীর। লেখাপড়া তেমন ঘটে নি। অতাত কঠোর জাবিন্যান্তার মধ্যে দিছে তাঁকে যতে হয়। কিন্তু ভার লেখায় বুদা জাবিনের প্রতি অনাবিল প্রেম ও দবদ ফটে উঠেছে। চরিত্র বৈশিক্টো তাঁকে আন্ট্রেলিয়ার শ্রংচন্ত্র বলতে পারি।

এই যুগের প্রভাবে প্রভাবিত আন একজন কবি বাৰ্ণাৰ্ড ওড়াউড় (১৮৬৬--১৯৫৩)-এর নাম অবশা মতবা। ইনি इ.इंडेभात्नद खामल्य कावाहरा करवाहन । দেশ ও জাতিকে উদ্বৃদ্ধ করাই ছিল তার কাবা সাধনা। তার 'দা বৃশ' নামে বৃহৎ কবিতার (১৯১২) তিনি অস্টেলিয়ার সন্তাকে উদ্বাটিত করেছেন। তার সম্ভাবনা-ময় ভবিষাতের বিপ্ন এপ্রেছেন। তাঁকে দেশের সবাপ্রতার জাতীয়তাবাদী কবি ছিসেবে সম্মানিত করা চর।

এই পর্বের উপন্যাস সাহিত্যের কথা বলতে গেলে নাম করতে হয় জোসেফ ফাশির (১৮৪৩—১৯১২) ইনি 'ট্র কলিম্স' ছম্মনাত্রে লেখেন। হদিও ইনি একাধক উপনাস লিখেছেন কিন্তু তার প্রথম উপন্যাস্টির জনোষ্ঠ তার খ্যাতি আজও অটুট। উপন্যাস্টির নাম জীবন এই রকমা (১৯০৩)। দেখের রাসকসমাজেশ্ব অভিমত হল এমন মৌলিক ও প্রাণবন্ত উপন্যাস ওদেশ থেকে আরু বেরয় নি। এতে আছে অস্ট্রেলয়ার আঁতের কথা। সিডনী ব্রেট্টেনের সম্পাদক উপন্যাস্টির গুৰু ব্ৰেতে ভুল করেন নি। পাণ্ডুলিপ

প্রেট্ট্ এটি মনোনীত করেন। উপন্যাসটিতে কোনো নিটোল, আদি মধা অণত-এর ছকে বাঁধা কাছিনী বোনা হর নি। বুশ থেকে ছালিয়ে গেছে এমন একটি ছেলের কাছিনী বলা চরেছে। এবং তা বলা হয়েছে ছেলেটিকে যাঁনা প্রছেছ তালের জিয়া-কলাপের মাধ্যমে এ ভারেরির ভণিগাম।।

অস্থেলিয়ার সাহিত্যের ততীয় প্রা মুখা ১৯১৫ থেকে ১৯৪৫ খাটাব্দ পর্যাত। এই প্রের সাহিতাক্ম শহরে সভাতদ শ্বারা প্রজাবিস। অর্থনৈতিক কারণে ও শিক্ষেপ্ত উর্যাত্ততে যার পেছনে সরিয় চালাত বিশা শতকের বিজ্ঞান ও প্রাথার-বিদ্যা দেশে গড়ে উঠেছে একের পর এক মিকপ্সয়ান্ধ শতর। এই সব মিক্সনগণ্মী পাথিবার তাবত খিলপ্নগরীর অনুর্প। এখানে লোকের জীবনযারার একট ঘাঁচেম। এই নতন পরিম্পতিতে এ দেশের সেই 'র' খ' জ'বিন তার প্রাধানা হারাল। ব.শ জাতন হালত গ্রামণি। আধানিক যলপাতি চেট্র জীবনযারায় একদা প্রবেশ করে নি। কিল্ল বিভা শান্তকল বিভান ও যাত্ৰীশালপ শেই জীবনযাতার ডেহারা ও চরিত পাদেট फिला र म क्वीयन सर्थण्डे आमर्जनक इस প্রভিজে।

এ মংগের সাহিত্যচার্ট তাই আর ব্রশ জাবিনকে প্রাধান্য দিল না। তাছাড়া ইডি-শবে বাং জাবিন ও অস্ট্রেলায়ন্থ নিয়ে ফোলনে লেকজ্যোত হয়েছে সিজনী ব্রোটন কালতের সেন্টাতি সোচ্চার হয়েছে তা এখনকার লেখবনের মনে বাড়াবাড়ি ও ভালাবাল্প বলে তিকলা। তারা স্থাবার্ট্য সোজাতে চাইলোন।

মেন্ড ঘোলনে হল দুভাবে। এক,
নগল কালক জাবনকে সাহিত্যের বিষয়ধণ্ড কলে। দুই দুদ অভীতে রোমান্টিক
দুখি মেলে। অথাৎ সেই প্রথম দিকে ধারা
এদেশে বসলাস কবতে এসেছিল ভাদের
ইবিভয়ের কবিনী এখন পেরেন্ড ইভিতাসের
া দুখি রোমান্টেক
বিষয়ের কবি প্রথম পেরেন্ড ইভিতাসের
া দুখি রোমান্টেক
বিষয়ের কবি প্রথম দিল আরু এক
বিষয়ের কবিন প্রথম দিল আরু এক
বিষয়ের ভাগেরির অধানিবাসীদের জীবন
নিরো উপন্যাস হন্য।

এই পরেল খ্যাতিমান সাহিত্যিক যাঁরা ত্ত্রি প্রায় সকলেই মহিলা। এবং ঔপন্যাসিক হিলেবেই এ'দের নাম। তবে কবিখ্যাতি পেলেছেন একজন প্রথম। নাম রবার্ট ফিট-জেবাণ্ড (১৯০২)। প্রসিম্প আমেরিকান কবি ধবার্ট ফুল্ট-এর স্থেগ **এ'র তুলনা করা হয়।** ইথেল ফ্রোরেম্স রব্টসন (১৮৭০— ১৯৪৬) যিনি হেনরী হ্যাপ্তেন রিচার্ডাসন নামে লেখেন-তাঁকে এই সেদিন প্রাণ্ড বলা ক্রাফে যে তিনি হলেন সর্বজনগ্রাহা-ভাবে অञ्मेनियात मर्दाहाने खेलगामिक। তিনি চরিতেও মনোলোকে প্রবেশ করতে পেটেছন। তাঁর লেখায় বাইরের ঘটনা ভত্তা প্রধান নয়, মত্তা আঁতের কথা। দেশে তথি নিজের হাতী জীবন হোপেলৈ

থাকার অভিজ্ঞতা এবং বিলেশে জামে'নীর লাইপজিৰ নহতে বাল লেখন ক্ষতিক क्रीत दानशास श्रीति काटक कार्तितराहम । का कब्रुवन्त्र कार विवाद बार्टाम नाट्य वसी উপন্যাসে ভার শ্রেন্ঠ মনিসরানা প্রকাশ रशरहरू । धरक स्थलक महारमाहक ज्ञारिक বেডেনর ক্ল কিংবা ছেলার জা ক্লিতফের मान्त्र कुलेना कार्डाह्म । मादेलक सान्कालन (১৮৭৯-১৯৫১) ভার ভাল সোমাগ্যার নামে বিশ্বার উপনাসে একণ বছরের কাহিনী বনেছেন। ১৮৫৩ সালে এক আইরিল বাবক ভেদ্র নববধাকে সংগ্র নিরে এদেশে আসে ভাগা অব্বেরণে। তাদের এবং তাদের বংশপরশ্পরার জীবন অতি-বাহিত হয়েছে এখানে। তারই ইতিকথা নুপায়িত হয়েছে এই এপিকধর্মী উপ-ন্যাসে। শ্রীমতী হানিশ গান (১৮৭৩— ১৯৬১) ভার দেশের আদিবাসীদের নিরে উপন্যাস ভিবে খাতি অজ'ন করেছেন। তাঁর ইই অফ দা নেভার নেভার' উপন্যাসটির বহু সংশ্করণ হয়েছে। প্রসংগত ভোগা रमजात' कथापित जार्खनीय अर्थ इन धे দেশের উত্তথ্যাওল—যেখানে অপ্রেলিয়াদের বসবাস নেই।

১৯৪৫ থেকে শার, হয়েছে অস্টেলিয়ার সাহিত্যের চতুর্থা পর্ব। এবং তা এখনো চলেছে। তত্তীয় ও চতর্থ পর্বের ভেদটা খ্র ম্পন্ট নয়। তবে বলতে পারি দ্বিতীয় বিশ্বয়াধ দাই পর্বাকে প্রথক কলেছে। ঐ যাদেধন পরিণতি ও প্রতিক্রিয়াল স্ব দেশেই মান্যধের মনোরাজ্যে যে ভাববিপল্ব দেখা দিয়েছে তা থেকে অস্টোলয়াও প্রভারতই মুক্ত থাকতে। পারে নি। যণ্ত-শিশের অভতপূর্বে উন্নতিতে যোগাযোগ ও যাতায়াতেল বাবদথা অতিস্ভাভ হওয়ায অস্ট্রেলিয়াবাসীদের মনে সেই পূর্বেকার বিচ্ছিলতা ও একাকীছবোধ আর তেমন বইল না। ভাছাড়া সমগ্র বিশেব রাজনৈতিক পরিমন্ডল এমন একটা গ্লুপু নিল যে, তাতে কোনো দেশই বিচ্ছিন্নভাবে একলা থাকতে भारत मा। आर्म्येलगाव निकार गन्छी পেরিথে বাইরে এল। অন্যান্য দেশের স্তেগ ভার যোগাযোগ ঘটল। বিশেবর নানা ভাব ও ভাবনার ঢেউ তার মনোলোক স্পূর্শ করতে লাগল।

এই পরিম্পিতির প্রভাব যে এখনকার সাহিত্যে পড়াব তা সহদ্রেই অনুমের। এই পরে যাঁরা লিখছেন বা লিখছেন তাঁরা সজ্ঞানে হোক আনু অজ্ঞানেই হোক বিশেষ দেশকালে আবদ্ধ যে অম্প্রেলীয় জাঁবন দ্বে তার ওপরেই কম্পনার আয়ানা তুলে ধরতে অনিচ্ছুক। তাঁদের কাভিথত আদর্শ হয়েছে তাঁদের রচনাকে দেশকালের গণড়ী মুক্ত করে সর্বমানবাতা বিশ্বজনীনতার সজ্যে যুক্ত করা। এই পর্বে যাঁরা উল্লেখ-যোগা ও খাতি সক্তন্তারী লেখক তাঁদের লেখার উক্ত আদশেশ্ব রূপায়ণ কম্বান্ধানী দেশতে পাই। যেমন অ্যালেক ভারাওরেন্ট হেপে (১৯০৭) ও জন্তির্থ রাইটের (১৯১৫) কবিতা এবং পার্টিক ছেনাইট (৯৯৯৯) হল পোটার (১৯৯৭) ও গিণ্টার পোটারের (১৯৯৯) কথাসাহিত্য। গিণ্টার পোটার ব্যক্ত গালিধর লেথক তবে ইনি লাভক বালী এবং এখন এশকে একজন ইংগ্রেজ লেথক বলেই বরা বধ্বে থাকে। হল পোটারের নাম শার্টিক হেনাইটেন পরেই।

পার্থিক কোহাইট বেশ विष्ट काम আগেট অস্ট্রেলিয়া ও অস্ট্রেলিয়ার বাইসো একজন শ্রেষ্ঠ ঔপন্যাসিক ছিসেবে প্রতিষ্ঠা পেরেছেন। এবং নোবেল প্রক্রার পারার আগেট বর্তমান অস্টোলরার প্রস্কাসিক বলে স্বীকৃত। লৈন্ট্র ভন্টর-ভাষ্কর সভো তাকে তলনা করা হয়েছে। তার নোবেল পরেস্কার প্রাশ্তির মধ্যে ভাই কোনো বিশ্ময়কর আকৃত্যিকতা আছে এমৰ কথা বলা চলে না। অন্য লেখকদের চেরে তার লেখার সর্বমানবীর আবেদন পুরু বেশী। ভাই বলে তাঁর লেখায় অস্টেলীয় অনুভাত অনুপশ্থিত এমন নয়। তথা-কথিতে পরেনো সভা দেশের লোক এদেশ ও তার বাসিন্দাকে গ্রাহোর মধ্যে আনে না এবং এই ঘূণা বা তচ্ছ কথার মনোভাব অন্টেলীয়দের মনে যে একট ম্পর্শকাতরতা জাগিয়ে রেখেছে তার ব্যঞ্জনাময় প্রকাশ দেখি হোয়াইটের লেখায়। একটা ছোটু দৃষ্টাইত দিই। তাঁর একটি গভেপর নায়ক যে হা**ল্যের**ী থেকে অভ্যোলিয়ায় নবাগত একদিন এই গলেপত্র অন্টেলীয় নায়িকাকে বললে এখানে কিছাই মেলে না-কিসস; না। তথ্য নায়কা ফোঁস করে উঠল—আমরা অঙ্গেই-লীখরা একেবারে অভটা অসভা নই-বিশেষত এই ১৯৬১ সালে ৷ তার্পর **এ**ই কথার জের টেনে বলেছে ানা অস্টেলীয়া হলে অনেক জনলা 🥶 👍 ঝমেলা। এই তিয়াক কথায় আমা ামন অনুষ্ঠালয়ার অণ্ডর স্পূর্শ করি তেমান একটা **সব**-মানবীয় আবেদনও অন্যুভ্ব কথি।

ে তক্ষণ অস্ট্রেলিয়ার সাহিত্যের বৈ পরিচয় তুলে ধরা হল তাতে নাটকের কথা অন্পৃষ্পিত থেকেছে: এর কারণ, অস্ট্রেলিয়ার माशिका नापेक त्नरे क्लालरे छल। अप्तरम কোনো নাট্য আন্দোলন হয় নি। তবে এই শতাবদীর বিশা দশকে লাই এশন ও ভ্যানস পামাল কিছ, উল্লেখযোগা একাৎক নাটক লিখেছেন। এবং চল্লিশ দশকে **ডগলাস** পিটউয়াউ′–এব श्री वर्गा हरा নাটকগ লিতে ম্বসীয়ানা আছে। সাহিত্যের আর যে একটা দিক—প্রবন্ধ সাহিত্য সেকের ওয়াল্টার মার্ডকের নাম সমর্তবা। এ'র লেখাহা আছে স্কা রসিকতা। **রচনা**-শৈশীতে আছে সহজপট্ম। সব রক্ষ ভণ্ডামীর বিরুদেধ তার ব্যঞ্গাত্মক বক্তবা শাণিত ফলকের মতো খলসিয়েছে।

সমগ্র দ্ভিটতে অস্ট্রেলয়ার সাছিজ্যে পদেগ চেয়ে গদাই বেশা পদেও পরিণত। এ সত্য ৰাচাই হয়েছে প্যাঞ্জিক ছোল্লছটের নোবেল পরেক্লার প্রাশ্তিতে।

ত্রিকী তালন্দ বাচান্তি উপন্যাস

একে শাড়ি তায় আবার টেরিলিন।

কিছুতেই আর মনের মত করে পরা চিচ্ছিল না।

দোতদার ঘরে ড্রেসিং টোবলের সামনে

গ্রেডিয়ে অন্তত তিনবার শাড়িথানা খুলল মার পরলো তপতী। দকুলের জীবনের খোলস খুলো ফেলে এই প্রথম কঠান প্রভাগতির মত সে পাখা মেলতে ঘাছে। স্কার্ট, সালোয়ার ছেড়ে শাড়ি, সে বেন খোলার কিলোয়িটার পথ দুর অন্ত। দকুল থেকে কলেজ সেও এক প্রথম থেকে ধেন ম্বনা প্রথিবীতে আসা।

তপতী আজ হঠাৎ বড় হয়ে গেছে।

কপতী আজ প্রথম কলেজ হাবে। তাও
যে সে কলেজে নসু কোলকাতার এক নামধরা কলেজে। ছেলেমেয়ের। একসংল্য পড়ে
সেখানে। ভার্তি হবার দিন বাবার সংগ্র গিয়ে সব দেখে এসেছে। ভপতীর বাবাও এই কলেজে পড়েছিলেন। প্রেনেনা দিনের কথা বলতে বলতে ভপতীর বাবা কেমন ছেলেমান্য হয়ে গিয়েছিলেন।

কণপনা সনাতনী দ্রীয়ভবীর ভার্ত হয়েছে একটা নামী মেয়েদের কলেজে। কিংতু দাই কলেজে ব্রিথ গালাফ এফ ডিফারেন্স। ওবি দারী প্রাধীনতার যুগোও ওরা কত পরাধীন। এমন কনজারভোটিভ বাড়িতে এক মাহাতি আর থাকতে ইচ্ছে করে না ওদের।

যড়ির কটাির দিকে চোখ পড়তেই আঁতকে উঠলো তপতা। ইস. নান্দ্তা, পারমিতা, বন্দনা এক্ছনি ভাকতে আসবে। রোভ হয়ে থাকতে বলেছিল থকে। শাড়ি-খানাকে তৃতীয়বার নাক্চ করে দিয়ে ব্লাউজ-পেটিকোট পরা অবস্থাতেই খালা মেশানো ধলায় তপতা ভাকে, আ! ও হাং

মা পাশের ঘরেই ছিলেন। মেরের বস্থাঘটিত দ্রবদ্ধা অনুমান করে মনে মনে
বুঝি হাসছিলেন। হাসি আচিলে মুছে এবার
গম্ভীর মুখে মেরের ঘরে উপিক দিকেন,
কী: হল কি তোহার? আল্লনর স্বামনে
এমন উলোম হয়ে কি করা হছে?

নাকে কে'নে মেয়ে জানালো, 'উ'হ' হ' মা! মোটেই হচ্ছে না। তুমি পরিয়ে নাও।'

ছি ছি। এখনো শাড়ি পরতেই শিখলৈ না, দুসিন বাদে যখন পরের মরে যাবি?'

আহু তুমি ধামবে মা। ,ওসৰ বললে ফিন্তু সৰ খুলে ফেলব।'

তা তুমি পারো বাছা, কিছু বিচিত্র নয়! যা কচিস্য কচি হয়ে উঠছো দিনকে দিন! এখন কোমরে গুনসী বেশ্ধে যুরে বেড়ানোই বাকি। আসুকে আৰু বন্দনায়া।

'ওদের বলে দিলে ভাল হবে ∙া কিন্তুমা!'

মা আর কথা বাড়ালেন না। টাইট প্যাতি
শাড়ি পরিয়ে দিয়ে গোটা দুই কর্নাসকড সেফটিপিন গ্রুজনে মোক্ষম জায়গায়। ভারপর মেয়ের উঠতি শ্রীর আধ নজর থাত্যে নিয়ে মনে মনে একেবারে ভিন্তিংশন মার্কস-ই দিয়ে ফেললেন।

'হলো?' মেয়ের দিকে ভূব্ ভূলে জ্বানতে চাইলেন।

সায়ের দুত এবং দক্ষ হাতের কাজ দেখে তপতী মুক্ধ হয়ে গিয়েছিল। এবার উজ্মিত হয়ে বলল, কি স্ফুদর পরাও তমি মা! আমায় রোজ কিঃতু এমনি করে পরিয়ে দেবে!

মনে মনে খাশী হলেও কৃতিম মাখ খামটা দিলেন মা. হা আমার আবার এই নতুন চাকরি হল! তোমার বাবাকে টাই বেংধে দেব ডোমাকে শাড়ি প্রাক্তা আমার স্থের আর কর্মাত কি? হেমন বাপ ডেমান হয়েছে বেটি!

এমন সময় কলিং বেল বেজে উঠকো ছোট করে। মা মেহে গ্রেগনেই ভ্রেকে ঘান্তর বিকে তাকালো।

নিজের ঠেটির ওপর আডাআড়ি করে তর্জানী রাখলো তপতী ইস্স, শ্নতে পাবে গক্ষাটি মা ওদের কিন্তু তুমি আবার:—

ইসারায় ব্যক্তিট্ব, সারলো তপতী, চোমে মুখে কাতর অনুনয়।

মা মাথা নেড়ে অভয় দিশেন, 'হ্

খাতা হাতব্যাগ ড্রেনিং টেবিল খেকে
তুলে নিয়ে হায়ের পারে আলতো করে
একটা প্রণাম সেবে তপতী তর্তর করে
নিচে নেমে এল। বন্দনাদের চমকে দেবে
ভেবে পা টিপেটিপে নিচে নেমে এপে
আচমকা নরজাটা খুলে ফেলেছিল একটানে, কিন্তু চমকান্তে হল তপতীকেই।
বন্দনাদের বদলে দোরগোড়ার এ কে দাঁডিরে
ভাতে

'কাকে চাই ?' নিজের গলা নিজের কানেই কর্ক'ল শোনালো।

মৃথে স্থারী হাসির ফেউন শুলিকে যে য্বকটি এডকণ অপেকা করছিল সে এবার পালটা প্রধ্ন করল, তপতী দ্বিত্ত কার নাম?

তপতী শৃকনো গলার একটা চৌক গিলে প্রধন করল, থকন, কি হুয়েছে?'



' प्रमार्थेतः स्टब्स्ट्रिं।' खीवे विदेश सामारमा स्टब्स्टिं।

ক্ষার সামে ?' জ্বুশ সন্দিশ্ধ গুলার তেশতী আবার জানতে চার।

তার ছানে, কম টিকিটের একখনো চিঠি জাছে আপনার নামে, দশটা পহাসা লাগবে। তঃ আপনি গোল্টাপিস থেকে তাই ফলন।

স্বাহিত্তর নিশেবাস ফেলে তপতী হাত স্থান স্থানে সুস্টা পয়ুসা বের করে দিল। শ্বসা দিতে দিতে এই প্রথম লক্ষ্য করল হ'বকটির বপলের তলায় একগোছা খাম পোল্টকার্ড ক্রেছে। এক মৃহ্ত আগেও প্ৰকে পিওন হলে হ'ণাক্ষকেও সদেহত হয়ল ভার। খাকি জামা-প্যান্টের বদলে দিবি। ধ্রতি পাজাবি চড়ানো। অলপ বয়স চোথ-গ্রে উক্তলে ঠোঁটে অপেশাদারী চালি মাতে উল্লেখ ছটি। এত অলপ বয়সের পিওন লে আগে কথনো দেখেন। বলতে গেলে विकास मोडि स्मान्धिमात्रत केरव्ये मिरवरे আদের বাজি। ভেতরটা ঘরের জানলায় দাভালে পরিস্কার দেখা হার। গণ্ডার গণ্ডায় শোষ্ট্রয়াদকে সে দ্যবেলা দেখতে পাল ক্ষিতে এমন সৌখীন ছোকরা পিওন সে आकरे शक्य एम्बरमा। याम ना मिरम काक দেখে মনে হাবে, কলেজের উ'ড় ক্লাসেব অথবা ইউনিভাসিনির ছার।

পক্ষপা হাতে পাবার পর যাবকটি মাচান হোসে চিকির গোছার ভেতর থেকে একথানা নীল বজের খাম টোনে নিয়ে ভেততীব দি ও বাড়িয়ে ধরকা। তপতী অবাক হয়ে খামখানা নি ও চিক্ত গোল একটা অথপাণাঁ ছাসি হোসে। যেন, এই নীল খামে তোমাকে কে চিঠি দিয়েছে ভা আমি কানি!

তমি ছাই জানো! তপতী প্ৰায় শব্দ करतहें कथाते यान एकजल कार्यन भिक्त ভজকণে গুলির বাঁকে অসাল। হয়ে গেছে। লোকটা ভারী অসভা তো! কেল্ল লচ্চিক **মাচকি হাসভিকা। আ**রে বারা, আমি তেমন গেয়ে না, আমার সেস্ব কেউ নেই যে এমন **ছারে চিঠি লিখাবে। বরং বনদনাকে বলতে** শারছে, তার বয়ুফেন্ড আছে পার্যমতার इद यब अथन एथरकडे ठिक, एम शहरतन एथरक ধেশাখার চিঠি লেখে। বন্দনা পার্রাম্মতাকে **িফক্সভ প্র**।ইস' বলে ক্ষেপায়। আর নন্দিতার **ষলিহারি, সে এক** দ্রস্মপ্রের দাদ্যব **সং**শেই চিঠি চাপার্টি চালাচ্ছে। ওরা তিন-জনই ভগতীকে, কেন্ট নেই জেনে বেখন জনা ক্রপার চেপ্তথ্য সেখে। দয়া করে, ধ্যেত ভদের চিঠি-ফিটি ওপতীকে পড়াতেও

তপতী বলে, শ্বক্ষে করে, ও আমার দাধার চাুক্তব না। গোটার নাইটিন্দ্র চির-কালু আমি গোলা। খেয়ে এসেছি।

ৰণ্যন বন্ধসে স্বচেরে বড়, এ'চোড়েও
বাব পাকা। আবিল্য এ'চোড়ের বর্স ওর
আর এখন নেই। গ্রুল ম্যাগান্তিনে ব্বাবর
মডার ক্রম করা গ্রেপেশশ লিখে এসেছে।
ক্ষাও বলে ঘ্রিরে পে'চিক্লে। বন্ধনা বলে

লেটার রাইটিং-এর দায়িত্ব তো তোকে দেওরা হয়নি তণিত, শুধু রিভিং দে---র্যাণিতে রিভিং, হাতে গোলমেলে জারগা-গালো প্রশাঠ ভূলে বেতে পারিস।'

ভপভীর মনের মধ্যে বৃদ্ধি ভখনো এক আখনুত্র অভিমান ক্ষমে ছিল তাই শস্ত করে গাস্তু নেড়ে বলে, 'আমি পরের চিঠি

'ও! নিজের চিঠি তাহলে আসছে বল':'
নিদতা বলল, 'তুই ছু'ড়ি একদন নিন্দা

পার্নারতা ফেডিন কাটে, তা বলেছিস। একট্ আশি গণ্ধ পেলে পোস্টাপিসেগ ছাপোষা পিওনরা প্য^{ক্}ত থামের মূখ খুলে পড়ে। আর তোর হাতে ধরে সাধ্ধে—এমন পাবি না রে, এমন পাবি না।

জপতীর সন্বিত আবার নিজের হাতের দিকেই ফিরে আসে, পেট্রোটা নীল খাম থানা তথনো হাতেই ধরা আছে। ভাল করে ভাৰিয়ে দেখে না ভুল নেই চিঠিখানা ভারই। অচেনা হাতের তাক্ষরে তার নিজের নাম ঠিকানা দেখে ভেত্রটা কেমন শির্মাণর করে ওঠে। এক মাহাতের জনো মনে হয়. মদি এমন হয়, থাম খালেই দেখা যায় कारना आहमा भाग्य छात्क अवशामा मान्द्र চিঠি লিখেছে? সে চিঠিকে প্রেমপত্র না বলা মাক অন্তর্জা চিঠি বলা যায় অন্তত। কিন্তু এই হতচ্ছাড়। পিওন্টা যদি খাম খালে গোটা চিঠিটায় চোখ বালিয়ে থাকে। যদি কেন্নিশচয়ই নইলে বাবার সময় এমন ফচকে হাসি হেসে গেল কেন? পিওন পিওন ভার তাত হাসাহাসির কি আছে!

তপতী নিজেই কিংক তোস উঠল পরের ম,হ,তে । হার্টেরি, এসব আবার কি ভাবছে সে! কেউ তাকে কাদ্যনকালেও ভাষন চিচাই _{লিখবে} না। অচেনা মানুষ ভার নাম হিকানাই বা জানবে কোথেকে। আরু চেনা ভাষচেনা ভেমন কেউ তার নেই হারা চিটির সমপ্ৰেক্ত কাছে আসতে পারে। বাংধবীরা ছাড়া কেই কথানা তাকে চিঠি দেখান ভাও সে চিঠি কথনো পোণ্টকাডেরি বাউন্ভারী পার হয়নি। খাম এই প্রথম। তবে খামের ওপরে হাতের লেগটো কখনোই মেহোল নর। তীখন প্রেষ্ফালী তথক্র। কে হতে পারে? তাদের আত্মীয় কেউ ? কলেজে ভতির থবর পেয়ে হয়ত অভিনশন ক্র্যানিয়েছেন। এই সম্ভাবনাটা এতক্ষণ প্রার মনে আসতেই কেন জানি খামের রংটা ফিকে হয়ে এল।

ভেওরের চিঠির কাগ্রন্ধ বাঁচিয়ে খামের একটা পাদ ছিণ্ড ফেলল তপতী। ভেতর থেকে বেরোপো মোটা প্যাভের কাগ্রেল পৃষ্ঠা তিনেকের একখানা চিঠি। দ্রুত ধাঁচের বড় বড় অক্ষরে লেখা। যেন খুব তাড়াহুড়ো করে লেখা হয়েছে।

প্রিয় তপতী, আমার তপ

এক,নি ছমি কলেজ বাবে, নিচে নেমে একে এই চিঠি পেলে। পেরে অবাক কে তোমাকে এমন চিঠি দিল। পাড়া উটেট চিঠিও শেষে খু'জালে, কিন্তু নাম নেই। ভাবাগে, এ আবার কি রক্ষ চিঠি আই না? আমি ইচ্চে করেই নাম লিখিনি ঠিকানাও না। যে তোমার সামনে দাঁড়িয়ে ভার আবার কি ঠিকানা, নামেরই বা কি প্রয়োজন? লাখে তো ভেবে আমারে ভূমি চিনিতে পারে কিনা?

ि १४ वर १ च सरमा

হাঁ তপ্, সতি। আমি তোমাকে এই
মুহ্ছেও দেখছি। এই তুমি এখন চিঠি
সভুছো তোমার মুখে এখন রঙের ভৈলো।
ভর লছজা, বিদ্দার খেলা করেছে তেনার
মাধে। আর কিছু আর কোনো বং? রাকে
করেলে অন্রাগ? বোধ হয় না। যাকে মনে
করতেই পারো নি, তাকে মনে ধর্মের কি
করে?

কিন্তু কি স্কুদর না ভোমাকে দেখাছে ।
ভাষা ভোমার টেরিলিনের চিশা ফুল রং
গাড়িখানার সংগ্রু কচি কলাপাতা ব্লাউল,
সেই সংগ্রু কপালো জার্ল বরণ টিপ।
প্রতিমার মত টানাটানা চোখে ফেদুর করে
কাজল টেনেছ। অহ, ওয়ান্ডারফালি
বিউটিন্দ্র।...

তপতাঁর ব্রুকের মধ্যে এইট্,কুতেই পেটাগাঁহা বেজে উঠেছে। মাথাটা কিম্বিম করছে
হাতের আছালগালো থেমে বরফ। চিঠিটা
এখনও শেষ হয়নি, আরও অনেক কি সব
লেখা রাহাছে, পড়তে সময় লালাবে। আর এগোতে পারলো না তুপতাঁ, আচক্রকা এই, প্রাথাত সামলানে। শন্ধ। চিঠিটা মাুছে খামের ভেতর ভবে ফেলল। ভারপার চারপাশ নগর ব্যুলিয়ে নিয়ে চেলিয় প্রবাধে ক্রিজের তলাম চালান করে দিল ব্যুল্থানাকে।

ভার ঠিক পরের মৃত্যুত্ত গালির ম্যুক্ত তিন মুক্তির উল্লেখ্য এক সেকেন্ডের কন্যে ওরা দেশ পেল না। শুখুট কি সামনে পিছলে নাজের বলা শোনা বেল এই সময়, তা, তুই এখনো যে দাঁড়িয়ে পোত লামি ভারছি কথন কলেজ চলে বেছিন

'এই য়াচ্ছি।'

পেশুনেটে সতুন জাতোর হিল বাজিরে তপত্তী এলিয়ে গেল, গিয়ে প্রিয় বংশাদের কাকে লিখাল। তিনটি রঙীন প্রজাপত্তি কথান চাবটি রঙীন প্রজাপতি হয়ে ফিরে গেল। গলি থেকে কলকাকলির চেউ ভুলে বড় রাস্থায়।

পার্নামতার হব্ বর পার্নামতাকে একটা বিলিতি ফোলিডং ছাতা কিনে পাঠিয়ে দিয়েছে সেইটি আজ ওপেন কমলো। বন্দনর বয়ঞেন্ড আলমোল বেকার তব্ কিজাবে একটা রাশিয়ান ছড়ি কিনে দিয়েছে। বেথে মনে হয় বড়লোকের বাজা। ভাষাটা বন্দনারই। ওর কথাবার্তা এই রক্মই। কউকে রেয়াত করে লা নিজেন্ডে না। তপেতীর ডিজ্বগাইজড দাদা নেই যে বাগা কিনে দেবে নিজতার মতা। ও মারেরটাই নিয়ে বেরিয়েছে কিন্তু ওর আপাদ-মুক্তক মার্চ হয়েছে অসাধারণ। শাড়িখানা নিক্রম সামী। সেটা শ্র কার্মিল, করে প্রেক্তেট।

गतम्ब इस ना निम्म खरागः सन खाः नतमाना सामा निम्म सान्द्रशा ना और

ktiva<mark>janisti</mark>stistis (1941. užišis 1867. užišej 1968. g. – 18. sprastistis

নিক্রেক্তর বুশচ্চার সর্রন্দের্যনা করতে
করতে ওরা কণ্ ওয়ালিপ ছাসিং পার হল।
ক্রেন্সার্মী জার কুক্চ্ডার নিচে কলের
ক্রণাটেন্ড তথন ক্রমক্রাট। নতুন সিগারেই
কুক্তে শেখা ফাঁচ গোক আর তেলি
কুক্তি ভেটারেন্সের ক্রিয়ের রিং
প্রাক্তিস করতে। অব্যাপকরা একজন নুজন
করে সাধা হেটি করে বেন শ্বদ্রেবর ক্রাডে

ওদের ব্যক্তিগত প্রদান্য থেমে যোল धरेशातहै। किन्छ क्ष्मकीत शक्कीत क्रांकन কাছে টাটকা গোলাপের কটার মত স্বাস্থ্যলা **थ5४५ कटन विश्वविकाः कामकवान हैएक** रण स्वीमरम किठित वालात्रणे कश्रुरम्ब कार्ड তোলে এবং দেখায়। ওরা ব্যাক ভণতী কারো অনুকশপার পাত্রী নয় এ ব্যাপারে नतः वहे बहुएक वक्का हमक नानास्त्रा নাটকের নায়িকা। কিন্তু স্বভাষত লাজ্ক তপতী শেষ প্রতিত বান্ধ্রীদের দুটি আকর্ষণ করতে পারেনি। যে চিঠির স্বটা এখনো লে নিজেই পড়ে উঠতে পারেনি, যে <u> भग्रताथकरक निरामाई धायन स्वास्थ्य क्वर ह</u> পারছে না সে চিঠি কাউকে এখনো दम्शात्मा ठढन ना। विरमस करत काता समि বশ্দমা পার্মিতা মহিন্তা ছয় দকুলের ভাঙক भाव बारम्ब नाम व्यव्यक्तिन विक्रमा !

অবিশিয় উড়ো চিঠি বলে এটাকে ওরা উড়িরে দিত না নিশ্চরাই বরং এটার মধ্যে অনেক বেশী রোমান্সের গণ্য পেরে তপতিনিকই ছিচ্চে খেত। প্রতিদিন প্রতি গুরুত্ব এই শাস্ত প্রেমিকের পরিচয় জানতে চেনে ওকে উভান্ত করে তুলতো। নিজের পায়ে নিজে কৃত্ত্ব মেরে কাজ নেই, বরং তপতার অথন কিছুটো নিরিবিলি নিজানতো চাই চিঠির মান্যুটাকে ভালা করে ভাবনার জনা।

তাই অফ পিরিয়তে কমনর মে থাক চেনা জানা কেউ নেই ওপতী বৃক্তের কোটব পেকে বের করলো চিঠিটা। বসদমালের এখন এ পিরিয়তে জাস চলছে, কন্দিবনেশ্ন আলাদা। তপতী চিঠির পড়া অংশটুকু এক-বার চোৰ ছুপলো মান্ত পড়ল মা। আগে এতক্ষণের দমবন্ধ কোডহেল মিট্ক, ভারপরে ভারিয়ে পড়া যাবেখন। এ ভিঠি এখন তো ভারই, ভার একলার সম্পত্তি।

্রেক্রের তপ্ তোমার প্রগঙ্ভ।
ত্রেমাকে না হয় অপ্কৃতি দেখাছে, ভাতে
আমার এত মাথা বাখার কি আছে, ভাত্
না? যে মান্ত্রক তুমি মান্তই আনতে
পারছো না ভার মভামতের দাম কি? দাম
হাত এই চিটিটারও কানাকড়ি থাকতো না
ভোমাক কাছে যদি না এর মা্ল্য দিটে
ভোমাকে বাধ্য ককতাম। দশটা প্রসা ভো
ভোমাকে বাধ্য ককতাম। দশটা প্রসা ভো
ভোমাকে বাধ্য ককতাম। দশটা প্রসা ভো
ভোমাকে বাধ্য করতাম। সভাট কি আ্লার
বাদ্য কান্তন্ম নাই করো। সভিটেই কি আ্লার
এই পান্তনা ভোমার ভারে, ভপ্য শেল

গম্ভত ? আই খাদি, জাহজে আবার কেন ব্যাননামে চিটিটা খালে বলেছ সাংকরী ?...

সজি লোকটা সাংঘাতিক এমন দক্ষ কথা লেখে যে চনকৈ উঠতে ছয় গানে কটি দিয়ে থঠে। লোকটা কি ভগবানের মন্ত লব দেখতে গার, লব ব্যক্ত লারে আলে থেকে? আরক মুখে আন্তর্ক ভালিকের আলে ভিনিয়ে অপতী কর্মনা ক্রে আন্তর্কা ক্রিকালার দিবে ভালালো। গোল্লোনা কাহিলীর মন্ত এই বুলি সাঁ করে একটা উপিকালা মুখকে সবে যেতে দেখবে! মার্চ প্রক্রেকাক অভিনাম মুখকে সবে যেতে দেখবে! সার্চ প্রক্রেকাক আভ্রান ক্রিকালার বিজ্ঞানীর ক্রিকালীর ক্রিকালীর এবার নিজে বিজ্ঞানীবিক ভালতী। ভিতিটার নক্ষর বিজ্ঞানীবিক ব্যক্তি টিডিটার নক্ষর বিজ্ঞানীবিক প্রক্রিকালী ক্রিকালীর ক্রিকালী বিজ্ঞানীবিক ব্যক্তিটার নক্ষর বিজ্ঞানীবিক ব্যক্তিটার নিম্নার বিজ্ঞানীবিক ব্যক্তিটার নক্ষর বিজ্ঞানীবিক ব্যক্তিটার নিম্নার বিজ্ঞানীবিক ব্যক্তিটার নক্ষর বিজ্ঞানীবিক ব্যক্তিটার নক্ষর বিজ্ঞানীবিক ব্যক্তিটার নিম্নার বিজ্ঞানীবিক ব

আরও করের নাইন একবা কেবার পরে পরপার চিত্রিটাকে ভিণ্ডে তেলার অন্-রেয়ে জানিরে চিত্রিটা আচমকা শের ইয়েছে। লোরে কোনো নাম নেই, আগেই দেখেছিল কিন্তু এখন যেন হেচিট খেয়ে পারে নম উলেট রামার মত লাগল। এও ডাড়াডাভি কথা ফুরিয়ে যেতে মনটা কেয়ন খায়াপ হয়ে গেল ডপড়ীয়। হাতে সময় ছিল। নার নুই আলোগোড়া চিতিখানাকে পড়ে আবার ইখাসখানে রেখে দিল সে। ছিণ্ডে কিন্তু মেখাসখান রেখে দিল সে। ছিণ্ডে কিন্তু

মানের মাণ্যে এখন থক একটাই প্রাণ্ডন, কে এই পরালেখক যে তাকে এমন করে জানে, যে তাকে জালজ্যে এমন করে নজরে রাখে? আলপাশের ক্লানো বাড়িকে লে নিশ্চর থাকে। খাব দ্বের কেউ হলতই পারে না। কিংবা তেমন গ্রের ঘোনা থেকে গ্রেবীল চালারে তাদের বাড়ি ভোষা যায়। কি একটা ইংরেজি ছবিতে এরেল্য ঘটনা যেন দেখে-ছিল। প্রবিরের মধ্যে কেমন একটা সিহরণ লেগে উঠল তপতীর।

আশপাণের বাডিগুলোর জাননা বালকনি ছাদ খাতির খাতির ভারণ। প্রাণ্ড বয়স্ক সক্তর অসম্ভর প্রথম মারকেই সন্দেহের কোঠায় ফেলে মনে মনে ইন্স্টার্রভিট নিজা কবে কোন্দিন কৈ উপলক্ষে পাড়ার বার স্পেক্ বা কছে থেকে তার দিকে ভাকিয়ে থাকতে দেখেছে মনে করে দেখতে ভোকায়ে করকা। কলেকে বসে মাথা ঠান্ডা রেখে ভেবে দেখা সম্ভব নম। বাড়ি দিবে গৈরে খুব ভাল করে খ্রিটারে দেখতে হবে, বাদ কোনো ক্লু পাঞ্জা হায়।

ধাধার উপ্তরের মতে লোকটাকে ঋূণজে সে বেয় করবেই এ ভার এক বিরাট চালেঞ্জ।

প্রমে জনেকেই পড়ে, প্রায় সব মেরেই স্ফল হোক বা বিজন হোক স্বৰণ খেয়ালী কিংবা দীর্ঘ উন্ধান্ত বা একত্বকো অর্থাৎ মনে হানে। কিংসু এরকল জনকাল বোধছুর ন্মিটার কেউ পড়েনি। এর চৈত্রে বন্দ্রানার করে কিংকা করেছে জনতার বালার করে কিংকা পারে বা করেছে জনতার।

বুটো নিনেই তার অবস্থা কাছিল। এই নুটো দিন শুখু অংশকা, অংশকা ভার অংশকা। কাজে অক্তের পুখু চিন্তা, চিন্তা ভার চিন্তা। বিশেষ করে কালে বেরোনের যুগে কেবল। মনে হয় যদি আলার আসে! তপতী কলেদ ক্রিনা গোলেই রাম্বা

বাড়িতে বড়কণ থেকেছে গ্রেষ্ ছবফুটানি। আহারে র্চি নেই, চোখ থেকে দ্বাস
মাছে গেছে বিলক্ষ্ণ। মারের স্পেশ গুল্প
গরতেও আর ভাল লাগে না। বই খালে
মালে শা্বা চোখের সামনে কালো পি পতেও
সারে ঘরে বৈড়ার। আলপাশের বাড়ির ছালবাজ্পনি-জানলা তদগত করা হলে গেছে
অনেকবার। ঠিক সংসহজ্ঞানক ফাউকে পাওয়া
মারান। কাউকে সঠিক করে জ্লেতে লা
পারলে মনের মধ্যে বে অন্ধিরতা জাগে
ডপত্তী এখন ডাইতে ভ্লেছে

নিক্ষে বার কয়েক পাডের কাগজে এলোমলো মনের কথা লিখেছে। লিখেছে আর ডালো পাকিরে ছুব্চে ফেলে লিয়েছে রাহতার। নিজের পাগলাম নিজেই গরে তেলেছে থানিক বাদে। অথচ মনকে ছাক্ষা করার এছাডা উপায় কি ?

চিঠির জন্যে হা পিতেন্দ করছে তপতী। ঘনঘন চিঠির বাকস খলে দেখছে। কলেছ থেকে কিরেই মাকে শ্বিকেছিল প্রের্ দিন আমার কোনো চিঠি এসেছে, মা?'

প্রথম দিন মা দুধ্যে খাড় নেড়েছিলের ই ব্যিতীয় দিনে হেনে ফেলে বলেছিলেন, কেন্ কোথাও থেকে আসার কথা আছে মাড়ি লে?



্ ধ্ব লক্ষ্য পেরে গিরেছিল তপতী, সংশ্য লংগে সামলেও নিরেছিল, না এমান ভাব-ছিলাম বলি এসে টেসে থাকে।

মা একচোট থ্র হেসেছেন যেন খ্রে
মন্ধার কোনো কথা বলেছে তপতী। কিন্দু
ছাসি থামলে সন্দিশ্ধ চোখে তাকিয়ে থেকেছেন
ভারপর।

বেনামা চিঠিটা কিন্তু ওপতের মনের মধ্যে পাক থেকেই চলেছে। পরের দিন ক্লাসের পর ক্লাক শ্রেমা কানেন বলে থাকলো কোনো অধ্যা-পন্দের কোকচারই আর মাথায় ঢ্কলো না। একটা ক্লাকে তা বালাকলের সময় রেসপন্দ ক্লাকেই ছুলে গোল। ভাগিাস বালনা পালো কলোকিল, সে সংগ্য সংগ্য ধরতাই দিল। ও প্রশেস্টিল প্রকৃতিন না দিবে বৈকায়দায় পড়েছিল আর কি।

কিরে কি ব্যাপার ? বন্দনা ফিসফিসিয়ে বলে, কোন্ রাজপাত্তারের প্রেমে পড়ে গেলি, দ্বাই ? কত বোলনা-বার বল না আমাকে?

ধ্যমাড়িয়ে সোজা হয়ে বসেছিল তপতী, গ্যাং বাছে কথা বালস না—তুই ভারি অসভা

বাহবা! দেকলা জ্টতে না জ্টতেই আমাদের দ্যতিস > খ্য দেখালি বাবা।' পার্মিত। ফোডন কটেলো।

স্থামরা হো তোর ইয়ের মত প্রাক্টিকাল স্থাসভা ছতে পারবো না ভাই, তাই দ্টো ইাট্টা তামাশা করেই প্রের সাধ ঘোলে মেটাই। বন্দনা খ্র নির্বাহ গলা করে বলো। স্মাহ, ধামার তুই, বন্দনা ? তপ্তী এর ছাতে চিম্মটি কেটে দেয়।

উঃ! বংশনা চাপা আত্মিরনি তুলে বলে, আমাদের ভেজিটোরয়নের যে খ্য কেগেছে

নমিতা মাচকি হেসে মশার মত গলায় গৈছে ওঠে—

'এখনো তারে চোখে দেখিন শ্ধ্য বাদী শ্লেছি (মানে রোগকল শ্লেছি)

আহা প্রাথমন যাহা ছিল দিয়ে ফেলেছি '
মে কোনো গানের ওংক্ষণাং পারেছি
বীষার নন্দিতার জাড়ি নেই, গলাটাও মোটের
বাধার ভালই। কোন ফ্রেল মেন গান নিখছে,
কাইনাল ইয়ার। দেখলে মনে হয় ভালা
কাটে উলে খেতে জানে না বিহতু মিচকে
বিক্রিট

ব্যাপারটা অনেকদ্রে গড়াবে ভেবে মনে বনে প্রমান গ্রাছিল ওপতাঁ, এমন সময় ঘন্টা পড়ালা, ক্লাস ভেগেল গেলা: হ্যান্ডসাম ইয়ং প্রফান বেবিয়ে যেতে ও যেন হাল ছেড়ে বাচলো। নালভানের কল্পনায় কিছু আটকাম না, মুখ তো আরও বেঅগেলা। এশের কাছে আবর চিঠি দেখাবৈ ভেবেছিল ওপতাঁ। ক্লাক্ত হল হয়ে যেতে আর বাকি থাকতো না,

ভৃতীর দিন সকালে আবার সেই কলিং বেলা, ঠিক দলটা বাজতে পাঁচিলে। প্রথম দিন বেমন বেজেছিল। মায়ের হাতে শাড়িপবা দেব করে আক্তম ফিনিশিং টাচ্ দিছিল ভুরতে। দ্রেসিং আন্ধনার সামনের গদিমোড়া

আসন থেকে তড়াক করে লাফিরে উঠল

পেত্রী। এ সেই হাতের চিপানি, এ নিঘাত

সেই ছোকরা পিওনটাই এসেছে। সেদিনও

এমান ছোটু করেই বেলটা চিপেছিল, যেন

একটা বিন্দা, শব্দের হাটকি—বা বড়জোর

হাইফেন। যেন ভেতরে বাইরে দ্টো মান্বকে

ক্রেড়ে দেবে। কলনারা কিন্তু ঠিক এব

উক্টোটি একেবারে দমভর বাজাবে।

পাশের ছরে উর্ণিক দিয়ে দেখল মা নেই, বাধরুমে জলের শৃক্ষ শোনা বাজেছ। শাওয়ার থ্লেছে।

সিশ্চ দিরে প্রায় উড়ে এসে দোর খ্লেজ তপতী। হা যা ভেবেছে তাই। একেবারে সেদিনের দৃশাই। ছোকরা তেমনি সাদা পোষাকে, তেমনি হাসি হাসি মুখে দীড়িয়ে আছে বগলে চিঠিব বাণ্ডিল।

ক্ষা পরসা। কৌতুকের গলায় বল্

আবার বেয়ারিং?

হুৰ্গ আবার চিঠি, আবার বেয়ারিং, দুষ্ট্র হেসে ছেলেটি বলে একই লেঞ্চ নাকি?

কোনো জবাব না দিয়ে তপতী থবে গণতীর হয়ে গেল। দদটা পয়সা দিয়ে চিঠি ছাড়িয়ে নিল কিল্কু দ্বিতীয়বার পিওনটার দিকে ভূকেও তাকালো না। থামটা সবে বাগে চ্কিয়েছে এমন সময় খ্কখ্য কাশির দাশ দানে তাকি-য়েই চমকে উঠল তপতী। বন্দনার কথা দিকারী বেড়ালের মত নিঃশাদে তাস একট্ তফাতে দাঁড়িয়ে আছে। পিওনটা তথ্যও ওদেব পেরিয়ে বায়নি কিল্কু ওরা গাটেপাটোপ অসভ্যতা দাত্র করে দিল।

দ্যার থেকে নেমে ভাড়াভাঙি পা চালালো ভপতী। এদের নিয়ে ঝটপট নিরাপদ দ্রুছে চলে যাওয়া দরকার। নইলে বন্দনার মূথের কোনো ভাল-ভালা নেই চেণ্টিয়ে মেচিয়ে ঠিক একটা কিছু যাঙ্ছেভাই রসিকতা করে বসবে। তা যদি করে আরু মায়ের কানে যায় তা হলেই হয়েছে।

গলিব মোড়ে প্রদৃশ্য হ্বার কিছু আগে ছোকরা পিওন একবার বন্দনাদের দিকে
মাচকি হেসে তাকালো। লোকটার স্প্রা
সভিত্ত ভদতার সামা ছাড়িয়ে হাছে। কি
তেবেছে ও? তপতীরা কি জানিয়ার স্কুলের
ছাত্রী না ছেলেমান্য? রীতিমাত কলেজের
সড়া আধ্নিকা মেয়েদের স্বেগ্ন সাহ্সে?

কিন্তু মনোযোগটা ওদিকে দেওরা গেল না, বন্দনারা তপতীকে নিয়ে পড়ল। এদের তিনটের ময়ে চাপা দেওয়া কঠিন কান্ধ। ছিছি কি লড়া। পাড়ার জানাচেনা লোকের কানে গেলেও কেলে॰কারী। ব্যাপারটা রংদার হয়ে ঠিক ছড়াবে।

নদিদতা তথন গলা ছেড়ে গাইছে, বাব্রাম সাপ্তে কোথা বাস বাপ্রে ৷ আরে **বাপ**ে পিছে চা দুটো চিঠি দিয়ে বা—

আসলে ছোকরা পিওমটাকেই পাল্টা আওয়াজ দেওয়া ওর উল্লেখ্য । উল্লেখ্য মহৎ সন্দেহ নেই কিন্তু তপতীর বে আরু মান-চুচ্চাং বইল না। ছোকরাও বজাতের কম মাড় নয়, গাঁকুর মাথাম পেশীছে আর একবার সবকটা লত বের করে ফিরে তাকিরে গেল।

আর যার কোথার, পারনিতা ছেলেদের ভাগাতে ঝপ করে চে'চিয়ে উঠল, 'আহারে রাজা আমার!'

দ্বিট মাঝবরসাঁ লোক গলির মাধে ভবিব চমকে দাঁড়িয়ে পড়েছিলেন পরে ঠোঁটে ছাঁস টেনে আবার চলতে লাগলেন। পর্নট করেক কর্লের মেরে আসছিল তারা খিলাখল হেনে পরস্পর চলাচলি করে তপতীদের ক্রস করে গেল। মাখচোথ লাল হয়ে উঠেছিল উপতীর, মেরেগ্রেলা ওর চেনা।

'এটা আমার পাড়া!' তপতী চাপা কাঁদো কাঁদো গলায় বলে।

'জানিরে ম্থপর্ডি।' বন্দনা বলে, 'কিন্তু মালটা কোন পাড়ার?'

সাতা বলছি তই যা ভাবছিস--

ন্যাকামি করিস নে, সখি। ব্যাগের মধ্যে তার লিপিক। আনটাচজ্ রয়েছে। কেন্ট ঠাকুরটি এখনো মনে হয় কে:ট পড়তে পারেন নি, বড় রাস্ভায় বেরিয়ে ধরে ফেলতে পারেব।

কিন্তু যাই বলিস বন্দনা, নমিতা নিবেদন করে নায়ক বড্ডে বেবসিক। নইলে মানসীর ঘরের দরকায় কোনো মাল হাতে করে চিঠি দিতে আসে?

এ তোর নিছক অপবাদ নদ্দি। বসের ক্মতিটা দেখলি কোথার? পার্বামত। মিচকে হেসে বলে দেখলি না যাবার সময় আমাদের দিকে কেমন টিপস ঝেডে গেল।

চেহারাখানা যাই বলিস কামেরা ক্যাচিং। বল্দনা মন্ত্রা করে তাই না?

কি রে, ফিল্মেনিটারে নাব গলিয়েছে নাকি তোর হবচেন্দ্র ? পার্বায়ভার জিজ্ঞাসা।

মার্য্য হয়ে শ ্লায় তপতী বলে কি দিবি গালতে তোরা আলায় বিশ্বস করবি বল ? এয়ে বাবা, মা কলার দিবিং, ও আলার কেউ নয়, ও জাস্ট পিওন, নতুন পিত্র।

াপ-ত-ন?' বদনা প্রায় শিস দিয়ে ওঠা গলায় বলে, 'শালা আমরা কি **জন্মে** পিওন দেখিনি নাকি, যে পিওন দেখা**চ্ছিন**? ভণ্ডি মারিস, না!'

পিওনের ওরকম চেহারা।' **পারমিতা** মা্থভাগ্য করে, 'ওরকম জামাইবাব**ু পোয়াক!** মাইরি!'

'অমন দিলবাহার চাউনি, সেটাও বল।' নদিত। পয়েন্ট যোগান দেয়।

জল এনে গিয়েছিল তপতীর চোথে ভানিটি বাগের ভেতর থেকে দে নীলবঙের খামথানা টেনে বের করল এই ধ্যাথ তোরা এটা ভাকের চিঠি।

তপত্তীর সংগ্যা সংগ্যা সবাই লীড়িয়ে পড়েছিল। তিন বাধ্যবী ঝ'ুকে পড়ে খামের দিকে ফ্যালফালে করে চেয়ে থাকল একট কল। ভাইডো! খামের ওপর নামঠিকানা, ভাকটিকেট, টিকেটে সীলমোহরের ছাপ স্পন্ট। তিনক্সে ग्राच जाक्या-जाकीय करत अवश्यत वसम W 2 7 7 1

এক লেকেড চুগ করে খেকে বন্দন্য बलना अ व्य जि किसाना क्रम्क हत्तो चितन সিস্টার ভবে পিওন ছলেও ফাব ছেকিয়ার HEAR PRODUCTION IN

'ক্সৰ থাক' পাসনিকে যেতে যাও' পায়-নিতার জোৰ বালবানার বিচৰ জান কালে **फेटेन. 'बामान अश्वता शास्त्रहे ब्रह्मान । सामन** चन<u>ः</u> सरका शामभाना कि स्थानना मानि, छो। कि भागमा अस्तरम जिल्ले?

'कर्स मान्यांक त्यरक' कावता क्रमाकीक क्राफ চেপে খনে কলে, আৰুনি খোল, সৰ খোলভাই प्रदेश काएवं।'

'আর সিন ক্রিয়েট করিল না, ভাড়া!' ভারণর চেম্বর ইণ্যিত করে দেখার ভগতী माथ समिक।

দুচারজন কৌডুছুলী ছেলেছোকনা बासा काल बारद प्रिक्ट क्रमन: बाँभाग भाजकिल।

শার্মফভা শেলিকে ভাকিয়ে স্বলতোভি রুল, 'অ রে ম<u>ুখপো</u>ডারা ৷'

সামনেই হেদো। তপতীর হাত *থে*কে শ করে চিঠিখানা টেনে নিরে বন্দনা লের মত তীক্ষা গলায় বলল, ভাগনীগণ, লৈ ওই পার্কের মধ্যে গিয়ে এর একটা বিভিত ੀਰ।'

व्य काद्या अवस्थात स्वार्धे हत्य কঠার চুমতা আছে বন্দ্নার। যে কোনো ক্রিন মশানকে ট্যাক্স করতে পারে ও। তবে মিশত বাাপারটা তপতীর নাগালের বাইরে লৈ যাচেছ ক্রমশঃ। এখন চোরের মত ওদের াতে আ**ত্মসমপ'ন করা ছাড়া উপায়** নেই। চিঠি আর ফিরিয়ে নেবার বা স্কোবার টা করা ব্থা। এর ভাগ ওদের দিতেই ব। **স**্ত্রাং বাড়া**বাড়ি না করে সহ**জ য় য[়] ওয়াই ভাল। বরং এ একদিক গেকে ^{দাই} হল। এই রহসোর **ও**পর **ওরা হ**য়ত ছুটা আলোকপাত করতেও পারে।

ফ্রাস।লাটা হেলের মধ্যে গিয়ে **হল** না, লা ক*লেকে* গিছো।

'আজ ফাস্ট পিরিয়ডটা আমরা কাট্ दिया, हरला कमनद्वारम शाहे। वनम्ना करान्। হেস'দেটক ?' তপতী ক্ষীৰ গলায় বলল।

হা কেয়াল ফর এ সিঞ্চাল পি ?' পার-ভা এক কিলিক শিস দিয়ে বলে ভেলের ত কামাই করে শানোছ!

্তাছাড়া তপতীর অনারে অন্ততঃ প্রথম টো গণছ:টি উপভোগ করা উচিত আমাদের। ন?' নদিওতা কলে, 'কেন না তপতী আজ হৈলায় লেটার পেয়েছে!

র্মান্দতার কথায় নান্দতা ছাড়া স্বাই ছেসে ঠিল মানেটা বুকতে পেরে। নান্দিতা থেকে নিক এমন এক একটা মাকার কথা ছাড়ে যে ৈছেলে থাকতে পারা যায় না।

এসংব্যানেড ফিরতি ট্রামের থেকেও এখন মনর্ম ফাকা। কেউ নেই। এক কোলে চার ান গোল ছারে বসল বসদনার নিদেশিমত। দ্দনা ম্যাঞ্জিশ্যানের মত সকলের সামনে থামথানা উচ্চ কয়ে থকে একটা পাল সক মান্ত্ৰনৈ ছিডতে লাগলো।

ছি'ডডে ছি'ডডে বলল, জানি না কৈ চা খ'ডেভে সাপ বেরোবে কিনা। কাসট লাভ?' তপভাঁর দিকে দ্রা নিকেশ করে জিগোস করল, আই প্রথম শেরেয় নাকি? তপতী গলার স্বর মুডটো সুস্ভর নিয়াসক करत दणना, 'शहत । सास्त्र कांच किसा सत्त्र क्लिपेड क्लिपेड ।

कर्क न्यूट्स अठ र निर्देशीएक ब्राट्टिशारका धानर माहिताका बद्धा यक्तमा यक्क करे। बादेरवेदे अथम विकि मिन्द्रम बनान क्राइक हाछ

परमोड कि ? **छन्छो गमा**स अक्टे ক্ষাক্র মেশাবার জেটা করল বিকত বিশ্বনো मा, यत्रश रमयहा विमिश्रास रमानास्मा एकछ যদি গালে পড়ে আনাকে চিঠি লিখে বলে আমি কি করতে পারি ?'

ছ', ।' বন্দনা আৰার দেই কক[্]তকু माका हाउँनि ख्टा हामन गैक भारता? भारता চিঠি রিসিভ করতে, পড়তে, পড়াতে এবং ভারপর লাগসই অবাব লিখতে। মাও পড--

কথা শেষে কিনার ছে'ড়া শামখানা বাডিয়ে ধরল জেপতীর দিকে।

'আমি?' তপত্ৰী যেন আঁতকে ওঠে। 'হাাঁ হাাঁ তুমি।' বন্দনা তপতীর গলা

নকল করে যেন ওভার-তরাকৃটিং করুল। 'কেন তুমি পাড়লে দোষ কি?'

प्राप्त আছে। वन्त्रना मृ**श्च शम्छी**त करत বলে 'আমার এথিক্স-এ বাধে। পুরের চিঠি পড়তে নেই।'

তপত্রীর মনে হল তারই কোন এক-मित्तत कथा **উপলক্ষে ठ.क**रला कम्पना।

'তবে যে ছি'ডলে খামটা ?' যেন লিগ্যাল প্রেক্ট পেয়ে গেছে এতক্ষণে, এমনি লড়ে-যাওয়া গলায় তপতী বলে তবে যে পড়তে ৰলছ ?'

'मदनात्वा वरन! अना कारना मुक्कीछ-সন্ধি নেই, ডালিং কদনা হাসে পুরের চিঠি শ্নেন্ডেও নেই এমন কথা কোনো নীতিশাশ্যে লেখা আছে কি?'

তে৷ পার্মাতা পড় ক নয়তো নিদ্তা। আমি পারবো না।

কলকলিয়ে ক্রেসে উঠে বন্দনা ব্লে 'হ' পথে এলো বাছা আছার।'—৩:৪০ব বেন টাটম শিরে শাটার টিপছে এমনিভাবে তপতীর দিকে তাকিয়ে আছে জো আছেই -धक्री क्रांच चार क्यंडे इटड हार ता।

খ্যাৎ অসভ্য। কি পেয়েছিস বলত ু স্থামাকে যে অমন করচিস ?'

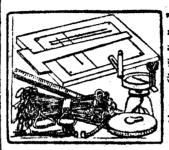
ं क्यांकि छोन्। बदलाव। हेर्ड आर প্রেগন্যাত হৈল্ম্যান্ট উইব লাভ। ভোমার পেটে পেটে প্রেম গলিয়েছে সিস্ট্র দ

नदाई व बाका वन्त्रमा काव कारना नरसम् थ्यांक शाक्षात्ना (SIZIO) N বাড়লো। এর বর-ফেডের প্রেসঞ্জিপদান অনুযায়ী আছকাল নাকি ধরে Before किकनान जिल्हा अधिमतन अधा शर्मन्त বই থেকে রোজ বাহাদার দেখাতে গ্র-চার লাইন আওভানো চাই। বন্দনা অনা পাডায় থাকে ভার বর ফ্রেন্ডকে কেট চোধে সেখেনি কিন্তু কিংবদক্ষীর মত সে সাকাৎকারের সমগা বশ্দনা কেন জানি এড়িরে **যার। বলে** হবে इ.द. कडिन्गाल प्रश्रीव।'

কত দেরি তোর ফাইন্যালের ? मिला अर्कान्स माधिरराष्ट्रिया।

'এখন সবে হিট্স চলেছে।' मकामान भाष करत वर्त्वाहल।

চিঠিটা শেষপর্যনত তপত্রীকেই পদ্ধের হল। ব্যাপারটা বে তার দিক থেকে কিছ নয় সেটা বোঝাবার জনোই। কিন্ত জারগায় জায়গায় গলা কেপে বেতে লাগল। ওরা তিনকনে ভর ছোড়াছণ্ডি করে জায়গা-গ্লো উপভোগ কর্রাছল। চিঠিটার নতন কিছ, জবশ্য ছিল না। আগের চিঠির মতই এতেও তপতীর হপের প্রশন্তি আর অম্পণ্টজাবে অনুরোগের প্রকাশ। গড় _{দাটো} দিন যে প্রলেখক অলক্ষো থেকে खा:क র্ঘনিষ্ঠভাবে লক্ষা করেছে ভার 145 প্রমাণ। যেমন কিভাবে গড়কাল ওয়ালিশ কসিং পার হয়েছিল কিবক্য সাজ করেছিল কেমন দেখাজ্ঞিল পথে তেদের মধ্যে বান্ধরীদের সঞ্জো শোল হয়ে দীজিয়ে ফাচকা খেয়েছে ইত্যাদি। সেই বাশ্ববীদের সম্প্রকে দ্ব একটা মাশরোচক মশ্তব্য। এই জায়গার পার্রমিতা



न्कृण, करमञ्ज এवः ইश्विनीवादिः ফার্ম' ও অফিসের জনা ফেল-नावी, काशक, मारक', क्रहेर, **देशिनीयादिः** যাৰত ীয় উৎকৃণ্ট ছাপার কাজের সলেভ প্রতিষ্ঠান।

৬৩ট রাধারাজার **স্টাট কলিকাতা—১**

জ্ঞান—২২-৮৫৮৮, ৬৭-৪৬৬৪: গ্লাম: অহার্মিন—হাওড়া পোন্ট বন্ধ-০৮, হাওড়া

ছঠাৎ উঠে দাঁড়িয়ে 'ছোলে বাবা পরি ক্ষেপ্যা বলে এক চক্কর নেচে নিল। পরিমিতার মধ্যে একটি লেডি মার্থক রয়েছি, সে প্রাবের মত বেপরোয়া হয়ে এঠে ভোকে থেকে।

চিঠি শেষ হল। চিঠির শেষে কোনো মাম নেই তবে প্রথম চিঠিগ উল্লেখ আছে।

বন্দনা তপতাীর কাছ-থেকে চিঠিট)
চেয়ে নিল্প এথিকসে নাধে বলেই বোধহয়।
ভারপর কি মেন ভারছে ভাগাতে বসে
থাকলো। সবাই চুপ করে ওর মাথের দিকে
চেয়ে বসে আছে টা শ্রুটি করছে না,
পাছে সম্মার মানোযোগ ছিল হয়। সবাই
আসলে উদ্যান তপতাী প্র্যান্ত, বন্দনার
মণ্ডার শ্রেনায় জনা।

কিন্তু সংদ্যা মান্তব্য করল না। হঠাৎ উঠে দড়িয়ে বলল, 'লেট আসু সেলিটেট। চল রেসট্রেট থেকে এক কাপ করে চা খোড় হল লি করে আসি।

ক্তি করে করেন প্রথম চুম্কটি দিয়ে বাদের করেল ভ্রেট সেট্রভলৈ ঘোমান্টিক দ বিক শান্দিতা জানসের চায়।

এই চিঠির পরিকল্পনাটা। নামিকার **ক্র**ীব্রনের এক ৮ মারণীয় দিন প্রেঃ-সমর্ণীয় হযে উঠল। নটা বেঞে পায়ারশ। সবে শাভির শেষ প্রাচ্থানা মেরেছে অর্মান কলেং বেলা পিশা খেন ছোট কৰে বাকের স্থোলাল ডিপ্লো। মাহিকা পাড়মার করে নিচে নেমে এসে দ্যাথে বন্দন্য পার্রাগতা নান্দতা নাম্নী খেণিদ পোচ বাচিয়া নয়, **একেবারে জনজ্যান্ত কেপ্টকলি মা**নে কলির কেন্ট্রাকুর প্রায়ং নায়ক—থাংগিত থঃড়ি নায়ক নয় নায়ক নয় সরকাবী প্র-মতে দ্যজায় দাঁতিয়ে এইখানে বাংকেটে ফেকে জিজেস কর্ছি ভপ্ত**ী** ওই **ছ**ুছুম্দরকুমারই সেদ্দিন ত্রসেভিজ তে।? অব্যাইট্ ওকে। একটা দশপ্যসা দশ্নী দিয়ে কাপ্টমস থেকে মাল থালাস এবং মাল ফের আন্ডাধ ব্রাউজ গ্রোডাউনে **চল্মন।** কারণ? কারণ গালির মোড়ে তথ্নই ক্রিকলার উদয়—'

ক্ষেটি।' মন্দিতা বলল, 'এ যে চিত্রনটো **অই**ছি।'

খি চীয়াস ফর তপ্তী নিপ্র হার হস জীও। পারমিত। ছেসেনের গলা নকল করে কৈবিন কলিয়ের চেতিয়ে উঠল। পলকে গ্রেমন থেনে গেলো সংগ্রিপেনের ওপার নিচে, গোটা বসনত কেবিন সাইলোপ্যাব চড়ানো পিশ্ডলের নলের হাত ওদের কেবিনের দিকে গলা বাডালো।

তেবাবি। বন্দমা নতি দতি চেপে
শাসন করল পার্বায়তাকে। ক্ষান্যলালপাও
কুলে আন কেনা তারপর বেন কিছাই
হয়ান গলার, বিবতীয় দ্বা। মায়ক
অদ্যা। শক্তেলী বাল নিক্ষেপ করে
আনব্দন্তা কম আছে আর মার্চকি মাুচ্চকি
হস্তি। নির্মান দ্বা, শুরু দ্বান্যান্তর
নয়, প্রায় নিন ক্রিয়েট করে ফেলেছে—
ক্ষিপ্ত হ্লেম ইন্টিকেল লাভারের প্রেমপর পড়াছে—তার কাণে এছাড়া তার আর
কিহাই করলীয় নেই।

'कार्डे ।'

্ভাট !' বন্দুনা সংকা সংকা নিন্দৃতাকে ধনকে দিল। পারমিতা যদি আবার নেচে এঠে তবে কেলেঞ্চারী হবে। কিন্দু পারমিতা আর চে'চালো না, শ্যু বুলল, 'তোর ওপি-নিহান ?'

িক ব্যাপারে?' 'নাম্বকৈর ব্যাপারে।'

'সেরানা। খেলবে দ ঠিক স্পালিস।' নদিদতা বলল, 'হাসি এতই তেখিত চেনা, হাদি এতই মনে খরেছে তপতীকে তবে নাচতে নেমে আবার ঘোমটা কেন, দাদা।'

নিষ্ট্রাই ! পার্রামতা ওকে সমর্থন করে,
বেরিয়ে এসে, প্রেমে লড়ে যাও, ফাইট দাও !
অলসেল তপতার মনের ওপরে হাইপ্রেশার দিছে ইচ্ছে করেই । মতগুবটা ঠিক
ধরতে পারা যাছে না । অবিশিঃ, তপতীকে
একটো ফলার কদান বলল, সংস্কৃতে কি
একটা ফলার আছে না, অরসিকাস্য প্রেম
কিবেদনর শির্বাস মা লিখ মা লিখ—'
কোট্রান ভর হল।' আপত্তি জানালো

ক্ষাত্রশান জুল হ্যা। আগান্ত জ্বান্ত্রণ নান্দ্র। আফ্রান্তের তুপতীত কিছা বেয়াসক নয়,

থেভাবে ডুবে ডুবে—' পার্মিতা বলে। দেন দেয়ার মাস্ট বি সাম আদার রিজম-খনা কোন কারণ, কিন্তু কি সোটা?' বন্দনা চলচ্চিতা প্রকাশ করতে থাকে ধাপে ধাপে, ্চিঠিতে নাম সূচী করতে ভয় পাচ্চে? হাক সেটা ভাবা যাবে পরে, এখন এক এক করে দেখা যাক। এক নম্বর, কোনো মেয়ে তপত্রীকে খেলাচের না নিশ্চয়। হাতের লেখাই তার প্রমাণ এ প্রায়ের হাতের লেখা। দুটে নুম্বর কোন লোফার টোফার পিছনে লাগেনি, তারও প্রমাণ এই স্ক্রের হাক্তের লেখা, ভাষা এবং নিভলৈ বাননে। যে লিখছে তার পেটে দ্বেলম বিদ্যে আছে। তিন নুদ্রর অপর্বিচিত কেউ নয় তাও ঠিক এবং সারের কৈউ নয়। অহলে ? ভাগলে আমানের আবার সেই পারাতন প্রশেন ফিরে আসতে ইচ্ছে, নাম সই করতে ভয় পাচেছ? না আন্য কিছু;?'

বন্দনাকে ওদের মধ্যে খার ভারিক্রে দেখাছিল। কথায় তো বটেই, অভিজ্ঞভায় এর বয়সেন্ড। এই বন্দনা বার দাই স্কুল-কাইমানে গাংলু মেরেছিল ভারাই হায় না। ভানিটি বালে খালে কিমাছে সে। নাচারাল বালারে মজানো ঠেটিদুটো আঠালো। তলায় কলো বিধি লংখন করা নেমন্তর চিঠির মত বংসাখ্য লাগছে। হরত গো-গোর জনোও

ভূবতে ক্ষাঁজ এবং আ্যান্টিক্লীক্স খেলে গিয়ে গোলগোর মেথলা গুপিটের ল্যান্ডপেকপ বরলে গোল বটাক্ষ দিয়ে একটা জিজ্ঞাসার সিলনাল পাঠানো হলো তপাতার উদ্দেশে, পরে বলল কে সেন্দ্র বাজি ভাবা কিউ? নার্যান ইয়াং কিক্স খাব ক্ষান্তিত দেখতে, যে জানে তার দিকে ভূই ফিরেও ভাক্ষাহি না কথনো। এমন কেউ আছে নাকি তোর ধার যেবেং?

ভুগতী উল্লে ক্লতে পার্ক্স না এভাবে সে কথনো এই উড়োচিঠির নামককে ভাবে নি। এ ধরনের স্মভাবনার কথা কণপনাও করেনি। বদনার জ্যানালিসিস হয়তো খুবই রিয়াল, হাকে বলে মেটিরিয়ালিস্টিক চোথে থতিয়ে দেখা, কিন্তু ভগতীর সব কণপনার সব কথান বেন ভেঙে গ্রুডিরে চুরমার করে দিছিল। তপতী উত্তর দিতে পারল না। খুব, মাধা নাডলো।

বন্দ্না হেন সহান্তুতির সংশা তপতীর অবংশাটা অনুধাবদ করল, তারপর মুচ্ছি হেসে বলল, 'এখুনি বলবার দরকার নেই, খুব ভাল করে ভেবে দেখিস।'

তোকে মাইরি বা লেভি-ভিটেকটিছ
লাগছে না! পারমিতা তে'তুল খেরে তারিফ
করার ভাগতে টাগরায় শব্দ তুলল, আইন,
ফাইন। শা্দ্র ঠোঁটে একটা সিগারেট থাকলে
না মারকাটরি দেখাতো দ

র্থিনিসভাত উইথ খ্যাংকস ই বন্ধনা পার-মিতার দিকে ঈষং মাথা নৃইরে বলাল, কর-প্রাক্ষর স্থেগ থেকে থেকেই আমার হা কিছু! ও এখন দৃহাতে ডিটেকটিত উপন্যাস লিখছে যে—'বলেই হঠাং থেমে পড়ল এবং খ্যাং করে এক কামচু জিভ কাটলো।

'থেকে থেকৈ?' নান্দতা বন্দনার কথার ভেতর থেকে এক চিমটি নান্সা তুলো নিল বেন 'কিভাবে থেকে থেকে তোর যা কিছ**্বা?**' নান্দতা চোথ টাারা করে তাকাল।

বন্দনা এতদিন কথনো ওর বয়ফেবুন্ডের নাম ওপের সামনে উচ্চারণ করেনি। ও একজন, সে ইত্যাকার সর্বনাম এবং বিশেষণ দিয়ে চালিয়ে যেত, আজ মুথ ফ্রন্ডেই বোধহয় বলে ফ্রেলেছে!

পার্রামতা সংগ্রা হাকে পড়ে বঙ্গল লাভলি! লাভলি! আমি যা ডিটেইটিভ লুম্প পড়তে ভালবাসি না! বল, বল করঞ্জাক কোন পতিকায় লেখে ২ প্রো নামটা বল।

বন্দন। ন চেয়ারের পিটে ছেলে গিয়েছে। আর একবার জিত কেটে বঙ্গল দিস, ওর বারণ ছিলা একদম ভূলে গিরে-ছিলাম। যাকগে, যেনামে ও লেখে সেই ছন্দ্র-নাম তো আর তোদের গ্রালার স

'ছণ্মনাম' ছিউকে সোজা হুল্লে বসল পার্বামতা, 'বল, বল আমার মাথার নিবিং কেননা! একে করঞ্জাক্ষ, ভার ওপরে আবার ছন্মনাম সেটাও কম লোমহর্ষক হুবে না, কি বলিস নন্দি? উফ তোর ব্রক্ষেত্রন্ড আপাদ্যমতক মিশিট্রির্বাস।

বঞ্চনা থাথা থাকাছে দেখে নদিতা বলস 'আমাদের মধ্যে থকতে সোষ কি ! সে তো আর ফেরারী আসামা নয়, মন্দ্র পড়া স্বামীও নয়। ভোছাড়া তোর বরের, ওত্ খুঃড়ি, তোর বরের কানে তো আর হাচ্ছে না, আমাদের মধ্যেই থাকছে।'

না ভাই, রিকোয়েন্ট করিত্র না। বন্দশ শরীরের একটা ঢেউ তুলে বলজ, 'আমাকে ভাই আনফেইএফাল হতে বলিস না।'

অগত্যা সেণিনের আসর এইখানেই ভেঙে গেস। তপ্তীর চিঠির শুনানীও মুলজুখা রইল।

(क्रमण्ड)



ছিয়াত্তরতম জন্মদিনে তুষারকান্তি ঘোষের সম্বর্ধনা

প্রবাদি সাংবাদিক এবং সাহিত্যর্কিক
প্রীতুষারকানিত ঘোষ ছিয়াত্তর বছর বয়সে
পদার্পণি করেছেন। ঐ উপলক্ষে গত ৩০ মে
অপরাহে। রবীন্দ্র সরোবরের তারে চক্রবৈঠক'-এ বিশিষ্ট সাহিত্যিক এবং সাহিত্যপ্রেমীদের উদ্যোগে তাঁকে সম্বর্ধনা জানানো
হোলো।

প্রথ্যাত কথাস্ছিত্যিক ক্রীবলাইর্গণ মুখোপাধ্যায় স্বন্ধং ত্রাববাব্র গলায় মালা পরিমে দিয়ে স্বরাচিত কবিতায় তাঁকে শুভেছা জানালেন। তিনি বলালেন, ত্রারবানিত পান্টান্তর অভিক্রম করে হিয়ান্তরে পড়লেন এটা নিশ্চয়ই স্মুখবর। আজন্মের দিনে পণ্ডাশ অভিক্রম করতে গিয়েই লোকে কাত হয়ে পড়েন সেই সময়ে ত্রারবাব্র ছিয়ান্তর বছর বয়সেও সক্ষম থাকার নজার একটা দ্ভৌশত হিসেবেই চিহ্নিত করা য়ায়। বলাইবাব্র বছুতার মধ্যেও হঠাং এক সময় চিলিৎসক বলাইবাব্ জেগে ওঠে বলালেন:

ভাই ত্যার, বয়েস হয়েছে। বেশী গুরুপাক জিনিস থেও না লক্ষ্মীটি। আর ছটোছটিও কর না বেশী। বুড়ো বয়েসে বিপ্রাম দরবার। ইজি চেয়ারে লগ্যা হয়ে শুয়ে আন্তা দিয়ে যাও ক্ষমাগত। বুড়ো বয়েসে আন্তাটা ভারী হিতকারী। বাংগালী মনেব পক্ষে এর চেয়ে ভালো টনিক আমার ভানা নেই।

সভাপতি শংকরপ্রসাদ মিচ তাঁর ভাষণে বলেন, আমি তুষারধাব্র বিশ্রাম নেওয়ার পক্ষপাতী নই আমি আশা ফরি তিনি একশো প'চিশ বছর বে'চে থাকুন কর্মাম্ম ফ্রারন নিয়েই।

গ্রীবিবেকাননর মুণোপাধ্যার বলেন স্নুন্দর হাসি হাসি মৃথ, গালপ কথার স্বাসিক ত্রারবাব আমার বড়ো ভাইরের মতো। এই বরসেও তিনি ঘড়ির কাঁটা মিলিরে চলাফেরা করেন। সারা প্ৰিবীটি তাঁকে ঘ্রতে হয়েছে নানা কলে। ইংল্যাপ্ডেই গৈছেন চল্লিশবার। কিন্তু ইংরেঞ্জীভাব ওংকে মেনেই পপশ করতে পারেনি। উনি পাঁটি বাংগালাই রয়ে গিরেছেন। অমৃতবাজার পানকার মতো বিশ্ববিধ্যাত পাঁনকার সম্পাদক নানা সময়েই নানা ঝড়ঝাপটার মধ্যে দিতে এগোতে হয়েছে—প্রতিক্লতার সংগ্য লড়াই করে পত্রিকাগুলোকে বাঁচাতে হয়েছে।

শ্রীমতী বাধারাণী দেবী ববেন, ছিয়ান্তর
নর ও'র বরস আঠারো থেকে বাইশের মধে।
নিছিমিছিই ও'র বরেস ছিয়ান্তর ববে
হৈ-চৈ করা হছে।...ও'র নামও ভূষারকান্তি
নয়। আমি একটা নাম দিয়েছি। ছরোয়া
নাম। অন্সর মহলের জনা স্ব'ন্থ সংরজিত
সেই নামটি হল বিভাবস্।' (ভূষারবাব্র
স্থীর নাম বিভারাণী ঘোষ্)। সম্বর্ধনার
উত্তরে ভূষারবাব্ তাঁর স্বাহাবিক নিজস্ব
ভ্রণান্তে ববেন বড়ো লক্ষার মধ্যে ফেললে
মণীন্ত্র রায় এবং আর্ভ্র অনেকে।

পুরুষার-ক্রমন্থী অনুষ্ঠোনে ভাষণ নিচ্ছেন শ্রীমতী রাধারাণী দেবী। পাশে রয়েছেন গ্রীকুষারকানিত ঘোষ, শ্রীনক্ষরপ্রসাদ নিহ, শ্রীমনোজ বস্মু ও শ্রীমনী আশাগুণণ দেবী।



হোতা। শ্নতেও ভালো কানতা... এনি
সাহিত্যক কি কবে হোলাম্ কানি না: গান
শ্নকে যদি গামক হত্যা যায় তবে আমিও
সাহিত্যক। কেননা আমি প্রচর বই কিনি
এবং পড়ি। যার ককণো থেকে একনো
পাঁচল বছর আমার আয়ু কামনা ববেহনে
তা যদি সাহিত্য হবে সেনিন তারা
আক্রেন তো। ভূপবনকে বানি স্বাস্থ্য এবং
মনের আনন্দ যত্তান বহুমান থাকরে তত্তদিন্তা থেন বেছে থাকি। তারপ্র আর
বেছে লাক নেই।'

এই অনুষ্ঠান উপলক্ষেই একলো প্রাইনির একটি অভিনন্দন গ্রন্থ বেশাল পাবলিশার্স করেছ প্রকাশ করা হয়। বইটির নাম ত্র্যাবঅর্কটো অনুষ্ঠানের সভাপতি দ্রীশংকর
সসম মিত্র কইখানি ভ্রয়বাবার হাতে ত্রে
কেন। অভিনন্দন গ্রন্থটিতে বিজেভন, ক্রীভিক্তার চটোপালায়, অল্লাশানকর রায়,
ক্রমণ্ড প্রেমন্দ্র মিত্র, বিবেকালন ম্বেন্থা,
শাধার, বিশ্ব ম্বোপাধায়, অভিনত্তকাব
ক্রেন্থাক্র বিশ্ব ম্বোপাধায়, অভিনত্তকাব
ক্রেন্থাক্র বিশ্ব ম্বোপাধায়, অভিনত্তকাব
ক্রেন্থাক্র বিশ্ব ম্বোল্ডাক্র বায়, ভ্রাম্পাপ্রাণ্
ক্রেন্থা, ক্রেন্থাক্রমন ব্যাহ্য ভ্রাম্পাপ্রাণ্
ক্রেন্থা, ক্রেন্থাক্রমন ব্যাহ্য ভ্রাম্পাণ্ডাব্যাই, ব্যাহারণার্গী



ুমার-জয়ক্তী সমারক গ্রন্থটি ভূষারবাব্রে হাতে তুলে দিছেন স্থাননা হানু ঠানের স্ভাপতি শ্রীশ্বন্ধসাদ মির।

া কাজী নজরুল ইসলামের। **শ্রেষ্ঠ কাব্যগ্রন্থ**

১। রুবাইয়াৎ- ই- ওমর থৈয়াম ---- ১৪:00 ২। **গুল** বাণিচা----৩:৫০, ৩। কাব্য আমপারা--৪:00 ৪। **পুৰের হাওয়া----২**:00, ৫। ঘুমপাড়ানা মাসীপিলি--২:00

মোহন লাইব্রেরী ৩৫ এ, সূর্যসেন ফ্রীট

দেবী, স্তীকাকত গৃহ, মন্মধ রায় গ্জেল্-কুমার মিঠু কানন দেবী জ্রাসকং, মনোজ বস্ স্মধনাথ ঘোষ, লীলা মজ্মদার ও ভবানী মুখোপাধ্যয়।

অন্তানে উপস্থিত ছিলেন, প্রেমেছ মিং, অমদাশ্বনর রায়, আশাপ্ণি দেবী রাধারাণী দেবী, মনোক্ষ বস্, দক্ষিণারজন বস্ বিখ্যু মুখোপাধ্যার, ভবানী মুখোপাধ্যার হরপ্রসাদ মিয় গোপাল ভৌমিক, আশুভোর মুখোপাধ্যার, প্রফুল রায়, ন্মনবিতা সেন মননিক্ষ রায় এবং আরও অনেকে।



'এন সাইলোপিডিয়া বিটানিকার' সভূন প্রিথবীর সংস্করণ দীর্ঘকাল পরে 'এনসাইকোপিডিয়া অন্বিক্তীয় কোৰগ্ৰুথ রিটানিকার নতন সংস্করণ প্রকাশিত হল। এটি এই বিখ্যাত গ্রন্থের পঞ্চদশ সংস্করণ। চতুদিশ সংস্করণে যোট শব্দ সংখ্যা ছিল ৩,৭০,০০০,৩০ আর এবারের সংস্করণে আছে হোট ৪.৩০,০০,০০০ শব্দ। তিনশত ষাটজনের সম্পাদকীয় দেশ্তর এই সাবহং গ্রন্থ সম্পাদনার দায়িত বহন করেন। যার। এই কোষ্যদেশ্ব জন্য বিভিন্ন নিবংধ রচনা করেছেন তারা সংখ্যার দিক থেকে তাবশা বেশীর ভাগই ইংরেজী ভাষাভাষী, কিন্তু তা ছাড়া প্রিবীর আরও ১৩১টি দেশের বিদশ্ধ ও সংধী লেখকগণের নামও এর লেখক স্চ[†]ে দেখা হার। এবারের এই প্রকাশনার একটি বৈশিদ্টা এই যে গোটা কোষ্যাম্থটি তিনটি বিভিন্ন ভাগে বিভক্ত করা হয়েছে এবং একটি নতুন নামও দেওয়া হয়েছে ঃ বিটানিকা ৩। শিকাগো বিশ্ববিদ্যালয়ের অন্যতম প্রাক্তন সভাপতি (2204-84) উই লিয়াম বেণ্টন এনসাইক্লোপ্ডিয়া রিটানিকার অধিকাংশ শেয়ারের মালিক ছিলেন: এবারের নতন সংস্করণ প্রকাশের বায়ভার প্রধানতঃ তিনিই বহন করেন। সাকুল্যে ৩০ খন্ডের এই 'রিটানিকা-৩'-এর বিক্যমূলা ধার্য হয়েছে ৫৫০ ভলার। এই বিরাটগ্রন্থের রচনা তথা সম্পাদনার দায়িত্ব নিয়েছিলেন মুরটিমার ইনস্টিটিউট আডেলার। ইনি सन्द ফিলজফিক্যাল রিসাচ-এর প্রতিষ্ঠাতা-সভাপতি।

চিশ খণ্ডের এই বিরট গ্রন্থের তিনটি বিভাগের নাম ব্যাক্তম প্রোপাডিয়া, ম্যাকোপিডিয়া ও মাইকোপিডিয়া।

প্রথম খণ্ডটি প্রেপাডিয়া ও পরের ১০টি খণ্ডের মাইকোপিডিয়া নাম দেওয়া হরেছে। প্রথম খণ্ডটি অংশিং প্রোপাডিয়া বাদতবিকপকে সমগ্র গ্রুপটির স্টার হথান প্রহণ করেছে। মান্ত্রমাজক দিল্প, ধর্মা, প্রহারিকলা মানুবের ইতিব্ভ, এবং নানা বিজ্ঞানের বিভিন্ন 'হাগা' এই খণ্ডে দেখা সার। তারপরে আছে ৪২টি বিভাগ এবং ১৮৯টি সেকশন ও মোট ১৫০০০ বিষয়। মাজেলাপিডিয়ার ১৯টি খণ্ডে মোট ১৮০টি নিকম আছে। এর বিষয়বস্তু হলো হ্রুপটি নিকম আছে। এর বিষয়বস্তু হলো ভারবা ও প্রিথবীর নানা দেশের প্রাকৃতিক

পরিচর। প্রচলিত বর্ণানক্রমে এই উনিশ খণ্ডের স্ক্রী তৈয়ারী হয়েছে। মাইকো পিডিয়ার মোট দশটি খণ্ডে সর্বস্থেত ১০২২১৪টি ছোট নিকশ স্থান পেয়েছে। এর মধ্যে কোর্নাটর দৈর্ঘাই ৭৫০ শব্দের অধিক নয়। আডলারের বিশ্বাস যে আজকের প্রথিবীর ক্যব্যাহত মান্ত্রের প্রয়েজন মেটাবার পক্ষে মাইক্রোপিভিয়ার ১০টি খণ্ডই যথেষ্ট। তবে যারা কোনও বিষয় সম্পকে কিছা গভীরভাবে জানতে বা ব্রুবতে আগ্রহণী তাদের পক্ষে ম্যাকো-পিডিয়ার সাহায়া নেওয়া ভিল্ল উপায় নেই। ত। ছাড়া ম্যারোপিডিয়া অংশে যে-কোন বিষয় সম্পর্কে আরও প্রাণ্ডনার জন্য চমংকার নিদেশিও পাওয়া হাবে। এটি এবারের নতুন সংস্করণের একটা উল্লেখ-যোগ্য বৈশিশ্টা বলতে হবে।

রিটানিকা-৩ প্রকাশিত হরেছে মে

মাসের প্রথম দিকে। কিল্ডু দ্ভোগ্যের
বিষয় যে বেনটন তাঁর অর্থান্ক্লো ম্দ্রিত
এই বিরাট গ্রেথের সবকটি খণ্ডের প্রকাশনা
গ্রভাক্ষ করে যেতে পারেন নি, কারণ, মাত্র
দ্যোস প্রেণ্, গত মার্চ মাসে ৭০ বংসর
বয়সে তিনি দেহতাগ করেন।

নিঃ ভাঃ ৰণ্গ সৃষ্টিতা সংক্ষেণন আয়োজিত রবীক্ত-জন্মোংসৰ ও বাংলা দিবস পালনের আছনেন।

গত ১৯শে মে উত্তর ভবতারণ সরকার বিদ্যালয়ে একটি অনাড়ম্বর অনু ঠানের মাধ্যমে ও বহ বিশিষ্ট ব্যক্তির উপস্থিতিতে প্রতি বংসর ১৯শে মে দিনটি রাজ্যে তথা সমগ্র দেশে 'বাংলা দিবস' রূপে পালনের জন্য সর্ব-শ্রেণীর দেশবাসীর নিকট আবেদন রাখা সালে এই দিনেই হয়। করেণ, ১০৬১ শিলচর-এ ১১ জন বাঙালী মাড়ভাষার ম্যাদা রক্ষার জনা প্রাণ বিস্ঞান দিয়ে-পোবেহিতা করেন ছिलान । अनुष्ठात সন্মেলন-এর সভাপতি শ্রীতৃষারকাশ্তি ছোষ। তিনি ভার সংক্ষিত ভাষাণ বলেন বাংলা ভাষা ও সাহিত্যের প্রচার, প্রসার ও শ্রীব্রণিকাপে তিনি কৃতসংকল্প। N CT প্রস্তাবটি উত্থাপন করে সম্মেলন-এর কলকাতা শাখার সভাপতি খেদের সংজ্য বলেন যে, "আমাদের 🤺 মধ্যে এমন স্ব 'মহামানব' আছেন যারা নিজেদের বাঙালী বলে পরিচয় লিভেও কুঠাবোধ করেন।

সম্মেলন-এর কলকাতা শাখার সম্পাদক শংকর রাদ্র জানান যে এ বংসর ইওলো বৈশাখ থেকে বাংলাকে রাজ্যের সরকারী ভাষা হিসেবে ঘোষণা করবার জনা সম্মেলন বে দাবী জানিয়েছিলেন সরকার সে দাবীর প্রতি কর্ণপাত করেন মিট 'এছভাবম্পার কাজেই তিনি **বলেন হে** আমরা বাংলার সকল সাহিত্যিককৈ নিরে মহাকরণ অবধি এক মিছিল-পরিক্রমার এবং বাংলা ভাষার রাণ্ডীয় মহাদে প্রতিভার আন্দোলনে বাধ্য হবো।' **অনুষ্ঠানে প্রধান** অতিথিয়াপে কবি-প্রণাম জানিয়ে শ্রীজানার-ুলার মজ্মেদার একটি সারগ**র্ভ ভারণ দেন।** তিনি বলেন যে রবীশুনা**থ বেল গানের** মধ্যেই বাঁচতে চেয়েছিলেন, কাজেই গানই কবি প্রণামের শ্রেষ্ঠ উপহার। জারপর শ্রীমজ্মদার বলেন 'বিবেকান**দের মতই** তিনিও (রবীন্দ্রনাথ) একক, অস্পা বিবেকান্দের মৃত্ই তিনিও **বল্লেন, ভারত** বিরোধ বা বৈপরীতোর মধ্যে ঐক্যের সাধনা করে আসছে।...রবীন্দ্রনাথ বলতেন আমার গতিবেশীকে চেয়ে দেখ**াচন ভালের।** তবেই ইভিহাস-পাঠ সা**থ'ক ছবে।**'

এই মনোজ্ঞ **অনুষ্ঠোনে সংগীত** পরিবেশন করেন সতেপা **লাস, উবা রক্তে** গোপা ভট্টাচার্য, শুলা **ভট্টাচার্য এবং** গোত্র বন্দ্যোপাধার।

সাহিত্য আকাদেমী কর্তৃক প্রেসিভেন্ট দেনখোর সম্মানিত:

দেশ স্বাধীন হবার পর থেকে ছোটো-বড়ো প্রথিবীর বহ, দেশের কর্ণধারই কথনো না কথনো ভারত **ভ্রমণে এসেছেন।** এ-তালিকায় আহেরিকা. রাশিকা ব্রেটন ভামনিনী চীন, জাপান থেকে স্বে করে ছোটো ছোটো এমন সব দেশ, স্থানচিত্ত হাদের খ'্জে বের করা সাধারণ মান্তবের পক্ষে কণ্টকর ব্যাপার হয়ে দড়িয়া—সে-সব দেশ থেকেও নেতৃ×থানীয় ব্যক্তিগুণ ভারভ পরিদর্শানে এসেছেন। এ সমস্ত রাজ্যের ত্লনায় আফ্রিকার সেনেগাল-এর রাজনৈতিক গ্ৰুর্ভমনে হয় অনেক কম। কিল্ছু সেনেগাল-এর প্রেসিডেন্ট সেন্দের-এর ভারত ভ্রমণ অনা কারণে বিশেষ গলেছ-পূৰ্ণ। প্ৰেসিডেন্ট সেন্যোর ভার শিক্ষের দেশে অন্যতম শ্রেণ্ঠ কবি **এবং লেখক** িলেবে থাৰই জনপ্ৰিয়। ভা**রতের ভাষা 🖘** সংস্কৃতি সম্পুকে তার আন্তর্ বিশেষভাবে লকণীয়। তার দেশের ভাষার *সং*পাদিকার্

ভারতের ভাগ্নিক ভাষার যে অনেক তুলনীয় দিক আছে তা অন্ততঃ এদেশের সাধারণ মানুৰ তার ভারত আগমনের পরেই জানতে পারলো। ভাষার সাদ্শ্যে যে সংস্কৃতির ব্যাপ্র চর ক্ষেত্তে সাদ্শোর ইন্লিত বহন অনেক প্রচীন ভাষার হলে হো অস্টোট প্রয়াণিত হয়েছে। গাবেষণার কোতে বিশেষ করে আফ্রকার সংগ্র এশিয়ার ভারতের সাংগ্রুতিক সোগাযোগের পক্ষে সর'প্রধান যে বাবা অর্থাৎ সাম্ভাজাবাদের বিজ্ঞাদকালী শক্তি তা আজ অপসাবিত, আজেই আশা করা মার প্রেসিডেন্ট সেনখের-নেত মতের জননী গুলা ও উৎসাহী বাজির প্রক্রোগতার আঞ্জিকার সংখ্যে ভারতের একটি স্থায়ী সাংস্কৃতিক সম্পক গড়ে ট্টারে। প্রেলিডেন্ট সেন্থোর-এর বিদ্যাবজার व्याज्ञात्मर সাহিতা <u>প্রকিলিম্বরকাপ</u> আকাদেয়ী ভাকে ভানাত্র আবৈ হ'লক সদস্যরাপে বরণ করে নিয়েছেন। ভার পার্বে আৰ কোন বিদেশী ভারতে এই দ্লাভ সম্মান লাভ করেন নি। প্রসংগত উল্লেখা মে সম্প্রতি সেনেগাল-এর স্বংগ ভারতের একটি সাংস্কৃতিক চাঙ্কও স্বাক্ষরিত হয়েছে।

कालांज कावास शवा राजासन

প্র' জালানীতে নানা শ্রেণীর কিলোর সাহিত্যের অন্যতম প্রেণ্ঠ রচয়িতা টুইবি মেইনচক সম্প্রতি তার একটি আভ্নাহ কিখাল্ডের কথা ঘোষণা করেছেন। তিনি জানিয়েছেন যে জাহাণন ভাষায় তিনি 'बागारान' अन् ताम करदवन: उदव शामा नहा, गरमा। बनाइ वाङ्ना श्रधानाउः किर्गात পাঠক সমাজের দিকে লক্ষ্য রেখেই এটি র্মাচত হবে। এর পূবে' ভারতীয় রূপক্থার একটি সংকলন তিনি অন্বাদ করেছেন विकेषिकाल समन নামে ৷ উপযোগী তার ইতিহাসের পটভানকায় রচিত উপন্যাস 'দি ডেডলী সাইলেন্স' এ-বছরের শেষের দিকে প্রকাশিত হবে। **ত্রিটিশ রাজ**্গালে রাজশান্তর বিরুদেধ বিশ্ববীদের সংগ্রামের একটি শর্ব এই উপনাদের বিষয়বস্তু-একখাও মেইন্চক व्यामित्राष्ट्रम ।

काकी जावन्त्र अम्दरत स्कृत्वार्यक्री

নবজাগরণ সমিতির উদ্যোগে সম্প্রতি কালী আবদ্ধে ওদ্দের চতুথ মাতৃ-वर्षकी फेमर्शाश्च द्या। এই অনুक्रीरन প্রশাত সাহিত্যিক অরদাশৎকর রায় স্ভা-পতিত্ব করেন। শ্রীরার তার ভাষণে ওদ্বদ সাহেবের সম্তির প্রতি শ্রুমা জানিয়ে ₽. ক্তবি সাহিত্যকীতি **দাশ্রদায়িকতার** বিরুদ্ধে তারি **আজ**ীবন नरशास्त्र भित्रकत स्मग्र । এই অনুষ্ঠান বাংলালেশের কলকাতাম্ব ডেপন্টি ছাই-ক্ষিণ্ডার আব্দুক শোভান চৌধ্রাী, এবং কুক বর জরক্তান্তে বলেদ্যাপাধ্যায় ও নির্ভন হালদার সমূপ অনেকে ওদুদ সাহেবের বহুমেংশী প্রতিভার নানা বিশিশ্ট ৰিকের কথা উক্তাৰ করে ভাবৰ চৰন ও ভার শ্বতির প্রতি **প্রশানিকেন করে**ন।

রবীকু জয়ক্তাতে কবি সংখ্যালন

এ বংসর হতোগালি রবীদ্দ জক্ষোংস্ব পালনের কথা জানা গেছে, তার মধ্যে একটি বিশিষ্ট আয়োজন হিসেবে রবীন্দ্র সদনে অন্তিঠত কবি সমেলন-এর কথা বহাকাল মনে রাখবার হতো একটি ঘটনা। প্রথমতঃ রবীশ্রেন্তর যুগের গভায়া কবিগণের রচনা পাঠঃ এ বিভাগে দ্থান পেয়েছেন সভোল্ড-নাথ দত, মোহিত্লাল মজামদার, যতীবনাথ সেনগণেত, জীবনানদদ দাশ নিশিকাণত সংধীশ্রনাথ দ্ভ, বাংধদের বৃস্তু সঞ্জয় ভট্টাচার্য ও সংকারত ভট্টাচার্য। ভারপেরে একে একে একুশজন কবি তাদের স্বার্হিত कावाशाठे करत अकनरक मान्य करतन। এ'দের মধ্যে অন্দাশক্ষর রায় অচিত্য-কুমার সেণগ্*ত, দীনেশ দাস, কবিতা সিংহ্ কালাক্তিসাদ চট্টোপাধায়ে, বীরেণ্ড চটোপাধ্যায় ও নবনীতা দেব সেন-প্রম**ু**থের কাব্যপাঠ বিশেষভাবে উল্লেখনীয়। এই প্রচেট্টা বিশেষ প্রশংসার দাবী রাখে।

লয় ভারত, জয় বাংলা পৃত্তিকা :

রক্তক্ষ্মী সংগ্রামের মধ্য দিয়ে দ্বাধীন বাংলাদেশের জন্ম। এই জন্মলণেন কোটি কোটি ভারতবাসীর কঠিন শ্রম তথা ত্যাগের কথাও নিশ্চয়ই আজ ইতিহাসের দ্বীকৃতি-গাভ করেছে। এবং তাই ভারতের জনগণের সংখ্যা বাংলাদেশের জনগণের এক আড়ত-পূর্য কথাত্বের সম্পর্ক গড়ে উঠেছে। এই বংধারকে আরও দায় ও দীর্ঘায়ী করে তুলবার জন্য ভারত-বাংলাদেশ যুব সংঘ্রে উদ্যোগে জয় ভারত, জয় বাংলা একটি মাসিক পৃত্রিকা প্রকাশিত হচ্ছে। পত্রিকাটির সম্পাদনা করছেন স্থেয়র সভাপতি শ্যামস্কের মহাপার এম পি। অনেক বভামান তথা ভাতপ্ৰ এম-পি পতিকাটির উপদেশ্টা বোডে আছেন। ভারত ও বাংলাদেশের প্রধান মণিতুদ্বয়, তথা ভারতের রা"ট্রপতি, ভারত-বাংলার সম্প্রক" আরো ঘনিষ্ঠ হক—এই কামনা জানিয়ে বাণী পাঠিয়েছেন।

রাজা রামফোইনের ণিব-শতবাধিকী প্রতি⁶ উৎপব:

গত ২২শে মে সম্প্রায় মানিকভঙ্গায় রাম্মোহনের প্রেনো বাস্ভবনে সাহিত্য-তীথের উদ্যোগে এক সমরণসভা উদ্যোপিত হয়। এটি ছিল ভারতপথিক রামমোছনের 'ব-শতবাধিকী প্তি উৎসব। এই ^{অনুষ্ঠানে} সভাপতিৰ করেন তীথ[্]পতি বনফ্ল। স্ভাপতি তার ভাষণে বলেন যে. আধুনিক বাংলার ইতিহাসে প্রেবসিংহ রামমোহন রার প্রশম্যপ্রের। আমরা প্রতি বছর তাকে প্রণাম করে সম্মানিত হই। এই মন্তানে ডঃ কালীকিব্লর সেনগ্রুত, তাখল নিয়োগী, রমেন্দ্রনাথ মলিক, জ্যোৎসনানাথ মলিক ও বে**লা দেবীও ভাষণ** দেন। এই উপলক্ষে রাম<u>মোহন লাইরেরী</u> ংলে ভারতারা রাম্মোহন লাটকটি মণ্ড**ু** করা হর।

শতব্ধ কবির নীরব জয়তেশী

এবার বিদ্রোহী কবি কাজী নজরেল ৭৫৩ম জন্মদিনের নানা ই**সলা**নে অনুটোনর মধ্যে একটি অনুষ্ঠান বিশেষ-ভাবে সুধীজনের দুল্টি আক্ষণ করেছে। ২৫শে চে শনিবার সকালে পৃশ্চিম্বঁৎস নাটা অন,ন্ঠিত এই সংরক্ষণ গলিতির উদ্যোগে জয়ণতী সমিতির সদস্যরা তাঁদের কাষা-লয়ের সামান বড়ো রাস্তায় কবির একটি প্রতিকৃতি গিরে মৌন-অবস্থান করেন। প্রতিকৃতি চিল সোনালী ধা**ন দিয়ে তৈরী** এবং তাতে যে মালাটি পরানো হরেছিল তা চাল দিয়ে তৈরী। মৌন-**অবস্থান করে** সকলে নীরবে কবির রোগম্ভির জনা প্রাথনি করেন : পথ-চলাত অনেকেই ব্যাপারটা দেখে গুলি হয়ে যান এই অনেকৈ ্রান-প্রাথনায় যোগদান দেবচভাষ এই করেন। নীর্ব ু প্রতি এই অ**ভিন্**ব পূর্যাততে তা জানাবার জন্য উদ্যোজাদের আমরা সাধ্য

-- छात्रकात्



দুই বিশ্বন্ধের মধ্যকালীন বাড়লা কথা সাহিত্য (প্রবন্ধ)। **ডঃ গোপিকানাথ রায়** চৌধুরী। অভী প্রকাশন, ২০ কিরণ-শংকর রায় রোড কলকাতা-২। **হোগ** বিকা

প্যারীচাঁদ মিরের আলালের मृजारमात, तहसामाल ও প্रकाम-चर्चसा**क स्कम्प्र** করে আজ থেকে প্রায় দুই দশক আগে বাংলা উপন্যাসের শতবর্ষপ্তি সমরণ ছয়ে গেছে। এই কিছ্বিন আগেও দ্রেশ-নদিদনীর একশ বছর প্তি আমরা পালন করেছি। মোট কথা বাংলা কথাস্তিতের বিবিধ বিচিত্ত জয়্যাতার পথকে আমরা নাশা-ভাবে অভিনাদ্ত করেছি এখনো করছিও। বাংলা কথাসাহিত্য তুলনায় অব্যচীন শাখা হলেও যথেষ্ট পরিণ্ড শিলপ আজ। এই কথাসাহিত্য নিয়ে একাধিক আলোচনা গ্ৰন্থ ও গবেষণাম্লক প্রয়াস হয়েছে, হচ্ছেও। সেই প্রয়ালধারায় ভঃ গোলিকানাম রাল্ল-চৌধুরীর সদা প্রকাশিত পু.ই বিশবয়ুদেশর মধাকালীন বাংলা কথাসাহিত্য' ক্লমটি निश्मरम्पद ऐस्म्या।

প্রথমবার জানিরেছেন, তাঁর ভি-ফ্রিক্সার পরিকার প্রদক্ত গ্রহণটির ঈবং পরিব্ বার্তাত রূপা আলোচ্য গ্রহণ প্রতিপ্রেব্ বাংলা উপন্যাসের ইতিহাস ধারার বিভিন্ন পর্ব নিবর একাধিক গ্রহণ প্রভাশিত হরেছে নেব্যুলির মধ্যে কোন্টি গ্রেক্ষা প্রথম ানটি বা সাধারণ। প্রদশ্যত বলে রাখি,
ছ'মান গ্রন্থটি সেই সব গভান-গতিক
লোচনা গ্রন্থ থেকে প্রক মহাদার দাবী
থে। গ্রন্থটি বেল কিছু উপনাসের
হিন্দীর সংক্ষেপে ও সাধারণ চরিয় বিচার
ত্রীয় আলোচনার সম্মান্তী নয়, স্মৃপারদিশতভাবে ১৯১৪ পেকে ১৯৩৯-এর
ধাবতাঁ বাংলা কথাসাহিত্যের কেল্পেথ
বণতাকে স্পট্ট কয়য় প্রস্নাস।

পরিশিষ্ট বাদে বিশাস গৃস্থটির তেরোটি রিক্রেদ। ভিল্ল ভিল্ল শিরেনামায় চিহ্নিত রিচেছদগালি নুই বিশ্বয়ুদেশর মধ্যবতী-ললীন কথাসাহিত্য ভাবনাকে *এক্*টি লেখিত চিদ্তাস্তে ও ঐতিহাসিক ্রান্ত্র পাত করার সহারক হরেছে। বান্ত্র্যান্ত্র করার সহারক হরেছে। বায়থ চৌধুরী' ভারতী গোড়্টী' কল্লোল ভনা' হোবনরাগ ইত্যাদি কয়েকটি অধ্যায়ে খক সাথকি গবেষণাধ্মী নিক্ঠা শ্রম ও ত্তা এবং স্বোপরি মৌলক মানের রিচয় রেখেছেন। কোন কোন মুক্তব্যে ক্রমের অবকাশ নিশ্চয়ই আছে কিন্ত ধকার আপ্ন সিম্ধান্তকে নিজের মত যুক্তিসহ করতে পেরেছেন। ইতিপার্বে া গেছে অধিকাংশ গবেষণা প্রতথ ভার-ী সশ্র কাজের তুলা হয়ে দেখা দিয়েছে লোচ্য গ্রন্থটি তা নয়। স্ক্রে বিশেলষণের শা প্রবন্ধকারের মৌলিক্তা নিংস*দেরে* িভিনন্দনযোগ্য। কথাসাহিত্যের মত শ্রেন্ট খোটির আকোচনায় যে পদভোষা বর্তমান নিখক বাবহার করেছেন বিশাল রুভ্থটির হিং মুৰ্যাদা পাওয়ায় দাবি সেই ভাষাব হুজতা সাবলীলত সাধারণ পাঠকেরও বোধ-মা হওয়ার বৈশিচ্টোর কারণের মধ্যেও শহিত আছে।

বস্তুত ডঃ গোপিকানাথ রায়চৌধুরীর ত্মান গ্রন্থটি যে শুখুমাত নীরস আকো-চুমিক হর্মান এটাই এর আরু এক প্রধান ্ণ। কিন্তু গ্রন্থটি শ্লেষ করার পর চ্যেকটি ম্লে প্রশ্ন জাগে যার ফলে হংস্যা পাঠকের মনে অভাববোধজানিত মণ্ণিত জেগে থাকে।

কিন্তু সীমাবংধতা মত্বিরোধ কোন কান আলোচনায় গতান্পতিকতা থাকলেও গালোচা গানেথ গোপিকাবাব্ বাংলা উপন্যাসের ও ছোটগদেশর যে আদতর বভাবকে স্কার আলোচনার প্রতিমান দিশপীত করেছেন তা ইতিপ্রে প্রকাশিত দু-একটি উল্লেখযোগ্য গ্রেথর নিশিচ্ত মিক্কঃ

--- बीरबण्ड मञ्

এরা কক্ষম (উপন্যাস)। মলর সানাল। নব সাহিত্য প্রকাশ ১২১লি সভিরেম েয স্ফ্রীট কলকাতা-৯। দশ রাকা।

ভারেরীধর্মী উপনাস আভিগ্রের কোন বৈশিষটেই নেই অথচ ভারেরীর চঙে উপনাস উপহার সিরেছেন এক নতুন লেখক শ্রীমালর সামাল তাঁর ওরা ক'জনে' গ্রন্থে। দুই কিতানের ক্লমনী স্মতির লেখা ভারেরীই এই গ্রন্থ। কিশোরী অব্স্থায় আত্মীর-ক্ষপার্কের শ্রিচভাগ্নে, সুমতির দেহ ভোগ करत स्थोवनकाया क्यांशात किरत ठटन यात्र। তারপর থেকে আদিতা-মাবব ইত্যাদি একাঞ্চিক প্রুবের ভোগ্যা হরে কাটাবার পর অবৈধ সুক্তান নৃষ্ট করে প্রামীর ঘরে আসে। প্রামী ভাকে **ভরিণভাবে ভালবা**সে আর বিশ্বাস করে, অথচ অতীতের পাপের কথ। তাকে বলতে পারে না বলেই তার স্বাঘী-পুরু-কন্যার কাছে বিবেকের দংশন। শুধু ভোগ আর তথাকথিত বিবেকের দংশনে পাঠকের সংখ্য পার-পারীর কোন সহম্মিতাই তৈরী হয় না। শচিতাংশু অকপ বয়সে যোবনক্ষা বাডিয়ে দিয়ে পালিয়ে লেছে বলেই সুমতির অবাধ যথেক্ত ভোগের জীবন অপরাধের জীবন সম্ভব হয়েছে—এই ধ্র্তি ও নায়িকার অদিত্য সিন্ধান্ত একেবারেই হাস্-কর। হাস্যকর মেলোডুমা শচিতাংশকে হত্যা ও স্মতির অম্বহননও। গভীর মনসভুত্রের নায় বাতিরেকে শ্বা দেহাভাগের বাস্তব চিত্রই যে উপন্যাস হয় না এ বোধ লেখকের থাকা উচিত ছিল। গ্রন্থের মন্ত্রনপ্রমাণ সমান পীড়াদায়ক।

প্রেম প্রীতি প্রতায় (কাব্য সংকলন) শ্রাম্পর্যান্ত বস্থা মণ্ডলা বুক হাউস, ৭৮।২ মহান্ত্রা গান্ধী রোড কলকাতা-১। তিন টাকা।

শীশ্বদ্ধসত্ব বস্থাকজন প্রতিষ্ঠিত আধ্নিক কবি। 'প্ৰাক-কথন' অংশে ভিনি জানিয়েছেন, এই গ্রেথ কিছা হালের কিছা আমার কিশোর কালের রচিত কবিতা স্থান পেয়েছে। কিশোর কালের কিছু কবিতা ও হাল আমলের পরিণত চিতার কবিতাগুলি আলোচ্য সংকলনটিতে কবির অন্তর্ভয় স্তাকে স্পণ্ট করতে যথেন্ট সহায়ক **হয়েছে।** যৌবন, প্রেম, স্মৃতি সময় প্রকৃতি আধুনিক চেতনা—এই স্ব বিবিধ স্কর ভাবনা ও অনুভৃতি কবি শ্রীশুন্ধসত্ত বস্ত্র কবিভাষায় চিত্রের ব্যপ্তনায় রূপ পেয়েছে। কিছু 'লিরিক' রচনায় কবির স্বাত্তা চিঞ্তি ক্ষয়তা স্বীকার্য। স্মৃতি বিস্মৃতি কবিকে বেশী নাড়া দেয়। কবি বলেছেন—'চারিদিকে বিস্মাতির জল, তব্ কোন বোধে/সমাতি ডোবে'। বলেছেন-- 'চিথর জল নাডা খেলে/সব কিছা দালে ওঠে/...ফালের সৌরভ, কিংবা পাথির কাকলি/—সব নড়ে ওঠে, দোল খায় সব। ৴ এরই নাম সম্ভি। জীবন ও স্ময়-সচেতন কবি। সাম্প্রতিক দিব্ধা সংশয নিশ্চয়ই এ কবিকে আলোডিত করেছে কিল্ড কবির উচ্চকন্ঠ ঘোষণার মত-জীবনের সব ক্ষের থেকে হেরে-ফেরা/মান্রবের কাছে তুমি ম্তিমিতী আশা/অপ্রেমের যুক্তণাকে ধ্রে ম্ছে/সূরভিত ফুলের উচ্চাস!' কবির জীবনবোধের ও বিশ্বত্ব কবিস্তার প্রতায়-'সংসার লোকের ভীড় প্রতাহের গোলামী ও ক্ধা/তব্তুমি সময়ের উচ্চস্র নীলাকাশ জীবনের সুধা। যেমন বিস্মৃতির শদান্তেব বয়া'—এই জাতীয় শন্দগ্রক্লিছিড আ ভাবনা সহ্দয় পাঠককে যদিও 🔧 পীড়া দেয়, তবু আলোচা কবির গ্রামীগ্রক ফীবন প্রেম ও ছন্দ চিচ ডিকশান আতি আধুনিক স্প্রাণ কবি-ভাবনার দোসর हरम्ब ।

বর্ধ পঞ্জী। ১০৮২। নির্দেশনায় অর্পরতন ভট্টার্য। নাশগাণত আগত কোলনানী প্রাঃ লিঃ। ৫৪।০ কলেক ফার্টীই। কলকাডা-২২। দাম তিন টাকা।

এদেশে আগে শিক্ষার একটি অবাদ্যা
পঠনীর বিষয় ছিল জ্যোতিন্দ্রচর্চা। রবীন্দ্রনাথের জাবিন্দ্রুল্টিতে দেখা যায়, কিশোর
রবীন্দুনাথকে তার বাবা দেবেন্দ্রনাথ যাত্ত্র
করে আকাশের গ্রহ্-নক্ষ্য চেনাছেন। বে
প্রথিবীতে আমরা বাস করি সেই প্থিবীকে
ভাল করে জানার একটি উপায় হল ভোগিতনবিদ্যা সম্বন্ধে সচ্চেত্রনভা। আলোতা
দিনপঞ্জার বৈশিষ্ট্য হল প্রতি মাসের আকশে
গ্রহানক্ষরের অবস্থান সম্পর্কের মানচিত্রের
প্রবাদ। চেণ্টাটি অভিনব এবং সম্প্রান্ত্রাচা

শ্রীরীরামকৃষ্ণ জনক-জদনী। নিতারজ্ঞন চট্টোপোধ্যায়। প্রাণিতস্থান কথা ও কাহিনী। কোলকাতা বারো। দাম এক টাকা পণ্ডাশ পয়সা।

আমর। সাধারণতঃ মহাপুরুবদের ক্ষানন এবং তাদের বিচিত্র ক্ষাকালেডই বেশী আগ্রহী। যে প্রতিবেশের উত্তাপে দিনে দিনে ঐ পুরুবটি মহাপুরুহ হয়ে প্রঠন তাকে জানতে গেলে ব্যভাবিকভাবেই তাদের পিতামাতার কবা এসে প্রভা মহাপ্রবদের জীবনী নিরেই আমাদের দেশে যা কিছু আলোচনা হা কিছু পুশুতক কনা—তাদের পিতামাতার প্রস্পাটা প্রদ্ধানিক গোণ।

নিত্যরঞ্জনবার, প্রমপ্রের্য শ্রীশ্রীরাম
কুক্রের জনক-জননী গ্রেথে তার পিতামাতার
কুথাই শ্নিরেছেন। সম্ভবতঃ এই প্রমপ্রেরের পিতামাত। সম্পর্কে ইতিপ্রে
কোন প্রক গ্রুথ রচিত হয় নি। অবশ্য
রামকৃষ্ণ বিষয়ক উল্লেখযোগা গ্রুপ্রালিতে
এই মহাপ্রেরের পিতামাতার প্রস্পা
বারবারই এসেছে। নিতারজনবার্র সেশা
সংক্ষিত অথচ স্লিখিত এই গ্রুথটি
নিঃসন্দেহে প্টকদের আক্রমণ ক্রবে।

য়াপা বাধাই এবং প্রচ্ছন প্রিচ্ছের।

সংকলন ও পত্রপতিকা

ৰাক্ষতী (ফাল্গান্-চৈত)—স্মপাদকঃ ম্ মনির-উজ-জামান। সাহিত্য পরিষদ। বাংলা বিভাগ। চুণ্টিয়া সরকারী কলেজ। কুণ্টিয়া। বাংলাদেশ। দাম এক টাকা।

কুলিয়া সরকারী কলেজের বাংলা বিভাগের ম্থাণার বাসভতী মননশাল সাহিত্য-পরিকা। করেকটি ম্লোবান প্রকং লিখেছেন ম্রান্ধান শোরের আলী (জীবনানভদ লাভের আধ্নিকতা) ফললার রহ্মান খান বেশ্ম (মাব্দনের কাবো মানসভা), আলেয়া বেশ্ম (মাবলা রুইজ শিকাসো) মৃহ্মনদ ইক্রীস আলী (বাংগালী কবি মধ্সুক্নের আধ্নিকতা) মৃহ্মাদ ব্যাম (কবি জনীমউন্দীন), মু, মনির-উজ্জালার (ক্রিম্জানী

হরিনাথ প্রসংগ্র রবীন্দুরার। আরো কাষ্টাট প্রকর্ম, কবিতা ও গলেশ সংখ্যাটি সংহার্থ

আদ্তক্তাহিক আধ্যক (শীতাহস্ক-কলেন স্থান ১৬৮০)—সুক্ষানকঃ নাধা সনকার। ১৯০ শু**ল্লাফ্রন্স নুখার্কি** নোও। কলকাতা-২৬। দার্ম্বার্ক টাক্স

বর্তমান সংখ্যায় বেশ কয়েকটি ঘ্লাবান আন্দ্যান করিয়েছে। সভাজিৎ রায়ের জন-ফাড়া গাছত রোধরজ-এর একটি প্রকশ্ ভারতীয় চর্বাচন প্রসাধন করেকটি ভারিব আকাচনা ভারতানান করেকটি ভারিব সম্পর্কে আলাচনা সংখ্যাতির আনতাম আকাবা।

লেখা ও রেখা (১৮ বর্ষ । ২য় সংখ্যা)—
সম্পাদকঃ ভাষ্টকর মাথেলাখারে। মিলালয়। ১২ বংকম চাটোজি দ্বীটি।

কলকাতা-১২। দায় এক টাকা।

আগেণনা সংখ্যাগ লির ছুলনার উল্লেখযোগা এচনাসমান্ধ না হলেও বও'মান
সংখ্যা বেশ করেউটি কবিতা, গলপ প্রবংধ
থোছে বঙামান কাগজদুন্দ্বিলার বাজারে
রুগ্য প্রশাশ যোখানে দুবাত হরে উঠেছে,
সেখ্যান বংগালী স্বাহ্মান বংগালী কিনা। বিশেষ
ধ্যা পোনা বংগালী মতি উদ্ধাননা
কবিবাৰ প্রতি পাঠকদের আরও হুদ্যায়ান
হৈথার প্রতি পাঠকদের আরও হুদ্যায়ান
হৈথার প্রত্যালন বরোছে।

আলি ও কথার (এম বর্ষ । এর সংখ্যা)-সম্পানক শতুনিপুনাথ মনুখোপাধারে। ১৫
বিক্রম চাটাজি স্থীট। ক্লকাডা-১২।
দাম দেড টাকা।

বভামান সংখ্যার লৈখেছেন স্তালিকর গ্রং আশা দেবা, কল ধর গোরীশকের ভটাচান রজিওকুমার মাধ্যোপাদার অমলেকন্দ্ দেখে আদিত। সেন, স্কিতবুমার ভট্টাচানা কামাল হোসেন সোমোলন্ প্রেপাপাধারে এবং স্টেরিতা সামালে।

সম্প্রতি। সম্পাদক প্রণব মাইতি। অংডাল। কন্টাই। মেদিনীপরে। দাম এক টাকা। মেদিনীপ্রে জেলার প্রতিনিধিম্লক

কৰি ও কৰিতার অনিবায় শিবয়াসিক সম্প্রতিরে এই সংখ্যাতে রয়েছে ছড়া কবিতা এবং আসোচনা। কবিদের মধ্যে প্রায় সকলেই নতুন। কিছা কবিতায় প্রতি-হারে সকলেই নতুন। কিছা কবিতায় প্রতি-হার্বির হাপ আছে। ছাপার ব্যাপারে আরও একট্য বছ নেওয়া দরকার।

ভাষা (রবীন্দ্রনাথ বিশেষ সংখ্যা) সম্পাদক মুশাল নাথ। ১ বিধান সর্থা। : কোশকাতা ১২। দাম আড়াই টাকা।

বাংলাভাষার ভাষাবিজ্ঞান অনুশালন সমিতির হৈনাসিক শৃথপাত ভাষার সাল্প্রতিক সংখ্যাটি রবীন্দুনাথ বিশেষ ক্ষেম হিসেবে চিহ্নিত। এই সংখ্যার ভাষা

<u>Lail gʻild</u>i "Nga danga kalaysi.

সম্পর্কিত প্রবংশগালি ববীন্দ্রনাথকে কেন্দ্র করেই। প্রতিটি প্রবংশই উল্লেখ করার মুডো। গিখেকেন সংনীতিকুমার চটোপাধ্যার, স্কুমার সেন, প্রবোষচন্ত্র সেন, তারাপদ ভট্টাচার্যা, মুহুম্মদ আব্দুল হাই এবং আরও করেকজন। মুহুম্মদ আব্দুল হাই-এরা লেখা ভাষাভাত্তিক রবীন্দ্রনাথ এবং ভারাপদ ভট্টাচার্যার লেখা ভাদ্ন ভাতিক্রমা রবীন্দ্রনাথ প্রবংশ দুটি পাঠককে বিশেষভাবে আক্রমাণ

য়াঝি (কবি প্রণাম)। সম্পাদনা প্রশাস্ত রায় এবং হরিপদ দে। ২৮বি সিমলা শ্রীট, কোলকাতা-৬। দাম চলিশ প্রসা।

স্মনিবাঁচিত কবিতার তালিকার অসংখ্য কবির কবিতা আছে। তার মধ্যে বিশেষভাবে কালো লেগেছে কৃষ্ণ ধর, রাম বস্যু, তারাপদ রায় এবং লনং বন্দোপাধ্যারের কবিতা। স্প্রতিষ্ঠিত কবি দীনেশ দাস এবং মণান্দ্র রায়ের সচিত্র সাক্ষাংকারটি প্রিকার বিশেষ আকর্ষণ। দীপেন্দ্রমাথ বন্দোগাধ্যারের দেখ আলোচনাটিত ক্রেয়েখ করার মতেও। প্রকার একমাত্র গংগাটিতে প্রফ্রের রায় প্রতিকাদর উৎফ্রে করতে প্রেরাছন ব্রেই ধ্যরণা হয়। প্রতিকার হাপা এবং অলহকরণে কৃষ্টির ছাপ রয়েছে।

কথা ও সংশ্কৃতি। সম্পাদক গণপতি বৰ্দ্ধা-পাধায়। ১৫ বৃত্তিম চ্যাটাজি গুটি। কোলকাতা নয়। দায় এক টাকা।

কথা ও সংস্কৃতির এই সংখ্যায় বেশ কিছু কবিজ্ঞা করেকটি গণ্প এবং দ্বটি প্রবাধ আছে। কবিতাগগুলির মধ্যে শক্তি চট্টোপাধ্যায় এবং আমতাভ দাশগণেতর কবিতা ভালো সেগেছে। প্রবাধ দুটি লিখেছেন দেবপ্রসাদ সিংহ এবং গণসতি বন্দ্যাপাধ্যায়।

সাহিত্য সামাই। সম্পাদক বিশ্বানাথ ঘোষ। সামাই সাহিত্য সংম্থা। রস্কুপ্রের। বর্ণমান। দাম পঞাদ প্রসা।

সম্পাদককে দোখা নির্বাচনের ব্যাপারে আরও ধঙ্গশীল হতে হবে। আধিকাংশ লেখাই দুর্বাল। ভবিষাতে পাঁত্রকার পাতার প্রতিপ্রাতির খাপ দেখব এই প্রত্যাশাই রাখলায়।

কোশিকী। সংশাদ্মায় তারাপদ সাঁতরা ও আন্দদ গ্রেগাপাধায়। ৮, মুখুরাম কানোড্যা রোড। হাওড়া। দাম কুড়ি পয়সা।

পরিচ্ছা পৃতিকাটিতে করেকটি **উল্লেখ-**থোগ্য প্রবংধ আছে। শিশেছেন রা**থালাদাস** বন্দোপাধ্যায়, রবীদ্রনাথ বন্দো।পাধ্যায় এবং সাকুষার মিত্র। গোকসংস্কৃতি এবং প্রচৌন ইতিহাস সম্পার্ক বিশেষ প্রবণতা পত্রিকাটির একটা বিশিষ্ট চরিল স্থিত ক্ষেত্র । এই শর্মের পরিকার বহুদে প্রচারকর আছে। প্রেশিকা পরিকার রাজ্যন স্থানার। ছাপাও ডালা ।

यस्य विकास । सन्भासमा क्रथक्ष वानाकि समर्थकार सक्तिका । व्यस्माका । वेक भारता । स्व भटना भक्ता ।

পৃত্তিকাটির নিবেদন : মাত্তাধার রাধামে বিজ্ঞান প্রসামের উন্দেশ্যে জাতীয় অধ্যাপক আচার্য সভ্যোপ্তমাথ বস, বাংলার রাটিতে যে বীজ বপণ করেছিলেন, তাত্মই একটি অঞ্জুরিত চারা ব্যুগ বিজ্ঞান ৷ এই চারা একদিন মহীরুহে পরিপত্ত হবে এই কামনাট করি।

ত্রভিষাত্তিক। পুণ্চিশে বৈশাখের বিশেষ সংখ্যা সম্পাদক নির্মালেন্দ্ নাথ। দাম পঞ্চাশ শয়সা।

অসংখ্য কবিতার সম্প্র এই পতিকাটির অধিকাংশ কবিতাই ভালো লেগেছে।

ন্বভোগসার। সম্পাদনা চন্দন ভট্টাচার্য। ৪০ নন্দনা পার্ক। কলকান্তা-৩৪। দ্যে চল্লিশ প্রসা।

পৃতিকাটির সূর্বত চমক স্টিটর প্রয়াস কোনো উদ্দেশ্যই সফল করতে পারে নি।

বোদৰাই বৈচিন্তা। রেখা দত্ত, মঞ্জালিক: গপোপাধায় এবং শালটি ঘোষ সম্পাদিত। বিচিন্তা কালচারাল এসো-সিয়েশন। ফাাট ২ প্রদীপ্রেরলি হিল এস্টেট। বোদবাই ০০০০১৮। দাম তিন

বোদনাই থে ক প্রকাশিত বাংলা পতিকা বোদনাই বিচিত্রা'র নববর্ষ সংখ্যাটিতে গ্রন্থন, কবিতা, নাটক উপন্যাস দ্রমণ কাহিনী রমারচনা অনেক কিছাই আছে। সন্দুর বোদনাই থেকে সেখানকার প্রথাসী বাঙালী মনটিকে পতিকটি আমাদের সামনে হাজির করেছে। সম্পাদনার দিকে একট্ব মনোযোগ দিলে পতিকটি ভবিষাতে আরও ভালো হবো।

আলোয়া। গোঁতমকুমার রার স্মানিত। ২০ পশিডত হরিনাথ নাার্রত্ন শেন হাওড়া। দাম পশ্চিশ প্রসা।

সাহিতা সংখ্যা আলোয়ার কবিতা-গালোর নিবলচনের ব্যাপারে মেটেই বল্ল নেওয়া হয় না। ভারকনাথ বলেদাাপাধ্যারের ক্বিতাটি এই প্রসংশা উলেখ क्षा शहा शहा এর্মান আরো কয়েকটি কবিতা আছে। গোড়ম রারের গলপ্টিও নেহাংই কাচা লেখা। নতুদ পত্রিকাই নতুম লেখকদের লেখা প্রকাশের ক্ষেত্র। কিম্<u>ডু নতুল লেখক</u>-দের লেখার ব্যাপারে নিশ্চরাই শব্তি স্পর করতে হৰে।



(25)

ভারতীয় সঙ্গীতে প্রথম অকে^ভট্যা



দক্ষিণাচরণ সেন

যেমন বিরাট তেমনি বর্ণাতা শোভা-যাত্র। জাঁকজমক আর আড়াবরের ফেন এক চ্ডাম্বত প্রদর্শনী। গাঞ্চের মরদানে কি সমারোহ সেদিন। ১৯২২ সালের ৫ই জান্যারী। সম্রাট পঞ্চর জ্ঞাজের কলকাতার সেই সম্বর্ধনা। ফোটা উইলিয়্মের ময়দানে প্রজেন্ট শো। কলকাতায় এক অভ্তপ্রেণ দৃশ্য।

কিছ্ব দিন আগেই (১৯১১) দিলীতে ব্রিক সমাটের দম্মবার হয়ে গেছে। তারপর জয়পুর প্রভাত রাজা দেখে পঞ্চন জর্জ ও রাণী মেরী এসেছেন কলকাতায়। এখানে জা দিনের কার্যসূচী। তার মধ্যে একদিন এই জান্মারী শ্রুকার ময়দানে এই পেজেন্ট শো হবে। আয়োজন করা হয়েছে এক বিশাল বিচিত আন্তানা। কলকাতানাসীদের ব্রিক ভিন্ত চান। করেক দিন মারেষ প্রচার হয়েরে তার নানা ধ্মধামের করে।

দৃপ্তের আড়াইটা থেকে আরম্ভ। কিন্তু কোল থেকেই ময়দানে জনস্রোত দেখা দিরেছে। দুপনুরের আনেক আগেই এ আগুলের সব পথে ভিড়। চতুদিকি জনতা। ময়দানে সাধারণের জনো সমস্ত জায়গায় লোকারণা।

সেই বিপ্লে জনসমাবেশে বাণ্গালী মহিলাদের বিশেষ চোখে পড়ে। তার আগে এত অব্তঃপূরিকাদের কোন উপলক্ষে দেখা ধার নি মন্নদানে কিংবা কোন প্রকাশ;
শ্থানে।

সকলের দ্ভিট স্দুদা প্যাভিলিরনের দিকে। সেথানেই প্রুম জঙ্গ ও রাশী মেরীর জনে সিংহাসন সাজানো হয়েছে।

ক্রমে বেলা দুপুরে হরে এল। মাননীয় অতিথিয়া তুখানা উপস্থিত হন নি সন্তিত্ত প্যান্ডেলিয়নে। তবে বাবস্থা মতন অন্-ণ্যানের ভূমিকা পর্ব আরম্ভ হল।

মিলিটামী বাণ্ড ঝমঝম শংক বেজে উঠল আকাশ বাতাস ভবিয়ে দিয়ে। ময়দানে উৎসবের সাড়া জালল। শোভা যাচায় নেখা গেল—বাহারী পোলাকে সারি সারি ঘোড়া। পেছনে তেমনি সারবন্দনী হাতি
তাদেরও দেশবার মতান সাজ। হাতনীদের
মানে মানে পাগড়ী মাথায় চোপদার। তারপার
টকটক লাল পোশাকে ইংরেজ সেনাদল এবং
থাকি সাকে দেশীয় সেপাই। তাদের সংকা
নিজেদের বাাশ্য পার্টি। তার পরে এক এক
জোড়া ভবনগর রথ। গ্রিপ্রেয়ার হাতীয়।
সেই রথ দুটিকে টেনে নিয়ে চলেছে। তাদের
পিছনে আসতে পাইক বরক্ষনাজ,
উটের দল যোড়ার দল আর অন্য হাতীয়।

কিছ্কণ পরে রাজ দশ্যতিকে দেশা গেল। তাঁরা রাজকীয় বান থেকে নেম এলেন পাাডিলিয়নে। তারপরই অনুষ্ঠান আরক্ত হল। বিউগল বেজে উঠল উল্লাসের স্বে। আর সেই সব অপুর্ব চলত দৃশ্যাব বলা রাজা-রানীর সামনে আসতে নাগল।

তাঁলের সায়নে প্রথম থকা নতুরোক শোভাষাতা। তারপরই আর এক অভূতপরে তান্তান। তা একই সংগ্রামন রুটবা তেমনি শোনবার মতন। বিরটে এক ঐকতনি বাসনের দল বাজিরে চলেছেন। বাদকবের महस्ता अक्ना का नगा अक्टलंड वाल्मालीः আৰু ভালের মেন্তা দক্ষিণাচরণ সেন। সংগীত क्षत्रास्त्र बाद्या अक खाल्हर वर्गमा। व्यर्ट खेक्छारम्य शरहाकाँडे यानायन्य सम्मीव ব্যক্তে জনতীয় সংগতি-বিগত ইট होरित्र कारकार्थे। प्रीकाशहरक CEIPITE লেনের বিব্যাত হু বিহন অবেশ্রী তান श्रम् अञ्चलकार्थे नामनात्रमीत्र प्रकार क প্লামিত ছার গেল। পোডামারার অমা সব कार्रामक बार्या करे विश्वात कार्यां को जानकी করেছিল প্রায় জন্ম । তিমি আবার তা ভাল করে শ্লেডে ফেলেছিলেম। আত পারের ीसम आवेशामारम स्थानसाल शर केक श्रमारमः कर्त्वाञ्चरकम क्रीकमानवशस्य । मञ्चारपेत बाज्यां विश्व वास्त्रमात् एम खार्क ज्योत P2725 किर्ण के ब्रिएक राजा। प्रशासन्तित एमरकारी राजार ह र्जापन करकरियोग भारत रमचा जिल्लाकरणा টিভিয়াল পাইক মত কদের দল। মহার-क्षात्रक राज्यात भरिकालगांत प्रशासकाञ्चल अहे কশকী নাজাও দেখবাল ছাত্ৰন ভাৰেছিল।

किन्छ रममन निनदारगढ़ अगास द्वारहासम নেট। এখন বর্ণনার দিবল-ক্রেনিনেব ভাৰতীয় সংগাতে লাখ্যাকা *আক্রেপি*টা वाजामत कथा।

অম্ভেরালার পরিকাম তাল প্রের দিন ভারিশে) (STOTE 6-3-555 উল্লেখ পাওয়া হার র

"Babu Dakshinacharan Sen's band Barty stood in the middle playing a sweet gal a tune".

को जातिथारहै Statesman शकाम करत-Both processions were headed Maharaja Tagore's Indian b Maharaja Tagore's Indian which played under the dir of Hon. Superintendent Babu Chandra Mükherjee and band ters Professor Dakshina C direction Charan rers Professor Daksnins Charan Sen and Babu Gopal Chander Ba-nerjee — Indian music resembling in character the chants of Western in character the chants of Western music. It also played at the en-the National Anthem, the effect in the Indian instruments, being rather world but by no means unrather world but hy no means un-niessing. After heading the proces-sions as roal as the paylion this hand fook up the diately in from of the thane and plaged at intervals as the proces-

শ্রেটটসমাদেক এই বিকাশ পোরে পারেয়া দক্ষিণাচরণ প্রমানেধর নেত্রে সেই शमकातानी व्यक्तीय यटना বাজিকে-विरामन, क्षीता বে ভাৰতীয় সংগ্ৰীত



সক্ষা হৈত্য পাশ্চাতা ধ্যুণে হয়, ভারা শেৰে বৈNational Anthem আমলের সেট আভীয় সংগতি · METER Signific God Save the King Emperor! বাজিলেভিলেন ভাও উপজেগা হরেছিল তালের সিংহাসনের অর্থাং পশাম কর্জ ও খোঁবর একেশারে সামদেই ছিলেন অকে জ্যা-বাদকাদের দল এবং সামরিক বিরতির পরে ক্ষেক্ৰামই তাম শুনিয়েছিলেন शरक ब(अंग्री।

अधास त्रिक्रिमास्मात्र अहे विवस्त **धक**ि कुल खारह । रशाभागान्त वरण्या-भागात्मक भारती इत्य हत्येशायात्र ।

আগতেবাজার পত্রিকার প্রতিবেদনে আরো বিশ্তারিভভাবে পাওয়া যায় বন্দসংগীতের সেই বিরাট জন কানের কথা। কতজন বাদক ছিলেম ভার উল্লেখের স্থেগ কি কি রাগ मिहे बालवामान द्वालाइन, स्कान् दकान् াজে তাদের নামও ৬-১-১৯১২ ভারিখের অন্নান্তবাজার পরিকার প্রকাশিত €0 1--

The ancient Indian band of 100 performers has been equipped and trained under the supervision of Maharaja Tagore. The instruments by the band have all been specially made from ancient models for the present occasion for the Imperial Recention Committee.

1. Ragini Sarang (composed by Mahara Tagore)

Imperior.

Ji Ragini Salang (composed by Ragini Imon Kalyan (composed by Maharaja Tagore).

Si Ragini Shankara (composed by by Maharaja impuri 3) Ragini Shankara (composed by Professo: Sen). 4) Indian March (composed by Pro-

The following Indian musical instruments were used in this pand: Il Banshi-hamboo fute—an ancient wind instrument of the Hindus. Tubri—a pastoral wind instrument with double tubes. Also used by Snake charmers.
3) Juhatnjree (?)....consis hollow rings of copper

enclosing

helle little Kartaul--cymbals

Ghanta—cup-shaped bells. Surmangal (?)—true Hindu origin

gin
7: Jagajhampa 8) Kara, 9) Tichora
10: Dhak, 11) Saringhee 12: Shankha. 13) Mridanga, 14: Nakara, 15)
Kartar—of two pieces of wood, 16)
Pillagovi or Murali, 17) Nagasvar,
Mukh-vina, 19) Moshund or
Bazana, 30) Turi bheri, 21) Rabab,
22) Saradiya vina, etc.

উলিখিত মহারাজা টেগোর ছালেন শাথ্যবিস্নাঘাটার প্রদ্যোতকুমার ঠাকুর। তিনি রাজা সৌরীন্দ্রমোহনের পতে এবং মছারাজা ষতীন্দ্রমাহন ঠাকুরের পোষ্যপূত ও উত্তরাধি-কাৰী। তিনি পারিবারিক স্তে এবং আবাল্য পরিবেশে সংগতিক হতে পারেম। উন্ত ২০০ জন বাদাকরের প্রাচীন ভারতীর বাদনগোষ্ঠী মহারাজা প্রদ্যোৎকুমারের আন্-কুলো, অথ বারো গঠিত হয় একথাও সভা। কিব্তু মহারাজা টেগোরের তত্তাবধানে শিকা-প্রাণ্ড' একথা আক্ষরিক অথে দেবার প্ররো জন নেই। সেই একশজন বাদকের শিক্ষা দেন দক্ষিণাচরণ। কারণ তিনিই ছিলেন সেই বিরাট যক্তী সম্প্রদারের প্রকৃত স্রসংঘোজক ও শিক্ষাদাতা। প্রদ্যোৎকৃষার ভেন্ন কিয়াসিন্ধ স্পাতিক ছিলেন না।

সেখানে অনুষ্ঠিত সারংগ ও ইয়ন কল্যাণ छारण प्रतिव अत्वकात यत्न श्राताशक्ष्मारतर नाम ग्रामिक हरमक रन विवस्त जारमह कारन शास साहर्ता भागमता वाचर दी-छठान क्षाति-अत क्रम **क मार्डिक मन्मिन्**राहतरनद जानि द्वाराष्ट्र जन्छायमा । जामानिक ट्यानिना श श्लीवरद ख्रिकारम अय्क्रम क्रीडिक मनारवद ভগর আলৌপত হত। সাহিতাকেরের মতন স্পাতি জগতেও তার অপ্রাপা ময়।

ভারতীয় সংগীতে প্রথম ইউরোপীয় यारक ज्या शकेन । श्रीत्रहालम, मण्या में ब्रांशरक (অর্থাং যে সমস্ত রাগে বিবাদী বা বাজাত দ্বর নেউ) পাশ্চাত(রীতিতে 'হর্মানাটক' कार जाक गोत जान कान जान जाना जाना भारात अक्रम रानारिक भिक्रिक गठिक करा --- এসবের জনো দক্ষিণাচরণ সেনের নাথ্ট শ্মরণীয়। ভারতীয় রমগুর ভিক্তিতে বোপীয় ধুরুনে Blue Ribbon Orchestra- - বু প্রবর্তন করে তিনিই এদেশে ঐতিহ্য সালিট করেছিলেন। পশুম জর্জের এই পেজেন্ট শোর প্রায় ৩০ বছর আগে থেকে দক্ষিণা-চরণ তার অভিনব অকেপ্যা বাদন **আর**ম্ভ করেছিলেন। সেই ৩০ বছর যাবং তার ব রিবন অকে স্থাি অতি প্রাসি**ংধ লাভ : করা**র ফলেই তিনি সেদিন এই বৃহৎ অনুষ্ঠানের দ্যিত পান মহাদা

ফেদিনকার এবেত বাদনের জন্যে যে দীঘ'কালের প্রস্তৃতি ছিলা, তা ধারকা যায়। দক্ষিণাচরণের ব মকে^{স্ট্রা}র অভিজ্ঞতা না **ধাকলে অকস্**মাৎ সেই পেজেন্ট শো-তে ১০০ জন ষশ্গীর ভারতীয় রাগে, দেশীয় যুক্তে ইংরেজদের শোনান সম্ভব হত না হামেশিনাইজ এতগঢ়লি । গং। সম্ভাট **পণ্ডম জন্ধ**ি কিংবা বডলাটের সামনে অকে দ্টা বাজিয়েছিলেন এবং প্রশংসিত হয়েছিলেন এ জনোই দ কিণাচরণের গৌরব নয়। ভারতীর সংগীতে 'হামে'নাইজ' করা রীতির বংশ-বাদনের তিনি প্রবতকি ভিলেন, শ্রেষ্ঠ গুণী ছিলেন। সংক্রাং এ বিষয়ে যোগা প্রতিনিধি রুপেই তাঁকে আনা হয় পেজেন্ট লো-তে। তা⁻ই তার গ্ণপনার স্বাকৃতি।

ভারতীয় রাগে হামনিট্র ব্যাপারে আরো কথা আছে।

দক্ষিণাচরণ পাদচাতা ব্লু বিবদ অকে দ্যা প্রথম পত্তম করেন ১৮৮৩ সালে। ভারতীয় স্পাতি হার্মাইজ করার স্ভান্ত অবদ্য বাংলাদেশে ভারত আগে আছে। সুক্ষ্ম বল্লোপাধ্যায় ভারতীয় € . ইউলোপীয় ^{স্থাতি}ত বাংপ্দ হন তর্ণ বরুদেই। তিনি ১৮৬০ ৷৬৮ সালে প্রথম চামনিট্র করেছিলেন। তার নিদশান আগ**্র** কৰি

Hindusthani Aira Arranged for the Piano Forte প**্ৰতকে (১৮৬৮ সালে প্ৰকাশিত)। কিন্তু** কৃত্ধন কোন অকে স্থা গঠন বা স্থাৰত ন করেননি। সে গৌরব দক্ষিণাচরকেট প্রা**পা।** ৪০ বছরব্যাপী তার দায়া সন্দাত্তিক্রাবন मिक्नात्वम जरक यो गठम छ भौतकामारङह

অভিনাহিত করেন। ভারতীর স্পাহত নামা শৃশুলৈ হলে তিনি হরেনিট্র কর। এবং তার ভিতিতে অবেশ্রীর স্থেনাড্রেই হাম থার্কেন ভারতিন।

ेर्जीयमः बहुपारतक खन्द्रपटेराज प्रीक्रमाहराग 500 - अन वास्कारम्य निरंत कारकाची गामित्रहेडिकाम । किन्छ सामा महात्व करेन ता निवर्त पारक प्रोप्त छोत्र वामा करायन मेर्था शायल ३५ १५० छन होता जालवार নিখাতে ইউলোপীয় রাভিত্র নিরিত্র ভাল অকৈশ্বী সম্পূর্ণ আন্দার নহা, একথ শ্ৰীকাৰ্য। কারণ প্রশাসন পাল্ডাতা करक भी 500 1500 क्षम बामक जिल्हा গঠিত হওরাই বাতি। পিয়ানো বক সাপরিছার্য। ৮৮ চাবিছার ৮ সংক্রের ভার যাল্য পিয়ানো ব্যাপকত্য সুদ্ধের প্রিথ নিয়ে পাশ্চাক্তা অকেন্টার প্রধান ঐশ্বর্ণ। সেই পিয়ানো দক্ষিণাচরপের অবেশ্রিক कथामा वारक्षामा कावन जीव एम बद्दामाना যাত ক্ষেত্ৰ সংগতিক ছিল না এবং এলে'ল পেলাদারি জীবনে গ্রোডালের কাছেও ততখানি আন কলা সম্ভৱ চহান। জা ভাভা যথার্থ অকেপ্টার চার্যটি আংশে (বেস টেনর অলাটো এবং সোপ্রামো) মিদিপ্ট থাকে বিশেষ বিশেষ যন্ত। খাদ থেকে ক্রমে চড়ার দিকে বেস টেমর অলাটো ও সোপানো সেই সত সকো নিজিক জেকলে বাজাবার প্রথা। দক্ষিণাচরপের প্রকে ডেমনি নানা মালাবান স্বৰু এবং উপয়াক সংখ্যাত বাজানো সম্ভব ছিল না। সংগতিরও অভাব এবং অন্ত সংখ্যক সিল্পীকেও নিদিশ্ট যাতে প্রস্তান্ত করা অসমভ্রে। সে ষ্ট্রের সাজগীতিক প্রিপিথাকৈ ইউরোপীয় বাঁজিয় বিবাট আকারের আকেপ্টা গঠন দক্ষিণাচরণের পক্ষে কারণেই সম্ভর ছিল না। তোঁর পাক যত্থানি সাধা ছিল তা তিনি করেছিলেন অপ্র নক্তায়। রাগেণ শাশ্রতা অক্র রেখে তিনি পাদনাকা প্রথাক্তক ভাষানাইজ করেন। আর রচিত 'প্ৰীস'গালৈ নিয়ে বাজে তাঁদ আকেম্টা। উপযান সংখ্যত এব[ু] নিদিশ্টি সূব যক্ত বিশোষ তার ছিল না। তবা তা এই আর্থে আর্কেস্ট্র যে, যাত্রীরা ভিন্ন ভিন্ন আংশ বাক্তাতেন এক-ষোগে। একই সার সকলের হাতে বালতে না। অর্থাৎ লা কনসার্ট নয় রীতিমত অকেন্টা ছিল সংগীতে। অংশাত অগ্নিলের ছাথো বহু, মিল ও দ্বৰস্পাতি যথারীতি বিকশিত মত। ভারতীয় রাপ রূপ শুস্থ রাথার বিষ**া** তিনি ছিলেন যেমন নিন্ঠাবান সভক। যে যে রাগে বিবাদী স্বর আজে সেস্ব রাগ তিনি অকে স্টার জন্যে কখনো নির্বাচন করতেম না। তার এই সংচিশ্জিত আভিমত ভিল যে, হার্মনাইজ করবার সময এড প্রকার প্ররাগতরের মধ্যে বজিতি স্বর -প্রাসে পড়তে পারে অসাবধানে। সেই সতক্তার জনো তিনি সম্পূর্ণ বাগ (আছাৎ বেসব রাগে স্বগ্লি শ্বর বিদা-য়ান) জিলু কথনো অকেন্দ্রীর জন্যে হার্ম-माईक कर्तान नि।...

নিয়াসিক বাসক্রাপে ব্যক্তন্তগর বহুব্বী ক্ষান্তর বিজ্ঞা। বিশেষ করে বের্চান ও বালাকে ক্মিন ক্রিনেন ক্ষান্ত বেহুলা ক্ষাক। তেনান বড়ুবোলে বালিত বেহুলা ভালা ইকালি। বল্যা তার ক্ষান্তর (ক্রেলা, ভালা ইকালি। ক্ষান্ত তার ক্ষান্তর বালা নাবর ক্ষান্তর ক্ষান্তর বালা ক্যান্তরকট্ বালাট, ইউকোনিয়া প্রকৃতিতেও ক্ষান্তর ভিনি লিকা লিকে অকেন্দ্রের ক্রনে প্রকৃত ক্ষান্তর। তারকো অকেন্দ্রের ক্রনে প্রকৃত্ত ক্ষান্তর। তারকো ক্রান্তর বিভিন্ন বিলা তার। সূত্র ক্রান্তর সংবোগ ক্ষান্তর্কর (হ্লান্ট্রেকান) ক্ষার্য ভিনি প্রথমে পিরনেনেতেই করে নিজেন। সেই
পিরনেনার সূর থেকেই পর্যালীপ করতেন,
ভাইদের পেরকেন নানা হতেন। আরু তার
কাপানিক বিষয়ে, বিশেষ আরুতীয়
সংগতিত তার পাশিকতা ছিল গড়াই।
ইউনোপীয় রাভিতেও বে রাভিয়ত ভাইচর
ভালে, একরা বালা বাহেলা। মুই প্রায়
সংগতিত তার অপতান্তি, ভিতার রাভিন্
ভালা এবং ব্যবহারিক হয়েক বিষয়ে কর্মার
তার রাভিত সংগ্রহার ব্যবহার কর্মার
তার বাহানিক সংগ্রহার ব্যবহার কর্মার
তার রাভিত সংগ্রহার প্রাতিনিকর প্রয়

প্ৰকাশিত হমেছে

नकुन छलनाज

আশ্তোষ ম্খোপাধ্যায়-এর

ञान भ র भ 🛌

আনস্বাদেশ্ব শক্তিমান ভূতানি জাইতে, আন্দেশন জাতানি জীবতি, আনস্বাদ্ধিতিক স্থানতাতি ।'

সেই সব[্]ষাপ[†] আনদদ থেকে সমস্ক প্রাণীর আবিজাবি সেই সব্^ৰষাপ[†] আনন্দের শ্বার। সমস্ত জীব জীবনের প্রাণের স্পদ্দন, সেই **সব্ব্যাণী** আনন্দের মধ্যেই তার পরিণতি অনাপ্রবেশ।

এই লেখকের

দুটি প্রতীক্ষার কারপে ৬: অপারাচতের মুখ ৭: थनित नजन मणि

ाग्र व शक्तिक

¢.

প্রফল্প রায়-এর সর্বাধনিক উপন্যাস

निटजं मटज पिथा

নোবনের শের প্রানেত পেণীছে লাশ্সট সোধ্যে নর লাভা নাটো এক গুরুলীর সংস্থাপে এসেছিল। লাভা বেন মেরে নর, সে একটি লগাল। এই লগালে সোমেলবর হঠাক নিজের প্রতিবিদ্ধ দেখে চন্ধাকে উঠকো। নিজের সাল্যাপ্রদেশ শ্রুছাল কাহিনী মার, মনোবোগা পাঠক এর মধ্যে নিজেকেই আবিক্ষার কর্মেন। দাম : আটি চারা।

এই লেখকের আলোয় ফেরা ৯

[তপন সিংহ-র পরিচালনার 'রাজা' নামে সিনেমার আসছে]
লেখনে জনান উপনাসঃ

সুখের পাখি **বনেক দুরে** আমার নাম বকুর ৭ वश्वा

ক

٩.

٩٦

नवन्त्र श्राकान्यक्षक्ष यहे केन बहुक कविनाद्या सवस्थाय कवि

দেজ পার্যালাগিং C/o দে বুক ক্টোর, কলিকাতা-১২, কেন : ৩৪-৫০০৫

জ্ঞান <u>ভারমোনিয়ম</u> সাত প্রথম ও শ্বতীয় ক্ষার (১৯০৬ না বইরের চারটি সংস্করণ ক্ষিত্রবিধার পাক বিশেষ প্রয়োজনীর। তেয়নি স্থান্থ্ৰ ১৯২২) প্ৰত্যাপালি সংগতি शिकाशी प्रथ भटक ।(मह भट्याकर्नास । एकाँ-ইপ্শান্তৰ বৈষয়ে তাৰ পৰিণ্ড প্ৰতিভাগ পরিন হিন্দো প্রথ क्यांकर सार्वास (১৯২৪) এ শ্বভাষ ভাগ (১৯২৫) অবশ भाक्षा । । अकार्श्वासन्द शतदात्रिक असास्त्रास्त्र বিষয়ে তেনি কতখান সচেতন ছিলেন এবং ছে। সিশ্ব ক্ষর্যার বিষয়ে কি ঐকাশ্তিক ছিলেন তা তাঁৱই একটি উলি থেকে জান বার সর্জ হারকোনিয়ম সূত্র প্রথেপ ভামকাস তিনি লেখন 'এ প্রাণ্ড গানের খ্যর্কাপ্পূর্ণ বহু, প্ৰডক প্রকাশিত হইয় ছে কিন্তু ঐ সকল স্বর্গালিপ দ্রটে প্রাম লিংহা পুলালী কোম পাস্তকে লিখিত হয় নাই। এজন। এই পণালা ইচাতে আতি বিষ্ঠুত ও বেশদর্কে লিখিত হইয়াছে। 'তাল পরিবভূমি করিয়া বাজাইবার প্রণালী'ও किम वर्गमा क वर्षम अञ्चलकारम् । जात একটি গ্ৰাহণাণ বিষয়ত তিনি বিজ্ঞান জনোচিত আলোকপাত করেন: 'প্রত্ক দাপ্টে সংগাঁত শিক্ষা করিছে তুউলে। উত্তা রক্তে হাত। শিক্ষা নিভান্ত প্রয়োজনীয়। ভাষ্ট মারা শিক্ষা আধিকাংশ প্রস্তাকে আভি সংক্রেপে দেওয়া থাকে সেজনো তিনি বিস্তানী ভঙাবে এবং সংজ্ঞাবাধা ব্রীভিড মারা বিষয়ে আলোচনা কারছেন এই পঞ্জে। এমনি নানা প্রোজনীয় এবং স-দশ্টেদত নিদেশের জানে। তবি বইগালি নিশেষ ম্লাবান হয়েছিল। বিশেষ তবি দাই খণেড রাগের গঠন শিক্ষা সলগাঁতের ছাত্র ও জিজাস: সকলের পক্ষেট অপরিহার্য বলা যায় তবি সমগ্র সংগতিভাবিনের চিদ্তা धार क्षां इक्क होत् क्षणभ्यत् । अहे । शुरुश्द खात्र हार्वाह शन्छ तहनाट भविकञ्चना छौत ছিল। সেক্সনো উপকরণ সংগ্রহও করেছিলেন ট্রপদ্কভাবে। কিচ্চে ধ্বক্তীয় খচত প্রকাশের পরর তার হাতৃ। হয়। আব অপুণ্ থেকে মার আরক্ষ মহং কাজার।

রাণাসংগীতে অভিনার অকেম্ট্রা প্রব ভানের জনে। কেবল নয়। সংগতি বিষয়ে গভার পাশিভাতোর জানোও সংগতিসহাজে সম্মানিক ছিলেন দক্ষিণাচরণ। প্রিণ্ড বরুসে ডিনি আচায়ে'র শুম্পার আসন লাভ করেছিলেন। সেকালের গণড়ীবাধ সংগতি-চচার ক্লেন্তেও ভারে জীবিভকালেই কোন

কান পুস্তকের ভিনটি চারটি সংস্করণ वान्य लेकाणीयः मन्गीलामवीतम्ब स्रीवान তার প্রভাবের এ এক পরোক্ষ স্বীকৃতি।

মধ্য জাবন থেকেট দক্ষিণাচরণ কৃতী াণ্যায়ণ্ডলী গঠন করে সংগতিসমাজে বিরাজমান থাকেন। তারি শিক্ষা বারা পেরে-ছালন ডাদের মধ্যে বেশি ছিলেন ব্র বিবন প্রকেম্মার বাদক গোষ্ঠী। তাদের অনেক-কই দক্ষিণাচরণ একাধিক বাদাযাণ্টে স্থাঠিত করেন। তারা প্রত্যেকেই ইউ রাপীয় সংগীতে কিছু, ব্যংপ্র হন মাচাযেরি শিক্ষায়। তাদের মধ্যে বিশেষ ুছেখা হরিচরণ দাস (বাঙালীদের মধ্যে এমন ন্দক্ষ বেহালাবাদক অশ্পই ছিলেন), কিরণ চণ্দ্র মিত্র (দক্ষিণাচরণের পরে ইনি নেতা-ব্পে তাকে স্ট্রাটিকে ক বছর বাঁচয়ে রেখে-ভ্ৰেন) কুঞ্চন্দ্ৰ দাস (বেহালা ইউফোনিয়ন এবে। প্রভৃতি বাদক- এ'র কথা পরে বিশেষ-ভাবে জানাবার আছে) শরংচন্দ গ্রিক (উরু াকরণচন্দের প্রান্তা, ~তাদের বিষয়েও পরে মারো বন্ধবা আছে) কৃষ্ণচূদ্র গুত্র ('রাগে?' গঠন শিক্ষা' প্রভৃতি রচনায় দক্ষিণাচরণে ^{भर (धा}रिका करतम) *सम्बन्धान प्रा*म कांकिक শাল যোগীদুনাথ দাস, লক্ষ্যীনারায়ণ বাস প্রভৃতি:

দক্ষিণাচরণের বাদকমণ্ডলীতে ছিলেন না এমন শিষাদের মধে৷—শোভাবাজরি রাজ না এমন শৈষাদের মধ্যে—শোভাবাজার রাজ-গোপালপ্রের যতীন্দ্রকিশোর রায়চৌধ্রী গোরীপরের স্বনামধনা রজেন্দ্রকিশোর রায়-চৌধ্রী প্রমাথের নাম করা হায়। বাংলার এক কারণীয় সংসংতাল ব্রজেন্দ্র কিশোর নানামুখী দেশরতী জীবনের মধ্যে তরুল বয়সে পাথোয়াজ শিক্ষা ক'বন মুরাবি-খোহন গ্রেণ্ডর কাছে। কিন্তু পরবত্রণী জীবনে ক্লেড্রাকশোর সংগীতজ্ঞর পে ঐপর্পত্তিক চর্চাতেই মনোনিবেশ করেন। তাঁর অহোনলের সংগতি পারিজাত মৃত্র গ্রন্থের ব্যাখ্যাসহ অন্বাদ (সংগতি বিজ্ঞান প্রবেশিকা মাসিকে প্রায় সম্পূর্ণ প্রকাশিত). বিভিন্ন রাগের আলোচনাত্মক প্রবন্ধাবলী ভারতীয় সংগতিভত্ত সম্পর্কে নামা নিকাধ তার সংগীত জ্ঞানের সাক্ষাস্বর্প বিদামান। वशास तकना এই या न्यान्यक्तिमात निर्मय-ভাবে সংগতি-ভক্ত বিষয়েই শিক্ষা করতেন দ^{িক্র}ণাচরণের কাছে। দক্ষিণাচরণের সং**ল্**ল বজেন্দ্রকিশোরের প্রায় ১৫ বছরবাংশী 'শক্ষাথী'র্বেশ যোগাযোগ ছিল। আচাস্

n Control Scory-মহাশয়ের क्टिमार्वर व्यक्त श्रद्धकित ६६ वक्ता ক্রিন্ত দক্ষিণাচরণের কাছে ভগনো ভার क्षेत्रशासक विषय मिकात वित्रों किन जा। 'অতিগুণী লোক ছিলেন', দক্ষিণাচরণের নাম করে ব্যক্তেন ব্রজেন্ত্রকিলোর। ভক্তিশা-চরণের সংগতিবিদ্যার প্রতি প্রশাসবর প জার মাতার পরও তারি পদ্দীকে আজীবন ব্রজেন্সার মাসিক ব্রতি দিয়ে গেছেন।

, দক্ষিণাচরণের একটি শিষ্যা গোষ্ঠীও উল্লেখনীয়। সদাচারী এবং পরম চরিত্রবান বলে দক্ষিণাচরণের অতিশয় সুনাম ছিল। সেজনো পরিচিত অপরিচিত নানা গাইস্থ পরিবারে প্রাংগণাদের সংগীতিশিক্ষার ভার-প্রাণ্ড হতেন তিনি। তার সেই আলতঃ-প্রিকা সংগীতশিবারা কোন দিন প্রকাশে অনুষ্ঠান করেন নি বটে। কিন্তু তাঁদের সূত্র সংগতিকা আর একভাবে কিছ প্রসার লাভ করে, একথা বুলা হায়।

দক্ষিণাচর পর জাবিন একনিক সংগতি মন্শীলনের এক উজ্জনল গখ্যাত পরিবারের এক দরিদ্র সক্তান প্রতিভা অধ্বসায় ও ঐকাশ্তিকভায় মংগতি জীবনে বিপুল প্রতিষ্ঠা আরু ন করেছিলেন। আর বাংলার সংগতি ইতিহাসে বিশিষ্ট স্বাক্ষর রেখে যান। দক্ষিণাচরণের জীবনকথা সংক্ষেপে বিবৃত করা হল এখানে ৷

১৮৬০ সালে তার জন্ম (১. ফাল্যান ^১২৬৬)। ২৪ পরগণার বারাসাত মহকুমার ম:হশপার গ্রামে তাঁদের আদি নিরাস। পিতা নীলমাধৰ সেন কলকাতায় প্ৰিলশ ইন্সপেকটরের কাজ করতেন। একমতে দক্ষিণাচরণের জন্ম মাংলপারে। অনা মতে. তাঁর জন্ম পিতার ুলালয়ের কলকাতা গাহে। এক বছর রস থেকে দক্ষিণা-চরণের শোভাবাজারের বাস আরম্ভ হয়। প্রথমে পাঠশালায় বিদ্যাশিক্ষা। তারপর ^{ভারু}র•টাল সোলনারী ও কুইন্স **কলে**-জিয়েট স্কুলে। কিন্তু এন্টান্স পরীক্ষা পার হতে পারেন নি। বিদ্যাচচায় বাধা হয়েছিল হাঁর সংগীতে একাশ্ত আসক্তি।

বাল্যকাল থেকেই দক্ষিণাচরণের সংগতি এই অনুরোগ প্রকাশ পার। স্বেখানে গান বাজনার কথা শুনতেন, পাঠ ও খেলা স্ব ফেলে সেখানে উপস্থিত হতেন। আর তন্মর হয়ে যেতেন সংগীতে।

কাছেই নম্পরায় সেন স্ট্রীর্ট (এই পণ্ডেই ২০ সংখ্যক বাড়িতে স্বনাম্ধনা টেপাচার্য নিধুবাব্ অথাং রামনিধি গুল্ড ১৮৩৮ দালে মৃত্যু পহকিত বাস করেছিলেন **४वः बाम्बाह्यकाला, ১৮৬৯।१० आ**रम সেই গতে তাঁর বংশধরণাণ নিবাসী ছিলেন)। সেখানে নন্দরাত্র স্থাপিত বিরাট রামেশ্বর শিব্মন্দির। বালক দক্ষিণাচরণ সেখানে মাঝে মাঝে যেতেন। কারণ এন্দির চত্তরে বাঁশী বাজাতেন রাজেন্দ্রনাল মুখো-পাধ্যার নামে একজন বংশীবাদক। ভরি वींभी भद्राम मिक्नगाठतम् सून्धं राज्ञ यान।



লৈ থাপুল হয়ে সাজৰ বালী সেধবাই কৰা: তথ্য তাৰ বহন ১০১০ বৰ্ষ। এত Wine Grow प्रारम्भागांग चौरम अभिनी COMMING STREETS | TONG BOUCH HOME क्रियात निरक्त क्रियान समा हम्हे । आसक ক্ষেটার এক পর্ব উপলক্ষ্যে বিন্নালন একটি रेथेनेमाद ये वीरना वर्गिन। रेजई वीनिएडर्ड রাজেলার্কার কার্ছে স্কাতিত তার হাতে থাঁও হল।

নৰজাত প্ৰতিকা এবং অদল্য আগ্ৰহে সেই থেলার বালিতেই সতে ফোটাজে লাভালেন ২০ ৰছবের বাশক। ভরেই তার আদ্ভয়া সংগতিশলি প্রকাশ লেভে লাগল। যে কোন बारमा गाम गरम गरम वाजारकम वीभारक।

এমনিভাবের সংগীতচর্চার किए काल গেল। ক্রিন্ত সেই বাশের রাশীতে গানের সংরে মন ভরণ না বেশি দিন। সংগীতের পিপাসা তার প্রবল হরে উঠল। শিক্ষার জন্যে আয়ো যশ্রের জন্যে অস্থির হলেন মনে মনে। আর উপয়ন্ত গাণীর সংধান করতে লাগলেন। যেথানে আনেক শিশতে পারা যাবে। শোনা স্থাবে অনেধ কিছু।

দেখতে দেখতে তার ব্যুসত একটা বাড়ল। পার ছলেন স্কুলের গ•ডী ৷ এনটাল্স পরীকা না দিয়েই লেখাপ্ডা হাততে হল।

এমন সময় শ্নলেন কালিপ্রসম বল্লো-পাধ্যাহরর কথা। তিনি সেতার সূরবাস্থার কি সৰ হান্দ্ৰ বাজাম। তাঁর বাজি আহিরিটোলায় ১৩, গোলোক দত্ত লেনে। শোদ্ভাবাজার থেকে বেশি দূরে নয়।

থোঁজ করে দক্ষিণাচরণ চলে গোলেন গোলোক দত লেনে। বৈঠকখানায় বসে তখন কালিপ্রসন্ম বল্দ্যোপাধ্যায় সূরবাহার বাজাচ্ছিলেন। ঘরে চ্কতে **সাহ্স হল** দক্ষিণাচরণের। জানলার পাশে দাড়িয়ে শানতে লাগলেন। কি চমংকার तासम्भा ।

যতক্ষণ হল, দাঁড়িয়ে দাঁড়িয়ে শা্নলেন ! পরের দিন আবার গেলেন। তারপর প্রতাহ গিয়ে শনেতে লাগলেন কালিপ্রসমের সর-বাহার সেভার, বৈঠকখান্দর জাদলার ধারে দর্গীভূয়ে।

দিনের পর দিন কালিপ্রসমের বাজনা শ্বনেই ডাঁকে তৃণ্ড থাকতে হচ্ছিল। কারণ বৈঠকখানার যাবার সাহস হত না কিছ,তেই।

কিম্ভু হুঠাৎ এক্ৰদিন কালিপ্রসয়ের দৃতি এদিকে পড়ল-জানলা থেকে একটি ष्ट्रका धक्यत्व राक्षमा भन्तरह।

তিনি देवर्शकाराच श्रदेश जारक काकरमान । किरकान कहरमन, 'क्यादन नॉक्टिया पास दक्त ?'

দক্ষিশাচরশের এবার ভয় ভালাল। তিনি नारन करत्र वनत्नन, आमाद्र नंता कृत्त वाक्या त्मधारक्य?

वामाका विकास कार्याम । गुनासम्ब कार्य अक्टीक লিকার একাত সামহ। কোন মতনকাতের

पाला द्वांद्र क्लिकार्य आकारत अकारित-वाहरू जीव चान्धाकर्मा भाषांत्रशा-বাটার ভার সংগতি বিদ্যালয় কিছ অহপট প্রতিষ্ঠিত হয়েছে। সেয়ও একজন ভাৰপ্ৰাণ্ড কালিপ্ৰসম। আপাতত প্ৰক্ৰিণা **চরণকে তিনি ভতি করে দিলেন** সেই সপাতি বিদ্যালয়ে। প্রতিষ্ধ বেচালা শিক্ষর বিহারীবাল চক্রবতীর শ্রেণীতে দ্বিণা-**5तत्नत द्वाला भिकाद श्राक्त्र्था हुन।**

বিহারীলালের কাছে ঐকান্তিক চেম্টার তিনি অতি হতে শিখতে লাগলেন। জ্ঞাব পরীক্ষার সময় অধিকার করলেন প্রভাগ স্থান। প্রেক্ষার পেলেন একটি क्रिक्ट श्रम বেহালা। তাঁর বয়স তথন ১৮ বছর।

এতদিন পরে স্পাত জগতে তিনি ভালভাবে প্রবেশের সংযোগ লাভ করলেন। কালিপ্রসল্ল বন্দ্যোপাধ্যায়ের সংশ্যে ত পরি-চিত ছিলেন আগে থেকেই। এবার সৌরীন্দ্র মোহনের সংগতি গোষ্ঠীর আরো গ্রেণীদের সঙ্গে ঘনিষ্ঠ হলেন। তালের কাছ পেতে লাগলেন নানা উপদেশ, নিদেশ। পাথ_রিয়াঘাটা ঠাকুর পরিবারের সংগীত দর্বার এবং এই সংগতি বিদ্যালয়ের পরি-বেশে বিভিন্ন রীতির সংগতি, বহু প্রকার যল্য এবং বিভিন্ন শি**ল্পীর সংস্তবে এলেন**। এখন থেকে প্রকৃত সংগতিক্ষীবানের অভি-জ্ঞতা আরুভ্ড হল দক্ষিণাচরণের।

বিখ্যাত ধ্রন্পদী এবং বস্গীর নাট্য-শালার এক সঞ্গতি পরিচালকর্পেত প্রাসম্প মদনমোহন বর্মনের সন্সে ভিনি পরিচিত হলেন। প্রপদ রীতিতে মোহন ছিলেন কলীপ্রসম বন্দ্যোপাধ্যার প্রমূপ পাথনিয়াঘাটা গোষ্ঠীয় নালা গুণীর গ্রবাহ্থানীর। তার কাছে দক্ষিণাচরণ লাভ করলেন নামা জানগর্ভ উপদেশ। মধন-য়োহনের সংগ্য ভার বিশেষ সাংগীতিক বোগাযোগ ঘটেছিল। পরবর্তী ভারিচা তিনি যে 'গীতশিকা' ন্বিতীয় ভাগ জনা করেন তাতে মদৰ্শমাহনের প্রসংগ পাওরা যায়। এই গ্ৰেতকে সভী কি কলাক্ষ্মী নামক বিখ্যাত গীতিনাটোর মদনবোহন কন্ত ক স্মসংযোজিত গীতাবলীর শ্বরিলাপ প্রকাশ করেন प्रीक्रमाहरू । ভূমিকার এ বিবনে ভিলি লিখেছেন, ইহাতে পতী কি কলভিকনী গাঁতিনটোৱা পৰনের গীতের স্বর্মালিপ প্রদুত্ত হুইরাছে। উত্ত गानगर्नामञ्ज अरुवा छेरक्न्छ । तथा अध्योष বিদ্যালয়ের পূর্ব অস্ত্যাপক, সংগ্রীদ্রশাস্ত विनायम "अमनस्यामन सर्थन अञ्चलक आहे जकन भारत नृत नश्रदाक्तवा क्रांका ... किन् এই গতিসমূহের স্বর্গালি ভরিলাভিলেন। কিন্তু তিনি অকালে প্রলোক্ষাত হওৱার তহিন জীবন্দশায় ঐ ব্যৱলিশ ম্বিত ও প্রকাশিত হওরা ঘটে নাই। আমরা ভহিন্ন

নিকট বুইতে যে সময় শ্রালিন মেন্দ্র প্রাণ্ড হইরাছিলনে, অধিকল নেইছুণ PETERS AND STORES THE काम मण्ड मीहार्थाक्ष क्रीन्स्ति ।

লেই ভয়াৰ ব্যাস পাথ বিভালটো कीवान्त्र महत्वानी वानिकान्त्र। देनीवीन्त- अश्वतिक शीवान्त्रात्रे शोकनकृत्व शीविक हत्सन , स्वाभागातम्ह . इत्योगायातम् अत्मा मन्याहर्त्वदे अक्षम कर्ती हता स्वाकाल-চন্দ্র ভারতীয় সংগীতের সংখ্য ইউরোপীয় ৰ ডিডেৰ বিশেষ ৰা হেপায় बिर्कान । বাৰক হিসাবে CHIPPING चिट्नम द्रारम नियुक्त পারদশী'। ভার कारकड দক্ষিণাচনৰ ইউরোপীর সন্দীতে প্রথম জ্ঞানলান্ত করলেন। আর একটি বিশাল সপ্ৰতি জগতের স্বার উপ্মান্ত হল ভার শিক্ষবানস্পটে। পাশ্চান্ত র**ীভিত্র চচার** তিনি নিবিশ্ট চলেন।

> ইউরোপীয় সংগীতে বিমাশ্য হল ভার চিন্ত। বিশেষ অকেশ্বী ভাকে পরম বিশ্বার আকর্ষণ করলে। তার ব্যাপকতায়, শ্বর-ধরনি বৈচিলো, ফলসংগীতের সমারোহে অপ্রে উন্মাদনা জাগল তাঁর মনে ! দল্গীতের এক অভিনৰ অনুভব ৷ ন্তুর দ্ভিতৈ তিনি স্পাতিকে দেখতে লাগলেন। মেলভির পরিবতে হামনি। একটি স্বর নর। একষোগে অনেক সূত্র ও তাদের সমন্বয়। বাহ্যত এবং খণ্ড ৰুড ভাবে অমিল, কি**ল্ডু** সমগ্রভাবে বহ**ু মিল। একট** मर्ला नामाधकाव धर्मन माना यस्त राखदाः অৰ্থ রাহণ করৰে এক অপ্রাণ স্কর-

> > শিশ, ভূমিষ্ঠ হলেই দরকার একখানা

বে বই-এ লিখনে ক্লমকল থেকে সাত বংসর পর্যক প্রতিটি উল্লেখ্য ঘটনার नथी ও ছবি রাখা বাবে

ৰণত আছে শিশুকে গড়ে জেলার পরিক্রপনা।

1070

ৰণে ও সজ্জায় অভুলনীয় मिला : भनत होका. শোক্তন ঃ প্ৰচিল টাকা)

> অমপ্রাশনে ও জন্মদিনের উপহারে অনন্য

শিশ্য দাহিত্য সংসদ প্রাঃ লিঃ **०२७ चाहार्य क्षक इ**न्हें दशाय । कनि-> ক্ষাৰ কত বীতিনীতি। কত ক্ষাৰ কংশাৰ অলন্দ্ৰৰণ হুদানাইছে-কা কিছু সংশা ক কোশলে কত বিভিন্ন ক্ষাৰ্থকাৰো ঘটানো। কি বিপুল ক্ষাৰ্থকাৰো মায়াজাল। গোপালাচ্ছ ক্ষাৰ্থকাৰাক এই নতুন পথ্যাত্তাল দক্ষিণ ক্ষাৰ্থকাই ৰাক্ষ্যাভ্য হলেন বাট। কিছু ক্ষাৰ্থকাই ৰাক্ষ্যাভ্য নিৰ্দ্ধে প্থ বছনা ক্ষাৰ্থকাই ৰাক্ষ্যাভ্য নিৰ্দ্ধে পথ বছনা

ভাৰ শিক্ষাণীনে কিছুকাল ইউরোপীয় ্লাল্পীত ভান্শীলনের পর উদ্যাদধ হল লকিণ্ডরণের স্জন্দীল প্রতিভা। আপ^র মেষা আগ্রহ ও অধ্যবসায়ে তিনি পাশ্চাতা ৰায়াছ আরে। অগ্রস্ব হলেন। ইউরোপে মালিত রেখামারা পর লিপির নানা piece লৈ সময় জামদানি হ'ল কলকাভার। ভাতে প্রতিক যতের barmonypart শিক্ষেপি সমেও। তিনি সোস্ব সংগ্রহ করে চ্চা করতে লাগলেন। লাম ঐকাণ্ডিক কাধনায় কে বিষায় তবি আক্রণ জি কালত হল। আরু একটি অকেম্ট্রা দল গঠনের প্রেরণা লাভ করলেন আন্তরে। সে সম্পর্কে উদোগাী চয়ে উঠলেন। ভারপর কয়েক বছরের প্রচেটায় তুলি সংগীত-সাধু প্রথম রূপ ধারণ করলো। কজন ভানুগামীকে নিয়ে গঠিত হল ভার Blue Ribbon String Bant নামে ব্যাপ্ত হলেও স্চনা থেকিট তা অকেপ্টা। কনসাট নয়। স্ব মশ্র বা কয়েকটি যুক্ত একত রক্ম সাং বাছাল-অর্থাৎ ঐক্তান-তা নয়। আলাদা व्यानामा भ्वत नद्वी এक अल्लाहे वाकर्ड থাকরে। অথচ সকলের সহযোগে রপেলাভ করবে একটি বৃহৎ সংগীত-প্রিকল্পনা। হামানাইজেশন : সংযোগ তালগ্করণের এক জ্ঞতিল প্রক্রিয়া। কিল্ডু নিয়ন্নবৃদ্ধ রাপায়ন। ভবে- আগেই বলা হয়েছে- ভাকে স্ট্রার সব হাকের উপকরণ দক্ষিণাচরণের ছিন্তা না। ভিনি দরিদ্র। তারি সংগতিশ অভাব। দেশবাসীর কাছেও উপযক্তি আন্ক্লা লাভ অসম্ভব ছিল সে যুগে। ৮ অকটেভের পিয়ানো ভার ছিলাই নাং আকে প্রাণ চার অংশের —বেস টেনর অলটো ও খোপ্রানে।—জ্নো নিদিশ্টি সব যাতও তিনি সংগ্রহ করতে শারেননি। তব, তা কন্স্ট নয়— সাংগতিক হতিতে প্রথাগত অকেন্দা।



এদেশে দক্ষিণাচরণের আগে তার অভিতম্ব চিক্র না।

দক্ষিণাচরণের অকে শ্রীর আর একটি বিশেষত প্রথম থেকেই স্প্রকাশ। ভারতীয় সংগতির ভিত্তিতেই তিনি অকে স্মা গঠন ও পরিচালনা কমেন। এক একটি সংপ্র রাগ ছামনি।ইজ করেছ তার অকেপ্টান্ন সার-বচনা। সেইখানেই ভার কৃতিৰ এবং কৈলিখন। জারভায় সংগীতের ক্ষেত্রে এমন সাথ'কভাবে এত দীঘ'কাল যাবত তাঁঃ পুৰে' অকে'দ্বায় সাধন আগু কেউ করেন নি। নানা রাগে হাম'নাইজ করা অকে'"ডা কোরট প্রথম সুলিট। তিনিট এ বিষয়ে আদি দশ্টাতে। এ-ই তবি ব্ৰণ্ণ আদশ সাধন ছিল—পাশ্চাতা ধাগার সংখ্যা ভারতীয় সংগীতের একদিকে যোগ্থাপন। রাগ রাপ শাংধ তথে তামনাইজেশন। সমপূর্ণ রাগ্রালিকে পাখ্যাতা রীভিতে সংযোগ অলংকরণ। থাগের **শ**েধতার বিষয়ে এত সজাগ ও সত্ক ছিলেন যে কখনো ঔডব (দ.ই স্বর বজিতি রাগ) বা ধাড়ৰ বা খাড়ৰ (এক ধ্বর বৃদ্ধিত গ্রাগ) জাতীয় রাগে হাম^{নিইজ} করতেন না। বলতেন, 'এ চলবে না। হাম'নাইজ করবল সময়ে বজিভি স্বর এসে পড়াতে পারে। রাগ নত তরে যাবে ভাহকো।

কখনো কখনো অবশ্য তিনি প্রের ইউরোগীয় সুক্ষীতের অর্কেছিট। বর্তমে। অপাং রাক্ষেব ভিত্তিতে নয়, ত সুক্র্ পাশ্চাত লীতির। সেখানে সূত্র রচনায় রাগ্র সংশ্যাকো সুক্র রাখতেন না।

দক্ষিণাচরণ প্রথম এই রু দ্বিবন অকেণ্ট্রা দল গঠন করেন ১৮৮৩ সালে। ডবি বয়স তথন ২৩।২৪ বছর। তথি সম্প্রদায়ের বেশির ভাগ বাদকই তথন সৌখীন অর্থাং অপেশাদায়। কিন্তু প্রত্যকেই উপযাভ বন্দ্রী। দক্ষিণাচরণই ভাঁদের যোগা শিক্ষা দিয়ে গঠিত করে নিয়েছিলেন।

তাঁর বাদনগোষ্ঠীশ র বিবন নামেরও
একটি ভাংপর্য আছে। সে সময় র বিবন সোসাইটি বিশেষ কারণে প্রসিম্পি লাভ করেছিল ইংলন্ডে এবং সেখান থেকে কলকাতাতেও। স্নীতি প্রচারের আন্দো-লনের জনোই ওই সংখ্যা বিখ্যাত হয়। দক্ষিণাচরণ বভাবে বিশোষ নীতিপ্রায়ণ মর্মপ্রাণ ভিলেন কলে এই নামকরণ কলেন আক্সীর। বি উন্দেশ্য ভিল—সকলে সেন জানেন বে তিনি সদলে দ্বাতিবিরোধী। তাঁর সদক্ষায় কোন্যন্ত্র

ধার্মিক অশ্তরের প্রেরণায় দক্ষিণাচরকের
অক্ষেত্রীর প্রথম অন্ট্রান হল নম্পরাম
সেনের সেই শিব মন্দিরের বিশাল চকরে।
এখনেই রাজেন্দলাল মুগোপাধারের বাশালী
মনে তবিই কাকে বালক বরুসে দক্ষিণাচরপ সম্পাতির প্রথম পাঠ নিয়েছিলোন।
আরো একটি তথা আছে এ প্রসংগা।
প্রবতী সংগতিজবিনের বহু খ্যাভি ও

কর্মানাস্ক্রতার মধ্যেও প্রতি বছর নিক্ রাহিতে এই মান্দারে তিনি ব্রু রিবন অক্টেস্ক বাজিয়ে বেতেন। বেমন তাদের অক্টেস্ক হত বেল্ডু মঠে, বার্ষিক জন্মাৎসব্বে

तः वित्न अटक न्या मा मार्टिक आर्टिक দক্ষিণাচরপের ব্যক্তিজীবনের একটি কথ্য এখানে উল্লেখ্য। সাংসারিক অন্টনের জনো টকশালে তিনি চাকরি আর**ভ্ড করেছিলেন।** কিন্তু সংগতি তার চিত্তকে আধিকার করেছিল একাতভাবে। তাই, সংগীতচকার অস্তিধা হবে বলে এ সময় সে চাকুদ্র ভাগে করলেন। তথন থেকে সংগীতই তথ্ন জীবনের একমার অবলম্বন। **বন্দ্রসংগীত** भिकामानारकरे अनैवानत वृद्धि क्वारमन। অর্থ গ্রহণ কর্লেও শিক্ষাদান বিষয়ে জিনি ছিলেন অতি উদার একথা **জানা বার**। অনেককে বিনা ভাথেও শিক্ষা দিভেন। এবং বা বিবন স্থিং ব্যাহ্ম প্রথম প্রহন করেন অপেশাদারর পে। তেমনি সৌধীনভাবেই Philharmonic Band शहन करवी कटना। তালপর যথন বা রিবন আকে প্রা প্রবর্তন করে নানা জায়গায় অনুষ্ঠান করতেন কেখন থেকে অর্থ নিতেন অকেম্ট্রার জন্মে।

দক্ষিণাচরকের তার্কেশ্মার মহ্ছা একং অন্ত্রান প্রথম দিকে নন্দরাম সেনের সেই শিবমনিদরেই হত। তারপর একটি শ্রামার বিবেশ্যা হল বাগবাজারে। তার প্রিয় শিব্য ক্ষান্ত্রা দাস নিজেদের বাজিতেই ব নিক্র আকেশ্যার জানা শ্রান করে দিলেন। সেখান থেকেই আবসত হল দক্ষিণাচরকের সংলাতিক জীবনে সফলতার প্রথে খাচা।

यन्तीमल शर्मन कर त कि हिम्दान মধেটে দক্ষিণাচরণ কৃষ - দাসের সহায়তা নানাভাবে পান। ু জীবনের প্যশ্ভিও সেবক ও সহায়ক ভিকেন কৃষ্ণচন্দ্র। দ্রাক্ষণাচরণের প্রথম জাবনের এই সংগ্রিক্সের ব্যক্তিপুলিচয়ত্ত মতন। সেই সূতে স্মিষ্ট **সংগীত প্রসংগের** মাধা আর একপ্রকার মিন্টকের কথাও এসে একেবারে গিন্টাল-রসগোরা। বাগৰাজানের আদি রসগোলা। কথা এট যে, রসগোল্লার প্রথম উস্ভাবক ও প্রচলন-কর্তা নবীনচদ্র দাসের একমার পার **হলেন** উত্ত কৃষ্ণচন্দু। বাগ্যাজারের ন্বীন্চন্দের বাসম্থান এবং ত'র রসংগালা বাবসালের ^হথল বলে বাগব।জাগ্রের রসগোলা' নাম ছয় রস্ঞাহীদের মৃধ্যে মৃধ্যে। ন্বীন্**চল্ডের** (১৮৪৬-১৯২৬) উধ্বতন ৪।৫ প্রের আগে থেকে এ বংশের বাগবাজারে বাস। ভাদের গণ্যাতীরের আদি বাড়ি ৪, কাশী মিত ঘাট শ্বীটে। নবীনচশ্রের শিতামহের সময় **থেকে** তাদের চিনির বাবসায় ছিল। বিলাতে চিনি র**°**তানী করতেন ভারী। নবীনচন্দ্রই প্রথমে রনে ভাসমান মিন্টাম অর্থাৎ রমগোল্লা প্রস্তুত করেন এবং ভারপর **থেকে** একংশে রসংগালার ব্যবসায় স্পরিচিত। নবীনচন্দ্র সংগীতপ্রিয় হিলেন এবং তাঁর পদ্ধী বিখ্যাত কবিয়াল ভোৱানাথ

नायाव (क्यांका अक्षा) दर्भावी । सर्वास्त्रम रेगांचक कामी हैंगा चार्यक मान् स्थाप पार्मिक प्राप्त नाम भौतक्छ न करहन। वागवानात्त्रक थाई शोगाई कालमा जीकरनई विकास सारक दिन राज्यातमा दिशास পক্ষীৰ পালের বা না শচীদ পক্ষীত্ব আৰক্ষা। সেই ব্ৰোসাই লোজ নৰনিচলের পরে क्रकेरिक टायम भौगम (बारके यान करतन धरार रनवारमहे शक्ता छारक भी गाउन करना गिक्नगाठर्म । क्रक्टरमूर्व जन्भ दशुम द्वार সন্দীতকবিদ আৰুভ। ৰাভনিপ্ৰিয় তথ্ কুক্তন্ত ভাল খোল বাজাতেন, কাটোরার খেলবাদক ভগবান দাস বাবাজীর আছে িকার ফলে। তার নহাল কলে পাঠকালে কুক্টলা দক্ষিণাচরণের কাছে বৈহালা শিক্ষা করেন। তখন খেকেই গরে শিব্যে খনিষ্ঠ-তার স্টেপাত। তার করেক বছর স্থের प्रक्रिशाहत्रण आदक्षित्रों शहन करावा प्राप्त পরিবারের সেই বাসম্থল ৭ গোসাই লেনেই হয় তার ঠিকানা। দেখানেই দক্ষিশাচরণ তাকে স্টার জনে পিস করলেন ব্রলিপি লিখডেন ছাচদের শিক্ষা দিতেন। আকি শ্রার মহড়াও নিয়মিত বাদনও হত সেখানে। সেই ঠিকানা থেকেই দক্ষিণাচরণ সদলে অনার অকে স্ট্রা বাজাতে

বু: দিবন অকে'স্টার সেই প্রথম দলে কৃষ্ণচন্দ্ৰ যেমন এক বিশিশ্ট ফাটী (তিনি বেহালা ওবো ইউফোনিয়ম ইড্যাদি নানা যশ্তের বাদক হতেন প্রয়োজনবোধে প্রধানত বেহালা বাদ্ক), তেমনি তার চারজন জ্ঞাতিভাতাও। যেমন-হারচগণ ন'দ্বাল দাস্ পক্ষ্মীনারায়ণ দাস এবং যোগীন্দ্রনাথ দাস। তাদের মধ্যে SHIME -- NEEDING বাক্সাতেন চেলে। অপর তিনজন বেহালা।

যণ্চী সংখ্য দক্ষিণাচরণের অসাধারণ গাণী ছিলেন-হাবা দত্ত ও নাণ্ডবাব্র। বাংলার এক শ্রেন্ঠ কলাবত, কুর্মাধিওনৈট স্রেবাহার এসরাজগণে (এবং ধ্রুপদীও) হাব্র দত্ত ছিলেন ব্যামী বিবেকানদৈর জ্ঞাতিভাতা। প্রকৃত নাম তাঁর অমৃতলাল দত্ত। তিনি অপ্রে স্রেলা

ক্লায়িওসেট ব্যাহক হিসেন এবং ক্ষেক বছৰ বু নিয়ম অংক'ন্যান এক প্ৰধান আকৰ'ণ বালে গণ্য इरकम । भवश्रक क्रीयरन अमेंत्रिक, विमात्रा शक्रीक माह्य-भरकत क्रापिकारणी मामस्माद्दान बान्यसम् नव foin amera fectere erein b ula presi: alequia bala die fina राव, पत रमपारत समाग्रत राखे कारफन र्गातिकक व्यवस्थाना जागाविक्या व श्रम क्षीन्त्र क्षाक्षकाम कान, मरखन कारब धकाविक बन्दानेका कि निका क्लान मा वहत বাবং। সম্ভালায়ের গঠিত রামপুর ভেটট ব্যাশ্ভও আলাজীবনৰ লোনেন এবং প্রে মাইহার তেটি ব্যাল্ড গঠনে সেই স্ভাল্ড হয়ত খা সাছেবের কিছ, উপকারে আসে।

নশ্তিবাবঃ মামে সংপ্রিচিত বেহালা-দিক্পী পরে দক্ষিণাচরণের অকেম্যা তারে করে নিজের গল গঠন করেন। তার সেই অকেন্ট্রা পরেলের ইউরোপীর পদাতির ছিল (অর্থাৎ রাগের ভিরিতে নয়) এবং উচ্চমানের বলে প্রসিন্ধি লাভ করে।

দক্ষিণাচরবের অকেন্ট্রা ৭ গোঁসাই লেনে ১১ ৷১২ বছর থাকে ক্ফচন্দ্র দাসেশ্ব প্রতিপোষকভার। আগে বলা হয়েছে ভার আক'ম্টা কখনোই ইউরোপীয় দুন্টান্তের जुना त्र्र जाकालात श्रामि, किन्छु श्रकात তার স্বগোলীয় ছিল। এই পরেও দেরি যশ্বীদের সংখ্যা থাকে ১২ জনের অমধিক এবং পদ্মবত ী পারে । তাই। যাত ছিল--বেহালা, ভোর মধ্যে ফার্ন্ট ভারোলন সেকেণ্ড ভারোলিন ইত্যাদি প্রকারভেদ অবশাই ছিল), কুমরিওনেট, ভাস, চেলো ভাবল ভাস কর্নেট ইউফোনিয়ম ইত্যাদ।

কৃষ্ণচন্দ্রের গৃহে আক'ষ্টা আরুদেভর দক্ষিণাচরণের সংগ্র প্রমোদকুমার ঠাকরের সাংগতিক যোগাযোগ ঘটে। ভার জবিনে তা একটি সারণীয় ঘটনা। তাল ফলে তার সংগতিজ্ঞাবন, বিশেষ ইউরোপীয় সংগীতচর্চা আরো সমূদ্ধ হয়েছিল।

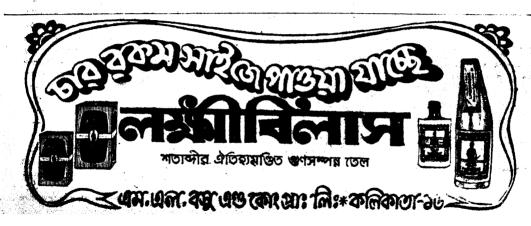
প্রমোদকুম্ব হলেন রাজা সোরীপু-প্রতিভার য়োহন ঠাকরের জোষ্ঠপুত্র। আধার . প্রমোদকুমাগ্র প্রথম জীবনেট ইউরোপীয় সংগীতে বিশেষ কৃতী হরে-

क्रिक्त । जन्मतः ना इस्त विक्र क्षणान्त चार्याम् । स्वतंत्रम् । गुरुष्ट्रान्त्राः स्वतंत्रम् । রাগ অব্যাদ্ধনে ইউরোপীয় ব্যক্তির न छात्रकारिक सहसा कर्ताहरूमा । two Lady Duffrin Value ! Toping ध्याक्षीत्रद्वात वारिक छ हैद्रक्त हैनाक प्राचिम बारिक वास्त्राचात स्टामा रमति केसस निर्माण्डलम् छिनि। अक्रीमन् वर्गम्बर्गाहरू সেই মডারখাতি শলে মশে এব আপনার অকেশ্বার বাজাবার ক্রান্ প্রক্রের दमारका पाम सिंह त्मन । जावनक क्षा जान त किया जरकारीय अकारम श्रीक्रवाद्वित इन ।

সেদিন প্রোতাদের মধ্যে প্রয়োকভূমাকের गत्भा नामा विभिन्ने ह्याणा विकास । দক্ষিণাচরণের পশ্বিচালনার সেট নাজালভাতি শ্বনে উচ্চন্দিত প্রশংসা করলেন প্রয়োগ-কুমার এবং কলকাতার অনেক প্রাথান ব্যবি। ব্লু রিবন আকেশ্রা এবং ভার দলপতির জয়যাতা আলাম্ভ চল।

প্রােদক্যারের দক্ষিণাচরণের প্রতিভাব পরিচয় পেয়ে বিশেষভাবে আরুষ্ট হলে। তারপর দক্ষিণচরণকে তিমি মানা জিকা দেন ইউরোপীয় সংগীতে।

প্রায় ১২ বছর তার আকেপ্রা গৌসাই লেন থেকে পরিচালিত হবার পর কুমারটালিতে প্থানাত্রিত হয়। ব্রু বিবন অকেপ্টেম এই পূৰ্ব উদ্যাপিত হত দক্ষিণাচরশের আর এক প্রির শিষ্ট কিরণ-চন্দ্র মিচ-দের গ্রে। ক্রিক্টন্দ্র 🔞 ভাতা শরংচণ্ড দক্তেনেই ব্লুরিবনের ফার্টী (প্রধানত বেহালাবাদক, অন্যাদ্য কটি যগেও হাত ছিল), দক্ষিণাচরণের ছাল এবং প্রাচীন মিত্র সংতান। চিংপরে রোড-বনমালি সরকার পথের যোগাস্থল থেকে পাদ্চম বন্নাবর অঞ্চল জাড়ে সেকালে মিচবংশের বসতি ও অধিকার ছিল কুমারটালি পার্ক (তথ্য তা এক বৃহৎ পালেরিণী) প্রণিত। ট্রাম রাস্তা থেকে বন্মালি সন্তকার **শ্বীট প্রথমে** বামে তারপর দক্ষিণে বকি নেবার পরেই





মিলবের একডলাল প্রশংত নৈঠকখানায় রুর নির্বন অকেশ্যার আখড়া ছিল। মহড়া অনুষ্ঠান, অনাত গতি সবই হ'ত এই ক্রিকানা থেকে। ১৭।১৮ বছর জাল অকেশ্যার সন্দো মিত্রবংশের এই গৃহ অক্শান্দা বিজ্ঞাতি থাকে। দক্ষিণাচরংগ্র শ্বহুত লিখিত হার্মানাইজ করা খাড়া-গ্রাক্ত এখানে ছিল কিরণচন্দ্রের কাছে। প্রাক্তর পরে কিরণচন্দ্রই হার্মাছ্রেলন রুর্ ভিত্তন অকেশ্যার দল্যপতি।

প্রার ৯৮ বছর কুমারট্রলিল এই মিগ্র পরিষারের পর দক্ষিণাচরণের অক্ষেত্রীর জ্বাখ্যা হয় ১, নবক্লক স্থানিট। এই চিকানার কান্ডলায় অক্ষেত্রী পরিচালিত হয় বছর পাঁচেক। এখানেই দক্ষিণাচরণের অক্ষেত্রী জবিনের কোব পর্যা কারা। কারা ভারেকর বে চাহে বছর তিনি জীবিত্র ছিলোন অক্ষেত্রী পরিচালনা থেকে অবস্থা নিরেছিলেন। স্বান্থ্যভেগও হুল্লেছিল আন্ধ্র

অধ্যক্ষ বিষয়েত অতিশ্য আগ্ৰহী হন দীক্ষাতে। কিন্তু তার সংগতিজীবনে ছেপ পড়েমি। পুছতক রাচনায়, বিশেষ কাগেৰ গঠন-শিক্ষা' প্রণয়নে ব্যাপ্ত অণ্ডিমকাল প্যশ্ত। কৃষ্ণচন্দ্র দাসের নতন ভবনে সে সময় দক্ষিণাচরণ সারাদিন গাগের গঠন শিক্ষা' রচনায় অভিবাহিত করতেন। সকাল দশটা-এগারটা **থেকে রাত** আটটা-নটা প্রয'শ্ত। প্রভূত পরিশ্রমে দু শাশ্ড এই প্ৰশুক সমাশ্ত কলবার জানো প্রস্কৃত হচ্ছিলেন। সেই অত্যধিক প্রমে শরীর ত[া]র ভেল্গে যায় একেবারে। **ন্বিতীয়** খাভেল শেষ ফম**া প্রেসে** দেবার দক্ষিণাচরণের পরমায় ও (১৯২৫)। ^সরুস হয়েছিল ৬৫ বছর**।** 'রা'গ্রের গঠন শিক্ষা' পা**ছ**্রাক্ত **অর্থাণ**ট্ট চার খণ্ড অপ্রকাশিত হয়ে গেল।

্রাধান্ত তালের কেন্দ্র হাত্রানী সংখ্যা একটি গ্রিক্ত দ্বিদ্যান্তরণ শেস জ্লীকা যাপম করেছিলেন। প্রে আনা একটি প্রের নামকরণ হর ক্ষিণাচরণ সেন' ভার মন্তিরকার জনো। কিন্তু সংগতিক্ষাতর তার মাতি উপধ্রতাবে রক্তি হর্দিন...

বাগবাজানের গোঁদাই লেনে এবং
কুমারট্লির মির পরিবারে অবংশানের সময়
রু রিবন অকেঁস্যা স্প্রান্দিধ হর নানাস্থানে
অনুষ্ঠানের ফলে। তার মধ্যে বিশেষ
উল্লেখ্য—শ্টার থিয়েটারে করেক বছর এবং
কোহিন্র থিয়েটারে করেক বছর এবং
কোহিন্র অভিত্য ু স্টার
প্রেল্ডারের
প্রেল্ডার রু রিবন অকেঁস্যার জনে বিশেষ
হাতে দখিদিন অকেঁস্টা পরিচালনা করতে
দেখা বিত্ত দক্ষিণাচরণকে।

তার আফৃতি ছিল অতি সাধারণ—
নাতিদীর্ঘ ধাামবর্গ একহারা গঠন। বেলবাসও সাধাসিধা। কিল্ডু অসাধারণ ছিল
দুই চক্ষ্তে প্রতিভাব দীণিত। শাল্ড অমায়ক মুখভাবের মধো দীণত চোখ
দুটি প্রথমেই দুন্দি আকর্ষণ করত। পরে
তিনি আকৃষ্ট কর্তেল মধ্রে বাজিঙে।
মান্র হিসাবে অতি সক্জন ছিলেন
দক্ষিণাচরণ।

ভারে সকল ছাত্র-ছাত্রী বৃধ্ধু-বাধ্ধর পরিচিত কান্ধির আধ্যারিত শংধার সংগে ভার স্মাতিকে বহন করে রাথেন।

করেক বছর ধরে তাঁরা পালন করতেন দিকণাচরণের প্যাতি-বাহিকী। সংগীতের অঞ্চলিতে, মনীবীদেশ ভাবণে তাঁর কারণ-অন্তান সংপল হত। তার মধ্যে ১৯২৬ সালের সভা হয় বড় স্পের আর দ্বিকা। চরণেরই সোগা ভাবে। সেদিল তাঁর একাই স্র-স্ভিট দিয়েই তাঁকে স্পতিতপ্ণ করা। হয়।

Dead Mr. h in soul আনুসরণে দক্ষিণাচন একটি স্বর্জাপ করেছিলেন রেখামাতা প্রণাস্থীতে।

সেই শ্মরণ-সন্ধায় র ছিবন অকে আটার সকর্ণ সারে সেটি বেজে উঠল। বাজালেন তবিই হাতে-গড়া ছাত্রধা। আর সে অকে আঁর সন্মিলনে কটি বালিকা গাইতে লাগলেন—

বাজ বীণা বাঁশি আজ কর্ণার।
কাঁদি কাঁদি কেন হুদি ব্যথা পার।।
বাণী প্রেলা তরে বাদ্য বৃদ্ধ,
নিত, হিলা যাঁর জীবন মদত,
চির হাল্য জ্ঞান্যে সরকা মনে
স্থী শিক্ষা দিত শিষ্পাণে
ভাষা কাদে বিষাদে মদ্যু গানে:
দিতে গ্রেদ্দিলা শিক্ষা পার,
বাণী-পদ পানে ধাানে চারণ।

গানখানি নাটাফার্য আয়্তর্কার বৃদ্ধের রচনা বার আফ্রেলর গটার খিরেটারে কড়িন কড় রাগের চালনি দক্ষিণাচরণ শানিরেছিকেন রু রিবন অকেশ্টার;

- निवा निकुत्रात महत्वानावात



(89)

ছোটবাব; তথন ডেকের ওপর ভীষণ জারে ছাটছে। যাকে সামনে দেখছে তাকেই বলছে নবকু কোথায়। সারেছ-সাব ছিলেন প্রালির প্রজায় বীভিনে, ছোটবাব; সেথানে থোম গেল, সামান। দম নিল। বলল, চাচা ববকু কোথার?

—নিচে তো ছিল। বড়-চিন্ডালকে পাওয়া যাচ্ছে না শ্ৰেছিস!

বড়-টিঞ্চলকে পাএরা হাছে না, পাওরা বাবে। গভীর রাতে হয়তো দে ফিরে আসবে একা একা। একজন জাহাজি মানুষ রাতে ফিরে আসে নি, সকালে ফিরে আসবে। সকালে ফিরে না এলেই ভাবনার কথা, কিণ্ডু মৈচদা বংকুর সংগে ছিল, সংসা বংকু লেখেছে, শহরে ভিডের ভেডর মৈর পালিরে প্রেছে। জাহাজে ফিরে ছোটবাবা এ-সব শালিছিল।

ভারপর আর হা শ্নেছে, সেটা ভীষণ ভয়ের। বংকু গৈতদাকে হাকিয়ে খেজি-খু-জি করছে, করতে করতে আপিয়া শহরের শেষ প্রাণ্ডে দেখেছে ছোট ছোট বালির চিবি, সেখানে সব খ্রম্ভের রস পান করছে মেশ্লেরা, সেখানে মৈত্র খুরে বেড়োকে । ওর হাতে ছিল বড় মাপের একটা জনি-ওশ্বাকার। সে সেটা প্রায় বগলদাবা করে হৃতিছিল। ওর বিচিত্ত পোশাক দেখে সবাই চোখ ট্যারা করে ফ্লেন্ডেছিল। এই যেমন শরীরে ছিল ভার স্ল্যাস্টিকের খেলনা দেপ্টিফিনে আটকানো সব নীল পাথরের মালা, কিন্তের পাছুল, হুলান রভের পাতার বাঁপি। এবং মাধার জন্বা টুরিপ জোকারের अरखा। जनाहे, रामन वृत्का-वृक्ति, जाभवा হ্ৰভাক্ত হৈতকে হ'বে কিবে দেখছিল। हेबह कवा वलक्षिण अवाद मटला, मारमाशान ৰাষ্ট্ৰ পূৰ্বেরা অথবা কিছু বিদেশিনী হাৰো, বারা খ্রুজুর রস চেটে চেটে পাছিল, তারা হাঁ করে দেখাছল।

কিছু ছোট ছোট ছেলেনেরে ওর পারে পারে ঘুরছিল। সে স্বাইকে গুড় আকটারন্ন বলছিল। আর কথার ক্ষার মানেডলার
ন্ন বলছিল। আর কথার ক্ষার মানেডলার
নার মাহাজভূবির গলপ বলছিল। একটা দুটো করে লজেন্স চরোলেট বিজ্ঞিল ছোটছোট ছেলে-ন্নেষেনের। কউকে কোলে নিরো
মালা পরিটো দিক্লো।

বংক কোনো কথা বলছিল না। দ্বৈ, আড়ালে দৃড়িরেছিল। কারণ জায়ণাটা ছিল মেলার মতো। অথবা যা হয়ে থাকে বিকেলে সনাই বালিয়াড়িতে নেমে আসে, সম্পূত্র সাঁ গজন শ্নতে শ্নতে—থাকাজের রস খোতে ভারি মনেবর, ওরা বস চেটে থাকাল সময় গৈতের নাম জিজ্ঞাসা করলে বলেছিল বসভালিবাস। বসভলিবাস কথাটা ওদের কাছে পথাই তুল না বলে সে আবার বলেছিল, যি, ব...স্..হে..নি...বা...স্য

সবাই প্রায় বাউ করার মতো বর্লোছল, ইয়েস ইয়ো বসনটো নি...বা.. স। নিবাস।

—ইরেস মি নিবাস। বংকু সব স্থার আড়ালে আড়ালে ছিল। দেখে ফেলালেই ফের ছুটে কোপাও মৈত্র পালিরে বাবার চেকটা করবে। গোপনে তাকে কেউ অন্সর্ব করছে বৃষতে পারলেই আবার সে ছুটবে।

জাহাজে ফিরে ছোটবাবা এমন সব
নানাজনের কাছে শুনেছে। স্বাই ডেকে উঠে
এসেছে। কেট বোধহুয় নিচে নেই। এবং
কি করা হায়, কাণ্ডানের কাছে ইতিমধ্যে
বিপোর্ট হরে গেছে। তিনি রীজে অফিসারদের সঙ্গে বোধহুয় পরাম্বর্শ করছেন। আর
ছোটবাব্য ঘরে মরে ধ্বাজে বেড়াকে
বংকুকে। বংকুর মূথ খেকে সব শুনীতে না
গারলে দে দ্বিসিত সাজে না।

—বংক আছিস বংকু! মন্ফলল এই তো এখানে ছিল। কোখার গেল! আবার সে ডাকল, বংকু। বংকু কোৰার? ডেক-সলপ বলল, বংকু বোধহর মেস্-নুমে গেছে।

কিংকু ছোটবান্ ওপরে উঠে দেশক যেসর্ম থালি। করিডোরে নানজনের জাতকা ।
কট চেণ্চামেচি করছে, হটুগোল, কর্ম
জাহাজে থাকবে না এমন বকছে। থাককে
বড়-টি-ডালের মতো ওরাও পার্বাক হরে
থাবে। আনালে কড়-টিডডালের কিছু হরে
গোলে কেন ওরা আরও জোর পাবে। ওনের
বিদ্যুত করডে স্বিধা হরে। ছোটবাব্তে
দেখে দেশকলে স্বাই চুপ্তাপ-একটা কলা
কলছে না। করেণ ছোটবাব্তে আরে ওলের
স্থা-বৃংখ বৃথাবে না। বেশ জ্লোমে আরে
গাসের মনিব ছোটবাব্ প্রকার পাবে।
গাসের দাড়িকে ভবিল স্বোধ মালক হরে
গাসের মনিব ছোটবাব্ হরে পারে
গাসের মনিব ছিবল স্বোধ মালক হরে
থাছি সবাই।

এ-ভাবে ঘুরতে ঘুরত্তে ছোটঘানু টের পেল, সবাই ওকে ক্রমে আনিশ্বাস, করতে আনন্দ করেছে। কেন্তু ওদের উসকে দিছে, কে দিছে বৃষ্ণতে পারছে না। ডেবিড ভাষ্ণ টেকেন্সিত হয়ে আছে, এক বছর আরও ভাহাক্তে থাকতে হবে, সে সবাইকে পোশাম বড়-টিন্ডালাকে কেন্দ্র করে উত্তেজিত করে রাখতে গারে। আসক্রে কেন্ট্র সঠিক বলতে পারছে না নৈচদার কি হয়েছে। না নৈচদার কি হয়েছে।

এবং এ-সমরে মনে হল, মান্ত্রের নিচে কারা দাঁভিয়ে সংগোপনে অস্থকারে দল-পরামণ করছে। ছোটবাব্ বললা, বংকু তোকে খু'জছি। মৈনুদা কোবার!

दःक् स्कान, क्यांन ना।

- জানি না লানে !

— আমি কি করে জানব ছোটবাবু! ।

—বংকু! এই প্রথম ছোটবাবু কেলান
একজন মানুবকে গদভীর গলায় কথা বগল,
ভার হেন নভুন এক ছোটবাবু সে আর আগের সেই ছোটবাবু নিরহ্কারী ছোটবাবু নয়। যেন কোনো এক হাদুবলৈ,

ছোটবাব_ু ভার আত্মপ্রতায় খ**ুডে শেরেছে।**

ক্ষিত্র কি কি কে মৈরদা কোথায়।
ক্ষিত্র ক্ষেত্র ক্ষেত্র কাতা দেখেছিস।
ক্ষিত্র ক্ষ্মতা ক্ষ্মতা থাকাপ

ক্ষাল, আমি তো তোর কথা মানে ক্ষালকৈ ছিলাম। তারণর দেখি সে জিলাক ক্ষেত্র দেই। আমি কি করব?

-कात बारक नाम नि।

--শেরেছিলাম। গুর বগলে তথ্য একটা বড় ববের বোতল। সে সামান্য দম দিসে কালা, গুরুপর বা করে। একদল ছোট ছোট ছোলামার বা করে। একদল ছোট ছোট ছেলেশেলে। সে ভাবের নিয়ো পাতার বাখি কিলাজিল। ঘ্রাছিল ফিরছিল। আড়ালে অঞ্জেলে গুরু প্রকারাগছিলামা।

—**ट**ण्य क्टो तहक ?

্ৰিকেল হবে। এই মানে সুমু সমুদ্ৰে অসত বাজিল।

—কোৰাল তথ্য তোৱা ?

লৈ কাল, বিষ্ণুটা দেখাছাস ? বেল লাক্যা বিচ। অমেক দেৱে, কাল সকালে দেখা হাবে, লোখাৰ খাব পাকে একটা পাহাড় ছাবের মতো লাক্ষ্যুট ঘুকে গোছা। অভদার হোতে হয় না। ভাচ একটা এদিকে, সি-বিদে বারা বেড়াতে এনৌছল ভাবের সংখ্যালালালি ক্রতিল দৈয়ে। এবা বেল মজা গৈয়ে একে স্বাই ক্সভানিবাস বসংভানিবাস বাজে ডাকছিল।

সবাই গোল হলে দাঁড়েয়ে আছে। কংক यात नाम कडनान त्य धनाने नथाई चार्नतस्थ ফিলিনে নলেছে। চিফ-মেট ভেকে পাঠিয়ে-হিল বংকুকে। লে ভাকে বলে GOTTE ! दस्क-मार्गात कारक फिर्फ-द्यारप्रेय कार्य मिदद्र নিরেছিল। যন্তটা পেকেছে লে STA CIT ভাৰত ইংরেজিতে স্বটা বুকিয়ে 有所(34 চেক্সেকে। ডেক-সাংরঙ, আর পাঁচ 4244 क्तिक दशास्त्र भारका बारका -বিশদভাৱে वतभावतेएक जाएवा खारका करम নিরোছ। চিফ-যোট সব লগৰকে নোট কবে মরেছে। তারপর ज्याम *दशास* CHCX আলতেই রেজ-মিনি- জাতি প্রায় অধ্যক্ষ বেকে বের হারে আসার মতো ব্লেছে, একে अस्क रहामना भवारे शहर । स्मर्ट धाम ध প্রভাব আবার ফাহাজে হাথা চাড়া দিবে উঠেছ। বুড়ো ছিগিনসকে আর মানহে हार्वेटक मा। मरक खीराम अब रगरहा বৈশক্তিপ ক্ষাটাতে। সে সন্তুদ্ধে বলেছে আচি কলেও, कामाहिनत कारता तका स्माहे । सिग्रहक

কি শ্রু কোথা থেকে ওরা এভাবে
প্রাক্তির সমস্যার স্যাধান খাতে প্রেচছাত ছোটবাখা ব্যুখান্ত পারছে না ! স্বাবাই চোথা ইছা অনুভাছে । একটা আভগানি ভাছাতে ভারা উঠে এলে বিপরে গড়ে গোছে এইন ভার ক্রম । এনজিন-স্বাক্তে ভারা ভারে । সে ব্যুখানা পালার একল কথা বভাতে পারছে ক্রম জোলা পালার একল কথা বভাতে পারছে কা ! বাবাল লে ক্রমান করে কলার ভারে ভারা করে কাছে । সমস্য এবং স্থানা বাসিট ক্রমা বিলে বাবাল । সমস্য এবং স্থানা বাসিট ক্রমা বিলে বাবাল লেকিজ স্থানাপ্র। গণালিশ্র ক্রমা বিলে বাবাল লেকিজ স্থানাপ্র। গণালিশ্র মতো লুকিরেছিল, ছোটবাবু এতক্ষণে হেন আচি করতে পারছে। আর বুলি এ-জবেই জাহাজে কথনও কথনও বিয়েত দেখা দের। কোনো কিছু ভাববার তখন আর জাহাজিদের কমতা থাকে না।

ছোটবাব্ প্রায় নিঃখ্বাস বন্ধ করে খনুমছে সব। সে বজল, তারপর তারপর কি ?

বংকু বলকা, আমি তো জানি আমাত্র বংকু বলকা, আমি তো জানি আমাত্র বিশ্ববৈষ্ট দোটড়ে পালাতে।

--- त्रीएक भागात्त्र तृत्रांच कि करत्र?

নিষ্ঠানে বললায়, ভাষার সংলা বের হাতে। ভাইবান ভাষাকে একা বের হাতে বারণ করেছে। জনাবে বলল, ছোটবান কে। ছোটবান বারল কাউকে তো চিনি না। কি করি বলা, ভুই বারল গোছিস। অনিমেরও বললা রাখা দরকার। কিন্তু কাকে লাক। রাখা সেরভাস কি বারল দিলা, ভাষার সংগো কাউকে বৈতে হবে না। আমার কিছে হুমুনি।

ভারপর বংকু বলল, ভুই জানিস, বেশি

চেণ্ডামেচি করলে, হ্রান্ডো সারেও ঝায়েলা

করবে, একেবারেই নামতে দেবে না। জাটকে

রাখবে। ভাবলায় নেয়ে যাক, পেছনে পেছনে
আয়িও লেয়ে যাব। আর নেয়ে যেই না দেখল,
আমি পেছনে আছি কি থিছিত! যা মাণে

আমেন। ভারপর যেই শহরের একটা পদতগ্যোক্ত ভারগায় এনে গেছি, দেখি গৈত নেই।

জনেক দ্বে একটা গলির ভেতর নিয়ে

দোড়াজে। আমি সংগ্য থাকি কিছুভেই সে

---সংশ্ব থাকলে পাগপ্রতি করবে কৈ করে! তারপর কেমন চিৎকার করে ছোট্নান্ ব্যক্ত, কোথায় গোল তারপর।

বংকু বক্সল, লডিং জানি না। আমার ঘে কি
লোড হল! ভাবলাম একট্ খরম্ভের রস
থাই। ভাতে নামান; খরম্ভের রস, ভামাটে
রঙ, কি যে খেতে স্কুনাস্ ভোটনাব্, আর
ডগন দেখি, একদল লোক চে'চাফোচি করছে,
ঐ যে চলে যাকেচ চলে যাকেচ! ফিরে দেখি
অনেক দ্রে একটা লোক পাহাডে্র সেই যে
কাবা ভাদ আছে, ভার নিচ দিয়ে সম্পুরে
বিকল হুটে যাকেছ। ভোটবাব্ আমি স্পাট্ট কিছু দেখিন।

-- नम्दम्द भित्न !

-ত্রিদকে মাইলের পর মাটল সম্পুদ্র ভেতরে সব অভ্যুক্ত বালির চিত্রি আছে। গাঞ্জপালা নেই। পাগর নামা রুকের। জোয়ার একে সব ভূবে যায়।

ছোটবাৰ; আবার বলল, তথ্ন কট বাজে:

— আমি ছড়ি দেখিন। সংস্থা ভূবে গোছে বলে সারা সমূদ্র তখন লালে ছিল ভীবণ। — ইই বৃশ্বলি কি লবে মৈদুদ্য গোছে।

ত্রা তো সবস্থ কলছিল, আরে
কাবলার দেখছি । একদম মাধা খারাল।
কাথার বাজেই । এ-সমর গুলিকে কেন্দ্র বার
বা। গুরা সবাই হা-ছা লবে কিছুটা ছাটে
লিবে এসেছে। আমিও তালো কিছু
দেখিনি খারালের সম বেবে দুড়াজনে কর্মা
নালা সার লোক। কেবল নেখেছি ক্রমে
বিধন্ধ মতো কাবলা একটা ফড়িন অনেক

र्द्रात महाद्वात खनत मान्ट्रहा खोत मा धारणे कांग्रह कि करत मुख्या

ছোটবাব্ বাকতে পারল, ভারাও এবম একটা চিবিতে চলে খিরেছিল। ভার একটা जानामा काक्त्रभ कारह। त्न चाद धक शृह्त দেরি করল না, যদিও জানে জোয়ার হরতো এসে १९६६, मा अस्म । आत स्मित स्मरे। अता क्लाबादबंद कारण किरब धटम्रहरू, धान्द रकावान এলে জাতাজে টের পাওয়া হার। একবারে ষেদ লাহাজটা লাফিয়ে অনেক উচ্চতে উঠে বার এমন মনে হয়। বাই হোক সে লাখিরে পার হয়ে গেল ফকা। এলিওরেত দুকে ভেবিডের দরজার নক করছে, ভেবিড দরকা খোলো। বোধছয় ভেতরে ভেতিত নেই। সে ওপরে উঠে দেখল সালি হিলিনস স্বাইকে গালাগাল করছেন। জাহাজে তিনি ছিলেন না, এতক্ষণ স্বাই এভাবে চুপচাপ বলে আছে। খেজিখ জির দায়দায়িত কেউ निताक मा। यमिछ अन्त घटनात, ज्यानीत প্রিশ সাহায্য করতে পারে, এবং লাইফ-সেভিং সমিতি। স্যালি হিগিনস এক এক করে স্বাইকে ফোনে খবর্ড়া দিয়েছেন-আর বড়-টিল্ডালকে যে জাহাজে রখা বাবে সা टनटम शांकिए मिए इतन जनम भाकिए দেবার কথা মনে হলেই তাঁর মাখাটা সহসা ভীষণ গরম হয়ে যায়। এসব লোকগালো काराक्रिके फालवास्त्र ना। विश्वा भागमावि করে দেশে ফিরে যোত চার। দেশে। ফিরে যাবার একটা মোক্ষম অষ্ধ। আর সংগ্ সালি হিলিনসের ভীষণ ভিত্ত চোধ মূখ। সারেখকে ডেকে পাঠালেন, বললেন বড়-ট্রি-ভালকে জাহান্ত থেকে আরু মানতে দেৰে না। প্ৰায় লগৰ,কের ওপর একটা ভাবেশনামার হতো তিনি কথা বললেন।

ভগন মৈত্র জ্যোৎসনা রাতে একটা ঢিবির প্রপর বর্ষোছক। সে লাজিরে ক্রান্ট্রছ পার ইরে এবেছে সব ঢিবি, বাজি চর। অনেক দ্রে সেই পাছাড়ের ছাদ লুহাত ব্যাজিরে সেম এগিলে আসাছে ৩কে ধরতে! কিছুতেই সে ধরা দেবে না। সে কেবল লাফ মেরে চিবি, বাজির চর পার হরে হাজিস ক্রমাগত। জ্যোৎসনা রাত বঙ্গে অসপ্যত সব কিছু চার-গালে।

ত্তর পায়ের কাছে: সমৃদু। আর স্বাংশ আকল্প পাথবা, লাজ লাল পাথবা। সে একটো দুটো করে হাতে পাথর নিজে, আরু দুরো তিল ছ'ুড্ড নিছে। একটা মাটির ভড়ি। ভাঙে সে মদ ঢালছে, খাজে। মাধে মাধে একাকী प्त प्रहें भा के कि मिरह भ भिवरिक स्वम व नगान्त्रा के लियां नाम्रक । ता इसम माजान হয়ে উঠছে দে বসম্ভনিবাস। সে ছোট ছোট হেলেনেরের স্ব পাতার বালি বানিস্ দিয়েছে। সে ইচছ করলে বাতাসের ওপর क्टिन स्वरंक भारत-पार्वे स्व मावात अग्राम, कानाजारक जामा भाग राजा वार्य, अने जायान যখন পালৰ গোৰা, বৰন সে ব্যৱতানিবাস अतः वीम हाहेजिजित करो। राकरमा सामाङ शास्त्र रूपम रज्ञ किन् सारत मा। रज्ञ जाला क्लाल्माह वायम बक्ता मिल्स महीटन क्टन অনান্নাদে সারারান্ত মন খেতে পারে, সাচতে



all on miles ceferbis Genie

🥙 পারে, অনিয় কেসব গান গাইত শ্রেদ শেলে, ভার একটা পান, বাবু আমার কিছু ভাল कारण मा...रत्र स्मट्ठ स्मट्ठ शाहीकृत।

্ৰা আৰু ভার বনে হচ্ছিল, সমূদ্র চারপাণে कार चारत बारत नाजरक। दम अथन दर्यापटर **ভাকাতে, শুখ্র নীল জ**ল। কেবল ওব চিবিটা উচ্চমতো, এবং মনে হয় নিচে অংকভিট বাজ্ঞাত । কাম পাতলে আদ্মর্যা সে মিউজিক া শানতে পাতে সমাদের নিচে। এবং হা মনে হুল সে অল্পুত একটা ছেলেন ব্যাস্থলা হয়ে লোছে। কিছুদুদাণর ভেত্র দে বাতাসে ঘণ্টা পরনি শ্নতে পাবে। আসছে, আসছে। মানেওলা হাইতিতি ৰাভাবে ভেকে আক্সেছ। সে এবার মাটির ভাঁড সম্মান্ত স্থাতে ফেলে দিলে সে আর ভাড়ে যদ ঢালতে পারছে মা। হাত কশিছে। ভালতে গোলে পড়ে। হাতে মন। তাতে ভার ক্রিক নেই। ভার জেরে। মানে रुण, शलाज ६५८म रमस्य स्माख्याः तम हो करत কিছাটা জেলে জিল মাবোঃ মাখে কুডাকে ৰোজা। বাঁ হাতেৰ ভালনতে যাখে মতে লাবে থাকস দিং ছবে। আৰু শে থাকাল্ল মকণ্ড धानर क्यारञ्जा अकृतम् त कार्क जामा राजनित्ततः মাহোত ভ**িজ্ঞাৰা ভাতত। এর আদে হা** সামে হতিক্তা একালি ক্ষতে কাৰে কাক্তাসে ঘদটো ধর্মি হৈ ক্ষেথকে পাবে একে একে স্বাই रिलंकि नामार्क शास्त्रक्षका स्टाक्तिकार शा हाते. জিতি একমা লা কেলি--সেই ফোফাটা, খান बार्गीरर निक विक्र या अधार प्रश्नासम्बद्धाः ফেনিটা ফেন্টা লাক সত্ত্ৰ ক্লাড়ে নিলাছত্ব হ'লে য়াক্ষি। তথা সৰাই নেছে একে কোথাও ভার स्थात् कथाः

বোধহয় গেই হাস্থক জাড়াজড়বির পর নিকমি আহিশ ৰে কটেকা পাড়ভিক---মে আত্রতে। তে কি করছে। তে চিংকার করে নবাল, ড়ায়া একা ক্ষীলে কি করতে পান ? সে ব্ৰাভে পার্ল মাদ্দটা এখন বড় বড় গাছ কেটে ভাৰ গণ্ডি কেটে কেলার সংখ্য নান্যক্রে। অধিকার সব কচ্চপ জেল নিয়ের तसमारक। जील आध्याम् कस निराक्त कराना জেকে: শাল বানিমেক্ত নড বলে ইউকন গাছেব পাড়ে। খেকে। মানা্রটা জিরে আসেওে। किट्य আসভে। সহাত্র কড় কলাব তেত্র মিরে মান্তটা সম্প্রের ওপর পালা ভূজে চলে আসংজঃ বড় বড় क्ष्याच्या राष्ट्र । स्थापि । स्थापि । खानाम रक्ष्माक भाजित्य मिरक बारम । महारक्षम ৰলে সাহান্য চৰিতে থাকে: কৈ বে সাম্বাস মান হাজে ^{ক্রি}নরীরের তার পাতার শোলাক। মাধায় পাড়ার টুর্লি। মৃত্থ বড় বড় ক্রড়ি। इक कम्बा। हात रक्षमाही अगृतम देश इंडान-দ্বলৈ এগিয়ে আস্চে। ভারপর কেন যে ভার भारत इन्हें, रकाकड़ी खाद रक्छ नेत्र। रत्र निरक्षः। ম্বাডের রাড়ে ব্যক্তি ফিরে দেখকে শেফাক্ট মরে নেই। শেঞালী বিমল্যাব্র স্থাী হয়ে লেছে কের। আর মনে হল বাতেজনার মতে क्षणीते रक्षाते स्वयत् सामाना चूरन वाहण समा क्षमणे बाग बर्च तहर सता हिस्सात स्वाप्ता নে কিছাতেই কাডে পাছতে বা আছি বসগত-निवास । विश्वास क्य बाए-छनाः खार्थः तप्रकाः নিবাদ। তোলার হাকে ভাকো। তার সংক্র बाराव जलक क्या जात्व।

তথন একটা মাছি কোচখকে এসে মাঁতখন ওপর বসল। সে ভাল করে হাত নাডাতে পারছে না। সম্ভুদ্দ ফ'ুসছে। পাহাড় সমান তরখ্যমালা ক্রম এগিয়ে আসছে। তীর শিস বাজ্ঞতি আকাশেবাড়াসে। ব্রেকার ভেতেগ যাচেছ, ফনফরাস পায়ের নিচে জনজে জনুলে নিভে যাছে। যেন অজন্ন জোনাকিংকাক। েক্ট ছডিয়ে যাঙ্গে কিনারে আবার নিডে থাছে। সহ প্রকাশ্ভ প্রকাশ্ভ চেউ চলে লাস্ছে আবার আবার সেই জোনাকি-পোকারা, পারের কাছে ক্রমে এক কাছে চলে আসতে কি করে। এবং মনে হচ্ছে ক্রমে শ্বীপটো ছোট হারে বাচছে, ক্রমে মনে হচছে, নে চারপালে খাুখা সবাস্তু দেখাছে, সহালের कल ग्रामित्व छेताक रमाछे ग्रामित्व छेतात মতে। এবং জার সে উঠতে পারছে না। সে শ্রে শ্রেয় এখন স্ব দেখছে। জ্বেন এবার সে হাত দিলেই সমুদ্রের জল নাগাল পাবে। এবং ওর শেষ বিষদ্দ ফেই মদাশানের আণিতম মৃহতে মনে হল, মছিটা ভৌদণ পশ্চলে। ল বাধিয়ে দিয়েছে। সে বার বার গ্রাছে চাইছে মাছিটাকে। সে বার বার উঠে দাঁড়াকে চাইছে হাছিটাকে ধরার জন্ম। জনের কল্মোন জীবন দয়কে দ্বকে চারপালে এড ্শতে বাচ্ছে যে অনেক দুৱে কে ভাবে काकरछ भान्तर्थ भारक गा। देश काम रभर् শোনার চেণ্টা করছে, কে ডাকছে। মনে হ'লে অনেক দ্'রে সম্পুরে ভর•গমালায় ভোষে চলে আসক্তে ডাকটা, যৈত্ত...দা তু...ছি কে।থার। সে শুনতে পাজে: ভারি অস্পন্ট। ভব্মনে হকে ছোট ভাকে ভাকছে। ভার তথন ভবিণ হাসি পাজিকা। সে কেল উঠে দাঁড়োবার চেন্টা করঙ্গ। বলতে চাইল আমি এখানে ছোটবাব্। সম্ভু চারপাশে মেচে পেড়াকে; আমি একটা চিবির ওপর শুরে আছি। কিন্তু সে উঠতে পারছে না কেম। চেবে ভাল দেশতেও পাছে না। এখন खोमात होत निक्त ग्रं कल छन छत्र আসছে, আবার নেয়ে হাচেছ, জ্বল চারপানে ছড়িয়ে খাল্ডে। সমূহত শ্রীরে এখন জলকণ্ উড়ে এসে ভিঞ্জিয়ে সিজে তাকে। ঝপস। মনে হল্পে চারপাশটাঃ আর জ্থনত স্রে किए छाकास-किछाला।

त्क हे *जाका* छ---क्षिता

কেউ ভাকতে—মৈল্লা তুমি কোথারু!

কেন্ত ভাকছে--বভ-টিজ্যাল। কেউ ভাকছে—বসংত্নিবাস।

সংখ্যা সংখ্যা সে উঠে দড়িল। তিৰিচাৰ মাথার সে দাঁড়িয়ে গোল। সে এক হাডে বোতল বাভাসে উ⁶চিয়ে ধরল। কোনরকমে টলতে টলতে খালি হাতন বাড়িছে দিল আকাশের দিকে। জড়ানো গলার বলস য়ি বস্তুদিবাস। মনাক অফ অল আই সাভে : দে শেৰবারের হাতো জল এগিনে আসতে থাকলে স্মৃত্যুত্ত মাধার শালি বোজনান ভাগতে। ভাবক। তার ভারি **ই**ক্রে জিল কৰিছেল **সম্ভাৱ কথার কড় বছদক** এতটা জন্ম ক্রের ক্রের **সর সে** শাহি ভেবে হা হা করে হেকে

উঠন। দিশতব্যাপী কালো অঞ্ধকার এগিয়ে আসছে। সে দাঁড়িয়ে দাঁড়িয়ে টলছিল। তকু বাতাঙ্গে উ'চিয়ে রেখেছে বোতল্টা। মারবে। কাছে এলেই মারবে। মেরে মাথা ফাটিয়ে কেৰে। মাগির ছেনাল**ীপ**না त्वस कहरू ।

তথ্যত সেই বিক্রম সমান্ত্রের ভেতরে আত ভাক, মৈলদা ভূমি কোথায় ! অসপটে সেই **শ্বর গ**ুল-গ**ুলিরে বাজ**ছে মৈত্রের মাথায়। ভাষণ সে উংক্লা হয়ে উঠছে। বেশ প্রতিশোধ দেওয়া নাবে, সে ছেলেমানুষের মত্তো আনশে কের ছাটে পালাবে ভাবল। ছোটবাব, জ্যোৎজনা রাজে হয়তো তাকে নেখে ফেলেছে। পাহাড়েও ছাদ দু-হাত দল্বা করে যাকে ধরতে পারে নি, তুমি ছোটবাব, তার শাগাল পাবে! আর দেই বোতলটা তখনও ঘড়ির পেন্ডুলাগ্রের মতো হাতে দুলাছে। যেন সেই এবট আফ এবট ত্ৰক, **খন্টা** বাজাচেত্ পাহাডের মাথায়, **এদিকে না**, এদিকে না। জল পায়ের পাতা ভিজিনের চলে। তেখন শুধু জল, আর জাল। আর ডের>গল্লালা এবং ক্রমে সেই কলের চারপালে শ্রুপী জয়াবহু ঘূর্ণি, অথবা নীল জালে, অতিকায় পাহাত্তের মতো শ্বা**পদের। নিংশবাস ফেলছে। এত** বেশি জনকণা উড়ছে যে সে শ্বাস ফেলতে

তখনও দ্বে, সম্দের এইসব গজনের ভেত্তম একটা ক্ষাঁণ ডাক ভেসে আসছিল, মৈলদা কালে থেকে আমি তোমাই স্থেল বের হুখ। তুমি কোথায় : কাস আ...মি...কোথাও

শিশুর য়তো সে শুলকে বলল, এখানে। সে বোভানে চুম**়** খেতে থেত্ত বলন্ত্যমি कथारमः आहियात्। আমি ভোল আছি।

জন্ম এবার আরও ওপরে উঠে আসছে। লে আর ফাঁড়াডে পার্রাহল না। সে এতক্ষণ দাঁভিয়েছিল, আস্ক, এলেই মান্ধৰে, কিন্তু এখন সে হাতের বোতল ঠিক ব্ৰুক্তে কাছে এনে টকান্তে টলতে বলে শভুতেই জন্মানার চলে বেন্ডে থাকল ওপর ৰিয়ে। ৰিচে ৰে। ভেলে ভেলে প্ৰায় সেই উচ্ছ কাৰায় মজে এবং শিশ্ব আওনাদ শ্বনতে পাজিক। সম্দের অতলে শিশ্ব। কদিছে। সে আরও জ্যোরে জলের নিচে বোক্তশটাকে এক্যার সমতানের আত্মরক্ষার্থে श्यम कारण भत्रका। **छातभ**त नृष्ट्र सीक कारकात খেলা, আহিমিল জল তার আপন প্রবাহে মন্ত**। কোঞ্জা**কার কে এক বসংত্রনিবাস ক্লোকের মুখে পড়ে কুটোগাছটির মতো ক্তের হাতে, তার বিন্দুমার আরক্ষণ নেই :

শাহাত্তর উদ্ মততা কারগার তথন ওরা প্রভিরেছিল। বিশ্বচয়াচরে এ-ভাবে জ্যোৎস্থা কথানক জোলাবন জাল মিলৈ বায়, অথবা ए इ. इ.व. उत्तर कार्याच्या कार्याच्या इत्त **इत्त इत्त** শাশ্ত সম্ভের জলবর্ণি হত্ত্ব **যার না নেখলে** বিশ্বাস করা, বার মা। সম্পুরের প্রবল গার্জন এ-ভাবে ক্লমে কমে আসতে থাকক। জল উদ্ব হতে হতে সেই পাহাড়-ছাদের কাহা-কাছি জারগায় চলে এসেছে। এখন মনে হছে প্রায় জেটির মতো, অনেকটা সমুদ্রের ভেতরে অনায়াসে হেন্টে বাওরা হৈতে পারে। ওরা স্বাই শেষ প্রান্তে দীড়িয়ে বাঙ্কা কিছা করার নেই।

প্রিকশ কর্তৃপক্ষ জানাল, জল নেহে মা গেলে কিছু করা বাবে না।

সমৃদ্রে ভেসে গেলে খেঁজাখুজি করে হারা, তাদের দলটো ফিরে এসেছে। এরাও একট কথা বলল।

রাত ক্রমণ বাড়ছে। প্রবল জোয়ারেব মুখে জোপেনা তেমনি ছায়া ফেলে বাজে । পাছাড়ের মাথায় সব অজস্র মানুষ দ্যুতিস আছে। অথবা এখন এক খবর এই ছোট গবীপর ভেতর, একজন মানুষ সমুদ্রেব ছলনায় অবার পড়ে গেছে। কোন খেজি-

ডেক-সারেও এনজিন সারেং সমেত প্রায় জাহাজ থালি করে সরাই চলে এসেছে। প্রা কেউ আর বিদদুমান উৎসাহ পাছে ন জাহাজে ফিরে য়েতে। ছোটবাবার পালা ডেপে গাছে ভাকতে। বনি ছোটবাবার বার বা বিশেরছে— এ-ভাবে ডেকে লাভ নেই। কত্রার, কোথায় আছে বড়ালিডালা। তুমি অযুগা ভাকছ।

ছোটবাবার খন তব্ মানছিল না। যেন তার বিশ্বাস, তার আথ্যাজ পেলেই মৈরদাব সব অভিযান ভেগের যাবে। আবার ফিরে আসবে।

সমৃদ্ধ দেখে এখন মনেই হবে না, কখনও প্রবল তর্গমালায় সে ক্লেপে যায়। আশিচ্যালাজ হয়ে সেছে। চারপাশো সব নাল জলা। বিকেলে বা ছিল বেড়াবার জায়গা। বেখানে মান্বেরা বসে খরমাজের রসে পান করেছে এখন সব সমৃদ্ধের অতলে। সকাল হতে না হতেই তাবার বালিয়াড়ি জেগো উঠবে। সমোয়ান পার্য রম্বালিয়াড়ি জেগো উঠবে। সমোয়ান পার্য রম্বালিয়াড়ি জেগো উঠবে। সমোয়ান পার্য রম্বালিয়াড় জেগো উঠবে। সমোয়ান পার্য রম্বালিয়াড় জেগা উঠার ফিস্কৃডিয়া নিয়ে যাজে। এবং কত রকমের সাব বড় বড় জিন্কে—মিন্কের জেন্তর কখনও কথানও এরা মাজে। বাবে না, সমাদ্র এখানে সাত্রভার বোঝা বাবে না, সমাদ্র এখানে দাভিকেছিল।

স্যালি হিগিনস্ একটা কথা বলছেন না:
স্বার সামনে, একেবারে সেই ছাদের কিনাবে
বাড়িয়ে আছেন। বাডাস আসছে। ও'র চুল পোলাক সব উড়িয়ে নিয়ে সেতে চাইছে।
ও'র হাতে রুপোলা চিন্টক তিনি স্টিকে
ভব করে দাঁড়িয়ে আছেন। তার পোর স্ফরে
অমন একটা বুখটিন: নানাভাবে ভাকে বিষয়
করে দিছে। তিনি ভাবছেন, এমন ভো
হবার কথা না। সমুদ্রে এভ দীর্ঘালিনের
স্কর্ম, কথ্নও তিনি এমন বিচ্লিত বোধ

Legil Millian (1995), Program of Johann (1996), Program (1996)

করেন নি। এতো প্রায় আবেহতার সামিসা। তিনি কি এখন করবেন ডেবে উঠতে পাবজেন না।

তব্সব সিথর সিংখাদেতর মতো লাঠি উ⁴চিয়ে বললেন, আমাদের এখন জাহাজে ভিষলত হবে।

সবাই, স্যালি হিগিনস আর কৈ বলবেন, ভেবে দাঁড়িয়ে থাকল। কেট নডল না।

কিনি বৃদলেন, বড়-চিন্ডাল এটা ভাল কাজ কয়ল না।

ওরা দাঁডিয়ে আছে। ব্রুতে শার্রছ ওরা, স্যালি হিলিনস একটা কথা শেষ করছেন আরু মাথা নিচু করে রাখ্ছেন। যেন করছেন কাছে ডিনি পরাজয় স্থানিকর এমনভাবে লাঠিতে ভর করে পাঁড়িয়ে আলেন।

তিনি ফের বললেন, ওকে শেলে আর্থাপাঞ্চলো চাবকাতাম। তাবপর যেমন জিতে দৃতি ঠেলে আকার ঠিক জার্গায কসিরে দেন তেমনি বসিরে দিতে দিতে বসলেন, স্কাউডেজন।

তারপর তিনি ভাব একটা কথাও
বললেন না। ঠিক লাঠি সাধান তরবারিক
মতো উণ্টু করে হেণ্টে যোতে পাকলেন। তে
এল, কে এল না পেছন ফিরে একবার
কেখলেন না। সোজা সমাদুরে তর লাঠিব
অজ্বতা দেখিয়ে ছাদের এপর দিয়ে হেণ্টে
যেতে পাকলেন। জ্বতোয় ঠকঠক শব্দ শোনা
যাক্টে। নীল রভের ভাহাভটি পোলাক,
পাতলা কদ্ম ছাটের চুল এব সাদা এক
মহীয়ান ব্বক এখন যেন পাহাড় বেয়ে
দাঁৱে উঠে যেতে চাইছে।

প্রথম ডেবিভের হু হল আরে চলে যাচ্ছে ব্ডো। চলো। স্বাই ভোচন। দাভিয়ে থাকলে কেন।

সারেও তবি এনজিন-র্ম কমীদের প্রায চুং মূর্বেথ বলার রাতো চে্বকে বললেন, ফিরে যান স্বা^ট।

ডেক-সাবেঙ তার লোকদের বলল, নহিব মিএরা। পেটের দাহের ডোছারা ভাগো স্বাহাটো মবডে এসেছ।

ছোটবাব্ বল্প স্বাই চাচা পেটের দায়ে এসেছে। এখন এ-সব বলার সময় না। প্রায় চিংকার করে উঠেছিল সে। কেউ ভার ওপর কলিয়ে পড়তে পারে, টশুটিছিছে নিতে পারে এখন, বিদ্দাহাত আচি করতে পারে নি। এবং যেন জাহাজিরা মারপিট সারা, করে দিতে পারে সংক্ষেই সামানা কথায়া তেল-সাবেঙের অপমান হাল সে বৃত্ততে পারে নি। ডেকাসারেঙের সামানা কথায়া তেল-সাবেঙের অপমান হাল সে বৃত্ততে পারে নি। ডেকাসারেঙক পারে দিয়ে প্রিভিয়ে তথ্য থাটো গলায় শিক্ষা দিছিল আর্চিণ

এনজিন-কণ্শ হাত উ'চিয়ে ক্লুল, সদ্বা লশ্বা হাত দেশে গিয়ে ঝাড়ৰে ছোটবাব. ৷

ছোটবাব অবাক! সে বলল, কাশপ আপনাকে কিছা বলে নি।

বলি বলল, ছোটবাব চল। ছোটবাব এগিলো গেল। বলল কণক মাথা গলম কলছেন কেন? এখন আমাদের মাথা গলম কলার সময় না।

ডেবিড বলল, কি বলছে ছোটবাৰ;? ছোটবাৰ: বলল, কিছ; না।

এনজিন-সারেও বললেন, ছোট পুই আমেলায় থাকিস না।

—কিসের ঝামেলা চাচা।

এনজিন-কশপ তথ্নও বেশ সর্গেক করছে। স্বাইকে ভাতাছে। ছোটবাৰ ডেক সারেওকে অসমান করেছে। কথাবাতা ঠিক জানে না। বেয়াদপ। এবং কশপ মখন এ-ভাবে চিলাচিল্ল করছিল, তথ্ন জাক বলল, ছোটবাবু কি বল্লে কশপ।

ছোট্ধাব্ তেম্নি নিম্পুত্ গলার বলব কিছু না।

এনজিন-সারেঙ বললেন ছোটবাব, তুই চাল আয়। বলে হাত ধরে টামতে চানতে নিয়ে গোলেন। ওরা কিছা, একটা করতে চাইছে, কি চাইছে আমিও ঠিক জান না। শুধ্ ব্যুখতে পারি, ওদের যুত্রপ ভাল না।

ছোটবাৰ হুটিতে হটিতে বলগ, **ওরা** কি করতে চায়, আমি সব **জানি**।

সারেও সহস্যা দাঁড়িরে **প্রেন্স। —িক** করতে চার?

—চায়, কিছা একটা করতে চার চাচা। এখন তোমাকে বলা ধাবে না।

---ওরা তোর কোন ক্ষতি **করবে** না তো!

—তা করতে পারে। তুমি ভেব না।

এনজিন-সারেও আর একটা কথাও বলতে পার্লেন না। আচি পেছনে ভার প্লবল নিয়ে আসছে। ছোটবাব, ব্ৰুড়ডে ভীষণ গ্ৰহ পারছে আচি জাহাজে। সে *জাহা*জিদের ভার টানছে। ভারপর কি 🛊 করতে भारत আর্চি ভার স্ব ধ্যেন **জানা। সে বশল**, মির্বা তমি থাকলে কত **তামার সাহস** থাকতো বলতো। সে দ-হাত 'তলে চিংকার করে বগতে **পারলে যেন বচিত**, ভূমি ভারি স্বার্থপর মৈরদা। কিম্ভু কিছ, নগতে পারল না। ওর চোখ - **জলে ভার** হয়ে আসভিল। আমনু নেই, মৈরদা দেই। ভূতির নিংসাল সে ভূতিহল একলা। এত বড়া ্ৰের সভ্যে করে ব্যবে এখন!

(\$PP'\$)



অসমাপ্ত বিশ্লব—(২)

6. खाण्ड विस्काव:व रमश्रा शांत्र अर विश्वासी खामभाष्यः। खान्नास मारूटकः জ্বাসী বিশ্বার এবং বিশ মানেকেও বালিয়ার সমাজতাশ্যিক বিশ্লবকৈ যুগাশ্তকারী ঘটন ষলে ধণনা করা হয়। কিন্ত সভিটে বি **এই मार्ट विन्त्राहरत करता यात्रान्छत घराउँ छन्** ব। বটেছে ? ফরাসী বিস্পাবের দ্বান পাচীন शास्त्रीताराज्या---ाग অধনপর্যার প্রট্রনীয় ধ্যাংস হয়েছিল সংগ্ৰেছ নেই কিণ্ড সমাজ বার্যপার কি কাম। পরিবর্জন সাচ হারেছিল ? বিশ্লাবের পর সাধারণ ফ্রাসা নাগরিক নিজেকে প্রখন কলতে শার করেছিল : কি পেলাম ? ভারপর মিজেই তাল উত্তয় দিয়েছিল : কিছা না। প একজন চিতাশীল নাগরিক অবশা দ্বীকার করেছিল ঃ না কিছা পাত্রা গেছে এবং বো হল আইনের সমাক্ষ সমতা। কিংত এই সমতা যে সম্পূর্ণ অস্পন্ট ও অনিদিক্ত —বিশ্বরোত্তর হাগের অস্তর্গান্তসংস্থা নাগ বিক ক্ষান্ত প্রকাশ করেছিল।

বিশ্বর সফল হলেও অসমাণ্ড বলেই
মেপোলিয়নের অধীনে সামরিক নায়কত্তের
উৎস্ব সম্ভব হরেছিল। স্তেরাং প্রাচীন
ধার্মী বারস্থার পরিবর্তে মকুন রাজ্য-বারস্থা
প্রবর্তিত হলেও ঠিক যগোল্ডন বা অস্পা
বারস্থায় আমাল পরিবর্তান ঘটেন।
উপ্সাধান উল্লেখ করা বেতে পারে সে পাচীন
ভিদ্যাল সাধান কিলেব বলাতে এইরক্ত
ব্যান্সক্রম ব্যান্সক্রম।

নামিরা ও অনানা চেশের সমাজ কাশিক বিশ্ববের ফলেও বংগাতের সাধিক ইননি-আতত এখনেও নয়। ১৯৭০ সালে সোলে কাশিক কাশিক কাশিক সাজে কাশিক কাশিক

মানে অধানিচিক বিশ্বনা আখ্যা বিশুলা হন-বা বাজান-বাদেখাকে ক্রুদ্ধ জনে তেন্ত্র গুড়ক থেকে গড়ে উনতে উদিদ্দ লভাবে একে পরিচিত বাপ পরিচাত করে ভাগু অসমান্ত পোক গিরেছিল। এবং এই কার্যাকই প্রয়োজন চরেছিল আন এক দক্ষা বিশ্বনার বা বিশ্বাবের এক নতুন অধ্যারের

অথানৈতিক বিশাব :

সংক্রেপে বলা যায়, মধাযুগের ধর্মীর ও প্রথাগত সকল প্রতিবংশককে অপসারিত করে সন্নাক্রের উৎপাদিকাশন্তিকে সম্পূর্ণ মন্তে করেই হলা তথাকথিত অথুনৈতিক বিপার। সার হেনরী মেইনের ভাষার, এই পরিবর্তানের ফলে সমাজের উৎপাদনারতথা যা গতানাগতিকতার ধারা বেংহ গাঁল ধাঁরে চলাছিল তা হঠাও এক করিশালী যাতে পরিগত হল এবং এর করাশন্তির উৎপাদন বা লাভ্রের উৎপাদন বা লাভ্রের উৎশালী বা বা লাভ্রের উদ্দেশ্যে বিলাম্যা।

এই বিশ্ববের বাাখা। করেন আজাম
শম্থ এবং বিশ্ববাক কত্তকটা নির্দিশ্ট পথে
পবিচালনার প্রশুলী করেন মালথাস ও
কোন্ডো ইউটোপিয়ান সোল্যাজিস্টরা এবং
তংশরবতী ব্যাে লডা কেইনস এবং তাঁব
অন্বতীগণ। ইতিমধো অধশা কালা
বাকস অথানৈতিক বিশ্ববের খোলনলাচে
পালাট ফোলে ভাকে সম্পূর্ণে নতুন ধারায়
পবিচালিত করবাশ আহান জানিয়েভিলেন। এবং কেইনস ঠিক রশ্যাকে
গাবভাগি হবার আগেই রাশিয়ার নবস্থাতিতিত শ্মিক ও ক্ষকদর সমাজভাগিত
শালী অথানিতিক বিশ্ববের ইতিছাসে এব
নতন অধ্যায়েশ স্চনা করোছল সর্বাণনী
অথানিতিক পরিকদশনা প্রবর্তন করে।

সোভিরেন্ত ইউমিরনের অঞ্চিনিত্র পরিকলপনাশ অভাবনীয় সাফলা অর্থানীতি-শাস্তবে এক নতুন মর্যাদা দান করে—করেণ এই সাফলা প্রমাণিত করে যে অর্থা ব্যবস্থাকে প্র-পরিকণ্সনা তান্সাং স্পরিচাণিত করেল মান্ত্রের অভাব মাচনের সমসাদ্ধ দার্থাক মোকাহিলা লানেকাংশেই সম্ভব।

विश्वादव नवश्ववीत :

এই বে প্রতীক্তি—এ এক মুগাণ্ডকালী ঘটনা সন্দেশ্য নেই। কিন্ত এই পাণ্ড সর্বাক্তের জন্সরদায় কিয়া জা মিনে বিশেষ বিক্রেরের স্থানী হয়। বলা হল ব্যৱসিক্তিক বিশ্বাবন এই অধ্যান ম্যান্ট অধ্যানিক্তীন নল—ম্যান্টেই ক্রমণান্ত্রিকালীন নহ। সভালা এই প্রথাত ক্রেমি গণভালিকাল দেশে গ্রহণীয় নর। অধ্যত অধ্যানিতিক পরিকশনা হৈ বিশেষ ফলপ্রদায়ী—সে
উপলব্ধিও বৃশেষ প্রসারলাভ করে। ফলে
অথুনিতিক পরিকশনা মহণের অন্তর্কু এই
পরিকশনা হৈ ভিন্ন প্রকারের হুইরা
প্রয়োজন ভাও অন্ভুত হতে থাকে। এই
সঙ্গাতির সামঙ্গদাবিধানের প্রচেণ্টা থেকে
জন্মগ্রহণ করে গণতালিক অথুনিতিক
পরিকশ্বনা ধারণা, যাকে প্রথনিতিক
বিশ্ববের আর এক অধ্যায়—নবপ্রশাহ্ন বলে
যভিতিত করা যায়।

বিষয়টির সামানা ব্যাখ্যা করা যেতে পারে।

সাক্ষর জীবন সম্ভব করবার জনেটে গাণ্ডের অণিত্র'-বহু শতক আগে গ্রীক দার্শনিক আাহিস্টাল এই টুলি করেছিলেন। উক্তিটির ভাংপ্যতিল যে সর্সাধারণেশ कल्यानमाधनक इसल्येत हिल्लका। नारक्षेत्र अर्ड पिल्कमा हात त्यक्ता इतम अभ्य कर्ड ल कार कार कार प्राप्त कार कार कार এই 'फ्रांल উ'प्रमागाधन कतरक भारत र छ। বংপকে বিভিন্ন সাল বিভিন্ন প্রাথল পোষ্ট করা **হয়েছে।** াক্তবাতন্তাবাদের পর সমাজবারে এসে মান্ত্র এই ধুশলায় উপনীত হয় যে অথ্নিতিক ক্ষেদ্র রাজ্ট্রের কাঞ হবে মান্ত্রকে অভাব থেকে মুক্ত করা। অভার থেকে মাজিল এই দানিই পরিকল্পনা-প্রবণতার র প আমানের মত স্বলেপারত দেশে ভাভাব বিশেষ প্রকট বলে জেখানে স্নন্দ পরি-কর্মনা-প্রবশকার আধিকা দেখা <u>হাস।</u>

न्यरम्भावक स्मरम् भविकरभयातं सका ३

(এক অৰু হাই মাসকল্যালান) বাল ৰক্ষা কলেছেন ভাতে পেশহোৰাৰ ককাও कारक किन्द्र का द्वा काराज नशिकन्त्रता ৰা ভাৰালৈতিক বিশ্ববেদ্ধ এই পৰালেত লোৰ কৰা। কোন স্বলেগাহাত নেশই আৰু THE OF THE PER CHICAGO PICE IN শতেরাং স্বতিই বিশ্লাবের এই স্বপ্রার मन्त्रार्थ जनमान्छ। अवर जामारम्य स्टब्स বিশাব বেশীদরে অলুসর্ট হর্ম। রুত্তো-নিদেশিত সম্প্রসারণের ভতীয় প্রের উলেখ করে বলা বার বে, আমাদের সম্প্রসারণম্ভাক অর্প-ব্যবস্থা ভূমিভ্যাগ (एक-जक् क्रिक्ट नमर्थ इस्ति। क्रमान : পশুম পরিকাপনার খসভায় ঘোষিত দুটি त्यांन लका-(क) माधिता मृत्रीकराण, (भ) অর্থানৈতিক স্বয়ুন্ডরতা অর্জন। স্মরণ অথ্নীতি इ.च. সম্প্রারণ অম্পালে ভূমিত্যাগ পরের পরত বিনিরোগ এত বৃশ্বি পায় এবং প্রবৃদ্ধিবদ্যা এত উন্নত হয় যে সম্প্রসারণ সম্পূর্ণ স্বরম্ভর হরে ওঠে। আমাদের বিগতে ২৩ বছরেও পরিকল্পনার পরিপ্রেক্টিডে বিষরটির পর্যালোচনা করা যেতে পারে।

আমানের অর্থনৈতিক পরিকাশনা :

আমাদেশ প্রথম পগুবাবিকী পরিকংশনা (১৯৫১-৫৬) ঘোষত মুখা উদ্দেশ।
ছিল দ্বিটিঃ (ক) যুখ্ধ ও দেশবিতাগের
ফলে ক্ষতিগ্রন্থত অর্থ-ব্যবস্থাকে শাস্তশালা করা, এবং (খ) জনসাধারণের জ্বীবন্যাইতা মান উরয়নের জনা উয়য়ন্ম্লক কর্মা সংধৃতির গোড়াশতন করা। সম্প্রসারণের মাপ্রাঠিতে লক্ষা ভিল মাথ্যপিছ্ব অয়াবে ব্যাসম্ভব তাড়াভাড়ি দ্বান্ন করা। কিন্তু ২৩ বছরেও মাথ্যিপ্ছ্ব আয়া দ্বিগ্ন

শ্বিতীয় পরিকম্পনায় (১৯৫৬-৬১) উল্লেখনের প্রতেজন গতি ছড়েও নিয়োগ সম্প্রদারণ ও জাতীয় আয়ের নায়া বন্টনের ওপন গ্রেড আরোপ করা হয়। এই নাায়া বন্টনকেই সমাজতাশ্বিক পক্ষপাত

ভতীয় প্রিকশ্পার (১৯৬৯-৬৬)
লনপতির সন্তাবহার, ক্রাসংখ্যানের
স্বোদ-স্বিধার সন্তাবহার, এবং আরি ক্রাস্থ্যার ক্রায় আরু পর করে।
ত্রাহার আরোপ করা হয়। এর পর চলে
তির্ঘি বার্ষিক প্রিকশ্পার (১৯৬৬-৬৯)
এবং ১৯৬৯ সাল থেকে পরে, হয় চতুর্থ পরিক্রণার ভবিন্নবারার হান উল্লেন্ড পরিক্রণার ভবিন্নবারার হান উল্লেন্ড ব্যা জন্মন এবং জনপতিব্যাধ্য মৌল উল্লেন্ড্যের অন্তর্ভুক্ত হয়।

জা হলে দেখা যাজে বে ২০ বছর থরে জমাগত জীবনবাতার মান ও জনশান্তর স্থান হলে, কিন্তু ফল কতা হয়েছে? পালম পরিকলপনার খনজ্য দালি করা হয়েছে যে, জার্থানিতিক জারনের ফলে মাথাপিছ, আয় লক্ষাণীয়ভাবে বৃশ্বি পেরেছে, এয়ন কি আন্মাত অঞ্চলসম্ছেও জীবনযাতার মান উমত্ত হয়েছে। কিন্তু সপো সংলা স্বীকার করা হয়েছে যে উল্লেখযোগ্য উন্নয়ন সংস্তুও মোট জনসংখার ৩০ শতাংশ দারিত্রাসীমার নীচের রে গেছে। আর দারিল্যাসীমার সংজ্ঞা হল ১৯৭২-৭৩ মালির মালাশতর আনুযারী মাথাপিছ, মাসিক অলতত ৪০ টাকার দ্বাদি ভেগের বাবস্থা।

স্বভারতীয় গড়ের হিসাবে এখনও যদি জনসংখাদ্ধ ৩০ শতাংশ দরিত্র হয় তবে কোন কোন অঞ্চলে এই পরিমাণ যে আর বেশী তাতে কোন সন্দেহই নেই: বেসরকারী স্তে বলা হয়েছে শিংস্পানত পশ্চমবংগাই শতক্ষা ৭০ ভাগ লোক দরিদ্রাসীমার নীচে রয়েছে।

তারপর ধরা যাক বিপলে জনশন্তির সম্বাবহারের কথা। সম্বাবহার দুগুরে কথা, মোটাম) বাবহারও বে সম্প্রত হরান ভাও সহাজ অন্মের। হলে কর্মারাথীর সংখা-বান্ধ এইভারে ঘটত না, আরু নিয়ন্তবন্দ ক্ষান্ত প্রতীক্ষাক ক্ষেত্র নাইছে ক্ষান্ত ক্ষাত না।

আছিক বৈশমা সংক্রমণ বাৰ্ত্তান্তর যে বিশেষ সূত্রর পাওরা বার্ত্তান আর্থান ভাত অনস্থীকার্য। একটা হৈছিল করিবল, কমিটি ও কন্তুপিকছু স্থীকার করেছেন।

जनमान्छ विन्त्रव ३

স্তুরাং সব দিক দিয়ে বিশাব শুৰু অসমাণ্ডই থেকে বারনি, সাথাকতার দিকে অগ্রগতির সক্ষা দেখা বাক্সে কিনা দেইটিই বিচার । অন্যান্য শ্বন্ধেতার দেশেও অনেকটা এইসকম হরেছে। বেমন ইলেন-নিশারার তৈল সন্দাদের দর্ম জাতীয় আরু হঠাও অকলিপতভাবে ব্যিপ্ত লেরেছে, কিন্তু বন্টনজনিত বৈষ্ক্রেমার দর্ম দারিল্লাও বায়াপ্রত্ত হচ্ছে এবং অসংখ্য কর্মপ্রাক্তী সত্তেও উৎপাদন-ব্যব্ধাকে ঠিক কামাভাবে সংগঠিত করা সম্ভব হয়নি।

এই রক্ষা প্রিমিথতির দ্যান প্রথম উঠোছে যে সাভাই কি গণভাগিক পরি-কলপ্না অথনৈতিক বিশ্ববের এর মতন প্রায় না এক ভ্রান্ত আদর্শ? বিস্থার্ক জামেনীল এক যাব-সন্মেলমে বস্তুতা দিতে এসে বলেছিলেম ঃ আছি তোমাদের মাত্র তিনটি উপদেশ দেব—কাজ কর, কাজ কর, কাজ কর (ওরাক', ওরাক' আশ্তে ওয়ক)। কি করে ব্যুক্তনার্যত দেশ-সমূহের বিপাল জনসংখ্যাকে লাগানো যায় তাই হল গণতান্তিক প্রাদ-কলপ্রার সমস্যা। এ সমস্যার সমাধান সম্ভব না হলে এ ধরনের বিশ্বব শাধ্য অসমাশ্ত থেকেই যাবে না বিশরীত বিশ্ববৈদ্ধ দিকেও যে কোন দিন মোড় **য**ারতে পারে। তথম হয় অথানৈতিক পরিকল্পনা না হয় গণতত্ত যে কোন একটিকে পরিভাগে করতে হতে পারে।

—नाण्डिनान महत्यानामासः।

रेठ जनार पव अयकालीन वाडाली अयाज

বাংলার আকাশ জুড়ে মধায়:গে নেমেছিল দুরোগের ঘনঘটা। সেদিন তার সমাজ ধর্ম, জ্ঞান সব কিছুই আচ্ছল ছিল এক অগোরবের কালিমায়। কৃতিম অথ'হীন সংকালের বেন্টনী এবং ঐক্যের সৈথিলো ছিল্পুসমাজের চলমান গতি হয়েছিল আবর্মধ। অঞ্চান্তা এবং স্থিতর মধে নির্শায় এবং আম্মা ভখন একাত অসহায়। এমন সময়ে সেই আত্রিসম্তির অপ্রকারের মধ্যে একটি সম্পান্ত আলোক য়োখা দিপায়ান হয়ে উঠালো। সেই আলোকবলিকা হাতে নিয়ে মাজিদতে হকে সাধারণের মাঝখানে এফে দভালেন চৈত্রসাদেব। ভার স্প্রে নতুন জীবনাশাঙ

লাভ করলো জীণ স্থবির বাঙালী হিন্দুসমাজ।

বাংলার স্কৃতান হোসেন শাহের রাজরে চৈতনাদেবের অভাদর মাট। ১৯৮৬ সনের ১৮ই কের্রোলী নবশ্বীপে তরি জন্ম হয়। তাঁর ভাকনাম ছিলো নিমাই। তেইশ বছর বছরে কিন জনত দীক্ষত হন এবং এর বংশ বছর পরে কেশব ভারতীয় কাছে দলাপর করে করেন (১৫১০)। সালাসে হত্য করেন (১৫১০)। সালাসে তহ্য করেন (১৫১০)। সালাসে বংশ করেন (১৫১০)। সালাসে বংশ করেন (১৫১০)। সালাসে বংশ করেন (১৫১০)। সালাসে বংশরে পরে তিনি অধিকাংশ সমার নালাচল বা প্রেণিকেই থাকাডেন। শ্রীক্রকের ক্রীবাড়াল বান্ধাবন তথার প্রায় ক্রমন্ত্রা হার্নাকরে তথার প্রায় ক্রমন্ত্রা হার্নাকরে তথার প্রায় ক্রমন্ত্রা

আবার এটাকে বৈশ্বর ধ্যেরি একটা প্রধান কেলে পরিণত করলেন। বহু বিশিষ্ট ব্যক্তি তারি পার্বদ্রেশান্তক্ত হন। এলের রাধ্যে ছিলেন শাণ্ডিপরে নিবাসী প্রবীণ বৈশ্ব আচার্য অন্বৈত, বীরভূমের একচাক্ষ রামের হাড়াই ওকার ছেলে অবধ্তে নিত্যান্দ্দ, বৈশ্বর ধর্মাণ্ডিরিত মাসসামান হরিদাস ঠাকুর, নিমাই পাশ্ডিতের সহপাঠী এবং চরিতকার মারোগি গশ্ডে প্রভাগ নিহাইকে উপ্পারের অত্তার বিশেকারের বিশেবা করেন। বিশ্বরাধার করেন করেন। এই পাণ্ডি কালের কুলা বিশ্বরাধার করে। এই মাধ্যের ভাবের প্রতীক ক্লেক্স

श्रीक त्मानीतम्ब बागः बागाव त्थ्या। धरे হোজের উন্নাদনাই চৈতনোর জীবনে প্রতিভাত সমেছিলো। বাধাককের আদর্শ অনুবারী হৈতদেও শান্তক ভাবমেশানে। ভাষাদ্যভিত্ন ও প্রেমের ভরণ্য সারা দেশে काशिदर्शेष्टरमा अव शहान नकीयती भाषा

এটোলে ভাষাককের প্রেমের মহান क्रमान देखाना कार्म थारके हाम अत्माह কিন্ত লো বছাল পরিয়াণে সাত্তিক ভাব থেকে সরে গিতে নরনারীর দেহসম্ভোগের काश्य क्रदश क्रिकेंक्स्ता। कवि क्रशस्त्वत শাতিলোবিদ্য এবং চণ্ডীদাসের শ্রীকৃষ-ক্ৰীড ন' কাব্যগ্ৰালতে দৈহিক সম্ভোগের এক নপ্ররূপ চিল্লিড হয়েছে। চন্ডীদাসের প্রীকৃষকীতান কাব্যে রাধাককের প্রণয় কাহিনীর মধ্যে সে র প প্রকাশ পেয়েছে। কক্ষীত নের নায়ক কুক বারবার রাধাকে ৰলেছেদ ৰে তার দেহসম্ভোগের জনোই ডিমি (রুক্) প্রিথবীতে অবভার হয়ে জন্মেকেন (অবভার কৈল আহেন ভোর রুডি আলে)। অবশা চ-ডীদাসের পদাবলীতে এবং অনাত বিশ্বতথ উচ্চপ্ৰেম্য আদর্শ এবং উচ্চালা ভরিরদের কথাও আছল দেখতে পাই। যা-ই হোক জনদেশ থেকে শার করে তিনশো বছর পর্যত রাধাকুকের প্রেমের নাম করে কামের নগন-রূপ আর পরকীয়া প্রেমের মাহাত্মা বৈক্ব ধর্মকৈ কল্বতিত করেছিলো। এই কল্মতার কির্দেধ শ্রীটেডনোর স্পেষ্ট প্রতিবাদ ধননিত হোলো। জীব অজেয় পৌর্য পবিত্র সাত্তিক ভাব এবং অসাধারণ বান্তিঃ রাধাকুকের প্রেময়ালক বৈক্ষর ধর্মকে এক অতি উন্নত শতরে তুলে দিলো। পবিগ্ छडित श्रकाना উপमस्थि श्रारगाश्चापकारी কটি-ন আন রাধাক্ষের প্রেমের যে শ্বণাীর আদশ তিনি নিজের জীবনে রপোয়িত করেছিলেন তার স্রোত সমস্ত মলিনতাকে ধ্যুয়ে ফেললো। এ প্রসংগ্য চৈত্নাদেবের প্রবৃতিতি একটি নির্ম বিলেবভাবে উল্লেখযোগা। তবি আদেশে নারীর সংখ্যা বৈক্ষর ভর্মের কথাবর্ডা নিষেধ करत रमश्रम जात्मा।

এ ভাবে চৈতনোর অন্সূত আদশ এবং দৃষ্টান্তে সমালের নৈতিক মান ছোলো উন্নত। বাঙালি হিন্দ্ যেন এক মতৃন জীবন লাভ করলো। নবদবীপের একটি ঘটনার মধা দিয়েই তা আমাদের চোখে পড়ে। সেধানকার মুসলমান কাজার হ্কুমে মখন চৈজনোৰ প্ৰবিভিতি কীতনি গাল নিষিশ্ব হোলো আর কীতুনীয়াদের ওপর দার্শ অভ্যাচার শ্রে হোলো সে-সমরে অনেক বৈক্র ভার পোরে নবদ্বীপ रहरक खना काइगारा या श्वात সংকশ ক্ষালেন। একথা শ্বনে প্রতিহিংসাবশত অনেক **অবৈক্**য বেদা খুদি-ই হলেন। কিন্তু তা ঠৈতন্দ্ৰেলকে এতট্কু দমাতে পারলো না। তেলোকীত হরে তিনি বোৰণা করনেশ যে কাজীর আদেশ অমানা कता बह नवन्त्रीरम् व्यवस्थे कीर्जन करत

ইতিহাস এট সাক্ষা দেৱ যে বাঙালি তিনলো বছরের মধ্যে ধর্মরকার কন্যে মুস্লমানের অভ্যাচারের বিরুদ্ধে মাথা ভলে দাঁড়াতে পারে। তারা মান্দর এবং रमयम् जि धन्तरमत जगना नाइना धरः নিদার প অপমান সভা করেছে নীরবে। এবার চৈতন্য নেতা দিয়ে অসম্ভবকে করে তলজেন সম্ভব। তিনি কীত্নীয়ার দল নিয়ে কাজ । বাড়ির দিকে এগোলেন। কাজী কুশ্ধ হয়ে বাধা দিতে এগিয়ে এলো। কিত মারমুখী এক বিবাট জনস্রোত ভার বাড়ির দিকে এগোচে দেখে কাজী পালিয়ে গেলেন। এর পরে সংকীতনি নিষেধের আদেশ তলে নেওয়া হোলো।

চৈতন্যদেব এই দতে প্রতিজ্ঞা করেছিলেন বে শ্ৰী শ্ৰে মূৰ্থ ইত্যাদি আচন্ডালে প্রেম ভার বিভয়ণ করে তাদের জীবন গোরবাশ্বিত করবেন। প্রেরীতে থাকাকাল্যীন তিনি এই টানেলো অবহাত নিতানিকাক वाध्यारमाण भागात्मम । हैएएमा करिक धार्ट কথা ব্লেছিলেন, 'তুমি বদি শ্বের দেয়াসীর জীবন্যাপন কর তবে নীচু পতিত মুখ দরিদ্রকে তার কে উম্পার করবে।' এই প্রচেষ্টার ফলে জাতিভেদের কঠোর শাংখন ভেঙে গেল। হিন্দু সমাজের নীচের তলাগ যে সমূপত শ্রেণী এতকাল উপেক্ষা আর लाक्ष्मात माथा कीवन कार्गिक्टला जाएनड একটা বড়ো অংশ বৈষ্ব ধরে দাক্ষিত হোলো। চৈতনোর আগে দলে দলে নীচের শ্রেণীর হিণ্দুলা ইসলাম ধর্ম গ্রহণ করছিলো। আবার অন্যদিকে ব্রাহ্মণদের অভ্যাচারে সমাজের নীচের শ্রেণীর প্রান্তন বৌদধ্যা মূসলমানদেরই হিন্দুর আরাধ্য দেবতার জায়গায় বসিয়েছিলো। অহাত সোজা কথায় তারা ইসলাম ধর্ম গ্রহণ করেছিলো। কিন্তু নিত্যান্দ এবং ভ[†]র সহচরদের প্রচারের ফলে জা আশ্রত আংশিক পরিমাণে বৃণ্ধ হোলো।

চৈতন্যদেব তার প্রেমভারম্ভাক ধর্মে দীক্ষা দেবার জনো যে নীতি গ্রহণ করে-ছিলেন তা নিঃসণেদহে এক বৈশ্ববিক ব্যাপার। এর জনো তিনি আন্তানিক শাস্ত্রবিহিত নিয়ম ইত্যাদি বাদ দিয়ে স্ত্রী পরেষ এবং উচ্চ নীচ সব ভোশীর মান্য-কেই এই ধর্মের ছায়াতলে এনেছিলেন। ফলে অনেক শ্রু এবং সংখ্যার অলপ হলেও মুসলমানেরাও বৈক্ব ধর্ম গ্রহণ করল। জাতিভেদের ব্যবধান গেলো কমে। ভাই দেখি যবন সংস্পর্শ থাকা সত্তেও হারিদাস ঠাকুরকে অশৈবত আচার্য প্রাদেধর অগ্রভাগ দান করেছিলেন। অনাদিকে বাচ্যাণ্ডের জাতির সাধকেরা বিনা স্বিধার বাহমুগকে মশ্র দিতে শার্ করলেন। রহানাথ দাস কারাম্ম হয়ে গোড়ীয় বৈক্ব ধর্মের নিরতা হয় গোস্বাম্বীর মধ্যে স্থাম পোলেন। ভাসংখ্য बाङ्गण काद्रण नरवासम ठेक्टावत भिनाप গ্রহণ করকোন।

এই সময়ে নারীদের অবস্থাবত উল্লেড দেশা দিলো। কুলবধ্য়া প্রকাশা সংকীতানে বোগ দিতে আরম্ভ করলেন। তার সাক্ষা পাই বজরায় দালের কারো। জিন

निर्देशक "मश्कीर्जन बाद्य माठ करने বোচাৰি ৷ বেডডি মহোবদবের সমর নিজানশ্বের ক্ষ্মী জাত্যকী দেবী গোড়ায় रेवकव अध्भाषायाव न्याव्य मिरविक्रालन। वट िम्बारक जिन शन्त्रपासक करबिहालन। অন্যাদকে শ্রীনিবাস আচারের মেয়ে হেমলতা ঠাকুরাণীও অনেক শিব্যকে মণ্ঠ দিকে ছিলেন

হোসেন শাহের রাজতে বাঙালি বৈশ্বথ ভন্তদের অবস্থার দিকটিও আলোচনা কর। প্রোজন। আগেই বর্লোছ নবস্বীপের কাজী বৈক্ষ ভরদের প্রতি কিরকম আলোচার করেছিলেন এবং চৈত্নাদের সেই কাজার বিবৃদ্ধে পড়াই করে হথিনাম সংকীতন চালা করেন। তার এ ব্যাপারে ভয় পেয়ে তোসেন শাহের মন্ত্রী এবং পারিষদেরা চৈতন্যদেবকে গ্রাজ্ঞধানী গৌডের সালিধা ছেভে যেতে বাধা করেছিলেন। আর এটাও বিশেষভাবে মনে রাখা উচিত যে ১৫১০ সনে দীক্ষালাভের পর চৈতনাদেব চৰিবশ বছর অর্থাৎ ১৫৩৩ সন প্রথিত বেচে ভিলেন। অনু মধ্যে সহ মিলিয়ে তিনি পরের একটি বছরও বাংলাদেশে কাটান নি। এভাবে তিনি বাকি জীবনের বেশির ভাগ সময় জ[†]র প্রধান ভক এবং হোসেন শাহের চরম শত্র, ওড়িশার বিক্রমশালী প্রাধীন রাজা প্রভাপন্থাদের আশ্রয়েই কাটিয়েছেন। আনেক বাঙালি ভক্ত ভাব অনুগামী হয়েছিলেন। এইসর ঘটনা থেকে বোঝা যায় যে বাংলার শাসক হোসেন শাহের সানাম থাকটোও তিনি হিম্ম ধ্যাবিলম্বী দের ব্যাপারে যথেত উদাসীন ছিলেন। দাঁদের নিরাপতা রক্ষায় তিনি বাথতিল পরিচয় দিয়েছেন।

অনেক প্রতিব্য অবংখা পেরিয়ে বাংলায় চৈতনাদে 🧺 বৈষদ্ব ধর্ম বিরাট জনপ্রিয়তা **ল**ে করেছিলো। এর প্রভাবে বিশেষভাবে সমুন্ধ এক বাংলা সাহিতা গড়ে উঠ্নে। বৈষ্ণবভন্ত কবিরা কৃষ্ণলীলাকে আশ্রয় করে অনেক গান বা পদ লিখলেন। এভাবে বাংলার গৌরবময় পদাবলী সাহিতা সৃষ্টি হোলো। শুধু তা-ই নয়. চৈতন্যদেবের জীবন-চারত অবল**শ্বনে**ও অনেকগ্রন্দি বড়ো এবং স্বাদ্র গ্রন্থ প্রকাশ পেলো। অপর্যদিকে কৃষ্ণলীলাকে কেন্দ্র করে রচিত হোলো অনেক আথানকাবা। এইসব রচনাসম্ভার প্রাচীন বাংলা সাহিত্যের শ্রেষ্ঠ সম্পদ এবং এদের সংখ্যাও অতি বিশাল। বাংলার বৈক্ষ সাহিতে।র এই স্মৃতিধ বাংলা সাহিতের অন্যানা শাখাকেও প্রভাবিত করেছিলো। এভাবে চৈত্রনাদোরের আশীর্বাদধনা বাংলার দাই ক্ল •লাবিত হোলো এক নতুন প্রাণের জোয়ারে। এ **য**ুগের উদার ধর্মনীতি, নারীপ্রগতি মহান কাবাসাহিতা, মহান সলগীত প্রভৃতি স্বাকটি দিকেই এক ऐक्कारम जाएमाक्यनमा क्रीफार भएम। **क**्रै উন্নত্তর সন্ধিন আক্ষম ফামল লাভ করে, **ছিলো আগামী দিনের বাঙালী** ভযাল।

-वारमद्वाकातः त्मन



মানসিক—(৩৭)

হিণ্টিরিয়া রোগ সম্বন্ধে মোটামটি আৰু এক পরিচয় দেওয়া হয়েছে। এবার রকমের মান্সিক রোগের বিষয় আলোচনা করা হাক। এই রোগটিকে আর্বেশিক বায়-বোগ (অবসেশানাল সাইকো নিউরোসিস) বলা হয়। নাম থেকেই বোঝা মাচ্ছে এটিও বায়ুরোগের পর্যায়ে পড়ে। মানসিক বোর্গের যে বিভিন্ন নামের তালিকা মানসিক রোগের বিষয় আলোচনা করার প্রথমেই দেওয়া হয়েছিল তার মধ্যে এই আরেশিক বায়; রোগও এক প্রকারের মানসিক বোগ বলে সেই তালিকাড়ত করা হয়েছে। আরেক ধুমজ বোন আছে তার নাম অন্কেশী বারা রোগ (কমপালশান সাইকো নিউমো-াসস) এই দুইে রোগকে অনেক সময় ধমজের মত সংযাত করে আবেশিক অনকেষণী বাদাঃ রোপ ৰঙ্গা হয়ে থাকে। কাছাকাছি হলেও ্বদের মধ্যে প্রভেদ আনেক। সেকথা সময় মত বলা যাবে। আগে আবেশিক বায় রোগের কথা বলে নিই পরে অন্করী বায় রোগের কথা বলবো।

এই রোগকে আবেশিক বলার প্রধান কারণ হল এই রোগে এমন এক মানসিক আবেশের সাখি হয় যার ফলে এক বিশেষ রক্ষের চিন্তা বারে বারে মনে আসতে থাকে। চেন্টা করেও সে চিশ্তাকে মন থেকে দরে করা যায় না। ইচ্ছে করে একটা বিষয় বহ্রবার চিন্তা করা যায়। কিন্তু এই রোগের বশে যে চিন্তা বা যে কথা বারে-বারে প্রানে আসতে থাকে তা যেন কোথা থেকে জ্বোর করেই বারে বারে আসতে থাকে। ইচ্ছে করে ভাবা কথা এ নয়, আপুনা থেকে মনে এসে জনালাতন করতে থাকে। মনে করুন আপনি কাজ করতে যসেছেন তথন বলা নেই কওয়া নেই যাদ কেবলই মনে আসতে থাকে 'আজকে সিনেমা যেতে হবে, আজকে সিনেমা যেতে হবে।' তাহলে কি হয় ? একই চিল্তা যদি চাজারবার করে আপনার মনে আসতে থাকে ভথন কি আপনি কাজ করতে পারবেন? এ জবশ্থার কোদও কাজে প্রেরাপুরি মন মনওয়া অসম্ভব। আর এই সামান্য কথাটা वारबनारत भरम बाजवात करन करम এकটा বিরবিত্ত কোধ জাগতে পাকে, কিন্তু তব্ চেটা করেও ঐ চিতা মন থেকে দরে করতে পারা বার না। হয়ত বিরম্ভ হয়ে বলে

বসবেন-সিনেমা যেতে হবে তো, তার হয়েছে কি? এখন তার কি? সবে তো विना ५५%। जाद जिल्ह्या मारे विकल ৬টাছ। এখন ভারনা কি?' বেশ হিসেব করে সৰ বাঝে নিয়ে কাজে মন দিতে গেলেন কিশত ঘারে ফিরে ঐ এক কথা কেবল মনে তোলপাড় কথতে থাকে। কিছুতেই যেন মন থেকে সে চিন্তা দূরে করতে পারা ধার না। ব্বুঝতেই পারছেন এরকম যদি দিনের পর पिन এक এकणे विषय नित्य किए, ना किए, চলতে থাকে তবে মান্বের মেজাজ ঠিক রাখা কি রকম কঠিন হয়ে পড়বে। যা ভাবতে চাই না মনে করি তাই যদি হাজারবার করে মনে উঠতে থাকে তবে মেজাজ খিচডে যাওয়া খবেই প্রান্তাবিক। এই জাতীয় রোগীদের মেজাজ অনেক সময়ই রুক্ষ হতে দেখা যায়।

এই রোগের মধ্যে দরেকম রোগা দেখতে পাওয়া যায়। এক শ্রেণীর রোগীর মনে হাখন যে কথাটা বসে হার সেই কথাটাই বারেবারে আসতে থাকে। কখন কবে কোন চিন্তাটা রোগাকৈ পেয়ে বসবে ভার ঠিক নেই। আর অনা শ্রেণীর রোগীর মনে কোনও বিশেষ একটা বা এক সূতে গাঁথা কয়েকটা চিন্তা প্রতিদিন হামেসা মনে পড়তে থাকে. অথবা প্রতাহ বিশেষ বিশেষ সময়ে বহবোর করে মনে আসতে থাকে। এই দুই রক্ষের রোগাঁই মনে করে ভারা এসব চিন্তা করতে চায় মা—তব কোথা থেকে এ চিক্টাগ্রকা এসে কেন তাদের বাধা করে ভাবার, না হয় মন জন্তে ৰসে। কিছাতেই সে চিত্তাকে দূর করতে পারে মা। অনকে রোগী এর হাত থেকে রেহাই পেডে চেণ্টা করে নানা ভাল ভাল চিন্তা কম্প্রা করবার করে, কিশ্তু সেসৰ চেণ্টা ব্যথা করে দিয়ে সেই আৰোশক কথাগুলিই ভাৰ যোৱাফেরা করতে থাকে। অসহা 578 কোনো কোনো সময় জোগীকে আবোল-তাবোল অসম্ভব চিম্তা ক্রবার চেটা ক্রতে দেখেছি। এমন কি নিজের মদে সে চিস্তা করতে না পেরে জোরে জোরে আজে বাজে কথা বকতে থাকে, ভাতেও যদি ঐ এক চিন্তার হাত থেকে রক্ষা পার! কিন্তু বেশী ক্ষণ তা পারে মা। ঐ এলেকেলা কথা চিন্তাম মধ্যেও মনে সেই জাবেশিক চিন্তা-गर्मन जानारभामा भरता करत रमत्र। जार्कान्त्रे

হরে রোপা তখন ছটকট করতে আরক্ত করে। রোগের প্রকোপ বেশা রেডে গেলে রোগাকৈ প্রায় উপাত্ত অবস্থায় নিয়ে রেডে পাবে।

বৰ্ষাকালে আকাগে মেম ক্লয়াই স্বাজা-বিক। কোথাও কিছা নেই সকালে খাৰ रथरक छेट्रे आकारण द्यात्र स्मर्थ गास इरह গ্ৰেল—'আকাশে মেখ জমেছে, আৰু আকাশে মেঘ জুমেছে, আকালে মে**ঘ জুমেছে।** যুৱে ফিরে এই কথাই যখন তথন মনে হতে থাকবে। কেন এ কথা ভাল মনে হল ভোগ জমলে কী হয় ইন্ড্যাদি কোলও কথার উত্তর রোগী দিতে **পারে আ। এমে ঐ** কথার চাপেই আঁত্**ণ হরে এঠে।** দিনের আনেকখানি সময় জ্বতে ঐ চিন্তা তাকে পেরে বসে। আবার এক **সমন্ত ইরড** সেটা আপুনিই মন থেকে দুর **হরে বার।** ক্রান্ত মনে তথ্নত যে আরেকটা কোনও কথা চেপে বসবে তার কোনও **মানে নেই।** হয়ত বেশী থানিককণ মন স্বাভাবিকভাবে কাজ করে থাকে। কিন্তু আবার কোন চিম্ভাটা যে ভাকে পেয়ে বসৰে **ভা আৰ্দে** থেকে কিছা বলা যায় না। রোগ**ি নিজেও** लारम ना। किन्छ भाग करत जना सर्व দেখলে দেখা হায় প্রত্যেক রোগার সমের এক-একটা রক্ষয় আছে যে**ন : এক"একটা** ভনদ আছে: যে রকর্মটিকে কেন্দ্র করে **এক** বংশৰ জাভীয় কথা বা চিম্তা তাড়ে শেরে বঙ্গে। রোগার **মনের কাত্তিগত - চিস্তাধারার** পরিচয় তার আবেশিক চিন্তার রক্ষ থেকে ব্ৰুঝাত পাৰা বার। এই বে চি**ণ্ডার কথা বলা** হল দেখা বায়—আবেশিক ডিডালটোলা



क्षिक किए मा किए छेश्य-छ। त्यम महस्त्राह्मा বাহর। আন্দেশ্য কোনও ন্যাতি বা চিন্তা मार्कानक बाद जारंग शास्त्रा अस्तिक ना। ভাষ্ট্রার অভিন্তভান্ন কোন্ত क्षिणिकिक देश संख्या प्रदर्शन बदल 207.00 পটে ন। একটা ভাগরে দেখতে গেলে ৰোমা মাৰে সংখ্যে সংখ্য আৰ্বেল্ড বায়, अक्षेत्र इक्षमा कार्य प्राप्त । स्राप्तक प्रम প্ৰাচৰ বালাল্ড রোগের কথা বলতে গিয়ে EMIGNIE COME धक्छ। উरकार्ठा यत मा शाकरत काम কাৰেই ধানসিক ধ্যাগ হতে পাৱে না। ইন্দ্রাটা কিছু না থাকলে তাই মানসিক আৰাত হবে না। স্তুরাং আবেশিক বারা कारण व किण्छा बारब बारब श्रांस धरत भाषा মৈতে থাকৰে ভার সংগ্র কোবাও না কোথাও क्ष्मणे छेरकाठी याच शाकत्वहै। महा त्राभटक হুলৈ জেলার নিজ্ঞান মুনে যে উৎকণ্ঠা চাপা ধাৰে বলে জোগা নিজে অনেক সময় রোগ निकारका ज्ञान्य की छेरकाठी छात्र मान शतक ব্রশতে পারে না। — নিজ্ঞান যদের অভিতম শ্বীকার করবার প্রয়োজনও **छा এইখানেই।** जात्मक विषयात जाःमाहना ক্রমার সময় বলা रहारक या. 700 ক্লাগেই হে গোপন উৎকণ্ঠা গোপনই থেকে **রার** তা নর। অনেক সময় রোগ লকণের परमा धक्ते, इ.भ वषम करत इत्म ७ उरकारी প্রকাশ পেরের হার। এমন রোগও আছে যার র্থান লক্ষনই হল উৎকণ্ঠা। আমরা এই প্রশাব কিছ, কিছু রোগের আলোচনা এর গালেই করেছি, উদাহরণ দিয়ে সে রোগা-শ্র্মার সংক্র পরিচয় করিয়ে দেবার চেল্টার চরা হয়েছে। -সেক্থা এখন আর নয়।

আবার আয়াদের বর্তমান আলোচনায় মাবেশিক বায় রোগের বিষ্কার ফিরে আসা াক। দেখা হায় এই রোগ লক্ষণহার কোনও দ্রতাই তেমন গ্রেভর কিছা নয়। সাধারণ চাল্থে দেখতে গেলে জ**িবনে** সে কান অথ**হি পা**ওয়া যায় না। কিন্তু রোগাঁর ানৈ এই চিন্তার অতি প্রয়োজনীয় কোনও মূ**র্থ গোপনে থেকে** কাজ করে বলেই সে াই আশাত অন্তর্কে চিন্তাকে বাদ দিতে भारत मा। यम थाक किएएटरे त्र किला ्व कंतरण शहर ना। शहन কর্ম যে **রাম ও কাজ করবা**র আলে যদি এক ইকে শরে করে দশ প্রান্ত মনে নে আউড়ে নিভে হয় তবে क्रम किएका। कात्र वाफ़ी थिएक दिवन्तात गर्म अक मार्ट करत मण शर्मण्ड गारम শ্রে প্রে বের্ভে হয় তা না হলে বেরনো লভব হয় লা। তাও আবার এমন দরে এক থেকে দুই আনার দুট থেকে क्रम लामगण प्रथा धक्या निमित्र में समस्यत उद्याम बाका जवना अवहासम् म्यान द्या

বাদ ভা হয় তবে স্বৰ্থ কেন্ডে বায়। আবার
নতুন করে গনেতে হয়। কেন্ড বা এক
নিঃখবাসে দশ বা কুড্লি, পশ্চিদ পর্বাত্ত
গন্তন নিজে তবে নিশ্চিন্ত হানে বাইরে
বেরতে পারেন। তা না হলেই মন অদাশত
হয়ে বটে। বাইরে বেতে হান চার না।
কা জানি কা কেন বটেবে এই রক্তম একটা
মনোভাব রোগিকে ক্ষেত্রম করে কেলে।
চন্টা করেও, এই জিতা অ্বোভিক হানে
করেও, কিন্তু এর হাত থেকে রোগা কিছনে
তই নিশ্চতি পায় শা।

একট থোলা মনে দেখতে গেলে দেখা याद्य कामाद्यक विद्यास दलाम्ब সন্মুখীন হতে হলে বভক্ষণ ভার একটা সমাধান খ'ুজে না পাওরা হার ততক্ষণে भागतकार मत्म त्मारे सम्मान कथाही चारा ফরে আসতে থাকে। এক সময় হরত সে সহাস্যার সমাধানের কোনও সূচ্চ পেয়ে যাওয়া সম্ভব হয় আবার তা সম্ভব নাও **হতে পারে ৷ কালের গতিতে মন** আন্তে আন্তে তা সরে নের। এটা মনের স্বভাব বলে আমরা সাধারণত মনে করি। কিন্তু সমস্যা দেখা দিলে তার সমাধানের খ'জে বের করবার জন্য চেন্টা করায় যে চিম্তা আর সমস্যায় পুডে সেই সমস্যার হাব,ডুব, খাওয়া এই দটে অবস্থাকে এক পংৰিভৃত্ত করা যায় সমাধানের উপায় খেজিবার চেণ্টায় চিণ্ডাকে ^{"বাডাবিক বশা} হবে। কিন্তু সমসাার কথাচাই যদি বারেবারে মনে আসতে থাকে আর তারই আবেশে মন আচ্ছল হয়ে থেকে অস্বাস্ত বোধ করতে থাকে, চেন্টা করেও যদি সে অবস্থা থেকে নিজেকে মঞ্জ করতে না পারে মনের সে অবস্থাকে স্বাভাবিক वमा यात ना।

আবেশিক বায়ু রোগের সংগ্র অমাদের বাভাবিক জীবনের কিছু কিছু যানসিক আচরণের মিল দেখতে পাওয়া থায়। যেমন ধর্ন সকালে ঘ্য ভাগাবার পরে প্রথমেই দর্গনাম বা অপর কোনও ইন্টদেবতার নাম নিদিন্টে সংখ্যকবার মনে মনে ভেবে নিয়ে পরে বিছানা ছেড়ে ওঠবার অভ্যাস অনেকের আছে। কেউ কেউ ইণ্ট নামের সংগ্যাসেই ইন্ট দেবতার র প্র মনে মনে কল্পনা করে নিয়ে তারপর অন্যাদিকে মন দেন। যদি কোনও কারণে এই নির্মের ব্যতিক্রম ঘটে হায় তবে মনে অশানিত দেখা দের। মন শংকিত হয়ে ওঠে, কী জানি কী হবে! ভাই আবার শারুরে বা বঙ্গে পড়ে আন্তানিক চিতা ঠিক ঠিকভাবে সেরে নিয়ে পরে অনাদিকে মন দেন। যে কোনও শ্ৰুভ কাজে যাৰার আগে এই ধরনের নানা বক্ষ মান্সিক চিশ্তার সামাজিক বিধানও দেওর। আছে। পরীক্ষা দিতে বাবার আগে ারছারীদের প্রায় সকলেরই মনে এই রকম কনও না কোনও চিন্তা আমে। সেই চিম্তানলোরে মন চালিত করতে না পারলে ক্ষতির সম্ভাবনার মন বাস্কুল হরে ওঠে।

আমাদের প্রতিহিক স্বাভাবিক জবিনে এ রক্ষ বহু মনোভাব নানা দিকে ছড়িয়ে আছে। বৈজ্ঞানিক বিচারে এদেরও আবে-শিক বাররে প্রভাববার বলা হবে। কিন্তু এ অক্সাটা নেহাডই সাম্ব্রিক অথবা সমাজে প্ৰায় সৰ্বজন গ্ৰাহ্য স্বাভাবিক মনোভাব বলে গহীত হওয়ায় এগুলিকে বাাধির পর্যায়ে क्या रस मा। अशान वाद मिरे म्याखीयक ও অস্থাভাবিক বা ব্যাধির অবস্থার ছালো श्राक्षम मन्द्राप्य एवं कथा द्यम क्रायक्ष्यात क्रव जारा छेडाच कडा इसाह मार्ट कथाई শ্মরণ করতে বলব। যে লক্ষণ শ্বাভাবিক সেই লক্ষণই যদি স্বাভাবিকের সীমা ছাভিবে বাড়াব্যাড়র পর্বায়ে এসে পড়ে ডবেই ভা রোগ বলে গণা করা হবে। হা স্বাভাবিকের সীমার বাইরে তাই অস্বাভাবিক কিন্তু এখানে মনে রাখতে হবে সব অস্বান্ডাবিক অবস্থা বা লক্ষণই রোগ নয়। অভিবৃত্তিধ অতিজ্ঞানী কোনও বিষয়ে ইত্যাদিদের স্বাভাবিক আর দশজনের সামিল করা বাবে না। কিণ্ড ডাই বলে। धारम्ब ব্যবিশ্রস্ত বলাও হাবে না। একথার এর আগে বিস্তৃত আলোদনা করা হয়েছে। এখন আর তার প্রেরুল্লেখ দরকার নেই। একট্ যা বলা হল তাতেই আল্লাদের বোঞ্চ বার কাজ চলে যাবে।

বলছিলাম, আমাদের স্বাভাবিক দিম যাপনের মধ্যেও ঐ আবেশিক বার্র লক্ষণের সামান্য অস্তিত দেখতে পাওরা যায়। কিন্তু ঐ সামানার সামা ছাড়িরে গেজেই তথন সেই লক্ষণই রোগ লক্ষণ হয়ে প্রকাশিত হয়, তথন তাকে বোগ বলে গণ্য করা হয়।

আমরা ধ্যেবে না সংশিক্ষা সদন্শীলনের নামে যে এন মানসিক চিল্ডার অভাস করে থাকি তার প্রায় স্বগালিই এক হিসেবে লৈজানিক বিচারে আর্বেশক বায়নের দশভাবধয়শী বলে গণা করে৷ পারে। তাই বলে এ স্বগ্রিলকেই হার্নাসক <u>হোগ পর্যায়ে ফেন্সা যাবে</u> কিনা তা বিশেষ অবস্থায় বিশেষ ব্যক্তিকে বিচার না বলা সংগত হবে না। যে চিন্তা না করলে উৎক-ঠা বা আনিষ্ট হবার ভয় মনে জাগে সেই সেই চিন্তাকে রোগদ্বণ্ট বললে ভুল হবে না। আমাদের বহু, স্বাভাবিক অভ্যাস আচরণ, ধারণা বিশ্বাস ইত্যাদির সঞ্জে মনের কিছ, কিছু অস্বাভাবিক রোগ-সক্ষণও মিলে মিশে থাকে। সেগনলৈ বাড়াবাড়ি না হয়ে যদি সামাজিক প্রচলিত সীমার মধ্যে থেকে যায় তবে তাদের রোগপ্রকৃতিটা মনঃ-সমीक्कण ना कतराल সহজে ধরা शाह ना।

আবেশিক বায়, রোগ সম্বশ্ধে এই সাধারণ আলোচনাট,কু করেই এবার শেষ করা বাক। পরের বার উদাহরণ দিরে বিবরটি স্পণ্টতর করবার চেণ্টা করব।

— ज्यानग्रम निरम्



(প্র' প্রকাশিতের পর)

মিঃ ওয়ালা পালে এসে দাঁজিয়ে নারবে ফাইট এনানাউপ্সমেট বোডের দিকে আঙুলা দিতেই দেখি আর বসে থাকার সময় নেই। দিদশিলামী এয়ার ইন্ডিয়ার বিমানের আহার ও বিশ্রাম পর্ব শেষ। শেষ টানজিট লাউজে বসে যাতীদের গঞ্চপালুজব, বিশ্রাম বা দ্ব-এক রাউন্ড ভিন্ক করার পালা। আমিও আর কোন কথা বললাম না। একবার থয়ালা সাহেবের দিকে তাকিয়ে একট্র ফেস্টে উঠে দাভালাম।

ছোটবেলা থেকে জামরা চিংকার চে'চা" মেচি হৈ-হালেড শানতে অভাস্ত। আমরা যখন হাসপাতালের মেটার্রানটি ওয়ার্ডে মার পাশে, কোলে শুয়ে থাকি তথন ভাতার-নাসের কুপা ভিসাব জনা যাব বাথা আকল প্রাথ নার পর চিংকার শানেই আমাদের মবণ ইণ্রিয় সতক' হতে শরে করে: ভারপর আন্তে জাপেত বাড়ীতে, রাস্তাগাটে শ্রুল-কলেজে ট্রামে-বাসে অফিস-আদা-লত কারথানায়-স্ব'র চিংকার শ্রি। হাট বাজার আর রেল থেটশন তো চিৎকার-চেণ্চা र्काष-देश-शास्त्राह्म स्था विशास्त्र। मन्द्रत्य আসার আলে আমি স্পেনে চডি নি । দমদম এয়ারপোটে'ও প্রথম গিয়েছিলার রঞ্জনকে বিদায় জানাতে তারপ্র হেদিন আগ্নি আসি। রেল টেশনের মত অত হৈ-হালোড না হলেও দমদম এয়ারপোটেও কম চেচা মেচি হয় না। চিংকার, চেচামেচি, চৈ-ইনজোড, ঝগড়া-মারামারি না করে রোধ হয় আমরা কোন কাজ করতে পারি না। প্রজাব বাড়ীতে, কালীঘাটের মন্পিরে, আসরেও শাশ্তি মেই। প্রীতির বিয়ের জাসক দুই পুরোহতের হতভেদ থেকে করে শেব প্রবিত দ্র প্রকর মধ্যে কি বিক্ষিত্র ভক্ক খগড়া হলো! প্রীতি ভায়ে. प्रदेश कौन्द्रीसन, कौन्द्रिन। जामि अत জড়িয়ে বলেছিলাম কিন্তু আমিও চোখেব জ্ঞান লাকেলে পারি নি। প্রার স্ব^{িবার} বাদ্ধীতেই কোন না কোন কারণে একটা विकिति काण्ड घडेत्नहै। अधन कि भवना ক্ষুবার জন্য শুলান্যাটে বাবার সমর্ভ কি

বিচ্ছির উল্লাসের সংগে আমরা হরির নাম স্মরণ করি! পাশ্চিথিয় ভারতে কোন কাজ গাশ্চিততে, নীরবে হতে পারে না।

ইউরোপে সৃশকিছাই উন্টো ব্যাপার।
থদের দেশে ভগবান বংশ বা মহাত্মা গাম্পার
আবিভাবি না হলেও আমাদের মত ওরা
চে'চামেচি, হৈ-হালোড় মারামারি কাটালটা
দাংগাছাংগামা করে না। ভারতবর্ষের ইতিহাসের চাইতে ওদের ইতিহাসের পাতার
বেশী যুম্পবিপ্রহের কাহিনীও লেখা দেই।
আমরা সরব, ওরা নারব। চিংকার, না
হলে আম্রা কিছা শুনতে পাই না। আমি
বোধহর দমদম এয়ারপোটের মত লাউন্দেশী
বাধহর দিশ্ব এয়ার ইণ্ডিয়ার শেশনের
থালারকের কথা জানতেও পারতাম না। মিঃ
ওয়াশকে ধনাবাদ জানালাম সো। কাইণ্ড
আম ইউ টা রিমেবার মী।

মিঃ ওয়াল হাস্লেন। বললেন, আই এয়াম স্কটিশ বাই বার্থা দু রাউণ্ড স্কচ থেয়েই আমার যাথা থারাপ হবে না।

লন্ডন-দিল্লী-বোদেৰ ग्रन्त এয়ার ইণিডয়ার পেলনে যত বালীদের বৈচিত্র দেখা যাবে, বি ও এ সি প্রান্ত্রাম স্ক্রাপ্তে-নেভিয়ান, সুইস এয়ার, টি-ডবলিউ-এ বা জনা কোন এয়ার লাইনেল বিয়ানের যাতীদের মধ্যে এত বৈচিত্রা দেখা বাছ লা। ছেলেগেরো-বাচ্চাকান্ডা নিয়ে অতিসাধারণ মান্য থেকে জাইাজের খালাসী কারখানাব কমণী, লন্ডন ট্রান্সপোটে র কন্ডাক্টর আন্ডার शाउँटप्टन द्विश क्रार्क हात्रहाती तानिकीन ডিপেলায়াটে ফিলা ভীত বাৰসাদার স্বাস্থ ছাড়াও আরো কত রকমের বাচীকে এয়াল ই-িডয়ার বিয়ালে দেখা বার ভাষ ঠিকানা নেই। আসা-যাওয়া দুলিকের করেই अरुपत शाखरा शाखा जात्राच रण्यांस যাত্রীদের মধ্যেও বোধভার একা সভাই चारकत। चारकम तालामा तिकाती गटकताति ज्ञाताली भाक्षाती-जिल्ही जातकत दिन्ह-ম,সজমান-প্রিন-খ্যান।

र्था वदक्रशबद এমার পোটের मा**उटक वटन थाका**त मन्ना ग्राह्म এদিক-ওদিক म विदे च बार् 197700 धारम्य रमश्रीक्रमाव। ज्ञारम-भारमञ्ज मह-हाज्ञक्रम ছেলেমেয়ের চোখে চোখ পড়ডেই একটা হেসেছি ওরাও হেসেছেন। একবার পাল থেকে বাংলা কথাও শানেছি। আশ্চর এই নি। কলকাতার বাংগালী দুর্গাপুরে বদলী হলে অনশন ধর্মঘট করজেও কিছুকাল হিথরো এয়ার পোটেঁর ট্রানজিট জাউল্লে বাজ করে জেনেছি সারা প্রিসীর সমূহত কোণায় কোণায় বাংগালী ছভিয়ে আছে। এক কালে আমি নিজেই ল'ডনের হিথারো এয়ার পোটের ট্রার্মজন্ট লাউল্লে বেল কিছে কাল কাজ করেছি। আন্ত ফাৰ্ডকফার্ট এয়ার পোটের টানজিট লাউলে বলে দ্-চারজন যাত্রীর মাথে বাংলা কথা আ**ছার পারানো** দিনের কথা মনে পড়ছে।

সেদিন আমার বিকেলের দিকে ডিউনি। চলবে রাঘি নটা পর্যন্ত। ডিউটিভে আসার পর পরই ট্রান্সাএমটক্যান্টিক এক দল ধাতী হৈ-হৈ করতে করতে বানজিট প্রত্যে ্কেকেন। কিছু शाठी श्राणी किए অসম্ভুদ্ট। আমি গ্রাহা করলাম না। তথন আখো-পাশের আনেক ঘটমাই প্রাচা কর্জার না তাল কিছুকাল कारभाव दक्षमारक গারিয়েছি। আর-বেশ্র-বাসম্থানের জনা প্রায় চাকরি করছি। ভাও অভ্যান্ত সাধারণ নলগ্য চাকরি। ট্রামজিট সাউলে বতে হাজার যাত্রী চা-কফি-সনাক্ষম খ্যাক্ষম কেনা মারেরা কন্ত ইকমের ক্যাণ্ডি চকেলনট বা আরো কন্ত কি খাজে খব্যার কার্ক পড়ছেন। সিগারেট দ্রীলক্ষেন। আরো করেক-जन दिएतत मराम जाति क्षेत्रीकारे महिन्दात्त-প্রবিচ্ছল বাখি।

মাথা মীচু কালে জাপন মান জামি
নাকেটেল মাধা মাললা ভুলাভ ভুনাৎ পাঞ্ছ থাকে গানেম সাম জামে একো কেন কালায় গাগল কালে লাল কালে চাঞ্ছ যাংকাছ লগ। মাথ তলে ভালিকেই ড্ৰোস কেলায়। না ছেসে পাল্লাম না। আমাল চোথে চোৰ

প্রতেই উনিও হাসলেন। দণিতরে গণ্প ক্ষার অধকাশ নেই। ছারে ছারে সেণ্টাং होतियोकि महान টোৰকেও উপর থেকে ছাম্বরূপর পরিব্রার কর্রাছ। একটা পরে দেশির ভদ্রালারী আল্লার কাচে এশিরে এসে-ছেন। একবল্প ভাকিয়েই দাভি গাটিকে হাজিখ-শী मिलाहा। कारण माण्यत দেখলেই ভবন আর ভাল লাগে না। বরং এশা স্বাই ভর করে। মূলে হয় হয়ত বিশ্বাস্থ ত্রু। র্জনের মত তাজিনেকা আবার কোন क्रमा कर्त व्याधारक বিশ্বতিক মধ্যে ফেলবে।

'নক>কার ৷'

কানে এলো কিন্তু কোন সাড়া দিলাম লা। এলন ভাব দেখালাম বৈন শ্নতে পাই মি, অথবা শ্নতেও ব্যুখ্যত পারি নি।

বিষ হকো? জবাব দিকেন না?'

বাচনীদের সংক্ষা গালপ করা আমানের
কাজ নর উচ্চিতও নর তাবে ট্রুটাক দুটোএকটা কথা বলা বাগল নর। কথনও কখনও
বাচনিদের সংক্ষা আমার কথা বলি বলতে
হার না বলে পারা বারা না। বাচনিংর প্রতি
অবোজনা দেখান অনার। তাই নাধা হতে
ক্ষালা আমারে কিছু, বল্ডেন ?

'**অফ কোস' আপনাকে বলছি** ৷'

'বলুনা।'

বিশেষ কিছুই বলার শেই তবে বহু, জাল প্রে একজুম বাণ্গালী মেয়ে দেখে খুব ভাল লাগছে...

'धनावाम ।'

আমি আর দড়িই না। নিজের কাজে
মন দিই। ট্রানজিট গাউজের অন্যান। দিকে
চলে যাই কিণ্ডু আবার দেখা হর। কথা
দুনি বলি। সকালবেলার মত বারীর ভিড় নেই। কাজের চাপ কন। তাই মাঝে মাঝে
দুন্পচি মিনিট গ্রন্থ করতে অস্বিধে
হবা না।

'আপনাকে দেখেই মনে হয়েছিল আপনি বাংগালী বিংজু সচিচ ভাবতে পারি নি...



'লশন্তন এরার পোটে'র ট্রানজিট লাউজ একটা বাংগালগী মেরে এই ধরনের সাধারণ াক্রনারের কান্ত করতে পারে তাই না?' 'আমি জানি এটা ইণ্ডিয়া নর। কোন

काकाई अधारन रहाउँ नहा।

আমি জিজ্ঞাসা করি আমাকে দেখে হঠাং ঐ পান গাইলেন কেন?

উনি হাসলেন। বসলেন কেন গাইলাম জানি না কিব্ছু বহুকাল পরে আপনার মত একজন বাংলালী মেয়েকৈ বড় ভাল লগেল।

আদি বাকেট হাতে করে একট্ দ্গের আনি। আবার একট্ পরেট ফিরে আদি। জিজ্ঞানা করি আপুনি বেখানে থাকেন সেখানে বুঝি বাংগালী নেই?

'আমি স্কামাইকার একটা টেকসটাইল িমিলে কাজ করি। আমাদের ভাদকে বাংলালী েমেই বললেই চলে।"

'ভাই নাকি?'

হা। তাই তো একটা বালনালা মেয়ের খোঁজে জামাইকা থেকে কলকাত। যাজিঃ

আমি হাসি।

'ছাসছেন' কিন্তু অত দ্বে দেশে একা একা থাকা যে কি কভকর তা আপনি কংশনা করতে পারবেন না।'

কথাটা শানে কন্ট হলো। বললাম কিছটো পূৰ্যার বৈকি।

'এথানে তাৈ অনেক বাংগালী। স্তরাং আমাদের কট আপনার। বুঝতে পারবেন

ভ্রম্প্রেলাকেল নম জানি না পরিচয় জানি না। অথচ গণপ করে যাছিছ। 'এখানে কি ফাইট চেজ করবেন?'

> 'দঃখের কথা আর বলবেন না।'... 'কেন? কি হলো?'

'বা্টিশ গুয়েণ্ট ইণ্ডিল এয়ার গুয়েলেগ একটা শেশশাল ক্লাইট্রে প্যারিস যাক্তিলাম। প্যারিস থেকে এয়ার ফ্লান্ডেসর ফ্লাইটে ইণ্ডিয়া বাবাল কথা কিন্তু ওরলি এয়ার পোটে হঠাং শ্মাইক হওয়ায় ওরলি এয়ার পোটে বন্ধ।'...

ভাহকো ?'

'ওরলিভে ল্যান্ড করতে না পেরে এখনে এসে ল্যান্ড করেছি'...

'ডারপর ?

অলটারনেট এয়ারেঞ্জন্মেন্ট হচ্ছে। বোধ-হর কাল সকালের দিকে অন্যান্য এয়ার্ছ লাইন্সের ক্লাইটে অফরো রওনা হবো।'

'রীডেল ক্যান আপ্রেট হলে ভারী বিচ্ছির লাগে ভাই না?'

উনি হাসলেন। 'হাসছেন বে?' 'ক্ৰিনাৰ প্ৰিয়াল লাগছে না।' সে কি p' **'नके**ता।'

্কণ। ক্রিছ মুনে করবেন না ডেচাস

মনে মনে একটা সন্দেহ হ'লো হয়ন্ত আমার সংপকেটি কিছা বলবেন কিছু বসলাম না না কি আবার মনে করব?

'আপ্নার সালে দেখা হবে জানকে এত খরচ করে ইন্ডিয়ার চিকিট্ট কাটতাম মান'

আমি হাসি। বলি খ্ব চটপট অনেক কিছু ভাবতে পালেন তো আপনি।

াকছ; ভুল করলাম নাকি '?'

'মনে মনে হা ইচ্ছে হয় ভাবুন কিন্তু সে ইচ্ছা পূৰ্ণ করার দায়িত আমার কয়।'

ছেলেটির নাম আমাধ্র মনে নেই। বোধ হয় নবেশ্দা। দরে দেশে নিজের দেশের একটি মেয়ে দেখলে অনেক ছেলেরট মনে অনেক প্রত্যাশ্য জ্বাগে। হয়ত শিকার করার প্রবৃত্তিও জাল। মিঃ ওয়ালের পাশাপাশ এগাতে গিয়ে দুটি একটি বাংগালী যাত্রীর মশ্চনা কালে বলা। অশ্লীল না হলেও একটা বেস লগল। মনে মনে হাসলাম। ভাবলাম 🔗 তো জানেন না পারাষেধ সামান্য স**াল্য রোমাণিতা তবার পালা** আমার শে হয়ত শেষ আমাধ আনক্ষের দিনগাুলি: ীকান্ত আমাকে ভোলবাসে আমার ব ার জন্য সংখের জন্য কতে কি করে কিং া নিভগিতা যে সামিধ্য আনি চাই ভার ক্লা ও কোনদিন বলে না। বলে নি। সবাই ভাবে **শ্রীকাণ্ড আয়াকে বি**র করবে। এমন কি বিজয়ারও শ্থির বিশ্বাস আমাধ জীবনে শ্নতো নেই। শ্রীকাশ্ত আমাকে পূর্ণ করার প্রতিশ্রুতি নিয়ে পাশে এসে দ'ড়িয়েছে কিল্ড আমি ডে! ভালি ও কাছে এসেও কত দারের মানাব। আমি ওকে কাছে পাই কিন্ত মনের মধো পৃগ্নিপ্রণ'ভাবে পাবার আনন্দ থেকে বণিতা। এই প্থিবীতে কিছু মান্য শরতের ট্করো ট্করো সাদা মেরের মান মনেল আকাশে উদর হায়ে বর্ষার শেব ঘোষণা করলেও তাদের স্থায়িক নেই। এত বড নীল আকাশের কোলেও ওরা একটা নিজের ঠাঁট কলে নিতে পারে না। শ্রীকান্ড এমনি একটি মান্য। একে নিয়ে **কি কো**ন মেয়ের মন ভরতে পারে?

হ্মানি না।

কেউ না জানলেও আমি জানি ওর উপর অভিমান করেই আমি দিল্লী যাছি। বিবেকের কাছে যাছি। পিরালীর মত আমি প্রেম পড়িনি, কাউকে ভালবাসি নি কিন্তু সব মেরের মত বামীর বক্ন দেখেছি বেন্দ দেখেছি হেলেমেরের। কেন্দ দেখাই বেন্দ দেখেছি ছেলেমেরের। কেন্দ দেখাই করার জানাই তো আফালের বর্কে বর্ষার কালো মেঘ দেখা দেয়। যে বর্ষার মেঘা বর্ষার কালো কোল তার আবিকার? অকসকোর্ত প্রীটবন্ড স্টানির বন্ত সদ্য ভিস্কে ব্যাহ্ম উইল্ডে গ্রিপং করে আহ্বের ব্যাহ্ম ব্যাহ্ম করি কালে সম্বাহ্ম বন্তু করার কি তার অবিকার? অকসকোর্ত প্রীটবন্ড স্টানির বন্তু সদ্য ভিস্কাইন্ত্রাক্ষার কি তার অবিকার? অকসকোর্ত প্রীটবন্ড স্টানির বন্তু সদ্য ভিস্কাইন্তর্ভাক ক্ষাহ্মর উইল্ডে গ্রিপং করে ভ্রেম্বের

আনন্দ হলেও মনের ছাঁণ্ড হতে পারে না। হর না। যৌবনের পসার সাজিরে কিছুকাল কিছু প্রুবের মনে চাণ্ডলা দেখে আনন্দ হলেও আন্দর্শিত নেই। তাই তো শ্যামী চাই সম্ভান চাই। জগতের আর জান ঐশ্বর্শ পাবার অধিকার না থাকলেও এটকু প্রত্যাশা সব মেয়েই করে। করতে পরে। এটা আমাদের জন্মগত অধিকার। এই অধিকার প্রকৃতি আমাকে দান ক্রেছে।

কার্ব কুপাল্ক ঐশ্বর্থ নিয়ে জামি এই

এই প্থিবীতে সমাজে এক। একা থাকলে কিছু মালুৰের বিছুপ উপহাস, অবাচিত ও অপ্রত্যাশিত সম্তব্য জামাকে শুনতেই হবে। শুনছি। লক্তনে মুনোছ। এই ফ্লাঞ্চফার্ট এয়ার পোটেও শুনলাম। আর ভাল লাগে না। প্রীকাণত কি এসব ব্যবে না? জানে লা? বিবেধ ব্যবে?

कानि ना।

বিশ্বপুর্জান না। সংখ্যু জানি শ্রীকাণ্ড জাগাকে ভাগবাসে, তা নরং ঐভাবে কেউ এরার পোর্টেইছুটে আসে?

আনতে আনেত আবার এয়ার ক্লাফট-এর মধ্যে গেলাম। মিঃ ওয়ালের পালে বসলাম কিন্তু রন?

(ক্রমণঃ)



রিয়মিত দাঁত রাশ করলে আর মাড়ি মালিশ করলে

মাডির গোলযোগ ও দাঁতের ক্ষম রোধ করা যায়

ন্ধীতের ডাক্তাররা বলেন, মাডি মঞ্চবৃত ও দ্রন্থ রাখার সবচেরে ভালো উপার হল নিয়মিত মাডি মালিশ করা। খার, গাভের ক্ষয় রোধ করার সবচেরে ভালো উপায় হল নিয়মিত রোজ রাত্মে ও স্কালে এবং প্রতিবার খাবার পর ন্ধাত ব্রাল করা, যাতে ক্ষয় স্টিকারী সমন্ত খাবারের কুচি বেরিয়ে গিয়ে দাঁত পরিকার হয়ে যায়।

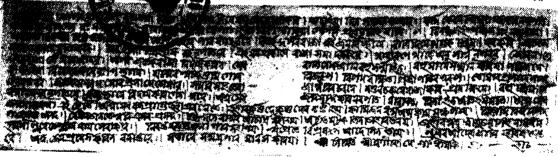
আপনার বাচ্চাকে ফরছাপের অভাাগ করান; নিম্নমিত গাত ত্রাশ করতে শেখান ফরছাপা টুবপেট দিয়ে—খা এক গাতের ভাক্তারের তৈরী। আর দেখবেন, মাডি মালিশ করার ক্ষতে ও খেন ব্যবহার করে ফর্ছাশ ভর্ল্-আ্যাকশন জ্নিয়ার ট্ওত্রাশ।

ৰঙ ভাড়াভাড়ি কর্মাক দিয়ে দাঁতের যদ নিডে শেখাবেন ভতই ভাকো

ক্ষিত্রতী তথাপুর এটার পুরিকান "আপনার হাত ও যাড়ির এই কুপনের সঞ্জে ২০ পছসার ডাকটিকিট পাটান, এই টিকারাছ :	বাদ্ধ বিশ্ব করে আনুষ্ঠার করে । বিদ্ধু পেতে করে অনুষ্ঠার করে বিদ্ধুবার ক্রেক্টাল অনুষ্ঠানী
ब्रह्म त्रावि प्राप्त वर २००७), वर्ष ४०० ००) । ब्रह्म (शाह वाज वर २००७), वर्ष ४०० ००) । साव	4C874
টুকানা •অনুস্তাহ করে যে ভাষাত চান ভার নীতে দাব কেটে চিব—ইংনি উর্চ্চ, গাঞাবী, যাংলা, অসমীরা, ভাষিল, তেলেও, যালয়ালয়, ভ	ार्गी, दिली, पासडी, क्लांसी, मार्गी।



काकाराम दृष्टी कुरकाड़ कुरकाड़ कुरवा खड़ाका



পা'ডববিজয়ের অভিনব কবি

(১)
বাংলাভাষা ও সালিত্যের অন্রাণী
শাঠকমাণ্ডেই অবগত আছেন যে, রামায়ণ
ও মহাভাষত এই দুই সাপ্রাচীন জাবীয়
মহাকাষা অবলম্বনে বহু বাঙালী কবি
গ্রীরাম পাঁচালী ভাষত পাঁচালী অথবা
পাঁতালী বিজয় অন্বাদ কলেছিলেন। এই
অন্বাদ কমা প্রয়াসের মধা দিয়ে বাংলাভাষা ও সাহিতা যে যথেণ্ড প্রিমাণে শান্তী
হার উঠেছিল, ভার উল্লেখ বাহ্লা, মান্তা।

বাংলা রামায়ণ মহাভারতাদির অন্যাদ-কালে প্ৰ'ভাগতে একটি ভিল্পন' সংশ্রুতির সংঘাত স্মাণার দেখা । দ্যোহল। একগিকে বাংলার তদানীশ্রন রাজসভার প্রতিপোষকতা, অপর্নিকে বহিরাগত ভিন্ন-ধর্ম ও সংক্ষাত্থ শ্লাবনকে হিন্দু শং**শ্কৃতিক প্রতিরোধের দ্বারা** নিবারিত অথবা বহু: কালানুসূত সংরক্ষণ্শীল डाबाना भरम्काङ्क स्भीमन बाक्करन्डव সকলেও কাছে প্রবর্গজীবিত করার ভাগিদে এই অনুবাদ সাহিত্য-শাখার জ্ব —এ-জাতীয় ধারণা প্রচলিত। স্ক্রু সাল-তাবিখেব বহা-বিত্রিকত মত ও পথ প্রিহান করে মোটামাটিভাবে বলা চলে যে পঞ্চম শতক থেকে উনবিংশ শতক শ্রম্পত রামায়ণ্ড মহাভারতের অন্যাদ-ক্ষপ সূবিষ্ট। স্থা পাঠক একথাও জানেন যে, শ্রীরাম পাঁচালী বা ভাগত পাঁচালীর অনুবাদ করিয়া সকলেই মহা-কবি বাল্মীকি বা ক্ষণ দৈবপায়ন বেদ্বাাসকে কাব্য রচনায় আদৃশ হিসাবে গ্রহণ করেনলৈ। গ্রীধাম পাঁচালীর অন্বাদকরা বৈচিত্রের লোভে অথবা মৌলিকত দেখাবার উদদশো মহবি বাদ্মীকির প্রত্ীকালের রচিত রা**মকথা স্ম**বলিত অ**শ্ভূত** রক্ষায়ণ। অধ্যাত্ত্ রামায়ণ, ভারত दाशास्त्रज्, হোগু শংস বামারণ থেকেও কাহিনী আহরণ করে: **ছিলেন। অন্**রুপভাবে ভারত পাঁচালী অথবা পাণ্ডৰ বিজয়ের কবিরাও ব্যাস্-ভারত ছাড়া জৈমিনি ভারত থেকেও কিছ বিছা অংশ গ্রহণ করেছিলেন। জৈমিনি

ভারতে লবকুলের যুখ্ধ প্রস্পে বণিত রামায়ণের কাহিনী অবলম্বনেও বহু কবি রামায়ণ রচনা করেছিলেন।

(२)

প্রাবশ্যিক জৈমিনি ভারত অবলন্বনে লিখিত এক অভিনৰ কবির ভারিতাসম্বলিত ভারত পাঁচালী বা পাশ্ডব বিজয় প্ৰশ্ৰির অধ্বমেধ পরের সংখ্যান পেয়েছেন জেলার নবদবীপ থানার অণ্তগতি বামনে-পাকুর গ্রাম থেকে। এই কবির নাম-পরিচয় দীনেশ সেন মহাশয়ের বুজা সাহিত্য পরিচয়, শ্রীসাক্ষার সেনের বাংলা সাহিত্যের ইজিহাস, শ্রীঅসিত্রমার 272211 পাধাায়ের বাংলা সাহিত্যের ইতিব ত মণীশুমোহন বসুর दाःला সাহিত্য (২য় খন্ড), বংগীয় স্নাহতঃ পার্ন্ত প্রকাশিত বাংলা প্রাচীন প'্রথির বিবরণ (১ম ও ২য় খন্ড), পঞ্চানন মন্ডল সম্পা-

শ্রীযতে ন্সিংহ শিবজ ভাবিয়া গর্ভধ্বল

মধ্যে সংগীত বির্চিল।

নরহার বা ন্সিংহ একই ব্যক্তির ভিন্ন নাম।
অতএব নরহার দেব দ্বিজ্ঞ ন্সিংহরেই
ভাগতান্তর বলে গ্রহণ করা চলে। রাজ্ঞগ্রনাটেই দেব এবং ন্সিংহ = নরসিংহ =
নরহার। এক নামে প্রিচিত কবি অন্নামে বা অন্য ভাগতার পরিচিত। এমন
নাজর বাংলা সাহিতোর ইতিহাসে দ্বাভি
নয়। বৈষ্ণব ইতিহাসের শ্রেষ্ঠ গ্রুপ ভাত্তিবত্তাকের গচাইতো, পদাবলী সংগ্রাহক ও
সংকলক নরহার চক্রবতাবি ভিন্ন নাম ছিল
ঘনশ্যাম দাস।

প্রসংগত উল্লেখযোগ্য যে, মধ্যযুগের বাংলা সাহিতে। এবং বিশেষ করে বৈক্ষ সাহিতো নরহাবি, নর্সিংহ বা ন্সিড নামে বহা কবির পরিচয় গড়কা যায়।

- ১ বৈষ্ণৰ সাহিত্যে আটজন কবিলাজ ও

 শীনিবাস ৩ চাহবি প্রধান সহচর ও
 শিষ্যদের মধ্যে এক ন্সিংহ কবিরাজের
 প্রিচল প্রক্রা লায়। প্রেম্বিশ্রেরাহ্ব
 বস্তুল্লা সাহিত্য—২য় খণ্ড)
- ২ রপে গেলিমানি হংসদতে কাবোর জন্মনাক নরসিংহ দাস বা ন্সিংহ দাস বা ন্সিংহ দাস নামে এক কবির পরিচয় পাওয়া যায়। আবাল উন্ধব দাতের অন্বাদক এক দিবজ নরসিংহের পরিচয় পাওয়া যায়। জবশা বাংলা সাহিতেরে ঐতিহাসিক ডঃ সক্ষার সেনের মতে হংসদ্ত কাবেল জন্মদক নরসিংহ বা নুসিংহ দাসই শিক্ষ নরসিংহ হওয়া সম্ভব। (ঘঃ খ্রীস্ক্মার সেন্নাকালা সাহিতেরের ইতিহাস—১ম শভ)
- নরেভ্রম দাসের শিব্যদের মুধ্রে পুদকতা
 হিসাবে এক ন্সিংহ দেবের উল্লেখ
 পাওয়া য়য়।
- ৪ শংক্ষতে সূৰ্তং শ্ৰীচৈতন্য মহাভাৱত কাৰা রচরিতা চাটিগাৰাসী এক ন্সিংহ দেৰের পরিচর পাওরা বার।

জয়ণতকুমার চক্রবতী

দিত পর্ণুথ পরিচয় (১ম ও ২য় খণ্ড) নামধ পর্ণুথ নিদেশিক গ্রন্থে নেই।

এই অভিনৰ কবির ভণিতা স্থালিত পর্ভাথর প্রথম ও শোষের দিকের প্রত্য लहै। भुकी अश्या आ/--वान। व्यवमा নাৰে মাৰে কয়েকটি পন্সা নেই। এছাভা কালের স্থলে হস্তক্ষেপ এবং কটিদেট দক্ষার জীব পশ্বির পাব পাঠ গ্রহণ অনেক **"থলেই সম্ভব হয়নি। ক্**বার রচনাকালজ্ঞাপক প**ুচিপকা অংশ প**ুণিং আদি অথবা আন্তাই থাকা সম্ভব। কিণ্ড কাব্যের প্রথমে শেবে বা অনার কাব্য-हाठनात कालकाशक निर्माण ना शाकाश अरे কবির স্ময়কাল তাথবা কাহোর হচনাকাপ অনুমাননিভার হারে ওঠে। কবি কাবোর ভণিতায় নরহার দেব **দ্বিজন**রহার অ**থবা** দিবজ নৃসিংহ বলে পরিচয় দিয়েছেন। বধা, ५ क्षणाल नत्रश्ति राज्य विक्रीकृतः।

২ শ্বিক নরহার কছে তালিত হৈয়।

(હ્વે)

- র্ক্ত বর্ণাণ চলিকারা নাজে করে নিবলেবর ছচীয়াতা এক নর্রাসহে বহসের পরিচন পাঞ্জয় বার। (ঐ)
- ৬ দামোদরের বানের ছড়া-লেখক এক নর্নসংহ দাসের পশ্চিচর পাওরা বার। (ঐ)
- ্ব নার্নিস্কে নামে ধর্মার্মপাল কানোর এক কবির পরিচর পাওয়া বার। অবস্যা এই কবির পদবী ছিল বস্তু।

(ম্রঃ শ্রীআগুড়োষ ভট্টাচার —বাংলা মণ্গল-কাব্যের ইতিহাস)

দ পদাবলী সংগ্রাহক সংকলক ও বৈক্ষ ইতিহাসের শ্রেণ্ঠ গ্রন্থ ভবি-রভাকের ও নরেত্বম বিলাস রচারতা ছিলোন নরহার চক্রবতী। নমহার চক্রবতী অবলা ঘনল্যাম দাস মামেও পরিচিত ছিলোন।

ছে: প্রীঅসিতকুমার বল্লোপাধ্যার বংলা সাহিত্যের ইতিব্ত- ৩র খণ্ড)
নরহার, নরাসংহ বা নাসিংহ নামে পরিচিত
এইস্ব কবিদের মধ্যে নব আবিষ্কৃত এই
কবিকে অভিনব বলেই মনে হয়। কাব্যের
এক স্থানে আত্মপরিচয়় দিতে গিয়ে
কবি সামান্য বে দ্-চারটি ক্থা বলেছেন
তা নিদ্দর্প:

চটুকুলে বাঘৰ আচাৰ মহাশশ্ব। অচ্যুত মট্ক ফিন তাহাত্ৰ ডনয়।। তাহাত্ৰ পত্ৰ শ্ৰীষত্ত ন্যেংহন্ম ধৰি।

হারলাপারেছে গামেরায় সেবা কার।। নরহার, নরাসংহ বা ন্সিংহ নামে প্রিচিত প্রেবতা কোন কবিই চট্টোকুলোদ্ভব ছিলেন না এবং তাদের কারো পিতার নাম রাঘব ছিল না। কবি পরিচয়স্কাপক অংশে মচাত দাস নামে তার এক দ্রাতার উল্লেখ করেছেন। ভাগবক্তের অনুবাদক এক অচ্যুত দাসের নাম পাওয়া যায় সম্প্ৰক' বিশেষ কিছাই জানা **ৰায় না।** ভাগবতের অচাত দাস এবং বর্তমান কবি ন্সিংহ চটোপাধ্যায়ের জাতা অচাত দাস উভয়েই একট বান্তি কিনা কে জানে। কাব ন্সিংহ চটোপাধ্যায় অভিনৱ কিনা শে-সম্পর্কে নিঃসংশায়ত হওয়ার জনা ডঃ স্কুমাল সেন মহাশয়ের সংখ্যা পরালাপ করেছিলাম। তিনি জানিয়েছেন যে, আলোচা কবি ন্সিংহ চটোপাধ্যায়কে আপাততঃ পাণ্ডব বিজয় বা ভারত পাঁচালীয় অভিনৰ কবি বলে গ্রহণ করা যেতে পারে।

কবির পরিচয় মোটামাটি পাওয়া গেল, কিল্ফু কবির সময়্রকাল বা কাবের রচনাবাল সম্প্রতি কিছে জানা গেল না। পাঁথের জিলিকর একস্থানে অন্টলিপার হে তারিবটি বাবহার করেছেন তা হল, ১৬৭৬ শকাল ২৮শে লাবণ অথা তারেল উলাল বিকান দেওয়া আছে—সাত-সৈফা পরগণা ধার্মাঞি প্রাম। ডঃ সম্কুমার সেন মহাশরের কাছ থেকে অবগত হরেছি বে সাত্রৈকা পরগণা ব্ধমান জেলার কালনা মহকুমার অভ্যানা মহকুমার অভ্যানা মহকুমার অভ্যানা মহকুমার অভ্যানা ব্ধমান জেলার কালনা মহকুমার অভ্যানা মহকুমার অভ্যানা মহকুমার অভ্যানা ব্ধমান

কাব্যটি প্রার ও ত্রিপ্দী ছলে রচিত। কাব্যে ক্রেক্টি রাস-রাগিগীর উদ্ধেষ ন্তাহে। ব্যক্ত শ্রীরাগ, থানগাঁ, পাছাড়ী ভাটিরাগাঁ ও কেনিক্ত। স্ভারং এটি বে গাের কাবা হিল সে সম্পত্ত কোন সম্পত্ত কেই। ফার কাবের বৈশিক্টা অনুযারী গাার্কের প্রক্তিত অংশ্রু এখানে প্রাকা বিভিন্ন সর।

ভারত পাঁচালী বা পাশ্চম বিজয়ের এই আভিমৰ কবি ফুক্ডভ বৈক্য কবি ছিলেন। কাব্যের বিভিন্ন শ্বানে ভণিভার অথব। আত্মপারিচরজ্ঞাপক অংশে কবিব বৈক্য-প্রাণ্ডার পরিচর হোলে। যথা—

- ১ কুকের চরণ স্বাদর ক্সরবিশ্য মকরণ। পান করি ন্সিংহ রচিল।।
- ২ কুকের কমল পদ হ্দপদ্ম ভাবিয়া।
 শ্রীষ্ত নৃসিংহ রচে তাপিত হৈয়া।।
- ও গোপাল চরণ মজাইয়া চিত।
 শ্রীষ্ত নাসিংহ ভণে মধ্র সংগীত।
 কাবোল প্রিচয় দিতে গিরে কবি
 বলেছেন ঃ
- 6 জৈমিনি ভারত মধ্র স্থাীত রচিল গোপাল ভাবি।
- ২ জৈমিনি ভারত দিয়া রচিল সংগীত ভাষা নরহার ভাবিয়া প্রভূরে।
- ও শ্রীষ্ত ন্সিংহ দিবজ ভাবিয়া গর্ডধন্ত বিষ্ঠিল ভারত কাছিনী। কাষা গচনার প্রেবংয় বে-দেবতার স্বন্দানেশ ছিল, তার উল্লেখ করেছেন কবি ঃ নিবস্তুর কৃষ্ণকথা গান মহাশয়। স্বন্ধত বিশ্রর্গে আর্গোল তার।। প্রভূব আন্দেশ জানি হরিব অন্তরে।

আন্ধ্ মেন প্রবেশ কবিল বনাতেরে।। আন্ধ্রেধ-বন্ধ কথা প্রবেশ ফল সম্পর্কে কবি বলেছেন: আন্ব্রেধ ফলপ্রাম্ভি ইছা প্রবেশতে।। ইছার কীতানে কুক্লেব ত্বেত হয়।

বামীজন ধর্ম অর্থ কাম মোক্ষ পায়।।

নিকামী নিৰ্বাণ পদ পায় কৃষ্ণ অংগ।
বৈষ্ণব জনেতে শ্নি এসৰ প্ৰসংগ।।
কৰি নাসংহ চটোপাধায়ের ছণিতাসন্বাদত
ভাৰত পাঁচালীৰ পাঁছি অনা কোথাও
আৰিষ্ণত হয়েছে কিনা জানি না। কি
কাৰণে তিনি ভৌম সংকীণ্ডাৰ মধো বদলী
হয়ে এতদিন লোকচন্দ্ৰে অভ্যাকে
ছিলেন তা ভাৰতে আদ্চৰ্য লাগে। বাৰু
প্ৰোণ্যক্ষতা দেখে মনে হয় তিনি এক

জন প্রতিভাবান কবি ছিলেন।

(৩)

এবারে বিষয়বশ্ব প্রসংশা আসা বাক।
শ্বেই বলা হয়েছে এটি জৈমিন ভারতের
ফবমেধ প্রের আদশে বচিত। রাজা
জনমেজর কোত্তলাবিক হয়ে জৈমিনিতে
একর পর এক প্রদন করে চলেছেন এবং
জৈমিনি তার উত্তর দিছেেন। এইভাবে প্রদন
এবং উত্তরের মধ্য দিরে কাহিনীগালি
বিষ্ণার লাভ করেছে। কাবা গাঠের আসকে
আমর্থ বেন জনমেজরের মত প্রোভা এবং
জৈমিনি বেন কথক রার গাতার ব্যাল কমতার আজ্পট হয়ে প্রোভারাও ব্যাল করেছ লোছেন। শহির প্রথম দিকে

भू के जा का का का का का का का का ग्रहीं कामा काम मा। भर्मिश्र भ्रहेश বেখান থেকে পাওয়া বাজে জেখানে কামদেবপারে প্রমীলা বাহিনীর সংখ্যা আছ-वर्णां सम्ध योगं छ इस्तरक। स्टब्स स्वाच-বর্ণের ও বাষকেতর পরাজ্ঞ দেখে আক্রান श्रमीमात श्रीक बन्नाम्य श्रासान कर्यस्य স্ভিট রসাতলে বাস্ত্র দেখে দেবতারা চিশ্কিক। ভাৰখোৱে স্বেক্সাক্ষর ভিত্তের यकान अभीमारक विवाह क्यामन अब श्रास থমালার জন্ম-রহস; বাগতে হরেছে। গাধবারাজ চিচারথ (?) ইন্দের আছ্নানে শ্বগরিকো গিয়েছেন। তার জনপেশ্বিভিত্ত শ্বোগে শ্ভিকাশ্ত (?) নামে এক দানৰ চিত্রভাষ ম:তি ধরে তার প্রাক্রাদে একেন। ល់ងគ সমূর कियार शर প্রেরাগমন ঘটায় দান্ত ভীত হতে প্রমালা নামে নারীবেশে ধারণ করে বার প্রবীর মধ্যে আত্মগোপন করে। অবলেনে অমীলার ঐকাশ্তিক প্রার্থনায় এবং ক্লায় (मदौद दाद अमीना जाल' नाक नाक कराम

অতঃপর অফনে ব্জাত্ব নির্মে শত বিশি, রক্ষদেশ, দীঘনাশার দেশ পরিটি করে ভীষণ রাক্ষদের দেশে এতোন। রেছ বর্ণেদ্ধ সংগ্য ভীষণের ক্ষেথ হল। বুলে চিচরেপী (?) হন্মানকে দেখে জীষণ রাক্ষ্য রবে ভগ্য দিল।

অন্ত্রিন বাহিনী তারপর মাণপারু এলেন। নাগকনা উল্পানীর সংলা অক্লান্ত্রিন বিবাহ, গংধবকনাা চিচাপালার কথে অক্লানের বিবাহ, অক্লানের নির্দেশ অমান কবার কনা চিচাপালাকে ক্রমীর হয়ে করে থাকার জনা অভিশাপ বছাবাহনের করে লগার অভিশাপে বছাবাহনের হার্ অল্লানর মাত্যু এখানে বিস্কৃতভাবে বিশিক্ষ হয়েছে।—

গ্রুপা বলে যে মারিল আমার প্রেরে। অন্ট মাসে মার্থেক প্রেরে সমরে।। বাগর্পে জনলা আছে বজুবাল জুলে। অল্নের মৃত্যু ইইরাছে সেই বালে।)

কৃষ্ণ অজানের পাতন জানতে পেরে মুণি
পারে গোলেন। বহারাহন তথন পিতৃহত্তা।
লোকে আঘাহত্যা করতে বাক্ষেন। অবংদা
কুরের প্রবাধদানে এবং মালর পরত আজান প্রকাশন লাভ করলেন। পিতৃ
পারের অদত্ত বান্ধাহিনী প্রবণ ক কানকেল্ব বিশিষ্ঠ হারে কৈমিনিকে জিল্লা।
কর্মন

লামেলর শানি বলো অপভূত কথন।
কভু নাহি শানি পিতাপ্রের রপ।।
মনি বলো মহাবীর বজ্বান।
বাম সংগা যেন সবকুলের আখানা।
বজ্বান রপ কৈল সকল জানিয়া।
শানি কামেলের রাজা বিনয় বিচ বজন।
করলেড়ে জিজাসিল জৈমানির প্রানে
অপুরা কহিলে গোসাঞি

বজুবানের কাহিন প্রকুশের উপাধান কছ ইছে গানি।। কৈমিনি তথন রামের কন্মব্তাত থে প্রকুশের বৃশ্ব সংক্ষেপে বর্ণনা কর্কে

water was a self----n al was mente for WHEN PRINTED STATE STATES क्षीत निर्माण मणगढण क्षीत व को भौतरकात कातरका का निकास गः

निहास्त्रिक स्वयंत्राप्त मूकानी नाट्य का बालां दावला धवर विशासक छेशा क्षाक्रिक भट्टा कतरण मात्रावण रमहे श्रीकेमाक यथ कराय सना शब्दागढी লৈলের। মাজস তখন পাতালে আখ হৈদিশ্য করল এবং তার কন্যাকে বিপ্রবার कारक आक्रीरमा। मुजानी-कमा विद्यवाद कारक श्राक्षमा करत भार गांछ करता। त्यहे প্রে 🍅 🗷 অঞ্জানের জন্য তপস্য বর্ণান : ইয়াৰ দেখি স্থা বহু দিল তারে।

रमय बिश्र जिल्ला की मुक्ता जरजारत।। দিক্সাল আদি ভিনিলেক প্রত্কার। कारिन्दाक कार्रिन्दाक दमय शान

ক্রমার গোচর!!

রক্ষা বলেন আমি কিছ, কহিছে না পারি। দ্বেশ্প লইয়া গেল বথার দ্রী ছরি।। কবিল অনেক স্ততি দেব গদাধরে। **লুনিরা বলেন প্রভু** দেবতার তরে।। ক্ষাপ বৃক্ষ বংশে সবে জ্বাস লভ গিয়া। আমি জন্ম লভি গিরা মনিষ্য হইর।।। নয়-বানরের ছাতে রাবণের বিনাশ। লেখগণে আদ্বাস কলিল শ্রীনিবাস।। ি**এখানে** রাষ**চন্দের মনুষ্য জ**ন্মের কারণ 'লালাভে' বে ইলিগত দেওৱা হয়েছে ও। **াশাল্মীকি রামারণের অনুখ্রপ কিল্ত মানব-**্জেকে শ্রীরামের আত্মবিস্মৃতি সম্পর্কে ্ষে-কথা কণা হয়েছে, তা বালিণ্ঠ রামারণের **অনুর্প। বাশিস্ঠ রামার্যে** বলা হয়েছে ভগবান ন্সিংহ মাডি ধারণ করলে দেব-**দত্তের গর্ভবন্ত**ী পত্যী তাঁকে দেখে ভয়ে **্রাণজাগ করেন। তখন রামাণ** দেবদত্ত এই **অভিনাপ দেন**—ত্মি যেমন আমাকে শ্তী-**িৰয়েশ্য কাতর** করলে, সেগ্রপ তোমাকেও ুক্তুকাল আত্মবিস্থাত ও স্থাী-বিয়োগে ্**লতর হতে হবে। রাহ্মণ** দেবদত্তের শাপেই **ামচন্দের গভবিত**ী সীতার সংখ্য বিচ্ছের **াংশটিত হয়েছিল। আলো**চ্য কাবোর াবিও রামচন্দ্রের অংমরহুস্য সম্পর্কে প্রশিষ্ঠ রামারণকেই অন্সরণ করেছেন ্**লে মনে হয়।** রাবণ কর্ত্ক সীতা অপ-্রিটা হলে রাম সীতাকে খ'রেজ পাছেন না। **্বর্থার তিনি তো 'অথিলের** নাথ'। এর सन किसामा कतरमन सनस्वयः **িখালের নাথ রাম প্রভু** নারারণ। विष निरमक भीका ना खारन कातन।। ীক্তার শোকে ব্যাকুল হৈয়া বেড়াইল। সংক্রমের হৃদয়ে রহিল।। नि बान भान हाका भार्व विकास। পালা भा भारत রাম সে সব কারণ।। ক্রাক্তিক বাজা অভি দুণ্টাচার। ল মাল হেতু প্রভূ ন্সিংহ অবতার।।
ক্রিতে নিগমি হৈয়া ঘোরতর।

प्रकार बाक्रिका शकु ग्रामध्य ।।

হু হৈছার নালে ভূখন কাপিল।

गार्थकी कामगीर महानास देश।। नाजिला समान कील माहिनक देवता। विद्यान करिय मान्य एक मा कान्या।। शक्तिमार देशमा स्थान स्थान समात प्रत्य ! ভেলব্প হয় ভন্ন আৰু পাৰ্সায়ৰে।। জৌমনি ভারতে আছে রাশ্ব্য জমিত রস্মায় পাপ থেকে মারি পাওয়ার कास ब्राह्मका चाल्यसम् वस्त कर्लाहराम। ক্ষিত্ত এখাৰে কৃষি রামচন্দ্রের অধ্বমেধ वकान्द्रेशस्त्र खना कान्य प्रियद्रहरू। অগ্ৰুতা মুনির কাছে শ্বেত রাজার কর্ণ কাছিনী লবণ করে এখানে রামচণ্টকে অধ্বমেধ হজের আরোজন করতে দেখি।

মজ্ঞানত নিয়ে খাত্মা লক্ষ্মণ, ভগ্নত ও রামচাম অবে অকে বালমীকির আগ্রাম এলে তারা ল্যকুশের হাতে পরাকিত হলেন। পরেদের হাতে শ্রীথামচণ্ডের পরাজয় अश्याम सदर्भ जीवात श्रातात्वम्या धवः বাল্মীকির আশ্রমে নির্বাসিতা সাঁড়ার বেদনামত দিনগালি সীভাব বারমাসাথ মধ্য দিয়ে সাশেরভাবে বণিত হয়েছে। পিছতভার দ্বেখ-বেদনায় লবকুণ নদী-তারে অন্নিকৃত করে প্রাণ বিস্কৃতি দেবে-এই ভারস্থার মধ্যে সীতা বারমাস্যার আ্রিগকের মধ্য দিয়ে তাঁর মন্দ্রাগ্য বর্ণনা করছেন। অপরপক্ষে কুন্তিবাসের সীতার বালমাস্যা অন্য পরিবেশের মধ্যে বাণিত ্রেছ। রাবণ হবের পর সাতা অযোধ্যায় চলে এসেছেন। একদিন ভীমালা সাভাকে তাঁর বনবাসের দুঃখ বর্ণনা করতে অনুরোধ করলেন। তখন সীতা বারমাস্যা বর্ণনা করছেন। এখানে বারমাস্যার বর্ণনা বিশেষত্ব বিজিতি। যেমন---আইল বৈশাথ মাস ধ্বির কিবণ। খরতেজে পোড়ে পদ হিংগলে বরণ।। ভাদ*ে*র উদর জনালা সহিতে না পারি। দিন গেলে মিলে রামে ফল দুই চালি।। সেই ফলম্ল মোয়া করিতাও ভেক্ষণ। উপ্রাসে থাকিতেন দেওর লক্ষ্মণ।। আইল ফাগ্ন মাস বৃসন্তের বায়। ক্ষণে ক্ৰে সীতার প্রাণ বাহির হইয়া যায়।। जामातकत यस सङ् मात्कत काधन। অভাগী সীতার কেনে না হয় মরণ।। (দ্র: মণীকুমোহন বস্বাংলা সাহিতা

এই বারমাস্যা বর্ণনার তুলনায় আলোচ্য কবি ন্সিংহ চট্টোপাধ্যায় সীতার বারমাস্যা বর্ণনায় অনেক দক্ষতা দেখিয়েছেম বলে মনে হয়। যেমন---

জেও মাস বনবাস প্রভু দিলা অদর্শন। লক্ষাণ রাখিয়া গেলা এই তপোবন।। নিদাঘ রবির ভাপে পোড়ে কলেবর। পিতৃকম' করিল বাল্মিক ম্নিবর।। নিল আপনার ঘরে ২ ভোমার কল্যাণ হেতু পর্জে মহেখবরে।। আয়াতে নবীন মেঘ স্থম নিনাদে। ভেক পিক শিখি মন্ত মন নাহি বাবে।। সংখে নিদ্রা যায় যত নরনারীগণ। কাশেদ সীতা চন্দ্ৰমূৰি

শ্রীরামচনেদ্রর মাথে আরোশিয়া আর্থি।। প্রাবশ মাসেতে প্রভু দরেন্ত ব্যিবা।

Market William

MIR EN MINI 1 मार्थ वीम **बाक बात स्मामा सारम**। शास सावन टाफ् कामात्र महारम् । १ প্ৰভাৱে কল্যালে ব ছিতি ভিজি ফলে তুলি প্রিজ নারারে।। শাচ প্রা হেড় লোভ সব ভার মাসে। शतम केरमक करन अर्मान शतकार ।। সংখ্যে কারণে থিয় মধ্যপাল করে। রাজার কুমারি আমি ধানিক অনাস্থারে।। আশ্বন প্লামেতে প্রভু দেবীর উৎসবে। পরম উৎসব লোক করে একডাবে।। বন্দ্ৰ অলক্ষালে বিভবিত নারীগৰে बाकाद वर् कादि काम मर्गमत क्वता। আমি প্রিজ ভগবভী ২ বর মাগি কুশলে আকুল প্রাণপতি।। কাতিকে শিশির বিছে পাষাণ ভিতরে। অথে একাকিনী কান্দি বসিয়া বাহিরে।। অগ্রহণ মাসেতে যত যাবক যাবতি। সূত্রশ্ব্যা শ্র্ন বঞ্জীয় সূত্র্যাত।। তাথে নিশিদিশি ব্সি কাল্দি একাকিনী। কশপটে শ্যা মোর রাজার ছরণী।। জন্ম মোর রাজকলৈ ২ জনম অবধি দঃখ নিজ কম'ফলে।। পোষে বিসম শীত বসন বিহনে। রবির প্রকাশ মাহি দেখি তপো**র**নে।। তপ্ৰবী আচারে ভাগে তপান্বনী সনে। না যায় কঠিন প্রাণ রহে তে কারণে।। মাঘে নানা ভোগ লোকে করে উপহারে। মনে মনে কাম হয় প্রভার মিলনে।। সর্ব বিপর্যার ডেল ২ অভাগী সীতার দাখ অধিক বাড়িল।। বুসণত উৎসব লোক করে ঘরে ঘরে। রমণী প্রেষ লংজা ছাড়ে সর্বজনে।। আনি ভুগাদ্বনী তায় ২ ফাগান **ফাসে**গ্ন দাখ কথন বা **যায়া।** শ্ভ জন্ম দিবস প্রভুর 🧠 মা**সে।** বাসংতী দেবীর প্^ভাইত দিবসে।। আখল আনন্দময় বল রজনী। ভাষতে ভাষতে মোর বাকুল পরাণি।। মন্ন প্তাার সংহতি ২ বাসণ্ডী প্ৰোধ ছলে প্জিজামতিথ।। পীতার দৃঃখ প্রকাশের পর সকলে অণিন-কল্ডে প্রবেদ করবেন এমন সময় বালমীকির আগমন। ভার যোগবলে গ্রামাদি সকলের প্রনজণীবন লাভ এবং যজ্ঞা×ব সৈন্য ও দ্রাতা সমাভবাহারে রামচন্দ্রে প্রত্থান।

অতঃপর বণিত হয়েছে ভাষাধ্বজ ও তার পিত। ময়ারধন্তের কাহিনী। আয়া ধ্রস হজাশ্ব বাদী করে কুকার্জানবাহিনীর বীরগণকে প্রাস্ত করেন। **কৃষ**ার্জ**ু**ন **তাক্ষণের ছম্মবেশ্** ধরে মুম্রধনজের রাজে। প্রবেশ করে নগরবাসীর কৃষ্প্রাণতা দেখে ম্বধ হলেন। কৈকৰ দম্পতী তপন ও সংগ্ৰতীর কাহিনী এখানে **বণিতি হয়েছে** ! ছল্মবেশী কুঞ্চাজনে বৈক্ষৰ দম্পতীয় क्रांशिक्थन ग्नालन :

পতি বলে প্রিয়া তোর খঞ্জন নয়ানে। তোমারে দেখিলে মোলু কৃষ্ণ পড়ে মনে।। প্রিয়া বলে সাধ্যাধ্য ডোমার প্রকৃতি। অমন সময়ে তব কৃষ্ণ চিত মতি।।

আপনা পাসবে লোক রম্মান দেখিলে। কৃষ্ণ অন্বেষণ দেব পরিন্দ্রগণ কালে।। বড ভালাবভী আমি তমি হেন পতি। তোমায় দেখিলে মোর পশ্বম পিরিতি।। यथन करकदा शान शाल एक स्वाप्त । পরাণ অপিয়া থাকি তোমার শ্রীগ্রে।। বৈন্দৰ দুমপতীর করেভক্তির পরিচয় পেয়ে— কুপায় অবশ কৃষ্ণ গৃহিতে নারিলা। আঁত্রথি বলিয়া ডাকি বাকাসখা দিলা।। আতিথি বচনে সংখ্যয় চিত্ত করি। যাহিব হইল দক্তে হাতে রভাঝার।। চরণ পাখালি দিল আসন বসিতে। বিনয় কবিষা আজ্ঞা লাগে জ্লোভ তাতে।। কৃষ্ণ জিজ্ঞাসা করেন প্রে-কন্যা না দেখি তোর ঘরে।' উত্তরে তপন বলে : হিনু প্রেম গোসচিজ ছোবা দুটেজনে _ন দুই পক্ষী প্ৰিষ দুহে অপতা আবেশে।। কৃষ্ণ তথ্ন অপ্তকজনের বিডাম্বত জীবন সম্পর্কে দংপতীকে সচেত্র করে দেন ঃ সাংসারিক জনের অপতা নাচি থাকে। অশ্তে মুঙ্জি নহে তার মরণ বিপাকে।। অপ্রেক জনের ডিক্ষা ভিক্ষাক না লয়। অন্তে সম্চিত দেহ সংশ্কার নহে।। অত্তএব কুষ্ণের প্রস্তাব : এমন সংসারে থাক কোন প্রয়োজন।।

তপন বলে ঃ ্রগোসাঞি কর অবধান। বৈষ্ণব জনের মৃত্যু জীবন স্মান।। ক্রীথাসম অংগ যদি জপে নাগায়ণ। কি করিব সংসার প**্রের** তপ্র।। সংসাধ ছাড়িয়া বেড়াইব দ্রাত হৈয়া। তীর্থসম কার্য গ্রেক্ক নাম লৈয়া।। তপনের কৃষভিক্রি পরিচয় পেয়ে ভগবান আন্দিত হলেন। তাদের নিজ্জাম জীবন-চর্যা জানতে চাইলেন কৃষ্ণ : যাবক যাবতী দাত গাত এক স্থানে। জন্মার্নাধ সংস্থা নাকি কি কারণে।। একরে কেয়াল থাক চিত্ত-নিবারবে। তখন সংধাৰতী বলে ঃ দ্বাদুশ বংসর যবে পিতার মণ্দিরে তথায় গেলেন পতি মোরে আনিবারে।। সেদিন রহিল মোর পিতার আলয়। আইন, পতির কাছে শয়ন সময়।। খলিষ্ঠ দেখিনা পতি যাবক সময়।

পরমহংস হৈয়া তাম চল মোর সনে।

কাশিতৃলা ফল মৃত্যু হব সেই श्थात।।

আমি কুসাঁগানী অতি তেল মম্ভির।।
সাত-পাঁচ মনে করি চাঁহি পালাইতে।
কামেতে আত্রুর পতি ধরে মোর হাতে।।
বালনা নিংঠার বাণী মার্যভার পাই।
মোরে পরিবর্ষণা কর কুন্তের দোহাই।।
শ্নিয়া নিংঠার বাণী পতি বলে মোরে।
আমি আর পরিবর্ষণা এই শা্স্থাচারী
দেশতীর কথা প্রবণ করে কুক্ক তাদের অভিলাষিত বর দিলেন।
তপনের প্রাথানা :
পতিতেরে কুপা করি যদি বর দিবে।
রাম কুন্তের র্পে স্প্শাহিব।।
রাম কুন্তের র্পে স্বের কংসের নিধনে।
কুক্ক ভক্তর বাঞ্জিত র্প স্পশ্নি কর্মানে।

অতঃপর সংধাবতীর প্রাথনা : বলে সংধাবতী বিনয় ভারতী যদি মোরে কব দয়া। প্রেমন আশ প্রভূ শ্রীনিবাস রাধিকা মাধব হৈয়া।

উভয়ের প্রার্থনা চরিতার্থ করে কুক্র
ময়্বধ্যজের ভঙ্কি পারীক্ষার জন্য গোলেন।
কপট-পরিচয় দিয়ে তিনি রাজার কাছে
দেহার্য প্রার্থনা করলেন। রানী কুম্মুদ্বতা
ও প্রে তায়ধ্যজের উল্লেখ দেখে মনে হর
কবি আদর্শা গেখে সমতে। অনুসরণ করেভেনা ময়্রের্যরুজ কঠিন প্রশিক্ষার সম্মুখীন
হলেন। তার ক্রা ও প্রে করাত দিয়ে
রাজার দেহ দিব্রধানিভঙ্ক করবেন কিক্রু
তাতে রাজার একবিক্রও অশ্রুপীত হবে
না। এইভাবে বিভঙ্ক তারি দক্ষিণাপা এক
ব্যান্তের ভোজনের জন্য রাজাগর্মী কুক্রক
প্রদান করতে হবে। তথ্ন রানী কুম্মুন্বতা
ও প্রে ভায়্রধ্রজ ঃ

ন্পতির মধ্য শিলে অতি তাঁর ধরধারে করতে দিলেক শীঘ্রণতি।

ন্পতি প্রম ধার চিরিয়া আইসে শিশ্ব নাসা মধ্যে আইল করাত। প্রফল্লে দক্ষিণ চক্ষ্যে সদা হাস তব মুক্

প্রফালে দক্ষিণ চক্ষা, সদা হাস তব মান্ধ বাম চক্ষে হয় আগ্রুপাত।

কিবতু অগ্রপাতের মধ্য দিয়ে সমপিত এই দেহাধ বিপ্রবেশী কৃষ্ণ গ্রহণ করবেন না। কারণ ঃ দালার নাহিক সুখে প্রিক্তনে গ্রহাদেশ

দাতার নাহিক সংখ পরিজনে মহাদ্র্থ কার্যাসিন্ধি অনেক শক্তি।

বিপ্রবেশী ক্ষের কথা শানে মহাধানত वर्षमञ् १ না ব্ৰিয়া কৰ রোষ আমার নাচিক দোৰ निर्वपन भान प्रत प्रत पिया। এই যে আমার অপ্য জন্ম লভে এক সংগ্র পাপপ্ৰা আছে এক সাথ। দক্ষিণাপা দিবজে দিল বাম অধ্যপাতে গেল তে কারণে চইল অগ্রাপাত। निकाणाना प्रिय प्रिथ প্ৰফল্ল বদন আমি বাম অশা কান্দে অভিমানে। আপরিন বেদন আের চবলে কবিল ভোৱ বিচাব করিয়া ব্রে মনে। কবির এই বর্ণনার সংখ্য কাশীরাম দাসের মহাভাগতের কোন রচনাগত সাদশো নেই। কাশারাম আখ্যায়িকাটি এইভাবে বণুনা कदिर्छन ३

মাতাপুরে আনশিত রাজার বচনে।
চিরিছে মস্তক তার কৃষ্ণ বিদামানে।।
ন্পতির প্রেতে উঠিল হাহাকার।
বামাণ্টের রাজার পাড়ল জলধার।।
অপত্যামী ভগবান জানেন সকল।
বলেন ঈবং হাসে ভকত বংসলা।।
তার অর্ধ অপো মম নাছ প্রয়োজন।
অর্থার দান আমি না করি গ্রহণ।।
(৪: মণীপ্রনোহন বস্বান্ধারিতা

ন্য ব্যক্ত)

অতএব কাশীরামের প্রভাব **এই কবির উপর** পড়েনি। কবি আদশ গ্রণ্থ অন্সরণ **করে** শ্বাধীনভাবেই কাবা রচনা করেছেন।

অতংপর যজাশ্ব নিয়ে কৃষার্ক্রন্বিরির সাক্ষরত দেশে উপস্থিত হলেন।
ঐ দেশের রাজার নাম বীরবর্মা। তারী
পণ্ড পুরে কনা। মালিনী এবং জামাতা
যম। যম কিভাবে বীরবর্মার জামাতা
হলেন সে-কাহিনী এখানে বাণিত হরেছে।
বীরবর্মার শিশ্কনার সহচরী চিচ্হণাথ
সপ্থিতে মৃত্যু হলে শোকাকুলা মালিনী—
মায়েরে কালিয়া পুছে কথি গেল স্থিয়া।
প্রাণ স্থিয় নহে মের কথি না দেখিয়া।
কন্যা দৃংখ দেখি লীলাব্তী দঃখ মানে।
মারিব তোমার স্থি কালদ কি কারণে।।
মালিনী বলেন মা মারিলে কিবা হয়।
লীলাব্তী বললে মৈরে যুনে লৈয়া হার।।

মান্ত্রার বেকা শ্রমি মানিন্দী কুমানী।
মৃত্যুক্তর হেতু বম আরাধন করি।।
মুক্তিনার আরাধনার বম এলেন এবং
মানিনার বার্বাহ করলেন। তারণার থেকে
কায়াতা বম বীরবমার রাজকেই নইলেন।
ক্রম্পেবে বমেধ শ্রমার বীরবমার সংশ্য ক্রমানিত্র ব্যুম্ব এবং উভয় সকে সন্ধি
দ্বালির ব্যুম্ব এবং উভয় সকে সন্ধি
দ্বালিত হল। বীরব্যা ক্রের দার্শন সোরে
চারিতারি চলেন।

ভারপর কৃষার্জনবাহিনী নেপাল দেশে এলেন। 'সে নেশের কথা আভ্ত আখ্যান।' প্রাকালে মাধাতা নপতি এক সহস্ত্র নারীকে বিবাহ করেছিলেন। তাদেঃ মধ্যে নিৰাদকুমায়ী লীলাবতীয় প্ৰতি রাজার কোন আস্থান্ত না থাকায় দুঃখিতা লীলা-ৰতী রাজার প্রথমভাজন হওয়ার জন, শিবপাজা করলেন। শিব লীলাবতীর প্রায় স্তৃত্ট হলেন এবং রাজাকে বশী-ভাল করার জনা লালাবতীকে বলীকরণের ওয়ার দিলেন। কিন্ত লীলাবভী রাজাকে সেই ওবাধ না দিয়ে সমাদে নিক্ষেপ কথলে সমার নিবাদক্ষারীর প্রতি আকৃষ্ট হলেন এবং প্রতি রাতে মাধ্যাতার বেশ ধারণ করে **লীলাবতী**া কাছে আসতে লাগলেন অবশেষে লীলাবতী সংতানসম্ভবা হলেন। প্রকৃত ঘাণাতা তথন স্বকিছা অবগ্র ছলেন। মধাকালে কীলাবভী পত্ৰ প্ৰস্থ कत्रासन्। किन्छ भाग्याका क्वाक कुमान्नरक শ্বকৈতি দিলেন না এবং তাকে রাজ-मध्यम एक्टक वीगास्त करातान । जीनायकी রাজ্ঞার এই আচন্নণে দৃঃখ পেলেন। এক দিন রাতে যখন সমাদ্র মাধ্যাতার বেশ शायन करा मीमायङीच कारह कामन जयन व्यक्तिमानी भीमायणी श्राप्टरक विषय সম্পদ থেকে ব্যস্তিত করার জন্য দাংখ প্রকাশ कस्लामः। एथमः सम्भूषः वलातमः, लीलावङौद পরেকে তিনি এমন সম্পূদ দেবেন যা কোথাও মেলে না। তিমি বিশ্বক্ষাকে দিয়ে সমায় মধো বিশাল প্ৰাণী নিমণি ক্রালেন এবং লীলাবতী ও তার প্রেকে ালের বিশাল রাজ্যুত্র ভার দিয়ে তার প্রকৃত প্রিচ্য প্রকাশ করে তিনি তাত্রধান ক্রলেন। লীলাবড়েরি আসের মহে ভেগাল ভার নাম অস্থায়ী ঐ দেশের নামও নেপাল। সোমহাস রাজা ঐ বংশে জন্ম-পহণ করেন। দোমহাসের মতে। তালে ভার শিশবের চক্তসাসের পালানের দায়িত পান বা**জপারোহিত মদন। মদন** বাজাশাসালব ভার পেরে শক্তিক দক্ষেভ এবং তাত্যক **লোভেন বশবত**ী হয়ে নাজধ্যের আদর্শ ৰেকে বিচাত জালন। একদিন সদান্দে নাজ-সভার এক মানি এলেন। মিনি মিলা চলহাসকে সেখে বলালন :

এই শিশ্য অতুল সংগরে।
বালচ্চকতী লক্ষণ যত ধরে।।
কপালেতে রাজদন্ত করে উধর রেখা।
কলাক্ষণকৃশ চিম্ন কর পদে লেখা।।
চল্লহাল সম্পর্কে মানির এই উত্তি শানে
শিশ্যম প্রতি মদনের বিশেষ বৃদ্ধি পেলা।
ভিনি চাডালদের সহায়তায় চন্দ্রচাসকে

कार्तात क्वानक क्वरमा । निमा क्वरारम्ब সোমাকাাশ্ত চন্ডালদের কঠিন হারয়কে প্রবীকৃত করল। তারা লিশুকে বধ না করে अकृषि अन्तर्शन रहमन करत बटनत मट्या त्वरथ लाम। यहेमाइट्य मूर्जन्न मार्थ अक বাভি মুগরা করতে এলেন সেই বনে। শিশ্ব চন্দ্রহাসকে জনহান অরণো ঐ অবন্ধায় দেখে অপুত্রক দুর্জায় তাকে নিজের দেখে নিয়ে গিয়ে অপতা আবেশে পালন করতে লাগলেন। মদন সেকথা জানতে পেরে পথের কটা চন্দ্রহাসকে প্রার বিনাশ করার চেণ্টা করলেন। দ্রুলায়ের কাছে এসে বললেন চানুহাসের মারফত মদন তাঁর পরে বিধয়ের কাছে একটি পদ্ৰ পাঠাবেন। সেই কটে পত্ৰে বিষ প্রদানে চন্দ্রহাসের প্রাণবধের নিদেশি ছিল। **৮** দুহাস সরল বিশ্বাসে সেই পত্র যথাস্থানে পেণছে দেবার জনা অম্বারোহণ করল। পথস্থানত ভুক্ষাত চন্দ্রহাস এক সরোবরে এসে জলপান করে এবং বিশ্রাম করতে গিয়ে তন্তাচ্ছল হয়। মদনের কন্যা বিষয়া স্থি স্মভিবাহারে সেইম্থানে এসে ভুন্দাভিভূত চন্দ্রহাসকে দেখে মাুশ্ব হয় : কল্প জিনিয়া রূপ দেখি পরেবের।

কন্দপ জিনিয়া র,প দেখে প্রেন্থের।
পিছচিন্ন পর দেখে প্রের উপরে।।
পাগ হৈতে ধিছি ধিরি প্রেক কাড়ি নিল।
চিন্ন থসাইয়া পর পড়িতে লাগল।
কুটপর দেখি কন্যা দুঃখি ভাবে মনে।
কেন্দ্র দেখি কন্যা দুঃখি ভাবে মনে।

বধে হেন জনে।।

এত ভাবি অংশ তার করে নিরক্ষণ।
খনীরে দেখিল মহ্বাজের লক্ষণ।
ইহার গাণেতে ইহা বিধি করাইল।
কিবা পচ বাপ মোর ভূলিয়া লিখিল।।
কিবা মোরে দিতে বাপের মনে আছে।
দৈবঘটিত প্র দুখ্ট হয় শাছে।।
তেজপ্রা দেখি কিবা পাইল ত্রাস।
কুট প্র লিখিলোক করিছে বিনাশ।।
বেধি জে কর্ক আমি বর্গ করিব।
জামাতা হৈলে দ্বেহা না হিংসিব।।
এতেক ভাবিয়া বিষয়মহির খানে।
ব কারে আকার করে লোচন অজান।।

চণ্ডহাস বিষয়কে সেই প্র দেখালে বিবের
পরিবর্তা ভাগনী বিষয়াকে সে ভার্যাণে
চণ্ডহাসের হলেও প্রদান করে। মদন সমণ্ড
বিষয় অবগাত হরে জোধানলে অধিকতর
প্রদাণত হরে উঠলেন এবং চণ্ডহাসেকে
একাণেত তেকে বললেন দেশাচার এবং
কুলাচার অন্পানে তাকে নিশাকালে একাকী
চাম্ভার মান্দরে প্রো দিশ্ভ যেতে হবে।
অপানিকে এক গ্যুম্ভাতিকক আদেশ
দিলেন এ সময় মান্দরে যে ব্রিক্তি প্রবেদ
কর্মা, তাকৈ যেন হত্যা করা হয়।
শ্বশারের কথা শ্বনে চন্দ্রহাস মন্দির
যান্তর্যার আয়োজন কল্পাছে এমন সময়
গালক বিষয় চন্দ্রহাসকে বলে :

তোমান বদলে আমি প্রজিব ভ্রানী!। আগনি বিষয় চলে দেবী প্রিনারে। বামহতে পুরুষ দক্ষিণ ছাত্র ধারি।। একাকি বিষয় চলে চাম-ভার প্রী। বলা হতে চডাল আছিল

গতমাত কেপে আসি কাটে বিবারে।
মাদন সেই দরেগবাদ প্রবণমাত্র প্রাণভাগ করলেন। অবশেকে চন্দ্রহাসের প্রাথনায় চার্ডার বাবে মাদন ও বিবর প্রকলিবন লাভ করলেন কিন্তু দ্বাক্তমের শান্তির্পে মাদন অব্ধ হবে রইলেন। অন্তাপদখ্য

তৰ পিতা অংগ গেল

A STATE OF THE STA

মোরে রাজ্য দিয়া। তোমা না পালিন ুরাজ্য

মদে মন্ত হৈরা।।
হিংসা আচরণ হৈরা অজ্ঞান কমণে।
থোনার রক্ষিত কৃষ্ণ মারে কোন জনে।।
যে চক্ষে দেখিয়া তোমা প্রেম সা করিবং।
সিংহাত্ত তাকাইরা সে চক্ষ্ হারাইন্।
এই সংগ্রিচন্ত মেখা মন ডেক্স শ্লিখ।
ভিত্তি তেলা হাতি

খুচি কুর্মি।। অতঃপর মদন চন্দ্রহাসকে রাজ্য এবং সিংহাসন ফিরিয়ে দিলেন।

সেই চপ্রহাসের রাজো কৃষ্ণার্জনিব যজ্ঞাব নিয়ে এলে উভয়পক্ষের মধ্যে প্রচণ্ড যুম্ধ হল। অক্সনিবাহিনী চণ্ডহাসকে পেনে উঠলেন না। তখন কৃষ্ণ চণ্ডহাসের সায়নে ব্রহ্পে প্রকাশিত হলেন ঃ

কৃষ্ণ দেখি চণ্টহাস হরিব অণ্ডরে।
হাতের ধন্ক সব ফেলাইল দ্রে।।
রথে হৈতে নাম দণ্ডবত শতে শতে।
প্রদীক্ষণ করি শত্র করে জেড়ি হাতে।।
ভিয়োগে তৃষ্ট করিল প্রস্কুরে।
তৃষ্ট হৈয়া প্রভু আলিখনা দিল তারে।।
আমার করণ জন্ম ভোমার ভুবনে।
আমিই আনিয়াছি তোমার করণো।
মোর সংগা চল অন্বমেধ দেখিবরে।

তারপর তারা অধ্ব নিয়ে নেপাল দেশ অতিক্রম করে সম্প্রেম পশ্চিম ক্**লে** উপনীত হলেন। তৃষ্ণত অদ্ব সমূহে জলপান করতে গিয়ে সময়ে ভলিয়ে গেল। কৃষ্ণার্জানও অন্বের অনুসরণে সমাদ মধ্যে প্রবেশ করলেন। সবিদ্যায়ে তারা সমার্যাধা বিশাল প্রাসাদ প্রত্যক্ষ করলেন**া সেধা**নে ত্রিয়া এক মানির (বকদ-জু?) সঞ্চান পেলেন। এই মনি এডদিন দুর্বাসার অভিশাপে জলের মধো বাস করছিলেন। দ্বাসা তার শিষ্যদের নিয়ে অনশন রত পালন করছেন। শতবংসর **ब्रह्मा**ख অভিবাহিত হওয়ার পর একদিন দ্বোসা দিবাদের নিয়ে আহিছক **অপণি** করার জন্য সমালে এলেন। ভৃষাত এই মানি আজিকানেত আচ্মনের ছলে জলপান করলেন। দুর্বামা তা বৃষ্ধতে পেরে **ভাঞে** অভিশাপ দিলেন ঃ

দশ সহস্র বংশর রহু জন্তের ভিতরে।
কৃষ্ণ তুলিব তোরে অশ্বয়জ্ঞের ক্ররেশে।।
দবেসাব ক্রোর সম্পক্তে এখানে জার একটি কাছিনী পরিবেশিক ছারেছে। তিলোক্তমা নামে এক বিদ্যাধরী স্বাদিক্ত BUT SUFFERNI MIN MATHUM CHEN ভীতা তিলোৱনা অভিশত হওয়ার আশৃক্ষায় দুর্বাসার শতব করলেন। ল্বোসা ডিলোভমার মুখ্যল ক্ষমনা ক্রলেন এবং ভার পারিজাতের গ্রালটি গ্রছণ করলেন। তারপ্র ইন্দের সপ্যে দ্বাসার रम्भा रल। मृत्यात्रा हेन्द्रक बालां हे দিলেন। এরাবত মালাটি ছি'তে ফেলে। মনিবর নিজ প্রসাদিত মালার অবমাননা দেখে ইন্দের প্রতি কপিত হয়ে বললেন--भ्वताभाष भव देशा कात सारकाता। আমার প্রসাদে এত অবজা উত্তার।। লক্ষ্যার কারণ এত অহংকার করে। शिक्षाद्यत लक्ष्मी मध्ये इकेंक केंद्राव ।। দিলেক দার্ল শাপ অতি বড় কোপে। क्षकारीत विमान क्षित्रम्म बद्राभारम्।। দ্বোলার শালে রজত-কাওন রক্ষের দীণিত

সিংধ্কলৈ থেকে অজ্লেরাহিনী ध्नत्वम अग्रप्तथ्नद्वतः भाषात्व मृह्णमात প্রেকে প্রাশ্ত করে দুঃশঙ্গা এবং তার भावत्क निरंश्च यहाँभोष्ठेरवत्र कार**ष्ट** कःसन। থ, ধিষ্ঠির কৃষ্ণকে এবং আমন্তিত ভালাণ, নপতিদের অভার্থনা জানালেন।

ম্লান তল প্থিবী তল শস্ত্ৰীন। দেবভার

চিহিত্ত মনে লক্ষ্মীলে উন্ধার করার জনা

সাগরে গোলেন এবং সেখান থেকে লক্ষ্মীকে

উন্ধার করলেন।

आमर्ग्य भशान क्या द्वार्शन प्रिता। যজ্ঞাগারে নিজ বস্ত কুস্তম পাতিরা।। পরম হশ্রিষে রাজা কৃষ্ণ দেব লৈয়া। চুদ্বন করিল শিরে আলিংগান দিয়া। পরম হরিষে ভীম আজিপান দিল। নকুল আর সহদেব চরণ বণিদল।। कर्त्राह्म यूर्विनिश्च विस्तृ वहरत । কশল করেণ ফ্রিডরাসিল মারায়ণে।। আমার সংপদ তেজ-প্রজ-বল তাম। বে কার্য করাহ প্রভু তাই করি আমি।। যে কম' নিষ্টুর কার গোলে **মোরে।** চিত্রের পতেলি সম আনহ যক্তাগারে।।

অতঃপর যজ আরম্ভ চল। বজান্তে কুফের কৌতুক এবং তার লোকিক আচরণের বর্ণনা উপভোগ্য হয়ে উঠেছে :

> যজ্ঞোৎসব কৌতুক করিতে নারায়**ণ।** আপ্নৌ লইলা করে কুমকুম চন্দন।। প্রথমে দিলেন সব মানির শ্রীরে। অতঃপদা দিল সব নপেতির তরে।। তবে রমণীর অংশে ছিটে দ্রে হৈতে। দ্রৌপদীরে আজ্ঞা প্রভু দিলেন

> ইণ্সিতে।। পরত্ব কৌতৃক করে প্রভু নারায়ণ। আনো অনো দেয় গায় কুম । চন্দন।। হেম কণ্ড ভরি আনি দের ব্কোদর। কৌতুকে সভার অপে দেয় যদবের।। লক্ষ লক মুনি লক লক নৃপতিরে। কোতুকে দিলেন প্রভু সভার শরীরে।। শেষে এক কণ্ড নিয়া প্রস্থানুরায়। সর্বাঞ্য ঢালিয়া দিল ভীমের মাধায় ! প্রভার ইঞ্গিত জানি বীর ব্কোদর। मकीन जीनहा दुनश शक्त छन्ता।

লেখি যাখিতিবের বছ কৌতুক বাড়িল। हारिया क्षीरमंत्र करत है निवक क्षीतल।। शक्त द्यारम मीथ प्रतथ बाक बन्द बक। रखाताल कुछ डोह्याक गढ गढ।। কলাস ভারিয়া আনি দের বাকাদর। क्लिक स्तिम्बा प्रम क्रक्ट उनम्। ছাসিয়া ইপ্সিত প্রভ করে সভাকারে। বেবা যত পার আনি দেও মোর

যন্ত অনি যক বাজা কুক্ত ইণ্সিত। যুক্ত মধ্য দ্বাধ জানি ঢালে শত গতে।। णामिक जीमरक देशन करित अर्थाश ঘ্ত মধ্য বহে বেন ক্লেক্স্ন নদী।। কৌতকে পরস্থানন্দ অঞ্চলি ভারহা। সভার গায়েতে প্রভু দেন ছড়াইরা।! ভারপর রাজণ ভোজন শ্রা হল -

লক্ষ লক্ষ বিপ্রগণ সংখে বসি খায়। একা পরিবেশন করেন বদরোর।। আন আন কার প্রস্থ তাকে হারেমনে। আমিল্লা যোগায় প্রব্য ভার চারিক্সনে।। সূত্রে পরিবেশন কর্মে যদ্পায়। পরম কৌতুকে বিপ্রগণ বাস খায়।। এর পর নৃপতিদের ভোজন-নাক্ষণা দিয়ে नकनक विषाध अन्दर्धना एए छहा हन। এখানে কবি অস্বমেধ প্রে'র স্মাণিত খোবণা করেছেন।

আশ্বমেধ বজ্ঞের অবসানে কৃষ্ণ কি করলেন পরবত্রী অংশে তা বাগাও हरहरहा बकाएक व्यवाभागे बन्छान्छात বিরাপে বাহিত হার সেক্থা হার্থিভির क्षानरू हाहेट्यान कृत्कत्र कार्छ। कुक বললেন এক মানি (উপৰ মানি?) অন্নিল্টোম বজা করছেন। ভার ধনসম্পদের श्रासामन । इत्थ करत धनमन्त्रम नितः इक-बार्थिका लड़े बामित कारक एमानमा বারাপথে কৃষ্ণ যু, যিতিসকে কলি-কথা প্রমণ করাজেন। কলি ব্রাণ্ড প্রবাদ বুরিণ্ডির দ্বীত হলে কৃষ্ণ কলির আনেক গাণের কথাও **উলেখ क्वला**न :

সতায়াগে ধানে কলিতে শ্ৰেষাচারে। শত সহস্র দিবস থাকিত অনাহারে।। তেতায় করিত যতে ব্রাপরে প্রেন। কলি যুগে সেই প্ৰা

নাম সংকীত'ন।। আর কলি যুগে শুনহ রাহ্মণ। পাইব অক্ষয় ফল দিয়া অল্পধন।। অশ্বমেধ যজা যে করিল প্রাণপণে। সে ফল কলিতে পাব

দিবজের ভোজনে।। তারপর কৃষ্ণ পণ্ডলাডার কাছ থেকে বিদায় নিলেন। ছতিনাবাসীরা ব্যঞ্জ মনে **প্রভুকে বিদার জানালেন** :

পরিবার সমেত চলিলা বদুরার। হশ্ভিনাপ্রের লোক কান্দে উচ্চরার।। যতদরে জানি কৃষ্ণ দ্বিগথ দেখি। ততদ্র চাহে লোক অনিমিশ আখি।। कृष प्रवातकाञ्च अरम यमृबश्रामत प्रामीछ छ দ্বাচার দেখে চিন্তিত ছলেন। চিন্তিত इरलन कारक जिनि जिश्हाजरन वजारका। ल्लीब ब्रह्मट्रक जिर्हाम्हर बनावन छिक

করকোন কুক। কিন্দু মনে পড়ল ভারি বংশের প্রতি একাশাপের কথা। মধ্যেতে বিশ্র শাশিধারে পরেরে আঘাতে ব্যালয় রম্বাত এবং ঐ বিস্থের আশীর'াছে রুপ্র গাপ্রাক চুয়ে আরকার আধিপতি চুলেন : যয়তি রাজার শাপ বলবেংশে ছিল। মোর আশীব'াদে তব লাপ দ'ব জৈল।। রাজ্যক্রক্তী বাপ্র তাম লাগিকান্তে ! শাপ বাকা মাছ তমি হৈছে

আছি হৈছে।: অভ্য বিপ খাশিধর ভারপর নিভেন্ন দ্ভাগোর কথা সাবল করে দালীলাভের জনা কাঞ্চণ কৃপ প্রাথনা কর্মেন।

এই কাহিনী শেষ ছওয়ার পর একটি প্রভা পাওয়া গেল না। পরবর্তী করেকটি প্তিয় রাধার প্রসংগ বর্ণিত হয়েছে। মাঝের পৃষ্ঠাটি না থাকায় প্রাধা প্রসংগ্র পূর্ব সূত্রটি জানা গেল না। মহাভারতে রাধার প্রসংগ নেই। কবি কি বৈষ্ণবপ্তার ঝেকৈ এখানে লধার কাহিনী বর্ণনা করেছেন? অথবা এই অংশটি প্রাক্ষণত? যাই-হোক পরবডণী অংশটি বর্ণনা কর্বছি।

রাধ। সংদর্শনের জনা বাঞ্জলা সত্যবতী কুকাকে বলাছন---

বাধা না দেখিলে ছোর প্রাণ নাছি রয়। काथात्र एर्गथिय बाक्षा बनाइ निम्हसा। সতাবতীর উত্তরে কৃষ্ণ বলেন :

রাধারে দেখিতে তুমি চাহ অকলৰ।। রাধার রুপের সামা বিধি **অগোচ**র। যার তেজ তুলা দিয়া বলি লালধ্য।। রাধার সহিতে দেখা **হবে বেইকাৰে।** নাগিবে ধরিতে প্রাণ ভাছা নর্মদনে।। कृषि ग्रही देशका स्मात क्या हत । তোহা না দেখিলৈ প্ৰাৰ ছবিছে

बिका काटक शहान हामान महीका । विमन्त मा कर हम शह मिस्स्थासा কিন্ডু সভাবতী প্রাধাকে দেখবেন্**ই। তথন** কৃষ্ণ নিজের মায়ায় সভাবতীকে বাধিক্ষ রূপ প্রতাক্ষ করালেন :

আপ্নার নিজ মৃতি দেখাইতে ভালে: রাধাকুক এক আস্বা ভিন্ন জনু ধলে।। कुककथा भानि प्राची हाट्ट अ व शास । कुक ताम रमिथ ताथा कुरक्त मिक्स्सा। উধ্ব মুখে চাহ কণ্ম বলে বদুপতি। প্রকর বচনে উধের চাহে সভাবভী।। नाशाक्क रमार्थ निम क्षण्यक्क जरन । মূহা সভাৰতী তার অপাপা

হিকালে।।

যোগবলে প্রভূ সতাবতী জিয়াইরা। রমণীমণ্ডল মাঝে উত্তরিল গিয়া।। সতাবতী এবং অন্যানা স্থীয়া তখন কুককে রাধিকার পরিচয় জিল্লাসা করকেন ঃ রাধা কেমন ডেজ প্রা গ্রে থরে। তোমার আগেতে প্রাণী নাম করে

काठात कुमाती त्म क्लाबाल मजिए। দেখাৰে শ্নাৰে সেই গণেৰতী নতী।

u दाल वीलका अप विनय कात। ধরিয়া রাহল প্রভুর কমল চরণে।। 🕶 বাধিকার পরিচয় দিলেন :

পাছ বালে বাধা ঘোৰ অৰ্থ অংশ হৈতে। প্রকাশ পাইয়াছে নিজ রমণ ইচ্ছাটে। বেদ আগোচর কথা কেত নাহি জানে। र्शाकृत्म श्रकाम रवद्यावि वामावस्य।। প্রতিত আলার প্রিয়া তিন লোক

তৈতে। বাদারনে গ্রাধ্য আমি ভাহার মধ্যেতে।। আমি সে বাধাৰে জানি কাধা মোৱে क्रांटन .

লোপির্পে প্রকাশ নিবাস বাদাবনে।। দাইজন মহাকিলা বেদ অগোচর। তিন লোকে আমার নাহিক বাধা পর।। রাধ্য সম্পকে স্থীদের জিজ্ঞাসার শেষ নেই :

গোক্লেন্তে রাধা আছেন কার ঘরে। কেয়ন প্রকারে আছে কিবা কর্ম কলা। প্রভ বলে রাধা আছে গেল Secretary :

ঁ আমার ভাবনা যোগ বল অনস্থন।। স্থীরা রাধিকার প্রতি কৃষ্ণের নিদ্যতার অন্যোগ করেন। বানাবনে রাধিকা কঞ ভাবনায় অনুশ্নাকুটা আহু কুয়ু এখানে রয়েছেন কেমন কগ্রে!

ক্ষেনে আছ ভারে চিত্ত নিবাবিয়া। তোমা হেন প্রাণের স্থারে না দেখিয়া।।

উराद दूस वालन :

একর কাহার ভব্তি না রাহ্ন অভ্রে। নিকট হৈতে প্রেম শতগাণ ধরে।। নিরবাধ থাকি দশ প্রশা অভিলাবে। অশ্তরে ভাবনা রূপ ধেয়ানে

বিলাসে 🕕

যে প্রেম প্রিয়াছে মোর

:গাপিকা য্যতী। এতে নাহি হয় মোর কমলাল প্রতি।। গোপিকা যতেক মোর ভব্তি রসজ্ঞানে। শিব বিরিণ্ডি তার ভাতি না পায়

ধেয়ালে । । গোগিকথা শানি সবে ভিত্তমান তৈল। রাধা দেখিবারে অতি প্রয়াস বাড়ল।: 🗫 উত্থরকে পাঠালেন গাধিকাকে আনবার **জনা। রাধিকা আস্বেন্ তার জন্য প্র**ণ্ডু⊙ 501(E :

প্রভাষ ই পাত জানি শাম্ব নানা প্রবা জানি নিম্বাণিয়া কুস্মে রয়েতে।

মলয়ন ছিটি পথে কুসমে বাটিয়া ভাথে রাধা নিয়া চলিল বরিতে।

অভঃপর রমণীব্রদ রাধা-কৃষকে প্রতাক क्षार्थान : র্কুসিংহাসন পর বসিয়াছে যদাুবর

বে**ল্ডিত রমণীব**্দে সাতে। উত্তরিক গিয়া হাধা বসের মঞ্জরী কৃষ মুখাব্জ দৃশ পাই।

মা করিল জোড ^২তব বাকা প্রাণপাত িচন্ত পতেলিকা সম ঠাই।

শহের প্রামুখ ছেরি নয়নে সলিল করে ্**দর্শের বিজে**দ কলি মনে। লোপ্রীরাধা মুখ হেরি কৃক্ষের হাতক নারী

আপ্রতির আপ্রতা নিন্দা করে। ব্যরকারাসাদের সংগ্র লীকা করে বদ:-বংশের ধ্রংস প্রভাক্ষ করে গ্রাদ্রকে শ্বারকার সংহাসনে বাসয়ে ব্যাধের শ্রাঘাতে ক্ দেহ ত্যাস করলেন। এই সংবাদ শ্রবল যুৰিষ্ঠিপাদি পশুদ্রাতাও দ্রোপদীকে নিয়ে स्तरश⁴ाशरक्तन ।

কুষ্ণ কথা প্রবণ করার পর জনমেজর জামনিকে বলছেন ঃ

জ্ঞাতার্থ তৈলাম শানি কৃষের কথন। অতঃপ্র কহ ধাম কুশের মিলন।। রাজার অনুরোধে ম[া]ন তথন **রঘুনাথে**র রাজধানী প্রভ্যাবত'নেও পর অ**শ্বমেধ যজ্ঞ**, বাদ্মীকি স্মাভিব্যাহাতে লবকংশর আগমন ও তাদের রামায়ণ গান বর্ণনা করেছেন। পিতাপারের মিলন কাহিনীর পরে আল প্রভিত্র প্রক্রা মেই। এরপ্র কি ছিল বল। ধায় না। তবে জৈমিনি ভারতে আছে ল্বকশের পরিচয় প্রদানের পর রামচন্দ্র পক্রী পাতকে গ্রহণ করে স্টাথে রাজ্য আবহন কলে। জৈমিন ভাবতে সীতার পাতাল প্ৰেশ বৃণিত হয়নি।

1181

বাংলা সাহিতোর ইতিহাসে বহা অন্বোদক কবির নাম-পরিচয় পাওয়া যায়। এ°া কেউ পুরা মহাভারত অন্বাদ করেননি। করেণ বিপলে এই সাচিত্য-কমাকৈ অন্যবাদ করতে হালে যে সাম্ভোর প্রয়োজন এপদের সম্ভবত তাছিল না।

কাহিনীর অভিনব্ধে ঘটনার ঘন্ঘটায় জৈমিনি ভারতের অধ্বয়েধ পর্ব ব্যাস-ভারত অপেক্ষা অনেক আকষণিয়িও বিস্তৃত হওয়ায় অনুবাদকদের অনেকেই জৈমিনি ভারতের আদশে আদ্বমেধ পর্বা রচনা করেছেন অথবা অনাত্র বাসের আদর্শ গ্রহণ কংলেও অধ্বয়েধ প্র'টি রচনার কালে জৈমিনি ভারতকেই অনুসরণ করেছেন। মহাভাবতের প্রাসন্ধ কবি কাশীগ্রাম দাস ব্যাস ভারত ও জৈমিনি ভারত এই উভয় গ্রাম্থর আদার্শে মহাভাগত বচনা করলেও দেখা যায় তার অশ্বমেধ প্রাটি রচনার ক্ষেরে জৈমিনি ভারতের আদশ্ট গৃহীত

মহাভারতের অন্বাদকদের অনেকেণ্ড বিশান্ধ বৈষ্ণৱ ছিলেন। অশ্বন্মেধ পার্ব' কৃষ্ণান্দ্রানের মধ্য দিয়ে বৈষ্ণ্র মজ বিশেষত কৃষ্ণ গুৱাদশ বিশেষভাবে প্রাধান্য লাভ করেছিল।

কাশীরামের প্রে বা সমকালে মহ ভাষাত্র অশ্বমেধ পর" বচনা করেছিলেন ত্রাদের **মধ্যে ম্বিজ** অভিযাম, ব্যুমাথ, রাম্চণ্ড **থা দিবজ** হরিবাস, ঘনশামদাস, চ-দনদাস দিবজ কুষ্ণরাম, অনংক মিশ্র প্রভাতের নাম উল্লেখ-থেগা। প্রারতা করি শ্রীকরনন্দীও শ্বে অশ্বমেধ পরেরই অন্বাদ কণ্ণাছলেন।

এই সব কবিদের অন্বাদকগ্রের পাশেবা আলোচা অভিনৰ কবি ন্সিংহ চট্টো-পাধ্যায়ের একটি বিশিষ্ট স্থান আছে বলে মনে কথি। অবশ্য এই কবির কাব্য আলোচনা প্রসংগের মধ্যবংগর করেকজন

60 মরিমান[®]কবির কথা মনে পড়তে পারে। গীতার বারমাসা। পাঠ কর**লে প্র**ভারতে মনে পড়ে মাকুল্নামের ফারার বার মাসাহি কথা।

চাদুচাসের কাহিনীতে মদুরের চাহেন িকে একটি সাথকি ভিলেনর পে চিহ্নি করা চলে। চন্দ্রতাসের প্রাণনাশের জনা মদনে। নানাবিধ চক্রান্ত এবং পরিশেষে মদনের ভা-ধত্পাণিত ধ্যমিশাল কাব্যের মহামদ চলিত্রটিকে স্মরণ কথায়। মদনের শঠতে। প্রাজন ও আন্তদ্রনিদ্র নিদ্নাংশে সংগ্র ভাবে পরিক্ষাট হয়েছে :

চাদুহাস দেখি রাজা প্রবঞ্চনা করে। বিষকশভ প্রমাথ সমান উদরে।। দোমাতে অভিখ্যা মোর লইলেক অভনেরে। কনা; ্রত লিখিলাও বিষয় পাতেবে।। পাজিত দুহিতা মোর বাকোর পালন। বিব্যের যোগে রাজ্য করিত রক্ষণ।। কিন্ত পরক্ষণেষ্ঠ মদনের দর্শাস্ত্রতা : জামাতা দর্হিতা রাজা পাঠাইয়া প্রে। ভাবিতে ভাবিতে জার হইল অণ্তরে।। রাজা দিয়া বিধাতা আমারে বিডাম্বল। কলগত কন্যা যত দোষ ঘটাইল।। পরিণাম রাজা মোর হাথে না রহিব। জানিলে শানিলে নিজ অধিকার লব।। ভাবিয়া অশেষ দঃখ অশ্থির হৈল। মাথে বৃদ্ধ আছোদিয়া শ্রুন করিল।। জাঘাতা নিলেক খাজা বসি নৃপাসনে। দ্বপন দেখিয়া উঠে বসিলে সে ক্ষণে।। অধিক চিন্তিত রাজা হারি অনুমানে। চন্দ্রহাস জামাতারে ডাক দিয়া আনে।। করে ধরি লৈয়া তান্ধে খাটে বসাইল। নানা প্রবন্ধনা করি বলিতে লাগিল।। তোমাতে দেখিয়া আমি না পাতি রচিতে। অতিশয় প্রেম মোল তোমারে দেখিতে।। এক কার্য আছে মোর দেশ বাবহার। বিভার দিন দেবী প্জো কুলাচার।। আজিকার দিবস থাকি অনশনে। নিশাযোগে একা বাবে চাম্প্ডার প্থানে।। জামাতাকে এই কথা বলে অপর দিকে—

নিভাতে বসিয়া রাজা বলে চণ্ডালেরে। আজি নিশি রহ গিয়া চামাণ্ডার বরে।। তীক্ষা খড়গ লৈয়া থাকিবে সাবধানে। তংকালে কাটিবে তথা পাহ জেই জনে।। নির্দালখিত অংশগর্মিল পাঠ করলে খনার বচনের কথা মনে পড়ে :

১ চলিতে লক্ষ্মণ নানা অম্বৰ্গল দেখে: काक हिम श्रम्थ छैछि द्रात्म माथ।। দণ্ড প্রস্বিয়া ফের্ দক্ষিণ গামিনী।

২ এথা বঘুনাথ দেখে নানা অমংগল। বাম অংশ উগা চক্ষা সদাই চণ্ডল । ।

৩ এথা মদন রাজা চিশ্তিত অণ্তর। বাম বক্ষ গণ্ড সচণ্ডল বাম আখি।।

কবির রূপ বর্ণনা, ছব্দ ও অঙ্গুকাল প্রয়োগ দক্ষতাও লক্ষা করার মত। যেমন--১ রাধা-ককের রূপ বর্ণনা : উভ করি কেশ

কুস্কুমের বেশ অলক কুডল লোলে। নীল পীত ধটি দুই কটি আটি মণিমধ হার গলে। অনপা জিনিহা

দুহার ম্রভি क्वन (माइनकारी।

হোসরোধ শুরুর দমন मुद्ध बन्द कुलशीछ। ত্যাল জিনিয়া িল কুবলয় ৰতন মণ্যল তক্। ্যাম তন্ত্র মাঝে রাধিকা বিল্লাকে

নিসতে তবিত জন।

कृत्यत्र द्राभ वर्गनाः চতুত্ত শৃত্য চক্ত গদা পাম ধরে। শ্রীবংস কৌশতভ মণিময় রম্ন উড়ে।। আজান লাশ্বত গলে দোলে বনমালা। लामार्के रिक्क श्राम भागि हम कमा।। অভিনৰ ঘনশ্যাম প্ৰীতাদ্বধ্ধারী। বগেল্পবাহন এ ড্বন মনোহারী।। › তিলোত্তমার রূপ বর্ণনা : রূপের তলনা তার দিতে নাচি আর। স্ব'দেবরূপ তেজ শ্রীর তাহার।। কটাকে মহিতে পাবে এ তিন ভবন। বিধি স্ভিট কৈল তারে সর্ব স্কেক্দ।।

নানা রয়ে নিমিতে বৃদ্ধ অলৎকার। পাবিজাত মালা শোভে গলায় তাহার।। কবরী বেড়িয়াছে পারিজাত মালে। ্রপ্রমিলার গ্রাপ বর্ণনাঃ

त्रकल त्रभागी भाषा श्रीभाषा भाषाता। তারাগণ মাঝে যেন চল্টোদ্যু করি।। : भारतिनी :

চির উপবাসে দেবী হইয়াছে দূর্বলা। খিন তন্ত যেন দ্যতিয়ার চন্দ্রকলা।। , সীতা ঃ

জেপতি গতি জিনি র প্রাণ্বতী সতী विमाधीत म्हातः संत्रनी। মতি দীর্ঘ চার বেণী লাবণা বিলাসরাশি চন্দ্রম্থ তন্ত সম শ্যাম। । সীতার অণ্নিপ্থীকা ঃ

কনক প্রতিমা যেন অণিনর শোধনে। নিম'ল হইয়া ওঠে কান্তি শতগণে।। তেমত অণিনর কোলে জানকী উঠিল। ৮ ভরতের দ্গিতৈ ল্ব-কশ : দ্রেই শিশারের দেখি রামের সমান। অমল কমল জিনি অবুণ নয়ান।। শীতাসম মূখ জিনি পূর্ণ শ্লধর। উন্নত নাসিকা কন্বর্গ্রিব মনোহর।। আজান,লম্বিত বাহা দক্ত অন্পাম। বিক্রম বিশাল সূর্য বংশের সমান।।

৯ শত্রের দৃষ্টিতে লব-কুশ ঃ উন্নত নাসিকা দেখি শ্রীয়ত কপাল। অতি চণ্ডল ভূমে নয়ান বিশাল।। লাবণা শ্রীরামসাম শাতার বদন। ১০ जब-कृर्णव मरभा तामाज्यस्यादिनीय या. प প্রস্থাল :

প্রাণপূণে করি যুঝে সকল বাহিনী। मुद्दे निभा प्रकृतिया छत् बरकादिनी।। জন্মপ্রের মাবের ধেন জনলের শিখা। জ্ঞাঞ্জনুদ্র পতংশের নাহি রক্ষা।। অনল দেখিয়া যেন পতকোর গণ। নিবাণ করিতে ধায় হারায় জীবন।।

১১ লব-কুশের যুল্ধে প্রাভার পতন সংবাদে रामहरक्त जेंड : সেই ভাই গিয়া রণে পড়িল শিশরে রশে ভেকে কি গিলিল কালসপ'।

কম দক্ষতা দেখাননি ঃ

ফের কি ধাইতে পারে সিংহপদ গতি।। মিলা কি ধাইজে পাবে মতীধৰ পার। অফিজল পার্রমিতে হোগাত। কাছার।। সায়ের পর্বাদ কেরা উপাড়িতে পারে।

১৩ কৃষ্ণের বর্ণনা প্রসংগ্র অনাদি নিধন তমি অথিল রক্ষাণ্ড বানী তিজগতে নাহিক উপ্মা। নাহিক সাগর হেন সাপরে তলনা যেন মহির তুলনা নাছি মহি। বায়ার তুলনা বায়া মেগা তুলা নাহি মেরা তয়া তলা দিতে তলা নাহ। ভারতবর্ষীয় জাবনদশন বর্ণনাতেও কাব

১ সংসার উৎপত্তি প্রভ হয় তোমা হৈতে। পানরাপ মুগ্ন হয় তোমার আগ্রতে। ফেনার উদ্ভব যেন আন্দির হিল্লোলে। পনেরপি মান হয় সেই জলে।। ভোমার মাঘায় যবে নিমণন চইয়া। মিছা পতেপরিজনে থাকে বন্ধ **এই**য়া।। নিম্বন হট্যা পাপ প্ৰেক্ত সাগ্রে। মিছা বিভ সংপার আপন করি রারে।। জাম-মৃত্য-জরা গুণ গুণ গতাগতি। গভেরি যাতনা দাঃখ নরক বছাত।। দেখি শানি জাম-মৃত্যু সতা কিছ, নার: তথাপি বিবেক নহে তোমার মায়ায়।।

২ শনেহ ভকতজন না করিহ হেল।। সংসাধ সাগর কৃষ পাদপ্রম ভেলা।। জনিতা সংসার ভাই নিতা কিছু নয়। ভাবি দেখ দারাপত্র আপন হাদয়।। আসিতে যাইতে একা কর্মমান সাথী। ইহা বাঝি কৃষপাদপদের দেই মতি।।

০ দান এবং সভয় সম্পর্কে কবির উল্লি: পার ব্যক্তি দান দিলে পুণা অভিনয়। পাতানরেপেতে প্রা পাতক সঞ্য।। যেমন ব্যাধিত লোকে ঔষধ করিলে। তেমন দশ্যির জনে ধন দিলে।। দাতার অধিক কার্য সূথ প্রহীতার। যেমন শ্ন্য নৌকা চাপি হয় অভিদ পার।। ধনাকা ক্ষী হইয়া ধনী ধনা হয়। ব্যয় না করিয়া করে ধনের সণ্ডয়।। গ্রহীত। দাইয়া যদি ধনকার্য করে। ভবে সে আপুনি দাতা তরিবারে পারে। সপ্তর করিলে হর অকাট দুহার। গ্রহীতার পাপে পাপ সণ্ডয় দাতার।। অধিক অকার্য ধন সভয় করিলে। পূর্ণ নৌকা চাপি যেন মজি অন্দি জলে।। দান করি পাত অনুমূপ ফল পায়। বৃশ্চি জল পাতে যেন নানা মত হয়।। भाग नमीत जभा भाग कला। মুক্তির পতনে বেন হয় মুক্তাফল।। কপরে সে জল হয় কদলির পাতে। সে জল গরল হয় সপের মাথেতে।। সে জল কর্ম হয় ভূমের পত^{নে}। পাচী অনুরূপ ফল এই মন দানে।।

কবির কোন কোন উত্তি প্রায় স্তির মত সংযত ও ভূয়োদশনিজনিত অভিক্ষতার পরিপ্রে'। কবি ব্যবহাত গাঢ়াক্ষর বাক-সংহতি লক্ষ্য করলে বভাবতই হ'বত इल्ड्रेड अंत्रशास्त्र कथा मस्त शर्फ। ৯ শিশ্রে সমার জ্ঞায়ে কর বড় কার।

জিনিলৈ গোরৰ নাই হারিলে যে লাজ।। ২ ক্লেক্ট্রে প্রধান ধ্রা স্লাহ সমর কর। o **জামিলে** মর্ণ ত্র মাত্রিকং কের নর।

যে জন আমণে জিনে আছি কারে লাব। বৈষণ্যবর তারে কিছা করিছে না পরি। ও বৈক্র জনের মাতু। জীবন সমান।

কারে কেই সাথ দুট্থ দিছে নিজে নারে। পাপপাণা ভোগ করে কর্ম অনুসোরে।। ৭ আপনি বঞ্জি কৃষ্ণ কে মারিছে পারে। ৮ এক ভূপে সিধাত ঘটাছা আৰু সক্ষ। ৯ একের দোবেতে হয় আবের বিমাশ।

যে কর্ম করাহ প্রভু তাই করি আমি।

থলজন দোৰে সাধ**্জন প্ৰী**ড়া হয়। লক্ষ্মীর বিনাশ হয় দেবরাজ দোহে। যেন যক্ত নাশ তব করে দক্ষ দোৱে।।

প্রলায়ের মেঘ যেন বিপরীত ভাকে।

তেজবৰত নদী খেন পংক নাজি রাখে: ঘালা প্ৰাবান হৈলে পাতক না দেখে।। ঘরের প্রধান যাদ প্রশাবান হয়। তার পুলাফলে পরিজন প্রাণ্ড সয়। কিছা কিছা শব্দ প্রয়োগের বৈশিক্তী क्षकभीय। स्यम्--

जिल्लामिटल कथा कह माना गमा करेंद्र। অস্র কপট মুনি প্র বেশ ধরি। এখানে পাদ্য' শব্দটি উপহাস বা পরিহান রসিকতা অধে বাবহাত হয়েছে। **অবন** शना मारकत करे जांध वावहारतम प्रविधिक অন্ত রয়েছে। 'বেমন---(ক) হেন ব্ৰি গুদ্য মোৱে করিল হ্ৰফী

---কবিকক্ষন চপট্ৰী (খ) গোপীনাথ গদ্য করে পৌ**নুৰধ**ু হৈছি

এছাড়া কয়েকটি প্রাচীন শব্দের বাবহার এই প্রসংগ্য উল্লেখ কর্মছ—

 ना याद्य कठिन शाल द्रार एक कानाल। ২ মো সম অভাগী নাহি সংসার ভিডরে। ৩ মো নাল পোড়াইল খান্ডব দাহৰে।

রামায়ণ ও মহাভারতের বিভিন্ন আন্-वामकरमञ्ज भरया जूनसाम् सक् विक्रम् सारमा-চনার অবকাশ নয়েছে। এ-জাতীয় **আলো**-5मा ना इरम काना बादा ना **जन्मकी** কৰিয়া প্ৰস্থীদের কাছে কি পরিয়াণ খৰী এবং কোনখানেই যা তালের আছ-নৰত। গৱেষকর। এ-ব্যাপাত্রে বত্নবান হতে অনেক নতুন তথ্য উম্মাটিত হতে **পারে**।* [* অনেক ক্ষেত্ৰে উপত্তে অংশগ্ৰিক্ত প্রাচীন বানানের পরিবর্তন সাহিত হয়েছে—প্রাবৃণ্ধিক]



জভীতে বহু সাহিত্য-পত্ৰিয় সংক্ষেপ্ত বিবিধ সাহিত্য-স্বোদ প্ৰত্নভাৱে প্ৰচাৱত হত। তংকাদীন সাহিত্য, সাহিত্যক ও সাহিত্যান্বাগীদের স্ক্ৰংশ যেমন বহু কোত্তলোগদীপক সংবাদদি সাহিত্য-স্বাদের মধ্যে প্রিব্রিছিত হত দেমন সাহিজ-সংস্থাবা সাহিত্য স্থিলনের বিভিন্ন স্বাদ্ধি বাদ যেত্য না তার মধ্যা

স্থিবীর ইতিহাস' প্রভৃতি বহু মুল্-স্থাপ প্রতেশ্বর লেখক স্থান্ডত দুগাদাস লাছিড়ী মহাশয়ের ততাব্ধানে এবং প্রমধনাথ সান্ধলের সুম্পাদকভাষ সাহিত্য-সংবাদ নামক একটি মাসিক পাত্ৰা প্ৰণাশত হত এককালো। যদিও উক্ত প্রিবাস স্বর্গমার সাহিত্যের সংবদ্ধই প্রকাশিত হত না व्यानामा भारताचान होन्द्रिक (१९)निवास कराउ ভশ্চ সাহিত্য-সংবাদ নামে একটি স্বত্ত বিভাগত ছিল পহিকাথানিতে ১৩২৬ সালের ভাল সংখ্যার প্রকাশিত অনুরেশ একটি বিভাগের নিদশান যথাযথভাবে এখা স জামরা উষ্ণুত করে দিলাম। এই উদ্যুতির **লেখের অং**শানি বিশেষ্ত্রত দুইনা। এর মধ্যে শেখকগৰ সম্পাকে এমন কিছা মণ্ডব্য আছে যা বভাষান কল্লা । কর্

। ।माहिका-मश्वामः ।

বিন্যাসাগর মহাশয়ের চনগা-ভারের দিন সমরণ করিয়া গত ১৩ই স্থাবল বাজ্যালার ভিন্ন ভিন্ন স্থানে স্মৃতিসভার আধিবেশ্স **হয়। শলিকাতার কোহিন্র** থিয়েটারে ঐ সম্বদ্ধে যে সভাব অধিবৈদ্য হইস্চিল্ সকল সদল্ভানে উৎসাহলালৈ স্বায় শ্রীয়াক শক্তীণ্ডলাথ চোধাুরী এম-এ, বি-এল মহাশাস্থ সেই সভায় সভাপতির আস্ক গুঞ্চ করিয়া-ছিলেন। শুনিলাম, ঐ সভায় বিদ্যাস্থারেস 🖛 বন্দ্রবিদ্ধার প্রাণ্ড জ্ঞান্ত ১৮৬ চরণ वरक्षाकावा श्र अह । बार প্রিয়েশছিলেন-ক্ষণত ক্ষণত সুখনা সূত্ৰতাকৈ আলীব'াদ **করি√ে ছইলে বিদ**াসোগর মহাশয় বলিতেন, জ্ঞাশীর্বাদ করি ভূমি বিধবা ছন্ত।' অর্থাং, মুক্তী বিধবা ছইলে বিদ্যাসাগ্র মহাশ্য জাছার বিবাহের বাবস্থা করিয়া বিধবা-বিৰাছের পেষ্কতা করিবেন, ইহাই ভাহাব আশবিদ্যাদের উদ্দেশ্য ছিল। আমরা আগচর্ষা **ছইলাম সভাস্থলে একথার** কেন্তু প্রতিবাদ करतन नाहे। 'বিদ্যাসাগর' প্রদেতা 'বংগবাসী র জীৰ,ত বিহারীলাল সরকার মহাশয়ও একথা **মানিরা চুপ করিয়া চলিয়া** আসিয়াছিলেন! স্ভালতি মহালয়ই বা কেমন করিয়া এর প

প্রাণাপ বাকো আপত্তি জানাইজেন না, ভাহাও ব্যক্তিত পারিতেধি না।

কলিকাতা পাহিতা-সন্মিলনের উপয়ান-পরি দাউটি অণিবেশন হউয়া গিয়াছে। একটি আশিবেশন -কবির দিবভেন্দলাল রায়ের লোকাণ্ডরে লোকপ্রকাশ উপলক্ষে। কবিবর শ্রীয়েক বিহারিলাল সরকার মহাশ্র সভা-পতির আসন গহণ করিয়াছিলেন। দিবতীয় অধিবেশন উপাসনা-ভত্ত বিষয়ক আলোচনাৰ জন্য পন্তিত শ্রীষ্তু রামস্থায় কাব্যতীগ महागर जनर श्रीयाक शितिकाङ्ख्न हरहाशामत्र মহাশার ভৌপাসনা-ভঙ্গ বিহারে প্রবাদন পঠা পরেন। কলিকাত। সংস্কৃত কলেজের স্মৃতি-শাসেরর অব্যাপক পশ্চিত শ্রীয়ক্ত শিতিকাত বাচস্পত্তি মহাশ্য সভাপতির ত্যাসন গ্রুণ করিয়াছিলেন। এই দাই ভাগিবেশনে বক্তুতা কবিসাভিজেন মহামতোপ্রেম্য প্রিডেড শ্রীষ্ট্র সভীশচনদ্র বিদ্যাভ্রষণ এম-এ পি-এইচ-ডি জীবাড় শাশভ্যণ "মুখোপাধাঝ (বস্মুমতী সম্পাদক), শ্রীষ্ট্র তিনকডি ম্যোপার্যায় পণ্ডত শ্রীষ্ট্র হ'বদেব শাস্ত্রী, শ্রীষ্ট্র মানীশপ্রসার স্বর্গধিকারী, শ্রীস্তু ক্ষেতনাথ কাবাক-ঠ, শীয়াক সুরোন্ধ্যাহন মির প্রভতি। বড়ই আনদের বিষয়, সাহিত্য-সন্মিলনের সমপাদক শীষ্ট্র শচীন্দ্রাথ মুখোপাধানে বি এল মহাশয়ের প্রয়তে। এবার সাহিত্য-সন্মালনের কাষ্ট্র সূচারাুর্পে স্ম্পাদ্ত <u> इंट्रेस्टर्</u>छ ।

সাজ্গলা ভাষার সৌভাগা যে, আঞ্জিকাল দেশের ধনকবেরগ্রের দাই একজন বাজ্যালা-कर्नेहार स्वयं अयुक्ताहरूको वटौ अञ्चेत्रार्कन । ক্রমানাধিপতি মহারাজাধিরাজ অনারেবল মার শীষ্ট্র বিজয়তীদ মহাত্র বছোদার ভারতবর্ষণ পাঁএকায় একটি সংগীত ও একটি প্রবংধ লিখিয়াছেন এবং নাটোরের মহারাজ ভানবিবল শ্রীষ্ট্র জগদি•দনাথ বায় বাহাদ্বরের একটি প্রবন্ধ (বরেন্দ্র-অনুসম্ধান-সমিতির অভিভাষণ) খানসীতে প্রকাশিত ষ্ঠালালে প্ৰথমীয়া মহারাল অনুষ্ঠিতভ আচাষ্য' চৌধ্রী বাহাদ্র 'নিক্ম'ল্য' পরে শিকার-কাহিনী লিখিয়াছিলেন। কয়েক বংসরের মধ্যে বাজ্যালার এই ভিনজন মহা-রাদকে বাজালা-সাহিত্যের আলোচনা করিতে দেখিনা আমরা বাস্তবিক্ই আন্সিক্ত হইমাছি। এতং প্রসংশ্য চু'চুড়ার সাহিতা-र्जाम्मलरन 'धानारतयल' भरावास श्रीयाह भनीन्त्राज्य नन्ती वादान्द्रवद अक्डिक्श अवर **উट्ड-वर्ग प्राहिक प्रोध्यम् बानगीय**

বিচারপতি শ্রীষ্ত আশুডোৰ চৌধুরী মহাশয়ের অভিভাষণ উল্লেখযোগ্য। সে দুই অভিভাষণকে বংগ-সাহিত্যের দুইটি রতা বলিলেও বলা হায়।

কাহারও কাহারও ধারণা—বাংগালার বে দুই চারিজন লেখক খুব নামজানা হইয়া উঠিরাছেন, তাঁহারা না পিখলে সামায়ক প্র চলতে পারে না। কিপু আমরা ভাহা মনে করে না। যে দুই চারিজন লেখকের নাম গুলাইর হাইয়া আছে, তাঁহারা ভিন্ন বাংগালার বে আর লেখক নাই, তাহা অক্তানের বাংগালার বে আর লেখক নাই, তাহা ক্রকালার বে আর লেখক নাই, তাহা ক্রকালার বে আর লেখক নাই, তাহা ক্রকালার বাংগালার বাংগালার বাংগালার বাংগালার আর ক্রমালার আর আর ক্রমালার আর ক্রমালার আর ক্রমালার আর ক্রমালার আর ক্রমালার আর ক্রমালার বাংগালার বাংগ

সাহিত্য স্বাদের লেখকগ্রের **এ**খ্য পার্ক-পাঠিকাগর সেইর"প অনেক অপরিক্ষাত প্রতিভাশালী লেখকের পরিচয় পাইরেন। আজ দ্বইজনের মাত্র নাম করিতেছি। (১) শ্রীয়ার রঘ্নাথ দে মহাশ্র। বহু পাধ্বে মবজীবন সম্পাদক আনের যতে। ইংগ্রার দ ই তারিটি রচনা প্রকাশ করিয়াছিলেন। ভান সম্পান 🖣তে ই'হার কয়েকটি রচনা প্রকাশ পাইয়াছিল। এখন সাহিত্য **সং**বাদে মধ্যে মধ্যে ইনি কল-পাসি লিখিলা **লাকেন**। বেন্ত প্রবধ্বে ই'হার নাম প্রকাশিত হয় কোনিত প্ৰত্যেক ইকোলৈ নাম প্ৰকাশিত হয় না। কিণ্ডু যে বিষয়েই ইণ্ছাকে **প্রবাধ** লিখনে বিজ্ঞ টীন সেই বিশ্বরেই তাভাংকুট প্রবাধ লিখিতে সম্থ**ি বিজ্ঞান** বলান পশ্ন বলান ইতিহাস কলাল সমা-লোচনা বলাৰ বিদ্যাপ বলান-সৰ্বাবধ রচনায়ত তীন সিম্পত্সত।

(২) শীয়ার জয়কমার সদধ**ন রায়**। টাহার হাদয় কলিত্বলো। হচনাও ক্ষরিতে ভরা। ইনি যে ফাল সংগতি রচনা করিয়া-ছেল, সৈ সকা - জেলনা হল নাং ইনি য়ে স্কল উপন্যাস লিখিয়াছেন ভাহার মাধ্যযোগ খালত এই চানিরক্ষর ক্রবিগ্রের বিবর**ল্ট সংগ্রহ** করিয়া ইনি বঙ্গ-সাহিত্যে আভিন**্ সম্ম**ং কবিয়াছেন। বিজ্ঞান-দশ্লাহি স্মন্ত্রনত ইপ্তার ভারেষ্ণার পরিচয় পাউং ইনি নীরবে নিভূতে বাঁণাপাণির আলোচনার রতী ছিলেন। অনুসন্ধান ই'হার **প্রথম** সংধান পান। পোহিত্য-সংবাবে ইনি নিশ্বস্থিত লেখক। 'মুসলমান বীর' প্রভৃতি ইনি হে স্কল প্রম্থ লিখিয়া রাখিয়াছেন, খুদি কথ্নও সে সকল গ্ৰন্থ প্ৰাশিত হয় ৰূপায়-সাহিত্যিকগণের মধ্যে ইণ্ছার আসন কত উজে, বৃংমন্ডলী অনায়াসেট ভালয়ংগম করিতে পারিবেন। আজ সংক্ষেপে দ্রাইজনের মাত প্ৰসংগ উত্থাপন করিলামা উভিটেমৰ এবং 'সাহিত্য-সংবাদের' অন্যান্য লেখকগণের প্রতিকৃতি সহ বিস্তৃত পরিচয় প্রকাশ र्दादवाद वानना खाट्ट।



সেলিনা জানে না কখন সকাল হয়। ঠিক ঘ্ম কাড়্র মাটির মতো স্বল্প পানিতে গদগদে বভাবের না চলেও ঘুম ভাশতে একটা দেখাই হয়। দেৱী মানে বেশ কিছ,টা। একে সকাল বলা প্রবের बाद्र किना रत्र कारने ना। व्हनना, তাকিয়ে আকালে তখন স্যের দিকে বর্ণ সূর্যমার কিছাই দেখা হায় না। তথন মে স্ফের খ্ব একটা তেজ থাকে তাও নর। অঞ্চ তাকিরে দেখা বার না, বেমন শার না কবীরকে। কবীর যে যুবক তাও নয়। আবাধ কিশোরও নয়। অনাগত হোবদের একটা ইচ্ছার ধ্ততা যেন তার চেহারার, বিশেষত চোখে সব সময় স্কালের আকাশে স্বের মত कारम ।

কালেই সেলিনার বধন সকাল, হয়, সল ব্য ভাঙা আমেলে নিজেকে বিছা-নার বিক্তিক করে ছড়িরে রাখে, তখন একবার বাড় কাত করে জানালা গলিয়ে मकानागे प्रधाद क्रकी करत। मूर्य उपन পাশের একতলা বাড়ির কাণিশের পাশ দিয়ে তার ঘরে জানালা দিয়ে উ'কি দিছে। শ্রে শ্রেই সে দেখে। অন্ভব আহা কী সতেজ এক উষণতা তার গায়ে দপ্শ' ছড়িয়ে পাশে বিছানায় এলিয়ে পড়ে পড়ে যেন তার বিছানা দখল করতে পিল পিল করে প্রসাধিত হচ্ছে। আর ঠিক তথনই মনে হয় কবীরের চোথ। তাকিয়ে দেখা যার না। অথচ কেমন যেন কেমন করা ইচ্ছার এক উম্বতা ছড়িয়ে দিতে চায়।

এই সময়ই সেলিনা দেখতে পাশের এক তলা বাড়িঃ ছাদ কব্বির পলকে আড়ালে চলে গেল। যেমন স্ভুত্ করে কথানা চড়ই ঈবং চমকে দিয়ে চেতনার তেউ ভূগের আচমকা ছরে টোকে।

তার চেত্রনার অনুপ্রবেশ করে নাকি কবীর। প্রায় প্রতি স্কালেই অম্নি হয়। এমন অলস অবশ শরীরী ভাগাতে পড়ে থাকা সেলিনার বিমতে নিজনৈ ক্বীর

ক্ষীর সবে কলেজে ভার্ত হয়েছে। একমাথা কোঁকড়ানে। চুল। গোঁকের লোম: গুলিতে কেবল কালো রং বর্ণময় বান্ধনা ধরছে। একহারা গড়ন। বেশ মিশ্টি মিশ্টি চেহারা। একমার চোথ দুটি ছাড়া। দেলি-নার মনে হয়, হোকনের এক ধ্তজার ইচ্ছার নেকড়ে ধেন ৩ত পেছে আছে ওর চোখের গভীরে। কিসের এক গা" শির্মির করা অন্ভূতি জাগায় গুরু চোধ। এবং সেলিনাকে দেখলেই ওম টোখ চক চকে ইম্পাতের ছারি হয়ে খেন , ছিচ্ছে খ'ুড়ে সেলিনার দেহের অপার রহসা উদ-घाउँदन छन्माय इत्त छठं। छाहे तिनिमारक ও অসম্ভব দেখতে চায়। সকালে একনোই সে ছাদে আসে। বেদা বাড়লে ব্যান্দার দলে থাকে। অসীম প্রতীক্ষার।

प्त्रिंग क्रम्पान कत्र अहे शकीका। কেউ কারো জনা প্রত্তীক্ষা করছে ভাষতে काम भारत कार। वास्तात कारे नाकाहित খেলার মতো। সে লাকিয়ে থাকবে, ভাকে খ'জে বের করবে কেউ। ভঙ্গ कি যে আনন। তাকে কেট আবিকার কর্ত স এটাই ফেনেছে। এই প্রতীক্ষা কেন সেই জাবিক্সর। ডিলে ডিলে বেন আবিক্স্ত ছঙ্গার এই গোপন ব্যাপারকে সোলনা কিছ্মুতেই উপেক্ষা করতে পারে না। বরং লে প্রতিনিক্সতই একটা প্রশ্নরের অগতরংগতা বিদ্যা আহ্মান জানার।

কাজেই সেলিনা বখন ধীল মন্ধর পারে
প্রের গার্বভা রাজহুসেরি মৃত বাইরে
বের্বার জনা রাশ্তার পা দের, তখন
চকিত দ্ভিটতে গাথে কবীর তার আপাদ
মন্তক দেখতে দেখতে নেকছে হয়ে
উঠেতে তখন সেলিনা আরো একট্ উলোচিত করে নিজকেন। অধ্রের ঈষং বাঁজন
মনোরম তংগিতে কণিক হাসির ছটা উপভাসিত করে তা ছড়িয়ে দের, লীলায়িত
দেহের স্কুণ্পট ভাজে ভাজে, উদ্মান রেখার
ভিতরে ছণিদত দেহাবরণে।

সহসা বিদাং শশু আন্বের মত সেজা হয়ে ওঠে কবীর এবং গুড় নেমে জালে কন্সিত উত্তেজনার,......এই যে জানা আপা, ভাসিটি যাছেন নাকি। গুন্দি শিল্পীর গুড় লয়ের কাপানো জাপুর এক দৈন্দিন ভিক্তাপ।

ম্দু সম্বতির মাথা নাড়ে সেলিনা। ৰলে তুমি কোথাও যাছে নাকি?

करमदक शादा।

বেশ ডো চল। একসংগে বাস স্টান্ড প্ৰস্তু হাওয়া যাক। একা হৃটিতে একট ভাল লাগে না। আবার মোনালিসার হাসি অধ্যে আনে সেলিনা।

কান্ধারো না। একদম ভাল শাগে না। আতিগবে। উল্লাসিত কবীর পাশ থেকে এক কাক দেখে নের সোলনাকে। সেলিনা তখন প্রকাশত দাঁঘি। সান্ধান্য চোখ স্নানে তার কবি-না এসে ধার।

কবীরকে পাখে নিয়ে সেলিনা কিছ্কেণ

হাটো। কিছু সময় সৈ দেয় কবীরক। এই কেমন এই সকালে নিকেকে কবীরের দশিয়ে পরতেশু রাবে।

অনাদিন হলে এডকশ সেলিনা বিছানা ছেড়ে উঠে পড়তো। এবং বিশ্রুস্ত রাত্তি-বাস নিম্মেই ড্রেসিং টেবিসের আরন্যর সামনে দাঁড়িরে নিজেকে দেখতো। আত্মমণন অনেকটা সমর কেটে যেতো। এ ভো দেখা নর এ যেন প্রতিবিশ্বে বিস্মিত এক নারী। কথনো কল্যবাস। কথনো নার্সিসাস।

এবং তথানি মনে হতো কেন কৰীর ভাকে সামনে দেখে সহসা বিদাৰে স্পৃথী হয়।

কবীর ভার কোন অংগে নর, সামগ্রিক-ভার কুজাবনে অপরিণত শিকারী। কুজাবনের মোহিনী মালার ফালৈ আটকে প্রভায় বিমাণধ দিশেহারা।

কিন্তু হার্ণ-অব-রশীদ, তার সহশাঠী, কথনো আধাে ঘনিষ্ঠ কোন কোন অশ্তরংগ মুহুতে বাজপাথীর দ্বিতি ছকিতে দেখে নেয় তার ব্ক। সেলিনা সেমুহুতাগ্লিতে অবশ অনুভব করে। তাংশাণ্ড প্রকার যায়। একটা রঞ্জিম জড়তা তাকে বিমৃত্ব করে তোলে। তব্ একলিন তার দৃষ্টি নিজের আয়ত চােথে ধরে রেখে শ্রেছিল কি দেখাছো হার্ণ।

বাক-চতুর হার পুণ-জর-বাঁশদও সে প্রশেন বোবা হয়ে উঠেছিল। এভাবে ধরা পড়ে হাবে ভাবে নি।

এ প্রশন করার আগেই সেলিনা ধরে নিমে-চিন হার ৭ অব বাশদ এর জবাব দিতে পারবে না। কেউছ এভাবে সভোল মুখো-নুখী হতে পারে না। ভাই সে নিজেই কৌতৃকময়ীর হাসিতে প্রিবেশকে সহজ্ঞ কলে তোলার জনা বলেছিল, হুদয় দেখছো ব্রিং? হার,শু-আন্ধারীশদ তথনো কোনো জবাব দিতে পারে নি। লাজার মাধ নীচু করে সিগারেট টালভিলো খনখন।

সেরিনার নিজেরও লাজা লাগড়ো। মনে হতো কি আপোড়ন এক র্পের শ্রাধা বাকে নিয়ে তাকে বিরত হতে হয়। কি লাজা মনে হতো মরে বাই কি লাজা।

এজন্য প্রথম প্রথম সোজা হয়ে দাঁড়ান্তে
পারতো না। বৃক থেকে কি বেন এসে
গির শির করে ফেলুদন্ডের থাজে থাজে
গিহরণ ভূলে দিরে প্রবাহিত হয়ে বেত।
আর তথ্নি চোধম্থ লাল হয়ে উইতো।
মনে হতো, গত গত দুন্টির সামনে এ বৃক
নিরে চলবে কি কয়ে। ছি ছি, কি অসভাতা।

কি অংশ নির্বা। সমস্যাটি জাতের কার্টার মন্ধ্যনির মধ্যে থচখচ করে বিধতো। পারলে উচ্চতার এই স্ফোল স্পর্ধাকে গণ্ডিয়ে দিতো। কিব্ছু তা পারে নি। তব্ যতোটা সম্ভব চেণ্টা ক্রতো।

একদিন, সম্ভবত সহস্যাঠী লীলাই
হবে। বলেছিল, এ মা. তৃই কি লিনা,
কলতো। ও ভাবে বাধতে আছে নাক।
তোর মত আমাদের হলে মাটিতেই
লা পড়তো না। দেখিস, এর জনাই ছেলেদের
ড্যো একদিন কদর বাড়বে তোরী। ভ্যান
ব্যাবি।

ব্রুতে অবশ্যি সেলিনার বেশী দেরী
হয় নি: যা ভেরে সে লঞ্জায় অধোবদন হয়ে পথ চলতো, পথ চলতে ওসব
নিয়ে যে কি করবে ভেবে পেতো না, সেই
অংশান্তন স্পধারি জনাই তার মধন একটা
দুর্শত আবের ঝড় তুলছিলো।

কুলাবাগান থেকে ফ্রিক্রান্থ সেলিনা। দ্বুপুর অভিক্র-তা তব্ নিজনিতা ছড়িছে আছে এখনে তথানে। কখনো রিক্সা বা দু একজন মান্য চলে খাছে! ছটিতে বেশ ভাল লাগে সেলিনার। দ্বু অকল সাত, মুক্র পদক্ষেপ শিথিল বেশ্বাস। একটা তুল্য ভালমনায় চলাছিল হে।

হঠাং নজরে আসে খ্র কাছে প্রতি তেশাণ: একল কবীর মাজি। না জনা কেউ: কিপ্তু একি, ওপের দুন্দি বৈ আপ্রাসী অভগরের মত হিসুহস করে। আছাড়ে প্রুড়েছ তার ব্যক্তর ওপল। মাহ কটি মাহাতা। কিপ্তু সেলিনা উক্ত হরে ওঠে, যোন সলা লাগান দুবি চর সাম্যালোকে।

আর ঠিক তখনি কানে আনে ওদের করা। অশাল্পীন সংকাপ।

ভাবক্যাং গুর কান কাঁ কাঁ করে।
ব্যুক্র মানের রস্তু নেচে গুঠে। ইঠা: ছুটে
আসা ছোট ঘুনির একু দ্যাকা বাত্যসের
মত্যে ভাললাগা ওকে আছুর করে দের
অধ্যাসীন অধ্যা এক ভাললাগা একলিন কোধান
দ্যিকরে ছিল স্পোলনা ছানে না। নাকি এ
উচ্চারিত কথালালি গুর ঘুন ভালিকরে
দিয়ে গোলা। লায়া শিরা নব উক্তেজিভ কর



ভললো জি বেন কিসের এক অভিযাতা वासारिकरणां करव जिस्सा अर्थामस्मय माजिएत काला सन्दर्भवत भरवमी बानाम ! যেন এমন এক মনের পরিবর্তন, পাওরা নতুল খেলনার মতো আক্রেটা অনারালে কাচিরে দেওয়া বায় ৷ কোনাদন এমন অভিন্ততা ছিল না অথচ খেলার প্রভুল হাতে মেতে ওঠার .08 আকঠ পিশাসা সারা সন্তায় বন্দ্রণা ছড়ায়। बन्तना खाबह खान नारम।

সোলনার কাছে কী ভীষণ ওলটপালট ছভে ৰাজে সব। পবিশ্ৰ নাকি এই দেহ। নাকি মন। কি যে পবিচ ঠিক ব্ৰেষ্টেউত পারে না। যাদ ভাই হবে ভাইলে এ স্ব কথা কেন ভার কানে আলে। সেই কানে এলে চোখ মুখ রবিম হয়। খা কাকরে। আর কি আশ্চয প্রনো त्रवीन्त्रनारश्वत कथा किं छाटव ना। भारतमा ভাবে কথা বুলা নাকি আজকাল চরম অস-ভাতা। এ বৰুবা নিয়ে শেষবর্ষ বাংলার আবু শরীফ হামিদুল্লাহ তো এক প্রবংধ পাঠ করলো বিভাগীয় সভায়। সচ্কিত শাণিত সে প্রবংধ-পরেনো রবীন্দ্রনাথের মৃত্যু, অকৃতকালের জটিশতা **्वर खाबारनत छाया। मानरहा मानरहा प्रान्ध** হয়ে পড়েছিলো সেলিনা। নাকি আৰু শরীগ শহীদুরার শাণিত চেহারা মুক্ধ করেছিলো ভাকে। ঠিক করে ঠিক বলতে পারে মেলিনা। তাই ৰখন প্রথম আলাপেই আব শরীফ হামিদ্রাহ বলেছিলো আপুনি ভো আমার খুব চেনা। কতুদিন আপনার হটিার ছব্দ দেখেছি গানে বলতে পারবো না। আপুনার হাটাটাই নাচের একটি মৃদ্রা। হে মৃদ্রা আমাকে মৃত্যুর ভাক रपद्ध ।

অবাক হরেছিল সেলিনা-মৃত্য।

আৰু শরীফ হেলে জবাব দিরেছিল, হাাঁ — মৃত্যু । মৃত্যুই তো। অবশা সংখ্র মৃত্যু-রভের আদিম উল্লাসে চেতনাছ¹ন। তথ্ন কথা বলতে পারোন সোল্নাঃ বেয়ন भारतीय र्ज्ञापम निख्यारकरें।

यहे शाक्षा श्वरक द्वत श्र_य जार्नाहरू। नामरनत् श्राटवण शरथ मीजिट्स अक रहाणे मन বৈকালিক মেরে পর্শক, রাস্তাবাজ। সবাই ওর দিকে ভাকিরে ভাকিরে দেখছে। কাছে माजरखरे मञ्ज्या, कारम खारज : कि स्नरह रनरह আনতে তাই মা।

তব্ ভার গতি নির্ভিবণন অচন্তশ। সাক্ষিত্র তোলা ওদাসীনো ভাবলেশহীন।

—দেখ বা হাডটা নচের মন্তার মত করে রাখা। একজনের সরস মণ্ডবা।

—কিন্তু হাতটা কোথায় দেখেছিল। कारसक्तरात हेर्राभ्यम ब'त्र्य रम्बरा कवा।

—ভাইতো, ঠিক ধরেছিল। হাতটা ঠিক कांत्रगाञ्च दब्रट्य होंग्रेटक ट्या विग । व्यनाकन

-- छी। नाठ-गेरकत बन्हा नहा। व्यानतन हेर्राज्य । एक द्वान करण।

यूबील गरतानाधारा

সামনে আড়ালে 🤫

क्वीवत्नद्र दकात्ना घर्णनार मामाना नय। अत्नक क्राप्ट- थण्ड घर्णना দু, একটি চকিত মুহুতে অমানুষের জীবনে বিরাট প্রভাব ফেলে বায়। অনেক সময় সেগনুলি আমাদের চোখে পড়ে না—কিন্তু লেখক সেই সব সামান্য ঘটনাকেই অসামান্য রূপ দিরেছেন। শচীন বিশ্বাসের মনোরম প্রচ্ছদ।

> অসীমানন্দ মহারাজ-এর সাডা জাগানো উপন্যাস

वा त व धर

গী দ্য মোপাসাঁ-র আলোড়ন স্থিকারী উপন্যাস 'বল-আমি'-র অনুবাদ

এক নায়ক অনেক নায়িকা

নিশাচর-এর নত্রন উপন্যাস জীবন রহস্য कूरशिका

প্রণর বন্দ্যোপাধ্যায়- এর নতুন উপন্যাস

माजधात्रत नायका

নদীর ঠিকানা ৭ চিরক্ট ৭

সদ্য প্রকাশিত চিরঞ্জীব-এর নত্ন বই

বলের শিনো নাম

F.00

জ্যোতি প্ৰকাশন ॥ ২এ নবান কু ছু লেন ॥ কলিকাতা-১

ভাজনে দলটিকে অভিক্রম করে প্রতিবাহ করে দেশিলা। কিনের ইজিড লোনার রড করের অকথা ছিল না ভার। হরতো ওরা কর্নাছল কিন্তু তা কামে আর্সেনি। শুধে ওবের লাম্মিলিড কেটে পড়া হালি শুনতে পেরেছিল। বিশ্রী গা অরালালে হালি। ক্রানের ইজিড খালে পেরেছিল ভাগ কিলের ইজিড খালে পেরেছিল ভার হাটার জড়োল থেকে। তথালি হাভটি ভার প্রতীয়া করেলা অভ্যানের গড়ে ওটা লামিধা মের্ছে স্থান্ট্রাভ হরে প্রভাহনর গড়ে ওটা লামিধা মের্ছে স্থান্ট্রাভ হরে প্রভাহনর গড়ে ওটা লামিধা

আসলে ঘটার সদর হাতটা তার একটা
সামদা ছিল এতলিন। 'মতে সোঁজন আঁতক্ষেত্রকর বস্তু নে তেবে উঠতে পারেনি ্যতটা
ক্ষিত্র কি করবে। কোবার রাখবে। তান হাত
ভৌ ক্রিকরে চলা বার। কিল্পু বাঁ হাত।
আ্যাক্রকতা কোরে বসতো তাকে। আর এই
ক্রেকিতার মোহ কান্তির উঠতে পারেনি। ন্ই
ক্রের রাখের ন্রোল অবন্যানের শাড়ির ভারত
কা বাঁ হাতের আলানুল দিরে ক্রিবং ধরে
ক্রিটিত।

কিন্তু কি আশ্চয', এতদিন সে স্থানতো কা এভাবে হাত রাখার বিশেষ কোন অর্থ আছে। আছে কোন আমন্তণের ইণিগত। বিশ্বিত মনে ভাবে সেলিনা। ভার দেহ, নিজের আই দেহ নিরে কখনো চিন্তা আর্সেম। আর **দশটা মেরের মন্ড সেও দ্বাবতে অভাস্ত** হয়ে উঠেছিল, মেরেদের তো এমনিই একটা ্দহ बाटक। नाथातम धारः भारतस्यतः एएटा व्याकामा । এই প্রতিষ্টা,কিন্তু সেই সাধারণ দেহ থেকে বে, এভাবে একের পর এক আবিদ্যার হবে পরেবের অবিস্থানশীয় আক্রবণ এবং মিজের কাছেও কে জানভো। অন্যের চোখ দিয়ে নিজেকে দেখা, হোক না তারা রাস্তাবাজ, রক-বাল, সহপাঠী বা কবীর, ভার ভাললাগা ভো একাই উপভোগ করে সকালে সদা ঘ্র ভাপ্যা জড়তার আমেতে ড্রেসিং টেবিলের আরুনার প্রতিবিদ্ব তারিয়ে তারিয়ে দেখে। **হুত মানুষের চোহ্ব দিয়ে যে এত বড় আ**র্যনা **हस त्रिक्ता कार्य मा।** किण्डु अकारतात कड़े ফিন-ধ মনোরম আলো_র মণ্ড হার ধখন সে नित्कारक (मरम, मरन रहा कामश्या राज्यत আর্নায় ভাসছে ভার এই পরম রমণীয় দের। সেই চোথগালি বেল থেলছে এই সকালে শিশরে আকঠে শিশাসা নিরে ভার দেকের প্রভুল। সেই সব আক্রবণীয় অংশ, যা প্থে-বাটে বছ, বা প্রশংসিক, তাকে আবেলে উল্লেল ৰৱে ভোলে। হোক নাসে ভাষা আবিপ. खर् क्यम दाम मध्या

থাই সময় সেজিনা বাবে দাঁড়ায়। মরাজ রীবার উষধ ভাজ ভাল পদম পাুলর থেকে উঠি জালা বাজ্ঞহংসীং হত পিছান তারাত। জাম পার্কার পুসফাটিত পারা: পাাপড়ি বেলেনে মর্কার সামান্দার তারান ভালে কৈ ক্ষান্দার ভালেনে কর্মান কৈ ক্ষান্দার বাক্ষান্দার ক্ষান্দার বাক্ষান কে ক্ষান্দার বাক্ষান্দার ক্ষান্দার ক্ষান্দার কা ক্ষান্দার বাক্ষান্দার ক্ষান্দার ক্ষান্দার ক্ষান্দার কা ক্ষান্দার অর্থাধ। উষ্প্রেক্ত ক্ষান্দিততের তেওঁ বেলানো উদ্রাল তর্মণ বেন আছুছে পড়াছ গ্রে নিতন্দের ইগারার ওপর। কই, সে নিজে তো কথনো এমনভাবে দেখেনি। তবে?

ভাইতে শেছম ফিরে তাকাবার কৌতুহল কাম করতে পারে না সেলিনা। বিশ্ববিদ্যালয়ের গেট পোরিরে আনেমনে হটিছিল।
উল্লেখ্যা ছিল জাতীর গ্রন্থাগারে কুল্পাপা
বইগুলি দেখতে বাওরা। সামানাই পথ।
হাটিছিল সে। হটিতে ভাল লাগছিল। কিল্ত সেই ভাল লাগা যে এভাবে শাণিত ছারির
মত বিক্ষাত হবে কৈ জানগোতা।

পিছনের ছেলেগালি মা্শ-চেনা। বহু দেখেছে বিশ্ববিদ্যালয় চমুরে।

তাদের কারো সংখদ মণ্ডবা ঃ ছম্দ্রী দেখেছিস।

किटमद? अमासन।

र्त्रानना कोध्यतीय-।

— কি যে অফলীল কথা বলিস। হাদি শ্নেতে পায়।

—শোনার জনাই তো বলা। যার বা আছে প্রশংসা করা বুলি অশ্লীল ?

—তব্ এভাবে বলা।

—শ্নেজ ও খাশীই ববে। ওর যে এমন একটা জিনিস আছে যা নেখে আমরা নুম্প। নিজের একটা ভাল জিনিস থাকলে কে না খাশী হয়। বিশেষতঃ মেরেয়া।

প্রেগেশ্রি অবিশ্বাস করেনি ছেলেচির
কথা। তবে প্রথমে চমকে উঠেছিল এবং
তথনই যেন কে তার মুখ্যমন্ডলে গরম রং
তেলে দিয়েছিল। কলিত শ্নোমনে তলিয়ে
গিয়েছিল সে। তারগর চেড্না ফিরে প্রতেই
একটা রিকসা তেকে ধর্মেছিল। জাতীয় গ্রন্থাগারে তার ধাওয়া হয়ে ওঠেনি।

দুই অক্ষরের সেই কথাটা তার অপলীল মনে হলেও মনে হয়নি। কেমন যেন একটা সংখ্যে শিহরণ এনেছিল অংগ। কেম হে এমন হয় জানে না সেলিয়া। তব্য হয়।

কথাগালৈ বিচ্ছিমভাবে করেরবার তার কানে এসেছে। তবে বিচ্ছিম হলেও তাকে সমার অসময়ে বেশ ভাবিরে তোলে। তাম শরীরে এমন করেকটি ভারগা আছে, বার উপর অনোর চোথ আটকে বার, স্পির হরে থাকে, ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত এবং হাসংযমী ভার্পোল মন থেকে ন্যভঃক্ষ্তেভাবে
মনতবা হয়ে ভার কানে আনে। আর বার
মনতবা হয়েছে না, ভাবের চোবের সার
ব্রতেও কোন অস্ববিধা হয় না সেলিনার।
একই উৎস থেকে উঠে আসা ক্ষায় বিভিন্ন

আর্নার সামনে তথানো সোকনা। মাকন বিক্রান্ত কাপড়ে গিথিল নির্ক্রিক্ত তার নাড়িয়ে আর একবার আর্নার চোখ মেলে ধরে। যেন বিছিলে ধরে মিজের পরীর নিজের চোথের কাডেই। দেখে ঘন দেখা গের ছেল ছান কাডেই। দেখে ঘন দেখা গের ছানার নাড়া কাল্য কাল্য

সেলিনা একটে, হেসে তাকে অভিক্রম কয়ার পর ব্যক্তে পারে কবীর তাকে অন্-সরণ করছে।

হঠাৎ একটা দাঁজিয়ে সে বলে, মাঠে যাও নি কবীর।

—কেন

— (थमा प्रश्राः , रथमारः ।

—থেকাতো দেখছি। খেকতে পাবো কিনাকে জ্বাদে?

रठोर पर्दर्य ा_{र्थ} छठे करीत।

—কোথায় ্বলা দেখছো? সেলিনা জিজনাস করে:

—বে:থার? বলবো? না, থাক। কবীরের চোখে যেন থেলার মাঠের ছারা পড়ে। চমকার সেলিনা। এতটা সে আবালা করেনি। তব্না ব্থার ভান করে বলে, বলা না কোণার।

—জানেন লিনাপা, খেলতে আমা_র থব ভাল লাগে কিন্তু সুযোগই পাই না। তাই দেখি, শুধু দেখি।

—কি খেলতে ভাল লাগে? লেলিনার মুখ থেকে বেরিয়ে বার:

—থৈলা খেলা খেলতে।

লে আবার কি?

- किन्द्र कि त्वारक्ष ना जिनाभा। क्वीरतत काथ राम की वनर्फ काता।

—শা তো। শিক্তের অজ্ঞানতা প্রকাশ করে সেজিনা।

—যদি বলেন তো আপনাকে....। ইত-শততঃ করে কবীর। -की खारा शास्त्र कम ?

---वस्ता ?

and the second of the second o

---লেখাতে পারি আপনাকে।

—বেশ তো শিথিরে দিও। অস্তর্পে কঠে সেলিনার।

আৰু শিখবেন! আডিশবের বিষয়ে হয়ে পড়ে কবীর।

-मा आक सश्, काना।

---কখন জাসবো ।

-संधम राजी।

--- वाश कबारक भारतयम मा किन्छू।

—শাগল, ভোষার উপর রাগ করতে পারি! প্রশ্রের করে বলে হের্লিন।

—কিচ্ছু তখন কি জ্বানতো কবীর এতটা দ্বার হয়ে উঠেছে। প্রচশ্ড দ্বেচ্ও।

এবার আয়নার মুখোম্থি দাঁড়ার। নাকি
কবীরের। না, আয়না নয়। বিশাল দুটি
চোখ, যেখানে নিজেকে সম্পূর্ণ দেখা যায়।
সেখানে ভাসে সেলিনা। কখনো বসে, কখনো
শ্রে। কখনো নিয়াবরণ। বিচিন্ন ভাবে,
বিচিন্ন ভাশেতে। কী বিশাল সমুখের অন্ভব ভার রঙে, তার উক্ষড়া সংখে মুখে মরে
যার সেলিনা। অথচ কখনো ভাবেনি। অংশনায় নাকি চোখে এভ স্থ লাকানো থাকে।
কবীর তো ছেলেমান্য। তব্, ওর চোখের
নেকড্রে দাতি ইচ্ছে তখন স্থ হয়ে ছাঁড়ারে
লেকড্রে কী বিশাল এই আয়নায়।

তথনো সৈলিনা পাঁড়িয়ে ছিল এখানে। রাতের প্রসাধন করছিল শতে যাবার আগে।

হঠাৎ চমকে ওঠে ফিসফিসানো স্বরে, আমি এগেছি। কথনো কখনো হঠাৎ আসা চড়ুরের অনধিকার প্রবেশের শব্দের মত। অপ্রতিরোধা।

—কে? কদিপত কঠে দ্ধার সেলিনা।
—জালি কবীন। মৃদ্ অথচ স্মপ্ট।
জালাল লেমে সুটি চোখ।

—এভ রাভে?

—বারে, জাপনিই তো বলেভেন আসতে।

— আমি, বুকের মাঝে অকসমাৎ নাচে সক্তধারা, কথন বলেছি এত রাতে আসতে।

—বলেন নি বগন খুনী আসতে। ভাইতো চুপিচুপি এলান। ক্বীরেন কঠে কুহুক মাধানো কেন।

े - क्या कत्मत्वा ।

--

—অনেক্ষণ। ক্রিক্ত হয় সেলিনা, জানালার দশভিয়েছিলে হবিধ।

—অসভা ।

ৰর থেকে জানালা দিরে ছিটকে পড়া আলোয় গটি চেখ দেখা বায়। মুখ ফিরিয়ে সেলিনা আন্ধনার তাকিরে শিবরিত হব। একটা অজ্ঞানিত বিবল আবেগ দমম করে বলে, চলিচুলি এন্ডোবে এলে, কেন?

—বারে, এই ভো থেলা। বলেছি না, খেলা লেখাবো আগনাকে।

---ভাসাজা 1

—শুখু কি অস্ভাতাই দেখলেন আর কিছু কি নেই।

—ना। अवर कटकेत हरू **छन्छ। क**रते दर्भा**ल**ना।

—বেশ। ভাহলে আমি হাই। ভেজা কঠ কবিবের।

--धंत्रा।

--জাসবো।

—হণ এসো।

জানালা থেকে চোখ জনতহিত। বিষ্টু সোলানা কিছুক্তন স্থাপ হয়ে থাকে। কবীবকে সোকি প্রশ্রেম দিরেছে। হয়তো বা। ইরতো নয়। নাই যদি দেবে ভাগকে কানি আদে কি করে। নিশ্চর তার আচরণে এক্সন এক্টা কিছু ছিল বা ব্যুতে পেরেছিল বা তাকে এত রাতে এখানে হাজির করেছে। কিছু সতিয় কি সোলানা তাকে যৌন আমন্ত্রণ জানরেছিল।

পরোজার ঠক ঠক শব্দ ওঠে। ম্বর্ টোকা দেওয়ার আওয়াজ। শিহ্রিত হয় বেশিলা।কেন এ শব্দে বিহরে এরে পড়ে সে হ তব্ ফিসফিসিয়ে শ্ধোয়—কে ? কে ওখানে ?

মৃদ্ ধ্নিহান শব্দে ভেসে আসে সেন বহুদ্র থেকে বাতাসে কীসের কেমন বেন আবেগ আছড়ে পড়ছে পরোজার ওপর, পরোজা খুলান। আমি, খুলান না।

অপোছালো কাপড় টেনেট্নে ঠিক করে সোলনা। আরুনার সামনে থেকে দ্ব পা আগরে যায় দরোজার দিকে। খ্লবে নাকি দরোজা? দেখবে নাকি কীসের আবেগ কি । আকৃতি করে পড়াছ, আছড়ে আছাড়ে পঞ্জাছ কাঠের নীরস বন্ধ পাজার ওপুর।

আরো দ্ব পা এগিনে স্টেচে হাড রাথে সোলনা। পলকে উজ্জ্বল আলোর উসর দ্বার কেপে, ঝাপিনে পড়ে সীমাধীন আধারের আরোদা। তার ব্রুকেও সে আরোণ ধারা হারতে জাকে। নির্মান ব্রুকার মোলনা দুছাত প্রমানত করে দের। ওগুন্তে থাকে। জনালা ধরা অধ্বলন সত্তে আসা চেত্রে চক্ষাক করে বহু বাবহুত দরোলার ছিটাকনি।

না, আর কডকণ বিস্থানার প্রকরে সেলিনা। ত্রনাদিন এতকণ সে বিস্থানা ছাড়ে। এমনিক নিতাদিনের আর্নার দশড়ানো, হাত-মুখু ধোওরা, নামতা সবই তো সারা হয়ে বার।

অথচ আজ কিছুতেই তার-উঠতে ভাল লাগে না। বিছ নার নরম উক্তা সকালের স্বেরি তীর্ষ আলোর সালিক, সবই বেন হিরতার পর্য মাখালো এক নতুন আয়েক। এক নতুন অভিজ্ঞতাৰ অনুভূতির हो क्राइस्टा काल बाट देशम बढ़ वटह स्ताइ তার পারীরিক শিপাসার সাজালো ব্লোলে। रन काल काल स्थरनाक कथाता वा रनानारभव পাপতির ভারলো স্ট্রেক্ট্রি। ভার্পা এক कारियामा कारबाच विश्वासन देवदंबादक देखें स्थापी-রাত। কে খেলার সৌরভ-স্বাক্ষর বহন ক্রচের कात बटलत जान-अवसान । न जान कार्या প্তুল হওয়াত এক প্রা আপ্ত দিউন্তেশ তার নেহের পালু উচ্চলে নির্দ্দদের তাদিউর जारका जिएम जाएक जानाता गीरिय काजा क्रक-कालि द्वादम्ब जापात् । नांक कांद्रा हिन्द्रेबंद নেকড়ে চয়ে ওঠা ধ্তেতার ইচ্ছার আফুডিভে। दक् क्लारम ?

কিন্তু জানতে ইচ্ছে করে সেলিনার। ভাই সে ঘন চুকের আরপো ভাবে পান্ধা মরলে বিনা ঈরং বাঁলা করে পাশের সাজ্তির ছারের দিকে দুক্তি প্রসাভি করে দের। এই শীতের সকালে যেখান থেকে একফালি দিশেল্যা রোদ তার বিছানার জানালা গালুরে জিছুক্ত্বল লাটিরে থাকে। উক্তার এক আশ্চর কুত্রক বিশ্তার করে তাকে তুন্তি জানার।

পালের একতলা বাড়ির ছাল হৈছকে কে বেন পিছলে সতে বার। মিলিয়ে বার জর

সোলাশার মনে হয় কোখার বেন পড়োছে খনে বা প্রোয়ক একগার না একবার আন্তর্মই অকুগালো। নীগবে বিজ্ঞানী সম্ভাটের মড়েন্ডা নির্মাদণ করে তার ক্রীতি।

ভবে সে कि प्राप्त शासा।

এই শৃহ্তে সেলিনার নিজেকে সমে ইর দংসেছ ভানাবেল চঞ্চল মালের কার্যন্তীয় সেরিজ-স্নাত এক মহান কীতি। পরিস্থানীর





দৃশ দিক ছাগিছে প্রবল রেল উঠল— হারবোওল। প্রায় শ'দেড়েক ছেলে ফ্লে ফুলে ঢাকা মধ্মালার শবদেহ নিয়ে কলেজ ক্যাম্পাস থেকে বেরিয়ে গেল।

সদ্য পাশ করে দূর মফ্স্বলের একটি কলেজে তখন পড়াতে ঢাকৈছি। রেগা দ্বেলা মান্যে আমি—ছেলাপ্লেরা মাস্টার বলে মানতেই চায় না—রীতিমত গাম্ভার্য বন্ধার রেখে পাঞ্জাবির গলার লেষ বোডামটি পর্যাক্ত এটি কলেজে আসি—হাই।

কংল্জের লাগোরা অধ্যাপ্রকদের একটা মেস্-বাড়িতে থাকড়ায়। এবং জানি না কেন, লাগি, ছোটখাটো, ব্ডিরে বাওয়া মধ্যালা প্রথম থেকেই যেন থানিকটা স্নাজরে দেখে ফেলেছিল আমাকে।

দশজনকে তেকে ভোটে দেখানোর মত একখানা ফুলের বাগান ছিল আমাদের কলেজে। ঐ প্রতিস্ঠানের জন্মলান থেকেই সে বাগানের প্রণ্টা ও তদাবকৈ ছিল মধ্য। প্রিসিপাল গোল্যামী ওর অসাক্ষাতে বলাতেন—মধ্য আমাদের পাধরে গোলাপ ফোটাতে পারে।

মধ্ ছিল উৎকলবাসী। দীর্ঘাকাল পশ্চিমবাংলায় থাকতে থাকতে এক বিচিত্র ধরনের বাংলাভাষা রুশ্ত করেছিল সে। বাগানকে বশত 'বাগ্না', গেল বছম্বকে 'গলা স্থাল'...এমনি সব আর ক।

আমার ঘর থেকে স্পাণ্ট দেখা হৈতে কলেজের বাগান ও সারাক্ষণ তার প্রি-চহ^গরত মধ্বে।

ভোর চারটায় যুমু থেকে উঠে সাবা বাগানে সে অদম্য উৎসাহে জল विका তারপর একা হাতে ঝেণ্টিয়ে সাফ করত সব মোংরা, গুলো, ঝরাপাডা। তারপর একটা যকুল গমছর তলে বলে তিন্দটে **ই°টে**র **छेन्द्रम हा वानि**स्त ষেত্ৰ। চা-পানাদেও শ্বপরি নিয়ে দেশে যেত প্রতিটি গাছের গোড়া পরিকার করার কাছে। সে সাংগ হলৈ একরাশ সার নিয়ে বসে সেগুলো বাছত, মেশান্ত। **প্র**পাতে পদেশর রাচিল্র পর্কুরে চান সেরে এসে ঐ বর্ত গাছের তলাতেই ছোটু এক মাটির হুণিত্রত 17:3: মেশ্ব ভাত কটিছে নিত মধ্। ভারপর

গামছটো বিচ্ছে করে গাকিরে হল্টা দুরেক লাশ হরে পড়ে থাকত গাছের পড়লত রোদে মনে হত, রঙে গালে বিভার এক পুশুপ প্রদর্শনীর উম্বোধন করা হরেছে।

কলেজের ছেলে-ছেরে এবং কি অ্যাপ্রেরণ্ড বাগানে চুকলে সন্দ্রন্থ হুরে
উঠত মধ্য পাছে কেউ ফুল ছেড্ড বা
গাছে হাত দের—গোরেম্পার চোথে লক্ষা
রাখতে পাকত। আমাদের এক সহক্ষী
অমল নাগ আগে ঐ কলেজেরই ছাত
ছিলেন। কেন জানি না, মধ্ তাকৈ একদম
সইতে পারত না। তিনি বাগানে চকলেটে
সেবলে উঠত—এই অমলদান লিখা-প্রভাগার শেষ হবার নয়!

অধিকাংশ অধ্যাপকই ছিলেন কলকাতার ছেলে। বিকেলে টিফিন সেরে এসে আমরা জনাচারেক হয়ত একটি ফ্লেন্ড ডালিয়া-গাছের পালে বসে গলপ করছি, একপাশে প্রহায়ত মধ্ নিজের মনে বলে উঠত কাল এ গাছটার পাল থিকে একটা চল্পবোড়া বারাইছিল। বাসা, ৬-টুকুতেই কাজ হত। দ্বামিনটে আমাদের সন্মিলন ছগ্রভণ্য হয়ে

খুবই ব্যক্তিসম্পন্ন, রাশভারী (Time ছিলেন আমাদের প্রিশিসপাল। কলেন্ডকে ভালোবাসতেন প্রাণ দিয়ে এবং প্রায় একটি একটি করে ইট গে'থে প্রতিষ্ঠানটিকে তিনি সম্ভান-পালনের মত করে বড করে-ছিলেন। মধ্কেও তিনিই এনেছিলেন। অথচ বাগান নিয়ে সৰ সময়ই হাৰ; একটা চাপা দেবরম চালাত ভার সংখ্য। প্রিশিসপাল হয়ত গাগানে চকে তাকে প্রশ্ন করলেন যে বীজ কেনা হয়েছিল, সেগ্লো কোথায় প'্তেছ? মধ্য মুখে ঘ্রারিয়ে জানিদিশ্ট দিক তাকিয়ে বলে উঠত—দ্যাথ গা। প্রিন্সিপান্স আবার জিজাসা করতেন—ওগালো থেকে ফ্ল বেরিরেছে কী? মধ্বিরস গুলায় জবাব দিত্য কৈ নাও গা। মধ্যে সব অভিযোগ ছিল যে, তিনি কলকাতা থেকে যে চারা বা বীজ আনাতেন, সেগুলো থেকে কিছ, হয় না। আর বাগানের যা কিছ র্পবতী ফ্ল সবই নাকি মধ্-কর্ত্ 'গলা সালের' সংরক্ষিত বীজ্ঞ থেকে জন্মার। প্রিন্সিপাল একবার তো ক্ষেপে উঠে হ কুমই দিয়ে দিলেন যখন মধ্য বীজ থেকেই ফুল হয়, তখন অত টাকা-পয়সা খঢ়া করে শুধুমুধ্ কলকাতা থেকে ওসব আনার দরকার নেই।

কারো বাগানে কোনো ভালো ফ্লে বিশেষত যা কলেজের বাগানে নেই, তা দেখলে মধুর বুক হিংসের পড়ে যেত। সামার ঘরের সামনে যতা করে বেশ কিছ্ উজ্জন কালিমোর্শিরান পাপ ফ্টিরে ছলাম। মবু সেই ফল দেখে বললা—এ ফ্লুল ভালো না। আমি বললাম—ঠিক আছে, ভোমার কি ভাভে: সে আমের বলে উল্লে না ভালো মা, এ ভো সিংগালা (এক প্রতিবিশিট) ফ্লে! মাল্যানেক বালে কেথি বাগানের দ্বিশ কিব আলের ক্ষে



সিংগাল' ফালই রাশে রাশে **ফাটে ররেছে।** মধ্যে সংগ্র পায়ানেন্ট স্বগড়া কলেজের দারোয়ান চোলাই-এর। চোলাই ছিল প্রম বৈক্ষর। মুধ্যে লাঠি হাতে বাগানময় দিনরাত ব্যাং, ই'দ্রে, এসব ফটাফট মেরে বেডায়, এই প্রাণীহজ্যা চোলাই একদম সইতে পার্বত না। শীতের এক সকালে বাগানে মোডায় বসে পোয়াচ্চি, হঠাৎ শানি দাজনের মধ্যে ভুমাল নিতন্ডা হচ্ছে। চোলাই যথারীতি নিয়মিত প্রাণী হত্যার দায়ে অনুষ্ঠ নরক-বাসের সম্ভাবনার ভয় দেখাতেই **₹**.८₹ উঠল মধ্। বলল—তমারও নরকে যাতে হবে। কম পেরানী মারো তুমি রোজ ? রোজ সকালে চান সারি আসি পটাপ্ট ফুলগুলার গুলা ছিড্ডা নাও না?

দেশে মধনে বউ, ছেলে-মেয়ে সব ছিল।
আগো বছরে একবার যেত, পরে তা-ও নর।
মৃত্যুর আগো বছর সাতেক আর যার-ছু মি
দেশে। পরণে হল্দে ছোলানো লালপেড়ে
শাড়ি দু ছাতে দুটি রুপের বাছ্—তার
বউ একবার এসেছিল গাঁরের এক দোরে খাদ স্পো। মুখ্কে বাগ মানাতে না পেরে খাদ প্রিস্পালের কাছেই অন্যুক্তার কারেছিল তার বুড়ো'-কে ছেড়ে দিতে। মুখ্ বার মি।

क्यम वृष्य, व्यमक रूट्स भट्डिकिस स्थः। প্রায়ই জনর হত। চুপ্চাপ ঘণ্টার পর ঘণ্টা বকুল গাছের তলায় চোখ বুজে থাকত। পাছে তাকে ছটাই করে। সেওয়া হয়, তাই প্রিচ্সিপালের রিকসা কলেজে যখন ঢুকত বা বেরোত, সেই সময়ট কতে একটা খ্পেরি নিরে বাড়তি ঘাস তোলার ভান করে নিজের অটাট ক্যাক্ষিতা প্রমাণ করার ক্র**্ণ চে**ণ্টা করত সে। আমাদের ওপর তার দাবি-দাওয়ার অসত ছিল সা। অনেক ওষ্ধ-ডাভার করেও এক কাভিক্রির হিম থেকে শেষ প্যশ্তি বঢ়াতে পারি নি তাকে। ফুলে ফুলে ছেন্ত্রে দেরা হরেছিল তার শবাধার। কলেজের জাক্ট-টিচার थ्यूमा दकाटबटक ठात्रहरू विमाल म्बलनाम এনে তার মাধার কাছে সা**লিয়ে কিছেভিচ্ছে**।

অবিভাত কালগালৈ



প্রনো অন্ব্রুঠান এবার কেমন কাটলো ?

এই সেদিন শিয়ালদার কাছে দাঁড়িরে তাত্ত্ব বনে গিয়েছিলাম। রেল এমখিট। যে কর্থানা ট্রেন চলছিল ভারই একটা থেকে এক ভদুলোক সূপরিবারে অফিস টাইমে নামলেন। ভাঙি ঠেলে নেমেই ভরলোক ছোট ভোট ভেলেয়েয়েদের সামলাতে হিমসিম খাচ্চিলেন। ব্রুতে পার্ছিলায় তাঁর কোথাও হাবার একটা বিশেষ তাড়া আছে। সেই ভাঙ ঠেলে জনা ছয়েককে সামলাতে সামলাতে তিনি স্প্যাটফরম থেকে বাসে ওঠার জন্য রাম্তা পার হতে সার বেশ্ধে দাঁডালেন। আমিও এশ জিলাম। রাগতা পার হয়ে একই স্টুলে এন্সে গুণ্দের সংখ্যা বাসের অপেক্ষায় শীভালাম। সেখানে দাঁডিয়েও ভদুলোক বিস্তুত অফিস টাইমের জীড়। ডার ওপর ম্বাংস্বলের ছেলেমেয়ে কলকাতায় চলতে অসভ্যাস্ত অথচ কলকাতার ট্রাম-বাস জন-সম্ভের গতিবেগ দেখে সকলেই উচ্চলতে ফেটে পড়ছে দাবু হাল ধরেছেন ভদুলোক। ব্ৰুতেই তো পারছেন সে হালের কি প্রেক্থা। একই বাসে ভদুমহিলার পাশে

দিছিকে আমারত যাতা শুকু হল।
বাসে উঠে ভদুলোক ফ্রান্ডিকে নিঃশ্বাস ফ্রেন্ডনে। তিনি বাদের আঁকুনিতে দাক
কুটকে মালকোচা সামলাতে সামলাতে দুরীর
সংগা রসিকতা শুকু করলেন। আমি ভদ্রলোকের ধৈর্য এবং রসবোধ দেখে আবার
হারে গিয়েভিলাম। তিনি হালকা হাসিতে
কলেনে এতাদন পর শব্দুবাতী যাবার একটা
সুযোগ পেরছি তাতে ক্লামা-কাপড় ভাজ
ভেশেশ যা ভিরি হল...

ভদুমহিকা গণ্ডীরভাবে রসিক্তাট**ু**কু হ**জম করলেদ। এতক্ষণে আমার খে**িক হল জালাই বর্ণ্ডীয় নিমাগুল রক্ষা করতে ভদুলোক স্বাধীরবাবে ক্ষেত্র স্থানার বিবার করেও গদগদ।

এতো মফাশ্বলের জামাই এলেন কাৰ্যাতার বিশেষ এক অনুষ্ঠানে নিম্মিত ইবা । শহুরে বাব্রাও এ বাপারে কম কিলে। নতুর আর প্রেনো সকলেকই বেল উৎলাহ এই দিনটিকে স্করভাবে উদযাপিত ক্রার । আমাদের বহু, পরিচিত ধ্রীমানন কিলে ক্রেন্ডন প্রায় বছর তেইগ-চিবিশ

হবে। অথচ এ দিনটিতে তিনি কিছতেই অফিস হাবেন না। ছেলেমেয়ে সহ বেংকে একদিন আগ্রেই পাঠিয়ে দিলেন পিরালয়। তাই নিয়ে পাড়ার লোকেরা মঙ্গরা শুরু করলো। যত মঞ্করাই হোক না কেন ধীমান্দা এসৰ ব্যাপারে মোটেই হাথা ঘামান না। তিনি পূর্ব পরিবল্পনা অনুহারী গিলে করা পাঞ্জাবী আর ফাইন একথাশা ধ্তি সংগ্রহ করকেন একদিনের জন্য। কিন্তু দুর্ভাগ্য খন্ডন করে সাধ্যি কাছ। এত প্রস্তৃতির পর নিমন্ত্রণ রক্ষা করতে যেই বের জেন অমনি এক পশলা ব্যক্তিতে थीमानमात्र थात कता हकहरक हाँहेत कामाश् থকৰকে জামা-কাপডের বেই রূপ পাল্টালো তাতে ধীমানদাকে মাঞ্চ রাস্তা থেকে আবার বাড়ী ফিরে আলতে হল। লোহাক-আলাক পাল্টে হাথন আবার আধ মহলা স্লাম্রা-কাপড়েই ধীমানদা ব্ৰশ্ববাড়ী শৌহতের তখন প্রায় সকলেরই খাওরা-লাওরা লেব इरहार । का इरमक बीबाननात जारन किन् কম পড়েনি। সে বাবস্থা গ্রন্থিয়ে রাখার লায়িত আমাদের বৌদিই পিরালয়ে পিথে গ্রহণ করেছিলেন।

এবারের জামাই বন্দ্রীর রূপটা একট্র জিল প্রকৃতির ছিল। হারা হেলেপথের গালী তারা র্যাসময়ে নির্দিট্ট দিনে ঠিক্ট হাজির হতে পোরেছিলেন কিন্তু হ্যাসমায়ে হান-বাহনের অস্বিধার শ্বশ্রবাড়ী ছেড়ে হেতে পারেননি। বাড়তি আরও করেকসিন শ্বশ্র-বাড়ীর আদর উপভোগ করে বাড়ী ফরেছেন।

জামাইবণ্ঠী আমাদের দেশের এক প্রক্রীম অন্তানের ফড এ আন্তানের বিশেষ এক গ্রেন্ড আছে। মেরেরা বিরের পর শক্ষাক্রের সংগ্রে এবনভাবে জাঁড়ার পড়েন বে ইছে আক্রেন্ড মবারুরার বাপের বাপের বালের বাতে সেরের বালের বালের বাতে সেরের বালের বালের বাতে কেরের বালের বালিত-পালিভ হরে বড় হরেছেন ভার প্রতিগ্রাম করের করের পর খবুর সহজ্ঞা করে। কিন্তু করের করের পর খবুর সহজ্ঞা করে। কিন্তু বালিভ্রাম পর খবুর সহজ্ঞা করে। কিন্তু

এই একটি অনুভানে শিলালরে বাবার জন্ম মেরেদের দ্বানুবাড়ীর অনুমাড আদার করতে কোন কট হয় না। উপরুষ্ঠু এ অনুভানে অক্ষম দ্বদার-শাশাড়ী যদি তাদের জামাতাবারজীদের নিম্মাণ করতে না পারেন তবে গ্রেরেনের দ্বদারবাড়ীতে ক্ষ তিকাটিপানী সহা করতে হয় না। সেজান্য অক্ষম শিভায়ের কনায়ে এই দিনটিতে অভিভাবকের হাত অধানিতিক কটা হোক না কেন নিজেদের সম্মান রক্ষাথে সেট্কুক্ একরকম চোখ-বৃজ্জে সহা করেন।

দ্র পালার মেয়ে-জামাইকে মিয়ে এক ¤বশ্র-শাশ্ডীকে অদ্ভত ভাবনা ভাবতে দেখেছিলাম। রেল ধর্মাঘটে আসবে কি করে সেই উপদেশ দিতে ভারা জামান্তাট্ ট্রাৎককল করলেন। বাস, মিনিবাস হৈ করেছ হোক ভালের আসবার জন্য আমধ্যের করে বিজ্ঞান जित्नक जारम त्थातको त्रामा द्वीककार्यद्वीरस কমা কৰে রাখলেন বাতে তাল-ভালের নিরে ক্ষেন্যতেই রামার কোন আইটেম বাদ না পড়ে। আর সাঁতা সাঁতা আনক ধার্কা সারে म्पार्य-जामारे ठिक नमुदारे द्वाक्ति स्ट्राह्मिन। তাই দেখে বৃশ্ধ শ্বশুর-শাশুভূরি আর भागक शर्म मा। श्रेष्ठा टिक खाशास्त्रह সমাজের দিন এনে দিন খার দলভুত্ত নয়---ভাই তাদের আন্বোজন ও জামাই আদরের ঘটাটা স্বতন্ত।

আজকালকার সাধারণ মধারিত ব্যৱহা আমাইদেরও অনেকজেত্র উলারতা কর নেই। তারা দবদারবাড়ীর অর্থনৈতিক অস্টানের কথা উপলব্ধি করে দেবছারই নানা অক্ত্রের রাজার করে এ নিম্মানিক এড়িয়ে রাজা মহন্ত স্থানেই টিকাটিপদাকৈ বাণ দিয়ে সহজ্ঞ সরকভাবে দ্বা পরিবারের মধ্যে হোলাল্ ব্যাপন করতে পারক্রে তর্কত স্থাপন করতে পারক্রে তর্কত স্থাপন করতে পারক্রে তর্কত স্থাপন করতে পারক্রে তর্কত স্থাপন করতে পারক্রে তর্কত প্রত্তানতে সকল করতে ভালিকাকর জন্ম ক্রেমানিকালের আন্তর্কানে ভালিকাকর আনিকার কর পারকলের ক্রাণ্ডানিক ভালিকাকর আনকলের ক্রাণ্ডানিক ভালিকাকর ক্রাণ্ডানিকাকর ক্রাণ্ডা

—অঞ্জলি চৌধ্ৰী



County interes

Marie 1

কলকাতাৰ প্ৰখাত ধনী আশ্বলেব সেবের বাড়ীতে ১৮৫৭ খুড়্টাব্দে শকুর্তকা मादेशकः जास्मित इत। হাতবাৰণৰ লোভিন শাংকার বোৰ এই অভিনয়ে শকুন্তলা म ऐटक मात्र-स्मित्रका स्मित्रम् कारमञ्जू বিহারীসাল চট্টোপাধারের সংকা শরংচাদ্র যোজের ছিল কথাছ। সংক্রান্তলা নাটকে বিহারীকাল প্রিরাক্তন চ্রিয়ত অভিনয় कार्ताहालका । विक्राणीकाला 等[表]分表[等 একাহারদৈ থাককেন। নালনাল পিয়েটার ব্যুদ্ রাম্যাল ভ্রম অভিনয় কর্তি কিছালীলাল তথ্ন কলকভাষ আক্ষেত্ৰ এবং बार सहस्ताल मिरहा जानगाल करताय जाजिसस र्कन्दर्ज मार्ग। अंग्रे जिल्लाम क्रान्त्र किनावीताचा आम नमश्हेल स्वाय स्थाती লক প্রতিশ্রার অগ্রাপে চন। লাটকেল মধ্ कामक नामामकारत अभाव वेशमाजिल कार्यम । দিয়ায়ত নাল লিখে দৈতেও প্ৰতিভাতি म्बा के केन्द्रवाहरू निमान्त्राका वेद्याकारूक দ্ভ পশ্ভিত সভাৱত সামল্লমণ প্রকৃতি র্কীলেন প্রাম্পমিত্রশীর মধ্যে। ৯।৩ विखेम । महीराईट रचलाल नाखी मालित २०-ভাগে নিয়ে মণ্ডগত নিমিতি হলো। নতুন শটাগাহের নাম রাখা হকেনা বেংগাল খিরেটার।' কাইস লিসিয়াম' থিয়েটার প্রেয়ক অন্করণ কার নাটাপাছটি নিমি ভ হালে। কবি মইকেল মধ্যেস্থনের ইচ্ছে । ত্রীচিহিতে নারী নিয়োগ করার প্রত্তাব সংখ্যান করা। ভিত্তাবাদ এই প্রত্তান জিটি বেংগাল থিয়েটারের সংগে সমুস্ত नाशक विश्व कत्रात्ममा

প্রথমে ক্রিক হালা মাইকেলের খায়াক্রমন নিয়ে থিয়াটারের ব্যারোক্যাটন করা
হার। ক্রিক শেক প্রশাস্ত মাইকেলের
ক্রাজিটা নাকি ১৬ মার্পান্ট ১৮৭৩
বাটাকের মান্ত্র। তবং চাক্রম মাহলা
ক্রাজিটা সংগা করা হব। বাংলান্ত্র পেশান্তর
ক্রাজ্যার স্বাধিকে ক্রাজ্যা হালাক্রমার্কিক
ক্রাজ্যার স্বাধিকেল

ক্ষেণাল খিলেটানই স্বপ্রথম নিজেপ নাটাপ্ত নিমাণ করে নিয়মিত অভিনয় দ্রু-একেন। কেলে পিলেটাকে স্বপ্রথম শ্রী-চন্দিত অভিনেতী নিয়োগ করা হর। ইন্ধি শালনীর নিক্ষালাপ অর্থ মাইকেলের ক্ষুন্তনালের দেওলা হয়। ২০ ও ২৮ মাগস্ট শ্রীক্ষাকালন। ৮ সংগ্রাক লোহকেত্র ক্ষুন্তনালিক কলে। আভিনালিক ক্ষেত্রতাল ক্ষুন্তনালিক কলে। আভিনালিক ক্ষেত্রতালিক ক্ষুন্তনালিক কলে। আভিনালিক ক্ষুন্তনালিক নারাম্বর্ণের চক্ষানান প্র ধ্বংসনান ২২
নডেন্বর রাজনারাম্বর রত্যাবলী, ২৯
নডেন্বর মাইকেলোর কৃষ্ণকুমারী নাউক মঞ্জন্ম ইয়া ২৫ ডিড্রেম্বর ২৮৭৩ খান্টাম্পে বিক্রমান্তালের দুল্লোলাদিদ্দানী অভিনীত করে অসম্পর্ক সাড়া লাগায়। লগাংসংহরতে শ্রহিত্য রোজ অধ্যারাম্বর্গে মণ্ডে প্রবেশ করে সম্পর্কার বিদ্যাত করিছেল।

অভিনেত্রী নিয়ে অভিনয় করার জন্য ন নাম মতক থেকে নানাম বিরুপ সমা-লোচনায় বেংগল থিয়েটার কড় পক্ষকে কতবিক্ত করা হয়। এমনকৈ ৱাহ্য-মহিলারা বেশাল থিয়েটারে অভিনয় দেখতে গেলে, ভাদেরত নানাভাবে ভাতি প্রদর্শন করা হয়। অন্যান্য প্রপতিকা এবং ব্যক্তির। শিশ্পীদের বারবণিতা। বলে কট্ডি করেন। কি জু মহাত্মা শিশিরকুমার বোষ এবং তার অম,তবাজার পতিকা কখনও বার্বণিতা শ্বদাটৰ প্ৰয়োগ কৰেন্দ। আধিক**ন্ত মহ**ার। শিশিরকুমার বারিগতভাবে এবং অম'ত-বাজার পরিকা বেংগল থিয়েটারের অভি-নেরী নিরে অভিনয় করাকে প্রীকা-নিংশীকা হিসেবে অভিনাদ্ত করেন। আম,তবাজার পতিকায় শতীকোক সগাজ-পরিতাকা ও ধমজিন্টা শ্বদগ্লির উল্লেখ পাওরা যার, 'বারবণিতা' শক্দ নয়। ১৫ জান্যারী ১৮৭৪ খণ্টাব্দের অন্তব্যক্তার পতিকার বহী অভিনেহী নিছে অভিনয় কলাহা বে•গাল থিয়োটারকে সমর্থনিও আমার ম তবোর সাক্ষা দেবে।

বর্ধমানের মহারাজ দুর্গেশ্নবিদ্নী নারক দেখে মণ্ডে হয়ে বেঞ্চল থিয়েটারের প্রিচালক মন্ডলীতে যোগদান করেন।

ইণ্ডিয়ান ডেইলা নিউজ এর ২৩ নভেশ্বকের একটা সংবাদে পাওরা স্বায় বে, বেণ্ণাল থিকেটার বর্ধমান মহারাজের সামারণে কাজনা শিরে অভিনয় করে আসেন এবং মহারাজ নানা ভাবে সম্প্রদায়কে প্রেক্ত করেন।

১৮৭৫ খ্রুটাবেল বেংগল থিয়েটার মঞ্চে প্রেট ন্যাশনাল অপেরা এবং কিছু-দিন দি নিউ এবিয়ান থিরেটার অভিনর করেন। ১৮৭৬ খ্রুটারেল বেংগলে থিয়েটার স্কান্ত্রকর করা হয়।

বেঞাল হিরেটার প্রসংগ এখানে' আপাতত: শ্র্যাত কেখে আসন্য শ্রেট ক্ষাক্রাক থিরেটারের আলোচনা শ্রের কর্মান্ত: নাশনাল থিরেটারের অভিনর দেখতে বেরে শ্রংচন্দ্র ঘোৰ এবং বিহারীলাল চট্টোপানার বেংলল থিয়েটার প্রতিষ্ঠান তিবলা ধর্মানার বেংলল থিয়েটারে মণ্ডেম্বর বেংলল থিয়েটারে মণ্ডম্বর মাহতের এই কালভ নাটক। এই নাটকটি ওখন অলভ্রব জনপ্রিয়াতা অজনি করে।

শ্বতীয় পর্যায়ের ন্যাশনাল থিরেটারের ধর্মাদাল সর্ব আদ্ধ হিত্যু ন্যাশনালের
মলে অধিকতা নগেল্যনাথ বলেদাপাধ্যায়ই
মড়ে তুলেছিলেন গ্রেট ন্যাশনাল থিরেটার।
রাজ্যের পালের নেড্ডছে তৃতীয় পর্যায়ের
ন্যাশনাল থিয়েটার য়খন সানাল বাড়ীতে
অভিনয় কর্মাছলেন—ত্রখনই এরা ম্ফাংবলে
এবং এখানে ওথানে অভিনয় করতে
শ্বর করেন।

বেংগল থিয়েটারে মখন ভ্লোহতেতর এই কী কাজ নাটকটি জনপ্রিয়তার সংগ্রে অভিনতি হজিল তখন নলেন্দ্রনাথ বদেদ্যা-পাধাায় ধর্মদাস স্ব আর ভ্রমমোহন নিয়োগী ফ্লোচ্ছেভ শি 3 কাঞ নাটকটি দেখতে দেং টিকিট না শেষে অপমানিত হয়ে ি আসেন। ভ্রন-মোহনবার্রে বভাতিই নীলদপ পের রিহাসভিদ বসভে াম দাসবাব,র আজ্বীয় ছিলেন তিনি এ পিত বিয়োগের পর তার হাতে অং এনে পড়েছে। নগেন্দ্র-নাথ এবং সবাব, ভ্ৰন্বাৰুকে একট টুকেজি ক্ষে নিয়েই বললেন এসে। "থায়ী ১ণ্ড বেংধে আমরাও অভি-নয় করি। এভ**াব আরু অপমানিত** .**হও**য়া যায় না।

াই হালা। ধ্যাদাসনাব্র উদ্যোজা
ভূবনমোগন নিয়োগাঁর অথে গড়ে উচুলো
৬ বিভন স্থাঁটিটে প্রেট নাাশনাক থিয়েটার।
মহেম্প্রনাথ দাসের জাঁয় ৫ বছরের লাইজ
মাসিক চলিশ টাকাল ভাড়া মেওলা হলো।
সম্ভত মন্দ্রগাহির পরিকশ্পনা করলেন
ধর্মাসাস স্রে। মিঃ গারেশীক নামক জানক
ইংরেজকে দিয়ে জুপসিন ও আরু দ্ব একধানা সিন মান্ন আঁকানো হয়েছিল। বভানন মিনাভা থিয়েটারটি এই মাটিতেই
অবশিগত।

সোমবার ২৯ সেপ্টেম্বর, ১৮৭৩
খ্টান্দে মহাসমারোহে ছিত্তি প্রভর খাপিত হয়। সভাপতিছ করেন নব-গোপাল মিত। স্পণ্- গোঠ দিয়ে বাড়েটি নিমিত হয়। ৩১ ডিসেন্বর ১৮৭৩ খ্টান্দে কাষা কান্য নাটক দিয়ে নাট্-গ্ডান্দে কাষা কান্য নাটক দিয়ে

২৫ ডিসেম্বর ১৮৭৩ খৃত্টাকের অমাতবাজার পাঁচকার বিজ্ঞাণ্ড থেকে জানা বার, ৫০টি সমবেত কণ্ঠে উম্বোধনী সংগীত গীত হবে। কামাকান্ম নাটক। পালস্মাণ্ডিতে ইরং বেশল প্রহুসন। ডি, ব্যাবাকি জুক্তিত মুসোল্ম বুশ্য প্রত।

os क्रिट्राच्यत्। Suget जम्प्यान भारत् श्राह्म । प्रिक्षे मा र**भर**म ফিরে গেছেন। বিভন শ্রীট লোভে रमाकात्रमाः विवि मृत्रा खोकनीय इत्याद्यः। ठते। पान्म धान्म यान वर्षा हीस्वारत চতাদিক ভরে উঠকো। শেষ পর্যাত জান্স নিবাপিত হলেও-একটা আনন্দের রজনী প্রায় বিবাদে পরিগতে ছলো। সেই থেকে অন্নিদেরভার বিশেষ লোব দেখা বার क्रशासकात शलगाहरक विद्या। जास्त्रक बटनम <u>—এট জ্বণ্সিসংযোগের মূলে বৈপাল</u> शिरक्षे । इन्हर्क्षण दिला । इनियानी ১৮৭৪ খন্টাব্দে বেলভেডিয়ারে অনুষ্ঠিত अट्यत राजारत छाउँ न्हाननाम थिरत्रोत নীলদপণ অভিনয় করেন। এদিকে নিজে-সংস্কার সাধদ করে দের নাটাগ্রুটিরও नित्य ३० कान शाती, २४५८ च छोटन

৩১ শে ডিলেম্বর ১৮৭৩ খালীশে অর্পাং উল্লেখন রন্ধনীতে বাঁরা টিকেট কাটেন, প্রবতী এক অভিনয়ে উভ টিকেটে আয়ুদুর মাটক দেখবার সুযোগ দেওয়া হয়।

विश्वा-विश्वाङ माहेक प्रश्वन्थ करान ।

১৭উ জানুরারী মনোমোছন বসরে প্রথম প্রীক্ষা, ২৪নে জানুরারী মাইকেলের কৃষ্ণকুমারী, ৭ই ফেবুরারী বিক্রমচলের কৃপালকু-ডুলা এবং ১১ই জানুরারী ১৮৭৪ খাল্টাব্দে মহাব্দা শিশিরকুমার বােদের বাজারের লড়াই মণ্ডম্থ হয়।

মহান্তা শিশিরকুমার ঘোষ এবারও গিরিশচন্দ্রকে আবার অভিনয় কবতে ফিরিলে আনেন। বাজারের গড়াই নাটক ভারই স্কুচনা। ন্যাশনাল আর গ্রেট নাশনাল সন্প্রদায় ১৪ই ফেরুরারী সন্দিলভভাবে ম্পালিনীর অভিনয় করেন। গিরিশচন্দ্র পশ্পতি চরিতে আন্তর্গ্রাকীতেও ম্পালিনী মঞ্চন্দ্র হয় ছাট ন্যাশনালত।

এই আর্চ বিষক্ত। ১৮ই আর্চ ন্বীন তপ্তিক্লী এই অভিনরই ৩১শে ভিসেন্ধ্রের দশক্রা ওলিনের টিকেটেই দেখবার স্কোগ্রাণ পান।

8देश এইল কপালকু-ডলা, ろり食 এলিল হেমলতা এবং ৩০লে মে কুলীন-কন্যা অভিনীত হবার পর সম্প্রদায় বহরম-পুৰে অভিনয় করতে যায় এবং কলকাতায় প্রায় ও মাস আছিন্ম বন্ধ থাকে। বেগাল থিরেটার অভিনেত্রী মিয়ে অভিনয় করতে কিছুতেই য়েট ন্যাশনাল প্রতিযোগিতায় এটে উঠতে পাচ্ছিল মা। তাই গ্রেট ন্যাল নাল থিয়েটারও অভিনেত্রী নিমে অভিনয় করার পরিকশ্পনা গ্রহণ করে। অর্থেপ্_ন मूल्लाकी स्माना जान जाकरनकी निजा অভিনয় করার বিরাদেশ আভিমত বার করেন धवर श्रीक्रमाम अनुदार प्राप्ट मार्गमाम থিয়েটাৰ দাম দিয়ে মফল্লোর বিভিন্ন

हम व्यवहार गीक्टर काम्मन व्यव ७ सर्वा नामकोप्ती



म्बारेन पांडिना मृत्य करतनः धर्मानार्याय्यः म्बारेन क्षेत्रांत्र म्हणस्माध्य मृन्द्रानारस्य स्वारतनः स्वतः दृष्पः।

The second secon

শেট নাজনাল খিরেটারে স্ত[া] কি
ক্লান্কনা নাটকে স্বপ্রথম ১। রাজকুমারী
২। ক্লেট্রাল, ৩। বদ্মাল, ৪। লক্ষ্মারী
৫। হরিদাসী এই ৫ কান অভিনেত্রী গ্রহণ
করা হয়। ১৭ই সেপ্টেন্বর অম্ভবাজার
পারকার এ বিবন্ধে বিজ্ঞাপ্ত পাওরা যায়।
গিরিশাচন্দ্র তখন কিছ্ দিনের জন্য থিরেটার
থেকে দ্বে থাকেন। স্তা কি ক্লান্কেনী
অসম্ভব ক্লান্সভাজনি করে।

এরপর থেকে প্রতিটি নাটকেই মহিলা নিয়ে অভিনয় হ'তে থাকে।

তরা অকটোবর স্তুর্ বিক্রম, ১০
অকটোবর সভী কৈ কর্লাবিকণী ও ভারতে
যবন, ০১শে অকটোবর র্ত্রপাল, ১৪ই
রভেন্মর আননদ কানন, ২১শে নভেন্মর
আনকদ কানন ও কিণ্ডিং জলবোগ এবং
২৮শে নভেন্মর ১৮৭৪ থুটানে অম্ভেলাল
বস্তর সাহাযে র্ত্রপাল অভিনীত হয়।
এবার আবার স্বয়াধিকারী ভুবনমোহন
নিয়োগীর স্পো টাকার অংক নিরে নগেন্
নাথের বিরোধ দেখা দিল। তিনি রোট
নাশ্নাল অপেরা কন্পানী প্রভিন্টা করে
মফ্রুলে কিছুদিন অভিনর করবার পর
বৈধাল থিরেটারে অভিনর শ্রন্ত করেন।

রোট ন্যালনাল থিয়েটারে হরলাল রার রাঁচত পর্ সংহার (বেশী সংহার) বরা ডিসেন্বর ১৮৭ক খাটান্দে মণ্ডস্থ হর আর এই নাটকেই নাট্যক্ষাজ্ঞী বিনোদিনীর সর্ব-রধম মণ্ডাব্তকণ। বিনোদিনীর বরস তখন ১০।১১ বছর হবে। ২২ই এবং ১৯শে ডিসেন্বরও শাস্ত্র সংহার নাটক মণ্ডম্ব হর। বঙ্গল ডিসেন্বর মণ্ডম্ব হর বংলার স্থোবসাল।

५४०० च्योरंक छो नामनम् विष्योति रेवा कान्याती भवर अरकांकमी गाण्क अक्ष्म द्वा ध्वे नाग्रेत्वरे जरकांकमी शिक्स स्वित्य करत स्थानानाज्ञात्मची अनुक्रमणी नाष्ट्रा चार्या कर्दनः

ধর্ম দাসবাধ্ নগেছনথের পরে আর্থা যেট ন্যাপনালে একে বোগদান করেন এবং ১৮৭৫ খ্রুটপের মার্ট মাসে যেট নালে-নালের একটি দল কাকাতাতেই অভিনয় করতে থাকেন। কলকাতার মধে শরং স্রোজনী, রাসলীলা, সধরার একাদশী, জামাইবারিক, নর্শো র্পেরা সমাজবর্শন নস্পনকান প্রভূতি নাটক মে মাস প্রশ্নি অভিনীত হতে থাকে। ধর্ম দাসবাধ্ সম্পাদর নিমে পশ্চিম বাচা করঙ্গে মহেম্প্রালা বস্ত্র কলকাতা মঞ্চের ম্যানেকার রূপে কাল করতে থাকেন। কলকাতার মণ্ডে ১৭ই জ্লা ১৮৭৫ খ্রাকেশ্ অমৃত্রালা বস্বা হীরকচ্প, ব্যা জ্বাই পশ্বিমা প্রভৃতি মঞ্চম্ব হয়।

ভূবনবাব থিয়েটার ব্যবসায় বেশ লোক-जाम बाक्टलमा । धर्माजवादः जनगराज পশ্চিম থেকে প্রত্যাবস্তান করলে ভূবনবাবরে সংখ্যা প্রয়োলকার স্থিত হয়। ভ্রনবার, **७ थम कृक्थन वरम्हाभाषात्रक छाउँ नहामनाण** থিয়েটার মঞ্চ লাজি দেন। নতুন বিধিবারস্থায় এই আলাণ্ট ১৮৭৫ খাল্টান্ডে মঞ্চথ হয় পশ্চিম্নী। আগণ্ট সেপ্টেম্বর অকটোৰর এই তিন মাস কৃষ্ণান বলেন্যাশাধ্যার খিয়েটার চালাম। তিমিও খণভারে জভিড হয়ে পড়াতে থিয়েটার ছেড়ে দেন এবার আঙ্গেন উপেক্ষমাথ দাস পরিচাশক হরে। ম্যানেজার হন নাট্যাচার্য অম্তলাল বস্ । নলেন্দ্রাথ ব্লেল্যাপাধ্যায় গ্রেট ন্যালনাল পরিত্যাগ করে ध्यारे माममान अध्यक्ता माम निरम् । अकरो সম্প্রদার গড়ে মফঃস্বলে অভিনয় করবার

सा त्याम विद्यातीय प्रत्य खांकाम क्याक व्याक्तम । खायर भटन त्यामा विद्यातीय कामान्यका कामान्यकाम करमा। त्यामा विद्यातीय कामान्यकाम करमा। त्यामान्यका खायराव्यकाम करमा। त्यामान्यका करमा । खार करमान्यका करमा । खार करमान्यका करमान्यका करमा। खार करमान्यका मान्यका करमा। त्यामान्य करमान्यका करमा। त्यामान्य करमान्यका करमा। त्यामान्य करमान्यका करमा। त्यामान्य करमान्यका कर

্বেশ্বর থিরেটার মধ্যে গ্রেট ন্যাপনাল অংশ্বরেম দি নিউ প্রবিয়ান থিয়েটার ১৪ই অর্পান্ট ১৮৭৫ শুর্ণানেল উপেশ্বনাথ দাসের সারেশ্ব কিনোদি প্রথম মধ্যন্থ করে। ২১শে ও ই৮শে অর্থান্ড স্বরেশ্ব বিন্যোদনী অভিনাত ভর।

ভার সেপ্টেন্বর বারনারী, ১১ই সেপ্টেন্বর রমেশ দন্তের বংগ বিজেতা, ১৮ই সেপ্টেন্বর বংগবিজেতা ও মাকালা ফল্
ইওলৈ সেপ্টেন্বর কাব নবানচন্দ্র সেনের
প্রাাশীর বন্ধে মণ্ডন্থ হয়। এই সময়
বেংগল খিয়েটোর স্কেংস্ভুত করা হয়। আর
উপেন্টনাথ দাস ১৮৭৫ খ্টান্সের শেষভাগে গ্রেট ন্যাশনাল খিয়েটারে প্রিচালক
র্পে বোগদান করেন।

্রক্ষণন বলে। পাধারের পর নতুন পরিচালনার গ্রেট ন্যাশনাল থিয়েটার পরি-চর্মলত হতে থাকে। নতুন পরিচালনার ৫ই ভিসেত্রর ১৮৭৫ খ্টালে বৃত্ত সংহার, বিংল ভিসেত্রর হীককচ্প, ২৬গে ভিসেত্র তার সরোজনী মঞ্চথ হয়।

১৮৭৬ খ্টাব্দের ৮ই জানুরারী
থক্ত বৃধ্ব মঞ্চথ হয়। তারপর সরোজনী,
বিদ্যাসন্দর, সতী কি কলন্কিনী, গজদানন্দ
প্রহুসন, হন্মানচরিত, কর্ণাটকুমার তিতনটি হবার পর ১লা মচ্চ ১৮৭৬ খ্টাব্দে
মঞ্চথ হয় সর্বেদ্র বিনোদিনী। ৪ঠা মার্চ
সতী কি কলন্কিনী ও উভস্ন সংকট অভিনটিত হবার কথা। সতী কি কলন্কিনী
গজিনীত হচ্ছে এমন সময় প্রিলা গ্রেভ্রেরী
প্রোম্বানা নিয়ে খিরেটারে উপস্থিত হয়।

ভা মার্চ ১৮৭৬ খ্টাব্দে ভ্রন্মাছন নিয়েগাঁ, উপেক্সন্থ দাস, অমৃত্রাল বস্ত্র অর্ব কর এবং এই মার্চ আদালতে চালান দেওয়া হয়। স্বেক্স আসামীদের অভিযুক্ত করা হয়। শেষ প্রকিত আসামীদের অভিযুক্ত করা হয়। শেষ প্রকিত আসামীয়া মৃত্তি পেলেও ১৮৭৬ খ্টাব্দের ১৬ই মার্চ লাভ লিটন দি ভামেটিক পরেক্ষরমাস্য এটকট অনুমোদন করেন। বাংলা নাট্যালার ব্রেক্স প্রক্ষরমাস্য এটকট অনুমোদন করেন। বাংলা নাট্যালার ব্রেক্স প্রক্ষরমাস্য এটকট অনুমোদন করেন। বাংলা বিলিম্বালিক মেত্র চিপের ব্যক্তর অপর নাইকার আভিন্ন।

ভূবন্দোহন নিয়োগী সর্বাহ্বানত হলেন।
উপোন্থনাথ বিলেভ যাতা করলেন। অমতে
লাল বস্ফি কিছ্বিনের জন্ম আদ্দামান চলে
মান। নাটাশালার সংগ্রে জড়িত থাকলে
কন্যাদের বিবাহালিতে বাধাবিথা স্থিতি

হতে পারে আশক্ষম নগেল্যনাথ্ও মঞ্চের সংকশশ পরিত্যাগ করলেন। নানান হাজামার মধ্যে যেট ন্যাশনাল থিরেটার ২রা ডিসেম্বর, ১৮৭৬ খ্টাব্দে পারিজাত হরণ ২০০শ ডিসেম্বর আদশা স্তী মঞ্চেথ হয়।

১৮৭২ খাল্টান্দ থেকে ১৮৭৬। চার বছরও পূর্ণ হল্প নি বাংলার সাধারণ নাটাশালার। এই চার বছরে নানান দশাদাগর
মধ্য দিয়েও ২টি স্থারী মণ্ড প্রতিষ্ঠিত
হয়েছে। কিন্তু অকস্মাৎ বিরাট এক বড়ে
বরে গেল সাধারণ নাটা-শালার ওপর দিয়ে।
মনে হলো তার প্রণাট্ক বহিগতি হয়ে গেল।
কিন্তু না তা গলেন না। সেই নিঃসীয়
অংধকারের সমানে মাউভঃ মন্ত্র নিয়ে নতুন করে আবিভূতি হলেন
নতুন ব্রুলি নাতুন করে আবিভূতি হলেন
নতুন ব্রুলি নাতুন তার কাপানাল মণ্ডে
নাশনাল থিয়েটার-এর কাপার রুপে
এলেন তিনি।

বাংলার সাধারণ নাট্যশালার প্রতিষ্ঠার মালে যে জটিলাতা আছে তারই জট খলে তুলে ধরতে চেরেছি বর্ডামান আলোচনা প্রমণ্ড। যেসব ব্যক্তিদের নামের সঞ্জে ইতিন্যামী সংখ্যা থেকে সেই সব স্মারণীর পার্বাস্থানী সংখ্যা থেকে সেই সব স্মারণীর পা্রাস্থা করিয়ে দিয়ে পা্নরায় আগ্রারা গারাবাহিকভাবে নাট্যশালার ইতিহাস নিয়ে আলোচনা করবো। (ক্সমালঃ

कालीन प्रात्थाभाषाध



'छडोर रक्षा भाषत मारब काला खबन शहा मार्च-

া ক্ষমতে পরিকা ও থিয়েটার সেন্টারের ৰাশ্ম উদ্যোগে পরিবেশিত প্রয়েশ্দ মিলের সংশ্যে একটি সন্ধ্যা অনুস্ঠানটিতে ঠিক **এই জনভেবটি হোল। বাংলার সংস্কৃতি-**লোকে প্রেমেশ্র মিছ একটি বিশিশ্ট ব্যক্তিছ र्माफाम्स्य नामा श्रुमात मध्या अहे সংবাদটিও লোডের মত প্রবহমান হলেও অন্তুতির ধার যেন করে গিরেছিলো। সেদিন সংখ্যার প্রেমেনবাব্ বচিত নানা শান, (কোনোটি ছায়াচিতের কোনোটি माठेक्त कारनाढि ग्राह्म अकातम भाजात्कत। অবিতা নাটক ন্তন করে আলোকপাত ভাৰ ভাৰ নানায়খী বাছিকের বিভিন্ন **ছিক্সব্লির প্রতি। এ ব্যক্তে মালাস ন** এন **করে ভিন্তা কল্লোল-য**ুগের সাহিত্যিক

ভ্রমার-জ্য়াশতী অন্তানে সংগীত পরিবে শন করছেন রামকুমার চট্টোপাধ্যায়



and the state of t

প্রেমেণ্দ্র মিচকে, তার সতীথার। ন্তন কার হাত মেলালেন বেন জীবনের উবা লাণের প্রথম প্রতিভার স্পেন, আন্ত কবি সাহিত্যিকরা তাদের প্রভিত্তার নিশিবে প্রথমাল জানালেন আগ্রন্ধ প্রতীর প্রতি। প্রেমেণ্ট্র মিটের সংগ্রে প্রকটি স্পর্যাণ

বেন এক মধরে মিলন লাল, তাতিছানাকে প্রতিদিনের ধ্লোর আবরণ সামরে ন্তন ব্যর পাওয়া—বে পাওয়ার ব্যায়য়কে দীর্ঘ করতে ইচ্ছে করে।

অনুষ্ঠান শুরু হোলো সমকেত কটে ভুকু বছর আগের কোখা বেনামী বংদর কবিতাটির সালাীজানে দিরে। এ গানে পেলাম কবির তর্ণ মনের বিদ্রোহী আবেগকে যে আবেগের প্রচণ্ডতার আড়ালে আজ প্রমিকের প্রাণাশ্তকর প্রমের জনা একফোটা চোখের জল। দিশ্দীদের মধ্যে ছিলেন সবিভারত, গতিপ্রী দীপাশ্বিজ্ঞা রায় মাধুলা মজুমদার আরো অনেকে।

এরপর সাহিত্যিক শ্রীভবানী মুখোপাধাায় প্রেমেনবাব্র উপন্যাস ও গণপ
নিরে আ্রোচনা করেন এবং বই প্রসপ্তে
উল্লেখ করেন 'পাঁক' উপন্যাসচিল—বেখানে
সমাজের নিন্দপত্রের মানুবের দ্বেখবেদনাকে রূপ দেওয়া হরেছে গত্জ ও
ভাদয়-ছোঁওয়া ভাষয়।

ত্তীয় অনুষ্ঠানে প্রেমেন্দ্র মিন্ন রচিত
এবং পারচালিত ছায়াছবি ধ্যাগাধোল চিন্রে কানন দেবীর গাওয়া ভারা-মার্-দানী গানটি গোয়ে শোনালেন শ্রীমতী গীতশ্রী। এ অনুষ্ঠানে পেলাম গীতিকাল, চিত্রতার ও নাট্টকার প্রেমেন্দ্র মিন্নকে। আর একটি উপভোগা দৃশ্য গীতশ্রীর করে নিজের গাওয়া গানটি শুনে করতালি দিয়ে শিশ্পীকে অভিনালিত করেছেন সামনের সারিতে বসা প্রয়ং কানন দেবী।

এ ছাড়াও একদা 'সাহ'সিকা' ছায়াচিয়ে
স্প্রভা সর্বার গতি পরবেশন করলেন
প্রাহতী মন্তালা মঞ্মদার। ভাকিন্ত্রীর
চর' চিত্রে সভা চৌধ্রী পৃদ্ধিবেশিত
অধ্বারের অভল তলে গানটি শোনা গেল
সবিতারত দত্তর কন্তে। বর্তমানের পট্
ভূমিকার ক্ষণিকের জনা অতীত মৃত্
হয়ে একটি ভিন্ন প্রিয়ান্ডল স্তির
ক্রেছিলো।

কবি মণ্ডির রায় তাঁর প্রগতিশীল দৃশ্টির আলোর মেলে ধরলেন প্রেমেণ্ড মিয়ের কবিকৃতিকে। স্কুন্দর স্কুলিত ভাষণের করেকটি উপমায় হঠাৎ আলোর ধলকানির মতই প্রেমেণ্ড মিয়ের কবিসতা মুর্ভ হরে উঠল। যেমন খাড়া পাহাড়ের গা বেয়ে উঠতে, উঠতে হঠাৎ পাবরা এনটি পাইন গাছের তলার বিস্তাম করাম কোমণান দিয়ে উথের তলার বিস্তাম করাম কোমণান দিয়ে উথের তর্লালাত বেশ্নী প্রেম্ভ শ্বশেনর মতে মধ্র মানব-প্রেমিক প্রেমেণ্ড মিয়ের কবিতা। থানে এক্ষেপ ফ্রম

প্রেমেক্স মিরের ছখানি কবিতা পড়ে গোনালেন গান্ড মির। মান্বের জাবনের ক্লানিরের কাবনের ক্লানিরের কাবনের ক্লানির ক্রান্তর ক্লানির ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর মধ্যরামে নামিরে এনে ক্রান্তর মধ্যরামে নামিরে এনে ক্রান্তর মধ্যরামে নামিরে এনে ক্রান্তর মধ্যরামে ক্রান্তর ক্রান

অমৃত পহিকা ও খিনেটার সেন্টানের উদ্যোগে প্রেমেন্দ্র মিতের স্পেণ একটি সন্ধা/ত্রার-কান্তি ঘোষ উপস্থার তলে দিজেনপ্রেমেন্দ্র মিতের হাতে। কটো: স্কুমার রাম্ব



মিত্র ও শদ্ভুচিতের মিলিত স্থি বল্ব?

উৎসবেদ্ধ প্রথমাধের মধ্রে পরিস্মাণিত
ঘটল প্রীতুষারকাণিত ঘোষের সরস, মধ্রের
ভাষণ দিয়ে। কোনো ভারী কিছুর মধ্যে
না গিরে কয়েকটি ছালকা ছাসির রঙীন
ভেলা উৎসবের প্রোভে ভাসিয়ের দিয়ে যেন
ইনি সারা পাশ্ববেশকে আনগেদ ম্থের করে
ভলকেন।

উপোভাদের পক্ষ থেকে কবি, চিগ্রকার উপনাগিক ও গীতিকার প্রেমেণ্ড মিক্রেং হাতে একটি টেপ রেক্ডার উপহার দিলেন শ্রীত্বাল্যকান্তি ঘোষ। পরিশেষে তর্ল রার

মিঠ্ডা স্মণ্ড

পরিচালিত 'ওরা **খাকে ওরারা' নাট**কটি মঞ্জপ হর।

অনুষ্ঠান প্রিবেশনার পরিকাশনার অভিনবদ লক্ষ্য করণার মতই। মঞ্জের একপালে দেকরাজ রার বলে প্রতিটি অন্টোন ঘোষণা করে বেশ একটি বৈঠকী, ঘরোরা পরিবেশ স্থি করেন। ঘোষণার সংকা সংকা অধ্যক্ষর মণ্ড ধারে ধারির আলোকিত হানুরার আইডিয়াটিও স্থানর।

প্রেমেন্দ্র মিরের সংগ্য একটি সংখ্যার উদ্যোদ্ধারণট জাতীয় কর্তব্য সংখ্যার সংসাম করেছেন।

---क्षिशाना

निन्द् ब्रायहण अकामनी

नमास हरदे।शायासमा

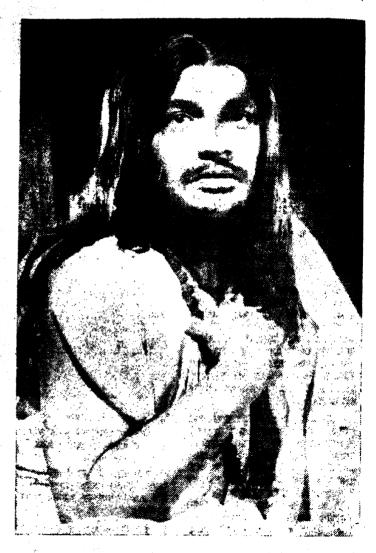
2 0.00 बाब कटका दमरान (किंग्नि) 1 0.00

बिरका/मृज्ञाणी १००० मान् करतम् रस्य (न्यमीर्गाण) १८०० विकृता (न्यमीर्गाण) १८०० मान्यस्य द्वारा १६-००

निक्ष करिया करिया (बारमा) ४ ०-०० वर्षा स्थित्क १ ३-०० वाह्य करिया करिया (बारमा) ४ ०-००

- Aug -

হুপ্যালারের রূপ্য কথা * খেলা হরের গান * রুড্মহলের উপকথা সি, এলা, টি, অমুল মহল * কলিফাডা->৯ ৪৬->২০০





জীবন রহস্য চিত্র স্মালোচনা

প্রবাজনা ঃ ডপেল ঘোষ ও জয়ত দেব।
শিক্চার্সা । কাহিনী ও পরিচালনা ঃ সালল
রার । চিত্রনাটা ঃ তপেল ঘোষ । সংগতি ঃ
আছিলিং বানাজা । সম্পাদনা ঃ দিবসাধন
আছিলা । চিত্র গ্রহণ ঃ বিমান সিনহা (প্রেণ)
শক্ষকী ঃ বালী লও ও অতুল চট্টোপাঞ্চার ।
বালন ঃ প্রেলক বানাজা । শক্ষ, প্রন্
হোলনা ঃ স্তোন চট্টোপাধ্যার ৷ অভিনরে ঃ
প্রাণ, মাধবী মুখার্জি, শাুভেলন্ চাটোজা,
কল্যালী স্বন্ধলা, গিলীপ রার ক্ষলে মিত্র,
জ্ঞানেশ মুখার্জা, তরুশকুমার, হরিধন

নীবাদ্রি বস্কু শ্রীকুমার, পদ্মা দেবী অপণি।
দেবী, সামা সরকার মায়া রায়্র বীরেন
চাটান্ত্রি প্রভৃতি। বিগত ৩১শে মে মাধুরী
ভিদিন্ত্রিটার্সের প্রিবেশনায় উত্তরা
প্রবী চিতগতে ম্ভি লাভ করেছে। ১লা
জনুন রকসী মিনিয়েচারে চিল্লানি আন্তরা
দেখে এসেছি।

ধনীর ছেলে প্রশানত। সংসারে আ ও শ্রুনী রমাকে নিয়ে সংসার। সংসারে অভাব নেই। বছর খানেকের বেশী রমার বিয়ে হয়েছে। হঠাৎ রমার এক অসুখ দেখা গোল। ৬টা থেকে ৬-০০টা পর্যশ্র অস্কান ইব্রে থাকে। গৃহিচিকিৎসক ডাঃ বেল কিছু- তেই এই রোগ সারাতে পারছেন না। ধনী পিতার একমাত্র মাত্রনীন সদতান রমা। তাই তার বাবা মিঃ রায় চিন্তিত হরে পড়ুগেন। তিনি দিথর করলেন সনুইজারপাদেও যাবেন, মেয়ের চিকিৎসা করাতে। ইতিমধ্যে ডাঃ বোস তার পরিচিত মনস্ভার বিশেষজ্ঞ ডাঃ কোলকে একবার দেখাবার অনুরোধ করলেন। ডাঃ কোলকে আনানো হলো। তিনি এসে রমা প্রশাসত এবং মিঃ রায়কে এককভাবে বিভান প্রশা প্রশাসত এবং মিঃ রায়কে এককভাবে বিভান প্রশাসত এবং মিঃ রায়কে এককভাবে বিভান প্রশাসত এবং মিঃ রায়কে এককভাবে বিভান প্রশাসত প্রশাসন না। রমার করিন কেনে অতীত সাছে কিনা ভাই ডাঃ

मध्य ए अरबाक्तिक-गतिकानिक : भकाब, को है।। मकीन्य कहेकार्य-दानदी सन्ती





गरिकारी/टर्गक्स प्रद्रोगप्रकात, प्रिकात का बाद बाद्या आहार

কোল জানতে চেয়েছিলেন। বুৱা ভাল সঙ্গীতখিল্পী। একটি গানের স্কুলে সে বিষের আগে সংগাঁত শিক্ষা দিত। এই সূত্র थरत छाः कोल शास्त्र म्कल आस्त्रत। ভারপ্রাণ্ড অধ্যক্ষের সংগ্রে যখন কথা বলা ছিলেন রমার বিষয়ে—তখন মেয়েরা বাইস্ক এসে ভিড করতে জনতে পারেন যে একটি টাকিসাঁ ৬টা বাজতে না বাজতেই সংগাত বিদ্যালয়ের সমনে এসে দালায়। ৬-৩০টা অব্যধ সম্মোহিত হয়ে থেকে আবার চলে यास। छा: कोन है।कर्ना हानकत कार থেকে গানের স্কলের সাত্র ধরে রমার অতীত জীবনের রহসে।। ঘাটন করে রমাকে সংস্থ করে তোলেন। র্মার বাবার ব্যবসা ঠিক সহজ্ব পথে পরিচালিত হতে। না। চোরাই মালের কারবার ছিল তার। এ বিষয়ে তার দ্দিদ্ৰ হুস্তুভিল বন্ধুর ছেলে রঞ্জন। বাঁশ্ততে থাকতো। দলের মুশ্তান থিল। লেখাপড়া স্কানতো না। এক পিসীমার কাছে থাকতে। রজন। মুমা রঙ্গনকে পছন্দ করতো না। ভর বাবাও ত নিয়ে অন্যেগ করতেন। গানের স্কুল থেকে আসবার সময় একানন রমা টাকনার জনা দাঁডিয়েছিল-হঠাৎ রঞ্জন ভার বৃদ্ধ অজনুন সিং-এর টাকসা নিয়ে সেখানে হাজির হয় এবং तमात्क वाड़ी अभे (इ.स. १५४) स्मर्ट स्थरक প্রতিদিন অদ্বন সিং-এর টাক্সীতে রঞ্জন নিদিশ্ট সমধ্যে গানের স্কুল থেকে বমাকে নিয়ে এখানে ওখানে ঘারে বাড়ীতে পেণাছ দিত। দ্রুজনে ধারে ধারে দ্যুজনের প্রণয়াসক হয়। রঙ্গন রমার অনুপ্রেরণায় বাড়ীতে শেখাপড়া শৈখতে শরে করে। ভদ-জাবন যাপন করার জন্য চাকরীর সংধানে थाक ज्वर लड़ी हालमार ज्वाहि हाकदीन পেয়ে হায়। মিঃ রায়ের কাজ করতে অপ্বী-কার করে। মিঃ রায় রঞ্নের সঞ্জে ভার মেয়ের মেলামেশা জানতে পারেন, এ বিষয়ে মেয়েকে হ'়াশ্রার করে দিয়েও কোন ফল भाग ना। उपन ब्रेक्सन्द क्रक अक्दिनक কাজে লাগান এবং তাঁভে রঞ্জনকৈ মেরে ঞেলার প্ররোচিত করেন। রখনের সহকারীর চন্তাশ্তে রঞ্জনের পররী ত্রেক বিগড়ে যাওয়ালে क्रकार स्नाक राजा अरह-दक्षनक व्यव প্রাণ্ড প্রাল্পের ভয়ে অভানে সিংহের ছরে পালিয়ে ঘাকতে হয়। রঞ্জানের প্রতি তাদের বাস্তর একটি মের প্রণয়াসভ ছিল। রঞ্জনের সাক্রেদ তাকে চঞাত করে বাব-বাণতার জাবান্যাতায় ঠেলে দেয়। রঞ্জন ভানতে পেরে তাকে উম্বার করতে। চেন্টা করে। এই নিয়ে সাকরেদের সংখ্য তার মন-ক্ষাক্ষি আরো বান্ধি পায়। মিটা রায়ের প্রবোচনায় সাকরেদ পারা রঞ্জন নিহত হয়।

ডাঃ কোলের বিবৃতিতে সমশ্ত বহস্য উন্মাটিত হয়। পানসেট ব্বারা রঞ্জনের আছার সপেল ডঃ কোল যোগাযোগ স্থাপুন করেন এবং এ বিষয়ে বৃত্তির মেরে মুস্তনাকে মিডিয়াম করা হয়। অর্জনে সিং আরু মান্য গুলুর রঞ্জনের আছা ঐ নিমিতি

्राम्य चार्यक्रास्/चन्त्रमा इतन भारतकाताः व्यापन भूतकः कटोः चर्माः



महत्र वर करका। कर क्या मध्यारिक हरूका। पाः स्कारमान कान्यसम्बद्धाः वामानीकी काचा बमादक स्ट्रिंग साह क्षेत्र ह्या अस्था द्दा ६८ठे। शुन्भवित भद्धा नक्षमक जाएक। সারা প্রথবীতে "লানচেট" নিমে যে মন্ততা দেখা যায়-তাকেই বৈজ্ঞানক ভাবে একজন চিকিৎসকের মধ্য দিয়ে প্রয়োগ করা ছয়েছে। আখার আবন-বরভা এবং ভৌতিক জগতের অবাংশকৈ সম্পকে বাদের বিশ্বাস আছে বভাষার ছবিটি ভাদের ভাল লাগরে। মাড়ার পর মানুষের আহা পাথির স্বাক্ত-बर्ग भाक भाग या। विस्तिय करव शास्त्र আকাষ্মক মৃত্যু খটে। এরা খদেহী হছে विष्ठत्रम कृद्व अवर शिश वाक्रियम अधा मिर्ह्स মাঝে মাঝে নিজেদের অভিতত্তের প্রকাশ করে। হিন্দু ধমের বিশ্বাসাম্যায়[†] এই সব আতার মন্ত্র জন্য পিণ্ড দান ও অন্যান্য শাদ্রীয় জন্দ্রানের বিহিত আছে। এই বিশ্বাসই চিত্রকর্মহনীর বহস্যোল্যাটনের মধ্য দিয়ে প্লাতপদ কর হরেছে।

খ্ব সহজ এবং সাধারণভাবে প্রি-চালক দলিল রায় চিচ্চির পরিচালনা করে-ছেন। অনেকের কাছে তিনি বাহনা না পেতে পারেন, কিন্তু নোংরামিনাজত একঘালি চিল্লোপ্যার দেবার জন্য প্রাচালককে ধনা-বাদ দেই। স্বচেয়ে বড় কথা তিনি নিকের মারপাচি দেখনে নি। ছবিটি দেখে দশকের। খ্লা ছবেন।

অভিনরে বন্দের প্রাণ্য কর্মাই সবাপ্রে বলতে হয়। আগগোড়া অসুর্ব দক্ষতায় তিনি ডাঃ কোল-এর চার্বক্র ফ্টিয়ে ফুলেছেন। মিঃ রায় চারতে ক্রমল মিত, ডাঃ বোস এবং প্রশান্ত চারতে যথা



काराम/बीज तान, निन्न्या सहरमान्। व्यक्त सम्मद्दा-स्वर्धाः श्रीमान्यः । स्वर्धाः स्वर्

পশ্ভিমাকশ্যর সমাধার ও সরকারী নিবলুগাধীন শিক্ষা কণ্ডারের মাধ্যী ছাঃ করনান আইনীকা বার্কা নরকার কার্তক ক্ষাক্ত্র নিট বিষয়েট্ডার নার ক্ষিত্র ক্ষাবিষয়ের উপন্তক্ত বিজ্ঞা আল্লোরার গা' ব্যক্তে একা অন্তানের উপোধন করেন।



ভ্রম তর্ণকুমার ও দিলীপ রাগ্ন, নারক রঞ্জন চরিতে শ্রুভেন্দ্র, অজানে সিং রাপে ভ্রানেশ মাখাজি এবং রঞ্জনের সহকারীর চাইরাভিনেতাকেও প্রশংসা করবো। রম্ম চিত্র মাধবী চারিরানুযারী অভিনর। করে-ছেন। ময়না চরিত্রে প্রীয়তী কল্যাণী মন্ডলের মন্ডল্যনার পরিচয় পেরেছি। উপযাঞ্জ পরি-চালকের হাতে পড়লে শ্রীমতী উর্যাতি করবো

অভিজৰ বন্দ্যোপাধ্যায়ের সংগতি
পরিচালনা ভাল লগাবে। চিন্র গ্রহণ্ উল্লেখযোগ্যভাবে নিন্দ্দনীয়। পুলা ইনন্দিটিউট
থেকে বিমান সিনহা কি লিখে এসেছেন
ব্যুব্তে পারলায় না। কলেবর ক্যানো উচিত
ছিলা। পারচালক, প্রযোজক স্বাহন
বাংলা ছবির এই দ্যোলনে চিন্নানির মান্দির
দুর্বলতা থাকা সংস্কৃত জীবন রহস্যকে
পুক্রপাথকতা করার জন্য দার্শকদের অনুযোধ করি। ছবি দেখে ভারা খুলা হবেন।

देशणांक्षशा बामभाकारमद माहात्या

मात प्रकार नव्याक/हिन्दी

প্রিচালনা ঃ জি ইনবর। সংগতি ঃ
ক্ষালা রাজস্থানী। অভিনয়ে ঃ স্তাশ
করোর, রাজনান, নাজর হোসের, বালা,
কালা শ্রুরী প্রভৃতি। মিগত ০৯লে মে
ক্ষারাইটি সিচনাম মার্ভি মাত করে।
কালোভিকরেল এই রাজনে ছিল্লী ভিয়োমান
ক্রেসলাল করিবারের কাছিলী নিমে বাডে
ক্রিক্র। কালে একনান করি। তার কবিষ
ক্রিক্র। কালে একনা করি। তার কবিষ
ক্রিক্র। কালে একনা করি। তার কবিষ
ক্রিক্র। কালে একনা বিবাহকধনের মধ্য দিয়ে

সাথকি হয়। কিন্তু শেষ পর্যন্ত এক দ্বতিনায় নায়িকা বিচ্ছিদ্দ হয়ে পড়ে এবং নায়ক আঁত আধুনিকা আর একজন নায়ীর সংক্র স্কড়িয়ে পড়ে। নায়কের জীবন বিষ-ময় হয়ে ওঠে। মুল নায়কাও নানান দক্তেখা কুটের মধ্য দিয়ে পুনুরায় নায়কের সংক্রা

সহজ্ঞ সরল ভাবে পরিচালক চিত্র কাহিনী তুলে ধরেংকা। মুসলিম পরিবারের নিয়ম নিশ্রের রাপায়ণ চিচটির আকর্ষণ। অভিনয়ে নাজনীনকে জাল লাগবে। হিন্দি চিচ্ন জগতের কয়েকজন প্রেরেন নিশ্নপাদের অভিনয়ত উল্লখযোগ্য। চিচ্নখনি সংগীতবহুল এবং হিন্দি ছবির দশাক্ষের ভাল লাগবে। আমাদের কাছে হাবে মাঝে ক্লাকুলভাল ক্রমনে হ্রেছে। মালিক কলকুল্লভাল আশংসনীয় নয়। উল্লেখ্য বেং চোঝের পীড়ানিয়ক।

চিত্রখানর প্রথম প্রদুশনীর অর্থ ইস্ গামিরা হাসপাতালের উল্লয়ন তহুবিলে প্রদান করা হয়েছ জেনে স্থানীয় পরিবেশক সংশ্বাকে আমরা ধনাবাদ জানাই। ইসপামিয়া হাসপাতালের সভাপতি প্রিচমবংগা সর-কারের কর্ম শিক্পমানী ডা জরনাল আবে-দুনীন বিগত ২বলে মে, সম্পা ৬-৩৭টাল ইম্লামিয়া হাসপাতালে এক সম্বাদিক সম্মানন মিলিত হন। পরতালি সংস্কানে মেই হাসপাতালে এক সম্বাদিক ক্ষাক্রারল বর্জাল সাধারণ সম্পাদ ক্লাক্রারল সম্পাদক মহন্দাদ শাহ বিভ্লাক এবং আত্রিরল সম্পাদক মহন্দাদ শাহ বিভ্লাক জনন ক্রান্তাল নাম হলেও বিভিন্ন অম্বিক্স্বী

দরির জনসাধারণ এথানে চিকিৎসার স্বযোগ পেয়ে থাকেন। হাসপাভালের সংখারি-(महेट्नफुन्धे **इट्ल**न फाइ दिक द्वाच रम । ८६ **फ**न চিকিৎসকের মাধ্য ২৫ জন বিনা পারিশ শ্রমিকে হাসপাতালের সংগ্রাভা জন-সরকারী সাহাযোর ১০াধারেশের দান এবং ওপরই হাসপাতালটি নিভারশাল। হাস-পাতালের সম্প্রসারণ ও অংখ্যানককরণের जना विभाग अर्थात व्यक्ताजन। এ करा जाः ও্যুনাল আবেদান জনসাধারণের আবেদন জানান। সভাপতি হিসেবে হাস-পাতালটিকে একটি প্রথম প্রেণার পাতালে রুপানতরিত করার জন্য আবেদীন যে চেণ্টা করছেন, সরক্ষার এবং জনসাধারণের সহযোগিতায় তা সাথকি হয়ে क्रुंक।

বৃহ ও শনি : ৬॥টা রবি : ৩টা ও ৬॥টা শৃশ্ প্রতিষ্টি গ্লাই নয়; প্রতিটি নয়ে,তা প্রতিষ্টি সংলাধাই মননাজানে:

প্রজীপত্তি

काहार, रिलम्बा, ज्युस्तन, रक्षामां, राज्यान, स्वाहार, काहा, वाल्या, काह्य, काह



্ শ্লাক্তন প্ৰায়ক্তন প্ৰতিষ্ঠান কৰিছে বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব কৰিছে।

ক্ৰিটি এখন এখনে চুটিকে ক্ষেত্ৰ ক্ষেত্ৰ

নিজ্জু করের সুন্দের আজিমের কাশালেও
ক্লুটারে চাক্তরের অধ্যাতি। নিন্দা ও বদনার:
দৃশ'ক, চিক্রেমালোচক ও চিক্রমোলানিকর আজিয়োগা, 'টাক্টার থেকার' কবিনি
মানত: বোলনর হিট হবি 'বানারসাঁ বাবাুন গাঁ-কাশা আখান এটা হিন্দা তি আর এটা নালোর চিন্দায়িত হরেছে। পরিচলাই দ্যালন আলাশা আসালো। অভিনতা অভিনতাই লালার চিন্দায়িত হরেছে। পরিচলাই লালার চিন্দায়ার বানারসা বাব্রন নারক ছিলোর লেগালার। বানারসা বাব্রন নারক জিলার লেগালার বালার থেকার নারক বেথা ও যোগাতীয়া বালার এবং টাকার থেকানি নারকা চাকার সালাতা ও অলিভিয়া।

্লাজন ছবিটা থেকে এখন দ্বাতে টাকা লটেছেন বটে কিন্তু ফলাফল >

হৈছাদে বালা ভারতের এবন চুলচ্চিত্র কেন দেন আজ বাদে বাল শুরা হতে যাতে, কেথানে আজিজের এই পাকর দুরি বা সংগ্র চুরি অথবা ফাফাশ দুরি (পুরে। ছবিটট

শীতাতপ নিয়ালত ফেন : ৫৫-১১৩৯ প্রতি বৃহ: ৬॥
শান ববি ও ছাটির দিন ৩ ও ৬॥
কুনাল মাধাকারি নতুন নাটক



্^ত পরিচালনা হ**াক্র খোষ** ত নালো হ**্যাপন** সেন

রশোরণে : বিংক্ষ, হার্থন, সভীন্দ্র, ক্ষর্নাথ, সঞ্চানন এবং শ্রেক্ষ্য, বাস্থানন এবং





চুরি, প্রতিটি শট পর্যানত) সভি।ই নিলনার, তা বলাই বাহুলা।

ৰণীর ছোপেন

ৰশীর হোসেন একজন দক্ষ চিত্র সম্পাদক হিসেবে পরিচিত।

সম্প্রতি তিনি একটি ছবি নিয়াণের করা ভাষছেন বলে ভানা গেছে। তবে তিনি সেছবি নিয়ে পরিচালনা না করে স্থানীয় একজন দক্ষ প্রচাশকের উপর সে দায়িত্ব অপ্রাথ করবেন বলেই জানা গেছে।

উল্লেখ থাকে যে, অনেকদিন আনে গতেরো নন্দর ফেকু ডস্তাগার লেনা ও গ্রাপন-পরা নামে দ্র্টি ছবি তিনি পরিচালনা করেন। এবপর দ্রীতাদিন তিনি ছবি প্রিচালনা থেকে। এবপর বিরত ছাকেন।

খান আছাউর রহগান

শভাষার তোরা মানুষ হার নির্মাণের
পর খান থানোউর এবার সম্ভান সখাঁ তৈরা
করছেন। ছবির কাহিনী ও সংলাপ নির্যোধন
আয়ঞাল হোসেন। ছবির কাহিনী হলো আম
বাংলার প্রেম গাঁখা। খান আভা নির্বোদিও
আর এবটি ছবির নাম গাঁচ-রঙা। এর
কাহিনী ও সংলাপ লিখেছেন বিধায়ক
ভট্টাহার। ছবিটি পবিচালনা করছেন প্রমাদ-

विकाशी माणिक

শিবালী সাদিক তার জাবন নিয়ে জার। ছবির স্টিং নিয়ে এখন ভাষণ বাদত বয়েজেন। এ ছবির নায়ক অধ্যক্ষিয়ে খাত ব্লাৰ্ক। নায়ক। ববিতা, শিবালী সাদিক জানালেন, অধ্যক্ষিয়ে চিনুখেলায় খাওয়ার জন্য তৈরী হচ্চে।

इयाम मिलान

ইবলে মিজান পরিচালিত আরু মনসূত্র এখন মুডির চিন গ্রুছে। এ ছবির নারক ওরাস্কা। নারিকা পাবানা, অব্য- খন্যার; চরিতে আছেন ফণ্ডের জোহানী, জন্মিন্ন, স্চরিত। ও জবা চৌধুরী প্রমূম। চাধী নজস্কার ইস্কাল

বা লাদেশের মুখ্য তিত্তিক হাঁব তথ্য এগারোজন ও সংগ্রামণ থাতে তর্ব পরিচালক চার্যা নজবাল ইসলাম এখন মুদ্র মনে শ্বাজীয়াল করার ইচ্ছা পোষণ করছেন। উল্লেখ থাকে যে তারি পার্যের দুটো ছবি বাজার না পাত্যার ফ্লেই তিনি এখন বাজায় করে এগের সূব জাগিক ক্ষুব্রক্তিত প্রত্বিয়ে দেবার শ্বাম থাছেন। জ্ঞান গ্রেছে, ভ ছবিতে নায়্য তে আঁজনম্ব করবেন নায়ুক্

ব্যক্ষাক

বাংলাক নিবেদিও 'বেইমান আলামী মানে নুকি পাচেছ। ছবিব নায়ক রাজ্ঞাক, নায়িকা কবিবী, এনানা চানিতে আছেন সমুস্কাতা ফলিল, প্রাল্ডাফ্ থান জয়ন্ত শহ্বী ও বাবব প্রথাখ।

ছবির পরিচালক রাহাল আগ্নিন। সংগতি পরিচালক জহিবলৈ হক।

भाइक मा आक्रम

তান্তরালের নায়ক মায়িকা জাফ্ব ইববাল ও ববিতা। ছবিটির পরিচালক সাই-ফল আজম, ছবির অনান চনিত্র আছেন স্টেশ্য, নাওকত আকর্বর, আনিস প্রমুখ। ছবিটি খাব সম্ভব্

আশী কাওলার

ভাইবেল ছবিটি এখন শেষ পর্যারে রয়েছে বলে জানা গেছে। এ ছবির পরি-চালক আলী কাওসার। কাছিনী সংলাপ ও চিচনাট্য লিখেছেন আলী মনস্বর, র্গারণে আছেন রাজ্ঞাক, পাবানা, মেহজুজ খান জার-ন্ল, আনোয়ারা, রবিউল প্রমুখ। ছবির স্পাতি পরিচালক খান জাতাউর রহুদান।

-THEFT



ক্যাজর বিচারে দণ্ড হ্যাস

মবাদানের সেই কলংকিত অধ্যারের ব্রহ্মের মহাদানের রাজ্য হাটবল সংশ্বা আই এফ এ) নিজগুলো ক্ষমা করেছেন। কল্যান ঘোষদান্তকার এখন বাল্বা ভূটা খোষদান্তকার ১৯৭৩ লালের এই আগতে ইন্টবেশ্যল-মোহনবাগানের ব্রার চলিক্ষেক লোকের সামনে সংশিক্ষা ফ্রার চলিক্ষেক লোকের সামনে সংশিক্ষা ফ্রার চলিক্ষেক লোকের সামনে সংশিক্ষা ফ্রার চলিক্ষেক লোকের দিয়েছিলেন। দীর্ঘাদন করের দিয়েছিলেন। দীর্ঘাদন করাহানার পর মোহনবাগ্যনের এই লোরাড়িটকে আই এফ এ সনপেত

অপরাধীর শাস্তি হওয়ায়, সেদিন ্নেকেই ভেবেছিলেন : 'হ্যা এতদিন আই ফ এ কঠোর হয়েছে, শন্ত হয়েছে'। কিশ্র খন কি কেউ জানতেন যে সাসপেল্ডের মুহত ব্যাপারটাই স্রেফ একটা ধেকা মানু? শ কিছুদিন চপচাপ থাকার প্র ক্ষমা ায়ে মোহনবাগানের স্কল্যাণ ঘোৰ-স্তদার আই এফ এর কাছে আবেদন ানালন যে ১৪ই আগুটের গাঁহ'ড ক্ষের জন্য তিনি গভীগ্নভাবে অন্তেপ্ত ारे क्याशार्थीं। वला **वार्**ला ग्रांबं-াম্বা ফটেবল খেলোয়াডের এই কাতর াবেদনে আই এফ এর নরম মন গললো। ্কল্যাণ খাজ্য ফুটবলের অধিকতর ংকারের জন্য মাঠে নামার ছাড়পর পেয়ে জেন দ'ড হাসের ফলে। কাজির বিচারে क्लाग भ्रहा

ইতিমধ্যে কত কাশ্ডই না ঘটে সেল
মদান মণ্ডে এবং মণ্ডের অধ্তরালে, পদার
পছনে। মুক্রাহ্ব ও আড়কাঠিদের
পেরতা বাড়লো। সুকুল্যাণ এবং তার
ই সহযোগী নঙ্গম কামন গ্রেম্নতার হলেন,
ড়ো পেলেন, জখম রেজারী অভিনাম
ত্যাহাল করলেন মামলা উঠে গেল। সব
গারটাই প্রোম্পত্র প্রাান মাত সাজানো।
কলম খেলোয়াড় তো প্রলিশের হাজ
কে ছাড়া পেরেই ছটেল দমনম। দেশে
ন গেলেন হাওয়াই জাহাজে চেলে।
থেরে জলে বিমানঘাটির মানওরে ভিলে
ল। বাওয়ার সমর সাংবাদিকদের ডেকে
ল। বাওয়ার সমর সাংবাদিকদের ডেকে
লও ডোলেন : এনাফ তার ইট, নো মোর
টবল এটে লিকট ইন কামল্টাট (দের

রাজ্য মহিলা ভালিরতা লাগের চুড়ান্ত পর্যের শেলার নৈহাটি এ সির ডুপ্রতী মল্পটেলর একটি ক্ল্যান্স বিভালী সংঘ্যের প্রেবী চৌধ্রী জালের ধারে লাখিনে উঠে নু-ছার্ড বিভিন্নে নারাল বিজেন। চ্যান্সিয়ন হরেছে এবার বিজ্ঞা করে।



হয়েছে বাবা, কলকাতার আর খেলছি না)। মিঞা সাহেবের প্রতিজ্ঞা অবশ্য খেপে টেণকে নি। আবাব তাকে সেই কলকাতারই আসতে হয়েছে, মাঠে নেমে খেলতে হচ্ছে।

ব্যক্তিগতভাবে কারও প্রতি আমার বিশ্বেষ নেই। উপরণ্ড একজন থেলোয়াড় টপ ফর্মে থাকার সময় মাঠের বাইরে পড়ে त्र**ट्रिय अ**ञ्जन्म कामात म्यः भहे श्रीकरमः किन्द्र ষে থেলোয়াড় নিয়মশ্তথলা, সহবং এবং **ম্নো**ব্যক্ত সাভশ্বরে খেলোহাড়ী অভ্যান্ত দেখিয়ে রেফারী খায়েল করে পার পেয়ে যাবে-এটাও বা কেমন কথা? দিল্লী-বো-বাইয়ে তো ইতিমধোই ঠাটা চাল**ু হ**য়ে গেছে কলকাভার রেফারী ঠ্যাপানে নিয়ে। খেলার মাঠে, কাষে শ্বেশ্ভারায় ঠাটুটি প্রায়ই শোনা বায়। ,তারে ইয়ার রেফারী পিটনে-সে **হোতা** কুচ্ খোড়াই? প্ৰেফ অফ সিজন মে ছ' মাহিনা স্থানপেড, ব্যস্!

কিন্তু আর নর। পশ্চদান ঠিক হরেছিল কি হয়নি, দশ্চ হ্লাস ঠিক হরেছে ক্ষি হয়নি তার বিচারক ক্রীড়ামোদী জন-সাধারণ। আমি শা্ধা রেফারি নিশা্ছ সম্প্রেক বাইরের একটি নজীল আপ্নাদের সামনে সবিনয়ে তুলে ধর্মছ।

২৯শে মে তিউনিস থেকে **সংবাদ** সংস্থা এ এফ পি জনা**তে**ন ঃ

ন্ধানীকে মারধানের অপরাধে তিউনিসিরার ফুটনল শেলোরাড মহুব্বদ্
গাউচিকে (২৩) ছ মাস জেল থাউতে হবে:
ফাউল করে থেকারে জনা রেকারী গাউচিকে
মাঠ থেকে বার করে দিরেছিলেন। একই
বদলা নেবার সংকলেপ গাউচি রেকারীর
মুখে সজোরে এক খাবি বসিরে দিরেছিলেন। খাবির জোর ছিলা এতই বে
রেফারীর মুখ্যশভলে চার জার্যার জার্যার
ক্ষাক্রত হয়।

হিটাবীন্দান মামী ক্লাব আফিকানের ব্যালালাক অহুপান পাটাবৈ বিচার কলে শা নীয় এক সালালাতে এবং বিচারক পাটাবিকে জ আলেও জন্য কালাদণ্ডে দণ্ডিত করেন। রাল্ল সেওলার কালো বিচারক বলেন। কর্মাকার্ম জিল্ড আকাল সমার্ম একজন কর্মাকার্ম জিল্ড বাকাল সমার্ম একজন কর্মাকার্ম জিল্ড বাকাল ব্যালালা বিবাদন উল্লেখ্য ক্লোকাল্ড মেকালা পোলালা বিবাদন একজন প্রালালা।

नक्ट्र अध्य कर

अवनेता ननीते उपत्रा समीधार्रमण RIVIS ME REN'E HERMANT GIRGTE ब्रिटक्टे नम् अवस्थात करम् सानम्य উপজ্ঞात করেছে গড় ৩১লে মে সারে ভাউণ্টিকে क्षा क्रेड्रकाके शाक्ति। छाजीश किला रथना भारतः इक्षतात मा मणीय माश्रीहे छन-পর ক্ষরের নিস্পত্তি হরে হার। ভাগতীয় দলের স্মীল গাভাসকার খেলার প্রথম দিনেই দেশ্বরী করেন (১৩৬)। চলতি সফরে এটি ভার দিবতীয় সেওরে?। সাত উইকেটে ৩১৭ রান তুলে ভারত প্রথম ইনিংশের সমাণিত ঘোষণা করলে প্রথম দিনের শেষে সারে এক উইকেটে ১০ রাণ করে। বিভায় দিনে মিডিয়াম পেস বোলার আবিদ আশীর দাপটে মাত ৮৫ রাণেই সারের প্রথম ইনিংসের ইতি ঘটে এবং करना-अस्त वंश इया आविन वाली बाठ ২৩ রানে সালের ছাওয়ার্ড রুপু ওয়েন-টমাস জ্ঞাক্ষ্মান ইণিডখাব আল্ম ও পে ককের উইকেট পান। প্রথম ইনিংসে कावित्मत त्वांमश्यात जिल्लाम इटक ३७-४-१०-७ खबर हम्धानचात्रस ०'२-५-६-२। শ্বিতীয় ইনিংসে সারে ব্যাটিংয়ের অনেক উলভি করে ২৬৫ রান ভোলে। গ্রাহাম ধ্প ৬5 ই^{বি}ত্থাৰ আশেষ ৫৬ সকনর ৪২।

নংকিন্ত শেলার ঃ ভানতীর দল ঃ ১ল ইনিংল ঃ ৭ উইঃ ৩১৭ ডিঃ (স্নানীল গাভাসকার ১০৬), লারে ঃ ১ল ইনিংল ঃ ৮৫ (এডের্য়ার্ডিস ৩১ ইণ্ডিমার আলম ২০ আবিদ জালী ২০ রানে ২ মদনলাল ১৩ রানে ১ চন্দ্রশোধর ৫ রানে ২ বেদী শান্য রানে ১), লারে ২ল ইনিংল ঃ ২৬৫ (এড-ওল্লার্ডিস ২০ গ্রাহাম র্লে ৬৬ ইন্ডিমার জালার ৫৬ চন্দ্রশোধর ৬২ রানে ৪ ডেক্টে-রাম্বন ও৬ লানে ২ মদনলাল ৩৭ রানে ২), ভারতীর দল ঃ ইল্লাইনিংল ঃ বিনা উল্লেট্ট ৩৭ ঃ

males cours

শানের আগে এনেকনের সংশা বেলা ছিল ভারতীর বিকেট নজার। বলা বাহ্লা চেমসকোডে অন্তিত তিন দিনবাপী এই ত্রীভান্তানে জয়-পরাজনের নিশান হর্নান ক্রীপ্রসালরের দ্বীমাংপা না হলেও এনেকটের বিরুদ্ধে ভারতের উনুধীর নারেক ক্রাক্তার ক্রার স্থা। সুক্রীর নারেক প্রথম নিশ্বে প্রের একশো রান করেন। মদন বালাও ১৪ রান করে অপরাজিত থেকে বানা

বংকিন্ড নেলার ঃ একেকা ঃ প্রবাদ ইনিংলা ঃ ২৭৮ (আরু কুক বন আরু ইন্ট ৫৭ অগরাজিত, বিবেদ সিং বেদী ১২২ লানে ৫), ভারতীয় দলা ঃ প্রথম ইনিংলা ঃ ন উইঃ ২৮৯ ডিঃ (স্থেপীর নারেক ১০০ ভয়ংদেকার ৫৭ মদনলাল ৬৪ অপরাজিত, আরুক্তির ৮ উইঃ ২০৫ ডিঃ (হার্ডি ৭৪ গর্ণার ৭৬, বেদ্দী ৩০ লানে ৩ আবিল আলী ৫২ রানে ২ সোলকার ১৮ রানে ২), ভারতীয় দলার ৭২ অপরাজিত ভ্রাদেকার ৫৮ অপরাজিত টালার ১ রানে ১)। ভারতীয় দকোর পরের পরের বংলা ডারিশায়ারের সংলো।

লয়েড দলনেতা

আসম ভারত সফরে ওমেণ্ট ইণ্ডিজ জিকেট দলের অধিনায়ক নির্বাচিত হয়েছেন ক্লাইড লয়েড। ওয়েণ্ট ইণ্ডিজ দল পাকিশুডান ও শ্রীলংকাও সফর করবে। ওয়েণ্ট
ইণ্ডিজ দলের সহজারী অধিনায়ক
মনোনীত হয়েছেন উইকেট মক্ষক ডেবেব

লায়েডের নেতৃত্বাধান ওয়েণ্ট ইণ্ডিজ দল: ডারতে সানিটি টেণ্ট ম্যাচ (২২—ছব্ নভেদ্বর বাংগালোর, ১১—১৬ ভিলেন্বর দিল্লীতে, ২৭—১লা জান্দ্রাদী কলকাতায় ১১—১৬ জান্দ্রারী মাল্লাজে এবং ২৩—২৮ জান্দ্রারী খোলাও ।

भीत्र हत्ना—এक हि द्वकर्छ

১৪২ মিনিটে ৪ রান! কথাটা কেমন
যেন অবিশ্বাস্য শোনালেও ঘটনাটি কিন্তু
রোল আনা খাঁটে। শলখনতিতে রান
তোলার ঐ রেকডাটি করেছেন কাউণি
চাল্পিয়ার্নাশপের খেলার সেদিন (২৪ মে)
এসেক্সের ওপেনিং বাটসমান ব্রারান
হার্ডি। চার রানের মধ্যে প্রথম তিনটি রান
তুলতেই হার্ডির সময় মেগেছে ১২০

রিনিটেরও দেশী। কি অন্যাহারণ হৈছা।
চার রাক্ত ক্রমেত ১৬২ জিনিট কাগিরে
হাতি ৪৪ রাজ্য আব্দে প্রাথক কোনালের
(নিপটারশারক) নক্তরিটিটেক কালো করে
দিরেকেন। কোনালেও ৪ রাল করতে
১৪২ জিনিট কাল্য নিরোজিলেন কিন্তু ১
পিচ ছিল ব্যাটক্যানের স্ক্রাক্তর।

मरादम्कान द्वरहरू

কলকাতার সিনিয়ার বিভিন্নর লাগি বাটবলের দহে বড় পালিক ইন্টারেলার ও মোহনবাগানের অ্যাকতি এবলা বাহারেভান করেছে কিন্তু ভতীয় প্রধান বাহারেভান করেছে এক গোলে ছার করিছে করে। মহামেডান বনাম বি এন আর-এর কোটি গেষ হয়েছে গোলপানাভাবে। ইন্টারেলাল ভাত কথকে ২-০ গোলে এবং বিদিরপারেকে ২-০ গোলে এবং বিদিরপারেকে ২-০ গোলে এবং করা টেলিগ্রাফকে ও-১ গোলে পরাজিত করে। মহামেডান এ পর্যাত চার প্রেণ্ট, মোহনবাগান এক প্রমণ্ট (ইন্টার্শে রেলের ভন্তুল খেলাটি না ধরে) এবং ইন্টারেণাল এক প্রেণ্ট নাট

করেছে।

বিজয়ী সংঘ বিজয়ী

এবার পশিচ্যবর্ণ রাজা মহিলা ভলিবল চাদিপ্রন হয়েছে বিজয়ী সংঘাণ গত পনিবার (১-া জন্ন) গড়েক সাঠে ফেডারেশন ে লীগের চ্ডান্ড পর্যায়ের খেলার বিশ্ব সংঘ গতবারের চ্যান্পিরন নৈহাটি এলাকে ১০-১৫ ১৫-৫ ১৫-১০ ও ১৫-১১ পরেন্টে প্রাজ্ঞ করে। আগের চাদিশারন ঃ ১৯৬৭—৭০ টালালা স্ভাষ সংঘ ৭০-৭২ বিজয়ী সংঘ ৭১-৭২ স্ভোষ সংঘ ৭২-৭৩ নৈহাটি এ সি।

লেক কাৰ চ্যাহিপছাৰ

প্রথম খাজা নৌ বাইচ প্রভিবোগিতার মোট ৪৮ পরেণ্ট সংগ্রহের শ্রে জেক ক্লাব গত ১লা জন চ্যান্পিরানশীপ জ্ঞানি করেছে। রানার্স আপছাটো। শেষ দিনে আটিট বিজ্ঞার চ্ডান্ড নিশ্পজ্ঞি হণ্ডরাগ পর রাজ্যপাল প্রী এ একা ভারাবের সভা-পতিকে শ্রীমৃতী ভারাস প্রকলার বিভবণ করেন।

-विभाग बंदमहाभाषात



লক্ষ লক্ষ লোক আজ
সাধনা দশন ব্যবহার করেন
কারণ অতি উৎকৃত্ট
দাঁতের মাজন ব'লে
এর সুনাম ও জনপ্রিয়তা
উত্তরোত্তর বেড়েই চলেছে।
অতুলনীয় গুণাবলীর জনা
সাধনা দশন বছদিন ধরে
দেশের সর্বর প্রচুর সমাদর
লাভ করে আসছে।
সাধনা টুথ পেত্টও বছগুণবিশিত্ট বিশেষ ফলপ্রদ ও
উপকারী। যাঁরা পত্ট গছন্দ
করেন তাঁদের অনুরোধেই
প্রস্তুত করা হয়েছে।

*** Sp.5/70



সাধনা টুথ(পষ্ট



সাধনা ঔষধালয়-ঢাকা

কলিকাতা-৪৮

অধ্যক্ষ ডাঃ যোগেশচন্দ্র ঘোষ এম্.এ, আবৃর্বেদ-শালী, এক,সি.এস, (লণ্ডন) এম.সি.এস, (আমেরিকা) ভাগলপুর কলেডের রসায়ন শান্তের ভূতপুর্ব অধ্যাপক। কলিকাভা কে**ন্ত** ডা: ন**োগটন্ত (ছাত্র,** এম,বি.বি.এস. (**কর্নি)** আয়ুর্বেদাচার



COURT POWDER

CO

হুণলো সেই আসল জিনিব যার পেছনে রয়েছে ১২৫ বছরের অভিজ্ঞতা

ন। ভত্তত ।

, । সর্বাধুনিক মদলা এযুক্তি বিস্থার
জল নতুন পায়াক আরও উন্নত
ধরনের কুক্ষী ও ডা মদলা ।

২ । এর পেছনে রায়াছ দীর্ঘদিনের
নাবেরনা ।

ত। বাজারের অস্থান পাঁচটা ওঁই
লপনা বোক কুক্রী ওঁকা রশনা
লপ্প্ ডির স্থান্ত ও ভাতরাব
ভবসূত্র।

সম্পূর্ব ডির স্থান্ত ও ভাতরাব
ভবসূত্র।

সম্পূর্ব ।

जावाति । जावाति अपि उ जावि काल अपि उ

अब किर एक एक एक एक (न्याइम) आर किर

(স্পাইস পাউভান্ন ভিভিন্ন)

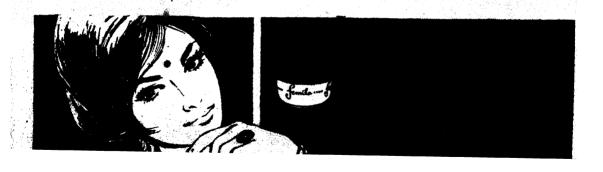
1808/KCB-74 १००१, महर्षि (कारत (कारत कारतिकाका-५ । (कारत : कक-०३०४ कार्योकी-कार्योज्य



'SB वर्ब, 9 माश्रा]

শ্কেবার, ও **আবা**ঢ় ১৩৮**১ বঙ্গা**ণ

[\$2.00 00



১০৮১ সালের মোচাক পান্তকা কর্ম্ব সন্ধীরচন্দ্র পর্রস্কার প্রাপ্ত শ্রীতন্বারকান্তি ঘোষ রচিত ছোট বড় সকলের মনের মত বাংলা সাহিত্যের দন্তানি আশ্চর্য বই

বিচিত্ৰ কাহিনী

जीकृतसम्बर्गन्ड स्वाय व्यापक-सम्बद्धाः प्राच क्रिक्स केन्द्रमध्यो जन्न क्रम्य क्रम क्रम्य क्रम क्रम्य क

ভাষত বিভিন্ন কাহিনী বইটি কিলোর ও বয়স্কলের
ক্রম্য সমভাবে রচিত। সেথক শ্রেষ্ ছেটেনের ক্রম্যই
রল পরিবেশন করেনান, বড়রাও এই জন্ত
জাস্থানন করে প্রেলিকত হবেন। অন্তর্নার ক্রম্যান্যেকা
ক্রমাশোলী একং প্রতিটি কর্ছিনার জিল ভিন্ন
আবশা চুল্মকের মন্ত পাঠককে টেনে মিয়ে মানে।
এই বইটিভে দশটি বিভিন্ন উপ্নের ক্রমিনী রচ্ছের
ক্রম্য ভাষত তার ক্রমিন্র করে ভাগিথত করেছেন
ক্রমান স্ক্রেকটের রসম্ভ করে উপ্লিথত করেছেন
বে পাঠককে বিমাণ্য করে।

আরও বিচিত্র কাহিনী

শ্রীকৃষ্যাকাশিত যোধ শ্রুতঃ—চার চাকা (চতুপ সংস্থাস চলছে)

এম সি সরকার জ্ঞান্ড সদস প্রাইভেট বিক্রিটেড, ১৪ বন্দিক চটো,জ্যে স্থীট, ক্লিক্সভা-১২ ংক্রের ৩৪-১৭৮২

भरकरत्रत अविश अश्विम (न,जन अष्ठेम म्हान) अर्कानिक हरना। माम आहे होका

গজেন্দ্রকুমার মিতের

নীহাররঞ্জন গাংকর

ज्यानाभर्गा दमबीब

নতন ব্যাদের উপন্যাস

কিষ্টিটীর শেষতম অভিযান

সাম্প্রতিক উপন্যাস

আকাশের সীমা নাই ৫ ্অহল্যা ঘ্রুম ৭ ্বকর্ল কথা ২০

উমাপ্রসাদ মাথোপাধ্যামের

अर्वायक्षात मानारणत

শেরপাদের দেশে ১০

বনস্পতির বৈঠক ২০্

প্রথম সংস্করণ সমাণিতর পরে। স্বিতীয় মন্ত্রণ

এই অসাধারণ বইটির দ্বিতীয় খণ্ড শীয়ই প্রকাশিত হচ্ছে।

रित्रयम सुक्ठिया वाली तप्तनावली

সাহিত্যপ্রতা বিভূতিভূষণ বল্গোপাধ্যামের অমন নচনা

গ্রাহক করা চলছে। তবে কোন অগ্নিম টাকা জমা দেবার প্রয়োজন সুত্রির নেই। প্রথম দুটি খণ্ড একই দশ্যে প্রকশ্যের পথে।

পথের পাঁচালী

॥ প্রতি খন্ডর আনুমানিনিক ম্ল্য আঠারো টাকা ॥

পেশার বাদক সংক্ষমণের াদবভীর মানুদ্র প্রকাশিত হলো। পাস হয় টাকা।

॥ आमारमत अकाशिक वाश्मा माहिरकात करसकि दशके किरमात शम्भ ॥

গজেন্দ্রকুমার মিতের কিশোর প্রন্থাবলী ৫

স্থলতা রাও-এর নানান দেশের র্পকথা ৩্ গলপ আর গলপ ৫-

বিভূতিভূষণ বন্দোপাধায়ের লবটুলিয়ার কাহিনী ৩॥

প্রবোধকুমার সাল্যালের **ছোটনের মহাপ্রতথানের পথে** ৪ স্মথনাথ ঘোষের কিশোর গ্রন্থাবলী ৪॥

লীলা মজ্মদাবের নেপোর বই ৩॥ সাকুমার রাশ ৪॥ বামিনীকাল্ড সোলের শ্রীনেহর, ২

প্রভাতরঞ্জন রারের **তুষার মানবের সন্ধানে** ৪ দক্ষিণারজন মিত মজা্মদারের কিশোর গ্রম্থাবলী ৪॥

বিমল খোষের (মোমাছি) বুশকথার কালি ৪॥ জান-বিজ্ঞানের মধ্যজাণ্ড ২॥

িবড়ডিভবণ মুখোপাধাধ্যর কৈলাসের পাটরাণী ৩

সাহানা দেবীর মৃত্যুহীন প্রাণ ৪॥

জ্যোতির্মরী দেবীর রবীশ্র প্রেস্কামপ্রাশ্ত সোনা রূপা নয়

ন্তন শ্বিতীয় মাদুণ প্রকাশিত হলো য় দাম কৃতি টাকা য়

১০, শ্যামাচরণ দে শ্রীট, কলি-১২ মিত্র ও ঘোষ পাবলিশার্স প্রাঃ লিঃ ৮৬।১, মহাজ্য গাধী রোড, কলি-৯ ফোন ঃ

98-982

08-49%>

नियुभावली

facult families

লেখকদের প্রতি

- ত্রু বিজ্ঞান বিশ্ব বিশ্
- ৰ প্ৰেটিজ রচনা কাগজেম এক প্ৰতার স্পানীজনের লিগিজে হওর। আব-নাকে অস্পানী ও ল্যোভ হস্তা-ক্ষে লেখা প্ৰকাশের কলো বাহতি হব না।
- রিকানা সাপো লেখকের নাম বা

 কিকানা সা থাকলে অসচেত

 কাকাপের জন্মে গ্রেণ্ড হর সাঃ

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 **

 *

क्रांक केरबन अधि

এজেন্দীর নির্মাবলী এবং নে সম্পর্কিত অন্যান্য তথা অমৃত কাৰালকে সন্ত আরু লাভার:

গ্রাহকদের প্রতি

- ১। ছাহছের বিকাশ পরিবর্তমের জন্য জনতে ১৫ দিন আগে 'আম্'ভ কাশালাকে সংবাদ দেওয়া আব-লাক।
- হ। ভি পি-তে শীরক। পাঠানো বর না। গ্রাহকের রাসা নিদ্দালাখত হারে মাণ-অভারবোরে অম্ডা কারালিকে পাঠানো আবদ্যক।

চীদার হার

'অম্ত' কাৰ্যালয়

১১/১, कामण वाणील' लन, कॉनकाछा—०

(काम । ६६-६२०५ (५८ गाहेन)

রবীক্র সঙ্গীতের নতুন রেক্ট্র

সাগর সেন

(স্টিরিও লং প্লে বেকর্ড)

রবীস্তসসীতে সাগর সেন একটি জনপ্রিয় নাম।
এই প্রথম তাঁর একক লং প্লে রেকর্ড বেরোলো। এতে
আছে শিল্পীর গাওয়া ১২টি গান: প্রথম আদি তব শক্তি;
কেন বাণী তব নাহি তনি, নাথ হে, ধায় ষেন মোর
সকল ভালোবাসা, নদী পারের এই আষাড়ের
প্রভাতখানি, আমার প্রাণের মানুষ আছে প্রাণে, ওহে
ভীবনবল্লভ, ওহে সাধনদূর্লভ, বধু, কোন্ আলো
লাগল চোখে, আহা, আজি এ বসজে, পথিক প্রান,
চল্, চল্ সে-পথে তুই, ক্ষমা করো মোরে, সখী;
ভাকব না, ভাকব না, আমি যে গান গাই জানি নে সে।

'চিত্রাঙ্গদা' নৃত্যনাটা

মতুন সংক্ষরণ (স্টিরিও লং প্লে রেকর্ড)

রবীন্দ্রনাট্যর জগতে এই রেকর্ডটি সমর্নীয় হয়ে থাকবে। এতে অংশগ্রহণ করেছেন: সুচিন্না মিল্ল, হেমন্ত মুখোপাধ্যায়, কণিকা বন্দ্যোপাধ্যায়, নীলিমা সেন, চিল্ময় চট্টোপাধ্যায়, বনানী হাহে, বাণী ঠাকুর, শৈলেন দাস, প্রতিমা মুখোপাধ্যায়, অদিতি সেনগুঙ, গোরা স্বাধিকারী, নমিতা ঘোষাল ও গৌতম মিল্ল। সংলাপ—গৌরী ঘোষ এবং প্রদীপ ঘোষ।

হিজ মাস্টার্স ভয়েস

ধনির জগতে ৭০ বছরের ওপর



আৰ্ত্তির একটি উল্লেখযোগ্য ই পি রেকর্ড "কর্ণ কুন্তী সংবাদ" অংশগ্রহণ করেছেন : অপূর্ণা সেন ও দিলীপ ঘোষ

GC 7994



৭ সংখ্যা মূল্য ৫০ পয়সা

প্ৰশিক্ষান জ্যান্ড ইন্টাৰ' নিউছ প্ৰেণাত সোলাইটিভ গ্ৰহণ

Friday, 21st June, 1974 শ্রেবার ৬ আবাত, ১৩৮১ 50 Paise

স্চীপত্র

भूष्णे विषय

त्वाच्

- ৬ সম্পাদকীয়
- ৭ দুর্ঘটনার পরের রাত্রি (গ্রুপ)
- —শ্রীঅশোককুমার সেনগা্ণত

১০ घটनाश्चवाह

- --শ্রীপ্রেডরীক
- ১৭ সেকালের সংগীতগ্রেণী
- --জীদিকীপকুমার মুঞ্চেপাধ্যার
- ২৪ চতুদ'শপদী গদাকবিতা (কবিতা)
- --शिमित्म नाम

২৫ সাহিত্য ও সংস্কৃতি

--শ্রীজরৎকার

२४ किकिशन

भौर्खिनम् भूरथाभागारात्रत जात এकि जान्तर्य मृण्डि ঘরের পথ শীর্ষেন্দ্র মুখোপাধ্যায় লেখেন কম কিল্ডু स्मिरे न्दर्भ लिथारे जम्भन रुख उर्छ ঘরের পথ আমাদের আকর্ষণ করে উত্তেজিত করে চিন্তিত করে শীষেশ্ন ম খোপাধ্যায়ের ভাষা সেই আশ্চর্য याम्, ঘরের পথ আরো প্র্ণতা পেল ঘরের পথ কেন य राग्न त्मच रल ना ঘর আগেলে ছিল সে অগ্ন জেবলে বসেছিল বাবা তার গেল বিদেশে পাহাডে ঘরের পথ হায় শেষ হল না আর এক আশ্চর্য ^{স্কি} ঘরের পথ সুখের আড়ালের পর হারের পৃথা লেখকের আর এক আশ্চর্য পরি-

भीट्यांनम् भूट्याभाशास

প্ৰতা।

সাহিত্য সংখ্যা, ১৮সি, টেমার লেন কলি-৯

টি পি লকলিন ৬'০০ জ্বোসেফ ডব্লিউ মীগার এগান্দী চটোপাধার

প্রেক্ষাপট র্কালনের আসেয়ানে চিচমর
নাগরিক জাবন ও অভিজ্ঞতার বৃশ্তে
বড়ো হরে ওঠা ছোটু টিগির নিম্পাপ
ভূবন। আছে জ্বাড়ী দাক্তির আজহ
জগৎ, ডাফেনের কান্দ্রকারখানা ও
পরমন্ত জুতোজাড়ার ছহল্য। কথনো
সোনালী দুঃখ, কথনো আনন্দ বার
নিম্পতি মধ্র হাসিতে। আদ্বর্ধ
মানবিক ও আনন্দমন এ জাহিনী
আপনার ও পরিবারের সকলের মৃত্তেক্তি
গ্রিকে রক্গান করে ভূলবে।

প্রীভূমি পাবলিলিং কোম্পানী
৭৯ মহাখ্যা গাখ্যী রোড, কলিকজ।

মহাত্মা শিশিরকুমারের

কয়েকখানি উল্লেখ– যোগ্য গ্লন্থ

কালাচ'াদ গীতা ^{৪ধ কংকর} •০০০

নিমাই সন্ন্যাস

নরোত্তম চরিত

श्च निरम्बद्धान २००

ন্তেট কাপড় ধোয়ার কেক ৰন্যান্ত্ৰ সাবাদের কুলরায় ১ই গুণ বেশী কাপড় গোয়—সা সে জল যে ধরণেরই হোক।

> ডেট কাপড় ধোয়ার পাউডান্ত লাছা কিয়া নীন — যে কোন সাইক্রে পাঙ্কের। কেবল ডেট গোলা মলে মূবনে আন পুয়ে বিন। এটি আপনার হাতের পক্ষেত্ত বিন্তাপদ।

> > **এন-ডেটি** দাশ ধুয়ে পরিষ্ণার করার এনজাইমযুক্ত পাউভার, সঞ্জিয় কিন্তু ক্ষতিকর নয়।

new!

detergent washing cake





স্চীপত্র

প্রতা

বিষয়

२৯ जल्लोक्क कनवान (উপन्যान)

-- शिक्कीन यरमहाभाषात

৩৪ ভাছতের ভাকটিকিট

-क्रीभ्राक्त्यम् नारिकी

৩৬ জাৰিক প্ৰসংগ

-- শ্রীশান্তিলকা ম্থোপাধাায়

০৮ দেই লোকটি

-- শ্রীক্ষিতাত দাশপূর্ণ্ঠ

৩৯ ভালবাসা ভালবাসা (উপন্যাস)

-- শ্ৰীজানন্দ বাগচী

८७ ब्रात्थाम न्छा : शम्छीता

-- श्रीश्रामग्रक रचाव

८४ भ्यम्ह

--- ব্রীক্ষপূর্ব

৫০ ৰূপদীর খাডা

--- শ্রীবরবনিশ্রী

৫৩ পিকাডিলি দার্শাল (উপন্যাস

-- শ্রীনিমাই ভট্টাচার্য

৫৬ প্রদর্শনী

-- शिश्चन्यवस्य दाश

८४ भरमत भवत

--শ্রীতর্ণচন্দ্র সিংহ

も0 (製帯)利度

७० बाद्यमारम्ब्यस म्हण्य

--আনওরার আহমদ

ও ব্ৰুখডিভিক ছবি

-- क्रीकालीन भूरधानाधाय

৭০ শতৰ্শের প্ররণীয়

96 d'A 51884

---श्रीषामग्र

५৯ स्थलभाला

-क्वीविभाग यत्माशाधाय

छळूर्मम थछ वाद्यित इडेल ! **শ্ৰম্মী নিজ্যাত্ম লম্ম রচিত**

শ্রীম-দর্শন

॥ 'बीबामक्थ-कथान्छ'-कात्र कर्ज्'क कथान्छित बााधाः ॥

এই খন্ডে আছে: যায় মান ব ক্লিবে দেবতা; আহরণ; বেলাস্ডব্রা 'কালী তপস্বী'; একদিকে জগালাৰ, অন্যাদকে বৈদানাৰ; পি'পড়ে চিনিট্কু নেওয়া; চৈতনাদেবের প্রালাভূমি প্রী: লগানাথের আহরানে: শ্রীক্ষেত্রে ক্লাইস্টের জন্মদিনে; গিলায় ৬ সিম্পাগ্রমে; দেববের সংখানে ক্লাইস্ট ও রামকৃষ্ণ; এই রক্ষজান বাবে ওয়েন্ডে, তবে তারা বচিবে: বক্ষাতলে রক্ষ হরিদাস; ভূবনেশ্বরের পথে: লিঙ্গরাজ মন্সিরে; প্রত্যাবতনি; জ্গান্নাথের রাজ-বেশ: পরিভুমা; ভেতনাময় পরেরী; খমভিশবন - বিশ্বাস ও অবিশ্বাসের স্বণদ্র; এই সূব দেবচিত মনের খোনাক; ভাষেরীপাঠ - মাখন জুলে খোলে খাক। --এই একুশটি অধ্যায় আর পরিলিটে আছে শ্রীমহেন্দ্রনাথ গণেত মহালয়ের সহিত চিরুম্মরণীয় কয়েকটি দিনের স্মৃতি কথা। মূলা বার টাকা ॥ জন্যান্য খণ্ড ১য় খল্ড (৩য় সং)-১২-০০য় ৪-৬ খল্ড : ৫-০০ য় ২,০৭--১৩ খল্ড: A-OO BIMIN

[জেনারের প্রিক্টার্ল ম্যান্ড পারিমার্ল প্রইডেট ব্যিকটেড পরিবেশিড]

क्रमादिस युक्तम्

थ-७७ करमक म्हेंकि दारक

জ: **(বাহুল্ড) বন্দ**্ধান্ত <u>এজ ৯৯</u>৯. জ: এস. এম. পার্লেড এমরি নি.ম যৌনবিজ্ঞানর রঙ্গীন ও বছটিতে চিত্রিও অতি আধুনিক সংস্করণ मारत लार्ख्यो कर् অগ্নিচা ৬-টাৰণ পাঠাইলে ভাৰজাণ্ডল ট্ৰ

गर्हिनीरमञ् রামার জন্য था'ि थवत!

গৃহিণারা সবসময় রালায় প্ৰস্থাসমাৰ্ক হা ডে মার্থাই বাবহার করন করিশ আগমার্কের ভিটাৰ **४००% था'ि इ**म

क्रकी गर्दका मनना नर्बर् जाशवार्क बाह्य नव अब रभक्टम बरबरक कांबरक क्षाचे सममा गावनाही क्कान्य गढ (क्कारी) शह जिल्ल हात श्राह्मद्रवस अधिकका। **काहे। न'त्र**का समना कवि जाध्यानक कात्रधानात अन्तृष इन्न क्षर गणनंत्रान्हें नगयदारोपीटक देवकानिक প্ৰথাৰ পৰীক্ষিত হয়ে বাজাৰে বিভারের জন্য প্রেরিড হয়। ক্তেল ভাটা গ'ড়েছা সপলা দৰ দময় পটি ও উল্লভ मानग्र ।

ডাঢা

গাু ড়ো মশলা রামায় ১০০% निदाशम

समन्तरथ देशियात विकास्त्री



সম্পাদকীয়

রাষ্ট্রপতি নির্বাচন

স্প্রীম কোটের অভিমত অন্তত এইটাকু নিশ্চিত করে দিল যে শ্রী ভি ভি গিরির কার্যকাল শেষ হওয়ার আগে তার উত্তরাধক বা নির্বাচনের পথে কেউ কটা দিতে পারবে না। সেটা খ্যুৰ কম প্ৰাস্তৱ কথা নয়। এই নিৰ্বাচন শেষ করতে হবে আর দেও মাসের মধ্যে। ভার আলে যদি এট বিষয়ে সংবিধানগত ফাউপ্রশন ওঠে তাবে বড রক্ষেব রাজনৈতিক সংকট স্থাতি হওয়ার আশৃত্রা থেকে বায়। গ্রেরট বিধানসভা বাতি**ল হয়ে যাওয়ার ফলে সেই** ধরনের প্রশ্নই ওঠে। সংসদ এবং বিভিন্ন রাজ্যে, বিধানসভার সদস্যেরা**ই ঝুণ্টপতি নিব'াচনে** ভোট দেওয়ার অধিকারী একটি বিধানসভা ব্যতিল হয়ে থাকলে নিব্যাচনমাভলীতে বড় রক্ষার ফাক পথক হায়। এই অবস্থায় নির্বাচন হলে কি তা সংবিধানের **দ্র্তিতে বৈধ** বলে গণা হাবে । সংবিধান-শাস্থাীরা এই প্রশন ডোলেন। সংসদেও বিরোধী প্রক্ষের কণ্ঠে অনিব্যুষ্ভাবে এই প্রন্থ শোলা ধাষ। কোনো বকর গড়িমসি না করে কে**লীয় সরকার** যে বিষয়টি স্প্রীম কোপার তাভিমত্তের জন্যে পাঠিয়ে দেন তার **মধ্যে রাজনৈতিক দরে**-^{দক্ষি}তোর প্রবিচয় মেশ্ল। কারণ দেশের সর্বোচ্চ আদালতের অভি**মত পাওয়ার ফলে** বাণ্টপতি নির্ভিত্ত মতে শ্রেষ্ট্রা সাংবিধালিক জটিলতা নিয়ে সন্দেত্রই নিরসন হলো ন । সেই সংখ্য এই প্রশন নিয়ে বিরোধীরা জল ঘোলা করবেন এমন সংযোগত এখন ব্রইলো না।

বাইপাত নির্ভিন সম্পর্কে সংবিধানে যে সময়তালিকা মিদিট্ট আছে তা মেনে চলতেই হবে এই ছেল অন্দালতের স্মানে সরকার পক্ষের যুক্তি। প্রধান বিচারপতির নেতৃকে প্রামান কার্কার বিশেষ বেশ্য সেই বৃত্তি মেনে নিয়েছেন। কোনো অবস্থাতেই এই সময়সূচীর রমবদল বরা থাবে না এমন কি নিরাচক্ষণভালীর কোনো আসন ুনা থাকলেও নয়। ইতিপ্রের স্থেপাত্ত নির্ভাচনের সময় কোনো আসন যে শ্লা । তা নি তা নয়। কিতৃ লোকসভা অধ্যান কোনো বিধানসভার এক বা একাধিক আসন শ্লা থাকার ফলেই সেই শ্লাতার সামি হয়। এই ধরণের শ্লাতা যাতে শার্ষ্টপতি নির্বাচনের পথে বাধা হয়ে নালভিত্ত সেনিক জ্বান বালভিত্ত ১৯৬১ শালা সংবিধানর একাশন সংগোধন সংসদে কার্ত্তি হয়। পান বালভিত্ত সিনা কর্মেনা করিব কথা কার্ত্তি সামি বিধানসভার বাভিত্ত হয়। পানবার সভ্যান কার্ত্তি করার করার বিধানসভা বাভিত্ত হয় পানবার সভ্যান ক্রিয়ালিক বাপ্রকাতর করে নি। কিন্তু স্পুতীম কোটের বিধানসভা বাভ্তা হয়ে থাকা বালভিত্ত রাম্প্রিক বাপ্রভাত নির্বাচন আন্টোনে কোনো বাধা থাকাছে ন্।

আদিলে সুধীনের চেলিফোন পাণ্ডয়ার পর হাতে মাত্র চাল্লিশ মিনিট সময়। এখন পাড়ে চার। পচিটা দশে কোলফিন্ড এক্সপ্রেস ছাড়বে। এখন থেকে ডেলার কথা বড় জোর বিশ মিনিট। কিন্তু বাস যদি ঠিকটাক না পাওয়া যায়, রাস্তা জ্ঞাম থাকে, হাওড়া ত্রাজৈ সারিবলী গাড়ী যদি পদশ্লী বসায়, তবে কভগানি সময় লাগবে তার হিসাব করা দ্বেক। তবে কিনা,

হাঁটা যেতে পারে। কিন্তু অসন্ভব ভিড় রাস্তার। গাড়ী মানুব ফ্টপাথে দোকান। পা ঠিকঠাক ফেলে আরও শরীর বাঁচিয়ে চলিলাশ মিন্টি লাগবেই। কিংবা তারও বেশী।

সুধানের আমাকে টোলফোন করার কি
দরকার ছিল জানি না। ইড়ইড় করে কথাগুলো বলে গেল। শনেতে শুনতে আমি
সীভানাথের জন্মে ভয় কর উব্বেগে এমনই
আচ্চর যে সমগ্র বাপে।রটা হজর করে
যাওয়ার অসুবিধার কথা ভোলাই গেল না।

আসানসোল থেকে গাড়ী নিয়ে আসছিল।
দ্গোপারের কাছে দ্যোটনা ঘটেছে। ওখানেই
হাসপ্যতালে ওকে ভতি করা হয়েছে।
মাণায়ক আঘাত নয়। পরিকার জ্ঞান আছে।
গাড়ীর মালিক স্থোধ রায় নিজে এসে
ধ্বরটা নমিতার কাছে দিয়ে গিয়েছেন। কিন্দু
শোনার পর নমিতা ভাষণ অধৈম্ম হয়ে
উঠেছে। স্থোনেব বাড়ী গিয়ে তাকে

ধরেছে দুর্গাপ্র নিমে বাওয়ার ছবো
স্থান সাক্ষা দিছেছে, আদ্দশ্চ করেছে
তেমন কিছু হলে স্বোধ মান্ত কে কথাই
থানেতে চায় না। ভাকে নিয়ে হাওছা পেটপনে
হাজির হমেছে। স্থানের ইছে আমিও
চলি। বন্ধ্র বিপদ। আমানেরই দেখা
অর্থা। শ্বা ভাই নর ও আনিরেও দিল
চিনিট নিয়ে শ্লাউফরা টিকিটের কাউপ্টামের
সামনে সে দাড়িয়ে আছে আমি হেন এক্মনি

স্বীতানাথের কি হল আমি এখন ভাবছি
না। বের হবার আগে থেকেই ক্লান্ডিত অন্যুক্তর
করছি। নিজেকে প্রস্কৃত করার কোন
দ্বোগই নেই। আজু আবার টিউলানিতে
কামাই হবে। অখত বাগেলারটা এমন কোন
ক্রমেই এড়ন বার না। সংগ্য টাকাভ নেই।
প্রেটে মাত্র এক টাকার ধ্যু খানা মোট।



ははい

সংখীন অবস্থা ওলিকে প্রস্তুত হয়ে নিন্দ্র কোনায়েছে।

জাসুম্ভব নির্রান্ত এবং একরাশু ক্লানিত নিক্তে বড়বাবুর কাছে গোলাম। সুম্ভবতঃ কুমুট্নী বলেই তিনি আগামীকালের কাজেকেল লিভ স্থেত আজ এখনই ছুটি লিতে কুন্তিত হলেন ।।। অভিস্ বেকেই রামকৃষ্ণ জারলাসে কোন করেলাম। ফোন আছে এদের। পাশেই আমার্যদের বাড়ী। জানালাম, অনুগ্রহ করে বাড়ীতে একটা খবর আনামা, অনুগ্রহ করে বাড়ীতে একটা খবর







্ 🗈 থে কোন নামকরা ওয়ুধের। তালোলানেই পাওয়া যায়।

DZ-166 1-200

দেবেন, জর্মী কাজে দংগ্রিপুর যেতে হচ্ছে।
হাওড়া স্টেশনগ্রমী বাসে ওঠার মহেতেওঁ
দেখলাম বার মিনিট সময় বায় হয়েছে। অর্থাৎ
হাতে এখনও আটাল মিনিট সময় আছে।
রবোল রোড কি বড়বজনরের মুখ কি
হাওড়া রীজ জ্যাম হলে আর টেন ধরতে হচ্ছে
না। সুধীনকে বলা চলবে, রাম্ডা জ্যাম,
আমি কি করতে গাঁব। চাই কি কাল সীতা

আমি কি কবতে পার। চাই ক কাল সীতা-নাথের বাড়ী গিরে তল্লাসও করতে পারি। বাড়ীতে কেবল ওর বিধবা মা আছেন।

দীর্থ ছু মাস ভাষার সীতানাথের সংগ্রেদখা হানি। আসলে এখন আমরা প্রত্যেকেই নিজেদের নিয়ে বাশত। বেকার জীবনের সেই অটেল সময় জার নেই। দিন এখন কর্মান্তর্ভার অভানত ছোট। তবে যোগস্ত্রটা জামানের ছিন্ডে যার নি। আসেগবার মতে টানটান নর কিন্তু আলগা। স্ভোর মূলে আছে ঠিকই। গভ পরশংই গোপীর সংগ্রামিভাকে নিয়ে সিনেয়া যাজ্জ্লা। দিবাকরের স্টেশনারী দোকানের সীতানাথ নাকি প্রামই আসে।

আমরা প্রভেকেই মোটামাতি চাকরী পেরেছি। দিবাকর অবশ্য দেটশনারী দোকান করেছে। সীতানাথের তিউশানিই সুন্বকছিল। ১১৪ সম কটি চিউশানিই ও অটগাট ছেড়ে দিল। আমরা খবরটা জানার পর ভীষণ অবক হয়েছিলায়। চাকরী না পাওয়ার স্নোভ এবং অবসান করেছিলায়। তারপরই জানতে পারলাম মোটর জ্বাইভিং শিখে ফেলেছে। সাক্রমান মোটার জ্বাইভিং শিখে ফলেটে। সাক্রমান মোটার সাক্রমান মান অকলন মোটা বাবসারীর গাড়ী চালানর কাল জ্ব্টিয়ে ফেলল। ডারপারই বিয়ে করল নামতাকে।

সীত্যনাথ ব্রাবগই চাপা স্বভাবের। তার উপর অতাতে অনামনত্ক টাইলের। আমাদের সংগ্রে মিশলেও কখনই ওকে উচ্চল হতে দেখিন। আমরা ওকে মান্টারমশাই বলতাম। ড্রাইভিং শেখাটাও আমরা একদিনের জন্যেও টের পার্হান। ড্রাইভারের চাকরী জোটানর সংবাদটা দিতেই আগ্ররা প্রদপ্রের দিকে বিশ্যিক छार्य छ।।कथ ছিলাম। ST: আডালে গ্রেগ বলেছিল ওর অনা কিছু মতলব দিবাকর বলেছিল, で 沢藤 1 কি আর কর্বে। চিম্নকাল পরের গাড়ী ঠেলবে। সত্য বলেছিল, টিউশনির চেয়ে চের ভাল। আমি মন্তব্য করেছিলাম, সাতানাথ গভার জলের भाष्ट्र। अञ्च द्याबाहे कठिन।

যাইণোক দেড় বছরে আমাদের অবাক কলার মত সাতানাথ অবশ্য কিছেই করতে পারে নি। সেই স্বেধ রায়েরই গাড়ী চালকছ।

চনংকার রাস্তা। আর ট্রাফ্ক প্রেলাপের বাবহার আবও চনংকার। হাত তুলে আমল না। সময় নত করল না। এদিকে বালখানার যেন পাধা বসান। হু হু করে ছুটে চলল। হাওড়া রীজখানাও মেন ভদ্রতার চ্ডাল্ড দেখালা নিজেকে সাফল্ফ করে রেখেছে যেন জামার জনে।ই পনের মিনিট সময় হাড়ে দিয়ে বাসখানা স্টেশনে থামলা এর পর আর দেরী করা যায় না। ভিড় ঠেলে স্ঘীনের কাছে আসতে করেক মিনিট বায় হল। নমিতাকে দেখতে পেলাম না। ঘাড় উচ্চু করে স্থানিই আমাকে খাল্ডাছে।

na mangangangan paggasan pantangan menganggan menganggan beranggan di dianggan beranggan beranggan beranggan b

সামনে খেতেই স্থেনি ব্লল, নমিতাকে গাড়ীতে বাসায় রেখে এসেছি। সিট আগলে আছে। পকেট থেকে সিগারেট কের করে একখানা বাড়াল আমার দিকে। তারপর কর করে দেখালাই জনালিরে ধরান হতেই বাস্ত শ্বরে বলল, চল। চল। বড়াড নাভাসি হয়ে পড়েছে বামতা। গাম্হরে বসে আছে। বলছি ভরের কিছু নেই। কিন্তু যদি বোভে।

—িক ভাবে আন্সিডেন্টা হরেছে? গাড়ীতে আর কেছিল?

সংখীন বলল, কি জানি! নমিতাও জানে না। ভদুলোক এসে শৃখু খবরটা দিয়েছেন। কালকেই সীতানাথকে কলকাতায় নিরে আসবেন তাও জানিয়েছে। কিম্তু সেয়ে পাগল। অজেই যাবে।

পাশাপাশি হে'টে আমরা ক্লাটফমে एकनाम। जान भिदक श्लावेक्ट्स अक्समा मय्क भाग लाकाल गाफी এटम मौड़ान। পিশপিন করা মান্ত্র। পাশাপাশি হটি। গেল না। কথাও হল না। একটা জানলার সামনে সুধীন দড়িতে এলিয়ে গেলাম। ততক্ষণে নমিতা মুখ াড়য়েছে। মাথায় ঘোমটা। সাধারণ এল 🔠 শাড়ী। থমথম করছে মুখখানা। ফোলা। আমাৰে দেখে সমানা কাল। মুহুতের সংখ্য স্বর্ক্ষের অস্থিয়া এবং বির্ভি আমার ফিকে হয়ে গেল। সীতামাথকে ব্যক্তেজবাঁধা অবস্থায় দেখাল কি হবে জানি না, নমিডাকে দেখে কিন্তু বাকের উপর ভারী পাথরের চাপ টের পেলাম।

স্থান আমাকে তারপরই হা জানাল তাতে তবত হবারই কথা। সে হাবে না! আজ সকালেই ওব বাধার সেট্রাল হয়েছিল। অফিস কামাই করেছে তাই। আমাকে একলাই নিয়ে থেতে হবে। সে প'চিশা টাকা আমার হাতে ধরাল। নমিতার বাছেও নাকি চাল্লৈশ টাকা আছে। দ্খানা টিকিটও আমার প্রেটে গাড়েজ দিল।

— আমি— আমি একলা খাব। তার মানে। হতাশ এবং কি:ভিং ক্ষেপ্সামা আমি বলা উঠলামা।

কেন তুমি কি খোকন নাকি যে একলা যেতে পার না। ওঠা ওঠা গাড়ী ফেড়ে দেবে।

গাড়ী ছাড়ল। সুধীনকে আর দেখা গেল না। তবে গাড়ীচলার তালে তালে আনার ভেডরের রাগ কোড এবং ওর চালাকিছে কলার ধরে, চল তোকেও যেতে হবে, বলতে না পাররে কন্টা কেমন বেন কেটে বেতে থাকল। নমিতা শোকে এমনই আছের জানালা। দিয়ে নির্বাক তাকিরেই আছে কেবল।

শব্দ করে গাড়ী চলল। লাইন বদকানের আওরাজ উঠছে। গাঁত এখনও তাঁর হরনি। দ্ শালেই এখনও শহর। দিনের রোদ পড়ে রবেছে বাড়ীগ্লেল গারে। তারপর কিছুটা সময় কাটতেই গাড়ীর গাঁত বাড়জা। শহর-তলী পড়জা। সব্রেরও দেখা মিলল।বেন্দ কর্মাক ভাব ক্রমদঃ হারতে থাকল। প্রুর্ গাছলাছালি স্বে অদ্বে শস্যভূমিতে শেষ বিকেলের তল নামতে থাকল।

জিজ্ঞাসা করলাম কথন আপুনি খবর গেলেন?

নমিতা বাইরে থেকে চোথ স্বিরে আমার উপুর ফেলল, দ্পেনুরে। স্ববোধবাব, নিজেই এসেছিলেন।

আাকসিভেন্ট হয়েছে কিভাবে?

—আমি কিছুই জানি না। নিচতা কণালের ছল সরাল। নড়েচড়ে ধসল, শ্নেই আমি কাঁপতে স্বা, করেছি। কি যে হয়েছে ভগবন জানেন। এখনৰ তো আমি কিছুই ব্রুতে পারছি না।

—সাংখাতিক নিশ্চয়ই নয়। আর কালই তো একে কলকাভাতে স্বোধবাব্রা নিয়ে আসবেন।

নমিতা উত্তর করেল না। "মামি দীঘাদনাস ফেললাম। বেশ কিছুটা পর নমিতা আবার ফলা সূর্ব করেল। সীতানাথের কথাই। আমিও হোগ দিলাম। শ্নলাম এই মোটর ডুইভিংটা নমিতার বরাবরই অপছনদ। এ নিরে সে ফাড়াও করেছে।

আমার পাশের ভদ্রাক বেশেকরি
আমানের কথাতেই কান পেতে ছিলেন। গলা
বাড়িরে দুর্ঘটনার বাগোরটা জানলেন। বেশ
মোটালোটা চেহারা বড় মুখ, কালো গারের রং
ধনধরে সালা সাট গারে। তান খন বিভি
থাছেন। কেন ব্রুলার না আমানের বাগোরে
বশই আগ্রহী। তিনি গাড়ীর ভিড় আাকসিডেণ্ট তো এখন জ্বভাত থেকে জি টি
রোডের ওপর তাঁর দেখা এক লার
দুর্ঘটনার ছবিও তুলে ধরলেন। ভ্রুইভাব
ভদ্রলোক নাকি থেখিলেল গিরেছিল। মানুব্
বলে চেনা বাছিলে না।

পাশেই নমিতা। এ সৰ শুনে না আরও নাডাস হয়। কামেলা তো আমাকেই পোহাতে হবে। সুভেরাং কথা ঘোরালাম আক্র দুর্গাপুর কথন গাড়ী পোছাবে কলতে গারেন?

—প্রার আটি। ধর্ন। ভদুলোক বলকেন ফাস্ট ক্লাশ গাড়ী মগাই। তেট প্রায় করেই না। বেশ কিছ্টো সমর চুপচাপ কাটল তারপর গলার স্বর নামিরে নমিতাকে জিল্পাসা করলাম কোন হাসপাতালে আছে? যাড় নাড়ল নমিতা। অথাং জানে না।

—শ্বজৰ কেমন করে বাতিতে? আর বাতে হাসপাতালইবারোগী দেখাবে কেন? আমার গলার উদেবগ ফুটগা।

নমিতা সাজা দিল না। বাইরে চোণ রাখল।

গাড়ীখানা এখন বেশই গতি পেয়েছে। একটানা একটা শব্দ লাইনে চাফার ঘর্ষপের এবং কম্পার্টফোটগুলোর নাচানাচি করার বেজে চলেছে। স্নোদের রঙ আরু নেই।
দু'ণাশের প্রকৃতি এবং নীল আকাশ
দুশিউণোচর হচ্ছে। তবে কেয়ন কেন কলাও
আভা। ইতে অপস্রেয়ান গাছগাভাগি
ক্ষেত্থামার এবং প্রেরভোব ব্রবাড়ীও
দেখা যালেও।

আমার চোখে অবশা সবই কেমন ফর ধোঁরা ধোঁরা। আমি বেশ ব্রুভে পার্বাহ দ্বাপুরে গিয়ে অস্ক্রিধার পত্তর। স্থান তো বেশ ছেকে। ভারক না দ্বাপুর পে'ছিভে রাতি হবে। শীজানা নাথকে দেখা বোনক্রমেই সম্ভেশ নয় আর্থ আমিও তো একথা ভাষকার বা

80% कम मारम वरे किनरवन?

আশাতীত স্কুল্ভ নতুন আনকোর। বই পেতে হলে এখনই আলকার-বিটা ব্রু ক্লাবের সদসা হোন্। কোনো মাসিক বা বার্ত্তিক চীদা লাগে শাএককালীন রেজিসট্রেশন ফ্লী ১ টাকা মানু। ক্লাব-সদসার। গড়ে ৪০% পর্বেশ্ব
ডিসকাউনেট বই কিনতে পার্বেশ। সদসা থাকার মূল সর্ভা : ক্লাব-নিবালিভ
ডালিকা থেকে বছরে অন্ততঃ চার্ল্ডানি বই কিনতে হবে। ভাক-এরচ স্কুল্ভ।
বই ভি পি-তে গোলে দাম দেবেন। সদসা হলেট কিনাম্লে। গাল্প স্মাচার্ক
মাসিকপর নির্মাত পাবেম। ১৯৬৬ সাল থেকে করেস হাজার গাল্যতেশা এই
অভিন্য সন্মানজনক ব্রু ক্রম বাব স্থার প্রতি আক্রম। আলমি এই
জানাজন তিনিই স্থেল স্বোলা বিল্য বাক-ব্যার প্রতি আক্রম। আলমি এই
জানাজন তিনিই স্বোলা বিল্য বাক-ব্যার স্বান্ত্র। আলমি এজনো
সদসা হন্দি। জাজেই ১ টাকা আন্ত্রিয়া শাসিরে বিশ্বন বিস্কৃতি উস্কৃতি ভিস্কৃতি ভিস্কারএকসপে ১৫ টাকা দামের বই কিনলে ৪০% ভিস্কার-ও ভিস্কার ৫ টাকা
দামের বই বিনাম্লো উপ্রৱ পাবেন।

এখনি সদস্য হলে মান্র ৬ টাকায় পাবেন জ্পান্তাধনে এছ দেশবন্ধন চিত্তরঞ্জনের জীবন-বেদ ১২

নৰ্শনাল মাইতির গণিতের কথা ও কাহিনী ছোটদের মন থেকে গণিতের ভাতি দ্র করার পক্ষে একান্ড সহায়ক হ

জনপদ ঃ প্রফল্ল ক্মার সিংহ ৮্
অম্ত ও দেশ পতিকার স্প্রতিষ্ঠিত নতুন উপন্যাস

্রায়াক প্রশানত গ্রহ টাঃ ৪;
দ্টি অভিনৰ নাটকের সংকলন ব্রব্য আধ্নিক, টেকনিক অভিনৰ,

চরিত্রস্থাল জীবন্ত, সংলাপ রচমার ব্যাধর দীশিত।' — অব্যক্ত এক ধরণের সপ্রতিভতা বেশ অনায়ালে টেমে নিরে বার পড়াডেও ভালো! — বেশ

এবং সীমা

উত্থানপদ বিজ্ঞানী নতুন বাদের কার্য্য দাম টা ৩.৫০

শালকি হোম্স্ফিরে এলেন

কোনান ভরাপের বিশ্বখাত গোরেপা গ্রপের বড় আকরের নতুন মুক্রণ বেরুছে। ১৮ টাকা। গ্রহেকদের জন্ম ১২ টাকা, অগ্রিম ৫ টাকা।

ত্যাল্ফা-বিটা বকৈ ক্লাবের পদশ্য হয়ে বই কেনাই লাভজনক ৫৫-১ কলেল পাঁট, ভেডলা, কলকাতা ১২

সামান্তাকে শানিকে অমান্তালে হাওড়া

ক্রিকারে টিকিট নিটার্ল দেওলা বেড । ঠেটি
ক্রিকার ক্রেকা আফলোবকে আমি হলম
ক্রিকার ক্রেকা ক্রেকার । ক্রেকার আছে
ক্রিকার ক্রেকার । ক্রেকার আছে
ক্রিকার ক্রেকার । তারপর দুর্গাপ্রের
ক্রেকার আকারতেট হরেছে । ক্রেকার নালে
ক্রিকারে ক্রাকার ভ্রেকার । ক্রেকার নালে
ক্রিকারে ক্রাকার ভ্রেকার । ক্রেকার ক্রাকার ভ্রেকার ক্রাকার ভ্রেকার ভ্রেকার ।
ক্রিকারে ক্রাকার ভ্রেকার ভ্রেকার ।
ক্রিকারে ক্রাকার ভ্রেকার ভ্রেকার ।
ক্রেকারের ভ্রাকার ভ্রেকার ভ্রেকার ।
ক্রিকারের ভ্রেকার ভ্রেকার ভ্রেকার ।
ক্রিকারের ভ্রেকার ভ্রেকার ।
ক্রিকারের ভ্রেকার ভ্রেকার ।
ক্রিকারের ভ্রেকার ।
ক্রিকার ক্রেকার ।
ক্রেকার ভ্রেকার ।
ক্রেকার
ক্রিকার
ক্রেকার
ক্রে

সাধাটা রাস্তাই নীরব রাইলাম।
আমার কেবলাই নিজের মাথার চুল ছি'ড়তে
ইচ্ছে করল। কমে সংগ্যা এবং রাতি নামল।
কম্পার্টমেণ্টের জালেনা জনলে উঠেছে;
বাইরে প্রে অদ্যে আলো জনসহে।
কাটবাট করে সরে বাচ্ছে এক একটা ন্টেখন।
কর্মানে পাশের ভপ্তলোক নেমে গেলেন।
ক্রিডাকে অস্বিধার কথা তখন না বলে
পারজাম না।

রেজিষ্ট্রি বিবাহ অফিস

মোট ১৬ টাকায় রেজিস্টি বিবাহ

এন কে ছোৰ জে-পি ম্যা**রেজ অফিসার**

১১৭, জেলবচন্দ্র সেন ন্যুটি কলি-৯, ফোন ঃ ৩৫-৩০৪৮



नियला रलन हन्त ना ठिक भारत स्तर। আক্রিভেন্টের কথা বদলে ঠিকই চিনতে পারবে। নইলে থানার যাব। দুর্গাপ্রে নেমে নমিতা ট্যাক্সি করার কথা বলল। সামনের হাসপাতালে প্রথমে পরে স্ব-গলোতে খোঁজ কথবে। একজন টাকেসি-ড়াইভারকে সর কথাই বললাম। ভদ্র-লোকের বাবহার অভাতত ভাল। আাকসি-ডেটের ব্যাপারটাও দেখলাম জানেন। क्जांकन अक्षे कात्मा त्राहात ज्यानवात्राकत তো। ভেতরে জাইভার ছাড়া কেটই ছিল ন। পিছন থেকে একটা লবি ধাককা দিয়েছে। রা^হতা থেকে ছিটকে এক[্]। গাছে হ্মডি খেয়ে পড়েছে গাড়ীটা। না জাইভার ভদ্রলোক বেংচে গেছেন। তবে শোনা কথা তার। নিজে দেখেন নি। হাসপাতালে আছেন कारनन सा

ভাগা ভাগ প্রথম হাসপ্তাবেই
আমলা থেজি পেলাম সতিলাথের। দেখা
হল না। দ্রের মান্য বলেই বেদকতি
থবরটাকু পেলাম। এখন ঘুমাকেও। ভয়
পাবার মত কিছা নেই। কাল না ভোক
পলাম বোধহয় কলকাতার মিফট কলা
যেতে পারে।

আবার উদ্কশিতে উঠলাম। ব্যবাস কি করমেন? কলকাতা ফেরার গাড়ী তের সেই শেকারতে।

নমিতা বলল কলকাতা ফিরব কেন। দেখেই যাব। আজ থাকব এখানে।

- —কৈথায় ?
- —কোন স্টেশনের ওয়েটিংরাম।

ন্মিতার ম্থের ভাষ কেটেছ। হাস-পাতালোর ডাঙারের কথা শানেই বোক-করি। চোথের ছলখলানিও নেই। আম নীরব। স্পেশনে এসে কাছেলই একটা হোটেলে আমা আওবা-বিহার কলোম। বিনিম্ন রজনীই কাটাতে হবে। ভাগে আগে অকারবে বেড়ানর জনো স্টেশন প্রাক্তিমের্ড এসে দড়িলাম। কিছ্টো হটিহাটি বরে বদি মাথার ভার লাখব করা যায়।

প্রায় জনশ্লোই দেটশ্ন। বাতি দশ্টা নাগাদ দ্রগামী টেন হাওড়া থেকে জাসবে। এদিকে হাওড়া ফেবার কোন গাড়ী শেকমাতের আগে নেই। আনবা অবশ্য ফরছি না। ওভারতীয় শার হরে
ওাদককার ভাউন শায়টফরের দিকে
গেলায়। আলোকিত সেটশন চন্ধা।
তালধকার দুরে অদুরে। আলোকারতার
ইতস্ততঃ। কোথাও শান, কোথাও
ইতস্ততঃ। ওধারে বাজারসার। এখনও
যোন সংগেরয়। আমারা শায়টফর্ম ধরে
পশ্চিমে তেওট চললাম। গোকা ঘরে কাুদে

—আ**চ্ছ দর্গোপরে আপনার চেনা-**জানা কেউ নেই?

—না। আর **থাকচনও সাবার কি** দলকার। নমিতা জোরে **শ্বাস ফেলে বলল**, আপনার খবে অসংবিধা হল না?

বলগান বিপদ তো অস্যবিধা**রই স্থি** করে। স্থিনাথ সুস্থ হলে **এই অস্**র বিধাই আমার অহংকার হবে।

—সুধীনবাবং আনাল সংগে **জংড়ে** সেওয়াতে অপেনার বংবে রাগ হয়েছিল নাং

—মিথো বলব রা। খানিকটা উক বল্লিভনাল বৈকি। তবে তার ছিটে-কৌন্ত এখন আরু নেই। এখন ভার্টাই স্টান্থ তাজাতাজি সাম্থ হোক।

— দ্র্যা। কত্দিনে যে হবে। নাম্তা আ্যার দিকে তাকাল না। হা-হা করে বাতাস দিকে। মাথার ঘোমটা নেই। করে বিজ্ঞানি করি করিছে। মাথার ঘোমটা নেই। করে বিজ্ঞানি করিছে। স্বাস্থ্যের একটা উল্ফোল্ডই চোগে পড়ল গলার সর্হার চিন্চিক করেছে। স্বাস্থ্যের একটা উল্ফোল্ডা আছে নামতার। স্থাপোর সেল আরও বেড়েছে। কিংবা হয়ত আ্যার এই চোগেই বলল, আ্যানতো ভেবে কোন ক্লোকনারা পাছিছ । কি করে যে চলবে। আনেন স্বাস্থ্য কিছে কেই। ভাল ক্রারে যে আনেন স্থানিকের কিছে করি করি করি বি

—আপনি ওসব ভাবছেন কেন? ব্যঙ্গাড়া ও বি এ পাস করেছে। খরে কৈচিঃ কলেও চালাতে পারে।

— সে কমতাও যদি না থাকে।

—ব্যক্ত চিন্তা ছাজুন তো। এত অপে ভেগে পড়লে আজকের দিনে বঁচা যায় না। নমিতা কোন উত্তর দিল না। পাশাপাশি হটিতে থাকল আমার। বাজ্ঞান লোগ শাড়ীর আঁচদ গায়ে লাগছে। শির-শিয় করছে গা। একট্র পর থমকে ছাড় ঘোরাল আমার দিকে আমি যে কেন ভয় পাছিছ আপনি ঠিক ব্রক্তেন না। আসলে আমি কন্দেহীছা লাসলৈ আসলে আমি কন্দেহীছা তো বলেনি কেনন করে আমার সংগ্রহণ নিয়ে হারছে।

আমি হতে যাড় ছোনালাম। বিষের পর বৌভাতে আমনা নিমাইকত হরে

কাজী নজরুল ইসলামের **শ্রেষ্ঠ** কাব্যগ্রন্থ

১। রুবাইয়াৎ- ই- ওমর থৈয়াম ---- ১৪:00 ২। গুল বাগিচা---- ৩:৫০. ৩। কাব্য আমুপারা--৪:00 ৪। পুবের হাওয়া----২:0০. ৫। ঘুমপাড়ানী মার্টাপিরি--২:00

মোহন লাইব্রেরী ৩৫ এ, দর্যঙ্গেন জীট ক্লোন-৩৫-০৬৩৩ কলিকাজ: ১ বাসও হয়েছিল স্বীতানাথ আমাদের বর-বাচী বেতে বলেনি বলে। তবে ভেতরে কোন একটা কান্ড আছে বলে আমর। ভাবিনি।

현물에 보기 전투다가 불쾌한 등 없었습니다. 하는 사람들이 되었습니다.

-জানেন আমি খিলে একেবারে সহা করতে পারি না। বাবা মারা বাওরাখ পর দাদার সংসারে শুধু ওই পেটের জনেটে পাঁচ বছর পড়েছিলায়। সব কথা ভংগনা তালিলোও সহা করতাম। বড়-দিদির বিয়ে দিয়ে গিয়েছিলেন মা। সে স্থী হয়নি। মাতালবামী। আমাদের সলো সম্পর্কও রাখত না। মা তো আগেই চলে গিয়েছিলেন। ফলে যাবার জারগা আমার কোলাও ছিল না। বৌদির কাছে চেন্টা করেছি। ভাল হবার আপ্রাণ পারি নি। স্ফেরী নই। বিয়ে এমনি হতে না আমি জানতাম। বৌদি বোধহয আরও ভাল করে জানত। তবে সবেরই তো একটা সীমা আছে। সহা করে করে কেন জানি না আমি পাথর হতে পাগিন। আত্মহত্যার কথাও মনে হয়নি। আচ্মকাই মনে হয়েছিল নিজের আশ্রয় খ'জে নেবার একটা চেণ্টা করব। বৌদি যা বলতেন তঃ খাটিনাটি না বলালেও বাঝাতে নিশ্চয়ই পারছেন একজন যুবতীকে কি ধরনের কথা বিরম্ভ গলগুহ পোষার যন্ত্রণায় মেয়ে-মান্য বলতে পারে। দ্পারে তাই এক-দিন সেক্তেগ্ৰেজ এসম্লানেডে দাঁড়ালাম। গা দরদর করে ঘামছে। অত মান্ত ভিড গাড়ী শব্দ কিছুই আমাকে হ'রে যাচ্ছে না ভেতরে ভেতরে ভীষণ রকমের ক**পিছি।** ফিল্লে যাবার কোন ইচ্ছা নেই। অথচ সামনেও এগতে পার্রছি না। এক জারগার দাঁডিয়ে থাকেনি। চারপাশ ঘুরেছি। थिएतत स्भारतिस নাড়িভুডি ছি:ভূ:ছ। আর জানেন ওই খিদেই আমাকে সাহসী করল। ট্রামন্টপে দাঁড়িয়ে থাকা এক ভদুলোককে সরাসরি বলে বস-লাম আমাকে কিছ, খাওয়াবেন। ভীষণ **থিদে পেরেছে। ভদ্রলো**ক বিস্ফার্থিত চোখে আমার দিকে তাকালেন। তারপর একটা রেস্টেরেল্টে নিয়ে গেলাম। গোগ্রাসে আবো খেলাম। তারপর সব কথা বললাম। ওই ভদ্রলোকই আপনাদের বন্ধ:। নমিতা গামের কাপড ভাল করে क्षणन ।

আমি নিম্পান নিমতার দিকে ভাকাতে পারছি না তাকালেও অন্ধকারে আমি ওর মুখ দেখতে পাব না। আশ্চর্য ! এত বড় কাশুন্টা আমারা জানি না। সীতানাথ চাপা শ্বভাবের। আমাদের বলেনি।

কিন্তু নমিতাকে এখন আমি কি কৈন্তে পাৰি? কি? কি হল। ভাগাটা আমার তো দেখছেন।

ৰীতানাথ আমাদের কিছুই বলেনি।

নিজের স্থাকৈ কে লাভায় ফেলতে
চায় বজনে। নমিতা দীর্ঘশ্বাস ফেলল আমিও বলতাম না। কিন্তু কেন জানি না হঠাং ইচ্ছে করল বলে ফোলে। আমি তো কাদতে ভূলেই গিয়েছিলাম। আপনার বন্ধ কাদতে আবাহা শিখিয়েছিল। এখন জানেন আপানার কাছে বলে ধেশ হাল্ড। বোধ করছি। কাদলেও এমন হাল্ডা বোধ ফালাম।

এরও কোন উত্তর দেওয়া যায় না।
দ্যুংখ্যে পার সংখ এলে আকাশে লাল মেঘ
দেখেও আগানের কথাই মনে হস্ত:
নাম্নতাকে দোষ দেওয়া যায় না। ভাষণ
দুবালিতায় ও এসব কথা বলে ফেললা।

আমার এখন সাঁতানাথকে মহত বজ মান্য বলে মনে হাজল। অথচ আশ্চর্য এই সাঁতানাথবাই ন্যেটিনায় পড়ে। আমি কিভাবে যে নমিভাকে এ সময় সাক্ষনা দিই।

সীতান্থের জী নমিতাকে প্রক্ত-পকে এই আমাণ প্রথম দেখা। কিছেব সময় দেখেছি কনের সাজে। রোগাটে চেহ রা হলেও মুখের প্রী ছিল। তারক একবার ওবের বাড়ীও করেছি। কর হর্মা বিশেষ মমিতাল সন্দো। সাঁতালবেশ সপোই কথা বলেছি। তবে তথনা সেংগছিলাম বিয়ের জল লাগা শরীর ও: লাউরের সবজে ভগাল উল্জ্বল প্রাক্তি হরে উঠিছে। সংসারে প্রাচুর্য ময় একট ভিমলম ভাব এসেছে। স্কেরী য়্ল হরমি তবে শরীরের বেখায় আকর্ষাকের মাদকতা দেখেছিলাম। এবং আনরাসের অন্যান করতে পেরেছিলাম শৃৎপ্রাভা দ্বীবন ওরা স্থা।

—িক আশ্চর্য আপুনি যে চুপ ছাই গেলেন। নমিতা মুহুতে যেন বছত ফেলল ফাঠ্যবর। বজল, কথা বজুন। নিন আর দুঃগের কথা বজব না।

পাশাপাশি হেণ্ট আমনা **একেনারে**থানেত এনে পড়েছি পলাটফমের । **নাকেন**কান্ধকার । দ্বে সিন্দান্তের **লাভ**আলো ৷ বাস যাতায়াতের **লাভ শোনা**বাচেত ৷ কিন্তু নমিতা হঠাং বলতে কোন
কোন পড়াবিনা কি কটে গোল এই।
বাড ঘালিয়ে আমি এর মাধ্য দেশতে কোনা
না ৷ ভান্ধকানে কেনে আছে ।

---নিন আপনার কথা বলুন। **নামত**।

সংস্কৃতি গ্ৰুথমালা

বাঙলার সামাজিক ইতিহাসের ভূমিকা

শ্রীসতন্দ্রমোহন চটোপাধায়। বাঙলার হাজার বছরের সমাজ-জবিশের ফিন্ত[্]নের ইতিহাস প্রতি শতক ধরে আলোচিত। তথাসম**্ম অথচ সহজ্ঞারী** কর্মেকটি বিরক্ত মান্টির টিঃ ১৫ ০০।

কালিকট থেকে পলাশী

্প্রীস্তবিদ্বোহন চট্টোপাধায়। পাশ্চাত। জাতিগ্রালর প্রাচ্য অভিযা**ন কাহিনী।** ২০টি বিবল মন্ত্রিন (টাঃ ৬·৫০)

বাঙ্গালার কী**ত্নি ও কীত্নীয়া**

সাহিত্যাবন্ধ শ্রীচ্যাবন্ধক ম্থোপাধায়। কীতানের তত্ত্ব, ারবর্তান ও বিশিক্ত কীতানীয়ানের জীবনক্ষা। কলেকটি ছবি। টিল ১০০০।

বাক্ডার মন্দির

শ্রীঅনিয়কুমার বন্দোপধোয়। বাকুড়ার ওথা বাঙ্গার **মন্দিরগঢ়ীলর ব্যাপড়ালৈলী** ও ইতিহাস। ৬৩ আ**ট**াংলট। |১৫·০০1

উদ্বাস্ত্র

্জীতিরকায় বলেলপাধান্য। স্বাধীনতা পরবত্তী উপবাস্তু সমস্যা ও সমাধান্-প্রচেটী। বাঙলায় একমার বই। টিঙ ১০ ০০।

সাহিত্য সংসদ

৩২এ, আচার্য প্রফল্পেরেড। কলিকাতা—১

--আমার কথা ?

শ্বহুতে ছেলেমান্ত হয়ে ওঠ দীয়তার চপলতাভরা গলা শানে স্থানলাম সামোগট পেলাম না।

—আহা। নামতা মাথে শব্দ বাজাল তারপর চট্লাপলার বল্লা, অনা কিছু বাংপার আছে নিশ্চয়।

—থাকলে যে কি খালী হতাম আনি।
অতীত এবং দীতানাথের কথা ভুলো
আমিও নমিভার কথার খেলার মাতলাম।
মাখা নাচিরে নমিতা বললা তার চেট্টা

—চেন্টা করলেট কি হয়। সীতানাথ তো পারেনি। তাই আপনাকে নিয়ে এসেছে।

ন্মিতা বলল, ও একটা বোকা! দেখছেন না....।

ৰূপা ধরে নিয়ে বলগাম আমাকে দেখে কি খবে চতুল বলে মনে হয়।

—ন। না নামতা শব্দ করে
হাসলা শরীর ভাগাল। বলক চতুর
বলকি না। কিল্প আপনার বা চোখ না
না থারাপ কথা বলকি না। আপনার
চোখ ভারী মিণ্টি। যে কোন মেরেই
প্রেটো পাডবে।

আনার আন্তল কেলে উঠল নামতার কথার। এই ফেলনের শেষপ্রান্ত নিজনি

Control of the Contro

জনহীন। নিষ্ঠিত পরিক্ষার দেখা বার না। এক ব্রতীশরীর আ্লো-আঁধার মাখা বড় রহস্যার। তার শ্বাসের শব্দ কালে বাজে। শরীরের ছাল উঠে আ্লে নাস্থ্যে। শব্দেরা বেন মায়াখন হয়ে বসে থাকে চারিদিকে শ্রীর হয়ে ওঠার অপেকার।

শ্বর ব্যক্তগাল किष्ट তাদ, রে অট্রালিকার আলো এবং অন্ধকার বড पातावी इत्त्र छक्ते। । । वदः धे नगर সীতানাথের স্থা নয় আছার কি বে হয় শরীরে নীচ হারে বাই। কেন নামতা হঠাং কথার এমন সরে আনজা? কেন? কেন শামি সার দিয়ে কথার খেলা চালাতে দিলাম? সীতানাথ হাসপাতালে বেডে আগায়ীকালের উন্বেগ ৰ ম'ত আমাদের মধ্যে চেপে অন্ধকার করে রাখার তথা। আদ্বর্ণ। কি চমংকার আমরা এক-জোড়া ব্রক ব্রড়ী এখন অন্ধ্রারে...। একটা সপিল হিমলোভ আমার শ্রীরে কেপে কেপে ছোটাছটি করে। হঠাং ৰদলে ৰাওৱার নমিতার রহস্য টের পাই

নমিডা কি টের পায় আমাকে! বসে এঠে কলকাতা ফিলে তো আপনার দেখাই শাব না। অথচ আপনারাই জরসা। ঋগুন ব বিছালায় পড়ে জকল।

দল বৃদ্ধ করে বৃশ্জান আম্বর তে। ববংছি। —কানি: দীয়তা এক পা সমনে কাড়িয়ে বাড় ভাগাল আগনাকে আনন বিশ্বস হয়।

ক্ষান্থকারের মধ্যে কি নমিতার চোথের মধ্যে দপ করে নক্ষ্য ক্ষান্তে উঠল। ব্যক্তান চলুন। এখানে চলাকজন নেই। অভাবে বাভিয়ে থাকা ঠিক নর। মাহি বাভ্যেত্র।

-746

—বিশদ হতে পারে। দিনকাল তে। ভাল নয়। হয়ত কেউ...। আফি কথা শেষ কার্মি।

—আ**গ**ি তা **আহেন**।

—ত্য:ম।

—হাা। রক্ষা করতে পারবেন নাই শমিতা বাড় উ'চু কমে আবার স্থিকে ভাকার।

আমি ব্বে উঠতে পারি না। দুর্ভাবনার কি মমিতার মাথা খারাপ হয়ে গোল নাকি? শভ গালার বলে উঠলাম ছেলেমান্ত্রী করবেন না চলান।

নমিতা থলখল করে হেসে উঠল,
আপনি ভয় পেরেছেন। আপনার পদা,
কাপছে। ভাবছেন আপনি বাদ নিজেই
বিপদ ডেকে বসেন। হাসি থামল না।
তারপর গলার পরে যে কি আনল কিসের
মায়া আমি দেখতে পাছিল না তবু টেল পেলাম চোখের ভারা নাচল শারা মুখমেশুল তীর আলোর নাচল এবং
যাবতীর সেই আদিম শাণিত অলের
কলকানি ফুটে উঠল ঠোটে হাট ভাই
আবার হয়। আর বাদ বা হয় ধর্ন হয়ত
আপনি আমাকে

অনারাসে নমিতা আর আনি তে: এই অন্ধকার নিজ'ন স্লাটফরে'র ভাষ প্রান্তে আর একটা গল্প তৈদি করতে পারি। কিন্তু তখনই হনে হর ন্মিতা স্বীতানাথের বিছাল্র পড়ে থাকাকাস্বীন সময়ের ভূমিকা তৈরী করছে। সপ্রে সপ্রে হিম বৃণ্টি শুর, হয়ে যার আমার উপর। সৰ উত্তাপ নিবে যায়। আমি স্পন্ট দেখতে পাই এসংলানেডের উপর দাড়িয়ে শ্রিড। আর এক স্বীতানাথকে খ্রান্তার। কি মারাশ্বক বিশ্বাস জানি না একবার পেলেছে বলেই ওটা সতা ময়। প্ৰি**থ**ীতে স[†]তানাথদের সংখ্যা বড়া অলপ। ন**লিভার**। এস স্পান্নডে দ্যিজুৱে অম্বকারের শিক্ষিলভায় কেবলই গড়িয়ে পড়ে।

আমি একটা শক্ত কথা বলতে গিয়েও থমকে বাই। বটে করে কানে বাকে নমিতার কথা। জানেন আমি খিলে একেবাকে কহা করতে পাগি না। কি ছেলেমানুক। শাধ্র টের পাই কর্তবা আল রাত কি আগামী-কাবই আমার শেষ হয়ে বাজে না।

ক্ষু ায়তন শণ্প প্রতিষ্ঠানগুলি গণনার কাজ পুরোদমে চলেছে

গণনাকারীদের কাছে সঠিক ও সম্পূর্ণ তথ্য দিন। এতে পরিকল্পনা স্থির করার স্ববিধা হবে এবং আপনিও লাভবান হবেন।

> উল্লয়ন কলিদনার ক্ষ্যোর্ডন শিল্প ভারত: প্রকার

> > - fo, a, fo, for 48 ist-

Market and the second of the s



প্রধান বিচারপতি এ এন রায়ের নেতৃত্বে সংশ্রীম কোটোর সাতজন বিচারপতিকে নিয়ে গঠিত সাংবিধানিক বেণ্ড জারতের রাষ্ট্রপতি নিবাচন সম্পর্কে সংকারের জন্মকুর্কো রাষ্ট্র একটা বড় রক্ষের সাংবিধানিক আন্শুচয়তার সম্ভাবনা দ্বে করলেন।

গ্ৰুজনট বিধানসভা ভেলো দেওয়ার সময় থেকেই প্রদানটা উঠেছিল। প্রদানটা হল রাণ্টপাত নির্বাচনের সময় যদি এক বা একাধিক বিধানসভা বাতিল অবশ্বায় থাকে ভাইলে বিদায়ী রাণ্টপাতর কাষ্ট্রাল উত্তীর্ণ হওয়ার আগে এ নির্বাচন অন্তিত হতে পারে কিনা অথবা কোন একটি বা এক্ষিক বিধানসভা যাতিল হয়ে থাকলে রাণ্টপতি নির্বাচনের কোন বাধা স্থিত হয় কিনা।

আগামী ২৪ আগণ্ট রাণ্ট্রপতির পণে শ্রী ভি ভি গিরির কার্যকাল **শেষ ছলে** হাওয়ার ক্থা। তার আগে সংবিধানের এই প্রশেনর একটা চ্ডোণ্ড মীমাংসা **হওয়ার**

প্রয়োজন ছিল।

স্প্রীম কোটের সংবিধান বেণ্ডের ই।রে সেই প্রাক্তন পূর্ণ হল। ২৭ প্র<mark>াক্তাপী</mark> এই রায়ে সংবিধানের নির্দেশ ব্যাখ্যা করে থলা হয়েছে যে, বাণ্ডাপাত প্রদের মোয়াল শেষ হওয়ার আ্লেই পরবতী রাণ্ডপতির নির্বাচন অবশ্য সম্পূর্ণ করতে হবে, সে সময়ে কোষ

রাজ্যের বিধানসভা যদি বাতিল অবস্থার থাকে ভাতেও কিছু আসে-যায় না।

রাণ্ট্রপতির আদেশে গ্রেরাট বিধানসভা বাতিল হয়ে যাওয়ার পর রখন রাণ্ট্রপতি নির্চাচনের উপর এই বাতিল আদেশের সাংবিধানিক প্রতিক্রিয়া নিয়ে বিভিন্ন মহলে আলোচনা হচ্ছিল তথন গত এপ্রিল মাসে শোসাদিনট পার্টি ও জনসংখ্যর করেকজন সদস্য সংসদে প্রশন্তি ভোলেন। আইনমন্ত্রী প্রীএইচ আর গোখলে এই প্রদেশন অবাধে বলেন ক্রে সংগ্রা বিধানের একাদশ সংশোধনের পরার ৭১ নন্বর অনুচ্ছেনের সংগ্রা নতুদ হৈ ৪ নন্বর উপশ্বারির একাদশ সংশোধনের পরার ৭১ নন্বর অনুচ্ছেনের সংগ্রা নতুদ হৈ ৪ নন্বর উপশ্বারীট যোগ করা হংরাই তাতেই বলা আছে বে রাণ্ট্রপতি নির্বাচনের নির্বাচনের উপশ্বারীট যোগ করা হংরাই তাতেই বলা আছে বে রাণ্ট্রপতি নির্বাচনের নির্বাচনের ভালি আন্তর্কান করেন যে কোন বিধানসভা বাতিল হারে থাকলেও রাণ্ট্রপতি নির্বাচনে যে কোন বাধার হারে বা ৭১৪) অনুচ্ছেনের মধেই তার বাংলার রয়েছে। তরতে, প্রীগোখলে আছেল করেন যে, এবিষয়ে সর করার জন্ম সংবিধানের ১৪৩(১) অনুচ্ছেনে রাণ্ট্রপতি স্প্রীয় কোটের অভিনত জানতে চাইবেন। সংবিধানের ১৪৩(১) অনুচ্ছেনে রাণ্ট্রপতিকে প্রায়ীক কোটের অভিনত জানতে চাইবেন। সংবিধানের ১৪৩(১) অনুচ্ছেনে রাণ্ট্রপতিকে প্রায়োজনবাধে গরেভ্রপ্র বিষয়ে স্থানীন কোটের অভিনত গ্রহণ করার অধিকার মেন্ড্রা আছে।

সূত্রীম কোটের রায়ের পর এখন রাম্পাত নির্চাচনের প্রস্কৃতিপর শারু করার পর খোলা হয়ে গেল। এইবারই প্রথম আমানের দেখা এমন এক সময়ে রাম্পাত নির্বাচন হতে চলেছে বখন একটি বধানসভার সদসারা (একমাত স্পীকার বাদে) এই নির্বাচন হতে চলেছে বখন একটি বধানসভার সদসারা (একমাত স্পীকার বাদে) এই নির্বাচন ছাট দিতে পারবেন না। ভারতবর্ষে এর আগে যে পাঁচবার রাম্পাতি নির্বাচন হাজা বিধানসভা বাভিল অবস্থার ছিল না। ১৯৫৭ সালে বিভাগে রাম্পাতি নির্বাচনের প্রাক্ষণালা হিলা মহাসভার প্রাক্ষণ সভাপতি ওঃ এম বি বালে পাজাবের প্রীরামনাথ কালিয়া স্প্রেমি কোটে এই বলে আগতি ছলেছলেন যে, বালিমি বালিনের যে তারিখ ঘোরিত হয়েছে সে তারিখের মধ্যে হিমালে প্রকল্প হবে কালিমিন বিভাগে এই বলা কালিমিক সমল্প হবে বালিমিন বিধানিক বালিমিন বালিমিন বিধানিক বালিমিন বালিমিন বালিমিন বিধানিক বালিমিন বালিম

এবার স্প্রীম কোটোর অন্যতম বিচায় বিষয় ছিল গাল্যটি বিধানসভা তেওঁ দেওগার পর ঐ বিধানসভার সদস্যদের বাগ দিয়ে রাম্প্রপতি নির্বাচন করা প্রকে ঐ নির্বাচন এবাগল সংশোধনের আওতার আসবে কিনা স্প্রীম কোটোর সংবিধান বেপ্তের সিম্মানত হল হার তা আপবে। বেপ্তের রায়ে বলা হয়েছে, রাষ্ট্রপতি নির্বাচনে সকল বিধানসভার সদস্যরা অংশ গ্রহণ করতে পারজে উত্তম কিন্তু যদি তা সন্তম ন হয় তাহুলেও কাতি নেই, নির্বাচনের সময় স্বেস্ব বিধানসভার সদস্যরা ও সংস্বাদের উত্তয় কলেকর নির্বাচিত সদস্যরাই ভোট দিয়ে রাণ্ট্রপতিকে নির্বাচিত করতে পারজেবিক হ

গ্ৰেন্তাটেন পন্ন বিচাৰেও বিধানসভা ভেভে দেবার দাবীতে বখন আন্দোলন চলাই তথনই সংপ্রীম কোটেন এই বার পাওয়া গৈল। এগত দাবা ল সংবিধানের একটা সভাবা সংকট এড়ান গৈল চাই নম সভবত এই বারের একটা রাজনৈতিক ভাগেলক চলাকে জালাটার পন বিহান বিধানসভা বাড়িক কবার জনা যেসর সল আন্দোলন চলোকে তালা যদি লাহ বাড়িপার নির্বাচন নিয় একটা সংবিধানিক সংকট সন্দিল উল্লোখ্য এটা কনে থাকে তাতলে সংগ্রীম কোটোন এই রায়র পন এখন তালের বাণগনটা ভোল দেবত কনে থাকে তাতলে সংগ্রীম কোটোন এই রায়র পন এখন তালের বাণগনটা ভোল দেবত দেবত কনে থাকে তাতল সংগ্রীম কোটোন এই রায়র পন এখন তালের কালাক কিন্তা কালাক কালা

মধ্যে আরও গোটা ধরেক বিধানসভা ভেগে বেওরা গোলেও ভাতে রাল্মপত্তি নির্বাচন জাটকে ধাকবে না।

এয়নিতেই অবলা দেখা হাজে যে. বিহারে বিধানসভা ভেণ্যে দেওয়ার আন্দো-লম গ্রহাটের মত এমন উচ্চগ্রামে উঠছে না। শ্ব তাই নয়, এ ব্যাপারে বিভিন্ন অকংগ্রেসী দলের ভিতরে বিরোধ দেখা দিচ্ছে এবং বিধানসভা ভাওতে গিয়ে কয়েকটি দল নিজেরাই ভেলে যাওয়ার উপক্র হয়েছে। বিধানসভা ভেণেগ দৈতে নহাদিল্লিকে কাধা क्दार जना क्ट्रकिं एक निर्कारम् अपमारम्य বিধানসভা ছেড়ে বেরিয়ে আসতে বলেছে। CKE K নলের অনেক এম-এল-এ ই এখন দলের নিদেশি মানতে অস্বীকার করছে। জন-मान्धत निर्फाटम के मरमत २८७२ अन्दर्भाव **রধো** ১২জন বিধানসভা থেকে জিলেক্তন। হো ১২জন দলের নিদে^বশ খানেন নি তারা বিধানসভা না ছেড়ে দলই ছেডে **फिराम्बर्ग । अश्याङ क्राअ**र्गालक >वस्म अध-कन-अंत माता मानु एकम प्रतात নিদেশি মেনে পদত্যাগ করেছেন। জনসংখ্যুর মকে সংযাক সোসালিক পাটিত এই প্রাংন শ্লেকে যাক্ষার উপক্রে হয়েছে। সোস্যালিক্ট শাটি এখন আর ভাবের সদস্যদের বিধানসভা ব্যাক পদত্যাগ করতে বলছে না, তার বদলে ছোৰা সাম্যায়কভাবে বিধানসভো ব্যক্ট ক্রার কর্মসাচী গ্রহণ করেছে। সংগঠন কংগ্রেস এখন জাতে ভাদের সদস্যদের পদত্যাগ করার জন্য পীড়াপীড়ি কবছে না।

িজের নিজের দলের হেসর সদস্য পদজ্যাপ করতে রাজী হচ্ছেন না ভৌদের সংগ্রে
কথা বলাব জন্য সোস্যালিক পার্টির চেয়ারম্যান জজ' ফার্নাহেডজ ও সংখ্যক সোস্যালিক
পার্টির নেতা রাজনারায়্য পাট্নায় গিয়েচিলেন। কিন্তু তাতের স্বিধা হল্ন। বিভাব
সংগঠন কংগ্রেসের সভাপতি সতেন্দ্রনারায়্য
বিহল্প বল্লেন, ভীর দলের ২৩জন সদস্যের
জ্ঞানকাকেই বিধানসভা থেকে পদত্যাপ করতে
অস্বীকার করেছেন।

ইতিমধ্যে পালাগিকটারি গণ্ডক রক্ষা করা ব আরুবীন সংবিধানের মাণারা করা বহারে একটি অরাজনৈতিক বিহারে একটি অরাজনৈতিক বিহারে গণ্ডাগিরে হারেছে। বিহারে এই ফুলট পঠিত হারেছে। কুন্দির নাম্য এই ফুলট পঠিত হারেছে। কুন্দির মাথপার নলেছেন, সাংবিধানিক উপারে দ্বনীতি দার করার প্রয়োক্ত বিভাগের কথা ভারা সরকারকে ও জননালাক নাম্যাক্তরে নাম্যাক্তর কথা ভারা সরকারকে ও জননালাক নাম্যাক্তর নাম্যাক্তর

বিধানসভা ভাগার আন্দোলন থেকে বিরভ ভরে বভারার শাসনবাবস্থার গলদগ্রিল দর ভরা সংস্কে আন্দোচনা করাব জনা ও এইসব আলা দ্বা করার উপায় খ্লৈ বের ভরার জনা হববান্ট্যালী ট্যাশাংকর দুগিক ত ও সংক্রেকের এগালজন এম-পি এর মধ্যে ভীজরপ্রকাশ নারার্থের কাছে দুটি প্রেব আবেক্স জানিব্যের। কংগোস এম-পিরা ব্যেল-জন, ভরপ্রকাশ বেভাবে আন্দোলন চ্যালিরে যাক্ষেন সেভাবেই যদি তিনি আন্দোলন
চালিয়ে যেতে থাকেন ভাহলে ফাসিজম ও
প্রতিক্ষার শক্তিগুলি বর্তমান অবস্থার
সাযোগ নিতে প্রলাবধ হবে।

সবোদর নেতা জয়প্রকাশ নারায়ণ অবশা প্রানিধারিত কর্লাস্চী অনুযায়ী বিধান-সভার অধিবেশন উদ্বোধনের দিন বিধানসভা ভেগেগ নেওয়ার দাবীতে পাটনা শহরে বিরাট মিছিল বের করেছেন। এই দাবীতে ভিনি ৫০ লক্ষ মানুষের স্বাক্ষরযুক্ত একটি সমারকলিপি রাজাপাল আর ভি ভাশ্ডারেকেও দিয়ে এসেছেন।

আনাদিকে এর আগের দিন শ্রী এস এ ভাগেগর নেড়ম্বে সি পি আই বিধানসভা ভোগে দেওয়ার দাবীর বিরোধিতা করে পাটনায় একটি বিরাট জমাযোং করেছে।

১০ জনুন থেকে ইসলামানানে ভারত ও পাকিস্থানের মধ্যে যে আলোচনা আবংভ হওয়ার কথা জিল পাকিস্থান একতর্জাভাবে সেই আলোচনাব প্রস্তাব বাভিল করে দিয়েছে। এই বৈঠকে দুই দেশের মধ্যে ভাক্ টেলিফোন টেলিজাফ প্রভৃতির যোগা-লোগ ও যাতায়াতের সামোগাস্থিয়া সম্পর্কে আলোচনা হওয়ার কথা জিল।

ইসলামাবাদে একটি সরকারী ঘোষণায় বলা হয়েছে, ১৮ মে ভারত যে পরীক্ষামালক পারমাণবিক বিচেমারণ করেছে ৩০০
সাকিচ্পানের মানা্য গর্মাছিত' হয়েছে। এই
সরকারী ঘোষণায় আরও বলা হয়েছে , যে, পাকিচ্পান ভার নিছের নিরাপতা ও প্রতিব্রকার জনা প্রয়োজনীয় নিচ্যুতা' পোলে
পর একং অন্কল্প পরিবেশ কৈরি হওয়াব
পর পাকিচ্থান ভারতের সংগ্রে ভার আলোচনা আবার আরক্ষ্ম করতে পারে, ভার আলোনয়।

পাকিম্থানের এই একতরফা অস্বীকৃতির পর ১৯৭২ সালের আগত মাসে সম্পাদিত সিমলা ছব্তি অনুযায়ী দুই দেশের মথ্যে শাহিতপূর্ণ ও স্বাভাবিক অবস্থা ফিরিয়ে আনার কার্যক্ষ সম্পূর্ণ বালচাল হয়ে লেল।

নর্মিরাতৈ একজন সরকারি ম্থপার বলেছেন বে, পাকিম্থান এই আলোচনার কথনই উৎসাহণ ছিল না। এখন সে একটি অছিলা থ'জে বের করে এই আলোচনা বাতিল করে দিল। শ্রীমতী গাম্পী গত হই মে ভুটেকে চিঠি লিখে যে আম্বাস দিরে-ছেন তারপর ভারতের পার্মাণ্যিক বিস্ফো-রণ সমপুর্কে পাকিম্ভানের কোন আশংকা থাকা উচিত নয়।

সিমলা হবি অন্যায়ী পাকিস্তানের সংশা স্বাভাবিক সম্পক্ত স্থাপনের জন্য ভারত অতীতে যখনই কথা তুলেছে তখনই পাকিস্থান কোন না কোন অঞ্চ্যুতে আলোচনা এডিয়ে গেছে।

প্রীক্ষরশ্রণা নারায়ণের কাছে দৃটি প্রথক সিমলা চুন্তির অবাবহিত প্রেই ভারত এই প্রবেদন জানিবাছন। কংশেস এম-পিরা রলে- আলোচনার কথা ভূপলে পর পাকিস্তান পরে, ২২ ছেল, জরপ্রকাশ বেভাবে আন্দোলন চুলিরের অবাব ভূপল, আগে পাকিস্তানের মাটি ইন্দিরা গ্

থেকে ভারতীয় সৈন্যদের সরিয়ে আন্। হোক।

ভারতীয় সৈন্য পাকিস্থানী এলাকা ছেড়ে দিয়ে চলে এল ১৯৭২ সালের ডিসেবর মাসে। ১৯৭০ সালের জানু-য়ারিতে শ্রীমতী গান্ধী ভূট্টেকে চিঠি দিলে। সে সময়ে পাকিস্তান বলল মুখ্যন্দীদের প্রদেশ সেদেশের জানমত ক্ষে হয়ে আছে, এই প্রদেশের নিম্পতি না হওয়া প্রস্থিত আলোচনা সম্ভব নয়।

এনপর হল দিল্লি চুক্তি। ১৯৭০
সালেন আগতি নাস থেকে পাকিস্তানী
বংশবংদীদের িশ ফিরিয়ে দেওয়া হতে
আকল। ুুুুুুুুুুবুন্দির ফিরিয়ে দেওয়ার
কাজ সংন চলছিল তখন ভারত আবার
পাকিস্তানের সংগ্রে স্বাভাবিক সম্পর্ক
দ্যাপনের বিষয়ে আলোচনার কথা তল্লা।

পাকিদ্যান তথন অজুহাত দিল, যুম্পাপ্রাধের অভিযোগে অভিযুক্ত ১৯৫ জন সহ সকল যুম্ধবংশীকে মুক্তি দেওয়ার আগে কোন কথাবাতী হতে পারে না।

প্রতিষ্ঠান স্বকার সে সময়ে সিমলা চুক্তির স্থানীয় অন্চেচ্চ্দের অন্ডেড্রুক্ত একমার ভাক ও তারের যোগাযোগ বাবস্থা সংক্রান্ত আলোচনা ছাড়া অনা কোন বিষয়ে আলো-চনা করতে অনিচ্ছা প্রকাশ করল।

এর পারের ঘটনা হল, গত এপ্রিল মাসে ন্যাদিলিতে অনুনিঠত ভারত, পাকিস্থান ও বাংলাদেশের মধ্যে তিপাক্ষিক আলোচনা। ১৯৭৪ সালের ৯ এপ্রিল তারিশে ভারত-পাকিস্থান যুক্ত ঘোষণায় বলা হল, ডাক ও ভারের যোগাখাগ ব্যবস্থা প্রতিষ্ঠা ও যাতায়৷তের সংযোগ সংবিধা বিশেষ করে তীর্থ যাত্রীদের চলাচলের স,যোগস,বিধা প্রবর্তনের বিষয়ে দৃই দেশের মধ্যে অগ্রাধি-কারের ভিত্তিতে আলোচনা হবে। ঐ ঘোষণায় আরও বলা হল যে, সিমলা চুন্তির ততীয় অনুক্ষেদে উল্লেখিত অন্যান্য বিষয়-গ্রনিতেও আলোচনার স্তপাত করার জন্য কমে কমে ব্যবস্থা অবলম্বন করা **হবে।**

এই ঘোষণার পর থেকে গত কিছ্কাল বাবং আলোচনার সম্ভাব্য ভারিশ নিরে নরা-দিল্লি ও ইসলামাবাদের মধ্যে বাতণ বিনি-মর হচ্ছিল। শেষ পর্যাস্ত ঠিক হয় য়ে, ১০ জনে ইসলামাবাদে দুই দেশের প্রতি-নিধরা বৈঠকে বসবেন।

এবারও পাকিস্তানই আলোচনা থেকে
পিছিয়ে গেল। এবারকার অজ্বহাত রাজস্থানের মর্ভূমির নিচে ভারতের প্রীকাশ ম্লক পার্যাণাবিক বিক্ষোরণ। এই বিক্ষোরণের অবাবহিত পরেই ভারতের পররাণ্ট্রান্ত্রী স্বরণ সিং প্রকাশে। পাকি-স্তানকে এই বলে আশ্বাস দেন যে,
শান্তিই ভারতের কামা এবং সে সিম্নলা
চুঞ্জি মেনে চলবে।

এই পারমার্ণবিক বিসেফারণের চার দিন পরে, ২২ মে তারিখে, প্রধানমক্তী শ্রীমতী ইন্দিরা গান্ধী ভূটোকে একটি পত্ত পাঠিরে পাকিস্তানকে মনে করিয়ে দিলেন যে, সিমলা চুলি অন্যায়ী উভয় দেশ অততিতের সংখাতের ইতিহাস থেকে বেরিয়ে এসে দুইে দেশের মধ্যে স্বাভাবিক সম্পর্ক ও স্থায়ী শান্তির বিকাশ ঘটাতে ক্তেসকল্প হয়েছে। শ্রীমত্তী গাল্ধী পাকিস্তানকে আদ্বাস দিপেন যে, ভারত এ চুলি অন্যায়ী পাকিস্তানের সংগ্র তার সব বিজেদ দিবপান্ধিক আলোচনার দ্বারা মিটিয়ে নিতে প্রতিশ্রতিবন্ধ আছে।

শ্রীমতী গাংধী তার ঐ পতে আরও বলেন যে, ভারত পারগ্রাণবিক শক্তির শানিত-পূর্ণ বাবহারের জন্য একটি প্রীক্ষা করেছে বলেই আন্সাপ-আগোচনার এই কল্যাণকর পথ পরিভাগ করতে হবে, এমন কোন কথা নেই।

পার্যাণ্বিক পারিকস্তান ভাষতের বিস্ফোরণের অভাহতে সিমলা চটি বান biল করেই ক্ষাণ্ড হয় নি. বিষয়টি নিয়ে ভারতকৈ বিব্রত করার ও আন্তঙ্গতিক রাজনীতির জল খোলা করার সাধ্যমত চেন্টা করছে। তার স্বর্ণশ্ব চেটো হল, ভারত মুহামাগর সংকাৰত রাণ্ট্রাংঘ ক মিটিতে প্রসংগটি ভোলা। সেখানে পাকিস্তানের ব্রুব্য হল, ভারত পার্মাণ্যিক বিস্ফোরণ ঘটানর ফলে ভারত মহাসাগরের তীরবত দেশগালিতে ভারসালা নন্ট ইয়ে গেছে। পাকিস্তান এই সাযোগে মার্কিণ দৌব্যরকে ভারত মহাসাগরে ডেকে এনে এই মহা-সাগরকে 'শাণ্ডির এশাকায়' পরিণত করার প্রস্থার বানচাল করে দিতে চাইছে বলে মনে হচ্চে।

গত ২ জন সকালে ভারতের প্রতিবেশী রাজা ভূটানে ১৮ বংসর বয়স্ক রাজা জিগুনে সিশেশ ওরাংচুক আন্ন্তানিকভাবে শুক গিরালপোর (ড্রাণন রাজা) পদে অভিবিত্ত হলেন। জিগুনে সিংগা ওরাংচুক হলেন ভূটানের বত্যান রাজবংশের চত্ত্ব রাজা।

দ্ব বছর আগে পিতা জিগমে দোরজি অরাংচুকের মৃত্যার পর রাজা হয়ে জিগমে সিংগা ভূটানের শাসনভার গ্রহণ করেন। প্রলোকগত রাজা জিগমে দোরজি আধ্ব-নিক ভূটানের রাজা চিসাবে পরিচিত। তিনি তার দেশের একজন জনপ্রিয় নেতা ভিলেন।

এই অভিষেক অনুষ্ঠোনে আনাজীনের মধ্যে ভারত ও বাংলাদেশের রাফ্টপান্তরাও উপাদ্ধত ছিলেন। এই উপাদকে ভূটানের তরংগ রাজা তার পরলোকতার পাতর নাতি অনুসেরণ করার ও ভারতের সংক্র বিশেষ সম্পূর্ক করার রেখে চলার আন্বাস দিয়ে-ছেন।

অভিবেকের প্রাক্কালে ভূটানের রাজাকে হত্যা করার ও রাজ্যে বিশৃংখলা সৃষ্টি করার এক চল্লান্ড ফাস হয়ে গোছে বলে রাজ-ধানী থিমপা বেকে ঘোষণা করা হরেছে। এই চল্লান্ডের সপো জড়িত থাকার অভি-হেলের বে ০০জনকে গ্রেণ্ডার করা হরেছে ভ্রান্তের রাজ্যের করার্ডা বিভাগের উপ- মন্ত্রী, ভুটান স্বকারের তিব্বতী শ্রণাথাী সংক্রাত্ত অফিসার, রাজকীয় প্রক্রিণ বাহিনীর একজন ক্যান্ডান্ট ও জের-ভোলা নামে পার্রিত একজন ভুটানী

ধতে ব্যক্তিদেয় কাছ থেকে নাকি প্রস্থা প্রিমাণে অপ্রশংস, গ্রিলাবারদে, হাত-বোমা ও বিষ পাওয়া গেছে এবং তারা নাকি তাশিজং দংগা প্রতিয়ে ফেলার, ব্যাপক গ্রেতচরস্থিত চালিয়ে সারো দেশে আঙ্ক ও বিস্লাধিত স্থিতির বড়ষণত্র করেছিল।

সরকারি সাতে এই যভয়ণেরর যে কাছিলী প্রচাব কর। হয়েছে সেটা হল এই যে, এই যতয়প্তের মালে রয়েছেন ইয়াংকি নামে ভটানের অধিবাসিনী একজন তিম্বতী মহিলা। এই মহিলা ভূটানার প্রলোকগত রাজা জিল্লাে দোরজি ওয়াংচকের একজন প্রিয়পা<u>রী ডিলেন বলে অকাশ। এই</u> ইয়াংকিৰ বাবাৰ নাম কাগাইভ। ১১৭২ সালের জান মালে। এটা কালাটভর সাজের যোগাযোগ হয় লোনসং ইয়েশে নামে ভারে এক বাজির। ভটানের বর্তমান যাজাকে ইনো কৰে ইয়ালীকৰ চেলাকে ৰাজ সিংহা-সনে বসান হ'বে বাল দ'জেনের ল্লানে নাকি সে সময়ে একটি গোপন চার হয়। এই লোবসং ইয়েশের মার্নির ইলেন লিয়ালো গিয়ালো খেনডুপ একজন থোনত প। মাপ্রিচিত্র ভিল্ডী শ্রণাথনী, থাকেন দাজিলিং-এ। তোরতোলা নামে যে ভটানী নাগরিকটিকে এই যতথন্ত সম্প্রেক গ্রেগতার করা হয়েছে তিনি নাকি স্বীকার কলেছেন য়ে ...১৯৭০ সালের জান্যারী মাসে পাজিলিং এ এই যড়মণা তৈরি হয়েছিল, তার পিছনে লাথাটা ছিল গিলাগো থোন-ভূপের এবং তাশিছো জং পর্নভূরে দেওয়ার জন্ম প্রোরভোলাকে লাখ খানেক টাকা দিতে চাওয়া ছয়েছিল।

এই বছরের গ্রেডার দিকে মাকিণ যুদ্ধরাটের প্রেসিডেট বিচার্ড মিকস্ট 'ওয়াটারগোট নিয়ে বছরখানেক ধরে ইয়েছে তাই ক্রের' একথা বলে ওয়াটারগোর্ট কেন্দেৎকারী বোডেয়াটেছ ফেলতে চেয়ে-ছিলেন। বিশ্ব ১৯৭৪ সালের সোড়াই राशक ग्राटमङ <u>ख्याहितकार्यं</u>ट **कम जीत** এঘনভাবে জড়িয়ে ধরেছে যে ক্যালিকে ছাড়ভে চাইলে কি হাবে তাকৈ ছাজ্যৰ বলে মনে হ'ছে না। রণভাবে 'ওয়াটারগোট কেলেডকারি' नारक পরিচিত যেসৰ অপক্ষের সন্দেহ প্রেস ্ডলট নিকস্নাকে যিরে ধরেছে সে সম্প্রেক িকসালের পাশের অভারত অসমরিধাজনত স্বাদেষ ঘটনাটি জল মাকিল সাপ্রীয় কোটো লবাবদিহির দায় এখ**ন তার উপর একে** প্রতেছে।

প্রেসিডেণ্ট নিকসন **যথন ইমপিচ** মেপেন বিরপে লড়াই করছেন **ডখন** স্প্রীন কোট এই বাপেরে **জড়িয়ে যাওনর** বিকসবের বিগ্রদ ভারত বাড়ে**ল।**

সংপ্রমি দোটে হৈ প্রশ্নটি বিচার করতে
সংগত হলেন্ডেন সেটি হল, কেলেগ্রুলারী
চাপা দেওয়ার দায়ে অভিযান্ত সহকারীদের
বিচার সংপ্রকে হিসেও তথা আদাশতে দাখিল
করার জন্য প্রেসিডেন্টকে সাপিনা করা
হয়েছে প্রেসিডেন্ট বিশেষ ভাষিকার' দাবি
করে সেসব ভ্যাপ্রদাণ উপশ্বিত করতে
ভাষবীকার করতে পারেন কিমা।

স্থোম কোট এই প্রশের কি উত্তর
দেশ এবং নিজ্সন মার্কিণ কংগ্রেস ও সেদেশের জন্পথের মধ্যে কোটের রামের কি
প্রতিরিয়া হয় তার উপর নিজার করকে
নিকসন প্রেসিডেণ্ট হিসাবে তার কার্যকাল
শেষ করে যেতে পারবেন কিনা, অথবা ভার
অংগ্রু সরে যেতে বাধা হরেন।



প্রেলিডেন্ট নিকসন সম্প্রতি আদালতে ও আইনসভার অষ্ট্রনের লড়াই নালিরে শেষ বিচারের দিনটি বিলাধ্বত করার যে কোশল প্রবণ করেছিলেন স্বুতিয় কোট করার তান বিশাব অধিকারা সংক্রান্ড আপতির বিচার করে পেশতে রাজি বঙারার প্রেলিডেন্টের সেই কোশল এখন অনেকটা অকেজে। হার বেল।

क्षणोत्रकारे कालान्यांत्र हाथा प्रवसात অভিযোগে নিকসনের সাতজন প্রারন সহ-কারীর বিরুদ্ধে জেলা জন্ত জন জে সিরিকার আদালতে যে ফোজদারি মাত্রলা চলছিল সেই মদালার প্রাসিকিউটর সিওন জাভরাস্ক ছোৱাইট চাউলেব কতকগুলি টেপরেকড চেরেছিলেন। টেপ রেকড'গ্রাল আদালতে *ছাজির করাব জনা* বিচারপতি সিরিকা প্রেসিডেন্টের উপর সাপিনা জারি করেন: প্রেসিডেন্ট সেই সাপিনা মানতে অস্বীকার ক্ষরেন। প্রেসিডেণ্টের কেণস্থাল সেন্ট ক্রেয়ার আদালতে আইনের প্রশন ভোগেন। বিচারপতি সিরিকা সেন্ট ক্লেয়ারের আপত্তি অগ্রাহ্য করে দেন। প্রেসিডেন্ট নিকসনের কেশসলো বিচারপতি সিরিকার **সিম্ধান্তের বিরুদেধ সার্রাকট কোর্ট অ**ব আগীলনে মাপীল করলে প্রসিক্টিটর পাল্টা চাল দিয়ে হনভর্মিক ভড়িংগভিডে বিষয়টি একেশারে সর্বিম কোর্টে নিয়ে লেছেন, যাতে প্রেসিডেন্ট একটার পর একটা আইনের প্রশন তুলে সময় কাটিয়ে দিতে ন। প্রেম।

এখন স্থিম কোট হয় বিচারপতি সিরিকার স্থাপনা আদেশ থারিজ করে দেবেন অথবা ঐ আদেশ অন্যায়ী সংশিক্ষট টেশ রেকডাললৈ আদালতে উপস্থিত করতে প্রেসিডেট নিকসনকে নিদেশি দেবেন।

সর্গ্রিম কোটে'র রার যদি প্রেসিডেন্ট নিকসনের বিরুদ্ধে বার ভাহদে তাঁকে অবধারিতভাবেই কঠিন সংকটের মধ্যে পঞ্চত হবে। হর তিনি স্থান্তম কোটে'র রার আনান্য করার দর্মন মার্কিন কংগ্রেসে ইম্মাপচমেন্টের কাঠগড়ার এসে দাঁড়াবেন অথবা টেপু রেক্ডগন্মি তাঁকে গুরাটারগেট কেলেংকারির স্বংগ্ আর্ভ জালভাবে জভাবে।

প্রেসিডেন্ট নিকসন ইতিমধোই যে ৪৬টি কথোপকথনের টেপ প্রকাশ করেছেন ্যেগর্নি অন্লিখনের পর এক হাজার প:•ঠারও বেশি ফাইল তৈরি হয়েছে) সেগালির মধ্য থেকেট নাকি সৈনেটের জাভিসিয়ার কমিটি কিছা আপত্তিকর তথা-প্রমাণ উত্থার করেছেন। যেমন গত ২১ দার্চ' তারিখের একটি কথোপকথনের রেকর্ড শানে ক্মিটির এই নিশ্চিত ধারণা হয়েছে যে, ই হাওয়াড হাল নামে যে দাগী লোকচিকে ওয়াটারগেট বিভিন্তাের ভিতর লাকিয়ে চুরিয়ে চকেতে পাঠান হয়েছিল ঘ্র দিয়ে তার মুখ বন্ধ করার বিষয়ে। প্রেসিডেণ্ট নিকসন তার প্রান্তন কে সির্নাণ জন ডীনের স্থেগ আলোচনা করছিলেন।

এভাবে দেশের ভিতর বখন প্রেসিডেন্ট নিকসনের রাজনৈতিক ভবিষাং ক্রমেই অধ্ব-কার হয়ে আসতে তখন তিনি তার পাররাণ্ড-সচিব ৩ঃ হেনরি কিসিঞ্জারের সাম্প্রতিক দান্তিনোর সাফলোর স্বা্যাত নিরে প্রিয়ার সফরে করার একটি কর্ম-স্চী গ্রহণ করেছেন। এর প্রে ভার রাশিয়ায়ও যাওয়ার কথা আছে।

দেশে যথন সারের অভাব তথন বিচিত্র মাজতে আমরা সার উৎপাদনের প্রয়োজনীর উপাদান নাপেথা বিদেশে পাঠিয়ে দিছি। দেশের সার কারথানাগালিতে উৎপাদন ঠিক মত না হওয়ায় তৈল শোধনাগারগুলিতে
সার জয়ে হাছিল। তারা নাগেখা উৎপাদন
কয়িয়ে দেওয়ার হ্মেকি দিছিল। এদিকে
য়াপান তায়াদের ন্যাপথার জনা ভাল দায়
দিতে চাইল। জমে-থারা ন্যাপথ বিভি করে
দিরে যদি তৈল শোধনাগারগুলির সমস্যার
ম্রাহা করা যার আবার সেই সংশ্য বিদ
কৈছ্ বৈদেশিক ম্লাও উপাদিক করে নেওয়
থায় তাহলে মণ্দ কি?—এই ব্ভিতে ভারত
সরকার জাপানে নাগেখা রণ্ডানি করেতে
শ্রে করেছেন। সেখানে ইতিমধ্যে ও
হাজার টন ন্যাপথা পাঠান হরেছে। প্রকাশ,
জাপান আরও চেয়েছে এবং ভাল দায় দিতে
প্রস্তুত আছে।

অথচ ন্যাপ্থা বিক্লি করে ভারত এখন বিশেবর চড়া বাজারের যতটাকু সংখ্যোগ পাবে সেই তুলনায় ভার অনেক বেশি দাম দিয়ে ভাকে বিদেশ থেকে সার আমদানি করতে হবে। ভারতে এখন বে সার ভৈরি ইয় ভাতে ভার চাহিদার অধেক মান্ত প্রথ হয়। ফুবিমণ্ডী ফুকর্নিদ্ন আলি আহমেদ বলেছেন, এই বছর ভারতকে ২০ লক্ষ টন রাসাদ্ধনিক সার বিদ্ধান্থ থেকে আমদানি করতে হবে।

বেশি দাল পাওয়ার আশায় যখন আলর।
বিদেশে ন্যাপথা পাঠাছে তখন দেশের
ভিতর আমদানির খরচ উশ্ব করার জন্য
ভারত সরকার সারের জন্য শাবহাত
ন্যাপথা দাল ও সারের দাম চাড়িরে প্রার শিব্যাল করে দিয়েতেন।

বাংগালেশেরর ইণিডৠনে ইনাঁস্টটটে আব মানেজ্যোন্ট একটি অভিনব বিষয় নিবে গবেষণা করছেন। ভাদের গ্রেষণার বিষয় হল, বলদে-টানা গাড়ির উল্লভি ক্রা হার কি করে।

মোটামাটি ্ৰতা হিসাব নিকে দেখা গেছে, ভারতে প্রায় দেড় কোটি জানোয়ারে-টানা গাড়ি আছে, এই গাড়িগালিতে প্রায় ৩০০০ কোটি টাকা লাখন করা আছে এবং এই গাড়িগালি থেকে ছাতার, কালার ইত্যাদি সহ মোট ১৬ লক্ষ মান্বের জীবকার সংস্থান হচছে।

অপচ ইণ্ডিয়ান ইন্সিটটাটে কৰ মানেজ-মেন্টের ডিরেকটর অধ্যাপ্ত রাম্প্রমাণী এই বলে আক্ষেপ করেছেন যে, উন্নত ধরন্দের গাড়ি বানিয়ে সেগ্লি থেকে গ্রামের মান্বের আর বাড়ান যায় কিনা সেই প্রশ্ন নিরে আমানের দেশের ডিন্ সক্ষ ইঞ্জিনীয়ার মাথা ঘামান নি।

প্রীরামশ্বামী বলেছেন বে, এখন এক-একটি গরের গাড়িতে অাধ টন থেকে এক টন প্রাণ্ড হাল বহন করা হার, কিন্তু গাড়িগ্রালর সামান্য কিছটো আধ্যানককিল করতে পারলে প্রতিটি পাড়িতে দুই টন মাল বহন করা থ্যই সম্ভব।







ওস্তাদের ওস্তাদ

(53)

কি মিণ্টি হাত। অথচ যুক্তার মতন নিখ°তে সব আঙ্ল আর ক্ষতলের কারন।। নিভাল অংকের মালায় তবলা বায়া বেজে চলেছে। কৈন্তু কি মেঠে আনহাতে বোল উঠছে অনগল। আর সেই সংখ্য পণ্ডমে বাধা তবলা থেকে একটানা সারের গেল--কানি-র টাং টাং ধর্মি। তারই মধ্যে ফটেছে অফারণত বোলের বালার।

হারশোনিযমে নামমার সংগত হতে। ঘারে ঘারে বেজে চলেছে শাধা গতের মুখটি। কাল্ল তবলাই এখানে মুখা। তবলচীই প্রধান আকর্ষণ। তারমো^{নিয়ম} বাদকের দিকে কারো দৃষ্টি নেই। শ্রোভাদের সকলকে আকৃণ্ট করে রেখেছেন ভবলা-শিপী। ওস্থাদ আবেদ হোসেন-লাক্ষ্মা খরাপাদার খালফা।

সেদিন ভ্যানীপার সংগতি স্ফিন ধনীতে আসর বসেছে।

পঞ্জাশ বছগোরও আগেকার কথা।

সৈ আসরে তাঁর বাজনা শনেতেই এসেছেন বেশির ভাগ লোতা। তার একক বার্ন ধারা তবুলা গ্রুরা।

লক্ষ্যোর তবলা ঘরাণার তথন শ্রেণ্ঠ প্রতিনিধি আবেদ হোসেন। উত্তর ভাষতের এক শ্ৰেণ্ঠ গ্ৰা। তাই খলিফা বলা হত ভাবে। বাইজ্ঞাদের মধ্যে জোঠো নভাকা ষেমন চৌধুরান বাই। কলকাভাতেই থাকতেন ভ পেই চৌধরোন। লক্ষ্যো থেকেই সে বাই**জী** কলকভিয়ে ভাগেন। লভেট কণ্ডক ঘরাণার বিদ্যা দীনেব কাছে ভালিম ভারি। দ্বাজনেই লক্ষেণ্ডর বলে আবেদ হোসেনের সংগ্র চৌধারাণের সাংগ্রীতিক যোগাযোগ ছিল। চৌধুরান বাইজী ও ভার কানতা আঞ্চমং বাই-নান্যা বাছযো নামে প্রাসম্থা দুই ভাগনীর কথক নাচের সংখ্য কত আসরে বাজিয়েছেন আবেদ ट्याटमन । मदक्ती खरना घरानात्र करत हिन ह्याना वाप्तन-रेभान्यो नाहकतान्छ المالية المالية ছিলেন। চৌধ্রান হোসেন খালফা বিচিজীৰ ভাই আলী কদরত ভাল তেবলচী। কিন্ত বভ আসর হলে স্যোগ থাকলে আবেদ হোপেন তানেক সময় তাঁদের কথক নংক্রের সংখ্য নাচকরণ বাঙাতেন। 'চাধারান আর আজলং বাই কলকাভাষ নয় বাংলার বাইলেও মজেরো করতে যেন্তেন পশ্চিমের নানা আসারে দরবারে। আবেদ হোসের কলকটেয় *ক*ৌ চৌধারান বাইয়ের বাড়িতেই মারশেদ (সম্পানিত অভিথি) **হ**য়ে থাকভেন।

আবেদ হোসেনের জ্ঞোষ্ঠ মধ্যে খাঁও ছিলেন খলিফা। মায়ে খার মাতার অনেক পরে বংশের সেই শানা পদ তিনি পরেণ করেছেন। ক⁵ঠন সাধনায় যোগা করে তলেছেন্ন নিজেকে। দৈনিক ১৫।১৬ ঘণ্টা বিয়াজে প্রশ্তত হয়েছেন। তথপর সংগতি আত্মপ্রকাশ করেছেন লক্ষ্মো 3910F ্রাণ্রে উল্যাক ব্সে। প্রিফার সম্মান প্রেছেন।

ভাবের হোসেনের জন্ম (১৮৬৭) লক্ষ্যোর মামনেপ্যুরে। বেশি থাকভেন লক্ষেন্টেটে। মাঝে মাঝে কলকাভাষ ভাসতেন। ভাব অনেক গ্রেগ্রাহী ছিলেন এ। শহরে। মানা আসের ছাজরো করতেন। সহর। খেলিংট্রেন্ড কোথান্ত। व शहना সংগতকার। এখানে ভাঁর কৃতী শিষ্ট ও হুন: অমনি নানভাবে সে স্থাপ্র কলকাতায় বিখ্যাত ছিলেন খলিফা আবেদ (इं)(अन्।

সোদন ভবানীপাব সংগতি সন্মিলনীতে তিনিই অতিথি শিল্পী। তবি লহরার জনে।ই এত বড আসর হয়েছে।

কাপতালে লগ্রা বাহ্যচিত্রেন খাঁ সাহেব। অসমান বিভাগের এই তাল। নোলায়িত ছফ ভার।

সেই ছদেদ আবেদ হোসেন জাহরা বা লহর শোনাকেন। তা হল একক তবলা পদ্ধতি। কত বোলের বি<mark>স্তারশ্বরে</mark> চলেছে কত ভাগেল বৈচিত্র। তার মধে। অটুট আছে সিল্সিলা। এক এক সংশের পর মাল ছদের দোলা যথারীতি 'ফরে আস্তে। বাসাধারার ছন্দে ভন্তে দোসায়ুমান হয়ে উঠছে শ্রোতাদের অন্তর।

আবেদ হোসেনের তদময় নিম্নীলিড দুল্ডি। আত্ম-সমাহিত তিন। জন্ম-জ্যোক ভূদাগ্রচিত্য শ্লেষ্ডল কল ল্লাইল **ল্লাই** আকার ভার। প্রোট বয়স। পরনে ছাড়দার পায়ভাগা পাঞ্জাবী। ল'আহ সক্ষেট্ট টাকি। ভার পাশে পিছনে বাবাধি-কেশে শাদা কালোর হিল্প।

দরবারি আসনে জান পেত্তে তিনি বুজিয়ে চলেছেন। হাত দুটি **খ্**ধ্ **চণ্টা** গতিগয়। সাধ সারা শ্রীর শ্লির জ্ঞাশা। স্দেখিকিল্লের নিষ্মনিষ্ঠ হুম্ভ সাধন-কৌ সংলেৱ ফুলাং

আবেদ তোসেদার বাম থাতে বাজছে তবলা। আর ভান হাতে ধয়া। ছিম ছাম্ মিঠে আওমাজে সজন্ন বোল উঠা**ছ**ী भारकतो प्रतानाञ्च *स्वरङ्*कर**हे स्वारमञ्ज श्राहृदर्य** বিশেষ্থে শ্রোতারা বিমাণ্থ।

সংগীত সন্দিলনীয় আস্ব খলিফার লহণায় তখন জনজনাট।

এমন সময় নতুন একজন গ্রোডার আবিভাবি হল।

আবেদ হোপেনেরই ধরনের চেহাম্বা 'হাঁর। শামেণ্ডা মেদবাঞা'⊛ শ্রণীর। তবে বয়সে আরো প্রবীণ। তিনিও वाडामी नज्ञ। काला है भीत में भारमहे প্রকাশের আভাস। আলো কোট শার্ট এবং ধর্মত। আর ধর্মত সংক্রত বোঝা যায় পা×ট্টাঞ্জেব লোক।

িনি মণ্ডের দিকে আবেদ হোসেনের কাছে আগিয়ে গেলেন।

ভাবে দেখে একটা চাঞ্চলা জাগল ল্রোভাদের মধ্যে। তারা বেশির ভাগই সপাতি সন্মিলনীর সদসা। আর তিনি ছলেন এখানভার সর্বহ্বীন্য স্পাতি।চারা।
রাজিরত শিক্ষাদানের জন্যে সাম্প্রকাশতে
একটি স্পাতি বিদ্যালয় আছে। তিনি
তুল ভারপ্রাপত। তা ছাড়া এখানে কলসার
ভিনি হন আসর-পতি। সম্মিলনীর যার্মা
লয়স্য সম্মিলনীর আসক
ভারা সকলেই তাকে চেনেন। তাই
ছ্যোতাদের মধ্যে শোনা বোল একটি অসম্টে
গ্রেম্বর : লছুমী এপ্তাদ।

ক্ষমণং লছমীপ্রসাদ মিগ্র। তিনি থা সাহেবের তবলা লছরা শ্নেতে এসেছেন।

ভাবেদ হোসেনও জানতেন তাঁকে।
এখন সামনে দেখে দস্ত্রমত খাতির
ভানালেন। কারণ সভ্মী ওপ্তাদ খাখে,
মহামানী গাণী নম। ব্যোজোগ্ঠ। তাঁর
চেবে ৭।৮ বছপের বড়। আর এমন নামামাখীন গাণের ওপতাদ সারা ভারতে কজন
আছেন? তিনি শানতে এসেছেন বাজনা।
ভাই খাঁ সাহেব দাঙ্গিয়ে উঠে তাঁকে সংমান
ভানালেন।

লছমী ওপ্তাদ হাসিম্থে আলিংগন জ্বলেন আবেদ হোসেনকৈ। তালপব স্কেনেই আসন নিলেন। আৰু লছমীজাঁব জ্বানেধে থা সাহেব শুধ্ করলেন লচ্বা। হারমোনিয়ম বন্ধ ছিল না। তাও তথনি লয় ধরে নিলেন। দেখতে দেখতে আবাব জ্বান উঠল লত্যা।

লছম বিশ্বতাদ মাথা দ্লিয়ে তারিজ ক্ষাতে লাগলেন পাহেং আছে। ব্তোং ক্ষাভা।

থিকাকা শিরোধার্য করে নিজেন গুরুত্বানকার আন্তর্গরের প্রশাসনে স্পিএর থ বাজ্ঞাতে লাগলেন। সমাধিদ সেই মাধ-মাতলে বিচ্ছারিত হল অক্তিকে আন্দেদব আন্তা। লাগমী ওস্তাদেব দিলাখোলা ভারিক। আবেদ হোসেন তার কদর থোঝেন বৈকি।

তার লহরের ছনদ ও+তাদগাঁর উলাম্বাততে আমো প্রাণ্যত হয়ে উঠল। খ্যোতাদের অনেকেই তা অনুভব করলেন।

আসর মাৎ করে আবেদ হোসেন্ডে লছন। শেষ হল একসময়ে। লছমী ও*তাদই ভবিক স্বডেয়ে সাবাস দিলেন। আর লক্ষ্যোমি বিনয়ে সেগাম জানাবেন ধািসাহেব।

ভাষপর ওক্তাদ্ভা আর এক রকমের ভারিফ করলেন। বললেন যে এমন ধ্রমক্তার বাজনা ক্রুনে বাজাবার উদ্দীপন জেগেছে ভার মনে।

ভাশিকা কশিতাল সানুকর হোর। সেকাজ আলু গয়ি।'

আবেদ হোসেল খালি হ'ছে জানালেন বাছ বাছ এ তো ভাল কথা। ওপতাদজীয় বাজনা লোনা বাবে।

শাস্ত্রনেকার প্রোভাষাও শানতে পেলেন কথাটা। আর একটা আসরেব জন্যে সন্থ আলা করে বসলেন।

কিন্তু লছমী এস্ডাদ নিজেল ত্বলা আনুন্দান ভা

ওলভাগতী আবেদ হোলেনের আন্মতি ইয়া তার কলাম বারা পাছে নিলেন। সূরে একটা নেবে গিরেছিল। ঠিকঠাক করে নিসেন ভেন্ট হাত্যভূটো দিয়ে। ডান হাতে তবলা ধুগলেন। বাঁহাতে বাঁয়া।

ওই ঝাঁপতালের লহরাই আরম্ভ করে দিলেন। অর্মান এক মগ্রায় একটি দ্বর দিয়ে হারমোনিয়মের গং-ও বাজতে লাগল। থলিফা আবেদ হোসেনের মিণ্টি দ্বেশ্ত হাতে এইমার বেজেছিল ঝাঁপতাল। আসমের হাওমায় এখনো তার ছন্দ ভরপ্রে হয়ে আছে। খাঁ সাহেবত সামনে ব্যে। এখন ঝাঁশতাল ধরা হঠকারিতা হল যা ত?

কোন কোন খ্যোতার মনে জাগল বাদ্ধ ওুম্থাদের সম্প্রে এই আগ্রাহন। কেউ আবার সদেহ করলেন আবেদ হোসেনেব সংশা উনি লড়তে চান নকি? না হলে একই তাল ধ্যালেন কেন্

কিন্তু আবেদ হোসেনের মনে হয়ত সে ভাব হয়নি। লছমী ওস্তাদকে দেখে বোঝা যায় শিক্ষীপাণেগ স্বতঃস্ফৃত্তি বাদনের আবেগ। তথিই বাজনা আর এক শিক্ষীর মনে ছন্দোবান্ধর প্রেণণা দিয়োছ। অন্য পোন উদ্দেশা নেই বাদকের।

শ্রোতাদের সন্ধ সংশহ আশ্বংকা ও তাদজী নস্যাৎ করে দিলেন। দস্ভুগ্নত লহুরার কাজ দেখাতে লাগলেন অকেবারে তৈর হাতে। তার কার্র মনে হল না। সন্ধের কথা আর কার্র মনে হল না। সনেকে আবার মবার হরেদ তাকৈ ভ্রলা বজাতে দেখে। কারণ তারা তাকে গায়ক বলেন্ড জানতেন। আর শ্রু বজানো নয় তাকাতেও যে একেবারে সাধ্য ও তাদী হাত।

রাতিগত উঠান দিয়ে গছমী তুম্ভান লহুটা আরশন্ত করেছিলেন। ভারপুরেই ধরণেন ঠেকা।

অভিজ্ঞ প্রোভারা লক্ষ্য করছিলেন।
ত্রুমতারক্ষ্য কর্মা করু সিল্মিলা ঠিক গোনারক্ষ্য। কির্কু সিল্মিলা ঠিক গোনারক্ষ্য। কির্কু সিল্মিলা ঠিক গোনালেন ফরাসবল্য। লহুবার ক্ষেমন পারস্প্য থাকা নিয়ম ঠিক পর পর বাজতে লাগাস। অসমান বিভাগের এই ফাপতালে লছ্মালি দেখাতে লাগলেন কত ছন্দ্রাতুর্য। তাত ব্যামিধ বাদন। ফ্রাস্ন্র্যার পর পোতাল দেখালেন। ক্ষ্মান্তির ভালার পর পোতাল দেখালেন। কাষ্ট্রান ভালার বিভারে প্রত্যান রক নিয়মমাফিক। ভালার তিহাই দিলোন যে আসর উল্লাম্ভ হুয়ে উঠক স্বাম্ন স্কুম্বিত

কিন্তু চক্তদার তেতাই সেরেও লছমীজী শেষ করলেন না। চক্তদার দিয়েই সমাপত করেন অনেক লছরা বাদক। তিনি ভারপুরেও ব্যক্তালেন—রেলা। আ্যার বৈলারে পর লগাগি।

এবার আবেদ হোসেনের সাবাস দেবার পালা। তিনি তা ভাল করে দিলেনও।

থাপতালের সহরায় যত ছালবৈচিতা আয় লয়কারী দেখালো পদ্ভব প্রই কর্মেন লছমী ওস্তাদৃ । আর মাংকরা আসরকে নতুন করে মাতিরে দিলেন। বাজনা শেষ হতেই প্রশংসার উচ্ছাস জানালেন অনেক প্রেন্ড:। আর বেশ্বারা একটা ব্যাপার ঠিক ব্রুক্তেন। আবেদ হোসেনের অমন বাজনার ছাপও মুছে গেছে লছমী ওস্তাদের লহরার। এ বে ক্তথানি কৃতিক ভার ব্যাখ্যা সকলের কাছে করা যায় না। অথচ কোন লড়াইরের ভাব দেখা দেয় নি। আবেদ হোসেনের এনে লগারীন কোম ক্ষান্ত। বা কান প্রতিক্রানিক বাস কাম ক্ষান্ত। বা কান প্রতিক্রানিক বাস কাম ক্ষান্ত। বা কান প্রতিক্রানিক বাস বা কান কাম ক্ষান্ত। বা কান প্রতিক্রানিক বাস বাজনা। পারস্পরিক সোহাদেরির মধ্যেই আসর শেষ হল।

লছসজির পুতিভার একটিয়াত পরিচয় পাওয়া যায় সংগতি সম্মিলনীতে। কিংকু তার সংগতিজনীবন অসামানা বহুমুখোন। এবং ভাই তার লোগোডর ধ্রণিকটা। তেমন উদাহলণ আসরে বিশেষ দেখা যেত না।

সেদিন সংগীত সন্মিলানীতে লছমী ওপতাদ তবলা লহবা শ্বিন্মেছিলেন। তেথনি দেন আসেরে ইয়ত তুলতেন বীশার ব্যক্তার। সিন্ধ বীশকার বেশে ভারী ভারী বাবেল আলাপচারি বাজাতেন। ভারপরণ শোনাতেন সেবা পাথোয়াজীদের সংগতে। আবার কোন আসরে মিপ্লে হাতে শেভার বাজনে। আলাপাত শেভার খালাম্ব

কণ্ঠসংগীতের আসলে আবে বিচিন্তগামী লছমীজী। একাধারে প্রপদ খেয়াল
উপ্পা উপথেষাল গায়ক ছিলেন ডিনি।
আব সেই সব বিভিন্ন রীতির সৌনদর্য ও
বাণীর জানে বালী। প্রপদীবলৈ মেয়নকার বাণবিদায় পাশ্চিতা তোমনি গায়নকারতা ছিল। যে দববারী কানাছায় জ্বিধবাব গণেশগার প্রাক্তিন সে গগৈ থিনি
ছিলেন সিদ্ধ। নানা র গেই যোগ্য মর্যাদায়
ডিনি আস্তবে প্রশ্নে গাইতেন। সর্বঅলংকারে সমুদ্ধ। ও ভার প্রপদ গান।

ধাষ্টিও তিনি শোনাতেন উপযুক্ত ঠাঁটেব মাজিলানো সহযোগে।

শহমী ওচ্চাদের সংগতি কঠও ভালই ছিল। বেশ দর্জে গলার গান গাইতেন আসার। তান কতারে কিছু কমতি ছিলেন না।

আর টপণা ত তাঁদেব ঘরে বিশেষ
চাঁর বদতু ছিল। যত রাগে টপা গান গাওয়া সম্ভব সৈ স্বই ছিল তাঁর সংগ্রহে। আসংবও তিনি টপ্পা গাইতেন। টম্পার নানা স্যুদ্ধর খুলত তাঁর গ্লায়।

তা ছাড়া আরো কথেক রীতির শানের সংগ্রহ ও অভিজ্ঞতা তার থথেকা ছিল। যেমন হোধি দাদরা ও ঠংরি। এসব গান তিনি আসেরে গাইতেন না। কিন্তু কেউ শিখতে চাইলে শেখাতেন ভালভাবে।

আর টপ্থেয়াল রীতি ছিল তারি বড় প্রিয়। তানের সংকা উপ্পার অলপ্তার চমংকার লোনাতেন। তার টপ্-থেরাল ছিল থানাজ পিলা টেববা থেকে ইম্প সাহানা ইত্যাদি নানা রাগে।

গুম্বাদের টেপ-খেষালেখ উত্তরাধিকার তার পার হরিদাসও পেল্লে-ছিলেন। আর হরিদাসের এক ছাত্রী চন কুকভামিনী। বাংলার একজন শীর্ষ-শ্থানীয়া টপ-থেয়াল গায়িকা বলে কুক-ভামিনী বিখাত হয়েছিলেন। ಡಚಿತ গ্রামোফোন রেকডে'র বাংলা গান বেশীর ভাগত টপ-খেয়াল অংশেগ। মনে হয় ক্ষান্ত উপ্লেখ্য ক্ষান্ত ক্ষান্ত উৎস ছিলেন তাঁব অনাদেম ওপ্তাদ হরিদাস মিশ্র ফিন ভার পিতা লছমী ওস্টাদের কাছেই এই বীতির তালিম পান। কৃষ্ণভামিনীর দ্টাণ্ডে এট ধারা এসেছিল কালিপ্র পাঠক প্রস্কিন।

সেকালের সংগতিজগতে এক বিস্ময় ছিলেন লছমীপ্রসাদ মিশ্র। একাধারে এও বিভিন্ন ধলে ওসভাদী হাত এবং নালা রীতির সংগাঁতে দিকপালা গায়ক সব'-কালেই দলেভ। কারণ ভারতীয় সংগতি এক এক বীভিতে বিশেষজ্ঞ হয়ের সাধনার বস্তু। অখাৎ এক এক গ্রাণী সচরাচর একেকটি যত কিংবা একটি খ্রাতির মাধ্যমেই চচায় সাধনায় জীবন অভিবাহিত করে দেন। একাধিক সাধ্যমের প্রয়েঞ্জন হয় না-এমন গভীরতা ও বিশ্তার বাগ স্পাণিতের। একটি মাধামেই সেই বিচিত্র ঐশ্বরের সন্ধানী হতে দেখা যায়। কিন্তু সকল নিয়মেরই আছে ব্যতিক্**ম**। ওম্ভাদ সেষ্ট ব্যতিক্রারে একটি আদর্শ উদাহরণ। তাকে যখন যে রীতির সায়ক বা যে যাণ্ডিৰ বাদকরপে দেখা যেত গ্রোতার মান হত তিনি এই গানে কিংবা এই খনা-সশাতিই একান্ত সাধন করেছেন। কল-কাতাৰ আসৰে আসৰে ওশতাদী দেখিয়ে গেছেন বটে লছমীপ্রসাদ। কখনো ধ্রপদী কথনো থেয়াল বা টপন বা টুপ থেয়াল গণেী। কোথাও বীণকার কোথাও সেতার শিংপী কোথাও তবলাবাদক। তাঁর এক ক্রকাট খন্ত প্রিচয়কেও ওদভাদ আখ্যা দেওয়া যায়। কারণ তারি তুলা গায়ক কিংবা বীণকার কিংবা সংগতকার হয়েও ওপতাপ নামে পরিচিত হতে পারতেন যে কোন গুলী প্রচীপ্রসাদ্ধে হাই শাহামায় ওসভাদ বললে যেন পূর্ণ পরিচয় দেওয়া হয় না। তিনি ওংহাদের ওংতাদ। সংগাঁতের এক আবতাৰ বিশেষ।

ঘরেও এমনি বিচিত্তের সাধকরপে তাঁকে দেখা যেও। কখনো ধ্রুপদ থেয়াল টপ্পা কিংবা টপ-খেয়ালের চর্চায় নিম্পন। কখনো বসেছেন বাণা নিয়ে। কখনো ধরেছেন সেতার। কখনো ওবলা বাজাছন। সংগাঁতের নিরলস সাধ্য জীবন তাঁয়।

লছ্মীজাঁকে শিক্ষকরপেও পাওয়া যেত সামগ্রিকর্পে। বিভিন্ন বীতির কণ্ঠ-সংগাঁতে ও প্রথ হণ্ডসংগাঁতে তার শিব্য-মণ্ডলা গঠিত হয়েছিল। তিনি বীণাম তালিম দিয়েছিলেন (সোগীল্মাছন ঠাকুরের পোটা কেনেল্মোছন ঠাকুর ও পত্ত হবি-দ্যাকটে। তাঁর কাছে তবলা দিখে শামাতরণ মিশ্র ও ব্লিক্ মিশ্র (ওশ্তাক গোরীশিক্ষরের জ্যেষ্ঠ ও চ্তুর্থ জন্জ) ও°তাদ তবলাবাদক হ্রেছিলেন। ধ্যেদ্রনাথ পাল পেচা পাল নামে স্পাধাচিত) তার আর এক নতা ওবলাবাদক হয়েছিলেন। বাংলার ফরার তবলাবাদক হয়েছিলেন। বাংলার ফরার তবলার তালিম পাল লছমীজার কাছে। পরে অনাথনাথ বসত্ত অনেক বছর তবলার তালিম পাল লছমীজার কাছে। পরে অনাথনাথ দিল্লীর নার রহম্মদ ও মান্ধাটের মহম্মদ সম্বির কাছেও তবলা শিথেছিলেন বটে। কিচ্ছু লছমান্ধাকর বাংলাকর প্রাণিরার রাজ্যান্দ্রনার প্রাণিরার বাজ্যান্দ্রনার প্রাণিরার বাজ্যান্দ্রনার প্রাণিরার বাজ্যান্দ্রনার প্রাণিরার বাজ্যান্দ্রনার প্রাণিরার বাজ্যান্দ্রনার সাক্ষান্দ্রনার প্রাণিরার বাজ্যান্দ্রনার প্রাণিরার বাজ্যান্দ্রনার বাজ্যান্দ্রনার সাক্ষান্দ্রনার প্রাণারার প্রাণারার বাজ্যান্দ্রনার সাক্ষান্দ্রনার সাক্ষান্দ্রনার সাক্ষান্দ্রনার সাক্ষান্দ্রনার সাক্ষান্দ্রনার সাক্ষান্দ্রনার সাক্ষান্দ্রনার সাক্ষান্দ্রান্ত্রনার সাক্ষান্ত্রনার সাক্ষান্তনার সাক্ষান্তনার সাক্ষান্তনার সাক্ষান্তনার সাক্ষান্তনার সাক্ষান্তনার সাক্ষান্তন

ধ্বপদে তার উপয্তে শিখ্য হন হরিদাস। লছমী ওসতাদের এই একমাত পাত্র যে কত বড় কলাবত হয়েছিলেন তা দেখা যায় অহিরীটোলার সে আসংগ্রে। সেদিন প্রেয়াজনী মনন্মোহন মিশ্র-

ঘটনাটা শেষে বলা যাবে। এখন লছমীজার আর্ল শিধ্যদের কথা আছে।

স্প্রিচিত থেয়াল-গায়ক অনাথ্নাথ্বস, ষত বছর তাঁর কাছে তবলা শেথেন তত বছর থেয়ালত শিথেছিলেন। লছনী-ছাঁব বহা থেয়াল শিক্ষা ও সংগ্রহ করে-ছিলেন অনাথ্যান্ত আনু সেই সংগ্রাক্ছা, ত্র-থেয়ালত যদিও আনুরে কথনো উপ-থেয়াল গাইতেন না।

ধ্বীরেন্দ্রনাথ ভট্টাচার্য (ধ্রুপদ্বীর্পেই প্রিচিত এবং ধ্রুপদে মহীন্দ্রনাথ মুখো পাধায় রাধিকাপ্রসাদ গোস্বামী প্রমান্থ্য শিষ্য চম্পার ভালিম নিয়েছিলেন লচ্মী রুহতাদের কাটে।

বিদ্বাজ্যারর বিনায়ক মিল ছিলেন তার আর এক শিষা। লছমী ওত্তাদের কাছে তিনি বেয়াল ও টণ্পার তালিম নিয়ে-ছিলেন।

হাওড়া-রামক্ষপ**্রের শান্না**চরণ বসংও ছিলেন তাঁর থেয়াল উপ্পায় শিধ্যে

্রে জীটের যোগেশচন্দ্র ঘোষ ও'তাদ-স্ক্রীর কাভে যেয়াল শিখতেন।

প'চুগোপাল খণ্ড এবং বাশ্তল। লেনের মদনমোহন মিশ্রও তার স্পাতি-শিবা ছিলেন। বিখ্যাত সারংগ্রাংক ওচ্ডাদ গৌরী-শুষ্কর মিল্লভ পাছমী ওচ্ডাদের কাইে উপক্রত ছিলেন নানা ধীতির গানের জনো।

তা ছাড়া ভবানীপর সংগাও সাক্ষলনীতে দীঘ কাল তিনি ছিলেন অধ্যক্ষ ও
প্রধান শিক্ষক। আর প্রতিভা দেবী পরিচালিত সংগীত সংঘ্যাও এক বিশিপ্ত
শিক্ষক এবং প্রীক্ষার বিচারক। এই দৃষ্টি
সংস্থাতেই তিনি নানা প্রকার কণ্ঠ ও
থল্যসংগীতে বহু ছাবছাগ্রীদের শিক্ষা
দিয়ে গেছেন।

যেমন নানাম খীন প্রতিভাধর গাণী তেমনি কৃতী দিখাগোণ্ঠী গড়েছিলেন লছমীজা। কলকাতার সংগতিক্ষেত্রে এই বালেব্পে বহু মানের আসন তার ছিল। গায়ক ও এনগাঁর। সকলেই তাঁকে মান্য কণ্যতন সংগতিচাহা বলে।

কিন্তু কোন বিরাট প্রতিভা অকসমাণ স্থিত হয় না। তা বিকাশত হয় সে প্রতিভাব আধারের দীর্ঘকালের নিবলস স্থাবনায় ও প্রয়ো সেই সংস্থাবনায় ও প্রয়ো সেই সংস্থার ভিয়ো সংগ্রাথা এই দুটে ধারার সম্মাননে গঠিত হয় লছ্যী ভুহতালের সন্ধ্যাতি জীবন।

একথ মিথা নয় যে অক্লান্ত **অধানসায়**ও শিক্ষায় তিনি নিজেকে প্রস্তৃত করেন।
তেমনি সভা—তিমি ছিলেন এক মহান ঐতিহার ধাবক ও বাহক। স্প্রাস্থ্য প্রসন্মু মনেত্র ধাবক ও বাহক। স্প্রাস্থ্য সাহমী-প্রসাদ মিশ্র।

বিভিন্ন ধারায় সংগতিচ**চা এবং** তালাধানে মানিস্থানা নালা প্রকার স্বন্ধ-সংগতি ব একাধারে সংলা এই ধ্বাণাকে বিশিষ্ট বিখ্যাত করেছিলা। উত্তব ভারতের এটি এক প্রেষ্ঠ ও বহু-পরিচিত ঘরাণা। তার কিছু ইতিব্তু এখানে দেবয় যায়।

বার্ণাসীর এক কথক রাজাল পরিবারের সংভান মনোহর ও হারপ্রসাদ মিপ্রা
হারপ্রসাদ সংক্ষেপে প্রসাদ্ধ নামে কথিত
হার্না দুইে সহোদ্ধ তারা। মনোহর
জোহা দুজনের সংগতিচচা এমন
এক ধারা প্রবর্তন করে হো দুই
ভাবার হাসপ পরিচয়ে একটি
ঘরালার নাম হায় যায়। মনাজ প্রসাদ্ধ নাম প্রথম প্রান নেয় বেশী প্রতিভাবান ও

যে বই আপনাকে বি শয়ে অভিভূত করবে

বুদ্ধিতে যার ব্যাখ্যা চলেনা

ক্রেকজন বিখ্যাত সাহিত্যিক, শিশপী ও বৃশ্চিক্রীবীর ব্যক্তিগত অভিজ্ঞত ইইডে লিখিত অলোলিক কাহিনী]

শীঘ্রই প্রকাশিত হচ্ছে।

মিল প্রকাশনী ঃ ২০৬, বিধান সরণী, কলিকাতা—৬ ফোন ৩৪-৪৬১২

প্রসিশক্তর হওয়ার জন্যে। তাদের কান্স্ট-ক্সম এতাঃ বিদ্যালয়ের নাম এই পর্যাণ্য ক্ষম নেইঃ

কাশ্বহিত এ বংশের আদি নিবাস বিধা ১৮ নেনপুরার কোনিছে। এনেছের ও ক্রিপ্রস্থানের শিক্তা ঠাকুলবালাও বারক ক্রিপ্রস্থানের শিক্তা ঠাকুলবালাও বারক ক্রিপ্রস্থানের বংশের বাস পর্যুক্ত করের ক্রিপ্রাক্তা করের বিধানা করের ক্রিপ্রাক্তা করের করের প্রাক্তানা করের ক্রিপ্রাক্তা করের করের। তবের প্রার্গ ক্রাক্তানার স্বার্গ্রের করা। তবের প্রেকেই ক্রিপ্রাক্তার ব্রেগ্রের করে।

নিজারারার হরে প্রের আগেলার
নান পাওর বার এবং তরি। সকলেই
ছিলেন সপনীতসেবী। কিন্তু অত প্রে
ব্রানেতর এবানে প্রয়োজন নেই। শুর্
রয়বা—নিলারার তরি পান জনানন এবং
জনানের প্রে ঠাকুনারাল এই তিন
প্রেরও ছিলেন গারক।

দিলারামের পেট ঠাকুরদয়ালের তিন প্রে। মনোহর ছবিপ্রসাদ (প্রসদদ) এবং বিশেষদ্বর। গায়ক ঠাকুরদয়াল তিন প্রেটকেই সঞ্চীতিশিক্ষা দিয়েছিলেন। কিন্দু কনিস্ঠ বিশেষখ্যারের নাম স্থায়ী হয়নি। সংগীত-ক্ষণতে।

শোনা যায় দিল্লীর পোন কলাবংগ সেডারীর কাছে তিনি শিখোছলেন সেডারী বিশেবখনকো কণ্টসংগীতের কথা বিশেব জানা যায় না। মিশ্র বংশে পেডারের চটা এই প্রথম তবে তার কাছে এ বংশে কেড সেতার শিক্ষা কর্মেন কিনা হার নি। বিশেবখন পরে বিবয়-সংগাতর ভারপ্রাংভ বন এবং মনোহর, হারপ্রসাল আখানিয়োল ক্ষেন সংগীতে। এই দুজনের সমরণীয় হয়ে আছে। প্রসন্দ্র মনোহরের নামই হয়ে আছে। প্রসন্দ্র মনোহরের নাম ক্ষিতিত হয়েছে একটি প্রথম্ব হালায়।

মনোহর ও হারপ্রসাদের সংগীতজাবিন জনেক সমারেই অব্পাহণী ছিল।
ভাদের যুদ্দে সংগতিচ্চার কথা কামবের
কানীয়। কিংতু স্থানাভাবে এখানে ভা
সম্ভব নয়। প্রসম্পূর্ণ বিবরণ দেওয়া হবে
দিব পশাপতির অধ্যাহা। কারণ এই অধ্যারেশ্ন
নারক লছ্মীপ্রসাদ হবেন মনোহরেশ্ন
পোর।

১৭৯৪ সালে বাবাণসীতে মনোহরের
ক্ষম প্রার মৃত্যু হয় ১৮৭১ সালে ৮০
বছর বয়সে। তিনি নেপালের প্রধানমন্ত্রী
সার কং বাহাদ্রের দরবার ও পাতিয়াল
মহামাজার দরবারে অনেক দিন সসম্মানে
ছিলেন। নবাব ওয়াজেদ আলীর লক্ষ্মী
দ্ববারেও থাকেন কিছাদিন।

মনোহর মিশ্র পরিণত বরুনে কল-কান্তারও বাস করেছিলেন। তথন থেকেই ভার বংশের সংশ্য কলকাতার সম্পূর্ক। জ্যোভাসাকো অঞ্চলে স্পর্যায় দে স্থীটে মানোহর ছিলেন কিছুকোল। পারে তাঁর প্রে রাষকুমারও এখনে থাকেন। সহুমী ওশ্ভাৰও দীৰ্ঘকাল বাস করে গেছেন এই অঞ্চলেই।

মনোহর মিলের সময় থেকেই এ বংশের সপো বাঙালী স্পাইডাশিলাদির বোগা-বিদ্ধান বাগা-বিদ্ধান বাগা-বিশ্বান বাগা-বিদ্ধান বাগা-বিদ্ধা

মনেছের অক্যায়ীভাবে বাস করেন কলকাতায়। কিন্তু তাঁর পুত্র অনেককাল এ শহরে বাস করেছিলেন। তাগ্পপর লছমী ওসভাদ তাঁর সংগতিজবীবনের স্বদীকাল আমৃত্যু ছিলেন কলকাতা নিবাসী। তেমনি এই ধারায় গোবিষ্ণদাস কেশবদাস হলিদাশ সকলকেই কলকাতাবাসী বলা বায় কাশীর সংগ্যে সংগর্ক সন্তেও।

মনোহর ধ্রুপদী ছিলেন বংশের ধারার। কি-তুতার ভোওই পরে রামকুমার হাুপদের সংখ্যা থেয়াল এবং দেশারও সাধনা করেন। উপরশ্ত বাঁণারাদনও। মনোহরের সময় থেকে নেপাল দশ্বারের সংখ্য তাদের যোগ-ষোগ। সেই সূতে রামকুমারও ১৪ বছর নেপালে ছিলেন। প্রধানমন্ত্রীর পতে জেনা-রেল মুখিয়ার সপ্গীতসভার থাকেন রাম-কুমার তারপর পরিণত বয়ুসে কাশীতে কিছুকাল বান্দের পর কলকাতায় স্থায়ী হন। এখানে জীবনের শেষ পর্যন্ত কালীকৃষ্ণ ঠাকুরের সংগীতসভার নিযুত্ত ছিলেন রামকুমার। বছরের **পর বছর তি**নি সম্মানিত ওপতাদ হয়ে কলকাতায় বসবাস করেন। আর ফলে এখানে গড়ে ওঠে তাঁর কিশ্ট শিষামণ্ডলী। বাংলার সংগতি-জগতে রামকমার মিশ্রের দান কতথানি তা তাঁর শিষাদের নাম থেকেই ধার্যণা করা যায়। (এখানে উল্লিখিভাদর কেউ কেউ অনা ওস্তাদের শিক্ষাও অবশা পেয়ে-ছিলেন যেয়ন হয়ে থাকে)।

রামকুমারোর কাছে শেখেন—চন্দননগর-*कहात्त* करे গোশ্লাডার ৳•পাগায়⊀ মধ্যাদন বন্দ্যোপাধ্যায় মহেশ ওম্তাদ নামে স্প্রিচিত উপ্পান্ণী মহেশচন্দ্র মুখে-পাধায় বহুমুখী প্রতিভা লক্ষ্মীনারায়প বাবাঞ্চা (প্রপদ খেয়াল টপ্পা ঠাংগি গায়ক এবং বীণা পাথোয়াজ তবলা ইত্যাদি যদেরর বাদক) ভাগলপারের থেয়াল ও টপ-খেয়াল গ্ৰী প্রেন্দ্রনাথ মঞ্মদার बारमान एएको वारेकीएनत मुखन मुद्रमा अ কির্ণময়ী গুজানারায়ণ-পৌত তুলসীদাস **ठाउँ शाक्षात भाषानग**रतत रुप्तनाथ वान्या-পাধায়ে গোয়াবাগানের নিবারণ কথক কলিপ্ৰসন্ন ঘোষ গ্ৰে পাথ্যবিয়াঘাণার •দ্বীটের বোগী•দুনাথ ঘোষ প্রভৃতি। তা ছালে জোড়াস্ট্রে ঠাক্সবাড়ীর সংগ্র সক্ষীতাচাৰ র্পে মিলের त्रामकुश**ा**त

বোগাযোগ ছিল। মহবিদ্ধি তৃতীর পরে হেমেক্সনাথের কন্যা প্রতিক্ষা দেবী ও পরে হিতেক্সনাথের নামও রামকুমারের দিকা ভালিকার গণনার।

কলকাজ্য স্থানিত সাজে আচাৰ'শ্বানীয় বামকুমার গারক ছিলাবেও ছিলাব আত্যাকত। তার বেব জীবন পরম গোরবে কলকাজাতেই অতিবাহিত হর।

রামকুমার ডিন পাত — গোতিনন্দাস কোনদাস কর্মীপ্রনাদ। প্রথম দুজনও গারকর্পে বাঁতব পারচর দেন। তবে কনিউ লছ্মীপ্রসাদই কন্মাধন্য হন বহু-মুখী প্রতিভার।

বারাণসাতে ১৮৬০ সালে সহমীর জন্ম। তিনি যখন দিশ, তীর পিতা রাষ-কুমার দীর্ঘকালের জনো নেপালে বান।

লছমী বাল্যজীবনে কাশীতেই বাস করতেন। রামকুমার এক আত্মীয়কে প**ু**রের সংগতিশিক্ষার ভার দিরেছিলেন।

১৪ বছর নেপাল বাসের সময় মাঝে মাঝে তিনি কাশীতে আসতেন। তথন লক্ষ্যার তালিম কেমন হচ্চে। লক্ষ্যার তথন নেহাং বালক। তব্ এই ছেলের ওপরেই রামকুমার আশা রেখেছিলেন। বংশের নাম রাখবে-ই। লক্ষ্যাইক তার নিক্ষের কাছে রেখে শেখাবারই ইচ্ছা ছিল। কিন্তু নেপালের সেই প্রচন্ড শীতে, তার ওপর বিদেশে ছেলেনানুষকে রাখা বড়ই অসুবিধা। তাই লচ্চমানুষকে আখারারের তালিমে কাশীতে রেখেছিলেন। গলাটা এ সময়ে তৈরারী হোক। বালেপার ভাল করে গড়ে নেবেন আর একট্ব বছরে বছরে। এই ভেবেছিলেন। এমনিভাবে করেফ বছরে গেল।

রামকুমার সেবার এলেন কবছর পরে।
লছমাকৈ ডেকে তার গান শ্নলেন। পরীক্ষা
করালেন তার কঠা। কিন্তু একেবারেই হুতাশ
হলেন। কি আশ্চর্যা। গলা সাধা ত কিছুই
হয়নি। ছেলেকে ভিজ্ঞাগাবাদ করে জেনে
নিলেন তালিয়ের প্রকল্প। ব্রুকতে পারলেন,
যাকৈ দায়ির দি নলেন, তিনি আপনার এন
হয়েও ফ্লিক (য়েইছেন। হয়ত ইছ্ছা করেই
ভিক্ রাখিতাত সাধাননি লছমাকৈ।

রাশ্তুমার সে জ্ঞাতিকে আর শিক্ত্র্বললেন না। সেবার বেশ কিছ্ব্রিন ররে গেলেন না। সেবার বেশ কিছ্বিন ররে গেলেন নাশীতে। আর প্রতাহ হণ্টার পর ঘণ্টা নিজে শেশাতে লাগলেন লছমাকৈ। তাও সেনপ্রার সে বাড়িতে নয়। ছেলেকে নিয়ে স্কাল বিকাল কোঠি থেকে বেরিরে যেতেন। অনেক দ্রো একেবারে লোকালয় পার হয়ে জ্ঞালের মারো। গলা খুলে লছমাক সেবানে সমতের হত। দক্ত্রমত নিয়েন কঠসাধনা করতেন। শ্বাদ্র আলাশ্টা ইতাদিও অকাশতেরে বিয়াজ ক্ষতেন। হতাদিও অকাশতের বিয়াজ ক্ষতেন।

এতদিনে লছ্নী ঠিক পথ পেলেন।
সহজাত প্রতিভা তাঁর। এবার দ্রুত লিথতে
লাগলেন। আরো কিছুদিন পরে রামকুমার
বধারিধ নির্দেশ দিয়ে চলে গেলেন নেপালে।
কিংতু সেধানে আর রইজেন না। বয়ুসের
সংশা অত শতিও আর সহ্য ছচ্ছিল না।

কাঁনন্ট প্রাংশ তৈরি করেও দিতে হবে।
এইসব কারণে কেনাকেল মাুখিয়ার দরবারী
প্রশাসের কাক ত্যালা করে ফিরে এলেন
কালাকে। লাভমাকে উপায়ন্ত করে রাড়ে নিতে
লালকেন্ন। লানের সংখ্যা আরম্ভ কর্লেন
বীধ্যে তালিম।

নিন রাতের অধিকংশ সমার লছমীর রিল্লান্তে চলে বার। একই সংকা প্রশাদ বেরাল টপ্লার সাধল। আবার বীলা আরে অবলার সংকা কেডারও। সব শিক্ষা সাধান একবোগে চলতে লাগুল। বিকশিত হতে লাগুণ লছমীপ্রসাদের বহুমুখী প্রতিভা।

রাষকুমার কাছে রেখে তাঁকে শেখাতে লাগলেন। লছমীপ্রসাদ হোমান মেধাবী তেমান পরিপ্রমী। পিতার নিদেশি অনুসারে অক্লানত নাধনা করতে লাগলেন। এমনিজাবে পিতা-প্রের দিন অতিবাহিত হতে লাগল কালীতে। ব্যাসময়ে লছমী ঠিক তৈরি হয়ে উঠলেন, যেমনটি রাষকুমারের আশা ছিল। হুশান খেয়াল টশা সবরকম গানেই উপাযুক্ত লেন। আর পিতার মতন বীণায় বিশেষ দক্ষ।

রামকুমার বিবেচনা করলেন, লছ্মী এবার শেখা আরুভ করতে পারে। নির্ভারতার জনোও তা প্রয়োজন। আর চর্চারও তাতে শ্রীবৃশ্ধি।

এইভাবে পারের শিক্ষা অগ্রসর করে নিয়ে রামকুমার কলকাতায় স্থায়ী হলেন।

শছমীপ্রসাদ প্রবেশ করলেন পেশাদারী জীবনে। কাশীর নিকটেই জৌনপ্রের দরবারে প্রথমে নিযুক্ত হলেন। জৌনপ্রের রাজা দরবারী শিশুপী বলে বড়ই সমাদর করতেন লছমীকে। এখানেই তিনি প্রথম চবংশিদক প্রেদ্ধার পান।

জৌনপ্রে কবছর থেকে লছমীপ্রসাদ বোগ দিলেন প্রিরার নববারে। প্রিথাব রাজা নিত্যানন্দ সিংক তাঁকে বিশেষ শ্রুণ্ধা করতেন। গার্র মর্যাদাও এরাজ্যে প্রথম পেলেন লছমীজী। প্রিরা-রাজই তাঁর কাছে সেতার শি্থতে লাগলেন।

প্রিণ্যায় কয়েক বছর বাসের পর
লছমীন্ত্রী পদিচ্যাওল ত্যাগ করলেন।
সংগীতচচাকে জীবনের বৃত্তি ও অবলদ্বন
করতে হলে কলকাতার কথা মনে আদেই।
সংগীতের এত শিক্ষার্থী এয়ন আন্ক্লা
সংগীতেববিদের এত প্রতিপাষকতা উত্তর
ভারতে আর কোথায়? লছমীপ্রসাদেরও
কলকাতায় সংগীতজীবন যাপন করার কথা
মনে হল স্বভাবতই। তাছাড়া পিতা রাম্কুমার
মিশ্র এখনে কেলু রচনা করে রেখেছিলেন।
তিনিও এখন বিগত। পেশাদার জীবনহাপন
করতে লছমীপ্রসাদ এপেন কল্কাতায়।

পরিণত হোবনেই পছমীজী কলকাতার সংগীতসমাজে এসে যুক্ত হলেন। রামকুমাব মিশ্র হে কালীক্ষ ঠাকুরের সংগীতসভার নিষ্টু ছিলেন, সেখানে আশ্রয় পেলেন তিনিও। আর জোড়াসালো অগুলেই শেই বলরাম দে শুটীটের পালে সাগর ধর শেনে বাস ক্ষাতে কালালেন। গুলের কার করে কাকাতা। এত বড় গুণ্টু লছমীপ্রসাদ, কাকাতাতেই প্রতিভার বোগ্য কের পেলেন। নানা ক্রম এলেন শিকাবশী হয়ে। আসরের পর আসতে মূলরো করতে কাগলেন। কোবাও মূলদ গাইতেন। কোবাও খেরাল টেপা টল থেরাল। কখনো বীঞ্কারস্পুপে দেখা দিতেন। কখনো স্থাত কাত্রন ত্বালা, স্ব রুটিতর গানে আর বীগার, ত্বালার কোরে ছারছাটীদের শেখাতেন।

ক্ষাকাডার সমস্ত শ্রেণ্ট আসরেই শহুমী
ওস্তাদ বোগ দিতেন। বিশেষ করে উত্তর
ক্ষাকাডার সৌরীন্দ্রমোহন সাকুরের দরবারে
হরেন্দ্র দালি ভবনে, হর-কুটীরে, সংগীতমিশ্রালর প্রভৃতি আসরে। দক্ষিণ ক্ষাকাডার
তার আসর সবচেয়ে বেশি ভবানীপ্র
সংগীত সন্মিলনীতে হত। তারপর সংগীত
সংগ্র

কলেনতায় নিয়মিত আসর ও সংগীত-চচার বনিয়ানী সংস্থা ভবানীপার সংগীত সন্মিলনী। সেখানকার সংগীত শিক্ষাদানের অধাক্ষ ছিলেন। বিখ্যাত সংগীত সংগ্রের বিশিষ্ট শিক্ষক ও পরীক্ষার বিচারকও হতে হয় তাঁকে।

ক্ষাকান্তার প্রথম বেতার প্রতিষ্ঠান আরুচ্ছ হল সেই ১৯২৭ সালে। আর লছুমী ওস্তাদের বীণাবাদন বেতার গ্রোতারা তথন থেকেই শুনতেন।

কলকাতার সংগীতসমাজের 317.3-SI লছমীজী একাত্ম হয়ে বিরাজ করতেন। শান্ত মধ্রে ব্যক্তিত্বে জন্যেও সকলের প্রিয় তিনি। ন্ত্ৰ, নিবি'রোধী, প্রিমাবজি'ত বলেই সকলে তাঁকে জানতেন। স্বভাব চরিত্রের জনে। স্বার শ্রুমাভাজন। বাঙালীদের সংক্রে অস্তরুগ্রভাবে মিশতেন। প্রায় সব শিষ্যসেবকই বাঙালী। পুষ্ঠপোষকরাও বেশির ভাগ বাঙালী। আর যৌবনকাল থেকে জীবনের শেষ প্রাক্ত বাঙালী সমাজের মধ্যেই কলকাভায় বাস করেছিলেন। এইস্ব সূত্রে তিনি বাংলা বেশ শিখেছিলেন। বাংলা ভাস বলতে যেমন পারতেন, তেম্নান পড়তেও। এমন্কি বাংলা দ্বর্লিপি ইত্যাদি লিখতেনও।

কলকাতার সংগীতজ্ঞীবনের সব দিকে লছমী ওদ্তাদের যোগাযোগ ছিল। ১৯২৪ সালে হাথন 'সংগীত বিজ্ঞান প্রবেশিকা' মাসিকপর প্রকাশ আবদভাহল তার নাম মারিত থাকত তার ততাবধায়কদের শীর্ষে। তাঁর পরে গোপেশ্বর বলেদাপাধ্যায়। নাটোর মহারাজ জগুলিক্টনাথ রায়, দিলীপকুমার রায়, ক্ষিতীকু-নাথ ঠাকুর প্রভৃতির নাম তালিকায় দেখা যেত। তাঁর নাম বরাবরই সংগীতাচার্য গ্রহমীপ্রসাদ মিশ্র' বলে প্রকাশিত হস্ত 'স্ণগীতবিজ্ঞান প্রবেশিকা'য়। এই পরিকার সংগ্য প্রথম থেকেই তিনি আফ্তরিকভাবে থাৰু ছিলেন। 'প্ৰবেশিকা'-র লেখক-লেখিকা-গণের মধ্যেও থাকতেন শ্রীযুত লছমীপ্রসাদ মিল্ল স্ণগীতাচার'। তার সংগীতবিষয়ক লেখাও এই পতিকার দেখা হার।

স্বাতিবিজ্ঞান প্রবেশিকার 3005 সালের জৈতি সংখ্যার প্রকাশিত হয় সংগতিচাহা বছমীপ্রসাদ বিল মহ খায় প্রস্ত ইমন্তিমা তেতলা।' এই স্বরালান বচনার সংখ্যা লছমী ওস্তাদের স্বাক্ষরে একটি निरंदान शास्त्र-'धारे मर्थाात क्ये व वन्त-সংগতি কিয়াপ সহজে আয়ুত্ত করা বাইছে পারে তদসংবংশ আমার অভিজ্ঞতান বায়ী আলোচনা করিতে একানত ইক্তা ছিল। কিন্তু क्शवात्तव कुणा मा इहेरण बामान हैकांबर কার্য করিতে পারে না। শারীরিক জসাস্থতা-নিবাধন ক্ষান্ত একটি স্বরলিপি বাড়ীক বর্তমান সংখ্যার আন কোন বিষয় লিখিছে পারিলাম না। সে কার্বে প্রথিত আছি। শ্ৰীলছমীপ্ৰসাদ মিগ্ৰ।

বাংলার স্পাতি স্মাঞ্জে এক বহুমানী আচার্য হয়েই তিনি ছিলেন। আরো একটি সংবাদ পাওয়া হায় এ বিষয়ে। ১৯২৮ সালের ৫ই মে তারিখে **খড়দায় বেশ বড় একটি** সংগতি সংখ্যালন হয়। তার উদ্দেশা ছিল খড়দায় একটি সংগীত সমাজ স্থাপন। সেখানে বিগত যাগের সংগতিজনের ক্ষতি-বুক্ষার ব্যবস্থা থাকবে। প্রতিষ্ঠা করা হবে একটি সংগীত বিদ্যালয়, ইণ্ড্যাদি। সেদিনের আসরে কলকাতা থেকে নানা প্রণিক্ষ গাসক বাদক হোগ দিয়েছিলেন। যেমন সকণী আমীর খাঁ, সারক্সী ছোটে খাঁ গারক-ক্তবলা-বাদক আনাথনাথ বস্ট্পাগায়ক রামচন্ট্র চট্টোপাধায়ে গ্রপদী বিনোদ গোস্বাল্লী উপ্পা-গায়ুক বিজয়ুলাল মুখোপাধায়ে এলাহি বস্থ প্রভাত। লছমা প্রসাদও গিয়েছিলেন। আর অধিবেশনে তিনিই হন সভাপতি।

সেই 'খডেদহ সংগীত স্মাজ'-এর
উদেবাধন ১৯২৯ সালের ৫ই জানুমানি হল।
এবারের প্রান-গোকুলচম্প বডালের বাগাম।
সেদিনের অনুষ্ঠানেও বহু গুণী সমাগম
হয়। আর মানগগাচারা দুলাভিচম
ভট্টাচারোর প্রস্তাবে সভাগতি হলেন লছমী
ওস্তাব।

যাশ সন্মান প্রীতি স্বাই তিনি জীবনে পেয়েছিলেন। আর সাধাসিধা আনাড়ন্দর জীবনযারা। অর্থালোভও ছিল না তার। সাধারণ সাংসারিক প্রয়োজন স্বাই মিটে হোত। তিনিও থাকতেন সংক্রিটিত।

কিন্তু শেষের কয়েক বছর প্র**স্তালজার**মানাসক শান্তিত একেবারেই ছিল লা।
সংগীত্যচলা করে যেতেন তুলিকা লিজেন,
আমরেও যোগ দিতেন গাইতে বাজাতে। কিন্তু
নিদার্ণ শোকে বিশ্বাস্ত ছিল তুলি মন।
তবে ধীর দিথর প্রকালের জনো বাইরে ভার প্রকাশ ছিল না। শুখু খনিও পরিচিতের।
জানতেন তুলি বান্দাময় অস্তর্যেক্ক করা।

একমাত পতে হদিদাস। আবাল্য তাকে নিজের হাতে গড়ে তোকেন। কি গুলী হয়েছিলেন হরিদাস। পিডার অভিবোগ্য উত্তরসাধক। পূর্ণ পরিণত ব্যক্ত তার হয়েছিলেন। বৃদ্ধ ওস্তাবের সকল সার হয়েছিলেন। বৃদ্ধ ওস্তাবের সকল রক্ষের আশা ভরসাক্ষ্প। সেই হরিদাদের মৃত্যু হল ।...

বাহাত সে মহাশোক সহা করনের লহমীকা। ফিল্টু পরীর ভেলে পড়তে লাগল। আলে থেকেই দারীর বিশেব সংশ্ব ছিল না। কটু প্রেডন হাপানিতে। সে রোগ ক্রমেই বাড়তে লাগল।

চিকিংসাও চলল কৰিবলেই ইত্যাদি। কিন্তু কোন কল দেখা গেল না। জীৰ্ণ কেহেই সংগীতচচা হতে লাগল বথাবীতি।

ৰাড়ীকে শিষরো আসতেন। শৈখাজেন জীলের। আসরেও বেংকেন। সংগীতের মধ্যেই শোক সংবরণের চেণ্টা করতেন ওক্তাদজাী।

ভানকে হরিদানের মাজুরে পর থেকে শিষ পদাপতি বিদের কমে আসতেন। ভারা কছমীলীয় আভারীয়। শিব পশাপ্তির পিতামহ হরিপ্রসাদ বা প্রশাল, এবং লক্ষ্মী ভালের পিতামহ মনোহর—দ্বী সহো-দ্ব। দিব পদাপতি ভাই লছমীজীর সব-চেয়ে নিকট জ্ঞাতি।

দিব, শশুপতি ভাগান্ত কলকাতার
দংগতিক্ষাবিন যাপন বন্ধতেন। লছমাজাবি
দংগ তাদের হোগাযোগ, সামাজিকতা ভাগে
ধ্যেকই ছিল এখানে। কিন্তু এখন তারা লছমা
ক্রুক্তানের কাছে বিশেষ উপদেশ্যে উপপিতত
চক্ষেন। লছমাজাত্তির একমাত্র পত্ত ইরেদাসের
মৃত্যুতে শিব পশুপত্তির মনে একটি ইছ্যা
ক্রেক্তিক্সা। একটি আশা। তাদের কেনে
শৃত্যুকে লছমাজাত্তী যদি পোষাপ্ত হিসেবে
নেন।

শশুপতি অপ্রেক। কিন্তু শিবসেবংবর তিন প্র-বামকিষণ, ভবানী ও বিঞ্। ভাদের একটিকে ত পেন্ধানিতে পারেন লছমাজী। এরা একই বংশের। স্পাতিচ্চাও একই ধানার। নিপে লছমাজীবও ও এ ব্যুপে একটা অবলম্বন হ'তে পারে।

শিব পশ্যপতির মনে এই আশা প্রান্তাবিক বে কাউকে পোষাপত্য নিলে। প্রছমী ওচ্চার ভার সংগতিবিদ্যান্ত তাকে নান করবেন। ডাঁদের মনের এই ইচ্ছা হা আগার কথা ভারা জানিয়েও ছিলেন লছমীজীবে।

কিন্দু বিদ্যাল কোন উত্তর দেননি। হয়ত তার ভাজ লাগেনি শিব পশুপতির এই প্রস্কাব বা ইছা। একথার লছমীকীর মনে প্রদোকেশ্ব দাছ হয়ত নতুন করে জাগত।

ভবে ভিনি কিছু প্রকাশ করতেন না মুখে। শিব, পশুপতি আসতেন। বঙ্গে বনে চলে যেতেন। কিল্ডু এবিষয়ে মৌন খাক্তেন প্রভূমীলী।

আর শেষ পর্যনতও তিনি কাউকে পোষা-পত্র নেন্নি।

স্তামে শবীর তাঁর আরো জীর্ণ হাল হালানির পাঁড়েনে। চিকিৎসার কিছু হার না দেখে আথাইস্বজন সেবকরা সাধাদের শব্দাপার হালেন। সেবার করেকজন মুক্তি-সম্পার সাধা এসেছিলেন গুল্পাসাগর তাঁথা করতে। লছমাজাঁকে স্কুম্ম করবার আশাস্ত্র তাদের কান্ত্রে প্রথানা জানানো হালা।

সাধার। বলালেন শাহিত গ্রহতায়নের অন্যঠান করতে হাবে।

সেই মতন স্ব ব্যক্তা হল লছমীলীর বহুদ্নির বাসস্থান সেই ১২ সাগর ধর লেনে:

সেখানে সকালবেলা সাধ্রা অংনককণ বজ অনুপঠান বরলেন। শাণিত স্বস্তায়ন হল ওস্তাদজীর নিরাময় কামনায়।

অনুষ্ঠানের শেষে সাধ্রা বললেন সংখ্যার পর গান শ্নেবেন। এত বড ওস্তাদ-শানের আসর যেন হয়।

অনেকে এসেছিলেন তার শাহিত স্বস্থায়ন দেখতে। ওাদের মধ্যে অনেকেট সংগতিক্তা সন্তর্গ সংখ্যাতেই সকলে আসংবর্গ আয়োজন করলেন।

সেই বাড়ীতেই আসর হল। লাছমী-লাীর আমায়িশ্বজন বন্ধবান্ধব দায়া-গায়ক বাদক জনেকেই এলেন আসারে। দিব পদাপিতি গৌরীদাক্ষর কালী ওক্তাদ দায়াছারণ ব্যাদি দায়া সহায় প্রভৃতি। লছমীলীও কণ্ট করে এনে সকলের সংখ্যা বসলেন।

সাৰ্ক এসে প্ৰথম লছয়ীজীয়ই গান শনেতে চাইলেন।

কিন্তু স্থিনকে ক্ষমা প্রাথানা করলেন ওত্তাদকী। আনরে গান সাইবার ক্ষমতা তার আর নেই।

জীবনে এই প্রথম সংগীতে অক্স হলেন লভ্যীপ্রসাদ।

ভথম জনাদের গান হল। দিব পদ্ব-পতি জাটিতে গাইলেন থেয়ালা। অন্দাদ-নাথ বস্তুও থেয়ালা লোনালোন। আারে। কেউ কেউ গাইবার পর শেষ হল সানের অনুষ্ঠান।

সংগীতের আসেরে লছমীজীর সেই শেষ উপন্থিতি তাত বিমা সংগীতে।

ভারপর আধু কদিন মাত্র বে°চে-ছিলেন।

অবশেষে ৭ই ডিসেম্বর ১৯২৯ চির-নীরব হয়ে গেলেন লছমী ওস্তাদ। বয়স হয়েছিল ৭০ বছর।...

ত্ব'র মৃত্যুতে সংগতিজগতে এক বিচিত্র শ্নাতার স্কুটি হল। কারণ উত্তর-অধিকার ত চলে যায় পুরেই।

প্রতিভাদীপত হরিদাস মিপ্র। বংশগত বিদার কি যোগা অধিকারীত সেই বয়সে হয়েছিলেন।

ভার একট্ পরিচয় একদিন পাওয়া যায় সংগীত মিল্লয়ে।

আহিবীটোলার ভতনাথ মিগ্রে বাড়ির সেই আসর। সংগতি মিরালয়। মির ভবনের সে আসরের কথাত বলবাধ গ্রতনঃ এমন দ্রাজ আসর সেকালেও আগ চহত ছিল না। সমুশত বড় বড় কলাবতদের গান-বাজনা ত দেখানে হতেই। সরোদী কৌকর খাঁত করামত্রলা খাঁ ারজ্যা ছোটে খাঁল গোরীশৃংকর মিশ্র াতারী এমদাদ খাঁও সংবাদী আমীর খাঁ লছমী ওস্ডাদ ও শিব পশপতি ওস্তাদ বিশ্বনাথ গাও ও সংগত-কার নগেন্টনাথ এবং আরো অনেক গুণীরই অসের হয়েছে সেখানে। কিংত সেজনো কথা নয়। শ্রেণ্ঠ গায়ক বাদকদের নিংয় কলকাতায় ত আগো নানা বাড়িতেই আসর হত। কিন্তু শ্রোতাদের জন্যে সংগীত মিগ্রালয়ে ছিল ঢালাও বাৰস্থা। আর এ বিষয়েছ আহিরীটোলার সেই মির বাড়ির জাড়ি যোলা ভার। সেখানে জোন কোন আসর পর পর দর দিন ধরেও চলত। সে জন্যে লোভাদের গাস-বাজনা লোনার জন্য আহার থেকে বিল্লাম পর্যস্ত বারম্পা পাকত সব বিশারে। প্রথম দিনে তে সারা রাত আসর ছল। ভারপর চলে গেলেন গায়ক वामकता। किन्छू নিম্পিত লোতারা গ্ৰইলেন। কারণ পরের সধ্যায় ভাষার বসবে আসর। তাই ত'দের সারা 'দিনের বিলাম আহার জলযোগ ইত্যাদির বাৰতীয় ব্যবস্থা। এমন কি বাথরুমে প্রভ্যেকের জনো কোঁচানো কাপড়**ও প্রচন্ত**। গাল-वाकना ग्राटिक अस्मरह्म। वाकुम् कानाम



প্রুণ, কলেজ এবং ইঞ্জিনীয়ারিং

চাম' ও অফিলের জন্য প্টেশনারী, কাগজ, লাডে, ছুইং,
ইঞ্জিনীয়ারিং ও যাবতীর
উৎকৃষ্ট হাপার কাজের স্লেড
প্রতিষ্ঠান।

কুইক ষ্টেশনারী ষ্টোর্স

৬০ই, স্নাধাৰাজ্যর স্থাটি, কলিকাডা—১

উন্তর্ভুটিটেড, ৩৭-৪৬৪৪; প্রায়ঃ অরারীয়ন—বাওড়া পোন্ট বল্প-৩৮, যাওড়া

করুর আহোত্ত করুন বিপ্রায় নিন। নিজের বাড়ির বছন ভাববেন। অন্টোনের কোন হাটি ছলো বলবেন। আবার সম্থার পর অনুনক্ষে আর এক দলের গান-বাজনা। ইক্ষে ছলো দে রাতেও থেকে বাবেন। সব আরোজন করা আছে দে জনো।

মিত্র মহাশরের জলসাঘরে শোনবার জন্মে বাঁরা নিমলিত হন তাঁদেরও গ্রেপ আছে। তাঁরা কেউছ হ্রুক্সের প্রোতা নন! প্রত্যেকে রাঁতিমত বোম্মা। গ্রেণীর গ্রেপ-কালা বোঝেন ধরতে পারেন অব্পবিদ্যার কাঁকি। রালের ঠিক-বেঠিক জানেও তাঁদের জানে। কাঁটিতান ঠিক-বেঠিক জানেও তাঁদের জানে। কাঁটিতান সমে এসে পড়লে মাথা তাঁদের ঠিক বড়ে ওঠে বোঁকের মাথে। তাঁরা দক্ষ্মত সম্মধার আক্রের প্রাণ। এমন প্রোত্তাদের না পেলে আসের জমে না। কলাব্রুক্সের কাই অব্যুক্তরের মিত্র তাঁরা। এখানে ভারের তাই অব্যুক্তরের মিত্র তাঁরা। এখানে ভালের বড় থাতির।...

সেদিনও ছুতনাথ মিচ বড় আসর করেছেন। জসলাযর তবে উঠেছে গ্রোতার দলে। কলাকাররাও উপস্থিত। বাইরে থেকে এসেছেন দুর্যর্ষ প্রবীণ পাখোয়াজী মদন-মোহন মিপ্রা। স্বনামধনা কটো সিংহের উপযুক্ত শিকা তিনি। এসেছেন লছমী প্রস্তাদ সংবাদী আমার বা সার্প্যা ছোটে বা গ্রাছাত। নবীনদের মধ্যে আছেন হারি-দাস অনাথ্যাথ বসু এমনি কজন।

সেদিন আসরে আসবার আগে পিতা-প্রে কথাবাতী হয়ে ছিল।

থা আসাবরে একজন বড় পাংশায়াল? আসবেন তা শ্নেছিলেন হায়দাস। আর বাড়িতেই বলেছিলেন বোবা আপনি নাই-বা পোলেন। আমি আজকের আসবে ধ্রুপদ গাইব।

লছমীজীর 144 সংগ্রহ হয় ৷ প্রেকে তিনি 5-918G বলেন. 517 আন্ত্ৰিত থাকব। দেখ হণিয়া. 377-য়োচনজী বাদ ี่ ๆ วิ আদমি ৷ তার কলে সিংয়ের তালিম। কিন্তু **এ** হা •া আনেক বয়েস হয়েছে। সামলে গাইবি। ও'র সংশা লড়াই বাধাস নি যেন।

সেদিন আসরে কিন্তু তা-ই হল

প্রথমেই গান আরম্ভ করলেন হাধি-দাস। তার ধ্বাপদের সংগ্যান্দনমোহনজাই পাথোয়াক্স নিয়ে বসলেন।

স্থাননের স্থাবিতে আছেন লছমীজী, আমুমীর খাঁ প্রথাধ। ল্লোভানের মধ্যে ভূতনাথ মিল্ল রয়েছেন।

অতি স্কেলা দল্প কণ্ঠ গান ধরলেন ছরিলাস: হাথাবিধি আলাপচারিতে রালার রূপ দেখালোন। স্বরের স্কুলর আবহ স্কি হল জাসরে। আলাপের পর হরিদ্স প্রায়ী গাইতে শ্রে করলেন।

মদনলোহন পাংখারাজের সূর তান-প্রোর আর এক্ষার মিলিয়ে নিলেন।

হারিদাস চৌভালে গাল ভারতভ করবনে ঠাল লয়ে। কিন্তু স্থারী স্থানর মধ্যেই গোলবোগ বাধল। গারকের সংগ্য পাথোরাজীর অমিল। সংগত মিলছে না গানের তালে।

শ্রোতারা কোত্তলী উৎকরণ ছলেন। উপেকের শেষে ফি ঠিফ পেণীছতে পারছেন না পাথেধারজনী? নাফি হরিদাস সমে পড়বার আগে মাঝপথে ছেড়ে দিচ্ছেন?

ডাটম্ম হলেন প্রবীণ মগনমোছন। গাওয়াইয়ায় সায়কারী সতক হিন্নে অনুধাবন করকোন। হাঁ। উপেন্ধ ত শেষ করছেন না।

ভারপর বললেন হরিদাসকে, এ কেয়া? বিচামে রোকাভা কাহে?

সপ্রতিভ গায়ক জানালেল, আশ্কা ইচজংকো ওয়াদেত। উপেজ শ্রা করলে আপনি ধা লাগাতে পারবেন বা।

কি, এত বড় কথা? চলিয়ে ত শেষ তক্!

মদনজনীর কথা মন্তম উপেজ শেষ করে ছরিদাস ক্ষামানৈত ফিরে এলেন। কিংতু আসরের সবাই দেখলেন—আশ্চয়া, এত বড় পাথায়াজন শেণছতে পারকোন না উপেজের শেষ। মদন্মোহন বেন প্রত্যক্ত বোধ করলেন।

এবার হরিদাস বললেন, মিশিরজী, ঠিক কিজিয়ো।

মিলজী থেন শেষ শক্তিতে ছবিলন, 'উর এফ দকে।'

কিংতু একবার নয়, এফাধিকবার একই
ব্যাপার ঘটলা। উপেলের স্থেগ শের পর্যক্ত
এসে পড়াওে অক্ষম হলেন মদন্যোহন। কি
বিষম কটা লয়কারি? বৃদ্ধ পাথোয়াজার
মাজভন্ক আলোড়িত হরে উঠল।
টেডনলোক চুমকিত করে জাগতে
গাগল বহুদিন আগের একটা স্মাত।
অনেকললের এক অন্ড্র আভিজ্ঞতা। লোকিন
ভাষ্কব। ঠিক সেই জিনিসের প্নরাব্তি
এখানে কমন করে হল।

মদনমোহন কোল থেকে পাখোয়াল নামিয়ে রাখলেন। হরিদাসের মাথের দিকে ফিথর দ্ণিটতে চেয়ে বল্লেন, 'আপ্কোন্ হ্যায়া?'

অর্থাৎ কি আপনার বংশ ধারার পরিচয়ু--ঘরাণা ?

হরিবাস লছ্মীজীর দিকে দেখালেন, 'মোরা পিডাজী।'

'আশকা দাদা ?'
'রামকুমার মিশির।'
'বেনারস্কা ?'
'ভী হাঁ।'

মদনমোহনকী আন্দেত্ত আন্তেত বল্লেন, 'ভাব পান্তা মিলা।'

গান বাজনা ত কথ ছয়ে গিরেছিল। খ্রোতারা অনেকেই অবাক হরে খুনছিলেল এপনের আক্তুত কথাবার্তা। এখন তারা আবো কোডুহলী হলেন। আর বহুদিন আগেকর আর একটি আম্পরের নাটকীর বর্গনা আরক্ত করলেন বৃদ্ধ পাথোয়াজী। লছমী ওল্ডাদ আর সকলেই মদনমোহনের কাহিনী গুনুনকে লাগলেন।

বস পারাধা জন্মানার কথা। আমি তথন তোমারই মতন অভয়ান। বেদারলৈয় এক আস্রে রামকুমার মিশিরজী গাইছেম। আছে সংগত করছি। আমার তথন কম ব্যক্তের দাশট্ট। গানকে আমার পাথোয়াক্ষের বংগ্য रकवक्ष रहेटन निरंश शावात रहकी कर्ता । अधन সময় রামকমারকী গান গামিরে বললেন 'সাথা সাথা চলো। সাুস্থ হোকে মিঠা 🖏দে বাজাও, ভাই। লডাই করছ কেন। किন্তু व छात्रान द्वत कथाय आति कान जिला में में। বক্ত গ্রম তখন। কেবল তেডে বাজাবার স্কার গাওয়াইয়াকে বেকায়দায় ফেলবার দিকে খোক। আর মনে এই অহুক্র-জারে এত শিখেছি, এসৰ বাজাৰ না? তথন আৰু খামিক গেল্পে তোমার দানা এমন একটা সরভারী ক্রাণেন—ঠিক এই তোমার মতন—বে আমার হাত একেবারে ব**ম্ধ হ**রে গে**ল। কোর্মী**লকে গাঁচতা নেই। আমি আর কিছাতেই **তার** গানের সংক্রে হা লাগাতে পারল্ম না। বে-ই-জতের একশেষ। পাথোয়াজ থেকে হাত উঠিয়ে নিতে তল সকলের চোখের সামনে। এখন আমার বা বয়েস সেসময় তোমার দালারও হয়ত কেমান বয়েস হয়েছিল। তিনি ভারপর আঘার বললেন, 'সম্প্রভীয়া এনিক সেদিক করতে গোলে নিকেই বেকাল্লনার পদ্ধবে। মনে রেখো, আম্লাদের ধরে হা আছে এস্ব জিনিসের সংগ্ কিছুতেই বাজাতে পারবে না। পরেও এই অবস্থায় পদ্ধবে। আজকের এট লয়কারীও ঠিক সেদিনের মতুল। আমি ভূ আর কিছুদিন **পরেট মরে** যাব। কিন্তু আজো **এ জিনিসের সং**শা বাজাতে পারল ম না। সেদিনও হোমান আজো তেমনি আমায় অপদৃস্থ হাতে হল আনারে। তোমার দাদার সেই প্রোণা জমানার কথাই ठिक ठिक घटन लाम।'

বিম্ব ব শ দীর্ঘদ্রাস ফেলে নীর্ব হলেন। আসের শুন্ধ লোক তার এই ম্বানিকক আভিজ্ঞতার কথা শুনক্লিন এতক্ষণ।

শেষে লছমী ওস্তাদেই জলসাধরের নিস্তাশ্বাভা ভঞা করলেন। আলপ্রশার শাস্ত মানুষ তিনি। সংবেদনশীল, প্রাক্তা।

ত্রিদাসকে সংক্রেপে শুধ**্ ক্রেনে**, ত্রিরা, গান সূত্র করো।' জার মদন**্রেশ্** গিলের দ্বি ফিরে তাকে বাজাতে **জন্মেরি**

এবার ছবিদাসের গানের সপ্সে আন্দর্ বোহনকার স্পাত মিলতে লাগল কি কিন। আর কোন গোলমাল নেই। লাডাইয়ের পর স্থাতি আরুদ্ধ হল আসরে।.....

লছ্মী কতাদের সংগ্রীভক ক্রিছে সেদিন সংগীত মিহালদের ক্রিছে ক্রিছে পেয়েছিল।

—निगीभकुमात गृहदानामात

চত্ত্বদশপদী গদ্যকবিতা

मिर्नाम मान

।। श्रीत्व्यः ।।

製造をおりませんが、または、いちんはいいかっとうです。

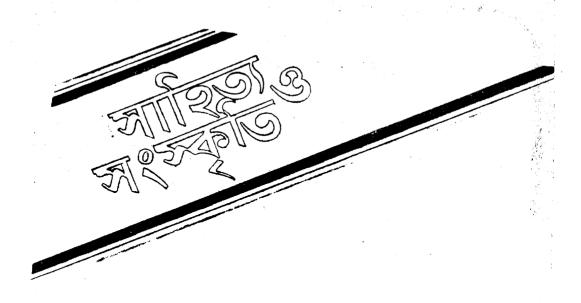
আকাশের উপর দিয়ে মশাল নিয়ে ছুটেছে পদাতিক সূর্য ঃ
প্রচণ্ড ঋতু গ্রীষ্ম আসে। হৃদয়ের দরজা সশব্দে বন্ধ হয়।
আমার দেহের উপর নিঃশব্দে মধ্যাকের সূর্য জনলে;
আমার শরীরে কেউ যেন অবিরত ধারাল ছুট ফোটায়।
তীরদলাজ সূর্য একটানা আলোর তীর ছুঁড়ে চলেছে,
শ্কানো পাতাগঢ়লি প্রোনো শব্দের মত ঝ'রে পড়ে,
বিবর্ণ পাতা যেন গ্রীষ্মের হলুদে রঙের প্রতিধ্বনি।

প্রিবী তার চিত্র-বিচিত্র ঋতু নিয়ে খুনিমত চলে.
সময় একটা বিরাট ফাঁদ যে-ফাঁদে আমরা সকলেই বাঁধা ঃ
এক একটি দিন চোখের ভিতর দিয়ে মগজে প্রবেশ করে,
আমার কানের ভিতরে তরল আগনে মুখে আগনের ফুলকি ঃ
আমি রুমাল দিয়ে আগননের গ'ডোগলো মুছে ফেলার চেণ্টা করি,
আমার মতা হয় না বটে তবে আমার কিছুটা ম'রে যায়;
মৃত্যুর ব্যাকরণ কি আর নতুন ক'রে লেখা হবে না?

ा। अस्य ।।

পথটি চলেছে সোজাস্ত্রি একটি শ্ন্যতার দিকে, এই পথের উপর দিয়ে আমি প্রতাহ হাঁটি : এ পথ স্ফের জনো প্রতিদিন অধৈর্য হ'য়ে ওঠে, ভোরের আলোয় এর মস্ণ কাঁধ চক্চক করে. স্ফের উত্তশ্ত আলিংগনে এর দেহ গ'লে যায় : আবার সংধ্যার অংধকারে সংক্চিত হ'য়ে আসে— দ্রামলাইনের উপর এই পরিচিত পথটি আমি ভালবাসি।

দীর্ঘ প্রার্থনার মত আমার একটানা পথ-চলা ঃ
দিনগালি এখানে গলিত পিচের ওপর ম'রে যায়,
ধালো বালি জ্বঞ্জাল জীবাণা বিসমরণে ভরা এই পথ।
আনেক সময় এর লেন বাই-লেন ফাটপাথ ঢেকে মৃত্যু আসে,
অস্থির পথটির ধারে ঘাসেরাও ঘামাতে পারে না ঃ
তব্ এই চিরপরিচিত রাজপথ আমার প্রিয়
আমি যতই হাঁটি না কেন, পথটি ঠিক আমার পিছনেই আসে।



ৰুখা ভাষায় 'ৰামায়ণ' ও মহাভারতের পূৰ্ণাণ্য কাৰ্যাল্লাকাৰ

সাহিত্য সরকার 'বিশ্ব সোভিয়েত গ্রন্থাগার' নামে গোটা পর্টথবীয় চিবায়ত প্রকাশের একটি ঐতিহাসিক সাহতা সিম্পাদত নিয়েছেন। এই উদ্যোগের প্রথম - ক্রান্তর্ভান্ত দু:খানি প্রশ্ব ছোমরের 'ওডিসি'। ভারপরেই প্রকাশিত হলো চিরা-রত ভারতীয় মতাকার। রামায়ণ ও মহা-ভারত'। সো**জ্ঞারত** দেশে ভারতবিদ্যা-বিশারদ একটি গোষ্ঠীর সহযোগিতায় অন্বাদক এস লিপবিন ও ভি পোডাপোডা রামায়ণ ও মহাভারতের কারানে,বাদ করে-ছেন। প্রথম সংস্করণে মহাকাব্য দুখানি ও লক্ষ কলি করে মানিত হয়েছে। এই প্রন্থ দুখানির প্রকাশ **উপলক্ষে র**্ণ সাহিত্যের স্বনামধনা সমালোচক পি মিনতাসে লিখে-ছেন : "সোভিয়েত পাঠক সাধারণ এখন ভাদের অত্যান্ত আদরণীয় ভারতীয় সংস্কৃতির মূল দু:খানি উণ্সর পূণাণ্য হবাদ পাৰেন। সংস্কৃত ভাষাং রচিত এই প্রাচীন মহাকাব্য দ্রিটিতে মানবসভাতার যে ধাণী উচ্চারিত হয়েছে তা দেশকালের গণ্ডী পার হয়ে বিশ্ব সংস্কৃতি ভাণ্ডারের এক অম্লা সম্পদ হিসেবে পরিগণিত।

বিভিন্ন স্তে বিভিন্ন সময়ে আমরা যে সংবাদ পৈরে থাকি তাতে দেখা যায় কে সোভিয়েত দেশে বিভিন্ন ভাষায় বিশেষ করে বৃশ ভাষায় প্রচীন তথা আধ্নিক ভারতীয় সাহিতা পাঠের জন্য স্কোদ্শের জনগণের মধ্যে একটা উদেশ্যেকায় প্রবণতা

দেখা দিয়েছে। সম্প্রতি আন্নরা জেনেছি যে রবীণ্টনাথের বিভিন্ন কাষ্য বৃশ দেশে যা প্রচারিত হরেছে তার সংখ্যা কোটীর উর্বেষ্টা ও-দেশের ব্যাপক সাক্ষরতা তথা আর্থিক দ্যাজ্ঞলা যে এর প্রধান দাটি কারণ সেবির্বায় সন্দেহ নেই। তব্ একথা বললে মনে হয় আনাায় হবে না যে নিজে কিনে বর অনায় প্রবাদ জনগণের প্রবাহা ভারত ত দ্রের কথা, খাস পশ্চিম ইরোলাপেরও অনেক জনগোন্টী অপেক্ষাধিক।

সাহিত্য অকালেমির উদ্যোগে অনুবাদের নমস্যা সম্পক্ষে আলোচনা

গত ১১ই মে শনিবার সাহিত্য জকা-দেমির প্রাঞ্জীয় দশ্ভরের উদ্যোগে কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের স্বায়ভাগ্যা একটি আলোচনা সম্ভা অনুনিষ্ঠত ENI আলেচনার বিষয় ছিল অনুবাদের मानः সমস্যা। এই আলোচনা সন্তা পরিচালনা করেন শ্রীমতী লাজা রায়। সর্বস্ত্রী আরদা শংকর রার সুধাংশুমোহন বন্দ্যোপাধার, স্নালকুমার চটোপাধাার, অরুণ মিল্ল ও জ্যোতরিশ্রমোহন জোয়ারদার প্রমূব এই অংলাচনায় অংশ গ্রহণ করেন। আংলাচিত অস্পাগর্নির প্রধান্ত চার্ট্টি ভাগে ভাগ করা गেতে পারে : ১। অনুবাদ সাহিতা প্রকা শনা সাহিতা অকাদেমির কর্মস্চীর অত্ত-গতে বলে অকাদেমির প্রাণ্ডলীয় দশ্তর क्षि जन्द्रवापक मुही' श्रकाण क्यरदन। এই অন্বাদক স্চাত্ত জন্বাদকের নাম,

ঠিকানা বয়স, পেশা মাত্ভাষা কোন ভাষা থেকে কোন ভাষায় ডিনি অনুবাদে আগ্ৰহী, প্রকাশিত অনুবাদের বিবরণ, এভঞ্জ কান অন্দিত পাণ্ডুলিগি প্রসত্তত আছে কিনা সে তথা স্ববিছ বিশদভাবে থাকবে। বাংলা বাততি প্রে ওলের অন্যান: ভাষা যেমন, ও'ডিয়া, পরৌও অস্থায়া প্রভৃতি ভাষার আংশ বাদকদের সম্পক্তেও সমাস্ত তথা অন্বাদকস্তীতে থাকবে এই স্চী জৈর তবার পরে প্রকাশক সংস্থাগর্নির তার প্রতিক্রিপি পাঠানো হবে। যাতে প্রয়োজনবোধে যে কোনও নির্বাচিত গ্রন্থে তান,বাংশর জন উপস্ত জন বাদককে বেটা নিতে পারেম : २। श्रवापान अरमधाना विक স**াবিধার জন। অন.বদ কমে'র** 🗆 प्राथमा अकामा मामाशास করবেল বেমল পাণ্ডুলিপি নিবাছল 🚜 यथात्याला अन्लापना। अ यालाखः व्य তাদের বিশেষজ্ঞগণাকও ZVATERA. कारक माशास्त्रमा । । जन्द्राज् প্রকাশে আগ্রহী প্রকাশন সংস্থাগনিকট ভাকালে মি ষোগ্য অনুবাদকের যোগাহোগ করে দেবার দাসিতু নেকেন অকাদেমির তর্ফ থেকে একটি পঢ়িকা প্রকাশের কথাও কমিটি ভাবছেন ৪। অনুনাদের কাজে স্বিধার 🐠 প্রাঞ্জের দাট্টি বা দিনটি ভাষার একখা অভিধান প্রণয়ন করা উচিত বলে উপস্থি সকলে মান করেন। এ উপেদুশ্যে **পাঁ**ছ ভারা সরকারের দুগ্টি আকর্ষণ করবেন।

—শ্রীজরংকরে



ভাভেৰীনৰের ভারত প্রমণ। অন্যোদ—গৃং। বস্তু। নবভারত পাবলিশাস্থ, ৭২ মহাজা গাংধী রোড, কলিকাতা-৯। হোজ টাকা।

ভাভেরনিয়ের দ্রমণ্য ভা•ত একটি অসাধারণ প্রান্থ। সাধারণ পাঠকের বেমন সংখপাঠ্য, ইতিহাসের ছাতের কাছে তেমনই ম্লাবান। জা বাডিস্ত তাভেরনিয়ে ছিলেন ফরাসী ব্যবসায়ী, মণিমান্তার কার-বার করতেন। ব্যবসায় উপলক্ষেই frefat আসেন। স্তদশ পাঁচবার ভারতববে **শতাব্দীর ভারতব্যের বহ**ু বিচিত্র বৰ্ণনা **তার সিক্ত ভ**রেজেস' গ্রন্থটিতে পাওয়া যায় ৷ **থরাসী ভাষায়** ভাডেরনিয়ে গ্রন্থটি লেখেন (১৬৭৬ ব্রীঃ), তারপর ইউরোপীয় বিভিন্ন ভাষার গ্রন্থটি বারবার অনাদিত তালাছ। বাংলা ভাষার সম্প্রতি (১৯৭৩ খ্রীঃ) গ্রীমতী সাধা বসা গ্রন্থটি অনাবাদ করেছেন। তাঁর কাছে আমরা কতন্তা।

তাভেরনিরের ভ্রমণ ব্রাণেত সংতদশ শতাব্দীর ভারতবরের রাজনৈতিক অবস্থা ব্যবসা-বাণিজ্য, পথ্যাট ও যান্বাহন ব্বেম্থা, সামাজিক রীতিনীতি ও গ্রান্তিচান ইতাদির বিশাদ বিবরণ পাঞ্জা ব্রা ।

রক্তান্তের থেকে প্রে করে মীরজ্মনা ও

নার্নতা থা গ্রেমত ভারত বিশাত বর্বান্তর সংগ্য তাডেরানরের সাক্ষাং থেকে

ভারো ব্যবহার পেরেছেন, কেউ তার সংগ্য
থারাপ বাবহার করেছে। ওলাদাল, ফরাসী
ও ইংরেজ থ্রা সে ধ্রে ভারতবর্বে বাস
করতো তাদের সক্ষেছেন। তবে অধিকাংশ
বিবরণ নাকারে বার্ণতা তবে অধিকাংশ
বিবরণ নাকারে বার্ণতা পার্যান্তর না তিনি
বার্নারী প্রতির্যাসিক ছিলেন না, তিনি
বার্নারী প্রতির মাত্রান্তর ছালেনই
তার ক্রমণ ব্রান্ত পভা উচিত।

বাংলা অনুবাদ্টি নানা কারণেই প্রশংসার যোগ্য। প্রীমতী সুধা বস্মু এই দীর্ঘ গ্রন্থটি অনুবাদ করতে প্রচুর পরিশ্রম করেছেন। এই ধরনের অনুবাদ ষতই প্রকাশিত হয় ততই আনন্দের কথা। শ্রমসাধা অনুবাদের কাজে সাধারণতঃ বাঙালার আগ্রহ নেই। অথচ অনুবাদের মধ্য দিয়েই বিশ্বসাহিতার সুপো আমাদের যোগাযোগ ঘটে, বাংলাভাষা এবং সাহিত্যেও সুমুন্দি লাভ করে। আলা করি তাতেরনিয়ের ভারত শ্রমণ প্রশ্নটির যথোচিত সুমাদের হবে। এবং সাহিত্য করে। আলা করি তাতেরনিয়ের ভারত শ্রমণ প্রশ্নটির যথোচিত সুমাদের হবে। এবং সাহিত্য সুমুন্দির প্রয়োজন শুটুরে।

ভবিষাং সংস্করণে অন্বোদটিকে চুটি-হ'ন করে ভোলা এবং সম্পূর্ণতা দেওয়ার প্রস্নেজনে কয়েকটি কথা বলি। 97700 কেভেরনিয়ের ভূমিকায় বৃশিত ব্রাণ্ডি অতাণ্ড অসম্পূর্ণ. ক্রযেকটি প্রয়োজন তথ্যত সংশোধন করা যেগ্ৰন তাভের নহে প্রথম প্রাচ্য দেশ প্রয়টনে আসেন ১৬৩১ খ্রীফ্টাম্পে (১৬৩৬ নয়)। চতুথবার ১७७२ **थ**्रीणोर≈म ভারতবর্ষে আসেন ('চতুথ' যাত্রায় পদক্ষেপ করেন' কথার মানে (वाक्षा यात्रक् ना)। जाग्राह्म मान्याला करे দ্যাণ বারাদেরর অনাশৈথক একথা সম্ভবত সতা নং অন্তত শালে জারেত-এর ব্যাখ্যা বিশেলফা গ্রহণ করলো। জোরেত-এর উল্লেখ ভূমিকায় একাধিকবার করা হয়েছে, তা থেকে মনে হয় লেখিকা জোরেত-এর বইয়ের সংস্গ পরিচিত (যদিও তিনি সর্বল্ল এম জোরেট' কেন লিখেছেন জানি না. সম্ভবত বল-এর ভমিকাষ ম'সিল জোরেত'এর সংক্ষিপত রূপ ুকু লেখা উচিত **সি জোরে**ভা

বাংলা অন্বোদের ভূমিকার জানানো হয়েছে, 'তাভেরনিয়ের প্রমণবৃত্তান্ত' বইটি ভি বল্-এর 'ট্রাভেলস ইন ইন্ডিয়া' দেই খন্ড. ১৮৮৯) গ্রান্ডের (বইটির নাম Thermier's Travels নয়) পাণোঁপা অন্-দিত রপো। প্রথমেই মনে হয় ফরাসী থেকে অন্বাদ করতে পারলে অন্বাদ অনেক বৃদ্ধান প্রস্তুত্তা। তবে বল্-এর সংস্ক্রণটি অতান্ত নিজ্বযোগ্য পাঠ-সন্দ্রালিত ও টাঁকা-টিপ্সনী সংযোজিত হওয়ায় এক হিসাবে অনেক বেশী মূল্যান

আরো বই

ব্ৰনাশেৰ নের্দা—কাবকণ্ঠ প্রকাশনী।
১০1১ ইল্লাইমপুরে রোড। কলকাতা
৭০০০৩১। শম পুচি টাকা।

চিলির সামরিক জাগ্ডার হাছে নিহত কাবি পাবলো নেব্দার নাম প্রগাড়েশীল মানুষ মাহেরই প্রির। তার কবিতা দাঁঘাদিন ধরেই স্বাধারিতিত এ দেশের মান্যাধর কাছে। স্বাহিন্টিত এবং তর্ব কাষ্ট্র মেরুদার কাবিতা বাংলায় অনুযাদ ক্রিছন ক্রেক। বৈশ ক্রেকটি সংক্ষনত বেরিয়েছে।

ব্রনাশ্ব ছদ্মনামের আজালে শ্রীমন্থি

থটক গীর্ষাদিন আগেই নের্দার ক্ষেকটি
কবিতা অন্বাদ করেছিলেন। পার্ল্ডীকালে

আরো কিছু কবিতা অন্বাদ করেন। সমস্ত

অন্বিত কবিতা একহিত করে বারিয়েছে

বর্তমান সংকলন। অন্বাদক স্বাং একজন

কবি। অনুবাদে মূল কবিতার সেলাজকে

ক্ষেত্রাক্তি তিনে এনেছন আস্চ্যা নিস্বোর্দার

কাছাকাছি টেনে এনেছন আস্চ্যা নিস্বোদার

ব্যক্তিগ লোলাযোগ্য ছিল। ভার লিভিতে

একটি আলিখা গেগ্ডন্ত হলে, বাঙালী
অকটি গৌরুর রোধ করতেন।

আংশ্য প্ৰতি জংকা (কাৰ; সংক্ৰান) আশিস সান্যাল। বাক সাহিত; প্ৰাইভেট লিমি-টেড, ৩৩, কলেজ রো, কলকাতা-৯। ৰাম চাত্ৰ টাকা।

ক্লাভিত তর্ণ কবি শ্রীআদিস সান্যালেব 'জমে প্রতিজন্মে কাব্য গ্রন্থটি সম্প্রতি
প্রকাশত হয়েছে। আলোচ্য কাব্য সংকলনের
প্রধান দ্টি ভাগ—জন্ম প্রতিজন্মে ও হে
দ্বনেশী ফ্লা। দ্বিতীয় অংশটিতে মোট
ছয়টি কবিতা সংকলিত এবং প্রতোকটিই
অনুবান কাব্যা। অনুদিত কমিতাগুলি প্রতিবশী ভারতীয় কবিতারই অভতভূত্ত।
প্রভাকর মাচওয়ে, নীলর্মান ফ্রুকন, নবকাশত
বড়ায়া, শচীরাউত রায় মায়াধর মানসিং ও
বলরজ কোমলন্দ এই মোট ছয়জন কবির
কবিতা অনুবাদ করেছেন শ্রীসানাল। হিন্দী
ও অসম্প্রীয় কবিতাগুলির অনুবাদে একেবারে মুল থেকে অনুবাদ করেছেন কবি ও
অন্বোদ বাস্ত্রিক অর্প প্রশ্নার যোগ্য।

জান্দ প্রতিজ্ঞানে অংশে কবি আশিস সানালকে তার পার বতা কবিতা থেকে বেশ কিছটো প্রায়সর চিন্তার অধিকারী হতে দেখি। আলোচা কবি সহজে আশাহত হন না। তাই কি দেশপ্রেমের কবিকে ভালবাসা বা দুঃখ ভাবনার অনুভূতিতে—সব দিকেই এক দিথর নিশিচত আশাকেই আলোর মত

যরে রেখে সগবে এগিরে যেতে ভালবাসেন। 'আবার দিগাত জাড়ে আবরাম প্রতিপ্রতিময়। স্বাগত নবীন জন্ম প্রতিজন্ম—। স্বাগত হে রূপাভিত চেতনার দীপ্র বরাভয়। তোমার ম্থের থেকে। জেবলে দেবো প্রত্যাশার প্রদেশয় মহিনা। অন্ধকার **উপবনে।' বা** 'তোমরা যেদিকে য**়িশ্চলে যাও। আমি** এই প্রান্তরের তারা ছরা রাতে।....দেখবো দ্'চোখ মেলে মমতায় পরিপ্রা সেই সব আশ্চর্য মোহিনী —ইত্যাদি পংট্র রচনা করে গ্রীসান্যাল তার পূর্বেকার কবিভাবনা থেকে কিছ, চেতনার উত্তরণের সংবাদ দিরেছেন। শবদ হৃদ্দ চিত্রের অভিজ্ঞতায় শ্রীআশিস সান্যাল অকারণ জটিলতাকে পরিহার করে বরং সমস্ত কাব্যিক অভিজ্ঞতাকে যে জীবনের মমতাময় অফিতভের প্রতীক-প্রতিম করে তুলতে অভাদত, জন্মে প্রতিজন্মের কবিতা-গ্নলি তা প্রমাণ করে।

প্রিয় সব কিছ্কেই চিতায় (কাবা সংকলন)— প্রশাবত দাস। সিব্ধু স্বারস প্রকাশন, ৫০ কটাপকুের থাড বাইলো, হাওড়া ১। তিন টাকা পঞাল প্রসা।

কবি প্রশাস্ত দাস যে কবিতার নামে প্রস্থের নামকরণ করেছেন সেখানে বলেছেন, আমাকে তোমরা কেউ কুশুল জিল্পাসা কোরো না: কারণ তার সমস্ত ক্রমান্তর ইঞ্জার শব

भर्म इएक शारत । किन्कु वना-धत्र मश्च्यत्रात 'প্রাপা' অনুবাদ হয়তো অসম্ভব হয়তো অপ্রয়োজনীয়, অত্তত বল্-এর সংস্করণটি পালে রেখে মেলাতে গিয়ে দেখছি কিছুই মিলছে না। তাভেরনিয়ের গ্রন্থের মূল্যবান উৎসূগ পর্যাট অনুবাদকালে পরিতার इरहरू, 'फिकारेम अफ जि अध्द' छारमधिल অপ্রয়েজনীয় বিবেচনায় অম্বোদ করা হয় নি। বল-এর গ্রন্থটির সবচেয়ে বড়ো আক-র্যণ গ্রন্থানতভূতি টীকাটিপনী এবং পরি" . শিষ্টগ্রিল। বাংলা অনুবোদে সেগালি आफ्री वादशांत कता श्रानि । সবচেয়ে वर्षा কথা, মূল পাঠ যথেচ্ছভাবে সংক্ষেপ করা হয়েছে অন্বাদও কোথাও ম্লান্গ নয়। অন্বাদ কর্ম অতাত দ্রহ ও অনসাধ্য জানি, কিন্তু তব্মনে হয় এ ব্যাপারে আর একটা সভকতো প্রয়োজন ছিল। ভূমিকার বলা হয়েছে, 'ইহাতে মূল্যাণেথ বিধ,ত কিছন সংখ্যক স্থানের রধো দরেছ বাতীত আর কোনও অংশ বৃজিতি হয়নি। সব বিষয়ই भागीभाषात्भ म्थाम रशरहार । वनावाद्ना, क्ष बन्नद्रमञ्जानी मा कन्नाहे छाएना दिन। অন্তত্ত 'বজিভি' স্থানগ্ৰালয় কথা অন্থাদে क्रमभ कता केंक्कि हिमा अहाका अहे জাতীয় ভ্ৰমণৰ ভাগেত একাধিক মান্ডিয় থাকা একাশ্ত প্রয়োজন, বাংলা অনুবাদ-প্রকেথ একটিও মানচিং বা পথনিদেশি নেই!

distance to

-अदिशक नाग्र

আন্তপ্রহ যীশ (জীবনী)—অচিন্তা-কুমার সেনগা্পত। সাহিত্য সদন, ৬৫-এ মহাত্মা গ্^{রিন্} রোড, বলকাতা-১১ ধোগ টাকা।

শ্রীষ্টে অচিন্তাকুমার সেনগংশু বাংলা সাহিত্যের প্রথম লোগার কথাবারদের মধ্যে আর নজুন করে পরিচয়ের অপেশা রাখেন না, ক্ষিক্ত তার সম্প্রতি করেক বছরের মধ্যে প্রবাদিত জাবিনী গ্রন্থার বিদ্যাল করেছে। জাবিনী রচনার একটি নিনিন্টি ধারা নপত ছায়েই ছিলা বিভারনাল আগে প্রস্কার সোলার প্রকাশ বারে নিম্নুত করেছে। শ্রীষ্টে অচিন্তাকুমার সেনগংশুত সেই ধারায় খেনবা নতুন বারে নিম্নুত করেছেন শ্রমপ্রেষ শ্রীরামকৃষ্ণ ইত্যাদির মত প্রশ্ব বানা করে। সম্প্রাক্ত প্রকাশিত অম্ভপ্রেষ ঘারায় একটি ম্লাবান জাবিনী গ্রন্থ।

জীবনরে অভিতয়, স্বর্প ও যীগার মধ্যে।
জীবনর ভাষনার একারতা প্রস্পা ধাষ্য ব মীশ্র জীবন ও বালীকে নতুন ধ্রা জীবনী প্রশেষর আজিগকে পরিবেশন ক ভোষ

জ্জিয়ায় রাজা হেরডেয় নিংস্ক প্রোহত দম্পতি জ্ঞাক্রিয়াস ও এলিং বেথ বয়সের খেষ প্রাণ্ডে উপনীত। মার্গ্র গ্যাব্রিয়েলের যাণীর পরিপতিতে এই ধ্রুত এলিজাবেথের সদতান হল-নাম জন। ং ওদিকে গালিলির ন্যাজারেথ শহরে ^গল ডেভিডের বংশের ছেলে জোসে:ফর স বিবাহের অংগীকারে আবন্ধ কুমারী মেন গভে গারিয়েলের কথামতই জন্মালের ঘটি রোম সমাট সিজার অগণ্টাস ইঞ্সরায়ে অধিবাদী-- এ সৰেছ কাছিনীয় মধ্যে স্কম ধীশহর জীবন কাহিনীকে মনোরম ক্র পূৰ্ণ ভাষায় - বাস্ত করেছেন স্কৌবন্দীক কোথাও কথা প্রমাণ বিচাত নম, আঘচ ব্রহ धक्कम कथाकारबंद अतिभाग काहिमी यर रकोमालत भाषाई अहे विदार सीवनसारि শেষ হয়েছে। এ জীবনখাছিনী নীয়দ কথাসাহিত্যের মতই পাঠা, উপভোগ্যা 🐞 এক মহাপরের জীবন ও বাণীকে গভ **जार्य डेशर्माच्य क्यान वर्षाय महान्** অমাতপার্য খীলার সাহিত্যিক প্রসাদ क्षाम्यमा ।

ক্র্বান্নাশা—চিত্রভান্ বল্যোপাধার। বিশ্ব-জান টেমার পেন। ক্রন্থাতা-১। দাম চার টাকা। ---

লেখকের প্রথম গ্রন্থ, গ্রন্সগ্রন্থ-শিবভিত্র ক্রাদের মোট আটটি র্চনার একটি পরিক্ষর সংক্রম।

পাঠকের সহজ্ঞ কৈডিছেল আকর্ষণের জলা গণপলারের যেউকু ম্বিসরাদা থাকা দরকার চিন্তভান্ বংল্যাপাথাার সৈই ম্বিসরাদা বাক্রার স্থাকর সংগছেন। যদিও ম্বাত কার্মার স্থাকর সংগছেন। যদিও ম্বাত কার্মার স্থাকর কার্মার ভিন্ত প্রাত্তিক প্রত্তিক ব্রহার তব্ব পরিচিত ও প্রচলিত ব্রের বাইরে কেতে তার কিয়া ভাবে। এতে সাধারণ গণসার্বারক পাঠকের কিছু লাভ হরেছে

ফান্স, আসমান জমিন, দ্রের জানালা ও আরো অন্তত একটি—বিভিন্ন ব্যাদের ক্লাকেটি গ্রুপ পাঠের মনোর্ম অভিজ্ঞতা ক্লাকেট

সংকলনের শেষ শ্বচনা ক্রোরারালার লেখক সময়কে ছ্'তে চেমেছেন, কিংতু গ্রহণ-কলপ এই বিশেষ নামে রচনাটিকে চিহ্নিত করার তাংপথ পাঠকের হ্'দ্রংগম হয় মা। ভবে নিঃসলেহে ক্রোবাল্লাদা লেখকের একটি সফল প্রয়াস। নানব্যন (এতিগ-জ্ন) ১৯৭৪ সাক ধীরেন্দ্রনাথ গঞ্জাপাধ্যায়। ১৯৯ বিবাদ সম্পী, ক্লেকাডা-জা বান ক্রিক পাটাউর প্রসা।

মন্দেবিজ্ঞান, জীববিজ্ঞান ও জীববিজ্ঞানের এই গৈমালিক্যের বজাতীয়া রহিছে বিজ্ঞানের এই বিশ্বেষ্টি বিশ্বেষ্টি

যতীক্ষনাথ সজ্মদার বিরচিত ঐতিহাসিক উপন্যাস

আশা-মরীচিকা

ওরপাজেবের পাসনকালে বাংলার অমাওম প্রাথনি নৃপতি রাজা সভিরের বারের পোর্বদ্পত জীবন-কাহিনী। প্রশেখানির জালোচনা প্রসংশা পঞ্জিত প্রবাধ তিপ্রশেশকর সেনখালতী বলেছেন র "উপন্যস্থানি এ-কালের বিজ্ঞানীক প্রেরের পথের সংখান দেবে, তাকে জালাপ্রবৃথ্ধ ও মন্ধ্রের উজ্জ্বের করে তলবে।"

ध भ्रामा इस डीका ॥

গ্রাপ্তিখান : জেলারেল বুকস এ-৬৬ বলের শার্ট মারের্ট কলিবতা-১২



কালীপ্রসর সিংহ প্রসংগ্র

্রামান্ত প্রকাশিত বিশ্বরঞ্জন সেনগ্র<u>ে</u>ণ্ড হাশর শৈখিত কালীপ্রসল সিংহ ভ'ব শালা 🤹 নাটক প্রবংধ পড়লাম। ঐ বংশ বিশ্বরঞ্জনবাবঃ হাতোম প্রাচার কলার রচয়িতা হিসাবে কালীপ্রসলকে ভিহিত করেছেন। শ্ররণ হয় বেদা কিছ্যু-ল স্বালে কোনো এক বাংলা সাণ্ডাহিকে ুভাষ পাচিত্র নকশার সঠিক রচয়িতা **লীপ্রসর কিনা এ**-বিষয়ে আলোচনা ্র্বং ৰাশান্বাদের স্থিত হয়েছিল। বেল য়াকলন খাতিনামা প্রবন্ধকার ও লেখক সীপ্রসামের বিপাক্ষে তাঁদের মতবাদের প্রত্যরণা করেছিলেন সমস্যমায়ক কালের भी कामी व करवाय পরি<u>প্রেকি</u>তে। क्षित्व भारत भएक इ.एए। भारति सक्नाह কাদ স্থপতি হিসেবে এই বিপক্ষকারীরা ক্ষমতা ভট্টাচারের নাম উল্লেখ কংগ हुनन। कुक्कशन নাকি, নানাভাবে কালী-র্লনর আথিক সহায়তার ওপর নিভ্র-🎮 ছিলেন। ভাই ঐ নকশাখানি কালী भवत नाट्य अकाम कदात वावम्या करह ্কু**ক্রতার প**রিচয় দেন। আবার কারো বৈর মতে হতে।ম পাচাল নকশা ্<mark>ৰানীন্তন কালের কোনো এক ছম্মা</mark>রেশী **লা লেখক ম্বা**রা রচিত এবং কালা **লব সেটা কিলে নিজেব** নামে প্রকাশের क्या करतन।

ৰাই হোক এ-বিষ্ট্র পশ্ডিতের নাই-ই হয়েছে আসল রচনাকাবীব নাল ফ্রেলেনি। সভেরাং কাগজে-কলায় কা ফ্রেলিভ না হর হাডোগ্রের আসল ক তেতকল অবল্য কালীপ্রসালকেই নালারী হিলেকে শ্রীকার করে নিঙে

> প্রমধেশ ভটাচার' উদ্বা।

রবীন্দুনাথ ও রোদেন =টাইন প্রসংগ

সাহিতঃ সংখ্যা 'অমতে' 'ব্ৰীলুনাথ রোদেনশটাইন' সম্প্রিতি উজ্জাল ম**ভ**ুমদাবের স্চিটিতত ও তথাবহাল খালোচনাটি পড়দাম, পড়ে কিছা মত্ত খবগ্ৰও জানা ঘেল ভবে সম্প্ৰতি মাৰ্কিন দেশের হাভাড বিশ্ববিদ্যালয়ের উদ্যোগে রবীশ্রনাথ ও রোদেন্স্টাইনের এযাবং অপ্রকশিত যে পরগক্ষে গ্রন্থাকারে প্রকা-শিত হয়েছে তার উল্লেখ ও আলোচনা থাকলে লৈখাটি স্বয়ংসম্পূর্ণ তায় উঠাত পারতো: রোদেনস্টাইন পরিবার ও বিশ্ব-ভারতীর সৌজনো প্রায় দু'শো প্র সংগ্রহ করে ঐ সংসম্পাদিত গ্রান্থে স্থান দেওয়া হয়েছে এছাড়া ঐ নইচিতে পাওয়া যাবে গোদনস্টাইন, তাঁর পরিবার-পরিজন ও ব•ধ্বগ'কে উপহার দেওয়া বিশ্বক্ষির **অপ্রকা**ণিত বেশ ক্ষেকটি কবিতা। গীতাঞ্জালর ইংগাজি অনুবাদ সম্পকে এতকাল অজানা অনেক খণ্টিনাটি খবরও ছড়িয়ে রয়েছে ঐ পত্রাবলীতে। শিক্সী-ভাষ্কর রোদেনশ্টাইনের সহযোগিতা ও প্রণোদনায় ভর্ণ রবীন্যানাথ তৎকালাীন বিলাতের গ্ৰীজন সমাজে এবং সাহিত্য-সভায় কিভাবে প্রবেশের ছাড়পত্র লাভ করেছিলেন, কিভাবে কবি-মহলে প্রতিষ্ঠা লাভ করেন তার অনেক অজ্ঞাতপুর্ব সংবাদত পাওয়া যাবে ঐ প্রাদ্র মমস্পশ্ আণ্ডারিক ও ব্যক্তিগত পরগক্ষেত। তাই ব্যেদেন টাইনের সংগ্র রবীন্দ্রন্থের স্থা কতটা নিবিড় ছিল তা জানা ও জানাবোর জনো ঐ গ্রাম্থর উল্লেখ অপরিহার।

> হ৪ প্রেগ্রা ১৪ প্রেগ্রা

দেশী বিলেশী সংগীত প্রসংগ্র

আপনাদের ক্ৰীড়া-বিনোদন সংখ্যা ২৩৮০ পত্রিকায় রক্ষারি বিষয়ব**ংতু**র সলিবেশের জন। ধনাবাদ জানাই। এই সংখ্যায় ই সলিল টোধারীর সাক্ষাৎকার পড়তে গিয়ে শিল্পীর বস্তব্য ও কার্যক্রমে বৈসাদ,শা দেখে চিঠি না লিখে পাগলমে না। স্থানিল চোধারী সারকার হিসেবে বাহিক্সধ্মণী সন্দেহ নেই। তাঁর সূর আমানের ভাল লাগে। আর লাগবেই না কেন? স্বেকে তিনি প্রথমেই যে নিজের মধ্যে আস্থাস্থা করেছেন তার প্ৰীকৃতি শ্বাকাৎকারেই মেলে, এক জায়গায় ব্যশ্তেন ং বাবাই বিস্তুর সিম্ফনীর কিনতেন। জ্ঞান হওয়া অবধি সেস**ব শ**ুনে শানে অকেপ্রেশনের উপর একটা সংস্কার মনের মধ্যে গড়ে ওঠে। তার মানে সংগীতে অকেংশ্রেশনের জন্য তিনি পাশ্চাত্য রীতি-নীতির কাছে বহালাংশে **ঋণী। অঞ্**চ তিনি বাংলা গানে পাশ্চাত্য সংগীতের চং আনছেন-এই অভিযোগটা অস্বীকার করে বলেছেন বাংলার সংগীতের ঐশ্বয়'লে।ক এমনই পূর্ণ যে বিদেশীল কাছে আমাদের হাত পাততে হবে কেন্ত কিন্তু কে না জানে সলিলবাব এখানে মোটেই সঠিক কথা বলেননি ? যেমন ত'র সংরে ছায়া' চিত্রের গান্টি পোনের প্রথম লাইন দুটি Itna Na Mujhse Tu Pyar) -এর গ্যাপ মিউজিক মোৎসাটের বিখ্যাত এক সিম্ফনীর সংগো মিলে যায় **হ**্বহ**ু**। এমন আরো বহু গানের বেলাও ঘটেছে। সলিলবাব্ যদি এ-বাপারে কোন ধারণা দেন বাধিত হ্ব।

> निवित्रा मक्क्यमात्र वाश्नादमम्



(88)

ভোটবাব্ সারারাও ঘুরোতে পারল না । ভারার মাথার ভেতরে সেই ঘণ্টাধর্নি । ঘণ্টাধর্নি হলে ভাষাব অস্বাস্ত । কলতেওটা পাল্ল হাত পা এবং শরীরে কেমন অস্বিস্তা, সেন এক অসহা দাহা নিয়ত মাথার ভেতরে কথনও ঘণ্টাধর্নির মতো, কথনও রেলাগাড়ির চাকার মতো ঘড় ঘড় করে আকাশ বাতাস কগিয়ে চলে যাছে।

ছোটবাৰ; টুপটাপ বোট-ডেকে দাঁড়িয়ে-ছিল। পালে ডেবিড। ডেবিডের গা স্বভার সে নানাভাবে ছোটবানুকে স্নত্না সিচ্ছিল। ছোটবাব; ভেবিডের একটা কথা শানতে পাছেছ না। এত জোরে মাথার ভেতরে ঘন্টা-ধরনি হলে কিছু শোনা হায় না। ছোটবার দুহাতে রেলিঙ চেপে দাঁডিয়ে আছে। দেখলে মনে হবে, ওর দু: হাতের পেশিতে এত রোশ শক্তি প্রায় মড়মড করে লোহার রেলিং গাড়ো গাড়ো করে ফেলবে হোন। সে দ্বের স্মৃদ্রে কেবল গজনি শ্নতে পাছে। জোরারের জল বোধ হয় ধীরে ধীরে নামতে। এবং এ-কারণে যা হয়ে থাকে, কখনও কখনও শৈৱদার মূখ সম্দের গভীরে নীল জলের ভেতরে দেখে ফেলে। বেন মান্রটা গভীর নীৰ জলে এখন একটা মাছ হয়ে সাঁতার কাটছে। এবং পালে কোনো দ্বীপচিত আছে কিনা খ'লেছে। তারপর যা হয়ে ষার সে দেখতে পায় দুরে দাড়িয়ে স্বীপের মাথার মৈত্রদা ভাকছে। -এই ছোটবাব-আমাকে ফেলে তোরা চলে যাচ্ছিস আমাকে মিৰি না! সংশ্বেস্থেগ মনে হয় নৈচ্ছ শতার কোটে জাহাজে উঠে আসায় জন্য ৰাহত হয়ে পড়েছে। কেন্ট্ৰ ভাকে নিছে চাইছে না। ভারণা আশ্চর সে দেখতে পাতে মৈচণা ডুবে যাতিল সম্ভ আর ভার অভিকার সব তেউ মলে মৈরদাকে ভাসিয়ে নিয়ে যাজিল। আচি যেন জাহাজে তথন বি**উপাল বাজানেছ। ভোটবাব**় তথ্ন কেমন ভ্যাবাচেকা খেয়ে সামানা অবলদ্বন ভেবিভ ভেবিভকে বলে ফেলল ভেবিভ তোমাল কী মনে হয়?

ে ভেনিড ব্যুক্তে পারল না ছোটবার। কী বলতে চাইছে।

ছোটবাব; বলগ তুমি কী বিশ্বাস কর জাহাজ কোনো অশাভ প্রভাবে পড়েছে!

হৈছবিভ বলল সে তো ছোটবাবা জাহাজটার আঞ্জম একটা রোগ ৷ এ-নিয়ে ভূমি এখন ভাবছ কেন!

—আ্ছ্রা তেবিড তেগ্রার কি সতি। মনে হয় গৈচদা সমনে চেন্ডেম গেছে। সমতে ডুবে গেছ। আ্লালে কেউ তে: ঠিক ঠিক দেখেনি

— কিছা তো নগা যাবে না। হসতো দেখা যাবে সকালো নাঁগি বাজাতে বাজাতে জাহাজঘাটনা নড-ডিডাল ফিরে আলছে। সৈ যা একথানা মান্ত্ৰ!

ছোটবাৰ, বলল ডেবিড জোনাকে তং পেট ভবে মদ খাওয়াৰ।

-- त्रिक्।

— ঠিক ডেবিড।

তারপর আবার ছেটিবাব, কেন সে দেৰে ফেলে আচি ক্লা তাৰ দলবল ভাগ করে এগিয়ে আসছে। প্রথমে আর্চি পরে পাঁচ নম্বৰ এবং পরে একাবে ভেক-সারেড, এনজিন-কশপ মার্চ করে যাছে বোট-ডেকে। ওরা প্রথমে বিউপল বাজাজিক। ভারপার সবাই কেমন কাদ্যকের নল উচ্চ করে দাঁড়ায়। এবং ক্রমে সে দেখতে পায় সার সার ওরা তিনজন-কাশেটন স্থালি হিগিনস বনি এবং সে। **আথ**াং একটা বহুস। ফড়য়ে আছে জাহাজে এটা পাপ কাৰ্গো সিংপ মেয়েয়ানাম রাখা পাপ। এবং **এ**কাটা উদ্যন্ততা তথন চারপাশে নেচে বেডাজ্ঞ। প্রায় উলম্প করে দেবার মতো বনিকে আ চি সবার সামনে । পড় করিয়ে দিকে। এই আপনাদের জ্ঞাক। কাণ্ডানের খ্যান্তান ছেলে। ছেলে না মেয়ে? বলন। জনকের শ্রীর মা**স্ত্রলে ক**ুলিয়ে রেখে এমন বলতে প্ৰ জান্তি^ত চ

নার স্থাট্যাল সালার কাল কলে জি হাজ্যেড় জাহাজে। স্বাই এগিয়ে জাস্তে গণ্দ শালুকে। হোন স্বাট গালৈগিটি হুট যাজে। আস্টে। মাথা উদ্ভিয়ে দেখা স্বাচ। আবাৰ ছালে আস্টে। মাহাত প্ৰায় সেই হাজেন্ডে বিনকে বগলপাৰা ক ডালা নিজে লোন। এবং ছোট ছোট মাখন স্বাচীস মাৰে পাতে জিভ দিয়ে চেটে চে সাহিস মাৰে পাতে জিভ দিয়ে চেটে চে বাহিছে। বনি চিংকার করছে ছোটবা-বাহিছে।

মাথায় এভাবে ঘণ্টাধরনি চলে লে কি করে। সে ডেবিডের শক্তো আর এক কথা বলতে পালছে না। ওর টো अ.मार्क। ज्यानित पनवन अन्यान्ते स्थान ह যেতে পারে—সে শুখ, বলে দেবে মিছ সিতে ভোমাদের জামি মান্য দেখাম নাবিকগৰ। ভোমরা তো জানো আ প্রান্তে ভাংগা এক বছরের নাম এনে তোমাদের ছলেবলৈ সামিল হৈ रः यहत त्तरथ मिल्का **छ।त्रशत व्यक्ति** तकत जागात का कारन-एक्टन दक्का ভেবে ভোষে ভোষৰা পাগল হলে 🛊 বিষ্ণু আমি ভোষাদের দেখাতে প্র এক আশ্রমণ নারী স্থা পারাধার। 🐧 ফটে ফট সে সার কথাত[ে] নেকট ভেত্র বনির শরীর ফেলে দিছে টে জনাক ভেখন বাইবে একে **ব্যাল ভোটব**ট

তুমি এগনও জেলে আছ?

ডেবিড বলল কিছুতেই মৈয়ে হেছ প্রিছি না।

ছে। তিবাবা স্থানিক দেখে কৈছন ক্রি গোল। বলাল এত রাক্তে তোলার এখানে। দরকাব! ভূমি কি করতে বের ছয়েছ।

জন্ত বলল ত্যেরা কথাবাতী **রহ** আমার হ'ন আসে!

ছিটিলবার তারপথ মান হল সে জীবনিকে আগোগর মানে। মর্যাদা দিল্লে ন বনিকে বরং জারি অসহার এবং সালে মনে হাজে। বনিপ জন। এভাগে তার রৈ এক অপচল মারা। একটিক্টেট গে খ্ া বিচলিও হয়ে পড়ছে! সে কলং

ৰুচিছ।

বনি ৰলল, হাছি না। একনি হাবে।
ক্ষেটবাৰ আৰু গাঁড়িরে থাকার সাহস
না। দুরে শছর, শহরের আলো
ক্ষের বাতাস তেমনি বইছে এবং সব
ক্রি ঠিকঠাক কেবল একজন জাহাছি
কর জাছাজে ফেরেনি। অথবা সম্প্রের
ক্ষিত্র লৈ শ্রের আছে। সে কিছাতেই
ক্ষেত্র মতো ভাষতে পার্যাহল না
ক্রি ইলি সে মে মৈচলাক দেখতে পারে
ক্রি গাঁড়িয়ে আছে। গাড়ার বালি শাভাচে।
ক্রি গাঁড়িয়ে আছে। গাড়ার বালি শাভাচে।
ক্রিব বলল তেবিও ছমি একে নিয়ে

্তিভাৰিত বলল সেই কথন থেকে তো জিছা

ুঁছোটবাস, ব্যুক্তে পাগল ওর জনা ুটুবিরত হয়ে পড়ছে। সে ভেবিডকে নি. চন।

বনি দরজার পাশে দাঁড়িয়ে থাকবা।
ক্ষম সির্গড় ধরে ছোটবাব, নিচে বের বাবে ততকণ সে এভাবে সেন দাঁড়িয়ে কৈবে। দরজা গেকে নড়ার না। ডেবিড কি ভাগে নামছে। ছোটবাব, পেছনে বাবে সেমল বাবার সময় সির্গড়া মাথে বাবে দেখল বনি স্থাও দাঁড়িয়ে মাড়ে: বিকল এই ভূনি দাঁড়িয়ে থাকবো কেন।
ভূমে বাও।

্বান এবার আর দ্টাতে পারল না।
দিয়জা কব না করলে যেন নিল্টনত
ভ সারছে না ছোটবাব্য সে চ্যুক দরজা
করে দিল।

ৈছোটবাৰ; তথন নামছে। মিচে নেমে 🚁 খ্ৰে চপচাপ বিছানায় বসে থাকল। ্রট-ছেম্পে খোলা। গরম পড়েছে ভীষণ। ুজোরে পাখা চ্যালয়ে দিল। মৈত্রদার বী একটা কথা ভার মনে হ'চছ--ভাহ'ল **জাহাজে**র ছোটবাব্। গৈৱন। হাজের কোলবয়দেও ছোটবাব বলে কিখ। **ছো**টবাবা নামটা মৈরদার দেওয়া। ীয়ে অতীশ দীপ্ৰকর ভৌনিক যেন গ্লা **চিয়ে বল**লেও কেউ আর বিশ্বাস করাবে <mark>শ এ-জাহাজে সে ছেটবাব, হয়ে গেল।</mark> 🎮 ভাকে এ জাহাজে ভোটবাব, বানিয়ে ্র**জনেশ সলে প্**ডল। আর ষাহ্য এ-সব ামনে হলেই চোখ ঝাপশা হয়ে আসে। ু<mark>ৰাসই করতে পারে না দৈচদার সংখ্য</mark> 🌶 আলাপ প্রো এক বছণ্ড চয়নি ্<mark>রিচ মানুষ্টা ছিল ভার সর যেন। এবং</mark> **য় জাংখে** সে বজন কাল যদি জোলাতে ্ভী লৈপিঃ সকালে পাতে দাঁডিয়ে পাতাব ল ৰাজ্যাক ভাষে লাণ্ডাদেশ হাতো আমিও ্বামাকে আগাপাশভালা চাপকাব। ভূমি াবেছ কি

তেৰিত বেশ তেবে খাশি তখন—বড়
ভাল বা একখান: মান্ত এত সহজে
তে ভেলে বাবে বিশ্বাস করা বার না।
তে সাঁতা সে সকালে খাম থেকে উঠে
বিবে ভার দলবল নিরে ছেটিতে বেল্ম
ক্রে বাঁশি বাজাজে ভখন বিকেলে সে
ক্রিবর্ত্ত স্বাস্থার পেট ভবে মদ খাবে।
ভালে হাঁজিল সকাল হলে সে ভারে
ভালে হাঁজিল সকাল হলে সে ভারে
ভিনে হাঁজিল সকাল হলে সে ভারে
ভিনে হাঁজিল সকাল হলে সিভালকে

নেওরা যাবে ভারপর মদাপান লারে লারে গান গলায় ওলা যে অন্য গ্রহে তাদের সব কিছু রেখে একেছে ডখন আর মনেই হবে না। তেবিভ আলো মিভিরে শ্রের পড়ল। ছোটবাব, সহজে শ্রের পড়তে পারল না। আলো নেভাতে ইচ্ছে হল না। পোটহোলে দাড়িয়ে গাবল।

ওপরেও এভাবে বান দাঁড়িয়ে আছে। ভারত ঘুম আস্থান্ত না। ছেটবাবলে সংগ वार्गाक्रम-कमार्भद्र किथ् अवचे इसारहा धर्माक्रम-क्ष्मारभतं कथा छिन छ गम्नत इतात। কিন্তু সে হতে পার্কান। ওর রাগ প্রাভাবিকভাবে ছোটবাররে ওপর থাকবে! ছোটবাব; এনীঞ্ল-কখাপের সংখ্যা বাংলায় कशावाकी वसहिल। एम किए है व या उ পারেনি। ভোটবাব্রেক সে বলেছিল কি হয়েছে। ছোটবাৰ, ৰলেছিল কিছা না। এই প্র্যান্ত। ভারপুর সেও ছোটবাব্রে কেন জানি দিবতীয়বার আরু কিছা বলতে সাহস পায়নি। ছোটবাবার মাখ ভীষণ থমথমা কর্মভূল। ভাস্পদ্ধ জ্যো**ংসনার বত্**ঠ ছেটিবার্ গোপন কথাক সর সে ব্রেটট পেনেছে ভোটবাৰার মাথায় আবার সেই ঘণ্টাধর্মন হাছে। বাবা ভাকে ঠিকই বংলভিবেন্তান ছোটবাবুর লাখায় शिकः १८७५ ना ८१।' रहरी **रा रहाज-सन्हे रश**रू পড়ে গেছিল ছোটবাৰ**ু, মাথায়া পে**রেক ্লে সাওয়া এবং পল পর সর দ্শা মনে হলে যে পিথর থাকতে পারে না। সে কিছাতেই আজ বলতে পারেনি ছোটবাবার চোল মুল দেখে জুমি ষড়ই অপ্ৰীকার কণ কেলার ছোটবার, কিছা হাছে না কিন্তু আনি সলভি মাণার ভোমার কৈছা হচেছ। ভূমি আমাকে সব গোপ্য করছ।

আনু বনি আশ্চরতি হয়ে গেছে আগের মত্যে গেছে। আগের মত্যে সহজেই জেদ বজায় বাখতে পারে না বনি। আনা সময় চলে সে কি কলত জানে না কিবত আজে গণণ কিতা না বলে আছে সেনকে পারত। আগেচ সেনকথা না বলে গাকতে পারত। আগেচ সেনকথা না বলে ভাশে। ভাটিবালকে আন সমীচ করতে ভালাগছে। ছোটবাল ভাকে সৰু বললেই লাগতয় খাট্য হয়ে বৈতা।

ভোটবানু তখন নিচে দাঁজির ব্যুবতে পাণ্ডর বান গামোরান। মাধার ওপর বনির কোনন। হাটাহাটি করলে তার পাওরা বার। জাহাজ নোভর ফেলে রাখলে এড নোল নিজনিতা বে বনি কাঠের পাটাতনে নাম কাপেটের ওপর কিজাবে কোমালিকে তা পার্কত বারা বার। বান এটার পোটাতেলে দাঁজিরেছিল এখন হোটে সে তার বাংকে এবে বাসেছে। আর কোন শাক পাওয়া বাক্তে না। বাবহর বনি এবার শারে পঞ্জা। বাক্তে না। বাবহর বনি এবার শারে পঞ্জা। বাক্তে না। বাবহর বনি

ভোগার এভাবে পোটছোকে দাঁজির দ্রেশ শহর দেখনে। আর নক্তমালার মড্যো নিকানক করছে দাহরের আকো। কেন হাজার ক্রেন্ট্রিকস্থান অক্সমুক্ত গারে শিংর হরে আছে। আর দুরে তেমান সম্প্রগজন। অবিরক্ষ সম্প্র শ্বীপটাব চারপাশে ফ'লেছে। জ্যোহন্দার জ্বীপের উচ্চ পাহাড় অথবা চিলাতে বর্ষাড়গলো দেখা বাজ্ফে না। রামতার অতলা বুরে বুরে এঠে গেছে। আর কি বিচ্মর কথকেও মিনারের মতো অথবা গদন্তের মতো মনে হক্তে ছোট ছোট পাহাড়গলোকে। আলো-গালো গদ্পুলের গায়ে মীনাকরা মান-ম্বার মতো। এমন সব স্পের প্থিবী মন্বের মান্বের চলো বেতে ইক্তে হ্র কেন ন্বতে পারে না।

আবার মন হল মাথাল ওপর কাঠের পাণ্ডনে কেউ হটিছে। বনি তবে ঘ্যোতে পারছে না। বনি আবার পোর্ট-হোলের দিকে এগিয়ে বাছে। ওর ইচ্ছে হচ্ছে এক্ষ্মিন ওপলে উঠে দরজায় দাঁড়িয়ে বলে বনি কী হচ্ছে! ভোষার জনা আমি ঘ্যোতে পারব না! এভাবে দ্যুপাদাণিপ করলে নিচে কারো ঘ্যা হয়।

আর তথনই মনে হল কোথার যোগ বনির ওপর সে আধকার পোরে গেছে। বলি হয়তো নিজেই অধিকারটাক অজাতে ভাকে দিয়ে দিয়েছে। অধীবা এমনই হৰাৰ কথা। সে তে_। বনির পারের শব্দ প্রথম থেকেই মাথার ওপর শ্রেমতে পেত। সে তো কখনও এভাবে ভারেনি বরং বনির পায়ের ৮ লথার ওপর না হলে ওর মেন ঘ্রে এ,সত মা। কাস্তানের ছেলে সামানা দাপাদাপি হলেড করবে না তো কৈ করবে! ভার তথন মনেই হত না ওপরে কেউ হেণ্টে বেড়াকেছ। তার **ঘ**্রা ঠিক চলে আসত। আর এখন সে শানতে পাচ্ছে বুনি খটেখটে করে কিছু কাটছে বনি ভারপর খাুৰ জোরে পোর্ট-ছোলের কাচ ঠেকে দিচেছ এবং স্ক্রু একে দিচেছ ভার শবদ প্রস্থিত কাম পাতলে 🗺 । বাছে। বনি কি সারায়াত খ্যোতে : '

সে এবার দরজা খালে **ওপনে উঠে** ভালল বনি।

বনি দৰ্শকো খালে বলল, কীঃ

—ঘ্যোক্ত শা কেন। কেবল খুটখাট শব্দ করছ।

বনির খারীরে রাতের পোশাক। বাদ কী বলেই চোখ নামিরে নিরেছে। আগ যেন ছোটবাধ্ এক অধিকারের সাল্লাজ। পেরে গেছে। এখানে সে খ্লিলাজে বিচরণ করবে। তার চোখে মুখে ভীষণ অহংকার। সে বলল যুমোছে না কেন?

-- খ্য আস্তে না ছোটবার:।

ছেটবাব, বলল ভূমি না ঘ্রাকে আনার ঘ্রা আগবে না বনি। আ্যাকে ভোমরা সবাই এত কণ্ট নাও কেম।

বান বলল ব্লোডে বাছি। বান আন্ত্র কছে বলল না। বান অধীরভার ভূবে বাজে। নে কিছতেই নোলাবালি ছোট বাব্র দিকে ভালাতে পারল না। ছোটবাব আজ সারাদিন ভাবে ধলকের ওপল লেখেত। অভিযানে ভার করা পাছিল। নে দক্ষলা করা করে দেবার সময় কলে ছোটবাব, আমি আর খুটখাট শব্দ করব মা। আমি ঠিক এবার ব্যায়রে পড়ব।

ছোট্বাবু নিচে এসে আর ওপরে কান শব্দ শানতে পেল না। এপরের কেবিনটা নিথর। এতটা নিথর হোন তরের। কেবল এখন কেন জানি মনে হাছিল, বেল তােছিল বিন। যেন সে এবং বনি পাথিবীতে শান্ত জেগছিল। বনি ঘানিরে পড়েছে, কি চুপচাপ শারে পড়েছে, পাশ ফিবছে না, শ্বাস জােবে ফেলছে না,-পাছে তার ঘানে বাাঘাত অটে ব্রুতে পার্ভে না। এতটা সে না করলেই পারতে। ওপরে উঠে করে ছংগিনা না করলেও জাতা । ওপরে উঠে করে ছংগিনা না করলেও জাতা । ওপরে শার্ভিই মনে আর্গছিল ঘারে ফিবে।

খাব ভোৱে জাহাজে সোরগোল উঠে গেল। ছোটবাবা দরজা খালেই শান্দা, বড়-টিন্ডালের লাশ পাওয়া গেছে।

ছোটবাৰ যেন কথাটা ভীষণ নত্ন শানছে। তা হলে সকালে পাড়ে দাঁডিয়ে মৈচদা পাতার বাশি বাজাক্তে না৷ সে কেমন বিহ্নলপ্রায় দাঁড়িয়েছিল। এক পা মড়তে পারল না। মান হয় ওর কিছা আর **করণ**ীয় নেই। কোথায় কে কিন্দোবে বসুণ্ডনিবাসের ম্তদের আনিৎকার করেছে কার জানার ষ্মে কোন আগুত নেই। কেবিনের দরজায ওর সামনে দিয়ে চুপচাপ দীড়েয়েছিল। হে"টে গৈল বাটলার মেস-রুম-বর থার্ড অফিসার। ওরা সবাই ডেকে ছাটে হাক্তে। সে হাক্তে না। সে পোট-হোলে গিয়ে প্রতির দী্যোজে না। সে যেন এখন দুপ্টাপ হাতে মূখ ধানে এক কাপ চা খাবে, কাজের পোশাক পরে তেন্সের টব বাকেট নিয়ে কেল্লন বোক উইনচে চলে বার চেলনি সাবার কথা। বড়-টিন্ডাল কে সে তাকে দেনে লা! চোখ মৃখ দেখালে বিশ্বাসই হবে मा राज-विरूपाल राज कारीयक विरुद्ध ।

ভেবিভ এমে দেখল, ভোটসাসা, চুপচাপ দটিদয়ে ভাচেভ দক্তনায়। ডেবিভকে দেশে একটা কথা কলকে না।

এনজিন-সারেও ছাটে এপেছেন।—ছোট তই যাবি মা?

—কোথায়।

্লড়-চিল্ডানের লাশ পাওয়া গেছে। ভোতবারু বলল, ডোমরা বাও, আমি ডেকিড এবং রেডিও-অফিসার বাবে। স্যালি হিলিসন, বনি গাঙ্গুন্তেতে চক্ষে গোছে। মোটগু-বোট সি'ডির কাছাকাছি অপেকা করছে।

সারেও বললেন, তুই না হলে হবে কেন?
—আমার কি দরকার। আপনারা হান।

—আমার কি পরকার। আশানাস বাদ।

কি বঙ্গছিস ছোটা ওর কাজ কামে কি
দরকার হবে আমারা কি করে জানব।

—আমি তো কিছ; জানি না কি কি করতে হবে।

ডেবিড এবার বেন গৈর্ম হারিরে ফেলছে। —ছোটবাব্ সবাই তোমার জন্য জনেক করছে। সাজি হিগিনস, তার্চি চিক্ত-মেট্ সবাই। ছোটবাব্ তব্ কথা বসকে মা।কে ভেডরে তুকে গেল। অরপর ছোটবাব্ পোশাক পানেট বের হার এল। সারারাতে মে দুমোর নি বলে চোল ফোলা। বে বাইরে এসে কনা কোট ভাড়েছে। প্রব

সে বোটে উঠে গেল। সে সমাদ্রের দিকে মুখ ফিরিয়ে রেখেছে। ওকে কেউ দেখ্ক সে যেন চাহা মা। দুরে চোট বেলাভূমিতে একেবারে শহর ভেঙেশ সাব লোক নেমে। এসেছে। সেই বিচিত্র মানাষ্টি জোয়ারের জলে ভেলে গেছিল আবার সমাদ लाक क्षेत्रल দিয়ে গেছে কিনারায় এবং শহরের সবল দুখন একই খবর জাহাজের সেই মানুষ বস•ত্নিবাস হারা গেছে। সকালের রেডিওতে আবহুবাতা (Project রেডিওডে এ-ছোট্র শবরটাও জিল, বেন্দা-ভূমিতে একজন বিদেশী মান্তের মাত্রেত পাওলা গেছে। জাহাজ সিউল-ব্যাংকের নাবিক। মান্রজন ভাটভে সেই বিদেশী মান্টের ম্ভাদের দেখাতে।

ওরাও সবাট সেই পাচাতে ছাদের নিচে মলে এসেছে। কে কলাব গাদকাল রাড়ে দ^{লটি}য় জল ছিল এখানে ভাদের সন্নান। এখন বেলা-ভূমি শ্কেনো ধারা শংখা, কিনাক সংগ্র করতে এসেছিল, ভারা দেখেছে, একজন সান্ত উপাত হতে পজে আছে। একটা উড মাপের জান-ওয়াকারের ব্যেতল কালে। সমত্যমনে আসন করার মতে। ব্রেক কারে জালিরে রেখেছে। এই স্ব মানাসেরা ভাটে ভূটে শবর দিসেভে সদ শহারবাসীদেব, সে^ট <u>নিকেলে</u> কোকটা. হে মেলায় ছানে বেডিয়েছিল বেলান ^{ইডিয়ে}ন-ष्टिल नाकारम्, नाखन्त्र, सरकारतारै जात निभाः দেব বিতরণ করেছিল—সে সাবাদ্ধণ পাড়ার বালি বাজিয়ে চলেছিল মি ব্যক্ত নিবাস সেল্র—মারা গ্রেছে। সমুদ্রে অলে ভবে মারা গোড়ে।

স্বাট সিলে পথ করে দিলে থ্রা ভিত্রে নাকে গেলা। ভোটবাল সাচ্চা ভোলের মালো পালে সক্রে পাডেভে। পাস আদেস করার মাণো মাখা সাক্ষার মাণোর পালে মিজে গোভে। সে সে ক্রিকে কাটকে সাখাকে শিক্ত না।

সাধিক ভিনিন্দান লাসিতে ভর করে মাধার দিকে দ্রম্পিক আছেন। ব্যুগক ক্ষোন্তর ব্যুগক ক্ষান্তর। ক্ষান্তর, ভৌর আমার ভারি বদুনাম করলে হৈ ছেকিরা। তিনি চিড-মেটকে বললেন চিফ জ্লাদি বৈটে তানে। বোটে করে ওকে জাহাজে নিয়ে যেতে হবে। অনেক কাজ। তাপনারা এখন থেকে সরে বান মা-মাঁসরা। এই সে ভেলে-ছোকররা তোমরা যা-৪ বাপা। এবং সপে প্লিশের লোকেরা ছিড়েটা সরিয়ে দিছে। সালি চিগিনস বললেন আমি আপনাদের বড়কভারি সভেগ একট কথা বলার। বলে পালিখের কাভ থেকে ঠিকানা নিলেন। ভারপর ভাকলেন ভালিবা ভূমি আপারে কণ্ডক বালেন ভালিবা ভূমি আবার কণ্ডকে বালেন ভালেবা হলালের বিভাবি বালেন।

হুঠাং সাজে হিগিনস **ক্ষান্ধ চটণটে**এবং ব্যবহারে ভীষন স্থাস্করের মাভা **মাখ,**একজন জাহাজি এজাবে বেলাভামিতে **শুরো**আছে তিনি সেন লাঠি **টোচিনে বলবেন।**এক দুই তিন ওটো। জাহাজে চলো। তারপর্ট বড-টিন্ডাল উঠে দাঁডাবে। **ভাহাজেন**দিকে হাঁদিতে আরম্ভ করবে। **এরনই** মনে
হাজিল স্থালি হিগিনস্কে দেখে।

্রতি ভোটনাব এখন**ে ভূমি অ'লে** আছা। এটো। একে ভূমে মাও। **দেখছ না** তলে সাব ভিজে বালচ আমাদের।

সকালের স্থান কের্মি শাহত এবং প্রাহমান। ভোট ভোট কেরার একে প্রেক্ত্রী স্বার জানের মাজে কিলার কালের মাজে । ভাট ভোট কেরার গানের মাজে । ভাট ভোট কেরার একে এক রাবপালে জানের মাজে । ভোটেনার এবার ভাতে প্রিলাকালে জ্বান বলন, ভোটার

—ওপরে তলে নিয়ে **যাবে। জলে ভিত্তে** শ

হাঁনদা জীনন জাবি। এরম ভবরুণত ।
যান্ত্রান্তের হের সনজেই লাগৈ হারলে মিতে
পেরেভিল। পথের পরিলক্ষাল কোরণর
কাঁপে হেরলে মিতে লাকে কর দাঁর কারেভ হড়-হড়
করে। এবং পার হালকা দার লোকে হেনিও বিবা সেবল সমাই ধালে নাকিল কারা হাজাল
কাঁপে হেরলে নিকে শাসনিক কার সহাজাল
কাঁপে হেরলে নিকে শাসনিক কার সহাজাল
সাধ্যের মানিক। জাহিনি থলা দাকিলে কার্বা
দাকের মানিক। জাহিনি থলা দাকিলে কার্বা
বা বললে সাার আ্যারা জাহাজাল ভিত্র

স্থালি চিথিনের সকলেন নি ।
তানি নাম হস্ আদ্যানে কেন্ট প্রেটিলা
স নিমান নাম - নানি আক্রম কেন্টে।
সালি চিথিনের নেনে - নানি আক্রম কেন্টে।
সালি চিথিনের নাম সালে সামি বিশেষ
নাম কলান কিনি কিন্দু সকলেন না কিনি
কানা কলান স্থান সকলেন নি কিন্তু
কানা কলান স্থান কলান কানি বিশেষ
কানা কান্তুল স্কলা কানি বাঢ়ি
কান্তুল কলান কলান সকলেন বাঢ়ি
কান্তুল কলান স্থানিক কলিন সকলেন

গেনিল-সারেও ছারে <u>এলেন। ভূমি</u> কি করভ?

এনজিন সংক্রম সম্প্রমান ক্রিকে তের আর্থ স্বানন নিজন। প্রবা হতা সারে লাখা অবর ফেবে না।

তা হলে কি কি কমতে হবি ঠিকটাক করে ফোল। সভাবো দেবি করব মা।

স্যালি নিশিকে স্থান্তন জোনবা নিন্তী । বাঁধে নিয়ে দাঁড়িয়ে আছে। স্বার ডেমে ুা

িছোটবাল লন্দা ভীলৰ এক মানুৰ, আজ ্রাক্তাক্ষরে স্থানন সামানা। সহ সিদ হয়ে বাবে। ক্রিক্টিয়ে থাকতে বাও ৮-এই বে ডেক-সারেড क्रमण्ड १६० मान्द्र माम्बन मामित्र माहि ্রিলে কোল। বললে আদার স্থার।

স্মালি তিগিনস বললেন, আদাব। বড-্লিণ্ডাল কেন ম্বাল বলত?

कांत्र मा मादाः

্ৰত্ম জেক-টি-ভাল ?

্ল -- ক্রামি না সার!

- ভূমি ভূমি!

🖫 বনি বলন ভোটবাল কতক্ষণ লাশ নিয়ে नीजित धाकरव। १९७ नामाछ।

ন্যাল ছিলিনস <u>টোককের</u> ীলাখো ভো বোট আসভে কিন। !

🗽 আর্চি বলশ, ঐ হে আস্ছে স্থার। ্লাকছে। সে আর এক মৃহতে পাড়িংখ **খাকতে পারছিল না। বোটোর কাছে ছ**ুটে হৈলে। স্নালি হিগিনস সামানা হাস্তোন। ীবললেন ছোটবাব, এবার ওকে নামাও।

ৈছে।টবাব: বলল, নামিয়ে কি হবে ? বরং লার বোটে তলে দি।

বাট বিছ,টা দ্রে। ডেবিড কলল, ছেট-বাব একে নিচে রাখ। আমরা লাশ ধরাধরি क्टा मिट्स शास्त्रिः।

ি ভোগনাব বিশ্ব বলল মা। এগিরে যেতে क्षांच्या । हवाहर्षे तम अस्कवादत रेमहामारक माहिता ক্রিকে : বোধহর ভোটবাব্র ভীবণ যায় হচ্ছিল, এক এত ভারি ওজনের মান্কটাকে কাথে ্রাপ্রেশ রাপা হালের না। এক হাতে দু পা ্রাধে শরীর এবং ভান হাতে আর একটা িয়ান্ত, আহত কোন সৈনিকের প্রত্যে জোট-कार्यः कार्यः रेभगानास्य निरसं सारकः। स्टाप इस ক্লে মৈতকে কোনো মূত মান্যের মতো ভাবতে काशांक सा। रूल एक शहा भारताहा करान 3 ক্ষিপদও বে'চে ওঠে—হয়তো বোটে নিয়ে যেতে ক্রিডের মৈরণা ফিক করে হাসবে, কিরে ছেলে 🔃 মেয়ে ? এমন যখন হুতে পারে তখন তাকে শ্লাকজন আহত সৈনিকের মতো সে নিয়ে ্রালন। বে'চে গেলে যেন বলতে না পারে. ুরাখ রাখ তোরা তো আমাকে মেরেই ফেলেছিলি। ্রবং এভাবে ছোটবাব, মৈচকে শাইয়ে দেবার বুমর বোটের চারপাশে স্বাই জড় হতে ্রাক**ল। এ**কটা মানু বোট ঠিক থাকল বাকি भिवारे रह*राहे शाद काहारख। त्वारहे रक्षाहेनानः ক্রিনিট বংক ক্রেনিক সংখ্যা বনি ট্রান্ত ুঁচয়েছিল ছোটবাব; বলল নো। क्रिके बाल I

ি আরে এখন ওই যে একজন সম্দ্র-্ব ক্রমানের শেষ কাজ, শেষ কাজ বলাতে ওরা মার্কে দরে সময়েন্দ্র ভাসিরে দিয়ে আসতে ীয়ারে একজন সম্ভ্র-মান্বের সমাধি এভাবে প্রস্থা বাঞ্দীর। কিন্তু বংকু আনিমেষ ব্যক্তি নাগরিকের মতো চোধ মুখ দরে ক্রিছে। বহুদিশ পর মনে হরেছে ওরা তিতে হিন্দু ওদের ধর্মে নামারকম সর ব্ৰক্ষান আছে, তীরের কাছালছি ভূমিতে একটা লাহ করার ভারণা খুণ্ডে नेत क्त्रक हत्य। ७वा व्हाण्याय काना,

কিছু তেই গোটবাব ভাম কিন্ত চৰে না।

বনি আবার বলল ছোটবাব, আমাকে নাও। আমি ধাব।

ছোটবাব্যু বলল, উঠে এস। বলেই ওরা বোট ছেডি দিল। ওদের অনেকটা পথ ঘুরে বেতে হবে ছোটখাটো স্ব দ্বীপ্মালা ভেসে রয়েছে। জাহাজটা আছে সামনে মনে হয় কাছাকাছি কিন্তু এই সব দ্বীপমালা চার-পাশে। অনেক ঘুরে ছুরে হেতে হবে। क्यादित त्यादे छदा छाइन शावाब समग्र स्थल মৈলুদা নিরীয় স্বভাবের মান্য ব্যিরে আছে মতো। শরীর এখনও শক্ত হর্মন। দ্রটো একটা **প্লাটিকের পেলনা জামায়.** ছোট প্রতির মালা। পকেটে হাত দিয়ে দেখল ভটবাব সামান্য কটা **চকোলেট। এ**বং জামাটা ওপরে উঠে গেলে ছোটবাব অবাক পেটে পিঠে অভ্ত সব নীল চাকা চাকা माना मामाना प्राप्ति। स्त्रामा अस्त्रे এसा সবাই কেম্ন চোখ মূখ কুচকে দেখল শরীরে যান্সটার কিছু ছিল না। এনজিন সারেঙ বললেন ছোট সর্বনাশ তই ঘটিছিল। তোব রকা থাকবে না।

ছোটবাব্য জেদি বালকের মতের ভারি নরম হাতে জামা টেনে দেশল। বনি আছে নয়তো হো প্যান্ট খুলে দেখত কোথায় কোথার মানুষ্টা শ্রীরে এমন বিচিত্র অসুখ নিয়ো বে°চেছিল। বনি আছে বলে সে ফের कामा रहेरन वनन, वश्क कार्ठ भावि काधादा ?

ছোটবাব্য তাঁম কিংত ব্**লা**ল্য আমাদের কথার বাইরে যাবে না। গেলে হাতাহাতি হবে।

অনিমেষ বলল, আমরা মৈনুকে আগুনে পোদ্রাব। মান্তির নিচে কিছ**ুভেই** চাপা দেব না! ধর্মাধরেরি ব্যাপারটা ভূমি অবহেলা क्त्रव ना।

ডেভিড বলল বড় ট্রিন্ডালের এত বড় অসংখ ছোটবাবং তুমি জামতে মা,

ছোট কি বলবে ! সে বলল, মা। সে সোজাসুভি মিথা কথা বলল।

—তোমরা ছোটবাব মরবে। ছোটবাব; বলল, ভেবিড আমার কিছ করার ছিল না।

এবং ভীষণ চিন্তিত দেখাল ভেবিভকে। एशिक यनन त्माकता चारवद कवानास পাগল হয়ে গেল। **আ**র তোমরা **চুপচা**প দেখে গেলে!

ছোটবাব্, ভারি লব্জায় পড়ে গেছে মতো মাখা নিচু করে রেখেছে।

এখন বান বলক, ডেবিড বড়-টি-ডালের শ্রমীরে ওসব কি।

ছোটবাব_ু যহুসা চিংকার করে উঠন বদি!

এবার ছোটবাব ভেবিভের দিকে হা তাকিয়েই বলল, ভেবিভ এসৰ কথা আৰু रूके द्राम मा **का**द्म। देशवाना है देख मह दर, रक्के छान्द्रका आमता क्लान्हें मा हड कामनाम विकास किकी कार्या कर्जा मार् গেল। আর ভবনই ছোটবাব্র মুখটা ভারি বিষয় হতে হার। বেদ মনে হর ওর উচিত ছিল ভেবিডকে সব খুলে বলা। মৈচদার ভয়ে সে এটা করেনি। বৈরদা তা হলে হয়ত বে'চে হেড। **সে বলল ডেবিছ** জানতাম। মৈরুবার ভরে বলিনি। এখন মনে হাচ্চে আমি সড়ি মানুষটাকে মেরে ফেল্লাম। ব্ৰুক্তে পার্রছি আমার আরও সাহসী হওরা দরকার।

ভেবিড বলল, ছোটবাৰ, জাহাজে মানুৰ এভাবেই বাঁচে। তোমার দুঃখ করার কিছ নেই। নাসবে আছে মরবে-তৃমি কিছু বরতে পার না।

বংক ভখন আবার বলছে, ছোটবাব আমরা কিন্তু হৈচকে পোড়াব।

ছোটবাব, বলস, পোডাবি ভো শোডাবি। वात वात वलात कि लाइ!

— তুমি যা মানার। ভালো মানারের মতো রাজি হয়ে ালে আমাদের কথা কেউ তখন শুনুবে না

ওরা ছজন জিনুর হাঝখানে লন্বা হরে পাতে আছে আন্তমিবাস। আকাল ভীরণ মেঘলা। স্মারের জল তেমন মীল নর আরে। का प्राचा एवंचारकः। **श्वा म**ुरहोन्धकते। ংবীপের পাশ দিয়ে জা**হাজের দিকে এগিয়ে** যাছে। বোটের মান্যটার কাছে আশ্চর লাগুছে, কোথাকার মানুষ কোথায় এসে মরে গেল। লোকটার **ক্রী ছেলেমেরের**র কোথায় থাকে জানার খবে ইচ্ছে। সেও म्हणे अक**ा कथा वलाल।**

দ্ এক পশলা বৃদ্টি হছে গেল এ-সময়। ্বের বোট এখন জাহাজের নিচে ভিজে গেছে। সি⁶ড়ির কাছে বোট বেংধে ছোটবাব ও বন্দু ওপরে উঠে গেল। কিভাবে কি হবে ওরা কেন্ট এখনও **জানে না। জাহাজে মাল** বোঝাই হবার কথা স্কাল থেকে। কিল্ডু ज्ञकारम **अम्म अक्टो धरेमा नरहे स्मरम ज्ञ**न ^{বৃহধ} হয়ে গে**ল। জাহাজে মাল** বোঝাই হবে না। একজন মৃত কাহাকীর সন্মানে স্ব কাজ-কর্ম বন্ধ। ছোট্**বাব**ু ভেবিভ **এনজিন**-সারেঙ হে १८ योक्टिन। অনা সব জাহাজিরা এখন স্বাই রেলিঙে **ক্র'কে আছে। বড়-**চি-ডালের লাশ দেখছে। ভীষণ **হতাশা** মূথে এবং আচি তেমনি জাহাজিদের পালে भारम रह°रहे बारव्ह। भारत रम हुनाहे स्तरम, काहारकत माञ्डूरम नामानिध नृप्रदिनात इति প্রতাক্ষ করছে। সেও বেশ **ঝ**ুকে দেখছে।

স্যালি হিগিনস রীজ তখন হাঁকলেন কোরাটার মাল্টার।

কোরার্টার মাহতার একো করলেন, ছার্ট-वावादक फाटका।

<u>रकावेदाद</u>, क्षांत्र क्लोरङ **उनका** उन्हें গেলে হিণিনস বললেন, দাহ করা যায়ৰ মাণ্ দ্থানীয় য়াদ্ধে আপত্তি করতে।

ट्रिकियाद् बनाम, उसम मासा ?

—ভারি বীভংগ ব্যাপার বলছে। ফোনে কথাবাতো বলগাম কিছু করা গোল না। শহরের মেরর রান্ধি হক্ষে না। গণভগোল বে'বে যেতে পারে।

সে বজাল, যদি শ্বের এই ধরনে কথা-বারো মাইল দ্বে কোনো ছোট শ্বীপে নিয়ে ধাই।

—দেখি তবে।

তিনি ফোন করে ফের সব খবরাখবর নিলেন। বললেন হবে। তাহলে তোমরা বোট নিরে ভেসে পড়।

প্রেটা বোট ভড়ো করেছে চিফ-মেট। এখন কৈ কে বাবে? স্যালি ছিগিনস বললেন, ছোটবাবাকে ভিজাসা কর কে কে হাবে?

কান্তে কোথাও ভোটবাবা ছিল না। সে
তখন কাহাজের পালে ভোট বোটেটতে দেনে
গেছে। তারে সব মান্রবের জাটলা। স্বা
করে সমৃদ্র থেকে ওপরে উঠে আসভে। দলে
দলে সব সাদা রাজের পাথি কাহাজিটার
মামার উভজিল। ভোটবাবা বড়-টি-ভালের
কামা পানে খালে বিলা বাধ ভেতার রাও। বনি মুখ বাজের করে
কারে নাকে বার বার বারে না। সারাজ্ঞ ধানেক।
ভাবছ—আরু বারে না। সারাজ্ঞ ধানকে।
ভাবছ—আরু বারে না। সারাজ্ঞ ধানকে।

া এনজিন-সারেঙ অবাক্ জাকি ভোট-বাৰ্কে কবে থেকে এত মান্য করতে দিখল। छिनि **এक्वा**रत हो। जब प्राथ-गास धथन ইচ্ছে হচ্ছে ভাকেও ভোটবাল বিভ বলক। কিছু এই বেমন সামান্য চলন কাঠ কোখাৰ পাওয়া সাবে। সামানা ঘি সেনর ব্যুম পাওরা বাচ্ছে—কাঠের জন্য বংকু আর ডেবিভ চক্ষে গেছে। ভোটবাব তাকেও পাঠালে পারত। জব্দুর মন্, বাদশা মিঞা চুপচাপ বড-টি-ডালের পাশে বঙ্গে রয়েছে। এবং যা হয়ে থাকে স্বাই নিজের নিজের সূখে দাংখ ভাগণিং এই মাতা মানামেন কোন ব্যবতী^ৰ আকাঞ্জার মতো মৃত্যু ভাদের বেন আনেক বড় করে দিয়েছে। কিছুতেই ওরা আর প্রোট কাঞ্জ করকে পার্তে না একজন জাহাঁজি যান্য নানা কারণে প্রিবীর আন। সার মান্বের চেরে আলাদা। মৃত্যুতে ভার অংহকার আছে বড়-ট্রিন্ডালের মুখ দেখে ওলা এমন ভাবভিল।

বোট ভাড়ার সময় হরে যাজে। ধারা বাবে হাত তালে ভোটাবাব, ইশারার ডাকছে। যোমন যাজে ভোট-টি-ডাল এনজিন-সারেও বড়-টি-জালের বংরাচের তিনজন জারারমানে বুজেন কালেরর সালি হিশিনের লিজিন নাজে। ভোতা বান লাজির নামতে। ভোটাবাব আমি বাব। ভোটাবাব তালাকার ভারের। ভোটাবাব তালাকার ভারের। ভোটাবাব তালাকার কালেও সময় দেই। ভাত তালে সে ইশারার না করেতে। আলি ভিলিনের নোলা আসার সময় দেখাত প্রেক্তির বাবিলানর দিকে বাজ্যার মুখে কিরের সাজেও। তিনি বলাকোন, মিন বাবে?

বনি ব্যক্ত। না বাবা আমি বাব না। বনি বোধ হয় মানুবের এই নিত্র প্রিকতি দেখাকৈ সাহস পাচ্ছে না।

আর একটা বোট নিকে ফরছে বংক ও ডেবিড। ওরা কাঠ হোটে হাডি এবং নতন সাদা কাপড় এনেছে। এবং বাঁশ কবা মতো দুটো কিছু শাকনো ভাল আর সব চল্দন কাঠ। পাট কাঠি পাওয়া হাজে মা তার চেয়ে নরম ছাসের কান্ড হা পাট কাঠির মতো জালবে। ভারপর দটো বোট সমারে কমে একটা স্বীপ খালে বেডাকে বেডাতে বেশ পাঁচ-ছ মাইলের মাথায় একটা আন্চয় মীল রঙের পাথবের স্বীপ পেরে গেল। দার থেকে দ্বীপ বজে চেমা হার মা। সম্পু য়েন সহসা ডেউ ভলে স্থির হয়ে গেছে। চেউটা আর নড়ছে না। উচ্চ নিচু সব চেউ আর ভার উপভাকা। গুরা কাচে গেলে ব্রুক্তে পারল রেশ দ্রাট ধ্রীপটা। ফার্লাং-এর মতো ন্বীপটা পালে লন্বায় এবং উচ্চভার সমাম। ওরা চারজন ভেবিড বংক সামদে আনিমেব ছোটবাব পেছনে উঠে বেতে থাকল।

মাচানের প্রণর পারে আছে বড়-টিপ্ডাল।
প্রেছানে আলছে সবাই মাখার করে তালে
আনছে কাঠ বীলা। এবং সালি ছিলিনসেব
হাতে চলদনের কাঠ। সারেশ্বের হাতে ছি-এর
টিন। সব লেশ্ব উণ্ড একটা জার্গা দেখে প্রা
উঠে হাজে। চালপালে শ্রা সম্ভান্ত আব তাব তারগামালা নীল পাছাতের মাখার কেই
এক অপিনকালেন্তর আহোজন। ডেবিভ প্রবা
সালি ছিলিনস লেল্ব স্থাতিবল লগা কোঁত হলা হার উঠাকন। মান্যের লবীর
আগ্রেন পড়ের কার—ক্ষীবন্নের ক্রা লেশ্বন নি। ক্রম ভবে ক্রিত্রলে ওরা সামালা
দ্বের দাড়িরে দেখতেন।

ছোটবাব্ সমূল থেকে হাঁড়িতে জল হলে আনছে। জলে দনান করানো হল্কে বড়-টিন্ডালকে। বড় একটা পাথরের ওপর বসন্ত-নিবাস শ্রে আছে বড়া ঘড়া জল গুলা হচ্চেঃ। একে একে সমাই জল এনে ওর শরীরে ঢেলে দিল। ভারপর সালা নড়ন রাপড় এবং কাঠ সাজিয়ের রাখা হচ্চের স্মা ঠিক তখন সমূদ্রে অস্ত্র বাবার মূথে। ছোটবাব্ ফিচদার মূথে আগ্রে দেবার সম্ম্য বলল বংক ভোরা হািরবোল দিলি মাঃ সবই যখন হল এটা বাদ হাবে কেন?

অবং এই এক শব্দ পাছাড়ের মাখায়
আর সেই দিগকেত এখন সম্প্র করে
অথবা আকাশ বাতাস জর করে জুটে রাজে।
এরা সাত্বার চিন্তা পুদক্ষিণ করেল। ছোটবাব্রুর সেই সাক্ষার চিন্তার দান্দা এবং প্রেড
ছাই হয়ে রাখ্যা কি যে জয় ছিল তখন
এখন সে সাহস্যী মান্দের মাজে ভাগর কলা
মার অভিনানকের ফালে কার্কে। নিচ্ছে আকাশ
দিয়ে পাছাড়েন মাথায় ক্রিছের আকাশ
ভাগন ক্রেম প্রকল হলে উর্ক্তে। কার্কের
ফালে ক্রিছে আগ্রান ক্রুমে আকাশ ছুন্রের
দিন্তে চাইতে।

আর আগ্নের ভেতর ছোটবার, সহসা ক্ষের বানর মূখ কেখে কেলা। ভাষাক্র

বনি একা। স্যান হিসিনেস পাহাড়ের মাখাস দাঁড়িয়ে মানুবের সংকার দেখাচন। ক্ষেত্র হু^{ম্ম} ছিল না ভার। ছোট্বাব, পালে দাঁড়েয়ে ভাকণ সারে।

—কিছু আমাকে বলবে?

—তানেক রাড হবে। আপনি বরং সারে ফিরে রান একটা বোটে। সে ডাক্ট্র চাচা। সারেছ পাচাণ্ডের মাধার ট্রান্ট বোল ন্যাল ডাপনারা ফিরে রান। জামান বাক্তনা শেষ হরে গোলে ফিরব। আমানের একটা বোট চলেই চলবে।

হিণিনেস জাচাজে কনিব মুদ্ধে দেখাসক বনি কাই দুক্তৰ কীলিকা লাগে জালাই ক্রি সালা জোহতনা সমস্তে। বোট দুজুকে বন্দির আরভা দেখা লাল্ড। বনিস লাভ পিটে বলুলেন, ওদের ফিরুকে রাজ্ হবে বনি।

-- ব্যা কভদ্র গোড়ে ?

তিনি এবার দ্বে অব্যক্ষর অঞ্চলট জ্যোপনার দেখালেন সক্ষারত নতে সমুদ্রের বৃকে আগ্নিটা জ্বালছ। নী রে সমুদ্র কথাতে পাচর না য়াতে লক্ষ একট কৈছা, সক্ষার রাতো আগন আকালে ক্ষান্ত ক্ষা দুশ লগ জ্বাছে অন্যার নিজে বৃহত্ত দেখাতে পাচর।

—हा वावा।

প্রধান থবা প্রকটা ক্রীকে ।
টি-ভালকে আগনের গাড়িকা করকে তাকে ।
প্রবার বললেন ভর করকে তাকে প্রকার

এবং তথনই হঠাং ওপরে ক্ষেত্রটাই মান্টারের গলা। সারে ফোনা সে ক্টাই বলতে নেয়ে আসছে। ওপনা উঠে ক্টিই বলকোন, ইয়েস আপেট্র সালি ছিনিক্ট বলুন। ভারণত চুপচাপ। আবার বজাকো ইয়েস ইয়েস। কিল্ডু এটা কেন হচ্ছে। ব্যিন দেখল বানাব মাখ দ্বাডে মানুহত্বে বাছে।

ফোনে তিনি চিৎকার করে **উঠকে** হোরাট।

—স্যার রিচার্ড কেলের এমনি নির্দেশ আছে।

—লো মোঃ আমি পারব রাঃ করের বলতে উত্তেজনার তিনি ধরবর পর করের করেন। তারপর রেমন চিত্রনিত গালার বললেন, আস্থান। নিগচর আস্থানন তারপর বলে পত্তেলন। বেরম রক্তশ্ল ইরে গোছেন সভাসা। সালা ক্যাকালে নৃব। বনির দিকে ক্যাকিরে ল্যাকেন। আর চোধা মামাকের নাঃ বনি সাবালে ক্যাকালে ভাউমাউ করে ক্যাক উঠ্লের রাবা কি গরেছে। বারা। বার

স্যালি হিলিনস ভীষণ নিশ্র। ঠাকা বেদ জীবনে আর একটা ক্যাও ক্লাকে সা



বিশ্বের মানচিত্র প্থিবীর, বৃহত্তম
প্রকৃষ্ট প্রার্ক্তর শ্থান অতি স্চিছিছে।
শ্বাধীনতা লাভ করার প্রবতী অধ্যারে
ভারত বৈশিক ভাগ রাস্ট্রের কাছ থেকে
মর্লাদা ও বর্ণাভ লাভ করেছে। সেইজানা
বিশেষ ভারতের অন্যানা চার ও কারশিক্ষেক ভারতীর ডাফটিকিটের কদরও
বেড়ে গিরেছে এবং স্বাধীনতা-উত্তর ভারতে
বেল্ল ভারতিরট প্রকাশিত হরেছে
ক্রেছে আবিশ্বাংশই অন্যানা দেশের
ক্রেছেক্সের ক্রেছেগ্য করেছে।

১৯৭৩ সাল অর্থাধ স্বাধীন ভারতে প্রায় ভাষাক্য ভাষান্তিকিট প্রকাশিত হয়েছে। এগবুলির মধো দেশের স্কেন্ডান্টার সন্ধানে এবং স্থারণীয় ঘটনাকে কেন্দু করে টিকিট মন্দ্রত হয়েছে। এছাড়। বিশেবর করেকজন মনীবী ও করেকটি বিশেষ ঘটনা আশ্রয় করেছে বেশু কিছু ভাকটিকিট। তার পূর্ণ ভালিক। দীঘাতর করে ভুজাবে বর্তমান নির্থধ।

ভারতের জননেতা সাহিত্যিক দেশপ্রেমী
দিলপী বিজ্ঞানীদের মধ্যে রয়েছেন রাম-মোহন, বিদ্যাসাগর রবীণ্দ্রনাথ, পাদ্ধী
জ্পাদীশচণ্দ্র, প্রফাল্লন্দু বিবেকান্দ্র এয়ানি
বেশান্ত, স্ভাষ্টণ্ট আশ্যেতাষ, অরবিন্দ,
জহরলাল চিন্তর্গগন অবনীন্দ্রনাথ, আব্লাকালাম আঞাদ, বনি ব্যা, সেণ্ট ট্যাস্
বিক্ষচণ্ট্র, মধ্যুদ্ন, সি ভি রম্শ, জিবাজনী রাম্কৃষ্ণ ভাতথণেড, পাল,সকর
প্রভাত । কার্ণীয় ঘটমাগা,ছের ভালিকাও
বিস্তৃত । এদের মধ্যে এভারেন্ট বিজ্ঞা,
সিপাহণ বিভার, হাজ আলোলন পাদ-বিশ্বন জালিয়ান ওয়ালাবাগ বিশ্ব প্রমিক সংস্থা,
বৃদ্ধ জয়ন্তী, জন-গণমা, স্বাধীনতার স্বাণ জয়ন্তী গহনি তপাণ, জর বাংলা, ভাজ-টিকিট প্রকাশী ইভালি অনাত্য়।

বিশেবর বরেগদের মধ্যে আছেন মাডাম কুরি, লিংকন লেনিন্ গোকী রেডছদের হেনরী ডুনানট, ডাঃ মন্টেসরী, বিটোভেন, ডাক বাবস্থার অনাতম পণিকৃৎ সাইবাস, বাই'ডে রাসেশ, কোপারনিকাস প্রভৃতি। বিশ্ব The second second second second

ঘটনামক স্কৃতিত করে যে কর্মিত ভাকটিকিট প্রচারিত হরেছে তার মধ্যে বিশ্ব ক্রাক্ষ্য দিবস, মানব অধিকার আন্তরাক্ষ্মীর দ্রে সংবাদ সংব শতাক্ষ্মী, বিশ্ব সহবোগিতা বংসর, বিশ্ব প্রটন, চাঙ্গে প্রাপ্তি, বিশ্ব ভাক সংবের ন্তম ক্ষ্মীলার সংকৃত্য ক্লুন্থী-সংবের শতিক ধর্মপ্রতিত ইন্ধার্মি।

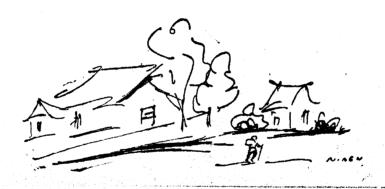
বিখ্যাত শিক্ষাবিদ ডঃ ডি কে আছে ও খাতনামা রাস্তুবিদ ডাঃ এম বিশেবদ্বরওরার व विकासात्म ভাবের জন্মনার্থক প্রতি উপশক্ষে ভারতে ভাকটিকিট মালিত ইটা-ছিল। বোধছৰ প্ৰিবীৰ আৰ্টিকিটের ইভি-हाटन अब ज्याबि स्थाब स्मरे। आताबीक বিশ্ববিদ্যালয় এবং উচ্চ আদালতগালের শতবর পাতিতে বেসব ডাকটিকিট এ'দের শ্মরণার্থে প্রকাশিত হয়েছিল, ভাতে অন্ডতঃ এটাক আত্মশলাখা অনাভব করা চলে যে শিকা ও আইমের কেন্তে আম্বা অল্যান্ অগ্রসর দেশ থেকে পিছিছে নেই। প্রণত শিকারীদের হাতে পড়ে, ভারতের বনা-অস্তরা কমশু। বিজ্ঞাপ্তর পথে চলেছে। এ থেকে নিম্কৃতি পাওরার জনো নানা রক্ষ আইনের নিষেধাক্তা ছাড়াও বলা-ক্রীবন সংভাহ পালন করে এই সব বনাপ্সা, দের সংবৃক্ষণের যে ব্যবস্থা চলেছে, তা থেকে ভাক বিভাগও পিছিত্তে নেই। ভারতের বাব, হাতী সিংহ, গণ্ডার প্রভৃতির রঙীন ডাকটিকিট প্রচারিত হয়েছে বিভিন্ন সমরে। ভারতীর পৃক্ষীক্লও অবহেলিত নর ভারতের ভাক-हिक्दि। नौलक-ठे कार्रेट्रांकता इंड्यांनिक বহুবৰ' টিকিট চাল, হরেছে বেশ কিছ,দিন আগেই। ভারতীর চিচুশিলেপর যে প্রচীন ঐতিহা বয়েছে তার পরিচয় তলে ধরেছে ভারতীর চিত্রকলা পর্যারের ভারুটিকিটগর্বিল। এখানে রাজপতে ও মোগলবংগের কয়েকটি চিন্ন তুলে ধরা হয়েছে। সম্প্রতি ভারতীয় মাখোসের ওপর করেকটি টিকিট প্রকাশিত হরেছে। মুখোস যেহেছু সেগিকর সংস্কৃতির অস্ত্রণতি, তাই এগালির মানুণ গারেছপাণা আদার ভবিষাতে ভারতীয় নৃতা ও বাদা-যদ্মের ওপর বেশ করেকটি ডাকটিকিট প্রচারে ডাক বিভাগের আগ্রহ রয়েছে।

निमिष्के क्यान प्राकृतिका दश्यानि ক্ষাে পরিকলিপত A.H.Com মালিকারানা লক্ষ্য করা প্রথম যে সিবিভাটি বার। ১৯৪৯ সালে নেধানে ভারতের প্রাচীন স্থাপ্তের নিদর্শন ররেছে। তার মংশ বিখ্যাত ক্ষেত্ৰায়কেল ছোডা এগলিকেন্ট গ্রার রিম্তি সাঁচী কলে, বাল্যসন্ম ও क्षत्रहरूपदात्त्व अभ्यत्, विकाशस्त्रहरू स्थाप গান্ত্র আক্ষতার ভাস্থা, আম তস্কোর শ্বণ প্রতিষ্ঠারের বিজয়সভন্ত চিত্রির লালকোন इन्हानि केदलबरबाला । न्यिकी विनिष्के हरमन ভাকটিভিতে (১৯৫৬) ম্থান পেরেছে পঞ্ वार्षिकी श्रीवकाशमाः। स्नर्गातस्य श्रीत-कर्ममात्र ग्रह्म र्मिक्टिस स्वयंत्र स्रदास এবের প্রচাব লেবিন বাঞ্চনীত ছিল। ভারতীর টাকার লগমিক মন্তার রপোল্ডরিভ হওরার জনো তজীয় নিৰ্মিষ্ট লয়ের ভাকটিকটের श्रासम कार्कृत दत्त ३৯७० चर्नेन्गारका। এগ্রাল ভারতের মান্তির সংবলিও বিভিন্ন রং ও দামে মাদ্রিত হরেছিল, সেকথা সবারই জনা। এবং একথা স্বীকার করতেই হবে বে এগ্রনিডে কোনো বৈচিত্য ছিল না যা মনকে আকর্ষণ করে। কারণ এগুলি অভাতত তাড়াহ,ডো করে প্রস্তুত হরেছিল। তাই, ज्यानकीम्म धारत जात अकि मितिसका शारता-জন বোধ হলেও, ডাক বিভাগ চতুথ 🕬 প্রকাশে অভান্ত গড়িমাস করে। বস্তুতঃ দীর্ঘ চার বছর ধরে (১৯৬৫--৬৮) বর্তমান সিরিক্তটির প্রকাশ ঘটে। স্বভাবতই এগ্রালতে আগোর মত কোনো একক ভাব বা বিষয় গ্রহণ করা হয়নি ৷ এখানে বিচিত্র বস্তুর সমাবেশ ঘটেছে, প্রত্যুতত্ত, হস্তাশিল্প পশ্ চা, আম্ কৃফিফল, বাঁধ ইঞ্নি বিজ্ঞান আণ্যিক চুল্লী প্রস্তৃতি বিভিন্ন নির্ম এগুলিভে স্থান পেয়ে নতুন কোত্হল জাগিরেছে।

স্বাধীনতা আন্দোলনে অগ্নণী শচীদ 🕳 যোগ্যাদের ওপর ডাকটিকিট প্রকাশ করে যেমন তাদের প্রতি যোগা কুতজ্ঞতা ও সম্মান জানানে চারছে তেমনি মাজির বাণী প্রচারে অগ্রণণা আমাতবাজার পরিকার শতবর্ষপাতি ্রপলকো (ফেব্রুয়ারি ১৯৬৮) ভাকটিনিট ম.পিত হরেছে। এই প্রসংগ্র মহাত্ম লিশিব-क्याव च्यात्वव (५४८०--५५५५) मात्र व्यक्ति क्षा भएक। हैनि शक्य क्षीवरम मौन-विस्तार कांकित्व शरकम अवश हासीरमञ् मामाना कथा প্রকাশ করেন ভিতর পেটিয়ট পরিকার। পার সাংবাদিকভার বাজি করে অমতবাজার পরিকা প্রকাশ केशकेश ज्यारता। अरहेक अवस भारत আইন এড়াবার हेरदाव्यी माञ्चादिएक भीतम्ब करव्या छात्र-शरवाश्रीव দৈনিকে পরিবাতিত চর। PACALE निव्यक्तमाद्वत् गाम THERE এ°ন ভাষকার **উল্লেখ্যে অংশক্ষা রাখে। আশা कर्य कारमा** এক সাবোধা আৰু বিভাগ চিকিট মালিভ करत विभागतकशास्त्रच अधि अधी कामारव।

পরিগেবে আরও একটি প্রসংগ উত্থাপন করি। ডাক বা ডাকটিকিটের ওপর বাংলা ভাষার ডেমন কোনো প্রশ্ন রচিত ছর্মান । ১৯৫৪ সালে বিশ্বভারতী মিশ্ববিদ্যাসংগ্রন্থ প্রশ্নাজান নবেল্ডনাথ রাছ লিখিত সভিত্র স্থেপাঠা প্রশ্ন ভাগের কাছিলী প্রকাশ করে (১৯৪ সংখাব প্রশাম আর আনা)। পরবতীকালে (১৯৫৮) শ্রীগাচীবিলাক রার চৌধরী অনেক পরিপ্রম করে ভার্কটিকিটের জন্মকথা গ্রন্থনা করেন। গ্রন্থের বিষর বর্জ-মানে উক্ত গ্র্টি প্রস্তকই পাওয়া যার না। পান্চমবংগ ডাকটিকিট সংগ্রাহ্বের সংখ্যা হোক্তে কমবর্ধমান সে কারণে বাঙলা ভাষার ডাকটিকিট সংগ্রাহত প্রস্তকও প্রশ্নেকর।

भरूदम्भन्मर् नाविक्षी



আথিক ্রপঞ্

নবম, নানব সংস্করণ ?

বংগ্ৰছেক ইডিক্ত : দিবানিরা আ্যান্র জনাত্ম বেলাস আদ্ধ প্রতি বছর গ্রান্ত্রের ছুটির বর্ম এর সুযোগতে বরুতে জ্ঞান্তের বাব । ঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যাসাল্য মহাশারের কোন-এক জনিনীতে যাম পড়েডিলার বে তিনিই এই ছান্তির প্রবৃত্তিম কার্বাছালেন অবস্থা ভূরি উদ্দেশ্য ছিলা ভূথানারের বিজ্ঞানী-বাতি স্থায়াসৈত্রীয় লিয়ে প্রথম স্থানারেক প্রস্তাহিক হারের স্থানিক বিশ্বর বিশ্বর স্থানির বিশ্বর বিশ্ব

প্রকরের রক্ষিত্র দাশার পারান্টর দিনে
সংকরত কাকাজের কোন এক জাসি তুরে
বিদ্যাসন্ধর হলাকা দাশার হ শন্তকের

করেন কার বারান্তে জাহাকাপড়ে ভিতে
প্রকরার স্থানট রুঠি রা দাশার হা
সংকরার স্থানট রুঠি রা দাশার কার
স্থানকর একার বারাক প্রতির বারস্থা
স্থানকর প্রকর্ম কার্টির বারস্থা
সংকর্মকার কার পারাক্ত পরিকর্ম না
ক্রান্তর কার পারাক্ত পরিকর্ম না
ক্রান্তর ক্রান্তর কার
ক্রান্তর ক্রান্তর করেন

ক্রান

ক্রান্তর করেন

ক্রান

ক্রান্তর করেন

ক্রান্তর করেন

ক্রান্তর করেন

ক্রান্তর করেন

ক্রান

ক্রান্তর করেন

ক্রান্তর করেন

ক্রান

ক্রান্তর করেন

ক্রান্তর করেন

ক্রান

ক্রান

ক্রান

ক্রান

ক্রান

ক্রান

ক্রান

ক্রান

ক

আমার শায়নককেই টেলিফোন। আগে
আমি নিদ্রাস্থে বাাঘাত যাতে না লটে
তার জনো মধাাছকললীন শায়া গ্রহণের
কে আগেই রাাডল থেকে টেলিফোনেব
'ঘ্রিসভারটা নামিরে রাখতার। এর পর্মএকদিন নিজেরই একটা ক্ষতি হয়—একটা
জর্বী ধ্রম পৌছোয় না। সেই থেবে
কৈসিভাগ আর নামিয়ে রাখি না ভেং
সালাক্ষা নিয়েই ব্যোই কথন ছন্টি বেজে
উঠবে—বং কলও হতে পারে।

মেদিন সবে চোখ দুটো জাড়ে এসেছে এমন সময় টেজিফোনের বণিট। বিরক্ত হুয়ে সাড়া দিতেই অপত প্রাহত খেকে ভেগে এল : নমাকার সারে আপনার বই এসে গভে।

বিবলি প্রশাসিত হল না কারণ ভূলেই গৈয়েছিলার কোনা বই। তব্যুও থানিকটা দংগত হয়ে ভিজ্ঞানা করলায় : কোন বই-এব কথা বলাছন?...

—কেন শাম্কেলস্মের নাইন্থ এডিসান। আপনিই দে অর্জাব…

জ্ঞার শোনার স্পেকার ভিন্স না ওখানেই থামিয়ে দিয়ে বঙ্গলাম : বেখে দেবেন স্বিধ্যাদ বিজে নিম্ম জ্ঞাসত।

—রেথে দিতে পারব না সাদে মাত্র বার কলি পেসেছি পাতক বিক্রেতা জানালেম.— আন্দ বিকেলেই নিয়ে বাবেন। আর সাার ক্রেডিন দিতে পারব না।

শ্বেধ অপমানকণ নর কিঞ্চিৎ দ্যুসংবাদও বন্ট কারণ মাসের শেষ। মনের ভাব যথাসাধা গোপন করে জিজ্ঞাসা করলাম : কত নিয়ে যেতে হবে?

—পঞাল টাকা।

শ্রকনা-পত্নীর কাছ থেকে ধণের মাধ্যমে ঘাটাত প্রণ করে পণ্ডাশ টাকাই নিয়ে গিয়ে বইখানা সংগ্রহ করলাম মোটা পবছ কাগছে পাকি করা। দোকানে আর পাকেট খালাম মা। বাড়ী এসে খলে নাড়াডা করে দেখলাম সংস্করণটি সন্বৰ্ধে যা শ্নেতি সবই সত্যি—মোটেই ব্যতিশ্যেকি নয়।

কি শানেছিলাম ?

প্রদান-গঠনে বোধহয় একট, ভুলাই হল।
গোনার চেয়ে প্রপতিকা পাঠের মাধামে
ভোনেছিলাম আরও ভোনেছিলাম অধ্যাপক
সামেয়েলসনার ভিজ্প বিক্রিকালক রচনা
এবং একটি বিশেষ সাক্ষাংকার প্রকে!
অত্তাব কি জেনেছিলাম? —এই প্রশন
করলেই বোধ্যা ঠিক হত।

জেনেছিল।ম এই নব্যা সংস্করণে অধ্যাপক স্যাম্যুরলস আথিক কল্যাণের এক নতন মাপকাঠি নিৰ্দেশ বাল্ডনাচ্ফ (বিজ্ঞানেস সাইকলস) তত্ত্বে ধারণার বেশকিছ, সংস্কারসাধন করেছেন আন্তর্জাতিক অর্থনৈতিক সহ-নতুন প্রকার-পন্ধতির কল্পনা যাক'সীয় অর্থনীতিতে উপেক্ষা করা উচিত্ত নরু-সে সম্বন্ধে স্ক্রা অভিমত প্রকাশ করেছেন আর যেসব সমস্যা আজ অর্থানীতিবিদদের বিদ্রান্ত করছে—বেমন উৎপাদন-বার ব্যাথজানত ম্ল্যুসফীতি (কস্টপাুস্ইনজেশান) বংধাকস্থায় মূলাস্ফীতি (म्हेराशस्त्रभाम), জনসংখ্যা ব্দিধর শুনা হার জেড পি জি: সম্প্রসারণের শ্না হার (रक्षप्र हे कि). 'দ্বিত পরিবেশের দর্ন রোজ-কেয়ামতের ভয় জাতিগত কারণে ও স্ত্রীপরে,রভেদে পক্ষপাত বহুজাতীয় বাবসার প্রতিষ্ঠানের বিবিধ ऐम्फ्रायत प्रवास BRIDTE অর্থ বিনিমর আৰ্ডজাতিক ব্যবস্থার প্রাজনীয়দা পরিলোকে আছে অপনিত্রিক পান্ধারণার ক্রমাবকাশের ওপুর সম্পূর্ণ একটি সম্পূর্



অধার বাতে প্রাক্তিকাসিক বংশের অর্থনীতি থেকে নরা বায় ও তর্ন মার্কসবাদী দ্লিউভগা এবং প্রেণী-সংঘর্ষ ও সমাজজ্জীবনের গতিপ্রকৃতিক সংক্ষিত পর্যালোচনা করা হয়েছে।

বা জেনেছিলাম নবল কংশ্বাল থেঁকে জা মিলিরে ঠিক চক্ষাকগের বিবাদভ্যান নর পরোক্ষ ও প্রভাক জানের ফারাক দ্বেক করলাম। তাও আবার একিদনেও মর বেশ করিন ধরে করেশটি নাডাচাড়া করে। এখন এই লখ্ড জ্যানেই সংক্ষিত বিবরণ দেওরার আগে প্রত্তীক্ষা হিসেবে প্রথমিন কিছুটা পরিচয় দেওরা বাক।

জালোড়ন-ব্লিটকারী পাঠাপতেক ঃ

১৯৭০ সালে অর্থনীতিতে শোরেল প্রহকার-বিজয়ী মাসোচাসেটস কৰ্মান-টিউট অফ টেকনোজজির অধ্যাপক পল खान्हेंनी मान्द्रा**ल**नत्त्र (**छन्य ১৯১**৫) গ্রন্থখানি একথানি পাঠাপাত্তক মার তাও আবার স্নাতক শ্রেণী যা মার্কিনীরা বাবে বলে গ্রাজুয়েট স্কল পর্যায়ের জন্যে। তবে এ রকম আলোডন-সান্টকারী পাঠাপনেতক বড একটা প্রকাশিত হয় নি। সাম্ত্রেল-সনের নিজের বিবৃত্তি অনুসারে মার্কিন बाह्यतार्ष्ट्रेत शाक्षाद्वारे म्यून्नम्मारश्च वार्थ-নীতির হারদের অন্তবে ৫০ শতাংশ তাঁর এই পাঠাপত্ৰেক পাঠ কলে থাকে। ইংরেজী ভাষাভাষী সর দেশেই भारतार প্রতক্ষণানি ঐ হারে না হলেও বৈশেব জনপ্রে। (প্রশ্থানি আমাদের কলকাত। বিশ্ববিদ্যালয়ের আটুস ও কমাস কোসের জনো মনোনীত পাঠাপ, স্তক। স্ত্রাং ম্বীক্রে গ্রন্থ। নেরে ভারভাগ্রীদের মতেকরা একজনও পাতা উল্টে দেখে কিনা সন্দেত।

পাঠাপুস্তক হিসেবে গ্রন্থখানিকে বাকরণ বা অভিধান বলে অভিহিত কর। হার। কোন বিহয় নেই একে > অন্ভাবে বলা যার প্তেক্থানি আগাগোড়া পাঠ করাল অথুনীতির সর কিছার সংখ্য মোটামটে পরিচর হরে বার। আধ*নিব* मानाशिकत भारक लालास्त्रीत जिनायनाज्ञत জানা এই পরিচর বে অপরিহার্য তা অলপ্রিস্ত্র চিদ্তাশীল সকলেই স্বীকার করবেন। বস্ত্ত তাথনিজিকে নাগরিকের অবশা পাঠা প্রধানতম শাস্ত্র বলে অভিচিত করা হছে। থামে বাসে হাটেবাজারে সর্বহার ও অন্যানা কর্তপক্ষকে স্বজানতার ভাব নিয়ে সমালোচনা করকেই চলবে না নাগাধকতা ব্যক্তিরেকে সচেত্ৰ গোষ্ঠী বদল হলেও রীতিনীতি-পন্ধতি পরিবৃতিতি ছাবে না। তখন আবাই যোহ্যুত নাগরিক-সম্প্রদার সরকার ও কর্তৃপক্ষের সমালোচনা শরে ক্ষাবে। খিক্সিন্ত ফেন্সারদের ভাতা দেওরা^র সিন্ধান্ত যদি পাহীত হয় এবং এর জন্মে ৰাদ আৰাৰ পকোই হাত পতে তাৰে আহি কি করব? দিহতীয় হুমালী বীজ নিয়াণ সাক্ষান আয়াতা রেল লাইন **केला**णि जनकार Take (প্রয়োজনীয় कि ! भः स्थात्नद् ব্যবস্থা

নি=চয়ই পাতাল-রেলও u S अस्याजनीय । কিঙ্গত MOOM অৰ্থনীতি ও পরিবহন-ব্যবস্থার বর্তমান অবস্থার অগ্রাধিকার শৈলে পাবে কি? নাগরিককে এইসব প্ৰশেষ প্রথায়থ সিশ্বাবেত উপল কৈ विहात 707 T হতে হবে। নচেং অপানীতি কিছাতেই ঠিক্মতে পরিচালিতে হবে না 4000 মৌলিক সমস্যা—থেগে পরে বেকে থাকার সমস্যা—মাথাচাড়া দিয়ে উঠারে। আড়োয় সিম্ব উল্লি করেছিলেন : সম্পির চেয়ে নিমাপতা অনেক বেশী কামা। এখন প্রণন নিরাপত্তার প্রয়োজনে সমরসজ্জাকে কতদার সমর্থন কথা যেতে পারে? ভতপ্র মার্কিন রাষ্ট্রপতি হ ভার সতক করে দিয়েছিলেন যে মূল্যস্ফীতি গৌলনের চেয়েও ভয়ংকর ইনফ্রেশান ওয়াস দানে জালিন, তা কতদ্র গ্রহণীয় > মালাম্ফীতি কি একনায়কতন্ত্রের চেয়েও অকামা না মাজলাস্ফীতির ফলে শেষ পর্যান্ত এমন অবস্থা ব্যবস্থার উদ্ভব হয় শা একনায়কতলের চেয়েও ভয়াবহ?

অধ্যাপক স্থান্ত হেলসন অপনীতিকে সামাজিক শাশুসমাতের সমাজী আখা দিয়েছেন। এই সমাজী বা রাণীর সজ্জে সাক্ষাং-পজিয়ে না থাকলে তাঁর রাজতে গামা মনে নাম দনা অসমভব। বৃদ্ধি ও বিকিশ্ন :

বর্তমান সংস্করণে গ্রন্থখানির নাম শুধে ইকন্মিকস বা অর্থনীতি। প্রবিত্তী সংস্করণসমতে নাম ছিল ইকন্মকস-ইন্ট্রোডাকটরী অ্যানালিসিস অৰ্থনীত-একটি উপক্রমানকাম লক বিশ্লেষণ। বর্তমান সংক্ষরণে (১৯৭৩) প্রতী সংখ্যা ১১৭: ১৯৪৮ প্রকাশিত প্রথম সংস্করণে পড়ির সংখ্যা ছিল ৬০০-র মত। সাতরাং বিগতে ২৫ বছরে (১৯৪৮— ১৯৭৩) এবং মণ্ট সংস্করণে গ্রন্থথানির আকার ৫০ শতাংশের মত বৃশ্ধি পোরেছে। প্রেমন উঠতে পাছর : সাধারণ নাগরিকের পক্ষে এই বিপ্লোকার গুল্থখানি আশা-গোড়া পাঠ করা কি সম্ভব আর আমাদের দেশের ছাত্রা কি আকার দেখে বতই ঘারভিয়ে যারে না?)

এই আকারব্যুম্বর কারণ হল অর্থ-পট-পত্মিবস্ত ন। অধ্যাপক নীতির স্থাম ুরেলসন নিজেট বলেছেন : ১৯৪৮ সালে প্রকাশিত প্রথম সংকরণে অনাভয় ব্যাক্ত किल জনারেল থিয়োরী। তারপ্_য অর্থনীতির ক্ষেত্রে অনেক মন্তন নতুন সমস্যায় উদ্ভব ঘটেছে এবং সারা বিশ্ব এইসর সমসা নিয়ে আজ মাথা সমাতে বাদ্য সাজ উদাসরণস্বরূপ উৎপাদম-রায় বৃশ্ধিক্ষমিত যুক্তাস্ফ্রীন্তি এবং বাধাবস্থাক যাত্র रक्षीरिकत जिल्लास करा शांता सामिकासम्बद्धाः अकृतिक-अविवर्कान सर्वेतक वार्तक अकृतिना व ज्येश्वीति (जाराजानेक्याजिक्य) ज्याह क्रश्रम अमिनिक्रके साम्य ज्यानीहा किन्छ औ भाग नवात महान महान । तमार-সমস্যা তথনও ছিল কিন্তু পূর্ণ নিয়োগের

দাবিতে লোকে তখন সোকার হয়ে ওঠেন।
স্যামুরেলসন আরও বলতে পারতেন
বে সম্প্রামারণ অর্থানীতির ধারণা তখনও
ঠিক দানা বাঁধোন, জনবিস্ফোরণ
ম্যালগুনীর তত্তে পুনরুড্জীকৈ করেনি,
পলিবেশ ব্যক্তি হওয়ার প্রথম ওঠেন
দ্যারিপ্র বা গরীব সম্বন্ধে ধারণা পরিক্ষটে

ষাহোক নতুন নতুন সমসার উদ্ভক্তের
ফলে অথানীতিবিদ্দের—বিশেষ করে ধাঁকা
অথানীতিকে বৃত্তি হিসেবে গ্রহণ করেছেন
বা প্রকেশনাল ইকনমিন্ট ভূমিক। গ্রেছশ্র্ণা হরে উঠেছে এবং বৃত্তিও হরে
উঠেছে উত্তেজনাপূর্ণা। বিদি আম্মা সর্
সমসারই সমাধান করে ফেলতে পার্কতাম
বাদ জগণ্টা কি একঘেখ্য হরে উঠত না বি
দেশন করেছেন অধাাপক সামার্রেলসন।
যত মত ভক্ত পথ :

অথনৈতিক সমস্যা কি সমাজতানিক দেনেও নেই ? যখন যুগোশ্লাভিয়া হাশেরী পোল্যান্ড বা চেকোন্সোভাকিয়া মোটামনীট বিকেদ্দীকরে ব্যবস্থার ওপর নির্ভাত করে বাধা হয় তখন তারা অ-কমিউনিষ্ট অর্থ-ব্যবস্থার মতই সমস্যার সক্ষাধীন হর-তখন নিয়োগ-সংস্থান ও নিয়োগ-প্রাথ**ি**-দের মধ্যে সামঞ্জস্মিবধান করা কঠিন হত্তে পড়ে কিংবা ভোগ্যপণক্রেতানের ক্রেমীরট মারস) মোট বার এবং মোট ভোগা**পভের** মাণে সমতা তারিয়ে যায়। অ-ক্ষিউনিলট জগতে অর্থবাবাথার প্রকৃতি **অভিন** শ্ হলেও সমস্যার প্রকৃতি কিন্তু একঃ বেমর **अ**्रेक्षाव्यान्छ जनकाश्य वाजन्यादामी এবং স্ইডেন বহুলাংশে সমগ্রবাদী। **অথট** গত ২৫ বছরে এই দুইে দেশের সম্প্রসারণ হার ছিল মোটামাটি এক। অতএব, মত 🤙 পথ এক না চালেও একই লক্ষ্যে কিন্তু পেণছোনো সম্ভব।

এইভাবে অধাপিক স্যাম্বেলসন্দের জানবশি ঘটেভে নিগত ২৫ বছরে এবং এই জাল্ই তিনি বিকিল্প করছেন তরি অর্থনীতর নবম সংস্করণে। ফলে সংস্করণটি হুরে দাঁড়িরছে একরক্ষ নব সংস্করণ।

শ্বানাভাবে আরু এখানেই বানতে হল। নর সংস্করণে বিকাণ নতুন বৈরয়-গ্রনো সদবংশ আলোচনা করব পরবর্তী সংখ্যায়। শাহিতলাল নবোপাধ্যায়



সেই লোক্টি

^{কে} **আমার কথ: ভবিধাংব** সেই লোকটির নাম দিকোন্তল জো-ক'ড়ে। তা চন্দ ক'ডেই ভদাকাকের নাম বিজনবিভাবী দক। থাকতেন আমার আগতানার ঠিক উল্টো मिरक भार একটা ডোবাৰ পোটেৰ সধা। খনে নীচুলমির এপর ছিল তার জাচি-বেডার কলো একখানা ঘর--শার অসংখ্য ফাঁক-ফোলর দিয়ে রোদ-ব্রণ্ট আকেলে ভেত্তে गहरू भाजात । अन्ति क्षाण इत्लाहे चात्र-साहास्स **জামি দব থট থট কর**ত। চারপাশে লক-লন্দিরে উঠতে আগছো শোলাকচুর জন্গল এমন কি কড়রিপানা। আমন এক স্টিট ছাড়া আর্মে একটি হাতিজীপ ত্রুপোশের ওপর বসে বসে হাপানী রুগী বিভানবার: ফিনভর বাপ-লা কুলে সমানে খিছিত করে বৈত্ন বিশ্ব-দ_নিয়ার মানাসংক দাদা কাণ্ডের মত ফ্লেকাকে আরু কবি তাঁর **শ্রুটা ধন-বাদাড় ঘ**ারে ভাণ্টপ্রহার সংগ্রহ কর-তেন কিছা শাক কচুর গেড়া, এখান থেকে ওখন থেকে যা পাওয়া যায় সামান্য তবি-ভরকারী। বিজ্ঞানাবরে বড় মেরে জালির আহার ছিল ঘোড়ারোগ। এ বাড়ি ও বাড়ি যারে চোয় চিকে খেত পর্সাও আদায় এবং সেই পয়সা জড়ো করে চার নাবর গ্যেটির হাট থোক কিনে আনত পারা-চট আয়না সংখ্যাদারের চক্ষাতি পাউড়ার सु⁶बक्षरा फिहाउन K-187-2 কাশল এগন কি জিপদিক। কলোনির কিছা ক্ষতপুরণ দাদা সে ধরে ফেলেভিল অচিবাং। এবং ভাতেও না শানানোতে সে অভঃপর সরাস্তি চাকে 'গরেছিল দার দার পালার বেসরকারী বাসের ড্রাইভার-কন্ডাকটার-রেলপারদের নৈশ্ **ছাউনির** ভেকরে। কিড়াদনের মধেটে আসল সৰ্বিশের মড় এক অপ্রিনেস বারেপেরে চল মেমেছিল তার হেডেশী শরীর গিলে।

বিজ্ঞানবাধনে কালী নামে ছোটো যোগাটি ছাছেছিল ছি'চকে চোর। ব্যোগা পালেটি লেছ পাটের ফাসিছি মত চুল উড়াছে, চলাল গৈ চোথ কালী নাগ নাগাগ সে কোনো বাডিছে চাকে গিয়ে কিছু না যিছা চাল-সাফাই করে আনাম। এই ছিল মাসক্লাই-বাড়ির বিজ্ঞানিকাৰী শাক্তব সংসার।

কটোটি নাজতেন না ভদুগোক। কিভাবে কি হক্ষে, দ্যোগ মেলে দেখতেন না। মাকে মাকে তবি তবাস দিলে জনে আসত। একটা ভেড়া কানি গালে শ্রীরে ভাস্মরে কুকুরের মত একাল্যেভাবে তথন কুই কৃই ক্রতে থাকতেন। একটা সুস্থ থাকলে বাইরে

এসে একটা সজনে গাছের তলে বসতেন। তার সারা শরীরে ছিল অস্থ্নীয় রুংনতা 🔊 ও দারিদ্রোর ছাপ। দ্রী ও কান্যাদের সর্বাদাই 'অশিক্ষিত' বলে সম্বোধন করতেন। প্রতি দিন আমার খনরের কাগজটি চেরে এনে আলোপাশ্র পড়াতন। বিশ্ব বাজনী: ভারতীয় অথ'নীতি র শুমাকি'ল সম্পক' ইত্যাদি বিষয়গালি স্বাদাই তাকে উদ্বাদন করে বাখত। সেই উদেবগ অভিশয় প্রবল হয়ে উঠলে হঠাৎ হঠাৎ আমার ঘরের দরজায় এসে ভাক দিতেন, 'আমাতব্যব্য আমি বেরিয়ে এলে ফেন একটা একান্ত প্রয়েজনীয় कथा वनसङ्ग, अङ्गारम । श्राप्त कारमा अभर মুখ এনে বলতেন জ্ঞানৈ নিয়ে লোমতা ম্শকিলে, পড়া গেল সশাই, কিংবা, প্চাদদটা ব্যাংক যে সরকার নিয়ে নৈল, এটা কি ভালো হল'—ইত্যাদি। পাডার উকিল ডাক্কার শিক্ষক—মারাই রামতা দিয়ে মেতেন, ভারের काछित ना काछित्यः बाखा जाभ भन्ते। जात्र প্রতিয়ে বিজ্ঞানাব্যে দুপ্রিক্তার আংশ নিজে হত। কোনো হ[†]নমনাতা ছিল না ভ[†]র। ^{স্বা}র আছে থেকেই রাজার প্রতি রাজার মত আচরণ প্রচাশা করতেন।

ভার রোগ। দ্ব্রী কাঠকটোটা জড়ো করে ভিনটে ই'টের উন্নে আগনে জনলতেন ম^{ার্}টর মাডিতে র্যাধতেন শাক-পাতা সেন্দ। কুয়োবা পাইখানা বলতে ভাঁদের বাড়ির চৌহদিব মধো কিছু ছিল না মহিলাটি ধ^{েকতে} ধ**্**কতে হাজারবার জল টেনে আনতেন এ-বাড়ি ও-বাড়ি থেকে। সেই জল দিয়ে মহা তারেসে চান সারতেন বিজনবাব, धानः भागात कठतम कठतम हाउ भा भारतन। অতিরিক জল খরচ ববার দর্ম ফারি সাদ্ প্রতিবাদ শানে তিনি ব্লতেন জালির মা তুমি তো, অণিক্ষিত মান্য, তাই ব্যালে না, म्याम्या ना थाकरम आंत्र किছ. हे भारक ना। তাঁর ঘরের অনতিদ্রেই থাকতেন তাঁর এক ^{সম্পান} সহোদত্ত রাসনিহারী শন্ত। অভাবী দাদাকে মাশে-মধ্যে সাহাযা করতে চাইছেন। অথচ এর ফলে বিজ্ঞানবাব, এতই খাম্পা হয়ে উঠেছিলেন ভাইরের ওপর যে, ভুলক্কমেও তাঁর সংখ্য হাক্যালাপ করতেন না। পিড্দত্ত বেশ কিছ্টা লাগেয়া জমি ছিল ভার কৃটির ঘিরে। পাড়ার এক ভারনাক ঐ জমিট ক বেনার প্রশ্তাব নিরে বিজনবাবরে কাছে এলো



ীতিমত অপ্নান করে তিনি রাজিরে দিয়েতিলেন তাঁকে। স্বাংশে নিঃদ্ব অথ্য অমন ডটিয়াল লোক আমি জীবনে দেখি নি। আমার বংশ; ভঞ্জিমাধ্ব মলত, বিক্রনবাব, একটা প্রাথ্বাভিক্যালীক্ষ্ম মাইবি।

গাঁষে কয়েক বিছে জুমি ছিল বিজন-বাব্রে সেখানে গিয়ে অনায়াসে লোটামটেট **जारेलाकारवडे शाकार भारतरहा ऋषे कारारवत्र** নিয়ে ঐ জমি নেডে-চেড়ে শ্রা, গ্রাসংক্রাদনই নয়, উদ্বান্ত ফলন বেচে কিছা, টাকা-প্রসাও করতে পারতেন হয়তো। কিন্ত সে পা**ন**ই ছিলেন নাতিনি। দুজন ভাগ-চাষী রেখে কাজা করাতেন। নিজে ক্ষিন্নকালেও যোগেন নাজনিতে। ফলে গাঁথেকেও ধান-চাল প্রায় কিছাই এসে পেণিছত নাতাঁর কাছে। কালেভদুে যদি বা দশ-^{পি}শু সের ধান দিয়ে যেত ভাগ-চাষীরা, 🕝 👍 ঝাড়াইবাছাইয়ের শংক্র, হাকডাকে 🦙 পাড়া সন্মুখ্য হয়ে উঠত। গাঁয়ে গিয়ে সপরিবারে বাস করার জনা একদিন তাঁকে প্রস্তাব দিত্তে তিনি ঘ'্রেস উঠালেন আমার ম্বেগর ভপর, 'আম্ত-বাব: আমরা হলাম টাউনের লোক ঐ গেইয়া অশিক্ষিতদের সপো কি আমাদের থাকা পোষার ঠ

আনাদের চোথের ওপর খেটেখেটে করে করে মারা গোলেন বিজনবাব্র সর্বংসহ। সহধ্যিশী। বড় মেরে জলি চমৎকার উড়তে খিপেছিল—একদিন একেবারে ভৌ পান্তা উড়েই গেল। ছোটো মেনে কালীই বা হোক চেরে-কুড়িরে চ্রিন্টামারি করে খাওয়াত বাপকে। হাড়ের ওপর চামডার চালর-পরিহিত বিজনবাব্রেক খেখলে রুস্তুত তখন ভর করত। ভর করত, যখন তিনি তার ক্ষকবালসার ভান হাতিট আনার মুখের ওপর নাড়িয়ে বলে উঠাতেন, নিক্সন এই কালটা কিন্তু জালো করল না, অমুত্বাব্"!

—অমিডাভ দালগ্ৰেড

ত্যাত্তাল্য বাচাচ্চা

(পূর্বে প্রকাশিতের পর)

্জপতীলের গাঁলর খুব কাছাকাছি এসে পড়েছিল ওরা এমন সময় নাঁলতা বলল, ওরে লাখ ল্যাখ তপু, বকেরাদের টনক নড়েছে —কেমল ঘাড় লম্বা করে তাকিয়ে আছে আমাদের দিকে ল্যাখ!

তপতীদের পাদের গলির মুখে একটা হোলটাইম রহু আছে সেখানে সর্বাক্ষণ কতক-গুলো বিশ্ববধা বঙ্গে থাকে আরু সেরেদের ক্ষা করে টীকা-টিম্পনী রামিং ক্ষেটারী ছাড়ে। তপ্তী ব্চক্ষে দেখতে পারে মা এই ইরংবেশগদের। এরাই নাকি দেশের ভবিবাধ।

ভপতী তাকার না, এ কুচিকে বিরক্ত গলার বলে তোর সাধ না মিটে থাকে তুই দাখ, আমার বমি পার ওদের দেখলে। এত অসভাঃ

আহা অমন বলিস না। ৰন্দনা বন্দে, ওরা বড়া দৃঃখাঁ, বড়া হতভোগা। ওদের কেউ দেখো না কেউ বোঝে না কেউ ভাবেনা, ওদের কথা তাই ওরা অমন। যতটা খারাপ আমরা ভাবি ততটা নর।

নশ্বিতা বলৈ তাই আমি নাম দিয়েছি বলেরা। যা পড়ে থাকে। দ্যাথ না ওদেরই নাকের জগা দিয়ে ওদের মানসপ্রতিমা বেপাড়ার পাচার হরে যায়, ওরা শুধু ফালেফ্যাল করে বেপাড়ার দরের বারফাট্টিই দ্যাথে। বড় জোর ব্চারটে ক্লাড়েল করে কোমার, গামছা বাঁধার চাল্স পেরে বতে লার—নইলে খন্দের জীবনজ্ব শুধু মারাপু বাঁধা আরু ম্যারাপ্রথালার ইতিক্লা।

সবাই নিজেদের মধ্যে হৈসে উঠল। কদমা বলগ, পেথিস নিস্তা, তুই আবার কারো মানসপ্রতিয়া হকে থাথে ড্যাং করে চলে যাস মা। বড় দাগা পাবে।

পার্রামতা আর একবার সামনের বংকর দিকে তান্দিরে বলে, নিল্ডু বাই বলিস মাইনী, এই রক্ষ কেলোরা মা থাকলে আমাদের পথ-চলার আমনদন্ত আধ্যামা হয়ে হেতো। ওই কান্ট্রাস চেকিং।

শশ্টিউন চেজিং বল মন্দিতা ওকে। রেডাই বের। গুই হল জ্যাগলন্ত্ বাপার। পার্রিছা গুরুদর কাছাকছি আসার আগেই নিজের কথাটা শেষ করে নিতে চাইছিল বলে একট্ বিরক্ত হল, প্রেরণা-ফেরনা না থাকলে আমা-দের দ্নিরা নিরামিষ হরে বেত। আমি তাই ওলের নাম দিরেছি এন ভি এফ।

এন ভি এফ ? বন্দনা গোগোর মধ্য দিরে গোল গোল চোখে ভাকার, সেটা কি কন্তু পার.?

সেটা অতি জনহিতকর বস্তু। ন্যাশনাল ভ্যাগারণ্ড ফোস[ে]।

ওই হল। নদিতা ওরই গলা নকল করে বলে, ওই হল। বকেয়া পার্টি।

জা তরা যদি আমাদের দেখে একট্ শিক্ ফিস্ দিরে আমন্দ পায় হোরাট হার্ম। বন্দনা বেশ ভারিক্কী চালে উপসংহার টানে, পাথিও তো শিস্ম দেয়। আমার বাপ্র একট্ মিউজিক ফিউজিক ভালই লাগে।

তপতী চাপা গলায় বলে, থাম তো তোরা। কানে গেলে আরো বেড়ে যাবে।

তুই আজ ওদের চাঁদমারি তপু। নান্দতা নিচু ফলায় বলে সবকটা যুবশক্তি তোকেই টাগেটি কষছে।

তা তপতী আমাদের মধ্যে বেদট লংকিং একথা অস্বীকার করতে পার না।

রক পার হরে বদনা বগল কথাটা।
কিন্তু রকু থেকে এক মতি লাহিন্যে নেরে
ওদের পিছু পিছু আসছে বদনাও থেরলে
করেনি। হঠাং পিছুনে পারের শন্দ আর
গলার করে মনে নন্দিত চমকে তাকাল।
তারপর তপতীর গারে খেচি৷ দিরে বলল,
তোকে ভাক্তে তপতী।

থাম: অভখনি সাহস ওপের এখনো হয়নি। চলতে চলতে জপতীবলো।

ম্রি, আট ম্রি, একবার শোলনা— এইবার ওপতার কানে গেল পিছডোক। সংগে সংগে স্তান্তিত হরে গেল, নিজের গানকে যেন বিশ্বাস হয় না। এ নাম এখানে কারে জানবার কথা নয়।

ভোৱ নাম মালি নাকি ? কট কথনো তো বলিস নি ? পাৰ্যমতার স্থানকালপাৰ জান একটা কম জৈ জোনে জোনেই কথা বলে।

তপতী পোন পাত লাবে দীড়ালো তীর গতিতে। পিছনে যে আসছিল সে টাল সামলাতে না পেরে এলেবারে গারের ওপর এসে পড়লো। মাথার ঝুপাঁড় চুল বোটা জুলাঁপ, কোমরে অস্থাভাবিক চওড়া বেকট। ট্রিস কোটোঁ যে মোটা নীলচে অপড়ের স্কীন ব্যবহার করা হয়, ডাই বিরে চোণ্টা গানেট হেথালোখা ভারত্তঃ গ্রি ছরেক পকেট পারে কানভাস ব্টে।

সার্টের কলার চেপে ধরতে গিয়ে **ডপতী** চমকে গেল, কে?

আমাকে চিনতে পারশে মা? ছেলেটির ভাংগা ভাংগা গলা একটা কর্ণ শোমালো এরই মধ্যে ভূলে গেলে আমাকে?

তুমি প্নৃ! তুই এখানে কি করে? তপ্তীর মংখ্যানা ঈষং ফ্যাকালে হরে পেল। যাক চিলেছিল তাত্কে? ভন্ন পালনি

না ভয় কি? একটা **চৌদ গিলে মালা** তোকে আমার ভয় কি! তবে একট, হাস্বার চেটা করে তপতী চেহারা**খানা ভর** পাওয়াশার মতই করেছিল।

আমি কি আরু করেছি? হান্তে লেভেছি অনেক তো গেলা.....বাক হাসল ছেলেটি, যাক বাদ দে ওসব তোর কথা বদা। কলেভ থেকে ফিরছিস? ওঃ কন্দিন বাদে ভোক স্থো দেখা...

এদিক ওদিক ভাকিরে ভপতী ভিস্কিক করে বলস, ওরা ভেকে ছেড়ে দিরেছে? না পালিয়েভিস

ছেলেটা হঠাং উন্মানের মত গলা ফাটিরে হেনে উঠল। পথের লোক চনতে পেলা। তপতী তীতচকিত হরে গাঁড়িরে থাককে। মুখে জলা নিরে গাগলে করার ভণিগতে পিছেল মাথা চেলিকে হাসছিল গান্। একটি পরে হাসি থামালে করলা নাথা মাটার্সা নাও! আমানা ক্ষেত্র গোঁড়। ফিনিক্সড়া হাসির্বা দ্যাকে ক্যান্ধা এসে গিরেছিল। ক্যান্ত্রিক ক্যান্ধা এসে গিরেছিল। ক্যান্ত্রিক চাটি সামান্ধে কলা এনি হাউ তেকে ক্ষেত্র্য প্রান্ত্র কলা

কোথায় এন্সেছিস ? তপত্নীর কেমন বেশ মারা হবা পানার চ্যাগা প্রান্ধানো চৈছালার দিকে কাকিয়ে। খাব রোগা হরে পেছে ছেলেটা। প্রচাথের গুড়ানে ছামা জনেতেই, कारात्म्य राष्ट्र व्यत के काश्व महा स्ट्रियर मानिक मान लाए होटी अकते। बाते मान खबरमा भारतात्मा हर्जाम। कथा वनस्य स्मर्तम গুশরের পারির একটা গতের অনুপান্ধতি চেত্রে পরে। তপতী মনে মনে ভাবল পরী-রের ওপর দিয়ে ওর অনেক কড়ঝাপটা প্রেছে তা দভা। সামাদিক এড পাড়ি পিরে ধখন অথম লাহাল ক্লে এসে পে'ছার ব্রিয় এই सुकार्य कथातः

আমি এপাডাডেট কাদন চল আছি৷ শ্বাসনিমা আসোমশাই স্বাট ভাল ?

কপত্নীর এতক্ষণে বংগনাদের কথা সমর্গ **চয়, 'ফারে তা**কিলে দাখে প্রয়া থানিকটা अभिरश निरंत अक्रो स्माकान स्थाप कि.च. কিনছে। তপতীকে ভাকাতে দেখেই সী-कारणन किनारक हार नायरना वस्ता। শার'মতা হাতের রুমালটাই নেড়ে দিল পতাকার মত করে। ওদের চোখ মুখ দেখে মনৈ হল ওরা খাব মজার খোরাক পেয়েছে।

কোৰ কথ্যা? প্ন কোতক মেশানো প্রধায় রলজ ভোকে মনে হাজে খবচের খাভায় भिद्रश राज आहा: या भारता-

ওরা প্রকম্ট করে। তপ্তী আনার পান্ত বাগের ^{দে}কে তাকালো তোর কথা ৰাল শামি। কভকাল পরে ভৌকে এভাষে... স্থাত্র-

बामान रकारमा कथा रहते। श्रामः रक्षमम বিচিদ্ৰ মাখভাগিত কর্মেলা আহি প্ৰেশ্চ নই আনলি এখন ইতি। কেমন ভার্লগারে ন পরেট থেকে চামিনারের তোরভানো প্যাকেট বৈর পরে গলায় কেয়ন শক্ষ তুলে তুলে <u>शामरमा ।</u>

তই এসব ধরেছিস ? তপভী ঠোট নাক কচিকে ৰ'লা

व्यासक किछा है ধরেছি, ফস করে জিলাবেট স্বরিয়ে *হেল*ে বললে আবোব **क्ष्मिल** ।

ट्रकाल मा रकमन आरक्ष्म? श्रामी यरणस् এখন কি করতে রে ২

ভাষ মনে আছে? গড়িয়ার কথা ভাবিস

লাবে। মারে। ভাল আছে স্ব? রাণ্যা-হ্যাসীমা আমার কথা বলেন?

ধোঁয়া ছাড়তে ছাড়তে পানা একমহাত অন্তানস্ক হলে মার তারপর সন্বিতে ফিরে **बारज रक्या**म काँकि जिल्हा करना नौछ हेरे गाहिल माचि हेरे। বাঃ পালা --

অপ্রসার আহত মুখে এক লহমা চুপ করে থেকে তপতী কলে, আক্সাচলি। আমরা এট পালের গলিতে, জিনের একের বি কলিং বেল আহে আসিস না একবার। সব কথা হবে--

व्यास्का । কিম্তু কি আর, কথা হবে, स्कारना कथा स्माहे जाजरण बारवीहरू।

ब्राक्षिः जगली स्नाम प्रिनित्स करण, য়াত্ ব্**লাকে অভডড: বলিস। ও**কে আমি ক্ষণন জাগে স্বাস কেখেছি।

बुन, तरों।

त्महे । शास्त्र २

भून् जान गोंकारमा ना, याः छात्र।

बकते भा तकान छिएम हत्व भूना। । আবার প্রকের আড ভার ফিবে চকল। একট বেন কেমন কু'জো হবে গেছে। রকে আর পুটো ওর বয়সী ছেলে বর্সে আছে। তারা এতক্ষণ এদিকে একবারও তাকায় নি এইবার প্রজনেই খাড ফিরিয়ে তাকালো। বোধহয় প্রত্ত পাষ্টের শব্দ ওদের কানে গেছে।

কেমন যেন অস্ভত হয়ে গেছে প্ন। क्षाम त्यम इंप्यान। चाना त्नहें, कथाणित মানে কি? বাজ কি বাডি থেকে পালিয়েছে না বে'চে নেই? এব কথা থেকে কিছুই ম্পুরুট ধোঝা গেল না। **রা**ংগামাস্থীমার কথাটাও কেম্ন চাপা দিল প্রে। এই পরিবত ন তপতীর কাছে খার শকিং। বালার ব্যাপারটা অকলপ্রীয়। প্রের আর সে প্নে হেই। হতুহিভত তপতী আংতত जिकिभिनिए निः भगन गौज्य एएक यथन পিছ ফিরলো বন্দনাদের আর কোথাও দেখতে পেল না।

বাজিনে ভাকার আলে গলি থেকেট তপতী টের পেল বৈঠকখানায় আড্ডা জন্মছে। ভার মানে তুপতীর বাবা আগ বাড়িছে। এবং তিনি বাড়িছে থাকলে বাড় সরগরম হয়ে উঠতে বিলম্ব হয় না: আমিতাভ মি<u>লা</u> তপতীর কাবা ভয়ংকর ভাজ্যবাজ লোক। হৈছে হাসিভামাশ্য এবয়সেও তার জাড়ি মেলা ভার। অবশা বয়স এখনত প'য়তালিশ পোরে নি, চেহারায় বয়স আবো বছর আণ্টেক ছাটাই হয়েছে। १५१८च ४^{मा}मा स्मर्ट ५ल निर्देश काल कहरू(५ कार्या, क्लांकजारमा धनव्याम वाव्हेवात्राव গত : টেটি নন বেংল্লী গোঁপ আমার কলো জ্লাপ। সৰ মিলিয়ে শিলম ফিগাৰ অমিতাভ মিলকে আরু মাই ছোক বাবা মনে হয় না। মনে হয় তপতীর সাদাটাদা কেউ। এমন চণ্ডল, আম্থির হাজাগবাজ মানাধ বাঙালী সমাজে হাজারে একটি আছে কিনা সন্দেহ।

বাড়িতে তিনি কমই পাকেন। মাসের মধ্যে গ্রাটচারেক ট্রার এবং তৎসহা ব্যক্তিগত আউটিং। শিকার, শুর্রটিং, মাছ ধরত যাওয়া, পৰতি তাভিয়ান, সাইট **িস্**য়িং ইত্যাদি ইত্যাদি। একটা নান্ধের পক্ষে হাত রকমের বাই-বায়না ধরা চলে, আমিতাভ ভাছেন ভার মধ্যেই। এক কথায় বলা সায় তিনি একাই একশো টাইপের মান্ত্র। অথ5 খেয়ালী, খামখেয়ালী প্রসাকীদের ওপরে মারা মমতা নেই। দুহাতে রোজগার দুহাতে বাস্। বলেন, 'থারচের জনো মারু দুখানা হাতে শানায় না। আমার যদি বাড়ভি আরো দুখানা হাত থাকভো!'

তপতীর মা মহামায়া ভ্রেকটি ভংগেনা করে বলেন, হছেছে খাক! দক্তাতেই দেউলে হতে আর বেশী বাকি নেই। আমাকে পথে বসিয়ে যাবে, সে তো জানিই'—

থোড়াই জানো।' অমিতাভ হাসেন, আমি তোমাকে প্রাণ থাকতে বিধবা ছতে দেব ভেবেছ। সে গ্রুড়ে বালি। অফিসে, ধরাবর লেট হয়ে এসেছি, ওপারেও জেট হবো। যাকে বলে লেট হড়ে লেট হওরা। নামের আগে চম্প্রকিল্ব আমার একদহা ধাতে अवश्रांना।"

महामाद्या द्वरण दरमन, जब दिवस्तुहै जिल काना काटक जाता।'

'বিধবা হতে না পেরে এড় মেলে স্বাচ क्तम जामिर । जे जवन्या अमन किसे न स्था নয়, ভার চেষে বরং'---

फात कारत अ^{करे}, माथके, य जावनाटक শেখ। মহাছায়া সল্পে উঠে হান। আসলে তপতীর সামনে , এ রকম শঘু ভারণ মুহামায়া স্থতে পারেন না। তিনি নিজেও ধীর-স্থির যথাসম্ভব মেপ্সেল্লেই কথা বলেন, মেয়েকেও সেইভাবেই ছানাম করতে ्राहरश्चित्समा किन्दु वात्भन ज्यास्टब्स আদিখোতায় তা আর হয়ে উঠনে ৰূপে মনে হয় না।

তপতীকে এই বয়সেও কোলে টেনে িতে নিতে অমিতাভ তাঁর বন্ধা হাীরেনকে লক্ষা করে বলেন, ব্রান্তে তে টাকরো, আমার এই ছোট পরিবার সাধী পরিবারের বাইরের ভেংগীটাই আহলে ওরকম। ওসব রাগ্ফাগ কিছ**ু নয়, দ্যাংগাগে** হয়ত রালাম্বে গিয়ে গ্নেগ্ন করে গুল গুটাছে আর ভোসা বানাছের, **আজকে**র আড্ডার প্রথম কিটিত ৷'

হীরেন আমিতাভের বংশা সুম্পুকের্ শ্যালক্ স্তুরাং সে দ্ব-ভরফেই আছে। ঠাট্টা করে তাই ওকে হীরের ট্রকরে। বালান। কৃতিম দুংখ করেন, আগত হাীরে যখন আমার বরাতে নেই তথ**ন আমার** এই টুকেরো হীরেই বহ**ুৎ আচ্ছা**!

হাঁরেন হেসে ফেলে বলেন, 'বোলি এখানে নেই ভাই বে'চে গেগে ও-রকম কথা

অহা আমি যেন, বেংটে প্রিবার সূখী পরিবার বলেছি।' হো হো করে হেসে শেষে যোগ করেন, তা তোমার দিদি **এক**টু শর্ট কাট এ তো আর অস্বীকার করতে भारता सा। विरला कारें वृत्रातन? दशातात আ্রাঙ্ক মাই ডটার, মূ । এখনই পাঁচ জিন। ওর দিল অনে**ক বড়ো হবে দেখিন।** কি রে মুকি?'

ড^{পত}ী আরম্ভ হয়ে ওঠে। স্বভাবে সেও মাধের মতই কিজিৎ **লাজ**ুক, আর চাপা দ্রভাবের। ভাছাড়া বাবার সামনে সে সম্পূর্ণ স্থজ হতে কেন যেন পারে না। আলসলে লাকে হোমন দেখলেই মা-মা ম্নে হুল, বাবাকে দেখলে কিন্তু কিছুতেই ক্মণিলট বাৰা মনে হয় না। হদিও বাবাকে মনে মনে ্স ভৌষণ লাইক করে, ভৌষণ ভালনাসে। আজকেও বৈঠকথানায় হলাহাসি শানে খ্ব গুশী হল। কারণ অনেকদিন পরে বাবা আজ বিকেলে বাড়িডে আছেন। আর যে-দিন বিকেলে বাবা বাডিতে থাকেন, সেদিন আর তিনি বাইরে কোখাও বেরেন না। বাবা না থাকলে বাড়িটা বড্ড পাল থালি লাগে। এত বড় বাড়িছে 37176 আড়াইজন মানুষ কিছুই নর। দাদু সারা হাবার পরে ওরা পাকাপাকিভাবে **এ-বাভি**তে চলে জাতে গড়িকার বাড়িটা ভাড়া শিকে। এ-বাড়িটা দান; দিয়ে গেছেন। মাকে। কিল্ছ সে জনো নয়। বছর তিনেক আগে তুগন **छ जन्मतो मात्रास्त्रक इत्त्र छेर्छिकाः श्रान्य** প্রাপ্ত করে পথে বেরেরজ্ঞা। ক্-পাঁচুটা ক্লেক্সম নিজ্ঞা কেন্ত্রগাই ক্লিক্স। ক্লঃ কেন্ত্র ক্লিক্স গরের পরকার কথা করেও ক্লাকিন্ত ক্লিক্স না নিশ্চর্যুতা ক্লিক্স না নিশ্চর্যুতা ক্লিক্স না নাউক্তের ক্লিক্স কর্ম হরে গিরেক্সিল। চোখের চাউনি, মুখের রেখা এখন পালেট গিরেক্সিল থে অনেক সময়ই অচেনা লাগ্ডেটা। ক্লেক্সে ক্লোক্স নান আর পক্টেট পিল্ডেল নিরে ভ্রত্তো ক্লেদে নেকড্রে দল। ক্লাই ক্লেন্ত্র ক্লিক্সেট্র ক্লিক্স্টের ক্লিক্সেট্র ক্লিক্সিট্রাক্র। আন্তর্কের মত্ স্ক্লিক্স নিরে ভ্রত্তো ক্লিক্স্ট্রা এই প্রশাস্ত্র ক্লিক্সিট্রাক্র। আন্তর্কের মত্ স্ক্লিক্স নির্বাহিল। আন্তর্কের মত্ স্ক্লিক্স নির্বাহিল স্ক্লিক্স নির্বাহিত বানিক তথ্ন।

বাৰো! এ পাড়ায় চকে এসে খ্ব বাঁচা বেংচে পিয়েছিল তপড়ীরা। পালের বাঁড়ের মজুননার জোন্ খুন হলেন সাত দিনের মধ্যে। বাবার কথা ছিলেন উনি। পাড়িয়ার জায়া। উনিই কিনে দিরেছিলেন। কে জানে বাবারও কোন্ দিন বিপদ আপদ কিছু ঘটে বৈজ কিনা।

'এই বে, মুলি মা। এলো ভেডরে এলো'—

বৈঠকখানায় উর্ণক দিয়েই পালাতে বাচ্ছিল তপতী হীরেনমামা তৈকে বসলেন আসলে আন্ধ ঘরের মধ্যে অটেনা মূখ দেখেই সে নোতলায় পালাচ্ছিল পা টিগে টিগে। কিন্তু হীরেনমামার চোধ সাংঘাতিক, তার কাচ এন্ডানো শক্ত।

বইখানা বুকের কাছে ধরে লাজুক পারে ত্থা তথা থারের তথা তথা থারের চালের রেলে চলছিল। নুহুত্ আরে তথা তথার কালের কালির কালের কালের

ভপতী লক্ষা করল মহিলার বরস চলিলের বাছাবাছিউ হবে। গারের বং ববধবে সাদা প্রায় মেমক্ষাহেবা। চুল বব করা, ঠোঁটে হাক্ষা রং চোঝে ধানালো চশমা। স্বাধিক প্রকল্প প্রবাধনের পালিলা। পোষাকেও আভিজ্ঞান্তা আছে।

উন্টোদিকের সোকার কোণে পাকা কাপের ক্ষেতের মত একমাণা চুল নিরে একজন অপরিচিত ব্যক্তি হাসি থামিরে তপাতীকে লক্ষ্য কর্মভালেন, এবার হীরেন-মান্নাকে উন্দেশ করে বলজেন, এই আমর থেরে?'

'এবং একমাত দেয়ে।' তপতীর বাবাই ভবাব দিলেন, মুলি, তোর ফরেনসিক বিশ্ব-খুড়োকে প্রণাম করে। বিশ বছর বিলেতে ফাটিলে দেশে ফিলেছেন, বীতপ্রশ্ব হরে আবার বোধহয় ফিলেই ফানেন। মাধার চুকা দেখে ভূলিস নি মা, আমরা এক নরসটি প্রায়। তবে ইনি সারেলকের গায়ের বং শিরোধার্য করে বুল্লো সেকেকেন।



তপতী নিচু হরে প্রণাম কর্বাছল, উনি বাধা দিলেন, খাল খাল মা। ওদেদে থেকে থেকে প্রণাম জিনিসটা এখন অন্তাতিজ্ঞান লাগে। ভূমি বনং ওপকে:—অপরিডিগে মহিলার দিকে ইণিণাড় কর্মেন।

শাই দি ৰাই। যানি ওংকে তুমি চেন না, কাবল আগে কখনো দ্যাংখা নি। উনি ভোষার কদ্মা মা, আই মীন হ'তে হ'তে কল্কৈ বাগুৱা মা। শ্রীমতী কালোকাং' আগতান্ত জন্মহিলানে সদেনাধন কাব একটি ক'ছে সাম্ম জাতে দিলেন, 'কি, ঘটনাটা ভাই তো?'

ক্ষিক স্পেতে তুনি চালিকেও বোধহয় ছাড়িয়ে গেলে, অমিডাছ ! দটুনা কি দুখটিনা জামি না, কেবে প্রভাক বজ অটি নিরই একটা করে ফল্কা গেরে। থাকে বলে শ্রেছি।

মুখে হাসছিলেন, কিন্তু ভ্রমহিলার কথাল্কো হানকের মনে হল না তপত্রি। কোন বিদ্যালয় হাত দিয়ে প্রকান কথাল্কে। কোন বিদ্যালয় হাত দিয়ে প্রকান কাল। কিশ্বলার মতু কালেকির কিন্তু কাল কিল। কিশ্বলার মতু কালেকির কিন্তু কাল কিলে না বরং কোন ভারপর চিন্তু কালে উপজোল করলেন। ভারপর চিন্তু কালে উপজোল করলেন। ভারপর চিন্তু কালে কালেক কালেক মান্তুলী বালিকে বিশ্বল তথালী বালা কিলেক মান্তুলী বালা দিকে তথাকির হেলে কোনালার কোলেনা একোনার তোলার মান্তুলির কালালার কালেনা ভাই হাকির ভাকিরে সহলোলার স্মাধান শ্লেজকোন যেন।

'হাউ নারোলি এসকেপত। ওহা এক চুলের জনো দেশ্য যাওয়া একেই বলো।'

অমিতাভ অভি নিরীছ ম্থ করে কথাটি বলেই সিলিং-এর দিকে তাবিংর থাকলেন। স্বাই কোকটো আন্মান করে ছেসে উঠল। মহামারাত হাসলেন, তো আমার মতে মুখ পেলে মোরে বতে বৈতু তোমার-

'এবার বিভাইরেকটেও টা প্রীনতা, ইউ
ভারার নারোকি এসকেপড়। ভাগিনস
ভারার করি করে নি, ভারতে বৃত্ততে
ইালাখানা কারে কর। তামতাভ চুন্ট কেন
কর করলেন, ভারতে কোথার ছিল ভোরার
করিকিটস করা। হে'সেল কেলতে কৈন্তে
ক্রাকটিস করা। হে'সেল কেলতে কৈন্তে
ক্রাকটিস করা। হে'সেল কেলতে কেন্তে
ক্রাকটিস করা। হে'সেল কেলতে কিন্তে
ক্রাকার ফ্রাকার কাভ থেকে বারোমাসাটা
ভানে নিরো এক কাকে। হাসি চেপে স্টার
ক্রিকে চোথের ইণিগত করলেন।

এতক্ষণ স্থাস্ক বাপারটার আট্ট লাইন বুলে নিমেছিল তপতী। মারের সংগ্য বাবার বিষ্ণে হওরাল আবে একটি হেরের সংগ্র বাবার খুল ভাষসায় নাকি হয়েছিল। বাপারটা বিবাহের দিকেই গড়াছিল, হঠাং কা কারণে যেন সম ভোগো কার। যেরেটি জ্বা একজনকে বিজ্ঞ করে জলেনে চলে বার। মারের মুখেই একদিন গুলুমছিল বাছিনটি। না শুনেছিল বাহার লাছে। বাবার বিশ্ব রাখ্য গ্রাম একজন কার্যার বাহার বাহার বাধ্য গ্রাম একজন বাহার লাভ্য বাবার বিশ্ব রাখ্য গ্রাম মুখাই ফার্টা কার্যার বাহার বাহার বাহার ভপভী ছাচাই-চোথে খাঁচিয়ে খাঁচিয়ে পাঁচিয়ে দ্বেল। শ্রীমতী কালেকির, ফর্লা হন্তে পারেন মাথে রুপের ধারে থাকতে পারে, কিন্তু কথনোই মারের মাথের কিন্তু কেই। মা তার মাণের হারে ভানতের রুপোল আঁচড় পড়েছে। বাবার পাণে কথনো মানার না। ওকে মা ভারতে ক্তের ভেডরটা কেয়ন করে। বাবা কিন্তু বলেছেন ঘাউ নাারেলি অসকেত। বিষে করেজ এই লাইফ আপনার থাকতো নাবার করে আগনি খাই বলেকের বাবার মত বাড়ে। ধানাকর আগনি আলাকর আগনিকর বাবার মত বাড়ে।

মা বলল, তেপু যাও জালাকাপড় ছেড়ে আমাদের চায়ের তাসারকি করে এসো এই আসর **ছেড়ে আমার আর উঠ**তে ইচ্ছে করছে না।

অমিতাভ বিশ্বনাথ ঘোষাল এবং হাঁরেনকে চুর্ট অফার করে নিজেও এপটা মুখে মাইজে ছিলোন। এরকম প্রশা এবং সর্
াইশের চুর্ট দেখতে ভালা লাগে তপতার মানুরকে অনেক ল্যাট দেখার। কিন্তু বেশার ভাগ লোকই যেন মারোয়াড়ী মাকা চর্টের ভক্ত। ইয়া চাউস আর বে'টে, মুখের হাঁ বংশ করার কর্ক ফোন। কি বোকা-বোনাই না বেখার। যেন চুষিকাঠি চুষ্টেন বুড়ো

সিগারে জাণ্ন-স্থোগ করে আমিতাভ বলসেন মাসা তুমি একে আসর বললো। তবে কি বলব? মহামায়া শেলধের

বগণে বাসর। আমাদের বিবাহ ক্ষাতি-বাসর। আমাদের বিবাহ ক্ষাতি-বাসর। তানতাভ গোঁয়া ছাডতে ভাততে বগলেন, শ্রীমতী তোমার মনে আছে তোমার প্রেমে তামি কেন্ন রাইন্ড হয়ে গিয়েছিলান। তথ্য ভাবতান্ন চেমাদের না বেল্ল

তথন ভাবতান তেখন বাংগত হয়ে গিয়েছিলান কৰব। তাৰপান শিবু সদাবাৰ আচ্মকা দিলে সত্বক্ষ উল্টে আমিও বিক্ল্মান চিল্তা না কৰে গলায় দড়ি দিয়ে কুলে পড়লাম।' বলে আড়ে আড়ে একবার ক্লীর দিকে তাকালেন।

মহামায়া ও'র মুখের দিকে ভাকিয়েই ছিলেন গোড়া থেকে বজলেন, গলিরে বে'চ গেছ।'

ওঃ শিওর। শিওর। নিছাতি বে'চে গোছ। আজকের ছিনের এক্সম বাঁধকে জনানাদের হাতে পঞ্জে লাইফ গ্রেল ধ্য়ে বেত।

আমার হাতে গড়লেও তোমার দশ।
কিছা ভাল হত না শ্রীমতী উচ্চ হাসেও
কানালেন। অমিভাভ তার কথা লাফে নেবার
ভাগতে ভাড় নাড়গেন দিস ইন্ধ ফর
মাইসেলফ, আমে রিগিটিং থার্ড টাইম—ভোর
নাবোলি এসকেপড়াং

সবাই উচ্চ হাসো ফেটে প্রভ্রুসন, ওপতী এবট অপুনত্ত বোধ করে তাড়াতাড়ি পর থেকে বেরিয়ে গেল। সমুস্ত বাপান্দটাই তার কাচ্ছ একটা অভ্যুক্ত নাটকের মর্ক্ত কোপ ইচ্ছিল। খানিকটা যেন পরিং—সিন্নিও ক্ষমিক কামেও। ভালনাসা এবং বিবাহ প্রটো ব্যাপার ক্রমন যেন গোলনেক্যে প্রস্কুসন্ধানিয়াপেক

गरा । একটাকে **का**फाडे জি াস আর একটা खाःकृत्भ 504 বার। নিজের হারে এসে বইখাতা রেখে কাপত বদলাবার আগে একবার আচকোরিভাছেন সামনে গিয়ে পাঁড়াল। ভেতরের আলোটা জ্যেল দিয়ে নানা রঙের মাছের ভালকেলি দেখল কয়েক মূহুতি। কৃত্রিম জলাধারে ভেত্রে ন্ডিপাণরের পাহাত পাহা জলজ শ্যাওশা। কেমন স্বচ্ছ তরতরে জাবন কিস্ত কঠিল নিবেধ চারপাশে কাঁচের প্রাচীর িঘরে রেখেছে সব ×বংনকে **ভোট** একটা মার্কের মধ্যে ভার বাইরে **শাু-কভা আ**র শ্নোডা, ্রাজ্র বাইরে আকাশকুস্ম ঝারে গেছে। ^{কিন্}তু সৰ দেখা যায় ম**জর কর**লে। অবাসের্বিয়ামের মধ্যে স্পর্যান মাছপুলি কি াকবারও দৃষ্টি প্রসারিত করে দেখে ভালের জগতের এই নিবারাণ অসংগ্রি।

কাঁটের জন্মাধারের সামনে থেকে সংব গিয়ে দুত পোষাক পাণ্টাতে **লাগলো তপভী**। একেই কি ভালবাসা বলে ? বাবা **নিশ্চয়** একদিন শ্রীনতীকে **ভীষণ ভালবাস্তেন।** শ্ৰীমতীকে ছাড়া একদিন হয়ত সতিইে **ভা**র জগং অন্ধকার হয়েছিল। সেই অনুভাত সেই বেদ্যা কি এককণাও মিখে ছিল ? লোগ হয় ছিল না। নিজের জীবন দিয়ে তেপজীব য়া কিছ; অভিজ্ঞা ভালবাসা কথনই মিথে। বেদনা নয়। অনেক অনেক **ব্যথাবেদনার** ^{চে}য়ে তীর এবং সৃতিয়। শরীরের **যুক্তগা** ওস্ধে আরোজ। হর, যা সেরে যায় মাথাধর। একটি টাবলেটে মন্তের মত ছেড়ে বার। কিন্তু মনের অভিথরতা, অসুখ কোনোদিনই কি একেবারে সেরে যায়? স্বামী, স্বচ্ছপতা অন্য পরিবেশে জীবনের চরিতার্থতা খাুলে পেরেও শ্রীমতী কালেকার কি প্রকৃত স্থী। সেন্ট পার্সেন্ট হ্যাপী? তিনি কি সম্পূর্ণ ম**ুছে ফেল**ভে শেরেছেন অতীতের **জীবন** ? ম্মতি কি গাছের ডালের পাখি **যে তা**কে হুশ করে উড়িয়ে দেওয়া যায়: শ্রীমতীর মনের মধ্যে কোধাও একটা কিছু আছে। এত হাসি এবং মেদের তলার তা একেবারে চাণা ^{পড়েনি}। তপতী পর্যন্ত বা্**ৰতে পেরে** গেছে। নইলে এতদিন বাদে **পথ খ**ুলে খ্ব'জে প্রাভন প্রেলিকের বাড়িতে হানা দেবেন কেন। এও এক ধরনের মস্টার্লাজরা। যে অতীত নাট, সেখানে আমরা সৰাই ফিরতে চাই। রোমানিটস্[†]জম **রোধা**তে প্রফেসর মুখার্জ বলেছিলেন কথাটা। ইংরেন্সিতে পড়াতে পড়াতে মাধ্যেমধ্যে এক-আধ্টা ৰাংলা লাইনের এরকম্ পাঞ্চিং বেল শানতে লাগে। ও**শ্ব গ্লানে** শ্রীমতীর ধাবার ভাৰায় হতে হতে ফদেক যাওয়া মালেৰ কথাগ্রলোও সিগনিফিকেন্ট। একটা আত্যার र्गिनः लाह्, धक्या गुकीत खर्थ। क्यान्ता ক্রক্র করে এখনো তপভার কানে বাজছে--धर्मेना कि नृष्टिंना कानि ना एत्**ट श्रटला**क শক্ত আঁট**ুনিরই একটা করে ফ>কা গোরো** থাকে বলে লুমেছি! কথাটা কি বাবাকে শক্তা করেই বলা নয় > ভারপরে আংশীরণিদেব ভাষাটাই বা কি রকম: তপত তো চমকেই

Sign of apparence and recommended

উঠেছিল প্রথম কথাটা খানে। মনস্কামনা পর্ণে লোক মা। আশ্চর্যা তা হলে কি নিজের মন্তকামনা একদা পূর্ণ হ্যুনি ? মা নিশ্চয় ব্যাপারটা তার থেকেও ভাল আঁচ করেছে। তাই চায়ের যোগাড় দেখতেও উঠলো না। মাকে খাব চেনে তপতী। মা যতই হাসকে, আজ বাতে বাবার সংখ্যা শিওর আগড়া করবে। বাবা অবশা এত খোলামেলা হয়েও কেমন ঝাপসা ঠিক লোকা যায় না স্ব সময়। মনে হয় কিছা একটা বহুসা আছে। মাজিশিয়ান যেমন সকলের সামনে তার হতের মৃঠো ঝোলাকুলি থেড়ে দেখান কিছা নেই আগচ ঠিক তখনই একটা বড় বক্ষের কিছা বিস্ময় লাকোনো থাকে সেই খালে দেখানো ভাতের মধ্যে বোলাল কিংবা পকেটো যালাও আজে কর সহজে কণ্ড অন্স্রাপে স্থাক্তা বেছে দেখালেন নিজেব পর্বজীবন নিয়ে ঠাটা করলেন কিন্তু ভাতেই কি সৰ মাতে গেল।

শাড়ির বদলে শালোয়ার পরে নিয়েছিল ভপতী। এমন সময় বাড়ির তথায় গাড়িব শবদ হল একটা অদ্ভত মিঠে হনতি শোনা গেল। ছাটে পিয়ে জানলায় উপিক দিয়ে অবাক হলে। ভগতী। একটা দাধের মত সাদা বিলিতি পাড়ি এসে দাঁডালো ওদের বরকার ভার তা থেকে গাফিয়ে মাছলো বাইশ তেইশ বছরের একটি ম্বের । ঠিক সেন হিন্দী ছবির হীরো। নেনেট চো**থ** থেকে প্রকাস খালে হাতে নিয়ে কণর দিকে ভাকালো। সংখ্য সংখ্য চোখড়খি হল দাজনের। তথানীর বা্কের ভেনর্টা কেপুপ উঠল কেমন একটা অজ্ঞানা আশ্বেলয়। অগ্ল ख्यैतरह नील काण इसं कारशत खाता **म**्की নীল দোত্ৰা থেকেও ছপ্দট ককতে পেৱেছে তপতী, অমন ভ্রা, অমন াঠাটে বাকেনো হাসিটি কট করে কোণায় যেন লোগে যায়।

তার একটু দেখতে ইচ্ছে কংছিল তেছেদটি। তাদের বাড়িতেই এল বোধ করি
কিন্তু লংজাবশত তাড়াতাড়ি সরে এল
তুপতাঁ। বাবা সিনেমাল নামতে যাডেন
কয়েকদিন আগে শুনেছিল কথাটা। বাবার
বংশু ছবি করছেন তাঁর ইচ্ছে বাবা একটা
পার্ট করেন। একটা স্থাতি থেকে যাবে।
বাবা শেষ অবধি রাজা হুয়েছেন। এ হয়ত
সেই ছবিবাই নায়ক টায়ক কেই হবে না
কি প্রোডিউসার?

তপত্তী ভাড়োতাড়ি নিচে নাম্বল, বালা ববে গজমোহন কি করছে কে জানে। চা-জঙ্গখাবার ভাড়োতাড়ি পাঠানো দরকার। আর একটা ডিশ বোধ হয় বিশি হবে।

হাতের ইসারার অনীভা েপতীকে ডাকল।

একট্ৰ অবাক হল তপত্ৰী। অনীতা আবার ফিরে এসেছে ভানতো না। করেক মাস আগেও বাড়ি থেকে পালিয়েছিল। বর বাড়ির লোক অবশা অনা কথা বলড়, গালানোর কথা দবীবার করেনি। কিংগু জানতে কারোই আর বাকি থাকেনি। কারে এই পাড়ারই এক ছেড়ার সংগে ঘর ছৈড়ে-ছিল্ল অনীতা। পাড়ার এই কেছা নিরে

তানেকদিন মেরেমজলিস বেশ জমে উঠেছিল। কারো কারো মাজ পালানেটা পরের কথা আসল ব্যাপার অসম্পা নাকি এজদুর পুর্ভুত্তর হার উঠেছিল যে অনীভার গা চালা দেশরা ছাড়া উপায় ছিল না। কথাটা প্রথম রখন শুনেছিল মানেটা ঠিক বোঝেনি, কান্টা, বোধগ্ম্যা, ছতে কান্টান লাপ ১য় উঠেছিল।

আসলে পাড়ায় অনীতার স্বতই নিলে তোক তপত্ৰী ওকে খাব বেশী দোষ দিতে পারে না। মেয়েটা সরক মেয়েটা বোকা মামানাড়িতে গলগ্রহ হয়ে রয়েছে। পড়া-শোনার খ্যুব ইচ্ছে ছিল মেয়েণার কিল্ড গালী বাজে খরচ করতে নারাজ ভাট ≰াস নাইনেই সকলের পাঠে ইতি হলে গেছে কংগক বছর হল। মুখে বাজে সংসারের খাটানি খাটে, কিন্তু তবা কারো কাছে ভাল মাখ পায় না। এদিকে মামীর একটি লক্ষা ভাউ আজ তিন বছর ধরে মেডিকেলে রুগডোচেচ। সেও এ বাড়িন্ডে থেকেই পড়ে। মান্না অমলান বদনে ভার সমস্ত খ্রচ-খরচা আর আবিদার বহন করে চলেছেন। শ্বালক বলে কথা। আস্থে গোটা প্রিয়ারটাই অশিক্ষিক। য়ামাও বেশিস্র লেখাপড়া শেখেমনি কিন্ত জানলপ ফাক্টিবিভে বেশ ভাল মাইবেৰ াকরি করেন। ফি শনিবারে দিশি জাল পান করে অধিক বাবে বাভি ক্রুরেন। ক্রোনো কোনো রাত্তে মামা-মামীতে কর**্কেনের মহ**াড়া হয়।

ছাদের আলসের দিকে সৈতে বৈতে তপ্তী শাংলার ক্ষিত্র ছাতে নকরে ফিরলে ন' তপ্তীদের পিঠোপিঠি নাড়ি ধীরা-কৌদিদের। লাগেন ছাতেই দাঁডিয়ে ছিল অনীতা। বিকেলের আলো মরে এসেছিল। কাছে ব্যেত তপ্তনীর চোখে পঙ্লো অনীতার মিণিগতে সিন্ত্র। আরও শারীরিক পরিবর্ধন চোখে পড়্লো। মনে হল কথাটা হা রটেছিল সিকই ভাহলো।

অনীতা মুচকি হেসে বলল, দিন সাতেক হল ফিবেছি, আবার শিল্পাীরই চলে হাব।' কোধায়?'

'কেন ধ্বশারবাড়ি। আমার হে কিরে হয়ে গেছে গো! ওয়া জান না?'

তপতী প্রতিট্ জানাতা না। পানার ভারা কারো সংগ্যা বড়একটা মেশেও না। দাড়-পাঁচ কোনো কপায় থাকেও না। মা ঋুব অপ্ছদদ করে এসব। তাই মান্তের কানে যদি গেণিছেও থাকে তো মা কথনোই তপতীকে জানানো প্রয়োজন মনে করেনি। মি লক্ষ্মীর মা এগাড়ি থেকে বিবেয় হতেই পাড়ার গেজেট বংশ।

খুৰ খুণী হলাম অনীতা। তেজার বিয়ে হয়ে গেছে জেনে খুব খুণী হলায়। বয় কি করে হ'

বরের কথার আকারণেই মাথাদ্ধ কাপড় টেনে দিল অনীতা। একটা হোন লক্ষ্যা পেল কেমন যেন আড্রান্ট বোধ করলো। হাতের নথ খাণ্টতে খাণ্টতে বলল, 'ধানবাদে কিসের কানি বাবসা আছে। ঘর ঠিক করেই আমাকে নিয়ে যাবে ব্লোচে।'

'বেশ, বেশ। একদিন তোমার বরের গ্রুপ শোনাবে আমাকে, কেমন?'

অনীতা ঘাড় কাত করে বলল, 'একদিন যাবো ভোমাদের বাড়ি রাসীমাকে প্রকাশ করে অসাবো। ভাল কথা, ভোমাদের বাড়িতে নাকি ফিলিমের লোক একেচে?'

িফিল্মস্টার ? দরে বেলক। কে বঞ্চল ?'
পীরাবেটিদ বলেচে ? বজনা শতি,
কে এসেছে ? আমি কাউকে বলব মা!'

্থানার সম্পূর্কে এক মাসীমা, ভার ভার ছেলে। ওরা ক্রিন্সকালেও সিনেয়ার কেউ নন। কিন্তু ধীরাবৌদি কোথায়? তিনি এতস্য কোলা থেকে জনগোন?'

পানাবে বিদ্যুদ্ধ স্থা জানতে পারেন পো স্থা জানতে পারেন। এই যে জামার—' ব্যাই হঠাং সামাল নিয়ে কয়েক সেকেন্ড চুপ নেরে থেকে কথাট মাথা খাটিয়ে সামাল নিজ ভানীতা, 'ভুল হায় গোষী বলতে ধারাবোধির কি হয়েছে কিছু কানো না?'

ধীরা নোদিদের বাড়ি অনীতাদের
লাগোছা, পিঠেপিঠি হলেও কিছু দেখা
যায় না। একমাত্র ভানে উঠপেট তবে রখে
দেখাদেখি নাইলে দেওটা নাড়িই পরস্পারর
দিকে পিঠ ফেরানো।
এ কালতে আন বাড়ির
প্রিক কলকাতার প্রথের মান্তের মত, পালে
গালে কাপেট আহে তব্ কেট কারো ইম্মান্তের।
দেশকে মা, ক্রমা বলা শ্রের বিষয়।

'কই না! কি হয়েছে?' তপতীর **ছেছ।** কেলন ভীত বিশ্বয়ে গোল হারে ওঠে। উনি তো মরতে মরতে বেকি

ভীন তো মরতে মরতে বৈতি গিরেছেন্। গায়ে আগনে লেগে গিরেছিল।



প্রথম একটা, ভাল, তাবে গ্রেমণারা। ভাভার ক্লীফেনা বারণ করে গিরেছে। গুলপ করার লোক নেই ভাই আমাকে ভেকে পাঠান ব্যয়া হেখন।

শ্বকো কি! আগনে লাগলো কি করে, স্টোড় বাস্ট করে নাকি উননে থেকে?'

ত্মনজি গলা লাশা করে বাড়েরে শ্বর নামিরে বলল, খোকোনদার সিগ্রেট-লাইটার থেকে সে অনেক কথা, পরে বলকান দ পিছনে বাড় ফিরিরে চেচিরে বলল, বাই। ভারপর চোখর একটা ইসারা করে তপত্যিকে জানালো, টনক নড়েছে। চলি। একবার এসো না হয়?

অনীতা ছাদ থেকে নেত্র গোল। তপত্তী একা হততই নানা চিচ্তা তাকে ক্রাণার মত ছিরে ফোলল। বাইরের দৃশ্য এবং শহরের ফোলাছল মৃদ্যু থেকে মৃদ্যুত্র হতে হতে কথ্য মিলিয়ে এল। একটা আগ্রের ঘটনা-গুলোই ভারছিল তপত্তী।

बालाकाः नत रथनात नाथी भारत श्री १ এখানে এপাড়ায় কেন! কদিন থেকে তাকে নাকৈ লক্ষা করে হাছে। একথার অথ⁻ই ষা কি। ভাকে দেখেছে তো ভোকে কথা বলেনি কেন? এপাড়ার গাঢ়াকা দিয়েই বা राखाक काम? बाना कि शारा लाक? जहान সংশ্বেষণ সংগ্র ছেলেটা কি করে মারা रंगनाः ग्रान्यस्क रका ज्ञारमञ्ज्ञ ज्ञारतम् করেছ। ভাহলে এত ভাড়াভাড়ি ছাড়াই বা শেল কি করে? ভাকে বে আলকো থেকে পরাঘাত করে যাজে তার সংশ্রা পনের কোনো সম্পর্ক নেই তো? কথাটা ভারতেই কেমন সর্বাজ্যে শিহরণ থেলে গেল: আপন মনেই সপো সংখ্যা মাথা নেডে দ্যু প্রতিবাদ खानात्मा, नाना। এ इत्तरहे भारत ना। जारका जारका व्यक्ता मृत्या। शतगरशाना घारत **धौताद**वीपि আত্মহত্যার চেষ্টা করেছিল কেন? খোকনদার সিগারেট লাইট্রারটাই বা তার কাছে কেন এল! থোকনদা। ইয়েস থোকনদা। হি মে বি খোকসল। কসনা। একটা দিনের স্মৃতি ক্রাঁটা যায়ে চোট লাগার মন্ত ছিলছিলিরে উঠলো। ধীরাবৌদিদের ছাদের সিণ্ডিতে দিক একটা শিকারী বেড়ালের মত খোকনদা ত্তৎ পেতে ছিল।

মনটা কেন্দ্র হঠাং তেতো হয়ে গেল তপ্তার। তপতী জানে না, বড় হতে গিতে সব মান্যেরই এরকান এক-আঘটা লংজা ঘ্লা ডিস্কতার জরলে চিহা। থেকে যায় ডেডেরে ভেডরে। অনেক কথা ভূল হয়ে যায়, অনেক বড় বড় ঘটনাও একদিন ভানিশা হয়ে যায় কিন্তু এইসন কলে কত চিহাগালি মোহে না। এরা জাবনভারে অচল প্রসারে মার্ড মান্যের পাকটের ভলার পড়ে থাকে।

মানাকর মন কোনো ভিথর ছবি কোনতে পার না এই যা রক্ষে কোনো একটা ছবিব সায়ানে স্থিরজ্ঞান, তারে চা কথানো কাল না। চলচ্চিত্র নিবে তার কারবার। তলাকার মনেও ছবি পাল্টালো। চা দিতে গিরে অতনকে সে প্রথম মুখেমার্থী
দেখলো। তা সত্যি, বুপোলি পদার নারক
হবার হোগ্যতা অতন রাখে। অমন সম্পর
টেউখেলানো চুলা, লালচে কপালা ছড়ানো
গড়ানো, গোঁফ কামানো কিন্তু খুলফি ধারালো
অল্ডর মত খুলে আছে, সেই সপো ধর
নাক, ঠোটোর ধার, এবং চোবে নীল
আনগের ছায়া বংকের ভেতরটা কেমন
মাচাড়ে দেয়। অতনকে চা দিতে গিরে
ভপতী চা ছলাকে ফেলন। খাবারের ডিলা
কড্ডা পেরে তপতী প্রত প্রালিরে এল,

তপতীর মনের ভেতরটা কেমন গ্রনগান করে উঠলো। আহা ভার প্রলেখক হদি অতন্ত্র অপ্ততঃ অতন্ত্র মত কেউ. তাহলে বেশ হত। কিন্ত বাস্তবে কি স্ব স্ময় মনস্কামনা পূর্ণ হয়? বরং যা চাওয়া ধার তার ঠিক উল্টোটাই হর। হয়ত দেখা যাবে বন্দনার কথাই ঠিক। যে চিঠি নিয়ে ভারা ভোলপাড করছে. চিঠি তার চোথের যাম আর মাথের হাস পিছনে কেডেছে। তার নিকাশ্ডর আর্নিটরোল্লান্টিক ব্যাপার। এয়ন মুখ যা ম্থোসের থেকেও কুংসিত। খর কথাগ্লো বেন এখনো কানের মধ্যে জনলে পারভার্ট ব্ৰুড়োহাবড়া কেউ নরত ইরং কিন্তু খ্ব ক্তিত দেখতে যে জানে তার দিকে তই ফিরেও ভাকাবি না কখনো!

আচমকা পিছন থেকে কে যেন তপতীর চোখ টিপে ধরণ।

এই নির্ম্পনে একা একা আপন মনে
নানা কথা ভাবছিল তপতী তাই ব্যক্তি পারের শব্দ টের পায় নি। অথবা যে এসেছে, খনেই পা টিপে টিপে এসেছে, তপতীকে অবাক করে দেওরাই তার উদ্দেশ্য।

হঠাৎ বলে কেমন একটা ভরই পেয়ে গিরেছিল ও ৷ ভাই কাঁপা কাঁপা গলার চে'চিয়েই উঠেছিল, 'আরে একি ছচ্ছে!'

হৈ তোৰ টিপেছিল হেৰু ছাড়ল না, ধরেই থাকল।

কে? তপতীর গলার শ্বর শ্বির এবং কঠিন। ভরের ধারা কেটে গিরেছে। এবাভিতে চোখ টিপে ধরবার কেউ নেই। অগীতা হতে পারতো, সে এইমার নেমে গেলা। ধীরবোদি অসম্ভব ছিল না কিন্তু তিনি শ্যাশায়ী। বন্দারা বাড়ি ফিরে গেছে এত ভাড়াতাড়ি আবার আসা সম্ভব নর, কেনই বা আদরে।

তবে। সে নর তো। রঞ্জেরাসে মুখ্টা গরম হরে উঠলো। এত অচেনা, এখনো বে ভাল করে আলাপই হর নি, তার পকে কি ছালে উঠে আলা সভ্তব? আরও এলেও এরকম আচরণ ছিছি! বাডের ওপর করেক ছাড়াবার চেন্টা করল, পারল না। হাত বিরে ছুরে

চেমবার চেটা করণ। যে ধরেছে সে পরেব তপতার চেয়েও মথায় লাবা হাতে শ্রে মোটা কোকড়া লোম। বালা, কিবা বড়ি কিছু নেই, অতন্য নয়, প্রে নয়, অতএব?

এবার ভীবণ ভর পেয়ে অস্কুট আর্তনাদ করে উঠলো 'ওঃ মাগো!'

চোখ মন্তে হয়ে গেল তপতীর। ছার্য ফার্টিয়ে হেসে উঠলো লোকটা।

'এত সহজেই ভয় পাস তুই। কলেঞে ফেকও জক্তরে ভয় গেল না দেখছি—'

হঠাৎ চোথ খুলেই আলোর ধাঁধা লেগে গিরেছিল, ভাল করে চোথের পাতা মেলতে পারাছিল না তপতা তব্ মান্বটাকে চিনতে আর ক ছিল না। খ্ণাক্ষরেও ভারতে পাতে বার কথা দেই ওকে আছোদে করে হেড়েছে। আশ্চর্য মানুষ! হায়ার সেকেন্ডারী টেন্ট প্রীক্ষার সমন্ধ উধাও হয়েছিল আর এই।

তপতী হেসে ফেগল 'ড়ত কোথাকার! এমন ভর পাইরে দিরোছিল কি বলব! বলি, ছিলে 'ং ' হলোয় এতদিন ? একখানা চিঠিও তো দাও নি। একটনও যদি কাণ্ডজ্ঞান পাকে তোমার, ভবদা! বাবা-মা কত চিশ্তা করে তোমার জানে তা তো তার ক্লামো না ?'

হাদের আলসের ওপর লাফিরে উঠে বিচেছিল ভবনাথ আর হাসছিল পরিছেশিতর হাসি। একমাখ দাড়ি, চুলে জট পড়েছে, কটে গেছে। পরনে একটা আধময়ালা ধাতি আর নতুন কেনা হাফান্টা। দুক্ধবল শাটের সংগা আধময়ালা নীলাভ ধাতিখানা চোখে লাগে। কিন্তু ভবদা নিবিকার। সে বরাবর ওই রকমই। খাওয়াপর শোওয়া নিয়ে মাথা ঘামার না। সংসারে খেকেও সংসারের বাইরে। কোনো লোকিকভার ধার ধারে না। কে কি ভাবের কে দাচিদ্ভার ধাকবে এসব ভবনাথের হিসেবের বাইরে। মাগানিফারিং ভাসের মত তীক্ষা লেম্বের চামার কিলেবে তার প্রভাগাকিক জিনিস পেখে।

কি হাসলেই ফ্রিরে গেল, না?' তপতী ভূর কু'চকে ধনক লাগায়, 'বলি ছিলে কোন্ চুলোয়? কোথায় ছিলে, আঁ?'

এ বাড়িতে বোধ হয় এই একজনের
কাছেই কাব ভবনাথ। সামানা খুনস্টেট,
সামানা ঠাটাতামাসা বা গলপ্ৰকপ এক
তপতীর সংগোই। নইলে বরে লাব্র বিরে
নরত দোর ভেজিরে রাত্যিন অভক করছে,
নতুন নতুন বিওরী ফাঁদছে, লাগি রাজি
বিভিন্ন সব বই পড়ছে। দিন গড়িরে রাভ
আসহে হ'ল নেই। রাভ সরটো ভিন্নটের
সমর উঠেও কত রাভ তপতী ভবলার
বরে আলো দেখেছে। চুলি চুলি উলি লিরে
দেখেছে, উল্লোখ্যকা চুলে উব্ হয়ে বলে
ভবদা দিলেত

লিখছে। আবার সকাল সাড়ে দৃশটার ক্রুলে বেরোনের য়ৢথে কোনোদিন দেখেছে খানতিনচার থান ইট সাইজের বই মাখার দিরে ভবদা ভৌসভূ'সিয়ে বুরোজে। ভরদা গুই রকমই। আবার বাড়িতে আছে আছে উধাও। কোথার সাড় কণ পুনের দিন কাটিরে ফিরে এল কাঁধে শুধু কাপড়ের ঝোলা ব্যাগ একটা।

বাবা বলেন 'ছোঁড়ার মাথায় গোলমাল নইলে অমন রিলিয়ানট প্রকলার কি আর ভেরেণ্ডা ভেজে বেড়ায়।'

তা সজি। ভ্রনাথ এম-এসসি-তে **দাস্ট'রাস ফাস্ট' হয়েছিল। কি হল একবার** দ্মে করে আমেরিকা ঘুরে এল কিম্তু তারপর আর কোনো প্রোগ্রেস নেই থাচ্ছে দাক্তে ঘুরে বেডাক্তে। ভাল ভাল চাকরির ইণ্টারভিউও পেয়েছে কিন্তু সিলেকশন বোর্ডের প্রশেনর উত্তরে এমন সব কথাবাত্রী করে এসেছে যা সেইসর দিকপালেরা বাপের জন্মে শোনেম নি। আসলে ভবনাথ হয়ত চাকরি করতে চায় না হয়ত কিছা, করতেই চার না। হরতো কোনো অভ্তুত কিলস্ফির ভূতে তাকে কিলোচ্ছে। তার ধারণা মান্তের কিছু করার নেই। সংসার সফলতা, ট্রতি-ফ্রতি সর হাসকের। মন্যজীবন ব্যাপালটাই হাস্যকর। তাই সে নিজেই হাসাকর।

ছোটবেশার তপতী বলতো, 'তোমার ইস্কুর্প ঢিলে আছে, ভবদা।'

ভবনাথ হাসতো, বলতো, হতেই পারে, আমার সব প্যাচ কেটে গেছে যে—'

ওর কথাগলো ওই রকম, আপাত সরল কিন্দু কোথায় যেন বাইপাস আছে। একটা গভীর কিছু একটা আলাদা কিছু। বা তপতী সেই বয়সে, হয়ত এই বয়সেও ঠিক বনে উঠতে পারে না। অসহিক চোখে ভাকিয়ে থাকল তপতী তার প্রদেশ্ব কোনো উত্তর দিক্ষে না ভবনাথ।

ইংলক্ষিক চুলিতে নিশ্চর নয়,' ছাদের আলসের ওপর বিপক্তনকভাবে বনে আর একচোট হাসতে থাকে ভবনাথ, সংসারের সব চুলোই এখন নেভানো ব্যুলি, তুপ্শে। শুযে গারে মাথায় ছাই মাথামাথ হয়।'

পুমি নামবে ওখান থেকে, মশাই? নাকি একটা কেলেংকারি ঘটাবে!

তপ্তীকে এক সময় তপশে মাছ বলে খেপাতো ভবনাথ। আজ তপতী খেপলো না, বরং বাসত হয়ে এগিয়ে দেন ভবনাথের দিকে, তারপর হাত ধরে টানলো নামো। পাঁচিলের ওপর থেকে নেমে দাঁড়াও, ভবনুরেদা। সারাদিন খাওয়া হয় নিদেসর? চা খাবে? দাঁড়াও আমি চা জলখাবার আনছি নিচে থেকে।

ভবনাথ লাফিয়ে নামতে নামতে বকল গুরাণ্ডারফুল বলেছিল। ভববুরেদা! কিন্মরকর রেছোবাদার পরে মান্দের এই আর একটা রিমাকেক্স নামকরণ হল। ভি বেন কথাটা, ভবব্রেলা? রিমালি ওরাপ্ডারক্স। হাঃ হাঃ হাঃ হাঃ হাঃ হাঃ

্তবনাথ হেসেই অভিথর, হেসে চলেছে তো হেসেই চলেছে। এই কথাটার মধো এত হাসির গিরনির্বার কোথার শ্বিকরে ছিল তথ্যতা তেবে পেল না।

কৃত্রিম বিরম্ভ গলার বলল, 'তুমি এখানে দাঁড়িয়ে দাঁড়িয়ে কন্টিনুরাস হাসে, হাসতেই থাক, যাতে লোকে তোমাকে পাগল ঠাওরায়—'

'ওহ, তপ্শে! এই সংসারে কে পাগল
নর বলতে পারিস? তোদের রবিঠাকুর কি
বলে গোছেন মনে নেই? পাগল যে তুই কণ্ঠ
ভরে জানিয়ে দে তাই জানিয়ে দে কি,
গানটা শনেছিস কখনো? আসলে দুই
জাতের লোক আছে এই দুনিয়ায় দেয়ায়
আর বাডে মান আগড মাড মান কেউ বিদ
আয়াকে পাগল ভাবে আছি গবিভ হত--

তা হয়ো এখন ভার আগে কৈছ, সলিড ফুড নিয়ে আসি খাও। নিশ্সয় সারাদিন খেয়াল করে খাওয়াই হয় নি। কি খাবে বলো?

মূল বলিস নি-

কি থাবে বলো, ভবদা, তপ্ততী উল্লিসিত হয়, তোমার ফেভবিট চাণ্ডা আনবো না চা-কেক থাবে না অনা কিছু;?'

ভবনাথ এক সময়ে চারের সংগ্র ডিম থাব পছনদ করতো। তপতী তার মাকে দেখেছে ভিমের নানারকম ভাারাইটি করে খাওয়াতো।

'দ্ৰনিয়ায় দ্বিলে বাপোরটাই আসল খাওয়া বাপোরটা কিছ্ব না! কথাটা আবিশি। ভূই ঠিক ধরতে পারবি না। বড় হলে—'

তপ্তী হঠাং ক্ষেপে গেল এই কথা শনে, আমি কি কচি খ্কাটি নাকি! তোমরা সব সময় যে বড় হলে বড় হলে— বলো। আমি তোমাকৈ...তোমাদের সব চালাকি ধরে ফেলেছি। আমার চোখে ভোম্বরা কেউ ধূলো দিতে পারবে না!

কথার কথা হিসেবেই কথাট বলকে শ্রুর করেছিল তপতী কিন্দু শেষটার যেন ভার মনের মধাে দৈড়ো চিঠির বাাপারটাও উ'কি দিল। তাকে নিয়ে এই থেলা আর বেশিদিন চলবে না সব বড়বল জাল ভিন্তু আসল মানুষটাকে তপতী টেনে বের করে স্থানবে। এনে এই লুকোচুরির উচিত শাহ্নিত।

ভবনাথ আর এক ঝাঁক ছররা হাসি হেসে বলল, হ'। বড়োছের সব লক্ষণ-গুলোই তোর মধ্যে ইদানীং দেখতে পাওরা যাজে রে। তুই আলবত বড়ো হরেছিস নইলে চ্যাকালে শিখাল কি করে। সব কিছনে দেখামাত সম্পেত করা সেও বড়-মানুবারিই লক্ষণ। তবে তুই হোটাকে ৰড়য়ন্ত ডেবে চলেছিস সেটা আদতে তা নাও হাত পাৱে।

তপতী চমকে ভবনাথের চোথের দিকে ভাকাংশ। কিব্তু সে চোথ তথন ব্রভেন্ধ। বিকেলে আলো আনককল মরে গিরেছিল, তব্ সংধার আভা ভবনাথের চমশার লেম্স দটোর ওপর পড়ে ঠিক ফলড লাদের মত দেখাছেল। পিছনে আদিগাল্ড ভাদের কলকানা প্রসারিত কবরখানাম মত ভাদের কলকানা প্রসারিত কবরখানাম মত ভাবের কলকানা সামারিত কবরখানাম মত ভাবের কলকানা প্রসারিত কবরখানাম মত ভাবের কলকানা প্রসারিত কবরখানাম মত ভবনাথের পড়ি জমানে ম্বখনান সেই বাজ-বাড়িশ্ড বাড়ুমর শিক্রেটে ম্তিরু মত বাড়ের

একটাক্ষণ চুপ করে থেকে তপত্তী বলল নাঃ পাচি তোহার কাটে নি, শ্বিরাপ আছেই।

'আছেই।' ভবনাথ হাসলো, ত্যাণ্ড ইট লক্ত ইন মাই হাটা। ব্লেটের মত বহিরাগত নিক্ষিণত, কিন্দু ইম্কুর্পটি অনা লেকের মত আমার মণ্ডবাসী নয়।'

> ছেদয়বাসী।' 'হাটা মফবলটা' 'এবং একট ডিলে, ভট না?'

प्रकृताती रहेकाल हैं. काहाती रकाटकाल हैं पित तकारक शांक्षीस समास्त्र है

'কুছ নেহ**ী ভূম করে বালিকা, কী** করকে খাদা লৈ আও '

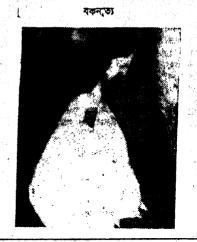
বলেই আকাশ ফাটিয়ে হাসতে লাগলো **ख्**रनाथ। ख्रनाक्षत्र क्रकोना शांत्रहरू স্লাইস্ড রুটির মন্ড করেক খণ্ড করে গাড়ির হর্ণ বাজলো গালর মধ্যে। তপতী ভার হালক। শরীর নিষ্কে बारकत विकास ছাটে গারে ঝাকে পড়লো। নিচে সে কি PRICE দেখতে পেল কে জানে ফিক্তে নেশ্ট আর দীড়াতে বলল আৰু শংগ্ৰ গেস্ট। বাশ্বা আহ্রাদের বাডিখানা আৰু গেপ্ট হাউস হয়ে গেছে। কি দিশেই বে তোমার আবিভাব ঘটলো ভবলা মা-বাবা কেউ বোধহয় থবর জানেই না এখনো তাই না ?'

কিণ্ডু যাকে লক্ষা করে বলা সে তথাই হাদের মাঝখানে পাড়িকে সমাধি হওৱা সাধকের থত সাইলেন্ট হার লেক্ষা পাড়াবাড়া এবং নীরবভা যেন একসংশা ক্ষমট বোগেছে। পারের আকালের দিকে তাকিয়ে বিভবিত্ত করে সে কি যেন বলছিল। কিছু খোনা গাড়িক না শুখু ঠোট মাড়াটাই চোখে পাড়লো তপত্নীর।

কি ভেবে তপতী ভবদকে আর ভাকলো না। যতুদর সম্ভব শন্দহীন পারে হটে নিচে নোম গেল। বাবার সময় ছাভের সবজায় ওপিঠ থেকে খিল ভুলে দিয়ে বেভে ভুলল না।

(\$44A)

भर्दशाय नर्जा गम्डीबा



अमिर्गाक द्याव

বাংলাদেশের দাজিপিং, ঢাকা মন্নান-সিংহ, পরেলিয়া, চটুপ্রাম ও মালদেশের ক্ষিতা উৎসবকে কেন্দ্র করেই মাঝোল লিক্সধারার স্থাচা। এর মধো গদভারার মাঝোল বোধ করি সর্বাদেশ্যন প্রচান। হাজাল বৃদ্ধারেরও ধেলা এই লিন্সের আজ নাভিদ্বাস দেখা দিরেছে। সে লিক্সধারার পুন্নবুজ্ববিনের জ্বনা চাই ভার ব্যাপক গঠনম্পক প্রচার।

বাংলার বিভিন্ন অঞ্চলে চৈচসংস্থাতিতে শিবের গান্ধনে।ংসর গোড়েবংশার মালদহে এসে 'গাড্ডারা' নাম নিয়েছে।

সাম্ভারা' শব্দটিয় ভাপে সাস্পাট নয়। যদিও ভাম্ভীরা লাজের অথ'—নিভূত शास्त्राके बन्छन वा प्राचानाता। प्राचीप्रतान रम्यागरा शास्क्रम भशासिय বলে শিবের শ্রাকে বলে গদভীরা এ অর্থ করা হলেও **পাম্ভারা। প্রা উল্লান্ত**ম্থানে ট্রস্ব উপ-লক্ষে এত্রপ নিমাণ করেই হয় অন্ত্রিত, সাতরাং ঐ অর্থ নিম্পিধায় সামে নেওয়া চলে না। তৈত্ন্যবাগে পদ্ভীরা শব্দাট্র ব্যাপক ব্যবহারের ফলে নিভত প্রকোণ্টে শিবের অবস্থান থেকে গদভীরা অংথ শিব-**শ্রা—এ অর্থ** নিদিশ্ট হয়েছে। আবার শি**ষের এক নাম গম্ভীরদেব**। তাঁর প্*ভা*কে বলৈ গভ্টার প্রা। এ অর্থ করা গেলেও শেষ প্রভিত টেকে না। কারণ শিবপ্জা বাংলার অন্য কোনস্থানে গম্ভীরা নাম না নিরে কেবলমার গোড়ে বা মালদহেই বা **राजा (कम ? এ সম্পর্কে সঠিক গবেষণার** चांक क चार्क अरहाकन ।

গাঁচনীরা সন্পর্কে আন্তর্কে যে অর্থ প্রতিষ্ঠিত সেই অর্থ অর্থাৎ নিবপূজা তা নিরেই তার মুখোদাদিলে সন্পর্কে আলো-চমা করা রেতে পারে। যুগপ্রাচীন ঐতিহ্য-রাহী সম্ভীরাপূজা ও উৎস্বের সন্দো সন্প্র স্পাত্য ও স্মুখোদান্ত্যা। মুখোদা মুখ্যের আলোচনার হারার প্রাক্ত-সন্দেন গম্ভীরাপ্তা ও উৎসবের সংক্ষিণ্ড আলো-চনা কয়া বেডে পারে।

আদিতে চৈগ্রসংক্ষান্তির আগের চার-দিনের শিবের শ্রাই গদভীরাপ্রাণ। উংসব চারদিনের। ইদানীংকালে তিনদিনের, দ/দিনের, কোন কোন স্থানের। এক দিনের।

প্রথম দিন--- বটভরা

শিকীয় দিন—ছেটিভামাসা তৃতীয় দিন—বড়ভামাসা

চতুথ দিন--আহার। (বোলবাই বা বোলাই) গম্ভীরাপ্ভার সংগে যভে দটি বিষয়,

গদ্ভীরাপ্ভার সংগা ব্রু দ্বটি বিষয়, (১) গদ্ভীরা স্থগীত, (২) গৃদ্ভীরা ন্তাঃ

এগ্লি লোক-ঐতিহ্যান্সারী সংগীত ও
নৃত্য। গচ্ছীরা গালে আদিতে
গিবের নিকট কৃষিকাল ও সম্বংসরের থবরা
থবর (রিপোট বলে কথিত) গীত হতো।
প্রথম বিশ্বযুদ্ধের পর তাতে সামাজিক
ও বিশেষ করে রাজনৈতিক বিষয়কভু প্রবেশ
করে তার আবেদন হলো ব্যাপক। ধর্মের
বংধনমন্তির জন্য বাংলার লোকসংগতির
মধ্য গচ্ছীরা গানের আবেদন ব্যাপক।

শ্বিতীয়—'মুখেশান্ত্য'। মালদহের ভাষায় তাকে বলে মুখ-নাচ'। মুখাতঃ পোরাণিক বিষয়কে কেন্দ্র করে মুখেশান্ত্য হওয়ায় স্বভাবতই ভার সংগতিবক কেবল-মাচ ঢাক ও কালি। কোন গান এখানে মেই। নৃত্য অংশ এখানে প্রধান, অন্ধানিক গন্ভীরা সংগতি গানেই মুখ্য। 'বন্দনা' ও চার-ইয়ারী' অংশে কিছু, কিছু, নৃত্য আছে বট, কিল্কু নে লৃত্য গোণ। গান্তীয়া নৃত্য বলতে যাতে ক্রিলাক্ত না স্কট সে কারণ গান্তীয়ার অন্য নৃত্যান্তিক সাম্থান্ত্রেম' অন্তর্গত।

প্রাণ্ডিতিক চরিত এ নাডো থাকলেও সেই কেন্টেই সে দর্ভিতের থাকেনি। পরবর্তী পর্বারে সে গ্রন্থীণ পরিবেশের নহু উপাদানের দ্বারা তার নুতোর আকার ও প্রকারকে করেছে পঞ্জাবিত। তার চোথে পড়েছে বকের দল, টাপা করে মাছ ধরার অনদদ, মহিদ্বাথাল নৃত্য, চাধা-চাষাবো-এর ছবি। ধর্ম ছাড়াও লোকায়ত জাবনের প্রতি ঐকান্তিকতা এই নৃত্যধারাকে নিয়ে এসেছে জনগণের মধে।

গশ্ভীবার নৃত্য পরিপূর্ণ মুখোশনৃত্য নয়। কিছু মুখোশ কিছু
মুখোশহান কৈছু সাজসকলাযুদ্ধ। একক
ও যৌথ এই দ্ব ধরনের নৃত্যুই
এখানে বর্তামান। স্বগলি নৃত্যু মুখোশ
ব্যবহৃত না হলেও চঙে তারা মুখোশ
নৃত্যেবই অফ্তুপ্ত। তবে পইরী (প্রী)
ইত্যাদি নৃত্য দেলা, স্গোলিতে যে একসময় মুখোশ
্হুত হত তা সহজেই
অন্নামা।

বৈষয়ক্তপুর ভিডিতে গদ্ভীরার মাুথোশ-্ত্যকে কয়েকটি **ভাগে ভাগ ক**রা হা**য়ঃ**—

(ক) পোরাণিক—বাণ, কালী, বাশ্লী, গ্রিনীবিষাণ, চাম-ডা, নার্রাসংহী, উগ্রচ-ডা ঝাঁটাকালী, মহিষ্মান্দনী, কাতিকৈ, গণেশ লক্ষ্মী, স্বচ্বতী, রাধাক্ষ রাম-লক্ষ্ হিরণাক্শিপ্ল ব্ধ, তারকাস্ত্রে ব্ধ, শিব্দর্শে। নৃত্য ইত্যাদি।

্থ) গ্রামীণ বা লোকায়ত চিল্ল-বক্ টাপা (জেলেকের বাঁশের কাঠি দিয়ে এক রক্ম মাছ ধরার পাত), গররে দুখে লোহা, সাঁওতাল, কলস্টা কাঁথে বধু ইত্যাদি নাডা।

্গ) প্রাণী সম্প্রিত—সূপ, ব্যাল, হরিণ মহিষ ইত্যাদি নত্য।

্ছ) সামাজিক—মাতাল, মেম সাহেব, বড়োবনড়ি ইন্ডাদি নতা।

(%) তান্যান্—পইরী (পরী), বংশ রেণপায় আরোছণ করে ন্ত্য), শব, বাদ্যুক্তর চালি ইত্যাদি নৃত্যঃ

এ প্রসংগ্য একটি কথা প্রতাব্য হো বিভিন্ন সময়ে এই নৃত্যগর্নি এই মুখোল-নৃত্যের ডিডরে জ্বনুপ্রবেশ করেছে। ক্লিডু জন্মাবেশ করলেও তারা গাল্টীরার সোক-ন্ত্রের চহকে সাধাকভাবে রুশারিত করতে বেগ পার্রান। লোকমানসকে সে ভৃত্ত করে হরেছে ধনা।

টোটেম-মাতি বাংলায় সকল লোকলিল্প বিশেষ করে মাতি ও মাথেলিলিলাকে
প্রভাবিত করেছে। তার প্রকাশ প্রাণী
সংগাঁকিও লংগীরার ম্থেলেও। আদিতে
স্মুক্ত মাথেলাই ছিল নিয়াকাঠের। এখন
কার ছাড়াও অনা উপাদান দিয়ে মাথেলা ইয়
তৈরী। শোলা, কোড়োমাটি এমন কি শুলাটার
অফ প্যারিশা কাশড়ের উপর পাতলা করে
দিয়ে মাটি রঙ বা বানিশা করা হয়। তবে
মাল্লহে প্রেলিয়ার মত মাথেলিদিশা
বিশেষ গড়ে ওঠোন। চিত্র-বিচিত্র জামাকাশড়
চরিস্তভেদে তৈরী হয়। কালের পরিবর্তনে
সাজ-স্ক্লারও হরোছে পরিবর্তন। কালী
নারাসংহী, বাশালোঁ, উগ্রচন্ডা, চামান্ডা
ইত্যাদির মাথেশি সর্বাশেকা প্রাচীন ও

ঢাকের বোল পাঁচ প্রকার। দেবদেবীর নৃত্য বিশেষতঃ কালী, চাম্বডা, নারসিংহী ইত্যাদি নৃত্যে এগ্রেল বান্ত। এগ্রেলকে বলে সাস।

প্রথম স্ত্—আবাহন শ্বিতীর স্তু—প্রাবাদ্য ভূতীয় স্তু—অংগপ্রত্যাংগালন চতুর্থ স্তু—শহরা পঞ্চম স্তু—বিদায়।

পাঁচ প্রকাষ সূত্র সাত প্রকাষ নতে।
প্রকাষ । পরে 'জ' দ্বতীয় পরণ', তৃতীয়
বিদার বাদ্য' দিরে শেষ করা হয়। পোরাশিক ন্তাকে বলে বাধনতা। মাধ্যিক নৃত্য
—খাঁটাকালী, শিষভাগবতী, কার্তিক লক্ষ্যীসরুবতী বৃভাব্যুভি স্পা ব্যাহ টাপা মাভাল
ইত্যাদি।

করেকটি বোল উপ্স্থিত করা হেতে পারে---

কাশীন্তা-আবাহন ঃধিং ধিং ধিধিং নাতিং
ধিন্ধিনা তিং, ধিধিং নাতিং
ধিংনা ধিংনা, ধিধিং নাতিং
ধিং ধিনাধিং ধিধিং ধিনা
বিলা বিধিং

প্জা (ধ্পধ্না দেওয়া হয় ও প্জা)—

ধিং ধিনা ধিনাক্ ধিধিং
ধিং ধিনা ডিং নাতিং,
নাডিং ধিনাক্ ধিধিং ধিংনাতিং
শাতিং নাডিং নাডিং তিনাক্।

२। होना माका---

ধিনাধিং, নাক্ ধিনাধিং (টাপা ফেলে মাছ ধরাকালীন) —তিলাক নাতিং তিনাক নাক ধিক ধিনাতিং তিনা (পরে উপ্র হবে তারপর) গড়ে গড়ে গড়ে গড়ে করে মাছ ধরা ও বিদায়

ধ্পেদী মৃত্তা 'অপাহার' ও 'করণ' বর্জমান। গাম্ভারার এ নৃতা লোকন্তা হওরার প্রশেশীন্তোর বিশিষ্ট অপাহার ও করণ স্থান্ধান্টভাবে ধ্রা না প্রত্তেত মিশ্র-

1 .010 · 4 · · : * 14

ন্তের ঢাঙে নিজ্জব এক প্রাণ্থান স্থোক রীতিতে সে প্রতিশ্বিত। এ নৃত্যে 'সিংহপদ' ও ব্যান্ত্রপদ' লক্ষাণীয়।

গম্ভীরার মুখোশন্তা আচারভিত্তিক হলেও তাতে কিন্তু কাহিনীরও অভাব ঘটোন। কালের পরিবর্তনের সংখ্য সংখ্য সে কাহিনীকেও গ্রহণ করেছে বৈচিগ্রাস ন্ট্রি कता या धकान्छ लाक्खे छिशान साती। काहिनौ कथनउ वा नाविक जारवपरन सम्भ । ম্কোভিনর হয়ত বা মুখেশন্তের প্রাক্ত-প্ৰেৰি স্থি। সেটিৰ এখনে বৰ্তমান। ছনেদামর গৃতির ভাষা শিরে তৈকী হয়েছে গদভীরার ন্তেরে অনেক লোকারভ ছবি। গুল্ভীরা পূজা ও উৎসব উচ্চবর্ণের ছিল্ম: অপেকা নিজাবংশর ছিলাবেদর জ্বারা জেনী অনুষ্ঠিত হয়। রাজবংশী, প্রেক্তারয় জেলে-মালোরাই এ উৎস্বের প্রধান আংশ-গুহুণুকারী। কোন কোন প্রান্ধ 🗷 উৎস্ব প্রোপ্তির ভাবের ম্বারাট হয় অন্ত্রিভিড। পদভীরা উৎসৱ সংহাচীন উৎসৱ। স্বভারতই मत्यानन्छा व गण्योखक टम्हे माराहर

জন্মলাভ করেছে। হিউ-এন-সাঙ্কের বিবরণে গোড়ৈ গদভারার ন্যায় এক উৎসবেরও আছে উল্লেখ। রাজা শশাংক গদভারা উৎসবে যোগ দিতেন। পালরাজারা ছিলেন এর প্তিপোষক। স্র্যপূজা পরবর্তী পর্যারে রুপান্তরিত হয়েছে বলা আমাদের বিশ্বামা বৃশ্বাধন্য এবং শিবোৎসবকে কেন্দ্র করেই মৃথ্যোলন্ত্যারার বারা। স্ব্র জাবনের উচ্ছেল অভিবাদ্ধি পটে এ উৎস্বাদিতে।

হাজার বছরেরও প্রচীন গৃষ্টীরাপ্তা এবং তার নৃত্য অনেক পরিকর্তানের পধ-পরিক্রমা করে আজও চলেছে। লোক-সংস্কৃতির এক অম্প্রা নিদর্শন গৃষ্টীরা।।

বাংলার লোকন্ত্যের এক মুলাবান নিল্পান গাড়ীরার মুখোলন্ত্য প্রত নিশ্চিক্ হচ্চে সামাজিক ও অগনিত্তিক সংকটে। ঐতিহ্যপ্রমী সংস্কৃতিবান মানুষেব ভাই তার প্ননুষ্ঠীবনের জনা সচ্চেট্ হুওরার ক্লিছ আহে বলে আমার বিশ্বাস।

পून * ह

পর্নশ্চ

প্রনশ্চ

भारिपारमार्था गुन्वाभिनामी — অভাব दा **मातिष्टः मान्दर्यत अग्इ शृह्यत्वहे विनामप्राधन** করে, সমস্ত সদগ্রেকেই নিগ্রাণ করে দেয়। দারিদ। মানাসক সাহসকে অবদামত করে ভাগিত টেল্পানন। বহু সিংক্ষিত সং ব্যক্তির জীবনত আভাবের তাড়নায় বার্ণতায় পর্যবিস্ত রয়েছে বিভানবড় রয়েছে। কোন **স্ভিটশার্য যো**জালে *লাচ্চলাত। বা প্রাচয়ে*র মাধে। দ্রান্ত্রাস্থান্ত ভাবে দমপল হাতে পারে। আন্তাৰ অন্যান বা দাবিদাৰ প্ৰসংগ তা হে সংস্কৃত নহ এ দুল্টাভেতত আভাত নেই। প্রতিভা থাকলেও তা যে স্মসচ্চলতার মধ্যে স্ফারিক হাঙ্গে পারে না একথা আবিসংবাদী সতা। ফেলটনকাখ ক্যাহত সমন জ্লা कारत निक्रिया राज्ये भारत सा स्कातरकत মধেট তার বিনাশ গুটে স্বাস বিচ্চারিত হবার ^{স্}যোগ পায় ন ্তেয়নি অগাড়ার দ্থের করাই ও দ্রদেশেরে নিকেপফারে মাধ্যেও কোন পুরিভা বিবশিত হ্রার সায়োগ

এই সাবিদ্য জীবনের স্বাক্ষেত্রেই কল্ বিত্ত করে পাকে মান্সহর মহাবিদাকে করে পাকে মান্সহর মহাবিদাকে করে করে। সে বারণ যে কেন প্রথাতিবাদীল বাত্র স্বাক্ষিত হামান্সহর সাহার্ত্তির করে জন্য প্রকিশী হামান্সহর জন্য প্রহাত্তিরাম। হাম এবং কোকেই অল্লাধকার দিয়ে থাকেন। হাম এবং কোকেই অল্লাধকার দিয়ে থাকেন। আশব দিকে নাবিদ্য মান্সহর মধ্যে হামান্সহ কলে এনে দেয় তেমানি তার বুশ সাবে পাকা সংক্র সে স্বকলন সোন তেমান্সহর সাবে কার্ত্তির হামান্স্য হামান্স হামান্

বিশ্বন্য করে সাহিত্যাসেবীদের ক্ষেত্রে এই
উপমার নিদর্শন প্রকট্নভাবে চ্যেত্রে পাড়ে।
আনক শক্তিমর করি ও সাহিত্যিককে দেখা
বিশয়কে প্রতিক্র স্থিতিবার অভ্যাবের ভাভনার
বর্গ হরেছে—অব্যাক্ত ভাবিনদীপ নির্বাধিত
উর্বেছ । ব্যরিদ্রোর স্থানা যুশ্ব করতে

প্রতিভার বিকাশ ঘটেনি এমন নিদশনেরও অভাব নেই

প্রাধীনতা লাভের পর দেশে সাহিত্যিকদের জন্য বিভিন্ন সরকারী প্রেকার বাতীত
কারকটি সংগ্থা থেকেও কিছু কিছু সাহিত্যপ্রকারের বাবস্থা হয়েছে বটে, কিন্তু ভাক
মখ্যা অতান্ত নগণা। সাহিত্যিকদের জন্য
নাসিক সরকারী ভাতাবও কিছু বাক্থা
আছে, কিন্তু ভাও প্যাণ্ড নয় এবং এমন
্যোধরা মৃতিটায়ের মান্ত্রের জন্য বিধিবংধ
হা তার স্কোণ গ্রহণ করা যথার্থ প্রয়োজনীয় নাছিব পক্ষে দ্বঃসাধ্য বললোও
অত্যক্তি হয় না।

এখানে আমরা এই সমূহ উদ্ভিত্ত পরি-প্রেক্টেটেই 'সাহিতা-সংবাদ' নামক মাসিক পরিকার ১৩২০ সালের ভার সংখ্যা হইতে দারির। ও প্রতিভা' নামক একটি নিকাধ এম্পানে উদ্ধান্ত করে দিলাম। দুখথের বিষয় নিকাধ্যিক সংখ্যা লেখকের নাম না থাকায় এখানে উল্লেখ করা সম্ভূব হল না।

দারিদ্রা ও প্রতিভা

প্রতিভার প্রতিদ্ধ দারিদ্র-রাহ্মাসে হ^{ানপ্র}ভ হয়। বাঙ্গালার বহ**ু প্রতিভা-কুস**ুম উপন্তর্প উৎসাহ-বারি সেচনের অভাবে গলিন চইসা আছে। আমরা প্নঃ প্নঃ এ কথা কহিয়া আসতেছি, প্রনঃ প্রনঃ এত-দিবষয়ে সক্তয়গণন দানিট আকর্মণ করিয়া আসিছেভি। কিল্ক আনক সময়ে অনেক এতদিববরে আমাদিগকে বিদ্রুপ করিরা থাকেন। তাঁহারা বজেন—'পুডিভা ভাাপনিই প্রস্ফুটিভ হয়, সে কোন সাহাযোর অপেকা করে মানা কিন্তু কম্মাকেরে আমরা কি নেখিতে পাই? উপয়ন্ত জলসেক ভিন্ন বীল কচিং অব্বরিত মুকুলিত ফলপ্রপ্সমন্তি হর। আশ্রর অবলন্দ্রন না পাইলে প্রতিজ্ঞ ক্ষনই প্রক্ষাট হইতে পারে না। সাহিত্যের ইভিহান— সাহিভাসেবীগণের জীকাব্ত-चारमाहमा क्षेत्रहा सम्मान त्रमीवासम्बद्धारिकाला

দাবদাহে পাঁড়য়া কথনও কোনও প্রতিভা-কুসুম প্রস্ফ^{িটত} হয় নাই।

বিলাতের রয়েল লিটারেরি ফলেডর নুয়োবিংশকোধক শততম সাম্বংসরিক **অধি**-বেশনে এই কথার আলোচনা হইরাছিল। প্ৰেণ্বতী অধিবেশনে লড <u>কারিদ্রের</u> বলিয়াছিলেন<u>্</u> মধ্য সাহিত্যের অত্যক্তটে সম্পৎ প্রাপত হওয়া হায়; কিন্তু ধনৈশ্বমেণ প্রতিভা থবা করে" অথাং যে সাহিত্যসেবী হত দলিদ হন তাঁহার রচনা ততে মনোহারি**নী হটয়া থাকে।** এ বংসরের অফিবে**শ্নে ভারতের ভৃতণ বর্** বড়লাট লড়' স্কাৰ্কন রোজবেরির মন্ডব্যের পুরিবাদ ক**ি**ুভেন। সূড়ে কাজ্জন দেখা**ইয**়-ছেন, পরিন্রোর মধো পড়িরা কথন**ও কোন** প্রতিভা বিকাশপ্রাণ্ড হয় মাই। **ভিনি একে** একে বাহারণ সালাস দুসার নাণারটির গোচড ম্মিথ প্রভৃতির দুখ্টান্ত **উল্লেখ করিয়াছেন।** বলিয়াছেন বায়রণের প্রতিভা অবিসম্বাদিত: কিন্তু তমি শৈল্পার বা ধনবান ছিলেন। বান'স বদিও কুবিকারে। জীবনাতিপাত করেন কিন্ত অভাসম্পত-শালী পর হইতেই তিনি স্লেখক মধ্যে গণ্য হন। চসারের অসমধা শোচনীয় ভিজ বটে কিন্তু বে সময় তাঁহার পরিবলনে হর ভ্রমীন তাঁহার সবোধকুন্ট গ্রন্থ রচিত চুইয়াছিল। নিরসম্ভার অবস্থায় ভানেক অনাহারে দিন কাটাইতে হট্টরাছিল বলিয়া চাটোরটনের প্রতিভার **শ**ারণ হয় **নাই**। গোলভূসিমার মাড়াকালে দাউ সহস্ত পাউন্ভ ৰাণ্যস্ত ছিলেন বটে কিস্ত হখন ভাঁহান অবস্থা ভাল ছিল তথ্যস জীয়ায় ভাত্যকুলী গ্রহণসমাত বৃদ্ধিক নদীসাভিত। সেজপিলার মিলটন এডিসন স্ইফট পোপ ছাইডেন याक हाकात्म ह्यांना क्रांफ प्रशादक प्रभावक টেনিসেন-কাচাকে রাখিলা কাছার र्याणय ? रे'राएम्स एक्टरे जातिसमुद्ध मिल्लिसम बिक्शिक्स महा हती। वेश्वना

ন্তু ছিলেন বাং সকলেনই অৰুমা নাজুল বাং কেই কেই বা অভুল অনুমানিকে কিন্তুল কিন্তুল কিন্তুল কিন্তুল কিন্তুল কিন্তুল কিন্তুল কাৰিছেন তিনিক কাৰিছেন কৰিছেন কিন্তুল কাৰিছেন কৰিছেন কিন্তুল কাৰিছেন কৰিছেন ক

नाफ কাজ্জন পাশ্চাতা দেশের যে ্জ্যান্তের অবভারণা করিয়াছেন আমাদেব শেশ সে দাল্যানত জাল্জানালামান পেথিতে াই। এদেশের কোনও কবি, কোনও লেখক ানরল অবস্থায় কেবল প্রতিষ্কার প্রভাবে, কথনও হাশের জ্যাসাল্য লাভ করিতে পারেন নাই। শাসন গ্রন্থ মধ্যেও এবন্বিধ দেখ্টানেতর অসম্ভাব নাই। রাজার্ষি জনকের আহায় লাভ করিয়া তাঁহার উৎসাহ-বারি-নিবেবকে কত প্রতিভা-ক্রম ম প্রফাটিত চইয়াছিল। ১ সেই দর অতীতের তাম্প্রমাজন গভার হইতে এতস্থাত অনুসম্ধান করিবার আবশ্যক নাই। লোকলোচনের অন্তর্ভন্ত ইতিহাস এ সম্বন্ধে কি সাক্ষা দিতেছে? প্রিভার মধ্যাহ।-তপন কালিদাস দরির ছিলেন। কিল্ড রাজচরুবতী বিক্রমাদিতোর আগ্রম লাভ করিয়াই ভাঁহার প্রতিভা পরিক্ষাট হয়। ধন্বৰতার ক্ষপণ্ক, আমরাসংস্ক, বেতালভট্ট শংক ঘটকপরি ব্রাহমিতির ব্রুর্ভি--রাজ্ঞা বিক্লমাদিতোর সভাসদাণ্টক সাহিত্য-সংসারে কির প খ্যাকে-প্রতিপ্রিসম্প্র কেনা ভাতা অবগ্র আছেন > বিক্যাদিতেরে অনুগ্রহলাভ নাকরিলে তাঁহারা কি এ সংসারে স্থারণীয শ্মতি বাখিয়া হাইছে পাবিতেন!

মহাক্রি ভবভতি-কান্যক্ররাজ যশো-বদ্মার অন্ত্রেছ-লাভে নাটা-সাহিতে। অক্ষর কীত্রিস্তুম্ভ প্রতিভা করিয়া গ্রিয়াছেন। খিলাদিজ হর্ষবর্শন-শ্রীহর্ষ নামে সাহিত্য-সংসারে প্রতিষ্ঠানিক্ত। তিমি কান্যককের অধীশ্বর ছিলেন। আশেষ ধনসম্পদে পরিবাড থাকিয়াও তিনি সাহিত্যে রভারকাঁ রভা রাখিয়া গিয়াছেন। আর তহিারই আশ্রয়-তর্তদে থাকিয়া বাণভট্ট 'কাদন্বরী', 'হম'-চরিত' প্রভৃতি রত্যাবলীতে ভাষাস**ু**নদরীকে সাজাইয়া গিয়াছেন। রাজচুকুবতী *লক্ষ*ুণ-সেনের এবং পূর্ষোন্তমের অধিপতি রাজা আনন্দদেবের উৎসাহ না পাইলে জয়দেব-কসুম কি কদাচ প্রস্ফাটিত হইত ? শিবসিংহের **মিথিলা**ধিপতি चालरह বিদ্যাপতির বিদ্যাবতা প্রকাশ श्रीसः । মহাকৰি ভৃত্তিবালের অবস্থাও অসম্ভল ছিল না। তৃহৈনে প্ৰবিশ্রুহণণ রাজ। বাঁলকা পরিচিত ছিলেন। গৌডেন্সরের নিকট

২। রাজবি অনক প্রভৃতিক আগ্রামে সাহিত্যসেবীশণ কিম্প উৎসাহ-প্রাণ্ড হুইডেম শাঝিবার ইতিহাসে গ্রন্থের (ক্রাণ-দাস লাহিড়ী শিশিত্য) ১ম থপ্তের, ৭০-শ

The Course March 18 18 Washington Course Committee and Control of the Control of

শেরাক তেওঁ দিরা তিনি স্থোট্ডেন্সকরের কুপালাভ করিরাছিলেন। উংস্কর্ণের অধিপতি
রাজা নর্রাসংহ দেব মহাকবি কাশীরার
লাসের এবং তাঁহার প্রাক্তা ক্রাব্যন্থানা
প্রব্যা গালাবরের প্রত্যাক্রাক্রাক্রাক্রান্তানা
আক্রা-রাজ্যপর্ভাবির রাজার সাহাবো কবিকবেন চণ্ডাক্রার রাজার সাহাবার
ক্রাক্রান্তার আজর পাইরাই রামপ্রসার ও
ভারতেচন্দ্র প্রতিত্যান্তিত।

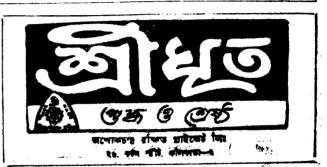
দ্বাদ্ত কও উল্লেখ করিব? আধানিক বংগ-সাহিতো বহিারা হলের মুকুট লাভ করিয়াছেন ভাঁহাদের প্রতি দ্রণ্টিপাত কর্ম: দেখিবেন-কেহই নিয়ন্ত অবস্থায় প্রতিভার পরিচয় ছিতে পারেন নাই। দরিদ হদি সে প্রিচয় দিতে সমর্থ ও হয়, সংসার ভাষা স্বীকার করে না বাংকয়চন্দ্র কখনট इंग्रहन्त, शीनवन्ध, নবীনচন্দ্ৰ এক-একটি প্রতিভার মধ্যে পরিগণিত। কিনত ইংহানের প্রত্যেকেরই পশ্চাতে পদগৌরবের ত অগ[ে]-সম্পদের প্রভাব ছিল। কেই ডেপট্টী-ম্যাজত্র ছিলেন কেই ভাক-বিভাগের অধ্যক্ষ ছিলেন কেহ বা উকীল-সরকার ছিলেন। ই°হাদেব কেহু যে দারিদ্রের সহিত সংগাম করিরা যশের জয়মাল্য লাভ করিয়াছিলেন কথনই বলৈতে পারি না। দিবজেন্দ্রসাল কবিবর বলিয়া প্রতিভঠানিত। তাঁহারও বংশ মহাদার কথা সমরণ কর্ন, তহিারও পদ-সংস্থার বিষয় আলোচনা কর ন। রবীন্দুনাথ স্বদেশে-বিদেশে স্ক্তি স্থাসম্মান লাভ করিতেছেন। তিনি ধনকুবের। অর্থসম্পদে পরিবৃতি থাকিয়া তিনি বীণাপাণির সেবা করিয়াছিলেন: অন্য পথে তঠিব চিত্ প্রধাবিত হয় না। তাই তহাৈর খাতি প থিবী-পরিব্যাপ্ত হইয়াছে। রমেশ্চক্দ পত্ৰজেলার মাজিলটর **হইতে বিভাগী**য ক্লিশনর এবং পরিশেষে বরে।দার গাইকো-যারের মল্ট্রীপদ গাভ করিয়াছিলেন। সাহিত্য-সেবায় কখনই ভাহাকে দারিদ্রের সহিত সংগ্রাহা করিতে হয় নাই। প্রেববিধেশর গোরবভাদকর রায় কালীপ্রসন্ত যোষ বাহাদরে সি-আই-ই ভাওয়ালাধিপতি রাজা রাজেন্দ্র-নারায়ণের আশ্রয় লাভ করিয়াই সনবিংগতি करित <u>भुधान</u> ভইয়াভিলেন। বাশালার মাইকেলের দৃশ্টান্ত লিতে চাছেন : কিন্তু কাবাস, জরী রখন তাঁহার পলে বর্মাল। প্রদান করিয়াভিলেন মহারাজ ফ্রীন্দুমোহন, বিস্যাস্থাগর প্রড়ড়ি তথম তাঁহার দারিলে-

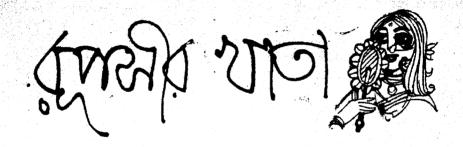
AND THE PROPERTY OF THE PARTY O

দুঃখ দিবালন করেল নাই কি? অক্সমন্থ্যার দত্ত মহাশার আদি রাজাসমাজের ঠাকুর পরি-বারের আগ্রা পাইয়া বংগভোবার পরিপান্ট-করেপ সৃত্ত্যালিতা করিয়া গিরাহেয়। দারিয়ের মধ্য হাইডে তাঁহার গাংখরতা উভ্তত হইয়াছিল ব্যৱস্থা প্রবীকার করা ব্যয় না।

দারিদ্রের স্ভিত সংগ্রাম করিয়া যহিলে ক্ষমত ভখনত মুদ্ধকোত্ৰলনের প্রাণ পাইয়াছেন, সমবেদনাশ্লা সমাজের ক্রাঘাতে তাহানিগকে প্রার্ট ছেন্টমান্ড জীবনমাপন করিতে ভইষাছে। কবিবর প্রালকক রায় কত অনুপ্র কল্যাল-কারে গ্লাভভাষ্টক স্পিভিড করিয়া গিয়াছেন। সে অবদা তাঁচার স্বসময়ের ফলট বটে: কিন্ড ভিনি দবিদ্র ছিলেন বলিয়া প্রখাত সাহিত্যিকরণের মাধ্য এখন কচিৎ কহিলে নাগোলেখ চইয়া থাকে। কবি কুজারুদ দাবিলের সন্দিদ সংগায় কবিসা অধালনে জীবন ত্যাগ করিরাছেন। পরিদ্র ভিলেন বলিয়া এখন দুমেও কেচ ভাঁচাৰ নামোলেখ করেন না। 'স্বর্গলতা'র नगण সামাজিক উপনাস বাজ্যালায় দিবভূতি নাই বলিলেও অলেকি হয় না। প্রথা-রচনার সময় াল্যকারের উল্লিখ্য দিন জিল্। কিন্ত তিনি বিদেয় কিছা রাখিয়া হাউডে পারেন নাই; স্ভেরাং এখন কচিং তহিলে নাম শুনিতে

এইরূপ অনুসংধান করিলে দেখা বার थौड़ाइडे श्रंथम दा इहमा नृष्ट्र इडेहाटड, ভারাই তখন অহম্থার কিছু ছিল। পদগোরব এবং অর্থসম্পদ থাকিলে সে রচনার প্রভাবেই ভিনি সমাজে খার্নিভ-প্রতিপতি লাভ করিয়া শিয়া**ছেন। বহি**য়া অর্থাসম্পৎ নাই, বিনি উচ্চপন্নে অধিষ্ঠিত নতেন, তাহার সাহিতাচ্চা বিজ্বনা মাচ। তিনি নাতভাষাকে অম্লা রত্যাল কারে সংশোভিত করিতে সমর্থা হইলেও যগোমাকট কখনত ভাঁচার মুদ্রুকের শোভাবংশন করিবে ना नाक्ष्मालाश अधन जात्नक काँन अधन আনের সালেখন আছেন-হাচাদের রচনা প্রতিষ্ঠান্তি কবি-লেখকগণের राहमान তুলনায় কোনও অংশে **ন্নন নহে। কিল্**ড র্তাহাদের জয়ঢাক নাই, **বাজাইবার জো**ল নাই! তাই জীহাদিগকে একচেন্দ্ৰ মুখ लाकारेया शाकितक इ**रेगात्क। टिज्जीनड** মহতকেই লোকে তৈজাসেক করে। মুক্তবেশ-র্ক অবস্থারই লয়প্রাশ্ত হর।





আন্তার অংশ অংশ কে বাজার বাঁগাঁ
কিজের রুপে নিজে মাণ্য হরেছিলেন চিত্রগাদা—মুণ্য করেছিলেন রক্ষাহারী অজানেকে।
রুপের জর সর্বাদেশে সর্বাকালে। তাই
হারত বংগ যাল ধরে রমগাঁকুল নিজেদের
রমগাঁর কয়নীয় করে ভোলার জনা নানা
উপকরণ খোজেন। প্রোকালে ফালের কুগাঁড়
গাছের রংবাহার পাতা ইনোদি দিলে ওারা
নৈটি রাংগানেন, হাত পাযের নথের সৌশ্যা
বাড়াবার চেণ্টা করতেন। প্রদৌপর শিবের
আলি চোখে মাদর আবেশ স্থিট করতো,
এমান আরো কতো কি?

কিন্দু আজকের বিজ্ঞানের তাবদান এই রুশচেচার সামগ্রীর ওপরেও কম প্রভাব বিস্তান করেনি। তবে একটা কথা। ধনী কনারে বা বাবহার করেন তা আমাদের সবার করা সম্ভব নয়। কিন্দু নেই। সাধারণের জন্ম বহু বাবহুথা আজে—শধ্রে, কানারত কথা বসব প্রসাধননামাশ্রীর কথা বসব সেগ্রান্ধি সহজ্ঞানত করে। আমাদের মান রাগতে হব । আমি যে সব প্রসাধননামাশ্রীর কথা বসব সেগ্রান্ধি সহজ্ঞানত এবং দামও কম। এলাড়াও আমাদের মান রাগতে হবে যে, শুধ্যান প্রসাধনই নয় এর সঞ্জেকচালি সাধারণ বারোল করাত হয়। যেমন বারান্ধা করেলমান শ্রীবের ভারী আংশগ্রান্ধা করা বহু যাহমন চাঙা গ্রাণ্ধা চিব্রক ইন্যাদি।

প্রমাধনের আর্ছে স্বামার প্রথম তর কথা থনে রাখান্ত হাস দা হল, রাপ চর্চা একটি বিশেষ সক্রমার খিল্প। সেই এক বিকাশের জনা বিশেষ যাত্য প্রয়োজন। কথায়ে শশুভ চবে কোন কালা? গশীমা কি কথায়ে শশুভ চবে কোন কালা? গশীমা কি কথায়ে। সাজ্য বসন্তে এ দাবি কালাই প্রধান। দোরপর বাসতে সমায়। অগ্রাণে সকালা, বিনাকল সক্রমা কি হাড়ে? নোরপর ব্যাস। নেইসক শিক্ষ জ্যোস দেখনে হাব। আন্যোদের ক্রমারপ্রমান ভাই আ্যানের সাজসাজা স্থান বাবিদেশীদের চেয়ে যে আলাকার হলে তা বলাই বাহ্নেলা। ব্যামানিক থ্যম অনেক প্রস্থামসাগ্রতী আছে বা আছরা বারহার করে বিপরীত ফল পাই। তার সবচোর বড় কারণ আমাদের আবহাওরা। সেইজনা আমাদের আলোচনা একট, ভিন্ন-গ্রতী চাব।

প্রকৃতির অকুপণ ঐশ্বর্য নিয়ে অনেক নারী জন্ম নের। রূপ, লাবণা, রঙের চমক সর নিয়ে। কিন্তু সেসর বাঁচিরে রাখা**ও** একটা বিশেষ কাজা। বাঁর কলা রূপ আছে, জাঁর কাজ প্রণপ জিনিসকে বিকশিত করা যাঁর আপাদদ্দিটকে মুকে হবে কিছু নেই, দাকৈ খাঁকে নিজে হবে নিজের সাথকি<u>তা।</u> কোথায় কডেটা করলে জীকে স্পর্পা লাগবে, আবিষ্ফার করেছে হারে ছেকৈ। এই-সর সমস্যার সমাধানে ভামি সাহার করার চেণ্টা করব। র প্রভা হওয়ার মধ্যে সম্ল নেই। যুপে রমণীর লোকর ও ঐদনয় । এই ঐশ্বর্য পর্নিথনীপ্রেন্ট যোল্ধা বিস্কারদেরই শংখ্য পদানত করে রাখ্যর ক্ষনা নহা বাগানে সতা ফোঁটা ফ্রালের মডন, সংসারকেও স্থান্দর করে রাখার জনা দরকার:

আজকের আলোচনা শারা করব ছব নিরে। করেণ শ্রীরের প্রথম আনরণট এটা। ভাল মার্লা উক্তরেল করেন উপর চেহারা ও দেহের কমনীরতা ও সালী চকচকে ভাব সব চেয়ে বেশি নির্ভার করে। আজকের দিনে সম্মার অভান, তাই মান হয় বাশ চচারি তানসর কই? কিন্তু লামার নিশ্বাস, ইল্ফা যদি পাকে ভাহলে এর মধ্যে সম্মন্ত খালে পাওয়া যার। আর না পাওয়া গেলেও যাটক ভামারা করি সেউক্ও ঠিক মৃত্য করলে কোন কালোলাই থাকে না।

প্রথমে আছারা দরে, করন দাতি কালের নিম্মাণনিল নিরে। কারণ আগেই বলেছি আলাদের দেশ গ্রীকাপ্রধান। সভেরাং সেই সমরের আলোচনা একটা বেদ্দী বিদাদ ও দীর্ঘা হবে। দাতিবু ক্ষমা ছটপ্রট সেরে নিরে গ্রীক্ষে অংশেষ্ট্র দাতিকালে শংক হাওয়ার জনা চামডার টান ধরে, চামড়া ফেটে বার, পারের লোড়ালী ফাটে এবং তাতে মরলা জমে খাব কুংলিত দেখার। মথের মধো ঠোঁট নাকের জগা ইত্যাদি ফেটে কালো ছোপ ধরে। এর কারণ অনেক। প্রথমত ঠাণ্ডার ভরে জল সাবাদ দিরে হাত মথে পরিক্কার রাখা সাধারণত একটা, কমই হয়। তালাড়া হাক মথে না ধরেই লার উপর কীয়া ও পাউড়ার নারহার কবা হয়ে থাকে। দ্টোট খাবাপ অন্যাম। কীড়াবে ছক মস্প্রাথা বার দেখা বাক ভাহলে।

সাধানণ্ড আমরা সাবান বেশী মারায় বাবহার করে থাকি। কিন্তু সাবানের জন যে আঘাদের মুক্তের চাম্যভার ক্ষতি হয় তা খেয়াল রাখি না আমরা। মুখে ভাই বধা-সম্ভেদ কম সাবাং শ্রেচার করা ভারপর মনে 🤫 জে হবে যে সাবান আমরা সেইটাই ব্রাণ্ড ব্রেহার কর , ভোছালো সাবান বাছার সহায় বিশেষ য**ু**: নেওরাৰ দরকার। শতিকালে তে সাবানে শিক্ষারিন জাতীয় জিনিস **রোশান ভাছে ভা** ব্যবহার কুরলে জালো, কিংবা দেশী বা বিদেশী কোন উচ্চ ছানের সাবান বাবহাৰ করা উচিত। কাছাতা সারা দিনের পব রাক বিভানায় শোবার আগেও একটি গ্রহা জল দিয়ে সাবানেস সাহায়ো মূখ ধ্রে নিডে হয়। তারপরট সাঁন্দ্রা জল দিরে মুখে 🤝 📽 भनाव साभगे भित्र सद्दे इहा। क्षेत्रकार বার দটে শাখ্য গরহা ও ঠাণ্ডা জনের আপটা মংখে ৰ গলায় দেওৱা উচিত। এর স্ফল মুর্লা বৃহে বায় ও লোমক্প ভাল ভাবে খালে বার। কোলে নিশ্বাস প্রশ্বাসের মাজন এই ক্লোমকাপ্রালি কিরে করেই সন্ধারত धवर तमहेलमा इस हलाहला इरा। রভের মলিনতা জাই সহজেই দরে হয়ে বায়। হাত পাও এইভাবে গ্রিকা জলে সাবান দিয়ে ধরে নিতে হয়। ভারপর 'চার্মিস' চীয় (नाशक्तामा सन्त) द्यम करत नवुर्वराजी स्तरम

াত হয়। মানুষ ক্রীয়া, বা বে করাম কিছু
থার সমার প্রকটা কথা সর্বাদ্য মানে রাখতে
বৈ বে বাই হাতের আংলানেলর জলা বিজে
লা থেকে উপার লিকে টানাভ হবে, বাতেনী
চোরাল পর্যাত। তারপার নাকের দ্বিপাশ
থকে পরে, করে গোল করে গাঁলের উপার
দরে নাচ থেকে ঘরিয়ে উপারের দিকে
নাকে হবে। এইভাবে অগতার ও থেকে
২০ মিনিট করলে ম্থের চামড়ার সংজে
রাসের দাল পড়ে না ও চামড়া বাকে বার
না। কপালো, ঠিক নাকের উপারে মাঝখান
থেকে শরে, করে কানের উপার শ্রাক্ত

একটা বাটি হা গোল পাটে গ্রেম জল
নিরে তাতে হাতের নথ ও পাতা **ভূতিরে**গাথতে তাতে হাতের নথ ও পাতা **ভূতিরে**গাথতে তাতে হাতে বালালের নরম পতি
মাজার রাগ দিয়ে নথ প্রিম্কার করতে হথে।
এরপর ভাল বিলিতি হাতে ক্রমি কিম্বা চার-

কারপেই পা কাট্রে সা। অক্ট্রা হৈছেতে বাওয়ার সুবল্প নিশ্চমই না। একটা বিশিন্দ আমানেদর মনে রাধতে হতে যে কবিভালন পারীর কাট্রে দুর্বিট প্রথম কার্মণা-এক প্রকাল কমে, দুরই, শারীরে তৈলাক দ্বাবে ক্রম থাকলে। নিজ্ঞীরটি অন্তর্ম ক্রমি তেলা ইড্যালির সাহারে বাধ করতে পারি।

ভাহলে এবার সকাল থেকে শ্রে করে একটা রুটিন তৈরি চেন্টা করি। বুল ববকে উঠে রুশ ধরের দরের সক, ক্ষালালেবর থাসা বাটা আর পরিক্রার সামান্য মান্য একসংশ্য ফেটিরে একটা জীয় জাতীর জিনিস তৈরী করতে হবে। তাই দিরে আনে বেমন বলোছ ঠিক সেই একই ভাবে মুখের উপর আঙ্গা দিরে লাগিরে মিনিট ১০ পরে ঘরে তুলে ফেলতে হবে। এইটি রে চাম্বান্য প্রক্ষে কভো ভাল তা দিন সাতের মুধ্যেই আপ্নারা ব্রুক্তে পার্যবেন। এতে

ভারা ক্রমে রাখনের কান ক্রমে ক্রমে ভারে ভারে রাজ।
মনের পাড়ভার চাক ক্রান্স কার কি ভারে ও ক্রি
মানকারে প্রভারন করা কেন্ডে পারে ক্রমে
সাক্ষারে প্রভারন করা কেন্ডে পারে ক্রমে
মান্তির আদা এবং মানের প্রভিতি আংশ
লিক্সে আন্যান্য করা করা ক্রমে
প্রথমিই কর্ম নিরে বর্গান্ত এই ক্রারণে যে করা
বাদ্য ভাল না হয় ভারতের জোন প্রসাধনাই
তিক মান্তর ক্রমান্তর বাদ্য প্রান্তর বাদ্য প্রসাধনাই
তিক মান্তর ক্রমান্তর পারে না।

হার্গ আবার আআরা ব্রটিনের ব্যাপারে ফরে আসি। বিকেলে বা লগ্যাবেলার বারা বাড়ীতেই ছিলেন, ভারা মুখ্টা পারে জল দিরে একবার ধরে হাল্কা হাতে মাছে লেবেন, ভারণর বেহাোলিন সাহান। নিরে আন্তে আন্তে মেথে ভারণর প্রসাধন কর-বেন। বারা কাজের পর বা বাইরের থেকে







যি**স ক্রীম** বৈশ করে দুই তালতে ঘবে আথে নিতে হবে। যাদের পারের গোড়ালা ফাটে তাদের বিশেষ করে যতা নিতে হবে পারের। মেরেদের পারের সৌন্দর্যের একটা লক্ষ্যান্ত্রী থাকে যা প্রতিটি রমণীর মনে রাখা উচিত। অলপ গরম জলে পা ভূবিয়ে সাবান ও ব্লাশ দিয়ে পা প্রথমে ধ্যুতে হবে। তারপর বিলিতী বা দেশী অলিভ তেল এক চামচ নিয়ে ভাতে একটা শেব্র রস মিশিয়ে গরম করে নিজে হবে। পরে জাই দিয়ে পায়ের গোড়ালী ও পাতা বেশ করে ঘষে নিতে হবে। তারপর ঠান্ডা জলে মিনিট শনেরো বাদে হাত-পা ধ্যে ক্রীয় মেখে শারের পড়া উচিত। এই ভাবে রোজ করলে গোড়ালী কখনও ফাটবে না। এছাড়াও যে মহিলারা বাড়ীতেই থাকেন করি। যদি সার। দিন মোজা পরে থাকেন—তাহলে কোন

ডুক মুসাণ আহু সেই সংখ্যা খাব উল্লেখ্য দেখার। এতে মুখের লারণা বিশেষ ব্রণিধ পায়। দেশী বা বিদেশী যে কোন আশিভ তেল শীতকালে মাথা সবচেয়ে ভাল। কৰে যদি আমাদের সামথেণ না কুকোর ভাগলে নারকেল তেল একটা গরম করে মাখা উচিত। সাধারণতঃ আহারা সরবের। (TO 69) व।वदात करत शांक। किएक एककान मतत्रत ভেলের মতন ক্ষতিকর আরে কিছাই সেই। —তারপর স্নানের স্থার একবার ঠান্ডা ও একবার প্রম জল দিয়ে মুখে খাপ্টা দিতে হবে। মূখ মোছার ব্যাপ্রেও একটা কথা মনে রাখতে হবে যে গামছা অথবা খরখরে আতীয় কোন কাপ**ত বাবহার কর**৷ উচিত নার, নরম ভোরাকে দিয়ে হ্রাখ মোচা উচিত। म.भ.रत क्षीम नानदात कता এरकनारतदे উচিত নয়। বিশেষ করে যার। বাইরে ধান

ফির্কের, ভারি একট, গরগ জলে হার্থটা
থ্রে, ভাসে কোম বিদেশী কোম্পানীর
তৈরী অথবা এখানকার দেশী কোম্পানীর
ভাষ ক্রিনসিং মিশ্ক দিয়ে তুলোর সংহাব্যে
মাখটা মাছে ফেগরেন। তাহলে খনের
উপরের সব ময়লা উঠে আস্বেন। এবশরে
করা উচিত হবে সেই সম্বন্ধে পরে আলোচ

শতিকালে এইভাবে ছকের যতে। করলে রম্পীকতা তো বাড়বেই, সেই সংগ্রে শাবণ্য-ম্মী করে তুলবে প্রতিটি ব্যবহিত।

এশার আমরা আসি প্রণিয়কালীন পরি-চলার।

জন্মের ও প্রকার হন্তন আছে হাস্তাধন-কলার দিক থেকে জক ভিন রক্ষা ১) তৈলাভ হক. ২) শক্ষে হক, ৩) সাধারণ
ছক। সভেরাং আমরা বাধনাই হকের পরিইটার কথা ভাষর তথনাই আয়াদের দেখে
নিতে হবে যে হক কোন জাতারীর। সেই
ব্রে ব্রবাধা করতে হবে। প্রথমে আলোচনা
শরে, করো বাক তৈলাভ হক নিরে। নিয়ম
মতন গ্রেথ সাবান ব্যবহার বতো কয় করা
ব্রে ভতুই ভাল। কিংলু আয়াদের দেশে
এতো বেশা গ্রেম ও দায় হয় যে সাবান না
কাবহার করে পারা যায় না। তৈলাভ হকে
সাবান দিনে, খ্রে বেশা প্রয়োজনে তিনা
বার, ত্রে স্থানগ্র ও দুইবারই করা ভাল।

সভালে কানের সময় একবার সাবান ব্রেহার করা ভারপর মুখে কিছা না দেওয়া। বাইরের রোদে বেরালে বিদেশী বা ভাল দেশী কোম্পানীর এক রকরের হোড-কেটেড লোশান পাওয়া যায় তার একটাখানি গুৰকা কৰে মাখে ও গলার মেখে বেরানো উচিত। ভার ফলে ময়শা ফকের উপরে ক্ষমতে পারে না, আর রোদে রং পর্ভে যায় না। ৰাজুট ফিন্তে তলো দিয়ে ঠানতা জালে আতেও আতেও মৃথ মাুছে ফৈলেই 'ফক আবার পরিংকার হয়ে যায়। সাধারণত আমানের ধারণা গায়ে মাখার পাউডার মাথে ব্যবহার করা ভাল। কিণ্ডু ডা নয়। বড়ি শাউডার মৃথে ব্রেহার করা ভাল নর। এ-ছাড়া নানা ধরনের যে সব রডিন পাউড়ার জাইখ সাথার জন। পাওয়া মায় সেগ**্**লি কোন কারণেই মাখা উচিত নয়। এতে মার্থর পাওলা ছক খসখনে হয়ে যায়। জামি তা পনাদের বারবার করে এই আনুরোধই করন--ত্বক ভালা রাখতে হলে মাুখে পারত-পক্ষ পাউডার বাবহার করবেন না।

বিকেলে বা সংখ্যার কোন প্রসাধন শবহার করার আলে আবার সাবান দিয়ে মথে ধরে ফেলতে হবে। ভারপর সংভাহে থকাদন করে মথে জেল্বে রস একট্র জলে মিশিয়ে লাগিয়ে রাখতে হবে মিনিট দশেক। পরে মূখ ধ্রে ফেলতে হবে। রাতে শোবার আলে মূখ ধূরে ক্রিনসিং মিক্স দিয়ে মূখ মূছে ফেলা উচিত।

শাকে জকের জনাও এইসব নির্মাই মানতে চবে। শুধু রাতে শোবার সমর মুখু ধ্রে, বোরোলীন অথবা ক্রীয় (সাহান্য) মেনে শাতে হবে।

সাধারণ ডকেরও মোটামর্নিট এই একই ব্যবস্থা। এসব ছাড়াও আর কয়েকটি বিষয়ে ট্টাবলেট প্রতিদিন একটি করে খেলে ভাল ফল পাওরা বার। সব্ভ সন্থি শাক-পাড়া মন্যোর ডাল ইত্যাদি অবপ মশলা দিরে রামা করে খেলে ছকের অবিশ্বাসা উপকাব হরে।

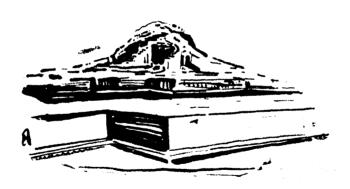
সার্ভাদন অভ্তর হাতের পাতা ও আঙ্কা একট, অলিড তেল গরমা করে ডাতে ভিজিয়ে রাথলে হাতের চাম্ব্রু কুচকোর না, আর হাতের সোক্ষর্বা বঙ্গে যায়। হাতের তেলো মেয়েদের বরসা বলে



বিশেষ লক্ষ্য রাখ্য উচিত। সেটা হল খাদভালিকা। এক মস্থ্য, দালহীন সোলহীন
রাখতে হলে স্বচেয়ে প্রথমে পেট পরিকারে
রাখতে হলে। প্রতিদিন স্বালে এক গোসাস
ঠাওা অথবা গ্রম জলে একটি পাতিলবরে রস খাওয়। প্রয়োজনা স্বাদের ক্র তৈলান্ত তারা কেশ্বী তেল দি-এর রালা
থাবেন না। চিনি চা ও ক্ষি বেশ্বী খাওয়া
বাজনীয় নয়। তাদের সালাভ (শশা
বিশ্বাজ, বিন, গাজন কড়াইশাট্ট লেল্সপাত্রা) দ্বুধ ছানা চবিত্রীন মাংস্ মার
এবং স্বার উপরে প্রচুর প্রিমাণে জল ভ
ফল খাওয়া উচিত। মাঝে মাঝে ভাইটামিন

দেয়। হাত কথা বলে, হাতের স্পদেশ স্থেষ ায়, মাতের কমনীয়তার মাধ্যে আমে--াও আক্ষণ করে সূতরাং সেই হাতের কদর অনেক। তাকে সাদের করে, সতেজ স্ঞান 李代 রাখার মাকা হ্যান্ত দিয়ে আছাগদর শাইরের করভে জব_ভ ভার 27 হাত্যের হা । নিজে হবে। বন্ধতে হাত দিয়েই তো হাত করি আমরা সৌদর্য'-ाक्त्र जात्कावित।

-ৰব্বনি'লী





(প্র' প্রামিতের পর)

मन्द्रन (थर्क क्राम्क्यार्टे। खारत ভारवाज कर प्रात्ता अथन अर्थन अर्थन आ दिवान प्रात्रपृष्ट नश्च। কলকাতা থেকে খোগলসবাই। বোধহয় তার থেকেও কিছা কম। মাত চারশ একছটি মাইল। সাত্রণ একচল্লিল কিলোমিটার। দিল্লী মেল ৰা বোদেব মেলে এক বালি কাটিয়ে ছোলজ-সরাই পেশছতে হয়। এক্ষ্যান এই দ্রেড भाव दलाभ धन्हीशात्मत्कत भर्यादे। त्वन दा মোটবগাড়ীর গৃতি বেশি নয় বলে সৰ সময় মাইলের হিসাব করা হয় কিন্তু আ্বান্নক বিমানের গতি এত বুতে যে কোন বিমান্যাত্রী দুরত্বের হিসাব নেবার প্রয়োজন মনে করেন ন। টাইমস বা ডেইলি টোলপ্রাফ পড়তে না পড়তেই এক দেশের রাজ্ধানী থেকে দেশের রাজধানীতে পেশছনর মধ্যে বিমান-মাত্রীরা চাঞ্চলাবোধ করেন না। তাদের কাভে দ্র এক বার্টকড স্কটের পর লাভ খোষ করতেই এক মহাদেনের তাক মান্ত থেকে প্রথা সাদত বা এক রাতের কয়েক ঘণ্টার ঘামের ফারে ব্যটি মহাবেশ অতিক্রম করে হুঙীয়া মহা-দেশের অধে^কেটা পার হওয়া অভানত স্বাভবিক ব্যাপার।

আমান্ন বিমানখাতী হয়েও দ্রেখের হিষাব না করে পারাছ না। আমি শা্ধাু একটির পর এখটি দেশ পাড়ি দিছি না, দেব না, পাড়ি रत्व अक्षि अविभव्छ। आर्क्ल, अक माहेक। এট এয়ার ইন্ডিয়ার বিমানে ভারতবর্ষের মাটিতে পা দেবার সংগ্যে স্থেগ্র আমার জীবনের একটি ব্ত সম্পূর্ণ হবে। ভার-উটনের শিক্ষাদের ভাষায় জন্ম থেকে মাড়াই একটি জীবন-বৃত্ত কিল্ডু নিউটন ভারউইনের ভক্ত অবলম্বন করে তো মান্ত্রের জীবন চলে না। বিশেষ করে আমার মত সাধারণ ভারতীয় মেশ্রেদের জাবন গতিপথ কথন বোধায় মোড় ঘারে দাঁডাবে কেট বলতে পারে না। নতান জীৰনের প্রশহত রাজপথে এসে দড়িতে না দীভাতেই কত হওভাগিনীর চলার পথ শেষ হয়ে হায়। দিল্লীতে পেশছবার সংখ্য সংখ্যেই আহার পথের শেষ। পথের শেষে নতন পথের ছদ্দিশ, নতুন জীকনের ইণ্গিত পাব কিনা ক্রানি না। খেরাঘাটে পেশছেই বি স্বাই পারাপারের থেয়া পার?

আমি তামার ব্যাগথের দ্রুবাক আমাহা করতে গারছি না। এরার হোস্টেসের এনাউসস-মেন্ট লানে জানছি কড দ্রু এসেছি হিসাব কর্মি সামনের পথের দ্রেছ।

লন্ডন থেকে ফান্কফার্ট আসতে এত অলপ সময় লাগল যে ঐ সময়ের মধ্যে এয়াপ-টাইজার হিসেবে ন্-এক রাউন্ড ড্রিক সার্ভ করা গেলেও লাভ দেওয়া যায় না যাত্রীদের। এই ফুল্কফার্ট থেকে বোমের দূরত্ব বেশ্বী ন্য। ছাশ সাওচ্লিশ মাইল, এক হাজার এক-চাল্রণ কিলোগাটার। দেও ঘল্টা সময়ও লাগ্ৰে না। এবার যাত্রীদের লা**ন্য দে**ওয়া হবে। আমি এখানে বসেই দেখতে পারছি স্টাুয়াট'-এয়ার হোসেটস্রা মিল্ সাভিসেব ভোড্জোড় শরে করে দিয়েছেন। আমার সামনে পিছনে যত যাত্রী আছেন তাঁরা লাজের পর কফি কফির পর একটি সিগারেট শেষ করলেই পাবলিক এয়ডডেস সিপ্টেমে ভ্রয়ার হোস্টেসের কণ্ঠস্বর শানতে পাবেন উঠ উঠল বা স্টালি ল্যান্ডিং এটে রোম.....

শার আমি : অন্যান্য স্বার মত খাব, কৃষি খাব ঠিকই কিন্তুমনে সনে কোথায় যে ৮লে যাব, কত কি ভাবৰ, ঠিকঠিকানা নেই। কত স্মাণের ম্যাড়ি, দ্যুংখর ইভিতাস, বার্থভা ও বেদনার ট্রুকরো ট্রুকরো ঘটনা রোমণ্থন করার পর আমি রোম পেশ্ছব্ ত। জানি না। দাতক রাউন্দ স্কচ বা জিন এনান্ড ট্রনিক বা বিখার শেষ করতেই স্বাই জন্ডন থেকে দ্রাঞ্জ্যার পেশছে গেলেন আর আয়ি সেই অবসরে আকাশ-পাতার ভেরে ভেবে মর্লাম। কথনত কথনত মনে হয় ভার ভাবনা-চিন্তা করব না। যা হবার ভাই হোক। লম্ভনে থাকলে খাওয়া-শরার অভাব হবে না। স্রকারের ভান্ডারে যা জমা দিই তার বিলি-ময়ে **অস্**চমাহলে স্চিকিংসা নি×চয়ই শাব। হঠাৎ কোন কাশবে বেকার হয়ে গেলেও ষা ভাতা পাব তা দিয়েও আমার দিন কেটে হাবে। মাঝে হাঝে খবরের কাগজে পাঁড অম্ব ইণ্ডিয়ান ভয়াক পাকিস্তানীকে কোন রেক্তারা বা হোটেলে চ্কটে দেওয়া হয়নি বা ভাষিস-কার্থানার কোন সাত্রের কালা-আদৃশী বলে নাহা অধিকার উপভোগ করতে দেয়ন। অগবা এই ধরনেরই অন্য কিছা। এসৰ ঘটনা ঘটে মা-এমন নয় কিম্ছু কোন कान विरमञ्ज स्कर्त, विरमञ्ज विरमञ्ज कातरम् এখন ঘটনা ঘটে ৷ খেটামাটি একটা শিক্ষিত ও ভদ্ন হলে এসৰ সমস্যার সম্মার্থীন হতে হয়

এইসব সমস্যার কথা মনে পড়লেই আমার প্রাডফোডের দিনগালোর কথা মনে পড়ে

গ্রায়। অনেক কাল্লাকটি ঋগডাকটির পর একদিন রঞ্জন এয়ার কালাভার একটা টিকিট কিনে আনলো। ব্ৰুলাম নাটকের পঞ্চ অঞ্ শাব্য টিকিট্টা এনে এমনভাবে টেলি-ফোনের পালে রাখল যে সংগ্রে স্থেগাই আমার চোথ পড়ল কিন্ত কোন প্রশ্ন করলাম না। ও টয়লেট থেকে গারে আসতেই আনি টেবিলে সভানের খানার নিলাম। সাইলে+ট ্রেভির মত আমারেক একটি শুখ্দ উচ্চায়ণ করতে হলো না। ও খেতে বসলা আহিত খেতে বসলাম। খাওয়া শেষ এবার পরই ও বড় বড় দ্যটো স্টেকেশ সাজাতে খারে করল। পথম অল্কে নাটক একটা দুভ গতিতেই এগিয়ে চলে। চলল। আমি কিচেনের কাজকর্ম গেয করে এসেই শ্রুষে পড়লাম। জানলার দিকে মাখ পরে কাত হয়ে মাধ্যে থাকলেও ব্ৰাতে পার্ডিলাগ্ন রঞ্জন চল্লে যাবার উলোগ্ আয়োজন করছে। ঘাম আসছিল না জেগেই ছিলাল কিম্ত শেষ প্যবিধ কখন ছে ছ্মিয়ে পড়েছি তা ব্রুত্তই পর্বিন। অনেক রাজ শ্বয়েছি বলে অন্যান্ দিনের ছতু ভোরবেলায় ঘাম ভাগের নি। ঘাম ভাগাল রঞ্জনের **ভৌ**কে, রাণা একটা উঠাব :

ন্তর ভাক শানে ভামি বিছানাতেই ক্রিস্ন সমলায়। দেখি ন তৈরী। ঘবে বড় বিড় স্টে-কেশ দ্রটোন দেখতে পেলায় না। মান চলো বোধচয় নীটেব স্থানিভার এ রেখে এসেছে।

'আর্মি: হাডিড ।'

ভাগি দা হাঁটার উপর মাধ্য রেখে পুশ করেই বলে রইলাম। কোন কথা বজ্লাম না, বলতে পাবলাম মা।

ইপলাস সাহেবকে দৃ হাসের ভাডা দেওয়া আছে। তোমার ধাকালে, বাগেকের চেক বই টেবিলের ভুয়ারে থাকল আর.....

রজন থামল।

আমি সাবা রান্ত্রি বিশ্বাসের পথ বিছনেরে বলে থাকলেও অনিদা, জনাহাবালিকটানের মত্র হঠাব লাখা দ্রেটা চোম জলে ভবে পেল। গড়িয়ে পঙ্গু গাস বেয়ে, হাতের উপর হান্ত্রি উপর। ভাইন ইন্ডা কর্মিজ একবার এর মৃত্তের দিকে ভারাতে কিন্তু পরেলাম না।

রঞ্জনই হঠাৎ আমার কাছে এপিয়ে এসে দা-তাও দিয়ে আমার মূখখানা তুলে ধরতেই দেখলাম ওর দুটো চোথ দিয়েও জল গড়িবে পড়ছে। কড়ক্ষণ ও আমার মূখখানা দু-হাত দিয়ে ধরেছিল, কতক্ষণ আমার দিকে
তাকিয়েছিল, আমি ওকে দেখছিলাম, তা জানি
না। বোধহয় এক মিনিট বা দ্বা মিনিট।
হয়ত বা তারও বেশী। দ্বানের কেউই কোন
কথা বলতে পারলাম না। তারপর হঠাৎ রঞ্জন
ভুটে শ্বর থেকে বেরিয়ে কোল। তেবেছিলায়
ক্রে একটা প্রণাম করব কিন্দু সে ইচ্ছা প্রণা
ক্রার স্থেষার পেলাম না।

আজন্ত সেই কথা ভেবে কন্ট পাই। ধ্ব থারাপ লাগে। হাজার হোক গ্রামী। চিন্ন- নিনের মত ভার কাছ থেকে মৃত্তি নেওয়া।
সহজ বাংগার নর। প্রায় অস্মতব। মৃত্যুংগাক
সহা করা হায় কিল্তু নিজেন বেদনা অসহ।।
ম্বামীর মৃত্যুরে পর বৈধবা সহা করা বায়।
কর্মটেই হয়। সবাই সহা করে কিল্তু ন্যামী
বে'ছে থেকেও তাকে হারালে সভিচা অসহ।।
রঞ্জন আমাকে প্রতি পদক্ষেপে ঠিকিয়েছে।
ও মিধ্যাযাদী, অশিক্ষিত। লম্পট। চরিত্রীন।
তব্ত ও আমার ন্যামী। সেই স্বন্যাশা
দিক্ষে স্কালবেশাল্ল ওর জলাভ্রা চোখাদ্টি

দেশে মনে হয়েছিল ও আফ্রাকে ভালবাস আমাকে চায়। প্রাণ মন দিয়ে চায়। আমি কি ওকে ভালবাসেতাম?

নিশ্চয়ই। এখনও কি ওকে ভালবাসি ?

बद्ध कर्जिस अन्मा ठिए करत कराव रमध्य মা<mark>তিক্তা। ওকে ঘেলা</mark> করি, ওর উপর 🔞 হয়। ভাষণ রাগ হয়। আমার বর্তমান জীবনের জাটিলভার জন্য, এই আচ্তত্ত্ব জাবনধারণের জন্য একমার রঞ্জনই দাঘী িত দরকার ছিল আমাকে বিয়ে করার? আলাকে লশ্ডনে টেনে আনার? আমাকে বিয়ে করাঃ মত একটি ছেলেও কি কলকাতায় পাওল रबंड ना। अण्डो रकम, अक्यों हो हिल भाउरा ষেতো। একট্র চেল্টা করলেই পাওয়া যেতো কিন্তু কে চেড্টা করবে? বাবা বেং৯ बाक्टल दकान कथा हिल ना। वाहरलारक দুলালীকৈ বিয়ে করার পর দাদা আন্ত আমাকে সহা করতে পারত না। বিধবা মা ভি করবেন? ছেলের কথার উপর আর ফিছা ষলতে পার্লেন না। র্জানের স্থেগ আম্ব ৰিয়ে হলো। কলকাতার একটি শিক্ষিত ছেলের সঞ্জা বিয়ে হলেও আমি বেদ সুগ্রে থাকতে পারভাম। কেন পারব না ? আমার 👊 কিছ্ পিছ্টান ছিল না হে ধ্বামীকৈ ভাল-ৰাসতে পারব না। কলকাতায় জনেয়ছি । বহ হয়েছি, স্তরাং বিয়ের পর কলকাভায় শাকলে বেশ আনন্দের্ থাকভার। চার-পারিট টাকা হলেই দেশপ্রিয় পাকের কোনায় ভিডে একটা ব্রাউজ কিনতে পারতাম অথবা দুজনে মিলে উচ্চ লায় সিনেমা হেতাম। রবিবান সকালে বস্ত্রীতে কত ভাল ভাল গানের অন্ ধ্বান হয়। রবীন্দ্র সদলে তো নিতাই কিছু না কিছ্ হছে। লণ্ডনে আসাব পর বাংলা খবরের কালজ দেখার স্যোগ হয় না। এব-মাত জয়নতীদির বাড়ী গেলে ধবিবারের কাগঞ দেখতে পা^স অনেকদিন পর একটা **বাং**গ। ৰা**গঞ্জ** াত পেলেই সৰ চাইন্তে আলে সিনেমার বিজ্ঞাপন পড়ি। লম্ডনে প্রথিবীর কত বিখ্যাত শিলপার অভিনাতি সিনেয়া-িংয়েটার হ'ছেছ। মাঝে মাঝে দেখি। জীকাল্ডর ভানা দেখতেই হয়। ভাল লাগে, খুৰ ভাল लाण किन्क् छव । छ छ एमक्मात्वत अक्षी बहै দেখার জনা মনটা ছটফট করে। প্রীকালতকে আমার খুব ভাল লাগে। বোধহয় ভালবাসি। भारक भारत ७१क निरम् कविकारण्य व्यक्त स्मिका শেষপর্যক্ত আলি বলি আবার লক্তনে ফিবে এপে ওকে বিয়ে করি, ভাহলে আদ্চয় হবে। ন। এর সর্বিছাই আহার ভাল লালে, শাুখা একটি বিষয়ে ওর সংক্ষা আমার সার্ণ মত্বিরোধঃ ও সেমির চ্যাটাজির ভর উত্থ क्रमासतक विरागम राष्ट्रक्ष करव ना। উद्धमकुद्राय স্মপকে আজেবাজে কথা শ্নলে স্বাহাৰ ट्राइक ठिक शारक ना। छेनुम हेक छेनुस। অশ্বিতীয় । জনদ্য জজুলনীয় সিমেদা হলের পদ্য ক্তে যথম উত্যেশ মুখখানা লেখি তথন আমার ব্ৰুক্টাও ভরে মায়। ভল-कालाग्न ल-फानत घर मृथ ना धाकरमध बारमा সিনেমা তো আছে, উত্তমকুমায়কে তো দৈখা হার। আমার মত লাধার্ণ বাণ্যালী মেয়ে ভাস্কেই খুল্যী। (Bant)

আলেকজাণ্ডার ডুমা রচনাবলী

৪ খণেও সম্পূর্ণ ॥ প্রতি খনেওর দাম ১২; টাকা ॥ রেক্সিনে বাধাই।

চार्ल र्भाष्टदकन्त्र ब्रह्मावली

8 খণেড সম্পূর্ণ ॥ প্রতি খণেডর দাম ১২, টাকা ॥ রেক্সিনে বাঁধাই।

এমিল জোলা রচনাবলী

भरन्छ मन्नमून ॥ द्वीक भरन्छत्र नाम ३२ होका ॥ द्वित्रदन वीबाहे।

শেক্স্পীয়র সমগ্র রচনা সংগ্রহ

৪ খণেড সম্পূর্ণ। ৪ খণেডর মূলা ৪৫ টাকা । বেরিনে বাধাই ।। প্রথম খণ্ড প্রকাশিত হরেছে ।। শচীন বিশ্বাস অভিকত স্কুলর প্রজন্দট ।। প্রথম খণেডর অন্বাদকমণ্ডলা ।। উৎপল দত ।। তা ছরপ্রসাদ মিছা। মণ্টির রায় ।। বিশ্বনাথ চটোপাধায়ে ।। অভিকত গণেগাপাধার ।। মানস ছোর ।। সমরেল মৈত্র অমিতাভ দাশগাণুত ।। একমন্ত আমবাই সমগ্র নাটক কবিতা ও সনেট সম্পূর্ণ দিছি। অন্বাদকালি আক্ষাবক। ২য়খণ্ড জ্লাই মাসে প্রকাশিত হচ্ছে।

মোপাস ারচনাবলী ॥ টলস্টয় রচনাবলী

৽ খন্ডে সম্প্রি এতি খন্ড ১০; ৫ খন্ডে সম্প্রি খন্ড ১২;

গিরিশ রচনাবলী॥ দামোদর রচনাবলী

েখন্ডে সম্প্রাত খন্ড ১৫; ত খন্ডে সম্প্রাত খন্ড ১০;

ভ্রেদেব রচনাবলী ॥ হেমচন্দ্র রচনাবলী । হ মচন্দ্র রচনাবলী । হ মন্দ্র রচনাবলী

বঙ্গদর্শন ॥ রাজনারায়ণ রচনাবলী ৮ খন্দ ॥ প্রতিখন্ড ১০: ১ খন্ডের গম ১৫:

প্রতিটি রচনাবলীর গ্লাহকম্পা ৫ টাকা। গ্লাহক হবার ও মনি অর্কন্দ পাটানোর মূল কেণ্ড: জোডি প্রকাশন, ২এ নবীন কুন্দু লেন, কলি-১ ॥ অনানা কেন্দ্র: ববীন্দ্র লাইছেমী, ১৫/২ শামাচর্গ দে স্থীট, কলি-১২ ॥ প্রা প্রকাশন ৮এ টেমার লেন, কলি-১। সাবেম পাইছেমী। শুর্গাপ্রে॥



লাক্স সুপ্রীম ্নি

সাবাদের প্রনিয়ার এক নতুন বিশ্বার লাক্স সুখীমা আপনার হকে এনে দের লাবণা, আনে রেলম কোমল ছৌয়া। কারণ কেবল লাক্স সুখ্রীমেরই আছে ভার । নিজস্ব বিউটি ক্রীম। যার সরল লেগে খাকে

- বিজ্ঞাস্থ বিউটি ক্রীমে ভরপুর !

উপতে পড়া ভরম্ব কেনার গভীরে।
সেই মুকুণ কেনা আপুরার সংক্রমধ্যে

উপতে পড়া ভরম্ভ কেনার গভীরে। সেই মফণ ফেনা আপনার বুকে যখন আনে কোমলভা, আপনার সকল আছে ভখন বিকশিত হয় এক অনিদ্যা মন্ত্রুম মুর্ভি—যা লাভা স্থপ্রীমের একান্ত আপনা

মুন্দরীর সৌন্দর্যের দেয় সন্ধান-লাক্স মুগ্রীয় বিউটি ক্রীমে ভরা একমাত্র সাবান

মহারাণ্ড তামিলনাড় অন্ধপ্রদেশ কর্ণাটক ক্রেক্ত ও পরিভারতের পাওকা ধার!

বিশ্বান নিভার জিমিটেডের একটি নেরা জনাধন সামনী

अम्म नी

अमर्भ नी

श्रमर्भ नी

মিউজিয়ম অফ মডার্ণ আর্ট-এর গ্রাফিক প্রিণ্ট-এর প্রদর্শনী

ন্বিজীয় বিশ্ববাদেশ্য কাল থেকে সাবা প্থিবীতে বিভিন্ন গ্লাফক মাধ্যমে লিচপ-55'Id क्की एक अध्यक्ष श्रीकेक श्रीकार मिल्लाइक श्रमाधार क्या माधारिक इस নৈতিক প্রেক্ষাপট আছে। ডিব্রিগের নশকেং ধনতান্ত্রিক প্রাথবীব্যাপী আখিক বিপ্-যাহ্যের পর থেকে তেলবংশ্বর ছবি ও জন-রঙের ছবির বাজাধ-দর চড়তে চড়তে এমন এক জায়গারে এলে ঠেকেছে বেখানে পেণাছতে পারা মাকিলি ছেলের প্রক্রেল পক্ষেত্ৰ ইন্কর। প্রকাসের হাতিম বিধায় मानान श्रधांच रियाक भारभीप्टर डॉटर কথা ছড়েট্ট দিলাম এলাল্ড ভয়াব্যসাল বা প্রাক্ত পেট্ডলার মাতন মানকাল চিত্রকরাল্ড **क्वां दक्ता अ शांकिक केक्स्यश**ीरक अनुनर्भः ल्याक्त भएक म्इनाशा द्याभाव । **४०३५ '४**क धीरा न्यक्तक भूजाहरू माना माना धमर े कित्रकातिक कि काबतु সম্পাত্র সেলে বেড়েছে ৷ প্রিচ্পী-ছাত্তেও স্পানা হৈরবী মূল শিক্ষকত সম্প্ৰে এ-চাহিদ্য সম্প্ৰ যদের তৈরী কমালিয়াল প্রসেস প্রিনট দিহে क्षिणे अम्बद्धि स्थः

ক্ষাধ্যক মাধ্যমগুলির যে-কোন একটিতে তৈরী প্রিনেটর সংক্ষা ক্যাশিয়াল প্রসেগ-প্রিনেটর প্রধান পার্থাকা ক্যাশিয়াল প্রসেগ-প্রিনেট একটি জনা মাধ্যম স্ক্রী সম্পূর্ণ শিক্ষ-বস্কুব নকস্ এবং গ্রাফিক প্রিন্ন তথ্য

সত্তেও নকল নয়। কারণ ছাচটি সম্পূর্ণ শিল্পবস্তু নয় প্রিন্টেন্টার সম্পূর্ণ শেল্প-বস্তু। দিবতীয়তঃ কমাশিয়েল প্রসেস প্রিটেট रिवारन राज्य-उक क्षण तुः ता क्रांभ्काध करियु तकल काभा इह क्राचाति ता शास्क ম্ল চিত্ত-মাধ্যমের দৃশান্ত্তি না থাকে নিল্পীর হাতেয় স্থােশর অনুভূতি। গাফিক মাধ্যমে ডিবস্থিত মালেভ যেতেও ছাপার একটি প্রধান ভূমিকা থাকে, সেতেত্ णशाद देवीमन्तरिक काट्रक नानिताई अ-काट्ड कति देल्यी इस्। कल्ला शाक्षात्राय प्रमान्त-ভৃতি ছবিতে সজাীব থাকে। এবং দিল্পা যেতেতু স্বহদেত ছাচের উপর নক্ষা রচনা করে থাকেন সেহেড় চিত্রে সেই হাজের **>পর্লা অন্যভূত হয়। এইস্ব কার্ণে গ্রাফিক** প্রিকট মিলপার হাতে তৈরী মূল খিলপ-বস্ত্র সম্খান পার ধা কমামিরেল প্রসেস-প্রিনট সংগত করেণেই পার না। অবচ একটিমার নকশা থেকে বেহেত বহু: প্রাফিক প্রিন্ট পাওয়া সম্ভব এবং কাগঞ্জের উপদ হবার শর্ম প্রতিটি প্রিটের পিছনে যে ব্যয়স্থেকাট সুম্ভৱ তা অন্য মাধামে অকল্পনীয়। ফলে গ্লাফিক প্রিণ্ট অনা সব মাধামে নিমি'ড শিলপ্রণ্ডর তুলনায় সংলভ। একটিমাত্র ছাঁচ থেকে যেহেতু বহু, প্রিন্ট পাওয়া সম্ভব সেহেতু দুল ভতার মূল্যে প্রিন্ট কথনও আতিরিও

দামী হয়ে ওঠে না। এইস্ব কারণে পশ্চিম
ইউরোপ ও মার্কিণ দেনো গ্লাফিক প্রিণ্
জনপ্রিয় হয়ে উঠেছে। পূর্ব-ইউরোপের
শমাজতালিক দেশগালিতে এবং ভারতের
মতন পশ্চাদপট দেশগালিতে যেখানে
শিক্ষাবস্তুর বাজার একাল্ডই সংকীণ এবং
বে-সব দেশে লিক্সাটদের বলার কথাও অনেক এবং অনেক্সের মধ্যে সে-কথা প্রচাই
করা আবলাক, সেধানে গ্রাফিক মাধানগলেই এমন শধ্যম যাতে স্বভী লিক্সাবস্ত্ অপেকাক্স শ্রাভ মাুলা বহাজনের কারে
সেপিকাক্স শ্রাভ মাুলা বহাজনের কারে
সেপিবালা

profit the second second

নিজেদের বে"চে থাকার জন্য মিশেপর বাজারের এবং শিল্প রসাস্বাদনের ক্ষমতা প্রসার সকল খিলপশ্রিট কারা। তা ছাডাও প্রতিটি সতিকারের কিল্পী ভার স্থিত মাধ্যমে অনেকের মধ্যে নিজেকে ক্ষাতে চান, অনাকে ছ'্তে চান সেই অনেক বা অন্যের সংখ্যাবৃশ্বিও কামা। গ্রাফিক মাধামগ্রানতে শৃষ্ট বস্তুর এ-কাজগ্রাল করার ক্ষতা অনাান মখামে স্বা খিলপ-ব**ম্বুর চেয়ে কিঞ্চিং অ**ধিক। এ-ছাড়াও প্রতিটি শিক্ষপীর মধ্যে একটি কারিগর-শ্বতা সাক্ত থাকে। প্রতিটি শিক্ষপীই তাঁর সাক শিলপ্রস্তুতে থানিকটা লারিগরী দক্ষতা প্রকাশ করতে চান। এ-ব্যাপারে গ্রাফিক মাধামগালি শিল্পীদের যে সংযোগ দেয় ক্লেসকো এবং হয়তোবা টেম্পেরা ছাড়া অনা কোন চিত্ত-মাধ্যম সে সংহোগ দেয় না। বিশেষীকরণ-সম্পান্ত কারিগরী পক্তা বিংশ

প্তাৰ্থীর শিক্তারত দেশব্লিতে বেভাবে প্রকৃত হলে কা ইতোপাবে প্রিথীতে হলনত ভেট দেখান। এইভাকখার বিনি বেখানে আছেন, সেখানে ভাঁচ কাজের বিশেষভাকে কানিগারী নক্ষতা দিয়ে প্রমাণ করতে ভংগত হরেছেন। এ-সর কারণে সারু পৃথিবীতে প্রায়ক প্রাথ্মে শিচপাচচ্যার একটা ভোরার এসেছে।

बाबोसम क फेर्नायरम भाषाकारिक প্রসেস-প্রিশিটা क्याणि देवक চৰনি তখন প্ৰাফিক মাধামের কাজ ছিল অনা ग्राथात्म ज्ञान्ते শিক্ষবস্ত্র নক্ষা তেয় করা। ইউজিন দেশারোরা তাকে বিকাবের বালীবছ কর্লেন ফ্রান্সিসকো গোইয়া ও'রে AZITO-তাম্পে দামিষ্টে এবং হোগার্থ বস্তব্যকে জনসাধারণের সমাজোচনাম লক মধ্যে ছড়িরে দেবার জন্য এই মাধ্যমগালির লোৱেক হলেন. আর তুল্জে লোকরঞ্জন? লিকেপ্র লোকররপ্র নম্ভাক লিথোগ্রাফের উৎসসম্বানে ক্ষমতার তার পরে আসবে শ্রণা পর হুলেন গ এলেন পিকাসে মাতিস, বাক শিক্সে গড়ে তলতে চাইলেন বহিজাগতিক জগতের সে-জগত কি দিয়ে সমানতরাজ জগত। ক্ষেদ ভাবে গড়া হয়, তার ঘনিত পরিচর নেবার জনা যে কর্মকান্ড শরে, হল তাতে কোন মাধ্যম, কোন বাতি কোন কোন প্রকরণ বাদ গেল না। প্রতিটি গ্রাফক শ্র: যাধাম নিয়ে তারা নাডাচাডা করলেন। এ°দের কাজের ফলেই এলে। বিংশ শতাব্দীতে গ্রাফিক মাধ্যমে শিল্পচচার নতুন জোরার।

বিংশ শতাব্দির দিবতীয়াধে প্রিষ্ট ইউল্লোপ এবং আমেরিকায় গ্রাফক নাধ্যমে শিলপ্চর্চার মাজ ধারাগালির সংখ্য ভারত: বাসীর পদ্মিচয় ঘটানোর জন্য নিউ ইয়কে'র মিউজিয়ম অফ্ মডার্ণ আট-এর আন্ত-জ্বাতিক কামটি এবং ইন্ডিয়ান কাউনসিল অফ কাজচারাল রিলেশনস-এর যৌথ উদ্যোগে সম্প্রতি একটি গ্রাফিক প্রিন্টের প্রদল'নী ভারতের বিভিন্ন শহরে অনুডিঠত **ইউনাই**টেড ক্লেটটস অফ সান্তিস এবং বিডলা আক্রেডাম প্রদর্শনীটি আর্টের সহযোগিতায় কাতার ছারে গেল।

পিকাসো, য়াতিস কলকাতায় বসে রাক শাগাল ম্বাসন চলছের জা আপ উইলিয়ম হোটার, লাচিও ফণতানা লেনাড বাসকিন জা দৰেফে ফ্রিডনারণ হুন্ত্রে-সেবাফিন্যান মারা হোয়াণ উজ্ঞাসসের. ছারটাঙ পিয়ের সালাঞ মিরো, হানস উইলেম ডি-কৃনিত, আৰ্তনি কাপিয়ে আর্গিড ওয়ারহোল হ**ন্ত**্ৰোনব**্**গ ভিক্টর ভাসারেলি, বোসেফ আলবেস প্রমাথ বিশ্ববিখ্যাত শিশ্পীদের ছবি স্চরাচর দেখা बाब मा। এक माजी जिल्लीएसर केल जिल्ला-করেছি সভাে পরিচর বড়িয়ে সেবার জন্য केटमाकाना शानमाक धनानामाक^{े।} करन अक्या নিশ্চই কল্ব না যে প্রতিটি বিশ্বাত শিল্পীর शोकी क्रांद्र প্রদর্শনীকে স্থানপ্রাণ্ড ভাদের শিক্সক্ষেত্র প্ৰতিনিধিত্ব কৰ निमर्गन । आमारमञ् रमस्याद हारणव निमाणाद्यात काटक श्रामभागाति सना कक्षि कार्याण धकारिक यात्र अर्थनत्याचा প্রদর্শনীটিতে বিবেচিত হয়েছে। প্রতিটি প্রাফিক মাধ্যমে রচিত শিল্পবস্তু ম্থান পেরেছিল। তার মধ্যে যেমন এন-গ্রেভিঙ ভার পয়েন্ট এচিং একোহাটিন্ট সফট গ্রাউন্ড লিফট গ্রাউন্ড स्थरका विन्हें প্রভৃতি সহজ্ব সরল ইনতাল্লিও প্রিকট লিখোগ্রাফ এবং অফসেট-এর গ্রাফিক প্রিন্ট, উড-কাট উড-প্রিন্ট লিনো-কাটের মতন ঘিলিফ-প্রিচট এবং সিল্কাম্কন ও পোলেয়ারের মতন স্টেনসিক প্রিন্ট-এর বেমন সহজ-সংল ব্যবহার দেখা CSICT তিমনি নানা মাধ্যমের নানা রকম পরীক্ষা-নিরীক্ষাম্লক ও হৌগিক বাবহার গেল। সব সময়েছ যে এইসব পর শিক্ষা-নিরীক্ষামূলক ব্যবহারগর্বি নাপনিক অথে সাথকি হয়েছে এমন নয়। তান্দেক এ-ধয়ণের প্রীকা-নিরীক্ষামালক মাধ্যম ব্যবহার কারিগরী **एक टा**ब প্রদর্শনীতে পায়ণত হয়েছে।

731· প্রদশ্ৰীট দেখে বর্তমান লোচকের মনে হয়েছে, প্রদশানীটি গঠিত বিশেষ বিশেষ দেশের হয়েছে একটা ক্যেকটি বিশিষ্ট রৌতির শিল্পকে বাহ,লী ধরার জন্য। বলা য়ানোইটেড স্টেটস অফ আমেরিকা এবং বিশিশ্ট রুটীতগর্নার নাম, পপ আট অপ আর্ট ও মিনিম্যান্স আর্ট। য়াুুরোপীয় শিক্সীদের কাজের থেকেও মে-ধরনের কম্তু প্রদর্শনীর জনা সংগ্হীত হয়েছে—যা পপ আট অথবা অপ আট বা মিনিম্যাল আর্ট'-এর অগ্রাধিকারকেই প্রতিষ্ঠিত করে, অথবা নিজেশ দৈন। দিয়ে মার্কিণ শিল্পী-দের শ্রেষ্ঠতার স্বীকৃতি দেয়। প্রদর্শনীতে য়ে ধরনের কাজ দেখা গেল মাতিসের নিশ্চয়ই তার চেয়ে অনেক ভাল মাতিসীয় লিথোগ্রাফ এবং মিরেশ্র অনেক ভাল এচিং ছিলে।

এই প্রদেশ শতাবদী থেকে গ্রাফিক
মাধামগ্লিতে রচিত বিখ্যাত শিলপাদের
কাজের অন্যতম বৈশিক্তা ছিল মানব-জাবদ
সমস্বেধ তাঁদের ব্যক্তিগত ধ্যান-ধারশার
সরাসার প্রকাশ। বার রেশ এখনও পিকাসো
দ্বন্ফে, বাসকিন রন্তগেনবার্গ প্রমুখ
শিলপাদের কাজে দেখা বার। কিন্তু সমশত
প্রদর্শনীটি দেখকর পরে মনে হর
প্রদর্শনী-সংকলকের উদ্দেশ্য এই দেশবার
বে শিলপ্রস্তু অন্যনিত্র নর, দিলুক্সকু

স্বরং ব্রাট। সিল্পী শ্ব্র সিল্পের উপা-লান সিত্তেই সিল্পবস্ত নির্মাণ করেন।

আমা আমার লাল সমগ্র প্র ইরেরেলে এমনক খোদ মাকিনদেশেও প্রাফক মারামে শিশপ্রচীর এমন কাজপর ধারা ররেছে যাতে প্রাফক মাধ্যমে শিশপ্রচীর আদি এবং অকৃতিম কাম্ডানিকেশন কাংশানই সমতে রাক্ষত হক্ষে। তার কোন পরিচয় এ প্রদানীতে পাঞ্জা বার না।

তব্ প্রদর্শনীটিতে বা পেরেছি তা কর্ম কি? পিকাস্যের অনবদ্য লিনোকার ও লিথোগ্রাফ, আঁচে মেননের লিথোগ্রাফ স্থানন স্বারট,ঙ-এল লিথোগ্রাফ, কেন্যুড বার্লাকনের উড-কাট, স্ট্যানলি উইলিয় হেটারের এন্টোডং-সফট্যাউন্ট এচিং-অফসেট, রবার্ট রন্তশেনবার্গা-এর লিথোগ্রাফ ও লা দুব্বফের লিথোগ্রাফ মনে রাখার মতন।

—श्रुववयक्षम साह्य







মানসিক রোগ (৩৮)

আবেশিক বায় বোগের যে দুটো क्रमा चाट्य धवादा कत्मको छन। इत्र मिता खाराजा वहबाएँ। धकरूँ, भौतकात करत द्याश्वानम् दल्यो क्यादा। काम किए, धार्यन

बनवात मतकमा हरव ना।

(১) জ্বলোকের বরস চলিশ পার্য इलाइ। कात्मत शार्भात हरन अक्टे. अक्टे. शास्त्र भरत्रदेश । जामन्दरम राजाक निरमञ्ज स्वानात च्यानिम क्रांत्र-अवकावी हाक्रा - अध्यात बाकी अटन अवने, बादन क्रांट्य निया गरना-গ্ৰেব ৰা কোনো কোনোদিন একটা আধটা জ্ঞাস থেকেন। ছাটির দিনে ছেলেমেরেসহ সন্ত্ৰীক ৰেড়াতে খান, সিনেয়া দেখেন ইত্যাদি। কলেজে ভাল হায় বলে নাম क्ति। वहे गण्मा अक्षे स्वीक्त आहा। এক্দিন একটা ইংরাজী উপন্যাস প্রত পড়তে ভাতে এক চরিতের বরস হরে বাকে কলে তার যে অস্বস্তির বিকরণ দেওয়া ছিল --লেটা ভাকে কেম্ম হেন একট নাড়া শিয়ে হায়! আর সেইপিনই ब्राह्य धक्कम छोटक स्मृत्य बरमन, च्यारत सामवानः अत्रक्त करते क्रीवन्ते। ब्रंबा कांग्रेजा मिलान। अक्ट्रे क्रीकाशास हबाक अक्रिन निरम्भ मा? जानीन वक লৈরেমিব লোক মণার। ওলিকে চুলে বে भाष श्राक कामान रका त्नव हरा करना! দিন সময় আকতে ভিজে পদ্দে ।' ভাষনকার मक बामनान, ठाडी कता क्यांचा काविता দিলেন। কিন্তু বাড়ী কেরবার সময় তার ক্ষেত্ৰ মান হ'ত থাকলো ছালে পাৰ্ক থাকে, বেৰাদ কো ক্ৰিয়ে এলো!' সে बाख (चटक बटन जमानितन बक शान-शक्त क्यारक रककी क्यारकाम क्लिक क्यारकी मा। मध्यम् द्वारम के क्यान्याह द्वनम अठ कं क्यूटक जागरना, हुटन गांक श्रदाहरू, মেল্ল ভো ফ্রিলে এলো।' বিভানার न्दा का प्राच्य वद्यात के अक्टे क्या गल পড়তে লাগলো। একবার উঠে গিরে शाबात शास्त्र गर्य करा निष्म जावात गर्या शक्राप्तन। जात्तकक्ष शक्त शक्त ग्रह হলো। কিন্তু তার মধ্যে নানারকমের हिकिर्विक की अब "यान माध्यासम छा किए हे जांद्र मत दारे। मकारन विद्याना त्थाक फेंग्रेंट टेक्ट टम ना काथा व्यक् যেন আকাশছাওর। ক্লান্ত নেমে এসেছে। বেলা করে উঠলেন, শরীর খারাপ কিনা জানতে চাইলে স্থাকৈ উত্তর দিলেন বয়স ছরেছে এখন তো শ্রীর ভাঙবেই। দেখছে। मा हूल नाक बरताक। आका इरवर-अ य বয়লের ধর্ম।' রোজদিনকার মতই কালে বেরুলেন বাড়ী এলেন ক্লাবে গোলেন, কিন্তু দে রামবাব আর নেই। এ বেন এক नकून आह क्कं त्रामबाद्। वाक्षीत लाक्का এ হঠাৎ পরিবত নের কারণ ব্রুতে না পেরে শরীরে কিছা হরেছে মনে করে ভাষার দেখাতে বলে, রামবাব, বলেন, ভাভারে কৈ করবে? আমার তো কোনও ব্যারাম নেই! বন্ধ হরেছে? তাডো স্বারই হয়।' বাবে বারে ঐ বয়সের কথা বলতে থাকার তার স্থান মনে সদেহ হয় হয়ত वा धो बहुन व्यस्प बाल्क वलाई मान व्यानन ভর দেখা বিদ্ধেহে তাই অমন হাসিখুলী স্ন্ৰেণ্ রাভারতি পালটে গেল। অনেক করে আনাকে উৎসাহ দেবার চেণ্টা তিনি কলে চলেল। ছেলেমেরেরা এসে ভারে এখানে ছবানে নিরে বৈতে বলে। তিনি সংশ্বাদ ক্ষিত্ত ভাদের সংশ্বা আনদে ब्यान निरंड भाषान मा। क्यार प्रत्न इर्ड থাকে, ছুলে পাক-খরেছে, মেরাদ তো ফ**্রিরে এলে:। এই রক্**য় করেই বেশ কিছ্দিন কেটে জাল। তাঁর হঠাং ধাক্কা থাওয়া মনটা মেন জনেকটা সামলে নিডে পেরেছে। আবার কিছ, কিছ, করে হাসি-খুলি ভাৰটা কিন্তে এসেছে কিন্তু তা হলে কী হবে। এই চুলে পাক ধরার কথা, মেরাদ ক্লিকে আসবাদ কথা বাবে বাবে মনে আসতে থাকে। তিনি নিজের মনেই বলেন, এডো আছা জনলাতন হল! চুলে পাক, ধরেছে ভো কী হয়েছে? মেরাদ কি জানার धकांत्रहे कृत्सात्व। भवात्रहे त्या कृत्स्ताः। बद्दाका इव दान इदन। कारक की। छन्द क्षिक के कथान्ति जिनि जूनक नासन ना।

এক সময় বলভেন, 'আমালু মালের পেছমে ক্ষেট্ট লেগেছে।' অম্পিন হয়ে উঠতেল এ কথা বারে বারে মনে প্রভায়। এক এক সময় মাথার চুলে দুহাতের আঙুল দিয়ে মুঠো করে পরে টান দিতেন, বঙ্গডেন, 'जनामाजन!' किन्छ कममी छाटक ছाएए না। যখন তথন ঐ কথা মনে হাতে হতে তাঁকে ক্লান্ত করে তুলতো। তারপর আরও কিছাদিন পলে থেকে তিনি ক্লমে বলতে থাকলেন, আমি সভোন বোস হাড়ে চলেছি।' কমে চল পাকা আর মেয়াদ ফ্রোনোর কথা আর মনে আবে না। কিন্ত মধ্যে মধ্যেই অধ্যাপক শত্যেন বোসের চেহারাটা তার মনে পঞ্চে বারা। তাও বাডতে বাডতে এমন হল যে একসংগা বসে কাজ কন্ধতে পারেন না বই পড়তে পারেন না-বেড়াতে গেলেও কেমন ৰাখে৷ বাধো ঠেকে। े চেহারাটাই কেবল মনে পড়তে থাকে একদিন একজনের সংশা গল্প করতে করতে হঠাৎ কথা বশ্ব করে মনের সেই ছবিটাতে একেবারে নিবিশ্ট হয়ে যান। যে কথা শ্নছিল সে ও°কে হঠাৎ এমন চুপ হয়ে যাওয়ায় মনে করলো হয়ত কিছু অস্বিধে হচ্ছে তাই ভাষা-তাড়ি উঠে পড়ে পরে একদিন আসবেন বলে চলে গেলেন। রামবাব অপ্রতিভ इरलन किन्छू किए, क्यावात तरेण ना। এইভাবে বেশ কয়েক মাস গেল। **ভারপ**র আবার পট পরিবর্তন হল-ছেলের বাৎসবিক পরীক্ষার আলে ছেলের প্রাটা গোদা ঠিক্মত হচ্ছে কিনা কোনও অস্বিধা হচ্ছে কিনা-এই নিমে ছেলেকে বারে বারে প্রশ্ন করতে লাগলেন। স্থাবৈ নানা অভাহাতে মনে কলিয়ে দিতে লাগলেন—ছেলের পরীক্ষা এসে গেছে ওকে দেখো কোনও বেন অসংবিধে না ছয়! পড়াশোনা ঠিকমত হকে তো? নজৰ त्तरथा। अत्र श्रमीका अत्म त्त्ररक किना-ভাল করে নজয় দিও' ইত্যাদি। সমসে অসমত্রে কেবলই ঐ ছেলের প্রশীক্ষার চিন্তা তাকে উলবাস্থ করে ভুলাভে লাগলো। তারপরে বাস্ততা আর রইলো

मा-दक्षण 'दबरनद शदीका' वह कथागेह बाक्ष बाद्ध प्रत्न शफ्टल बाक्टना । अवन हुण ৰে নিজেই বলতেন—জাঃ এতেঃ আজা ভুতে পেলো। ছেলের পরীকা ছো আমি कि कत्रत्या-दिल्ला ज्याद भारतिका। छ। আমাৰ ভাষনা কেন? বতুসৰ। ভিনি সে-विष्ठा **धा**पट जान किन्छ के स्टब्स्स পরীক্ষা এই কথাই কেবল হবে ছবে ছবে জাসে। এক এক সময় নিজেই বলতেন-'এ যে আছা পাগলামিতে পেয়েছে। নাও তোমরা এর চিকিৎসা করাও। আর পার। যার না। ক'বছর হয়ে গোল কেবল এই धक्री-मा-धक्रो प्रत श्त्रशक शास्त्र। आह পাৰিনে। একী পাগলায়ি বসত। হতে হতে विकश्मा कहाताई ठिक इन किए তথনও তার লজ্যা—এরকম আন্ধেবারে কথা যার কোনও মানে নেই—তিনি নিজেই তা বোঝেন তব্ ছাড়তৈ পারেন না। এসব কথা এ-বয়সে ভাস্তায়ের কাছে বলবেল কি करता शथन जात किए. ऐभाश तहेरा मा তখন একদিন চিকিৎসা করানোর জনা হাজিল হুকেন। রামবাব, কয়েকদিন 5िकिश्मा करिया कि**डा इत्त मा श्राम कर्य** হানঃস্মীক্ষণ চিকিৎসা ছেডে দেন। মাস-তিনেক পরে তিনি আবার ঠিকমত চিকিৎসা করাবেন স্থির করে ফিরে আসেন। -এই তিন মাস তিনি নানারকম চিকিংসা করিয়ে মনে স্বস্তি পানান। তাই আবার ফিরে আসেন। দীর্ঘ প্রায় দ্র' বছর চিকিৎসা করিয়ে তিনি এখন সাম্প হরে আবার হৈ-চৈ করে থেলে বৈভিয়ে আনন্দে আছেন।

ব্যুড়ো হওয়া সম্বরেধ ত'র ভয় হঠাৎ তাকৈ একেবারে কাব্ করে ফেন্সে। প্রথম যোবন থেকেই তার মন নিজের উপযুক্ত প্রিষণান্ত সম্বদ্ধে একটা দ্বধা ভাব ছিল। কিন্তু প্রেষ হয়ে জন্মে পিজেয় প্রথশক্তিতে কম হওয়া অতানত ক্লানি-কর মনে করে তার হাত থেকে উপ্রার পাবার জন্যে নিয়মিত ব্যায়াম করা খেলা-ধ্যা করা হৈ-চৈ করা আনন্দ কথা—এই নিয়েই নিজেকে মাতিয়ে রাথতে—অর্থাৎ এই দিয়েই নিজের দুব্লতাকে ঢেকে রাখতে চেণ্টা করে এসেছেন। তারপরে যখন উপনাস পড়ে মনে আবার ধাক্তা শাগলো তখন সব কেমন তালগোল পাকিয়ে গেল। না পারলেন বাধকোর সংশ্যা দুর্বলতার বোধকে সহ্যা করতে না পারলেন অন্য কোনও উপায় বের করে নিজেকে রক্ষা করতে। এই স্বন্সের পড়ে ত[া]র অহাং এক পাকচক্রে ঘ্রতে **থা**কে। তারপুর সেই অহং এক এমন বৃদ্ধকে আশ্রয় করতেলা যিনি স্বনামধন্য শ্রেষ্ঠ মান্ত্র! এ-বাধও টিকলো না-যখন ছেলের পরীক্ষার সময় এগিয়ে এলো। তখন ছেলের সংশা একাষ্যতাদ ফলে আবার নিজের ক্ষমত্য-অক্ষমতার স্বলন দেখা দিল। এই-ভাবে একের পর এক মনে ধাক্কা যতে। এলো রামবাবার মন ততো টলে বেডে লাগলো। মনঃস্মীক্ষণের ফলে তরি নানা

व्यवस्थात व्यवस्थात काव मान करत जिल्ह আহমের শক্তি বেডে যাওয়ার ত'র শ্বাভাত্তিক সক্তে মানসিকতা ফিরে আসে নিক্তানে আৰু বেসৰ ক্টিল বৃত্তির সংগ্র জীয় এই মানসিক রোগ যুত্ত হয়েছিল-त्म **शाक्ताह**ना अथात कड़ा मम्हद नड সাধারণভাবে বিষয়টি বোঝবার জনো এক জটিলভার মধ্যে বাবার প্রয়োজন হত না।

(২) এক মধ্যবয়দকা মহিলার আহুং-লিক বায়া বোগের লকণ ছিল অনা এক मधामान मान्या याता विवादक श्रथम वर्गाको मध्यान मण्डावनात स्थान (प्रथा দেওয়ায় নানা কাগণে স্বামী-শতী উভরের हेक्नामानात्त रम-डाम नके कता रमख्या हवा। তারপর প্রায় ১৫।১৬ বছর কেটে গেছে-তাদৈর আর কোনও সম্তান হর্মন। ভবিষ্যতে সম্ভান হবার আশাও তারা জ্যাপ করেছেন সম্ভাম ভার। চান কিন্তু স্থার সদতাৰ হাৰ না-এই ধারণাধ জনা মনে দঃখ বোধ আছে। মহিলার মনে দঢ়ে ধারণা হারেছে—প্রথম সদতান নণ্ট হওয়ার ফলেই অভিশাদপাত সোগেছে ঐ ভাগের আছ দেবতার। তাই সম্তান আর তাদের হাব না। স্ত্রীর এই বিশ্বাসের কথা শানে শানে স্বামীরও মনে সংশয় দেখা দেয়। মহিলাটি আন্তে আতে লকাপিজা কঠীপ্রা নিরাকুল এত মঞালচণ্ডী করে একে একে অনেক প্রজা মানত নিয়ে সময় কাটাতে শ্রু করলেন। পরিচিতদের মধ্যে আলোচনা হতো-ছেলেপ্লে না হওয়ার थर्म निता नम्य कार्षेत्र तम फालहे। त्काम ভরালা না তাই মনও ভরলো না। সেখানে দেবদেবীর আসন পেতে মন ভরে त्तवात राज्यो हरणहुष । विषयु अरक भन ভর্মে না। সমস্যা দেখা দিল-তে দেবতার রুপ তিনি কংপ্রা করতে চান সে-রুংপর বদলে জানা দেবতার রূপ অস্পণ্টভাবে মনে জাগে। কিছ্তেই ড'র বাহিত দেবতার রূপ মশে আনতে পারেন না। নিজের পাপের ফল মনে করে প্রায়ণিচত করবার কথা ভেবে পশ্ভিতের মত চাইলে পণ্ডিত তাকৈ যে দেবতার রূপ আপন্ থেকে মনে আসে সেই দেবতার ধ্যান কথতে উপদেশ দেন। কিম্তু তাও সম্ভব হয় না। তিনি যে দেবতার ধান করতে চান ত: বদল করতে তার মন সরে না। হতে হতে অবস্থা এম্ন দড়িলো যে সময়ে-অসময়ে একটা অম্পণ্ট রূপ তার মনে আসতে লাগলো। কোন দেবতার হ'প সেটা তাও তিনি ধরতে পারেন না। মনে অসহা এক অশান্তির অবন্ধা সূতি হল। কিন্তু সেই ছায়াগ্ৰ তার মন থেকে কিছাতেই ভিনি দূর করতে পারেন না। এই দূবোধ্য অবস্থায় পড়ে মনে মনে তিনি অভ্যাতত আৰত হয়ে বান। হয়ে একটা মানসিক অবসমতা ও দৈহিক ক্লান্তি নেমে জাসে। তিনি আর মন দিয়ে প্রাও করতে भारतम मा। त्मरे अन्भार रामाम् छि কেবলাই তার মনে জাগতে থাকে। এই

অবস্থা থেকে উল্পার পাশার জনো জিনি श्रका खाउ पिर्मम। धककरम् श्रहाश्राम कारणा वागाम कन्नहरू क्रणी क्यांजन। नवस् कार्ड-- जाब हम काल हम--बक्डे काम भारत विक्रम् सम्भा सम्भा मन्त्रीक करन मा। दकाश करत यानाम क्लाटक दलका बाम । কদিন পাৰে এখাদনও অস্ত্ৰীৰ্যে দেখা मिल। राथम एवं समुख्या क्या हाटन समार्थ চান তা মনে আলে না। এখানেও একটা कारनार्थ की करन त्वस बदन खारून। ट्रन ফালের আকারটা ভার বং ইভানি कानहो है न्ना है इस ना। क नियम सद्याद এবাদ্ধ সেই একই অৰম্বা হল-সেই অস্পাণ্ট ফলে ভারি হাজার বার বনে জাপান্ত नागाना। मात्र सारम्य मा। स्था त्याम्ब क्यान्त माल्या त्वम व्यात्म मा। बहे व्यान्तिन िक काल एक्सा-बानाव वा**द्या**त स्थापके তাঁকৈ সৰ'দা পাড়া দিতে থাকে। মেলুরুর যাল্যার অভিতঠ হয়ে লোৱ প্রান্ত চিক্তিং-मृत्कत गत्रगा**लात क्**लिम। <mark>आह</mark> मृ" वर्णत চিকিৎসা চলে। এট সময়ের মধ্যে এক সময় সেই অস্পণ্ট কচেনা দেবতায় ধানায় প আৰ এক সময় সেই অস্পূৰ্ণ অন্তেম্য ফ্ৰালের আভাগ বিহুপেন করে পালাছতো ভার মান যোরাফেরা করতে থাকে ধারে ধারে তিনি সংস্থ হয়ে ওঠেন। এখন তার স্বাধা-রক্ষার অসহা ভাগিদে প্রেলা বা বাগান क्वाजाहीरे आप कवर इस मा। क्राहीरे किहा किहा अथने आहर-कान नारन ৰলে। তিমি বলেন-'খাড়ের ছত নেমেছে। রক্ষে পেয়েছি।'

কোথা থেকে কিসের তাগিলে তার ध-रहान छ। जब बहुल बला बहुत ना। শিশ্কালের অশোধিত কামনা ভেডরে বাসা বে'ধে থাকে। তার সংগ্রা বাধার ফল আক্রমব্যাত্তও জাড়ারে পাড়ে পরের জীয়ানে সমস্যাথ সন্টি করে—এটা হল মানাস্ক রোল সম্বন্ধে সাধারণ কথা। পায়কাটের সংখ্য আক্রমবাতি ও অধিশাস্তার (সাপার ইলো) শাসন জড়িয়ে গিয়ে সমস্য জণিল করে তলে আবেশিক বাম রোগের স্ভিট কপা। এই মূল কাঠামোর উপর প্রভাক রোগীর নিজম্ব কতকগালি কামনা-বাসমার শ্বন্দর মিলে বিশেষ বিশেষ লক্ষণের স্থানিট করে। প্রত্যেক রোগীরই রোগ স্কলে এবং বিশেষ করে হোগের সক্ষণ স্ক্রেন নিজের মনের বৈশিশ্টা কাজ করে থাকে। রোগ**ার** লিবিডো প্রিণ্টির বিভিন্ন শুরের মধ্যে দিয়ে চলে আসবার সময় অহং ৰে বিশেষ গঠন নিয়ে গড়ে উঠতে থাকে তার প্রদার পুরাগলকণের মধ্যে ধরা দিয়ে তার বৈশিশেটার পরিচয় দেয়। প্রত্যেক **মানসিক্** বোগাঁর স্মোগলকণ তার নিজম্ম বৈশিক্টার স্থিট। তাই রোগের নাম এক হলেও সেই একছ বোগের রোগাঁ প্রভাকেই প্রক-স্বত্যর।

— ज्यानिक निरंद





.

रश्रकाग्र

মহানগরীতে বহু বর্ণ - বৈচিত্রের করেকটি ছবি এসেছে। হিল্প ছবি প্রেম-নগর' ভারই একটি। ইন্টমানকালারের বর্গাটা এই ছবিটির প্রয়োজক ডে রামা নাইছে। নির্দেশক কে এস প্রকাশ রাও। স্কু সংযোজনা শচীনদেব ব্যানের।

ভারতের হবিব জগতের বিশেষ করে

ছিল্লী চলচ্চিত্রের জনপ্রায় ভারকা
রাজেল খাল্লা কার হেমা মালিনী ছবিটির নায়ক-নায়িকা। সন্দো অনানা সহচরিত্র চিত্রকে আছেন-আশাহকমার্
প্রেম চোপরা, র'মাশ দেও লাগা দেভিছে,
নাজির ক্রমেন, ক্রমিনী কৌলল শ্রেন্ডাচনা, মীনা-টী এবং আরো অনেকে।

আনহানগরের ছেট জমিলার কুমার করণ সিং বংশের ধারা প্রবাহের বাইরে



যেতে পারেন নি। ধন-দৌলত, মদের নেশা আর তার লাগোয়া মেয়েদের পিছা ছোটা-ছাটির জীবন। সেই উচ্ছত্থল স্থাবনের গ[ি]তকে থমকে দড়িতে হলো। মধ্য-বিস্ত খরের একটি মেয়ে কুমার করণ সিং-এর রাশ টেনে দাঁড করিয়ে দিল। মেয়েটি এসেছিল ছোট কুমার সাহেবের ব্যক্তি-গত সচিব হয়ে। মা (রাজমাতা) বত-কুমার আর তার দ্যা জামদার পরিবারের তানা'না মুখা-কৃশ্বীলব। ছোট-কুমারের সবই আছে, সবাই আছে-তব্ৰ জীবনের শানাভা দিনে দিনে বেড়ে উঠেছে। তারই প্রতিভিয়া রিয়ে পেশক্তায় মদের প্রানে নিজা-নত্ন মেয়েমান্যের মাছমহী ন্তালাস। উপভোগ করতে গিয়ে। লতা-একাণ্ড সচিবের জীবন-ব্রত হলো ছোট-

কুমার সাহেবকে উচ্ছ খলতার থেকে সরিয়ে আনা। সে চেণ্টায় লতা সফল হলো। ছোট-ক্মারের জবিনের গতি বুলিবাবা ফিরলো। অবস্থাটা োখে দেখলো না বড়-কলার। ছবির এক জুর, থঙ্গ চরিত্র এটি। এদিকে ফাঁকি দিয়ে সম্পত্তি হাত করার প্রয়াস, জতার সান্নিধ্য কুমারকে দরিয়ে রাখার চেন্টা E.A. 4 মত্যাচারী জমিদারের মূর্ত চরিত নিরে বড-কমার ছোট-কুমারের আকু মনের একটি কন্ট্রান্ট। রাজমাতা ভারে পারিবর্মরক শ্বন্দর মীমাংসাও করেন জমিদারী মাধ্যমে। অত্তরের স্পশ্ দিরে :WID-





কুমারকে কাছে টানার কোন চেম্টা করেন না ৷ ফলে ভেডি কুলারের বিচেছ**ি মনে** ত্যান ওঠে। মনের বিচোহ তার শিশ্ কাল থেকে। বিলাসিনী মা আভিজ্ঞা সম্বল করে দিন কাটিছেছেন। শিশ্র করণ সিং গড়ে উঠেছে আয়াত্ত দেনহে। সেই আয়াকে মানের নিগেশি গালী করে মেরে ফোলা হলো। ফিলোর করণ সিং সেই দিন থেকে বিদ্রোহারী মন নিয়ে চলাফেরা করেছে। স্মান দেখেছে ভার বাবা ভার মাথের অবহেজার দিনে দিনে পানসে**ত** হয়ে নিজ্ঞাক নিঃশেষ করে ফেলেছেন। মদের নেশায় স্প্রাও তার তথন থেকেই। মদ আর মেয়েমান্য-করণ সিং-এর কাছে এছাড়া যেন আর কোন জগত ছিল না। লতা সেই জগতে প্রতি আর প্রেমের লেখ দিয়ে মেঘ আনিয়েছে, ঘটনা পর-মপুরায় ঝরা বাদলে ছোট-কুমারের কাছে আরো ঘানন্ঠ হয়ে উঠেছে। <u>প্</u>লা^{ক্তে}উ নেশাগ্রহত একটা মান, যুকে এক অনাবিল প্রক্র-জীবনের পথে টেনে এনেছে। ঘাত-প্রতিমাতের মধ্য দিয়ে লতা-করণ সিং-এর

জীবনে প্রেমনগরের উঠলো। করণ সিং করেক লক বিরাট এক স্বেমা হম বানালো এবং তার নাম দিলো-প্রেমনগর। খল-নায়ক বড়-কুমার চুরির অপবাদ দিয়ে প্রকাশ্য নিয়াতনে এগিয়ে এলো। ছোট-কমার নিগ্রহ থেকে লভাকে রক্ষা করলো বটে, কিন্তু তাকে আর কাছে ধরে রাথতে পারলো না। রাজমাতাও ঐ ঘটনায় কিছ, উত্তাপ সৃণ্টি করে দিলেন। শতা ফিরে গেল। সেখানে হঠাং বডলোক माना-द्वीमित्र সংসারে মা বাবা, বোনদের নিয়ে এক অসহায় জীবন যাপন कदाल लाभारणा। मामा-द्योजिक নত্ন উপদ্রবে বিয়ে করতে রাজি বাধ্য হলো। বিয়ের বাস্তর উপস্থিত। ওদিকে নি**জেকে** ম.ভ ছোটকমাব অস,স্থ ওব্ৰুগ্ৰুর পান প্রয়োজন। লতার কাছে শ্রুভিবম্প ছোটকুমারের তা সম্ভব নর। লতার বিয়ের চিঠি পেরে অসুস্থ কুমার বিয়ে ব্যাড় এসে নিজ'নে पानी²वाप कत्रा । प्रत त्थरक वरत्व मा তা প্রত্যক্ষ করলেন। ফলে যা ঘটার ভাই ঘটলো। বরকে বিয়ের পি'ড়ি থেকে নিরে যাওয়া হলো। কুমার করণ সিং ত ধন প্রেমনগরের পথে। অসহ্য যক্তনা, নারী-িক আর মানসিক দুই নিয়ে বিশ্বস্ত, জাবনের ইতি করা ছাড়া তথন যেন তার কাছে আর কোন লক্ষা নেই। রাজমাতার জীবনেও টনক নডে। তিনি ছুটে বান লভার বাড়িতে। **ছোট-কুমারে**র অসুস্থতার কথা জানাতে এসে লতার তেখন অসহার ৷ বিয়ে मामा-दर्गीमञ् চরমে। প্রেমনগরে। লতা সব খানে ভাটলো সেই সরুমা হমে করণ-লতার অবের মিলন হলে।

—চিত্ৰরথ

ও°রা বলেন

ঃ সময়ে-অসমেয় 'আলো আছে আলো নেই' অবন্ধায় আপনায় পভিজ্ঞতা কেমন?

লঙা সেক্ষা আর কগবেন না বাড়ীতে বখন পাকি তখন না হয় বেমন-ডেমন, কিল্ডু ধর্ন স্ট্রভিওর শুটিং করছি। একটা বেশ দ্বামাটিক ইমাশনাল সিন আছে। অনেক্ষণ প্রসারেশন করে নিক্তেকে তৈরী করামা। ফাইনাল টেক হবে। অমনি এক ভুড়িত গেল সব নিভে। মডেও গেল্ চলে। ব্রন্ধে তখন কি অবস্থা। তবে এখন এটা তো নিভানেমিভিক ব্যাপার গা-সভয়া হয়ে গিরেছে।

বিবি' দেখেছেন? কেমন লাগলো?

না দেখা হয়ন। ঠিক ছিল, আমার

ক্রক প্রিয়জনের সংশ্য ছবিটা দেখব।
দক্তোগাবশত সে আমাকে চিরদিনের
মত ছেড়ে চলে গেছে। তাই ঠিক
ক্রেছিন-ঐ ছবিটা দেখবো না।

ঃ ছিন্দী ছবির কোন্নায়ক আপনাধ প্রিয়?

—র্ভেশ খালকে তো ডিম্পল নিয়ে কিয়েছে এখন ধ্যেতি আর সঞ্জীব ক্যার।

: ভারত ইংলাণ্ড টেস্ট সিরিজের ফলাফল কি হাত পারি?



—আশা তো রাখি আববাই বিতর। কুটবল লীগে মোহনবাগানের বিপ্রার আপনায় কেয়ন লাগছে?

—খু-উ-ব খারাপ লাগছে। আমি মোহনবাগানের সাপোটার। ভাষতেই পারছি না, ভাড়সংঘের মাত দশের কাছে কি করে হারল মোহনবাগান।

ঃ অভিনেত্ৰী না হলে ভবিষ্যতে আপেনার অনা কোন লক্ষা ছিলা কি?

— আমি তো তেবেছিলাম হয়
মিলিটালী ডাছার হবো নইজে
ঘরকদা করব। মাঝখানে কিছা নয়।
কিল্ডু ভাগোর ফেরে কি হয়ে গেলাম
দেখতেই পাছেন।

ঃ ঘরকারা করতেন কগালেন তা সাংস্যারিক কাজকমা, রামাণালা জানেন?

— জানি বৈকি জানি না মানে। তেজ-কই চিংড়ী মাছের মালাইকাবী, ইলিখ মাছের খাল এমন লীধ্ব না আছে। রীধ্নীও পারবে না।

ং ফেলে-আসা জনীবনটার কথা ভাবেন কখনও, কেয়ন লাগে?

—অভিনেত্র ইসুছি বলে স্বাভাবিক
জীবন্যাহায় থ্ব একটা পাথকি।
আমি কলিনি। যত্থানি সম্ভব
সকলের সংশ্ব আগের মুক্ত মিলেমিনে
হাসিখনি ফ্রেজাজেই থাকি। তব্
বাইরের স্থ বাধা-নিষেধণালো আমান আচরণে পাই সেগালো না রাখাশও
চলে না। মাঝে লাকে লাক সভাও
ফেলি সব বাধানিষেধ। তাই আগেগ জীবনটার কথা ভাবনে একটা হিংসেই

সর্মিতা মুখোপাধায়

হয়। মনে হয় আনেক স্বাধীন, আনেক প্রাণময় ছিলাম তখন।

ঃ এত কাজ আনন্দ আর জ্যাকের মধ্যে থেকেত আপুনার কথনত এক। মনে হয় নিজেকে?

— (একটা হেলুস) মনে হয় কখনও স্থনও। কি কাল্লান সঠিক বলতে পারবো না, নিজেও ব্রুবতে পারি না ব্রুটা মাচতে ওঠে মাঝে মানুঝ।

ঃ স্কুল বা কলেজ জীবনে কোন প্রীক্ষায় ক্থনত ফেল করেছন?

না না কথাখনও কমিনি ববং এক-বার ডবল প্রমোশন পেয়েছিলাম। ক্লাস এইট থেকে এক্কেবারে টেন-এ উঠেছিলাম।

: খবরের কাগজ নিশ্চরই পড়েন, ফোন্ পাতাটা আপনার সবচাইতে প্রিয়?

— খবংরর কাগজ হাতে নিরে সবার আগে আমি সিনেমা পাতাণীই খুলি —নতুন কি ছবি আসছে জানবার জনা।

ঃ স্টার সিস্টেম-এর আপনি পক্ষেনা বিপক্ষে এবং কেন?

—বিপক্ষে নিশ্চরই। কারণ নতুনের। নইলে তো সুবিধি পাবে না। স্টার



সিপেট্র থাকার কিছা সাবিধে আছে
ঠিকই কিন্তু নতুন তথাপুদের সাংখ্যাপ
না দিলে ফিল্ম ইণ্ডাপ্টিই বা এলাবে কি করে: জানি নতুন শিংপাদের
নিয়ে কাজ করায় আ্থাকি ক্যাক অনেক-তব্যুত কালব এই সিম্পেন দারকার হলে একটা বোশ দায়িত্ব কাধে
ভিত্রিত একটা বোশ দায়িত্ব কাধে
ভিত্রিত

েফিনেম অভিনয় করার প্রধান যোগ্যতা কি হওয়া উচিত?

- অন্তি। ৃত্তি না থাকলে অভিনয় করা কখনই সদত্ত নয় তা সে সিন্দেই হোক বা থিয়েগ্র। থামি যা নয়' সেই কাক্স যথন করতে হবে তথন অনুত্তি ছাড়া চবিগ্রাটিকে ব্যেধ কি করি জানব কি ভাবে?

ঃ দিলের শেষে শারিং অলক ফিয়ে এসে আপ্রদি কি কথেন?

-শার্বারিক ক্লাণ্ডির জন্য কিছ্মুক্দ রিপাক্স করতে হয়। রিলাক্স করতে করতেই ভাবি সারাদিনে কি কাজ করলাম। কতিকৈ ভালো হলো, কতে-টকু মনদ হোলা কাজ থারাপ হলে মাঝে মাঝে মনে হয় যদি আমার প্রচ্য লকা থাকত প্রিচালককে বলতাম খারাপ জারগাগ্লো বাদ দিয়ে আবার শাটিং করতি। প্রসা আমি বিতাম। কিন্তু সে আর গার্মীই কই।

—আলাপচারী

वाध्याक्ष्माण्य

আনুমতি কর্ম, তাহকো পটলকে
নিমেই শুরং করা যাক। পটল একটা চরির।
বাহোপেকাপের জগতের বাইদ্রে এমন চরিত কিছে বাস্ত্রিক দুর্গত। জান্তবন—আট লাইনে বারা, ও বতুই অস্থীকার কর্ম, মাথায় তালের কিন্তিং চিট্ থাকতেই হয়। না হলে ধ্যনুম এই আনিস্চিত লাইনে কে আর তার জীবন যোবন উৎস্পা করে ব্যেস ?

খাহোক, পটলকুমার ছবির জগতে গ্রোডা-কুশন ম্যানেজারী করতে একদিন, কথা দেই বাতা নেই, হুটু করে চুকে পড়েছিল। আব তাই, নিয়ে বেলি মিতিরের কি রাগা বললে, মনতে এ লাইনে কেন এয়েচ? এগাঁ?... বারোক্ষেকেল লাইনে কেন এয়েচ? আন মানুষ আরো ভারের হবের মোক জানো হারের কোহা যাত্রব কী?

ফিন্স লাইনে মোষ? শনুনে পটলের খ।
অবংখা। —ছা বাঁদেদা, এখানেও মোষ?
ভখন বেগদে মিডিরের কি বছুতা। সে
ভাবনে পোড় খাওয়া অভিজ্ঞ মানুষ।—ছা:
এখানেও। কেন, ফিন্স লাইনে মোষ থাকতে
নেই ব্নিয়? এই ষে তুমি ফ্লাকডালো ভ্রুকে
পড়লে, ডাগ্লিই তো একটি আছত মোষ!

একদিন বোম্বের সাল্ডাক্তক এয়ারপোটে এসে দেখি পরিচালক হাষিকেশ WICH!-পাধায়েও কলকাতা যাছেন। সংগ্ৰেয় বললেন ভালই হল। বেশ গল্প করতে করতে।... স্মার সেদিনই আকাশে ব্যাধ্য আহা কি sueaia আয়োজন। কখনও ইলসে গ'ুড়ি। কখনও কাংলা-গ**্রিড়।** নাগপ্রের মাথায় যেতে সেটা বে ইতিমধ্যে ভয়ংকর হয়ে উঠেছে—স্পণ্ট বোঝা গেল। বেছিং পেলন টাল-মাটাল। দ,চাঙ্জন হাড় হাড় করে বাম করে সামনেব সাঁটের প্যা**নেঞ্জারদে_র কৃতার্থ করলেন** ঘনে হল। বেগতিক দেখে অনেকে যেমন ভীডের বাসে দশড়ায়, এইভাবে ডিং মেরে দশভিয়ে উপস্থিত বিপদটা পাল কাটালেন। হাষিবাৰ; স্ক্রমন বললেন, আঃ ভূলে গেছলাম গলপটা।... পদা বিঘা জমিন' ছবির সময় আমনা বন্ধেতে। স্বাই ওখানে অপরিচিত। কোন গাঁড়কে ছবিটা করা হচ্ছে। বোদেবর শহরতলীর এবটি মার থারে আমরা সবাই মানে বিমল সংধেক্ষ্রায়, সলিল চৌধ্রী, ছোৰ, অসিত সেন আমি-প্রের ইউনিট-ই शांकि। पिरनद रवना कार्डे आर्थ्यकीत स्थाहन ষ্ট্রন্তিত্তে, রারে শৃধ্ এখানে শোহা। খাওয়া-দাওয়া বাইরে। রাডে চোখে ঘুম খাকে। সা। কারণ নরেক্দ্বাব্ গোটা রাত এঠে জোরে माजिका-धर्मि (शक्तनि) हानिया कान 🗀 🛰 আমরা কয়েকজন ক্পোকাং। একদিন আর্মি

আসিত সেনকৈ বলসাম, মণাই, এর হে একটা ব্যবস্থা ক্রপ্তেই হয়—

্সোৎসাহে অসিত সেন্--অবি<mark>লম্ভে কর্ন,</mark> আমি আছি।

হৃষিবাৰ বললেন, ঠান্দা লিলিয়ার গুলুৰ শোনা, খুমণত বাজির কানে বাব করে জিল-নার মোহ পোড়ো খা বলকে নাকি মাজিকেন্দ্ মন্ত নাক ডাকা বন্ধ হরে বার। একবার প্রথ-বেন নাকি?

অসিত সেন সনিদশ্ধ দ্বীষ্টতে একবার নিপ্লিত লেখককে দেখে নিয়ে বললেন—বল-দেন।

'। —হাাবলভি ।

—তবে তাই হোক—বলে অসিভ ্সেন
নবেন্দ্ৰাৰ্ধ কানের গোড়াল বেশ আমিন তিনমার মোল পোড়া থা—মেন পোড়া থা— মোম পোড়া খা বসলেন। তামপুর মান্ত এক সেকেপ্ডের বিরতি, নিপ্লিড লেখক অংকাশ্য এই অবস্থাতেই বলে উঠকোন জুই খা—ছুই থা—তুই খা।

বেলৈ মিতির ক্ষতএব ফিল্ম লাইনে মোবের অভিওপ বিনা গবেষণাম বন্ধে ফেপেঞ্জে —এমন বলাটা উভিও ছবেনা। ক্ষিত্তু গালৈকৈ মোহ বলাটা হয়ত ঠিক হয়নি ভার। পটলা ক্ষতিবাদ হয়েতিল।

এই পটলকে একবার সৈনেযার নীরিকা খালে বের করার জন্য ক্ষিণনন্ত করা হরে-ছিল। নায়িকার অভাবে ছবিটি বন্দ হাষার উপক্রম হংগ্রছে দেখে সে এইন অসকসাহাসিক কাজের দায়িত্ব নিডে বাধ্য হরেছিল। পটল ট্রামেনবাসে বহু সাম্পারী তর্গী দেখে গেখে ভেবেছিল—এ এসন একটা কিছু গাল্লীভূতর রাপার নয়। তথন বেলৈ মিউরের ইন্ট্রী ছিল—ভাবলে এবার তুই মলি।

পটল কটে-টা দক্ষিণ ক্ষাকান্তার এই গালাস কলেজের সামনে। করেশো ইয়া মরেশো ভগাতে। ইনানীং বেদৈ মিন্তিরের ঠাটা তার সভা হয় না।

বিখাত নায়ক এরল জিন তাঁর আশ্ব-তাঁবনী আই উইকেড উইকেড ওমের্জ প্রেশ এমন সব ব্যক্তিগত ঘটনার উল্লেখ ক্রেডেন যে গড়লে ইয়ে ইয় মানে আবড়ে থেঁতে ইম। এর হিগুনের শো-মানশিপের বাদ্ভবিক ভূলনা হয় না। চেহারার জোরে বাশ্বিত্ব জোরে উর্ত্ত-

মিনাভা ব্ৰং ও শাল । ৬%

পি । তা ৰ ৬॥টা ংক্ত্ৰু তাৰুণোৰ আৰু ও আগামী-

कारमञ्जूष क्रमण्ड क्रिकामा। সময়েশ बसूब

প্রজাপতি

কালী বালাজী নিম্মলক্ষার স্থেন দাস প্রেমাংশ্রুপ্র শৈলের অ্থাজী অভর ব্যালাজী লিপ্তা মিত্র স্থাজিল সালাজ স্থেতা নীলিয়া স্থাজা চৌবালী এবং

দিলীপ সাম ও বালবী নশ্মী
আলো: ভাপল লেন নাটক: প্ৰায় ব্যাহী
গান: স্বাম নাশ্ৰমণত মণ্ড গ গলেশ বস্ত্ৰ
নাভা: সিন্দা নাট্ৰমণা
নিৰ্দেশনা: ব্যাহীশা



क्षाक त्म-बारशंद विकास, कुषास भागतीलक अरम्भ क्रीनके हा करवरकत, शत्मात कटा हरा ভাৰ স্বীকারেনলৈ আছে।

काब कर भरकोड हानि हार्मिकरमत ৰৈব্যাত সাই মাটোবালোগ্ৰাফী গ্ৰন্থ। এক ক্ষাম অসাধারণ। চলচ্চিত্রের সেই প্রথবী-জ্যাত ভিরম্বার তক্দিন যেভাবে ক্যামেরার आमारन करन भीक्षित्राहित्सन, रक्छे निनिहर ভালে বলতে পারেনি, মলাই এক 101053 আপেকা কর্ন, এই লোকটি দিবিভাষ্ট্রী হবে। বিভন্ত সময় প্রমান করেছে ্ঞাই শো-ম্যান্শিপ তল্লাহান। চালি **आर्थामा**स्त्र किन्नु स्वीकार्रहाई आहा। ७१५ बङ्ग ब्लामामाश्रक। এবং বোধাণ্ডতীন।

পটল এই দুয়ের আঝালাকি একটা প্রক্রিকা চেরেছিল। পেতে বাধা কোণায়? যে ভদ্নকোক ভাকে ইতেজিত করে একটা ভাষনায় পেণ্ডে দিতে সাহায়া করেছিল প্রাঞ্জ মতই বিরাপ মণ্ডবা করাক ভার অবদান পটেল তার স্বারিনে অস্বাকার করতে 'পারে না। পারা সম্ভবধ না।

কাটা-ট্র-কাট্ **কলেচের ছ**্টির সমর পটেল বহু হুব্যু মাগ্নিকা দেখেছে। কিল্ফু তার প্রভান হাজিল না। সে প্রায় রোজট বিরত **ম্বিজ্ঞান্ধ মানে ব্যাহের স্কান**ে দ্বিজ্ঞা থাকত। তার ধারণা—দে মেয়েদের [©]দকে নক্সর রাখতে। কিন্তু অলক্ষো পাড়ার ছেলের। ৰে তাকেও নজবে কথাছল-এটা সে ব্ৰুক্ত

পটলের সহকারী সানীলের জবানীতে শ্ন্ন খেছ প্রতিত কি হলো। স্নীস একদিন বলকে-নানা পট্নদার কিড্তি আর ৰি বলব। একদিন আনায় বললে সুনীৰ চল আজ এটা মেয়ে দেখেছি, দার্ণ, রাজী করাতে পারসে ও অনেকের ছুট্ট করিয়া

স্নীল অগ্তা গিয়েছিল। ছবি বন্ধ ছলে বিপদ্টা ভারতঃ দাদা, কলেজের সামান **গিয়ে পটল**ল। বললে ছুটির সময় সবাই **হাড়মাড় করে। বে**রিয়ে পরে। দাটো কে মান্ত্র চোখ। সবাইকে তে আর মান্তরে প্রে রাখা যায় না। আজ তই হাফ অমি হাফ--ভারপর হঠাৎ দেখি চারটে ছেন্সে দেখি এংস পটলনাকে চেপে ধরেছে। পটলুদা পরিত্রতি চেচাকে। শ্লক্ষাম, একটি ছেলে বলছে--

শীভাতপ নিয়মিতত 404 : 60-2202 প্রতি বৃহিঃ ৬॥ শদি রবি ও ছটির দিন ৩ ও চা৷ कुमाल प्राचार्वा है राष्ट्रम माउँक



• প্রিচালনা ঃ বণিক্ষ ঘোষ • আলো: ভাশস সেন ুপান্তৰে ঃ অভিকল, অন্তিখন, সভীবন खाबामाध, भकानन कदर ब्राइम्बर् । मांग्रङा विश्वाम



CAPTRON POWERS

রোজ রোজ এখানে কী করা হয় মখায়ের? পটল অকুডে। হয়—কেন বলান তো?

- জালে জানাদের প্রাধনর জবাব দিন -ভারপর ভাাপনারটা---

--এই ইয়ে মালে--

-- বলে ফেগান বলৈ ফেগান ..

পট্রনদা হো প্রাক্ত করবে সে উপায় কেন্দা, ধরা য়ে কাঁধ চেপে দেয়াল ঠেশে দাঁও করিয়েছে--আরে আপনাশ ঠিক ব্রুক্ত পারছেন না—আমি চিরোইন খ**্ড**ভে—

---ব্ৰ-পাড়ায় হিবরাইন **খোজা ছচ্চে**? পট্টলের কথা শেষ না হতেই ওরা—**আস্পেন্দা** আপনার কম নর তো...

সহকারী সানীল বললে—আমি **নাকিরে** পড়েছিলায় ভাগিলে নইলে উঃ—সুনীস শিহুরিত-পট্লদাকে ওরা **পার্কের** শে**ই**ন দিকটাম নিয়ে বাকে হাটা দিয়ে—

धकार एक वनल-गन् আমুরা নুরক্মই জানি, ইন্চিয়ান, ওয়েন্টার্ন --এখন বলুন কোন্টা আপনার পছন্দ--

এরপর স্নীল আর দাঁডায়নি। চলংক একটা বাস ধরে কালে পড়ে সোজা স্ট্রাছিল্য। পরিচালক ভদ্রলোক আংকে উঠে এর্ন, কি भव नाम -- हल हल हल ---

অকুস্থানে শেণছৈ জানা গেল, হাঁ সবই ঠিক, তবে তিনি হস্পিটালে।

স্ব শানে পাড়ার ছেলেরা **খ**ুবই দুঃখিত। জারে ছিঃ ছিঃ—ভা বলবেন তে। হে উনি ধায়ে।দেকাপের জনো গ'জছেন--আমবা ভাবলাম উনি বোধহয় পাসে নাল হিরেটন...

পট্ল বাড়ালী কিন্তু সৌভাগাবশতঃ আখবিশ্বত নয় আমার মনে হয় অদ্র ভারধাতে ও আন্তলীবনী লিখবে। হাতে গ্ৰাছিয়ে লিখতে পারে ভাই অংপাততঃ এটা আমি লিখে দিলাম, পরের গালো আশা হয় महरक्रे । जिल्ला राजारा

- तक्षन मक्स्मान

স্ট্রভিও সংবাদ

সমকালীন বাংলা ছবিতে ছিবো শুখু िट्या' मह - कारतक्षेत्र हिट्या'। अहे हित्रत्वर धरल अध्यक्ति नाथात्रश मण्करमञ्ज शहन-थात्रणा क्यान बस्तकारका जाएन अवने अमर किन स्थन ্তিরো কলতে বোঝাত ভাল মান্ত। লালট্র চেহারার শুব কদর ছিল। পাণিবার হাবতীয় ভালো কাল করতে হত। চরিচের সাধ্যাই ছিল প্রধান। সময়ের সংগ্র সংগ্রে মাল্যাবোধ পরিবেশ এবং পরিস্থিতি পরিবৃতি ত হয়েছে। িহরো' এখন আর দেবতুল্য ব্যস্তি নন। তিনি দোবেগাবে মিলে মানাম। তার মাবে ন্যাকা নাকা কথা কমেছে বোকা বোকা ত্রাসি মিলিয়ে গিয়েছে। ভাল ও মন্দর সংমিশ্রণে বিশ্বাস-ষোগ্য হয়ে পদার ব্বে ক্টে উঠছেন। ভাষতে পারেন সাম্প্রতিক একটা ছবিতে 'হিরো' চরিত্র আদ্যুক্ত দুস্চরিত।

रनाक्टोरक रमभून। छारना करत रमभून। পরনে ফিনফিনে ধ্রতি গরদের পাঞ্চাবি চোখে গোলেডন ফ্রেমের অকথকে চশমা। চল্মার কাঁচের মধ্য দিয়ে চোথ দুটি স্পন্ট। অভ্যাত ধীর স্থির প্রকৃতির। নিম্ম অবচ নিলিপ্ত। লোকটা এমন অসহায়ভাবে মাথা নুইয়ে দাঁড়িয়ে আছে যেন তার পায়ের ডলায় মাটি সরে যাতে । সে চলে যাছিল ! পিছ, ডাকলো সতেরো-আঠারো বছর বয়েসী একটি ছেলে। হ্যা ওরই ছেলে। দীর্ঘদিন পর এসেছে, কলকাতা থেকে। এসেছে এখানে এই বাড়িতেই। জারগাটার মাম ধরে নিতে হবে রানীপুর। বাডি নয়, বলা থেতে পারে এটা একটা প্রাসাদ। নিজের হাতে ঘর সাজিয়েহে লোকটা। স্বই নাকি ছেলের জন্য।

জন্মের পর থেকে যে ছেলে দরের বাইরে সেই ছেলে আজ দরে। কত আনভেদর ব্যাপার। কিম্তু ল্যোকটার অন্তরে কাইরে কোনোরকম প্রকাশ নেই। ছেলে উপলাঞ করতে পারে। কিছুক্তবের মধ্যে হাঁপিয়ে ওটে। দুত এই পরিবেশ থেকে নিজেকে মুক্ত করুতে চার। ১পণ্ট বলে: আমি কালই হিনাব ৷'

লোকটা অনুনয় বিনয় করে : পনেরো বছর পর আমার কাছে এলি শাুধা একটা ৰাতের জনা। তোকে নিয়ে আমার অনেক আশা ছিল রাজা_ুা...রাজাুশোন তোকে যে ক্রন্ রানীপার আনিরোছ সে শা্ধা মাুখে বললে ভুই বুখতে পার্রাব না। আনেক কিছু দেখতে হবে শুনতে হবে...:

ছেলেটি যত দেশৰে যত শুনবে অবাক হবে। দশকরাও। কারণ ছেলেটির পারস-শেকটিভ-এ দশকিরা সেখকেন ৫ লোকটা ভন্নানক স্বার্থপির আত্মকোন্ডক হিংদ্র কৃটিল अनः मिक्टेना अर्थात रभक्त कुछ्टक। अत জন্য কন্ত খারাপ কান্ত করতে পারে—নিজের **ब्हालदक्ड हेकार**ङ भारत ।

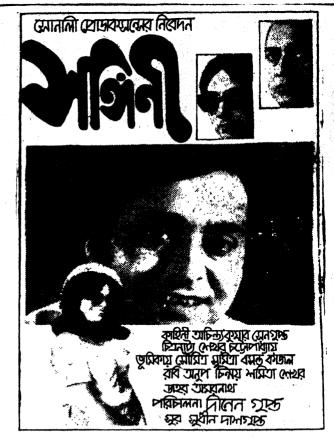
चटनरक्ट्रे बलारवन मृन्धीक 'खर्वना-এর খোলাস ছেড়ে ৰেরিয়ে এসে 'হ্রিরো' উত্তয়- কুমার কল্যান : বছ দিন পর একটা চরিত পাওয়া গিয়েছে । এই চরিত রুপায়নে যে

কি পরিয়াণ পরিমিতি বোধ ধাকা মরকার তা প্রভাক করা গোল তার সপ্রতেক অভিনরে। তিনি চরিরটিকে ব্যার্থভাবে ফ্রটিয়ে ভুলতে আভিশ্বা প্রোণ্রি পরিছার করছেন। চলনে বলনেই চরিদের মর্মর রহসা প্রকাশিত হক্ষে। বাদ্তবান্তি হক্ষে ভবেশ রঙ্গাংসের মানুহ। তা সে হতই খারাপ কাল কর্ত্ত না কেন।

প্রকল্প রাষ্ট্রের প্রথম ভারার আলো থেকে এসেছে এই লোকটা ভবেশ। এসেছে এ এম ফিলমদের বাঘবদনী ছবিতে। নাট্যকার-পরিচালক পীঘ্র বস্ত বিগত সংতাহে টেকনিসিয়ালস লট্ডিওতে শাটিং শ্রু করেছেন। রাজ্র ভূমিকায় অবতীণ্ ছরেছেন পার্থ মানেশাধ্যার। প্রধান দুই নারী চরিতের শিংপীঃ স্থিয়া দেবী ও মহুরা বারচোধুরী।

আস্থায়া ভট্টাচার্যের নিবেদন এই ছবির खारमाकां हर्शा महन्ती : शरमधा दम् । भिक्रम-निक्षणक : मूर्य हरद्वाभाषाह्य । अल्लाहक : देवमामाच हरहाभाषाञ्च।

পশ্চিম্বংগ সরকার বাংলা ভলাত্তত-শিকেশর উল্লেডফ্লেগ প'চিশ লক আণিকি সাহায়া মঞ্জুর করছেন এ-খবর एडा भुद्रतात्मा इत्य शिरतरह । अथम सामत्वन কিছু টাকা বায় করা হবে নতুন ছবি निम्पार्थ। करहाककान होका शास्त्रका स्थामा যাক্তে মাধবী দেবী টাকা পাক্তেম। ছবি প্রয়েজনা করবেন। আশাপ্রণ দেবীর 'স্বর্ণতা' তাবলম্বনে হবে এই ছবি। পরিচালনা করবেন : গ্রেলাস বাগ্চী। বলা वाइन्हा अधान नाती हतिरहा त्रापनान क्यारतम भाषवी एकती। श्रवान भारत्य **प्रतिहरू भा**ष সম্ভবতঃ অনিল চটোপাধ্যায়।



সগোরবে চলছে!

- প্রাচী - প্রিরা - শব্দারী - স্কিলা - যোগনায়া - জলকা - লারা श्रीकाम भ्रम हेकीक - क्यांजी - मीना - क्या - न्वह ।। श्रीवृश्चिर निक्छान श्राः जिः नीव्रविनक इवि ।।

অপ্রাজতা/রাজনী বসু ও ত্নিমা বিশ্বাস



আজ্ঞের বহ, - বিত্তিকতি নাট্যকার দিল্টীশ অজ্মদারের বহু-আলোচিত জনপ্রিয় প্শোগ্য নাটক

शालाभ काँछात

একটি সেট্

सृठुर

একটি না

প্রকাশনা ।: রবীন্দ্র লাইরেরী, ১৫ ব, শনমাচরগ ,দে স্মীট্র কলিঃ—১২



এই স্তে আর যে ক'লনের নাম কানে আস্ছে—ডারা হলেন ঃ মঞ্জা দে পলাধা নকেদাপাদায়ে এবং পার্থপ্রতিম চৌধানী। জীয়তী দে বনফাল রচিত আগানুন জনালো চলাজিলায়িত করবেন। পলাশ—ভারাশংকবের বিখ্যাত গলশ প্রতিমা এবং পার্থপ্রতিম ক্রমণকান্য পার্বিং পা্নরায় শা্রা করবেন।

কলকাতায় হিলিদ ছবি তৈরীর পরি-কংপলাটি নতুন নয়। এখানকার ফিল্ম ইন্ডাহিট্র সংকট মোচনের জন্য এই একটি প্রকৃতি উপায়ের কথা অনেকেই ভাবছেন। সম্প্রতি রাজ্য সরকারও এই প্রস্তারটি বিবেচনা করে দেখছেন। ইত্মধ্যে প্রয়োজক-পরিচালক দয়াশংকর স্ফাতানিয়া এবং স্থেন দাস কার্কর ভূমিকা গ্রহণ করে-१६न। श्रीम् मरानिहात व्यवमान स्थली। প্রিবতনি ছবিটি তিনি এখানেই নিম্পি করেছেন। আবার নতুন ছবি শ্বর্বু করেছেন 'কিডনে পাশ কিতনে দ্বর'। এ-ছবিতে গলপ দুটি। প্রথম প্রেরি কাজ প্রায় শেখ। বিভিন্ন চরিতে র্পদান করেছেন ঃ সমিত ভঞ্জ হীনা কৌদর রবি ঘোষ চিনময় রায় অজয় বন্দ্যোপাধ্যায় হারাধন বন্দ্যোপাধ্যাস এবং স্ত্রতা চট্টোপাধ্যার। দ্বিতীয় পর্বে

প্রধান চরিত্রে রুপদান করবেন জ্ঞানেশ মাুথান প্রধায়। মোটামাুটি একইভাবে স্থেন নাখ আচনা অভিনির হিন্দি চিচর্প দানে হ'ট হরেছেন। হিন্দিতে নামকরণ করা হয়েছে 'অনজনে মেচরান'। কলারে তোলা হলেছ। যথারীতি যুক্ষ পরিচালক ঃ জ্ঞানেশ মাুখাপাধায়ে এবং স্থেন দাশ। ভূমিকালিতে কিছু অদলবদল হয়েছে। প্রধান চিরতে রুপ দিক্তেন সমিত ভঙ্গা নারিকা কে হবেন তা এখনো দিবর হর্মন। তবে বোকে হবেন তা এখনো দিবর হ্র্না। তবে বোকে থেকে করেকটি বিশিষ্ট চরিতের প্রপাত আসক্ষেন ঃ ভানি প্রমণ্ডলশ পশ্মা খালা অথবা জরাশ্রী টি। শাুটিং শুরু হয়ে শিরতে গিরতের বিলিছা চিচগ্রহণে আছেন ঃ কে এ রেজা। সংগীত পরিচালনার ভালা নিরেছেন। অজয় দাশ।

আদ্র ভবিষাতে কলকাতায় একাধিক হিলিদ চিত্র নির্মাণের কাজ শ্রুম হচছে।
পরিচাপক তপন সিংহু মঞ্চমকল মাল্লকা
হিন্দীতে রুপায়িত করকেন। নায়ক-নায়করে
ভূমিকায় সঞ্জীবক্ষার শার্মিকা ঠাকুরের নায়
শোনা বাছে। অর্কণতী দেবী গোরকিশোর
ঘোনার ভৌলয়ে যাবার আলো ভাবল
ভাসানে তুলতে উদ্যোগী হয়েছেন। কলকাতাতেই সমস্ত শ্রুটিং হবে। দুই ভাসানেই
শাহুদ্ম সিনহার কাজ করারে কথা আছে।
নায়কা চরিত্র হারিকা কাজ করতে পারেন।

কলকাতায় ুহতের নাএলন মণ্ডব্য করা ঠিক নয়: াতুন ধরনের ছবি করার সাহস এখানে হ। তবে এই সংসাচস বিস্তার লাভ ারনি। কডিপয় ভর**ুণ পরি**-**हालक जटह**ा অনেক বাধা-বিপত্তির মধ্যে তাঁরা এক্সি াছেন। যেমন নাতিশ মুখোন পাধ্যায়। ভিঞ্জিন সূম্বার পর নতুন ছবির পরিকল্পনা গ্র**ু করেছেন** । **এবারেও স্**নীল্ দাশের কাহিনী থেকে। কাল মধ্যাস সমপূর্ণ আউটডোরে তোলা হবে। লোকেশন তানের নারে-ভূটান সীমানেত্র কাছাকাছি কোথান্ত। শ্ৰেনিদ্ৰ পত্ৰী ছে॰ড়া তমস্ক ছবির কাজ শেষ করে স্নীল গঙেগা-পাধ্যায়ের 'আত্মপ্রকাশ' চলকিপ্রায়িত করদেন এই মনদথ করেছেন। বিশ্লব রা**য়চৌধ**ুরী ^{বর্ণবিরণ}্রার কাজ শেষ করে নতুন ছবি শ_{ুর} করার চেল্টায় আছেন।

অতি সম্প্রতি মধ্য কলকাতার একটা বাড়িতে শাটিং হাছিল। বাড়ির ছাসে চিলেকোটায়। নামকরা নায়িরকা। খবরটা ছড়িয়ে পড়তেই রাশতায় ছিড়। বেলা বাড়তে ভিড় বাড়তে থাকে। তারণার এক-সময় জনতার দাবী—নায়িরকাকে নাচে নেমে আসতে হবে। সকলে তাকৈ নিকট দ্রুতে বেথতে চান। নায়েকা, অতএব নাচে এলেন। এসে দাড়িলেন জনসমস্কে। মাপা হাসি হাসলেন। জনতা শ্লুকিত হলেন। প্রথম করে উত্তর পেলেন। স্ত্রাং প্রশেষর পর প্রশন। শেষ প্রশন হ আময়া কি আপনার গায়ে হাড় বিয়ে এটু দেখতে পারি?

নায়িকা তথন চোৰে সাৰ্যে ফুল দেখ-

🖟 ্ স্ট্ডিও সংবাদদাতা

বাঙলাদেশের যুদ্ধ ও

যুদ্ধতিত্তিক ছবি

একার্যরের ২৫শে মার্চ থেকে ১৬ই ডিসেন্বর প্রবাণত যারা বাংলাদেশে ছিলেন ও বাংলাদেশের মার্ডিয়াশ্ব প্রত্যক্ষ করেছেন এবং পরবৃতীকালে শ্বাধীনেতার বাংলাদেশে নিমিত খুন্ধভিতিক ছবির' দশ্কি হয়েজেন তাদের প্রদান, এইসব পরিচালক ছবি তৈরীর ফান্য এতো কিছু পাকতে কেন বাংলাদেশের করতে তালেন প্রতিত্বী করে ছবি তৈরী করতে সেলেন

তাদের প্রশন, এই সব পরিচালক নিজেরা ন্ম্পান্ডান্তক ছবি তৈরী করার আগে বিদেশে নিমিন্ত ও এদেশে ইতিমধ্যে একা-ধিকবার, অসংখাবার প্রদাশিত কোন ব্যুম্থ-জিক্তিক ছবি দেখেছেন কি?

এবং আরো প্রশান, যুদ্ধের নর মাস অর্থাৎ ২৬শে মার্চা থেকে ১৬ই ডিন্সেম্বর পর্যাত এইসর পরিচালক কোথার ছিলেন? বাংলাদেশে ছিলেন কি? যদি বাংলাদেশে থেকে থাকেন ভাহলে এই নর মানের যাম্ম তারা কিডাবে প্রভাক করেছেন? একজন নির্ণায়, মৃত্যুভ্রকাত্র, সদাশংকিত বাংগালী হিসেবে কি?

কিশ্ত কেন এসৰ প্ৰশন?

প্রশন এই জন্য যে, বাংলাদেশের নয় মানের যশে ও যুন্ধপররতী কালে নিমিত যুন্ধভিত্তিক ছবি কয়চিতে মিলের চেরে অমিল ও গ্রমিল দশকের হুদ্যে শথেই দুরুখ বেদনা ও হতাশার জন্ম দেয়।

ইতিহাস সাক্ষী দেয়, বে কোন যুম্ধ, বিশেষতঃ মুক্তিযুম্ধ, সে দেশের চলচ্চিত্রের উপর ব্যাপক প্রভাব বিশ্তার করে।

ন্দিতীয় বিশ্ববংশের পর মার্কিন, ব্রটিশ, সোভিরেত, ফরাসী এবং অন্যানা ইউরোপীয় দেশের চলচ্চিত্রে যে সন্দ্রা প্রসারী প্রভাব বিশ্তার করেছে, তাতে স্বাভা-বিকভাবেই আহাদেরও আশা ছিল, এ দেশের নম মাসের রক্তক্ষয়ী যমে (ম্বভিষ্মেশ) এ দেশের চলচ্চিত্রের উপর ব্যাপক প্রভাব বিশ্তারে সহায়ক হবে।

কিন্তু হা হতোদিন!

অদ্যাদের আশা, স্বাধীতার **এই** তিন বছর পরেও দ্রোশাই রয়ে গেল।

চিশ লক্ষ জীবন, এক নদী রন্তের বিনি-মরে, দীর্ঘ নর মাস ধরে রকক্ষরী সংগ্রামের প্র, যে প্রাধীনতা আমরা অর্জন করলাম স্বাধীনোত্তর নিমিতি মান্তিযুম্পতিতিক ছবিগালোতে তার সতিকোরর ছাপ্ কোথায়:?

আর তাই বাংলাদেশে মাজিয়াও ভিত্তিক নিমিতি ছবি করটির কাহিনীকার চিত্তা-নাটাকার, সংলাপ রচিয়াতা ও পরিচালকদের প্রতি বাংলাদেশের দশকিদের উপরোভ প্রথানাক্ষী।

আমরা জানি, যুদ্ধের নয় মাস বেশ ক'জন প্রথমত পরিচালক বাংলাদেশে ছিলেন না। তারা বাংলাদেশ ছেড়ে প্রাণ্ডরে লক্ষাধিক শরণাধানির সংক্ষা প্রতিবেশী রাশ্ব ভারতে গিয়ে আধ্রম নিরেছিলেন।

আন্নালের জানানতে এইসব পরিচালক-দের মধ্যে যেমন ছিলেন জহীর রারহান, আলম্বানীর কবির, সভেষ দত্ত, আবদ্ধা জন্বার থান, তেমনি ছিলেন নরোরণ ভাষ, মিতা, মোমতাজ আলী ও হাসান ইমাম প্রম্থা

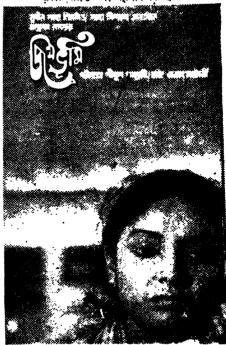
ম্ভিয়াদের নর মাস এইসকল পরিচালক ভারতে বসে কি করেছেল তা আমাদের
জানা নেই। ভবে কহীর রামহান সেখানে
গারে বে চুপ্চাপ বসে ছিলেন না, তার আমাণ
বা্দ চলাকালে জহির রামহান সেখানে মোট
চারটি প্রমাণা চিন্ন নির্মাণ করেছেন বা
আমাদের ম্ভিয়াদেরে রাডারটিত বিশ্ববিবেকের কথ-দ্যারে অভ্যান্ত সাথকভাবে

আঘাত হানতে সক্ষম হয়েছিল এবং ক্ষিত্র-জনমত অক্ষাদের মাজিবশ্বের ক্ষাতক জোরালো করতে সহায়ক হয়েছিল।

জহারের এই চারটি প্রামালানির লে-সমর্ব আমাদের মুভিযু-খকে কডটা এগিরে নিরে গোছে, তা নিশ্চর আজ আমাদের স্বার কাছে লগতা। জহার নিমিতি প্রামাণা ছবি চারটি হল (ক) স্টপ জেনোসাইড (খ) বার্থ অব এ নেশন (গ) লিবারেশন ফাইটাসাঁও (ছ) ইনোদেনট মিলিয়নসং অবশ্য অস্পীকার করার উপায় নেই, উল্লেখিত চারটি প্রামাণা চিত্র, যা আমাদের মুক্তির্বাধিত সামাণা চিত্র, যা আমাদের মুক্তির্বাধির সামাণা দিলাল, তা বাংলাদেশের স্কৃত্ত প্রেণীর তিলাভিত দশকি আজও দেখার সোভাগ্য অর্থন, করেন নি।

কিন্তু জহীর রারহান আৰু আর আলা।
দের রাকে নেই। বে স্থাণীনভার জন্য ভার
এতা তাগা, এতো কার্ড স্থানিকার, নেই
স্বাধীনোক্তর হাংগালেশ হানালারের ও
লান্তর্ভ মাতিতে, সব্বর চোধের সালনে এবং
প্রকাশা দিখালোকে (বাছবেরের ও শে
কার্নরোর্ভা) জহীর রারহান নিজ্ঞান্তর
আলোকিকভাবে, নিশোল হলেন।

দশক্ষের মতে— একটি বলিন্ট এবং দ্যুংসাহসিক ছবি • এবি



ন্ত্ৰী (০ ৬ ৯) ইন্দিরা (০ ৬ ৯) জরা নার্লাশুরী দিনন (হুলিরী) ক্ষমনা (চন্দনন্ত্র) নালা (কার্লাকশ্র) ক্ষান্ত্রী টেক্টেটী) কুশ্বহত (ব্যামান) ।। প্রতি সেমার্গ্র রাভ ১০॥টার বিবিধ ভারতীতে জনম্ভূমি-র' বিশেষ অনুষ্ঠান শুনুন।।

THE PERSON NAMED IN



অতঃপর বাইস্তের গেল। তিয়ান্তর গেল। এটা চুয়ান্তর। কিম্কু জহুরি আর ফিরে এলেন না। হয়ত তিনি চিয়কালের জন্মই আমাদের কাছ থেকে হারিয়ে গেলেন ও নিখোঁজ হয়েই ইইলেন।

আমাদের আজকের আলোচনার বিষয়-বস্তু বাংলাদেশের মৃন্ধ ও সরবত ীকালে বাংলাদেশে নিমিন্ত যুন্ধভিত্তিক ছারাছবি স-সাকে। অওএব অহারের প্রস্থা এখানে অপ্রাসাপ্যক নয় সরং প্রসংগরমেই আসছে।

কথা হল, জহার রায়হান একদা ছিলেন। তার প্রমাণ অবস্থ পাকিস্তান আমলে জহার 'জাবন থেকে নেরাদ্ধ' মত ছবি তৈরী করে পাকিস্তানের শাসকদের মনে একদা ভাতি সন্ধার করতে সক্ষম হরেছিলেন।

জহার একদা আমাদের মাঝে ছিলেন। আর তাই স্বাধীনতার আগে তিনি শেষট



মণ্ডরালে/ববি**তা ও জাক**র

দেরার বি লাইটেম মত একটি আন্তর্জাতিক ছবি নির্মাণে দুখপারে ও অকুতোভরে এগিরে এসেছিলেম।

এবং অহা ব একদা বাংলাদেশের
মান্ব ও মাটিকে সভিষ্ট ভলোবেসেছিলেন,
ভার প্রমাণ ছল, মুক্তিমুখ্য চলাকালে ভারতে
গিমেও ভিনি অন্য অন্যান্য আড ভাষাত
পরিচালকদের মত নিশ্চির না থেকে পরপর
চারটি মুক্তিমুখ্যভিত্তিক প্রামাণ্য চিলু তৈরী
করেছিলেন।

অথচ দাল যে জহীর আফাদের মাঝে নেই, তাও আমারা দিবালোকের মাত, চাদ ভারা স্কেরি মতোই সর্বাঞ্চল কর্মাছন কর্মাছন

ষে জহীর অবর্শ পাকিস্তান আমলে

'একুশে ফের্রারীর উপর ছবি কৈরী করতে
চেরেছিলেন যে জহীর শাত সহস্র বাধা
বিশক্তিকে বৃন্ধাণ্যলৌ দেখিয়ে 'জীবন
থেকে নেয়া' তৈরী করেছিলেন এবং 'লেট
দেয়ার বি লাইট' নির্মাণে হাত দিয়েছিলেন
যে জহীর যুম্পের নয় মাসে সুস্পূর্ণ একক
প্রচেটার প্রপর চারটি মাজিয়ুম্ধভিত্তিক
প্রমাণ্য চির বিমাণ করেছিলেন, সেই জহীর
যান আজ আমাদের মাঝে থাকতেন, ভাবি
নির্মাণ করেতিন, তাহলে হয়ত আজ আর
আমাকে এ আলোচনা লেখার জন্য কলম
ধবতে হতো না এবং বাংলাদেশের চলাচির
দর্শকদেরকেও আজ আর আশাভ্রেগর
বেদনায় মুষ্ডে পড়তে হতো না।

ধা বলভিলাম, জহীর নেই। কিচ্চু জহীর মদি আজও বে'চে থাকতেন, ডাহলে জহীর আমাদেরকে 'য'়েধভিত্তিক' এক বা একাধিক সাথকি ছবি উপহার দিতে পারতেন, এমন আলা আমরা নিশার করতে পারি।

জহার নেই হৃত্তু অন্য অন্যান্য প্রজান ধিক প্রবীণ নবীন চিচ্চ-প্রিচালক দে। আজও বেংচে আছেন এবং তারা ছবিও একটার পর একটা তৈরী করেছেন « করছেন। অথচ 'এক জহার; হা প্রেতেন 'শতাধিক প্রবীণ ও নবীন পরিচালক' দ্বো কেন বধাযথভাবে করতে পারভেন না ?

অবশ্য স্বাধীনতার পর মান্তিয় খেতিত্তিক ছবি যে বাংলাদেশে একেবারেই তৈরী হুরান, ভাও নয়। ইয়েছে এবং বেশ ক্ষেকটিই ইয়েছে।

বাংগাদেশে মাজিয়া, শভিত্তক এইসর ছার নিমাতাদের মধ্যে বেমন ররেছেন স্কুডার দত্ত, খান আভাউর রহয়ান, নারারণ খোল মিডার মৃত প্রবীণ পরিচালক, মেমাতাল আলমারী, ক্রির আনাল আলমারীর ক্রির আনাল ক্রেমান মডে আভিন্তা পরিচালক, মেমাতামি নিজের নাজ্য নালিক। ক্রিয়ালক বিশ্বাক বিশ্বাক ক্রিয়ালক বিশ্বাক ক্রিয়ালক বিশ্বাক করেছেন) পরিচালক বিশেবে কলে করেছেন) পরিচালক বিশ্বাক ব

বাংলাদেশের মাত্রিব্দেকে ভিত্তি করে মালতঃ এইসব প্রবাণ ও নবীনদের মাথে, দক্তবাব্ অধ্যোগদের অপিনসাক্ষী মেত্র-ভাক কালী স্বভাত বাংলা আনুন্ধ কালী

. .

वान्त्राक्ती' अवर हाची नक्षत्रन देशनाम 'बता क्राह्मका के जिल्लामा निर्माण करतन ।

अ क्राक्षा जानमगीत कांगरतर 'थीरत सङ आवार । कामकाशीय मुक्कामत कामाव श्राक्षमिरात्रक माकिर्म क्रांस्ट्रा कर् शासा हरत । जन्मान कामा हरत नहीं।

জনাদিকে খান আতাউর রচয়ান তবি 'আরাষ ডেব্রো মান্তে হ' এবং নারারণ যোব ফিলা ভার 'আলোর মিছিলে' বান্ধ নর **মাখ্য-পরস্ত**ী সাংলাদেশ বাংলাদেশের प्राज्यत्वतः यज्ञ प्राज्याक्ष । ज्ञारकत राज দিরেছেন এবং দিতে চেণ্টা করেছেন।

এ ছালেও পাংলার ২৪ বছর' ও 'বাংলাব মাখ' নামে দ্বটি ছবি নিমিতি ছজিল এবং অক্সত কারণেই আজও মার্ছি পায়নি।

অস্লাদের দরবার' নামেও একটি ছবি একদা নির্মাণের কথা পত্রিকাতরে প্রকাশিত খবরে জানা হায়। জানি না বর্তমানে ছবিটি क्रिय 'क्लिक्स 'फोर्चिस' तक्ती ठरव तरहष्ट এবং আলো আগামীতে নিমিতি হবে কিনা?

এখন মৃত্তিয়ুশ্বভিত্তিক ও ইতিমধ্যে মাছিলাত ছবিগালো নিয়ে আলোচনায় আসা

বাংলাদেশের মাজিয়াদেধর উপর ভিত্তি করে নিমিতি ও মাজিপ্রাপ্ত মোট চারটি ছবির মধ্যে আন্দের বাঘা বাংগালী ও মোমডাজ আলীর 'রক্তান্ত বাংলা' ম্ক্রিযুম্পভিত্তিক ছবি নয়। বরং উক্ত ছবি দ্র্তিতে পরিচালকদ্বর পাক বাহিনীর হাতে এ দেশের মা-বোনদের উপর ধর্ষ'ণকে ডিগ্রায়ণের মাধ্যমে 'ট্র-পাইস' আয় করার চেণ্টা করেছেন। ছবি দেখে স্পণ্টতঃ ত। প্রমাণত হয়। এ ছাড়া উক্ত ছবি দর্টির পরিচালকম্বয়ের বাংলাদেশের মুট্ডিয়নেধর উপর বাশ্তব যে কোন অভিঞ্তাই ছিল না, তাও এ দেশের যে কোন দশ কের কাছে কল্ডাকরভাবেই ধরা পড়েছে। ছবি দুটির ক্রাহ্মী, চিব্রনটো, সংলাপ-স্বই বাদ্তব বিবাঞ্জ'ত ও আয়ু মনগড়া। বিশেষতঃ 'বাঘা বাংগালীকৈ নাচগান ইত্যাদি যেভাবে জ্ঞাড় দেরা হয়েছে--তাতে ছবিটি একক^{থা}য় নিতা**শ্তই** নিম্নয়ানের ও র**্চি-বহিত্**ত।

সভোষ দত্ত আলাদের চলাক্তরের একজন প্রবীণ পরিচালক। একান্তরের ২৬শে মার্চে তাঁকে পাক-বাহিনীর লোকের। তার বাস। থেকে চোখ বে'ধে গাড়ীতে করে সাবেক গভনবর হাউসে নিয়ে যায় এবং সেখানে তিনি একটা অন্ধকার কুঠরীতে একনিন ও একরাত বৃদ্দী ছিলেন। পরে একজন ভর পদস্থ মিলিটারী অফিসার তাঁকে চিনতে পেরে গাড়ীতে করে তার বাসার পেণিছে দেয়। প্রদিন অবাংগালীরা তাঁর বাসায় আক্তমণ চালায়। তখন প্রাণভয়ে স্থানি পরের **চাত ধরে দত্**বাব**ু** পাশের বাড়ীর গোদালঘরে আশ্রয় নেন এবং সেদিনই তিনি ভারতের উদ্দেশ্যে রওয়ানা হন। অভপর বংশের নয় মাস তিনি ভারতে হয়কে বাংলাদেশ বেতারকেন্দ্র থেকে নিয়ামত चन्द्र न करतन।



অথাৎ মাডিয়াখের নয় মাস বাংলা-দেশের জনগণ কিভাবে বে'চে থাকার সংগ্রামে ' লিপ্ত ছিলেন পাক হানাদার বাহিনী এখানে কিভাবে অত্যাচার চালিয়েছে এবং ম্বি-যোশারা কিভাবে হানাদার বাহিনীর সংগ য**ু**ণ্ধ করেছেন, তার প্রত্যক্ষ অভিজ্ঞতা দত্ত-বার নেই। আর ডাই, তার 'অর্গোদয়ের আহিনসাক্ষীতে মন্ত্যুপেধর স্তিকারের চেহারা এমন কর্ণভাবে অনুপশ্থিত এবং দুঃখজনক হলেও সত্য আগের ছবি দুটোর মতো এ ছবিতেও 'ধব'ণ' রয়েছে। ধব'ণ-থ্নিত 'জারজ স্তান'কে নিয়ে সমসা--এ ছবির মূল বিষয়বস্তু।

অথচ আহরা, এ দেশের চলচ্চিত্র দর্শক-সমাজ, দত্তবাব্যে কাছ থেকে আরো সাথ'ক ও বাস্ত্র একটি ছবি আশা করেছিলাম। কিশ্তু দত্তবাবং আমাদেরকে এ ব্যাপারে সমপূর্ণ হতাশ করেছেন।

তাপরপক্ষে চাষী নহার ল ইসলামের মত একজন সদাজন্মপ্রাণ্ড তব্ব পরিচালক এ বেশের চলচ্চিত্রের ইড্জেড রক্ষা করেছেন। ও দেশের দশকি সমাজকৈ সম্পূর্ণ হতাশ ন! করে কিছাটা আশার আলো দেখালেন এবং কিছুটা সাধ্যমার বাণী শোমালেন।

চাষ্ট্র নজর ল পরিচ লিত 'ওরা এগারো-জনা এ দেশে মাজিপ্লাণ্ড প্রথম মাজিযালধা

ভিত্তিক ছবি। আর তাই এ ছবিতে কিছে কিছু অবাস্তবতা-কমেডীর নামে কিছু ভাড়ামী চিতায়িত হলেও এবং চিত্রনাটো ক্মবেশী দূৰ্বলতা থাকা সভেও ব্ৰীকার করতেই হবে, পূর্বে আলোচত ছবি জিনটির তলনার এ ছবিটি অনেক বেশী মাছিখাশ্ব-ভিত্তিক ও বাস্তব।

চাষী নজরংশের পিবতীয় পরিচালিত ছার 'সংগ্রাম' তার প্রথম প্রিচ্যালত ছবি 'ওরা এগারোজনের' চেন্দ্র অনেক বেশী পরি-ণত ও সফল এবং ম্ভিব্ৰাছবিক। এ ছবিতে আয়াদের মাজিয়াখ **অভ্যাত বিশ্বস্ত**-ভাবেই চিগ্রায়ত হয়েছে এবং এ দেশের দৃশ্কসমাজের ম্ভিয়্স্ডিভিক ছবির আকাজ্যা প্রণে বেদ কিছটো সক্ষ इ अहम

অবশ্য একটা যুদ্ধ বিশেষ করে মুক্তি-याम्य या अप्रतम मीर्घ नहा शाम कलाए, হিশ লক্ষ জীবন, এক নদী র**ক্ত নিয়েছে**, এ দেশের পক্ষাধিক পোককৈ চলে থেতে. ঘর-ছাড়া করতে বাধ্য করেছে— সে ধ্রন্ধকে সাথকভাবে চিনায়িত করা এমন কিছ সহজ-সাধা ব্যাপার নয়। বিশেষত দেশের সরকার-নাব সক্রিয় ও উদার সাহায়া ব্যতিরেকে এমন একটা অভ্যানত ব্যয়বহালে ও বাদন্তবানিত ছবি তৈরীর কাজ এ দেশের কোন পরিচালক বা

শিশ্য রংমহল প্রকাশনী

नमत हरहोभागारयव

याम, करवत रमस्य (विशय)

মিঠ য়া/স্মাত वामः करतम रमरम (व्यवस्थान) 18-०० জিলে।/ম্পলী : 0.00

मिठ्या (श्वतिशि) : 8.00 नानार बहुए। : 2.00 \$ \$.00

यका विमाक माळ कारे हम्भा 1 5.00 याम्: कट्सम रेमरण (बारला)

- ব**্**তম্

শেকা হারের গান 📍 রঙমহারের উপক্রমা दर्गालास्त्रत द्वन्त कथा সি. এল টি. অৰণ মহল • কলিকাতা-১৯ ৪৬-১২০০

टियानरक्त श्रीकात शरकते मन्छत नह धरः দ্রা র্বাভিয়ভো আকাশকুসুম স্বশ্বার।

বিদেশৰ ভানা অন্যাশ্য দেখে এ ধরনের বারবহনে কামে সরকার সচিয় ভারকা গ্রহণ করতে এগিরে অসেন। আমাদের প্রতিবেশী রাশ্ব ভারতও তেমন নজীর বহুবার রেখে-অংশ (সম্প্রতি সভাজিৎ রাধ পরিচালিক দিনী'রমন ছবি 'সোনার কেলার' জনা ভারত সরকার বেশ মোটা টাকার আথিকি সাহায্য शक्तं करवासन ।)

ক্ষিম্প্র আমাদের দেশের সরকার এ-সব ব্যাপারে আজও নিশ্বিয় ভারকা গ্রহণ করে

এমন কি এ ধরনের ছবি যা বায়সায়িক সফলতা অভেলি সহায়ক নয়, তেখন নিরীকাম শক ও পরীকাম শক ছবির স্না এ দেশে 'ট্যাকস রিলিফ'-এর কোন ব্যবহ্না

আৰুও হয়নি। অথচ ভারতে তেমন বারম্থা

প্রসংগত প্রতিবেশী রাখ্য ভারতে ফিল্ম ফাইনান্স কপোরেশন' অর্থাসাহায়া দেন। কিন্ত এদেশে তেমন বাকথা আৰুও চাল

এমর্নাক ভারতের মতে এখানে 'বাংসারক নগদ আর্থিক প্রেম্কারের'ও কোন ব্যবস্থা চাল্ড নেউ।

ইত্যাদি কারণেই এ ধরনের ব্যয়বহুল ম্বিয়্বধভিত্তিক ছবি নিম্পাৰে আমাদের পরিচালকরা দ্বভাবত সাহসী নন এবং সে কারণেই এ দেশের মাজিয়ান্ধ হান্ধের বিবিধ ঘটনাবহাল অভিজ্ঞাতিতিক ছবি নিমাণের পরিকল্পনা বা ঘোষণা ইদানিং আর শোনা सारक गा।

প্রথমেই বর্গেছ, একটি বন্ধ, বিশেষ্ট মারিকাশ যে দেশের চলচ্চিত্রের উপর ব্যাপন প্ৰভাৱ কিতাৰ কৰে। কিন্ত ৰাম্ভৰে আন্তা দের দেশের চলচ্চিত্রে এ সভা আৰু আ কোথাও খ'জে পাওয়া বাজে না।

তবে কি যুদ্ধের ভয়াবহ স্মৃতি 🚜 দেশের চলচ্চিত্র থেকে চিরভরে ভারিসে

কিশ্ত তাই যদি সতা হয়, তবে ভা হয়ে আমাদের জনা রীতিয়তো আছহতার ক্রায়িল।

দেশের সরকার, এ দেশের চলচ্চিত্রের সংগ্ৰাসংখিলণ্ট শত-সহস্ত চিত্ৰক্ষী এবং দেশের অগণিকে বাশ্ধজীবী 😸 জ্ঞানীগ্ৰাণী ব্যাপারটা দরা করে ভেবে দেখবেন কি?

—আনওয়ার আহমদ



(8)

দ্মিৰণ্য মিতের নাটক নিয়েই শারু श्रद्धांक्रम सामनाम श्रिद्धां।(तत क्रायाता। ভব: রামনারায়ণ তক'রঙ্কে নিয়ে প্য'য়ের আলোচনা শ্রু করার আশা করি সংধী পাঠকসমাজ অংবীকার করতে পার্বেন না।

बार्लात माधात्र तल्लामाला वा 'सामास থিয়েটার' প্রতিষ্ঠিত হবার প্রবে বাংলা নাটক শিখে হার৷ খাতি অজন করেন ভাদের মধ্যে রামনারায়ণ তক'রছের মাম সব অথমেই মান আসে। নাটাশালার ইতি-হাসে রামনারায়ণ প্রথম ন্যাটাকার তিলেবে কীতিতি। সাধারণের কাছে রামনারায়ণ **পরিচিত না হলেও না**টক বা নাটাশালা



সম্পকে থাদের বিদায়ার আগ্রহ রামনারায়ণকে ভারা সব সময়ই সকতন্ত্র চিত্রে সমবণ করে থাকেন। রামনারায়ুণ ভক-রতা সর্বপ্রথম যে নাটক রচনা করেন এবং যে বাংলা নাটকখানি জাতীয় নাট্যান্দো-লানর ইতিহাসে স্মারণীয় হয়ে আছে—সে নাটকখানি হলো 'কুশীন কুলস্ব'স্ব' নাটক।

'কুলীন কলসব'দব' নাটকের পাবে'ও বাংলা নাটক লিখিত ও অভিনীত হবার সংবাদ পাওয়া যায়। কিংতু উনিশ শতকের মধাভাগ থেকে বাংলা নাটক ও নাটকাডি-নয়ের যে আন্দোলন দেখা যায়—ভার মালে রামনারায়ণের 'কুলীন কল্সবাঁহব' নাটক তাই আনেকে কুলীন কুলসব্পবকে এই সময়ের প্রথম অভিনীত সাথাক নাটক বলে যেমন মনে করেন—ডেমনি রামানারায়ণকে সর্বপ্রথম সাথকি নাট্যকার বলে অভিনাদনত কবেন। তান নাটাকে ক্রান্টাকে করেই

সমধিক খা**ছ**ে হন। ১৮২২ খাল্টালে কল-কাতার পাশ্ববিত্তী হরিনাভি গ্রামের এক বিখ্যাত পান্ডত বংশে রামনারায়ণ ক্ষমগ্রহণ

নাটুকে রামনারায়ণ তক্রিতা

রামানারায়াণর পিতা প্রজ্পাদ রাম্ধন শিরোমণি ছিলেন একজন সুসম্ভিত। তাঁর পাশ্ডিতোর খ্যাতি সারা দেশে ব্যাশ্তি শাছ করেছিল। রামনারায়**ের পরিবারটি কে**মন বিদ্যার গোরবে প্রখ্যাত হয়ে উঠেছিল-তেমান পরিবারের দারিদ্রের খ্যাতিও কম ভিল না। লক্ষ্মী-সরস্বতীর চিক্তের বিরোধ য়েন পরিবারটিকে কেন্দ্র করে নতুন করে ধ্যায়িত হয়ে উঠেছিল। দারিদ্রের অসহনীয় জনুলা রামনারায়ণের পিতা রামধন শিরো মণিকে যেম পণীডত করছে পারেনি, তেমনি কানি তার প্রচদের বিদ্যান্ত করতে।

রামনারায়ণের জ্যোষ্ঠ দ্রাতা পশিওত প্রাণক্রফ বিদ্যাসাগর ছি**লেন সংস্কৃত কলেজের** অধ্যাপক। তাঁর পাদ্ভিত্যে**র খ্যাতিও কয়** ছিল না। প্রাপাদ পিতা **ও জ্বোঠ দ্রা**ভার আদর্শেই রামনারায়ণ গড়ে ওঠেন। বাল্য कारमञ्जे विमान्न তাঁর উল্লেখযোগ্য ধ^{ীশান্তির} পরিচয় পাওয়া **বা**য়। **হারনাভি** গ্রামের সাপুদিভত **মধ্যস্দ্ন বাচ>পতি**র কাছে রামনারায়ণের বাল্যাশিকাঃ ব্যাকরণ শ্ম,তি, কাব্য ও অন্যান্য বিষয়ে মধ্সদেন বাচম্পতি প্রাণ ঢেলে তাঁর এই প্রির **ছাহটিকে** উপযুক্ত করে গড়ে ভোলেন।

মধ্স্দন বাচস্পতির কাছে শিকা সমাণ্ড করে রামনারায়ণ ন্যায়াশাস্ত্র অধ্যানের কন্য প্রদিশে গমন করেন। ন্যায়াশালে **সুপন্তি**ত হয়ে রামনারায়ণ স্বদেশে প্রভাবতনি করেন এবং সংস্কৃত কলেজে ভার্ত **হুন। শেহ পর্য**ক্ত সংস্কৃত কলেজের সাহিত্য ও অলভ্কার শাস্থ্যে অধ্যাপক পদে ব্তে হন।

সংস্কৃত ও বাংলা ভাষার বহু নাটক কাব্য ও বিভিন্ন প**ৃষ্ট্ৰক রচনা করে স্বাম-**নারারণ খ্যাতিমান হরে ওঠেন। রাজনারাজনের



টামজিন্টার রেডিও ও রেডিওগ্রাম, টেপ বেক্ডার, রেকর্জ, পাখা, রেক্রিভারেটর ইক্ষাদি নগদ ও কিবিজে বিঞ্জন করা হয়। বেরাবডেরও কর্ম্বোবর আছে।

ব্ৰেক্ষিত এও কটো টোৱন **৩৫, গণেশ হস্তা-হাতিনিউ, কলিকাডা**-১৩। (WIN 1 48-8434

কবিৰণভিত্ত উপেকণীর নর। রামনারারণ বচিত প্রকাষক সংস্কৃত কাবাপাঠে সংস্কৃত ভাষার স্বাধিভত কাউল সাহেব তাকে কবি-কেগরীতে ভাষত করেন। রামনারার্গের কাব্যের আলেভিয়ের ঝংকার কবি কালিলসের নতেই অপ্রবিবলে তদানীশ্তন পান্ডত স্মাল মান্তবা করেন।

THE RESERVE OF THE PROPERTY OF

প্রহ্ সন্, সামাজিক নক্ষা পোরাণিক ও একাধিক সংস্কৃত নাটকের অনুবাদ করেছেন রালনারায়াল।

১৮৫৪ খৃষ্টালে রচিত 'কুলান কুল'-সর্বাদ্ব' নাটকৈ তখনকার কৌলিনা প্রথা ও অন্যান্য সামাজিক হাবস্থার একটা ছবি পাওয়া যায়।

১৮৫৬ খৃচ্টাব্দে চড়ক্ডাংগার জার্নান বসাকের বাড়ী কুলীন কুলসবাদ্ধ নাটক স্বা-প্রথম অভিনীত হয়। ইন্ট ইন্ডিয়ান রেলওয়ে বন্ধানীর বড়বাবা রাজেন্দ্রনাথ বন্ধো-গাধ্যায়ের তত্ত্বধানে সমাক বাড়ীতে একটি মণ্ড নিমিতি হয়ে নাটকটি অভিনীত হয়।

অভিনয়ে ছিলেন ঃ কুলপালক ঃ মহেন্দ্র মুখোপাধ্যার, পেটকুক ঘটক ঃ রাধাপ্রসাদ বসাক। পশ্ভিতবৃদ্দ ঃ জগুওদকুল ভ বসাক ও রাজেন্দ্রমাথ বানাজি । বেংলল থিয়েটাবের অন্যতম প্রতিষ্ঠাতা বিহারীলাল চট্টোপাধ্যার জনোক। স্থা চিরের আভানার করেছিলোন। চাবোর এথানে নাটকটি অভিনার হয়। ১২ বছরের বালক গিরিশাচন্দ্র এখানেই কুল্মীন্রুলস্বাস্থ্য নাট্রের অভিনার গোড়েন্ব আভিনার বালেন বালে

श्रकाभा । द्वरभाव रक्षणात कृष्टिकरमञ्ज्ञ क्रामिनार्व দ্বরতি কালীচরণ রায়চোধারী মহাশ্রের এক গোষণায় 'পতিরভোপাখ্যান' নাটক রচনা করে খাণ্টানের দ্বামনারায়ল ৫০ টাকা 2440 भूतम्कात माछ करतम। ১৮৫৩ अञ्चलात्म গোর খাংকর ভটাচার সম্পাদিত ভাস্কর এবং বাত'বিহু' পরিকার কেশিলনাপ্রণার अग्रमा निरंश नाएक ब्रह्मांत सना ६० होका পারস্কার খোষণা করা হয়। 'কুলীন কুল-সর্বছর' নাটকটি লিখে রামানারায়ণ ৫০ টাকা পর্রস্কার লোষণামত ও করেন। ভাস্কর পরিকাম বাংলা ১২৭১ সালে নাটকটির সমালোচনা প্রকাশিত হয়। স্বাগতিঃ গ্রাণ-দুনাথ ও গণেদুনাথ ঠাকুরের ছোৰণামভ 'বিধবা বিবাহ' নাটক লিখে রামানারায়ণ भाम' ठीका भारतस्वात बास करतन। नाइकिंछ স্ব'প্রথম ঠাকরবাড়াতে অভিনীত হয়।

জররাম বসাকের বাড়ীর অভিনয়ের পর গদাধর শোঠের বাড়ীতে কুলীন কুলস্বক্ষ নাটকের অভিনয় অনুষ্ঠিত হয়। ঈশবরচন্দ্র বিদ্যাসাগর এই অভিনয়ে উপাদ্থত থাকেন।

১৮৫৮ খ্টোকের ংরা জ্লাই চাড্ডার নরোত্র পালের বাড়ীতে কুমান কুলস্বসিক নাটক অভিনীত হয়। তথানকার প্রথাত সংগতি শিল্পী রুসপচাদ পক্ষী নাটকের স্ক-সংযোজনা করেন।

জাতীয় নাটাশালার ইতিহাসে মহারাজা যতীপুনোহন ঠাকুরের নাম **স্বর্ণাকরেই** লিখিত আছে। তাঁর অকৃঠ্ঠ প্তিপোষকতা ও উৎসাহে বাংলার জাতীয় নাটাান্দবাল্য নাদাদিক দিরে পরিপ্তি লাভ করে। রাজ্যারার্চানের
পরম উৎসাহদাতা ও প্রেটগোরক ছিলান
যত্তীদানোহন। মহারাজা যত দিরুয়োহন পাইকপাড়া রাজানের ছিলোন পরমহিতেহী কর্ম্ম্ব।
হতীদ্রমোহনের সাগের ক্রাজনার দেরেই জ্বন্যাণিত হন। কিংচু কুলান কুলারবিদ্দর
নাটকের অভিনর সংবাদই ভালের বেকাগাছিরা
বিয়েটার প্রতিষ্ঠার উপ্লেশ্ব করে।

গ্রতীন্দ্রমোহনের শরায়ণে ঠ ভারা সংস্কৃত 'রক্সাবলা' नापेटकरा অনুবাৰ রচনার माशिष রামনারায়বের ত্রপর करतन । চার মাস কেটে 10 727 'রত্যাবলী'র অনুবাদে। ৩১ জ্বাই ১৮৫৮ খ্টোবেদ র্ভাবলীর স্বাপ্রথম অভিনয় অন্-िटेफ इस। এই व्यक्तिस्स ताकात्मत रण হাজার টাকা খরচ হয়েছিল। বেলগাছিতা থিয়েটারে র্জাবলীর ছুটি অভিনয় পাওরা বাসু। অভিনৱে বহু- ইংরেজ প্রেবেরা নিম্নিত ভরেছিলেন। ভালের সুবিধার জন্য বেছাবলী নাট্কের কাছিনার সারাংশ ইংরেজীতে অনুবাদ করে প্রকাশ করা হয়। ইংরেজী অন্বাদ করেন কবি মাইকেল মণ্ডেন্দন দত্ত। 'त्रष्टावस्ती' साहित्तत् । जस्तास করতে বসেই নাটক রচনায় মাইকেল উদ্বৃত্থ

-कालीन मृत्थानाशास









মধাবিত সংসারের কর্তা রঞ্জবান্,
ত্রী, চার পরে এবং চার কনা। নিয়ে কারক্রেম্প দিন কার্টাচ্ছেন। বড় ছেলে
নিজ কর্টানকের কাজ করে, মেজ ছেলে
সম্প্রীপ প্রথম শ্রেণীতে অনাসাঁ নিরে
ক্রি এস-সি পাশ করে জার্মানীতে আরে।
ক্রিচ শিক্ষা গ্রহণ করবার জন্যে যাওয়া
ম্যির করে। রজনাবরে বিরোধিতা এবং
আর্থিক অবস্থার চাপ ওার উচ্চাকাঞ্চাকে
ক্রেম্ডারেই প্রতিহত করতে পারে না।
নিজে ভাইএর বিশেষ প্রশারে জন্মে চড়া
সানে টাকা ধার করে। এবং এর স্থীর
ফল্যকার নিক্রী করে। আরে সম্প্রীপর

২৫০০ টাকা এনে ওর হাতে তুলে দেয়।
মঞ্জিনার বাবাও তাঁর মোয়ের ভবিষাং এবং
বর্ জ্ঞাইয়ের উচ্চেশিক্ষার জন্যে
প্রয়োজনীয় অর্থ বায় করতে দ্বিধা বোধ
করেন না। এইভাবে মধ্যবিস্ত পরিবারে
প্রতাকেই ভাবে সক্ষীপ বিদেশ থেকে
মান, সুম্মান ও অর্থ নিয়ে ফ্রিরবে। কিক্টু
জামানিটিত গিয়ে সক্ষীপ বিদ্যা দিকার
মণ্যে বিশাসবহাল জবিপবারায় অত্যতত
হারে কেথানার নোহ কাটাতে না পেরে
প্রায় ক্ষা বছর পরে মার একাতে
ক্মানুরোধে দেশে ফিরে আসে মাকে

প্রকর্ম রায়ের সাথকি উপন্যাসের শোভন চিত্রত্প

দেখনার জনো। তবে কন্পনা আর বাস্তবে যে আকাশ ও পাতাল প্রভেদ তা জামানী থেকে ফিরে এসে সম্পীপের আচরণে স্পণ্টই বোঝা যায়। প্রশেচত সভাতার চোখ ধাধানো অলোয় স্বাদ্ধিপ

হারিয়ে ফেল তার প্রেসিডা। সংসারের প্রতি তার পারিত্ব আছে-সেটা মানতে সে অপারগ। তার অতীত হারিছে **যা**র প্ৰাৰ্থপৰ বৰ্তমানে। এদিকে বিগত দশ বছরে বজবাবার সংসারে নেমে এসেছে একের পর এক দ্রেগি। সন্দীপের **জনো** ঋণগ্ৰহত নিতা আত্মহত্যার পথ বেছে নেয়। তার বড় দিদিকে, তার স্বামী ডাইডোস[ে] করায় তাঁকেও এট দ**েখকলে**-জজরিত সংসারে আশ্রয় নিতে ছর. সন্দীপের মা ক্যান্সারে আক্রান্ত ছুন। অর্থাং এই দীন-দরিদ্র মধাবিত্ত পরিবারের একমার ভরসা কেবল মালকা। আজ সে ভীর প্রেমিকা নয়, সে ঝালিকে পাড়াছ এই অসহায় সংসারকে বাঁচাতে। সন্দীপের দুই ভাই জাড়েরে পড়েছে রাজনৈতিক দলের সংগ্যা **সরুলের এক** মাত সাম্প্রনা তাই মাপ্লকা, এবং সম্বল ভার সামান্য চাকরি। এই **পরিশ্বিভতে দশ** বছর পরে সম্পীপ যথন দেখে ফিরে আসে তখন পরিবারের সকলেই নতুন



করে বাঁচবার স্বান দেখে। কিল্ড সংদীপ সংসারের দৃঃখ-কণ্টের সংস্কৃতিয়ে পড়তে চায় না, কারণ সদ্য জামানী ফেরং म**उ**न नज़न कल्पना छात रहारथ। इठे।९३ একদিন ধনী বাল্যবৃদ্ধা তাপদের সংগ্ তার দেখা হয়ে যায়, আর তার একাত অনুবোধে সন্দাপ ভদের বাজীতে নায়। আলাপ হয় ও'ব আধ্নিকা বোন রিনির সপে। বিনির অন্রোধে প্রায়ই ওদের দেখা সাক্ষাৎ হয়। রিনিও সন্দীপের মধ্যে ছয়তো তার ভবিষাং প্রণয়াদপদকে খু*াছ পায়। কিন্তু মল্লিকা বঁচাবার সমরণ করিয়ে দের সন্দীপকে সংসারের প্রতি **তার দায়িদ্রের কথা। সন্দ**ীপ সেদি*া* তব্য বিশেষ নজর দে_র না। ওদিকে ছোট ভাইয়ের জেল হয়েছিল। অনা ভাইও ব্রাজ্ঞানৈতিক কারণে গ্রহত্যাগ করেছে। অপারেসানের জন্যে ক্যান্সার

হাসপাতালে ভতি কুৱা হয় অপারেশানের পরও জ্ঞান ফিরে আসে না। হঠাংই এক মাসের ছট্ট ফ্রিয়ে যাওয়ার সন্দীপ ফার্মানীতে ফিরে যেতে চাগ।

সংগী হয় বিনি, সে লংগনে যাবে
উচ্চ শিক্ষার জনো। এপিকে গলিকার
চাকুরী চলে যাওয়ার সে ছাটে থায়
এয়ারপোটে, সর কিছা জানিয়ে সংগীপকে
ফিরিয়ে আনার জনো। শেষ মৃত্তে
স্পদ্রীপকে তার কর্তবোর কর্মান্
নিজের আত্মতালের ক্যা জানিয়ে
গলিকাই তাকে আনার 'জ্বাভ্যিতে
ফ্রিয়ের নিয়ে আসো

অভিনরে রজবাবরে চরিত্রে কান্ বদেদাপাধারে এক কথায় অসাধারণ। মল্লিকার চরিতে নবাগতা সেন্মা দে মধাবিত্ত সমাজের দিংশ, দৈন্য ও কদেটর প্রতিটি

মাত্রতিকৈ যেনন ফাটিরে তুলেছেন, তেমন ছবির গোড়ার দিকে প্রণয়ভীর, ভর্ণীর চরিত্রে উনি অপার অভিনয় করেছেন। শ্রেন্দ, চট্টোপাধার (সন্দীপ), অসিত্রবণ (মিল্লিকার বাবা) দামতা বিশ্বাস নিতার প্রী), মুণাল মাখারি (নিতা), তর্ণকুমার (জামাইবাব্), অপ্শা দেবী (মা), সোনিয়া সাহানি (রিনি), শামল ঘোষাল (তাপস) এবং কণিকা মজ্মদার (ক্দি) প্রত্তেকই চিন্দাটা অন্যায়ী ভাল অভিনয় করবার চেন্টা করেছেন।

প্রবিতা তিনটি ছবির চেয়ে পরিচালক পাঁষ্য গাণগলো জনমভূমিকে
আরো বাচতবসন্দত ভ আক্ষাণীয় করবার
চেণ্টা করেছেন ক্ষেকটি দ্লোর চিত্রকলপ রচনা অভুলনীয়, আরু সোমা দের
অভিনয় তুসনাহীন। উনি সতিটি
অভুলনীয়া।



[.

किन कीर महत्ना रमफ्का रहाफ़ रमक

নালনাল বিষয়েটারে গিরিশ্চনের স্বীভার বনবাস' নাটকের অভিনয় বেলন জনপ্রিরতা অভান করে, নাটকটিও তেমনি স্থীজনের প্রশংসায় অভিনন্দিত হর। লযকুলের অভিনয় রাডিরে নিরেছিল সকলকে। এই অভিনয় রাজেরে নিরেছিল সকলকে। এই অভিনয় বার্তিক একাথিকবার অনেকেই বিরেটারে জাসতেন। নালনাল বিরেটারের ক্যাধি-কারী তথন প্রভাগ জহুরী। তিমি একাপন গারিশচন্দ্রকে বল্লেনা হ বাব্ বব দোসরা কিতাব লিখগে, ডব ফিন ওচি নুনো ক্লেডকা ভোডে দেও।

গিরিশ্চণন্ত শেষ পর্যক্ত তাই করলেন। প্রতাপ জহুবীর অন্রেরেধেই ল্বকুণের সংযোজনার জন্য লিখলেন লক্ষ্য বজনি নাটক।

প্রোতনে হতাদর

কোন একটী নাটক নতন ধখন আঁচ-**নীত হয়—তখ**ন শিলপীরা অতি BICE IS भर्ग खाँछनश करत शाकन। नाउँकि য ভই শ্রেনো হতে থাকে-তত্ট খেন সকলে ছেড়ে দিয়ে অভিনয় করেন। বর্তমানের মত তথনত এমনি অবস্থা ছিল। প্লাশীর ষ্ম্প তখন খুব জমিয়ে নিয়েছে। বজবিহারী ঘোষ নামে গিরিশচন্দের জনৈক প্রতিবেশী वस्यः नाउँकिषि (मध्य भाग्य इस । ब्रह्मवायः धककन भाव कक हित्यन। भट्टकात इतिरंड বাড়ী এসে 'পলাশীর যাদ্ধ' বিজ্ঞাণিত দেখে পানবায় তিনি অভিনয় দেখতে ষ্ঠান। দিবতীয় বারের অভিনয় দেখে প্রের মত তিনি পরিতাত হতে পারলেন না। তথন গ্রীপর্যম গিয়ে শিরিশচুন্দুকে বলুলেন 🤰 শ্রাতনে হস্তাদর কথাটি দেখাছ **অভিনয়ের বেলায়ত থেটে গেল** স

গিরিশচন্দ্র বললেন : কি রক্ম?

ক্তমবাষ্ট উত্তর দিলেন হ প্রথমবার প্রকাশনীর যুম্প দেখে এতই মুক্ত হয়েছিলাম যে এযারও দেখতে এলাম। তথন রালি রালি মুক্ত সৈনিকদের মধ্যে গোলার আঘাতে ভংক-পদ মোহনলালকে দেখে মন কেপে উঠেছিল। এবার একটী ঢালের ওপর মধ্য আমা অবস্থার মোহনলালকে দেখে করাণ হলো। হার মোহনলাল। থিয়েটারেও তেয়ার এত ছতানর।

नवाहे दहरत्र हेरेरक्षन ।

र, कामन दमगात

অংশিল্য শৈথরের বহ; প্রভাগেরমাত্র-ছের করা শ্নতে পাওরা যায়। এমারেলড থিরেটার সম্প্রদায় একথার নৌকো করে মফা-ম্বনে অভিনয় করতে বাচ্ছিলেন। সংখ্যা ইয় হন্ত। দেখা গোল একখানি ছিল সাম্পানের নৌকো অন্যান্ত করে ছাটে আসংহ।

श्राक्षित्रा बदल क्षेत्रेटला : क्षाकारकत्र ट्योदका । नवादे जालरांकक हरता केळाडा विकलीया श्रास शांक-माछ काछ काछ करत छेरालाम। कार्यन्य द्रण्यास समक जिल्हा जकनारक हुन। कारह থাকতে বললেন। ভারণর বেশকারকে ভাক-লেন। পোলাকের বাকস থেকে সাহেব আর ক্রনেত্রকানের সর পোলাক বের করে সকলকে দাজিয়ে দিতে বজেন। বেশকার তাই কর-क्ष्म । चार्यन्त्रामध्य मारस्य स्मात्व वन्तक हाटक स्तरत द्योदकात माम्रदन 977 क्पछारमन । जारहर करमणेवल সেতে অন্যানারা অধেপিদ্রশেষরের নিপেশিমত ডাকে ছিরে দাঁড়ালেন। ডাকাত দলের ছিপটি একটা কাছাকাছি আসতেই বন্দুক বাগিয়ে সাহেবী शकाश कार्यक्रमुप्तथत वाल হ কামস দেয়ার?

ভাকাতেরা মনে করলো নিশ্চরাই জল-প্রিলশের নৌকা। তারা মুহাতে ছিপের গাঁত-পথ প্রিষত্ন করে অদৃশ্য হয়ে গেল। স্বাই হাঁফ ছেডে বাঁচলেন।

विकि खेटन देवकव भन्नीका

গিরিশচনের 'চৈতন্য লালা' তথন অস-ল্ভব সাড়া জাগিমেছে। বহু বৈকৰ .a∢e পদ্যিতদের আহাদ্যুল **छ**ानिस्य নাটক দেখানে হতো। আবার অনেকে চবত-প্রবোদিত হয়ে নাটক ফেখতে আসতেন। শেষে এমন হালো আলেক বাজে লোক দেখে যেতে লাগলেন। একর ব পরচুলা মাথার বিয়ে এক টিকিধারী নকল পশ্ভিতকে হাতে হাতে ধরা হয়। নকল পৰিডত আৰু বৈষ্ণবদেৱ থিয়েটাৰ रमधान হিড়িকে স্বাই অস্থির হয়ে পড়ে। প্রথাত অভিনেতা প্রবোধন্দু ঘোষ একদিন বলুলেন : এবার থেকে টিকি টেনে পরীক্ষা করে দেখবে কে আসল আর কে নকল বৈষ্ণব?

অবশ্য গিরিশচন্দ্র আর টিফি টেনে আসল নকল প্রীক্ষা করবার অনুমতি দেন না। তিনি বলোছিলেন ঃ নফলরা কিতৃক্ষণ আস-লের ভাব নিয়ে থাকছে তেতে

শেয়াল কৃক্রে কাদছে

মিনাভার্থ থিয়েটারে অংকুরে নিনা নাটকের অভিনয় চলছে। রক্ষীরা আব্দেলসনকে বন্দী করে পাললা গারদে নিয়ে খাছে। আব্রু মা ওরে বাপরে—আমার কি হলোরে বলে কালাকাটি কচ্ছে।

কয়েকজন দশক কাহার সারে সার মিলিছে কেশদ উঠলেন।

অধেন্দিশেশর মঞ্চ থেকে বিদায় নিতে নিতে দশন্কদের লক্ষ্য করে মায়ের দিক চেত্র বল্লেন ঃ মা, আরু কংদিস মা। দেখনা ভোর কারো দেখে শেয়াল কুকুর কংদিছে।'

সমুদ্ধ নাটাগাই হাসিতে ফেটে পড়ালা।

ৰসনাজেৰ প্ৰভূথপদামতিত্ব

গ্রেট ন্যাশনাল থিয়েটারে রসরাজ অন ত-লাল বসুর হীরকচুণ নাটক অভিনীত বিজেপ্ নাটকাইতে ক্লাককে প্রক্রম মেগাগাড়ী
পেথানো হরেছিল। মঞ্চে হুইসিল গিতে
বিতে রেলগাড়ীর প্রবেশে নাটামোলিরা চনং,
কৃত হতেন। এই রেলগাড়ীটি তৈরী বংরে
প্রখ্যাত ইজিনিরাদ্ধ বেলগেন্দ্রশাখ মিয়। তিনি
ভাইভার সেকে গাড়ী চালাকেন। শব্দর
নিশান হাতে নিরে অমুত্রাল গাড়ি সেকেন
বাব্ ট্রেন চালিকে চ্লোছেন। হঠাও কলকলা বিকল হওরাতে ট্রেন বন্ধ হরে গেল।
নানান বিনুশাস্কর ধর্নি উঠলো। আন্তলান
ভাড়াভাড়ি সব্জ নিশান সরিরে লাল নিশার
উদ্ভিরে দিলেন। ভূপ পড়ালো। পরে টেন্টি
সরিতে নিরে পরীক্ষা করা হলো।

আমৃতেলালের প্রত্যুৎপলমতিতে নাটা-মোদির খাণী হলেন।

ন্বাৰা সিং মানে উপস্থিত

বেংগল থিয়েটারে জ্যোতিরিংদ্রনাথ ঠাক-রের 'অপ্রমেতী' নাটকের অভিনয় হছে। জনৈক অভিনেতা দুত্তের ভূমিকার মঞ্জে প্রবেশ করে বললেন ঃ মহাবাজ্ মার্নিসংহ 'বারে উপস্থিত।

কিন্তু ভয়ে সব প্রালিয়ে ফেলে তিনি বল্লেন : শ্বারসিংহ মানে উপস্থিত।

স্বাই হোতো করে হেসে উঠলেন।

এলো এলো একপাল যু, ধিণ্ঠির

স্টার থিপ্রেটারে দ্ব্রহান্ত নাটকে গিরিশচন্দ্র দ্ব্রেটারে তাভনায় করবেন। একে একে দ্ব্রা এসে যজ্ঞ ধংসের সংবাদ । সংবাদ পাভয়া মার গিরিশচন্দ্র ভীষণ মৃতি আর রক্তিক্ষা নেশে দ্বেশো শিশুপারা ভয় পের ১৯১৯ করে ক্পিডেন। ভারেকের সংলে মানে পাক্তান না। নেপ্রেটা তারেকর সংল মানে পাক্তান না। নেপ্রেটা তারেকর সংল মানে পাক্তান না। নেপ্রেটা তারেকর সংল মানে পাক্তান ক্ষিপতায় দ্ব্র্কর্যাণ্টি করে জ্বলে উঠিতা। রা-হর ধর্মনির ভীষণতায় দ্ব্র্কর্যাণিক্ষান্তর্যার করে জ্বলে উঠিকে। আভনমা চলা্ট্রা প্রথম দৃত্রে এই বল্পরে ঃ

মংব্রাক্ষ, প্রাণ যদি চাও, পালাও পালাও—এলো এলো রঞ্চদেতা হৈত্বর বেওাল।'—ইত্যাদি। কিল্কু গিরিশচ্চের ম্তি দেখে দ্তের্পী অভিনেতা অভিন-য়াংশ ভূলে বলে বসলেন ঃ

মহারাজ এলো — এলো—একপাল — একপাল মাজা যাধিতির।

অবস্থা গোচনীয় দেখে যিনি প্রন্তী কচ্ছিলেন দ্তোবেশী অভিনেতাকে ভিতরে আসবার জনা বল্লের আরে আর্—পালির আয়া কিংকতবি নিম্চ অভিনেতা প্রাচীন রের কথাই প্নেরাকৃতি, করলেন ঃ মহারাজ, পালিয়ে আর্—পালিয়ে আয়া

এদিকৈ হাসির রোলে মঞ্সূত্ ফেটে পজেতে।

ডুপজিন পড়লো। ভিতরে **বাইরে** তথনভ ছাবির রোল।

न्यूष हिष्ण ज्ञान



छत्रः क्षेत्रमात्रमा महमात्मम स्कान मध्य প্রথমে যেতে চার? এ প্রশেব সরাস্থি জবাব-এরিয়ানেস। হ্যা দঙ্গিতদারও ময়দানে এসে 5865 माला 5865 প্রথম কলকাতা সিনিয়র ডিভিসন জীগে থেলতে নামে এরিয়ালেনর জামা গাছে পরে। প্রতগতি আর নির্ভল দিশানার তীর সটের জন্য দশ'কদের নজর কাডতে শিশিরের খ্ব বেশী দেরী হয়নি। মাঠের নির্মিত যাত্রীরা অনেকদিন পরে আবার একজন গোলদাতার দেখা পেলেন। এই দলেরই ব্যানাজি'র ঠিক-নিশানার পর ফরওয়াডের সংখ্যা ক্রমে ক্রমে আসছে। কলকাতার দশকরা অনেক চোখন দোনো গোল দেখার সুযোগ পেয়েছেন গত দ্-এক দশক আগে। আর সেই সব গোলদাতার নামও অবিসমরণীয় হয়ে আছে-হাফেক রাসদ, ডি ব্যানাজি সোমানা নায়ার ধনরাজ মেওয়ালাল। আরও আগের যাগের 'সামাদের কথা এখন কিংবদন্তী। এরিয়ানে এসেই শিশির পরপর কয়েকটি ম্যাচে গোল করে দশকি মনে আধার প্রোনো আবাশা আগিয়ে তোলে। এখনকার পদাতি **অন**-

শিশির গুরু দক্তিদার

যায়ী শিশির থেলে দ্টাইকার হিসাবে, ভিতর দিকে। মানেমাঠে আক্রমণ রচনার সমর ব্যান্ধান্তার সংগ্র চিকতে স্তার্থি ইন বা লিংক-হাফের সংগ্র জায়গা বদল করার হতে তংপরতা শিশিরের একটা বাড়তি গ্রাণ।

শিশিরের ফুটবল খেলা সরে, চাঁহবল প্রগণা জেলা দলের হয়ে। ওর বাড়ী হালিশহার। স্বাভারতীয় দকল ক্রীডার আসরেও বাংলা দলে স্থান পে**য়েছিল।** এরিয়ান্স থেকে মহামেডান স্পোর্ট'ং দলে। দীঘ' একহারা টেহারার এই সবল গতিচক্তর থেলোয়াডাটকে পেয়ে মহামেডান দল গত ক'বছর জোর লাপটে কলকাতা প্রাংগ জাঁকিয়ে প্রতিশ্বন্দিত্তা চালিয়েছিল। তবে. শিশিরের খেলা সবচেয়ে উৎকর্ষ লাভ করে-ছিল এরিয়ানেস থাকতে। এ বছর ও এসেছে মোহন্বাগান দলে। শিশির জাতীয় জানয়র ফটেবলৈ বংলাদলে খেলেছে। এশীয় যুব ফটেবর্শেও স্বাদশের দলে সে স্থান পেয়ে-ছিল। সুব ক্ষেত্রই শতু এলবাত শ্রীব আর দ্রতগতির জন্য দশকদের বুড়িয়েছে।

শিশির এখনও অধিবাহিত। চাক্রী করে ভাক ও ভার বিভাগের অফিসে।

শ্লোহনেষাগানে লিশিরের খেলা সম্পর্কেও বলা বার বে, নতুন দলে ও এখনও ঠিক মানিকে নিতে পারছে না। তবে দলগতভাবে অনুশৌলন ঠিকমত চললে অদ্ব ভবিষাতেই শিশিরের খেলার চমক ফিরে আসবে। ফিরে আসবে ওর গোল করার সম্থানী সট্।

ক্টনলে এক একজন খেলোর্রাড়ের বেলাল্ল দেখা বান, সে প্রথমে যে পলিদনে খেলা ক্রে, করে, পরে সে পজিশন পরি-বর্তন করলে ভার খেলার উৎকর্ম নড়ে, বই ক্ষেনা। ভবে এই সঠিক জালগাটি শক্তি ক্ষির করে দিতে অভিজ্ঞ প্রশিক্ষকরাই পারেন।

ইণ্ট্ৰেণ্ডালের লেফ্ট প্রসার বাকে
শাল্লেল ঘোষের বেলাতেও এই ব্যাপার ঘটেছে।
কল্লান্ডা ফ্টেবল লাগৈ শা্মাল খেলা
আক্রুক্ত করে ১৯৬৯ সালে—খিদিরপরে
ফ্রানে। প্রথম দিকে ছিগ প্রাইকার। তারপর
সরে আসে হাফব্যাকের জায়গায়। প্রশিক্ষক
অমুক্ত ব্যানাজি আর গ্রবণি স্যাংচা মিতের
উপলেশে চলে আসে একেবারে ব্যাকের
জান্ন্যায়। ১৯৭৯ স্বর্শন্ত শা্যানল খিদিরপ্র
ক্রান্ত্রি ছিল। কলকাতা ময়দানে প্রথম

শ্যামল ঘোষ

ভিভিন্ন প্রথম মাচ খেলে মহাত্রেভান্ জ্পোটিং-এর বির্ণেষ। সেই খেলায় খিদির প্রের জয় হয় এক গোলে। সেদিন ভার মনে আনন্দের আধু সামা ছিলু না।

৭২ সালে শামল আসে মোহনবাগানে। প্রের বছরই ডাক পড়ে ইন্ট্রেগলে।

শামলের জন্ম ১৯৫৩ সালের সেপ্রে-ম্বরে, কস্বায়। ছেলেবেগা থেকেই ফটে-বলের ওপর ঝোক দেখে মেজদা রণাজং যোষ ছোট ভাইচিকে নানাভাবে উৎসাহ দেন। শ্যামশরা পাঁচ ভাই, এক বোন, বাবা স্বগতি। বেলের বিয়ে হয়ে গেছে। শ্যামল হল চতুর্থ পতে। শামশের সবচেয়ে আনন্দ হল ভার মাই তাকে খেলার ব্যাপারে স্ব থেকে বেশা উৎসাহ দেন। বিশেষ করে মায়ের প্রেরণা भागतन्त्र क्रिवेन त्यमार अधान ग्रामधन। এখনকার দিনের মা-বাবা যদি আরও বেশী মাতায় তাদের ছেলেনেয়েদের খেলাগ্লায় **উৎসাহিত ক**রেন্ ভাহলে দেশের ছেলে মেয়েরা আরও সপ্রতিভ, আর্ড স্বল, আর্ও আছাবিশ্বাসী হয়ে উঠবে। শ্যামল বলে বাজীতে মায়ের এই প্রেরণার সংখ্য মেজদার উৎসাহ মিলে আমার খেলার আগ্রহ বড় খেলোয়াড় হবার আগ্রহা বহাল পরিমাণে বাড়িরে দিরেছে। বাড়ার পরিবেশ ছেলে-आख्रांक्त लाषाभुष्ठा-रथलाश्रुणात अत्यान হলে কমে সমাজেও সংস্থ-স্বল চিন্তা ও মননশীলতা ব্ৰুম্প পায়।



কসবারই চিত্রজন হাইস্কুল থেকে পাশ করে শামল বিজ্ঞান নিয়ে সংরোদ্ধনাথ কলেজ পড়ছে।

কুশলী ফ্টবলার হিসাবে নাম ওর ছড়িয়ে পড়াত দেরী হয়নি। জাতীয় জানি-য়র ফাুটবলে বাংলাদলে স্থান পেয়েছে পরপর দা বছর। ১৯৭০এ তে। শান্ধলের নেড়ায়েই বাংলাদল ঐ আসরে চার্নিপ্রান ভাষাতে অজান করেছে।

কুশালতার সর্বভারতীয় দ্বীকৃতি লাভে
শ্যানলের বেশী দেরী হ্যানি ভারতীয় জ্যানি
রার ফটেবল দলেও দ্থান পেরেছে ৭০ ও ৭৩
মালে। শেষবার, অর্থাৎ গাত্রার তেহেরানে
তান্থিত এশীয় জ্যানিয়র ফ্টেবলে দ্বদেশের
অধিনায়কছের গ্রুদেয়িয়ওও পালন করেছে
শ্যান্থাই। ঐ বছর কোচিনে অ্রোজিত
জাতীয় ফ্টেবলের আস্রেভ শ্যান্তা বাংলা
দলে শ্যান পেরেছিল।

বাাকের পজিশনে খেলতে পেরে শ্যামলের বিছাটো বাড়াত সংবিধা হরেছে। এক-বিকে সে এটাইকারের মত দ্বত সট নিতে পরের, আবার জনাদিকে পরে অভিজ্ঞতার জল্যালে লিম্ক হাফের মত সামনের স্টাই-দুরদের বল এটাগ্রেও দিতে পারে। তাছাড়া প্রতিপক্ষকে হতে টাকিলিংয়েও শ্যামন খ্যা তৎপর। ওকে চট করে ফাকী দেওয়া সহজ

অভিজ্ঞ প্রশিক্ষক প্রদুগ্ধ ব্যানার্ক্তির
উপদেশ, আর বড় আসরে আরও বেশী
নামার সংখ্যাগ পেলে শ্যামালের ক্রীড়াকৃতি
যে আরও পাকাপোন্ত হরে উঠবে, তা বেশ
জোরের সংগ্রুই বলা হায়। করেশ, সবচেয়
ভাশার কথা ২১ বছর বয়দক এই তরংগের
নীড়াকৃশগভা এথন বাড়লিটি
যে দ্রেক বছরের মধোই বাংলা তথা
ভারতীয় দলের একজন নিভরিশীল বাফ
হয়ে উঠবে সে ভবিষ্যমাণী করা বার

তাসংকাটে। খেলার উৎকর্মসায়নের সংকা চেন্টা আছে কর মধ্যে এবং এ ব্যাপারে লে যে থবেই আলক্রিক, শামালের সংকা খেলা নিয়ে আলাল-অলোচনা করলেই ছোবা বারা। খেলা লেখার খ্যাপারে প্রশিক্ষক আচ্যুক্ত বানাজির প্রতি এই সপ্রতিভ জর্মাট খবেই কৃতক্ষ। অনাদিকে ইন্টবেশাল ক্লাবের ধবেই কৃতক্ষ। আনাদিকে ইন্টবেশাল ক্লাবের প্রসাধি প্রসাধি প্রসাধিক প্রসাধিক

বলা বাছ,লা, শামল এখনও অবি-বাহিত। ফুটবল খেলাই তান কাছে এখন থানকান। একদিকে বাড়ীতে মা আর লালার উংসাহ আরু অন্যানিকে যাঠে প্রানিককের সন্সেই নিলেশে গামল খোব আগামা লিনে ভারতীয় দলে প্রায়ীভাবে নিজের প্রায় করে নিতে পারবে বলেই আলা করা হায়।

গতবারের লীগ, শীল্ড ও রোজসেরি বিক্রমী এবং ডুরাণ্ড কাপের বানাস-আপ ইণ্টবেশাল দলের সফল অধিনারক ব্বপন সেনগ^{্ন্}ত এবার মোহনবাগান দলে চলে এসেছে।

এই স্বাস্থ্যক বিন্নী ছেলেটি কল-কাডার প্রথম ডিভিশন লীগে প্রথম খেলতে সারা করে খিলিরপার ক্লাবের পক্ষে। ইণ্ট-বেগগলের বিচক্ষণ খেলোরাড্সম্থানীরা ছেলেটির মধ্যে প্রতিভার ছাপ দেখেই চিনতে পারেন। ব্যুখতে ভাদের দেরী হয়নি যে, এ ছেলে কেবল প্রতিভাবান নয়, ফুট-বলের সনিষ্ঠ সাধকও বটে।

দ্বপন সেনগাপ্ত

ছেলেবেলা থেকে ফ্টেবলই ব্ৰপনের ধ্যান জান। নিশিক ভারত স্কুল ক্টিড়ায় তর্ম ব্ৰপন বাংলার ফ্টেবল দলে খেলার স্থোগ পায়। এছাড়া এশীয় যবে ফ্টিবলে ও ভারতীয় দলে নিজ ধোগাতায় স্থান করে নিয়েছিল।

ম্বপন সাধারণত খেলে রাইট উইংরে। শ্বসমর্থ সপ্রতিভ গতিতে বল নিয়ে ধার ংখে যথন ছোটে তথন প্রতিপক্ষ রক্ষণ-ভাগের খেলোয়াড়দের পক্ষে ওর নাগাল পাওয়া কঠিন হয়ে দাড়ায়। স্বপনের খেলার প্রধান বৈশিশ্টা হল বল ধরেই ও সরাসরি আক্রমণ চালার। প্রতিপক্ষ রক্ষণভাগ তছনছ করার ঝোঁকই সবচেয়ে বেশী। বল পায়ে ঘ্তগাঁততে লোডে দ্বপন প্রতিপক্ষকে কাটাতে ও>তাদ। আগেকার দিনে মহামেডানের ছোট ন্রে বা মোহনবাগানের মানা গাই ও निर्मात हारोंकि किश्वा देग्हें विशास म्यारनिय বিশেষভাবে এই গ্ৰাট ছিল। প্ৰতিপক্ষ থেলোয়াড় কাছাকাছি এলে বল এগিয়ে দিয়ে তারপর দুর্গতিততে সেই প্রতিপক্ষকে কাবধানে ফেলে বল নিয়ে বাওয়ার মত কণ্ট-সাধা, সাধনাজ্ঞ গুলু নিম্মাল চ্যাটাজ্ঞির পর অনেক দিন কলকাতার মাঠে দেখা ধার্মন। প্রপদ সেই গ্রাট আয়ন্ত করেছে। ওর বেমন গতির প্রতেতা আছে তেমান আছে সটের ভারতা। বল পেরেই সট নিতে পারে অপম। বু পারেই সমান সট থকোর ধ্রপন শেকট উইংছেও বেলতে পারে।

বাংলা তথা ভারতের শীর্ষ স্থানীয় ইণ্ট্রেকগলের মত একটা প্রথম প্রেণীর দলের অধিনায়কের দায়দারিছ বড় কম নয়। একদক্ষে মেমন দর্মকার ক্রীড়াবুন্দালতা, অনাদিকে
ভেমনি নিক্তার বাছিছা, ২৪ বছরের যুবক
ক্ষপন এই শুটি গ্লেরই অধিকারী। আরুকালকার খেলায় দ্বের সাফলোর ওপর নিভ'র
করে না, তা সাতা। কিন্তু দলগত সংহতি
অক্রের মাখতে বা খেলোয়াড়দের মনে জয়ের
অন্তর্পনা বোগাতে দানায়কের আচারআচরণের গ্রের্ছ যে অনেক, একথা খেলাম্বালা কেন, জীবনের সব জ্কেন্তেই স্বীকার না
করে উপায় নেই। গণত্তের যুবেও না।।

শ্বপানেরই নেতৃত্বে গত বছর ইংটবেংগল ক্লাব্র কলকাতা স্টুটবল লাগ আই এফ এ শাল্ড এবং রোভাসা কাপ বিজয়া এবং ভুরাত্ত কাপে রানাসা-আপ হরেছে। এ এক জননা কৃতিছ। একজন অধনায়কের পক্ষে এর চেরে জানগেদর বিষয় আর কি থাকতে পারে? কিশ্তু এতবড় সাফলোর পরও শ্বপনের আচরণে বা কথাবাতারি কোন রক্ষ জ্বাভাবিকতা লক্ষ্য করা যারান। সে নিজের প্রভাবিসাধ বিনরের সংগাই বলেছে, সাক্ষিততভাবে আগ্রার হয়ত তেমন কোন মৃশ্ত অবদান ছিল না, প্রশিক্ষক এবং সভাবিরা এই স্ব খেলায় আপ্রাণ প্রিপ্রম করেছেন। তবে আগ্রার দিক থেকেও চেণ্টার গ্রাটি ছিল না।

হ্যাঁ, স্বপন বড় ক্লাবের অধিনায়কের গ্রেক্টার সাথাকভাবেই বইন্তে পেরেছে। স্বপনের প্রতিষ্ঠা আছে। বড় হবার স্বান দেখতে পারে। স্বপ্নের সাধনায় টান পড়বে না।

প্রপানের গৈতৃক বাস ছিল বাংলাদেশের কুমিলা জেলায়। স্বাধানোওর পূর্ব পাকিস্থানের অন্য অনেকের মত্ই স্বপনের পরি বারের সবাই জ্পাড়িয়র মারা তাল করতে বাধ্য হয়ে প্রপান বাংলায় চলে আসেন। মানাবা আছেন। সংগ্রতি সে বিবাহিত। এখন ধাকে বারাকপুরে। প্রস্থাতঃ বলা বায় কুস্ট-



কাতা কথা স্ব'ভারতীয় আসরে কৃষিয়ার কাট্যবারসের অবদান প্রশাস সংগ্র উলেখ কর্মার হাত। অতীতে প্রকালের বহু কুণালী কুষ্টা কৃট্যবাল এলেকেন এই ব্যা-ক্ষাবিশী কৃষিয়া বেকে।

লে ৰাই হোক, যৌবনচন্দ্ৰল স্বপন জে ভার ছীড়াপ্রতিভার ম্লেখনে আর্ও বড় আল্লেম বৈতে পালবে, সে আশ্। ক্যার ব্যক্তি কালণ বয়েছে।

ক্ষকাতার দশকরা মরদানে নানা দলে জনেক তর্প এবং প্রায়-কিশোরকে খেসতে দেখেকেন। ক্ষিত্র প্রায়-কিশোরকে খেসতে দেখেকেন। ক্ষিত্র প্রায়-কামা দলের গোলসকার দায়িক বিশ্বজিতের মত কোন তর্নার এপার পড়েছে বলে জানা হার না। ইণ্টবেল্গা ক্রাবের নবাগতে গোলারক্ষক বিশ্বজিৎ দাস ইংবেজীতে ঘাকে বলে এখনও টিন এজেওঁ। বর্তমানে কলকাতা ক্রাবেল লালগে সম্ভবত বিশ্বজিংই ত্রণ্ত্র ধালায়াত।

বিশ্বজিং এখনও শ্রুপের ছাত। এ বছরই
এসেছে টালিগঞ্জ অগ্রগামী থেকে ইণ্টবেংগালে। কলকাতা ময়দানে থেলা স্বর্
ক্রেছে বলতে গেলে মাত ১০ বছর বয়সে।
৩০-৪০ দশকে এরিয়ান দলে সেন্টার
ফ্রোয়ার্ড সৌরেন দে মাত চোদ্দ বছর ব্যসে
প্রথম ডিভিশনে থেলার সনুযোগ পায় ব্রে

বিশ্বজিৎ দাস

জানা যায়। কিন্তু ভারপর বহ'নিন হল সবেয়াত কৈশোর পার হ'রই প্রথম গ্রেণার খেলায় সংযোগ পাওয়ার নজীব বড় একটা দেখা যায় না। তাই বল'চ বড় ক্লাবের ইতি-ছাসে বিশ্বজিতাই ভরণতম গোলরক্ষক।

কশকাতায় ১৯৫৭ সালে বিশ্বাজতের জন্ম। বাবা শ্রীপ্রোলাল দাস মার্কিণ্ট্স বন্দ কোম্পানীর অবসরখাশত ক্যাচারী। মাও জীবিত। এরা সাড ভাই অর দুই বোন।

বিশ্বজিং পরম প্রণ্ধান্তরে বলে তার ক্ষেত্রেও ফটেবল থেলার প্রাথমিক উৎসাহ আসে তার গাণাদের কাছ থেকে তবে তাকে ময়দানে সব প্রথম নিয়েই আসেন বিগ্রুত দিনের প্রথাত ব্যক্ত পরিভোব চরুবলুটা। সভিজ্ঞ, প্রবীণ পরিভোব চরুবলুটা। মানস চক্ষে দেখেছেন এই ছেলেভ একদিন কে দত্ত, ওসমানের স্মগোগ্রীয় কুশলী হয়ে

১৯৭০ সালে সাগার্গ সমিতির পক্ষ হুমে কাকতা লাগৈর হুতীয় ডিভিগনে বিশ্বজিং-এর খেলার আরুছে। পরের বছরই ৬ চলে যাল দিবতীয় ডিভিশনের স্বারান কাবে। ৬খনে তার জীডাচাত্য প্যাবেক্ষণ করে টালাগিল অগুগালী নিয়ে আসে প্রথম ডিভেশনে খেলাবার জনা। নিজের খেলার ক্যা-উংকরের কনা বিশ্বজিতের মোহন-বাগানের প্রজন কুশানী সাত্রের ও প্রাশক্ষ স্থাপ বানাজির প্রতি কুডজ্ঞা অফ্রেড।



কলকাতার ভেটারেন্স ক্লাবের বিচারে থলার কুশতা এবং মাঠে ও মাঠের বাইরে থেলায়াড়ী আচরগের জন্য বিশ্বজিং এবার শ্রেণ্ঠ স্কুল ফ্টেব্লার নির্বাচিত হয়েছে। এবংগ থেলোয়াড়ের পক্ষে এ এক অনন্য সম্মান ও ক্লীড়াচাতুর্যের স্বীকৃতি।

বিশ্বজিতের খেলার ধার যে ক্রমেই বাড়ছে, তার প্রমাণ ৭০ সালেই ছেলেটি জানিয়র বাংলা দলে স্থান পায়। এর আগে ৭২ ও ৭০এ নিখিল ভারত স্কুল ক্রাড়ার আসরে বিজয়ী বাংলাদলে বিশ্বজিং ছিল। ৭২এ মালপারে খেলার পর ৭০এ ইন্দোরে আয়োজিত এই ক্রাড়ার আসরে বাংলা দলের নেতৃত্বও করেছে বিশ্বজিং।

বিশ্বজিং রাজেণ্ডনাথ বিদ্যাতবনের ছাত। এ বছরই হায়ার সেকেণ্ডারী পরীক্ষা দিয়েছে ক্যাস্ বিষয়ে।

গত বছর কণকাতা ফুটবল লীগে টালীগল অগ্রগামী বনাম মোহনবাগানের খেলার কথাই বিশ্বজিতের সবচেরে বেশী

করে মনে পড়ে। সেদিন তার দল মোহন বাগনের সভেগ ১-১ গোলে খেলা শেষ করে নাম্মী দলের কাছ থেকে মূল্যবান প্রেন্ট ছিনিয়ে নিয়েছিল। গোল ক্রার জনা মোহনবাগান আপ্রাণ চেন্টা ঢালিয়েছিল। ফলে রক্ষণভাগের ওপর যে প্রবল চাপ এসে-ছিল তার মোকাবিলা করতে দলের সমগ্র রক্ষণভাগের সংখ্য তাল রেখে গোলে বিশ্ব-জিং কি অপুর্ণ দৃড়তার প্রিচয় দিয়েছিল, তা সেদিনের আস্রের দশকিদেরও মনে থাকবার কথা। ঐ দিনের ক্রীড়াপ্রতিভা দেখে তাভিজ্ঞ ক্রীড়ামোদী বা ক্লাব পরিচালকদের হনে নতুন আশা উ'কি দিয়েছে। তাই বিশ্বজিতের ডাক পড়েছে আরও বড় ক্লাবে, আরও বড় **আসরের প্রস্তাৃতর জন্য। এত** কম বয়সে প্রথম শ্রেণীর ম্যাচে গোলরক্ষকের গ্রেদেয়িত্ব পালন করতে আর কোন তর্পের ভাক পড়েছে কিনা জানা যায় না।



कलकाका कर्षेवल नीश

কশকাতার খরোয়া লীগ খন্টবল নিয়ে
গড়ের মাঠ এখন সর্গর্ম। চ্যান্স্যিনাশাপৈর
লড়াইও রাতিমত জামে উঠেছে। গত চার
বারের একটানা চ্যান্সিরান ইন্টবেল্পলের
অগ্রগতি অব্যাহত থাকলেও অন্য প্রধান
নোহনবাগান এখন কিছ্টা কোগঠাসা।
কোগঠাসা মহামেডান দেপাটিংও।

ইণ্টার্ণ রেলওয়ে বনাম মোহনবাগানের ভডল খেলাটিতে আই এফ এ দু পক্ষকেই এক পরেণ্ট করে ভাগ করে দিয়েছে। ভণ্ডল হওয়ার সময় খেলার ফলাফল ছিল ১-১ গোল। মোহানবাগান টালিগজ অগ্রগায় বি সংশ্যে ১—১ গোলে খেলা অগ্নীমাংসিত রেখে আবার প্রেন্ট হারিয়েছে। ইণ্ট বেংগল প্রেটিং ইউনিয়নকৈ ৩-০ গোলে এবং পুমারটালিকে ২-o গোলে প্রাঞ্চত করে। মহামেডান দেপাটিং গত সংভাচে আটার কাছে ১-০ গোলে এবং তার আগে কালী-ঘাটের কাছে পরাজয় বরণ করার লীগের লডাইয়ে এখন প্রায় ास्रादेशका / ইণ্টবেণ্যল এ প্রশ্ভ প্রেণ্ট ন্চ্ট করেছে একটি। মোহান্বাগান তিনটি এবং মেডান কেপাটিং সাতটি।

সিনিয়র ডিভিসন লীগ কোঠায় যাদের
অবিচ্ছাত এখন তলার দিকে তার। ইতিনগেই উঠে পড়ে লেগেছে নিজেদের অফিতর
বজায় রাখার জনা। গড়ের মাঠের ফার্টবলের
বিচিত্র পতিবিধির সংগে থাদের পরিচয়
রয়েছে তাদের সকলেবই জানা আছে যে,
এই অফিতছ বজায় রাখার জনা প্রকাশ্যে এবং
নেপথাে কত কঠিখড়ই না পোড়ে, কত
নোংরা যড়য়ণ্ডই না হয়। বলা বাহালা
এবারও সে সব জিনিস ইতিমধাই শ্রেয় হয়ে
গেছে এবং লাগ শেষ না হওয়া প্রাফর
ভারতা ম্যানারে নেপথা নায়্করা স্কিয়
থাকবে।

अभीना वाष्ट्रकरेवन

দিওলে আরোজত পণ্ডম এশীর মহিলা বাস্কেট বল প্রতিযোগিতার ভারত বোগ দেবে। এই উপলক্ষে ১৫ জন খেলো-যাড়কে ইতিমধোই নির্বাচন করা হরেছে। প্রে তিনজনকে নির্বাচনের কথা বয়েছে। নির্বাচিত ১৫ জনের মধ্যে পশ্চিম্বতগর লিশ্ডা ফার্টণডো, শিরিন কণ্টকটর, গ্রিলোচন কাউন এফ কার্পরো ও রাধা আরেশারও ররেছেন। নির্বাচিত পনের জনের নাম 2 কিরণ ত্রেওয়াল, কিরণ কাপরে, প্রেম সারেওয়াল ও লালতা সিং (দিল্লী) লিশ্ডা ফাটাডো, শিরিন কণ্টাকটর, তিলোচন কাউর, এফ কার্ণরে, রাধা আয়েংগার (বাংলা), শেলারিয়া জনসন (অন্ধ) রেখা সন্দে (শাঞ্জান) বলবীর কাউর (হরিয়নো), নীনা শ্রীনিধাসন, মেরি আদক্ষেল ও তারা (কণাটক)।

সাগর অভিযানে

আগামী নভেদ্বর মাসে একসংশারাস ক্লাবের উদ্যোগে ওড়িশার পাল্র থেকে ইন্দোনেশিয়ার বালি দ্বীপ প্র্যুক্ত পালা ভোলা নোকা বেয়ে হাবেন ভারতীয় ভরণে অভিযাতীরা। নোকাটির নাম দেওয়া হয়েছে টোদ সদাগর'। সম্প্রতি গাভেনরীচ রাজা-বাগান ডক ইয়াডে ঐ নোকাটি তৈরী শ্রে ইয়েছে। নোকা তৈরীর উন্বোধন করেন কেন্দ্রীয় জাহাজ দুওবের উপ্রাক্তী প্রীপ্রণ মহেথাপাধার। নোকাখানি লম্বা হবে ৩৯ ঘ্ট ৯ ইণি, চওড়া ১০ ফুট ৬ ইঞি। ঐ সহরের প্রতিবাদে আফ্রিকার স্থাতিম দেশার্টস কাউন্সিল ব্টেনের সংশ্ব প্রীদ্ধা সন্পর্ক ছিম করার প্রশ্বাব নের। ব্র্দিশ মান্দের্টবেল সংশ্বার বিন্দ্রার আফ্রিকার ক্রন্তাবের সমর্থনেই চীন শেষ প্রশ্বত সহরে বাতিল করেছে।

इक्ट्रेसाटम नकन रहेनिम मरक्या

যুক্তর্শের বিশ্ব ডিম টোনস সংকর্ষ প্রতিনবন্দা একটি টোনস সংকর্ষ ইট-রোপেও গড়ে উছে।

আগামী নভেদ্বরের মাঝামাঝি দ্বাদ্ধ সম্ভবতঃ ইতালী ফ্রান্স স্পেন প্রিছন দ্রামানী, ব্রেন এবং সংইচডনে এই সংক্ষার থেলোরাড়দের আসর বসবে। বিকশ্প হিসাবে ক্রীড়াস্চীতে অপ্রিয়া এবং ব্রোদ্ধলাভিরার নামও এপের তালিকার আছে। এই সংস্থা কোন থেলোয়াড়ের স্পেন ছাল-বৃদ্ধ হ্বেন। বিজয়ী খেলোয়াড়দের ভারিক প্রস্কার দেবে।

ইতালীয় ওপেন টেনিসের মহিলা সিংগলসে বিজয়িনী হরেছেন যুভরাভৌর তরণী জিশ ইভাট । ইনি ফাইনালে জেলাক্রেলাভাকিয়ার নাতিনা নাজরাতিলোভাকে হারান ৬—৩ ৬—৩ সেটে। প্রেবুর বিষরন বগা সরাসরি ৬—৩ ৬—৪ ৬—২ সেটে র্মানিয়ার ইলি নাতাসেকে হারিয়ে সকলকে চমংক্ত করেন। ব্রেরি ব্রুস মার্য ১৮ বছর।

খেলাধ্লা ঃ অত্ৰ, অন্ত

তেহেরাণে ভারত আমন্তিত

জ্লাইয়ের তৃতীয় স্পতাহে তেহেরানে যে ইরানীয় জাতীয় আছেলটিক ক্ষাড়া দল গঠনের জন্য আগামী ২০, ২১ জনে ভারতকে আমতের জানান হয়েছে। ভারতীয় দল গঠনের জানা আগামী ২০, ২১ জনে বাংগালোরে প্রাথমিক বাভাই প্রতিযোগিতার আসর বস্বো। জানা গেছে যে, মেমেদের পেন্টাপলনে যোগদানের জন্য দলেন ভারতীয় এথলাটিকে বিশেষভাবে আমপ্রব জানান হয়েছে।

সফর বাতিল

চীনা বাদেকট বল দল ব্যটেন সফর
বাতিল করে দিয়েছে। কথা ছিল চীনা দল
ঐ সফরে সাতিটি মাচ খেলবে। চীন অবশা
কোন কারণ না দেখিয়েই সফর বাতিল
করেছে তবে ওয়াকেফহাল মহলের বিশ্বাস
যে আফিকাকে সমর্থন করার উদ্দেশ্যেই
চীনের এই সিন্ধান্ত। ব্টিশ লামন্স রাগ্বী
ইউনিয়ন বর্তমানে দক্ষিণআফিকা সফররত।

वर्षि फिनारबंब अफिन्बन्दी एक ?

বিধ্ব দাবা চ্যাদিপ্রান মার্কিন খেলোযাড় ববি ফিসারের বিরুদ্ধে খেলার যোগাছ।
অজানের জনা রাশ গ্রান্ড মার্ন্টার আন্দাভোগি কারপ্ত ব্রাহাই পরে প্রতিশালয়তা
করবেন। এই খেলাটি হবে মান্টোর
অাগামী ১৬ সেপ্টেব্র।

আলি-ফোরম্যান লড়াই

এবার মুখিয়ে ধে বিশ্ব চ্যাদ্পিয়ানশীপ্র
আখ্যার লড়াইয়ের আসর বসছে অ্যান্তকার
হাররে (প্রান্তন কংগো)। এখানে আগমৌ
২৪ সেপ্টেম্বর বর্তমান বিশ্বচ্যাদ্পিয়ান
জল্প ফোরম্যান লড়বেন প্রাক্তন বিশ্ববিশ্বরী
তথ্য বহুখাতি-অখ্যাতির ধারক মহন্দমন্
আশী ওরতে ক্যাসিয়াস তের সংল্য।

লড়াই হবে জারথের রাজধানী কিন-সানায়। এখাদে এছ লড়াই আহোজনের জন্য এফটি সাইস ব্যাণক ১ কোটি ১০ লক্ষ ভলার গ্যাক্টি দিয়েছে, এছাড়া বসে লড়াই দেখার টিকিট বিক্ত থেকেও কম করে ১৪ লক্ষ ভলার পাওয়া বাবে বলে উদ্যোক্তাম্বর হ্যাক্ষ সোয়াটন ও বব আর্ম প্রতিপ্রতি দিয়েছেন। আর্ম এখন আলীন ম্যানেজার ও একটি টেলিভিশন ক্যোক্সানীর প্রেকি-ভেন্ট।

গ্ৰেলাগং ৰাতিল

পারিসের এক থবদ্ধে প্রকাশ, অন্তেইক্রিয়ার কুশলী মহিলা টেনিস তাগ্রকা প্রান্তন
উইন্দ্রলভন বিজারনী ইভন গ্রেলাগং এবং
এক্সান্তেইন থেলায়াড় জিমি কোনসাকে
একার ফরাসী আশতকাতিক টেনিসে
ধেলতে দেওয়া হবে না। এর কারণ, তারী
বিশ্ব টিম টেনিস সংস্থার সংগ্যা চুলিকাধ্ব এবং ঐ সংস্থার পণিচালিত আনতঃ শহর
লীগ-টেনিসে ধেলেন।

কুমারী গলোগং এবং কোনসাঁ ফরাসী টোনসা ফেডারেশনের এই নিশোশে বিরুদ্ধে পাাবিসের আদালতে যে মানসা কারছিলেন সংখিলণ্ট মাাজিণ্টেট তা থাবিজ করে আনেশা দিয়েছেম যে তাঁদের আ্বেদন মামলার বিবর বহিভতি।

कान कारमस्त्रत कात्राम

উইন্দ্রকাভন টেনিসে গাত্রবারের সিঞ্চালস বিজয়ী কেরু খেলোয়াড় জান কোদেস তার বাথা গারমের ফলে খব ফাাসাদে পড়ে-ছেন। ইতালীর ওপেন টেনিসের সিঞ্চালনে খিবতীর রাউন্ডে ইতালীর আন্তোনিও কাগারীকার সঞ্জে খেলবার সময় লাইন-বিচারকের এক নির্দেশের প্রতিবাদে তাঁর সংগা তর্কবিতর্কা জ্বাড়ে দেওয়ায় এবং ভাকে দ্বাৰ ধাককা মাধায় বিচাৰক তাকৈ
মাঠ থেকে বহিস্কার করেন। উপান্ধকু অভবা
আচরবেব অপনাধে ঐ আসরের ভাবলস বিভাগ থেকেও কোদেসের নাম বাতিল কর।
হয়। কোদেস সিলালসে শিবতীয় বাছাই
এল সম্মান পেরেছিলেন।

মাথা গরমের অপরাধের শাস্তি এখানেই শেষ হয় নি। ২৮ বছর বরুক এই কুশলী খেলোয়াড়কে হয়ত আসর মরাসী ওপেন টেনিসেও খেলতে দেওয়া হবে না। ১৯৭০এ তিনি এই আসরে সিঞ্চালসে বিজয়ী। আত্জাতিক লন টেনিস সংস্থা হয়ত তাঁর বিশ্বাংশ আরও শাস্তি মূলক বাবস্থা নেবে।

ভাজিনিয়াও চটেছেন

ব্টেনের ভাজিনিরা ওয়েডও ইতালীয় ওপন টেনিসে দক্ষিণ আফ্রিকার প্রাট প্রেটো-লিয়াসের সপো কোয়াটার ফাইনালে খেলার সময় বিচারকের এক নিদেশি চটে গিরে চিৎকার করে ওঠেন। পরে, এলোমেলো বল মেরে ৫—৭ ৩—৬ সেটে ছেলে বান।

ৰিজয় ও আনশেৰ হার

প্যাধিসে আরোজিত ফরাসী টেনিস চাহিপারনমানৈ সিপালাসের তৃতীর রাউদেড ভারতের বিজয় আম্তরাজ গত ৮ই জনে ২—৬ ২—৬ ও ২—৬ গেমে ইরাল কোডেনের কাছে হেরে গেছেন। এর আগের দিন ভারলাসের প্রথম রাউন্ডের খেলায় বিজয় ও আনন্দ অম্তরাজ ২—৬ ৬—০ ও ৮— ১০ গেমে জন কোডেস ও জেডনিকের হাতে পরাজয় বর্গ করেন। সিপালাসের খেলায় বিজয় ৭—৬ ৩—৬ ৩ ৬—৩ গেমে বৃষ্ধ বান্দ্রের ম্যাকনেইরকে হারিরে ছিলেন প্রথাত ভটান স্মিথ প্রথম বাউন্ডেই হেছে, ছেন জাপানের কামিওয়াজামির কাছে ৬—৫ ৪—৬ ৩ ৬—৮ গেমে!

বিশ্ব কাপ ফাট্ৰল

আগামী ১৩ই জন থেকে ফিফা ফির্
কাপ ফাটবল প্রতিযোগিতার উল্লেখন
ঘটছে (চ্ডাুগত পর্যার)। তিন সংতাহ ধরে
পাশ্চম জারানার বিভিন্ন শহরে ১৬টি ফের প্রতিফাল্যনার বিভিন্ন শহরে ১৬টি ফের প্রতিফাল্যনার করেব বিশ্ব চ্যাহিপারনার্যাপ অর্জাাল জন্ম। বে কটি শহরে এই খেলাব বাংগুলা হরেছে তা হোল—বার্লান, হাফ প্রাহ্ম ফ্রান্সকটি ডাইমান্ড গেলসেন্কিরসেন ভূসেলডকা চান্নান্তার মিউনিখ।

প্রসংগদের উপ্রথ্যেকা যে একারের কিন্তু কাপের বাছাই পরে প্রতিন্বন্দিন্তা করেছে स्माउँ ৯ विष्ठे रमभा विभव काश काहेबात আর্জেটিনা ১৯৩০ সালে রাপার্স আগ হয়েছে। ব্রাজিক চ্যাম্পিয়ন হয়েছে ১৯৫৮ ১৯৬২ ১৯৭০ সালে। রাণাস' আগ ১৯৫০ সালে। ভতীয় স্থান পেয়েছে ১৯০৮ সালে। চিলি ১৯৬২ সালে হতীয় স্থানাধিকারী হয়েছে। ১৯৫৪ সালে চ্যাদিপয়ন হয়েছে পদিচম জামানী রানাস আপ ১৯৬৬। তৃতীয় স্থান ১৯৩৪ ৫ ১৯৭০। চতুর্থ ব্যাস ১৯৫৮। ইতালা বিজয়ী হয়েছে ১৯৩৪, ১৯৩৮ বালে রাণাস' আপ ১৯৭০ সালে। ১৯৫৮ সালে রাণা**স আপ হয়েছে স**ুইডেন। তৃত্যীয় হয়েছে ১৯৫৫ এবং চতুর্থ ১৯৩৮ সালে: ১৯৩০, ১৯৫০ সালে লাদিশরন হয়েছে উর্গায়ে। চতুর হরেছে উর্গান্তে ১৯৫৪ ও ১৯৭০ সালে। হুগোল্লাভিয়া ১৯৩০ সালের সেমি ফাইনালিন্ট। ১৯৬২ সালে লাভ করেছে চতুর্থ স্থান।

टिटेन्डेंब खाटश मर्टि अग्र

ম্যানচেণ্টারে ওল্ড ট্রাফোডের্ বিরুমে প্রথম টেক্ট মাচ খেলার আগে ভারতীয় ক্লিকেট দল পর পর দর্ঘট কাউন্টি ম্যাচে জিতেছে। বলা বাহালা দলের এই জয়ে খেলোয়াররা অনুপ্রেরণা পাবেন। একাদিকমে দশটি ম্যাচ অমীমাং-कार्द्धिनि সিতভাবে শেষ করার পর সারে দলকে ভারত হারাম দশ উইকেটে। আলোচা থেলায় গাভাসকার নিজেকে প্রতিষ্ঠিত করার অবকাশ পেয়েছেন। সারের বিরুদ্ধে প্রথম ইনিংসে ভারতীয় দল ৭ ৩১৭ রান তুলে ইনিংস ডিক্লেয়ার করে দেয়া ঐ ০১৭ রানের মধ্যে গাভাসকারের বাঞি-গত সংগ্রহ ১০৬। বাটো ষেমন দক্ষতার পরিচয় দিয়েছেন গাভাসকার ঠিক তেমনি বলে নৈপংগ্যের পরিচর দিয়েছেন আবিদ আলি ৷

—विभाग वरम्माभाषा



রোডও...১২৫; থেকে ১১৫০; রেকড[ে] শ্লেয়ার (২ রক্ষ).....

850: 6 640:

ফিটরিও সিম্পেন (৪ একন)..... ১০৩৫: ১২৫৫: ১৮৭৫: ও ২৩৭৫: এবং নানারকম সংক্ষর রেভিওগ্রাম

জি রজাস অ্যান্ত কোং

১২. ডালগোঁস স্ক্রের ইন্ট, কলিকাডা-১ • ২৩-৫৪৮৩ ৫১. থিয়েটার রোড, কলিকাডা-১৭ • ৪৪-০৭৭৯

লম্ভ পার্বালনাস' প্রাইভেট লি:-এব পক্ষে শ্রীসাপ্রিয় সরকার কড়ক পঢ়িকা প্রেস. ১৪ আনন্দ চ্যাটার্জি' লেন, কলিকাতা-৩ ইতে মালিত ও তংকত্কি ১১।১, আনন্দ চ্যাটার্জি' লেন, কলিকাতা:-৩ ইইতে প্রকাশিত।



শুধুই কেশ্ তৈল নয় একটি কেশ রসায়ন



অতুলনীয় গুণাবলীর জন্য যুগ যুগ ধর সুবিদিত

षामनकीरे हेशात अधान छेशकत्व

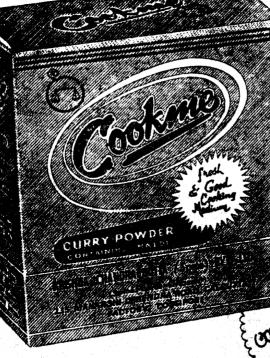
কেশের পুল্টিসাধন ও কেশমূল সুদৃঢ় করে। কেশের সজীবতা ও স্বাস্থাবিক বর্ণ ফিরিয়ে জানে। কেশপতন ও জকালপকৃতা রোধ ক'রে ঘনকৃষ্ণ সুন্দর কেশোশ্গমে সহায়তা করে। মন্তিফ স্থিত ও কর্মক্ষম রাখে।



সাধনা ঔষধালয় চাকা কলিকাতা-৫







হু'লো সেই আসল कितिय शाद (श्रष्टात द्वाशास् ১२६ वस्तिव व्यक्तिकार

)। प्रदीश्रुविक प्रमक्ता श्रदृष्टि विचार क्रम महून शासक खातल हेंदन वहासव क्ल्मी अ का प्रमता ।

६। अत (नहाम ब्राह्म कीर्विमास ৩ । বাজ্যবন্ধ অস্থান পাচটা ওঁড়া

प्रमता (साक कृत्यों के हा प्रमता मन्त्र किंद्र शास्त्र व वास्त्राव -

ल्या कार्य आहा उ তামাদের

4300ाल कृष्ण एक एक (ग्लाहेंज) अध बिर

(স্পাত্স পাউতার ভিজ্ঞিক)

100 /KCD-74



ामना ६

শ্বকবার, ১০ আবায় ১০৮১ বন্ধাব্দ

38 वर्ष, ४ मरवा।

বলিও বাবা কাছে আগবাকে সাহাদিব এই অং সূঠের বিচেই চলতে কিহাত হবে। শহাহের উ অংশগুলো সূঠ তাপে বলসে সাবে। কেথা কোড়া, কুসকুড়ি ও থাকের অভান্ত অভান্ত অবেক সময় এই সব কতগুলো ছবিত। গঠি বাইতেরাধুলো-ধোঁয়া বা ব্যেক-ক



হুরভিত আদিসেগর্টক ক্রীর আণ্ ভকের পভীরে প্রবেশ ক'রে কাটা-ক্রিড়ান ভাকের রিরাপক্ত

ত্রাভ্রেতিনাতা শরভিত পার্টিঃ সপটিও ক্রাম যার সহায় ক্রামে তার ভয়

১৩৮১ সালের মোচাক পত্রিকা কর্ত্রক সন্ধীরচন্দ্র প্ররুকার প্রাপ্ত শ্রীতন্মারকান্তি ঘোষ রাচত ছোট বড় সকলের মনের মত বাংলা সাহিত্যের দ্ব'খানি আশ্চর্য বই

विष्ठित कारिनी

শ্ৰীভূৰারকাণ্ডি ছোৰ

ম.লাঃ-চার টাকা

(সম্তম সংস্করণ চলছে)

ছেটেকের উপৰোগী করল কচনা বাংকা সাহিছে।
ব্ব বেশী কোনা হয় নি। বিশেষ করে নানাবিষয়ে
সভ্য ঘটনা অবলম্বন করে ছেটেকের নানাবিষয়ে
সভ্য ঘটনা অবলম্বন করে ছেটেকের নানাবিষয়ে
কাহিনী'তে লেখক সভ্য ঘটনাগা,লিকে নিজের সরস
মানিসয়ানা দিয়ে এমন জীবনত আরু আকর্ষণ করে
ভূলেছেন বে শ্রে, থেকে শেষ পর্যন্ত প্রতিটি রচনাই
জনবদ্য রস ও রোমাণ্ডে টইটম্ব্র। মোট পনেরোটি
কাহিনী ভিন্ন ভিন্ন রসের ফল্গা,ধারায় সিন্ত,
বর্ণনায় মনোমাণ্ডকর।

ভারও বিচিত্র কাহিনী' বইটি কিশোর ও ব্য়ুক্তদের জন্য সমভাবে রচিত। লেখক শুধ্ ছোটদের জন্যই রস পরিবেশন করেননি, বড়রাও এই জন্মত আম্বাদন করে প্রেকিড হবেন। জনবদ্য রস রচনাশোলী এবং প্রতিটি কাহিনীর ভিন্ন ভিন্ন আকর্ষণ চুন্বকের মত পাঠককে টেনে নিয়ে যাবে। এই বইটিতে দশটি বিভিন্ন রসের কাহিনী রয়েছে এবং লেখক তার ব্যবিগত অভিজ্ঞতার কাহিনীগালি এমন স্কুদরভাবে রসম্ভ করে উপন্থিত করেছেন যে পাঠককে বিষ্কুশ্ব করে।

আরও বিচিত্র কাহিনী

শ্রীজুষারকাশিত ছোষ
মূল্য:—চার টাকা
(চড়থ সংস্করণ চলছে)

এম সি সরকার আশ্ভ সন্স প্রাইভেট লিমিটেড, ১৪ বিকিম চাট্রজ্যে স্ট্রীট, কলিকাতা-১২ : কোন ৩৪-১৭৮২

শৈলেশ দে'র বহা প্রতীক্ষিত গ্রন্থ আমি সভাষ বলছি ত্তীয়খণ্ড ২০-০০

এই পর্যায়ের ১ম খণ্ড (৫.ম সংস্করণ) ১৫০০০ এবং ২য় খণ্ড (২**ম সংস্করণ**) ১৫০০০ যথারীতি পাওয়া যাচ্ছে

প্রবাসী সাহিত্যিক অমরেন্দ্রনাথ বল্লোপাধ্যায়ের

সূবन शिंद

₹0.00

শব্তিপদ রাজগ্রের উপন্যাস

নয়া বসত

4.00

প্রখ্যাত চিচ-নিমণিতা শক্তি সামশত বাং লা ও হিশ্দী উভয় ভাষহতই মইটি চলচ্চিত্রে রূপ দিচ্ছেন। হিশ্দীতে নাম হয়েছে "আমানুধ"—উভয় ভাষারই নয়েক মহানায়ক উত্তমক্ষার

শুকু মহারাজের অনবদা ভ্রমণ- কাহিনী

<u> भधः - वः नावः न</u>

মহানপর্ব ১০.০০

এই পর্যায়ের রজপর্ব (২য় সং) ১০০০০ এবং বনপর্ব ১০০০০

যথারীতি পাওয়া যাচ্ছে শ্রীহংস-এর নতুন উপন্যাস

लाम्हे उग्रार्ड

H · OO

বিভৃতিভ্যণ মুখোপাধ্যায়ের সর্বশ্রেণ্ঠ সাহিত্য স্থি

नीलाञ्च्रतीय

25.00

ভূপেণ্ডুকিশোর রক্ষিত রায়ের

ভারতে সশস্ত্র বি॰লব ২৫-০০

ফণিভূষণ ভট্টাচ ৷গেরি জন্দত অবদান

নো-বিদ্রোহের ইতিকথা

H · 00

নারায়ণ সান্যালের অভাবনীয় উপন্যাস

आवात यों हे ह्या कर्न ५२००

ডঃ বৃদ্ধদেব ভট্টাতা যের ভ্রমণ-কাহিনী

রূপসীপ্রতিবেশী (দেশল ক্রমণ)

\$₹.00

নিখিলচন্দ্র সরকারের নতুন উপন্যাস

দ্বঃখে স্বখে বাচা

\$0.00

গঞ্জেক্ষার শিস্তের গাংশগ্রু আকাশের আয়না

\$

জনপদজীবন ৮১

পণ্ডকন্যা

काम्द्रकाम बद्दमानामात्रका

আর এক সাজে

পিছ ডাকে

নীক্ষকেন্দ্রের গ্রহপঞ্জন্ত

নীলকণ্ঠ বিচিত্রা ১০:

আগ্নিলতা জ্বাভারণ সম্পান উপন্যাস

বিশ্বাসের বাইরে

কৃশান, ৰংক্যাপাণ্যালের রহস্য-কৃহিনী

অনেক রক্ত মাড়িয়ে ৯-০০

যুগ স্বাক্ষর ১০

শ্নশিক্ষার যোগর উপন্যাস কারা প্রাচীর ১০

NI 스타OIN - ** · 백화대학: 박대학: উপন্যাস

অন্য তরঙ্গ ৮.

পার্থ চটোপাধামের উপন্যাস

নিঃসঙ্গ পদাতিক ৬১

र्मस्य नाविक ५

রবীন্দ্র লাইব্রেরী ১৫ ২, শ্যামচরণ দে শ্বীট্ কলিকাত্য-১২ ম ফোনঃ ৩৪-৮৩৫৬.

নিয়মাবলী

লেখকদের প্রতি

- ১। অমাতে প্রভাগের জনো প্রেরিড নমাতে রচনার নকজা রেখে পাঠা-বেম, বনোনীত রচনার বরর বা-রানের ববে জালাম বরু অমাকো-নীত গালা ভালাম্বাই ফোর-পাটাক সভার বর লোধার স্থানা কোম ভাকালিকট পাঠাবেম রা।
- ই ই তৈথিক বুচনা কাণ্যজ্ঞের এক প্রকার প্রক্রীকারে বিশিক্ত করের। আন-শক্তে অস্পন্ত ও ব্যবস্থা ক্রম্ভা-জকে ক্রেকা প্রকাশের জন্যে গাহীত হয়, মাঃ
- ত। রচনার সপো জেখকের নাম ও সিকানা লা থাককে ক্ষমতে অকাশোর জনে। গ্রীভ বয় না

धारका छेटम व श्रीक

একেন্সীর নির্মাবলী এবং সে সম্পতিতি অন্যান তথা তমাতা কাৰালকে পচ বারা ক্লাত্সা

গ্ৰাহকদেৰ প্ৰতি

- ছাছকের ঠিকানা পরিবর্তানের জন্যে
 ভাতত ১৫ দিন আবে। "আন্ত"
 কাৰালিয়ে সংবাদ দেওয়া আবে
 শাক্ত।
- হ। জি গি-তে শঠিকা পাঠানো হর

 দা। গ্রাহনের চীদা নিন্দালখিত

 হারে শ্লাণ-অভারেষেগে ক্ষম্ভা
 কাষালয়ে পাঠানো আব্দাক।

চাদার হার

কলিকাতা **ন্দান্ত্র্ব্বেশ**বার্ষিক টাকা ২৫-০০ টাকা ৩০-০০
বাস্মান্ত্র্ব্বাক্ত্র্য টাকা ১২-৫০ টাকা ১৫-৫০
টাকাসিক টাকা ৬-২৫ টাকা ৮-০০

'অম্ত' কাম্বিয়

১১/১, আদস চ্যাটালি' লেন, কলিকাডা—০

হেশান ঃ ৫৫-৫২০১ (১৪ লাইন)

৮ই জুলাই প্রকাশিত হচ্ছে

छेल्छेय त्रह्वावलो

৫ খণ্ডে—প্রতি খণ্ডের দাম ১২ টাকা। রেক্সিনে বাধাই ও জাকেটে মোড়া সদেখি ভূমিকা লিখছেন : **ডঃ হরপ্রসাদ মিত্র**

১৫ই জুলাই প্রকাশিত হচ্ছে

साभामां त्रष्ठवावली

ত খণেড—প্রতি থণেডর দাম ১০ টাকা। বেক্সিনে বাধাই ও জ্যাকেটে মোড়া সদেশীর্ঘ ভূমিকা লিখছেন: ভঃ হরপ্রসাদ মিত্র

আলেকজাণ্ডার ডুমা রচনাবলী

8 খণ্ডে সম্পূর্ণ ॥ প্রতি খণ্ডের দাম ১২, টাকা ॥ বেক্সিনে ব্ধাই।

ठाल र्সा ७८क न्त्र तहना वली

৪ খণ্ডে সম্পূর্ণ ॥ প্রতি খণ্ডের দাম ১২ টাকা ॥ রেক্সিনে বাঁধাই।

এমিল জোলা রচনাবলী

ত থণেড সম্পূণ ॥ প্রতি থণেডর দাম ১২ টাকা ॥ বে ান বাঁধাই।

শেক্স্পীয়_ন সমগ্রচনা সংগ্রহ

৪ খণ্ডে সম্পূর্ণ ॥ ৪ খণ্ডের মূল্য ৪৫ টাকা ॥ রেক্সিনে বাঁধাই প্রথম খণ্ড প্রকাশিত হয়েছে ॥ শচীন বিশ্বাস অধ্কিত স্কুদর প্রচ্ছদপ্ট ॥ প্রথম খণ্ডের অন্যাদনমণ্ডলী ॥ উৎপল দত্ত ॥ ডঃ হরপ্রসাদ মিত্র মণীন্দ্র রায় ও আরও অনেকে।

একমত্র আহ্বোই সগল নাটক কবিতা ওসকেট সম্পূর্ণ দিছিছ। অন্বাদস্কুলি আক্ষরিক দিছিছ। ২য় খণ্ড জ্লোই মধ্যে প্রকাশিত গছে।

প্রতিটি রচনাবলীর গ্রাহকম্**লা ৫** টাকা। গ্রাহক হবার ও **মনি অড**ারে পাঠানোর মলে কেলঃ **জ্যোতি প্রকাশন,** ২এ নবনি কুতু লেন, কলি-১ ম অন্যানা কেলুঃ **রবীন্দ্র লাইরেরী**, ১৫/২ শাশাচরণ দে স্থীট কলি-১২ ॥ ১৪শ বর্ষ



৮ সংখ্যা মূল্য ৫০ পয়সা

ব্যাল্ডভান আন্ত ইকার নিউজ গুলার সোনাইটির প্রকল

Friday, 28th June, 1974 भूद्रवाद, ১০ আবাঢ়, ১০৮১ 50 Paise

স্চীপত্ৰ

भूकी विवस CHIWA **ন**ংপাদকীয় --- শ্রীকুমার মিছ बबनाव काटना (शक्य) - श्रीमिनी शक्सात मत्याशायात लकारमद जनगीकगानी 50 -- শ্রীপ_করীক बहेना श्रवाह >> চিত্রিপর 20 -- শীক্তবপ্রসাদ মিচ >8 প্ৰকাশা (কবিতা) -- শ্ৰীজতীন বদ্যোপাধায় बर्जीकिक समयान[‡] (উপন্যাস) રહ সাহিত্য ও সংস্কৃতি -- শ্রীজগৎকার 00 -- শ্রীশাহিতলাল মুখোপাধ্যার काधिक अन्न 25 --- শ্রীঅয়ুক্তালক विकास्त्र कथा ૯૭ -- শ্রীনিয়াই ভটাচার্য পিকাডিলি সাক্সি (উপন্যাস) ৩৯ —শ্রীতর ণচন্দ্র সংহ মনের খবর 88 —<u>শ্রী</u>আমিতাভ দাশগ**ু**ত महे लाकपि 88 ভালৰাসা, ভালৰাশা (উপন্যাস) -- শ্রীআনম্দ বাগচী હર -- শ্রীঅঞ্চল চৌধরে ী অধ্যন্য GO. ---জীবরবার্ণনী র্পসীর খাতা Œ5 --শ্রীগোতম গ্রেছ बाचि वा भारतक शक्स (शक्स) d b



ডাঃ প্ৰণৰ বন্দ্যোপাধ্যানের আধুনিক চিকিৎসা একমাত্র নিডারশীল হোমিও বই

মূল বিজয়কেন্দ্র — আমাদের কলিকাতার চিকিংসা কেন্দুশ্বয় ও হেজ
অফিস।

চিকিংসা কেন্দুশ্বয় ঃ ১১৪এ,
আন্তোষ মুখার্জি রোড, কলিকাতা-২৫ এবং ৫৩ জে দুইট,
কলিকাতা-৬
হেজ জন্ধিক হাড, কলিকাতা-২৫।
মুখার্জি রোজ, কলিকাতা-২৫।

পাইকারী কেতা / বিক্তেতাগণ হেড অফিনে যোগাযোগ করিবেন

সকল সম্ভাশ্ত দোকানে

পাওয়া বায়

শিশ্ব ভূমিন্ট হলেই দরকার একখানা

আমার শৈশব

বে বই-এ শিশরে জন্মক থেকে সাত বংসর পর্যাত প্রতিটি উল্লেখ্য ঘটনার নথাঁ ও ছবি রাখা বাবে

खाङ

বাতে আছে শৈশকে গড়ে ভোলার পরিকল্পন।

বৰ্ণে ও সম্প্ৰায় অভূলনীয় (মজ্যে: প্ৰৱ টাকা, খোডন : পাচিৰ টাকা)

> অন্নপ্রাশনে ও জন্মদিনের উপহারে জননা

শিশ্ব সাহিত্য সংসদ প্রাঃ লিঃ । ৩২এ আচার প্রক্রেচন্দ্র রোড। বাল-১

মহাল্পা শিশিরকুমারের

কয়েকখানি উল্লেখ-যোগ্য গ্ৰন্থ

কালাচ'াদ গীতা

িনিমাই সহয়াস আৰু ২ঃ গলেল ২০০টু ⊥

নরোত্তম চরিত

OR REPRESENTED NO.

यूश्व

পশ্বসা বাঁচান, বেশী সাদা করুন



সূপার ৭৭৭ বার — দুমিকান্তে এর খুড়ি মেই। এটি একটি নতুন ফর্ম্পা। এতে রমেছে বেশী কাপড় জনেক বেশী সাদা করার, জনমক বেশী পরিকার করার কমতা—এমনকি যে জনে সাঞ্চারণত একবারেই ফেনা হর বা, তেমর জনে-ও। সমধারণ বার সাবারের ভুজরার দাস-ও কর।

अथम (चट्ट सम्बद्धात कतरक एक कत्रम मञ्जून बहर्षत सह—मृगात १६० विकासरक कागक रवातात मतः!

স্চীপত্র

পৃষ্ঠা	বিষয়	रम्भव
७४ ५० ५२	প্ৰেচ স্থিনী (চিত্ৰ সম্যালচনা) ও'ৰা ৰলেন ৰালেদেকাপিক	—শ্রীক্ষপণক —শ্রীচিয়েদ্ত —শ্রীনমবি ধর —শ্রীরঞ্জন মজন্মদার
৬৬ ৬৮	ন্ট্ৰভিও সংবাদ শতবংশ্ব ন্মরশীর	—•*ুডিও সংবাদদাতা —শ্রীকালীশ মুখোপাধায়
95	মণ্ডাতিনর প্রমীলা কগং	— শ্রী অময়
৭৫ ৭৯	७'ता कशकान थ्यमाथ्या	শ্রীবিপ ্ল বন্দোপাধায় শ্রীদ শ'ক

কবিতা সিংহের নতুন স্বাদের উপন্যাস

চারজন রাগী যুবতী ৫-০০

ভান্ রাগী নয়, বি-রাগী চারজন তর্ণী ভবানীপ্রের ঘিঞ্জি পরিবেশ ছেড়ে ভানা মেলেছে রাজপথে। উদ্দেশ্য একট্ হাওয়ায় উড়ব। ফ্রতি করব। একটাও দ্ঃথের কথা বলব না, একটাও কণ্টের কথা ভাবব না, শর্ম হাসব, পাগলামি করব আর যৌবন নিয়ে ছিনিমিনি খেলব!

ফ্লিভ্ষণ আচার্যের মিণ্টি মধ্র উপন্যাস

(জा ९ ज्ञाय वाघवन्ते (थला क

গ্রেণুকুনাব মিতের অননাসাধারণ উপন্যাস

वामा याउयात भरभत भरत ५

নটরাজনের যুগোপযোগী অসাধারণ সাহিত্যস্থি

उता रमरे भर्तालम ५२

ডঃ বৃদ্ধদেব ভট্টাচার্যের অসাধারণ ভ্রমণ-সাহিত্য

হিমালয়ের তিন সঙ্গী ১২

পূর্ণ প্রকাশন : ৮এ, টেমার লেন, কলিকাতা-১ ॥ ফোন : ৩৪-১৫১২

গ্ৰিনীদের রামার জন্য খা'টি খবর!

গৃহিণীরা সবসময় রারায় আগমার্ক গুড়ো মশলাই ব্যবহার করুন কারণ আগমার্কের জানব ১০০% খাণটি হয়

ভাটা প্রভা প্রপালা প্রে আগলাক ব্রেই নর এর পোলনে ররেতে ভারতের আও রুপলা ব্যবসায়ী কুক্তন্ত বস্ত (কুক্তমী) প্রাঃ লিয়র চার প্রের্বের অভিন্ততা ভাটা প্রেড়া মুললা অভি আম্বানিক কারখানায় প্রস্তুত হল এবং গভালাকেই আন্তর্জালীকে ব্যোক্ত প্রধান প্রাক্তিত ব্যালিক প্রধান প্রাক্তিত ব্যালিক প্রধান প্রাক্তিত ব্যালিক ক্রান্তর্জালীক ব্যালিক ক্রান্তর্জালীক ব্যালিক ক্রান্তর্জালীক উল্লেভ ন্ত্রান্তর্জালীক উল্লেভ ন্ত্রান্তর্জালীক উল্লেভ ন্ত্রান্ত্রান্তর্জালীক প্রান্তর্জালীক ব্যালিক

जागे

গ[্]ড়ো মশলা রান্নায় ১০০% নিরাপদ

অসম্বাধ প্রচায়ত বিজ্ঞাত



সম্পাদকীয়

ভারত-বাঙলাদেশ মৈত্রী

ভারতের রাষ্ট্রপতির সাম্প্রতিক বাঙলাদেশ স্ফর নানাদিক দিয়েই তাংপর্যপূর্ণ। এই প্রথম ভারতের রাষ্ট্রপ্রান বাঙলাদেশ সফর করলেন এবং বাঙলাদেশের জাতীয় সংসদে ভাষণ দেবার সম্মান পেলেন। আমাদের দুই দেশের মধ্যে সম্পূক ঘানতত্ত্ব করার জন্য রাণ্ট্রপাতর সফর ঐতিহাসিক ভূমিকা পালন করবে সন্দেহ নেই। এখনও আন্তর্জণাতক দুনিয়ায় এমন অশাভ শক্তি কাজ করছে হারা ভারত ও বাঙলাদেশের মধ্যে মৈত্রী সম্পকে ফাটল ধরাতে চায়। এরাই ম্যাক্তিযুদ্ধের সময়ে পাকিশ্ভানের পৃক্ষ নিয়েছিল। সেদিন ভারত বিরাট ঝাকি নিয়ে এই মাডিসংগ্রামীদের পাশে না দাড়ালে ইতিহাসের গতি অন্য পথে মোড় নিতা বস্তুত বাঙলালেশের রাজীতি জনাব এইনেদ্রাই মাজিয়াথেব সময়ে বাঙলালেশের প্রতি ভারতের একুঠে সহায়তার সপ্রশংস উল্লেখই শথে করেননি, বাঙলালেশের প্রনগঠনে ভারতের সহয়েগিতাকেত তিনি অভিনাদিত করেছেন। রাণ্ট্রপতি গিরি এই সহযোগিতার ওপরই সবচেয়ে বেশি জোর দিয়েছেন। দুটি সাব'ভৌম দেশের নিজ্ঞাব সিদ্ধান্ত গ্রহণ করার সম্পূর্ণ আধকার রক্ষা করেও ব্যক্তনৈতিক ও অথানৈতিক ক্ষেত্র ঘনিষ্ঠতম সহযোগিত। কর্ত্তি পারে। রাষ্ট্রপতি গিরির এই উদ্ভি আমাদের দুটে দেশের মৈত্রী বনধনের ওপরেই বিশেষ গারেছে আরোপ করেছে। সমদত প্রতিকালতা জয় করে আজ বাঙলাদেশ রাজ্বসংঘের সদস্যপদ লাভ করেছে। এই স্বীকৃতি বাঙ্গাদেশের বীরত্বপূর্ণ স্বাধীনত সংগ্রাম ও সার্থক পররাণ্টনীতিরই স্বীকৃতি। ভারতবর্ষ প্রথম থেকেই বাঙলাদেশের পাশে আছে এবং রাণ্ট্রসংছে তার সদসাপদ লাভের জনা জনমত স্থিত করে আসছিল। যার। বাঙলাদেশের বিরোধিতা করেছে এতকাল আজ তাদের নীতির বার্থতা সংস্পন্ত। বাঙলাদেশকে কেউ দাবিয়ে রাখতে পারাব না। ইতিহাসের ঘটনাবলী তা বারবার প্রমাণিত করেছে।

এই উপ্মহাদেশে শ্যায়ী শাহিত প্রতিষ্ঠায় ভারত বাজলাদেশর হোম উদোগ বার্থা করার জন্য পাকিশ্বান সিজয়। কিন্তু শাহিত্য স্বার্থা আমাদের দুই দেশ যত্দার যাওয়া সমভব এবং যত্থানি উদারতা দেখানা সমভব তা দেখিবছে। পাক যুশ্ববশাদের মাউদান এবং যুশ্বশেরাধীদের বিচার না করে বাজলাদেশ নতুন আন্তর্জাতিক নজার শ্রাক্তান করেছে। শাহিত্র জন্য ব্যুক্তাদেশেব এই আগ্রহ মারণায় হয়ে থাকবে। ভারতবর্ষ সব সময়েই বাজলাদেশের পাশে রয়েছে। রাজ্যপতি গারি পরিশ্বার ভাষায় বলেছেন, এই দংই রাজ্যুর মধ্যে কৃতিম ফাটল স্থিতীর কোনো চক্তানত বরদাশ্ব করা হবে না। আমাদের মৈতী দিনে দিনে শিল্পালী হবে। বাজলাদেশের রাজ্যপতি ভারতের বৈজ্ঞানক অগ্রাতির প্রশাস্থা করেছেন। শাহিত্যুর কালে প্রমান্য বিক্ষোরণ নাতির জন্মাদেশের কালি পরিশ্বার নাতী দিনে করেছে বাজলাদেশ। পারশ্পাক স্থাপান করেছে বাজলাদেশ। পারশ্পাক স্থাপান করেছেন ভালাদেশ ভালাদেশ করিকাদ যে বিশ্বাস প্রাপান করেছেন ভালাদের ভাল দেশের আধানৈতিক খালগাত্যে উন্তয় বাজ্যুশাই অভিবান্তি।

ভারত ও বাঙ্গাদেশের বহু সমস্যাই প্রায় এক ধরনের। আমাদের আদেশেরও রয়েছে মিল। গণতাহিকে পশ্ব ততে সমাজের পরিবজন এবং পর বৈষয়িক উন্নয়নে আমার বিশ্বাসী আমাদের দুই দেশ বহু ক্লেক্রেই সহযোগিতার ক্লেক্র সেনারের। সমাজার পরিকলি কর্মাণিতার ক্লেক্র প্রসারিত। সমাজার ক্লেক্রেই সহযোগিতার ক্লেক্রেই সমাজার ব্যবহান আবন্ধ। বাঙ্গাদেশের প্রের্কিটিন নহায়তা দিয়ে যার স্ত্রপাত সবশিশীত অধানিতিক উন্নয়ন পরিবংশনার তার তেই আবন্ধ প্রশারিত হবে, এ বিশ্বাস আমরা রাখি। বাণিজ্যিক ও সাংস্কৃতিক আদান-প্রদানের শ্বাসা আম্বা নিকটতর হব এবং রাজনৈতিক আদাশ্রের সমাজায় এই বংধন হবে অক্টেশ।



কেন, তোর ভাল লাগ্রান্ত না?' প্রাক্ত বাজে। এক চিলতে বিধরবিংর জলা এব নাম ঝরনা : একটা শব্দ প্রাণ্ড নেই।'

অলক। কাড়িছের বালানি কিছা। সাত। এব নাম করনা হলে আবশোলান্ত পাখি। সাব নিশেন একটা জলের ধাবা দেখে আগতে জলব থেকে। তার না আছে বেগ, না ভাষা। চারপাশটা আধার সাক্ষেবি আলো পড়েনি। গরনার দেখে স্থালোক প্রতিফলিক না হলে রাম্বন্ধ সাতটা রঙের বোলনাই বিকিয়ে ওঠে না। অনতভ এই রক্ম করনা দেখতে পচি মাইল টাঙার চড়ে সাথ সকলে ছাটি আসার কোন মানে আছে মনে করে।।

ভাহদে তুট বোস। আমি ওদিকটায মূরে আসি। বলে ভিলবা চলে গেল দলের সংগ্রাযোগ দিতে। অল্বা দুছোত গালে ঠেস দিয়ে বসে রইল।

অলাকা ব্যাবরট ঝরনা দেখাত ভাগবাদে।
ঝরনা মানেই পাহাত, গাঙগাছালি, প্রজাপাতি
পাখার ভাক। ঝরনার কলভাষা শুন্ন বুকে
৬য় খ্লোর স্থোত উভাল এটা পাহাড়ের
কোন দ্নিরিক্ষা গভারতা থেকে একটা
বর্তিভ্লীন স্লোভাধারা নেমে আস্চ্ছে—ভার
গতির মধ্যে খ্লাইর চুপক্তা তার গামে
ব্যাবেশ লাখে। অভ্ৰুচির বিশিক্ষ—ভারপর

ছটফটে প্রবাদের রাতা লাফ কেটে মীচি
আফিরে পাড়াছ, সংগ্র সংগ্র কেটে ইঠছ
ত্রকাশ ফেনা—বৈশ লাগে দেখাছে। ঘাটার
পর ঘাটা এই আনন্দর্যার যাবে বসে
পাকতেভ তার অর্গটি আসে না। তাই বনপাইচাড়ের দেশে বেড়াছে গ্রেশেই অল্লবা
আজি করে ভাশপাশে কাথাও করনা আছে
কিনা। তার সার মেটাডেই ধেন করনা আজেও
নার বাহিলিটে। তারপর একদিন দল বেগ্রে
বারনাভাগ্য যাভ্যা। পিকনিক, গান কলপ
আছা। অলকা সব তাঙেই আছে, আশ্বর

তার এই >বভাব নিয়ে হাসি-মংকর:ও বড় কম হয় না। এমন ক্রমী-পাগল মেবে সডিটে কেট সেথেনি কথনও। মা ওর তিল্বাদি না নিজের বন্ধ্য-বান্ধররা না দাদার বন্ধ্যা। তব্যু অনকার ধ্বভাবু বদপায় না।

সেথারে রাজগাঁরে গিছে ওকে নিয়ে কি বিপদেই না পড়েছিল সকলে। কাতিপ্তির শেষ, বৃণ্টি-বাদলের দিন নয়। কিন্দু হঠাৎ আকাশ

কালো করে বাদল নামল। বৃণিট হল **শা**ধ্ क्षकां प्रमा किन्द्र सार्वेष्ठ देवाचाद्र विभागाहरू. রত্যাগার আর শোনগিরিতে **যেন, হাজার** করনার সরজা **খালে গোল। পাছাড়ী বর্ষা** আগে কখনও দেখেনি অপকা। দেখে মাণ্য হয়ে গেল। একটা ঝরনা নয়, **অগ্রনাত** ক্ষরনা রাতারাতি গন্ধিয়ে উঠেছে **পাছাড়ে।** ব্,ভিটর পর একনাগ্রায়ে ভিনটে দিন আর কিরিকিরি স্থোত থামে না। সামলানো মুভিকল। যতগুলো পাছাড়ী জল-ধারা আচমকা দেখা দিরেছে তাদের স্বার সভেগ তার দেখা আকাৎ যেন না হলেই নয়। রাজগাঁরে যেট্কু কোডাক ফিল্ম ছিল তার भवर्षेक् तम अकाई भवर करव रक्तना छात्र আর কি, বাকি স্বার ওপর দিয়ে ঝামেলা গেল বড় ভালে নয়। **এই রকমই পাগল** श्चारश कामका। वदावसः

এবার খ্রনাতে বেড়াতে এসেও বাইশ বছরের মেয়েটা কচি খুকীর মতো বায়না

NAME AND

মাহল ম্বরনা দেখা । পাওয়া গেল খৌজ।
মাহল চার পাঁচ গেলেই ব্য-শাহাড়ের অন্তল।
স্বোহন হলদীবরণ বলে চমংকার একটা
পিকানিক হপট আছো। সেই সংক্র ব্যানর
পাঞ্জা হাবে। আলো দেখে মথের স্থোন
ক্রানর কথার। কিন্তু তার মনের স্বাটার
স্বান্তি নিক্তে গিয়েছে ধরনা দেখে।

ভাৰ ক মনের মান্ত্র ভারবে।র মধ্যে বেশীক্রপ নৃঃখাঁ প্রাক্তে পারে না। অলকার
বিষাদ আচেত আচেত খানিকটা কেটে এল।
এই সবে ফাল্যানের শ্রা। ভাগান দুক্বী
ক্রেন্ত্র পাতা ঝবতে শ্রা করেছে। দক্ষিণ
সমভূল ছাত্রা পাঠিরে দিছে সমভবা
ভূমিতে। অবংগার মধ্যে এইবক্স আলোখনা
ব্যান্ত্রপাক আলোখনা
ব্যান্ত্রপাক আলোকার।

আনেককাণ গণটার কোন সাড়াশব্দ নেই।

থকা স্করত গাছপালার আড়ালে ঢাকা

পড়েছে। কথাবাড়ার শব্দও কানে আসছে

মা। হ্যতো একটু দুরে চলে গিয়েছে।

মাণে হ্যতো একটু দুরে চলে গিয়েছে।

মাণে হ্যতা একটু দুরে চলে গিয়েছে।

মাণে হ্যতা একটু দুরে চলে গিয়েছে।

ব্যাধ্য মাণা আয়ে অর্গ্। বাবা-মা

আন্সননি। খুস্বনাঙেই রয়ে গিয়েছেন।

ব্যাধ্য ব্যাধ্য ব্যাধ্য কর

নিশীধরা আলাদা করে বেড়াতে এসেছিল **শিষ্পত্তায়।** একদিন খুরনার রাণ্ডায় দেখা। সেই থেকে ষখন তুখন আসে ওদের ৰাসাম। হলগীবরণে পিকনিকে আসার প্রস্তাব **দিভেই এক কথায়** রাজী হয়ে গোল। আশকার ক্ষেন যেন মনে হয়েছিল ওনের **উৎসাহের আসল कारण ওরা দ**্বোন বিশেষ क्दब त्म। इञ्चल्या क्राल्ड त्मात्वत क्रिट्ट त्नेट्ट, এটাই স্বাভাবিক। তবু অসকার ভাল লাপেনি। নজরধরা মেয়ে দেখলেই হোসর ছেলে ছামতি খেয়ে পড়ে তাদের বড়ো **অগতনি মনে হয় ভার। ছেলে**দের চাগরে **জনকা কিছ**ু গভারতা আশা করে। এই সংসারে কোন কিছুই মনের মতো মেলে না, এটাই যোগহয় স্বাভাবিক। তাই আজ পর্যান্ত ভার নিজেকে কারো কাছে সংপে দেওয়া क्ष मा।

স্বাই অব্যাক্ত ভূল বোন্দে কঠোর বলে আন্তর্গন কিছু ভাই কি ? কোন কোন নিজান মহেতে বাজীর লাইফ সাইজ আরনটার নিজের দীঘা ক্রুদ্ধ ভিত্ত ভালই লাকে অলকার। পাইজা ফ্রুফ্টের এক ভোড়া ঠোঁট সমান নিজাক মালসাই কপাল, ভূলির টানের মতো ভূলা, নিমাল কাজলকালো টোবা জোড়ার দিকে জ্বাক্তর নাসিপানের কাহিদীটা মনে পড়ে। মান বাড়া মান পড়ে।

বন্ধার বলে, গগের এতা কন্ম দেখার স্ব প্রথম দেখার স্ব প্রথম দেই কেন ক্ষান কিই কেন ক্ষান কিই কেন ক্ষান কিই কেন ক্ষান ক্ষা

ভেতর চোথ মেলে দেখতে পায় সেখানে নিংসাড়ে বয়ে যাছে এক র্পোলি ধরনা ভাতে সম্ভরছের গীলাখেলা, চেউরের কালন। কেবল সেই ধরনা কারে চোথে পড়েনা, ভার শব্দ কেউ শ্নেতে পায় না।

অলকার নিশীথ এবং অর্পের ভাবনা মনে এল এই মাহাতো কেন এল সে নিজেই জানে না। হয়তো নিজ'নতা বস্তুটা গোপন মনোরহসোর দরজা খালে দেয় বলেই। ওরা দ্যুদ্ধনেই বড়্ডো এযুগের ছেলে। চেহারা ভালাই মোটের ওপর অবশ্য জ্ঞাল দেখানোর চেটা থেকেই বেশী ভাল দেখায়। পাঞ্জাবি পরে না ওতে নাকি স্কল্মাস্টারের মতো দেখায়, ভাই সার্ট-ট্রাউজার পরে। খন খন সিগারেট খার। সিলারেট ধরার মধ্যে আছালের কায়দা আছে। আকাশের দিকে নাক তলে ধোঁয়া ছাড়ার মধ্যেও কায়দা। বিজ্ঞালি বলে, 'এরকম করে সিগারেট **थिएन एडएलएन नाकि द्वन क्या**ने नारंग।' তা হবে। একথা বলতে পারে বিজলি। কারণ য়াফে রো>ভারায় একরাশ ধোয়া ওভানে। ছেলের নাম্থানেই যে সর্বন্ধণ বসে থাকে বিজ্ঞাল। কদিন ধরেই নিশীখ আরু অর্বুব্রে দেখছে অলকা। দেখেছে আর মনে মনে द्राप्ताका मुकारनहे छोड़िकाल कथा बाला। ক্ষেম গদভার গলায় বলে, আরু শন্দর লোকে অনথ'ক জটিল করে। কাল স্বেধায় রাশ্তার বেড়াতে বেড়াতে ভূল সংর রবীন্দ্রসংগীত গাইছিল নিশ্বীথ। ঠিক বিশেশী পানের মতো লাগছিল। অধ্যুদ বাংলা ছায়াছবির আলোচনা করতে করতে মাঝে মাথেই চ্যাপলিন গ্রুফো, আনত-নিত্নি এই ধবণের নামগ্রলো আলটেশকা ছা'ডে ছা'ডে দিচ্জিল। ব্বিশাক্ষের সেতাকও তার আলোচনা থেকে বাদ যাচ্ছিল না। সব মিলিয়ে ভয়ানক হাসাকর।

অথচ এসব না করণেও ওদের পাম
ক্ষাত না। ওদের কারোরই বিদোব্লিধ কম নয়। নিশীথ ভবলচ্
বি-সি-এস পাল করে ভাল মাইনের
সরবারী চাকুরে। অর্ণ একটা প্রাইনের
সরবারী চাকুরে। অর্ণ একটা প্রাইনের
সরবারী চাকুরে। অর্ণ একটা প্রাইনের
সরবারী না একিব পোরে
জন্য তার বারান্য। এদের চেম্মে উচ্চু ভালের
ফল পেড়ে দিনতে পারাবন না নিশ্চিতই।
বিল্লু আশ্চরা এরা এসে থার এখানকার
স্মৃহ্তিগ্লোক রভীন , করে ভূপতে
পারল না।

ভালক। তাথার প্রনার জন্যে দৃথ্যে বোগ করল। কি মনে করে সে উঠে দক্ষিল। তারপর পায়ে পায়ে উঠে এল ছোট্ট ঝরেনাটার ধারে।

কিছু দ্বল নিন্দুপ সে করনাটার দিকে চেয়ে রইল অপলক চোখে। তিবতির করে নেমে আসভে জলধারাটা। কোনে শব্দ নেই। চারপালে আলোর ১৬৮ছছি: কিংত ওপার কৈছু ছায়াতর থাকাতে করনার ওপার ধাসর তরল অব্যক্তার। অলকা ব্যাই জলকার মধ্যের রামধানু খাজেল্ল। তার নন জলাক্ষাতার ভেত্তর শব্দ সংখ্যান বর্রছিল। ঘত্তে মানি করে পালোর সাক্ষাতার সেই করে পালোর শাহরুরি গান্তে কালাগিয়ে সে উংকণ হল। খুব মিহি স্রেলা

একটা গ্রেন শুনতে সেল সে হা নৈশানোওই অন্য নাম। অলকা কান ভরে, নিজের মধ্যে তলিরে গিরে, নৈঃশব্দা উপভোগ করতে লাগল।

'একি, আপনি এখানে কি করছেন?' অলক। চমকে দ্বান্ত কেরাল। নিশীধ। অলক।র মুখে একরাশ রুঙ ছড়িয়ে গোল। দণজা গেয়েছে।

'ভাষন করে কান পৈতে **কি শ্নছিলেন** ব

'শবদ।' নিশীথ <mark>অবাক, স্থ</mark>রনার? 'চার্য।'

'আশ্চয' তো!' 'আশ্চয' কিসের?'

'ভামন করে খরনার শব্দ ধাুনিঃ কেন্দ্র শোনে '

আমি শুনি। ভাল লাগে।

নিশীথ হতাশার ভগগতৈ হাত ওল্টার। তারপর বলল, আমরা কত ঘুরলাম বনের ভেতর। বেশু চমংকার স্কায়ণা। ছবিও তোলা ছবির ভেতর আশনি হুইলেন না। আপনাকে আমরা আশা করেছিলাম। গেলেন না কেন

ভাল লাগছিল না।

মানে ধরনা ছেড়ে বেতে মন স্বছিল না। কিন্তু এই ধরনাটার তেওর দেখার মতো কি আছে?

অনেক কিছু।

নিশীখ ঠেটি কামভাল হাতাশ ভংগীতে, কি জানি। আগনার ব্যাপানটা কেনে এপরক্ষা।

ভালকা নিশীধের অভিংয়াগের উত্তর∠ দিলুনা। ঝরনার জলে তার চোখ স্থির।

'এখনে এক এক দুর্নিভূষে কি কলবেন চল্যুন ঘূরে আসি।'

জল থেকে চোখ ইলে নিজাঁগের নিজে ভাকাল। নিশাঁথের সুখে একটা প্রভাগে গমকে আছে। ভার ভারা খোনার জন্ম উন্যাপ হয়ে আছে শিশীখ। কেন্সন বোকাটে দেখাজে ভাকে। জন্ম, কথা বসন্ত না। পুঞ্ ফিরিয়ে নিল।

র্ণক কথা বসছেন না যে?

্শালকা কথা বলল কিংড় সোটা নিশীথের প্রশেষর শ্রমণ ন্য, ওরা স্বাক্ষাধ্যা

বিশ্ব একটা আঠারের স্থাত একপ করছে। বোটানির ছাত তো। এই এছে-গাছালি নিয়ে জিজ্ঞাসাবাদ করছে। ভোমার দিদি আরু অর্ণ--

્રી સહાર કે

নিশাপ তাস্থাট হাসল, কি আরে। এই বনেরই কোথাও গাছপালার ছায়ায় বসে আছে। কিন্তু আমার কখাব জবাব মিলল না যে!

অলক। সান্ডা গলায় ব্লল, স্মামার ভাগ লাগছে না।

ভাল লাগছে না! নিশাথ কেমন বিদ্র বিড় করে বলল, কিংকু কেন জাল লাগবে না! এখন পাহাড় ছায়া বোদ, বাডাস, পাথীর ডাক—ভাল না লাগার কি আছে?

ানশাথবাক আপনি ধান। আমি একটা, একলা থাকতে চাই।;

9.8°

এরপর আর কথা চলে না। নিশীথ ঘাড় নীচ করে আন্তেত আন্তেড চলে গেলা।

চলে যাওয়ার কথাটা কি আব একটু নরম করে বললে হত সমনে মনে ভাটল অলকা। কিবো একে কি ভাট্ডিয়ে দিটেই চেয়েছিল অলকা? বোধহর মা। অলকা দৌর্ঘবাস্ ফেলে ধ্রনার কাছ থেকে সরে

কানের রারে বিছানায় শুরে গ্রংশ করছিল ভিলকা। জানদাপথে আসা জ্যোৎসনার আলোয় বিছানা মাখানাখি। ছলদীবর্বের জংগলে আজ সকালের মৃত্ত্গিলুলোবই গ্রুপ করছিল ভিজকা। তার গ্রেয়া খুশীর জ্যামজা। তার গ্রার সবরে অর্ণু নামটা এমন সরস হয়ে ফুটিছল যে মনে ছচ্ছিল সে মেন নামটাকে জল করছে। শুনতে শুলাত ভালকার গ্রান ক্রান্ত্রা হাছিলা। গ্রুপ প্রায়র হঠাৎ বিজ্ঞান শ্রেধান অর্ণু প্রায়র হঠাৎ বিজ্ঞান শ্রেধান

'ভালই তো।'

'আহা কেমন ভাল ? ডোর কথাগ্রের জালগা আলগা।'

প্রেশ ভালা চেহার! মনসা নর,, বিশে। আছে মোটা চাকরি করে। আরু কি চাই?'

বাস বাস। তা নিশাগৈর তো আছে ওই সব। ওকে অমন করে তাড়ালি কেন?'

'বলেছে বাবি ?'

বলবে কেন? মুখে দেখে বোঝা যায় না হাঝি - জানবাট সে ওকে পাসিবেভিলাণ বোব কাছে। আমি আরু অর্ণ। বেচারা বড়ো দ্বেথ পেয়েছে। ভাজালি কেন? ওকি ভাজিয়ে দেবার মডো ছেলে?

াঁক জানি কেন সহ। করতে পারলাম ন। ^দ 'নিশীথ ডোকে ঠিকই ব্যুক্তে?'

'কি ব্যেছে?'

ত্তার স্তুকের মধ্যে কোন অরনা নেই বলচ্চিত্র নিশীগ। সভিচ্ট তোর সুকের মধ্যে কোন শ্রনা নেই জলকা।

রাত সাড়ছিল। পরিপ্রি তৃণিতর আবেশ মিয়ে তিলকা কিছুক্লনে নগেই ঘুমিয়ে পড়ল। তার জ্যোৎসনামাথা নরম মুখটাব দিকে তাকিয়ে মনে হবে এক রাজকন্যা তার প্রিয়া রাজক্মারের স্বণন দেখতে বিভার হারে। রাইরে রাতপাখীর ডাক পাতার শির্মানর এবং বায়াুর উচ্চনাস মধারাতি বেংখণ। করছিল। কিন্ত্ তালকার চোখে ঘুন এল না। দিদির কথাটা ভার মনে পড়ছিল। সতিটে কি ভার ব্যক্তর ভেতর কোন ঝর্না নেই? না স্বাই ভাকে ভ্রন বা্কেছে। ভার দিদি নিজের বৃষ্ধুরা নিশাণ ভাংল স্বাই। ভার হ্রয়কে ব্ৰু করে নিরুদ্ধ বয়ে চলেছে এক জোরাশ শ্বনা। ভার নেগ আছে কলগ্রান আছে বণ্ছিটা আছে। কেউ সেটা শগুণা টের পায় এটাই আশ্চর্য। জাল টের পেলেও সেটার ধর্নি বর্ণ মাধ্যে কেট ভোগ করতে शास्त्र मा रकम ? रकम शास्त्र मा ?

নিজের বৃক্তের মধ্যে এই আশ্চর্য করনার কলপ্রি শানতে শ্নতে অলকার কেমন কার। পেয়ে গেল।

॥ লাইবেরীতে রাখার মত বই শংকর যেখানে যেমন 20.00 সমরেশ বস্থ আশুতোষ মুখোপাধ্যায় ঘর 9.00 ৭৯/১বি মহাত্মা,পালী রোড় ॥ কবিকাড়া ৭০০০০১

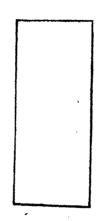


দ্বারজ্ঞালার সর্বা আমেরি খাঁ। বস্ত্র ক্ষেম হার ৩০ ি২ বছর। ভাগোর সংধ্যে ক্ষাকাভায়ে চলে এলেন্।

তাকৈ অন্তায় দেবার মহন কেউ ছিল না এ শহরে। তার ধানাশোনাও তেমন কেউ নেই।

আমার থার আহ্বীয়-স্বজনরান্ত সব পশ্চিমান্তগাবাসী। কথকাতাম্ম তাঁরা কেউ আসেন নি। কিপ্তু আমার ধাঁ অনোকর মংগাই শানেছিলেন বাংলাদেশের কথা, বাংল স্থানে কথা। কথবানার কথা। বাংলাদ্র ধাইতাগদের কথা। কথবানার কথা। বাংলাদ্র ধাইতাগদের কথা আছে। আর গান-বাজনার খাই স্থানে কথিব আছে। আর গান-বাজনার খাই স্থানি আছে সংগাঁতির আনক দববার। বহুং বইস পোক আছেন যাঁরা আসরের জন্মা, কথাবাংদের জনো বিস্তর খরচ করেন। প্রসা দিয়ে শোনেন গান-বাজনা। ওচ্ছাদদের বাহিয়ে রাখেন। তালিম দিয়েও বেশ রোজ-গার করা যার বংলাদেশে।...

আমার থার বরাত ভালা। সেই সমার লালভ্যাহন মৈত্ত কলকাতায় এসেছিলো। রাজশাহী কেলার ভালাদের জালাদের লালত-মোহন মৈতা। কলকাতায় ভিনি মাঝে মাঝে আসাতেন। লালভ্তকার নানাদিকে তার সথ। মার্টাপ্রের ভিনি। গিরিশচন্দ্র প্রমুখের অভিনর সেখনে বংগামেলে। আর সংগাহরপুনী শাস্ত্র কমা সংগাইতচিতি কিছু কিছু কারিংছাত। ক্ষাতা ভোলাকার কারে ওবালাল। আবে লাক্ষেন কলকাতার চেয়ে প্রবিশেশই বেশী আক্রেন। ঢাকা-ভাতরাকে তার শিষ্য বাংলায় সরদ বাদন ও সরদী আমীর খণ



পেকালের সংগীতগুণী ভাওরালরাজ রাজেগ্রনারারণ রায়। আর কলকাতার নামী শিষা ছিলেন অবনাশ্র গাংগ্রাী। বাজশাহী তালন্দের লাজিত্যোহ্ন শৈহত আতা হোসেনের একজন সোখান শিষ্য হয়ে তবলা শিখ্ছিলেন।

তবলা চচারি জন্যে লালি হয়ে।হনের একজন বাদকের প্রয়োজন ছিলা। কোন ওঙ্গুলা
সান্দী সারে সরেগ তবলা রিহালে করনেন
নিয়মিত। গারক বাদকদের যেমন সংগতকরের পরকারে তেমান সংগতিয়ার অথার
তবলাচ বা পাথোয়াজারিও দরকার ফ্রন্তীগারকের। তাই ধনী সংগতকাররা ত্যেক
ফ্রেনা প্রশান তান্য রিহালের
ফ্রেনা প্রশান কান্য রিহালের
ফ্রেনা প্রশানির সারিক বাদকদে নিয়ন্তের
রাখতেন।

সেই সমন আনীর খার সংগে যোগাযোগ ঘটল মৈর মশায়ের।

তালপেই তিনি থাক্তেন। কথানা বখনো কলকাতার আসতেন সাত। সেঞ্জনে আমীর থাকে তিনি দেশে নিত্রে যেতে চাইলেন। তালদেই থাক্সেন খাঁ সাভ্যো তার সর্বের সংগা রিয়াজ করে নেবেন তিনি। আর তার সর্বত নিয়মিত শ্নেবেন।

আমার থার কো. এপতি হল না এই
নিয়োগের প্রস্তাবে কলকাতার তাঁর অন্য
কোন আশা ভরসা ছিল না। লালভমোচনের
এই আশার নরি পক্ষে তথন মংলার্টি আশার লাকি তানক ভাল। পেশার পক্ষে
কারন চেয়ে অনেক ভাল। পেশার পক্ষে
কলার ক্ষেত্র খ্রেই দরকার বটে। কিম্পু
সামার বাঁর তথনকার সম্পূর্ণ অপ্রিচিত
অবস্থার এখানে নিরাপত্তা নেই। তাই তিনি
ভালদেশ চলে গ্রেম লালভমোহনের স্তেগ
এবং সেখানেই বাস্করতে লালভমোহনের।

লালতমোহনের কলকাতার সংগীতক্রণত ও লাটালগতের সংগোও যোগাহোল ছিল। বিখাত বল্টী অমৃতলাল পত্ত বিশেষ পরিচিত ছিলেন তার। হাবং দত্ত নামে সংপার-চিত ছিলেন তার। হাবং দত্ত নামে সংপার-চিত এই গংগীর তুলা ক্রানিওনেট সাদল সেবংগ আর বিশেষ ছিলেন না। তা ছাড়া, তিনি এসরাজ ও সংরবাহারেও একজন সংশক্ষ শিলপী। স্বামী বিবেলানন্দের জ্ঞাতিস্রাতা চাবা ৮০ এবিদিকে বাহাগর হলাগা স্বামান্তলীর খার দিয়া রাগসংগীতের কলাকার। তার সংগাত জীবনের আর একালিকে তিনি রপামান্তর সংরক্তি নাটাকের সংগাতি পরিচালক। ক্রানিওনেট বালুকরেপেও তিনি ক্রামান্ত, ক্রানি

ইত্যাদি মঞ্চে ব্রন্ত ছিলেন। (তাঁর বিস্তারিস্ত সংগীত-জীবনের পরিচয় 'আস্বের গল্প' ৮০-১০৫ পান্টায় প্রকাশিত)।

এখনে হাব, দত্তের প্রসংগ এই জনো যে, তীর মধ্যপথতার লালিতমোহন মৈন একবার গিরিশাচন্দ্রকে সদলে নিরে বান ভালদেন । সেখানে প্যায়ী নাটামণ্ডে গিরিশাচন্দ্র প্রমুখের নিরমিত অভিনরের আরোজন তিনি করে-। ভালদেন তাব বিবরণ জানবার মতন। গিরিশাচন্দ্রের প্রায়াণিক জীবনী প্রশ্ব থেকে সেবুক্তান্ত এখানে উদ্ধৃত করা হল ঃ—

স্ভাসিণ জারিত্নেট্-বাদক এবং স্থগীভাচার ব্যাহি অম্ভলাল দন্ত (হাব্বার্)
মহাশয়, রাজশাহাী-ভালদের জমিদার ব্যাহি
ললিতয়োহন মৈচ মহাশয়ের বিশেষ আগ্রহ
এবং রত্যে তাঁহার রামপ্র ব্যায়ালয়ার
প্রসাদকুলা ভবনে মধো মধ্যে গিয়া অবস্থান
করিছেন। লালিতয়োহনবাব যেরপে গীতবাদ্য প্রিয়, সেইর্প নাট্যান্রাগী ছিলেন।
কলিকাভার সাধারণ নাট্যালারা নায়ে রামপ্র
বোরালিয়ায় একটি সাধারণ নাট্যালারা প্রতিঠা
করিবার জনা সময়ে সময়ে তিনি বিশেধয়্প
উৎসাহিত হইয়া উঠিতেন।

'শিরিশান্দ যে নংসর (১৩০৪ সাল, ফালেণ্ন) পটার থিয়েটার পরিতাগে করেন, সে গংসর কলিকাতাগ প্রথম পেলগ দেখা দেয়। পেলার কলিকাতা চন্দল হইয়া উঠিয়াছে, আবালব্দ্ধনিতা দলে দলে শহর তাগে করিরা যাইতৈছে, বাবসা-বালিজা একপ্রকার বন্ধ বলিলেই হয়,—সে দৃশা যিনি দেখিয়াছেন ডিনি তাহা জীবনে বিক্ষাক ইইবেন না এই সমরে লালিভয়োহনবাব্ স্যোগ ব্যিয়া হার্বার্রে সাহাযো কলিকাতার সাধারণ নাট্শালা হইতে জালিনেতা ও অভিনেতা সংগ্রহ প্রেক রামপ্রে যোয়ালিয়ায় রংগালয় প্রতিষ্ঠার উদ্যোগাই হন।

হাব্ৰাণ্ দ্বাং গৃণী ছিলেন্ তাহার উপর গ্রহ্রাতা বিবেকানন্দ দ্বামীর প্রম আত্মীন বলিরা গিরিশচন্দ্র তাহাকে বিশেষ তীতির চক্ষে দেখিতেন। লালিত্বাব্র আগ্রহাতিশারো হাব্রাব্ আসিয়া গিরিশচন্দ্রকে রামপুর বায়ালিকার লইয় রাইবার জনা ধরিরা বিসলেন এবং বলিলেন্ লালিত্বাব্র আপনার সন্মান ও উপব্র পারিশ্রামি তুপানে সন্মত, এবং এ সন্ধর আপনার ফ্লি-কাতা পরিকাপত্র বাঞ্নীর।

পটার থিয়েটাবের সহিত গিরিশচন্দ্র তথ্য সংকর্ষ বিচ্ছিল করিরাজন, কলিকাতাতে এই হলুম্থেল ব্যাপার গিরিশচন্দ্র অগতা। এ প্রস্তাবে সম্মত হইকেন এবং তিন সহল্র মূলা বোনাস স্বর্গ পাটরা। রামশ্রে-বোরালিরায় প্রমন করিকোন। স্বর্গীর নীল্যাধের চক্তবর্তী, প্রবোধচন্দ্র বোর শ্রীষ্ঠিত, স্বেল্যাথি বোর (গানিবার্), ভ্রণক্রারী স্নালাবালা প্রভৃতি ক্ষাপ্রতিষ্ঠ অভিনেতা ও অভিনেতীগণও ব্যাবেশা কেন এবং অলপাধিক বোনাস পাইরা ইভিস্বের্ রামপ্র-বোরালিরার বল্লা জালভ্জোভ্নবাব্ উদ্যোগী প্রাথ ছিলেন। অলপদিনের মধ্যেই রংগালের নিমাপ-কার্ব শেষ করিরা আনিজেন। এদিকে গিরিশ-চন্দ্র শল স্থোঠিত করিরা ক্রেকথানি উৎকৃত্ট নাটক অভিনরাথে প্রস্তৃত করিজেন। থিরে-টারের নামকরণ হুইল—মাভাল (Marval) থিরেটার।

প্রথম রাচে বিচক্রমণ্যল নাটক অভিনয় হর। অভিনর আরুল্ড হইবার পরে গিরিশচন্দ্র কচ্চক রচিত নিন্দালিখিত ক্রিডাটি পঠিত হয় ঃ—

ইতিহাস করে গান রাজশাহী রাজস্থান স্কেলা স্কলা শামা স্কেরী প্রদেশ: নব রস বর্শচিত স্ধৌব্দ বির্জিত

মরাল-স্বভাব-গাঁব - আকর অশেষ: বিকাশ নটের প্রাণ, সহাদর বিদ্যান

অমানীর মানদাতা সম্মান-পর্যোধ;

সবিনয়ে নিবেদন জানার হে অকিণ্ডন-

বহু আশে আদিয়াছি—করো না বছন।
'থাতিনামা অভিনেত্গণ সন্মেলনে অভিনরও বেরপে উৎকৃষ্ট ইইয়াছিল, দশাকগণের
ভিড্ও সেইর্প অসম্ভব ইইয়াছিল। প্রম
আগ্রহে বহুপ্র ইইতে বহু গ্রামের দশাকগণ
আসিতে পাকে—সমস্ত দেশে একটা হ্লেশ্রেল পভিয়া যায়।

'অলপদিন তাভিনয়ের পর ললিকমোনন-বাব্রে অভিভাবকগণ ব্রিলেন যে ক্ষুদ্র শহরে টিকিট বিক্রম করিয়। লাভবান হওয়।
গরোকাশকা মাত্র। তহিরাই উল্যোগী হুইয়া
থিয়েটার বন্ধ করিয়। দিন। এাদকে কলিকাতার কথন শেলগের আভ্যুক ক্ষেমা। গরাছে। সম্প্রদাহ নিভারে কলিকাথেয়
প্রভারতান করেন। সহাদয় লালিত্যোহনবাব্র বভা এবং সম্বাবয়র সম্প্রদায় পরয়
ভানদেন তথায়া অবম্পান করিয়াছিলন।"
(গিরিকাচন্দ্র ২০২-২০৪ প্রেটা-অবিনাগাছদয়

প্রেণাপাধারে)।

আমার থাঁ ভালন্দে আস্বার কর্মন্থ আগালার ঘটনা মাডাল থিয়েটার। তা হল ১৮৯৮ সালোর প্রথম থিকের ক্রথা। তালান্ড-মোহনের তথম ২৫।২৬ বছর বয়স। তালান্ড-চার্চা আরম্ভ করে।জনান তার আনেক পরে। তারও পরে আমার থাকে তালান্দে নিরে

প্রকাশিত হলো!

প্ৰকাশিত হলো!

इतिनाताग्रग हट्टोशाधादग्रत

সম্পূর্ণ ভিন্নস্বাদে র নৃতন উপন্যাস

कायनात ४८० ১०

जामार्टणाव मार थानाधारमञ

নবতম উপন্যস

काछन রাগিনী ह

নীহাররঞ্জন গ্রেডর

কিরীটী অমনিবাস

(8**4 4.5**) 587

21 A.A.2-22.

२व थ॰७ — यन्त्रण्थ

OH W.R-20.

অবর বাহিত্য প্রকাশন,

৭ টেমার লেন, কলিকাতা-৯

জামীর ধাঁকে ললিত্রোহন জেন্ প্রে রাজ্পাহীতে এনেছিলেন তা সঠিক জানা বায়নি। তবে আনুমানিক ১৯০৭-৮ সালে হতে পারে।

আমার খাঁদ তালদেদ নিষ্কুত্র হবাব জারিখটি এক ছিসেবে মুল্যবান। কারণ বাংলাদেশে সর্মবাদন প্রচলনের সপো তাঁর ও কৌকর খাঁর (আর. তাঁর জোণ্ঠ কর্মধ-উল্লা খাঁরত। অংলাগ্রা সংবন্ধ আরু ।

বাংশায় তাঁদের অবস্থান সার্চের মাধানে সংগীতচ্চী সর্থে বাংগালী শিষ্য গঠন ইডানি কার্চের স্বরুষ্টের প্রত্তান করে। তাঁদের কাছে শিক্ষার ফলেই বাংগালী সহদীধা সংগীতজ্ঞগতে দেখা দেনা তাঁরাই প্রধানে সর্বেদ্র প্রত্তান কাজন বাংগালী শিষ্টেক।

তবে তার মধে। অগ্রশাস্থাতের প্রশন
লাক্ষ। কৌকর খা বাংগাসি শিষ্টাদের
সরল শিক্ষা দেন তাগে। তাপে তাতের
১০ চই বছর পারে সংগ্রীর খার বাংগালী
শিষ্বাস সরাল চিটা আবদ্ধ করেন। এবিষয়ে সনা-তানিংগর সাক্ষা কিছু বত্নিন।
তা উল্লেখ করবার আ্লালে তাদের বংশ বা
ম্বাণার একটা উল্লেখ করে নেওরা যার।

বাংলায় তার। দটি ভারত্তাসিংধ সলগী খালার পার্নারি। নিলাফা উলার খানের—তার দাই পাত আসাদ্যারা খাঁ কৌকর ও করাফালয়া খাঁ। আর পোলাম আফানীর ঘারের আমারি খাঁ। তার ঘরানার পরিচয় কথা পার আসবে।

কৌকৰ খাঁ নামে। পরিচিত আসাদ্রা। 220ব মালে করকাতায় ক্রামেণ্ড। ব্যরাগ্র কার সংগতিসমাজে স্কাতি ও সন্মানের সংখ্যা তিনি অবস্থান করেন ৮ বছর। সেই সময়ে সেতার স্বেবাহার এসরাজ যতে যেমন ব্লোজী শিষা গঠন করেন, তেমনি क्रिश्रोतक अनुद्ध⁸का जोत्रच क्रांड क्रिक्साना মধ্যে এক প্রতিভ্রোন ধীরে-দ্রন্থ বস্ হৰণ প্ৰেট ু প্রায় প্রায় সার্দ্দির সার্দ্দির স পরবত্তীকালে ধরিবেলন্থ বাংপায় এই ষ্টের একজন বথাপ প্রবঞ্জ বলে গণ। ছুপ্ৰয়েও ভূনি জেকিস হতি কাছে সকৰ भिक्का जारेक्स कार्यम ३५०%-३० महिला কৌকৰ খার ১৯১৫ সালে কলকাতায় মাতা হয়। ভার কয়েক মাসের মধাই তদ্রি জেন্টে সংখ্যুদর করামণ উল্লাভানীত क्कारी क्षारण हम् क्रिक्स माना प्रशास कारस **জ্বার জনো। ভূখন কৌকাবর অন। 'দায়া-**দের সংক্রে ধরীরেন্দ্রনাথও করামতরার ভালিম নিতে থাকেন। কলমং বংশোয় ছিলেন Se-28 दहरा छ-इनर ५5.05 आस्त **লক্ষে**ণতে তিনি প্ৰলেকণত হন। এই Break word after go and a war Aguero লাখ বস্ভাজনেও বংলায়ত **পথ**য় র্থার কথাও আছে। সে-সংক্রেড্রার জালে י ווה שידה שיות הנידלים ועים אחש ארומים

আমশীর ধাঁ কংলারা সংক্রম প্রানাসক সমাক্ষাস্পান ক্রমীর সাঁর আগাণান্ত সর অনুমূর্মানিক ১৯০৭-৮ বলা হরেছে। যদিও নর, তব্ ধরা বাক তারও দ্বিএক বছর
ভাগে ।তান এগেছেনেন। কিন্তু সরদে
শিষা তৈরি করতে থাকেন অনেক পরে।
বতদ্র কানা বার ১৯২০-২১ সালের
আগে অনার খার বাজালী সরদী শিষ্য
দেশা দেশনি। বাংলায় গ্যারী বাস জারুছত
করবার এত পরে কেন তিনি শিষা করেন
তার কারণ বোঝা বাবে তার সংগীতজীবনের কথায়।

তার আগে আলাউন্দিন খার প্রসংগ একট্ আলোচনা করে নেওয়া বায়। কারণ িনিও বহু বিখ্যাত বংশালী সরদ?। এ-বিষয়ে তাঁকৈ প্রচীনতম মনে করতেও কেউ কেউ পারেন। কারণ, ত[া]ব বয়স নিধে প্রচারিত হয়েছে অনেক অতিশয়েশিঙ ও অতিরঞ্জন। অপ্রাসন্পিক বলে সে সম্পকে পর্যালোচনার অবকাশ এখানে নেই। শুধ্ সংক্ষেপে বলা যায় যে তার জন্ম ১৮৮০ সালের আগে নয় এবং তিনি সরদবাদন ,আরুমভ করেন সংগীতজীবনের পরিণত কালে। উজীর খাঁর কাছে তাঁর সরদাশিকাব স্চলা ১৯১০ সালের (অর্থাৎ ধারেন্দ্রন্ধ বসার শিক্ষারদৈভর) আনক পারে। তার আলো, দিনাজপার নরবারে সরদী আহম্মন আলীর কাছে আলাউদিদনের সরদীপক্তা তরি নিজের সাক্ষেটে ট্রেলখনীয় সহা। তাও ১৯১০ স্থলের প্রবিভাগী কিনা প্রমাণ সাংগ্ৰহ

আমীর য'ও কৌকব খাঁর প্রস্ঞো দ_টি সরদী ভর গার নীম করা হয়েছে : ভারা দক্তেনে ছিলেন যথান্তমে গোলান অবল ও নিয়ামত উল্লার অবের । পোলাম আলী নিয়ামতেরই সমসাময়িক ছিলেন আর একজন সরনী এনায়েং হোসেন। **अ**कड़ि भत्रम्वापद ত পত ব্ংল্যার প্রবৃতিতি হয় এবং তিনি বাংলাদেশেই তার সংগতিজীবনের অনেকাংশ অভিবাহিত করেন। এনায়েং ছোমেন ছিলেন ভাওয়াল-वाक बारकन्प्रनाताश्चरभव प्रवचावी वापक। विन्छ এনায়েৎ হোসেন কোন বাংলালী সন্দৰ্শ শি**ষা গঠন ক**রেননি বলে তাঁ_ব বা ত'ার ঘরাণার কথা উল্লেখ করা হয়নি। ঢাকার স্পরিচিত সেতারী ভগবান দাস কিছু কিছু শেখেন অনেক ও তাদের কাছে: ভাবের মধ্যে একজন সরসী নেনায়েং হোসেন। কিন্তু ভগবান দাস ছিলেন স্তোরবাদক। এনায়েং হোসেন শুধ**ু** তবি প্র সাকায়েৎ হোসেনকে স্তুদ তালিয় দিয়েছিলেন। আরো একটি কথা জ্ঞানানে। যায় এপ্রসংখ্য। এনায়েৎ ত্যোসেনের বংশ পরে নিয়ামত্রার ধারার সংগে যুক্ত হয়ে शाप्त। कामग, সাফায়েই-পাল সংগাৰং বিশাল করেন কৌকব খাঁর কন্যাকে। সার তার প্রের পর্যায়ে সপাত্রতের প্রাক্তর কেকিয়-माजन कहाजर पेकाद जा लिख । श्रिकां बार स्था সেস্ত্র প্রসংশার এখানে প্রয়োজন নেই।

এন-সেং হোসেন ভাওরাল পরবারে নিমার লগার আনের বছর পরে কলকাভার সংসাম কৌনর গাঁ ও ভারাীন গাঁ। তাঁর। বাজনো পাম গদট সমায় এ-প্রক্রেশ একে-ছিলোন, দেখা গৈছে। তাদের মধ্যে কোকব খাঁ ররে গেলেন কলকাতার। আর আমার খাঁ লালিতমোহন মিলের সংগ্যারাজাগাহীতে চলে এলেন। একরকম শ্যারাজাবেই তালান্দে বাস করতে লালানেন আমার খাঁ।

তালদের রমা প্রাকৃতিক পরিবেশ।
লালতমোহনের এখানে বিস্তৃত এলাকা।
তার অন্যানা সদনের মধ্যে দেবলেরার
মান্দর অতিথি সেবার আবাস ইত্যাদিও
গথাযোগ্য আছে। আমীর খার বসবাসের
বাবস্থা হল অতিথিশালার। কোন অভাব
নেই। আমীর খাঁ স্বাক্তবেদ্ নিশ্চিতেও
এই নতুন পরিবেশে দিনহাগন আরম্ভ
করলেন।

এখানে সংগীতচর্চা হত লালত-মোহনের বৈঠকখানার। তাঁর তবলার সংগ কখনো আমাীর খাঁ বাজাতেন। কোন সময় রাগালাপ করতেন সরোদে। বাহত্তর সংগীতজ্ঞগতের সংগু এখানে কোন যোগ ছিল না। তাহালেও ছিল একটি সাংগীতিক পরিবেশ। আর আমাীর খাঁও সংতৃণ্টিতি, শাহিতপ্রিয় স্বভাবের মান্যে। সেজনো ্লালকে তাঁর স্বাধেই কালাহিসাত হতে লালকে

এইভাবে করেক বছর কাটল। আমীর ধাঁ সেখানে নিজের সংগীতচচাত করে মেতে লাগলেন বড় আসর কিছু না হলেও। জালিজাহান তার কাছে কথনো সরদ শিক্ষা করেনান। তার সংগত বাজাবার সথ। তবলা ভিন্ন আনাহিত্ব দেখেনানি তিনি। কিছু রাজধাহাতি আমীর থার অপর দ্বতক্ষন শিষা হরেছিলেন সে-সময়ে।

এ-কথাও স্মরণ করা যার যে, এই
সময়ের আগেই ক ক্রতায় ধরিকন্তনাথ
বস: সংগীতচ্চা শাক্ষত করেছিলেন
কৌকব ধরি শক্ষাধীনে। কসক্রতার
সংগীতসমাজে তখন কৌকব খাঁবিশেধ
খাণিত ও প্রতিপতি অভান করেছেন।

সে-সময় আমীর খার কাছে রাজ-শাহীতে ধারা শেখেন তরি। স্পৌতজন্তে স্পরিচিতি হননি। তব<u>ু অ্মীর খার</u> প্রথম শিষার্পে তাদের নাম দেওয়া হল এখানে। একজন হলেন জক্ষরকুমার মৈত-বিখাত ঐতিহাসিক-গবেষক ইনি নন। ইভিত্যস গুণ্থালেখক লক্ষ্যকুমার মৈর ছিলেন ভিল্ল ব্যক্তি। আমারি খাঁর শিষ ভাক্ষয়কল্পাৰ মৈত্ৰ ভুগভাদৰ কাছে সম্পদ শিক্ষা করেননি। শিথেছিলেন এসরাজ। আর একজন রাজশাহীতে সরদ জেপেন জানীর খাঁর কাছে। জাঁর নাম পঞ্জান গাংশ্যাপা্ধাায়। তিনি কমসি,তে রাজনাহী মিরা<mark>সণী ভিসম্পান ভিনি সর্লাগ</mark>নিল প্ৰাক্ষননি সংগতিজ্ঞাতে সংসাৰ নোগ ক্রাপে নেন। তিনি কলাখনের कर्राक्षकरभाव व्याभाग्र विवासम्बद्ध स्वावी साक्ष माध्यस्य हम भटराहीकारण।

নাক্ষাক্রী চালানে অব্যাপ্তশানে আর আফানি থার কাছে আর কেউ শিক্ষা করেননি। উলেখ করবার মতন কিছু নর, তবে নিশ্চিতে দিন অতিবাহিত হতে লাগগ আমীর ধার। বৃহত্তর সংগীতভ্রপৎ থেকে তিনি বিভিন্ন হয়েই তালকে রইলেন।

এইভাবে লালিডমোহন মৈরের আশ্রয়ে আমীর খা ছিলেন ১৯১৫ সাল প্যন্তি। আরো হয়ত থাকতেন কিন্তু একপ্রকার বিপত্তি ঘটল।

এই সময়ে অনেকখান পরিবতিতি হয়ে গেল মৈর মহাশয়ের জীবন। একটি ম্ভাতে তিনি বড মানসিক আঘাত পেলেন। তার ফলে আগেকার অনেক স্থ ও আনন্দের বিষয় ত্যাগ করলেন একে নয়, সংগীতেয় একে। শুধ্ব তবলা বৈঠকও বঞ্জিত হয়ে গেল। আগে থেকেই ললিত্মোতন ছিলেন বৈশ্বীয় ভাবের মান্ত্র। এবার ধর্মকর্ম তার প্রায় সারা-দিনের অবলম্বন হল। রাধাবলভ জাডি বিগ্রহ প্রতিষ্ঠা করে সঙেগ রাখতেন সর্বদা। ত্রণরই ধ্যানে বেশির ভাগ সময় ত্রণর অতিবাহিত হয়ে যেত। এই অবস্থার আমীর খার সংশা তার সংগতিচচাও বিশ্ব হলা।

তবে জামীর খা মেসব স্থ-স্বিধা ভোগ করে আসছিলেন তার বৈতন, বস-বাস ইত্যাদি বিষয়ে যেমন বারস্থা ছিল, সবই রইলা। কিগত আমীর খার সলো সংগীতের বৈঠক শ্যে বন্ধ হল না তার বাজনা শোনার আগ্রহত চলে গেল তার। ওস্তাদজীর করণীয় বিষয়ে শ্যে একটি নির্দেশ ললিভ্যোহন দ্বেমন। কুলদেবতা সদন্মাছনের মন্দিরের শ্বারে বাজনা শোনাবেন আমীর খা।

হৈচমশায় ভাকে বলেছিলেন, মন্দিরে কেবল ঠাকুরের আ্রতির সময় ব্যাজিরো দেবেন '

কাদিন সেই দেবালয়ে তিনি সর্বদ বাজিরেও ছিলেন। কিন্তু এভাবে দিন-যাপন অসমতব হল খাঁ সাহেবের পঞ্চে। সংগীতের পরিবেশ তালাদেদ এখন আর একেনারেই নেই। ফৈচ্চচাশারের বৈচকে সংগীতের বেটকে আবহ জিল তাও লাম্পত হয়েছে। এখন শুধু বিশুহের সামনে একা বস্দে কিছ্কেশ বাজানো।

এই অবশ্যার আর আমীর খা থাকতে গারলেন না। কিল্ড ললিডায়াচন পারে আমত করেন, তাই ভবি অল্লান্ডেই আয়ীর খা ডাকান্স ভাগা করলেন।

এ-সময় শীতলচন্দ্র মাথে।পাধানুরের বিশেষ সহায়ত্ম পান আমার খা। পরবত্তীকালের স্পারিচত এসরাজবদক,
শীতলচন্দ্র। মহামাসিংহ গোরীপ্রের জামলার জ্বলের বহু, ওত্তাদের সংগলাভে তিনি
সংগীতগ্রা হুরেছিলেন। আমার খার
ভালন্দ্রনাসের লেডান্দ্রে শীতলচন্দ্র ছিলেন
এই এস্টেটের এক কর্মান্তর্গ এবং সংগীত
বিষয়ে আগ্রহী। অন্মীন খা জামন ত্যাগ
কর্মাস বিক্রাস্থ্য ব্যাল্যানি বার্

যোগ ঘটিরে দেন। তা হল ১৯১৬ সালের কথা।

আমার ধার তথন স্থায়ী আশ্ররের প্রয়োজন। কলকাতার সংগতি ক্ষেরের সংগতি তার কোন হোগ নেই। এই পরিভিথতিতে শতিকাচন্দ্র মুখোপাধ্যায় তাকৈ নিয়ে আসেন রক্ষেণ্যক্ষিকার রাম্ব চৌধারীর কাছে।

পরবত্রিকালে মাজহুদত সুস্গতিপ্রেমী সংগতি-সেবক বজেন্দ্রকিশোরের দরবার বিখ্যাত হয় বহু গুলী সমাগ্রে ৷ কিল্ড সেই ১৯১৬ লালের আগে তার তৈয়ন কোন নিয়মিত সংগতিসভা গড়ে ওঠেনি। শ্বস্থান গোরীপারেও নয় কলকাডায় আমহাস্ট প্রীটের অস্থায়ী আবাসেও নয়। বলতে গেলে, ব্রজেন্ড্রকিশোরের স্পাতি দ্রবারের পত্তন হয় আমীর খাঁকে নিয়ে এবং ১৯১৬ সালে। এ ব্যাপারে শীতলচন্দ্র মংখাপাধ্যায়ের উল্লেখ্য ভূমিকা আছে। আমীর খার মতন স:র্শিক্সীদের নিষ্ট করে নিয়মিত সংগীতসভার অনুষ্ঠানে তিনিই খানিকটা উম্ব_িশ করেন রজেন্দ্রকিশোরকে। আম্মীর খাঁর পরে আরো নানা কলাবতকে রঞ্জেন-কিশোর যে বিভিন্ন সময়ে নিয়ক্তে করেছিলেন তা আনেকখানি শীতলচন্দের তৎপরতার ফলে। তিনি এইসব যোগাযোগ করা এবং দ্র থেকে নানা গাণীর কাছে সাংগীতিক সংগ্রহের জন্যে গোরীপরে এস্টেটের ভার-প্রাণ্ড হয়েছিলেন। অবশা এই ধ্রুনের কাজের জনে। কালিচরণ রায় নামে আর একজন সর্বক্ষণের কমীংকও নিযুক্ত করেন হজেন্দ্রকিশোর। আমীর থাঁকে নিযন্ত করায় রজেন্দ্রকিশোরের সংগতি জীবনে আর এক বিষয়েও উপলক্ষ্য হন শীতুশচন্দ্র। রুজেন্দ্র-কিশোর প্রথম জীবন থেকেই সংগীতে আগ্রহী হলেও তার কেবল তালবাদ্য বা সংগ্রহান্ত এবণতা ছিল। ম্রোরিমোহন ্রেণ্ডের শিক্ষায় পাথোয়াজ বাজাতেন তিনি। কঠসপ্যাতে ও স্বেয়দেরর শিলপ্রদের কাছ থেকে সংগীতবিদ্যা আহরণ করার দিকে তার যে উদ্দেশ মধাজীবন থেকে দেখা যায়, শীতলচম্দ্র তার মালে অনেকথানি ছিলেন। আর আমীর শাঁকে নিযুক্ত করা থেকেই তার সূত্রপাত। রজেন্দ্রকিশোরের এসরাজ চচাও তার পরের কথা। অবদা আয়াীর খাঁকে নির্মিত স্ংগতিসভা আর্ডের আগেও <u>রজেন্দ্রকিশোরের সংখ্য কোন কোন গুণীর</u> সাংগ্রীতক যোগ ছিল। য়েমন, অমাতলাল দত্ত (হাব; দত্ত), কিংবা দক্ষিণাচরণ সেন। কিম্পু তিনি সংগতি কিয়া তাদের কাছে শিখতেন না। হার; দত্তের ক্ল্যারিওনেট প্রভৃতি যশুসংগীত উপজেগ করতেন। দক্ষিণাচরণের সংগ্রেজালোচনায় উপক্ত হৈতেন সংগীতভঙ্গ বিষয়ে। লাশচাদ বড়াল₋ এই সংগ্রারকেন্দ্রিকশোরের বন্ধ্যক ছিল। তাঁর গানের সংগ্রে সংগতত করতেম লাল-চাঁদের গ্রহ। আমার থাকে নি**য়ত্ত** করবার আলে রজেন্দ্রকিনোরের এই ছিল সাংগীতিক পরিচয়।

ওদিকে অভাগি ভাগ সংগণিকজীবনেও ভ্ৰম একটি পালাবনগৈর কাল বুলা হায়। কারণ তারপর থেকে তিনি করে যুত্ত হতে থাকেন বাংপার বৃহত্তর সংগতি সমাজের সংগতি সামাজের সংগতি আরম্ভ হয়। কারণ ব্যক্তের তার পরি-চিতি আরম্ভ হয়। কারণ ব্যক্তের তার পরি-চিতি আরম্ভ হয়। কারণ ব্যক্তের কারভারের করকে। বেশির ভারই থাকতেন কারভারের তথন বাস করতেন। বাংপার তংকালীম রাজনৈতিক, সামাজিক ও সাংস্কৃতিক আন্দোলনে প্রকাশ্যে, গোপনে যুক্ত ছিলেন প্রকাশ্যের। সেই স্ত্রে নানা মানাগণা ব্যক্তির সংগাই তার যোগাযোগ ছিল। তাদের অনেকে উপান্ধত হতেন তার গ্রেহ। আমার ধারও কলকাতার পরিচিতি লাভের আরক্ত

সে যাগের ব্রজেন্দ্রকিশোরের পরিচরগু এখানে একধার স্মরণ করা হার। স্বদেশী ভাবধারায় উত্বঃম্ব দেশসেবক তিনি প্রথম য়োবন থেকেই। তাঁর নানাম্**খী কম'বোগ** সেই মূল জাতীরতাবোধেরই প্রকাশ। विश्ववी जात्मानात्वत जामि भव थातकर তিনি আনুকৃশা করেন। সেজন্যে গ**েড** সংগঠনের ও অর্থবিন্দ ছোষ প্রমাণের তিনি একজন নেপথা সহায়ক। যাদ্ৰপ্রে সংগ-প্রাস্থ 'জাতীয় শিক্ষা পরিবদ' (বার পরিণত র'প হাদবপ্রে বিশ্ববিদ্যালয়) সংস্থার প্রতিষ্ঠার এক প্রধান উদযো**গী। জীড়া**-ভগতে টাউন ক্রাবের অনাতম **স্থাপনকতা।** হিশ্বস্থান ইনসাবেশ্সেরও এ**কজন প্রতি**-ফাতা এবং প্রথম কোলধাক। **অন্যাদকে** রজেন্দ্রকিশোর ভারত স্পর্ণত স্মা**জের অন্য**-ভুম বিশিল্ট সদস্য ও নাট্যশিল্পী। মুদ্ৰগা-চার্য মুরারিমোহন গ্রেতর এক শিষারূপে পাথোয়াজ বাদক, নানা সংগীতজ্ঞের সংগ্র ভার যোগাযোগ, ভারতী**য় সংগীতের তত্ত্ব**-বিষয়ে আগ্রহী ইত্যাদি।

এমন সমসে শীতলচন্দ্রের জন্যে ভারি সংগ্যাসরদী অমীর বা পরিচিত ছলেন। বা সাহেবকে নিয়মিতভাবে নিয়ক্ত হরবার প্রস্তান করলেন শীতলচন্দ্র।

রজেগ্রহিংশার সম্মত হলেন। **বল্লেন,** তা বেশ। গোরীপ্রে ডামার **এখন বাঁধা** কেউ গ্রাণ নেই। আমার খাঁকে **রাখ্য**

শ্বে গোড়ীপ্রে এয়। রঞ্জেব্রাকিশারের কাছে নিষ্কে হয়ে আম্বীর খাঁ কৃপকাভাতেই বেলি থাকতেন।

রজেন্দ্রকিশারের তথ্যকার সেই বাস
শুল ছিল রাম্মোহনে রারের আমহাদ্র্ট

শুলী উবনের সিক বিপ্রতি দিকে। পশ্চিম
মুখী এই বৃহৎ গৃহটিও রামমেহনের

ওংকালীন বংশধর পারেনিশাহন রারের ছিল।
১৯০৭ থেকে ১৯৩০ সাল পর্যাত এথানে
বাস করেন বংলাকাকদার। এই দীর্ঘকারে
ভার যুবতীয় কাহাধারার কেন্দ্রশ্বল ছিল
ভারহাদ্যি দুর্গীটের সেই বাসভ্যনঃ

আমীর গাঁর কগকাতায় প্রথম আসরও সেই বাড়িতে হত। তাঁর সংগতিজীবনের এই পরিবর্তানের সময় আরো দ্র-একটি সংবাদ উর্লেখ করবার মতন। বেমন, আদীর থাঁ রখন ভালন্দ থেকে চলে বান, প্রার তখনই কলকাভার কোকব খার আকাশ্যক (৪৫ । ৪৬ বরসে) মৃত্যু হয়। আর আমীর থাঁ রখন রজেন্দ্রকিলারের আপ্রার লাভ এবং কলকাভার বাস আরুভ করেন, তার সমকালেই কোকবের জোট ভাতা করামত্বস্রাও স্থায়ী হন এই লাহরে। কোকবের ধারেন্দ্রনাথ বসু প্রমুথ শিক্ষার করামত্বস্রার ভালিমও তথ্ন থেকে

আমীর খাঁ গোরীপার বা কলকাডায় শুখ, আসরই করতেন না রজেন্দ্রকিশোরের সংগতিসভায় থা সাহেবের কাছে ব্রক্তেন্-কিশোর রাগবিদ্যা শিক্ষা ও সংগ্রহ আরম্ভ করলেন। একটি এসরাজ যুদ্দ তাঁর ছিল বটে। কিন্তু হাতে সংগীতক্রিয়ার বিষয়ে ছিলেন না। তিনি উৎসাহৰী ছিল-বিভিন্ন রাগ সংগ্ৰহ । রাগ্রের রূপ गर्रुन. আলাপচারী লিপিবম্ধ করে নিডেই रिकामि **উত্যাদি** অগ্রহী ছিলেন। আমীর খার কাছে তিনি বহু রাগের তত্ত্ব সংগ্রহ কর্রোছলেন দীর্ঘ-কাল বাবং। আমার খাকে তিনি নিয়ামত ৰেতনে নিয়ক রেখেছিলেন। সেজন্য আমারি খার দেওয়া বহু রাগের আলাপ, গং ইত্যাদি এজেন্ডাকণোর ও ভার পরে কীরেন্দ্রকিশেনের সংগ্রহে থাকে করেকটি রুজেন্দ্র কিলোরকে খাভায় নথিউদ্ধ হয়ে। এই দিক থেকে আমীর খাঁব অন্যতম শিকা বলা যায় এবং একজন আদি শিষা।

আমার থা নিযুক্ত থাকাকালেই আরো অনেক কলাবভ বিভিন্ন সমায় বুজেন্দ্র-কিশোরের দরবারে ভিলেন। যেয়ান এনায়েৎ থাঁ. মহম্মদ আলী থাঁ, হাফেজ আলী আবদালা খাঁ (আমীরের পিতা) করাযতুলা প্রস্তৃতি। তাদের সকলের কাছেই তিনি (ও ভার পাত্র বারেন্দ্রাকশোর) এইভাবে সংগ্রহ ক:রন। পরে বারেন্দ্রকিশোর আমীর খাঁ ছাড়াও উন্ধ ওস্তাদদের কাছে শিক্ষা করে-ছিলেন নানা সহয়ে আলাউন্দিন থার কাছেও। বীরেন্দ্রকিশোর স্বর্গান্তচল আরুন্ত করবার আবেগ শতিলচন্দ্র আমার খাঁ প্রমূখ কলা-বস্তদের কাছে রাগ সংগ্রহ, লিপিকরণ ইত্যাদি করতেন রজেণ্দ্রাকশোরের পক্ষে। বাল্যকাল থেকেই সংগতিশিক্ষাথা, আলাউন্দিন থার প্রথম জীবনের অংতরংগ সহযোগী শীত্র-**চন্দ্র পরে গ্**ণী এসরাজবাদকর্পে পরিচিত হয়েছিলেন। তিনি নানা ওস্তাদদের কাছে সংগ্রহ, তাদের সংগ্র হোগাযোগ ইত্যাদির ভারপ্রাণ্ড কর্ম'চারী ছিলেন গৌরীপার এস্টেটে। সেই সূত্রে সব কলাবভদের কাছে, হিক্সাই **राजन्त्र**िकरमारतत আন,ক,লো **সুযোগও শীতুলচন্দ্র** পান। তার সম্বাবহার_{ণ্ড} ক্রেন। শীতলচন্দ্র আমীর খারও সেই প্রথম হাগের একজন শিষ্য। ভবে তিনি সরদ্বাদক হুননি। এসরাজ যথেত্ই আহরণ ও চচা ক্রেছিলেন আমীর খাঁর বিদ্যা। শাতিলচন্দ্র গোরীপারে বা কলকান্তায় রঞ্জেন্দ্রকিলোরের নিষ্কু ওস্তাদদের কাছেও থাকতেন। আবার ভার পক্ষে দ্রেও বেতেন রাগাদি সংগ্রহের উন্দেশ্যে। শীতলচন্দ্র ছাদের কাছ থেকে সপ্শীতবিদ্যা আহরণ করে এনেছিলেন তাদৈর মধ্যে একজন হলেন গয়ার বিখ্যাত ব্বীয়ান কলাবত হন্মান্দাস্কী। থেয়াল ও এসরাজের একটি বিশিষ্ট ধারা-প্রবর্তক, গুয়ালী সংগতিকেন্দ্রে আমর্য-স্থানীয় হন্মানদাস। তার কাছ থেকে সংগ্রহ ও লিপ্রশ্ব করতে শীতলচন্দ্র গরায় যাতায়াত করতেন। তেমনিভাবে তিনি যান বার-ভাগ্যাতেও। আমার খার পিতা আবদ্ধা থাঁকে ব্রক্তেন্দ্রকিশোরের পক্ষে শতিশচন্দ্র কলকাতায় এনেছিলেন। কলকাতায় আব-দ্লো বেশিবার আসেননি এবং বেশিদিনও ঘাকেনান। তিনি তখন অশীতিপর বংধ। হাত তথন আর তার স্ববশে তেমন ছিল না। কিন্তু ধ্রুপদ অঞ্চের তথনো অসাধারণ গ্রাণী ছিলেন আবদ্ধা থা। স্বারভাল্যা থেকেও তার নিকটে শীতসচন্দ্র তাদের ঘরের किছ, সংগ্রহ এনেছিলেন।

বিভিন্ন ঘরাণার বিদ্যা সংগ্রহে আগ্রহী ছিলেন রজেন্দ্রকিশোর। সেজনোই নানা কলা-বতদের নিমন্ত করতেন। আর দ্বে থেকেও প্রয়োজন হলে, সংগ্রহ করতে যেতেন শতিলাচন্দ্র।

আমার খাঁ ও আবদ্রা খাঁও একটি বিখ্যাত ঘরাণাদার ছিলেন। আমার থাকে নিষ্কে করবার পর ক্রমে তাঁদের সংগাঁত-পাঁরবদের কথা ক্রেমেছিলেন রক্তেম্পাঁত-পাঁরবদের কথা ক্রেমেছিলেন রক্তেম্পাঁত-পাঁরবদের কথা ক্রেমিছার সংগা তিনি যোগাযোগ করেন। এই সরদী পাঁরবারের কেন্দ্র তখনছিল ন্বারভাগায়। ন্বারভাগা মহারাজার দাক্ষিণে। এ বংশের একাণিক গ্রাণ ভখন প্রতিপালিত হতেন। বথা মুরাদ আলার প্রাস্থার আমার বাঁও সেখান থেকেই কলকাতার এসেছিলেন।

আমীর খাঁ এই ঘরাণার প্রথম পরেই গোলাম আলী আগেই বলা হয়েছিল--ভারতে তিন্টি সরদের ঘরাণা ছিল বিখ্যাত। সেই তিন ঘরাণার প্রবর্তক হলেন নিয়ামং খাঁ, গোলাগ আলী এবং এনায়েং হোসেন খা। তারা তিন্তন স্মস্মারক ছিলেন। আর ভিল ভিল সংগীতকেন্দে হলেও সরদ-551 তারা আরম্ভ করেন প্রায় একই সময়ে। ভাদের তিনজনেরই পূর্বপ্রায় কাবুল-নিবাসী ছিলেন। বংগের ধারায় কাব্রলি সরদবাদক থেকে তারা ভারতে, ভারতীয় সংগীতের সরদবাদকে পরিণত হন উনিশ শতকের মাঝামাঝি সময়ে। কথিত আছে, তাদের মধ্যে সরদের বর্তমান আকার-প্রকারের প্রবর্তন করতে নিয়ামৎউল্লার প্রতিভা সব চেয়ে কার্যকর হয়েছিল।

এই তিনটি ঘরাণারই আদি কিংবা পরের কোন প্য'ারে সেনী ঘরের সংগপশ ছিল। অর্থাং তাদের সংগতিবিদা লাভ হয় ভানসেলের কোন না কোন বংশধরের ভালিমে বা সহায়ভায়।

প্রথম ক্রীবনে ছিলেন বেরা-রাজ বিশ্বনাথ

আমীর খাঁর বরাণার আদিপ্রেব গোলাম আলীও ভার বাভিক্তম নন। গোলাম আলী সিংছের দরবারে। বিশ্বনাথের ওশতাদর্পে তানসেনের প্রেবংশীয় জাফর খাঁ, প্যার খাঁ প্রাজারা অবশ্থান করতেন। তাঁদের কাই থেকে প্রোক্ষে লাভ করেছিলেন গোলাম আলী, এমন প্রাস্থিম আছে। গোলাম আলী এই বংশে যেমন প্রথম সরদ আরশ্ভ করেন, তেমনি গং তোড়া বাজাবার তে ইত্যাদিও অনেক্যানি বে'ধে দেন। গোলাম আলীর খাঁবা গং এসে পে'ছৈছিল আমীর খাঁব হাতেও। আমীর খাঁব ছিলেন গোলাম আলীর স্মপ্রেক্র প্রপাঠিত

গোলাম আলীর তিন প্র। হোসেন খা ম্রাদ আলী ও নামে খাঁ। জ্যেন্ঠ হোসেন খা পিতার শিক্ষার চেরে লক্ষ্যার গোলাম মহম্মদের তালিমে গঠিত হন। গোলাম মহম্মদ ছিলেন তানসেনের কন্যাবংশীর ভ্যরাভ খার প্রথম স্বরবাহার বাদক শিষা।

লোলাম আলার দ্বিতীয় প্রে ম্রোদ্ অলা। তিনি পিতার দিকা ছাড়াও রামপ্রে দ্রবারের (উড এররাও খার পরে) আমার খার বিদ্যা অনেক আদার করেন। মুরাদ্ আলালৈ, বিশেষ বিশীদ্বত আলাপাচারিতে নিপুণ দিংপা বলে তার স্নাম ছিল। কিম্পু মুরাদ আলা ছিলেন অপ্রেক। আবদ্ধা খা তার পোষাপ্রে। আবদ্দার অমপ্রয়স ম্রোদ্ আলা ভাকে লক্ষ্যোতে পেরাছিলেন। সেখান থেকেই সংগ নিয়ে আসেন। পোষা নিয়ে শালন পালন করেন, ভালির দেন বথাবিধি। আবদ্ধার নিজের প্রেপ্রবের কথা কিছু জানা যার্নি।

গোলাম আলার কনিস্তব্য নালে খাঁছিলেন সরদাঁ হাফেজ আলার বি-পিতা। কিব্ছু হাফেজ আলার তালিম নালে খাঁ ডিল রামপুর দরবারের উজার খাঁর কাছেও হয়েছিল।

গোলাম আলীর নগুথ প্রে হোসেন থার একমাত প্রে অস্থর আলী এই ঘরাণার এক শ্রেণ্ট শিশপুট ছিলেন। আস্থর পিতার শিক্ষার চেয়ে বেশি পান বাণকার রহিম খার তালিম। রহিম খা ছিলেন ভানসেনের কনাবংশীয় এবং রামপুর ঘরাণার আমীর খার ক্রিণ্ট সচেদর।

এইভাবে দেখ। হায় এই ঘরাণাতেও প্রায় প্রতি প্রযায়ে ভানসেনের কোন মা কান বংশধরের কাছে বিদ্যালাভ হয়েছিল।

আমীর থা যথাথ ই বলতেন, 'বে যা বলকে, আমাদের বংশ সেনীদেরই শন্দে শন্দে মান্য হয়েছে। এ বিষয়ে সন্দেহ নেই।'... ...

গোলাম আশীর ন্দিতীয় প্রে ম্রোদ আলীর সময় থেকে তাঁদের ব্যারভাগ্যার বসবাস। তার পোষাপ্রে আবদ্ধা খাঁ হলেন আমারের পিতা।

মুরাদ আলীও আবদ্লোর ১তন দীর্ঘ-জীবী ছিলেন। পোঁচ আমীর খাঁকেও ভাল তালিম দেন মুরাদ আলী। আমীর খাঁ পিতার চেয়ে মুরাদ আলীর কাছেই বেশি শিখেছিলেন।

আবাল্য এই আনহে শ্বারভাগ্যার বর্ষিস্ত হন আমীর খাঁ। পিতা আবদ্ধরা এবং পিতা- মহ মরোদ আগার কাছে অচপ্রেরস থেকেই নির্মাবন্ধ শিকালান্ত করেন। সেই সপো নির্বাস রিয়াল। এইভাবে আমার খাঁর সপোতজাবন গাড়ে ওঠে। যৌবনেই তিনি হন সদেক সরদ্বদেক।

কিন্দু ন্বরভাগ্যায় তারপুর তরি বাদের আর ইচ্ছা হল না। মহারাজ্ঞার দরবারে যকে হবার সন্মাণ বিশেষ মেই। কেননা, জ্ঞাতিভাতা আস্থার আলী তখনো দরবারের সরদা। তাছারা একটি পারিবারিক কারণ ঘটল। নিব এরার নিকা করপেন আবদ্দো লা। এমনি নানা ঘটনায় আনীর খাঁ আর শ্রেজভাগায় বাস করপেন না।

তিনি ভাগ্যাদেব্যণে চলে এলেন কলকাতায়।

ত্রিপর লালত্যোহন মৈরের সংজ্য যোগারোগে তরি তালদের পর্ব আরুদ্ভ হল। সেখানে কয়েক বছর বাসের পরে ১৯১৬ সাল থেকে রুজ্বেন্দ্রাক্লোরের আশ্ররে একাম আমার খাঁ।

ভারপর থেকে ভিনি বৃহত্ব সঙ্গীতস্থাকে প্রিচিত হতে লাগগেন। তার স্কুলাত হল ভার এখনকার পুঠিপোথক রজেন্দ্রকিন্ধের আন্কর্ণা। আগে বলা হয়েছে, কলকাতার আমির লার প্রথম আসর ব্যক্তর। গোরের সেই আমহাণ্ট ছৌটের বাসম্থানেই হত। সে বাড়ির ওখনকার কিকানা ছিল ৫৩. আন্তাণ্ট গুটি এখন হয়েছে ১, মহেন্দ্র শ্রীট এখন হয়েছে ১, মহেন্দ্র শ্রীটা এখন হয়েছে ১

আমার খা কলকাতাতে তখন থেকেই
প্রত্যুগ বাসায় থাকতেন। রজেণ্টাকশোরের
নাছে তিনি একাতভাবেও নিযুক্ত ছিলেন
না। অখাহ পেশাগত স্বাধীনকা ছিল খা
সাহেবের। তিনি অনাট মাুজরো করতে
থারতেন অনা শিষ্যু গঠনেও কোন বাদ্য
ছিল না তার। রজেণ্টাকশোরের কাছে
নিযুক্ত হত্রার পর আলার খা ১৯১৬
ক্ষেকতায়াই ছিলেন।

সেজন্যে কলকাতার বাস আরুও করবার পর থেকে এনে আলীর খার পেশাদরে জাবিনও আরুনত হর। কয়েক বছরের মধ্যে এখানে তার শিষ্যগোদীও লড়ে উঠতে থাকে। কিন্তু রজেন্দ্রকিশারের সংগে তার যোগ ছিল বরাবর। তিনি গোরীপরে থেকে কলকাতায় উপস্থিত হলেই খা সাহেব তার সংগে সাজ্যের করেবের ইছেন্দুম্যারী সংগ্রহের কায়াও ভলত আলীর খার কছে।

র্থা সাহেবের গোরীপরে এপ্টেটের সংগে সম্পূর্ণ তাঁর জাবনের শেষ প্রাণ্ড ছিল। তাঁর ১৯০৪ সালে মাত্যু পর্যাণ্ড মাসে ৪০ টাকা রঞ্জেন্দ্রাক্ষণার তাঁকে বাঁও নিতেন। আমার খার আমাত্যু একজন প্রে-প্রোক্ষক ছিলেন তিনি।

খাঁ সাহেবের কাছে রজেন্ট্রিনোর ও শীজলচন্দ্রের সংগ্রহ এবং শিক্ষার কথা ভাগেই বশা হয়েছে। তারপর ১৯২১।২২ সাল থেকে আমার খার কাছে শিক্ষা আরম্ভ ক্রেন্স্ বীরেন্দ্রিন্দোর। প্রথম থেকেই রাগালাপ শিক্ষা ও চচার দিকে বারৈন্দ্রকিশোরের প্রবণতা ছিল। সেজনো আঘার
থার কাছে বেশি শিখতেন নানা রাগের
আলাপচারি। আমার খা রাগের রুপ
প্রিচয় প্রদর্শন করতেন সরদে। বারেন্দ্রকিশোর সংক্যে সংক্য স্বর্নালিপ করে
নৈত্রেন। কখনো শাঁতলচন্দ্রও সেশবে
বর্নালিপ করতেন ব্যাতলচন্দ্রও সেশবে

এ কার্যে গোরীপারের আর একজন ক্যাচারী সহায়ক ছিলেন কালিচরণ রায়।
তিনি সর্বান্ধনের জন্যে নিযুম্ভ থাকতেন।
দর্শে স্বরালিপির জন্যে নয়। বিভিন্ন সংগীত-কেন্দ্রে উপাদ্থিত হয়ে রাগালাপ ইত্যাদি
সংগ্রহ করে আনতেন। ওস্তাদদের নিয়ে
আসতেন রজেন্দ্রাকিশোরের পক্ষে। কালিরব নিজেও কিছু সংগীতচচা করতেন।
বিশেষ সরাদ থাপ্র। সরদ্যী করাম্ব উল্লোব
কাছে তিনি সরাদ্বাদন কিছুদিন শিক্ষাও
করেন। তথ্য থোক ৩।৪ বছর বীরেন্দ্রকিশোর শিখেছিলেন আম্বীর খার কাছে।

প্রথম দিকে তিনি বীরেন্দ্রফিশোরকে ইমনের ভাল করে তালিম দেন। ভারপর জন্ম প্রিয়া, ইমন কলাণ, তোড়ি ভৈরে। দরবারী কানাভা ইত্যাদি। আলাপাচারিতেও ব্যন্থী সাহেবের বোকি ছিল এবং শেখাতেনও।

আমার খাঁ গোরীপারে নিযুক্ত থাকার সময়ে এবং বীরেন্দ্রকিশোর ভার কাছে শিক্ষাকাশেও আরো গগেী স্মান্য ভাদের দরবারে হয়। সেজন্যে কোন অস্বিধা হয় নি আমীর মার দিক থেকে। তিনি যেমন শাণিত প্রিয়, গু,ণলাহী ছিলেন, তেলান বর্পে মনোভাবত <mark>পোষণ করতেন ফ</mark> এনাদের সম্পর্কে। সকলেরই প্রশংসা করতেন। ঈর্ষাহান চিত্ত ছিল আল্লার থার, যেকথা তানেক ওসতাদ সম্প্রকেই বলা সায় না। সেজনা ভার অব্দিথভিকালেই একের পর এক বিখ্যাত কলাবতেরা যাস্ত হয়েছেন গোরীপ্র দরবারে। যেম্ন রবারী-ধ্রপ্দী ংহ্মাদ আলী খাঁ, সেভারী স্রেবাহারী जनारवर गाँ. भत्रमी क्रामर छेला या भत्रमी লাডাদন মা. স্বদী হাফেজ আলী প্রমাখা ভাদের কাছে। সংগ্রহ করা হয়েছে াজেন্দ্রকিশোরের পক্ষে। তাদের ত্যালিয় িয়েছেন বীবেন্দ্রিশোর। কিংত অসংয়া রহিত তানাবিল মন আমার খাঁ সকলের সংগ্রহ মানিয়ে চলেছেন। তবিষয়ে দুংগভ উদার্চিত ছিল তার।

আমার থা কলকাতার অন্যান্য শিষাদের ১৯২০ ৷২১ সাল বা তার কাছাকাছি সমরে শিক্ষা দিতে আরদ্ভ করেন।

রজেশাহরি সেই অক্ষরকুমার ছৈত্র,
পঞ্জানন গংশ্যাপাধ্যায় (উন্নানন্দ স্বালা)
এবং পরে রজেশ্রুকিশোর রার
ভৌধ্রী, শতিজাচন্দ্র মুখেলাধ্যায় ও
বিরন্ধিকশোর নামভৌধ্রীর আলীর খার
কাছে শিক্ষার কথা এ প্রশিত উল্লেখ করা
হয়েছে।

এখন শাঁ সাফেবের জিনানা শিহাদের প্রসংগ। তারা প্রায় সকলেই কলকাতায় তাঁর কাছে শিথেছিলেন। আর, আমার থার এই শাষারা—শধ্ম সেতারী মাসতাক আলা ও বিশ্বলাকানত রায়চোধ্রী ভিল্ল-স্বাই ভিলেন স্বদ্বাদক। ভাদের তালিকা এখানে দেওয়া হল।

কলকাতার আশতে।য় কুণ্ডু খা সাহেবের একজন কতী ও পরোনো শিষা।

পরবতীকালের স্পাণীচ্ড অকেজ্যী পরিচালক ও সরেকার তিলিববরণ ভট্টাবর্শ এথম জাবনে আমার খার অন্যতম প্রিয় নিষ্য ছিলেন। খা সাহেবের কাডে তিন শেবেন প্রায় ব বছর। ভারপর তিলিবরণ আলাউদিন খার শিক্ষা নিতে যান নাইছারে।

বাগবাজারের বাগীকটে মাঝোপাগার ও আমীর আর শিক্ষায় স্মান্ত হাতের, নিপ্রেণ সরববাদক রতেশ পরিচিতি লাভ করেন।

শোভাব্রার রাজবংশের সেহিত সুন্তান নারেন্দ্রক্ষ মিন্ত ছিলেন খাঁ সাহেবের এক বিশিষ্ট লিয়া। তিনি খা সাঠেবের কাছে প্রায় ১০ বছর শিখেছিলেন। ভার কাছে ওস্তাদের সংগতি সম্পদের ভাল সংগ্রহ ছিল এবং তিনি তা প্রকাশও করেন প্রস্তকাকারে। মারেন্দ্রেক্তর সেই বহং ্রত্য শরদ রস্চান্দ্রকা'-র (প্রকাশ ১৯৪০ সালে) আখ্যা-পরে আছে—'ভ্রুতাদ আমারি : খাঁ কুত ২৪৯ প্রকার রাগ-রাগিলীর গ**ে ^সহ** ভান ঝালা ঠাট রূপ ও রস শিক্ষা করিবার। একলার সহজ সংসতক।' রাগ সংগ্রহ' প্রেকল রক্ম বাদ্যয়ণেরর উপ্রোগ**্রাসহজ** প্ৰত্যু, ১৯৩২-এ প্ৰকাশত) ও সংগীত সোনান: প্রথম ভাগ (১৯২৬) নামে তিনি অন্য ্রটি গণেগরও গোখক ছিলেন। **আগার থার** জনে। তিনি শোভাবাজার রাজবাডিতে একদিন যে আসর করেছিলেন তা বল্লবার মতন। ভার কথা পারে বলা যাবে।

সংপ্রিচিত সেতারী মুম্ভাক আলী ।
পা অনেক বছর শেথেন আলীর থার কাছে।
কাশীর সেতারবাদক আসিক আশীর শতে
পার মাম্ভাক আলী। অপপ্রস্তাই (১৭।
১৮ বছরে) মাম্ভাক আলী শিভার কাছে
থেকে কলকভোগ এসেছিলেন। আমীর
পার কাছে প্রস্তামত গাণ্ডা বেশি ভালিয়।
নির্মেছলেন ভিন্ন অবনা সেভার ফলে।
আমীর থার কাছে শেখনার সমর অনেকদিন
মাম্ভাক আলী বাণীকাঠ মুখোপ্রারের এ

সৈতারবাদক বিশ্বলাকাণত রাহচেগ্রীর এনায়েৎ ঘরি শিক্ষা প্রবাস্ত আতো আমীর ঘার কাভে শিহেছিলেন কয়েক মাস।

জালীর থার শিষ্যদের মধ্যে স্বর্চেরে ব্য়োকনিক্টে হুলেন রাধিনাছোছন গৈত। কিব্ উত্তরকালে তিনিই হয়তে স্বর্দে তার ওপতাদের নাল স্বর্চেরে বাচিয়ে রাথেন। যে লালতমাতন প্রত্রের আহার ভালিব ধ্ব লাভ করেছিলেন প্রথম জালিবেন, রাধিনালোভন তারই পোত। লালতমাতনের মাতৃ হয় ১৯২৪ স্থালে। তার মার বছর পরে আর আলীর থার সংগ্রু হৈত প্রিবারের সোগা-যোগ ঘটে। ফলে রাধিকামোহন ১৯২৯

থেকে ১৯৩৪ সলে আছার হার নাল্ড প্রেছিলের ভালভাবে। প্রতিন প্ত-পোষ্টের বংশধ্য বলে খাঁ সাহের তাঁকে েমহক্তরে বিশেষভাগে শিক্ষা দিয়েছিলেন। আমার খার মৃত্তে পরে রাধকাগোহন দ্বীর থার কাছে শেখেন প্রধানত রাগালাপ। সরদ্বাদক বাণিকালোহানের বাজনায় নিশ্ধ তাংশে আমার খরিই ছাপু থেকে যায়। ...

খিদরপারের সাবেলচম্দ্র দে, আম্দ্রল ৰাজ প্রিবারের জগংলাথ মির প্রভৃতি আরো কজন আনীর থার শিষ্ট ছিলেন। সকলের নাম এখানো দেওয়া গোল না, সবার কথা জ্ঞানা বাল নি বলে।

এথানে একটি সমর্গীয় বিষয় আছে। বাংলার সরদ বাদনের। ইতিহাসে আমীর হ'র এই বিশেষ দানটির কথা। তবি ভাষিক সংখ্যার শিষ্য গঠনের ফালে বাংলায় সরদ চটা বৌশ প্রসার লাভ করেছিল। কৌকব-করামভেল্লার পরে আর্মীর খাঁ শেখাতে আরম্ভ করেছিলেন বটে। কিন্ত তার হাতেই আনেক বেশি বাংগালী শিষা গঠিত হ'লে ছিলেন, একথাও সতা। ভার ফলে বাল্যাক্টাদের মধ্যে সরদ্বাদানর সম্পিক ইচিকান ভয়।

ৰাজ্য শিষ্ট্ৰোটো ছিল খা সাহেবের। **এ প্রসংগ্র প্রাস্থ্য গায়ক ও সংগ্রকার** জানাথনাথ বস্ত্র নাল্ভ করতে হয়, যদিও তিনি আনীর খার শিষা ছিলেন না। শা সাহেবের কলকাত। বাসের মধ্যে ১০।১১ বছর বস, মহাশয়ের সংগ্রে তার ছিল নিবিড্ সংগাতিক মেগ। সনাগনাথ তখন উদীয় মান শেষাল মুর্গর পায়ক এবং তবলা গদক্ত। আমীর সার সরদ বাদনের সংগ্ মানা আসেরে সে সময় ভিনি সকাত করতেই। লামীর খাঁ য়ে রেকডটি করেন কাফি ও পাহাড়ীতৈ ভাতেও বেবলাসংগ্ৰু করেছেন অনাথনাথ। আর খাঁ সাহেরের কাছে তিনি গায়কর পের উপকৃত। ২০ ক্লেরের বয়ে।জে।ক আমীর পরি সকে। আনেক দিনের আসরে বৈঠকে গান বাজনায় জালো সনায় অনেক **জ**ানবার সংযোগ তিনি পেরেছেন। শংধা তাই নয়। বেশ কিছা গামত (বিশেষ ঠাংরি) ডিনি সংগঢ় করেন হা সাহেবের কাছে। আমীর খার অনেক স্থায়[া] আৰ্ডরা জানা ছিল। তাছাতা, এবিবরে তবি য়ারেও ভিল সঞ্জয়। আত্মীর খার স্বিভীয়ু নিগি ছিলেন লক্ষেট্র বিখ্যাত প্রায়ক, ছোটে দুট্রি শার কন্যা। সেইজনে। আমীর খার বিবিষ व्यक्तिक भारताह तराज्या काला हिला।

অনাথনাথ আম্বীর খার কাছে গান শং**গতের সময়** তার পরিচয় পেডেন মানো

এলন হত-হয়ত কোন গানের মুখটা ধা সাহেবের মনে পড়ছে না। কিংবা ভূলে अधिका जागलना ।

ৰলতেম, 'আছো কাল দেব।' প্রথম প্রথম অন্যথনাথ ফ্রিক্সেস্ করন্তেন, काम काका शिक भारतन?'

'बद एथरक्ड रक्टल स्तर।'

কিংবা কোনভিন হয়ত বাসায় বলতেন असके त्वारमः अन्त्रमः स्थातक आत्म वर्णाकः।

এই বলে বিবিধ কাছে জেনে এসে গানটা দিতেন। এমানভাবেই জ্বানা প্রায় দর্শার করার সংগতিঞ্জতার কথা ৷

আমীর-বিবির ভাই পদবণ খা ছিলেন ভংকত ঠারে গায়ক। লপ্রণ খা কলকাতাতেই থাকবেন। চমৎকার তালে। সব ঠাংরি তিনি পাইভেন মিঠে গুলায়। টাপার তবলাবাদক চুনীলালবাব্র বৈঠকে প্ৰকৃপ খা পাষ্ট গাইকেন। কলকাডায় এ'ব কজন বাজ্যালী শিষাও হয়েছিলেন। একজন অভি স্কণ্ঠ ঠাণের গায়ক হিসেবে আমীর খার এই শ্যালকের নাম মনে রখবীর

বিখ্যাতে সার্জ্যী ছোটে খাব সংগ্রেভ হান্ত্র ছিল আমার থাব। ভগ্নকার কলকাতায় ও কাছাকাছি অঞ্জের নানা আসরে মজলিসে তারা একসংকা মাজরো করতে যেতেন। তথ্যকার সংগতিজ্ঞাত আমীর খাঁডোটে খাঁর নাম কলেক বছর ধরে চেনা হারে যায় সকলোর।

সরদী আলীর খাঁ, সারংগাঁছেটে এ গায়ক লগবণ খা-একটি ঘানাঠ লোভী যেন। আর তাঁদের মধে তথন একটি যোগ-সতি তর্ণ তবলাবাদক অনাথ্নাথ বুসু। কত আসরে তিনি আমার খাঁ, ছোটে খাঁ প্রভৃতির পাশাপাশি বসে গান গেয়েছেন। আবার ত্রশাস্পত করেছেন তাদের বাজনার সংগ্রে অনাথনাথকে আমীর থা এজনে। 'পেয়'র' করভেন।

পরিণত বয়সে আলীর - খাঁ কলকাতার বিখ্যাত সরদ্বাদক হয়েছিলেন। বাংগার সংগতিক্ষেত্র একায়ও হয়ে যান তিনি। মংতাক আলীভিল তাঁর সমুসত শিষাই বাল্যালী। বাংলাদেশেই ভার যাবভায় উত্রাধিকার দিয়ে স্থান তিনি। পশ্চিমা-পুলের সংগতিক্ষেয়ের সংখ্য ভার কোন যোগ আর থাকে নি। জন্মদ্থান শারভাগ্যায় ভার যাভায়াত প্রায় ছিলই না। কশকাভারই বালিদদা হয়ে যান ১৯১৬ সালের পুর থেকে ১৯৩৪ বালে মৃত্যু পর্যাত। মেছায়াবাজার অপলে ১১, সদর্শিদন লেনে তার বাস ছিপ শেষের ক বছর।

তথনকার সংগীতসমাজে আমীর খী প্রতিষ্ঠা লাভ করতে থাকেন ১৯২০-২২ সাল পেকে। তাঁর সমকালে কলকাতায় স্থায় জাবে ছিলেন ওস্তাদ করামং উল্লাখা। তিনি ভিল ঘরাণার, দুধ্যি স্বভাবের এবং শেশাদার হিসাবে আমীর মার প্রতিশবন্দরীও শুলা যায়। স্বদী করামং উল্লোৱ (ও কৌকব খার) সরদী শিষা ধারে-বুনাথ বসং আমার খার শিকাদের প্রবেব্ট সরদ্চর্চা আরুদ্ভ করেন, এক**থা আগেই উল্লেখ ক**রা হয়েছে। এখনে বক্কা এই যে, কলকাতার করানং উল্লাম্বীর প্রবল অবস্থানের সময়েই প্রতিটো অজন করেন আমীর খাঁ। বয়োজ্যেও সরদী করামণ উল্লা খাঁএ শহরে ১৯১৬ থেকে ১৯০১ সাল প্রদিত বিরাজিত জিলেন। স্তবাং সামার খার কলকাতার সংগীত-জীবনও তার সদকালীন। কলকাতার তার ব্ৰং শিৰ্ম-ডলী গঠন, বিভিন্ন সংগীত

মজালনে যোগদান সবট ভাষেত্র সেট সময়ে। তার সংগীতজ্ঞবিনের শ্রেষ্ঠ পর সেটি। তখন করামং উল্লাৱ পাশাপাশি একই অপলে তিনিও প্রতিপত্তি লাভ করেছিলেন। আমীর খার সংগীতগুণের এও এক প্রোক্তরেল প্রবিচয়।

আর করামভরার দামিত্রক ও সংগ্রাণী চ্যিটের সম্পূর্ণ বিপ্রীক জিলেল আছাীৰ খাঁ। তিনি নিরহজ্ঞায় শান্তভিয়, শান্ত-ভাষী সম্তল্টালত। দীঘাকাল বাজাাদা সমাজের সংখ্য মেলামেশা বাংগালী ছারু ও পাঠপোষকদের সংগে কথাবাতী বাবহারের ফলে আলীর খা রীতিয়তে বাংলাভাষীও চয়েছিলেন। পরিকার বাংলা নলতে পারতেন ×বচ্ছণেদ। এমনকি, উল্লোৱণে কোন পশ্চিমা টাল ছিল না।

সরদ শিংপরি,পেও আমার খাছিলেন িভাকস ক। তার সামিণ্ট সানিপাণ হাতের বাজনায় শ্রোতারা মুপ্র হতেন। মুনোহারী ছিল তার সংগ**্লির বাদদশ। বিলাদি**রত চালের নয় এবং বেশি দুত লয়েও নয় । কবি গংমধ্য লয়ের হত চমংকার সারের বাধ্ননিতে। ঈবং শার সংবেদ চালচিকে রবের রূপ-প্রতিমা প্রতিষ্ঠা। বিস্তারেও খাঁ সাধের দ্বেস্ত ছিলোন।

বহা রাগের সংগ্রহ ছিল আমার খার। তাঁর প্রিয় রাগ বলে ইয়ন কলা।ণ্ডাডালে বাহার, দরধানি কানাড়া, নট মলার এমনি করেকটি ছিল ভারি চালের মধে। হালকার মধো পাহাড়ী কাফী ইভালি ভার বেশি প্রদুদ ছিল। তুরি প্রাক্ষোন রেকডুঙি आहरू करे माहिता

আমীর খাঁর পারিবারিক জীবনের উল্লেখ ভাগের করা হ্রায়ছে। সূক্রি খার কন। তার দিবতীয়া বিবি। তার আগেও আর একবার আমীর । নিকা করেছিলেন। কৰে দুপক্ষেই ডি ছালেন নিঃসক্তান।

তারি শ্রামবং' মাঝারি আকারের এবং ম্বোমারি গঠনের শ্রীর ছিল। কিংস্ত স্বাস্থ্যবার ছিলেন না তেমন। অনেক-দিনের হাফানির অস্থ তার ছিল। মাঝে মাঝেই কণ্ট পেতেন হাঁফের পাঁডনে।

আমীর খাঁদীঘজীবীও ছিলেন না। ম<u>ু</u>তা হয়েছিল ৫৮ বছর বয়সে। হফিন্নিভেই তার কাল হয়েছিল বটে। কৈছে তার আগে শ্রীর এখন বিশেষ অস্তেথ কিছা হয়নি। শেষের কণ এসেছিল প্রায় আক্সিক।

আমীর খাঁযতদিন ছিলেন, সকলে তাঁর সংখ্যতিই করতেন। অন্য কলাবত-দের সংশ্রেও তার বিরোধ ছিল না। তার প্রতি বিশ্বেষ পোষণও করতেন না কেউ।

তবা শ্'একজন তার নিশ্লক ছিলেন। ওই একই পেশার মান্য তারা। किल्छ আমীর খার নিন্দা করতেন তারা বাজনার क्रमा नहा। কোন স্পাতিক হাট্ড দেখাতে পারতেন না। দ্বাকা **বল**তেশ তাঁর স্বভাবের কোন কোন বিচাতি নিয়ে।

আমীর ধাঁ অহিফেন সেবন করছেন। वारता र - अविष्ठे साम वीकाक विका । serm

ENGINEERING TO DESCRIPTION OF THE PROPERTY OF



o all रण का किय तिक्की (क्रेमिक

·আমন্না অনেক অনেক বদনেছি আপনার মতই !

পথে এবং কোন কোন ব্যুপথেও তুরিয়-লোকে যাতায়াত করতেন বটে তিনি। সে সব সময় কেমন ঝিম হয়ে থাকতেন। আপনাতে আপান \মশন। তোমন অবশ্বায় আসেরে বাজিয়েছেনও যথারীতি। বাজাহার সময় হয়ত হাত থেকে জবা খসে পঞ্চে বগছে। চটকা ভেশো তথান কবা ভূগে নিয়ে আবার বাজিয়ে গেছেন ঠিক। প্রোত্যাদের ব্যুগতে না।

তা ওই সব আনুৰ্বিণাক নিয়েই সেই ল্—একজন ওপতাদ আমার আর নিদদাবার্থ করতেন। তাকে নর। বাংগা বিস্তুপের কথা শোলাতেন তার এক প্রিয় দিলা নারেণ্ড করতেন। শোভাবালারের দেব পরিবারের অবণাব রাজা স্বকৃষ্ণ বংশের এক দেছির তিন। ১৪, রাজা নবক্ষে ভারীতেই তার বাস জিল। শীরেণ্ডকৃষ্ণ তার পোশাকী নাম। তাকে নিতাইবাব্ বলেই স্বাই বেশি জানতেন।

আমীর ধার সেই নিশন্ধরা হাতের
কাছে নিজাইবাবাকে পেরে ঠাটা তামাস।
করতেন। অতি সম্ভা গড়োর বালার তখন।
অবেপ তুণ্ট ধা সাহেব হাত্ত কাউকে শিক্ষা
দিয়েছেন স্কান্ড। তাই নিয়েই তারি
নিতাইবাবাকে শ্নিরে দিতেন আরে
আপকা ওস্তাদকা গং আঠ আঠা আনাম
বিকাতা হার। আই আট আনার তার গং
বিরিভ হয়-ইতাদি।

মাথে কেবল নিন্দাবাদ করেই ত'রা
কানত হলেন না। আমার খার একটি বড়
আসর করবার জনের পড়িলপিড়ি করতে
লাগগেন নিতাইবাব্ধে। খা সাহেবের ওই
আন্থান্সক নিয়েই তাদের আলা ছিল।
ত'রা ভেবেছিলেন বড় আসবে এসে
অলপথ হবেন আমার খা। কাবণ তার
মনমেলাক্সের কোন ঠিকঠিকানা নেই। আর
এই সমন্ধাবনায় নিতাইবাব্যু যদি করি
ওপত্যদের আসব না করেন, তাও লাক্ষার

নিতাইবাব্রেও সেক্থা ভেবে আমীর খার আসর করতে ঠিক সাহস হচ্ছিল না। কি জানি যদি অপ্রস্তুত হতে হয় আসরের সামনে।

কিন্তু নিশন্কদের ব্কাবানে নিত্ই-বাবুকে রাজি হতে হল। বর্দ্ত ঠকে আসবের বন্দোবদত করণসন। থা সাহেবত এক কথার সম্মত—হাঁহা ব্যলনা হবে। সময়ত মিদিণ্টি করা হল তার সংগা।

সেদিন দেব পরিবারের ঠাকুরবাড়িতেই
আসরের বারস্থা হয়েছে। ঠাকুরদালানের
নীচে বিশাল প্রাস্থান। সেকালের অনেক
বড় বড় সভা, শাসর অন্তোন হও
এখানে। বহা দশকি ভোতা সমাগ্রের
উপযুক্ত স্থান। সেদিনও ভোতার সংখ্যা
মহেন্ট দেখা গেলে।

ি সেই নিজ্ফর উদ্যোগী হয়ে নিয়ে ঋসেছেন ্রেল্ সহায়কে। বেনারণের

খবানার রামসত'য় ছবলা বংশেরই গণে তবালয়া। কাশীর কবীর টোরার বলদেও সহায়ের (কণ্ঠে মহারাজের ওস্তাণ) পরে দ্বাসিহায় — ভাকনাম নার্। বালাকাল থেকেই পিতার কাছে নালার শিক্ষা আরুভ হয়েছিল। তারপর দল বছর ব্যাসে বসকে চক্ষা হারান। সেই থেকে তবলা ভিম জগতে আর কিছু ছিল না নামরে। একাশ্ত সাধনায় যৌবনেই হয়েছেন মহাগাণী। তিনি বাংদাদেশে থেকেছেন। কলকাতায় এসেছেন, বাজিয়ে-ছেন ভবানীপার সংগতি সম্ফলনী ও অন্ত অনেক আসরে। মুরুমনসিংহেব গহারাজ্য শশিকাতত আচার্য চৌধনেরী তাকৈ আপ্র দরবারে নিযুক্ত ক'বছর রেখেছেন। বর্ণপদক দিয়ে সংখ্যানিত করেছেন। কাশীতেই ১৯২৬ সালে ভার মুকা হয় মাত ৩৪ বছর বয়সে। শোভা-বাজার রাজবাড়ির এই আসর তার ক'বছর আগেকার কথা।

আমার থার সেই নিলকেরা নিত্রীবার্কে বলেছিলেন, নাল্সহায় এখন কলকাতায় রয়েছেন। তাকে আনলে হয় এই আসারে।

নিভাইবাব; রাজি হয়েছিলেন, বেশত, তিনিই বাজাবেন খাঁ স্যুহেবের সংশাঃ

তাঁর, নালাকে যথাসময়ে আসরে নিরে এলোন। এ বাপোরেও তাঁদের আশা ছিল— এমন তৈয়ারি তবলিয়ার সপো বাজাতে আমার থা আরো বে-ইল্জন্থ হবেন ঠিক।...

এদিকে ঠাকুরবাড়িতে অন্টোন আরুভ করবার সময় হল। অনেক গ্রোতা উপস্থিত। শিল্পীদের জনো সাজানে আসরে বসেছেন নাম্জী। তাঁর মাথায় পাগড়ি। গায়ে জন্যা পিরান। কাছে তাঁর তবলা আর ঝকঝকে তামার বাঁয়া।

শ্রোতাদের সামনের শারিতে কজন নামকরা গায়ক বাদক রয়েছেন। ত'দেব মধ্যে আছেন শিবসেবক পশ্পতিদেব প্রভৃতিত।

দেখতে দেখতে নিদিশ্বি সময় উত্তীৰ্ণ হয়ে গেল।

কিল্ড এখনো আমার খাঁর দেখা নেই। বিষয় দানিচ্নতা নিতাইবাবার মনে। তিনি
চণ্ডল হয়ে একবার ফটকের সামনে দেখতে
যাছেন। আবার ফিরে আসাছেন আসরে:
বিশিষ্ট গ্রোভারা অনেকেই প্রশন করছেন।
নিতাইবাবা তানের আশ্বাস দিচ্চেন—এই
আসবেন এবার। অনেকটা হাশ্তা। রিকসা
করে অসবেন…...

কিশ্ব প্রমাদ গনেছেন মনে মনে। আবার ফটকের কাছে দেখতে যাচেছন।

আবো খানিকক্ষণ কাটল এইভাবে। স্বৰ্শেষ ঠিং ঠিং শক্তে ঘণ্টা বাজিয়ে একটি রিকস আসতে দেখা গেল। তার মধ্যে আমীর খাঁ কাং হয়ে বসে। নিভাইবাবা ফটকেই ছিলেন। খাঁ সাহেব যে এসে পড়েছেন এই যথেণ্ট। রিকস থেকে যন্দ্র ও তাকে নামিয়ে আস্বে নিয়ে এগেন।

তারপর সরদের তারগালি সাবে বাধা, তবলাকে তার সংশা মেলানো ইব্যানি হল। বাজনা আরুল্ড করলেন আমীর খা। সেই নিলকে দক্তন মজার আশায় তার দিকে চেরে রইলেন।

তরফের তারে একবার কঞ্চার দিয়ে খা সাহেব ধরেছিলেন আডানা বাহার। এक्ट्रें विमा लाख कमिरहा जानाशाहि শ্রু ক্রলেন। সাধারণ আসরে তিনি আলাপ বিশেব বাজাতেন না। এখানে বাঞ্চাতে লাগলেন সংগ্রেণ অভ্যার আলাপ-চারি। এখন আসরে আমীর খা জনা সব দিক ভক্ত। রাগের রাপের **সং**শ্য নিজের শিশ্পীপরিচয়ও বিকশিত করতে লাগলেন। আসর ভরে উঠতে লাগল সরদের বড আওয়াজে। অনিবশ্ধ থেকে নিবশ্ধ অংশ: তার মাথে জোডের কাল। স্বিদ্তারে আলাপের ক্রমপদ্ধতি আমীর খাঁ বাজাতে লাগলেন। আলাপ থেকেই মাণ্ধ হলেন শ্রোতার। আলাপ শেষ করেই শিলপী গং আরম্ভ করজেন। আডানা বাছারের মধ্য লয়ে চমংকার বন্দেশ। আসর তথ্নি বেশ জমে গৈছে। মধ্য লয়ের এমনি মনোহারী গতেই আমীর খাঁৱ বেদি মাদিস্যানা। স্কের সংখ্রে আলপনা যেন। সেই সংখ্য ভালের ধ বৈচিতা। নাল্ল সহায়েরও বড ভাল লাগছিল বাজনা। তিনিও প্রেমসে সংগত করতে লাগলেন। মাঝে মাঝেই সমঝদারদের মাথে শোনা যেতে লাগল--'বহুং আক্রা।'

অনেকক্ষণ ধরে আমীর খাঁ আড়ানা বাহার বাজাতে ন। দেড়ঘণ্টা পার হয়ে গেল কথন। তা এ সরদী দুখানি হালক। চালের পর পর শোনাগেনন। অসব একেবারে মাং করে, কোলা থেকে যার নামালেন আমীর খাঁ। দুঘণ্টারও বৈশি তার সরদ দুন্নে শ্রোতারা পরম পরিত্ত হলেন। আরো বেশি ত্তিলাভ করলেন নিতাইবারু।

বাজনা শেষ হতেই নাল্লসেহ।য আমীর ধার উচ্ছন্সিত প্রশংসা করতে গোগলেন। দশ্ভিয়ে উঠে তিনি হাত বাভিয়ে সংধান করতে লাগলেন—'আমীর ধা কণ্হ; আমীর শশু?'

নিতাইবাব; খাঁ সাহেবকে নাল্ল;-সহায়ের নাগালের মধ্যে নিয়ে এলেন।

দৃষ্টিহুনীন স্বপাতীয়া সরদ্ধিকপীকে আলিকান করলেন বুকে নিয়ে। দৃষ্ণনেরই ভানন্দের অভ্যু ঝরতে জাগল।

নিতাইবাব্র হঠাং দৃষ্টি পড়ল সেই নিন্দ্কেদের দিকে। মুখ কালো করে তারা একদিকে তখন নিঃশব্দে বসে আছেন।

- मिनिशक्मात मृत्याशामा



জয়প্রকাশ এবং আবদ্বলা

শেশ আবদ্ধো ও জরপ্রকাশ নারাম্বরণের বাজনীতিতে কিছ্টা সাদৃশা সক্ষার। তাদের কেউই আনুটানিকাভবে কোন রাজনৈতিক পশপুর নন, অবর্ধ বাজিগতভাবে উভয়েরই যথেন্ট রাজনৈতিক গরেন্থ রাজনেতিক গরেন্থ রাজনৈতিক পরিয়া এক সময় কওছরলাল নেহর, সমেত কংগ্রেস নেতাবের অত্যুক্ত কাছের মান্য হওয়া সত্ত্বে পরবর্তী সম্প্রে সরকারকৈ যথেন্ট বেগ দিয়েছেন। জয়প্রকাশ নারায়ণও এক সম্মে নিজেই প্রথম সাম্মির একজন কংগ্রেস নেতা ছিলেন এবং তার সংগাও নেহর্র যথেন্ট খনিন্টতা ছিল। শেখ আবদ্ধার মত এতটা না হলেও, জয়প্রকাশত বিভিন্ন সম্মের কটোর স্থালোচনার ব্যায়া সরকারকে ব্যাতবাসত করে তুলেছেন। শেথ আবদ্ধার প্রতি সরকারের বির্শ নাতিরও একজন সমালোচক ছিলেন জয়প্রকাশ।

অথচ, ঘটনার খোগাযোগে, শেখ আবদ্ধার সংশো নয়াদিলির ব্যবধান দ্র করার ব্যবদান অব এক দফা চেণ্টা হচ্ছে তথনই নয়াদিলির সংশো শ্রীনারায়ণের ব্যবধান হেন বাড্ছে বলে মনে হচ্ছে।

বিহারে শ্রীনারায়ণ ও কংগ্রেস প্রস্পারের বির্দেধ ক্রমেই অধিকতের অনমনীয় রনোভাব অবল্যন করছেন। শ্রীনারায়ণ এখন বিহার বিধানসভা ভাশার আন্দোলনে প্ররোপ্রতি নেমে প্রেছন। বেরোজগারি, মাল্যাই অউর এন্টাগর'-এর বিরয়েশ্ব ছাত্রদের বিক্ষোভের মধ্য দিয়ে যে আন্দোলনের স্টেনা হয়েছিল শ্রীনারায়ণ এখন সেই আন্দোন লনের নেতৃত্ব গ্রহণ করে এমন একটি কর্মস্টেট রেখেছেন যার সঙ্গে গান্ধীলী কর্ত্বক পরিচালিত সরণাধ্যক আইন অমান্য আন্দোলনের তলনা করা চলে। গ**্রেল**রটের **মন্ত** বিভাবের তিনি বিধানসভা ভেজে দেওয়ার দাবি জানিয়েছেন। কিন্তু ভিনি শ্বে দাবি জ্ঞানিয়েই ক্ষান্ত চনলি বিধানসভাৱ সদসারা যাতে পদত্যাগ করতে বাধ্য খন সে**লন্য** ভাব অনু গামীরা বিধানসভা ভবনের সামনে ধর্ণা দিক্ষেন এবং এম-এল-এ'দের বাজি ত্যরাভ করার পরিকল্পনা গুচুল করেছেন। তার আন্দোলনের কর্মসূচীতে সরকারী টাজে দেওয়া বংধ করার কথাবলা হয়েছে ছিলি ছার্ডের এক বছরের জন্য স্কুল-ক্রেজ হাওয়া বন্ধ রেখে আন্দোলনে ঝাঁপিয়ে পড়ার পরামশ দিয়েছেন। প্রিপশদের **প্রতি তার** প্রাম্মণ উপ্রভয়ালাদের হারুমমত তারা যেন আপোলনকারীদের উপর জভাচার না করেন। ইতিমধ্যে শ্রীনারায়ণ পার্টনা শহরে একটা মিছিল বের করেছেন এবং স্বাস্ত্র-आह्नत कार्य शांत नाय भागारयत भ्याकतिक वाकिए भ्यातकीनी भारत विधानमूका ভেলে। দেওয়ার দাবি জানিয়ে এসেছেন।

নম্নাদিরি থেকে স্ব[্]শেষ ইণ্জিত পাওয়া গৈছে, শ্রীনারায়ণের এই **বৃহৎ রাজ-**নৈতিক চ্যালেজের সামনে কোনরকম নতিশ্বীকার না করে সম্পত সরকারী শ**ড়ি** প্রয়োগ করে এই চ্যালেজের মোকাবেশা করা হবে বলে সিন্ধান্ত নেওয়া হরেছে। রাজ্য স্বকারকেও এই সিন্ধান্ত **জানিয়ে দেওয়া হরেছে বলে প্রকাশ**।

বিহারের নারায়ণী আন্দোলন সম্পর্কে এই আপাতপ্রতীক্ষান সরকারী দুদ্ভার অন্তরালে কিন্তু কংগ্রেস দলের মধ্যে একটা গভীর দ্বিধাসংশ্র রক্তেছে। শ্রীনারায়পের বাজনৈতিক চরিত্র সম্পর্কে ও তার নেতৃত্বে পরিচালিত আন্দোলনের স্বর্প সম্পর্কে কংগ্রেস দলের মধ্যে দুটো সম্পর্কে ভিন্নবত র্য্রেছে।

সি-পি-আই-এর মত কংগ্রেসের धकारण शत्म करतम त्य. श्रीमाताश्रलत ताल-নাতি প্রতিরিয়াশীল, তার আন্দোলনের <u>ধ্বারা দক্ষিণপূর্থাদেরই স্বাধ্যা করে</u> দেওয়ার চেণ্টা হচেত। এই আন্দোলনের পিছনে বিদেশী চরদের উপ্কানিও থাকতে পারে বলে সন্দেহ প্রকাশ করে এই আন্দো-লম কঠোরভাবে দল্লন করার প্রামশ দেওয়া হয়েছে। কংগ্ৰেস এম-পি কককাত বলে-ছেন জয়প্রকাশের আন্দোলনের বির্দ্ধে কংগ্রেস ও কম্বানস্ট পাটির ঐকাবন্ধ সংগ্রামে সালিল হওয়া উচিত।বিহার বিধান-সভার কংগ্রেস সদস্যদের মধ্যে হার। গস্কারের বিবাশের ব্যাহেন ভারা সংধারণভাবে জয়-প্রকাশের বিরাশের কঠোর বারস্থা তাব-ধ্বনের পক্ষপাতী। বিহার বিধানসভায় থেসব কংগ্রেস সদস্য শ্রীনারায়ণের কার্য-ক্ষপাপের সমালোচনা করেছেন, তাঁর নেত্থা-ধান বিহার রিলিফ কমিটির টাকাপ্যসার হিসাব সম্পর্কে অভিযোগ করেছেন ও বিধানসভা ভেশেগ দেওয়ার আদেদালনের সংগ্রে বড় ব্রস্থাসাদের আনন্দ্রাগের ও ও সি-আই-এর সংগ্রব থাকার আভিযোগ এনেছেন তারা কংগ্রেসের এই জয়প্রকাশ-বিরোধী অংশের প্রতিনিধিত করেছেন। পাটনার মিছিলের উপর 'ইন্দিরা রিগেড'-এর সশস্ত্র আক্রমণ জয়প্রকাশ ও তারি আন্দো-জন সম্পক্ষে এক শ্রেণীর কংগ্রেসক্মীদের চ্চাত্ত অস্থিক,তার প্রকাশ। অন্যান্যদের মধ্যে বিহার এদেশ কংগ্রেস কমিটির সভা-পতি সাঁতারাম কেশরীও দিলিতে গিয়ে জয়প্রকাশের আন্দোলনের বিরুদ্ধে দ্যু ন্তি গ্রহণের প্রাম্প দিয়ে এসেছেন।

কিন্তু বংগ্রেসের মধ্যে তার একটি তংশ জাছেন হারা জয়প্রকাশের সংগ্র সম্পূর্ণ মধরে নামার পক্ষপাতী নন। তাঁদের হারি হল, শ্রীনারাহল দুনাগতি দুগনের ও নিয়ানিচনের গলাদ দুর করার যে প্রশন্ত তার মধ্যে মধ্যেও সাক্তি আছে। তাই প্রশন্ত করার যে প্রশন্ত প্রশার সংগ্রেসের অনেকের মধ্যে রায়েছে। শ্রীনারাহ্যুলকে জনসম্পর্ক অনোনা প্রতিক্রিয়ালীন শন্তির হাতে সম্পূর্ণ ঠেলে না দিয়ে বরং দুনাগতিদান ও নির্বাচনারিধ সংস্কারের ব্যাপারে তার সংগ্র পরামার্শ করাই কংলেসের প্রদেশ বিচক্ষালার ভাল হরে। তার মতে প্রামার্শ করাই কংলেসের প্রদেশ বিচক্ষালার তার সংস্কারের তার সম্পূর্ণ সরকারবিরাধার নেতা হিসাবে চিলিত হ্যে মেতে দিলে ভাতে কংগ্রেসেরই লোকসান।

শ্বরাওনৈতা ট্রাশংকর দাঁলিত সব'লের

যথন পাটনায় এগেছিলেন ত্থনও যে তিনি

জয়প্রকাশের সংগ্র আলোচনার আগ্র প্রকাশ

করেছিলেন, বিহারের মাধ্যমতী আবদ্দ করেছিলেন, বিহারের মাধ্যমতী আবদ্দ করেছি কথনও যে কয়প্রগ্রাম সম্পর্কে কেন করেয় মন্তবা না বরে শুস্তু তাঁকে আন্দো-লম প্রতাহার বরে নেওয়ার জন্য আবদন লনাক্তেন, জয়প্রকাশকে জেশ্যার করের প্রস্তুতার যে বিহার মন্তিসভায় অনুমোদন লাভ করেনি - এইসব ঘটনা থেকেই বোনা যাকে, জয়-ক্রমার ক্রমা দলের মধ্যে কিছুটা আগ্রহ্ ভ্রানাদট রাইছে।

मिलित এकि मर्वाटम भ्रकाम स्व, देख-

মধ্যে কিছু কিছু মধ্যস্থ ব্যক্তি প্রধানমন্ত্রী শ্রীমতী গাম্বীর সংগে জয়প্রকাশ নারাঘানের একটা বোঝাপড়া করিয়ে দেওয়ার চেণ্টা করছেন। তাঁদের প্রথম উদ্দেশ্য হচ্ছে, গত মার্চ মাসে ভবনেশ্বরে শ্রীমন্ত্রী গ্রান্ধীর একটি বিক্তিকে কেন্দ্ৰ কৰে উভগোৱ মধ্যে যে ভুল বোঝাবাঝি হয়েছিল'তা দার করা। ওডিশার ুখামন্ত্ৰী শীমতে মহিদ্দী শতপথী অবশ্য পৰে একটি বিব্যুতি দিয়ে বোঝাগার চেণ্টা করেছেন যে, শীয়ত গান্ধী জয়প্রকাশের বাড়ি-গত আদ্রাভা সমপ্রে কোন প্রমা ভারেন নি। জয়প্রকাশ চিকিৎসার জন্য ভেলোরের হাসপাতালে ভতি হিৎয়ার আংগ প্রধানমধ্রী ভাকে শাভেচভারাণী পাঠিয়েছেন এবং লোক-সভার ^হবরাজ্যা**ন**ী উমাশ্রের দ্বিষ্ট শ্রীনারায়ণকে 'বিবেকবান মান্য' বলে আভি-হিত্র করেছেন ন্যাদিলির সংগ্রে শ্রীনার্যাপের ব্যৱধান স্থাতে ভার না বাজে সেই প্রচেণ্টার পরিচয় এইসর ঘটনার মধ্যে দিয়ে পাওয়া

মধ্যেশদের দিবতীয় উদ্দেশ্য হচ্ছে, নির্বাচনবিধি সংস্কার ও উপরতলার দুর্নীতি দ্ব করার উপায় সম্পত্তি উভয় নেতার মধ্যে একটা সংলাপের সাত্রশাত করা।

অপোষকারীদের এই চেণ্টা অবশ্য অদার ভবিষাতে সফল হওয়ার কোন সংভারনা দেখা হাছে না। তার প্রথম কারণ ত্রান্ত নহাচিদলি ব্লোভন, ভয়প্রকাশের তরফ থেকে অমাকাল সাড়া পাওয়া যাচে না। জন-প্রকাশ লাকি স্লেছেন যে জিনি যে ছয়দণা গুস্তাৰ দিয়েছিলেন কেন্দ্ৰীয় সরকার সে সম্বর্গের কোনবক্য উপ্তবাচ্য না করায় তাখান আর আলোচনার রাস্তা খোলা মেই। (নয়া-ভিল্লিতে শ্রীনারয়ণের এরকল্প কোন প্রস্ভাবই নাকি খণুকে পাওয়া যায়নি।) আলোচনা-সাপেকে আন্দোলন বন্ধ রাথতেও শ্রীনারায়ণ রাজি নন। তিনি বলেছেন, আন্দোলন আমার প্কেটের জিনিস নয় যে, আমি ইচ্ছমত বের করতে পারি আরে ইপ্রাণত চাুকিয়ে বাখতে পারি।

শ্বিতীয় কার্য হচ্ছে, কেন্দুরি সরকারের ধারণা, বিহারে জয়প্রকাশের আদেদালন বেশি-দুর এপটার না। তাঁরা এটা আশার সংগ জন্দা করেছেন যে, বিহার গাজরাটকে হাবহা নকল করতে রাজি হজের না। গড়েলাটের মত বিহারে বিধানসভার সদসাদের মধ্যে পদ-ত্যাগের হিডিক পড়ে খায়নি। বিহার নিধান-সভার বিরোধী সদসাদের একটা বড় তাংশ নিজেদের দলের নিদেশি অমানা করে বিধান-সভায় যোগ দিক্তেন। এই প্রশেন এমনকি জন-সংখ্যের মত সাংশাংখল দলও দিবধাবিভক্ত হয়ে গেছে এবং শ্রী বি পি মন্ডলের মত বিহারের ডাকসাইটে বিরোধী নেডাও বিধানসভা থেকে ইছতফা দেওয়ার ডাক উপেক্ষা করেছেন। বিধানসভার মোট ৭০ছন বিরোধী সদসোর মধ্যে এখন পর্যন্ত সাত ২৫ জন প্রদত্তাগ করেছেন, এই ঘটনা থেকে কংগ্রেস নেভারা ভ্রসা কবছেন যে, গ্রন্থগাটের মত বিহারে ভাৰতত এম-এল-এদের পদ্যাপ করিয়ে বিধানসঞ্জার ইচ্ছামৃত্যু ডেকে আনা হাবে না।

কংগ্রেস নেতারা আরও আশা করছেন বে. স্বোদর জালেশালনে জয়প্রকাশের সহ- নলনিবাই তাঁকে সংযত করতে সমর্থ হংকন।
আচার্য বিদ্যোবা ভাবে ইতিমধ্যে জয়প্রকাশের
আন্দোলনের সমালোচনা করেছেন এবং
বিষয়টি বিকেচনা করাত্ত জন্য সবোধার কর্মান্দ দের একটি বৈঠক আছ্যান করেছেন।

সামগ্রিক পরিম্পিতি বিবেচনা করে
নয়াদিলি হয়ত এই সিখাণেত এসে পেণিছেছেন হো, আর করেকদিন পরে শ্রীনরোরণ
যখন নির্চেই ভণার আন্দোলনের সম্ভাগনে
তারও ভালভাবে ব্যুক্তে পারবেন
তথ্যর সংগ্যা আলাচনা আরম্ভ করলে বরং
বেশি কাজ হবে। আপাত্তে ভার সংগ্যা নর্মন

পররাজীনতী দর্বণ সিং পুর্বিবের
জন্য শ্রীনগরে গিয়ে শেষ আব্দারার সংগ্র গ্রেম্প্রপ্রের রাজনৈতিক আলাপ-আলোচনা করে এসেছেন। এই আলোচনার শেষে ফোন স্কুপ্র ঘোষণা করা হয় নি, আলোচনা, ঠিক কি বিষয়ের হল ভাত সর্কারিভাবে জানান হয় নি, শুবু পরে আলার আলোচনা এবে বলে জানার হয়েছে।

ত্রক হৈ স্থাননর স্টিন্তরে দ্বরণ সিং বলেন যে, তথারা ধ্যানিরপেক্ষতা ও গণ-তথের শক্তি সংহত করার উপায় স্কুষন কর-ক্রেন তার সেয়েন্ত বেশ আবদ্ধা ধ্যানির-পেক্ষতার তারকারি ত্রকক্রন প্রধান প্রবঞ্জা ও সম্প্রতি ত্রিবার তথার বিশেষ অবনান রবেছে সেয়েন্ত তথার স্থায়া চ্যান্ডাইছে।

দ্বরণ সিংহের এই বকুরা সম্প্রেণ শেষ আব্দুরাকে প্রথম করা হলে তিনি বলেণ তিরা চান, আমি একটা ভূমিকা গ্রহণ করি। কিন্তু এই ভূমিকা গ্রহণের উপন্ত উপায়বঢ়ীল আমার হাতে লাকা চট। মার ঠিক ঐ ভিনিস্টাত এইস্ব আলাপ-আলো-চনার হ্রবা দিয়ে লিব করার তেন্টা হছে।

শেষ আব্দান মান দান বাংছে, ১৯৫০ সাগের ৯ আন্ত তাকৈ গ্রেপ্তার করার আগে কাম্পারের যে অবস্থা ছিল সেই অবস্থার ছিল সেই অবস্থার ছিল সেই আবস্থার ছিল সেই আবস্থার কার সাংশা কারত লগতে বাছে । শেষ আক্রার কই দানি কতা দানে কোন্তা যায় তা বিবেচনা ব্যক্তি গিয়ে ভারত সরকারকে ভেবে দেখতে হুছে। গত ২১ বছরে যেসব পরিবর্তনা ক্রেছে তার সংগ্রে আবদ্যার কই দানিকে কতা খাপ খাওয়ান যায় কাম্পারের জন্ম কবা থাপ খাওয়ান যায় কাম্পারের জন্ম কবা কার ভাল কিলে সালানাক বা ভামিলনাভারে মত বাংজা তার কিলেনাভারের সভাব প্রভাব প্রতাত পারে।

কারণ ১৯৫০ সালের অবুস্থায় ফিবে যাওয়ার মানে হাছে প্রতিরক্ষা, যোগায়োগ বৈদেশিক সংশাকতি মুদ্রা —এই কর্মাট বিষয় ছাড়া অন্য সব বিষয়ে কাম্পানৈরে পর্যে শব্যাওশাসনের অধিকার মেনে দিতে হবে এবং গতে দুই দশক সমায়ের মধ্যে কাম্মানি ভার-তের মাংবিধানিক এত্তিয়ারের যে প্রসাব ঘটোছে ভাকে সম্পূর্ণ অম্বাকীয় করতে হবে। এই দুই দশকের মধ্যেই কাম্মানির স্থিম ধ্যাটা পরিকল্পনা ক্ষিশন নিশ্বাদ্ধন ক্ষিশন অভিট্র জেনারেল কেন্দ্রীয় পাবলিক সাভিন্স করিশন, ইত্যাদির এক্তিয়ার প্রদারিত হয়েছে। শেশ আব্দ্রার দাবি মেনে নেওয়ার তার্থ হচ্ছে এই সব ব্যাপারেই কেন্চে গণ্ডুয় করা।

শেষ আবদুল্লা যে কাম্মীরকে কেন্দ্রের
সংশ্য ঘনিস্টতরভাবে যাত্ত করার যেকোন
প্রস্থাবেরই বিরোধী তা নয় কিন্তু তথ্র
বত্তবা হচ্ছে ভারত সরকার একতর্মচাত্রবেতার রাজ্যের স্বায়ন্তশাসনের অধিকার ধর্ব করতে পারের না।

যদিও কেন্দ্র ও শেখের মতামতের মধ্যে সামজস্য করা কঠিন তাহন্দেও শেখ আব্দ্রার সক্ষে করেনের যে বোঝাপড়া হতে চলেছে তার একটা ইন্সিগত পাওয়া গ্রন্থ কান্দ্রার সংকার করেনের গ্রেলমার্গা কেন্দ্রের উপনিবাহিনে। সেধানে প্রাথী ছিলেন মীর কান্দ্রম সিঠসভার সদস্য ও শেখ সমর্থক মাহা ঐ নিবাহিন করেনের লোকভলন ও শেথের অনুকার্মীর একহােগ্রে মুবারক শাহা ব করি প্রচার অভিযান চ্যাস্থ

গণভোট গ্রুপ্টের যে সভা আগামী ২২ জন্ম তারিথে হওয়ার কথা ছিল সেটা পিছিরে দেওয়া হয়েছে এটাও একটা তাৎপর্যপূর্ণ গর্টনা। এই সমরে ফ্রুপ্টের সভা হলে সেখানে ভারত সর্বস্বার ও কাম্মীর সরকারের বিরক্তের্যস্ব সমালোচনা হত তাতে শেখ আক্রেরার সংগ্রার স্পতানা ভিল।

গত প্রায় চার বছর ধরে মধ্যে মধ্যেই নয়াদিল্লির সঞ্জে শেখ আৰু ল্লার আপোষ আলোচনা চলছিল। এর আগ্রে S)NE গান্ধীর প্রতিনিধি হিসাবে জঞ্বরলাল নেহর: বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রাক্তন উপাচার্য জি পার্থ-সার্রাথ শৈখ আক্ষুল্লার সভেগ কথাৰ ভে বলৈছেন। এখন যেসর কারণে দেখ আৰু-লার সহযোগিতা লাভ করা কেন্দের বিধে-5-নয়জর রুরি হয়ে পড়েছে সে,গরুল হলঃ— (১) কাম্মীরের রাজনীতিতে শেথ আক্ষার অবিসম্বাদিত মুখা ম্থান গুহুৰ পারেন এখন দিবতীয় আর একজন খ্যজে পাওয়ার চেল্টা ব্যর্থ হয়েছে। শেখ অল্লারও বয়স হয়েছে। এখনও সংগ্র আপোষ্ব না করা গ্রেলে পরে কাম্মার ×থায়ী মীমাংসার স্ব আশাই হয়ত নত হয়ে যৈতে পারে। (২) ভারতের রাজনীতিতে মাসলিম লীগের ক্রমবর্ধখান প্রভাব করার জনা শেখ আব্দল্লার মত প্রতিপত্তি-শালী একজন মুসলিম নেতার সাহায়া পাওয়া প্রয়োজন। (৩) পর্ণকিদ্তান সম্প্রতি আবাব কাশমীর নিয়ে জল ঘেলা করার জনা যেভাবে উঠে পড়ে লেগেছে এবং গণডোটের কথা বলে বেভাবে কাশমীরীদের উৎকামি ভিক্তে ভাতে শেখ অবদ্যার সংখ্যা মিটমাট করার প্রথমটি জরুরি হয়ে উঠেছে।

ब्रान्ब्रेनश्ट्य बार्नाट्मम

বাংলাদেশ রাণ্ট্রসংগ্রর সদসা হওরার পথ অবশেষ পরিক্রার হল। সাধারণ পরি-মনের কাছে এবিষয়ে স্পারিশ করে রাণ্ট-কৃত্তিকর নিরাপত্তা পরিবদ একটি প্রস্তাব এইণ কলেছেন। প্রশ্তাবটি বিনা ভোটেই নিরা-পত্তা পরিষদের সিন্দানত হিসাবে গৃহুটিও হয়েছে বলে জানান হয়েছে। এভাবে সিন্দানত গ্রহণে চীন আপত্তি করে নি অথবা ভোট নেওয়ার গাবিও জানায় নি।

প্রশ্বরের পাকা হতে এখন শুখু দাধারণ পরিষদের অধিবেশন হতেই যা বাকি; আগামী সেপেট্নর মাস্তে ঐ অধি-বেশন হওয়ার কথা আছে। তার পরই শংলা-দেশ ১০৬তম সদস্য হিসাবে রাষ্ট্রসংখে তার প্রাপ্য স্থান গ্রহণ করবে বন্দে আশা করা

নিরাপত্তা পরিষদে প্রশুতাবটি আলোচনার সময় চীনা প্রতিনিধি চুয়াং ইয়েন এই বলে সন্তোষ প্রকাশ করেছেন যে রাখ্রসহর উপমহাদশের ঘটনাবলী সম্পরেক বরা হচ্ছে। তিনি আরও বলছেন স্থামার আলা করি হে উপমহাদেশের রাখ্রস্কালী বিদেশী হস্তক্ষেপ দরে করবে এবং সমতা ও সাবস্ভামত্বের ভিত্তিতে রাখ্রস্কালির মধ্যে স্বাভান্তির সম্পর্ক করে প্রত্যান্তার মধ্যে স্বাভান্তির সম্পর্ক করে ভারবান্তার মধ্যে স্বাভান্তার মধ্যে স্বাভান্তার মধ্যে স্বাভান্তার সম্পর্ক

গ্রহাসে ভূট্টের পিকিং সঞ্চরের সময় চীনা উপপ্রধানমন্ত্রী তেং সিয়াও পিং বা বলেছিলেন তার প্রতিধহীন করে নিরাপ্তা পরিবদে চীনা প্রতিনিধি বলেছেন দক্ষিণ এবি-য়ার স্বেস্ব দেশ প্রাম্থাপ্রবিধ দংগ্রাম করছে চীন ভাবের স্ক্রায় করবে।

তবে লক্ষ্য করার কিবর যে ভারতের পার্মাণবিক বিজেয়ারশ নিয়ে পাকিস্তান যে সোরগোল তুলছে চীনা প্রতিনিধি তাতে সায় দেন বি।

এর আগে বনগাদেশকে রাখ্রসংখ্য নাষা প্রধান দেওয়ার চেণ্টা চীনের ভিটো প্রয়োগের ফলে বান্টাল হয়ে গেছে। প্রতিক দতানী যুখ্যবন্দীনের দেশে প্রভাগতভানের মুক্তা মধ্যে রাখ্রসংখ্যর প্রদত্তার সম্পূর্ণ ক্যর্য- কর হয়ে যাওয়ার এখন আর চীনা ভিটো প্রয়োগে কান অজুহাত নেই।

ওয়াটারগেট এবং মাকি'ন সঙকট

প্রেসিডেণ্ট বিচাড নিক্সন বলেছেন ওয়াটারগেট কেলেওকারিকে যতই টেনে বড কর। হচ্ছে মাকিন যান্তরাম্প্রক ততই एएट निर्देश नामान श्लाह । एडे क्लाबकाराज জ্বাল ছডালেও এডাদন প্রেমিডেন্ট নিকসনের র্ঘানত সহক্র্যাদের মধ্যে একজন এই কালের বাইরে ছিলেন। ডিনি ছলেন মাকিন যাক্রাভের পরবাভ্রসচিব ডঃ হেনবি কিল্লেঞ্জার এই কারণে তাঁকে মিশ্টার ক্রিন নামও দেওয়া হয়েছে। ডঃ কিসিঞ্জার শুধু যে 🦠 ওয়াটার কেলেন্কারী থেকে নিজে মতে ছিলেন তাই নয় তিনি ত'ার একটার পর একটা কটেলৈতক সাফলোর ব্যার। প্রেসিডেন্ট নিকসনকে এই কেলেজ্কারির ধ্রলোকাদা কতকটা ঝেডেয়াছে দাঁড়াবার সংযোগ করে দিচিত্রেন। যেমন সম্প্রতি ডঃ কিসিঞ্জারের মধ্যস্থতায় সিংবয়া ও ইজরায়েলের মধ্যে সৈন্যপ্সারণ চুক্তি সম্পা-প্রাই Tower. হ ওয়াব প্রেসিডেশ্ট লিকসন মাজিনে প্রেসিডেন্টের নিয়ে প্রিপ্রেণ মহিমা বিদেশযাতার বেরোবার ও এই স্যোগ অল্ডত সাম-যিকভাবে ওয়াটারগেটের অস্বাস্তকর পরি-বেশ থেকে অব্যাহতি লাভের ফারসং পেয়ে-ছেন। এই যাতায় তাঁব সোভিয়েট **রাশিফা** সফরেও খাওয়ার কথা আছে।

কিন্তু অবশেষে সেই পরিচ্ছার **ভা** কিসিজারেরও প্রস্নারান্তরে ওয়াটেরগাট কেলে-ধ্বারির সংগ্র জড়িয়ে পড়ার সম্ভাবনা দেখা দিয়েছে। মার্কিন সংবাদপ্রগ্রেলিতে অজ্ঞানা সত্তব সংবাদ উন্ধান্ত করে ও কিছু নিখপরের উল্লেখ করে অভিযোগ করা হচ্ছে যে নিকস্ব



প্রশাসনের আয়লে সন্দেহভারন সরকারী कम्पारी व वाडाहेक्या कारक्या माध्याविक्त টোলফোনে আডিপাডার ব্যাপারে ডঃ কিসি-कारबद क्रीमक हि अन्त्रान निमान किल ना এবং এবিষয়ে ভিনি সিনেটের কমিটিকে থে সাক্ষা দিয়েছেন ভাঙে ডিনি সভা গোপন করে

এই অভিযোগের ভীর প্রতিবাদ করে ভঃ কিলিকার খলেভেন যে এই ধরনের জপবাদের বোৰা মালাৰ উপৰ নিয়ে তিনি আমেৰিকার প্রবাদ্ধস্মতিরের দায়িত্ব পালন করতে বিশেষ করে বিদেশে মাকিনি প্রারাপ্রশীত পরি-**हालना कतरक भारतिम ना। इत्र अमश्र विश्व**रि বিবেচনা করে তাকে এই অপ্যাণ থেকে মাত করা হোক আর তা নাহলে তিনি পদতাল ৬%-বেন। প্রেলিডেন্ট নিক্সনের সহযাত্রী হিসাবে প্ৰিচা এশিয়াৰ সফৰে স্বাভয়াৰ প্ৰাকাশে অপিট্রার স্পাক্তবার্গ শহরে তিনি হখন এই ছোষণা কর্মিলেন তখন সাংধাদিকের বিধরণ অন্যায়ী ডঃ কিসিঞ্জার যেরকল্প ক্লোধ প্রকাশ কর্ছিলেন এবং তার চোক যেরকম অনুসিত হয়ে আসছিল সেরকা উত্তেজিত অবস্থায় এর আগে আর কখনও ভাতি रम्था यात्र निम

টেলিফোনে আডিপাভার ব্যাপারে তার ভূমিকা ডঃ কিসিঞ্জার অবল। প্রাপ্তি আন্বীকার করেন নি। তার নিদেশি বা সুপারিশে আড়িপাতা হয়েছিল একথা ঠিক নয়। তাঁর শশ্তরও এ ব্যাপাতে জাভিত ছিল না। আডিপাতার সিম্ধান্ত হয়েছিল প্রেসিডেট নিকসনের সংগ্র তংকালীন ज्याउनि दलनारका सन विक्रम छ কেডারেল বারের অব ইনভেল্টিগেশনের তংকাশীন ডিরকটর এডগার হৃত্যারের এক বৈঠকে এবং সম্ভবত প্রেসিডেন্ট নিকস্কের নিজের নিদেশে। তবে একথা ঠিক যে জাতীয় নিরাপস্তার পক্ষে গুরুষপূর্ণ গোপন সরকারি দলিল ফাস হয়ে যাওয়ায তিনি উন্দিশন হয়ে উঠাছলেন এবং এটা বন্ধ করতে চেথেছিলেন। আডিপানের সংগ্র ত'র সমপক শাধ্য এইটাক যে জাতীয় নিরাপতার স্বাথে যাদের উপর নজর রাখা मतकात जीत्मत अकि निमिन्ते दश्यापिकम्य ভালিকা রচনা করতে তিনি সাহায়া করে-हिटनन । जीटक दन मधास वना हारश्रीकृत, ভাতীয় নিরাপন্তার প্রয়োজনে টেলিফোনে আড়িপাতা বেজাইনী কাজ নয়। এবং **ভাল্কালি**ন ব্রহ্মভেল্টের আমল থেকেই হার্কিন সরকার এটা করে আসছেন। তাঁর দৃশ্তারের কল্পারী ডেভিড ইয়াকে এর্লিখ-মানের দণ্ডার নিরে যাওয়া হরেছিল একথা ঠিক। কিন্তু ভাকে জানিয়ে এই কদলি করান হয় নি. এবং ইয়ংকে দিয়ে ঠিক কি কাল কল্ম হয়েছে তাও ছিনি কানের না। টোলফোনে আড়ি পেতে পর-**ল্যানের স**ণেগ রেম^{ল।}প ও অম্লীস আবোচনা রেকর্ড করে রাখা চত এবং দে সব রদাল বিবরণ ডঃ কিসিঞ্চারের দশক্তরে (জঃ কিলিজার লে সম্মার জাতীয় निदाभकात विवद्ध ध्यनित्यन्ते निक्नारमस

विश्वय अहकाती हिस्तान ।) शाकीन इंड এ কথাও তিনি অস্বীকার করেছেন।

ডঃ কিসিজার বলেছেন, সিনেটের ক্মিটিতে জিলি এই সব কথাই বলেছেন कान किहा शालन करहन नि।

जानाक्षकार्शिक जाश्वामिक जार्शिकार्य एः কিসিঞ্জার বলেছেন আমি এ কথাই ভাবতে চাট যে, ইতিহাস মরণ করবে (আমার চেণ্টার) সদভবত কয়েকটি ভাবিন রক্ষা পেয়েছে ও কয়কজন মাতা কতকটা স্বৃহিত লাভ করছেন। কিলত আমি এই বিচারের ভার ইতিহাগের উপর ছেডে দিতে চাই না সেটা ছল জনজীবনে আগ্ৰাৱ চাই। যেটা আমি ইতিহাসের উপর ছেডে দিতে শানাম নিয়ে আকোচনা।

পরবর্তী সংবাদে প্রকাশ হে ডঃ কিসিঞ্জারের পদাত্যাগের হামকিতে কাজ হলেছে। তার অন্রোধ অন্থায়ী সিনেটর প্ররাশ্ট্র বিষয়ক কমিটি আডিপাতার ব্যাপার তার ভূমিকা ভাগভাবে বিবেচনা করে দেখতে সম্মত তহেছেন। কমিটির সভাপতি ফালরাইট বলেছেন, ডঃ কিসিঞ্জার পদত্যাগ করে গেলে আমেরিকার পররাত্ত্র-নীতি পরিচালনায় অস্ববিধা হবে। সিনেটের সংখ্যাগরিষ্ঠ নেতা মাইক ম্যান্ত্র-ফিল্ড ড: কিসিলারকে পদত্যাগ না করার জনা আবেদন জানিয়েছেন করেণ তাকে भित्र एम्टम्ब अलाकन आहि।

স্থাপ্তিম কোটোর সামনে আইনের লডাইয়র প্রথম নাজিতে পরাজিত হওয়ার পর প্রেসিডেন্ট নিকসন ইতিমধ্যে আরও একটি আইনের লডাইরে তেরে গেছেন। ভার এই হার হয়েছে ফেডারেল ডিপ্টিইট তক্ত গোরহার্ড জেসেল-এর আদালতে। সেখানে প্রেসিডেণ্ট নিকসনের প্রার্থন সহ**্** কারী জন এরলিখমানের বিরাদেধ একটি মামলা চলছিল। এরজিখনান ভবি আত্মপক সম্বানের জন্য হোয়াইট হাউসের কিছা ন্থিপত্রও টেপ চেয়েছিলেন। প্রেসিডেন্টের কেণস, লৈ জেমস সেন্ট ফ্লেয়ার এসব কাগজপত ও টেপ দিতে অস্বীকার করেন। তিনি প্রস্তাব দেন যে, আসামী কাগজপ্র ও টেপগ্লি পরীক্ষা করে দেখতে পারেন তারপর তাঁর কোনগর্লি দরকার ওা বনলে হোরাইট হাউস ঐ অন্রোধ বিবেদনা করে

বিচারপতি জেসেল প্রেসিডেন্টের এই প্রস্তাব প্রত্যাখ্যান করে দিয়েছেন। তিনি মন্ত্রা করেছেন যে প্রেসিডেন্ট নিক্সন তার একজন সহক্ষ্ণীর নাগ্রবিচারের খথে বাধা

এই প্রসংগ্য উল্লেখ করা বেতে পারে যে, এরলিখ্যানের মামলা চলার অবস্থাতেই প্রেসিডেণ্ট নিক্সন এই বিচারপতি জেসেলকে ফেডারেল ব্যর্ক্তো অব ইনভেণ্টি-গেশনের ডিরেকটর করার গ্রন্থতাব দিয়ে-ছিলেন। বিচারপতি জেসেল এই প্রপদ্ধাব श्रक्षाभान क्राह्मानः

এরলিখ্যানের বির দেব অভিবোগ আন: চামেতে ডঃ এলসবাপ নামত শান-গোল্সকোর একজন মানসিক রোগের চিকিংসকের চেম্বারে গোপনে চানা দেওয়ার অভিযোগ সম্পর্কে। রাজনৈতিক शास्त्रकाशितित উट्यम्मा नित्र करे शाना দেওয়া হয়েছিল।

বিহারে রাজনৈতিক ভাষাভোগের সংবাদের নিচে আর একটি চাঞ্চলাকর সংবাদ যে এতদিন বেমাল্ম চাপা পড়ে গিছেছিল সেটা টের পাওয়া গেল বিশ্ব স্বাস্থ্য সংস্থার একটি রিপোর্ট থেকে। এই রিপোর্টে বলা হয়েছে যে বসণত বোগে মৃত্যু সংখ্যার দিক থেকে এ বছর বিভাৰ বিংশ শতাক্ষ্যীর বিশ্বরেকড করেছে। বিশ্ব স্বাস্থা সংস্থার হিসাবে এ বছরের গোড়া থেকে মে মাসের প্রথম সণতাতের মধ্যে বিহারে মোট ১০০০০ বসদত রোগী মার। গেছে। আরও কয়েক হাজার বসনত রোগী অন্ধ হয়ে গেছে।

বিশ্ব প্রাস্থা সংস্থার এই লাজাজনক রিপোর্টে আরও প্রকাশ পোরেছে যে, ১৯৭৪ সীলের প্রথম পাঁচ মালে সারা প্রভিবী থেকে মোট ৭৬ ৩৮৩ জনের বসংত রোগে আক্লান্ত হওয়ার সংবাদ পাওয়া গেছে। তার মধ্যে ৬১.৪৮২টি আক্রমণের সংবাদ পাওয়া গেছে ভারত থেকে। এই সময়ের মধ্যে সারা পাথিবীতে মোট যে ৩০ হাজার বসভেরোগী মারা গেছে ভাদের মধ্যে ২৬ হাজার জন অর্থাৎ ৮৭ শতাংশ হচ্ছে ভারতীয় আর ১৭ হাজার অথাৎ ৫৭ শতাংশ হচ্চে বিহারী।

বিশ্ব স্বাস্থ্য সংস্থাত পক্ষ থেকে অবশ্য বলা হয়েছে যে এবার মহামারীর প্রকোপ এমন বেশী মলে হাত্রার অন্যতম ফারণ হল : বিহারে এখন সেখানে বস্তু রোগের প্রাদ,ভাবে সংবাদ সংগ্রহের ব্যবস্থা আগের তুলনার অনেক উন্নত হয়েছে। তবে, সংস্থার কত পক্ষ এই মহামারী সমনে সময়মত প্রয়োজনীয় বাবস্থা অবলম্বন করা হয়নি বলে সরকারের কঠোর সমালোচনা क(श्रष्ट्रन ।

রাজ্ঞার বর্তমান রাজনৈতিক অবস্থায় বিহারের, চিলেপনা প্রশাসনব্যবস্থা আরও শ্লথ হয়েছে এবং বিহারের এবারকার মহা-মারী যে সেই শ্লেথতারছ একটা পরিণতি তাতে সন্দেহ নেই। এর উপর আবার বিহার সরকারের ২২ হাজার ডাভার ও টিকাদার সহ স্বাস্থ্য বিভাগের অনাানা কমচারীরা বেডনের অস্পাতির প্রতিবাদে পাইকাৰীভাবে ইম্ভফা দেওয়ার অথব: ধর্মাঘট করার হাম্মাকি দিছে রাজ্য সরকারকে আরও বিরক্ত করে তুগেছেন।

সর্বাদের সংবাদে প্রকাশ যে বিহারের এই বসদত মহামারী এখন উত্তর প্রদেশের পার্বাঞ্লে ও বিহারের সীমানত-সংলান পশ্চিমব পা ছড়াছে।

প্ৰেৰীক

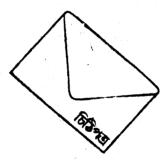
नकत्व अन्दर्भ

থতে ১০ই জৈনেঠর অমতে প্রকাশত ভঃ শিবদাস চক্রতীর দেখা বিয়েছে করি নজরুল শীর্ষক প্রবংশটি পড়লাম।

লেখক তার এই প্রবন্ধে কবি নজর লের সংগ্রেক্সর কবি, রবীন্দ্রনাথ ও সডোম্ম-নাথের যে প্রসংগ তলেছেন এবং পরে তাঁর প্রবাদটিকে যেভাবে এগিয়ে নিয়ে গেছেন ও শেষ করেছেন, তার ফলে অনেকের মনে এই ধারণা হওয়াই দ্বাভাবিক হো, রণ্ত্য-বাদনই কবি নজর লের একমাত লক্ষ্য। কিন্ত যে কবিতার জনা বংলা সাহিত্যে কবি নজবাল আত্মপ্রতিকা গাভ করেছেন, সেই বিখ্যাত কবিতা বিলোহীর মধোই তিনি বলেছেন-গ্রম এক ১ জে বাঁক। বাঁশের বাশরী আর হাতে রণ্ডুর্য। সাত্রাং রণ্ড্র্যবাদনই কবির একমার লক্ষ্য নয়, বাংশর বাশরীকে প্রাণের গোপন বালীকে বাজিয়ে তুলতেও তিনি সমান উৎসাহী। সেই যে বাজনা তা তিনি বাজিয়ে-ছেন অত্ততে দর্দ দিয়ে তার প্রেম ও প্রকৃতি-বিস্তাক কবিভাষা সাব সংখ্যা বড়ে একটা গ্ৰম নয়। তার অজ্ঞাস গানে এই বাঁশীর সংবে আমরা সভোন্দনাথ ও রবীন্দনাথের অতি পরিচিত্র কণ্ঠকে শানতে পাই। বলতে শিব্ধা নেই যে, কবি নজবুল হলেন একজন মথার্থ কবি, তিনি কেবল প্রচারক নন। বিদ্রোজীব গানে আমরা কবির যে ভৈবব মাতি দেখতে পাই, সেইটাই তাঁর যথার্থ স্বরূপ নয়। ভার ক্রিমনসের দুটি দিক। এর একদিকে আমবা দেখি উল্লাসের কর্ত্তালি আর অন্যদিকে দেখি ব্যথার রাগিণ্ডা--একদিকে কঠিন বাস্তবের প্রভাক্ষ কায়া তানাদিকে মনের গছনে সঞ্জ গোষের মায়াই তাঁর কবিছ, তাঁর অকুত্রিম সোল্ব'স্থিট্র পার্ণ প্রিচয় আমরা পাই ভার গজন গালগালিতে। এ ছাডা তাঁর বহা কবিতায় ফুটে উঠেছে প্রকৃতির সৌন্দর্যময় ব্ৰুপের মধ্যে মুদিবাপানে উন্মন্ত ব্ৰুপপিপাসার অসহা ভ্রমত্রতা। এই প্রসংগ্রে ভার একটি কবিতার এখানে উল্লেখ না করে পার্লাম না. হা থেকে আহারা এই সতে। উপনীত চতে পারি যে, রণডুর্যবাদনই কবির একমাত্র লক্ষা ন্য-ভাবে, ভাষায় কোমলভায় ছলেন-বৈচিতােও তার কাবা সম্প্র

> ্বী নীল গগনের নয়ন পাতায় নামপো কাজল কালো মায়া। বনের ফাঁকে চমকে বেড়াঃ আরি সজল আলো; ভাষা ॥

ঐ তমান্স তালের ব্যুক্তর কাছে
ব্যথিত কৈ দাঁডিয়ে আছে
দাঁড়িয়ে আছে!!
ভেচ্চা পাতায় ঐ কাপে ভার
আনুধা চল চলা কায়া॥



আজ তার বেদনাই ভারেছে দিক.
ধর-ছাড়া হায় এ কোন্ পথিক
এ কোন্ পথিক?
এনি সভ্তম তারি আকাশ-জোড়া
অসীর বোদন-বেদন ছায়া।

শৃত্যম বাদক;

শৃত্যম বাদক;

শৃত্যম বাদক;

শৃত্যম বাদক;

होनाह अम्रद्रश

সাণ্ডাহিক 'ক্ষম্য' পরিবার ১৪শ বর্ধ ৪ সংখ্যার 'শার্বালরার ছোন্তো নামে একটি প্রকশ প্রকাশ করেছেন ভাচিন্তাবাবা। এজনা তিনি ধনাবাদাহ'। কিন্ত কতব্যালি পক্ষাবীর বিষয় আ্যাকে গ্রুট্র ভাবে অন্সোজ্যি করেছে।

(১) লচটির নাম ছোনাছো? ডঃ আশাৰ্ডাৰ ভটাচাৰ সম্পাদিক লোকলাটিত পতিকার ওর্থ সংখ্যায় বেছনা প্রামের যে স্মাক্ষা রিপোর্ট প্রকাশিত হয়েছে তাতে গ্রহার উল্লেখ পর্ণজ্ঞ (অকটোবর, ১৯৬৮) ! দি ফোক ডালেসস অফ ইণিডয়া (কিতাকৈতান विकार सारकार वार विकार कार कार कार कार ইন্ডিয়া পোবলিকেশন ডিভিড্নন হাম্পত 'জো' (ছো) শক্ষের উল্লেখ দেখি। **ডঃ** স্বারীর করণের মতে না ছেনিয় কোন কারণেই ছোনয় নিছক ছ-এ ওকার। (দেশ, ১৩ই কাতিক ১০৭৮।। বহুদ্দন আগেও ডঃ করণ ছৌ-ছর বিরোধিতা করে তাই লিখেছিলেন, ...স্বীয়াণত বাংলায় থেহেত এই নাচ শু,দ্ধ <u>'ছো' সেইজনা শব্দটিকে ভানার হাই ছোক</u> না কেন, এ কোনে তা অনিকৃত রাধাই উচিত। ্দেশ সাহিতা সংখ্যা, ১৯৭৩)। अन्त ১৯৭০ সালে ভঃ আল্ডোব ভট্টাচার্যের নেত্রে মেদিনীপার জেলার বাঁশপাহাড়ী মান সমাক্ষাকালে তিনটি দলের ন্তা লক্ষ্ করি। দেখেছি স্রধার গান গেরে বোল দ্বার সময় কলে ছেন। অকটোবর ১৯৭২ সালে বোহদা গ্রাম সমীক্ষাকালে আগ্নি নিজে শুনেছি গণ্ডীর সিং-এর মূখে (খিনি কিছুনিন আগে ইউরোপে ছো নাচের দলপতি ছরে গিরেছিলেন) শব্দটি হল ছো', আ ছাড়া লক্ষা করেছি এদের এক ধরণের নাচের নাম খাব্ছো। শশ্শতিপ্রসাদ রাছাত মহাশর তাই গভীর আপলোবের সপো আমিও একজন তাই জনমতের কথাটোই বলি কথাটো ছো। (সমত্য্য প্রভাশন, ১৮৩ন সংখ্যা) প্র ১০০)। তাই আমার সিখানত এবিরে কো মা কেন নাচের নাম বে ছো। এ বিরুষ্ণ কোন সন্দেহ্নেই।

(২) সেক্সাস্ রিপোটস্সত্ সকলেই বলে থাকেন গ্রামের নাম বড়িদা কিক্টু আমি সমীক্ষাকালে শানেছি বেভিদ। '

(৩) ১৯৭২ সালে বোড়লা গ্রীম স্থ্রীকা-কালে আমি এই গ্রামের মুগ্রাক্ষ বিপ্র পুরুল্চরণ দত্তের কাছ থেকে শুনেছি তদ্দৈর বর্ধমান থেকে আগমনের কাহিনী। ডিডিইনট সেনসাস হাল্ড ব্রুক ১৯৬১ প্রেলিয়া থেকেও ভানতে শাজ্ঞ।the local Sutradhars penters) were reported to have

penters) ... were reported to have been brought from 'Bartal Para' of Burdwan town by Rara of Baghmund! ..."

জ্ঞানিক কোন তালের ভিত্তিত দাবী করেছেন, "সম্ভবত চেদিনীপুর কেলার কোন ম্থান থেকে এসে তারা বসবাস করেন বছন্দুভিত রাজের আন্তক্তা," ব্রতে প্রশাম না।

> খাদ্গোপাল মুখোপাধ্যায় কলিকাস্তা-৪৭

সেকালের সংগতিগণে

প্রীদিখা প্রুয়ার সাংখাপ্যায় রহিছ সেকালের সংগীত প্রা শিরোনামার মনোজ রচনাগালি খ্ব এগ্রহ সহকাবে গঠ কর্মছ। আশা করবো—তরি দেখনী থেকে এই প্রায়ের আরো লেখা অস্তের প্ঠা অলংকত করবে।

কলাবতী কৃষ্ণভামিনী সদপ্রিকিত দুগাল বচনাটিতে কিছা তথাগত লাগত লাগত লাগতে বাবেছে বলে আলার বিশ্বাস। রচনাটির দেবাংশো গেখক ককভামিনীর বাজি জীবন সম্পর্শেশ কিছা বলতে গিয়ে লিখেছেন যে কৃষ্ণভামিনীর জীবনে এক প্রেন্থের আবিভাষি ঘটে। 'ইনি ছিলেন উত্তর বাংলার এক বিষাট জালাগালী এপেটটের ম্যানেজার।" কিছাই ইনি ম্যানেজার ছিলেন না, নিজেই এপেটটের মাজিক ছিলেন। রংপ্রে পত্র থেকে ৮।১০ মহিল দারে এক গ্রামে তারি নিবাস। তংকালীন মালার মালালা হিস্তাভার জালাগালীর বালিক শ্লামান ছিল আনুমানিক লক্ষাধিক টানা।

--ब्राक्त मृत्याशायाव



প্রত্যাশা

হরপ্রসাদ মিত্র

সকল কথা হয়নি বলা:
না হোক বলা,—তাতে
যতিপতন-দুঃখ নেই অথবা সন্তাপে
মর্বিন কেউ: তবে,
প্রত্যাশার অনত নেই,
বিণ্টি হবে কবে?

বিষ্টি হলে ফ,লেশ্বরী কামিনী দেবে বাস! আরো সব্জ হবে আমার বাগানে শ্যামা ঘাস।

বাগান হায়, বাগান হায়, বাগান ছিল মনে; বৃক্ষ-লতা রুপের ধূপ খেয়েছে ভাই-বে:নে— আগ্যন আর হাওয়া, সারাজীবন স্বারই শুধু সেদিকে সরে যাওয়া।

সহজ কথা বে'কিয়ে বলা ব্যসন যার,—তাকে একশ' হাত দুরে রেখেই এ কী কঠিন বাঁকে এসে গেলুম সরলা, ওগে সরলা ভান্মতী, বুঝি না এ কি লাভ না এ কি ক্ষতি? পোড়ায় সব কোমল ত্বক ওড়ায় তার ছাই। প্রত্যাশার অন্ত নেই, বিণ্টি হবে কবে!

গর্ভিণীর স্তনের মতো গাঢ় মেঘের রঙে থাঁ থাঁ আকংশ ভরছে কেউ ভান,মতীর ৮ঙে। জ্যৈষ্ঠে য'কে যায় না দেখা গ্রাবণে সে-ই সব সকল কথা হয়নি বলা। বেকা তো সম্ভব!



(86)

তথ্য সম্পুদ্ধ পাড়ে পাড়ে সব সামোধান বৰ নাগীদের ভিড়। ওরা জোগদনার দাড়িয়ে দ্ববতণী পাছাড়ের রাখার আগান জানতে গেখছে। তার উৎসাহী মানুষ্ধরা গোট-ভারা করে চলে যাছে। কি করে সে একজন নানুষ্যর প্রভিন্ন দেওরা হয়! এবং প্রভারে চারপ্রপাশ ওদের দেখে ছোটনাই বাহনে বিপ্রভার জন্ম হাত বেংগত চন্টা বপরে ভ্রা উঠে আগতে চন্টা বেংগত চন্টা।

ভেটবান্ না বহলে যেন কেউ উঠানে
পারতে না। সে বংলা, আস্না এবং ওাল্য কেট কেউ সানা্যের সেই আমাপোড়া শ্রার দেশ কেমন ঘারতে পোল। তেবিভ পান বেনি সময় কাছে থাকতে পানে নিং ত পাশের ভোট একটা পানেতের মাথায় প পূষ্য আছে। তর শ্রার গোলাছে। ছেটিনালু ভাক ভালিক গোল এসেছে। আরল মানা্যের মাংসের সেই উহকটা সোভা গলেশ ছেটবান্ত কি জিল না। বংলা, আনমেয়ে খ্লাসভালী মনাামের মাথে কারে মাজে। ছোটবান্ মানে মাকে আগ্রা ক্যে গোলা উলান দিছে, বাই ফোল নিছে। কারের নিতা শরীর সেব সাব সময় মান্টা পারছে না দেখে

যার। এসেছিল বোট-ভাড়া করে, রেশি বর্মনের কেউ কেউ বয় বস্পনের। বেশ নিজেদের এত্তার কথাবাতা চাজারে যাজেছ। পাহাড়ের মাধার কলে একসংখ্যা বোশ লোক উঠিও পার্রার না। পাঁচ সাতজনের একটা দল উঠে ভাসাহ, আনার তরং নেমে পোলে এবি একদন উঠে আসাহে।

অনিমেষ বলল, বেশ বেটা মরে গিয়ে এখানে অমর হয়ে থাকল।

আসলে বেধেগ্র এই ন্বীপবাসীদের এটা একটা ঘনন—মেন দিন কাল মাস কেটে হাবে, শঙ্রের পর বছর কেটে হাবে, তবা, থক্টা ওয়া বয়ে বেড়াবে আজ্ঞীবন। বাংলাদেশের নাবিক বৃক্তনিবাস এথানে সমুদ্রে ডুবে মরেছিল। ঐ যে দেখছ পাহাড়টা, সন্মার থেকে থাড়া উঠে গোছে, ঠিক আব্দর্শন নিচে, তার মাথায় সারারাত আগ্রাটা অ্রেছিল। একজন মানাকে: শ্যার প্রায় সারারাত পাহাড়ের মাথায় অর্গোছিল—বড় নুঃসাহাসিক ঘটনা।

স্তরাং প্রথমে মনে হয়েছিল একজন মান্যায়ের শ্বার আগ্রানে পোডালে ম্বাপ-কাসারি। সহ**ভেদ মেনে নিজে নাক পারে**। গরে মনে হায়েছে, ছেন এই স্বীপৰাসীদের জাবনে এটা একটা ন্তন জেমা**ও। কা**রণ স্মা, ডের পাড়ে পাড়ে হাজার হাজার এখন মন্থ। ভেন্তেনায় দিগুতে নক্ষরে মতে। আগ্রের সামানা **ফ্রাকি দেখছে। আগ্**নের সেই ফুলুকি নিভে না গেলে ওরা ব্রাঞ্জেই ঘটো ফিরবে না। একজন ঘরছাড়া আন্তর্য মাতাতে ওরা বেদনা ধোধ ধরছে। দীন্তথে দীন্তিয়ে শোক প্রকাশ করছে। দেখে মনে হতে মেলবংক ধরে হয়তো এ-বছরের বাজেটে পাতাডের মাধায় সঞ্চান। একটা এপিটাপের জন্ম খরচ রাখ্যে, যেন আগ্রামী 86788 জন-লেখাটৰ ভেত্ৰ ত্রপিটাপের নিমাণি কাম' শেষ হয়ে যায়। ভার সূধ্য মান্যুক্ষণ । <mark>যথম নালিয়াভিতি</mark>, ১৯, দেব ধারে ধারে এবং পাতা**ড়ী উপতা**কারে দাঁডিয়েছিল তখন একটা এপিটাপ নিয়াণ সন্মান্ত্রীয়া। কেই সাদ্য কেনংসনায় ভারা ছায়। সৰ হাল্ষের মিছিল। আর আগ্র নিতে নিমে শেষ **হয়ো আসেছে।**

চাবপাশে সুমৃদ্ধ ডেমনি ফুলসছে। সমৃদ্র পাহাড়টার চাবপাশে মাথা কুটে মরছে। তথা ডেবিডকে ডেকে নিয়ে তল। এখন বদ্দ থেকে ডল ভুলে আনতে কবে। চিডা মিডিল দিতে এবে। ডেটিবায় জল। এবে চিবার ডপার ডেলে দিল। বলল-দান, ডেমেকে এখনে বেহর গেলায়। সূথে ফেল।

অনিমেষ বলল, থাক শালা। সাথে থাক। বংক বলল, ডুমি তো থাকলে বড়-টিডাল। ভোমার বৌকে আমর। ডিরে গিগ্রে মুখ দেখাব কি করে!

ডেবিড জন ডেলে দিল।

জন্দার এবং অন্য স্বাই জল তেলে ভারপর নেমে এল নিচে। সম্পুত্র ওরা ভারপর ভেরা জামান কলে বাসে বাস্থাই। কেউ একটা কথা বসতে দা। আকাশে সক্ষয়ালা তেমনি জেলে আছে। পাংস্ট্রি জন্ম জেলুকনার অসপট হয়ে লেল। কনে এরং লাহাজের আলো, মান্ডলে তেমনি ক্ষমালা তেমনি ক্রালো, মান্ডলে তেমনি ক্ষমালা তেমনি ক্রালো, আলা, আলাভা এবং ক্রালাজ্য ভালা, বান্টি ভিড়িয়ে ভপরে উঠো বারতা লাকল।

ওখন গণতে হৈছে কোহাটার-মাণ্টার বললে, আন্নান্ধারক। ভোটবাবা বলল আন্নান্ধারক।

্ছারণার মাহটার হাত টেয়ে বলম্

কাশ্যামের শ্রীর ভাল না।

—িক হংক্ছে। ডেবিড শ্নস্থ : —কী।

—কাশতানের শধীর ভাল না। কোয়াগার নাশ্টার কাল **ফিন্** ফিটের ব্যমেণ্

ছেটবাৰ: এবং ডেবিড এক **ম.হ.ড**ি দেরি করল । । জম্বার **আর বংকজে** বলল, তোৱা যান ভিজে জামা পাঞ্চ পরে বেলিক্ষণ থাকিস না এবং **ছোটবাব**ু নিজের ক্ষেত্র এসে তাড়তাড়ি পোশাক প্রতি নিল। পাশের কৈবিন্সালো কথা স্বাই ঘুলিয়ে আছে হয়তো। রাত গভীর∙ কোন সাড়া শন্দ নেই। সে ওপরে ওঠে বনির কেবিনে টোকা মারল। সাড়া শব্দ এখানেও কিছু নেই। বনির **কাছে জানতে** পারত কি হয়েছে। ত-পালের পোর্ট-ছোলে উবিদ্দেশৰ দেখাল, বানি বৈনিবনে নেই। দে এবার সি^{র্ন}ড ধরে আরত ওপরে উঠতে থাকল। চার্ট-রামের পালে কাণ্ডানের খাস্-কামরা। দরজা খোলা। ভেতরে আলো। জনালা। সে উর্ণিক দিয়ে দেখল, পা**য়ে**র কারে আর্হি বিলে আছে। মাঝে চিক-মেট। ^{র ।} চারে বংল দেখা হাচছে। কাশ্চালো শরীর চালে চান সে ব্রেক্তে পারল।

চিফ-মেট ছেটেশাব্দক উপিক দিতে দেখে বুলল, কাম-ইন!

স্যালি হিগিনস বললেন, কে?

--दश्चार्थवायः।

--কাম-ইন কাম-ইন। যেন প্রাণ পেয়েছেন
ছাতে। এবং মুখে সরল বালাকের মজ্যে হাসি।
ছোটবাবু ভেতরে চুকলে বললেন, ব্যাস।
মুখ এভ গোনাবা কেন! আরে, আমার কিছু
ছম্ন নি! বড়-টিন্ডাল। ওটা একটা আহাম্মক।
ব্যা জন্য কটা পেয়ে লাভ নেই।

হৈ ট্রাব্ কখনও কাণ্ডানের খাসকামরায় আসে নি। একটা সব্জ রডের
আলো জর্লছে। তিনি শুরে আছেন। বুক
প্রকিত সাদা চাদরে চাকা। দাঁতের দু পাটি
খোলা। খ্ব বুড়ো এবং শীণকিয় মন
হচ্ছে স্যালি ভিগিনসকো এবং কেন জান
মনে হল জানাস্থা প্রচিন মান্যের মধ্যে
অথবা ভালিব বলল কেমন আছেন।
সে শালে বলে বলল কেমন আছেন।

—খ্ব ভাল। জ্ঞাক তুমি শ্তে যাও। কতক্ষণ এ-ভাবে বসে গাকরে।

আবং ছোটবাবা দেখল, জ্যাক হাখার কাছে
বনে আছে। তার দিকে তাকাচেল না। অথবা
সে যে কেবিনে এসেছে একেবারে যেন
ব্যুখতে পারে নি, জ্যাক কি যে চুপচাপ এবং
কেব কেন জানি আর একটা কথা কলতে
পারল না। এমন একটা স্বান্দর কেবিন, ঠিক
মাথার কাছে যাশার মার্টি। নিচে ছোট্
গোল টেবিল। ফ্লোনানিয়ে ট্রিপ খ্যালার।
ক্রান্দ্র অতিকায় দ্রিটা পোল ভাল ক্রান্দ্র করে
ক্রান্দ্র অতিকায় দ্রিটা পোল ভাল প্রান্দ্র করে
ক্রান্দ্র ভিনি ব্রুকে দ্রুখত প্রথমন
মতো রেখেছেন। ছোটবাব্র কেমন ভাল
লগতে না। ছেবিল এখনও আলতে না কেন।

তথন স্থালি হিলিক্স ব্ললেন, থেশ স্ময় লেগে গেল তে।মাদের।

ছোটবাব, বলল, হা। সার। ছেবিও এখনও আস্তেনা কেনা সে সরজার ভিতে বার বাব তাকাছে।

হৈতিনাস বলজেন, বড়-ট্রিডাকের বাড়িচ্ছে কৈ আছে >

--- তর স্থা।

—আর কেন্টু নেই >

- আর কে আছে লানি ন।

শি **—কালই থবর**টা পাঠিয়ে দিতে হবে।

ি চিফ-মেট বলল, আপনি চিনতা করবেন লা। আমর ডো আছি।

ভেবিভ বভের মতে চাবে প্রথমে পালস
দেশল কাশ্তানের। তারপর চোব টোনে দেখুল।
প্রেখি জিন্ড। বের কর্যন। ভোটবার্ টার্ট
দার্ভিরেছে। ওরা দালুলন প্রায় এখন দেন
সমবয়ুসী মান্ত্র। ওরা পালুপারি দালিল দালি ছিগিনসকে দেখুছে। জনক শ্রেস
রয়েরছে মাধার কাছে। একটা কথা বলছে না।
জ্যাক্রেমে জ্যাক্রিক দেখুছে। এবং
অভ্তাধে জ্যাক্রেক দেখুছে। এবং
বে-ক্রেমেন সে বসে রয়েছে। এই যে মেশ
জ্যাক, এবং এই যে সাগান্ধ হোরের চারপালে—ক্রেমন তবি আক্রেম্বল। সে সারারাত
ভূকো মেন বুলে থাক্তে পারবে। জ্যাক বনে থাকলে রাত জেগে বনে থাকছে এতটাকু কণ্ট চবে না তার।

ডেবিড বলল আপনি ছুমেন স্যার। স্যালি হিতিনস্বলদেন, আমার ছুম আপছে না ডেবিড।

—না ঘুমোলে তো চলবে না। এই জ্যাক, তুমি আর বসে থাকবে না। হাও। ঘুরে পড়ো গো। স্যার, সে চিফ-মেটের দিকে তাকাল।

চিফ-মেট বলল, যাতিছ।

ডেবিড় এবার আচির দিকে তাকিরে
বলল, কি ব্যাপার তোমার ঘুম পাল্প না।
এস। সে প্রায় সবাইকে নিরে বাইরে বের
হয়ে এল। একজন কোয়াটার-মান্টার শুন্।
জেগে বসে থাকল বাইরে। আলো নিভিয়ে
দেওয়া হল। ওকে এ-ভাবে জাগিয়ে রাখা
ঠিক হয় নি। পাল্সের বিটে সামানা গন্ডগোল এখনত আছে। ওরা বোট-ডেকে নেমে
গুলা। জাক বলল, ফোনে কথা বলার সমুর
আজান হয়ে বান। ডারার বলে গেছেন, ভানিব
চিন্টা ভ্রনায় এমন হয়েছে।

জ্ঞাক আধার বলল, বাবা ফোনে[†]কথা বলকে বলতে ভীষণ উত্তেজিত হয়ে পড়েন। —কার সংশ্যে কথা বলছিলেন? ভৌবত বেলিঙে দুটিয়ের এখন বলল।

—ব্বাঝতে পারলাম না। কেবল শেষে গলক্তে শোনলাম, আস্বেন। তারপরই বঙ্গে পড়লেন। আর আমার দিকে ভূত দেখাব গতো তাকিয়ে থাকলেন ভেবিভা।

বোধ_হয় মধায়ামিনীতে ওরা এভাবে বোট-ডেকে দাঁডিয়ে ভীষণ চিন্তাভাবনার ভেতর কিছ'ুই বাঝে উঠতে পার্ছিল না। জাতাল সম্পাকে নতুন কিছু কি খবর এসেছে! চিফ-মেট পাশে দাঁডিয়ে আছেন। বহুলে প্রবীণ মান্যেটি কাতের পোশাক পরে আছেন। মাথার ওপর সেই নিবর্ষিকালের আকাশ আর তার নক্ষাল্লান। ওপরে কাশ্ডান ভারাজের সবচেয়ে নামী মান্**ষ্টা ব**াক্ কারে করভোড়ে হাত বেখে শাহের আছেন। বার বার জিজ্ঞাস। করেও ওবা ফোনে কি বধা হয়েছে জানতে পারে নি। এমন নতুন দ_্ংসংখাদ বয়েছে এই **প্ৰাচী**ন **জাহাজ**ক কংদ করে। এয়ন শক্তসমর্থ মানুষ্টা প্যবিত বিচলিত বোধ করছেনা ওরা কেউ আর কথা ব্লক্তে পারল। না। নিঃশদের যে যার কেবিনের দিকে হাটাতে থাকল।

স্কালে যে যার মতো ঘুল থেকে উঠেছিল যে যার মতে চা খেয়ে ডেকে উঠে এপেছিল। পালাডের মাথার সেই আগানের শিখা আর নেই। সূর্য *লাল বলের ম*তে। পালাডের মাথায় জেলে উঠেছে। এই সমাদ্র দ্রীপের নারকেল গাছ অথবা আতা গাছের জ্ঞাল দেখতে দেখতে কৈ বস্বে, গ্ৰু বাতি ্রকটা পালাড়ে <mark>এক</mark>জন ত্বা ও-পাশের হান্ত্র বেখে এসেছে। **সকালের সব কা**জ-কামেরি ভিতর বক্ত-নিদ্যোগের দানৌ **এক**ই। কথা এবং নানাসংগাঁৱ সূত্ৰ তথেকা শোক সংক্রাপ, (এবং এবই চেত্র এবা কালে কালে হাজিলে। ফলকা থেকে গ্রিপাল খালে ফেলা হজে কাঠ ছ'্ডে ফেলা হচ্ছে। ডেরিক নৌনে ছোলা হচ্ছে। মাল বোৰাই হবে বলে নবাই এক দৃশ্য

দাঁড়াতে পারছে না। বড় বড় সব টাগ-বেট এগিয়ে আসছে জমল। বড় বড় পিশে ভাতি ফসফেট। এবং সামোয়ান মান্ধ্রা টাগ-বেটি জাহাজের কাছে নিয়ে এসে চাক্ছে—হাডিয়া।

আর এ-ভাবে বখন জাহাজে হাড়িল্ল হাফিজ শব্দ, কাঠ ফেলার শব্দ ঘর ঘর করে বড় বড় শিংপে উঠে হাচেছ ডেরিকে, নিত্তে অনেক নিচে খাদের মতো জাহাজের তলার নেরে হাচেছ পিংপেগুলো—তথনই দেয়া গেল, একটা সাদা রংরের বোট জাহাজের দিকে ভেসে আসছে। শুলিক মানুম্ব একজন বেংটে মতো, একজন লখা মতো, সাদা পোশাক দ্বাবির, দড়িত্বে আহে বোটে। ওদেব একজনের হিপপকেটে ছোট মতো একট হাত্ডি। জাহাজটাকে দেখেই বে'টে মতো মানুষটা হাওয়ার ওপর হাত্ডিটা দোলাছে।

আর সেই হাতডিটা দোলাতে দোলাতে লোকটা লাফ মেরে সি⁴ড়িতে উঠে এল। ভারপর সির্গড় কাঁপিয়ে সে আরও ওপরে ইঠে আস্থে। পেছনে সেই লাবা মতো মানাধ। এরা দাজন প্রায় লাফিয়ে লাভিয়ে জাহাজের সেই শেষ ওলায় উঠে যাছে। গোলগাল মান্ত্রটা যে প্রচেথ লৈঘেণ্ড সমান-যার শ্রীর বেচপ, <mark>যার মৃথে স্নিত হ</mark>াস এবং হাসলে কান। পদ্ধতিত নতুক্তে থাকে দে কেল্লম লাঝে নাঝে দ্বটো ছেলের মতে বালকেন্ডে হাতুদ্দি ঠাকে দেয়াল যেখে ^ক **শ**ুনছে। তথ্ন সেই হানাুষের চাথে মাুখে ক অপার বিদময়। যে**ন সেই শব**দ লোচাব অন্তর্ভাবে লাকে নামারকলের খেলা। প্রায় ল্যুকোড়ার খেলা গ্রুতো অথবা স্থাপান্ত্র শক্ষ শোনাৰ মতো কান পেতে শান্যত গ্ৰীয়ী ভাব শিরা উপশ্বিম কতটা ঠিক আছে।

ন্দ্রিভ সাথেছ বর্ণাব-ব্যু খেকে টাই
আসার : দেখলেন ভাইভ দেখার এবটা লোক বলের গার্টিড়াত উব্ হয়ে আছে। সে চানেসের পালে উব্ হয়ে কি দেখালা চান্ত্রিট মনে হল উব্ হয়ে কেখছে ন' বান স্পান্ত কি শ্লাছে! হাতুভিছে দ্বাবা ইস্কেই কান পোনে বছ স্বাহ্নপাদি শ্লাহ ইক্তিট্ চোখে মাথে দ্বাহী বালকের মাজে ভবি। দ্বাহে বলল হাসি। খ্লিকত ভার পাদ ভবে বাছে। হাতুভিটা আনকের বাবাসে ছাতে আবার লাকে বিছে।

আর তথন লম্বা নতে। নানুষ্টি হাতেও ইশারায় ডাকল তাকে। বড় বেশি তোমার বাপু নেশা। জাহাতে উঠেই কালকাম আরম্ভ করে দিয়েছ। এস দেখি লাহাজেও ব্রো করা কি বলে। কল ফোনে যা তেওে উঠেছিলেন, এখন হাতে হাতুড়ি দেখলে থাড় ধরে নামিয়ে দেবেন।

—ভিত্রে আসতে পাবি : চিহ্ন-মেট বলল, কাকে চাই ?

—ক্যাণেটন স্থালি জিলিন্দ। বলে বে একটা লদ্বা কাগ্যক চিত্ৰ-মেটের নাকের ছলায় তালে ধবল।

লোকটার সাহস আছে। বনা নেই কত্স নেই একেবারে রীজে উঠে এসেছে। বিনত্ কাগ্রকটা পড়ে দে যুখতে পারল—হেড- And the company of th

অফিসের বেশাদ কভার লোক—স্তরাং হা হয়ে থাকে, আদর আপাায়নের শেষ থাকে না: —আপনাথা বস্ন। দেখিছি। কালেটন কাল থেকে সামান। অসুস্থ। দেখি—বলে সে সিলকরা খাম হাতে নিয়ে ঢুকে গোল ক্যাকেটনের খরে। ভিনি বেশ উঠে বসেছেন— এবং ফকোর বস্সু থাকেন। জ্যাক সব ছাতের ভাছে এগিয়ে নিজে।

িচ্ছা-মেট ফাল, সারে দৃভান গোক এসেছে। আপনার সংগ্রেখা করতে চার।

জ্বালি ছিগিনস ব্যাস হৈছে দিলেন।
—তা হলে ওরা এসে গেছে। ফলের রস মাত্র সামানা খেরেছেন।

জ্ঞাক বলল, ভূমি খেন্তে নাও না বানা।
বনা তো ধসছে। ওয়া তো চলে বাচ্ছে না।
চিন্দ-মেট বলল, সান ওদের ভেড্নে
নিয়ে আসব।

--না। ওদের চার্ট-রুমে বসতে বল, আমি মাজিত।

—কিম্তু স্যার, আপনার এ-শরীর নিবে যাওয়া কৈ ঠিক হবে!

—কিছে; হবে না। ওদের বসতে বল। ভাকে বলল, বাং।!

—क**ै** !

— ভূমি হাবে না। ওদের এখানে আসতে বলি।

স্থালি হিণিমস্ ভাকলেন, চিফ্-মেট ! সেই হাই করে ভাক। একেবারে আগের মতো স্বাভাবিক। এতটাুকু বিচলিত্র যোধ করছেম না।

—আজে কিছা বলছেন সাার?

— আমার শ্বীব ভাল না, এ-সব আবাব বল নি তো।

চিফ-মেটের চোপ নামুখ শাকিছে। গোন দে তো আগেই বলে দিয়েছে। চিফ-মেট বলল, সারে!

—তোমাদের কবে হে কান্ডজ্ঞান **হ**বে ! য়াও। তিনি এবার বেশ সহজভাবে নেমে এলেন বাংক থেকে। যেন সেই যেবনে ফিরে যাছেন। প্রথমে তিনি তাঁর দু; পাটি দণত মাথে পারে দিলেন। একেবারে যাবকের মতো **মাখ হয়ে গেল।** তিনি তাঁর ইউনিফরম পার নেবেন। কাশ্তান-বয় ছাঞ্জির সামনে। আ জ্যাক অগত্যা কি করে—সে চুপ্চাপ বাইনে এসে দাঁডিয়ে থাকল। বড বড় পিপে স্ব ওপরে উঠে যাচ্ছে, নিচে নেমে হাচ্ছে। ছোট-বাব, মাথায় ট্রন্পি পরে তেলের টব আর বালতি নিয়ে এক একটা উইনতের সামনে কিছুক্তৰ দাড়িয়ে থাকছে, মাল ওঠা-নমা, অর্থাৎ গিয়ার, লিভার এবং স্থবিছ; ঠিক মতো চলছে কিনা দেখে আবার অন্য উইন্ডে ছাটে বাজে। দড়ি-দড়া বেয়ে উঠে যাজে স্থ মান বের।। কৃলির দ্ব হাকডাক করছে। ওরা হাত কুলে বলছে হাতিয়া, মাল নেমে যাক্ষে। ওরা বলছে হাতিজ, খালি পিপে উঠে ভেসে হাচ্ছে বাতাসে।

জ্যাক পরেছিল নীল রডের ট্রাউন্নার। ছাটি শর্মানত গোটানো। মাধায় দেও ট্রাপ পরেছে। এবং চারপালে ফসফেটের গ্রেডা, কুল্লাশার মন্ডো উদ্ভাছে বলে, সে একটা নিরিবিজি জারগার, অর্থাও ট্যাঞ্চ টপে শরীর
এলিয়ে দিয়ে সামনের মেলিডে পা রেথে
ন্রের সমুদ্রে গভীর এক মাল মিজলিডা
দেখতে পাছে। সে বৃথকে পারছে না ফোনে
বাবাকে লোকটা কি বলেছিল! ছারা দেখা
করতে আসছে ভারা কি সেই লোক। বাবাকে
সে দেখেছে, যখন ভাষিদ বিচলিত হয়ে পড়েন
তথন সব কিছু ভার বেলি বিকঠাক
চাই।
কারো তিনি তথমে সামানা এটি সহা করতে
পারেন না। মার্জনিয় করা তো দ্বের
কথা
মে বৃথক্তে পার্ছিল, বাবা তেতরে বিকঠক
নেই। সে দামে লোক ভাষণা

তথ্য স্যালি ছিগিনল গুরোপুরি
ক্যাপ্রেম স্থালি ছিগিনল। চক্চকে সালা
জুগুড়া, সালা ঘোজা, সালা প্যাকট সাল্
ছাফ সাট সোনালী শ্রীইশ কাঁধ চার চারটা।
য়াথায় এংকোরের সোনালী ছবি আনা
বাণভানের টুপি। ফিটফাট এবং ভীষণ
রামান্ডারি মান্ড দেখাজিল তাঁকে। ডেডবে
তুকলে ওরা দুজন উঠে দুড়াল। পাশে
চিচ্চ-মোট আজ্ঞাবহনবারী মানুষের মান্ডা
দাভিয়ে আছে।

লম্বা মতে মানুষ্টি কণ্ডে সাহান। হাত বাড়াল, নাম বলল।

বেংটে মতে। মানুষটি ঝানুকে নাজাল পাছিল না ক্যান্টেনের ছাত। পেট ভীষণ মোটা। টেবিলের ও-পাশে পেটের চার্ম থকথক বরছে। ভামার ওপরে পেট ভেসে রয়েছে। মোটা বেলট। বেলট খাুলে ফেললেই প্যান্ট তড় হড় করে পরে যাবে। স্যানি হিগিনস আরও বেশি ঝাুকে হাও বাড়াকেন। বল্লেন, ইউ দেন মিণ্ডার ইয়ানু ওসাকা।

—ইয়েস ইয়েস ওদাক। ইয়ানু ওসাক।।

— বস্টা।

তরা বসে পড়ল। তিনি হললেন, কঞ্চি।

তিল মেট মুখ বাড়াল দরকায়। কাশ্ডানবয় সোডা। দাড়িয়ে আছে। সে হাকুমে≺
প্রতাকায় আছে।

- 4.17p (

স্যাজি হিলিনস মাথা থেকে টুলি খ্লে প্রধান হাকে কালিয়ে দিলেন। খ্যু সঙ্গ টোখ মাুখ। তিনি জানতেন, এরা কি বলবে। টিনি বলগেন, কবে এসেছেন এখানে।

— সকালের স্থাইটে।

— যিঃ ফেল কেমন আছেন?

—ৼাল।

— ভার ফুরী।

—ভাল আছেন।
—তাহলে সবাই ভাল আছে। দেখি অপ্ৰমাদেৱ কাগজপত্ৰ। নিঃ হ্যানিকটৰ ভাপনাকৈ আগে কোথাও দেখেছি?

--ग अगरा

—भूथिहे। यूव रहना रहना।

and the desire of the desire of the second s

মিঃ হ্যামিলটন ভাষণ লাভ্যা আর রোগা।
দালাল লোকেরা দেখতে যেমন হয়ে থাকে—
এবং প্থিবীতে সব দালাল লোকদের মুখই
দ্বি এমন হয়। মিঃ হ্যামিলটনকে ব্ৰিদ্ধ
তাই খ্যু চেনা চেনা লাগছিল। ফাইল খোচ
দিলকরা খাম বের করে আলোতে গেওে
ছিতে ফেলসেন। এবং চিফ-মেটকে

্লাসন, তুলি আসতে পাব। **কাছাকাছি** থাকৰে। ভাললে সাচা দেৱে।

তিনি খামের ভেত্র থেকে লাল রচের প্যাতে দেখলেন সেই সমলের নোটিশ। ভোরাল শক্ত হয়ে উঠতে।

—তাৰপর ইয়াদ ওসাকা, জাহাগটা এক্ষার দেখবেন বলছেন।

-- ইয়েস স্যার। প্রানো জাহাজ। একট ধাজিয়ে নিতে হবে। বলেই সে ভার হিপ-शक्ति स्थाप रहाते अकता हार्काळ स्वत करव প্রায় কানের ভেতর গালুভে জেল্ল। বেমন भ्यगंकातरमञ्ज हाकृष्टि भावना हकहरक श्रवह দামী উদ্পাতের তৈরি হয়ে থাকে অঞ্চ ভারি মনোরম, কানের ভেতর পেনালল গাণ্ডে দাধার মতো এমন একটা ভারি ভাতাভ লোকটা অনায়াদে কান্তো গ্ৰ'ছে রেখে দিল। आवलारिक तम अ-कालहोहे करराह_{। भावास्त} কাহাজ কেনা বেচার কাজ। ভারাকের इंज्लारक केएक केएक स्मर्थ स्मर्थ क्यांत कि भाग खारक काहारक। कारन खबन रमाकहा শেনসিল গ্রাপজে রাখার বদলে হাত্তি গ্রাক্ত রাখে। কানেব পালে ক্যা পালে গেছে। কানার ভাবি করে গেছে।

স্যালি হিলিনস্ নেখজেন কজি এসে গেছে। তিনি কফি ঢালতে জলতে বলজেন, জাহাজটো দেখে আপনাদের কিছুমনে জড়েনা।

—জাহাজটা তো স্যার অনেকদিন দেখার ইল্লেছ ছিল। এত শ্রেনছি। এখন দেখে তো আর দশ্টা জাহাজের মতোই লাগছে। ইয়ান ওসাকা জোক গিপল বলতে বলতে।

- তাই তো হওয়া উচিত।

মিঃ হ্যামিকে: বলগ, মা**কথানে** গোনলাম আপনাদের **জাহাজের ফোনো** থবর নেই।

—মাকে মাতে খাকে না। খুব স্বাভাবিক গলায় বললেন স্যালি ছিগিনস। এতদিনের একটা বিশ্বাস এবা ভেলো দিতে এক্সেছ। নাক ভালোয় ভালোয় শেহ পর্যাভ্য পোকে গেলেন।

--ভারি বিশ্বাসী **জাচাজ**।

ইয়ালা ওসাকার শুখা মুখটা দেখা
যাচ্চা গলা প্রতিত টোবলে ঢাকা। শুখা
মুখটা দেখতে পাছেন স্মালি ছিলিনস।
ছাড়ির মতো মুখা চুল কালো। সজ্জার
নাটার মতো চুল খাড়া। সব সমল্ল জ্ঞাত
ভাসা। ছাললে দ্বটো কান নড়তে থাকে।
লোকটা কেন হৈ ছালছে। লান নড়তে
থাকলে ভাবল কাবলিত। এবং মনে ছাছেল
ইয়ান্ ওসানা একটা শিশে থেকে গলা ক্ষে
করে কথা খলছে। ফান মাড়া ক্ষ্য
করে কিতে ইছেছ হছে।

ওসাকা বলাল, খুব পলে পেছে **মডে।** বলন, ভারি ইচ্ছে ছিল, ঠিক ইচ্ছে না বরং দ দবন্দ বলতে গারেন সিউল ব্যাণ্ড **জাছাফ** আমার হাড দিয়ে পাস্ হবে।

স্যালি হিপিনদের সতি। ইচ্ছে হল কান ধরে বের করে দেবেন। কিবচু তিনি দ্বতি ঠেলে দিলেন ওপরে—বংস্ক্রে হারেছে আমারঞ ইরাদ্য ওসাক। সতিত্ব মিধ্যা হা থালি শুনো এটাকৈ ক্কাপ করার জন্য পাগল হয়ে গেছ।
ভারণর ভিনি কেমন জেদি বালকের মতে।
ভারকোন, আসলে ভাহাজকে ভয় তারও কম
নয় এওদিন তিনি ভাকে বাংগ রেখেছিলেন,
জাহাজ এখন শেষ সফরে তার হাতের বাইরে
হলে যাজে। ভিনি বললেন, জাহাজ তো
আশাভত জিলং যাজে।

—তা যাক। হ্যারিলটন বলাশন।
তাপুনাদের চুঙি শেষ না হলে
এটাকে ভাগাড়ে নিয়ে হাজি
না মিঃ ফেল, সব খুলে আমাদের বলেছেন।
া স্যালি হিলিনস বললেন, যদি এর ভেডর
ক্ষিত্র হয়ে যায়।

— চুক্তিপর সে-ভাবেই করা আছে। একার থেমে হ্যামিলটন চোখ বড় বড় করে বলল, কিছু হবে বলে কি আপানার মনে হচ্ছে?

—না না। এমনি বললাম। সব কথাবাত'। বেশলামেলা থাকা ভাল।

্ — আপনি তো শ্যুনেছি জাহাজটাকে সব্ আশ্বন্ধ প্রভাব থেকে রক্ষা করে আস্ছেন।

— এ-সব গলপুগাঁথা। জাহাজ ঠিকই জাছে। গুজৰ বলতে পারেন।

—আমরা তো জাহাজটা সম্পর্কে এত শুনোছি স্থার, উঠেই মনে হরেছিল, স্মানানেরও কিছু একটা হয়ে যাবে।

স্যালি হিগিনস হা হা করে হেসে উঠকেন।

ইয়াদ্য ওসাকা মুখ ছার করে ফেলল।
এই প্রথম স্যালি হিজিনস দেখনেন
ইয়াদ্য ওসাকার মৃথে ধোন কথা নেই।
বিষয় দেখনেন, আমরা তো বুনেছি
কার্টেন ল্ফেনার নিজের তদারকে জাহাজটা
বানিয়েছিলেন।

--ভা হ্যতো করে।

প্রাণ বলল, সার স্ব খবরাখবর নেবাব জন্য হামবৃংগ কিছুদিন থেকে গেলাম। রেজিস্টার খাতা, সাল তারিখ, স্ব জাহাজের নাম ঘোটে দেখলাম কোথাও এর কোন রেকডাস নেই।

---আছে কোথাও। সব দেখা তো আপনার শক্ষে সম্ভব নয়।

— তা ঠিক বলেছেন সার। তবে হামবুর্গ গতরের বাইরে এক ভদলোকের স্কেল দেখা। সে কেবল বলল, সিউল-ব্যাহক, জাহাজের নাম নয়। জনা নাম ছিল জাহাজটার। ক্যাপেটন লাকেনারকে সে চিনত। কাউটি পারবারের ছেলে হিনি। বাবার নাম— কি যেন ছাক পে ভূলে গেছি। তিনি নোম পর্যাহত আর ক্যাপেটন শাকেনার ছিলেন না। তাকে সিন্টেভল বলা হত। সম্প্রে একটা জাহাজ জার একটা মানুষ অনেক বাঁথি কাহিনী জারে। সে একটা বোহাইক ঘটনা সারে। সে একটা বোহাইক ঘটনা সারে। সে একটা বাহাইক ফাকে কাহিব কাকেন

স্যাসি হিগিনস ছাড়বেন কেন! ক্যাপ্টেন শকেনার সম্পর্কে লোকটা কিছু খবর রাখে চুব। তিনি বগুলেন, জাহাজের কি নাম জিল গ্রেশনি জানেন? ক্যাপ্টেন শকেনার যে গাহাজটা চালাত তার নাম আপনার নে আছে? ওসাকা উঠে দুড়াবার চেডট করণ।
বসে থেকে সে স্যালি হিগিনসকে যেন
ভালভাবে দেখতে পাছে না। কাাণ্টেন
ল্কেনার কিংবদৃশ্ভির মান্য, আর এ-যেন
আরও বড়। তাকে ভাল করে দেখতে না
পেলে যেন ঠিক জমছে না। ওসাকা নীড়িয়ে
বেশ স্বাভাবিক বোধ করছিল। স্যালি
হিগিনস ভাবে কি বলেছন ভূলে গেছেন।
উল্ট সে বলল, জামানি ইমপেরিয়াল
সাহিস্কৈ তিনি লেফটেনাল্ট ক্যান্ডার
ছিলেন।

—ওর জাহাজটার নাম জানেন? স্যাঞি হিগিনস বিরম্ভ মাথে কথাটা বলগেন!

—হার্গি সার। সেড্জার। ক্টে বলল সিজলার। কেট বলেছে সিজালার। সঠিক কি হবে জানি না! হার্গি সার বাপের নাম মনে পড়েছে—বাপের নাম গুরাফ ফেলিকস ভন লুকেনার।

স্থালি হিগিনস কাগজাপর দেখছেন।
ওর দিকে তাকাছেন না। সে কি পরীক্ষা
দৈছে। সে কৈমন ভাগবাচাকা খেয়ে বল্লব ভটা বাপের নাম না ছেলের নাম মনে
নেই সারে।

স্থালি ছিগ্নিস এবার ফগজপত এইটা পেশার ত্রেটে চাপা দিপেন। তারপর কেমন ছাই তুলে বলালন, লাকেনার সম্পকে এত আপানার কৌতা্ছল কেন্

ওসাকা বললা, সারে জাই।জন্টা সমপকের্ব শ্নেছি কি মেড, সতির যদি অপ্ত প্রভাব থাকে যদিও এ সবে আমার বিশ্বাস নেই তব্ কি হয় জানেন সারে, মন তে! মান্ত্রের দ্বলি, নুবলি খ্ছাতে সবই সতি। মনে হয়। সেজনা কিছা যৌজখবর নেওয়ার ইচ্ছে হয়েছিল। সবই পেয়েছিলাম—ওদের পারিবারিক মর্যাদা তর ঠাকুরদার বাপের থবর। সে একটা ইতিহাস। তর ঠাকুরদার বাপ শ্নেছি সারে ঘোড়ার ঘাস বাটত।

হ্যামিলটন জানের ওসাকা খ্র মজার লোক। স্যালি হিলিনস হেসে ফেলেজিলে, কিন্তু লোকটা যদি জোরে হাসলে খাবতে যায়, তিনি সামানা হাসলেন। ছালিলটন জোরে হাসল:

ভুসাকা বলল, বিশ্বাস কর্ম। ছোড়াই ঘাস কাটতে কাটতে কোকটা অধ্বারাহাই সৈনা হয়ে গেল। নিজে সৈনাদল গাড়ে ভুলা। তথন তো সানা রাজারা সব ভাড়াটে সৈনাদল বাখতেন। তথন তর ঠাকুরদার বাশের বয়স বিশ হয় নি। তের বছরে ঘর ছেড়েছিল, ঘোডার ঘাস কটোর বাজ নিয়েছিল, তুথন তো সানা প্রস্থাসনা ওয়ার চলেছে। প্রস্থাসনা বাংশাল কাটার কাল নিয়েছিল ভেড়ে গেল। অবং ফেডারিক দা গ্রেটের আন্ডারে একজন তথ্য সে জাদরেল জেনারেল। এক নিঃখ্যাসে এওটা বলে সে ছেটিস্ব করে ধ্যাস করি বাস নিল।

হিণিনস বললেন, আপনি দেখাছ আনেক খবর রাখেন।

—রাথব না সার। ওর ঠাকুবদার বাপের তো শেষ পর্যক্ত গিলোটিন হয়েছিল। বলে চোথ গোল করে ফেলল ওসাকা। -- গিলোটিন। ধেন কত স্বাভাবিক কথা।
স্যালি হিগিনস্বলন্ধেন্ধ্ৰ শহনত ক্যাপ্টেন লাকেনাধ্ৰের কি হয়েছিল বুগতে স্থাবেন।

—সে তো ঘ্রে ঘ্রে জেনেছি অনেক। কিম্মু এক্টার মধ্যে আর এক্টার কোনো মিল নেই স্যার।

স্যালি হিগিনস বললেন, মিল পাওয়া খুব কঠিন।

ওসাকা বলল, স্যার এক প্লাস জল খাব।

স্যালি হিগিনস জল আনতে বলে কাগজেব ওপর সামান্য ঝ'কে পাড়ুলেন। দ্বোর তিনবার কটা লাইন বার বার পাড়ুলেন। —এখানে তো দেখছি আপনাদের বিক্লি বাট্টা দ্র দাম সব কথাবাতা শেষ। জাহাজ বে'চে দিয়েছে তবে!

-- इति भारतः

—তবে আর দেখবেনটা কি!

হ্যামিলটন আমতা আমতা করতে থাকল। করতে থাকল। করতা বলল, এতদ্রে থেকে উড়ে এলাম দারে, একবার ঘুরে সবটা দেখে যাব নালেবে না গেলে ছ্ম হবে! আপনার হত সার বশ্ন! তাছাড়া অনেক সইসাব্দ আছে। দেখিয়ে দেব খলে সে প্রায় কুকে টেবিলের কুপর লাফ দিয়ে উঠ আসতে চাইল। ভাছাড়া কোথায় কি কি আছে।।

তিবলের কুপর লাফ দিয়ে উঠ আছে।।

তিবলার কুপর লাফ দিয়ে কি কি আছে।।

ওসাকা ভালো ছেলের মাতা বসে পা নাড়াতে থাকল।

হিগিনস বললেন, গিলোটন হয়েছিল ওসাকা খাব বিনীত ছাতের মতে৷ আক্র দাঁডিয়ে গেল। সে মূখন্থ বলে যাবার ছতে। ^{বলন}ে সে স্যার ফেডারিক দা গ্রেট মহা পাঞ্চি লোক ছিল। পর **১**ঠাকরদার বাপ **য**়ুম্ব জয়ের পর পাওনা া মিটিয়ে নিজে গোল বললে পাওনা গ্লা ক্ দেশের জনা ঘুণ্য কংগ্র কিচ্ছ : না। রাগে দ্রখেস্ব ওক্ষা রাজার পায়ে রে**থে সোজা** পর্যারসে। তথন সমর ফরাস[া] বিশ্লব চলছে। বিশ্লবে যোগ িয়ে বেশ রাজার বিরুদেধ লড়ছে। ভালই লড়ছিল। কাল হল সেই এক পাওনা গ্ৰুড়া নিয়ে। সে পয়রিসে ফিরে তার দাবীর শুথা বলণ। তার সৈন্দলের মাইনে বাকি পড়েছে অতুদিন না দিলে চলছে না। **ও**রা বলল, ব্যামার বাপ, গিলেটিন। একজন লোক্টে টাকা প্রসা না দিয়ে গিলোটন করা কত সহজ বল^{্ন।} বলে আবার ফ্যাক করে হেসে fray 1

স্থালি তিথিনস শা্ধ্র বললেন, খা্ব সইজ। ভারপর দিবতীর আর কোনো কথা না শা্ধ্র বললেন, কোলায় কোলায় সেই করতে তবে বলে দিন। সব কাগজপন পাড়ার আর ওবি ধৈয়া নেই। এখনই ত্যাড়ো তিনি তাই করে ফের চিৎকার চেডাগেছি শা্রু করে দেবেন।

প্সাকা চক ঢক করে স্ব জলটা থেয়ে ফোলল তথন। বলল সার এখানে। বলে সে ঘ্রে স্যালি হিবিনসের প্রায় ঘড়েও কাছে চলে এল। হাকের চেটোতে মুখ মুছে একটা একটা পাতা উল্টে হেতে থাকল, আর স্যালি হিগিনস্ সই করে হাজেল।
হাত কাঁপছিল সই করতে, নোধ হয় ভাঁকণ
দুর্বল শরীর। একবার নাংকি-আয়ুল্যান্ডে
উঠে গোটা জাহাজটা দেখার ইক্ষে হ্রেছিল।
ভারপর ভেনেছেন কি হবে দেখে! একটা
জাঁকন এ-ভাবে নাজি রেখেছিলেন একটা
জাহাজের পেছনে, এখন ডাও শেষ হয়ে
বাজে। তিনি বললেন, ওসানা প্রানে
জাহাজ সম্পর্কে খোঁজ ধবর করায় তোমার
বোধ হয় একটা নেশা আছে।

—তা আছে সারে। প্থিবীর সব প্রাচীন জাহাজ করে কোথায়ু কিতাবে বিক্লি হরেছে বলে দিকে পারি।

—তা রখন পার সিউল-ব্যাণ্ড কত পুরোনো নিশ্চয়ই বলতে পারবে।

-- भारत मा।

—【春日 ?

—শে**তি** খবর কেন্ট্র শেষ পর্যন্ত সঠিক দিতে পারে নি।

—ভার মানে।

-- माद्र मात् এ इत ७७ इत।

শ্যালৈ হিশিনস বললেন, তুমি বেশ মানুষ ছে ওসাকা।

ওসাকা বলল, এখানে একটা সই সাস বাজে স্যার। এত স্ব কথার ভোতরেও ওসাকার হিসেব ঠিক আছে। ভূলে কিছ্ বাদ্যাজের না।

স্থালি হিগিনস্ বললেন, ডাহুলে সিজালারকে কিনে নিয়ে হাল্ভ ভাবছ।

আমার তো মনে হয় তাই। তবে কি জানেন সার! এখন আর পাতা ওলটাকে না সে। পনের বিশ পাতার একটা ডিড। প্রতিটি পাতার প্রতিটি অক্ষরের अमाकात नकत क्रिक जात्ह। क्रांट्श ग्राट्थ যতটা বোকা বোকা, কাজে কমে^ৰ বিপরীত। বরং ওসাকা ভীষণ স্বভাবে। সে বলল সি**জ**ালারের ডেভিলের কি হয়েছিল কেউ ঠিক বলতে পারেনি। কেউ বলেছে জাহাজটা ডুবে গেছে বলসেভিক সমৃদ্রে। কেউ বলেছে, প্রথম মহাবলেধ তিনি প্রাণ হারিয়েছেন। ইংরেজ-দের হাতে জাহাজটা চলে বায়। আবার কেউ বলে থাকেন সাার জাহাজটা ডুবেও বার নি, কেউ ধরেও নিয়ে যায় নি। তিনি নিজে জলদন্য হবার জন্য মিথায় প্রচার করে সরে পড়েছন। এখনও নাক লাকেনারকে দেখা বার কোনো নিজনি ম্বীপে তিনি পাছাড়ের মাধায় দ্যজিয়ে আছেনঃ কেউ বলে থাকে তিনি কোনো কোনো বন্দরে প্রতি মাঝে মাঝে ছন্মবেশে চলে আসেন। তাকে একা একা হটিতে দেখা যায়। সমাদের পাড়ে পাড়ে তিনি তিনি হে°টে বাচ্ছেন। মনে হয় তিনি আমাদের ভেতরেই আছেন সারে। এবা কথনও মরে বার না। আমাদের ভেতরেই বে'চে খাকে।

সালি ছিগিনস এবার উঠে পড়সেন।
তিনি বে নিজে গিলোটিনের দিকে এগিয়ে
বাক্ছেন কথাবাতীয় এতটকে বোঝা বাক্ছে
না। সামানা একটা ডিড সই করার মতো
সব কাজ সেরে বললেন তাহলে চলনে
জাহাজটা আপনাদের দেখিয়ে দি। কোথার
কৈ আছে, রিপোটের সংগ্রামিলিরে দেখতে
পাবেন। কিছা আবার এদিক ওদিক বিজি
হরে গেলে আপনাদের সতিয় ক্তির কারণ
থারৈ।

--তা সার ঠিক।

স্নালি ছিগিনস ওঠে ট্রপি টেনে নিলেন। মাথায় পরে তারপর কিছা কেন ভাবছেদ এমনভাবে দীড়েরে চুপচাপ নিজেকে ঠিক করে নিলেন। পাছে ভেলো পড়েন জ্ঞান হারিরে ফেলেন গড রাডের माजा-ठिक ना। वनि काह्य काथा व तरे। থাকলে হয়তো সভাি ভিনি ভেগে প্রতেন। অনামনুক থাকার জন্য কালেন, ফানেল আমরা পারেটছি বছর পনের আলে। ওসাকা ফানেলে দ্বার হাতৃড়িতে ঘা মেরে দেখল: স্যালি হিগিনসের কথার সভ্যাসভ্য যাচাই করে সে খুশী হল। সি⁴ডি ধরে ক্রমে বয়লার-র মে---এই তিনটে বয়জার। বা দিকে স্টার-বোর্ডে ঢাকে গেল ওরা। দ্বটো জেনারেটর রেসিপ্রাকটিঙ এনজিনের কলকজা, কনডেনসার পাম্প পাইপের নাম এবং প্রপেলার সাফট প্রপেলার স্যাফটের মাথার চড়ে বসেছে ওসাকা। সে হাতুড়িতে যা মারছে, চোৰে মূথে এক অভীব বিক্ষয়। যেন ভেতরে শুধ্ব স্টিল পোরা নেই, অনা কিছ্র ধাত, সোনাদানা নেইতো! হিগিনসের এমনই মনে হতে থাকল। একটা কসাইর মতো চোখ মথে ওসাকার। লোভে লালসার চোথ মুখ অধীর। ওসাকা বলল সাবে শ্নতে পাছেন?

স্যালি হিগিনস বললেন, কী?

—আসনে। কান পেতে শান্ন। ধকো সে হাতুড়ি দিয়ে ঠাং ঠাং করে ক'বার ঘা মারেল।

সালি হিগিনস কান পেতে তেমন কিছু শ্নেতে পেলেন না।

—শ্ৰুতে পাছেন না আও**রাজটা** অনেক দুর প্যান্ত লাফটের গা কেরে চলে বাজে। যেন এখানে আঘাত করতে সারা জাহাজটা কপিছে। সারা জাহাজটা ঝনঝন করে বাজছে। মিরাকল, সাম্মীথং মিরাকিজা সারে সে কলতে পারত। কিন্তু ভীষণ বোকামির কাজ হয়ে যাবে, পরে হলি জাতাজভূবির খবর দিয়ে বিভিনাটার ভিভে আচল করে দেয়া সে বে খুশীর ঢোটে কি সব করতে ধর্নজ্ঞা সে কলে স্যাফট থেকে নেমে পড়বে ভাবল নামার সময় মনে হজে, এত নিচে সে নাগাল পাবে না। ধপাস করে পড়ে বেভে পারে। সে হেণ্টে হেণ্টে কিছটো দুরে সেলে সগৰুট জয়েন্টে নামার ধাপ পাবে। ভড়া ছে°টে গোলে নেমে বেভে গারবে। কিল্ছ নে হাড়ডি দুলৈয়ে ভাকৰা মিঃ হয়মিলটন অসন। ওর কাঁথে এক হাত বেশে প্রায় गतीत त्यस्त निष्ठ जास्त्र **अन अन्तरम**् বলল, কেনাবেচাতে সামানা লাভ লোকনান থাকে স্যার। এ নিয়ে আর ভেবে লাভ নেই। চল্ম ওপরে ওঠা বাক।

সালি হিগিনস দেখলেন **টানেকে** দরজায় চিফ-মেট্ ভেবিড, ছোটবাব**্ স্বাই** অপেকা করছে।

এ-শ্বনীর নিব্নে কি বে নামার ব্যবকার নিচে, ওরা ভেবে পেল না! আরে এ-ব্লেটা লোক নেই থেকে এত কি কথা বলছে। এত কি দেখলে। লোকটার হাতে সেই হাতুড়ি। কানে গাঁজে রাথছে কের। করা সালি হিলিনসকে খাঁলতে একেছে একানে। শ্বনীর ভাল না। কি বে করছেন!

স্যালি হিগিনস ওপনে উঠে বলজেন।
মিঃ ফেলকে আমার অভিবাদন **থাকল।**বলবেন, আমরা ভাল আছি।

তসাকা বৈটে ওঠে হাওয়ার হাতৃতিটা দ্লিয়ে বলদ বলব আপনারা ভাল আছেন। তারপর ওলাকা দেখল, সিউল-নাংক জলে ভেলে আছে। বত দুরে বোট চলে বেতে থাকল তত জাহাজটা হার পরিবর্তে চোথের ওপার বঙ্গ হলে বেতে থাকল। ভয়ে ওসাকার শ্রীরে কেমন জন্ম এসে গেল। মাথা ঘ্রছে।

(क्ष्मणः)





बारमारम्भ माहिका । मरम्कृष्टि बारमाहन। इन । भरम्भक अमुगन्ति

श्रांष्ठ्य तारमा छ तारमात्मम-दाञ्ज-নৈতিক জলোলের বিচারে এই দাই ভখতের মধো তফাৎ অনেক, গড় তিন চার বছরের মাধা এ দুরেম অনেকটা কমেছে বটে, কিন্তু ত্ব, দূরও যে আছে তা বলাই বাহণো क्ष मध्य जनस्योकाम' एः, क्षेत्र मार्ट जनस्यात শাধারণ মান্যে একই মাতৃভাষার প্রতি অসীম শ্রুপা ও অংভারক মমতাবদ্যতঃ রাজনৈতিক বাৰধান অভাহা করেই পরস্পরের সংখ্য মেলামেশার সংযোগ করে নিচ্ছেন। এটা একাণ্ড স্বাভবিক। দীর্ঘ নুই মুল পরে এই ম্বাভাবিক মেলামেশা সবে শ্রে ই মৈছে। দ্লেগের স্বাধারণ মান্য্রের কল্যানে এবং আমাদের মাত্ভাষার উত্তরোত্তর উল্লান্তর উম্পেশ্যে এই মেলামেশা কুম্পঃ আরো খনিত ২০০ থাকবে-সমুহত শ্রেণীর बाष्ट्रामा दे वह जामा कताता

সম্প্রতি (৯ই জ্না) কলকাতার রহণির
সলনে বাংলাদেশ সাহিত। ও সংস্কৃতি
আলোচনা চক্ত ও প্রত্তক প্রদশনীর উপোধনের দিনে এই প্ররোজনীয়তার কথাই উভয়
ধনের দিনে এই প্ররোজনীয়তার কথাই উভয়
ধনের দিনে এই প্ররোজনীয়তার কথাই উভয়
ক্রাক্তানে উপান্থাত সাহিত্যিকগণের মধ্যে
পান্চর বাংলার অন্নদান্তরর রায়, প্রবোধকুমার সান্যাল, তুষারকানিত ঘোষ, মনোজ
কর্মার সান্যাল, তুষারকানিত ঘোষ, মনোজ
কর্মার সান্যাল, নুর্লি ইসলাম, জালাদেশের মুস্তার অভ্যাল, সক্রল সাহার্ভিদ্দীন আজ আভাল, সক্রল সাহার্ভিদ্দীন আল আভাল, সক্রল সাহার্ভিদ্দীন আন বাংলা, প্রাক্তান স্নালা, সক্রলে
র্বিব বেগল জোবেদ্য আন্মান বেগ্যান থানে, ব্যাক্তান স্বান্তির বিশ্বাম ব্যাক্তান স্বান্তন ব্যাক্তান ব্যাক্তান

भाष्ट्रम ७ काहमान्स इक-धत नाम दिश्य-भारत উল्লেখযোগ।।

অনুষ্ঠানের সভাপতি শ্রীওুযারক। তি ভাষ তার ভাষণে বলেন : দ্য-দেশের মৈত্রী দুহ করতে বাংলা স্মৃহিত্যের ভূমিকা ারেছেপূর্ণ। বাংলাদেশের মুক্তির প্র দ্ব-বছর কোটে গেছে তাথট দ্ব-দেশের মধ্যে বই আদানপ্রদান এখনত সহজ নয়। এ-নাপারে বিদেশী মন্তার প্রদেন বাধা থাকা ্রচিত নয়। তিনি আশা প্রকাশ করেন যে, প্রশিচ্য বাংলার লেখকরা বাংলাদেশের মান্ষদের আশা-আকাশ্কা নিয়ে লিখবেন এবং বাংলাদেশের লেখকগণও পশ্চিম-বাংলার মান্রদের সম্পর্কে লিখবেন। এই-তাবেই কুমুশ দুইে দেশের মনে,বদের মধ্যে প্রকৃত অন্তরের সম্পূর্ক গড়ে উঠবে। বংগাদেশে প্রকাশিত প্রেতকারণী ক্রমশঃ ভারতে জনপ্রিয় হয়ে উঠছে দেখে শ্রীঘোষ স্তেট্য প্রকাশ করেন।

আল্রণাশ্বর রায় তাঁর ভাষণে আশা প্রকাশ করেন যে, বত মানের এই আলোচনা-চ্ছে বাংলা সাহিত্তের বহুন দিগতে উন্মো-চন করবে। প্রবোধকুমার সান্যাল মনোজ বসু, ও সুভাষ ম্যোপাধ্যায়ও সভায় ভাষণ্ দেন।

বংশাদেশ প্রতিনিধি দলের নেতা
মুস্তাফা ন্রুল ইসলাম বলেন ঃ দুঃখজনক
থাপার যে, উভর দিকের আগ্রহ থাকা
স্থেও দু-দেশের মধ্যে বইরের আদানপ্রদান
নহন্ধ হারে উঠছে না। ৩-সংশ্রকে সর্বা
এ-সাজের বারা দাই ভিনে ও সংবাদিকগণের
নিকট আবেদ্ধ আনানা। তারি ভাষণে জানা

এই উপগক্ষে যে প্রস্তৃক প্রদুশনীর আয়োজন করা হয়েছে এ-পারের সাছিত্য-রসিকদের ত। বিশেষভাবে আক্ষণ করেছে।

নানা দেশে ৰফ্ণী ও নিৰ্যাত্তিত শিল্পী, সাহিত্যিক ও সাংবাদিক

উপাশ্চার রাল ী কাদপালা থেকে
সংগ্রতি সাংবাদি তারাল টরগারসন-এর
এক বার্তার বুশ্রজাবী নির্মাত্তনের এক
ভয়াবহ সংবাদ প্রকাশিত হরেছে। এই
সংবাদে জানা হার মে, সে দেশের শ্বশ্পশৈক্ষিত একনারক ইদি আমিন তার শ্বেছাচারিতা প্রকাশে সমর্থানে অনিছকে বাজিমানেই নিবিচারে খন্তম করে ফেলছেন।
এাদের মধ্যে শেষক্ সাংবাদিক করি শিক্ষক
অধ্যাপক সকলেই আছেন। এই শেশীক
অন্ততঃ প্রধাশ জনকে বিগত দেও ব্রব্রের
মধ্যে খন্তম করা হয়েছে বাজ দ্বান্য গ্রহা

আর একটি সংবাদে জানা বায় যে, এমনেসটি ইন্টাবন্যাল-এর পরিচালিকা গ্লিস এমেলিয়া অগস্টাস রাষ্ট্রপর্বের কর্তৃপক্ষের অগস্টাস রাষ্ট্রপর্বের কর্তৃপক্ষের অগস্টাস রাষ্ট্রপর্বের কর্তৃপক্ষের প্রথিবর্বির ০১টি দেশে বন্দী ১৭৬ জন করি সাহিতিক নটোকার রে সাংবাদিক-গণের প্রতি সান্দিক অধিকার দেখা যার, এই ধরনের বন্দীর সংখ্যা ইন্দোনেশিরাতে ৩৭, চিলিতে ২৬, তুরক্ষে ২০ সোভিরেত বালিয়ায় ১৮ তাই বর্যান ও মালারে ৮ জন করে, গ্রীস ও দক্ষিণ কোরিরার ৫ জন করে, গ্রীস ও দক্ষিণ কোরিরার ৫ জন করে, গ্রীস ও দক্ষিণ কোরিরার ও বাংলালেও ৪ জন মরককো তামেজানিরা ও বাংলালেও ৪ জন মরককো, তামিটাত, রাজিলা কেনা সিংগাশির ও উল্র ভিরেতনাত্রে ২

ন করে পাকিক্টান কামের নস্ ইকোরা-ভার স্কাত্েখালা পানামা পের ফিলি-গ্রমস পক্ষি আফ্রিকা গক্ষি ভিরেত্নায়ে কর্ম করে।

সক্ষীর এই তালিকার ভারতের কোনও মা দেখা যার না।

লকাভার প্রেকিন্-এর ১৭৫তম জন্ম-বন্ধ পালন

রুশ কবি ও ঐপন্যাসিক লালেক-ান্দার পূর্ণাকনও জন্মগ্রহণ করেছিলেন ৬শে মে। এ-বংসর তার ১৭৫তম বর্ষ ্র্ণ হলো (জন্ম ১৭৯৯)। বাঙালী াঠকের কাছে প্রাক্র-এর পরিচিতি ধানতঃ ডটার অব দি কমানভাল্ট উপন্যাসের য়িতা হিসেবে। প্রাচেভ-এর বিদ্রোহকে শদ্র করে র্চত এই উপন্যাস্থানাই প্লে-নকে আন্তর্জাতিক সাহিত্যের কেন্ত্রে ত্রতা এনে দের। কিন্তু বাস্ত্রিকপক্ষে দ রাশিয়াতে তিনি প্রধানত কবি সেবেই প্রভিত। প্রশক্ষিন সমরণে কল-তায় ৪ঠা জন একটি অনুষ্ঠান হয়ে রছে। এই অন্যান প্রধান আজিথি লেন কবি স-ভাষ **ग्र**्थाभाषाम् । বিশ্বজিৎ রায় :বাদিক পূর্ণাকনের বতার তান্বাদ পাঠ করে সকলকৈ নব্দ দেন। কলকাতার সোভিয়েট হাবাসের ভাইস ক**ম্**সাল ওয়াই মরো**জভ**: শকিন সম্পর্কে ভাষণ দেন।

দর ভাতৃত্বয় ও গ'কুর সাহিত্য পরেদকার

গত ২৬শে মে তারিখে প্রথিবীর অনেক শরই শিল্পী সাহিত্যিক মহলে এডমণ্ড রে-এর স্মরণে নানা সভা-সমিতি হয়ে ছ। খাস ফ্রান্সের গ'কর আকাদেমি ভিন্ন ানী শেপন এবং ইতালীতেও বিভিন্ন হত্য সামাতির উদ্যোগে এই ধরনের সভা ং গ'কুর ভ্রাতৃশ্বয়ের সম্পর্কে আলোচনা থাকে কিছটো ব্যাপকভাবে; অন্যান্য ণ অপেকাকৃত কম। এডমণ্ড পাকুর শন গ'কুর দ্রাভূম্বয়ের মধ্যে জ্যোষ্ঠ। তাঁর া ১৮২২ খান্টাধেন। ছোট ভাই জালের হয়েছিল আট বছর পরে ১৮০০ দুই ভাই-ই াবেদর ৭ ডিসেম্বর। তঃ শিক্সীছিলেন। দ্বদেশের তথা শের, বিশেষ করে জাপানী চিগ্রাদিন্স কে ব্যক্তিগত নোট-বইতে স্কেমার শিল্প, না, প্রেম-প্রাতি দয়া কর্ণা অপ্তা --অথাং মান্ব 'প্রবৃত্তির নানা ধারা কে তাঁরা যে নোট রাখতে আরম্ভ তা-ই পরবন্ত[া]কালে শিলেপর স্পে া সাহিত্যক্ষেত্রেও তাঁদের প্রতিষ্ঠা এনে এই সাফলোর পরে তারা যখন থর করলেন যে, উপন্যাস রচনা করবেন, তারা একটি অভিনৰ উপায় উপ্সবন ছশেন। সাধারণত ঐপন্যাসিকগণ হোমন ঠিক করে লিখতে আরম্ভ করেন, তাঁরা भिवासीत मांग्रे फिट्स চরক্রেম না। বশের নানা ঘটনা দৃশ্য তথা বাভি-চরিত র মনে যে প্রতিক্রিয় স্থি করতো, তাই বিশিষ্প করে রাখতেন তারপ্র

সেই প্রত্যক্ষ ক্ষান্তক্রসংগ্রিক তরি একটা ক্ষান্তর স্তুটোর গোগে বিতেশ তারিক প্রায় প্রতিটি উপন্যাসই এইভাবে রচিত বলে সেনুস্ব উনিশ শভকের ফ্রান্সের রান্তিকের রান্তিক ক্ষান্তক্র ক্ষান্তক্র রান্ত্রিক ক্ষান্তক্র বিশ্ব হরে উঠিছিল।

ছোট ভাই জুলে মানা বান মার ৪০ বছর বরসে ১৮৭০ খণ্টাব্দে। কিন্তু এডমণ্ড ভার পরেও ২৬ বছর বে'চে ছিলেন। দ্ব-ভাই একতে যে উপন্যাসগনিল রচনা করে গেছেম, তা বাদ দিরেও দ-েডাই প্থেকজাবে দংখারা বই রচনা করেছিলেন জনের পঢ়াবলা এবং মনেডের একটি উইল অন্সারে ফ্লান্সের গাঁকুর আকানেমি গড়ে ওঠে, বার প্রধান উদ্দেশ্য হলো শ্বদেশে উপন্যাস রচনার যোগা বাবিদের প্রেরণা হোগালো। গাঁকুর নাহিত্য প্রকল্পর নামে যে প্রকল্পর নামিত্য প্রকল্পর নামে যে প্রকল্পর

বিনাম লো ৫ টাকা দামের বই নিন!

আগতীত সূক্ষতে নতুন আনকোরা ভাল ভাল বই পেতে হলে আছেই আল্ফা-বিটা বৃক ক্লাবের সদস্য হোন। গড়ে ৪০% কম দামে বিভিন্ন হকাদকের প্রতিভাবান লেখকদের বই পাবেন। একসপের ১৫° টাকার বই কিনলেই ৪০% ডিসকাউন্ট তদপেরি ৫ টাকার বই ফ্রা বোনাস! অভ্যতশূর্ক্শ! সদস্য হতে কোনো মাসিক/বার্ষিক চাদ লাগে মা কেবল ১ টকা ভর্তি দাী। ক্লাবের ভালিকা থেকে বারো মাসে কমপকে চারিখানি বই ক্লিনলেই আজাবিন সদস্য থেকা যায়। প্রতি মানে গ্রাথ সমাচার পাকিক পাবেন ফ্রাং বিলিছ লানছেন তিনিই সপের সদস্য হচ্ছেন। কারা ত কালি ডাকবার ইত্যাদির অন্বাভাবিক ম্বুলাস্নিধ্য জন্য ১৫ জ্বলাই থেকে ভর্তি ফ্রাই হাকা হবে। তার আগেই সদস্য হয়ে বান।

এখান সদস্য হলে মার ৬ টাকায় পাবেন ক্রেন্ডাম্রা রাচত দেশবন্ধন চিত্রঞ্জনের জীবন-বেদ ১২

পণিতের কথা ও কাহিনী

টা ৪ (ব্ৰুক ক্লাবে ২-৪০**)**

রোয়াক

প্রশাস্ত গাহের নাট্য সংকলন (দেশ ও আমাতে প্রশংসিত) টা ৪ (বকে ক্লাবে ২-৪০)

্ছাট্রা (ছাট নয় অধাপক গোপাল যায়ের উপন্যাস

জধাপক গোপাল রায়ের উপন্যাস টা ৪-৫০ (ব্ক ক্লাবে ২-৭০)

বাঁচতে সবাই চায় মনোরহস্যে ঘরেলা আলোচনা ভঃ অসীম বর্ধন

णे 0-96 (त्क कारव २-२**६**)

আরও কতের সমের বই আছে।
সবই অভাষনীয় কম লামে। অগ্রিম
১ টাকা ভাতি ফা শানিয়ে বিশ্বদ বিবরণ জেনে নিন। আজই। এখনি। ১৫ জালাই থেকে ভাতি ফা ২ টাক। ইন্ধে বাবে।

57271

প্রফারকুগার সিংবের উপন্যাস (দেশ ও অম্তে উজপ্রশংসিত) টা ৮ বেক ক্লাবে ৪-৮০)

मार्वे हे (शब्द मार्क्ट्स अ**टल**ब

কোনান ভর্মাল/অন্ত্রীশ ব**ধ'ন** বিশ্বথাত গোয়েগ্লা প্রথের নতুন মন্ত্রণ বড় আকারে দার টা ১৮ (ব্রু ক্লাবে টা: ১০, অগ্রিম ট্ ৫)

এবং সীমা

উথানপদ বিজ্ঞানি কার্যান্ত্রণ (অম্ত ও যুগান্ত্রে প্রদাসিত) টা ৩-৫০ (বকে ক্লাবে ২-১০)

ইচ্ছার মুকুরে ছায়া

অচিন্তা চট্টোপাধানের কাবায়ন্থ টা ৩-৫০ (বকৈ ক্লাবে ২-২০)

আগল ফা-বিটা

ৰাক ক্লাবের সদস্য হয়ে বই কিন্দ! ৫৫-২ কলেজ পাঁটি, কলকাজা ১২

आर्थिक ० अभ

নবদিগভ

ইরোর একসলোনসী এবার আপনার দেশে জনবিস্ফারণ সন্দর্ভধ আপনি কি ভাষছেন তা দু-চার কথার বলান। উগাণ্ডার রাণ্টপতি জেনারেল কৃদি জামিনকে বিগ ডাডি বা বড় বাবা নামেও গাড়) অনুরোধ করলেন ফরাসী তথ: ১শান্ততের পরিচালক বাবে ট স্কোডার।

— ক্ষাবিশ্বোধণ বলতে । ক বলতে
চাইছেন—কান না—আমিন উত্তর দিলেন,
আমার নিজেরই ত বারটি ছেলে আর ছটি
মেরে। হাট আমি বেশ ভলেই কক্ষাভেদী।
(আই এাম এ ভেরী গড়ে মারকসমানন,
ইরেল)। তবে সবারই কি অতসংখাক
সভ্যান-সভতির জনক হবার ক্ষাতা বা
সংগতি আছে? ভাছাড়া আমাদের জনবল
বে বাড়ামো দরকার। নইলো কাজ করবে
কেই যারা আমাদের দেশকে শোহণ করছিল
সেই এশিয়ানদের ত ভাডান হয়েছে…

আমিন রঙ তাড়াভাড়ি বলাছলেন আর নাটকার ভংগতি এদিক-ওদিক ঘুর-ছিলোন। ধালে কায়েরামানে বা শব্দবংগ্রী-কারত পক্ষেই ভাগ রাখা সম্ভব হাজ্জা না। স্তেরাং বাধা হরেই পরিচালক মহা-গলকে বলতে হল : ইরেল একসলেনসী। অভ জলদ নয়।

শিশরে মত মুখে (জামনের চেহারাখানা বিবাট হলেও মুখ নাকি সভিটে
শিশরে মত) আকশবিশতত হেলে আমিন
খাইলেন, ভারপর ধীরেই বলে চললেন :
জনবিশ্যোরণ একটা বোগি — সাম্বান্তা বাদীলের গড়া বোগি। আমি ও নিরে মথি।
খাইলের গড়া বোগি। আমি ও নিরে মথি।
খাইলির গড়া বোগি। আমি ও নিরে মথি।
খাইলির বাং আমার মথি। আমাবার আরও
ভানেক বিবর আছে।...
জালাধ্যারি ভাত :

ষ্ঠনাটি এই মানেরই প্রথম বিকের।
উপাশ্যা ও তার রাণ্ট্রপতি কলি আমিনের
ভগা চলভিত নিমাণ করছিলেন উক করাসী
পরিচাকক। বাক সে করা। আমানের
প্রকলা হল কর্মবিস্ফোরণ। দেখা গেল যে
করাজ্য স্বকেশাসত (না, অন্যাসর?)
কেনাজ্য স্বকেশাসত (না, জনবিস্ফোরণ
ষ্টাইহ বলে জনেকের ধারণা—তার দেশে
ক্রাবিস্ফারণ বিশ্বাস করেন না।

থধাপক পদ আগেটনী স্যান্ন, শ্রেলস্পত করেন না তবে মাত স্বলেশালত দেশসমূহের নয় সারা বিশেবর ক্ষেতে। স্যাম্যেলসন্ধে প্রখন করা হয়েছিল ঃ আপনি কি মনে करमा वर्शमाम कनमः भात भटक भागितीत প্ৰাকৃতিক সমপদ পর্যাগ্ড ? 40 TIKE শ্ৰশণ্ড-হলেও ক্রেদিন शाक्ट्स ্ব(ক্র আপনার ধারণা ? সামায়েলসনের উত্তর তাঁর নিজের ভাষাতেই (অবশা অনুবাদের মাধামে) দেওয়া সাক: আমাদের নিজেদের ছটি ছেলেমেয়ে। তেমনি প্ৰিবীর যদি সং নম্পতির সম্ভান-সম্ভতি ছয় হস্ত তবে ্িগৰাৰ সম্পদ-সামধেনির ওপর নিশ্চয ীন পড়ত এবং জীবন্যতার মান দিন দিন নিন্দাভিদ্পী হত কিন্তু সামার মনে হয় নালে আমাদের ছটি ছেলেমেরের প্রত্যেকের সম্ভাম-সংখ্যা গড়ে ছর হবে। ব তৃতে, জনসংখ্যা ব্ৰুদ্ধি সদক্ষেধ দার্পার পরিবতনি হচছে; ধলা যায় বিভিন্ন উল্লভ দেশে গাত হল: জনসংখ্যা ৰাশ্ধর শুম্য श्रादतम् (रक्कफ क्व निश) मिरका

—তবে কেন জনবিংফারণের আড়েক সায়া বিশ্ববাপী ছড়ানো হ**ছে**?

সন্মন্নেলসনের উত্তর ছিল, ভালই করা হতেহ। অনেক সময় বেচৰার **জনো খু**ৰ বেশী রকম ঢাকঢোক, পেটাতে হয়— আতংকর স্ণিট্ট করতে হয়। নইলে লোকে কিনবে কেন? নব্য **মালথনে**ীয় ভড়েং क्षणांकता समितिकात्राम् नद्गम त्य द्यास-কেয়ামতের আতত্ত প্রচার করে বেড়াছিলেন তা একদিন মালাথসৌর ভত্তের মভই ত্ৰান্ত প্ৰমাণিত হবে। বিজ্ঞানকে विष ঠিক্ষত মানুৰের উপকারে লাগাতে পারি তবে মাত এই বিশ শতকেই না, (I) divin শতকেও আমরা রোজ-কেরামতকে শেখাতে পারব। বাই হোক, বিষয়টি गात्रक्षा व -- - न्याभारत একেবদর अन्ति मा निरम् अ-मित्र किर्के जावा ভাগ।

জডএব বিশেব জনবলি সন্বশ্ধে অধাপক সামক্ষেণসনের ধারণা সম্পূর্ণ আশাবাদের দ্যোভক। তবে বছবা হল বে তিনি বিষয়টির আলোচনা করেছেন উন্নত দেশসমূহেরই পরিপ্রেক্সিতে। কোন পরিপ্রেক্সিতে। কান পরিপ্রেক্সিতে। কান পরিপ্রেক্সিতে। কান পরিপ্রেক্সিতে। কান পরিপ্রেক্সিতে। কান পরিপ্রেক্সিতে। কান পরিক্রিক্সিতে। কান কারে নিক্সির্বানিক কাজে লাগিয়ে সম্প্রানার বাদের হার কীম্বির সংখ্যা সংখ্যা কার্যার প্রানার কারেছে। এবং এর জন্যে আত্ত্রিকর স্থিতিও বে অপ্রিহার্য তাও বলা বাহুলো। সাম্ম্রাক্সিনের ভারার গ্রার্থাপস ইউ শাল হারেছ ট ওভারসেল ইন অভার ট সেল।

ল নিউ:

সাগ্নরেশসনের অর্থনীতির নবম সংশ্রেরণ হতেে আসবার জনেক দিন আগেই ম্মাতেরই এক সংখ্যায় দা নিউ ধা নীট আথিক কলাগা সদ্মকেধ বিশ্তারিত আলোদ চনা করেছিলাম। সা্তরাং বর্তমানে সংক্রেপেই তার ক্ষার্কেশ করছি।

মাট জ ার উৎপর (ইংরেজীতে
প্রাঙ্গ নাগানাল প্রভাকট বা সংক্ষেপ জি
এন পি) অমাত্রম অর্থনৈতিক ধারণা। কিচ্ছু
অর্থনীতি পাঠ না করেও অনেকে ধারণা।
টির সংক্ষেপ মাট জাতীর উৎপর হল
প্রতি বছর দেশে উৎপরে প্রবাদির (বস্ফুগত
দবা ও সেবান্লক কার্ব) অর্থন্ন্রের
মর্মনি। একে উৎপরের সম্নিট ছিলেবে
লাতীয় আয়ও (নাগানাল ইনকাম আাজ
নাগানাল প্রভাকটে) বলা হর।

অভাদন পর্যন্ত এই মোট জাতীর উংপ্রক্রেই আগিল কল্যাদের নাপকাঠি বলে গণা করা হড়। ফলে নোট লাতার উংপ্র বত বৃদ্ধি পেত, দেশ তত সন্দ্বিধ লাভ করছে—আর্থিক কল্যাদের প্রথ চলাছে বতল ধরে দেওরা হড়। সম্প্রতি ক্রিক্ করেকলন অর্থনীতিবিদ পরিমাণের প্রতি ক্রম্প ভারত বেলিকভা সম্বন্ধে বিশেষ সন্দেহ প্রকাশ করেছেন। এ লেরই একল্যেন উর্ভি হল : জি এম পি বা প্রোস্কান্দালা প্রভারটের কথা আরু আমাক্রে

বলবেন না। আমার কারে জি এন পির क्षर्थ इक शाम नामिनास भवानान। हेरहन বিশ্ববিদ্যালয়ের দুজন অধ্যাপকের মতে আর্থিক কল্যাণ এত বেদী গরেম্পাণ বিষয় যে, একে প্ৰিসংখ্যান্বিদদের স্থাত ছেডে দিয়ে মোট জাতীয় উৎপত্নের মাধামে মাপালের চলবে না—মোট জাতীয় উৎপল্লকে পরিশোধিত করে নীট আথিক কল্যাগের হিসেব করতে হবে। এই নীট আর্থিক क्लाम वा तमें हैक्सीमक श्रह्मात्मका स्व সংক্রেপ নিউ বলা হর। নিউ-এব পরিমাণে चार्थामक नगरकीवरन्त नर्वाकड च-मरमा-র্মতা (ডিস্ অ্যামিনিটিক) ও যেমন দূৰিত বায়ঃ জনাকীৰ্ণ জনপথ. কণ্যিদারক খান্দসমধ্য ইত্যাদ। অপ্র দিকে আবার যে সহ কাজকর বিনাম্কো সম্পাদিত হয়-যেমন আমাদের সূহ-"থালীতে স্থালাকদের কাজকর্ম-ভাদের ধরতে হবে, বা মোট জাতীয় উৎপলের ছিলেবের মধ্যে ধরা হয় না। ধরতো আ্মাদের মত দেশের জাতীয় উৎপল আনক ব্যক্তবে আর উন্নত দেশের জাতীয় উৎপাস

এখন প্রশন, নিউ-এর অনুসর্গে কি সম্প্রসারণ বা মোট জ্বাতীয় উৎপদ্মের ব্লিধ্র ধারণাকে সম্পূর্ণ পরিত্যাগ করতে হাৰ? অধ্যাপক স্থামান্তেলসনের মতে সম্পূর্ণ পরিত্যাগ করার প্রয়োজন মেই তবে সম্প্রসারণকে নিয়ক্তণ করা বিশেষ প্ররোজনীর। এই নির্দাণ করতে হবে নিউ-এর দিকে নজর রেখে এবং উরুত দেশের উরতি থেকে অপেকাকত অন্মত দেশসম্ভের সম্প্রসারণে সাহায্য করতে

भिएलाग्रह्म । शहित्सम :

শিলেপালয়নের ফলে পরিবেশ কিছাটা দুষিত হবেই কিন্তু এ নিয়ে আতৎিকত द्यात कात्रण धात मध्यादे चरलेख वरन मरन इस ना-- धेष्ट इल अधार्शक मामारसन-সনের অভিমত।

সজিই দেখা যাজে যে পরিবেশ নিংয় অধিকাংশ দেশ এখনও মাথা ঘামাছে না। ১৯৭২ সাজে শকহেেম সন্মেলনে অনেক দেশই যোষণা করেছিল বে, পরিবেশ কিছুটো দূৰিত হয় হোক আ্মাদের শিলেপারায়ন চাই। পরিবেশ দর্বিত হওয়ার আত্তক হল ধনীদের ব্যাধি। তারা আরও বেশী দিন বচিতে চান। সতেরাং বাতা^স কডটা দ্বিত হল তা নিয়ে তাদের দ্শিচন্তার অঙ্ও নেই। অঙ্তত পরিবেশজনিত কারণে अतम्मनील प्रभागांका मम्भागांत्राम् भाष থেমে যেতে পারে না। থেমে যেতে দিলে **भूगई** कहा इ.स.।

ব্দেশাল্ড দেখ ও সম্প্রসারণ:

- क्न क्न कता इत? এই शास्त्रव উর্ত্তরে স্থামনেরলসন বলেছেন : দেশের মধে। रक्षम क्लोरमञ्ज् देवकरमात्र जमजा तरमरक् . আগতনাতিক কোনেও তেমনি রয়েছে উলাত

ও স্বলেশান্ত ব্যবধানের সমস্যা। এ সমস্যাত্র মোক্তাবিলা করতেই ছবে—আয়ের শ্তরে বৈষম্য হাস করা অপরিছার্য । অবশা আগের চেয়ে অনেক দেশের অবস্থাই ভাগ। তবে প্রত্যাশা সায়ও বেশী। ভারত বা न्यादिम आदर्शतकात त्नादक वथन छिनिः ভিশ্নের মাধ্যমে মাকিনী জীবনবাচাঃ দল্যে পরিচয় লাভ করে তথন তার। মোটেট খাশী হয় না বরং তাদের লেখের উলয়নের মন্থর গতিতে বিরভই হয়। স্তরাং ব্যবধানকে সংকৃতিত করা দরকার ' अवर अंके कातरण देखकामणील रमणगर्रणाव উল্লয়নে উৎসাহ দিতেই হবে।

विक्रिक गाहाका :

উৎসাত দেবার জানো বে সাহাযা করা প্রয়োজন তা দ্বিপক্ষীয় হবে, না তাকে আশ্তর্জাতিক সংস্থার মাধ্যমে প্রবাহিত করা হবে? স্যাম্রেলসনের অভিমত হল যে এই ধরনের বৈদেশিক সাছাযোর বল্টন-ব্যবস্থা আন্তর্জাতিক সংস্থার মাধ্যমেই করা ভাল। নচেং এর মাধ্র নত হয়ে যায়। আর ভা ছাড়া রাজনৈতিক কারণে পৃক্ষপাতের প্রশন্ত আছে।

कृषि बनाम जिल्ला :

এই সাহায়া প্রধানত কৃষির না শিলেপ্র উল্লেখনে হবে তা নিভার করবে উল্লেখনের স্তারের ওপর। তাবে কৃষির ওপ_র অন্ধ ভারি না থাকাই ভাল, কারণ দেখা গেছে যে. भिक्शाकरत स्थितिकत खेरशामन कृतिरक्तरत উৎপাদন থেকে বেশী। অপর দিকে আবার মাকিন যুক্তরান্ট থাইলান্ড কোরিয়া প্রভৃতি দেশ কৃষির অক্রিপত উল্ভিসাধন করেছে। সৃত্রাং এটা ঠিক কৃষি বনাম শিকেপর প্রশন নয়, উত্তয়ের মধ্যে সামজসা-বিধানেরই সমস্যা। দু-একটি শিল্পই অবশ্য সম্পির স্চক নয়-একটা ইম্পাত কার-খানা বা বিমান সংখ্যা থাকলেই দেশ উলত হয়ে ওঠে না। ধনীরা চুরটে খার किञ्जू जार्सनि वीम अक्टों हुन्नू हे किस्स টানতে শ্রুকরেন তা হলেই আপনি ধনী বলে পরিচিত হবেন না। অতএব একটা ইম্পাত কারখানাই বথেন্ট নয়।

ন্লাম্ফীত :

মালাক্ষণিতর প্রকার ভেদ ঘটেছে---বলা মার এক নতুন ধরনের মালাস্কাতির উল্ভব ঘটেছে। একে বলা যায়, উৎপাদক-ব;য় বুণিধজান্ত ম্লাস্ফীতি৴বা বিকেতার ম্লাস্ফীতি (কৃস্ট-প্রেস্ বা শেকাস স**্পাস্ফ**ীতির **२नःक्षन**ान)। **এই** ধরনের িনক্ষোগঙ্গংস্থান সময় সম্প্রসারণ ও িথভিশীল বা বন্ধাবস্থায় স্বাক্তে পারে। এই অবস্থাকে ট্যাপক্সেশান্—বন্ধাক্ত্রায় মূল্যুম্বীতি বলা যায়।

বিক্রেভার ম্লাম্ফণিতর কারণ হল প্রনিশ্যোগ অনিয়াক্তিত বাজার এবং দিখন

মূলাস্ভরের মধ্যে স্বান্ডাবিক সাম্ভর্মা-বিহুট্টনতাঃ বৃহত্ত কোন দেশই আঞ প্ৰশ্বত এই তিনটি বিষয়ের সাম্বাস্থাবধান করতে সমর্থ চ্রান।

এ প্রাণ্ড উংপাদন-বার ব্রণিধ্জানিত मानाम्योषि वा कम्रावे-भाम हेनस्क्रमास्त्रद জনো শ্রমিক-সংঘ গ্রেলাকেই দায়ী করা হত। এখন দেখা যাকে, শুধু শুম-বিক্লেডারাই নয়, সকল ধরনের বিক্রেডাই দারী। মোট জাভীর উৎপালকে যদি ১০০ শতাংশ মনে করা হয় তবে উৎপাদকরা এই ১৩০ শতাংশই পেতে পারে। এর বেশী যদি ভারা পায় ভবে বিক্রেডাদের মূল্যস্থাডি ম**্ল্যুম্ফ**ীতি বা (সেলাস ইনফেশান) না ছটে পারে না। অন্যভাবে বলা হায়, উৎপক্ষের পরিয়াণ ব্যাশ্ব ঘটে যদি (বিশ্লেতাদের প্রেস্ বা थानान मन्द्राः) मास् स्रोप साम द्रावि द्राप्ति शास তবে মলোকগীত না ঘটে পারে না। এই রকম ম্লাস্ফীতি একটা স্তারের পর ফলার ज्ञासना कवाटल साधा।

STORE :

কেইন্সের পরবতী যুগে বাণিজাচ্চ ঠিক অতীভের বস্তুত্ত পরিণত হয়নি--তবে মহামদদা আরু ঘটছে না। এলককি অবর্শত (রিসেসানও) হয়ে দাঁডিরেছে স্বল্পকালীন এবং সংখ্যায় অভালপ। ভব্ও তা ঘটছে এবং এর অনাতম কারণ হল বিক্লেন্ডার মূল্যস্থাতি।

नथनिस[्]म :

এই সব ব্যাপারে অর্থনীতিবিদ শধে কি বিশেষৰণ করেই কাম্ভ থাকবেন পথানদেশত कस्त्वस् । भाषाः समाभागाः मर्छ নিয়ংপক দিন চলে গেছে। সাভ্রাং **মা**ল্য-বিচারের কাজও চাতে সিতে হবে। प्रस्थात हता ব্যবহারিক কোনে অবভাগ হার তত্ত ও दिएनवर्गक कार्वित मागार्ड इस्य।

উপসংহার :

অধ্যাপক স্বাম_ক্রেলস্ম বিশ্বেদীয়ত উপরি-উর তকু ও ধারণার আধকাংশই ব্যাপ্তর দিক দিয়ে বিশ্বজনীন প্রকৃতির। স্ত্রাং আহাদের দিক দিয়েও বিশেষ গরেষপূর্ণ। এর মধ্যে আমি মার একটি िनतात अकारणत कृष्टि आकार्यण कवारक छाडे এবং তা হল বিক্লেভার মূলাক্ষীতি হা সেলাস' ইনক্ষেশান। विद्वालामा स्वा-×ফণীতিকে যে শতরে নিরে **বাজে**ল ভাতে व्यास्य मन्त्रात सह—खन्नामा ভাশব্যাও ররোছ। সভেরাং **এখন থেকেই प्रदर्भ इ.७३**। श्रासाक्ता मतकारका शुक्क এ-ব্যাপারে প্রচারকার্য **ठाणाद्याव विदंशव** मानाष तरहरू।

-- नान्छिनान मृद्धानावाच

বিজ্ঞানের কথা

মহাকাশ গবেষণায় ও উপগ্রহের সাহায্যে শিক্ষামূলক প্রচারে ভারত

উচ্চতর পদার্থবিদ্যা ও মহাকাশ-গবেবশার জন্যে ভারতে বিপ্লে পরিমাণ অর্থ
ববাদ্দ হরেছে ও বহুনেখা প্রয়াস চলেছে।
ভারতের প্রথম গবেষণামাূলক উপগ্রহ
উংক্ষিত হচ্ছে এ বছরের শোষদিকে,
সোভিয়েত ব্টুটার রকেটের সাহায়ে।
এ খবর জানিয়েছন সোভিয়েত ইন্টাবক্সমস কাউলিসলের সভাপতি বোরিস
পেল্রেভ। সোভিয়েতের এই কাউলিসল মহাক্রাশ-গবেষণায় যুম্ম প্রকল্পের দায়িত্ব পাকন
করে থাকে।

মহাকাশ-গবেষণার কেন্দ্র ছড়ানো রয়েছে সারা ভারতে। ১৯৭২ সালে প্রক্রতাবে গঠিত হয়েছে মহাকাশ গ্ৰেষণা সংগঠন এবং এই সংগঠনকে ভারতের মহাকাশ-গ্রেষণার ক্ষাস্চা র প্রণের দায়িত দেওয়া হয়েছে। তার আগে প্যত্ত এই দায়িত্ব পালন করত পরেমার্ণাবক শক্তি বিভাগ। ভারতে মহাকাশ গবেষণার কয়েকটি প্রধান কেন্দ্র হচ্ছে থুম্বায় বিষ্কৃতীয় রকেট উৎক্ষেপ্র সেট্মন হিবাস্তাম রাশ্রসংঘ-প্রবৃতিতি সাউণিডং রকেট রৈল ও ভার কাছাকাছি একটি মহাকাশ বিজ্ঞান ও প্রয়ারিকাবদ্যা কেন্দ্র, তদঃপরি থাম্বায় একটি বকেট-চালন ও বকেট নিয়াল শ্লান্ট আমেদাবাদে উপগ্রহের সাহায্যে যোগাযোগের জনো ভূমি-সেট্শন হায়দ্রাবাদে रवन्त-উৎক্ষেপ্। বावभ्धा ও গ্লেমারে অতি উচ্চতায় স্থাপিত একটি গবেষণগার।

সোভিয়েট **ব্যক্**টের সাহান্যা হে গবেষণামূলক উপগ্রহটি উংক্ষিণ্ড হবার কথা তা নিমিত হচ্ছে ভারতে। সোভিয়েত মহাকাশ-বিজ্ঞানীরা এ-কাজে যতোটাক সাহায্য করবেন তা অতি সামানা। এই **উপগ্রহের সা**হায়ে পর্যবেক্ষণ করা হরে সৌর ব্যাপার, পর্তিথবীর আয়নোচ্ফিয়ারের প্রক্রিয়াগ্রালের সংগ্য তার সম্পর্কে ও হাইরের মহাকাশ থেকে একস্তরে বিকারণ। পরে ভারতে তৈরি হবে আবহাওয়া প **প্রাকৃতিক সম্পদ প**র্যবেক্ষণের উপযোগ⁹ উপাছ। এই উপগ্রহ থেকে আগে থেকেই বৈষন জানা বাবে ঝড়-ঝগ্না প্ৰসাপাশের আক্রমণ সম্পর্কিত থবর ডেমান প্রাকৃতিক **লম্পদ আহরণের সংকেতও।**

প্রধানত আবহ-পর্যবৈদ্ধণের ক্ষেত্রই ভবাত ও সোভিয়েত ইউনিয়ন এতদিন সহ-সাগিতা করে এনেছে। ১৯৭১-৭২ সালে উভয় দেশের উদ্যোগে থান্বা থেকে উৎক্ষিপ্ত থারছে ৩২টি রকেট। সংগ্রহীত তথাের প্রাথমিক বিশেলবদ সম্পন্ন হরেছে রকেট-স্টেশনে দ্যান্সত সোভিয়েত মিন্সক-১১ কম্পিউটারে এবং বিশেলবাকে ফলাফল রকেট-উৎক্ষেপ্রের এক স্পতাহের মধ্যেই মন্দেকাতে পাঠিয়ে দেওয়া হয়েছে।

আমেরিকার ন্যাসা-র সঙ্গে সহযোগিতার ১৯৭৪ সালে আরো একটি উচ্চলক্ষ্যসম্পর উপপ্রথ উৎক্ষেপণের কর্মসূচী ভারতের ছিল। সেটির নাম দেওরা হয়েছিল শিক্ষান্ত্রক উপপ্রথ টেলিভিশন প্রীক্ষাকার্য (স্যাটোলাইট ইনস্ট্রাক্স্মনাল টেলিভিশন একস্পোর্যালি, সংক্ষেপে সাইট)। এই উপপ্রথের (আমেরিকান এটিএস উপপ্রথ) সহাযো ভারতের বিভিন্ন এলাকার ৫০০০ গ্রেম শিক্ষান্ত্রক টেলিভিশন প্রোগ্রাম প্রচানির প্রধার কথা ছিল।

গত ৩০শে মে ভারিখে আমেরিকার কেনেডি সেগন কেন্দ্র থেকে এই উপগ্রহটি উংক্ষিণত হয়েছে। এজনো খরচ পড়েছে সাড়ে কড়ি কোটি ভলার অথাং দেড়শ কোটি টাকারও অধিক। আমেরিকাকে এক-একটি আমেগালো অভিযানে চন্দ্রে মানুষ পাঠাতে যে-পরিমাণ খরচ করতে হয়েছে ভার প্রায় অর্থেক খরচ হয়েছে এই একটি উপগ্রহকে প্রথিবীর আকাশে ভোলার জনো। একটিমান্ত উপগ্রহ আকাশে ভোলার জনো এমন বিপ্লে পরিমাণ থরচের দৃণ্টাত্ত এই প্রথম।

উপগ্রহিক এমন এক উচ্চতার তোলা হয়েছে যাতে পৃথিবীকে একবার পাক দিতে তার সময় লাগ্যে চন্দ্রিশ ঘণ্টা। এদিকে প্রথিবীও এই চন্দ্রিশ ঘণ্টার মধ্যে নিজের পাক খাজে। দায়ের পাক খাজা যদি একই সমরের মধ্যে ঘণ্ড থাকে ভাহকে তার ফল কী বীড়ায়? তখন পৃথিবী থাকে তাকিরে মনে হ'তে থাকে উপগ্রহিদি যেন পৃথিবীর আকাদে শিকার। এমনি একটি সমতার অবদ্যথা ঘটাতে হলে উপগ্রহকে ৩৬,০০০ কিলোমিটার উচ্চতার তোলাপ্র উক্তার স্থাপিত এটিএস এমনি একটি দিপর উপগ্রহ

প্রথমে (১৯৭৫ সংশের জুন মাস প্রযুক্ত) উপগ্রহটি থাক্তে গ্যালাপাগোস ম্বীপের আকাশে। এই অবস্থানে উপগ্রহের আওতার এসে পড়ে গোটা মার্কিন ব্রে-রাষ্ট্র। তখন উপগ্রহ থেকে প্রচারিত টেনি-ডিশন প্রেগ্রাম মার্কিন ব্রেরাষ্ট্রের বেশকোন এলাকা থেকে ধরা সম্ভব।

তারপরে, ১৯৭৫ সালের জলাই মাসে বেতার-নিদেশে উপগ্রহটিকে স্ববিষ্য জানা হবে আফরিকার কাছাকাছি ভারত মহা-সাগরের আকাশে (তার মানে ৩৬.০০০ কিলেমিটার উ'চতে পাথবার কক্ষে স্থাপিত হবার পরেও উপগ্রহের সঙ্গে যুক্ত থাকন্তে উপগ্ৰহকে নিদি ট দিকে ঠেলা দেবার একটি ব্যবঙ্গা বা কোনো এক ধরনের রকেট)। এটি এমন এক অবস্থান যেখান থেকে গোট: ভারতবর্ষ নজরে এসে যায়। এক বছর এই অবস্থানে রেখে উপগ্রহটিকে ব্যবহার করা হবে ভারতের (বিহার ওডিশা মধাপ্রদেশ কর্ণাটক ও রাজস্থানের) গ্রামাণ্ডলে শিক্ষা-ম^{্লক} প্রচারের উন্দেশ্যে। ভারতের পাঁচ হাজার গ্রামে সমসংখাক টেলিভিশনের মাধানে এই শিক্ষায় লক ক্মসিচী প্রচারের বাকম্থা করা হচ্ছে। ভারতের পক্ষে এ এক ঘাভন্ব পরিকল্পনা।

অন্তান-স্চী রচিত হবে ভারতে, এ বাপারে অন্ কারও কোনো কর্ছ থাকছে না। রচিত অন্তান স্চী উপ্তাহ প্রেরিত হবে আমেদাবাদের মহাকাশ গবে-ধণা কেন্দ্র থেকে। ভাতের আকাশবাণী ও মহাকাশ গবেষণ ংগঠনের সহব্যোগ্ডার এই কর্মাস্চী র্ায়ত হবে।

এশিরার ভারতই প্রথম দেশ যেখানে শিক্ষামূলক প্রচারের জন্যে আধ্নিক্তম উপপ্রহের সাহায়া নেওয়া হচ্ছে।

উপগ্রহটিতে আরে। একটি রাব*থা রয়েছে যার সাহাব্যে আবহাওয়ার পূ্বাভাসও জানা সম্ভব হবে।

ট্যাইবোলজি

কথাটা নতুন শোনাছে, এ এক নতুন বিজ্ঞানের নায়। বিটেনে এই বিজ্ঞান প্রবাদ্ধ হজে হৃদপিপেতার ভালতের শালাচিকিংসা থেকে শ্রুর করে ভারী শিলপ পর্যান্ত ব্যাপক ক্ষেত্রে: তার ফলে বিটিশ শিলেপ এখনো পর্যান্ত যে-পরিমাণ ক্ষমক্ষতি বাচানো গিরেছে ভার মৃশ্য প্রায় ১০ কোটি পাউন্ত।

বলা হচ্ছে, যথা খাওয়া বা গাড়ানো বা হড়কালোর দরনে প্রতি বছর যে লিচ্প-দক্ষতা খোয়া বার তার মূলা ৫০ কোটি পাউন্ড। এই নতুন বিজ্ঞানের সাহাযো এই অপক্রর কথ করা থাবে, দাবি করা হচ্ছে। া এই বিজ্ঞান ১৯৬৬ সালে প্রবিতি।
উদ্দেশ্য ছিল, 'আপেক্ষিক গতিসম্পন্ন
প্রস্পর-ক্রিয়াশীল ওল এবং সম্পর্কিত
বিষয় ও ক্রিয়ার বিজ্ঞান ও প্রথান্তি অন্যশালন। বর্তমানে তিনটি কেন্দ্রে এই অন্যশালন চলেন্ডে—বিষয় যুখপ্রতির ঘর্ষণ ও
লব্রিকেশন ও অ-স্থিতিশীল অংশের
ক্রেক্ট্রে

শংশু শিংপ নর, চিনিংসা ক্ষেত্রেও এই বিজ্ঞানের প্ররোগ ঘটছে—বিশেষ করে হার্ব-পিশেডর ভালভের শংগাচিকিংসায় ও হাড়েব জোড় সম্পাক্তি সমসাায়। চিকিংসার এই বিশেষ ক্ষেত্রে ইঞ্জিনিয়ারিং ক্ষানের প্রয়োগ থেকে উল্লেখযোগ্য স্ফল পাওয়া গিরেছে।

আট বছর আগে প্রবৃতিত এই বিজ্ঞান ইতিমধ্যেই প্রথাণ দিয়েছে যে এই বিজ্ঞান প্রয়োগ করে অপ্প সময়ের মধ্যেই প্রচুর আথিক সাধিধা লাভ রূত্ব যায়।

আঙ্বল মটকালে আওয়াজ হয় কেন ?

ঘটনটো সাধারণ, আঙ্গে মটকালে প্রায় একটা মিনি-প্রটকা ফাটার মতো আওয়াজ ওঠে। শূল্ আঙ্গে কেন, কন্টে, ইটি, ঘাড় এলনকি কোনর প্রশত গ্রটকালো চলে এবং প্রতি ক্ষেত্রেই কম্বনিশি আওয়াজও পাওয়া বায়। সাধারণভাবে বলা চলে, মানুষের শরীরে যেথানেই হাড়ে-হাড়ে জোড় তৈরি হয়েছে সেখানেই গ্রটকানোর প্রতিরাটি সম্ভব। আর এই প্রক্রিয়ার স্থেগ স্থেগ আওয়াজও। কিণ্ডু কেন?

এই গ্রাংনর স্থিক জ্বাবটি দিয়ে এক জন বিটিশ বিজ্ঞানী সম্প্রতি প্রেম্কুড হারছেন। বিজ্ঞানীর নাম ডঃ গ্রানটনি উমস্প্রাণ, লীজস বিশ্ববিদ্যালরে বায়ে। ইল্লিনিয়ারিং-এর লেকচারার। ট্রাইবোগজির রৌপাপদকে তাকে প্রেম্কুত করেছেন মেকানিকাল ইল্লিনিয়ারদের প্রতিংকা।

এই বিজ্ঞানী সন্দে করেন, আঙ্জের জোড়ের (বা শরীরের অনা কোনো অংশর জোড়ের) এক অংশকে যখন জোরের সংগ্র অনা অংশ থেকে টেনে ধরা হর বা প্থিক করার চেণ্টা হয় তথন সেখানে আংশিক ভাকুয়াম স্থিট হয়ে থাকে এবং এই জাকুয়াম প্রেণ করে এক জাতীয় গাসের ব্দব্দ। আওয়াজটি ওঠে গাসে ধানিত ইওয়ার দ্বনে।

এই গ্যাস আসে কোথা গেকে? মান্যের মানীলে গ্রাভারতি লোকে গালে এব সর্বানে **প্রারক্টিং তরলপ্**নার্থ — সাইনোভিয়াল রুইড। প্রত্যেকটি জোড়ে বিক্ষুমার ঘর্ষণ-জানত বাধা বোধ না করে মানুষ ধে এত সহজে তাংগচাশনা করতে পারে তা এই ন্রেরিকেটিং ত্রুপ্সদার্থটি থাকার জন্মে। উল্লেখ্য গাসে উন্ভূত হয় এই তর্লপদার্থ

আর এই লাবেরিকেটিং শ্রক্থা যদি ভেক্ষা পড়ে ভাহলেই বাত বা আপ্রাইটিদ রোগ দেখা দেয়। আশা করা হচ্ছে, ডঃ ভিনসভয়ার্থেরি গবেষণার ফলে বাত বা আপ্রাইটিস রোগের চিকিৎসায় নতুন আশার বির পাওয়া যেতে পারে।

উপগ্রহের সাহায্যে শিক্ষাদানে ভারতের নিরক্ষরতা দূর হবে

একথা বলেছেন খোদ ভারতীয় বিজ্ঞানীয়া, থারা এটিএস উপগ্রহটির উৎক্ষেপন দেখার জন্যে কেপ কানাভেরালে তদাহিত্বত ছিলেন। শ্বে তাই নয়, তাদের মতে ভারতীয় অর্থানীতিতেও এই উপগ্রহের স্ফুল নিশ্চিতর্পেই পাওয়া বাবে। এই বিজ্ঞানীদের বস্তব্য একটা বিশ্ততভাবে শোনা দ্বকার।

একজন হচ্ছেন ভারত টেলিভিশনের সহকারী অধিকতণ পি ভি কৃকম্তি। তিনি বংগছেন

'স্বটেয়ে বড়ো কথা, সময়। ভাবতের
পক্ষে অপেক্ষা করা সম্ভব নর। গোররে
গাড়ির গভিতে বাপোরটা চলকে, একথা
এখন আর ভাবা যার লা। নতুন ধানগরণাকে অগ্রসর করে নিয়ে যাবে নতুন
ভাবনা, উপগ্রের মাধামে টেলিভিশন।

যোগাযোগ করার ক্ষেত্রে আমাদের সামনে রয়েছে তিনটি বাংং সমসা। এক, সরাসরি উপশ্থিত হতে না পার। দেশটা এত বড়ো যে সেটাই আমাদের বিবাদেধ হাছে। দ্র দ্র এলাকার সংগ্র সংযোগ গড়ে তোলা থবং শক্ত। জজটা যদি আল্লরা ভাড়াভাড়ি করাত চাই তাহলে উপগ্রহের কথা ভাবতেই হয়।

দুই, নিরক্ষরতা। আমাদের দেশের শতকরা সত্তরজন মানুষ না পারে পড়াত না পারে গিখাতো। ছাপার হরফ তাদের কাছে অর্থ্যান। এই বাধা কাটিয়ে ওঠা যেও পারে টোনভিশনের ছবি ও কথার সাহাযো।

তিন সাৰক নানাধের অভাব। আলাদের চাই এফানি মানাধের বিবাট এক বাহিনী। টোলভিশান বলহার করে আমরা তেই ফান্সদের গড়ে তুক্ব, সঞ্জে সংগ্র ব্যক্ষের্ড।

ভারতকৈ যদি ৪২ত উন্নত করতে হয় তাহলে উপগ্রহের পথই ইচ্ছে একমাত্র পথ। আত্মরা তাদের শেখার দুইটি শিব ফলিয়ে

ড়াইটে, সংখালে আগে হৈত একটি।

বরে তেতালা।

টেখিভিখনের প্রোল্লায় এননভাবে তৈরি করতে হবে যেন তা বিশ্বাসযোগ্য হয়, এটা ভীষণ জন্মরি কথা। যেনন, করকের নিজের চান্না নিয়েই আনতা টেলিভিখনের ফিল্লা কুলতে প্রারি। তাকে দেখাতে পারি উয়ত পৃথ্যতি কিভাবে তার জনির ফলন উয়ত

্রমণি সবনের জিলম সানা**স্থকে দেবে** জিলম নাস্ত্রান্তর বেলে স্থাসালিবলের স্থান্ন নেই। বাস্থ্রটা সতি হওয়া টাই। মান্য বিশ্বাস করবে, এটা জর্মির কথা।
ভারতের শিশ্বদের টেলিভিখনের
মাধ্যমে শিক্ষা দিতে পারলে বিরাট রকমের
ফল পাওয়া যাবে। ভারতের শতকরা চল্লিল্
জন শিশ্বে ক্লাশ ফাইভ প্যাস্ত পেশিহতে
পারে না ভার ভারতেই তাদের লেখাপভারা

ইতি ঘটে যায়।

তার একটি কারণ, অন্ন্যাদের দেশের <u> শ্বলগালো আক্ষ্ণহীন এক্ষেয়ে নিরা-</u> ন্দ। কোনো বুক্স খেলা নেই **কোনো বুকুয়** মজা নেই। শাধা মাখস্থ বালি **আউড়ে** তারা লেখাপড়া শেখে। নাস্কাল্য এক/শেষ সময়ে যোগ্যতাহীনও। উপগ্রহের <mark>মাধ্যত</mark>ে শিক্ষাদানে শিক্ষকদের সাহায্য করা হবে আর ছেলেলেয়েদের কান্তে কোমাপড়া শেখার ব্যাপারটা হয়ে উঠবে ভানেক বেশি আক্রমণীয়। শিশ্রাই হবে টেলিভিশনের সবচেয়ে বড়ো দশকৈ ও শ্রোতা। মাকিন যুক্তরান্ট্রের শিশাদের কাছে টোলভিশন তো নেশার মতো। আমরাও কেন-না এটাকে কাজে লাগাই ও তার ফলভোগ করি? আমাণের *কল ব্যবস্থার ওপ্তে তার প্রভাব প্রথবে প্রচম্ভ রক্ষের।

টেলিভিখনের মাধ্যমে শিক্ষাশনে আ্থানের দেশের মেরেদের কেন্দ্রেও বড়োবক্ষরে ফল পাওয়া যাবে। কথার বলে—
একটি পরেষদেক শিক্ষা দিলে শিক্ষিত করে
তোলা হয় একজন বাজিবিশেষকে কিল্পু
একজন স্থালৈককে শিক্ষা দিলে শিক্ষিত
করে তোলা হয় একটি প্রজন্মকে। আমাদের দেশে রবল শতকরা ঘাট ভাগ কার্
করে মেয়য়া। লাঙল দেওয়ার কার্জটক্
বাদে আ্রা স্বই তারা করে। নত্ন ধানধারণাকে আরো বেশি গ্রহণীয় করে
তোলার জনো মেরেদের শিক্ষার লাওতায়
ভানেতেই হার।

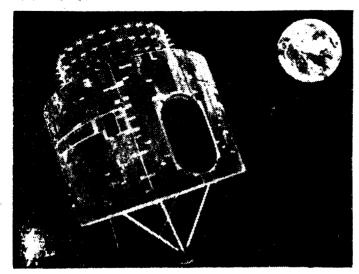
শুনায়েরা ও শিশ্বরা ভারতের চেহারা বদলে দিতে পারে ৮

আরেকজন হচ্ছেন ভারত স্পেদ গাব**ষণা** সংগঠনের সেশস প্রয়োগ ক্ষেন্দ্র অধিক**্র**ী মধ্পাল। তিনি রলেছেন—

উপগ্রহ শৈষ প্রাণ্ড শিক্ষার গোটা পার্টণ্ডটি বৃদ্ধে দেবে। লক লক মানাসকে জাতিরাতাল বোধ দেশের বংকি বংশের সংগ্রা করাজালা এবং সংগ্রা

এন্ট্রিস এলন একটি নাক্তথা যা থেকে জানা **যাবে ভারত বোগাযো**গের

এটি একটি দিখন আহে উপগ্রহ। রাজ্বার উপক্ষের কাছাকাছি বিষ্ববেশার ওপরে আকাশে এটিকে এনন এক উক্তার (০৬০০০ কিলোমিটার) পৃথিবীর ককে দাপেন করা হয়েছে যার ফলে উপগ্রহটি প্যিবীকৈ পাক দিছে ২৪ ঘণ্টার একবার। প্থিবী শাকে ভাকিরে মান হয় উপগ্রহটি যেন দিখর। এ ধরনের দিখর বা দিনরোনাস উপগ্রহ মালিন স্ক্রাল্ট পেকে এই প্রথম। উপগ্রহটির নাম এস্থান্তাস—১ ইনফা-রে কামেরা-সম্মানিত। উপগ্রহ পেকে প্রতি জিশ মিলিটে একবার করে পাশ্রম খোলাকের মেঘের ছবি ভোলা হাছে। উপগ্রহার অন্যান যাকে সংগ্রহীত হচ্চে পরিবেশ-সংকাহত নানা খ্বর। আশা করা হচ্চে উপগ্রহটির সাহাযো এই এলাকায়ে আবহাওয়ার প্রতিভাক নিস্ক্রভাবে দেওরা সম্ভব হবে। উল্লেখ করা চলে প্রথম করে মালিনি ম্কুরাটে ও আলাদিকায় এবং দিবতীয় সভাবে ভারতের শাক্ষাম্বাকর বিষ্কার প্রতিভাক বিশ্বহার প্রতিভাক বিশ্বহার ভারতের শাক্ষাম্বাকর প্রচারের জনো যে এটিএস উপগ্রহটি গত ও০শে মিলকে করিত থেকে আকাশে তোলা হয়েছে সেটিও এমনি ধ্রনের একটি দিগর বা সিনকোনাস উপগ্রহ



ক্ষেত্র বড়োরকামর সাম্থ্যতি অজনি কথাত পারে কিনা এবং দরে-দরে এলাকাই যথাসমন্তর শীঘ্রতে পারে কিনা।

উপগ্রেছর জন। ভারতকে অথবিধ করতে গবে -ফলদায়কভাবে ববেহার করতে হলে যে অথেবি প্রয়োজন তার মার ১০ থেকে ২০ শতাংশ।

দিবাচলিত ধরনের সেখাপ্তা শেধার চোর আরে বেশি জর্বী প্রয়েজন হঞ্ছ কারিকটো জনে।

আরো অনেক জরুরি ভিবিতে কর। দরকার এমন বিষয় প্রচুর রয়ে গিরেছে। সেখানে নিরক্ষরতার প্রশন্তি অবাতর হয়ে বায়।

আমাদের দেশের একজন প্রাথাও বিজ্ঞানী একটি কথা প্রায়ই বলে থাকেন —আমাদের এখন চাই সাক্ষরতা ত্রুগুটা মহ যতেটো না কারিগরী জান। অথাবি জারিগরী বিবয়ে সাক্ষরতা। আমাদের মোট জাকীয় উৎপাদানর প্রথান শভাংশই হক্ষে কৃষি। কৃষিকে সাহায্যা করা হয়। স্বাধাতর জারী স্থায়া করা হয়। স্বাধাতর জারী স্থায়া কলে খাদা। অথানীতির জারতির জন্ম আমাদের চাই কৃষির উম্লিডা। লক্ষ্য লক্ষ্যান্য চোক্ষের দেখার আবো ভালোভাগে বিগতে পালে৷ বড়ো বড়ো কথার কোনো প্রয়োজন নেই। আমাদেশ দেশের কৃষক খানই রক্ষণশীল কেননা শত শত বছর ধরে সে বার কান্ধ করে এসেতে বিশেষ কতকগালো উপারে৷ তার কান্ধ সে কগানেই অনাভাগে করতে বান্ধী হবে না মতোক্ষণ না সে দেখনে যে অনাভাবে কয়াণা সংগলভাকচাষের উপারের উপারেই নিভার ববুর তার গোটা জীবন।

অপথ একজন হচ্ছেন অধ্যপিক ই ভি
কিত্তিনত—ভাষতীয় স্পেস গ্ৰেবৰা সংগঠনের পক্ষ থেকে শিক্ষামূলক উপগ্রহ টোলভিশন প্রীক্ষাকাবের প্রোগ্রম মান্বেলার। তিনি বলেজেন—

ভাষাদের জাতীয় উন্নতি ও আমাদের
সমগ্র অথানীতির প্রেমাসিনের জনা আমার।
প্রসত্ত। আর তা করার জনো আমাদের
দেশে লিগতে ও পড়তে পারে শতকর।
বিশক্তার বেশি নয় কাজেই জনেক
মান্বেল সংগ্র ষোগাযোগ করার কোনো
পথ নেই।

ভারতে জনসংখ্যা ৫৪ কোটি আর শাঘা ভারতে ঐলিভিশন সেট আছে বড়-জোর শহাশ হাজার। গ্রামের অধিকাংশ মানন্বের টেলি-ভিশন দেখা এই প্রথম। গণ-প্রচারের মাধ্যন ভাদের প্রায় স্পর্শ করেনি বলা চলে। আমাদের চাই এমন একটি মাধ্যম বার জনো পড়তে বা লিখতে জানার দরকার

ভারতের পরিকলপনা—পাচ বছরের মধ্যে অধিকাংশ গ্রামে পেশীছে যাওয়া।

তার মানৈ—১৯৮১ সালের মধো ভারতের বৃহৎ অংশকে আমাদের আওতার আনতে পারব এবং প্রত্যেকটি গ্রামে অস্ততপক্ষে একটি করে টেলিভিশন সেট বসাতে পালব। তবে টেলিভিশন বসাতে शातालाई माल्य माल्य माम्यापार्ता উঠ ষাবে তা নহা ভালো পোলাম দেওয়া চাই। মান্যজনকে বকুতা শোনালে নয়, চাই ভাদের অংশভাগী করে ভোলা। গোডাতেই প্রকাণ্ড পরিবর্তন ঘটে যাবে এই যদি আশা করি ভাহলে বলতে হবে---নিজেদেশ আমর। ধোঁকা দিছি। সময় লাগৰে। কিল্ড মান্ত্ৰে যদি আমতা বোষাট্ড পারি বস্ট্রোগটা খারাপ কিছা নয়, চিকিংসাৰ ব্যাপার—তা চুপ্লই মুখ্য কাজ করা হয়। সদি তাদের শেখাতে পারি স্**ষম প**্লিট ক**ী**, পরিবার পরিকল্পনা ক্ষেন করে প্রিকোর <mark>থাকা ফল কিডারে</mark> জল বিশ্যাস বাস্থ্য তীয় কেমন কারে---শ্রেশেও সমত কাজ করা হয়।

এছ মান্যদের আন্দের দিতে হবে আরো আক্রিশনাস এবং নিজেদের কারে। আরো স্বানোর।

উপ্রতেষ স্থানে শিক্ষানান ক্ষিকে সংহায় করবে এবং তার ফলে আর্থানীতিকেও। সংগ্রে এটি হবে অভীব গজিশীল একটি বয়ুগরে।

অপর একজন হ দ্বন ভারতীয় স্পেদ গ্রেষণা সংগঠনে প্রোদেক্ট মানেজার প্রমাদ কালে। িন রাজ্যেন—

'আশা করা হ*াছ*—এটিএস উপগ্রহ চলা থাকার প্রথম বছরে দ**শ লক্ষ** মানুসের কাজে পোহতে পাধা যাবে।

এটিএস উপগ্রহ ভারতে শ্রে কর্বে মতুন যোগাযোগ ব্যবস্থা ও শিক্ষার এক নতুন বিবতনে। এই প্রথম আধ্নিক শিক্ষা ও কৃষ্ণিকে আদার। নিয়ে যেতে পারব গ্রামের একাকার।

এটিএস উপ্যহটিকে প্রথম বছর
ব্যবহার করবে মার্কিন যান্তরান্ট ও
আলাপনা— স্বাস্থা ও শিক্ষাগ্যালক প্রচারের
জন্যে। এক বছণ পরে এটিকে ভারত
মহাস্থারের ভালেশে সরিয়ে আন্ হবে
এবং এক নছরের জন্যে খণ দেওলা হবে
এবং ওক নছরের জন্যে খণ দেওলা হবে
এই উপ্রত পেকে স্রাস্থার সংক্রেত
এই উপ্রত পেকে স্রাস্থার সংক্রেত
শেষিক্রে স্থার ভারতের পতি হাজার
ভাষের বিশেষ টেলিভিশন সেটে।

ভারতের নিজ্ম্ব শিক্ষাম্কক উপগ্রহ উংক্ষিণ্ড হ্রণ কথা ১৯৭৭ সালে।

—অরুক্তান্ত



(পরে' প্রকাশিতের পর)

হাসথদেশক আগে জরুক্তীদির বাড়ীতে
বাংলা কাগজে দেখলাম রবীন্দ্র সদনে মানবেশ্য
মুখাজির নজরুল সুখাতির আলর হছে।
এশব বিজ্ঞাপন দেখলে মন থারাপ হয়ে যায়।
ভৌবয়া পরাণ শ্লিন্তেছি গানা আর লীলাশ্বরী শাড়ী পারে কে যায়া গান দুটো শ্লেতে
গোলেই আহি টিকিটের পয়সা উঠিয়ে
নিতাম। আনদেশর জন্য লুন্ডনে আসার দরকরা নেই, ববং আমানের আনকেদর সবকিছ্
ই
কর্পকালায়। লুন্ডনে উপভোগ করা যায় কিন্তু
মন প্রাণ্ড ভার আনকেদ স্বাহোগ্য কেই।

কলকাতাল, বিয়ে হলে ৰেশ স্থে থাকতাল্ল কিম্ত রঞ্জন আমার জীবন্টাকে লন্ড ভৰত করে দিল। সব স্ময় রঞ্জনের কথ। জাবি না। ভাৰতে চাই না ভেবে লাভ নেই। আমার জাবনে ওর আর কোন ভূমিকা নেই কিম্ত হঠাৎ স্থন স্ব্কিছা মনে পড়ে, মনে পড়ে বিয়ের কথা, বাসরের কথা, কলকাভার কান দিনের কথা, আমার লন্ডন আসার কাহিনী, ওকে স্ব কিছা উজাড় করে। দেবার ৯মাতি থেকে শারা করে কানাডায় ওর বিয়ের কথা, স্চী পারের কাহিনী এবং শেষপ্যাস্ত আমাদের বিক্রেদের দিনের শান্তার জনাশার কথা মনে পড়ে তেখন ওকে সতি অসহা মনে হর। মনে হয় হাতের কাছে একটা রিভলবার শেলে হয়ত ওকে গ্লী মেরেই শেষ করে मिकाश।

আবার আন্নার মন, মান্ধের মন ি বিচিন্ন তা ভেবেও অবাক ইই। রঞ্জন বংগতিল ইসলাম সাহেব বড় ভাল লোক। মৃতদ্দিন লণ্ডনে আছো, এখাটেই থেকো।

ও বোধহয় ভেবেছিল আমি ওর হাবার কিছানিন পরেই ইন্ডিয়ার ফিরে মারো। তাই ইসলাম সাহেবের বাড়ী ছাড়তে বারন করে-ছিল। ও ভারেনি আমি একলা একলাই লন্ডকে থেকে মারো। আমি মান্ডই ইসলাম মারেবের বাড়ী ছাডিন। হাড়তে পারিন। ইসলাম সাহেব পারিসভালী নাসলামান কিন্তু কার্ডান কাল্ডে লাল্ডিন সাক্ষামান কিন্তু মিশি নি। খবরের কাগজ পড়ে পড়ে ওদের সমপ্রের্ক অন্তাহত খারাপ ধারণা কর হান। কোন মতেই, কোন কারণেই ওদের ভাজা বা বঙ্গন্তাবে ভাষতে পারতাম না কিল্প এখনে এসে আমার প্রান্যে ধারণা একেবারে বদ্ধে

আমি কলকাতা থেকে ছিথরো এয়ার-পোটে এসে ল্যান্ড করার পর রম্পন আমাকে এই ইস্লাম সাহেবের বাড়ীতেই নিয়ে এলো। রাড়ীর সামনের ছোট টেরেসে ইসলাম সাহেব স্পরিবারে আন্নাকে অভার্থন। করলেন কিণ্ড সেদিন ঠিক ভালভাবে কয়েক দিন আলাপ-পরিচয় হলো না। পরেই উনি আলাদের দক্তেনকে ভিনারে নেল্ডলের করলেন। ইস্পান সাতেবের বিবিকে একটা রক্ষণশীলা মনে হলেও ওর একটা কথা আমি ভুশতে পারি না। ইসলাম সাহের আর রজন ডুইং রনে হাইপকীর ধোতল নিয়ে বসলে উনি আমাকে ভিডেরে নিয়ে গেলেন। ঘব-সংসারের हे कि हो कि অনেক কথার পর বল্লেন এটা কিন্তু হিশ্বস্তান বা পারিস্তান নর। এখানে আহি তোমার দিদি তহি আহার ছোট বেন আরু ইসলাম সাহেব তোমার বড় ভাই।

ইসলাম সাহেবের বিধি আলার মত কলকাতা বিশ্ববিদালেয়ের সমাবর্তনে যোগদান করার পর ইউনিভাসাল আট গালারীর ক্রিওতে ফ'টা ভোলেন নি কিন্দু উনি সহজ সরলভাবে, আপান মাধারে যভাবে আমাকে আপান করে নিলেন তা দেখে আমি স্টান্ডত হয়ে গোলাম। তবর নান মধ্যে বিশ্বাস করতে পারি নি। তেবে-ছিলাম বেগচ্য় আমাকৈ খুলী করার জনাই নামকে ঐ ক্যাগলো বললেন।

দিনে দিনে, শীত-গ্রীশ্ম-বর্ষা শরং-হেমনত পার হ্বার প্রন, ব্যুক্তাম, জামরী শিক্ষিত্রা জনকে খুশী ক্রার জনা কথা বলি কিন্তু হারা বিশ্ববিদ্যালয়ে বিশ্ব-বিদ্যার হারল পান করেন নি, ভারা শুখা মনের কথা, প্রানের কথা, বিশ্বাসের কথাই বলেন।

ওর আরো একটা কথা আলার মনে হয়। সকাল বেলায় রঞ্জন কানাভা রঞ্জনা হবার পর আমি বিছানাল বাসে বাসেই কাছিলায়। দংপারের দিকে জিসেস ইসলায় এসে আয়াকে অনেক সাক্ষনা বাবার পর বাগলেন, রংগ্ন, হঠো, থাওলা দাঙ

আমি অভাগত দংখের মধ্যেও একট্র মেসে উঠদান। জিল্ঞাসা করলান, এমন-ভাবে প্রভারিত হ্বার পরও রাগ করণ না?

প্রকাশিত হ'ল

নাস' হওয়াটা কি সমাক্ষের চক্ষে অপরাধ ? তারই যথাবথ উত্তর দিক্ষে—

শ্রীঅণিনজিতের

বিলীন বুদবুদ ৫০০

্বাংলা সাহিত্যজ্ঞগতে আলোড়নস্থি কারী অবক্ষয়ী নারী সহাজের উপর একখানি বলিষ্ঠ উপন্যাস)

পরবত বি উপন্যাস

শ্রীত্রশিকাজিত্তর **ডিস্কার ডটরেখার** ম্লান্ড-১০০ প্রকাশাপ-শাণী প্রকাশা। এ-১২৯ ক জেজ শ্রীট মাকেট, কলিকাজা-১২ প্রাণিতস্থান-কথা ও কাহিলী, ১০ ব জিজ নাটাজশী স্টাট, কলিকাজা-১২ সেপ্টাল লাইজেলী: সে ব্যক্ত স্টোকস এবং অন্যন্ত। দিসেস ইসলাম আমার মাথায় হাও বৃলিরে দিতে দিতে বললেন, আমাদের দেশ থেকে আসার পর প্রাম সব প্রেক্রেরই এ রোগ দেখা দেয়। ইসলাম সাহেকও এ রোগে বেশ কিছ্কাল ভূগেছেন। তবে ভাই এসব রোগ বেশাদিন থাকে না, ভাইসম্ভবরও থাকবে না...

আমি হাসলার।

ক্ষাত্য বৃদাছ রুণ; এ রোগ বেশাদিন থাক্ষতে পারে না। ডোমারও এ রাগ থাকতে পারে না। আবার সব ঠিক হয়ে যাবে।'

ঘিসেস ইসলামের কথাটো আমার মারে মারেই মনে হর। ভাবি, সভিটে কি সব ঠিক হয়ে যাবে? কিন্তু কি করে? ভর আন্দের স্থাী ডিভোস' করণেও অতীত ইতিহাস ভো মুছে যাবে না। ভাছাড়া ওর ছেলের কি হবে? এসব প্রান্ধের করাব জানি না, আনক চোটা করেও খ'ুল্কে পাই না। ভব্ মনে হয়। মনে হয় মিসেস ইসলানের কথা সভিচা হলে বেশহয় ভালই হতে।।

রজন চলে যাবার মাসখানেক পরে এক শনিবার সকাশ্রেলায় ইসলাম সাহেব এসে হাজির, বহিনজী!

'আস্ন, আস্ন।' ইসলাম সাহেবকে বসতে দিলাম।

ইসলাম সোফার দসেই বললেন, একটা কথা বলৰ ভাবছিলাম কিণ্ডু.....

আমি হাসলাম, বলনে কি বলবেন। আনত চিশ্তা বা শিধা করার তো কারণ নেই।

রেজিষ্ট্রি বিবাহ অফিস

মোট ১৬ টাকায় রেজিস্টি বিবাহ

এন কে খোষ, জে-পি স্থানেক অফিসার ১১৭, কেশকল সেন স্থাট

কলি-৯, ফোন : ৩৫-৩০৪৮

'আমার মনে হয় এন্ডাবে চুপচাপ বসে না থাকাই ভাল। তাতে শরীর আর মন দঠেই খারাপ হবে!...

'কিন্ত কি করব ভাইসাব?'

শ্বাম সাধারণ মান্ত্র; খুব সাধারণ কাজের ব্যবস্থা আমি করে দিতে পারি কিন্তু...

আবার কিন্তু?'

ইসলাম সাহেব হাসপেন। বলপেন, বহিনজা, আপান বি-এ পাশ করেছেন। এসব সামান্য কাজের কথা বলতেও আমান্ কম্জা লাগে। তবে এ দেশে সব কাজেরই মর্বাদা আছে।

ইসলাম সাহেব হিথরো এরানপোটেই হেভী ডিউটি লর চালান। ওরই চেণ্টার আমি হিথরো এয়ারপোটের ট্রানজিট লাউজে কমজিবিন শুরু ক্রলাম।

রঞ্জন দুমাসের ভাড়া দিরে গিয়েছিল।
এরপর আমি যথন প্রথম উইকের আট
পাউন্ড ভাড়া দিতে গেলান তথন ইলেলার
সাহেব আমাকে ছেট্ট একটা কথা বলেভিলেন, বহনঞা, আমি নিজে প্রভেক
উইকে ফটি এইট পাউন্ড মাইনে পাই।
তারপর তিনজনের কাছ থেকে বাড়ী ভাড়া
পাই। এরপর বহিনজার কাছ থেকে ভাড়া
না নিপেও আমার সংসার ভালভাবেই

এ দেশে কেউ কুপা দেখার না, কেউ গ্রন্তাশাও করে না। তাই সংগ্রু সংগ্রন্ত জান বল্পেন, ডাড়া জা আনি ছেড়ে দেবো না। ভাইসাবের কাছ থেকেই আনি ভাড়া আদার করে নেব।...

'ভাইসানকৈ পাচ্ছেন কোথায়?'

ইসলাম সাহেব হাসেশেন। বলালেন, আমার ভাড়া ফর্নক দেবার ক্ষমতা ভাই-সাবের নেই।

উনি বোধহর ভেবেছিলেন রিজন দ.চার মাসের মধাই ফিরে আসবে কিম্টু ছমাস পরিও যখন ও এলো না তখন থেকে ভড়া নেওরা শরে করলেন। তবে আনি ইচ্ছামত স্বিধা মত ভাড়া দিই, উনি কোনদিন ভাড়ার কথা বলেন না। আমি যখন কমিউনিটি বিলেস্তেশর চাকরি নিরে ব্রাজক্ষেত্রে ছিলার তখনও এ বাড়ী ছাড়ি নি। প্রত্যেক উইক-এন্ডে এসেছি, গেকেছি। এখনও ওবাড়ী ছাড়ি নি। তাছড়ো সাহেবের জন্য ছাড়তে পারি না। তাছড়ো আমি ছাড়তে চাইকেই কি ইস্লাম সাহেবের মেরে স্বারহিয়া বেতে দেবে?

वे वाखी ना छाछार अभव कारण भवाई ভানে। বিজয়া জানে, শ্রীকান্ত জানে, আরো व्यत्नत्क सार्ता। किन्द्र खवाडी ना शासार আরো একটা কারণ আছে। সেকথা কেট জানে না আমিও জানাই না। কিছাতেই ন। আমি পারি বেশী দিন আননদ হ:ব নি। সানদের জোয়ার সংযোগ পাই আসতে না জাসতেই ভাটার এসে গেল। আমার ছেটে সবকে দাবিগটি মর্প্রাণ্ডরের রুক্ষভায় ভরে গেল। মিণ্টি স্মৃতি আমার মনের মধ্যে লাকিয়ে আছে, ভার স্বাকিছাই ঐ দুটি ঘরকে কেন্দ্র করে। ঐ দুটি ছরের স্বাক্**ছ**ুর **মধে**।ই রঞ্জনের একটা গীন্ধ পাই, স্পর্শ তানভেব করি। আমি ভীষণ ভীত। একা একটা ঘরে থাকতে পারি না কিন্তু এই বাড়ীতে একশা থাকতে ভয় করে না। ঘুমের মধ্যে, অবচেত্র অবংথায়, মনে হয় রঞ্জনের বলিষ্ঠ বাহ্ম দ্টোর মধ্যেই তো রয়েছি, ভয় কি? পরেনলো দিনের ঐটাকু মিন্টি স্মাতি, হারিয়ে মাওয়া রজনের উপর ঐণক নিভারতা কিছাতেই বিস্ঞান দিতে পারি না। সাহস হয় না। ভয় লাগে।

আপন মনেই থেসে উঠলাল। চরিত্রহাঁন প্রামার কথা ভাষ্তে ভাষ্তে কোথায় ভেসে চলেছি ?

তাকস্কিট্র মাঁ! সাঁট বেংগটা খ্লাবন
নাট মাক্থানের হ্যান্ড রেণ্টের উপর কন্ই
রেখে একটা বেশা নিবিতৃ হয়ে মিঃ ওয়াল
কথা বলতেই সামনের দিকে তাকিয়ে
দেখি নো স্মানিকং" সাইনের লাল সব্দেত্ত
উধাও হয়ে গেছে। তার মানে পাঁচ-দশ
মিনিট আগেই ফাংকফাট থেকে টেক অফ
করেছি। কতট্তু দ্রুবছই বা পাড়ি দিরেছি!
তথেচ এরই মাধ্য আমার কাবন পথের কত
দ্বিত্ব পথ প্তিরুমা করলাম! কত
ভাল গাঁজ থেকে কত প্রশাস্ত রাজপথ পরিভ্রমণ করলাম।

কোমর থেকে সীট বেশ্ট খলেতে খ্লতে ওয়াল সাহেবের দিকে তাকিরে একট, হাসতে হাসতে ধন্যবাদ জানালাদ্ধ।

মিল সাভিজ্য শ্রে হয়ে লৈছে। এরার হোণ্টেসরা লাণ্ড ট্র নিয়ে আইল দিয়ে হুটাছটি করছেন। মিঃ ওয়াল মুখ টিলে হাসতে হাসতে বললেন, নো মোর ছিমিং! একানি লাণ্ড থেতে হবে।

'আই নো।'



বাই দা থকে, ডু ইউ ইট দটি?' আমি গদভীর হয়ে বললাম, আই এয়াম এ ম্যান-ইটার।

ইণ্ডিয়ানর। ম্যান-ইটার হলেও স্ব শমর ম্টি-ইটার হয় না।'

আর কথা ব্লার অবকাশ শেলাম না। এরার হোপ্টেস দরটো শাল টো হাতে করে একটা ঝার্কি পড়ে আমাকে জিজ্ঞাসা করলেন, একস্কিউজ মী ম্যাম। ডেজ অর নন-ডেজা?

আমি উত্তর দেবার আগেই মিঃ ওয়াল বললেন সীইজ ও মান-ইটার।

এয়ার হোন্টেস হাসতে হাসতে খবে ভাল করে আমাকে একবার দেখে নিয়ে লাল দিয়ে গেলেন।

লাক্য থেতে থেতে গিঃ ওয়ান বললেন, এই লাকের লোভেই আমি স্ব সময় এয়ার ইতিহয়া প্রেফার করি।

তান বিহাফ অফ সিকস হানড়েও এনত ফিফাট মিলিয়ন পিপল অফ ইণ্ডিয়া আমি কি আপুনাকে ধন্যবাদ স্থানাব?

'আই ওক ডিস্লাইক দ্যাট!'

দ্যুক্তনাই হাসি। হাসতে ভালই লাগে।
বরাবর। স্কুলে, কলেজে, কণ্যুবাণধব;
আজানী-স্বজন মহলে আমার হাসির খ্যাতি
ছিল ও আছে। বিজয়া তো বলে, ভোমাকে
হাসতে দেখলে দনেই হয় না ভোমার মনের
মধাে কোন দৃঃখ জনে আছে। এই হাসির
জনাই ফাদার জোনস বিজয়ার অনুরোধে
অামাকে কমিউনিটি রিলেসাসে আফিসে
ভাকরি দিরেছিলেন। উনি বলেছিলেন, মাই
চাইক্ড, তুমি বিজয়ার বংশ ভারপর এমন
জাণ খ্লে হাসতে পারে। ইউ মাণ্ট গ্রে এ

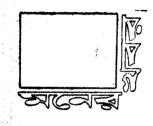
ইংরেজদের অনেক দোষ কিল্ড এমন কিছা গণে আছে যা আমাদের মধ্যে দলেভ। ফাদার জোন্স আসামের দাজিশিলং এর পাহাডে আনেক কাল কাটিয়েভেন। বিজয়া যখন দাজি লিং'এর দকলে পড়ে তখন থেকেই ফাদার জোনস'এব সংগ্রে ওর পরিচয়। তারপর লেক ডিণ্টিকট থেকে লন্ডন ফেরার পথে ট্রেন দ্রজনের আবার দেখা হয়। বয়স হলেও চপ করে বঙ্গে থাকতে পারেন না ফাদার জোনস। ইয়ক শায়ারের লোক। লীডস'র্এ লেখাপড়া করেছেন। ছোটু একটা ফার্ম আর রেজ রিলেসাল্সের কাজ করেই ব্যুড়ো নিজেকে বাস্ত রেপেছন। কোন দরকার ছিল না কিম্ত তব্ব এশিয়া-আফ্রিকা-গ্রেষ্ট ইন্ডিজের কালো মান্যগ্লোর কলাবের क्रमा किए ना करत भाग्छि भाग ना। এই ফাদার জোলস্তার জনাই আমি হিথারো এহারপোর্টের টানজিট লাউজের কাজ ছেডে রাজ্যকার্ড কমিউনিটি রিলেসাল্স অফিসে চাকরি নিয়ে লব্ডন ছাডলাম।

and the second of the second

(事**和**考2)

সদ্য প্রকাশিত হ'ল ঃ কুশান্ত বন্দ্যোপাধ্যায়-এর রহস্য উপন্যাস ধ্বের ধোঁয়ায় b. স্কুনীল গণেগাপাধ্যায় -এর নতন উপন্যাস সামনে আডালে B Œ. অমিতাভ দাশগ্রুত -এর নতুন গ্রন্থ त्मरे लाका 9 অসীমানন্দ মহারাজ-এর আলোড়ন স্থিকারী উপন্যাস वात्वधः প্রণব বন্দ্যোপাধ্যায় -এর নতুন উপন্যাস সাজঘরের নায়িকা চিরক্রট ৭ নদীর ঠিকানা নিশাচর-এর নত ন রহস্য উপন্যাস জীবন রহস্য রাত্তি গভীরে একটি খুনের কাহিনী **जिघाश्**मा ७ क्रांट्रीनका অনিল রায়-এর আজকের উপন্যাস হটলাইন হটকার ব্যাক সেপ্টেম্বর ৭ লগ্ন প্রহর গী দ্য মোপাসাঁ-র আলোড়ন স্থিকারী উপন্যাস "বেল-আমি"র অনুবাদ এক নায়ক অনেক না অন্বাদক ঃ ইন্দ্ৰভূষণ দাস **b**.

জ্যোতি প্রকাশন ॥ ২এ নবীন কুণ্ডু লেন ॥ কলিক।তা-৯



মার্নাসক রোগ-(৩৯)

স্পারেক রকমের আর্বোলক বালু রে,গোর **উদাহরণ দিয়ে এই রো**লের আলোচনা শেষ कत्व। जारशत वाद्धारम উपाइतन स्तल्सा হরেছে ভাতে দেখা গেছে এক এক রক্ষানর ষ্টিন্তা রোগার মনকে বেশ কিছুদিনের জ্ন্য এমনকি করেক মাস বা কয়েক বছরের জন্য প**ী**ডিভ করতে থাকে। ভারপরে সে চিন্তা ক্রয়ে কমে আসতে আসতে এক সময় তা রোগীব মন থেকে দুর হয়ে বায়। কিল্ড সে চিন্ত। প্র হলেও আবার আর এক চিম্ভা এসে **ভাকে চেপে ধরে অস্বাস্ত ঘটাতে থাকে।** অনেকেই আছেন যাদের মধ্যে এই রকম রোগ লক্ষণ কিছু কম মানুষ দেখা দেৱ। বিশেষ এক একটা কথা বহুবার করে ভাদের মনে আনিতে থাকে। ভাবোর এক সময় তা থেমে হার তার জায়গার আন্য এক সময় আর একটা **हिन्छ। अ**नामाञ्जल कतरण थारक। किञ्चारको ্ৰেন কম আর থামতে চায় না। মান্ত্রের দেখা অনেকেই পেয়েছেন। একচ **লক্ষ্য রেখে চললে সকলের পক্ষেই** এই সক্ষণ কিছু কিছু লোকের মধ্যে দেখতে পাওয়া किन हरव ना।

এখন আমরা সে রকম আবেশিক বায়্ব ক্ষণ বলব জারও স্বভাব একই। অপাত কেই ক্ষণ বারে বারে মন্দ্র আন্দে। কেবল প্রক্রেক এই বে, এ রোগাঁর ক্ষেত্রে একই কথা বারেক আন্দে আরে, অথবা বিবেল সম্ম ক্রিকেল রক্তমে আরে আই পক্ষণ হয়ত ক্রালা ক্রাকিন ধরে চলতে থাকে। কিছুতেই ক্রালা ক্রাকিন ধরে চলতে থাকে। কিছুতেই ক্রাক্রেক কে ধরনেক চিত্তা ব্যার করতে পারে কর্, রোলা মন্দ্র মনে এক এক সময় ক্লাত হল্পে প্রত্য, নিজেল মন্দেই বলে আর পারি না

কিশ্ত কিছাতেই মন থেকে সে চিম্তা দরে করতে পারে না। বেশ করেক বছর আগে এক হয়েছিল। খিলিছত প্রাব্দের সংখ্যা দৈখা काशककान वाम नाना शक्य शक्छ। कि कथाइ আর এক সময় দশভ্জার নাম উল্লেখ করি। যে যাবক্তির কথা বল্ছিলাম সে তৎক্ষণাৎ বলে উঠলো 'আঃ আপনি এটা কি করলেন!' আমি তার কথা ব্রুতে না পেরে তাকেই প্রথম করি -সে কি বলতে চায়। সে বলে আপুনি আবার এই নামটা করতে গেলেন কেন?' আমি তখনও ব্যুমতে পারিনি ঐ নাম করাতে আপত্তির কার্ণ কি থাকতে পারে। মনে সন্দেহ হয়েছিল, নিশ্চর কিছু একটা এ মায়ের সংগ্রে ছাড়িত আছে যার ফলে ওর এউ আপত্তি উঠেছে। আবার তাকে প্রশ্ন করতে করতে শেষ পর্যানত জানতে পারা গেল—প্রতি-দিন বিছানায় শ্বের সে করেকটি দেব দেবীর माध मान मान खेकात्रण कात आत मारे गाउन তাদের রূপত কল্পনা করে থাকে। প্রথমতঃ দার্গানাম মনে আসতো। তারপর এই **নাগ**া-নাম বেশ কয়েকবার করে মনে আনতে হতো। আরত পরে নামের সংগ্য সংগ্য দুর্গণ প্রতিমার ছবি মনে আনতে হতে লাগলো। যতক্ষণ এতে তার মন তেওল না হতো ততক্ষণ বাবে বাবে এই প্রক্রিয়া মনে চলতে থাকতো। তারপরে কবে এক সময় শিব প্রথেশ কুফ ইত্যাদি করে পর-পর নয়টি দেব দেবীর নাম ভার মনে এসে ভাটেছে। আমার সেই দশভুজা নাম বলাব সংখ্যে সংখ্যে তার মনে হয়েছে আর একটা নাম তার তালিকায় যুক্ত হয়ে গেল। আর সে নাম সে ভুলতে পারবে না-তখন থেকে রোঞ ার অন্যান্য দেবদেবীর নামের তালিকার সংগ্ৰেই দশভ্জা নাম্ত নিতে হবে। তানা হলে সে স্বসিত পাবে না। কিছু দিন পরে তার সঙ্গে আবার অনার দেখা হয়ে ছিল। সকলের আড়ালে ডেকে এনে ভাকে জিভেস করে জেনেছি—তার আগের সন্দেত্রই ঠিক হয়ে গেছে। তার তালিকা_র দশভজার নাম এসে গেছে। এখন রোজ তাকে সে নাম নিতে হয়। আরও জেনেছি যে কেনে দেবতার পরে কোন দেবতার নাম মনে আসেবে তার একটা ক্রম আছে। যুদি তানাহয় আবার প্রথম থেকে স্ব্রু করতে হয়। প্রায়ই কোনও না কোনও ভূল হয় আথবা তার মনে সন্দেহ হয় যে, ঠিকমত ক্রম রক্ষা নাম নেওয়া হয়নি-তখন আবার তাকে সে নাম বলাতে হয় আরু ভাদের রূপে স্তেগ স্থেগ তার মনে আনতে হয়। যদি সে ছবি স্পল্ট না হয় তবে আবার মুক্তিল বাধে। কেন শেষ্ট হল না—তাই নিয়ে কোথাও ভুল হয়েছে মনে করে আবার মনে মনে প্রথম থেকে তার সেই তালিকামত দেব দেবীর রূপ একের পর এক আনতে থাকে। এক একদিন এমনও নাকি হয় যে, শোবার পরে দ্তিন ঘণ্টা সময় কেটে যায় তার সে মানসিক চিন্তা তব্য শেষ হতে চায়ুনা। কখনও বা বিছানা ছেড়ে উঠে মাথা হাত পা ভাল করে ধুয়ে এসে আবার শাণ্ড মনে ধীরে আচেত নাম মনে জানতে থাকে। মনে যখন বাধা, সংস্কৃত ইত্যাদি বোধ

क्वांशरक बारक रत्र हक्का दर्ख शास्त्र। अधर्माक অভিনার চয়ে ৫ পাশ ওপাশ না হয় একবরে ষদা একবার শোওয়া এই করে ক্রান্ড হয়ে প্রভা এ সবে কীবে লাভ হয় ভা লে জানে না-কিন্ত ভাবনা তাকে ছাডে না। সে নির্-পাল হয়ে এই মানসিক অশান্তি ভোগ করতে থাকে। বাড়ীর লোক ভাকে শোবার আগে भाक्तित घात वरम धक्रमान काम काम করতে বলে কিতু সে ভা পেরে ওঠে মা। ভার মনে ঐ তালিকার নামই কেবল আসতে থাকে। প্রায় ১৬ ১১৭ বছর পরে ভার সজে আবার দেখা। চেহারা অনেক পালটে গেছে। রোগা ক্ষেত্র দড়ির মত পাক খাওয়া, রুপ্ল ক্লীখ্ট हिराता हत्त्रत्ह—हिंग्थ शटक बटन इंगटक-কেমন মনে হার সে চোখ দিরে সে বেব বাইরের কিছু দেখতে পাছে না-কেমন আতংকপ্রস্ত ভাব প্রকাশ পাচ্ছে। জামা কাপড়েব দিকে কোনও নজর নেই। আলুখালা পরিক্রদ - এলোমেলো চলন ভঙাী। অনেক कथा रम —সেই একই অবস্থা—একই চিন্তা তাকে পাগল করে দিয়েছে। আগে খালি রাচ শোবার সময় মনে আসত. এখন নাকি বিশেষ কাজে বাস্ত থাকলেও হঠাৎ কখনও সেই তালিকার নাম মনে এসে তাকে ক্রেপিয়ে তেলে। কাজে মন পিতে পারে না। মন থেকে সে চিন্তা দরে করে দেবার জনে মাঝে মাঝে জোরে মাথা কাকাতে থাকে, কখনও বা দ্-হাতে মাথা থাপাতে থাকে। তবু সব স্ময় চিশ্তা থামে না। এই এক জনালায় ভাব জীবনের সর সূখ আনন্দ নদ্ট হয়ে গেছে। বাড়ীর অবস্থা ভাল, পারিবারিক জীবনেও অন্য কোনও অস্থান কিছু নেই কিন্তু ঐ এক চিশ্চা, সে 💛 তার দেকের সব রস শাুষে নিচের, সং শাণিত লোপ করেছে। তার আর ৰ্ণাচ্যাব ইচ্ছে নেই। দু একবার নাকি আগ্রহত্তঃ গুরবার চেন্টার কথাও ভেবে ঠিক করোছল। স্ফল হতে পারেনি। এটা যে মানসিক রোগ তা সে এখন ব্রুতে পারে কিন্তু চিকিৎসা করিয়ে আর কিছ্র হবে না--এ তার নিয়তি, ভাগা, কর্মল ইত্যাদি বলে সে যত্ত্বণা নিয়েই দিন কাটায়। এই সংগ্ৰে একটা কথা বলে রাখা ভাল। এই সব রোগী একদিক থেকে মানসিক হান্দ্রণা বেমন স্ভোগ करत जारतकिष्टक द भन्नरनन ব্যর্ণা ভোগ করতেও চায়। কথাটা বোধহয় বড়ই অবা-দত্তব মনে হতে পারে। কিন্তু ভবু কথাটা স্ভা। অনেকেরই নিজ্ঞানে বিশেষ রকমের অন্যায় বা পাপ বোধ থাকন্তে পারে। সেই পাপ বোধ হাদ জাবিনের কোনও এক সময় অন্য কোনও কারণে নাড়া খেয়ে প্রবল হরে ওঠে, তবে সে পাপবোধের প্রারশ্চিত্ব ছিলেবে শাসিত পাবার ইচ্ছা জালে। এই শাস্তির ইচ্ছা থেকেই মান্য রোগ ভোগ করতে চার। হয়ত বা নিজের অজানেত, কখনও বা জেনে ব্ৰেট সে **प्रथकनो** निरंकत भार[्]त कम[्]कन वरन दरत

নিয়ে শাস্তি পেতে থাকে। কেবল বে এই আবেশিক বায়া রোগের ক্ষেতেই একথা সভা তা নয়। তান্য অনেক মান্সিক চয়ত সব নান-সিক রোগ, এমন কি শারীরিক , রোগের বেলাতেও এই রক্ষের মানসিক্তা করতে দেখা যায়। এর ঠিক বিপরীত রক্ষেত্র রোগীদের মধ্যেও এই মানসিকতা করছে এমন দেখতে পাওয়া বায়। সামান কিছু, হলেই অতিমানায় উৎকঠা দেখা দেয় আর ঘটা করে চিকিৎসা করতে উঠে পড়ে লেগে হায়। সামানা শারীরিক ক্যানি-তেই মনে মনে অভিথর হয়ে ওঠে এখন রোগী নেহাৎ কম নেই। নিজের মনে যে পাপবোধ मृत्काता शारक-अमृत्य रता एम अमृ्यक পাপের শাস্তি বলে মনে করে বলেই, নিজে যে পাপ^{ণু} ন্_{য়} এইটা নিজের কাছে, **অ**প্রের কাছেও প্রমাণিত করবার জনোই যেন চট-পট রোগ সারাতে তৎপর হয়ে ওঠে। অবশা ইচ্ছে করে রোগ ভোগ কারাটা কখনই মান সিক স্মুখ্যভার পরিচায়ক নয়। ভেমনই মোগের নামে আঁংকে ওঠাটাও স**ুস্থ**তার লক্ষণ নয়।পাপবোধ ল**ু**কোতে চাইলে, বা ল্কোনো আছে যা তা বাইরে প্রকাশ পাবার বয়ান ব্ৰুপ্লেই তাকে বিশেষ করে চাপা দেবার চেন্টার নানা রক্ষ প্রক্রিয়া মনে চলতে থাকে। দেখা মাজে রোগ ভোগ করবার ইঞে এবং রোগ সারানোর জন্য বিশেষ তৎপরতার -এই দুয়ের মধেই লুকোনো পাপ বোধ কাজ করতে পারে। একটাতে পাপের শাসিত হিসেবে মেন্বে নেওয়া হয় অপরটাতে পাছে নিজের পাপ বোধ ধরা পড়ে যায় দেই ভার-নায় যেন মন ঢাকা দেবার চেণ্টা স্লাতে

নিজ্ঞান মনের নিশেষ কোনও ভোগ-ব্যক্তির পরিপরেশের চাপ ও তার 🕆 রে[ধের চেটা এই দুই মান্স কিয়ার সামজস্পেরণ মীমাংসা কিছু পদি মন খণুকো না পায়, তুরে সেই সমসায়ে পড়ে যে বিকৃত সমাধ্যনের পথে তখন মন চুগতে থাকে—ভাকেই নানসিক রোগ বলা যায়। আর সেই বিকৃত চলার পথে সে সব চিন্তা বা কিয়াদি মন করে চলে, তাকেই ফার্নসিক রোগ্য লক্ষণ বলা হয়।—একথা, বহ' আগে এই স্ব আলোচনার প্রথম ভাগে মনের গঠন ও ক্রিয়া সম্বন্ধে বলতে নিয়ে বঙ্গা হয়েছে যে মনের রোগ হলেই যে প**ু**ঝা মনটাই অস্তেথ হয়ে যায়, সে মন আর শৌনও চিশ্তা, বিচার ইত্যাদি বা কোনও মান্ত্রিক ক্রিয়াই যে স্কে আর দশজনের মত করতে পারে না তা নয়।—মনের বংগু ক্রিয়া ও প্রক-রবের মধ্যে যে বিশেষ ক্রিয়া প্রকরণের মধ্যে রোগ দেখা দেয় মূলতঃ কেবল সেই শানসিক ক্তিয়া সংখ্য যুক্ত বিষয়েই রোগ লক্ষণ সাধার-শত দেখা দিয়ে থাকে। তবে একপাও ঠিক যে কেনও কিশেন মানসিক ক্লিয়া প্রকরণে যদি রোগ দেখা দের তবে তার সপো বৃদ্ধ বা আনুবাঞ্চাক ভিয়াদিতেও কম বেশী রোগ দুখলী দেখা দিতে পারে। বিশেব ক্ষেত্রে এক প্রকরণ থেকে মনের অনা প্রকরণে রোগ ক্ষণ প্রকাবিত হতে বা সন্ধালিত হতেও দেখা হায়। এমনও হর বে প্রথম অবস্থার বে রোগ ক্ষণ নিরে রোগ দেখা দের ক্ষমে তা বদলে গিরে অনা ক্ষণ যুক্ত এক ভিন্ন মানিসিক রোগে তা রুশা-তরিত হয়ে বার। এ সন গেল মানিসিক রোগ সম্বন্ধে সাধারণ ঘু একটি কথা। সাবার আমাদের আলোচ্চা বিকরে ফিরে আলা

আবেশিক বায়া রেগের উদাহরণ আর বেশী দিয়ে লাভ নেই। আর একটি রোগীর কথা বলে এ আলোচনা শেষ করব।

এক কলেজ পাশ করা শিক্ষিতা সুবতী-বয়স ২৩।২৪ বংসর হবে। মধ্যবিত্ত পরি-বারের মেরে। মোটাস্টি ছোট সুখী পরিবার। এম-এ পরীকার দু ডিন মাস আলে আকাশ-বাণীতে কলকাতার আবজ'না জন্মে উঠে কী অস্বাস্থাকর নোংরা পরিবেশের স্থিট সংয়তে তা নিয়ে কিছু থবর প্রচারিত হয়। প্রীক্ষার পড়া তৈরী করতে করতে রোগটির কানে সে খবর আমে। তখন কিছা তার মনে হয়ান। কলকাতার নোংরা পথে সে তে কত্রিন কত-বার চলাফেরা করেছে তাতে ন্তন আর কী আছে। সে আবার পড়ায় মন দেয়। ইঠাৎ তার মনে হল ঐ স্ব নোংরা যদি ভার গায়ে এসে লাগে, নাকে মুখে চুকে যায়, বাতাস তো দ্যিত ৷ ভাতেও ভখন ভার কিছা আব মনে হয়নি। ৫তদিন যদি ওতে কিছু না হয়ে থাকে ভবে আর ভাবনার কি আছে। আছে তে। আছে। কি আর হচ্ছে। সেদিনের মত পড়া ছয়ে গেল। স্বই হ্বাভাবিকভাবেই **চলল।** ক দিন পরে রাম্ভায় চলতে গিয়ে মনে হলা--নাজ্ঞানি কতুনোংবা নাকে দিয়ে তুকে জাগছে। রুখে এই বোপটা 5(163) একট্র একট্র করে। কাড়তে পাকে। নোংরা कषाने भर्या भर्याहै जात भरन जाभरक भारक। জোর করে সে ভাড়াজে চায়, এক এক সময় সফল হয় আনার কখনও সে চিম্ভাটা শড়াতে পারে না। বেশ কিছ্মুক্ষণ তার মনে ঘুরপাক त्थरक भार**क। राम क्**रावरात रहको करत स्मारता রয়েছে তা সকলের নাকেই হাদ লেকে তবে ভাগ ও ্ডুকুৰে--ভাতে হয়েছে কি**। কী** হে इस्त इम् क्या जात गरा अगरी करत जात জাসে কিছা। কেবলই মনে হাতে পাকে ारता भागभ, त्नारता काल ना, क्नारती নোংরা। পড়াশোনায় বাধা পড়তে 朝に本 1 সময়ে অসময়ে ঐ এক কথা মনে জানে নেংরা। কোপায় কোনটা নোংরা জ্ঞার ভাতে কী ভার হবে সে স্ব কথা ভার কিছু মনে আসে না। নােরা হলেই থারাপ। কী খারাপ ডা ঠিক জানে না। বিভার কিবেচনা করলো বলতে পারে ভাস্থ করতে পাবে নাংরা তো ভাল না। ইত্যাদি সাল্লান্য একটা

जरनक क्रिडोश प्रदेश कारण के ब ষ্ঠা ভার সাধারদুভ তার মনে আঙ্গে না। কেবলত নান হয় বিশ্বিশ ভার পথ চলা ভাতে বংশ হরান, কিংড় পঞ্চলতে ফুল্ট্ড বহুবার ঐ নোংরা भाग्महोडे महा अस्य लाक जानवना करत प्रशा এক এক সময় এভ বেডে সায় যে রাস্থায় গাড়ে চলাচলের দিকে ভার খেয়ালাই থাকে না। রাস্তায় বভ রক্ষের বিশ্ব ঘটতে ঘটতে অনোর সাহাযো সে কয়েক বার বেশ্চে গেছে। এক সময় নিজেই বুকতে পারল এটা তার মনের ব্যারাম। বাড়ীতে বলতে লংকা भाग-किन्द किन्द्रामिन तरहा अरहा स्मारक भारक বলে চিকিৎসার ব্যবস্থা করিছে মেহ। জে বছর ভার এম-এ পরীক্ষা দেওলা চল না এই মনের তাস্বস্তি নিয়ে কোনও জিকেই তার পক্ষে হনোনিবেশ করা সভছ চর হৈ। প্রায় এক বংসর চিকিৎসা করালোর পর আর মনের স্বস্থিত ফিরে আসে। পরীক্ষা **লিকে** পাশ করেছে। কয়েক মাস আনো ভার বিছে হারছে। এখন আরু মনের সে সর দাশিচালা কিছা নেট। সাথে মধ্যে এখনত সে কিছা কথা বলতে আসে। ভাষা **আছে**। त्म हेक्का **स्टा**रक बारत बारत বাড়ো তাকে সে শারাপ বলে অবদ্যিত করে বাশতে চেণ্টা করে-বিভাটা সফলতাও লাভ করে-ছিল। পরীক্ষার আলে মনে প্রক্রোভ উৎকাঠা যথা বেশী বেড়ে গেল তথন ভার আগেকরে সাজানো বাণ—আংশিক্ ভে:গগ নোংরা শনদটাকে আস্তায় করে ভাকে **স্থানত** করে তলেছে। সে আরও বেশী করে ভার অবদ্ধিত কাম্নাকে দমন ক্রমার বারে বাতে নোংয়া শব্দটা মনে জালিয়ে ভরে रमने आतुर भूडक'ला निरात निराम**्त तना** করতে ফেন্টা করেছিল। মুনঃসমীক্ষ্যুলর করে ভার ভাবদ্যিত ইচ্ছা **ক্রমে ভার কাছে প্রকাশ** পেল, তথন ভার মনের জাম্থরতা বেছে গিয়েছিল। তারপরে তার ধ্বা**ভা**রিক স্বরূপ গুড় সে অন্ত্র করতে পারকো, **এও** পে সেই ব্রিচর দারাপ বাবে নিজের **পঞ** বিচার করে বেছে নিছে পারল ততই স্তার সংস্থাত। ফিরে একো। আকান। শাতুই বে**ল্**ট ভয়াবত, শগ্রার স্বর**্প কেনে তার উপায়ার** বাবস্থা করে আন্ধরক্ষা, আত্ম মিশিচ্নততা গড়ে তুলতে পাললে মানসিক স্বাস্থ্য ফিন্তে আটুস বজায় পাকে।

- जन्म जिरह



সেই কি

শ্রেষ্ণ কেড়াতে ক্রেছিলাম চাকুলিরার । ঝাড়গ্রাম গিথান ক্রিডেয় এড়িয়ে থিরিমাটির কেয়াল তেলিল হঠাও হটাও বাড়ি আর শানত বনবেখা পেরিয়ে কাঁমে রুখায়াক ভংতোর রাজিকালাল খ্লো নিয়ে একে উঠেছিলাম পার্শাকক ওয়াক'স-এর ছিমছাম ডাক্ষাংলোর। চৌকিলারের হাজে রালা মার্গার ঝোলাভাত থেরে ডক্তপোবের ওপরে বংগ তুথোড় মেজাজে চামিনার ধরিয়েছি, দর্শকার একটি দীঘাছারা এসে পড়্জা। বাজ্যাই কলা জেগো উঠল, শভতরে অসেতে পারি।

আমার উদ্ধরের মপেক্ষা না করেই বিশদ্দা রক্ষের লম্বা এক মাঝবয়সী ভল্তসাক চ্যুক্ত পড়লেন ঘরের ভেত্র। কদম-ছটি চুলা চৌকো চোয়াল, বিশাল খাঁচা শ্রীরের, প্রনে হাকাশার্ট ও থয়েরি টাউজাসালন ব মিলিরে বেশ দশাসই চেহারার মালিক। বাড়াসী কিন্তু কথায় এক অভ্তুত ধরনের হিন্দী টান আছে। চেলার দখল করে কললোন আমার নাম বিমান মিতির। আখান সেবাই আমাকে দ্ওরাইখাবা বল চেনে। গাঁরে গণ্ডের। ব্যাপাক পর বেলাক, আকা বিলাক করে পোট চালাই আর শিকিটা আলাপ করতে একা মেলা আছেন আই নেধে খানিকটা আলাপ করতে একামা। লক্ষা করনাম বিমানবাব্র ওপ্রের প্রির মাঝখানের একটি দাঁত সোনা দিয়ে বাধানো।

জনগলৈ জনায়াদে কথা বলতে পারেন ভর্টলাক। কথা পেচা ভাঁর পেশা হলেও সংলাপকে সোটাম্টি শিলেপ চেলে সাজানোর দলভি গণে ভার রুখ্য একটা ওক্ষের ফার্মের কানভাসার তিনি—ভাঁর এলাকা হল বিহাদের দেহাত এলাকা-গলো, কোন-ঘুগচি। বউ ছেলেপ্রেন কলকাভায় থাকে ওপ্র সারাজীবন ভিনাদিশি ছাট-মাঠ-জুগল শোকাশ্যুকি করেই গোলা

প্রায়োশ্যাণ কলকাতা ছেছে সুট করে বেরিয়ে প্রভেছিলান কাছে পিঠে ফারা জায়গায় ব্রুক ভরে দল নের বলে। দ্দিনেই জামে গেল বিমানবাবার সংগা। ভিনা দিনের দিন কাকভোবে কোখেকে এক জাপ জাটিয়ে এংন ভিনি বলগোন—চলনে ধলভূম-গড় ছারে আসি।

অফারান অরণের পেটকেটে আঠার উনিশ মাইলবাপী রাদতা যেন লহমার উলিরে ফরেন্ট ডিপার্টামটের বাংলাের একে উঠলাম। বিশ্রাম নিজি বিমানবাবা ক্যেণেকে নিজের হাতে বরে নিয়ে এলেন রেডির তেলে জাজা আদ ডজন সিংগাড়া। তাঁর পেজনে শেছনে সিটকে হেবার এক ভোকর। কলাইয়ের গেলামে করে দশোর ধোঁরা ওগড়ালাে চা রেখে গেল। শালাস্সান আর প্রহারীর মত দশ্ভামান অসংখা কাজা বাদামের গাভের মাথাার আদা রিবন পড়াতে পড়াতে স্থিন মামা যখন পটে গেলেন কিছা দাল ছিবিত ভাজা শাল ছেবিতলা অবশ করা গলের। কিছা মার ডগামেশে কেজাজ এসে আদাশিন হলেন। বলামের বিমানবাবা ডগামেশে কেজাজে এসে আদাশিন হলেন। বলাকে ছখালি মাটির গেলাম ও এক বাডিল চুটা বের করে চেলিক বিভিন্নে নিয়ে ফের বলালেন শাভুজা শালা করা

এমনিভেই বেশি কথা বলেন বিমানবাবা, সুপাত্তর পোট পুজতেই একেবারে ভক্তজিরে বাকে রলে থান বাজ—তাই বেরোভি থাকল। পোথবাজের মত খানের নানা ভবে গোল ভার রজিম মাণ অসুন্তর্গীন আবেংগ নলে যোন লাল্যনে ভারি বিচিত জীবনের ক্তিনী। কি করেননি বিমানবাবা। ইটি

খালার তদারকৈ করেছেন বেণাচিতিতে, ভুয়াসে নিয়েছেন গ্রন্থ কাণার ইজারাদারের কাজ ধণাভূমণার কথাকটার করেছেন বেখা কয়েক বছর, রাত্য বানানোর ক'জে কামিন খাটিরেছেন সাওতাল প্রগণার মহলায় মহলায় শেবদেশ ওবুধ ফ্রি করে ছারে বেডাজেন সারা বিহার। প্রীপার পরিবারকে কখনো কাজের জারগায় আনেন্দি, তাঁর ছেলেনেয়েরা বছরে এক-আধবার জোঁকে চম'চকে দেখতে পায়। ফলে বিাননবাব, ও তার স্বজনদের মধ্যে এক দ্রুছের অর্ধ পরিচয়ের প্রিচল পাকাপাকিভাবে उद्भाव-त्र यात्र भाव देखकारत द्वापिकः वान-काशाता-भाषा-বিপথে নানা বড়-স্বাপটার মধ্যে এতগ্লো বছর কাটিয়ে এক অদ্ভূত ধরনের ভারোলোনস "থায়ী হরে আসন গেডেছে हाल-हलन करिनमहाश्वास । योज्य कन्य नियन्तरण विश्वामी नन িব্যানবাৰ, ৰদিও ঠাসব্দোট কাজের ফাকে ফাকে কলকাতায় গিয়ে এ যাবত আটটি সম্তান উপহার দিয়ে এসেছেন শ্রীকে তব্য সদরে দেহাতে অক্সান্ত শক্ষতায় নারী-মাগ্রা চালিয়ে যাওয়াটা তাঁর সবচেয়ে বড নেশা 'মেইয়াছেলে'—বেশ রসিয়ে রসিয়ে উচ্চারণ করেন তিনি। শব্দটির গা ১৮টে চেটে। আর সারা। ধলভূমগড়ে সাঁওতাল কামিনরা নাকি তাকে ডাকতই 'বোতলবাব' বলে।

রতি ঘন হয়ে আসছিল। বাংলার আলা হাঁরের পালকাটা দাতে ছড়াছিল তাঁর ওপরের পার্টির খাঁটি সোনা বসানো দাতে। হঠাং আখার কাঁথের ওপরে একটা চাপড় মেরে বললেন ইয়ংমান ডোলট মারি বি জি আজে এয়ার। কেন, বিশ্বে করেও আপানি নিজেই তো যথেক জি আছেন— গলায় কোঁতুক মিশিরে বললাম। উত্তর দিলেন না বিমানবারা। বেশ খানিকক্ষণ গমে মেরে বসে রইজেন। তারপর মাথা নাইয়ে আতে আতে আতে লাগলেন দেখান, জাঁবনে কম প্রসার রোজগার করিনি আমি। টাকা আখার হাতের মরালা বৈ নর! মথনাই স্থোগ পাই, বাড়িতে একতার টাকা পাঠাই। তাতে বেশ ভালোক্সর ঠিবাট বাব্যানি বলায় রেগে গিলি ছেলেমেরেন্দর চলে যায়। করেক বছর আলে একটা ভক্ষণ গাড়ি কিনি সেটি এখন আবার জ্যোষ্ঠ বড়াটিছ চালায়। ওপরে ওপরে ভারি ভিসেন্ট স্থানিব লোকেতা



পরা মুখে রং বৃলিয়ে প্রায় সংশোর মারকেটিং এ যান, পড় মেয়েদুটি টিংকার জান্ম সেখানে যার বেল-বটম দুলিয়ে, ছেলেরা
একেবারে মডেল সেডেলিট-ফোর ৷ আমি বাড়ি গেলে ওদের
অপ্রতিত্ব শেষ থাকে না বেল চীনে মাটির বাসনের দোকানে
এক বুনো রাজ এসে চলুক পড়েছে। ফোন, ফিলে রেকড
শেলারা কক্ষকে জুইং রাম থেকেও যেন শব্দ উঠতে থাকে
ছুমি রাও। চলে বাও। দু-চারদিন থেকেই ফিরে জালি।
আবার কাজে ঝালিয়ে পড়ি। দিন বার খাট্নিতে সংশ্য
মহারার নেলায় রাভ দেহাত কুপাঞ্চতে ঝাপড়িতে। তাই
বলছিলায়—ডড়াট মারি বি ফি আল্ক এরার।

—অ্মিতাভ দাশগ্ৰুত

ত্রিকী আন্তালন বাচাচ্চি উপন্যাস

[প্রে প্রকাশিতের পর]

কিছুতেই ঘ্য স্বাছিল না। অথচ অনা দিনের তুলনায় সকাল সকাল আলো নিভিয়েছে তপতী।

আর আলো জেনলে শথে শুধু বসে থেকেই বা লাভ কি যদি ছাপা অক্ষরের একটা লাইনেও দক্তক্ষুট করতে না পারং বার। কেনে কথাই যদি মাথায় না চোকে। বতুবার পড়তে আরমভ করে আধু মিনিটও বুলি পার হয় না ট্রামাড়ীর মত যাত্তব পাইনাছার হয়ে থেমে যায়। কথন প্রেম পড়ে অনা কথা ভাবতে শ্রা করে দেয় নিজেরই থেয়াল থাকে না।

শোবার ঘরেই তপতীর রাতের পূড়ার টেবিল। সেখানে বসে অনেক রাত অর্বাধ পড়াশোনা করে ক্লান্ড লাগলে সামানা সময়ের জন্য পাশের আক্রিয়ামের দিকে তাকিয়ে মংসা কেলি দেখে। বা সেলে। বিছানায় চলে বায়। শিয়রে ঠিক খাটের মাপে একটা ছোটু টোবল আছে তার উল্টে পড়া প্রমন্ত ওপরে একটা রঙীন টেবিল লাম্প জার খানকয়েক গলেপর বই সব সময় সাজানো থাকে। দামী কাঠের বিভলভিং उन्हार् শেলফে ইংরেজি বাংলা আরও কিছা সংগ্রহ ররেছে হাত বাড়ালেই পেতে পারে।

বেডলাইচ টিলে সিলিং-এর আ্লো মিডিয়ে টেবল বাতি জনালিয়ে নিয়ে তথান গলেশর বই পড়ে। বই মানে গলেশব বই তপতীর একমাত জনিবার্য নেশা। বই পড়তে পোলে সে বিশ্বদানিয়। ভূলো সেতে পারে। প্রতিদিন বই পড়তে না পেলে তার বুম আুসে না। মনে হয় কি কাক্ত যেন করা হল না কি কর্তবা যেন অসমপূর্ণ থেকে লোল। আধাপেটা খাওয়ার মত, কেমন বুন খালি-শালি লাগে ভেতুরটা।

আক্ষপ্ত বিছানায় এসেছিল পড়ার টোবল থেকে: বড় আলো নিভিয়ে ছোট পরিধির অক্তরণ্প আলোয়। জমজমাট একটা রহসা আড়েডেগুরের বইও টেনে নিরেছিল হাডে। কিন্তু এই প্রথম গাপেন বই ভার বিশ্বাদ লাগলো। কোনো চার্ম কেলা না। নিজেই অধাক হল এবং ভিতিত্ত। জীবনে বা কথনো হর নি ভা কেন হল। তবে কি সে অসমুস্থ অথবা কোনো কঠিন রোগে আগামী করেক বর্ণার মধ্যেই আক্রান্ত হতে বাজ্ছে! বিরম্ভ হরে এক আঙ্লের খোচায় আলো নিভি.য় দিরে বইটা রেখে দিল টেবিলের ওপর।

বইয়ের পাতা শাধা নয় চোথের পাতাও বোজালো। জানলা দিয়ে রাশ্তাং একাধিক আলো খরের মধ্যে এসে পড়ে ছিল--তপত্রী চোথ বন্ধ করে সেটাকেও রখেলো। কিল্ড র**ুখ**তে পরি**ল** না অধ্যকারে প্রায় একসপ্রেসগতিতে ছুটে-আসা চিণ্ডা গালিকে। যতক্ষণ আলো জনস্থিত ততক্ষণ তারা ম্পত করে দেখা দের নি। মেপথে। কোথা থেকে হয়ত ছুটে আসছিল আসল গাড়ীর মত শধ্যে তার ঘদটা শোনা গিয়ে-ছিল প্র্যাটফরে' দাঁডিয়ে। কিন্তু এবার একেবারে সে হাড়মাড়িয়ে যেন বাড়ের ওপর এসে পড়লো। প্রায় ঝড়ের মন্ড ধ্লো-শালপাতা উড়িয়ে আলো অংশকারেং অকটারনেট ফ্ল্যাশ দিতে দিতে পিসটনের দাঁতে ঘসটানি চাকার চবনি হ:ইসেক আর ফিসপ্রেটর কাত্রানি মিশিয়ে কম্পাট মেন্টে কম্পার্ট'মেন্টে ভাগ হয়ে বোগ হয়ে कानमारा-जानमारा जनश्या मृथ जार মতাতে টাকরো টাকরো হয়ে গলেশর মত উপনাদের মত আঞ্জকের দিনটা আঞ্চকের ঘটনায় ঘটনায় ঘনঘটা দিনটা ভপতী ঘগ্যক্তর উপক্লে এসে আছড়ে পড়ব।

আজকের সামাশ্য একবৈলার তপতীর বয়স যেন करब्रक वस्त्र বেড়ে গিরেছে। কদিন আগে প্রথম শমী পাড়ী পবে কলেজ যেতে গিয়ে তপতীর মনে হরেছিল সে হঠাৎ বড় হয়ে গিয়েছে। কিন্তু সে বড় হওরা তার শরীরকে জড়িয়ে। ক্তপ্নাকে মিলিয়ে। কিন্ত আৰু বিকেল থেকে সম্পোরতের মধ্যে তপতীর জীবনে সেন বর্তানকার পরে যবনিকা উঠেছে। পদার পর পর্দা সরে গিয়ে একটা না-দেখা ক্রেক্টান্তার অনেকর্থান হঠাং আবিস্কার করে বসেছে। भारा त्रकेश नत् स्वन क्लिक्ट क्रक्टश्चित्र গ্রীণরুম প্রাশ্ত। বেখানে কলনামল জলার ছলনামনীরা শিজে হাতে নেক-আপ নিতে धारा चानारक बरम । जाना क्रोर रचन धान রাজ্যে দীমাল্ড পার হয়ে সংগ্রেপ অন্য

রাজো চকে পড়েছ। এই রাজা প্র্কের রাজা। এখানে ঢোকার হাড়পার হচ্ছে গোপন আভজাতা। অভিজ্ঞাতার চেরে উত্তেজক আর কিছু নেই। অভিজ্ঞাতাই মান্বকে পালেট দেয়, জাগিরে দেয় বড় করে দেয়। বরঃসন্ধির চেকপোণ্ট পার করে দেয়। হপাতী আজ একই সংগ্গ কৈশোর এবং হোবাননকে অন্তব করেতে পারল। এই অন্তব্ধ ভবে বড় বেদন।

পুনুষ্ট, পুনুক্ত প্রথম বখন খুরে গাঁড়ায়ে দেখতে পেয়েছিল মুখোমুখি দাড়ানো সাঙ্ও চিনতে পারে নি। আচমকা এবং অপ্রত্যাশিত বলে নর পুনু আপাক মাতক বদলে গ্রেছ বলে।

শ্বের বয়সের জন্ম নয় মিশ্চর ব জিল ₹**57**77 মান বের तहरू 100 বাড়ে ? কাতাটা বছরের বেশী বাজতে পারে না নিশ্চর ! বয়স তাকে হয়ত মাথায় কিছটো লাঙা করেছে মাখনের মত মসাশ-নরম ঠোটে কিছুটা আবুজনা জানুয়েছে কৈছে পাল্টাতে পারে নি জলজানত মান:ষ্টাকে গুম করে দিতে পারে নিং অথচ ুব কিশোর পানকৈ বাসককাল থেকে জানতে। অপতী সে কই? সে আজ আগ কোথাও নেই হারিয়ে গেছে উপে গেছে ইহদ্নিরা থেকে। মাথের কঠিন রেখাস চিলাকের এক গ'ুরেমীতে আর চোথের বরফ-শীত্রা চাউনিতে পান, এখন আর একজন গভিয়াৰ প্রশাচ দাশগাণত এমনি সাইজের ভিত্র মান্য।

পৃন্দ কবে ডেডরে ডেডরে বড় হয়ে গেছে কেউ ছানে
না। বয়স নয়, আডজ্ঞতাই পৃন্দকে এমন
পাণেট দিয়েছে। কি অডিজ্ঞতা এড পন্দের
এই বয়নে? তার পোকে দে বছরের বেশী
বড় হবে না ও। অথচ এবই মধ্যে পানে
মান কছু দেখেছে জেনেছে ডেবছে এবং
ইাডে-কলমে করেছে যা তাকে রাভারাতি
কালে দিয়েছে। কি সেটা, তপ্তী জানে
না। আত্তক? আজেশে? হতা।? তপতী
জানে না।

প্রনার সংখ্যা আলাপ হয়েছিল প্রার দশ বছর আগে গড়িয়ার মাঠে। তপতার ্তিশান্ট মনে আছে। দিনটা ছিল ববিবার **শীতের সকাল। গাঁড়রা** তথনত এত^চা জ্ঞা এঠে ।ন ঠাসবান্যান বাড়াখনে ভার ফাঝা জায়গা সহ ঢাকা পড়ে হার নি ৰ।থাৰাও পাকা হয় নি। এত সান্য এত শাইকেল এড বিকসা তথন পথে চলতো না। এতে আলো দোকান বাজার এত বাণ এবং বাসের এত ভিড ছিল না। সরকারী ষাৰ এ প্ৰাৰত আসংভা বড়ী ছ'ুংং চক্ষকর দিয়ে কিরে যেত। আসতো খালি বেত্রেও প্রায় থাল। খাল পানাসকের যাঁপের সাঁকো খেতথামার গাছপালা ঝোপ-কাড় শেরালের পাল সব নিয়ে সেদিনের গড়িমাস গড়িয়া সংস্প পড়ে ওঠে নি। দেশ-হারানো সব-খোয়ালে মান্যে ইতি-**উতি জারণা নিরেছে: সরকারী সাহা**যা নিজের চেণ্টায় কাঁচা বসতী বে'ধে বসেছে। হেখা ছোৱা বড় বড়ী পাকা বাড়ী দে।তেলা তেতেল। নিশ্চয় ছিল। ফটক বাগান কুকুল হইতে সাবধান গাারীজের প্রমার কান্তাংনা হাসমডেলের গাড়ৌ ভারণা অৰুশাই ছিল। কিণ্ডু সে বলতে গেলে ভিটে-ফোটা এথনকার তুলনায়। এই দশ বছরে आलामीत्मत रेमछा न्यसः बर्चेश गणित রদক্ষের কমটাকট নিয়ে রাতকে দিন করে द्वादक मिरामटक ।

কোটু বিশু^{ৰ্ণি}ঝ সেট প্রহরে প্রহরে অভি-মেলানো লোরালের ভাক আর লোনা বার मा जन्धकारत ज्ञानाकीत स्रोक चात्र स्नरह বেকার না। আর আলে না সেই অক্স **१९-व्यत्तरकात भाषि तका-व्यतकाम भाषि।** अक्षेष्ठ और भावि मिलार भागात जाला **ভেশভী**র আলাপের স্রপাত। শীতের সকাল বারটা রবিবার স্পশ্ট মনে আছে ভশভীয়। পাথি ধরারা পাথি ধরতে এসে-ছিল ওদের পাড়ায়। তপতী তাই ছকে र्वितरह अरमीयम भए। स्थला। स्माकर्गाला জাতে বেলে বোধ হয় বাংলাদেশে আনেক-क्षा व्याप्त शास्त्र नाक्षानी द्वार व्याक्त ভালের শংশ্য খাঁচার করেক রক্ষ্মের পাথি ছিল। তিতির ময়না টিরা। ওদের পিছনে <u>ুপছনে ছোট ছেলে-মেরের ডিড লেগে</u> গিরেছিল। ওরা বার বার ছোটদের কথা ৰলক্তে নিৰেধ ক্যছিল। দুয়ে দাঁড়িয়ে দেখতে ক্সছিল।

জ্ঞার হরে দেখাছল তগতী হঠাৎ বর কানের কাছে মাধ নিয়ে কেউ ফিসফিস করে বলল 'আমাদের বাড়ীতে বাবে? একটা মজা দেখাবে।'

ভাকিরে দেখে ওরই মাথার মাথার একটি ফুটফুটে ছেলে মাথার একরাশ কোভিড়া কেকড়া চুল ভাগর চোখ মাখনের কুটো ভালার মত গালা। ঠিক কেন প্রাণ-সাইকের একটা ভল প্রভাল ভগতীর মানে ক্ষেত্রতা ছেলেটাকে লে খেলার মাঠে আগে ক্ষেত্রতা খুব লাককৈ টাইপের ছেলে কথা ক্ষেত্রতা এই প্রথম শুন্লো।

ভগভী অবাক হরে বলল 'পাণি? ভালানের বাডীতে পাণি আছে?'

হার্ট আমি ধরেছি।' স্থান্ড তেনে ক্রেক্টো বলে 'এই কাছেই আমার বাড়ী।' ভাশতী ওলের বাড়ীতে গিরে ভো আবাক। একতলা বাড়ীর ছাদের ঘরে একটা আধ-ছেণ্ডা মলারী টাঙানো। চার পাশে আধলা ইণ্ট দিয়ে চাপা দেওরা। আর তার মধ্যে কিচির মিচির করছে করেকটা রং.
বরংরের পাখ। মশারীর মধ্যে নালা একমের খাবার গাছের কচি পাতা আর নাটির ভাঙে জল রেখে দেওরা হরেছে।
আর ওড়াউড়ি শরুর দেখেই খ্ব ফটাপটি আর ওড়াউড়ি শরুর করলা।

'পাখি মেবে?' ছেলেটা ওর হাটটা চেপে অন্নরের ভংগীতে 'নাও না ভাই?' 'কোন পাখিটা?' তপ্তীর ইচ্ছে হয় কিল্ড বিশ্বাস হয় নাও সতি। সতি।

দেবে।

'স্বকটা তোমাকে দিয়ে দেব। নেবে?'
একটা আড়ণ্ট হয়ে থেকে তপাতী ঘাড়
নাড়ে 'না। খোমার পাখি আমাকে দেবে কেন? আমি তোমার পাখি কেন নেব!'

ভূমি নিলে আমি রোক ওদের দেশতে পাব। ছেলেটার চোখে কল বাব। আকেই ওদের উভিয়ে দেবে বলেছে।

সকলের প্রথম চা প্রতিদিন তপ্তী নিজের হাতে করে। নিজে হাতে যক্তে খরে পৌছেও দিরে আসে।

গজনোহন শ্বের দীত বের করে হাসে আর দীভিয়ে দীভিয়ে দিদিমনির গিল্লীপনা দেখে। আর থেকে থেকে দুশেব ধ্যক খার। ফাউফব্যাস খাটে।

র্মবিবার হ'লে চারের সাঁপা টাও থাকে। তপাতীর মজি'মত রেকফাস্ট স্পতাহে সুম্তান্তে বদলার। মা আড়ালে বলেন মেরের তোমার হে'সেলের হাতেখড়ি ছ'চছে।

অমিতাভ হাসেন আর বলেন, আনারই আন্তর্জা তো! কিল্টু ধাই বলো মারা, ওর হাতের চা না খেলে আমার ধ্যেই কাটে না। প্রলা চুম্কেই আমি ধ্রতে পারি, কে চা করেছে।

অমিতাভ লেট রাইজার। সকলের গোরে কিছানার যান, সকলের গোরে ওঠেন। তাই তপভীর চা ও'র কাছে যখন গোঁছায় তথন সে চা বেড-টী। উনি পাল বালিশ আঁকড়ে এডার টাইম নৈছেন, পাশের টিপরে চা জর্জাতে থাকে। তপভীর ন্দিতীয় দফা ভাগাদার উনি চোধ খোলেন হাত বাড়ান, আধ শোওয়া হরেই চারের কাপে চুমুক দেন।

'আঃ! জ**্ডিরে গেল বলে ম**ুখে একটা রাজসিক শব্দ করেন।

'জ্ডিরে যাবে না তো কি! কুল্ভকরের মত জ্যোরে—'

ওগো মগজ কাড়াও। মগজ বাড়াও। :এ জুড়োনো সে জুড়োনো নয়—'

'ঢং!' মহামায়া এই অছিলায় ঘর থেকে বেরিয়ে যান।

আছকে তপতী বাবা মাকে চা দেবার পর টোতে থাবার আর চা নিরে লোতলার কোনের ঘরটার সামনে এপে দাঁড়ালো। এই ঘরটার আগে দাদ্র থাকাতেন, এখন একটা ভবলার। ছোট ঘর, কিন্তু ন্বরং সম্পূর্ণ। এটাটাড়ড় বাথ আছে এক চিলতে। এখানে সেখানে ভয়াশিবাল আগ পরেন্ট। হিটাব চালাও, শেভিং নাগাও। দাদ্ ছিলেন শেখিন মান্ব।
এখন খিনি আছেন তিনি বাউণ্ডুলে দি গ্রেট,
অগোলারে রাজা। ঝকঝকে করে গ্রিছয়ে
দিয়ে যাও, দ্বলটার মধ্যে আবার যে কে
কেই। ওটা মেঝের গড়াছে, সেটা খাটের
তলার। যার আলনায় থাকবার কথা সে
বিছনের, যার বিছনোয় জারগা সে টেবিলে
ভিংবা চেয়ারে। প্র কিছ্ উল্টেপানে একে
বারে লক্কার লিংলার কাছে সর সমান
যা হাত্র ভাছে পায় প্রয়োজন ফ্রোলে
ছিব্ল ভি

তেজানো দরজা শব্দ করে হাট খ্লে ভেতরে চাকলো তপতী। হাতের টেটা রাখ-ঘার জায়গা নেই, চেয়ারের ওপরে একগাদা বই। টিপয়ের ওপর অবেক ছাপা কাগজ ৬রা মিন টাইপ্রাইটার, তার পাশে এটো ফলের গেলাস। ওদিকে লেখার সৌকলে লায়গা নেই। জামা পাগেট ড্যালা প্রকানে পড়ে আছে, কিছু মানিজিণ্ট, ক্যাপ খোলা কলম গোটা দুই হাতঘড়ি খানদেই লং স্পেরিং বেক্ড আমে। খানদেই থানইট সাইজের বই খোলা বিড়ের বান্ডিল, গ্যাস্লাইটার, ক্যামেরা। দিশি বিদেশী জিনিসের যেন অকশম সেল।

জানালা-দরজা ভেজিয়ে ঘর অধ্যক্ষার করে ঘুমোজিল ভবদা পরনে টাউজারস আর গের্যা শাঞ্চাবী। মাগায় বালিশ অধেকিটা খাটের বাইরে নেমে গেছে চাদরটা মাটিতে উল্টো থাকা বছরের মাথায় ট্রেটা নামিয়ে ওপাশের জানলাটা শাল করে খুলে দিল। এক ঝলক রোপ আর অবরাশ আলোয় ঘর ভরে গেল। ভবদা জেলা গারাছল। দিনকানা প্রাণীর মত শিটিপিটিয়ে তাকালো। সক্তবত কৈছুই দেখতে পেলানা বালিশের তলায় হাভড়াতে জালালো আর বলতে থাকলো কে? ঘরে কে

ভবদার চোখ খুব খারাপ। সব সমর একজোড়া হাই-পাওয়ারের চশমা পরে। চোখে চশমা না থাকলে দিনে আধকানা রাতে প্রো।

তপতী একদিন গম্ভীর মুখ করে জিগোস করেছিল 'আ্চছা ভবদা তৃষি শ্বশ্ন দেখ?'

ভবণা হেসে উঠেছিল সংশা সংগ্র ভসর স্বস্ন-ফ্রান আ্লার নেই। ওসর ভোদের জনো।

আবাক হয়েছিল তপতী 'এই বে এত যুমোও বিশন দাাখো না একদিনও? সেকি?'

'ওঃ সেই স্বাংন। হা দেখি আনেক সময়েই দেখি।'

কিন্তু "বংন কি করে দাখে। ভবদা?" টেকনিকাল সাইডটা জানতে চাল? তাহকে তোকে সাবকনসাস মাইজে--"

ফ্রান্ডে-টরেড রাখো। চশমা ছাড়া কি করে দ্যাখা তাই বলো'—

'ওরে ডে"পো মোরে!' হাসিতে ফেটো পড়তে পড়তে ভবনাথ ওর কানটি ধরে धाक्षे आमात्र हुए ह्यार्त्राह्म भारत।

ভবশ এইবকম। অভি অন্তৈপ ডার হাসির বাধ ভেডে যায়। প্রায় হিশ্টিনিয়ার র্শীর মত হাসতে থাকে। সামানা খাবার পেলেই যাকে বল একেবারে ক্যাড। চেটে-পুটে পরিতৃশ্ভির সপো থার। তাই ভবশার সপো কথা করে স্থ শাইরে স্থা।

ভবদার চশমা খ'লেতে আজ হিমসিম থেরে গেল তপতী। বালিশ বিছানার চাদর উপ্টে বইখাতা সরিয়ে খাটের ভলা তল্ল-ত্য করে কোখাও গেল না। ছাওরা হয়ে গেছে চশমা একেবারে ভারিনা।

'বাক অন্ধ নাচার হয়েই ত্রেককাপট সেরে নাও। চা-খাবার জন্মিনের মাজের

হাতড়ে হাতড়ে মুখ-হাত ধ্রের এল ভবনাথ। ততক্ষণে তপতা বিছানাটাকে টেনেট্নে একট ভদ্রুখ করার চেম্টা করতে গিয়েই বালিশের ওয়াড়ের ভেডর থেকে খোয়ানে চন্মা পেরে গেল। ঘ্রোবার আগে কখন বালিশের তলার য়ৢখতে গিয়ে ভিজো-কভারের মধ্যে গ'জে বন্দে আছে

জপতী ভবনাথের হাতে চিমটি কেটে বলল 'ছমি একটা যাচ্ছেছাই লোক ভব-দ্বেলা। বলি বিদ্ধে করে। বৌদি ভোষাকৈ প্রসাঠ ভাইভোগ করে বাংপদ্ধ বাড়ি চলে বাবে।

ভবনাথ ওর মাথার একটা আন্ম-মানক গাটা কহিলে কলল, 'ছুই খুব পেকেছিল ভপ_দ। দিনে ক'খানা করে বাংলা নবেল গেলা হচ্ছে ইদানীং?'

বাইনের ল্যেকর কাছে তপতীর
লাজুক মুখে কথা ফোটো না সব সমার
কিল্তু ভবলাকে ও থোড়াই কেরার করে।
প্র বা-কিছা ওল্ডাদি ভবলার প্রপার
থাটার। বিদ্যার বরুসে ভবনার যত বড়াই
ছেক্তি ভাসলে সে একটি আপ্রকৃতিশ্ব

বাংলা উপন্যাস তো আর পড়তে বা জাবনে' তপতা মথ ডেংচে বলে 'প্রোটন আর মিনারেলস দিনে ডরপ্রে। এফ আগট চাখলেও তোমার স্বাধ্য ভাল হয়ে বেড মণাই। এই নাও আর পে'চার মড পিটগিটিয়ে তাকিও মা তোমাকে আমি উপনরন দিছি—

চ্চাথে চলমা পরিয়ে দিতেই ভবনাৰ মোটা গলার আলেসেশিরাদের মত হাউ-ছাউ করে চেউতোলা হাসিতে কাভরাতে লাগল। কোল কথার যে ভবনাথের অভরে ভর্মবন্ধ কাতুকুত লাগবে আর সে লমফাটা হাসি হাসবে কেউ আগে থেকে বলাভে পারে না। তপতীর মনে হর এই হাসি দেখে মনে হয় ও নাথ প্রোপ্রী শ্রভাবিক মান্য নয় কোখার যেন আবি-নর্ম্মানিটি রয়ে গোছে।

এক সময় হাসি থামলে স্ক্রনাম তপতীর পিঠ চাপড়ে বলো সাবাস তপতী! ইউ আর এ টকিং বিউটি! কিন্তু এটা আমার উপ নম্ম আসল নরন এক ক্ষম্মর চোধা। এর ভেতর দিয়েই আমর:

वीदन्यमाथ সরকারের

নতুন ভ্রমণ উপন্যাস

গোরী গঙ্গা ৯ ০০

भौर्स कु सूर्थानाभाराइत

ঘরের পথ ৬ • ০০ স ুখের আড়াল ৫ • ৫০

भूनील गटका भाषाराय्र

তোমার আমার ৪'০০

নীল লোহিতের চোখের সামনে ৫:০০

ञागाभर्गा रमवीत

ভালবাসার মুখ ৫০০০ তরঙ্গহীন ৫০০০

সৈয়দ মুস্তাফা সিরাজের

এক বোন পার্ল ৬ ০০ বনকরবী ৬ ৫০

চিরঞ্জীব সেনের নতুন উপন্যাস

রাশিয়ানর্বিররহস্যুব-০০

শ্যামল গণেগাপাধ্যা রের নতুন উপন্যাম

मत्रमा ७ नीलकाल ५०००

নীহাররঞ্জন গ্রুণ্ড

नन्दीभन हत्योभाशाज्ञ

মনজানেনা ৭ • ০০ একক প্রদর্শনী ৪ • ০০

অনিল রার

জ্যোতিরিন্দ্র নন্দী

সোনার পাতায় রক্ত ৭০০০ নাস্ট চ্যাপটার ৫৫০

শাহিত্য সংস্থা ১৮সি টেমার লেন, কলি-৯

দ্দিরা দেখহি অল হিউ**র**গন রাই-ড ক্ষাক্রের ভেতর দিয়েই তাকিরে আছি। ৰাকং ইন আন্ড আউট থা এ লাকিং **'লাস'**—চায়ে চুমুক দিতে দিতে বলে পেরে ব্রবি আমি যখন থাকবে না তখন আমার কথাগালো ব্রাব।

ভূমি থাকবে না ছানে! ইয়াকণী नाकि ?

ইয়েস ইটস এ জোক এ ভৌর ল্লাকটিকালে ওয়ান। তারপর অতি ভারবং করে এক চামচে খাবার মাখে পারে বলে আমি কি চিরকাল থাকবো বলে এসোছ? দ্র পাগলী!

কথাটা বলে ভবনাথ খাবারের ডিণে। ভন্মধ হয়ে গেল আর ভপ্তার হঠাং একটা কথা মনে পড়ে গেল।

ভবদা যে এ-বাড়ির রঙ্গম্পকের কেউ শ্ব সে-কথা শ্ধু তপতী কেন ওর মা বাবা সবাই স্থাল গি গ্লিছালন। অথ6 ঘটনাটা খ্ব বেশী দিনের নয়। খবরের কাগজের প্রথম প্রতার সেদিন স্চিত্ত হার বেরিয়েছিল নুম্টিনার খবরটা। বছর দশেক আশোর কথা। দমদম থেকে রওনা হওয়ার কিছ্কেণের মধে৷ বিমানখানা রহসজেনক-ভাবে ভেঙে পড়ে। আরোহীদের কেউই আৰু বাঁচেনি। আমতাভ মিহ এয়াবপোটে বন্ধ্য আর বংধ্পেত্রীকে সী-অফ করে তখনও বুলি পড়িয়ার বাড়িতে ফিরে আসতে পারেননি এএই মধ্যে ঘটে গেছে দ্বেটনা। রাতের খবরে সংবাদটা শোনার পর থেকেই আমিতাভর ঘুম ছিল না भतामम सकारणत कागाळ विश्लातिक सरवान পড়ে চল ছি'ড়তে বাকি রেখেছেন। দেব-নাথ মৈচ তার সংহাদর ভাই-এর চেয়েও ক্লাপনার। শিশা বয়স থেকেই একসংগ্য মান্ত হরেছেন। দেবনাথের বাবা ছিলেন লৈ-যালের নামকরা হেডমাণ্টার। *স্বরে*শী **যালের দেখাসেবী। অ**শিনস্ফালিকা আর **অলুবিন্দ,** একসংগে বেন। অমিতাভর বাব। মারা যাওয়ার পরে তিনি ওকে নিজের কাছে এনে রেখেছিলেন। সৈই অর্থাধ ধ্যাল **ভটেনর ম**ত মানুষ হয়েছেন অমিডাভ আর দেবনাথ। কোখাও একতিল ভারতমা এক ছুল ফারাক ছিল না দকোনের কোতে। পরে

জীবন আর জীবিকার কের আলাদা হয়ে গেলেও দেবনাথ ডাঙারী করে বিত্তশালী হয়ে উঠলেও দুজনের যোগসূত অটু किन। चारत वाहेरदेव भागा-श्रवाद्यारण श्रवम्भद পরস্পরকে খ্র'জতেন। সেই দেবনাথ আর তার স্বী-দ্রজনকে দংধাবস্থায় স্নাক করে এসে কিছুকাল আমিতাভ কেমন হয়ে গৈয়েছিলেন। ভবনাথ তথন সাংয়*স কলেজের ছাচ। নিউক্লিয়ার क्रिक्टिक क কৃতিত্ব দেখিয়ে ভবনাথ আহোরকা চলে যায়। অনেক আশা করেছিলেন অমিতাঙ কিল্ড ভবনাথের রক্তের মধ্যে কি করে এক আহ্থরতার বাজাণা বংগে বংগছে। কেমন এক অনাসন্তিত অসংখে সে তথ্ আক্রানত। গবেষণার উল্জানল ভাবষাং ছ ফোল দিয়ে সে দেশে ফিরে এল। অনেকের চোখেই সে তখন হাফ ম্যাড। দেবনাথের বিষয় আশয় আগলে রেখেছিলেন অমিতাভ, এবার ভার উত্তর্মধকারীর হাতে প্রভ্যার্থণ কবে যেন ত্রতিত্র নিঃত্রাস ফেললেন[†] ভবনাথ নিবাসত। পৈতৃক বাড়িটা বিজী করে দিল। কিছা টাকা থেয়াল খালি মত খরচ করে বিলিয়ে নণ্ট করে অবশিশ্ ীকার শেয়ার সাটি ফিকেট আর বাতেকর বই কাকাবাব্যুর হাতেই ফেলে দিয়ে বলল আমাকে বাঁচান। টাকায় বড় কল্ট। আমি একটা শাস্তিতে থাকতে চাই। সেই থেকেই এ বাড়িতে রয়ে গেছে ভবনাথ। একটা ঘর এ-বাড়িতে ভবনাথের জন্য পাকা। কিন্তু ভবনাথ থেরাল-ক্ষ্যাপা বোহে মিয়ান কোথাও যেন ব'ধা পড়ে না। থাকে থাকে হঠাৎ একদিন উধাও হয়ে বার পথের টানে ভেসে বেডার। প্রথম প্রথম চিতা হত এখন এটাই নিয়ম হয়ে (गाइक र

ভূগোলের সাার একরকম পাখির গলপ বলেছিলেন তারা হাইগ্রোটরী বার্ড। হাজাব হাজার মাইল পাড়ি দিয়ে তারা কিসের টানে ভেসে আসে বছর বছর। সমটে মহা-সমন্ত পার হয়ে হিমালয়ের মত ত্বার পর্যত ডিভিয়ে কেউ চলে যায় হাওয়াই শ্বীপে কেউ *চলে* আসে ভারতবর্ষে[।] সেখানকার নদীতে জলাশরে শীতের সময়ে জাদের মরশ্রমী বসতী তৈরি হয়। নিশিচনত

विदात हरन। यस दश मा अरमत चादात বাধন কাটবে বন্দরের কান্স শেষ হবে স্ফুরের ভাক আসবে রক্তের মধ্যে।

ক্রবদাও এই আঁত্থি পাখির মত্ট। ঠিক' ব্লেছে এখানে এ-বাড়িতে চির্নাদন থাল ও সৈ ভারেমি। একদিন হঠাং চলে ৰাবে হয়ত বরাবরের জন্যেই চলে বাবে। তার নিয়মিত ফিরে ফিরে আসা থেমে বাবে একদিন।

েলট সাফ করে ভবদা গানগান করে शाहे ज़िल : भ्रतारम द्राव क्---

ভূমি বা**প**ু কাল রাতে W-7 জ্ঞালিয়েছ আমাকে কাল রাতের কথা মনে পড়ে গোল তপতীর সারারাত লক দৈত্যির মত চাষে বেড়িয়েছ আমার ঘরের ছাট। বাব্বা আবার হিপিদের মত খড়মে **চ**ডবার সথ হলো কেন বলো তো?

ভবদা একট ক্ষিক্ত হাসি হাসলো ইস তুই বুঝি ঘুমোতে পারিসনি?'

তপ্তী ঝাঁঝের সংখ্যা বলল পর করে পারবাে! তুমি আমার ঘ্মটুম খড়ম পায়ে মাড়িয়ে চরমার করে দিয়েছ। কি ভরেছিল তোমার কাল?'

'একট্ নেশা হয়েছিল।' বলেই ভবনা আড়মোড়া ভেঙে শুরে পড়লো আবার। শ্বের ঝকঝকে শিশার মত হাসতে লাগলো।

পাজাবীটা সরে গিয়েছিল কোচারের কাছ খেকে ট্রাউজারের ওপরে পেটটা বেরিয়ে পড়েছিল ভবদার। আন্দুত ফর্না মাখনের মত মস্ণ অথচ এক তিল মেদ নেই কোথাও। কেন যেন খুব ভাল লাগে দেখতে। একজন ইন্টেলেকচরাল মানুবের পেট বর্ঝি এমনই হবে। একম্থে দাড়ি, দীর্ঘ ছাদের দেহ ঠোটের মোচডে নাকের খাড়ার এবং শাণিত চোখে মেন একটা নিঃশব্দ হাসি উদাত **হয়ে আছে। তপ**তী जाविको इसा स्मर्थाहरू।

এমন সময় গজমোহন এসে দ্রজার দীড়ালো তার পানের রসে ছোপানো দাঁত বের করে রাঙা দিদিয়াণিরে মা ভাকিতেছেন।

রবিবারের সকাল হলে কি হবে হাতি

বাগান দিয়ে বেন হটি। বার না। সিনেমার টিকেট কিনে ওব, তপতী षोष्म-वारम ना छेळे ट्रांट ट्रांट क्रिय-ছিল। মানুবের অলস বাস্ততা দেখতে বেশ ভাল লাগে। সংতাহের ছটা দিনই মানুষ কেন নিজের দিকে তাকাতে পারে না। প্রতিদিনের উধন হবাস চড়াই-উৎরাই ষদেরর মত অন্ধের মত দিন-দৌড় জীবন বিপল করে ছ্যাণ্ডেল ধরে ঝোলা ফুট-বোডের স্চাগ্র ছেদিনী নিয়ে দিন-मान्या। সারভাইভ্যাল ফর দি ফিটেল্ট। মাথায় ভিজে চুল পাট করা সদ্য ভাজ ভাষা সাট টাউজাস ধ,তি-পাঞ্জাবী হয়ত সোমবার। পান চিবক্তে চোখে ভারলেশ হীন ছাগলে দুল্টি। নয়ত এলে-পভা বাসের সামনে শেষ সিগারেট-টান। চেনা মান্বের সংখ্য কারো বা মিরোনে হাসি কিংবা অফিস-আলাসত সংস্থাত স্বাটার व्यक्ष काकि न-गत्रते क्या।



ন্কুল, কলেজ এবং ইঞ্জিনীয়ারিং াম' ও অফিলের জন্য ক্টেশ-নারী, কাগজ, সাভে, ভুইং, र्देशिनीयादिः । বাৰত য উংকৃষ্ট ছাপার কাজের স্বৈড প্রতিষ্ঠান।

কুইক ষ্টেশনারী ষ্টোর্স

৬৩ই, রাধাবাজার পাঁটি, কলিকাভা---১

— ২২-৮৫৮৮, ৬৭-৪৬৬৪; প্রামঃ অরাবদিন—হাওকা পোল্ট বন্ধ-০৮, হাওকা

কিন্তু আজ? ছুটির দিন শুধু নয় চিরচেনা দিন। হিসেবের **বাই**রে নয় ৰাজেটের ঘাটতি বাড়তি নয় একেবারে হাতের পাঁচ যাকে বলে। তব এর রঙ জালাদা। কেন্যু ভিলেচালা সহজ্ঞ। শ্রেট কতারা কেউ কেউ এত বেলা**রও দিলে**কর আপত্তিজনক লাভিগ আর ফত্যা হাতে টামের মাণ্থলি আর মানিবলগ নিয়ে বাজার যাজেন আসছেন। থালেতে ফুল ক্পিটা মালোটা বেগানটা উপিক্ দিচ্ছে: কেউ কেউ সিনেমার হলে হলে ড'ুড়ে বেডাক্তেন মণিণ্-শোর কাটপিস দেখতে : কেউ চারের দোকানে অলস আঙ্কল দেশলাই জনলছে। লোকিকতা সারতে বেরিয়েছে কেউ কেউ যাবে কালীঘাটে প্রো দিতে সংখ্য পরিবার সময়।

তপতী হাঁটতে হাঁটতে হাতিবাগান বাজারের কাছে এসে পড়েছিল। রবিবার সকালে এখানে পাখির হাট বলে। রঙ-বেরঙের পাখি সায়রা গিনিপিগ রঙীন মাছ গাছণাছড়া সবই বেচাকেনা হয়। নথ ক্যালকাটা এক জোজব চিডিয়াখানা । এখানকার জীবনসংস্কৃতি বিচিত্র। এত দারদ এবং এত বড়ালাক এক বান্দী এবং এত ভূ'ইফেড়ি বোধহয় একসংখা আর কোথাও নেই। ভবদার কাছেই শোনা। আহিরীটোলা নাথের বাগান জোডাবাগ্ন এবারার ট্রেলাভার ছেবি সাবটালি ভাছে উত্তরের খাস চেহারা। এখানে সবরকম দিশির খান্দান। পাড়ায় পাড়ায় ছাদের ওপরে বাঁশের মিনার বা ব্যোমা। খাড়া-ব'শের ওপরে হাল্কা মাচা বাধা। এগলে কব্তরী এয়ারপোর্ট। আকাশে ডিগবাজি কারসাঞ্জি দেখিয়ে উড়ে বেডালো নোটন লক্কা গের্বাজরা এখানে থেকে থেকে ল্যান্ড করে। কিছা লোক চৌপুছর আকাশমুখা, এই পারাবতচচায় মসগলে হয়ে আছে।

ভিছেন পাশ কাণ্ডত কাটাতে তপতী একটা ফটো গটভিওর সামনে এসে পড়ে ছিল। শো-উইন্ডাতে ৰড় বড় এনলাজ' কত ভণ্গির কত তঙের। পাড়ার একটি মেরের ছবি দেখে দাঁডিয়ে পড়ল তপতী। মেরেটা স্কুলে পড়ে এখনো চেনা কৈন্তু হোরেকা পাকামী করে ফটো ভূলিরেছে ভাতে মনেই হয় না ওর কিছু বাকি আছে।

দোকানের ভেডর থেকে সম্ভবত দোকানের মালিক কাম ক্যামেরাম্যান তপতীকে ডাক্ল, 'আসুন, আসুন, ভেডরে আসন। এখানে একবার ছবি তুললেই আবার...আরে একি তপ্য নাকি, আ!! আরিবাস।' বলতে বলতে একজন মধ্য-বয়সী সৌখীন ভদুলোক বেরিয়ে এলেন। ঢ়োখে অটোমেটিক ধেন্দ চশমা, আধারে ম্বাক্ত আলোয় কালো হয়ে বং বদক্ষা। একটা অভ্ত সব্জ রঙের হাতের তাতের হোটা পাঞ্জাবী। তাতে কলার আছে, বকে রো-টাইএর মত মোটা ফিতে বাঁশা, টেইট পাজামা পায়ে নাগরা। তপতী এবার ভিনতে পারলো ভল্টবোব্। থোকনদার ইয়ার ছিল এক সময়, রকে বসে আড্ডা িত। এক নম্পরের ভাগাবেণ্ড ছিল লোকটা।
কাধে ক্যামেরা নিরে সব সময় ব্রেতা।
সাযোগ পৈলেই মেরেদের ছবি তুলে নিতো।
নারী অসভা ছিল। একবার রাস্ভার কলে
কার স্নানকরা ছবি তুলে খবে ফ্যাসাধে
প্রেছিল। সে কি কেঞ্ছেকারী।

্তরেপর এপাড়া ছেড়ে চলে গেছে
কনেককাল। দেখাও হর্মান, মনেও ছিল না।
ভাতবৈবে খ্ব আবেগের সংক্র বিরিয়ে

নালন, মাই গড়েনেস, তপতী! তুমি যে

ব্যতিগত গেছি হয়ে গেছ, তা এদিকে
কোথায়? আহা বাইরে দাঁড়িয়ে রইলে কেন,
ভাতবে এস কন্দিন পরে দেখা। দাদা কেমন
আছেন বউদি?'

'ভাগ আছেন!' তপতী দারসারা গোছেব উত্তর দিলো, 'এসেছিলায় সিনেমার টিকেট কাটতে ছলি।'

তপতী পিছা ফ্রিতেই ডল্টবোবা ক্ষিপ পায়ে এগিয়ে এসে খণ্ড করে এর একটা হাত ধরে ফেলাগেন, 'আরে পাগনা নাকি? দরজা থোকে শাধু মুখে ফ্রি যাবে'—

তপ্তীর ব্বেকর ভেতরটা কেনন কে'পে উঠল। সে সভরে ফিরে দক্ষিলো, আঃ লাগছে ছাত্রন।'

'মাসথানেক হল এই দ্যুঁডিও খ্যোছি ব্ৰেছে?' হাত না ছেড্ডেই গুণটুবাবা আবেগের সংশ্যা বলে চললেন, 'নবাই মধ্যা কৈবত মিছো বলবা না, নাম করেচে ডেইলি দারর। নামটা কেমন্ দিয়েছি? ভাল? অসো ভাই, এটটু চা খেয়ে তবে ভোমার মাজি'—

হাত ছেড়ে দিয়েছিলেন। স্তপতী হাড় নেড়ে জ্বানালো, স্মামি চা খাই না।'

'অল রাইট ভাহলে রস্থোলা আনালি একটা মিণ্টি মূথ করে যাও।'

ওলা, না, না। শুধু শুধু বসগোলা কেন থবো, অস্পতির হাসি হাস্প ও, আপনার তো আরু মিন্টির দোকান নয়। ন্য ? কেমন ধারা হাস্কেন জ্বন্ট্রাব্রু বেশ মানলাম। কিন্তু মিণ্টি মুখের দোকাদ তো? তোনাদের মত মিণ্টি মিখে মুখ্ যাদের, তারা এই দোকানে নিজেকে নাতুন করে দেশতে আসে। বাইদি বাই, ভুমি কথানা নিক্ষা ভবি তোলাও নি ?'

প্রকান বগ্নে তো? একজ্ব কাজের
সংগ্রে কথাটা ব্লন্তে ব্লন্তে তপ্ততী ভেরের
ক্রেক উপাত ভালিতে কাউণ্টারে ক্রান্ত্রের দাড়াল। ফাউণ্ডানার তপ্ততীর মোজাজ্ব
গ্রেক্তর মাখলেন না, কথাটাও তার ক্রেক্তর্গরের মাখলেন না, কথাটাও তার ক্রেক্তর্গরের থনে হল না। তিনি আপুশ্র
মান্ত্রেই, দেটকের ক্রেন্তর দাড়ালো অনাম্রাক্র
অভিনেতার মাত ধ্বগর্টোক করে ক্রমেন র
মান্ত্রেকাই বৃ। কি আমান্য তো রোজ্ব
মান্ত্রেকাই বৃ। কি আমান্য তো রোজ্ব
মান্তর্গরেশ নিজের ক্রেন্তর প্রান্তিনিক ক্রেক্তর
আবিশ্যি নিজের ফ্রেন্তর প্রারে। ফ্রিকা ফ্রাররা
গ্রেক্তর নিজে ব্রুক্তে পারে। ফ্রিকা ফ্রাররা
গ্রেক্তর—

কাউদ্টারের ভেতরে ট্রোর ওপরে তের-টোপ বছরের একটি চোকরা বঙ্গে ছিল। টান তাকে বগগেন, ছা তো বাবা সত্তা-নীরয়েণ থেকে এক টাকার রসপোলা নিয়ে ভায়। ছটে যাবি দৌতে আস্বি।

ছেলেটি কথার খেলাপু করণ না। তপ্তী থাধা দেবার আগেই ছ্টে বেরিয়ে গোল দোকান থেকে।

'ভারপুর, টিকেট পোরছ?' ভ্রুটবোল নেশ্ডরব্য প্রসংগ্র এপোন, প্রান **ভ্রু** নাটনি?'

তপতী গদভার হয়ে বলন, না ইঞ্জিক দো। যা যাবেন।

ভণ্ট্রার: অপ্লায়িক হাসপেন, 'কথনের চিনেনার টিকেট পোড এ পাড়ার অস্টার্ক হাল তুমি আমাকে জানারে। এরা সবর অমার চেনা। তারপর করেজ কেমন চক্রেজ তেমার ব

বাঙলা সাহিত্যে একটি নতুন অধ্যায় সংযোজিত হ'ল

ভারত মহাসাগর কতখানি ভারতের

क्षाचित्रमाम बन्द

ভারতের বৈদেশিক নীতির ইতিহাসধনী ইতিব্র । প্ররাণ্ট্র দণ্ডারের বংগঠন ও কার্যপ্রধালী। স্কারত মহাসাগরের রাখনৈতিক তাংপর্মা। রাণ্ট্রসংঘের বিস্তৃত পরিচর। কিছু কিছু অংশ জানস্বাজ্ঞার পত্তিকার প্রকাশকালে আলোভ্রুশ তুলেছিল। দায় ১০:। সভাক ১২ পাঠাবেন।

প্রাইনা পার্বারেশন্ন ৮৯ মহাথা গাংধী রোড, কলি ৭

ভাগতী আর একবার চ্যাকালো। দ্ব ব্যারের ওপর দেখা দেই লোকটা তার কলেজের থবর কি করে জানালা। আরো আঁকবৈর কথা, কোনো দিন পাড়ার থাকতে ভাগুরাবরে সপে কথা পর্যান্ত বালোন ভাগুরাবরে সপে কথা পর্যান্ত ভাগান্ত ভাগুরাবর স্বান্ত ভাগান্ত ভাগুরাবর স্বান্ত দিব্য মনে রেথেছে হলা নর, নামতি প্রান্ত দিব্য মনে রেথেছে

্ৰিশ্ৰেকো গলায় তপতী ব্লল, ভাল। একার জামি বাই!

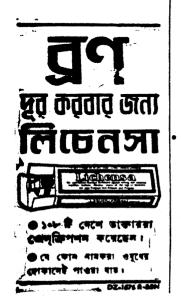
া বারে তোরার জন্যে মিন্টি আসহে আর,
কুছি পালাবে কি রকম ?' তারপর হাং হাং
করে হালালেন, 'থহো তাই বলো। তুমি মনে
মরে জাবছ 'আমি তোমার জন্যে এরকম
জারীছ কেন? একট, বৃথি বাড়াবাড়ি হরে
জারীছ কেন? একট

ভপতী গাঁজত হয়ে ব্যাল, 'আজে জাল, ডাকেন ভাববো।'

ভাৰৰে বইণি।' ভলটুবাবু হঠাৎ আইৰেল হাসিটাসি মকে গদতীর হরে গুেলেন, ভাল ৰাড়াবাড়ি সভিটে হচে, হরে বাচে, কাল ৰাড়াবাড়ি সভিটে হচে, হরে বাচে, কিম্মীকাল করবো না। কিম্চু কেন জানো?'

ভূপতী আরম্ভ মুখে বলল, 'ছি ছি আপান একথা কেন বলছেন, আমি তো তা আবিদি। আপান চেনা লোক, খোকনদার লক্ষ্য সেই হিসবে—'

শ্লা. সেই হিসেবে না।' বিষয় ভাল্যতে
প্রাধা নাড়তে লাগলেন, আমি দিশেনী মানুত্ব,
কুম্পর মুখকে আরো সংশ্বর করে ফোটতে
ভালাাাস, কিন্তু সে জনোও না।' ভল্টুবার,
ভিত্তুলন চুল করে রাসভার টামবাস দেখতে
লাগলেন। মনে হল কোথার যেন বড় রক্ষরে
একটা কথা আছে লোকটার। ডপভারে
ধারণা ব্যন একট্ব একট্ব প্রভারেছে।
ধারণা ব্যন একট্ব একট্ব প্রভারেছে।



মান্ত্রের বাইরের চেহারার সপ্তে ভেতরের রুপ সব সম্মর ছোলে না। বাইরের চেহারা, বাইরের কথবেতের মান্রেকে অনেক সমরই ভূল বোঝার। থোকনদার স্থো দহরম মহরম ছিল বলেই ভল্টাকে এক সমর খারাপ ভাবতো, পাড়ার কানাকানি শুনে অসভ্য ভাবতো। কিল্টু আজ এখন, এই মুহুতে যেন মনে হজে লোকটা থোকনদান নার।

আসলে নিজের স্বাথেই তোমাকে
থাতির করাঁছ, তপতাঁ, স্রেপ নিজের স্বাথে ।
মথের বিষয় গাল্টার্থ মছে ফেলে আবার
হাসির মেকআপ তুলে নিলেন ভ্তাদ্রা,
তেমারাই হক্ষ আমার ভরসা। তেমারাই
কুলবে, আমার পট্ডিবর পার্বালিসিটি
করবে নানান স্বায়গাস্থ—তবেই তো ভেইজি
মারার ক্ষমে উঠবে। হাই হাঃ কি বলো।
তবে হাা, তোমার খানকরেক মারাঘক ছবি
তুলে দেবো দেখো, লোকে টারা হরে বাবে।
এই ফেল, এই কিগার পোলে আমা দমকল
ভাকিরে ছাড়তে পারি। এসো এ পিঠে
এসা—মিন্টি খেরে যাও।'

স্তানারায়ণ ফেরত ছোকরা ছুটতে হুটতে মিশ্টির জড়িনিরে হাজির হল।

ছলট্রনার গট্টেডিও থেকে বেরিরেই একটা থাকা টাম পেরে গিস্তে উঠে পড়ল ডপ্ডা। চিৎপরেরের টাম, গ্রে-মাট্টি-সেন্টাল এডিনিউ ক্রাসং-এ নেমে সামানা গলিপথে ইটিলেই বাড়ি পোছে যাবে।

গোটের মুখে একট্ ভিড় ছিল, বেশ করেকজন মেরে-প্রের নামবার জনো বাস্ত হরে পড়েছিল। তারা নেমে বেডেই ফাঁকা ট্রামে এতন মাতি মতাকৈ প্রথম দেখতে পেল। দেখে বেমন চমকালো তেমনি খালি হল তপ্তা। আজ দিনচারেক বন্দনাদের সংলা দেখাই হচ্ছে না ওর।

দ্ব দিন কলকাতার মাথার ওপর দিয়ে যে সাইকোন গৈছে, যে ঝড়জল, তাতে গা বাঁচিয়ে ছাতা বাঁচিয়ে হোরানে। অসম্ভব দিলা বিত্তিক কিছে অবদ্ধা। সন্তবাং কলেজের কথা চিন্তাই করা যার নি। আর শনিবার মানে গড়কাল আকাশ পরিক্টার ছিল ঠিকই কিন্তু কলেজ ছিল না। শনিবার ভাদের অফ কাস থাকে না। ভেরেছিল বিদ্যালয় যদি বেড়াতে আসে, এক-এক দিন হৈ হৈ করে যেমন চলে আসে, কিন্তু কই কেউ আসে নি। আল দেখা না হলে হয়ত ডপ্তাই সহত এক দেনে।

ধর। কিন্তু তপতাকৈ তথনো দেখতে পার নি। পাশাপাশি সাঁটে তিনজন, না তিনজন নয়, সপো আরও একটি অপরিচিত মেরে আছে, করবৰ করতে করতে চলেছে। বদনা আর পারীহতার বগলে অনেকগলো কাগালের পাদেকট, রীতিয়ত মাকোটিং করে এল বলে মনে হয়।

ওদের সিটের পেছনে দাঁড়িয়ে তপতীর মুখ ফসকে একটা রসিকতা বারিয়ে গোল কি করে, 'এই বে চিফলার চার্টান কোথার চলেছ, প্রক্রোমাকেটিং সেরে?' এক হাইতেরি জন্য কলরব থাছিরে ওরা বাড় নৈরিরেছিল, তারপর তপতাঁকে দেখতে পের তিনজনে একসংশ্য প্রমা হৈ-হৈ করে উঠলো যে কন্ডাকটার কি হরেছে দেখবার জনো হুটে এল। ড্রাইভার তার পিছনের জানলার ফোকর দিয়ে বিশ্বিত হাথে উক্তি মারল।

ভপ্তী ভাষণ নার্ভাস হরে ওদের প্রামাবার চোটা করঙ্গ, 'আঃ, কি হচ্ছে, প্রামিত মধ্যে?'

'প্রিল মারো তোমার গাড়ির মধ্যে।' প্রমিতা ছোকরা কায়দায় একটা অসভ্য ভগ্নী করল, আহ্বর বেথানে আছি সেধানে

তা পোশ্যবল্প দিদি, তোমার তলৈ-তলে লিটরেটার কেমন চলছে?' নিন্দৃতা উক্ত দেবার চেন্টা করল পার্রামতাকে। জানে, একটা থেই ধরতে পারলে হয়, পার-মিডাকে তথন কনটোল করে কার সাধা।'

পার্নামতা লাফিয়ে উঠে তপতাঁর হাত গরে টানলো, 'এসো সম্প্রাঁ, ডাইরে কেন আমার পালে এসো একটা সালতে সিটিং হার যাক।' প্রতোকটা সাকে ইংরেলি এস-অক্ষরের মাত উভারণ করণ, 'তুই সামেন, ও পাশের সাটে যা আমার ফি'য়াসে এখানে বসুবে।'

অন্য মেয়েটি ভাড়াভাড়ি উঠে দাঁড়ালো। তপ্তী বললা না না তুমি বসো, আমি এখানেই নামবো। এই সেন্ট্রাল আডি-নিউডে।'

অনেক নেছে সংগী, আর না।' পার্রাহতা তপতীর হাত ছাড়লো না, 'চল আমানের সংশা এমপার ওম্পারে চল। বাসর জয়াতে হবে না?'

একটা দটপে এসে ট্রা থেরেছিল।
একজন আধবয়সী পা সঞ্জাহ এতজ্ঞ বোধ হয় ওদের রংগর । শ্বছিল সেটের কাছে দাঁড়িয়ে। এবা । ড়ে থেকে নেনে ওদের জানাসায় এক মুখ বাড়ালো, ওইয়ে মারকটারী দিদিরা, একট বাংকে দেয়ে আ্কাসিডেন্ট সম্মু যাবে—'

প্রমিতা ম্রিখয়ে উঠেছিল **লাগসই** জবাব দেবার জন্যে, মণিদ্তা ওকে টিপে **দিল,** নিচ্ গলায় বনল যেতে দে দেখছিস না রঙে আছে। সকাল বেশায়ই চাতিয়েছে—

লোকটার জড়ানো গলার স্বরে স্পন্ট বোঝা যাচ্চিল লোকটি প্রকৃতিস্থ নেই। গাড়ি ছেড়ে দিয়েছিল, পার্রাত্ত। তবং জানলার কুকে পড়ে প্রতিশোধ নিল 'আজ্ঞা দানু টাটা, হুটি হুটি পা-পা করে বাড়ি লান'—

টলমাল পায়ে লোকটা সংগ্য সংগ্য হরে দাড়িয়েছিল, কিন্তু ট্রাম শপীত নিরেছে তথন। জড়িত গলায় হাতের মান্টো শানো তলে কিছা একটা বলল গাড়ীর শব্দে শোনা গোল না। ট্রামের অনা ষাহারীয়া মাখ টিপে হাসছিল অনেকেই। দানুনকজন সচিন্-লোলা মাখ করে বাইরের দাশা শেছিলন। ভাগাটা এমন, তারা কভবত ইহলোকে নেই।

বন্দনা বলল বোস, বোসে পড ভপতী। বাড়ীতে ফিরতে না হর ঘণ্টা

The light pays of the first transfer which the

দেড়েক দেরী হবে, কি আর রাজকার্য ফেলে এনেছিল। বলিল তো আমি মালীমার কাছে বাবোখন ফেরার সময়।

অগতা তপতী महस्रा सच्यी মেরেটির পরিতার আসনে বসে পড়ে বলগ 'आदा ना, ना। भा किছ, वनात ना, वादा-টার মধ্যে পে'ছিলেই মথেন্ট। কিন্তু তোমবা দলবেধে কোথায় চলেছ তাই এখনে জানতে পারলাগ্র না।'

পারবে সিসাটার পারবে। ভোগার বারোটা বাজার আগেই আমরা ছেড়ে দেব। পার্নমতা এর পাশে ধপ করে বলে পড়তে পড়তে বলল।

'আমরা একটা রিয়াল আডভেণ্ডরে বেরিরেছি । মাল্ডা কেন্ট্রগরের প্রভালের মত হাওরার মাথা দুলিয়ে কলল রেসকিউ আ্রাড়রিহ্যাবিশিটেশন পাটি না কি যেন বললৈ, বন্দনা? বন্দনার খাড় নাড়া লক্ষা করে বসলা ভৃতিও এই পার্টির মেম্বার হলি। চল অনেক আগাম অভিক্ৰতা হৰে।

'আগাম অভিজ্ঞতা?' স্বেমার গলাটা খাব সারেলা, এতক্ষণে সে মাখ খালল 'অভিজ্ঞতার আবার আগাম কি ভাই?'

'হয় হয় জান্তি পারো না' নন্দিতা কমিক গলার বলে, মান্বের পনের আনা আভিজ্ঞতাই এক অংথ অপচয় কালে লাগে না। স্তর্গ সেগুলো তামাদি কিংক বাকী এক আনা পোলাকৈটেড চেকের মত ভবিষাতের সম্বলাশ

'সে তো নিখরচার, মানে খরচায় ৷ সুখন৷ ব'লে ৷

ঠিক তাই।' নাশ্বতা বলে, 'स्ट्रिटिं প,ড়লে তবেই না গোনরের क्षाताम অভিজ্ঞাতা!'

বন্দন্য হেলে উঠলো 'নন্দিতার ফিল-সাফি খুব লাগসই, তপতী। তুমি রিয়্যাল এক গোবরকে দেখতে পাবে। এমন গোবেচারা বরকে সচরাচর খ'্জে পাওরা বার না।'

'শাধা গো বলিস নি' পার্মিতা কলস, 'ওনার হেডে রীভিমত চল্পবিশ্ব धाःहा

মানে?' নান্দতা জানতে চায়।

'যানে, গোঁ। থক গোঁ আছে।' পার্যয়তা বলে আরিশিয় লান্ড যখন বরবর **হয়** ভাষন একটা গোঁধরেই থাকো^{*}

বলদনা নলিকতা সংখ্যা তিনজনেই খোলা গলায় হেসে উঠল। তপতী প্রসঞ্চী ঠিক ধরতে না পেরে হাসল মা। শাংধ্য ওদের মাথের দিকে ঘ্রে-ফিরে -होकाजा।

কিছ, কিছ, বনেদী বাড়ী তার খেল-নলচে এখনো ফেলতে পারে নি।

ভেতরে ভেতরে সব গেছে অথচ বাড়ীর কর্তাবাবাদের স্থো সংগ্র ভব্দ-জান, জালারী সাওয়ার, মিলিয়ে গেছে। কোমপানীর কাগজ একদিন শ্কেনো তেজ-পাতার মত শংশঃ কাতিটকু অকিডে লাক্রমে হবেছে। শরীকী ফাললায় ফেপিড়া হুরেছে ব্যাপেকর আ্যানত। লালবাতি ার্মার এর কর-কর-পর-এক লাতের বাবসারে।

ব্যেতলের ভূতে আরু মাঠের ব্যেতার কিন্দা দামী মেরেগানাবে একে একে খেরেছে স্থাবর সম্পত্তি। বাগানবাড়ী ল্যাণ্ডো ফিটন অনেক আগেই অদ্শা হরেছিল, পরে থেমে থেমে গেছে কলকাতার শহরের ওপরের ভাড়া বাড়ীগফো।

শেষ বসত বাড়ীটা তবঃ দশাসই চহারদা ররেই গেছে। বাইরে মেরামতির অভাবে সময়ে সময়ে চুনবালির আশ্তর খসে পড়ে রঙ বিবৰণ হয়ে বিদ্রশম্তি ধারণ করে। সৰ জানলায় আচত কাঁচ নেই এমন কি উপয়ত্ত পদা পর্যত্ত জোটে মা। কিন্তু তব্ ভেডরে বে সব আসবারপর আড্বাডি অব্যেল পেলিটং মান্ত্ৰ প্ৰয়াণ ৰড়ি পদ্ম ग्राम्क नाकारमा जारक रत व देशि नात গালচে পাথরের কার আর বেলজিরাম শ্লাসের ঝলকানি তা একমার বাদ্যুর্বকেই মলে পাড়য়ে দেয়।

মনে হয় এ আর একটা বুগ আর এক ইতিহাস বাকে আর কোনো দিন ছেলি যাবে না। আঞ্চকের দিনের মান্ত এসবের আৰু Williams এখানে যেন সৰ সম্ভৰ আইপেন *ा**डी** ब्लाएं ना हाकाव ो**क**ा माञास মপ^{াল}ন বেনারসী পারে অগত্যা প</sub>ুইচ্ছাত্ত রাধ্যে বাড়ীর প্রোচা প্রতিশী।

ওরা যখন পাঁচজনে হৈ-চৈ করতে করতে এ বাড়ীর মধ্যে চুক্তো তথ্য তপতীর মনে এই রকম ভাবই ক্লমশ বেন पाना वौधिकतः अहा कारमक वा**छी : रकन** যাতে এখানে কি নরকার কিছার ভেঙে বলৈ নি ওরা। ইজে করেই তপতীকে তান সাসপেকের রেখে দেওয়া। বেন চ্ডাল্ড অবাক করার জনোই।

প্রকাশ্ত হলমরের মধ্যে ওদের বাসরে রেখে বন্দনা ভেতরে চলে গেল। তপতী যে

কানন দেবী **मवा**दिশিল্পীদের অন্তর মেলে তুমি সিশ্ধহস্তা। "সবারে আমি নমি"তে সেই ক্ষতা চরমে উঠেছে।

অমলা শংকৰ

আমি নমি

ম,স্যা—আট টাকা

."সবারে আমি নমি"—বইটি পড়লাম। —লেখা এ**ভ জ**ীব**ত** যে পড়তে পড়তে মনে হয় কান নদি যেন সামনে বঙ্গে কথা বলছেন। শিল্পীদের তরফ থেকে সন্ধ্যাকে ধন্যবাদ জানাচ্ছ।

হেমন্ত ম্বেশাশালার

... "সবারে আমি নমি" পড়তে পড়তে মনে হয় যে কানন দেবী নিশ্চয় ঠিক এই কথাগ*ুলোই আপনাকে বলেছেন। নিজেকে* প্রচ্ছন্ন রেখে আপনি ভাষার কুশশতায় কানন দেবীকে এত প্রতাক্ষভাবে গোচরে এনেছেন যে আপনার লেখনীর দীঘজীবন কামনা করি। শম্ভ মিচ কানন দেবীর স্মৃতি কথার মত এমন নিভাকি, উল্মোচনশীল অথচ এমন সংযত সরলতায়, আজ্ঞীবনী অল্পই লেখা হয়েছে আমাদের দেশে। তাই কৈবল স্থপাঠ্যতার জন্যে নর্কেবল অতীত মোহ তৃত্ত করবার জন্যে নয় বিবর্তনময় একটি জীবনকে জানবার ঔংস্ক্রেওএই বইখানি পাঠকের অজন্ত আদর পাবে বলে মনে আফাদের বিশ্বাস হয়। শঙ্খ যোষ

এম, সি, সরকার আছে সম্স প্রাঃ লিমিটেড ১৪, বঞ্জিম চাট্ৰেল্য স্থীট কলিকাতা-১২ ফোল : ৩৪-১৭৮২ সোকাণীর বংশছিল সেখান থেকে শেওরালের ছ করে লক্ষা ভিনের আর্কান্তর নাম নিছতের মহালের বেশ নিছতে। দেখা বাজিলার ভিনের নিশ্র প্রথমের নিশ্র দোভালার দিকে উঠে গেছে। বাদনা লাফান্তে লাফান্তে সেই সিজি বেরে প্রথমের জিঠে গেল। ছার চানি আ্রান্তার দিকে জাকির সলল। ছার চানি আ্রান্তার দিকে জাকির সলল। ইল। আ্রান্তার বিকেটা কেনা হার আ্রার ব্যকটা কেনা চিন্দা করাছ।

প্রিমিডো জু কুচিকে জিগোস করল কেন্?'

'এডক্ষণে বোধ হয় ওাদকে আউট হয়ে গেছে।'

'আনুরে গঢ়ীল মার! পাণি তে। হাওয়া, জার আর পাত্তা পেতে হচ্ছে না।'

নাল্যত্য ঘড়ির দিকে তাকিরে বলল প্রথম দশটা বাজে ৷ নাং, আবো দটি ঘটা অক্তত বৃংধা ভূজংগবাবা মোহিনীব ক্ষেটি বৃংঘ বিভি ফ কেব খাব পেকে থেকে খাদ ঘটা কাঁচের মধ্য দিয়ে শ্রীলতার ব্যাক্সাইড ইলিউশান দেখবে ৷'

মাহিনী হচ্ছে উত্তর কলকাতার হালআলানের অংগর্চির দোকান। ছোগাছোগ্
হৈমন মডার্গ প্রকাপতি অফিল মাহিনীও
ক্রেমন অধান থেকে লেকে যায়। তপ্তা
নামটা লানেই চিনতে পারকো। তার লিসভুজো দিদির সংগ্র একবার লিয়েছিল।
চুল বাধার কত ছাদ, কত ভাল্মা। চাথের
কত স্ক্রেকারিগরী। আলেবায় দেখলে
মাথা মনে বায়। বং বদল, চং বদল শ্রে
নাম, নেগেটিভকে প্রিটিভ বানতেও
ফাহিনীর ক্লিড নেই।

নন্দিভাই ভাংকো রহসাটা এভক্ষণ।
জ্ঞীলভা বন্দনাদের বালাগণযুঃ। ইদানীং
এর বাপের কিছ; উটকো পারসাকাড়
ছরেছে। বাপ সোকটা ভালই ছিলেন কিক্তু
ক্বিভারবার বিয়ে করে একেবারে পাকে
প্রেছন। জ্ঞীলভার সংমারের প্রামণে হঠাৎ
প্রের বাপার পাকা করে ফেলেনে।
জ্ঞীলভার হব বর র্পে-গ্রেগ রাম্ভ্রান।
ভবে টাকা আছে অফেল। স্থা-ক্রেলো দ্



রক্ষেরই। বন্ধসের গাছ-পাথর নেই। বিনাহিত জীবনের টেস্ট প্রিটেস্ট দটে-ই চয়ে আছে। অর্থাৎ আনকোরা বলে শ্রীসেতাকে দাঃখা করতে হবে না। ভাবণ ডিভোসা দাং দ্বোর আইনশন্মতভাবে গাড়িভা ভিত্তভেন।

শ্রীলতার মত ঠান্ডা ভালমানার মেরে এ বিয়ে হলে নিঘাৎ গলায় দড়ি দেবে: যারা গাড়ি ফিজ রেডিওলাম আর কডেয়ো গ্রুমা নিয়ে খেলাছর বাধে ও সে-টাইপের মেরে নয়। তাই রেস্কিউ আদ্ভ রিস্মার্বিল-টেশন পাটি একটি দঃসাহসিক আণ্ড ভেন্ধারে নেমে পড়েছে। আন্ত শ্রীলভার পিওদত্ত বিবাহ। কাডফাড বিলি হয়ে গেছে মারাপ বাধ্য কমণ্লট কনের रथाभागांधा हमाहा। माता हमाना कथा। কিল্ড মেয়ে সেখান থেকে ভার্নিশ। সাউথ कामकाधात श्रीशका स्त्रभाता नत्त्र श्रकांत्र দিক্ষে। ফেসকাট্ অনেকটা একরকর বলে वन्मनाव मिमि हम्भनामि छक विक्रां करत ছেন। হিন্দুম্থান স্টীকোর রিসেপ্শানিস্ট য্থিকা শন্ত মেয়ে। ওকে সবাই সেইনলেস য্থিকা বলে ডাকে। একট রকম কাপড জামা পরে ও তৈরি হয়ে অপেকা কর-ছিল। শ্রীলভার নতন মা নিজে সরকার মশাই কাম শ্রীর বাপের বডিগার্ড ভ্জাণ্য বাৰ সহ ওকে মোহনীতে নিয়ে গিয়ে নিজে আলবাম দেখে খোঁপা পছল করে দিয়ে অন্য কাজে বেরিয়ে গেছেন। পাহারা বাসিয়ে রেখে গেছেন ভূক্তপাবাব্যকে কারণ কনে সাজাতে বহু, সময় লাগবে, অতক্ষণ তার বলে থাকার সময় নেই। নিদি "ট আসনে বসার পরই কনে বদল হয়ে গেছে। *ষ*ূৰিকাকনৈ সাজাছে য্থিকার নকল অভিভাবিকাও সেখানে তৈরি। বোরখা পরে শ্রীলতা বেরিয়ে এসেছে চন্দন্দির সংক্র এবং যথাস্থানে পেণছেও গেছে। শাঘ্রবাজার পোস্ট অফিস থেকে ফোন করে সব ও-কে জেনেই আমরা আসছি! নদিতা বেশ রসালো করে ব্যাপারটা তপতীকে জানালো।

বন্দনা এপর থেকে ছুটতে ছুটতে নোমে এল এই সময়। পার্মছতা আর শক্ষিতা একে দেখেই উল্ দিতে গিরে আচুমকা থেমে গেছে। বল্দনার মুখ-চোশ কি রকম পান্টে গেছে। ও এসেই গদির ওপরে ধপ করে বসে পড়লো। মুখে কথা নেই।

নশিতা ভীত গলায় প্রশন করল, কি হয়েছে রে বলা?

করেক সেকেন্ড কথা কইতে পারল না বন্দনা। শেষে ধরা গলায় বক্তন, সর্বনাশ হরে গেছে ভাই। পাণি উত্তেক্তে।

যরে বাজ পড়াব পারে বেন শতক্ষেতা নেমে এল। সবাই বোবা হরে গেল কিছ-কাণের জানো।

সে কি! একট্ আগেও তো টোল-কোনে—পার্মিতা সম্পূর্ণ করে না কল্টা। বেশীক্ষণ কাছ হ'বে থাকবার মেরে বঙ্গনা না। সে ইতিমধ্যে একট্ সামলে নিক্লেড কথা শ্রেন বোঝা গেল। বজল বিহুপ্রী নয় বিহুৎগ। সুত্তুল প্রাল্যব্যেছে ৷

'আ[†]!' নাল্ডার ফেণ্ট হবার অবস্থা:

ভাহৰে কি হবে!' সাম্যার গলা দিরে আত্থাদ বেবেলো।

'বেজিম্ব্রিক সংগে কটিার কটিার এশাসার বিশেষদেশেটি ওরা স্পেটিছে যাবে সাক্ষীসার্দসহ। তারপর বিরে বাড়িকে অনুষ্ঠান। সব ম্যাসাকার হয়ে গেল, নন্দি।

'কেন পালালো? কোথায় পালালো?' পার্যায়তা জানতে চায়া

ন্হাত তুলে কাঁধ নাচিয়ে বলক উপসর জানেন! বড়ী পিসি ঠাকুরকরে স্তরাং তিনি এখন অসপ্শা। কি মানদা বলতে নারলো। শ্ধা উপস্তে ভড়ত ঘণ্টেশ্বর বজল, দাদাবাবা বাইরে গেভেদ ভোর সকালে বোধহয় দ্িত্নদিনের মধো ফিরছেন না। এই চিঠি দিরে গেছেন।

হাতের মাটো খলে বন্দনা একছিলতে
কাগজ দেখালে ওদের। তাতে ব্যরথরে
আক্ষরে দ্-লাইন লেখা। সবাই ঝানুকে
পড়ে সেখাটা পড়ল

—

আমি খবে শোকি আর সিক ছিল কর্মাঃ আমি কিছাতেই মনন্থির করতে পারাছ না। আমাকে তোমরা ক্ষমা করো! সম্ভোষ

'এ বলে কি রে?' পারমিতা চে'চিরে উঠলো, 'একজনের লাইফ নিরে তামাশ। হচ্ছে।'

নশ্দিতা বিকাজাবে মাথা দোলালো, 'কাল রাত দশটার সময়ও ফাইনাল ছিল। সব শ্লান পালা। তখন তো ঘণোক্ষরেও শোক্তিনেস যুক্তে দাওনি, বাবা।'

নিশ্চর কেউ ভাগেচ দিরেছে। ইস কি হবে। লোকটা এমন শরতান ভাষতেই পারিন।

বন্দনা চিরক্টো ফিরিয়ে নিয়ে ভাল করে বাগে রাখছিল বলল, পারতান না— অপদার্থ, কাশ্রের কাউরার্ডা। ইভিরেট পালাবে কোথার? আই শালা জ্ঞান ইউ আউট! আই মালট! আমার নাম কল্না বস্রার। আমিও বলির বাকা। আজ্ঞা—'

পার্নমিতা গ্রীক কার**ায় বজ্পনার** কবিজ ধরকো অমি আছি ভোয়ায় সজো।

'আয়রাও।' নদিতা হোম বাকি সকলের হরে কথা দিল, 'হয় এশ্পার নয় ওস্পায়।'

in er er end i tertigi grække het tille i flyer militeret

(Salets)

OBAT

মহিলা সাহিত্য আসর

সম্প্রতি ভার্নত। পরিকার সম্পাদিক। क्रीवर्टी रहना रहीय दी अरुडालिया स्वार्ड মহিলাদের একটি সহিতা আসরের আয়ো-জন করেন। এই ঘরোয়া আসরে সভানেতী ছিলেন শ্রীমতী বাণী বায়। এখানে বর্তমান সাহিত্য জগতে মহিলাদের অপ্রগতি ও অনগ্রসরভার বিভিন্ন করণ ও প্রতিকারের কিছা কিছা বিষয় আলোচিত হয়। মহিলা ক্ষবিদের কবিতা বিশেষ করে আধানিক কবৈতাকে পাৰত এক দ্বিট্ডবিংগ নিয়ে বিচাব করা হয় এ-বকম এক অভিযোগ ডলেছেন শ্রীমতী বিজয়া মুখোপাধায়ে। তিনি অতীত ৰ বর্তমানের মহিলা কবি ও সাহিত্যিকদের ববিতা ও সাহিত্যের উৎকৃষ্টতা আলোচনা করেন এবং বলেন যে কোন স্ভিটকেই তার देश्कव द्वांत कता भागाधन करा दशक--প্রন্তা হিসাবে দ্ব্রী-পূর্বে কোন ভেদাভের না করে। শ্রীমতী এথাক্ষী চটোপাধ্যায় প্রবংশের ক্ষেরেও মহিলাদের অন্রসরত।র कथा जात्नाह्ना करत - वर्तम, अवस्यः स्मायात ব্যাপারে যদি লেখিকারা এগিয়ে আসেন ভবে ट्रांफ्त अत्मादकत्र हुन्या हेक द्रम्पीत काना হিসেবে মধানা পেতে পারে।

প্রবংধ প্রস্ঞের আলোচনা করতে গিয়ে উপদিপত কেই কেটু বিশেষ করে সাঁরা মাসিক অথবা তৈমাসিক পরিকার সম্পাদনা করেন ভারা বলেন পঢ়িকাকে বাঞ্চারে চাল;ু স্লাখার জন্য নানা বিষয়কেই প্রাধান্য দিতে হয় ! ভাতে যদি প্রকারেই বেশী গ্রের দেওল হ'হ' একমার নামী প্র-প্রিক: ছাড়া সাধারণ পরিকা বাজারে সচল রাখাই দারতে ব্যাপার। আমাদের দেশে প্রবন্ধের পাটক-পাঠিক-ব সংখ্যা স্বরুপ ও সীমাবন্ধ পাঠক-পাঠিকার চাহিদার ওপরে নিভার করেট সাধারণ পরিকার প্রাণ দপদন ও আয়ু নির্ধারিত হয়। দীপালি ধর এষা মৃত্যাপাধায় ও আনে। অনেকে অবস্যা একথা স্বীকার কর্লো-3 হলেন প্রবংশর শাঠক গাঠিক সংখ্যা দিন দিন বৃদ্ধি পাছে এবং উচ্চলানের **প্রব**ংধন চাহিলাও আছে। প্রকাশ পড়ার জন্য একদ্য পাঠক-পাঠিকা সব খেম্মই বারা।

বর্তমান তর্ণ সাহিত সেবিকাদের মধ্যে গলপ বা উপনাস লেখার প্রবর্গতা খুব বেশী দেখা হায়, না, লেখা হালেও তার নান অনেক লেখকদেবই সমাকক নয় এ-বিক্য এক প্রথন উথাপন করেছেন শ্রীমধী এবা মুখোপাধ্যায়।

এ প্রত্যে শ্রীমতী বালী রায় বলেন, মেয়েদের দেখা বা জানার জগত স্বল্প, স্থোগত আনেক কম সে তলনায় পার্থেরা অনেক र्यमी अविधात अधिकाती। य कावरन औरमव দ্বিভাগ্ন ও চিতাশার মহিলাদের তুলনায় অনেক বেশী প্রসারিত। অবশ্য শ্রীমতী রাষ একখাত বলেন মেয়েদের এবং পরে বদের উপলব্ধির গভারতাতে পার্থকা নেই, কিল্ড অভিন্তুতা সংগ্ৰহে আছে অনেক তফাং। ভাই আমাদের দেশে শেখক সমরেশ বসার মত সমমানের লেখিকা এখনত চোখে না পড়লেও সাহিত্য-স'ন্টিতে মেয়েদের প্রতিভা भृत्यस्ति काल कारण क्या नश-প্রিবার সাহিত্যে নজর বোলালেই একথা প্রমাণ্ড হয় যে ছণ্টা হিসেবে মহিলারাও ক্ত উচ্চে জ্ঞান পেয়েছেন। মেয়েনের বে কোন জিনিসে উপজিখির গভীরতা কম ন ভাকলেও অভিজ্ঞান অভাব ্রাধেই বোধহয় বড়ানে নবান লেখিকাদের উপন্যাস বা গলপ ততটা উচ্চ মানের নয়।

একথা অবশা দ্বীকার করতেই হবে বে উৎকৃষ্ট সাহিত্য কবিতা এবং প্রক্ষ স্থানিত কবিতে হলে তার জন্য যে পরিপ্রমা ও দ্বীঘা সময় বার করার প্রয়োজন হয় মহিলাদের পঞ্চে সে গ্রম ও সময় দ্ব্যা স্ভির ক্ষেত্র বার করা সম্ভব নর কাবল নালিকত বা স্কাবিকার থাকতে পারেন না। সংসাবের কাজের ফাকে বা অবস্বের সাহাত্য স্থানা করতে হয়।

একডালিয়ার ঘরেয়া সাহিত। আসর উপস্থিত সকলকেই বেশ আগতন দিয়েছে। এ ধরনের সাহিত্য অসরের আয়োজন হয় নি

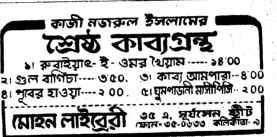
The state of the s

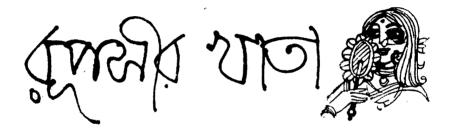
বললেই চগে। অথচ খোলাখানি আলোচনা,
সরহপরের চেনাগোনা মডামতের বিনিমম
প্রভৃতি প্রতিটি ক্ষেতেই এ-রক্ষম আলেরের
বাবের অনেকখানি। মাঝে মাঝে এ ব্যবনের
মাঝের আয়োজন করতে শার্মের
স্ফলেই তাতে উপস্থিত হয়ে স্বাধীন
সভামত বাব্রু করে প্রস্থারের মধ্যে চান
বিনিম্য় করে সক্ষম হবেন।

স্থিতিতা বা নিল্প স্থিতিত পৃথ্য বা মতিলার মধ্যে কোন রক্ষ কেনাকে মাদ্রাক্রির বাছনাইয় মতিলার স্থা জ্ঞানস ফাদ্রাক্রান্ত বাছনাইর আক্রেক না হয় তবে জনেক প্রাক্র মান্সই ডা উপেক্ষা কিবল কর্মান চোলে দেহখন। এখচ যে কোন স্থাতিই হয় প্রভার আবেগ, কলপান হ ম্ভান নারী বা পাল্যই হাই হোন নারী বা পাল্যই হাই কোন কোন কোনাকের প্রথান ক্ষামানের ক্ষামানের ক্ষামানের ক্ষামানের ক্ষামানের ক্ষামানের ক্ষামানের ক্ষামান কাম্যানির ক্ষামান্ত তার মানের ক্ষামাই আদ্রবাধীয় হয়।

বভাষানে নারী-প্রগতির হাবে আরের। যে কোন কঠিন কাজই হাখন পাৰ বৈৰ কাৰ সমানভাবে করতে এগিয়ে খাজেন সেখান নারী-পূর্বে ভেদাভেদের কোন হাতি আই কি > নৈহিক শক্তিত মোহোৱা প্রাক্তের ছে**লে** দ্রাল এবং সেই দ্রালতার জনাই শেল কোন ক্ষেপ্তে তারা হয়তো বিশেষ কিছু কিছু भृतिका मार्वी करतम स्थमन ग्रेम-वाज-राहेरन करें। বসা বা টিকিটের সাইনে প্**থক সাডিওে** म्हिता। क्रीयन शुरुष मध्य नाती-मृत्रुत्व কোন তফাৎ নেই তখন স্ভিটয় ক্ষেত্রে ্র পার্থারে কোন মূল্য নেই। काबादमत रमरम क बाना निर्माहन करक গৈয়ে মেহোরা শাুধা মেয়ে হয়ে জন্মাবার আভিযোগেই অনেকে হোগাতা স**ংৰও ঈশিস**ক क्रम अधान भारकृत ना।

-- अश्रीन क्रीश्रही





(२)

স্থাকর পর আমর। প্রথমে ন্যুথ্য বিশেষ অংশগ্রাল নিয়ে একে একে আলোচা: করবোঃ সবচেয়ে প্রথম চোখ:

কালো তা সে বতাই কালো তোক--

স্থামি বেংখাছ তারু কালো ছরিব চোখ।
সঙ্গাম সংক্রেম্ব চোখের দ্যতির হাতিরাব
দিয়ে কভো বাঁম হান্য ক্রম করেছে রমগাঁকুলা। তোখ এক মণ্ড সংগদ। চোখের কাণো
ভারাম ক্রেট ওঠে যাজিছ মানসিক গঠন।
ক্ষাম বন্ধে চোখ মনের আহ্বন। গেই
আহ্বনাকে ধক্ষকে স্ক্রেম্ব করে না রাখগে
ক্রোস্বর্মক্র করে না রাখগে
ক্রোস্বর্মকর করের প্রিস্বর্গণ বিকাশ হবে কি করে?

ধ্রেখ স্থানর করে সাধারার আগে স্ব-চেয়ে প্রথম বিচার করে দেখতে হবে, চোখাট কেমন স্থানী করেটো সম্পন তার আছে, আর করেট্ডু ক্য। সেই ব্যুক্ত প্রসাধনের ব্যুক্তা।

আপনার হয়ত শ্নেলে আন্চর্য হ্বেন যে চোশেরও ব্যায়াম হয় এবং তা নিয়ামত করা উচিত। চোশ যেমানই হোক এই ব্যায়াম স্বাম করা। যুম থেকে এঠার সময় থেকে রাচে গাড়ের যাওয়া পর্যাত কতকার্নি বিংশ্য নিয়ম স্বারই পালন করা ভাল।

ছুম থেকে উঠে ছতক্ষণ সম্ভব ঠান্ড। জলেম কাপটা দিয়ে গোল ধাতে হবে। এ নিয়ম সব কালের জনা। চোখে গান্য জল একাতে কোন রোগ ছাড়। দেওবা মাডিয়াক

अरम्प्रितंग्य (अप्रमः) बर्का है वयावंस्री 3 सिक्य नार्थे व्यावंस्री 3 सिक्य नार्थे व्यावंस्री 3 सिक्य नार्थे

নয়। চোহা মিনিট ভিনেক বেশ করে ধোহার পর বত করে সোজা চাইতে তারে। তারপর ভানদিকে মোথা সোজা বেখে। চোখের মাণ থারিয়ে চাইতে হবে এবং পরে বাদিকে। এই ভাবে বার দুশেক করার পর দুটি মণিই ভান দিক থেকে ওপরে তারপর বাঁদিক এবং বাদিক থেকে ওপর তারপর ডান দিকে: এই ভাবে পোল করে মিনিট ২ ৩ে খোরানোর পর এক মিনিট চোথ বন্ধ করে রাথতে হবে। ভারপর দিনের কাজ সূরে। আনও একটা খাব সাম্পর কাজের দ্বারা ডোখের জ্যোতি বাডান যায় ও চোপ স্কর করা হায়—তা *হল* ভোরবেলা নতুন স্হেরি লাল আভা ছড়ানো প্রে আকাপের দিকে তাকিলে সাঘা প্রণাম করা। প্রথমে সোজা তাকাতে। হবে ভারপব আম্ভে আম্ভেড চোৰ সহজ্ঞভাবে বড় করে প্রাণ ভরে লাল আভা দেওয়া উদীয়মান প্রথম সায়'কে দেখতে হবে। এরপর ঠান্ডা জলে চোৰ ধোয়া ও ব্যায়াত্ম। যারা এতো ভোবে উঠাত পারেন না—তারা করবেন না।

এরপর সারাদিনের নির্মিত্ কাজ চলার ।
দানের সময় চোথে সাবান তেল কোন কিছা
মাতে না যায় সেদিকে লক্ষা রাখা দরকার।
যাঁথা বাইরের কাজে যান তারা বাড়ী ফিরে
অনতত মিনিট ৫।১০ চোখ ৭০৫ করে বেথে
চোথের বিপ্তাম নেবেন। সেই সময় তুলা
ভিজ্ঞিয়ে গোল করে দৃষ্টি চোথের পাতার
উপর দিয়ে রেগে দেনেন। এরপর বেরোবার
সময় আবার ঠাতো জল দিয়ে বেশ কিছ্কেণ
ঘোখা ধুয়ে শোয়া দরকার, তবে সেই জলে
ঘোলাপ জল মেলান ঘাকলে ভা চোথের পাতে
আবি ও উপকারী হাবে।

এতে। বেল চোখকে সুস্থ রখোর মোট'মাটি আলোচনা এছাড়া খাদে। স্বাধ্যেত কিছা
জানা ভাল। কাঁচা পেথাজ, কডলিভার তেল্
ডাঞা হোট দুনে মাছের মাথা চিবিয়ে খাজা
ও সব্জ ডালা সাক্ষি—চোডার স্বাঞ্জার বিধ্যা ভাল। তবে এ বিষয়ে ডাজারকের মতামতই বেশি ম্লাবান। আমার আসল বস্তুবা
ভোগের প্রস্থান।

চাথের বহু রক্ষের প্রসাধন সামণী আঞ্চকালকার আধ্নিক রপেসজ্ঞার মধ্যে দেখতে পাওয়া যায়। কাজল আইলাইনার আই শাতো নকল চোখের পাতা চোথের পাতাকে শক্ত ও বড় দেখাবার জন্য ব্যবস্থা, প্ৰই আছে। কিন্তু যে কোন সামগ্ৰী ব্যৱহাৰ করার আলো স্বড়েয়ে প্রথম দেখতে তাব চোখটা কোন জাতের। অর্থাৎ বস্ত না ছেটে। টানা বিম্বা থোল। তেতর দিকে বসা ন। কপালের দিকে ঠেলে আসা। এর পর চোথের वह कारमा भरवती द्यामारहे বৈদ্যান চোখ কোন বৰুমের? এবং যে কোন প্রসাধনের আর একটি বিশেষ দিক যা লগ্ন রাখা প্রয়োজন তা ভল বয়স। কোন বয়সে কি ধরনের প্রসাধন মানাবে সেটা খাুবই যাকি ও বাণিধ দিয়ে বিচার করতে হবে। এছাটো অনেকের বিশেষ কোন টোখের ব্যাধি থাকতে পারে সে কারণে হয়তো ভার কোন রকম প্রসাধনট কয়া যুক্তিযুক্ত হবে না। সেই স্ব ক্ষেত্রে নিজেদের ডান্তার দৈখিয়ে জেনে নেত্য়া ভালা

সাধারণ আৰু । ও বঙ্গের চোথের জন। যে কওকগুলি ৫ গন সম্প্রীর দরকার তার সুবই অন্যান্য ধনা চোথের জনাও প্রয়োজা। ওবে ঠিক কওট । হোর করতে হবে আর কিভাবে করতে । সেইটাই বোদার ও হনানার।

রারে শে্বার সময় ঘরে তৈরি কাজন খাব হাংকা ও সরা করে চোখে দিয়ে রাখা ভাল। দিনের বেলা বিশেষ করে গ্রীঞ্মকালের দ্যুপ**্রে চেঃখের উপর কোন রকম রং বা** লাইনার **ব্যবহার না** করাই যুদ্ধিসংগত। তলে শীতের স্পাৃরে বেড়াতে গেলে হাস্ফা হাতে চোথের ওপরের পাতায় 'লাইনার' দিয়ে সর_ু রেখা টানা হায়। যাদের চোখ ছোট ভাঁরা নাকের পাশ থেকে-জর্মাণ চোখের স্বাৃু থেকে তুলি দিয়ে টিক চোখের পাতা ঘেয়ে মোটা করে কালী টেনে শেষেব ভাংশ একটা তুলৈ দিতে পারেন। তারপর নিচেও ঠিক ভেমনি করে চোঝের শাতা ছে'ছে স্বে; থেকে শেষ পর্যাত টান। উচিত--তাতে করে রেচাথ বেশ বভ ও জাল**লজ**্পে দেখায়। ওপরে ভুলে দেওয়া রেখার সংগ্র নিচের রেখা হাবে না কিন্তু, এটা মনে বাখা দরকার।

যানৈর চোখ চীন দেশীশুদের মত্রন চাপা ও তেরছা তাঁরা চোখ অংশনর সময় ওপরের তুলির টান প্রথম বারের মতনই দেকেন কবে শেষ অংশ সোজা চোখের ভাজের সংগা একট্র বাইরের দিকে টেনে দেবেন। তারপর নিচের পাডায়ে মাঝামান



অংশ থেকে সোজা টেনে নেবেন, ওপরের রেখার সংগ্য সমতা রেখে। এতে করেও ঢোখ বড় আর সোজা দেখাবে।

যাদের চোখ বেশ বড় ও ভাসা ভাসা ভাসা ভারা নিচের অংশে তুলি দিয়ে আঁকবেন না, তাহুলে চোখ মুখের তুলনায় বেশী বড় বেখাবে। আর ওপরের পাতা ঘেষে যে তুলির টান দেবেন তা খ্ব সরু হওয়া ভাল। ছোট চোখের ওপর একট্ মোটা রেখা হবে, কিল্টু বড় বড় বড় চোখের ওপর তা হবে না।

একেবারে গোল আকারের বা মাধারি ধরনের চোথের জনা আই-লাইনার বাবহার একটা বিশেষ কায়দায় করতে হবে। চোখের পাতার ধার যেখে ভূসি দিয়ে রেখা টেনে শেষ অংশে একটা নজর দিতে হবে। শেষ অংশ চোখের নিজগ্ব বেখা ছুটিডয়ে তার একট্র ওপর দিয়ে সোজা সামান টানতে হবে। নীচেব অংশেই ঠিক তেমান করে নারা থেকে শেষ অ্বথি এসে ভারপর জড়েনা দিয়ে ওপরের অংশের সঞ্চো সমতা রেখে সোজা টেনে দিতে হবে। এব ফলে চোখের চেহারাটা অনেকটা মাছের মতন দেখাবে। যার শেষ অংশটি মাছের ল্যাক্তের মতন মনে হবে। এর ফলে শুধু যে চৌথ দেখতে ভাস লাগে তা নয়, চোখের দ্ভিতে একটা মানকতা জালে।

এতক্ষণ গেল আই-লাইনার' ব্যবহারের কথা। এবারে আসব আই শ্যাডো অর্থাণ ভোশের ওপরের ঢাকনীব (আইলীড) ওপর যে সব রঙ ব্যবহার হয় তার কথা। এর আগে একটা কথা আগাচনা বরতে ভূসে গিয়েছি, তা হল কোট্রগত বসা চোথেব কথা। এমন চোথের নিচের অংশে কালো রেখা টানা কোন মতেই উচিত নমা ওপরের অংশেও খুব সর্বু করে ফ্রান রেখা দেওরা চলতে পারে। এর জন্য অন্য বাবঙ্গা হা পরে আলোচনা করবো।

'আইশ্যাডো' ব্যবহার করার সময় একটা कथा विरमञ्ज करत्र भरन बाधा शरहासन, ा इस कि अंतरनंत्र अनुष्ठारनंत बना जान, यात कान अभयात कना। अकारन वा मून्द्र আমাদের দেশে আইশ্যাডো' বাবহার? নৈব নৈব চ। সংখ্যাবেলাতেও ভাবতে হবে। যাদ উৎস্বের জায়গায় খুব বেশী তেঞ্চের আলো খাকে বা বিলিতি কায়দার উৎসব হয় তাহলে বাবহার করা চলবে। এখন ভাষতে হবে কোন রঙ। সাধারণত শাভার বংয়ের সংগ্র মিলিয়ে চোখের ওপরের রঙ ব্যবহার করা হয়। তবে এর মধ্যেও একটা বিষয় ভাববার আছে-খেমন গায়ের বং খুব কালো তুলে भव तर ठलाव ना। रुष्ट्रे स्कान देश्हे ব্যবহার করা ঘ্রিছম্ভ হবে না। আব্রে হানের চোখ ছোট, বা গোল আকারের তাঁজ রহ ব্যবহার করতো থাব হাল্টা হাডে চোখের ওপরের মাঝখান থেকে সারু করে ব্ৰাশ দিয়ে হাসকা টানে টেনে দিতে হবে ভুরুর নিচ প্রশিত। আইশ্যাডো সব সময়েই ' খ্যে হালকা আর মস্ণ কলে দেওরা উচিত। রভের আভা থাকবে তবে তেজ থাকবে না, এটাই **হল সাজা**র বিশেষ**ত্ব।**

এবার আসা হাক আগও আগগুনিক ব্যবহুধায়। আজকাল চোথের সংশ্যে আঠা

এই জিনিষ্ব কিন্তু 'মাসকারা' হাড়াও

হয়। বাচ্চাদের ব্যবহারের দতি মাজার রাশ্

দিয়ে জাস ভিজিয়ে রোজ চোটের পাডার

কৈচ থেকে ওপরের দিকে ঘ্রিয়ে টালজে
ভ্রাথর পাতা বড় হয় ও স্কর হয়। তুর্বৈ
একটা কথা আমাদের সর্বাদাই বনে রাঝা
দরকার যে চোথের প্রসাধনের জিনিষ্যালি
যে কোন কোলপানীর ব্যবহার করা উচিচ্চ
না, তার ফলে চোথ খাবাস হতে পারে।
প্রসাধন সামগ্রী কেনার আগে বিলেশী বা
দেশী খেগালি নামকরা ও ভ্রাল সোল্লী
দেখে শ্রেন কেনা ভাল। আর নিজের চোথের
বঙ্গ পারের বং সব বিচার করে রয়েরের শেজ্
কেনা একাদক প্রয়োজন। হয়তের রংরের
নিল না হলে স্ব্রো সাজটাই বার্থ হতে
পারে।

--ব্ৰব্ৰিপ'নী





একটা ছোট খানের গলপ বলি। এদিকে আস্মে, একটা এপাগো। মাচ, আর্ম্র হার্নশ মিজামতা দর্শদার। চল্যা থকা। কোথাও যাই। ছাসলে কি জামেন, ব্যাপারটা এত মিতৃতে ভাষাত চাই যে লেন শোনা তাপেমভানদের থেকে অলাক দ্রবেদ্ধা পোলে এই গ্রহীর মিন্ট্রেডার কাইনেটা ভাষাতে ব্যুক্ত বল পাওরা যায় মা।

আপনি নিশ্চার চুগাক উঠনেন। এই কোকটা—নিক্টটা পরিচিত্র কেন জানি না দেশকে ভাগ পানে, পালাপ করে সুখ আছে, এর হঠাছু কি হানা নিসেবিভাগ এমনা কি হানা হৈ মাঝারতের মাতালের হত দৃঃ খ টলতে টলতে চলেছে। আপনি ভেবে চলেছেন এইবানা নি আরপ্ত ভাবতেন না করে তিলাছিল মাকি বা বাবতে তেলাছিল?

কি চেমেছিল মাকি বা বাবতে তেলাছিল?

কি চেমেছিল মাকি ব

— ঠিক বংরছেন। খান রাজতে চোর্ছিল।
বুলতে কি খানই করেছিল। ক্রেফ বংকর
উপর জারাটি—। আর কে জারেন? তারার
বাধ্যা ছোটবেলার বন্ধা। খার ভালবাসভান
থকে। বাছাত খার ভালবাসভা রামাকে।
টিফিনের কোটো থোক একটা মিথি রোজ
ানাক খাওরতো। প্রসাছিল ওদের।
বিপ্রার প্রসার সম্মান্ত দিত।

বাস্ত্য কিন্তু আমাত্রে কথনো ধর্মের ত নিজেও গ্রাম্বালকে ভাগনাসে। আমি জানিয়েছিলাম। জানিয়েছিলাম ওবে---আর কাউকে অবশা নয়।

বিকে লার রোদ শালগাছের পারের তলাম শেশা বুমালের মতো ছড়িয়ে। আমি আর গালা হাসতে হাসতে খেলার মাঠে যাছি। তেমন বেটে নেই রাগতায়। দ্-একটা সভিতাল কখন নিঃশব্দে চলে যাকে নজরেও পড়ে না। কি এরকম একটা সময়ে বলেছিলাম বাপারেটা। ব্কের মধ্যে যে কা এক অভ্ত-প্রে আনন্দ এসে ভর করেছিল, এখন মনে বয় বেটা আন স্বভারতীয় স্থাদশানীতে দেওয়া বেতা বেশের সব পাক এসে দেখে যেত ভালামার আনন্দ কাকে বলে, ভালামার আন্দ

বাচন কিন্তু কিছে বুলল না। খ্র ফর্সা ছিল বাচন আর চোখ দুটো কটা কটা। পাশা-পাল হাটছিলান, চোখ দেখতে পারছিলান না। কেবল আন্ত মুখের একটা পাল দেখা হাছিল। কীরক্ম একটা পাশতীর্ষ আর ছারির ফুলার রুড় তিক্সান্তা, বে তিক্সান্তাকে বিশ্বাস করা ফ এ দ্বাসের সম্প্রিত একটা নিশ্রভাব হ'টে উঠেছিল ভর মুখে। মনে হ'চ্ছল একটা শ্রতানি ওর মনে কোথাও জম্ম নিচ্ছে। কিন্তু ও আমার বন্ধা, আমাকে গ্র ভালবাসে। প্রবিশ্বা আর চিন্তা এ দুই নিজ্জল কমই সেন্টে ফেললাম মন্ থেকে।

অনেক্ষণ প্র বাচ্চা বলজ---হাং, কি যা তা বলছিস। এত চেনাশেলা সব্, এক গড়োয় থাকি।

ব্ঝতে পারছিলাম ম্দ্লার প্রতি ওর গ্রন্থ দ্বেল। কিন্তু সে কথা ও প্রকাশ করপ না। ফিল্ড ভারপর থেকে যা একাণ্ড গ্রাভাবিক তাই হল। ওর আমার মধ্যে কোথাও একটা -চিড ধরতে শ্রু ৠরসা। এছাড়া আমি যথম ন্দ্রার সংখ্য কথা,বাল ও দ্রে দাঁডিয়ে থাকে। মৃদ্লা আমার সম্পর্ককে ও সমর্থান করে না, তাই ও গখন পিছনে দাঁড়িয়ে থাকে. দাঁড়িয়ে খেকে আমাদের কথায়তো ভাবভাগ্য লক্ষ্য করে ! তখন কেন্দ্রন ভয় হয় আমার। ব্রিথ বাচার দিকে মুখ ফেরালেই দেখব বাচনর মুখের বদলে অপ্রিণত শয়তানের কেমন একটা व्यम्भुष्टे सूथ टेड्सी ह्याट्ट या छात्रास्क

লোগনে আক্ষমণ করতে চাইছে বহিংয় বংশার করতে চাইছে

ক্ষাত্র নাকার বিকে একবার তাকিলে করে রাজ মান ক্ষাত্র নিল দেখলায়।

এই শনিকপাণ কথলে কেবল একটাই চন্দ্রীর বস্তু ছিল। সেটা একটা বালানকাড়ি।
আদ সমান উচু বন বন অনেকাগ্নিল বাউগাছের হাবে গাল টালার বাংলোটা দেখা
কেত। বাড়ির মালিক মডিবাব, বছরে একবার
আগতেন। কিল্ফু তিনি কালাদের খব ভালবাসতেন। কেলা হলেই মালার হাত রেখে বাবা
নার কুলল কানড়ে চাইতেন, আর বাডার
বেলা বাভার বিশ্ববা গিলর। তিনি কিল্ফু
তার বাগানে আলাদের খেলবার অন্মতি
দিয়ে গিরেছিলেন।

আমরা শেশতাম। বাচ্চা একদিন ফটবল নিয়ে এসেছিল। আমি কিক করে সেটা বাগানের অনেক ভিতরে ফেলে দিশাম। কারণ সহজেই অনুমেয় ধ্টবল থেলায় মাদ, লাকে নেত্রা প্রায় না। ব্যস হিসাব কিছ বেয়ানান হলেও নাম-পাতাপাতি জাতীয় মেয়েল থেলায় ভিডে প্রভাম। থেলার সময় ওর একটা ছোয়। পাওয়া যেত (বাচাও পেত)। সেটকু ক্ষিরের আম্বান্দর মত লাগত। মাদ্রলার বাবা ব্যাড-মিন্টন খেলার জন্য দটোে গোলাপী উলের বল কিনে দিয়েছিলেন। মৃদ্ধলা ভার একটা আমায় তৎক্ষণাৎ দিয়ে দিলে বাচ্চা মোরা মর পথের উপর এমন স্জোরে পা দাপাতে দাপাতে চলে গেল আমার ভয় কল ওর না পা ফাটো স্ক্রিক্ত হয়ে যয়।

কিন্তু সে বছর প্রেডায় খ্র জন্দ হয়ে গেলায়। মৃদ্রোদের বাড়ি কলকাডা থেকে জনক লোক এল। ভাদের মধ্যে হল্দ আর লাল মেশানো ভোরা কাটা জনকলো জায়া সার আমার সমবরসা একটি ছেলে মৃদ্রাক সন্তান্তর ব্যাপারে আমারের প্রাপা অংশে আনক ঘটিত পড়ে হায়। ছেলেটি মৃদ্রাদের বাড়ি থাকে, গ্রায় কলাকাতা থেকে এসেছে, ভায় অন্তানীর করবার উপায় নেই। মৃদ্রাভ খ্রে একটা যেন করবার উপায় নেই। মৃদ্রাভ খ্রে একটা যেন করবার উপায় নেই। মৃদ্রাভ খ্রে একটা যেন করবার অ্রাম্বিকের অগ্রাধিকারের স্বাজিক করবার প্রাম্বিকের অগ্রাধিকারের স্বাজিক করে মৃদ্রার সাম্প্রতিক অর্থাকি চিম্ভা করে মৃদ্রার সাম্প্রতিক অন্তাম্যাকিক করে মৃদ্রার সাম্প্রতিক

বাচো এসে ছেলটির গণপ করে।
ছেলেটি নাকি দারংগ বল থেলে। আমি
গোলে খেলাডাম ছেলেটি এমন এক শক্ত কিক
করল যে বল মাথে লৈগে মুখে বছ উঠে এল।
মাথা বা বা করেতে লাগল আমার। গালের
খানিকটা ছড়েও গেল। ছেলেটি কাছে অসতে
পরম নিশিশিতর সংগে প্রচান্ত এক হাই কিক্
করলাম। যেন মুখে বল লাগে নি, পাউডার
পায়া লোগেছে।

কিন্দু পরের কিকেও ও আফ্রাকে গোল

বাচা খ্ব হাসছিল। প্রে খেলার শেবে
ম্থ উচ্চ করে ছেলেটির সংসর মংখের
সিক্তে ডাফিরে অকারণে অপ্রয়েজা অনেক
স্পৃতি বন্দনা করল। আমার দিকে ম্হুডের
ক্রেক্ত ক্রেলে না।

থানন বাজা অংশণ্ট ন্যৱে সেয়েলি ততে ইন্ত্ৰমিতু করে জানাল এর সংগ্রাহালিক ব্যাহালিক পরে বিজে হবে। আমি ব্যাহানিক বার করি হয় নাকি। এরা ভো আম্বর্তিন

ক্রিট্ আন্ত্রীর নর, ব্রুলার দালার ব্বন্ধবাদির সংগ্রু । ক্রী সম্পর্ক আলো সম্পর্ক কিনা শ্রেলাম নাঃ কিন্তু ব্রুলাম ছেলেটি মদ্লার আন্ত্রীর নর।

কিন্দু শেলেটি চলে সেল। গরমের
ছুটিতে এসেছিল, ছুটি ফুরোতে সবাই চলে
গেল। মুদুলা আবার খেলতে এল। আছত
পৌর্বে খেলা এবার আমি ফুটবল দিয়েই
শ্রু করগমে। মুদুলাকে গোলে দাভি
করিরে দিলাম। বাজ্য দেখি খেলা ছেড়ে
দির কেবল মুদুলাকেই দেখে। আতা করে
কিছান থেকে খেলতে খেলতে আছা করে
বাজ্য মাটিতে বাস পড়লা। ৩ঃ বাপ রে। বলে
বাজ্য মাটিতে বাস পড়ল।

বাগানে একদিন একটা স্বাদ্ধ প্রজাপতি উড়ছিল, ধরে এনে মৃদ্গার মাথা ছেড়ে উড়ে কাণ্ডন ফ্লেনের ঝোপের উপর গিরে বসলে মৃদ্গা খ্লাতে হাডগাল দিয়ে উঠল । আমার ফিকে তাকিয়ে আমার ইছে করছিল মৃদ্লাকে জাপ্টে ধরি। এত ভাল লাগতি এ এ।

বাচ্চাকে দেখলাম হিংসায় মুখ বেংকে

এরপর বাচ্চা আর আমাকে পিপ শো কিংবা ত্যাপারি খাবার প্রসা দিল ন।।

কিন্তু ওর একটা বদভাস তৈরী হল।
নতুন যা কিছু দেখে ভাই মুদ্যুলাক দেখায়।
নাদ্যুলা ও আমি মুখ ঘ্রিয়ে দেখি হয় সেটা
কনো ফ্ল নয় কোনো বিচিন্ন আকৃতির
নাম্লি পাথর, নয় তো স্লেফ সিগারটের
রাংতা। কিছু দিন পর ও কিছু দেখাতে
চাইলে আমি মুখ ফেরাভাম না, মুদ্যুলা
তখনো ফেরাভান না ফেরাজা আমার প্রতি
দ্যুলা কেরাজান না কেরাজা আমার প্রতি
দ্যুলা কেরাজান কার প্রতি
দ্যুলা কেরাজান কার প্রতি
দ্যুলা কেরাজান কার প্রতি

মতিবাব্র বাগানে আমাদের থেলা শেষ হয়ে গেছে সেদিন। কিছা তাভাতাভিই শেষ হয় গেল। মৃদুল। থেলতে আসে নি। বাচচ। থেলে শেষে পায়ে জাতো গলাচেই। এমন সময় অত্যান্ত স্বাদর একটা পাখি স্যাউ গাছের মাখায় এসে বসল। অসাধারণ পাথি-টার সৌনদর্য। এমন পাখি আমি জীবনে দেখিন। মনে হল যেন রূপকথার জগত থেকে উদ্ভে এলেছে। গায়ের কী রঙ, গলার কাছটা ময়া্রের রঙের, ডানা সাটো উম্জান নাল সব্জ হল্দ আর গাঢ় লাল র্ভের খেলা সারা শ্রীরে এমন স্ফরভাবে সাজানো মনে হচ্চিল মেন কোনো চিত্রকর ওকে রাভিয়েছে। এমন একটি দুলভিবস্ত দর্শন করে বিসমায় আনদেদ আমি অভিভৃত, বিষ্টে। বাচন দেখি গেইট পার হয়ে বঙ রাস্তার উঠে গেছে। আমি দৌড়ে গেল।ম মুদ্রশার বাড়ি। মুদ্রশা আর আমি উধর্ন-দ্বাসে দৌড়ে ফিরে এলাম যখন দেখি পাথিটা তখনও বনে।

বিকেলের আলো কমে এনেছে ইতিমধো। আলোর বালে বালা কল গারে নাথার জারুও মুশী কলামা আরও নিমু ওটের বনেকে সংখ্য আরও মুশী কলামা আন্তর্ক কলামা আনুনাকে পালালর মত স্বাধ্যা প্রাথান সব কিছু মুখ, জানা, বকের বিচিত্র রক্তর প্রথা ভিছ্মনিত বলে ভলোছ কত স্কুলর পাখিটা। এমন সময় লিছন থেকে খাঃ খাঃ করে হাতভালি লিমে উঠতে পাখিটা উড়ে গেল। ভূরং করে উড়ে বাগানের ভিতরে গিরে বসল তারপর কোথার হারিলে গেলে কে হান্ম।

ফিরে দেখি বাচ্চা। মুখ গোঁজ করে মাটির দিকে তাকিয়ে দাভি য আছে।

ইচ্চে করছিল বাচ্চার গলা টিপে ধরি তংক্ষণাং। কিন্তু শত হলেও ও অহার কর্ম পারসাম না। পাখিটার জন্য অভিথর হয়ে চতদিকে দাণ্টি ঘোরাতে লাগলাম। জামার প্রাণের মান,বটাকে ক.ডা ভাল করে ঐ অপাথিব বৃহত্তর সৌন্দর্য দেখা চ্ছলাল বিন্ত তা অসমাণত রয়ে গেল। মনে হল বাচনা ফেন আমাকে খনে করল। মৃদ্পাকে কোন্দিনও আমার ভালবাসার কথা জানাকে পারিনি কেবল আজ খেন ডেণ্টা কর্বছিলাল। আল্লাক প্রাণ মন সভা-সর্বাক্তর ভর নিকট্ডম সামিধো পেণছে যাজিল বারবার। পাথিটা দেখতে দেখতে দাজনাব ভিতৰ কভবাৰ অম্তত্বা সুধারস বিনিময় হচ্চিল, দুহিটতে দুল্টিত কত কি জানাজানি হল্পে একটা কিছকে কেন্দ্র করে আগ্ররা মিলিত চাচ্চলায় একান্ডভাবে ঘানিষ্ঠ হাচ্চলায়। প্রেমের শিহরণ এমন রোমাঞ্চকর হয় **কখনো অনভেব** করিনি এর আগে। কিল্ড বাচন প্রে প্রতিশোধ নিয়ে নিল নাটক যখন দার্ক জন্ম উঠেছে ঠিক তখন ক্লম্ম হাতে মবনিকা টেনে দিয়ে। ভাষার আভাবের আমার পিছ; পিছ, গোপন হিংসাকের মতো এক সময় শিথর প্রতিজ্ঞাবদ্ধ যে নিষ্ঠার ব্যাধ এলে দভিল আমারই প্রিয়তম অনুভূতিকে শিকার করতে সে যে আমারই বন্ধা, হলে পারে এ কথা আগে স্বংশত ভারতে পারি নি।

এ ছাড়া মৃদ্লোকে আমি বা **উপ্তার** দিতে চেরেতিলাম সেই **অলোকিফ** সোন্দ মার দশান তা কি আর **পন্নর্শার** সম্ভব। আপনিই বল্লন ?



সমূহ স্থিত ফলের মধ্যে আমাদের দেশে অনাতম প্রেণ্ড ফল হিসাবে
গণ্য হরে থাকে। শুবু আমাদের দেশ কেন,
এই অম্ক ফল আজ ইউরোপ মধ্য এগিয়া
ও আমেরিকার মান্ত্রকেও অসাধাণেভাগে
আক্রণ করেছে। জক্ষ গক্ষ টাকার আম
ক্রেজ ভারত থেকে বহিভাবিতের নালা
দেশে বংতান হয়ে চলেছে। এর মধ্য
গণ্য ও স্বাদ্ স্বাদে বিদেশীয়রা এমনই
ক্রিজ্ত হয়েছেন যে, সে দেশের মাটিতে
এই কল কলাবার জন্য নানাভাবে চেতা
চালিয়েছেন তারা।

প্রাচীন সংক্রত সাহিত্যেও আমলেহ আয়ুকুঞ্জ, চাত্মঞ্জরী আশ্রাসার আমবন প্রভৃতি আম সম্বন্ধীয় বহু শব্দের প্রচলন দেখা যায়। নববর্ষের স্চন্ত থেকেই আন্তম্কুলের স্বভিত্তে এদেখেব আকাশ-বাতাস ছেমে যায় মধ্য পর আনদদ-উল্লাস আর মধ্যোঞ্জনে মাধ্য হয়ে মুকুলিত ব্ৰুসমূহ। 1973 <u>কোরপর</u> মানিমর প্রারশেভই ফলের সমারোহ দেখা বিতে থাকে গ্রামাণ্ডলে, গল্পে-নগরে। মানা-यार्गात आह्मत शाहर्य स्ट्राम-यात बाषा जवाव मानहे আনক্ষের ক্রাণার, ক্লিবে ক্লে এনে দেয়। বর্ষার প্রায় শোষ পার্যান্ত জোরদার চলতে থাকে এই

আমাত ফলের আপ্রাদন ও মাচাপাকীত্ন।

এই আম নিয়ে বাংলায় নানা প্রবাদ-প্রচলন আছে। যেরন—'আছা শ্রেনলে আমসী বয়স গোলে চামসী, আম না হতে আমসরু', 'আমে বান তে'তুলে ক্ষামে দুধে এক হয় আদাভের আডি পাদাড়ে রয়'- প্রভৃতি। এই আম 'থকেই আবার নানাপ্রকার টফ-ঝাল-মিন্টি আচার, আমদী আগ্রেচর, আগসত কাস্ডেদী প্রভৃতি মুখরেডিক জিনিস তৈরি হয়ে খাকে। এই আয়ুফল বাংলার প্রধান ভারদান হাকেও, বিহার মধাপ্রদেশ মাদ্রাজ উত্তরপ্রদেশ প্রভৃতি ভারতের अमाना প্রাদেশেও আম জনেম থাকে। বোদবাইয়ের भगा पत्रताकार**ा** रक्षान्य**र** भाग ANTOUR! **মত ^শশারেব ডিভের**, ব্যস্থায়ী গ্ৰপ্তান্ত প্রভাতিৰ প্রসিদিধ তে: আছেই ভাছাড়া গোরাতেও প্রচুর জাল হায় থাকে। কণ্ট কোলেকা ও গিমার প্রভৃতি গোয়ার মামকরা আয়।

মা্লতঃ প্ৰিচনবাংলার যে পরিমাণ শানাবিধ আত্র ফলে থাকে সে ধর্মের **্বাশ, সাইজ ও র**্প-ক্ষের ভারেইটি আর কোথাও দেখা বার না। একমাত ম, শাদা-বাদ ও মালদার আমই আছে শতাধিক **ন্মের। তার কিছ**ু পরিচয় এখানকার **প্রের্গ্রেড 'আয়'** নামক প্রবদ্ধটি থেকে **প্রিকরা অবগত হবেন। কেবলমার আ**ম **দিলনের নামই নয় এই ফল ও ফলের** গাছ **সমর্শের বহ**ুবিধ **জা**তবা তথা, এবং এই ফলা ফলাতে হলে তার স্বাদ বৃদ্ধি ও হালাল বৃদ্ধি করাতে হলো যে শিকা আছে, গাছের প্রয়োজনীয় পরিচর্যা আছে সে স্থল বিষয়ত রচনাটির মধ্যে অভিজ क्षा निम्मानाम বাহাণ বের নবাব



উণানসম্ভের ভূতপূর্ব - অন্বাবধায়ক প্রবোধন্দদ্র দে এফ আর এইচ এস (লাভন), বেভাবে আলোচনা করেছেন তা বিশেষ প্রণিধান্যোগা। উক্ত প্রবংগতির অংশবিশেষ এম্থানে 'সজীযনী প্রিকা' (২রা আয়াঢ় ১৩০২) থেকে প্রকাশিত হল।

: जाम्रा

আয় যে কেকট বাংলাদেশেই জনিমা।
থাকে তাহা নছে। শতিপ্রধান দেশ বাতীত
ভারতের সবর্তি ইয়া জন্মে। ভারত
মহাসাগরন্থিত সিংহল ও ববস্বীপ এবং
চীন ও রক্ষদেশ প্রভৃতি অনেক দেশে আয়
ছানিমায় থাকে।

কথিত আছে যে, হনমোন যথন সীতা উশ্বাহার্থ লাকায়-আধ্রনিক গমন করেন তথন তথাকার স্মিণ্ট আয়ু-ফল ভক্ষণ করিয়া তাহা_র বীজ ভারতে নিক্ষেপ করায় এদেশে আত্মের উৎপণ্ডি হইয়াছে। কৃতিবাসের রাম্য়েশে এ কথার ব্ৰমীল উল্লেখ থাকিলেও সংস্কৃত্ রামারণে কিম্ত তাতাব কোন উল্লেখ নাই : কহিবাসের কথায় নিভ'র রামায়ণের পাবের ভারতে আয়ু ছিল না বিশ্বাস করিতে হয়। কিণ্ড বেদে আয়ের উল্লেখ থাকায় আমহা বিলাতে পারি যে রামারণের অনেক পাবর চইতেই ভারত আহ্বাভ ক্রিছে। বেদ রাহারণ অপেক। আনৈক প্রাচীন গ্রন্থ: স্বভ্রাং ভাহাতে মখন অংশ্বের উল্লেখ দেখা যায় দ্রখন কৈদিক সময়েও বে ভারতে আন্ত ছিল এবং আমাণ শবিগণ বে ভাচা জানিতেন িষ্ঠো কোন সংখ্য নাই। অন্তর্ণক আত্মের क्षमा क्रावडनर्स लश्कात सिकाई श्रामी पान्छ।

ভারতের নামারখানে আন্য জান্য কিবন্ধ ক্রমানে দাকিবারে বেন্দর ই নাহনিয়ারে এবং বাংগালার মধ্যে মালেন্ড ও মার্কান-বাদে যে সমালায় আয়া ক্রান্মে তারাই বিব্যুট আয়া প্রচর পরিমানে ক্রান্ম্যার উংক্রট আয়া প্রচর পরিমানে ক্রান্ধ্যার থাকে তাহা অপর সাধারণে অবগত নহে। তাহার বাবণ এই যে, ঐ স্থানের আয়াগাই স্থানাতরে সহজে বাইতে পারিন্দা। বাগিচা সম্বন্ধে ইংরাজি অথবা বাংলা ভালার যে সম্বায় প্রতক্তক এ প্রতিত

প্রকাশিত হইরাছে ভাহার 7012 খানতেই মার্লিদাবাদের আমের বিষয়ে কেল উল্লেখ দেখা বার না। এই জন। সাধারণেও তাহার বিবয় জানেন না। 'চনখালির আব' নামে যে আম কলিকালে ও অন্যান্য স্থানে চালান হয়, তাহা খাস কিন্তু তাদ্ৰ মার্সিদাবাদের আম বটে ভাজ জাতীয় নহে। তাহার কারণ এই যে, ম্থানীয় ধনী ও ভদ্লোকদিগের থে সম্দায় বাগান আছে তাহার অপকণ জাতীয় আলোলিই কলিকাতার ফল-বারসারীগণ খবিদ করিয়া আনিয়া বিজয় করে। বাগান অধ্যে ভাল ও নামজানা গাছে বে আয়ু পাৰে, তাহা উদানস্বামীগণ বিক্রম না ক্রিয়া স্ব স্ব ব্যবহারের জন্য রাখিয়া থাকে নালদহ বোদবাই প্রভৃতি ম্থানের অনের উৎকৃণ্ট জাতীয় আজকাল অনেত স্থানে দেখা যায় এবং গাছ-বাবসায়ীগণত বিজয় করিয়া থাকেন, কিন্তু ম্রসিদ্বাদের শতাধিক উৎকৃত জাতীয় আনু মুর্সিদাবাদেই অবর্ণধ আছে। মুর্সিদ্বিসিগণ যদিও ঝানীয় আম্মকে একচেটিয়া করিয়া রাখিয়াছেন কিন্তু পরিতাপের বিষয় এই যে, তথায় উহার যথাবিধি পাঠ হয় না এবং দেখা शाय, तकल गाडिय मधिक नाम नारे। এकरे গাছ অনা বাগ্যনে নামা তরপ্রা ত इट्रेग्नाटकः देशा हिमानस्यामीयन देखान्यार्यक না করিয়া থাকিলেও নামের প্রতি ঐদাসীনা যে তাহার কারণ, তাম্বিয়ে সন্দেহ নাই। যাত হাউা, এক্ষানে আশার ানক স্থানীয় শিক্ষিত বিষয় এই যে, ভদ্রলোক আর্ডা नाना প্रकात स्थानीश আয়ের একগ্র াবাদ করিতে আরুভ করিয়াছেন। ায় বন্ধ; বাব; মহেশ নারায়ণ রাঃ তথাকার নানাবিধ উৎকৃষ্ট আমের গাভ সংগ্রহ করিয়া দ্বীয় বাগানে রোপণ করিয়া কেবলে যে মিজের উদ্যানকৈ মুলাবান করিয়াছেন তাহা নহে ভেশ্বারা তিনি মুর্সিদাব্দেরও একটি স্থায়ী উপকার করিয়াছেন। সংবেক সংগ্রহের মধ্যে নিজামতের 'হাুুুুমায়ান-মঞ্জিল' ও বাজা-সাফেবের বাগন * এবং কাটরা প্রিত রায় লছমীপত সিং বাহাদারের বাগানকে উৎকৃষ্ট বলা যায়।

ম্রসিদাবাদের মধে৷ যে সকল অম
আছে. ত-মধে৷ কালাপাহাড় কহিত্র
রোণন বিম্লা নাজিম-পছন্দ মিছরিকন
লম্বা ভাদ্ভে ভোতা (হরিপজের)
আনানাস এনাদেত-পছন্দ প্রভৃতি উৎকৃতি ও
প্রথম প্রথমীর আয়৷৷ একাল প্রযাতে যে
সকল আয় তথার আবিন্দুত হইরাতে, তাহা
মতাবিধি পার্ট হইলে উলতে হইতে পারে
এবং ষতা করিলে রকমের সংখাতে ব্দিশ্ব
করিতে পারা বায়।।

মারসিদাবাদে ও মালদহে প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড আগ্লের বাগান আছে এবং প্রতি বংসর এই দুই প্রানে বে আগ্লেজনার, ভাছার অধিকাংশ বিজয় হইয়া দেশাশ্তরে চাপান হয়। এক মারসিদাবাদেই আধ্বর লক টাকার আম প্রতি বংসর বিজয় হয় এবং তাহা 'চুনাখালির আব' নামে বাজাও প্রচলিত।

বীজা জোড়-কলম ও গুটি-কলমে
আন্তার চারা হইয়া পাকে। বীজ হইতে
চারা উৎপান করিতে হইলে লৈটেঠ মাস
হইতে ভাল মাস মধ্যে যে-কোন সম্মার
অচপ ছায়াবিশিট স্থানে হাপোরে বীজ
রোপণ করিতে হয়। বীজকে আটি ব
বিলায় থাকে। সপেজা ফলের আটি ব
হইলে ভাল চারা হয় না...

হাপোর হইতে চারাকে স্থানান্ডর করিবার কালে উহাকে 'থাসি' করিয়া দিলে গাছের আকার লাশ্বা না হইয়া বিস্তপ্ত হইয়া থাকে। চারার মলে শিকড়কে কাণিয়া দেওয়াকে 'থাসি' করা কহে। লাশ্বা গাছ অধিন অপেক্ষা বিস্তৃতায়তনবিশিষ্ট গাছে অধিন ফল হয়. এই জন্য গাছকে শেবেছে প্রকারের আয়তনবিশিষ্ট করিতে হইলে চারাকে খাসি করিবা দিতে হয়। খাসি করিবার কাষা অতি স্ক্রা এজন্য কৃতি মালী ভিন্ন আনভিক্ত বা শিক্ষানবিশের প্রারা এই কাষ্যা স্ক্রাক্ত বা শিক্ষানবিশের ব্রারা এই কাষ্যা স্ক্রাক্ত বা শিক্ষানবিশের হওয়। আপিক্রার ক্রাক্ত ব্রেরা আশ্বান্ত হওয়। আপিক্রার ক্রাক্ত ব্রেরা আশ্বান্ত ব্রেরা আশ্বান্ত ক্রান্ত্রা ক্রান্ত্রাক্রান্ত্রা ক্রান্ত্রা ক্রান্ত্রা

জ্যেড়-কলমের প্রণালী জতি সহজ্ঞ হইলেও, সকলে কিল্ডু স্চার্ত্রপে কলম বাধিতে পারে না। চারা বা গাছের শাখা দ্বাধিত পারে না। চারা বা গাছের শাখা দ্বাধিত কাড়ে বা চাচিয়া দ্বাধি বাধিয়া দিলেই জ্যেড়ে কলমের কাথা সম্প্রে হইল স্ডা কিল্ডু ইহার মধ্যে যে ক্রিয়গালি জাজে তাহা জানা না থাকায় জাধকাংশ সময়ই উহাতে নানবিধ বাাঘাত ঘটে এবং সেই কাটা স্থান জ্বাভিয়া গেলেও তাহার মধ্যায়িড সমবধ্যে কোন নিশ্চয়তা গাকন না।

আবাঢ় মাস হইতে ভাদ মাস প্যতি আন্তের জোড়-কল্ম ব্ধিলে চারা ও দাখার জোড় লাগিতে অনেক বিলদ্ব হর না। পরো বর্ষা পাকিলে এবং চারা ও দাখা কোমল থাকিলে ২০।২৫ দিনের মধ্যে জোড় লাগে, কিন্তু বর্ষার অভাব ইইলে জ্যেড়ের দ্যানের রস দাক্ত ইইরা বার, সাত্রাং জোড় লাগিতে বিলদ্ব হয়। এত্বাতীত দাখা ও চারা হল কাগিতে বিলদ্ব হয়। কাল্যার বারক্ম এক বংগর হয়। চারা ও দাখার বারক্ম এক বংগর হাইলে আ্রের জোড়-কল্ম ব্ধিবার সাবিধা হয়।

বীজোৎপল গাছে ৫ । ৬ বংশরে এবং কলমের গাছে ৩ বংশরে ফল ধরে। ইহার প্রের্মিদ গাছে মাকুল আইসে, তাহা হইলে সেই মাকুল নত করিয়া দিলে ভাল হয়। তাহার কাবল এই যে নিভারত দলা গাছে ফল ধরিতে দিলে গাছ দ্বেলি তইয়া পড়ে।

কার্ত্তিক মাসের প্রথম ভাগে ক্ষায়গাছের গোড়া খাড়িয়া দিতে হয় এবং সেই অবস্থায় দুই শণ্ডাই রাখ্যা ওংশার উহুতে নুড়ন মাটি বা সার দিতে হইবে। গাছে মাকুল জাসনে, গোড়ায় প্রচুধ পরিমাণে কল সেচন করা আবশাক। মাটি নিশ্তক ও সারহীন হইলে অথবা মাটি রসহীন হইলে মাকুল ও ফল ঝারয়া যায়। গাছের ভলায় ক্ষণলা জান্মলে গাছ রুক্ম। গাছের ভলায় ক্ষণলা জান্মলে গাছ রুক্ম। ইহাতে ফলের জাগ্যাদনও খারাপ ইইরা পারে এবং অভিশায় কম ফল ধরে। ইহাতে ফলের জাগ্যাদনও খারাপ ইইরা যায়। এবাক্লে লাব্যাদনও খারাপ ইইরা বায়। এবাক্লে জনার মাটি জনেক দিবস সরস থাকে এবং ব্লক্ষণও ধীরে ধীরে সেরস আহরণ করিয়া প্রেক হইয়া থাকে।

আয় পাকিতে আরুদ্ভ হইলে তাহা
প্রতিদিন সংগ্রহ করিতে হইবে এবং গ্রহ
মধ্যে মাচা বা তন্তায় রাখিয়া সংপক্ষ
করিতে হইবে। গাছ হইতে আয় পাড়িবার
করা 'কালতি' বা ঠুলি' ব্যবহার কর ভাল। বিনা 'কালতিতে' ফল পাড়িবার কর ভাল। বিনা 'কালতিতে' ফল পাড়িবার কর ভালের আম্বাদন খারাপ হয়। গাছ হইতে
আয়ু সদা পাড়িরা খাইলে তাদল সংগ্রহী কালে না বরং তাহাতে আটার গাম বাহির হয়। স্পুরু হইলেও অংততঃ ১।১০ ঘণ্টা গ্রহা স্পুরু ইইলেও অংততঃ ১।১০ ঘণ্টা

আয় ফলে দুই জাতীয় পোকা জনেম —এক জাতীয় কমিবং ও অন জাতীয় পাখাবিশিষ্ট। নদীয়া ষশোক্তর প্রভতি প্রেজিলে উভয় প্রধারের এবং কলিকাতার দক্ষিণ রাজপার, জয়নগর-মজিলপার প্রভতি fuানে শেষোক প্রকারের কীট **জন্মে**। কৃমিবং পোকা আয় মধ্যে কোথা হইটে জ্ঞানে ভাহা ঠিক করিয়া কেহ বিশতে পারে না, ভবে কেহ কেহ অন্মান করেন যে গাছের, গোড়ায় পোকা লাগিলে ফলও পোকাবিশিদ্ধ হয়। গাছের গোড়ার পোক। লাগিলে ফলে পোকা ধরে--এ-কথা প্রথমতঃ অসংগত বোধ হইতে পারে, কিন্তু ইহা ঠিক যে গাছ নিরোগ হইলে ফলও নিরোগ হয়। দিবভীয় প্রকার যে পোকার কথা বলা গিয়াছে, তাহা বাহির হইতে ফলে প্রবেশ করে। অনেক সময় দেখা বায় যে ফলের গাতে কোন ছিল নাই, অথচ ভিতরে পোকা আছে। এই পোকা বার-মাসই থাকে। বাগানের মধ্যে যে স্থানে ৰুপ্তাল বা ইণ্ডকের ক[্]ড় থাকে, উহারা তাহারই মধ্যে বাস করে এবং আমগাছে মুকুল আসিংল ফালের কোরকে প্রবেশ ≈বে। ফ্ল গভ'বতী হইলে সেই পোকা আর বাহিরে আসিতে না পারিয়া তাহারই মধ্যে বাস করে এবং ফল হতে বাড়িতে থাকে সে কটি তত পরিপ্রণিট লাভ করে 🗷 ফলের ভিতরে ডিম্ব প্রস্ব করিয়া দ্বীয় জ্ঞাতির সংখ্যা বৃণিধ ক্রারে। এই জ্ঞান্ডীয় পোকার হৃত হইতে পরিৱাণ শাইবার জন্য কয়েকটি উপায় অঞ্চম্বন করা আবশ্যক। প্রথমতঃ উদ্যান মধ্যে কোন স্থানে জ্পাল বা বাবিস থাকিতে দেওবা উচিত নহে। শ্বিভীয়তঃ, পাছে খখন মাকুল হয় তথন হইতে ৰাগানের মধ্যে গাছের তলায় পানে পথানে পানুন ও গাৰ্থক জনালাইয়া দিতে হয়। এজন্মতীত প্রকট্ট কোন উপায় পেধা বার না।

महामिक्शवारमञ्ज विरामक विरामक कारणक प्राणिका

অম্ভতোগ, অনুপান বা অনুপ্র আহ্ সর৷ (নাগিনাৰাগ), আলি-প্ৰসক্ষ আলিবক্স, অভা-প্ৰদ আনাৰাস অফিপি আবাদিয়া আমীর-প্রদ্র আস-মানতারা আমর্দ আনারদানা আঙনা-বাহার ইমামককস উমদা-খাসা এনায়েড-প্ৰাক্ষ এলাচণানা কাজাপাছাত কাকাড্যা कडि छन कार्रशा किया काना काक्षित कत्रक्षा कालारम्य कस्तकत्रिया कृष्टकथात्रा काश्वन-কষা খীসাপাতি খনমুজা খাজা গোলাই-জামন গোরজিং গাসকল থান্য-প্রকল্প গাররায়শান গোরিয়া গোলাবী গণগাগ্রেয়াদ চাণ্টি চারখোসা চরকীচাপা চুশ্নী চাল্ টিয়াকটা ভোড (ছবিগঞ্জের) ভালটি তোভাম্থী ভূদধাসা ভরবুলা তর্ম नामन नाडेव-रंडाना नाडाव-वनस नाडिक-প্রমণ্ড নপ্তনেচ'লে (চুনাধালিক) নুঞ্জীন-প্রমণ পূজাবিদ্যা প্রামাধালিক প্রামণ প্রমণ বিশ্বন্দ্রোহাল (সালক্ষ্মি) বেশ্বনিদ্ধা পান্তা খোনাবকাস ফারদৌস-পাসক বৰ্ণন বাদসা-পসন্দ বার্থেসে বাত্রান ৰাভাৰী বৈলা কুলাৱনী ব্যৱ্ম-প্ৰাঞ্ ভবানী-টোরস মিয়া-প্রক বিয়া লগী ংরৈইস্বাল) মতিয়া মত্ত্রান মতলিক-ৰওসন মোসাহেব মোলামজাম ছোহন ভোগ মিটি মালি-প্রণদ মিছরিকজ ন্ত্র বিসাস মাদ্রকী ময়লা মনিরা-খাসা হোল-সরি মিরজ্ঞা-পসন্দ রানী-প্রসন্দ রাছঃপেটী রামভন,খাসা রৈটস-প্রদাদ (রৈইস্বার্গ) রতনকেওয়া রামগতি-খাসা লাভ্যা লাক্ষ भिशिशा भितामात भक्तम नाशा नारसक পসক সিক্ষারিয়া সারেখ্যা সব্জা সাক্ষারী লোর সাহেবের বোল্বাই সা-লোকা স্বৰ্তী স্প্তান-প্সন্দ স্-ত'ত স্বেল্টির। হারিকাল-বোশবার্ড ছোলেম-বঞ্চল ছোউছে-কসর হাগেরো-দ্রদ্ভাণ্ডা।

जनन जाइगाइट अक जमात्र करा श्रामन করে না বা এক সময়ে ফল পাছিয়া উঠ না। কোন জাতি বৈখাণে কোন জাতি লৈতে কোন জাতি আহাছে, কোন জাতি প্রাবণে আধার কোন জাতি ভাতে প্রাক্তিয়া থাকে। বৈশাৰ মাসে যে সমনের আন্ত পাকিয়া উঠে তাহাদিগকে এক ছোপী জৈন্ট মাসে যে সকল অন্ত পাকিয়া উঠে তাহাদিগকে এক শ্রেণী, এইর্পে যে তা আন্ত বে মাসে পাকিয়া মাকে ভাছ। প্ৰেই জানিয়া তাহাদিগকে বিভিন্ন ভোগীভূক করিয়া রে_{নি}পণ করিলে এক সময়েই সকল জাতীয় গাছের পাট করিছে इश्र मा। जाणि मिनिट एएस जननगर्निस এক সমলে সমান পাট করিলে যে জাছিব ফলের সময় উপন্থিত ভাছার উপন্থ হয় কিন্তু অপর জাতির ভাহাতে জনিউ হয় 夏朝!

a salah s

^{*} কলিকাতা শথ শোভাবাজারের রাজা প্রস্কানরারণ দেব বাহাদ্র প্রেব নিজামণ-সরকারের দেওয়ান ছিলেন। সচরাচর লোকে তাঁহাকে রাজাসাহের বলিত। এই বা্গান তাঁহার ছিল্ এজনা উহাবে সকলে রাজাসাহেবের বা্গান কহিত।



সোগিত চট্টোপাধায়ে

ত্যাটন আজে। থটে'—হঠাৎ অফিস্পাড়ায় এলো ভাষণ বর্ষা, রাণ্ডায় অসহায়ের মডে। দাড়িয়ে ভিজলো নাঁলিমা আচমকা এসে দাড়ালা একটা গাড়ি তার সামনে। সাহেবী পোলাক পরা একজন বয়ংক ভদ্যলাক (স্বাসাচনী) পরিচিত ঘাঝাঁয়ের মডেট নাঁলিমাকে লক্ষ্য করে গাড়ীর দরজা খুলে দিলেন। দিব্ধা করেও ব্লিটর ভয়ে গাড়ীতে গিয়ে উঠলো নাঁলিমা, আর বেচারা রজন ওার করে। অসেক্ষা করে ফিরে গেলা নাঁলিমা পরে রজনকে স্বাসাচী ভট্টাচার্যের সল্পে আলাশ থেকে গাড়ীতে দিকটে পান্তয়া শুনিকটি ভট্টাচার্যের সন্পো। এরপর সে, তার ফেলে আসা সানক্ষাসা আনতে গিয়ে স্বাসাচীবার্র বাড়িতে যে স্ব কাড্ডবার্কান দেখে এল সে এক চার্গালিকর ভারা রজিলা। কিক্ত রজনকে পান্তয়া যায় না। সে স্ব সময় থিয়েটার নিয়ে বাড্ড থাকে।

রঞ্জনের বংশ্ব খাভেন্দার মাধ্যমেই আলাপ হোল ভলমহিশার সংগণ। তিনি থিয়েটারেরস্থ বংগপারে রঞ্জনের মতে। একজন তর্পকে চেয়েছিলেন নায়কের ভূমিকায়। কিন্তু রঞ্জন ব্রুক্তে পারলো না কেন এই ভদুমহিল। (আনিনিদ্তা) এক বড় ছাটে বাড়ীতে দেশুতলায় একা থাকেন।।



একই বাড়ীতে একতগার থাকেন শিক্ষাবিভাগের সেতে-টারী স্বানাচী ভটাচার। তিনি এই ভদ্রমহিলার থামথে রালি-প্নাকে প্রশ্রর দিতে না পেরে অনেক সময় রূথে যান তার অতি আধুনিকতা চালচলনকে বাধা দেবার জন্যে।

ক্রমণ রঞ্জনের বনধ্র শচ্ছেন্দরে মাধামে উপরের তলার স্থানিকতা দেবী এবং নিচেরতলার স্বাসাচী ভটাচার্যের মধ্যেকার সম্পর্কের জট খালে ফেলা হল। ও'রা এক সময়ে বামী ও স্থাী ছিলেন আর ছিল ওপের একটি ছেলে—যে বিদেশের পথে পাডি দেবার সময় বিমান দুর্ঘটনায় মারা গেছে। স্বাসাচীবাব, নিজের স্মীর স্বেচ্ছাচারিতা এবং আধনিকতা'কে বরদাস্ত না করে তাঁকে ডিভোস' করেছিলেন। কিন্তু তব্ত একই ম্নাটে তারা নিজেদের মত ও পথ নিয়ে মেতে থাকে। আর তাদের দুজনের পালায় পড়ে নীলিমা এবং রঞ্জন দুজনকে ভল বোঝে, ও'দের মধ্যেকার ভালবাসার সম্পক্তে ফাটল ধার। আবার অন্যদিকে অনিন্দিতা দেবীর সহান্ভতি পেয়ে ভ্রবেশী এক অসৎ বারি তার প্রামীর অন্প্রিপতির স্থেল নিয়ে তাঁকে ব্যাকমেল করবার চেণ্টা করে এবং প্রলিশে মিথা ভাষেরী করে ষে উনি মেয়েদের নিয়ে নাচ ও গানের প্রুল করবার নামে অসৎ উপায়ে অর্থ উপার্জন করছেন। ফলে প্রালেশ আসে। এবং স্বাসাচীবাব: নীলিমা এবং রজন, স্বাইকেছ প্রিল্ম শাসিয়ে শায়-এইসব ভাড়াম ও অসংবৃতি বন্ধ করের জনো।



অবশেৰে রশ্বনের বংশা শাতেকনা এবং রঞ্জনের অক্লাকত চেক্টার সব কিছা জালোর জালোর নিটে বার। সবাসাচীবারার সংগো অনিনিদ্ভা দেবীর মধ্যেকার বিরোধ মিটিরে ওরা আবার প্রতিবিহ করতে রাজী হন। আর নীলিয়া এবং রঞ্জনও বিবাহ করনে আবশ্ব হয়। সকলের মাথে হাসি ক্যোটে চারিদিকে আনন্দ আর উৎসবের বান বয়ে বায়।

খাতিনামা সাহিত্যিক অচি+ত্যকুমার সেনগংশেতর কাহিন্দী অবলম্বনে চিত্রাটা রচনা করেছেন শেখর চটোপাধ্যায়। ছবিটির সংগীতের দায়িত নিয়েছেন সুধান দাশ্লাক্ত।

পরিচালক দীনেন গ্রুপ্ত তাঁর বলিণ্ঠ এবং বাপ্তব দৃণ্টিভশ্পীর মাধ্যমে একটি সর্বাশ্পেশ্নের হাসির ছবি উপহার দেবার
চেটা করেছেন। অল্যেকচিত্রহণে—বিশেষ করে জাশ্বাক—
বিভিন্নর্পে তিনি যেভাবে নায়ক এবং নায়িকাকে উপস্থিত
করেছেন শেহ সব দৃশোর চিত্রগ্রহণ খ্বেই প্রশংসনীয়া শিল্পানিদেশিনা এবং সম্পাদনার কাজ পরিক্ষম ৷ স্থাতিপরিচাশক
করেকটি গানের সরে রচনায় তাঁর স্নাম অক্ষার রেখেছেন।

অভিনয়ে নীলিমার ভূমিকায় স্মিরা, রঞ্জনের ভূমিকায় সেমিত এবং স্বাসীচীর ভূমিকায় বসনত চেধ্রেলী ভাল অভিনয় করবার চেণ্টা করেছেন। অন্যান্য ভূমিকায় কাঞ্জ গৃংত (অনিন্দিতা) অন্ভেক্ষার (শ্রেভেন্দ্ন), রবি ঘোষ শ্যিতা বিশ্বাস চিমেয় বায় রক্ষা ঘোষাল এবং শেশর চাটোমাধ্যয় চিত্রনাটোর দাবী মিটিয়েছেন।

সোনালী প্রোভাকসনের এই ছবিটির জনপ্রিয় হওয়ার সম্ভাবনা।

--চিত্রদ্ভে



অন্ গ্ৰুমা



স্মিলা ম্খোপাধ্যায়

ঃ সারা প্থিবী জাড়ে যে ঘটনাটা আফ সকলের মাথে মাথে সেই পার্মাণবিক বিশেষরেণ সম্পর্কে আসমি কিছা ভাবছেন কি ?

—আমি এ ব্যাপারটাকে খাব একটা ইনপরটাকস দিছিল না, অবলা এটাকে যদি দেশের উর্বাভির কালে লাগানো হয় ভাইকে আলাদা কথা। কিন্তু আমাদের দেশের ইক্নয়ি যে গাতিতে যে দিকে যাজে তাকে আটামিক মাকি কি রোধ করতে পারবে ? — শ্বন্ধন দেখার মত অনেকটা, ইসপস্ ফেবলস্-এর সেই বাসনওরালার গলেগট মনে পড়ে। ভিশ্ন হয় কবে না লাথি মারিয়া নিজের একমাত্র নুলধন বাসন-গ্রিষ্ট না ভিজিয়া ফেলিট্র।

ং পাহাড় সা সম্মুদ্র, কোনটা বেশী ভালো লাগে আপনার এবং কেন্দ্র

— পাজাড় বেশী ভালো লাগে। সিমলা-দাজিলিং - ঝম্মারের পাজাড় নয়।



भन्द कट्ढो भाधाय

কোনো দেশের ইকর্মি বিচার করা যাই সেখানকার ওয়েজেস্ ও প্রোভাক ট দিয়ে। কোটি কোটি লোকের বেকারড় এবং ক্লাবর্ধমান ইর্দ্ধেশন আটকাতে আটিমিক শব্ধির খ্ব একটা দান আড়ে বলে আমার মনে হয় না। ভার আলে অনেক কিছুব করার আছে।

় কলকাতা একদিন কলোলনী ডিকেন্ডম ছবে-এই দেলাগান সন্পক্তে আপনি কি বলেন্ড



শাহাড় দেখতে হলে আরত্ত ইণ্টিরন্নারে
যাধ্যা দরকার। পায়ে হটি পথে তিন
চর দিন গেলেই তবে পাহাড়ের সৌন্দর্যা
যে কি মনোরম তা ফিল কর যায়। আমি
বিগলিক কর্ণা ছারির স্টিং এর সময়
গিয়েছিলাম গোল অ প্রস্কিত। এখনত সময় সংযোগ পেলে হিমালমের বিকেই
চলে যাই। পাহাড়ের আসল মৌন্দুর্য ভার শাত স্মাহিত গামতীয়ের যাকে দিক
ভারা নিয়ে বোঝাতে পার্যন না আর্যা।

—ডিসেনির মানে আমালয়, আমার নিজেরই আছে ভাই। তথ্যসভ্র খেলে কিছুদিন চাশা থাকে, আবার হয়। আসলে ব্যাগারটা হোল—আমানের প্রথানকার, বিশেষ করে কলকভার জলে প্রথান কত্যুগো কিনিস্ আছে সেগ্লো আমালয় হবার পক্ষে খুবই ফার্যকরী। সূত্রাং কল থেকেই জ্লাশসু নিন্দুর্মই। ডাঞারী বিব্রে আর কি করেবই

েডাছারবাব**ুরা গ্রাজে চল**ুন'--এ সম্পক্তে একজন ডাছার হিসাবে আপানার কি স্ট্রান্ড স

-- छाइ- छाइ- वाब्द्र वाङ्ग्यात । किन्द्र वाब्द्र वाबद्र वाब्द्र वाव्द्र वाब्द्र वाब्द्र वाब्द्र वाव्द्र वाव्द्र वाव्द्र वाव्द्र वाव्द्र वाव्द्र वाव्द्र वाव्द

ভারত আগে সরকার আধুনিক চিকিৎসার সকল সাজ-সরজায় তথ্যপদ্য এমে প্রমে পেশাফ দেওরা। নইলে ভাঞারবাধুরা প্রমে গি ও কি করতে পারেন ? রোগাঁদের তো আর জলপড়া মাদ্যলী দিয়ে ভালো করতে পারবেন মা!

্ব কলকাতার প্রেমানারী থিয়েটারের অরগেডি সম্পর্কে আগনি কি খুব আশাবনে

—ন্ন, মোটেই না। কলকান্তার পাবলিক বোর্ডে মাটক নিয়ে কৈছা হচ্চেছ্ন না, ইবার সংযোগত নেই। যা হচ্চেছ্তা সুবই আনোচার গুপগ্যলের মধ্যে সমায়ক্ষ।

: ভাহলে আপনি স্টেজে যোগ দিলেন কেন?

- প্রথমত স্টেজ আমার ভালো লাজে। শ্বিতীয়ত দেখলাম চবিত্রটাত বেশ ভালো। ওতীয়ত মাস গোলে নিশ্চিত কিছু অয়ত হবে।

ঃ আপনি কি নিক্তেকে ধামি^ক মতে করেন ?

্রান্থ কথার অর্থ হা ধারণ করা হয়— তাই ডো! আমার ধর্মা অভিনয় করা সেনিক থেকে আমি আপ্রাণ ধার্মিক। ক্রিক্ট ধর্মা বলতে যদি হিলদু ধর্মা-ম্সল্মান ধর্মা ইত্যাদিকে বোঝান হয়ে থাকে, বাকি স্ব কতারা ব্যাতিরেকে সেই অর্থে আব্যাই আমি ধার্মাক নই।

: ভারত তো প্রথম টেস্টে ইংল্যান্ডের কাছে হেরে গোল, পরবভী থেগাগ্নোর ফলাফল সম্পর্কে আপনার কি ধারণা?

—দেখো ভাই, দল হিসাবে কিন্ত্ ভারত ইংলাদেশ্যর জ্লনায় খুব এফটা নিকৃণ্ট নয়। তবে গতা সফরে ভারতে সে ইংলাদেশ্যর টিমা এসেছিল ভার চাইতে এবার ইংলাদেশ তানেক বেশী শাঁজণালী। ভাছাড়া আমাদের দিপনাররা কেউই প্রায় কিছাই করতে পারছেন না আবহাওয়াও অন্ত্ৰ্ব নর। ও অবস্থার পরিবর্তন না হলো পরের দুটো টেস্টে জয়ের আশা অন্ত্ৰী

3 আসছে প্রেলয় টি ভি তো অলকাতায় এসে গেল মনে হছেে! বাংলা ছবির অবশ্পা কি আরও অবপ্নীয় হবে না? লব দেশেই যা হয়েছে শোনা য়ায়— টি ভিার স্পো পাল্লা দিতে গিয়ে সিনেয়া কোলঠাসা হয়ে পড়েছে। এখানে কি তার ব্যক্তিকম হতে পারে?

—এ ব্যাপারে আমার পালটা প্রশন আছে। টি ভি তো আসহে ! সেই টি ভি চলবে কিসে—কেনোমনে না গোবর গ্যাসে? অন্তএব আমরা যেখনে আছি সেখানেই থাকছি। এন্যোক্সিনা পেডে।ভিও না। ভাছাড়া মৃতিমের যে কজন লোকের টি ভি কিনে ঘর সাজাবার ক্ষমতা আথে ভারা বাংলা ছবির দশকি নন।

: ডান্থারীকে পেশা হিসাবে · নিবে আপনি যে আর্থিক প্রতিষ্ঠা পেতেন, অভিনয় করেও ফি সেই একাই রক্ষ শব্দুলাতা এসেছে আপনার? এবং আফশোষ করেন কি সেঞ্জন্য?

—না, তা নিশ্চরই আসে নি। তবে
আর্থিক ব্যাপারে আমার চাহিদা খুবই
কম। থেয়ে পরে বেণচে থাকছে পারনেই
হেলা এখনত তাক্দ তার অভায হয় নি।
উছাড়া আমি তো জেনেশ্যেই এসেছি
এ লাইনে। স্ত্রাং আফ্রাণাধ করব
কেন্

ঃ হাল ফ্রাশনের পোষাক পরিচছদ কি আমাসনি পছদদ করেন?

—থাজিগত ভাবে পোষাক ্লো সংগ্ৰে সমার বলার কৈছা নেই। তবে এইসব
মড়া জেসগালো নিয়ে কয়েকটি প্র-পতিকায় যে রবস বাহারী রঙিন কালোচনা
হয় তা থেকে এই পোষাক আনিংনারক
অবং পত্রিকান্তনাদের সংপ্রেক দিটো
ধারণা অন্নি করে নিয়েছি। এক নন্ধর পরাকা কয়ানোর উদ্দেশ্যে এগালো করা
হয়, দ্বা নন্ধর—যাব সমাজকে বিগগে চালিত করার জন্যও বটে। আছিক উমতিই যদি কিছু না হোল তাহলে মড়া জ্বেস পরে শার্ক প্রীটের বিপথগামী বাউদ্ভূলে দিগাঁ হিপি ছড়ো আর ক্রি হতে পারি আন্তরা?

ঃ পাকিস্থানের সংশ্রে ভারতের সংপর্ণ কি কোনদিনই বদুলাবে মা—আপ্নার কি মনে হয় ?

—ভারতের প্রতি পাকিন্স্থানের আটিচ্যুত কথনই আলো হবে না। কারণ এই দুটো দেশেরই জন্ম হয়েছিল দেশী বিদেশী রাজনৈতিক পান্তর লাভ-লোকসান আর ক্ষমতার হিসেব নিয়ে। সুত্রাং উভয় দেশের মধ্যে শান্তি প্রায়ু অসন্ভব। একমান তথনই সম্ভব যথন দুটো দেশের পালিটিকাল স্বাধ এক ইডিওলজির ডলার একচিত হুবে, নচেং নয়ঃ

ঃ বাংলা ছবিতে শিল্পীনের মধ্যে পেশাগত কোনো প্রতিযোগিত আছে কি?

—গেশাগতভাবে প্রতিযোগিতা আছে।
কিংলে নেই? সব লায়গাতেই আছে।
নিলেকে এন্ট্যাবলিস ক্যায় প্রতিযোগিতা
তো থাকবেই। তবে আয়ানের এথানে
প্রতিযোগিতার কোনো নেংরাম নেই,
অন্তত পাক্ষ আমার তেমন কোনো
অভিজ্ঞতা হয় নি।

_{ः स्थापे} — निर्माण धर

पाँछत्र डाफात्रज्ञ बत्तव तिस्रिप्तिछ पाँछ द्वार्थ्य कद्गल खाद्ग साड़ि सालिश कद्गल साड़िद शालखाश ७ पाँछिद कस द्वाध कदा यास

নিয়মিত কর্মাক টুগণেষ্ট ব্যবহার করেন এমন অনেকে জবাছিত প্রাণাসায় পঞ্চমুখ হয়ে লিখেছেন :

"বারো বছর বরেস থেকেই আমি ফরছাল বাবহার করে আসছি । এখন আমার বরেল প্রায় কুড়ি । এখনবার করহাল বাবহার করার সময় আমার মারির কিছু সোলবাগ ছিল । এখন সব ঠিক হবে গেছে, কোনো বাবেলাই নেই । • • আলে আমার নাত্রেপাঁড তাপ করার অক্তাস ছিল না । কিন্তু পরে, রার্মে পড়ান্তবো করার সময় ১-টা বাধবাই আমার মবে পড়ে যেত আলনাবের বিজ্ঞাপনে কেখা "একটি নতুন আভাাস"-এর করা লি

"---বদিও আমি ধমপান করিনা করম शासक जारा मकी करनाय-जाशाह माळ स्थाप स्टा चाटक । ---व्यामात चावा. বিনি গত ভিরিশ বছর ধমে "ফয়ফাঞ্য" ধাবচার করে জাগছেন, জার্থাকে টুক্সেট वमरता "कत्रकांका" बावशात कतरक साविक क्यारमन---व्यान्तर्य। यस रणमात्र श्रे व्यास, আমার গাত বেমন হওচা উচিৎ- এত তেমনি । আমি খীকার করতে বাধা হ**তি** বে আপনারা আপনাদের অপূর্ব টুবপেট্র-कत्रक्षान-ज रव त्रव खन ब्यारह बरन बांदी करवन-छ। प्रक्रि ! क्षणाक द्वेरपरदेश সঙ্গে এর তলাৎ তো ছবেই-- এ বে এক দাতের ভাকারের তৈরী ট্রথপেট 🕍 (খাঃ) এস. এস. চ্যাটাৰ্কি, ar. a., cettiertiffe



েএই প্রশংসাপত্তের অভিজ্ঞানি (কটোষ্টাটো জেঞ্চি বান্সসী এও কোং লিঃ-এর বেকোনো ক্ষতিসে কেন্দ্রত পায়ের।)

ভালোতাৰে গাঁতের বন্ধু নিজে হলে হোজ ছাতোঁ আৰু সকলে ক্ষয়াল টুখণেট ও ক্ষয়াল ভুৰল আ্যাকণক টুখনাল বাংগা ক'ল্পন-আৰ নিয়মিক আগমান্ত? হাতের ডাক্তারের পরামর্শ মিন।

क्रियाप्रसाम्य उपाप्त ब्रहीन	ুবিকা"আপনাত বাত ও বাড়ির	रक्" और गुजिका त्मरक हरन
অধুমহ করে এই কুপ্নের	সংক্ষে ২৫ পরসার ভাকটি(কা	পাঠান, এই প্ৰকাৰায়ঃ
খানাৰ্গ ডেণ্টাল আডকাইসরী	বুলো, পোষ্ট ব্যাস লং ১০০০১	, बर्द ७०० ००३ ।

াকাৰা •অপুগ্ৰহ করে বে ভাষাত্র চান ভাত্ত নীতে লাগ কেটে দিন—ইংরিজী, দিবলী, বাজারী, ভলত্তানি, উৰ্দু, গাজাৰী, বাংলা, অসৰীয়া, ভামিল, তেলেক, বালয়ালয়, কানাড়ী।

स्थान्य प्राप्त के में त्या कारणात के ही ने

120 F-182 8500









পিনাকী মুখোপাধার/মালনা দেবী/দীক্ষর দে

সেদির সকাল থেকে আকাশের মূখ-ভার। মেখলা গদতীর। আত সেই সংশা জ্ঞাপদা গরম। সেদিনই একটা ভবিব আউটডোর শ্টিং হবার কথা ছিল কাতার হুটিকালচার গার্ভেনে। ভোর इयात मरका मरका ইউনিটের স্বাই লোকেখানে এসে পেণছেছিল। আকাশের ওট অবন্ধা দেখে তো স্বার মাথায় হাত। হয়ে শিলপীয়াও এলেন লোকেশানে। এথন কী করা? বিব্রত পরিচালক বলগেন, किट्चन अल्लका करत रमधा याक। सूर्य-দেব যদি সদয় হন তো ভালই নইলে এই ভাল আবহাওয়াতেই আনায় শাটিং क्षारक इरव। आत कान विकल्प नार-

অপূর্ণা সেন তথন দীপুত্র দে-কে বল্লেন-আস্ন, ওই গাছের তলায় বসে কিছুক্ল গাল্প করা যাক--

मीश्रक्त वनकात मन्द नत।

গাছের জলায় মোডা পেতে ওবা মাথোমাখি বসলেন গলপ-গালব করতে। দেখাদেখি আরও করেকজন এগিরে এ**লেন**।

দীপত্তর দে সম্প্রতি ফিলেম এসে-ছেন। আর এছ অলপ সময়ের মধ্যে নিজের বাবহারের গ্লে বেশ জনপ্রিয়তা অজন করেছেন। ফিল্মে হোর দেখার আগে উনি কলকাতার এক নামজাদা সংস্থার বেশ ভাল পজিশনে একটা চাকরী করতেন। কিন্তু দ্ব'নৌকায় পা রাখা সম্ভব নয় বলেই দীপ্তকর চাক্রীটা ছেডে-ছেন, ফিল্মটা ধরেছেন।

আর এমনই হোগাবোগ সেইদিনই দ্বীপৃৎকরের প্রথম ছবিনি রিলিক হওয়ার কথা। বেচারি, পাশ থেকে কে যেন খললে ভাবনা-চিন্তায় ওর রাতের খুম গেছে। দশকিরা যদি ও°র অভিনয় পছদদ করে তো অলরাইট নইলে অবস্থা কি দক্ষিবে, দীপাকরের আশাম দুভাবনা। খুবই দ্বাভাবিক।

— কি ভাবছেন? হঠাৎ অপশার প্রশা

-- उँ ?...ना ना, किছ ना।

রিলিজ ছবিটির কথা অপর্ণা সম্ভবত জানতেন। সহাসে। প্রদন করলেন-আজ বিভিন্ত ?

সামান্য ইত্যততঃ ভাগা দীপ্ৰক্রেই-আ হা আজই রিলিজ--

— উঠল ইউ বেশ্ট অফ লাক।

- —থ্যা•ক য়া<u>,</u> অপূর্ম।

—ভেবে আরু কি হবে।...বা হবার 🕒 হ বেই।

দীপ্তকরের ্ব্ হেসে সায়।—হার্ জা তো বটে

—তাছাড়া আপনার রিশ্ক আরু কি? वार्डलाव भागत्य--

এভক্ষণে হাসির বোমাটা ফাটল। সবাই হৈ হৈ করে উঠলেন।

অপর্ণার যেন সামানা অপ্রস্কৃত ভশা —নানা ব্যাপারটা কি: এতে **হাসি**র ব্যাপারটা কোথায়?

হাসিটা সূন্ রায়চৌধারীর-ই বেশী। উনিও কন্ফার্মড ব্যাচেলার। বললেন, তোমার কে বলেছে ও বিয়ে করেনি?

পরিচালক পিনাকী মুখার্জি বললেন ---আরে দ**ীপ্ত**কর **র**ীতিমত বিবাহিত। ভোমার কাছে বোধহয় চেপে গেছে...।

দীপৃত্ৰুৰ ভীষণ ক্ষিত। বিব্ৰত। দ্ব হাত তুলে বললেন—না না পান্দা এটা লেগ প্ৰলিং হচছে। আমি ভাৰাৰ কৰে চেপে গোলাম ?

অপ্রণা সারসিকা। এসব শানে মিটি॰ মিটি হাস। লগছেনই তো চেপে। কই, কবে বললেন আপনি বিয়ে করেছেন। উল্টে স্ব সময় একটা তপ্নী রেখেছেন-বিশ্বে-টিয়ে করেননি। ইসু এখন কী হবে?



পিনাকী মুখাজি ছাত্রম আশাভণে ১ল ১ল মাথা চাপড়ালেন—বটেই ডো, এ বাাত্রমত হাট-ব্রেকং সংবাদ। কভ ডাবাইন তোমায় দেখে আবার নত্ন লাব্য বাক বেংবাছিল, ভাদের এখন কী

দীপঙ্কর হাসবে না কদিবে স্থিয়

করতে পার্রছিল না।

বলগাম—বাক্ণে আ কবার হয়ে গেছে। তা তোমার শ্বশ্রেবাড়ী কোধায় ভাই?

দীপংকর আর মুখাই খলেতে চার না। স্বাই শীড়াশ্রীড়ি করতে বললে, ইরে দিল্লীতে।

—বটে বটে। তা গিলী বাঙালী জো? —উত্

আত্তিকত প্রশ্ন-তাহলে?

— মত লোপীয়ান— —**লভ** ?

জার দীপংকর সহজে মুখ খ্লতে চায় না। কিংতু অপশা সেন ওর নাম।
ইছে করে সথন খানস্টি করেন তথন ওর
কাড়ি খাজে পাওয়া ভার। সহাসো
বললেন—আরে বলানই না। এখন তো
লার কেউ বলেজ্য দিছে না। আমিও তো
প্রান করে বিয়ো করেছি। নাথিং আন্

অগতা অগতা একটা সময় বলতেই হয়। মজার আছো। সন্মা তারই মধ্যে গাড়ি পাঠিয়ে কষেক কাপ কফি আনিরে ফেলেছেন। এক কাপ দিশিংকরেই হাতে ধরিয়ে—আরে নাও ভাই নাও, বেন রাম করেছা। আর দাও তোমার একটা দিহাট লাভ এবকা একটা আছোয় কফিটাফ নাহলে আবার মানায় না...

দীপশ্চর যাদ্বপুর ইউনিভাসিটির ছাগ্র। এম-এ ডিগ্রী করে সোজা দিল্লী চলে গিয়েছিল একটা চাক্রী করতে। সেখানে ওর সংগ্র নায়িকার মোলাকাং।

– ভোমার স্কুটার ছিল?

্দীপংকর অবাক। স্কুটার? কেন,

শকুটার কেন থাকতে হবে?

পিনাকী ম্থাজি সাংঘাতিক একটা নিবীত ম্থতংগী করে বললেন—দিয়ীর প্রেমে শ্নেছি স্কুটার নাকি থাকতেই হয়। মানে নায়িকাকে নিয়ে ফতেপ্রে মিকি টাতেল-ইন-টাকিসি শ্নেছি বেশ কম্লী।

দীপংকর হেসে আঁগ্র —উল্ভট কথা। একেন্বরে উল্ভট। তবে আ্নার গড়িছিল —অফিসের।

অফিসের কাজে দীপাণকরকে প্রায়ই দিলীর আর একটা অফিসে সেতে হ'জা বাহিত হয়নে—

আর একটা সোরগোল—গিলীর নাম— কাট-ট্ু দীপংকর, রুম্ধ ভংগী—হাং, বাণ্টি—

---আহা চটে মাজেহন কেন?

স্ন্তু সম্বেদনায় একখানা হয়ে তেংজলাং--জাহা বেচারি ক্লমে একটা রোলানিটক পরিণতির বিকে যাতে, ওকে মাকখানে বাধা দেওৱা কেল বাপা? অপর্ণ ফিক ফিক।—যতসব বেরসিক। হার্ম ভারপর—

দীপ্থকর এখন আর সমরণ করতেই
পারল না যে, কে আগে আগেস করেছেল।
একবার বললে মনে হচ্ছে যেন বাণ্টি-ই,
না না না, ভূল হচ্ছে আমি আমিই;
সেকি আজকের কথা সরি আমার ঠিক
পশ্চ মনে পড়ছে না—

অপর্ণা হেসে কুটিপাটি—না, আপনি
কিন্তু এড়িয়ে বাজেন। এসব দিনের কথা কেউ কি কথনও ভূলতে পারে? মানুবের জাবনে একবারই আসে। আর সারাজামন আমাদের আ্তিতে সেই আনন্দের বিষাদের উত্তাপের মাই তালালি থেকেই বায়.....

হঠাং ফি ফেন হলো দীপ্ৰক্ষ সামনের দিকে লম্বা করে তাকাল। মুখে ম্মু-মধ্র হাস। কিছু বলল না। আসকে আর কিছু ওর বলারও ছিল না। পিনাকী ম্খালি, স্নীল রায়চৌধুরী তখন পড়লেন সহকারী পরিচালক শামল চক্ত-বর্তীকে নিয়ে। শামলের বিয়ের দিন দ্ভে ঘনিয়ে আসছে। বেচারি বাইরে বত্তী মাটানেস দেখাক এপশা বলালেন আসলে মামল কিন্তু ভেত্রো-ভেত্রে প্রচম্দ নাভাস। স্থের ভীর টানাপোড়েন সবই ধই নাভেরি মধ্যা......

মণিলনা দেবীর সংগে আজকাল সামাদের দেখা খুবই কম হয়। কি[•]ত দেখা হলে মহাতে আনতারকভার যে সিন্ধ আবহাওয়া উনি অনায়াসে স্ভি করেন, তার জনে। আগন। আনেকেই ও'র কাছে কৃতজ্ঞ। এই দেখা প্রসংশে ওরি কথা মনে হল। আমি ও'র সংগে ইদানীং কাজ করেছি 'বনপলাশীর পদাবলী' ছবিতে। এই বয়ুসে এত প্রিল্লন যে উনি কিছাবে করেন ব্রুতে পারি না। প্রায় প্রতি রাতে ই ও'র থিয়েটার প্রোগ্রাম থেকে থাকে। সারারাত জেগে উনি এসেছেন ছবির আউট্টেড়ার শান্তিং করাত, সবত অবাক। কয়েকদিন পর পর এই ব্যাপারটা হতে উন্নাৰ্মার একদিন বললেন আপেনি অসম্ভবকে সম্ভব করলেন এটা আমি কোনদিন ভঞাব না।

অহ্যপ্রক্থানের পথে তথ্ন সিনেমায় উঠছে। উনি ছবির সল্পাসিনীর ভূমিকায় অভিনয় করছেন। পরে জানা গেল-একটা চ্যালেঞ্জের মোকাবিলা করালেন উনি। কেউ সম্ভবত এই চারতে মলিনা দেবীর নিব্রচনকে কটাক্ষ করে থাকবে। সেটা ও'র কানে পেণছৈছিল। আর বায় কোথা। যে-ক'দিন শ্রটিং করেছেন-দিনে একবার মাত্র স্বপাক আহার হবিষা করেছেন. রাত্রে শাহ্যেকেন বিচালির ওপর কদবল বিভিন্নে, মাথায় তেকের অভাবে চল ব্লফ হয়েছে জট পাকিয়েছে। পরেছেন গৈরিক বসন। থেকেছেন খালি-পা। হয়নি চরিত? আলবং হরেছে। ছবি রিলিজ হবার পর ও'র অভিনয় দেখে স্বাই চ্যাকে গছেন। ভারপ্র 'রানী রাসমণি' ছবি। কি অসম্ভব ব্যক্তিকপূপ চরিত। ফলিন্দু দেবী দেখান সে-চারতের কি মহিয়সী রূপ দিরেছেন পর্বায়। অন্তর্গালে বাটেছে : ভান শুনুত্ব করতে এসেছেন, প্রোভাকশন মান্নেজার জানতে এসেছিল আজ লালে উমি কি খাবেন, মালনা দেখা নিংশলে মথা নেড়েছেন, আজ উপবাস। অরপর বভাদন ও-ছবির শ্লিটং করেছেন প্রভিদনই উপোস, প্রভিদিন প্রান্ধনা, প্রচন্ত গরমে একফেটা জল প্রশিক্ত খাননি। প্রদন্ত অভিনয়টা আমার অক্ষিন ব্লক্ষেন, প্রাই

আর একটা ঘটনা স্মরণ হল্পে, পার্থ-প্রতিম চোপরের ছারাজ্ব ছবির পারিং হছে। সেদিন কামেরার স্থানন ক্তিনার ক্ষতিলেন পাছিলা ঠাকুর আৰু ছালনা দেবী। নিজের হত্রজিত **মেরে রেগ**ু (करन, व्य-कर्ण भिवभूत्का देव मा) কোথায় কি একটা গণ্ডগোল পাকিছে धामा ना कि छाका हात-कात्र धकते। किहे ঘটেছে। সবার ধারণা--ওটা বেটারই কীতি। যেটি যেট মায়ের লাখোলীখ হয়েছে আরু যায় কোথা, রাগে দঃখে ক্ষোভে মা তখন থর-থর করে কলিছেন কারণ ব শংক্রানকে কেউ চার না, সেই ঘেটাকে মা সবচেয়ে বেশী ভালবাসেন আল ক বি বি-বাস চলে গ্ৰেছে—এগিলে এসে ডিনি ठाम-ठाम करत प्रायत भारत महोते हुए खारत কামায় ভেঙে পড়ছেন-এই হচ্ছে পর্যা म् <u>भाषे</u> ।

বিহাস শিল হলো। মলিনা দেবী জ্যে উজিয়ে দিলেন। তবে চড়টা তখন মারলেন না—ওটা টেকের সময় করব। শামিলা কলেন, আসনি কিন্তু খাব লোরে মারবেন। তা না হলে আমার বি-আক্রমানটা কিন্তু লাল হলে বানার বি-দেবী সহাস্যে ঘাড় নেড়েছিলেন।

েক ৷

থ্র থর করে ক'পতে **কাশতে হা**এগিয়ে অনুসক্ষেন শেষ প্রস্কিত **ভূই ফার্ক**হাল চোর! ছি ছি ছি লাক্ক আদি ভোকে

—স্মি আমি মেরে ফেলব—

্যেণ্ট্রলাছে—মা **তুমি বিশ্বাস কর** আমি চুরি করিনি—

মা এপোকেন--- ওরা বলেছে ভূই চারে

- ৩ই চোর, ভোকে আছি: মা সপাটে
মারবেন বলে হাত ভূপেভেন। যেটি আমা-রক্ষা করার চেন্টা করছে না। এই মা ভাকে
মারবে এটা সে কিবাস করতে ভারতে না---

হঠাৎ কি হলো। উদাত হাত নেমে
থাকে, মলিনা দেবী কদিতে কানতে কানে
বেসে পড়াহেন। চারিদিকে একটা কানাজতীশান। নাট কাট। কানোকা বিক্তঃ পরিকালক
অলক্ষ্য মানিনা বেবী কানাভ কানতে
বল্লেনানা, আমি বিনক্তক কিছুতেই চড়
মানা বিক্তাতক কিছুতেই চড়
মানা বিক্তাতক কিছুতেই চড়
মানাত পানব না কিছুতেই না.....

জালতে চাওরা হ**রেছিল কেন কি** গণ টান ভগনককে জালা**লেন, চড় মারতে** গিয়ে অগিন আমার মেরের মুখ কেবছি ওখানে। আমি পাছৰ লা।

-- तक्षमं यक्षं, यनात



বিদেশী ছবি অভাসিটি

এ সম্ভাহের অন্যতম আকরণ রাশিয়ান হবি অভাসিটি গডকাল থেকে এবিট চিত্তগুত্ত প্রদর্শিত হকে।

দিবতীয় বিশ্বৰ শাভিত্তিক কাতিনী-টিতে পেখানো ছয়েছে কিভাবে রাশিয়ার ভূখনেড একদল স্বদেশপ্রেমিক তবল म्बिट्यान्या नाश्मीत्मव वर्षवेका त्थाक নিরীহ দেশবাসীকে রক্ষা এবং ছিটলারের मात्रगरक वन्य कत्रवात कारमा 'मार्जी'त्मव ছম্মবেদে গিয়ে গোপন তথোৱ পাচাব বশ্ব করলো, ছাবর পরিচালক গেয়পুর্ণ ইয়ংভাড হিলকোভিচ একটি সাসপেক্স-ধ্য়ী রহসা কাহিনী পরিবেশন করবার চেণ্টা করেছেন। চলচ্চিত্রের আঞ্সিক, বিশেষ করে আলোকচিয় গ্রহণের কাজ উচ্চাংশার। অভিনায় ভ্যালেনটিনা ভদডামির ও নিকোলাই কৃতিভ দে খিয়েছেন।

শেলার চিত্রগ্রেই ইতিপ্রের প্রদর্শিত
ব০ মিঃ মির বিখ্যাত ক্রিওপেট্রা
(প্রিচালক জোসেফ মাকনেওরাইস)
ছবিটি লুন্রপ্রদাশত হঙ্গেচ। নালভূমিকার
এলিজারেও টেলরের মর্লা অভিনর
ভূলবার নর। অনানা ভূমিকার চরিতান্যাল্ অভিনর করেছেন রেক্স হ্যারিস্কর,
বিচাচ বাটনা।

স্টুড়িও সংবাদ,

সম্প্রতি টেকনিসিয়ান্স স্ট্রতিওতে প্রী আর প্রেমিকদের মেলা বর্দেছিল। সর্ব-শাকুলে। তিনজন পরী আর ছ'জন প্রেমিক। এক একজন প্রীর সংখ্যা দ'জন করে প্রেমিক—গড়ে তাই তো দড়িয়। এখন অবশ্য প্রবিধা সব এক জায়গায় প্রেমিকর। ছাড়িয়ে ছিটিয়ে। আমি, টিনের চাণ ধ্সের দেওয়াল ময়গা মশারি দেখতে দেখতে প্রীদের রাজে চলে এসেছি। বেশ বড়-গোছের একটা ফ্রেমের মধ্য দিয়ে দেখতে পাচ্ছি-ছোটটি পায়ের ওপর পা তুলে চাটনী খাছে। মেজে। দেলাই-ফেড়িট করছে। আর বড়? সে সেজেগ্রেক বেরবোর উদ্যোগ করছে। করামেরা ট্রলিতে ধীরে ধীরে এগিয়ে আসে। শেষে স্থির হয়ে দ ড়ার বড়জনের মুখে। পরিচালক দিলীপ বংশোপাধায়ে বারকয়েক বিহাসশিল দেখ-लान। अनात एरेकिश। आलाहिकाकान মাহাতে নিশ্চপ। মেক-আপ্ময়ন ফিনিশিং টাচ লিচ্ছেন। মাথা কাংকিলে ছটিবুর ওপর

আবিশ্চার রাজেশ খালা ও শমিলা ঠাকর



ভর দিয়ে বুসোছলেন প্রিচালক। মনে হচ্ছিল যুদ্ধযাতার আগে নিঃশন্দ প্রস্তৃতি। হঠাং তিনি ক্ষিপ্রগতিতে এগিয়ে গেলেন। সোমা তোমার ডায়লগটা আরেকবা^র वन एका। अर्कां कन्यों साम्रा नरक्रहरू উঠলো। মিল্টি চেহারা। নিজে যা. ও নিজে যা হতে চাইছে মেয়েটি পাশ ফিরে দিবধা, বিশ্বাস ভয় এবং ভরসায় মুখ তুলে তাকাল। তারপর ডাগর ডাগর চোখ দ্রটি প্রসারিত করে বললো আমি ভাই আমারটা নিয়ে আছি সাত চড়েও রা নেই।'...

মুরেফিরে কথাগলৈ যখন তৈরী হল ঠিক তখনই শটটা টেক করলেন পরিচালক দিলীপ। বয়সে তর্ণ, দ্বভাবে উদামী। এই প্রথম তার কাহিনী চিত্র-পরিচালন। সে থান দই ছবি কুরেছে। প্রথমটি রুনকীর স্বচনী —শিশ্ মনস্তত্বের উপর ভিত্তি করে ছবিটা মানহাইম চলজিত উৎসবে দেখানো হয় প্রচুর প্রশংসা পায়। দ্বিতীয় দলিল চিত্র সাইলেন্ট রেভলিউশন - ফ্যামিলি স্পানিং-এর উপর। তৃতীয় ছোট ছবি শ্রুটীট ট্যালেণ্ট্স', অজ্ঞাকের ছল্লছাড়া যাব সমাজের চেহারা তুলে ধরার চেণ্টায় আছেন, শ্রিটং এগিয়ে চলেছে। এ কথা সে কথার মধ্য দিয়ে আমি বা ব্রকাম, দিলীপ অত্যত সহজভাবে সরলভাবে প্রকাশ করতে চার, লে যা বলতে চার। জীবনের জটিকভার মধ্য থেকে উত্তরণ চার। কোনো রক্ষ চালবাজি নেই বেট্কু বোবে ঠিক লেই কুই প্রকাশ করতে নিজেগা কর।

একটা প্রচণ্ড শিল্প-মাধাম সাহায্যে শাুধা দিলীপ নয়, দিলীপের মতো সহস্র তর্ণ কমিউনিকেট ক**র**তে পারে দশকদের কাছে পারে।

জ্যোতিরিন্দ্র নম্পীর গলপ নিয়ে ফিল্ম সম্ভবত সম্প্রণ হয়ন। চেন্টা হয়েছিল। এই প্রথম সম্পূর্ণ হতে চলেছে। সেইদিক থেকে প্রেন পরী ছয় প্রেমিক' নিম্পিরমান তবির তালিকায় মথেটে গ্রুপেণ্ণ । দল্যাপ্ৰিক কমেডি ফর্মে ভাবা হয়েছে এ-ছবির চিত্রনাটা। চিত্রনাটাকার পরিচালক নিজেই। তিন প্রী ব্যাক্তমে : জাই বন্দ্যোপাধ্যায়, জয়শ্রী রায় এবং নবাগতা

সোমা মুখাজি^ল। ছয় প্রেমিক : আন**্প**ন ক্ষার ভিলক চকুবভা নবাগত সম্পীপ ভট্টাচার্য, বসন্ত চৌধরেী, সত্য বন্দেয়া-পাধার এবং পার্থ ম্থেপাধার। তিন প্রীর বাবা সেজেছেন বিকাশ রায়। অন্যান্য চরিতের শিক্সী: মলি শ্রীমানী জতার রাব, রার্ডৌধ্রী এবং m112194 ম্থাজি^{*}। সমীর প্রোডাক্সন্সের এ-ছবির চিত্রশিলপী দীপক দাস। শিলপনিদেশকঃ রবি চটোপাধার। সম্পাদক: গ্রুগাধর নদকর। সংগীত-পরিচালক : প্রবীর[্]মজ্ম-দার। নেপথা ক-ঠাশলপী : মালা দে. আরতি ম্থোপাধায় এবং তাপ্ত म्यांका।

ন্ট্,ডিও সংবাদদাতা

नाहे क !! নাটক !

नाउँक !!! জ্যোতু বনেদাপাধ্যারের পলাশের রঙ ৪-৫০ রাজা বদল (২র সং) ৪-০০ मर्थिवम 0-00, क्षीभाषी 0-00 **जाकार्य का**न ७-२७ मन्नाक जिल्हा हाक ভাঙা মধ্য ৩-৫০, বীরু ম্থোপাধ্যারের শাখা মড়ীন ৪-০০ জানেশ ম্থো-পাধ্যারের চলৈবেতি ৩-৫০, সমর মাজে শৃখ্যানের স্তদেছ ৩-২৫ ছে আছ भाषिकी २-६०, जिल्ला म्यानित केरनम् २-६० क्लाला मरस्त स्थल सह ७-०० উমানাথ ভট্টাচার্বের জন্ম নৃষ্ট্য ৩-০০, শক্তিশদ রাজগ্রার মন্দ্রম ২-৫০ রতন रवारतत मनाह भाग्य २-६०, औष्टबार २-०० नानाराम्य ननात स्वका सहमानाही क्ष्मा 8-00/बाक्का अवाक (वार्षका क्ष्में का क्षांक मार्गकात मरकात) ६-००, নতুন রাজির অক্ষাক (হ'কন নতুন ন্টাকালের সরাকন-নিরাক্ষার্কক मरक्यान्त्री क्रेन्⁰0

0012-0 404 OF 444-0



विद्यारी नाग्रेकात कवि मारेक्क मधुम्रामन मुख

মান্ত্ৰকে থাকাকালীন সময়ে মাইকেগ স্থাপন্ত জেড়া বচনা করেন। তথ্য পার্যাল্ড ও বাংধ্যবালধ্যবর স্বাহ্মাবাণ্ধ প্রার্থির বাইরে কলকাতায় মাইকেল থবে বেশা পরিচিত ছিলেন না। বন্ধন্দের মধে গৌরদাস বসাকের কথাই সর্বাত্তে মনে আবে। মাইকেলের আর একজন অত্রংগ বন্ধা কেশবচন্দ্র গ্রেগাপাধান্য ভিনেশ তখন বাংলার নাটাজেদালটার অনাত্য भारताका दाकि। देश्तकी नाण्यां धनायुर সংখ্য বাংলা নাট্যাভিনয়েও তিনি স্ক্রিয় **অংশ গ্রহণ করে**ন। অভিনেতা হিসেবে কেশব গণেগাপাধায়ের সমকক্ষ অভিনেত। ভখন খ্র কমই ছিলেন। নাটাপরিচালনা অভিনয় শিক্ষা ও সংগঠনী শান্তও ছিল কেশবচনের ভার্ভত।

বেকপাছিয়ার রাজার। যখন র মনারায়ণ ভকরিত্যের রভ্যাবলী নাউকর অভিনয় আয়োজন করেন- তখন কেশবচ্নুক্তে ভারা আয়াত্র জানানা মহাগাজা থভানিধামাহন ঠাকুবির সংগে কেশববাব রজবানী অভিনয়ের স্বাবিষয়েহ প্রায়শ্ল দিয়ে সাহার্যা করেন।

SHOR শনিবার, ৩১শে জালাটা, थ-गुरुटक्त রাভ H-CORT 7.9(7.0) ১২-৩০টা পর্যন্ত রভ্যানগাঁর প্রাথায়া অভিনয় অনুভিঠত হয়। কেশব গ্লো-শাধ্যার বিদ্যাক চরিতে অভিনয় করে সকলকে চমংকৃত করেন। যোগস্থরারণ চরিতে অভিনয় করেন গৌরদাস বসাক। ৰভাবলীর অভিনয় দেখবার জন্য বহ টিংরেজ রাজপার্য ও গণামানা বারিদের আমশ্রণ করা হয়েছিল। এপদের কথা মৰে ব্যার পাইকপাড়ার রাজারা ইংরেজীতে রভ'বেলীর শারাংশ মাদুণের প্ররোজনীয়তা জনাভব করেন। কেশ্ব গণেগাপাধায় এবং গৌরদাস বসাক উভরেই মাইকেড মধ্যদেন দত্ত সম্পাক ি বিহায় অব্হিত

अब्रह

महाचा : विद्यारोत तन्त्रीत

মহাত্রা প্রতি ব্রুম্পতিবার মহাত্রা : ৬.,১৩ ২০. ২৭ জান '৭৪

নহাকা । মনিরের-এর তাত্যিক

वहाचा ३ वारमाह्रज्ञ

মহাবা: লোকনাথ ভট্টাচার্য

वदाका : निरम्भना

महाया : ज्यान व्यवस्थी

কালে এবং মাইকেলকে এনে রাজাদের মণে পরিচয় করিয়ে দেন।

'রত্যাবলা'র ইংরেজীতে স্বারংশ রচনার দ্বিজ মাইকেলের ওপর অপ'ণ করা হয়। অন্বাদের প্রিশ্রমিক ব্যক্ মাইকেলকে দেওয়া হয় নগদ ৫০০ টাকা।

বতাবলী নাটকের অনুবাদ করতে এসেই নাটক রচনায় মাইকেল অনুপ্রাণিত হান। তবে চিত্রিলেড়ী মাইকেল সংস্কৃত নাটকের চিরাচ্রিত গঠন-শৈলী মেনে নিতে পারলেন না। ইংরেজী নাটকের সহজ অভিনয়-ধারার পন্ধতিতে নাটক রচনায বতী হলেন। অবশা সংস্কৃত নাটা সাহিত্যের কাবাঝংকার ও লালিতাকে অস্বীকার করতে পারলেন না। বরং নতুন কার ক্রিলাসের নাটা-সম্ভাবে আভামান থাকবার তথাও পাওয়া যায়। শুমি ঠ। কাহিনী নিব্লিনের মূলে ন্টকের লুহাকলি কুলিসাসের 'ফভিজান শক্তলা' নাটকের প্রভাবত অঙ্বীকার করা বায় না। উংরেজ**়ী নাটাশালা ও নাটকের প্রভাবে** আমরা পূজ্যেদিবক বলে আমাদের একদল ঘাইকেশকে নজিব হিসেবে উপস্থিত করতে চান। জাছের রক্ষরা মাইকেল সম্পাণ ইংরেজী ছাঁচে ব্যুংলা নাটকের রপে দিলেন। বিদ্রেছী মাইকেল প্রাতনের সব কিছা ভেগোচরে তছনত করে দিলেন। কথাগালি শানতে বেশ দাগে। কিন্তু এর মালে কোন সভি। নেই। মাইকেলের নাটকাবলীই তার প্রমাণ। মাইকেল সংস্কৃত সাহিতা থেকেই তাঁর বেশীর ভাগ নাটক এবং কাবোর উপকরণ গ্রহণ করেন। মাজভাষা এবং দেখমাতকাকে নতুন করে মাইকেল আমাদের দেখিয়েছেন বললেও ভল হবে না।

মাইকেলই 'জাতীয় নাটাশালার' প্রথম উল্ভাবক। ১৮৫৯ খ্লীব্দে মাইকেলের 'শাম'ক্টা নাটক প্রকাশিত হয়।

রাজা প্রতাপচন্দ্র সিংহ এবং ঈশ্বরচন্দ্র
সিংহই মন্তেশের সমশত বার বহন করেন।
শার্মান্টা নাটকের ভূমিকার মাইকেল
রাজাদের প্রতি শ্রামা জানাতে বেরে
লোখন: ভারতের মাটিতে অদ্র ভবিষতে
যেদিন আবার নাটা-ধারা উৎসারিত হরে
স্টাবে—সোদন কেউই এই উচ্ছদের দুই
মহৎ বাজির কথা কিস্তে হবে নাই
জাতীয় মাটাশালারে উলেম্ব-মুহাতের
এবার ছিলেন তার পর্য বন্ধা

বেলগাছিয়া থিকেটাবের অভিনয় প্রথম থেকেই প্রত্যক্ষ করেছিলেন মাইকেল। বেলগাছিয়া নাটাশালার মঞ্চ, সঞ্গীত অভিনয়—লাটক সব কিছু জাতীয় ভাষ-ধারারই ছিল পরিপ্রেক।

বাংলা ১২৬৫ সালের অগ্রহারণ মাসে লামিটো নাটকের রিহাসিল শর্ম হয়। বাংলা তরা জাল ১২৬৬ সালে ইংরেজী তরা সেপ্টেকর, ১৮৫১ খুল্টালে শর্মিটা নাটকের অভনরংশে ছিল্লন হ্যাভিত্রির অভিনরংশে হিল্লন হ্যাভিত্রির্নাথ দত্ত গরে যস্নাথ চটোপাধ্যার।। মাধ্যা—(বিদ্বক্) কল্পব

গগেলপাধ্যায়। শকুচাহার-দানিকাথ ছেল্। ক পিল--বেশ্বল থিয়েটারের MINER ঘোষ। বকাস্র-রাজা ঈশ্বরচন্দ্র সিংহ। উদ্বরচন্দ্র ঘোড়া থেকে পড়ে গিয়ে আহত হলে প্রত্তিময় করতে পারেন না। বক্ষাল্ল চরিয়ে তখন অভিনয় করেন ভারীচাদ পরে। দেবধানী—হেমচন্দ্র মাথে। প্রধায়। শ্মিক্স-কৃষ্ধন ম্পোপাধ্যা পারিষদবর্গের মধ্যে ছিলেন মহারাজা শতীক্রমোহন ঠাকুর রাজেন্দ্রলাল মিরু প্রয়ন্থ খেঠ। খাইকেল শ্মিষ্ঠা নাটকের অভিনয় দেখে মাণ্ধ হয়ে বৃধা রাজনারায়ণ সেকে লিখেছিলেন : সোজা কথায় বলতে ত্য চমৎকার। সমুখ্য দুশ্কি মন্ত্রমাধ হয়ে। অভিনয় দেখেছে।

হিন্দ্য কলেজের বৃণ্ধ অধাপক রাচ্চণ্ড মিত অভিনয় দেখে মাইকেলকে কণ্ডলে ধরে উচ্চন্দিত অভিনয়ন জালান। পণ্ডত মহামহোপাধার প্রেমচ্দি তক্ষি বার্লা শাম্প্রিটা নাইকের বিরপে সমালোচনা করেন। এবিষয়ে গৌরদাস বসাককে এক পত্রে মাইকেল লেখেন ঃ ওগ্রা অধার পণ্ডত্রা আমার সব কিছুতে বৈদেশিক গণ্ড লেখে থাকেন। সংক্রত বাট্রকের দাসত্ব ভ্রিফ করে আমাদের এগিয়ে যেতে হবে।

সংস্কৃত নাটকের দাসত্ব ছিল্ল করে
মাইকেল কিন্তু ইংরেজনী নাটকের দাসত্বক বরণ করে নেননি। নাটকের উল্বোধন সংগতিও মাইকেলই রচনা করেন। ভাছাড়া এবারও ইংরেজনী সারাংশ রচনা করেন ছিলেম মাইকেল। যতীল্প্রমাহন ঠাকুরও একটি গান রচনা করেন।

শমিশ্চা নাটকের ৬টি অভিনর সংবাদ পাওয়া বায়। বিশ্বকোষ-এর মতানুরোছী ৮।১০টি নয়। সবাশেষ অভিনর ২০শে সোণ্টেশ্বর, ১৮৫১ খৃষ্টাবেদ অনুষ্ঠিত হয়। বাড়ীর এবং পরিচিত আত্মীর-শ্বজনদের মেয়েদের জন্য একটি অভিনয়ও করা হয় বিশেষভাবে।

শমি ঠা নাটক যেখানে অভিনীত হয়েছিল—এখনও সে স্থান উদম্ভই পড়ে আছে। একটি দেয়ালের চিহুইে আছে। নাট্যশতবাধিকীতে পশ্চিমবংগ সাংস্কৃতিক উল্লয়ন সংস্থার সভারা ঐস্থান মালা।পশ্ করেন। কুমার জগদীশ সিধহ এবিকায় বহু তথাও আমায় সরবরাহ করেন।

শ্মিভিটা নাটকের পর মাইকেল বেলগাছিয়া থিয়েটারের জনা পদমাবতী নাটক রচনার রতী হন। কিন্তু ১৮৬১ খ্নটাকের ২৯শে মার্চ রাজা ঈশ্বরচন্দ্রের মাৃড়াতে বেলগাছিয়া থিয়েটার বল্ধ হয়ে যায়। পশ্মাবতী আর এখানে অভিনীত হয় না। ১৮৬০ খ্নটান্দে পশ্যাবতী রচিত হয় না। ১৮৬০ খ্নটান্দে পশ্যাবতী রচিত হয় না।

পশ্মাবতী নাটকের উল্লেখযোগা অভিনর সংবাদ পাওয়া বায় ১৮৬৫ খান্টান্দে। বৌবাজারের রাজেন্দ্র দন্তের গাহে এই অভিনয় অন্নিঠত হয়। অভিনয় অপেরাধ্যী ছিল এবং জনগ্রিরজার্জনি করে।

১৮৬৭ খান্টাবেদর ১৪ছ সেপ্টেম্বর পাঁচকভি মিত্রের উদ্যোগে fre প**্রের** 'প্ৰমাৰতী' বিশেষ সাড়া আল্নীত জাগায়। আরো কয়েকটি অভিনয় এখানে হয়: এই অভিনয়ে বেংগল থিয়েটারের ভালতেম প্রতিকাতা বিহারীলাল চটেও পাধার ইন্দ্রনীল চরিতে অপূর্ব অভিনয়-ক্তিকের পরিচয় দেয়। পশ্মাবতী চরিধে ছিলের শিবচন্দ্র চটোপাধার। স্থালকার লিবিশচন্দ ছোষ বা নগদার গেরিশ চারটি চাঁবতে অভিনয় করেন। ন্যাশনাল িয়েটারের শিবচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়ও এ'দের সংলা জাভিত থাকেন। পদ্মাবভীর চরি<u>লা</u> ভিনেতা আর তিনি এক লোক নন। বিহারীলাল চটোপাধার ছিলেন নাটা-শিক্ষক। পশাবতী নাটকে কলির মাথেই মাইকেল তার অভিযাক্ষর ছন্দ সবপ্রথম সংযোজনা করেন বলে অনেকের বিশ্বাস। ্রাইকেল একাধিকবার এখনকার অভিনয়ে উপাদ্থত থাকেন।

সিমলার শংড়ীপাড়ার জনাদনি সাহার বাড়ীতে ১৮৬৬ খ্টাব্দে পদমাবতীর অভিনয় অন্িঠত হয়। এই অভিনয়ে নাশনাল থিয়েটারের অনাতম প্রতিঠোতা নগেলুনাথ বন্দোপাধায়ে বাদনদল নিয়ে যুক্ত হয়ে পড়েন। তাছাড়া পদ্মাবতী নাটকে কল্ফুকী চরিত্র সর্বপ্রথম তাঁর অভিনয়। ১৮৬৫ খ্টোব্দের ১ই জিসেম্বর পাথ্রিয়াঘাটায় জনৈ ধ্নীগাতে পলাবত। নাটকের অভিনয় সংবাদ ১১ই জিসেম্বরেয় সংবাদ প্রতিন্দ্রাদয়া প্রিকায়ে পাওয়া যায়।

১৮৬৭ খুড়াফো বাগবাজারের কথেটে क्ट्राजार शितिभ्रातम् वात **উ**त्ममहन्ध অভিনয় ক্রালেন চৌধারীর নেতারে মাইকেলের "শাম'প্ঠা"। শাম'প্ঠা নাটকের যাতা রূপায়ণ ও কয়েকখানা গীত রচনা করেন গিরিশচন্দ্র। শ্রমিণ্ঠার পরবর্তী প্রচেট্ট বাগবাজার এমেচার থিয়েটার শ্মিভিটা এবং প্রতিষ্ঠা। মাইকেলের প্ৰাবতী বাংলার - नाष्ट्राटन्स्**र**न्द কীভাবে সাগ্রসংগলে পেণছে দিতে সাহায় করে— আমার মনে হয় কে কোন নাট্যামোদী তা স্বীকার করবেন।

১৮৬০ খ্টাবেন্দ মাইকেল উপহার দিলেন তার ক্ষেক্মারী"। কথিত আছে মাত এক মাসের মধ্যে এই নাটকটি মাইকেল শেহ করেন। অথাৎ ১৮৬৭ খ্টাবেনর ওই আলাত নাটকটি লখতে খ্টাবেন পুষ্ঠ সেতেচনর। নাটকটি প্রকাশিত হয় ১৮৬১ খ্টাবেনর শেষভাগে।

কৃষ্কুমারী ঐতিহাসিক পটভূমিকার রচিত। বিদ্যাপ্তনের মতে প্রেচ্ঠ নাটকের মধ্যে সমাত্র। মাইকেলের একেই কি বফে সভাতা এবং বাভো দাজিকের ঘাভে রে প্রামান কটি দার্ঘাস্টা নাটকের প্রাহত শেষ **জীবনে লেখেন মারা কান্**ন। মাইকেল অভিনয়ের জন্যই নাটক লিখতেন। ভার মেঘনাদ বধ কাব্যও নাটকায়িত হয়ে অভিনীত হয়েছে।

জোড়াসাক্রি চাকুরবাড়ীতে গণেশ ও গুণান্দ্রনাথের উদ্যোগে যখন অভিনহ অনুগঠত হয় তখন প্রথমে বিভিন্ন আবৃত্তির সংগ্য মাইতেলের 'কুফকুমারী নাটকের দ্শ্যাভিনয়ের সংবাদ পাওয়। যায়।

মাইকেন্সের 'একেই কি বলে সভাতা প্রহসন দিয়ে শোভাবাজার প্রাইভেট গিয়েটিলাল সোসাইটির শ্বারোশ্যাটন কর। হয় ১৮৬৫ খ্টান্সের ১৮ই জুলাই। অভিনয়ে রাজবাড়ীর বিভিন্ন কুমারের। অংশ গ্রহণ করেন। দেবীকৃক বাহাদ্রের। একতলার একটি গ্হে মণ্ড নিমিতি হয়েছিল। দিগদ্বর মির, কালীপ্রস্ম সিংহ্ মত্নিদ্রমোহন ঠাকুর প্রভৃতিরা প্রথম অভিনয়ে উপস্থিত থাকেন।

প্রতি মঞ্চল শক্ত ও রবিবার এখানে নাট্যান্সাস হতো।

১৮৬৫ থ্টালের ২৪শে জ্বান্ই
ক্ষকুমারী নাটকের জেস রিহাস্তিল হয়।
প্রকাশা অভিনয় নিয়ে বহু মতাণ্ডর
আছে। ৮ই ফেবুয়ারী, ১৮৬৭ খ্টান্সে
ক্ষকুমারীর প্রথম প্রকাশা অভিনয়
ত্রারিথই সচিক বলে বেলার ভাগ মনে
করেন। অভিনয়ে ভীম বিশ্ব চরিয়ে আখ্রপ্রকাশ করেন বিহারীলাল চট্টোশাধার।
ক্ষকুমারী—ব্যজ্জিনক্ষ দেব বাহাদ্রে।
ভিরমাধন বস্তু।

গিরিশচন্দ্র বিহারীলাসের ভীম সিংহ দেখে মুক্ষ হক্ষেছিলেন। কৃষ্ণকুষারীর অভিনয় সংবাদ চতুদিকৈ ছড়িয়ে পড়লো। কালীপ্রসাম সিংগ প্রথমে এদেব নাটা মুক্তলীর সভাপতি ছিলেন। পবে পদতাগ্র করেন।

১৮৬৬ খৃণ্টাব্দের এপ্রিল মাসে
আরপ্রিল নাট্টেশ্যাজ শক্ষতলা নাটকের
সংলা মাইকেলের 'বুড়ো শালিকের ঘাড়েরে' প্রহ্সন অভিনয় করেন। ১৮৬৭
খুল্টান্দের ১৮২ এপ্রিল দিবপরে লোকনাথ
চটোপাধাারের বাড়ীতে কৃষ্ণকুমারী নাটক
অভিনীত হয়।

গিরিশচন্দ্রের সংখ্যে তার বংধাদের বিরোধের কথা আমরাজানি। মহাকা শিশিরকমার ঘোষই গিরিশচন্দ্রকে প্রেরায় নাশনাল থিয়েটাকে নিয়ে আসেন। **নাশনাল** পরবক্ত' পরিচালকেরা থি<u>য়েটারের</u> অভিনয়ের জনা মাইকেলের কুক কুমার? নাটক নিবাচন করেন। কিন্তু ভীম সিংছের চরিতে অভিনয় করবার মত কোন অভিনেতা ছিল না। মহাতা শিশিরকুমারের অন্তর্গধে গিরিশচন্দ্র যেমন পরিচালক-র্ভেপ যোগদান করেন-ভেমনি জ্ঞীম সিংহ চরিতেও অভিনয় করতে "বীকৃত হন। তবে এ ডিসটিংগ্ইসভ এমেটিয়ারার্ডে ভাঁই

নাম প্রচার করা হয়। শনিবার ২২শে ফের্রারী ১৮৭০ খ্ন্টান্সে ন্যাগানাণ থিরেটারে যেনন সর্বপ্রথম মাইকেলের কৃষকুমারী মণ্ডণ্ড হয়—তেমনি ন্যাগানাণ থিরেটারে ভীম সিংহ, চরিতে গিরিশ-চন্দেরও সর্বপ্রথম আত্মপ্রকাশ।

৮ই মাচ' অবিভক্ত নামানাল থিয়েটারে সানাল বাড়ীতে মাইকেলের বিজে শালিকের যাডে রোঁ অভিনীত হয়।

'সাধারণ নাটাশালা' প্রতিষ্ঠিত হ্বার প্রে' বাংলার নাটাাদেশালনে মাইকেলের অবদান সম্পর্কে প্রশেষ পাঠক সাধারণকে অবহিত করতে চেরেছি। সাধারণ নাটা-শালায় কবে কখন মাইকেলের নাটকাবলা মাঞ্চম্থ হ্রেছে, সে বিষরে বেমন সাধারণ আলোচনার মধ্যে তৃলে ধরা হ্রেছে তেমান ভবিষাতের আলোচনায়ও তুলে ধরা হবে।

মাইকেল সম্পর্কে আরে। যে কথা বিশেষজ্ঞাবে বলবার আছে--তাহলো মাইকেলের উৎসাহ অন্প্রেরণাতেই গড়ে ওঠো বেশাল থিয়েটার।

বেদগাছিয়া নাটাশালা থেকে বহু নাট্যাভিনয়ে মাইকেশের বিভিন্ন নাটকে বিহারীলাল চট্টোপাধাায় অভিনয় করে মাইকেলের প্রিয়লমদের অন্তম হাছ ওঠেন। শারংচন্দ্র ঘোষ সম্প্রকেও ঐ একই কথা বলা চলে।

ন্যাদান্ত থিরেটার প্রতিষ্ঠিত হ্বার
পর পরংচন্দ্র এবং বিহারীলালকে বেণ্ডল
থিরেটার প্রতিষ্ঠার মাইকেলই বেশী
উৎসাহিত করেন। তথন জালিনরের
উপযোগী ভাল নাটক পাওরা বেফ দাঃ
মাইকেল এ বিষয়ে ত'দের প্রতিষ্কৃতি দেশ
বে বেণ্ডল থিয়েটারের কনা ডিনি নিয়মিত
নাটক লিখনেন। বেণ্ডল থিরেটারের পরিচালকম-ভলীতেও মাইকেল হোগদাশ
করলেন।

মাইকেল পরামার্শ দিলেন, লা চরিয়ে
অভিনেত্রী নিয়োগ করতে। পশিন্ত ইশ্বরচন্দ্র বিদ্যালয়গরও পরিচালকমান্দ্রপাতি
ছিলেন। মাইকেল-প্রতিভারই তিনি
অন্বালী ছিলেন না—মাইকেলকৈ শেহও
করতেন অনেকখান। কিন্তু মাইকেলের
ভী চরিত্রে অভিনেত্রী নিয়োগের প্রশান্তা



প্রিচর নাটকে শ্রেক্তন্ম চট্টোপাধ্যার এবং দক্ষিতা বিশ্বাস



বিদ্যাসাগর সমর্থন করতে পারলেন না। ভিমি নিভেকে বিভিন্ন করে নিলেন।

বেশাল থিয়েটারের জনা মাইকেঞ্চলনা নাটক লিখতে শারু করেন। মায়া কানন দিরে নাটালালাটির উদ্বোধন করা হবে বলে দিওটিকৃত ছিল। কিন্তু আইকেকের আক্রিমক মাত্যুতে শেষ পর্যবভূত ছাল দিরেই ১৬ই আগণট ১৮৭৩ খল্টাবেল বেংগাল থিরেটারের লালোল্টান করা হয়। মাইকেকের ইক্তামত লাজিখ্যা নাটকের বিভিন্ন নারী চরিত্রে যে ক্রকলালার জায়প্রনাশ করেন তীরা হলেন প্রকলালার জায়প্রনাশ করেন তীরা হলেন প্রকলালার জায়প্রনাশ করেন তীরা হলেন প্রকলালার জায়প্রনাশ করেন তীরা হলেন প্রকলাক্রমী, ক্রমন্ত্রিকিবী শায়মান্নেরমী ওবলোল্যান্ত্রার

মাইকেলের মৃত্যুর পর ৩০শে আগত ৰ ১৮৭৩ খ্টাকে মারা কাননের অভিনয় সংবাদ পাওরা বারা। কিন্তু অভিনয় জনে রা। মাইকেলের অসম্পূর্ণ বিষ বা ধন্ত্র্পূণ নাটকের অভিনর সংবাদ পাওয়।

বাইকেলের মৃত্যুর পর তুরানীতত্তন কালের প্রতিটি নাট্যশালাই মাইকেলের সম্ভান-সম্ভাতিকের জন্ম বিশেষ অভিনরা-সুস্ভানের আরোজন করেন।

্ নাইকেলের জীবদী নিরে প্রখাত সাহিত্যিক বনকলোই সম্ভবত প্রথম জীবন্দ্রন্দ নাটক রচনা করেন। ছাত স্থান্তব্যা এই নাটকটি বহুবার অভিনর করেছেন। পেশাদার রংগাশালায় নিত্রি ভট্টাচার্য রচিত মাইকেলের জীবনচরিত নাট্যাচার্য শিশিরকুমার ভাদ্যভূরির প্রব্যো-জনার এবং পরিচালনায় শ্রীরংগম রংগমঞে মঞ্চম্প হয়ে বিদম্পজন থেকে সর্বসাধারণকে বিম্মুখ করেছিল। কবি মাইকেল চরিত্রে নাটাচার্য শিশিরকুমারের অভিনয় কে.এ দিনকু নাটা।মাদীরা ভুলতে পারবেন না।

নট ও নাট্যকার পরিচালক মহেন্দ্র গাশত রচিত মাইকেলের আর একটি জাবিন-নাটা নটস্বা মহান্দ্র চৌধরেবীর পরি-চালনার রঙমহল রক্সমণ্ডে মণ্ডম্থ হরে বিপলে জনপ্রিয়তা অর্জন করে। মাইকেল চরিতে আত্মপ্রকাশ করেছিলেন নটস্বা। আচাবের অভিনয়ের পাশে স্বের দ্বিক্তি অনেকথানি ক্ষিপ্তাভ হয়ে প্রে।

চলচিতে মাইকেলের জীবনী মণি গাঁহের প্রযোজনায় চিত্রায়িত হয়। চিত্রথানি পরিচালানা করেছিলেন ব্যাত মধ্ বস্থা মাইকেল চরিত্রে অভিনয় করেন উৎপাল তা বলানাটকে মাইকেল চরিত্রে রুপদান করেন ব্যাত্রিক মাইকেলের মাত্রা অভিক্রম করেছি। প্রতিবাহিকী আমরা অভিক্রম করেছি। প্রতিবাহিক বার বিশালার মাট্রালালা মাইকেলেকে সমর্ব করেবার মত অবকাশ পার্মনি বালে দুঃখ হয়।

নাটাশালার সংশ্য জড়িত শিল্পী শাংবাদিক নাটাকার ও ক্য**ীদের জন্য** ক্ষাকারে বে কোল হালগুড়োকো মাইকেলের নামে একটি শ্বা সংরক্ষণের
পরিকল্পনা নিয়ে একটি প্রতিনিধি দক্ত
পরিকল্পনা কিছে প'জার সংশা সাক্ষাং
করেছিলেন বলে শ্রেছিলাম। কিছে এ
বিষয়ে কতথানি কলপ্রস্তরেছে তা জার
কানা বায়নি।

১৮৭৩ খাটাপের ২৯শে জনে মাইকেল
গর্স্দন দত্ত প্রলোক গমন করেন—
১৯৭৪ খাটালের জনে মাসত বিদায়
নৈতে চলেছে। এ বিষয়ে আমাদের কী কোন
কর্তব্য নেই? প্রাদেশিক সরকার এবং
পাশ্চম বাংলার প্রতিটি নাট্য সংশ্যা ও
নাট্যানরাগী জনসাধারদের দৃশ্চি আকর্ষণ
কাজ্ঞিল এ বিষয়ে। মাইকেলের জাতীর
নাট্যশালা গিরিশাচন্দ্রক জাবিয়ে তুংলছিল। গিরিশাচন্দ্রের ভাব-ভাবনাকে রূপ
দিলে অগ্রস্কর হুরেছিলেন দেশাবন্ধ্ কর্বক
সফল হর্যান। দেশবশ্বর আর এক শিষা
বিধানচন্দ্রও পারেন নি ক্লাতির দীর্ঘদিনের
ভবনকে সফল করে তলতে।

দেশবংধু ধৌহিত সিংধার্থ'শংকর নতুন করে জাতীয় নাটাশালা প্রতিতায় অগ্রসর হয়েছেন।

জাতির ভাব-ভাবনা নিয়ে গড়ে উঠ্কে
জাতীয় নাটাশালা। আর সেই সংগে গড়ে
ভোলা হউক জাতীয় নাটা-গবেধণালয়।
বতামান ও ভাবীকালের গবেধকেরা নত্ন
করে মতুন কথা শোনাবেন আমাদের
মাইকেল এবং আ্রো নাটারথাদৈর
সম্প্রেণ।

-কালীশ মুখোপাধ্যায়



গ্ৰন্থা প্ৰিচালনাঃ তপন সিংহ আছতি ভট্টান্য'/দেবহাক বাৰু

মণাভিনয়

श्रीबहरा 🗸 नाहे। जभारताहना

প্রোজনা : শ্রীরণজিংমল কাংকারিয়া। গান থেয়েটার। নাটক ৫ কশাল ম খাজি। প্রচালনা : বা কম যোষ। সংলীত : িমরবরণ। আলোঃ তাপুস সেন। মণ্ডঃ সংবেশ দ্রা সভানাণ : সতোষ সরকার। ভাতনয়েঃ শ্ভেন্ড চটোপাধায় শ্মিতা বিশ্বাস, হরিধন ম্থোপাধ্যায় পঞ্চানন ভ্লাচায়' বাঁৎক্ষা ঘোষ তপ্ৰ বস, কাতিক দ্যোজি সাশীল বসা রবীন বসা গোপাল সিংহরায় অমর মুখানিং শিশির চক্ততী শাহাল রাষ্টোধারী শাহিত শৈলেন কান্ত বীরেন স্মা মহিদরা গীতা ও অন্মিকা সাহা প্রভতি।

৩১ মে শাক্রবার মঞ্চথ হয়েছে স্পার থিয়েটারের নত্ন নাটক 'পরিচয়'। সাধা-রণত খন-খারাপী ও বিভিন্ন অপরাধ-মুদ্দক কাহিনী নিয়ে রহস্য-ন্টক গড়ে ওঠে। কিম্তু স্টার থিয়েটারের বর্তমান নাটক উঠেছে সম্পূর্ণ ভিলধ্য । এক রহস্য নিয়ে। একজন উদীয়মানা লেখিকার রচনা কিভাবে আর একজন খাতেনামা লেখককে প্রথাত করে তললো, তারই সংধান পাওয়া ফাবে বর্তমান নাটকে। তাগ্য খ্যাতনামা সাহিত্যিক এর্বিষয়ে কোন শঠতা বা প্রবঞ্চনার সাহায়্য নেনান। বরং বলা চটন পরিম্থিতির চাপে অনিচ্ছা সত্তেও এই খাতির বিজ্নবনা সহা করতে হয়েছে তাঁকে।

অতী•দুনাথ ছিলেন একজন প্রখাত সাহিত্যিক। বৃহুজনের মধ্যে একজন উদীয়সানা গোনকীও তাঁর অন্রাগিণী ছিলেন। শতীন্দনাথের এক দ্রেসম্পর্কের বোন ছিল লেখিকার বান্ধবী। বান্ধবীর মারফং লেখিকা ভার 'পরিচয়' নামে একটি উপন্যাস অতীন্দ্রাথের মতামতের জন্য পাঠিয়ে দেয়। প্রাণ্ডাগিপতে লেখিকার নাম ঠিকানা ছিল না। অতীন্দ্রাথের সমুহত বই প্রকাশ করতেন তার বন্ধ, প্রকাশ। পকাশবাব: 'পরিচয়'-এর পা'ডালপিটি নিয়ে প্রকাশ করে দেন। এই নতুন উপন্যাসটি প্রকাশিত হ্বার সংখ্য সংখ্য পাঠক মহলে অসমভব জনপ্রিয়তা অজ'ন করে। **অতীন্দ্রনা**থকে নতুন খ্যাতিতে ভা^স্ত করে। শেষ প্র্যান্ড 'প্রিচয়া' উপ্নাসের জনা অত্যুদ্দন্থ জাতীয় প্রুফার পান।

অতীক্ষণাথ কিন্ত ভিতরে ভিতরে মোটেই খুশী ছিলেন ন। তিনি লেখিকার সংগানে ছিলেন: তার দরে সম্পকের বোন্টি যোগ্যাগুড মারা স্থাওয়াতে সংধানের ষা**র**িছিল হয়ে। ধনীর একমার উত্রাধি কারী অতীন্দ্রনাথ। বিলাসবাসনে কাটিয়ে-দ্বন। সংসারে সিতৃত্না ভৃত। হরি ছা**ড়া** पात रक्छे छिन ना। अन्छ पर्य रमन सन्दर्भ প্ৰভে শেষ পৰ্যত সেনা বিভাগে কাল निदल्ला

সেখানে মঞ্চতা বলে একটি মেয়ের সংল্যা অভীয়নুনাথের পরিচয় হয় এবং আক্সিকভাবেই দ্জনে বিবাচ বংগনে আবৃদ্ধ হন। অতীন্তনাথের সেন্বিভাগের

পাপ জাউর প্রে भागिका जानत



ভাউনী ছিল দাজিলিং-এর আহাকাহি সীমানেত। স্তাকৈ পার্লচতি পত দিয়ে তিনি দেখে পাঠিয়ে দেবার ব্যবস্থা ক্রলেন। আর প্রকাশবাব, এবং হরির কাছে বিয়ের সংবাদ জানিয়ে নদিকতার দুখানা ভাব দিয়ে দিলেন। চিঠি দুটি তাডাতাড়ি পেণছানোর জনা ওদের কর্নেল মি: লাভিডীকে সমণ্ড বিষয় জানিয়ে পোষ্ট করে দিতে অনুরোধ জানালেন। একটি হোটেলে ওদের কথাবতা হাকল। অতীন্দ্রন্থ নান্দ্রাকে নিয়ে হোটেল থেকে বেরোনোর সংকা সংকা ব্যবিং শ্রু হয়। অতীন্দ্ৰনাথ এবং নন্দিতা বিজ্ঞোরণে মারা যায় বলে সেনা বিভাগ থেকে প্রচার করা হয়। কনেলি লাহি**ড়ীও আহত হ**রে মিলিটারী হাসপাতালে ছিলেন। এখানেই নাসের কাজে ছিলেন 'পরিচল্ল' উপন্যাসের মূল লেখিকা কনেলি লাহিড়ী তারই হাতে চিঠি দর্টি পোষ্ট করতে দেন। পরে তিনিও মারা যান। চিঠির খামে অতীন্দ্র-न्। (शह বাড়ীর ঠিকানা म:ि েয়েটি চিঠি श्राह्म ফেলে। সমুহত বিষয় জানতে পারে। দুটি খুলে ফেলে। সমুস্ত বিষয় জা_{তি}ত সেনা বিভাগ থেকেও থবর পায় অতীন্দ্র-নাথ এবং তার দ্বী নান্দতা মারা গেছে। তখন প্রতিনোধ গ্রহণের ইচ্ছার চিঠি দুটির মধ্যে নিজের দুখানি ছবি ভবে দিয়ে নিজের বৈধ্বেতি কথা জানিয়ে দেয় এবং লিখে দেয়, সে. একাই স্বালীগৃহে আসেছে।

যথানিদিপ্ট দিনে লেখিকা অভীন্দ্র-নাথের পাছে এলো নদিদতার পরিচয় নিয়ো। শোকের মণেও কিড.টা আন্তলে পেলা সবাই। ভাকাশবাহা এবং ৩ 🔓 📆 এসেও দেখা করে স্থিক। দিয়ে শেলেন। কেশ
কিছাদিন কেটে গেল। কৌথকার জার
একটি উপন্যাস অভীগ্রশাহার শেব শেখ্
কলা তার পাড়েকিপ্টি প্রকাশের চাতেই
দিলে ছলেন কৌথকা। গেল রচন্যা নাম
অভীগ্রন গেগ এই পাড়েকটিও প্রকাশিত
বার সালে সলো অস্ভর জনপ্রিরতা
লোক এই সালার সালারীরে ছভীন্তনাথ একে
ত্রিগিলত ছালান। অভীগ্রন থ বিজ্ঞান।
কিনি প্রচার করেন এই সেরেটি ভর ভৌ
মনি প্রচার করেন এই সেরেটি ভর ভৌ

> বোশ্মানা বিশ্বনাথম্

রচিত সদ্য প্রকাশিত নাটক

ট্যাক্স মন্ত্রী / ৫০
তাতন্দ্র স্বীমান্ত ৫০
দক্ষোর দপানে ১০০০
প্রাণিতন্দ্রম : জাতীর সাহিত্য পরিষদ,
১৪. রমানাথ মজ্মদার প্রীট কলি-১॥
জাতামর, ১৩১, হারশ ম থাজী রেছে,
কলি-২৬। নম্বর্থ কুটীর, কলি-১২।

মিনাভা রবি: ৩টা ও ৬॥টা ০ জন্জোগ

ক্ষেত্ৰ "হাউস মূল" আগে তিকিট কিন্ন।

প্রজীপতি

কালা, নিৰ্মাল, লুবেন, প্ৰেমাংশা, নৈথেন, ক্ৰান্ত, সং, দি-টা, মন্, প্ৰমেল, শিপ্তা, ন্যুনিজা, দ্বাজা এবং দিলালৈ ও বাস্থা। আলো ঃ জাপদ দেন, ন্তা ঃ দিন মান্ত্ৰনা কাম ঃ ন্যুনি হাপ্যাপ্ত, মণ্ড ঃ স্টেন্স ক্স নাট্য প্রিচালনা ঃ হাব্দ্য গ্রুভ নাটক ভিল্লধ্য[া] আক্ষণ নিয়ে মণ্ড^{ত্}থ হায়ছে।

অভিনয়ে কাহকাচরিতে শ্রীমতী শ্মিতা বিশ্বাস আগাগোড়া আবেগাস্থ অভিনয়ে মায়কা চারহাটকে র পাহিত করে ভলেছেন। অভীন্দুনাথ চরিতে শভেগে, চটোপাধারত পালা দিয়ে অভিনয় কারেছেন : সমগ্র নাটকে ত্র'রাই প্রধান। প্রবীশ ছবিধন এবং নবীন তপন দুটি চহপু চারতে হাসির হাজেলডে নাটানেদী-দের মাতিরেছেন। বণিকম ছোষ প্রেন্থে চ:কর ছড়িদা চরিতে ভিল্লধর্মী আভিনরে মি:জর দক্ষতার পরিচয় দিয়েছেন। জনপদ-ষধ, নাটকের মাদ্রাজী ভদুলোকের চারিগ্রা-ভিনেত্রকে হরি চরিতের মধ্যে খাজে পাত্যা যাবে না। যতীক ভটাচাবেই প্রকাশ মহাবিহা সংস্তা বলাই সাংগতি', স্থাল বস্ত কাভিক চাটোজি, বেনন বস্, শিলির চক্রত্ী গোপাল সিংহরার প্রণানন ভটাচার্য এবং অন্যান্যরা স্ব স্ব চার<u>হান্যায়ী অভিনয় করেছেন। প</u>ূলিণ অফিস রে৬ চীরতে অগর মুখাজির বাচন-ভাগার কিপ্রতা প্রশংসনীয়। কিন্তু জবানবদশী প্রহণের দ্বানা ভার ছটফটানী দ্ভিটকট্র। নতুন মেয়ে অন্মিকা সাহার প্রশংসাকরব। অন্যান্য ছাইলাখিংপীর। কোন ছাপ আঁকতে পারেন নি। দ্রাপত ্চন্য সংবেশ দত্ত বত্মান নাটকে যেন আলোর যাদ্বর তাপস সেনকেও ছাড়িয়ে

'পরিচয়ে'র সবচেয় উল্লেখযোগ। হাচ্ছে
টিমওয়ার্কা। বহু নতুম শিশপীদের স্থোগ
দেওয়া ইয়েছে-তারা সবাই সংযোগ
দেওয়া ইয়েছে-তারা সবাই সংযোগ
মর্যানা রেথছেন। এজনা এজনেতা
পরিচালক বাকিন ছোবকে এবং সমগ্র
দিশপীদেরই অভিনদন জানাই। জনপ্রিম সংগতিশিশপী অলোক বাগচীর কঠেমাধ্রে
নাটকের অনাত্রম আকর্ষাণ। সবচেয়ে বড়
কথা একসংগ এক পরিবারের সকলকে
নিমা দেখার মত নাটক প্রিচয়া। এদিক
থেকে রণজিংফল কাংকারিয়া শ্রাবের
ঐতিত্য বজায় কেখেছেন বলে ধন্যবাদ

जानक दार्व जाशाहे नाविक

আঠারেশো বাহারতে দীনকথ মিত যে রশা বাংগ স্থিত করেছিলেন, তার রস-বস্তু আ্লাও অম্লান দেখা গেল ২০ মে রংমহলে অভিনীত আ্নত্মির জা্মাই বারিক নাটকে।

বাংলার রণগরস কলতে বা বোঝার তা এ সংস্থার প্রযোজনার স্বতন্ত হুপ দেখা গেল। সংলাপ অভিবাদির সংলা দেহের স্ব অপগপ্রভাগের সাজাবে গ্রের স্বালার নজির সভিটে পিরল। এ-নাটক দেখতে বসে বেসন দ্যকাণী হালিতে রঞ্গালার ভেড্ডে পড়ে তেমনি এর গান-ছড়। দিরে অলন দশক্ষের মনে-খাশির মেজাজ।

অভিনয় প্রসংগ্র জমিদার বিজয়বক্সভের চারতে রঞ্জন ব্যানাজি প্রথম দ্শোই নাটকে প্রাণসম্ভার করেন। তার চালচসন এক কথার অনবদ্য। এরই পালে দাপটের সংগ্র তাজনর করেন রাহা চাকরের ভানতর জনিল চৌধুরী। জমিদার কন্য ক্যানীর চরিতে ছব্দা চাটাজি প্রাণ্যকত। এছাত উরেখনোগ্য চরিতে স্মতিকার করেন নিমাই স্ব বাণী সাম্ভ গ্যাব্দ। হিল্লাম্য অভ্য সিন্হা ও এম

সোনাই দীঘি অভিনয়

হও যে রাপিবার শাদ্বপ্রে র এস রায় হাসপ্তাল কটেজ ময়দনে আবেলকাট কলাল সভাপ আদ্বান রাজন্তব্যার দেব সোনাইদ্বীর নার্কটি সফলোর সংগ্রে আভ্যায় করে একেন্ দ্যান ও কুশ্নতার আবার ফাল্ডর বিয়েকেন্দ্র শ্রে থেকে শেষ ঘাত প্রতিষ্কার ও

শ্র থেকে শেষ ঘাত প্রতিঘার ও শ্বশ্নমা্লাক সকল প্রাই মনোগ্রাহী হলেছ দলগত সংহতি ও প্রয়োগ্রটিত মনো রাগর মতা

অভিনয়ে হোসেনশা ভাৰনা কলেই ভাইত মাধৰ যাদৰ হাবতার আগাবাসী আছিল নিশাচর-বাচস্পতি প্রতথর্যন্ত সোনাই কেডকী ম্তকেশী ছাল্লকা প্রভৃতি চরতে রাখদান করেন সভানিবার। বটা ভট্যাল পারেন হর। বঙ্গী প্রদীপ ব্যান্ডিল নিমিল দাস শ্শাংক চ্যালীজি দক্ষিণা দেব মধাস্ত্র ছোছ মনোল বস্ু শানস্ভদর ভট্টাহা স্তরণ ঘোষ বেলা ষ্ঠকাৰ বাল্বল দে ৰীয়া স্থানাজি সাধ। সরকার প্রভৃতি সংসদের কুশালী শিলিপ্রাণ। নবেদ্যাপনাম জীপুদীপ স্থানীকা ত ল্যাসাল ঘোষ ও নাট্য পরিচালনায় ছিলেন শ্রীধীরেন ≽রবত**ী।** আরোগকোমী কলাণে সমিতির পক্ষ পেকে শীলালা বস 🗻 প্ৰকাল বিশ্বাস ও এ'দের সদস্যাগণ অকুপুণ সহযোগিতার ণ্নার। সমস্ত অনুষ্ঠানটিকে সফল করে ভোকোন।

বিবিধ সংবাদ

মিনার্ভা থিয়েটারে শ্রীভূষারকান্তি ঘোষের সন্বর্ধনা

দেশনরেল্য সাংগাদিক জ্মাজ তুষার কাছিল ঘাষ এ৫ বছর অতিক্রম করে এও বছরে প্রতিক্রম করে এও বছরে প্রতিক্রম করে এও বছরে পদার্পণ করেলেন। দেশের মাহিতিকে-সাংবাদিক থেকে বিভিন্ন জন-প্রতিষ্ঠান এই উপলক্ষে নানান অনুষ্ঠানের অক্ষেজন করে তার প্রতি জ্ঞাতরের প্রথান করেছেন। তুষারক তির বিজ্ঞা মুখ্য প্রতিভার আলোচনার মুখ্য বিক্রম মুখ্য প্রতিভার আলোচনার মুখ্য করেছেন। একটি স্মারক প্রথাপ্র প্রকাশিত করেছে তুবারকাশিত সম্পর্কিত বিভিন্ন আলোচনা নিরে। প্রতিভার বাংলার শিক্ষানিরার প্রতিভার আলোচনার নিরে। প্রতিভার আলোচনার নিরের। প্রতিভার আলোচনার বিভ্রম আলোচনার বিজ্ঞারকাশিতকৈ আমারা নতুন করে

ভানতে পেরেছি। কিম্তু ৯ জন্ম, রবিবার সাব্যায় গ্রিনাতী থিয়েটারে অগুজ তুথার-ফাম্বর সম্বর্ধনা ছিল বিশেষ তাৎপর্যা-ফাম্

মিনাতা থিয়েটার আয়োজিত তুষারকান্তর সম্বর্ধনা আসরে নট ও নাটাকার
নংশ্র গাণ্ডের স্বাগত ভাষণে মহাত্মা
নিশারকুমার ঘোষ এবং তার একমার পার
ব্যারকানিত ঘোষের নাটাশালার ক্ষেত্রে
ভিত্র অবদানের কথা জান্বার স্থাতি
প্রার গেগানা। তাই এই সম্বর্ধনাকে
িশ্র তাংপ্যাপ্যার বিলেমনে হয়েছে।

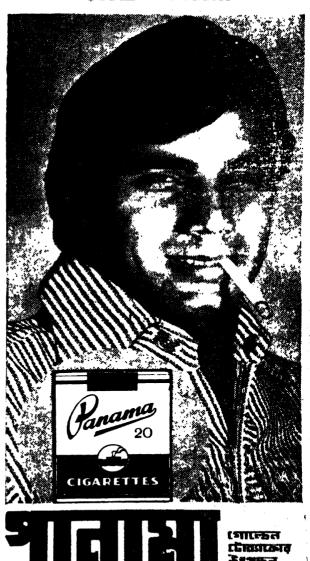
মঞ্চে এনে বসানো হল তুষারকান্তিকে, শিংপী সোলা গাংগালী চন্দন প্রাণেন, শংখধননিতে মনের হয়ে উঠল মিনাভণী ব্রিয়েটার।

কৃত্পিক্ষের তরফ্থ থেকে গোরীশ**ংকর** নানোজি মালা দিলেন। বরণ করলেন নাম্নীয় প্রথমতে ধরতি চাদর ও মিণ্টি **লিকে**।

তধারকাশ্তিকে স্বাগত জানিয়ে প্রখ্যাত াটাফার পারচালক এবং প্রবাদ আভনেতা নহেন্দ্র গরে বললেন ঃ ৭৬ বছরে পদাপ'ল কর্লেন আমাদের প্রম ভাদের ভ্রাবকর্গন্ত ঘোষ। তার সম্পকে । নতন করে আল্লাদের বলর কিছ, নেই। কিন্ত তিনি যে একাত-ভাবে আমাদের, অথাৎ মণ্ডলোকবাসীদের আপনজন বলতেই আজকের এই যরোয়া অনুভান। মহাথা শিশ্রকুয়ার <mark>খোষ</mark> লাশনাল থিয়েটার প্রতিষ্ঠায় ছিলেন অনতিয় স্তুম্ভ ম্বর্প। নানান সভিয় উপ্দেশে উদ্যোক্তাদের সঠিক পথে প্রিচালনা করেছেন। যখনই কোন বিপদ এসেছে তিনি তাদের পাশে দাভিয়েছেন। গিরিশ্রশ প্রথমে যে। গদান করেন নি বংধাদের সংখ্যা। গিরিশ্চন্ডকে ছাড়া নামনাল থিয়েটার যথন খাটল হবার উপক্রম মহাতা শিশিরকলারই গিরিশচন্চকে ফিরিয়ে আনলেন এবং নিজেও ন্যাশনাল থিয়েটারের পরিচালক পদ গ্রহণ করলেন। শিশিরক্সারের নাটক ও আভনীত হয়েছে ৷ থিয়েটারে অভিনেত্রী নিয়ে অভিনয় করম বির্ণেধ যখন প্রতিবাদের ঝড় উঠলো অম্তব্যজার পৃত্তিকা স্ব স্ময় নাট্যালাকে সম্থান জানিয়েছেন। যত্তিদ্য তিনি জাবিত ছিলেন, তার ফেন্ড ছায়ায় নাট্শোলাকে চেকে রেখেছেন। শিশিরকুমারের একমার প্র উবারকাশ্তিত পিতার পথ অন্সরণ করে 57.CEN |

শিশসী ও কর্পক্ষকে ধন্যবাদ দিয়ে
হুষারকাশিত তাঁর স্বাভাবিক রহস্যাপ্রথায়
সকলকে মৃশ্য করেন। তারপর শরে, হয়
মহেন্দ্র গ্লুন্ত পরিচালিত মিনাভণ
থিয়েটারের চলতি লাটক প্রজা তির
অভিনয়। অনুকোনে প্রথাত সংবাদিক
দক্ষিণারঞ্জন বস্ব, নিম্পাক্ষার ঘোষ,
প্রথাজন বস্ব, নিম্পাক্ষার ঘোষ,
প্রথাজন ব্রুল্যাপাধ্যায়, কালীল মুল্লোপাধ্যায়,
আজিত ব্রুল্যাপাধ্যায়, গ্রান্তন ডেপ্নিটি মেয়র
পালালাল দাস কারো অনেকে উপন্থিত
হিক্রেন।

शातासाग् वृञ्जि अिक्सः(१ वृस्धृत जासिकः अिं जात...



GT (P)-710-Ben.

श्रमीना जग९



श्रीत्भा आहे। क

শ্রীরূপা চ্যাটাজি

শ্রীরপো চ্যাটাজিপে এখন একম ব আকাগদা জাওঁর এখলেটিক দলে স্থান পেতে হবে। স্বংপপাপ্তার দৌড়ে বিশেষ করে একশ আর দুশ মিটার বিভাবে, গ্রীর্শা একে একে সাফলের স্যোপান অভিক্রম করছে। দৌদন এক সাক্ষাংকারে প্রে রেলের কয়লা-ঘাট ভাজিসের চারতলায় নিয়ে উপস্থিত হলাম শ্রীর্ণাব টেবিলের সামনে। স্মিত মুখে বসতে বলে শ্রীমন্ত্রী মেয়েটি জিজ্ঞাসা কবল কি জানতে চান বলান।—

কথায় কথায় জানালো বাড়ী ব্যেড়ালৈ বাবা রবীন্দ্রনাথ চ্যাটাজি বৈক্ষের চন্ড। লামের খেলাধালায় ছোট মেরেটির সপ্রতিভ আচরণ আর কীডাকশলতা দেখে প্রশিক্ষক মধ্যেদেশ ভট্টোমা ওকে নিয়ে আসেন কল-কাইয় এরিয়ান্স কাবে। সেটা ১৯৬৮ সাল। সেই বতরই দ্বীয় কৃতিকের মলেধনে শ্রীন্পা স্কল কডিচ বংলার পতিনিধিব পে তাম্পরা-বাদে যায় এবং একল ও দুশ মিটার দৌড়ে প্রথম হল । এটোড়া ৭৯ সালা থেকে বার করেও এশীয় প্রশিক্ষণ শিবিরে তার ডাক পড়েছে। এবারও যাবে অনুগোলোরে এশীয় ক্রীড়ার প্ৰণতাত শিক্ষা ৭৩-৭৪**এ** জন্দৰে অন্যোজিত জনতীয় ক্রডিবে অনসরে বাংলার প্রতিনিধিত করে দীরাপা। এই আসের একদ মিনীয় লৌ.ড ১২-২ সেলেন্ড স্থ_{য়া} শ্রীরাপা জ্ঞাতীয় রেকড প্রপর্শ করার সংগ্র সংখ্যা মৃত্যু গাঁও রেকড[ে]তে করেছে।

শ্রীর্ণা এখন চাকধীর স্তে প্রণির প্রথালিটিক দলের ইয়ে জীড়ার খাসরে নামে। রেলের প্রশিক্ষর স্মৃতিত সিন্ধার প্রশিক্ষরে তাব অন্থালিন চলো সলালে শ্রীর্ণা নিয়ন্থিত অনুখালিন করে রবীন্দ্র স্বান্ধর স্বেটির মে। গত বছর ভারত বৃশ শ্রেল্ডা কীড়া প্রতিয়োগিতায় শ্রীর্ণা একশ্ নিটার নৌড়ে প্রথম স্থান অধিকার করে নতুন স্মৃত্রিয়া তারিলে লছে।

প্রশেষ উত্তরে শ্রীরংশা জানাল, ওরা চাব ধেনা, পারের বোন শ্রীলতাও ওবই মত একশা ও দাশ মিটার দেখিছের মাসারে দানে। চাকরী পোয়ছে, তাই করছে চাকরী করার ইচ্ছা তেয়ান দেই। এথলাটিব্রেই পরিভিত্ত ঘত চায়।

সর্বভারতীয় কেরে দেশেছ মেয়েদেব ক্ষড়িদানের কথা উঠলে শ্রীর্পা বললো, ত-বাপারে অন্নে রাজেব মাব প্রায় কাছাবাভি বলেই তার হয়ে হাষাক।

বাড়ীর সকলের উৎসহ শ্রীরপোর চুট্টা চচ্চীর বাড়িত অন্তেরণা ম্থাণিরেছে। তাইছেট থেকে ওর পক্ষে ধাপে ধ্যমে নানা আসরে ধেলা দিয়ে অভিজ্ঞাত। স্পুমের স্থানা করেছে। আসর এলীয় ক্লীড়ার বাছাই উপলক্ষে বাংগালারের প্রশিক্ষণ অনুলালন শিবিরে স্কুতার মত শ্রীর্পারও ডাক পড়েছে। বাছ ই প্রতিযোগিতায় সক্ষল হবর জনা আপ্রাল চেন্টা করেছে বলে জানপো

न्या हिष्डान



শন্ত মৈত্ৰ

আজ আমি শুন্দ্ হৈছে। ফ্টেবল মাঠে অলপ্রিক্তর স্বাই আমাম জানে, চেনে। দ্বংথের কালো থেও এখন হস্ততো খানিকটা কেটে গেছে কিংতু ফেলে-অসা শৈশব-কৈংশারের দিনগালুলি মনে পড়ুলে আজ্ঞ ভয় ইয়।

ৰ্ণকণ্ড ওসৰ কথা থাক। খেলার কথাই বলি ৷ জন্মেছিলাম ১৯৪৮ সালের ইয়া অকটোবর ঢাকুরিয়ায়। আমু দের জাদি নিবাস পাবনার সাহাজাদপরে। হা[†] বাংলাদেশের সেই সহাজাদপরে যেখানকার নব ইতিহাস লিখেছে শত-সহস্ত ম্ভিফৌজ, মিচবাহিনী ব্যক্তের রক্ত দিয়ে। বাবা রিফিউজি শ্রীস্থাংশ, নৈর অধ্যান গাটে ওঠা পরে পাকিস্থান থেকে কগকাভায় এসে একটা চাকরীতে ত্যকৈছিলেন। হাইকেটের গায়ে **অকল্যান্ড** রিফিউজি রিলিফে। চার ভাইরের মধ্যে আমি থেজ তই ভবিষ্যাৎ দায়িছের কথা কেৰে বাখা মতান দক্রে থেতে সার করনাম। 'যেতে' কথাটা ইচ্ছে করেই - বলেছি ভার কারণ ম্কুলে পড়তে হলে তো বই লাগো, चाला नारम, रश्रीम्मन नारम श्रा**टेटन नारम।** পাবো কোথায়? কে দেবে?'

আমি নিজেও রেমিউজি। তাই রেকি-টাজ পরিবারের সমাণত দক্ষে কাট সমাণত লাজুনা, প্রতারণার কর্মণ ইতিহাস আমার জানা, আমার পাড়া। তাই একমনে শাক্ষর কথা শ্লে বাছিলাম। দি উন্নারার নোজ হোয়ার দা সাম্ পিনচেস। আমি জন্ত্র করতে পারি শাক্ষর দ্বেধের গভারতা।

একটা দ্বীধান্বাস ফেলে সাহাজাদপুরের বারেন্দ্র ভারেণ শদভূ মৈত আবার জীবনকথা সরে, করণেন : 'বাছা থতীন দ্বুলে বখন আসভি রাজি, সনটা থতদুর মনে প্রেছ ১৯৬২ই হবে, ক্লাস এইটে পড়ি রবীন্দ্র-সরোবর স্টেডিয়ামে প্রথাত ফুটবল খেলোন রাড় শ্রীস্থানীল ভট চার্য আমার কাছে টেনে । ৬৪ সালে বাংলা দ্বুলা দলে চান্দ্র প্রেছাম গ্রেছাম। গ্রেলাম স্বেলারতীয় দ্বুলা হাঁড়িয়া

উদয়পারে। ১৯৬৫ সালে হায়ার সেকেণ্ডারী প্রীক্ষারত ব্যাত জোরে উংরে গেলাম। ঠিক এই সময় একদিন বাঘান। (শ্রীতেজেস সোমা) এপেন বাডগিলে।

আরে বাপ্রের বাঘাদা। কোথার যে বসতে দিই। কালক্রম বাঘাদা আমাদের ঘরের লোক হয়ে গোলেন। ঘাঘা আর আমি, যেন শপ-ছেলে। বাঘা ধরে নিয়ে গোলেন ইন্টার্ন রেলের তংকালান কাল্যংয়াল অধিকতা জীকলাগাকুমার দাসের কাছে। দাস সাহেব মান্য তো নয়-দেবতা। তারই কুপায় ১৯৬৮ সালে ইন্টার্ন রেলে চাকরী হোল। ইতিমধ্যে ৬৬, ৬৭ এবং ৮৮ সালে জুনিয়ার রজ্যে দলে খেলে ফেলেড। ছেবট্রি সালে এশীয় যার ফটেবলে ঘোগদানকামী ভারতীয় দলের টোনে শিবরে ভাক পড়েন্ডার মাঠে প্রথম খেলাল মারপ বাদ পড়ে গেলাম। গড়ের মাঠে প্রথম খেলালাম ১৯৬৮ সালে উত্তারীয় কালির লাহে চাপিয়ে।

৬৮ ৬১ ৭০ ৭১ সালে উয়াড়ীতেই খেলেছি। ৭২ সালে ভাক এলো ইস্টবেশাল থেকে। গোলায়। কিন্তু খলে ভাল সাগালো মা। খেলতেও পারলাম না তেমন। তার ওপর অতে। বড় ক্লাব। আবার উয়াড়ীতে ফিরে গোলায়। ৭৪ সালে এলাম মহামেডান স্পোটিবরে।

প্রদীপ দত্ত

ক'দিন কণকাতা নাঠে খেলতে প্রবো ন্ধুখনই জানেন। প্রকীকা দোর গোড়ায় কড়া নাড়ছে। উংরে যেতে পারলে চাকরী-বাকরী ভো যা হোক একটা কিছু ছোগাড় ক্রতে হবে। কলকাতায়ই যে চাকরী হবে এমন নিশ্চয়তা কোথায়: বাইরে যেতে হলেই ভো হসে, সন্টাবল্ ফিনিস।'

কথার স্থান প্রদাপের একটা ভরাট অনিশ্চয়তার ছাপ। পদাপ অর্থাৎ এরিয়াস্স-এর প্রদাপ দত্ত কাব লানে বাত্রাপি পেব্র-গান্ত তলায় বন্দে বাত্র এ নিশ্চয়তার কথাই বস্ছিলেন আগাকে। স্বক্তল ঘরের ভেলে

প্রথম প্রকাশেই ৩০০ কপি নিঃশোষ্ড সাড়া জাগান উপান্যস

र्फियाता

২০১০০ টাকা

গোপ^{শান্}ৰ চটোপাধায় আনও কয়েকটি রাখবার মত বই বৌম্পুরের ত্রাদ ৬.০০ টাকা দিলীপ দত্ত

ওরা ক'জনে ১০-০০ টাকা মলম শান্যাল

হেমপ্রভা দেবী পতী ৫-০০ টাকা নাতন উপন্যাস মন্ত্রন প্রছেব

নৰ সাহিত্য প্ৰকাশ ১২১সি, সীতাৱাম ঘোষ খুটি কলি-৯



প্রদীপ। ক্ষেক্যাল ইঞ্জিনীরারের ডিগিটি যাদবপ্র বিশ্ববিদ্যালয় থেকে এখনও বছর-খানেক বাকী, কিল্পু খবিষ্যতের চিন্তায় প্রদীপ্রে এখনই রীতিমত ভাবিয়ে তুলেছে। কিল্পু প্রদীপ কটেবল মাঠের ম্টাইকার। সংসারের যাঠেও সে লক্ষ্যভেদ করবে।

শক্ত সমর্থ চেহারা প্রদাপের। গাটাত পারে, প্রতিপঞ্চকেও খাটাতে পারে। পারে লাখোগের তাংক্ষণিক স্পান্যহার করতে। সমর বাবে সই নিতে ওস্তাদ। যতক্ষণ মাঠে থাকবেন অভিতম্ব হবে উজ্জ্বল। কিন্তু এতিটা উজ্জ্বল হতে তাকে কি কম মেহনত করতে হয়েছে। সেই এতিট্রু থেকে যে সাধনা সার, হয়েছে, তা এখনত নির্বাজ্ঞিন। তার বিশ্বাস সাধনা এর অনুশালনের বিকল্প নেই। যে কোন একটায় টান পড়কেই নির্বাধ্ পতন। আর পতন মানেই—গাঙ বাই ফাটুখল।

প্র চেয়ে বড়ো কথা অহং ভানটি
একেবারে নেই। মনে মনে এখনও শিখাঘাঁ।
চানততঃ আমার তো তাই মনে হয়। অংক
গেটার নিরে হায়ার সেকেন্ডারী পাশ করে
যানবপারে বিশ্ববিদ্যালয়ে ইজিনীয়ারং
গড়তে চোকার আলোই প্রদীপের ফুটালের
হাতেখাঁড় হয়েছিল মিশানের স্বানী ভটাল্যার্থ
প্রশানত পিরি এবং নানা ভটাল্যার্থ
কাছে। তারপর এলো বিষাট গড়ের মাটে।
গগম ডেরা উয়াড়ী তারিবাত। উয়াড়ীতে
শাংলার (শ্রীতেজন সোমা) হাতে রপর
গেরিচমা হয়েছে অনেক দিন। তারপর থেকে
গিরিচমা স্বান্ধ হোল ফ্টেবপের পাদি
গুলির সামনে এলে দট্ডবোর জনা।
উয়াড়ী থোক কেপাটিং ইউলিয়নে, শেখান
থেকে খিদিরপারে।

থিদিরপরের পেরে গেলাম কোকোদাকে। দৈনহে যতে। পরিপ্রমে কোকোদা (অচাত ব্যানাঞ্জিণ) আমাকে খানুষ' করার জন্য কি ক্রডই না কমেছেন। কিন্দু হঠাৎ লোভে
প্রড় গেলার। ১৯৭৩ এ ইলে এলার মোহনব্যাল । অর্থ সিংহ আমার পেছনে কি
প্রারমই না ক্রেছিলোন। কিন্দু সিজনটা
আমা একেবারে ডাল গেলো। আটিটা মাট
থ্যেলার বটে কিন্দু চটিগাইয়া আমি কেয়ন
বার রইয়ে গেলার। তেবেছিলান ৭২ সালে
বারকেব এশায় জ্লানার ফ্টেমলে যখন
ভারতের প্রতিনিধিদ্ধ করতে পোরবা। কিন্তু
ত্যা কি জানতুর যো বেশার ভাগ দিনই
ছলাতু হরে মোহনবাগান মাঠে বা ইডেন
গাড়েনে সাইড লাইনের পাশেই বসে থাকতে

ব্যুক্তেই পাবছেন মানর কি তাব্দ্র্য় ।

তথ্য পাড়াপড়দানা একসন্তা আচিতি বলে

১ ট করে। দরে ছাই বলে ফটেবল হ্রাভা
একেবরে ছেড়েই দিছুম। দিইনি বাড়াব লোকজনের জন্য। বাব্দে মা কাকা জন্য।

প্রচিত্তাই-বেনের (প্রদীপ মেজো) জন্যে।

আমি যথন প্রায় ভেজ্যে প্রভূজিনাম ভারা

সংস্কাললেন, উৎসাহ্য দিলেন। ফলে আলাব

নাটবা ছাড়া বোল না। এবির্যুক্তে একা

কটিনা এবা এথন আমি কেয়ার অফ

লতিফুদিদন

'অবিজ্ঞানের সংগে আপনি তো
আমাদের বাড়া গেছেন বারকরেক। আন্ধাচান, আপনি, মাদ্রাদা প্রদান্তিক ইউসম্ফ হাকিম এবং আজমচাচা বসে বসে কত বাত প্রফিত গণ্প করতেন। আমার কিন্তু সব্ মনে আছে।'

ইলিয়ট ব্যোতের মহামেডান স্পোটিং
থাসের দোতলার নিজের বিছানার ওপর
বসে সদ্য চ্যেট্-খাওয়া একটা পায়ে হাত
বলোতে বলোতে অধিনায়ক লতিফ্লিদন
খ্যাতিচারণ করছিলেন। দেখলাম সবই
হ্রেহ্ মনে আছে। হায়দরাবাদে সন্তোষ
গ্রিফ চলার সময় আমার আবিদ বোডের
খাশতানা থেকে বেরিয়ে, তাজমহল
হোটেলকে বলৈ বেরেথ একট্ গলিম
ভাবত-বিখ্যাত ফ্টেবল খেলোয়াড় মইন
সাতেবের বাড়ী বারক্ষেক গেছি বিভিন্ন

থকট গছিলে বসে মেস-বয়কে
চারের অভার দিয়ে লতিফাদিদন আবার
মুখ খ্লালেন-অমাদের হারদরাব্দেশ
সৈয়দ ফামিলি হচ্ছে প্রেলারি-ফ্টেবল
লামিল। ইচ্ছে হলে বে-কোন সময় আম্বা
থকটা ভাল টিম খাড়া করতে পারি।
খ্যার বাবা মঈন্দিন ১৯৫২ সালে
হেলাসংকি বিশ্ব প্রজিলপ্তে ভারতের
এক বছর বাবে, নভেশ্বর মাসে। ভাই
সওকত খেলেন সাউধ সেন্টাল রেলে।

'আ্ছা জড়িফ কোলকাতা ভোমার টানলো কেমন করে?'

'সে-কথা আর বলবেন না। আজন-চাচা (হাবিব, আক্ষরের দাদা) আর

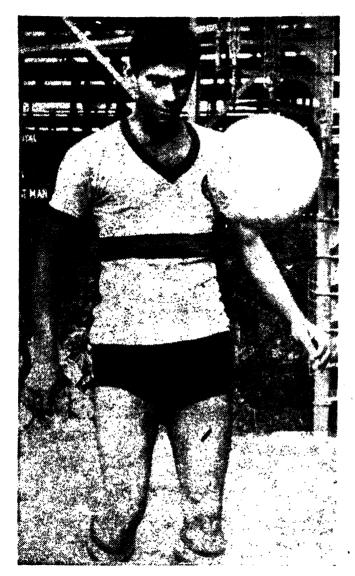


প্রথাত প্রশিক্ষক মহন্মদ আব্বাজ্ঞানকে বোকালেন যে কলকাতার মাঠে ফাটবল না বেলাদে ফাটবল থেলাই হোল না। মা গোড়ার দিকে কালাকটি কংলেও, হার-দরাবাদের পালিন ইনসপেণ্টর আব্বা-জানের অন্রোধে রাজী হয়ে গোলেন

ছোটবেলায় আব্দালই আমাকে হাত ধরে ফাওবল মাঠে নামিয়ে দেন। তথন আমি সিটি কলেজিয়েট প্রশাসর নামু কাসের হাত বিশাসক করাই কাসের ছাত্র। পাঁটে বসলে মাথাটো হাই বেও পার্যত উঠতো না। ছোটবেলার কথা বলতে লাভফালিন হাই। যেন ছোটি হয়ে গোল। চলে সেল আবার ছরের কথায়। নিজের মায়ের কথায়।

প্রদা। ১৯৭১ সালে বেললাম মহামেডান দেশ্যটিংয়ে। ৭২-এ গেলাম ইম্টবেশ্বলে। প্রের বছর আবার ফিরে এলাম প্রেন্না ক্লাবে। এখনও আছি। ১৯৭৩ সালে ক্লোচিনে জাতীয় সিনিয়ার ফ্টেবল প্রতি-

যোগিতায় (সন্তোধ ট্রাফ) বাংলা ললে নিব'চিত হয়েছিলাম। গিয়েছিলা**ম**ও। ১৯৭৪ সালে ব্যাংককৈ এশীয় যাব ফাট-বলা বংশ চাহিপায়ন ভারতীয় দলের প্রতিনিষ্ঠি করার সৌভাগতে আমার হয়েছে। ফাইনাল খেলাটি আমার এখনও চোখের সামনে ভাসছে। ওঃ কি থিটিশং। খেলার কি মেজাজ। প্রথমে নেমেই ইরাণ গোল দিলে। শোধ করানাম আমি। বাডতি সময়ে সাবির আলির গোলে আমর। জাগিয়েও গেলম কিল্ডু নাস্ব খারাপ। ংক্রা ভাঙার দেড় মিনিট থাকতে বকৈয়া গোল ইরাণ শোধ করে দিলো। আম্মা যুণ্য চ্যাদিপয়ন হলেও এ-কথা দ্বীকার করতেই হবে যে, ইরাণী ছেলেদের স্টান্ডার্ড আমাদের চেরে অনেক সনেক ভাল। ফোন টাকলিং রিসিভ: পাসিং কভারিং, তেমান স্টিং। গারে-গভরে আমাদের সংগ্র ওদের তুলনাই হয় ন।। কি চেহারা কি **ন্ট্যামি**না



অণ্ন চোধ্রী

'রং বদসাবার মরশুমে হঠাং আমরা যে

ক্রম ভারী ইক্ষতওয়ালা পুরুষ (ভি আই

পি) বনে যাই, সারা জাবন নয়, গোটা
করেক বছর একটানা যদি ভাই থাকতে
পারতুম! আছ আরাম, কি আপায়ন। সবাই

মিলে কত আদর, কত থাতির। অগু কি
থাবি বলা, অগু কি প্রবি বলা, চিয়ায়
আপা মাই বয়। আরও কতো কি?'

ক্ষেক্তাতা মন্ত্রদানের সাম্প্রতিক হাল-চালের ছবি এ কৈ আগ, যেন বোঝাতে চেণ্টা কর্মাছণ, রখ্যানত বা ছায়াছবির নায়ক-নারিকার মত ফটেবল খেগোয়াড়েও একদিন কা স্লেতান। দলের প্রার্থ যোল আনা প্রেণ করতে পারলে তুমি রাজা, রাজ-রাজ্যেশবর। নঃ পারলে ?'

না পাবলৈ কি? পরিছ্কার করেই বলুন না? কিছা যেন গোপন করতে চাইছেন? মনের ভেতর কিছা যেন গ্রেরাচ্ছে থেকে থেকে। অভিযোগ কার বির্দ্ধে? আমি ছাধেই। না না কারও বির্দ্ধে আমার কোন অভিযোগ নেই, কোন অন্যোগ নেই— জানায় জণ্ চৌধ্রী।

অণ্য চৌধ্রীকে গড়ের মাঠে আজ কেনা চেনেন? কালো, লম্বা, শন্ত-সমর্থ দুটাইকার। সাম্প্রতিক ডেরা এরিয়ালেস। মান্তু নেমে পরিপ্রমে ফাঁকি দেন না, যেটকু শিংধ-ছেন বিশ্বসভাতার সংগ্য সেটকু কাজে লাগাবার চেপ্টা করেন। চেপ্টা করেন নিছে অপতে এবং সেই সংশ্য সংগ্য পাশের আর স্বাইকে খেলাতে। স্ট্রাইকার হওয়ার মন্ত্ পায়ে স্ট আছে, আছে প্রত্যুত্ত ভাসেও। সন্তরাং কাল অথবা পরেশ্ব অণ্ব চৌধ্র গ্রিক ফট্রবলের শিরোনাম হন, তাতে আশ্চর্য হওয়ার কিছা থাকবে না—বর্ঞ্ব সেটিই হবে একাণ্ড প্রভাগিত।

অণ্ গড়ের মাঠের হালচাল, গতিবিধি
দেখে খাব খানি না হলেও এখনও বংগুই
আশাবাদী। অণ্র বস্তবা ঃ ফাঁফি দিয়ে
তো কংলাতার মাঠে এসে দাড়িই নি। কট করেছি খেলা শেখার চেণ্টা করেছি এবং
কর্ম স্করাং পরিশ্রম আর নিত্তার ফল এক্সন না একদিন পাবোই। আমি আলাবৃদ্ধী, কিছুটা স্বান্দশীও বলতে পারেলা

সহজ, সরল, সবল ছেলে অণ্। এত সারশাকে যে এথনত জিইয়ে রাখতে পেরেছে ত। বোধহয় গাঁরের ছেলে বলেই। হঠাং কথা বললে কেমন যেন একটা রাক্ষ্ রক্ষ্ বিদ্যুক্তি কথা কছে থাকলেই ধরা পড়ে অণ্যুর মনটা একেবারে কাদার মতানরম।

কলকাতা সিনিয়ার ডিভিসন ফটেবলে অণ্যার প্রথম প্রকাশ উয়াড়ীর মাধ্যম। বলা বাহ,ল্য উথাড়ীতে থাকার সময় সে বাঘানার পালিশ পেয়েছে পরিচয়া পেয়েছে সতা সোমের। উয়াড়ী থেকে পোর্ট কমিশনার্সে। সেখানে নিখিলদার কোচিং, তারপর বি এন আর-এ দেব ঘোষ বলরাম ও অর্ণদার টোনং। অণ্য জানান ঃ দেবলা বলরামদা, নিধিলদা অর্ণদার প্রাণকণে ফটবল সম্পকে মোটামুটি একটা ধারণা হোল আমার। বি এন আর থেকে রাজ-প্থানে। সেখানে প্রশিক্ষক হিসেবে পে^{লাম} ফেনকে। বন্ধ ভলমান্ত। ডিফেন্সের েলয়ার হলে হবে কি অফেন্সের দ্টাটিজ ও'র ন্থদপ্রে। রাজস্থানে থাকার সময়ই প্রোগ পেয়ে গেলাম জাতীয় ফটেবলে অংশগ্রহণকারী বাংলাদলে গত বছর। বেডালের ভারেন অবশা দৈকে ছেণ্ডেনি খেলতে পাইনি একদিনও কোচিনে। অবশা না পাওয়ার কারণ আছে। যাঁরা খেগেছেন তারা সন্বাই নিঃসন্দেহে যোগাতর।

এবারে খেলছি এরিয়ান্সের। তর্ণ, বাংগালী ছেলেদের নিয়ে এরিয়ান্সের লড়াই করার ঐতিহা দীঘাদিনের। এরিয়ান্সে এসে অনেক আনকা পেয়েছি। নাট্দা (অগোক ফিন্র), শাচীনদা, বারেনদা, রামদা আর ফাটিলার (এস দে) কাছ থেকে ছোটভাইয়ের দেকে ভালবাসা, যত্য পাছিছ। উৎসাহও পাছিছ সব সময়।

অগ্রে শেষ কথা ঃ 'অনেক ক্রাব, অনেক তবি, ঘ্রেছি। আর তবি, পাণ্টাতে মন াইছে না। রং আর নাই বদলালাম। নাই বা হেলাম একাদ্দের রাজা?' -

বিপ্ৰে ৰন্দ্যোপাধ্যায়



ভারত বনাম ইংল্যাণ্ড

নান্দেশ্টারের ওল্ড ট্রাফ্রেড মাঠে চারত বলাম ইংল্যান্ডের প্রথম টেম্ট ক্রিকেট খেলায় ইংল্যান্ড ১১৩ রানে জিতে ১১৭৪ সালের টেশ্ট সিরিজে ১০০ খেলার এগিয়ে রইলো। এই নিয়ে ওল্ড ট্রাফার্ড মাঠে ভারত-ইংল্যান্ডের ৬টি টেশ্ট খেলার ফলাফল দড়াল : ইংলান্ডের জয় ১ এনং খেলা জু ৩। বভারানে ইংলান্ডের মাটিতে এই দুইে দেশের টেশ্ট খেলার ল্লাফল : মোট খেলা ২০ ইংল্যান্ডের জয় ১৬, ভারতের জয় এবং খেলা জু ৬।

ইংলাদেওর অধিনায়ক মাইক ভেনেস সৈ জিতে প্রথমে বাটুট করার দান নেন। গণ্ডির জনের প্রথম দিন প্রেরা সময় থেলা যোন। মার ৬৯ ওভার থেলা হয়েছিল। প্রথমদিনের থেলায় ইংলাদেও ৪টে উইকেট ব্রায়ে ১১৬ রান সংগ্রহ করেছিল। মার্ট ২৮ রানের মধ্যে আবিদ আগনী ইংল্যান্ডের দ্যটো উইকেট নিয়ে ইংল্যান্ডকে কোণঠাস! করেছিলেন। 'তৃতীয় উইকেটের জ্বাটিতে এগ্রামস এং ডেনেস ৬২ রাম তুলে স্মায়কভাবে দলের পতান রোধ করেন।

শ্বতীয় দিনে ইংলাশ্ভ তার ১ম
ইনিংসের ০২৮ রানের (১ উইকেটে)
মাথায় থেলার সমাশ্তি ঘোষণা করে। কিথ
ফোর ১২০ রান করে অপরাজিত
থাকেন। টেন্ট জিকেট খেলায় দ্রেলারের
এটি ১র্থ সেলারী এবং জারতের বিপক্ষে
২য় সেলারী। ৬% উইকেটের জাটিতে
ফোরার এবং গ্রেগ ১০৪ রান এবং নরম
উইকেটের জাটিতে দ্রেচার এবং উইলিজ
৬৩ রাশ সংগ্রহ করেন। দিবতীয় দিনের
বাকি ৩৫ মিনিটের খেলায় জারতের দাটো
উইকেট পড়ে মান ২৫ রান ওঠে। কলো
করে।

ততীয় দিনে ভারতের ১৯ ইনিংস ₹८७ वादनव माथाय : भाष छत्त-- ८१: तार लख्य ৯ম ইনিংশের ৩২৮ সানের ১৯ উইকেন ডিক্লেয়ার্ড) থেকে ৮২ বান কম। ভারতের পরিচাতার ভামকা নিয়েছিলেন গাভাশ্কার (১০১ রান) বিশ্বনাথ (৪০ রান) এবং আবিদ আলী (৭১ রান)। ৪অ' উইকেটের জ্বটিতে গাভাস্কার এবং বিশ্বনাথ ৭০ রান এবং ৮০ উইকেটের জাতিকে পাড়াস্কার এবং আবিদ আলী ৮৫ রাণ তলে দেন। গাভাগ্ৰার নিজপ্র ১০৯ रात्तव माथाश तामकाछो छन । हिण्डे জিকেট খেলায় তাঁৱ এটি ৫ম সেঞ্চরী এবং ইংলাদেডর বিপক্ষে ১য় সেওরে । বিশ্বনাথ ভার ১ম ইনিংবের ৪০ রানের মধ্যে ৩৮ রাম করে টেপ্ট ফ্রিকেট প্রথমন্ত ভার হাজার রান পার্শ করেন। ত'কে নিরে ১৯জন ভারতীয় খেপেকাড টেশ্ট কিকেটে 2000 রান পার্ণ করেছেন। আবিদ আলবি অক্রেরণাথাক ব্যটিং 7 1/7/77 ষ্ণেণ্ট প্রাণ সন্ধার কর্মেছিল। তল্পেছিলের ৰাজি সমহোৰ খেলায় ইংলাণ্ড দিৰ্ভীয় ইনিংসের একটা উইকেট খাইছে ১৮ রাম সংগ্রহা করেছিল।

চতুর্থ দিনে চা-পানের ২০ মিনিট্ আবো জোর ব্লিট্ পড়ার খেলা বন্দ গ্রেষ্ণ ব্যার। এই সমর ইংলাগেড্র ২য় ইনিংসের রান ছিলা ২১০ (৩ উইকেটে)। এইদিন ব্যায়ির দরনে খেলা আবদভ করা দশহুর হয়মি। জন এডবিছ ১০০ বান ভরে অপ্রাজিত থাকেন। টেক্ট ভিকেট খেলাম্ব ডব্র এডি একাশন সেগ্রেষ্টা অপ্রাক্তি



ভারত বনাম ইংল্যাণেডর প্রথম টেক্টের চতুর্থ দিনে আবিদ আলগির বলে ডেরের আশতারইড ইইবেটরক্ষক ফার্ক ইঞ্জিন নীলারের হাতে ধরা পড়েছেন।

ভাষতের বিশক্ষে প্রথম সেলারী। অপর তথ্য উইকেটের জাটিতে এমিস এবং এডারচ ললের ৭৪ রান ভুগোছলেন এবং অসমাণত ৪খা উইকেটের জাটিতে এডারচ (১০০ রান) এবং আধনায়ক মাইক ভেনেস (৪৫ রান) ১০৫ মিনিটে দলের ১০৯ ভুলে দেন। তারা ভাষতাীয় শিপন বোলারনের বল পিটিয়ে ছাতু করে দিয়েছিলো।

প্ৰদায় অভাং খেলার শেষদিনে ইং-ল্যান্ড ভাদের ২য় ইনিংস খেলতে নামেনি। আগোরাদনের ২১০ রানের (৩ উইকেটে), মাথায় তারা খেলার সমাণিত যোষণা करता थिलाय अयलार्ड्स करना ७ घन्हेस ১ল ইনিংসে ভারতের ২৯৬ রান করার প্রয়োজন ছিল। খেলা ভালার নিদিটি সময়ের অনেক আন্তাই কিন্ত ভারতের ২য় টনিংস ১৮২ বানের মাথায় শেষ হয়! ফলে ইংল্যাণ্ড ১১৫ রামে জিতে যায়। শে চনীয় ব্যাটিং বিশ্যায়ট ভারতের এই প্রাজ্ঞার কারণ। ভারতের ২য় ইনিংস गानाश्कात (८४ बान) अवः विश्वनाथ (८० ব্যান) যা থেলেভিলেন। ভারতের প্রক্ষে এই বেলা অন্তাত ভ করা ছোলটো নাক ছিল নত। ভারতের শিপন বে^চলংযের ধারত যথেশ কমে গ্রেছ। প্রধানতঃ এট চিপ্র বেলিক্সের ক্লিক্ট ক্রিক ক্লেক্সের নোক্ষে ভারেক উপ্যাপ্তি ভিন্তি টেস্ট সিবিজে রাবার জলী হয় -১৯৭০-৭১ সালে এয়েশ্ট ইণিড'ছব বিপঞ্চে ১—n रभनाय (छ ८), ১৯৭১ आरम हैशना एउन িপাক্ষ ১—০ থেলায় (ড়াই) এবং স্বলেশের মাটিতে ১৯৭২-৭০ সালে ইংস্পান্ত্র ^{হি}পুঞ্জ ২--১ খেলাস জু ৯১। উপল্লেখির এট বিনেটি গ্রেট সিনিসেল বাবাস ভাষের সাতেই আন্তর্জাতিক জিকেট ভা**লার হারত পথ্য সাবি**তে আসন পেয়েছিল।

সংক্ষিণ্ড দেকার

ইংল্যাপ্ড: ৩২৮ রান (৯ উটাকাট ডিজেয়া্ডা ডেনিস আলিস ৫৬ কিথ ক্ষেত্ৰ অপ্ৰাজিত ১২৩ এবং চীন গ্ৰেগ ৫০ বান। অবিদ আলি ৭৯ বানে ৩ মদনলাল ৫৬ বানে ২, বেদী ৮৭ বানে ২ এবং চাদুশেশ্বর ৫৫ বানে ২ উইকেচ)।

ও ২১০ রান (৩ উইকেটে ডিকে:।
জন এডবিচ অপ্রিজিত ১০০ ডেনিস
আ্মিম্ম ৪৭ এবং মাইক ডেনেস অপ্রা-জিত ৪৫ রান। আবিদ আ্লা ৩১ রানে
১, সোলকার ২৪ রানে ১ এবং বেদী
৫৮ রানে ১ উইকেট)।

ভারত: ২১৬ বান (স্নীল গাড়াপরার ১০১ বিশ্বনাথ ৪০ এবং আ্বিদ
আবি ৭১ রান। উইলিস ৬৪ বানে ৪
এবং হেনজিক ৫৭ বানে ৩ উইকেট)।
এ ১৮২ রান গোভাপ্নার ৫৮ এবং বিশ্বনাথ ৫০ বান। কিস ওপড় ২০ রানে ৪ এবং
গোগ ৩৫ বানে ৩ উইকেট)।

বিশ্ব ফুটবল প্রতিযোগিতা

পশ্চিম জামানীকে দশম বিশ্ব ফাট-ধল প্ৰিয়েলিয়ার চাড্তেত প্রা শহার ব্যলাগ্র ১০ জন আব্দ্র ङ (मर्ड । ১৬টি বুছাট দেশ নিয়ে 2 N. 19531 জালালীর ৯টি লহতে এই চার্ডেড পর্যাধ্যের খেলার আগর রসেছে । ফারনাল रियामा करत वर्षे कामार्ट विक्रीत्रम मारुखर ভালিম্পিক স্টেডিয়ালয়। প্রমিন্তা ভারতিনীতে ১০m বিশ্ব ফাউলল প্রতিয়েলীগণের এট **চাড়ক্ত প্যতিষ**্ কেলা হিন্দি ব উপেড় ত্বে ১**৯ ৫ ১য়** বাটপ্ডের খেলা ত্রে লীগ প্ৰায় এবং ৩য় বাউপেড্র প্রলা নক-আন্টেট প্রথায়। প্রথম ভাউন্ভের জালিব খেলায় ১৬টি দেশ চারটি গ্রাপে স্থান ভাগ টায়ে খেলবে এবং পতি লাপের ১৯ 🚜 ২য় **প্**যান ক্ষিকালী দেশ প্ৰবৃত্^ৰ ২য় ফাউন্তে খেলবার যে গানো লাভ বরবে িবলীয় বাউলেব জীগের খেলাল চাই দেশ দাটি লাপে সমান ভাগ হলে খোলতে এবং এট সাই গ্রেপ্ত ১য় স্থান অভিযান্ত্রী দেশট ফাইনালে খেলবে। প্রতিযোগিতার

তন্ত্ৰ ও ৪ব শ্বান নিৰ্গায়ের জনো এই দিবতীয় রাউণ্ডের খেলায় ২য় ১৭ন অধিকারী ২টি দেশের মধ্যে খেলা হ'ব।

১৯৭৪ সালের এট 202 ফুটব**ল প্রতিযোগিতায় যোগ**দানকার দেশের সংখ্যা ছিল ৯৮। এর ১৫ ১৯৭৪ সালের প্রতিযোগিতার উদ্দর্ভ পাশ্চম জাম'ানী এবং গতবারের বিদ ফটেবল কাপ বিজয়ী **3**1166 য়োগিতার প্রথামত স্রাস্ত্র জাম[া]নীর চ্ডা•ত প্রায়ে যোগতো লাভ করে। কিল্ড বাকি সক গ**ালকে তাদের ভৌগাদক অবুং**খান জন. হাহী বাছাট পবের আওলিক লীগে থেলায় অংশ গ্রহণ করতে হয়েছিল। এ বাছাট পবে'র আঞ্চলিক খেনায় জে পর্যাতে এই ১৪টি দেশ পশ্চিম ভামানী চ্ডাপ্ত পর্যায়ে খেলবার ধোগাতা লাভ করে : ইউরোপীয় অন্তলের পর জারানা हेळाली दुशालाएड स्क्लेलाएड घारा का ভিয়া হল্যাণ্ড সাইডেন এবং বালগেছে দ্যিকৰ আমেতিকা আকালেৰ ট্ৰালাড धारकारिका छन्। जिल ভাষেষ্বকা এবং কচবাবিষ্ঠ ধ্রিক कामहालास केंद्रिकिक आरोहिक के अनुसरकार करहेर এবং অণিয়া-এংশনিয়া খণ্ডলের লিয়া এই ১৪টি দেশের মধ্যে 6185 দেশ তাফ্টালয়া প্যা ভাষাল্ট এবং জাইর বিশ্ব ফাট্রল পুট্সে_নিল্ব চাডাত প্রাধ্যে এই প্রথম খেলাছে ট 5 ডাণ্ড প্ৰথায়ে স্বাধিকবাৰ গলা: বেকড়া (দশ্বরে) ব্রাজিলের। এপার্যান্ত এট -, ৪.৬ দেশ বিশ্ব ফু এবল কাল জ্যাই হাড়াছ রাজিক তিলবার, উর্লেখে দ্রাখ ইতালী দাবাৰ পশিল্য জাম্নিী একবাং এবং ইংল্যান্ড একবার। এর পাঁচটি বিন্ ফাউবল কাপ বিভেগী দেখের মাধ্ ১৯৭৪ সালে চাউন্ত প্যাংগ্র উঠেত এই চারটি 🛶 স্তাভিল উর্পুয়ে ইতলা এবং পশি, জামানী। ১৯৬৬ সালের বিশ্ব ফুটবুল কাপ বিজয়ী ইংলটেড চাডাত পর্যায়ের খেলায় উঠতে পারে^{নি চ} ইউরোপীয় জোনের ৯নং ল্রাপে চার্নিপ্রান বাশিয়া বন্তা দক্ষিণ আপেরিকর চিলিব থেলা উপলক্ষা করে আন্তর্জাতিক কলে নৈত্রিক আসের বেশ সবগ্রে হয়ে উঠে ছিল। শেষ প্রশিদ এনিয়ে জল বেশ্নির গড়াহনি। রুজিয়া রুজনৈতিক কাবত চিলির মাটিতে খেলতে রাজী ত্য কাৰণ ডিলি ছাড়া অপৰ কোন লেশেই মন্ট্রত থেলাত চেয়েছিল। কিন্তু অপুন জাতিক ফটেবর ফেডারেশন রাশিসার *এ*ং প্রস্কার অ্রান্তা করাল বাশিয়ার বিভিন্ন र्णकरण राजीत। क्स पिति । क्साक व्याक পোল প্রিয়ম জন্মনির্মীর মাড্রান্ড প্রযাহ্র খেলবার অধিকার লাভ করে।







CURRY POWDER

ा वाजारम्ब राज्य ने स्वते व व प्रमता त्या व मृत्येश व का प्रमता प्रमूर्ण विश्व वाश्यक व व्यवस्था

ज्यापति । ज्यापति अप्रतः । ज्यापति अप्रतः ।

escent কুষ্ণ চন্দ্ৰ দত্ত (স্পাইস) প্ৰাঃ বিঃ

(ল্লাইস পাটভাস ভিভিন্ন)

कत/KCO-74 १०१, म्यूरि (पादम (मात, क्रिकाझा-१ । (काम : ००-०३०१ काक्रिके-कालेख



[५८ वर्ष 💃 मर्था]

भ्यक्तात्र, २० व्यावाए, ১०৮১ वन्ताब्स

[स्ना द



১০৮১ সালের মোচাক পত্রিকা কর্ত্ব সন্ধীরচন্দ্র প্রস্কার প্রাপ্ত শ্রীতনুষারকান্তি ঘোষ রচিত ছোট বড় সকলের মনের মত বাংলা সাহিত্যের দন্থানি আশ্চর্য বই

বিচিত্ৰ কাহিনী

শ্রীভূষারকাশ্তি ঘোষ

মূল্যঃ—চার টাকা

(সণ্ডম সংস্করণ চলছে)

ছোটদের উপযোগী সরস রচনা বাংলা সাহিত্যে খ্ব বেশী লেখা হয় নি। বিশেষ করে নানাবিষয়ে সত্য ঘটনা অবলম্বন করে ছোটদের মনের মত বিচিত্র রোমাণ্ডকর লেখা খ্ব সহজ নয়। 'বিচিত্র কাহিনী'তে লেখক সত্য ঘটনাগ্যলিকে নিজের সরস ম্বিসয়ানা দিয়ে এমন জীবন্ত আর আকর্ষণ করে ভূলেছেন যে শ্র, থেকে শেষ পর্যন্ত প্রতিটি রচনাই অনবদ্য রস ও রোমাণ্ডে টইটন্ব্র। মোট পনেরোটি কাহিনী ভিল্ল ভিল্ল রসের ফলগ্রধারায় সিত্ত, বর্ণনায় মনোমাণ্ডকর।

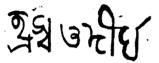
'আরও বিচিত্র কাহিনী' বইটি কিশোর ও বয়স্কদের জন্য সমভাবে রচিত। লেথক শ্রেন্ ছোটদের জন্যই রস পরিবেশন করেননি, বড়রাও এই অমৃত আস্বাদন করে প্রাকৃত হবেন। অনবদ্য রস রচনাশোলী এবং প্রতিটি কাহিনীর ভিন্ন ভিন্ন ভিন্ন আকর্ষণ চুন্বকের মত পাঠককে টেনে নিয়ে যাবে। এই বইটিতে দশটি বিভিন্ন রসের কাহিনী রয়েছে এবং লেথক তার ব্যক্তিগত অভিজ্ঞতার কাহিনীগ্রিল এমন স্পেরভাবে রস্যুক্ত করে উপস্থিত করেছেন যে পাঠককে বিমৃথ্য করে।

আরও বিচিত্র কাহিনী

শ্রীতুষারকাণিত ঘোষ ম্ল্যঃ—চার টাকা (চতুর্থ সংস্করণ চলছে)

এম সি সরকার অ্যাণ্ড সম্স প্রাইডেট লিমিটেড, ১৪ বিংকম চাট্রজ্যে দ্বীট, কলিকাতা-১২ :ফোন ৩৪-১৭৮২

যাযাববের আপন বৈশিষ্টোর এক অনন্য অবদান



ভৃতীয় মৃদ্রণ প্রকাশিত হরেছে।

जामान्यम क्वीर

প্রবোধক্মার সান্যালের

বহ ্লালোচিত, বহ বিত্তিত, বহ প্রশংসিত গ্রন্থ

বাংলা সাহিত্যে নতুন প্রহণর স্পন্দর

আশুতোৰ মুখোপাধ্যায়ের

সারি তুমি কার?

তৃতীয় ম্রুণ প্রকাশিত হয়েছে।

লাম আট টাকা

মিত্র ঘোষ প্রকাশিত ছোটদের কয়েকটি অন্বাদ সাহিত্য :--

গজেন্দ্রকুমার মিত্রের

স্মথনাথ ঘোষের

এ টেল অব ট্র সিটীজ ২া! স্বইস ফ্যামিলিরবিনসন ১॥ কাউন্ট অব মন্টেকিস্টো ২॥ ডেভিড কপারফিল্ড ২া!

পর্যাথবীর শেত্রতালপ

১ম খন্ড (রাশিয়া) ৪৯

८वर्ष वस्य (क्द्राशी) **८**१

৫ম খন্ড (হিন্দী) ৩;

অত্যাশ্চার্য ভাগ্য গণনাকার

বিখ্যাত জ্যোতিষাচার্য!

ভূগ্ম জাতকের

নিজের ভাগ্য নিজে দেখনে

নতন সংস্করণ প্রকাশিত হলো।

দাম মাত্র তিন টাকা।

মিত্র ও ঘোষ পারিশার্স প্রাঃ লিঃ ২০, শামক্রণ দে বীট

निय्यावली

বিলেশ - বিজ্ঞাপ্ত

লেখকদের প্রতি

- ১। অমাতে প্রভাগেও জনো প্রোরত লাঠ।
 নমতে বচনার নকল রেখে লাঠ।
 বেন। অনোনীত বচনার ববর লন
 আলের কারা জানার হার অমানোনীত বচনা কানার হার কানা
 লাগার দক্ষা কানার বাংলা
 লাগার দক্ষা কানার সংলা
 কোন ভালাবিকা লাগারের লাগা
- ই। ত্ৰৈবিতে বাসনা কাগ্যন্তের এক প্ৰসাধী প্ৰথমিকাৰে জিপিবাত প্ৰথমে আৰু-বাবে তামপুলন ক'লাবোদ্য প্ৰস্তুন-ক্ষাৰে ক্ষাৰা প্ৰকাশেক জন্মে, গাজীক বাম না।
- গ্রারনার সালে লেখাকর নাম ।
 নিজানা না থাকাল অফাজে
 প্রকাশের জানা গ্রাহীত হয় না
 নিজালের সালের সাল

একে-উদের পতি

একেলনীর নিষ্মাবলনী এবং শ সংশক্তিতি অন্যান্ত তথা তথাত নালাকেলে প্রচাল ক্ষাত্রমা

গ্রাহকদের প্রতি

- ১। প্রাহাকের রিজনা প্রিবর্গনের জনো আক্তেভ ১৫ দিন আবে। অমাজ কারালিকে সংবাদ দেওয় আব-লাক।
- ২। তি লি-তে প্রিক পাঠানো হর না। রাহকের গীনা নিশালিক্তি হাবে নাগ তালাব্যবার অম্পূর্ত কারালিয়ে পাঠানো, রাব্দাকে।

চাদার হার

কালকাজ মফ: বল বাব ক টাকা ২৫ ০০ টাকা ৩০.০০ বা-মাহিক টাকা ১২.৫০ টাকা ১৫.৫০ ফ্রামানিক টাকা ৬.২৫ টাকা ৮.০০

'অমৃত' কার্যালয়

১১/১ আনজ গোটাজি লেন, কলিকাডা—৩

ক্রান : ৫৫-৫২**০১ (১৪ লাইন)**

সকলের প্রশংসাধনা।

গণিতের কথা ও কাহিনী

নন্দলাল মাইতি বি এস-স্থিত এম এ বি টি

ছোটদের মন থেকে গণিতের অন্তেত্ক ভাঁতি ও আড়ুব্ধ দ্বে করার পক্ষে একদত সহায়ক উপথারের উপযোগাঁ মনোবম প্রচ্ছদংশাভিত সচিত্র বই।

में 8 (ब.क काटा २-8₀)



৪০% কম দামে বই কিনবেন?

আশাতীত সংল্পে নতুন আনকোরে বই প্রে হলে এখনত আলোলা বিটা বকে ক্লাবের সদস্য হোনা। কোনো মাসিক বা বাধিক চাদা লাগে না— ভতি ফী ১ টাফা মতা জল সংস্কারা 80% গুড়ে ভিস্কাউন্টে বিভিন্ন প্রকাশকের প্রতিভাষান লেখকদের নই কিনতে পারবেন! সদসা থাকার মূল স্তু 6 কাৰ-নিৰ্বাচিত পেকে বছরে অঞ্জতঃ চারখামি ধই ক্রমতে হবে। ডাকখ্রচ বই ভি পি-তে গেলে দাম দেবেন। সদস্য হলেই বিনাম্লো গুণ্থ স্মাচার মাসিকপত নিয়ামত পাবেন। ১৯৬৬ সাল থেকে কয়েক হাজার গ্রন্থপ্রেম^ন এই অভিনৰ সম্মানজনক বকে ক্লাব ধাৰ প্থার প্রতি আকৃণী হয়েছেন। খিনিই জানছেন, তিনিই দজে সঞ্জে বিল বাকবেছে সদস। হচ্ছেন। আপনি এখনো সদস্য হননি ন আজট ১ টাকা অলিছ পাঠিয়ে বিশ্ল বিবর্ণ জেনে নিন । একসংগ্রাহে টাকা দামের বই কিনলে ৪০% ডিসকটেণ্ট জদ্বার ৫ টাকা দামের বই বিনামালো উপহার পাবেন। কাগজ কাল ভাকরায় ইত্যাদির काम्बाङाविक मृज्याद्वीत्थत समा ১৫ छ नारे थ्यांक र छाउँ की २ हैक। इस्त। তোর আগেই সদসা হয়ে হান।

শ্বার সদস্য হলে মার ৬ টাকায় পাবের প্রশংসাদর রাজ্ত দেশবিস্কু চিত্রঞ্জনের জীবন-বেদ ১২

ক য়েক খানি ম নোর ন ব ই

577917

প্রফাল্যক্রমান সিংহের চমকপ্রদ উপন্যান (দেশ ও অম্বেড উচ্চপ্রশংসিত) টা ৮ বেক ক্লাবে ৪.৮০)

শার্ল ব হোম সাফরে এলেন

কোনাম জয়াল জয়াশ বধ⁴ন বিশ্বথাত গোধেগা গ্রণেয়র মজন মটেব বড় আকাকে দাম টা ১৮ (বড়ক রাবে টা ১০, আগ্রিম টা ৫)

এবং সীমা

উথানপদ বিজ্ঞানীর মন্যোক্ষ কারাপ্রক্র (অম্ব ও যাস্পাস্তারে প্রশংসিত) টা ৩-৫০ (বাক ক্লাবে ২-২০)

রোয়াক

প্রশাদ্ত গাহের আভিনৰ নাট্য সংকলন (দেশ ও অমাতে প্রশংসিত) টা ৪ বেকে ফ্রাবে ২-৪০)

ছোটরা ছোট নয় অধ্যাপক গোপাল গয়ের উপন্যাস টা ৪-৫০ (ব্যুক্ত ক্ষুপ্তে ২-৭০)

আরও কতরকমের বই আছে।
পদই অভাবদীয় কম দাদে। আগ্রিম
১ টাকা ভার্ভি কী পাঠিকে বিশদ
বিবরণ জেনে নিন। আজই! এখনি!
১৫ জালাই থেকে ভতি^{তি} কী ২ টাকা
হয়ে যাবে। ভার আগে সদস্য হোন!

আ্রাল্ফা-বিটা ব্ক জাবের সলস। হয়ে বই কেনাই লাভজনক
৫৫-১ কলেজ শ্রীট, তেওলা, কল বাতা ১২

১৪ল বৰ্ষ



১ সংখ্যা মাজা ৫০ পরসা

'**वैश्वितान का**।-क इंग्लोब' निकेस পেপার সোজাইনির গ্রহণ

Friday, 5th July, 1974

শ্রুবার, ২০ আষাঢ়, ১৩৮১ 50 Paise

স্চীপত্র

পাণ্টা বিষয় লৈখক সম্পাদকীয় छनर्ग (5(354) —শ্রীশাতন, দাশ ১০ সেকালের সংগতিগাণী -- শ্রীদিলাপিকুমার ম্থোপাধ্যায় ১৭ ঘটনাপ্রবাহ --শ্রীপ:•ডবীক २५ हिकिशन २२ यमि अन्न कद्राउद्दे इस ' (कविटा) --শ্রীরাম বস্ত २० खालांकिक क्रमधान (উপন্যাস) -শ্রীঅতীন বন্দ্যোপাধ্যায় ৩০ সাহিত্য ও সংস্কৃতি —শীজ্বৎকার **৬ সেই লোকটি** –শ্ৰীঅমিতাভ দাশগ্ৰেত ৩৭ ভালবাসা ভালবাসা (উপন্যাস) -শ্রীআনন্দ বাগচী ८४ अवर्णभी ---শ্রীপ্রণবরঞ্জন বায ৪৯ প্রেশ্চ -- শ্রীক্ষপণক **८२ का**श्नाना —শ্রীঅঞ্জলি চৌধুরী

প্রকাশিত হইল কৃষান্ম বন্দ্যোপাধ্যায়ের নতুন রহস্যোপন্যাস

শিশিরে রক্তের ফো

সদ্য প্রকাশিত অদ্বতীয় চিরঞ্জীব সেনের নত্নতম থিলোর

ইংলন্ডের পারমাণবিক গবেষণাকেন থেকে নিউক্লিয়ার শান্তির ফরম্লা চুরির চাণ্ডলাকর কাহনী। প্রতি পাতায় উত্তেজনা।

পারিজাত গ্রস্য ৬১

(দাম আট টাকা মদ্র)

রহস্যের অন্তরালে ৫ নিশাচরের রহস্যোপন্যাস অমরেন্দ্রনাথ মুখোপাধারের গোয়েন্দার দপ্তর ও

নটরাজনের

ने अ भान्धात ७ वन स्थाम ७

অবিক্ষরণীয় নিগ্নোন্দের ঐতিহাসিক উপন্যাস হারেম থেকে বলছি (২য় সং) ৭

দুধ্য তাতার ৬ দেবদেউলে ভারত ৫. ছন্দহারা ২.৫০

অম্রেন্দ্র দাসের ঐতিহাসিক উপন্যাস

বেকস্রখালাস ৫ আলোরলগন ৩ ৫০

বিশ্বাস পাবলিশিং হাউস । ৫/১এ, কলেজ রো, কলিকাত-১

সারদা-রামক্ষ

যাগাদতর ঃ--সব্যাণগদান্দর প্রশ্বর্থানি স্বপ্রকাতে উৎকৃষ্ট হইয়াছে। বহাচিতে শোভিকে সংতম মাদ্রণ-৮

শ্রীরামক্ষণ-শিষ্ণার অপার জাবিনচরিত थानम्पराक्षात शतिकाः-है'शता क्राउट ভাগো শতাব্দীর ইতিহাসে আবিভাঙা হন। ব্যুচিচ্চার প্রথম ম্প্রণ-৫

গ্রীসার্দামাতার মানসকল্যার জীবনকলা বেতার জগংঃ--অপর্প তাঁর জীবনাকেখ্য অসাধারণ তাঁর তপ্দ্রবা। বহু চিনুসহ ৮:

সাধ্ম-চত**ু ^হ**টয়

বামীজী-সহোদ_ৰ মনীতী ম:হব্দুনাথ দত মহাশরের মনোজ্ঞ রচনা।। পরিবধিত দ্বিতীয় সংস্করণ—১-২৫

माधना

বস্মতী:-এমন মনোরম স্ভোরগীতি-প্ৰুতক বাণ্যলায় আরু দেখি নাই।। পরিবধিত ধত্ঠ মন্ত্র-৬

सी मी नात (एमती वास्रव ২৬ গোরমাতা সরণী হলিকাভা-৪

শীঘ্ৰই প্ৰকাশিক বঙ্গে চিন্তানায়ক রবীন্দ্র-নাথ ও বিবেকানন্দ

ডঃ আদিতাপ্রসাদ মজ্মদারের এই তুলনা-ম্লক অভিনব গ্ৰেষণাগ্ৰাম্থে আছে দুই য্গপ্রেষের চিন্ডাধারার বিস্তৃত

রবীন্দ্রদর্শন অন্বীক্ষণ कः मृथीत सम्बी

দার্শনিক ডঃ নদ্দী তার প্রেডকে ম্র মারসেল-এর অনুসরণে বিচিত্রতর ও ব্যাপকতর বিশেলখণমারার পরিপ্রেকিতে রবীস্ত্রদর্শ নের ন্বরপোনগরের চেন্ট করেছেন।

ববীন্দ্রকাব্য পারক্রমা 20.

শ্ৰীভূমি পাৰ্বালিশং কোম্পালী ৭৯ মহাত্ম গাল্বী রোভ, কলিক্সভ ৯

জाতीय সঞ্চয় সংস্থা बार्स ५, ५৯१६ (शरक श्वरक तर्सिठ हाद्रा ग्रुष्ट मिएण्डत

সিকিউরিটি ও আক্রেউন্টের নাম	পুরনো বাধিক হার	নতুন বাধিক হার
ডাক্ষর সঞ্জ ব্যাক *	8%	٠%
৭ বছরের জাতীয় সঞ্চয় সার্টিফিকেট (II এবং III প্যায়) ●	¢%	٠%
৭ বছরের জাভীয় সঞ্চয় সার্টিফিকেট (IV এবং V পর্যায়)	৭.৫% (চক্রবৃদ্ধি হার)	৮.২ ৫% (চফ্রবৃদ্ধি হার)
ভাক্যর নির্দিষ্টকালীন মেয়াদী জমা : ১ বছরের	% %	७ .9¢%
২ এবং ৩ বছরের ৫ বছরের	9% 9.২৫%	4.0% 6%
 বছরের ডাকঘর পৌনঃপুনিক জ্বমা 	b. 9¢ %	٩.૨৫%
 বছরের ভাকঘর ক্রেমবর্ধমান মেয়াদী জ্বমা ** 	8-96%	a.2a%
১৫ বছরের সরকারী ভবিষ্য নিধি 🐲	æ • %	e.b %

এতে সুদ করমুভ

এতে কর-এ রেহাই আছে এবং সুদ করমুভ
 বিশেষ প্রকম্পার্গালর ওপর সুদ সমেত অন্য প্রকম্পার্গালতেও বছরে '
 ০,০০০ টাকা পর্যন্ত সুদ করমুভ।



এখনই সঞ্চয় ককুন বেশি করে সঞ্চয় করুন জ।তীয় সঞ্চয় সংস্থ।

পোষ্ট বন্ধ নং ৯৬, নাগপুর

davp 74/78 B

স্চীপত্র

शकी

বিষয়

- ৫০ রূপদীর খাড়া
- **६६ जानाब क्षिल्य करना** (99P*() ६४ जान कि कन्म (हित नहाइनाहमा)
- 40 MINI
- ७२ असा बरणन
- ७ व वाद्यार का श्रक
- ७ व क्रिकिट ज्ञाम
- ৬৯ শতবর্ষের ভারণীয়
- ৭১ রখ্যাজগতের রখ্যাকথা
- < वाश्वादमृत्य नाह्य **कार्यमान**म
- ৭৩ মাঠের নায়ক
- ৭৬ খেলার জগতে মেরে
- ५५ दशकाश्राम्

লৈখক

- --শীববরণি নী
- -শ্ৰীঅভিত দে
- -প্রীচিত্রদ, ত
- -श्रीविशामा
- -শ্রীনিম'ল ধর —শ্রীরঞ্জন মক্তুমদার

-শ্রীকালীল মুখোপাধ্যায়

- —আনওয়ার আহমদ
- --श्रीविभ्राम व्यवसाभाषाम्
- ---শ্রীঅময়
- শ্রীদশ ক

দ্বিতীয় মূদ্রণ প্রকাশিত হয়েছে

अहे व्यथ्दकत

কোটিল্য গংশ্ত'র উপন্যাস

চেরঙ্গী কনট সার্কাস ৬. कुरामी यूल ७ न्यू लिक व

দেনাফকস্ক্যাবারে

স্বাংশ রঞ্জন ঘোষ-এর

এই লেখকের

कुर्योज नकगानवां ५० কালমাকসি ১০্

মায়া বস্কুর স্বাধ্নিক উপন্যাস ১৯৭২ সালের লাশা প্রকারপ্রচত,

मृतवशाह्वा *«*,

প্রথাত মনন্দিনী লোখকা মায়া বস্থা পরিশীলিভ মনন, তীর ইন্দ্রিয়ময়তা ও তীক্ষা জীবন বিশেলষণে সমৃন্ধ এই

নীহাররজন গণেত'রঃ রিপ সংহার ৬

मद्यं भर्ल ५ मत्रवाती ६

ন্বিতীয় খণ্ড প্রকাশিত হয়েছে

शिव विनावनी

৩৭টি নাটক ও সনেটের আক্ষরিক অন্বাদ। পাঁচু খণেড সম্পূর্ণ। পাচ টাকা অগ্রিম দিয়ে গ্রাহক হলে প্রতি খণ্ড দশ টাকা। প্রথম খণ্ড প্রকাশিত হয়েছে

মপাসারচনাবল

ভূমিকা: ডঃ অসিতকুমার বলেনাপ্রধার তিন খণেড সম্পূর্ণ। চেখকের সম্পত ছোটগলপ ও উপন্যাস। পীচ টাকা দিয়ে গ্রাহক হলে প্রতি খণ্ড দশ টাকায়। স্থানিতসংথাক ছাপা

ভূলি - কলম: ১, কলেজ রো় কলকাতা—৯ ফোন : ৩৪-৮১৮০

স্বাধীনতা আন্দোলনের পট্ডামিকার শৈলেশ দেৱ নবতম প্রশ

(यव एत वा शार

विनय-वापन-पिट्रम्भ त क्रमा रनदे 8 ताक्रव प्रकरत क्र বি-বাস পাৰ্কালনিং ছাউস

৫/১এ ক্ষেত্ৰ রো । ক্ষাল্যভা-১

ग्रीहनीदम ৱালাৰ জন্য था'ि थवत्र!

গৃহিণারা সবসময় রালায় আগমার্ক গুড়ো মশলাই বাবহার করুন কারণ আগমার্কের জিনিষ -

১००% था'ि इम 'फोंगे ग'र्फ़ा ममला मृथ् ष्मागमार्क व्युष्ट नम् अब শেছনে রয়েছে ভারতের ट्यन्ड बनना नावनाग्री কুক্চন্দ্র দত্ত (কুক্মী) প্রাঃ **লিংর** চার প্রেবের অভিভৱতা। ভাটা গ'ড়েড়া মশলা অতি আধ্নিক কারখানায় প্রস্কৃত **एक अ**वर शक्य हान्हें नान्द्रविद्योतिक देवस्त्रानिक প্ৰবাদ্ধ পদ্মীক্ষিত হয়ে বাজাৰে বিক্রের জন্য প্রেরিড হর। কৰে ভাটা গ',ভো মশলা সৰ সময় খাটি ও উন্নত मानम्ड ।

ডাঢা

গা; ড়ো মশলা রানায় ১০০% निद्राश्रम

বাৰে প্ৰচাৰিত বি**জ**িত।



সম্পাদকীয়

সিকিমে গণতন্ত্র প্রতিষ্ঠা

সিক্ষের চোগিয়াল দেশের গণতানিত্রক সংবিধান গ্রহণের পথে বাধা দেবার চেণ্টা করে ভুল পথে নিজেকে নিম্নে যেতে চেয়েছিলেন। সিকিম ভারতের আগ্রিত কিন্তু অপায়াজা নয়। তার জনসাধারণের ভালমন্দ দেখার দায়িছ ছারতেয়। তার সিনরাপতার পণে দায়িছভা সিকিমের ভৌগোলিক অবশ্বান এই দায়িছ আয়ও বাড়িয়ে দিয়েছে। গত বংসর এপ্রিলে সিকিমে জনগণের এক বিহাট জভুঞান হয়। সেই অভুঞান ছিল সিকিমের রাজতক্তের অগণতান্তিক শাসনের বিরুদেধ। সিকিম কংগ্রেস ভিল তার সংগঠক। সেই অভুঞানের সময় চোগিয়ালেয় আমারণেই ভারত সরকার সিকিমের আইন ও শংখলা রক্ষার দায়িছ নিজের হাতে গ্রহণ করেন। সিকিমের চোগিয়াল য়ার্জা হন শাসন সংশ্বার। চাগিয়াল এই সংবিধান সম্মাত দেন। কিন্তু সিকিম বিধানসভার প্রথম অধিবেশনে যথন সংবিধান গ্রহণের কথা সে সময় তিনি তার প্রাসাদ্ধক্তার প্রথম অধিবেশনে যথন সংবিধান বিলা বাছুলা তিনি সফল হননি। কিন্তু তার এই বাবা দেবার চেণ্টার পেছনে যে মানসিকতা কাজ করছিল তা নিঃসন্দেহে মারাত্মক এবং নিন্দনীয়। তিনি অনেকদ্র প্রথকে এগিয়েও কার প্রান্থে কিংবা কী দুরাশায় এমন কাল করেতে গেলেন োবা দুক্রর।

ভারত **সরকার স্ব**ভাবতই এতে উদিব'ন। সিকিমের **জনগণ অবাধ** নিব'চিনের মাধানে তাদৈর প্রতিনিধি নিব'ডিত করেছেন চিন্রানসভার বহিশটি আসনের মধ্যে একবিশ্বটি আসন সিকিম কংগ্রেসের প্রলে। এই সংবিধান তারা একবাকো অনুমোদন করেছেন। জনসাধারণের গণত্যনিত্রক আকাশকার বিব্রুদেধ চিগিয়াল যদি কিছা ধনতে যান তাহতে তিনি প্রকাত ভুল করবেন। সংবিধানে ভাকে নিয়মতানিক প্রধান হিসেবে প্রীকৃতি দেওয়া হয়েছে। তার মান্মযানা ও ব্যক্তিগত সংখ-সাবিধা কোনোটার ওপরেই হাত দেওয়া হয়ন। বিবানসভায় প্তিতি বিল তার কাছেই কাবে অনুনোদনের জন্য: যদিও সে বিল একবারের শ্রুলি ভিলি প্রবি**ধ্যে**চনার জনা বিধানসভায় পাঠাতে পারবেন না াবতীয়বার গাহীত বিল অন্যোদন তার প্লে আবশিক। কোনো বিল সরকারের বিবেচনার জনা পাঠাতে পারেন। এ ক্ষেত্রে ভারত সরতারের সিম্থানতই হবে শেষ কথা। ভারত সরকারের ওপর সিকিমের জনসাধারণ আরও অনেক ক্ষমতা অপুণি করেছে। ভারত সরকার মনোনীত চীফ এন সিকিউটিভ আফসারই ছাবেন সর্বায়য় কর্তা। বিধানসভার স্পীকারের দ্যায়ত পালন করবেন তিনি। ম থানতী ও মান্তসভার সদস্য অন্মোদনের ক্ষমতাও তরিই। স্পণ্টতই বোঝা যায় সিকিকের জনসাধারণ ভারতের সংখ্যা ঘনিংঠতম সম্প্রের পক্ষপাতী। ভারতের গণতান্তিক সমাজের অংশীদার হতে চায় তারা। সামন্ততনের নাগপাশ থেকে বোঁরয়ে আসার এই আগ্রহ নিংসনেহে অভিনেকনীয়।

সিকিম বিধানসভার প্রথম অধিবেশনে সংবিধান অন্মাণিত হবার পর সদসারা ভারতের সামাল্রক অথনিতিক উন্নয়ন পরিকপ্তনার সংগ্ণা সিকিমকে ব্রেক্তরার দাবি জানিয়ে প্রশৃতাব নিয়েছেন। ভারতীয় নাগারিকদের সংগ্ণা অধিকার তারা চান: ভারতীয় নাগারিকের মৌলক অধিকার সিকিমে প্রবত্তিনের দাবিও জানিয়েছেন তারা। সিকিমের জনগণের এই গণতান্তিক আকাঞ্জার প্রতি ভারতের জনসাধারণের পার্গ সমর্থনি ও শান্তেছা রার্যে। তিমালয়ের ব্যক্ত এই রাজাটি এতকাল ছিল লোকচক্ষার আড়ালো। তার প্রতিবেশী ভূটান আজ এগিয়ে চসেছে। বেখানকার রাজ্যনত জনগণের হাতে ক্ষাতা অপশি করে আগের দাবি মেনেনিয়েছে। সিকিমের অলুকাতিতে আজ ভারতের দায়ির অনেন বেড়ে গোলা বারা এথনও সিকিমের এই গণতান্তিক পরিবর্তান মোনে নিয়েছ কিবধা করছেন তারা আশা কমি নিক্ষেকর ভূব বর্ণাতে পেরে জান্ত থেকে বিবত ক্রেন। সিকিমের জননাধারণ বহু সংগ্রাম্যর পর যে আবর্ণর প্রতিটা করেছে তাল ওপ্র জনকাধারণ বহু সংগ্রাম্যর পর যে আবর্ণর প্রতিটা করেছে তাল ওপ্র জনকাধারণ বহু সংগ্রাম্যর ব্যব্যা ক্রমেই সহা করবে না। ভারত স্বকারকে এই গাা্রাণিট দিয়েছবে।



ঠিক সময়ে ট্যাকসি পাওয়া এবং এই হারবল জ্ঞাম পেরিছে ট্রেন ধরা একটা ভিট্রনী। র্যাবশ। সারা প্রথিবীর উপর বিজ্ঞা নিয়ে ভদুলোক এক সময় খাড়ে গলায় মূখে কামা ঘ্যার মতো রমাল বোলালেন। এই ফালগ্নের গরমেই ভদুলোক ঘেমে দেয়ে অতি কণ্ডে এ কামার সম্প্রীক সোধিয়ে যেন আমানেরই অপরাধী করে তুলালেন। এই সময় বসত উৎসবের ভিড়, জামগা পাওয়া যায়? কিন্তু দেখেছি প্রিথীতে এক ধরনের মান্য অচ্চেন, ধরি ঠিক সমায় ঠিক মতোনই এসে ঘান, জায়গাও পেয়ে যান, আবার সম্মত প্রিথবীকে অস্ক্রাও করেন। উদ্যোক্কে দেখে সে রক্ষ একজনই মনে হল।

নিখ'তে পোশাকের এই জাটি সম্বন্ধে জনেকেই শশ্বাসত হল। মিথো বলবো না আমিও যে একেবারে নিগড়প ছিলাম, তাও নয়, বিশেষ করে জন্মহিলার বাকে লেন্টে থাকা ফটেফটে এই এইটকে একটা ছেলের জনো, কতই বা বয়স হবে, জিল্ডেস করতে সাহস হল না। তবে মাস দায়েকের বেশী তে নামই ? নিশ্চয়ই না। এই এতটকে একটা বাচ্চা নিয়ে কেট বেবোয় ? কি জানি, হয়তো এমন কিছা জরবে কাজ আছে। কামবার এই গবনে ভদমহিলা এবং বাচ্চাটির চোখ-মাৰ লাল।

ট্রেন চলেছে শান্তিনিকেতনে।

বেশীর ভাগ যাত্রীই বস্তুত উৎসবের। আমিও। কলকাতার হাজার কাজকমেরি থামেলা মিটিয়ে সব সময় চলে আসা সুভ্তব হয়ে ওঠে না। তাই এভাবেই কোনো না কোনো কাজের অভিলায় প্রায় পালিয়ে আসতে হয়। যেন দগছ,ট থেলা। ভালোই

মাঝে মাঝে এই খেলায়। এবার একট িত হয়ে যাছি, তাই মন্টাও হালকা ক্ষু মতো। আকাশ বাতাস স্ব কিছুই के मार्गाः प्राप्त शत्म श्राप्त श्राप्ति स्ति। **লেভাগ্য বা দ্ভণগ্য জা**নিনে ভদলোক বলার জন্যে আমাকেই নির্বাচিত লৈ। ভার মানে এই কামবার মধ্যে আমি ্**একজন ঈর্বণীর পরেষ। এই** ভাগা কাউকে দিতে পারলে প্রম নি[±]চন্ত কর্তম কিম্ছ উপায়হীন। ক্রমাগত **্রাক্তের প্রখনবাণে আমি জন্ত**িরত। ভদ-া প্রোপ্রি শাহরিক বলে মনে হচ্ছিল **ভারণ শিশভবেদ, লোকাট জা**য়া বা **ল ধরনের ডিলেচালা লাডিটা**ডৌ লবীরে **লেও হাতে** গয়নাগাঁটির সপ্রে একটা **একৈ ৰাচ্চ দেৰে মনে হল**, ভদুমহিলা লা খানিকটা পোছতে আছেন। তবে ইনি ্ৰী-গলে ৰেশ গৰিতা। এবং এই ভদ্ৰ-🚁 উপৰ[্]পেয়ি সেই রকম গর্ব করার ্র কথা আমার শ্রনিরে হাচ্ছিলেন। লাশ থেকে চোৰ নামালাম মাটিতে। লয়ে জনমহিলা সুন্দরী, অস্তত আমার ্শ তো ভাইই মনে হল। ওংকে আরো সম্পরী করেছে ওর ব্যক্ত লেপটে-न बर्रे भिगः। है,कहें,दक गाम कामा गार्य । নের উপরে রাখা আলতো করে ছোঁয়ানো **েল। কপালে ছোটু এক** টিপ। কাজলোর। ভর গায়ে ঠেসে ঠাসেই বসে ্রছন। ছাতে একটা দ্র্যভাতি ফিডিং

বোত্তাের বাাগের সংখ্যা রেকসিনের ঝোলানো হাতব্যাগ। স্ববিছা সামলে সামলে প্রেট থেকে পাঞ্চেট বের করে ফস করে একটা সিয়েট জ্বালিয়ে ঠোঁটের কোনায় ভাগতে। করে ব্যালিয়ে আমার দিকে ধোঁয়া ছ'ড়েছি-লেন, সেই সংখ্যা শব্দ। ইচ্ছে করছিল না নোটেই উত্তর দিতে। তব্ ভদুতা করতে হল। শান্তাম—ভদুলোকের ধবশাুরালয় বেলপরে। স্থাকৈ বেশ কিছাদিনের জনো রেখে দিতে বাচ্ছেন। এই ফাকৈ বসনত উংসবটাও দেখে আসা যাবে। ওটা নাকি এর আগে কখনো দেখা হরে ওঠেন। ইচ্ছে করছিল উত্তর না দিতে। জ্ঞানালার ওপাবে ভাকালমে, চোখ ছড়িয়ে দিলমে সমাদের দিকে। দেখছিল্ম-কেমন করে অজস জনতার উত্তাল চেউ ঝ্পঝাপ করে বারবার আছতে পড়ছে কমেরার দরজায়। ভার সংগ্র পানকৌডির মতো ফেরিঅলার মাশগ্রেলা ডবে ভেসে, ডবে ভেসে একসময় কথন ট্রপ-টাপ করে মিশে যাছে। টোন এখনো শেশ্ডর ভলায়। সময় আনক পোরয়ে গেছে। এমনতো হয় না। আলো, অন্ধকার গরম দাম স্মার চাংকার, অসহ্য ভ্যাপসা ভিডের মধ্যেও कथाना कानना भान इ'द्रा यातक द्रांतिव ্ব নিয়ে বাতাস। শিশ্বটি সে স্বাদ পাচ্ছে না, পাবার কথাও নয়, কারণ আগাপাছ-তলা তার ঢাকা। অসংয় আড্মোডায় বারবার তার শর্মার দলেে উঠছে। ভদ্মহিলাও যেন ক্রান্ত। হয়তো কড়ো রাচ্চি জাগুরণের ক্রান্ত

ওর চোখের পাতার। বাইরে থেকে পোশাক আসাক পেনের আনু কতনুকাই বা ঢাকা হায়।

ভদ্মহিলাভ ভার অংসায়াসিক্স কলা ব্রুতে পারছেন, কিন্তু কিছু করার নেই, বারবার ছেলেন দিকে একানত মনোনিবেশ ছাড়া। এক মুখ জিজেস করলেন--কটায ছাড়ার কথা। ভুলোক এবার অসহিষ্ণ বারবার মণিবলে বাঁধা সময়ের দিকে চোখ রাথছেন। ফুস করে ধোঁয়া ছেডে বাইরে আকাচ্ছেন, আর আমায় জিল্লেস করছেন। হাজার অভিযোগ। আমার কিই বা করার আছে। একটা হেলে বললয়-কখন ছাতেরে. সে কি ঈশ্বরওবলতে পারেন? আর ট্রেনতো। গড়িমসি করার মধ্যে যেন একটা অহৎকার ল,কিয়ে আছে।—সভিা কি সিচেটমের মধ্যে যে আমরা বাস করছি, বলেই আবার সিগ্রেটে স্টেপ করে একটা টান দিলেন। ধোঁয়াটা র্থানকটা গলায় গিয়ে ব্যক্তিটা হড়েহ,ড করে নাক দিয়ে বেরিয়ে এলো।

ডাই করা মাছের গাদার মতো মানুষ
নিয়ে অবশেষে টোন ছাড়লো। গ্রন্থ যেন
বাম্প হরে চকেছে, বেরছেে। একবার মনে
হল এ টোন না এলেই যেন হত। বরক্ত
রাতের টোনটা আরো ভালো ছিল। ভদ্দলোকও উত্তরেতর চটছেন। চটছেন গরমের
বির্শেশ, সিস্টেমের বিব্দেশ, সময়ের
বির্শেশ। ভদ্দাহিলার সমস্ত ক্লিত চোল্লম্য শরীরে ভর স্বরেছ। ট্রেট্কের
বিশাটিকে এপাশ ওপাশ বাহন, বারবার।



আর শ্লেম ছাড়ার সংখ্যে সংখ্যেই নিয়মিত র,টিনে—বিলদার চানাচ্র লজেশ্স চ জন্মী পেন থেকে শারা করে দক্তির মাজন, চাবনপ্রাশ, ধ্পের বাণ্ডিল –চাংকার फॅलेटना जकर मध्या कामवात वाटक।

নেবং এই সময়ে কামবার ভিড সেলে বেরিয়ে এলে। পাগলা ভিভির্টিটা। ক্রমশঃই ভিড বেড়ে চলেছে। বাচ্চাটার চোথমা্থ লাল। পকে একটা শান্ধ বাভাস দেয়া দরকার। প্ৰিবীতে একট্ড বাতাস নেই? ভ্ৰম্যিলা তরতো তাই ভারভেন।

ঠিক এমন সময় এই ভিখারিণী কাঁখে ছেলে নিয়ে হাত পাতলো ভদ্রলোকের দিকে! — ধবাবা, ভোমার দুটো পায়ে পড়ি বাপু দশটো শয়া দে রে, কাল থেকে বাচ্চাটা কিছ্ भाक्षांन। परहो ग्रांष शासा।

ঃ মাফ করো।

— ও বাবা, দশটা প্রসা দে বাপ। ঃ হা শালা ভাগাগ়্া। ভিথিয়ী ন্ডলো না। উব, হয়ে পায়ের জ্তো ধরশো।--খা भारता. शाहा

—ও বাবা। এবার উন্ হয়ে ভিথিরী ভদ্লোকের পাটভাগ্গা ধ্বধ্বে প্যান্টশ্রুণ্ পাটা জাড়য়ে ধরলো। শাদা পানেট ভিখিরীর পাঁচ-পাঁচটা আজ্যালের আলতে। ছাপ।- শালা শারোরের বাচা। যা ভারাগ। ্ভ বাবা, ভোকে ভগবান দেখবে রে। ভিখিরীর কথার শেষট্কুশেষ হওয়ার আগেই উবা শর টাকে প। দিয়ে সজোরে সারয়ে দিলেন ভর্লোক। অভ্রোর সহবার ধর **শক্তি কোথায়। ছেলেকে নিয়েই এক্লিড খেয়ে** পড়লো সিটের আরেক পাশে। এটা এমন কিছ, ব্যাপার নয়। ভিডের কেউ কেউ এক-বার আড়চোথে ভাকালেও এই ছোটলোকের সপক্ষে মণ্ডবা করার প্রয়োজন মনে করলো ্না। হাত দিয়ে গায়ের ধ্রালা ঝেডে প্রতি-বাদহীন জননী একবার ভাকালো বাস্ত্রা বাচ্চাটার দিকে: ভারণার কখন করিডারের মধ্যে ছিলে গেল।

ট্রেন চলেছে শাল্ডিনিকে চুনে।

বাইরে গরম, কামরায় ভিড্, স্টেশন একের পর এক পেরিয়ে যাচ্ছে রতে। বর্ধ-মান আসবার কিছু আগে এগিয়ে একটা कार्षे रुप्तेमस्य ध्वेन्षे इश्वेष ध्वका বিরাট বুনো জম্তুর মতো হাঁপাতে লাগালা। কি ব্যাপার ? কি হল ? কথানে তো থেন থামে না। কচ্চপের মতো সার সার মন্ডু-গ্যকো জানলা দিয়ে চ্কছে কের্চেচ। শোনা গেল কোন এক লোকোকমী নাকি এক ক্ম'চারীর ব্যাপারে ফ্রসালা না ইওয়া পর্যান্ত এ লাইনের সমসত টেনের চাকা বন্ধা। জান্তবে, ভাইলো কি হবে। কোথায় যাবো, কিভাবে যাবো, কথ্য মিটবে.....? হাজারো ধাক্কা থেয়ে ফিরে শব্দ টেনের ছাল এক পাও এগ্রেলা মা আসতে লাগলো। মৌন। ফার্টাও এফারে কফিতে খানিকটা বিশ্রাম নিজ্ঞিল। ভিড় সেলার্কোল, দরজায় **য়াও**রা লাচনা, অস্তদ ভীগকাব, ভাষ **গর**ে ভক্ষুতিকা কুখন এব বন্ধ নিক্ষেত্ৰ হয়ে **চলে পড়ানান** গেড় গোনে, নালি জিডিং বোত্তলটা আহতে পড়লো কামরায়। ভাগ্যি

ভালে: ভদলেকের চোখে পড়েছিলো। বাদ্ধা-টাকে উনি ধরে ফে**ললেন। ভিড্ দ্র**ত থানিক জায়গা করে দিল আমারই আসনে, জানলাব ধারে। কিম্ত এতক্ষণ বাদ্যাটাকে কেউ লক্ষ্য করেনি। হঠাৎ ভরলোক সমস্ত বেশবাস, আভিজাতা ছি:ড চাংকার করে উপল্লা সোনা। সোনগানি বাপী। তভক্ষে বাজাটা আরো নিসেত্জ, ঘন ঘন আদ্রোচ্চা ভাগতে চোখমাখ লাল মিঃশ্বাস দাত। দাওতর।

ভিড হাটান, মশাই জানপাটা ছেডে

লোকজন খবে একটা সরছে না বরক ভিড বাড়ছে। ভরলোক এখন কি করবেন, কি করা উচিত এখন। হঠাৎ কোলেব দিকে ভাকিয়ে অস্থায়ের মতো চীংকার উঠলেন-সোনা । সোনা তার বাবার বাকে ঢলে পড়েছে। এল...একট্ৰল ছিটিয়ে দিন এখানে কি কেউ ভারার আছেন্ সাওয়া ছাড্নে..... এই ৭:ধের বাচ্চাকে নিয়ে কেউ বেরোয় ? ভদ্রলোক কোল কাকিয়ে ক্লাগত

বলেট চলেছেন स्माना स्माना সোনাছার।

কেউ দেখোন সে ভিথিবীটা ঠেলে কখন সামনে এসে পড়েছে। চোখ পড়ার আগেই নিজের বাচ্চাট্রাকে পায়ের সামনে রেখে হিংস্ত দুহাতে জ .केरज ভন্তবাকের 73K tan সোনাকে ছিনিয়ে ওয়ে য় রেগের কাপড় উদ্দেশ্ব স্বার সাম্যেই **হতনের বোটাটা** দিলেন শিশ্রে মুখে। সোনা একট্ উঠে পরম তৃণিততে মায়ের বকে রাখলো। গভীর স্নেহে মাথায় ব্যক্ত হাত বংসলো স্বাডোনা লা।

আর ভিডেরই গা যেণ্যে প্রম হয়ে আরেক ভিক্তরের মুক্তা तरेतमन **धककन।** सरतमाक।

পাগল মেয়েটির কোনো জ্রাক্তের সে ওথনো পাগগের মান্তো জড়িয়ে वरकार्ट ४८कारक---एमामा সোনায়নি।

শৈয়ৰ মজৈতৰা জালীর रम**्ड**रे शक्स

मिली भक्षात बारतन স্মৃতির শেষ পাতার

৬ণ্ঠ মন্ত্ৰ ৭.০০

नाम : ১০.००

এপার বাংলা ওপার বাংলা

৩২শ মৃদুণ প্রকাশত হ'ল

মান্চিত্র ৭ - ৫০ চৌরঙগী ১৫ ০০ যোগ বিয়োগ গুণ ভাগ ৬.০০

সাথ্ক জনম ৬.০০ পারপারী ৩০০০

ননীয়াধৰ চৌধ্ৰেীৰ

बन्धः दल्

বিভূতিভূষণ মুখোপাধ্যায়ের

শেষ অধ্যায় প্রথম গরল

তাঞ্জাম

দাম : ১৬.০০

দাম : ৮.০০

দার : 8·৫0 ৬-৫০ 🛭 শ্রীসেন্থীতিকুমার চট্টোপাধ্যা

সাংশ্রুতিকী ইয় উপন্যাসের স্বরূপ

\$\$.00 न्दिकम्प्रकाल: कवि ও नागेकाद्व .

২·০০ ॥ ডঃ শিশিরকুমার চট্টেপাধ্যা n প**ুলিনবিহাী সেন সংপর্টেড্**ড ১৬.০০ ॥ ডঃ রপীদুনাথ বায়

৬.০০ ॥ বিশ্বনাথ চট্টোপাধাায়

ল্লেছাণ্টিক কবি ও কাষ। ভারাজেগতি ম্থোপাধ্যয়

निबादे छहे।हाटब्द्

শেষ কোথায় উইং কমা^ডার স্বাক্রাত

নতুন উপন্যাস ৪০৫০

৪থা মাদুণ ৬০০০

মস্কোথেকে দেখা তাব্নগর

माश : 50.00

স্চিত্র প্রথমকাহিনী। ৬-০০ -

বাক্-সাহিত৷ প্রাইভেট লিমিটেড,

৩৩, কলেজ রো, কলিকা**ভা**--১

সেকালের নগীতগুণী



(SR)

নিক্ক আসরে খেলন দেখা যায়। যিনি

য়, ভার দংশাংশ কিংবা পিছনে

ছানপ্রাং দক্ষেন সেই দ্রি

রীয় একটানা স্ব ছাড়চেন। নিখাও

সারে বাধা ভানপ্রা। একই সংগ্
প্রের গ্লেন ভোগো আর গানের
শীরবও হয়ে যায় একসংগা পানের

শাষ্য, নয় নিজেগাও দুটিতে

গ্রী। প্রক অসিডছ ভাদের মেই।

নিপ্রা দুটিতে কখনো আলাণা
গ্রেরাণ এলাণা থানেও না। জাভিগ

রী। আলাণা থানেও না। জাভিগ

রী। আলাণা থানেও না। জাভিগ

রী।

্ক তেমনি ড*গ্রাও। শিব ও ডি। দটে সভোদর। সবাই বলে⊸ শ্বপ্তি। কেউ আবার অসাব্ধানে ∄ করে--শিবা পশ্পতি। যেন আরট নাম। যেন জাড়ি ভানপরো। ্জনের সংগতিজীবন এক হয়ে মিলে আছে। ছেনেবেলা থেকে সংগতিচচা ীন একসংখ্যা বড় হ'য়ও তাই। জি**ও সচ**রাচর লোকে ত'াদের একই রম্বে। দুভাই জাতিতে গান গাইছেন ু৷ স্কার স্বাস্থাবান P[7]. 7 क्षा भीषांकारा विवन्ते श्लोतवर्ग त्ला। ল্লাথের ভার। কিন্ত দাধার্ম সংগ্রামী র। দরবারী পোশাকে অস্পর ্রান থাকেন। অধ্যে রেশমী নকস্বদার ীপরান। মাথায় জারদাব ৌপ। ব্লাই চোথে চশমা। একই ব্ৰুভে দ্ৰ⁹⁸ ক্ষম। স্বতন্ত অপিতম নেই। সংগীতের ৈথেকে ঘর সংসারে পর্যক্ত।

ছাসকে দক্তাই নানা ৰীতিৰ গান

মঃ ধ্ৰুপদ কিংবা ছোৱি ধামার:

কিংবা উম্পান কেবি সময় পেছে।

আসকে গান স্বরক্ষা না হলে

প্র ধ্ৰুপদ ছোৱি ধামার: কোন আসকে

কু আরু উম্পান স্ব গানই তোলের

কু আরু উম্পান একই ধ্বনের কঠে। এক

কু গায়নকীতি। একই চালের গান।

স্পান্ধীতির আসরকে স্বাই এমনি
ক্লেকে।

াহা যথাসংগতিত আসরে পশাপাও কীপা, সরেবাহার আরু সেতারবাদণ । বিশেষ সৈতার সাজান আহি কৈবি । জালারে পথাপতি একল সৈতারী। নি আরু লেটিতে শিসু থাকেন না। ইক্ষী নুদ শিষ্ যদিও জোন কোন ধংল হাত আছে। কিল্পু তা খনোয়াভাবে। সেতারও তিনি পিতার কাছেই শেংগন বালাবয়সে। তবে আসরে পশ্পতির সংগ্র বাজাতেন না।

ত্বিদের গানের আসরই বেশি ছত আব বেশি বিখাত ছিল। শিব পশ্পতির আসর বলতে সবাই জানত খানের যুগলবদদী গান।

শিবসেবক মিগ্র ও পৃশ্পতিসেবক মিগ্র। শিবসেবক কিব্ছু প্রায় তিন বছরের কনিক্ট। উচ্চারণের মাবধার জন্মেই ত'াই নামটি লোকের মাথে আগে এসে যেত।

পৃশাপতিসেবক ও শিবসেবক হতনন লচ্চ্যী ওপতাদেরই বংশ। তশ্ব জ্ঞাতিভাই তশ্বা। সেই বিখ্যাত প্রসম্পন্ন মনোহর গর্ণার পত্তই ধারা। মনোহরের পোট প্রস্থাতি প্রস্কৃতিসেবক ও শিবসেবক।

প্রসন্দর মনোহর ঘরাণার বৈশিটো। ভালাধ্যায়ে অথাং তাল লয়ে মালসমানা এবং একযোগে নানা রণীতর গান. যদ্রসংগীতের চর্চা। যেমন জহমী ও তাদের তেমান শিব পশ্পতিরও বহাম্থী প্রতিভা। তবে লছমীজীর তল। বড় গণী তারা দুভাই নন। শিলেপর মানে, ললিতকলার তুলনায় তশুদের দক্রেনের স্থান নিচে। লছমী ওস্তাদের মতন সংগীতরস শিব পশাপতির গানে ছিল না। মাধুয়া কিংবা রসস্থিত দিকে ত'াদের ঘাটাত। তবে তালাধায়ে অতি দুরসত তাবা। তাদের বিশেষ করে তাল লয়েরই সাধন। লরকারীর কটে কৌশ্ল নিয়েই শিব পশাপতি মন্ত থাকতেন। আসর মাৎ করবারও চেণ্টা করতেন মানার নানা স্কা আতিকক খেলাছা। অনেক সময় সেই তাল লয়ের লড়াই চালাতের সংগত-কারের সংগ্রা। ্ অনেক পাথোৱালী তবলচীকেই ভারা বিপাকে ফেলতেন। অনেক সংগতীয়ার হাসের পাত ছিলেন ত•ারা ।

পশাপতির সেতার বাজনাতেও গণেপনা ওইদিকে বেশি দেখা যেত। সংরেদ চেয়ে ছবদ লয়কারীই বেশি। ভার হাবে ছিল অবাবত দৈবী। তানের বৈচিত্রও অসাধারণ। ভার বাজনার ক্লাবতী নিপাগো বং অলগ্যেব দেখালেন। কিংছ সাুরের বল্লের রস্কৃতি হত না তেমন।

জ্বড়ির তানপর্রা

্রাল, লয়ের ক্রেদার দিকেই ভার আ্লাশ কোকি। এ বিধায় অম্ভুত ক্ষমতা দেখাতেন আসরে। আর দশতুরমত চমক স্থিটি করতেন।

জোগ্দের বলতেন 'ফরমাইয়ে, কৌন্ মাল্যে কৌন ছন্ত কি তান উঠায় গা।'

বাণ্ডাবক, ফ্রগ্রায়েস মত্ন ভঠাভেন্ড

তা। যে কোন মাল থেকে যে কোন ছলের তান তোড়া তুলভেন। অবাক করে দিজেন সকলকে। কারণ এ ভানকারি বছত ক্রিন। শাুধা পশাুগতির সেতারেই খেয়াল গানেও শিব প্ৰাণতি শ্জনই ওরকম কাজ করতেন। অতি স্ক**্র হিসাব** হিল ভাগের মালাজ্ঞানের। আধু মালা পৌনে একমারারও চলচের। দখল ছিল। মাতার ভাগাচর ক্রাক্তেন তশবা অবলীলায়। লয়কারির এইসর ভাগিম ছেলেবেলা থেকেই পেয়েছিলেন। আর হারস্ত করেছিললন ভেমনি। তাল লয়ের অতি জটিল প্রক্রিয়া তাদের কাছে জলবং ছিল। সংগতকারদের তট্টেথ করে রাখাডেন তাল লয়ে সিম্প শিব প্শাপতি। শিব-সেবকের যদি কখনো একা আসতে গান হত তখনো দেখা যেত ত'ার ধ্পেদ ও খেয়ালে অতি কঠিন ব'াট ও তানের কাজ। অলপ সংগতকাররাই হাত খালে তাদের সংখ্যা বাঞ্জাতে পারতেন।

ভাল লায়ের নানা কটেকাখের জানেই ভাদের নামডাক ছিল বৈশি। আর দ্ভেনেরই প্রতিভা বহুমখেন। এই ঘরাপার যা বৈশিশন আর লছ্মী ওশ্ভাব যার দুক্তাব্ত দেখিয়েছিলেন।

কলকাতার সংগতিখনতে জছ্মী ওস্তাদের সমকালেই ছিলেন গার পশুপতি। লছমীজী এখানে আগে থেকেই ছিলেন। তার বেখা কিছু বছর পরে আসেন এবা দ্ভাই। লছমী ওস্তাদের পরিগত বয়সেই এবাও কলকাতার নিজেদের আসন করে নিয়েছিলেন।

লছমীজীর অনেক ব্যোক্নিন্ট শিব
পদ্পতি। পদ্পতিসেবক তণ্ন চেরে
২১ বছরের এবং শিবসেবক ২৪ বছরের
ছোট। কিন্তু লছমী ওস্তাদের তুলনার
কৌনা দ্জেনেই অল্পায়, বলা যায়।
লছমীজী গত হন ৬৯।৭০ ব্যাস। আর
পদ্পতি ৫০ ও শিব ৪৯ বছর ব্রুমেন

লছমীজার মৃত্যুর ৩ বছরের মধ্যে তাদেরও জীবনাবদান ঘটে। সেজনো লছমীজার সংশাই তাদের হংগাত-জাবনের উদ্যাপন হয় করকাতায়। আর তার সমমানের না হলেও তারা দুজনেই বড় ওতাদ বলে মানা হতেন। লজমীজার মতনই তারা একাধারে কঠেও বংল কলাবং। নানা রীতির গানে সিদ্ধ গায়ক।

শ্বভ্যী ওহন্তার এবং শিব প্রমুক্তি ত একই ঘরাণাদার। আর সেই প্রসদ্ধ মনোহর ঘরাণার একটি নৈশিন্টা—বহু-বৈচিত্রা। নানা মাধ্যমে রাসসন্সাত্তির সাধন। একাধারে কঠে ও হন্তসন্সাতির চর্চা। শিব পশাপ্তির বিভিন্নমাণী প্রতিভাও শ্বভ্যা ওস্তাদের সংগে বংদের ব্যন্ত ঘরাণার দান। আপান বংশের ইন্দরার ধিকার। কারেক প্রক্ষের সেই বিদার ভিত্তি। সেই সময়েই ওপরেই তারা গড়ে

লছমীজীর সংগীতজ্ঞীবনের কথার তাঁর পিতামহ মনোহরের কিছত পরিচয় দেওয়া হয়েছে। মনোহরের পিতৃ পিতামহ ঠাকুরণয়াল, জগমন মিশ্র প্রভাতর জল্লেখন আছে। তাদের কথা নতুন করে বলবার প্রয়োজন নেই। এখানে মনোহরের মহাম জন্ম হরিপ্রসাদ বা প্রসাদ্র পরিচয় দিয়ে আরম্ভ করা হল শিব পদাপতির ধারা। কারশ প্রসাদর হলেন শিব পদাপতির পিতামহ।

প্রশন্ত মনোহর নাম দাটিও একছ উচ্চারিত হত। তাদের দ্রুনকে নিয়েই বরাণার নামকরণ হয়ে যার। তবে হার-প্রসাদের প্রতিভাছিল বৃহত্তর কমিন্ঠ হলেও প্রসন্ধ নামই সামনে। মনোহর ও প্রসদ্দ प्रकारने পিতার শিক্ষায় সংগতিজীবন আরুহ ত*াদের করেন। একই সংগ্ৰ স∵রপাত। **टम्यामात्र**ी জীবনেরও কিন্তু তখন থেকেই প্রসদ্দ প্রতিভার বী°তিতে সামনে এসে পড়েন। আসরে বরণীয় কলাকার। প্রসম্দর্র নামও মনোহরের আগে উচ্চারিত হড়ে থাকে।

প্রসদদ্র জন্ম হয় বারাণ্সীতে, ১৮০২ সালে। বালা থেকেট পিতার কাছে তার স্পাটিশিক্ষা আরম্ভ হয়ে বার। জ্যোক মনোহরের সপো শিখতেন তিনি। ভারপর প্রথম যৌকনেই দ্ভানে গায়ক হারে দেখা দিলেন।

আমন সময় সেই বিরটি জলসা হল পাতিরালা রাজো। পাজাবের এই রাজ দরবারে। কিল্পু তা শুধ্ সংগতি সম্মেলন নয়। এক প্রকাশ্ড প্রতিযোগিতা।

পাতিরালা দরবারে ৪০ দিন বাগনী সেই প্রতিযোগিতা চলে। তথনকার সব ঘরাণার নিমন্ত্রণ পাঠানো হয় তাগেও পাঠাবার জনো। বহা কলাবত পাতিরালায় উপন্থিত হন। আর দিনের পর দিন চলকে থাকে প্রতিযোগিতা। বিচরেকমান্ডলী প্রতিষ্টারের অন্টোনে বলাকারদের বিচার ক্রেন। ১০ দিনের শেবে স্বাক্ত হর্ম

প্ৰকাশিত হল

ভারতীয় সমাজ ও বিবাহ

म्राम्ब गान्यामी

ডিমাই ১/৮ : ২৪৪ পাতা ঃ বেড়ে বাঁধাই : ম্ল্ড : বারো **টাকা** বি**ষয়-প্**চী

পরিবার ঃ পরিবারের ভাংপর্য; দিন্ধারা নাঁতির সংক্ষোচ: পরিবার বিবাহ: পরিবারের বৈশিন্টা; বাধাত পরিবার: রক্ত সম্পর্কিত পরিবার দম্পতিম্কার পরিবার: ব্রুড় পরিবার; নারার পরিবার আধ্যনিক পরিবার।

বিবাহ ঃ বিবাহ পদ্ধতি; বিনিমর বিবাহ; বা পালটা ছব: বীয'শ্লকা; রাজঃ বিবাহ: আস্ত্র বিবাহ বা কনা।পণ প্রথা: লাসা বিবাহ; অন্প্রবেশ বিবাহ: কাঠী বলল মূলক বিবাহ: কুমানীব্যহ হতে পত্যী নিবাচন; গাদধর্ব বিবাহ: কাঠী বলল বহুবিবাহ: বিবাহ: বাথ বিবাহ: বাথ বিবাহ: আমা যৌনতা প্রকল্প; উত্তর্গাধকার স্তে বিধ্বা বিবাহ; দেশর বিবাহ দ্যালিকা বিবাহ: বাঞ্জি যৌন সম্পর্কের রুগীত; অন্তর্গিবাহ; সহোদরা বিবাহ: বাঞ্জিত যৌন সম্পর্কের রুগীত; অন্তর্গিবাহ; সহোদরা বিবাহ: বাঞ্জিত সম্পর্ক।

আত্মীয়তা ঃ আত্মীয় সদবংধ (জ্ঞাতি ও কুট্নেন); বংশ, কুল, পোন্ত আাগনেট ও কগনেট আত্মীয়; সগোন্ত ও সধিশভ; সগিশভ ও সকুলা; সপিশভী করণ; পিতৃধারা ও মাতৃধারা; শিতৃশা সন ও মাতৃদপ্রধানা; আত্মীর সদপকাঁয় আচার (অত্মিড় পিতৃসংখনের রীভি; পরিহার সদপকাঁ; পরিহার সদপকাঁ; কানের নাম শ্বার, পরিহয় রীভি; আত্মীয় বা জ্ঞাতি গণনারীতি ট্রাইব (কৌম); ক্লানের রাজ তিব্ত; ক্লান ও উটেমবাদ; ফ্লান্ট্র সংগঠন; ক্লান্ট্রিভাল; বিবাহরীভির বিবর্তন।

শ্রেণী ও বর্ণ ঃ বৈদিক সমাজেব দ্ভীগত; শ্রেণীর তাংপর্য; বর্ণ বিভাগ বর্ণপত মানা বিশ্বাস; সামাজিক দ্বত; বর্ণভেদ ও বিবাহরীতি; বর্ণ ৮ উপবর্ণ; বর্ণভেদের দোবগ্রে।

বৈদিক আর্য দের পরিবার প্রথা ও যৌন জীবন ঃ [(১) বাজিকার পরিবার; (২) বাজিকার গৃহ; (৩) স্ফাতি, সঙ্গাত বংশ; (৪) বিবাহ স্কে (৫) বিবাহের প্রকারভেদ; (৬) বম ও বমীর কাহিনী; (৭) প্রস্থাপতিং কাহিনী; (৮) অবৈধ বৌনভা ও গণিকাবতঃ; (১) দিরোল বিধি।

বিবাহবিচ্ছেদ ও প্নবিবাহরীতি ঃ [(১) প্রবের প্নবিকার (২) সপত্যীবতঃ (৩) ল্যীলোকের শ্নবিবাহঃ (৪) নিম্পত্ন: (৫) অভীন্তর (৬) ভর্ম; (৭) ল্যীধনঃ (৮) গ্রেম্থালীঃ (৯) জীবিকারতীদের ব্যাক্রা

আর্য পরিবারে পুরের স্থান ঃ [(১) পুরের প্রকারজেদ; (২) কৃষ্টিছ তনর প্রধা: (৩) পুরিকা প্রধা; (৪) নিয়োগ প্রধা; (৫) ক্ষেম্র ও বীক্ষাঃ

হোঁন সম্পাক সমাচার ঃ ৰোন সম্পাক্তর ক্ষত্তে মিৰেধ ্ব আনুমোদন: (২) প্রাক্তিববাহ যোন সম্পাক; (৩) বিবাহোত্তর বোন সম্পাক; (৩) আবেম যোন সম্পাক; (৫) পারিবারিক বেশাাব্তি; (৬) বিবাহবিহীন ব্যক্ত পরিবার: (৭) যোন সম্পার !]

শহরের পরিবেশে গণিকা প্রথার প্রসার ঃ ১) নাগরক বস্ত; (২) গাণকা বস্ত; (০) শহরে ভোগবাদ। (৪) মৃচ্ছকৃতিক্য নাট্টাপ্রতেশ সমার্থ চিন্ত; (৫) নগর জীবনের চিত্র; (৬) গণিক: গৃহ: (৭) কুটুনীমত্য কাবাপ্রতেশ বিকরালা মালতী সংবাদ: (৮) হারলতার উপাধান; (৯) গণিকা শারীর আলেখ; (১০) মঞ্জরীর আখান।

মুসলিম সমাকের বিবাহ ঃ [(১) আরবীর আচার ব্যবহার ও ইসলাফকত সংস্কার:(২) বিবাহে দেন মহর প্রথা: (৩) মৃত বিবাহ প্রথা: (৪) অম্সলমানের সহিত বিবাহ: (৫) চতুংসংখার সীমিত স্থাবিবাহ: (৬) ম্সলমান সমাজে ভাত্বিভাগ।) ইত্যাদি। অনানেয় আলোচনা।

> নিউ এজ পাবলিশার্স প্রাইভেট লিমিটেড ১২ বাংকা চ্যাটভৌ প্রাট, কলিবাভা ঃ ১২

্ট শারক বারাকসীর হতিপ্রসাদ মিশ্র। বৈ প্রথম ক্ষানে অধিকার করকোন। কিয়াবার মহাতাজার নানা ম্লাবন বিশ্বার পেকেন প্রসাদ্য।

সেই পাতিয়ালার দরবার থেকেই

স্বান্ধ্র নামভাক আরম্ভ গোতিয়ালা
রাজ্যার অনেক প্রেম্বারই দ্বে,
কান না। তিনি নাডা, কপ্রিথালা
বাক্ষার উলাদি দরবারেও আনিলাও
না সংগতিয়ালা
ভালাই ত'ব বহিচ্ছত দিবাকরেও বালা
ভালাই ত'ব বহিচ্ছত দিবাকরে
বাক্ষার স্থাতিয়ালা
ভালাই মাত্র মাত্র কলাবিব

স্বাধ্যার দিবা হুমাত্রানা ভালা দুই
কলাবিব

নাকি ভিলেন বিখাতে গায়ক আলিয়া
ভালাকে অন্যায়।

ক্ষাতিরাধা শরবার থেকে প্রসদ্ধে ও
শহর কাশীতে ফিরে একেন। বিশ্রাথ
কার কিছুদিন। তারপর প্রসদ্ধু আরে।
বিখ্যাত দরবারে গেলেন। যোগ দিলেন
বিক্রাকেশারী রগজিং সিংতের দরবারে।
বাবে কিছুদিন থাকবার পর নগপ্রে
কার। রইলোন ভেশ্সলের সংগীও
বারে। প্রত্যেক দরবার থেকেই প্রভৃত

ী তারপর উনিশু শতকের মাঝামাঝি **দাল আ**য়ান্তত হলেন নেপালে। এই র্ক্তিশার সংগো নোপাল দরবারের সেই প্রথম লাগাযোগ। আর সেই থেকে পার_্ষান্ত-ুম ত'দের নেপালে বাস আরম্ভ। ত'ার ৰু রামসহক, পৌত প্**শ**ুপ্তি স্কলেই 🐎 এক সমধ্যে নেপালের দরবারি শিংপী বৈক্ষা ভার সচেনা করেন প্রসম্পা। শৈলে মহারাজার দরবার এবং প্রধান-্ছী রাণার দরবার—এই দুই সংগীত ভার সংক্রেই প্রস্থান যুক্ত ছিলেন। তিনিই থকা কাশী থেকে নেপালের দরবারে যোগ ং**ইলেন। আ**ৰু মনেত্ৰ একোন কণাকাতায়। নাহরবংশের সংশা কলকাভারও সেই <mark>ধন সম্পর্কা। ভা_{বি} পরি ভার পরে</mark> অকুমার ও শেষে লভুমীপুসাদ সেই সক্ষ আরো নিবিড করেছিলেন।

প্রসম্পূর্ব অনেজ সঙ্গ থাকেল নেপাল কলা। তার সংগতিকীবনের অধিকাংশই শানে কেটে বায়। মহারাজা মাত্রর বিং



পাপা এবং প্রধানমতী সার জালা বাহাবরে রাণা দ্বজনেই ছিলেন প্রস্থার পাকিপোরক।

প্রসন্দ্রে থেকেই এই ধারায় নানা রীতির গানের চর্চা আরম্ভ। তিনি ছিলেন রাপ্রদান থেয়াল ও ছোর গানের সাম্পন্ধ কলাবত। উপাও তিনি এ বংশে শানে করেন বাদ জানা ধারা। বিখ্যাত উপাপানাই হানদনের থর ছিল এই বংশের উপপা গানের উৎস। অমানভাবে প্রসন্দান কোন করেন নি তিনি। তার কাঠাপনের চুচা করেন নি তিনি। তার করেলীয় পাত রাম্যাসবক বংশে মান্ত্র বারা পাত্রন করেছিলেন। তার স্থানা করের বারা পাত্রন করেছিলেন। তার স্থানা তার বার্মাসবক বংশে মান্ত্র বারা পাত্রন করেছিলেন। তার স্থানা পাত্রন করেছিলেন। তার বার্মাসবক বংশে মান্ত্রনার বার্মা নায়। একই সাংশা ভালের বার্মাসবক মিশ্রা।

১৮৬৮ সালে প্রসন্ধুর মৃত্যু হয়েছিল।
ত'বি দুইে পুত্র। শিবসহায় ও রামসেবক।
জোণ্ঠ শিবসহায় ছিলেন কৃতী গায়ক।
প্রপদ থেয়াল টিপা ইত্যাদি রীতির গান
বংশের ধারায় চিটা করতেন। তার মধ্যে
তিন। কলকাতায় অনেক বছর শিব
সভায় বাস করেছিলেন। ত'ার যোগা
শিষাও হয় এই শহরে। বাংলার দুই
প্রসিদ্ধ টপা গায়ক মহেশাচন্দ্র মুখোপ্রসাদ্ধ বন্ধান্তিক।
শিবসহায়ের দুজন শ্রেস্ট শিষ্যা। অবশা
মতেশা ও মধ্যস্থান বন্ধোপ্রাধায়ে হলেন
শিবসহায়ের দুজন শ্রেস্ট শিষ্যা। অবশা
মতেশা ওক্ষান এবং মধ্যাদন বন্ধোপ্রাধায়ে
লাজনেই লচ্মান্তির পিত্র রামকুমারের
কাজে কিল্পিন শিশ্বছিলেন।

শিবসহারের প্রে নারারাধদাস কিন্তু হন সেতাধবাদক। তিনিও কলক তার ছিলেন। তিনি সেতার শেখেন বেধিহ : রামসেবকের কাছে। শিবসং ! রের ধারার কথা অকপ কিছা জানা হার।

প্রসন্দরে নাম রেখেছিলেন তার কনিষ্ঠ পত্র রামসেবক। তার জণ্ম ১৮৪৫ সালো। বালকোল থেকেই ভ^{*}ার নেপালে বাস। আর পিতার কাছে সংগতিশিকাও সেখানেই পেয়েছিলেন। প্রসন্দ**রে প্রা**র যাবতীয় বিদ্যালাভ করেন রা**মসেবক**। ধ্রপদ ধামার খেরাল ট॰পা সব রীতির গানই তিনি পিতার কাছে শিথেছিলেন। পিতার মতার পর রামসেবকও চন নেপাল মহারাজার দরবারী গায়ক। তারপার থেকে আরম্ভ হয় তীর যন্তস্পাতির পর্ব': বিশেষ সূরের ফল। তিনি যখন নেপাল দরবারে, তখন ক'জন দিকপাল কলাবং-ও সেখানে ছিলেন দরবারী শিক্ষাী হয়ে। তাদের একজন হলেন স্বনামধনা বড়ক মিঞা। তানসেনের প্রবংশের স্রশৃৎসার-ষদ্যী। নেপালে বড়কু মিঞার কাছেই বামসেবক বন্দ্রসংগীতের শিক্ষা পেয়ে-ছিলেন। 'তুনি যে পরে সেতার সরবাহার-বাদকও চ'লছিলেন তা বড়কু মিঞার কাছে সেই তদ্রবিদ্যা লাভের ফল। ভাষ্টা বামসেবক ভবলাচচাও ভালভাবে করেছিলেন। ভবলাবাদনের **শিক্ষা ভিনি** পেয়েছিলেন ত'ার ভবলা-বিন্দ্ মাতুল

namen timente angenagiage afanga memerit time ta salam tidakan a salambahan kalambahan kalambahan kalambahan k

প্রভাগ মিপ্রের কাছে। তবলা বিবরে ছিন্দীতে একটি গ্রন্থও লেখেন রামসেবক। তবলা প্রকাশ ঔর তবলা বিজ্ঞান।

নেপালের রাজদরবারে তার বিশেষ
মর্যাদার স্থান ছিল। দরবারে তিনি ছিলেন
সংগীত বিভাগের প্রধান সচিব এবং
অবৈতানক দেভাষী। নেপালে বার হাইস্কুলের প্রতিংগায়ও তিনি প্রধান উদ্যোগী
ছিলেন।

এমনি নানা গাণে সংগীতবিশারন ছিলেন রামনেবক মিশ্র। নেপাল মহারাজা পথেনী বাঁর বিজ্ঞম সিং অতি সম্মান করতেন তাাকে। কাঠমণ্ডর হিটি প্রাসাদে তিনি একটি সংগীতবিদ্যালয় প্রাপন করে-ছিলেন। তার কাবাধ্যক্ষ করেন রাম-সেবককে।

সেকালের কলাবতদের মধ্যে তিনি বিদাবে চর্চাও বেশ করেছিলেন। তিনি এফ এ পরীক্ষার উত্তীর্ণ হন কাশীর কুইনস কলেজ থেকে। তাছাড়া একদিকে সংস্কৃত, হিন্দী কন্যদিকে ফার্মাস আরবী উদ্যু আবার ব্যংশা ভাষারও চর্চা তিনি করতেন।

স্বর্জিপির সাহাযো শিক্ষা প্রচলনের চেট্টাও একসময়ে করেছিলেন রামসেবক।

শেষজনীবনে তিনি আর নেপালে থাকেননি। সেখানকার প্রচন্ড শতি সহা হত না তার বৃংধ বয়সে। রামসেবক তখন ব্যাদেশ ফিরে আসেন। তারপর থেকে বেরি ভাগ জিলেন ত'দের পূর্ব নিবাস বারাণদীতে। তার মধে। কয়েক বছর তিনি বাস করেন কলাকাহায়। এখানে শোরীদ্রন্থান স্করেলন সংগতিবি নলায়ে শিক্ষকতাও করেছিলেন। দে-সমাশ তীর তবলাতার কর্মধান প্রকাশ হয় কলকাতা থেকেন। একেবারে অনি প্রকাশ হয় কলকাতা থেকেন। একেবারে অনি প্রবির্ষ্ণ ক্রাধীতে।

ত'ার দুই প্রে। পশুপতিসেবক ও
শিবসেবক। দুজনেরই জন্ম নেপালে।
রামসেবক তখন দুরবারী শিক্পী হরে
সেধানে বাস করছেন। দুজনেরই সংগাতিশিক্ষা প্রধানত হয় পিতার কাছে। আর
নিতারত বালাকাল থেকে। ত'াদের মধ্যে
ভার কাছে পশাপতি শেখন বেশি।

পশ্বপতিসেবকের জন্ম ১৮৮১ সালে: অংশ বয়সেই পিতার শিক্ষা তিনি পেতে থাকেন কন্ঠসংগতি। পন্ধতিগত কন্ঠ-সাধনার সভ্যে নানা রীতির গান। ধ্রেপ হোরি থেরাল টম্পা—সবই পশ্পতিকে **শেখাতে माग्रामन রামসেবক। একাদিরুমে** করেক বছর। দিন-রাতের অধিকাংশ সমরে সাধন। তার ফলে প্রথম যৌবনে সাুদক গায়ক হন পশ্পতি। তারপর পিতার কাছেই তীর ফলসংগীতের শিক্ষা অবুরুভ হয়। সেতার ও সরবাহারও তেমনি অক্লানত পরিপ্রামে শিখতে থাকেন। পদ্ম-পতি পিতার মৃত্যুর পরে বংশের অভিনিক শিক্ষাও পান মহক্ষদ হলেদের কক্ষ। বাস বেরিলির বীণ্কার মহন্দে হাসেন: জার কাছে পশ্পতি বীণাবাদন শেখেন।

on the first service and an extra

বীপা তিনি বিশেষ বাজাতেন না পরে। কিন্তু বীপার এই তালিম ত'ার স্ববাহার ও সেতার বাদনে প্রয়োগ করেছিলেন। বিশেষ আলাপাটারি অংশে।

প্রথম জীবনে পশাপতি সংগতিশিক্ষার সংগা বিদ্যাচচাও করতেন। নেপাল
বীর হাই শক্লা থেকে উত্তীর্ণ হয়েছিলেন
এক্টান্স পরীক্ষা। তারপর অবশা কলেজে
আর পাঠ করতেন না। সংগতিত আগানি
মেমন্দ হন একান্ডভাবে। পেশাদার
নাক্ষেক প্রবাদন জনো পিতার শিক্ষার
নিক্ষেক প্রশুত করতে থাকেন। বহুন্থী
সংগতিসাধনাই হয় তার জীবনের ক্ষা

পিতার মতন পশ:পতি দরবারে দীঘাকাল নিয়ত থাকেননি। রাম-সেবকের মৃত্যুর কিছুকাল পরে তিনি বিদায় নেন নেপাল থেকে। তারপর উত্তর ভারতের ন্না দরবারে তিনি যোগ দিতেন। একাধারে গায়ক ও বাদক বাসই সন্মাম হর তার। বিশেষ করে তিনি সেতার ও সূরবাহার বাদক হিসেবে অতি প্রাসন্ধ হয়েছিলেন। বেমন তৈরি হাত, তেমনি ভানের বৈচিতা। বাজনায় অতি দক্ষতায নানা অল•কার দেখাতেন। আর সেই मसकातित प्रान्तियाना। ছत्मत कविन छ চমকপ্রদ কাজ পর। যে-কোন মাতা থেকে বে-কোন ছদের তান তোড়া ওঠানো। প্রথম জীবন থেকেই ভাল-লয়ের এমনি কার্কমে পশ্পতি অসের মাৎ করতেন। আর নানা দরবারে বিখাত হতে থাকেণ লপ্লকারির গ্রেণ। এস্ব নৈপ্রণা যেমন সেতারে দেখাতেন তেমনি পানেও। করেকটি দরবার থেকে "বর্ণপদক করেন গ্রপনার জন্য। প্রথম জীবনের বিভিন্ন সমরে তিনি দরবারী শিংপী হরে সংগতিচর্চা করেছিলেন। তারপর আসেন কলকাতার।

কলকাতার সংশে সংখ্র ভার পিডার সমর থেকে। রামসেবক এখানে শোরীন্দ্র-সংগীতবিদ্যালয়ের মেহ নের ছিলেন। ত'ার 'তবলা প্রকাশ' গুল্থ^{টি}ও প্রকাশিত হয় কলক_'ড়া থেকে। তথন থেকেই কলকাভায় ত'দের বংশের কণা সংগতিসমাজের জানা। রামসেবকের জোওঁ পত্র শিবসহায়ও অনেক দিন কলকাতায় স্পাতিসমাজে বাস করেছিলেন। শিব-সহায়ের প্রধান শিবারাও বাঙালী। তাছাড়া তাদের জাতিদের ধারা ড এ-শহরে আরো অনেক পরিচিত। রামসেবকেরও অনেক আলে আনেন তার জ্যোঠতাত মনোহর মিশ্র। তারপর মনোহরের পরে রামকুমার কলকাভার রামকুমারের অনেক বাজ্গালী শি**ষ্য হলেছিলেন।** রাম**ভ্**যারের বিখ্যাত পত্ত সভয়ী ওস্তাদ প্রস্পতির আগে রয়েছেন আচাদেরী বেবেই এশান नन्यात्म ।

এমনিভাবে অনেকদিন আগে থেকে অনেক স্চে মিল্ল বংশের সংগ্য কলক।তার বোস। তাই পেলাদার জীবনের পরিণতিতে শ্রেপতি কার্যভাৱে থেকা। আর স্থারী ভাবেই রয়ে গেলেন বাংলার স্পাতিজগতে। কনিষ্ঠ শিবসেবকও তার স্পেল কলকাতার এসেছিলেন। এখানে প্রথম থেকেই অপ্যাপ্যা তার্নের স্পাতিক্রীবন। তথন থেকেই একসপো শোনা বার্ন শিব প্রশাস্তি—এই দুটি নাম।

শিবসেবক পণ্যপৃতির চেয়ে তিন বছরের ছোট। তারও জন্ম নেপালে, ১৮৮৪ সালো। প্রায় শিশুকাল থেকেই শিব পিতার কাছে শিখতে আরুভ করে-ছিলেন। বংশের ধারায় বিধিবশ্ধ তালিম। কিন্তু পশ্পতির মতন করে শিবনে শেখামনি রামসেবক। প্রশাস্তি প্রথমে বছরের পর বছর ক্রন্তসংগীতে শিক্ষা পেয়েছিলেন। তারপর শেখেন যদাসপাত। শিবসেবককে কিন্তু একট সংগ্ৰেক্ট ও বদ্যসংগতি শেখানো আরুড চয়। এক-যোগে নাদ তব্ত ও বাদ্য। রামসেবক দেখতেন, শিবের প্রভাবে আছে চিক্তা আর অভিনিবেশ। অলপ বয়স থেকেই অসাধারণ মোধা। তাই ভালভাবে ত[ু]নর শিক্ষার বাবস্থা করলেন। প্রাপদ খের ह হোরি টপ্পা সব রীতির গান শেখাতে লাগলেন। আর সেই সংশ্রে সেতারও।

শিবসেবকের প্রথম জীবন নেপালেই কেটে যার: তিনি ছিলেন সংগীতশিক্ষায় অকারত পরিশ্রমী। দৈনিক ১৪ ঘণ্টা তশর সাধনা চলত। আর তাও সেই বালক বয়স থেকেই। তখন ত'াকে দেখে মহাপ্রশংসা করতেন প্রধানমধ্যী বার সমলের জ্ঞা। বলভেন 'এ বালক দিশ্বিজরী হবে স্থাতি ৮

শিবসেবকের কঠোর প্রমা দেখে নেপাস
দরবার থেকে আদ্যাদা এক ব্যবস্থা হরেছিল। তার স্বাস্থারক্ষার জন্য আর্টাট
দশ্ধবতী গাড়ী দেওয়া হর রামসেবককে।
বালক বরস থেকেই শিবের পান শ্রের
রাজ্যও স্থাটিত করতেন। অবসরহালে
প্রায়ই শ্রুতে বেতেন স্কুড্ট কিশোরের
গান।

এমনি সমাদরের পরিবেশে শিবসেবক নেপালে বড় হতে থাকেন। সলগীত শ্বিতীয় সন্তা হরে ওঠে ত্রুর জীবনে। দেখা বায়, সলগীতের অতি কঠিন শিক্ষার্ড ডিনি সঠিক ধারণ করতে পারেম। তার্ক লরের ক্টে কৌশলও আরক করতে থাকেন শুলভি ক্ষমভার।

রামসেবক তার উত্তর শিকার বানাকার্
করে দেন,। ৫ বছর বরসে শিবসেবক পেটের
লারন্ড করেন পিতার তারিয়া। আরা ২৬
বছর বরস প্যকিত তা পেটেরিলেন।
তারপারই কিন্তু পিতাকে হারান শিকাপারের শোষ দিক থেকেই রামাসেবকের ক্রান্থাভেগ হয়েছিল। তা সত্তেও
তিনি স্বান্থাভাগ ব্যাহিল। তা সত্তেও
শিকাকা নান্থাকার গানের সাংগ ভ্রালা
ও সেতারের শিকাও দিরেছিলেন। ত্রে

সংস্কৃতি প্রস্থমাল্য

বাঙলার সামাজিক ইতিহাসের **ভ্রিমকা**

শ্রীসতীল্যমোহন চটোপাধারে। বাঙলার হাজার **বছারর সহাজ-জীবান্ত** বিবতানির ইতিহাস প্রতি শতক ধরে অধলোচিত। তথাসমুখ্য **অথচ সহজাশারী** করেকটি বিরলু মানচিত্র |টাঃ ১৫ ০০।

কালিকট থেকে পলাশী

শ্রীসতীস্থামাহন চটোপাধার। পাশ্যাত। জ্ঞাতিগ্রাজির প্রাচ্য অভিযান কাহিনী ১০টি বিবল মানচিত। টিছ ৬-৫০।

বাঙ্গালার কীর্তনি ও কীর্তনীয়া

লাহিতাবত্ব শ্রীহরেকুক মুখোগাধারে। কাঁডানের তত্ত্ব, বিবতান ও বিশিশ্র কাঁডানীরাদের জাঁবনকথা। করেকটি ছবি। টিছ ১০০০)

বণকুড়ার মন্দির

প্রীআমিরকুমর কন্দোণোধায়। বাকুড়ার তথা বাঙ্কার মান্দরগ্রির স্থাপতটেশলী ও ইতিহাস। ৬০ আর্ট'নেলট। (১৫·০০)

উদ্বাস্ত্র

প্রীহিবসময় বন্দেশাপাধায়। স্বাধানতা পরবত্তী উস্বাস্তু সমস্যা ও সমাধান-প্রচেষ্টা । বাঙ্কায় একমান্ত বই। [টিঃ ১০-০০]

সাহিত্য সংসদ

৩**২এ, আচার্য প্রকার**ক্ত রোড। কলিকাডা—৯

শিবসেবকের বন্ধসংগীতের চেরে গানেই প্রবশতা ও চচা ছিল বেশি। রামসেবক তাকে বহা অপ্রচালত রাগও দেন বং দ্যাতি ছিল অন্তঃ। এই সক্তয় তাকে (এবং সন্পাতিকেও) পরের গায়ক-জীবনে ক্ষোতি বিদ্যালিক।

ীআর শুধ্ব এই ২১ বছরের শিক্ষা ন্ত্র পিতার মৃত্যুর পর তিনি স্থাপ্র ক্ষাছত শিংখছিলেন। পশ্পতি একাধারে ৰূপের শিক্ষক এবং সংগতিচনার সহ-কোষী। মরে এবং আসরে শিবসেরকের বালাকালে জতুলিন পদপ্তির সংগাই চচ': জনতেম। পিতার নিদেশে দুই সহোদ্রের ছক্ত একর সাধনা। তারপর শিকা সময় ছোরেট পশাপতির সংগ্রে আরুদ্র হল অনিক্র সহায়াগতা। প্রস্পর্নিভবে এক বিচিত্র সংগতিক্ষাবন পড়ে উঠল। ভাবের স্থাদান-প্রদানে, সহ অন্ভব ও সমু শিল্প-ভাবনার গড়া ত্রীদের মিলিভ সংগীত জ্ঞানিন। সেই য**ুগ্ম পরিচয়েট ত**ার। সংগীতসমাজে প্রিচিত ও প্রসিদ্ধ তন : আছের মৃতা প্র*'হড়* তা ভিল অটুট আয়েলিন।

্ কলকাতাকেও সের সন্মিলির সংগতি জীবন নিয়ই শিব পশ্পতি এসেছিলেন। এখানকার গোড়োরা পথম থেকেই দেখে ছিল জাড়ির তানপার।

কলকাতার আগে শিবসেবকের আর একটি কথা আছে। ত্রীর শিক্ষাজীবনের আর একটি প্রসংগা। পশুপতির কাতে শিক্ষা হাড়াও ত্রীর আর একটি ভোগিম। শিবেরও বংশের অভিনিত্ত শিক্ষার কথা জান বায় পশুপতির মতন।

বেরেলির বিখাতি গায়ুক ছিলেন এনায়েং হোসেন খা। তিনি একদিকে সোহালিষরের খেয়াল-গ্ণী হুম্নু জাম তা। অন্তদিকে শা শোয়ান ঘরাবাদার। এনাছে: হোসেন বিশেষ উপ-খেয়াল রীতির জনো প্রাসিশ্ব জিলেন। এমন্কি উপ-বেয়াল গানের এক আদি প্রচারকও বলা হয় **জ'াকে। নেপাল** দরবারেও বৃহাুকাল নিয়াক **থা**কেন এনায়েৎ হোসেন। তথন থেকেই রামসেবক পরিবারের সংশ্রে জৌর পরিচয়। ভারপ_র ৭৫ বছর বছসে এনায়েং হোসেন নেপাল দরবার থেকে তাবসর নিয়ে **কাশীতে আ**সেন। দেড় বছর পরে ত্রার মৃত্যুও হয় কাশীকে। তিনি যখন নেপালে ছিলেন, সে-সময়েই ত'ার কাছে শিবসেবক শিংশছিলেন। তা হল রামসেবকের **মৃত্যু**র পরের কথা। এনায়েং হোসেনের কাছে **নেপালে বৈশ** কিছুদিন শেখেন শিব লেবক। পশার্পতিও বংশের অভিরিম্ভ শিক্ষা **পান যে বীণকার মহম্মদ হোসেনের কাছে তিনিও শা শো**য়ান ঘরাণাদার । এইভাবে একই শা শোরান থরাণার দক্ষেনের কাছে পশ্পতি ও শিব বংশের বাইরে তালিম ল্বেছিলেন।

শিতার মৃত্যুর পর পশ্পতি কিছা কিল মাকেন নেপাল দরবারে। কিণ্ডু শিব- সেবক এ-দরবারের নিষ্ট দিলপী হননি।
পেশাদার জীবনের প্রথম থেকেই তিনি
ভ্রমণ করেন নানা সংগীত-কেন্দ্র। বিভিন্ন
দরবারে আদরে গণেপনার পরিচয় দেন।
সে-স্বই তীর সামায়িক অবস্থান। অব
শেষে কলকাতার এসেই তিনি স্থারী হন।
তখন তাঁর পরিগত হোবনবাল।

পশ্বপতিরও তথম থেকেই এই শহরে বাস আরুভ।

্রতন্র জানা হায়, তাঁরা দুজনে কলকাতার সংগীতস্মাজে যোগ দেন ১৯১৮-১৯ সালো।

শিব পশুপতি। এই সংগীতনগরীতে তথন থেকে তাদের সংগীতজ্ঞীবন
আরম্ভ হল। আর আসরে আসরে তাদের
যুগালবহদী রুপ দেখা গেল। দুই সহো
নবে ঝংগাংগা সংগীতজ্ঞীবন। আবাস
থেকে আসরে। সবঁত তাদের একই সংগ্
দেখা যেই। লুভির ভানপুরা যেন হবে তান
প্রায় গ্লেগাবের চৈয়ে বহুগোল সম্পুধ।
কাবর ভানপ্রায় মাল চাকতি বাঁহা
প্রায় বিকংতর প্রেরাবৃত্তি। কিম্তু শিবপ্রাপ্তারিক বহু বিভিন্ন স্কার।
গ্রেগাত্তিবি বিভার স্কার।

তারা দ্রানে যখন এপেন, কলকাতা বালোর সংগীতঞ্গতে ভখানৌ ধ্রুপদের যথেত সমাদর। খেয়াল টপ-থেয়াল টম্পার চর্চা সাম্ধ পেয়েছে বটে। কিণ্ড সংগতিলসরে ধ্রপদের মহাাদ্য অনেক বেশি। ধ্রুপদ ভিন্ন কোন আসরের উপেবাধ হয় না। তারপরে পরিবেশন করা হ**ং** থেয়াল টপ-থেয়াল ইত্যাদি পান। উনিশ শতকের জের হিসেবে তথনো কলকাতাঃ নানা ধনী-গ্ৰেহ সংগীতসভা মুখর। সেখানেও ধ্রুপদের বেশি কদর। কোন নবাগত কলাবতের গাণ-প্রীক্ষা ধ্রপদের মাধামেই হয়ে থাকে। এখানে তথন ধ্রপদাচার্য রয়েছেন লছম ? ওপতাৰ (থেয়াল উপ্পা উপ-থেয়াল ইত্যাদির গায়ক হলেও) বিশ্বনাথ রাও বাধিকাপুসাদ গোস্বামী (থেয়াল অপোর গায়কও) প্রমথে। সদ্য বিগত হয়েছেন মহীন্তনাথ गुर्थाभागारा। शाभानाहन्य तरमगभागाह ভতনাপ বদেরাপাধ্যাস আমরনাথ ভটাচার্স, রামপ্রসম ও গোপেশ্বর বন্দোপাধাায় ললিতচন্দ্র মাথোপাধায়ে প্রভৃতি ধ্রুপদীরা আত্মপ্রকাশ করেছেন। এমন সময়ে প্রধানত গ্রুপদ গাহকর পেই এলেন শিব পশ্সতি নানা রীতির গানে গণী তীরা। একাধিক যদ্যসংগীতেও অভিজ্ঞ, বিশেষ পশ্পেতি। সংগীতসমাজে তব, বাংলার প্রশাস্ত্র প্রাপদীর্পেই দেখা দিলেন। প্রসম্পর মনোহর পরাশার প্রশদের বরেল-বন্দী গায়ক ভ্রাতৃত্বর বলেই ভালের জানলেন বাংলার গ্রোতারা।

এই ঘরশোরই লছমী ওতাদ তবন ররেছেন কলকাতার। বাংলার সপাতি-সমক্ষে একাম হরে আচকরের ক্ষানে বিরাজ করছেন। বাংগালী গ্রাণের সংক্র আত্মজন হয়েই মিলে গেছেন লছমীজী। কিন্তু তারিই এই দুই আ্যানিরের

কিন্তু তার্কীই এই দুই আ্থান্থির বিষর সে-কথা বলা যায় না। শিবপশ্-পতির কলকাতার সক্ষতিজ্ঞাবন আরুভ হল বিরোধের মধ্য দিয়ে। কারণ তাদের দুজনের মধ্যেই এক সংগ্রামী মনেভান ছিল। আর স্বংগতি বিষয়ে এক প্রকট আংখান্ডি-মান। ত'াদের অরাণ্য যে তালাধ্যান্তি অন্বিতীয় তাঁরা যে লয়কারিতে অপ্রতি-বিশ্বা গুলির যান সংগতি করবেন সম-যোগ্য হয়ে? ইত্যাদি মনোভাব শিব-শশুপভির ছিল তথ্য।

এখানে তাই তাঁদের প্রথম আসরেই সংঘর্ষ বেধে গেল।

সেবালের কলকাতায় সংগীত সমাজের
একটি পরিবেশ ছিল। অর্থাৎ সংগীত
বিষয়ে একটি সামাজিক বেবি । সংগীতসেবীদের মধ্যে পারস্পরিক সন্বাধ ভাবের
আদান প্রদান। নবাগতদের নিজেদের মধ্যে
নবণ করে নেওয়া ও গাণ বিচার করবায়
আগ্রহ। শিন-পশাপতি তখন প্রথম কলকাতায় এসেছেন। তারা এক বিখ্যাত
ঘরাণাধার এবং অবস্থান করবেন এখানকায়
সংগীতক্ষেরে। অভএব সেই সংগীতসমাজ
ভাদের বিষয়ে কৌত্তলা হল। আর
সেই সংগা জাশল দায়েগবোধ। নবাগত
এই কলানত ভালাদের গ্রেপনা ও বিষয়া
বত্তা কেমন? ভার পরিচয় নেওয়া
প্রয়োজন।

অরএব শিব পশ্পতির গা্ধ বিচারের জনো একটি অংশরের বংশ্থা হল। তীরা বিদার পরিচয় দিলে। কলকাতার গা্ধী ফানের সমালো। ার জনো ঠিকমন্ড বিচারক মাডলো হন ওত্তাদ বিশ্বনাথ রাও সংগতিযানীয় বজেন্দ্রকিশোর সায়চৌধারী প্রভৃতিশের নিয়ে। মিশ্র শ্রাতারা এ-বাবশ্থায় সম্মত হলেন।

কণে বিয়ালিস স্থীটের ভারত সংগীতসমাজে সেই জলসা সেদিন আরোজিত
হয়েছে। সম্প্রা উত্তীপ হয়ে গেছে। আসরে
প্রস্তুত হয়ে বসেছেন পশ্পতিসেবক ও
মাবসেবক। জ্বভিতে ত'ারা প্রসেপ গাইবেন।
ত'াদের পাশে আসন নিয়েছেন পাশেরাজী
সতীশচন্দ্র বাগচী। বিখাত স্রকার দেবক'ব বাগচীর ত্রাভুন্তে। তিনিই সংগত
করবেন।

বিশ্বনাথ রাও রজেক্ট্রিলার রার-চৌধুরী প্রম্থ বিচারকরাও উপন্থিত। বহু সংগীতজ্ঞ, সুধী রজেভন ভ্যোভাবের মধ্যে। সামনেই পাখোরাজ স্থী নজেভন নাথ মধোগাধ্যার, প্রতিসন্থ ভট্টচার্য প্রম্থ বসেভেন।

স্পাতিসমাজির বৃহৎ বৈঠকবান, সাম্প্রকার ব্যরালা স্থাই হেলে পরির-

The state of the s

এবার গান আরম্ভ করলেন শিব পদার্শত। জ্বডিতে তাদের আলাপচার মধ্যসাতি হল এবং নিবিবেটে।

কিন্দু চৌডালে গান আক্রম্ভ হতেই গোলহোগ বাধল। প্রথম আবতেরি পেত্রে পাহরার্মকে ধাঁ মারলেন সতীলচন্দ্র। আর্মান্ শিব পশাুশতি প্রতিবাদ করে উঠালন।

জ্যোতাদের দিকে চেরে, সতীশচন্দের উদ্দেশে তাঁরা বললেন, বাব্যুক্তীকা ধাঁ মোক্তাম সে শেখিছতা নেহি।'

স্তীশচণ্ট শাহত, নিবীহ স্বভাবের মানুষ। কিন্তু তব্ এ অপমান তিনি সচা কর্মেন না। মাতার হিসেব দেখিয়ে যুদ্ধি দিয়ে বললেন, আমার ধা ঠিক্ট পেণিভেচে।

গায়করা কিন্তু মানলেন না তাঁর কথা।

তখন 'ধা'-র পাঁর 'ধা' নিয়ে মৃত্যুগতর ক্লক্তে লাগল পাখোয়াজী ও গায়কদের মধ্যে।

স্থীশ্রচন্দ্র অসহায়ভাবে সিচারকদেও দিকে চাইলেন। কিন্তু তারা কোন মভানত দিলেন না তথান।

ক্রমে শিলপীদের মধ্যে তকাতকি পেকে বিবাদ আর্লত হয়ে গেল। গান ত বংবই হয়েছে। এবার অনেক গ্রোতাই এ'দের কণ্যে দেখতে লাগলেন কৌত্হলী হয়ে। গার ভূল : কে সঠিক : কেন মতান্তর গ্টল ?

স্ত্রীশচ্চন কেবলই বিচারকটির দিকে ভাকান্তেন। কিল্পু ভারা নিজেদের এপো আলোচনা করছেন কোন মতামত মা দিয়ে।

ওণিকে বচসার স্বর ও স**ুর রু**মেই তী**র** হাচ্চ।

তথ্য নগেলন্ত্রাথ ও দ্লাভ্চণ্ড এগিরে এসে বগলেন, সেডাশিবাবরে সংগীত শালত জানুবাল্লীই হলেছে। বাংলায় এই রাজি প্রচলিত। এই প্রাঞ্জীর সংগ্র গাণীর শিক্ষাহার সিপ্তা, কালতাপ্রসাদ প্রভৃতি বড় বড় গ্লিবীন সেকে গেছেন। কবনো আগতি করেবান।

শিব পশুপতি প্রবস্থাবে জানালেন, ভোমরা নেশাল বরবার, কানী প্রভৃতি পশ্চিমের প্রথা ভানাসারে গাইছি। সম বিসম মত্তীত অনালাতের সব দেশ্বাস্থা। ইয়ে ঠেকা মে গণাদ্ হাায়।

সভীশচনদ্র প্রেরায় বিচারকদের দিকে চাইলেন রায়ের জনো। কিন্তু বিচারকমন্ত্রণী তথনো নিজেদের মধ্যে শ্রামণা করে চলেন্ত্র। ধনা রায় দিজেন না এই অভিযোগের বালোৱে।

প্রদিকে কলাছা ও ব্যোলয়ারা বিষয় বাড়াও লাগল। বিবাদ এবার সংক্রামিত ছল শিক্ষী-দের আসর থেকে গোড়াদের মধ্যাঃ

वीद्रिः भूनाथ সরকারের

নতুন ভ্ৰমণ উপন্যাস

গোরী গঙ্গা ৯ ০০

गौर्स कु सुर्थानाध्यारमञ्

ঘরের পথ ৬ ০০০ স্বখের আড়াল ৫ ৫০

भूनील गदभाभाधाद्यत

তোমার আমার ৪'০০

নীল লোহিতের চোখের সামনে ৫:০০

আশাপূর্ণা দেবীর

ভালবাসার মুখ ৫•০০ তরঙ্গহীন ৫•০০

সৈয়দ মুস্তাফা সিরাজের

এক বোন পার্ল ৬ • ০০ বনকরবী ৬ • ৫০

চিরঞ্জীব সেনের নতুন উপন্যাস

রাশিয়ানর, বিররহস্য ৭০০

শ্যামল গং গাপাদায়ের নতুন উপন্যাস

मत्रमा ७ नौलकाछ ७-००

নীহাররজন গাুণ্ড

अन्मीयन **४**। द्वाया**श**

মনজানেনা ৭•০০ একক প্রদর্শনী ৪•০০

অনিল রায়

জ্যোতিরিন্দ্র নন্দী

সোনার পাতায় রক্ত ৭ ০০ লাস্ট চ্যাপটার ৫ ৫০

সাহিত্য সংস্থা ১৮সি টেমার লেন, কলি-১

निर्देश प्रमान विज्ञानीत साम्राज्य हात स्था । भाम अन्यो श्रीचनाम पाम्रा हम

স্পাইতের স্থা ভাগ হরে পড়ল দুটি নিয়াশ দুলে। পড়াপয়ের জাবার প্রচন্তত। এমন গড়াল বে মোণিক থেকে ম্ভিবেলের পরিবেশ সুনিট কল

্তিকভু বিচারকর্মন্তলীর পরামধ্য গুখনো শেষ হচ্ছে না। হয়ত প্ট বিক্ষান দলকে সম্ভূত করবার উপযুক্ত মারু দিতে তাঁর। অসমধ্য।

এমন স্বর দুটি প্রচম্ড প্রতিপকের মান্দ্রখানে এসে দ্বাড়ালেন এক বিরাট দেতী বারি। মলবীর বাতীস্ত্রন্থ গ্রে। কিল্ড সে মারে কলকাভার অসপ লোকই তাঁকে জানে। পরিচয়—গোবরবাব্। कार सार करें তাকে জানেন মহাশাস্ত্রধর কুস্তিগীর বলে। এবিষয়ে দেশের গৌরব গোবরবাব্য। সেকালের বিশ্ববিখ্যাত বাঙালী পালোয়ান। সমাজের একজন মানাগণা বাঞ্ছি তিন। সেই আমেরিকায় লাইট হেভিওয়েট বিষয় প্রতি-ৰোগিতায় শীৰ্ষ স্থান অধিকার করেছেন। **উমিশ শতকের বিখ**টত নক্লবীর অদ্ব**ুগ্**তের ৰংশধর। মসজিদবাড়ি গুটীটের বনিয়াদী পুত্ পরিবারের সম্ভান গোবর্বাব; পারিবারিক পরিবেশে দলগতিজ্ঞ ছিলেন। কৌক্ষ খাঁ ও কর।মঙুল্ল। খাঁর শিক্ষায় সেতারচর্চাও করতেন জিলি। ৫২ বীজন স্থীটের ব্যাজিকে প্রোবর-বাব্র জাসর নানা প্ৰীর অন্কোনে প্রায়ই মাশ্র ১৩। তথ্যকার কলকাতার স্মাজের একজন মানাগণা ব্যক্তি তিন। সেই ছিলেবেই মলবীর সেদিন ভারত সংগীত नभारक धार्माकरलन।

এখন আসারের বিসদাশ অবস্থা দেবে এগিয়ে একোন দুটি বিরোধী নলের মাঝখানে। শরীরের কুলা বলিণ্ট গুরি ব্যক্তিকুত্ত।

স্বংশভাষী গোবরবার । সংক্রেপ জিজ্ঞাসা জরলেন—নৈবন্ধিকভাবেই— এটা গানের আসর না লড়াইয়ের আখড়া?

সভার কলরোল তখন একেবারে স্পুষ্ঠ হরে পেছে। কিম্ছু গোবরবানকে উত্তর দিতে শোনা গেল না কাউকে, সকলেরই স্বৃদ্ধি তার পাছাতবং অব্যাবের দিকে।

অলপক্ষণ গোবরবানু দাঁভিয়ে রইলো। জার তাঁর মাুখ চোখ থেকে সর্বাচেণ ফাুটে উঠল একটি অভাবিত প্রদম : কে কে লড়াই করতে ইচ্ছাক, এগিয়ে আসাুন।

না, না। গোবরবাব্র আকারপ্রকার নির্নিকণ করে আর কার্র সে সাধ নেই। বাঁরা হৈ চৈ করে আসারের দিকে বিক্রম প্রকাশ কর্মছলেন, স্বক্থানে ফিরে একোন শাহত কুলোধ বলেকদের মুখন।

বেল হালুদদেও নিল্ড শ সভা।

গোৰরবাব মৌন ভংগ করে শুধু বলবোন, 'এবার আমরা গান শুনব।'

জার কোন বডাল্ডর নেই। চৌডালে জাবার আক্রন্ড হল শিব পুল্মুগরির গান এবং মুডাল বাগচীর সংগত।

এবার বা ঠিক ঠিক রোকারে। পৌছতে লাগল। তার কোন আর্মন্ত বা প্রতিবাবে আনকা হাটি হল নাও স্থানিকর নিম্পান কোনোন বিচারক-নন্ডলী আর সেই সংলা স্থানীভাগ্রিয় শানিক-প্রিচ্চ প্রোভারাও।

শিষ পশ্পতির আরো একটি আসরেও
আশানিত বেধেছিল। তবে অতল্র নর ।
এবারে তাঁদের তাললারের ক্তিমুন্দের সামনে
দাঁড়ান দৃর্ধর পাখোয়াজী ব্লভিচন্দা।
পাখোয়ালের বোলে আর খা'নর প্ররোগ
তিনিই সে আসর বাঁচিরেছিলেন। (তার
বিবরণ 'সংগাঁতের আসরে' ২০০-২০০
শৃত্রায় দুণ্টবা।)

এমনি অপাতির মধ্যে দিব পদাুপতির সংগতিজ্ঞীনন কলকাতায় আরস্ভ হয়েছিল। অবে তা শান্ত হয়ে আন্তে কালরুমে।

কলকাতরে সংগীতসমাস্তে বাস করতে করতে বাঙালী গুণীনের সংগা মেলামেশার তাঁরা খনিষ্ঠ হতে পাকেন। আসরে আশরে যোগ দিয়ে এখানকার সংগীতসমাজের অংগীড়ত হয়ে যান শ্বাভাবিকভাবেই। বাঙালী গুণগুতি প্রতিপাসক লাভ করেন। বেশিপ ভাগ বাংগলীদের নিয়েই গড়ে ওঠে তাঁদের শিয়ান্যদেশী।

তারপর জীবনের শেষপর্যাত ভারা কল-কাতারই স্থায়ী বাসিন্দা ছিলেন। দুই সহো-দরের অটাট আত্মীয়ত। ছিল বরাবর। এক. সংশ্যেই বাস করতেন তারা উত্তর কলকাস্তার বজিপাড়া তাপ্রশে। কেবল কিছুদিন শোভা-বাজার বাজবাড়িছে পশ্রপতি নিয়াক হায়ে-ছলেন। অনেকসময় একই শিষাকে एन मृक्तारे। स्यान-मृशीम्प्रताथ प्रकृष-দার। আর পশ্পত্তি সেতার সারবাচার বদেক বলে আলাদা সেতারে শিক্ষা দিতেন। তাঁর শিষা সেতরবাদক বিজয়দাস পাক্য,ভ। স্ধীন্দুনাথ ও বিজয়দাস জিল জাদের অন্যান। শিষাদের নাম এখানে একর উল্লেখ করা হল-সতীশচন্দু দে, জলিত্যোচন দাস ড: স্থাময় বস্ অভয়পদ চটোপাধায়ে অনিলকুষ রায়, লক্ষ্মীকান্ত উপাধ্যায় পশ্-পতি রায়চৌধুরী কোপালচন্দু লাহিড়ী দুর্গণিচরণ বিশ্বাস সীতাংশুকাল্ড আচাষ্ চৌধুরী প্রভৃতি।

কলকাতায় শিব গশুপতির প্রতিষ্ঠা-লাভের জনো শোভাবাজার রাজবাডির রাধাকক নেব, সৌম্যোন্দ্রকৃষ্ণ দেব ধীরেন্দ্রকৃষ্ণ দেব अत्नक जान्कृता क्रतिहरनम। তারা *দুজনেই কলকান্তার সংগীতস্মাজ*ভূত্ত থাকেন জীবনের শেষ পর্যান্ত। এবং বংশান্-ক্রমে। পশ্পতি ছিলেন নিঃসংক্রান। কিংভ শিবসেবকের তিন পার রামকিষ্ণ, ভবানী-সেবৰ ও বিফাসেবৰও বাংলানিবাসী হয়ে যান। তাঁরা তিনজনেই বংশের যোগ্য উত্তর্গধকারী হয়েছিলেন। রামকিষণের শিক্ষা শিভার চেয়ে জ্যেওঁভাক পশ**্শতির কাছে**ই হর বেশি। ভাছাড়া, বাল্যকালে পিডামহ রাম-লেবকের ভালিমও ভিনি ক'বছর পেরেছিলেন। রামবিবণ ও ভবানীলেবক কলকাভার সংগীত-সনাকে সুপরিচিত গারক ছিলেন আম্ভুর। বনিষ্ঠ বি**ক**ৃসেবক পরিশ্ত ব**র**সে আজো ক্তমান আছেন।

পশ্পতি ও শিবসেবক ১১।১২ বছর ক্ষাকাভার ছিলেন। মির্রার্ড মানা আসরে বোগু দিয়ে বহু বাংগালী শিবা গঠন করে
বাংশার রাগসংগতি প্রচারে বছার্রক হরেছিলেন তারা। শিবনেবাবের শিবতার পূর্
প্রতিভাষান ভবানীসেবক অশার্ ছিলেন।
তার অপর দুই প্র রামাক্ষণ ও বিক্সেবকের হার্রাধ বাঙালী। এইভাবে দেড্লা
বছরের প্রচীন সেই প্রসম্প, মনোহর
বর্মদার উত্তরাধিকার রাংলার এসে বার।

এই ঘরের সহাকারির একটি নশ্বন ছিলা। এ ঘরাণার একজন যে গুলী খেয়ালগায়ক-রূপে প্রসিদ্ধ রামবিষণ মিশ্রসেই দশনেব ব্যাখ্যা করতেন এইভাবে—লয়ের জনোই সারের অস্তিত্ব থাকে।—সারে প্রাণ সঞ্চাধ করে--লয়। রাগ শাশ্ধ রেখে তার ভাবরসকে ফ্টিয়ে ভোলে। লয়ের স্ব কঠিন কা**জ** রাগের াস বিকশিত করবার অলপ্শার ভিন্ন কিছা নয়। লাখের পরতে কার কলে প্রোভারা বিরক্ত হবেন কেন? যদি তাঁদের বিরক্তি আসে তাহলে গায়কের অপট্রত সায়ী-লয়কার। নয়। একটি স্∶রে তানেকক্ষণ স্থিভ *চালে* একঘেরে ভাব আসে। সূরেকে প্রাণবংত করে ভার গতি, ভার বিক্ষেপ। মন্দ্র গতি, সুক্র গতি। কথনো একটি 🖣 র থেকে গ্রানের সুর্তি ট্রেড সপশ করে চলা। তাপতি মীড় দিয়ে शास्त्रक रमोन्पर्य (अपनिता। लग्नतक वाप फिरहा কিছে করা হার না।.....

সেই লয়কানীর কলাসাত ছিলেন শিব পশ্পতি। কল্কাতার সংগতিস্থাজে লয়ের এমন শ্লা কার্কমা তাঁরা দেখিয়ে গেছেন যা তাঁদের দেখাশত হয়ে আছে। অবশা তা-ই ভাঁদের একমার সাংগাঁতিক পাঁনচয় নয়। তাঁদের শুশ্ধ রংগরাপের সাধনায় রাগ-সংগাঁতের মানা বীতির চচায়ে পশ্ধতিগত শিক্ষালানে একনিটে সংগীতাস্বায় সক্ষধ করে যান বাংলার সংগীতাস্বায় তাঁলে দিন জীবিত ছিলেন সংগীতাস্বায় তাঁলেব ম্ভাতে একটি শ ার স্থিট হয়েছিল। কারণ ঠিক সমধ্যায় হ্নমি তাঁদের কোর উর্ব্লেস্থাসঃ।

তাঁরা প্রথম সখন এসেছিলেন দুজনেই বেশ স্বাস্থাবান ছিলেন। কিল্ডু দীর্ঘায়া, লাভ করেননি কেউই। গণ্ডাশও অতিক্রম করতে গারেননি। প্রথমে বিগত হলেন পশ্পতি।

সেই শোকে শিবসেকক বিহুল হয়ে
গড়ালোন। কমেই হারিয়ে ফোলালেন আসারে
আসারে যোগা দেবার সশ্হা। প্রিয় প্রাতা,
শিক্ষক, সংগীতের আজীবন সহযোগাী, বহুদিনের বহু অভিজ্ঞতার স্থেশ্যুখের একাছত
সংগীতির গোলান। এই মানস্তাপ আর সহা
করতে পারলেন না শিবসেবক। তভালায় ক্রমে
শ্রাশায়ী হলেন। আর দেও বছরের মানেই
তাম সব দ্যুখের অবনান ঘটে পেলা সেই
বু১।১ কালিপ্রসান দত্ত স্মীটের বাভিডে।

একটি ভামপরে ১৯০১ সালের শের দিকে সতম্প হয়েছিল। আর একটি নীরব হল ১৯০০ সালের শ্রুলা কেব্যুমারি।

- निनीभकुमात मृत्याभाषात्र



পারমাণবিক বিস্ফোরণ

ভারতের প্রথম পারমাণবিক বিস্ফোরণের এক মাস প্রশ ছওয়ার সংক্ষা সংগ্র ফ্রান্স ও চাঁন একই দিনে পারমাণবিক বোনা ফাটিয়েছে। ফ্রান্স ওরে বোনা ফাটিয়েছে দক্ষিণ প্রশানত মহাসাগরের মর্বেয়া ক্বাণে আর চাঁনা বোনা ফাটান হয়েছে সে দেশের পশিচ্মে লগে নর অন্তলে। ফরাসা বোনার বিস্ফোরণ ক্ষমতা আনুমানিক ২০ কিলোটন (২০ হাজার তন টি এন টির বিস্ফোরণ ক্ষমতা আনুমানিক ১ ফ্রেগটেন (দল লক্ষ্য টি এন টির বিস্ফোরণ ক্ষমতা সান্মানিক ১ ফ্রেগটেন (দল লক্ষ্য টি এন টির বিস্ফোরণ ক্ষমতার স্বান্মা গারমাণবিক বামা ফাটাবার প্রথম থবর পাওয়া গেছে অস্টেলয়ার প্রধানমন্ত্রী গাফ হুইটলার ও নিউজিলানেডর প্রধানমন্ত্রী নামান কানের্থির কান্তিলানেডর প্রধানমন্ত্রী পারমান কানের্থির কান্তিলানেতর প্রধানমন্ত্রী পাক্ষ হুইটলার প্রথম সংক্রের ধ্বা পড়েছে ভারতে পারমাণবিক ছাত্ত কমিশ্রের রাম্পানর

ফ্রান্স বা চীন কেউই ভারতের মত মাটির নিচে পারমাণবিক বিক্ষোরণ ঘটায় নি। ভারতের মত তারা কেউই প্রতিপ্রতি দেয় নি যে, তারা শাক্তিপ্র্প উদ্দেশ্য ছাড়া অন্য উদ্দেশ্য পারমাণবিক বিক্ষোরণের ক্ষমতা ব্যবহার করবে না। ফ্রান্স এবার নিয়ে নয়বার ও চনি এই নিয়ে ১৬ বার পারমাণবিক বোমা ফ্রাট্রল। অন্যানা বারের মত এবারও তাগি উভয়েই কয়্মনভলে বোমা ফ্রাট্রেছে এবং তার ফলে বাতাস দ্বৈত হবে বলে জাপান অপ্র্যালয়, নিউজিল্যান্ডি প্রভিত দেশ অবশ্য প্রতিবাদ জানিয়েছে। কিন্তু ভারতের পোথরান বিক্ষোরণে যে সব দেশ মহাসোরগোল তুলেছে ভাদের কেউ কেউ যে ফরাসী ও চনী বােমার্লিছের সম্পর্যাল স্কর্প্র ক্র্পা এগটে বসে আছে, সেটা ভালন না করে পারা যায় না।

সবচেয়ে লক্ষণীয় হল পাকিতানের আচরণ। বায়ামণ্ডলে ও খোলাশু খালিভাবেই স্মাধিক উদেশে। প্রণোদিত চীনা পারমাণিকি বোমা বিশেষারণ সম্পর্কে ইসলামাবাদ থোকে কোন রকম বির পা ফতবা শোনা যায় নি অথচ ভারত তার শানিতপূর্ণ উদ্দেশ্যের কথা বার বার ঘোষণা করা সত্তেও পাকিশ্চান পোগরানের বিশ্ফোরণ সম্পর্কে সারা প্রিবীতে জল খোলা করে চলেছেই। পাকিশ্চান এখনও ভারতের বির্শেষ প্রচার চালিয়ে যাচছে।

পাকিসতানের পররাণ্ট ও দেশয়ক্ষা দণ্ডরের রাণ্টমন্টী **অভিজ্ আত্তমেদ** সম্প্রতি জাওীয় পরিষদে বলেছেন, ভারত ও পাকিস্তানের মধো নতুন করে আলোচনা আরম্ভ করার আলো ভারতকে এই মমো শ্রেমু গাারাণ্টি দিতে হবে যে সে সাম্বিক উদ্দেশ্যে পারমাণ্যিক শক্তি বাবহার করবে না।

আহমেদ বলেছেন, ভারত শাণিতপূর্ণ উদেদশে প্রীক্ষাম্**লক পার্যাবিক** বিস্ফোরণ খটিয়েছে বলে যে দাবি করেছে পাকিস্তান সেই **দাবি সেনে নিজে** পারে না।

আজিজ আহমেদ সম্প্রতি মার্কিন যাত্তরাণ্টা ফ্রান্স, ব্রটেন ও ক্যানাভার গিয়ে ভারতের নামে নালিশ করে এলেছেন এবং ভারতের পারমাণবিক পরাক্তম থেকে পাকিস্তানকে রক্ষার বাবস্থা করার জন্য কাদনি গেয়ে এসেছেন।

একই উদ্দেশ্যা পাকিশ্তানের বৈদেশিক বিভাগের সেকেণারি **জাগা** শাহী পিকিংয়ে ঘুরে এসেছেন।

ভারতের পারমাণবিক বিস্ফোরণ সম্পর্কে ইতিমধ্যে বিদেশে বেসব প্রতিভিয়া হরেছে সেগলি থতিয়ে দেখার একটা স্যোগ সম্প্রতি পাওয়া গেছে। আমাদের বৈদেশিক দশ্তরের সংগা বৃত্ত পার্গামেণ্টের মন্দ্রণা কমিটিতে বিষয়টি

व्यात्नाह्ना इत्याद्ध। व्यात्नाह्नाय ক্ষিটির সদসারা এই বলে সন্তোষ 건주기의 कार्यक्रम বে. পার্মাণবিক শক্তিবগোর এক-द्याद्याग्राकोन्या व ठ१ টেটিয়া অধিকার ধর্ব হওয়ায় এশিয়া ও আফিকার দেশগুলি ও জোটনিবপেক দেশ-गर्नाम भूमि इरग्रदछ। কমিটির সদস্যরা সম্ভেত্তের সংপ্র এটাও লক্ষ্য করেছেন যে. প্রশিদ্ধমের অনেক দেশও ভারতের পার-মাণবিক বিশেষারণের বিরোধিতা করে নি धारा धारे । धक तकम स्मरना निरम्भण स्य ভারতকে তার নিজের কর্মসাচী অনুযায়ী প্রয়োগকৌশল আয়ত্ত করতে পাৰ্যাণ বিক क्रिक्ट इटन।

ব্টেন্ ভারতের পারমাণবিক বিচ্ছোরন্
ভাগতি করে নি। রাশিরার সংবাদপতে এই
বিচ্ছারণ সম্পর্কে ভারতের বকর সর্মাণ করে প্রথম প্রকাশ করা হয়েছে। এমনকি
রাফিন ব্ভরাতী ও চীনের প্রচিত্ররাও
প্রথমে বতটা বিবন্ধ হরেন। জ্ঞাপান
ভ ভারাভারে প্রতিক্রা যে এতটা তীর
হ্রেছে সেটা একট, বিসম্মকর। তবে এটা
কল্ম করার বিষর যে, ক্যানাভা এখন ভার
সার কতকটা নব্য কর্বছে।

সংবাদে প্রকাশ যে মত্তণা কমিটির ঐ সভায় দ্ভান প্রান্তন মত্ত্রী দীনেশ সিং ত ব্যালাম ভগ্ন বলোজন প্রোথবানের বিষ্ফোরণ সম্পত্তে ভারতের আমতা-আমতা করার বা জ্বাবদিহি করার প্রয়োজন নেই। সারা প্রিথবীকে বার বার বলা ভারত পার্মাণ্যিক শাস্ত্র হয়েছে যে. ম্যাল্ডিক্সবে বাবহার করতে চার। শাদিতপূর্ণ উদ্দেশ্যে পার-এই ধরনেত্র মাণবিক বিস্ফোরণের প্রয়োজনীয়তা সম্পকে দেশের মান্ধকে আগে থেকে সচেত্ৰ সরকার যে ব্যর্থ হয়েছেন, ত্যাপতে চাক श्रीप्रिश क শ্রী ভগৎ তার সমালোচনা করেছন।

প্রীহীরেন ম্থোপাধ্যার ও অন্যান্য করেকজন সদস্য শান্তিগণ্ণ উদেনশ্য পারমাধ্যক শন্তির ব্যবহার সীমিত রাখা সংশক্ষে স্কেকারী গোষণার বিশেষভাবে সংশক্তা প্রকাশ করেছেন বলৈ জানা গেছে।

রাজাসভার মনোনীত সদস্য ডঃ ভি
পি দস্ত নাকি পারমাণবিক অন্টের প্রসার
রোধ চুল্লির বিশেষ সমালোচনা করে সরকারকে এই বলে সভক করে দেন যে,
অন্যানা পারমাণবিক শান্তিধর দেশগালির
উপর প্রযোজ্য নয় এমন কোন নিষেধবিধি
যেন মেনে নেওয়া না সর।

ভারতের পাগয়াণবিক বিস্ফোরণ সম্পর্কে পাশ্চান্তা দেশগান্তির বির্পেতা যে বত্রটা করেছে সম্প্রতি তার একটি প্রমান পাওয়া গোছে পার্টিরস ভারতের সাহায়াকারী দেশগালির গোস্ঠীর সভায়। এই সভায় সাহায়াকারী দেশগালি ১৯৭৪—৭৫ সালে ভারতকে ১৩৫ কোটি ভলাব প্রোয ১৮৫ কোট টাকা) দেওয়ার প্রতিশ্রতি দিয়েছে। গত বছর তাদের প্রতিশতে সাহাযোর পরিমাণ ছিল ৯০ কোটি ডলার (७६५ क्यांवि টাকা)। যে সব দেশ ভারতের পার্মাণবিক বিশেষার্ণের বির্দেখ জোরালো প্রতিবাদ আদের মধ্যে জাপান ও কানাডা বাদে আর সকলেই গত বছরের তুলনায় এ-বছর ভারতকে বেশি সাহায্য দেওয়ার প্রতিপ্রতি দিয়েছে। যে সাইডেন ভারতের পার্মাণ্যিক বিস্ফোরণের বিরুদ্ধে কঠোর সমালোচন। করেছে সেই স্ইডেনও এবার প্রতিশ্রত সাহাযোর পরিমাণ গতবাবের তুলনাম দেড়গুল করতে দ্বীকৃত হয়েছে।

এই সভায় অবশা পারমাণবিক বিক্ষোন বণের জন্য ভারতের কৈফিয়ৎ তলব করা করেছিল। ভারতের প্রতিনিধি বলেছেন, এই বিক্ষোরণে ধে সামানা পরিমাণ অর্থা বায় হারতে তাকে ভারতের উলহান পরি-কল্পনার কোন ক্ষতিই হয় নি। পারমাণ-কিক শক্তি থাতে ভারত কোনদিনই তার মোট বাজেটের ১-৫ শতাংখার বেশি অরচ করেনি। তাভাড়া ভারত তার শাল্তির পথ থেকে একটাত বিদ্যাত হয় নি।

আমেরিকা যথন একদিকে ভারতের পারমাণবিক বিপেদারণের সমালোচনা করাছ এবং ভারতের বর্গিতপূর্ণ উদ্দেশ্যের ঘোষণা

কৰিতা সিংহের আলে ত্ন নশ্তিকারী দেশগ্রিল ১৯৭৪—৭৫ সালে
কৰিতা সিংহের আলে ত্ন নশ্তিকারী উপনাল
চারজন রাগী যুবতী ৫
বাস্ত্রের বাস্ত্র সাজা তনই ৪
বাজাগ্রের বাজা নেই ৪
কারনাথ বারের সাজা জাগানো এথ
রাজিগ্রের ভাল ভাল গলপ ৩
কাণভূষণ আচার্যের আলো্ডনস্থিকারী উপনাল
জ্যোর ভাল ভাল গলপ ৩
কাণভূষণ আচার্যের আলো্ডনস্থিকারী উপনাল
জ্যোৎসায় বাঘ্বন্দী (খলা ৫.
ধন্দা আর কতদ্রে কবিতা গ্রাথ) ৪
কার্যনাল গোধ রাচত শালা জাগানো গ্রাথ
মাকসবাদ্র শেষ রাচত শালা জাগানো গ্রাথ
মাকসবাদ্র শেষ রাচত শালা জাগানো গ্রাথ
মাকসবাদ্র শেষ রাচত শালা জাগানো গ্রাথ

পরিচয় গ্রেডর রহসেদ্পনাস রহস্যের ধোঁয়া 4.00 শক্তিপদ রাজগুলের वरन बना छरत 9.00 **শ্ৰণ** মূগয়া 8.00 যাদ্কর এ স সরকারের व्यानम् । भवी 4.00 হবিনারায়ণ চটোপাধ্যায়ের এই জীবন 4.00 দ্ভিট্হানের উপনাস মধ্ গন্ধে ভরা 8.00 শৈলেশ দে'র শপথ निवाम (२য় সং) ৫.০০ বহুর্পীর লৌকিকভার পরিবর্তে 9.00 এकिं ि भिभित्र विन्म् 6.00 নিশ্যচরের তিন তাসের খেলা 6.00 মরণমহল 6.00 ब्रङ्कका मक्ताय 6.00 স্শীলকুমার নাগের নতুন উপনাস লোপদী প্রেম 5.00

মেনে নিচ্ছে স্নাঞ্জ হচ্ছে না তথন জনাদিকে মার্কিন প্রেসিডেন্ট নিজেই তার সাম্প্রতিক মিশার সফরকালে সে দেশকে পার্যমাণ্ডিক জনালাদি ও পার্যমাণ্ডিক চুল্লি সর্বরাই করার অস্পাকার করে এসেছেন। প্রেসিডেন্ট লিকসনের এই সিম্মান্ডের নির্মান এতথ্যাত নেনোড, ফ্রাফক চারচ হার্মাট সাইমিংটন জনাকব জ্যাভিট্স প্রস্তৃতি সিনেটর সমালোচনা করেছেন। সিনেটর জ্যাভিট্স বলোছেন, পশ্চিম এশিয়ার বার্শ-জ্তিসে বলোছেন, পশ্চিম এশিয়ার বার্শ-জ্যাত্রি বলোছেন মার্কিন যুক্তরাজ্যের সঙ্কর্বাভার উচ্চিত।

কেন কোন সমালোচক বংশছেন, ভারত তার প্রথম পারমাণবিক বিস্ফোরল করার পর এত অলপ সমরের মধ্যেই মিশরকে পারমাণবিক জনালানি ও চুলি যোগাবার চুক্তি সারা প্রথিবীতে একটা মন্স্তাত্ত্বিক প্রতিক্রিয়ার স্থি করবে ও পারমাণবিক অস্ত্রের প্রথাবের পথ খোলা হয়ে খাবে।

এই সমালোচনার উত্তরে মার্কিণ প্রেসি-ডেন্টের সহকারী রোনাল্ড জিগলার ও চচ্চা মার্কিন পদ্দিকারীরা বোনাবার চেন্টা করছেন যে, এ ব্যাপারে ভারতের সংগ্র মিশরের কোন তুলনায় হয় না। কর্মণ চ্বানাবার ফিকিরে আহে আর মিশরের উদ্দেশ্য নাকি একেবারেই শ্রান্ডিপ্রেণ্ডা

নিন্দু মানিনি স্বাদারী মুখপার্টের বেই বিব্যাতির কালি শাকোতে মা শাকোতেই মিশরের প্ররাণ্ড মন্ত্রী ইস্মাইল ফার্ছার্ম বলেছেন, মিশর পার্মার্লাব্র অস্ত্র বানাবার ক্ষমতা রাখে এবং ইজরায়েন যদি পার্মান্-বিক অস্ত্র প্রশীক্ষা করে যেতে থাকে তাহলে মিশরও পার্মার্ণবিক অস্ত্র তৈরী করবে।

মিশ্র পারমাণ্ডিক অপ্রের প্রসার রোধ
কালত চুক্তিতে স্বাক্ষর দিলেও আন্ত্রজানিবভাবে এই চুক্তি অনুমোদন করেন।
এই কথা জানিয়ে প্রবাণ্ট্র মন্ত্রী কাহামি
বল্লেছন ইজরায়েল পারমাণ্ডিক অপ্রের
প্রসার রোধ সংগ্রান্ত চুক্তি স্বাক্ষর
ও অনুমোদন না করা প্রবাণ্ড
মিশ্রম্ভ এই চুক্তি আনুষ্ঠানিকভাবে অন্তর্ন
মাদন করবে না।

বাংলাদেশে রাণ্ট্রপতি গিরি

ভারতের রাণ্টপাত ভি ভি গিরি পাঁচদিনের জন্ম বাংলাদেশ সফর করে এসেছেন। বাংলাদেশের মাঞ্জির পর ভারতীয় রাণ্ডপ্রধান এই প্রথম সেদেশে সরকারী সফর করতে গোলেন।

নীথিবিকে এই উপন্তেম বাংলাদেশে বিপুল সম্বৰ্ধানা জানান হয়। ঢাকাই সংবাদপ্ৰগালিতে বিশেষ প্ৰবৃধ্যাদি প্ৰকাশ কৰে তাকৈ স্বালত জানান হয়েছিল। নীথিবি ঢাকায় বাংলাদেশের রাণ্টপতি মহম্মান প্রবাণ্ট্রমন্ত্রী ডঃ কামাল হোসেন ইত্যাদির সংশা কথা বলা ছাড়াও, সেংকাশের জাতবিয় সংসদ্ধে বৃদ্ধতা দিয়েছেন

এবং কাপতাইয়ে গিন্ধে সে-দেশের নর্নান্তির রাম প্রাকৃতিক দশ্য দেখে এসেছেন।

এই সফরে শ্রীগিরির সংশ্য ভিন্যান্যদেব মধ্যে তাঁর স্থা শ্রীমত্তী সরস্বতাী গিরি ও ভারতের প্রবাদ্ধী দশ্তরের রাশ্রীমন্ত্রী সংবেদ্যালি সিং ছিলেন।

ব্যাংলাদেশ জাতীয় সংসদের একটা বিশেষ অধিবেশনে বজুতা করতে বিশেষ বাধিবেশনে বজুতা করতে বিশ্বে রাণ্ট্রপতি বিশি করেছেন। তিনি বলেছেন, এই সহযোগিতা ইতিমধ্যে বাণিজ্য, পরিবহণ ও বোগাযোগ থেকে বিশ্বানি ও প্রায়্ত্তিবিদ্যার ক্ষেত্র শর্মানি ও প্রায়্ত্তিবিদ্যার ক্ষেত্র শর্মানি বিশ্বানি করতে পারে কিন্যু সেশ বিকাশ লাভ করতে পারে কিন্যু সেই প্রশান তুলো ব্রাগিতার বলেন, 'আমরা দুটি প্রভাগ সার্বভাম দেশ বলেই কি দুই দেশের মধ্যে কৃতিম প্রাচীর তুলব।'

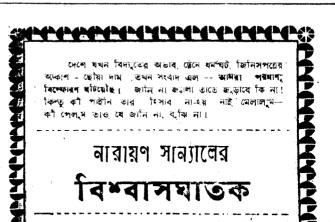
শ্রীগির আরও বলেন হে বাংলাদেশ
শর্ম ভারতের বন্ধা ও প্রতিবেশী বসেই
ভারত তার সাফলো আনন্দিত নর
কেতে আমাদের দ্টে দেব এবটা স্থারী
আন্তর্জাতিক বারকথা গড়ে তুলতে একই
ভারত বাংলাদেশের সাফলো শ্রাণী

ভারতের রাণ্টপতির এই সফরের শেষে যে যুক্ত ইস্তাহার প্রকাশ করা হয়েছে, তাতে দুই লেগের বার্ত্তপতি তালের এই গ্রহার প্রভায় ঘোষণা কংগছেন যে, সম-আদর্শা সাবাভেট্ম সমতা ও পারণ্ঠারক মর্যাদাবাধ থেকে ছাত্ত দুই দেশের বংধ্যাপ্রণা সম্পর্ক ঘানিষ্ঠ থেকে ঘানষ্ঠতর হবে।

ইসতাহারে বলা হয়েছে যে, বাংলাদেশের ম্বান্থয়াধে ও ম্বির পরে
সে-দেশের জাতীয় প্নলাঠনের কাজে
ভারতের সরকার ও ভারতীয় জনগণ যে
ম্বারান সহায়তা৷ দিয়েছেন বংলাদেশের
প্রেমিডেট্ট মহন্দদ্বা তার সপ্রশংস্
উল্লেখ করেছেন। বাংলাদেশের সরকার ও
মে-দেশের জনগণ ভারতের প্রতি বন্ধান্থর
যাবেগপ্শ করেছেন বাংলাদেশের স্বান্ধ্রীপতি ভারতের
রাত্মীপতিকে জানিমে দিয়েছেন।

গ্শতলের আদৃশের সংশা সলান্তি,
রক্ষা করে বৈধারক ও সামাজিক ন্যারবিচার পাতের উদ্দেশ্যে তারত বিজ্ঞান
প্রবর্তিবিদ্যা ও শিলেপর কোতে যে কৃতিছ
প্রদর্শন করেছে, এইন্মদ্রা সেজন্য ভারতের
প্রশংসা করেছন।

বাংলাদেশের প্রতি ভারতের সরবার ও জনগণের গভীর প্রীতি ও বন্ধান্তর মনোভাবের কথা রাণ্টপতি গিরি জানিক্রে দিয়ে এসেছেন। মাজিখুদেশ্ব সমর বাংলা-নেশেব জনগণের বীরস্থান্ কান্বতাশা-



পরমাণ্ট্র শক্তির উৎস কোথায়, কেমন করে পরমাণ্ট্র আন্তর বিদীণ্ট হল তার অধশতান্দীর ইতিহাস, সেই আবিকারের গোপনতম তথাস্ত্র কেমন করে একদেশ থেকে অপর দেশে গৃংশ্তস্তরের দল পাচার করেছিল এবং কা ভাবে গোয়েশ্দার দল অপরাধীকে খণ্ডে বার করেছিল তার বিজ্ঞানভিত্তিক আলোচনা করেছেন এক বিজ্ঞানী-কথাসাগিতাক—যা গোয়েশ্দা-কাহিনীর চেন্তের উপাড়েছায়। গাঁঘুই প্রকাশত হচ্ছে।

भ व्य अ का भ न ॥ ५৯ वि, घटाचा शास्त्री द्वाप, क्लिकाका-১

এর জন্য শ্রীনিরি গুণীর প্রথম জ্ঞাপন করেছেন এবং সামাজিক ও বৈর্মায়ক ক্ষেত্র অগ্রগতির জন্ম বাংলাদেশ যে প্রায়াস চালিয়ে বাজে তাতে তিনি সে-দেশের প্রশংসা করেছেন।

ঘুদ্ভবা

কংগ্রেস হাইক্মাণ্ড স্ত থেকে জানান হয়েছে যে প্রশিচ্মবংক সি পি আই প্রগতিশীল গণতাটিতক মোরচা থেকে বৌররে বিধেষা দল ইসাবে কাজ করার যে সিন্দানত করেছে, তার প্রতিক্রিয়া অন্য রাজ্যালুলিতে কংগ্রেস ও সি পি আই-এর সম্প্রকরি কোন পরিবৃত্নি ঘটবে নাঃ

এ সাই পেকে বলা হায়েকে হয় কংগ্রেস্
যেমন বেবলের স্যুক্তরুন্ট ভেঙে দিয়ে
সেলাকার লীতেচ্ছে মেনলে সরকারক সরাবে না, তেমনি মনার সি পি আই-ও কংগ্রেসের সংগ্রেস বভ্যান বোঝাপড়া ভাঙার যা বলে বংগ্রেস আন্ধা করে।

বেমন ওড়িশার শ্রীমতী নাল্যনী শতপথার সর্বারকে টি'কে থাকার জন্দ কম্মেনিন্ট পাটির সম্পানের উপর নিভার কারতে হয়। ওড়িশা বিধানসভার ১৪৬ জন সদসেদ্ধ মধ্যে ছাত ৬৯ জন কংগ্রেনের। সি পি আই-এর সদস্য-সংখ্যা স্থাত।

উত্তরপ্রদেশ বিধানসভায় অবশ্য শ্রীবহুগ্রের সংখ্যাগরিষ্ঠতা খবে সামানা—৪২৫ জন
সদস্যের মধ্যে মার ২১৬ জন। সেখানে সি
পি আই-এর সংগ্রেপার কোর আন্মেটানিক বোঝাপড়া না থাকলেও বিধানসভায় মোট ১৬টি কমানিক ভোট বে-কোন সময়ে কংগ্রেপার পক্ষে বেশ মানাবান হয়ে উঠতে পারে।

কংগ্রেস সভাপতি ডঃ শংকুরদয়াল শর্মা একটি প্রশেনর উত্তরে প্রথা করে দলেছেন, পশ্চমবংকা পি ডি এ-র সংগ্রেস পি আই-এর বিচ্ছেদের ফলে কেরলে কোন ওপ্রটিপালট ক্লবে না।

ইতিমধ্যে ইণ্ডিয়ান ইউনিয়ন মুসলিম লীগের সভাপতি স্লোনা সাইং-এর চেণ্ডায় কেরলের মুসলিন লীগের বিবাদের মীমাংসা হওয়ায় সেখানকার সরকারের অনিশ্চয়তাব, আর একটি কারণ দার হয়ে গেছে।

ভূটানের রাজার নির্দেধ চক্রান্ত সংশক্তে ইয়ানিক নামে যে তিখাতী মহিলাটির নাম করা হংরাছে তিনি এখন ভারতের নৈনিতালে আছেন। একজন সাংবাদিক সম্প্রতি সেখানে তীর সংগ্রা শক্ষাং করে ও তীর সম্প্রতি শক্ষাংব করে তিরা সংগ্রাচির বিজয়ে ও ই চক্রান্তের অভিযোগের প্রতিম সম্পর্কে ্বান্তি করে তথ্য পরিবেশন করেছেন।

শিশপুর সরকারী মহল থেকে ইয়াজিকর পারিচর দিলে বলা হরেছিল, তিনি ছিলেন উল্টেহনর ভূতপূর্ব রাজার রাজতা। ইয়াজিল দাবি করেছেন তিনি বড়ে মহাশ জিগমে দোরাল ওয়ৄ৻ছুকের বিবাহিত।
প্তাী ও ছেটি রানী ছিলেন। রাজা তার
জন্য ভারত-ভূচীন সীমান্তের কারি
কোলপানত একটি প্রাসাদ তৈরি করিয়ে
নিয়েছিলেন। নেনিয়েলে স্থানিরসো নাল একটি বিরাট বাংলো-বাড়িও রাজা তার
জন্ম কিনোছিলেন। এছাড়া খিম্পন্তেও
রানী ইয়াডিকর একটি প্রাসাদ আছে।

ইয়াক এখন ঐ স্থেনিবাসান।
উঠবেন বলেই নৈনিতালে বংশ্ছেন। লেকের
যারে ১৮ একর জামির উপর অবাস্থিত
ব্যক্তিট এখন ভার ও তার সংগ্র গোকা জনদের থাকবার জনা নতুন করে গাজান-গোচান হচ্ছে। বছর চারেক অলে একবার থিমপ্রেক্তির ১৮টি দ্বীক বোঝাই করে আসবারপর নিয়ে এসে স্থানিবাসাত ভোলা হয়েছিল। কিন্তু বছর দুয়েক, আলে দ্ব জিনিসপত ভূগানে ফিরিয়ে নিয়ে যাল্যা হয়। সেই থেকে স্থানিবাসা থাল প্রেক্তিয়া সেই থেকে স্থানিবাসা থাল

ভূটানের রাজার অভিষেকের করেও দিন আগে ইয়াতিক ভূটান থেকে পালিরে আসেন। সে-সমরে তিনি ভারতের সীমানেতর এক কিলোমিটার দুয়ে কেলিপ-েত ছিলেন। দাজিলিং ও দিলি হয়ে তারা এখন নৈনিতালের একটি হোটেলে বাস করতেন।

ইয়াণিকর সংশ্যে যাঁরা আছেন, ভাদের
মধ্যে একজন হলেন ভূটানের স্বরাধী
বিভাগের প্রাক্তন উপমন্ত্রী এস তেনাজং।
তিন এখন রানার সেকেটার হিসাবে
কাজ করছেন। অনাসাদের মধ্যে তার সংশ্য রয়েছেন দুই ছেলে ও দুই মেলে ব্লান মা. ছোট বোন ও ছোট বোনের
সংভানের।

ভূটান থেকে খাসার সময় ইয়াকি চারটি আমদানি-করা বিদেশী গাড়ি ও একটি জিপ গাড়ি নিয়ে এসেছিলান। গাড়িগালি মালের উপর ভার হোটেলার বাইরে দাঙ্ করান আছে। চারজন জাইভার অবশা ভূটান ফিরে গেজেন।

দ্ভেন নিরাপতা রক্ষী ইরাজ্জির হোটেলের ঘরের বাইরে অফ্সাহর পাহার। দিছেন। তাঁর সংক্যাবেকেউ দেখা করলেও এমনকি ত'ার সেকেটারি দেখা করলেও নিরাপতা রক্ষীরা সামনে হাজির থাকেন।

ইয়ান্দক এই ভারতীয় সাংখাদিকের সংগ্য ভূটানের সাংগ্রহিক ঘটনাবলী নিরে বিশ্তারিত আলোচনার আগ্রহ প্রকাশ করেছিলেন। কিন্তু একজন উচ্চেপদথ্য প্রান্ধ আফ্রান উচ্চিন করিছেলেন। কিন্তু একজন উচ্চেপদথ্য প্রান্ধ আফ্রান উচ্চিন করেন। তার, তার সোকটারি সাংবাদিককে বলেন যে বত্নান রাজাখনে ভাল লোক ও ইয়ান্দিককে না বালেই মনে করেন। তার আলোপাধার কিছা লোক ইয়ানিক সম্পর্কে ত্রার করেছে। প্রাক্তন রাজার জারলে এই লোকগ্রানিকে ভূটান করেছে। প্রাক্তন রাজার আরালে এই লোকগ্রানিক ভূটান করা হয়েছিল। তারা নেপালের সামানেত, গিয়ে এবটা জারার আলোচাত করা হয়েছিল। তারা নেপালের সামানেত, গিয়ে এবটা জারার আলোচাত করি করেছিল। এখন ভালের ভূটান করে

াস্পত দেওয়া হয়েছে। ফিরে এসে ভার এই ধারণা ছঙাবার চেণ্টা করছে ব, ১১) ফর প্রমশ্মতই ছাদের ভূগান থেক বহিশ্বার করা হয়েছিল।

ইতিমধ্যে হংকং-এর একটি খবরে বস্থ হারছে চীন ও জুটানের মধ্যে একটি নতুন কন্দ্রের সম্পূর্ণ দ্বাগনের পথ উক্তঃও হারছে গুলা চীনের সংবাদ সরবরাহ প্রতিষ্ঠানাজনত্বা করেছেন।

ভা ্রাস্থেত চীমের রাজ্যত্ত সম্প্রতিজ্ঞানির রাজার অভিযেক উৎসরে উত্যাহিতী ভিকেম।

তালে আৰু একটি খবৰে বলা হ'ব ছিল, জুটান সৰকাৰ এই উৎপৰে চ'ল প্ৰতিনিধিকে আমন্ত্ৰণ কৰ্বেন না বলে ন্যালিকৈ কথা দিহেছিলেন গণ ভাগত সৰকাৰকৈ না জানিয়েই এই আনুন্তৰ পাঠান হয়েছিল।

পান্ধম যোজনার জন্য বিজ্ঞান ও প্রমাজিবিদ্যা সংজ্ঞানত একটি খসড়া পরি-কলপনা তৈরি করা হয়েছে। এই পরি-কলপনায় পান্ধম যোজনার পাঁচ বছরে মোট ২০৫০ কোটি টাকা বায় করার প্রস্তাব করা প্রয়েছে।

এই পরিকাশনার একটি উল্লেখযোগা বিষয় এল, বলদে-টানা গাড়িসহ সর্বপ্রকার যানবাংনের উল্লাভির কথা বলা হয়েছে।

এই প্রসংগ আর একটি সাম্প্রতিক খবর হল বাংগালোরের ইন্ডিয়ান ইন্স্পি-টাটে াব ম্যানেজমেন্ট আধুনিক উল্লেখ্য প্রনের বলদে-টানা গাড়ি তৈরির বিষয়টি খন্নিকন করে দেখছেন।

ইনস্টিটাটোৰ হিসাবে আমানের দেশে
মাই দেড় কোটি জানোয়ারে-টানা গাড়ি আছে। এই গাড়গালিতে মোট লালির সমিশ অনুমান ত০০০ কোটি ঢাকা। এই গাড়িগালৈ থেকে ছাতার, কামার গাড়োয়ান ইত্যালসহ প্রায় ১৬ লক্ষ্যান্থের জীবিকা নির্বাহ হয়।

ইনাপটাটের ডিরেকটর অধ্যাপক রাক্ষ্রামী এই বলে অ্যান্দেপ করেছেন যে আমানের দেবে মদিও তিশ হাজার ইজিনারার আছেন, তাহলেও উন্নতভর বলনেটানা গাড়ির জন্য নতুন ডিজাইন উল্ডান্থার দিকে কেউ তেমনভাবে নজর দেনানা প্র'চাকার গাড়ির বদলে চার চাকার গাড়ি বাবহার করলে রবাবের টায়ার, তেক বলবেরারং ইজাদি বাবহার করলে আন আন দেবা মাড়গালৈ থেকে জাবতে বেলি আন করা যায় রাভ্যার বাক্ষণা করা হায় রাভ্যার বাক্ষণা করা হায় বাভ্যার বাক্ষণা করা হায় বাভ্যার বাক্ষণা করা হায় বাভ্যার বাক্ষণা প্রান্থার বাভার বাক্ষণা বাব্রা বাক্ষার হায় বাব্রা বাব্রা

ইন্স্টিট্ট খোঁল করে দেখেছেন, তামিলনাড্র ও ইরিয়ানায় উপ্লত ধ্রনের বলদে-টানা গণ্ড তৈরি করা হয়েছে। তবে অধ্যও উপ্লত ডিজাইন উভ্ছাবনের স্যায়েগ কয়েছে।

—গণ্ডেরীক

55-6-98

ঘোষপাড়ার মেলা ও কর্তাভজা সম্প্রদায় সম্পর্কে

আমি অমতের একজন নির্যাদ্ধ পাঠক। গত ১৩ বর্ষ ৫০ সংখ্যা 'অম'ত' প্রিকায 'ঘোষপাড়ার মেলা ও করেছিলা সম্পদাস' সম্পর্কে রচনাটি প্রকাশের জন্য আছি অমৃত সমপাদক্ষণ্ডলীকে আংকবিক অভিন্তু**ন** জানাই। রচনাটি সম্পর্কে আয়ার কিছে বন্ধবা আছে। বিশেষ করে লেথকের উন্ধ রংনাটির মধ্যে বেশ কিছা তথে। গাটি ধরা পড়েছে, সেই হিসেবে কিছা বলতে চাই। প্রমতঃ লেখক লিখেছেন ঘোষণাড়া গ্রামটি গোবিন্দপারে ঘোষ পরিকারের জামদারিকে অবস্থিত। আহি ঘোষপাড়া ঐতিহাসিক অঞ্চলের কাছাকাছি থাকি বলেই ঐ ভলের সার ধরতে পেরেছি। ঘোষপাডা আসংখ নদীয়া জেলার কল্যাণীতে অর্থত।

দিবতীয়ন্ত রাজ্য সরকারের কাছে নীলামে ইজারা নিয়ে মেলাটি বসানো হয়। মেলায় স্মাণ্ড ভক্তনের মধ্যে নরনারীর সংখ্যা-বিধবার সংখ্যা বেশী। শুণ্যু তাই নর রচনাটিতে লেখক লিখেছেন মেলাটি নাকি তিমদিনের। লেখকের উদ্ধু বিবরণ ঠিক নয়।

্তৃতীয়ত—লেখক আউলচদি প্রথম বাইশ জন যে ফবিরের তালিকাভুক করেছেন। আবার থেকে রামশরণের নাম বাদ দিরেছেন। আবার প্রেক আউলচাদের ধ্বন প্রতি হরিজন সেবা, প্রতিভালনের কথা উল্লেখ করেছেন তাত্ত সঠিক নয়। ত ফেটে লেখকের লৌকিক উতিত্যের ক্যাটি বিশেষ করে সমান রেখে চিত্রা করা উচিত ছিল।

সবচাইতে আশ্চমেন্তি কথা, লেখক এক জায়গায় লিখেছেন-ঘোষপাটোর মেলা ও কতাভিজা সম্প্রদায়ের সম্প্রেক প্রাণিক আলোচনা হওয়া আজ দরকার। কিন্তু ইতি-হধ্যে ঐ বিষয়ে যে পার্ণালগ আলোচনা কার গবেষণা শরে হয়ে গেছে সেটা হয়তো তিনি নিজেই জানতেন না। ঐ প্রসংগে ডং তৃষার চটে।পাধায়ের প্রেষ্ণা ও গ্রেষ্ণা-মালক প্রকশাদির কথা এবং অধ্যাপক রতম নাদীর সামগ্রিক কর্তাভ্জ। সমপ্রক্র গ্রেখণার কথা উল্লেখযোগ্য। কিছাদিন ভাগে আকাশ-বালী মারফত ডঃ ভ্যার চটোপাধ্যায়ের গোর-পাড়ার মোলা ও বত্তিভাগে সম্পাক গবেষণা মূলক একটি বিবৃতি পূচারিত হয়। শ্ধ তাই নয় এপদের গ্রেম্বার ফলে এরই মধ্যে বহা মোলিক তথ্যাদি উদ্পতিত হয়েছে তা আমরা সংবাদপরে লক্ষা গরেছি: যাই হোক ঘোষপাটোর মেলা ও কতা ভাজাদের সমপ্রের আমি ষ্তুট্কু জানি তাতে মনে গ্যু লেখকেয়

রচনায় বেশ কিছ্ ভুল ওথা রয়োছ।
—আনুপ্র নিত্র, কাচরাপাড়া।

(૨)

ি 'ঘোষপাড়ার মেলা ও তার প্রাণভোমরা' (আমৃত ১২ বৈশাখ, ১০৮১) শীর্ষক



প্রবন্ধে মেলার প্রাণ্ডোমরাটির পরিত্য বাংলার পোল আমবা আন্তিদত **লেখক** আথ'নীতিক তদানী'তন সায়াজিক ও কাঠামোর পটভূমিতে সমশ্র বিষয়টি বিচার করবার চেণ্টা করেছেন। তার এই ক্রতিত্বে দাবী রাখে। লেখকের সংশ্রে যে কোন সমাজবিজ্ঞানী একমত হবেন যে, কোন ধ্ম'ড়িলতা সমাজ-নিরপেক নয়'। তাই, তিনি অনাদের সমাজ-জাবনের নির**দ্তর প্রাক্ত**য়ার মধ্য থেকেই এ সমপ্রদায়গর্নির উল্ভব হয়েছে।' বলে যে মণ্ডব। করেছেন, বাদত্ব সভা এবং তিনি সমগ্ৰ সমাজ-জীবনের চলমান <mark>প্রেঞ্চাপটে' 'ক</mark>র্তাভজ।'দের কিছাটা পরিচয় দিতেও চেণ্টা করেছেন। এ-পুষ্ধতিতে পুরিচয় দেওয়াটার হাজের' প্রতি তিনি আলোকপাত করে ধনা-বাদের পার হরেছেন। তবে একটি ক্ষয়ে গ্রবন্ধে একটি পূর্ণাণ্য গ্রন্থের বিষয়বস্তু আলাকরাবথা।

এ সম্পাক'ত ঘোষপাড়া কতাভিজা সম্প্রদায়' (অম্ত, ২০ জৈণ্ঠ, ১০৮১) নামক প্রকাশিত একটি পর পড়ে যুর্গপৎ বিস্মিত ও দুর্গবিত হয়েছি।

বিসিমত এই জনাই যে, মানিকগবরে প্রবংশর ইতিবাচক দিকগালি অন্যালেখিত বেবে পরলেখক কেলল প্রবংশ লেখক সম্পর্কে হাটি, ভুল, সঠিক নয়, প্রয়েজন সম্ভ্রমত সব পড়েন নি, অসংগতি, অজ্ঞতাজনিত..... অন্যালে, অবহিত নন প্রভৃতি নেতিবাচক দিক যে উপায়ে তুলে ধরেছেন, তাতে অবতঃ পাঠকবলোর কাছে সঠিক অবগতি বা বিষয়বস্তুর প্রকৃত মালামনের গঠনাত্মক উদ্দেশ্য প্রবেখকের পোনাম ধরা পড়েন। বরণ উক্ত পাতর অনেক অন্তেদ্দের গেবেন। উলিত ছিলা শব্দাটি এবং উল্লিখিত উক্তিন্তারিক ব্যবহারে উমত্তর অন্তেদ্ধর হাতি গ্রানিক ব্যবহারে উমত্তর অন্তেদ্ধর হাতি

জ্যোষ্ঠ্যাতার ঈর্ষাপ্রস্ত অংশালিকে**নন** স্চিত করে। এটা অভিপ্রেত নয়, প্রীড়া-দায়ক!

দুঃখিতে এই জনাই আম্বা পাঠকেলা প্রকতপক্ষে ভজকতা-মতে অনুপ্রাণিত নই। কোন জন বেশী জ্ঞানাধিকারী কার কিছা क्य भारतक भाषा चारक तका लाइडे कता ব্যাপ্যাত্মক উপদেশারোপ সরেশপরি বেশী পদা কোন গবেষকের নামের অন্ত্রেশে উপদলীয় কোন্দল—এই সবের মধোই আমরা পাঁড়া অনভেব কবি। দ্বছারতই ষে-কোন লেখার যে কোন প্রশংসনীয় গ্রেটিলকডা আমাদের আকর্ষণ করে। এক্ষেত্রে ছাপা-িকত গবেষকগণেরই মৌলিক রচনার আধি-কারী—একথা স্বীকলে নয়। প্রকাশকার-লিখিত কয়েকটি শব্দ যথা তথানিভাৱ ক্ষেত্র অনুসম্পান ইত্যাদি বাবহারে জাপা-িকত গবেষকের শিউরে ওঠার 'বাধা'তা কোথায়? বৃহত্তঃ গ্লানিকবাব লোকসংস্কৃতি বিষয়ক প্রদশ্যতার্ত আমরা বৈজ্ঞানিক আবেদন দেখেছিলাম।

পগ্রশেষক কর্তৃক উল্লোখন্ত অধ্যাপক রতন নন্দীর কোনও প্রবাহ্ম প্রকাশিত হরেছে কিনা, তা জানি না। কিন্তু কর্তৃত্বিকা সম্প্রদার দার সম্পর্কে আলোচনার ডঃ ত্বার চর্টে পাধ্যানের নামকে স্মরণ করিছে দিছে স্ক্রন্তু লেখক ঠিকই করেছেন।

কোনও শেখায় কোন স্বীকৃত নারের
অন্প্রেথকে অন্যভাবে বিচার না করাই
ভাল। কারণ নায়োপ্রেথর কি শেষ আছে?
আমাদের দেশ সংগীজনধনা। তঃ সংশীর
চক্রবর্তী ও শ্রীনিমলকুয়ান মাখেলাধারের
নাম এই প্রসংশ্য বর্তমানে আলার মন্দে
আসছে। পগ্রশেখকের পরে তো এই নামের
উল্লেখ নেই, এটা কিছা উচিতঃ অতিকৃষ
করার অপরাধ ন্য়।

অবঁশা কোনও প্রতাক্ষ উন্ধৃতি নিজের উন্ধির মত থাবছার করা অপরাধ। এই প্রসংগ্য বলচ্চ--তুরার চট্টোপাধার মহালয় কিংকু তার জালদালী সম্পাকত বিষয়ে প্রকালিত এক প্রকাশ প্রস্থান করে করে নি। অন্ধ্রের করে করে করে করে নি। অন্ধ্রের ক্ষেত্রত মনে হয় ঘটেছে। উল্লেখ্য স্বিশেষ গ্রেষকের ঐ প্রবাধ্য প্রদত্ত বাইশ ফাকরের নাম স্থালিত পদ্যে রাম্প্রণ প্রতের নাম ন্থালিত পদ্যে রাম্প্রণ প্রতের নাম নাই।

সর্বশেষে বলতে চাই, 'আকর এগ্রণ' কোনটি আর 'কোনটি নর, তা জ্ঞানি না। কিম্তু গণৌজন কতুকি গণৌজনের প্রতি গণৌজনোচিত ব্যবহার ও মন্তবাই আমরা সাধারণেরা হালা করি। আর চাই গঠনাব্যক্ত সহদের আলোচনা।

> नीना भूत्थानाशास्त्र कक्षनश्रद्धं नम्स्र



যদি প্রশ্ন করতেই হয় ॥

রাম বস

আমি শ্ধে এই কথাই বলি ও বদি জোন প্রশন করতে হস্ন স্ময়কে কর সমানুকক কর আমি কিছাই জানি না

পার্বাপ্তান্ধ আলোয় দেখেছি
হাতের তালার জাটিল জ্পাল থেকে লাফ দিল ক্ষাধ্যত নেকড়ে
এক কামড়ে আমার কণ্টনলী ছিড়ে নিয়ে পালিয়ে গেল বালিয়াড়ির পারে প্রায়-লণ্ডে জলধারার মত্যে ভাগারেখা কয়েকটি মাত পাথি, নাড়ি আর কাচপোকা ব্বে নিয়ে বসে আছে আলি লাখ্য জানি আমাদের অল্ধ ইতিহাস কুষায় পড়া মহিষের মত্যে আর্থ অল্ধকারে ডেকেই চলেছে

আমার মরা-পাথারে কপালের ধারে রিস্ত সংধার আলো একদা অনাগতের ইংগিতবহ শরীর এখন নণ্ট বাতিঘর দিগলাশ্ড জাহাজের সাইরেন কটা ক্য়াশায় হনো কুকুর প্রথিবীর শেষ লাবণোর কবর খোঁড়া হচ্ছে ঠিক জালার বাকের ভিত্তর, আমার বাকের ভিত্তর

যজবে কি জাবিনের নিষ্ঠেরে পরিহাস?—বল; ক্ষতি নেই
জামি আমার ভূমিকা জেনে গেছি
আমি এখন দাই কাঁধ প্রসারিত করে দিয়েছি
যেন হতছাড়া কালপ্রেয়—নৈঃশন্দ একটা জিরিয়ে নিতে পারে
বিশ্বাস্থাতকতাল বাঘনখে খোবলানো তার দেহে, বিষয় নক্ষ
মাখিয়ে দিতে পারে বনরেণ্ ওর্ধ
বেন তাকে মাডে দিতে পারে লতাপাতার সাক্ষনায়

আমার ভূমিকা আমি জেনে গ্রেছি আমাকে আর কোন প্রখন করো না বদি করতেই হয় সমারকে কর উময়কে কর।



(B&)

- ATT !

স্যালি হিগিনস পাশে ছোখ ফেরালেন।

- —প্রপরে চলান সার।
- —ওপবে ? আছে। ।
- --স্বার ! ---জাজিচ ।

বনি একটা কথা বলছে না। চোখ সুখ ভার ভারি বিষয়। সে একট্ব দুরে দাঁড়িয়ে আছে। ছোটবাব্ব বনিকে নানাভাবে বেকাছিল। সামানা সাহসী হতে বলছে। বনি যেন ছোটবাব্ব একটা কথাও ব্যক্তি সাজেন।

ড়েবিড এবং চিফ্ল-মেট ব্যুবডের পারছে না কি করবে। আবার বলল, সারে আপনি সেই কথন থেকে এখানে দ্যাড়িয়ে স্থাচেন। ওরা তো চলে গেছে। আব দেখা হাজের না। প্রসারে চলান এবার। স্বীর ঝাপনার ভাল নেই।

मार्गिक डिजियम बन्द्रमास हन।

ক্রা পোট সাইড ধরে এবার হে*টে ষেতে থাকল। সোজা ছোটবাবুর কেবিদের স্ক-পালে ছোটট লেক।

তিনি দীরে ধাঁরে সিভি ভারতে থাকলেন। খ্ব সতেজ এবং কিছা হয় নি
মতো উঠে যাছিলেন। কেউ আর একটা কথা বলতে সাহস পাজে না। লোক দ্টো কে, ওরা কেন এসেছিল! বেণ্ট মতো লোকটা ভার অন্তুলা অকাংল হোখানে সেখানে হাতুতি ঠুকছিল।

ডেবিড চিহন্মেটের কানের কাছে মাল এনে বল্প কিছু একটা ঘটতে যাছে স্থার।

—কি ঘটবে মনে হয়। চিঞ্চ-মেট সি⁴ছ ধরে পঠার সময় ওখন বধল।

ডেবিড ভাষণ ফিস ফিস পলাম কথা বলচিল।

— কিছু একটা ঘটবে। ঠিক ঘটবে। ওঠি মুখ্য দেখে আপনি বুখডে পারছেন বা সারো! ি —িক ঘটবে! কি ঘটতে পাৰে!

৬না তভক্ষণে স্কুক্তই বোট-ডেক্তে
উঠে এসেছে।

চিফ-মেট সামান। কি ভেবে বঞ্চল, কিন্তু এটা ঠিক না। এমন শ্বাংর জাহাজেব অতকে নেত্রে সাওয়া ঠিক না। এতটা ওঠা-নামা করা তাঁক উচিত হল্প নি। কিছু একটা সতিয় ঘটে গেলেও ঘটে যেতে পারে।

স্থালি হিগিনস্ সি°ড়ি ধরে আরও
এপরে উঠে যাছেন তখন। মনে হছে না
প্তকাল তিনি অস্তুথ ছিলেন, সংজ্ঞা
হাবিরেছিলেন। বেশ স্বাভাবিক গ্লাম্ না
ভাকিয়ে ভাকলেন—চিফ্লমেট।

চিফ-মেট ডেবিডকে বোট-ডেকে ফেলে ধপরে প্রায় দ্ব-পাফে উঠে সেল।

বনি আর ছেণ্টবা**ব্ ভারত পেছনে** আসছে। বনি দেখল, বাবা **ভিফ-ফেট**কে নিশ্লে চাট-বুমে চাকুক যা**ছে**ন।

ভৌবভ জ্যাককে পেছনে আসতে দেখে বলল ভাম জানো জ্যাক, এবা কারা?

—মা ডেবিড। এর। কারা ক্রামি না।
জাহাকে তেমনি ফসফেটের গাঁলে
উড়াছে। টাগ-বেটি সব আস্ছে হাজেছ।
টাগ-বেটি থেকে তেমনি বড় বছ ফ্রাফেছ।
কেনিলাহল জাহাজে। উইনচের প্রচণ্ড শব্দ।
তেল কালি বানিফোর গাঁলের প্রচণ্ড শব্দ।
তেল কালি বানিফোর গাঁলের গ্রাহল রেছে
আর বাতাসের মাতো আবছান্ডয়া। দড়ি দড়া,
রঙের টব, জাহাজ সমান্ত এবং শ্বীপমালার
ভেতর তেমনি আছে ভার ছোটবাবা। ভব্
স্ব কেমন বর্ণহাঁবি। সে বিছুত্তই কেন
কানি ভাল করে সাড়া দিছে পাবছে ভব্
কি যে এক ভবাং বার ছোটবাবা হাঁলিছ

ছোট্টাব্রের কাক্স পড়ে আছে উইনচে। সে এখানি হয়তো নেমে যাবে। ডেবিডও থাকবে না। সে তথন এই বোট-ডেকে আরও একাকী হয়ে যাবে। অধ্য সে বাবাকে কিছু বলতে না পারলে নিশ্চিন্ত হতে পারছে না। চিফ-মেট এখনত বের হচ্ছে না। বের বুরু সে ঠিক দেখতে পাবে। এবং স্থন বের হতে এল চিফ-মেট এক দলত সে আর নির্দ্ধে দাড়াল না। লাফিয়ে ওপরে উঠে গোল। ভেডরে ঢুকে ভাকল, বাবা।

স্যাল তিগিনস মান্ত টোবলে মান্ত্রা রেখেছেন। বনি জাহাতে আছে তার স্থেপ মনেই ছিল না। মাথার ভেতরে সোরগোলে ওঠে ওঠে জট পাকিরে যাচ্ছে— ঘূর্ণির মড়ো অথবা রবের চাকার মতো বন বন কেক্স ঘূরতে। তিনি তখন আর চারপালে কিন্তু দেখতে পাচ্ছেন না। বনি এই যে তাকে এসে: ডাকল কতপুর থেকে যেন সেই ভাকে ধারা ভাম এমন হয়ে যাচ্ছে কেনা হোল চলক্ষে সময় লেগে যাচ্ছে তার—বনি তার আজ্বলা, রহে মাংসে বনি তার আখ্রার চেলে প্রকাশ পারভিলেন না এন্ডেক্সণ। বনিকে চিনতে ভ্রম

বাবা কেবল তাকে দেখছেন। **একটা কথা** বলচ্ছেন না! সে ভয় গে**য়ে ফের ডেকে উঠক**, বাব। তামার কি চয়েছে।

তিনি শিশুনিত গলা**র বন্দীনে**ক **কিছ**ু হয় নি তো!

- লোক দিটোর সংখ্য **ভূমি এলজিন**-রামে নেমে গেলে কেন?
 - এরা জাতাজটা দেখতে **এসেছিল।**
- —-চিষ্ণ-মেটকে পাঠালে পারতে। ভেবিষ্ণ ছিল। তুম নেমে গেলে ক্ষেন?

—ভাতে কি হরেছে! সেই সমুল কাবন্ধান্তর মতে। অথবা বনির এমন হে সমুলর কাবন্ধান্তর মতে। অথবা বেসহার ভার বতে। অথবা বেসহার বৈশাবে তিনি এমনই বিজেন কাবন্ধান্তর বিশেষ বিশেষ কাবলে বিশ্বনাত্তর বাংলার বাংলার কাবলে বিশ্বনাত্তর বাংলার বাংলা

কৈর।টার-মাস্টার এলে বললেন সম্ভান-বয়।

কাশতান-বয় এলে বলগেন, জ্যাতেব কবিনে আমি খাব। ডাইনিং হলে জানিয়ে নবে। ভারশন বনিয় বড় বড় চুল এলো-ঘলো করে দিয়ে বলগেন, তাহলে আমরা কিসংগু খাচ্ছি।

বাবাকে সহস। এত খুশী দেখে সে
কমন অবাক হয়ে গেল। ঠিক সেই চিরদিনের
ক দেনহময় পিতার মুখ, সে কি আর
করে সে যে ভেবেছিল তানের কিছু বলবে,
কাবো বে'চে থাকার মতো সব আছে।
কাটা ভাল্যা জাহাজ নিয়ে তোমার এত কি
য়! ছমি কেন বলতে পার না, ভাহাজ
নার কাবে না। তোমার এমন কি দাস্বত দেয়া আছে, ভাল্যা লাহাজ চিলিয়ে নিতেই
বিরা কিছু বাবার হাসিব্দৌ মুখে
ভাল্য আছে, ভাল্যা লাহাজ চালিয়ে নিতেই
ভাল্য আছে, ভাল্যা লাহাজ চালিয়ে নিতেই
ভাল্য ক বত বোল ছেলেমানুখা থাকে যে সে
কাল বাল করতে পারে না।

্ষাধার টেবিজে বনি বলল বাবা ওরা জিলচাজ্ঞটার কি দেখতে এসে।ছল :

্র —এরা জাহাজটার স্ব ই>পাত দেখতে এফেজিল।

-- क्रेञ्गार !

- জাই।জটা ওরা কিনতে চায়।

--এই স্রোনো ভাল্যা অচল জাহাজ

an কিনে কি কববে!

এখনও এর হা আছে বনি...হেন ক্লাহাকটা ভাগ্যা পুরোনো বলসেই তিনি

ক্ষেপে যান ভেডবে ভেডরে। তিনি ক**ফি** पांक्करलन, स्थाब प्रति करत वीनद माथ দেখছিলেন। বনি জাগাজটাকে পারোনো ভাগ্যা বলছে বনির এমন কথাবাত্রণ তার একেবারে পছনদ না। বনির কাছে তিনি কিছাতেই মাখ ভার করতে পারেন না। এট যে তিনি বানর সজ্যে খেলেন, বানকে নানাভাবে উৎসাস দিচেছন--যেন বনি किছ्युट्टरे তात मुखीवनाद कथा छि≥ ना स्पर्ध যায়, পেয়ে গেলে তিনি জানেন হোৱেটা সারাক্ষণ জাহাজে মুখ গোমডা করে রাখবে। তিনি সারাক্ষণ ভাবতে চেন্টা করছেন গতকাল এমন কিছু তার হয় নি। এবং দ্ভ^{াব}না এত বেশি প্রবলয়ে বার বার ম^{ুখের ওপর একটা ঘন কালো ছায়ায় ঢেকে} গেলে তিনি প্রায় জোরে হেসে দেবার চেল্ট করেছেন, আর তথ্ন কিনা বনি বলছে ভাল্যা প্রোনো জাহাজ—হোন তিনি এখন জ্যেরে চিৎকার করে উঠতে পারতেন বনি প্ৰিবীতে স্বাই জাহাজটাকে নিয়ে উপ্হাস করছে, আমি সহা করে গেছি। কিন্তু ত্রি কর না। তুমি ক্সাহাজটাকে ভাঙ্গা অচল বললে আমি আমার সব সাহস হারিয়ে হেগলব।

বনি দেখল, বাবা মৃথু মৃছে ধাঁরে ধাঁরে বের হয়ে হাচ্চেন। জাহাজটা অচল বলগে বাবা ভাঁধণ ক্ষেপে ধান। সে কেন হো এমন ধলতে গেল। নরজার বাইরে মৃথু বাড়িয়ে দেখল, ওপরে তিনি চুপচাপ রাজে দাঁড়িয়ে আছেন। বাচের ভেতর অংশতট হায়া দেখা হাচ্ছে। বনির মনটা আবার ভার হয়ে গেল।

তথন স্থালি হিলিনস যেন, এই সাম্বনে যা বিছা আছে কিছাই দেখতে পাচ্ছেন না। বেনল দেখতে পাচ্ছেন একটা জাহাজ সেই কবে খেকে তিনি তার যাবী, জাহাজটা তাকে নিয়ে নিরবাধকাল সমৃদ্ধে ভেসে চলেছে। আর তথনই তাব সদপে বলতে ইচ্ছে হয়, আসলে বনি, জাহাজটা লুকেনারের হাড দিয়ে তৈবি। সামৃদ্ধে স্কল্পত ভ্লেত ব্যুক্ত বিয়া সুক্রিয়া তাবি। সামৃদ্ধি সুক্রিয়া ভ্লিয়া ত্রুবি। সাম্বাধি সুক্রিয়া সুক্রিয়া সুক্রিয়া ভ্রিয়া সুক্রিয়া স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া সুক্রিয়া সুক্রিয়া সুক্রিয়া স্ক্রিয়া সুক্রিয়া স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া সুক্রিয়া স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া স্ক্রেয়া স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া স্ক্রেয়া স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া স্ক্রেয়া স্ক্রিয়া স্ক্রেয়া স্ক্রিয়া স্ক্রেয়া স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া স্ক্রেয়া স্ক্রিয়া স্ক্রিয়া

পারে না। তারপর তার কি হে ভয়ে বায় দ্ৰ-হাত ওপরে ওলে আকাশ ছাংয়ে দেবার ाळाई त्याप्र বলাব ইচ্চে চিৎকার কবে---সি...জা.. বা জাতাজের আসল আকে'মডিসেব সি...জা..া। প্রায আবিশ্বাবের মতো তিনি যেন করেদিন প্রায় দীর্ঘ'াল বলা চলে এবং এই শেষ স্থারে জেনে ফেলেছেন অভি প্রাচীন জাহাজ এই সিউল-বাাক। তার ব্যুসকাল নির্ণয় করা অর্থস্টান। এবং এখন আর ধা ত্রীর মনে হয় জাতাজের ভেতরেট আছে সেই এক ঐশী শকি। বনি ডাল্ল সৰ অৰ্জেলা করতে পার, কিন্তু তাকে তমি পার না। দেহাই বনি, এসব বলে তুমি তার কোপে পড়ে যেও না:

আর সংখ্যা সংখ্যা সেই কঠিন কভাবনা। জাহাজের গিলোটিন হায়ে গেল। কিংকদভিতর মতো যে ছিল তার কাছে অজর অমর কলমের এক থোঁচায় সে শেষ হয়ে গেল। এখন তাঁর ইচেছ করছে যদি পারতেন জাহাজ, নিয়ে সমুদ্রে পালিয়ে বেড়াতেন। গিলোটিনের হাত থেকে বাঁচাবার তার কাছে আর কোনো পথ নেই। কারপর বাঝাত পারেন সব অর্থাহীন-মিঃ ফেলের ব্যক্তিগত চিঠি এবং কিছা তার বাক্যাংশ মাধা করে কুরে খাচেছ। দূর্বলিতা ভেবে যত চেয়েছেন সৰ কিছু ভুলে থাকবেন তত সেই বাক্যাংশ কঠিন সংশয়ের ভেতর नित्काभ कतर्छ। তিনি কিছাতেই এই অভিনয়ে অভিনয়ের ভেত্র আর নিজেকে গোপন রাখতে পারছেন না।মূছী যাবার ভং হৈবিকে চাকে টোরলে মাথা রেখে ফেব ুস্প ডলেন।

বিকেলে স্বাই দে ্র ভিন্ন ডেক-চেয়ারে স্যালি তিনি হাথা দিয়েছেন। বাইবেল . তেও । পাতার পর পাতায় কি যেন কেবল খাঁজে বেড়াচ্ছেন। তিনি একটা পাওয়ে এসে আইকে জিলেন। তিনি পড়লেন, হাতে কর্নাফডেনস ইন দ্য লেড, ইন হাল াই ভারতা যেংক অন হৈছে, এয়ান্ড হি উইল ভাইরেকটর দাই স্টেপস: ঈশ্বর আর কোথায় কি বাইবেলের পাতায় নিদেশি রেখেছেন বসে বসে দেখছেন। পাগলের মতে পাতার পর পাতা যাক্তেন। এবং এখন দেখে মনে এ^{কজন আখ্রুকন মান্ত্র তিনি। ভীর্} ঝ'্রকে পাঙ্ছেন বাইবেলের ওপর। এত স্থাইনজের চারপান্ধে বাস্ততা, ঘড় শব্দ এবং অতিকায় শব্দের ভেতর ক্মপ্রণালী ঈশ্বরের সংখ্যে যুক্ত হচ্ছে তিনি যেন তা একেবারে শনেতে পাছেন না। বাইবেলের পাতার শবেদর ভেতর বার বার তিনি ভিকটিস্ শব্দটি আবিংকার করে অতিশয় মুম্পান্তক চোথ মুখ করে রেখেছেন। এবং এ-ভাবে বার বার শেঘবার, শেখবারে তিনি নিজে তার শিকার। মিঃ ফেলের ধৃতিতা চোথের ওপর চলমার কাচে জ্বল জ্বল করছে। —আপনি আমাদের আজীবন সহহোগী। মিঃ হিগিনস আপনার ওপর আম্রা নানা কার্য গ নির্ভারশীল। বোর্ড আপনাকে পরিচালক



বর্গের অন্যতম করে নিয়েছেন। এতে আমরা সম্মানতি বোধ করছ। আপনার অধিকারের ভেতরেই আছে সে। আধিকার শবর্ণাটর দ্বারা কিছে, অজন করা বোঝায়। অজনি করেছেন তিনি জাহাজের বিশ্বাস অ**জ**নি করেছেন। আর বিশ্বাস শ্রদটির সংশ্বে গিলোটিন শ্ব্যি বার বার চোথের ওপর আগ্নের রিং হয়ে থেতে থাকল। তিনি চোথ মাছে ফের ৮খনা পরে নিলেন। চোখের ওপর তিনি কি যে সব ভেসে উঠতে দেখেন! এবং মনের এ দ্বেলিভা ভিনি কিছতেই পরিহার করতে পারছেন্ না কেন। আর তখনই বাইবেলের ভেতর সেই **সব শব্দ, যেন কোনো দেবদূত পাথরের** গায়ে বড় বড় শাবলে রোপুণ করে যাজেন-নাণিং কান বি কমপেয়ারত টা এ ফেখফাল ফ্রেন্ড, এলন্ড নো ওয়েট অফ গোলড এলন্ড সিলভার ইজ এবল টু কাট্নটারভেল দ গ্রভাবেস অফ হিজা ফাইডেলিটি। তিনি ভীষণ ঘামছেন। খালি গা তাঁর। সাদা রংয়ের হাঞ্-প্যাণ্ট। মুখ চোখ ক্রমশ আবার লাল হয়ে যাচ্ছে। সেই সব শব্দ পাহাডের গায়ে এত বেশি বড হয়ে যাছে, এত বেশি কাশছে এবং ক্লমে এগিয়ে আসছে যে তিনি আর বসে থাকতে পারছেন না। যেন বার-বার সেই স্ব শব্দ বিশ্বসাভ্যোর দায়ে অভিযুক্ত করছে: তাঁকে। সংসা আবার সব পাহাডের গায়ে খোদাই করা লেখা সব মাছে গেল। যেন সেখানে ডেভিল ভার শাবলে ণ্ড বড অক্ষরে ছের রোপণ করে যাছে নতুন সব শব্দ বাই সা এনভি অফ দা ছেভিল, ছেও কেন্ন ইন্টুদ, ভয়ালভি। **তেথ**, একাক[†] গোপনে স_েবার উলারণ ধার্রর সময় তিনি কোদে ফেপলেন। দোহাই আপনার, তিনি বেন বাতাসে তাঁকে খু'তে চাইলেন। বানকে ছাড়া আমি আর কিছা ভাবতে পারি না। দোহাই, আপনি তাকে इका कत्ना

ভারপর আর যা মনে হয়, তিনি পাগল · হ'মে যাচেন্তন না তো! নিভেকে অকারণ কেন ৰার বার বিশ্বাসভ্যেগর দায়ে আহম্ভ হারছেন! সাধানণ একটা জাইাজকে কেন বার বার ভারছেন ভার 🗋 প্রতিটি রিণ রঞ্জ-মাংসের। কেন ভাবছেন এক্ষ্যান ভাই।জের হাড় পাজরে বিদ্যাৎ থেলে যাবে! আর তিনি এ-সব কি দেখছেন চোখের ওপর। —সভি। সারা ডেকে বিদ্যাংগ্রাহ, সেই কোনো মুর্ভুমির স্রীতিকার মতে তিনি চেমতে পাচছেন বনি আতংক চিৎকার করতে, **লাফিয়ে লাফিয়ে বেড়াচ্ছে। তিনি র**ীজে যেন ক'্কে পড়েছেন। চিংকার করে ভাকছেন, বঁ ওদিকে না। এদিকে চলে এক। ছাম বনি কিছ তেই এদিকে চলে আহতে পাধছে না। অকটোপাসের মতো বিদ্যাৎপ্রবাহের বেড়াঞ্চালে আটকা পড়েছে। মেয়েটা শোলালী লতায় কমশ চেকে ভিনি 7364 হুর্নজ্বে। আর সংধ্যা সংখ্যা বেচহেয় না পোর হাতের বাইরেল 🛚 ছাড়ে দিতেন: ছুড্ড দিলেই সব বিদ্যুৎপ্রবাহ क्षेत्रक अध्याच वागीएक छाई दस वादन তখনই মনে হল অনেক দ্বৈ সম্দ্রে অথবা বাতাসের গায়ে কেউ রোপণ করে গাছে আশ্চর্মান্ত অভয় বাণী—কল আপন মি ইন দা ডে অফ টাবল আই উইণ ডোলভার দি, এয়ালড দাউ শ্লালট শ্লোরিফাই মি।

তারপর সৰ আবার ঠিকঠাক। জাহাজটা যেন একেবারে আর দশটা জাহাজের মতো। এডক্ষণ ডিনি কেবল জাহাজটা দেখতে পাচ্ছলেন, আর কিছা দেখতে পাচ্ছলেন ন। বনি ভেকে লাফিয়ে লাফিয়ে বেডাছে, আর কিছা দেখতে পাচ্চিলেন না। তিনি নিজে রীজে দাঁডিয়ে আছেন-আর কিছ-দেখতে পাছিলেন না। এখন তিনি আবার সব দেখতে পাছেন। চারপাণে টাগ-বোট दान थोनाञ्च करत हरन शास्त्र । अकस्रत थानाजी तः करतः फिन्नरकः। शक्तकः। थारतः भारम द्वरथ रशाभद्य भिगादबं भारकः। বড় বড় কাঠে নাবিকেরা ফল্কা ঢেকে দিক্ষে। ভেরিকের দক্ষিদভা ভুলে নিরে बात्स् एक-कण्म। हार्ग्यावः क्रेम्स्ट्र मिट र्थिक शाक्षा त्वत करत रत्रश्यक । धवारत राम হামাগর্মড় দিয়ে উঠে আসবে। বনি যোট-ডেকে দাঁডিয়ে ডেবিডের সংগ্র গ্রন্থ বর্গেছ।

আষার এ-ভাবে প্থিবীতে আর একটা
দিন শেষ হয়ে যাছে। স্থ অভত থাছে
পাহাড়ের মাথার। সম্দে সব পাণিদের
ছারা। ওরা বাঁপে ফিরে আসছে। পেডিএালবারস কোথাও হয়তো আছে, অথবা
সম্দের গভীরে নাল জপে এখন মাছ ধরে
নাডে। সে বোধহয় তার প্রেম্পাথিটার
কথা একেবারে জ্পুল গেছে। প্রিথ্বীতে

বে'চে থাকার সময় কত শন্তি, কত এবং এইসব ছবির শন্মালা আরু যার না, পাথিব'র অন্যকারে জন্মা জগতের সেই প্রবাহমান ধারার মিশো কত কারু কত সামান্য এ-সর মহে সাালি হিগিনস এ-সব ডেবে বোমাহম দ্বৈপতা পরিহার করতে চাইছেন হতে না পারলে ভিনি ড্বে যাবেন্।

কোয়াটার মাণ্টার জাতাজের সর क्षान्तम नित्रष्ठ एथन। कात-भारम्पेत জৈনলে, দ্ব-প্রশের সব তালো 🐷 জনলতে সে ছাটছে।মেন-মা**ণ্ট**া আলো জন্মলতে হবে। জাহা**জের**ী या किছ, अन्धकात देन मा-शारक अधन দিছে। সৰ আলো জেলে, সৰ পতাৰ নিমে যাবে সে। ভারপর হয়ছো विश्वित स्थामा एउटक केमाद काकारणक जाक्यामिन दकरहे रशस्त्र भ्राचित्रके शरिमधानात कारक मायाना मळकाने 💥 वारे मा धनिक अक मा ट्राइक्ट हों हेनचें मा क्यामा । यान्यत्व अक्रका হায়ে উপায় নেই। পাপ এবং · বিকার कता भागत्यत मठकाना ना देखा নেই। এবং এ-সৰ মনে হলেই ডিনি) ভেতরে দ্বেলি হয়ে পড়েন। **ভার পর**ী নিমেষে উবে হায়। তিনি **ভথন**ী করবেন ঠিক করতে পারেন না তিনি পাতার পর পাতা না দেখে বা সব **শতবক আব**িত্ত করে মান। কথনত তিনি কোনো চিপ্রিচ্যেল সং एटए शाव्यक हाम-भारतम मा। शाक

হাস্যে লাস্যে মোংজাল বিস্তার করে যে সব বংগিনী ধুমকেছুর মত রাজনৈতিক বংগানত প্রথম করে সব কিছাকে তছাছে করে পিয়ে আবার অনুশা হয়ে যায় তাদেরই একজনের প্রকাশ্য ও নেপথ্য কাহিনী। ৫-০০ টাকা

॥ প্রকাশিত হব ॥ শ্রীপারাবতের

विदनापिन

। সদ্য প্রকাশিত ॥ সৈয়দ মুস্তাফা সিরাজের

হাঙর

.....দ্ হাতে রুণিটকে জড়িয়ে ধরে ব্রেক টেনে নিসাম, তার্পর একটা ফুল কচলাবার আনক উপজোল করে সোজাহরে দাঙালাম। রুণিট মিটিমিটি হাসছিল। , আঁচল দিয়ে গলা ও কুপাল থেকে আমার চুনোর দগ মুছাছল অথবা কেন দাগগুলি নঙুন করে ছারে ছারে দেখাছল। ৬-০০ টাকা ॥ শূল্ প্রস্কাশিত ॥ জ্যোতিরিন্দু নন্দরীর

প্রেমিক

প্ৰেত্তক প্ৰকাশনী — ৮২/১ মহা ঝা গ্ৰন্ধী রোড, কলিকাছা

তে করণো ভিকার মতো গলা ছেডে ি ভীষণ ভাল লাগে ভাকতে তিনি ছন-জাই এয়ম অন মাই ওয়ে। অথবা ও আই এগম তান মাই ওয়ে টু লৈ-স্যান্ত। তারপরই মনে হয় নাডির ্বা থেকে গুলার স্বরে ভেসে আসবে 🖫 ঈশ্বরের জন্য প্রতীক্ষা—শেলারি হ্যালে-্মি. আই এ।ম অন মাই ওয়ে। আমি িনার কাছেই যাছি। কোনো উপতাকার 🐺 **অথবা** কোনো শ্বীপ্রমালার ভেত্র 🖟 **ষেতে যে**তে, অথবা সব সব্জ গাছের ্রি, দরেবতী নক্ষতের মতো মরে ঘরে খীতে করণো ভিক্ষার মতো তিনি যেন মাজেন, পোরি হ্যালেল,জা, আই আন মাই ওয়ে।

—স্যার! স্যালি হিগিন্স মুখ তুলে তাকালেন। — ভাজার নিফে দটিভূয়ে আছে।

্রী—ভার্কার আনার কেন! আমি তো ্রী আমহি।বেশ ভাগো।এখনে তাকে বুঁএস।

্—িভিতরে গেলে ভাল হত না স্নার।

্ — তোম্বয় ভাবি জনালাতন কর চিফ।

কৈ নিম্ন হঠাৎ তোম্বদের কেন যে এত গিবনা বাঝি না। বলে, তিনি উঠে জিন। সম্বুদ্ধ থেকে জোল হাওয়া উবে ছৈ। তিনি ইচ্ছে করলে তার পোলাক গিপ্রি পরে নিতে পারেন। আর বৈ তিনি প্রায় এলকমের। ধরাত্তা বি তিনি প্রায় এলকমের। ধরাত্তা বি তিনি প্রক্রারে এখন কর্মপেন স্বালি নিসা ভেকের ভালার এপে হাত বাড়িরে ভিন্যাক কর্মেন। ব্লম্পন, তোমার কি মনে হয় ভারনর, এ-বঙ্গুনে তুমি আর আমার কিছা করতে পার?

—না সাবে।

—তবে এসেছ কেন!

ভাঞার এর ওর মাথের দিকে তাকাতে থাকল। তথম বনি ধলল, তুমি শানের প্রত্যোধার।

আর একটা কথা বগতে পার্রেলন না।
একেবারে ভাঁতু বাগকের মতো শরের
পড়লেন। বনি খতক্ষণ পারের কাছে আছে
আর বোধহয় তিনি একটা কথাও বলতে
পারবেন না। সামানা দুট্নিম করার ইচ্ছে
ছিল ভারারের সংগা। বনির জনা তাও হল
না। চুরি করে মাঝে মাঝে মেয়ের ম্থে
দেখছেন। বনি ভারারের ম্থে দেখছে।
ভারার ভারারেক নানাভারে সাহায্য করছে।
কতা রক্ত-চাপ শরীরের দেখছে এবং কানে
নাল লাগিয়ে ব্যক্ত পার্শে দাঁড়িয়ে আছে।
ভারার কি বলবে শোনার জন্য চাথের প্লক

ভাষার সব ব্যাগের ভেত্তর ভরে নেবার আগে, জিভ দেখল, চোখ দেখল, পেট টিপে দেখল। দুটো একটা প্রশ্ন। যান অথবা চিফ-মেট কথনত ভেবিভ জবার দিচ্ছে। এবং সকালে জাহাজের এনজিন-রমে নেমে গেছিলেন এ-সবত যথন বলা বাদ গোল না আর যথন ভাঙার বলাল, ভাল আছেন, কোনো ভয় নেই, তথন স্যালি হিগিনস হা হা করে থেকে দিলেন।

—তবে! বলেই স্যালি হিণিনস একেবারে সোঞ্চা উঠে বর্সোছকোন।

--ত্রে জাপনার এ-ব্য়সে যত বিশ্রাম নেবেন তত ভাল।

স্যালি হিলিনস সহসা গলা ছেড়ে গান গেয়ে উঠেছিবোন ব্ৰি—হাত তুলে বলার ইচ্ছে—আই এ্যাম অন মাই ওয়ে, আই এ্যাম এ ফলিং এ্যাম্ড এ রাইজিং, বাট আই এ্যাম অন মাই ওয়ে।

স্যালি হিণিনস সহসা বললেন, ভাজার তুমি গান জানো?

ডান্তার মান্বেটি সাম্মান্য না হেসে পারণ না। কাম্ডান সন্তিয় মন্তার মান্বে। অথচ সে দেখেছে, অফিসাররা কেমন ভীতু মথে করে গ্রাই গাঁড়িয়ে আছে পাশে। থমদ্ভের মতে ভয় স্যালি হিগিনসকে। সে এবারে বুগল, জানি সার।

চিফ-মে অবাক স্থালি হিণিন্দ্র
রাশ্ভরী ক্রিক্টিলেন এবং দিথব ধার
কাণতান। কিংখালিলের মতো তার জাবিন।
এবং থেহেতু দ্বাধাদিন একটা অচল জাহাজ
চালারে তিনি প্রমাণ করেছেন, তিনি আর
দশজন কাশ্চনের মতে। একবারে শ্বেম
কলকজার তপর নিউল্লোলি নম, এবং
ভাহাজ চালা ১ গেলে একটা দিথর বিশ্বাস
থাকা বাছ্নাহ নাগা ঠানতা রেখে কাজ
করা যত যায় তত মজালজনর এক তিনি
যথন এ-ভাবে একজন সকল কাশতান তথন
বলা ছেড়ে লাম গাভ্যা খ্ব একটা ম্যালের
বালার দ্বান্ন কন্তু কি বলবে সে, ব্যালের
বর্গাবার দ্বান্ন তাকিয়ে আছেন। সে
বলল, গলা ফোন্ত পারব।

—তা হলেই চলবে। তুমি ভেবিত। ভেবিত মহল ফ্ৰিলা

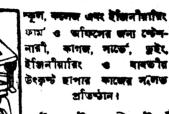
—ছোটবাৰ ু ব্যোহায় ? ছোটবাব,কে ভাকো। আমরা সর্বই এখন গলা ছেডে গাইব, তেলার হাটেলল্যা, আই এটাম অন অন মাই ওয়ো। গাই হাচে হাচ টাই**ন্** বাট আই হাছে অন মাট ওয়ে। হ্যাভ **এ মাইটি হাড**িটাইম, জেলালি হ্যালেল**্ছ**া, আই এশে অন মাম ওয়ে। ভাতর সবাই মিলে পায়ে ভাল দিয়ে গাইছে। যেন জাহাজে এখন পিয়ানে। থাকলে, পিয়ানো বাজাতে পারত। অৎচ ছেট্ৰাব বাইবে দাডিয়ে আছে। সে কোনোট্ন কোনো গানের সংগ্রে হিক্মতো মেলাতে পারে না। আর এ তো বিদেশী গান, এবং গল৷ চিরে যাচ্ছে—এ-ভাবে অস্কের কাপ্তানের কি যে মার্ক্র, হয়তো ভেতরে একটা গৃন্ডগোল ঘটে গেছে স্বার, সবাই এখন এইস্ব চিপরিচুয়েলসের ভেতর সামান; অবলম্বন ব্যাজাছ। মানার এভাবে দীঘণিন সম্দ্রে ভেসে বেড়ালে মাধা ঠিক রাখতে পারে 🚓।

স্যালি হিগিনস খুশীর চোটে ভারারকে
পরীদন লাগে দেয়কতম ৬রে খেলালন, তুমি
কেশ গাও হে ছোকরা। তোমার গলা ভারি
দরাজ। আমিও এক শময় খুব গলা ছেড়ে
গাইতে পারতাম। এখন পারি না।

বনির ভয় লাগছিল, বাবা হয়তো এবার বলকেন, আর একটা। সে ভাড়াতাড়ি বাবাকে বলল, বাবা, তুমি আমার রেকভাগুলো শুনবে?

স্যালি হিগিনসের ঘেন সহসা বাঁধ তেশো গেছে। তিনি বনির কথা একেবারে শূনতে পেলেন না। বুড়ো মানুষটা বাঁধানো দাতের জন্য ভাল গাইতেও পারেন না— অথচ ডাক্টারের গলায় এবং সকলের গলায় গানটা আচ্চর্য এক স্বর, কথনও উঁচ্ লয়ে, কথনও নিচ্নু স্বরে, কথনও ফিস্ফিস্ গলায় আবার কথনও লন্দ্রা ঘেন সরু,





কুইক ষ্টেশনারী ষ্টোর্স

৬৩ই, রাধাবাজার স্থীট, কলিকাতা—

জ্ঞান-- ২২-৮৫৮৮, ৩৭-৪৬৬৪; প্রারঃ অরার্ত্তিন--হাওকা পোষ্ট বর-৩৮, হাওকা

রেখার মত্যো ক্রমে জাহাজের বাঁশি বেরে উঠেছে। তিনি ফের বললেন ধরে। হাও তুলে এই ছোটু কেবিনের ভেতর, ঠিক ছোটু কেবিনে কুলছে না বলে তিনি প্রায় হাও তুলে গাইতে গাইতে ব্রিয়ে উঠে যাচেন —হোললার, হে ওমান হে গালা ডোনচা ইউ হিয়ার মি, কলিঙ ইউ, সাই ওমান ।সা সাইট সো সাইট!

ুবনি ভাকল বাবা। তুমি এত জেওর গাইবে না।

স্যালি হিগিনস হাত স্থিয়ে দিয়ে একেবারে স্থির হয়ে গেছেন।

স্বাই এ-ভাবে দিখন। তার মনে হাজিল বাবা সারাদিন এ-ভাবে কি য়ে স্ব করে যাজেন! কোনো মাথামনুক্ত নেই। সে ডাকল বাবা! বাবা! বাবাকে ধরে ফোলল। তুমি থামো বাবা। তারপর যেমন চিহুবার করে বলল, আপনারা থামান। বাবা বাবা!

স্যালি হিগিনস একবারে ধপাস করে বসে পড়লেন। খাব জেবর জোরে খবাস নিচ্ছেন। ভারপর ঢোক গিলে বলনেন ব্যুখনে এখন আর সভিত পানি না। আরার ভাষা প্রিয় সান এটা। পানি না আর পানি না।

বনি এবার বাবার পাশে বঙ্গে দলন বাবা আনার যদি ভূমি গাও, আমি কিন্তু ভবিধা কান্ড কবর।

স্থালি হিণিনসের মনে হল, স্থেটোট থাকলে এখনত হাঁর বেণ্ড আছে। ভিনি বললেন, আরু গুটিব না। আমার আবু কি গাইবার আহে।

আর তথ্য তার্চি ভাহাজের অন্বকারে পায়চারি করছিল। কত্রদিন সে ভাল্গায় রামতে পারে নি : ৬ জ্যায় নামতে পারলে তার ভেত্রের অস্থটা নিরাময় হত। সাময়িক নির্মেষ্ডকে হয়তো রুষে এ ভাবে এক কঠিন নিয়তির দিকে এত সহজে ঠেলে দিত না। সে ডাল্গায় নাছতে পারলে কোন স্দ্রী রম্ণী, অথবাকি যে হচেছ পর্নিথবী থেকে সে প্রায় আছে নিব্নসনের मञ्जा এবং যে কোনো वन्मः द्व' न्नध्य शालारे যুবতারা যেন তার কাছ থেকে আমরকাথে পালাতে চায়। কোথাও সে দেখেছে, শিশরো তাকে নিয়ে ভামাসা করতে ভালবাসছে। ভাষে সে আর জাহাজ থেকে নামতে পারছে না। আয়ুনায় যত নিজের মাথ দেখা তত ব্যামে স্বে ভয় পেয়ে যাছে নিজেকে: এবং অশ্বকারে সে এখন বেশি থাকতে ভাল-বাসছে। ডাইনিং হলে সে যাছে না। **মেস-র্ম-বয়** তার খাবার ফেবিনে দিয়ে আস্ছে। এ-ভাবে সে ঠিক বড়-মিশ্রির মতো ক্রমে অন্ধকারের জীব হয়ে যাচ্ছিল। আরে তখন জাহাজে বালিকা যুবতী হচছে। জাহাজে থালিকা...বালিকা, প্রায় রেকডের বাজনার মতো বালিকা যুবতী হচ্ছে।

আবং আ-ভাবে আর্চি দেখেছে, বরং সে এখন আলো দেখগে ভয় পেরে যায়। কেন্ট মূখ দেখকে তা সে চায় না। ধতটা গোরে সে মুখ জ্বিক্য়ে রাখে। জ্ঞাককে

দেখলে সে আর মাগের মতো দৌডে যেতে পারে না। কারণ জ্যাক এলন কদ্য মাখ দেখলে ভাষণ ভয় পেয়ে যায়। কাপ্টেনের ঘরে গতরাতে সে কিছুক্ষণ বসেছিল, উঠতে ইচ্ছে কর্মছল না, জ্যাক ওর দিকে একবারও ৬া তাকাচ্ছিল না। সে লোভের ভেতরে পাড়ে যাছিল বন্ধপ্ৰাহ সাবা হাথে এবং সে ভেতরে ভেতরে নিষ্ঠার হয়ে যাছিল। সে কেবিনে ফিরে দ্র-হাতে এইসর কদর্য ভোৱা কাটা কাটা দাল মাজে দিতে চেষেছে: থতবার মাছে দিতে চেয়েছে, ততবার সে পেথেছে দাগগালো আরও প্রকট আরও গভারে—কি যে কালো আর কুংসিত হয়ে যাতি এবং পালে পালে সাপের মাতো নীলাভ সাদা রং স্বার্ডাবিক চাম্যায়—ক্রে উইচ, আফ্রিকায় ঘন অরণের ভেতর কোনে অরণ্য সদ্বিবের হবেতী কন্যার চাম্যার তলে নিচ্ছে। সে একটা উইচ, সে একটো উইচ!

আসলে এ-জাহাজে যুত রাত বাড়ছিল
তত সে ঘুমোতে পারছিল না। মাঝে মাঝে
সের ক্ষেপে হায়ল-শরীরে আশ্চর্যা লোভ
ভালসা, কোনো বালিকা যুবতী হবার
মাথে শায়ে আছে, তার চুলে সমুদ্রের গণ্য,
দারীরে কি যে দরম আশ্বাদন, মাংস খাবলে
নিতে ইচ্ছে করছে বার বার, জংঘায় ভার
রয়েছে চমংকারীয়-মেন হতের পেশা
সেই চমংকারিয় পর লাইন করে নেরে।
সে এ-ভাবে ক্রমে যুখন ক্রমান্ম হয়ে যার
দার পারে না, চুলি চুলি একটা খবাপদের
মার পারে না, চুলি চুলি একটা খবাপদের
মারতা উঠে বার। গভার রাতে সে দেখেছে
ক্রমান্ত কেউ না কেউ বালিকার মাথার
ভপরে সতর্কা পাহারায় থাকে-ক্রমান্ত

প্রেতাত্মা, লেডি এনলবার্যস ল্যকেলারের ক্থনত সমুদ্রের অণ্নিকান্ড, ক খনৰ ব্রুপাতের মতো কিছু অধিভৌতিক শাদ অভাতরে বাজতে श्वादक । ভাকাপের গর্টিয়ে পালিয়ে বার বার সে ভয়ে লেজ আবার আসহে। এবং যা হয়ে থাকে. দুরাত পার হয় না কেবল জ্যাকের কেবিনের চারপাশে খাঁচায় পোরা বাধের য়তো এ-পাশ ও-পাশ করা, কখনও শর্ম শ্ব'কে ধাওয়া, জ্যাক হোখানে বঙ্গেছিল, যেখানে দাড়িয়ে গলপ করেছিল সেখানে শ'ুকে শ'ুকে সে কুকুরের মতো মাণ্ নিতে নিতে অমান্য হয়ে যায়। তথন মুম আসে না, মদ খেতে ভাল লাগে না, ভাগা আহ্না আরও ভেগে দ্মডে সে একটা অভিকার মনস্টার যেন। আর অন্ধকার ভার

শটা লাখন। তখন সহসা ।

শতে পাজেন! ঠিক মোনতিয়া সে স্বাপিড়িয়ে আছে। জক ক্ষেমক্ষেম্বত ডেক-সাই এবং কমে ছায়াটা
কণপ এবং অনা সুতে হতে প্রায়
তুলা আসকে।
আধি-ভৌতিক ঘটনায় পথতে। ভাগি
সংক্ষে সে উসকে দিতে কাহাজের
একমার স্থবল এইসব নিবাই-পারভেন
কাহাজির। স্বাই তার হাতে রোভে
ভোহাজে বিজয় লাভ করতে সময় তেই
সা। তখন সে যুবত ইবার মুখে পদ্ধ
সব কিছা চাংকারিয় লুক্টন করে তি

অংশকণর দাঁড়িয়ে তার মনে হল ।
রিছিপের মতো কার। এগিয়ে আসে
েথন বাতাসে ভর করে প্রথমেই এ
দাঙাছে, ছোটবাব্। সে সন্জোরে ছোটবান্
পেটে ঘৃসি বসিয়ে দিল এবং দেখা পৈ
ডেক-সারেং দাঁঙিয়ে আছে মেন-মাহে
দিছে। এবং উইনচ চালিয়ে সোজা মান্তুচ
লাটকে দেওয়া হছে। আ হাততালি। ভা
হুবতা এন্য এভাবে কবে যে স্থাল ছবে

আঠি অন্ধকারে দাভিয়ে পায়চা করছে। এদিকটায় কেউ আসে না। कार्ष তখানে বড-মিন্তি থাকতে একবার স্কুর্ দৈখেছিল। <u>অথবা কেউ</u> কেউ জাহাৰে রাতের গভারে কোনো **যুবতীর ছার্** দেখেছে। আর কি যেন আছে এদিকটাজে নানা কারণেই সব সময় এ জায়গাটায় কেট আলো জয়লিয়ে দেয় না-তঞ্বা মনে এই আলো য্তব্ব क्षा,नारना ध्याष्ट्र ক্যান্টেন কোপাত্ত ভান্ধকার রাখতে যুক্ত যুদ্ধ করেছেন তত সে মাঝে মাঝে এদিকটা লাইন অকেজো করে রাখে। এবং যেছেট তার হাতে ভোরামতের দায়-দায়িত কে আনু ভাবে—কোথায় ভালো কিভাবে জ্বন্ধরে এবং এই অগ্যকারে সে দেখতে ুপ্র বাভাসে ভর করে এসে দাঁডিয়েছে, স্নাটি হিগিনস। আচি হা হা করে হেসে জাল বশল, স্যার আপুনাকে আমরা কিছ, কর্ম ন। সামনের ধ্বীপটাতে আপুনাকে আনা রেশে চলে থাব। আলেকজানভার সেক্ত্র 18 P. July श-श-शा

জ্ঞাক তৃষ্টি কি দেশছ। তেলেক ক্রিনিট করব না। তেনের দেশু চ্থান্ত করে না। তেনের তালিকার ক্রিনিটার করে দেশু। তেনের তালিকার করে বাব ক্রাক। তেনের বিধ্বাসন্থান করে বাব ক্রাক। তেনের বিধ্বাসন্থান নাম রাখব। প্রের্বের বি



ভোমান থাকা থেকে কোটে দেব। আৰ কিছ? কৰম না। সভাি বলছি, আৰ কিছ; কৰৰ না।

তথ্ন স্থালি চি চিনস সি ডি ধরে নাম
হলেন। তিনি চাট ব্ৰেম দিকে এগিয়ে

হলেন। কি লাভ কলে বাক। গতকাল

কলে কল্লুভ একটা দৃত্যিকাম সময়

কটেছো। কোন কাল কলতে পালেন নি।

কলি নান হয়েছে যে-কোনে মৃত্তে

হলটেন। ঘটে ধানে। তবিত্বা তেবে মাধা
প্রেমে কোন্ডা গ্রাম্য থাকবেদনা।

এখন সময় যুত চলে যাছে তত তিনি **हाल्का द्यास कन्नरह**न। वात वात मुचारत्व মতো তিনবারের মাথায় কিছু ঠিক ঘটরে, এবং ভয়ংকর সেই ঘটনার মাখোমাখী হাড়ে হয় পাঞ্জলেন প্রথমবার থিও ফেল নিজে: দিবতীয়বার রিচার্ড ফেলের একমার জাতক ইইকিছার ফেল। তথন রিচার্ড ফেল গাড়ি হারিয়ে নিচ্ছিলেন। হুডখোলা গাড়ি। বারান্দার পাশ থেকে সেই প্রাসাদের সতো বাড়ির রাস্তায় চলম্ত গাড়িতে ধপাস করে কৈছে এন্সে পড়েছিল। সব কিছা ঠিকঠাক। কেবল কাগজপরে সই সাবুদ-ভারপর in 🚧 বাৰেককে আৰু দশটা প্ৰোলো ভাংগা জা**হাঁকের ম**তো নাকে দাঁড় দিয়ে নিয়ে **ঘাঞ্জা হবে—ভার[‡]রই ঠিক ছিল উৎস**ব গ্রাষ্ট্রালে, এতবড় একটা আজীবন উদেবগ শেষ হয়ে গেল বলে যথন উৎসবের আয়ো-জন্ম ঠিকঠাক তথ্য হ্যুদ্ধোলা গাড়িতে এক**র্মার** জাতকের মারদের। দোতালাব

রেলিং টপকে কেউ ভার বালকপত্রকে নিচে क्षेत्रम क्षारमः-निरम्नकः विकाध-क्ष्मन सम्भारमन ঘাড়টা বেশকে গেছে, মনে হয় মাড় মটকে ছাড়ে দিয়েছে নিচে। এবং রিচার্ড ফেল পাগলের মতো নেমে গৈছিলেন। উন্মাদের মডো চিংকার করছিলেন সি'ডি ধরে ওপরে ভাটে যাওয়ার সময়-সব শেষ! ডারপর তার গলাব স্বর ভয়ংকরভাবে তীক্ষা হয়ে উঠেছিল।∼দা সি-ডেভিল। ধেন খধর সিউল-নিয়ে शार्यन यास्त्रवादन বাাংককে পর্যাভয়ে মাও। পেটোল চেলে জনালিয়ে দাও। সে আমাদের সব কেভে নিচ্ছে। তিনি ভারপর কিছাতেই ততীয়বার জাহান্ত সক্যাপ করার আদেশপরে একটা কথা লিখতে সাহস পান ন।

আসলে দৈব-দ্যটিনরে সপে যদি ভাকারণ কিছা হায়ে যায় তবে তার কি দোব! অমধা সিউপ-ন্যাংককে নোয়ারোপ করার অর্থ হয় না।

সামান জনপদার্থ এই জ্লাহাজ। খ্রা কলক-জায় চলে। কোনো অনুভৃতি থাকেও পারে না। ভাগচ বাব বার একে দোষারোপ করে অভিকায় ভীতির ভেতৰ পড়ে যাচ্ছে স্বাই। কাল রাতে সেই প্ররাববিত্র কথা ভেবে তাসস্থ হায়ে পড়েছিলেন ভাষচ মাথে বলা যায় না, ভারি খ্রাস্যকর ব্যাপার-এবং কেট গ্লগ্ৰণ ভেবে একজন বনেদী কাণ্ডানের এতদিনের ঐতিহো কল ক লেপে দেবে স্থির করেছিলেন্ স্ব তিনি ঠান্ডা মাথায় করে সাবেন। যতেই ভাব্ন স্ববিজ্য ঠান্ডা মাথায়ু করে হারেন শেষ্প্যন্তি আর তিনি খাব ঠাশ্যা যাথাসুছিলেন না। তিনি সারাক্ষণ বনিকে ভলে থাকার জনা একটা ন্য একটা অস্বাভাবিক কিছা করে গ্রেছন। এ-সব মনে হলেই ব্যুক্তে পারেন দীঘ⁴-দিনের অভীব এক বিশ্বাস ভেতরে কলো বে'ধে আছে। ছার হাত থেকে তিনি কিছ্যুতই নিংকৃতি পাচেছ্ন না। এবং সাবে মাঝে এই যে ধনিকে ডেকে পঠেচেচন ডেকে বলছেন, আছে। বনি রোমার শ্রীর ভাল তে।। এবং এ-সৰ প্রশেন তিনি দেখেছেন, বনি বড় বড় চোখে ও র নিকে তাকিয়ে থাকে। কিছুবলে না। বড়বেলি অবাক হয়ে যায়। তিনি হাথন নিজের দ্বেলিভার ধরতে পেনে কেন্দ্ৰ শুক্ৰো প্ৰায় বলেন জাহাজ তে খাব একটা ভাগো জায়গা নয়। সাবধান থাকলে ক্ষতি কি!

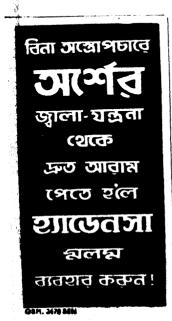
তথনই আব্যর মনে হয় সেই ভ্রাবছ বঞ্চপাতে কেন্দ্র মারা যাছে। পাথিবীতে কত লোক বঞ্চপাতে মারা গোছে তাখচ সেই নিদিন্ট খুবরে তিনি চিম্মর থাকতে পার্থেন না কেন! এটা তিনি কাকতালীয় ভাবতে পারছেন না কেন! এবং এট, কাকতালীয় ব্যাপার ভাবকেই তার বেশি ভাল লাঝা উচিত। রিচার্ড ফেলের শ্রীমান তে। ভারণ চণ্ডল ছিল ব্যভাবে। পরিচারকলের সব সময় দ্বভাবনার জম্পর করে রাথ্ড। সে থে সহজ পথ ভেবে রেলিং উপকে প্রলাকে চার্মান এবং নিচে পড়ে হার্ম নি কে বলবে। তিনি মাথা থেকে অহেতুক দৃত্যিনা স্থিতি দ্বোর জন্য হাজার রক্ষা ব্যাখ্যা ক্রতে থাকদেন স্বকিছু। নতুন করে আবার সর ভাবছেন। না ভাবলে তিনি পাগুল হয়ে

তব্য রক্ষে সূম্যটনা ঘটে হাবার আগেই কাগজপর স্থ ঠিকঠাক করে দিয়েছেন। এটা একটা তাঁর বড রকমের জয়লাভ। তিনি সিণ্ডি ধরে এক ধাপ মামলেন, আমাধ তিজিবিজি স্ব চিন্তা তাঁর মাথায়। সহজে ত্রতর করে নিচে নেক্সে ছেতে পারছেন না। অনেক উণ্ট থেকে তিনি দেখতে পাক্সেইন মহিষীর মতো সিউল-বাংক ভেসে আছে স্মাদের জলে। তার দুটো বড় মাস্তুলে তেমন লম্ফ জালছে। হাওয়ায় তার দীড়-দ্যা তেমনি বাতাসে লোল খাচেছ। কেন্দো কিছুতে ধ্নে তার আসে হার না। শুরু মনে হল থানিকে বলে দিতে হবে, বুলি ভূমি কিন্তু রেলিং ছোষে কথনও দাঁড়াবে না। নিচে ঠেলে ফেলে দিলে তে। কিছ করার থাকবে না। তখন হতে দোহ তবে সিউল-ব্যাংকের। মনে হবে সতি। কিছ্ একটা অশৃত প্রভাব এ জাহাজে আছে।

স্থালি খ্রিনিস চ্রাট-ব্রুমে চ্রুকে বল-লেন, হেডারে ঘড়িতে কটা বাজে চিফ-মেট ?

চিচ্চ-মেট ভাবি অবাক । মাস্টার তাকে জিজেন কবছেন কট বাজে ! সময় মোলাজেন ঘড়িতে , মুম্ম তৈ। তার ভুল এবার কথা না। সময় ঠিকঠাক থাকার কথা। চিফ্ মেট বলল নটা বাজে সাবে।

---আমার ঘড়িতেও ঠিক নটা। ভীষণ কারেকট সময়। দ্যাখো দ্যাখো সেকেন্ড এবং মিনিটের কটি ঠিক দ্ভানের এক জায়গায় নেখে স্যালি হিগিনস ভীষণ পূলকিত হয়ে পড়ালুন। ত্রণর হাতের স্বড়ি কোনো অশ্ভ প্রভাবে পড়ে বেতে পারে। কিল্ড চিফ-মেটের ঘড়ি এবং যেখানে যত-রকমের সময় নিধারণের ব্যাপার আছে সূৰ্বত দেখে দেখে বুৰতে পাৰ্লেন কোনো कृत-तुर्वित क्या स्तरे—अभय ठिक—शासा घन्छे। পর হয়ে ছবিশ খিনিট। এবং এভাবে তিনি वाज याज्ञ क्वितन पृत्य शन प्राच्य शायक्त! গ্রিনিটের কটি। একব্রে ঘারে গেলেই : সেই শৈশবের মতো প্রায় লাফিবে উঠছেন-এক লুই তিন গুনে স্থাচ্ছেন। মত সময় পার হয়ে যাবে তত তার রোষ কমে আসংব। বোষের মুখে একরকয় সময় পার গেলে অন্যরকম।



সারারাড 'ডিনি ঘাড়র শেহতলায়ের মাজা এভাবে চিত্তাভাবনার দুলেছেন। পারচারি করেছেন। যুকোতে পারেন নি। মানে মানে শেষ হোলে দ্বাভিয়ে দেখেছেন সর্বত্ত শুকু ক্রেরা ভেসে যাছে আকাশে। কখনও জিন সিপাঁড ধরে নেমে এসেছেন নিচে। বুনি, দরক। খালে যদি কোথাও চলে বায়! কোনো অখাভ পরি তাকে যদি আকর্ষণ করে মাথায় তে। চখন কিছু থাকে না। বোকার মতো দরজা ধালে হেশটে ষেক্তে পারে। বার কার নিচে ওশরে, কখনও মাথায় হাত দিয়ে দাঁডিয়ে থাকা কখনও ঠিক বনির সামনে দাঁডিয়ে ভেবেছেন, কেবিনের ভেত্র বনি নেই, ফাঁকা ঘর তিনি পাহারা দিকেন ভখনই ব্কটা কে'পে ওঠে, মূহ্ত'মানু তাব আর অপেক্ষা করার সময় থাকে না-বনি বনি তুমি কি করছ ! বনি !

বনি দকজা খুলে মুখ বাড়িয়ে বলেছে, কি হল বাবা? এতে রাতে? তুমি এখনও বুমোও নি! চল ওপরে!

— আরে না। তুমি ঘুমোও ! আমি ঠিক উঠে হাতে পারব। আছে। গণানো, পরজা ঘুলবৈ না। কেয়ন ? জাহাজ তো তাগ জারগানা। কেউ ডাকলে পরজা খুলবে না। দরজাটা ভাল করে লক করে লাও। কি দিবেছ ?

—হা দিয়েছি। তব্ ঠেলে দেখলেন একবার। রাডটো কিছুডেট লেব চল্লে মা। সেই এলিসের মৃত্যুদ্ধ দিনের মতো। প্রত্যোকটা মিনিট বল্টার চেরেও বেলি লম্বা ক্রয়ে যাকে। আর ভার বুম আসেকে না। বুস এলেও তিনি ঘুমোতে হাক্তেন না। ক্রমে রাত এভাবে বাড়ছে। তিনি আর কেবিনের ভেতরঙ থাকতে পারছেন না। হেন কেন্ট অসতক মৃহুতে বের করে নিয়ে বাবে। চার্ট-র মের বেলিঙে চলে এলেন। এখানে দাঁড়ালে বনির দর্জা দেখা হার। উইংসের আলো এসে পড়েছে পরস্থার। সামান্য শন্দ হলে তিনি ঠিক টের পাবেন। এবং সমান পেকে যত প্রকা হাওয়া আসাক দর্জা খোলার শব্দ ঠিক শুনতে পাবেন। বনি কোথাও দরজা, খুলে চলে হোতে চাইলে তিনি ঠিক টের পাবেন!

নিশীখে নক্ষরের। ক্তথনও তেমান আক্রণে
এবং দিগতেত পারাপারহাঁন অসামভাগ কিরণ দিছে। সামনে শহরের সব আলো গর বাতি। কোথাও কুকুরের ছায়া। জাহাতে কোথাও কোনে এতটুকু শব্দ নেই। একেবারে শব্দহীন অণ্ডহাঁন যান্তার মতো তিনি দাঁভিরে আছে ওপরে। গোপনে পাহারা দিক্তেন। কোনোরক্ষে রাডটা পার করে দিতে পারকেই প্রভাবনার অনেকটা লাঘব। তথন সভসা বেন দ্বে কিছা দেখতে পাচ্ছেন! ঠিক হোম-মাল্টের পোন্ডার কেন্ড দাঁজিরে আছে। ছারা বড় হারে মাক্তে কমে এবং রমে ছালারাং লম্বা হয়ে যাছে। লম্বা হতে হতে বনির কেবিনের কাছাকাছি চলে আসচে। তিনি কাঠ হায়ে গেছেন দেখকে দেখকে। জাতি সে এগিয়ে আসছে। জাহাজের অসপণ্ট আলোতে কিনি ক্ষতে না, এভাবে টুলড়ে টুলড়ে এই গভার বাতে বোট-ডেকে কে উঠে আসছে। তিনি কিছুতেই আর স্পির থাকভে পারলেন না। রেলিভে यद्भक हिश्कात छेठेरमन एक? एक ख्यानहात ! ঠিক বনির দরজার কাছে এসে গেছিল। এখন পালাকে। মুখটা ভীষণ নিচু করে রেখেছে। ওপর থেকে দেখা যাছে না। তিনি বললেন কে ? কে আপনি। মধ্যে সঞ্জে চোথের ওপ্র থেকে ট্র'প করে ডুবে গেল। বনির সামনে ঠিক নিচে নামার স'ডি। সিণ্ডিতে ছায়টো অদৃশা হ'য়ে গেল। তথ্ন সেই মধ্য-যামিনীতে হাতাকার শব্দে, স্থাল তিগিনসের কান্ট্রনর সামগান্ন করে বেজে উঠক, কে? কে আপনি! আপনি কি জাহাজের সেই অশুভ প্রভাব। আপনি কি ক্রমে আবার প্রতিহিংসা-শরায়ণ হয়ে উঠছেন!

(इक्षांबह)





মঃ ভাঃ ৰংগ স্থিত্য স্কেলন নিৰ্দা প্ৰগণা শাখাৰ বাহিকি অধিবেশন

গত ১৬ জুন রবিবার বারাসাভ-এর
রান সিনেমা হলে নিখিল ভারত কলা
হৈতা সংক্ষেলন-এর চিলাল পরগুল শাংলার
রম বাহিন্ত অধিবেশন সম্পান হুরেছে। এই
ক্ষেলনে সভাপতির ভাষণে সাহিতিকে
বাহ্নিক শ্রীবুলারবর্গতে থেখে বলেনঃ
ক্ষেলনাশ্ল নতুন সাহিতিবনের রচনা
হ কিলাত সাহিতিবনের ক্ষেপ্র
র কলেন বেঃ সাহিত্য নতুন করে ছেপে
র কলা বেঃ সাহিত্য সভা-সক্ষেলনে
ভা এবং পিকনিকই বেশী হয় সাহিত্য
না।

সন্মেলনের প্রধান অভিগি লীপ্রেমেন্য মির ##3 15রম সংকটে প্রতিক্**ল অব>থ**ৰে খে সভজেট নাহলে যা মতাতানিয়ে <u>ভাঙ্কে পারজ্যেই সাহিত্যিকের কর্মের পালন</u> । হুবে। ভারপর শীমিচ বলেন যে **্থিক ভারত বংগু** সাহিত্য সংস্থেপন-এর গ্রান সভাপতি - শ্রীত্রাবকানিত খোষ-এর 5वंदीञ्च বর্তমান সংস্থা আশ। করা হার ুর ভবিষাতে নিখিল বিশ্ব বংগ সাহিতা **অভ্যন-এ পরিণত চুরে।** সংখ্যালনের লোচনা চল্লের উদেবাধন করে আশাপ্রণা ্<mark>ৰীকলেনঃ ধাসতালাঘট্ছে অ</mark>গাং বনের সভা প্রতিবিদিবত হয় সাহিতো। **ন্ধান অবক্ষায়ের কারণ তান**ুসম্বান এবং ্রি**থেকে** উম্পারের পথ দেখাতে ভবে **ছজ্জিকে। শ্রী**শৃক্ষিণারক্লন বস**ু** তবি **রবে বলেন: 'জীবনে স্কুল**ে ও আস্কুল্র িই আছে অস্তুত্বর থেকে স্তুত্তর উত্তরণ্ট হুত্যাদ **অধ্যাশক হরিশদ** ভারতী তার ভাষণে বলেনঃ অদেশবাদী স্তিতিতেকের কাছে স্মাজ আমন্দ্রতি শোনবার পথত্ত মান্ত্র কল্যানের পথ পাবার আশা রাথে।

ক্ষভার্থনা সমিতির সভাপতি হেন্ডল ছোম তার ভাষণে ধর্ম সাহিত্য রাজনীতি ও সাংবাদিকতার ক্ষেত্রে চিন্সিশ পরগণা জেলার অবদানের কথা শমরণ করেন। সম্পোদনের চিন্স্প পরগণা শাখার সন্তাপতি তঃ শামা স্ভুলর বন্দ্রোপাধ্যায় এবং সম্পাদক বারিব-বরণ বন্দ্রোপাধ্যায় এবং সম্পাদক বারিব-বরণ বন্দ্রোপাধ্যায় অবং সম্পাদক বারিব-বরণ বন্দ্রোপাধ্যায় জন্মতানে ভাষণ কেন।

नाता बारमा कवि ज्ञानम

পয়লা আষাচ (১৬ জনুন) মনুশিদাবাদ থেকে প্রকাশিত হৈমাসিক সাহিত্য পহিকা প্রণাহ এর উদ্যোগে কলকাতার ইউনিভাসিটি ইনস্টিটিউট হলে একটি কবি সমেলন ৫ স্মরণীয় কালালোচনা অনুষ্ঠান হয়ে পেল। প্রথম তাধিবেশন হয় বেলা ১০টা থেকে বেলা ১টা পর্যাত এবং শিবভীয় অধিবেশন বেলা দুট্টা থেকে রাজ আটটা পর্যান্ড। প্রথম আধিবেশনে সভাপতির দায়িত পালন করেন কবি ও সাহিত্যিক শ্রীঅচিন্ডাকুমার সেন-গ**ুণ্ড এবং পুধান অতিথির ত্যাস্**ন গ্রহণ করেন কবি শ্রীমণ্ডিদু রায়। এই সন্ফোলনে 'আধানিক কবিতা কোন গ্ৰেণ শীৰ্থক ন্যালোচনায় অংশ নেন সভাপতি প্রধান অতিথি এবং শাুশাস্বয় বস্ত তর্ণ কবি গুৰ ম্থোপাধ্যায় ও চন্দ্ৰ সিংহ্যায়।

অচিস্ভাকুমার থাঁর ভাসণে গাণতীয় সংগকার ভাগগার ও বনধন মাজির জন্ম বর্তামানের এবং আগামী নিনের কবি সমাজের প্রভি উদাক আহ্যান ভাষাম। কবি মণীন্দ্র রাম্ন তবি দীমিত ভাষাম। কবি মণীন্দ্র হরিয়ে দেন সমাজের প্রতি দেশের সাধারণ মান্দের প্রতি তাঁদের কর্তারের কথা। কবি শুশুদ্বত্ব বস্ত্র ভাষণে ফুটে ওঠে আশুনিক কবিতার উন্দেশাহ্নিতা বা স্থির সক্ষের ভাতারের কথা।

শিক্তীয় অধিবেশনে প্রথীপ ও তরুণ কাবদের ভানেকেই স্বর্গান্ত কাবিতা পাই করেন। কবি দবীনেশ দাশ এবং শিশন সমালোচক নিম্নাশক্ষালা ঘোষকে স্থাননানা জানা হয়। এই উপলক্ষে আয়োজিত লিটল মালোজিনের বিরাট প্রদর্শনীর উদ্বোধন করেন প্রথীন সাংবাদিক কাঞ্চীগাদ বিশ্বাস। হথানিসংগীত প্রবিশ্যা করেন বাদী সাজুব এবং আর্ভিতে অংশ নেন বাদী ব্যানাধানায়। বিক্রয় কেন্দ্র থেকে তার ক্রেনা উপাস্থিত ক্রিনা এ ব্রিভা ক্রম ক্রেনা উপাস্থিত ক্রিনা এই ধ্রনের সম্মোলন খাব ক্রমই দেখা হায়।

রবীন্ত অন্ধ্যান

রবীন্দ্র অনুধ্যান আমাদের নিত্যাদনের কতবা। সেজনা বিশেষ দিনক্ষণ চিক্তিত করার প্রয়োজন নেই। রবীন্দ্রনাথকে স্মরণ করতে হলে কেবলমাত্র সংগতি ও নাডাকলার উপর জোর দিয়ে রবীন্দ্র চচ্চা সামাকৃষ্ণ করা উচিত নয়। পশ্চিমবঙ্গ রাজে তথা ও জন-সংযোগ মন্ত্ৰী শ্ৰীসাৱত মালাধায়ে উপৱোক উলিটি করেন ১৫ জন কলকাতা তথা কেল্বে তিন দিনের রবীন্দ্র অন্ধ্যান অনুষ্ঠান উদেবাধন করতে এলে। রবীন্দ্র জীবনদর্শদের উপর আলোচনার স্ত্রপাত করে কবি স্ভাব ্বেথাপাধ্যয় বলেন: 'রবীন্দুনাধের ভিত্তি-ভূমি মানবতা কোন ক্ষুদ্র স্বার্থ ভাকে টুলাতে পার্রোন। তার জগুৎ বিশ্বমানবের তাগং।' ভাষ্যাপক প্রণবরঞ্জন ছোম অধ্যাপক সত্যেশ্যনাপ রায়ও এদিন ভাষণ কেন। দিবতীয় দিন ব্ৰীন্দ্ৰনাথের শিক্ষাদ্রশান প্রসাবেগ ভাষণ দেন প্রমথনাথ বিশী শচীন গালো-পাধাায় ও আমিয়কুমার মজানুদার। তৃতীয় দিনের আলোচা বিষয় ছিল বাছি রবীন্দ্রনাণ এবং রবীন্দুনাথের গানের গতি-প্রকৃতি। এ আলোচনায় অংশ নেন সবলী শাহিতদেব যোষ দক্ষিণারপ্তন বস্তু তামিতাভ চৌধুরী প্রম**্থ** : রবী-দুনাথকে কেন্দু করে সাধারণত शरहा जनकोत इस भएक वह जनकामोहे নিঃসংস্পতে ভার মধ্যে একটি ব্যতিক্রয়।

শ্রেণ্ট শিশ্বাছতিঃ রচনার কান প্রকরে লাধপ্রতিষ্ঠ শিশ^ন ও কিশোর সাহিত্য স্কারিত। শীর্ষিপাস সাহা রার শিশুসাহিত্যে রাজীয় প্রেম্কার লাভ করেছেন। এ প্রেম্কারটি দিয়ে থাকেন ভারত সরকার। এ বছর শ্রীনাহা রায় এ প্রেম্কারটি লাভ করেছেন তাঁর 'আমাদের ভারতেরত ইন্দিরা' শীর্ষাক বইটির জনা। এ প্রেম্কারের সম্মান্ত্র্যাহত। কুটীর। বইখানার প্রকাশক দেব-মাহিত। কুটীর।

ৰাংলা দেশ-এর বইয়ের প্রদশ[্]নী

রবীশ্র-সদনে বাংলা দেশ-এর সাহিত্যের প্রপর যে আলোচনা সম্প্রতি হার। প্রেরা। সে সম্পকে আমরা আগেই বলেছি। এবার বই-এর প্রদর্শনীর কথা বল্ডি। ক্ষেক হাজার বাংলা দেশ থোকে এই পদশ্নীর হবে শানেছিলাল <u>কিন্</u>ত E = 1 আনা পর্যাত দেখা গেল এসেছে মাত্র (अ)स Soo খানা वर्दे । সংখ্যার 122 থেকে এ প্রদশ্নী খুব উল্লেখযোগ। না হ্লেও, বিষয় বৈচিত্তের জন্য এ প্রদশ্নী বাংলারও অনেক লেখক, গবেষ্য এবং প্রক-শেকের সপ্রশংস দৃষ্টি আক্ষ্পি করেছে। সাধা-রণ অভিগান থেকে গিণেয িংশ্য বিষয় সম্পক্তে অভিধান বা কে ষ্প্ৰত্থ যা বাংলা দেশ থেকে প্রকাশিক হয়েছে ্লা খাবটা উ**ল্লেখ-**যোগা। আঞ্চলিক ভাষার অভিদান (শ্রুণী-দাল্লাক্ত সাজেব সম্পাদিত) প্রকার্ট একথানা অসাধারণ বই। বাংলা লেখা ভাষার ও কথা ভাষার মধ্যে ভফাং খানেক। লেখা ভাষার রূপ প্রখানতঃ দুটি, কিন্তু ক্থা ভাষার চেয়ারটা সম্পূর্ণ ভানারকম। বলতে গোলে, প্রতি ২ কি ৩ হাজেও প্রাথিটিল আন্তর বাংগালীয় কথা ভাষা একটি ভিন্ন রূপ নিয়ে। থাকে। পার্লে বগের সাংগ্র প্রশিক্ষা বজেরে যে ভয়েং বা পাব^ৰ ও পশিচমের সংখ্য উত্তরন্ধোর বে জ্ফাছ তা স**হ**জেই নেখো যায়, ^{কিন্}ত এক প্রেবিজ্যের মাধাই ব্রিশাল, তিপুরা চুট্রান ঢ়াকা নোয়াখালী প্রভৃতির যে তফাং, তা হিলেষ বিশেষ শক্ষের অগ্ডেদের যভোটা, ভার প্রয়োগ বৈশিশেটার জন্য ভর্গে-ধিক। কাজেই, বিশেষজ্ঞের সংগ্রহা ভিন্ন তঃ অন্তভঃ সাধারণের পক্ষে বোধা নয়। এনিক থেকে "আঞ্চলিক ভাষার অভিধান" আনেক-দিনের একটা অভাব পারণ করলো। এ-ক্ষানা বাহীত, বাংলা উদ্ অভিধান, দশন-কোষ বিশ্বকোষ এবং প্রাচীন বিজ্ঞানের ই'ক-হাস এ প্রদর্শনীর উল্লেখযোগ্য বই। আক্রে-চনা ও সমালোচনা জাতীয় বইরের বেশীর ভাগই মাইকেল রবীন্দুনাথ ও নজরুলকো। কেন্দ্র করে।

পেপার ব্যাক বইয়ের প্রদর্শনী

বইরের বিবতানের ক্ষেত্র পেশারব্যাকের ব্বা চলছে। পাথিবার সব দেশেই আজেকের দিনে পেশার বাকে বই প্রকাশিত হচ্ছে। মার্কিল যুদ্ধরালয়েই স্বস্থিত্য এই পেশারব্যাকের বহুরের প্রচলন ইংরাছিল, এবং পেশারব্যাকের মধ্যেও যে কতে। বলাফার হয় বা হতে পারে করে নিতানতুন নিতাশার কথা যায় মার্কিশ করেই ধরদের পুটি প্রস্থানী হয়ে শিক্তাক

কলকাতার—একটি নেইর্ চিলপ্রেস মিউ-জিরমে এবং অনাটি আমেরিকান ইউনিভার্নিটি সেন্টারে 'ওরার্ল'ভ অব পৌলারবাাকস' নামে এই প্রদর্শনীটির উদ্যোজা ছিলেন ইউ এস আই এস ও ৭০টি বিভিন্ন মার্কিশ প্রকাশক প্রতিষ্ঠান। শশ্চ শভার্গিক শেশারবাাক নইয়ের এই প্রদর্শনীতে বেমন ১৫০-২০০ শৃষ্টার হাক্কা বই আছে, তেমনি ৭০০-৮০০ কি ১০০০ শৃষ্টার ভারী ভারী বইও দেখা যায়।

লক্তনে ৰুপা সাহিত্য সন্মেলন-এর প্রস্কৃতি

প্ৰাসী বাঙগালী সনজে ত টেকের আগামী ২০াশ জালাই লশ্ডনে বাংলা সাহি-কোর একটি সম্মেলনের আংয়াঞ্জন করেছেন। লণ্ডানে এ ধরনের প্রচেণ্টা এই প্রথম। এই অনুষ্ঠানে নিখিল ভারত বঞা সাহিতা সংম-লন-এর সভাপতি দ্বন্যধন্য সাংবাদিক ও সাহিত্যিক শ্রীভষারকাশ্তি ঘোষ ভাষণ দেবেন। লাভাড়া আখা করা যায় সে, ভারত ও বাংশা দেশ থেকে আরো কয়েকজন কবি, সাহিতিকে ও সাংবাদিকত এই সমোলনে যোগদান কর-বেন। সাহিতা আলোচনা বাতীত এট ক্ষেত্ৰ-লানে বিশিষ্ট শিলিপগণের নাচ গান আব**ি**ফ ও অভিনয়েরও আয়োজন করা হয়েছে। 🖘 **हाला এडे ऐथलाक अक्ति प्रामाद गारा**कन्छ করা **চয়েছে।** এই মেলায় টক্রস কংগার কটি শিক্তপ পানের বেকড[ে] বই ও ছবিও খিতি হবে। কেউ হদি এই সাংস্কৃতিক মেলাম কোন দুবা বিক্তয় বা প্ৰদেশকোৰ জন্য পাঠাতে হান তা হলে ১৯নং কা'থাবিন স্টীট জন্মন खर⁶ल्डे-ीञ⊸उटे ठिकानाह হোগান্দাল করতে পারেম।

ওয়ারেন হেল্টিংস-এর স্মাতিকথা

ইংলেডের নিশ্নবিত্ত পৰিবৰ্ণন্তন ছেলে ওয়ারেন হেদিটংস ১৭৫০ সালে ইম্ট ইণ্ডিয়। কোমপানীর একজন সাধারণ কেরাণী হিসেনে ভারতক্ষে^র এসেছিলেন। তারপর জ্যোত্র দুত্রগতি ও স্বীয় ব্ণিধ্যন্তার গুণে এক সময় তিনি এদেশে স্ব ক্ষমভাসম্প্র করেছিলে। রাজপার**ুদে**র **প**ণ আধিকার বলাই বাহালা যে ও ঘটনামেতে। নিয়ক্ণের ব্যাপারে তেপিট্ংসের নিজের কৃতিক্ত ছিল যথেষ্ট। তাই, কথায় বলে যে 'ক্রুক্টাতা একটা কাউন্টিং-হাউস থেকে প্থিনীর সর্ব.হং সংখ্রাজ্যের ক্যাপিটাল হয়ে উঠেছিল'...কল-কাতার এই রূপান্তরে হেস্টিংসের অসদান একক হিসেবে বোধকরি অগ্রগণাই ভিন্ ভারতের কার্যভার থেকে অবসর গ্রহণের পরে হবরেশে ফিরে গেলে বার্ক শেরিভান ও ফ**ক**স প্রাথ বাণ্মী ও আইনজীবীগণ যেভাবে হেপিটংসের সমালোচনা করেছিলেন এবং নানা কুলারের দাবে অভিবৃত্ত করেছিলেন ইংরেজী ভাষার অসম্পারপূর্ণ বস্তুতা ছিসেনে আৰুও তা অক্স হয়ে আছে। কিন্তু তব, একবা সভা বে, পরবত্তী অনেক ইংরেজ রাজ-প্রেকের তুলনায় তেপিটসে ভারত তথা এ **লেশ্যে জনগণে**র প্রতি বন্ধ্-ভাবাপল না অন্ততঃ অনেক **ছিলেন**

নিঃসক্ষেত্ৰ উ বলা शीशः ব্যক্তোর গুভণুরের পদ পেকে আবসার করেন ১৭৮৫ সালে। তারপর জিনি # বারা করেন। স্বদেশের পথে জাহাতে তিমি এই ফার্তিকথার বেশীর ভাগটা করেন। অবসর গ্রহণের প্রেবি মোটাম টিভাবে জানতে পেরেছিলেন তার বিরাশেধ কি ধরনের অভিযোগ উ করা হবে, তাই সম্তিকথায় প্রধানতঃ এই সমূহত সম্ভাব্য অভিযোগের ীথ আতাপক সম্বাধনের জন্য প্রয়াস পেরে কেম্পানী সরকারের অর্থ অপচয় করা বিভিন্ন ভারতীয় শক্তির, সংক্রে যুদ্ধে হয়ে শন্তির অপবাববহার করা **এ**য়ং ক ফারক্রীয় রাজপারবারের আভাশ্তরীশ বা অহেতক হুম্ভক্ষেপ করা—মোটামাটিভাবে গ্রালিই ভিল হেন্টিংস-এর বিরুদ্ধে যোগ। ভারতে সামাজা স্থাপনের এট 'গাড়ার किटल বোমবাই S माशिष . প্রেসিডেকী আহি স্বকারকেই প্রধানত বাংলা ভরতে হততা-কিলোরভভাবে কার সরকারী গরচপতের হিসেব লেফিটংস অথ' অপ্রয়ের সে ক্ষতিয় কৈছিল দিয়েছেন। এ সমূহত অভিয়ে শ্র কৈফিয়ণ অপেক্ষ। সাধারণ পাঠক টেসিটাকের স্মাতিকথার বে আংশ করে আনন্দ পাবেন তা হলো দ্রাত আ মান ভারতীয় রাজশস্তির লম্জাকর দুর মাধা এককভাবে মারাঠাগণের মংগ্রাম। বহুকালা পরে হে স্টিংস-এ: ম্ভিক্থা মেয়াস্থিলেটিভ টু দি তাক ইণ্ডিয়া' প্ৰেফ প্ৰকাশিত ইয়েছে ফোড়া ও আই বি এইচ পাৰ**লিখিং হে** दशीश छेत्मारंग ।

—শীজবং

প্রথম প্রকাশেই ৩০০ কপি নিয়শে শাড়া জাগান উপন্যাস

দিশারা

20.00 f

গোপাশদের চটোপান্যাল্ল:
আরও করেকটি রাখবার মত ব ব্যোশদেরের শ্বাদ ৬.০০ টু দিশীপ দত্ত গুরা ক'জনে ১০০০ ট

মলম নাশাল হৈমপ্রভা দেশী সতী ৫.০০ নতেন উপন্যাস মনরম প্রছ

নৰ সাহিত্য প্ৰকাশ ২০১০, সীডায়াম আৰু গুটি ক

বই আর বই

THE RESERVE OF THE PROPERTY OF

ক্রিকথানা বই হাতে. এসেছে।

ক্রিলার। ক্রাণ কলেবর। কোনো নামী

ক্রিকের সদা সংলোজন। বইটা

ক্রিকের সদা সংলোজন। বইটা

ক্রিকের। সাত আট মাস আগের সে

ক্রের দায় তিন টাকা কি বড় জোল

ক্রিকার বেশি ভাষ। সেতু না আরু দায়

ক্রিকার।

ইয়া, সাভ সাংগ্রু সার ফ্রান্স বই
টাকা। বই ষ্টারা ভাগবাসেন এবং
ক্রিন এই চটি বই হাটে টান্যে দার
নামান্ত ভাদের বাগ হ্বার কলা।
নামান্ত ভাই ইয়েছিল। পরে কৌত্তেল
ক্রেই প্রকাশকের সংগ্রে সোলাযোগ
মিছা এবং দাম নিয়ে সরাসার
ভয়োগ করেছি।

্দেখলাল ওই মানী প্রকাশনের বেলাপোও বিষয় চিত্যাছল। ইাজানে এ-রকম দ্মোপোর বই বির হার কি-রকম হবে ভোবে ভারিও গহুত। এভটাই দান বাড়ার প্রফোলন হস্তু কিনা খোজ নিত্তে ভারা তেকটা

क्रिक्रिय माथिस कदल्ला। काशक्ति माग এর মধ্যে ভর্গেরও বেশি বেভেক্ত। ভাও অনায়াসে মেলে না, চাহিদার ম_** ভামের সন্তথ্য বাচিক কিনতে হয়। এর পর কালির দাম, ছাপার দায় বকের দাম আর বিজ্ঞাপানের দাম অব্দপ সময়ের মধ্যে শতকরা কত বেডেছে বিশেলবণ করে দেখালেন তার। আর ∽নিঃসংশয়ে **খোষণা করলেন** আগের মজাত কাগজ অথবা ছাপার স্রগ্রাম যাদেয় হাতে নেই ভারা এই করপের সংকটে কাঁপ দিতে বাধ্য। আর মঞ্জতে যাদের আছে ভারাই বা কত্দিন যাঝবেন সমিলিতিক প্রকাশনা স্টেপ বাখাত হলে মজতে থাকেই বা কেমন

এই সংস্কৃতির একটা সাদ্রেপ্রসারী

চিত্র মনে আসা প্রভাবিক। প্রবেত
দুমা্ল্যের দ্রনে নতুন বইরের
চাহিদাতেই টান ধরে সাবে। তারপর
নিংশেষিত সংস্করণের বই প্রমাণ্ডিণের
বাপারে প্রকাশকদের আগ্রহ আরো ক্লাবে
এবং ফলে অনেক ভালো বইও ক্লাশ

প্নের্ভেগীবনের মথে দেখনে না।
সাহিত্য ক্ষেত্র নতুন বৈচিত্রের প্রীক্ষানির্কাল বংধ হচ্ছে—আরো ইবে।
প্রকাশকরা মুখ্টিমের গ্রিকতক নামী
ক্ষেথকের পিছনে শুধে ছোটাছুটি
ক্রছেন এরই মধ্যে, সংকট আরো
বিস্তৃত হবার সংগ্য স্থেগ সাহিত্যদ্রবারে নতুন ক্ষেথক নতুন ক্ষিতা নতুন
গ্রিভাব প্রবেশপথ আরো স্থকীণ্ডির
হবে।

এই অগ্নাদ্য সংকট প্রবেব হাতিষার সরকারের হাতে কি শা্ডবা্শিসম্পন্ন প্রকাশকদের মিলিত শক্তির হাতে আমার জানা নেই। হয়তো দা্টি শক্তিই সা্চিন্ডিত গহুমোগিতার ওপর নিভার। আনার বরণা, এক একটি ভূালো বই সম্প্রের মহাসমারে একতি চির-ভালার আগোক-স্তর্নেডর মাতো। এই আশো নিভতে দিলা আমানের জাব্দের প্রত্যাব্যাক্র

--আশ্তোষ ম্থোপাধাাম

ভাল বই সতি৷ই কি

কম দামে দেওয়া যায় না?

ইনে**স্কো**র 'প্রেপ্তক ক্ষরণা' এমক ্থেকে বভাষান প্ৰিবীয় প্ৰকাশিত হৈর তথাসম্প নিশদ বিবরণ **পেরেছি। ভারতব**র্যো বিভিন্ন ভাষায় **় প্রতি বছর প্রকাশিত হয় 'বো**ল্যাই **্রাট অব কালচার' এই জাত**ীয় একটি **৪-বিজ্ঞানসম্ম**ক্ত সংশিক্ষণত নিবরণ **ত্রেছেন। সেই খ**তিয়ান থেকে **ভেমেছি, '৭**২--৭০ সালে প্রকাশত ভৌন্ন প্রক্ষেথর ভালিকার ১২০০ ি**প্রকাশিত হয়ে বাংলা**ু বই চতুথ খেল করেছে। এখন, দিকতীয় ব **न्थान अ**धिकात करतरह देशतानी. ভামিল গ্র•থ. সংখ্যা—যথাক্রনে \$ 00¢ ২২০০, স্লোট-মাটি অবশা এটি পাঠাতালিকা বহিছাত া বাংশা বই প্রকাশিত হল্পে क्ष्म क्या, धाक्या यथा निष्द्रातासम्ब কিল্পুকেন কম ছাপা হচ্ছে, একথা কি ডামরা শিথর মহিত্তেক টিণ্ডা করে দেখেছি! বই ছাপা হয় কাব জনা?

প্থিবীতে যত প্ৰেতক ছাপা হয়, ভার পাঁচ ভাগের চার ভাগ প্রকাশিত হয় আমেরিকা, রাশিয়া ও জাপান থেকে। শুধু ভাই নয়, মিনিটে একটি করে বই প্রকাশিত হলেও, প্রথিবীর তিন ভাগের দ্র-ভাগ জার অধেক भारकत यह शुन्ध **अरहारून**, মাত্র আমাদের হাতে আর্মে। আমাদের নেশে তথা পশ্চিম্বলে নিদার ুণ শোচনীয়, ভা কলাই বাহ্না, আমাদের जनम्था ভুলনায় ভানেক শেশী। অথচ আগ্ররা জানি, আদিম-কাল থেকে মানবের জ্ঞান-পিপাসা জাগ্রত সে জানতে চায়, শিখতে চাসঃ সংগ্ৰই সেই জান্শেখার মান্ধের সহত চিতার মহা-ম্লাকান ও অবশ্য প্রয়োজনীয়

নোড়ক' বা শত বাবহারেও নণ্ট হয় না,
উপানপু জ্ঞান বিশ্বারে যথেগট সহারতা
করে। শত শত শ্রেণ্ট মান্য, তাঁদের মুগ্রবাগানেতর সন্ধিত জ্ঞান, প্রশীভূত ভাষা,
চিন্তার ফসল, চিরম্পায়ীভাবে রেখে গেছেন
বা যাজেন, অসংখা ছোট-বড় প্রগেণ
প্টোয়। অথচ অভানত দঃখের বিষয়,
সে-সব বই আমাদের পড়া হর না,
তার্ডাধিক ছাপা হয় না, ফলে বিক্রীও
আশাতীত নয়।

কিন্তু এ অবস্থা কেন? মান্বের জ্ঞানের পরিধি, মান্তায়ত, বহু ভালো শেখ—এ সবই দিনকে দিন ক্রমণঃ বেড়ে চালছে। স্বাভাবিকভাবেই অসংগ্য প্রুম্ভক-রাশির মধ্যে কোনটা পড়ব আর কোনটা বাদ বেব, সে প্রথন আসে। বলা বাহুলা ধারা কবিনেও সমস্ত প্রেডক পড়া সম্ভব নর, श्रेरप्राचमा नह । दन चरनारे शाल निर्वाहत्त्व कथा এटेन 'नरफ !

প্রাধীন্তা প্রাণ্ডর পর বহু ভালে বই প্রকাশিত इस्मुट्ड । ব্দিপ্ত স্বাক্ষরের সংখ্যা ৩০ও নয় (অর্থাৎ ৭০ জনেরও বেশী নিরক্ষর) এবং অনুমান করা ষার, ওর মধ্যে উচ্চশিক্ষিতের সংখ্যা এক চতুর্থাংশ, বাদবাকী সরাই মধ্য বা স্বচ্প শিক্তির প্রায়িভ্রু বার জন্য বই বেশী বিক্লী হর না। স্বীকার করলাম। কিস্ত লভ্জাদ বিষয়, বহু, ভালো বা প্রেচকার প্রাপ্ত বই-এর ম্ল্য पिन দিন বেডে চলেছে. অনেক প্রকাশকের মালাভিবিন ব্যবসায়ী মনোব্যন্তর म्बर्ट वन সম্মতিতেই ?)। গ্রন্থ মানব সভাতার নিদর্শন দেশের বা সমাজের অজ্ঞতা করার পক্ষে বিশেষ উপযোগী। আমাদের দরিদ দেশের গরীব জনসাধারণের ইচ্ছামতো বৃহ আজান বৃশ্ধি করা (অধিক মৃল্যের গ্রন্থ-গ্রেলর কথা বাদ-ই দিলাম) নিভাৰত-ই কণ্টসাধ্য ব্যাপার এন্ডর্প অসম্ভবই বলা চলে তা আম্রা ভালেভাবেই জানি।

বশ্ব প্রকাশকরা (লেখকরা!) মূল্য-বাশির ব্যাপারে তাদের প্রপক্ষে নিশ্চয়ই বভবা রাখবেন বিদ্যুৎ বিভাট, কাগজের অশ্নিম্কা ও দুজ্পাপাত; প্রেসের বিভিন্ন চার্জ ইত্যাদি অত্যধিক ব্যেড়ছে সেক্থা জানিয়ে। নিশ্চিভভাবে স্ভি। কথা এনং আহারা তা বিলক্ষণ জানি। তবে সবিনয়ে জিজ্ঞাসা কর্নাছ, একথা কি সতি৷ নয়, একটা বই বাজারে প্রকাশিত হবার পর, প্রতিটি বই-পিছ, যে মূল্য ধার্য করা হয়, তার অধেকের সামানা বেশী টাকা খরচ হয়. প্রতিটি বই-এর জন্য? অর্থাৎ ১০ টাকা মালোর বই-এর জনা ৬ টাকা মতো বার হয়! তকের খাতিরে একথা বাদ দিলেও খ্যেই বিস্মিত হই এ কারণে—ভালো বা প্রেক্সর প্রাপ্ত বইগর্লি, হা প্রায় দশ্বিদ হাজ্ঞারের উপর বিক্রী হয়েছে বা হচ্ছে, সেই গ্রন্থগর্নিই দিনের পর দিন দরিদ্র ভাগ্রহ-শীল পাঠক-পাঠিকার চাহিদার সুযোগ নিরে, ক্রমশঃ ম্লাব্দিধর মধ্য দিরে সাহিত্য মনোব্তিকে শ্বছদে অবহেলা-উপেকা করে, অপরাধম্পক ব্যবসায়ী মনোব্ভির পরিচয় দিচ্ছেন না কি ? স্ফুজ কারণেই দার্ন ইচ্ছা থাকাসত্ত্বে বহু; উৎসাহী পাঠক-পাঠিকা রমশঃ মালাব, মিধর জনা বইগালি কিনতে পারেন ন জানভাংডার করতে পারেন না। হেহেতু ভালো বইগালি প্র বিজী হয়, সেজনো পূর্ব নিধারিত ম্বা হ্রাস হওয়াটাই স্বাভাবিক অথাচ মজার বাাপার উল্টো ব্যাপারটাই হুকেই। আপনদের জ্ঞাতাথে দ্যানত্ত্বরূপ এখনি মনে পড়ছে এমন কতগার্বল গ্রন্থের লেখকের সমেট্রেখ সহ কয়েক বছর পূর্বের এবং বর্ত মানের দাম কিভাবে বেডেখে তা श्रमाण्डि ।

লেখ ক	বই	পর্বে দাম	বৰ্তমান দাম
বিমল মিল	কড়ি দিয়ে কিন্দায়	oo; (56+58	3) 0A_ 50+2A)
. আশাপূর্ণা দেব	ী প্রথম প্রতিপ্রতি	>87	` ' \$ ₩_ ´
কাশকুট	অম্তকুদেভর সম্পানে	۹-	22-
মনোজ বস্	कम क्रभाग	¢-	4-40
गरखन्त्र मित्	পোরফাগনের পালা	>0₹	\$ H.
শহ্কর	<u> চৌরপ্</u> গা	১০;	5 2 - 30
মনোজ বসং	চীন দেখে এলফা	৩-৫৫ (২য় খ	ধ•ড) ৬-্
সম্বেশ বস্	বাঘিনী	9-60	>0.
ভারাশঞ্কর বুলে	নাপাধায় আরোগ্য	নকেতন ৮	22,
"	গণ দেবতা	₽ ڙ	50
*	পণ্ডগ্ৰাম	₩,	207
"	হাস্কা বাকের	উপকথা ১০	> <
সংবোধ ঘোষ	ভারত প্রেম্মকথা	e; '	¥ <u>*</u>
সোরীন সেন	কংশা থেকে ফেরা	P.	÷0;

উপরিউন্ত প্রেতকগালি ছাড়াও, যতদ্র জানি. বি*ড়*তিভূ**ষণ** वरम्माभाषारहरू ইছায়তী,' য়াণিক বন্দ্যোপাধ্যায়ের 'পুতুল নাচের ইভিক্থা.' সতীনাথ ভাদ্ভীর জাগুরী' রমাপদ চৌধুরীর বনপ্লাশীর প্দাবলী', যাহাবরের 'দুভিটপাত' বসরে ব্যাটে বলে জিকেট ও মাঠ থেকে বিক বৃলক্তি' দৈ-র 'স্মাতি ক্ৰবিষ্কাৰণ প্রভৃতি প্রতক্ষাবির ম্কা দ্র-টাকার কাডাকাছি বা তারও অধিক বেডেছে! অনুমান, এ লেখা প্রকাশিত গুওয়ার সময় হয়তো আরও দাম বাডতে পারে ?

ভালো গ্রন্থের প্রতি সরকারের (জন-म चिं সাধারণেরও) দে ওয়া স্বিশেষ প্রয়োজন। এ ব্যাপারে আঘাদের একটি পরাম্মর্শ, সরকারের বিবেচনার উদ্দেশ্যে নিবেদন করছি। বাছাই করা 'ভালো গ্রন্থ' আরও অধিক বিশেষভাবে দ্রিদু সরকার লেখকের, লাখ **भागामन। धारा** Ď এক 200 প্রত্যেক স্কুল থেকে স্নাতক শ্ৰেণী অব্ধি, ছার-ছারীদের জনা আবশাক পাঠার,পে গ্রহণ করার জন্য निदर्भ भ প্রতিটি প্রশেষর দাম মাত্র এক টাকা করা হল অর্থাৎ এক লাশ বইএর দাম এক লাখ টাক^{া।} এক লাখ টাকার ২৫ হাজার টাকা ছাপতে, ২৫ হাজার শেথককে, ২৫ হাজার বিজ্ঞাপন ইত্যাদি (খরচা) এবং ২৫ হাজার ট্রাফ সরকারের লাভ। **प्रतकार इत्स 'नामना**ं. ব্যক্ত করপোরেশন' মতে। করে, এ কাজে নায়িত্বভার তাদের উপর অপণ করা চতে যদিও ন্যাশনাল বকে ট্রাস্ট আছে কিং তাঁদের স্বারা কি এ জাতীয় কাজ পতিঃ আশা করা যায় না?

আহ্বরা বই পড়ি জ্ঞানাজনের 🖛 আনন্দ পাওয়ার জন্য মনকে সংখ্য সর করে পড়ে ভোলার বা বিচারব শিশ বৃশিশ জনা। বই পড়ার **ম**ধে দিয়ে এ সরে কোনোটিই যদি না হয় অথপং তডিৰা করে শোক-দেখানো বা **লোক-শোনা**টে পড়াই যদি হয়, তার সা**থকিতা কোৰায়** অনেক পড়ে কিছ না জানা অপেকা, ক পড়ে কিছু শেখাও আনেক ভালো।

ভালো বই সম্পর্কে আমাদের দ্বেজি চিরকালের। শেথক মৃত্যুবরণ করিলেও ত প্রেই গ্রন্থ পাঠকের অস্তরকোকে চি বির্যাঞ্জত, চিরন্ন,তুঞ্জয়। শহরবাসী ছো স্রা করে স্দৃর গ্রাহাণ্ডলেও, **হান্**টে চিত্তসংযমের একটি প্রধান উপা**য়ও ভা**টে প্র•থ। ভালো বই মান্বের **জীবনশ**ি দ্বর_্প—হা চিরকালের জন্য যত**্রসহ**কা সংরক্ষিত মহাম্লাবান ধন। তাই **মনে প্র** জাগে, ভাগো বই সতি৷ই কি কম পা দেওরা বার না?

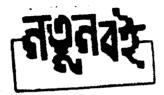
—প্রবীর ঘোষ

। কাজী নজকুল ইঙ্গলামের । প্রেম্ভ কাব্যগ্রন্থ

৯। রুবাইয়াৎ- ই- ওমর থৈয়াম ---- ১৪:০০

২। গুল বার্গিচা----৩৫০, ৩। কাব্যুআমুপারা--৪'০০ ৪। পূবের হাওয়া---- ২ ০০ ৫। ঘুমপাড়ানা মাসীপিজি--২:00

মোহন লাইব্রেরী ১৫ এ, দুর্যঙ্গেন খ্রীট



্ৰাক্তান উপন্যোগ, শেশক দেবন্তত জন প্ৰাইলেট বিশ্বিটেড। ১৪ ব্যিকম কৰ্ম টাজ। মংখাপাধ্যরি। এম সি সরকার একড চাটিজি প্রটি, কলকাতা—১২। দাম—

ক্ষাটা লোড়াতেই স্বীকার করা

ক্ষিটো এই যে নীতিপরিচিত নতুন কোনো ক্ষাইক্ষা কোনো বই হাতে পড়াল চিক ক্ষাইক তথ্যনি পড়বার জানো সর্বান বাদত ক্ষেটিটিল। পড়াতে প্রেন্থ কারে আগে ক্ষাই, শিবধাসংগত্ত যে মনের মধ্যে জাগে সে ক্ষা গোপন ক্ষাণে সভাৱে অপলাপ হবে।

্ ন্যানিক ক্লোভ্র আক্ষণ ও অজ্ঞানত সংবাদে আজাবিক কোত হল যে একেবারে থাকে না । নর কিন্তু সেই স্থেগ একট আশংকার আজাসও অন্তব করি। আশংকার যথার্থ ক্লোভ্রম সংবাদে নিশ্চরই নর। মেটা সেই নকল ক্লিভ্রের সেই আফ্রালন সংপ্রে সংতা আজিক বেশী ম্লাধন যাব নেই।

নতুন ৰা কৈছ, লেখা হক্তে তা স্বই এই
ক জাতের অংশাই নয়। শংধ, ভাঁংগ দিয়ে
ল ভোলাবার সন্তল নিয়েই বর্তমান
গিলাভোর কালবাস চলাচ লা গাগোর হারেনার
কভি হাজালে বারা নিবিচিন্রে গা ভাসাকে,
লাবের ভিড়েও এক আগটা লক্ষণীয় বাভিত্রম
াবের আ্রাণ্ডে দেখা বাক্তে না এমন নয়।

শিশু সাহানা এমনি একটি প্রীভিপ্রদ নিউজন। লেখক শ্রীদেশ্বত মধ্যেপাধনারক নিছতে একরকম নবাগতই বলা উচিত। বীর দটোরটি গল্প ও উপন্যাস ইতিমধ্যে শিক্ষকণের দ্বিত আক্ষান করলেও সাহিতা মিজে সংপার্কিত রঙ্গতে যা বোঝায় তা ভাম এখনো ঠিক হয়ে ওঠন মি।

্ তীর সে অবশ্য প্রাপা ধ্বীরুতি মিলু ছেলিটে এনে পেবে বলে আমি বিশ্বাস রবি।

হৈ সব কাবণে মিল সাহানা উপনাসাঠ কেৰজাৰে প্ৰবৰ্ণীয় ও সাথাক তার মধ্যে কান হল পেথকের সেই প্লেভ ক্ষাতা যা কেলানক কাহিন্দীর ভেডর দিয়ে সম্পূর্ণ ক্ষান্যাগা বথাথা নিজস্ব একটি জনং কিট করে তোপে।

শিল্প সহোনাবং পটভূমি বতুপান ক্ষেত্র কটি নিশিষ্ট অঞ্চল। কিল্কু তার মধে। বহা গুনুবের বংশগতির ধারার বিচিত জটিল গুখ্যান সমূলত দেশের ইতিহাস ভূগোলকেই নি জীক্ত করে ত্লোড।

ু প্রথম প্রকাশিত উপলাসেই বিরাট এক চহিনীর এই বেগ ও বিস্তান নিপাল চাতে ছাল্ডিড করা বড় কা কাডড নর। বইটিব থল মালিড লাইলে যে চিরজাবিদার দেখা টি তার বিশ্লাকর জাবিন-কথা শাধ্যর শাধার পতে পার্লিক শাব্র নর, সম্প্র অক্টীতের বংশধারার ম্লগত বৈচিয়ে একটি শতকল বাশ্তর পরিমণ্ড্রের মধ্যে আমাদের নিবিষ্ট কবে বাখে।

সেখানে অসংখা চরিত্রের জ্ঞানাগোদা।
বহু বিস্তৃত কাহিনীর জ্ঞান্ত শেই। সেই
সব নিরে শিরাট স্চীচিত্রের শক্ষার নিরমে
কথনো গোচর কখনো জ্গোচর টানাপোড়েনে
একালত সাসব্নোল যে টোপেন্টী সেখানে
পরিক্তিক্ত, সব সামায়ক হাজুগোর উর্থে
একাল সেকালের উপন্যাস-সাহিত্যের কাছে
তাই এখনো এক বিশেষ সাথকেত্রে
পরাক্তরা

উপন্যাপের যিনি কেন্দ্র অরু লার অবানিতে কাহিনীটি কলা সেই চিরঞ্জবিশা আরু সন্দেশ বাদে মাগারেট মেহের আলি অজয় মাল্লিকা অতন্দা, সোদি বিভূতিবাবা জিম আইরিদ্রালা মিপ্রা সহোনার করেকটি মাত চরিত্রের নাম। বেশা দীয়া উপন্যাসটি শেষ করবার পর বিবাহা মধ্রে স্মৃতিতে জভালো এই সম্মৃত চিরকে ছেভে যেতে যে মন চার না, ভাদের সংগ্রাক্তরে পারার জন্যে স্পেছনের পাতা অনেকবার যে ভ্রতাতে হয় শিক্স সহোনা মনে করি।

—প্রেক্সেন্স মিত্র

বিভিন্ন কবিভিন্ন। পৰিত মুখোপাধ্যয়। ভাৰাব। ১০≀১ বি≪ম চাটুজেন শৌট। কল্ডাকালা বাবোঃ দুয়ে পাচ টাকা।

সাম্প্রতিক কালে কবিতাপত্ত কবিতার ভাষনা নিখেনত বিরল নক্স। তবু, ভাল বই হাতে এখে উৎসাহা বোধ করতেই হয়।. এই রক্ষ একখানা বই তোল পবিও মুখো-গাধ্যাসের বিভিন্ন অবিভিন্ন। তবি কবিভার মতই পবিপক্ক পৌর্ম এবং প্রক্ষার ছাপ রফেডে বিশ্বনিত। কবিভারে পবিপ্রাব্ একটা শ্লবিলাল ভাবতে চান না। মান্বিক এবং বোধ্যব অনুভূতির প্রগাণ্ডার ভাই ভাবি বলতে স্বান কবিভা এখন অফ্ডরাল-বভা স্থান।

বিভিন্ন সময়ের ব্যক্তিগত চিত্তা বইরের বারোটি নাক্দীর্ঘ প্রবেধর মধ্যে কবিতার যে স্থিটকাল চিন্নিত হয়েছে তা রবীন্দ্র উত্তর কালের চিন্নিশ থেকে প্রায় ষাট পর্যাত বিস্তৃত। জীবনানন্দ বিক্যু দে সুভাষ যুক্ষাপাধ্যায় প্রভৃতি উত্তর সুবীর প্রবতী কালান্ডরে পবিদ্ধানুখোপাধান্ত নিজেকেও অনুসাধান করেছের।

প্রবাহধগালোকে ভাগা ভারকোনতা না করে কোনো তত্তের গিকে না বংশকে একটা ইয়প্রেশনের দিক থেকে কবিডাকে ব্রেডে চাওয়া ব্যাহাট ।

জীবনানন্দ আত্মান্ত সংকটেছ কবি: তাঁর কবিতার পতি ছবে পাপ ছাত্তির আকাঞ্ছা ও আরোগ্যা মানুষের একটা 'ক্রাইসিস' ভতে ব্ৰাভ হ'ববের লিপিতে জ্বলজ্ব করছে। अके बाटनही वृत**ी**क्रमार्थत गरका खौरा রবীলমার শোভন সংকর सामरार्थ हा। শেষভম বিশয় সেৰ **জন্মে আয়—ভ**ার কৰিতাতেও আশাবাদের কেত্রমটিকে ক্লিন প্রতিক ল বাতালে আবনত করেননি, ভারিনা-নন্দ এসবের বিপরীত-তবে রবী-মুনাথের জন্মজরুতীর সংখ্যা জীবনানদের নিরাশ-নক্ষা প্রিম দার্বভিভার প্রসংগ প্রির্বাব ना जानत्वक भारत्कम । कावन वनीवनसारधन জন্মলাপে জাতীয় উচ্চাসের কারণ প্রভল্ত---সেখানে কবির ব্যক্তির যা কবিভার অভিব্রিক একটি সাণ্টি করে নেওয়া ইমেঞ্চ রক্তান্ত যার সংশ্রে জাত্তে প্রাক্তে স্বাদেশিকতা বুলা-ভাগ নোবেল প্রাইজ শাণিড্রনিক্তন স্নৃতিট ও গান রচনা।

রবীন্দ্রনাথ জনবনানকে বল পাথকাই থাক গীতিধমেরি দিক থেকে একটা, স্নাদানন ছিল। এই গাঁভি প্রবণ্ডা নিছক প্রলালি**তা** না হ'লে পাতে তার সেউনেক বর্মান্তমনের কুইক' বলেও সস সময় ভাবা চলে না। রবীন্দ্রনাথের অভিযোগ সড়েও আমরা সব সময় স্বীকার করি না যে জীবনানাংক প্রির্নিটির অভাব কাছে। তার প্রশাণ্ড ভার অক্ষর বার—হান প্রধানের আ≖চর্যা মন্ময়তায়। তাঁর রাপকলপগালির মধ্যে একটা প্রবহমান 'ট্রানসেনডেন্ট্রালক্তম ছিল ষেটা স্ধান্দ্রনাথ কি বিক্লাদের মধ্যে স্ভভ নয়। অপরাংশে জীবনাননের ভাষাণর সংধ্য যে আপাত বিরোধের বিভাগ রব ীণ্ডনাথে অনুপদিগত।

মহাক্বিতা বিষ্ণা ও কাবাভাষা প্ৰিব্ৰাৰা কিছা নতুন বলৈছেন। মৃহ্যালাবোর এক তাংশ বেমন উপদ্যাসের বিকলেশ তেমনি আর এক অংশ মহাকবিতার মধ্যে সাথকি হয়ে উঠতে চাইছে। মহাক্রিতা রচনার দারিভ ৰারয়ে দিয়ে ভিনি বলেছেন—মহাকবিভাব বহ'তের বিভব্ত জাটিল ল্যাফিরিনথট বেছে নিতে হয় কবিলে। 'কবিতার ভাষা' এবং পদা স্মানত এর সমস্ত প্রিক্তবাব্র ব্যাপত नभीका কোনো কাব্য পাঠকের স্তাল লাগবে: একদিকে রবীন্দুনাথের আধুনিকতা আর একাদকে ক্ষান্তেনখন ভেতের বাংগা জীবনানকের কবিতাকে এক নতুন দিককেত শেণীত দেবার চেন্টা এবং পোরেটিক ভিকলমের অভিনৰ উপলব্ধি দ্বেরৰ মধ্যেই আধ্নিক বাংলা কৰিডার একটা পালাবদল ঘটে ণেছে। পবিশ্ববাব, ভার ক্রেকটি #ভর্ শ্বতে। মানিয়ে ভোলার চেণ্টা করেছেন।

-वेबच्चार बरम्बारशायास

আরো বই পত্র পত্রিকা

জানি লোলা এবং—হ্বীকেশ মুখোগাধ্যায় ক্ষমেশ সাহিত্য। দাম চার টাকা।

THE PARTY OF THE PROPERTY OF THE PARTY OF TH

আমি সেদা এবং চ্বীকেল মুখোপাধারের ১৯৬৪-৭৩ এই কল বছরে
লেখা মেট বালোটি গলেগর সংকলন।
ভিনটি সম্বারে গলগন্তি সাজানো হলেও
কোশক ন্দ্রং প্রার প্রতিটি গলেশর কেন্দ্রীর
চরির। এর কলে একদিকে স্বেমন নতুন
ন্বার কিছুটা পাওরা বার আনাদিকে ভেমান
কিছুটা এক্যেরেও কনে হয় কোনো কোনো
বল্প।

এই সংক্রানের গ্রহণগ্রাল পদ্ধলে ব্রাত অস্বিধে হয় নাবে চ্যীকেখবাক হানসিক সিক থেকে বাট দশকের তর লভর লেখক গোল্ডীরই একজন। জাতিনী ব্রহা ইত্যাদি তথাকথিত দায়িত কিছুই স্বীকার করেন নি শেখক। কিন্তু তৈরি করেছেন নিক্সব এক অন্ভূতির জগং। 'সেই লোকটা' গলেশর টেনশন ক্রমশ পাঠকের মনেও সংক্রামিত হয়। তলনায় ভাগ भाकती গ্রুপগালি সম্পার্শ প্রথামাক হাতে পারেনি। 'আমরা বসে থাকছিলাম' কী রকম বাংলা? অথবা ভবা **শ্রাবণে জল থৈ থৈ পল্লী**মাটের ব্যকে চার-পাশের দ্রোর নিশর প্রতিবিংশ্বর মতে অধিচল রাণী—ভাষার কোমাবাজি ছাড়া । ক**ি? এদিকে লেখক আ**র একটা মনোগেগ দেবেন আশাকরি। যারাভিল স্বাদের গংপ পাঠে উৎসাহী সংকলমটি ভাদেব ভাল লাগবে। বিদীর্ণ অবশেষে আর্ভ কোনে। কোনো গণপ তর্ণ লেখক হিসেবে হ্ৰীকেশ বাব্যুর পরিচিতি নিশ্চিক করবে।

আমিডাভ শৃশপ্তের নিৰ্চিত কবিতা (কাবা সংকলন)—অনুক প্রকাশন ১২, বনফিল্ড সেন কলকাতা—১ পাঁচ টাকা।

প্রতিষ্ঠিত তর্ণ কবি প্রীথমিত: দুদাশগন্ত তার কবিখ্যাতির জন্য নতুন কবে কোন পরিচিতির অংশকা রাখেন না তব্য তার সম্প্রতি প্রকাশত নির্বাচিত কবিতাই সংকলন এংখাট ছাতে আসার বর্ব আমাদের মনে হয়েছে, কবি আমিতা ধ্র দাশগান্তের কবিছা আরও নতুনভাবে আলোচনা হওয় দমকার।

ষ্ঠদ্র মনে পড়ে আমতাত দাশগ্ৰেক্ত প্ৰথম কাৰাগ্ৰন্থ সমাদ্র থেকে
আকাশ"। তারপার এক এক করে মাড়
শিশাদের জন্য ইফি' মধানার ছাতে আর সাত ঘাইল' গ্রুপ দাটি প্রকাশিত হংরাছে।
বত্রিমান নির্বাচিত সংকলনাট উপবোর গ্রুপাদ থেকে বাতিক্রম এই কারণে যে, কিং অপ্রশিক্ত বহু কবিতা এতে সংকলিত করেছেন। প্রকাশিত তিনটি গ্রেপ্রের সামাণ প্রতিক্রমান আজিও

অমিতাভ দাশগাণেতর দীর আচারত কাবাচচার বোধহয় সোনার ফসকত এতে আছে! তিনি কখনো সংতা রোমাণীকভার ভেলে যান নি. বা তাকে নিয়েই কাৰা-ভাবনার নিবন্ধ থাকেন নি। তিনি বলিও চেডনাত বাশ্চববাদী কবি। প্রমাণ নিবাচিত কবিতার প্রায় সব কবিতাতেই আছে সবচেয়ে উল্লেখা বোধত্য প্রভেথর প্রথম কবিতাই--ওকে ছ'লে না ছ'লে না ছি। বাশ্তব জীবন ও সমাজচিতে মনবিক মালা-বের্ধের ক্ষেরে বৈষ্মা ও অপ্যানভে নিক এমন তীর ব্যাভেগ্র কবিতাটি সাথাক কবির মর্যাদা দেয়। ভাতি জাটার মাঠ।হা হা খিলে দিছে কটি।মূৰে মূখোল এটি নিস।হিস হিস হিস হিস।জনি জিরেত জনালিয়ে ধা ধা।কাল কে**উ**টের বিষ্ণ-এমা কিপ লঘ্ড ছবেদৰ আডালন বাংগ ও মুমতার প্রোত কবিকে এক কথায় আপন কলব দেয়।

অমিতাভ দাশগাংত নিছক **শহরে**কবি নন, ভাঁর অভিজ্ঞতা সহস আকাশশা বাসনা সুখ-দাশে অন্ভূতি বাংলাই ভনজাবিনকে ব্রেক মধ্যে ভড়িকে কবে। উপস্থাপিত। তাই তাঁর প্রতীক প্রয়োগ শ্রুমিমাণ চন্দভাবনা ও স্বোপার বস্কু-সভাবে অভাতভূত ক্বিমেয় কর্টি দ্রোভ ক্ষমতা ভাঁব ১৯৬৮-র পর প্রকাশিত কবিতাগালিতে চিরকালীন শিলেশ্ব সভ্তায় ভাঁবত হায়েছে।

দেশকে ভালবাদে কবি ভালবাদেন তার প্রকৃতি ও মান্ত্রকে। কিল্ড তা কোন বোমাণ্টিক কবির নিজক বিলাস নয়, তার অহা তিনি করেছেন সর্বালের মানামতে ভালবাসার প্রেক্ষিতেই। বহু কবিতা? ক্রির শ্বন্য আছে শ্বন্য থেকে উত্তরশের জনা বাসনার ভীরতাও সেখানে কম **নর**। মানাষের কাছে থেকে গায়ে **গায়ে মিল** মিশে কবিভাষা ব্যবহাৰ করতে অভাসং বলেই আনোচা কবি মথার্থ অর্থে অধূনিক ও বিয়লিস্ট। অমিতাভ **দা^ন** গ্ৰেণ্ডৰ কবিভাৱ সমকা**লেও জীবন সমাজ** মান্য অভাচারী ও ফতাচেরিতদের যেভাবে হিরকালের প্রেক্ষাপনে খোদিত উ এই ভুরাণ স্প্রাণ কবিকে চিরকালের আধ্যনিক অভিধায় চিজিক **ক'**ৰ।

পরেদের মধ্যে যেতে যেতে'—দেবীপ্রসাদ মৈত। তাধ**ুনা সাতিতা। আড়াই টাকা।**

বোদের মধ্যে সৈতে যেতে খান সাঁভব দের প্রিমাদ সৈত্র প্রথম কবিতার বই।
নামকাস কালিসেনেন বিনি সে সাঞ্জানেন কোনে নিয়ম মানা হয়নি। কিন্তু কবিতাগনিব পড়ার পর মনে ৬ল নিবাচনেরও কোনে নিয়ম ডিনি মানেননি। কারণ আধিকাংশ কবিতাতেই দেবীপুলাস্বাব কলো আবেল ও ভারাস্তার করে অভিন্য করতে পারেননি।

কামা গেল খেন্দ্র মান্ত এলো নেকে...
(গোলাপ কুণিড় মন্ত) অথবা পামরকে
চুন্নি করতে গিমে ধরা পত্তে গেল লোকটা
(এই পথে) ইত্যাদি পথে চুন্সাকর ক গাঁড়ালারক। অবন্য পান্ধ-প্রতিপান্ধ বোদের মন্ত্রা বেডে বেতে মানকারে চাঁদ ইত্যাদি কবিকার এক বন্ধগের পানক-নিন্ধানের কামরি কবিকার নিকাশন শেকাক উল্লেখন প্রকাশ-ভিন্তা সাঞ্জম করতে চুলে দেবীবাবাকে এখনো রোকের মধ্যে অনেকটা পাই ব্যাকে চুব্র ।

নীল সামৃত্ত জোলাজন (কাষ্য সংকলন)।
দেবীপ্রসান বলেয়াপাংগ্রেয়। নব সাজিত্তা
প্রকাশ ১২১ নি সীজায়াম বাব পরীটি
কলকান্তা-১। জিম টাজা পঞ্চাশ পারসা।
দেবীপ্রসান বলেয়াপান্তার কচিত্ত আলি
সময়ে লোনা জলা কাবা প্রশানিত কোলী
নাম্যান বলেয়াপান্তার কচিত আলি
নাম্যান বিষয় ও হলকানিতে লোভা
কিবলুগান কিবলে বিষয় ও হলকানিতে লোভা
কিবলুগান কিবলের না লাগ নাবেনা। লাল্যাকালা
কথা স্কুলববনের কথা—কবি হলে সুত্রের
কথা স্কুলববনের কথা—কবি হলে সুত্রের
কবিতে কেনি করিছে। ভলজান আল্পন্ত
পরিলালিত হওগা উচিত্র ভিলা। কোন কোল
তবক বা চরনের কোন আই ব্যাল

সাহিত্য কাপ। সংগাদক **অসিত্যক্ষ** হালদার। স্**হিপলো। বনিয়হটে**। এক টাকা।

সাম্প্রতিক বাংলার রবীন্দ্রস্থাতি নির্ধান্তি প্রত্যাক্ত দেশত এবং আসম্পূর্ণ হলেও সম্রোপ্রোপ্রােগী। লেখক বে কর্মা নির্দান করেন বে তারা স্বাল সাকারে তুর লিরেছেম সেই শিল্পান্তের তালিকার প্রোল্ডাকে প্রকাল ক্রের সাল্ডাক ক্রের সাল্ডাক ক্রের সাল্ডাক ক্রের সাল্ডাক ক্রের সাল্ডাক ক্রের সাল্ডাক ক্রের নির্দান ক্রের সাল্ভাক ক্রিরাম্ব নির্দান ক্রেরাম্বান ক্রিয়ার নির্দান ক্রেরাম্বান ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রেরাম্বান ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রেরাম্বান ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রেরাম্বান ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রেরাম্বান ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রেরাম্বান ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রেরাম্বান ক্রেরাম্বান ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রেরাম্বান ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রেরাম্বান ক্রেরাম্বান ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রেরাম্বান ক্রিয়ার ক্রিয়া

আলের। সংখ্যাদক মোহনলাল কাপ্তা। কানাইপার বাট্না। কাপনান। ছাওড়া। দাম এক টাকা।

পরলোকগত বৃশ্ধদেব বস্ব এবং পবিছ গঙ্গোপাধারের স্মাতচারণ কলেছন পঞ্চিতা-রঞ্জন বস্ব এবং বনলভা সেন। এইছো ভারনান্দের দ্ভিটতে রবীদ্দমার নিক্ষীট উলেখ করার মতো।

বা। সমপাদক খাতীমা চক্তবতী। গাট ১৯৬ ডঃ বি সি রার কো-আপদেরটিক কলোনী। বিধান পার্ক। কলকাডা-৫০। দাস এক টাকা পঞ্চাল পরসা।

হনতেরা। দীনেশচণ্ড পাল ও ছোঃ করিছ দাদ সম্পাদিত। ছরতেরা। পালগড়। দিনাজপরে। দাম এক টাকা।

टम्ड लाकि

ু বহুদিন ননীকে দেখি না। হঠাৎ হঠাৎ স্মৃতির ভেতরে ভিতৰ মাহের মত ঘাই দিয়ে ওঠে ওর মুখ।

আমার দাদ্যমাধ্যের ছোট ভাই ছিলেন প্রভু জগাশ্বংধ্রে
পাঁয়লা সাবিষ ভক্ত। তাঁকে অনুমরা ডাকতাম সাধ্দাদ্য বলে,
ভক্তরা বলতেন—হারবেলে রক্ষচারী। ফ্রারদপ্রে মহাকালী পাঠশাল র একপালে সাধ্দাদ্যে একটি তারি স্দের আহাম ছিল;
মারের দিনার হাত ধরে বহাবার সেখানে গোভ ছোটোবেলায়:
ক্রীতানে, ধ্যালিগপে শাহ্যপাঠে স্ব সময় ব্যার্ম করত ঐ ছোট নিকোনো আশ্রাটি। আমার লোভ ছিল ঠাকুরের পুসাদের ওপর:

দেশভাগ হয়ে যাওয়ার পদ সাধ্দাদ, সেই আশতানা ছেছে ভার একটি চালাকে নিয়ে একে উঠলেন টালায় আমার মামার বাজিতে। এই চালাটির নামই ননীমাধ্ব ভর বা ছিমছাম ভাষায় নন্ম।

মাথার পাঁচ্ছটের নর। রোগে জনলা গারের বং। হাজ-জিরজিরে কেন্টর ভালির মত চেরার। কামনানা মাথার একটি প্রেণ্ট, টিকি। উধান্তা অবালিত। একটি অন্তর্ভাত ধ্রতি জ্বান্তির মতন করে কোমরে সটি। নংন পদ। দেখার মত তব্য ওচ্চ জ্বাহ্য চোখ প্রি। সব সমর মনে হন্ত ক্রেলটানা।

ননী কথা বলে অসম্ভব প্রতার। কি বলে, বহুকাল দোনার অভোগে না করলে বোঝা, অসম্ভব। অধিকাংখা সময় একটা কবল পেতে সাধানাদার পারের কাছে কুম্পুলি পারিক্য মারে থাকে। এবং সারাক্ষণ ওও মাথে সোভা পায় জন্তর্ক বিভি। যদি বোনা জায়গায় একস্থে স্থাবিশ্বি পোড়া বিভিন্ন উল্পুলে পড়ে থাকতে দেখেন ব্রেকেন, এখানে একট্ আ্রে ননী ছিল।

ও ছিল বয়স চোর। তেইশ থেকে । তেওঁলিশ—যা খুশি বলে ওকে চালানো যেত। দিখিলা মা, মালীমা—সবাই ওকে ননী বলাইন আনতা আনলা ভাইবোনেরাও ওকে ননী বলাইছ ছাকতাম। দাবার ওপর ওর ভাঁত বা আসভি ছিল নাছে।ভ্ৰাপদা স্পানিয়োলের মত। সব সময়ই জাঁব করে শোনাতো আমাদের সাধ্রে ছিচরশের ভলায় থাকি তাঁব পায়ের ধ্যেলা আমারও লারে লালে।

ভয়ংকর অলস প্রকৃতির ছিল নানী। সারা সকাল দুশ্বের শ্রের শারে বিভি টানত, ব.প.ক কোনল্প উঠে অন্যান্ত পেকেই সাধ্যান্ত্র মালসা ভোলে ভাল বসাত। দাশ্বেও হার্ছিল ভরত রাজার অবংগা। রলচারী মান্ত্র কিন্তু অবলা পশ্র ভূলা নানীর ওপর তাঁহ মায়া-মালের জনা। ছিল না। যুক্তেন শাসন করতেন কম নয় কিন্তু প্রদেশের জনা নানীরে ভোগের প্রপর না দেখলে ভয়ংকর উনিবংন হায়ে যেতেন। নানীরে কেট কিছু, বললে মানে মানে অসম্ভূতিও হাতেন খবে। আর নানী জিল বিপালনক বক্ষের সপট্রস্থা। স্থান-কাল পার-আনকার বিচার না করে যাবে বা খালি বলৈ ভিত। বলা বাহালা। এর দর্শবে বাড়িল্পে সরাই বেশ বিজ্ঞতই থাকতে ওকে নিয়ে। শাসনে জনা সরাস্থিত কিছু বলাই কিছু হাবে ভাবে বাড়িল্পে সরাই বিদ্যা ক্ষারে করে লাভ বারি কিন্তু হাবে ভাবে বাড়িল্পে সরাই কিছু বলাতে সাহস করেই না বাট কিন্তু হাবে ভাবে বাড়িল্পি নানী। দিয়ে কস্বে কর্ড না যে কড্খনি গাল্লহ হয়ে ভাবে নানী।

দোৰে ননীৰ জনাই সৰু বিজয় সামলে-সামলে <mark>মানাবিটি</mark>

করেককন ভক ছিলেন, তাঁরাই উদোগী হরে একটা ছোট্ট আপ্রম গড়ে গাপুকে স-ননী সেখানে নিয়ে গেলেন। পাপুরে দুর্ভাগা সেখানে গিয়ে ঐ ভক্তপেরই ওপর ননীর দাপুট ও অভাচির চারগণে বেড়ে গোল। সমরে অসময়ে তাঁদের বাড়ি বেরে চুকত চকেই বলত ছোটো সাধ্য আইলাম সেবা লাগাও। বধন তথন তাঁদের কাছ থেকে পাপুর নাম করে নিয়ে বেত তাির-তরকারী ফল-ফলারি টাকাট্টা-সিকেটা। ননী তার কথাবাতা, আচরণ দিয়ে সব সময়ই সবাইকে বোঝাতে চেন্টা করতে বে সে একটি ক্ষণে ভগবানবিশেস দয়া করে তা্দের কৃত্যুর্থ করার জন্য এতাগামে নেয়ে এপ্রেছে।

병원에는 이 사람들이 모두는 다른 아이들은 나에 살아왔다고 하는 것은 것도

বেশ কয়েক বছর কেটে গেল। আমহা ডাঁটো হারেছি, বে-থা করে ছেলে-পালে সমেত সংপারী-ও। মাসে একবার করে ননী অসত কাঁচড়াপাড়া থেকে কলকাতায় আমাদের আত্মীর-পদ্ধরে বাড়ি বাড়ি ঘ্রে দাদের গরচের জনা বার-সার মাসিক বরান্দের, টাকা নিয়ে যেত। এর মধ্যে ওর পলাকা শ্বীর আ্রো ছেডে গেছে, সারা গায়ে গড়ি ম্থেময় খোঁচা খোঁচা কাঁচাপাড় মাথায় নোংবা শামহা বাধা, পা থেকে হণ্টা, অবধি সাত হাতের-চাটারের ধ্রেলা—কক অসক্তর চেচারা হয়েছে তার।

সন্তর-একান্তরের সেই ভয়াবহ সন্থাস আর গণেহতারে দিন-গলিতে কলকাতার আলি-গলিতে স্পাই সংক্ষেত্র ছোলে-ভোলরাদের হাতে ধরা পড়ে অভত বার ন্যেক প্রভাব কপায় প্রাণে বেচি যায় ননী। এ ক্ষেণা ভিলানা তব। গলা ভূলেল হোরপ্রেম জগদন্য, মহাউন্ধারণ/চারিহন্ত চন্দ্রপাত হা-কটিপাতন কাইতে গাইতে ঠিক মাসালত এসে হাজির হাত আমার বাজি বক্ষ ডাকেই মোঝতে গা এলিয়ে দিয়ে আমাকে বলত, দিনে-মাজি বায়, স্লাদি সেবার টাহা প্র। বিভিন্ন প্রসা দেও।

একদর ক্রীঝবা দটেটা ফ্রাস্মরাস নিয়ে দাদার আশ্রম থেকে টি বি হাসপাজালের বেজে একদিন চালান হয়ে গেল ননী। দাধ্য মা-কে চিঠি লিখগেন। মা কালাকাটি শাব্য করলেন— শত হলেও গরেডেটি তো বটে! একদিন কাজে কামাই দিয়ে মা-কে নিয়ে গেলাম কাঁচভাপাড়ায়। সংগ্রেস গ্রিসকটা বি<u>লা</u>ম করার পর দাদ্ট আমাদের নিয়ে শূপ্য লোক হাসপাতালে। বিভানায় একেবারে চাদরের মত লেপেট গেছে तनीः मादा শরীরে মরণের একচ্চত ছায়া। কেবল জনলনত কয়লার মত প্রধন জনবাছে দাচোখ। পাদাবে বাজিফে ভার পায়ের প্লো নিতে গেল। ্পর মূত্রে অবৃণানীয় কটের সর কটি বিকৃত বেখা ফটিটা খামাকে বলল আনি তো চললাম। সাধাৰে সেইখেন কিন্দু।'

--অমিতাভ দা**শগ্ৰুত**



তালন্দ বাচাচ্চা উপন্যাস

(প্রে প্রকাশিতের পর)

ন্ধবাভির ভেতর থেকেও বন্দন্য করিয়ে এসে ঘাড় নাড়লো। অর্থাৎ এখানেও নেই।

আনার টাফ্রিস ছ্ট্লো। এ রাস্তা ও ক্ষণের গোলোক-ধাঁধা ম্বে আনার জন্য গড়োর, অন্য ফিকানায়। জুইভারের পদেশর সাটে বন্দনা বসেছে, সেই নিয়ে যাচ্ছে শ্লাস্তা দেখিয়ে।

গার আধু ঘণ্টা যাবত এই হুছে। হোকেনে। উল্লেখনির যোগেরে প্রেপতারী তল্লাসী চলাসী চলাসা একন আবা মেরে চলা মানুষ। তার মহিছার বাঘা কঠিন, চেটাল শক্তা জাই-ভারের সংক্ষা ছাড়া সে একটি কথাও বলাছে যা কারো সংক্ষা। শাসুহ প্রেলেন বাবে। শাসুহ প্রেলেন মরে। ভারে ইসারাল্ল কথা হাজে তাদের মরে। কিতানের সাইট তপতাই, পারমিতা অনুর মানুলী। সামুমান বা হাজালু বাদ বেছে, তাকে থাঠানো হালাকে আনা কাজো চন্দ্রাদিকে খবর কোলানুত রোজে সে।

সে সব জায়গায় সন্তোষের পক্ষে মাওয়া সম্ভব বংদনা জানে। সেই সব জেরাগালিই বৈজ করা হচ্ছে অভিনব কৌশলে। কথনো সংগ্র মিল্লনীকে নিজে, কথনো একাই। একবার তপতীকেও সেতে স্বাভিলা যেখানে মান হয়েছিল অচেনা মাথ কাজ করবে। কৈণ্ডু বংদনার এত চেণ্টা বোধহয় বাংগুই হয়। কোথাও সংগ্রেষ সেন্দের ক্রিক্তিল থবরও মেলেনি এ প্রার্থকা থবরও মেলেনি এ প্রার্থকা

এতফাণ পারে পারমিতাই প্রথম কথা বললা, তেনে কি সতিসেতিটেই বাইরে পালালো। ! বংলা। কোনো কথা বলল না, শাুণা ঘাড় ফিরিয়ে কঠিন দািউতে কয়েক পলক ওব দিকে ভালিয়ে থ কলো। বাস পারমিতা টাইট, একেবারে এয়ার টাইট, মুখে আর টা শংলটি নেই। বন্দনার কিশানেতর ওপরে কথা কলা ভার ঠিক হয়নি। কদনার চোক্ষ কলে করে সভ্যের সেনেকে কেউ চেনে না। বন্দনা তাকে বাকে বাল ভেন্ড, শিসভুতো ভাই আন্ত মুখাপক্ষী। স্বেতারের বাংগচিত্রের কলার মধ্যিপক্ষী। স্বেতারের বাংগচিত্রের কলার মধ্যিপক্ষী। স্বেতারের বাংগচিত্রের কলার মধ্যিপক্ষী। স্বেতারের বাংগচিত্রের কলার

সজ্ভাষ কি থকম নাভাসি , কি রকন ভাগিসলেটিং, কোনো কিছাতে দিটক খাঞ थाक इ भारत मा इहेर इहेर भूछ । सम्लाभ শ্বনা তা জানে। নিজের অফিস আরু গাতির বাউরে সে অসহায়। কোণাও বাইরে ধানার কথা হলে মাথায় যেন আকাশ ভেগে পড়ে। আসলে নাম্বার ওয়ান রেল-ভীত। ট্রেন bleck হবে, দেট্শনে থেতে হবে শালকেই সংক্রাধের আমাশাস ভাব হয় খনখন বাথ-রামে ছেটে। এ একটা টাইপ। 🕶 থাড় এই সাহিত্যায় একবার দা্-জন কুখাতে গাুন্ডাকে একা শায়েম্তা করেছিল। দাউ দাউ করে - জালে ওঠা ঘরের মধ্য থেকে ওপের একজ্বন আত্মী-যাকে বের করে নিয়ে এসেছিল নিজের জীবনের প্রতি ভাক্ষেপ নাকরে। একটা গোখরো সাপকে স্লেফ রালকাঠ দিলে পিটিয়ে মেরেছিল সেবার চন্দ্রনাগরের বাগান্দরিভতে।

আসলে সংগ্রেষ ডেসপারেট, তেয়ারিং, স্বিকিড্ট্—িক্ল্ড সে ভাৎক্ষণিক 457517 লহুমার জনো। আচমকা যে কোনো হিথাতিতে ফেলে দাও স্কেতা**য** ভার মোকা-विला कद्रात् रव रकारमा विशासक वर्ष रकरने বেরিয়ে আসবে। কিল্ডু তাকে এক রাত সময় দাও কোনো বিষয়ে ভেবে দেখার, কয়েক ঘটা আগে ভাকে কোনো দায়িত্ব ব্যক্তিয়ে পাও, বাস সনেতাষের হয়ে গেল। সে তথন ভীক্সা ভীত, বিশকুল নারাজ, পিছ: হটা মান্য। অভি সামান্য সাহসে_ই কাছত তখন ভাকে দিরে হবে না। এত ক্রেন্ত এই ভুলটাই বদ্দনার। করেছে। সভেত্তীয়কে আলে থেকে ইলোপের গ্রন্থ শানিরোছে কি রকম ঝার্ক নিয়ে স্ব কাজগুলো করে শেকে ছবে সেই **প্লানপ্রোগ্রাম ডিটেইলস ওকে বাতলেছে।** তার ফল এই। এটা বন্দনাদের আগে থেকেই ভাষা উচিত ছিল।

যাই হোক, এবার বন্দনার ভূল ছবার নর। সংশ্ভাব একা কোথাও সাইরে কোনিয়ে পড়বে, দ্বের কোথাও গিয়ে দিন দ্চার কাটিরে আসবে, এ অসম্ভব। স্ভরাং রবিবার সকালে মনম্পির ক্রেই সপো সপো ভ্রমণের স্বগানী পাওয়া পান্ত। অভএব সৈ কলকাতা ভাড়েনিং এই শহরেই কোথাও গা ভূবিনে বসে স্বান্ত। ভারততঃ এ বেলার মধ্যে ভার লেটানা লীক্ত করা হল্পে না। নদনা মিলিচ্ড।

আরও গাটি ডিনেক বাড়িছে হানা দিয়ে বন্দনা ধ্রথন টাজিতে এসে উঠলো তথন তার চেথেও হতাশা। বোধংয় শেষরক্ষা হল না। কত তদবিদ্ধ করে একমাস আগ্রের ব্যাকডেট দিয়ে মানেজ নোটিশ ইসা করিয়ে পিবে-ছিলেন চন্দ্রাদি। আজ খাতায় কল্মে বিয়েটা সেরে ফেলতে পারলে নেয়ের পিতপক্ষ পাত-পক্ষ দ্যু ভরফকেই ডোন্টকেয়ার। তথন আন্তু-ত্যানিক কাজকর্ম অনেকটা নিভায়ে সারা যাবে। নইলে অতব্য লোকের বিয়ের ভান্-প্টান সামবাটেজ করা এবং নেয়েকে **অপ্**সর্গ করে সরিয়ে অন্যত ভাপরাধে **পর্টলাশ কেসে** ফে"সে যেতে হবে। কেলেংকারির কেলেংকারি, এবং সেই সংখ্যা মোয়েটির লাইফও ছেল হয়ে यात्व, वर्षाहादमा यात्व स्ता । वन्त्रसात आक्रो শানিক্য গিয়েভিল সেইজনে। সেই সংস্কাস্থের সংগো বিয়ের ইনিসিয়েটিত নিয়েছিল। ভারাই বলতে গোল দলভূমি সংস্থাসমত **করেছে** এখন কলে এসে ভরাভূবি হলে আরু মুখ দেখানের উপায় **থাকরে না।**

উত্তেজনা আর রতাশা ছড়িয়ে পড়েছিল সকলের মনের মধ্যেই। ব্যাপারটো এখন আর প্রেম্পিজ ফাইট নয়, কোশেচন তার **লাইক্ষ** আনত ভেগ। অথচ সমুহত ব্যাপার**টা এখন** যেন আর কোনো মান্যের হাতে त्मते । নিয়তি এখন এই ব্যাপার্টার গতি নিয়াল্ল করে চলেছে। সম্ভোষকেই এখনো পর্যাত খ'ুজে পাওয়া গেল না, পেলেও কি হবে বলা भक्ष। वर्षना लाएक वाशास्त्र भावस्य किसा कि জানে। পার্মিতা পার্মালি মেরে তনঃ চঞ্চ ভানপিটে। তব্ তারও চোথে যেন জগ এসে গিরেছে। জান্তর ওপরে তার হাত भारों धक्यात ग्रांक्रिक्य इराफ् भ्रदेशरह । भारत भिश्र कुछि आहतत महाश्र दकारना ভাবাস্তর নেই। সে কি ভাবছে কেউ জানে না। কডটাুকু ব্ৰেছে ভাও অন্মানের বাইরে। তব্যুক্ষন মনে হয়, দেৱ এই অভিযুদ্ধর সামিল হয়ে গেছে ব্রি। একটা **প্রশান করছে**। লা একবার মাজ ফেরা**ছে না ফারো সিংক**, ^{াবিন}ত পটাছের মত **শা্ধা সজাগ বসে আছে** हैन्जेबार्गित स्कृतिका अधिका, भव्मस्थीन शतकत

ক্ষাবহান কলকাতার বিশাণখন পথ দিয়ে সে বেভাবে অলোয়ারের মত বিদান গতিতে আক্রেক পাশ কাট্রে, প্রতি মৃত্যুত্তি মুক্তি নিয়ে গাড়ি চলোক্ষে ভাতে তপত্তি ক্ষেক্তই মনে তাল্ল লোকটা নিছক অটো মোলাইল মন্দ্র না, ভারও একটা প্রমাণ-সাইজের হ্দের ভাতে। সেও আফ এই অপারেশানের ভাংশীনার।

'শালা, যদি ছেলে ইতান, আনিই ওতুক বিষ্ঠে ক্ষতাল্ল'

স্বাই চ্যকে তালালো পার্মিত্র পিকে।
মা শার্মিতা রাস্কিত। করেনি, কানো দিকে
তার জ্বাক্ষেপত নেই। এই কথা-ভূল-বান্দা
টাক্ষির খোলেব মধেনে মেন বুলা, তঠান
আশা মনে কথাটা বলে উঠল: এটা তালিব
কথা ময়। কেট তালিব ভগল দিয়ে হাত নাট্ডির
তব হাট্রের ওপত্র হাত রেকে স্কেন্ত্র একটা
ভূপি দিলা। কেট কোনো কথা বললা না।
ফেলেব ভেডারে যেনা আন্তর বিনিম্ম হায়ে

জাই শেষ। ছিপা্নার বাড়ি দেখা হলে হলে। বেলাই আমাদের আব কিচ্ নরার প্রকাশনা। বিদ্যাল কালের স্থানের মান্ত্র কালের স্থানের মান্ত্র কালের স্থানের মান্ত্র কালের স্থানের মান্ত্র কালের কালের কালের কালের কালের মান্ত্র কালের কালের

জিপাদ। কিন্তু গণেশ স্টুরাজের ক্রিমান কলেও নাম নয়। নান্দ্তার মনে পড়কো। কাৰ্কেন্দার বয়স হয়েছে, প্রায় প্রকাশ ভাই-**ছ**ুই। কিন্দু এখনো পণ্ডশ বছরের যাব্যের মত দৌড় ক'।প করে বেড়ান। হ্রজ্বের শেষ নেই, নেশ'র জানো ত'ার অদেয়ও কিছা নেই। লোকের ছিট থাকে, ওারও আছে, একেবারে **ছিলগৃহত মান্ম। মৰ সময় যেন ব'ডাদ বগলে** করে আছেন। দেশ বিদেশের বাড়িশ স্কেত আবে হুইক্ছিপের এমন সংগ্রহ কলক।ভার শহরে আর কারো আছে কিনা নশ্চিটার জ্ঞানে না। এই মংসক্ষ্যোপা মন্মটা কিন্তু ব্যাচেলর নন, রীভিষ্ঠ সংসারী। 'কল্ড সংসারের সংগ্রাগের গোড়াই যোগাযোগ ফাতনার দিকে ছাড়া হার আর কোনো দিকে **मत्नारवान रनदे । ज**िन्दा अश्मारत क्रिक অশাদিত লেগেই আছে, কিন্তু এ গুলেশ ওলাই-বার নর। তিনি গভীর জনের কারবারী তিনি শ্রে অস্থেদিপশাদের টোপ ভালামেই বাসত। বনদনা একদিন রগড় করে। বলেছিল আমাদের ছিপ্দা, অকুতদার নন, উন বিক্রীদার। বউদিকে উনি বেচে দিয়ে বলে चार्ट्न ।

কবিবার ছিল্পাকে ব্যক্তিত পণ্ডের। যাবে ছেল্লাল্য জুল্ডেড। তবু বাড়িতে গেল, কিছ**ু** তথ্য সংগ্রহের জনো। এই র্যবারে ছিপ্দা কোপার চার ফেলেছেন সেটা জানা প্রয়োজন। এবং সেই সংগ্রাত্তির মহ্যাতী কারা কার। হতেতেন যদি জানা ধার।

কিল্ল ক্রাছি মানাখাটা ইংরেজিনে যাকে য়জে কঠিন বাদাল ভাই। বাহত পংগা, প্রায়, অণ্ডতঃ সেই রক্মই ভান করেন। বেশির ভাগ সময়েই খাটে শ্রে শ্রে শ্রে বি চাকর ঠাকুর अमोराहरा। कथाना कथाना मिकाल भाग भागतन प्रास्त्रवाकी नाग्नमध्य देवालाटन চ্ছুদেশিলায় বসে স্পালি কাটেন কৈৰো धमलाशा ए बार्डमा क्यांना क्यांना त्यांना হোৱি টুরোজস্টার নিয়ে দোল খান। কথনো ঘটাভিত কেছে। সিলেম। মানুলাজিন চালেন। ক্ষিত্র ভিপাদার সম্প্রের কিছা জনতে গেলে চিপ্রাটি নটা । জনগ'ল কথা বাবে গেলেও এক লাইন জনতবা মিল্লে মান সোয়েলের িলেয় কলে সভেত্ত বল্পে ভিন্ন তথ্ भ्यामीत भार अवस्ति ग्यालक भाग्याक अनेभव নৈস্থাৰ চেনাবালি থেকে বাদনো যেন ভাই কডবিল মনে লনে হাসে বন্দনা ছিপচ্ছেই হিক্সীতদার শা্ধা ন্যা, বিক্রাধারত বাটে।

ছিপানৰ সংগোন্টাইন লেখের সাজিতে স্বাইকে নিয়ে চাকে পদল বশ্লা।

তেরতার নানান্দার সৌনি রখন সোলানাস্থ ।

চেপে উপ্টোলন ভার বিশিক্ষণ আর বিশ্বাস্থ আর বিশ্বা

শক ভোষৰা স্বী বালের সূত্যমন কুট্চাই ছবের মবো...৩ঃ ভাই বজো, বফলনা এলি, ভাই বজ্...'

ভূগ্নি ভেয়েভিজে একপাল মেয়েভাকত এসেছে? না বৌদি হাসি নয়, আজ্ঞাকাল হামেশা মেয়েরা ভাকাতি করে সেডাক্ছে।"

'ভা তুইও কিছা কম যাস না মেয়ে। বাকবে লো তেমিরা, ভালকথা, কে যেন ভোমরা, সম্নার মত ভালতে মেয়ে আনমি চাক্ষ দেখিনি।

'দ্ব চোকে দেখতে পার না ভাই বলো।'
ছিছি ভাই কখনো হয়!' বলেই জিজাসু কুটিল চোখে নন্দিভা পার্রামতা জিজাসু কুটিল চোখে নন্দিভা পার্রামতা জপ্তীর দিকে ভাকিয়ে থাকলেন।

'এই দ্যাখো কি ভূলো মন আমার।
যে জনো এসেছি'; বন্দনা বৌদিকে জিড
ভৌগ্যমে দিল, 'ভাই ভূলে গেছি আর এদের
সংগ্র ভোনার পরিষ্ঠন্ন করিরো দিতেও ভূলে
গেছি। অবিশা এই নন্দিতা চৌধরীকে ভূমি
একবার দেখেছ, আলাপও হয়েছিল, ভবে
থার্র্যাভা দত্ত আর ভপতী মিশ্রকে আজই
প্রথম এবং সংভবত শেষ দেখাছো—'

েশ্ব বিশার কথায় কেমন একটা নরম বাদ্য বিদি, ব্যাহা **বাট বাট মেরেরা, শেব** কেন?' হেণ্ট হঠা সিনেয়া পরিকাখানা কুড়োতে পিরে চোখ মচকে ইসারা করল বন্দনা, তরা চজেনেই খুব শিগুগির ফরেন চলে হাছে। ব ডুশি শিল্প নিমে দ্কোনেই বিলোচে গিছ ন ব্যধা করবে। তাই লাবলায় ছিপ্ ডি...ছিপ্ দেখিয়ে নিয়ে যাই গণেশদন ব ডু থেকে। মাহ শিকার সংব্রুণ বিজ্ঞা হ গোনান প্রেন্ট-ফরেণ্ট যদি পাওয়া হাছ।

বদ্দা মুখ ফসকে তার একট হাজ্য কেলেক্যারী করে ফেলেছিল, ছিপু দিল্লে সেটা চাপা দিলেও বৌদি সন্দিশ চেথে সম্পার মাথের সততা পরীক্ষা করকেন কায়ক সোগাত ভারপর বগলেন, বিলম্ব বাড ব্যাজনে এলে ভাই- গ্রামার দাদা তো--

প্রশের ঘরে উঠিক মোরে বন্দনা বল্ল, ভাত বরতে গোছেন তো?'

ভাঙাড়া আর কোন চুলোয় যাবেন। ব্দ্নার হাত থেকে উপ্টোর্থ ফেরত নিজে নিতে জান্ন।

্দেখনে আন জেনারের সাজার ছাত্ত মান করে দেখনে দুশা গনের কেন্দ্রী ক্রন্ধনে ক্রেন্টা গোছে। করাই না সংগ্রী আছে আর দেউ? টিকেট কেটে না কোনো বাগন-রাজিকত কেছেন, গলেশনা। বৃদ্ধ শছ সেজে কিন্দু নৌদি ভাষাকে খার্লা দেবেন। জ্ঞান মাছ উল্টেপ্যটে খোলা।

গণেশ-বেটাদ বেবংগড়, নিশেষ জানের না, কিব্রু গৃত্বিন্দির ভারত কিছা করা নাই।
এটকংলাগা গোগে বন্দনার ধ্যায়া পুলস্কীপাতা
না,থখানা নির্টাফন করলেন। পরে বলক্ষেন,
ওড়ালা দাদান ব্যস্ত বেতে আমাকে ব্যক্ত কর্মেন দেশল্ম। মেরে টিফিন ক্যাবিহারে
কর্মেন দেশল্ম। মেরে টিফিন ক্যাবিহারে
ক্যাব্র ভরে দিশ—'

> ভাষণে বোধ হয় টালিগঙ্গের দিকে—' 'হতে পারে, আশ্চয়' নয়।'

উটে, উলিগজে বোদ হয় না', বফলা আপন মনেই বলল, 'এর আগের রোব্যারেই তো ওদিকে গিলোছিলেন। এবার আমার মনে হয় মদামগুল, কিংবা বিরাটির বাগান-বাভিতে—'

বৌদির মধ্যে চনক, মো মধ্যমুখ্য যায়নি বিরাটিও নাম শ্রাধ্যানী নাম্টাই শুনেছিলাম যেন্য কেন তোগরা বাবে নাকি ?'

'আপনি কি ক্ষেপ্ৰেছন বউদি! আয় কি আর কর্মান—দাদার আমিষ ঘরখানাই এক নজর তোরা দেখে যা। পৃথিবীর নানা দেশ থেকে দাদা ছিপ আনিয়েছেন, সূতো আনিয়েছেন, ব'ড়াল আনিয়েছেন। মছ ধরার সমস্ত সরজাম তোমারা দেখতে পাবে, তার পাবে মৎসা বিষয়ক দেশবিদেশের বই আর জান্লি। একটা ওয়াপ্ডার—' বন্দনা বোঝার, আর এর পিছনে বেটাদর ইনস্পিরেশন না থাকলে গনেশদা কখনো আনতোব এগোতে পারতেন না। ভোমারা যদি ভেবে থাক, বৌদি দাদার ভিসাং হবি একবম লাইক করেন না, ভাহলে একটি মারাম্বর রাল্ডার করেন না, ভাহলে একটি মারাম্বর তুই থামতো ডে'শো মেরে!' গণেশ-বেদির মুখ্টা কিন্তু উল্জান হয়ে উঠলো, থর দেখতে চাস, দেখ। তার জন্যে আর গাস দিতে হবে না।'

Marine Marine Spirit and Greek and Spirit an

দোলা থেকে বৌদ নেমে পড়ালন। একটা পায়ে একট দোষ আছে, কেমন ছাত্রিতার হাটেন। চাবি দিয়ে প্রশের ঘরটা খালে দিলেন। খরটা স্থিত দেখার মত করে সাজানো। কিল্ড বাদনা তা দেখছিল না সে শ্ধে প্র মেলাজিল। হুইল রাখার রাক ছাতার আলনা, ফ্লাস্ক আর টিফিন ক্যারিয়ারের আলমারি তার চোখ হাঁটকে বেড়েকিল। ইঠাৎ ঘরের মাঝখানের সেন্টার টোরলে আাশটার ওপর তার চোখ পড়লো। একটা আধ-খাওয়া চুরুট সেখানে নামানো অনেকটা ছাই লখ্বা হয়ে মুখে লেগে আছে। ভার পাশেই হিন্দ্রুখান স্ট্রান্ডাডের স্নান্ডে উইকলিখানা আজকের তারিখের। বন্দনার ্রেখ জনুলে উঠলো। এই চুরটে ভার খবে পরিচিত। হিন্দু=থান স্ট্যান্ডাডের ন্যাগা-ফিনখানাও কোথা থেকে এসেছে সে জানে। वफ विकिस कार्तिशास, नृत्यो भ्राप्क देगाउ ইয়েছে, গাটি চারেক ছিপ। সাত্রাং উনি একা গেছেন একথা বলার বিশেষ কারণ অবশাষ্ট আছে।

'দেখলি তো তোরা? চল এবার ফেরা যাক,' বৃশ্দনা বলে, 'বাই দি বাই, একটা টেলিফোন করতে পারি বউদি?'

'কর।' ব্উদির ম্যুখানা ইঠাং কেমন বিস্বাদ হল, বিষ্তু কগন্দ্ররটা খাতায় শিথে দিয়ে যেতে ভূলো না। নইলে তোমার দাদা আবার রাগ করেন।'

'থ্যাংক ইউ বৌদি। নিশ্চয় লিখে দিরে স্বাব। আছ্না তোরা ততক্ষণ বৌদির সংকা গ্রুক কর, আমি ফোনটা সেবে নিই।' বংদনা গণেশবাশ্র ব তুলিখর থেকে বৌরয়ে ফেতে তেপতীকে চোথের ইসারায় ডেকে নিল। বাইরের ঘরের দরভায় ওকে পাছারায় মোতারেন রেখে ত্বের ভেতরে তুকে বন্দনা দ্রতে হাতে ভায়াল ঘোরাগো।

'কে, স্বমা? কতক্ষণ? হা সব ^{বলব}, দিদিভাইকে দে।'

টোলফোন কানে ধনে অংশকা করতে ক্রতে একবার ঘরে তাকালো বন্দনা। চোখের আভাসে গণেশ-বৌদির অবস্থিতি ভেনে নিরে আবার টেলিফোনে মন দিল। টিপরের ওপরের খাতাটা নাড়তে নাড়তে कथा वनन, भिम्हाई? अव मार्ग्स् সাপেনিটাইন দেন থেকে। হ্যা মনে হচ্ছে পেয়েছ। স্কালে ছিপ্লার এখানে এসেছিল, একস্থেগই বেরিয়ে গেছে। না জানা গেল ন। হার্ডনাট ব্রেলি। ছিপ্সোর ওপরে তিনকাঠি। কিছু স্বীকারই করল ।। উনি নাকি একা গেছেন। অথচ আমি ক্লু পেরেছি। হ্যা শিওর। কথার কথার অন্মান হল দমদম বা বিরাটির দিকে কোনো..এই ছিদিভাই, দৃৃাড়া...মনে হুক্তে পেয়েছি, আচ্ছা ধরে স্বাক এক সেকেণ্ড' বন্দনা কল-ফেকডের শান্তার थन्त सद्दक अफ़्रामा। वस्युतात कासगरम्ब ফেল্লার দেখে তপতীর মনে হল **লটার্কার** প্রাইজনিকেট ওর তিকেটের নদ্বর দেখতে প্রের গেছে।

স্থ্যালো দিবিভাই! পেয়েছি রে, পেয়ে গোঁছ। ওবা মনে ছল্ডে সংশ্রেষর বংশর আটা বস্চোধ্রীর বাডিতে. হ্যা মধাম-গ্রামে না ভল নেই, কলবাকে আমি ওর নিজের হাতের জেখা দেখলাম। নানা তার নরকার নেই আহ্বরাই পারবা। আহি যেমন করে পারি ধরে জানবোট দেখিল। না. ট্যাক্সি ছাডিনি। এক নি বেরিয়ে হাছিত, থাছে, মাকেণ্টিং-এর বাকি টাকা তো আমার कारहरे जो श्रांशको। जन्दत प्रीक्षा जो मत्न আছে ভাবলিউ বি টি হয় হয় নয় নয়, পিকিউলিয়ার ভাই না না ভোলা লোক। ম্যারেজ অফিসারের সংগ্র হাতি ভূট ব্রং আলের প্রমেশ্ট্রা ঘন্টা ভিনেক পিছিয়ে দে ्रा मार्किमहान्हे...च-रक? **एडर**७ मिन्हि (3°5--'

ফোনটা নাজিরে রেখে খাতায় শন্দর গিখতে লিখতে বংগনা নিজের হাতগড়ির দিকে তাকালো। তারপর লেখা শেষ করে উঠে দাঁডিরে সিম্বতম্থে তপতীকে একটোখ দেখিরে দিল মনের স্থানগে।

'ভয় পাসনা তপু। এখন এপারটা

বাজতে দশ। উইদিন টেন মিনিউস ছুই
নাড়ি পেণিছে হাছিল। তার মানে, ওয়ার্ড
ইঞ্চ ওয়ার্ড, ডোকে আর তেগাবো না।
বাধরাটা বাজার নীট এক ঘণটা আগেই তেগেলর
নাড়ির দোরগোড়ায় ড্রপ করে দিরে আয়ারা
থ্রি মাস্কেটিরাস্থি উত্তর্মধার্য্যাহার দিকে
প্রেট বেরিয়ে হাছি। কী? অমন করে চেয়ে
আছিস কেন? আমাকে কাপ্ট দিস হাছে।
বিশাল ক হোলস মনে হছে কিমা বলা!
বিশ্বার কথা শেব হাতে না হতেই

বউদি এসে পড়লেন। ডাকে মন্দিতা **আর্মি** পার্রামতা বেশিক্ষণ ভূলিরে রাণতে **পার্রো**ন। কি রে বন্দি, কোথায় এত **মনোবোগ**

ज़िता को **मिरका**न कहा इस्मा!

বন্দনা প্রাম্য মেরের মত শ**াক্ষত ভালা** করে বল্লা, যাঃ বউদি, তুমি ভারী অসভা।

'জ্যা, ভাহলে ঠিকই ধরেছি? ওবে **দেরে** কলেজে একেই তবে ভূবে জল খেতে শরে করেছ।' একটা নিঃশ্বাস ফেলে বউদি ফেল বলেন, 'ভা ভোদেরই ভো দিন।'

ানচে হন' দিছে।' নফিদ্তা **প্ৰন থেকে** পৰা।

াঁক দিকে? বোদি বেতো শরীর নিরেই নান্দতার দিকে বৌকরে যবে গেলেন।



্রিক্স টিড সিক্সি হর্ন দিছে।' পার্রায়তা ক্রিটান্ডাবে হর্ম দেওর। দেখাজো। সে ক্রিডেরে ভেডরে ক্রিছেন।

ৰউদি আন্ধান বন্দনার দিকে ফিরলেন, আর্থী তেন্ধানা কি ট্যাকসি দাড় করিমে'— আন্ধান চোধের দ্বিট স্বর, আর তবিকা হয়ে উঠকে সম্পেতে।

ক্ষুনা জিভ কাটলো বউদির দিকে।

জাললৈ ও নির্যাত বউদিকে জিভ ভে-গালো।

ইসস্। টাকসিটকে ছেড়ে দিয়ে
জালভেই ভূলে গোছ। হা করে দেখাইস কি.

চু শিপশির চ, মীটারে কত উঠেছে কে

জানে! ইসস্, এমন ভূলো মন—

ী পুতির শানে। সহমার জন্যে দাঁড়িয়ে অবলী বিখান হোমন করে প্রারাশ্রট নামিংয় ক্ষিত্রে হার, কদ্লাদের ট্যাক্সিটা ক্রেমনি করেই গুলির মুখে তপভীকে নামিয়ে দিয়েই চোখে পৰিকে উধাত হয়ে গেল। এতক্ষণ তপতী যৌন একটা রুখ নিঃশ্বাস ঘূর্ণির মধ্যে জাটিকে ছিল, এবার সেই ছ্টাতে চরু থেকে ছাড়া পেল। ভার মাথাটা টলছিল যেন ভখনত ভারসাল্ল ফিরে পার্যান দেহটা। প্রসাদ্ধ পর্বাশ্রের ছাতা মাথায় মিক্ষিণ্ড মান বাটা খেমন করে। তেলে দালে মিচের দিকে নামতে থাকে, নামতে নামতে একসন্তব্য কঠিন বাস্তবে হা খেয়ে পায়েব ভঙ্কায় জ্পির মাটিকৈ আবিক্ষার করে, ভূপতীও তেমনি গলির মাণে স্থির হয়ে পাঁড়িরে নিজের প্রকৃত পরিমণ্ডল খু'জে दमका ।

নিজেকে কেলন ছোট আর অসহায় ননে
ছল। আন্টেশনেট সে যেন জালমানুবী দিরে
বীষা আছে। তার চারপাশে নিষেধ আর
ক্রিট একটা লন্ডীর মধ্যে বন্ধ। প্রতিটি
ক্রিকেশ মাপা, প্রতিটি কাল্প রুটিনমাফিক।
ক্রেটে আনিয়ম করতে, অনিশিচত আর
ক্রেটেনাম করতে, অনিশিচত আর
ক্রেটেনাম করতে, অনিশিচত আর
ক্রেটেনাম করতে, অনিশিচত আর
ক্রেটানাম করতে, অনিশিচত আর
ক্রেটানাম করতে, কলেনে কর্টা পাড়া সে
ছেটে, ক্রীবনের কতটুকু সে জানে কর্টা পাড়া সে
ছেটে, ক্রীবনের কর্টানাম কর্টা পাড়া সে
ছেটেনাক জ্বান্ধান আন্দালিশ সে সেখেছে?
ক্রেটোর ছাত্বাব্র আন্দালিশ সে সেখেছে?

আজ ওপের সংশ্য শেষ প্রতি সে তে।
পার্বারা না ছুটো হোতে। কেননা মা ভাববে,
বারা চিম্তা করবে। নিনিপ্টি সম্মা পার হুপে
থৈজি।
ভালি কারাকাটি পড়ে মারে। কারণ ভপত্তীব
জানে মাগা জীবন নিনিপ্টি সীনন ছিসেবের
জানে মাগা জীবন নিনিপ্টি সীনন ছিসেবের
জানি। ভাব মারগালে শাদা বই আর আরকবিভালি, রেডিওর নিশ্মেহল আর আরকবিশ্বারা সে নাকি শাদ্ভ গোরে লগানী মেগে,
ভালি মেরে। কিম্ত ভালা মেরে হুরো তপতার
ভিলা মেরে। কিম্ত ভালা মেরে হুরো তপতার

্তশতীর জীক্ষন সোত দেই ঘণ্ডি দেই জ্ঞাই মজুনত নেই। এমন মস্প এমন স্পঞ্জ জীৱন কে জানে স্বাত তারক কামা দর। বিজিটি কিন ভক্কাটা প্রতিটি রাত মারা টুলি। বুল বেকে জালা, জাগরণ থেকে বুল-- এই দুটো মলটের মধ্যে যেন কত্কগুলো বছর কত্কগুলো সাল পাতা বেশ্ধ রাধা হয়েছে। সেই শ্নাপাতার কিছু লেখা হর্মি। উল্টোপানটা কিম্মরকর আপতিকর কিছু যদি লেখা হত তাহলে কি খুব থারাপ হত। কিছু উত্তেজনার পার্কি, কিছু খাত্রা-পড়া-শোত্রার জীবনের বাইরের কথা কিছু নিষ্ঠিপ অন্তব জমা হলেও তপতীও নিজেকে বিত্ত-বান মনে করতে পারতো।

তার বাবা তপতী ভাবলো জমজমাট আহুটোজ মানুষ, কিন্তু সেই শ্রোয়। আদ্ভারও একই চেহারা, তাতে গতি আ:ছ কিল্ড সে গতি লাট্র মত নিজেকেই কেল্ড করে। তাকিয়ে তাকিয়ে দেখা যায়, ভালও লানে, কিন্তু তার স্পীত কাউকে কোথাও নিয়ে খাল না নিজেকেও না, বাইরে তিনি কাজ তাড়্যা মানুষ, সেখানে তিনি আরও আবংধ, আরও স্নাট, ডাইমেনশ্ন তারানে। ছবির মত কৃতিম। টাুরে-কনফারেনেস, ফাইলে আর ইনদেপকশনে বাঘবনদী। জার মা এখন শ্ধু পটেলেখা গোছের শুধু গৃহিণী জুয়িংবুম বেডবুমের মাল্যানের কিচেন করি-ডোর। গ্রেপট্রেপ ভারা পার্নে: মালিক প্রিকার সংগেই মাকে মোলানো যায় অলং অবসবের পাড়া উল্টে সময় কাটানোবং ভূপত্তীত এই জীবনট মকদৃশ্য করে আস্চেই. ভ্ৰপতীত একইভাবে বড় হচ্ছে, ওপভ্ৰীও একই ভাবে ফ্রিয়ে যাবে। স্কুল ফ্রিয়ে গেছে, কলেজও দেখতে দেখতে ফা্রোরে, তারপর অনতিবিলদের একদিন সানাই বাজবে, উলা পদেবে। এক ভাৰতরালা থেকে তপাৰী আর এক অংভরালে চলে মাবে, তপ্তীকে আর কেন্ট দেখভে পাবে না।

মুখের ভেত্রটা কেমন তেতো লাগছিল।
তপতী আর দডিলেলা না, ক্লান্ত পায়ে ধীরে
ধীরে বাড়িতে গিলে চ্কলো। রবিকারে:
সকালেও বাড়িটা কেমন পোল্ডো বাড়ির মাত নিজনে। সদর বন্ধ করে দিলে কোথাত কোনো
শব্দ নেই, নিশ্চুপ। ঠিক নিশ্চুপ নয় বোবা।

দোতলার সিশ্ভির দিক্তি আনাম-দ্রুক শারে এগোল্ভিল, হঠাং মারের গলা শুনে চমকে গেল।

মারি শোন। সৈঠকথানার সোদ্ধা বসে মা রবিবারের কাগজখানা নাড়াচাড়া করছিল, পদাটা অনেকথানি টানা থাকায় তপতী রাকে লক্ষা করেনি। থমকে দাঁড়িয়ে তপতী অবাক হল। এ সময়ে একডকার বৈঠকথানায় মা কোনোদন একা বসে থাকে না।

থার চাকে জিজ্ঞাসী চোখে মারোর দিকে ভাগলো। সামনে সেন্টার টেবিলের ওপরে দুটো এ'টো কাশ মাথেমার্থির বঙ্গে আছে। কিছুক্রণ আগে হরত কেন্ট এসছিল। অনাদিন হলে ওপতী হৈ হৈ করে উঠতো মারে দেখে, সাওটা প্রশন করে বসতো আদারে কিছার কিছত আন্ধ ভার মনটা কেন্দ্রন অবসর। কিছারা কিছত আন্ধ ভার মনটা কেন্দ্রন অবসর।

ওকে ডাকার পর মা তাবোর খবরের কাগজে মাথ নামিয়ে পেশে আছে দেখে শা্ধু কলক, 'কী ?'

'হাাঁ', মা কাগজখানাকে মুড়ে সে্টার

টোৰলেছ নিচের থাকে চালান করে দিতে নিতে ওর দিকে তাকালেন ট্রিকট পেরেছিস

'रुभरशंक I'

'শ্বং' টিকেট কিনে আনতেই এত রেরি ।' 'না। এক জায়গায় গিরেছিলাম।'

স্কৃত্ব কপি। কঠিন গলায় মা শুধোলেন, কোথায় ?

'বস্দলাদের 'টিছা' 'আর প্রেটিকিনে?'

না। খ্যাঁ, ভোলটুবাবার স্ট্রিডরোডে।'
তেভাটুবাবা কে?' জ্যু কুচিকে এক পলক
ভাকিয়ে নিজেই ফের বললেন, 'ওঃ সেই
আন্রোমান লোকটা!'

হুৰ্না, খোকনদার বন্ধ_র, ওরোস্সস আগে—

'হরেটে। সেথানে কেন গিয়েছিলো কি দরকার ছিল ডোমার? যাবার আগপে কই কলে যাত্নি তো আমাকে?' মারের গলা থমথমে এলসায়।

হুঠাং গিয়েছিলাম।' তপতাঁর গুলাও ফুম্ম হাবে। বলে তো আর বেরোইনি ফিন-ছিলাম বেগ। হল, ডাকলেন ভাই গেলাম। একক্ষেণে জনে। ছাড্লেন না, মিচিট্র খাওয়ালেন কিছাতেই খাব না—

্রেশ করেছ। এপতীর মা মেয়ের আ**পাদ-**মহত্র নির্ভিশ্ন **করলেন, বেসো, ধর্গড়িয়ে** ব্যালাকেন স

'কাপড় ছাডবো না?'

ভাড়া নেই। বসতে বললাম, বল্যো।'
অভিমানে তপতাঁর চোথ ঝাপসা হয়ে
আগছিল। সে একটু শব্দ করেই লোফার
ওপরে বসে পড়ল। তার মনে হল, এই মা
এখন তানা মা। তার সং মা। বলফের মত
ঠান্ডা এবং কঠিন। গলার শ্বর কথার ভালা,
স্ব কেমন আচমুকা বললো ফেলোছেম।
ওপতার মা এই রকমই। বরং কথানো কথানো
আরও বেশা নিঠুর। বাবার সংগো মারের
ব্-একটা সেরকম দৃশ্য তপতাঁর চোথে কানে
এসেছে। মারের সেই দীর্ঘনিয়াদ্বী কোভনেস বাবাও ভার করেন, এড়িয়ে চলেন
স্বাধানত।

'এই ডোমার সভাতা শেখার বয়স, কাপের কাছে তো কিছুট শিখলে না।'

এবার যেন শৃধু অভিমান নয়, ভাপ জমছিল তপতীর মনের ভেতরে। কি ভেবেছে ভাকে মা? কচি খুকি না,, কান্ডজ্ঞানহীন শিশ[ু]? কি অপরাধই বা হুরেছে তার। বেলা গড়িয়ে বাড়িতে ফেরোন, ক**লেভ কা**মাই করেনি। রবিবারের সকাল, এখন মার এগারটা বেজে তের, তাও দেওয়াক্ষযড়িটা কাষ্ট মিনিট পাঁচেক। হাাঁ, ঠিক পাচ মিনিট। নিজের হাত্র্যাড়র সংক্র মিলিয়ে নেশতে পেল। তা তুমিই তো পাঠিয়েছিলে সিনেমার টিকেট কাটতে, আমি তো আর ষেঠে যেতে চাইনি। হঠাৎ বিদ্যাতচমকের মত একটা আশংকা তপতীর মনের মধ্যে খেলে গেল। তার ল্কিয়ে রাখা চিঠিখানা সাহের হাতে পড়েনি তো! অবশ্য মারের ওরকম দ্বভাব নেই। তার ঘরে চাকে জিনিসপত্ত घाटा ना आ। मृहु आक रतन नहा, स्विभिन



िनिक्ष विकिति क्वीरस उत्रभूत !

স্বেট্নের পুলিয়ার এক নতুল বিশায় আৰু স্তপ্ৰীয়। আপনার হকে এনে দের मामगा, काटम (त्रमम ट्रामम ट्रामा। কাম্বণ কেবল লাকু পুপ্রীমেরই আছে ভার बिक्य विकेषि क्रीय। यात्र शत्रण (गर्भ थारक

উপতে পড়া ভরম্ভ কেনার গভীরে। সেই মকণ ফেলা আপনার ছকে যথম আনে কেমিলভা, আপনার সকল আছে ভ্ৰমন বিকশিত হয় এক অনিন্যা নভ্ৰম তুর্ভি-্যা লাকু তথ্রীমের একাস্ত আপন।

श्रुक्त तीत সৌক্রের দেয় সন্ধান লাক্স শ্বপ্রীম বিউটি ক্রীমে ভরা একমাত্র সাবার

কেরল ও পশ্চিমবর্ণে শাওরা যায়।

মহারাষ্ট্র তামিলনাড়ঃ অন্ধ্রপ্রদেশ কর্ণাটক হিন্দুখান নিভার নিমিটেভের একটি সেরা প্রসাধন সাম্প্রী

শৈকে তান্ধ শোবার হর আলাদ। করে দিয়েছে
ক্রেন্সিন বেকেই ওইটুকু স্বাধীনতার মহাদা
ভাকে মা দিয়েছে। তার তোরপা-দেরাজ এ
কথনো ভূকেও হাত কেয়নি, বা উ'কি মারতে
কার্মান। না ক্রেকে বরে ঢোকোনি। হয়ত তারে
ক্রিনা। না ক্রেকে বরে চারেকার চিনা মারতে
ভারানা। করে বরে তারেকার চিনা মার করে।
ভারানা কেরে ভারাকার চিনা মার করে।

ভব বলা বাল না। তার হালের হালচাল
লক্ষ্য করে যদি সন্দেহ জেনে থাকে। সন্দেহের
বাদবভী হল্পে যদি মা ঘরে চুকে কিছু
খুলি শেতে বেথে থাকে। জারেরী? না,
ভালেরীতে লে স্পুল্ট করে এ বিব্রে কিছু
লেথিন। বা লিখেছে তা পড়ে কেট কিছু
আন্মান করতে পারের না। কিছু চিঠিগুলো
হাতে পড়ে ভারে বাদ, মদি কেন, বোধহর
ভাই পড়েছে। নিশ্চন্ত । নইলে নারের এমন
ক্ষাল্যের আরু অকারলে মারের এমন
ক্ষাল্যের আরু বিলি ক্ষান্ত ক্ষান্ত অম

ক্ষাকালে মুখ কুলে তপতী ওয়ে তয়ে দারের মৃথের দিকে ভাকালো। তর এবং কক্ষা। কান মাতু পিঠ কেয়ন ক্ষালা করছিল। মারের মুখ দেখে কিছা বোখা গেল মা।

'ख धारमिका।' भा जाहमका नरन रक्नना।

তপতীর বাকের ভেতর হোন একটা পেটা ঘণটা নিংশবেদ ঝোলানো ছিল আচ্যকা তাতে এক বা হাতুছি পড়ুল। সংস্কা সংকা মাথাটা তোট করল ৩ঃ

সে কি! তপ্তীর মাথাটা ঘারে গ্রেগ যোল। এরকল্প সুক্ষাব্যার কথা কথানা মনে হয়নি ওর চিঠি পড়ে। অবশা আন্ধ কয়েক-দিন যাবভ চিঠি নেই। এই নীরবতা অস্বাভাবিক লাগৃছিল তার। কেন জানি না ভাষ্বাস্তি ছড়াভিজন মনের মধ্যে। শাস্তি নাট হায়ে গিয়েছিল বলভে কি! তবে কি সে!জা দেখা করতে একেছিল? মাকে ওর পরিচয় দিয়েছে নিশ্চয়! না কৈ এই ছেলেটাই ? একে দেখলে পোষ্ট-গান্ত্ৰায়েট ফট্ৰডেম্ট ছাড়া কিছ-ভাবা বায় না। হস্ত এম-এর স্ফোল-টাও শড়ছে। ইয়ন্ত লীভ ভেকেদ্যিতে তেন্দেশারারী ্েক্ছে শথ করে। হয়ত ওপত্রীকে কোনো সালে চিনতো, ভাই তপতার জনমই এ त्भाञ्जोभिक्त कासची भिरत्नरहा ७ इ८७३ শারে। কারণ কাল এখন একটা জিনিস আগিশানার করেছে ওপত্তী--

'ভকে ভূমি এ শক্তিত আসতে প্রেছিগে? 'আমি!' ভূপতী মাধ্যের মৃথের দিকে ড্রাকাতে পারে না, শ্রকনো মোছা মোছা গুলার কলে, 'আমার স্থেষ এর মেগ্রি চ্যুনি!'

সিংগা নলতেও শিংগছ। সেদিন ছানে স্থাজিয়ে তোমরা গ্রুপ করেছ ও স্থল।

্ত্যটো ওপতী সেন নাভা চাদের একে-বারে কিনাবে পিরে সাড্ডিও বেয়ার না করে। তেরকম মেয়ের সংক্য বেলায়েশা আমি শঙ্ক করি না। মনে থাকরে।

বাশ্বাঃ মনে আবার থাববে বা। খান থাকবে। ওপতী ভার বাবার বলা কথাটাই খারিকো মনের মধো উচ্চারণ করলা, ডের্টা নাগ্রেকী এসবেপড়! বাইরে ঘাড় নেড়ে ভূপভৌ শ্বস্ভির নিঃশ্বাস ফেবল। এইবার উদ্ধ্রে কিনা ভাবছে এমন সময় আবার মারোর গুলা শানে তপতী মুখ তুলে। ভাকলো।

ত্য় ভাল কথা গছিয়ার প্নের সদবন্ধে একটা সাবধান থাকবে। তুমি বোধ হয় জানো না ও কোন দলে আছে। তোমার অবশ্য জানবার কথা নয়, ও নিজে হাতে দ্ব-তিনটে মার্ডার করেছে।

তপতী মারের ম্থের দিকে ফালে ফালে করে তাকিয়েই থাকলো। সে বাাপারটা বরতে পারছিল না। মা কি করে প্রের থবর পেয়ে গেলা কেউ কি স্থানিয়েছে মায়ের কাছে এসে।

তপত্নীর মৃথ দেখে মা কি ভাবলেন বোঝা গেল না তবে মানের মন যে আবার নরম হয়েছে তা অনুমান করতে অসন্বিধে হল না। মা যখন সহজ, বেশীর ভাগ সময়ই মা অভাত সহজ, তখন ওকে তুমি বলে না, তই সন্বোধন করে।

অবিশিয় মনে হয় না তোকে জনালাবে।
আজু বা আজা করে শর্নিয়েছি বাদ
মান্ত্র হয় এ বাড়ীম্থেশা আর কখনো হবে
না। মা থেকে কি সব ভাবল, তারপর বলল,
ছেড়িটোর নিশ্চয় কোন মতলব ছিল।
কিন্তু আমাদের আদ্ভেস কোশেকে জোটালো সেইটেই চিন্তার কথা। সেদিন নীচে থেকে
ম্রি মাুলি বলে চেচ্চিজ্ঞল। কারেন্ট ছিল
না হয়ত কিছুক্লণ কলিং বেলও টিপেছে।
আমি জাক শনে জানলা দিয়ে ম্থ
বাড়িয়েই চমকে গোলাম। একেবারে ভাবতেঃ
পারিনি কিনা। না চেনার ভাব করে বাড়ী
নেই বলে জানলা বথ করে দিলাম। তুই
তখন বাথরারে ছিল।

তপ্তী কথা বলতে পার্গছল না। মনে হচ্ছিল, মা একখান। আন্ত ছারি তার বাবে বসিয়ে দিয়েছে ভুল করে। বাকের ভেডরে ভীষণ কণ্ট হচ্ছিল। হাঁ করে মায়েঃ মাথের দিকে তাকিয়ে থাকা ছাড়া তার কিছা করার ছিল না। বেচারা পনে। ও বে কত দাঃখী আঘাতে আঘাতে ও যে কি রবম চুরমার হয়ে গেছে কেউ জানলো না। শকলে ওকৈ গ্ৰুড়া ভাবে, খ্রুণী ভাবে বিপজনক ভাবে। ওকে দেখলে **ম**ুখ ফিরিয়ে নেয় কপাট বন্ধ করে দেয়। কি**ন্ত** ও যে পথ খ'জছে, ও যে ব'চতে চাইছে ্কউ জানে না। আঃ প্রন্তুই আমাকে ক্ষমা করিস প্না তুই ঠিক এসেছিলি তিনের এবের বি-র কলিং বেল ছম্মে কথা রেখে গেছিস, অথচ এই কদিন আমি েতাকে মনে মনে মিথ্যে দোষী করেছি ভূল র ঝেছি। মাথের ছায়ে আলি তোর কাথে ক্ষমা চেয়ে নিচ্ছি। ক্ষমা করিস ভাই।

মনে পড়ছে না ছেলেট কে? মা তপতীর দিকে ঝাকে বাস বললা, 'গড়িয়ার আমাদের পাড়ায় সেই নারকোল গছে-আলা টিনের বাড়ীতে থাকতো। ছেলেবেলায় তোর সংগ্রহার ভার ছিল। ফুসা প্তুল-পাতুল চেহার। ছিল এখন বক্তম চেফাট্ড, দেখলেই মনে হবে ওয়াগন বেলার কিল্বা ঐ ধরনের কিছ্: কথাবাতাভ কাটা কাটা, চাষ্ট্ডে ধরনের। তা উপযান্ত শাস্তিও প্রেছে। মড়ুম্যার-বৌদির স্থ্যে সেদিন লালাবিতি দেখা হয়েছিল উনিই বনলেন।
পুনুর মা এখন বংশ পাগল, বৈড়ি দিয়ে
বেধে রাখে বাড়ীতে। ছোট ছেলে ব্যল্কে
কারা মায়ের সামনেই দ্ম ট্রকরো করে দিয়ে
নিয়েছিল। ভাবলে অবিশা কণ্টও হয়
নায়ের প্রাণ তো।

তপতী আর পারছিল না, উঠে দাড়িয়েছিল। এখানে বঙ্গে থাকলে তার দম বন্দ হয়ে আদবে। মা-ও উঠে পড়লেন বা, ভয়ের কিছু নেই। বা ক্লার আমি বলেছি। রাশতার দেখা হলে কথা বলিদ না তাহলেই হবে। তবে মনে হয় না আভাকের ঘটনার পর, বা এবার সনান্টান করে নে।

তপ্তী প্রায় ছাটে বন খেকে বেরিয়ে গেল।

ওপরে গিয়ে তপতী নিজের করে থিল নিয়ে বালিশে মূখ গাঁকে শকে থাকলো কিছুক্ল।

এ বাজীর সর কিছু জার ছোট লাগছিল, আরও ছোট। নিজেকে এই প্রথম আলাদা মনে হল। বাড়ীর কারো সপে বেন তার আগ্রিক যোগ নেই। ভার শিক্ত যেন আলাগা।

মারের সংগ্র একট্ আন্ধের ছেট্র সাক্ষাংকার তার চিরদিন মনে খাব্রুবে। মা তার এত আপুনার মাকেও ক্রেমন অচেনা লোগছে। মা এত চাপা, মা এত নিষ্ঠরে মা এত ফাধ্ব কেন?

পন্য তাগ কেউ নয় পন্নর পক্ষ নিরে
সে ওঞালতী কগছে না। সোদন পণে
দেখা না হলে তার কথা ধীরে ধীরে
ভূলেই যেত। অতি কদাচিং কথনো হয়ত
গলাস্থাতির তানেক ভিড্ডের মধ্যে একটি
দুর্বোধ্য কিশোরের ম্থে ভেসে উঠতো।
কিন্তু সে পলকের জনোই।

মেদিন রাদ্র দেখা হয়ে বাওয়ার পর প্নাকে নতুন করে আবিকার করেছে। এ বাট পথিবতৈ ভার মতই প্নাও এবা। কিন্তু পিছা হটতে হটতে দেওয়ালে পিঠ ঠেকে গোলেও পানা কারে বাজে। হাড় ভেলেগ গেছে, কিন্তু হয়ত এখানা হোর বার নি। তাকে কেউ না ব্যক্ত ভগতী ব্রেছে। ভগতী যে রাকেছে সেকথা করি প্রেছে। ভগতী যে রাকেছে সেকথা করিব ক্রেছে। তাই দ্বার করে ভার সংগ্রেছণ। বাকারে করেত এসেছিল। কিন্তু মা আদ্বর্ধ এমন বাবহার করল ওব সলেগ, অপম্ন করে ভাড়িয়ে দিল।

তপতীর ব্কের ভেতরটা কেমন খাঁ খাঁকরছিল।

আশ্চৰ মায়ের ব্যবহার। সেদিন বে পানু এসোঁছপ ঘণাকরেও কছ তপ্তীকে বলে নি ডো মা। বললে কি ক্ষতি হত? একবার দেখা হলেই বা এ বাড়ীর কি ক্ষতি হতো?

তপতী হঠাৎ বালিলে **মুখ চেপে** ক্লিতে লাগলো। कमनाता धका ना,

কাল ওদের যা গেছে, আল আসতে পালবে খবেই সন্দেহ ছিল ওপতার। কাল দেয় পর্যক্ত কি হল কে জানে। গণ্ডগোল কদ্বে পর্যক্ত কি হল কে জানে। গণ্ডগোল কদ্বে পর্যক্ত কর্তালা দেয় বিদ্ধান করে করে করে। লা বিদ্ধান কাল করে মেরোগলো, বে রক্ষা বাবার জাল করে মেরোগলো, তেরক করে। তবে ওদের শলটা বিনাট এবং বহু কানেকদ্ম আছে। বন্দনারাই তো সাত বোল ভাই দেই যদিও। কিল্টু প্রতাকেই ঢোলে পড়ার মত। বিশেষ করে চন্দনাদিকে ভূগতে পারে না। অমন টল ফিগার, অখন পার্লোনালিটি অমন মধুর বাবাহার বেরার। ওদের বাড়ীতে গেলে শামানা দুন্চারটে কথা হরেছে কথনো কিল্টু ভাতেই মনে গেগ্রা

শ্রীলতার জন্যে কণ্ট হচ্ছিল তপতীর বিপত্ত মেরেটিকে চোথেও দেখে নি মে শধ্য গলপই শংনেছে। আর মজা লাগছিল, রিয়্নাল গোনেচারা সন্তোম সেনের এপি-সোডটা জেবে। কল মারের সপো সিনেম দেখতে সমেও ওপর ক্থাই জেবেছে অনুলা নিভিয়ে বিছানার শ্বে শ্বে হারেও। কালও জনেক রাও অবধি দ্ম আসে নি। ভবদ আবার কাল প্র ভালিরেছে। কেথা পেকে এক জ্যেতা বন্দের বল লাগানো শুড়া করেছে। সেইটে পরে রাত অন্তত দশবার ছাতে উঠেছে নেমেছে, পারচারী করেছে। পায়চারি করার জারগাটা আবার ঠিক তপতেীর ঘরের ওপরের ছাদ্টকতে।

প্রথম দিন তো ভয় পেরেষ্ঠ গিয়েছিল।
মান্ন রাতে ছাদের ওপর গড়ম পারে কেউ
চলে কেড়ালে মার কথা ফাস্ট রাউপ্তেই
মান পড়ে তিনি নিদাত রক্ষান্তা। ধরধবে ফর্সা ন্দারকালিত, পোটসকোলিওর
মত পেটের কাছে বেশু সংরক্ষিত একটা
ভূজি, খাল গায়ে বেলের আটা দিয়ে
মাজ্যা এক গাছা মজবত পৈতে। আজ্ম
দিনের আনোয় এমন মজাদার ভাবনা
এলেও কাল বেশু কিছ্লেণ আড্মট হার
সিলিংয়ের দিকে ভাকিও শ্রেষ ভিল।

প্রে সিংড়িতে পাষের শব্দ আর একটা চেনা ক্লাসিকালে গানের বনরতাে মহড় শুনেই হড়সনাহন নারকক চিন্ন ফোলেছে। সভি ভাবদা ইদানীং ভাবে ভাবিয়ে তুলেছে। নিছক ক্লাপা বলৈ ভাকে বিজ্ঞাকট করা যাছে না।

বই খাতা গ্ছিয়ে নিগে নিগে নাগত নাগতে তপতীর কৈমন কণ্ট হল। প্রায় সম্ভাহে প্রে এল, কিল্লু চিঠি আর এল না। এই মহেতের বিদ্যু করে করে করে করে তিনা করে করে তেনা। এই মহেতের কেমন পক করে তিনা। করে করে প্রেসিসে সেই সেখিল ভাবতে চেল্টা করেলা। মনে পড়লা না এই মহেতের। করে করেলা। মনে পড়লা না এই মহেতের। কলা সকাল থেকে এত ঘটনা ঘটেছে বে স্ব কিছু যোল ভাই পালিকা যাকেছে।

চিঠির বাকসটার ছেতের অর্বাদ দেখা মাজিল কাডের পকেট দিরে। তব, একবার

৮ই জুলাই প্রকাশিত হচ্ছে টলপ্টয় রচনাবলী

ও খণ্ডে—প্রতি খণ্ডের দাম ১২ টাকা। রেক্সিনে বাঁধাই ও জাগুকটে মোকা স্দৌর্ঘ ছমিকা লিখছেন ঃ ডঃ হরপ্রসাদ মিল

১৫ই জুলাই প্রকাশিত হচ্ছে

साथामाँ त्रष्ठनावली

০ খন্ডে—প্রতি খন্ডের দায় ১০: ট্রাকা নেরিকে নামই ও জাকেটে ব্যক্ত স্বাধা ছনিকা লিখনে। ভঃ হরপ্রসাদ বিদ্র আলোকজাণ্ডার ডুমা রচনাবস্দী

8 थटफ जन्न्यून ॥ श्रीक थटकत नाम ১१ होका ॥ दिश्वित वीशहै।

চাল সিডিকেন্স রচনাবলী। ৪ খণেড সম্পূর্ণ ॥ প্রতি খণেডর দাম ১২ টাকা ॥ রেরিনে বাধাই।

এমিল জোলা রচনাবলী ০ খণ্ডে সম্পূর্ণ ॥ প্রতি খণ্ডের দাম ১২ টাকা ॥ রেক্সিনে রাধাই।

শেক্স্পীয়র সমগ্র রচনা সংগ্রহ

৪ খন্ডে সম্পূর্ণ ॥ ৪ খন্ডের মারা ৪৫ টোকা ॥ রেক্সিনে বাঁধাই প্রথম খন্ড প্রকাশিত হয়েছে ॥ শচীন বিশ্বাস অভিকত সন্ন্রর প্রচ্ছদপট ॥ প্রথম খন্ডের অনুবাদনমন্ডলী ॥ উৎপল দন্তবা ডঃ হরপ্রসাদ মিশ্র মণীন্দ্র রায় ও আরও অনেকে।

একমত আমৰাই সমগ্ৰ নাটক কৰিত। অস্কেট স্কৰ্ণ দিছিছ। অনুবাদস্কি আক্ষরিক দিছি। ২র শুভ ক্লাই মাসে প্রচাশিত ইকছে।

গিরিশ রচনাবলী॥ দামোদর রচনাবলী

• শভে সম্পে ॥ প্রতি শভ ১৫ে ০ শভে সম্পে ॥ প্রতি শভ ১৫:

ভ্রেদব রচনাবলী। হেমচন্দ্র রচনাবলী । হ মচন্দ্র রচনাবলী । হ মচে সম্প্রা প্রতি মন্দ্র ১০: ২ মচে সম্প্রা প্রতি মন্দ্র ১০:

বঙ্গদর্শন ॥ রাজনারায়ণ রচনাবলী

ি ৮ ক'ভে ॥ হাতি শভ ১০;

५ भारतम्ब माद्य ५०

প্রতিটি রচনাবলীর প্রাহকম্লা ৫ টাকা। প্রাহক হবার ও মনি অভারে পাঠানোর মলে কেন্দ্র : ক্যোভি প্রকাশন, ২এ নবীন কুড় লোন, কলি ৯ ॥ অন্যান্য কেন্দ্র : রবীন্দ্র লাইবেরী, ১৫/২ লামাচন্দ্র দে স্থীট কলি-১২ ॥

का कार्यक प्राच्या कार्यक्रिक और कांगरन প্রকাল চিত্রি অন্তক আগবেই। গলি रिमेरिक वर्ष स्थितक करने शर्मा व सार्व ক্ষান্ত দোকানে এলেসিসের ভেতরটা এক-রার মোর মালিছে নিল। মনের মধ্যে হরত এইটা ক্ষীৰ আশা ছিল প্ৰনা বদি থাকে। Care 1

ধ্যোক্ষমসারা এখন আছু এখানে বসে না। এখন এখানে ভেকসট কোনারেশনের আন্টা জারাই পাড়ার উঠতি মুস্তুল। ঠিক বেন জিংহাসনের উত্তরাধিকার। রকেই বলো चात्र हारतत स्माकारमहे वरता अक्ट কাপের। এক দশ আগে বাজৰ করে আবাৰ ছলে যায়। আৰার নিউ বুড নিউ থট, নিউ কেন। গভিয়ার দেখেতে। এখানে পাডায় পাড়ার দেখছে। যেন অলিখিত নিয়ম। একেবারে স্ট্রাম্পত কাগজে মর্মে মমে সই

আজে কেটে নেই ওয়েসিসে। কেবল লালিক ক্যাণবাল আগলে বসে ঘাম[া]ট মারছে। ভার এক কোনে এপাডার উঠ*ি*ত माहोत्पतिहालक कृणावीमा माणि म्याव मार्थ ন্ত্রণ করছেন হাতে ফাইল। আছা, তপড়ী ক্ষামলো মুখ্যম কথাটা এলো কোণেকে? মুদ্ধা থেকে মুদ্ধান এসেছে? হাতি আনেক সময় মুহ্পা হয় বইছে শড়েছে। তাদেব কেই নিংসাল ক্ষিণ্ড অসংখার সংগা কি কোনো খিল ভাছে এই মণ্ডানদের ?

পাশের গণির রকটা এসে পড়েছিল। বুকের ভেত্রটা আবার কৈমন ধক করে উঠাল। নাঃ হাটটা বোধ করি উইক হরে (भाषा अकर्रात्वे आक्रकाल खेमन हमत्क खाँक तराकत एकउत्रोग क्रमाम माफाराज धारक য়ে সাম্বলতে সময় লাগে। সেদিন এখনেই, ওই রাক্ট প্রে বসেছিল। তপতী সেদিন দেশতে পায়নি। আজ কাছে গিয়ে ঠিক দেখে মেরে ৫ আছে কিনা। কিংত থাকরে কি!

এক দুংগল ছেলে রকের ওপর মৌরসী-পাট জান্ত্রে হিন্দী গানা জাজছিল। আর সিগারেট ফ**্রকছিল। কেউ একজন** ভোরালো গলায় শিক্ষা বাজিকে চকেছিল এবং আগ जिक्कान माहेत्हदीत बहेतात वीधाव्या प्रमाएउँ ভাষাৰ ঠেকা দিখে চ্যোছল। বিশ্ব কাছে লিয়ের জ্রাক জেল জ্বলে দেখা কলে না ওপতে বৈ। রকের কাছে পেডিনার আগেই স্ব গাণ-ৰাজনা হঠাৎ গ্ৰেছে গ্ৰেল। কেউ চাপা গুলায় বলল, জাই বুনটা, সেই হেলামালনট মইবটা!

সংগ্রে সংগ্রিক্সাস বংগ নীর্ণভাচ কথাটা যে ভাকে ক্ষম করে তপত্নী টোর না ভালার ন্মতে পারশো। মাল্মানা গরন্ন হয়ে रेंग्डिकिन, भारतत हाला पुरस् कार्या प्रमा 'ভেপতী। প্নংলিশ্চয়। মেই দুলের ল্ধো। থ কলে এধরনের ফ্রন্ডব্য হতো না নিম্নুট্র শ্ৰষ্ট পালিয়ে দিও। সেদিন কেউ 🖔 শ্লেটি করেনি। কিন্তু প্নির কি হল**়** দেশ। করবে বলেছিল। ফিন্তু কই কদিনের সংখ্যা ভার সঞ্জারই হল না। জ্ঞান্ত এত কাছেই রঙ্গেছে। ব্রেক্স মধ্যে আলার সেই প্রোনো

তপত্রীর ইক্ষে হল শ্ধু মূখ নয় ভাতোও ভোলে পা থেকে খালে নিয়ো। থেমন রোগ তেমন পাওয়াই যেমন ককর জেমন মাগার প্রাজন। কিন্তু তপতীর মা তপ্রতীকে সাবধান করে দিয়েছে। **পথস্বা**ট দিনকাল ভাল না। কোনো দিকে তাকালে না, কোনো কথা গায়ে মাথবে না, সোজা থাবে সোজা আসরে। মন্দ্র মান্ত চিরকালট থায়ে পটেড গণ্ডগোল পাকাতে আসৰে কিন্তু তাদের ইপনোর করাই স্বচেয়ে উপয়াক ক্ষুৱার। একদিন দুদ্দিন তিন্দিন যড়জোর, ভারপরে দেখবি নিজেরাই থেয়ে গেছে। তা ঠিক উভেজিত হলেই মানুষ আরও পেয়ে বঙ্গে। তপতী ভাবল। ভারতে ভাৰতে বক পার হয়ে গেল, হাসি টিটকিরি গান পিছনে মাজে গেল। তপতী হনহানিয়ে যেমন হাটছিল তেমান তে'টেই চলল।

একটা পরেই তপতী আবার চিন্তিত ঘল। একজোড়া জাড়োর শশ্ব যেন পিছন পিছন আসছে, দতে, প্রায় পালা দিয়ে। যেন ভাকে ধরে ফেলতে চায় নয়ত ভাকে ভোরটেক করে এগিয়ে যেতে চায়।

আপনার চিঠি ছিল।'

তপতী একেবারে চমকে গেল। কথাটা ভাকেই নিশ্চয়। থেমে, পাশ ফিরে ভাকালো। এবং যাকে মাইটেরে জনোও কংগনা করে নি, সেই! সেই লক্ষা পিওনটা, আজকে জাবার টোরালন क्षेत्रिकारका कार्य গুগলস্থ

'বেয়ারিং?' তপতী স্বাভাবিক গলায় কথা বলতে পার্বাছল না। মনে হাচ্চল বাকের ভেতরের পিংপং বশটা অবাধোর মত আবার লাফাতে শারা করেছে। থামখানা চালে করে পিওন্টা কৈমন হাসলা পা বেয়ারিং করতে ভালে গোছেন বোধহয়।'

লোকটার স্পর্ধা সভািই অবাক করে দেয়। তপতী খামথানা হাতে নিতে নিতে কটম^{টি}য়ে ভাকালো, 'আপান অনেক দুর

একখানাই চিঠিছিল লোকটার হাতে। সেখানা ডোলভারী দিয়ে সে যেন লাভি পেল। ভপতীর চার্ডান সে দ্রক্ষেপই করলো त क्षाप्टीत व्यर्भ व करला किना दक कारम। খালত ভাল্মান্যের মত । ম্থা করে ধাল, ভাষা খানিকটা দর নিশ্চরই। এই আপনার হেনো প্যতি হাবো চলান এক-· সংকাই যাওয়া খাক*া*

রাগে বিরক্তিত মাুখ-নাক,জাল তার গোল পূৰ্ণকে। কী বসবে, কিছ, একটা বলবে আছে৷ করে কিন্তু ছেবে না পেরে শেষে কক'শ গুলায় বলল, 'আমি কলেজ যালিছ ব্ৰেডেন ?'

'হাাঁ, আন্নি জানি।' লোকটা নিব্যক্তিকার কেছাব্দ, গাড্ডারের চামডা ছাড়া মন্দ্ৰে এমন বেহায়া হতে পারে না আছে

দীভার নি হটা দিয়েছিল। লোকটিও নাছোর। সভিটে পাশাপাশি আসছে। যেন কতজালের ফ্রেন্ডলীপ। কেউ দেখলে কি ভারবে ছিঃ ছিঃ। সনাত্নীরা দেখে কেললে प्रावस्य प्रभारती अवहें, प्रारंश क्रांदिशाक। চ্চিয়ে প্রেম করছে রাস্তায় রাস্তাম। রঙ ফলিয়ে বলেও বেডাবে। প্রেম করতে বরেই গ্যাহে আমার। তপতী ভাবল আমি তেমন ছোৰে না। ভোৱা কলেভো চাকে ওৱকগ হয়ে গোছস, সৰ কিছার মধেট রঙ দেখাত PITE I

একটা স্টেশনারী দোকান দেখে দাঁজিয়ে পড়লো তপতী। যেন হঠাৎ কিছ- কেনার কথা মনে পড়েছে। আচলে লোকটাকে কাটাতে। কিংত কি কিনবে ভেবে না পেয়ে আনিটি ব্যাগ থালে ধারেস্টেম্থ প্রসা বের করতে করতে আড় চোখে দেখলো শোকটিও দাঁজিয়েছে তার পিছনে এসে। তপতীর পিত্তি জ্বলে গেল। গায়ে প্তা পরের সহাকরা যায় না।

'আপুনার কী চাই?' মার্মারেখা ভেপ্তেটী খারে দাঁড়ালো এবার।

না না আপুনি কেন সে আলি নিজেই কিনবো?" বিগলিত মুখভান্স করে (कांद्रशक्ता)

ছা ভাই কিন্দো। বেশ মালের সংগ্ তপ্তীকথা শলেই আর দাঁডালো না জিনিস্ত কিন্লো না, পেত্রেণ্টের ওপরে রাগী রাগী পা ফোলে হাটতে শাুরা করল। বেশ কয়েক পা এগিয়ে গিয়ে একবার ঘাত ফিরিয়ে দেখলে লোকটা অবাক হয়ে তাকিয়ে আছে তগনো।

প্রদের মোয়েতির আগুলের খোঁচা খোৱা ওপতীর ঘমে ভেঙে গেল:

অনামনকতার ব্যালেগে জেগেই ঘুমোচ্ছিল সে।

'এই ফিফ্টি এইট দাঁড়া, স্বার ভোকে ডাকছেন।'

তপ্তীয় দূৰ্ণিট স্পণ্ট হল। প্ৰয়েসার শেকচার থামিয়ে ওর দিকেই ভাকিয়ে ছিলেন। পাশে ভায়াসের নিচে বেয়ার। দাঁড়িয়ে আছে। হাতের চিরকটে চোখ ব্লিয়ে প্রফেসর বললেন, রোল ফিফটি-এইটি, ভপতী মিশ্র ভোমার নার ?'

তপতী গড়হাড়য়ে উঠে দাড়িয়ে ঘাত নাতলো।

'এক্সুনি অফিসে মাও। তোমার বাডি থেকে ডাকতে এসেছে ৷'

বাড়ি থেকে ভাকতে এসেছে! বৌ করে ঘুরে গেল তপ্তীর মাথাটা।

কোনো খারাপ খবর নয় তো? আজ সকালে মারের শরীরটা বেন খারাপ দেখে এসেছিল। তবে কি মারের পরীয়ই বেশী থারাপ হলো? আজকাল হাটের তো বয়স বিচার নেই, মেয়েপরেম ভের্দ নেই, বে-কেউ যেকোনো সময় হ'দরোগে আক্রানত হ'লে-! ক্রিংবা ষদি অন্য ক্রিছ, হয়? তার বাবা আজ গোহাটি রওনা হয়ে গেছেন প্লেনে করে। আলা আন্টেইথফ্ল ভেহিকল-বাবাই একদিন বলেছিলেন কথাটা। ছেলেবেলার একটা স্মৃতি শিউরে উঠলো সংখ্য সংখ্য। সকালবেশার কাগজে সেদিন একটা বিধাসত এরে েলনের ছবি বেরিয়ে গোটা বাডিকে ক্রমন নিথর করে দিয়েছিল, আছও মনে

দমদেওয়া পতেলের মত নিজ্ঞাণ ভালতে তপ্তা অফিস্থরের বারান্দায় এসে মা কিংবা ভবদা কাউকেই দেখতে পেল না। শুধু বন্দনা গুম্ভীর মুখে চুপ করে দাঁড়িছে ছিল। ওকে দেখতে পেয়েই চোখের ইসারার নাঠার ডাকপো। বাইরে হেদ্যোর দিকে একটা কালো আমেবাসাডার পাক করা ছিল। বন্দ্রা এগিয়ে গিয়ে গাড়ির দরজা খ্লে ধরলো, 'ভেতরে গিয়ে বোস।'

ভেতরে আগে থেকেই তিমটি মাতি থমথার মূখে বসোছল। তারা নান্দতা, পার্রমতা, সংযাম। সমস্ত আবহাওয়াটিই এমন অম্বাভাবিক যে তপতীর জিভ শ্রিকয়ে কাঠ। বাকের ভেতরে যেন ভেণিকর পাড় পড়তে শাগলো। পার্রাল্ড। আর ন্নিডাকে কথনো এভাবে বোশার মত বদে থাকতে দেখোন। ওরা কেউ তপত্তীর মুখের দিকে ভাকাচছে না, তপতা টোর পেল।

পা দ্খানা থরথর করে কাঁপভিল. কানোরকমে গ্রিট গ্রিট ্ভেতরে গিন্তে रप्रल। मृत्रका वन्ध कृत्य मित्रा वन्द्रभः শোফারের পাশে গিয়ে গৃহভীর গুলায় বলল পাক স্থীট।

গাড়ি সংগে সংগে গড়াতে শ্রে করল : শ্কেনো গলায় তপতী শুধোয়, 'পাক *-*শুটিটেকেন যাচিছ?

গাড়ির ভেতারে যেন হঠাৎ হাসির বোফ ঘাটলো, যেন অনেকগ্রেলা নানা জাতের পাথি একসংখ্য ডানা মেলে উড়ে পালাবার চেণ্টা কর**ল।** এডক্ষণের দ্বস্থাগামভীয়া ছিণড়ে ফেন্সে পার্রামতা আর নন্দিতা এ ওর গান্ধে গড়িয়ে পড়ে প্রিয়ে ল্ডিয়ে হাসতে লাগলো। হাসির তোড় একট**্** ধরণে বন্দা বলল, আজ হচ্ছে আমাদের বিজয়া মানে বিজয়োৎসব। পাক' গ্রাটিটের উ'চ রেন্ডেরার একটা ফাডিফাডা করতে **ব্যক্তি**।

'এই গাড়ি পার্মিডার জামাইবাব্র নিশতা বলল 'বেলা ডিনটে প্রতিত आभारमञ्ज कञ्जास एकराए भिरस्टक्स ।

ঘাম দিয়ে জনুর ছেডে গোল তপতীর কিন্তু নাভেরি অবস্থা, ব্রেকর চিক্চিব *বাভাবিক হতে সময় লাগলো। দম ফরেনো গলায় ও প্রশন করল, কাল পেলি গ্রেশ-বাব্যকে ওখানে ?'

ওস্তাদের হাসি বন্দনা হাস্পো ধরলাম। চার 'কাতি'ক গণেশ দুজনকেই ফেলে বুসেছিলেন জানেন না নিজেরাই ব'ড়াশতে গে'থে আছেন। গি**রে স্টে**ট সন্তেধের কলার ধরলাম।"

'৩ঃ বন্দনার সে মারম খো মাতি হাদি দেখতিস,' নান্দতা হাসির ধারা সামলাতে সামলাতে বলে, দুই মংস্য শিকারীরই পিলে চমকে গিয়েছিল দেখে। ভার ওপরে পার্রান্নতা এমন ক্ষেপচারয়াস হয়ে উঠেছিল যে গোবেটারা সভেষে সেনের শেজেগোবরে অবস্থা। ৬কে ডিফে**ন্স দিতে গণেশচন্দর** এবং রায়্বাহাদ্রের নাতি প্রভাষকাশ্তি যাহা মুব, খালেছিল অমান বৃশ্দনা একখানা ফোটো ও'দের নাকের তথায়ে ছ**ুড়ে বিয়ে** একবারে বেয়োনেট চার্জ করে শসক আপনারা কি চান্ত এ মৈয়ে এই বয়সে বিধবা হোক ? আপনারা প্রারাটি দিতে পারেন ওই মিয়োনো ছোকরার এর ধারেকাছে থেতে পারে এমন মেয়ে জাউবে কোনোদন? বর্ণ-দামভা সভেষকে লাইফভর শ্বধ্ব পরের বিয়ে বাড়িতে শালপাতা চিবিয়ে বেড়াতে হবে দেখে নেকেন! এমনিধারা একের পর এক পয়েন্ট ডুলে বন্দনা ওদের একেবারে স্মাাস্ত করে দিয়েছে। e: তপ**ু আর সুষ্মা** যদি সে সাঁনে থাকতিস'--নাদতা স্মাতি-টারণ করে হাসতে থাকে।

'সং'তায় ব্যাটার বি-ক**ন্নাম্পকস** শালা, ত্র কি ফুটো হবার জিনিস! ওঃ বি-ক্মপেক্সই জানিস না?' পার্মিভাকে নাইস দেখাছিল, 'তুই মাইর**ী সিস্ন, সিস্**ন। বিয়ের ক্মণেলকসকে বি-ক্ম বলে।

বন্দনা ওকে ধমক জাগার ' আছ ছ করী, কি হচ্ছে। সংশ্রেষ আমার বিলোট্ড ভূলে যাস না, ও আমার ভাই চর!'

র্মানদ্ভাও বন্দনার পক্ষে, বলে, ভোর ম খের জনো কোন্দিন লটকে থাবি, য়িতে সতি। ব^{্ৰা}ছ। টেক কেরার অব ইরোর টাং! ইস কাল মধ্যমগ্রামে কি কেজাটাই না কর্মাল।'

বেশ করেছি বলেছি, ও কেন ওরকম বলল,' পার্যায়তা ঝাঁকিয়ে এটে প্রুম বলল চিনি না জানি না একটা মেয়েকে দক্ষে করে বিয়ে করে কি করব আমার মাথায় সংগ্র সঞ্জে রক্ত চততে গোল।'

'তাই বলে তই মুখ থারাপ করাব ?'

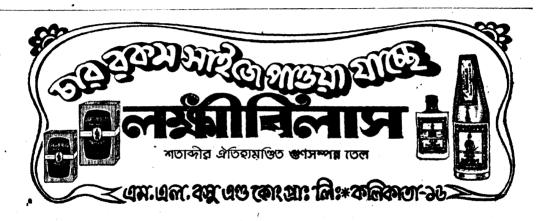
'কি বলেছিল মিতা?' সুব্যা থেকে জিগোস করে।

র্ণবয়ে করে আপান কি করবেন **সেকথা** আহাদের জানবার দ্রকার করে না, নাদ্দভ: পার্মান্ডার কথাগালে হাবহুণ বলার চেলটা করে, আপনি স্তেখ্যমদা সতি৷ বলব একট্র <u>তাস ওয়ান খড়র লোক অভেন। একটি</u> মেয়ের স্বানাশ ঘাট্য়ে এখন ভিজে বেডাল সাজছেন। ওপৰ ভড়কি আমার কাছে চলুব না। শ্রীলভাব সংগ্রে আপনার বিষে হওয়া আপনার চোদ্দ পুরুমের ভাগিন। শ্রীলভার যদি কিছা হয়, আপনার লাইফও ছেল করে দেব আগে থেকে বলে রাথছি।'

বৰদ্যা বল্ল, 'ছিল্টো একেবারে ছ্যাড হয়ে পিয়েছিল। ছিপ্রদাকেত নিয়েছে---'

'থাক শেষপর্যাত <u>ভাইকে</u> রাজী निगरहर्गक्रमः २ তপতী স্বহিত্য নিঃশ্বাস ফোলে বলে।

'ও রাজ**ীন। হয়ে কোথায় বাবে** !' বন্দনা বলে, দিদিভাইও গিয়ে হাজির এই গাতি নিয়ে। সংগে নিদেশ্যর জামাইবার । উনি এখন হাত্ডার ডি-এম্ জানিস তো। ভারপর সধাই মিলে হৈ-হৈ করে রেজিআীর কাঠগড়ায়, সেথানে সই আব শপথ ছুকিয়ে ওরাল বিয়ে প্রীকাম জাদ তলায়। দিবিভাই একহাতে স্ব**ুসামলে**ছে অবিশ্যি মেড ইন মোহিনী সেটইনলৈ



র বিকাদিও কম খাটোন। বাসর খারের অভিসাদ-ইম-চার্ক তো সেই ছিল।

পাছি ভারণগাঁ দিয়ে চলছিল। তগণ্ডী বৰ্মা, ডোননা কোথার বাচ্ছ ভাই আমার বিশ্বস্থ ভার করছে। এভাবে কলেল পালিয়েকডিডে কানতে পারলে—

শারের পালি! পার্রামতা সোরাদের হৈছিলে উঠা বাড়ি বাড়ি করে ভোলা খ্ব বাড়াবাড়ি করে ভোলা খ্ব বাড়াবাড়ি করি ভালি করি। আমানের মান্টাড়াকা আই বালাড়ার হৈছে প্রিকার করি বাজাতার হাত প্রিকার আই বালাড়ার হৈছে। প্রিকার করে বাজাতার হাত প্রিকারের ক্রেক্স করিবার করে বাজাতার হাত প্রকার করে বাজাতার হাত প্রকার করে বাজাতার হাত বাজাতার হাত বাজাতার হাত বাজাতার বাজা

বৰ্ণসান একটা এয়ার-কব্সিক্সনত রেণ্ট্-বোল্ট-বাবের সামনে গাড়ি দড়ি কবিয়ে বল্পা, তল সামনে একটা মুখ্পান্দি করে আসি। ডুাই জিন ব্-সিপ্ টেনে দ্যাখ ক্ষেম মৌজ হয়।

ভণতী ৰিছেছ করে বসলো এইসব থেলে সে কিছুতেই তেতার তুকাব না, একুমি বাজে চেপে বিদেয় হবে। ছি ছি শেষপথতিত মদ। শংশদী উন্তাবণ করতেই রুছিতে বাবে। বংশদার এতদ্ব উল্ভি ছবৈছে জালা ছিল না তো

বাংদনা ওর কাঁধে হাত রেখে বলান, সেওী ওপতী, আমি ভোমানে ওয়ার্ভ নিছিত্ব ভোমানে করার্ভ নিছিল। বংসে, এ শাগা ভোমানে ছলানা করিছলাম মাত। পারীক্ষায় উত্তীপ হাছে তুমি আমাকে প্রতি করেছ, ভারিবাতে তেমান বন পাওনা এতে আকলা।

সবাই একটোট হেসে নিল। তপতী হাঙ্গলো না কেমন বোকা বোকা লালুলো। সাঁড়া এখনো সে বঞ্চনদের গালে দুড়িবার রোগ্য নহা।

সাঁচন্তা দরের মাধ্যে ছাক একটা কোনের বিশিক্ষা বেছে নিয়ে বহদনার। বসলো। বাইরে এখন প্রশ্বর বেদ্ধি কিছ্ত ঘরের ভেড়ারে এখন প্রশ্বর বেদ্ধি কিছ্ত ঘরের ভেড়ারে এখনে ছারা-ছারা। স্থান্তর করে সাঞ্জানে টোরালগানের চেরার বিশ্বর বিশ্ব। পারের নিচে কাগোটা। কাউন্টারের কাছে রেভিড্ডামে বিদ্দেশী দান বাজছে। এখানে ভিছ্ব দম্পতি, কিছা প্রশ্বর বিশ্বর কিছে আমানা, কপোত্রব মাত বঙ্গে আছে। উঠিত আম্মানার ক্রবাজালী বিশ্বরেসমানার করের কিছুর এক। বঙ্গে কেউ কেউ দেরা কেণ্ড ভিরেছেন।

চিকেন দে পি য় গিজর অভগ্র দিয়ে বংলন। বংল, জিডে প্রেন করে হেইজন সেইজন সেবিজে ঈশ্বর। আগ্রার বালে আজ খনন্ট গ্রেম নেউ আছে, তার খনিকটা দ্যারদ্রনার্যারলী সেবায় লাগাবো।

নিক্তা চোখ বড়ু বড় করে বলন, ভার মানে একলো টাব্দর নোট? এতটাকা ভূই পেলি কোখার?

আৰোধ উৎস কথানে সংগান করতেও আই। মানি ইজ নেভার এ কোপেচনেবল থিং। জেখিস না স্ন্নিরায় শ্যু টাকা না থাকারই কৈফিয়ন্ত বোগাতে হয়। তবে জেনে রাথ এটা জাল্যিয়াল মানিন বাক্যে মব্করে, পার্, তোর আক্রেম্য দুশনি এবার হয়ে হাক।

পারমিতাকে বন্দনার কথনে। মিতা কথনো পার বলে ডাকে। বলে, এখন ফাট-পিনের বুগ। অতবড় নম এখন মুখে লোচে

পারমিতা ভার বাগা খালে বলো, কটোর সংল্যাকিক্তু একখামা সাড়ে ডিন পাডার রম-রমে চিঠিও ছিল, তুগতী লক্ষা পাবে বলো সেখানা আর খালছি না পরে ছবে।'

'তাছাড়ো এণ্ডিকস-এর একটা বেশদেচনও আনছা' বণদনা ভগতীর দিকে কটাক্স করে। বংলা।

... 'ভাছাড়া পরপুর্বের চিঠি। আরও নিবিশ্ধ।' নঞ্চিত ফোডন দেয়।

জিক্ত দিয়ে আশীন্ত্ৰস্কুক কৃষ্ণুক শব্দ করে বজননা বলে উছি হ' । পারার হ'ব। বরুকে পরপারার বলা যায় না।'

সূর্ষদা সেয়েটা ভিজে বেড়াল। চুণচাপ থাকতো, মুখে প্রায় রাটি নেই কিণ্ডু সময়ে সময়ে এমন ঝাঁগতালে ঠেকা দেয় হে চমকে উঠতে হয়। ও বন্দনার কথা ছ্রারে বলগ আরে বর না হওয়া পর্যন্ত সব প্রেমিকই হবু ভোর আমার, নন্দির কিংবা তপতীর কার বা হাবু নয়?

'আরে হবুরাই বিয়ের পর গবু হয়ে মামা' নন্দিতা জানায়।

যায়। নালংখা জালায়। আবার তুপতীতে টানা কেন? ও ভাল গৈয়ে। পার্মিভা সূত্রমাকে কলে।

'বাং বে, তুঁতো এখন গোজেটেও প্রেনিকা। ওর অ্যানেনিমাস লাভ লেটার-এর কো গংপ ডোদের মূথে শুর্নেছি, ভারপরেও একে বাইরে রাখবো।'

বন্দনা বলে, জারে আমার কথাটা বোগ, আমি বলভে চেক্লেছিলাম, যুবতী-শাল্যমতে প্রায় নামক এই মান্ত্রিক জেপসিমেনটির দুটো টাইপ—পর-প্রায় আর বর-পুরুষ।'

হু বিদ্র কেনিসের মধ্যে ভাস সাফল **अक भारक**हे পোসাইকার্ড সাই জের কালার ফটো টেবিলের ওপর ন্যামণ্ডে রাখলো। লন্ডনে আছে পার্রামভার বাক্দভ ১বায়াঁ, দেখে ফিরে এলে মধ্বপুত করে: সে পাঠিয়েছে তার করেকটি উইকএনেডর সন্যাপশটস। খ্যাত বিখ্যাত জায়ুগা, দুভুব্য-বিশেষ দুষ্ট্রা ভো রয়েছেই, সেইসংগ আছে দেবতাজ্যিনী পরিচিতা-অপরিচিতার সৌজনা চিত। ছবিগালি সভািই অপ্ব'় দামী কামেরায় ডোলা, দামী কাগজে প্রিন্ট করা-এখানকার আনেক স্ট্রডিওর ছবিকে আক্রেশে হার মানায়। বিশেষ করে ল্যান্ডেন্ডেকাপ কালারে য^{় খোলে।} তপতীর মনে পড়লো ডেলি-মিররের ভক্তবাব্রক। তিনি প্রফেশন্যাল হরেও এ ছবির তারিফ না করে নিশ্চর भाक्रका ना।

ভাজার ছোকরা দিবিঃ আরোক্রেই আছে
পেথা যাছে।' কল্লা কলল, ছুন্টির দিলগ্লো খবে একটা লাভিমিকা বিজ্ঞাত এমন
তা মনে হচছে না। ভূমি বাধা একট্
পচবোগে মিতালী এবং মাধার দিবি।
চালাও। নইলে জাধার ভারিখে পড়ে বেতে
গারে।'

বলনার মুখে অচেনা কোনো শব্দ শ্বংগাই নাল্ডা ঠিক জিজ্ঞাসা চিচ্চের মণ্ড করে গলাখানাকে লদ্বা বাড়িয়ে দেয় আর বলক্ষাও তার ভারালগে নতুন কোনো মন্দ রেজনা করলেই ওই জলজান্ত জিজ্ঞাসার দিকে তাকায়। আজও চোখে চোখেই প্রদেশর আদানপ্রদান হয়ে সেল।

তাজকাল ওলেশে ডেটিং চলেছে। ক্ষেণ্টাক্রের দেশের লোকের ওপরে অ্বার মহাথেবডাদের বড্ড টান। তাই বলছিল্ম। সাবধান হ পার কে জানে তর্ণ এফ আর-সি-এস গাছেরও খাছে তলারও কুড়োছে কিন্য।'

পারমিতার ঠোঁটে অবজ্ঞার হাস নোগালে একো বাছাধনকে আমি ঠিক করে

এই নতুন জারগায় এনে তপতাঁর বেমম ভাল লাগছিল তেমনি মনের মধ্যে অস্বস্থিত দেগে ছিল। বাবার পরিচিত কেউ যদি দেখে ফেলেন তাহলে কি ভাববেন তপতাঁকে। দুরের চেরারে কারো গ্রেফাইল কিংবা শিছনবিকটা চেনা লাগলেই কেমন আড়ক্ট আর কেশানে বোধ করছিল। নিবতাঁরবার সেদিকে ত্যকাতে ভার করছিল যদি চোখাচাখি হয়ে যার। অহচে চাখ ফিরিয়েও নিশ্চিক্ত হতে

'আমার ছাই ভয় করছে।' তপতী তার মনের কথা পাড়ে।

শুসা লাভাবের চিঠিতেই ভয়^২ দ্যাধ তে পার ' আমাদের কত স্টোড। সেন্টার ফরোরাড কির্ক্ম বেপরোয়া খেলচে। বন্দনা তারিফের চোথে একধার পার্রমতার দিকে তাকালো, তারপর কথা বলতে গিয়েই থেমে গেল। বেয়ারা এসে কাঁটা-চামচ জলেহ ক্লাস, ন্যাপাকন সমের বোতল বেশ কতানী ডাঙ্গতে মঞ্জ করে যেতে ল**া া ভারপরে এলো এক**া লেনটে নান <u>, রস-টমব</u>ুর দো-পিশ্রাজী। পরিবশেকের প্রস্থানের পর বন্দনা ভার ছেন্ডা সাভোৱা গিট দিল যে ল্যাং থেডে ভয় পার না, সেই লাগং, দিতেও পারে। ওর বর ব্রহংবর নয় বাড়ি থেকে পাকা-পাকি করা সন্বন্ধ ফিরে এলেই চতুল্পন হবে কিন্ত ভলায় ভলায় প্রেম কেমন ঘনিয়েছে দেখলৈ তো, দেখে শেখ। নিজেব চেন্টায় জনসংযোগ করতে না পারলে কেউ करत रमस्य ना।'

আঃ না ব্ৰেই ড্ই ৰছ লেকচা^র দিল ব্ৰুনা। আমি কি চিঠির কথা ব^{্লছি} নাক?

তবে কিসের কথা বলেছ?'

'চেনা কে**উ হদি দেখতে' পে**য়ে যায় কি **ভাৰতে**?'

ভাববে নরা জ্ঞানার দেবদাসী।
হরেছিস, দেবদাসের তালিকো দেবদাসী।
বিরহের জ্যালায় বাবে ছুটে
এসেছিস পেগ পেগ ঢোলে আ্গান নেভাবার
জন্যে। তারিফ করবে। নিদ্দতা বলো।

ালনা হাসে, 'যিনি দেখবেন ভিনিত্ का ते कार्य दे **अस्त्राहरू नाकि ह**न्छीभार হর'ত বারে চুকেছেন? লক্ষ্য ঘণা ভয় দুৰ এই বিগ্ৰাহিবতা হয়েই বলে আছিল প্রাং তোর হবে না। প্রেম করা জার মার্ট হোক তোর কর্ম নয়। ভাল কথা হত্যা পেরিয়ে গেল, ভোর রাইটারের খবর

তপতীর মগজে সাতা ·बाईछोड २' হাত্রই চোকেনি ব্যাপারট সে আবার

্ডামার, লেটার-রাইটার হেগা) স্বলি আর দিশ ?'

প্রিয়তমাসঃ.

कि राज नान्याधन कवि ग्राज्ञ मा তপু, নাঃ আমার তপুই ভাল। তপ্তী নামটার সতিটে গভীরতা আছে। কেমন ভাপসী তাপসী লাগে শুনতে। তপের শার। যে তেওত আহা। মনে হয় আনম য়েন ধ্যানমণ্ড ধ্রুটি লোকচক্ষ্র আডালে ছাইভস্ম মেখে বসে আছি। আর ত্মি কায়মনোধাক্যে করছ তপ আমার্ট জনা। অথচ জানো না, আমারও এই দেপথা জগতে বসে ধানি সেও তোমারই

খবে কবিত্ব হয়ে গেল, তাই না? হাসছো? হাসবে বৈকি। কারণ ফাকেট হাছ এই আমার জনো তপ করতে োমার বয়েই গেছে। তাম বরং সেই সমরটা সিনেমা দেখছো, বৃষ্ধাদের সংগ্র হাজাড় করে বেড়াচ্ছ গলেপর বই পড়ছো। খার কি করছ? আমাকে ভোলার চেকী বৰ্ড। ডাই মাণু **কিণ্ড**—

একবার তোরে দেখেছি যখন

কেমনে এডাবি মোরে ন

চাও নাহি চাও, ডাক নাহি ডাক

কাছেতে আমার থাক নাই থাক যাব সাথে সাথে, রবো পায় পায়

রবো গায় গায় মিশি-চনতে পারো লাইনগ্লোকে? এ আলার বাহত্র প্রেম। ফিরে ज्यारीच क्षारंशस्य क्षणा<u>स्</u>रा

কিন্তু ভপতার সংল্য মালি? কিসে অরে কিলে সৈতি বলছি, নামণা আমাগ ^{মোটে} পছন্দ নয় তোমার তাঁমকে যেন অনেকথানিই খাটো করে দেয়। ভোমার নাম নিয়ে আমি কত ভাবি দেখছো তো? কিন্তু তুমি কি ভাবো আমার নাম নিয়ে। মনে মনে ভূমি আমাকে কি নামে ডাকো? ^{ত্ৰ}তী, আমি ভোমাকে খবে জবালাকৈ াইনা? তুমি তো আদৌ আমাকে गालावात्मा ना भद्यन करता ना. व्याध कत रक्टली इस कथा। रक है यीन भारत শড়ে আমাকে চিঠি লিখে বলে আমি কি ^{ছরতে} পারি, তাই না? কিম্তু আমাকে ^{কৈ তুমি} এখনো চিনতে পারোনি তপতী? া কি, এত কাছে রয়েছি বলেই অবহেশা इत्ह ?

তপতী কেন জানি মনে হলেচ এবাব ^{দামার} সরে যাবার সময় হয়েছে। গায়ে

পড়ে ভালবাসতে ৰাওয়ার চেয়ে বিভন্তনার আর কিছু, নেই। আমি তো হিন্দী ছবির ায়ক প্রতনায়ক কেন্তুনই জ্যাম মাক আমি নিঃশব্দ আমি ছারা। আমি কারো সংক্ষাই আমার চেতারা দিয়ে স্মার্টনেস দিয়ে আহিক কমতা দিয়ে ডয়েল লড়তে পারবো না। লড়তে আমি ছুপা করি: ভাষ্ণোবাসায় লক্ষাই চলে না। এ নিয়ে যারা বাঁড়ের লড়াই চালায়, তারা বার যাই হোক আমি নই। আমি কে জপতী? নন্দিনী চিঠি পড়া শেষ করে কলনার

দিকে তাকালো। পারমিতা **বারার নটের** গলা নকল করে বলল জোমি কে ভ্ৰপতী? আমি বাংলা বিহার উভিযার'---

क्रम्ब ধ্যক मागारमा, भाषरका। ম্থানকালপানী ভলে বাস ছোরা। একটা সিরিয়াস ব্যাপার নিয়ে এরকম করা— চিঠিটা শেষ কর আনগে?'

ৰ্ণচঠি শেষ ত হয়ে পেছে।' শীকাতা

সেকি এইখানে খেৰ সংখি সেভো আয়াকে:—বন্দনা হাত বাড়াকো 'অই সী! তাইতো ভেবেছিলাম ইরাকী করছিস। হু"...বন্দনা কি খানিকটা চিন্তা করলো 'এ একেবারে শর্ট স্টোরির মত লেখ করেছে যে রে। বন্দনার মাথের ওপর একটা অঙ্গলট ভাষা ভেঙ্গে উঠেই মিলিয়ে গেল।

'হর্ন।' পার্মিতা ধুরো ধরে, 'দেয হরে হইল না শেষ'--

'আর অঞ্জরে **অড়**ণিড?'' নন্দিতা তপতীর বুকের মাঝখানে আশালে দিয়ে একটা খোচা দিয়ে ছঠাৎ নিচু সারে গেয়ে ওঠে যোড মেতে দুয়ার হতে কৈ ভেবে ফিরালে মুখখানি মনে...

বন্দনা গুম্ভীর গলায় বংগ, 'গান ফান রাখো নদিতা কেস খ্র জটিল। চিঠিও ভাষা লক্ষা করেছ? একেবারে সে-ট পার্মে'-ট লাভ লেটারের ভাষা। মানে নারক খেলাতে খেলাতে নিজেই গে'থে গেছে। ্রপতী ও রিয়ালি তোর প্রেমে গেছে রে।'

रशहरू ংববিংয় বেহেতাবা ভিকটোরিয়া মেমোরিয়াটেমর মাঠে গাছের ছায়ায় গিয়ে বসেছিল। ঞ্ৰীজ থেকে বোরয়ে যেন ফ্রীডমে। মাথার ওপর আকাশ যেন সচল ফ্রেম্কো চারপাশ উল্জেবল ব্যেন্দরের ভৌরহত। পায়ের জলায় মথমণ ঘাস ইতস্তত ফুলঝোপ। একটা ঘূর্ণি গাছের भाषाम हिन हिक्क त निरंत छेतेन। निरंकत হয়ে আসভে। পারে মাণার হাত দিয়ে চমকে দিয়ে যাতে দক্ত হাওয়া। থেকে (文)(本)

তপতী কোনো কথা ৰলছিল না আন্ধ্ৰ অনেকটা যেন ব্যান্তাবিক। একটা ছাসের ভাটি ছি'ড়ে নিয়ে কটকট করে সেটাকে দণতে কাটছিল আর কি যেন জাবছিল। চিঠিটার মধ্যে সতিটে আজ किंडू आहा। यनको क्यान केनान इत হায়। একটা গভীর কালা কার্ ভাস लागरह। त्कम ठिक त्वाका बाल्क ना। उत्पन ৰারো কথাই তপতীর মনে লাগালে না। একটা শতিল শ্ৰাজ্যৰ মধ্যে অন্যমনস্ক তপতী কেবলই পাৰ খাছিল।

বন্দনা ভপতীয় ক'াধ ধরে মাজা দিল. র্ণক বে অমন সনমরা হয়ে পোল কেন্ত্ না কি ধ্যান করছিল?' বলনোর গলার শ্বরেও আজ कি বেন আছে, ঠিক ধর। बाटक ना।

ধীনে ধীনে চোখ ফেল্লো তপতী খ্যাল ? কাকে ?"

ধ্য কেবল পালিয়ে বেড়ায় প্রিট এডায় ভাক দিয়ে যায় ইপিছত—ভার। मन्त्रिका वरना

কিছা অনুমান করতে পারভিস^{্ত} ভোল काउँदक प्राप्त र्लाण ?' वन्त्रमा श्रम्म करत । তপতী শান হাসে।

'লেয়োছন ?'

সকলকে • চয়কে দিয়ে জেপজী বলে 'লেয়েছি ।'

পার্মিতা নাদ্তা মুখ চাওয়াচাওার करत। यम्भना क्रांच खादक कारना हमना খ্লে তীক্ষা দৃষ্টিতে ওর দিকে কিছুকেৰ ত্যকিয়ে থাকে। ভারপর কি রকর ফেলে বাওয়া গদায় প্রদন করে, পাঁড়া ফলছিল? কে সে? নাম বল।'

তপতী শানতে না পাওয়ার ভাগতে करत्वक स्मरकन्छ हुन करत् वस्म शास्त्र। তারপর হঠাৎ হাত রাজিরৈ ঘাসের ওপর থেকে বই খাতা তুলে নিতে দিতে কৰে এখনে। মন স্থির করতে পারিন। পরে

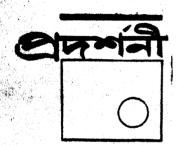
·আাঁ। বলিস কিরো।' পার্মিতা **চ**র্নী করে তাকিয়ে থাকে ওর দিকে।

আমানের বলাতে হাদি মন সাহা না দেয় পরেও নাই বললি।' বলনা খানিকটা অভিযানের স্বরে বলে। বস্পদার আজ কিছু হয়েছে। ওর দিকে না তাকিয়েও **তপভা** ব্ৰুতে পারে।

'তা নয়। তুপত্ৰী একটা দীৰ্ঘ-নিঃৰ্বাস ফেলে বলে '5季 বাণি লাই ভেৰি হয়ে যাজে।' রাস্তার দাড়িরে **থাকা কালে**। আম্বলসাভার হন দিল।

ভরা আর কোনো কথা বলে না, নিজের নিজের হাত্রাড়র দিকে ভাকিয়ে উঠে পড়ে।





ক্রড-কাট প্রাচীনতম গ্রাফিক মাধান। চীনদেশে নবম শতাব্দী থেকে এই মাধামে শিংশচ্চা শ্রু হয়। জর্মনীতে বিশেষ করে এই মাধায় অতাক্ত জনপ্রিয় এবং আলারেখাই ভয়রের ও ল'কাচ ফন এগনচ-এর হাতে **অত্যন্ত সমান্দি পায়। যেসব জমান শিল**ীরা শিংপে মানবিক অবস্থা সন্বংশ কোন মনো-**ভাবকে জোরালো ভাষায় ব্যক্ত করেছেন এবং** মানবিক বাণীকে বহুজনের কাছে পেশতে দিতে চেয়েছেন তাঁরাই কোন-নাৰ্কান সম্যো এই মাধ্যমের শরণাপ্য হরেছেন। এই শতকের গোড়ার দিকে এমিল নোলডে এবিক **ट्रिक**लं का**ल**िकाछ-रताहेलाक खाढ़ी भारशलड লুডভিগ ত্রিশনার বিপিট্যান রোহলফস ফ্রানজ মাক' মাকস বেকখান जार्न के वार्यकाच अवर कार्क कालिस्टाइट মতন জমন একসপ্রেস্নিক্ট শিল্পীরা কাট মাধ্যমে সাপ্রিভাবে মানুষের 4-83 দ্বেশ্লা বিবাদ ক্ষোভ ভাতি বন্ত্রণার ছবি এ কৈছেন।

এক অপে গ্রিয়েশাবের জন্মন একস্-ভ্রেদ্নিস্টদেরই উত্রস্ত্রী। একস্প্রেদ্নিণ্ট-দের মত্নই তিনি প্রতিচিদ্রক রূপবন্ধকে ছবিতে সরক্ষীকৃত করেন নবর পায়ণ ঘটান কোন একটি বিশেষ ভাগ্য কোন একটি **বিশেষ ইণ্যিতকে** বিশেষভাবে দুভিনৈগাচর **করে কোন একটি বিমার্ড** ভারনাকে বা **মলোভাপ্যকে অভিবাহ করার জন্য।** বিভিন্ন ৰহিজালিক রূপক্ষ বা মোটিফের যে পার-**লপারক** ভারভুমা ভিরোশাবের ছবিতে ঘটান, ভাও এক্ট উল্ফেশ্যে। কিন্তু গ্রিয়েশাবেরকে প্রেম্প্রিভাবে একসপ্রেশনিদ্র বলে চিভিড কর সম্ভব ময়। একসপ্রেশনিজমের অনাতগ্র জালিতা হল চিত্তবস্তু চিলোকুর কোন বিম্ত ভাৰনার সংকেতবাত্রী এবং চিন্তুম্প রূপ গোল। **িকভারতঃ এই** বিয়াত ভারনাসকল অণি-**কাংশ কোন্তে ভ**ীতি বিভানেতা ভাতাশা বিহ*ে* **বন্ত যক্তা ইতা**ছি আচুছতি ল্মাজ

গ্রিমেশাবের-এর ছবি কিন্তু কোন বিমৃতি ভাবনা বা অনুভাতির সংকেত রেখে র্পগত-ভাবে গাণি চরে যাবার অনুপাতে অনেক বেশা অলাকরারধর্মী। অবণ গ্রিমেশাবেরের ভারির আলাকরারিতা ভালেরকে একসপ্রেশানিকরের ভারির ইন্দিরাতিরিক্ত সন্তা দের না। নিবতীয়তঃ তার ছবিতে মানুহ পশা শাহী গাছ ফুল লভা পাতা ভেনতু বাংসলা সম্পর্কে এবং সেই ফেলে আসা জাগুং সম্পর্কে একটা মন্টালকে বিবাদবাধ থাকলেও ভাতি হতাশা ক্ষাভ ফ্রেমা ইংলাব ব্যাসক অন্ত্রিত প্রসাশ নেই।

শিশ্বশিল্পীরা যেভাবে কোন বহিলাগ-তিক রাপবন্ধকে চিত্রে রাপায়ণের কালে, ভার নিজের অভিজ্ঞতায় ধরা পড়া রপেবন্ধটির কোন বিশিশ্ট ভাল্য বা বিশিশ্ট বাপটিকে ফাটিয়ে জোলার জনা রাপবন্ধটিকে সরলা-কত করে বিশিষ্ট ভাষ্ণাট্রকে সরব করে टारल, शिक्षाभारतत्व⊕ भागकः छा**टे करतरह**न। শিশাশিলপীরা ষে-ভাবে অভিবান্তির **প্র**য়ো-জনে চিত্রস্থ রাপবদেধর পারস্পারক মায়-ত্নের তারতমা ঘটিয়ে চিগ্রতলে বিন্যুম্থ করে গ্রিয়েশাবেরও মূলতঃ তাই করেছেন। একই সংগ্রা শিশ্রশিলপীরা যেভাবে রাপ্রশাসকলের সীমারেখাকে আলক্ষারিক প্রবণ্ডা দিতে সচেন্ট হন গ্রিয়েশাবেরও তাই করেছেন। কারণ গ্রিয়েশ্যবের শৈশ্যের সেই সাংগ্রাকে বিষয়-চিত্রে সমাল্প করেছেন। পঞ্চল, সপ্তরণ শতকের ভোটদের বইয়ের এবং রূপকথার ইলাসেট্র্টেররাও ঠিক একই ধরণের চেন্টা করতেন ঐ একই মাধ্যমে। ফলে গ্রিয়েশাবের-এর ছবি কোথায় সেই আলঙকারিক - অথ্য অলংকার-সর্বাপর নয় সেইসর ইপানেট্রশনকে হলে পাড়িয়ে দেয়।

িন্ধেশাবের-এন ছবি একান্ডভাবে থিমারিক। হোগানে তিনি হিঘাত তল দেখিয়েছেনও সেখানে বিভাজিত তলগালি উপরে নীচে স্থাপিত না হয়ে পাশাপাশি সাজানো হরেছে। ওরে র্পকন্ধগালি পর্ত, প্রধান এবং বিস্তারসম্পার, অথাচ তারা আকারে একান্ড রেখামারিক। প্রা সংস্থান একান্ডই স্থান্। রেখার বাবহার তার ছবিতে অপ্রত্ন নয়। রেখা আকার-ভারতে অপ্রত্ন নয়। রেখা আকার-ভারতেরস্থা বিশ্বন প্রবাদ্যে এবং আবয়ারিক িন্যার পতিপ্রকাশের কাজে অথবা ছবির ছন্দ ন্যান্য করে তোলার কাজে ব্যবহৃত। স্থান্ পুল্লে সংশা, সজীব সচল জান্তব্ হল সমংখ্রেথা ছবিতে একটা টেনশন জৈণ করে। সেই টেনশনই শেষপর্যন্ত ছবির অভি-ব্যক্তি সন্ধার করে।

কাঠ কাটায় এবং রডিন প্রিনট ডোলায় শিলপার দক্ষতা অনুস্বীকার্য। ছবিগালি আকারে বৃহং। শোনা গেল জর্মনীর তর্ণ দের মধ্যে গ্রিয়েশাবের-এর প্রিন্টের জনপ্রিয়ত অসাধারণ। শানে অত্যন্ত আন্বৃদ্ধ হওয়া গেল। গ্রাফিক শিলেপর জন্মকাল থেকেট গ্রাফিক শিল্প মানবিক অভিজ্ঞতা প্রকাশের এবং সর্বজনগ্রাহ। ভাষায় কো উপস্থাপনের বাহন হিসাবে কাজ করে এসেছে। আজ বখন দিলেপর নিজস্ব রূপের দাবীর অগ্রাধিকার দিতে শিল্পীরা ভাষার <mark>সর্বজনগাচা</mark>তার দাবীকে অগুণিধকার দিছে গিয়ে শিচ্পতে অনা-তাভিজনে শ্নানিরাবলম্ব বস্তাও পরিণত করেছেন, তখন জমনি ভর্বেরা এমন এক শিলপীকে সম্মান দিক্ষেন যিনি পাফিক শিলের মূল সত বিক্ষাত নন।

এছাড়াও গ্রিয়েশাবের-এর কাজ খেলে আমাদের শিল্পীদের শিক্ষণীয় অনেক কিছ আছে। যাঁল ছাপের ছবি করেন ভাঁদের কাছে উড-কাট এখনও নিশ্নমানের মাধ্যে বলে পরিগণিত ্য। যারা অন্য মাধ্যমে ছবি আঁকে: তাঁদের আনেকের কাছে গ্রাফ্র মাধার্য ুলিই নিমন্যানের মাধ্যে কুলে মুন হয়। ফ্রেন্মে বাঁধানো **ইজেল পে**ন্টিং-এর শ্ভাদয়-এর সংক্রা ধনতাদিক বাল্লি-ক্রেডার অভাদয়ের প্রশ্ন জড়িত। ছবি সেখানে বহ জানর জন্য নয়। গ্রাফিক প্রিন্ট আনেকের জনা। আমাদের দেশে বত না ধনিক বালি আছেন জেমে বাঁধানো ছবি তৈরী হয় তার বেশী। এই ধরদের ছবি আঁকাও ব্যরসাধা। বেশীরভাগ বায়টাই অতএব বাজে খরচ। আমাদের দেশে শিল্পান_রাগ তৈরী ন্যতে গেলে করতে হবে ভাঁদেরই যাঁদের দামী অয়েল পেনটিং কেনার ক্ষমতা নেই। অন্তএৰ গ্ৰাফিক প্ৰিন্ট ছাজা গজি নেই[।] উড-কাট, স্পিন্যাক্ষট, উড-এনপ্রেভিং ছাড় অন্যান্য গ্রাফিক মাধ্যমে ছবি তৈরী হলে ছাপার বন্দু দরকার, ধাতু-নিমিতি শেলী দরকার। সবই বারসাধ্য এবং দাম বাড়ছে। এমতাকম্থায় উভ-কাট, লিনেনানাট এবং উড-এনগ্রেভিং-এর প্রসার বা**স্থ**নীর।

—প্রণ্বর্জন বার

জন্ত নিগত এই জৈও মাসে

কিবোলার যে সকল মনীবী সাহিত্য
কিবোলার যে সকল মনীবী সাহিত্য
কিবালার বিশ্বজনের তিরোভাব থটেছে,

কিবালার ভূদেব মুখোপাবাার শিবজেল

কিবাল, সার আশুতোৰ মুখোপাবাার

কিবলাহন তাত্ত্ব ও মুখানীকাতত

কর নাম স্বাত্তি মনে ব্যুড়।

श्राम्भाक कृत्व मृत्यानाश्चारतत াপ্রয়াণ ঘটে ১৬০১ সালের ১লা ন্য। ১৩২০ সালের তরা জ্বৈত ্লাকগমন করেন িব্রেক্ট্লাল রায়। র আশুতোবের তিরোভাব য়টে 350 रेलाक्त्रं । সালের ১০ সালের ১৩ই জৈন্ট প্রতাপদন্দ মদার অক্ষয়কুমার দত্ত ১২৯০ সালোর हे देखार्क. स्मीतीन्द्रसाहम ১১ সালের ইইলে জেন্টে এবং ১৩০৭ ন্ত্র ত্রালে জৈন্ত রজনীকান্ত গ্রেন্ডর । ঘটে। বংসরগ**্রানর মধ্যে** প্রভাত ামে থাকলৈও জৈদঠ মাসের এই ্লি আমাশের কাছে বিশেষভাবে ণীয় হ'ষে আনুছে।

এবাৰ বভামান চলতি আবাচ মানের বলি। এই আ্ষাড় মাসে ধারা লাকগানন করেছেন, তাঁদের মধ্যে াগণ প্জা কৰি হলেন স্বামী না^{নক। ১৩০৯ সালের ১৯শে আয়াড়} জনগণকেই নয় ভারতব্যের বহু জনকেও শোকসাগরে ^{জেত করে} তারি মহাপ্রয়াশ ঘটে। এবং অাষাট মাসের ২রা তারিখেই স্ব'-াঁষ ক্ষেত্রে শোকের ছায়া নেলে আসে ^{নিলুর} তিরোধানে। ঘটনাটি ঘটে ং ^{দালে}। এতদ্বাতীত এই আ্ষাং/ ^{ট হরিশচন্দ্র মহেখাপাধ্যায়, চন্দ্রনাথ} এবং কালীপ্রসম কার্যাবশারণঙ ^{রেণ করেন।} কম'জীবনের বৈশিষ্ট্য ারী এ'র⊺ সকলেই व्याचारभन য় ও বরশীয়।

্লেখক অমরেন্দ্রনাথ রায় मिर्गिमाहा-মির সম্পাদিত সেচির শিশির ^{ণ্র শারদ}ীয় সংখ্যায় (১৩৩৩), ভার তিপশি রচনার মধ্যে এলের সম্পর্কে কিছ্ আলোচনা করে গিয়েছেন। া উৰু আলোচিত ব্যক্তিবগের মধ্যে গ কেতে বহু, আলোচিত দ্বামীলী मितन्थः मम्भकतीय तहना माहि वाम হরিশচকর মহাথাপাধ্যায় চকরনাথ ও কালীপ্রসম ক্রোবিশারণ সদ্বদেধ রচনাগরীল এখানে সাধারণের ^{তর} জনা **উল্থ**তে করে দিলাম। আশা ^{ছবিষাং} **জীবনী-অভিধানিক্রা। এই** থেকে কিছু ন্তন **তথোর স্থান** BLU- GOODS ECONS



इतिमान्द्र स्ट्यानाशास

(ম্ডুা: ১লা আষাঢ় ১২৬৮)

এখনকার পাঠকরা হরিশচন্দের নাম
নৈক ছাড়া তাঁহার সম্বন্ধে বিশেষ কিছু

জানেন না। কিছু ছিল একদিন, যখন

তাঁহার ম্পের ও তেজের কথা বাংশালীর

মুখে মুখে আলোচিত হইত। বাংশালার

অনেক গানে, কবিতায় ও সাঁচালীতে

তাঁহার নাম অমর হইয়া আছে। একজন

লিখিয়াছিলন্—

নীল বানরে যোনার বাংলা করজে এবার ছারখার। অসমলে হরিশ মজো— পংগ্রা হলো কারাগার।।
পার একজনের গান আছে—
নীলে নীলে স্ব নিলে
শীলে নীলে স্ব নিলে
শীলে বল ভাই কে বেথেছে।
ভাই নিয়ে বাল বার

नित्य नित्य एदिन मरतरक ।

এইকুণ গাদ আনত অনেক আহে,
বাহুলা ভারে দে-সার উপাত করিলাম না।
হরিলাচনের রাভুগতে দেনাবাসী হৈ কিরুপ লাতবাধ করিরাছিলেন, তাহারাই এভট পরিচয় দিখার উপেশেনা এই কর ছুও উপাত করিলাম। বাহারা এই লোক করিয়াছিলেন তাহারা বাদ আন্ধ লীবিত থাকিতেন, তাহা ছাইলে আফিলার দিনেও তাহারা পাবদার কথা দানিয়া হরিদা-চলের অভাববোধে রোদার করিতেন। তথ্যকার দিনে চিত্তরগান ছিলেন না সংগ্রা কিন্তু হরিলাচন্দ্রের শ্না আসন বে এতদিনেও প্রশ্ হইল না ভাহাও অপ্ববীকার করিবার উপায় নাই।

'হিন্দু পেট্টিয়ট' পৱিকার मध्यापक रहेशा मध्भामक क्रीवरमत एवं कामधा তিনি দেখাইয়া গিয়াছেন তাহা এখনও जिल्ला अजुनमीश इहेशा आहा। ১৮৬० হইন্তে ১৮৬৫ খ্রীণ্টান্দ প্রান্ত-ভাগাং সবেমার এই করেক বংসরকাল ভিনি সমপাদকের পদে রতী ছিলেম। কিন্তু এই ≥বলপকাল মধ্যে তিনি যে কীতি রাখিয়া গিয়াছেন, তাহা শাধ, অভুলনীয় নহে অসামানাও বটে। ভারতের বছঃ স্মরণীর ঘটনার সহিত তৃহিার স্বংপ সংপাদক জীবনের ক্রীন্ত বিভাড়িত আছে। সন্তব পত্রের পনেঃ সংস্কার অযোগ্যাকে ভাষিকার-ভূতকরণ, সিপাহী বিদ্রোহ নীলক্ষরগণের

—প্রকাশিত হল—

১। বি, এ অনাস (দর্শন)-এর জন্য-

ধর্মদর্শন

প্রয়োদবংধ্ সেনগর্ণত

২। মাধ্যমিক প্রীক্ষার জন্য ঐচ্ছিক বিষয়-

म्क्रल कारेनााल जर्काबना

—श्रामनन्ध्र तमनगर्

৩। বি এড্ ও বেসিক-এর জন্ত

শিক্ষণ প্রসঙ্গে সমাজবিদ্যা
(২য় সংক্ষরণ)

গৌরদাস হালদার

BP.

ব্যানাজী পার্বালশাস

৫/১০ কলেজ রো, কলিকাতা ৯ লেন : ৩৪-৭২৩৪

ত্যাচার বাজহদেও বাজ্ঞা-শাসন-ভারের পরিবর্ত্তম ও বিদ্যাবদালয়-সংস্থাপন প্রভাতি ঘটনা এই সময়েই ঘটিবাছিল।

হরিশচন্দের নিভাকিত। ও নির্পেক্ত। এই সকল অটনার ভিত্র দিয়া তিক-পেটিরটে তথন প্রতিনিয়ন্ত আত্মপ্রকাশ করিত। সিপাতী বিদোলের উপদাবিত **ষ্টিলে পর একদিন কলিকাতার বড়লাটের** প্রাসাদ হইতে হরিশচন্দের ভবানীপারের বাসবাটীতে এক চিঠি যায় যে, **কে:নদিন** সময় কিরিয়া কখন লভ ক্যানিভের সহিত সাকাৎ করিতে পারেন। বড়লাট বাহাৰীর আপনার সহিত শাসন-**নীতি সম্পদ্ধে আলাপ করিতে** চাহেন।' হরিশচন্দ্র মুখোপাধারে অমনি সদা সদ উত্তর লিখিয়া দিলেন, 'আছি দরির সাধারণ বাভি আমার পক্ষে বডলাট দশ'ন শোভন হইবে না। তিনি এদেশে রিটিশ রাজের

রেজিঙ্গি বিবাহ অফিস

মোট ১৬ টাকায় রেজিস্টি বিবাহ

এন কে যোষ, জে-পি ্যারেজ অফিসার

১১৭, জেলবচনদ্র লেন শুটি কলি-১, ফোন ঃ ৩৫-৩০৪৮



প্রতিনিধি: ব্যক্তিগত এবং পদ-গত অতি প্রস মহিমার বারা আমার মতন দরিদের মন আক্তল এবং বিমশ্যে তইতে পারে। পালে বিমায় অবস্থায় আমি বাজে কথা কহিয়া ফেলি সেই ভয়ে আমি পাট-প্রসোদে যাইব না। দরিয়ের প্রতিনিধি আমি, আমার জাতির ও দেশের সম্বদেধ ·ছিন্দ; পেট্রিয়টে[,] আমি যাহা লিখিয়া <u>কাহাই</u> আনোধ বক্রা। 'सरहा" পেট্রিটা লভা কানিও যখন নিয়মিত পাঠ করিয়া থাকেন তখন আমার ্শহা'ক ন্তন কিছা বলিবার নাই। আমার ব্যক্তিগুড স্থ-দ্ঃথের ক থা অভিযোগের কথা আম্মি বডলাট বাহাদরেকে শ্নোইতে চাহি না। অভএব আমি ভাহার আমন্ত্র গুড়র করিতে পারিশাম না।'

এ তেজদিবতা, এ আর্ম্মর্যাদা জ্ঞান সকল দেশে সকল সময়েই त्र,प्र^{ाय}े । আধানিক নেতাদের দিকে একবার দ্ভিপত করিলেই ব্যাহ্যায় যে প্রতঃ-সমরণীয় হারশচণ্দ্র কত বড় তেজেশ্বী— কত বড় দচ্যতেতা পুরুষ ছিলেন। বাজনীতি কোলে তিনি শাধা আমাদিশের গ্রে নহেন, সর্প্রধান গ্রেও বর্টন। ত'াহার সারণ-শত্নেত ধাহা সিখিত আছে তাহাই তাহার কীন্তির সংক্ষিণ্ড পরিচয় হইলেও প্রকৃত পরিচয় পাঠক-সাধারণের অবগতির জনা এখানে তাহা উন্ধৃত कतिशा मिलाश-

न्वगारेश क्तिमाठन्त स्त्यानाधाय

থিনি 'হিম্দু পেট্রিয়ট' পচিক্র সমপাদক ও বিটিশ ইণ্ডিরান' সভার অধিনায়ক ছিলেন এবং সমকালে বহুবিধ বিবরের আন্দোলন প্রস্থো দক্ষতা ত'হার সময় ও নিঃশ্বাথভাবে বিচার-বিতর্ক শ্বারা শ্বদেশের প্রভৃত কল্যাক্সাধন করিরাছিলেন।

যিনি অসামান্য সাহস, সতানিভী ও সাধীনতার সহিত অনায় পক্ষের প্রাজ্যে প্রবার হইতেন ও ন্যায়ের পক্ষ সম্প্রাথ

যিনি বিদ্রোহসংক্স সংকট সহার রাজপরে,বগণকে সংপ্রায়শ দিহাছিলে, ও রাজনীতির প্রকৃত অভিপ্রায় স্বার্থির গোচর করিষাভিলেন;

যিনি উৎপীজিত দীন-দরিচের পিচু-স্বর্প ছিলেন এবং তাহাদের সহাত্ত করিচে স্থাপাক্ষ কথনই বিমুখ হইডেন

্র্তি বিনি স্বীয় জীবনের স্বাথতা ৮ কর্ত্বাপ্রায়ণতার উজ্জ্বল আদশ প্রদৃদ্ধ করিয়াছেন:

হিনি একবার প্রজাব্দের শরণা প্র গোষক ও ব্টিশ সাম্ভাসের অবল্পিত শতক্তন্তর্প ছিলেন:

সেই মহাপ্রেষের স্মৃতিচিক

এই কীতি সতম্ভ

ত্দীয় চিরক্তজ্ঞ ব্দেশবাসিগণ কর্ণ স্থারণের প্রদত অথাবারা প্রতিদিও। হুইলা।

কলিকাতা ভবানীপ**ুরে সন** ১২৩ সালে তীহার জন্ম ও সন ১২৬৮ সাগ তীহার মুখ্যে হর।

চন্দ্রাথ বসং

(মৃত্যু ঃ ৬ই আ্বাঢ়, ১৩১৭)

প্থিবীতে একটির অধিক দ্ইটি চ্ছু
নাই; এক চন্দ্রেই সম্পত্ত জগতে আলোকিব।
কিন্দু বাংগালায় সাহিত্য-চন্দ্রের শংলা
অগণিত না হউক—অত্যাধিক বটে। ভার্ব্যচন্দ্র হইতে আরম্ভ করিয়া শর্বচন্দ্র বহুন্দেরে আলোক-শংশাতেই

দাহিতাকি। সমুজ্জ্বল। ভারতচলে
প্রে কোন চন্দের কথা মনে পড়ে দ
এবং ত'হি।র সমকালে তিনিই বা
হইতেছে 'একশ্চন্দ্র' ছিলেন্ কিন্তু হারপ
আর একটি মান্ত চন্দ্র নহে—এক সর্গে
দ্রে দিক হইতে দ্রুটি চন্দ্র উদিত হইর
বাণ্গালার সাহিতাকাশকে পালোকি
করিয়াছিল। সে আপোক-সোন্দ্র্যা ৬০।৬
বংপরের প্রেত্ন হইকেও এখনও মান
হয় নাই, এখনও তাহা আমনা সান্দ্র
উপভোগ করিয়া থাকি। গ্রণ্ড কবি ইন্ব

থু দুই চন্দ্রাদরের পর বাণ্ণাল সাহিত্যাকাশে চাদের হাট বসিরাছিল বিকমচন্দ্রের সংগণ সংগণ হেমচন্দ্র নর্বা চন্দ্র, গিরিশাচন্দ্র রমেশাচন্দ্র সঞ্জীবস অক্ষরতন্ত্র ও চন্দ্রশেশবরর ও ঘটিয়াছিল। এই অভট্যন্দ্রের সহিত চ



নাথে নামও আমনা উচ্চেম করিতে পারি। গোভার ও প্রভার এই করটি চলা সমতুলা না হইলেও ইহাদের কেহই উপেকার বোগ্য নহেন। এ ব্যের বজাসাহিতোর ইতিহাস বদি কখনও লিখিও হয় এবং সে ইতিহাসে ঐ করটি চলের মধ্যে কোনও একটি বদি বাদ পড়ে তবে সেইতিহাস অসন্পর্শে হইবে।

্রুরাথের অনেক লেখা হয়ত অনেকের লকা এখন ভাল লাগে না. কিন্তু ব'হোৱা ক্রেল্য ও সাহিত্যের প্রবাপর অবস্থা খন াথিয়া ভাহার সাহিত্য-সাধনার আলো-করিবেন, তাঁহারা বুঝিতে পারিবেন ্য চন্দ্ৰনাথ যাহা দিয়া গিয়াছেন তাহা পচৰ না হইলেও তাহার ব্যারা বাহিতোর প্রি ও পাঠকের উপকার হইয়াছিল। আলোচনা এখনকার সাহিতা-রথীরা চিসাবে যাহা লিখিয়া থাকেন তাহার ত্রিকাংশেই বদ্হজনের দুর্গণ্ধ ছাড়া আর কিছাই পাওয়া যায় না। বিলাডী লেখকদের মতামত ঠিক মত না ব্ৰিয়া ইহারা কেবল কালির আচড় পাড়িয়া থাকেন। কিন্তু চন্দ্রনাথ এর পভাবে কথনও আ্থা-প্রবশ্বনা করেন নাই, বরং ও কাজটাকে আম্ভরিক च-लात চক্ষেই দেখিতেন। নিজে হাতা চিম্তা করিতেন, যাহা ভাল বলিয়া ব্ৰাফতেন, তাহাই তিনি পরিংকার **ভাষায় নিভ'বিতার** সহিত বলিয়া ৰাইডেন। সে আলোচনাঃ ফলে মনে পড়ে রবীণ্ডনাথের সহিত ত'াহার এককালে ঘোর বিচার-বিত'ডা ঘটিয়াছিল—সাহিত্যকোৱে সে সজীবত। এখন নাই। মাসিক রাজ্যে কেবল ছু টো বাজিরই থেলা চলিতেছে।

গোড়ার চন্দ্রনাথ ইংরাজী-য়ানার ও ইংরাজী ভাষার বোর পক্ষপাতী ছিলেন। ত'হার সে সময়কার কথা বলিতে গিয়া তিনি একস্থানে লিখিয়াছেন যে, 'বাল্যালা শিখিতে অপুরুত্তি হইয়াছিল ইংরাজী লিখিয়া বড় সুথ হইত।'-কিল্ডু এ সংখ-বোধ বেশীদিন তাহার আয়ী হয় নাই। বেদিন বাংক্মচন্দ্রের প্ররোচনার তিনি শক্ষতলা-তব্ লিখিতে আরম্ভ করেন, সেইদিন হইতে ভাবার মনের পতি ^আর একর্প হুইয়া যায়। এ সম্বন্ধে জিনি **নিজেই** ব্লিয়া গিয়াছেন বে "শূর্তজা-তন্ত্র লিখিবার পর সরকারী ^{ভাষে}রে জন্য ভিন্ন আর ইংরা**জী** শি থ নাই—লিখিতে আর ইচছাও হয় নাই। দিখিতে হইলে মাড্ভাষার ন্যায় অন্য ^{কান} ভাষা **লেখা স্বাভা**বিক ও স্বৈকর ^{ন্ত্র}। যখন **বাংগালায় লিখি** তথন त्र्राच्य, যখন ভাহা সম্মাথে ংগ্ৰাজীতে লিখি, তখন বাহা লিখি

তাতার এবং আ্লার ম্লাচক্র মধো ধেন একখানা পদা বিকাশিকত দেখি।'—এমন অকপট্ড: এমন স্তাবাদিত: মাক্তলার প্রতি এমন ম্মর্থাধ একেলো স্তাই কি পুলভি নয়?

চন্দ্ৰাথ ভাৱজীবনে W/03 Œ দেখাইয়াছিলেন. ভালা जननाजाशा 📲 হইলেও ত'াহার সদবদেধ কিছু বলিতে চাহি না। কারণ দেশের ও দশের ছিড-সাধনের সহিত সে কৃতিকের সম্বন্ধ নাই। স্মসাময়িক স্বৰ্ণীয় কালী বাছেলো ও কালীপদ গতে-ই'হারা উভয়েই বিশ্ববিদ্যালয়ের CONT. PT চি লেন বিষত চল্টনাবের ভলনার ই'হাদের সমৃতি আজ ক্তটুকু Com. of হইয়া আছে? চল্নাথ শ্বভ্ৰাত্ত 'হিধারা' ও 'স্ববিহাী-তত্ত্ব' না **লিবি**খলে ত'হার কথাও লোকে ভালিয়া বাইত। ঐ ক্ষুখান গ্ৰন্থই ত'হোৱ নামকে আজিও ব[া]চা**ইয়া রাখিয়াছে।**

> কালীপ্রসন কার্বাবিশারদ (মৃত্যু ঃ ২০শে আবাঢ় ১০১৪)

াঁহতং মনোহারি চ দুরাভং বচঃ'-এই ব্যক্তাকে মূল্যদন্ত করিরা বিশি
হিত্রাদী' পতিকার পরিচালনা-ভার
স্বহ্দেও গ্রহণ করিরাছিলেন, জ্বল বেশে
বংসর হইল (এখনকার হিসাব মৃত ৬৭
বংসর) তিনি জামানিগকে ছাড়িয়া
গিয়াছেন।

'হিতবাদী' কালীপ্রসম্ভের কীরি-শুহুদ্ভ। ত'বিহার রচিত **ভাল ভাল গান ও** কবিতা অনেক আছে ত'হিয়ের সম্পাদিত বিদ্যাপতি' বিশেষ কৃতিখের পরিচারক। তিনি একজন কল্পবালিও নিভানি সম্পাদক ছিলেন। নারে হউক অন্যার হউক তিনি বাহা ভাল বলিরা ব্রিডেন, তাহা প্রকাশ করিতে কথনও সংক্ষাচ বোধ করিতেন না। কোনও প্রকারে ভান না কোন প্রকারের প্রলোজন, তাহাকে কথনও কর্ত্বা-শথ হইতে বিচলিত করিতে পারে নাই।

মাতৃভূমি তহিল একমার উপাস্য দেবতা ছিল। তিনি অনা কোন দেবতা মানিতেন না। প্রশাসত মহাসালরের বক্ষে বাসয়া তিনি মৃত্যুর প্রেব দিবসেও জঞা-ভূমির উল্লেখ্য এই কবিভাটি বিশিষরাছিলেন—

'এই কি জীবন শেব ? জীবন-রাজনী !
কোথা হিল্ল জক্মভূমি ?
কোথা আমি ? কোথা ভূমি ?
পাড়ল কি ব্যানকা সহসা এখনি ?
কোনার মহিমা গাব, ওলা জক্মভূমি !
লাহিত তোমার নাম,
দেখে তব্ব চলিলাম
এ দীর্ঘ জীবন ব্যা—দেখিলে ড ভূমি !
এ দ্বংখ রহিল মনে,
ভোমার সক্তান্যথে
না দেখিলা স্বাস্ত,—শ্যান ক্রমে

এ ন্বলেশ-প্রেম স্থান্ত গুলুর হাত্তর কম্বারি জীবনের শের মুহুতে শ্রাত ডিনি ন্বলেশের জ্বাই জাবিয়াছিলেন।

হোতে হল-মনসাধ রহিল মা মনে!

- WORKE

বাংলা ভাষায় এই প্রথম সরকাসী দিশপ সংস্থানমূহের স্পৌশ্য ভাষাস্থান্ধ

স,রদাসের

ताष्ट्रीश উদ্যোগ প্রসঙ্গে

কেন্দ্রীয় বাণিজ্যমন্দ্রী দেবীপ্রসাদ চট্টোপাধ্যায়ের ভূমিকাসন্বালত।
দাম ঃ আট টাকা

সত্যবাদের জন্মগরিকা ৭-০০ / সত্যেশবর মুখোপাধ্যারের রাজনকাশ ব্রুক্তবাদ ৩-০০ / উপানাল ঃ কুলারেশ বোবের মানুরেশ ২-৫০ / সালিল সেনের লোকার কাজি ৪-০০ / কোশিক বারের রহদেন নাজিকা ২-৫০ / জ বানুদেবের রহস্য উপানাল কাশিকাকা খুল ৩-০০ / বন্দ দাশ প্রভাসকাশিক ভন্ন ও রতেঃশবর বর্ষদের গদপ ৫-০০

निशिका ००१५-७, बरनव द्या, क्नि-५

OBAY

সোনা-সৌন্দর্য এবং বর্তমান

অলম্পনের সৌল্পরে প্রাকালের মত আলকের মেরেরাও মুক্র। দিনকালের মার তম্মের জন্ম অলম্পনার বাবহারের মারা বা পরিমাণের পরিবতনে হলেও বিরাট কিছু পরিবতনি হর্মি। হ্রাম খুব সম্ভবতঃ অলম্কার বা গ্রমার দিকে শ্রেরেদের সহজ্ঞাত প্রবৃত্য বা প্রীতির জনা।

সদ্য একটি বিয়েবাড়ী আব জন্মদিনের উৎসবকে কেন্দ্র করে এ ধারণা আরও ম্ল হল। **প্র**না বাবহার করা এখন 104 ভয়াবত ব্যাপার। ভাই শোনা হায় **5**[शुन् তৈরির দিকে মেয়েদের কোঁক কমে 2117750 (ভার-এপর সোনার দাম সাধারণ মধাবিত গবের :क्याटक्टन*र* ধরা-ছেখিয়ার বাইদে। 37.75 থাকালেও গ্রনা গড়েবার সাম্থা সাধারণ লোকেদের নেই --এ অবস্থা জানা বা শোনার পরেও পয়নাপ্রীতি নোয়েদের কমে নি।

এক ধরনের ছিল। আছেন যাদের এ ব্যাপারে কোন স্পাত্য নেই তারি আচেল বা আনেক পেলেও যাড**়িকু** বাবহার না করলেই ব্যাত্তাটুক্ট কর্তমন।

অলগকার ব্যবহারে মেয়েরা আরও
শ্রীমন্তিত হয়ে এটেন একথা যতটা সতঃ
আষার অতাধিক বেশী ভারী ভারী, লবড়জং
গরনার শ্রাভাবি সোদ্দর্যটাক অহতহিত
হয়: আছে বংলাই হেমন-তেমন একটার দর
একটা চাশিয়ে ওংনের বাড়ীতে উপন্থিত
ভবল সন্দর্শকর প্রচার করা সম্ভব হলেও
সোদ্দর্শকর আম্মতা আর বৃতির
দীক্রাকেই লাহিন করে।

নামী পরিবারের এক মহিলা মিনি গাড়ী ৰাভী বি-চাকর বেণিটতা হয়ে থাকেন ব্রুথতেই শারছেন যাঁপে এই শ্লিপনের বাজারে শর্মি না নাড়িছের পায়ের ওপর পং ভূলে সিন কাটাতে হয় তিনি রখন উৎসবের বাড়ী হা অন্য কোধাও নিমল্লণ রক্ষা করতে হাজিরা দেবেন জার স্বাধ্য প্রায় ঢাকা থাকে চোখে ধাধানো অলংকরে। এই দুদিনেও যে তিনি এড অল•কার বেলিটতা হয়ে বাইরে বেরুতে সাহসী হোন সেটাই সবচেয়ে আশ্চরের ভারপর ব্রুচিবোধের ভো একটা প্রদন আছে। त्रकाट्स संदानाहा जाङात्ना वा जाङा একট आशातन बारमात हिल (ट्रम्केटल ঐশবয়' क्ष^{र ६} जन नम्छ दिन। देव कारक छोजा निरंह বেশ্ী লোনা গাঁরে চাপাতে ু পারেন সেইকর প্রতিয়োগিতা প্রায়ই প্রকাশ পেতে। প্রতিষ্ঠানিজার দিন্ত ক্রিয়েছে, ের ক্ষতাও মানুষের আর সেই। হার হতট্টু আছে, সেটাকু কত হছে গোপনে **রাখ**তে পারেন তারত প্রেণ্টা চলছে।

আসল জিনিহকে গোপনে স্বিয়ে রাণার প্রচেষ্টা চললেও গয়না ব্যবহারে কিম্ত কোন কর্মতি নেই। তাঁরা আসল জিনিশ ব্যবহার না করে নকল জিনিস ব্যবহারে মনের স্থ-আহ্রাদ মেটাজ্জেন। অনেক বাড়ীর আছি-ভাবকরা ভাঁদের বাড়ীর মেয়েদেরও গয়না পরতে উৎসাহিত করে। খানিকটা আথিক সংগতির অভাব, খানিকটা দুদিনের ভৌগদে। ভাই বাজারে হরের রক্ষা নকণ গ্রহনা উঠছে হা দেখলে আসল-নকলে সন্দেত জাগে। নকল গয়নার দৌলতে ভারী গয়নার हमन्द्री একেবারেই উঠে গেছে বললেই হয়। তারপর রাচির পবিবত্তিন হয়েছে। এখনকাব মেয়েরা আর চওড়ো ভারী জিনিস বাবহার করতে পছন্দ করেন না। ছিমছাম রাচিস্কাত জিনিসে হতদার নকল কম বোকা ধায় সেরকন জিনিস্টাই ব্যবহার করেন।

আসল গ্রনার চলন কমে গ্রে ग्रहा थ গয়নার বাজার ছেয়ে গেলে বা মেয়েরা বাবহার করলেও কিল্ডু একটা জান্নগায় নকল গয়নার এখনও চলন হয়নি সে উৎসবে আসল গয়নাটি হিসেব মড ঠিকঠিক চাই-ই চাই, সে হজ্তে আমাদের বিবাহ নামক উৎস্বটি। উৎসবে এখন গয়না নিয়ে সকলে নিক্রি ওজনে না মাপলেও আকার ইণ্যিতে জেনে নেনেন মেয়ের বাবা মেয়েকে গ্রানা কম করেও িদক্রেন। ছেলে বিরে দেবার সহয়ে ছেলের বাবা বা অভিভাবক প্রারই ভূলে যান নিজের মেরের বিরেতে তিনি কটা অলংকারে সাজিয়ে দিয়েছন বা ভবিষয়তে দেবেন। ছেলের বিয়েতেই তাঁর অন্য চেতারা। সবচেরে দ্বংখের লেখাপড়া শিখে আমাদের দেশের অনেক ছেলেদের এখনও সে বলিস্ঠতা আর্সেনি তার কিন্তু এ ব্যাপারে পিতামাতার একান্ত বাধ্য।

দিনকমেক আগে এক বিবাহ বাদরে
কন্যার পিতা হ্বার অপরাধে এক ভ্রনোক
সব মান-স্কান বিস্কান দিলেন। বিশ্বে শান্ত্
হ্বার বিছু বাকি পালপক্ষের একজনের হঠাং
নক্ষরে পড়ালো অসমের গান্তের গান্তার ভিজাইন চওড়া হলেও ওজনে হালক।
এটা তিনি বিশেষভাবে কক্ষা করলেন ও জনদের কক্ষের আনলেন। সপ্তো স্পেণ পালুগুলের
সকলের মধ্যে একটা গ্রান্ধন চকতে লাগালো।
ব গ্রান্ধনের মেধ্য ক্রমে ক্রমেই এন্যে পৌছুলেন

পত্রীপক্ষের সকলের কাছে। প্রমাদ গানেলেন কন্যাব পিলো। তিনি আতি কৈলে হলে। গৰ্ডগোল পাকাবার কেন্দ্রক্ষের खारकडे তিন অভাষ্ট বিনীতভাবে পারের পিতাকে এ ব্যাপারে জিঞ্জাসাবাদ কর্লেন এবং ভালুরোধ করলেন <u>এ নিয়ে যেন</u> কোনরকম **অপ্রীতিকর ঘটনা না ঘটে। নিজের ভব**লপ সাংগ্রে কথাও জানালেন। উপরুক্ত বাঙ্গাল[†] পরিবারের ছেয়েদের ভাগো এসব ঘটনায় যে <u>প্রভাগ্য ঘটে থাকে তা যেন না ঘটে সেজনা</u> ভানারোধ জানালেন। এ অনারোধে মন ভোলে না আমাদের মত হতভাগা দেশের পদের পিতাদের। তিনি অবশ্য অতটা অনম-নীয়ু বা দুড়েডা নিয়ে পানকে বিকাহ বাসের ত্যুগ গরতে বাধ্য করবেন সেক্থা বললেন না কিন্ত তিনি কঠিনস্বরে জানিয়ে দিলেন তাঁর মত সদাশর লোক বলেই এ হাতা বে'চে গেলেন। উপরুষ্ট আক্ষেপ করলেন এ ধ্রনের মোয়েনের বাবাদের সংখ্য বিয়ের আগেই সোনা-দাশ অর্থাৎ পাওনা-গুম্ডার ব্যাপার্যটি পাকাপাকি সেরে নেওয়াই উচিত ছিল।

পাতীর পিতা কথাগালো শানে মরমে মরে গেলেন, তব্ও প্রতিবাদ করার উপায় নেই। তিনি এই দেশের অভাগা মেরেদের একজন পিতা। যা হোক, তয়ানক কিছু না ঘটলেও ঘটনাট যে মমান্সপানী আজকের দিনে আমরা সবাই অলতওঃ এট্নুক উপলাধ্য করতে পারবো আবার এ ঘটনাও বিরল নয় এই বাছিটিই হিনি কন্যর বিয়ে দিতে গিলেয় মান-অপ্রান কর কিছু মুখ বাংজ সরে কন্যাগায় থেকে মুলি পেকেল তিনিই আবার হয়তো নিজের ছেলের বিয়ে দিতে গিলেয় পালের ছিলের ছেলের বিয়ে দিতে গিলেয় পালের পিতা হিসেবে এ ঘটনার প্রনাবাতীত করবেন।

আমাদের বেশ্চ থাক্ষার জন্য স্থাস্যান আনত নেই। সেশবের আনেক কিছু দৃর করবার ক্ষমতা আমাদের ব্যক্তিগত প্রচেতটার হরতো সম্ভব নর। কিন্তু বাক্তিগত প্রচেতটার আমরা আনেক সমাজ সংস্কারকের কাজ করতে গারি। একট্, উদার মনোভাব নিরে পর-স্পারকে বিচার-বিবেচনা করতো আনেক কিছু, ভুল বোঝাব্ঝি, অনেক কিছু, অঘটনের হাত থেকে মুক্তি পেতে পারি। বিরের আনরে পণের নির্দিণ্ট টাকা, সোনা-দানা নিরে বিরোধ এখনও লেগেই আছে, সোনার দাম হতই বাজুক পারের শিতা হতে ক্ষেক্ষা বিক্ষাত হওৱা খুব সাধ্যারণ বটনা।

-অহাল চোধৰে

রূপসীর খাতা



চোথের সৌন্দর্য বৃদ্ধি করতে বা প্ৰিপাৰ্ণ কৰতে স্বচেয়ে বেশা সাহায্য করে ভর্ন। অনেক সময় সাসন্ধিজত একটি इ.स्पर्व मिक्क कार्य अस्त इस कि स्थन स्तरे-কিন্তা কি যেন বেশী আছে—তথন বেশ নভর করে দেখলে বোঝা যায়, তা ভর্। কার্ত ভুরুর নামমার রেখা দেখা যায়, ভাতে ঘণেট্ট চল না থাকায় কপালটো বড দেখায় আর চেহারায় ব্যক্তির ফটে উঠে না। সেই স্ব ক্ষেত্রে ভাল ভুর, আবার পেন্সিল দিয়ে কিশ্বা আসকারার তুলি দিয়ে ভরুর ওপর চালকা রেখা আঁকা উচিত। তবে মাসকারার বা পেন্সিলের রং বেছে নেওয়ার সময় যত নিতে হবে। সাধারণত কাপো রং নেওয়া উচিত। কিন্ত বিশেষ ক্ষেত্রে যেখানে চোখ কটা সেখানে দেখতে হবে কালো রংটা যেন কুচকুচে কালো না হয়, একটা ভাষাটে হয়। ঘাদের ভুর খাব মোটা ভাদের যদি কপাল ^{১৬৬।} হয় তাহলে ভুর্র অতিরিক্ত চুলগুলি উঠিতে দিতে হবে। প্রথমে ভুরু দুট্টির ওপর কালে। পেন্সিল দিয়ে গাঢ় করে এ'কে নিতে হবে যতোটা রাখলে ভাল হয় সেই মতন ভারপর সেই রেখার বাইরে চুলগালি দুর্ব চুল ভোলার স্ক্রা দিয়ে তুলে ফেলতে হবে। ভবে এটা সর্বদা মনে রাখা উচিত, নোটা ভূর, সর্ব করা ভাল, কিন্তু ঘন ভূরতে ^{ছাবার} পেনসিক দেওয়া ভাল দেখায় না। টুল তোলার সময় একটা ক্রিম লাগিয়ে নেওয়া ভাল। তবে প্রথম প্রথম একট লাগে, কিন্তু পরে কোন কণ্টই হয় না।

অনেকে ভুরুর যেখানে শেষ তারপর
পৈলিসল টেনে ভুরু লান্বা করে থাকেন।
সেটা থ্রই খারাপ দেখতে হয়। একটা কথা
প্রসাধনের সময় মনে রাখতে হবে সে,
প্রসাধনের মধ্যে একটা নাাচারাল লাক থাকা
নরকার। তাতে আনেক বেশী ভাল দেখায়
ব বাশ্বিলীশত মনে হয়। কিন্তু আমাদের
দেশে বেশীর ভাল মাইলা প্রসাধন কবার
নিয়ে এটা ভূজে খান, কিন্বা মনে করেন থে
প্রকটভাবে প্রসাধন সাম্প্রীর বাবহার দেখাতে
গারলৈ ভাল হয়। এসব ধারণ। ভীষণ ভূল।

যাদের জোড়া ভূর তারা নাকের ওপরের জোড়া অংশ এই একই নিয়মে তুলে দিতে পারেন। ভূর মেখানে শেয় ভারপর কোন বাড়তি রেখা ট্রান্স টিতিত নর। তবে খবে জোট হলে ভূর্বে শারে থেকেই রেখা টানতে ইবে এমন স্কা হাতে বার ফলে বাড়ুটিত রেখাটা বিশেষ নজরে না পড়ে। অনেক চেবারার ছোট ভূর বেশা মানার যেমন্ থাদের ছোট কপাল আর চোথ একট্ ভেতরের দিকে চোকা। ভূর্ব সংল্য চোথ ও কপাল-এর আকার কিশেষভাবে জড়িত। তাই ভূর্মাকার সময় বা ভূর্ তৈরী করার সময় সৌদকে বিশেষ নজর রাখতে হবে। খাদের কপাল চবড়া, বড়, তারা ভূর বেশা সর, করবেন না। ভাছাড়া ভূর্র দেষ ভাগ একট্ নিচের দিকে নামায়ে দেবেন। খাদের খ্যবভাট কপাল আর কপালের দ্পোল খাব করা তের বিদের ভূর যেশে আই আলোচনাট্রুই যথেণ্ট। তবে প্রয়োজন বোশে খারও আলোচনা করা যেতে প্রের।

এরপর নাক, কান, গাল, চিব্রক চেয়াল ইত্যাদির মাঝে আসা যাক। তবে এগ্রেলি আলাদাভাবে আলোচনা লা করে ম্থের শ্রেমাধনের সপো সপো করা হবে। আমি আগেও ব্রুছি, আবার বৃশছি, প্রসাধনের আগে কভকগর্নি বিষয়ে বিশেষ লক্ষা রাথতে হবে। যেমন—ব্যুস সময় কাল ও কি ধরনের উৎসবের জনা সাজ।

শতিকাল দিয়েই শ্রে করছি। ম্থের

কি ভাল রাথার জন্য কি করতে হবে তা
আগেই আলোচনা করেছি। তবে প্রসাধনের
আগে কি কি করা ভাল সে সম্বন্ধে আলোচনা
করবো প্রথমে। শত্তিকালে আমানের
চামড়ার টান ধরে আর তৈলাক ভাব নন্ট
হয়। সেইজন্য প্রসাধনের সময় ম্থের ওপর
তৈলাক ভাব আনা সবচেরে প্রথম কাল।

একেবারে দেশামতে, ক্ষালালেরর খোসা বেটে দ্ধের সর আর সামান্য **অলভতেলের** সপো বেশ করে ফেটিয়ে নিতে হবে। তার-পর সেটা মুখে মেথে বেখে মিনিট ১০-১২ পরে আপালের ভগা দিয়ে বসে ঘুসে

রক্ত ভাগুার শুন্য প্রায়

- ' শেবজনায় রক্ত দান করনে।
- আছায়ি-বন্ধা বোলার অন্ক্লে বঙ্জ দান কর্ম।
- নগদ ২০ টাকা গ্রহণ করে বন্ধ দান করতে পারেন।
- কমপক্ষে ১০ জন ব্যক্তি ইচ্ছকে হেলে

 ক্লাড ব্যাতেকর "মোলাইল" চিমাক

 আহান করে প্রতিষ্ঠানে বসে রছ

 দান কর্ন।

যোগাযোগ কর্ম ঃ

क्लोश बाए बाक

মেডিকেল কলেজ হাসপাতাল, কলিকাতা—১২

रकान : ०८-२०४२, ०८-५३३७

কেন্দ্ৰীয় রাভ ব্যাণ্ডেকর প্রভার বিভাগ কর্ত্ক প্রচারিভ Adv/26/74-75













ভূলে দিতে হবে। এতে মুখের থকে মরলা
ভ্রমতে পারে না ও মস্প হর। এইভাবে
রেজ সভালে করতে পারলে থ্রেই ভাল,
ভ্রমর সভালে করতে পারলে থ্রেই ভাল,
ভ্রমর সভারে তভাব হলে ২।১ দিন
ভ্রমর। এছাড়া কটা হলােদ বেটে মাথলেও
ভাল। এরপর একবার চাল্ডা ও একবার
গরম ভলে উল্টো-পার্টা করে ধুরে নিলে
থ্র উপকার হয়। আগেই বলেছি—সাবান
লা মাখাই সবচেয়ে ভাল। কেবল মার রাত্রে
ভালেত বাওয়ার আগে সাবান গ্রম জল দিয়ে
মাথ ধোনা বার।

এবার আসা যাফ ঠিক প্রসাধনের আগে কি করা উচিত। যদি কোন উৎসব থাকে ছাগে, বেশা আলোর মাঝে, তাহলে প্রসাধন- এর রং একট, চড়া গ্রেহ। মুখ প্রথমে তৃশো আর ভাল ক্রিনজিং মিকে দিয়ে মুছে ফেলকে ছবে। মুখে সব কিছু করার সময় মাকে প্রথমে করে হবে যে, মাঙ্গেল চলবে নিচ থেকে ভণরের দিকে। প্রথমে গলার নিচ থেকে চায়াল ও বাতনা প্রথাত উঠবে। ভারপর

নাকের পাশ থেকে আঙ্গুলের তগা গোল করে থ্রিবে গালের ওপর দিকে টানতে হবে। তারপর নাকের দ্পোশ থেকে ভূর্র কাছ প্রশান্ত দৃষ্টে দিক থেকে টানতে হবে। এইভাবে মথে পরিকার হবে। ঠিফ সেট-ভাবে ম্থের ওপর সব রক্ম প্রলেপ দিতে হবে।

প্রথমে হাতের তেলোতে চার্রাম্য জিম
একট্ নিম্নে কার সপে ফাউপ্ডেশান মেলাকে
মবে। তারপর সেইটা মাথের ওপর বেশ
করে সমানভাবে মিশারে দিতে হবে। গলা
কান ছাড় সব জারগার সমানভাবে মাথতে
হবে—যাতে রঙের সমতা থাকে। এরপর
লিশাস্টক ডান হাতের জ্মান্যাতে হবে। কিন্তু
এই লাল রং ওই একই পার্যাতে গালের
ওপর ছারিয়ে লাগাতে হবে। যাদের গাল
বেশা খোলা বা একট্ নিচের দিকে ঝোলা
তরিয়া লালারং খুব হাক্টা করে যথাসদ্ধর্ব কম

रमद्यन। काफ्रेरन्डभारान्त्र रमाछ वाषाद मगर বিশেষ ব্রুক্ষা রাখতে হবে। সাধারণত ভুল कहा इश्रास्य, श्रीरमंत तः महाज्ञा ना अकहे. চাপা তারা ন্যাচারাল রং ব্যবহার করেন। কিন্তু তা উচিত নয়। তাদের শেড একট. চড়। ইওয়া উচিত। থেমন সান টান, গোলেডন টান ইত্যাদি। ঘারা থবে ফসা বা রং থাদের ফর্লার দিকে তাদের ন্যাটারাল শেও বাবহার কার ভালো। গালের বং লাল না রেখে গোলাপী ব্যবহার করা উচিত। যাদের নাক ছোট তাদের নাকের দল্পাশে ওপরের দিকে লাল লিপস্টিকের টান দিয়ে আন্তে আন্তে মিলিয়ে দিতে হবে। তার ফলে নাক উ'চ দেখাবে। ক্রিমের বদলে বোরোলীন দিয়েও ফাউন্ডেশান লাগালে ভাল হয়। এরপর তুলো দিয়ে আন্তে আন্তে সারা মংখের ওপর থংপে দিলেই মংখের প্রসাধন শেষ হাবে। এর সংখ্যা টোখা । ও ভুরতে। হবেই। শীতকালে দিনের বেলা বের্লে মুখে ক্রিম মাখা চলবে না। আর লালে রংও ভাল লালে না। বাড়ীতে ফিরে ম্থ আগে বলে দেওয়া পন্ধতি অনুস্থার পরিকার করে ঠান্ডা জলে তুলো ভিভিয়ে মাথের ওপর : ার থাপে দিতে হবে। এতে চামডায় বা চার ছাপ পড়ে না।

গ্রীঞ্চালে স্থেগ্রেলা বেরোবার সময় ক্রথাগ্রিল বিষয় থেয়াল রায়া প্রয়োজন। ধরা থাব বেশী থামেন তারা সাজবার আগে বেশ কিছুক্ষর ঠানডাজনো তুলো দিয়ে মুখের ছপর থাপে হারুয়ায় বসে মুখ দারিকরে নেবেন, ভারপার প্রসাধন। বোরোলামা বাজিম নামমার বাবহার করা ছাল। আর সর শেষে পাউডারের পাফ-এর মাধা সামানা পাউডার দিয়ে থাপে থাপে আলাগাঙে মুখের ও গলার ওপর দিতে হবে। এইটি ক্রিলার বিলক্ষ দিয়ে মুখ প্রিকার করে তুলো লোশন-এ ভিজিম্ম মুখে মুখিম মুখিম বাখার গ্রীক্ষরালো গ্রীক্ষরালো বিশেষ উপকারী। তার-শর প্রাথমান শ্রুম করা ভাল।

গ্রীষ্মকালের দিনের বেলা মুথে গালে কিছু না মাথাই সবচেয়ে ভাল। শুয়ে মাও মুখ পরিক্ষার করে বেরোন যুক্তিয়ক। প্রসাধন সূব সময় সূব কালে চলে না। শুয়ে ভাই নয়। অনেক সময় প্রসাধনের মাতার ভূলে স্কুদর চেহাল্লাভ কুংসিত দেখায়। চড়া প্রসাধন একমাত শাতিকালেই চলে।

, --बब्रदर्शिनी

এই উপন্যাসের নায়িকা দ্বান্ধকে আপা নারা অনেকেই চেনেন হয়ত, সেই মোনালিস। মোনালিসা মুখের আদল, হারণ চোথে বনহারিণীর মত চাইনির সাথে মুক্তোর মত দাঁতে কাষ্ড্ দেওয়া হাসি: আপনার আমার আবও এনেকের বাকে উত্তেজনার আগ্নের শিহরণ স্থাগিয়েছে।

দৈনন্দিন চলার গবে হাঞ্চারো ২বপ্নার মাঝে এই উপন্যাসের নায়িকাকে চিনতে ভূল করবেন না।

রত্যাকে চেনেন কি? আর লেখক ওাপস্বাব্ অথপ্র তাপস দজ্দ-গ্রুতকে...? র্যাদ চিনতে না পারেন ভাগলে একটা অপেক্ষা কর্নে, সামনের মাসে প্রকাশিত গঞ্জে--

এক অবিশ্যার ণীয় উপনাস

ন্ত্ৰীৰ্জাণ্মজিকের

তিস্তার তটরেখায়

চাল নেই ডাল নেই নুন নেই তেল নেই চাকরী লেই রুজী নেই রেজাগার নেই নেই আর নেই এর রাজতে বাস্ত্রনাক সমস্যাবহুল জীবনে ভালবাসাট্কুও নেই। — জবে কি আছে? বাদি জানতে চল ডাংলে আজই পঞ্জন—

দ্রীক্ষাপরিভারের

विनौन यूनव्यम

(C,

Ы,

वागी क्षकाम ॥ व ३२५ करमा मों। मारकन, क्षमकाणा-५३



মাদ্রের গা এলিরে চুপ্রচাপ একটানা ই থাকতে পাঁলার ভালো লাগে না। কেমন কাঁচত হয়। নিঝ্নি দংপ্রেটা ভারী হয়ে গ্রেকতে থাকে বংকের মধ্যে, ফেন দন ই করে আনে। দর্মার বেডার চিক্রি-টা জানালা দিয়ে তেওান হাওয়া আফে না, ইনা দরজা হাট করে খোলা। মিঠে হাওয়া লা দরজা দিয়ে ত্রেক ঘরমার লুটোপ্রটি র, লালার শর্মার তব্য জন্তোর না। সে ব্রার পাশ বদ্লায়ে, তার সারা গা ঘ্যে জব করতে থাকে। ছট্ফাটিয়ে ওঠে সে।

থকপাশে মা অংখারে ঘ্রেছে। ছোটো ই দ্রটোর পাত্তা নেই-কান নতে দাটা য দিয়ে ওরা উধাও হয়েছে বহুক্ষেণ। বাসদের আমবাগানে গোছে হয়তো, দল-জিটিয়ে গাছতলায় হুটোপাটি করছে।

নিংসপা দুপেরে বড় মন্থর, দীর্ঘ মনে া ক্লান্ডি আন্দো। দীলা হাই তোলে। ই ফুছো থেকে জল নড়িয়ে খায়। তারপর ব মরে পড়ে। একা একা শান্তে থাকড়ে কৈত দীলা হাপিরে ওঠে। আসলে দ্বেপ্রেবেলা শোরার আড়েস নেই লালার। এ কেম সময়ে বাড়িতেই থাকে না ও। রোজই অনেক ভোরে বেরোডে হয় ৬বে। ফাস্ট টেন ধরে নশ দশটা ইন্দিট্শান পার হয়ে ও যায় আফ্রতালর বাজারে। ওখানে চাল নিয়ে বসে। সারাটা দিন চালের বেলাক কবে বে দ্বটো পরসা উপায় করে কলিল তাই দিয়ে কোনমতো ওদের সংসার কলে। দ্পেরে বাড়ি আসা হয় না লালার, আফ্রতার বাজারেই চা-পাউর্বাটি বা যা-ছোক্ কছে থেয়ে নেয়। এপেরারে বিকেন্সের বিজি বাটা সেরে সপ্রেয়ার পর বাড়ি ফেরে।

লীলা আজ যায়নি। বে:জকার মতই ভোর গ্রতে মা ঘুম ভাগিংমে দিয়োছল, কিন্দু লীলা বঠেনি। আবার পাশ ফিরে শুরেছিল। বলেছিল, আজ যাব মা, শরীরটা ভাল নয়।

বাদত হাত কপালে ঠেকিয়ে মা ঝল-ছিল, কই, গা তো ঠাণ্ডা।

मीला दल्ला क्यून्त्र नया, प्राथात्र कृष्टे। धन्त्रपा इष्टम् भ्रत्।

গতকলে সম্প্রের সমস্থ বিশ্বে আত্যকা যে কাপ্টটা করেছিল সেকথা মনে আসার সংপা সংপাই লীলার শরীরটা সম্পান্ন ভরে আড়াট হয়ে যাজিল। বাল কা মে হরেছিল বিশ্বে কে জানে, কিন্তু ও যে কোনো দিন এমন করতে পারে লীলার ধারণার ছিল মা। মালনাদি অর্থাণা অনেকদিন আগে এককার সাবিধান করে দিয়েছিল ওকে, পুরুষ মানুষ- এর সংশ্বে অত মিশতে যাস নে লীলা, বিশ্বদূহরে।

গীলা ইণিয়তটা বংশেছিল। কিন্তু গানে আপোন উড়িন দিয়েছিল। হেনে বংলছিল, বিশ্বো দে ক্লম ছেলে নয় মলিনাদ।

তিটি বৈশিক্ষে মলিনানি বংশছিল, এ বাৰু টেল বিশানে দেখেছি আছি, ভূই আৰু আমাকে প্ৰেৰ মানুৰ চেনাস দে লীকা। গোড়ার গোড়ার স্বাই আমন ভিজে বেড়ালের মন্ত থাকে।

—প্রের জাতটার ওপর তোমার **খ্**র রাগ, না প্রা**লনা**দি?

কাপো কোপো কুঞ্ছিত ছেহারা মলিনানির। ওর স্থামী ওকে নের না, বাপের
গাড়িতে ফেলে রেখেছে আরু কত ব্যবহ হয়ে
গেল। লীলার কথায় দপ করে জনপে
উঠেছিল মলিনাদি। বলেছিল, আমার তো
আছেই; তোরই বা রাগ থাকবে না কেন?
নিজের দিদির কথা ভূলে গোল এরই মধ্যে?

দিদির কথা মনে গড়ে বার লীলার।
সেও লীলার মতই ঢাল বেচতে বেত উল্টোডিল্মি বাজারে। তারপর একদিন টেনে থাটা
পড়প। লোকে বলে, কাটা পড়ে নয়—লীলার
দিদি মরেছে ইচ্ছে করেই। ওর না কি পেটে
বাচ্চা ছিল। কুমারী রেষে টেনের তলার পড়ে
নিজ্যেক পজ্জার দায় গেকে বাচিয়েছে।

লালার বারেস তখন তের। ভাই দ্রটো একেবারে ছেলেমান,য, স্তরাং রোজগারের ভারটা লীলার ওপরই এসে পডল। দিদির ভামো শোক ছিল দাঃগ ছিল, কিণ্ড পেটের ক্ষিদে এক ভাষ্ট্রকর সর্বনাশা বস্ত। রোগ 🍨 শোক দাঃথ কিছাই মানে না সে। সর তার ক্রাছে তচ্চ। ক্ষিদের জনলায় শোক মাথায় উঠল। প্রায় রাতারাতিই চালউলি বনে গেল শীলা। প্রথম প্রথম দিন কতক মা সংগ্র ছিল। পরে আর পারেনি। চাল বেলাকের ঞাজটা তো আর সহজ নয়। দৌড্ঝাপ, হলপামা হক্ষেতে খনেক। রাতিয়তো গতরের জোর চাই। কিন্তু মার শরীর বরা-বরই বেজাত। এত পরিপ্রম এত ধকল মার अञ्चल ता। अल्ल फिल्लरे आक्वारत काहिल ধয়ে পড়ল। তারপুর থেকে লীলা এক। একাই চাল মিয়ে আমতলির বাজারে যায়। থেতে হয়।



বিশার সংগ্রালীলার আলাপ ওই আল-তলি বাজাষেই। পাল বছরখানেক আগে। আচ্ছকাট আলাপটা প্রয়ে গিয়েছিল। সেদিন-টাতে প্রাক্তির হলা এসেছিল। প্রায়ই যেমন আসে তেমনি। এপটা বেলার দিকে। প্রতিশের কালো গাড়িটা এসে থামডেই इ.स्डाइ.फि अस्ड श्रम हाम-त्वहा शास्य-शतमान मत्या। त्व त्वीमत्क भावाम ब्रांट्स करत ध्योज। मनिमापि काशान विरोक लाव क জানে উধ্বপনালে ছাওতে ছাওতে লীলাও বাজারের ভিতরে একটা সর্মত গুলিছে एएक भएएकिन। जन्भभूत अस्मर्क विद्यारन्ज्य मक ७ वर्गाक्रम राज हुडार। माम्रास्त्र अथ वन्ध এটা যে কানাগাঁল আগে বোঝা যায়নি--र्थामध्क निष्टा भागितात कारी याति व আৰম্ভাজ। কী করবে ব্যোতে না পেরে দিশেহারার মতন সামনের দোকানটাতেই ए एक भएडिए मोना।

দর্মজর দোকান। অম্প্রজেসী জোয়ান একটি ছেলে সেলাই মৌশনের ওপর ঝ'কে ক' একটা সেলাই করছিল আপন্মনে। ছঠাংই একটি যুবতা মেরেকে ঝড়ের মতো ভার ঘরে টকে পড়াত দেখে চমকে উঠে-ছিল সে। অবাক গোখে খানিকটা সময় ল'লার দিকে ভাকিরে থেকেছিল। চেয়ে থাকতে থাকতেই ব্যাপান্তী ধরে মেরের রাখা চালোর ছোটোখাটো বস্ভাটা চোথে পড়তেই ব্যুক্তে আর কিছু যাদ্ধি থাকেনি ভার।

নিঃশব্দে মেশিন ছেড়ে উঠে পড়েছিল জোমান ছেলেটা। দরকার কাছে দাড়িয়ে উ'কি মেরে রাস্তার এদিক-ওদিক দেখেছিল বারকমেক। তারপর লগিলার কাছে এসে বলেছিল, মাঃ আর ভয় নেই, ফিরে গেছে প্রালিশ্টা।

লাগা তগনো কাপছে। থামছে দ্র-দরিয়ে। ছেলেটার কথা শোনার পর কাঁপা-হাতে আঁচলের কোন্দিয়ে হাখ মাছল সে তারপদ সারা থবটায় চোথ বোলাল।

ঘরের একপাশে সেকাই মেশিন, পিছনে বসার জন্যে উড় ট্লে। অন্য পাশে একটা ডক্তপোষ। তার ওপর বিছানা, একগারে গোটানো।

ত্ত্বপোষের দিকে আখনেল দেখিরে ছেলেটা বলেছিল বোসো না ওখানে। জিরিয়ে নাও একটা।

তক্তপোষের একধারে লগিল বঙ্গেছিল। তড়োসড়ো হয়ে। বসে বাববার ঠোটে জিওটা বোলাছিল সে। অনেকটা পথ দৌড়তে হয়েছে ভাকে। পিপাসায় ছাতি ছেটে যাছিল তার। অনেকটা সংক্রেডের সংগ্র শ্রকনো গলাল্ল লগিলা বলেছিল, জ্লপ আছে?

কল খাবে, দাঁড়াও দিক্তি, বলে ছেলেটা নিক্ষেই ঘরের এক কোণে রাখা কু'জো ধেকে কাঁচের গেলাসে জল গড়িয়ে লালার দিকে বাড়িয়ে ধরেছিল। বলেছিল, একট্ট্টা হলে বোধহয় ভাল হত। খাবে? সম্পুচিত গলায় লীলা ব্লেছিল, নান্ চায়ের দরকার নেই।

—আরে, অত ল'জা করছ কেন, এ সত্ত তো আমি নিজেও চা খাই এববার। তুম খাও এক কাপ, গ্রহম চা খেলে ফরের কেমন করকরে লাগে দেখো।

পারে চটি গলিবে ছেলেটা বোর গিরেছিল। দুহ হাতে ছোটো ছোটো দুর কাঁতের গেলাসে চা নিয়ে ফিবে এডাছ একট, বাদে। একটা গেলাস নিজে নি অনটা লীলাকে দিয়েছিল।

ছেলেছিল লীলা। গুর দরদ, ওর আদ্র কুরেছিল লীলা। গুর দরদ, ওর আদ্র কুরেছিল লীলা। গুর দরদ, ওর আদ্র কুরেছিল করিছে গিয়ে অনেক রক্ষ মান্দ সংস্পূর্ণে এসেছে লীলা। কুত লোক ওর গুপর দরদ দেখিয়ে মিশতে চেয়েছে র সংকা। কিন্দু তাদের আসল মতলব র ফেলতে দেরি হয়নি লীলার। ওর মনে র ফ্লি, এ ছেলেটা সে-রক্ম নয়। বর ছেলেটা জোয়ান অথচ এ্যুনো একটা স্কা কোনো মতলবের ছায়া দেখতে পেলা লালা।

চা থেতে খেতে ট্রকটাক কথানা চন্দতে শাগন। সন্কোচ কাটিয়ে আৰু আনতে লীলাও সহজ হয়ে উঠল। তল আলাপটা জন্মে উঠল এক সময়। ছেল নিজেৰ নাম বলেছিল। বিশা। বিশন কল্লার। স্বাই বিশ্ব বলে ভাকে। সংস্থ দ দা-বৌদির সংখ্য বনিবনা হয়নি। এই াকে। দোকানে শোষ্ট, এখানেই নিজে ওশ বেডে খায়। যোদন হাতি ঠেলতে ইচ্ছে ব ন। হোটেলে খেয়ে নেম। লীলান কা প্রাট্রে খণ্টিয়ে ভেন্তে নিয়েছিল বিশ লীলা কোথায় থাবে, ওর সংসারে কে আছে, ব ভাবে চলে ইভাদি। দিদির ক উঠে । কবিভাবে দিদির মতোটা 🤅 হল ৩ গিয়ে লীলার সোখ দ্রটো ১০ছ করে উঠেছিল। বিশ্ব তথন আর লীগ দিকে ভাকিয়ে থাকতে পার্কোন চোম দ নামিলে নিয়েছিল। সেই মহাতেই ^{তাত} লানা হয়ে গিয়েছিল, বিশ্বে ভিত্রা গ বদ্ভুটা একটা বেশি।

প্রথম আলাপের দিন থেকেই বিশ দোকানে চাল রাখার বলেদাবস্তটা প হয়ে গিয়েছিল। প্রস্তাবটা সংগ্র বিশা নিজেই। এতে ভানেক স^{িই} इएर्रोइल लीनात। अवता हाल বিক্রি হয় না প্রায়ই বেশ কিছটো আও থেকে যায়। সম্পোর পর বার্ডাত চালটা 🐡 পূর্ণা করে বিশরে দোকানে রেখে নি^{মুখ} আড়া হাত-পায়ে বাড়ি ফিরে যায় লী এভাবেই দিন গড়িয়ে যায়, একটার " একটা মাস কাটতে থাকে। বিশার 🐃 মেলামেশা বাড়ে, আন্তে আন্তে িশ জীবনের সংশ্র অনেকটা জড়িয়ে যায় ল^{াত} সাধারণ পরিচয়ের তেহিশিদ ছাড়িছে ^{বি} কমশ এগোতে থাকে। প্রথম আলাপের ^প দিন করেক মেতে না থেতেই বিশ্ব **पूरे का जलक मकान-** भकान आगित्र वी --छा अल्म ल्योंको स्तित्व अकरे, हा क्रा তো পারিস। আমিও ঘরে বসে চা-টা পাই;

কোনো কোনো দিন সকালে লালার আগতে দেরি হরে ধার। উট্রন লেট থাকে কিংবা লালা সমস্ত্রমতো একেবারে ভোরের গাড়িটা ধরতে পাকে না। এককয় হলে বিশ্বর এন পার্য পাত চাই থাইনি জানিস, হাপত্যেশ করে বলে আছি তোর জন্যে। কী বে অপ্তেস হরেছে ভূই আসার পার থেকে কোকানের চা ভারে মুখে বোচে না রে লালা কী চমংকার চা করিস না ভূই।

চ্ছাল্য করে লীপা বলেছে থাক আর গ্র গাইতে হবে না। ও সব ব্রিয়—থালি কাল কার্য়ে নেবার ফিক্রির।

শ্বেষ্ চা নয়, মাথে-মধ্যে লাগাকে দিয়ে রামাটাও করিয়ে নেম বিশ্ব। লাশবা হাই তুলে এক-একদিন বলে, ইস, কত বেলা হয়ে গ্রেছ—কথন রাধ্ব বলা বিদি লালা? তুই দিবি একট্ব ভাতে-ভাতটা চাড়িয়ে—আমি ভক্তকলে চানটা সেরে আসি।

পুরুষ মানুষ—শংধ ভাতে-ভাত দিরে পেটের ভাত থাবে ভাবতে লীলার থারাপ গলে। আনাজ-পত্তর যা থাকে, ভাই দিরেই চণুণ্ট একটা তরকারি বানিমে দেয় দে। েত বুলে তরকারীটা মুখে দিয়েই বিশ্ব লীলার রাম্লার তারিফ করে। প্রায়ই বলে যাঃ মুল: ২,৪৭। একটন একট্ন মাংস রেংধে খাওয়া মা রে লীলা।!

লীলাও বলে, এনো।

তারপর একদিন সত্যি স্তিই মাংস আনে বিশ্ব। বেশ অনেকটা মাংস। লীলা ফল, এত কি হবে?

— দ্বাদ খাব এট্কু না হলে হরে কি

— শুক্তনে মানে— আমি কিন্তু খাব না আগেই বলে দিছি।

—ভোর বস্ত তং লালা। বিশ্ব রেগে যায়, থমথমে এন ে থলে না থাস তো রাগতার ফোল দে কুকুরে থাক।

অগত্যা লীলাকেও সেদিন থেতে হয়।
বিশ্ব সংগ্র একই স্থায় । পরে থার বললে
বিশ্ব শোনে না, চান করে এসে চুপচাপ হাত
গ্রিয় বানে থাকে। গ্রুক্ত জীলা বাবার উচ্চা ভাতের থালায় হাত দেয় না।

বাংগ্রান কর নেকান চে দ্ খিল পান নিয়ে আসে বিশু। এক খিল লীলকে নিয়ে অন্যত, নিজের ম্বে দুবে চিবোতে চিবোতে বলে সিনেমায় যাবি দালা? চ না—খ্ব ভালো একটা বই এসেছে অঞ্চতা টকীকো।

লীলার লোভ হয়। কিংকু কী স্পের নিজেকে সামলে নেয় সে। বলে অন্য একদিন বিব আজ থাক। গাটো কেয়ন গ*্ৰ*াভেছ।

এভাবেই বিশার সংশা মিন্ট-মধ্র অবত-বংগ দিনগালৈ কাটাছল লালার। নিজেকে আব শাধ্ চালাউলি মনে হয় না তার। সেও দবংশ দেখতে স্বা করে। ভিন্ন এক জাবনের হবি প্রতিমার পিছনকার চালাচিত্রের মতই বর্ণমন্ন হলে ওঠে তার চোখের সামনে। যেন যোর লেগে বাল্ল লালার। তারণের হঠাং-ই কেমন একটা ছব্দপত্ন ঘটে পেল গ্রুক্তনা । সম্পেষ্টা নাগাদ বিশ্বে দোকানে ফিরে লালা। চালের বস্ভাটা সবে নামিয়েছে বিশ্ব বজল--তোর জন্যে একটা জিনিস করেছি নিবি?

লীলা কোত্হলী চোখে ওর দিকে ভাকাতে একটা আকাশী রভের ব্লাউজ বাঁজিয়ে গরে বিশ্ বলেছিল নে এটা গারে দে—দেখ ঠিক ঠিক হয়েছে কী না।

বলে বিশু দোকান থেকে ্বেরিছে গিয়ে-দ্বিল। দরজাটা ভেজিয়ে দিরেছিল বাইরে থেকে।

বিশ্ব ফিরে এসেছিল খেশ কিছুক্ষণ বাদে। ততুক্ষণে লীলা নতুন রাউজটা পরে ফেলেছে। ঘরে ঢুকে খিশ্ব কয়েক মৃত্তু অপলকে লীলাকে দেখেছিল তারপর বলেছিল—১৯৭বার লাগলে তোকে। আসলে কিজানিস, এই বঙটাতেই তোকে বেশি মানায়—ওসব গাল-ফল আর পারস না তেই।

—বিচ্ছিরি দেখায়: ভোর যা **পায়ের রং** ভাতে এই সব রঙের শাড়ি-রা<mark>উজেই ভোকে</mark> ভালো মানায়।

দীলা মূখ ভার করেছিল। থমথমে গুলায় বলেছিল, ব্রেছি—ভার মানে আমি কালো, কচিতে।

্রত্যান রাল করালে জুই কাঁবলতো লালা। বিশা এগিয়ে গিমে হটাং এপ করে লালার একথানা হাত চেপে ধরে বলেছিল তোকে আমি কত সম্পর দেখি তুই কাঁব্যিসানা।

লীলা শিউরে উঠল। কোন যেন হছে ভারা। কী এক দেশায় চোখ চালে আসহে, শ্বীর এরকম এলিয়ে আসহে কেন? আচমকা দিদিব কথা মনে এল। সম্বান্ধের দার্ব কী এইভাবেই হয়? দিনিরও কী এমিন হার্মাছল? লালা ভয় বেয়ে যায়। এক ঝটকাশ বিশাব হাত থেকে হাত্টা ছাড়িয়ে নেয় সে। ভারপর বিশাকে শ্রীভান্ধ করে দিয়ে হন হন করে বেরিয়ে বা দোকান থেকে।

কাছাকাছি কোথায় একটা চিল ডেকে উঠল আচমকা। তীক্ষা তীব্র গলায়। নীর্ব দুপারটাকে প্রবের করাত দিরে চিরে দিল ধেন। লীলার সংবিত ক্রিকা। পাশ ফিরে দেখল মা কথন উঠে গিরেছে। হরতো এটো বাসনের গাদা নিরে মাজতে বলেছে পুকর ঘটে।

বিশ্ কী করছে কে জানে। লীলা প্রকাল বারনি দেখে নিশ্চরই খুর মন ধারাপ ধরছে ওর। হয়তো খাওরা-বাওরা না করে কাল-কর্ম কেলে বাস আছে চুক্তাশ। গাঁলারই কী ভাল লাগছে কিছু? বিশ্ব সাংগ দেখা করার জন্য খানিক্ষণ করা-টখা বলার চেনা তার ভিতরটাও তো ছটাফা করছে সেই কখন থেকে। কিন্দু উপার কী? গাঁলাকে কাল বড় ভর পাইরে দিয়েছে বিশ্ব ওর কাছে গাঁরে দাঁড়াবার সাহস্টাই হারিয়ে ফেলেছে লালা। তার কেবলৈ মনে হয় বিশ্ব যদি আজও আবার...।

ভাবতে ভাবতে হঠাং-ই **একটা মন্তর্গব** মাধ্যয় আসে লীলার। মাদ্**রের বিছানা** ছেড়ে উঠে পড়ে ও। পরনের শাড়িটা অস্প-দবল্প ছে'ড়া। সেটা পান্টাবার জনো টিনেব ভোরণা খ্লে একখানা শোয়ানো **শাড়ি বের** করে আনে চটপট।

প্রকৃর থেকে ধ্রয়ে-আন: বাসনপত্র নিয়ে মা ঘরে লোকে। লীলাকে শাড়ি বের করতে দেখে বলে তুই কী বেরোচ্ছিস না কিরে লীলা? ভাঁজ খুলে শাড়িটা গরে ভড়াতে জড়াতে লীলা বলল, হণ্ট্য

--তৃই ফে বললি শরীর খারাপ...তারপর বিদ পথে-ঘাটে মাণা খারে পড়ে বাস ভৃষ্ট !

—না না শরীর এখন ঠিক আছে মা। আপন মনেই হাসল গীলা। তারশর বিশ্ব দেওয়া আকাশী রঙেব **রাউল**সীই পরল ও। বিশু খুশি হবে।

গোরাঙ্গপ্রসাদ বস্কুর ক্রাইম উপন্যাস গীতাকাপ্ররের আত্মহত্যা নীলিমা নিঃশেষ নিহত কী যাতনা বিষে প্রতিটি ৮০০০

বেদ্বইনের জনপ্রিয় গ্রন্থ

হ্যানয় থেকে সায়গ্ন

সিয়া একটি গোপনতক ১০.০০ সাদা মান্য কালো রস্ত ৯.০০

প্রাইমা পাবলিকেশন । ৮৯ মহাবাঃ গাঁখী রোড, কলিকাত ৭

আপ কি কসম



প্রেক্ষাগ্র

শ্রুখাত ধনী ব্যারিণ্টারের একমাত কন্যা স্নেডা।, আর গ্রহিবর ছেলে কমলা। কিন্তু সে উচ্চাভিলামা। ওর ইছা একাদিন আরো বিশ্বাক হরে দেশের ও দশের মুখোদ্দরেল করে। ওরা দ্রুলনেই একই কলেজের ছাত্রছাট্ট এবং দ্রুলন দ্রুলনেই ভালবাদে। ক্লিণ্ডু ধনা ও দরিপ্রের মধ্যে প্রভেদ দর্শুকর, স্কুলাং প্রেম বা প্রণায়ও খবে বেশা দিন টিকে থাকে না। বা হোক শেব পর্যায়ও স্নেটিভার বাবা এবং কমলের বাবা রাজা ছলেন বিরের ভেতর দিয়ে ও'দের ভালোবাসার স্থাকৃতি দিছে। বিরের প্রে বংশারের দ্যিত্ব দারি ওবার জনো কমলের প্রায়োজন একটা ভালক চাকুরার। ইজিনীয়ারিং-এর উ'চু ভিত্রা থাকার এবই বন্ধ্র মোহনের অক্লাকত পরিপ্রামে কমল একটা ব্রহু বাবসারিক সংস্থার চাকুরা পেল। কমল ও স্নেটিভা দ্যুলনেই এবার ওদের প্রেমা বাড়ী ছেড়ে দিয়ে, কোম্পানীর দেওয়া নতুন কোরাটারের এসে উঠল।

বন্ধ মোহন একই সংস্থায় উচ্চপদম্থ কর্মচনী হয়েও বিবাহিত জীবনে বার্থ। কমল ও সন্দীতার মতো সুখী,হতে পারে নি সে আধ্নিকা স্থীকে নিয়ে। মোহনেব অফিসের বাইরের জীবন অভিশণ্ড, কারণ অফিসের প্র তার স্থীকে সে

पत्र कमर्रे शन्ता मण्डवरः अतं की जिल्ला বন্দকে নিয়ে যহতত রেদ্ধান্স করতে বাস্ত। বাধা হরে **আফ্**সের পরে জোহন কমলের স্থা সুনীতার কাছে এসে ভার স্কাছ (भारक आकर्ष, राज्यह-मण्डा १९९७ हाम्-एव राज्यह वा समाचा क्रम ৰোনের কাছ থেকেই পাওরা উচিত ছিল। বাট ছোক এইছাতে ছাটির পরে, বা কোন দিন ছাটির আগেও, কমবোর বাজীতে व्यामारे अह काम रहान। काइन क्यानह मता शीरत शीरत स्वीत्त এল, যে মোহন মনে-প্রাণে নিশ্চরই স্নীতাকে ভালবাসে, ভাল সে কলেই মোহন ওদের বাড়ীতে বাডায়াত করে। স্থাচ মোলন সংনীতাকে শিক্ষের বোনের শতোই ওকে সেনহ করে কলেই ভার কাছ থেকে স্পেত্বা সমতা আশা করে। কিন্তু ক্সল ও স্নীভার দাশপতা কলহ স্নীতাকে বাধ্য করলো ভার বাবার কাছে স্কৃ ঘটনার কথা বলতে। উনিও কমলকে ডেকে সব ভূল বোঝাবারি মিটিরে ফেলতে বললেন। কিন্তু কমল স্নীতা ও মোছনকে ভুল ব্রেলো। ওর ধারণা হোল, মোহন স্থাীর স্বেক্টারিকা 🔹 অসহযোগিতার জনাই সনৌতার প্রতি আকৃষ্ট হয়ে-নির্মানত স্নীতার সংক্যে দেখা করবার জন্যেই ক্যালদের ৰাড়ীতে যাভায়াত করছে। স্ভেরাং ঈর্ষাই ক্মলকে ভুল পথে *জৈ*লে দিল। স্নৌতার পিতার অন্বয়েধ না মেনে ও স্নীতাকে ভিজেপ कराना। अथि कप्रम अक्नात (कर प्रथमा मा म जन्मीका 'মা' হতে চলেছে; **ভারাই সম্ভান তার গভে**। সানীভার শি**ল্**



তার ইচ্ছার বির্দ্ধে আবার তাঁকে বিবাছ করতে বাধা করলের

ক্রেক ওর্নানের সংগা। ধাঁরে থাঁরে মেছেনের কাছ থেকে স্ব

ক্রিক্টা জানবার পর, তার নিজের ভূল ব্যুত্ত পারলো কমল,

ক্রেক্ট ভখন অনেক দেরা হয়ে গেছে। কারণ স্নাতা তথন

আনার ঘরণা, আর তারই মেয়ে তথন এক বিবাহোপযোগী

তর্ণা। ফলে কমল শোকে দ্বেথ পাগলের মতো পথে পথে

থারে খেড়ায়। মাহনের কাছ থেকে খবর পেয়ে ছাটলো

স্নাতার কাছে। কারণ আছ তার মেয়ের বিয়ে। আর শভে

দিনেই খটলো অঘটন—হঠাৎ বিবাহবাসরে লাগলো আগনে।

বিশ্বেসা আগন থেকে নিজের আজ্ঞাণকে বাঁচাতে গিয়ে

কমল আগনে প্রেড় মারা গেল। সকলেই হায় হায় করলো।

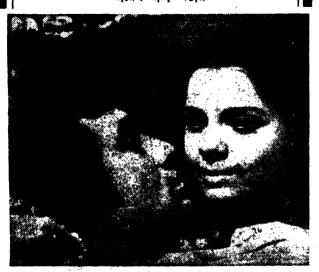
কিণ্ডু এইভাবেই বোল হয় কমল তার নিজের জাঁবন দিয়ে

স্বাবিরেণ মিটিয়ে গেল।

কমলের ভূমিকায় রাজেশ থালা তাঁর অভিন্য জাননের জনকার করেছেন বললে অভাঙি হবে না। সনোতার ভূমিকায় মামতাজ এবং মোহনের ভূমিকায় সলাবিক্ষার জালো অভিনয় করেছেন। মোহনের স্থার ভূমিকায় সলালতা চাটাজ্লী, স্নোতার ও কমলের পিতার ভূমিকায় যথাজনা ও কৈ হাংগল ও রেহমানের অভিনয় প্রশংসনীয় এবং দানা পাঠক রুবি স্বোচনা, রণজিং ও আস্বানী চিত্রনাটোর দাবী ছিটিয়েছেন।

কাহিনীর অতি বাস্তবতা ও নাটকীয়তাকে বাদ দিলে, প্রযোজক জে ওমপ্রকাশ প্রথম চিত্র পরিচালক হিসাবে প্রয়োগ-নৈপণা প্রদর্শনে বার্থা হুননি। সংগীত পরিচালনায় জার তি কর্মশুও পরিবেশান্যায়ী সংগীত রচনা করেছেন, 'আপ কী কসম' ও জিন্দেগী কী সফর গজের যাতে হৈ' অচিরেই জ্যেকের মুখে মুখে ফিরবে। আলোবচিত্র গ্রহণে ভি বাবাসাহেব এবং লিম্প নির্দেশনার সুধেদ্যে রায়-এর কাজ প্রশংসনীয়।

ৰাজেশ খাগা নমতাজ



দেবছক বিশ্বাস



জলসা

রবীন্দ্র সদলে এবারের সেরা শিল্পী দেবতত বিশ্বাস

রবীন্দ্রসদন আয়েনিকে প্রায় এক মাসব্যাপী রবীন্দ্র-জয়ণতা ওৎস্বের মধ্যে চারটি
দিন নিদিন্ট ছিলো গ্রীন্দ্রস্পানিতর জনা।
অক্ষণীয় কোনে লক্ষ্যি বাদ থানার।
তবে নবীন ি সীদের নিগাচনে আরও
বিচন্দ্রবার প্রয়োজন ছিলো। রলো গুতুঠাক্রতার মন দীশিত্রমান তর্ব শিশপার নাম
এদের মনে পড়োন্ এটা একটা আশ্বর্য
ঘটনাই বলব-এবং এমন অনেকেই গ্রেম্থছেন যাঁরা এ আস্বরে গাইবার উপ্যাঞ্জ কিনা
সে বিষয়ে সন্দেহের অবকাশ ছিলো। আর
একটি কথা। আবিকংশই মহিলাশিশপীদ্রের্যিন্দ্রপীরা কি স্প্রীত্চচা ছেড়ে
দিলেন

এবার চার্দ্রিন্থাপী সংগীতে।ংসবের অবিসংবাদিত নায়ক হলেন শ্রীদেবরত বিশ্বাপ। সম্প্রতিকালে শ্রীবিশ্বাসের গান নিয়ে বিত্তক ও বিরোধী মনোভাবাপর কিছ্ শ্রোতার সমালোচনার উত্তর এলো শিশপীর গানে, গানে। শিশপাস্কার শ্ধে নয়, দপর্শ-কাতর শিশপীচিত্তর অভিমানের ছোঁয়ার মধ্রেও। প্রথম গানিটি ছিলো কেন ভোমরা আমায় ডাক। প্রবল কণ্ঠকে মান্মধ্যর ভারেগাসিক প্রশ্নে হোতা ও শিশপীর মধ্যে মন দেক্যা নেওয়া চলল। ঘুরে ফিরে বার বার ক্রানে একটি বিশেষ চরণে লখন शाबाबरमा प्राथमा हारि, धत हार्डि'-मात्रा अकारा इ अक्टी कार्यन्त्रमा सीत्र हात्र स्थल श्चम्य कर्वाक्टमा ।

জিতেরি গান হিংসার উপাত্ত পাধ্বী-भवाव महन्त्रा महन्त्र एक् स्थानास्त्रम বরার ক্রেন ক্রেন ক্রেন তার স্বর স্বর भिक्तिका गीनका गिरु व स्वत्मदात वित्राहरू প্রতিবাদ জানাশেন। এর পরই তিনি গান শেষ করতে চেয়েছিলেন। কিন্ত নীতে থেকে ওপর অর্থা প্রতিটি প্রোতার ভ্রাণ অনারোধের ধর্নিতে শিল্পীকে আবার আসন গ্রহণ করতে হোলো। নতুন করে আনভ্র ক্রলাম সকল শ্রেণীর শ্রেডা তাদের ১৯৯৫ বিশ্বাসকে কতথানি ভালবাসেন্ত শিল্পীর হাদয়েও বাঝি লোগেছিলো এ অন্ভবের দোলা। তাঁর অভিমান-কঠিন চিত্ত যেন চোখের জলের ধারায় নিকলিত ছোলো যুখন তিনি গাইলেন কৃমি যে আমারে চাও আমি তঃ জানি'—তারপর একে একে থ্রে রাতে মোর দারারগালি' ভাগার বেলা যে **যা**য এর নানা ভাবের পর্যায় ভাতিক্রম করে নথন থামলেন খাবা বিথান্থেলায় গান এনেছিলো' তথন 'সাংখ্য বেলায় ছালা' উদাসী বিষয়তার গৈতিক আলোর রং লাগে **राम्याक्त हिटल्ल** ।

দেবতুত বিশ্বাসের নির্বন্তিত পানের ভাৰসংহতি এবং বিরাম্বিহীন গতিতে এক প্রমায় থেকে তাপর প্রায়ে **হ**ারার অন্সরণীয় ডগ্টি আমীর খাঁ সাহেদের পরিবেশনা শৈলাকৈ মনে করিয়ে দুন্য। দ্বল'ত ওদভাদ বিনা যতিতে একট সেল্টি-মেণ্টের বিভিন্ন প্যায়ে ধীরে চলতেম-ভার বিভিন্ন রূপ, গতি ও প্রকাশ-ভণিগুব ওপর আলোকপাত করতে করতে।

হেমণ্ড মাথেপাধায় তাঁর নিজ্পর উদ্ভ মানেই সংগারবে অধিভিত্ত ছিলেন। অশ্বেক্তর বনেদাপাধ্যায়ের আত্মবিভার গভীরতা ধ্রণিত হোলো গ্রাথায় ভূমি আমি কোথায় —মায়ার খেলার সেই স্বিখাত গান 'হোওনা ফিরোঃ আর সবংশেখে কৌতুক বন্যায় সালা সভা +লাহিত করে তিনি গাইলেন 'দ্বগে' তোমায় নিয়ে যাগে উড়িয়ে' চিরক্ষার সভার সেই সরস গানটি -যে গান অশোক্ৰাব্ই জনপ্ৰিয় করেছেন।

স্ট্রিনয় রায় তাঁর শাশ্ভ ঋূপেনী মেজাজের গানে যেন প্রজার পরিবেশ রচনা

প্রসাদ সেনের 'এই ত ভালো লেগে-ছিলো—ভালো লেগেছে।

দিবজেন মুখোপাধায়, **সাগর** সেন ভারবিন্দ বিশ্বাস, শৈলেন দাস স্ব স্ব মানে প্রতিপ্রিত।

ভব**্**পত্র শিক্ষণীলোকীয় এবারের সেরা শিল্পী হলেন আখা সেন। কণ্ঠমাণ্ট্যনি অন্ভ্রনিবিভ্তা এই দুয়ের সম্মেলনে তার গানকে আকর্ষণীয় করে ত্লোছলো। গোড়ম মিন্ত আন্তে আন্তে নিজের জায়ুগা করে নিচ্ছেন।

গ্রপদ গ্রুপ্তের এবারের গান আরৌ भाविमास्ति । विश्वीन् देवन्यस्थानस्थानस्थानस्थानस्य क्ष्माधानः विश्वनात् विश्वनिकानः नव सम्बन्धनि

नावः वःविकित्तवः क्ष्रकाः । अद्या जामः की अ तरि द्यातः अविकालनाः अञ्चलकाः ফটো : অনুত



'ছদি জানতেম আমার কিসের ব্যথা'—কাল লেগেছিলো স্বরের শালিত্য ও পরিচ্চার পরিবেশনার কারণে।

মহিলা শিল্পীদের মধ্যে নীলিয়া কন. কমলা বসা, নীতা সেন, মায়া সেন তাদের খাতিতে অম্লান। বিশেষ উল্লেখযোগ্য মায়া সেনের খত বিসময় লাগে।

তর্ণ শিল্পীদের মধ্যে স্ট্মিরা সেন, খাতু গৃত্ঠাকুকতা ও বনানী গোষ প্রোতাদের মাধ করেছেন। সামিতার সংখ্যারমান্ত স্বধ্য গতি (কেন্ট দিল জীবনে মমা) খড়ের 🗓 🖫 ক্তের আবেল ঢালা পরিবেশনা পদন ফ্রালো: বনানীর কন্তেই কলিকার অলংকার-গ্রন্তিত ধ্রনি তার নিজের আবেলের রং এ রঞ্জিত হয়ে বেলেছে পনি ঐ ক্রি বাশী সাজে।

বালী ঠাকরের ককে সমুচিতার প্রভাব তবি পায়কীকৈ সম্প্র করেছে প্রলার সাধী লো বিদায় শ্বার খোলো পানটি সেই পরিচয়ই বহন করে।

গাঁতা ঘটক তাঁর সচল উজাত করা ভাল্যতে গানের বছনাকে প্রাঞ্জল করেছেন। ভ: হিপ্রলেমা স্বভালে গেয়েছেন মেই পানটি যে গান অধিকাংশ সময় বিনাথেলে খাতে হয় পুৰ বসিলে সম।

প্রবী ম্যোপাধ্যায়, প্রতিমা ম্থেন পাধার সভুদের গানেই মুক্সিয়ানা ছিলো। প্ৰণ দাস, সামিতা লায়, স্বশ্ন হোসাল অদিতি সেনগাড়ে, কুফা গাড়েঠাকরতা ভালট গৈয়েছেন।

म्यादी र्यापनाम नाराम अन्यक्तिन

বিশিষ্ট সেভারী মণিলাল নাগ দক্ষিণ

য়ালিক অধিবেশনে ডিলক্কাথেদ রাণা আলাপ ভোড় ভ কালা সাজিয়ে কোনান! পরে তিনি দেশ রাজে গং বাজান ভিনতালে। আমিন্তা ভটাচার্য জার সংগ্রে তবলায় স্বলান্ত করেন। এই দুটি রালেই শ্রীনাগ তীর আশো। প্রতিভার পরিচয় দেন। শেষে তিনি **কিনো**য়ানী রাগাঁট বাজিয়ে ছোডাদের প্রভত আনন্দ भाग करत्रन।

একটি বিশেষ সর খিল্পীদের রবীন্দ্র সপনের সংবাধ ত করা হয় ববীণ্ড-7000E সংগাঁতের জন**িপ্রা**হা 3.100CE 21144 অন্ত্ৰীকাৰ**ি এ'র**। ভাগকা জোটভবিন্দু মিন, স্পেতাৰ সেনগাুণত, আসিয়া ঠাকার কানন দেবী। পান প্রেছে শোনান প্রথম তিনজন। এ'দের মধ্যে সভেতাশ্বাব্য গাওয়া 'দিনাৰত বেলায়' এবং আনিয়া ঠাতবের ভার **কেন-এক বিশ্বেছ** পরিবেশ স্থিত করে। স্কলকে চমকে দিয়ে আসরে এলেন জারু-ধারী দেবী। এ'র পরিবেশিত তিনখানি গানের মধ্যে পথে থেতে থেতে 등(취) 등(취) (전략) [

দিবতীয়াৰে অনেক নবীন নবীনাদেব भाग रमाना रभागा। प्रीतन्त्र प्राप्ता देशसभाका গান গায়েছেন ক্ষা মিল, উল্লেখিনী সেন সমুবিদ ঠাবার, স্রাঞ্জিৎ রস্ম।

এই আসংবই সঞ্চলকে অহাক কৰে দিয়ে সোভিয়েট শিক্ষী ভিভিয়ন মোরো: জোভা নিজুলি স্থে এবং প্রয় নিহ'ল উচ্চারণে স্বান্ধর করে জেল্লেছেন কেনিন भाष्ट्रांस महिमा तहर । क्षांत्रः साविश्वादस्य कृष्टिष ७६ कशकी घट्टबालाबारहर ।

-- क्रिक्टिया





আরতি ভট্টাচার্য



মানব না মানে নিন্চয়ই মানি। একে আপুনি সংস্কার বা কুসংস্কার যাই বলন। আমার কাছে ঈশ্বর একটা অদুশা শক্তির মত। অসহায়ের একমায় সংয়য়।

একটা ঘটনা বলৈ। একবার প্রীর
মালবে ক স্থেক জ ল আমেরিকান
বৈক্বকে কিছুতেই পাশ্চারা চুক্তে
দিল না। তাদের কপালে তিলক, প্রথ গের্য্রা পোষাক। আমি নিজে পেখালে জন্ম উপাস্থত। এই সব দেখে মনে হয় আমাদের ধর্মে বেরোবার পথ আছে কিন্তু চোকা বড় শঙ্ক।

ঃ ফাশন বলতে আপুনি কি বোঝেন? ফাশনের আধ্বনিক জোয়ারে আপুনিও কি পা জীস্য়ে দেওয়ার পক্ষপাতী?

— স্থাপন মানে মংগের সংগ্য মানিরে চলা। শ্রেমার (পোষাক-আশানে নর, মনেও। পোষাকের কাগানের কথা মদি বজেন তাহলে বলব বেল বটস্

পর্গেই আধানিক হওয়া যায় সাডী ব্যাক ভেতেও, তা আম মনে করি না। শাড়ীকেও ফ্যাশনেবল করে তোলা যায়। আর ভাসিয়ে দেওয়ার কথা যে বললেন না আমি নিজেকে কখনই কোনো কিছ,র সংখ্যা হারিয়ে থেতে ৰিতে বাজা নই। তবে আমি জো অভিনেত্রী শো বগুপারটা দশকিয়া খ্ব কাউন্ট করে। তাই আধ্বনিক ফাাশনের পোষাক আমি নিশ্চয়ই পরি, পরবভা কিন্তু এট/ মনে রাখবেন "মডান প্রেমাক" পোষাক' বলে আমরা আপ্নারা যতই টে চাই না কেন ঘুরে-ফিয়ে লেম প্যক্তি শাড়ীতে এসেই আটকে যেতে হয় স্বাইকে।

ঃ দুরে কোথাও যেতে হলে কোনটা পছন্দ করেন বেশী—ট্রেন অথবা পেলন?

- ছবির কাজে যখন যেতে হয়, তখন
সময় বাঁচাবার তাাগদ খাকে, দেক্তের
কোনে যাওয়া ছ,ড়া উপায় থাকে
না। কিক্টু যখন বাড়ীর আখাীয়স্বজনদের নিয়ে কোথাও যাই তখন
টেন ছাড়া ভারতেই পারি না।
দেশটাকে ঘারে ঘারে আর কতট্কু
দেশটে পার। টেনে গেলে দ্ পারের
খোলাখেলা পর্জ দেখে মনটা তব্ব
কিছ্টা হাক্কা হয়। প্রকৃতিকে দেখাঃ
ভাগ একটা মনত সংখ্যা।

ঃ স্থা স্বাধীনতায় কি আপনার আপতি আছে?

— বাধীনতা যদি বেচছাচারিতা বা উল্লেখ্যন না হয়ে ওঠে তাহলে স্মী



হবাধীনতার পক্ষপাতী আমি।
মেরেরা শিক্ষা-দক্ষির এখন এগিরেছে
মনেক। প্রেফদের সংশ্য পালা দিরে
চলেছে সব কাজে। আমার করেকজন
মধ্যে তো এখন ইজিনারারিং পড়তে
ম্দরপ্রে। মেরেদের আর চার
দেরালের মধ্যে ক্ষ্মী রাখা যাছে না
ধাবে না।

: আপুনি কি তাহলে স্মী-শাসিত সম্ভান্ত বাবদ্ধা কায়েম হোক—এটাই চান?

- ে ভবিষাতে কি অপুপনি প্রেপুর্বি সংস্থি**প্র** গ্রিণী হতে চান?
 - সেটা কোন মেয়ে না চাষ বলনে?

 ছীবনের পরিপ্রতা তো সংসারে।
 মেয়েদের তো বটেই। তবে এই
 মুহুতে ভবিষাং সম্প্রে থ্য একটা
 কিছু ভাবছি না। অভিনয় বরছি।
 শিংপী হবার হবন আছে মনে। আগে
 চেণ্টা করে দেখি সেই শ্বন বাণ্ডব
 হয় কিনা! ভারপর সংসার-টংসার।
- : শাড়ী না গয়না—আপান কোনটা বেশী ভালবাসেন?
 - এক কথায় শাড়ী। গয়না আমার কোনদিনই ভাল লাগে না। এই দেখন না—আমি কোনো গয়নাই পরে নেই। কোথাও গেলেও পরি না। মা বঙ বকেন আমাকে এজন। আর শাড়ী পেলে কথা নেই (একট, নিরামার সরে) রিসেন্টাল শাড়ীর ধা দাম বড়েছে বাখ্বা। শাড়ীর সথও যাবে বর্থেছে
- ে মেয়েদের ধ্মপান সম্পর্কে আপনার কি মত? ইউরোপের সকলেই তো এ ব্যাপারে অভাশ্ত।
 - ব্যক্তিগতভাবে আমি ধ্মপানের খোর বিরোধী। সিগারেটের ধেরিয় আমি একদম সহা কুরতে পারি না। তাছাড়া ধ্মপান এবং ফ্রিন্ড করে। দুটো কা ই কিন্তু অভিনয়ের ক্ষতি করে। ভ্রেস মোটা হরে থার, দাঁও ঠোঁট কালো হরে যায়। বলান না সেগালো কি ভ্রালা? আমার মতে মেরেদের কোনো। নেশা না থাকাই সব থেকে ভালো।
- িস এয় ডি এ সুদ্পকে সাধারণ সোকের অভিৰোগোর তো শেষ নেই। অনুপনি কি বজন?

— আমিও সবার সংশা একমত। সি
এম ডি এব কাজে নিপ্টার বড়
অভাব। বর্ষা খা এসে গেল এবার
সবাই টের পাবে। আর আমি যেখানে
আছি, সেখানে ভা (ফুলবাগান)
দ্গেতির মেয় নেই। একট্ জল হলেই
মনে হয় এক নিজন খ্বাপে বসে
আছি যেন

ঃ অভিনয় ক্ষমতা কি জন্মগত প্রতিভা না ডেখা করেও দক্ষ অভিনেতা হওয়া ব্যায়:

- শ্রতিভা বাপারটাই তো জক্ষপ্রত।
 আন্দীলনের মাধামে তাকে রাপ দিতে
 হয়। আমার বিশ্বাস প্রত্যেক্ষ
 মান্যের অনচেতনে একটা শিলপী মন
 আছেই। সেটাকে শ্রেরণের জনা
 চেণ্টার দরকার। শ্রেশ্লাই চেণ্টা দিরে
 শিলপী হওয়া যায় না। আমি
 অভিনয় করি, কেউ আকৈন কেউ
 লেখেন। সবার মধেই সেই শিলপী
 মনটা কাজ করছে।
- ঃ আপনার অভিনেতী হ্বার পেছনে কার দান স্বচাইতে বেশী বলে আপুনি মনে করেন?
 - থাতিনেটী কি আমি হয়েছি এখনও :
 নিজে এখনও ব্ঝুতে পার্গছি না।
 আ্গে অভিনেটী হিসাবে প্রতিঠা
 পাই তারপর ভাবব কার দান
 কতিব্রু?
- : প্রচন্ড দর্মথ বা ম্যুনসিক আ্ঘাত পেলে আপনি কি করেন?
 - দেশে মনটাকে হাত্রা করি। কেপে কেপে মনটাকে হাত্রা করে নিই। তারপর একা কিছুক্ষণ চুপচাপ খন বংধ করে বসে থাকি। কথনও বা রেডিওটা আন্তে করে চালিরে দিই। সে সময় যদি কেউ সাল্বনা দিতে আসে ভ্যানক রাগ হয়। কারও কাছ থেকে

সমবেদনা পেতে আমি চাই না। নিজেই নিজের মধ্যে সাক্ষনা খণুজে নিই।

- ঃ সম্প্রতি বাংলাদেশের একথানা ছবিতে তো কাল করে এলেন, সেখানকার ছবি সম্প্রেক আপনার অভিয়ত কি?
 - —ছবি আমি বেলা দেখতে পারি নি।
 কাল নিয়েই তে। সব সমন্ত বাস্ত থেকেছি। ওখনকার ছবির মান খ্বে-একটা ভালো নয়। ভবে আনক ভালো কিছু করার চেল্টা করছেন গানেলাম।
- ং বিশেষ ধরনের কোনো চরিতের প্রতি আপনার দ্বিকতা আছে ?
 - —শিলপী হিসাবে সব ধরনের চরিত্র
 কর্য—এমন ইচ্ছে তো আছেই তবুও
 একট্ বেশ জাতিল—সিরিয়াস চরিত
 হলে খ্উব ভালো লাগে। যেমন
 লাগছে তপন সিংহের রাজা ছবির
 রমসাদি চরিতটা। খ্ব ভালো চরিত।
 আপাতং দ্ভিতিত চরিতটা কেমন-একট্
 মনে হতে পারে কিন্তু চরিতটার
 একটা বেশনাপায়ক অতীত লাছে।
 মাই ছোক, গলপটা বঙ্গাছ নাব
 দেখবেন ব্যহাদি কেমন হয় ২
- : কোন লোকের উপকার করেছেন—আবার তার কাছ থেকেই আঘাত পেরেছেন এজন কোন ঘটনা ঘটেছে আপনার জীবনে?
 - ল্হা-হা বহুবার ঘটেছে। এই ফিল্ম লাইনেই ঘটেছে একাধিকবার। কেই বিপাদে পড়ে আমার কাছে শালতেই আমি না করতে পারি নি। নিছেও অস্বিধে সক্তেও এলিছে পারিছেই তাদের কাছে। কিন্তু পারিহেই তার প্রস্কাব প্রেটিছ একবাকে বিপারীছ বাবহারে। কি শার ভার বলনে। চুপচাপ সহা করেই গেছি। বার করবই বা কি।





ংশা ছবির অসন সংপার সংগার ছিট সাফলোর পর আপনার অভিনয়ে যেমন চাহিদা হওয়া উচিত ছিল সেটা হয় নি কেন?

—এ ব্যাপারটা আমিও মাঝে মাঝে ভাবি-কেন এমন হলো? তবে দা ছবির পর আমার কাছে অফার আ?-নি এটা বলবোনা। আনুষ্ঠ সেগাৰে আক্সেপ্ট করি নি বা করতে পারি। সেই সৰ ছবির ভবিষয়তের কথা ভেবে তার ওপর ইন্ডান্টিতে অনেক সমুহ य मारता वाहि वा लाकी किल রাজনীতি চলে তার মধ্যে নিজে মামি জড়াতে চাই না—এ ঘটনাটা কাজ করেছে। প্রোডিউসারদের সংগ তেমনভাবে হয়তো কো-অপারে করতে পারি না সে কারণেও হয়তে কেউ আভিয়েড করতে পারেন। আগি ঠিক কারণটা বলতে পারব না। তথ রিসেন্টলি বেশ কিছ ছবি করছি, এটা আমার কাছে খুব আনলদ সংবাদ।

শ্রেটবেলা — স্কুসজীবন কেটেছ
আমার জ্মসেদপ্রের। মখন ডাপ্রারীতে
প্রতি হবার কথা হোসা তখন জাম
সেদপ্রের ভালা মেডিক্যালা কলের
নেই। নে একটা হরেছে একট্ দ্বের
সেটা ববার কো-এডুকেশন শ্রে
বা বার রাজী হলেন না। আটিস
ি তাই প্রতি হয়ে পেলার
কলেনে। এখন এই ফিল্ম লাইনের
আনশ্চরতার মধ্যে দাড়িয়ে মাঝে মাঝে
মনে হয়. ডাপ্রার হলেই ব্রাঝি ভালা
হতো। নিজেকে এপ্টাব্লিস করার
একটা অধিবার থাকত। এখনে ভে
সব সময় অনোর ভরসায় থাকতে হয়।

ে সৌন্দর্যাই সম্পদ, বি.শ্রম্ব করে অভিনেত্রী দের। সেই সৌন্দর্য রক্ষার জন্য আপান কি করেন :

— নিয়মিত যোগ বাারাম করি মাাসাজও বরাই নিয়মিত। খাওয়া দাওয়ার ব্যাপারেও রেসট্রিকটেড। মাঝে মাঝে বিউচি পারলারেও যাই।

ঃ ছবি দেওখন নিশ্চয়ই। কোন্ ছবি বেশী দেখেন :

—ইংরেক্ষী ও বাংগ,। হিন্দী খাব কম। ভাগদা ছবি শ্নলে তবেই দেখতে যাই।

MEN CAMPATO

ফিলম লাইনে প্রচুর সাধার গণপ আছে।

এর একটো গ্রুপ আমার অস্ক্রে বিদ্যারণ হবার কথা নয়। একবার আমরা তীরের প্রজাপতি নামে একটা ছবিও माणिश कराज किस् मिन माहेशान ভিলান। ছবিটি পরিচালনা কর্ছিদেন নিম'ডা বিখ্যাত তথাচিত্র শাহিতপ্রসাদ চৌধাৰী : নার ব রাশভাবী মান হ ! দীর্ঘাদন বিলেতে কাটিয়েছেন। তথানে इत्तर्काष्ट्रिकाल डेक्सिमीशांबर 9(18) एमरण फिर्द फिल्म তৈরী করছেন। গাইতোক আমরা উঠোছদাম ডি ভি সির हेरमात्रकामान वाहरतायः। यामा वावम्थाः।

শানিং হচ্চে হচেছ হঠাৎ শানিতবাব, একদিল আহায় ডেকে বললেন—এবার যে একটি মাধা চাই!

আমি ভাবলাম উনি ঠাটা করছেন। হেসে বলজাম—পেয়ে ধাবেন। কবে চাই?

—কাল, পরশু।

ব্যাপারটা মজার। তৎক্ষণাৎ প্রোডাক-শন ম্যানেজার মহাদেব সেনকে ডেকে বললাম—একে একটি গাধা চাই।

ৰ ভাৰল-ঠাট্টা। মুচকি হেনে বদলে-মান্তর একটা। তা কথন চাই?

—কাল সকালো। শ্রেটিং-এ লাগবে। ডিরেকটারের অভার।

—আ।...পুরুষ্টু ?

-ठारैश

—বেশ পাবে।

সেদির আর বেশণী কথা হলো না।

সিন দরেক পর শাসিতবাব, আবার ভেকে
পাঠালেন।

—শেরেছো ?

—ক্ৰী ?

-शाक्षा ?!? -शाक्षा ?!?

তারপর এসব ক্ষেত্রে বা হয়. কেন্দ্র গদা সাফ করে আয়তা আয়তা--ইরে অর্থাৎ-পুটা বাস্তবিক ছবিশত লাগছে তাহকো

শান্তিবাব, অবাক। —লাগতে মানে নিশ্চর লাগতে। তুমি ঠাটা ভাবলে নাকি?

এরপর ম্থোম্থি দাঁড়িয়ে থাকার কোনো অথ হর না। আমি ধাঁ। আরে: রামচন্দ্র। কেলেওকারী আর কাকে বলো। এক হুটো মহাদেব সেন—এই যে মাফটবে, সেই গাধার ব্যাপারটা সেদিন বলেছিলাম হার কি হলো?

তথনও ওর ধারণা এটা ঠাটা একগাল হৈলে আনার কিছু বাকা দেবার উলেগগ করতেই—আরুর মা মা, বাাপারটা সিরিয়াস। গাধা লাগবেই। শান্তিবাব তো জোর করদেন এখন একটা বাবশ্যা করো।

—সাতা সাতা গাধা লাগছে।

—হ্যা ভাই।

মহাদেবের মাথার হাত। গুর সদেশহ এ তল্লাটে গাধা বোধহর নেই। থাকলে নিশ্চর একটা দটেো চোদে পঞ্জ। মহাদেব একটা বাকুব ভণগী করে বললে— দেখাছ খাজে—

রাতে বললে, অসম্ভব গোটা মাইখন চয়েছি, এখানে গাধার পা' নৈই । ও বাণা আমি পারব না। ভূমি শানিত-বাবাকে বালা দাওগে।

'একটা গাধা খ'লে বের করতে সারলে না' ফিক ফিক হাসির ভোজে চড়ানো এই কথাটা দোনার জনো কার ইছে আর শাহিতবাবকে গিয়ে 'ওটা মশায় পাওয়া গেল না' বলে।

আমাদের হৃত্যুদ্ত ভণ্গী দেখে ভান্পদ্মার জানতে চাইলেন, কী ব্যাপার, তোমাদের প্রবলেমটা কী? মহাদের ফুল করে বললে—গাধা। ভিরেকটারের রিকুই-ভিশান শটে গাধা দেখাবেন অধ্য

আন্পর্কনার আ্নার জন্দিতকৈ ডেকে বল্লেন একদন চেপে যা। আমার বা বলেছিস বলেছিস, আর কেউ শ্নাস তো্দের লাইফ ডেলা করে ছাড়বে। গাধা একটা খোঁকার ফিনিস ছলো। এটা

তখন বাওয়া হলো মাইথনের এক স্বজাশতা ভদুলোকের কাছে। তাঁকে এটা সেটা নানা বাক্য দিতে দিতে সুহোপ বহুৰ জিলোস কৰা হ'লা হ'ল ফার, একটা গাধার সংধান দিতে পারেন ৷

এক লহুমা চুপচাপ। ত্রেপর হঠাৎ
ভদ্রলোক উঠে দীভিরে আইস্রাম প্রান্ত্র
বললেন, মশায় ব্যস্টা আপনালের চাইতে
আমার কিণ্ডিং বেশী-ই। আর আমার
বৈঠকখানার বলে আমার সংশ্ব এয়ার্কি—
এটা এটা বাড়াবাড়ি মনে হচ্ছে। আপনারা
একানি কেটে পড়ন—

—মানে ব্যাপার্টা

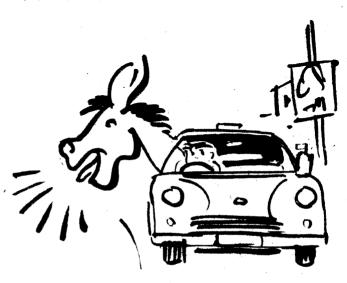
—নো নো নো কিছা শোনাগুনি নেই... কি আসপন্দা আমার কাছে গাধা খাজতে এয়েচে গেট আউট গোট আউট—

রাশতার পড়ে মহাদের আমাকে দ্ব'-দ্বার হত্যা করার বার্থ চেন্টা করল। তোমার জন্মে এট জনশ্রা—

অরপর রাশ্তার লোক মনে টাই করা হলো। তালা সন্ধিন্ধ দুন্দিটে আনানের নেখে-টেখে সরে পজন। কিছু বলসাই না। বটগারের তলার এক সাধু বলে নানা কেরামতি করছিলেন তাক প্রথম কভতে তিনি বললেন, আধানে পারে লা লাশ্, আমি সব ধনব রাধি। ত্লেমন বরং আনানানোলে যাও। বাজারের প্রেছনে ধ্যোগালের একটা বলিত আছে,

ভি ভি সির একটি ভান আমরা সারাজনের জন্য ভাড়া নির্মেছলায়। জাইভারটি স্থানীয় লোক। নায় ইরাকুর নাকভালিট ধরনের লোক। কাউট আসাম-সেল। অনেক খাজে পেতে শেকে ধালাদের আনতানাটা পাওয়া গেলা। তথন নাক বসে হয়েছে। নবে সামেন নুকটি নাক বসে হয়েছে। ব্যবহ সামানে নুকটি নাক বসে হয়েছে। ব্যবহ সামানে নুকটি নাক বসে হয়েছে। ব্যবহ সামানে নুকটি নাক বসে হয়েছে। অভ্যাতনাক ক্রেটি আইজা?

— তৈামার নাম ধলা রজক?



< -र' वाहेखाः

—তোমার গাধা আছে? —গাধা: হ' আইকা।

-लेंग व्याभारम्भ ठाडे।

বলতেই ধলা রক্তকে চাধ কপালে।

কলতেই ধলা রক্তকে চাধ কপালে।

ক্রিয়ে বলা হলো, গখে। বাদ্যোক্রেয়ে বলা হলো, গখে। বাদ্যাক্রেয়াল নামবে আহা কি কপাল বাদ্যার

ক্রেয়াল নামবে আফালার করলে—ও পারক্রেয়াল বাব্যালা বড় টেটিয়া, হুণ হুণ ক্রাই বাব্যালা বড় টেটিয়া, হুণ হুণ ক্রাই বাব্যালা বড় টেটিয়া, হুণ হুণ ক্রাই বাব্যালার করেক, মনে
ক্রিক্তের ক্লেটা ২০ পার্বেক নাই—

त्म माश्चिष व्याधारमञ्जू व्याधाना वर्षाकरम वननाम जरब मानलाम तम क वीका किहा रमहे मर्थ्या आमता रेपचः त्थाताकी ताला भग्ना भारत श्रमा त्रक्षक मात्रामा किन्दा করব। ডতকংগ সেখানে একটা ছেটিখাটো किक करम त्यारकः अवाद कार्य म द्र ক্ষেত্ৰল। গাধা সিন্মোয় নারাবে--- এ 5 me কম্পনারও অতীত। ভারপর প্রাণ্ডবেশ আছে। কেউ কেই टक्कन गाधारण करम कार्डका. আমা-নিয়ে দেশকেই দেন কেনে নামায়ে। তাই নিজেদের মধ্যে একচোট বিভাজ। আমর। यक्षाम, ना भाषाण ठाई।

শৈলে ধলা রিজাক আকটা প্রাথন ভূগল -ভাস্তাকে করে চাই আইজ্ঞা?

— কাল ভোরবেলায়। সামানা একটা কাল: দংপার নাগাদ আমরা ওকে বিদায় করে দেব।

ধলা রক্তক বললে যে তার গাধণি বড় হাতজ্ঞাড়া। লোয়ানেক পথ বড়জোর হাটবে তার বেশী নয়। অতএব আমরা বললাম ঠিক আছে, আমরা ভাগেন চাপিয়ে ওকে লোকেশানে নিয়ে যাজি যেনন তেমনি লোকে দেবার বাবস্থাও হবে। দুখোনা হল উলাসত। তেমি বলো রজক শ্র উলাসত। তেমি করে দেখিছে গিয়ে বালা রজক শ্র উলাসত। তেমি করে দেখিছে গিয়ে বাদাটাকে ধরে কললে—লিয়ে যান এজ্ঞা।

আমরা পাধা নিয়ে চলেছি আর পাড়া ভেলে লোক চলেছে আমাদের পেছন

মিনাভা বৃংহঃ ও শনি হ ও। বৃধি হ তটা ও ও ॥টা সংক্ষাক ভারংগ্যের আন্ত ও আগামী কালের জলকত মিজাসা।

প্রজাপতি

কালী ব্যানাজ্ঞী নিৰ্মালকুমার স্থেম দাৰ প্রেলাংশ, বস্ শৈলেন ঘ্যালী অঞ্জ ব্যানালী শিল্পা দিন স্মিতা সানালে সোমা নীলিমা স্পেতা চৌশাৰী এবং

্দিলীপ রায় ও বাসবী নদশী আলো: ডাপ্স সেন নটেক লেমর মাধ্যেতী বান: স্বীন দাশগ্ৰেছ মণ্ড: স্রেদ দও লাভ: মিসা মার্মিশা

निः भागाः सरस्यः शुल्कः

পেছন। স্বাই মজা পেরেছে এই ঘটনার। ভাান ডাইভার ইয়াকুবকে খ'ুকে পাওরা গেল না। জোতি বায় বললেন, সে হবে-খন। আলো গাড়িতে যাল লোড করো।

সে এক কাড। গাধা গাড়িতে আর উঠতে চারা না। গলার দড়ি বেংধে হেইরো হেইরো টানাটানি কিল্কু বাটা নড়েচছে না। বাজারের মুখোমুখি এই কাণ্ড দেখে লোকের কি প্রচন্ড ভিড়া নানা মানুষের বিভিন্ন মন্ডবা শুনেতে শুনুতে মহাদেব সেন তো কেপে লালা। এমন সময় ইরাকুর এসে হাজির। পরিচিত লোকের লগেগ দেখা করতে গিয়েছিল। সেখান থেকে পান চিবুতে চিবুতে এসে এই কাণ্ড দেখে তার চঙ্গু দিখার। হাউমান্ত করে ভিড় ঠেলে সে এসে বললে—এভি করছেন, একি করছেন?

মহাদেব তথনও ক্ষিত দ্বেখতেই তো প্ৰেছা। নাও, একট ঠেকে ভোলো ব্যাটাকে।

নু পালের ঠেলার গাধা ততকলে ভার
কণ্ঠ দিতে শ্রু করেছে। হ° হ° করে কি
বিকট আওরাক তার। সবার কান ঝালা
পালা হবার দাখিল। ইয়াকুব হাতজোড়
করে বললে—বাবু আখার সভানাশ হরে
যাবে।

—কেন কেন? তোমার আবার বি হলো:

ইয়াকুৰ বলগে—িক সম্বোনাশা কাণ্ড বরছেন আপনার। নুক্তে পারছেন না সারে। আমার চাকরী চলে যাাবে। এই ভানে গাধা যদি সন্তয়ারী হয় তো আমার লাইসেল বাভিল হবে। কেও র্থতে পারবে ন্।

জ্যোতি রায় বলকেন—জাঃ তুমি
একনম কথা বলো না। বলে দুখানা দুখা
টাকার নোট তার হাতে গাঁজে দিলেন।
বাস, সব ঠাভা। উলেট ইয়াকুব গিয়ে গাধাটাকে ভটাভট কষে দটো লাগি—এঃ
বাটা সেন রাজার ছেলে কোনে
গাভিতে তলতে হবে। চলা—

দ্যানীয় লোকেরা গাধাটাকে সংগণ্ট অপনান করল। একচোট মুখিট্যোগও দেওয়া হলো। ভারপর ধলা রজক এসে ক সব থ্রিক করল বাণ্টা স্ভে স্ভে করে গাভিতে উঠে স্টান শ্রে পড়ল স্পাটকরে। নামবা বাভদাপুরে গিয়ে পেশিছালাম মাইথনে।

দেই গাধা নিয়ে জামরা পারো একটা দিন শাধিং করেছিলাম। এখন ভেড়ার গৈনে হারেছে কি ওর আওরালে রেকতে করা হর নি। কলকাতাম কিলে ছবির প্রোক্তেকশান দেখে। শাহিন্তবাধা নাজাল- স্প ঠিক আছে, কিন্তু গাধাটার সাজাল কোথায়? সাটের মধ্যে যে চেচিয়েছে, সূব বোলা যাচ্ছে-

অত্তর আগার সাধার ভাক রেকডিং। মহাদের সেন শ্নেই চ্কেনী ছেড়ে দিয়ে হাওরা দিল। আমি প্রধান সহকারী। আমার সরে পড়ার রাষ্ট্র। দিন দুরেক কলকাতার বিভিন্ন রঞ্জক পাড়ার পেটোল পর্যুচ্চরে থবে ছোরায়রি হল কিল্কু গাধা শার পাওয়া গেল না। ধাপা অন্ধলের রেক্তরা বলক্ষে, এই মাণিশ-গাড়ার বাজারে কে আর গাধা লথে। তাই আদরা ঠেলায় করে মোট বরে যাছিছ।

অগত্যা ডাকা হলো কিছু হরবোপাক। স্টুডিওতে একদিন সবাইকে ডেকে

মাইকোফোনের সামানে লাইন করে বাত

করিয়ে দিয়ে বলা হল একে একে ডেকে

যান ভাই। একটা মনিটার করতেই

রেকডিপ্ট প্রায় উম্মান। কিল্ডু সে-ডাক

শানিতবাব্র প্রকণ হলো না। আয়বা

ছবিতে দেম প্রবিশ্ত গাধার ডাক না দিয়েই

রি-রেকডিপ্ট করে দিলাম।

কিছু দিন আগে আবদায়া মজিনা ছবিতে কিছু, গাধার প্রয়োজন পড়েছিল। এই বৃত্তা আর ভাড়ার পাওয়া বার না। অতএব দীনেন গ্রুত দুর-দ্রান্তের এক বাজার থেকে না কোখেকে প্রটি গাধা কিনে এনেছিলেন। ওরা স্ট্রভিওতেই থাকত। ছবির কাজ শেষ হবার পর দীনেন গাশ্ভ শিহার করলোন—বেচে দিলে <u>ভাষে।</u> কিন্তু ক্রেতা? কেউ আর গাধা কিনতে চার না। দঃ একজন রজককে পণিয়ে-পাটিয়ে আনা হয়েছিল। তারা এমন দর দিল যে দীনেন গ**ৃপত হেসে অ**দিথর। হাজার **টাকা**র মাল মাত্র বিশ টাকায় বিক্রি! কাটো ভাই, সোজা কেটে পড়। তারপর দীনেন গ্রুণ্ডের অর্জার ওদের ম**ৃত্তি দিয়ে দাও। আ**র্শাদদন ঘরের খেয়েছে এবার চরে খাক। ওলের বাঁধন কেটে দেওয়া হল। কিন্তু কিছুতেই স্টাভিও ছেভে যেতে চায় না। দঃপারে খাবার সময় হলে হ'হ' করে বিকট চেচায়। শ্রটিং-এ বিষ্ণ হয়। রেকডিস্ট ভদ্রশোক থান 🐔 ছণুড়ে মারেন রাগের চোটে। তব্যুভ ্ চায় না। এত বেহায়া। প্রমাদ গাবে ন গ্ৰুত শেষ প্র্য কর গাধা দুটিে একজন শাৰ্ডশিন্ট কেন্তাবে বিনাম্লো গছিয়ে দিয়ে হাঁফ ত তে

'বিলাত ফেরং' ছবিতে একটি <u>গাধার</u> দরকার পড়ায় গাধা কেনা হয়েছিল। এক-দিন রাতে বালিগঙো শাুটিং। সেখানে গাধার প্রয়োজন পড়ল। প্রোডাকশন ম্যানেজারের ग्य माकिसा इस. कि करत स्मारकभारन निरम् वाद्य ? एवशी इटल दकरमञ्जातीः পরিচালক ভাড়াতাড়ি নিয়ে যেতে অভার দিয়েছেন। বেচারা। করলো কি একটা আম্বাসেডার গাড়ি ভাড়া করে তার ছাই-ভাকে ডবল টাকা কবলে করে গাধাকে ঠেলে তুলল গাড়িতে। তাতে তার কি বিকট চীংকার। ছবি শেষ হবার পর গাধাটিকে নিয়ে বেধেছিল একই সমসা। পরে একজন অনিচ্ছুক রজকের কাঁথে চাপিয়ে তবে সকলের রেছাই। খাটা পাড়ার एशारकत घाम भारते। कर्नाष्ट्रम वर्ष साउ অভিযোগ উঠছিল।

--রজন মজ্মদার

স্টুড়িপ্রাদ

বৈদ্যতিক গোলযোগের জনা সেদিন. রাজা তার মো-সায়েবদের নিয়ে ফ্রোরের মারে গাছের ছায়ায় বসেছিলেন। কথোপ-কথনে বাসত ছিলেন। কদিন ইল গ্রহটা এত চেলে **পড়েছে, রাজার গরদের** পাঞ্জাবি নুমাশ ভিজে হাচেছ, মন্থের মেক-আপ উঠে গালে কলে তিনি উশথ,শ করছিলেন: কিন্তু উপায় ছিল না। যদিও ফ্লোরের মধ্যে দেখন বিয়ে ব্যক্তিতে হ্যাজাক জনসছে। ্যাঞ্জাক জনালিকে তো আর শন্টিং করা যায় না। শাটিং হচ্ছে না বলে বিয়ে বন্ধ। বিয়ে অবুলা আগেই বৃশ্ধ হবার উপক্রম হরেছিল, যাদ না ঘটনাস্থলে সময়মত রাজা এসে উপদিথত হতেন। গ্রামাবালার বিয়ে হবে না, পাত্রপক্ষ পাওনাগন্ডা ব্রুঝে পাননি এই অজুহাতে—খবরটা শোনামার দয়ালা, রাজা তাঁর মোসায়েবদের নিয়ে ছাটে এসেছেন। বিয়ে হবে না মানে, আলবাৎ হবে। পাওনা-গভা ব্ৰিয়ে দিতে যাবেন ঠিক এমন সময় আলো গেল। চিত্রনাটো সুম্পূর্ণ ব্যাপারটা ম্থান পেলে পারীপক্ষের কপাল প্রভত। এখন শ্রড়ছে প্রয়োজকের। চার-পাঁচ ঘণ্টা অতি-বাহিত তব, ভার দেখা নেই।

এখন আর এসব ঘটনার বিশেষ প্রতিরিয়া হয় না। হাসি হাসি মৃথে বেশ মেনে নিরেছেন সবাই। বলা বাহুলা মেনে নিতে বারা হয়েছেন। কেননা তাবড় তাবড় লোক-জনদের জানুরোধেও বিশেষ কাজ হচ্ছে না। অণ্চ প্রতিদিন কত লোকের ভাগা জড়িয়ে যাছে। পট্ডিওর খেটেখাওরা মান্ষগলো গরমে ঘেমে নেয়ে একশা হয়ে খ্ক খ্ক করে কাশে আর বলে 'এভাবে কতদিন চলবে কে জানে।' এ'দের আপনারা চেনেন না। শিলপ্রিল্ব সেছিন থাকাই এ'দের কাজ। আলোর আলোর, অক্ষারা, প্রাণিকতে।

হঠাৎ সকলে যেন হাতে পেরে গেলেন আকাশের চাঁদ। অত্যত ক্লিপ্রগতিতে কাজ শরে হরে গোল। বন বন করে এরার সার্ক্রান্টর ঘরেতে লাগল। করেক মিনিটের মধ্যে ভার উঠল বিয়ে বাড়ি। গ্রামের বিয়ে বাড়ি ফেন হর। ছেলেমেরে মিলিয়ে জনাপণ্ডাশেক একখা। পাল পক্লের প্রধান মিল প্রীমানী গালী পক্লের সীতেশ চক্রবত্তী, পাল জনৈক, গালী কল্যালী মড়জল—যে যার পজ্লিশনে কারে পাড়ালেন। জনাতিবিলদেব রাজা কোজ শৃতি জ্লোনের মধ্যে প্রবেশ করলেন উত্তম্ভার। তাঁর স্পাজল করেকল মানায়েব—তর্গক্ষার প্রভৃতি।

ছবির নাম সাম্যাসী রাজা'। জনালিতকে
শ্নেছি ভাওরালের রাজার কেস হিল্টে নিরে
এ ছবির গলপ তৈরী করা হয়েছে। চিত্রনাট্যকারে রূপ দিয়েছেন পরিচালক পীয্ব
বিস্। শ্রীকস্ম বৃত্তাানে টালিগজের অন্যতম
শ্রীকালকে ক্ষি হুখনি ছবি জ্যেন্তে দুংখনি



्यर्रेप फिर्म प्रतिभव थ्राष्ट्रिं

TO THE SECOND

৪৫ আর-পি**-এম** এক্সটেন্ডেড় **গে রেকর্ড**

7EPE 3056

তঃ অজনি মুখোপাধায়ে
দোলা লাগিল দখিনার বনে
আজো মধুর বাঁশরী বাজে
সাপুড়িয়ারে
ওরে ডেকে দে

7EPE 3056
কাজী সবাসাচী (আহুজি)
বাতায়ন পাশে
ভবাক তরুর সারি;
শিলী সমরণে

SEDE. 3076
গীতল্রী সন্ধ্যা মুখোপাধ্যার
প্রিয় এমন রাত যেন
কত আর এ মন্দির দার
মোর প্রথম মনের মুকুল
কেন দিলে এ কাঁটা

SEDE 3087

মীরা দাশগুর পিউ পিউ বলে পাপিয়া রেশমী চুড়ির সিঞ্জনীতে শংকরলাল মুখোপাধ্যায় সঙ্গ্রা মালতী যবে ঝরা ফুল দ'লে কে অতিথি

SEDE 3094 সুমিছা রায় কে তুমি দূরের সাথী আজি এ স্লাবণ নিশি

অধীর বাগচী আগের মত আমের ডালে হাদয় কেন চাহে হাদয়ে SEDE 3098
পূরবী দত্ত
হলের বন্যা হরিশী অরুণা
আজে৷ ফোটেনি মম কুর্জে
নীতিশ দত্ত
বনে চলে বনমালী
এলো ওই বনাতে পাগল বস্ত্র

সুপার সেডেন স্টিরিও রেকর্ড

S/7LPE 104
অনুপ ঘোষাল
মেঘে মেঘে অজ
ছাড়ো ছাড়ো আঁচল বঁধু
আমার ঘরের মলিন দীপালোকে
মান আলোকে ফুটলি কেন
তোমারই আঁখির মত
মাধবী লতার আজি

S/7LPE 105
মানবেন্দ্র মুখোপাধ্যায়
এসে। প্রিয়া আরো কাছে
বনহরিণীরে তব বাঁকা আঁখির
সাধ জাগে মনে
ক্রদীপ নিভায়ে দাও
বঁধু তোমার আমার এই যে বিরহ
হল ফুটিয়ে গেলে ওধু

7LPE 106
ইন্ মেমেরিরাম্:
গীটারে নজকল গীতির সুর
কাজী জনিক্ষ
পথ হারা পাখী
জানি জানি প্রিয়
শুক্নো পাতার নুপুর পায়ে
অরুপ কান্ডি
মোর ঘুমঘোরে
হায় পলাশী



দি প্রামোফোন কোম্পানী অব ইণ্ডিয়া লিমিটেড (ইলেক্টনিক, বেকর্ড ও চনরপ্রনে আন্তর্জাতিক ক্ষেত্রে অর্থনী দি এবং আই. কোম্পানীসমূহের অঞ্চল)

C 8008R

ফাটোঃ আমাত



ছবি বেডি ফর রিলিজ। ফ্রারে এই ছবি
এবং বাধবশা। বিলেজ করবে বিকলে
ভাকের ফুলা এবং 'সবাসাচী'। চলতি
সভাকেই 'সমাসী রাজা'র স্মৃতিং শরে,
হরেছে উবা ফিলেসের শুডাকভলো। প্রয়োদেরী।
জন্মানা চরিতের শিংপী: রবীন বলেনাপাশায়, রসরাজ চরবভাী, ভর্ব মির,
কশাশী অধিকারী এবং এককালের নামকর।
স্ক্রিক্টা প্রবাদী।

শরংসন্দের ছেলেবেলা নিয়ে একটি প্রেশাক্স কাহিনী চিতের নিলাণ স্রে **হ'লেভে। ছ**বির নাম রাখা হয়েছে 'ছেলে-বেলায় শরংচন্দ্র । গত মাসে একপ্রস্থ লাটিং হারছে রালপারেহাটের অন্তিদ্ধে কুর্ম প্রামে। নয়দিন ধরে বহিদ্পি। গুরুণ করে। গর। শবংগদের ছেলেবেরা রাপায়িত করছে মাষ্টার আর্থদান। অন্যান্য চরিতার খিলপ্রী.... সম্পানাশী, ভারতী দেবী, ভোছন দহিত্সায় कारमण भरणाश्राष्ट्राष्ट्राक्षा त्रांत जिल्ला अवर মাণকা মিত্র। এক সাক্ষাংকারে এ ছবির প্রি**চালক** শাড়ীন সেন্গ**ু**ত কিছু।রিভ লালেন। জানা গেল, কাহিনী রচয়িতা, চাৰণিক ফোন। চিত্তনাটোকার ফিলাপৈ বভেদা-শ কার। তালোক চিত্রশিল্পীঃ শৈক্ষা চট্টো**পাধ্যায়।** সংগতি পরিচালক : অভিজ্ঞিৎ বন্দোপাধার। গান রেকড করা হয়ে গিরেছ, কণ্ঠদান করেছেন হেমন্ড মুখে৷ পাধার, হৈমণতী শরেল এবং মনোজ রায়। পরবতী প্রায়ের শ্রিং টেকনিসিরাস্স **क्ष्मिक्ट क्रमार्ट प्रांत्मत प्राकामान्ति त्मरक**!

বিশেষ সংবাদ : পশ্চিমবর্গণ সরকার,
গট্ডিও সাংপাই কো-অপারেটিভ (নিউ
থিয়েটাস দ্ ন্দর্বা)এর কর্তাইভার গ্রহণ
করকোন গছ তেসরা জ্বা। অনুষ্ঠানে
পোরোহিত্য করেন সন্বায়য়্মকী ডঃ জয়নাল
অবেদিন। সরকার পক্ষে উপাস্থিত ছিলেন
নিখিল ভারত হ্ব কংগ্রেসের সভাপতি,
সংসদ্ সদস্য প্রিয়রজন দৃশেশ্বস্মী, তথা ও

জনসংযোগ বিভাগের রাণ্ট্রাণ্টী স্ব্রেত মুখোপাধার এবং আরে আনেকে। এ ছাড়া ছবির জগতের খাছিক ঘটক, আনিল চট্টো-পাধার, ভান্ব বংদ্যাপাধ্যার, আসত চৌধ্রী সমিত ভল চিশার রায় স্বৃত্ত সেন-শ্রমা বিষল দে প্রম্থ উপ্থিত ছিলেন।

সরকারের এই স্নৃত্ পদক্ষেপকে উপ-স্থিত সকলেই স্থাগত জানান

– দট্ৰাডিও সংবাদদাতা



শতনর্ফোর সম্ব্রণীয়

মুখীয়া জেলার চোবেড়িয়া গ্রামে বাংলা ে সালের চৈত্র ছাসে, ইংরেজী ১৮৩০ ানে জন্মগ্রহণ করেন নাটাকার দীনকথ পিতার নাম ছিল কালাচাদ fare: 1 गायत श्रामाना स्था करद मीनवन्त्र লাহার ক্রেয়ার সকলে ভার্ত হন। এখান ্র চনদ কলেকে অধ্যয়ন করেন। েলো থেকেই মেধাবী ছার ছিলেন। দ কলেজে ব্ভি পেয়েই ন। বচনা শক্তিতেও বাল্য ক্রম থেকেট বন্ধার প্রতিভার উদেম্ব পরিদক্ষিত হয়। দ কলেজের শিক্ষা অসমাণত রেখেই ্ত্র ১৮৫৫ পাল্টাবের দ্বীনকথা ভারত ালের ভাক বিভাগে চাকরী গ্রহণ করেন। ম পাটনায় পো**ল্ট-মাল্টারের পদে বহাল** : এখানে ছয় **মাসের মধ্যেই দক্ষ**ভার ১য় দেন এবং পদোলতি হয়। উতিবা গ্রের পরিদর্শকের পদলাভ করেন। ষা থেকে বাংলাদেশে বদলী জনা য়া ঢাকা কুম্মনগর মাগ্রো-অবিভ্রু ার বিভিন্ন স্থানে-- পাজিলিং আসাল ার উডিসা ও উক্তর পশ্চিম অঞ্চলের স্বতি দীনকেণ্ড কমজিতীবনে পরিভয়ণ ছেন। কুফুনগুৱে অনেক দিন অভিবাহিত ম এবং এথানে বসবাসের জন্য একখানি ি করা করেন। কয়েকজন মিলে একটা যুক্তরও প্রতিষ্ঠা করেন।

১৮৬১ খাণ্টান্দে কুঞ্চনগর পরিতারের কলকাতায় সমুণরনিউমররি ইনস্পেন্টিং টামান্টার পদে বতে হন। পোষ্টার কেনারেলকে সাহায়্য করাই ছিল এই উর দায়িছে। ১৮৭১ খাণ্টান্দে লাভাই বা ডাকের বন্দোরক এবং করের মাস শ্রারা কলকাতায় ফিরে আন্সেন। বিশ্ব যিত্র রাম্বাহাদ্র উপাধিতে ভবিত

বিংকমচন্দ্র মন্তব্য করেছেন ঃ মাধ্যাকা।
তে চারিজন রহসাপটা লেখকের নাম
যাইতে পারে—টেকচান, হুতোম, সুন্দর
এবং দানকন্দু। সহজেই বুঝা বায়
ইহার মধ্যে দিবতীয় প্রথমের শিষা এবং
ঁ তৃতীয়ের শিষা। টেকচানের সহিত্ত
গ্রামের যৃতদর্ব সাদৃশ্য সুন্দর সাল্তবের
গ দানকন্দ্র ক্রিল। প্রত্তেম বাদ্যা না
ক আনেক দ্র ছিল। প্রত্তেম প্রান্ধর
ব গণ্তের লেখায় বালগ (উইট) প্রথম,
ব গণ্তের লেখায় বালগ (উইট) প্রথম
হাস্যা উত্তাম প্রান্ধন দুইজানেই
ভিল্লান ভূলাগ বাট্ ছিল্লান না। হাস্যারেসে
ব গ্রেক রাচনা পার্কর ম্যু উল্লেখ ভ্রামরেসে
বর্মসেরচনা শাক্র ম্যু উল্লেখ ভ্রামরেসে

নাট্যকার দীনবন্ধ মিত শাহ্রদার আমান প্রত্যক্ষ করেছিলেন।



দক্লে অধায়নকালে তারই বিকাশ। এই সময়ই কবি ঈশ্বক্দুর গুলেতর সংস্পর্শে আসেন। দীনবংশুর কবিতা অনুপ্রাস্ বহুণ। যেমন:

হে নয়নে রেণ; অংগু আঁস্ অন্মান। বায়ুসে হানিৰে তায় তীক্ষা চণ্ড বংশ।।

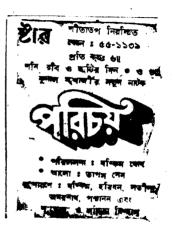
ইশবর গ্রুত সম্পাদিত সোধা র্প্লনা সাংত্যাহ্রকে দীনবংধার প্রথম রচনা সানব-চাবল প্রকাশিত হয়। দীনবনধার স্কেধ্নী, দ্বাদ্দ কবিতা লামাই-ষ্ঠী কমলে-কামিনী প্রভাতর কথা বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য। দীনবন্ধার প্রথম নাটক নীলদপণ। নীল-प्रशास नाम नाहेकम: **हाका श्वरक ५**४७० খ্নটাব্দে প্রকাশিত হয়। নবীন ডপাস্বনী ঢাকা থেকে প্রত্যাবত নের পর লিখিত। ১৮৬০ খাণ্টাব্দে ক্ষনগরের মাদ্রিত। 'সধবার এক।নশী' আর বিশ্বে পাগল। ব্যুদ্ধে ১৮৬৬ খাল্টাব্দে প্রকাশিত। ন্বীন তপ্তিবনীর পরই স্থবার একাদ্দী রচনা করেন দীনবঃধা। কিন্তু প্রকাশিত হয় বিয়ে পাললা ব্যুড়োর পর। লীলাবড়ী ১৮৬৭ জামাই বারিক ১৮৭২ এবং কমলে কামিনী भूरव 2490 बाह्या तम প্রকাশিকে হয়।

কর্মজীবনে অভাগত সং প্রকৃতির লোক ছিলেন। কোন প্রকার দুর্নীতির প্রশ্নর দিতেন না। ডাক বিভাগের প্রভৃত উলক্তি সাধন করেছিলেন তিনি। ব্যক্তিজীবনে দরালা পরোপকারী কথাবংসল হাসাপ্রিয় ভাড্ডাবাজ লোক ছিলেন। ডাক বিভাগের পরিচনালা করিব জনা দীনসন্ধা মিরকে বিভিন্ন স্থানে পরিভ্রমণ করতে ত্রেছে। এজনা বিভিন্ন জনের সংস্পাদা এসে প্রচর ভাড্ডিজভা সঞ্চর করেছিলেন। ঢাকায় ভাত্তভাল চাষীদের প্রশ্ন দীকক্ষ সাত্রদের অমান্ত্রিক অত্যাচার তিনি

সিপাছাী বিশ্রোহের বার্থতা জাতির দৈছিক শত্তির মূলে চরম আছাত হামলেও—
এই বার্থতার মধ্য দিরে উদ্দেষ হলো আছিক শত্তির । সাহিত্যো—কাবে)—সাংবাদকতার—
নাটকে—সমাজ সংশ্বারে জাতাঁয়তাবাদের বে
প্রকাশ উন্নিংশ শত্তান্দ্রীর স্বত্য দশক হেকে
পরিক্ষিত হয়—তার প্রকৃত্তির বাঁজ নীলদশকের মধ্যে নিহিত্ত ছিল ব্লক্তেও
আতাত্তি চবে না

'নীলদ্রপ'ণ' বচনাকালের একটা **হালো** আনেকেরই জানা আছে। বিংক্সচপ্রই ঘটনাটি লিপিবশ্ধ করে হান। চাকার ভাবস্থানকালে ডাক বিভাগের পরিদর্শন কার্যে দীনকশ্রক নদমিত্ত প্রবিশের বিভিন্ন স্থান নৌকা-থোগে পরিভ্রমণ করতে হত্যো। নৌকার বসে তিনি অনেক সময় নীলদপুণ রচনা করতেন। একবার নীলদপণি লিখতে লিখতে তিনি মেঘনা পার হাচ্ছলেন। এপার থেকে ওপায়ের দিকে নৌকাটি দু,' কোশ সূরত্ব অভিক্রম করেছে। হঠাৎ দেখা গেল নৌকোর জল উঠছে এবং বিভ্কাণের মধ্যেই হয়ত জলমংন হয়ে ষাবে। যারা সাঁতার জানতেন নেমে পড়লেন। দীনবংধ্যু সাঁজার জান্তেন না। তিনি নীলদপ্রের পান্ডলিপি হাতে নিয়ে নৌকোতেই বসে রইলেন। **সাঁতার কেটে** ধারা আগসের হাজিলেন, কিছাস্থ বাদে তারা মাটি পেলেন। তখন নোকো টোনে নিছে সেই हरत होताना करना। स्वरूत स्वीरका स्वीनार रशमः शीनतम्यः जार्थरसङ्का सौनप्रभारितस থাতা হাতে নিয়ে ভ^ই-এর উপরে **উঠলেন** : তখন নদীতে ভাটা ছিল। তা**ই চরে নোকো** ঠেকিয়ে সাময়িকভাবে রক্ষা পাওয়া পেল। জোয়ার কথন আসবে তখনকার কথা চি**ন্তা** করে স্বাই আতিকে উঠলেন। এছনি সময় দারে দাঁডের নৌকোর শবেদ স্বাচ বাঁচাও রলে চ্রীংকার শা্বা করলেন। নোকোটি এসে সকলকে বৃক্ষা করলো।

নীলদপণ প্রকাশিত হাবার পর সারা দেশে আলোড়ন দেখা দিল। নীলদপণি নীলকর সাহেবদের অভ্যাচারের বির্দেশ শাণিত কুপাণের মতই ঝলাসে উঠলোঁ। দেশ-



বিদেশে পেশীছে দিল ইংরেজ কুঠিয়ালদেব
অন্ত্যাচারের কাছিনী। নীলদর্শণ ইংরেজীতে
অনুরাদ করেছিলেন মাইকেল মধ্নাদন দত্।
শালী লং সাহেব ইংরেজী অনুরাদ প্রকাশ
করেন। লং সাহেবর ১০০০ টাকা জরিমানা
ও এক মাস কারাদেও হয়। জরিমানার টাকা
দিয়েছিলেন মহাজা কালীপ্রসায় সিংহ।
হাামলার ধর্ষত তিনি বহন করেন বর্ব।
হাামলার ধর্ষত কিনা বহন করেন বর্ব।
করার জনা ইংরেজী অনুবাদে নাট্লোরের
ক্যা বাংলা বা ইংরেজী অনুবাদে নাট্লোরের
কাম ছিল না। অনুবাদকেরও না। তাই
সরাসরি তাদের ওপর হ্যাসলা না হলেও

ঢাকার প্রবিধ্য কগাড়াম নামে একটি প্রতিষ্ঠান ১৮৬০ খাড়াকের প্রেট অভিন্যাদি নিয়ে কম'তক্ষর ভিলেন। এখানে ১৮৬০ খাড়ান্সেই স্ব'প্রথম নীলদপ'ণ্ অভিনীত হয়।

পরোক্তাবে তাঁরাও রেহাই দার্নান।

নবীন তপ্সিন্নী স্ব্ভিথম অভিনীত হ্য়
১৮৬৭ খান্টাকের ১৭ই জালাই। এই
অজিনর গোরাড়ে বংগা নাটাডিনর' সভরে
উদ্যোগে জন্মিটিত হয়। কুকনগর কলেজের
ছাত্রশে অভিনয়ে অংশগ্রহণ করে।
খারীরিক অসুস্থাতাবশতঃ দীনবন্ধা মিত্র
অভিনরে উপস্থিত থাকতে পারেন না। চিন অভিনরে বায় নির্বাহের জনা ২০০ টাকঃ
নাহারা করেন। রামতন্মু লাহিড়ী মশাস এই
অভিনয়ে উপস্থিত থাকেন। দীনবন্ধা মিত্রে
অভিনয়ে উপস্থিত থাকেন। দীনবন্ধা মিত্রে
ভাজনিট নাটক বাংলার সাধারণ বেগালালা
স্থাতার মালে অভিনয়ে বাংলার বাংলার সারার হলা স্থাবা একাদশী, নীকদপ্য ও
কালাবতী।

তথন ধনীদের পূরে গুহে নাটকাভি-নরের রেওরাজ উঠেছে। সব অভিনয়ই ছিল বাষ্ত্রতাল আরু সাধারণ জোবেদের পক্তে স অভিনর দেখবার সূবোগও ছিল কম ু তাই বাদনদল আরু শ্মিপ্টো নাটকের যাতা-ভিনয়ের পর বাগবাজারের যুবকেবা নাটকাভি **নয়ের জনা** গড়ে তুল্লেন গদ বাগবাকার **এমেচার থিয়ে**টার।' কি**ন্তু বায়ব**ংুল ন্যাকৈর্গভনয়ের উপযোগী ত'াদের অর্থ-সামপুর ছিল না। তাই ডগদের নেতা গিরিশ-চন্দ্র বোষ দীনবংগ্র মিরের স্বধবার একাদল⁵ং मारेक निर्वाहन करतन । प्रीनवन्ध्रात नाहेरक কোন প্রস্তাবনা জিল না। গিরিশচন্দু প্রস্তাবনা লিখলেন। ভাছাড়া জিনিই ছিলেন নাটা-চ্যিত্র बिक्काका निवाहणम দীন্দ্র মাউকেট গিরিশচন্দ্রের সর্বপ্রেথম আত্মপ্রকাশ।

নীলদপ্পি ফোন বাংলার রাণ্টীয় ও লামাজিক জীক্মে বিরাট আলোড্ন স্টিট করলো—'সধবার একাদশী' তেমনি উপবৃত্য করলো সাধারণ রকাশালা প্রতিতঠায়।

সধবার একাদশী নাটকের মধ্য দি ইই
অমা পরকতী কালের নাগাবুকে যেমন
লাভ করি তেমান নাগেলুনাগ বন্দোপাধারে,
আধেলিব্লেখর মৃশুভ্রতী ধর্মাদাস সূর, রাধারাধ্য কর, অমাভলাল ম্থোপাধারে
প্রভৃতিও পরবতী কিলের নাটাভেলালনে
উল্লেখবেলা ভূমিক গ্রহণ করেন।

সধবার একাপশী নাটক দেখে স্বাই

রবীন্দ্রনাথের **ঘরে বাইরে** (প্রযোজনা বহর রাপা) নাটকে শতিকাী মিচ ও উদর সিংহ



যেমন উচ্ছাসত প্রশংসা করেন তেমান রেভাবেশ্ড লালবিহারী দে ফোল্ডাল রিভিউ' পাহরায় বিরুপ সমালোচনা করেন। অবশা লাম্বাই রারিক'-এ বেঃ দেকে বাজা করে টোতারাম ডাস্ট' লিখে উত্তর দিয়েছিলেন। চতুর্থ অভিন্যু সধ্বার একাদশীর সংগ্ বিয়ে পাল্লা বুড়োও অভিনীত হয়।

বাগবাজার এমেচার পিয়েটারই আবৈতনিক नामनाम थिएशहोत नाम निष्य पीनवन्ध्व লীলাবতী নাটক অভিনয় করেন। ১৮৭১ সালের ভিসেম্বর মাসে মহেশপার প্রান্ন লীলাবতীর অভিনয় হয়। চু'চুড়ায় বঙ্কিমচঃ দু এবং অক্ষয়চন্দ্র সরকারের উদ্যোগে কটিল। বতীর অভিনয় খুবই সুনাম অজনি করে! কিন্তু নাটকের কিছু পরিবর্তন কর। হয় বলে দ্বীনবৰুধা মিদ্র চটে যান। পরে <mark>অবশা স</mark>ব মিটুমাট হ_{যে} যায়। চু'চুড়ার আর অবৈতনিক নাশ্নাল থিয়েটার কছ'ক লীলাকডীর অভিনয় বেশী খাতি লাভ করে। লীলাবতীর সময়ই বাগবাজার একেচার থিয়েটার সম্প্রদায় ন্যাশনাল থিয়েটার নাম গ্রহণ করে। ভানেকে টিকেট বিক্রী অভিনয় করার প্রস্তাব দিলে, গিরিশচম্প্র বিরোধিতা করেন। অনৈতনিক ভাবেই লীলা-বতীর অভিন_{য়} অনুষ্ঠিত হয়।

এরপর দীনবন্দা মিত গিরিশচন্দ্রকে নীলদপণ তাভিনরের প্রস্তাহ দেন। নীলদর্পণ নির্বাচিত হয়। গিরিশচার্শ্র রৈহাদেপিও দেন কিছুদিন। কিন্তু চিকেট কোটে অভিনয় করার প্রশতাবে বেশীর ভাগ সভা অভিমত বান্ত করলে গিরিশচান্দ্র করেক-জন অনুগামী সহ দলভাগ করেন। ১৮৭২ খ্রুটানেরের এই ভিসেত্বের সান্যাল বাড়ীতে ন্যাশনাল থিরেটারে টিকেট নিক্রী করে র করকেন নীলদপশি। শবিবার ১৪ই ছি ১৮৭২ খণ্টাব্দে ন্যাশনাল থিরেটার র বারিক অভিনীত হয়।

১০ই জানুরারী নাগনাল প্র লীলাবতীর অভিনয় হয়। ১৬ই জন বিরে পাগলা বুড়ো, ১৮ই জানুরার তপদিবনী অভিনীত হয়। এই সমু থিয়েটারে আভানতরীণ গোলমাল বায়। মহাজা শিশিবকুমার গোম বির সহ নাগনাল থিয়েটারের পরিচালকাল বোগদান করেন। কিন্তু কিছুদিন পূনরায় সম্প্রদার হিন্দু নাগনাল নাগনাল থিয়েটারে শিব্ধ। বিভক্ত হত্ত্ব

শ্বিধা বিভন্ত হয়ে যাবার প্র র সুরের নেতৃত্বে রেজিনিউকুতনাদানল র ২৯শে মার্চ, ১৮৭৩ খৃণ্টালে নেটির পাতালের সাহাযো টাউন হলে নীর অভিনয় করেন। গিরিশ্চণ্ড উচ স্ চরিতে তাভিনয় করে প্রভৃত থাতি। করেন।

টাউন হলে ৫ই এপ্রিল, ১৮৭০ ব্ সধবার একাদশী, ১৯শো এপ্রিল রা দেববাহাদ্রের বাড়ীতে নীলদপণ জা হয়। নাশনাল ও হিন্দ্ নাশনাল রা হাওড়া, ঢাকা ও মকাদ্রপের বিভিন্ন দীনবাধ্য মিত্রের বিভিন্ন নাটক আবন।

১৮৭৩ খুল্টানের অকটোরর দীনবর্ধ্ব মিত্র বিক্রেলটক কর্তৃক ব হরে শ্যাগায়ী হন। এবং ১লা ন ১৮৭৩ খুল্টানের মারা যান। দীনবর্ধ ৮টি সম্ভানের জ্ঞানক ছিলেন। জ্ম

মৃত্যুর প্রে^শ দীনকশ**্মিতের ¹** কামিন^{ম্} সেপ্টেম্বর মাসে প্রাণিত ^{হয়}ু

২০শে ডিক্সেম্বর ১৮৭৩ শ ন্যাশনাক থিয়েটারে দীনকথ মিতের ক্মিনী অভিনীত হয়।

দীনবংধ্ মিচের প্রতি শ্রম্থা বিনামাল থিয়েটার, ৩রা জান্মারী, ১ খ্টানেদ নীলাদপশি নাটকের অভিনয় পরবর্ত বহুবার অভিনীত হয়েছে। সাধালার শতবার্ষিকী বর্ষে এবং তার বহু সৌখনি সম্প্রদার নীলাদপশি বিকাশকা।

নীঞ্চকর সাহেবদের অমান্ছিক।
চারের বিরুদ্ধে দ্বীনবন্ধুর না
হাতিয়ার রংশে কাজ করেছিল। ছ
চেতনায় উদ্বুদ্ধ করেছিল নানাভাবে।
পরাধীন জাতিকে তার স্বাধীনতার দ উদ্বুদ্ধ করে তোলায় হেমান নীলিদ অস্বীকার করা হায় না তেমান তা শোষকের বিরুদ্ধে দােমিত ও নিশা হাতিবাদ গণচেতনায় হাজে বা রুদ্ধেই দেখা দেয়। স্বোপ্রি ভ সাধারণ রঞ্গশালার প্রতিষ্ঠা হয়েছিল

-कालीम मृत्या

म २० व्यावाए, ५०४३]



मांग हा जिंग भरते यात्वा

্ৰিল্পপূৰ্ণ তথ্য প্ৰচন্ত আলোড্ৰ ল সমগ্র দেশে। ন্যাশনাল থিয়েটারে _{তাপর আভনয়} হচ্চে। প**্রলিপে**র িকাম্শনর জাইলাম' সাহেব একদিন অভিনয় দেখতে লল ল টকের সকলেই আতৎক। একটা কিছ িয়েত গরে নিয়ে যাবে যাকে পাবে স্বাই কুম্পুমান। মতিশাল সূর তথ্যকর দিনের একজন প্রখ্যাত : যুদ্রা ডোরাপের **চরিতে** অভিনয় ভান খ্রান্ত লাভ করেন। পর রূপ সংজ্ঞানিয়ে সর্কিস পরেই আছেন তিনি। সকলের আত্তিকত কিনি লাফালাফি য়। রশতে **লাগলেন সাইসের স্থেগ**ঃ নিয়ে হাবে হাক। আমি ল**ুৎিন প**রে সেজের **যাবো।" মতিলালবাব**ুর ল। দেখে স্বাই যেন বল পেলেন। নের চেনেও সবাই যেন কোছার বৈংধে 8 季素(利・) 1 লড় বিষয়টি প্রিশ সাহেবের কানে

তরে গিয়ে তেরিপের সংধান । মার্যন গ্রেন ট্রেসলো মাজিলাল - বেশ্চ করে।

ত দেৱী হলো না। তিনি **মনে মনে**

া ভারণর এক ফারে উঠে জেপেন

া এদিকে ত আনেকের আত্মারাম

যাও বারিছ দেখাও। স**্থ্য পরেই** ও এবার!

তলাগরাকু লম্মিকা প্রেই **সামনে** সাহস করে আ**রো অনেকেই**

নিশ সাহেব তথন ব্ললেন, জয় নাই ।

রেবা আলি ধরিতে আদি নাই ।

কোথতে আদিয়াছি । দীনবন্ধ্বাব্
বংগা তরিই অন্রোধে আদিয়াছে ।

ভালো কছে । স্ফ্তিতিত অভিনয়
বংল কানতে সাহত আবার তবি
বাস অভিনয় দেখতে ব্সলেন ।
বাস্তর নিঃশ্বাস ছাড্লেন !

নী আৰ জ্বাদার দৃষ্ট হয়ে দাড়াও

শাল থিয়েটারে দীনকথ্য মিত্রের

টী নাটকের অভিনয় চলছে।

স্বাব্র বৈঠকখানায় জ্বাল অরবিন্দ
নিয়ে মহা হ্রেফেগ্ল। হরবিলাস

ভালয় করছেন অধেন্দ্রিশ্য

বিলাসবেশী অধে নির্শেশরের সং হলান খনাবু, তুমি পাপান্তবে ই কর, তারপর কপালে যা থাকে,

লচাদ কৰেন, ঃ আপনি বাসত হবেন

ম। এখনি প্রেল ইন্সপ্রেটর আসবে। এলেই তাড়ীর আন্ধ হবে। এমন সময় পর্নিশ ইন্সাপেকটর হাজেশ্বর ক্যোদাল ও मारेखन करनक्षेत्रलय तलाभरक श्रास्त्रण करात কথা। সকলেই এলো। কিল্ড সাজেশ্বর আসতে না। দশকৈরা পারম আগ্রহে আশেকা कत्वहरून। याख्यस्यातात स्त्या नार्छ। आर्थान्य-শেশর ব্যাতে পারলেন, একটা কিছা অঘটন ঘটেছে। তথন প্রালিশ ইন্সপ্রেটরকে লক্ষ্য করে বললেন: জমাদার সাহেব, ভোমার আসামী স্টাকৈছে। এখন তুমিই আসাম্মী আর জমাদার দুই হয়ে দাঁডাও। আমাদের কাজক চলাকুকা (দশকিদের দেখিছো) ব্যবস্থা সব বসে আছেন। আবার গোসা করবেন। দশ্যকিরা অধেনি,শেখরের রসিকভায় হো-ছো করে হেসে উঠলেন।

আমার নন্দাই

নগেন্দ্ভ্ষণ মুখে।পাধ্যায়ের সর্থাধি-কারিছে তখন মিনার্ভা থিয়েটার পরিচালিত হচ্চিল। এই সময় একদিন দীন্দ্ধন্মিটেশ নবীন তপ্সিন্মী নাটক আভিনীত হচ্ছে।

স্লোমন সাহেব নামক এক ইহুদী
মাহেব তথন প্রায়ই থিয়েটার দেখতে
আসতেন। সামনের আসনের টিকেট
কাটতেন। তরি হাতে থাকতো একটা ফলের
বাসকেট। ততে ফ্লোর ভোডা, মালা, কুটো
ফ্লা থাকতো। সেসব শিলপীদের অভিনর
স্লোমন সাহেবের ভাল লাগতো—তিনি
তার বাসকেট থেকে তাদের উপ্দেশ্য ফুলা
লালান তাড়া ছায়েছ ছাত্ত দিতেন।
সালোমন সাহেবের নাটা-প্রাতি শিলপীরা
প্রাতিব চোখে দেখতেন।

সেদিন জলধর চরিতে অধেশদুশেখর মু>তফী আর তার কা জগদুশনী চরিত অভিনয় করছেন গুলফন হ'ব।

শ্বিতীয় অংকর প্রথম গতাংশ শ্বামী-সান্দ্রশা জগদ্দনা মড়ে। বাটা হাতে বংগ-মঞ্জে প্রবেশ করে বগছেন, আজ তোমারি একদ্নি, কি আমারি একদ্না.....আমি ঘোমটা দিয়ে চুপ করে বাস, যদি ধরতে পারি, আজু মাল্ডী মারককে মা বলিয়ে নেব তরে ছাড়বো।

ত্রমীন সংখ্যান কলে গ্রাণ্ডন হ'ব (জগদদ্বা) যখন পোটোটা দিয়ে স্বাদ্ধিক ধরবার জনা লাকিয়ে থাকতে যেতেন, তখন-করে অভিবাদ্ধি দেখে প্রতিজন দশাকই মাধ্ব হতেন। সলোমন সাহেব গ্রেফন হ'বর অভিনয়-চাতৃহয়ে মাধ্য হয়ে তার উপেশো এক ছড়া ফ্লের মালা ভাগুড়ে মারলোন। গলেজন হরি মালাটা কপালে ঠেকিয়ে গলায় দিয়ে বসে রইকোন। সারা নাটাগ্র্ কর্জাল ধ্ননিতে ভাকে অভিনদন জানালো। জলাধর্পে অধ্যেশ্বশেষ গ্রেকন হরি অথাৎ স্থার হাতে ত স্ক্রান্ত্র

স্বামার প্রতি সাক্ষ্মী হবার সময় ্লফন হরি ঘোষটা ফেলে দিয়েছেন। তার গলার মালাটা দেখা সাচ্ছে। অধ্নিংশেখর এবই সুযোগে দশকিদের একটা, আদদদ দিতে শ্রীকে বগলেন ঃ ''আমার তো কথার কথার সংলহ করো—বলি এই যে গলায় বাহারের মালা দ্লাছে, বল এ মালা দ্লালালা কে? বল কে দিলে মালা?'—
পত্রীর প্রতি রংখে উঠলেন। স্চীও রেমন
তেমন অভিনেত্রী নন—গ্লেফন হরি! সংগ্রু সংগ্রু বলে উঠলেন ৷ শ্রীক রেমন
বিমান উঠলেন ৷ শ্রীক রেমান
ত্রমন অভিনেত্রী নন—গ্লেফন হরি! সংগ্রু
সংগ্রু কে উঠলেন ৷ শ্রীক কি মিয়েছে!
পরপ্রের দেয় নি ৷ দি স্থাছে আমার
নগ্রী! ঐ ত বলেই আছে ৷ জিজ্ঞাসা কর ।
সারা নাটাগ্রি স্কেটে পড়লো ৷ স্থান রুমা
এসে স্কান্ট্রিক ক্রিলা। স্থান রুমা
এসে স্কান্ট্রিক ভারি স্কান্ত্রিক ভারিফ করতে লাগলেন।

বিবিধ সংবাদ

রাতি যাদের দিন ঃ রবিবার ২৩শে জনে সকাল ১০টায় ইন্দ্রপরে প্রতিভততে তিশয়নী চিত্রমের প্রথম চিত্রমা কর্তি বাদের দিন'এর শুভ মহরং অনু'ঠান সম্পল হয়। ছবির কাহিনীকার ও **পরিচালক** শ্রীরবি ভট্টাচার[ে]। সভায় সভাপতি**র** করেন মাননীয় **ম**ণ্ড্ৰী শ্ৰীতর্শকাণ্ডি **খোষ।** তিনে বাংগালীকে চিত্র ব্যবসায়ে ব্যবসায়িক দ্ভিটভংগী নিয়ে **আভানয়ে।গ** আহ্বান জানান। সংস্থার পক্ষ থেকে প্রযোজক সভাব রায় চলচ্চিত্র করার পথে বিভিন্ন বাধা বিপত্তির কথা বলেন। ভান-'ঠানে ডঃ ফুড়ালে হাক, ভোরতক্ষা **গণপ্রজা**-তৰটী বাংলাদেশ ডেপাটি **হাইকমিশনা**র জনাত অলেদুস সোলহান খান চৌধুৱী, দেবদ্যাল বদেদ্পাধার কলকাতা বিশ্ব-বিদ্যালয়ের বাংকা বিভাগের বিভার ডঃ অরুণ মৃথোপাধানয়ও ভাষণ দেন। মছরৎ শিল্পী ছিলেন নায়ক সৈকত মুখোপাধায় ও ছায়া পেনী, ক্লাপ্সিক দেল চলাবভী দেবী ও সাইচ অন করেন **শ্রীলতী ধ্যানো** বড্যো। অনুষ্ঠান পরিচালনা বিশালসভার সদস। শ্রীলোভন চক্রবভী ।

রবীংদ্র-জের্ল সংধা : পশ্চনথঞা সরকারের ইনেটালজেম্স মিনিসিট্যাল কম-স্বী সমিতি সমাহের যৌথ উদ্যোগে গত ১০ জনি ১৯৭৪ জারিখে ১৯ নং প্রত



দিনতা রোডিশ্যত শ্রীশিকারতন মধ্যে এক
মন্ত্রের রবীন্দ্র-নজরুল সন্ধার আরোজন
করা হরেছিল। এই অনুষ্ঠানের আহ্বারক
শ্রীলনোগুলন বর্ধান তবি ভারতে স্বিতিস্মতের
শ্রের এই ধরনের সংশ্রুতিক অনুষ্ঠান
উদ্যাপনের ভাংপর্য বায়খা করেন। তিনি
করোন বে ইন্টেলিজেন্স বিভাগের কর্মাচারী
হিসেবে গ্রামর রতিক সমান লীবং
ধ্রের সম্পূর্ণপ্রেল বিজ্ঞান হরে বাস
করতে হয়। এই ধরনের স্বংস্কৃতিক অন্
ক্রেনে ভাংশ গ্রহণ কবার স্প্রাণ ভারের
সমাজিকভাবে বিজ্ঞান এবং বৈচিত্রত্বীন
দিন যাপনের শ্রামি কিছু প্রমাণে লাগ্য
করতে পারে। অনুষ্ঠানের প্রধান অতিথি

পশ্চিমবংশ সরকারের শ্বরাণ্ট্র বিভাগের রণ্ট্রমন্ত্রী ডঃ ফজলে হক উন্টেলিক্টেন্ডল বিভাগের যিনিশিয়াল কর্মচারীদের সামাজিক সমসার কথা শ্বীকার করেন। এই সন্টোনে সভাগতিত করেন সংগ্রহণ্ডার বিদ্যালয়ের ডঃ জর্মভাত্যাক বন্দেশ্যালার। বিশিক্ষ অভিন্ন ভিস্কার্থতার উপাল্ডিড লেন পশ্চিমবংকা আই জি পি বঞ্জিত গ্রহ্মতার কোলকাতার প্রিশা করিমন্ত্র স্থাল কিন্তুতিক অনুটোনে সংগীত প্রিশ্বন করেন অল্যাক্তর ব্রক্ষাণাগাল, ববং দিলাক করেন অল্যাক্তর স্থালাগালার ববং দিলাকি চক্রব্ভতী। অনুস্টোনিটি প্রিচালনা করেন ব্রহ্মী সেন্স্টানিটি প্রিচালনা করেন ব্রহ্মী সেন্স্টানিটি প্রিচালনা করেন ব্রহ্মী

বাঙলাদেশে নাট্য আন্দোলন ক্রমশঃ গড়ে উঠছে

নাটক আজকের আনিবক্ত কোন খিণ্ণ মর। আজকের নাটকের শ্রীরে বরেছে প্রায দুন্ধ বছরের প্রাচীন ঐতিহা।

স্যার বল্নাথ সবকারের ভাষার 'আফ আমরা নাটক সম্পাক্ত বাহা ব্বি, ভাহ। উনবিংশ শতাব্দীর স্থি।'

কিন্তু আজান্ত কচ্জাকর বাপোর হলো বাহলাদেশের বাংলা সাহিত্যের অন্যান্য বাহ্য বহা কবিতা, গলপ পঞ্চিত্র রে হারে উপ্রতি হরেছে, ঠিক সে হারে নাট্য সাহিত্য বা মঞ্চ নাটকের উপ্রতি হয়নি।

এর কারণ নানাবিধ। তবে ম্লাডঃ এর জন্য হে কারণ দারী, ভাহলো সাবেক পাকিস্তান ভাগেলে বা স্বাধীনতার পর ভাদাবধি এদেশে মণ্ড নাটকের জন্ম কোন্ স্থায়ী রুপ্যাঞ্চ তৈরী হর্মন।

আছাচ তানস্বালায়া সভ্য হ'ল, গণসংযোগের একটি প্রধান মাধাম হলো নাটক এবং জন-গণকে আনন্দ বিভরণের ও বিনোদনের একটি প্রধান মাধাম এই নাটক।

সম্প্রতি তারশা একটা স্কাকণ আমানের জনা 'শ্রুড সংবাদ' বহন করছে। স্কুলে, কলেজে বিশ্ববিদ্যালনে এবং পাড়োয় পাড়োয় জেলার জেলার, এক কথায় এখানে সেখানে সর্বাপ্ত বেশ শৃত্যার দল বিশ্বী নাটক ক্ষহ বং মধ্যস্প হচ্ছে।

এবং আরো আশার কথা আমরা যার। ইদা-নিং নাটকের শশকৈ হকি, ভারা নীভিমতো 'দশানীর' বিনিয়ারে নাটক দেখছি।

তাথচ, সামান্য কিছুদিন আগেও নাটন দেখার মত বিমি পরসার দশকিও' এখনে পাওয়া হৈতে না।

এর কারণ আগে যে সব নাটক পঞ্চয হতে এবং এখন বে সব নাটক মঞ্চম হচ্চে -- এ দুরের মাঝে ররেছে বিস্তর ব্যবধান এবং তা আধ্যনিকভার, চিশ্তাধারার ও অভিনয়ের গুলে।

আজকের মধ্যুস্থ বিভিন্ন নাটকে রেজন নাতুনত্ব' এনেছে, তেমনি আজকের স্থাকি নাটকের প্রতি আগের চেরে অনেক আগ্রহী হায় উঠেছেন।

এটা অবশা প্রতিবেশী রাখ্য জারতের পাদচমরকো অনেক দিন থেকেই এবং অনেক নেশী করেই লক্ষা করা গোচে ও গাড়েছ। সেখানে এক একটি নাটক মণ্যস্থাহর। কাগাকে কাগকে ও দশ্যি মনে মড় জোলে এবং শত শত রজনী হাউস ফালে থাকে এবং থাকছে।

আনাদের এথানে স্থায়ী রওগমঞ্চ নেই। আর তাই এথানকার নাটামোদীরা তাঁদের ইজাকে স্ব^ৰদা বাস্ত্রে রূপ দিতে গিয়ে অর্বহ হাজারো সমসার মুখোমুখি হন ও হাজেন।

এতদসত্ত এখানে এখন প্রায়ই নাটক মধ্যকথ হচ্ছে এবং দশ্কি মন জয় করতে সক্ষম হচ্ছে।

এ ব্যাপারে ঢাকার নাগারিক নাটা সম্প্র-দায় পারাপার ও থিয়েটার সোক্ষীর ভূমিক। সকচেরে অগুলী।

নাগরিক নাটা সম্প্রদারের (ক) বাকি
টাত্রাস (থ) বিদেশ রম্পীক্ল ও ছৈল
সংকট (গ) ক্লস পারপাস (খ) এই নিবিদ্ধ
প্রমীতে । পারাপারের (ক) পোল্টার (খ)
ক্লমে ক্লমে ক্লমড়া (গ) তারপর হব ইডিহাস এবং থিরেটার গোল্টার স্বেচন
নিবাসনে (প্রথম নাটক—এখনও চলছে)।
আমাণের আক্লকের নাটা আক্লোসনকে
দানপথে ক্লমণ্য এগিরে মিরে বাজে এবং
দর্শক রালকের নাটা ক্লমণ্য ওারের
আক্রহাী করে ভূলছে।

শ্বীক্রেড়ার/সাবিত্তী চল্টাপাদার ফটেটা :



তবে এখানে যদি স্পারী । তৈবী হয় তাহালে আমাদের নাটক । এলিয়ে বেতে পারবৈ এবং আমাদের আন্দোলন আরো শভিশালা উঠবে, ভা বলাই বাহালা।

এখানে এখন বেসব মঞ্জে নাটক হ হয় ও হচ্ছে—সেগকো হল টি এচ (ছাত্তেশন জন্য সীমাবন্ধ) মহিলা দ ওয়াপদা, বাটিল কাউন্সিল বাংলা ডেমা, কারিগরী মিলনায়তন থা এসব মঞ্চের ভাড়া অভ্যাধিক। আর এসব মঞ্জের নাটক মঞ্চম্প করা দে নাটালোকীশ্লোর জনা রীভিমতো ভীত বাংশার।

আর ভাই, বিনা প্রসার বা প্রসায় নাটক মঞ্চ করা ঢাকার প্রায়েই অসম্ভব বাপোর। ফলাফল নাটলোকী আভ চিন্তিত এবং কেউ ইতিমধ্যে নাটক মঞ্চল বাপারে বেশ শিছিয়ে সভ্চেছন।

আর এ কারণেই এখানে বাতে প্রসার নিরীকাধরাী নাটক সন্দেশ পারে, তার জনা অবিসন্দেব একটি প্রায়োজন।

সরকার দেশের শিক্ষিত সংগী এবং জ্বনগণ—সবংহকে এ বাংপারি লক্ষে এগিরে অসতে হবে। আর জায়াদের আজকের নাটা আগি সফ্রপ্রার পথ খাকে পাবি।

—আলওয়ার আ

गाउँ व गाउँ क



कि सक्षां वज्ञान छा नामा? निर्णाणां वाकामी जीम जासीम व्यक्त द्ववाक वाकामी। वारताम छावि, वारतामरे भ्वन एमंच। एया वस्मावास्य भवादे व्यक्त किना क्रमन छूटे विद्याती।

হা বলতে গারেন মাকৃতমাটা একট্ব আমার উইক আমে। জননা তা আনভানে বিদ্যানাণ। জনোছ বেশানে, বড় ছরোছ বেশানে, বেশানালার প্রভাব তো অন্বালার করা মার না? ভাই বাংলা বলার শ্লোটা একট্ব কর্মি, হলেও একেবারে আগ্যান বিংগালী আমি।

মহামেজান দেশাটিং স্থানের মেসে
লতিক দিদনের বিছানার প্রপর বসে বসে
চলন গ্রেডের সংগ্য আলাপ চলছিল।
চলনের তাড়া ছিল অফিসে বাওয়ার।
চাকরী ফাটিলাইজার কপোরেখনে। নতুন
চাকুরে তাই বেয়ুর হয় এখনও হাজিয়ার
মন্ত্রনা তিও রখনা চেখ্টা কবে। চল্ফনের
দু পারেই সট আছে। ভাল লিংকমান।
দরকারে পাইকারত হতে পারে। পাজসন
জ্যানত রীতিমত ভাল। সব চেয়ের মড়
হাতিয়ার চল্পনের আ্বাবিশ্বাস। বড় মাতে
বড়ো মেজাল।

মেজাজ যে বড়ো তার প্রমাণ তো এই
সেদিন ইন্টবেশাল মহামেজান দেশাটিংল্লের
বেলার দিন হাতেনাতে পাওরা ফেলা
বলতে গেলে একা চন্দনই তো সেদিল
পেচনে গড়ে ঠেকিয়ে রাখল ইন্টবেশালা
সভাব সর্রজিং, আক্ষর জার হাবিবকে
কতবার যে কতভাবে বিমান করেছে তার
কি হিসেব আছে? মাধার ছোট, গারেগাতরে মাংস একটা বেশা ফোটকানের প্রস্কুত এত চবি বোধ হয় ভাল নর।। কিন্তু চেহারা বা-ই হোক পজ্জিলন জ্ঞান আর
পরিপ্রমের বিনিমারে চন্দান সমন্ত ঘাটিত
প্রিয়ের বিনিমারে চন্দান সমন্ত ঘাটিত সালের ২৬ শে ফেবুয়ারী, পাটনার।
বাবা শামাদরপ্রসাদ গাঁহত নহার প্রসালের
কি-আই-ডি ইন্সপেকটর। পশ্চ ভাই
(চন্দন মোজ) শ্ব বোন, মা-বাবা মিলে
চন্দনের সুখী পরিবার।

১৯৬৮ সালের স্বত কাপ জয়ী
পার্টালপ্ত হাই চকুল দলে চন্দন গ্রুপ্ত
ছিলেন সব চেয়ে চ্যোথে পড়া মিনি
ফাট্রপার। পার্টনা বি এন কলেজে পার্ট গুরান কেলা) পড়ার সময় দটি লোকের চেয়ের পড়ে মান চন্দন। প্রথমজন কলেজেন শরীর শিক্ষক মহম্মদ তাহের তেনেসন এবং শরীর শিক্ষক মহম্মদ তাহের তেনেসন এবং শরীর শিক্ষক মহম্মদ তাহের তেনেসন এবং শরীর শিক্ষক মাতনামা ফ্টিল থেলোয়াড় চল্টেশবরপ্রসাদ। ৬৯ সালে আনতঃ বিশ্ব-বিদ্যালয় ফাট্রলে প্রেণিগুলীয় আসরে গার্টনার প্রতিনিধিত্ব করার পর চন্দের্শবর-প্রসাদ চন্দনকে ধরে নিয়ে এলেন কলকান্তায়। ঐ ৬৯ সালেই পার্টনা বিশ্ববিদ্যালয় ফ্ট্রল দলের অধিনায়ক ছিলেন চন্দনের ব্রুডাই রঞ্জন গাঁহত।

প্রটিনা ফাটবল কাবের নামকর।
খেলোয়াড় চদন গাুণত কদেলতায় এদে
গড়ের নাঠের চেহাবা, গাালারীর দশক আর সমধ্যক্ষের মেজাভ দেখে থানিকটা ছকচকিয়ে গোলেও কয়েকদিনের মধেই সহ কিছা মানেজ করে নিজেন।

আড়চোৰে একবার ঘড়ির দিকে তাকিয়ে নিয়ে চন্দন বলগেন : ১৯৭০ भाषा श्रेत्रापमा पटा धार्म कुमालन स्माइन-বাগান ক্লাবে। তিন বছর একটানা পাকল্ম। ক্লতে জ্বে যাচ্চল্ম এর ভেতর পাটনার ছাপ নিয়েই ১৯৬৮ সালে জারতীয় পর্কল দলে প্রান পোলাম। খেলভাম জীলংকার বিষ্টুদেধ (তথন বলা द्याक भिरद्रमा। ১৯৭১ माल होकिएम আয়েজিত এশীয় খ্ব ফুটবল প্রতি-যোগিতায় আমিই হোলাম ভারতের অধিনায়ক। যাসতে পারেন : খোদা যব দেতা ছম্পর ফেশ্ড কর দেতা। ৭২ সালে বাংকক এশীয় যুব ফুটবলেও গিয়েছি ভারতের সহ অধিনায়কর পে। ঐ বছর বহং টারে খোল। ভারতীয় ফাটবল দল গেল জাকাতায় আমন্ত্ৰমালক ফাটবল (কিংস কাপ) খেলতে। আগ্নিত গেলাম। ১১৭২-এ আমি জাতীয় ফাটবাল বাংলার হয়েও খেলেছি কিন্তু ফাইনালে খেলা বরাতে জোটে নি। বাংলাসেশের জন্মের পর খেলতে গেছি ঢাকায়। ৭৩ সাল ইণ্টবেংগল ক্লাবের হয়ে হংকং সফরও করেছি।

চন্দনের কলকাতার প্রতি ক্তঞ্জতা আপরিসাম। কেনলা এই কলবাতাত আল তাকে সম্মান দিয়েছে দিয়েছে স্বীরুতি। কৃতজ্ঞা সে শৈলেন মানার কাছে, কোট লাতক প্রদীপ বাদায়িল এবং মেওয়ালালের কাছে। এগ্রা সুষতা তাকে মানার করেছেন। রুটি শাধ্যমেছেন। রুমক নিয়েছেন অ্বার আগরিও করেছেন। প্রেমসে ক্টবল খেলে যাছি দায়া সংসারে কামেনা নেই, ধেল যাছি দায়া সংসারে কামেনা নেই, বিয়ে যা কার্নি করে ক্রবো তাও এখনও ভাবিন। প্রেমসে তাল যাছে আমান কলেই চন্দন দে ছুট। আফিসের বেলা হয়ে যাছেছে।



মামার বাড়ী মৃতসাগার। ঐ মৃতিসগারেই আমার জন্ম। গোটা ভারত ভবন
ইথাল পাবাল। ইংরেজের পাততাড়ি
গাটোবার ফটা বেজেছে। হিমালয় থেকে
কলাকুমারিকা প্রস্কৃত উত্তেজনা।
সাম্প্রদারিক গালার গোটা দেশ কতবিক্ষতা এরই মারখানে ১৯৪৭ সালের
ভিতা ফেব্রুরারী আমি প্রিবট্টত এলায়।

শ্বানাদের বাড়ী নগীয়া হৈ গোগের নাম খানেছেন তো ক্রেখনে বিভাগের সময় সবাই ভেল্ল আমি ভবিষাতে আংখলেটি হমেও ছিলাম ক্রিভাগু আন্থলেটিকসে পাক্তে সামলাম না ক্রেম্বান প্রায়ালী প্রসাম মাঠে।

বিল কেল একে প্রক্রের উত্তরে বিল্ডারের প্রীইকার প্রকাশ বিশ্বাস সংলাক প্রাথমিকভাবে ঐ বাধ্যান। প্রকাশ হালমিক গড়ের-লা নাম করেছেন। ভালা খেলোরাড় প্রকাশকে আক্রকালা অনেকেই দিয়ে দেখিরে দের। প্রকাশ মনে প্রাথমিক না খেলোলা আলা হয়তো দিনতো না। কোথার হরতো রধা হারিয়ে কেতান।

ন্ধনী থেলোরাড় প্রকাশ। পরিভাবার ক্রে মনুডি। থেলতোন কেনিন সব হয়ে গেল সেদিন। কেনিন মনুড দেন দিন প্রকাশে আর গালারীর কোন ফারাক থাকে না। প্রকাশ এই ভূমিকা সক্ষণকে দেখলায় ড্র সক্ষান। প্রকাশ বিশ্বাসের কথা হজিল ময়ানানে ইন্টার্শ রেল-নাথলোটক এসোসিক্লেশনের তাবিত্র দনের ওপর বলৈ কলে।

বারণ মধ্যবিক্ত খরের ছেলে প্রকাশ।

সৈতাশনল বিশ্বাসও রেকোর চাক্রে

মত। বর্তমানে প্যোক্তিং কাচজা
(ব্রকিং ক্লাকা)। ওখানকার হানেটি
লেই প্রকাশের পাঞ্জাশনা। বাবা, মা,
গাই, চার বোন নিক্রে স্থাতিমত বড়
। একা বাবার আসে সংগারের চাকা

রে চলে না বলেই আপে বরুসেই
ব্যালায় বেরুতে হয়। ব্রুতেই
পারকেন খরের বড় ছেলে আমি।

তে বান্ধিক মুরেছে। ছোটবেলার
কে আমি মোটেই ভালবাসভুম না।

সম্ভূম আ্যাধ্যকটিকল।

গৰাজার মাঠে নামি প্রথম আগ্রাফাটি।

আমি দ্বিপক জান্দ করতাম ইন্টক্রাবের হয়ে। পর পর চার বছর

আমি পশ্চিমবংগ দ্বিপদ জ্বান্স চ্যান্সিরন ছিল্লম । আঠারো বছরের নিন্দ বরুস্কলের দ্বিপদা জ্বান্সের রাজ্য রেকর্ডাট এখনও আমার । চন্ডশগড়ে ৬০ ।৬৮ সালে জ্বাতীয় আ্বাথলোটকস প্রতিযোগিতার আ্বামি বাংলার হরে দ্বিপদ জান্দেশ নেমে থার্ডে হয়েছিলুম ।

এ্যাথলীটের পরিচিতি নিয়েই ১৯৬৫ সালে চাকরী পেলাঘ বাটার। ফটেবলটাও क्रकें, क्रकें, हमरूका आधरमधिकरमद ফ'কি ফ'কে। ৬৬ teq সাল কা^টলো বাটার চাকরীতে। ইণ্টার্ণ রেলে চাকরী নিয়েছি ১৯৬৮ সালে। সভ্যি কথা বলতে কি चाविट्रणिकम्हे हिन अक म्याह जामात জীবনের ধানজ্ঞান। ফ্ট**র্লাকে তা**ই সিরিয়াসলি নিইনি। ্বিস্ত গোডায় ভাগের এমনই খেলা বে শেষ পর্যনত ঐ ফুটবলকেই আক্ষড়ে ধরতে হোল। এক ভাবছি ছেলেকো খেকে কটকাৰে সিরিরাসলি নিলে হরতো এবন আর একটা BIS CASICE STAFF !

ধাক সে কথা ছাইকাল কাই বিল। ৬৬ সালে জেলাল বাটার। ৬৭ সালে জেলাল বাটার। ৬৭ সালে ঐ ব্যক্তার। ৬৮তে রেলে এলাম চাকরী নিরে। ৭১ শালে জাতীর ক্রেকলে সর্ব ভারতীয় রেলওরে দলে শাসন পেলাম। রেল সেবার মাহাজে আরোজিত গলেতার দ্রিকতে রালাস ৪৮১ গোলে। রেলের একমাত গোলটি ক্রেভিলাম আমিই। তাপর ৭২-এ গোলার, ৭০-এ কোচিনেও সলেতার ট্রফির আসেরে রেলের প্রতিনিধিশ করেছি। কোচিনে কেরালার কাছে ফাইনালে আমার। ৩–২ গোলে হেরে

গেলেও কেন জানি না (বিনর?) স্ববাই আমাকে তারিফ করলেন।

এর ভেতর ৭১ সালে জাকার্ডার কিংল কাপে ভারতের হয়ে খেলেছি। দলে একমাত বালগালী ছিলাম জামিই। কোরিয়ার বির্দেশ একদিন একটা গোলাও করে ফেলেছিল্ম। তেহরালে আরোজিত এশীর কীড়ায় বোগদানকামী ভারতীর দলের ধারালেও ভাক পেরেছি জনা বালাভ্রনে মত। ইন্দ্র জান্দে ভারতী কাতে।

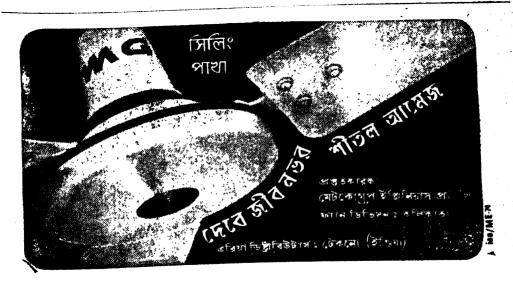
विगत्न बद्ध्यान्धाव



হীনক লো উপান্ধন
ত্যোত্মিক প্রেমিকাশের বৈত্তিক উঠি
অন্ত ক্ষান—'লোককে হা নহা-প্রেক্
নির্বাপেরে আম্টিন্ন ক্ষান্ধ মানিক সংগ্রেক ক্ষান্ত মানিক ক্ষান্ধ মানিক সংগ্রেক ক্ষান্ত মানিক ক্ষান্ত

ক্ৰকাভা দেখেছ ৩,
ক্ৰেডা ব্যাস-শ্ৰাম্থিক
ন্ত্ৰীয় হ'তে উঠেছ।

ভি এল কাইরেরী **তিনিকা** ৪২, কিলাল সরণী ৩০/১, কলোক ট



খেলার জগতে মেয়ে



স্ব্ৰতা দেবনাথ

বিবাহিতা মেরেরাও যে ডেডা ব প্রসাধলোর জ্বাসরে সাফল্য অজন ব শারে শ্রীমতী স্বভা দেবনাথ ডার ল স্ভি করতে সংকলপবন্ধ। সেদিন দ্প্ দিকে স্বেতার সংগ্র দেখা হল, তার । অফিস সেব্রাল একসাইজের এক গ্রুবিরেলের চাকরীতে খ্যাস্থ্য দিয়ে স্ দেবনাথ এখন এখনেই ইন্সপেকট

কথার কথার বলে উঠল সারতা---গ্র দ্বামীর থ্য ইচ্ছা আমি আমার স্টুপ্ট ডিসকাস ছেশড়ার চর্চা অর্থাৎ আমার হ **খনেলা চালিতে যাই।' অথচ** নিজের বা রক্ষণশীলতার জন্য ছেলেবেলায় প্কুলে এম কলেজে এসেও সে খেলাখ্লা চচার স্ত পা**র্কান। ১৯৬৮ সালে ভিকটোরি**য়া ইন্ **विक्रिश्रामद करलब ट्रम्भार्वेट**म माइवज् हो বৈ!গ দেয়। সূত্রতার কথায়—দেখলাম তা মেন্মে যোগ দিচ্ছে, তাই আমিও নেমে ল্ম' কতক্স্লো বিভাগে স্ফলও হল কটেজ কড়'পক্ষ আমায় আৰতঃ **स्भार्टे स्म नामात्र वाक्स्या करत्र फिल्म**ा বছরই জম্বলপ্রে আনতঃ বিশ্ববিদ্য াজার আসরেও কলকাতার প্রতিনিধিও কঃ স্যোগ হল স্বতার।

প্রথম প্রথম বাড়ীর বাধা ছিল। কিন্তু বাদা দিলালৈ পালের উৎসাহে স্বত্ত আগেরে নামার প্রেরণা পাষ্ট। ১৯৬৭ বে বাগ বাড়ী থেকে এসেছিল, নাদার চেলিরের বছর সে বাধা আর রইল না সত্ত সেবারই মাদ্রাজ্ঞ জাতীর দ্রীড়া প্রতিহাগিও আসরে বাংলাদলে স্থান পেলু স্টপ্তি ও ডিসকাস বিভাগে। স্টপ্তের দিকেই সাত্ত ক্ষাত বেদা। ভবে সে ডিসকাস হেণ্ডাই প্রথম বাদিক দ্রীড়ার আসরে স্বত্ত বি বি ক্রেডির বাহিক দ্রীড়ার আসরে স্বত্ত বি বি

স্ত্রেকা বলোঁ, স্টপাট আর ডিসং নিক্ষেপে তাকে প্রথম পঠি দেন তাও পাড়ার সানীল চ্যাটালি। পরে নেতাত ক্ষেম্ব কাকীর লীকা নিক্ষাক্ষকার প্রাণিব ্_{ছি, কে} মেননের কাছ থেকে স্বৃত্তা প্রণা**ল্য** _{প্রি}শ্যন লাভ করেন।

্রতার স্বামী হলেন ইণ্টবেণ্ডল ক্লান্থের
বাল ও ভারত বিখ্যাত ক্টেবলার বিক্রমজিৎ
সেন্ধা । খেলাধ্লার স্বামীর প্রেরণার কথা
সর্ব প্রভাগর সংশা এক নতুন নক্লীর
স্থান বির্বাহিন দেশের অস্ত্র নক্লীর
স্থান বির্বাহিন দেশের অসার মেরেরা
আরত বেশী সংখ্যার এগিরে আসবে এবং
কলে আমানের দেশে মেরেদের খেলাখ্লাব
মন মারও উরত হবে। প্রদেনারের স্মৃত্রতা
বলন, ১৯৬৭-৬৮-তে বখন প্রতিযোগিতার
মান্ত্রম তখন ৩।৪ জনের বেশী প্রতিশ্বক্রারীর
দেশ প্রেরম না এখন অবস্থার অনেক পরিরতান ঘটেছে। এখন রীতিমত কোরালো
প্রত্যোগিতা কর্মতে হয় অনেক মেরের
স্থোগির স্থান ক্রমই বাড্রেছ।

স্বতা ধাপে ধাপে এগিয়েছে। ১৯৬৮ে আনতঃ বিশ্ববিদ্যালয় ক্রীড়ার যোগ দের
স্বতা। সেই বছরই মাদ্রাভে যায় জ্বান্তীর
ক্রীড়ার আস্বো, ৭০-এ কটকে জাতীর
ক্রীড়ার অসকাস নিক্ষেপে প্রথম স্থানাধিকার
করে। ৭১-৭১-এ আমেদারাদে জ্বান্তীর আস্বর,
স্পত্তী ও ডিসকাস দ্বিভাগেই শীর্ষান্থান
পায়। এব আপেও জাতীয় প্রশিক্ষণ শিবিরে
যোগ দিয়েছে স্বতা। ১৯৭০-৭৪-এ
আনতঃ রাজ্য ক্রীড়া প্রতিযোগিতার স্টপ্টে
নতুন রেকডিও করেছে। এবার এশীয় ক্রীড়ার
যোগদানের জনা বাজ্যালোর যে বাছাইপ্রশিক্ষণ শিবির শৃথু হবে, ডাতেও স্বতার
ডাক পড়েছে।

স্বতার মা নেই। বাবা আছেন, আর আছেন তিন ভাই ও এক বেনে। ছেলেগেয়ে-দের মধ্যে স্বতাই সবার ছোট। দীঘাঁকায়া স্বাঠনা এমন একটি স্কে সবল বাপালী মেয়ে চট করে চোথে পড়ে না। নিজের সম্পর্কে নম্ব বিনরের স্থেল স্ক্তিপ স্ট একটা প্রতারের ছাপ স্বতার সম্পত্ বাবিত্তি

খেলাথ্যার প্রতি তার নতুন অফিসের কলেকটর এন এন রার চৌধুরী এবং এ কে দাদের উৎসাহের কথাও স্তৃতা উল্লেখ করে বলল, গ্রীরার চৌধুরী নিচ্ছে এককারে স্পোটসম্যান ছিলেন। বত্তমানে অফিসের ক্যাতারটারের মধ্যে হাতে খেলাধালার দিশেও আগ্রহ বাড়ে, সে দিকে তার চেণ্টা আহা বিজ্ব কিছ্ব কিছ্ব ক্রীড়াকুশণাকৈ চাকরীতে অগ্রাধিকার দিতে আগ্রহী। স্তুতার বিশ্বাস স্কুষ্যার স্বুবিধা পেলে অন্যান্য দেশের মত বাংলার কুমারী এবং বধ্রাও এথকোটককে ম্যাতির চুড়ার উঠতে পারবে।





রৌডও...১২৫; থেকে ১১৫০; রেকড' শেলরার (২ রক্ষ).....

854. 8 644.

স্পিরিও সিস্টেম (৪ রকম) ১০০৫:, ১২৫৫:, ১৮৭৫: ও ২৩৭৫: এবং নানারক্ষ স্থানর রেডিওগ্রাম

জি রজাস অ্যান্ত কোং

১২, ভালবোসি স্পেন্নার ইন্দ্র, কালকাতা-১ [©] ২০-৫৪৮৩ ৫১, বিষেটার ব্লেন্ড, কালকাতা-১৭ [©] ৪৪-০৭৭৯

ক্লিস ওল্ড ২১ রামে ৫ উইকেট



ডেনিস আমিস ১ম ইনিংসে ১৮৮ রান







মাইক ডেনেস ১ম ইনিংসে ১১৮ রান

ভারত বনাম ইংল্যাণ্ড

শ্ৰক্ষা টেম্ট খেলা

ন্টকিহাসিক লডাস মাঠের দিবতীয় টেস জিকেট খেলায় ইংগ্যাম্ড এক ইনিংস ও ২৮৫ গলে ভারতকে হ্যারম্ভে ভারতেব



জিওফ ক্যারনাড ১১ বানে ৪ উইকেট

বিপক্ষে ১৯৭৪ সালের টেস্ট ক্লিকেট সিরিজে ২-০ খেলায় রবোর জন্ম হয়েছে। ব্রাদ্দ পাঁচ দিনের এই টেম্ট খেলা চতুর্থা দিনের ৭০ ছিনিটের মাথায় শেষ হয়। বতমান চেন্ট াসবিজের শেষ ৩য় টেস্ট খেলা বাকি। তবে এই তয় টেস্ট খেলার ফলাফল কোন ভাবেই ইংলাভেডর এই রাবার জয়ের পরিবতনি ঘটাতে পারবে না। এখনে উল্লেখা, ইংলাদেডর বিপক্ষে ভারত উপয পরি নটে টেপ্ট সিরিজে (১৯৭১ ও ১৯৭২-৭০) রাবার জয়ী হয়ে আণত-জ্বতিক টেপ্ট ক্লিকেট খেলার আসরে প্রথম সারিতে যে আসন **পেয়েছিল তা** আল নাডবড়ে হয়ে গোল। বত'মানে ভারত বনা^হ ইংলাদেডর টেন্ট ক্লিকেট সিরিক্লের ফুলাফল দাঁড়াস ঃ টেস্ট সিরিজ ১২, ইংল্যান্ডের ৰাৰাৰ জয় ৮ ভারতের বাৰার জয় ২ এবং সিরিজ অমীমাংসিত ২। এই নিয়ে লড স মাঠে ভারত ও ইংলা পেউর মধ্যে যে ৮টা टोम्पं थाना इन छात्र धनायन : देशनाट छत জয় ৭. ভারতের জয় ০ এবং খেলা ড ১।

ববাংও ইংলাপ্তের অধিনারক টসে জিতে প্রথমে বাটু কর র দান নিয়েছিলেন। প্রথম দিনের খেলায় ইংলাপ্তের মাট ১টা উইকেট পড়ে ৩৩৪ রান উঠেছিল। এই ফিনের খেলায় অপরাজিত ছিলেন ডেনিস



টান গ্রেগ ১ন ইনিংসে ১০৬ রান

ব্যঞ্জিল

আহিছ (১৮৭ বান) এবং জন এডার্ড (১৩ ান)। আমিস এই নিয়ে তাঁর টেস্ট ্_{থকাই} এটা সেগ্রেরী করলেন ভারতের বিপালে প্রথম সেঞ্রী। অসমাণ্ড ২ছ _{টেক}্র জাটিতে আমিস এবং ১১৮ বান ততে ভারতের িবসংখ্য ইংলার ভর হয়ে ২য় উইকেট **ভ**ুটির রেকর্ড _{বান কারেন।} আগের রেকর্ড ছিল ১৬৪ বান ('কত্তফ প্লোর এবং কেন ব্যারিংটন িল্লী ১৯৬১-৬২)। জন এডরিচ ১০ রান সংগ্রহ করে তারি টেস্ট ক্রিকেট অল্লান্ড জীবনে ৪০০০ রান পার্ণ করেন তিনি এই সাফস্য লাভ করেন তাঁর দ্রাট্ট টেল্টের ১০২**তম** ইনিংসের থেলায়। ঠেন্টে এক ইনিংসে তার সবেণিচ রান ০১০ নট আউট (বিপক্ষে নিউজিলাণ্ড, রিডস ১৯৬৫)।

we star in states money

শ্বতীয় দিনে ইংলাদেজর ১ম ইনিংস ৮১ রানের মাথায় শেষ হয়। ইংলাদেজর এই ৬২১ রান ভারতে বনাম ইংলাদেজর টেপার এক ইনিংসেব থেলায় উভয় দেশের প্রক্ষা আছা সর্বোচ্চ বানের রেকার্ডা পরি-০০ চরেছে। এ বিষয়ে আরোব বেকার্ডা ইংলাদেজরই ৫৭১ রান (৮ উইকেটে হিলালার্ডা। এবছ ট্রাফোর্ডা, ১৯৩৬)।

প্রথম দিনের অপরাজিত খেলোয়াড় মাগিস এবং এডবিচ দিবতীয় দিনে মাত্র ২০ ছিনিটের মধ্যে খেলা থেকে বিদার দান। এডবিচ তার ৯৬ বানে এবং আদ্মিস ত্রি ১৮৮ রানের মাথায় আউট হন। এর: ২য় উইকেটের জাটিতে ২২৮ মিনিটে ২২১ বান তুলেছিলেন। লাপের ইংলাপ্ডের রান দাঁড়ায় ৪ উইকেটে ৪৪৫। খেলায় অপ্রাজিত ছিলেন অধিনায়ক ডেনেস এবং গ্রেগ। লাজের পর ওম উইকেটের ্ৰাট দেনেস এবং গ্ৰেগ বীৰ্ত্তাবক্ষম খেলে শেষ পর্যনত সেঞ্রী করেন। ৫ম উই-কেটের জ্বটিক্তে প্রেগ এবং ডেনেস ১১৮ মিনিটে গলের ২০২ রান কুলেছিলেন। থেগ তার ১০৬ রানের মাথায় আউট হন। এটি তার cu টেল্ট সেপারী। অপর দিকে ডেনেস তার ১১৮ বান করে আউট হন। টেশ্ট খেলায় ডেনেসের এটি প্রথম সেঞ্রী। শ্বিতীয় দিনের ব্যক্ষি ৬৫ মিনিটের খেলায় छावट अब दीनहरमद रकान छेट्रेरक ना থটেয়ে ৫১ রান তুলেছিল। থেলায় গাভাব্যার ১৭ রাম এবং ইজিনীয়ার ৩৩ বান তুলে অপ্রাক্তিত ছিলেন।

ইংলান্ডের ১য় ইনিংসের পাহাড়
প্রমাণ ৬২৯ রানের উত্তরে তৃত্তীয় নিনে
ভারতের ১য় ইনিংস ৩০২ রানের মাথায়
শেষ হয়। ১য় উইকেটর জ্টিতে গাড়াস্থার
বাবং ইজিনীয়ার ১৩১ রান তৃত্তি
ভিলেন। ইংলান্ডের ১য় ইনিংসের
করেন থেকে ভারত ৩২৭ রানের পোষ্ঠনিংসের
করেন থেকে ভারত ৩২৭ রানের পোষ্ঠনিংসের
করেন থেকে ভারত ৩২৭ রানের পোষ্ঠনিংসের
করেন থেকার গাত ইংলান্ডের আনুক্তে
কর্মণ্ডির ব্রামার বার বির্বাধনী

	विश्व कर्ष्वन		
বছর	বিজয়ী	রানা স ⁴-আপ	গ্যেপ
2200	উর ুগ ুয়ে	আজেশি টনা	•
2208	ইত্যলী	চেকে]:∗ল ভাকিয়া	5 - 2
১৯৩৮	ইতাসী	হাপোরী	8>
2240	উর_গ_ংহ	বাজিল	08
>> 48	পঃ জামানী	হ্যুন্থেগরী	ى ي ئا ي
১৯৫৮	ব্যক্তিক	স্ইতেন	4 —₹
>205	ব্যক্তিল	চেকোশেলাভাকিয়া	\$
১৯৬৬	ইংল∏~ড	পঃ জাম ানী	•
	``, '\ -	14 - 12 let 1	ઠર

দ্রুটবর : দ্বিতীয় বিশ্বধ্রেধর দর্ন ২ বার (১৯৪২ ও ১৯৪৬ সালে) বিশ্ব ফটেবল প্রতিযোগিতার আসর বসেনি। ১৯৫০ সালে লগি প্রথায় থেলা হয়।

ইতালী

চতুর্থ দিলের ৭০ মিনিটের খেলায় ভারতের ২য় ইনিংস মাত্র ৪২ রানের মাথায় শেষ হ'লে ইংলাান্ড এক ই'নংস ও ২৮৫ বানের বাবধানে জিলে যায়। ভারতের এই ২য় ইনিংসে ক্রিস ওল্ড ২১ রানে ৫টা এবং জিওফ আর্নণ্ড ১৯ রানে ৪টে উইকেট নিয়ে ভারতের মের_{ুদ্}ন্ড ভেলেগ দিয়েছিলেন। ভারতের এই ৪২ রানই থে কোন দেশের বিপক্ষে তার টেপ্টের এক ইনিংসের থেলায় স্বান্দ্র রানের রেক:ডা অ!গের 3,541 স্ব নিদ্য রানের রেকড' ছিল ৫৮ (বিপক্ষে অংগ্র-লিয়া রিসবেন, ১৯৪**৭ এ**বং বিপক্ষে हेरलाएड शाहलकोत्त, **५**৯৫२)।

>>90

সংক্ষিপত কেকার

ইংলাদুভ : ৬২৯ বাল (ডেনিস আন্মিস ১৮৮, জন এডরিচ ৯৬, মাইক ভেনেস ১১৮ এবং টান গ্রেগ ১০৮ বান। অবিদ আলী ৭৯ বানে ২ বেদী ২২৬ বানে ৬ এবং প্রসল ১৬৬ বানে ২ উইকেট)

ভারত : ০০২ জাল (গাভাস্কার ৪৯, ই'জনীয়ার ৮৬ এবং বিশ্বনাথ ৫২ রান: ওল্ড ৬৭ রানে ৪ এবং ছেনজ্ঞিক ৪৮ রানে ০ উইকেট)

) ও ৪২ রান (সোপকার নটআইট ১৮ রান। ওলড ২১ রানে ৫ **এবং আরনলড ১৯** রানে 5 উইকেট)

ইংল্যান্ড সফরে ভারতীয় ক্লিকেট দল

১৯৭৪ সালের ইংল্যান্ড স্থান ভারতীয় জিকেট ধল এ প্রতি (জ.ন ২৪) ১৬টি প্রথম প্রেণীর জ্বেলার জংশ গ্রহণ করেছে। তাদের এই ধোলটি প্রথম প্রেণীর তোলার ফলাফল : ভারতীয় দলের জয় ৪, থেলা ড ১০ (উপর্যাুপরি) এবং হার ২ (ইংল্যান্ডের বিপক্ষে ১ম ও ২য় টেল্ট)। ভারতীয় দলের জয় ৪ ঃ সারে কাউন্টি দলকে ১০ উইকেটে, ভারিসায়ের দলকে ৮ উইকেটে, সন্মিলিক অকসফার্ড এবং কেন্দ্রিজ বিশ্ববিদ্যালয় দলকে ৫৯ বানে এবং ক্লম্টারশায়ার কাউন্টি দলকে ৫ উইকেটে।

বিশ্ব ফটেবল কাপ

বিশ্ব ফটেবল প্রতিযোগিতার স্চনা ১৯০০ সালে। প্রতি চত্থ বছরে এই প্রতিযোগিতার আসর বসার কথ্যা কিন্ত শিবতীয় বিশ্বযুদেধর দর্ন ১৯৩৮ সালের পর দুবার (১৯৪২ ও ১৯৪৬ সালে) এই প্রতিযোগিতার আসর বসেনি। ১৯৩**০** সাল থেকে ১৯৭০ সাল প্র্যাস্ট ৯ বারের প্রতিযোগিতায় বিজয়ী দলকে 'জলে রিমে কাপ' দিয়ে পরেম্কুত করা হয়েছে। ১৯৭৪ সাল থেকে বিজয়ী দলকে আচলে রিমে কাপের পরিবতে 'ফিফা কাপ' দেওয়া হবে। কারণ রাজিল সোট ৩ বার (১৯৫৮, ১৯৬২ ও ১৯৭০) বিশ্ব ফাটবল চ্যাম্পিয়ানসীপ ল্যাভের স্ত্রে 'জ্বল বিমে কাপটি চিরদিনের মত হুস্তগত করেছে। ১৮ কারেট সোনা দিয়ে তৈরী বিষয়া কাপের দৈখা ৩৬ সেণ্টিমটার এবং দাম ২০ হাজার ভলার (মার্কিন)। আগের আইনের পরিবর্তনের ফলে কোন দলেবই পকে ভিরদিনের হত এই 'ক্লিকা' কাপ' জন্ধ সম্ভৰ মন।

প্ৰিচ্ছ জামানীতে বে ১০ছ বিশ্ব ফুটবল প্ৰতিযোগিতায় আৰু ৰঙ্গেছে স্কাৰ



প্রথম রাউন্ভের লীগ পর্যায়ের খেলা শেষ हरमध्य । अहे अथम दार्केटक मीरबद हार्देड श्रारम जीन ह्यांम्ल्यात अवर दाताम-वान ই এয়াৰ সাতে দিবলীত বাউদ-ডব জীগ পৰ্যানে খেলবার যোগাতা লাভ করেছে এই अपि तम्म- अनर शारभद शार्य कार्यानी ए পশ্চিম জার্মানী, ২নং গ্রাপের ঘ্রাপা-**শ্লাভিয়া ও বাজিল, তনং গ্রেপর হল**াভি ও সাইডেন এবং ৪নং গ্রাপের পোল্যাত ও चारक निर्देश । १०३ मधि मार्ग्य मध्य ইউরোপের ৬টি এবং দক্ষিণ আমেরিকার ২টি। বিশ্ব ফুটবল কাপ বিজয়ী পঢ়িটি দেশের মধ্যে ১৯৬৬ শালের বিজয় ইংল্যান্ড ইউরোপীয় জোনের প্রাথমিক वाषाहे शत्रवंत्र स्थलात विमाश निरशंष्टल, পশ্চিম জার্মানীতে খেলবার স্ববেশ পায়নি। পশ্চিম সামানীতে প্রথম রাউন্ডের লীগ পর্যায়ে যে ১৬টি দেশ খেলেছিল ভালের মধ্যে বিশ্ব ফটেবল কাপ क्यी रमन किल कड़े ठावरि-डालिन পশ্চিম জামাণী, ইতালী এবং উর্গুরে এট চার্টি বিশ্ব কাপ বিজয়ী দেখের মধ্যে পরবর্তী দিবতীয় রাউপ্ডের লীগ পর্যায়ে খেলবার যোগাতা লাভ করেছে লাজিল এবং পশ্চিম জামানী। উর্গায়ে তনং গ্রাপে স্বানিদ্ন স্থান এবং ইতালী ৪নং গ্রাপে ৩য় স্থান লাভ করেছে। এথানে উল্লেখ্য ইতালী ১৯০৪ ও ১৯৩৮ সালে এবং উর্গুয়ে ১৯৩০ ও ১৯৫০ সালে বিশ্ব ফটেবল কাপ জয়ী হয়েছিল। ইতালী ১৯৭০ সালে বান সংখাপও द्वा किया।

প্রথম রাউণ্ডে ২নং গ্রপের জালি খেলায় যগোগলাভিয়া, ব্যাজিল অন্ত্রুকাল্ড—এই তিন দেশেই ৪ প্রেণ্ড করে উঠেছিল। শ্রেষ প্র্যাজন গোল এই বেজের ভিত্তিতে যুগোগদাভ্যা এবং ব্যাজন মথাজনে ২নং গ্রাপের চ্যাজনিক প্রথাজনে ২নং গ্রাপের চ্যাজনির ক্রিবারের (১৯৫৮, ১৯৬২ ও ১৯৭০) বিশ্ব ক্রিবার ক্রিপা সন্ধানী ব্যাজিলের খেলায় প্রাণের মত

জোল্য এবং বিক্রম নেই। ২নং গ্রাপের সর্বান্দনা স্থানাধিকারী ন্যাগত জাইরকে বেখানে ব্যান্দাভিরা ৯—০ গোলে হারিয়েছে সেখানে রাজিল জিতেছে ৩—০ গোলে। যাগোন্দাভিয়া এবং স্কটলাভির বিপক্ষে রাজিল গোলাশ্নাভাবে খেলা প্রান্দাভির লগী পর্যাধের খেলার সর্বাধিক গোলে জিতেছে শ্রান্দাভিয়া—জাইরের বিপক্ষে ৯—০ গোলে এবং সমুস্ত খেলারেই জিতেছে একমার গোলাভিও (৪র্থ গ্রান্দা)

প্ৰথম বাউদেশ্য লীগ চড়োলত ভালিকা ১নং জ্ঞাপ

খেজ ভাচার ব্ব বি প

প্রেজামনিশী ৩২১০৪১৫ প্রজামনিশী ৩২০১৪১৫ চিলি ৩০২১১২২ কক্ষেলিয়া ৩০১২০৫১

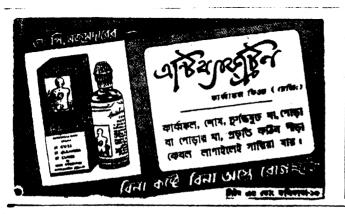
२नः ग्राम

শৈ জ জ হার স্ব বি প যুগোশলাভিয়া ৩ ১ ২ ০ ১০ ১ ৪ রাজিলা ৩ ১ ২ ০ ৩ ১ ৪ স্কলিগাভি ৩ ১ ২ ০ ৩ ১ ৪ জাইর ৩ ০ ০ ৩ ০১৪ ০

তনং গ্রন্থ

শে জ প্র হার স্ব বি প হালাণ্ড ৩ ২ ১ ০ ৬ ১ ৫ শ্রহৈডন ৩ ১ ২ ০ ৩ ০ ৪ বাজাগোরিয়া ৩ ০ ২ ১ ২ ৫ ২ উবালায়ে ৩ ০ ১ ২ ১ ৬ ১

খে জ জ হার প্র প পোলাকে ৩ ০ ০ ১২ ০ ৬ প্রে^{জন}্টনা ৩ ১ ১ ১ ৭ ৫ ৩ টালা ১ ১ ১ ৫ ৪ ০ গ্রাক



২য় রাউন্ডের লীগ-তালিকা

দ্বতীয় রাউণ্ডের লীগের খেলাই নীচের ৮টি দেশ দুটি প্রপে সমান ভাগ হয়ে খেলবে এবং এই দুই গুপেও চাদিপায়ান দেশ নিয়ে ফাইনাল খেলার আসর বসবে। প্রতিযোগিতার ৩য় ও ৪খ' খ্যান নিয়ের জন্য দুই গ্রুপের রানাস'-আপ দলের মধ্যে খেলা হবে।

এ **মংশ: প্র** জ্বমানী, হলাতে রাজিব এবং আ্রেণিটনা

ৰি গ্ৰ'প : ব্ৰেন্শলাভিয়া, পোলাও পশ্চিম জামানী এবং সইেডেন

প্রথম বিভাগের ফটেবল লীগ

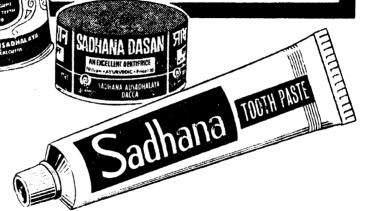
গত সম্ভাহে (জন ১৭—২২) প্রথম বিভাগের ফাটবল লাল প্রভিয়ে গিতার ম ১৪টা খেলা হয়েছে ভার সংক্ষিণ ফলাফল : জয়-পরাজয়ের নিম্পতি ৮ এবং খেলা জ ৬। মোহনবাগান গত সম্ভাহের খেলার (বিপক্ষে স্পোর্টিং ইউনিয়ন এবং ইন্টবেশলা) যোগদান করেনি।

গত চার বছরের প্রথম বিভাগের
ফারেরল লাগি চানিপ্রান ইস্টবেশন
স্বাগৃহত্যাভিতে উপ্যাপেরি পাঁচবার লাগি
জারর পথে এগারে চলেছে। বর্তামানে
ইম্টবেশনল ১৫টা খেলার ২৯ পায়ার্ট
সংগ্রহ করে লাগি তালিকার দাঁষ্ঠপান
দখল করে আছে। এখানে উপ্রেখ্য এ
বছরের লাগৈর খেলায় একমার ইফ্টবেশনলই এখনও কোন খেলাম হার
ম্বাগ্রার করেনি। তারা চিরকালের প্রথম
প্রতিশ্বন্দ্রী মোহনাবাগান এবং মহমেজান
স্পার্টিং লব থেকে অনেক পায়েটের
বাবধানে য়ে আছে।

(3) ্বাগান আলোচা সম্ভাছে কোন খেলায় যোগদান করেনি। খিদরপারের বিপদেশ তাদের খেলা কেন্দ্র করে যে ্রব্যভাবিক পরিম্পিতি দাড়িয়েছে এবং ক্রাব সম্পত্তির বিপানে ক্ষতি হয়েছে আর জনা ক্লাব কড়'পক্ষ এক অনুসম্ধান কামটি গঠন করেছেন। ব্রত্মানের এই অবস্থায় ২৯শে জান পর্যাত লীগের খেলায় তাদের খেলিনে করা সম্ভর নয় জানিয়ে খেলা ম্থাগত রাখার জনা মোহনবাগান আই এট ·৪-র কাছে এক আবেদন করেছিল। তাদেই এই আবেদন অগ্রাহা হয় এবং । নাহন বাগানও ভাদের খেলায় যোগদান থেনে বিরত থাকে। খিদিরপারের বিপক্ষে তাদের পরিভাছ খেলার আগে মোহনবাগানেই ১২টা খেলায় ১৯ পয়েণ্ট ছিল।

এরিরাফেসর বর্তমানে প্রেণ্ট দ্যাভিরেছে ৮টা থেলায় ১৩ পরেন্ট। নহামেডান স্পোটিংয়ের ১২টা থেলায় ১২ প্রেণ্ট। ইস্ট্রেকালের প্র এরিরাল্য ক্ম প্রেট নন্ট ক্রেছে।





লক্ষ লক্ষ লোক আজ সাধনা দশন ব্যবহার করেন কারণ অতি উৎকৃপ্ট দাঁতের মাজন ব'লে এর সুনাম ও জনপ্রিয়তা উত্তরোত্তর বেডেই চলেছে। অতলনীয় গুণাবলীর জন্য সাধনা দশন বছদিন ধরে দেশের সর্বন্ধ প্রচুর সমাদর লাভ করে আসছে। সাধনা ট্থ পেল্টও বহওণ-বিশিষ্ট বিশেষ ফলপ্রদ ও উপকারী। যাঁরা পেষ্ট পছন্দ 🖴 করেন তাঁদের অনুরোধেই প্রস্তুত করা হয়েছে। SD.5/70

SADHANA

TOOTH



সাধনা টুথ(পর্যু



সাধনা ঔষধালয়-ঢাকা

कव्यकाका-स

অধ্যক্ষ ডা: যোগেশচক্র ঘোর এম,এ, আর্বেদ-শাস্ত্রী, এফ.সি.এস, (লণ্ডন) এম,সি.এস, (আমেরিকা) ভাগলপুর কলেজের রসায়ন শাস্ত্রের ভূতপূর্ব অধ্যাপক। কলিকাতা কেন্দ্ৰ ডাঃ নরেশচন্দ্র গোর, এম,বি.বি,এস. (কবি) আমুর্বেদাচার

Friday, 5th July, 1974. Phone : 55-5231 (14 Lines)

तत्व अत्राक्त शूं स्थाना भूकत् अत्राक्त भूकत् अत्राक्त



ছ'লো সেই আসল জিনিষ যার পেছনে রয়েছে ১২৫ বছরের অভিজ্ঞতা

। সর্বাধুনিক মশলা প্রযুক্তি বিকার
 তল নতুন পাাকে আরও উরত
 ধরমের কুক্মী ওঁড়া মশলা ।
 । এর পেছনে বারছে দীর্ঘদিনের
 পাবেরবা।

গবেষণা।

। বাজাবের অসাক পাঁচটা ওঁড়া

মশলা থেকে কুশ্রা ওঁড়া মশলা

সম্পূর্ণ ভিন্ন তালার ও ধান্মপ্রাণ

সম্পূর্ণ ভিন্ন তালার

জন প্রাপ্ত ও বিশ্ব

व्यवस्थान कृष्ण एक म्ड (न्यादेत्र) आह तिह

(স্পাইস পাউডার ডিভিস্ম)

188/KCD-74

২৩৫, মহর্ষি দোবল্ল রোড, করিকাতা-१। কোনঃ ৩৩-০৯৯৫ ক্যাক্ট্রী—কাশীপর





ছৱড়িত আন্টিসেপটিক ক্রাম আপনার ত্বকর পড়ীরে প্ররেশ কণর কাটা-ছেড়া-ফাটা व्यरमञ्जाताक निवाशन वार्थ।

১০৮১ সালের মেটিক পত্রিকা কর্ত্রক স্থীরচন্দ্র প্রেমকার প্রাপ্ত শ্রীত্বারকাতি মোম রচিত ছোট কচ্চ সকলের মনের মত বাংলা সাহিত্যের ক্রানি আশ্চর্য বই

ৰিচিত্ৰ কাহিনী

প্রীতৃষারকাশ্তি যোগ

भूका ।- जात जेका

(अभ्या अस्मान ज्वारा

ছেটেমের উপযোগী সরস রচনা বাংলা সাহিত্যে
খ্র বেশী লেখা হয় নি। বিশেষ করে নানবিষরে
সত্য ঘটনা অবলম্বন করে ছোটদের মনের মত
বিচিত্র রোমাঞ্চকর লেখা খ্র সহক্ষ ময়। 'বিচিত্র
কাহিনী'তে লেখক সত্য ঘটনাগ্লিকে নিজের সরস
ম্নিসয়ানা দিয়ে এমন জীবস্ত আর আকর্ষণ করে
তুলেছেন যে শ্রু থেকে শেষ পর্যস্ত প্রতিটি রচনাই
অনবদ্য রস ও রোমাঞ্চে টইটম্ব্র । মোট পনেরোটি
কাহিনী ভিল্ল ভিল্ল রসের ফল্গ্রারায় সিত্র,
বর্ণনিয় মনোম্প্রকর ।

'আরও বিচিত্র কাছিনী' বইটি কিশোর ও বয়স্কলের জন্য সম্বভাবে রচিত। লেথক শ্বেন্ ছোটদের জন্যই রস পরিবেশন করেননি, বড়রাও এই জন্মত আস্বাদন করে প্রেচিত হবেন। জনবদ্য রস রচনাশোলী এবং প্রতিটি কাহিনীর ডিল্ল ডিল্ল ডিল্ল ডাক্ষণ চুম্বকের মত পাঠককে টেনে নিয়ে যাবে। এই বইটিতে দশটি বিভিন্ন রসের কাহিনী রয়েছে এবং লেথক তার ব্যক্তিগত অভিজ্ঞতার কাহিনীব্যক্তির এমন স্কেরডাবে রসম্ভ করে উপস্থিত করেছেন যে পাঠককে বিষ্কেশ করবে।

আরও বিচিত্র কাহিনী

শ্রীভূষারকান্তি ঘোষ ম্ল্যঃ—চার টাকা (চতুর্থ সংস্করণ চলছে)

এম সি সরকার জয়ন্ড সন্স প্রাইভেট বিনিষ্টেড, ১৪ বিদ্কিম চাট্রজ্যে স্ট্রীট, কলিকাভা-১২ ঃর্বেও৪-১৭৮২

मन्क महादारकत जार्थक समनकाहिनी अकामिक हज

20 अहे वहे जन्दरन्थ करस कार्ड म लागाम अञ्चलक ह

সম্প্রতিকালে বাংলা ভ্রমণ-সাহিত্যে খাবক মধারাজ একটি জার্মান্তর নাম। "মধ্-ব্ৰদাৰনে" নিছক ভ্ৰমণবিলা সীর অভিজ্ঞতা-সঞ্জম নয় । সেই সংশা লেখকের মনীয়া ও পাণ্ডিতাও স্প্রেকট। মথারা-বৃদ্ধাবনের ইতিহাস-काहिनी अलाम्ल निफीत मरना राध के शाधवाध करतरहन सा कियात गार्ग সন্ধিংস, গবেষক ও সাধারণ পাঠকের কোত হল আকর্ষণ করবে।"- দেশ শা্ধ; বৈষ্বের নয় ভারতীয় মাতেবাই মানস-পটে ব্লাবন **এক ম**হিম্ময় ম্ম্তিতে উম্ভাসিত: সেই ব্যাবন পরি ক্লমার চিত্র একেছেন লেখক-যা ভরি "विशामिण-कर्तुमा काङ्वी यभाना"त मण्डे भाठक-मतन ठमक मागारव।"

म गान्क ब

'শুকু, তোমার "মধ্-বুন্দাবনে" বই টি নিয়ে আমার ব্যক্তিতে কাভাকাডি পড়ে গিরেছে। কেউ আর সহজে ছা ডতে চায় না।'

....रेजनकाजन मार्थानाशास

'শ•ক. তোমার সরস লেখনী মনে হল এ। বইয়ে আরও সরস হয়ে উঠেছে।' --- गरजन्मकमात्र मित

'আপনার মধ্য-বাদাখনে পড়তে আরুদ্ধ করলে শেষ না করে ছাড়া যায় না।' --क्याब कशमीलहरम निरम्

অমরেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়ের অসাধারণ উপন্যাস

20.00

নীল চাষীদের আন্দোলনের পটভূমি সামনে রেখে বিখ্যাত "নীল দপ্রণ" রচিত হয়েছিল। এই লেখক চা-বাগ্রানের পর্টভূমিকায় এই যে অসাধায়ণ সাহিত্য স্থিত করলেন তাকে "স্বাজ্ঞ দপ্রণ" নামে অভিহিত করলেও অভ্যাঞ্জ ইয় না। বত্রমানে "সব্জ বিশ্লবে"র যুগে এও এক সময়োপ্যোগাঁ রচনা।

শতিপদ রাজগারের সমর্ণীয়ত্ম সাহিত্য স্থিট

ডজন বধ্ব

>> 00

করেক শতাব্দী আগেকার গোড়-বঞ্চার সামর্গঞ্জ রাজনৈতিক বিশ্বভালার যাগের পটভূমিকায় আবিভাবি ঘটেছিল মহামানব শ্রীটেতনাদেবের। তাঁর পাল আবিভাষে সেদিন সমাজের নিগ্হীত সাধারণ মানুষের সামনে এনেছিল মন্মাপের নবস্বীকৃতি। সেই নবড়েতনার একটি উল্জ্বল বিন্দুকে কেন্দ্ করে এই উপনাস। সেকালের একটি গ্রামা বালিকাবধার ভোগে সমাজের ব্যাপক য়ন্দ্রণা তার মহৎ উত্তরণের এক অসাধারণ প্রয়াস।

একটি সমর্ণীক গ্রন্থের পরিমাজি²ত মতুন সংস্করণ প্রকাশিত হল বিভূতিভূষণ মুখোপাধ্যামের শ্রেষ্ঠতম রচনা

लाञ्च, द्वौय

25.00

ৰহ,-প্ৰতীক্ষিত প্ৰশা লৈলেল দে'র অবিভারণী

সম্প্ৰাত প্ৰকাশিত হল। বিপ্ৰাৰ-ৰহি.াৰ উভ্লাস্ত শিখায় মৃত্যুক্ষয়ী বিশ্বব"-শংশিদের প্রতাক কর্ন। কেনে শিন স্ভাষের অত্যান-রহস্যের এবং কল্পিড মৃত্যুর স্বপক্ষ ও বিপক্ষ মৃতাম্ভ। প্রথম খণ্ড (৫ম সংস্করণ) ১৫.০০): দ্বিতীয় খন্ট (২য় সংস্করণ) 56.00 যথারীতি পাওয়া থাচেছ।

''আমি সুভাষ বলছি'' বইটির প্রতি খণ্ডের সম্পূর্ণ ম্লো অগ্রিম পাঠালে র্রোজ: ডাকে ৰই <u> બાઠાંદના</u> इद्य । ভাক-মাশ্ল আমবা বহন করব।

প্রখ্যাত বিপলবী ভপেন্দ্রকিশোর বঞ্চিত্র বায়ের

क्टिं (२३ मःक्कः १०)

২৫

ফণিভৰণ ভটাচাযেৰ

রবীন্দ্র লাইব্রেরী ১৫/২, শ্যামাচরণ দৈ শাটি, কলিকাতা ১২ ৷৷ ফোনঃ ৩৪-৮৩৫৬

नियुगावली

faces familes

रक्षथकरम्ब श्रीक

- ১ জন্মতে প্রভাগের জন্মে প্রোর্থক গর্মান বিনার নক্ষা রেখে পাঠা-ক্ষান অনোনীত রচনার পবং প্র-রাসের করে জানার হয় অহামা-নীত রচনা ক্ষানার্ভায় করেব গারাম ক্ষান্তম মা ক্ষানার সম্পো ক্রোম ক্ষানার্টারিকট প্রস্থিতির মা বি
- ই 1 প্রেরিভ রচনা কাগ্যন্তের এক প্রেন্থা পদ্দীক্ষরে চির্মাখন প্রথক্ত আম-শার ভাতপদ্দী হ লাগ্রাখন প্রসাদ-ক্ষরে প্রথম প্রকাশের জালা, গাহীত হয় না।
- চারচনার সংক্রা কেগকের নাম বা

 কিলানা না থাকার ক্রমান্ত

 ক্রানাের জনো গ্রেটিত হয় না।

এজে-টদের প্রতি

একেদনীর নিয়মাবলী এবং সে সংক্রিটিভ অন্যান ড্রেড অম্টেট ভাষাকারে পর ভারত জাতিবং

গ্রাহকদের প্রতি

- ১। গ্রাহকের ঠিকানা পরিবর্তনের জন্যে জনতত ১৫ দিন আলে তামাজ্ঞা কাশালায়ে সংবাদ দেওয়। আবশাক।
- হ। ছি পি-ডে শ্রিক পাঠানে হর না। গ্রাহকের হীন নিম্নালাখত হারে মান-অভাবযোগে অম্ভ কাবলিয়ে পাঠানে অবশ্রুত।

চাদার হার

কালকাজা প্রফ:শ্বল বামিক টাকা ২৫ ০০ টাকা ৩০.০০ বাশ্মাষিক টাকা ১২.৫০ টাকা ১৫.৫০ হাসাসিক টাকা ৬.২৫ টাকা ৬.০০

'অমত' কার্যালয়

১১/১ জ্যানক গণিজি জেন, কলিকাড়া—৩ কোন : ৫৫-৫২০১ (১৪ লাইন)

"জানেন কে এবং কারা অসার সভীপকে বিস্তান দিল, তারাই আবার অপেনাদের সমাজের কর্ণধার। রাত্রির অপ্কাবের আমরই শাড়ীর আঁচনের তলায় মুখ লোকায় এবং সংযোগরের স্কার্ড্র সাথেই তারাই আপনাদের সমাজের নিয়মের কাঠামো তৈরী করে।"

শ্রীক্ষণিন জিতের

বিলীন ব্দব্দ

ম্লা ৫, টাকা

(ব্যলা সাহিতা জগতে আলোড্নস্ভিট্কারী অবক্ষয়ী নারী সমাজের উপর একথানি বলিঠে উপনাস্)

শ্রীঅণিনজিতের পরবতশী উপন্যাস

তিস্তার তট রেখায়

श्ला ५ मेका

वानी প্রকাশ ॥ এ১২৯ বলেজ স্টাট মাকেটে কলিকাতা-১২

মহান্ত্রা শ্রিরকমারের

—কয়েকখানি উল্লেখযোগ্য গ্রন্থ

অমিয় নিমাই চারত

(৬৩) খণ্ড) প্রতি খণ্ড (১, ৪, ৫) ৩-০০ (২, ৩ ৬) ৪-০০

কালাচাঁদ গীতা

৪থ সংস্করণ ৩০০০

নিমাই সন্যান

(নাটক) ২য় সংস্করণ

\$.0a

নরোত্তম চরিত

क्षा अध्यक्तित

3.00

লড গোরাঙ্গ

(২২টি খণ্ডে) (ইংরাজী) প্রতি খণ্ড

2.00

নরোত্তম চরিত

(शिक्षी)

₹.00

ু গ্লাণ্ডগার ঃ *পত্রিক। ভবন* বাগবাজার ও বিশিষ্ট পুস্তকালয়



० मर्गा লো ৫০ পর্না

Friday 12th July, 1974 म्टब्रहाड २० खानाव २०४५

50 Pai

भूको विषय ७ जन्भाक्ष

- **२ अन्य ७ मृज्य अवहा**न
- ১০ সেকালের স্পাতিগ্রেণী
- २० अहे नाश्मात भवत
- ২০ ঘটনাপ্রবাহ
- २⁹ जलांकिक जलमान
- ৩১ সাহিত্য ও সংস্কৃতি
- ৩৫ আধিক প্ৰসঞ্চা
- ৩৭ চিটিপর
- শুচ মৃত্যু ও লুংখের গভারে
- ত৮ কাডি-ওগায়
- ৩৯ পিকাডিলী সাক্ৰাস

--শ্রীসমীর রাক্ত

- - -শ্রীদিলীপকুমার মুখোপাধ্যার

 - ন্ত্রীপ_ক্রনীক
- (উপন্যাস) —শ্রীঅতীন বন্দ্যোপাধ্যায়
 - —শ্রীক্তরংকার.
 - -- শ্রীশাশ্তিলাল মুখোপাধ্যার
- (কবিতা) —শ্রীআরতি দাস
- (কবিতা) —শ্রীম্ণাল বস্ চৌধুরী
- (কবিতা) —শ্রীঅমিরক্ষ হাটি
- (উপন্যাস) —গ্রীনিমাই ভট্টাচার্য

প্রকাশিত হয়েছে !

প্রধানমন্ত্রী বলছেন গরীরি হটাও সমাজবাদ কায়েম কর। বাদতব সত্য হল গরাবের চরম দুর্গতি আর অপমৃত্যু। শোষণ, পেষণ ও মিথ্যাচার ডেকে আনছে ফ্যাসিবাদ। দুন ীতি-অপসং স্কৃতি-ভ্রুটাচারে ক্ষুত্র জনসাধারণ কি চয় ?-ফারিবাদ অথবা রিম্লব। এরই সর্বাশ্গীণ ঐতিহাসিক বিশেষণ-

বেদুইনের কার পদ্ধবান

পাপ-পাণা প্রেম-আপ্রেম ও বিক্ষোভ-সংগ্রামের পটভূমিকায় রচিত অবিস্মরণীয় সাভি

প্রবয় সেনের

25-00

্দু 'থানি রাণ্ডীয় পুরুষ্কারপ্রাণ্ড অসামান্য গ্রন্থ---त्मवमात्र मामगादण्डक आकामा अ भाषिती s-00 পরাভূত প্রকৃতি •-•

সদ্য প্রকাশিত !

িমিসা! মিসা!! মিসা!!! ১৯৭৩

সোরেন চৌধরেণির তার্ণ্য মন তার্ণ্য ক্ষর্ধা ৮-০০

রেল কম'চারীদের সর্থ-দর্গথ ও রেল প্রশাসনের পটভূমিকায় রচিত দেবেন্দ্র মৈতের

ব্রডগেজ মিটারগেজ

प्तित प्रभागाद प्रक्रित दिन्न

0-00

সেম্ব্রাল লাইরেরী, ১৫:৩ শ্যামাচরণ দে স্ফাঁট, কলি-১২

জাৰৰি প্ৰাচীৰ কাৰি জ

যাবং স্থাস্যানিত গিরুরঃ সরিতশ্চ বিহুতিলে। তাবদ রামারণ-কথা প্রচরিষ্যতি ॥ রক্ষা কে যতদিন এই মহী-গ্রিসরিৎসকল অবস্থান



করবে. ততকাল রামায়ণ কথা লোকসমাজে প্রচারিত থাকবে। ভারতের শির্চ ডার্মণ কবিগার বাল্মীকি-রচিত ভারতবর্ষের এই প্রথম কাব্যে এদেশের সহস্র বংসরের হাদাপিত স্পন্দিত হয়ে এসেছে। আলোড়নময় ইতিহাস-গতির মুখেও আজ-অবধি এই চিবন্তন আমাদের স্বদেশের চতুঃসীমা স্থির হয়ে আছে।

ৰালমীকি-রামায়ণ-এর অন্টচকা-রিংশতি-সহস্র ছত্র তথা উত্তর-কাণ্ডের আদ্যোপান্ত মূ**লনিষ্ঠ** অনুবাদ ভারবি-র আসর প্রকাশ-স্চীর অ•তভু 🕏 হয়েছে। আচার্য শ্রীপ্রবোধচনদ্র সেনের বিদ্তৃত ভূমিকা সংবলিত, প্রখ্যাত শিল্পী শ্রীস,নীলমাধ্ব সেন-কর্তৃক চিত্রভূষিত এ**ই গ্রন্থের** সর্ববিষয়ক সৌকর্য যাতে গ্রুটি-হীন হয় সেদিকে বিশেষ লক্ষ্য রাখা হয়েছে। দ্ব-ভাগে বিনাস্ত এই গ্রন্থের মূল্য চল্লিশ টাকা। অগ্রিম দশ টাকা জমা দিয়ে গ্রাহকতালিকাভুক্ত হলে তিরিশ এই বই টাকায় প্রাপা হবে।



ভার বি

১৩ ৷১, বঞ্চিকম চাট্ৰেলা স্ট্ৰীট কলকাতা ১২

स्योचत्त्र अला अला यञ्जणा जात्र करष्टेत्र वाक्षांठे 3 जाट्य

व्यादात्व जात्र तिर्जतयाग्र ज्यातात्रित जानतात्र जात्रप्र काट्य जाट्य

व्यानित निम्मारे कालाकात काता छेएमव (श्रांक बाम नेकृत कालाक ता। श्रंक कालाक (कार्बा छात्वा किन्न (मश्राता श्रांक — व्यात व्यानित काम्मातत यञ्जना व्यात व्यक्षित मद्भन श्राप्त नेयानाशि। अ (श्रं व्यमशास व्यवशास व्यान नारक मारावा कत्वत (काताला व्यात

আানাসিনের গুণ অনেক। এ যে শুপু যন্ত্রণা থেকে আরাম দেয় তাই নয়— যন্ত্রণার ধক্কৰ যে হতাশভাব আসে তাও দূর করে দেয়। আপনাকে চটপট আরাম আর থক্তি দিয়ে, আানাসিন আপনার মুখে হাসি ফুটিয়ে তোলে।



এই অসহায় দিনগুলিতে যন্ত্ৰণা আর অস্বস্থি ভোগ করে পড়ে থাকবেন না। আজ যুগ অনেক এগিয়ে গেছে। জোরালো আর নির্ভরযোগ্য অ্যানাসিন আপনাকে চটপট আরাম দেয়, চান্দা করে তেলে। আপনি অক্লেশে আপনার রে একার কাজকর্ম করতে নারেন।

> নেয়ে হয়ে জন্মানে মাঝে মাঝে ঝঞ্চাট বলে মনে হয়। কিন্তু আজে এই অসময়ে আপনি আনাসিনের সাহায়ে সে ঝঞ্চাট পুর কবে—জীবনের সকল আনন্দ পুরো উপভোগ করতে পারেন। প্রয়োজনের জন্মে হ্যাওব্যাগে সবসময় আনাসিন রাখুন—মস্ত বভ স্থবিধে।

क्षांताला खर्म तिर्वत्रसामा

णुरातात्रित

्डावरः षाया-राजनात् डेमनासकाती अ**ष्**रथञ्जात सस्या प्रचारतः जनात्रीय

Rage. User of TM : Geoffray Manages & Co. Lat.



স্চীপত্র

প্ঠো বিষয়		লেখৰ
80 विकादन क्या		– শ্রী অরম্কাশ্ত
89 al_Ma2		—গ্রীক্ষপণক
৪৮ সেই জোকটি		শ্রীঅন্নিডাভ দাশগ্রণ্ড
৪৯ ভালৰাসা ভালৰাসা	(উপন্যাস)	—গ্রীআনন্দ বাগচী
६ ५ अ व्यव		—শ্রীঅঞ্জলি চৌধ্রী
৫২ র্পদীর খাতা		—শ্রীবরবার্ণনা
৫৩ খাসন	(গ্ৰহণ)	– গ্রীরূণ ঘোষ
৫৭ পাপ অউর প্রে	(চিত্র-স্মালোচনা)	
৫৮ ও'রা বলেন	ng traying and a second	— শ্রীনিম 'ল ধ র
৬০ ৰায়োলেকাপিক	, '	জীরঞ্জন মজ মুমদার
७० स्थान देश रक नग िक ७७	ण्डे _{फि} क मश्वाम	The second secon
७७ विष्मणी स्वि		শ্রী শা-র- চ
৭০ শতৰ্ষের স্মরণীয়		श्रीकृतिभ प्रदृश्याशासास
৭২ ৰাংলা দেশের ছবি		— শ্রীআনওয়ার আংনদ
৭৪ জনস া		শ্রীচিত্রাণ্সদা
৭৫ খেলার জগতে মেয়ে		– শ্রীক্রজয়
५५ शाउंत नामक		শ্রীবিপ্রেল বন্দ্যোপাধায়ে
্চ খেলাধ্সা	•	—গ্রীদশ্কি

* প্রকাশিত হল *

তারাশ্ব্কর বন্দ্যোপাধ্য ায়ের সর্বশেষ উপন্যাস

भाजावमीत स्यू 🚥

* দিতীয় খন্ড *

এ ট্রনাসের প্রথম খণ্ডে ছিল ঃ যালক মহাথর টংগজী শিক্ষার প্রয়াসে কল্ফ ডায় আগমন। কল্কাডার তুসে লেকপড়া আর্মত হয় মদাথর। তারপর অফ্টাস্স প্রথমায় প্রথম হয়ে উত্তীপ হয়।

শিবভাম খনেত : মন্যাখন কলেজ ভাবিন শার্ম। তারপর সেখানেও কত উত্থান প্রবের মধ্য দিয়ে ইন্টার্ম্মিডিয়েট এবং বি-এ প্রশিক্ষায় প্রথম হয়ে নিকেন্ন মান অক্ষ্মার রেখে কলেজের। সেরা ছাত্র বলে নিজেকে প্রমাণ করলো। তার ছাত্রজীবনের স্বেগ তংকালীন আচার আচরণ, নিল্পস্পক্তির সাংগ্র জেখক উন্নিবিংশ শতাব্দীর বাংলার মব্জাগ্রণ তথা নাংলা স্নাহিতার আর অক্সিক বিংশ শতাব্দীর জনসম্মত্তে উপন্ধাপ্তি ক্রেছেন। প্রথম থম্ড ১৫-০০

স্সোহিত্যিক গজেম্দ্রকুমার মিতের নতুন উপন্যাস

জলে দেখি জোনাকি 👓

প্ৰিশ ৰাহিনী	n	পণ্ডানন ঘোষাল	9.00		
^হ ৰাধীনতার হ্বাদ	n	মাণিক বংদ্যাপাধ্যায়	₽.00		
ওপার বাংলার আগে	u	নারায়ণ সান্যাল	28.00		
শ্বশ	11	স্নীল গণেগাপাধায	৬٠০০		
হিটলারের শেষ বিচার	n	কুশান্ত্বেল্ডাপাধ্যায়	¢.00		
বিক্ষ ধোডেসিয়া	H	ইন্দুজিং সেন	\$6.00		
তোমার দেশ আমার দেশ	n	<u>ড</u>	24.00		
মহানগর বাদশানগর	n	সম্লাট সেন	20.00		
যশোরেশ্বর	u	ঐ	\$₹.00		
প্ৰাভাস	n	চন্দ্ৰগ়্≎ত মোৰ	\$\$.00		
মণ্ডল ব্ৰুক হাউস ॥ ৭৮/১ মহাত্মা গাখনী রোড। কলিকাতা-৯					

শিশ, ভূমিন্ঠ হলেই দৱকার একখানা

আমার শৈশব

যে বই-এ খিন্দুর জন্মক থেকে সাজ বংসর পর্যাত প্রতিটি উল্লেখ্য ঘটনার নথী ও ছবি রাথা ঘাষে

ষাতে আছে শিশুকে গড়ে ভোলার পরিকল্পনা

বর্ণে ও সজ্জায় অতুলনীয় গেলা গ্লন্ম টাকা, গোডন গণ্টিশ টাকা)

> অন্নপ্রাশনে ও জন্মদিনের উপহারে অননা

শিশ্র সাহিত্য সংসদ প্রাঃ লিঃ ৩২০ আচার্য প্রফ্রন্ডেন্দ্র রোড। কলি-৯

नावि न्याशविव ५-००

অশোক সেন

চালি কমেডিয়ান। নিপক্ষপাত দ্খিত মন্তৃত তার নিবাক চিত্রকংশ ধাবতীয় র্থা-বেদনার অধিত্য এক্স.এ হাসে। বাল্রকাই গোফ ও অপপণ্ট কালার লাইন-লাইটে তার নন্দনতত্ব ধখন বিচিত্র মেড়া নের ওখন দি কিছা, এ **ওগ্ন লাইড** ক্লিমেশে একাকার হল্লে যায় গাড়ী, রাতে শোলা হানিসাক্তা গানের বিদ্যারের সাথে। চালির আদ্যা জীবন ফ্লে-বিত্রা, ডিস প্রাচ্কা —এ সবই অসীয় মমতাম্ন বিব্রাত গ্রেছে অন্যাক সেনের চালি চাপ্লিনে।

বিজ্ঞানাচাৰ্য সভ্যেন্দ্ৰাথ বসু ৪-০০

রবীন বল্দ্যাপাধ্যায়
শীঘই প্রকাশিত হচ্ছে ডঃ আদিতপ্রেসাদ মজ্মদারের তুলনামালক অভিনণ

किन्छानासक ब्रबीन्स्रनाथ ও विद्यकानन्त्र

গ্ৰেষণাগুল্থ।

শ্ৰীভূমি পাৰলিশিং কোম্পানী
৭৯, মহাখ্যা গাংধী হোড, কলিকাজ-৯



সম্পাদকীয়

ভূটোর বাংলাদেশ সফর

শাকিণ্ডানের প্রধানমন্ত্রী জুলাইকার আলি ভূটোর বাংলাদেশ সম্পর্বাহ্নতর পরিভিগতিরই পরীকৃতি। কিন্তু হার অন্যননীয় মনোভবের জনাই এই স্থাব হল। ১৯৭১ শালের মার্চ মার্সে ঢাক্র শাসনভান্ত্রক আলোচনা ভেঙে নিয়ে তিনি রাতির অন্যকারে করাচী ফেরে গিয়েছেলেন। তারশর শারু হয়েছিল ইয়াহিয়া খানের জলাবাহিনীর তাশ্ভব। দেদিন যদি জুলাফিকার আলি ভূটো বাংলাদেশের জনপ্রতিনিধিদের নামা দাবী মেনে নিতেন তাহলে লক্ষ লক্ষ বাঙালীর রক্তে পাকিস্তানী জনগাঁ শাসকর। হাত বলাক্ষত করতে পারত না। এই উপ্নিহাদেশে নেমে আসত না আরক্তি যুম্বের বিভাবিকা। বলাবন্ধ্য মাজবুর মহাদেশে নেমে আসত না আরক্তি যুম্বের বিভাবিকা। বলাবন্ধ্য মাজবুর মহাদেশে ফিরে পাকিস্তান ভার নববুই হাজার যুদ্ধবদলীকে অক্ষত অবহুও স্বাদেশে ফিরে পেরেছে। যুদ্ধাপ্রাধীদেরও বাহালী জ্ঞাত মার্জনা করেছে। ইতিহাসে এই উদারতার তলনা নেই।

বাংলাদেশের অভাদয়কে পাকিম্তান সহজে স্বীকার করে নেয় নি। ভুটোর ঢাকা সফরের সময়েও পাকি^ততান বাংলাদেশকে দেয় নি কটেইনতিক স্বীকৃতি। বংগবন্ধা নাজিবার রহমান ভুট্টোকে সসন্মান অভ্যথানা জানায়ে আকেনবার তার মহৎ হাদয় ও উদারতারই পরিচয় দিয়েছেন। পাকিস্তানের স্থেগ সহজ ও স্বাভাবিক সম্পর্ক স্থাপনের জন্য তিনি তিনটি শতেরি উল্লেখ করেছিলেন। প্রথমত, বংলাদেশে যে সমাগত পাকিস্তানী রয়েছে তাদের ফিরিয়ে নিতে হবে। দিবতীয়ত অবিভক্ত পাবিস্তানের বিষয়-সম্পত্তি ও দায়-দায়িত ভাগান্ত গিব প্রুম মামাংস করতে হবে। এবং তৃতীয়ত, উপমহাদেশের বৃত্তা স্বাথবিক্ষায় হ' দেশের মধ্যে গড়ে তুলতে হবে পারুদ্পরিক বিশ্বাস ও বংশাদ্ধের পরিবেশ। ভারতবর্ষাও চায় উপমহাদেশের 🕏 হণ্যুট শাহিত প্রতিক্ষার কাকে পাকিদ্তান তার বৈরিতা ও অদধ বিশেষ্য ভুলে গিয়ে এসিংয আসক। দঃথের বিষয় পাকিস্তানের তীর জারত-বিসোধিতার অবসান ঘটে নি। কুয়াশালামপারে ইসলামী সন্মেলনে ভারতের পার্মাণবিক বিস্ফোবণ নিয়ে এতি ক ও বিশ্বেষ স্থিতীর অপচেত্রী সে করেছিল। বাংলাদেশের দ্চতায় সেই অপচেত্রী তার সফল হয় নি। কিনত এর থেকে পাকিলানের দুলিভগণীর স্থকীণাতা ও অন্ধতার পরিচয় পাওয়া যায়। বাংলাদেশের সংশা ভারতের অন্তির সহফোগিতা ও অক্ষেদ্য মৈতী বন্ধনে পাকিস্তান আভিকিত। দুটি সাবিক্তিভি দেশ নিজেদের মধ্যে কৈ সম্পর্ক গড়ে তুলাবে এবং তা বজায় বাখলে সে িয়া পারিচার দার মাথা গাস্তেন্ত্র কোনো অর্থ হয় না। বংংলাদেশের মান্ত্রের ওপর বর্বর অত্যা-চারের জনা পাকিস্তান দায়ী। ভূটো বলা চেয়েছেন এই শোচনাল ঘটনা ও হত্যাকা কর জন। দায়ী পাকিতানী জংগীতনা। তিনি একবারও নিজের দায়িত ত্রীকার করেন নি কিংবা তার জন্য অন্পোচনা প্রকাশ করেন নি। বাংলাদেশের জনগণ সে কথা ভলতে পারে না।

বংশরেশ্ব তাকৈ নামণ করিয়ে দিয়েছেন যে ১৯৭১ সালে বাংশাদেশের জনগণকে যে মমানিতক অভিজ্ঞান্তা সহা করিছে হাছেছে তা সহজে ভোলা যায় না। বাংলাদেশ তা ভূগতেও রাজি নয়। তবা ব্যুক্তঃ শান্ত ও মানবিক কলাবের হাজে বিহু দেশের মধ্যে বাভাবিক সমপ্রক ন্থাপান বাংলাদেশ আগহাী। তারতব্যাধ তাই চায়। ভারত আশা করে বাশতর অব.খা স্বীকর করে নিয়ে পাকিল্ডান ভারতের সংপাক স্বাভাবিক সমপ্রক ম্থাপান করে আগ্রহ দেখাবে। গত লিক্সী চুছির সামর এই প্রতিজ্ঞাতিই পাকিল্ডান লিক্ডাতল এবং এই প্রতিজ্ঞাতির ভিত্তিতেই বাংলাদেশ পাকিল্ডানী বন্দাদের প্রতি ক্ষামা প্রদর্শনিকর। পাকিল্ডানকে ব্যুক্তে হবে বিরোধ জিইয়ে রেখে সে তার জনগণের স্বাভাবির ক্ষামা প্রদর্শনিরপেক্ষ রাখ্যা। তার আন্দেশের সংগা ভারতের আস্পেন্দার মিলা। পাকিল্ডানের আপ্রাদেশের ক্ষামার বাংলাদেশ একটি জোটানিরপেক্ষ, গণতাত্রিক ও ধ্রমানিরপেক্ষ রাখ্যা। তার আন্দেশের সংগা ভারতের আস্পেশ্র মিলা। পাকিল্ডানের সংগা ভারতের আপ্রদেশির মিলা। পাকিল্ডানের সংগা ভারতের আপ্রদেশির স্বাডা ভারতের আপ্রদেশির প্রামার শান্তি স্থাপানের জন্য তা সংক্তে ভারত ও বাংলাদেশ যেথি প্রচেট্টা চালিয়ে যাজে পাকিল্ডান যদি তাতে ঐকান্তিকভাবে ক্ষাজান্য বাথা করে দিয়ে কুটো আবির্য এক জনিন্দ্রভার মধ্যে ঠেলে দিলেন দুই সেলের সম্পর্কণ এই ব্যুবান অভিজম করা কঠিন হত না। বাংলাদেশের সংগা জালোচনা বাথা করে দিয়ে কুটো আবার এক জনিন্দ্রভার মধ্যে ঠেলে দিলেন দুই সেলের সম্পর্কণ এই ক্ষাজার দারিছ ভারই।

ন্যান নেই। তিন বছরের নয়ন চার ঘণ্টা আনগে মারা গেছে।

হাসপাতালের লোকজন সাধারণভাবে মৃত্যু সংবংশ উদাসনি। সেটা যে খবে বেমানান, এমন বলা যায় না। যেখানে প্রতিদিন্ট কেউ-শা-কেউ মরছেই (জন্মাঞ্চ্ছে) সেখানে মৃত্যু সংবংশ লোকে যদি সামানা নিবিধার হয়ই তবে তা খবে অংবাভাবিক নয়। দ্বিভিকটুত না। তবা যে-নাস্থ্য থবরটা দেল, সে খবে পোড়-খাওয়া নয় ব্য়েসটা কম ফলে খবরটা দেলার মাহাতে ভার মুখটা সমাদ্য বিশ্বপ্প হল। অখচ বমা আর প্রকাশ, নয়নের মা-বাবা, আজ কিছুটা নিভায়ে হার্মপ্রটির ক্রিটিকাল আওয়ার' প্রেরিক্র গিডেছিল এবং এই নাস্থিই খানিক স্বনিভ্তির স্বলে বল্লিছ্ল—আপনায়া এখনে বার ক্রান্তির স্বান্তির ক্রিটিক্র ক্রান্তির বান ক্রান্তির স্বান্তির বার ক্রিটিয়েছিল। দ্বাহির নিরুক্ত অনিচা। প্রে ক্রান্ত রাত ক্রিটিয়েছিল। দ্বাহির নিরুক্ত অনিচা। প্রে ক্রান্ত রাত ক্রিটিয়েছিল। দ্বাহির নিরুক্ত অনিচা। প্রে ক্রান্ত রাত ক্রিটিয়েছিল। দ্বাহির নিরুক্ত অনিচা। প্রে ক্রান্ত বারত ক্রিটিয়েছিল। দ্বাহির নিরুক্ত অনিচা। প্রে ক্রান্ত বারত ক্রিটিয়েছিল। দ্বাহির নিরুক্ত

কলে আজ্ এরা মাড়া সংবাদের জন্য তৈরী ছিল না।
কথাটা এক অর্থে হয়তো অবাদতরও বটে। কারণ কোন
মান্থই মাড়া সংবাদের জন্য কখনে তৈরী থাকে না। বস্তুতঃ
মাড়াকে কোন অবস্থাতেই কেউই আম্বা মেনে নিতে পারি
না। অগচ মাড়ার মত অনিবার্য অব্ধাবিত আর কাঁটিই বা
আছেটা আঘাতের তারি মাক্সিকতার এবা ক্ষেক্ মাইত্

বিমান হরে দাঁড়িরে থাকে। আরপ্র রমান দা-হাত সামানের আঠের দরকার ওপরে গিলে পড়ে এন, তেতে পড়া পরীরের ভার বহন করবার শতি যেন ক্রিটি লাডে। আর প্রকাশ স্থিত চোবে নাসের সদা ধেলাগেলি-ক্রবিভর দিয়ে চলে-যাওয়া দেখে। তারপর তার উত্তাশত হাত দাঁড়িও দর্জার ওপরে গিরে পড়ে।

দ্রকার ওপাশেই মুক্তী হতে ব্যক্ত এখন শ্রে আছে এই বৃষ্ধ-খবেই।

বাবা মার মধ্যে কে প্রথম কাদল িএটা খবে বেশী উল্লেখযোগ্য ব্যাপার কিছু নর্মাট্ট তবং প্রকাশই আগে কাদল সম্প্রেন আরুল হয়ে। লাকবিত্বভাগ্য সে ভূলে গেল স্থানফালের কথা। এই তার প্রথম পাত্র-লোক। নয়ন ছিল তার প্রথম এবং একমাত সংত্রি।

একমাত বা প্রথম সম্ভান না হলেও সে কাদত। কারণ এক্ষেত্রে কার্যাই স্বাভাবিক। কিন্তু রমা কাদল না। কাদতে পালে না। কিন্বা ভার কারা এল না। এটা খ্ব স্বাভাবিক নয়। কিন্তু কেন ভার কারা পায় না কে জানে। হাসি-কারা ভয় বা আনন্দের কার্যকারণ সম্পন্ধ বড় দ্বোধা, ছটিল। গর্মস্থ সে খ্ব স্পত্ট করে প্রকাশের কারার শব্দও শনেতে পোল না। কারণ একটা তীর নিরব্ছিল গ্রেমন খ্নি—খ্য র্টোলগ্রাফ পোসেট কান পাতলে শোনা যায়—তেমনি একটা



বহুদ্রাগত এবং বহুদ্রেগ্যেমী শক্ষতক্ষণ তার সমস্ত চেতনা তথন মথিত করে দিরে করে বিজেল। বিমে কিম বিমে বিমা বেন গভার পাহাটো খাদের ভেতর দিরে বরে মাঞ্জম খবনার শক্ষােত তার চেতনা অব-চেতনার মিলে বিশে তাকে নিস্পদ নিবােম করে দিছিল। অখচ রমা মুছা হায় নি। বে রকম অবস্থাকে ঠিক সংকােহ্নিভাও করা যাহা না।

অবিকল এ রক্ষ হটনা রমার জীবনে আরেকবার খটেছিল। নয়নকে জন্ম দেবার স্মন্ত্রে। সেদিনত করোকটি করে নি সে। শুধু শ্রীবের পক্ষে অসহা মন্ত্রে স্বাধার সের করেছিল। আরু সে চীংকার করেছিল। আরু সে চীংকার করতে পারছে না। অথচ চীংকার করতে পারছে না।

রমা এখন ভাবছে নমন আর কোনদিন ভার পালে শোবে না কিম্বা কালাকাটি করে ভাকে জনলাভ্রম করবে না কিম্বা আর কোনদিন ভাকে মা বলে ভাকবে না ভাষবা ভার কোলে উঠেই শ্বিপু হাতে ভার নাক খামচে ধরবে না। আর ভ্রমা ভূতিম রোধে ক্ষমা ভাকে ভাউ করে কালাভূ দেবার ভূতিম করকো খলবল করে নান আর হেসের উঠবে না।

রমার ভেঙে-হাওয়া ব্যকে কালা ভথলায না-বাল উঠে আসে, ১য়াড়ো বা অভিমান-জমন অকালে মরে গেল কেন নয়ন?

অঞ্চল ছাড়া কী? যে শিশ্য সাবে বছর তিনেক এসেছে প্থিবীতে যে কিছু চিনল না ব্যুক্ত না ভোগে করল না সে অমান অমান সাবে হতবে জার এই ছকি করে অমান কেন্যু এই তে, যেন স্মেনিন ভাকে বেহাংশ করে শিয়ে গভীর বাতে জন্ম নিয়ে-গ ছিল নায়ন এই হাসপাতালেই। আর গতবাল রাত শেষ হবব আগেই সে চলে গেল এই ছাসপাতাল খেবেই। ব্যার অন্তর্ম হতে ইচ্ছা বাব ভাগতত ক্ষিত্য বিন্তু কেন্যু স্কায়াও পায় না?

শ্ধ শৰীর বিব্ধ লাগে আব কানের মধ্য টেলিআফেব ভারের বহাুশ্রাগত এবং বহান্রগামী একটানা বিফাবিম শবদ শ্বিত পায়।

তার দুতাত সরজার পালে। বৈহে নৈলে যেতে খাকে, শ্বীরের অসহা ভাব ভুলাগত লীচে টেকে নাল্যা

প্রধান তার কলে। ইনি বিন্দু বিন্দু

থামে তেজা ফাকারে মুখটা দেবে, সামনে

থাকৈ আত্বেক তারে দ্রোতে ব্যক্ত টেবে

শেষ্ শোকাত্ত বালায় বলে—আলাদের নয়ন
ভার বেটা।

।

ভার গলায় ধত্টা গোক রম্প্রেক কাঁনাবাব ইনধন ভাবো চেয়ে বেশী। রম্প্রেক দেখে ভাব ভেয়া হয়। তবং রম্প্রিক নিঃ শুধু একটা হাত সে আলতো করে প্রকাশের কাঁধের প্রপর তুলে দেয়া। মাধা হেলায় ভার ব্বেক, থার দৃশ চোখ আধ্বোজা থেন তার বড় খ্য শেংকছে, এখানি চুয়াতো বা সে খ্যান্ত্রেও প্রত্তে পারে এমন অসাড় তার দ্ব চোশের ভারী পারে।

তারও চেয়ে অনেক বেশী নিঃসাড তার দুটি পা। নশ্বনের দুটো পারের মত হরে হাবে নাতো তার পা দুটো? দুটো অসাড় পা নিয়েই জনেমছিল ন্যুন, তিন বছর বয়েন্দেও উঠে দড়িতে পারত না। স্থামা দিয়েও এগোতে পারত না। কথনো কথনো ুবা হায়ে থাকলে। সারাঞ্চল বসে বসেই ভার কেটে হেত। পা দুটি পাট-কাঠির মত এমন সরু ছিল সহসা দেখনে মনে হত ও দাটি তার শরীরের অংশ নয়। রুমু এ⊄টা দাখিশবাস ফেলে। প্রকাশ আরে। জোরে কাঁদে স্পালের কোলল আলো সামনের স্বাঞ্চ প্র কিম্বা নিম্পাছটা কিছাই তাব দেখে। পড়ে না। তার দটোখ সঞ্চল। র্মার নিজ্বলা চোখ, ভবাসেও বিছাই দেখেনাঃ শা্ধা ভার বোজা চোহে বসে বসে মেঝে থেকে মাডি খ্পটে-খাওয়া নয়নের উবা হাওয়ার ভীকা স্পূর্ণ হয়। নয়নের মুখাণিনর প্রয়োজন হয় লা। কারণ এডটোক শিশ্বর শব দাহ কর্বার বাঁতি নেই। প্রকাশের ভাই বিকাশ ও তার গল্পাল্যৰ গলগাৰ **গ্**ভীৰ জলে নয়নকে ভাসিয়ে দিয়ে স্নান করে উঠে আসে। প্রকাশ ও ।

রমাকে কলতলায়, দাঁড় কবিয়ে মিন্
বালতি বাজাত ভাল চালে তার গায়ে। মিন্
রমার ন্দান পশিচমে হেলেপড়া স্থেব বারালো রোদ মমার মুখে এসে প্রড়ো তার দেটোখ বন্ধ। বালতির জলভাড়া জন্ম কোন জল নেই তার চোখে। জনক প্রতিবেশীরা থিরে দাঁড়িয়ে তাকে দেখে। এন্দ মেরো-মানাষ যে জিলে মার গেলেও কাদে না বিজ্ঞান্দতো সে বিশেষ দুর্গীরা। টালির চালে কাক ডাকে। স্নান হয়ে কোলে মিন্ তার হাত ধার ঘরে নিয়ে আসো। মিন, এই প্রথম রমার হাত ধরল এরকমভাবে। বিয়ের প্রধান শিক্ষাভিত্তাকে ব্রণ করে এরকমভাবে গরে নিয়ে গিয়েছিল।

শাশচ্চি বারাদায় আল্থোল হয়ে
তুম্প কালাকটি করছে। কালা-দিয়ে যদি নোকর পরিমাপ করা যায় তাইলে তার শোক সবচেয়ে বেশী। প্রকাশের চেয়েও, র্মাব ডো প্রশাহ তঠে না।

প্রকাশের বানা বলে—নিয়তি ব্যাবলে
নিয়তি। সবই তাঁর ইচ্ছা। যার যখন
ডাক পড়বে তাকে তখন যেতেই হবে।
কারাকাটি করলে কি নমন ফিরবে হ
ষাট বছরের বড়ো মান্য ফোকলা
হাথে জড়ানো জিতে তোতলায়। মুখে গাই
বল্ক, তার ছানি-পড়া গোবেত জল গড়ায়।
সে এমন বড়ো মান্টা বার আর না
বাটলোও চলে—সে দিবি। পড়ে রইল আর
তিন বছরের নাতিটা কিনা হাট করে চাল
গোল। বেশ্বা নিয়তির ওপরে তার রাগ
হয়।

Region of the control of the control

ছরে তকুপোরে আড় হরে এম শাহ্মেছিল। সে স্থির চোখে নরনের স্ত্রুপ করে রাখা ক্ষাঝাগালো দেখছিল, সে স্হস্য চনকে এঠে।

and the second second second second second

নিয়তি—নিয়তি—কথাটা হঠাৎ কালের
ঝিমনিম শশতরকাকে তেদ করে তীলা
প্রেকের মত গিরে আমলে তার মগজে
হিন্দ হয়। মাধার ভেতরে যেন বছপাত
সরে হতে থাকে। আর সে সজের
ধারা বেয়ে প্রেনো কিছা কান স্মৃতি টপ
টপ করে ঝরতে থাকে ব্রেকর ভেতরে।
ব্রেকর ব্রিকে গভার শ্লাতা হা হা করে।
বিহাল চোখে সে তৌখপৌ জানলীর দিকে
তাক্যে থাকে। মগজের ফ্টেফটো গলে গলে
জ্যানো বিছা করে। তির তির করে নামতে
থাকে সক্ষা ধারার তে।

কপাল, পোড়া কপাল আমার দ শাশ্রতির থেদোড়ি মনে পড়ে—'কপাল' না প্ডলে এমন হয় ?'

বড়ে। শ্ৰুবে ভূখনো বলত— নিয়তি, বাৰলে নিয়তি। জন্ম মতে বিয়ে।

এসব ছে'লো কথাৰ শাশ,ভিকে কেউ কথানা ভোলতে পারে নাম শাশ,ভি বলেছিল -ভগবালের দেশে ধরো না দোষ বাছে পোটবা

ষে পেটে বিকলত। ছেলে জ্বার সে পেটটার দোষ প্রমাণের জনা বিষ্টিত্র প্রয়োজন হয় না। বিশেব করে পেটটা যার সে যে কতব্ড পাপী—সেইটি প্রমাণ করে।

আমরাও তো সেটে ধরেছি ? শাশ্ডির এরক্য প্রশান উত্তরে আশার ময়, শাংম্ এটাই নিশিচত প্রমাণের জন্ম যে তার সেট নিকল্যা । আন্তর জন্মের সাসে না থাকলে এমন শান্তিত হয় ? — অকাট স্টিছ । এবস্থে আর কোন কথা চলে মা

কিন্তু পাপ থেমন আছে তা খন্ডাবাব পথত আছে। শাশ্যভিত বিধান দেয়--বাবাব খানে গিংম দন্ডী কাটো বউ মাদ্যলৈ নাত, দেখ যদি বাবার কুপা ১২২

রমা শাশুভিকে যে খনে মানা করে তা না। কিন্তু নয়ন তো তার পেটের ছেলো। এবং বিকলিংগত বটে। ফাল সে দন্তী কেটেছিল বানার খানে গিয়ে, হাজামজা পাকুরে দনান করে সাটাজ্যে হালায়ে গড়াগড়ি থেয়েছিল, বেলপাতার মাদালি করে নয়নের কেমারে পরিয়েছিল। আরু বিশ্বের পরে সেদিনই প্রথম সে কেটিছল, যামন সে গত জন্মের পালের হালা মাজনি ভিক্ষা বর্জিল প্রায়াশ্বকার খ্পারিতে ফুল-বেশপাতায় চাকা শিবলিন্দে দুখ্য চলভে চালতে।

এতে জনজন্মান্তরের পাপ কডটা ধ্য়ে মছে গিয়েছিল জানা নেই, কিন্তু মান্ত্রি দেখে ভাকার যে আগত্ম হয়েছিল সেক্থা রহা ভোলোন। 'এতেই যদি সামবে তবে আমার কাছে জাসা কেন? যা বা বলেছিলাম খাইরেছিলে? সিমোছের ঝোল রোজ একটি করে ডিম অন্ততঃ একসের দ্ধে? ওব্ধও তো খাওয়াও না ঠিকমত।

প্রকাশ বলেছিল—রিব ভারারের থালি বড়লোকী চাল। ওর কাছে গোলেই থালি খাওরার ফর্দ দেবে। আসলো শাল। ভারারি জানে না, শ্রেফ ভূজাং ভাজাং দিয়ে টাকা খায়।

'ষ্ত ডাক্তারি তুমি জানো?' র্মা এরক্ম একটা কথা বলেছিল।

আহি যদি জানব তবে শালা এই চাহারটার কাভে যাই?'

'যদি যাওই তবে যা করতে বৃশে ভাই কর।'

'ভাই কর? আমি কী জাটসাহেবের বাচ্চা? রবি ভারার জানে না?' সে যে রাটটাস বিভিত্তের কাশ জোব স্টাফ রবি ভারারের একথা জানা ছিল কিন। রমা তা জানে না।

প্রকাশ এক নিঃশবাসে কলেছিল – আসলে বাটো নিজেও পেট্কৈ, থালি কোলাবার ধালা। তোমার যথন পেট বাল্ডা এসেছিল তথ্না ও একটা এমান ফদ্^ৰ দিয়েছিল। দেয়নি ?'

রহা অস্বাকার করতে পারে নি। এবং
রমা বলতে চেয়েছিল—ভামাকে যা মা
খাতে বলিছিল সেরকছা কিক কিল থেলে
শয়ন এবকছা হয়ে জন্মাত না। এটা অবশ্য
ভার কথা না ডাঙ্কারেরই কথা। তব্য সে
বলোন কারণ তাহলে শাশ্যভিত্র বিরুদ্ধতা
করা হয়। অবশ্য তাহেও সে ভয় পায় না,
ভয় পায় পাছে বাভিত্ত কুর্কেত্র হয়।
এরকম কুর্কেত্র হয়েছিল—নয়ন আসার
আগে এবং একপোয়া মুধ নিয়ে।

ডাকার প্রোছল দিনে ভারত ১৯ দেও সর (এবং সেই সংশা ডিম কলা মাংস মাছ বেমন সাধারণত সে বলো) সে খেগেছিল এক লোৱা।

আমরা কী আর ছানাপোনা পেটে ধরিনি? আমরা কি ছি দুখ ডিম থেরেছি? বাড়ির লোকে পেব, চা খায় দুবেলা তা কী চোখে পড়ে না? লাজ্জা ছেলাও নেই এমন দিনকাল পড়েছে।

শাশন্ত্র এসব কথার ঝাঁঝালো উত্তর রমা দিতে পারত, দেরনি। কারণ বিরের আগে তাব একট্ ছিচ্কাদ্রনে স্বভাব ছিল। এবং গোঁদনও তার হঠাং কারা পেরে গিরোছল। অবশ্য শেষ প্রাণ্ড সেকাদেনি। কী কোশলে কে জানে, তীর উত্তেজনার মহেতে তার শরীরের বল্পাতিগলো যেন মহেতে দ্বত সেলাই মেশিনের মত থট খট করে তার ব্জেড়াজা ব্যাক্তির ক্রান্তের ক্রান্তর ক্র

সে না কোলে হালি মাৰে শালাভিক বলল—মা, আপনাকে দ্ধে দিলে চা করে দেব?' এরপরে বলি কুরক্তে হরই ভবে ভার জন্যে কে দারী, শাশন্ডি না রমা? আর ভারপরে বাড়িতে যদি এক্সপালা দন্ধ বল্ধ হরই ভবে ভার জনাই বা কে দারী? নিয়তি না রমা?

ঠিক এসময় টারাধাকা সিদ্ধান্টর মেরেডে পারের পাতার শব্দ ভূলে মিন্ এসে দাড়াল ভার সামনে মমভামার ভাল্যতে, বলশ—বাদি, একটা দুধে থেরে নাও।'

ভার হাতে কাঁচের 'কাস, ভার চোখ লাল এবং ফোলা। একট, আঘট, না কাদলে লোকে নিশেদ রটায়, ভাছাড়া মান্বের বিশেষ করে সেরেমান্বের প্রাণে মায়ামমতা থাকা নিতাশত দরকার। উপরত্তু মিন্রে বিষের বয়েস হয়ে গেছে। ফলে সে কেন্দেছে এবং ভালাকোয়ওন।

ভাবপেশ্হীন দ্থিতে রহা কাঁচের পাসে সাদা দ্ধে দেখে। জল মেশানো নালচে সাদা। গ্রনের জন্য একপোয়া বাধা। সে দুন্ধ আজে। এসেছে।

কাদন নাওয়া খাওয়া নেই, ঘুম নেই। দংগটা খেলে শরীর চাংগা ছবে।' মিনা, রমার একটা হাত ধরে যেন ভার নিবিকার অন্য-মনক্ষতা ভেড়েও দিতে চায়।

শারীর চাগগা হলে কী ভার কলে। গাবে ? সারা শারীরের ফ্ল্টেণ্ডগালো কেমন যেন ম্টেড়ে রয়েছে, বুক দ্যচাপ্য, স্তু করে একটা দীঘাশ্বাস ফেলে রয়া।

তারপর আচেত কলে--'নয়নের দুখ, নাঃ'

আচল দিয়ে মিন্ নিজের শ্কেনো
দ্টোগ মোছে, বলে--গরম থাকতে থাকতে ৩
গেয়ে নাও। বমার দটো টোটই কাপে, এবং
এমন তেরছাভাবে বাকৈ সহসা মনে হয় ব্ঝি
রমা হাসবে পরিকার গণায় রমা বলে---খ্য
দিতে বারণ করে দাতনি কেন্ট কাল থেকে
আর দিতে হবে না, বিকোলে গোয়ালাকে
বলে দিও।

বাইরে সেম্ব্রং শাশাভির নিভে-আসা কালা ফের হাওয়ার দাগতে আগ্রেনর মৃত লক লাকরে ওঠে। এতে মন্মান করা যায় প্রকাশ ফিরল, সেটা আরো সগত হল সহসা প্রকাশের একটা ধ্যাকে। যেন খানিকটা জল পড়ালা, সব আগ্রে নিফেবে ঠান্ডা হরে গেল। প্রকাশের গলা—রমা এগনো কাঁদেনি?' শাশাভির স্মিমিত প্রভাবে এবং আরো কিছ্ অস্পন্ট আলোচনার চিন্তিত, গ্রেন রমার কানের ঝিমাঝিমানি জারো বাভিরে ভুলল। পরে প্রস্পেসর জের টেনে মিন্ ব্রল—গভামাকে অভ ভাবতে হরেনা, ভূমি দ্র্বটা থেরে নাও ভো।' প্রকাশ ঘরে ভোকে, স্লিক্ষ চেন্ধে ক্রমাকে দেখে, ভারপর মিনাকে বংল-পুন দিচ্চিন ? ভালই। ভালারও ভাই বলল-ভা মধের সংখ্য এই ওর্থটা ম্লে দেভ।' প্রকাশ একটা প্রিয়া এগিয়ে দের।

রমা নিম্পলক চেন্থ প্রকাশের উদ্বেগা-কুল মুখ দেখে। রুশন স্থিমিত গলায় বলে— ভাষারের কাছ থেকে ওবংধ আনলে?

প্রকাশ উৎসাহে কাছে এগিনার এসে বলে—হাঁ রবি ভাছার দিল। দ্বধটা খেরে নাও, শ্ব ঠিক হয়ে বাবে।

হঠাৎ প্রকাশকে আম্ল চমকে দিরে অপ্রত্যাশিত তাক্ষাতার প্রচণত চীংকার করে ওঠে—কেন আনলে ধর্ধ?' তার দ্চোথ টক্টকে, গলা আর কপালের শিরা টান টান। উত্তেজনায় ওঠে বসে রমা।

আতত্ক উল্লেগে প্রকাশের শ্রমীর কোপে ওঠে। বিম্ফের মত দাঁজ্যি থাকে সে মেন বিজাহত। সহস। শাশ্তি দরজার সামনে পদে দজ্যি—বিশ্রমত জার বেশবাস, দ্টোগের কোলে শ্রকিয়ে-যাওরা জলস্ব দাপ অন্নধের গলার বলে—পদেট থেরে নাও বৌ? অত ডেপে পড়লে চলে? শ্রীরটা তে বাঁচিয়ে রাখতে হবে।

প্রকাশের চেয়েও বিমুড় কমার **ভণ্জি,** ভার দংচোখা স্থার, শাশ**্**ড্র দিকে সে এ**ড** দার্ঘ সময় ধরে ভাকিয়ে থাকে, মনে হয় আর কোনদিন ভার চোথের **প্রক** পুড়বে না।

কিম্চু শেষ প্যশিত চৈত্য প্রক পড়ে এবং সক্ষাকে অবাক করে দিয়ে ভার চেগের পাতা ভিজে যায়, ভিজে বেভে থাকে; ভাগন কে জানে কেমন করে ভার দ্ চোথ এনাগত জলে ভারে যেতে থাকে। সে হাত বাড়িয়ে দ্ধের স্পাস্টা নিয়ে নেয়, এবং সংগ্য সংগ্য মাথা নীচু করে ভুকরে কেন্দ্র ওঠে।

হয়তে। ভার তথন্ সেই এক পোরা দংমের কুর্কেগ্রের কথা মনে পড়ল কিম্বা হয়তে। ভগন ভার অন্ধকার খুলারতে দড়িরে নিজের পাপের জনা মার্জনা ভিম্মার কথা মনে পড়ল, অথবা হরতো ভথন ভার মনে হল নয়ন জন্মের আপে পরে তাকে যা দিতে পারে নি, মরার পরে সেই ভাকে এভাগুলো জনকের ভালবাসা দিয়ে গেল, এবং হয়ভো এস্থ কারপেই সহসা ভার কালা পেল কিনা কে জানে, হাসি কালার কার্য কারণ সম্বন্ধ বড় দ্বেশিয় জাবিল।

এবং দুখি কাল ভাবর শ স্মুস্ত কালা ।
এক সংগ্য উদ্বাধিত হওৱায় ক্ষার দুং হাত
সমুস্ত শরীর এমন দুংলে উকল হৈ ভার দুধ
মাওরা হল না, কিশ্চু ভবু ভো সে শেষ
প্রাজ্য হল না, কিশ্চু ভবু ভো সে শেষ
প্রাজ্য কান কান কান বাই
হোক সে মা-ভো; ভাকে ভো কোন না কোন
স্নয়ে পুরশোকে কান্তে হুতই।

এই বাংলার খবর

ওয়াণ্ড ্

बाई दाःनात थयन वनरङ बाई प्राह्मराङ अवसाव ওয়ালা ক্রিল্ম) থবরের কাগজের পাতাতেও বৈমন, লোকের মাথে-মাথেও তেমনই। পশ্চিম বাংলার মল্টীদের াবস্থাধ দ্বাণিত্র এলোপাথাতি অভিযোগের ইতি ঘটারার জনো মাখানতী সিম্পার্গনিকর রার্গএকটি তদ্পত क्रीमन्त्र श्रेटनद कथा खात्रवा क्षत्र एन्ट करून गाएनत आहे লারখে। ভারতের পান্ধ। প্রধান বিগরপতি কৈশাসমাধ ভয়ান: যে এই ক্লিশনের সভাপতি হবেন, সে-কথা ্যার্থ করতেও বেশি সময় লাগে নি। কিন্ত এই লেখা লেখার সময় প্রস্থিত কমিশন সরকারিভাবে গঠিত হয় নি। গোটা আদি অভিযোগ রাইটাস বিকিডংস হয়ে <u>ত্ররাজ্য দণ্ডরের ক্রেপ্সাল</u> আফিসার সিম্বর প মাখোপাধ্যায়ের হাত দিয়ে দিল্লীতে বিচারপতি ওয়াপার হাতে পে¹চেছে। তিনি সেগ্রেশ্য পরীক্ষা করে দেখছেন। পরীক্ষা করে তিনি যদি মনে করেন যে অভিযোগগলো ্থথবা সেগুলোর মধ্যে কয়েকটি) আপাতদুণিটতে গ্রহণ-যোগ্য করে সে-কথা জিনি জাশাবেন। ভারপর সেই সব আভিযোগের ধরন অনুসারে তৈরি হবে কমিশনের বিচাহ বিষয়। ভারপর তৈরি হবে ক্রামশন।

সাধারণত বেভাবে কমিশন তৈরি হয়, এই
পশ্যতিটার সজ্পোভার মিল নেই। কমিশনের বিচাষ টিগর্মল চিথার করা, কমিশনের স্ভাপতি নিয়োগ করা, তারেপর কমিশানের কাছে অভিযোগ পোশ করা—এইভাবেই লাজ এগোয়। ওয়াণ্ড; কমিশন সম্পর্কে যে বিপরতি পুশাতি গ্রীত হচ্ছে তাতে অনেক মহলে সন্পেহ দেখা দিয়েছে যে এই প্রথতি আইনলিশ্য হবে কিনা।

ইতিমধ্যে প্রশৃতাবিত কমিশনকে কেন্দ্র করে তিন্টি বাপোর ঘটেছে। প্রথমটি হলো তদনত কমিশন সংক্রাত আইন সংশোধন। ফৌজদারি অইনের কোনো মামলার কেউ যাদ মিখো সাক্ষা দেন তবে সংশিক্ষণট আদেশত তকৈ সাঞ্চা দিতে পারেন। এতদিন তদনত কমিশন আইনে এই বাবহয়া ছিল না। তদনত কমিশনের সামনেই লফ করের পর কেউ যাদ মিখো সাক্ষা দিতেন তবে তাকৈ সাঞ্চা দওয়ার জনো পাঞ্জক মামশা দারের করতে হতো। কিন্তু কার্যনাশত গোড়াতেই ঘোষণা করেন, প্রশৃতাবিত দ্রাটিত তদ্পত কমিশনের সামনে যদি কেউ মিখো সাক্ষা দেন তবে তাকৈ যাতে ঐ ক্মিশনই সাঞ্চা দিতে পারেন তার বাবহুবা কর। হবে।

কিণ্ডু ওদর্শত ক্রমিশন সংগ্রাণ্ড আইনটি হলো কেন্দ্রীয় সক্ষাবের আইন। ভাই এই আইন সংশোধনের জনো দিল্লীর সম্মাতির দরকার ছিল। সংশোধনের খস্ডুা রাইটার্সা বিলিড্সে থেকে পাঠানো হয় কেন্দ্রীয় আইন মন্ত্রণাশয়ে। ঐ মন্ত্রণালয় এবং রাউপ্তির আন্ট্রানক সম্মতির পর প্রিণ্ড বাংলার রাজ্পাল ২৪ জুন একটি অভিন্দ্রেক জারি করে আইনটি সংশোধনের ব্যক্ষা করেন।

শ্বিজার ঘটনাটি রাজনৈতিক শতরের। ওদ্রত কমিশন গঠিত হওরার পর শথানীয় একটি ইংরিজি দৈনকে থবর বেরেল্য বে, কংগ্রেস নেতা বিজয়সিং নাহার বংগছেন, এই কমিশন গঠন মংখামণ্ডীর একটা দটাট মান্ত।

ক্মিশন

বিক্ষয়বাব সতিটে এই ধরমের কোনো কথা বাক্তমে রিকা তা জানার জন্যে প্রদেশ কংগ্রেস সভাপতি অবংশ নৈত তাকে একটি চিঠি দেন। চিঠিটা শেশা কজা ভানটিশ বলে প্রথমে রটেছিল, কিন্তু পরে জানা গোল যে, প্রদেশ কংগ্রেকির তরফ থেকে শংশন ঐ মন্তব্যের সভ্যাসভা ঘাটাইরেরই চোটা করা হয়।

এই চিত্তির উত্তরে বিজয়বাবন্ অবশা অস্থানিলর করেন নি যে, তিনি ঐ "স্টান্টের" কথা বলেছেন। বরুহ তিনি বলেছেন, যা বলেছি তা স্তা বলেছি। দেশ ও দলের হলতে ই বলেছি। মুখামন্টার প্রতি কোনো কটাক্ষ করতে চাই নি। ওরাগু, কমিশন প্রিত হংগই বোঝা যাবে আমি যা বলেছি তা ঠিক কিন।

তৃতীয় ব্যাপারটি হলো বিভিন্ন জেলার কংগ্রেসী
এম এল এদের সঙ্গে মুখ্যানগাঁর দফায় দফায় আলোচনা।
এই আলোচনা নিতাতেই নির্ভাপ বা নিয়মরকার ব্যাপার
হল্নে দীড়ান্থ নি। ওয়ান্থ, কমিশনের ব্যাপারে মুখ্যানগাঁ কংগ্রেসী এম এল এদের কছে থেকে সমর্থন পেরাছেন।
এমন কি তার নেতৃত্বের প্রতি নতুন করে আম্থা জানিরে
ভারা সহও দিয়েছেন। কিন্তু ভার আলো তাদের অনেকে
নানা প্রশাও ভালেখন।

প্রদান্তার মধ্যে ক্ষেত্রতি দুন্যতির অভিযোগ
সংপ্রে মুখানতী নিজে কোনো তদ্পত না করে একটি
ক্মিশন নিয়োগের পরতে গেলেন কৈনি? এই ধরনের জনত ক্যেন্ন নিয়োগের পরার কি কংগ্রেনের সন্মান ক্ষেত্র হবে
নাই ওয়াণ; ক্মিশন কি আসল রোগ, অর্থান্দ দ্লাদালর
কোনো দাওয়াই দিতে পার্বেন ই দ্বে মুক্তী কেন্
কংগ্রেনের অন্যানা নেতাদের বির্ণেধ অভিযান্সপ্র নিয়েত
তদ্পত তবে না কেন ই

মুখামন্ত্রী দ্বীকার করেছেন সে, শাংশ ক্লুফুড় কমিশন নিয়োগের দ্বারা কংগ্রেসের দ্বারা শৃত্থপান সমস্রা মিনিরে না। কিল্ডু সেই সংগ্রে তিনি এ-কথা ্রেলছেন যে-কেড সা-ইচ্ছে বলে যারে, প্রনান অবদ্যা তিনি মেনে নিতে পারেন না। অভিযোগ পাল্যা-অভিযোগার আহে।ওয়ায় সরকারের কোনো কভিট ইন্টে পারে না। তিনি নিছে কোনো অভিযোগ্রের বিচার করেন নি তার কারণ তিনি কোনোরকার পক্ষ নিতে চান না। একটা কারণ কোনো অভিযোগের বিচার করেল কারো মনে কারণান কোনো অভিযোগের বিচার করেল কারে মার কারণা সংগ্রুহ থাকরে না। ক্রিমানের রায়ের পরে যান কোনো মন্দুইত চলি যেতে হয় তা হলেও সংগঠন জোরাদার হবে। কারণ তথন কংগ্রেস্বীয় বুলতে পারবেন যে তারী নিজেনের বির্বান্দে অভিযোগেরও তদন্ত করিয়েছেন।

তদশত কমিশন নিমে যেনন তানেক খবর পাওরা
গাকে, তেমনই আনেক গজেবও রটছে। মুখ্যমন্ত্রী এই সব
গজেবকে বলেছেন "আষাতে গংপ"। এই সব গালগান্তেপর
অধিকাংশই হলো গোপন বৈঠক আর সলা-প্রায়শের।
অনাানা মন্ত্রী বা কংগ্রেস নেতাদের নিয়ে তো বটেই গজেব
রটছে খোল মুখ্যমন্ত্রীকে নিয়েও। একটি গোপন বৈঠক
প্রসাগে সিন্ধাথবান্র টিম্পনীঃ "মে-মন্ত্রীর ঘরে কুলুম্প
এটি বৈঠক হরেছে বলছেন আমি সে-ঘরে গিয়ে দেখ্যাম্ম
সেখানে কোনো কুল্পই নেই।"

জেলায় অবস্থা ভয়াবহ

বিভিন্ন জেলার কংগ্রেসী এম এল এদের সংগ্রেম্বামন্ত্রীর বৈঠকের প্রধান উন্দেশ্য অবলাই ওরাণ্ড, কমিশন প্রস্তাপা কথাবার্তা বলা। কিন্তু এই বে বিধানপ্রভার সদস্যোরা একে একে কলকান্ডার এলেন, রাইটার্স বিক্তিংসে বঙ্গে আলাপ-আলোচনা করচেন তার মধ্যে দিয়ে অন্য একটা উন্দেশাও সাধিত হলো। বিধানসভার অবিধ্রেশন এখন হচ্ছে না। তাই সদস্যোরা তাঁদের নিজের নিজের এলাকার অবভ্যার কথা সরকারের সামনে তুলে ধরতে পারছেন না। মুখ্যুফগ্রীর সংগ্রে সাজাতের স্বেগ্রোগ্রিকে করি। এই কাজে লাগালেন।

ষে কটি জেলার ছবি পাওয়া গেল তার মধ্যে বাঁকুড়া আর প্রেলিয়ার অবস্থাই সবচেয়ে ভয়াবহ দেখা গেল। খবরের কাগজে বিক্লিকণ্ডভাবে যে-সব খবর বের্ছিল বিধানসভার সদস্যদের কথাবার্ডা থেকে তারই সমর্থান পাওয়। গেল। বাঁকুড়া, পরেলিয়া দুই জেলাতেই রাঁতিয়তো খাদ্যাভাব। বাঁকুড়ায় দশজন না-খেয়ে মারা গেছেন বলে অভিযোগ উঠেছে। বাজারে চাগের কিলো তিন টাকা, অথচ রেশনের বরাদে কমিয়ে দেওয়া হয়েছে। কীকরে যে বাঁকুড়াকে খাদ্যাশ্সের দিক দিয়ে উন্পাত্ত এলাকা বলে খোষণা করা হলো তা অনেকেই ব্রত্তে পারছেন না। এ-বছর এখন পর্যাত ডেমন বৃণ্ডি হয় নি। ফলে অবথা আলো গোচনীয় হয়ে উঠেছে। আর অভাব যে শ্যে খাদ্যালনীয় হয়ে উঠেছে। আর সভাব যে আনক জারগায় মহিলাদেরও উল্লেখ্য বা অধা উল্লেখ্য অবশ্বাম দিন কাটিতে হছে বলল বিধানসভার সদস্যাদের মধ্যে কেউ কেউ

ছোট রেল বড

হাওড়া জেলার মানাবের কাছে স্থবর, এই জলাই থেকে মার্টিন রেলকে ভডগেজ করার কাজ সর্ব্ হবে। রেলমণ্টা ললিতনারায়ণ মিশ্র কলকাতায় এই কথা দে বংগা করেছেন। ছোটারিল চালানো জমেই অলাভভলক হারে উঠছিল বলে মাটিন রেল বংগ হরে যায় সেই ১৯৭০ সালের শেবে। তার কিছু দিন প্রেই আসে লোকসভা আর হিধানসভার নির্বাচন। প্রধানমন্ত্রী শ্রীমতী গাণ্ণী সেই সম্মর নির্বাচনী সভায় প্রতিশ্রতি দেন যে, নতুন করে মার্টিন রেল চলাচল শীঘ্রই স্বর্হ্ব হবে এবং সরকারই স্ব্

টোলভিসন প্ৰোয় নয়

কলকাতায় টেলিভিসন অনুষ্ঠান প্রচার সংবং ইওরার প্রতিপ্রতে দিনটি আবার পিছিয়ে গেল। আগামী মহালয়ার প্রাে দিনে মহানগরীর কিছু সৌভাগারান মান্বের ঘরে টেলিভিসন সেটের পদা আলোকিত হয়ে উঠছে না। করে হবে ভাও এখনও ঠিক নেই। তবে আগামী মার্চের আগে নয়।

টেলিভিসন অনুষ্ঠোন প্রতার সূর, করার প্রধান দায়িও কেন্দ্রীয় সরকারের। তবে রাজ্য সরকারেরও কিছু করার আছে। ক্ষেমন টেলিভিসন সাইভিতর জনে জায়গার বাবস্থা করা। বেখানে অস্থামা টেলিভিসন সেন্টার হচ্ছে সেই রাধা স্ট্রভিওর দখল রাজ্য সরকার আগেই নিয়েছেন। বাকি কাজ (বেমন প্রায়োজনীয় মেরামতি, শীতাতপ্রনিয়েশ্ব) শেষ করতে আর বড় জোর মাস্থানেক লাগার কথা। তবং কেন মহাল্যায় অনুষ্ঠান প্রচার সূরে করা

অভিৰোগ করেন। বাকুড়া থেকে নির্বাচিত মন্ত্রী গারুপেদ ধাঁ দাবি জানান বে, এখনই দুর গাখ কেত্যজারের কাজের ব্যবস্থা করে দিতে হবে। মথোয়ক্ত্রী সব কথা শোনায় পর তথনই দশ লাখ টাকা সাহাযা হিসেবে মজার করতে চান। কিন্তু বিধানসভার সদদোরা মনে করেন নগদ টাকার চেরে চাল-গম-কাপড়্চাপড় দেওরার ব্যবস্থা করনেই দুর্গত মানাব্যের উপকার হবে বেলি।

২৪ পরগণা এবং বর্ধমান থেকে নিবাচিত সদশের। অবশ্য তেমন কোনো ভ্রাবহ অবস্থার কথা বলেন নি কিন্তু তারাও জানান ছে তাদের এগাকার সাধারণ মানুবের অবস্থা তেমন সুবিধের নয়। ২৪ প্রগণাকে এখন মাসিক যে-পরিমাণ খাদাশসা দেওয়। হচ্চে তার পরিমাণ দা গাল করার জানো দাবি ওঠে। গ্রাবের কাছে বারি বাপেকভাবে গলাবার জানোও সরকারের কাছে বারি জানানা হয়। সদসাদের মাতে, বরার তেস্ট রিজিক্রের কাজ সনোনা হয়। সদসাদের মাতে, বরার চাল, করা দবকার। বাধানার এক সদসোন তার্থাগ হলো, ভার জেলা থেবে কার করে চাল-গম চিনি আন রাজে। পাচার হয়ে য়াছেবি করে চাল-গম চিনি আন রাজে। পাচার চার মাছেবি করে চাল-গম চিনি আন রাজে। পাচার চার মাছেবি করে চাল-গম চিনি আন রাজে। পাচার চার মাছেবি

এম এল এদের ম্খাম্নতী একটা কথা মনে করিয়ে দেন। রাজের মান্ধের অভাব অনটন আছে। কিংকু জুর এখনও কংগ্রেসের প্রতি আম্থা হারায় নি। এই আম্থা আছে বলেই বিরোগাঁর কোনো স্নানিধে করতে পারছে না। কিম্মু কংগ্রেসের আসল সমসা। হলো নিজেদের মধ্যে দলাদলি। সে-বিষয়ে সাবধান হতে হবে।

হবে—সত্যি

দায়িও নেবেন। কিল্ছু তারপর <mark>তিন বছর পার হরে</mark> গেলেও কিছাই হয় নি।

েরলমণ্ডী এখন জানাজ্যন জারাই মাসে রড্গেজ লাইন তৈরির কাজ সরে, হবে এবং বছর দ্যোক্র মধোই শেষ হরে হাবে রড্গেজ করার জনে। সতিরিজ জমি দরকার। তা নিয়ে যে-অসংবিধে দেখা দিয়েছিল এখন নাকি তা আর নেই। টাকার ভাবনাও নেই। কারণ প্রয়োজনীয় দশ কোটি টাকার স্বটাই আসবে দিল্লী থেকে।

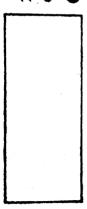
যাবে না ? যাবে না কারণ টোঁলাভিসন টাওয়ার ভৈরির কাজ ঐ সময়ের মধ্যে শেষ হবে না। ঐ টাওয়ার তৈরির দায়িত্ব আকাশব দার ইাজনিয়ারিং শাখার ওপর। প্রজোর মধ্যে তো শর্মই, মাচের মধ্যেও হবে কিনা তা এখন ঠিক নেই।

কেণ্দ্রীয় তথা মণ্টা ইণ্দরকুমার গ্রেজরালের কলকাতা সফরের সময়ে এই খবর জানা দায়। শ্রীগ্রেজরাগ জানান, কলকাতার টোলিভিসন কেন্দ্র থেকে পাদবাবতা যাট নাইল এলাকায় জান্দ্রীন প্রচারের ব্যবস্থা হবে। একটি টোলিভিসন টাওয়ার স্থাপিত হবে আসানসোল। ব্রিভারিট কোথার হবে তা এখনত ঠিক হয় নি। তবে উপ্তরবাংগ টোলাভিসন চলা হতে সময় লাগবে। ভবিষাতে রাজের প্রতি গ্রাম একটি কার টোলাভসন সেট রাখার ব্রেসথা হবে বলে শ্রীগ্রেজরাল জান্ন।

881 41 65

त्यव प्रज

সেকালের সঙ্গীতগুণী



(54)

মজালিকা বাই উৎফাল হয়েছিলেন।
এ যেন একটি জাবিন্দার। এক অভাবিত
জানন্দার আগবাদ। হঠাং কি আগচ্য কানেটার সন্ধান প্রেছেন। আর তার মন ভবে উঠেছে আনশ্যে। এক শিল্পীপ্রান্ত্র জার এক শিল্পীস্তার সংবেদন।

ছার্চটি ঘরে আসতেই তাকে বেকড-খানি বার করে দেখালেন মজ্লিকা বাই জিজ্জেস করলেন, খানা নেহি ত ইয়ে গানা?

'কি গান?'

'দরবারি কানাড়া কি এক বাংলা গান।' ৰাই সাহেবা উচ্ছনিসত হয়ে বললেন, জেকিন গলেনে কেয়া জোৱাতি!'

তারপর একটা পেমে এমনি মুক্তর্ করলেন, কলকাতায় এমন গাইয়ে সাংকন? আবার তুমি এতদারে একেছ গান শিখতে?' শেষে বললেন, আঞ্চ এখন দ্ধ্বারিটা শোন।'

চ্চাগ্যা-ওয়ালা গ্রামোকোনের পাশে বসলেন মঞ্জালিকা বাই। যদের সব্ত বনাতের চাকতিতে রেকভাগানি বারিরে দিকোন। ভার ওপরে সাবশানে ধ্রালেন সাউন্ভ বক্স।

দরবারি কানাড়ায় বাংলা ছেটি থেয়াল আয়ুরুভ হয়ে গেল।

আজি নিঝ্ম রাতে কে বালি বাজার...

হৈমন দরাজ রেগনি স্বেলা কওঁ। আপুর কি মনোরম মিড়ের কাজ।

ভারণাটি কাশীর প্রার এক প্রাণ্ড। বংগার ধারে নিরিবিল একটি ছোট

আজি নিঝ্ম রাতে কে বংশি বাজায়

দোতলা বাড়ি। হারশচন ঘাটে যে পথটি
সদর রাম্তা থেকে এসে পড়েছে, তারই
সালে। দোতদার মগ্রালকা বাইয়ের
একখানি ঘর। সামান্য কিছু আসবাব।
আর একদিকের দেয়ালে টাঙানো দুটি
ভানপরা। তার নিচে একজোড়া তবলা।
মেঝেতে স্তর্ধ। সেখানেই বাইজী
গ্রামাফোনে রেকভটি বাজাজিলেন।

আর চোপ্সার সামনে বসে শানছেন তার বাঙালী ছাত্তি—

'আছি নিক্স রাতে কে বাশি বাজায়, সারে বেদন বাজে গোপন হিয়ায়।'

গানের উপযাস্ত জারগার তারিফ করছেন মজালিকা বাই। ছারকে যেন চিনিয়ে দিচ্ছেন, ব্রিবরে দিচ্ছেন।

শালার জোয়ারি দেখছ? মিডের কাল ভাল করে শনে নাও। বোল তানের মতন ধরণ দেখ। কি সার, কি আওয়াজ। রেকড বেজে চলে—

'সংখ দমতি সাথে ওই সূর মায়ায়. কড দঃখে মেশে যেন অন্তল্ভে

আজি নিশীথ রাতে জাগি তারার সাথে, তারি সমৃতিটি নিয়া নীরব বাথায়। অগজি নিঝান রাতে কে বাশি

সেই গভীর স্তিলিতে ঘরখানি ভরে গেল।

কণ্ঠস্বর একই সংগ্রে গম্ভণ্ন ও মধ্যে।

স্নের শেষে মজ**ুলিকা আ**র একবার প্রিফ করলেন, 'এ তানপ্রার সলা।'

আবৃণ্ডি এই গায়ক তানিপালায় দুস্তুর-মত কঠে সাধনা করেছেন, ভারখোনিস্থেন নসঃ

ত্থন রেক্ড'গানি হাতে নিয়ে ব্ডাগী ছাত্^{তি} গায়কের নাম দেখলেন— জ্ঞানেক্তপ্রদান গোশ্বামী।

কে ইনি?

গায়কের আরো পরিচয় দিতে মঞ্জলিকা রেকডের আর এক পিঠ বাজ্ঞালেন—

আমায় বোলোনা ভুলিতে বোলোনা...
মমি পশানী বেহাগ গান ধরবার সংগাই
মার্ড হয়ে উঠল। মিছরির দানার মত্রম উল্ছিত্ত হ'ত লাগল রাগের ফ্রেক-ল্ছরী— আমায় বোলোনা ভুলিতে বোলোনা।

সে কি ভূলিকার ধন রমণী মোহন হেরিবারে করি কত সাধনা।। একেবারে বৃদ্দেশী ছিন্দী থের।গের ছক। স্থারী কলিতেই জনজনাট স্র। চাহিনা অনো চাহি বনমান্দী সে পদে দিরাছি মন-প্রাণ ভালি নহি সথি আমি পথের কান্ডালী শামি ভিনারিণী ললনা।! কলকেরি কথা হতাশেরি বাথা কতিই লান্থনা গঞ্জনা— করি দোহাগের হার পরেছি গলার ভলিবারে সাই কত যাতনা।!

কাশার হারণচন্দ্র ঘাটের সেই সাদ্যমাঠা বাড়ি। তার এক ধারে মজালিবা
বাইরের ছোট ঘরখানি। সেদিন দুখানি
বাংলা গানের সংকোর পরিপ্রেণ হয়ে গোণাবাংলায় কি চমংকার ছোট খেয়ালা। কি
ছোয়ারিদার সাকেলা গলা! সেদিন এক
অচেনা বাঙাগে গায়বংক আনক দ্র
পেকে বড্ট সমাধ্র করলেন পশ্চিমাণ্ডলের
এক স্বেশিগুলী।

মঞ্লিকা বাই। অংশর যুগের কলারতী খেয়াল পায়িকা তিনি। ডাই শ্শীর কাভই গ্ণীর কদর হল।

ভখন তিন বমণীস্মী। আসরে আর পান শোনাম না। এ 'কম সবসর নিয়েছেন শামিকা জীবন থে কারণ তৈয়ারি গান আর শোনাতে এন না। জানেকদিন নিযুক্ত ছিলেন পরে দরবারে। এখন অবসর নিয়েনে। কাশীবাস করছেন হরিশাচন্দ্র থাটের এই বাড়িটিতে।

িনত সংগতিসমাজ থেকে একেবারে বিভিন্ন সং মঞ্জালিকা বাই। কাশীর গ্রেণীজন তাকে জানেন। সংযান করেন। তার সংগো যোগাযোগত আছে কোন কোন বান গ্রেন থানিকার। বার শসীর প্রবীন ধাশনী হরিনারায়ণ মাখোগাযায় যেমন। তিনিই ত এই ছাত্টিকে তার কাছে এনে দেন। ছেলেটি কলকাতা থেকে কাশীতে আসেনভাল করে গান শিখতে। এতদিন হরিনারায়ণের কাছে ধ্রেপদ শিখেছেন। গালা সেংগভেন। বারণের কাছে ধ্রেপদ শিখেছেন। গালা দেখাবার।

তখন হরিনারায়ণ বজেন ভাল থেয়াল শিখতে চাও ত মঞ্জিকার কাছেই শেখো। তিনি এখন কাশীতে রয়েছেন।

নিজেই তিনি ছাত্তকে স্পের করে এনে ছিলেন।

মঞ্জালিকা তাই বতা করে শেখাছিলেন ছেলেটিকে। এঘন সময় সেই আন্চর্ষ গলার সন্ধান পান একটি রেকর্ডে। বাঙালী ছাচ্চিক তখনই সে গান শানিরেছিলেন। আর বলেছিলেন, কলকাতার এমন গাইয়ে থাকতে তুমি এত দারে এসেছ গান শিখতে ?'

মঞ্জিকা বাই নিজে অমন খেয়াল গায়িকা দেটা বেন কিছুনর। অজ্ঞান; গায়ককে সম্মান জানাতে বাই-সাহেবা এমন বিনর দেখালোন।

' ছাত কিল্ছু তখন কাশীতেই বরে লেলেন। এই গারিকার কাছে যেমন থেয়াল শেখা চলছিল, তেমনি চলতে লাগাল। কিল্ছু মঞ্জনিকা বাইয়ের সেই কথা ফলে। গিয়েছিল—তবে তা অনেক পরে।

তার আলে কালাতে একটা বিপ্রথার
বটে গোল। সেই শোচনীয় গেলগের মড়ক।
কত মানুব প্রাণ হারাজ, কতজন বে ক্ষীণদাভি স্থাস্থাহান হয়ে পড়েল তার হিসেপ্
নেই। কালার বাঙালাটোলা অঞ্চলে আর
বাঙালালের মধ্যেই ক্ষতি হল বেশি। তবে
হিল্পুনশীদেরও বিয়োগ-পজা যে ছিল
না তা নর। সেই ক্রাল গ্রাসে, অনেকের
সপো বারাণসীয় এক ম্লোবান শিশ্পীপ্রাণ্ড হারিয়ে গোল।

একদিনের সেই কালবাদিতে গভারা হলেন মজানিকা বাই। তার মাত্র একদিন আবে বাঙালী ছাত্রটিকে তিনিই পাঠিয়ে দিয়েছিলেন এলাহাব্দে। না হলে তাঁর ভালো কি হত কে জানে।

কিন্তু মেসৰ কথার সংশ্য সেই দরবারি কানাড়া গারকের কোন সম্প্রু নেই।

মঞ্জিকা বাই যখন সেই কেকডণিট প্রথম শোনেন, কলকাতায় সে গায়ক ভার আগে থেকেই বেশ পরিচিত নাম। ধ্রুপদ ও শেয়াল গায়ক আনেন্দ্রপ্রাপ গোলামী। সংগীতাচার্য রাধিকাপ্রসাদ গোলামীর জাকুস্পাত এবং ভারই সেন্ত্ধন্য শিষ্য।

উৎকৃষ্ট গান যাঁয় ভাগবাদেন,
ন্কেণ্টের যাঁরা আপর করেন এ নামটি
তাদের কাছে তখনই খাব প্রিয়।
প্রমোকোন রেকভের শ্রোভারাও জ্ঞানেনদ্রপ্রসাদকে আগে থেকে জানেন।
রাত্যেও আগে থেকে। এই দরবাদি
কালাছার আগেও তাঁর আনা রেকভ হয়েছিল। তখন খোকেই উদীয়মান এ
নবীন শিল্পী রেকভেরি গানে জনপ্রিয়া।

কি কমাতি স্বের এক একটি থেলালাংগ পান তাঁর। বাংলার ছোট থেলালাংগ পান তাঁর। বাংলার ছোট থেলার চুল্দী গেলারেকরই ছকে এক একটি গান গড়া---বেশ বেকা যায়: তা হোক। লানুনতে বড়ই ভাল লাগো, আলাদা, ছাড়া ছাড়া তান তা বেশি করেন না। গানের ভালার মধাই মিলে থাকে তান। রাগের ভোলার স্বান্ধনিতে পাওরা যায়। আর ভোলার ঠাসবানিতে পাওরা যায়। আর বাংলাকলাতের সার বাক্ত, এক একটি রাগের সাক্ষণতাতের সার বাক্ত, এক একটি রাগের সাক্ষণতাতের সার বাক্ত, এক একটি রাগের বাক্তর বাকা তারা পান। আর কি অপান্ধা এই গারকের ব্রর্থনিত অথাত অথান চিত্তিক্রণক হয়। মাধুর্যমিতিত অথাত

দ্শত পরে যকঠ। তার তুলনা বিশেষ ছিল না তখন। নিজমে রাতের আংগও সেই রাগ গানের আংচয় বাদি রেকতে আরম্ভ চায় যার।

যেমন তাঁর মালকোষের সেই গানখানি—

একি তন্ত্র কিজড়িত আথি পাত একি ব্পন ঘোর মোর দিবস রাত।।

রিক এ' ভকেরট মাল হিন্দী গান একা-ধিক আছে। 'মূখ মোয় মোয় মোস কাঁহাতা याजा' हेजामि। किन्जु धथारन भारा है ভাষাশ্তরের অন্কেরণ নয়। চির নতন রাগ-সঙ্গীতের এ এক নব রাপায়ণ। গারকের নিজ্জৰ অনুভৱে উপস্থাপনায উপভোগা সামগ্রী। সূর সেন আপন প্রাচুর্বে উপচির্মান। সেজনো 5049 গানের হদেশ পরিপাটিভাবে বাংলা গানেও মানিয়ে গেছে। কথার মধোই তাল, বা গমকের ধরণ। কিছুই কোখাও বেমানান নহ সেই অপ্ত কণ্ঠে। মালকোণের ঘন-বন্ধ রূপ প্রোতাদের কানে ভেঙ্গে আনে--

> কুহকী নিদয় ব'ধায়া যাদ্য জানে স্বপন আড়ে কেন টানে মায়া টানে। চলে আকুল মন তাহারি সাথা। একি তল্মবিজড়িত আথি পাত...

েন্ট্রেকডেরিট আর একদিকে জ্বানেক্সপ্রসাদ শ্নিক্রেছিলেন—

বৈৰৰ বৰ্ষ আৰি চাহিয়া...*

গোড়সারকোর সেই মন্দানম গানখান—

ত্যারি ফিলন আংশ আশা পথ পানে দখিন সমীরণে উদাস আনমনে হুদের আসন মম পাতিরা।। বর্ষ বর্ষ থাকি চাহিয়া

অলপ অলপ তানে, সংরের ইবং বিস্তারে, গানের ভাবকে বহুতা রেখেছেন গায়ক। গোড়সারপের উদাস করা সারের মায়ার পোতারা মাণুর হয়েছেন। এমন সারে কি সাক্ষাত পোনা বার কি ইছ। মানুর বি

এই মালকোশ (এ কি তল্পাবিজাড়ত আধিপাড়) ও গোড়সারপা (বরৰ বরৰ থাকি চাহিরা) গাল গুখানি নিরেই বোধহর জানেকপ্রসাদের প্রথম কেকর্জ হয়েছিল। গ্রামান্দানে তার পরে তরি গাল ওই দরবারি কানাড়া (আজি নির্মে রাজে বালি বাজার) ও বেহাগ (আমার বলো না ভূলিতে বলোনা)।

নীহাররঞ্জন গ্রুণ্ডর

কিরীটী অমনিবাস 🤫

গ্রাহকদের অবিলম্বে রই সংগ্রহ করতে অনুধ্রোধ করা হচ্ছে

MIN 28.

স্মথনাথ ঘোষের

ভিন্ন স্বাদের শ্রেণ্ঠ গণেশর সংকলন

ওখানে পদ্মা এখানে গঙ্গা ৫

আশাপূর্ণা দেবীর

নতুন ধ্বাদের উপন্যাস

ওরা বড় হয়ে গেল ৫

গজেন্দ্রকুমার মিতের সাম্প্রতিক উপন্যাস

বজেনু বাজে বগাশী ৪

ভূগ্যজাতকের

হাত দেখতে শিখুন 🤫

অমর সাহিত্য প্রকাশন.

৭, টেমার লেন, কলিকাতা-৯

প্রথম গান থেকেই রেকড জগতে জীর জন্মনাত। আনন্দত হয়ে বার। ব্যবসারের জন্মন হাকে বলে 'হিট সঙ', তার প্রায় প্রভোকটি দাশই তাই। প্রোতাদের হাদর मुखाप्त वा मिरक मिरक राजनाविक मिरक छ जक्त इर्फ्सक्ता कार्य रकार्ड बारणा বৈছালকে, বাংলাভাবার রাগস্পাতিকে চিভাৰৰ কভাবে পেয়েছিলেন ব্যভাগী ভোতারা[।] জানেন্দ্রসাদের গানে এক একটি রাগ স্পরিচিত হয়ে উঠত সংধারণ লোভাদের মনে। আর একটি পরিপার স্পাতিরসের আশ্বাদ পেতেন প্রোত্ব্স ভার প্রার প্রতিটি গানের জমাটি বাসেশ অভি উপভোগের বৃত্ত ছিল, তাঁর ততীয় রেকড বেংধহয় উক্তল কাজল দুটি নহনতারা। এখন মধুর মালগঞে বাং'বা गाम्तर ज़करण जाएग भाना गिराहिल कि?

উজল কাজল দ্টি নয়ন তার: আকুল চঞান কারে খ'জিয়া সারা।।

জাসিলে কে পাশে, লাভে মাদিয়া আংসে, পিয়াসী সদা ফেরে কার দরশ আসে।

দিখিনা বাতাসে কুস্ম স্বাসে. কারে মনে পড়ে বহে নয়নে ধারা।।

সেই রেকডেরিই আর একদিকে জয়জয়গতীর লীলা ত্রেপ --

দামিনী দমকে ধামিনী অধি।র গো, জাগিয়ে একাকী আগো তে।মার গো।

কে'দে ফেরে কনে বাদল কয়ে হায় তারি সমে ক'দে প্রাণ আমার।।

এমনিভাবে প্রতি গানে ছোটানের আকুটে করতে লাগলেন। নট जाता 'इत्म इतन जात सन्मालाम मधी পাখা শিরে কাঁকা গগেল প্রহাল' ইম্নে খ্যা সখি আন ভারে মোর বাকে ফিরারেয়া জ্জোনপারীতে ময় মধ্যে মিনতি শান ব্দশাগ্রা' <u>কাফিাসলধ্যুত</u> 'বিশ্বজনন' ভাষারিখা মাতঃ গাংলা, ভেরবীতে বলে ডুমি আছ ভগবানা কৌশকী কানাড়ায় সমশানে জাগিছে শালমা, পরতে গোপাল গোপাল প্রাণে মোর' বাগেশীতে **অনিমেধ জাখি আমার', কাফিসি-ধ**ুতে আমার শামি মায়ের কেলে', ছায়ান শানা এ বাবে পাথি মোর ফিরে আহা ফিরে আয়া, এইসব গাণ্ট সারের আবেশে মন আকুক করে রাখে।

বেক্ড তার আনো হয়েছিল। যেমন— বাজে ম্দেশ বাণা; ম্রেলির ধর্নি কার বাজে; মঞ্জ রাতে আজি সম্প্র নিম্নীল কেমা ইতাদি। প্রতাক গানই শোনবার মতন এবং জনপ্রিয় হয়েছিল। তা ছাড়াও উম্পা গানের বেক্ডা করেছিলেন জ্ঞানেন্দ্র-প্রসাধ। কিন্তু তার গানের প্রণা তালিক; এখানে দেওয়া সম্প্র হল না।

গ্রামোফোন রেকড'গর্মার জ্ঞানেন্দ্র প্রসাদকে থবেই প্রাসম্পি দিরোছিল বটে। কিন্তু তা ভার প্রতিভার সঠিক পরিচারক নর। তার সংগতিকৃতির একটি বাংল মার। ভিন মিনিটের এক একটি বাংল কোন রাংগর পূর্ণ রংগ দেখানো বেনন অসম্ভব, তেমান গারকেরও। রাংগর বিশ্চারবিহীন ভৌলটি মার এমনি ছোট থেরাকে গারক দেখারার সময় পান। সাধারণ শ্রোভার। অয়লা সভ্ততি থাকেন রাংগর এই সংক্ষিত র্পে। গারকের অসাধারণ ক্রুসন্দদে তাবের চিন্তাক্রমণ করে থাকে। মাথ করে রাধে রাগসন্গতির স্কের বাধনি ও বিনাম। কিন্তু তা ই সব নর।

স্কানগাঁক শিলপাদের মতন জ্ঞানেন্দ্র প্রসাদের প্রতিজ্য আসারেই প্রশান্তাবে শহতে হত। সংশীতাসরেই তাঁর যথার্থ পরিচর। সন্পূর্ণ রাতির গায়ন-শিলপা তিনি। ধ্রুপদ ও খেয়াদের নিন্টাবান গায়ক। পশ্বতিগত শিক্ষা যেমন পেরেছেন, আসরেও তা পরিবেশন করতেন। নিয়মনিষ্ঠ চচন্ত্র সংশো ব্রুছ হয় তাঁর লোকেরের স্কোক্ষ্ঠ।

পিত্বা রাধিকাপ্রসাদের হাতেগড়া দিয়া তিনি। গ্রেপদ ও থেয়ালের তথনকার ভারতের এক শ্রেষ্ঠ কলাবত রাধিকাপ্রসাদ। তার প্রেয়া তালিম প্রাত্তপরে জ্ঞানন্দ প্রেছিলেন। বালাকাল থেকে আরম্ভ করে একাদিলে ১৯ বছর বাবত—রাধিকাপ্রসাদের মাতৃতে আলে প্রগতিন। অনা কোন বিদ্যাণিকা জ্ঞানেল তান, অনা কোন বিদ্যাণিকা জ্ঞানেল বেননি। সংগতিবিদার সাধন্য তাঁর ছিল একাতে গ্রেমনি। সংগতিবিদার সাধন্য তাঁর ছিল একাতা প্রসাদের কাতে তিনি পান। তাঁরই নদেশে হয় ভার বিধিবণ্ধ কঠেম্ধনা। সেই সংগো যান্ত হয় তাঁর সহজাত অনুপ্রমানপর্বাহ বর্ণ। তা্র সাহজাত জন্মার দিবার স্বেলা কঠে। জায়ারিলার স্বেলা কঠি।

একাধারে বীর্য ও মধ্যে — জ্ঞানের প্রস্থানর সংগাতি ও কপ্টের এই বৈশিতা। এই অন্নাভার জনোই তিনি চিহিন্ত হন, প্রতিষ্ঠা লাভ করেন এবং স্বাক্ষর রেথ ধান সংগতিচচার ইতিহাসে। সাধারণ প্রাত্ত্রেশ থেকে শ্রেষ্ঠ কলাবতদের প্রমানত প্রগতির পাই হন। আসরে আসরে উচ্চনিসার প্রশাহর পাই হন। আসরে আসরে ইচ্চনিসার প্রশাহক শীবন।

সংগীতরসেই পরিপ্রণ ছিল তার সন্তা, তার জীবন। সদা সরে ভবপরে। যৌবনকাল থেকেই সংগীতজগতের নানা দিকে তিনি দেখা দিয়েছেন। সরের অঞ্জাল নিবেদন করেছেন প্রয় আনকে। আপানি সাথকি হয়েছেন, চরিত্ত থ করেছেন গ্রোভাদের। চ্চাট বড় নানা ঘরোয়া আসরে, বহুং সংগীত সন্মোলনে, গ্রামোফেন বেকডে, বেতারকেল্ডে স্বর্ণত। প্রাদেশিক থবং সর্বভিরতীয় ক্ষেত্ত।

সর্বন্ধি স্থে প্রে জ্ঞানেলপ্রসাদ। আসরে আসার গানের মেজাজ তাঁর সদা প্রস্তৃত। স্থুরে স্থুরে যেমন্নিজ্ঞা মেতে ধাকতেন্ তেমনি মাতিরে দিতেন শ্রোতাদের। জার লোন আসর বার্থা হড় না জাই। কি প্রসেসের আসর, কি থেরালের আসর—তার প্রতিটি অনুষ্ঠান শ্রোতাদের আশা প্রথ করত। পরিকৃত চরে ফিরন্ডেন তারা।

্ষ্রপদ ও খেয়াল দ্রান্ত রীতির জালি নিয়েই জ্ঞানেন্দ্রপ্রসাদ সংগতিকোর এসে-ছিলেন। ক্রমে প্রশাদের আসর কর্মে আর্জে তার। তার একটি কারণ—১৯৩২।৩৪ मान खादक कनका हाई द्वानार वामाई ভার্টা পড়তে থাকে। ব্রুপদের আসর তারপর স্বল্পতর হয়ে আর্সে ক্লয়ে ক্লয়ে। অনা কারণ-খেয়াল গানে তিনি উত্তরেত্তর স্ফৃতি লাভ করতে থাকেন। তাঁর প্রতিভা খেয়ালের তান বিশ্তারে ও সর্রবিচারে আকৃণ্ট হয় বেশি। আমনিতত হলে ধ্রুপদ তিনি সংগতিজীবনের শেষ প্রকেত গেয়েছেন বৰে। কিন্তু থেয়াল গামই তাঁর প্রতিভার প্রবান বাহন হয়েছিল। তবে ধ্রপদের গাম্ভীয় তিনি চমংকারভাবে মিশিয়ে নিয়েছিলেন তার থেয়ালে। যেমন গমকের ধরনে কোন কোন তান তাঁব খেয়ালের অভেগ মানিয়ে मिएलन । এজস্বাহার সংজ্যা মধ্রতা। যেমন তাঁর কলেঠ তেমান গার্নের অবয়বে।

সেই মাধ্য তিনি মিছরির দানার মতন গানে গানে ছড়িয়ে দিতেন। আর মাসরে আসরে মাণ হয়ে যেতেন জ্রোতারা। কলকাতার অসের থেকে সেকালের অথত বাংগার নানা জেলার সংক্রলনে। নিথিল কগা সংগীত সংক্রলন থেকে নিথিল ভাবত সংগীত সংক্রান।

তার করেকটি উদাহরণ এখানে **উল্লেখ** করা যায়।

সেবার চট্টাম সংগতি সংমালনে বাইরে থেকে সে কয়েকজন মিল্পী এলেন। তাদের বা ছিলেন জ্ঞানেন্দ্র সংশা করিছ গান হল। তার গানে সে কি উপদীপনা গোগল অংশর। শ্রেতারণ এক অপুরে ম ভক্জতায় উচ্চাসিত হয়ে উঠালেন।

আর একটি সনিব দি অন্রোধ এল শ্রোতাদের পক্ষ থেকে— অন্যারা একদিন আশ মিটিয়ে শুধ জ্ঞান গোস্বামীর গান শুনব।

জ্ঞানেন্দ্রপ্রসাদ সম্মত হলেন সানকে। জখন সম্মেলনের উদ্যোজ্ঞারাও সে বাবস্থা করলেন।

সেদিন সকলের সে আশা প্রণ করে-ছিলেন জ্ঞানেশপ্রসাদ প্রায় তিন ঘণ্টা গান শুনিরে চটুগ্রামবাসীদের ছণ্ডি দিয়ে-ছিলেন।

একবার রাজশাহী সন্মেলনেও গিরে-ছিলেন জ্ঞানেদুপ্রসাদ। প্রাতদেরে মধ্যে সেখানে মনীবী সলাতিজ্ঞ ধ্রুণিট্রসাপ ম্থোপাধাারও ছিলেন। জ্ঞানেদ্রপ্রসাদের গাবে সাড়া পড়ে বার সন্মোলনে। ব্রেডিন প্রসাদত আভতরিক প্রশাংসা করেছিলেন।

সদাই দৰে ভরপরে থাকতেন ভিনি। আর প্রোত্তাকে কেমন সেই সারে উল্পীপিত করতে পারতেশ তেয়ান নিজেও সংবর্থ পরতে উপাশ্ত হয়ে উঠতেন। সেবার ভবানীপরে সপাইত সন্মিদ্দনীতে যাগ্রক दल द न्य जिवादिकी सन्छाता नामा ननीत अपि रफ जानतः वर छाठा अरम-क्षितः। भिन्भीरमस् सरका आर्थन स्वारतन्त्रः প্রসাদ। এবার তার গানের পালা। তারই এক শিষা হারমোনিয়মে সংগত করতে বলেছেন পাশে। হার্মোনির্মে বেলো করে চাবিতে হাত দিতেই তার পাম প-তে আল্গাল ছ'ুরে গেল। শিস্তা কোন রাগের কথা ভেবে প ম প পদায় আংগলে দেন নি. আপনা থেকেই পড়ে বায় হাত। আমনি জ্ঞানেন্দপ্রসাদের হানে ' কেদারার আন্ডাস জেগে ওঠে। অন। রাগ তিনি গাইবেন ভেবেছিলেন। কিন্ত কেদারার একট: ছোঁরাচ মনে লাগতেই ধ্যুব নিলেন কেদারা। কোমল মধ্র কেদারায় মেজাজ এসে গেল। এমন চ্মংকারভাবে কেদারার প্রকড় দেখিয়ে গান ধর্কেন যে মনে হল এই রাগের জনোই প্রসত্ত হয়ে এসেছেন আসরে। তথন প্রাণের আরামে কেদারা গাইতে গাইতে তিনি আসর একেবারে জমি'র দিলেন। তারিই মতুন তুলায় হয়ে গেলেন ছোভারা। বিরাট কক ভবে গিয়ে জানালার সমানে বারান্দায় প্রতিত লোক দীভিয়ে শান্তে জাগালেন গাসকের কটাঠ ান স্কের নিঝ্রিণী। কেদারার বিশ্ভার করতে লাগলেন যা সচরাচর এই রাগে শোনা যায় না। গান থামবার পরেও মনে হল সে প্রস্তবের 'বরাম মেই। শ্রোতারা কেউ ধারণাও করতে পারতেন না--এই রাগের উদ্দীপ্র শিল্পীর মন্ জেপেছিল পান আরম্ভ করবার আপোর ম্হাতেটি হারমোনিয়মে কে দারার আকৃষ্মিক আভাস পেয়ে।

রাগের রূপ কি মহিমায় প্রতিমা হয়ে উঠত তারি সেই অপরাপ সারেলা কপ্টে। সেবার নিখিল বংগ সংগীত সমেলনেও তার একটি দল্টানত দিয়েছিলেন। ভপেন্দ্র রুষ্ণ ঘোষ পরিচালিত এই সন্মেলন সেবার হয়েছিল সেনেট হলে। জ্ঞানেন্দ্রসাপ বাগেলী গোয়েছিলেন-'বেটন গত ভৈ ।'। এক কথায় বলতে গেলে আসরে সেদিন সাড়া পড়ে বায়। আসরে তখন ছিলেন শ্বনামধ্না স্রেসাধ্ক আ্বদ্ল করিম থা। তিনি গায়কের কল্ঠের বড় তারিফ করে-ছিলেন। আর জীর সংকা **ঘনি**ন্ঠভাবে আলাপ করেন, পরিচয় নেন ব্যামিন মহা-গাুণী। খাঁ সাহেব তারপর যে কদিন কল-কাতায় ছিলেন জ্ঞানেন্দ্রপ্রসাদ তাঁর কাছে বৈত্তেন। আবদ্ধা করিম সাদরে কিছা গানও দিয়েছিলেন তাঁকে। খণ সাতেবের সেই একব্যৱহ কুলকাতায় স্পাতি

বিনাম লো ৫ টাকা দামের বই নিন!

আলাভণিত স্কাতে নতুন আনকোন; ভাল ভাল বই পেতে হলে আভই আলেক্ন-ভিটা ব্ৰুক্ত জানের সদস্য হোন। গড়ে ৪০% কম পানে বিভিন্ন প্রকাশকের প্রতিভারান কোনকবের বই পাবেন। এক সংগা ১৫, টাকার বই কিনলেই ৪০% ভিলকভেন তদুপার ৫, টাকার বই কিনলেই ৪০% ভিলকভেন তদুপার ৫, টাকার বই ক্রান্তেন। অভ্তপ্রেশ সদস্য হতে কোনের মাসক্রোভিক চালা লাগে না, কেবল ১ টাকা ভাত কা লাক্র ভালিকা খোলে বারে মাসে কমপক্ষে চারখানি বই কিনলেই আলাবিন সদস্য থাকা বার। প্রতি মাসে প্রশ্ন সমাচার পানিকা পাবেন দুবী। বিনি জানকে তিনিই সংগা সংগা, সংসা, হক্তেন। কাগজ কাজি ভাকবার ইজাদির অলাভাবিক ব্যানিবার জন্য ১৫ জালাই থেকে ভাতি দাই ২ টাকা হবে। তার আগেই সক্ষা হবে যান।

এখনি সদস্য হলে মার ৬ টাকায় পাবেন ভাষাকার লাভ দেশবন্ধর চিত্তরঞ্জনের জীবন-বেদ ১২

ক য়েকখানি ম নোরম বই

गणिएत कथा ७ कारिन

টা ৪ (বকে ক্লাবে ২-৪০) বোয়াক

প্রশাস্ত সাহের নাটা শংকলন (দেশ ও অহাতে প্রশংসিত) টা ৪ (বাক ক্লাবে ২-৪০)

্ছাট্রা (ছাট নয় অধ্যাপক গোপাল রায়ের উপনাস

भवागक शामक तामक बाताब ७४नाव हाँ ८१६० (बाक क्राउट २१९०) जोहराक काजगड़े १५५

বাঁচিতে সবাই চায় মনোরহসের ঘরেলা আলোচনা

ভঃ অসীম বধ^ন টা ৩-৭৫ (ব্ৰুক ক্লবে ২-২৫) বিয়ের আগে ভালোবাসা

টা ৩ (ব্ৰুক ক্লাফে ১-৮০)

কেটে যাবে হোঘ

টা ২-৫০ বেকে ক্লাকে ১-৫০ প্রাচনীর ও প্রাণতর আচনতাকুমার সেনগ্রেক্ত উপন্যাস

টা ৩ (ব্ৰু কাৰে ১৮৮০) বড়া চণ্ডীদাসেৰ শ্ৰীকঞ্কীত'ন ভঃ চিত্তৰপ্তান শাহা

তা ১০ (বকে ক্লাবে টা ৬)

তিন তাঙেগ এক অভগ
ভা: রাধাগোবিক দাসের উপনাস

টা ৫-৫০ (ব্ৰুক্টাবে ৩-৩০) ভূষারপথের ইতিকথা

শংলাপীর ভ্রমণকাহিনী টা ৪ বেবুক ক্লাভে ২-৪০)

আরপ্ত কভকরকমের বই আছে।

স্বাই অভাবনীয় কম দানে। আল্লিম

১ টাকা ভতি ফী পাঠিয়ে বিশ্বন বিবরণ ক্লেনে নিন্দ আল্লুই। এখনি।
১৫ জ্লাই থেকে ভাতা ফ্লী ২ টাকা।
ইয়ে বাবে।

জনপদ

প্রফারেকুমার সিংহের উপন্যাস (দেশ ও অমাতে উচ্চপ্রশংসিত) টা ৮ (বকে ক্লাবে ৪-৮০)

শালিক হোষ্ট্র ফেরে এলেন

বিশ্বথ্যাত গোয়েন্দা গ্রন্থের নতুন মন্ত্রণ বড় আকারে দাম টা ১৮ (ব্রক ক্লাবে টা ১০, অগ্রিম টা ৫)

এবং সীম

উথানপদ বিজ্ঞীর কারাগ্রন্থ (আনত ও ব্রান্ডারে প্রদাসিত) টা ৩-৫০ (ব্যক্ত ক্লাবে, ২-১০)

ইচ্ছার মুকুরে ছায়া

আঁচতা চটোপাধানের কাবাগ্রন্থ টা ৩-৫০ (ব্রুক ক্লবে ২-১০) আন্যু এক নাম রেমেল মিচের জপনাল টা ৪ (ব্রুক ক্লবে ২-৪০) কর্মার্শনী

আহিণ্ডকে্মার কেনগ্রেণ্ডর **উপ্ন্যাস** টা ৩ বেকে ক্লাবে ১-৮০)

শহরতলির শয়তান (গ্লপ)
নার্ট্রান্ড রাগেল আজতক্ত ভস

টা ৪-৫০ বেক ক্লাবে **২-৭০)** জীবনের লোগত **রেখাগরিল**

নালায়শ চক্রবভশীর প্রেম্পকৃত গ্রহপ্রচন্দ্র টা ৪-৫০ বিক্ল ক্রার ২-৭০)

আর এক ভেকা আর এক আকাশ অধ্যাপক কল্যাণ জানার গদপ্রতথ টা ২-০৫ (ব্যক্তরাবে ১-৬৫)

আল ফা-বিটা

ব্ৰ ক্ৰাৰেৰ সদস্য হয়ে বই কিন্দুৰ! ৫৫-১ কলেজ প্ৰীট, কলকাতা ১২ वह बारगड बारमम्लानाच भागमणी জিলেন। নানা রাগই শনিরেছেন আ্সরে আলের। সংগ্রহ তার প্রচর ছিল। রাধিকা-প্রস্থানর বিশ্বস সভায় তিমি পেরেছিলেন আনেকথানি আৰু তবি কাছে খিকার ভিটার-ও ছিল পাকা। তাই রাগবিদ্যা তার বাব বিশ্বত হলেও বিভিন্ন রাগরংপের জ্ঞান তার যথাবথ ছিল। কোন রাগের বিক্ততি ত'র নিজেরও বেখন ছিল না, ভেম্মি সহা করতে পারতেন না অনোরও। সিল্প সক্রের জানো হোমন, লাম্প রাগ পরিবেশনের জানোও গুণীজনের স্বীর্কাত ভিনি বরাবর পেয়েছেন, শ্রেম্ বংলায় মর পশিক্ষাপালেও। আগ্রার সেই আস্রের কথাত এখানে বলা যায়। সেবার কত সর্ব-ভারতীয় কলাবত এমেছিলেন আগ্রায়। নিখিক ভারত সংগতি সমেলনের সেই जाना जिन्द्रासम्बद्धाः

ভাঁদের সামনে জ্ঞানেন্দ্রপ্রসাদ ছারানটে গাইলেন—

পল পণ্ড'(শাস্বিদর কর মায়, কাভে প্রীতম অবহা নহি আহে।।

ভোর ভৈ সব আয়ে পিয়ার বা ভূম সোভন কৈ ব্যার কণায়ে।।

ত্থন সমধেত সৰ ওচত দৰাই সভি-ন্দদ জানিৱেছিলেন এই ৰাণালী শিচপাকৈ। তাঁর সংগীত কঠে তাঁর বাগ-ব্পায়ন তাঁর দরদী গায়নভংগী—সব কিছুবই তাঁৰা ড্ৰিফ ক্রেছিলেন।

এমনি নানা প্রশংসাধনা আসরে তবি সংশক্তিবীন সংগকি ভিল প্রিপার্ণ জিল। এ বিষয়ে আর বেশী উদাহরণ নিশ্সয়োজন।

নাগের কথার বলা যার সা তিনি গাইতেন সনই হত অভিপন্তোগ। তব, তার সেই উন্ত কপ্রেলিকার কানাড়া ইমন কলাগে বাগেলী ছারানট এই ধরনের রাগেণ ফেন ডুগনা ভিল না। ানা টানা সংবের সাক্ষোকান কি হাদ্যুস্পাদী হত তার দরাজ মাধ্যাময় স্বব্লাহবীতে। যাাল সে সন শ্নেছিলেন, সংগীতের এক এক ডেগ্রু আন্দাদ লাভ করেছিলেন।

গোণেতন ভংগসা ধাকে বলে তাই আন্দেশসাসাদের ছিল। নানা জেগে কলা বাতের প্রতির পাধ তিনি চন সেই গ্রেগ। ধেয়ান আবদ্যল করিম গাঁহেমনি বিক্-দিশাব্দর পালিসেকর কিংবা ফৈয়াজ থাবত। আন্তেক্ত গায়ক সংগতিচায়া বিক্-দিশাব্দর ক্রেকবার ক্লকাত্রে এসে- ছিলেন। প্রতিষারই অতিথি হন সংগীত-প্রেমী ভূপেন্দ্রকুক বোষের পাখ্নিরাঘাটা ভবনে। জ্বানেন্দ্রপ্রাণত সে গতে কীব-কাল বাস করেছিলেন। সেখানেই তিনি পশ্চিত বিভূদিক্তব্যের সংগ্র পরিচিত ও তার ক্রেধনা হন। পশ্চিতকী তার সংগীতকঠে মুক্ষ্ হুরেছিলেন এবং রাগ-বিদ্যা কিছু শিক্ষাও দেন তাকে।

ওসভাদ ফৈয়াজ খাঁও জানেন্দ্রপ্রশাদের সংগীত কল্ঠের পদ্ভরমত তারিক করতেন। বৃদ্ধতন '৪ঃ জ্ঞান তুমারা কেরা আওরাজ!' আর ওই গলার জন্যে ভালবেলে তালিমও তাকে দিতেন। খাঁ সাহেবও সে সময় অভিথা স্বীকার করতেন ভূপেন্দ্র-ককের। সেখানের ফৈয়াজ খাঁব কাছে জ্ঞানেন্দ্রসাদ শিক্ষা সংগ্রহ করেন; তা ছাড়া একবার খা সাহেবের কাছে সেজনো বারোপাতেও গিয়েছিলেন কিছন্দন। এখানে একটি কণা বিলেবখা ভোল। আনুনেক-প্রসাদ প্রেরা তালিম রাধিকপ্রসাদেরই পেয়েছিলেন। পশ্ডিত বিষ্কৃদিগদ্বর বা ফৈয়াজ থাঁর কাছে যে সময় কিছা কিছ, নেন ভার আগেই তিনি সম্পূর্ণ প্রস্তৃত এবং প্রতিষ্ঠিত গারক। আবদ্যুল করিম খা সম্পর্কেও একই কথা।...

অনিদ্যাক্তেই ধ্রংপদ থেয়ালেও হে কোনেগুল্লাদ এফদ্বানি কতেন শিংপা রূপে সেই তার বথাপুণি পিরচ্য় ছিল। সেই গুণেই অত জনপ্রিয় হয়েছিলের তিনি।

আসরে রীতিসম্মত ধেরাল ও প্রপেদ গাইখেন গামোফোন রেকজ ও বেভার কৈন্দে সংকা থেয়াল শোনাতেন। কিংলু ডা ছাড়া অনানা সংখা গানও গাইতেন জানেন্দ্প্রসাদ। অনশা সমই রাগাত্মক সংগীত। মে সমুহত সংকা গানেও তারি অহতরের দরদে রসমুক্তন ঠিকই হত।

বাংলা টাপা চমংকার গাইতেন তিনি।
নিধ্বাব্র টাপা গান তাঁর রেকজাও
হয়েছিল। টাপা তিনি শোনাতেন নিতানত
ঘরোয়া আসরে। সেজনো বাইরে আনকের
সেকথা জানা ছিল না। কিন্তু গুণীজনের
অবহিত ছিলেন দে বিষয়ে। বাংলার দর্ম
টাপাধান দে জনে জানেলপ্রসাদক
ম্থোগানার দে জনে জানেলপ্রসাদক
মাগেল সমানর করতেন। দ্জানেই তাঁর
চারে বয়োজোও হলেও আসতেন তাঁর
কাতে। গানু শানুন সম্মান জানাতেন।
দিন যাবে মা কথাই রবেন

মা তোর নামে কি এমিন ধারা ..'

এই উৎপাটি অপ্র গাইতেন
জানেশপ্রসাদ। সিংধ্ কাফিরু সকর্ণ স্বে
গায়কের ভঙ্কি ভাব অতি মমাপেশাই হত
মধা লারের দোলনে। দানাভরা কথার তান
গাঁল সেই অন্পর্ম কঠে থেকে মিছরির
দানার মধন করে করে সভত। আর তার
সংগ শিলপার অভাপ্র স্ময়ন প্রিপ্রা
করত সেই ভাবের দোভনা।

তার গান ভূপেশ্রকুক বোবের বাড়ীতে সবচেয়ে বেশী শোনা বেড। সেকাল একালের সন্ধি বুগের বাংলার রাগসংগীত প্রচারের বাপরিচিত ব্রেপার্য ছিলেন चार महागद्ध। एक मात्मत्र त्मेर्ड निश्व বপা সংগতি সন্মেলন এবং সংগতি প্রতি বোগিতার খিন প্রধান হোতা ছিলেন বলে কেবল নর। তার পাথ,রিরাঘাণা-ভব-স্পরিচিত হয় বহু উল্লেখ্য আসংরেরও करना । याव कार्नन्त्रज्ञाम रम्यात रहताः পর বছর বাস করার জন্যে কভ গালের আসরই দেখানে হয়ে গেছে। দে সব ড সদরের সেই দোভলার বৃহৎ জলসাম্বরের কথা। আরো হরোরাভাবে ভূপেন্দুক্ক তাঁঃ প্রিয় জ্ঞান বা জ্ঞেন্র গান এক-একদিন শ্নতেন। আর সে সব অন্তর্গা আনু-তানেও তার গান হত প্রথম শ্রেণীর **লো**গ্ণা কম'। কারণ অন্তর তার নিতাই সংগীত রসে নিষ্টি থাকত। শৃধ্ আবন্ধনের অপেক্ষা উপযুক্ত উদবোধন হলেই দেখা দিত সে সরেধানির ধারা !...

গ্রীষ্ঠাকালের সম্প্রা হয়ত উত্তরীর্ণ হয়ে গোছে। ভূপেন্টকুক এসে বসেছেন সম্প্রের দোতলা ছাদে। মত্তে দখিনা বাতাসে তখন ভাবান মনোরম হয়ে উঠেছে। একটা দাবের ঘরে ঘরে বিজ্ঞানী আলো। ফিচ্ছু ছাদে শ্রেম্বা কে ক্ষেত্রিকর চালা।

পাশের কাউকে ভূপেন্দক্ক বললেন জেনু কোথায়? ডাকো তো। একটা গান হলে বেশ হয়।

জ্ঞানেদ্ধক হয়ত পাওয়া শেক সদরের দেই তেত্রা বে। দাত্রার ছাথে তিনি একোন ভূগে াজর কাছে। সর-জামের রগে শাবুধ াউ হার্মোনিক্ম আনা হলঃ

এবার একটা পান শৌনাও জেনাং বল বহুকা

জ্ঞানেশ্বপ্রসাদ জানেন এই পরিবেশে কি গান মানায়। কেন ধনের গান ভূপেজু-কালের অভবের প্রিয়। তা-ই তিনি ধরালেন ববীন্দ্রনাথের গভীর ভাবের আবেগ-বিধার প্রপদালা গান।

জেণ্ডমা রাতের উম্মুক্ত ছাদ । দক্ষিণের হাওয়া লাণিয়ে বন্ধে চলেছে। রবীন্দ্রনাথের জোড়াসাকোর কাছেই এই পাথারিয়াখাণী ভবন।

ভূপেন্দ্রক্ষের একটি প্রিয় গান জ্ঞানেন্দ্র আরম্ভ করন্তেন—

নিশ্বিশয়নে ভেবে রাখ

মনে ওগো অণ্ডরবামী,
প্রভাতে প্রথম নয়ন মেলিয়া
তোমারে হেরিব আ্মি,

ওগো অন্ডরবামী।।

The state of the s

বাবেশীর হানর দ্বিত করা স্বর দ্বিতার, জানেশ্যালাদের উদাত্ত-মধ্রে ক্ত ক্রীন্দ্রনাথের বন্দনীয় বাবী—এক ব্যেক দারাজাল রচনা করতে লাগল গ্রীজ রাতের সেই মতে আকাল তলে। আর জাগাল বহুং লোকের প্রেরণা—

জাগিয়া বসিয়া শুত্র জালোকে ভোষার চরণে মমিয়া পুলকে

মনে ভেবে রাখি দিনের কর্মা, ভোমারে সাপিব স্থানী, ওগো অন্তরহামী।।

দিনের কম' স্বাধিতে স্থিতে ভেবে র্যাথ মনে মনে,

কর্ম-অন্তে সন্ধানিকার বুলিব ক্রোমারি সনে।

দিন-অবসানে ভাবি বলে খরে তোমার নিশাীথ-বিবাম সাগরে আনত প্রাণের ভাবনা বেদনা

> নীরবে বাইবে নানি, ওগো অন্তর্যামী।।

শ্রতথ হয়ে শুনে ভূপেন্দ্রকৃষ্ণ বললেন, 'এবার সেই ছায়নেট'

্জানেন্দ্রসাদ গাইতে লাগজেন তফর হয়ে—

অকপ লইয়া থাকি
তাই মোর যাহা বার তাহা বার।
কণাট্কু যদি হারায় তা লয়ে

প্রণণ করে 'হায় হায়'।।
নদীতটসম কেবলই ব্যাই
প্রবাহ আঁকড়ি রাখিবারে চাই,

একে একে বাকে আ্যাত করিয়া তেউগালি কোথা বায়।।

শাহা যায় আগার যাহা কিছা থাকে সব যদি দিই সাপিয়া ভোমাকে

ভবে নাহি কয়, সবই জেগে রয় তব মহা মহিমায়।।

তোমাতে রুয়েছে কত শশী ভানা হারায় না কভু অণাু প্রমাণ্

আমারই করে হারাধনগালি রবে না কি তব পার।।...

রবীক্রনাথের এই গানখানি আন্দেশ্র-প্রসাদের নিজেরও অতি প্রিয় ছিল। এটি রেকড করাবারও ইছা ছিল তার। কিন্তু বিশ্বভারতী কর্পাক সে সম্পর্কে প্রয়োজনীয় অনুমতি তাকে দেন নি। অগতা ওই গানেরই ছক হ্বহু অনুকরণে কাজনী নজর্লকে দিয়ে বচনা করে রেকড' করেছিলেন ছারানটে—

শ্ন্য এ বৃকে পাথি মোর ফিরে জার ফিরে আর...

এখানে বলা বায় জানেকাশ্রসাদ বেগব বাংলা খেয়ালা অপোর গান রেকর্ড করেন ভার বেশার ভাগই নজর,লের রচনা। শুখে, আজি নিঝুম রাভে কে বাশা বাজার এ উম্বল বাজল দুটি নগুনাখনা তার জনে। লিখে শেন অভিনেতা-নাট্যকার তুলসী পাহিডী।...

প্রের বরপরে জানেন্দ্র তাঁর জীবন কথা জন্যোপানত সংগীতেরই প্রসংগ শুর্থ, শেষের একটি অধ্যার ভিন্ন। তাঁর একটি স্থান্ধিক জীবনী এখনে শেগুরা হল।

স্পাতি কেন্দ্ৰ বিৰুপ্তে ১৯০২ গালের শ্ভ বড়দিন (১০ই পোর, ব্হ-প্রতিষার, ১৩০৯। ২৫ ডিসেন্বর) তাঁর জন্ম হয়। গোঁসাইপাড়ার এই গোণবামী পরিবার নক্ষান্তচচার জনে। বিখাত ছিলেন বিক্ষাপারে। আর এক কারণেও তাদের প্রাসম্পি ছিল। তারা শ্রীনিবাস আচাথের বংশধর। শ্রীচেজন পরবর্তী বাংলার বৈক্ষর সমাজের হয়ী নেতা নরে।শুম শ্রীনিবাস শ্যামানন্দের অনাতম শ্রীনিবাস ইাকুর। জ্ঞানেন্দ্রপ্রসংদের জন্মের তিশ্প বছরের আলে থেকে বিক্সানের হৈং এই বংশে বৈক্ষর ধ্যাচিচার প্রবতন হুরোখ্যা। জ্ঞানেন্দ্রপ্রসাদের জাবনকালেও বৈক্ষর আচারের বৃত্তি দেখা যায় তালের পার-বাররে। সিয়লাপালের রাজা মদন্দ্রহ্ম সিংহ প্রমুখ তাদের অনেক শিব্য বিক্ষার্থক

रेगलका-त्रा नः श्र

শৈলজানন্দ মুখোপাধ্যায় সাহিত্যে একটি অবিস্মরণীয় নাম। ঘনি**হ্**ঠতম নজরুলের শৈলজানন্দ বাংলা সাহিত্যে একটি প্রদর্শন নত্বন পথ করলেন। শৈলজানন্দ আণ্ডলিক সাহিত্যের প্রথম সাথ কির, পকার। অলস কল্পনা-বিলাস নয়, প্রত্যক্ষ অভিজ্ঞতার ভিত্তিতে শৈলজানন্দের হাতে যে সাহিত্য সূচিট হ'ল তাতে পাওয়া গেল জীবন্ত মানুষের দ্পর্শ—তংর কর্মের ও মর্মের বাস্তব রূপচ্ছবি। শৈলজানন্দ রচিত, সুধীসমালোচক দ্বীকৃত বাংলা সাহিত্যের সেই সব অমূল্য সম্পদ্ একত্রিত করে খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশিত হচ্ছেঃ

रेगलजा-त्रा नः श्र

সাহিত্য সংস্থা,, ১৮সি টেমার লেন, কলি ৯

জনকে ছিলেন। তাদের সেখানে পরিচিতি ছিল দোসাই বংশ বলে। জানেনপ্রসাদের রনেও বৈক্ব সংস্কার ভালভাবে ছিল। ভার জীবনের সেই সংকটেনর পরে দেখা গামেছিল বার তীব্র প্রতিভিয়া। সে ঘটনা জনেক পরেব কথা।

তার জন্মের অনেক আনে থেকে এ বংশে সংগীতচলা হত। তার পিতা-পিতায়হ-পিহ্বারা প্রত্যেক্ট সংগীত-সেবী। তাদের মধ্যে রাধিকাপ্রসাদ ত ভারতবিখ্যাত।

আন্নেন্দ্রসাদের পিতামত জগংচীন লোপবামী ছিলেন বিশ্বপরের সবচোয় নামী পাথোয়াজী। বিষপুপারের আবি ধ্রপনাচার্য রামশংকর ভটাচার্যের পার ও শিষা রামকেশর ভটাচার্য রামশুকরের আর এক শিষা কেশব্দন্ত চলবতী প্রভৃতিন গানের সংশা জগৎচাদ সংগত করভেন। যান, ভট্ট কখনো বিশ্পেরে এলে (বেশীর चागर किम विकाश तत्र वारेत शाकरतन) ভার গামের সংগাঁও পাথোয়াজ বাজাটেন জনংচাদ তার পণ্ড প্রের স্কলেই अश्रीकरअवी। श्रथम कीर्डिशंप শৈক্ষার পাথোয়াজী হয়েছিলেন। দিবতীয় বিশিন্তন্দ্র এসরাজ (এবং তার ময়ারমাখী সংশ্করণ তাউস মন্তের) বাদক ছিলেন-পাঠকপাছার নীলমাধ্ব চক্রবতী তাঁয় গ্রেয়। ভত্তীয় রাধিকাপ্রসাদ বাঙ্গাকাল থেকেই বিষ্ণাপ্তরে পান শিখতেন। তারপর ১৫ বছর বয়সে কলকাতায় রীভিন্নত সংগতিশিক্ষা আরুম্ভ করেন। বেতি<u>য়া</u> ঘরাণার বিখ্যাত গায়ক জাতুদ্বয় ুদ্বি-নারায়ণ ও গাুর প্রদাদ মিপ্রের কাছে দশ বছরের-ও বেশী শিক্ষার পরে প্রতিষ্ঠিত इन कलकाण उपा बारमात मन्त्री जन्मता। कगरहासिक एड्रथ भाग स्माकनाथ भागक इर्फ्राइरमन এवर भारिङ्गिरकङ्ग्रत नियेन्ड থাকেন তার অভপায় জীবনে। সর্বকান্ত্র नक्फिन्स धाकायाद्व अभाग (यशाल गाधक এবং সেতার সারবাহার বাদক হয়েছিলেন তিনি ধ্রপদ ও খেয়াল শেখেন রাধিকা প্রসাদের কাছে এবং সেতার সারবাহারে ছন নীলমাধ্ব চক্রবতীর পোষা। নকুড়চ্দুও শাংক্তনিকেতনে সংগীতশিকক নিয়্ इर्शिक्टनन ।

জনংচাদের শিবতীয় পঢ়ে 423 36-বাদক বিশিন্চশ্র হলেন জানেক্টো পিতা। বিপিনচক্রের সংগতিজীবন সংব**েধ** क्षाः न আর একটা, ৮ যোগ 0.41 যায় এস্থাজ (ও তাউস) বাদক 50H Q িংন একজন গায়কও ছিলেন। বিষয়-পারের স্পাতি স্মাজে। তিন পারাহের এই সংগতিচচপর অহতরকা পরিবেশে **ক্ষ**নেন্দ্রপ্রসাদ লালিত হন। আর শৈশর থেকেই বভাবের প্রেরণায় প্রকাশ পায় ছে'র সুমিত্র ক'ঠ। তার পারন প্রতিভা লক্ষ্য করে একেবারে বালক বয়সেই তাঁর
স্পাণীত শিক্ষা আরমত করা হয়। বিদ্যাণ
শিক্ষার পরিবতে সংগীতের পাঠ দেওয়;
ছত তাঁকে। পিতৃবা লোকনাথ আনেশ্রপ্রসাদের ৬ বছর বয়স থেকে সংগীতশিক্ষা
দিতে আরমত করেন। শান্তিনিকেতনের
সংগীতশিক্ষা আরমেতর দ্বারহর প্রে ১০
বছর বয়সে তাঁর মতু হয়।

ভারপ্রই রাধিকাপ্রসাদের কাছে জানেলের সংগতি শিক্ষার স্তুলাত। তার সহাস তথন ৮ বছর মাত। তাহল ১৯১০ সালের কথা। রাধিকাপ্রসাদ তথন মহারাজা মণীন্দ্র নংলীর সংগতি বিদ্যালয়ের অধ্যক্ষ হয়ে বহরমপারে বাস করছেন। তার পাঁচ বছর আলে (১৯০৫) বিশান্দর প্রতিট্যাকরেন মণীন্দ্রচন্দ্র। কলকাভার সংগতি তথনই খ্যাতনামা হয়েছেন রাধিকাপ্রসাদ। তাকিই মহারাজা মণীন্দ্রচন্দ্র প্রথম থেকে এই বহরমপার বিদ্যালয়ের ভারপ্রাপ্ত

বহুরমুপ্রে শিক্ষ, क्षा जन्म श्रामाप পেতে থাকেন ব**িধকাপ্রসা**দের কাছে। পিড়বোর কাছে তিনি তখন থেকেই বাস বরতেন এবং বিধিবদধ্যাবে সংগতিশিকা আর্ম্ভ করেন। বিদর্গাদকা হা অন্য করণীয় ছিল না ভূরি। এক্টেডাবেই রাধিকাপ্রসাদের নিদে'লো তান্ত কণ্ঠসাধনা ও শিক্ষা অগ্রসর হতে থাকে। সহজাও সাকঠ ভার ছিল। সেই সন্দে বাভ হল রাধিকা**প্রসা**দের উপযুক্ত শিক্ষা। দিন ভাষিকাংশ সময়ই জ্ঞানেনের সংগীতের সাধনে অভিবাহিত হয়। রাধিকাপ্রসাদ বহরমপরে থেকে হখন কল কাতায় আসতেন কিংবা বিশাপারে তথনো সংগ্রে আক্তেন ভ্রাভুম্পান্ত। রাধিকাপ্সসাদের সংগ্ৰানা সংগতিসেরেও উপাস্থত হতেন। এইভাবে গঠিত হতে থাকে আংশেদের সংগতিজীবন।

্রপ্র রাধিক্প্রসাদ বহরমপুরের সংগতি বিদ্যাপয় থেকে অবধর নেন। প্রায়ী হন কর্মকাতায়। তা সম্ভবত ১৯৯৯ সাজের কথা। জ্ঞানেনপ্রসাদত তার সংগ্রাহাকন।

রাধিকাপ্রসাদ এবার কলকাতা নিবাদী হন ভূপোনক্ষ ঘোষের আতিবো। ভার সাথ্রিয়াঘাটা আবাসের সদয় মহলে তিন-তথ্যে রাধিকাপ্রসাদের বাসের জন্ম স্থান নির্দিট ছিলা তথ্যা তার সংগ্রাক্ষে-রসাদ। ধ্রাদের প্রথাল দুই অংগরই সাধক ও গায়ক ছিলেন রাধিকাপ্রসাদ। প্রাতৃতপ্রকেও প্রথম থেকেই ধ্রুকের ধ্রেয়াল দিতেন।

ওই ১৯১৯ সালেই র্বাধকাশ্রসালের প্রধান শিষা প্রপদী মহীশ্রনাথের মত। হয় ৷ তারপর মহীদের শিষারা—ভতনাথ वरक्ताभाषाम् यागीक्षताथ वरक्ताभाषाः বীরেন্দ্রনাথ ভটাচার্য প্রমাথ আসেন রাধিকাপ্রসাদের কাছে। তার শিকাধীনে সভগতিচচা করতে থাকেন। তাদের মধ্যে यात वक्कन हिल्लन भशीन्त्रनात्थत कार्छ-পার লালিতচনর। পিতার স্যোগা লিয়া এবং অভি মধ্রেকঠ ললিতচন্দ্রও রাধিকা-প্রসাদের কাছে শিখতে থাকেন। শাখা প্রপদ্ত গাইতেন জলিতচন্দ্র। তাঁর চেয়ে ভার বছরের **কমিণ্ঠ** : **আমেণ্টপ্রসাদ তথ**ন িক্ষাথী⁴ তলেও আসরে গাইবার উপযান্ত ত্ৰভাছিলেন। রাধকাপ্রসাদের জীবিত-कारलाहे मामिकारमा ७ कारनम्बर्भनाम यागाम-বন্দী প্রাপদ গাইতেন আশরে, গরেভাতার সেই সলাভিক সদপক তাদের মধ্যে দীয কাল ছিল। এই দটে মাধ্যময় কণ্ঠের জ্যাটিতে # **.** 917 গান मिकारल । 7 00 1917 মৃত্যুও হয় এক বছর আগে পরে। ১৯৪৪ সালে ললিতচন্দ্ৰ বিৰত হম ৪৬ বছর বয়সে।

রাধিকাপ্রসাদ জ্ঞানেন্দ্রকে নিয়ে ক'বছর
পাথ বিয়াঘাটায় বাস করেছিলেন। তারপর
ভপেন্দ্রক্ষেরই মসজিদ বাড়ি শুরীটের এক
বাড়িতে ছিলেন কিছুদিন। সে সময় তিলি
সপ্রিবারে কলকাতাথাসী হন, সংশা
জ্ঞানেন্দ্রপ্রাদিন থাকেন। তারপর ১৯২৪
স্বালের ডিসেন্দ্রর লক্ষ্যো মিথিল ভারত
স্বালের ডিসেন্দ্রর লক্ষ্যো মিথিল ভারত
সংগাত সংমলনে স্বোল দিতে ঘান
রাধিকাপ্রসাদ সেই বাড়ি থেকেই। আর
লক্ষ্যো থেকে গরবার পরই ১৯২৫
স্বালেন বায় বাংলার সংগাতি
সমাজে।

তার কাছে ১৯১০ থেকে সেই ১৯২৪

সাল পর্যকত ১৯ বছর এক দিক্তমে গান

বৈধ্যভিলেন জানেন্দপ্রসাদ। রাধিকা

প্রসাদের পরে। তালিমে তিনি গঠিত
হয়েছিলেন প্রিয় শিষা মহীন্দের মৃত্যুর
পর গোসাইজার প্রেষ্ঠ উত্তরসাধক হন
তার এই একাল্ড দেনহের প্রাক্তন্ত।
ভূপেন্দক্ষের ভবনে প্রথম মধ্যন আসেন
ব্যাধনপ্রসাদ ঘোষ মহাশায়কে ব্যান
ভানার হবে। ওকে এখানে রাধব।

ভার আদরের আন্নেদ্রসাদের হয়ে।
ছিল ঠিকই। সাথকিতার শ্রীমন্তিত হয়ে।
ছিল তার সংগতিজাবিন। নাধিজাপ্রসাদের
মড়োকালে তিনি ২১ বছরের যুবক ও
পার্শ বিকমিত সিম্ম প্রশোধ-বৈজ্ঞাল লারক
সংগতিসমাজে প্রতিশ্বী লাভের জন্যে তাকৈ
বিশেষ কর্ম পেতে হয় নি। কিছু বিনের
মধ্যেই তিনি সংগতিসাদে জন্ত করেছিলেন
বল্ ও স্কর্মিক জন্ম।

তীল সংগতিকবিনের প্রথম থেকেই ভ্রাপ্তক্তক হোষকে তিনি এক প্রধান পেয়েছিলেন। ভার প্রত্যাষকর্পে আন্ক্লো এবং গ'হেই পরে তিনি পশ্ডিত বিষ্ণা দিগুমধন ও ওপ্তাদ ফৈয়াজ কাছে শিক্ষার সুযোগ পান কয়েকবার। রাধিকাপ্রসাদের মৃত্যুর পরও কয়েক বছয় कार्नस्थात्राप वात्र করেছিলেন ভাঁর পাথনির্যাঘাটা ভবনে। আর তার নিখিল বজা সজাতি সমোলনের শিল্পীরূপে कार्तम्त्रामान् अथम त्थाक्षेत्र यात थार्कन। রাধিকাপ্রসাদের মতন তার সংগতি कौरान ७ व्याक्ता किल कृत्भन्तकृत्कत छेनात হদরের সহযোগিতা ও আনুকুলা। পাথারিয়াঘাটা থেকে পরে তিনি কলকাতায় বিভিন্ন বাস করেছিলেন। কিন্তু ভলেন্দ্রক্ষের গাহে যাতারাত ও সংগতি-खीवत्नव चनिष्ठे अन्भक् जीत विमामान शास्क क्वीवतन्त्र (मास्वत्र शर्व शर्वन्छ। कृत्रम्य-কুকের উপযুক্ত জেভ্ঠ পরে মন্মথনাথ রাধিকপ্রসাদের সংগীতাশিষা ছিলেন বলে তাঁর সংগাও জ্ঞানেন্দ্রপ্রসাদের আন্তরিক প্রীতির मस्दर्ध किल।

ভূপেন্দ্ৰকৃষ্ণের গ্ছে জ্ঞানেন্দ্ৰপ্ৰদান ১৯২৮ ২৯ প্ৰাণ্ট ছিলেন। তারপর উত্তর কলকাতার নানা জারগায় থাকেন অপথায়াভ বে। আমহান্ট স্মাটিট মহাকালা পাঠশালায় ঘোষ লেনে চাচার হোটেলে ইত্যাদি হয়ে শেষ বছর দায়েক তলি মহারাণী হেমন্ডকুমারী প্রাটি। এটি পান্টিয়া রাজবংশের কলকাতা আবাস এবং এখান থেকেই জ্ঞানেন্দ্রসাদ বিকল্পারে শেষবার যাতা করেছিলেন।

কলকাতায় জ্ঞানেন্দ্রপ্রসাদ প্রেছিলেন নানা গ্লেম্পুর্য অন্বর্গা। বেমন পর্টিয়ার রাজবাড়ি কিংবা পাথারিয়াধাটার জ্বন, তেমনি বাগবাজারের পশ্পতিনাথ বন্ধ গ্রুপ্তিতেও তার সাদর স্থান ছিল। প্রাতিনাথের বংশধর অন্থনাথ তার স্পাতিগাগের জনো ছিলেন এক দর্শী প্তিপোষক।

ভূপে-দুক্ক ছাড়া ক্ষমকাতার আর যে সব আসরে জ্ঞানে-দেশাথের গান বেশী হত তা হল—জোড়াখাগান জ্ঞীটের দেবীপ্রসম ছোষের বাড়ি, রাজা রাজবল্লভ স্ট্রীটের বিশ্বনাথ সান্যালের বাড়ি বাগবাজারের কালিবাবে নামে স্পরিচিত উক্ত অনাথনাথ বস্ব বাড়ি ভগবভীপ্রসাদ খা চৌধারীর অথাতি পার্টিরার রাজবাড়ি বাগবাজারের বলারাম দ্বালার রাজবাড়ি বাগবাজারের বলারাম দ্বালার ভ্রানীপার স্থাতি সন্মিলনী প্রজ্ঞাত কলাকাডার বাইরে মহিষাদল রাজবাড়িত তার আসর বহুবার হয়েছে।

তা হাজা সংগীতই ত ছিল তাঁর জীবনের ব্যত্তি ও অবশম্বন। সেজ্নে

कनकाका ६ वाटन-भारमंत्र माना व्यामस्य তিনি মাজুরো করতে যেতেন। যথেত নামা ডাক তার হয়েছিল সংগীতজগতে। কিন্তু তখনকার আথিক মান অন্যায়ী তামি নুষ্ণরোছিল এক আসরের জন্যে হিশ টাকা মাত্র, ভবে সেসব তার কাছে বাহা ছিল। স-ভূণ্টচিত্ত থাকতেন তিনি স্করের ধ্যানে আবাহনে পরিবেশনে। সরল মন সভাকার শিল্পী-প্রাণ। সুরে নিম^{০ন} থাকতেই শ্রেণ্ঠ আরাম বোধ করতেন। কল কাতারই বাসিন্দা থাকতেন বেশীর ভাগ সময়। তথন উপার্জনের স্ব অর্থ এক ছাত্রের কাছে গাঁচছত রাখতেন। জাসরের ন্জবে গ্রামেকোনের আয় বেভারের রোজগার ইত্যাদি। আর প্রয়োজন মতন নিতেন। হিসেব চাইতেন দা কথনো। সে ছাত্র আবার অভিদারদ। কিন্তু তার নিষ্ঠা নেখে বিনাম লো তিনি তাকৈ শেখাতেন।

জাবার এক একদিন শৈবের মুখ লক্ষ্য করে বলভেন এমন শ্বেনো শ্বেনো কেম দেখাকে রে? খাওয়া হয় নি নাকি? 'আহেজ না বনে কিছু নেই দ গ্রেণু ধ্যক দিয়ে উঠ:তেন, বেলেজি না বখনই দ্যকার পড়াব ওই টাকা থেকে নিবি শ

হাত জোড় করে শিষা বলতেন 'আপনার কত সময় নণ্ট করে, ওয়ান আমায় দয়া করে গান গেখান। আরু কি আপনার ধ্বা বাড়াতে পারি?'

বিৰম রেগে জ্ঞানেন্দুপ্রসাদ জামাতেন ফের যদি কোনদিন জানতে পারি বে না থেরে আছিস, তোকে গান শেখানো বন্ধ করে দেব।

শিষ্য কিল্ডু কোনদিন জানতে দেন নি নিজের অনাহারে থাকবার কথা। আর কথনো গ্রের উপাজিত অর্থ প্রশাও করেননি। সংগীতশিকাও প্রেডে থাকেন অবাধে।

জ্ঞানেরপ্রসাদের সংগতিদাবা করে করেকজনেরই নাম করা বার: বেম-নালাচক হাতাকের ধারেকলেয় ঘটক, জয়-কুক সাল্যাল, সতোল্যনাথ বেমিল কর্গবিধী-

রামায়ণী প্রকাশ ভবন

১০৬/১ आमरान्डे न्द्रीडे, क्लिकाका-३

প্রকাশিত হল

আমাদের আর একটি ঐতিহ্যবাহী গ্রন্থ

রামায়ণীৰাঙলা অভিধান

ম্লাঃ বোল টাকা

আধ্যনিক ৰাঙলা সাহিত্যে ব্যবহাত এমন সব অনেক নতুন শব্দ বা প্রচলিত অভিধানে খ'্জে পাওয়া ভার—অথচ এই সব শব্দের ব্যবহারে আমাদের ভাষার শ্রীব্দিধ এবং ঐতিহ্য প্রবহমান—তার প্রয়োজনীয় সব নতুন শব্দমালা চয়ন এবং গ্রন্থন—বিশেষভাবে উদাহরণ সহযোগে তার ব্যবহার ৰাঙলা অভিধান জগতে এই বোধহয় প্রথম। তা ছাড়া বাঙলা সাহিত্য-কৃতি থেকে উপযুক্ত উদ্ধৃতি সহকারে অনেক শব্দের আশ্চর্য প্রয়োগ এ-অভিধানের আর একটি উল্লেখ্যোগ্য বৈশিশ্ট্য। বাঙলা ভাষাভাষী মান্বের পক্ষে বিশেষ করে ছাত্র, শিক্ষক, অভিভাবকগণের নিমিন্ত এই অভিধানগ্রন্থটি রচিত। বাঙলা ভাষার রচিত অভিধানসম্হের ভেতর গ্রন্থটি আলাদা মর্যাদা দাবীর আশা রাথে।

ংশিক নিন : স্যাজ্ইন পাৰ্বজিশাস কন্সান, ৩, র্মানাথ নজ্মদার স্থীট. কলিকাতা-১ চরণ খাঁ ফোর্যরী (পর্শটয়া), ওঞ্চারনাথ চটোপাধণার (বাঁকড়া) গ্রভাত।

এশের মধ্যে একজন হলেন কাশীর সেই মধ্যালিকা বাইরের ছারটি। মধ্যালিকা বাইরের মৃত্যুর অনেকদিন পরে হঠাৎ তার কথা ফলে গেল।

দেদিন গানের আ্বানর বাসেতে বাঁজন
স্থানিট শ্রী জে সি বাানাজানির বাজিতে। এক
জর্প গারক গান আরম্ভ করেছেন।
বিকাম্বিত লয়ের বন্দেশাী একথানি ইনন
কল্যালের বেগাল। এখন সমস্য আসরে
একটুখানি চাল্ডলা জাগল। গারক
দেখলেন-এক স্প্রেম্ম ব্যক্তি এলেন
আসরে। ভার দিকে চেয়েই গ্রোভাদের মধ্যে
গ্রেল জেগেছিল। ভদ্যলোক এসে স্বাস্থি
বস্পেন গানের জায়গাতেই।

তারপর গান একটুখানি শ্নেই মজ-শিস্ট চঙে বলে উঠলেন বাঃ বাঃ ভাই ৷'

আর গানের ক্ষণিক বিরুতিক সময় গান্তককে বললেন, বেশ হচেছা চনংকর চাল ও। আমিও সংগ্রাই, কেমন? গালটা বড় গাইতে ইচেছ করছে।

বংশই ধরে নিজেন গান্থানি। আর দম্মক গুলার সারে একেবারে ছাপিনে শুক্তে লাগল।

ভরবে গারকটি সংক্রেচ গান বন্ধ করছে ভয়বেশুক বললেন থামলে কেন? গাঙ্

শেষ প্রকৃত গাওরালেন নিজের সংশা ।
ক্রমন অবাচিতভাবে এবং এক অখাত
গায়কের সংশা জাতিতে গাওয়া—অথচ
নিজের ভোগ্ডর প্রধাননের শোলমার চেণ্চাও
নেই। এমন নির্ভিমান অকুন্স আথভোলা সার-পাগল। কে এই অসাধারহ
গায়ক-নিশ্পী ?

তাকে দেখে মুখ্য হরে ব্যক্তিন ভর্ব। গালকটি। আর লোভাদের জন্মটি গালেন শুনালেন—জানবাবা জান গোলবামী।

সেই কাশীতে মঞ্জিকা বাইরের খরে শোক্তিনা গোল্বামী? সেই নিক্ম ভাতেশন দরবার কানাড়ার জ্ঞান গোল্বামী? কি আন্চর্কা এউদিন পরে খোলানোগ দতে কেল ভার সংলা।

সেই জ্ঞানেপ্রপ্রসাদ গোল্পামীই তথক তাকৈ বলছিলেন, 'ডোমার গলাটি ত বেল ছাই! আর এমন সক্রের হিল্পেন্সানী উচ্চারল কি করে করজে? পশ্চিমে থান থিকেন্দ্র মাকি?

প্ৰাজে হাতি কাপতে সম্ভালক। বাইবেৰ কাতে কিছু বিন্তু বিশ্বস্থালক সং তেষার নাম কি?'
গ্রীধীরেন্দ্রনাথ ঘটক।'
'আমার কাছে শিশবে।'
ঘদি দরা করে শেখান।'
সেই অনুসরের সর থেকেই জ্ঞানেন্দ্র-

আরে একজন শিখতে চান আন্নেক্ত্রপ্রসাদের কাছে। তিনি তাকৈ শেখাতে
আরুহুত করেন। একমাত ছাত্রী তার।
তর্ণী হলেও গ্রামাফোন রেক্ডের
উদীয়মানা গারিকা। হালকা চালের গানকিল্পু বড়ই সংক্ঠী। পর পর ২৮ খানি
গান তার বেক্ডে হয়ে যায়। রেক্ড জ্পাতের এক স্প্রসিক্ষা গারিকা হন.....

প্রসাদের তিনি শিষ্য হলেন।

কিন্তু জ্ঞানেন্দ্রপ্রসাদের পক্ষে কি সংখ্যের হত এ ছাত্তীর সংসগ² না হলে! জীবন-যাত্রায় প্রকাশ্য রাজপথেই স্বচ্চন্দে স্তমণ করে যেতে পারতেন। হয়ত অনা রংশ নিত তরি জীবনের পরিণাম! তবে তা আরো পরের কথা। পরেই বলা হবে।.....

সংগীতজীবনে জ্ঞানেপ্রপ্রসাদ তথ্য খাতির শীবে উঠেছেন। গ্রামাফেনি রেকডে, বেতারে আসরে সন্মোলনে— সকলের মাথে মাথে তখন উজ্ঞানিত একটি শন্মা—জ্ঞান গোশ্বামী! তখনকার হিসেবে অর্থ ভাগাই বা মন্দ কি? কারণ সেই উপার্জনেই তিনি ত সম্ভূণ্টিতিত।

গ্রামেনিকান রেকর্ডের জনে। কাজা নজন্মকার সংশা তথা তার বেদা হংদাত। হয়েছে। একদিন হৈ হৈ করে নজর্মা তার হাত টেনে নিয়ে ভাগা বিচার করতে বসকোন। আর উল্লোস চীংকার করে উঠলেন ওঃ কি ভাগাই কারছেন। কাউকে গ্রি ক্তি। পেটা করেন সেও আপ্নার পারে ধরবে।

হার! জাগা ভ জ-দ্বী! সেদিন নজর্কের ভবিষ্যাধাণীতে ভাগাদেবতা হবত অক্টেম্ম হেসেছিকেন!

क्रिमाण्ड्यत्र !

সেই সমল ম.ভ-শ্বভাৰ ভাৰ-পাগণ গিকপী! তাঁর সে একাত সংগতিময় কবিন কি কটিল হলে উটল শেষে। কও ক্ট প্রশিষ্টে কথ হলে গোল। আর তিনি সেই স্ব প্রশিষ্ট কেন্দ্র করতে গোলেন কি শোচনীয় উপন্থে।

্রিভিন্ন ক্লডমের প্রদৈশ্ব। অকল্যনীর পরিশিষ্ঠি।

জনেশাপ্রশাসের সারের প্রাণ এশবের জনো প্রস্কৃত ছিল না। তিনি ক্রিন্ট হতে হত্তে লাখনেন বির্পু পরিবেশে। প্রতিক্রতা র্তৃতর এবং ক্রমবর্ষান হতে লাগল। থানিরে এল নানা সংকট। আর সেই সংলা বৃত্তি হারে পড়লা তাঁর ব্যক্তিত ট্রাক্রেডি। একটির পর একটি কিংবা এক্ষিক একই সংলা, তা বলা যাবে না। তার প্রয়োজনও নেই। সময়টা হয়ত ৩।৪ বছর হতে পারে। সবই দ্বতীয় বিশ্বয়াধের কাল। সেই যথন থেকে সভাতার প্রেক ম্লামান একেবারে পরিবৃত্তি ওয়ে যায়।

সেই সময় আসরের শিংপী জ্ঞানেকপ্রসাদ লক্ষ্য করলেন প্রোডাদের মন কির্ক্য

রেল হাত পড়ছে। খাটো হয়ে যাছে
গানের তা আসরের মর্যাদা। অব্যোগরে

াগরেপে বাভিচার নিষ্ঠা উন্ধার

সংক্ষার কিশ্চিমার। অথ্য আসরে যেতেও

হা। কারণ এই অবলম্বন এবং জীবনের
বিংশবাস বায়া। কিশ্স সাংগীতিক আদর্শ ও
র,চিকে ভ বিস্কান দেয়া যায় না।

তাই নিজের গান হয়ে গেলেই অপ্থির হয়ে ওঠেন। শিষ্য সংগীদের বলেন, এখনি টাকসি ডাক। পালাই। কান স্বালাপালা হয়ে গেছে রে।

তথন গান নিয়ে বেসাতি পরে।দস্র আরম্ভ হয়ে গেছে। বহুজনের কাছ থেকে গয়সা রোজগারের মাধ্যম দেখা দিয়েছে— শবাক গাঁচত। ইতর রুচির চাহিদা শথে পরেণ হচ্চে না। দুল্ট বাবসায়ী বংশিওতে মপ্রর্চি স্থিট করাও চলেছে। সেজনে।ই স্বরর জগতে এসেছে বিকট নৈরাজা! জানেন্দ্রসাধের শিক্ষী-চিত্র বিপ্যান্ত বোধ করতে লাগলা। কিন্তু নির্পায়। অথচ কানে আসে স্বই।

কত মতলবের পেশাদারই ওখন দেয়া দিকেন। ওই আবোল-তাবোল স্কুরের কারবারী হয়ে বরাত ফেরাতে চাম এমন কেউ কেউ আবার শিখ্ডেত ভাসেন জ্ঞান্দ্র-হসাদের কাছে। এখান থেকে কিছু আদার করে সমুসা ব্যোজগারের যালায় গাঁদ কালে লাগে।

শণভূবক। জ্ঞানেন্দ্রপ্রসাদ তাঁদের মাথের প্রপর বলে দেন, 'ওই সব দিকেই থাকুন'। শাস আছে ওথানে: এসব শিখতে বড় খাট্নি। আর আগনাদের গলা দিয়ে এরক্ষ কাজ বেবুবে: বলে, একট্র ভানবনার দেখিয়ে দিলেন। তথন পালিয়ে বাঁচলেন আধ্রাদিক গানের স্রকাক্রা।

ভারা না হয় গৈংগান। কিন্তু সংগতি জগতে আবো ভ্রাংকর দুর্নিনা ঘানিয়ে এল বে। মহাধ্যেধর মধ্য সম্পার কলকাভাষ ব্যক্ত অধ্যক্ষর নামল। সন্ধার পর থেকে শহর্ব নিশ্পদীপ। বিমান অঞ্জ্যেদের আঙ্গাক্ত এবং ভার প্রভিরেধের মহন্তা। সম্পত্ত পদ থেকে আবো বাজিভি হল। আলোকিত বাডি-মুরের সব জানলা বহুং। দেশমার আলোক যেন বাইরে না আসে। কিন্তু সংগতিরে জগত আলোর জগত, মুক্ত প্রাণের আরার ক্ষেত্র। এই শ্বাস্রোধকর পরিস্থিতিতে জ্ঞানেল, প্রসাদের এবং সকল গুণীরই সংগতিজ্ঞানিল, হয়ে উঠল দুর্বিসহ। আস্ব ক্রমে স্বন্ধান হরে উঠল দুর্বিসহ। আস্ব ক্রমে স্বন্ধান শহরত্যাগীদের ফলে কলকাত। প্রায় জনশুনা মুর্তি ধারণ করল। সংগতির আসর সেই অস্ভুড অবস্থায় যেন হাসির কথা।

হতাশ প্রানেকপ্রসাদ ছাখনের বলালেন আরে ও কলকাতায় থাক যায় না। দেশেই ফিরে যাব। কিল্টু গানের কি হবে রে? আর আস্ব এমন ঘুচে গেলে আমি বাঁচব কি নিয়ে?

সেই থেকেই তাঁর দেশে অর্থাং বিশ্ব-পারে যাওর। থাকা অনেক বেশি আরক্ত কল। আগে কথনো বিষ্ফুপ্যুরে থাকন্তেন না এতদিন করে।

জনহান আলোহান সূরহান কলকাতা।
এতদিনের সংগীওজাবনের অব্যাংগী
ফলকাতার স্থেগ জ্ঞানেন্দ্রপ্রসাদের বিদ্ধেন
ঘটতে লাগল। এই বিধ্বুহত নগরিক—জাবনে
তার সাংগাতিক অফিডম্বের ক্ষতি হুস
অবণ্নীয়।

আর অন্তজাবিনে সেই বিপর্যা।
রেক্ড জগতের দেই তর্ণী গায়িকা।
জ্ঞানেন্দ্রস্থানের সংগীতকদেঠ মুম্প হরে
তার কাছে গান শিখতে আরম্ভ করেন।
আর সংগীত শিক্ষা শ্রুণ করে ক্রে রুপেমুম্পা হলেন তার সুদুশনি পারুষ্কানিকতে।

সমাজ নামক বস্তুটি তথুনো কিছু ছিল। সেই নিরিখে গায়িকার পরিচয় দিতে হয়—তিনি সমজ-বহিভুতা। তবে নিদ্দ কোটির নন। শালীন, পরিশালিও। সেই স্বাধীনা অর্থাশালিনীর কাছে সব সমাজ বিধি লোকাচার নসাথে হয়ে ছিল। আর এত বড় শিতপীর গানে ম্বুধা, র্পম্বুণা। সেই চিরুতন ভারীর ললিত লোভন লীলা—আর অন্তম্ন ছলাকলা।

ত্ব জানেন্দপ্রসাদ হয়ত অটল
থাকতেন। কিংবা চবিত্রচাতির সম্ভাবনায়
বিচ্ছিল্ল করে আনতেন নিজেকে। কিন্তু
গারিকা মধ্রকন্ঠী হয়েই স্বেশিক্সীর
কাল হল। স্ব-পাগল স্মিন্ট কন্ঠের
পাগল জ্যানেন্দ্রপ্রসাদ ক্রণে আকৃতি হয়ে
পদ্যান কিরবীতে।

তথন তিনি অতিপ্রসিম্ধ গায়ব। সূত্রাং কপকাতার সংগতি ক্ষেত্র সংবাদটি প্রচারিত হয়ে গেল। অনেক বাধগালী চরিত্র পরিতৃশ্ত হল এই মুখ্রোচক থবরে। ক্ষিত্ আনেকে দুহুখ পেলেন। তেওঁ বা মর্মাছত হয়ে মান্তব্য করলেন জ্ঞান্থাব্ এ কি করলেন। এমন গলাটি হাবে!

কিন্তু, না। জ্ঞানে-দ্রপ্রসাদ সে মনোরম মোহপাশ ছিন্ন করেছিলেন কিছুদিনের মধ্যেই। তার অন্তরের সংক্ষরই তাকে রক্ষা করেছিল। কিন্তু তার মনে অতিশয় তার হরেছিল এই দুর্গতির প্রতিক্রিয়া। গায়িকা সংস্কাকে তিনি পদস্ফলন বলেই লগ্য করতেন এবং তার মর্মাহ্য তনার সীমা ছিল না। বাইবের সমাজে প্রকাশ পার্মি তার অন্তদ্যতের কথা। কিন্তু ছনিন্ঠ মহল তা জনতেন।

ভাগরেণ্য বন্ধুজনের কাছে তিনি সে সময় বলতেন, গ্রীনিবাস ঠাকুরের বংশে জন্মে এসব দুর্মতি আমার।

হয়ত কোন অন্রগা বংশ গ্রে আত্থি হয়েছেন। রাচে শরন করেছেন এক কল্কে। মাঝরতে আচমধা ঘুম ভেশে বংশ্ দেখেন জ্ঞানেন্দ্রসাদ শযায় নেই। ধরে আলো জেন্লেছেন, দাঁড়িয়ে আছেন আয়ানর সামনে। একদ্যেট নিজেরই প্রতিধিন দেখছেন আর গালে চিব্ধে হাত দিয়ে বিড় বিড় করছেন—এই আগি: এই আগি...'

অনেকে বলতেন বয়, তার বায়ুরোগ শেষ জীবনে খুব বৃশ্ধি গায়। তার স্তগাত হয় এইভাবে।

প্রায়ই নিজেকে ধিক্সার নিতেন। আর সেই অন্শোচনা থেকেই গোপাল-আরাধনার ভার থার মনে ভাগে নতুন করে।

বংশের তানেকদিনের সংক্ষার সঞ্জার হয়ে ওঠে। এবং আতিশ্যা দেখা দেয়। বেখানে সেখানে যার তার সংক্য কথায় গোপালের প্রমাণ আনেন। রুমে গোকে এটি মন্তিক পাঁড়া বলে গণা করতে থাকে। বাইরে ত প্রকাশ পায় না কার্যকারণের মানসিক গড়ে স্থে।

ভবে গোপাল গ্রন্থর এই আধিকাতা থাঁর জাঁবনের শেষ প্রয়াত থেকে হায়। এই প্রেরণায় প্রকাশ পায় তাঁর ভাত্ত-ভাবের গান রচনা হেমন, কাজী নজবগুলের রচিও হ গান তিনি নট বাগে রেকডা করেছিলেন তারই অনাকরণে—

> নাচে নাচে আন্নার গোপাল, আঁথি প্রেয়ে চলচল গলে বনমালা।।

গশোদার ননীচের। এই ননী-টোর থাদ্ভরা আখি দুটি করেও বিভার। আখিতে করেছে আলো জগৎ

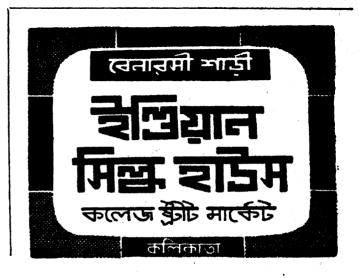
নিজের এই গানটিও নট রাগে নিজে গাইতেন। আর একটি একতালার বিলাম্বত থেয়াল রাগ করেন—জগতের ভূমি মা জননী ভবানী...।

সর্বন্ধণ জ্ঞানেন্দ্রপ্রাদের গোপাল-ভাই কিংবা বায়া বাগি থেকে শেষে জ্ঞানে জাট্রতা স্থিট হয়েছিল। কিন্তু তা ছাড়াও ত'ার অন্য প্রসংগ্র আছে জাবনের সেই অকাল-অন্তিম অধ্যায়ে।

কোন সংকট আগে বা পরে তাঁর জীবনে সেসময় আসে, সেকথা জানা মার্না। হয়ত সবই সমকালীন। কেউ তা সম্ভবত জানে না। শৃধ্যু শোনা হায় নানা ব্যক্তত। স্বই যুম্বের সেই নিশ্পেদীপ সময়ের কথা।

তিনি একবার দেশে হাকরে সময় এই দ্বান্তকে বললেন, গানে বান্ধনা ভ শেহ হুবাদ গাখিল। ভাবছি এবার কাঠের বাবসা ধ্রুই হু হুম্বে সাম্পাই করব।

তারপর একদিনের কথা। **হ**ম্ম **তথারে** চলেছে।



দ্বুপারবেলা। সংগীতজগতের সংগ্র পরিচিত দালন যাছিলেন ধর্মতিলার মোনে। ট্রাফ্রিক পালিশ একদিকের গাড়ি বন্ধ করে। দিরেছে। সেই দালনের একজন হঠাং হদ্মালন -পালে একটি মোটর খেয়ে রয়েছে। ভার ড্রাইভারের পেছনের সাটে বন্দে জার ড্রাইভারের পেছনের সাটে বন্দে

্তাকি, জননদা হো। গাড়িতে কোথায় খাজেন?'

'জারে ভাই আমি যে এখন মিলিটারিতে সাংস্থাই করি।' দ্বাজ কঠে জ্ঞানেন্দ্রপ্রসাদ জানালেন। আর ভদ্রাজাককে দেখে যেন তাঁব স্বগীতজ্ঞগান্তের পূর্বাস্মাতি জ্ঞানে উঠল। ব্লাজান করেছি, এক মাসে তার চেয়ে জানেক বেলি ট্রাকা পেরেছি।

ট্রাফিক প**্রলিশ হাতে দেখাতেই স**িকরে বৈরিয়ে গেল তাঁর গাড়ি।

মিলিটানিতে কাঠ, বাঁশ এসব সরক্ষাই করেছিলেন তিনি। যুন্ধের প্রায় শেষদিক তথ্ন। তবৈ গান ৰুগ্ধ ছ্য়নি। কলকাতায় জ্বকণা ক্লমে স্বান্ধাৰিক হয়ে এসেছে। কিন্তু স্কেশ্প মানাসক স্কুখতা কিংবা প্রয়াধিক জ্বকণা ক্লমে আসেনি তাঁর। এর্ট্ট পণ্ডে স্বার রাচিতে একটি বড় আসের হলঃ স্পোনে মুক্ললো পোলন তিনি। আর এমন গান শ্লিমে একোন বে বাঁচীতে সাজা পাও প্রায়ধার জ্বাস্কর করলোক তথ্নি কিব করলোল, আমার জ্বাস্কর করলোক তথ্নি কিব করলোল, আমার জ্বাস্ক করলোক তথ্নি কর করলোক

অথচ সেই সমরেও ক্ষেম থেন হরে থাকাতেন জানেলপ্রপ্রান । আসরেও আসেন বৈভিওতেও পান ছারদেরও শেখান। কিন্তু কি রক্ষ কো। একেবারে আগেকার সেই সদা স্বে ওরপার আজত্ত প্রশাস্ত হাসান্ত্র প্রান্তক জানেলপ্রসাদ আর নেই। অনামন্তক উপাসীন হরে ধাকের আসাক্ষার। কলকাতার আবার আসাক্ষার। কিন্তু ফিরতে পারেনির প্রকারকার পূর্ণ র্পে। জীবনে ধেন বিভিত্তা

এক কেনহালপদের বাড়িতে হুয়াও আহারে বসেছেন। হঠাং হাত গাড়িরে নিলেন। পালে কেউ জিজেন কয়লেন, গ্র হল, খাকেন না

न्द्रीहश्याका कौडा।'

ঁ প্ৰান্তঃ সা, না এই ত আলি খাছি। ভালই ভালা হয়েছে।

কীচা নেই?' অন্যমনক্ষ জ্ঞানেদ্যপ্রসাদ ক্ষমেন, 'ডা হবে ৮

কথনো আবার কাউকে এমন ধরণে কথা বলেন হেন আর বেলিনিন বাঁচবেন না। বাল্লু প্রকার রানজিক বিপার্থারে পরীর একট্ থারাপ হর্মেছিল বটে। কিন্তু জীবনের আধ্যান্তর্কার সম্ভূন কিছু নয়। সেক্ষা কার্ত্ত কলালার্ভ জালোনি। কথনো থাক্ডেন গাঁল বহারাধী হেমুক্তকুমানী কাঁটো। কলকভার

বা অন্যৱ আসেরে গানও গাইতেন।
রোডিওতেও মাসে মাসই গাইতে ছোতেন।
কামা থেকেই সাহায়াত করতেন বিস্ফুলুরে।
কাম্যানে। ছাইস্কোরাও থাকতেন সপরিবারে
কাম্যানে।

সেবার রেডিওতে গান গেরে দেশে ৮শে গেলেন। বেমন হোতন মাঝে মাঝেই।

ভার কিছুদিন পরে রাঁচী থেকে সেই সক্ষেত্রনের উদযোগীরা ক্ষকাভায় এলেন। সংখান করে ভারা এসেছেন জ্ঞানেন্দ্রপ্রসালের এক ছনিছ্ঠ শিষোর কাছে। গোস্বামী মধায়কে ভারার রাঁচীতে নিয়ে যেতে চান।

'সেবার বাঁচীতে যা গেয়ে এসেছে". সুসাই আবার এর গান শোনকার জনে। গাগল। হাতে আর সময় সেই। আজই একি নিয়ে যেতে এসেছি আমরা।

তা কি করে হবে? তিনি ত কলকাতাতেই নেই। বিকাশুৰে আছেন। তবিং সেখানে খবর দিয়ে আনতে সময় লগেবে কদিন।

ভাছৰে আপনি চলুন! আপনি ত গুরুর স্টাইলেই গান। সবাই চিলতে পারবে। আমানেরও মুখু রক্ষা হবে। একেবাবে খালি হাতে আমার মুখু দেখাতে পারব না মুচীতে। পরেব বাবে জ্ঞানবাশ্কে যে করে হোক নিয়ে যাবার ব্যক্তা হবে।

্ত্রগার ক্লানেক্ত্রসাদের শিষ্য সে রারে রাচী যাত্র করলেন।

ন্তার তিন দিন পরের কথা। রচিতি অনুষ্ঠান শেধ হয়েছে। ভিনি ট্রেন ফিনে অসক্ষেন কলগভায়।

खेन अस्त्र भौजिखर मृति कर्णस्य।

জ্ঞানে-লপ্রসাদের শিষা চা থেতে প্রান্থিক করে নিমেছেন। হঠাৎ দুল্টি পড়ল সাম্প্রেব্ল করিল কাগজের ওপর। বাংলা সংবাদপর এসেছে। আর ভার প্রথম পাতায় মুন্তিত সংবাদ—পর্লোকে বিখ্যাত গায়ক জ্ঞানেন্দ্র-প্রসাদ গোদবামী। মৃত্যুর দিনক্ষণ—২১ অকটোবর, ১৯৪৫। বাংলা সন ১৩৫২, ১২ কাতিকি, বৃহস্পতিবার, প্রভাষে।

নিৰ্বোধের মতন তিনি চেয়েই রইলেন কালো কালো আক্ষরগুলির দিকে। তারপন টেনের ঘল্টা বাজতে উঠে পড়ালন গাড়িতে।

কলকাতার সংগতি সমাজকও এমনি স্তান্তিত হয়ে গিয়েছিল। রেডিওতে শ্রে আর থবদের কাগজে দেখেও বিশ্বাস করতে মন চায়নি কার্র। বিভতু বিশ্বাস করতেই হল। চির্বিদায় নিয়েছেন জ্ঞান্তেপ্রসাদ। আর কোনদিন তার সামনে বসে সেই কর্তে গান গোনা বাবে না!...

অভাবিত শোকের প্রথম আঘাত দ্রুনে
চিত্রমিত হয়ে গেল। তখন কলকাভায় গোর
হানিট পরিচিতদের মনে বিষম বিচময়
ভাগল—মান্ত ৪৩ বছর বয়সে আমন স্বাতির
চবাল্যাবান পরীর বালগালে পড়ল কি করে,
এমন অকলাং। (হুলুরোগের তখন এমনপ্রাল্ডাব হয়নি এবং ভারত, সে ব্যাধি
হিল্লান)। মানসিক অস্কুণের করে শ্রীরের

যে এস্ফেওতা তার জনো জীবননাশ ত হতে পাতে না! মাুকার কারণ কি?

অনুস্কানর ফলে নানা ধ্রণের কথা শোনা যেতে লাগল। মতার প্রণিদন নাকি সুম্প ছিলেন সংখ্যার পরেও। তিনি নিজেই মাকি এই মুখ্ ক্রিক পরিণতির জনো নারী। কিন্তু কিছিলেন ধ্রেই তিনি নানা অধ্যান্তি ও চাপ্ত বুধা দিন কটোছিলেন।

ক্ষেত্রত শোনা যায় বিভিন্ন ব্তাহত।
ক্ষেত্র বলেন, সেই কঠের ব্যবসায়ে বেশ
ভাল রকম সঞ্জয় ভিনি করেছিলেন। কিন্তু
ভা বাাকে গছিতে না রেখে এক নিকট
ভাখিবির কছে রাখেন। সেই বাছি আর
ভা ফেরত দেশীন ভাকে। ভারই ফশে
সামাসক বৈকলোর শেবে...

ভাষার কেন্দ্র বলেন-না। সে বাছি ওই টাকা আত্মসং করেনি। পাছে জ্ঞানেক্সসদ লোপাল, লোপালা ভাবের আভিশয়ে সে সংশদ ঘ্টিয়ে দেন সেক্সন্যে সেই অর্থ গ্রাহকেরই আরে। নিকটের মন্মকে দিয়েছিলেন।

তাবার শোনা যায়—মা। তাঁর সে
টাকা কেউই নেননি। তবে বার বার তাঁকে
ভান্যোগ করা হত সাপ্তিত অর্থ দিরে
দেবার জন্মে। অভিমানী ভাবপ্রশ্ব জ্ঞানেন্দ্রপ্রসাদ তাই সমস্তই হস্তান্তর করে দেনমাও নাও। আমার চেয়েও টাকাই বড় হল
ত ! বেশ, আমায় জার জীবনের
প্রয়েজন কি!...

কে জানে কোন বা্তানত সঠিক। কারণ স্বট শোনা কথা। তার থেকে সত্য উত্থাবেন প্র কোথায় ?

ত্রে সকল বিবরণের একটি বিষয়ে কি ফিন্মত নেই ২ অতি অনুপ দিনে উপান্ধিত সারা সংগতিজ্ঞীবনের আয়ের চেয়েও অধিক সেই অর্থাই তাঁর চরম অন্থেরি ম্লাহয়েছিল!

অদ্যুক্তির কি পরিস্থাস। জানিকে আগে যিনি টাকায় আস্থা ছিলেন না এই উপান্তনিও করেছিলেন ঘটনাচক্তে লোতের বাদ নয়—তাই হুল তাঁর কাল ?

কে জানে। মৃত্যু ত চির রহসনেয়। অমৃত্রকঠ জনকেলপ্রসাদের মৃত্যুত হয়ত রহসাব্তই রইল।

এত বড় গায়ন শিলপী এমন **অকালে** প্রয়াণ কর্লোন এ-ই স্বত্যা! তার কারণ সম্পানে জার কি ফ্লা!

প্রবণ মননের শুখে কিছু চিক্ত রয়ে গেল। সেই বীর্য মাধুরে মেশানো সুরে কয়েবটি রাগের তিন মিনিটের রেশ বেহাগ মালকোশ গোড়সারংগ জয়জয়ংতী পরজ ভৈরবী সিক্ষু কাফি বাগেলী মালগ্র ইমন নট কৌশিকী কানাড়া কৌনপ্রী ছায়ানট...স্ববারি কানাড়া...

ম্ব্ধ গ্রোতার কানে কোন স্নেরের স্ব

আজি নিঝ্ম রাতে কে বাঁশি বাজারু,,,

-- निजीनकुवात ब्रायानामात्र



সাম্প্রতিক সিকিম

হিমালয়ের কোড়ে লালিও ভারতের আগ্রিত রাজ্য ক্ষাদ্র সিকিনে ঘড়ির কটি। পিছিয়ে দেওয়ার চেণ্টা করে ঢোগিয়াল নতন অশাদিত ও উত্তেজনার সুণিট সংগ্রহা।

সিক্ষার প্রথম গণডাশ্রিক নির্বাচনের দারা নির্বাচিত আইনসভা যথন সেই দেশকে তার সামাত্তাশ্রিক শাসনের শ্পেল থেকে মার করে গোন্বার গণতাশ্রিক শাসনের প্রথম থেকে মার করে গোন্বার গণতাশ্রিক শাসনের পথে নিরে যেতে উদ্যোগী হয়েছে ঠিক সেই সময়ে চোগিয়াল ও তার সমর্থাকরা এই সাথাক বিবভানের পথরোধ করে দাড়িয়েছেন। ফলে গাত বছর এপ্রিল মাসে যে গণবিক্ষোভের সম্মাণীন হয়ে সিকিন্সের রাজাকে নাত্তশীকরে করতে হয়েছেল তার অন্যর্প অথবা তার চারে তারতর গণবিক্ষাভে সেই পার্বাতা রাজা উপ্রেল হয়ে উঠেছে। সর্বাণ্য সংবাদে প্রকাশ য়ে, চোগিয়াল যথন ভারত সরকারের সঙ্গো কথাবাতা বলার জন্য রাজা ছেড়ে নিরিতে পাড়ি দিয়েছেন তথন রাজার শৈরতশ্বের বিরুদ্ধে বিক্ষোভ জানাবার জন্য রাজার বিভিন্ন পথান থেকে হাজার হাজার মান্য এসে গাড়েকে জড় হচ্ছেন। রাজার-প্রজার এই বিরোধ ভারত সরকারের প্রেক্ষ তফাতে দাড়িয়ে দেখা সংস্কারণ রাহণ করেণ এই বিরোধ ভারত সরকারের প্রক্ষেত্র কিন্দুছের জারাত্র আল্লিত রাজারণ গ্রহণ করেণ্ড এবং নির্ক্ষের প্রত্যান্ধ ও সে রাজার ভারত অল্লিত রাজারণ গ্রহণ করেণ্ড এবং করিবের প্রত্যান্ধ দার্থিত জনপ্রতিনিধিরা স্বানিচিত ভারত সরকারের যে, সিকিম্ম জারতের সংপ্রাণ ঘনিষ্ঠতর সম্প্রতা প্রান্ধক জরতে উৎসক্র।

তুলনা করলে বলা যায়, সিকিম যেন দপ্পে কাশ্মীরের প্রতিবিদ্ধ। কাশ্মীরের সংগ্রাভার আছিপ্রার্থ সংগ্রাভার সংপর্ক আদিতে নির্দিণ্ট হয়েছিল সেখানকার মহারাজার আছিপ্রার্থ অনুযায়ী। সিকিনের সংগ্রাভারের সম্পর্ক নির্দিণ্ট হয়েছে সেখানকার জনপদের ইছা অনুযায়ী। এই জনগণের অধিকংশ নেপালী সম্প্রদায়ত্ত্ব। আর সিকিমে সংখ্যান লঘ্ বলতে যৌদের বোঝা যায় সেই লেপচা-ভূটিয়া সম্প্রদায়ের মধ্যে পড়েন চোলিয়াল পরিবারও। কাশ্মীরের সংগ্রাভারতের সম্পর্ক কাক্রমে ঘানাস্ট্রত হয়েছে পালামেটের ভিপ্রায় অনুযায়ী। আর সিকিমের সংগ্রাভারতের অর্থনৈতিক, রাজনৈতিক ও অন্যান্য যোগাযোগ দৃত্তর করার জন্য উদ্যোগী হয়েছেন সেথানকার নির্যাচিত আইনসভা।

আসলে, গত এপ্রিল মাসে চোগিয়ালের যে শিক্ষা হয়েছিল সেটা যদি ডিনি জ ত্রি সম্প্রিরা এর মধ্যে ভূপে না যেতেন তাংলে এই বিভাট হত না। চেঞিয়াল লেপালী ও লেপানাভটিয়াটের মধ্যে সাম্প্রদায়িক বিরোধ **জাইয়ে রেখে জনগণের** গণতাশ্বিক আশা-আকাংক্ষাকে ঠেকাবার যে চেণ্টা করে আসম্ভিলেন তার বিশ্বশ্বে সেসমাহে সিক্তিয়ের জনসাধারণ প্রবল প্রতিবাদ করেছিলেন। **চো**লিয়াল আইনসভার ্ডিত্য সম্প্রদায়ের সমসংখ্যক প্রতিনিধি রেখে নিজের অধিকার স্থানিখিচত করতে ফেলেছিলেন। অপ্রথকে, সিকিম কংগ্রেসের নেতৃত্বে সিকিমী জনগণ চেয়েছিলেন, সকলেব ভোট তুলামালা, এই ভিভিন্তে নির্বাচন হোক। বিরত চোগিয়াল সেসময়ে সিকিমের আইন ও শৃংখলার ভার ভারত সরকারের **S**KQ তলে ভারত সরকারের মধ্যেথতায় তিনি সিকিয় কংগ্রেসের সংক্র একটা সম্বোভায় এসেছিলেন। মার্থাপছা এক ভোটের ভিত্তিতে তিনি সিকিয়ে নির্বাচন করতে রাজি হলেন। সেই নির্বাচন গত এপ্রিল মাসে হয়ে বাওয়ার প্র দেখা গেল ভাইনসভার ৩২টি আসনের মধ্যে ৩১টিই পেয়েছেন সিকিম কংগ্রেসের প্রাথ**ীরা। শ্রমাণ** হল সিকিম কংগ্রেসের পিছনে শধ্যে সংখ্যাগারে নেপালী সম্প্রদায়েরই সম্প্রনি নেই. সংখালঘা লেপচা-ভূতিয়া সম্প্রদায়েরও ব্যাপক সমর্থন রয়েছে। এই সিকিয় কংগ্রেসের নেতা কাজী লেনভূপ দোরজি নিজেই ভূটিয়া সম্প্রদায়ের মান্ব। ৭২ বছর ব্যাক্ত এই নেতা পরাধীন ভারতের দেশীয় রাজাগর্নির প্রজা আন্দোলনের সংগ্র খনিস্টভাবে याख हिल्लाम धार धे जाल्यालस्मत काताताल्य इरहाहित्समा

এই নির্বাচিত আইনস্ভার গৃহেতি একটি প্রত্যাব অনুসারে চোগিয়াল ভারত সরকারকে তাঁর দেশের জন্য একটি সংবিধান প্রশ্নুত করে দিতে অন্যরেধ করেছিলেন। সেই অন্যোধ অনুষায়ীই ভারত স্বকারের আইন বিভাগের একজন প্রাক্তন সেজেটারি সিকিমের জনা একটি সংবিধান তৈরি করেছিলেন। এই সংবিধানের আবা সিকিমের জন্য একটি ত্রিপক্ষীয় শাসনবাক্ষার সংপারিশ করা ইরোছিল। এই তিন ক্লে হত্তেন onara i

চোগিয়াল, ভারত সরকার ও নির্বাচিত আইন সভা। এ সংবিধানের মূল বারাগানুলি হল ঃ— সিক্সে চোগিয়ালের স্থান হবে সকলের উপরে এবং এতদিন ঘাবং তিনি যে সম্মান, মর্যাদা ও স্বাহাগ-স্ববিধা ভোগ করে আস্থিলেন সেসবই অধাহত

২৫ বছর বা তার চেয়ে বেশি ব্যসের প্রতিটি অধিবনোর এক ভোটের চিত্তিতে সিকিমের আইনসভার সদস্যরা নিবাচিত ছবে। এই নিবাচন পরিচালনা করার জন্য ভারত সরকার কতৃকি মনোনীত কোন ব্যভিকে চোগিয়ল নিবাচন কমিশনার হিসাবে নিবাভ করবেন।

আইনসভায় গ্ৰুটিড কোন বিশ অন্যোদন না করে ঢোগিয়াল আইনসভার প্রনার বেচনার জনা ফেরং পাঠাতে পারেন। তবে দ্বিতীয়বার বিধানসভায় 17 TO সেই বিল **ङ**्ध 753727 দ্যোগয়াল কে অন্যোদন করতেই হবে। ইচ্ছা করলে চোগিয়াল কোন বিক ভারত সরকারের বিবেচনার জন্য পাঠাতে পারেন। এব্যাপারে ভারত সরকারের অভিমতই চ্ডাত্ত বলে গ্লা হাবে।

ভাষক সরকার কর্তৃক মনোনাতি ও চোগিয়ালের দ্বারা নিযুক্ত একজন প্রধান প্রশাসক সিকিম প্রশাসনের প্রধান হবেন। এই প্রধান প্রশাসক আইনসভাব ২পাকারের

with a fail country

দায়িত্ব পাজন করবেন। এই প্রধান প্রশাস্কের পরামশ অনুযায়ী চোগিয়াল একজন মুখ্যমূলী ও অনাান্য মল্টাদের নিয়োগ করবেন। মাল্টসভার নাম হবে কার্যানিবাহক পরিষদ। কার্যানিবাহক পরিষদকে আইন-সভায় জ্বাবদিতি করতে হবে।

এই সংবিধানের থসড়া যে চোণিয়ালের
মনঃশৃত হয় নি সে কথা জানবার জন্
তিনি সমপ্রতি দিল্লীতে গিয়েছিলেন। কিন্তু
দিল্লি তাকে খোলাখালিভাবে জানিয়ে দের
যে, এই সংবিধানের কোন বড় রকমের
পরিবর্তন করা যাবে না। দিল্লি থেকে ফিরে
যাওয়ার আগে তিনি নাকি ভারত সরকারকে
এই ধারণাই দিয়ে যান যে, আইনসভায় এই
সংবিধান অনুযোদনের পথে বাধা দেবেন না।

এই সংবিধান অন্যােদন করার জনাই ২০ জ্বান সিকিম আইনসভার অধিবেশন আহ্বান করা হয়েছিল। ঢৌগয়াল এই অধিবেশনে বকুতা করবেন বলেও কথ ছিল। ১৮ জান ভারিখে সিকিম কংগ্রেস দল সংবিধান আনুমোদন করে প্রস্তাব গ্রহণ করল। অধিবেশনের জনা নিদিন্ট দিনে দেখা গেল রাজপ্রসাদের রক্ষীরা সত চোগিয়ালের সমথ'⊄রা আইনসভা খিবে ফেলেছেন এবং সদসাদের ভিতরে য়েতে দিক্তেন না। হারা এভাবে আইন-সভার অধিবেশন বানচাল করে দেওয়ার 5েটা করেন তাঁদের মধ্যে পিয়ন থেকে আবদ্ভ করে চীফ সেকেটারী পর্যানত স্বল স্ভারের রাজকর্মচারী ও তাদের পরি-বারবর্গ ছিলেন বলে প্রকাশ। এদিকে আইনসভার সদসারা ও তাঁদের সমর্থকরাও ক্রড হড়ে থাকেন। একটা বিশ্রী রক্ষার গোলযোগের আশংকা দেখা দেওয়ায় কেন্দীয রিজার্ড পর্লিশকে ১৮তক্ষেপ করতে হয়। শেষ পর্যন্ত বেমি রাগ্রিতে মিলিত क्ष्य আইনসভার সদসারা নতুন সংবিধান অন্য-মোদন করেন এবং ভারতের সংগ্রে সিকিমের ঘনিষ্ঠতর যোগ স্থাপনের জনা প্রস্তাব গ্রহণ করেন। আইনসভার এই প্রগ্ভাবে ভারতের পরিকলপনা কলিখন, জাতীয় উল্লয়ন পরিষদ, বাাংক, জীবন-বীমা কপোরেশন প্রভৃতি আথিকি সংস্থা ইত্যাদির কাজের পরিধিব মধ্যে সিকিমকেও যুক্ত কথতে বলা হয়েছে,

ভারতে সিকিমীদের জন্য ক্রমানংক্রানের দাবি জানান ইয়েছে এবং লোকস্তার সিকিমী জনগণের প্রতিনিধিকের ব্যবস্থা রাখার কথাও বলা হয়েছে।

চোগিয়ালের এই আক্ষিমক মাতপারবতানের সংবাদে সিকিমে যুখন রাজভাতের বিরুদ্ধে বিক্ষোভ প্রজীভূত হ্রে
উঠছে সে সময়ে প্রোহিত্তেরের সংগ্রু
পর্মশা করে শুভ দিন বৈছে চোগিয়াল
রাষ্ট্রমানী গাাংটক ছেড়ে দিল্লিতে গিয়ে
উপান্তিত হয়েছেন। উদ্দেশা, প্রজাদের সংগ্রু
এই বিরোধে ভারত সরকার তাঁকে কন্তটা
সাহায়া কগতে পারবেন, তার একটা
আন্দাজ নেওয়া।

ইতিমধ্যে ব্যাপারটা গিয়ে কোন কোন মহল ভারত স্রকারকৈ নিদ্দা**মদ্দ করতে** আরুভ করে দিয়েছেন। ব্রেনের 'অব-জাড'ার' পাঁধুকায় **লেখা হয়েছে**. সিক্মিকে গ্রাস করতে চাইছে এবং **সেখান**-কার সঠিক সংবাদ প্রকাশিত হতে দি**ল্ভে না।** সরকার এই ভিলিতীন . 2°C আভযোগের প্রতিবাদ করেছেন এবং ম-পিটমেল একদল নিব'চিত প্রতিনিধিদের কাজে বাধা দেওয়ার TEST করছে বলেই যে এই বিয়োধ পাকিয়ে উঠছে সে কথা সপত্ট কলে ানিয়ে দিয়েছে।

:k

গত ১৮ মে পোথরামে ভারতের পাংমাণ্যিক বিকেন্ত্রেণের প্র পাকিস্তান ভারতের বিরুদেধ তামাম দুনিয়ায় নালিশ জানিয়ে ভারতিকে অসামীর কাঠগড়ায় দাঁড় করবোর ও নিজেকে একান্ত বিপল্ল নিরীহ মেষ শাবকরপে পুতিপল ক্লার যে চেক্টা করেছিল তাতে বিশেষ 🌅 কাজ হয় নি। পাকিস্তানের সায়েতে তেওঁ এ আপারে তার সংগে গলা মেলতে ভুজি হয় <mark>নি, উপর•কু</mark> ১৭ জান তারিখে লগমরে মর্**ড্রাম অওল** থেকে ভারতের একল গালু শক্তিশালী তাপ-পারমাণবিক (হাইডেুংজেন) বেলা বা**য়ায়ন্ডলে** বিপেফারিত করে পাকিস্তানেন্ন **নালিশের ধার** কমিয়ে দিয়েছে। যে ইঃ।পের সঙের পাকি-১তান একদা সামান্তক মৈতা বনধনে আবেশ্ধ হওয়ার চেটা কর্নেছিল সে দেশের শাহ চাছাছোলা ভাষায় বলে দিয়েছেন, ভারত ঘাদ পাবিস্তানকৈ শায়েস্তা করতে চায় তাহলে তার সে জন্য পার্মাণবিক গোহার প্রয়োজন হবে কেন? ভুটোর প্রতিনিধিরা নেশে দেশে গিয়ে ভারতীয় পারমান্বিক বোমার বিপদ থোক মাথা বাঁচারার জন্য হো সামরিক ছর্ভায়ার আশ্রয় চেয়েছিলেন, সেই আশ্রয়ঙ তাকে দিতে কেই এখন পর্যন্ত রাজি হয় নি। সেন্টোতে পাকিস্তানের তরফ থেকে এই প্রস্থ্য তলবার চেন্টাই বার্থ হয়ে গেছে। পারমাণ্রিক বিশেফারণের অজ্হাতে বিদেশী সাহাব্যদাতারা ভারতের জন্য বৈদেশিক সাহাত্য ছাটাই করে দেবে, পাকিস্ভানের এই আখ্যাৰ সাথাক হয় নি। সংৰক্তে আরব



শ্বুল, কলেজ এবং ইঞ্জিনীয়াবিং

কাৰ্য ও অফিলের জন্য শ্টেশনারী, কাগজ, সার্ডে, ডুইং,
ইঞ্জিনীয়ারিং ও ধাবতীয়
উৎকৃষ্ট ছাপার কাজের স্বাল্ড
প্রতিষ্ঠান।

কুইক ষ্টেশনারী ষ্টোর্স

৬৩ই, রাধাবাজার স্থীট, কলিকাতা—১

নৰ—হ্-৮৫৮৮, ৩৭-৪৬৬৪; প্লায়ঃআহারনিন—হাতভা পোল্ট বল্ল-০৮, হাতভা

আমিন্তদের উপ-রাজ্ঞপতি সুম্প্রতি ভারত সঞ্চর একো ভারতের সংশা বৈধায়ক সহ-বোগিতার চুক্তি করে গোছেন, ইসলামাবদের গক্ষে এটাও একটা ক্টেনিভিক পরালয়।

সম্প্রতি ক্য়ালালামপুরে ইস্লামি রাঞ্-গ্রান্তর পরবাহট্যান্ত্রীদের সন্দেশলনে পরিক-হতানের এই প্রাজ্যের প্রানি গ্রভীরতর তল। এই সম্মেলনে পাকিস্তানী প্রতিনিধি দলের নেতা সে দেশের পররাণী ও প্রতিক্ষা দেশ্বরের রাজ্যানতী আর্মান্তভ আর্রমেদ ভারতের পার্মাণযিক বিক্ষোরণকে ভার প্রতিবেশী ইসলামি রাণ্টগর্নালর পঞ্চে বিপদ হিসাবে গুণা করার জন্য সদেমলনে যে আবেদন জানিয়েছিলেন সেই আবেননে সংস্থানের আধকাংশ প্রতিনিধি কর্ণপাই কবেন নি। ব্রুদধ্ দ্বার কক্ষে পার্কিস্তানী প্রতিমিধি যে আজগুরি অভিযোগ এনে ভারতের বিরুদে আরব বাধ্বগালিকে ও দর্শনায়ান কঞ্চাজনাদার খেপিয়ে দেওয়ার চেণ্টা করেছিলেন সে কথাতে গোপন রাখা যায় নিং

এই সন্দোলনে পাকিস্তানের ভাপচেণ্টাব বিস্নুশ্যে ধারা ব্যে দ্বিভিন্নেছিলেন তথাদের জন্যতম জলেন বাংলাদেশের প্রতিনিধি দলের দেতা ৬ঃ কালাল তোসেন। তিনি সন্দোলনের বিশেষভারে স্থাব করিছো দেন হে, ভারতের এই পারমান বিক বিস্ফোরনের উপেন্স হে মানিতপ্রা সে কথা ভারত বার বার ও স্পটে করে ভানিয়ে দিয়েছে। তিনি জারও বালন যে, উপাক্ষাদেশে যথন শান্তিত ওয় মানিক্সাদেশের প্রবর্তা দেখা যান্তে তথন প্রক্রিকানের পক্ষ ফেকে এই সংক্রের কথা বলা তাতান্ত স্থাত্কারক।

আফ্রানিস্টান, মালরেশিয়া, বেবনের প্রভৃতি দেশত পাবিস্টানের ভাষ্ট বিবেধী বৃৎসায় যোগ গিতে বাজি হয় নি। ত্রনাপানে যান পাবিস্থানের স্বর্গে সাম দিয়েছিল ইনির সাংগ জিল স্টোর জাবর, লিবিসা, জ্ঞান, গোনিবলা প্রভৃতি।

প্রতিনিধর বাছ থেকে ভাষিকাংশ উল্লেখ্য সাক্ষেত্ৰ প্ৰক্ৰিকভান শেষ প্ৰয়াৰভ ভারতীয় পান্মণ্ডিক বিস্ফোলনে ইভারায়েলেব সহযোগিতার এএটি গাঁলাম্রি কাহিনী প্রচার করে আলার মাধ করের চেন্টা করে। এই পালে।প্রিক বিচেফারণে ভারত ইজরায়েলের সহাযাগিতা লাভ করেছে। এবমা বলার স্কেল সালের আজিত আহাসেদ মুগ্রিও যোগ করেন যে, এন পর ইঞ্চরারোপ এবং দক্ষিণ আফি নাত্র পার্মাণ্যিক থোমা বানাতে উৎস্মিত্ত হবে। ১পট্ডই পর্নত-দতারী প্রতিনিধির উপেদশা ছিল, আরব দেশগুলির সংগ্রেও কুষ্ণাব্য আঞ্চিন্নাব দেশপ্রেলির স্থেগ ভার ভর বন্ধ্যারের ভিতব **घंगांग्रेस धरान्।** विस्तृ क्षरे कोशालक काळ হয় নি। শেষ প্যতি পাকিস্তানকে সাধারণ-ভাবে পার্মান্ধিক অস্মধ্রী দেশগ্রিপ বিপদের ছারা সমপকে একটি প্রস্তাবেই अञ्चल शान्छ হয়।

১১৭০ সংগ্রুব তপ্রিল মাস থেকে ইসলামি রাষ্ট্রগালির পররাজ্যুমর্চাপেন সংখ্যাসন হয়ে আসছে। এবার নিয়ে পাঁচ-বার ঐ পরবাত্যুমর্ট্রা সংখ্যাসনে মিলিত

হলেন। ক্লালালামপানের এই অধিবেশনো এবার ৩৭টি দেশের প্রতিন্ধির যেশা निरहे छ्टलन । अरे मृत्याननदक नाथा देननाम রাষ্ট্রগালির পারদপরিক সম্পরের মধ্যে সীয়াবদ্ধ না বেখে বিশেবর সকল দেশের মুসলিল অধিৰাসীদের রাজনৈতিক স্থাস্যা আলোচনার মঞ্জে পরিণত করার সন্য এবার যে চেন্টা হয়েছিল ভাতে অন্যানাদের সংগো পাকিস্তান্ত হোগ দিয়েছিক। সমেলনের সেকোটারি-জেনাবেল ভোতারি **লিবি**হার প্রতিনিধি প্রভৃতি কয়েকজন ৫ ব্যাপারে প্রধাম উদ্যোগী ছিলেন। তাঁরা এই সন্মেন্ডানে ভাষাসল্মান দেশপুলির মুস্লিম সংখ্যা-লঘুদের প্রতিনিধি পাঠাবার জন্ম আয়াকণ জানাতে উৎস্ক ছিলেন। তানের আছত প্রহলার ছিল্ফিলিফিন দ্বীপপ্রপ্ন আইলায়েত প্রভাতে দেশের মাসলিম আধবাসীনের সাহায়া করার জনা সংখ্যানের হৈ বিশেষ তহাবিল রুয়েছে ভার অবর্থ সংশিক্ষাট্ট দেশের সর্কা^সল্'লির মাব্যাং না সরাস্থিই ঐসব মাস্লম্ন আধ্বাদ্রীকে পাঠান হোক। কিন্তু মালগ্রেশিয়া ইনেনা-নেশিয়া প্রভৃতি দেশের প্রতিনিধির। এই প্রস্তাবের বিরোধিতা করেন। ভারত *বালেন* যে, এটো করার অবর্ধ হাবে অন্য দেখেব সাবভাষ অধিকারে ছফ্ডকেশ **6**0 1 মালবেশিয়ার প্রধানমধ্যী তন আবদার র**জ**াক বিশেষ করে এই বলে ছু-শিয়ার করে দেন যে, অল্পলয়ান রাশ্বগালির স্থেগ মাুসলিন গাড়গালির সমপক ক্ষার হয় এখন কিছে করা উচিত হবে না।

পাকিস্তান ও বাংলাদেশ

গত ফেব্য়ারী মাসে লাক্যেরে পাতি-সভাল ও ব ংলাদেশের মধ্যে সরকারি সভগে প্রথম যে গোযোগ হয়েছিল সেটা হয়েছিত ইসলামি রাজ্গুলির শীর্ষ সম্মেলনের পরিপ্রেক্সিভে। তার হার মাসে পরে লকায় প্রথমনকরী শেষ ম্ভিব্র রহয়ানের সংগ্র প্রথমনকরী ভূটোর যে থিবতীয় সাক্ষাংকর হাইছে সেটা ঘটছে ব্যালালামপারে ইসলানি বাজ্গুলির সম্মেলনে অবাবহিত পরে, ঘটনার এই যোগাযোগ স্মুহত সুমুক্ত্রি সম্পর্কের ফাউল ধরাবার উল্লেখ্য গাটিন প্রকাষে তার সংক্ষা বাংলাদে এ সংগ্রাত ইজ্যামি সংক্রতির পরিপ্রেক্তিট্র পুটিন্তিত কংকে চাইবে, এটা বেশে মন্ত্রী মুহ ঘটনা ন্যা।

বিশ্ত পাৰিছটোন যো প্ৰেটাৰ কৰ ক না रक्त क्षावर वारवास्त्रन भाविकास्त्रक करना দ্বাভাষিক সুমুদ্ধ প্ৰাপনে উৎস্থ হালেও সদা ভাতীকের স্মাতিয়ে এভ ভাত,ভাঁড ভেলে হায় নাসেক্ল এবার ক্রাটাল বাংলাদেশ সফবের প্রাঞ্জের মনে করিয়া িয়েছে বাংলাদেশের সরকারী হৈছিত ত টোলভিস্ন এবং সেখানবার সংক্ষান্তি কল কত্তি পরিচালিত সংবাদপত্তালি। বাংমানে দেশে ইয়াহিয়ার সৈন্যাহিনীর করি ভাত্যাদার যথন শরের তাল সৈই ১১৭১ भारतार्थ २० भार**ь**िह कारतस्थात कारक हुन्। ফেভাবে ঢাকা প্তডে পাড়ি দিয়েভিপেন, করাচী বিমান বন্দরে নেছো কিন্তাবে ডিনি দ্বসিত্র বিশেষ্ট্র হেনলে বলেছিলেন <mark>প্রা</mark>ক্ত পাকিস্তান কেপ্ড প্রেল।' সে সেব কথাও মানে করিয়ে দেভয়া হয়েছে। ভটোর সংহণে প্রাক্তের বংশানেশের প্রচার মাধ্যেনটুলি থেকে একাবে পাহান কথা মনে করিয়ে দেওয়ায় পাধিকভানের পঞ্চ থেকে কিছেটা উদ্যা প্রবাদ করা হয়েছিল। এছন্ত ইন্সিট দেওয়া হয়েছিল যে পালিস্তুন এই সফলের প্রস্তাৰ বাজিল করে দিতে পারে। যাই ছেকে শৈষ পর্যানত ভাটে দাক্ষা একেছেল এবং व्याप्त काम्युविश्वक प्रमाणना मान्यस कार्याहरमा

ভূটোর বাংখাদেশ সভ্বেন সৈম্ম পানিকদ্রান হয়ন্ত মজুন করে আবার বংলাদেশকে
ভারতের কার্য্যান্যক বিস্ফোর্ডরের মুল্ল স্পশকে বিবাহার্যার চেইটা কর্মণে পার্ন্থে স্থান্ত হারত করে স্থান্ত জুল বেল্যার্থ্য হারত করে স্থান্ত জুল বেল্যার্থ্য হারত করে স্থান্ত করে বাংলা পাকস্তান বংলাদেশের স্থান পার্যাপর্বক গ্রেম্বার ক্ষেত্রে সংখ্যার্থার প্রাক্তান নিজ্ঞে পার্বার ব্যাহ্যার কর্তী বাহালী সর্মান্ত পার্বার ব্যাহ্যার কর্তী বাহালী সর্মান্ত স্থাবা ব্যাহ্যার কর্তী বাহালী সর্মান্ত স্থাবা ব্যাহ্যার কর্তী বাহালী সর্মান্ত স্থাবা বিজ্ঞানীর মধ্যা আছেন প্রক্রান্ত প্রতিস্ব বিজ্ঞানীর মধ্যা আছেন প্রক্রান্ত ডং আন্থান বংলান সংস্থান্ত প্রাক্তন প্রধান তার আছিন প্রধান ডং আন্থান হেন্দেন এবং ক্রান্তীর

স্নীলক্মার ঘোষের ক্রাইম উপন্যাস ব্ল্যাক আমবাসাডর ২০ ০০ উত্তরাধিকারিণী

ব্যাক ডায়ম ড এক্সপ্রেস

4.00

<mark>প্রাইমা পার্বলকেশন্দ া। ৮৯ মহাত্ম গান্ধী</mark> রোড, কলি-৭

পার্মাণীবন্ধ চলির প্রান্তন প্রধান মহম্মাদ ইয়ুসুফ। পাকিছ্ডান বাংলাদেশের সংখ্য কেন বৰুল সহযোগিতার চুক্তি বরে এইস্ব বিজ্ঞানীকৈ ফিরিয়ে নিয়ে যাওয়ার চেণ্টা

পারমার্থাবক বিজ্ঞান ও প্রয়াক্তিবিদারে ক্ষেত্রে ভারত ও বাংলানেশের মধ্যে সত-হোগিতার জন্য গত এপ্রিল মাসে একটি ছব্র হয়েছে। এই ছব্র অনুষ্যা ভাবত বাংলাদেশের বাপপারে একটি এক মেগা-

> ग्रहिनीरमञ् রামার জন্য খা°িট খবর!

গৃহিণারা সবসময় রালায় আগমার্ক গুড়ে মশলাই বাবহার করুন কারণ আগমার্কের कांबर ১০০% খা'টি হয়

कांके गुरका भगना न्यूबर जानवार्क युक्तरे नय अब শেষকে ববেছে ভারতের टाए बनना सवनायी क्कान्य पर (क्कारी) शह লিংৰ চাৰ প্ৰেন্থের অভিনতা ভাটা গ'ড়েছা মশলা অভি ভাষানিক কারখানায় প্রস্তুত হয় এবং গড়ৰ্নমেণ্ট काम्बदब्रोजीटक देवळानिक প্ৰয়ায় পরীক্ষিত হয়ে বাজাং-ৰিক্তরের জন্য প্রেরিত হয়। करण छाड़ी गर्दछा समला সৰ সময় খাটি ও উন্নত मानम्ड ।

গ্যু ডে মশলা রান্নায় ১০০% निवाशक

লস্কাথে গুড়াগ্নিত বিজ্ঞ**িত** ।

अग्राटोत भारमार्गायक गाउनम् स्टीम निर्मारण সাহায়া করবে।

> আন্তর্জাতিক ক্ষেত্রে পালমাণ্ডিক পাছর বিদ্তার স্থপকে সাম্প্রতিক অন্যান্য করেকটি খবর তলঃ---

- (5) बार्डेस्न क्ष्यानमन्त्री स्ट्रेननन स्थायना করেছেন যে, কয়েক সংতাহ আগে প্রাক্রোরকার নেভাজা মর ভূমির মাটির তলায় বুটেন একটি প্রক্রিমান্তক পারমাণ্যিক বিচেফারণ করেছে। এই সংবাদে বটিশ য়তভেগ শুমিক দলেব মধো ভীর प्रिथा निरहारक।
- (২) ইরাণের শাহ ফ্রান্সে সফর করতে গ্রেছন। দেখানে তিনি একটি পারমাণবিক গবেষণাকেন্দ্র ও একটি পারমাণবিক Ten ननरकम्प्र सम्बद्ध शास्त्रम्। हेवान शांकिति পারমাণবিক বিদাং কেন্দ সম্প্রেক্ত তিনি ফরাসী কর্তপক্ষের সংখ্য ইথা বলকেন।
- এই সফরে যাওয়ার প্রাক্কালে ইরাণের শাহ সাংবাদিকদের প্রশেনর উত্তরে বলেন যে, ইনাণ পার্মাণবিক অস্ট্র সংগ্রহের চেট্টা করবে না। তবে তমি म ^को हरू আশেকা আছে ভারতের অনুসরণ করে ছোটখাট অনেক দেশই পারমাণবিক প্রাক্তম সংগ্রহের চেন্ট্র করতে পারে। মার্কিণ ব্রুরাণ্ট্র মিশর ও ইজরায়েলকে পার্মাণবিক প্রথাভাবদার ভাগ দেওয়ার যে প্রতিষ্ণৃতি দিয়েছে তারও পরিলাম জনা দিকে যেতে। পারে। এপন ক্ষেত্রে ইর্ণ পার্মাণবিক অস্ত্র সংগ্রহ সমপ্রে তার নাতি পানবিবেচনা করতে পারে।
- (৩) ক্টনৈতিক স্তের সংবাদে প্রকাশ যে, মদেকাতে র্শ-মার্কিণ শীর্ষ ' আলো-রনার সময় ভগতে পার্মাণালক বি**স্ফো**রণ ্জান্ত প্রীক্ষার উপার ভাংলিক িবহা**জন প্রয়োগের বিষয়ে** নথকেন্ত্র চেম্টা হতে **পারে**।

রাষ্ট্রসংগ্রহ সেক্টের্টার জেনারেল ভঃ কুট ভাশভহাইন বলেছেন সম্প্রতি অনেক দেশ যেসার পারমাণবিক পরীক্ষা করেছে সেগালি 'গারতের ব্যাপার'। তিনি বলোছন এই সব বিখেলারণের মন্যাজাতির টিকে থাকার স্বাথে এই সং পরীক্ষার উপর আন্তর্জাতিক নিষেধার্জা আরোপের জনা আমাদের নতুন করে চেন্টা করতে হবে।

ভারতঃ খাদ্য

এবারকার খরিফ থকে খাদ্য উৎপাদন বাড়াবার জরুরি পরিকল্পনার তত্ত্বাবধান করার জনা প্রধানমূল্যী শ্রীমতী ইন্দির গাৃশ্বীর নেত্রীয়ে কেন্দ্রীয় সরকারের একটি কমিটি গঠিত হয়েছে। ঐ কমিটির অন্য সদস্যরা হলেন খাদ্যমন্ত্রী ফকর্নিদ্দ আসি व्याहरमन मेर्डिस श्रीडन रक्त्यीय बाना-মন্ত্ৰী জগজীবন বাম ও লি দাৱলণাম এবং বোগাবোগমনা ক্রমানন্দ রেছি। খানেক আলে কংগ্ৰেস ওয়াকিং কমিটিতে গততি পুদতাৰ অনুৰায়ী এই করের কমিটি গঠিত হয়েছে।

দেশের অথানৈতিক সংকট নিরসনের क्रमा थामा छेश्भामन वृष्धित कार्यन्तिहे উপত বিশেষ গরেছ আরোপ করার উদেদখ্যে কংগ্রেস ওরাকিং কমিটি কেলে প্রধানমক্ষীর সভাপতিছে এবং রাজা-গ্রাজতে মুখ্যমন্ত্রীদের সভাপতিতে এই ধরণের জরুরি খাদ্যোৎপাদন কমিটি गर्रात्व म्रानाविभ करविष्यानः।

থাদ্যোৎপাদন বাদিধর পথে এথন প্রথম করেকটি অসুবিধা হল সার বিদ্যুৎ ও ভিজেলের অভাব। এই ভারস্থায় যেটাকু রালায়নিক সার পাথবা য'বে তার যথা-সম্ভব সুন্ব্যবহার হাতে হয় রাসায়নিক সারের অভাব যাতে জৈব সারের পারা যথা-সাধা পারণ করা হায়, সেটের নলকাপের জন্য সরবরাহের উপর অপ্রাধিকার দেওয়া হয় এসব দিকে লক্ষ্য রাথাই উচ্চ পর্যাক্ষের এই স্ব কমিটির

থাদ্য খংপাদ্ন বাদিধর জান্য বেংটে ও আধাবে'টে জাতের প্রচর ফলন্শাল বাজের ব্যাপক চাষের উপর জোর দিচ্ছেন ভারত্রীয় কুষি গ্রেষ্ণা পরিষ্টের ডিরেকট্র জেনারেল ভঃ এম এস স্বামীনাথন। তিনি সম্প্রতি একাধিকবার, বলেছেন প্রচুর ফলনশাল জাতের আধ্নিক বাজের চাষের জন্য সারের ব্যবহার অপরিভার্য অথবা এই সব বাছের রোগ পোকার ম্বারা আরুণত হওয়ার গ্ৰাভাবিক প্ৰবণ্ডা আছে এগালি ভল ধারণা। বিশেষ করে সম্প্রতি কেরলের 'গে লাঘর' বলে পদি্ত ফুটুনাদ এলা-O F े ^स्नेश *ামাপোকার আওমণে আই-আনু ১৭৬ জাতের বিবাট ক্ষতি হয়ে যাওয়ায় এইসব নতুন ৰীজ সম্পকে চাষ্ট্ৰের মলে একটা অংশ•কাদেখা দিয়েছে। 'আগমী খরিক ফসলৈ ধানের উৎপাদন বাড়াতে হাল চাষ্ট্রীপর এই আশ•কা দরে করতে হবে। কংগ্রেস ওয়াকিশং কমিটির স্পারিশে গঠিত একটি কমিটিতে সেদিকে নজৰ দিতে হবে।

অপেকাকত তালপ আয়ুসে যথাসমক্র অধিক ফল লাভের জনা কংগ্রেস ওরাকিং কমিটি আর একটি সংগারণ করে.ছা.লন। সেটা হল এই যে, দেশের যেসব স্থানে নদী-উপত্যকা পরিকল্পনাগালির বাজা সম্পর্তা হয়ে যাওয়া সড়েও আনুহত্তিক পরিকলপনার অভাবে প্রপর্নি সফল পাওয়া বাছে না সেদব ক্ষেত্রে আঞ্চলিক উন্নয়নের উপর অগ্না-থিকার দিতে হবে। এই উদ্দেশ্যে পরি-কলপনা ক্ষিশন কেশের বিভিন্ন স্থানে মোট যে ৫৫টি ক্যান্ড এরিয়া ডেডেলপথেস্ট প্রোক্তেকট চিহ্নত করেছেন সেগুলির डाहिमान किस्कृत नकत कथा अस्त्रव केक প্রায়ের কমিটির কাজ হবে:

२० १६ १५8

(89)

্ছোটবাব্ ফিস ফিস গলায় ভাকল, কনি।

বনি বলল, বাবা আমাকে জাহাজ থেকে আর নামতে দেবে না ছোটবাবা, ।

ছোটবাৰ বল্প, কেন নাগতে দেবে না! স্থাবিত থাজে।

—বাবা কিছাতেই রাজী হক্তে না।

ছোট্যাবা স্থান্দর পোশাক পরে ওপরে উঠে এসেছে। সারাদ্দ ভাষণ খাটনি গেছে। সে ভাটাভডি কাছ সেরে স্মান করেছে ভাল করে। এ কাদ্দ মন ভাল ছিল ম। শৈলদার মাজার পর সে শেলদা নিংসংগ বোধ করাছল। বিকেলে ভার কোনোদিন জাতাজ থেকে নামতে ইল্ডে ইয়নি। সকাল থেকে আৰু ডোবড বাৰবার ওর কাছে এসেছে। তাকে নিয়ে কিনারায় নেমে যাগে। भक्तर घातरत्। त्वारना भारत वर्ण भागानी 'ক্সিংকস। এভাগে একটা - উৎফাল্ল হাওয়া। তখনই মনে হয়েছে গেলে মন্দ হয় না। সে বনি আর ডোবড। বনির সংগে কতদিন যেন একা একা শহরের বাদতায় অথবা সমাদের ধারে সে হোটে থায়নি। সে বলে-किन वीगरक कार्यता नित्मतम किमानाश माय। ৰুমি বলেছিল আগ্নিত যাব।

কিন্তু এখন বনি কেমন নিঃস্পৃত ভার কোনো ইচ্ছে নেই খানার। সে চুপচাপ ভাছাজের ডেশ-চেয়ারে বসে আছে। কিছা বই একটা টিপয়ের ওপর। খ্লিমতো যে কোন বই তুলে দটো একটা পাতা ওলেই দেখছে আবার বেখে দিছে। আসলে ভার কিছা ভাল জালছে না। বাবা দিন নিন কেমন যেন হয়ে যাজেন। সে বলল জানো ছোটবাবে বাবা বাতে একেবারে খ্রোয়ানা।

ছোট্ৰাৰ পা ছড়িয়ে পাশে বনে পড়ল। কাল, কেন কি হয়েছে। বাৰা মাজে মাজে কামান দ্বাৰায়

क्रांच चारम्म ।

—কেন্ন নেমে আসেন? কি করে টের পাত তিনিট নেমে আসছেন!

—আমি ব্যক্তে পাবি ছোট্যাব্। বাবা সিপাঁড় যরে নেমে এগেই ব্যক্তে পারি। মাথে সাক্ষে বাবা নেমে এসেও নিশচনত থাকতে পারেন না। ডাকেন। আমি জেগে থাকলে সাড়া দেই। বাবা কেন যে এমন হয়ে যাজেন।

ভোটবাব বলল, ব্ংড়োর শেষ সফর। আর সম্দুদ্র আসতে পারবেন না। সম্ভেব জন্য ব্ডেরে শোক উথলে উঠছে।

—তা এভাবে আমার কেবিনের দরজয় সেজন্য দাঁডিয়ে থাকবেন কেন।

--ভাল লাগে না ঘুম আসে না। নিজের বলতে প্ৰিবীতে এখন শ্যু তুমি। সারাশন তেন্নাকে কাছে কাছে রাখতে চায়।

— আনে না। তা ঠিক না। প্রশ্রু রুতে কি হল তমি তো জান না!

– কী হয়েছে!

— আমার ঘূম আস্ছিল না। কেন হে ছেটবাবা ঘূম আসে না! খখন আন পার ছিলাম না, ভারলায় গোপনে তোমার কেবিনে গিয়ে চুক্চাপ রসে থাকর ৷ জাছাজে সরাই ঘূমিয়ে পড়েছে। কে টের পানে বল! দরনা খানে দেখি বাবা ওপরে জম্মণারে দাঁভিয়ে অংহন। একা। স্থাজের সম্ব জালো নিভিনে অম্বকারে দাঁভিয়ে আছেন। কার সংগ্র কথা সল্পান যেন। বাবাকে আমি এভাবে কথনত দেখিনি! সম্ভূপন্তি ক্ষা শ্রেছিলাম। সামান্য গলা বাড়াতেই দেখেছি বাবা দাঁড়িয়ে আছেন। মনে হল যায়া টের পান নি, দর্মধা দুক্ষ করে দেব ভোবে আবাব সেই সেরে গোছ তুখনই বাবা ডাক্সেন, ভাল করে দুয়জা-শঞ্চ করে দাও। এতা রাতে আবার উঠেছ কেন?

ছোট্যাবা বলল, ঠিক একটা কে**লেংকারী** করবে বনি। ভূমি কেন এত রাত্ত ক**ইলা** গালতে গোলে। মাথায় ভোমার কি চাপে!

ু সনি ভবিষণ সংগ্ৰাগেল। সেট্টবাৰু প্ৰতি ভিন্নসকার কৰছে। কেন্তু ভাকে গ্ৰুথতে পাৰে না। সে আন একটা কথাও বল্ল মা। বুইয়ের পাতা উচ্চাতে থাকল।

ছেটেবাব্ তথন আর**ও কেপে ধায়।** না, না, বনি এটা তুমি ঠিক করনি। **তুমি** গুলতে পারছানা বেন তোমার এভাবে বের হওয়া ঠিক না।

আমি কি করব ছোটবাব্। পারি মা,
দ্বার তোমার দরভায় পর্যাত আশকায়ে
নেমে গোছলায়। তুমি বকবে বলে পরজায় গিয়েত্ত ভাকতে পারি নি। আবার ফিরে এসেছি। তুমি ভারি নিউর ছোটবাব্য।

ভোটবাব্র মাথায় এখন কিছু শব্দ ধার বার ঘরেপাক থাচেছ--সালি ছিলিনস ঠিক অন্মান করেছেন, বান পালিয়ে কোষাও যেতে চারা। বান পালিয়ে ভোটবাব্ছ কেবিনে যেতে চারা। সে কেখন এবার শাসনের গলায় বলল, পোর্ট-মেলবোর্নে ডোমাকে ঠিক নামিয়ে দিতে বলব।



ৰ্ত্তীন বললা কেন্দ্ৰ আছাকে নামাতে পানুৰে di Cerena

্ৰা কৈটে নেখে ফেললৈ কি চৰে বলাতা! **হৈছে। মানুষ্টাকে আ**মরা মুখু রেখাব াক করে বল তো। আর ভারত স্বাই চাপ্চাপ থাকৰে! অন্তি তথ্য পোল বসৰে না ভোমাৰে। বনি দোহাট ভোগেমানামী কর

বনি ভাকাল না প্রতিষ্ঠ ভীষণ ভাবি মাখ। বয়সী ধাৰতীর ঘাতো মাখ গৃণভার করে থেখেছে। বই এর পাতার পর পাতা फेल्टो शाक्षका भाष कृत्य तकारेवादाक अर्थ-বারত 'দেখতে না। ছোটবার- পাশে বসে আছে, থাকক। ছোটবাযাত্র ভো কেবল এখন িত্রস্কার করার স্বভাব। ছোট্যাব্য, ভাগ এত দ্বার্থপর কেন-যেন ছোটবাবার এই স্বার্থ-পরতাকে কিছাতেই সে সূত্য করতে পার্ডে না। পারলে সে এখন উঠে চলে খেত। কিন্ত ছোটবাৰ যা একখানা মান্ধ! অপুমান জান ভীষণ। হয়তে। তারপর দিনের পর দিন কথা। बनाय ना। धाः वीन वर्ता स्म काउँक कथनस ডেনে না। তার বলার ইচ্ছে জল ছোটবার ত্মি নিজেকে ছাড়া আর কিছু ভার না। কিন্ত কৈছ, বলতে পারল না। তোমার তো ছোটবাব, ভাষণ খংশী হওয়ার কথা। আগ্র তোমার জনা এত করতে পাহি, তুমি আমার भना करिक प्रजा कर्ताक भावरव गा।

ছোটবাৰ কি কন্তে ভোৱে পাঞ্জে ন।। বনি কথা না কললে তাও মাথায় এখন আবেও বেশি রক্ত উঠে যায়। সে বলল নাগ্রিয়ে না দিলে তোমার ঠিক শাহিত এয়ে মা।

—वननाम (ङ) १क्छे भारत्य मा । १५॥हे-बाव, । भरत याद, छुना करते उत्तरमञ्जा । भारत ٦) <u>(</u>

ছোটবাবা সহসা ভীষণ দয়ে গেল। চরি করে বনির মূখ দেশল। ভীষণ থমথম क्द्रवह। भारा भारत दङ्गाभा (वाधरह গ্রেয়েটার অপমানে চোখ জ্বালা করছে। ছেট-বাব: বলল বনি, আমি তোমার ভালর জন **বলছি। ভোমা**কে নিয়ে বনি আমার ভারি Gar I

সহসা বনি এবার ভীষণ জনলে উঠল। এর দিকে বছ বড় চোখে তাকিয়ে বলল, কেন তুমি সাহাজে উঠে এলে ছোটবাণ্! ভোমার সংগ্রামার দেখা না হলে কি ক্ষতি ছিল। তমি যেন আমার সব এভাবে চুরি করে নিয়েছ! কেন কেন। এখন ত্রি ভাষাসা দেখছ! কিছা হলে ভোষার কলংক হবে বলছ। তুমি ভীষণ ছোট, তুমি ভীষণ ছবার্থপর ছোট্বাব**ু। তুমি ভাল না,** ভাম খারাপ। বলতে বলতে কামায় ভেগ্নে পড়ল।

ছোটবাব, বলল এই খনি, ছিঃ বি ছক্তে বনি প্লিজ এমন করে না। শোনো। বনি প্লিজ, ডেবিড উঠে আসছে।

বনি ডাডাডাডি বই দিয়ে মূখ ঢেকে দিল।

ভেবিভ কাছে এসেই টাইটে বাহিছে লিয়েছে। —িক ব্যাপাত্র জোমরা এবানে। নেলেণ্ডকে বদে আছি, পাছা চেই

क्षामालय बहे जाक ला। छीत्र यात्र वनाइ। का छन ! मृत्योंच कवाय ना । आत्र क्रींच हरन शास्त्रका त्वला अस्य ना।

क्षाहेंबाव प्रस्था वीन माथ काछान करव কেবিনের নিকে ছেপটে হাচ্ছে। সে তাকিয়ে থাকল ভারণর কেবিনের কুপালে, চলে গেলে वनम असाक शास्त मा। अत्र मतीत जाम निर्दे

'-ছি ছল ভাবাব >

—কি জানি কে জানে। ভোটবাব⁻ বলতে বলতে ভারি অন্যান্দ্রক প্রয়ে গোল ! সে কিছু रम्थाक ना भएका द्वारते यातक राजक भारत। ডোবভ পেছনে পেছনে মাজে। ছোটবাবা रवारहे सिकेल क्रवाही कथा वनम ना रखविराजव সংখ্যা ডেবিড দড়ি খালে দিল। ছোট্ৰাব্য তেলান দাঁড়িয়ে আছে। ও পরেছে কালো পান্ট হাভয়াইন সার্ট-পায়ে সাদা মোজা আৰু কালো জাতো। তব দিন দিন চাল ঠিক জ্যাকের মতোবিভ হয়ে যাছে। এবং কি থে সামতান চোখ্যাখ তথে যাতে কুমে! भाषि प्रभेष्टे नौलस १८६व भाउका, क्रांक्स धन হচ্ছে। চোয়াল ভীষণ ভারি। এবং নাকের কিছটো অংশ এখন দেখা হাচ্ছে-শরীবে স্বৃঞ্জ ঘাসের মতো কথনত বছ, কথনত মনে হয় ঘাড়ে মসণ্ডা অভাধিক। হাতের পৈশি শক্ত, ভাষণ শক্ত। ডেবিডের কেমন ভয ভয় করতে থাকল। বলল, ছোটবাব্য ছমি এমন গ্রেম গ্রেবে আছ কেনা

इक्राइनावा वलन, रेक मा रहा!

– তোমার কিছা হয়েছে ছোটবাবাু ১

—কৈ হবে ?

- কি হয়েছে জানি না। কিছু হয়েছে এটাক বলতে পারি।

– আরে ন । কিছে, হয়নি। ছোটকাব, ডেবিভের পেছনে চলে এন। দাত টান্রে বলে বঙ্গে পড়ল। এর মাথে অজ্ঞারেখা তৈরি হ'চেছ - নানারকমের সংশয়। এব: আচি সারা-রাত আবার জাহাজে বোধহয় জেগে থাকছে!

সেনুয়ে দাঁড টানছে। ক্রমণ আচি চারপাশে নেচে বেড়াঞ্জন। সাালি হিগিনস. আচি প্রেনো জাহাজ, এই যুবভা মেয়ে আর সব নানারকম সংশয় জনে ছোটবাব্যকে তাম্থির করে ফেলছে। সে একটা কথা বলতে পারছে না। মনে হচ্চে জাহাজ সম্দ্রে ভেসে ্গলেই ভয়ুত্কর কিছু ঘটবে। এসব ভাবনাব ভেতর জ্যাকের মুখ বড় বেলি ছারিয়ে মূজিছল। তথ্য ইছেছ ছাঙ্গল, একবার গোপনে পেছনে তাকায়। যদি জ্যাক জাতাজে কোথাত সাঁডিয়ে থাকে, তাকে সে বোট পেকে 144731

এবং ভূথনই কি যে হায়ে যায়. পোট্র-হোলে সেই মূখ দাঁড়িয়ে আছে। সে ফিবে ভাকাতেই ধারি ধারে হাত নাড়ছে—আমি আছি ছোটবাবা, ভয় নেই। আমি পোট'-হোলে দ'াড়িয়ে তোনাকে দেখাছ। তুমি যত-দারেই যাও আমি আছি সংশ্রো ছোটবাবা মনে মনে বলল, আমিও আছি বনি। সে দাঁডিয়ে হাত নাডতে থাকল। বনি হাত নাড়ছে। সহসা এক আশ্চর্য সুখান্ভূতিতে ছোটবাব্যর মনটা ভরে গেল। ভাশ বাপসা इत्त्र शाक्ष विसन्न कथा एक्टब ।

Company of the second s एकाहेबाब कनन, एक बिक कार्मि किन्छ বেলি খাব মা। আমাকে ভাডাভাডি জাতাকে হিচৰতে হাব। বনিকে জাচালে একা ফেলে সে এক্টন্ড কোৰাও আর বাক্তে পারছে না।

আর হা মনে হল ছোটবাৰুর, বনি জাহাজে না থাকলে সেও ঠিকটাক যেন काजारक "रव"राज्य थाकरव ना। एउविकरक निरंध লে বেশি সমহা কিনারায় থাকল না। বালি-য়াড়িতে সে এবং ডেবিড কিছুক্ষণ ঘাবে বেভাল। সম্পা হয়ে গেলে ওরা দুজন পাশা-প্রাদি বসল। আভা ঘাসের মদ খেল দক্তনে। কিছা খাবার। ডেবিড ওর সংগ্রে ফিরে এন ना। त्म क्या कित्र कल काहारक।

্রবং কভাবে আর ক্থনও ছোটবাব কে নেছে থেতে দেখা গেল না। সারাদিন কাজের পর সে বোট-ডেকে জ্যাকের সংখ্যা ফসে থাকত। গুম্পু করত। ডেবিড বার্ধার এসে ফিরে গ্রেছে। একে সংজ্যু নিয়ে যেতে পারোন। সামাসেত্র সময় ছোট্যাব রোলং এ দাঁড়য়ে থাকলে ডেবিফ বাঝাত পাৰত হোভাবে হভোটবাৰ জাত্যক উত্ত এসেছিল এখন আর সেভাবে ছোটবায় বে'চে নেট। কেমন ধার্লা>থর এবং চারিতের স্তুত। ভোটবাৰা জাহাজে বড় হ'তে হ'তে পেয়ে গেছে। ছোইবান্ কথা ফললে মনে হয়, धारतक मात्र (थारक कथा वलारक) एक हिंचा गारक আর আঁগের ছোটেশ্বা কিছাতেই ভাষা গাটেছ না।

মাসাধিককাল ভাতাজ ও বন্দরে থেকে গোল। ফসফেট ভেলিকে বোঝাই হচ্চে। কেনে মত সহজে এবা জাতাজ বোমাই তাকে পারে, ডোরকে তত সহজে হয় না। সময লেগে যায়। এখন ভাতাজ বোনাই ভয়ে গোলে ফের যাটা। জাতাল আপাতত **যাবে জিল**ছে। পোর্ট-মেলবোর্ন পার হলে মাইল চ্লিক দারে ছেটু বন্ধর। সূব মা প্রথানে খালাস করা হবে। স্থালি [ি] নসের কাভবর্গ এবং র্জাফসাসাদের সর দেখাশোনা শেষ। ব্রুদর ছাড়ার আগে সেই এক টাড়'য় লেওয়া। **স্বাই**কে स्टब्स เหมา ประเท 8-612 1004 ভাহাঁক আবার ছাড্ছে। বয়লার রাগ্রে সব বয়লাগের ক্ষোক বক্স একেবারে পরিকার করে নেয়া হয়েছে। ক্রস্-বাংকারে কয়লা লেভেলিং হচ্ছে। কোনো কবলে উচ নিচ প'ড়ে থ'কা কয়লায় গ্যাস হতে পারে। আগ্র লেগে যেতে পাবে জাগ্রেজ। কোপ্ত কোনো কারণে গাফিশতি থেকে না যায়। প্রায় বিশাদনের মতে: জাহাজ যের সমাদে জেসে চলবে। গ্রে মাসের মাঝারাবির সফর। দক্ষিণ-প্ৰ' আয়ুন বায়ুৰ গতিবেগু কুমুলু এখন বাড়ছে। স্মাদের তাবহাওয়া খ্রই খারাপ থাকার কথা। ঝড় বৃণ্টিতে জাহাজটা ভেসে চলবে স্মারে। ফল্কার ওপরে কাঠ, কাঠে চিপাল এবং চারপাশে কিল এটে সবকিছা ধোয়ামোছা শেষ। শেষতে কিছু পড়ে নেই ভেকে। কছের দরিয়ায় পড়ে গেলেও কিছু; ভাসিয়ে নিতে পারবে না। কোথায় কি বঙ চটে গেছে, খাঁচে খাঁচে নেখছে ডেক-টিস্টাল: রং-এর টব কোমরে কুলিয়ে कार्राक्तिता रहातेष्ट्रीते कारह। मिर्क कार्राह्र

ভেডরে ৰাইরে এভাবে না করে নেরা হচ্ছে। এবং

নার ভেরিক নামিরে দেরা হচ্ছে। এবং

মারার স্বা গি'টের সাহারে বাধাছাদা
শোল। উইচনগ্লোতে চিপালের ঢাকনা
পরিরে দেরা হচ্ছে। ভাহালের লাব্বাস লাইন
নিচে পাড়ে আছে। ভাহাজে চলতে আরশ্ভ
করলেই দাড়ির রিঙে ছোটু একটা ভালিমের
মাডো গ্লি ঘ্রতে থাকবে অনবরত।
জাহাজের গাত মাপার কন্য এটা ঠিকটাব
করে নেয়া দুর্বল্ব।

জলের টাংকগ্লোতে কত জল আছে, জাহাজের এরট চিক থাকল কিনা, ভাংগা ভাহাজ চলে খাশিমতো দ্য-এক ফাটে ড্ৰাফট এদিক-এদিক ছওয়ার উপায় নেই। কম ছলে ক্ষতি নেই। বেশি হ'লে বোধহয় জল এবং কয়কার ওপর দিয়ে যাবে। জল কম হলে রেশনিং করে দেয়া হোতে পারে। কাজেই সব চার্ট, সব পটক জাহাজের, কোথায় কি কভটা থাকবার দরকার সব এক এক করে বাকে নিচ্ছেন স্থালি হিগিন্স। তিনি স্বাইকে নিয়ে ঘারে দেখছেন, যেমন প্রত্যেকবার জাতাজ ছাড়ার আগে দেখে নেন। বন্দরে হিনি দলের বোট-মাস্টার করিয়েছেন— বন্দ্রে বোট-মাস্টার করা কােনাে হাদিও জর্বী ব্যাপার থাকে না। জাহাকের লাইফ্-বয়াগ্লো স্ব ঠিবটাক আছে কিনা দেখে নিজেন। শেষ সফরে তিনি ভীষণ সতক'। লাইফ বয়া, লাইফ জনকেট দ্যটো বড - বড কাঠের পাটাতন, সবই মেখানে যেভাবে থাকে ঠিকঠাক আছে দেশতে পেলেন। সাইফ-रवाराहेतु भाक्ताना भाषात कवा, रण्या अन्त्रेश সি-এংকোর সব ঠিকঠাক আছে। বেংটেব ওপরে দ্রিপালে ঢাকা। পুরোমো কোণাও ফাটাফাটা। দ্বটো হোটেরবোটেই দেখলেন, লাইফ-বোট দ্যানস মিটার সেট নেউ। 👵 দ্বটো চার্ট রুমে থাকে। বোট-মান্টারের সময় রোডভ অফিসার হাতে খ্রালয়ে নিয়ে একেছিল, আবার তুলে রেখেছে বোধত্য চার্ট র্মে। বডজলে ও দ্রটো আবার সন্ম-মতো যদি নাট হ'বে ধার। রেডিও-অফিসাব তবে ব্রুতে পারছে, স্মালি হিগিন্সের কাছে ফাঁকি দেবার উপায় নেই। দ্বকারমতো হাতেব কাছে আসল বাণকতা ট্রানস্মিটার সেটটি বিকল-ডখন মাণা চাপড়ানো ছড়া 2011 উপায় আর থাকবে নাণ চার্ট-রুমে রেখে फान्हे क्रत्रहः

এভাবে জাহানে পর পর স্ব কাজ হয়ে লেকে, প্যাং-হয়ে কেকে সি'ড়ি টেনে ভোলা হতে থাকল। এটাই স্বারু শেরের কাজ। জাহাজের সংগ ডাংগার শের ঘোণসত্ত এভাবে উঠে একেই মনে হবে চারপাশে স্বর্ত যেন কেউ সেই বিউলিল বাজিয়ে বিক্ষে কেব। সমৃত্র, অসমীয় আশালত সমৃত্র জাহাজ স্বঞ্জন বিরে ভোসে চলেছে। মানে বিজ্ঞার কিংলগিল বিরে ভোসে চলেছে। মানে বিজ্ঞার কিংলগিল বিরে ভোসে চলেছে। মানে ভাতরে ভখন বার বত দ্বলিত। মানু এবং করে দেখা দিতে থাকে। মানু এবং করে দেখা দিতে থাকে। মানু এবং করে দেখা দিতে থাকে। মানু ব্যাক

তিক একই দৃশ্য জীবাদ, কাইলে বত সমূহে এগিরে হ'ব ভাণ্গা বত দ্বে সারে বার, কাহাজিদের মন তত খারাপ হ'তে থারে। হ্বভাব হৈ কি মানুবের—ডাণ্গা বত-কণ দেখা বাবে কেউ নভুবে না। হুপচাপ দাঁজিয়ে সেই বাঁগ এবং বাঁগের বর্গমালা দেখতে দেখতে তিক স্বনেশের মুজো কল্ট বৃশ্বে। বে-কোনো ভাণগাই তথন তালের দেশ মনে হয়। ঐ বাঁগিটাতেই বেন বে'তে রয়েছে তার স্বাঁ পূর জাবর মা এবং মনে হয় কোনো স্ব্লুক সম্যাক্ষেত পাব হলেই বে তার হেটা কৃতির দেখাতে পাবে। যুবতা স্বাদ্ধির দেখাতে পাবে। যুবতা প্রাদ্ধির বিশ্বত সাক্ষরে তার হলে বাবে ক্রিলা। ক্রিলা বাবালের থাকে না।

ওরা সেই স্বীপটার পাশ কাটিয়ে যাকে: মৈনকে এ ন্বীপটায় রাখা ত্রেছে। এখনও কাঠ-কয়ুলা কিছু পোড়া কাঠের অংশ ভাল্যা হাড়ি দেখা যাছে। সন্দের এই দ্বীপে যেন বেশ তাকে মানিয়ে 7517.50 1 আশাদত তরংগ্যালার ভেতর আশ্চর্ শ্বীপটা। নিজনিতা প্রবণ। হা হা করে বাডাস্ সারাক্ষণ কয়ে যাচেছ আরু দবীপে মৈরের সব অহিতত্ব ছড়িয়ে আছে। ম্বীপটা এখন মৈরদার। বোধহয় কোন সফরে হাদ জাবার সে ফিরে আমে দেখতে পাবে বস্তত-িবাসের নামে কেউ এখানে একটা এপিটাপ িদিয়ে গেছে। ছেটেয়াব; দ্বীপটার কোথায় কিভাবে মৈরদাকে পর্ন ডিয়ে দিয়ে-ছিল এক এক করে বলে যাক্তে—এবং সেই যে জাহাজে ওঠার সময় সর ভরসা ছিল মৈল্য সেই মান্য ভার নাম দিয়েছিল জাহাজে ছোটবাব এসব বলতে ব্লতে শেফাশীরোদির গণে এবং কথনও যে মৈরদা স্বাংন দেখত একটা বড় পাইন গাছে, কেউ কালিয়ে বেখেছে বড় একটা ডিম মাতের কংকাশ নিচে সৈরদা দ্যাড়য়ে আছে-এসৰ কথা সে বলতে বলতে দেখল বনি চা করে তাকে দেখছে। ছোটবাব্যু বলল, বনি ভূমি কি দেখছ ! দ্বীপে মনে হচ্ছে না মৈত্রদা আহাদের হাত ভুলে টা টা করছে!

বনি বজ্জ, শুনছা

-41!

ভূমি শুনতে পাল্ড না

--বাবা আবার সেই গানটা বাজাকেন!

ছেতিবাব্ ওপরে তাকাল। বীছে তেবিভ পাল্লচারি করছে। পালে চুইলের সামনে তিন নন্দর কেলাটার-মাস্টার। মাথার টুপি। মুখ প্রায় টুপিতে চাকা। সে দাড়িরে আছে। সামনে আদিলত সম্দের জলরাল খেলাজলে মেন অসীনে জেসে বাছে অথচ সেই সংগীত ঠিক সংগীত বলা বাবে না, আচ্চা মেলভি বোধ সূর্যাল হিলানের দুঃখবোধ সড়ে। কিংবা সামালি হিলানের দুঃখবোধ সড়ে। কিংবা সামালি হিলানের এখন কোথায়। সেব বললা, তিনি তো বোধাও নেই বনি?

वनन, वावा ठिक घरत वस्त বাম বাজাচ্ছেন! এবং বনি ঠিক ব্রুতে পারছে না বাবা আবার এক দঃংখের ভেতর ভবে হাছেন কেন। বাবা যখন সব কিছুর ওপর বিশ্বাস হারিয়ে ফেলেন, এমন কি তার ঈশ্বরের ওপর তখন তিনি **এ গানের** ভেডর, এমন একটা স্থারের **ভেডর ভূবে** যান। বাবা মা চলে যাবার পর, এভাবে গান বাজিয়ে বাঁচার ল্লাডো আল্লয় খ্ৰাজ্ঞান ছিলেন। আবার কি বাবা এমন একটা দ্রুপের ভেতর পড়ে গেছেন, যেন কোনো তার অতীব আপন কিছু, শেষ অবলম্বন হারিয়ে ফেলছেন! শেষ অবলম্বন বলতে বনি জানে সে নিজে এবং বাবাকে এভাবে ভায়লিন বাজাতে শ্বনে কেমন বোধ করল।

তর। দুজনই ভীষণ কা'কে ছিল সমান্ত। ভোটবাব্য দ্বীপটা দেখতে দ্বরে সরে হাতে। শ্বীপটা দেখতে দেখতে লোভ-এ্যালবা**ট্রের** কথা মনে পড়ভো। এখনও দিগতে ওকে (मंशी योतक ना। ये काराक नगरम प्रतिक যাক্তে তত্ত ভাবছিল পাণিটা দিগতে কোথাও উড়ে উড়ে আস্ছে। কাছে এলে সে ঠিক ্র্নেশ ফেল্পে। অথচ প্রাথটা নেই, দ্ব**ীপটা** দারে সরে হাচ্ছে। বনি এখন বোটে ছেলান দিয়ে বঙ্গে আছে। এর চোগু কেয়ন স্থির। সে খাব নিবিদ্ট হয়ে যাছে যেন। একটা সে তুলে দিয়েছে বেলিঙে। শ্যান্ট গোটানো হাঁটুর কাছাকাছি। পাছে পাড়কা চাদিমালার জাতে। থালি পা যোজা পরেনি বলে ভারি মনোরল ছোটবাকা **বোধ চয়** চুরি করে বনির খালি পা এবং ভারেও এভাবে 🏟 সব ভাবছিল শোদ্ধ াকছ: এ(*লেশা*ট্রা**স্**র কথা মনে আস্কে। প্রিয় গাঁথটার কথা পর্যক্ত সে বনির **খালি পা** এবং সৌশ্দর্য দেখতে দেখতে ভূলে বাচ্ছে--



আছু এ সমায়ে বনির কি দ্রকার ছিল এমন একটা উপ্তট পোশাকে নেমে আসার। মাথার ভালপাতার ট্রপির ভেতর জাফরিকাটা হলদে রং, বা-হাত ঘাড়ের কাছে, আর ডান-হাত दारकत कार्छ। माल तरकत कहारकरे भारताह । মোটা বেল্ট আর পোশাকের অভিনাট ব্ড আবরণের ভেতর শ্রীরের ভাজ যেন ফ্টে বের হচেছাএত সাহস বনির কি করে হতে। সে জানে খাব কাছে। তার কেবিন, ্বুকের ওপর ইচ্ছে কর্লো ন্যাপ্রিন रशहरण अन्य कार्यन्यारह दशायन ककरत रचनारह পারে-ক্রিড এখানে যানি এখন ডেবিড চাল ভাবে! দে কেন্ট্ৰ এগেই স্মেন্সামনি দাঁড়ালে টের পাবে যেন জাকে হোয়ে। অথচ সে জ্ঞানে এমন কৰে ওকে কেউ দেখে ফেলপেও বিশ্বাস করবে না সে মেয়ে । কারণ সে জ্ঞানে, এটা একটা আজগুনি কথা কংগোঁ-শিলে পেয়ে। কারল এ তেন আর সাহি বহন করে না, অথবা কোনো কার্গোলিপে দশ-वाह्याक्षम शांत्र यारम्था क्यान्छ क्यान्छ থেকে শায়। কিন্তু সিউল-ব্যাংক ঘাতি নেবে লুৱে থাক দামী কাৰ্গো। পদস্কিত সে পাল না। আর দেখানে মেন্দ্র ঘারি, মেয়ে! গ্ৰাই যায় না মৃত্যু তুলি **গে**য়ে নেগের াজ্যে থাকে কেট ভাৰবে না ভূমি মেছে ! **র্গম মেধ্যে সে**কে স্বাইকে লোভে ফেরে দক্ষ এমন ভাববিং! আর তথ্যতি মনে হল, কবল আচি, আচি জানে, আচি জানে ন্তাক বনি। জার্চচ জনকরে কোষ্টান ট্রেন মতে ছেয়েছিল। সে কেছান ভেডরে ভেডরে প্রথাবের ভেরে পড়ে মুদ্রে। সে ব্যিতে ক বশ্বে ব্জভে পার্স না। তথ্নও ভা**রলিন** বঞ্জেছে স্থালি হিণিনস্। সে



বলল, জ্যাক দিন দিন ভোমার খুব সাছ্ট বাজকে।

- সাহস ?
- —হুৰ্যা। তুমি কি পৰেছ!
- —কেন পরুরের পোশা**ক**!

—ভাল দেখাছে না। সব বোঝা যাছে। এত আটি বিভি দেখাছে।

- -- ZT!
- —হাত্ৰীকা কৰছে।
- —তুমি জানো বলে ব্ৰুতে পার্ছ।

আছেন বনি, ছেটেবাব্ পালে বসগ বলল, আর্চি তবে টের পেল কি করে?

জ্যাক সব বলল। 'হ'উ নটি গাল'
থেকে সে যে একদিন কেবিনে ব্যালোকিবর মতো পোশাক পরে নাচছিল এবং এমন জি সে যে একদিন ডেকে মাতাল ছেন্টবাব্রক ড়েচীর রতে কেবিনে দিয়ে আসার নামে বারবার গোপনে চুমো শেয়েছিল সব বলে কোন যে আর মাথা উ'চ্ করে যেন কংগ বলতে পারছে মা। সে বলল, আমি আচিরি কঙে নিজের দোষে ধরা পড়ে গেছি চিটবাব্র

- আচি স্বাইকে যদি বলে দেয়?
- —দিতে পারে। . .
- দিলে কি হবে ব্যতে পানছ?
- ্রজান ছেট্রাব্যু। বাধাও বোধ হয় জন্মান করতে পারছেন সব।
- —তুমি আহেত্র সড়ে। মান্রটাকে ভারনার ভেত্র ফেলে দিয়েছ।
- কি করব ছোটবাবু। আঘার কপাস। ছোটবাবু বলল, আচি এখনও বলভেনা।
 - ---वनतह भा कि करत आता?
- —ঠিক ধবর চলে আসবে। বংকু অমিমেদ জন্বার এখনও আছে জাহাজে।
- আচি ধ্ত ছেটেবার,। সৈ এক। মজা লুটতে চায়। সে কটেকে সহজে বলবে না।

ভারপর থবা কেন্ত আর কথা বলতে
পারল না। চুপচাপ পাশাপাশি বসে থাকল।
স্ম্ অসত গোছে। সম্দুদ্র অধ্যকার। এবং
অনেক রাতে চান উঠবে আকাশে। ফ্যাকাশে
সম্দুদ্র তথন জাছাজের শুখু কলকজ্ঞান
শুখা আর চয়তো সারারাত স্যালি হিগিনস্
ভাষ্টিন বাজাজেন বনি?

বনি বলল

নোবডি নোজ ডি ট্রাবল আই সি নোবডি নোজ বাট জেসাস নোবডি লোজ ডি ট্রাবল আই সি পের্যার হ্যালেক্স্রল।

ছোটবাৰ বলল, সভিত আমরে জানি না কি ঘটবে। এনজিন-কল্প মাঝে গ্রাথে আজকাল জাতির হরে খুব আসছে।

এবং রাভে কেট ঘুরোতে পারল না। ভোটবার বার্ষধার রোট-নেলক ক্রান্ত কলেছ।

আই সি। স্যালি হিলিম্স বারবার একই গাম বাজিয়ে হাজেন। এবং সে বুখতে পারছে না-কভাবে জাহাজে তিনি আছেন. সামটাইমস অই এাম আপ সামটাইমস আই এাম ডাউন ৰ ইয়েস লড , আরও কি যেন আছে—তিনি গোপনে ভাংগা জাতাজ निदश कारकारम् अस्तर्ध रस्टरम ठेटलटस्म । ठान-পাশে সমাদের হাহাকারের ভেত্র তিনি স্থাম ঢাকে যাচ্ছেন। ভেতরে তাঁর অতীব বাতনা। হি এখন করণীয় ছোটবাবা বাুকতে পারুছে না। নিরিবিলি আকাশ আর সমাদে তিনি ফাকাশে এক অংতহনি করাণা ঈশ্ববের ধরতে থেরে কেমন বিচলিত। এবং সে তথন ব কতে পরোছল এগরা জাত্রাছর পাশাপাশি কোথাও আছে। ওর পাখার শব্দ এইমার ্কাথাভ যেন রতে ভেসে আসছে। সে গোট-ভেক - ধরে নিচে নেমে গেল। আলোগ**ুলো** ভাহাজের বিরমেজীন জনলে যাতের। জ্ঞাকাণে স্ফারের তেওঁর চাদের নিভত আলে। বড় বেশি ভাডিময়। ছায়া ছায়া একা বিশ্বচরাচরে ওরা ভেঙ্গে 'ব্রভাক্তে। এলবা মাস্ত্লোর তপর বসে আছে - সৈ দেখতে ্পল। পাখিটাও ব্বি ব্রুতে পারছে সর। ঠোঁট গ্রাজে যতবার সে ঘ্রমোবে ভেবোঁছঞ তংশার সে জেগে যাছে। আর বাখাসে পাশা মেলে। স্মস্ত হতাশা স্বিয়ে, দিতে চাইছে বুলি। **সে** সাঁড়িয়ে পা**বল মে**ন-মাস্টের নিচে। পাণিটাকে ফিসফিস করে ভাকস, এলবা ভূমি তো স্মাদে আবাচ্যান কাল এভাবে বে'চে আছো। তুমি কি ব্যুক্ত পারছ, আম্বরা এ-ভাগ্গা জাহাতে কোথায় যাচিছ!

কথন স্থালি হিণি বাংগাছেন — ওজান মাই ওেড আই হিয়ার বাবিল ইন স্থ এয়ার, দেয়ার ইল এ হাডেন সান হেময়েবা—আপ, এবাড মাই হেড, এাণ্ড আই নো, ইংয়স আই নো দেয়ার ইল এ হেডেন সাম হোয়েয়ার ়া

তারপর গম গম করে বাজছে—ভারজিনে তিনি দুত্ত ছড়ে টেনে হাজেন বাুঝি— জেরি

টিমবার, টিমবার! লড ডিস টিমবার গটা বোল টিমবার টিমবার

বনি শ্যে শ্যে স্ব শ্নতে পাছিল।
ওপরে উঠে বেতে ইচ্ছে করছে। বাবাকে
নিরুত করা দরকার। কিছু দরজা খুলতে
সো সাহস পাছে না। দরজার কাছে সে
এখন রাজিয়ে আছে। সে বুকতে পারুছে
বাবার সব গান তার ঈশ্বরের কাছে লিপি
পাঠারোর মতো। এখন তিনিই জার সর।
তার উল্লেশ্য এবং বিশেষ। অথাণ তিনি
নিমিত মার। বাবা তার জীবনের সব স্থাুখে কল্ণায়া ঈশ্বরের পারে, সমর্পাণ্
করছেন। বনি বুকতে পাছে বাবার আর
কোনো অবলন্দ্র নেই। বাবা এখন বিশ্বনুত
সান্বির প্রতিক্ষিব। স্বুথন কি করতে



মনস্তুত্ব, স্মাজতত্ত ও সাহিত্য

মলিয়ের-এর একখানা নাটকে দেখা হায়, একটি চরিত্র রীতিমতো অবাক হয়ে হাচ্ছে যখন অপর একজনের কথায় সে ঞানতে পারলে। যে সারাজীবনে সে যে দোৱায় কথা ব'ল প্রতাহিক क रिमशाहा নিব'ছ করেছে, ভাকেই **'বিশ**্ৰেধ কাদ্য হিউমার আছে, বলে। উদ্ভিটির মধ্যে যে তা আমাদের জাবনের অনেক প্রয়োজা : সাহিত্যের সম্পকে^ৰ য**্**ষ্ট ত এমুনি একটি বিষয়। নাটক-নভেল-কাবোর সাধারণ একজন পাঠক বা পাঠিকা **থাদের হারেশাই দেখা যায়** ष्ट्रोर्ग-नारम् বসতে না পারক্রেও দাড়িয়ে দাড়িয়েই অনেক লেখকের সারাজীবনের সাধনা ও পরিভারের ফস্ল মুস্টার 'ফিনিস' করে দিছেন, ভারা নিশ্চয়ই সাহিত্য প্রসংগ্রানস্তত বা সমাজভংতুর কথা কানে তুপতে। নারাজ হবেন। কারণ সাধারণের মধো এরকম ाक्षे। शातनात চলন হয়ে গিয়েছে যে বিজ্ঞান মানেই লাটলতা বা যদ্র বা অংক-সাত্রাং শত হলেতন...। কিন্তু না, বাস্তবিক ভা নয়। कान विकानहै आभाक ता जाभगाक অর্থাৎ সাধারণ মান্তকে বাদ দিয়ে নয়। ৰা একট্ট চন্টা করলে আহ্বলা ব্ৰেণ্ড পারবো না, এছনও নয়। বরং প্রকৃত বিজ্ঞানী, অথাং মনোবিজ্ঞানী বা সমাজ বিজ্ঞানী সব সমায়েই আশা করে থাকেন যে তাঁদের বিশেলজাগ্র সভায়ত য় সাধারণ পাঠা অসাধারণ বিষয় সম্পর্কেও অস্তদ্ভিট লাভ

কিন্তু এ কথা মনে রাখা দরকার যে মনসভও বা সমাজতত্ত্বে মতো নবীন বিজ্ঞান ত দুরের কথা, সমস্ত রক্মের বিজ্ঞানের খারণার প্রে মান্য সাহিত্য প্রেরণ। অন্তেশ করেছে এবং তার স্থিতিত তাগ্র-নিয়োগ করেছে। সাধারণ হো-কোনো মান্য সর্বন্ধণ তার হাদয়ে যে দেনহ-প্রীতি-প্রেম-ইষ্ণ দেব্য জ্যাশ্য-আকাংক্ষা-ঘ্ৰা সহম্মিতা বোধ করে থাকে কিছু একটা কাছিনীর স্তোয় গে'থে দিলে ডাই গল্প-উপনাস বা নাটক হয়ে দড়িয়ে। সাহিত্যের সম্পক্তে মনগতত ঠিক এই সমস্ত মান্বিক প্রবৃতিগ্লিকেই ব্রাবার চেম্টা করে বিশেষবংশর মাধ্যমে। যে-কোন সাধারণ পাঠক শেকস্পীয়ারের নাটকের **১রিত সম্বদেধ হ্যাজালিট বা কোলারিজের** আলোচনা পাঠ করনে ঐ সব নাটকের নসন্তাহণ ভার পক্ষে পূর্ণভর হয়ে ওঠে সে বিষয়ে আর সন্দেহ কি৷-- যদিও তাদের -আলোচনাগ্রলিট সাহিতা, মনস্তত্ব এবং সমাজতত্ত্বে একটা মিশ্রণ-বিশান্ধ সাহিত্য নয়, প্রোপ্রি মনোবিজ্ঞান নয়, সমাজ-তত্ত কর্ই।

দিনের সাহিত্যের जाक/कर দ,বোধাভা তানেক পাঠকই ত্যানক সময় অভিযাপ ক'ল গাকেন। এ অভিবোগ একেবারে ভিক্তিহ**ী**ন কথা বললে সতোর অপ্লাপই করা হরে। কিব্যু সেই সংগে এবং সংগে সংগে যে कथाछ। ना नतन भाता खादा ना का ठावा और .य. जास्तरकत भागास्त्रत सौतामान । जाव আপের মতো সহজ সরজ গেট আক্রেন একজন ভাপারের মাছ নয়

দ্বোধা হয়ে উঠেছি আমরা এ কথা কি
আমাদের বেশীর ভাগ সাধারণ মান্তের
পক্ষেই সাতা নয়: কাজেই আমাদের দিয়ে
যে সাহিত্য সাল্ট হবে তা খবে সহজ্ঞ
স্বল কি করেই বা হতে পারে, হলেই বরং
তা হরে আবাদ্তণ এবং অস্বাভাবিক।

মনস্তত্ব এবং সমাজাতত্ত্বের পট-ভূমিকার সাহিত। বিশেলষণের উল্দেশ। নিরে সুম্প্রতি "বাংলা সাহিত্য স্মীকা পরিষদ" রুগর একটি সমিতি গঠিত ইয়েছে। কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের উ**পাচার্য ডঃ** সভোন্দুনাথ সেন এই সন্মিতির প্রেড-পোষক এবং বাংলা বিভাগের প্রধান জঃ তলিতকুমার বদেনপাধায়, মনোবিজানের প্রধান ডঃ রামগোরিশদ চট্টোপাধ্যায় এবং রাজনীতি বিভাগের অধ্যাপিকা **শ্রীমত**ী বেলা দন্তগ**ুত এ সমিতির পরিচালক** নিষ্ট হয়েছেন। এগরনের উদ্যো**গ আরা**-সম্ভবতঃ এই প্রথম 1 एवं (परभ তামরা সংস্থাটির সর্বাঙ্গীণ शिव रिक्ष ক্রমনাকরি।

পরবোকে হিন্দী নাট্যকার শেঠ 📑 🖫 হ

গত ১৮ জনে প্রবণি সংসদ সদস্য শেঠ গোবিষদ দাস ৭৭ বছর বয়সে পর-লোকগমন করেছেন। সংসদীয় রা**জনীতিতে** অৰ্ধ শতাবদী প্তিভিপলকে গত বংসর তাকৈ একটি বিশেষ মানপ্ত দেওৱা হয়। রাজনীতি ও সমাজসেবার কেন্তে গোটা ভারতে তিনি সংপ্রিচিত **ছিলেন। কিন্তু** এটাই সূব কথা নয়। তাঁর জীবনের **অন্য** একটি উল্লেখযোগ্য দিকও ছিল। তি**লি** আধ্নিক যাগে হিন্দী সাহিত্যপ্রকীদের মধ্যে অন্যত্তগ ্লুণ্ঠ ছিলেন। **হিন্দ**ী ভাষার তার বচিত নাটকের সংখ্যা প্রার একশ। তা ছাড়াতিনি ৫ খানা **ভ্ৰমণ**-ব্তান্ত, ১ খানা উপন্যাস ও জিন খণ্ডে স্বৃহৎ আত্মজাবনী রচনা করে হিন্দী সংহাতে পথয়া আসন স্থিট গিয়েছেন। হিল্পী ভাষার প্রসার ও প্রচারের ্চাটার স্থেগু এক সময় তিনি এমনভাবে াৰ ছিলেন্াম আনহিন্দী ভাষাভাষী অঞ্চলে ভাব সম্প**েচ**ি ভাম্পেবিস্তর দ্রান্তধারণার স⁻্টি হ্যেছিল≀ বাস্ত্ৰিক প্ৰে

वरे आत वरे

১৯২২ / সাধা। সদা সদা একখাণা বই হালা হয়েছে। সংল সংশ্য হৈ-হৈ ই উ। সব গোলা সবে গোলা বলস বৰ ইইলা—এমন একখানা নাডিবোধলানা গুলালা না স্বালো সবলালা হয়েই বালা ফালো লেই বই গালা কলে গোড়ালো হাত থাকলা আ্বান্তলালাভ কানাভার। ইংলাভের কাল্টিলাল বিভাগ পোড়ালো প্রশা বভাগভিত্তলাই। কেট পোড়ালো প্রশা বভাগভিত্তলাই। কেট পোড়ালো প্রশা বভাগভিত্তলাই। কেট পোড়ালা বভাগভিত্তলাই। কেট

মজার খেলা দার ভারপ্টেই।
প্রান্তর প্রান্তরে প্রান্তর জানার
ভারা খেলার খানিমতো কাট-ছাট করে
নান জানা। পোক হ জারে প্রাক্তনে ক ই ছোপ বিশ্বনি করেও লাগাল। ভারের কহাল পাত হাতে লাগাল। একটি স্বাস্ত্র মাথ দেখালান না দাধ্যে সেই বইরের লেখক।

নইখানার নাম ইউলিনিস। লেখক কোলস জারেস। ভার তথ্য নিদার্থ বংশিভার এবং দ্বিশান্তিও রাভ হারাক্ষেম ভিনি।

থার বছর করেকের মধেই আবার এক ঘটনা। ১৯২৮ সাল কেটা। এক-খানা বইরের ফোরেনটন এডিখান ছাব্য হরেছে ম্যা হাজার কবি। দাম দু' গিনি করে। প্রকাশক না শৈয়ে লেখক ভার শেষ সমল্প খুইয়ে সেই ধই ছাপিয়েছেন। ব্যক্তারে পঞ্চার সংগ্ সংক্ বই ব্যক্তি-মার্ডাকর মতে। উরে গোপা, পরের কটা সংক্রমণ্ড ভাই। ভারপ্রেই সেই গোল গোল রব। বিশীত্যান বিশ্বাস ঝাশিয়ে পান্তান গুলাবার ওপর।

এ-বইয়ের নাম শেডি চ্যাটারলিজ লাভার। শেষক ডি এইচ লরেন্স। িনত মৃত্যপথ্যাতী তখন।

গুল্ডান্থৰ অগ্না কলিন্তি তাৰে।
কড্টা পালাপোত গ্ৰন সমানৰ নেই
গুল্লান্থলীয় ঘটনাৰ পৰ বাহায়
নাৰ ছেচলিনা বছৰ কেটে গোছে।
লেশকদেৰ নিধাপজাৰ বনিয়াৰ এখন
নাছৰ বলেই সকলেৰ ধাৰণা। আৰুকেৰ সভা দ্বিয়াল পাইকেট এটিখন
ক্ৰাক্ষণৰ আৰু অসিত্ৰ নেই ভাৰাট।
অসক্ষাভাৰৰ আৰু

কিন্তু সতিটে কি তাই? খেজি করলে এখনো দেখা যাবে হলা নামী আর অনামী লেখকের ভালো ভালো

বই লেখকের বিনা অনুমতিতে অন্ রাজে। অথবা অনা রাথের বেয়ন-ডেয়ন-ভাবে ছাপা হছে ভাবাণতরিত হছে। এগ্রনোর নাম কি দেব? অন্তরেশস্ত আমাদেরও অনেক লেখক চয়জো এক-খানা বিদেশী ভালো-জাগা বই অন্-বাদ করে বসলেন, আর অনেক ছোটখাট প্রকাশক চোথকান বুজে তাই ছেগে কেললেন। এও 🖠বঞ্চনার সম্ভল। ভারতের বাইরে কোনে: বাঙালী পাঠকের মনো-**জায়গায়** রঞ্জনের ভালন ভালেক মাম্মী লেখাকের ভালো ভালো বই বিনা অন্মহিতে গাপ। হয়ে যাজে। বলা বাহুলে অবৈধ পাড়ের অাকটাই এসব প্রকাশক্ষেত্ অসল লক্ষ্য এরক্ষ খানকত্রক বই আমাৰ হাজ্ এসাছে। সংগোলোৱে ছাপা বঁপাই আর কানান ছল দেখে চেচুখে জন আসার উপ্রয়া

অলভেগতির স্বাথা আর সংস্কৃতির
মূখ চেরে অচিরে এই সমস্যান প্রতিকার কামা মনে করি মিক্টানের ছামার এ গ্রে কামা মনে করি মিক্টানের ছামার এ গ্রে কাম মনে করি মিক্টানের ছামার এ গ্রে কাম এ মান্টার চিপ্রিট —এনান এক-একখানি স্টান্টর ওপর যে-কোনো আরচার এই মান্টার চিপ্রিটের যুক্তে অপরিমেয় স্কৃতিচ্ছ এগ্রে ত ব্যস্তা

—আশ্তোষ ন্থোপাধাায়

প্রায়ার প্রতি অলিটোচিত কিছ, করেন নি। বরং বহু ভাষাভাষীর দেশ ভারতবৃদ্ ভারতবাসীকে ব্রেবার আন্ডব্রিক আগ্রহে বেশ পরিণত বয়সেই ডিনি ডিনটি জনা ভারতীয় ভাষা (বাংশা, গ্রন্থটো ও মারাঠী) भिष्ण क्रविस्थित। छ। ছ। इ:सकी अवर সংস্কৃত ভাষার উপরও তার দুখল ছিল অস্থারণ। রজনীতি ক্ষেত্র শেঠজী প্রবেশ করেছিলেন ২২।২৩ বছর বরুনে কিম্তু তার সাহিত্য সাধনার সারা হয়েছিল ৯৪ বছর বরেল । পেকেই। । সাহিত্যসেবা, শিক্ষার প্রসার ভখা দেশসেবার স্বীকৃতি-শ্বর্প শের গোবিদ্দ দাসকে ১৯৬১ সারে পাত্মভূষণ উপাট্য (मृ:५३)। **इत्त**ा आधारा ভারি স্মাভির উদ্দেশে প্রশ্বা জালাই।

রাজ্য সরকার কংকি শরংহতের জন্ম শক্তর্যাধিকী উল্লাপনের জালোক্তম

আল্থা বছর অপরাজের কথ্যাশ্রণী শর্মচন্দ্রের জন্ম-শত্রাধিকী উচ্ছাপনের

করছেন। শরং স্মৃতি স্বয়িতির একটি প্রতিনিধিদল সম্প্রতি রাজ্যের তথামণ্ত্রীর गटन्त्र जाकार করণে ভার সম্পকে জানা বার। প্রথমতঃ मकाधिक িকা ব্যক্ত রাজ্য সরকার শরৎচন্দের ল'বিনকাছিনী निहर এহটি الاءن لعسَّام তথ্যচিত্র নি**ম**াণ করবেন বলে জন্ম গেল। িসতীয়তঃ রাজা সরকার शल्भात श्राप्त अरुश्चर कत्रात्र । १५ छ। कत्रोहरू। তা পাওয়া গেলে শর্কদেশ্র স্মন্ত গ্রন্থের अक्षि **म**ान्ड मश्**र्कत्रन ताका मत्रकात श**कान করতে চেণ্টা করবেন। শ্র**ংচন্দ্রের জ্ঞান**-শতকাষিকী উদ্**যাপনে**র জনা মুখামুল্লী শ্রীসিশাথশিংকর রায়ের সভাপতিরে যে কমিটি গঠিত হকেছে, তারা শীবই কেন্দ্রীয় সরকারের তথ্য ও বেতারমশ্রী শ্রীগড়েন-রালকে অন্রোধ জানাবেন সৰ ভারতীয শ্ভরে অহার কথা শিল্পীর শতবাৰিকী উদ্বাপনের জন্য।

ভারতীয় ৰাভাজীৰী সংগ্রে ৫৩তছ প্রতিষ্ঠা বার্থিকী

পারতীয় বার্লাজীব্রী भारत्याह প্রতিক্টা-বাধিকী উম্মাপত হয়েছে। এই উপলক্ষে আভেনিজন্ত অন,ঠোনে সভাপতিত্ব করেন সাংবাদিক প্রফ্লেরতন সাংস্কী। প্রবর্গণ ও নব্যান সাংবাদিকদের এই মিলিত সভায় ভাষণ দিতে গিয়ে স্বনাগ্রধন্য গাংবাদিক ও সাহিত্যিক দ্লিশারঞ্জন বস: अव दशनीत जारवामिकरमत ঐক্যবন্ধভাবে সমাজের প্রতি তাদের দায়িজ আহ্নান জানান। বত মানে নিউজব্রিংন্টর যে সঁৎকট চলছে সে জন্য তিনি 'সরকারী নীতিকেই দায়ী করেন। সম্বের ঐতিহ্যু ও দায়িত্ব সম্পকে ভাষণ দেন সবাদ্রী কলিত-লোহন বঙ্গোপাধায়, स्वीयमगान वास्त्रा-পাধায়, কালীপদ বি-বাস, অজিত ঘোর ভ *রজাকিশোর* সিং প্রমন্থ সাংবাদিকপ্প। কেন্দ্রীয় সরকারের তথা ও বেতার দশ্তরের উপমস্ত্রী শ্রীধরমবার সিংহও এ সভায় বস্কৃতা करत्नन ।

गांकत विकाननाथक शांकक

"你不是我不是

गर्यस्वत सना व मन्यामम्हरू आधिक প্রেক্তারের সিখানত নিরেছেন, তা জেনে আন-বিজ্ঞানের উন্নতিকামী वाक्रियात्तरे चार्गात्तां वज्ञत्म। रक्षम् म বিজ্ঞান গবেষণাগারের এই চারজন বিশিষ্ট বিজ্ঞানী অংশ'র প্রয়োজনে বেন গরেবণ বৃহধ করে দিয়ে চাকরী খ'লংভ বাধা ন হন বিশেষ করে সেই জনাই এই প্রস্কার। गरववगाभारतव বেতমভব বিজ্ঞানীরা যে-হারে বেতন পেয়ে থাকেন এই চারজন গবেষক বিজ্ঞানীও এখন থেকে সেইরকম বেতন পাবেন। এই চারজন বিজ্ঞানীর প্রথম জন হলেন দিল্লীর ন্যাশ্নাল ফিজিক্যাল ল্যাবরেটারীর ডাঃ এ পি মিত্র। ডাঃ মিদ্র পদার্থবিদারে ক্ষেত্রে তাঁর মৌল গরে-খণার জনা ইতিমধ্যেই আন্তর্গতিক স্বীকৃতি আজেনি করেছেন। বিশেষ করে বেতার ও টোল-কমিউনিকেশন সম্প্রেক रक⁴ हर्द গবেষণা বিদেশের প্রথম শ্রেণীর বিজ্ঞানী দেরও প্রশংসা পোয়েছে। দিবভীয় বিজ্ঞানী হলেন বাংগালোরের এরোনটিকালে লেবরে ট্র**রি** ডাঃ এন রামেশন। তৃত্যীয় ও চতুথ বিজ্ঞানী হলেন ফথারুয়ে ডাঃ এ বি কর এবং ডাঃ নিত্যানক। এ'রা দ্রেন্স্ট লক্ষ্যোহের সেণ্টাল জাগ বিসাচ ইনচিট-টিউটের গবেষক।

মহার্থান্তে হরণপার লিখপ-নিদর্শন প্রাণ্ডি

জান মাসের প্রথম সংতাহে মাহারাণ্ডি
রাজ্যের আমেদগর জেলার প্রীরামপ্রে
তালকের নাইমারাণে খ্রীণ্টপ্রে দিবভারি
সহস্রালের মারামানি সমরের চারটি রোজ-ফলক পাওয়া গৈছে। এর ফলে দক্ষিণ দেশ হরণার নিগপ-ঐতিহার স্মিশ্চত প্রমাণ পাওয়া গেলো বিশেষজ্ঞান মনে করছেন। হাতি মোম, গণ্ডার ও সংরাথিস্য একটি রথ—এই চিত্রগালি রোজফলকগ্লির ওপর যোগাইকরা অবস্থারে পাওয়া গেছে।

আচার্য ন্তেশন্তন্ত বলেদ্যাপাধ্যয়ের অরপসভাঃ

গত ১৫ জনে প্রখাত প্রদেশবতী শিক্ষাবিদ ও লেখক আচার্য ন্পেল্ডাল্ড বলেদাপাধায়ের নবতিত্য জন্ম দিবস উপলকে রামকৃষ্ণ ইনফিটিউট অব কালচার-এর শিব্দান্দ হলে একটি পারণ সভা হয়ে গেছে। অনুষ্ঠানে সভাপতিভ न्त्रम्यहरम्बर शाङ्क ছाउ न्यनायका ঐতিহাসিক ডঃ রমেশচন্দ্র মজামদার। এই উপলক্ষে আচাহা ন্পেন্দ্রন্দ্র আত্ম লীবনীমূলক গ্রন্থ 'আটু দি ক্রম্-রেডিস-**এর দ্বিতীয় সংস্করণ** প্রকাশ করা হয়। এই মরণ-সভায় অধ্যাপক চিপারারি চক্রবড[ে]ী প্রান্তন বিচারপতি ফণিড্ধণ <u> ব্যামী</u> *व्वारक*भवतानम স্থাংশনমাহন বলেগ্পাধায় অধ্যাপক নিম্বাচন্দ্র ভট্টাচার্য প্রমাথ আচার্য শ্পেশ্রচদ্রের প্রাক্তন ছাত্র বক্তা দেন। সমস্ত বভাই আচাৰ ন্পেক্সচক্রের रेरतकी आधाकीवनीत वाश्मा अन्वाम

व्यवगः 🔾 देशमञ्

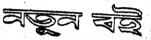
বৰ্ণীয় কৰি সংস্থান ও কলাভাতাং
সাহিত্যিকগণের হৈছি উপোগে গড় ১
আবাঢ় উত্তর কলকাভার সরুশ্বতী বাজিব।
বিদ্যালয়ের সভাককে মেখন্ত উংসদ
অনুশ্বিত হয়। চলালাকাত ভট্টাচার্য উৎ
সবের উপোধন করে কালিকাসের মেখন্ত
ও জন্যানা কাবের বর্ষা ও অন্যান অভ্যুত্ত
বর্ণনির বিষয় উল্লেখ করেন। অনুশ্বানের
প্রধান অভিয়ি ডঃ উন্মা রায় তার ভাষান
বর্ণীগলাগের উপর কালিকাশ্বার প্রভার
সম্পর্শের আলোচনা করেন। অনুশ্বান
সভাপাত্য করেন অধ্যাপক কালাকিংকর
সেনগগ্রতা

শ্বাথক সমবায় সমিতির প্রশ্ব বিশ্বাপর উপের্থন

গত ১৭ জনে কলকাতায় কলেজ দুট্ট মাকেটি লেখক সমবায় সামাত্র এ•থ বিপণির শতে উদেবাধন হয়ে গেছে: বিশিষ্ট লেখকবন্দ তথা সমবায়ী মনো-ভাবাপয় শিক্ষিত ব্যক্তিগণের সম্মিলিত প্রচেণ্টায় সংগঠিত 'লেখক সমবায় সমিতি'র বয়স ফদিও পনেরে। বছর হয়ে গেছে, কিন্তু এতকাল ত'দের নিজ্ন কোন বিপণন কেন্দ্র ছিল না। রাজ। সরকারের সম্বাষ্মন্ত্ৰী ডাঃ জয়নাল আবেদিন তবং ঐ বিভাগের রাণ্ট্রমন্তী অতীশচন্দ্র সিংগ্র **७३ উ**एकाधनी बन्ध्काल উপস্থিত ছিলেন। অনুষ্ঠানে পৌরোহিত। করেন সমিতির সভাপতি কবি ও সাহিত্যিক প্রেমেন্দ্র মিত্র। এই উপলক্ষে বিপাণর অদ্বে কলকাতা মিউনিসিপালে মিউ-জিয়াম হলে একটি প্রীতি সন্মোলন-এর আয়োজন করা হয়। এই সন্মেলনে ভাষণ প্রসংগ্র শ্রীমির বলেন ঃ 'এ কাজে পাঠক সাধারণের অকুঠে সহান্ভতি ও সহ যে^{ন্}গতা পাবার আশা আমরা তু করিই সেই সঙেগ আমাদের উদ্দেশ্যের পরিপ্রথ না হলে রাণ্টীয় সহযোগিতাও আমাদের সমবায় রাজ্যুমন্ত্রী অভীশচন্দ্র সমবায়ী ভারনা সমপ্রেক কবিগারে: রবীন্দ্রনাথের বিশেষ **प्रा**टनत উল্লেখ করে সীমিত হলেও স্কর একটি ^{ব্}কতা করেন।তিনি বলেন যে: জাতি গঠনম্লক সাহিত্য রচনা ও প্রকাশনের ক্ষেত্র সাহিত্যবেবী ও সাহিত্যরসিকদেও মিলন ক্ষেত্র হলো এই সমবায় স্মিতি।' এই সম্মেলনে বহু বিশিষ্ট লেখক এবং স্বাহতার**সিকজনকে শ্বাগত** জানিয়ে সমিতির সম্পাদক জোক্ষনা সিংহরার বেশেনঃ 'সমিতির গ্রন্থবিপাণকে আর পাঁচটি বইয়ের দোকান থেকে স্বতন্ত্র বৈশিষ্টামণ্ডিত ক'র তুলতে আমরা আগ্রহী। সেজনা গ্রন্থ-বিপুণি সংক্রাত একটি পাঠাগার স্থাপন এবং স্বকীর উদেদেশ প্ৰতক প্ৰকাশে অভিনাধী গ্রন্থকারদের বিভিন্নভাবে সহায়তা করাও আমাদের পরিকলপনার অভা।

এই সমিতির উদ্যোগে এখন প্রাক্ত ১১খনি গ্রাম্থ প্রকাশিত হয়েছে।

-Betele.



প্লাদের রং (মাট্র), জ্যাছু বল্লোপার্যার। জিপিকা ৩০ (১ এ কলেজ রো কল্ল-কাতা-৯। চার টারা।

শ্রীজ্যোত্ বলে।।পাধান্ত একজন প্রতিক্রিক্ত নাটাবার । সম্প্রতি প্রকাশিত প্রান্ত নাটাবার রহ নাটকটিতে তাঁর দাঁবাকালের নাটাশিলপ্র জার এক পরিগত রূপ পাওরা প্রেলা মোট তিনটি দ্রুলা একটি মাত স্মান্ত নাটারে ক্রান্ত ক্রান্ত নাটারে ক্রান্ত ক্রান্ত নালার নির্দিত আর মোট এগারোকারে কর চলার নির্দিত আর মোট এগারোকারে কর ক্রেন্তেই নাটকটির গতিমরতা বেখা দিয়েছে। দিনে বেস্ট্রেন্ট বাতে শ্র্তিভ্রান্ত ক্রান্ত ক্র

SHAKESPEAR'S MACBETH

EDITED WITH INTRODUCTION AND NOTES

H. J. C. GRIERSON (Bound Rs. 18/ Paperback Rs. 12/-)

Rupa . Co

15 Bankim Chatterjee Street Calcutta-700 012

।। লেণ্ঠ রচনাবলী প্রকাশিত হচ্ছে ॥

वलस्र वाथ ठाकुरत्रत

मन्भर्ग तहनावनी—३ थ'७/६८<u>"</u>

দেবেন্দ্র নাথ ঠাকুরের

সম্পূর্ণ রচনাবলী— ২ খন্ড/২৫;
প্রতিটি রচনাবলী র জনা ১০; দিরে প্রাহক হতে হবে। হারা এখনও গ্রাহক হননি তারা সম্বর গ্রাহক হন। কাগজের দুম্প্রাপাতার জনা ম্বদ্প সংখাক মান্তিত হচ্ছে। ম্লোও ব্যাহ্ম করা হবে।

জে, এন, চক্তবতী এ্যাণ্ড সম্স ১০. বন্দিন চাটার্লি স্মাট, ফলি-১২ প্রেমের থেকার পিছনেও যে সামাজিক ও
অথবিকটনবৈশ্যার স্তা—তাকে সপার্ট করে
কেন নাটাকার। পকালা, অজয়, কিলোরের
মধ্যে লিখার অপিতম্বকে নাটাকার যথেও
কনতার সংগ্যে চিক্তি করেছেন। শির্থার
আত্তমনা, অসিত রারের পলালের হাতে
মৃত্যে ঘটনা নাটাম্লের সার্থক।

নিশার (উপন্যাস)। গোপালসের চট্টোপাধ্যার। নর সাহিত্য প্রকাশ, ১২১-সি সীতারাম ছোর স্ট্রীট, কগকাতা-৯। দশ টাকা।

স্কুতা, অবনী মনীষা, অপরিয়েও পারিকাত, হেমেন বকসী, লিসা উয দিগ্রীম্বাব,—এরকম অজস্ত্র চরিত্র ও ঘটনা এনে লেখক গোপ লদেব চটোপাধায় ত্রি **क्रिमादा छेश**नार्जाहे शाठकरम्ब छेशहात पिरश-ছেন। ফিল্ড উপনাসে তেমন কোন কমভার পরিচর দিতে পারেন নি। অবনী এর নায়ক. স্কৃতার সংশ্যে প্রেম বার্থতা মনীযার সংখ্ ভাকে বোগ করে মন্ত্রী দিগনিবাবকে **স্কাশ্ডাল রটনা কোটে কেস, উবার** গৌণ কাহিনী-এসবই ক্লান্ডকর সহ্দর পাঠক-मिन् जारणी शत्त जारथ ना; कातन সংसारश বেশী বলার চেল্টা বকুতা দেওয়া কথা বলার মধ্যে কৃতিম বাশনো ভাগ্ন কাহিনীর মেলো-ভুচ্চ টেকি সিচ্যোগত প্ৰবই উপন্যাস্তিকে **भार्यामात गर्क ब्**लान मिलमेह रहेरन वारथ ভার বাড়তি কিছু, নেই। বাকুজার ঝাটি-পাহাড়ী সকল বর্ধসানের মেমারি অঞ্জ কলকাতা শহর-নানা জারগায় নায়ককে খারিরেছেন। উপন্যাস ভাই দীর্ঘা যে কথা বলতে চেয়েছেন লেখক অবনীর সেই নিবাসক মার্নাসকতা—ভাতে এত পরকারই পড়ে না। শেষে উত্তর প্রাদেশের আলমোড়াব আশ্রমের দিকে অবনীর রক্ষচয় জাবন-যাপনের ইঞ্সিত দিয়ে লেখক চরিত্রের আনিত্য ন্যায়ত্ত নন্দ করেছেন। কেবল গণ্প পড়তে বাদের ভাল লাগে দিশারা তাদের ভাল শাগভেও পারে।

সদপ (সংক্রমান)। মদন দাশ, প্রভাসকাদিত

তন্ত্র ক্রেম্বের কর্মণ। লিপিকা, ৩০ ১১
এ কলেন্ড বো কলকাতা-৯। পঢ়ি টাকা।

বলন সাশের—শ্রু একা একা গ্রুডন্গতিক এবং ও বিস্তান, প্রভাসকাদিত
ভদ্যে ভাগ লাল দ্রিভোল সংসার বেগ্রে
থাকা স্ত্রভ শতাংশ ও যথারীতি, রতেন্ধ্রর
বর্মাণের ক্রাথবিশ্ব বীশ্ব ও সোনার হরিল,

চার দশকের বাংলা গান ১৫্

প্রকাশিত হলো—
রবীদেরতের গাঁতিকবিদের গাঁরচিতি
সহ পাঁচ শতাধিক
নিবাচিত গানের
অনবদ্য সংকলন
প্রকাশ ভারতী
১০নং রামধন মিচ
লেন, কবিছহান্দায়তি, বে ব্যক্ত কেটার,

माब डाकार्ग, कांगा-52;

ধীথি চলে গেছে, তিন পকেটমার ও বিলাসী ্রবং জাবিন যে রক্ষা-এই গ্রেপ্সালি সংগ্ নামের সংকলনটিতে একত করে প্রকাশিত হয়েছে। তিন গলপকাবই তর্ণ ও নবীন। ্রশ্চয়ই গ্রাহপর মধ্যে কোথাও কোথাও কচি ্জ আছে—তা বিষয়-ভাষন য় যেমন উপ দ্বাপনারীতি ও গদ্যভাষাতেও তেমনি, কিণ্ডু প্রতাকের রচনায় প্রতিশ্রুতি আছে। আরও কিছা ঘষা-মাজা করলৈ কয়েকটি গলপ িনটোল শিক্সা-বন্ধন পেতো। গলেপর বিষয়ে যুবকের বেকারীত ভাবনা প্রেম আধ্রনিক कीवन मधामा व्याची। महन नार्यंत शास्त्र বেকার নায়ক, উত্তমপরেষ নায়কের ও ভার প্রেমিকা মমতার বা রাজমিস্ট্রী বংশটিরণ এবং তার সংসার্চিত মন্দ নয়। কিন্ত বর্ণনার অতিরেক ও অপ্রাস্থিগক ক্লান্ত-কর। এ দোষ প্রভাসকাধিত ভদ ও বতে!-শবরের থাকলেও তুলনার কম। রতেঞ্বর বমশেশর বীথি চলে গেছে গলপটি ভাল লাগল। জীবন যে রক্ষ গলপটিতে ক্ষতার পরিচয় কাছে। প্রভাসকান্তি ভদ্রের পর্য-বেক্ষণ শক্তি প্রবল। তাই বিষয় ও চরিত্র-ভারনায় তার চমংকার প্রিচয় পাওয়া গেলেও গলপ কথনে আরও সংক্ষেপ হওয়ার নরকার এ'র। মোটকথা তিন গলপকারই বিষয়ে ও প্রকাশরীতিতে আধ্বনিক এবং মংগদ্যে প্রতিগ্রাতিস্কাল্য। এ'দের কাছে ভবিষয়তে আরও ভাল গলেপর আশা রাখি।

অনান্তাত কৰিতার শ্বাদ (কাব্য সংক্রলন)।
সম্পাদক—মিহির চৌধ্রী। ৩৬ ১১১
বেনিয়াটোলা লেন ক্রক্তান-১। দু

টাকা পঞ্যাশ প্রাসা।

গ্রামবাংলার একুশাজন কবির প্রত্যাকের
একটি কি দুটি কবিতা নিয়ে এই সংকলন।
প্রত্যিক কবির আলোকচিত্র ও সংক্ষিপত
কবিরা এতে ছাপা। হরেছে। কোন কোন
কবির কবিতায় কবিকামতার: কিছু পরিচর
আছে হাদিও তবু কবিতা নির্বাচনে কবি
ও সম্পাদকের আরও মৃত্যানেওয়া উচিত
হল। তানেক কবিতায় ছন্দের ভূক স্পক্তান
সম্পাদকের দুখি ভূমিকার সংক্যা সংকলনে
স্থাগ ভেমন বোঝা গেলা না। ছাপার ভূপ
অক্তা। তবে তার্গ ও প্রবীণ এই কবিদের
সংকলন প্রকাশের উদ্যোগ উদাম—বিশেষ
করে মফ্রুপ্র গ্রেক নিশ্চাই প্রশংসাহাঁ।

প্র-পত্রি

গণেক্রী—সংপদক ঃ খাদতন্ত্রাস। ৪ ৯ আফ্টার মস্কিন ধেন। কলকাতা-২৭। দাম দুটাকা।

কবিতা ও কবি বিষয়ের প্রিকা
গগেগারীর বতামান সংখ্যাটি নানা কারণে
উল্লেখযোগ্য। মেদিনীপরে বিহার প্রেলিয়া বর্গমান মালদা অন্তলের কবিদের
সমীকা সমপ্রণ গুলিনা। এই কাতেরী
প্রমান বিশেষ চোথে পড়ে না। ব্যুখদেব
বস্ব করেবটি চিঠি ছালা চারেছে। কবিতা
লিখেছেন গোপাল ভৌমিক শৈলেনচন্দ্র ভট্টাচারণ গোরাপা ভৌমিক, সভা গছে এবং
আরা প্রেক্লন। শৃভ্শপ্রম্য ভট্টাচান্তের
আরা প্রক্লেটি আক্রশ্রীয়।

নতুন পরিবেশ—(কাতি ক-পোষ্) সম্পাদক ।
ধনজয় দাশ ও সতীম্প্রনাথ মৈত।
৩০ রামকৃক সমাধি রোড। বাক-ই।
ফার্ট—১৮। কলকাতা—৫৪। দাম
দাই টাকা।

ভিনটি প্রথম লিখেছেন নেপাল
মঞ্জ্যদার (মুদ্ধ ও ফাাসি-বিরোধী সংখ
এবং রুসীংলন্থ বিদ্ববশ্ধ ভটাচার্য
(বশ্রুবাদের সংজ্ঞা ও ইতিহাস) এবং
সাকুমার মিত্র (জামরা ও আমান্তের প্রতি-বেশা)। অনেকদিন পরে কবি রাম বসুর
একটি প্রশিপা একাবক নাটক প্রকাশের
কৃতিছ এই পতিকাগোপ্তার। একটি গশ্প
লিখেছেন অমল দাশগুশ্ত এবং ক্রোন্
নাটক প্রসংগা আলেচনা করেছেন স্মান্তর্য
নাস্ত্রাকী। করেকটি সান্তিত কবিতা
এবং প্রতক্ষমালোচনা সংখ্যাতিকে সম্প্র প্রাণিতক—সংপদ প্রিমল চক্রবত্তী। ৬৫ ফ বর্মারক জেন। কলকাত্য-

লিখেছেন নারেশ ঘোষ, কৃষ্ণ ধর পরিমল চকরতা নিনিলরখন কৃষ্ণ প্রদাপ সম্ভাগিয়নাথ রজ দিবজেন রায় এবং মারে অনেকে: ভোট আকারের পরিকা হলেও ভানককেই আকুটে করবে।

স্থে**ৰীজ—সম্পাদক: স্**লিত মৌলিক। ৯০ইচা৮ অভয় পোষ লেন, কলকাঙা—৪। শ্যু চল্লিশ প্রসা,

স্ভাষ দকেশ লেখা ব্রিড্রের কথা-ভাষার কবিতাটি ভাগলা লাগল। প্রছদ সালের। সম্পাদনার বাংপারে য্ভাবান হলে প্রিক্টি সমাদ্তি হবে।

থাক-সম্পাদক: শিবরতন বকেদাপিধায়। ৬৫ রায় বাহাদুর রোড। কলকাতা-৩৪। দাম এক টাকা প্রাশ প্রসা।

গদপ কবিতা প্রবংধ লিখেছেন আমিয়-বংধ্য সিংহ্ কৃষ্ণ ধর, কবিতা সিংহ্ দুর্গাদাস সরকার রণজিৎ দাশগদেও এবং আরো অনেকে।

জিপাৰা। সম্পাদনা রাণা চট্টোপাধ্যার এবং স্বজিত ভাদুড়ী। ৩৭ এ জঃ দেওদার রহমান রোড। কেক গার্ডেমস। কলকাতা-৪৫। দাম এক টাকা।

রাণা চট্টোপাধ্যায়ের বাংলা **কবিতার** ্পান্তর প্রসংশ্যে নিবন্ধ এবং অশোক দত্ত-চৌধুরীর কাবা নাকৈ ঘুত্র ভাগো **লাগল।**

आर्थक<u>ः</u> ०० अभ

গ্रহीत গ্र

রবিনসন ক্রুসো হয়ত মেয়েই ছিপেন, শ্রীপ্রেমেন্দ্র মিয়ের বিখ্যাত ছোট গলপটি পড়ে এ-সন্দেহ আমার এবং বোধহয় অনেকেরই হয়েছিল। কিন্তু চালি চ্যাপলিন যে সংস্কৃত জানতেন সে বিষয়ে আমার কোন সন্দেহই নেই। নইজে তাঁর স্বৰ্মাগ্যা (গোল্ড রাখা) চলচ্চিপ্রের শেষ দৃশ্যের আইডিয়াটা পেলেন কোথা \ থেকে : যদি বলেন ও ত' এক চিরণ্তন আইডিয়া— বিভিন্ন সাহিত্যেই সদৃশে ধারণার সংধান পাওয়া যায় তবে অবশা সামানা আহান নিয়ে আমার পক্ষে প্রতিবাদ করা কঠিন হয়ে প্রছে ৷ **স্তিটে তো বিশ্বসাহিত্যের সং**শ আমার যুৎসামানা পরিচয় --ইংরেজীতে যাকে বলে আকোএইনট্টানস—নেই! ত্ব-ও দ শ্যান্তির ১৪পলিনের চলচ্চিত্রের ঐ শেষ সংক্ষিণত বিব্রণ দিচ্ছি আপনারাই বিচার করে দেখান।

স্বৰ্থনি আবিংকারের পর নায়ক আজ ধনী-কোটিপতি। স্বতই তার জীবন্যায়ায় ভাকলপুনীয় পরিবর্তন এসেছে। জাতে ভঠার পালায় তড়াক করে একস্ঞ্গে অনেক ধাপ্ অতিক্রম করার বিড়ম্বনাও তাকে পদে পদে ভোপ করতে হচ্ছে। এক মহাসম্ভুগামী জশ্বানে নায়ক ইউরোপে বেড়াতে যাক্ষেন। পোশাক-প্রিক্তদ সম্পূর্ণ নিখ্'ত পদ-ক্ষেপ্ত স্দৃত্ সম্পূর্ণভাবে নবাজিত আভিজাতোর দ্যোতক। শারীরিক দিক দিয়ে প্রয়েজন ন। হলেও ছড়ির ওপর ভর দিয়ে হাটছিলেন নায়ক। প^{*67}তে তাঁর একজন সহচর। গ্যাংওয়ের ম্বে এসে থমকৈ দাড়ালেন নায়ক। ব্যাপার কি? পাশে এক প্রিত্যক্ত চুর্ট্খন্ড পড়ে, তখনও তা থেকে ধ্য় নিগতি হচ্ছে। চহিতে চুরটেখন্ড তুলে নিয়ে টানতে শ্রু করলেন নায়ক। ত দেখতে পেয়ে সহচরটি পেছন থেকে ছাটে এনে চুর্টখন্ডটি কেড়ে নিয়ে আন র মাচিতে ফেলে দিলেন, এবং ভারপর নিজের পকেট থেকে চুরুট-কেন্স বের কতে নায়কের সামনে খ্যাল ধরলেন। নারক ততক্ষণ সন্দিবং ফিরে পেয়েছেন। একবার সহকারীর মাথের িদিকে এবং একবার চুরটে-কৈসের দিকে क्टाइ दलालन : थाःव्ह इसे। से मृत्या মায়াকর—চা পশিনের মূরেথ যে ভাব করেট

তথনই মনে প্রশ্ন উঠেছিল ঃ নারক তরি সহচরকে ধনাবার দিকেন কিসের জন্যে -ঠৈতনা ফিরিয়ে দেবার জন্যে না একটা গোটা চরটে অফার করার জন্যে?

সংস্কৃতের গৃংসটি তো সকলেরই জানা, এবং গ্রুপটির হিতোপদেশ বা মর্মাল হল । সারমেরকে সিংহাসনে বসালে সে ঐ সিংহাসনে বহে উপানং চর্বণ করে।

চিবকাল বাস্তা থেকে বিভি-সিগারেটের টুকরো কুড়িয়ে টানা ষর প্রভাব সে যাদ চুঠাৎ স্বর্থনির মালিক হয় তাহলে বেশ কিছাদিন সে ঐ অভ্যাসেরই দাস হয়ে থাকবে অথবা জীববিশেষকে সিংহাসনে বসলেও সে ভার জাতিধর সহসা পরি-ভ্যাগ করতে পারবে না-এই ধারণা ব হিতোপদেশ সম্পূর্ণ পরিত্যাগ করতে পারবে না—এই ধারণা বা হিভোপদেশ স্পূর্ণ মেনে নিরেছিলায়। কিল্ডু জানতায় না বে ভাগারা ছাড়াও অনানা লোকে ভোগের স্যোগ পেয়েও তা প্রত্যাশ্যান করে—ফটেপাত ফাদের আশ্রয় তারা অনেক সময় আচ্চাদিত আশ্রয়ের চেয়ে ঐ ফট-প।তকেই পৃষ্ঠি করে। এই জ্ঞান আহরণ ক্রলাম সি-এম-ডি-এ বা বৃহত্তর কলকাতা উল্লয়ন সংস্থার সাম্প্রতিক প্রতিবেদন :থকে।

জনপথ ঃ

ফুটপাথ হল রাজপথের জনপথ।
রাজপথ রাজারাজড়ার জন্যে পথ নয়,
শক্টাদির জন্যেই নির্দিণ্ট পথ আর জনপথ
হল পিডেসটায়ান বা পদযাতীদের জন্যে।
ধরে নেওয়া বেতে পাবে, বারা শক্টাদিতে
দ্রুগ করে ভারা রাজারাজড়ার সমান ম
হলেও পদযাতীদের থেকে ভিন্ন জাতের
লোক। ভাই প্রথম প্রেণীন জনসাধারণের
হাজপণ আর শিক্টায় শেণীন জনসাধারণের
হন্যে জনপথ। মোর্কানীয়া অবশ্য জন
প্রথম একটি বোশহর মর্যাদা দানের
উপেদশা ফুটপাথ বা পায়ে হাঁটার শথ
না বলে প্রভ্রেন্ট শান্ধনারানা পথ বলে।
কলকাডার জনপ্য-একটি প্রভিবেদনঃ

কলকাতার অধিকাংশ জনপথ বা ফ্টে-লাগ (হিন্দি ভাষাভাষাদের অন্করণে আক্রমাল ক্ষাক্র ফটপাতকে শার্থ ফ্টে

বলতেও শ্রে: করছে) যে আর পায়ে-ছাঁটার পথ নয় এ-অভিন্ততা একপ্রকার জনীন। জনবহল রাজপথের জনপথ न्ध यूरी @ लामामान वावज्ञासीतम्ब न्यासा মোটামটি অধিকৃত, আর অপেকার্ড কা-বিরল অঞ্জে জনপথে বাসা বে'থেছে এক গ্ৰহুদি বা গ্ৰতাশী জনগোড়ী। अয় মাটেই হাহাবর বা জাম্মাল মালবলোও নয়, জীবিকার সংখানে এরা দ্র-দ্রাণ্ডরের পল্লী অন্তল থেকে মহানগ্ৰে এসে শেকড় গেডেছে। এদের অনেকে হয়ত দিল্লী বা বাদবাই হোড়ে পারত। সতেরাং **কলকাভার** আস্টা মোটাম্টি একটা আপ্তন, এর মধ্যে ঠিক কোন পরিকলপন নেই। কল-কাভার জনপথে অধিণ্ঠিত এই মানবগোণ্টীর কথাই বলা হয়েছে কলকাতা মহানগরী বা বৃহত্তর কলক।তা উলয়ন সং**স্থার** (সি **এগ** ডি এ। প্রতিবেদ্নে।

প্রতিবেদন অনুসারে ২ লক্ষ লোক
কলকাতার জনপথে বাস করে, আর এই
সংখ্যা দিন দিন বৃণিধ পাছে। বোদবাই-এ
নাক জনপথে বসবাসকারীদের সংখ্যা এর
প্রায় ৫০ শৃতাংশ বেশী বা ৩ লক্ষের মত।
কিন্তু সেখানে গৃহহীন মানবংলাণ্ডীর
বসবাস-পদ্ধতি কিছুটা জন। ধরনের বলে
সংখ্যাটা অত বেশী মনে হয় না। ভারাও
জনপথে বাস করে কিন্তু জনপথ ঠিক
দখল করে নিতে প্রেমি। ফলে বেশ্বাই
কল্পন্ডার মত এখনও চাইর ধাশির শহর বা
সাক-টাউন হয়ে এবেও নি।

প্রতিবেদনটিতে বলা হয়েছে যে, কলকাতার জনস্থে আগ্রর্গুণকারীরা শ্রে
যে বিহার-উড়িখার মত পাশ্রবতী রাজা
থেকে এসেছে তাই নর, অনেনকেই এসেছে
সংদ্র উত্তরগ্রেদশ ও গ্রেক্তরাট এবং অব্ধ প্রদেশ ও ভামিসনাড় থেকে। গ্রেক্তর্গুট থেকে বোদ্রাই-এর এবং উত্তরগ্রেদশের সনেক অঞ্জল থেকে দিল্লীর দ্রুক্ত কর, তব্র তারা কিল্ফু বোদ্রাই-দিল্লী না গিরে কলকাডাতেই এসেছে। কারণ? করেণ কলকাডাতেই এসেছে। কারণ? করেণ কলকাডা মহানগরীর উথর্ন সংস্থার প্রতি-বেদনে ব্যাখ্যা করা হ্রান।

জমিবকার সংখ্যনেই তারা কলকাডাতে এসেহে এবং অনেকেই জমিবকার সংখ্যন করে নিয়েছে। তারা রিক্সা চালায়, মাথায় বা ঠেলাগাড়া করে খাদ্যধ্রা ও আন্যানা পণ্য ফোর করে বেড়ায় জঞ্জাল ঘেণ্ট ছেড়া মাকড়া প্রেনো কাগক প্রভাত সংগ্রহ করে এবং সংযোগ হলে দিনমজার হিসেবেও খাটে। যারা এমন কিছু, করতেই সমর্থ হারা ভক্ষাব্তিই তাদের অবলম্বন। তবে অনেকেই সমর্পভাবে ভিক্ষাব্তির ওপর মাধ্যমে উপার্জন বৃদ্ধির প্রচেণ্টা করে ঘাধ্যমে উপার্জন বৃদ্ধির প্রচেণ্টা করে ঘাধ্যমে উপার্জন বৃদ্ধির প্রচেণ্টা করে ঘাধ্যমে উপার্জন বৃদ্ধির প্রচেণ্টা করে ঘাক্ষার

একটি স্থালোক তার প্রে ও কনাকে সংগ্রা নিয়ে কলকাতায় এসেছিল জানিকার সংখ্যান। সকালো বিকেলে য়া ও মেয়ে গ্র-পরিচারিকায় কাজ করে এবং সম্থোর পর পাটটাইম কাজ হলো ভিক্তে করা। এই-ভাবে উপাজনি করে স্থালোকটি তার ছেলেকে স্কুলে পাঠাতে সমর্থ হয়েছে। এই পরিবারটি একটি প্রিলন থানায় অনতি-দ্রেই বাস করে।

এই গৃহহান জনপথবাসীদের সকলেই নিক্তর বা সর্বহাবা নয়। অনেকেই তাদের উপার্জনের এক মোটা অংশ সপ্তর করে নির্মাদতভাবে তানের বাড়ীতে পাঠিয়ে পাকে, এবং এদের মধ্যে অনেকে দৈনিক ২৫-৩০ টাকা করে উপার্জন করে।

নিঃস্ব যথন নয় তথন তাদের পক্ষে গাহে---আছেদ্দনের মধ্যে বাস করার ইচ্ছে ইওয়াই স্বাভাবিক। কলকাতার জ্বনপদ-বাস্থীরা নাকি এই নিয়মের বাতিকম বলেই পরিগণিত—অর্থাৎ তারা ফুটপাত ১ ছেড়ে স্থায়া আচ্চাদনের মধ্যে যেতে চায় না। কারণ বোধহয় এর জনো যে ব্যয়ের সমভা-বনা তাসামানা হলেও তার জন্যে তারা প্রস্তুত নয়। অবশা অনা কারণও থাকতে পারে খোলাগেলা জনপ্র ছেড়ে খুপ্রির মত ঘরে গিয়ে ভারা হাঁপিয়ে উঠতে চায় না। সি-এম-ডি-এ'র প্রতিবেদনে এ বিষয়ে भः×भ•ष्ठे किष्टा वला इश्रांन—माधा रयः छाता ফ্টপাথ জেড়ে প্যায়ী বাস্প্যানে হোতে অনেক সময়ই নারাজ ভার ওপরই পরে, আরোপ করা হয়েছে।

खान अक मानवरगान्त्री :

কলকাতার জনপথে অধিন্ঠিত মানব-শোন্টর মধ্যে এক উপগোন্ডী আছে, তাদের বিবরণও প্রতিবেদনটিতে বিশেষ প্রথান পারানি: এরা হম্প প্রশিচ্যবালেগ্রই লোক— জনগোন্ডী নয়। অবশা এরাও এসছে উদ্বাহোর সংস্থান করবার জনো, কিংতু কিব বোধহয় প্রচলিত তার্থে ব্যজিরোজনাসের উদ্দেশ্যে নয়। কারণ, এরা নিজেদের নিয়োগযোগ্যভাহীন বলেই মনে করে।

এই স্তেহান মানগগোষ্ঠী বা উপ-গোষ্ঠী হল প্ৰ'তন পশ্চিমবলোৱ প্ৰ'তন কৃষি-ভাষিক বা ক্ষুদ্ৰ প্ৰমীণ কাৰিগৱ। কৃষিব জাত প্রবার চাহিদা হাসের দর্শ গ্রামীণ অর্থা-ব্যবস্থায় এবেরও প্রয়েজনীয়তা হ্রাস প্রেক্তেছ। তাই দিন গ্রেরান করা কঠিন বলে তারা এই মহানগ্রের এবং এর আন্দে-প্রান্ধেল আন্দর্ভানা গ্রেডেছে।

ফটেপাত রেল-ভেটশন, প্রেলর তলায় আশ্র গ্রহণ করলেও অর্থাৎ গ্রহণীন হলেও গ্রের প্রতি সহজাত আকাল্ফা এদের আছে। ভাই সুযোগস্বিধা পেলেই ই'টকাঠ াড়য়ে ছে'ড়া থাল-কাপড জোগাড় করে বাগবাজারের খালধারের মত বেওয়ারিশ জামর সম্খান পেলেই তাতে তারা আম্তানা গড়ে ভোলে। আচ্ছ দনের মধ্যে বাস করতেই তারা অভ্যস্থ-নীল আকাশের নীচের মোহে এখনও ঠিক পড়েন। তাই সংযোগ পেলেও জনপথ ছেডে নিমিতি বাসম্থানে যেতে চায় না-এই ধারণা বোধহয় পশিচম-বংশার গ্রামীণ অর্থ-ব্যবস্থা উংখাত এট মানবগোষ্ঠীর ক্ষেত্রে প্রযোজ্য নয়। তবে ঐ বাসস্থান ভিক্ষাক্ষেত্রে কাছাকাছি হওয়া চাই, কারণ ভিক্ষাই যে তাদের প্রধান টেপ-জগীবকা।

महामश्रास्त्र बीन्छ :

ব্ছত্তর কলকাতার বীদত অঞ্চলে বাস করে ২২ লক্ষ লোক বলে সি এম ডি-এর উক্ত প্রতিবেদনে জানান হয়েছে। এও অতি পরিদ্রাদ্যক তথা। কিন্তু বিদততে যারা বাস করে তাদের অকম্পা নিশ্চয়ই যারা সম্পূর্ণ গ্রেইন যারা তথাকথিত বেওয়ারিশ জামিতে অনিশিচয়তার মধ্যে আগ্রম নিয়েছে তালের উল্লেখন আল্য নিয়েছে তালের ভাল। কারণ সমাজবিদ্যায় নান্যতম বলে নির্দিত খাদা পরিস্কর বাসস্থান ও সেকাস—চারটেই তারা কিছু না কিছু পেরে থাকে, যদি বা গ্রামত ভারতমা যথেকটই আছে। সেইজনা মনে হয় বিস্ত উলয়নের আলে এই সম্পূর্ণ গ্রেহীনদের সমস্যাব মাক্যাবলা করা প্রয়োজন।

গ रशीनत्मव नशनाव स्माकाविना :

অথনৈতিক উন্নয়নের অন্যত্ত সচ্চক হল
নগরীকরণ বা আরবানাইজেশন। নগরীকরণদশ্চতিতে সামস্ক্রমান না থাকলেই নগরাণ্ডলে
স্থেইনিদের সমস্যার উল্ভব ঘটে। অথনি,
নগর গুলের অর্থা-বাবস্থা যদি গামীণ মধ্যাবাবস্থার চিট্রে আকর্ষণীয় হয় তবে গ্রাম
ছেড়ে লোকে নগরাপ্তলের দিকে আসতে
চাইবেই। এর ওপার আবার যদি গামীণ অথনি
বাবস্থার দিন অবন্তি ঘটতে থাকে, তবে
এই ক্রেন্তে যে গতিব্দিধ ঘটতে ওাও সহতে
অন্মেয়। আনাদের মত অনানা উন্নয়নশীল
থেখন আরু স্বল্পায়তে শক্ষণি বিশেষ
চালা নয়। চেশা এই সমস্যায় প্রভ্ছে।

এই সমসার সমাপনে ইনেদানেশিয়য় গ্রামাণ্ডল থেকে নগরাণ্ডলে আলমনকে বিশেব-ভাবে নিয়ন্তিত করার চেন্টা করে নগরাণ্ডলের অধিবাসীদের পরিচয়প্ত দেও্যা হয় এবং পরিচয়প্তাবিহীন বাজিদের আবান গ্রামাণ্ডলে থেকে জানা যায় যে এতে বিশেষ ফল ফলেছ। কিন্তু প্রদান হল । অনা ধরনের রঞ্জী ব্রংপ্থায় ইন্দোনোশায়ার পক্ষে যা, সংজ্ঞানা আমানের পক্ষে তা কি কোন্যতেই সম্ভব : ঘোষত নীতি সত্ত্বে কলকাতার ফ্টিশত ধেকে বেআইনী দুখলিকার বাবসায়ানৈর সার্ব্য জনপথ পদ্যাতী জনসাধারণের জনগঠ সংর্ক্তিক করা সম্ভব হচ্ছে না কেন এবং নার্বীকে যথনে সাজাবার কথা না হয় ছেড্ই দিলাম? কারণ সমপ্যাণ রাজনৈতিক।

স্তরাং আমাদের ক্ষেত্র অনাভাবে
সমস্যার সমাদ্র আনাভাবে অগ্রসর হাও
হবে। চুড়ান সমাধান হল অবশা গ্রাদ্র
অপ-বাবস্থানে াকর্ষণীয় করে ভোলা এবং
দেশের অথা ক্ষেত্রা আঞ্চলিক ভারস্মান্
হীনতা দরে বলা। কিন্তু এই দুই-ই দীর্ঘান্কলীন উল্পুনি প্রশান। তত্তিন জনপথে
গ্রহীন স্পান্তীর অস্তিভ পাশাব্ক
বৈধন্যেরই বচয় প্রদান করে চলবে।
স্তরাং আশাক্ষ্য করা দরকার।

আশ্ িড্র করা যেতে পারে ভা হল া গৃহহীনদের পানববসনের ব হিত্ত তেই ব্যবস্থা। এ জন্যে কিছুটা **বলপ্র**য়োগ -রাজনীতির ্য় পুলিশীজনুল্ম বলে অভিহিত াও-প্রয়োজন হলে করতে হবে। কঠি কংসায় রোগী অনেক ক্ষেতেই রাজী হয় দরদী আত্মীয়াস্বজনও ত্তুত সমথ≦ন কা না। তব্ভ ডা করার প্রায়েজন হয়। সেইরকম গ্রহীনরা গ্রহে বাস করতে না চাইলেও বাস করাতে হবে।

জানা যায়, এ ব্যাপারে সরকার অপ্রণী
ইংস্চেন এবং ইকাফের একটি বিশেষজ্ঞ দল
ভারতের বিভিন্ন মহানেগরে তথ্যান্সেখান করে
কেড কেচ। এই লাসেরই (জুন) দিবতীয়
সংতাহে দলটি কলকাতায় এসেছিল। দলটির
কাছ থেকে আংতজাতিক সাহাযোর প্রতিতা্তি পাওয়া গেছে।

উপসংহার :

এইভাবে আগতজগাঁতিক সহায়েব মাগণেট এই বিরাট সমসার সমাধান করা সম্ভব। তবে স্মরণ বাগতে হবে যে সভ্যত, পরিকল্পনা ইতাদি এক কথা এবং প্রি-ক্লপনাকে সাজ্যা বাপায়িত করা সম্পূর্ণ ভিন্ন বাপার। পরিকল্পনা শ্পে; যেন প্রচারমা্থী ও চিত্তাক্ষাকি প্রকাশে শেষ না হয়।

আরও একটা কগা। ভাপতিতিক দিক
থেকে যে-কোন গোষ্ঠী-ভাবিনকে থণ্ড থন্ডভাবে দেখা যায় না। স্তরাং গৃহহীনে গ্র
দেবার বাবদখার সংজ্য সপ্তের স্মারণ রাখাত
হবে যে তারা যেন দেখা পার্যাহত ঐ গুড়ে বস্থবাস করতে পারে। অর্থাৎ পর্যাহত বার্যার
শান্সানের—রাজ্যবাজ্যারের সম্ভাবনা সহ
শান্সানের—বাসম্পা করতে সবে। নাম্ম
কি ক্ষা বা ভামি সাাগের পর আ্যার অ্রবতর্প করা ছাড়া গান্যত্ব পার্যার না।

২৪ পরগণা জেলা সাহিত্য সম্মেলন

১৪ বর্ষ ৪র্থ সংখ্যায় চিঠিপর বিভাপে
প্রবীর ঘোবের পরিটি পড়লায়। প্রবাসী
বাংগালী আমরা—ডাই ২৪ পরগণা জেলা
লাহিত্য সন্দোলনে আমাদের প্রভাক্ষ কোল অভিজ্ঞতা নাই। অমৃত-এর পাতায় সন্প্রতি অনুষ্ঠিত এই সন্দোলন সন্বাধ্যে কিছুটো যা
লানতে পেরেছি। স্তরাং তার ভুল-চুটি
নিয়ে আলোচনা আমাদের পক্ষে সম্ভব নর
এবং এই পরে সেটা উদ্দেশ্যও নয়। আমি
শান্ত্র এই চিঠিতে শ্রীঘোবের পরের একটি
পর্যাবর তীর প্রতিবাদ জানাছি। এক জারগার তিনি প্রদন রেখেছেন,—...ক্রেকজন
অপেক্ষাকৃত নামীদের প্রিচয় দ্ব তিন
লাইনে (.....) অথচ ক্মনামীদের বেশী
লাইনে কেন?'

আমার প্রতিবাদ এখানেই। কর্মনাম দৈর
জন্য সাভেনিরারে বেশী লাইন থরচা করাটা
গ্রীঘোষের মতে অপচর। তাই নামানের জন্য
বেশী লাইন বরাণ না হওয়ার তিনি ক্ষ্ম।
আমাদের নেশে জনগানের প্রতিটি সভ্রেই
তলা মাথার তেল দেওয়ার রীতিটি মভ্জাগত। শ্রীঘোষই বা তার ব্যতিক্রম হরেন
কো? এই প্রাভাবিক কারণেই নামানের জন্য
কিনি ব্যথিত ও ক্ষ্মে। অথচ যারা উভ্জান
সংভাবনামর ভবিষ্যতের কন্ম দিতে প্রের,
সেইসেব বডামানের কন্ম নাম্মাদের জন্য তার
কোন সহান্ততি নেই।

নামী, দামী ও প্রখ্যাত সাহিত্যিকদের জন্য অপ্রাণত স্যোগ ও স্থানিবা রয়েছে।
এ ধরনের নতুন কোন অনুষ্ঠান বা ক্মতংপকতার জন্য তাদের গরিচিতির খ্যাতি
অপেকা করে না। তারা ইতিমধ্যেই সাহিত্যরাসক মহলে দ্বস্থান উপযুক্ত যোগ্যতার
ভাষকার করে আছেন। অগচ নতুন বা ক্মনামী লেখকগণ তাদের উচ্জ্যুল প্রতিভা ও
ক্ষভাবনাময় ভবিষাৎ পাল সম্ভেত্ত সামান্য
একট্য পরিচিতি বা প্রতিগ্রেকভার অভ্যাবে
অকালে ঝরে বাছে। আমরা যারা সাহিত্যকে
ভালবাসি, তাদের কি কতব্য ন্য এমন স্বা
নবীন প্রতিভাকে ঝরে যেতে না দেয়া?
এর জন্য বাংলার সাহিত্যক সম্প্রের কি
ক্রিয়ভাবে সচেণ্ট হর্য়া উচিত করে?

২৪ প্রগণা জেলা সাহিত্য সম্মেলনের সাচুতেনিয়র দেখার সোভাগ্য আমার হয়নি। তবে সত্যি যদি সাতেনিয়র কর্তৃপক্ষ ক্যা-



বাংগালীর আনতরিক শ্ভে কামনা রাইল,
তাদের জন্য। সেই সংগ্ণে প্রাথন্নি রাইল,
তাদের মত বাংলার সাহিত্য-রাসক মাতই
তাগিয়ে আসন্ন, যাতে এইসব ক্যানানী
লোধক এবং এদের স্থিত আধার ছোট
পতিকাগানিকে দ্ব-মহিয়ায় প্রতিন্ঠিত করা
২ায়।

—এলা রায় ভেইকল এমেটি, জবলপ্রে মধ্যপ্রদেশ

'সেকাজের সংগীতগ্রেণী' প্রসংখ্য

সংগীতগঢ়গী' 'সেকালোর প্যায়ে কোন একদা ভারতীয় রাগসংগীতের বিখ্যাত অধ্না প্রায় বিষ্যাত বিভিন্ন গ্রেণী পিল্পীর জীবনকাহিনী তথা সংগীতসাধনার জনবদা কাহিনী অভানত আগ্ৰহ নিয়ে গড়েছি। এই পর্যায়ে লেখকের 'বাইজীপর' বিশেষ উল্লেখের দাবী রাখে: কারণ একদা সংগীতরাজ্য কোলকাতার বিশেষভাবে বাইজী অধ্যায়ত ছিল এবং অতীতের সেই সব কিল্পুক্তঠ, স্কলক্ষ্মীর আশীর্বাদ-দন্য কাইজীদের সংগীতসাধনা এবং পবি-বেশনা কোলকাতাকে সংগীততীথে পরি-ণত করেছিল আর সে গৌরবের ধারা আজও **हामाक् । ता**शक स्मिट्टेम्ब गर्गी वार्डेकीरनत সংগীতিক জীবনের কথা কালের অভস থেকে উন্ধায় করে এক দুরুহ কভবা করেছেন। এজন্য তিনি বাংলার সংগীত-স্মাজের অকৃষ্ঠ ধন্যবাদ এবং কৃতজ্ঞতা-

গত '০১ মে ১৯৭৪ তারিখের জ্যাত (৪প সংখ্যা) পাঁচকায় লেখা সংগীতগা্ধী ঠংরী সমাট মোজশৈদনের জীবনী পড়ে স্পানাক স্থানক পেরিছি এবং গ্রামেক নতন

য়েজি-দিন সদবদেধ আরও অনেকের মত আমিত এর আগেও পড়োছ এবং বর্ষায়ান গ্রণীদের মাথে শানোছ তাঁর অসাধারণ সংগতিনৈপ্রেণার কথা। লেখক মৌজান্দিনের অনেকগালো বিখ্যাত ঠাংবীর উল্লেখ করে-ছেন। কিন্তু তার মধ্যে অত্যন্ত বিখ্যাত এবং প্রায় ঐতিহাসিক 'বাজ; বন্দ্ খালা খালা যায়া এই ঠাংরাটির কথা বলেন নি। আমি এই বিখ্যাত ঠাংরীটির অত্যত সাথক এবং প্রায় একক শিল্পী হিসেবে হোজ:-িদনের কথাই এতদিন জানতাম। কিশ্ত দিলীপবাবরে এ সম্বর্গে কোন উল্লেখ না থাকায় আমার দ্বিদিনের বিশ্বাস কিছুটা দূৰ্যল কয়েছে। আমি অনেকদিন আংশ কোথাও পড়েছি অথবা কোন জ্যেন্ঠ গণোঁর कारह को ठेरबी कवर क्यांक्रिन्स्त कथा শক্তেছি। এই প্রস্তেগই এক ৰস্বীয়ান সংগতিগ্ৰেষ্ট কাছেই শক্তেছি যে গোলা-লিয়বের ভারতবিখাত বৈশ্বালগায়ক ওচ্চাদ হেছং খা মোজ,পিন্দের অসাধারণ সংগীত-কৃতিছের কথা শুনে তার গান শোনার জন্ম দ্ব-শিষ্য বেনারসে আসেন। ইতিপ্<u>বে</u>ছি রহমং খার মাদত কবিকৃতির সামান্য লক্ষ্ দেখা দিয়েছে তবে তার তেমন উলেখবোগা নয়। মৌজনিদনের গান বিশেষত তাঁর 'काळा, राम्, भाग, भाग, वाक् भाग, बहुबार থাঁ স্তৰ্থ স্মাহিত এবং ভাবে আবিষ্ট হয়ে আখহারা হন। আর শোনা ষায়, এর থেকেই নাকি তাঁর মাস্ডম্কাবকৃতি পূর্ণজ্ঞ পাল্ল--তিনি সম্পূর্ণ উল্মাদ হয়ে যান। মৌজা-िम्हान्त्र गात्नत्र ज्ञानिकक मृद्रिश्वय त्रह्यार খা সহা করতে পারেন নি।

দিলীপৰাৰ এ সদবান্ধ **আলোকপাত** করলে বিশেষ বাধিত হবো।

> য়ণি সেম্ জন্মগরে, মধ্যপ্রদেশ্

প্রেমেন্দ্র মিত প্রসংখ্য

১৪ জান অমতের জালা নিভালে চিত্রাংগদা স্নেমেন্দ্র মিগ্র আলোচনা প্রসংগণ এক জায়গার লিখেছেন প্রেমেন্দ্র মির ফচিড এবং পরিচালিত ছারাছবি যোগাযৌগ চিবে কান দেবীর পাত্রা হারা মর্ নদী গানটি গেয়ে শোনালেন শ্রীমতী গাঁতলী। এ প্রসংশ্প উল্লেখা যে যোগানোগ ছবিটির উদ্ধ গাঁতের রচিয়িতা প্রেমেন্দ্র মির হলেও ছবিটির পরিচালক ছিলেন তিনি কর্মেন্ত্র। ছবিটির পরিচালক ছিলেন হতদ্র মনে পড়ে সুশীল মন্ত্রমার।

প্রমধেশ ভট্টাচার্য কল্পনা একিয়া



মৃত্যু ও দ্বংখের গভীরে॥

আৰতি দাস

থনেক মৃত্যুকে জ্ঞান, গ্ৰুতীর রাগ্রন সকল উংক্টো শেষ, নক্ষ্ট্রের চুপ্ নির্থ গ্রহত। কাড়ে ঘ্যুফ্ত শ্রীর সংস্থা শীতল: দুরে শোকাত শ্রজন কেম্বুলই অপেকা করে, সাহস্করে না:

হাওরায় কপাট নড়ে, কুকুরটো কে'দে ওঠে বাহির দ্যোরে, অনেক মৃত্যুর পরে আর একটি মৃত্যু আসে জীবনের নদীর কিনারে।

তানেক দঃখনে জানি
পরিপ্রা আনদের দিনে
স্মাতিকে সম্প্রা বিধে, উৎসব আসরে
যান পড়ে সে আসেনি,
কাঁঠন দবোক্য শনে
ব্যৱহাড়া, কে জানে কোথার!

দ্বেখ জানি, মৃত্যু জানি
সে পত্ত পাঠার জানি বিশ্বকত সময়,
বধচ—
সকল হত্যে, সকল দ্বংশের
গভীরে কখন প্রেম জলম নিশ
কেউ ভা জানি নাঃ

ব্যুস !!

ग्गाल वन् किंग्री

প্রণেন আহারে যর ছিল না শাদ। তুলো— মেটের সংগে হাওরার শাধে উড়ে বেড়ার; প্রশেষ ধ্যন কেউ থাকে না বেড়াল ডাকে – অনুন্ত্রে জলের টানে যর ডেগে যায়।

দ্বংশ আমার ঘর ছিল না মেছে হাওয়ার শরীর এবং শরীর শুধু হৈতাহারে— কাঠের ঘোড়া দৌড়ে বেড়ার আজানাল ঘুমের মধ্যে নির্ভেশ্ত বয়স বাডে।

কাডি ওগ্রাম ॥

আমিগকুমার হাটি

আনিয়মে হঠাং চলে হাদ্ৰপদন। শশ্কিত মন, দ্বশন মাথা কালো আঁকা খেলা ফ্রোবে এই বেলা?

অনিশ্দ আর নিলর যখন বাধ করে নির্ম মানা, শতাব্দ হবে তখন হাদর? কোম করে যায় বে জানা?

ভাই ভূলেছ ফাডি'গুলান—
PQRST?
এই কি ভূদর মহলের দান?
কিতের মধ্যে খবর ক্লেলে কি?

বশুণা কি বার হে হাপা?

(পূর্বে প্রকাশিতের পর)

শাধ্য চাকরির জনা রাড্যেন্ড গেলায় মা। রঞ্জন চলে যাবার পর লণ্ডনে থাকতে ভাল লাগছিল না। লাঝে লাঝে অসহা বাগল। তাই হাডফোডে' মাবাব সংযোগ পৌরে ভালই রাগল। সকাল কৈংস ক্লশ থেকে - থেনে চড়ে দংশো মাইশ পথ পাড়ি দিয়ে ঠিক সাড়ে দশটায় লীডস পৌছলাম। প্রায় কলকাতা-হাওডাব মতই লাডস আৰু ব্ৰহ্ণোড সাক্ষা ধার্ম শহর। রাজফোডে'ই নাইনটিনথ সেশ্বেটি ভিক্টোরিয়ান রিটেনের সংখ্য অনার প্রথম পরিচয় হলো। সসারের গ্রন্থরের চার ধারে পাহাড়, হাঝগারে লগ্নে সেণ্টার कालकाणेत ब्रञ्ज डाज्यकार्ज भइतित शाक्षणात्म পুরানো দিনের অনেক পর্যত চিহ্য ছডিয়ে আছে। হঠাৎ এক নজর দেখালেই স্পণ্ট ক্রেমা যায় মচারাণী ডিকটোরিয়ার ভাল-ভেরণায় যে শিক্স বিকারের জনা এরা গর্ব করে, তার জনা এই বাডফোড অবদান নগণ্য নয় কিন্তু লংডন থেকে এসেই , ঠিক ভাল লাগুল ন।। মন্টা খারাপ হয়ে। গোল। মনে হলো বোধহয় ভুল করলাম। পরিচিত পরিবেশের একটা মোহ থাকে। কলকাতা ছেতে বাইরে হাবার সময় ভাগ লাগতে না। কলকাতা ছাড়া দিল্লী, বোশেব, মাদ্রাজকে ভালবাসার কোন স্থোগ পাই নি। দেখিও নি। কলকাতা ছাড়া ল'ড'নেই থেকেছি ভালনেকেছি আমি অটোৱা. বেলাশিংটন নিউইয়ক কাররো টোকিওতে থাকি নি। তবে মার। গুসার শহরে থেকেছেন তাদের বহাজনকৈ চিমি, জানি। লম্ভনে তাদের সংক্রালাপ হয়েছে। স্বাই এক বাকো স্বাকার করেন স্ব রক্ষর স্ব শান্ধের এমন মিলন মেলা. আন্দেশজার প্রিবার আর কোন-শহরে দেখা যায় না। ফরাসী সভাতা-সংস্কৃতিঃ পরিবেশে যারা জীবন কাটিয়েছেন, পাইরস্ শাধ্ তালের কাছেই মকা। স্তনের মত

বি-বি-সি কাণিটনে আড্ডা দিছিলায়।
উপানেই বি-বি-সি টোর্লাভশনের একজন
কাগেররামান মিঃ গভানের সপেগ আলাপ
হলো। মিঃ গভানের জক্ষা সাউথ
আফিনুকার। কৈশের-যৌবন কাটিয়েছেন
ইজিপেটর সংগ্রেজ শহরে। কর্ম জীবন শর্ম করেন কালবেরায়। তারপ্র রোম। প্রেটি,
বয়সে একোন লন্ডনে। বি-বি-সিন্ত কাতি
সারা প্রথিব চিক্কর দিয়েছেন একাধিকবার। ডুইউ নো আই হন্ত ভিজিটেড
ক্যালকাটা টেন টাইমস:

वरमान कि ?

হোমেএভার আই গো ট্কালকটা প্রক্রেক্সার আমি কালহাঠোল। থেকে কুটা পার্ডেভ করি। দে আর লাভলি!

আন্ধাহাসি।

হাসভেন? আনার বড়াতে এসে দেখবেন আমি ঐ কল্টোলার কুতা বাড়াতে পরি।

ৰ্ণব্যুগ্ৰাকা :*

স্থন টেলোরস শর্মটানকেটনে ট. উইকস্ছিলান তথন তো আমি ঐ কৃতা আর পারজামাই প্রতাম।...

স্ভাষ জিজ্ঞাস। করল, আপান শাণিত-নিকোলনেও থেকেছেন ?

মিঃ গ্ডন হাসতে হাসতে বললেন, কেন, বিশ্বাস হজে নাং আই হাভে সুনি ডিয়াংগভা এলট শাফিনিকেটন...

আন্নার মাথ দিয়ে বেরিয়ে গোল, ভাই নাকি?

িয়ঃ গর্জন সংগ্য স্থানে আমাকে জিন্তাসা করিলেন, আপুনি চিট্রাংগভা দেখেলেন ?

·प्तरशंक्।

'আটে শাশ্টনিকেটন ?'

'ন', কলকাতায়।'

দেন ইউ হয়ত নট সান ডিডল চিটাংগভা। আমি কলকাতাতেও দেখাছ

আছবা চুপ করে থাকি।

উনি একট, পরেই আবার বল্লান, চাইন্টিজ লোটাশ এ।ক্স. সোডিয়েট বালে, পানিটানকেটনের চিন্তাংগড়া, কেকসপিরাকের নটকে স্থার জ্ঞারক্স অলিভার আর প্রস্কানর গণি। আমি জীবান ভূপার না।

ঐ গ্রন্থ সাহের বলেছিলেন, **দেয়ার** আর ১২ সিচিজ ইন দ্য ওয়ারড **লেভন** এটাত কালেকটো!

শ্বে গড়ান নয়, আবলে আনকের কাছে
শ্বেছি লাভন ও কলকাখার মতে প্রাণ-প্রান্থিয়া ভরা শহর আর নেই। সেই কলকাতা সেই লাভন ভেড়ে বাডাফার্ডা!

মালাবোরা ব্যোভ ক নিউনিটি বিংলসা-স কাউনিলে আনার অফিস। থাকি
আবো উত্তরে ওক এভিনারত। ছেটি
অফিস, মাত চারজন কর্মান্ডারী। অফিসের
বড় সাতের সি আরু ও কলিউনিটি বিজেসান্স অফিসার। বান্দ না হলেও প্রমাণ।
কাতিত ইংকেজ, আমি ভারতীয়। মীজন্ম
পাকিন্তানী। লিস দেশাই রিটিশ পালপোকিন্তানী। লিস দেশাই রিটিশ পালপোকিন্তানী। লিস দেশাই রিটিশ পালপোকিন্তানী। লিস দেশাই রিটিশ পালপোকিন্তানী। লিস দেশাই রিটিশ পালপোকিন্তানী কিন্তান ক্ষান্তানীট।
এক কণার লিনি ক্ষানত(রালখা। ক্ষাসা
আন্ব্যাদির উপার কোন অবিচার বা অভানচার হলে তার প্রতিকার ক্ষান্তানিকলের
স্ব চাইতে বড় কাজ। নিব্যায় নাম্বর কাজ
হলো সোটান্টিভাবে বিটেনের অথ-



নৈতিক ক্ষাত্র ইনিপ্রাগটনের অবদান ও প্রেরাঞ্চনীয়তার পর্যন্ত মানায় এদের উপাদিপ্রতির প্রয়োজনীয়তা সম্পর্কেই ইংরেজ সমাজকে সচেত্রন করা। এজাড়া আরে একতি কাজ আছে, কালা আদমাদের যেস্ব সম্তান ভিটেনেই জাকোতে ও বড় হাছে তাকের গাহের রং কালো হলেও ভিটিল নাগরিক এবং কেজনা শিক্ষায়-শীক্ষায় তাদের উপস্কে করে তেলো।

প্রথম দিন চারগানি ধরে চারজনের অফিস দেখে আমার হাসি পেরেছিল। তেবেছিলাম এই ছোট্ট অফিস আর মার চারজনের দবারা রাজফোজের প্রায় লক্ষাধিক কালা আন্মান কি উপকার হবে। ভাঙাড়া চারটি বিভিন্ন মন্তাহা সংস্কৃতি ও দেশের মানেধের আরা কি একসংল কাজ করা সমন্তব স্বাশত আশত আমার মন গেকে এসর সন্দেহের মেঘ কেটে জো। ভাল লাগল অফিসকে, ভাল লাগল সহ্সমানিক। ভাল লাগার কারণ ছিল। প্রথমিকিক আন্সানিকে কারাকি বিলামিক কারাকি ভালা আনাকে বালাকো দিনি আমি

আমি চমকে উঠলাম তার মানে? মীজণ হাসক। বলালা, আমি বাগালী মেয়ে বিয়ে করেছি।

শানেই ভাল লাগল। আপুনিও তো বাংগালী শ

মীর্জা আবাধ হাসল। বলবাধ বাংলায় কথা বলতে পারলেই কি বাংগালী হওরা যায়? আমি ওয়েণ্ট পালাবের.....



কিন্তু আপনার বাংলা শানে তে বাঝা বায় না '
লেখাপড়া তো ঢাকাতেই করেছি '
ভোই নাকি ?'
ভোট':

ঔ ঢাকায় থাকার সময়ই বর্ণি বিয়ে করেছেন ?

মান্ত্রণ প্রেট থেকে সিগরেট-লাইটার বের করতে করতে কাশলো, বিয়ে ঢাকাডেই হয়েছে কিন্তু ভার প্রদিনই আমর। এখানে পালিয়ে আ্লি।

মীজণ দিগরেও ধরিয়ে একটা মুচকি হাসল। আমার মুখের দিকে তাকিয়ে বললো আমার বাবা বাংগালীদের সহ। করতে পাকেন না। তাই চাকায় থাকলো কি যে হাতা বলা যায় না।

অর্থি চুপ করে রউল্লেখ।

মিস দেশাই কয়েকটা টাইপ করা কাগজ হাতে নিয়ে মীজনি ঘরে ঢাকেই থমকে দাঁজ্জা, 'সরি..টু ভিস্টার্য ইউ!' অন্মি বলকাল নট এন্ট ফল'

মিস দেশাই একবার মীকুণিকে দেহে নিরে আমার দিকে তাকিছে হাসতে হাসতে বলগো ওর ধারণা সারা পাৃথিবীর সব বাংগালীই ওর আ**লারি**।

অনুয়ি হুসি। কোন কলা বুলি না।

মিস দেশাই মাখা দোলাতে দোলাতে কললো, বিয়েলি বিলিভ মী। আমি একটাও বাভিয়ে বলছি না। যখন ওকে কোথাও গৌলফোন করে পাবেন না তখন জানবেন মিঃ মীজা কপতিয়াল এবিহার কোন বাংগালীর বাড়ীতে বলে আভভা দিচ্ছেন।

অমি কিছা বলাব অংগেই মীজ'ণ বললো তুমি হাফ ইংরেজ হ'র। আং নাকামি করো না।

'হোয়াট ল

হোয়াট হোয়াট করো না। **ভূমি** আওডার জি ব্যধ্যে তে **ছাকরী**?'

ভোগ টক ইন বেগালী। প্ৰাীক ইন ইংলিশ। মীর্জা ওর কথা গ্রাহানা করে আমাকে বললো, মেরেটাকে দেখতে কি স্ফার অথচ ম্কা^{ট-}-জাউজ পরে এতেই মনে হয় থাই থাই করছে।

্মীজ[া]র কথা শনে হাসি **পায় কিল্ডু** হাসতে পারি না।

মীজা এবার ওর দিকে তাকিরে বললো, হোরাই ভোক ইউ উয়ার শাড়ী? শাড়ী পরলে তোমাকে ধ্র ভাল মানাবে।

জ্মানি পরব না পরব তা নিয়ে তোমার মাথা ঘামাবার তো দরকার নেই।

'তৃমি এসব ড্রেস পরে এগদ আই ফিল একসাইটেড।'

মীজার কথা শানে আমি শতনিজ্ঞ।
ভাবলাম মিস দেশাই ভীষণ রাগ করবে
কিপ্টু করল না। হাসতে হাসতে বললে,
ফলি গাড় নিউজ। ডিভোসাই ইরর বেংগালী
ওয়াইফ এয়াত দেন মার্যির মী।

- মীজা সম্ভীর হয়ে বললো, কচু পোড়া খাও।

মিস দেশাই এক হাত দিয়ে মীজারি গলা জড়িয়ে ধরে আমার দিকে তাকিয়ে বললো, আমার সংগে ঝগড়া করকেও জেলেটা ভাল কিন্তু ওর স্হী বীণা আরো অনেক ভালো।

সতি বাঁণা বড় ভাল মেরে। যেমন দেখতে তেমন ব্ৰভাৱ। আমি বাজ্ঞাতে বেশা দিন থাজি নি কৈছত ঐ সংমানা করেক মানের মধেট বাঁণার মাণে আমার বালার করেক মানের মধেট বাঁণার মণে আমার বিবাল করণে তালার মানের জিলার আনার ধানের পারি নি বাংগালী হলেও মানের পার বাজনিন আনালবামে ওপের বাড়ীর ছাঁ দেখতে দেখতে জিজাবা করেলন তেমে।

বীণা হাসল। 'না, আমরা মুসলমান।' 'ভা্থলে ভো্মার নাম বীণা **হলো** কি করে?'

'তোমারা তো আমাদের দেশের থবর রাখে না ভাট জান না এখন মেরেদের নাম বা পোশাক দেখে ব্যক্তে পার্থে না কে হিল্প, কে মাুসল্যান।'

'ডাই নাকি?'

'ইন্ট প্রাকিশ্তান কলতে বে ছার তোম্যাদের চ্যেথের সামনে ভেলে ওঠে, সে ইন্ট পাকিশ্তান আর নেই।'

আমি কোনকালেই রাজনীতি করিনি। রাজনীতির বিশেষ থবরও রাখি না। তাই জিজাসা করলায়, তার যানে?

বাংশালী জাতি আর লংগা ভাষা ছাড়া আমাদের ওখানে আর কিছনে অগিতড় ছান শানের না দেখনে না গ

আমি কলকান্তার মেরে। বাদৌর পানোই চাকা কিল্ড সেই পালের সামীর থবর পেলাম্ব বেপাড়ায় এসে।



শুখু বীণা নর, রাডফোডে এসে পাশের বাড়ীর আরো বহু লোকের সপো পরিচর ও হ্রাডা হলো। মীজার সংক্র সংগ্ৰামত কৰ্ণত্যাল এরিয়ায় সিলেটি-আভডাখানায় যাতায়াত করলাম। হক সাহেবের দোকানে বঙ্গে ধ্সে চা আর পাঁপর ভাজা খেড়ে খেড়ে গলপ করি, লোকজনের অস্ব-যাওয়া কেনা-কাটা দেখি। মনসংর আদি সাহেব দোকানে চাকেই আঁয়াকে দেখে বললেন, দাদিন আপনার অফিসে গেলাম কোন দিন্ট দেখা চলোনা।

'কবে গিয়েছিগ্লন ?'

'লাস্ট উইকের ব্যধবার গিয়েছিলাম। মীজা সাহেব আপনাকে আমার কথা বলেন নি?'

'কই না তো। কোন দরকার ছিল ?'

তেমন কিছা না তবে ভেবেছিলাম একটা এয়াশিলকেশন দেখিয়ে নেবাং

'কিসের এদা ক্লিকেশ্ন?'

'বড় শহেব ছাটি মঞ্জার করার পর ছোট সাহেৰ হাকুল দিলেন এখন ছাট মঞ্জরে করা যাবে না। মনস্তুর আজি সাহেব হঠাৎ গলার প্রর একটা চড়িয়ে বলজেন ছুটি হবে না বললেই কি আমি ছেড়ে দেবার পার। সংকা সংকা 'স আর সাহেবের কাছে একথানা দর্থাস্ত নিয়ে मिलाइ।, ।

'ঐ দরখা'তই আমাকে দেখাতে.....

পাঁচ বছর পর মনস্র আদি সাহেব বিবির কাছে যাবেন বলে বেশ উর্ভেন্ডিত। আমাকে কথাটা শেষ করার স্থোগ না দিয়েই আসল কথাটা বলে দিলেন মন যথন একবার উড়া উড়া হয়েছে তখন আর কি কেউ আমাকে ঠেকান্তে পারে দিদি?

কণ ওয়াল প্র'বাংশার আপু কো মানুষেই ভড়ি। বিশেষ্ডঃ সিলেটের। নোয়াখালি কুমিলা চটুগ্রামের লোকও আছেন তবে কম। বরিশাল ঢাকা ফরিদ-পারের লোক নেই বললেই চলে। এককালে এরাদ মুঠো অল আর এক টুকরে। কাপড়ের জনা হাহাকার করেছেন, তারপর একদিন কলকাতা আর চটুগ্রাম বন্দরে নাম লিখিয়ে পাড়ি দিয়েছেন সাক্ত সমলে তেরে। নদী। শেষ প্যতিত ঘারতে ঘারতে , রাড-ফোড'। যে ইংদিশা টুইডের জনা সাগ্র প্রিবীর সৌখীন ও ব্রচিবান মান্য উদলীব, যে সহ সঃটিং∹এদ হৈবী করে অকসফোড প্রীট নকড প্রীট विरक्षको स्पेरिहेर साम अञ्चल एए।कास प्रतिहात সর্ব ছড়িবে দিয়ে স্নাম অজন কৰেছে সেসদ আংরো ভানেকের সংকা সংকা এদেই হাতেই তৈরী হয়। ইঞ্জিনীয়ারিং কার-খালাট্রেও আন্তর কাজ কার্যে। क्षाकरे । जनकारहा कितिमा प्रतिमा अपिन्छ। টাকার হিসেবে সাজে পাঁচ শ থেকে সাজে

अकामिक इन অমিতাভ দাশগ্রপ্ত

সেই লোকটি

অমতে-তে পারবে।হিকভাবে বংসরাধিক কাল প্রকাশিত হয়ে যে রচনাটি হাজার হাজার পাঠকের দৃষ্টি আকর্ষণ করেছে নানা দেশের নানা আজব চরিতের মান্তের বিচিত্র অস্তিমের সমর্ণীয় গ্রন্থর প। শচীন বিশ্বাস অভিকত মনোরম প্রচল।

সুনীল গঙ্গোপাধ্যায়

भागतन जाडातन

জীবনের কোনো ঘটনাই সামান্য নয়। আনেক ক্ষ্রুল-খণ্ড ঘটনা, দ্ব' একটি চকিত মাহাত ও মানাকের জাবিনে বিরাট প্রভাব ফেলে বার। অনেক সমর সেগার্থি আয়াদের চোখে পড়ে না—িক**্**ড লেখক সেই সব সম্মান্য **ঘটনাকে** অসামান। রূপ দিয়েছেন। শচীন বিশ্বাসের মনোরম প্রছেদে।

পাপ

শীষে দ্মুখে।পাধায় ॥ ৫্ নীহাররঞ্ন গ্ ত ॥ ৪

স্বাদ

দীপক চৌধ্রী ॥ ৬

সানাই

বহ্রপৌ ॥ ৫

চিরক্রট

প্রণব বন্দ্যোপাধ্যায় ॥ ৭

জিঘাংসা

নিশাচর ॥ ৬-

রাতের বাসা

গজেন্দুরুমার মিত্র। ত্

নান প্রহর

অনিল রায় ॥ ৭

দুই গন্ধৰ্ব

স্বোধ ছোষ ॥ ৭

প্রেমিক দস্যু

চিরঞ্জীব সেনা । ৭

সন্ভদ্রা হরণ

স্পোর্টস ভারেরী

চিরঞ্জীব ॥ ৭

মাতালের হাট

আবদ্ধ জক্বার ॥ ৮

রূপবতী অরণ্য

শক্তিপর্দ রাজগর্র ॥ ৭

দ্বিতীয় জীবন

প্রেমেন্দ্র মিত্র । ৫ -

সমুদ্রের সামনে

স্নীল গণেগাপাধাায় ॥ ৫

ধ্পের ধেগায়ায় কৃশান, বন্দ্যোপাধ্যার ॥ ৮

বারবধূ

অসীমানন্দ মহারাজ।। ৭

সুমের কুমের

অবধ্ত ॥ ৬

জ্যোতি প্রকাশন ।। ২এ, নবীন কুন্তু লেন ।। কলিকজা-৯

নাট শা—আট প। অত্যুক্ত সাধারণ জীবন বাপুল করেন সবাই। আরের অংশ কও বার উল্লেখ্য না। দ্বু-এক বাস পর পর বাংত ক্রাক্তত কেলে মোটা টাকা পাঠিরেও বেশা ক্রিছ্মেন্তেলের কাছে রেখে কেন। চার-পাঁচ র্হার পর বখনে এরা দেশে বান তখন সর চাইতে আলো ভাসেন হক সাহেবের চাকালান।

্ৰিলীৰ অভ্যমখন্তক কাপানী মাইলনের শাড়ী ৰাইছা দান তো!

বিশিক কান মাইলামের শাড়ি আটক শোকাশান্তবের কান কোট-পান্ত স্বা^{ত্ত-} লাউক ইাড়াও ডক্তনথানেক নাইলানের লাক্তি চান্তবের কলেকে যে ভাই-বাটো বি-এ পড়ে তার কানা রীফ কেল লং কোট কাউলেটন পেন ছাড়াও কতক্রনের জন্য এগা কত কি কেমেম।

'गरी' हारतक ल-जेन नाउ।'

হক সাহেব লাঠন আন্তে ভিত্তী কেকেই আমি চালক নাম চিক্ত নির লাকেছ এখান খেলে লাঠন নিয়ে যাবেন?



রেজিষ্ট্রি বিবাহ অফিস

দেট ১৬ টাকার রেজিন্মি বিবাহ

এন কৈ ঘোৰ, জে-পি ন্যায়েজ জফিসার ১১৭, ফাশফদ্ৰ নেন শীঃ

कॉक-৯, इकाम ३ ०६-७०८४

মনস্ব আলি সাহেব হ'লেন বিলেন, সিদ, আমাদের গোলাম হো আর বিলাতের গোলাম শল: ল'ঠন ছাড়া কি কাম চলে?

্তা তো বুৰুলাম কিন্তু এখনে কি ল'ঠন তৈরী হয় ?'ু

এ'তো জার্মান দঠন!'

ভাজফোডের কমভিয়াল পেলান হক সাহেবের দোকানে মা গোলে আজি জান-ভাম না জামানিশৈতে লগেন তৈবী হয়। আবো অনেক কিছু জানভাম না। জানভাম না ঐ লঠেনের আলোয়া শ্বে মনসরে সাহেবের বল আলো হলে না. আলোয় আকায় ফলমাল করে উঠাবে ওর মন, ওর বিবির অভতর।

এই পাথবী চলার পথে এগতে গিয়ে মান্ধের কাছেই দুঃগ পেরেছি, আখাত পোয়েছি কিন্তু সেই সংখ্য সংখ্য মানাবের কাছেই ভালবাসা পেয়েছি। মাণ্ধ হয়েছি ভাদের আক্তরিকতার। বেশী দিন রাভফোরের থাকি মি। বিজয়ার চাপে নতুন চাকরি নিয়ে আবার লভ্ন ফিরে এসেছি। তা হোক। রাডফোডে²র ঐ কালে। কালে। মান্যগালোকে কাছ থেকে দেখার, জানার ভাদের ভালবাসা পাবার দরকার ছিল আমার। রঞ্নের বিশ্বাসঘাতকভার জনঃ মানুষের প্রতি বিশ্বাস হারণত বসেহিলাল কিন্তু মানংখের প্রতি আমা, বিশ্বাস না থাকতে তো এই সংসারে কেউ ভিকরে পারে না। আমিও পারতার না। ফোডের মীজন, বীশা মিস দেশাই আর কর্ম এরাল এরিয়ার ঐ মানুষগালেন অমাকে আবার মাম্যকে বিশ্বাস করার, ভালবাশার ক্ষমতা ফিরিয়ে দিল। ওদের সংগে আছে। আর কোনদিন দেখা হবে বিনা জানি না কিল্ছ প্রালে দিল-গ্ৰেম্ব্ৰ কথা মনে ছলেই একটা পিছন ফিলে ভার্যালেই ওরা স্বাই ভিড় করে আসে।

'এশ্বকিউজ মী, ইউ উইস হায়ত কফি আর টি?'

কানের কাছে এয়ার তোলেলৈর কথা শানেই জানলা থেকে দ্খিটা ভিতরে এনে বললায়, টি।

সংগো সংগো আমার কাপে চা আর দুধ তেলে দিলেন এগার হোলেটগটি। মিঃ ওয়ালাকে কিছু জিজাসা করার আংগই উনি কাপ এগিন্মে দিলেন। চায়ে ভরে

চায়ের কাপ মাথে দেবার আণেই কমান্ডার অফ দা এরার কাফট যাতীদের উদ্দেশে। বলগেন আ**ই হোপ ইউ হায়েউ** ইওর কান্য এয়ান্ড মাক্র বী ভিলাইটেড টু লো লাটে উই উইল বী ওভার ফোরেল্ল ইন টু মিলিটন ! অর্থাৎ আমদ্য এখন দেয় থেকে মন্ত একণ অ্পা মাইল উন্তরে!

ক্ষাণ্ডারের ঘোষণা শৃষ্টে চ্যাকে উর্জ্ঞান।
তহলে তো আম ঘণ্টাও দের দ মর। আর্থ কণ্টা পরেই রোম। ইউরোপ শেষ। এর পরই মযাপ্রাচ্য। বেইর্ট। মাত একটা প্রভা। তারপরই তো দিলী! ঝাড়ের বেগা যড়ির কণ্টা ব্রের যাবে। বাচ্ছে। সকালে লণ্ডন, মধ্যায়ে রোম সম্পার বেইর্ট, রাতির অন্ধকার শেষ না হতেই দিলা।

হ্যাভ ইউ জিজিটেড রোম ? মিঃ ওয়াল চা থেতে থেতে আমাকে জিজাসা করলেন।

'আই এাম সরি.....

'রোম দেখেন নি?'

١١ المع

এনি ভাষা বর ফেশ্ড উভ হয়ভ এট ইউ হিয়ার।' ▶

'ইউ থিংক সো?'

'বাটে'ন্যি ।'

আপনি অপনার গাল ফ্রেণ্ডকে নিয়ে এসেছেন?'

'আ্টুডিড বাট.....

'**আ্বার বা**ট কে**ন**?'

'যাকে নিয়ে একেছিল।ম' তার সংখ্য আগার আর বৃদ্ধতে নেই।'

'খুব "বাভাবিক।'

'খ্ৰ ব্যভাষিক কেন্দু' 'আই মীন ই তুজ ভেৱী কয়ন এগ্যংগ ইউ পিপা্ল…

মিং প্রধার চা শেষ করে আহার চিকে একট, কালে বসজেন, আমি প্রতিজ্ঞা করতে পারি কংশনার মতে একজনত্তক জাবিনে পোক ক

'আ্যক্র রোমে রেক-জানিব করব?' 'কেন?'

'তাহলে 'সম্ট পিটাসে'ই' আমাদের বিরোহতে পারে।'

মিঃ ওয়াক হাসি সামলাতে পারলো না। ওর সংগে সংগা আমিও হাসতে শ্বে করলাম।

প্র আই হ্যাভ ইতর এাটেনগম প্রাছ।... উই উইল বী স্টান্ধ লাচিডং এটি গ্রেম।...

সংশ্য সংগ্র আন্তর-শারেক খোলার আন্তর্গক দানতে পেলায়। জানলা নিয়ে বাইরের দিকে তাকিয়ে দেখি এয়ার কাকট রোমের উপর এলে গোছে।

(#N"2

নিউইয়কো ১৯৫৯ সালে অন্তিত প্রথম কোয়ান্টাম ইলেকট্রনিকস সংস্কলনে (স্থ্ থেকে) জে পি গড়'ন, এন জি বাসত, এইচ জে ৎসাইগার, এ এম প্রেথোরত ও সি এইচ টোনেস। বাসত প্রেথোরত ও টোনেস মেসার উল্ভাবনায় তাঁদের কৃতির্ভ্রে জনে ১৯৬৪ সালে পদার্থবিদ্যার নোবেল প্রেশ্নার লাভ করেছেন।



বিজ্ঞানের কথা

লেসার

কলকাভার একটি ইংরেজী দৈনিকের খবর থেকে জ্লান্ধায়ঃ

কলকাতায় বিজ্ঞানচ্চার ছার তার সামিতিকে ইনিছয়ান জাবেগারিয়েশন হর কাল্টিভেশন অব সামেন্স) সম্প্রতি এবটি জেলার ইউনিট হলাপিত এবেছে। শহরে একটি কেলার ইউনিট এই প্রথম এবং এটি বাবহুও এবে বিভিন্ন বিষয়ে গাংসবার উদ্দেশ্য। আগনি আমন লেখনে টিউনটি আমনাক্রিক বিক্তু সুম্পের প্রীধানকার্যাতি আমনাজ্যন হৈছিল ইংবাকে বিভাগন্ত বি

'লেসার (লাইট আলেজিকিকেশ, বাই
বিন্দেটেড এনিসন অন রেডিয়েশনা-এর
সংক্ষেণিত র্মা। হচ্ছে ১৯৬৭-এর দশকের
ক্ষেড়ার বিক্রে উদ্ভাবিত অপ্টিক্স-এর
একটি একক ভ্রাকানৈরের আলোবের
অভাত ঘনসন্তম্ম যার ফলে এই
রিম এই অসাধারণ গ্র লাভ করে যে
দীর্ঘ ব্যার পার হতে গিয়েও মংপণ্ট মারায়
ছিছিয় পড়ে না। শিলেশ লোমার-এর বহা
বাবহার শ্রে হয়েছে এবং বহা ক্ষেত্র তাব
ক্রম এই অসাধারণ সংশান শানুয়া যাজে।
এক স্থান ভারতের মতা উন্তিভাবিত
ক্ষেক্র পকে লেসার রিম্মর সাহালে
ক্ষেক্র পকে লেসার রিম্মর সাহালে
ক্রেক্র খ্রাই প্রেম্মর ক্ষিমর সাহালে
ক্রেক্র খ্রাই প্রাম্মর রিম্মর সাহালে
ক্রেক্র খ্রেই প্রেম্মর রিম্মর সাহালে
ক্রেক্র খ্রেই প্রেম্মর রিম্মর সাহালে
ক্রেক্র খ্রেই প্রেম্মর রিম্মর

'বিজ্ঞান্চর্চার ভারতীয় সমিতির ইউনিটার্ট ব্যবহাত ভবে আগনিক পরিকীণতা অন্-দীলনের জন্যে। এ থেকে বস্তুর গঠন ও ধর্ম স্কাশকে ধর্মনা সাক্ষ করতে স্কুরেডা

William Comment

হবে। লেসার কনিউনিকেশ্যের সহতাবনা ভান্থীলন করে দেখার এবটি প্রস্তাবন্ধ গ্রাছে। ওইপাত দিক থেকে লেসার-এর একটি এবক রম্মির স্থাে বিশের ভারহ বেতার টেলিরাফ ও টেলিফোন কমিউনি-কশন আওতার হাও পারে।

বিজ্ঞানতটার ভারতীয় স্থিতির অপ্টিক্স নিভাগে ইতিবাধি একটি তিলাগান্ত্র বিজ্ঞান ক্ষান্তর স্থানি ক্ষান্তর ক্ষান্তর ইউনিটি নিশাবের পরিকল্পনা শুরু করা হয়েছে। তেসার ইউনিটির স্থান্তর পরিকল্পনা হরে প্রিট্টিক্সের ভারতী করিখানায়। ইউনিটির ক্ষাপ্ত হয়র পরে এই স্থান্তর স্থান্তর ক্ষান্তর অবাধানা সংক্ষার স্থান্তর স্থান্তর স্থানা সংক্ষার স্থান্তর স্থান স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান স্থান্তর স্থান স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান স্থান স্থ

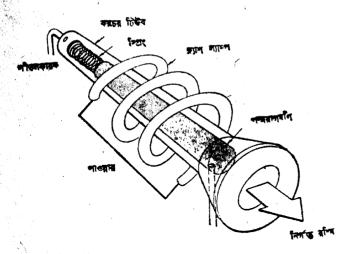
(পনরে অতঃপ্র বলা হুলেছে কলকাতার পেসার ইটানটটি হথাপিত হলার প্রের পরেবলার উদ্দেশে। চালা করা মাজে না— করেগ, যথন-তখন বিদ্যুৎ সরবরাই বন্ধ হয়ে যাওয়া। ইউনিটি চালা লাকার সময়ে সৃদ্দি আচনকা বোটা ইউনিটিটি ক্ষতিরাম্ভ হ্রা যায় ভাহতে বোটা ইউনিটিটি ক্ষতিরাম্ভ হ্রাব সুম্প্রানা।

নিজ্ঞানের অ্যাগতির একটি আধুনিক্তম নিদেশন হ'লচ লোসার। যেমন অপ্রব্ ক্ষেকটি নিদশন হ'লচ—নিউরিয়র বিক্ষোর্গ ইলেকটিনক কম্পিউটর (গ্যাক্যকারণ ক্রেটে) বহুত্বপক্ষে অনুকে বিজ্ঞানী বলে থাকেন যে বহুমিন স্বাগটি হ'লেচ প্রনাধা-শৃত্তি ইলেকটীনক কম্পিউটর ও ব্রক্টেটর (অর্থাৎ মহাকাল গ্রেক্সার) হ'ল। এই সংগ্ যদি বলা হয় লেসার-এর যুগত তাহলে লেসার-এর গুরুত্বক অযুথা বাড়ানো হয় না।

আজেকের দিলে খবরের কাগ্যক্তর পাঠকরাও লেসার শব্দটির সংগে কল-বেশি পরিচিত। সাধারণভাবে বলা হয়ে **থাকে** লৈসার হচ্ছে এমন এক অসাধারণ রাখ্য **যা** দারে যেতে যেতে ব্যাণ্ড হয় না বা ছড়িয়ে পড়ে না (মেমন বাণ্ড হয় বা ছড়িয়ে **পরে** টটেরি আলো বা মোটরের হেড**লাইটের** পালে। ইত্যাদি)। যদি কল্পনা ক্য়া হয়। অলোকের একটি রখিম ফলকের মতে আকার ধারণ করে সিধে কেথায় চ্যুক্তিছে, যতো দারেই যাক, এখন কি চার লক্ষ কিলো-মিটার (আডাই লক্ষ মাইল) পার হয়ে চাঁকে এসে পেণ্ডলেও আকার সেই ফলকের মন্ত্রো নেলগত হয়নি বা ভাঙিয়ে পড়েনি)--ভা**ছাল** লেসার-এর সন্তান্য অসাধারণ ধ্যাটি সংপ্রেক ধারণা কর। সম্ভব । এই বিশে**ক** মনটি থাকার জনো অতি শ্যাপক ও বিচিত্র শেনে শৈসার এর বাবহার হতে পাতে হ**চ্ছেও**ঃ এমন্ত্রি বল। হয়ে থাকে লেসার-এর সাহ্য**েল্ড** িস্টেল প্রতি ঠেকানো যায়। **সার্গরুক** ক্ষেক্তে গৈসার-এর ভারের গণতারের কথা শোলা যাছে। তবে সবচেরে हजान अने बातहाताहि अम्खराज **घ**षेट्ट **हामाछ** শলাচিকিৎসার কেন্দ্রে কিশেব করে চক্তর রোচিনাটি মাদ কোনে। কারণে কাট্নেটে। হয়ে শায় তাহৰে তার ঝোলাইকাষণ সম্পাদনে।

এমন মে লেসাচা তা কিতানে ঘটালো হজে : উচ্চতর পদার্পনিদার গ্রেফ্লের এই বিষয়টি যুখাসভূত সাধারণ ভাষাদ উপ্স্থিত করার একটা চেন্টা করা হাক :

১৯৫৪ সাজের ১লা জানেই তারিখের ফিজিকানে রিডিউ পরিকান্ন ছোট একটি ঘোষণা প্রকাশিত হুয়েছিল। তিনজন বিধানীর নামানকৈ বি গ্রন্থন, জে এইচ প্রাইলার ও সি এইচ টোনেস। তার শারে, এইরকান্য এনন একটি প্রবীক্ষান্ন ক্রাক্ষরতা নিমিতি ও চালা হুরেছে সেটি বাবসূত্র ক্রতে থাকে ক্রত্তে ইন্ড বিশেষক্রণ ক্ষাত্রকালে স্পেক্ টোমিটার বিশ্লিনী-ক্রত্ত) মাইজোওরেজ জ্যামান্সিকারের (অতি, ছোট মাপেল ত্রুরণাকে পন্মরাগ মাণর সাহা যো নিমিতি প্রথম লেসার



বাড়িরে ভোলার যন্ত) ও ভাত্যনত স্ক্রিখন অসিলেটর (দেসন স্ভির ফল্) হিসেবে। এই ব্যবস্থাটির নাম দেওয়া হল 'মেসার'। এটি**ও একটি সংক্ষেণিত র**্প গারের নাল माइजाकाका स আমাপ্রাফার্কশন পিটারেশটেড অফিশন তার রেডিয়েশন'। এই মেসার-কে আগে বোশ দরকার, ভারপার কোসার। দ্যোর মধ্যে ভঞাং সামানাই, মৈসারে মাইকোওয়েভ আর লেসারে माहेते। अते क बाब मिला बाकित खाँखराः **উভয় क्ला**टरे आधारिमकिकानः वा भारत्वश्र ৰ' আৰও সহজ ভাষায় ৰাজিয়ে ভোলা। काम खेलाह्म? मा भिन्न कारते । क्रीमान वा दारमात्र दमा स्थरण भारत छन्द्रीभिङ নিঃসরণ। কিসের নিঃসরণ? না, রেভিয়েশন का निकीतरणतः। मण्यकृत्रहरणातः अवश् वर्णाः इत्र মাল, কিপ্তু আদলে ব্যাপারটা কী ? পরিব্ধান ও বিক্ষারণ হদিও বা বোঝা বায়, কিল্ডু উন্দর্শিত নিঃসরণ? অথচ এটাই আস্তা ব্যাপার। কি মেসার কি লেসার দুটিতেই ট্রুমণীশত নিঃস্রপটাই মূল বিষয়।

শ্ল আলোচনার যাবার আগে মাইঞোক্রেমেন ও লাইট শব্দ দুটি পবিচ্নার চরা
ক্রেমেন ও লাইট শব্দ দুটি পবিচ্নার চরা
ক্রেমেন কেনি ক্রমন সাতটি রং আআদের
ক্রেমেন কেনি ক্রমন সাতটি রং আআদের
ক্রেমেন কেনি ক্রমন সাতটি রং আআদের
ক্রেমেন করান করান এই দুলামান
ক্রেমেন ক্রিমেন ক্রেমেন ক্রেমেন ক্রেমেন ক্রমেন ক্রমেন ক্রমেন ক্রেমেন ক্রমেন ক্র

্ব্ৰন্থীতিটা এক। থিকীরণের উদ্দীপিত নিজ্নাশ। এই উপরে ক্যিন্ত্র ভোলা হতে মেসারের বেলায় মাইক্রোওয়েভকে । লেসারের বেলায় আন্দো-কে।

উল্পালিত নিঃসরলের বাংপারটি বাসতে হালে পরমাণ্যর আভাষ্তরিক চিত্রটি সম্পর্কে কিছুটা ধারণা থাকা দ্বকার। সকলেই জানেন প্রমাণ্র যে আভান্তরিক চিত্র বিজ্ঞানী রাদারফোড উপস্থিত করেছিলেন সেখানে পরমাণ্র কেন্দে রয়েছে নিউল্লিয়স ও তাকে ঘিরে ঘার্ণামান ইলেকটন (অনেকটা স্থ ও গ্রহমন্ডলের মতো)। নিউক্রিয়সের পার্জাটভ ভার্জ ইলেকট্রনের নের্গোট্ড চালের সমান অতএব স্বাভাবিক আবস্থার পরমাণ্ড বিদ্যুৎ-নিরপেক। রাদারফোডে'ব স্পে কজ করতে এসেছিলেন ডেনমার্কের ত্র্ণ বিজ্ঞানী নীলস বোর। ভার কাছে পরমাণ্র এই আজ্ঞান্তরিক চিত্রটি গোল-মেলে বোধ হল। তা এই কারণে : ইলেকটুনে রয়েছে নেগেড়িভ চার্জ, ছবি কোনো বৈদ্যুতিক চার্জ দোলে বা কালে ভাছলে বিদ্যালটোশ্বক ভরণা স্থি হয়। যে কণিকা থেকে এই ভরংগ নিঃস্ত হয় ভা এনাজি বা তেজ তার ফলে খোলা ছেতে বাধা। ইলেক্টনের বেলাতেও এর্মান ব্যাপার চলা উচিত। ফলে যে ব্যাপারটি হওয়া উচিত তা হচ্ছে ক্ষয়িত-ভেজ ইলেক্ট্রনর খরতে ঘরতে জামই নিউক্লিয়সের দিকে সারে যাওয়া ও শেষ প্রয়ণত নিউক্তিয়াস পতিত হওয়া। কিন্তু বাস্তবে তা হজের না। অভএব োর বললেন, প্রচলিত বলবিদ্যাব নিয়ন শরমাণ্ডর অভ্যত্তরে খাটে না। তথ্ন জিনি নির্ভার করলেন স্লাম্ক ও আইনস্টাইনের ওপরে যারা বলেছিলেন আলোর ভর্জা হাছে পাথক পাথক কম্পান আলোর कामान् गेरमत शतक (विषयि निस्त जारणत ওকটি সংখ্যায় জায়ত বিস্তুল্**ভাবে আলে**চেন करार्द्धीक्र 🕒 नगर गर्ने 🤝 नगरमा 🛒 **करात अ**स्तर বোর পিন্টি 🔻 🔭 বিশ্বন্ধ করকোন। একটি স্তে बना १०. हे व्यक्ति अक कुक ल्याक

অপর ককে লম্ম দিতে পারে। লাফ দেওয়ার ব্যাশারটি বটা মানেই গাঁতর অবস্থা জিল হয়ে বাওয়া—ভার মানে তেলের ভিল্লতাও। এই তেল মিংসাত হয়ে থাকে স্বাংক আইনস্টাইন আলোব একটি কোলানটামের আকারে।

মোট কথাটি এই যে প্রেমাণুর অসিতঃ
থাকতে পারে প্রেক স্থক তেজের অবস্থাঃ
এবং ভেজের এক অবস্থা থেকে অন্
অবস্থার উত্তরপ ঘটলে স্নিনিপ্নিট কম্পানের
আক্রো বিবাহীরত হয়।

দুটি বাগের ঘটা সম্ভেব। নিদিন্টি কম্পানের বিদ্যুৎ চেম্বক তরজের আকারে শরমান্ত থেকে এক নিঃসরপ। কিবা নিদিন্টি কম্পানে বিদ্যুৎচেম্বিক তরজা থেকে একই পরিষ্টা, এক বিশোষণ। প্রথম ক্ষেত্র স্বভাস্থাতে নিঃসরপ শিবতীয় ক্ষেত্র বিশোষণ।

আরে। একটি ব্যাপার ঘটা সম্ভব, কজ বস্তুর বিক্রীরণ নিয়ে তপুনালক গ্রেব্যা বরতে গিয়ে আইনস্টাইন হা দেখালেন। ভা হচ্ছে বিক্রীরণের উদ্দীপিত নিঃসংগ্ স্বতঃস্ফা্ত নিঃসরণ থেকে এটি স্পাণ্ট-ভাবে পাথক।

উদ্দীপত নিঃসরণ ঘটে যথন নিদিপ্ত কম্পনের বিদ্যুৎচেট্যিক বিকারণ এসে পড়ে উচ্চমালার তেজের অবস্থার একটি পরমাণরে ওপনে। পরমাণ্টি তথন উদ্দীপিত হয়ে বিকারণ করতে শারে করে। পরমাণ্ট হয়ে থান উদ্দীপিত বিকারণ নিঃসাত হয় তথন মৃত্তিহাতে তেজ যাছ হয় উদ্দীপক ভ্রাংগর তেজের স্থেগ। মাল তরংগটি এইভাবে পার্বাধিত হয়ে থাকে এবং মাল পরেশ।

এই হচ্চে মেসারের মূলগত বিষয়।

১৯৫২ ও ১৯৫২ সালে জনকয়েক বিজ্ঞানী পৃথক পৃথক ভাবে মেসার বাকজ্থার জন্দে সনিবাদিন্ট প্রশান করার দিকে এগুসের হতে পাকলেন। তারা হতেন নিউইয়ক কলান্দ্র দিন্দ্রাকালয়ের সি এইচ টোনেস এবং মন্কো লেবেদ্ভ ইনন্টিটিউটের এন জি বাসভ ও এ এন প্রোযোষভা এই তিনন্ধন বিজ্ঞানী তাঁদের এই কৃতিছের জ্ঞান্ত্রে সালে প্রশ্বিদ্যান্ত্র নেবেকা শ্রেকার কাভে করেন।

১৯৫১ সালে টোনেস্ দেখালেন এক
কৰি অণুর দিখতিদখাশক্তাকে এমনতাবে
ক্র কয় বৈতে পারে হে ইক্তুর তোকর
অবশার অণ্ অধিক পরিমাণে উৎপান হয়।
ভারপারে অণ্ গুলোকে চালান করা বৈতে
পারে একটি গহরেরের ক্যোভিটি) রাবো
গহরেটি বাধা খাদে তেকের মঙ্গে বেল কর্তর উত্তর্গনের লোলনের সঙ্গে। অপুরুত্তর এখানে একটি সংক্তের করে। অপুরুত্তর প্রস্থান একটি সংক্তের করে। উদ্দশীন্ত হরে তেক নিঃসরণ করে এবং এমনিভাবে সংক্তেটি পরিবাধিত হয়।

জন্মে সংখ্যা বদি বংগত অধিক হর তাহকো গছনেরে বিকারণ এনন একটি শতরে বজার রাখা থেতে পারে যেখানে গহরের কতি জন্ম তেজের করে।

প্রেণ হয়ে যায়। অর্থাৎ ব্যবস্থাটি অবিবাম দোলনের অবস্থায় আসতে পারে।

শরে ১৯৫৩ সালের শেষদিকে ট্রোনেস ও তার দূই গবেষক ছাত্র গড়ান eসাইগার সাফলোর স্বােগ একটি মেসার চালা করতে পারলেন।

অন্যদিকে মঙ্গেকা লেবেদভ ইনস্টিটিউটের বাস্ভ ও প্রোখোরভ প্রথম উপস্থিত করলেন আমেনিয়া অপরে রেডিও তরণ্গ অসিলেটর। এই আ×চয়' বাবস্থায় স্বৰ্কটি আমোনিয়া প্রমাণ, হাবহা একই দৈখেব বিদাং-চৌম্বক তর্জা বিক্রীরণ করেছিল। দোলারের কম্পনের এমন এক বিস্ময়কর স্থিরতা বজার ভিল যে এই নীতিতে প্রস্তত ঘড়ি হাজাব হাজার বছর ধরে নিভূ'ল সময় নিদে'শ করতে

তারপরে ১৯৫৪ সালে এই দুজন রুশ বিজ্ঞানী টোনেস প্রবৃতিত গেসার বাবস্থার প্রায় অনাুরূপ একটি ব্যবস্থার তত্ত্ব ট্রপাস্থত করকোন।

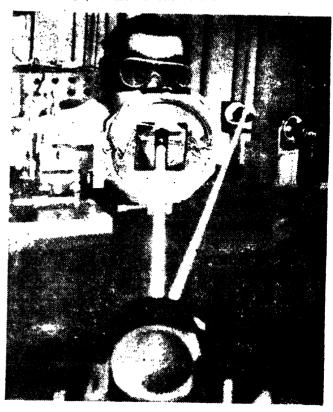
কিছুদিনের মধ্যেই কঠিন অকদ্যার মেদার তৈরি হয়ে গেল। অণ্র ঝানেব চেয়ে কঠিন অকিথার মেসারে একটি স্থাবিধে এই যে ভাতে দোলনের মান্তা একটি মানু মাপে বাঁধা থাকে না বিভিন্ন মাপে বাঁধা চলে। পদারাগ-মাণর স্ফটিক ব্যবহার করে যে কঠিন অনুস্থার মেসার নিমিত হয় সেটি ক্রমি উপগ্রের বার্তা-প্রেরণ ব্যবস্থায় পরিবর্ধকি হিসেবে ব্যবহাত হয়ে থাকে।

১৯৫৮ সালের ডিসেম্বরে টোনেস ও অপর একজন বিজ্ঞানী এমন এক শ্লেসারের পরিকল্পনা উপাস্থত কর্লেন যা দ-শামান আলোর এলাকায় বা অব্লোহিতের কাছা-**কাছি এলা**গায় স্নির্গততে পারে। এই বিশেষ মেসারের নাম দেওয়া হল অপটিকাল মেসাব বা লেচাার।

ফিজিকাল রিভিউ পতিকার ডিসেম্বর ১৯৫৮ সংখ্যায় টোনেস ও ডঃ আর্থার শাভলভের ' লেখা একটি নিবন্ধ প্রকাশিত হল। নিবশ্বটির নাম 'ইনফ্রারেড ও অর্পাট-কাল মেসার'। এই নিবলে তারা দেখালেন কিভাবে মেসারকে দুশামান আলোর এলাকায় বা অবলোহিতের কাছাকাছি এলাকায় চাল করা চলে। এ জন্যে গাহনুরটিকে তারা গাল করতে চাইলেন প্রদপরের স্মান্তবাল এক জোড়া আর্রাণ দিয়ে। পরিবর্ধনকারী भाशभएक ज्यानन कत्रा इत धारे मार्ड আরশির মধ্যে। স্বতংস্ফার্ড নিঃসরণ পটাব फरन और भाषाय कालाक छेल्ला कराय धवर সেই আলোক সকল দিকে গতিশীল হবে। ভিতরে থকেরে একদানু সেই আলোক ধাব সাতি সমান্তরাল আর্হাশর অঞ্চরেখ বরাবর, বাদবাঞ্জি অন্য সমস্ত আলোক বারকটোক প্রতিফলিত হবার পরে কিংবা একবারও প্রতিফলিত না হয়ে বাইরে চলে যাবে। ভিতরে থেকে যাওয়া আলোক দুই আৰ্মিলতে অনবন্ত প্ৰতিকলিত হয়ে অবিরাম চলাফেরা করে চলবে—তার মানেই অবাহত একটি দেখন।

প্রথয় অপ্রিকাল ঘেসার রা লেসার শিমিতি হয়েছিল রুবি বা পদ্মরাগমণির

এটি একটি প্রীক্ষায় লক অপ্টিকাল কম্পিটর মেমেরি। ধারণক্ষয়তা প্রচালত কম্পিটরের মতোই কিন্তু বেগ হাজার পলে অধিক। লেখা মজদে করা পড়াও মাছে ফেলার জনো এই কাম্পট্টারে লেসার রশ্মি বাবহার করা হয়। আমেরিকার রেডিও কপোরেশনে এটি তৈরী। আগামী দিনের কাম্পিউটরের এটি একটি নিদ্দান।



সাহাযো। এই মাণতে আছে স্ফটিকাকার আলুমিনিয়ম অক্সাইড ও অলপ পার্মাণ কোমিয়াম অকু সাইড। কোমিয়ামের আছিত্ ত্তিগুৰ চাজবিশিষ্ট আয়নের আকারে হে কারণে পাত্মরাগমাণতে আলোর মিশিসক ওঠে। এই পদ্মরাগমণির ওপরে ভার আলোর ঝলক ফেনে ইণ্সিত ফল-লাভ করা গেল ' লেসারে মাণর আকার धकि नत्नत मत्छ -देमच 8 तम मि: वान ০-৫ সে মিঃ। দুই প্রাণ্ড আরুনার মতে। शामिम कता। मन्फिटिक शान्ता कता इरक মাইনাস ১৯৬ ডিগ্রী সেণ্টিগ্রেসের ভ্রুত नाइरहोत्कन मित्र । जात्नाव खनक छाउँ कृपण ল্যান্সে এবং তার স্থায়ির এক সেকেন্ডের হাজার ভাগের এক ভাগ। ফলে নিগত রশিমর ব্যার্থত আনুর্প খণিডত হরে शास्क ।

পরবত কালে তৈরি হয়েছে লেসার হি^{দির}য়াম-নিয়ন ইত্যাদির সাহাযো। গাসে লেসারের মিগ ভ বুদ্ম খণিওত নয়, অবিরাম।

থেকে নিগতি আলো কেতিয়া-The second secon

রেণ্ট একথা আগে বলেছি। বাংলার বলঃ যেতে পারে, সামবংধ ও সাসংগত। কেননা এই আলো স্পৃত্থল ও অবিচ্ছিন তর্ণের গঠিত। সাধারণ আলোর বেলার একপারি বালা চলে না তা সে তারারই হোক বা মোমবাতিরই হোক বা ইলেকটিক বাভিন**ই** दशक। माधासम जारमा हेन स्काहिसारसम्ह বিজ্ঞানীয়া এই আলোকে স্কাস্ট্র বাল থাকেন হটুগোল। তার মধ্যে কোনো নিয়া न क्याना प्रमेश

লেসার এই কমিউনিকেশনের ক্রেট এত गाँव प्रमाण । क्षिक्र मिरक्रम्म होत्रें নিয়াররা চান ফিকোরেনসির সীমার একটি থাক হটুগোল থেকে মূত। এইট একটি কাঁক পাওয়া গেলেই তাকে ভর করে কমিউনিকেশনের অজন চ্যানেল তৈরি হতে পারে। এবং তার চেন্দ্র নিখতে আর কিছ হতে পারে, বিজ্ঞানীরা এখনো পর্যান্ত জা কর্পনা করতে পারেন না। সোভিরেত ইউনিয়নে ইতিমধ্যেই লেশার কমিউনিকে-मन्त्र काळ ग्रा द्राह लाए।

ক্ষাকর্প কাল্যীর আজ নানা রাজনৈতিক কাজে কারা প্থিবীতে যে ভাবে প্রানিণ্ধ-কাজ করেছে, তার প্রাকৃতিক সৌন্দর্য ও অন-কার নিকসকার্থিও যেন তার কাছে নিকপ্রভগ্রার। রুপিচ ভারত সরকারের অর্থান্ক্লো প্রানীর সরকার বিভিন্ন বিষয়, হথা—নিপা পর্বিসকারীদের যাডারাভ এবং ঘাটাত থাল্যাছি প্রেণ করে, কনসাধারণকে জনত ভীষ্মধ রুপের পক্ষে নানাভাবে সাহার্যানি করে আগ্রেম ভ্রাচ্ কান্মীরে বিভিন্ন গ্রাস্ট্রারর রুপ্তা ভারতার্থা অস্ট্রারর অর্থা ভ্রাচ্

এই ফাল্মীরে হিন্দু অংশকা ম্স্তফল্পে সংখ্যা অধিক। কিন্তু একলা হিন্দু
রাজ্যার প্রজাবই ছিল এখানে সমধিক এবং
কাল্মীরা রাজ্যাল গিন্ডতগল নানা পাস্তাবিদ্যার
কোনা পার্কার ছিলেন, তেমান কাল্যাবিদ্যার
কোনা পাল্যাকার প্রতিষ্ঠানও ছিল প্রচুর।
ক্রিন্ত হলে কাম্মীরে এসে অবস্থান করেন এবং
ক্রেন্তার কাম্মীরের এসে অবস্থান করেন এবং
ক্রেন্তার কাম্মীরের সারিকটে
শ্রুকার্যাক্রের পাহাড় নামে একটি পর্যাত
ক্রাক্রাক্রের ব্যাহাড় নামে একটি পর্যাত
ক্রাক্রাক্রের ব্যাহাড় নামে একটি পর্যাত
ক্রাক্রাক্রের ব্যাহাড় নামে একটি পর্যাত
ক্রাক্রাক্রিক হলে আছে।

ছিল্প্রাঞ্চলপের প্রভাবে সথ্ন ক ন্দীর্
সম্পূর্ণভাবে প্রভাবাদিবত ছিল ভ্রথন
কাল্মীয়ে ছিল্প্রমান্বান্দীলের শাস০৪৮।
কাল্মীয়ে ছিল্প্রমান্বান্দীলের শাস০৪৮।
কাল্মীয়ে প্রথানে রচনা করেছেন সেন্দ্রান্দির ইতিছাস বিষয়ক স্রজারীর স্থাতিত লক
নাম প্রেক্রা বিশ্বজন সমাজে পরিচিত্ত তেমনি
কাল্মীর সম্ভাট আন্দতদেবের রাজ্যুকালে
কাল্মীর সম্ভাট আন্দতদেবের রাজ্যুকালে
কাল্মীর সম্ভাট আন্দতদেবের রাজ্যুকালে
কাল্মীর সম্ভাট আন্দতদেবের রাজ্যুকালে
কাল্মীর সাজ্যুকালর গণ্ডের রাজ্যুকালে
কাল্মীয়া সাজ্যুকালি

ভারতের বিভিন্ন স্থানে চতুৎপাঠী ও ভালাল পাল্টচন্ত্রার নিস্পানি বেমন ছিল অপ-বর্ণাপ্ত তেমানি কাশমীরেও সেই লাল্টচন্ত্র থে ভারতেরই অননুর্গ ছিল তার নিম্পান পাঙ্গা বাল্ল ১৩২৫ সালের বৈলাধ সংখ্যা তেনিয়া প্রকাশিত নিম্নাক বচনাটি থেকে। এই

> कः (बाह्यमाका वस् अस्ति कि के कः अग. अस. नमर्थ अस्ति वि अस् स्मित्तित त्रस्पा अकं काक्यमान ज्ञान • सून्त ७० ब्रोतिकास्तत त्रुप्ति अस्ति व्यक्ति किक स्मित्रिकार विकास के स्माहित लाहित्व व्यक्तिका के स्माहित लाहित्व व्यक्तिका के



রচলাটর নাম কাজনবৈ লাল্ডচটা: এবং লেখকের নাম বাজনবেশুপাধার ছারণেচণ্ড শাল্ডীঃ

कान्यीरब नाम्य-हर्की

কাশমীর দেল প্রাকৃতিক শোভাসম্পনে বের্প লেন্ড, সেইর্প এক সমরে জানগৌরবেও সম্ভাবেল ছিল। নার, বেরণ্ড
কার্য ইতিহাস তাল বাক্ষাল প্রভৃতি সকল
গান্দ্রই কাশমীরদেশীর পাঁওতগণ অনন্যসাধারণ প্রতিভা প্রকাশ ক্রিয়া জগতে অক্ষয়কর্মির রাখিরা গিরাছেন। সেই সকল প্রথ
একলে অ্বনেক্ছংশ লাশ্নুত হুইয়া গিরাছে।

কাণত আছে, জয়াপীড় নামৰ প্রবল পরারাণত কাণ্যারন্পতি নেপাল আক্রমণ করিয়া
তথার পাচুইনেড কন্দী হন। রাজার অন্গাঁহথাতিকালে রাজাী রাজকার্যা পরিচালন।
করিকভিলেন। এই অবসরে স্থোগ ব্রিয়া
বাজার পালক কণ্যার আক্রমণ করেন।
লাভার নিকট রাজাীর প্রেরিড সৈনা পরাজিত
হল। পতিরভা রাজাী পতির প্রত্ন স্থার
লাভার অব্দিন্তা স্বীক্রার না করিয়া ধ্রুব

সাধারণ্ডাবে কডিপয় বিশ্বাসী পরিজন সংলা লইয়া রাজধানী হইতে পলায়ন করেন এবং এক গ্রামে ছম্মবেশে সামানাভাবে বাস্করিতে থাকেন। রজ্জী অলোকসামানা র প্রতী ছিলেন। সেই গ্রামের কোন রাজ্মগ মুবা রাজজীর মুপলাবশো অভান্ড বিমোহিত হন; অবশেষে মানাসিক উৎকট চাঞ্চাব্যাগতঃ ভিনি কঠিন পাঁড়ার লভিভূত হইয়া পড়েন। অনেক চিকিৎসা করিয়াও ঐ পাঁড়ার কিছ্নেষ্ট উপশম হইল না, রাজ্মণ যুবা উপ্তরোজের অধিকতর অবসার হইয়া পড়িলেন অবশেষে মুভূরে করাল ছায়া তাহাকে আঞ্চল করিয়া ফেলিল।

এই ভালাপ যুবা এক বিধবার একনাত্র পত্রে ছিলেন। অনাথা বিধবা অনেক চেণ্টার শ্রের প্রীভার কারণ স্বিশেষ অবগ্র রাজ্ঞীকে তিনি রাজ্ঞী বলিয়া হটলেন। क।নিতেন না: পরুত্ত এক স্থালা মহারসী মহিলা বলিয়া জানিতেন। তিনি রাজ্ঞীর নিকট উপস্থিত হইয়া 🛦 একানেত ভণহাকে সকল কথা জানাইয়া উপস্থিত বিপদে কাতর ভাবে তাহার দয়া ভিক্ষা করিলেন। মহীয়সী রাজনী তাঁহাকে মিল্টবাকে সুণ্ড্না দিয়া বিদায় করিলেন এবং পর্যদন আসিতে ব্যক্তিয়া **দিলেন। তাহার পর পরদ**ুঃখণাতরা জয়া-প্রীড়-মহিষ্টা শাস্ত্রজ্ঞ পণ্ডিতগণের নিকট ব্যবস্থা জিল্লাসা করিখেন যে সদি কোন ব্রাহ্মণের প্রাণ রক্ষাথা কোন নারী নিফের পাতিরতা থশিতত করে তবে তাহার শ্রাস্থার প্রায়শ্চিত কি?

পণিডতপণ বাবস্থা দলেন যে, এর খ-স্থালৈ ভ্ৰানলই এক ্ৰ প্ৰায় প্ৰত। ধৰ্ম-পরায়ণা রাজ্ঞী সেই অনাথা বিধবার প্রাণরক্ষা করিয়া অধশেষে তুষনিলে প্রাণ বিসজনি করিশেন। এদিকে জয়পীড় কৌশলে কারা-গার হইতে মুক্তিলাভ করিয়া নিজের সৈনা-সকল একর করিলেন এবং অতুল বিরুমে করিয়া আক্তমণ নে পাল পদ্দলিত **ও লুনিঠত করিলেন।** ভাহার পর বিজয়ী সৈন্য লইয়া কাশ্মীরের দিকে প্রধাবিত হুইলেন। ত'হোর শ্যালক তাহার প্রাক্তম সহ্য করিতে না পারিয়া কাশনীর ছুর্গড়য়া श्रुमाञ्चन क्रिक्ट्यन ।

জন্ধাপীড় কাশ্মীরে উপস্থিত হইরা
পথ্যীর শোচনীয়া পরিণাম অবগত হইষা
অঙাকত বাথিও হইকোন। তাঁহার পথ্যীর
এর্শ শোচনীয়া পরিণামের কথা সাধারণে
জানিও না রাজাও প্রচার ববিকোন না।
এক সময়ে তিনি রাজোর প্রধান প্রধান
পাণ্ডগুলাকে আহ্মান ব্যিয়া প্রেণিড়
বিহয়ে শাল্যীয় ব্যবহণা ভিজ্ঞাস। করিকোন।

এই পশ্ভিতেরা ত্রান্লের বাকশা দিকেন না,
দান ও অন্যর্শ প্রার্দিনেরের বাকশা
করিকেন। রাজ্য মনে মনে অত্যান্ত কুম্ধ
হইকোন, পরলত বাহিরে মনের ভাব কাহাকেও
জানিতে দিকোন না, হাথোচিত সম্মানের
সহিত পশ্ভিতবর্গকে বিদায় করিকোন। ইহার
পর রাজা মন্দ্রীগৃণ্ধে অহদেশ করিকোন হো,
আমার শাদ্রপ্রশেবর বিশেষ প্রয়েজন
হইরাছে; আমার রাজ্যে হাহার নিকট ষত
মাদ্রপ্রশিক্ষা আছে, সমস্ত সংগ্রহ করিতে
হইবে। ঘোষণা করা তুউক যে, শাদ্রপ্রশেষ
বিনিময়ে গ্রেম্থের স্বাম্য কুলা পরিমাণ স্ব্রণ
মাদ্রা গাম্পুর স্বামী কুলা পরিমাণ স্ব্রণ
মাদ্রা গাম্পুর স্বামী

রাজার আদেশান্সারে এইর্প খোষণা করা হইলে প্রজাবাদদ দলে দলে আসিরা চরপিম্বর বিনিময়ে শাস্ত্রাপ্থ স্বকা রাজ্ঞান্ত্র কিন্তুল বিনিময়ে শাস্ত্রাপ্থ স্বকা রাজ্ঞান্ত্র কিন্তুল বিনিময়ে শাস্ত্রাপ্থ স্বকা রাজ্ঞান্ত্র কালি কিন্তুল কালি লা বাজ্ঞান্ত্র হইল সেখানে স্বন্ত্র স্থান প্রকাশ কালি কালিক হইল ওখন এক দিন অবসমাধ জয়াপীড় শ্বক বাস্ঠ্যত্ত্বের সহিত অম্লা প্রথমালি স্কিল্ড করাইয়া ফোল্লেন। ইহার প্রের মন্ত্রী ও প্রজাবর্গ কেন্তুল বাহার অভিনার কিন্তুল কালিকে পারে নই। এইর্প প্রতাশিক্ষা কালে জয়াপীড়ের জোলেন হলাকি কালিকেন প্রতাশিক্ষা কালেকে ক্রাপ্রান্ত্র জালেন কালিকেন প্রতাশিক্ষা কালেকে ক্রাপীড়ের জোলেন হলাকি কালিকেন প্রতাশিক্ষা কালেকেন করাপীড়ের জোলেন হলাকিক ক্রাপ্রয়ার লাজা জ্যাপীড়ের জোলেন হলাকে ক্রাপ্রয়ার লাজা জ্যাপীড়ের জোলেন হলাক ক্রাপীড়ের জোলেন

এই ঘটন তেবারিধ কাশ্যারি নানক পাবস্য ভাষায় কিনিওছ—কাশ্যাকৈ ইতিহাসে বিপিত আছে। কহান পশ্চিতের বানেতর্তিকাশীতে এ কথার কিছুমার উল্লেখ না পাবার অনেকেই ইহার সভাতা সম্বন্ধে সম্পেহ করিয়া পাকেন (১)। পাঠার রাজগানের সময় বহু শাহ্তিকথ জ্বা হুইরাছে; এমন কেই স্বাহ্য ভালের জনতাতি একটি পথ শাস্থাক্তবি করিছে। করিছেল উহ্য ভাষার ভালের স্বাহ্য ক্রিকেট্র ক্রেই ক্রেইটি রাম বিদ্যাপাঁত-ভালের নিব্লিক্টা বিচার নাপা ও প্রশিভ্রত্বি নামক পুইটি রাম বিদ্যাপাঁত-

র্পে প্রসিন্ধ ছিল। সাঠান রাজসংগর প্রথম আচমণের সময় এই দুই ন্ধানের অধিবাসীগণ বহু দালাগ্রন্থ ভূগভো প্রোমত করিরাছিলেন। ঐ সকল গ্রন্থ কেছ আর উন্ধার করিতে সারেন নাই সমস্ভই প্রথমীর সহিত
মিশিয়া গিরাছে।

এইর প বাংস্কাল প্রকাজনে চলিলেও
কাম্মীরের গ্রন্থ স্থানিত এখনও ব্তট্ট্
শাওরা বায়, তাহাতেই ব্নিতে পারা হার
বে কাম্মীরে একদিন পারদার প্রিয়্তম লীলানিকেতন ছিল। কাম্মীরিদেশীয় ক্ষরত ভট্ট
প্রণিত নায়মজ্বী অতি আপ্রব্ প্রথ।
এই গ্রন্থ এক সময়ে প্রন্নানিত আত্তত
প্রস্থি এক সময়ে প্রন্নানিত অত্তত
প্রস্থি লাভ করিয়াছিল। নায়ে লাভের
একছেত স্মাট স্প্রস্থিত
করিয়াছিল। কিছ্লিল প্রেপ্ত কাম্মাটির
করিয়াছিল। কিছ্লিল প্রপ্ত কাম্মাটির
এই গ্রন্থের পঠন-গাটন প্রচালত ছিল।

একজন বয়েবৃশ্ধ কাশমীরক পাড্ড আমাকে বলিয়াছিলেন তিনি গ্রের নিকট নাায়মজুরী' গ্রন্থ অধ্যয়ন করিয়াছেন। জয়ব্ডভা থেমন নৈয়ায়িক, তেমনই অসাধারণ কবি ছিলেন। তিনি বহুস্থলৈ অতি নিপ্ত দার্শনিক বিচার সকলে স্বালিত পদে। লিপিবন্দ করিয়া গিয়াছেন। নাায়দশনির অনেক বিষয়ে জয়ব্ডভাটু নিজের স্বত্যু মত বাছ করিয়া গিয়ছেন। এই গ্রন্থ প্রান্থীয় মহামহোপাধায় 'গংগাধর শাস্ত্রী আই থহাদয়ের সম্পাদকভায় কাশীতে ভিজিয়ান গ্রাম সংস্কৃত দিকিকে ম্পুন্ত ইয়াছে।

কাশমীর সদানাধ প্রণীত এটবত রক্ষ-সিম্পি বেদানেতর প্রসিম্প গ্রমণ। 'যোগবাশিক রামায়ণ্' অট্যেত্যাতের উৎকৃষ্ট গ্রম্থ। ইত্য

১। এই ঘটনা আমরা কাশ্মীরের প্রা-তের বিভাগোর প্রধান প্রিড মহাত্রেপালার শ্রীলুভ যুক্তদরাম শাদ্বী মহাপরের নিক্ট প্রনির্ভি। বাল্মীকি-রচিত বলিয়া প্রসিদ্ধ হুইলেও, ইতার রচনাপর্শান্ত ও রামায়ণের রচনাপর্শান্ত সম্পূর্ণ বিভিন্ন। প্রভাপান মহামহোপাধার পুনবকুমার শাস্ত্রী মহোদ্যু ইভার রচনা-পশ্বতির স্মালোচনা করিয়া এই অল্থ কোন কাশ্মীরী পশ্চিতের বচিত বলিয়া সিখ্যান্ত করিয়াভিলেন। কাশ্মীরের প্রতাত্ত্ব বিভাগের প্রধান পশিভত মহামহোপাধ্যায় শ্রীযার মুক্ন্দরাম শাস্তী মহাখায় প্জাপাদ 'শাস্তী মহাশ্রের এই সিংগান্ত সমর্থন করেন। যোগ্রাশিষ্ট র মায়ুণ অশৈবতমতের অভানত পোষক গ্রন্থ, পর্নত আচায় শংকর কোন স্থলেট যোগবাশিন্ট রামায়শের কোন শেলা প্রমাণ্র পে উন্ধতে করেন নাই অথবা কোন প্রসংগ্র যোগবাশিক্টের নাম কোথাও করেন নাই-ইহাত চিশ্তা করিবার বিষয়।

'প্রত্যভিজ্ঞাদশ্লি' কাশ্মীবের অনন্য-স্থারণ বসম্পত্তি। ভুলুমাসেরং ভিনটি প্রসিশ্ধ-কংশমীর আননায় গৌড় ত্যাদরায়া ও কেবল আমনায় । কাশ্যা বি অ মনাহোর ভারসকল আমানের প্রাস্থ্য নাই। এই কাশ্মীর আন্দায়ের তল্যকে অবলম্বন কবিয়া কাশ্মীর দেশে <u>প্রতাতিজ্ঞাদশনি</u> প্রচারিত उचेशएइ। জৈমিনির পূৰ্ব মীমাংসায় যেরূপ বেদের ক-ম'কাণেডর মীমাংসা করা গৃইরাছে, বদ-রায়ণের উত্তর মীমাংসায় যেরূপ উপনিষদের মীমাংসা করা হুইয়াছে এই 'প্রত্যক্তিকা-দৃশন্তি সেইবাপ তদের মীয়াংসা করা হুইয়াছে। এই 'প্রত্যাভজ্ঞাদশ'ন' শৈবদিগের দৃশ্ন। এই দৃশ্নের মৃত্ত শংকর-দৃ**শ্নের** সহিত অনেকাংশে একব**্প। কাশ্মীরের** প্রাত্ড বিভাগ হইতে সম্প্রতি শিবস্ত-বিম্মাশনী', 'ঈশ্বরপ্রতাভিজ্ঞা' এবং 'প্রতাভি-ভাহাদয়ম নামে তিনখানি 'প্রতাতিজ্ঞা-দশনি স্বৰ্ধীয় গ্ৰুথ মাচিত হুইয়া প্ৰকাশিত **ट्**रेसाइट ।

__ 중이어 **경**

から、一年のかの人をおといるとあるから、心をかられて、大変になったから、この



সেই কোকটি

দুঃখে-সুখে এক পাড়ায় একই গালের ঘনতে পাশাপাশি বড় হয়েছি, ঘ্রে-ফিরে জনের বৃত্তের মত আবার কাছাকাছি এসেছি। বড় হয়ে পর্যন্ত দেখেছি, অনিক কেই শালত, ভেতরমাখে, সাত ৮ড়ে রা না-কাড়া সেই সাবেক অনিকাই। খাব নিয়মিত জীবনবাতা। পরি: বারে সাকুলা। তিনটি মান্ব—অনিল, অনিগের মা ও শ্রুণ। বছর দেড়েক মার বিবাহ হয়েছে অনিগের। দিবি: কশ্যুণ মার্থের বউ। আনকোর বাবা কিছু কোম্পানীর কাশক ও হাছার কয়েক জাকা ঘরকুনো-ছেলের জনা রেখে চোধ বজেছিলেন, তা ছাড়া দিমানায়ের আন্তারন কালক বজাবা বাড়ী—এ সব নেড়েড়ে আর কাইনস অফিসে কালক কলিক কেরানীব কাজ করে ত। মাটামাটি বেশ আফিসে কালক কলিক কেরানীব কাজ করে ত। মাটামাট বেশ আফিসে কালক ক্রিমিক আফিসে কালক ব্যুগ্রিক। তবে হঠাৎ কেন এই ভূমিকয়, এই বিফেনর গ্রামার ওপর শাকত ছাদে অসংখ্য ফাটালের সগাব। হাব

আমার ছেটেবোন বৃত্তি একদিন বলল 'বড়দা,
মাসিমা ডেমাকি বিকেকে একবার তাঁর সংগ্রা দেখা
করতে বংলাছেন।' মাসিমা মানে অনিলের মা। প্রথম
অংশকা নিয়ে মাসিমা বিকেল থেকে গ্রাহতার ধ্রের
কানলার ভালে চোথ পোতে দাড়িয়েছিলেন। আমি
কেতেই বললেন, 'পা টিপে টিপে একেবারে ছালে চলে
বা বাবা আমি এক্ট্রি আস্ছি।'

সভেধর অংশকার একটা গাঢ় হলে মাসিমা এসে মাদ্ধ বিভিয়ে বসলেন। একপাশে আমি। কিছ কণ চুপ করে থেকে হঠাৎ তিনি আমার হাত দুটো ধরে বললেন অনিশকে বাঁচা তই!' ভারপর, আমাকে কোন কিছা বলতে না দিয়েই ঝণাধারার মত অন্যাল বহে গেল তার বেদ্নাবিন্ধ কথায়ালা। এলোমেলো একরাশ যা ভিমি বললেন ভার মোদা কথা হল, অনিল একেবারে পালেট গোছে। প্রায়ই অফিস হায় না। বালিশে ব্রুক দিয়ে বলীর-পর-বল্টা শুরে-শরে পা নাড়াতে থাকে। কারো সালে কথা বলে না। স্থাকে বলে দিয়েছে মায়ের সংগ্ শক্তে। কখনো কখনো প্রচণ্ড চেটামেচি কর-এমন কি ब्रारमत कारहे कहा-उहें। जारह उन्या जामरह जीनरमद একেব্রেই প্রভারবির দধ। কোনো কোনো দিন বাসি জামাকাপত আর গালে একঝোপ দাতি নিয়ে হঠাৎ বেরিয়ে ষার-অবশনীয় শরীরের অবস্থা ও দু চোখ করমচার মত লাল করে দ্ব-তিন দিন বাদে বাড়ী ফেরে। শাতরা-পাওয়ার কোনো ঠিক-ঠিকানা নেই। আমি বেহেতু ভার আবাল্য-স্কুদ, তাই ছেলেকে বোবার সব আশায় জলাজাল দিয়ে এহেন অবস্থার একটা কিছা স্বাহা করার জন্য তিনি আমার ভেকে পাঠিয়েছেন।

অনিম মনস্থির করে নিলাম। কারণ মাসিমা আর অনিলের সদ্য-পরিণীতা বউটার মুখের দিকে আমি চ্ছাতে পারছিলাম না। পরের দিনই কলেজে নিয়ে দিন করেকের ছুটির জনা আবেদন করলাম। সংধ্বেলা অনিলদের বাড়ি গিরে দেখি, ও শ্রে শুরে কড়িকাঠ গ্রছে। আমাকে দেখে বংতেও বললা না। আমি শ্রের মর্বীয় গলার বললাম 'তৈরী হরে আজিস। কাল সকলো দুজনে মিলে হস্তাখানেকের জনা বেরিয়ে পড়ব।' প্রস্তাব দাবে বলা কিছুটা খালী-খালী দেখাল ওকে। আনি পরের দিন সক্তে রাউরকেলা একসপ্রেস ধরে
সোজা এসে নামলাম চক্তধরপরে। ট্রেন থেকে নেমেই
দেখি রাচি বা হাজারীবাগের চমৎকার তকতকে বাস
দাড়ির। আমার মতলব ছিল, অনা। হাত দেখিরে একটি
চলল্ড লরি থামালাম। টেবো ছাড়িয়ে গভরিতর
জগালের পেটের ভেতর টুকে হিরান জলপ্রপাতের কান
খেখে সোংরা সাংচ্যারী পোরয়ে খাই-খাই দুপেরে মাথায়
নিয়ে হেসাডি পি ভবলা, বাংলোর দরজায় এসে নামনাম। চারপালে পাহাড় নানা রেখার নদী আর
পাহাড়ী জ্যোচামের ফলন্ড শোভার ভেতরে দাল সেগনে
মহুরার গলেধ মাড়াল বাতাস বাকে টানতে টানতে
ড্রেস আসছিল। জানলা দিয়ে দেখা য়াছিল কাইরেদের
হরক মাপের গোলপাতের ছাউনি।

দাপুরে টানা ঘ্য দিয়ে যখন উঠলায়, তখন বাংলের চারপাশে অরণাচর লম্বা লম্বা ছায়ারা এসে দট্টিয়াছে। মাদলের বোল আরও আরও খরতর হতে হতে যেন বা হাইপিকেডর শব্দ হয়ে স্বাক্তি। একটা টেমি জন্দিয়ে রেখে গেল কীপার।

কিছ ক্ষণ পর আনল হঠাং দাঁতিয়ে উঠে বলল তই কেন নিয়ে এসেছিল এখানে আমাকে? মা বলৈছেন ব্যাক বিস্থা আন্নার উত্তরের তোয়াঞ্জান করেই সে বলে যেতে জাগল আমিও অনিল বলতৈ যে মান্যটাকে ভোৱা এতদিন চিনতিস, সে একটা ফাপা মিথো পরি চয়র মান্ষ। কি যা ত: বকছিস: দ্ব ল গলায় প্রতি বাদ করার চেণ্টা করলাম। ঠিকট বলছি ফসফরাসের মত দ, চোখ জনলে উঠল আনিলের, আমি যে সমুহত কিছ, জেনে পেছি! সামার নাম আনিল রাষ নয়, প্রভলন রায় আর বিমলা দেবী আ্যার বাপ-মা নন। যে শৈলেনকাকাকে ছোটবেল৷ থেকে ভোৱা আল্লাদের বংড়ী আসতে দেখতিস, আমি সেই শৈলেন বিশ্বাসেরই ছেপে। তাঁর দ্বী মানে আমার মা আমাকে জদম দিতে গিয়ে মারা যান। আমার নকল বাপ-মা অংসল সৈজে এতকাল জগতের সামনে মিথো পরিচয় দিয়ে মান্য করে-ছেন আমাকে। মাস দুয়েক আগৈ মাড়ার মাহতের **প্রবল** বিকারের ঘোরে শৈলেনকাকা আয়াতে সর কিছা জানিয়ে গেছেন। যে আমি-কে **শংধ**ু শা**রা** নয়, আমিও জানতাম, এক লহমায় সেই মান্ত্রতা মিথো হয়ে গেছে। এখন আমার চল্লিশ বছর বয়েস। এই চল্লিশ বছর-বয়ে বেড়ানো মিথে মানুষ্টা আন্ত কোথায়, কার কাছে কি নিয়ে দাঁভাবে, বলভো অমিভ?' দুঃ হাতে মুখ তে रहेरित माथा निरम नामारकत मक कांनरक मानम व्यक्तिम। আর এক ভয়াবহ নিষ্ঠার সভাের সামনে সম্পূর্ণ নিরুত উ^{ল্ল}ংগ মান*ুষে*র মত আমি পাথর হয়ে বুসে রইলাম।

—অমিতাভ দাশগণেত



ত্যাত্তাল্য বাচাচ্চা উপন্যাস

(পূর্ব প্রকাশিকের প্র_{স্}

ইটোর বাড়ি থেকে বেরিয়ে এসে কণ্টা ভার রাশিয়ান যড়িতে যেন মুখ দেখতে চেলী করণ।

জরাকত প্রথম খেদিন ঘড়িটা তাকে উপ্রায়ার দের এই চমংকার উপমাটাও সেদিনই দিরেছিল। বলেছিল তোমাকে এই আটোনটিক আয়ানটো ছাতে পরিয়ে দিলাম এতে তুমি সমরের মাখুর দেখতে পাবে। লাম্বর্ক কবি-সাহিতিকে, নাটকে এবং পাবল, প্রেয় পাবল অবশা। সে ঘড়ির ভারালে হরত সমরের স্কেন্তর থাইটী দেখতে পায় কিংপুরদারে প্রকে তা সম্ভব নয়। সৈ এব ছারেসেট ভারালে রোজ রাছিরে একজনেরই ছারেসেট ভারালে রোজ রাছিরে একজনেরই মাক্রেসেট ভারালে রোজ রাছিরে একজনেরই মাক্রেসেট করেছে। কিংবা বলা ভাল বাজী বরছে।

সাদার্থ আন্তেলিউ-এর এই সোনার থনির মত টিউশানীটার সংগ্রান দিয়েছিল সংকাম । নলতে গোলে তার নলাক ওলাতেই নক্ষন চাজাটা শেষে গোছে। বিক্রেড ফেবত একজ্যেড়া রেয়েক সে বাংলা শেখার। সাত্যতে তিন দিন কিকড় পক্ষিনা গোলা টিউ শানটি পেয়ে বক্ষনা বেন বেলে গোছে। উই এখানে সে কটায় কটায় বাডা এব পরে। কিকড় আল ভালার কটায় বাডাও পরে। কিকড় আল চারার প্রতারে বাডাও পরে। কিকড় আল চারার প্রতারে বাডাও পরে। কিকড় বাজা ভালার সারাম্যান বিশিক্ষামাইবান্য এসেভেন, সংকাম প্রাটি আন্তেভিন আলে জানতে পারালে বক্ষনা আন্তেভিন আন্তেভিন বিশ্বকর দশা হতে না।

কবিন্দ বিভিন্নত সময়টো দেখে ব্যবদানী মেজাজটা একটা খালাপই হরে গেল। হাতে এখনো নীট সওয়া ঘণ্টা সময়। হাজরার মেডে জয়ত থাকবে সাড়ে ছটায় পাংচুরাল সে রকম হিসেব করেই বাসে ওঠে কলন বিশিক্তর বেকোনো একটা সীটে বসার চোটা করে। জারগা না পেল জানালায় বাকে জিল্লে থাকে। জরুত প্রতিটি বাসে লক্ষা রাখে শ্টলে গাড়িরে। ওকে দেখলেই উঠে গড়ে। বাঢ়ির কড়ের স্টপ্ থেকে ওঠি বলেই এই সাবধানতা। তারা দ্বলনে চলে আক্সানেতে। চাটা থান্ধ, মর্লনে বেড়ার কিংবা বসে গল্প করে। কোনো বিন আক্রোন্ডাম কি ববীন্দ্রস্থনে লোকে।

কিংতু আর্জ এই সওয়া পাঁচটা থেকে
সংগ্রে ছটা প্রযাস্থ বস্থানা একা একা কিডাবে
কাটাবে ২ এ পাডায় না আছে কেউ চেনা
গেখানে কিডাটা সময় কইছে নেওয়া যায়।
কংগানা সাস্থানৈর দিকে অনিচিত পারে
এগোতে এগোতে হাতের ফাপের ভোডাটার্ব
দিকে নক্ষর দিল। যামজ শংবানে মিলো
ভিলমাণকে এই উপাহার দিগেছে আজ।
কোলাপেন মালানান ভাবেছিটি শিয়ে ভোডাটার
সাজানো। কাবনান অবি জালা লালালা।
আজ জালতকে সারপ্রাইল দেখা। বস্লানা মন্দ্র মনে জালতকে সারপ্রাইল দেখা। বস্লানা মন্দ্র মনে জালতক দুষ্ট্রিজিরা মৃথি দেখাতে পেলা।
কথার পাটা বেলাতে যা ওক্তাদ, ঠিক ব্লবে,
এবি বি-প্রোজানীশ্য মানে প্রেক্রপ্রের,

বুলনা মাণের কাছে ফা্লের গাল্ড তালে দ্বাপ নিজে এমন সময় কৈ কেন প্রায় পাড়ের াজ চাল বৈলি কানেকানে গলাল কোয়ে টিলো গেলেলে যোৱে বল তুই ফা্টিরি সঞ্জি

ড্মান্ড প্রিয়েছিল হাত থেকে ফ্রলের ভোডান পড়ে যেতে যেতে রা**র গেল**। িং**ংশর**ালের প্রেষের গলা ঘাডের ওপরে কিম্পু এই ছেণয়া পেয়েভিল **প্যান্ত**। মহেতেরি মধেট ক্ষেত্ৰৰ টাল সামলে সংক্রমে যানে ^{ব্রমি}মেছিল সম্প্রা। এ কথনই প্ৰস্থাৰত নায় প্ৰস্থাৰত গলী নয় চমকে দিতে eর জড়িন থাকলেও। জয়দর ভালেও রুখনো লাম পাল না বাথ্যুয়েও লাজি ক**থনো** গ্ৰিলালে কাস না। তাছাছো জয়কত এখন এখানে অকংপ্রের পাড়ার একটি রাবে ফে এখন নত্রন মাউকের মহলা দিক্তে আরু আড়ে আড়ে ঘড়ির দিকে নজর রাখতে।

ঘ্রে যাকে দেখা সেও কিন্তু আকল্প-নীষ্ট্ ভিলা। তাকে দেখা আর ভূত দেখা একট বাদ্যান। সে ভানেক দ্বের অতী্ত্ সে মৃত আজ বন্দনার কাছে। তার স্মৃতি প্যান্ত বাদ্যার কারে দিয়েছে।

কী? থনে চমকে গেলেল মনে হাল ? নিথাত স্টেপরা টাই কোলানো, চকচকে টোর, প্রায় 'হ্যালো কি.খবর' ভণ্গিতে তার প্রদর্শনীর যোগ্য কেতাবী দণ্ডগণুলো বের করে হাসলে। বস্তুগ্য করলায় না তোঞ

বশ্দনার আ এবং চিব্রুক কঠিন হাস সে হাস্পোনা, প্রথমের জ্বাব্রু দিলানা শুধু নীবেট নীবস নুড়ি গড়িয়ে পেবার মত একটা শ্রুদ দাঁতের ফাকে কৈচাবল কবল আ !

> আমি কিন্তু ভূত নই। হলেও কতি ছিল না। মানেং

শাংশ : নাথিং সাটাস'।

কিণ্ড একদিন—

বৈতে দিন। এক দিনের কথা অনা **নেরের!** ভাবকে। দ্যাট চ্যাপ্টার ইঞ্চ ক্রোক্তচ।

অহ অন্কোস । অবকোস । আ**ঞ্চি** সেজনো আসিনি। পলেট থেকে সিগারেট কেস বের করে।

ত্র[ি]ক কারেণ্ট আকা**উন্ট খ্রলভে?** বল্পনার গলায় বার্মে। লোকটা গারে মাখলো মা।

্রতিয় তে৷ আমাকে দেখেও না দেখার **ভান** কর্মজনে—

পথে বেরিয়ে উটকো প্রেয় দেখে বেড়ানা আমার প্রয়েশন নয়।

বাঃ। —ফিন্টার চিপ্তে একটা কিং সাইজ ঠোটে চেপে গ্যাসলাইটার জনালন, স্যার্ট হবার চেন্টা করলো করেকটা বিং হ'ডে, বাঃ তুমি আজকাল রে ইংরিজি বল।

আনি সংখ্য মান্য ইংরেজি বচন একটা মুখ খারাপ করি।

জুমি খাবই রেগে আছে **দেখছি।** রাগ? বন্দনা কঠিন গলার বলে কার ওপরে?

আমার।

অপেনিকে?

আমি ? আমি সঞ্জয় গ্ৰেগ্ৰাকী। লোকটা ফিমে স্টারের মত স্প্রতিস্ত ভাগ্যতে কথি নাচিয়ে তংসহ ফাড়ে দেয়, হয়ত মান্ত।

হয়ত। বংশনা চলে যেতে চ]র। বন। লোকটা হাত বড়িরে ওব হাত ছেয়ি।

জেশিকন লা।

ফরণিভ আদুভ ফরণেট, **বেল। ক্ষ্যা** কি এক্ট অপ্যাপ। ্ বন্দন্র হাতের পিঠটা জাতে বা্ছিল। একটা চুপ করে থেকে বলস করা বলে প্থিয়তি কিছু নেই। যান্থ কিছুই ভলতে পাতে না।

বশ্বনা কোনো উত্তর দিল না। হাটতে শ্র করবো। সংগ সংগে লোকটাও। লোকণার কোনো নাম নেই. এই মাচ उक्तातम करामा । तन्मना भूतः प्रमाणाः वन्मना अत भाषाः प्रमाणाः । उत् किस्ट् ভেজা হায় না। প্রেনো কথা মনে সডে। প্রেরনো কথা মনে প্রভাগ সাথা গরম হায়ে ওঠে, কান বা-বা করে। ব্যবন্য চলছিল। জ্যোকটা সংখ্যা সংখ্যা বৰদনার প্রান্ধে পালে আসভিল। বন্দনা কিছুই দেখভিল না. কিছাই শান্তিল না। নিশিতে পাওয়া মানুষের মত সে হাটছিল। লোকটা যেন কি বৃদ্ধিল, কিন্তু বৃদ্দন্ব কানে আস-ছিল না, অথবা আস্ছিল কিন্তু কথা-গ্ৰোৱ কোনো অৰ্থ হচ্চিল নাং অর্থ হীন শব্দের মতে কথাগ্লো কানে বাজাছল শাধা। দরপাশে মানাধের অসংখা টকেরো কথা, গাড়ির শব্দ থামার চলার তেককষার কত রকমের চলে দাওয়ার ফিকে আশার গাছে মাথাভতি সাম্ধা পাথির কিচিত্র মিচির কুরুর ভেকে উঠালা কোথায় বৈতিপূলাকের পদ্ধক কোগোয় রেন কো কারা **ভাসছে, গলা ফাণ্টিয়ে চাসছে, ডাক্ছে** কলিং বেল আরও কি, কি যেন...আবহ স্পাতির মত... সব কিছে মার্গ ডায়ে मानारम मानियाम तथ्यमा करिक करिक হাঁটছে...বেন ক্তিপিন দিনাগরর, রাভ রাভ-লালি…বৰণ বসতে শীম গুডিয়া কত ঋতুত ফুলে বদল পাড়ো বদল মাস বছর যুগ যুগা-**ত্তর পার হামে বন্দ্রনা মেন আর এক জীবানে** আন্দ জগতে তে^প'তে গতে। সামনোর কাশভাষকপ গাছ গাছখনি মানির চং মাটির হং বাজির ভাদ মান্সের দলন সর বদকো যাকে। সামনে সাহি বাহি কোয়া-টারস বাগান পিকনে রাংগা মাটির চল শালের জালা খোয়াই পথ্যালো পিচ-পাশিশা বানওয়ের মত ভাটে পেছে দিশ্যাল্ডর সিকে উঠের পিঠের ছাত্র উঠে নৈছে, স্রশালে গালের জনাদার লাকেনভা দেখকে দেখকে বাহিষক কাউলাধ্যক কোথাও হাজার দাণি কোথাও নিকেপ জন্মিতি ক্রিক শ্বেরনা-চৌলেক্রন ট্রেরি W72 মিসন আলোভ ভেলংমা কুলিল পীত ধ্বীকে সম্প্রের কাল্যাক্ত। কাল্টিনিটি ाच्यारेच्या जामान्य ज्ञानरकाद्विको स्थानेद्वानेद्वास चालिक सुनि भाग अधिक€े क्लान्टकीत कारास्त्र प्रतासक प्राची क्षीभाग भारत-पे-जानात জ্ঞানজ্ঞত ভাৰত ভাৰত ক্ৰীক্ৰ নিৰ্দেশ্য বৰ্ণক্ৰে নিশ্চন भाकितकार जिला प्रका शाला । प्राप्त शहरी क्रमुळ्डा जानकामा जान्तक हाफ विन्त्रीकः... দেহি সহস্থার মেলয়াকো কাব্যা-র **** ্ৰ সংকপ্ত কি ফোল জং কি সেন ইয়াড় किन्द्रिक अन् खाठीस अन्यान-ক্রেণ্ডিফ ক্রপে কেই তারিফা পাল কার-कंक किया विकास राज्य स्थान कार कर्मात জাতি ^{শাসন} লল পৰ্যত **খনে চে**না was man officered.

বন! কে যেন চিংকার করে উঠে ওকে টানালা দুহাত দিয়ে যেন ছি'ডে আনলো ্ই আজগানি স্বংন স্বংন ঘুম আর জাগার সীমানা থেকে। কদনা ফুটপাথের ত্রপর ছিটকে এল কার ব্রকের মধ্যে বলিন্ঠ বাহার খেরের মধ্যে অপরিচিত বিশ্বাসের হার্ম্য। তার পা থেকে একপাটি ক্রাডে। খালে গেছে ফালের ভোডাটা আর হাতে খনে নেই আচলটা ক'াধ থেকে মাটিতে আর সংখ্য সংখ্য প্রম ধালো বাতাসের ঝাপটা দিয়ে ঝড়ের মত কি যেন গা ছ ুয়ে কোরেয়ে গেল. এক ঝাক ভীত কোলাহল মোটা দমবন্ধ জাহাজের বাশির মত হন উড়ে বেরিয়ে গেল পিঠ ছ'ুরো।

কয়েক সেকেন্ড ওরা কেউ নড়কো না. শা, ক্রিম্পান শ্ব-JE 201 ব্লস্ দাভিয়ে शक्ता। ' নংবাদ্ধ হ্য ব্লদ্যার ব্রুক্তর ধনক ধনক সংশ্ৰ বাকের দেওয়ালে প্রতিধর্ননত মনে হতিভল যেন এই শবদটা তার নয় দওয়ালের ওপিঠ বেকে আসছে. 97 তার ক্রের ওপর ভেপো পড়ছে চেউরের

বৰণনা ধীরে ধীরে মূভ হল পথের ওপর পেকে অচিকটা তুরে নিয়ে শায়ি ঠিক কর্ণ। আর তখনই জন্তার কথা মানে পড়ক। একপায়ে জাতো আছে এক পায়ে নেই জাতো খাজতে পিছন ফিরলো। ফটুপাথের কিনারে পিচ বাস্তার ওপর চূপো পড়া সাদা পার্রার মত তাও জ্যতার পার্টি পড়ে আছে থেতিলানে। বস্তাস্থ। কাছে গিয়ে তুসতে গিয়ে রভ নয়, রক্ষণাশাপের ত্যেত্^{টি} একদলা বলেব মত পিচের সংকা মাখানাখি আছে। এদিকে জাকের অবস্থা থারাপ, জিলটা চার্গ এক পালের ক্টাণ্প ালে কেরিয়ে এসেছে। এ জারেরায় ভারে शा गंगामा हाम मा, हना हहा म्(द्वेत केशा।

'ইসে জন্ম ছাটা **বেল**।'

্তৃমিও গৈরেছিলে।

বলনা হভবাদির মত করেক পলক জাতোটার দিকে তাকিরে থাকল। জাতোর যে দশা হরেছে মটি দিয়ে আন মবলমত করানো যাল না। এখন এই গালি পায়ে কি করবে ভেবে পোল না বল্পনা।

'তেয়ের নবজনা হজা বলাগে পেকো' লোকটা নকা গজান তাবার কলল, 'চলো বাহ্যির ওপারে কাই।'

'কেন?' মুখ তুলে তাকালো লোকটার নিকে।

তোমার জ**ুলো কেনা প্রয়োজন।** যেখানে যাজিলে খালি পারে সেখানে বেতে গালবে না

কোথার বাজিলাম ? অপ্রসম গুলা বসনার।

লোকটা জবাব দিল মা, শংগ্র ছাচ্যা কমন সবজাগতা হাসি। তে জ্ববার সেগারেট কেস বেদ্ধ করক। ্রজনা কঠিন গদার লোকটিকে থেচিলো কী! জবাব দেওরা হচ্ছে না কেন আমার সদবদেধ দেখছি অনেক খবরই রাখা হচ্ছে!

'তা হচ্ছে।' এক মুখ ধোঁয়া টেনে নাক দিয়ে ছাড়তে ছাড়তে ও বলল।

বন্ট বৰদনা এক মহেতে কি ভাবল, 'এখানে কেন আসা হয়েছিল?'

তে মাকে বাড়িতে পোলাম না বলে। ও । বাড়িত ও যাওয়া হয়েছিল। এত-কাল পাবে া বছর পারে। কেন? কেন?

'নেক্ষ্ ক্রাব্লে ক্ষা চাইব বলে।
সাক্ষা ক্রেন বলে কত কত হয়ে গেছে
চিনতে ক্রিন দি ভেবে ছিলাম তুমি। সেইনাবে কর্ম কলতে গিয়েছিলাম। ওং কি
আন্চর সিমিলারিটি! তোমার যে চেহারা
আ্যার মনে ছিল, অবিকল সেই চেহারা।
সহি৷ অ্যাম একট্ লজ্বারই পড়েছিলাম।'

'তোমার বােধ হয় মনে ছিল না গণগায় অনেক জল বয়ে গোছে। ভেবেছিলে আমি সেই আছি। ভেবেছিলে কিছুই বদলায় নি?' একটা টানা নিশ্বাস ফেলাড বদনা, চােথের পাতা অম্বন কয়েকবার ফেলল তারপর আবার বলাল 'দেওয়ালের বাংলেকতারও বছরে বছরে পালটায় আর মান্ম পালটায় না?'

বলসনা মিজের হাতবাগটা খলে সদ্ভবত প্রসা-কড়ির পরিমাণটা দেখলো, তারপর ফের বন্ধ করে রাস্তা পার হবার জানা দ'ড়ালো।

'সাশ্তরাই আমাকে এখান্কার সিক্রা দিয়েক্ত ।'

'কিবত এখানে আসা উচিত হয় নি।'
'তা হবে। কিবত আমার সময় ছিল
না। তাই আসতেই হল। আজই বন্দে মেল দুনাপিনুৱে ফিরে বেতে হবে আমাকে।'

বন্দনা শীতল গালায় বলল, 'ফিয়ে আপনাক যেতেই হবে।'

'সাক্তনা কিচ্ছু ত্যোমার থেকে অনেক ভাল ব্যবহার করেছে আমার সংগা।'

'সাক্ষনা আপনাকৈ কত্যুকু জেনেছে।'
'ছুমি আনকখানিই কিব্যু ভূপ জেনেছ।' হাতের সিগারেটটার বিকৈ তাকিয়ে, 'বেশ তে' আগের মত 'তুমি' চলছিল অংবার আর্থান ধ্বলে কেবা?'

বৰদনা শেষ কথাট,কুকে উপেক্ষা করে বৰুল, 'আপনার দেবী হয়ে যাছে।'

লোকটা কথাটাকে আমল দিল শ বলল ভূমি চলে আসবার পরে আমি খান ভিনেক চিঠি নিরেছিলাম। কোনো উক্ত গাই নি।

'আপনার জবাব নেই।' বন্দনার গাণার একটু হাক্কা দুকর মিলল। পরে একট থেমে সম্মন বলার বলল, চিচিগ্রুজ্য আমি পড়িন। খালিনি প্রক্তি। থাম বুল্ধ হিছে কেকা দিরেছি।'

OBA

গেণডামি আর নয়

শোনা বায় পাচীহিসেরে চাকরীজাঁবী হোয়েদের স্থান স্বালে। তাই প্রপ্রিকায় অধিকাংশ স্থানে বিজ্ঞাপন-দাভারা পানীর বিভিন্ন গুণাবলীর সংশ্য চাকরীর কথাটা উল্লেখ করতে ভোলেন না। ভোলার কোন যাতি নেই। তার জনা আমা-দের অর্থনৈতিক কাঠাতো দারী। বর্তমান পার্নাম্থাততে অথ'লৈভিক অধিকাংশ প্রেরই একার আয়ে সংসার চালাতে নিভার-শীল নন। সভেরাং অধ্যক্ষিনী হিসেবে স্ত্রীকে চাকুরী করতে দিতে তারা বাধ্য ইন্ডাই হোন আর জনিক্কাই হোন। তার ওপর অর্থের এক মোহিনী শক্তি আছে যা স্থা-পার্ক নিবিশেষে সকলকেই বাদ্বলো স্তব্ধ করে দেয়। তছাড়া দ্বিউভিঞা পালাটেছে—কেউ কেউ অভান্ত উদারভাষেই দুর্বীর উপাক্তনকৈ সমর্থন করেন। সেখানে <u> প্রাদের কোন ক্ষোভ লোই তারা সহজ্ঞ, সরক</u> ও স্ফাতিতে ঘর এবং বাইরের কাজ বথা-সাধ্য করেন। সাত্রাং আমাদের দেশের বর্তমান বিবাহযোগ্য প্রেরেরা সচেতন-ভাবেই চাকুরীজীবী মেংয়দের স্ত্রীহিংস্বে নিব'চন করছেন।

য়েয়েদের শিক্ষাদ কার প্রসারতার সংখ্য সংশ্ৰে তারাও প্রাধীনভাবে উপাঞ্জন করে নিজেদের দায়িত নিজেরাই বহন করতে চাইছেন। ভার ওপর সংসারের দায়দায়িত্বের বোঝাও তারা এই ভার্য দিয়ে বহুলাংশে প্রণ করছেন। আবিবাহিতা অবস্থায় মুডিট-মেয় করেকজন হোয়ে ছাড়। চাকুরী করবার ছাড়পত্ত অধিকাংশ মেয়েই পেয়ে থাকেন। পরিবারে তাঁদের অথেবি প্রয়োজন না থাকলেও বাাপারে তালের ওপর বিধিনিষেধের কড়া-কড়ি কম, আর যাদের উপার্জনে সংসার চলে তাদের কথা স্বতন্ত। তারা প্রায়োজন অভিকাশ যে কোন ব্ভি গ্রহণেই সম্মত। শিক্ষাদীক্ষা ছাড়া অথুনৈতিক দিক দিয়ে মেরেরা এখন তানেক স্বাধীন। এই বাধীনতা নিয়ৈও বিংশ শতাক্ষীতে আমা-দের দৈশের মেয়েদের বিরাদেধ অনেকে কোড প্রকাশ করেন (যদিও জন্যান দেশের মেয়েরা ियाम, प्रोक्टेंत ठानना कत्रहरू)। এই क्लार्ड প্রকাশের অক্সভাগে প্রস্থাণদের সংখ্যাই বেশী, কিছ, কিছ, ন্বীনরাও এই প্রবীপদের অভিযাতে স্বাগত জানান। আমাদের আলোচা ^{িব্য}য় স্ফার চাকুরীকে উপ**লক্ষ্য করে প্র**য়ীণ-নবীনদের অক্তরে কেন্দ্র করে পরিবারে নবাগভার স্থামটি কোখার পেশ্রার এবং

পারব্তী ক্ষেত্রে পারিযারের দীর্ঘাদিনের জোট কেম্ন করে শিখিপ হয়ে যাওয়াল মুলো নববধ্বে দায়ী করা হয় ?

শ্বশ্র-শাশ্রী এবং পার ভিল প্রি-বারের অলপবয়স্ট শিক্ষিত ছেলেরা বধ্ বা ভ্রাতৃব্ধ নিব চনের ক্ষেত্রে উচ্চাশিক্ষভাদের বরণ করেন। সেখানে প্রচ্ছায়ভাবে কিছ অহংকারও থাকে। "বশার মতাশর সগরে বলতে পারবেন প্রের বিয়ের জন্য তিনি উচ্চাশক্ষিতা হোৱা নিব'চন করতে সক্ষয় ইয়েছেন। সেই দক্ষের ভারেট পারলে লেখা-পড়া জানা মেয়ের সংক্র চাকরীকে মতে कर्त्वष्टे भावी निर्वाहन करत्रन। अहे निर्वाहरन মনে মনে পিথার করেন বিয়ের পার পত্তে-বধ্বে সংস্থানের কাজে শিশ্ত করে চাকুরী হতে অবাছত দেবেন। কিন্তু সেই চাকুরী থেকে অবাহাত দিতে গিমেই যত গোল বাধে। তারা প্রেবধ্যকে বাইরে কাজে পাঠাতে সন্মানহানিকর মনে করেন। পাড়া-প্রিবেশী আগাীয়দবন্ধন সকলের কাছে তাদের আভিজাত্য রক্ষা করাই দরেহ হয়ে। ভঠে। ট্রামে-কাসে ঠেলাঠেলি করে বাড়ীর বৌকে বাইরে চাকুরী করতে যেতে হবে এটা ভারা কাপনাই করত পারেন না। এটা আরু কিছ, নয়—আভিজাতা, অর্থ নিয়ে অষণা দশ্ভ।কিণ্ড এই দক্ষেত্র খোর কাটাতেই বধ্যদের অশম্পা শোচনীয়া। তাঁরা वाङ्गाता अधिक श्रीतकारत अधिक श्रीत **अ**धिक श्रीत গোড়া ব্যক্তিদের বারণা আগের দিনের মত (करमहा विद्यात शत नवन्युटक शार्या शार्या সংপে দিয়ে বলবেন হ। তোমার জন্য দাসী নিয়ে এলাম।' স্তরাং বধ্ নামক সেই নবাগতা দাসীটি সংসালের সব দায়দায়িত্ব কালে নিয়ে বাইরের জগতকে জলে যাবেন। अ थ-म्याख्यम्मा क्राज कि निकारमञ्ज शहरून-अश्रह्मा अप्याप्तम কোনস্কল মডামত প্রকাশের ক্ষমতা তার **পাক্ষে না। ^{চবা}মাও** সম্বশ্ধে নিবি'কার থাকবেন। বিয়ে করে স্তান উৎপাদনের শক্তি ম্পিয়েই তিনি খালাস স্থার জন্য কোন স্থাচ্ছস্পতার দিকে নজর দিতে পারবেন না। স্বাক্ষদা জেলাবেন প্রবীপের। নিজেদের মতামত অন্-সারে। ভাবছেন বিংশ শতাব্দীতে দীড়িরে যেগানে আছরা সাগুনিক ধলে গলাবাকী কর্ছি সে যাগে এই আচীন ঘটনার পনেরা-কৃতি কেন কর্মছ? আমরা মূপে মুখে ভাধ,নিক বলে যুক্ত গলাবাজীই করি না কেন आधुनिक इरफ आमार्एका, अधनक जरनेक าร์ สารสาราสสารศัก

গোঁড়া পরিবারে গ্রামী ভয়লোকটি যাঁদ পরিবারের আর সকলের স্পের সরে মেলাভে

না পারেন তাহ'লে নবাগতার অবস্থা অত্যদত শোচনীয় হয়ে ওঠে। তিনি **স্ত**ীর চাকুরীকে যতটা সম্মথন করেন. প্রাক্তন ভার চেয়েও বেশী উপলব্ধি করেন। তিনি এতদিন পিতামাতার একাশ্ত অনুগত ছিলেন, এবার বাড়ীর অভিভাবক-দের সংশ্যে তার চলে ঠান্ডা লড়াই। একসময় -अ ठीन्छ। मछ है इग्रर्खा—काँक्रेस मछाहैता । পরিণত হয়। অভিভাবকেরা মনে করেন পরে বড হয়েও এতদিন যে নীরবতা পালন করেছে আৰু হঠাৎ বৌ-এর আগমনে ভার মাজি এত কঠিন হল কেন? তখনই তাদের ধারথা হেলেকে অভিন্নম করে ছেলের বৌ-এর দিকে পড়ে। আসলে নৰাগতা বেটি এ ব্যাপারে সম্পূৰ্ণ নীরব। সে না পারে **স্থায়ীর কথা** ফেলতে না পারে গ্রেজনদের **অবহেলা** করতে। তাই সে মোন থেকেই সব কার করে বার, অবশা মান মানে সে অর্থ উপা-জ'নকেই সমর্থন করে। এতদিনের অন্ত্যাস তার ওপর অর্থের প্রব্রাজনীয়তা দুটোকেট লৈ উপলম্পি করে। বাইরের জগতে এত দিনের শিক্ষাদীকার বিকাশ হবারও একটা সংযোগ থাকে। পরে এবং পরেবধা পরি-বারের আর পাঁচজনের সংখ্যা স্বাভাবিকভাবে মিশতে চেন্টা করলেও পরিধারের সকলেট তাদের আঞ্চাল নকরে দেখেন। স্ব দোদের ভাগই দেন প্রবধ্কে। অনেক চেণ্টা করেও তিনি প্রিবারের কারোরই মনোরঞ্জন করতে পারেন না। যেহেতু অফিস টাইমের ভাত খেরে ভাকে বাইরে বেরণ্ডে হয়, সেজনা টিকা-টিম্পনীর অত্ত নেই। ক্রমে ক্রমে এ টিকা-টিম্পনীর ফল সভ্যত জটিল আকার ধারণ করে। পত্র ইয়তো প্রেবধকে নিয়ে এক-সময় আর পাচজনকৈ ফেলে আলাদা হরে रशएक नाथा इस।

মেরের। শেখাপ্ডা যতই লিখুক অর্থ-নৈতিক স্বাদীনতা বতক্ষণ না তরি। ভোগ করেন ততদিন তারা প্রাধীনই থাকেন। অর্থই বল, ভরসা, সম্মানে সব ভোগার। প্রিবারে যে মহিলা উপাজনক্ষম তার ভাল-মন্দ কথা সকলেই শ্নেতে রাজি। প্রবিধরা যদি তাদের গোড়াম কাতিরে প্রেপ্রাদর আপন করে নিতে পারেন তবে সংসার সকলের কাছেই স্থের।

পরাকালে পানর রস, ফলে পাতার রুস দিয়ে টোট রাঙানো হতে।। রাভা টোট আর জ্বলে ভরা ভেজা ঠোঁটের চাহিদা কবি-দের থেকে সাকা করে সাধারণ মানার পর্যাতি **সবারই আছে। জন্মগত যে আকার, রং ^{আর}** বিশেষত্ব নিয়ে মহিশারা জন্মায়, ভার ওপ্রই ৰ**াশ আৰু স**র্ভাম দিয়ে তেবী করে নিউড ইয় চাওয়ার এতন দেখার মতন র প। জ'ম-গত ঠোটের রং অনে কর কালো হয়, শ্কেনো হয়। সে কেটে ততকগালৈ সহজ উপায় ভাষে, যেগালি নিয়মিত করলে ভাল হয ভবেষা সামান্য দাধে ভিজিয়ে ঠোটের মাঝে তেপে রাখতে হবে ৫ । ৭ মিনিট রোজ রাতে শোরার আগে। ভারপর ভলো ফান্সে দিয়ে ঠা-ভা জ্বানে মাখ ধায়ে শায়ে পড়াতে হবে : এই উপায় হল সাধারণ। ছোট বয়স থেকেই লিপস্টিক ব্যবহার করা ভাল না, বিশেষ করে খাবীপ কোম্পানীর।

কিছ্ছু এই লিপ্সিক বাব্যার করার
প্রথমিত চৌটের আকার ও প্রকারের সংগ্রে
সংক্ষা বদগায়। প্রথমত চৌটকে বিশেষ
কন্তকগালি শ্রেণীতে ভাগ করা যাক। সেমন
১ া পাতেলা কাটা কটা ঠেটি, ২ ৷ পরে, ভারট
ঠোঁট, ৩ ৷ উপারের অংশ পাতেলা নীচের
অংশ প্রে; ও মোটা, ৪ ৷ নীচের ঠোট
ভেত্রের দিকে টোকা, ৫ ৷ হাঁ মুখ বড়, ৬ ৷
খুব ছোট বেলানা হাঁ মুখ। সাধ রণ্ড এই
স্ব ধরনের ঠোঁটই বেশা দেশা যায়। এবার
একে একৈ আকা আলোচনা করা যাক—

১। এইসৰ সংশ্বর পাতলা কাটা কাটা रहेरिवंद कामा रकाम हिन्दा शास्क मा। उस्म জিপ্তিক লাগানোর সময় দেখতে হবে ঠেটের ধার: যেখন সমানভাবে ওপর ও নীচে লগান হয়েছে কিনা। প্রথমে লিপ¹⁹³ক ল্যাপ্রে, নরম রুমাল সুই ঠোটের সাবে রেখে চেপে ধরতে হয়, তাতে খানিকটা বং উঠে যার আর হাল্কা করে রং লেগে থাকে। এরপর আবার গালাতে হয় অন্তত দ্বার। এই নিয়ুম জিপ্পিটক লাগানোর সময় স্ব রক্ষা ক্লোটেই প্রয়োজ। আরও একটা জিনিস মনে র থাতে হাল। সাধ চেয়ে প্রথমে বিশেশ-श्कितकत भाव भिरश क्रीएवेत भाव भरत देवथा টেনে নিভে হবে, তারপর সব জায়গায় **লাগা**নো উচিত:

২। প্রেই ভারী সৌটো রং দেবার সময় শুখার দেখে নিতে হবে, যে স্টোট ফোলা আর উচ্চ কিনা—। যদি ভাই হয় তাহলে লিপাস্টিক হাক্রা করে লাগাতে হবে। মুন্-মান্ত রক্তের অভা থাকবে আর সৌটোর ব্যান্তাবিক রেখার একটা নীচ থেকে লিপ্-চিন্তুক্তর ব্যান্তা ভ্রান্ত হবে। এক সন্তো কিম্বা দুই সাজে। ভ্রান্ত থেকে।

৩। উপরের অংশ পাতশা হলে রং বেশি প্রক্রেপে একটা বেশি গাঢ় করে দিতে হবে। মাকৈর পরেনু অংশে পাতলা করে দিতে হবে। ৪। মাকের ঠোট ভেতরের দিকে তোক।

इरल नीत्वत जाराणात तर शाह दांदा

ধ হাঁ মধে বড় হলে টুকট্কে লাল ।
 ক্ষান্ত চলকে লা—ভাছাড়া ঠোটের দাই কেল
 ক্ষান্ত চলকে লাভাড়া ক্রিটের দাই কেল
 ক্ষান্ত চলে। অর্থাৎ লিপ্লিটকের

রূপসীর খাতা

কাঠি ঠোটের শেষ সংশ পর্যন্ত যাবে না।
একট্ দুরে শেষ করতে হবে। এটা কে:থাক
শেস হবে সেটা খানিকটা নিজের বৃহ্নিণ ও
খানিকটা হালেচেন। সাংপ্রক।

৬। খনে ছোট হা-ম্বের জন্য ঠিব উটো নিয়ম অথাৎ ঠোটের শেষ কোণা প্রণিত রং যাবে। ভাষাড়া সোটের স্বাভাবিক রেখার বাইরে রেখা টেনে বড় করতে হবে।

এ তে। গেল সোঁটোর আকারের সংগে ক ভাবে বং লাগান হবে তার আ্লোচনা। এবার আমরা কোন্ বং কখন কি ভাবে বাবহার ৪রতে হবে সেটা দেখি।

মাংশর প্রসাধনের ওপরই ঠোটের রং
নিভার করে। প্রসাধন কড়া হলে ঠোট ও
সেই রকমই হবে। সাধারণ ধারণা যে যাদির
বং কালো বা শামলা তরি। কমনও গাঢ় ইং
বাবহার করাবন না এবং আজকাশকার
হলকা শাদাটে গোলাপা রং বাবহার করাবন।
এই ধারণা ভাষণ ভূল। বং বাবহার করাবন।
ওই ধারণা ভাষণ ভূল। বং বাবহার করাবন।
কিলা উক্জান শাম তারা হালকা বং
বাবহার করাভ ও ভাল লাপে না। কিলা
সাংগ মিশারে মাধাতে পারেন। লালা রং
কালোরা বা শামলাধার মাধাতে পারেন, তবে
ম্বা উজ্জান পোশার আগতে পারেন, তবে

আরও একটা কথা জানিরে রাগছি।
লিপ্সিটক শ্রমাত একটি রং ব্যবহার
করার চেরে দুই রং বংবহার করা ভাল।
যেমন প্রথমে গাড় রংটি বাবহার করে রুমাল
বা পাতলা কংগড় দিয়ে দুইে ঠেটির মাঝে
চেপে নিতে হবে। তাতে করে বেশ কিছটো
বং উঠি সাবে। তখন নতুন করে একটা
প্রক্র পাতলা করে দিয়ে তার ওপর একটা
প্রক্রপ লাগাতে হবে। এতে রংও স্ক্রের হয়,

শালের সংগ্র খরেরী, কৃষ্ণি রং-এর সংগ্র গোলাপী ক্যালা রং-এর সংগ্র গোলাপী কিছনা কৃষ্ণি কালের সাথের গোলাপী ও শাদা-মৃত্ত রুই ইউর্লিদ বিশেষ-ভাবে ব্যবহার করা হয়ে শাকে।

এরপর বিচার করতে হবে স্পাড়ীর রং।

থাদি অবশ্য সাজ নিখাতে ও বিশেষ
বাক্ষণীর করতে হয়। নীল, কালো, লাল

থাচ সবজে ইত্যাদি গাঢ় রংরের সঙ্গেল ভালা।

শাসনী করলা ইত্যাদি লিপ্সিট্র চলে ভালা।

শাসা গোলাপ্নী হাকেরা নীল ইজ্যা ভবেই



ব। হালকা বং হ'লে বিচার কবতে হ'বে সময়। সকাল হ'লে হালকা বং ঠোঁটে দিতে হ'ব। যেমান গোলাপী মাজেশাদা কফি শবেরী ইত্যাদি। রাতে হ'লে বংয়ের একট্ হেরফের হ'বে। শাদাশাড়ীর ক্ষেত্রে ব্লাউজেব বং ধবে সাজতে হ'বে।

ত্রে এইসর লিপ্সিটক কেনার সময় গ্র এজন রাখতে হবে যে, কোন কোম্পানীর এবং কোন শেডের। ওাল লিপ্সিটকের এলটা সংলক্ষ্যণে আভা থাকে, তা ঠোটের সৌন্দ্রাকৈ আরও অপুর্বা করে ভোলে।

শতিকালে লিপ্সিন্টক মাখার প্র থব হাংকা হাতে একট্র ভেসলিন দিয়ে দিলে খবে ভাল লাগে। দিনের বেলায় দ্নানের খাগে দুখের সর ঠোঁটে মেশে কিছুক্ষণ থাকা ভালা। এছাড়া স্মানের আগে এক চ্ছাট আলিভ ডেলের সংগ্যা এক ফোটা ব্রাণিড দিয়ে তা মুখে ও নোটো মেখে রাখনে খবেই ভাল হয়। এসব বিষয়ে কান প্রদান প্রামি এই বিভাগের নামে লিখে ক্যানালে আমি উত্তর দেওয়ার চেণ্টা করব।

ঠাটের সংশ্ব থ্ডেনীর যোগ খবে বিশি। থ্ডেনী অনেক সময় ছ'্চোলো কিম্বা বসা ও ছোট হয়। সেই সব বেমানান কেনে কিছ, কিছা উপার আছে। যেমন বসা ও ছোট গ্ডেনী হলে থ্ডেনীতে একট্ লাল ং মোলায়েম করে মেখে রাখতে হবে। তার ফলে বসা ভাবটা কম দেখায়। যাদের ছ'্চোলো ও কম্বাটে ভাদের থ্ডেনী একট্ মাদা রাখা দবকার, আর ঠোটের রং বেশী কড়া হওয়া উচিত।

এই হল মোটামাটি মানের বিভিন্ন থানের সংগ্য মানের হোগাহোল ও সেই হিসাবে প্রসাধন। প্রসাধন যে অংশেরই হোক, গোটা মানের সংগ্য মিলারে তার সৌক্ষর নিজর করে। সেই জন্য সাজনার অগে সব সময় মানে রাখতে হবে, সময়, কাল, উপলক্ষ্য এবং সবচেয়ে অস্থা নিজের গায়ের রং। পোলাকের রংও বহু ক্লেত্র সাজকে করতে সাজকে কলান কিবল আরও সাক্ষরে কলান করে। তাই সাধারণ বাংশ ও সাজার সিক ঠিক সরজাম বাবহাল র রে ওবেই সাজকল্য সাক্ষর হয়, বাংশর জোরার জানে। এতে নিজের মনও খালা হয়, অনক্ষও খালা করে।

-व्यवनिष्मी

দিবাধায় পাতা পাত করে মাথ বেক্ষে ধ্রীয়ার বল শানে ছাড়েছিল। তারপার বা কন্টোম তব বেক্ষে ধানে বাবে বজালা কিন্টাম তব বেক্ষে ধানে বাবে বজালা হৈছিল। একপানে বাকি জানিশ্রে তান পিঠে আতাল বাধ্যায় তব দেখালা স্বাধ্যায় তান পিঠে আতাল বাধ্যায় তান পিঠে আতাল বাধ্যায় কিন্দুৰ্বাক্তি জানিশ্র তান বিশ্বে আথানে ধ্যামান্দ্র ব্যক্তিয় ছিল না আমানের এথানে ধ্যাম দিন আনোরকায় তথ্য বজানে ব্যাধ্যায় বিশ্বে তথ্য বত্ত

কথাটার কোনো প্রতিক্রিয়া দেখা গেল না।
নিব্যুক্তের বলার গেছনে দেরক্স কেনে।
প্রত্যাশাও ছিল কি ? আমরা তিনজনে দেটার রিভ দেখছিল ম। এবং শানের এলস্মর ফেটে মিনিয়ে থেভেও দেখলাম আমরা। নিব্যুক্তর কথাটা খামাদের কাছে খাবই বাসি ছিল। বোধয়য় সেই হেডু বাসি গণ্ধটা ভোসে বেগায়য় গেলার বাম। আমার গলার ভেতার আলজ্জিভও যেন ভোডোনারস্ভ ফল—ব্লে



জ্বাবার রেছে। এই হোমিও হলের ওপারে একটা হাসকিং মেলিন, মার দিয়ে পাঁটের ক্লিকা বরাবর কাজা হয়ে আছে। ছালকিং মেলিনটা অনেকক্ষণ হলো বন্ধ হয়ে গোড়ে। এর শেষ ধ্রাকটা এখনো আমার কালে আটকে ক্রিলের কালা মাটি থির পির পাঁকটা ছা মেরে সব ঠান্ডা করে। কিরে পার কালা মাটি থির পির পাঁকটা আটকে দিয়ে কেউ যেন নিপ্ল হাতে কালিলিটা ভূলে নিয়ে গোছে। গোছে বিল করেছে। আমি ওই ভাল করে দেখতে পাছিছ দিবালরক না ভ্রকটর সাংক্রিক। তাত লা, আসমেল আমি দেবাত বিল পালকে। তাত লা, আসকে আমি দেবাত লা, আসকে। তাত লা, আসকে আমি দেবাত লাইছি পোলকে। তাত লা, আসলে আমি দেবাত চাইছি খোচড় দিবালরিকে ব্যং শাঁডটাকে।

দিব।করের বউরের নাম তুন্—ত্নিমা।
জাড়াই বছরের বিয়ে দেড় বছরের মেয়ে।
মেয়ের নাম মোযো। নামটা দিরোছ আমি।
সাবে তথন জামি ফরেসেট চাকেছি, অধাং
কিনা অবংশা বঙ্গে ডাল মারছি। দিবাকরটা
লিখে সাঠালে হ

তনা কাল রাতে বড়কো কটা পেরেছে।
জিব বেরিয়ে গেছিল। আর র্জ্ন। রঞ্জ জার কটের ভেডর দিয়ে হুসে করে একটা কালা নাবিয়ে দিয়েই তন্ খ্লী হয়ে।

্রীক্রতির শেষে তনারও উম্পাতি ছিল ঃ

মেয়েটা তোর মতন দেখতে ছুল্লেছে।

একটা নাম পাঠিয়ে দিস। আরু এনে

একদিন দেখে হাস।.....

বাস, প্রপাঠ হৈ হৈ করে ছুটে এলো ঐ

मामदे।

তারপর থেকে আমার এই প্রথম মোমেকে
দেশতে আসা। সংগ্য ওবিশ্যি ইত্ত্ব এসেছিল
লাদিন আগো তামমার সংগ্য দেখা করে
গেছে ইছু, আমি জানি সেটা ওর নেগং
ফমালিটি। মোমোকে দেখতে এসে এসেটা
ব্যাপের কারজ দিয়েছে ও। আসলে দেখত আসার ছতোর ইছু সেদিন তামিল মাথের থপর ঐ কারজাটি ছ'ডে দিয়েই গেছে। এই
ইছর ব্যাপারে এখন মার আমার কিছু কার্যা
নেই। মন আরে দেছটার মধ্যা বিয়োগের মতন
ইছু আরু আমি ব্যুশ্যন আছি।

সদ্য প্রকাশিত ! প্রণিণ্য নাটক ! আজকের বহু-বিতর্কিত নাটকার বিশীপ মন্মণারের

গোলাপ কণ্টার

একটি সেট মৃত্যু একটি নারী

প্ৰকাশনা : **ন্ৰীপন্ন শাইছেন্ত্ৰী** ১৫ ৷২ শ্যামাচন্দ্ৰ দে শান্তীট, কলি-১২ বইটার মলাটের ছবিতে একটা গাংকো বেড়াগ একটি ফ্টেফ্টে মেরের মুখে হাসি শিক্ষে। শীত্র মুখটা দেখলেই আমার সেই গংকো বেড়াগটের কথা মনে পড়ে কায়। তার গোঁকের ডলাল্প শিশিবের মতন জলের গাংকো বহুবার আটকে থাকতে দেখেছি। তকে দেখে এখন আমার মোমোর সেই বেড়াগটার কথা মনে পড়াছল।

কিক্তু কথা হচ্ছিল বল নিয়ে। দিবাকর তার এবা কোথা থেকে যে দুম করে কেন।ব ছণ্ডে দিপোণ বল তার কেনাব কি এক ক আমার মাথায় কিছু চ্কেছে না। দিবাকর বলতে চাইলো ক্লোব বোধহর গোলাকার... বল যেমন গোলাকার...ক্লোব...আর বল... ভাহলে দিবাকর কী বলতে চাইল?

শীতব ঠাাং আমার দাবনার মাংসে কথা-গত চাপ খাচে। বেন এই ধরনের প্রীদান শীত্র কোনো মজা রয়েছে। কোনো মজার ভোগা। যেমন সাটায়, ঋদে বা বোতকে - এই সব খেলায় শীত শাদা-দাড়ি-ঈশ্বরের মত্ন িবিকার। একপাশে তাসগ্রলো ছিটিপে সয়েছে। আর কিছা খচেরে প্রসা। কৈছাক্র অংগেও আমাদের খেলা চলছিল। আছি কেই আর ওদিকে শীত-দিবাক্ত বংস্ভিল। কৈণ্ড একংঘ্যে এই খেলার তেমন উর্য়েক্তনা নেই। ডাকার বলে ওটিই খাসল, না থাকলে কিস-স্ জুলুম না। সবই তো সেরেফ ফুককা হে। আমি ভর্তর ডি পাল লভামণারিজ করেছি আছাল शिरकारकार ज्ञाक जिल्लाहा अनुस् सेपकांत्रीये किएकस्त्री कामान बारसब नाम स्मारमा - अहे काशि वसकि. ्या वालाम-साला कामा । राष्ट्रपा कथा करा चानम् जानन के वक्ताउँहेताहै।

া গতি বলে, হারাই-এর মতে। সিলে গালোরে টাঠে গিলস ফোটে লা গালা, সংগট টোচির হার যা, বাস । এর আগোও কিছু, নেই প্রেও নেই, ফাইবি, যা কালীর দিবি।।

किन्छ अकरपास करमा रथनाची अस्कार চল ছিল। কার্প, তন: ছিল। তন নির্লেপ স্থাসতে পারে। তন্য হাসকে হয় कি ভূখন আমানের দৃশ্টি দেই বলটার ওপর থেকে किष्टाकरणत करना मृद्रा बाध, मृद्र्य रक्षाकु राजा হয়। **আম**রা তথন সক**িলা ভিয়ে ত**ন্থে দেখতে পাই। আমার ় এ সময় সনে পড়ে জাপানিক তানকার কথা ক্রন: কি রক্ত বারি গ্ৰেছ গ্ৰেছ হয়ে যায়! শান্তি ওর অক্যাস মতো তন্ত্র কোলের ওপর পা জ্বলে দেয়। সেখে মনে হয় শীতুর পা মাখের রোদে পিঠ রেখে শংরে আছে। ডখন টেককা-বিবি ভাগের মঙন্**ই ডন**্রও কোনো ভাষাস্তর দেখি না। অথচ সময়ে টাল থেয়ে কাতও হয় পণিতু गाए करत भा रहेन निरम्न शक्याना शक् স'ন্ডা করে ওপরে তলে দেয়। দিবাকর এ স্থয় প্ৰতিজ্ঞ দৈনিক, যেন জুন্ত জিকে দেই-ভাৱে এগিয়ে আসে। আ**সলে লৈ চুয়োটু খায়**। বিল্ডু ছবিটা ফট্টে **এঠে আ**না দ্ব**ল্য, দি**ধাৰার যেন কৃকুর হয়ে গিছে ভালিয়াত হাতের স্বাংম খাবলে দেয়। এইভাবেই চলছিল খেসাটা।

ডেন্ডে গ্রেছে।

দিবাকর বডডো বেশী সিগারেট খাচ্ছে।
আন অংজাটা পারি নে। বেশী সিপারেট
খেলে ডাগার ভাবার বহিত কোটবে এক ধরনের
পোনটেন মতন কি যেন হয়। আর মনে হয়
গলার মধেটায় আমার ব্রিক ক্যানসার বৈধে
গেলা।

নিব্যক্তর সর্বা করে ধোঁয়া ছাড়ছে। এখন
আৰ ওকে কেউ ডিসটাৰ করতে আসবে না।
হোমিও হলের দরজার ওপরে না এনটি
বৈরত ঝলেছে। তনর মতে ওটা হওয়া উচিত
আউট অব অর্ডাল — লিফটের দরজায় যেনন
আদেশ, তমনি। ক্লাটা খাঁটি বলেছে তন্তু
আয়ারও আই মনে হয়।

দিবল এলাগো সংবোধের হাতে জ্যোবনী দ্বাতো কিকেও ঘ্রতে বাঁ দিকেও ঘ্রতে ক্রিছে স্থিমীর বেলায় এরকম স্পেক্তার্ত্ত নেই। তার গতি কেবল একদিংকই নিশিশ্য রয়েছে।

ভার মানে দিবাকর বলছে, স্থাবংধ মালীবের কোবে আর এই প্থিবী এক নহ। অর্থাং কিনা তন্ত্র কথাই ঠিক, দিবাকর এখন মরভারে নেই। প্রর নিশ্চর এখন পেট-স্টে গ্রম, সিগারেটের কালে দিব।কাকে এখন সান মিলক প্রবাস্থানেসিয়া দেওয়া বেড়া।

শীকু ছড়ানো তাসের পাশ থেকে খ্রেরে পর্মাগ্রনো দিবাকারের দিকে ঠেকে ছিল। কারপর ঠোট উল্টিছে। এক স্ক্র মুখছিরি করে।

—শ্থিষীর গাঁত কোন দিকে নিগিটি তেওঁ জাই সানিখ-কাল্চাত চায়ুনা-মানিও বাজিয়া আটম বনাম ইডিয়াত

ফেডি ফেডি করে শীকু হেন্দে গড়িয়ে যায়ে ১..জছ...আছ...আছ...

ধাদিকে খুলী গতি হোক। কোন দিকে লাভ ইংল-এসর নিয়ে জায়ার কি হবে। হাং ইন্ডিয়া কথাটা আমার মাধার মধ্যে চুকে লগ দেশ করতে থাকে। মধ্যক কিল্লাল লাকেও, বেড়ালো। কান বাবা চুলিছেন সমধ্য হে!

व्यक्ति गर्भ करत वर्णहे रक्लन्यः

- -- मिर्वाकत कृष्टे भाग था।
- *****| |
- -- 417
- रकत शास?

— এটা থেকে ভিখিরিকে প্যশ্ত কিন্তু স্থা মনে হয়। দেখিসনি সব খাওয়া-লাতয়া মারা হয় পশান দিয়ে, বউগলো কেমন তাদের অকিস্থানী মর্দদের ঠোঁটে পান ধরিয়ে দেয়

শানে দিবাকর আমাকে একটা লাঘি খালো। কাসলে মজা পেয়েছে ও।

শ্বীশুটা এ সমল পাজিয়ে উঠছে। লাট্য শি আইডিয়া। তুলু তন্তু শুড় চিম্পার শরের করে দিয়েছে শীড়। শ্বিশক্ষ বললো, বা বলছিলনে, হাই শ্বোবটা! পৃথিবী তো একদিকেই ছোৱে ক্ষিকু স্বোধের হাতে প্রদিকেই ছারতো শ্বোবা কিম্কু কেন ছারতো স

পদা ঠেলে তাননা তেওর থেকে বারিছে এল। যেন নতোর ভাগামা ওর প্রক্ষেপ। মসনে হাত দুটি নেড়েও যেন নাচের মানুই গড়ে ভোলে। বলে,—কি রে গাধার মতন চেল্লাচ্ছিশ যে।

শীতা শারুমার হাসে না, কেমন এবার গদভার হয়ে যায়। বলে বোস, কথা আছে।

তনিমা শীতুর দিকে এগিয়ে যায়। ৫ এবার শীতুর পালে বসবে। এখন ইচ্ছে র্মে তন্ম শীতুরে পালে বসবে। এখন ইচ্ছে র্মে তন্ম শীতাংশকে পেটাতেও পারে। ওর কানটান টেনে, নাক খামটে কিন্রা কাথতেও পারে। বা ইচ্ছে তাই পারে। দিবাকর কিন্যা শীতুর মতো তনার পারেও বথেন্ট কোর আছে, আমার পদচাংগেনে সে-নর্ঘটিও করে নির্মেই তন্ম। অথচ মানকিলটা আমার! ছেলেবেলায় ফাটবল খেলতে গিয়ে ভান-পান্টা কানাকরেছ। এখনও তেমন জোর পাইনে। তেমন করেছ। এখনও তেমন জোর পাইনে। তেমন করেছ। বিবেছে। লাখি বেয়ে লাখি ফেরত গিলেই তার হয়। একটা প্যানিকরে বর্তা পোরার একটা বাছিগত দথেম্ব, পারিনে বর্তা আমার একটা বাছিগত দথেম্ব, ররেছে। সে দুঃখ আমার কেউ বেয়ের না।

र्णानमात्र कांठल कामरत अकारना। हाहः-বাঁধ,নিটা আরও দপত হয়েছে তাতে। ওর ভারি বুক, গশ্ভীর নিতদ্ব, আর সাধারণভারে হেতি গোলেও তনার ক্লাসিক হিপের দ্বানি-ট্রকু একেবারে অমোঘ। তব্ বেভাবে মুটিয়ে বার্ডের তার বছর খানকের মধ্যেই নি শ্রত ওর একটা গলফবল নামবে। ওবিংশ্য এখন পর্যত তন, কিছু বিতিকিছির না। এন সময় রাতিনতে স্পর্টিছিল, বখন আমরা এম-এ পড়ছি সেই সমরটার কথা। পড়াশে,নার ব্যাপারে তন্য তেমন মনক্ষ ছিল বলা যায় না। বেশার ভাগ সময়ই ও নাব নিয়ে পড়ে থাকতো। সেব র ভারসিটির মডাণ ইণিভয়ান ল্যাংগারেজের গোণেড়ন জর্বিল হলো পনের দিন ধরে নাগাড়ে। তাতে বাংলা-উদ্যুদ্ধোশায়েরা থেকে নাটক, নতা, সংগতি, আলাচনা-সনালোচনা—সে এক এলহি **বা**পার। হার্রাছল মহাজাতি সদনে। একক ন্তো অংশ নিরেছিল তন্। শীকুর গানের সংশ্র তন্ত্র সেই নাচ, আমার মতো যারা দেখেছে তারাই জানে মহাজাতি সদনের সেই রাত ক্রিক্মভাবে উপচে উঠেছিল! তন্ত্র দক্ষতার সংখ্যে ওর তথবী রূপদী শ্রীরও ভাতে লাখ্ট সহায়তা কারছিল-একথা বাম-গম্বের ছানা দিবাকরও সেদিন প্রকাশ্যে স্বীকার কারছে। সেই শরীর এখন আর নেই তন্র। নাচ-ফাচ ওস্ব বালাই ঝে'টিয়ে বিদেয় করে তন্ত এখন শ্রীরে মেদ প্রছে।

শীত্র কাছে কোল ছ'ড়য়ে বসে তনঃ বললো, কি কথা?

—বৈড়ে একটা আইডিয়া দিয়েছে ভান, বলৈ শীতু আমার দিকে আগালে বাড়লো≀— ওয় মতে পান খেলে ভিথিয়িকের প্রব^ত স্থী স্থী পেশায় আর তুই কিনা দিহা-করকে এখনো পানখাওরা ধরাসি না! তুই কেমন বউরে?

কথাটা এমন করে বললো শাঁতু, ইয়ার-কির মাতা ছাড়িয়ে পরিবেশটয় কেমন বাদণ লেগে গেল। তন্ত কেমন চুপ করে রইলো:

শীতু আবার এললো, এই প্রসংগ্রাজামার একটা কথা মনে পড়ে গেস। সামার চাকরিটার পেছনে

একটা রহস্য আছে তেনের বলিনি বোধহয়। বলিচি?

হাই উঠলো আমার।

শাতু বলতে লাগলো, হাওড়া থেকে ফিবছি। টেনটা শেওড়াফালি দেউনলে দেউনলে দেউনলে দেউনলে দেউনলে কমপারট্নেনটে কিন্দের যেন একটা গণেতানগোল বেথেছে। লোড়ে গেজাম। জন্য গাঁচহয় রাগী ছোকরা কাকে যেন টানা-হাচড়া করছে, টেন থেকে নাবিরে পেটাবে। ভেতরে চাকতেই দেখি তাজা, মিটির; থকে নিরেই এই হাজোত। তখন ও পাটির কাডার। বিশ্বে পারসার পারীর কাজার। কিন্দুর কিছু, কহজে ছোড়া ছাড়ান পাবে না। কাল্বে আমি-শালা কি কার, একই ক্লুলে পাড়িটি তার ওপর ক্লাস ফ্রেড! তাজা, মার খাবে বার আমি দাড়িয়ে দাড়িয়ে তাই দেশবো।

তন, বললো, আমাদের তাজ, মিডির? ইনটারসেটিং!

—আমি ততক্ষণে ওদের ওপরে বাঁপিরে পড়েছি। ওরাও গিটাক্ষে আয়িও পেটাক্ষি। এমন সমর ভাগিাস শ্রেনটা ক্ষেড় গিল তাই রক্ষে। কিন্তু তাজরে মার তো ঠেকালান, এদিকে আমার তখন শারট-ফাট ছিড্ডে-ফোড় একাক্কার। মাথের ওপর দ্ব-এক জারগায় রঙ্কের দাগ। এতক্ষণে তাজ, মিতিরের তড়-পানি দ্যাথে কে! একেবারে গান্টি উন্ধার করে শিক্ষে। তারপর নরম গলার আমাকে সে কি কত্জাতা প্রকাশ কি বশবো তোদের।

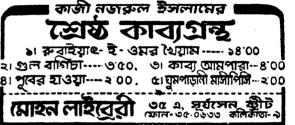
ভারার বৃজ্ঞান, ভূমিকাটা বন্ডো বঁড় হয়ে বাছে। তোর চাকরির রহস্যের কি হলো?

—আরে শোন না শালা। পালিটিজাল গন্ধায় তথন পশ্চিমবংগার থোয়াব হুটে বাকে: তারপর ইলেকশান হুগো। দেখা গেল ভাকা মিফিরের টোগ লেগে গেছে। থবর

শানেই আমি তথন বগল বাজিয়ে নৌডেছি এবার নিশিচক আমাত একটা হিচের হয়ে যাবে। এদিকে দিন যার, বছর যায়- আমার আর হয় না কছ্ই। ছোরাহাররও শেহ নেই। ঘরের খেয়ে কাহাতক আর হাকুম তামিল ক্ষি। পায়ের সতে।ও ছিণ্ডে যেতে বসেছে। এদিকে বেশ ব্যাহতে পার্মছ ডাজ্ মিত্তিরের কাছাকাছি আর পেণছতে পার্ছি ना । कान्य करमदे मृद्धत भाग्य स्ट्य केटला তথন তোও এম-এল-৫ চতে লেছে কিলা। যাই হোক এরগর একদিন ও সামাকে খুব জ্ঞানফান দিল। বাঙাগাঁর ছেলেরা বোগাস। চাকরি হাডা আর কথা নেই...তাহাড়া পারটির ওয়ারকার হিসেবে এ-রকম সাবিধে নেওরাটাও নাকি অন্যায়। ওর পক্ষে এরকম অন্যায় করাটা সম্ভব না। ...এদিকে আমার মাথায় তথ্য আগনে হলকা মারছে। তথ কি আর করা। তেপেছপে র**ইলন্নে**। **তারপর** অকটোবর এলো-প:জো। দলমীর দিন ভাবলমে, যাই ভাজ, মিভিরের সংগা বিজয়ার কোলাকলিটা সেরে আসি। আই সংক্র ফিজিক্যাল একজিসটেন্সটাও বদি কজে লাগে — হা শেসামত। क्रकारण समिक একদিন খিদিতখেটর করেছি কিংত এখন ও এম এল এ—অত সহজে কি कार वधन व्यक्त मध्य जान्या-नान्धे कहा বার? তাজ, মিতির কিন্তু স্থোগটা ছাড়ক না। প্রেপ্রেপ্রের স্দ্রাবহার করলো। সিক্কের শ্রিপার সামনেটা থানিক ভলে ধরে আমার সামনে দুটি চরণ বার করে এবং ছড়িয়ে এনে দড়িল। এই ছলিমর মধ্যে তার কোনো কাপণ্য ছিল মা—এ **আর** দিবিয় নিয়ে বলতে পারি। আমার শিক্ষা থকে ব্যুত্তে না দিয়ে অগত্যা হা করার তাই-ই করে ফেললমে। আমি মাথা নত করে ওর পাহে হাত ছোরাল্ম। আমি লালা ছেন আমার বাপ-ঠাকরদা-চোলপরেবের পি ভলান वद्रोष्ट, ध्रम्म मिन्छे।

কিন্তু তাল; একবারত আরা**তে বাধ।**দেবার চেণ্টা করালা লা। বরং **ওর ভালা**দেখে মনে হলো বাপারটাকে শালা এ**জর**বার ২ বার নার প্রেটি **চলে**এল। একেবারে ইন মাছ প্রেট—বলেই
একটা হাসলো। হাসপো, না ভেংচিকাটলো।
শাঁডু?

হাাঁ, তাই বলছিলনে—তন্ত্র ছাতের চুড়ি নিয়ে খেলা ধারতে করতে দাঁছিই বললো, দিয়াকরের জন্যে যখন পান সাজবি



ভাষ্থ কলে। অকাশাল বেশ। করে সাজস্ কৈত।

তিন্ধে কোলের মধ্যে মুখ গুগৈছে দিরে দম[ু]ফাটিরে হালছে, সে কী হাসি শীকুর। তন্ত্র কোলের গধ্যে শীকুর মধ্যে। তন্ত্র মধ্যে ওপার ধমধ্যে শিখার মতন ক'্কে ভারেছ।

বরের মধ্যে এক অসোরাসিতকর নৈত্রিক্ষা আমার মনে হচ্ছে কানের পদা ছাড়িছের মগজের ভেতরে কি প্রচণ্ড একটা চাপ পড়ছে। এ সময় কি হাসকিং মেশিনটা হঠাং চলতে পারে নাঃ যদি চলতো!

দিবাকর বললো, ধ্যাস সালালা।...

ভেতর এসমন্ত টোলাফোন বেজে উটেছে। কিরিবিং... কিরিবিং... টোলিফোন বালছে। পদশি দুর্নিরের তান ভেতরে চলে নেজ। খানিজপরেই তানিনা ফিরে এল, ইভা —ইড় করেছে।

দিবাকর বললো ইত! ইভ কেন?

তানিমা আহার দিকৈ তাকিরে বসলো ও কোথার যেন থেব ছে। তুই এখানে আচিস শানে ইভ এখানেই আসতে চাইছিল। আগ্রি না করে দিয়েছি। আজ আর কারোকে আগ্রি নল ানতে চাইনে। ইভু এলে আগ্রি কিন্তু হিংসের মরে যেতাম।

ভারপর আরও কেতিক করে তন্ম ভার মোহনভূর, মাটকে দিল আমাকে।

তন, হাসছে। ওর হাসি দেখে আমার উলটো রকমের হাসি পায়। বলি, ইভু এলে আমার আরও ধারাপ লাগতো।

---সাত্য ?

—তাই-ই। ওর কাছে আমার আর কোনো আনন্দ নেই।

--- কে কি রে! নেট ট-ই?

—ইভূটা আজকাল ভীষণ স্বার্থপর হয়ে ক্ষেত্র

কথাটা যে কোনো অপ্রিয় প্রস্পোর দিকৈ চলে যাচ্ছে সে বোধহয় আচি করতে পেরেছে তন্ম। তাই চট করে ও বলে উঠলো, আর দেরী করে লাভ নেই। লাইট কিছ্ম ফ'ড় নিয়ে নে। তোদের খাবার বোধ-ছয় হয়ে গোছে। কি নিবি জিন না ছারিসাকি?

দিবাকর বৃশলো, ধেনো। পিওর কালী-মার্কা মাদাম।

মেঝের ওপর তন্ত্র ছায়া; হাসিঞ্ কিলিক ধেন, ডানা মারিয়ে স্বজ্ঞা চলে জ্ঞান

(রাত্র)

ঝিলের একদিকটা এখনো হথেত্ থোলামেলা, তেমনই নিজান রয়েছে। আয়া- দের ছেলেবেলা অথণং আমার শাতুর আর দিবাকরের; শজ্প্র ছড়ানো রয়েছে এখান। মাঝে-মধ্যে দন্-একটা ভারা ট্রাক হাইওমের ওপর দিয়ে বেঝারে বেরিয়ে যাছে, দন্-একটা বিক্সোর হড়ে ঝড়ুরড় আওয়াজ। এখান থেকে হাইওয়েটা বেশ দেখাছে, যেন পথের দ্পানো কেয়ারি করা বাবলার সারি। হালকা টাদ ঝালাছে আকাশে। তার বাবলার বানে ফাকে ফাকৈ আকাশ, চকচকে আকাশ ধরা আছে। নিসাড় খেন ওমকে রয়েছে ছাইওয়ে। এবং যাতাসে হিম, সানক্ষেত ভরে এখন শিশির পড়ছে।

শাঁতু এখন গলা হৈছে হিন্দি ধরেছে।
ভনরে কোমর দংগছে। এনন রাজে, এই হাইভয়ের পাশ থেকে বলা যায় এখন আর
কোখাও কারো শত্র, নহা। আবিপের এখন
আর কেউ কারো শত্র, নহা। কেউ কারো মির
নহা। এখন আর শত্র-মিত বোধই
নেই। শিলেপর এই সংসারে খসব ওছে হরে
গোছে। এখন যাল তানিমা এই নিজন
নিসাত পাথের ওপর দিরে রাপোলি মাছের
গারীর নিয়ে তেন্টে যায়। এর সাবতারী
পোষার ক্ষিপের ক্লালে ছায়া ফেলে সভিরে
বেড্যার বাতালে, কিন্দা নারম এই জ্যোহনার
ভেতর ধানক্ষেত্রে ওপর দিয়ে ভন্র দের
ঘদি শ্রেমা ভেতর বেড়ায়—ভাইলেও যেন
খবাক হবার কিছা নেই।

তব, শহর যে রক্তম বাড্ছে এসব আর বেশিদিন থাণবে না। একদিন, হয়তো দ্ব-বছর—পাঁচ বছর বড় জোর—ভারপ্রই সব গিলে নেবে। ইতিমধ্যেই আমি মোনোকে একদিন এখানে নিম্নে জসবো। মোনোকে এসব দেখানো দরকার। থকে খো আমি এই প্রথম দেখাছ—মোমোর জন্মের পর এই প্রথম দেখা। থকে আমার কিছা দেখ্যা দরকার। শাঁতু ভবে ছবির বই দিয়েছে। আয়ি মোমোকে আমানের ছেলেবেলাটা উপ্রথা দেবো। কারণ বল গাঁড়ায় যাচেছ, যাবেই

এবং আমি ইডুব উপ্লাস দেখেছি।
বিবাহ সম্ভান—ওসৰ পছ্ৰুদ করে না ইডু।
বিয়েটা ওর কাছে একটা টাব, রাদ্দ সোতকেন্ট রাবিশ। ও পিল নিয়ে ঘোরাফেরা করে।
তব, আমাকেই কেন প্রুদ্দ করে ইড়া আমি
জানি নে, আমাকে নিয়ে ও যে কি করতে
চাম! যে-কটা দিন আমি এখানে থাকবো
ইডুব হাত থেকে আমার আরু নিম্ভার নেই।
ও আমার দ্র্বশিভার থবর রাখে। ওর যে
কী শক্তি! আমার অনিজ্ঞা সম্ভেও ঠিক
সন্মোহিতের মতন ও আমাকে টেনে নিয়ে
যায়। তারপর অমাকে নিয়ে পাপলের মতো
উপ্লাদে ফেটে পড়ে। ভাসকে ইডু আমাকে

ান্যাতন করে। কারণ ইর্ভু আমার কণ্টের কথ বোকে না, ব্যাতে চায় না। ও শ্বেদ্ বোনো আমার একটা পা ভাশ্যা এখন আর আমার কিছা করার নেই। ইভূ। ইভূটা এমন শ্বাৎ পর।

এই সময় আনি মোনোকে, মানার মোম ই নাকে — আমার ছেলেবেশাটা দিয়ে দিতে চাই। কেননা আমি এখন বয়স্ক, এর যোগা নই। মোনোই এখন এর যোগা উত্তর্গিকারী। হঠাও দিবাকরের সেই চিঠির কথা মনে পড়ে আমার—তন্ত্র ঠাট্টাও সেরচিট তোর মতন দেশতে হারেছে। একটা নাম আঠিয়ে দিস , তন, কি তাহলে আমাকে বাস্যা করেই এসব লিখেছে? উপহাস করে?

মথার মধে বিমানি, পা টলছে আমার। তিনটে শুনা আমার চেথের সামনে দুলছে। বিভাগ ছায়া মাটির ওপর আমোদে গড়াগড়ি ক্রিছে। জাড়িয়ে জড়িয়ে একাকার হয়ে থাজে। আবার আলান হচ্ছে। তানিমা নাচছে, শাতাংশ্যনাচছে।দ্বাক্র নাচছে।

কি নাচ নাচছে ভরা! একি আমার চেনা : এ নতেয়ে নাম কি!

যেন চেনা, বহুকালের চেনা। কিপ্ছু কি
নাঃ কিছুতেই মনে করতে পারছি চন।
অত্যত আমার ভাল লাগতে। তানমার দেহ
্তে উঠছে পড়ছে। দিবাকর এবং গাঁড়
তানমার দালিক পিরে উতাল সমারে যেন
তেউ খাচ্ছে। দেখতে পাছি, চ্টাল্ড আমান
নিবেদনের মুখে ওরা হারিরে যাচ্ছে। মাটির
কপরে তিনটি অধীর ছারা-শ্রীর আব্দু হয়ে
গেছে। অদ্যা কোনো সংগাতের তালে তালে
তার পদ্বিনাস বা মুদ্রা মুখ্র হয়ে
উঠছে। আমার করতল ভাত্তে হৈ হৈ শব্দ
উঠে আসছে।...বল বাক...

ধ্যেন যাবার হেদিকে যাবার...

স্পোর যাক।... কিপ্ত আমার ম্টোর মাধ্য শেলাব, যেমন স্বোধের ম্টিতে ছিল যেমন স্বোধের হাতে শেলাব উলটো দিকে গরেলেই মানাতো?

আমি করতাল দিয়ে উঠি। আমার ভাগা পা শ্লেল লাখিলে উঠে নতোর আঁত-মুখে ধেলে বায়। এব প্রাণ ছোকে এমনি করেই আর এক প্রাণ ভাগা নেয়। খেমন মোলো ভলমতে এখা গোগোরা ভাগাবেই। অথচ প্রাণের খেকেও বড় ছলেন তিনি— ভিন্ন মুখ্বভাবে উদাত, শিহরে বালে আছেন বালে খাকেন তিনি। তাকে অখবানা ক্রিম নে মোমো। এই দাখে কতো সহকে আমি বেকে উঠি।





পাপ আউর প্র্ণ্য

ৰমজ দুই ভাইরের দুঃসাহসিক অভিযানকে কেন্দ্র করে ইতিপুর্বে একাধিক হিন্দী ছবি নিমিত হরেছে। নিশান রাম অউর শ্যাম, সীতা অউর গীতা প্রভৃতি ছবির মূল কাহিনী একটি বিদেশী কাহিনীর জারতীয় সংক্রব। আর পাশ অউর প্রা এই বিদেশী কাহিনীর স্বাস্থানিক সংক্রব। এই ছবির মাধ্যমে পরিচালক ছাটাই, বেকারী, দারিল্লা ও মধ্যবৈত্ত প্রগান নিনা সমস্যার সংপ্য রাগ্রকমেল এবং ভশ্জামীর বিভিন্ন বাশতব্দ্ধা দেখাবার চেন্টা করেছেন। কিন্তু কাহিনী ও চিন্রনাট্যের দ্ব ব'লভার জনো সব কিছবই বার্থতিয়া পর্যবিদ্ধি হয়েছে, লালা বাধ্য নি।

দাই যজম ভাই গণগা ও জনওলা সিং, ওলেরই এক কাকা সিংহাসন এবং রাজ্ঞার ধন-সম্পত্তি ভাধিকার করবার জনে। নিজের বড় ভাইকে হত্যা করতে দিবধা বোধ করল না। কিন্তু যে সিংহাসনের লোডে এবং মহারাজা হখার জনো নিওঁরতার কাজ করল সম্ভবত সেই পাপের ফলেই নিজের পুত্র সমতানকে হারাজে হল তাকে। অথচ ধারণা ছিল সে বড় ভাইরের সন্তানকে ই হত্যা করছে। সিল্টার মাগাগরেট পুবেই প্রাজন মহানাজের দাই যমজ ভাইরের মধ্যে একজনকে তার নিজের মান্ত্র করেছে। ক্রমজ জনকে কুচলী ছোট ভাইরের হাতে তুলে দিয়েছিল কুচলী হোট ভাইরের হাতে তুলে দিয়েছিল কুচলী মহারাজের সন্তান হিসাবে। পুরে সেই দাই যমজ শিশা জনওলা সিং এবং গঞা পিল্লাম্যে প্রিচিত হোল।

গণ্যা রাজকুমার হয়েও ভালবাসে এক যোধপুরী মধ্যবিত্ত শ্রেণীর র্পাসী তর্ণী যুগানীকে। আরু জরওলা কায়কেশে বাস্তিতে থাকে মায়ের কাছে। এক ফাব্রুডারি চাকরী করত সে, কিন্তু ছাটাইয়ের ফলে বেশ্বর হয়ে পড়ে। নিজের দতী এবং কনা শিশুকার ভরণপোষণ করবার ক্ষমতাই নেই তার। দারিদ্রা থেকে এবং ক্র্যানিবৃত্তির জন্যে অবশেষে সে টাইগার নামে স্মাগালার এর দলে যোগ দেয় এবং প্রলিশের হাত থেকে এক বাহতে গিয়ে এক প্রলিশ অফিসারকে হতায় করে ফেলে এবং প্রলিশের হেপাজত থেকে প্রলিশের হাত থেকে বাহতে গিয়ে এক প্রলিশা অফিসারকে হতায় করে ফলে এবং প্রলিশের হেতে চাইছিল তার যোধপুরে ফেলে আসা প্রির্জমার ব্যানীর কাছে। স্তরাং কর্ত্তাকে গণ্যা সাজিয়ে নিজে জনওলা সিং সেজে প্রাদাদ তাগি করল গণ্যা। কার্ম্ব বন্দীর কাছে। স্তরাং কর্ত্তাকে গণ্যা সাজিয়ে নিজে জনওলা সিং সেজে প্রাদাদ তাগি করল গণ্যা। কার্ম্ব বন্দী কামা ছয়েছিল তার কাছে। সময়ের পরিবর্তানের সংগ্যা সকলে বন্দী কামা হয়েছিল তার কাছে। সময়ের পরিবর্তানের সংগ্যা সকলে বন্দী কামা হয়েছে। এবারে সে নিজ মাত্রির সম্প্রান্ত সাজ্যা ওঙ্গ নিজের সম্প্রান্ত প্রতিত্তা বিহু সমস্বার্য বিহু হার কালা ওঙ্গ নিজের সম্প্রান্ত করে বিহা ক্রার্য স্থায়ের পরিবর্তান করেলা, পালাবার আগে জন্তলা সিংক প্রিলাশ দিয়ে গ্রেন্ডার করিয়ে গালাকে হতা। করাবে। কিন্তু করাক্ত করেলা, পালাবার আগে জনওলা সিংক প্রিলাশ দিয়ে গ্রেন্ডার করিয়ে গালাকে হতা। করাবে। কিন্তু করাবে সালাকে জনওলা সিং করেল দাশিত পেতে হবে স্তরাং কৃচ্ছী মহারাজাকেও কয়েনথলায় যেতে হল, আর তার সংপ্রাক্তি জনবেলা। সিং করিব সে বিহুর স্থায়া করেলা স্থার তার সংলার স্থায়া করেলা সে তারবান সে ক্রেন্ডার করেলা। সাল করেলা সে একবার জেল থেকে পালিরে এসেছিল। আরু গ্রেন্ডার সংগ্রাক করেলা সংগ্রাকা সংলার সংগ্রাকা করে তারবানীক নিয়ে সংখ্যের সংলার গড়ে ভুললা।



ঃ আপনাকে ছবিতে দেখে তো স্বাই হাসে, আপনি নিজে কখনও নিজের ছবি द्वार्थ हीत्रन ?

-- লা আমি নিজের ছবি দেখে মোটেই হাসিনা বরং অনেক সময় অম্বাদত-বে.শই করি। করেণ সব স্বস্ময় ভো ভালো কাজ করতে পারি না। ক্যামেরার সামনে কাজ করার সময় যে হুটিগুণো আমি ব্ৰেতে পাৰি না পদ্বিয় সেগ্লো পরিকার হয়ে ধরা প্রেছ। তথনই খারাপ লাগে। আর



कानम इत कथनहे सथन एवंच नम्बन्ता ঠিক ঠিক জারগায় রিঅাকট করছে!

ঃ বৃদি কোন্দিন গ্ৰেডার আন্ডার পড়েন হাসির অংশ্য তাদের বশ করতে পারবেন?

—হ্যাঁ, পারবো। অবশা গ**্ডা**রা যদি তথাকথিত হিন্দী ছবির গ্রেডা হয়। ঃ হাসানোর বাাপারে গারাখপাণ কোনটা

— অভিনয় না অভিনেতার চেহারা? – জাতন্যুটাই আস্ল জিনিস্। শৃধুমার চেহারা দিয়ে আর কতদিন চলে। তবে অভিনয়ের সংগে চেহারা এবং সাজ-পোষাকও কম গ্রেছপূর্ণ বলবো না।

: ভাড়ামো আর হাসির মধ্যে তফাৎ কি? ---এটা স্ম্পূৰ্ণ ব্যক্তিগত লিমিটবোধো বলপার। শাধ্মার অভিনেতারই নয়, দশক্রিরও। ্যে কা**ল্টা** শাুধাু-মাল একটা চোখের ইশারায় করলে যুঁও খানি মজা পাওয়া যায়, কোনো অভিনেতা হয়তো সেই মঞা আনার জনা একটা ডিগবাজি খেয়ে ফেললেন। একেরে ডিগবালি খাওয়াটাই ভাড়ামোর প্য[া]য়ে পড়ছে। তবে সেই সংগ্র দশকিয়া দ্যাটাকে আবার কিভাবে গ্ৰহণ করছেন সেটাও বিচাৰ^ত বিষয়।

: প্রেমে পড়েছেন কথনও? —হাণ হাণ্ হরদমই পড়ছি। স্ফার জিনিস দেখলেই আমি কেমন প্রেমে পড়ে হাই।

ঃ আর যদি নারী-প্রেমের কথা বলি... —ও ব্যাপারটা স্বাইকে না জানালে কোনো ক্ষতি আছে?

: আজকের এই অথ্নৈতিক সামাজিক বিপ্রযায় সম্প্রেশ আপ্রার ক্ষিত্র ব্রার व्याद्ध ?

–বলার আছে অনেক কিছু। স্ব বললে আপ্নাদের পরিকার ধরবেও

না, ছোটু করে একটা কবিতা দিয়ে र्वाम. रकश्रम---জমাট একটা কথা কণ্ঠনালীতে বাসে ট্রামে মৌমাছির চাকের মতো ঝালানত জানতাক

হাওড়া শেয়ালদা স্টেশনে

ক্ষাত মান্যকে

অশালীন চলতিতা পোস্টারে অম্কের নান ঠ্যাং দেখে বাথা হয় ঢোক গেলার কাজটাতে। অজস্ত্র পশ্বদের বিজ্ঞাপনে প্রচারের এ-বি-সি-ডি ভিটামিনে কিছুতেই কমে না বা সারে না জমাট ব্যথা গালার কাছটাতে।

: তাহলে আজকের এই ভেঙে-পড়া জন-জীবনৈ হাসির কিছু ' ই্বলতে চান? —আমার তো ই ইয় নেই। সভি কথা বলতে কৈ আশেপাশে যা চলছে-টলছে তাতে হাসির কোনে কারণ তো আমার চোখে পড়ছে না: তব্তে যদি কেউ এসব ভুগে প্রাণ-খোলা হাসি হাসতে পারেন সেটা খারাপ নয়। হাসি তো আর কিছ না হোক শরীর ও মনের পকে ভয়ানক 'বাস্থাকর।

ঃ আপুনি নিজে খ্ব হাসেন কি? —চারদিকে নানারকম উল্টোপাল্টা ব্যাপার দেখে কার না হাসি পায় বলুন। যেখানে প্রচণ্ড, রাগ হওয়া দরকার সেখানে হাসি দিয়ে রাগ চাপা দিতে হচ্ছে। বাস্তব থেকে পালাবার আর উপায় কি?

ঃ আগে নিশ্চয়ই বাসে ট্রামে ঝালে যাওয়ার অভিজ্ঞতা আছে—এখন ট্রামে করে যেতে কেমন লাগে?

— ভালে ই লংগ। বেশীর ভাগ সময় তো প্রোভউসারের সরদার টাকিস-

বাজি করি। তবে বাসে অংশতে না পারার জন্য বেশ কব্ট হয়। কব্ট হয় এই ভেবে যে, বাংলা ফিল্ফ ইন্ডাপিট তো প্রায় কাউকেই বেশা তারও পর টাক্লির ফিলার রাখে না। তারও পর টাক্লির ফিলার বিশ্বতেই হবে। তা কিছ্দিন বাদে অংলতেই হবে। ভানভালে তথ্য পাবর কিনা ভারি।

NAMES OF THE STATE OF THE STATE

ঃ দেশের ভয়ানক বেকার সমস্য সমাধানে আপনার কি প্রসতাব?

—এসৰ খবে সিরিয়াস ৰাপার। আমার একার ভাবনায় আর কি হবে। ঃ আর যদি আপনি ঘটনাচকৈ মুখমকাী ছয়ো পড়েন—ডাহলে?

—না-না, কথ্খনো না। **মদ্মী হও**য়া-উওয়া আমার সইবে না। ভরানক খাটতে হয়, বঙ্ভা দিতে হয়।

ঃ কলকাতার ধনুটবল খেলা সম্পর্কে **আপনি** কি বলবেন : আপনি কি নির্মিত ২০১ সান ২

না পাদা, মাঠে আমি নিয়মিত যাই না বছরে একদিনই যাই শাশিও ফাইনগল দেখতে। তাছাড়া আজকাল মাঠে গৈগে কি বেলা দেখালে! দশ্লি বেফারী হছে, রেফারী দশ্লি আর বেচার গোলাকপার পালিশের ডালের বাহে প্রাণ নিয়ে ঠক ঠক করে ক'প্রছে। এসব

রাহি বাদের বিন ছবিদ্ধ শুক্ত মহলং জানুকানে ভাষণ দিকেন শিলপ বাদিজাকর ব্রীতস্পুক্তিত হোল এবং কাছিনীকার ও পরিচুলক রবি চটুচাম



দেখেশনে খেলা দেখাক আর আগ্রহ নেই।

: দ্বিতীয় টেল্টে তো গো-ছারান ছারলো ভারত। আপনার কিরকম লাগছে?

—ছিকেট ভালো ব্যি না দাদা আমি।
তবে ইন্ডিয়া হেরেছে—এটা শ্নে এক
ধরনের গাইয়া ফিলিং হয়।—'আমরা ভারতি । বাব বাব হয়।

: অভিনয়ে আপেনি কাউকে গ্রেব্কল ংবীকার করেন ? লগ্রহাদ-ট্রহাদ আমি মানি না।
আমার গরেও কেউ নেই। আমানুক্র
দেশের ইন্দু মুখাজিকে খুব জালা
লগেলে। ইনালাংক লে রবি লেকেন
মাজিত অভিনয় আমার খুটুব ভালো লাগে। আর বিদেশে জালা লগকে অস্থার করার সাহস আমার নেই।

: অণুপনার অভিনয়-জীবন কি কৌছুক চরিত দিয়েই শ্রে হয়েছিল?

—না। বরং উল্টোটাই। '৪২' নাউকে নিঃ মুখাজি—একটা ভিকেন চনিজ্ঞ অামার অভিনয়ের হাতেখাড়।

: তেওঁল না ফিল্ম—কোন্টায় কাজ করে আপনি বেশী আনুদদ পান?

— া চরিত্র আমায় আমেক কের্ব—
তা সে কেন্দ্র বা ফিকম বাই হৈছে বা
েন স্টেটা এককেব কে আলানা
মিডিয়ম। কাজেই চরিতটা আমার্থ কাছে মেইন কাইটোরিয়ান।

ঃ কলকাতার পাতাল রেলের **কাজ ডো** শ্ব হয়েছে, দিবতীর সেতুরও কাজ চলছে—এ-ব্যাপারে আপনি কি বংগুল?

> —এসর ঘটনার জামি জার রিজার্কট করি না এখন। উৎসাহিতত হট না। ছোটবেলার বে বরসটাতে সোরা দেখে জুলতাম—এখন তো জার সে ররশ নেটা এখন নিলিপ্তট থাকি।

ঃ লাথিক ভাবিষাৎ সম্পক্তে জাপান ক্রিট্র ভাবেন কথনো?

> —কথনোই না। জাপার ডিজিপন কেরানীর সিকিউরিটি নিরে বাঁচতে পারলেই বতে বাবো। তার আর ভারবোটা কি?



बबा किन नवा ग्राफ

नका कार्यको

--- निवास स



একদিন জয়ন্ত্রী রায়ের সংশ্যে টেকনি-সৈয়াস্স স্টাডিওতে আল্লাদের তুমাল আডডা হয়ে গেল। জয়ন্ত্রী আডডা দিতে ভালবাসেন। ধ্বার বছরা, আডডা না দিতে পারলে কাজ ভ্রার মেজাজ আসে না।

একজন ন্যাগতা ন মিকাকে নিয়ে
আমাদের বেশ কোতুহল আছে। তিনি নাকি
এখন গভাঁর প্রেমে হাবাতুত্ব খাছেন। অবিবাহিতা কুমারা মেয়ে দ্বানে স্বে নাম-টাম
করেছেন- শতএধ প্রেম পড়বেন- এ আর
কি এমন আদ্যা কণা। কিন্তু যার সংগ্
তিনি প্রেম পড়েছেন বলে বাজারে কথা
চাল হয়েছে, ম্হিকল বেগছে তাকে
নিরেই। ছেলেটি খাব ব্যিথমান। নামিকার
সংলা হাট করে প্রেমে পড়ার মতা ছেল মন তিনি। নামিকার সংগ্রাপ্রেমে পড়লে
অনেক হ্লজ্ব অনেক হাল্প। সে-স্ব সামলে প্রেম তালিয়ে যাওয়া, উহিন্ন ম্যা

জন্মত্রীকে প্রখন করতে উনি মিটি মিটি হেনে বলংলন, ওসব আমি জানি না বাপার। কৈ কার সঞ্জো প্রোম্বাপান্তা নিয়ে আনমার মাথাবাথা নেই।

জয়ন্ত্রী কণলেন বটে, কিংতু কথার ভুলাতে বোঝা লেল মাথাবাথা খ্র আছ আমি আরও নাড়া করে কিছু কুট প্রশন ভাষতে—

--আঃ ভালেগে না এসৰ কথা---

সবাই চুপ। চুপ কিল্ডু মিটিমিটি হাসি। ভাবখানা, সবাই জানি সবাই বাঝি অতএ^ব...

জয়শ্রী রয় সমুন্দরী মেয়ে। কনভেন্টে পড়া মেয়ে। একষার এক বিউটী কনটেন্টে গমস কালকটো হরেছিলেন। সাসলে ধার গালে সাদের টোল পড়ে। হাসলে মথেন্দ্রী আরও সিনাম হয়। থেমে থেমে চাপানরম ভগাতি কথা গলেন। আর হার্টা, য়ত বলেন। বার চেয়ে বেশী মনোযোগ দিয়ে গোনেন। দ, হাটার ওপর থাড়নী বেখে, একদাটে সাগ্রহে শোনার যদি তেমন ইন্টাবেণ্ট সাগ্রহে শোনার যদি তেমন

সোদন টেকানিস্থাস স্ট্রিডিওর মাঠে বসে আমরা, ওদিকে লোড শোডং দলছে, একজন বিখাত কমেডিয়ান হে'টে যাছি-লেন, বিরত্ত স্কুলিও মুখ, আমি হে'কে— —কেথায়?

- —¥ાં છેં₹-હા I
- কি ছবি স

—তিন পরী ছয় হালো—বলে তিনি ধা করে অদৃশ্য হলেন ওই প্রকাশ্য দিবা-লোকে। অর জয়শ্রী হেসে হেসে হেসে অম্পির। হাসির গামকে তার শরীর কোপে কোপে কে.প. একজন ভাগ্যিস 'হালো' দিয়েছিল, জয়্প্রী ত্রক ক্ষান মত থেমে শেষবারের মত—তিন প্রীর কথা ব্যক্তাম, আমি একজন প্রী, কিণ্ত ছয়—

বাকিটা বলা হতেই পারে না কারণ মাই হাসি হাসিটা এতই দ্রোরোগা ব্যাধি বড় বড় ভাজারও ফেল পড়ে যায়। আর স্ফুদরী মেরেরা হাসজে তারা বেশী করে ফেল পড়ে। বিশেত করে সেই স্ফুদরী মহিলা যান ভুঞ্জিফেরের নায়িকা হয়...। বলা বাহ্না, উল্লেখ্য ছবিটির নাম তিন পরী ছয় প্রমিকা।

জয়ন্ত্রী বলাগন, আমরা পিকনিকের আউট্টোরে গিয়ে একবার একটা মজা করেছিলাম। আমরা ছিলাম তিনজোড়াও আমি, আরতী, অচানা (বেন্দের বাঙালা মায়িকা ডাক নাম বলো)। আর ছেলেদের ভেতর ছিল রজিং মলিক, স্নান্ত ভঙ্গ, ধারিকাম চাটাজি।

পিকনিক ছবিব আউটডোর হচ্চিল বিহারের ভোপচারী লোকে। পরিচালক ইন্দ্র সেন। একটানা প্রায় প্রণীস্থা দিনের আউটভোর। ফলে স্বাইকে মানিয়ে নিয়ে ওয়ানই হাষ্ট্র ইয়েছিল। ভাকবাংলো ছাদো কারিয়া ভ্যাটার ভ্যাকাসের দান্তকারী খালি বাড়ি এ-বাবদ নিয়ে নেওয়া হয়েছিল। হায়শ্রীরা সবাই ছিল বাংলোতে, ছেলেরা কিছা দারের একটি কোনটোসে। আর ছবির দ্রাপ্যে দ্রাপ্যে যার। ' ন: করবে, পেল-ব্যাক্ত গানে ঠোঁট মিলিয়ে ান কবরে হাসবে কাদাৰ ঝগড়া করবে এবং সবশেষে ভাল-বাসার জোয়ারে উহ", উহ",..., প্রতিদিন শ্টিং-এর পর যখন বিকালের আলোয় পথ চিনে পাথীরা কলায় ফিরবে, দেহাতি মান,ষেরা যখন পাহাড নিজেদের বাস্ততে ফিরে যাবে, তোপচাঁচীর







জয়তী রায়



স্থিত ভঞ

আকাল হৈছে বখন মসলিন অব্ধ্বনার ক্রমে ক্রমে গাঢ়ি কালো মথমল হয়ে যাবে, তথন ? নায়ক-নায়িকারা মুখের রং ধ্রে: মুখে নিশ্চয়ই মুখোম্বি বসবে--দ্মণ্ড আলো-পের বনলতা সেন হয়ে, না কি জর্মী?

জীরশ্রী বললেন-সে আর বলতে। মেক-আপ তুলে ছবির কণ্টাম ছাড়তেই ষেট্কু সময়, তারপর ভাড়াতাভি সামান্য একট্যু চা-খাবার খেয়েই ওরা দ্টিভে রোজই উধাক-

- —এটি ওরা বলতে করে।
- -ব্লা আর ধতিমান।
- —আরেখ্বাস, তাই নাকি?

জয়ন্ত্রী থেসে বললেন, ব্যাপারটা প্রথমে খ্রেই মাম্লেটিছিল। ওরা শ্রিট্-এর সময় একট্ব বেশী যা গল্প-সংস্থা করতো হবে। ভারতার, একটা কিছা, তো করতে হবে। ছাই ওদের দ্রেলকে টাগেট করা ছলো। যথনই দেখা হয়, নিটি করে হেসে--ইয়ে, এই যে ধাতিয়ার বাণা কেরাছা?

—-ব্লা? ধৃতি অবাক।--কৈন, ওই তো লোকেশানে বঙ্গে আছে। শট দিছে।

— আ!... তা একলাটি বঙ্গে আছে কেন? একটা কম্পানী দিন। বেচারি মারটে পড়েও মনে ২চ্ছে। দেখখন না— ২লাইট বিবাহনা ভঙ্গাতে ভাকচ্ছে। আপ্নাকে খাঞ্জভ বোধ হয়—

ধৃতিমান প্রথমটা ব্যাপারটা ধরতে পারে নি। পরে যখন—

—এই যে ব্লা—

একা একা কেন ভাই—আরভিই প্রান্ত ভোজে নিয়ে হয়ত পেছনে লাগল ওচিকে ধাতি যে ছাফার্ট করছে—

---ধ্যাৎ ধ্যাং--স্লব্জ ভকাতি স্কর্মব দিয়েছে বুলা।

অথচ এই করতে করতে ওরা যখন বাশতবিক ফিলিডং-এ নেমে পড়ল, তখন স্বাই চুপ।—আরে যাঃ, সতিটি ধরা প্রেমে পড়ল নাকি?

অপ্রতি তথন মথে ঠোট ফ্লিয়ে— পড়লই তো। যেমন লেগেছিলে পেছনে। আমার পেছনে লাগুলে হয়ত অমিও—

বংসটাই এমন প্রেম প্রেম প্রেম প্রেম করে হিলে হাংকা মেঘে মেঘে মেঘে মেঘে মেঘে সেঘে সেঘে হাংকা মেঘে মেঘে সেই। করার ভাগ দর্শক এই নিয়েই। কেলীর ভাগ দর্শক এই নিয়েই। করনীর ভাগ দর্শক এই নিয়ে। করনীর বললেন, উঃ, আমাদের কি মল। প্রবীর এসেছিল লোকেশানে (জর্জীর স্বামী। সব শ্নে সে কাঁধ ঝাঁকিয়ে মাত্রা করলাতি করা জেলারাস। জয়গ্রীয় ক্রুটি কেল

ভেঞ্জারাস কিসে? ভূমি প্রেম[্]করো নি আমার সংগ্যা? দিনের প্রার্থন গোরেন্ন আমার কনো?

প্রথীর তংক্ষণাৎ রণেভণ্ণ। বাই বাই করে স্টান কলকাতার পথে নিজের গাড়িতে। জন্মী হেসে বন্ধন্দের বল্লে--গালিয়ে বচিল প্রবীয়।

এবার টেকনিশিয়ান্স স্ট্রিডভতে আমি মনে রঞ্জন মজুমদার বললাম, রাব্, এবর একটা স্লিড গাংপ বলো পাঠক-পাঠিকাদের শোনাই। গোজিয়ে যাঙ্ছে যে—

ভয়নী বল্পে বাজে কথা জায়য়ে লিখতে ন জানগৈট বনং সে ভয়টা থাকে। ধাকগে. এবার মূল কাহিনীতে আসা যাক। প্রতি-দিন শাটিং শেষ হয়ার পর আছারা স্ব গল্প করতে বস্তাম। দেখতান, ধৃতি আর याना প্রতিদিন একটা একটা দাবে। সরে যাচ্ছ। শেষটায় ওয়া পাহাডের নীচের দিকে ালয়ে যেতে ভারদভ করল। আলাদের চোথের সম্পূর্ণ আডালো। আমরা তথন ভাদর থেকে নজৰ সারায় সামনের পাছাডের নিকে তাকিয়ে নানা মন্ধার গলেপ ডবে যেতে থকতাল। এই রক্মই অক্দিন, আলি আৰ্বতি স্থিত প্ৰবীদ্ৰ গোল হ'হে বসে আছে, মান্ত্ৰৰ ভাত ্বৰ মধ্যালৈ, অলক-ক্ষণ সময় কেন্ট গেছে হাতিরা - এখনও ফোরেনি অস্থকার ঘটে ঘটে করছে, হঠাৎ অমার নজর পড়ল সামনের পাহাড় থেকে শাদা পোশাক পরা লগ্যা মত একটি মান্ত্র নেগ্রে আসছে নীচের দিকে। আমার খটকা লাগল। এই অন্ধকারে জনগল সাডিয়ে লোকটা নাম্ব্ৰে কি কৰে? আলো না নিয়ে ? আমি প্রবীরকে খোঁচা দিতে সে আমার দাণ্ট অনাসরণ করে তৎক্ষণাং তাকাল। সে-ও অবাক। ব্যাপারটা সকলের নজবে পড়ে গেছে। সমিত অবাক। আনার দিকে স্থান ভাকাল। আমি জ্বতংগী করে ভারার ভারনেতা বোঝালাল। মানাবাটি নামছে ঠিক যেন সিনেমার শ্লো-মোশানে। হাটাভ না বাতাসে ভাসছে। কাছে ভাসছে, ক্রিক্ড একটা মান্থের শরীরের আউট-লাইন ছাড়া আগ্রবটা পরিংকার হচ্ছে না আমাদের চোখে। হয়ত গাড় অস্প্রারের জনোই। কি জানি। লোকটা রাম্ভায় নে।ম 🖟 বা দিকে মানে বাহরজের দিকে নামতে ভারত করল। সাম্রা সবাই ভাষ্মা নম্বরে সেদিকৈ তাকিয়ে। আরে, তর কি মথো খ্রাপা? আত উ'রু থেকে নেমে আবার কোথায় চলেছে? উত্তেজনায় সমিত ভঞ্জ ্ভা ঠেনে উঠেই দাঁভাগ, ইয়েস, লোকটা ব্যারেক্সের দিকে ওই রক্ম সেলানোশানে যেন হাওয়ায় ভাসতে ভাসতে পেমে যাঞে। আমুৱা হতভদা। হঠাৎ উপ্টোদিক থেকে পুরের শুন্দ পাওয়া গোলা। अध्यक्ष র ভেদ করে ধাতি আর বংগা দুভি পদক্ষেপে ভাগমে আসংহ। উত্তেক্ষিত ভলগী।

—জেমরা এতকল এখনে ছিলে স্বাই?

হতির জবাবে আমি বললম্—হাাঁ,
কেন?

সামানা ইত্যততঃ করে ধৃতি বলকে—
দেখ, একটা অংছত বাগোলা দেখলাছ।
আমানের প্রায় গা খে'বে একটি প্রায় গালাক, মূখটা দেখাতে পেলার না, মাটি
ব্যারেক্সের দিকে নেমে গোলা আমানের
ডাকে সাড়া প্রথতি দিলা না। ব্যাপারটা
কেমন আনকানি লাগছে। তাই তাড়াভাড়ি
চলে এলান্—

আমরা সমস্বরে বললাম, আমরাও দেখেছি, তোমরা যেদিকে ছিলে, এই দিকেই যাজেছ—

ব্লার স্কির মুখে নিমে**ষে ভয়ে**র

থতিমান পরেষ মান্ষ। ছেসে বাপারটাকে হাজ্ঞা করবার চেণ্টা করে বললে—নিশ্চর স্থানীয় কোন লোক। তবে পোকটার সাহস আছে শ্বীকার করতেই হবে। বারেজের অপাশের কোন গ্রামে যাছে বোধ হয়।

কাটটে প্রের দিন সেই একই সময়।
গৃতিরা যথাবাতি প্রেম করতে বাবেরজর দিকে অদ্শা হয়েছে। আমরা কলন বসে ভাছি পাহাড়ের দিকে তাকিয়ে। অন্যকার গাচ হাজে রম্প্রা

ম্শ ফ্টে না বললেও স্বার মনের মধ্যে অংগর রারের ব্যাপারটা খচ্ছেচ্ করছে। দেশলাই জ্যালিয়ে সন্মিত সিপারেট ধরাজে। প্রবীর সেই আগ্রেন নিজেরটা ধরাবে ধরো এই কারেকভে—

অবতি ১ঠাৎ ধ্বন মান্ আত্মিদ ক্রপ। আমধা ফ্রচালিতের মত সাম্মের দিকে চাকিত্রে রোমালিত: পোক্টা ম্মেছে। সেই শাদা পোশাক, সেই দেলা আশান, সেই স্বলিছ; তাবিকল গত রাতের মতা

সমিত বরাবরই ভানপিটে। হাজের সংগ্রেটটা হ'ড় ফেলে দিরে অস্ফুট ক্লি যেন উচ্চারণ করতে করতে **উ**টে স্থানিক

মিনাভা বহু ও পার ও ১৯৫

ত অন্ত্রেধ o
 রোজ "হাউস ফ্ল" আলে টিকিট কিন্ন।

প্রজীপত্তি

কালাই, নিমাল, স্বেখন, প্রেলাংপ্র, বৈগোন অলল, জং লিন্টু গন্, প্রমোল, পিলা, স্মিডা, সলেডা পীৰং দিলীপ ও বাস্বী। আলো: ভাপস সেন, ন্ডাঃ লিন আইনা গান : ল্লেন দালগ্ডে, সভঃ গ্রেমালত

নাট্য পরিচালনা : মহেন্দ্র গালে



ভারপুর আল্লা বাধা দেবার আগেই লোকটাকে দন্তন্ত বন্ধান করে দ্রু পারে করিবা কলে। আনলা বিশ গজের নধাে দুজনকে ফান্টাকে পেছন থাকে ধরবা বলে কিন্দু আমরা ব্রেটি সাহিত পাছিল। করিবা স্থান দ্রুই থাকেই থাকে। সাহিত টোগেছে লক্ষান হােথা সাহিবা হাভ । গোকটা দাল্লাছে না। একই গতিতে, যেন ভাসতে ভাসতে ধ্যারেজের দিকে নামধাে এক সময় সে, এদাশা হয়ে গোল।

এবার সমিত খিলাছ। হে'টে নয়, যেন দৌড়ে। —এর। কোহায়? যাতি, বলে।? ধরা কোহায়ে?

ি দৃষ্ণ থেকে ওদের জাওয়াজ পাওয়া গেল। ওরাও ছটেছে।— এই যে আমরা, বুক উই ক্যার হিয়াব—

ধৃতি অন্ধকারের ভেতর থেকে ছাট্টে বেরিয়ে এসে আমাদের সামনে দাঁড়াল। প্রিকার জম পাওরা মান্যের চেহারা। বলো আমার শরীর বে'সে দাঁড়াল। কাঁপছে। স্মিত্র (ব্ব্। কটে প্রবল উভেজন। বললে, এক মুহ্ত জার এখানে নয়। লেচস গো বাক--

সামরা এতগালো মান্য, এক রক্ষ ছট্টেত ছটুটেত ভাকগাংলায় ফিরে এলাম। স্বাই হাফাছে। স্বই স্বায়ের দিকে ভাকাছে, কিন্তু কেউ কোন কথা বলাছে না আসলে বলার মত পরিস্থাত্ত না।

দৃতিমান এনেকক্ষণ পরে বললে—এখন যে যার ঘরে চলে যাওয়াই ভাল। কাল কথা ২বে। গড়ে নাইট।

কাট-ট্-কাট প্রদিন অম্পের শ্টিই-এর শেষ দিন। ইন্দরকে আগ্ররা কিছ্ ক্লিনি। কি হবে বলে দিনের আলোয় পাহাড়, লেক রাশ্তা, ঘাট স্ব প্রিক্লার রাত্টা যেন দৃঃশ্বক ফরগেট-ফরগেট।

ইপর বগণ, ভাই মাজ নাইট শ্রিটং-ও করতে হবে: ডে-নাইট প্রোগ্রাম করে লোকে-শ্রান শ্রিটং করতে প্রবলে তবে এমান্তা আউটভোর শেব হতে পারে। ভোলদের সকলের সহযোগিতা চাই

সবাই একবাক্যে রাজী হঙ্গে গেল। দীর্ঘ দিন বাইরে থাকার ফলে এখন কল-কাতা সবাইকে আকর্ষণ করছে। স্বাই এবার বাড়ি ফিরতে চাইছে।

ক্রিত ব্যক্তিরবেলা? আবার সেই विश्वीयका ? डेन्पबरक वीन-वीन करवंद वना হয়ান কথাটা। সোদনা আবার পার্গ আলা-বসর। কে যেন কথাটা শানিয়ে দিল। বঞ্জিৎ গালক ভাকবাংগোর ভৌকদারকে প্রদা করেছিশ-নাটা কি ব্যাপার। চোথের বিশ্রম ন্ধত ? সে লোকটা স্পণ্ট জবাব দেয়নি। ভা-না-না করে পাশ কার্টিয়ে**ছে। রারে** মাটিং হাবে জেনে জয়শী নিজেই চৌকিদারকে ডেকে পাঠাল। প্রথমে লোকটা কিছাতেই বুগতে চায় না। প্রত্যাপ্রতি করতে শেষ প্রতিত করেলে করল ব্যারেজের প্রেছনে যে-ঘূৰ সেখালে বেল কিছু দিন আগে একটি লোক আশ্বহজন করেছিল। নিশ্চয় কোন প্রতির বিক্র রালের ছিল। চৌক্রিটার স্থীকার কবল, ভারপর থেকে নিয়ম করে এটা হচ্ছে। থাপা কাটো খাত করে মা।

- গভার রংতে দরজা ঠেলাটোল **জানলায়** ঠক্ ঠক্?

— এবই কৰ্মিত।

—মা কোন মতলব্যাজ লোক?

চৌকিদার সভয়ে বলংল, নেহি মেম-সাহার, সন্ধান পর লেকের এই অঞ্চল্টা জনখানবশ্না হয়ে যায়। আপনারা আছেন ধলে আমি সাহস করে এখানে থাকছি। হোপনারা দলে যাবেন আনত তালা এটি দিয়ে সরে পুত্র। দায়ান খতুর্থাক জয়গা। এখানে বন্দ্যাশালাক আস্তিহ সাহস্ পারে

ভরা ভাষাবস্থার রাতে সেদিন আমরা যে
কী আৰু শ্টিং করেছি নাম্মরাই জ্লানি।
আমি গারীত ব্লো তং সমিত ঘটিত—
স্বাই গা ঘোসাঘোস করে থেকেছি।
র শতার ওপর গাজার হাজার কান্ডিল পাতযারের আলো জ্যালিয়ে শট নেওয়া হয়েছে,
কিন্তু সাইস করে আমরা কেউই সামনের
পাহাতের দিকে তাকাতে পারিনি।

াংল ব্লা?

- भारत ?

্মানে ধ্তিমান, ব্লা এরা ভাকায় নি ?

শ্বাস্থার কি হাস।—হাাঁ তাকিরেছে, থাকে ফাঁকে নিজেদের দিকে যতট্ট্ তাকানো হায়। প্রেমের গল্প আরু ভূতের গল্প পাশাপালি চলতে সব সময়ই গারে। এ আর কি এমন একটা বড় কথা!



আৰাপের চাঁল চাতে পাওয়া গেলে বে অবস্থা হতে পারে সেই ক্ষরস্থা মূথে চোখে दिनाकन काणिट्य करता दिन्यम असता किन সাইকের পিগারেট দ্য আঞ্চলের ফালে নাচাতত नाहारक এटम मोधारमध स्थात्मवास नाहारम. भारित दकारमञ्ज भाषा। अध्यक्त श्रवादक्त मा िलक अकर्क करत निर्माम श्रधाम महकावी পরিচালক সংক্রিত। চিলার যোটেই অথগো इत्तम मा। यक्त थानी इरलम धार एकर व পারো পটটো একটা সিগারেটের ওপর দিংমই যাবে। এ'ল আমদেনত ভারণ বউকে একা বরে পাওলা গিলেছে। এ ছবিতে বউ সেলেছে বড়া ছোমাল। দ্যায়াীকে ব্যক্তিতে ফেলে বাপের থাতিতে লৈ বৈশ মক্ষায় আছে। স্থায়ী চিন্ময়, সহা করতে না পেরে ছাটে এলে ছেন। আর এলেই তিনি ঘরে বউকে এক। भारत निरम्भाग कारक कि इस्ताह? कार्डे বলে কি তিনি বউ-র কত্ব সহা ক্ষাংকন। কথ্থনো নর। দা চার কথা লোলাংকাই। দার করা কালা আছে। নার করালা আছে। নারে করলেন এই ভাবে ঃ দিবা আছে। নারে রাখা খাছে। আরু আয়াকে শালে দিবে এলেছে পালার নার হাতে। রোজ এ পালা এক রামান্ত উল্লেখ্য কালিরা, উল্লেখ্য চতাতি আরু ব্যান্ত্রের স্কুল।

ঃ বেশ তো ভালই, স্বাদেশ্বর **উল্ল**ীড় হয়ে।

কথা বলতে বলতে জিগারেট স্বাতি
হবু । ধরানো হংলেছে ৷ কোথার আছি করে
স্থোটাম দেবে সিংশখনর—ডা কর এথন
ডাকে শ্বদরে মদাইর স্পে বজতে ইবে
'সিখ্' 'সিখ্' ডাকতে ভারতে ভিনি হে
একেবারে স্টাম হরে একে উপন্থিত প্রকাশ

এই বাঃ, সিগারেটটা শেষ হয়ে গেল যে...এখন কি হবে? মৃথে কাচুমাচু করে আছি-নেতা চিন্ময় রায় যা বিস্তারিত করলেন তা হল এই অজ সকাল থেকে এ প্ৰশ্ভ নিদেনপক্ষে বিশ্বটা কিং সাইজ সিগারেট টানা শেষ হয়েছে। আরও কথানা টানতে হবে তা একমান ঈশ্বরই থলাতে পারেন। এমন-সময় হাসি হাসি মাথে এগিয়ে এলেন পরি-চালক দ্বীনেন গতেও বললেন : এ তো বেশ ভাল কথা একটা ওয়াগড়া রেকড়া স্থি হতে চলেছে। আপান তো মুশাই হাসছেন क्रांक्रक आभाद श्रमा एवं मार्किएवं क्रांक्री क्षत पाड.... कन पाड। जर्भान তৎপন্ন প্রেডাকসন ডিপাট বেপ্ট কর্মধান ক্রয়েক পোস জন। তহ তক 4574 য়োরে দিয়ে চিন্ময় । ল কিন্দ। ব্যৱস্থা পাকানো চেহারা একুশতম সিগারেটে স্থাপ-সংখ্যার করলেন। অর্মান হাততালি **যেন** সনৌল গাভাসকার চার মেবে অধ'শত রান भागं कत्रामाः जासकृषा अधिकक्षेष्टे वर्षे!

চেহারাতেই মাল্ম হয় সিগারেটের সপ্পে চিন্দেরের যোগ্যয়োগ বহুদিনের। তথন হাফ প্যান্ট হাফ শার্ট টেনে হাফ চিকিট এবং আন্তকের জুলনান্ধ সেই বন্ধসটা হ্যতো হাফ। তা আন্ত প্রশাত স্বাসাগুল্যে কড সিগায়েট কাকেছেন।

চিন্দায় কিঞ্ছি বিৱন্ত। বড় বিশ্বদে ক্ষেপ্ৰসোল, ইয়ে মানে আছি তো কোনোদিন আৰু কি কথনও বিনেধ করে দেখিনি। ক্ষেটামানি হিসেবে আনে, এক লক্ষ করেক বাজার। এই যে গরীবটা দেখছেন এটা বজার সেলে নিগক্ষাটোর কানেই আছে।



হাতে রইল তিন∕মহ্রতে পরিচালক স্থির বংলাগেধাায় স্থামিরা **ম্থেপাধাায় একং** রিজত মরিক। **কটোঃ অন্**



পাল্লাৰাম্ মহরতে উভ্যক্ষাৰ মহান্তা বাৰচৌ ধারী এবং বিশ্বজিং:

करते । संबंद्ध



সেটা কাপনাতেও আসেনি। তাহলে এখন কি উপায় ? হাজে কালতে সিগারেট, মূথে এক-লাদ থেটিন—এর কি হবে ? চট করে মাথার বা্থি থেলে গেল সিধার। ন্যার মাণাইকে প্রায় করার অজাহতে ধ্পে করে বলে পড়ল। মুহ্তে সিধার মাথা শ্বাহর মাণাই-র প্রক্রে প্রায়।



মেশক হেনার ক্রেটিচ্চ, (হাতিক মান, বেকর্ট প্রেটার, ইনানিপাঁচার হোতিক ও বেতিকবাব, প্রশাস ক্রেটার বাব প্রতিব্যা বিদ্যালয়ক ক্রেটার করে প্রতিব্যা বিদ্যালয়ক ব্যালাক্তর ক্রেটার প্রটার ক্রেটার কর্মার বাব ক্রেটার প্রটার ক্রেটার ক্রেটার

(414 : 48-8130

বলছো না যে, শরীর খারাপ নাকি?....হা হা করে এসব প্রদেশর উত্তর দেয়া যায় না। এতক্ষণ কোনোকরে ঠেকিয়ে বেখেছিল সিধা। উঠে দাঁড়িয়ে কলেণ্ড সিনারেট গাড়া করে ডেরা স্মার্টালি উত্তর দেয়ঃ আমি ভাল....বেশ ভালই আমি।

। কি খবর কখন এলে? ... কি কথা

আমি ভাল.....বেশ ভালই আছি।

: মোটেই ভাল নয়। এত শ্কেনো
শ্কনো লাগছে কেন? হাতটা দেখি—

হাত দেখতে চাইছেন মানে পালস দেখতে চাইছেন-মারে গোছি। জ্লণত সিগারেট, কোছার ফোলা ফোলে মানে মতক্ষণ আর ভান হাত বা হাত করা যাবে। সিধ্ ঘেমে নেয়ে অম্পির হয়ে ওঠে। ভাকে ভাষণ অসহায় দেখায়। অমত্যা সে চুপ কার দাভিয়ে রহণ আর বলে চলল ঃ না, না, আমার কিড্ হয়নি, ...আমি বেশ ভাল আছি।

সিধ্ যে একদম ভাল নেই সেটা বেদ ব্রেতে পারছিলেন শ্বশ্রেয়ণাই। তাই তো তিনি কোনোরকম আপতি গ্রাহ্য করলেন না। শপ্ করে চেপে ধরলেন একটা হাত, সেই হাতেই উফ্আগ্নে..... পড়ে গেল আমার হাত.....

সিধ্ দমে যাবার পাত নয়। এর পরেও
ম্যানেজ করার ধাদ্দা করে। না, না, ওটা
প্রেড বায়নি সেটে গেছে। আমার হাতের
নথগ্লো....দাথ জিখা তোমাকে আমি
আগেই ধলেছিলাম নথগলো কেটে দিতে।
বাবার হাতটা কেটে গেল.....

শিখা গাছ খেকে, পড়ল। শিখার বাবা শ্বশারমশাই হাতের কেন্ অংশ কেটে গেল শ্বেম বাসত—ইতাবসরে সিধা কাজের কাজ করে ফেলে। জানলা অনেক দুরে। তাই ৰাটের এক গালে ফোলো স্থাবে। ক্ষাভার নিল্বাল ফোলে ফোলাটে সিম্ ক্ষাভার মুলাট্র হাত জলে গাল আরু বডট ফোলাবার টেটা ক্ষান্ত গাড়ে যার্লা ক্ষেট্র গালেছে কুন্তু করি বশ্বস্থা হার্লা হয়—মা, ক্ষাট্রান প্রভেট গিলেছে।

আলে করাল প্রেড্ছে সিজ্জেবনের,

এ বাজির জান্নাইর। একটা বিপাদ কাটিরে
উঠতে দা উঠতে আনেকটা বিপাদ ক্ষেস
সরতে হর। কোখেকে ধ্বাশ্ডী এসে
নগলেন খাটে তাঁর শাড়ীর আঁচল কাটিরে
পড়ে বাটিতে। শাড়ীর আঁচল আর জ্লান্ড সিগালেটের টুকরো ক্মশং বনিন্ট হতে থাকে।
এই দ্শা দেখে দ্বির থাকতে পারে না সিধ্।
তার গালান্টিবেকে অন্তুত এক ন্বর বেরিয়ের
আসে হি!

ঃ কি হল?

না কিছা না। (মনে মনে) গেলা গেল।

ঃ এদিকে বিয়ে ঠিক। পাতী পাঁচপাহাড়ী স্টেটের রাজার মেয়ে। আর ও চলে গেল কিনা দক্ষিণিং-এ গান গাইতে।

আমার কিম্কু জুনারকম মনে হছে। (মনে মনে) জালে গেল! পাড়ে গেল।

ঃ কি মনে হচেছে?

এ বিয়েতে ওব ঠিক মত আছে তে ? (মনে মনে) ধোঁয়া ধোঁয়া বেধগুছে।

শাড়ীর আঁচিল থেকে ধের্মা বেরুচ্ছে না।

এ ধেরা সেই ধেণায়া—উপ্রেণানী হতে হতে
জখন শ্বশ্রমণাই-র জামার তেওব থেকে
বেরুচ্ছে। ধেরা দেখে তিনি তো বিষম তর
পেরে পেলেন। নিশ্চরাই কোথাত আগুন লেগেছে, ঘরের মধোই। এ ধেরার সংশ্ শাড়ী জলার কোনোরূপ সম্পর্কান থাকলেও হরে গেল। হয়ে গেল ঠিকই। কেলোর কীতি ফাস হয়ে গেল। ততক্ষা জ্বাক্সত সিগা-রেটের ট্রকরো শানি আনেকখানি অংশ ভাষার করে নিয়ে । শিখা তড়ার ক্রিষ্টি শান্ধ দিয়ে পড়ে ভাগুন নেডায়। হাত্ত-নাডে ধরা পড়ে চিম্বুর চোথ দুটি টারা হরে

জানবেন এই ছবিব নাম 'রাগ্য-অনারাগ' যানার সভাস্থা প্রোডাকসকর। প্রক বনেল্যাপাধ্যয়ের কাহিনী অবলম্বনে চিত্রনাট্য রচনা করেছেন শেখর চট্টোপাধ্যায়। শ্রীচট্টো-পাধ্যায় এ ছবিতে শ্বশার্মশাই র চরিত্র র্পায়িত করছেন। নায়ক তার ভাগেন বিখ্যাত গায়ক শংকর সেন-রণজ্ঞিত মল্লিক। নায়িক। পাদু পাহাড়ী স্টেটের রাজার মেয়ে --অপর্ণা সেন। অন্যান্য চরিত্রের শিল্পী ঃ য়বি ছোষ, কণিকা মজ্মদার অনুপক্ষার এবং সুমিনা মুখোপাধায়। গত স্তাহে এ ছবির স্টিং শারা হয়েছে ইন্দুপারী কট্রভিওতে। সংগতি হবে অন্যতম সম্পদ। গান রেকড করা হয়ে গিরেছে। গেরেছেন আরতি মাথোপাধ্যায় এবং সাম্বনর হেমনত मृत्थानाथाय न्द्रुर्।

अधीन दिलस्यादण्यक गविकानमा छ निरमंगमात्र निर्मात्रसाथ क्षाचीक स्थलक दिलस्यक्तास मञ्चलकः कृतिहा नामक्रीसमस्य सह



স্টুড়িপ্ত সংবাদ

সমীর প্রোভাবস্কের তিন পরী ছর প্রেমিক ছবির সান রেক্ড কণ এরেছে। প্রবীব মজনুম্দার। নেপ্রেগ ক্ষ্টালন করেছেন। মালা দে, আরতি মুখোপধাম এবং তৃশিং মুখেপাধায়ে। স্মার মুখার্লি প্রবেজিত এ ছবির পরিচালক দিলীপু ব্দেলাপ্রধায়।

স্বোধ ঘোষ বচিত পার্বধ্ এবার চল-ক্রিতে রাখ্যায়ত হচ্চে চ্লেডে। পরিচাগনা করবেন বিজয় চটোগাধায়। শ্চিং শুকু হতে আর বেশী দেরী নেই। নার্ক-নায়িকার পে চুক্তিকাধ হয়েছেন স্থিত ভুল এবং সোমা দে। চিত্তাহণ করবেন : শকি কদেনাগধায়।

দয়াশংকর সুলতানিয়া বড়াছভার গ্রহণ কর:র পর থেকে ক্যালকাট্ট মর্লুভট্টান भद्रोजिक्ट बार्य भारत माहित इसका हर्या ह স্তাতে একজন নতুন পরিচালক Married ভিন*িদ*নের সিদিউল িন্ন7,হা **भ**्रीहर শ**ুর**ু করছেন। পরিস্তালক অমলে রায় ঘট^ক। **ভাবর** পর্যায়ের, নাম 'রং নাম্বার'। এই শিল্পী নায়ক স্মিত ভক্ত रुत् पकान अनः সাধার বলেরাপাধায়। সেট - احتالها ধরনের অফিস, নিমিত চয়েছে নিদেশিক সূর্য চট্টোপাধ্যায়ের তত্ত্ত্বিশ্ব ।

েল-বয় নায়ক সমিত ভঞ্জ অফিসের नम्। हिन्दिकात्म कात्र मुख्ना स्थल बा्त दहारम् হোসে কথা বলছিলেন। ক্রান্তেরাজ্যান দীপাক দাশ ফ্রেমে ও'কে, জাকিসের জান্যান্য কর্ম-চারাদের মধ্যে উলয় ভট্টাচার্য এবং তর্ণ-কুমারকে ধরছেন। কেননা এই টেলিফোনের পরিপ্রেক্তি অফিনের অন্যান্য কর্মচারীদের রি আকেশনস্গ্রলো নোট করে রাশতে চান পরিচালক। বয়ুসে তর্তুণ অভানত ধীর ছিণাব প্রকৃতির খ'্টিনাটি প্রত্যেকটা ব্যাপারে তাঁব স্ঞাগ স্থাতি। কেনোর্কম প্রিটেনশন নেই প্রসা রোজগারের জন্দ ছবি করতে এসেছেন ! একান্ডভাবে আছাত্তিক জন্ম নর। তিনি ভাবর মধ্যে নীট একটি গ্ৰুপ রেখেছেন স্বর্চিত। আগার্গাড়া তিনি মূল গ্রুপট্রিক বহুংসার আড়ানে রাখনে চাইছেন; পারেন টেলিফোন-ব্রুসাঃ শেল-ব্রু নার্ক আজ এ মহিল্বা, কাল ও মছিলার সকের ঘ্রে বেড়ার কিন্তু কথনই সেই মহিলার সংগ্ ঘাুরে শেড়ায় না সাকে সৈ রং মালবারা-এ পেয়েছে। প্রতিদিন বাতে নিদিব্দ সময়ে ऐंक्सिक्। तक्क कर्र । नातक स्वयादाङ शासक वाहिएक क्रांक रहेक्सिकान्छ। করে। ভেসে আসে কশনও বিষয়, **७००ल नार्वीकर्का एक अहे द्रज्यामही नार्दा।**

নুলতে প্ৰক্ৰম **এখনো আন্দল** ভূতিব খট্টিভ বৈড়াছি। সৈ হ**তহু আন্দলে**ন নায়িক।। এখনো ঠিক হুল্লীন, জানালেন : পরিচালক প্রীরাধ্যবটক। তিনি আরো জানালেন, এই
চরিত্রের জন্ম আমরা অনেক নতুন কৈরে
দেখেছি। কার্র চোখ শাওরা বার তো
ভিদার পাওরা বার না। কাব্র কিপার
পাওরা বার তো মুখ পাওরা বার না।
রাস্তার ঘটে অলিতে পলিতে—খুর্জেছি
ফ্রান্টিকালি খুড্জিছি। পাইনি, তাই পরিচিত নারিকার মুখের কথা ভাকতে হচ্ছে।

ইউনাইটেড ইণ্টারনাশনাল নিরেদিত এ ভানতে থান গুলেক গান থাকরে। দুখালা রেকর্ড করা হয়ে গিয়েছে। রচয়িতা দিলাশ গুহ। স্বকার দিলাগৈ ভট্টার্য। শেল-কাঞ্চ কর্মছন: হেমত মুখোশাধায়ে এবং ক্ষাল দ।







চুলজৈতে মতুম প্রীক্ষা-নির্মিকা প্রিবীর প্রায় প্রত্যেকটি প্রগতিশীল দেশেই আছে বিশ্চতি লাভ করেছে। আরু তার ফলে বরে বলেই আমরা এমন এমন ছবি দেখাছ যা আমাদের ব্রুদ্ধিবাতিকেই শুধ্যু নর স্থুত চেডলাকেও চুমকিত এবং বৃহত্তর প্রথিবী লম্পদেও সন্তাগ করে তুলছে।

ৰ্কা ৰাষ্ট্ৰা এর জন্যে আমরা বিশেষ করে ভাষত সরকার, ভারত>থ বিভিন্ন গোশর দুভাষাস এবং ফিলম সোসাইটি ও সিনে ক্লাবগালিক ক'ছে কৃতজ্ঞ।

তব্ একটা কথা ভারতের বাইরের আনেক দেলে এমন এলন উল্লেখযোগ্য ছবি তৈবী এবং প্রদাশতি হয়, যা যে কোন কারণেই হিকে আলাণের দেশ প্যাশত এসে পৌচর

হার কোন: ৫৫-১১৩≥
প্রতি বহ: ৬॥
বাদ বাব ও হাটির দিন ০ ও ৬াছ
কুনাল বংখাকারি নতন নাটক



পরিচালনা : বণিকল হোক
 আলো : তাপল বেল
 আলো : তাপল বেল
কুপারণে : বণিকল, হরিপ্রন, সত্বিদ্ধ,
 আকারণান, প্রামন এবং
ন্তেংগু ও দ্বিভা বিশ্বাস

না। এ সংপ্রেক এখানকার ফিল্ম সোস।ইটি ও সিনে ক্লাবগালির মধ্যেও কিণ্ডিং ক্লোড লক্ষা করা গৈছে। তাদের বববা এখানকার কনস্লোট বে সব ছবি দেন, তার মধ্যে থেংকই তগদের ছবি বেছে নিতে হয়। তার বাইরেইছেনে্বারণী তারা কোন ছবি আম্পানী করতে পারেন না। ভারত সরকারের আমানানী নীতির প্রতিবংধক্তা ছাড়াও সে ক্ষেত্র আছে।

পৃথিবীর বিভিন্ন দেশে জন্তিত চল-চিচ্চ উৎসবে যে সব উল্লেখযোগা ছবি প্রব-শিতি হয় এবং বার কথা আমরা প্র-পত্রিকায় পড়ে থাকি তার থ্ব কম অংশই এদেশে জাসে।

এ ব্যাপারে ভারত সরকার নিজে না
হানত সিনে ক্লাবগালিকে যাদ ছবি আনার
জন্ম অনুমতি দেন এবং কিছা কিছা কেন্দের
স্বাধা-স্বিধা দেন, তাহলে ব্যিধজ্ঞীবি
দশকিদের বড় একটা অংশ তা দেখার স্বোগ
পান। এবং তাতে বোধকার এদেশের চসচিত্র শিহপত লাভবান হবে।

একটা স্থের কথা গত কিছুকাল যাবং সৈভিয়েট কড়েপক্ষ মাঝে মাঝে টালং ব্যবসায়িক ভিত্তিতে হলেও চলচ্চিত্র উৎসাক্ষ মাধাম ছাড়াও পাবলিক হলেও তানের দেশের কিছু কিছু উল্লেখযোগ্য ছবির প্রবস্থাকর ব্যবস্থা করেছেন।

এ ছাড়া ইউ এস আই এস কর্ণপঞ্চ প্র
মান্ত মান্ত জানের দেশের ক্রাসিক ছবিগ্রেলি
দেখাবার বাবস্থা করে থাকেন। কিংস্কু সেটা
একাণত নিমন্টিত এবং নিজ্ঞাব মিনিয়েচার
হালের মধ্যে সামাবন্ধ।

অভএব কলকাতার প্রতাহিক নিয়নে বিশিষ্ট ছবিগালি দেখার তেম্ন সহজ্ঞাভা স্যোগ নেই বললেই চলে।

এই অভাব পরেণ করতে পারে বিশেষ-ভাবে ও উদ্দেশ্যে নিমিত একটি আট- থিয়েটার, যে হলে সে ছবির নির্মাত প্রদানের বাবদথা থাকবে। আর এ ব্যাপারে সরকারী আগ্রহ স্বাধিক কার্যকর। অথবা যে সব হল বা চিত্রপদ্যক সংগ্রথা এদেশে বিদেশী ছবি প্রদাশনের বাবদথা করে থাকেন ভাদের এই জাতীয় ছবি আমদানী করার স্থানা করে দেওয়া। মনে হল এ ব্যাপারে ভারা নিশ্চমাই উৎসাহ দেখাবেন।

সোলারিস

োভিটেট রাশিয়ায় নিমিতি এই ছবিটি
শুধ্যাত স্বংশশেই নয়, বলা যায় প্রার সারা
বিপেত এর বিষয় বৈচিতা প্রয়োগ গুণ ও
শিক্ষেপ্রক্রমণির জন্ম সভা জালিকেছে।
এ ছবিতে পরিচালক মানুষের অন্তর জনতে
এমন এক আন্চর্যভানক অনুসন্মানী দৃত্তি
নিক্ষেপ করেছেন যা এ জাতীয় ছবির ক্ষেত্রে
সংপূর্ণ অভিনব।

'সোলারিস' পরিচালনা করেছেন তর্মুণ পরিচালক অণ্টেই ভারকোভঙ্গিন। পোলিশ লেখক স্টানিস্পাভ লেমের বিজ্ঞানভিত্তিক উপন্যাস অবক্ষবনে এর কাহিনী গড়ে উঠেছে। যার পটভূমি মহাকাশ, বিষয় বস্তু কিছুটা মনসভত ঘোসা—তবে সুদপূর্ণ নতুন আজিক ঐ পটভূমিতে।

পরিচালক এই উপন্যাসের ভিত্তিতেই মান্বের মহাকাশ অভিযানের করেকটি পার্লা-নিক ও মানবিক সমস্য নিরে ছবিটি তৈরী করেছেন।

ছবির নাস্ক এবজন মনস্তত্বিদ। মহাকাশ সেটশন সোলারিসে এমন কিছু রহস্যজনক ঘটনা ঘটেছে যা প্রথিবীর মানুষ্টের
কাছে ব্রিশতে ব্যাখ্যার অতীত। নারক সে
স্বাক্তর অনুস্থান করছেন। সেখানে বিরে
তিনি এমন এক ঘটনার সংমুখীন হলেন যার
রহসা যাঁভ দিয়ে বিশেশবশ করা যার না।

.

এই মহাকাশ স্টেশনে এমন কিছু প্রাণীব রহস্যজনক আবিভাবে ঘটেছে বাইরে থেকে বাদের অস্তিজ্ব বাইরে থেকে বাদের অস্তিজ্ব বা আচরণ ঠিক মান্দ্রেরই মত! ঐ স্টেশনের কমণীরা নারককে হাদেশ দিতে পারে না বে, এই অন্প্রবেশকারী বা আগস্তুক কে বা কারা এবং কোথা থেকেই বা আসাছে। এদের প্রেতর মত আচরণ এবং নির্মামত উপস্থিতির ফলে একজন বৈজ্ঞানিত আতেজিকত হয়ে এক সম্মু আত্মহতাত্তি

শেষ পর্যক্ত নারক তার বৃদ্ধিবৃত্তির ওপর নির্ভাব করে সেই রহস্য উদ্বাচনে সচেন্ট হন ক্যিকু ডিনি শেষ পর্যত হার দবীকার করেন। বৃদ্ধির দ্বারা কেনে কিছুরই ব্যাহ্যা করতে পারেন না। শেহ পর্যক্ত অনুভূতিবোধ দ্বারা তিনি ভার উত্তর ধণুক্তে পান।

ঘটনাটা এই বনম। নায়ক একদা হারি
নামের একটি মেলেকে ভালবাসতেন। কি করে
সেই মেরেটি যেন দেখানে তার কাছাকাছি
এল। হারিকে পোয়ে তিনি খুলাই হলেন।
ভাবল হারিকে পালে নিয়ে তিনি অ বার নতুন
করে অন্সক্ষদেনর কাজ শার্ম করতে
পারবেন। কিল্ডু হঠাবই এক সময় নারক
ভাবিকোর করেন যে প্রিরীতে একদা হা
মেরেটিকৈ তিনি ভালবাসতেন এ সেই বছমাধ্যে গড়া হারি নর তার প্রতিবিদ্য মারে। বার
মধ্যে আত্মার ভালিত বিদ্যানান। কিল্ডু এই
প্রতিবিদ্য স্থিটির ক্ষমতা কার মানুবের
উধ্যার্থির এমন কোন শাক্ষিমানের ?

একদা হারির মৃত্যু এবং প্রনায়
আবিভাব চিন্তা নায়ককে রাত্রিমত বিস্মান
বিষ্ট করে। কিন্তু স্তু খু'জে পান না।
শেষ পর্যাক্ত তিনি এই সিন্ধানেত আসেন
যে এ রহস্যের কোন ব্যাখ্যা নেই। এরা
ইরাতো কোন পদার্থ অথবা এমন কিছু যা
শ্বারা মৃত্যুর পরেও এরা প্রে র্প
রাবণ করতে পারে এবং শার গতিবিধি বা
উল্লেখ্যা সম্পূর্ণ রহসাজনক প্রিথবীর
মানুবের কাছে।

হিন্দ্র শাস্ত্রে পরলোক তর এবং জম্মাতরবাদ বলে একটা কথা আছে। এ কাহিনীতে কোথায় যেন তাব অস্তিত এবং স্বীকৃতি খু'লে পাওয়া যায়।

ছবিটি ভার কাছিনীর জন্য দশকিদের মধ্যে খুবই বিতকের স্নান্টি করেছে। এব প্রয়োগ ধারাও সম্পূর্ণ স্বতন্ত্র।

কান চলচ্চিত উৎসবে 'সোলারিস' ছবিটি জুমীদের বিখোষ প্রস্কার পায়।

সবশেষে উল্লেখ করা যেতে পারে বে,
মহাকাশের ওপর আমেরিকার তোলা দ্র্যানাল
ক্রীরকের ক্ষেপ্স প্রতিস ট: থাউলেন্ড
ওয়ান ছার্নিটি মৃত্তি লাভের সর তা দেখে
অনুপ্রাণিত হয়েই তারকোভাসিক এই ছবিটি
তৈমী করেন।

অলৈ তারকেভাস্ক



সাউ৽ডার

হলিউডে কম বাজেটে তোলা 'স উণ্ডার'
(SOUNDER) ছবিটি একটি নিম্নবিষ্
কৃষিজীবী নিজাে পরিবারের একেবাবে
ঘরোয়া কহিনী। তাদের ছেট ছোট সুখ
দুঃথ বেক্চ থাকার আপ্রাণ চেন্টা এই
ছবিতে ভুলে ধরা হারছে সহ্মভুতির
স্বেশা।

মূল কাহিনী গড়ে উঠেছে উইলিয়াম
এইচ আমজিং-এর লেখা একটি মূল
উপন্যাস অবলবনে। সম্মুকাল ১৯৩০-৩৩
সাল। যথন কাহিনীর পটভূমি নুসিয়ান র
মানুর ভংকালীন সমাজ ব্যবস্থা এবং অগনৈতিক অবাবস্থার বিরাপে সংগ্রাম কংতে
প্রায় পরিবারেই অথানৈতিক অস্বাজ্ঞ্নর
জনা বাদ্যালার সভানদেব শিক্ষাদ্যনের
চেন্টা প্রায় অসম্ভব।

কৃষিজীবী নথান মগুনি ভিনটি সুণ্ডান সহ সুদ্ধীক বাসু করে তার ভাওা করা খামারে। গাবিলারিক দিক থেকে সেখুনই সুখ্যী। কিব্তু অর্থানৈতিক করনে সেতার ছোট ভোট ইচ্ছাগুলি প্রেণু করতে গারে না। এমন কি এক টুকরো মাংস্থ্রভুলে দিতে পারে না সে দ্বী এবং ছেলে-মেরেনের প্রতঃ

সেই ইচ্ছ টাই একদিন তার মনে লেভের সঞ্চার করে এবং একদিন শুকর চুরি করতে গিয়ে সে ধরু পড়ে জেলে হার। ফলে সমগ্র পরিবার্টিই একমণ্ড উপার্জনিকন ব্যক্তির অভাবে চরম পরিয়েরে সম্মুখীন হর।

এই সময় একজন বেবত্কায় মহিকা
নাথানের বড় ছেলে ডেভিড লীকে সংসারের
হাল গরাব জন জনগুপ্রবিশ দেন এবং নানা
ভাবে সংসারকে বাঁচাবার জনা উঠে পড়ে
দরোর ভাবে কিল্ডু পিতার আকর্ষণ তার কাছে
দরোর তাই সে একদিন তর সালে দেখা
করার জনা হত থেকে বোঁরয়ে পড়ে।

কিন্তু তার সেই সাতা সাংথকি হয় না। ফেরার পথে তার সংশে দেখা হয় একজন নিক্রা শিক্ষয়িরীর সংগো তিনি তাকে আবার পড়াশুনায় মন দিতে বলেন। কিন্তু লীর মন ভাতে সার দিলেও সে তথা কভাবোর কথা ভূগতে পারে না—আগতত ভাষে গিতা জেল থেকে ফিরে না আসা পর্যাত। তথানন ভাকে সংগ্রাম করে বেতেই হবে ভাগের সংস্থানক আনাহারের ছাত থেকে বেচে থাকার জনা।

ছনির শেষ দৃশাটি এদিক থেকে
উল্লেখযোগা। এক বছর বাদে গৃহক্তা বখন
তব করেদ জবিন শেষ করে ছরে ফিরে
এসে সংসারকে বাচিয়ে রাখার জন্য ছেলের
সংগ্রামের কথা শুনদ ভখন আনকেদ এখা
সান্সালাচনায় ভাগ চোগে জল একে সেলা।
সে আবেগে ছেলেকে জড়িয়ে ছরে
লেগ পেক ডোমানে ভালরে ছাতে
কথাপড়া ভিথে ভামাকে জবিবে
বড় হতে হবে। লেখাপড়াই মানুবের কিছে
বড় হতে হবে। লেখাপড়াই মানুবের

শ্বই সাদামাটা কাছিনী। কেন আছি
নাটকীয়তা নেই জটিল ব্যাপার নেই। সরজ কাহিনীর সরল বকুরা। এই একটি পরি-বাচের মধ্যে দিয়েই নিম্ববিত পরিবারপার্লির দৈনদিন জীবনের অতি সামান্য সূখে দুঃখ হাসি কালা কোন রকম নাটকীয়তার আগ্রন্থ না নিয়েই সরজভাবে দেখানো হয়েছে। দেখ বেলটিট এব মাল বকুনা। শিক্ষাই মানাবকে দারিয়ের হাত থেকে রক্ষা করে, জীবনে প্রতিভিত্ত হ্বার স্যাহাণ্ এনে দের।

ছবিতে নিশ্নবিত পরিবারগালির বেণ্ট থাকার জনা সংগ্রাম দৃঃখ দৈনা অভ্যারক জয় কমার একটা প্রবণ্তা দেখানো হরেছে নিগ্রে। পরিবারের মধ্যে। বারা আবহুমান-কাল ধরেই দারিছেরে সংগ্রা জতাই করে আসছে।

ছবিটি আগেরিকায় প্রচণ্ড সাড়া কণিলেছে। দেশেব প্রায় সব স্মালোচকাই সাউন্ডার' ১৯৭৩ সালের শ্রেন্ট ছবি ললে ১০৩বা করেছেন। মান্ত সহাল্ভাতর সংক্রা তোলা এই ছবিটি এ হাবং পর্যক্ত নিধ্যা স্মাজের শট্ট্যিকর তেলা ছবিশ্লি থেকে কিন্তিং দর্ভলা। যোগানে প্রচারটা ছবির অন্তর্বালে থেকেই কান্ত করেছে।

ছবিটি পরিচালনা করেছেন মাটিন রীট এবং প্রবোজনা করেছেন বার্ট র্যাভনিজ।





আই কে গ্জুলাল



লেও পরিচালক : মালাক জেন

বিবিধ সংবাদ

চন্দ্রতে দেবীর সংবর্ধনা: অবন্যহলে
মলার গাঁতবাঁথির সমাবর্তন উৎসবের
স্টুলার ছিলো প্রতিষ্ঠানের পক্ষ থেকে
প্রীয়তা চন্দ্রবৈতী দেবীর সংবর্ধনা। অধ্যক্ষা
শেলী সাম্যাল তার হাতে তুলে দেন
ক্রম্মার্থা ও মামাপা: শ্রীপ্রবাধ সাম্যাল
সাহিত্যিকের দ**িকাতি অ্বলোকপাত**দেবীর শিণপার্কাতর প্রতি অ্বলোকপাত
দেবীর শিণপার্কাতর প্রতি অ্বলোকপাত
স্করেন। আর ভার বাছিগাত ক্ষাব্রের আন্দদ্র
সম্ধ উক্ত্রণ দিক্তি মেলে ধরের তারিই
প্রান্তন্ধ্বীয়তী বীগাদেবী।

অভিনন্দনের প্রজ্যন্তরে শিল্পী বধোচিত বিনয়ে উল্যোক্তদের কড্ডাতা জানান।

পরিশেষ মণ্ডম্থ হয় দুটি নৃত্যনাট্য—
শিশ্বশিশণী অভিনীত। প্রথমটি আলকাবেট
ক্রাব পরিচালনার ছিলেন প্রণাশ মুখোপাধ্যার
ও সংগীত পরিচালনার ছিলেন প্রালখাবেট
ক্রাব—চবতীয়টি গ্রুপী গায়েন বাখা বায়েন
পরিচালক ও নৃত্যপরিচালক ম্থালমে শ্যামশেল ঘোষ ও ম্যুভিরঞ্জন ঘোষ। বিষয়বস্তু
অন্সমরে দুটি মাটকই স্থের রুপায়্পরে
মারীলার। শিশ্বশিশপারা সারাক্ষণই প্রোভাদের আনশেদ মাতিরে রাখাতে পেরেছে।
প্রশ্বশের কৃতিত শেলী সান্যালের।

নৰ শিল্পনাথ-জীজন্ম বিদ্যু : আবাঢ়ের প্রথম সংখ্যার (১৬ই জনে, ৭৪, ৭টা ৪৫ মিঃ) ইত্রেরীকণ ভরনে পরিশ্প লোভবলোর ज्यानाय शिमर्रायम भागमान्य खार्याकर क्रक क्रम्बानकीय व महानक गाँकि जालाश : 'तर किसाम के जीखर्तात्म'-ए। इत्शनाम बिराहक माधानिका व्यस्तिक इस। श्रीकार-विन्त- वा न निर्देश वरीम्ननाथ स वरीम्ननाक्षत প্ৰিটতে অৰ্থিক এবং এই দুই মহামনীয়ীৰ ওপর রচিত গাঁতি আলেখাটির বানাকার 'শা বিশ্ব' সম্প্রাদক শ্রীজ্যালেশ ভারচার প্রবর্থনার অংশ নেন। নারীক্তেও গ্রন্থনায় মাল অংশ নেন শ্রীমতী উষা ভট্টাচার্য। কবিতা পাঠ ও রবশিক্ষণগীত পরিবেশিত হয়।

ভিচিতাৰ ভাৰ : রংগনায় 'আক শবাণী রিক্রিয়েশন ক্লাবের প্রদেশ বাধিক অনুষ্ঠান হয়। বিচিত্রানুষ্ঠানে অংশ গ্রহণ করেন সঙীনাথ মুখোপাধার, উৎপলা সেন হৈমনতী শ্ৰুক্ত ও কল্যাল্য সিকদার ৷ যুক্তসংগীতে আলি আহমেদ হোসেন, সমরেন্দ্র সিক্দার অধেনিদ্র মাথোপাধ্যায় ও গোবিন্দ বসা। পরে সদসারা আজত মুখোপাধাায়ের সাংবা দিক' নাটকটি মঞ্চথ করেন। সরস সংলাপের গ্রাণে নাটকটি খ্বই উপভোগ্য হয়েছিল, অভিনয়ে প্রথমেই নাম করতে হয় সোমেন চৌধ্রী অমলেক্ষ্ হালবার, মিন্ট্র চক্তবত[ে] শাম্প্র চল্টাঞ্জি ও শেফালী বাানাজি। নাটা নিদেশিনায়ত ছিলেন অভিত মাখোপায়া নাটকটিকে শৈলিপক ম্িসয়ানায় প্রোভ্নেল করে ত্তাতে তার যে নিষ্ঠার কোন অভাব ছিল না তা প্রয়েজনার প্রতিটি মহেতে ধরা পড়েছে সংগীত পরিচালনা করেন ব্যাপ পাল। অনুষ্ঠানের ছোমগার ছিলেন कशास्त्राधा वज्ञाः कामा काम शास्त्रामा स्टब्स কবিতা সিংছ।

वहि | भिषा : हेलेगाहेलेख बार्क (ब्रह्म একসচেঞ্জ শাখা) ক্যানিরী সমিতি আবো-ভিত নীহারলন গুণেতর বহিং। শ্রেকটি লাটকটি অভিন**ীত হয়। শ্রেকটি**র নিদেশিনায় অভিত মুখোপাধায় আভি-নবছের দাবী রাখেন স্থানপাৰ সম্পা দনার জনা নাটকটির পাতিবেগ অব্যাহ's किल। मनाज्ञान्या छ আলোকসম্প:ও নাটকটিকে অত্যানত মনোরম করে ভূগে-क्रिना।

ट्योनर সঞ্জীৰ बक्त ड জয়ৰতী ব্ৰ'প্তিত উৎসৱ অৱন মহণ মণে সাফলোর সংখ্য অন্যতিত অনুষ্ঠানের স্টেনা হয় কাজি স্বাস্ট্রির অনবদ্য আবৃত্তির নাধামে। প্রবৃত্ী অন্তোৰে নৃত্য পরিবেশন করেন সাপ্রিয়া রায় ও স্চন্দ্র রায়। সংগীতে ছিলেন সবলী অসিত অধিকারী, অপূর্ণা খোৰ অতসী ঘোষ স্নন্দা ঘোষরায়।

শেষ অনুষ্ঠান শারা হয় অজয় কয় রালের পরিচালনায় বাদল সরকারের বাম-শ্যাম-হাদ্ নাটক নিয়ে। সংখের সভা-বুল্দ অভিনীত এই নাটক সমবৈত দশ-ক্ষান্ডক্রীর বিশেষ প্রশংসা লাভ করে . অভিনয়ে বিশেষ দক্ষতা দেখান সব্তী অজয় কয়রাল (গোবিদদ দক্রতশী), সমীর ছোম (রাম) ভোলানাথ খোম (বদ.). সোমোন ব্যানাজি⁴ (শাকদেব), ববংগ ঘোষ (भाग) भाषाणान वानाजि (जशानव),

অভিত্যিক হোহাল (নারো মিহির), দীপিড हारोडिं (खबानी) हक्क हार्किक (ভারকোক), স্থী চরিয়ে দীশ্রি (ভবাদী চৌধুরীর কন্যা)। পরিচালন। আবহুসংগতি, মণ্ড ও আলোর न्त्रम् इ

শাহিতানকেতন ভালামক সংখ্যের सबीन्त सरम्माश्रम्

ाड ०५ द्या नन्याश शस्त्र प्राप्त कार्हे কলেজ ভৰনে স্নান্তনিকেতন আল্লানক সংক্রের উদ্যোগে রবীন্দ্র জন্মে। সব অনুষ্ঠিত ইয়া। সভাপতিত করেন অধ্যাপক সক্রমার সেন। ট্রাবেন অলপ কিছুদিন বিশ্বভারতীর ছার ছিলেন। স্মৃতিচারণার মধ্যেই তিনি রবীন্দ্র-নাথ এবং শাহিতনিকেতন সম্পর্কে মনোরাচী ष्यारकाहना करतन।

व्यञ्ज्ञादम् भीट्रिमनकातकम् अस्यभारतम् निद्धार्भागां अभाषि भत्रदर्शमण अस्।

সংগতি পরিষ্টের অন্তর্ভান

অল ইণ্ডিলা ইন্ডিট্টে অব হাইছিন আা-ড পাবলিক হেল্থ কত্কি আমন্চিত হয়ে সংগতি পরিষ্দের খিলপীরা ব্রভিদ্র-জরুগতী ভানান্তান সাসন্পদ্ম করেন। একক ও সমবেত সংগতি মিলিয়ে তেরখান গান পরিবেশিত হয়। অর্প ভটাচার্য বিভাস ঘোষ, ও মধ্য-মাধবী ভটাচাহোর একক সংগীত আকর্ষণীর হয়। অন্যান্য শিল্পীদের মধ্যে ছিলেন প্রবী বলেলাপাধ্যাস ঋতুপূর্ণ ভট্টাচাহা মলয় রায় 👁 भ्यभ्भा मञ्जूमाना । त्यास त्यी म्यूनात्थत 'ख्यकम्ब' নাটকটি অভিনীত হয়। সংগতি পরিচালনা করেন মধ্যাধনী ভট্টাচাহ এবং নাটকের दावभ्याभना करतन नशैलिशा गल्यामात ।



শ্রেষ্ঠ সহ ভাভিনেত্রী: বাসবা নদরী



रहाको **भतिहालक (शिक्ती)**



ु श्राक्ताल



শ্রেণ্ঠ অভিনেত্রী ববিভা



नरगन्मनीथ वरम्पाभाषाय

ন্যালনাল থিয়েটারের গোড়ে পরনের মালে বারা ছিলেন তাদের মধ্যে নটগার: গিরিশ-গল্ল ছোৰ নট চ্ডামাণ অধেনিদ্ৰশেখন **गुन्छाकी**, द्रञ्जताक व्यग्राजलाल रञ् अनः ধর্মিক স্বেই সাধারণের কাছে পরিচিত। এ'বের বিভিন্নমাখীন প্রতিভা এবং নাট্যশালার সংগ্রে দীর্ঘাদনের যোগ ও কর্মা-ভংশরভাই রয়েছে এই পরিচিত্র মূলে। **কিল্ড আরো বারা ভিলেন তারা এ'দের মত** খ্যাতিমান না হলেও তাঁদের অবদানকে अञ्चीकात कता संस ना।

ন্যাশনাল থিয়েটারের উদ্যোগ ম কে হবগাঁতঃ কংগ্ৰেন্নাথ বকেনাপাধায় ছিলেন ভারতের প্রধান। সংগঠনী শহিত্ত নগেলুনাথ সৰ'প্ৰধাম ছিলেন বললেও ভূল বলা হবে ना।

বল্ব জারের : কলীন বাল্যণ পরিবাসে লক। ৫৭ রামকাতত বস্তু দ্টীটের গিরীশ-**চন্দ্র বংশ্বা**পাধ্যায়ের দিবতীয়া পত্র ছিলেন नरमञ्जूमाथ। मरभग्ननारथत् जाले छाङ् জেবেক্সনাথ বালেলাপাধ্যয় নাট্কের ভিসেবে প্রতিষ্ঠা ছিলেন। মহ আ খিলিবক মার এবং **জিরিশচন্দের সংগে** দেবেশুনাথ নাশনাল থিয়েটারে অনাভ্য পরিচালর রূপে যোগদান करत्वाः । नाशक्तनारशस् প্রস্তু শী লেফটেমাল্ট কৰেলে এইচ ব্যান্ডিল ছিলেন প্রিরার সিভিজ সাজেন। নাটাকে জনের সংগো তার প্রতাক হোগ না পাকালও তিনি একজন উল্লেখ্য কা ল নাটানারালী জিলেন। অন্যাশ ভাতাদের নাটাদাধনার ছিলেন এক-स्त्रम अक्षार प्राप^{र्}र ।

तम् द्रान्यस्य वान्त्राः भाषप्रतहा*त्* স্বৰ্ণলভা নাটক ২৮ এপ্ৰিল ১৮৭৪ (বাং

১২৮১) থ্টাকে প্রকাশিত হয়। স্ত্রীপকার বিরুশ্ধ অভিমতই এই নাটকে ধর্নিত। বাংগ লগ মেংয়ুরা শিক্ষা পেলে বিপথগুমান হয়-এই হলো নাটকখানির মূল বভবা।

নগেন্দ্ৰাথ বন্দ্যোপাধায় রচিত সভী কি কলাংকনী' নাটকখানিকে রসরাজ অমাত-লাল বসা দেবেনদুনাথের রচন। বলে আভিচিত্ করেছেন। ডঃ স্কুমার সেন বা অন্যান্য ঐতিহালের জা মেলি গালীন। সং**গলি**তা নাটকের বিরুদ্ধে ক্তিক্মচন্দ্রের বঞ্চদশনে বিরুপ স্মালোচনা পুকাশিত হয়। নাটকখানি বেংগল ও হিন্দু নাশ্নাল থিয়েটারে অভিনীত হয়েছিল। নগেন্দ্রাথের কনিংঠ স্রাতা কির**ণ্ডন্দ্র বনেদ্য** পাধ্যায় ছিলেন একজন প্রখ্যাত অভিনেতা ও নাট্যকার। কিরণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়য়ের ভারত মাত ক্রুদ্র নাটক-খানি জাতীয়তাবাদী ন টুক হিসেবে স্বজিন্দ্বীকৃত।

১৫ ফেব্রুয়ারী ১৮৭৩ খুট্টানেদ নাটক-খানি নাশ্নল থিয়েটারে অভিনীত হয়ে সাড় জাগাং। জারত মাড়া ও প্রধান সংতান চরিতে অভিনয় করেন মহেম্পু বস্ত অম্তলাল বস্থ ১৬ ফেলুয়ারী হিন্দু মেলাক্তে জামাই বারিকের সংগ্রে ভারতমাতাও আভিনীত হয়। ১৮৭৩ খ্টোলের ২৮ আগ্ৰুট নাটকটি প্ৰকশিত হয়।

কিরণচ্চেন্দ্র দিবতীয় নাটক ভারতে ধ্বন ১৮৭৪ খাণ্টাব্দে প্রকাশিস্ত হয়। শ্রেট ন্য শনাল অপেরা কোম্পান্য ৩০ জান্তারী ১৮৭৫ अन्दोत्क हा**उ**द्धा स्तुलक्ष्य शर् নাটকটির অভিনয় করেন। কলকাতার বিভিন্ন মাজেও ন টকটির আজিনয় সংবাদ পাও্যা যায়। ১৮৭৫ খৃন্টান্দে ৩ এপ্রিল ভারতে য্থন জামাই বারিকের সংগে আভিনীত হয়। গোপন চুম্বনা নামে কিরণচন্দ্র বলেধ্যাপাধ্যায়

১৮৭৮ থাকালো আর একবানি ছোট নাইত লেখেন। অভিনেতা হিসেবে কির্থ-क्रम पार्वित्याम जिल्लामा ১৮৭० पाणीरच्यत ६२ टब्ब्बु हानी निविम्नाहरूमय मश्ला सक-क बादी नाहेरक क्रमंश जिस्ट्रिय हिन्द्रास्टिन्स তিমি সকলের দণিট আকর্ষণ করেন।

a la

1000年 **阿森**斯 阿森林斯斯 1000年 1000年

श्राकोरमम्ब ७ व्यक्त SHAR থিরেটার মঞ্চে গ্রেট ন্য শনাল অপেরা কত'ক बाङ्गेरकरमञ्जू स्वचनान रथ माउँक स्वचनान চরিত্রে আমিচাক্ষর ছবেদ অপূর্বে অভিনয় দক্ষতার পরিচয় দিয়ে কিরণ্টন্দ ইতিহাসের পাংঠর অমার হয়ে আছেন।

২৭ মে ১৮৭৫ খ্ডৌকে এখানেই ম পালিনী নাটকে পশ্পতি চবিকো কিরণচন্দ্র জডিন্য করে হথেক প্রশংসাজন করেন। লারণ থ কতে পারে পশার্পাত চরিতে গিরিশ-চল্বের অভিনয় ঐতিহাসিক সাণ্টি হিসেবে কৈ ভিত্ত।

ক্ষনগর রজবাড়ীতে মণ্যালনী নাটকে পশাপতি চরিতে অভিনয় করে কিরণচন্দ্র প্রশংসাজান করেন। মাধব:চায়েরি আভন্য করেন স্বয়ং বিভাব**ী**লাল। বিশোদিনী অভিনয় করেছিলেন মনোরমা চরিতে। মধাম 🖢 ভাতা নগেন্দুনাথের প্রচেনটার সংগ্রে বিরুণ্ডেন্দ্র জড়িত থেকে সজিয় অংশ গ্রহণ করেন এবং অভিনেতা হিসেবে নাগন্ধনাথের চেয়েভ তিনি বেশী থাতি অজ'ন করেন। ন্যাশনাল থিয়েটারের भव श्रमान है हि। का ल भारत है व नातान्स्नाथ বলেদ্যাপাধ্যায় সংগঠক নাটাকার ও অভিনেতা হিসেবে ছিলেন সমান দক্ষ।

রসরাজ অমাতল ল বসা তার অন্ত মদিরায় ২৮৩ প্তায় লিখেছেনঃ

বোগবাজার নিবাসী' ভাৰসাটে ইল এটকটো নাগ্রেল্লাথ ব্রুলাপাধ্যম সামা-কর্ণ প্রভৃতি নানা রুসেরই অভিনয়ে ইনি নটক প্র শীয় স্থানীয় এবং নাটা শ্যা সম্বদ্ধে অধেবিদ্ধে ার্ব প্রথম সহকারী ছিলেন। সাধারণ সাশালার প্রথম অপেরা সতী কি কলজ্বিনী ই'হারই জ্যেতি সহোদর 'দেবেন্দ্রনাথ ব্রেন্দ্রাপাধ্যায়ের বচিত। ই'ভার ও ইছার দ্রাত্থানের ঐকাদিরক উদ্যোগ-যত। না থাকিলে সে সময়ে বংগ সাধারণ নাট্য-শালা স্থাপিত হুইতে পারিত কিনা সালে*ছ*।

নাট্যাভিনয়ের প্রতি গান-বাজনা এবং তদানীক্তন কালোর বেশীর ভাগা অভিজাত ধনিক সম্প্রদায়ের উৎসাহ উদ্দীপনা পরি-লক্ষিত হতো। নগেল্দ্রনাথের পিতা গিরীশ-চন্দের অন্যুরাণ এবং উৎসাহাও এ বিষয়ে কম ছিল না। কারণ তাঁর সম্মতি এবং ্টংসাহ না থ কলে দেবেন্দ্রাথ নগেন্দ্রাথ কিরণচন্দের পকে নাট্যান্দ্রীলন সম্ভব ছিল না। বাগ্বাজারের নলব্ময়ুক্তী সম্প্রদায়ের খাতি তখন চতাদকে ছাদেখে পড়েছে। গিরীশচন্দ্র তার গাহেও নজ-

ছোটবেলা থেকেই নগেন্দ্রনাথের সংগীত বিভিন্ন বাদ্যমন্ত্র ও অভিনয়ে আকর্তন পরিবৃদ্ট হয়। মংগণদ্রন থদের পরিবারের

का की कीमर/खत्र शा देवानी

দ্রুলে পরিচিত বাগ্বাজারের গোকলচন্দ্র ग्रामा बरमास्त्र निर्द्धीमात्रम् मित्र करा खासक्य-নাল ীয়ন্ত নলদময়নতী পূলে অভিনয় কর্তেন তেওঁৰা বুজনে একটি ব্দন দল 'ত্রী করলেন। ডাঃ দুগাদাস করের মাধাম গত ব্রাধাম ধব কর এবং হিল্পাল খাঁর সংগ্রে ज्ञातासम्बद्धाः अहे वामन नत्व त्यानमान कत्रत्वमा वामन मर्गाहे शीत भौत भार लाम कतरमा ! विकित नाहान फारन ध গ্ৰমান্ত সামাজিক অনুভানে কলিয়ে পদাসী লাভ করলো। তবানীপ:রের প্রখ্যাত हिक्स कामानम् भार्यात्रासास्य नाम আমাদের অজ্ঞানা নয়। পরবভাকালের নাটা ইতিহাসে জগদানদদ্বাব বিক্তে হয়ে তাছেন। জলদান-দ্বাব্দের গ্রে গিরীশ খিলের বাদন দল একবার বাজিয়ে যথেক্ট হার্লাক অঞ্জান করে। ভবানীপারের অনা ্রকটি শেহে সম্প্রেক্ত মলান করে দেয়। লিকীশ মিতের দলের এই খাতি নগেন্দ্রাথকে নিজহব একটি বাদন দল গঠনে অনাপ্রাণিত করে। এই দলের সংগে মৃত্ত থেকে তিনি য়াগুট্ট অভিজ্ঞতা ও দক্ষতালনি করেছেন।

দক্তের কয়েকজন সভাদের সংগে প্রাম্প করকেন গোপনে। হিংগুল খাঁ বিভিন্ন বানে। এবং অভিনয়ে চেখিস ছিলেন। কণিত আছে তিনি মাসলমান ছিলেন। পার ধ্যাণতারিতে হয়ে হিমাবোরা নামে পরিচিত ত্র। র্ধামাপ্র কর ভিলেন নগেন্দ্রনাগেণ खात्रका तस्यु। এडे मृज्य स्ट्रास्त्रस्तारथा প্রভা সহকারী হলেন। পরে প্রি**রীণ মিঞ্**ল দলের জন্যান্য সভারাত হোগা দেবা ফলে তিবাঁশ মিনের দল টেঠে যায়। নগেকুন স 'বাগ্ৰজাৰ একতান বাদ্য দল' নামে নিজ>া দল গঠন করে আসবে নামেন। নটগুুুুুু গিরিশ্চভেদ্র জেল্ডে শালেক রজেন দে মত শামের একটি বাদন দল ছিল। এট দলটি শেস প্য*্*ত **উঠে যায়। এদে**র দলে ক্র্যারওনেট বাশী বাজানো হোত। ভেখন সূপ বাদন<u>্</u> करनात कर्णात्र छटाडे বাশী ছিল না। বাধাম শব সাহ্যায়ে মুগেন্দুনাথ এদের রাগিরওনেট বাঁশীটি নিজ দলে কিলে আনলেন। সব দিক বিয়েই বাগবাজার একতান বাদন দল সেল। বাদন দলে পরিণত হয়ে জনপ্রিয়তাজ'ন कहरता। विভिन्न नामे जिनस्य नाजन्त्रनात्यः দল বাজিয়ে আসতেন। বাজিয়ে **য**তই প্রশংসা লাভ করা যাক না কেন-মাল প্রশংসা উৎসাধিত হাতো অভিনয়কে, কেন্দ্র করে। নগেন্দ্রনাথের মনে অভিনয় সম্প্রদায় গঠনের ইণ্ডা উ'কি ঝ্'কি মারতে লাগলো। প্ৰমাৰতীৰ অভিনয় তখন চ্ছদি ক সাড়া জাগিয়েছো বংলা ১২৭৩ সালে--

ইংরেজী ১৮৬৬ খ্লটাব্দে শুভূপাভায প্যাবতীর অভিনয় অন্তিঠত হলো। মগেশ্যনাথ ত'ার দল নিয়ে ব্রেছাতে এলে।। এদের সংখ্যে একটা বেশী মাখামাখি হঞে।। নগেন্দ্রনাথ অভিনয়েও অংশ গ্রহণ কর'লন। প্রমাবতী নাটকে কণ্ডকী চরিলে আত্মপ্রকাশ করলেন নগে'দ্রাথ। অভিনয়ের প্রতি সন্ধিয়-ছাবে আকুণ্ট হলেন নগেংদুনাপ।



WINE THE ববিতা/জাফর ইক্রাল

बाहेगीकरक बाब-वर्ज बरन देकियादा ব্ৰুত্ৰিৰাজ্যবেৰ একসল মধ্যবিক বঙ্গেৰ ছেলেৱা ৰাষ্ট্ৰান্তিময়ে মেতে উঠকেন। শুমিক্টা ও উমা অনিরুদ্ধ বা উবাছরণ হাতাভিনর খাব খাতি আর্থন করলো। গিরিশচন্দ্র উত্তর দলের স্থাপেই ক্রান্তভ ছিলেন। প্রমিশ্টা নাটকের बहाबान करा काक्क्यामा नन्त्रीक तहना करत গিরিশচন প্রশংসাজন করেন। বাতা শান খালী হয়ে অনেকে গিরিলচন্দ্রকে নাট্যা-ভিন্নরের ভারোভ্ন করতে অনুরোধ করেন। লিরিশচন্দ নলেন্দ্রনাথের চেরে একড়

বার্লেই ভিলেন বহাসে। গিরিশচন্দের বিদ্যা ব্রাদ্ধ এবং কবিভুদান্তির প্রতি প্রদ্ধানিকত ছিলেন ন্রেন্দ্রাথ। তারপর ছিলেন বল্প-স্থানীয়। নগেন্দ্রনাথ গিরিশচন্ট্রে এন্ড্র-রেধ করকেন সবাই মিকে একটি নাটাসংপ্রদায গঠনের। গিরিক্টক্র সমর্থন করলেন। স্বাই একে দ'াড়ালেন, এদের পালেই। সংগঠন ক্ষেত্র মূলে পায়িত নিলেন নগেন্দ্রনাপ নাটক নিব'চেন ও নাটা শিক্ষার দায়িত নিলেন গিরিশচন । সংগঠন কারে^ত নগেন্দ্রভার পরই নাম করতে হয় ধ্যাদাস স্বের। মণ্ড-বিষয়ক দায়িত ভার ছিলই।

জাধিক অনুস্থার কৃথা চিত্তা করে গোরশচন্দ্র দ্বিবন্ধ্ মিতের সধবার এক:লশী নাট্র মির্ল্ডন করলেন। স্থপ্রদায়কে পি বাৰ্বজনর এমেচার থিয়েটার নামে নাম য়িও তরা হলো। ভাষকটিলাপ বণিটড ংয়ে विद्यारम'न हमरू माशरमा । जारभ^रम्म ग्राम्य स्वी তথ্যত সম্প্রদায়ে আসেন নি। নগেন্দ্রনাথ ধ্যক্সবাব, প্রভৃতির অনুরোধে নগেন্দুনর্থের ৰ ডাঁতে পূৰণ বিহাসেকৈ আধেক্তিশেশৰ **উপস্থিত থাকেন।** রিহাসেল শেষে গিরিশ-চন্দ্র অধেক্রেশ্রের অভিমত চাইলে তিন **ক্ষােকটি চারিত্রের দ**্ববিশ্বতা সম্পরেক গিটারশ– চন্দ্র ও অন্যান্যদের দানিট আকর্ষণ করেন। क्रमात्राम क्रीतरतं जद्गकृत्व जानमात्रक मिर्ना-দ্বন করা হরেছিল। এই নিবাচন বাজিল করে সকলের জানারোধে জার্ধেন্দারণাথর শেব প্রণিত অভিন্যু করেন। কুম্দিনী ভরিতে স্থানস্কুত্র বিশ্বাসের নির্বাচন বাতিল করে বিরিশ্চনর অন্তলাল ম্রেশাপাধায়কে এচব করেন। নলেন্দুনাথ এবং গিরিসচ্চেন্দ্র এবং **অনেকের** নিবাচন অপরিবতিতি খাৰে। এরা আটল ও নিমচীদ চরিতে যথা-**হয়ে আত্মপ্রকাশ** করেন।

- –কালীল মুখোলাধ্যায়



नना : क्याप्तिहम शक्तानमा নাই নালের অভিনয়

- ২৪ রঙ্গহল
- ২৫ মান্ত জাপ্সম

क्षण्ड जन्मत वरो / हटन विकित



मद्धिः वन्ध तस्त्रस्ट

ক'দিন আগে ডাকার বাইরে ছিলেন বাংলাদেশের চিত্তজগতের হাতে গোনা মাত্র কজন তারকা।

এ'রা হলেন রাজ্ঞাক ক্রকী য়োস্ত্রকা স্কোতা আজিম।

ফলাফল সুটিং বন্ধ। এবং ডি সি খা খা জনমানবশ্না।

এখন রাজ্ঞাক কবরী ববিতা ভাকায়। কিল্ড ডব্ভ স্টিং বৃশ্ধ।.

কারণ শ্লোস্তফা, স্ক্রান্তা, এখনও ঢাকার ফিরে আসেন নি। ফলে রাজ্ঞাক কবরী ববিস্তা ঢাকার থাকা স্টেও ছবির স্বিটং বৃশ্ধ রয়েছে।

যেমন প্রিচালক কামাল আহমদ তার ছবি 'উপহার'এর কাজ ব'ধ রাখতে বাধা হয়েছেন। উপহার ছবির নারক নারিকা শক্ষাক ও ক্ষরী। কিন্তু মোলত্যন এ হবিতে বিশেষ একটি চরিত্রে অভিনয় কর-ছেন। এলের তিনজনকে নিয়ে **শাট্র** নিজে হবে। অতএব সর্টিং বন্ধ।

ষেমন পরিচালক এক এ বেন।

তিনি আকাশ কুস্ম' ছবির পরি-চালক। এ ছবিতে আজিয়া আছেন। কিন্তু আজিম মুক্তের থেকে এখনও **ফিরে আনে**ন নি। অতএব স্টেং বৃষ্ধ।

1 --

প্চিলাকের প্রতীয় ভবিৰ একই নায়িকা স্কোতা। ছবির নাম প্রশন আছে কিশ্র'। এ ছবির স্টিংও স্জাতা ফিরে ন্ধ আসার কারণে বংধ রয়েছে।

অভঃপর খবর নিলে দেখা যাবে, একই কারণে বাংলাদেশের অনেক পরিচালক এখন ছবির স্টিট বন্ধ রেখে ছবির মোটকে অংশের স্বাটিং ইতিমধ্যে স্মাণ্ড হয়েছে এডিটিং নিয়ে বাস্ত রয়েছেন।

যোমন পরিডালক কামাল আহমদ তার ছবি 'উপহার'এর এডিটিং নিয়ে এখন ব্যাল্ড

এছাড়াও অনা কিছু কারণে কয়েকটি ছবির স্নাটিং এখন বৃধ্ রয়েছে।

যেমন শাহাজাহান তোধরেমী পরিচালিত 'পি**জর'**এর স্টিং এখন বস্ধ রয়েছে। কারণ এ ছবির নায়ক উল্জবল। কিছুদিন আলে উক্তরের পা ভেপোছল। এখন তিনি কিছটো সংস্থ। তবে উজ্জ্বল এখনও স্টিং-এ অংশগ্রহণ করতে পারছেন না। আব ভাই, ছবির সংটিং বৃশ্ধ।

এবং শ্ব; পপঞ্জর'ই নয়, নিয়াীয়ঘাৰ যে কটি ছবিতে উল্জেখন রয়েছেন, সব ক্রটিরই একই অবস্থা। অতএব পরিচালক-গণ সবাই হাত গ্রিটয়ে বসে আছেন, কবে উত্তরেল সংস্থ হয়ে স্টেংয়ে প্রেরায় অংশ

এছাড়া জাফর ইক্লাল হো কটি ছবিব স্ব ছবির পরিচালকরাও নংয়ক, সে চিহিতত মুখে হ'ত গুরুটিয়ে বলে আছেন।

কারণ জাফর ইকবাল সম্প্রতি এক **এজ্ঞান্ত ও দু**রারোগ। রোগে ভূগছে^ন। রোগটা কি তা কেউ জানে না। চরতো হক্তালা 1

জাফরের কারণে মোল্ডফা আনোয়ার ক্রেরারী ও আলী কাসেম 'শেষ প্রেনর' স্বাটং বন্ধ ক্ষেক্তেন এবং 'ভাল্ডরালোর নাক কাজ্ট্রক শেষ করে ছবির পরিচালক ভারটিকে মাজ দিতে প্রছেন না খলে ভানা গোছে।

सन्तामा धवर

রাজ্ঞাকের পর ওরাসীম এখন বাংলা দেশের সর্বাধিক বাস্ত নায়ক। নিমশীয়মন বহু ছবির নায়ক ওয়াসীম ও লবাগতা কিশোরী সেকস-বন্ধ নায়িক। স্ক্রিতাকে ঘরে এখন স্ট্রভিও পাড়ায় নান। কথার ক্রামাহ্যা।

কিছ্বদিন আগে ছিল প্ৰিতা জাহুব ইক্ৰালকে নিম্নে জোনলো ফিসফাস্ এজগাজ।

ু এখন ওয়াসীম-স্চারিতাকে নিয়ে ফিস-ফাস।

সে যাই হোক, ওয়াসীম এখনী বেশ গুড়িয়ে নিয়েছেন। তার হাতে এখন অনেক-গুলো ছবি। স্চারতাত্ত কয়েকটি ভারতে অভিনয় করেছেন।

বাংগাদেশের চিত্রগতের একজন বচ্চ মাহিকা কবিতা সম্প্রতি হাহার ববিতা এইসেমা, স্ফুটরিতার গ্রেগ্রেফ ফিস্ফিস-এর ব্রেড ভেগেগ্রেম। কবিতা এখন চিত্রহলে আলোচনার ডেউলাইন।

তাকৈ নিয়ে এখন চিত্তমহলে অনেক কথা অনেক আশংকা।

যাদের ছবির নায়কা কবিত। যেস্ব ছবিল কবিচালক ইলেলিছ বেন সংস্কৃতি

ছবিব পরিচালফ ইদ্যানিং বেশ আশংকিত হার পড়েছেন।

কবিতাকে নিয়ে জোর গ্রন্থন—কবিতা থাব শিশিসার বিশ্লে করছেন এবং দেশ ছেড়ে বিদেশে চল্ল হাচেছন।

না, চিত্রজ্পতের কাউকে তিনি বিয়ে কবছেন না। বিয়ে করছেন কোট্রপার বানসংঘাকে।

অবশ্য বিছাদিন অংগর গ্রন্থর ছিল, কবিতা পরিচালক হাস্মতকে বিয়ে করছেন।

পরিচালক হাসমত অবশা সে খব্যের প্রতিবাদ করেছেন।

সাম্প্রতিক গুলুজব, কবিতা যাতে বিয়ে করছেন, তার নাম গোলাম কবীর।

কিন্তু কথা হল, কবিতা যাকে খংশী বিয়ে কব্ন কাজো কোন অপত্তি নেই। কিন্তু বিয়েগ্ন পথ কবিতা কি তাতিনয় ছেতে দেবন ?

আগ্রাদের চিত্রগ্রহলের আশংকা সেটাই। তার বিয়ে নিয়ে কারো কোন মাথাবাখা নেং।

বাংলাদেশে ২ড্ডাসন ব্যক্তজন চিগ্র-প্রিচালত ছবি নিম্নাণে বাসত থ্রেছেন চব দ্রতিক সংখ্যা আমি কেন, যে কোন চিগ্র-নিম্নাতার পক্ষেত্র বলা শৃষ্ক।

বাংলাদেশের আনক চিত্রপরিচালবের একজন মইনলে ছোমেন।

থার আবো একটি পরিচর রয়েছে। তিনি নিখোঞ্জ পরিচালক জহার রাজহানের একজন সহক্ষমী ছিলেন। জহীর রায়হান ১৯৬৭ সালে তার ৭ছ ছবি আনোয়ারা তৈরী করেন। মইন্ল হোসেন সাহেব সে সময় থেকে জহীর রায়-হানের সহকারীদের একজন হয়ে কাল শেখেন।

অবশা এত কথা আমার জ্বানা ছিল না।
কাদন আগে আর একজন বন্ধ চিত্রপরিচালক শাহজাহান চৌধ্রীর বাসার কলে
মইন্ল হেন্সেনের স্কো ক্যাপ্রস্পো এতো
কথা জ্বানলায়।

মইন্ল হোজেন বতুমানে হারজিং' নামে একটি প্রেম **জম-জমা**ট ছবি নিমাণে বাদত বয়েছেন।

'হারজিং'-এর **নায়ক জাফর ইকবাল।** নায়িকা হবিতা।

জিণেগ্স করলাম ছবি কবে শেব

– ঠিক ব্রুতে পার্রাছ না।

হতাৰ কণ্ঠে মইনলে হোসেন সাহেৰ জানালেন।

-- কেন কেন ?

—কারণ আমার ছবির আদি ভাগ কা**জ** শেষ হয়েছে গত মার্চ মাসে।

--ভারপ্র :

—তারপর আর কি? ছবির নামিকা বিবিত্তা আন্ত কলকাতা কলে তাসখনদ। ফলা-ফল, ছবির কাজ বন্ধ। অখচ এপ্রিলে কাজ শেষ করে মে-তে আমি অনায়াসে ছবিটি মাঞ্চিদতে পারতাম। কিল্ড-—।

- হার্ন, তা হবে। তবে কথা হল কি, ববিভার এই অনুপশ্চিথাতির কারণে অনেক প্রিচালক হাত গ্রেটিয়ে বর্গেছিলেন। এবার তারা নায়িক র কাছে 'সিভিউপের' জনা ভিড় জনাবেন। ফল ফল ব্রুগ্ডেই পারছেন। তবে জ্লোইতে আবার আছি আছার ব্যারাজ্ঞণ-এর স্মৃতিই শারা করব, ঠিক করেছি। অধাৎ আগামী ইনদ ছারজিণ হারিজপ্রতির স্মৃতির প্রাবেশ প্রবেশ করব, গ্রেছি। অধাৎ আগামী ইনদ ছারজিণ হারিজপ্রতির স্মৃতির আশা করবেও প্রবেশ করব

শার্থান্থ হাক থানা কলকাতার প্রখাত সাহিত্যিক স্মরেশ বসরে কাহিনী ছেটির ফানের সৃষ্টিং আপাততঃ বন্ধ রয়েছে। ব্যরণ ছবির পরিবেশকের সঞ্জেত মাধি কিছু মৃত্রিরের ব ঘটেছে। বতামান পরিবেশক ক্রাক এ ছবির প্রিবেশ্নার দায়িছ গ্রহণে এখন অসম্প্রতি হানিয়েছেন। করেশ অজ্ঞাত। তবে কোন্ কানা কাল্ জানা কেল্, ছর্টিই ফানের বে হও শতাংশ ভাল স্টিং শেষ হয়েছে, তার রাশ দেখে পরিবেশক হতাশ হয়েছেন এবং উপরোগ্র স্থানত পরিচলককে জানিয়ে দিয়েছেন। অবশ্য অব্যের স্তানিথা উই ছবির পরিরালক ভ্রারণের স্থানিত্র এথনাও স্বীয়াইশ্ব

'কান্ কানা কান্' খণবে আবো জানা লেছে গ্ৰুটির ফালি' যে ৪৫ শতাংশ ক*ল* ইতিমধ্যে শেষ হয়েছে, তার ২০ শতাংশ ভাগ নাকি শেষ প্যাণত রাথা যাবে, বাকি २८ महार्ग छान भूनताम् मृष्टिरं कदरङ

ৰ্ষাদ ভাই সতি। হয়, ভাৰতেল এ ছবির প্ৰিবেশকেৰ মাধায় ছাত।

শাহ জাহান চৌষ,রা পিঞ্জা নামে একটি ছবি পারিচালনা করছেন। সম্প্রতি ছবির কাজ উম্পান্তলর অসম্পর্কার কারের কাজ উম্পান্তলাহ নাম করেছে। ওবে শাহজাহান চৌম্বী জরি ছাবর ৬০ শতাংশ ভাগ কাজ ইতিমধ্যে নাম করে ফোলছেন। আগামী মাস থেকে ছবির সাটিং পানুনরার শার, হচ্ছে বলে পরিচালক জানালেন।

উল্লেখ থাকে যে, পিশুরুতের নায়ক উপ্জ্যুল গত এপ্রিল মঙ্গের শেষ সম্ভাহে আজিক্সর রহমান পরিচালিত অস্বামণ ছবির স্টিং কালে আহত হন। এখন অবশা তিনি প্রায় সংস্থ। অভিনেই তিনি স্টিং শ্রেম করবেন বলে জানা গ্রেছ।

বলা নিশ্পয়োজন, পিঞ্জরের নায়িক। কবিতা। অন্য অন্যান্য চরিত্তে রয়েছেন শুওকত আকরর মুস্তাফা মেস্বাহ্য। হাস্মত সাভাষ নত প্রমায়।

্র ছবির সংগতি পরিচালক খোন্দকার ম্বংল আশ্ম।

জিগোসে করলাম করে তক**্ ছবিটি** মাজি পারে?

---আগামী ঈদে আশা করা হয়। শাহজাহান চোধুরীর সংক্ষিণ্ড জবাব।

সাইফাল আজম প্রিচালিত ও ববিতা জাফর ইক্বাল মায়া হাজারিকা সটেন্দ্র প্রমূখ অতিনতি অসতর লো এখন মুদ্ধিব দিন গ্রেছো

এ ছবির প্রযোজক আজিজার রহম্ম ব্লি।

সংগত্তি-পরিচালক আলম খন, পরি বেশক প্রিয়ত্ত্বা বাণী চিত্র।

ইবনে মিজান পরিচালিত 'ভাকু র্মান্স' মাজির দিন গনেছে। এ ছবির নাম্নক নামিকা ওয়াসাম ও শাবানা। অন্যান্য চরিত্রে আছেন মেন্ডক্যা জান্ম জব। স্টেরিকা প্রমুখ।

কদিন আগে মুক্তি পেয়েছে সাসক ক্লানা নামে একটি ছবি।

এ ছবির প্রিরালক ন্রাগত মাসন্দ্ প্রিভেষ্ক।

ছবির নায়ক নবাগত সোহেল রানা, ছবির নায়কা কবরী ও অলিভিয়া। অনা অনানা চরিত্রে রুপ দিয়েছেন মুস্তুফা হলিল জাবের বাজাক অয়হা।

ছবির কাহিনী সংলাপ ও চিত্রনাটা লিখেছেন কাজী আনোয়ার হোজেন।

নতুন একজন পরিচালক, নতুন একজন নায়ক (প্রিচালক স্বায়ং) এবং নায়িকা সহ স্বাহ প্রোনো। ছবির কাহিনী জন্মজনাট। নায়ক প্রিচালক আভনন্ত্র ও প্রিচালনার থেহেপু নব গতে, সৈহেজু এ ছবিতে ছোট-নাটো কিখ্য কিছ্ম ভুল গুটো থাকা সত্ত্বেও স্বাকার কথতেই হবে শাস্ত্রেল হবি।

—আনওয়ার আহমণ

COMM CACACA CACACA

ভষার-জয়ন্তীর সংগীতাসর

ডেনায়ী ভালবাসি বলে

তুমি কুঝি মনে ভাব

উ চন্দ্রীয় লা তেলিলে

তামি বুলি মরে যাব।

এ যেন সমা-সাম্বাহক কালের জ্বানালা দিয়ে বিগত একটি যুগকে দেখা। প্রেম, কৌছকের ছালিন না কালের কাল

উৎসাবের প্রাব্যান্ত উদেরান্ত্রনী সংক্রীত ন ধ্যায়েছিলেন শ্রীজভী শানিক মুঝোপাধায়ে । বাহাটি আহা তেমার সংগ্রা আন্তার আবের ঘেলা ত জন্মুন্টানের উল্লেখযোগ্য বিহণু ভালো এই মে বিনাস্ত্র বিনা সংগ্রে খালি কলায় প্রবেশিত গ্রেন স্ব এল কর কোন্টিরই ঘালত ভিলো না। উচ্চাংগ্র

যুক্তাসনে খায়টর কাম নের পরবতী বিমান

আক্ৰমণ

নিজ গ্ৰান নীলকও জেলগুৰু ১৮ জালাই বৃহস্পতিবার সংশ্বে ৭ হলে গিকিট সংগাতির প্রোভাদের কাছে শানিত মুখো-গাধ্যারের নাম পরিচিত হলেও রবীদ্রসংগাতে দ্বার কৃতিত প্রশংসা করবার মংই।

এল পি ডিল্কে "চিত্রাংগদা"

নিজের বাপুপকে সক্রীন সক্রবে নাবীশ্বকে

ধিকার দেবার কংপনা রবশ্বিনাথ হাঁড়ো আর

কারো ধানলোকে স্থান পায়নি। এই অপুর্প

কংপনা অভিনয়ে গুনে মঙ্গরিত হয়ে উঠেছে
রবশ্বিকার্যত উপ্লক্ষা ভামোফোন
কোমপানীর লেবেল প্রকাশিত চিতারপদা

কলাপানীর লেবেল প্রকাশিত চিতারপদা

কলাপা ভিতেক।

করাপা চিতাংগদার হাদ্য বেদনা হতাশা সদাজীতত নারীসভার ব্যাক্সতার প্রতিটি বিষ্ঠানের ছবি স্চিতা মিতের পানে ইনেবলিত। আজুনি তাঁয় অজ্ঞানি ঋনা দিয়ে কেনুৱা নাজস্মান-এ চলকিত চিত্তেৰ অন্ভোতর মধ্রে বিলাপ অন্যায় এক অভিন্ততা ('ব'ধা কেন আলো লাগ্লো চেবেখ') হাদায়ের আস্থিকতা (ক্ষেণে আন্ মনে মনে অভানের প্রভাষানে আকল কার। (প্রাদেশন্তরা এ বস্ধতা ইন্ড্যাদি মাধান অনা-ভতির পথ বেয়ে ভাগি চিক্রংগদা রাজেন্দ্র-নক্ষনী তে জোলভূপিত। সিভ ভার্পুকাশ। প্রতি মাজাতে প্রোভাদের মনকে বেন্দালাক ভাভিজ্ঞ ভার শবিক করে। শা্দুভাষার এ বিশ্বতালি বাবে স্টেটা গিটেব প্রভাবিক উজ্লতা কিছু জ্লান বিৰত্ত ক্ষতিপ্ৰণ ঘটেছে অজ্যুন বলচালী মোর মান্থে হেলিল না নার্টার কাল্লায় ভেগের প্রভাব ভাপ্র



তুষারজয়ণতীতে সংগীত পরিশেন করছেন শাণিত চক্লবতী

স্কুদ্রী চিনাংগদার বিষাদ রেশানে আন্দেশ নতুন কাল্ডিকাছাত উল্লান এই নাট প্রকাশ নতুন কাল্ডিকাছাত উল্লান এই নাট প্রকাশ বিষয়ে অংগ অংগে কে বাজায়ে ও ইন্সভিতাল ক্ষরার কালের কালের কালের উল্লেখ্য রাজালার উল্লাভ হার উল্লেখ্য রাজালার উল্লাভ হার উল্লেখ্য কাল্ডায়ের লাবণায়ারের লাবণায়ারের বাকেই। কিংকা কাল্ডায় বিজ্ঞান কাল্ডা হারাকার প্রভি অজ্বলের আক্ষাণে হাল্ডা নালা বালা মার্ভা কাল্ডায়া হারাকার প্রভি অজ্বলের আক্ষাণে হাল্ডা কাল্ডায়ার বালা মার্ভা কাল্ডায়ার বালা কাল্ডা বালা কাল্

আর অজ্নি? প্রথমে ক্রুপা চিত্রাংগদকে দেশে তাঁর ইক্ষাচারী সালত অবজ্ঞা তারপ্র মদন ধরে বাপানিবতা চিতাংগদার প্রতি উন্মত ভাকেছিল প্রেফ্য এসো যে হাও সে হাও'--সক্ষেত্রারে কাশ্বি (কেন রে ক্লান্ডি আসে) এবং ঠিক সেই মৃত্যুতে রালক্ষারী চিত্তাংগ্রের বর্গনা শানে (পেন্স্বলৈ, ডিনি মাতা বাহাবলে তিনি রাজা) অজুনির চিড-চাওলা 😿 ক্ষতিয় গাহার ভাষণ শোভার প্রতি বিশিষ্ট সংশ্রম জেখনত ম্প্রপোধনাথের রানে স্বধ্যাল্য হাপ নিয়েছে। কণিকা ও ভেমকেন্তর কৈন্তকান্ট পাতি । কেন্ট্রেড একেন্স বির্ভের বেল। পান্টি ও ভান্তম আত্মাণ লানের ফ্রিজ্লির সংলাপ ভারজভীব আৰু হিন্তু কৰিয়ে ভলেচেন গোলী ছেন্ত ও প্রদাস ঘোষ। বিশেষ উল্লেখনে দাবী বাবে দোরী সোমের কড়েই দ্বন্দ, মুখিত তিতাংগদা চিক্তের ব্রহাক কালেবভান

আর্থায় মতি হিচ প্রমা

ভাগি শ্বা ্ রারে ফোটা ফাল

এক প্রভাতের শাূপ**ু প**রসায়**ু**।'

মদনের গানে চিনময় চাই পাধ্যায়ের গান মনোহর। সংখীদের খানগানি স্পতিবেশনার কৃতিত্ব স্থাসর শিলপীনের করি। হলেন নালিমা সেন বাণী ঠাকর কানানী ঘোষ আদিতি সেন-গান্ত প্রতিহা মুখেপাধায়ে নামানা যে মালা। গ্রামবাসীদের গানগানি গেয়েজন বৈশলেন দাস গোরা সর্বাধিকারী ও গোত্য

সমগ্র কাহিনীকৈ প্রতি মৃত্তে উদ্দেশন ব্শাম্ম করে রাখার কৃতিত পরিচালক সভোষ সেনগুল্ডর। বিশ্ব কোন আলো লাগল চোখোর পর ক্ষণে করে মনে মনে গান দ্বাটির ফালিট্রের একপলাক মালভানের স্বরে ও ন্তোর ভালে অন্বর্গনের থিচপক্ষা লক্ষ্য করবার মতেই।

এমন একটি স্বাংগস্ফার স্তিট্র জন এমেট্যেন কোম্পানী ধন্যবাদার্হ।

—हिटा भागा

শ্বোর জগতে মেয়ে

ভলিবলে দুই বোন ঃ প্রবী ও প্রভিপতা

কলকাতার ফুটবল বা কিকেটের দাই ভাইরের মত মেরেদের ভলিবলেও দুই বোনের দেখা পাওয়া গেছে। এয় দুজনেই সর্বভারতীয় আসরে নিজেনের ফ্রাডাকুশলতা প্রমাণ করেছে। দুই বোনের বড়াট হল প্রেবী চৌধ্রী, ছেটে প্রিপ্রতা চৌধ্রী। প্রথম জন ক্যাসার, দ্বিতীয় জন লিফটার।

প্রবী আদতঃ বিশ্ববিদ্যালয় ভাগবলে বিজয়ী কলকাতা দলের নেতৃত্ব করেছে ১৯৭৩-এ বরোদায়। এর আগে 'বং-এ জাতীয় আদরে রাণাস্প আপু বাংলাদলের নেতৃত্বর দায়িত্বও ওর ওপর পড়েছিল। দাজনেই গতবার বাংগালোর ও হারদরাবাদে জাতীয় প্রতিযোগিতায় বাংলার জয়লাতের কেন্তে সার্থাক ভাত্রিকা নিয়েছিল।

প্রেবী '৬৮ থেকে বিলছে কলকাতার বিজয়ী সংঘদকোল গও ছা ১ছর ধরেই প্রেমী বিজয়ীসংঘের মহিলা ভালবল দলের নেত্রী পদে রয়েছে।

লম্বা ছিপখিপে গড়ন সপ্রতিভ মেয়টিব রামকারত মিগুটা লেনের বাড়ীতে
গিয়ে দেখলমে মধ্যবিত বাংগালী পারবাবের পরিবেশ। ছোটু বস্বার মরে
সংশ্যা প্রফি, মনপার, তাহাড়া রাজ্য লীগ,
নকআউট জাতাীয় ৬ মাণতঃ বিশ্ববিদ্যালয় ভালবল বিজ্ঞানের স্বীকৃতিস্চক্
সাটি ফিকেট।

৭২-এ জানশেদপুরে জাতীয় তিলবল প্রতিযোগিতায় প্রধাই ছিল দল-প্রী। বাংলা ফাইনালে পাজাবের মঙ শঙ্কিললী প্রতিপক্ষ করাসরি তিন গেক্সে হারিরে দেয়। প্রবী ঐ খেলায় এবং পরের বার দিল্লীতে শ্রেণ্ড খেলায়াড্র স্বীকৃতি লাভ করে। এর আগো সিম্মলার বেণ্ড স্ম্যাসারের প্রস্কার ও প্রের্ছে। প্রক্রী মতে তার শ্রেণ্ড খেলা হরিয়ানা দলের বির্দ্ধে।

জিজ্ঞাসা করলমে—ভলিবল খেলার ইচ্ছাতোমার কি করে হল। ৬ বলল---'৬৬-তে অণ্টম শ্রেণাতে পড়ার विश्नात न्युम नामत हारा प्राप्तातम स्थारथा খেলতে যাই। সেখানে, ভাল খেলা দেখে ভালবলের দিকে ঝোক চাপে। কিত সংযোগ না পেয়ে ৬৭তে খোখোর স্চিব শৈলেন গাখ্যালীর চেণ্টার ফেডারেশন ভলি-বলৈ অনিমা গাংগলোর সংগ্ একরে প্রশিক্ষণ নিতে শ্রু করি। কিন্তু মাস দ্বই পরেই বাধার অস্থের জন্য অনুশোলন বাৰ ক্ষতে হয়। বাবা চন্দ্রশেখর চৌধরী

তে থানের মান্ধ। প্রবার জন্ম কলকাভার।
শরা পাঁচ বোন, দ্রেন ভালবল, দ্রেদ শাডামিটন আর একজন খোখো খেলার পটি। প্রবার নেতৃতে বিজয়ী সংঘ রাজা মহিলা লাগে ৭০-৭১, রাজা চ্যাম্পিয়ান-শাঁপে ৭১-৭২ ও ৭২-৭৩-এ জয়ী হয়।

১৯৬৯-৭০এ রাণাল এবং এ-বছর লীগ চ্যাদিপরান হরেছে। কিন্দু প্রথম দিকে থেজাথ্যার বোগদানে বিশেষ করে বাবার দিক থেকে বাধা ছিল। বাবা চাইতেন মেনে লেখাপাড়ার মন দিক। প্রথম বিশ্ব-বিদ্যালরে দার্শন নিয়ে এম-এ প্রথম। ক্ল



প্রেবী ভোধরেশী



কিশ্ব মেশেদের খেলাখ্লাতেও উৎসাহ দিয়েছেন। খেলাখ্লার প্রেরণা, মার কাছ থেকেই এসেথে বেশা করে। স্কুল-কবিনের সুব বাধা অবশ্য কলেজে এসে কেট্টে গ্রায়। পড়াশোনায় ও ভালটা।

জন্মান্য প্রদেশের ক্রীভূজান সম্পূর্কে শামার প্রশেষ উভরে প্রেবী বললে, বাংলার পরেট কেনলা, হাহ্যকরবান, পানার আর ত্রালিলায়াভূরে দ্বান। ঐ সব দলে বিবাহিত্য মেয়েও আছেন। থাকবে নাই বা কেন? ওদের সরকারও নানাভাবে সাহাযা করে। কেনলের সব মেয়েই ত প্রালিশে চাকরী করে। অন্য দলগালাতেও সরকারী বা বেশরকারী চাকরীরতা মেরেরা আছেন। অথচ আমাদের বাংলা দলে একজনও বিবাহিতা বা চাকুরিয়া মেরে ছিল না।

থেলার উৎকর্ষের ধ্যাপারে প্রেবী বিক্য়ী সংখ্য আশ্রেম রায়চোধারী এবং দ্যুই প্রাঙ্গ জাতীয় খেলোয়াড় ভাধনো প্রাণক্ষক স্থানি ব্যানাজি এবং ভ্যারক দাসের নাম প্রশা এবং ফুডজতার সংগ্য উল্লেখ কর্মা।

পরেবার প্রধান লক্ষ্য বড় খেলোয়াড় হ্যার, আর ইছে। জনেক নতুন নতুন থেলো- য়াড় তৈরী করার। আন্স চাকরী করার । আকাশকা ছিল। এখন আর সে ইচ্ছা স্টে।

ভারত । কাষ্ট্র মহিলা ভলিবল দলকে এবার তেরে বানে এশায় য়াড়ায় পাঠান ছবে না শানে প্রেবী খ্বই দরিখিত হল। এদেশে এখনও মহিলা ভলিবলকে এ রকম ভূছ-তাচ্চিলা করার অথ নবজাগ্রত প্রতিভাব গলা তিপে হতা করা খলে ওর ধারণা। আমারা জাপান বা কোরিয়ার মেরেদের সপে খেলতে পেলে তাদের বাড়তি গ্লে এবং আমাদের দেয়ে-তালিগ্লেলা বোঝাল প্রতাম । তে স্বামার প্রতাম ম্বামার প্রতাম মারার প্রত্তির জারা থেকে বাছ ক্লামে আকং প্রেকিলা তাতে স্বামার এবং প্রিম্পতা দ্কেনেই ছিল।

প্রতিপতার আফ্লোষ আরও বেশী ৷ বলল বলনে ডোকি অন্যয়? য়ানে আৰও চাৰ বছৰ পৰে যখন এখাঁয় আসব বসবে তখন কি আরু দিদি খনিয়া-দি বা তপ্তাদির ফম' থাকবে? ওরা যেতে পেল না। কি দাংখেব বিষয়। ভক্তে বিজয়ী সংখ্যের লিফটার। क्रिकेट्स विद्या বল তলে দি সমাশ করার জনা, বলল প্রক্রিতা। জাতায় আসরে तासार्ष १५-१३ ७ १७-१८-७. १२--१७. এর হায়ার সেেডারী প্রীক্ষার থেলতে পায় 🧀 এখন বিদ্যাসাগর কলেকোর প্রাাভাগে বিএস সিজাশে প্রথম ব্যেক্তি _না। খোখো এবং ভালবল খেলছে দিনি ্ৰখানেখি। **প**্ৰিপতা বলল আমি দিনি াছঃ পিছঃ চলোছ। ৬৯ সাল থে:ে জয়ীসংঘ দলের রাজ্য লীগ বেলছে। ্রও থেলার হাতেখাঁড আশ্-বাবার কাছ। পার বিমল গাংগলী এবং দ্বারিক দাস ও সাুশীল বানোজির কাছে श्रीमामाने भाष्ट्र जिएक निकाणिश-१। তেইোনগামী দলের বাছাই শিবিরের জন্য পর্টি ভারত ডাক এপ্রেছিল, কিন্তু কপাল খারাপ। সরকার মেয়েদের ক্রীড়ামান উপয়াত বলৈ মনে করেন না। প্রতিপ্তা বলল, বাস্তবে না দেখেই এরকম ঘারণা করা উচিত নয়। দেখনে না, কেরলের বিরাপন সায়-দরাবাদে জাতীয় ফাইনালে খেলতে নমার আলে অব্ধি শ্নোছ, ভারা দার্ণ শতিশালী দল। **ওদের সংখ্য আর জিভতে হ**বে না। কিল্ডু শেষ প্যাল্ড আল্লাই ত জিন্তল্ম। সে বলল, জানেন আমার খেলা পাঞ্জাবের এফ প্রাক্তন জাতীয় খেলোয়াও মাঠেই আমায় প্রম্কার দিল। পরে অবশ্য ছোড়াদ ও দালিত মালককেও পারুকার দিয়েছিল। ছোলরা তেছেরান হাবে, মেয়েরা যেতে পাণে না, এতে প্রান্পতার বৃত দেৱাপা

বাংলার জন্য অন্য বিভাগের জন্জ-অঞ্জদের মত মেয়েদের হালবলেও এই অঞ্জা-অন্জা স্থায়ী খ্যাতির অধিকারিণী হবে ব্লেই আশা করা যায়।

—অময়

মাঠের নায়ক

তপন সিংহ্রায়

সংসারের চাপটা যদি আর একটু কর্ম আকতো তা হলে এবার প্রাপ ভরে থেগার চেন্টা করতায়। বেগারে কি মারে নেমেও তো সেই সংসারেকই চিন্টা। মারর জনা এক জোড়া খান না নিলেই নয় বোন দুটো অনেক দিন ধরে বায়না ধরেই ক্রিনা কিলেউ ভাল শাড়ী চাই। বড় ভাই দিপনিব মিলের হাটাই ক্রম্ভারী। আমার পরের তিন জন হোট। ক্র্যেল পড়ে। বোন দুটোর বিয়ে দিতে পারিন।

ভপারের জবানবলনী এরিরাক্সের তর্প কপার তপন প্রসংহ রংয়ের। ফটেবল মাটে আনেক দ্যাইকারকৈ সামলালেও সংসারের ময়দানে জনটন নামক দ্যাইকারটিকে সামলাতে তপনের আজ কাল হিমসির থেতে হচ্ছে। বাবা প্রফারকুমার গড় হয়েছেন ১৯৬৭ সালের ও তিসেলর। শেষ মাহাতে বাবার বিছানাক কাহে থাকাতে পারিনি। ওম্দ তিনাতে কোল-কাতার এসেছিলায়। কলাণানী তেগৈনে নেকে মানলায় সব শেষ। করা সেই। বাবা প্রিচানকর কন জন্তান ব্যাতের চাক্রে

তপনদের আদি বাড়ী বাংলানেখের ঢাকা কেলার সোনার গায়ে। জন্মও ख्यात ১৯৫० माला। *घर्षेत्रला* इत्र्र् খড়ি ৬৫ সাল থেকে 'সভারত সরকারের कार्का सम्बद्धाः क्षाप्त भारति भारति स्थाप খেলার পর পড়ে যাই ২৪ পরণাার সারেশ বাানাজির নজরে। সংসারের হাল সদপ্রেশ স্রেশ্ব ওয়াকিবহাল ছিলেন। ধরে করে চার্ডাী যুগ্ধহে দিলেন্ স্তার সিবিউরিটি ফোসে[।] ৬৯--৭১ স্থাইত ওদের হয়েই খেললাম। ভারপর কলকাতার গণ্ডৰ মাঠে এসাম ট লিবাঞ্চ কালাম ল জার্সি গারে চাপিয়ে। ৭২ সালেও আমি ছিলাম সিনিয়ার ডিভিসনে টালিগঞ্জের ^হটপার। ৭৩-এ এরিয়ান্সে নিয়ে এলেন ন•টঃদারা। ইবিহাল (এই-৫৩) ভালেয়ৰ বাংলা দলে খেলেছি। ৭০ সালে সিনিয়ার वारना परन अवर 48 मारन कानियार ভারতীয় দলে ছিলাম স্টান্ডবাই। বশা বাহলো দুটোর কোনচাতেই খেলা হয়ন আমার। সভাদা চেয়েছিলে আমার উলতি। আমার স্নাম। খ্ব স্মানা হলেও প্রতিষ্ঠা গড়ের মাঠে হরেছে। কিন্তু আমার সব চেয়ে বড়ো দুঃখ সেই সভালা আৰু আৰু মেই। গত ৬৭ সালের ১লা ডিসেম্বর এক মুম্বান্তিক রেল দ্রুটনার वकाला माता एगरबन्।





শভাদাকে আমি ভুলিন। এবং ভুলিনি
আন্তর্ভার ব্যাকক সাথাক করার জন্য
শক্ষা সম্পান পরিশ্রম করাছ। ভোর
ভারটার উঠে ৪-৪২-এর ট্রেন কলালে থেকে
ক্ষাক্তার আসি প্রাক্টিস করতে।
ত্যাকার বাই আফিনে (এ জি বেণাল্
ক্লাকা)। সেখান আকে অবার মাঠা
তারপর টেনে কলালা। সমন্ত গঠ পর্বাকত সভাদার ব্যুক্তর বছ দিয়ে গড়া
কলাণা ইয়ংমেনস এসোসিয়েশনের ক্লাক্লা
ক্যাকাণী ইয়ংমেনস এসোসিয়েশনের ক্লাক্লা
ক্যাকালার ক্রাক্রে না-প্রের দিন
৪-৪২ এর প্রাক্তর বান-প্রের দিন
৪-৪২ এর প্রাক্তর বান্-প্রের দিন
৪-৪২ বার প্রাক্তর বান্-প্রের দিন
৪-৪২ বার প্রাক্তর বান্-প্রের দিন
৪-৪২ বার প্রাক্তর বান্-প্রের দিন

কিশোর মুখাজি

মা-বাবা নাম দিয়েছিলেন কিশোর। বিশ্বু কিশের এখন আর আক্ষরিক অর্থে কিশোর নেই, বরণ্ড বলা বেতে পারে প্রেরা-পরি যাবক।

কগকাভারই মাঠে বছর ছ-ছেক হোজ কিলোরর আনাগোনা। বলা বাহলো ঐ আনাগোনা ফাটবালের স্তেই, ফাটবালের আর্মাণেই। মোটামাটিভাবে বলা বেতে পারে যে কিশোর কলকাভার মাঠে আজ কিছ্টা প্রতিশ্রতি পেয়েছে। শাগ্র কলকাভাই বা বলা কেন-বছর দারেক আগে কিশোর এশীর ধ্বে ফাটবালেও তো ভারতের প্রতি-নিধিত্ব কর্মান। তা ছাড়া জাতীয় জানিয়ার ফটেবল প্রতিযোগিতার (ডাঃ বিধানচন্দ্র রার্ র্টাফ) তিনি বার কয়েক পশ্চিমবন্দোর হরে বেলেডেন।

কিশোর মুখার্জ ১৯৭৪ সালে খেল-ছেন ইস্টান রেলে। পজিসন রাইট উইং।
বংশ্ব-বান্ধবের সংগ্য খবে হৈ-হল্লা করলেও
ঐ গণ্ডীর বাইরে বেরিয়ে আসতে হলেই
ব্যাস। কিশোর খেন বোবা! রাইট উইংরে
খেলার অভ্যাস কিশোরের। বছর সাত-আট
ধরে ঐ এক পজিসনে খেলা রুশ্ত হয়ে গেছে
সাত্য, কিশ্ব দুল্লা প্রয়োজনে লেফট উইংরেও খেলতে ক্রিক্টার বালার ঘটনা বহুবার দেখা
গৈছে কিশোরের ক্ষেত্র।

ইপ্টার্ন রেলওয়ের অভিজ্ঞ প্রশিক্ষক নিজেও এক সময় গড়ের মাঠে ডাকসহিটে রাইট উইংগার ছিলেন। কিছুনিন ইপ্টরেপলন্দলে থেলেছেন তিনি। কিশোরকে যে তিনি মূলত রাইট উইংগ্র খেলাতে চান সে বিষয়ে কোন সপেহ নেই। তবে হালের ফ্টবুলের ইণ্ডারীতিতে এ রাইট উইংগার, লেফট উইংগার, রাইট হাফ, লেফট হাফ বা রাইট ব্যাক বা পেফট ব্যাক প্রথা স্বাকলেও প্রাটাক এবং ডিফেন্সের সময় চাহিদা এবং প্রয়োজন অন্থায়ী স্বাইকে সব প্রজিসনে গিয়ে দাঙাতে হয়।

হাওড়ার বাসিন্দা কিশোরের ডান এবং বাঁদ্য পায়েই সট আছে। ডিফেন্ডারের পা থেকে ছোঁ মেরে বল তলে নিয়ে শ্রুপক্ষের এলাকায় ৮7কে বন্ধণ ব্যবস্থাকে ভত্মছ করে দিতে কিলোর পারদশী। ফটেবলের অনেক গণে এধাত থাকলেও এই ছয়-সাত বছরে কিশোর খ্যাতির একেবাবে শীধে পেশছোতে পারন ন। না পারার কারণ অবশ্য বহু,বিধ। প্রথমত কোন দলে থিত হতে না পারা এবং দ্বিতীয়ত শারীরিক ঘটতি। সভর আশীবা নশ্বই মিনিট খেলতে যে ধরনের মেহনত করতে হয়, কিশেরের পরেরাপর্রি তা আছে বলে মনে হয় না। অধিকতর সার্থকতা লাভ করতে হসে সব প্রথম কিলোরের শরীরের দিকে আরও বেশী নজর দিতে তবে।

কিশোর হাওড়ার মধ্যবিত্ত ঘরের ছেলে।
লেখাপড়া হাওড়ার অক্ষয় শিক্ষায়তনে এবং
পাইকপড়া কাশিমবাজার ইনন্টিটানেট।
কাশিমবাজার ইনন্টিটানেট পড়ার সমরই
কিশোরের স্কুল স্ত্রত ট্রাফ লাভ করেছিল।
ঘরোয়া সিনিয়ার ডিভিসন লাগ ফটেবলে
এখন খেলেছে স্পোটিং ইউনিয়নের হরে।
সেখান খেকে এরয়াসেন। তারপর মহুরেজান
স্পোটিংয়ে এক বছর। মহুরাম্ভান স্পোটিং
থেকে ইণ্টান রেলে। ময়দানে কিশোরের সব
থেকে ইণ্টান রেলে। ময়দানে কিশোরর সব
ভাবা ক্রাম্বার্থীর ক্রাম্বার্থীর ক্রাম্বার্থীর ক্রাম্বার
ক্রাম্বালিশার গ্রুহ দিন্তদার, কান্য মজ্যাব্রা
দ্বালা দেব রাম দাস স্বাই মিলে এরিয়ান্স
সে বছর ময়দানের ফ্টেবলের আসম রাজিন
মত সম্বার্থম সরের রেখেছিল।

-विश्वा बरम्माश्राह





Camagar

मणक

উইন্বলৈডন লন টেনিস প্ৰতিযোগিতা

গত ২৪শে জান লক্ষ্যের দক্ষিণ-পশ্চিম দিকের ঐতিহাসিক উইন্ধলেডন শহরতলীতে ৮৮তম উইম্বলেড্র ল-টেলস প্রতিযোগিতার আস্ত্র ব্যস্তে। এই বিশ্ববিভাতে আন্তজনিজ আন দৌনস প্রতিযোগিতার উদ্যোজ্য অল-ইংল্যা-ড েন্স ক্লব। এ বছরের প্রতিযোগতায পরেবদের সিংগলস থেলায় রেকড'সংখাক থেলোয়াড (৪১০ জন) অংশ গুল করেছেন। চিরাচরিত প্রথায় টোনস খেলার পণ্ডত ব্ভিদের সহযোগভায় যোগদান-কালী খেলে।য়াড়দের যোগতো বিচার করে নামের বাহাই তালিকা প্রকাশ কর হয়েছে। ১৯৭৪ সালের এট বাছাট ত্রনিকায় ১ম স্থান পেয়েছেন প্রেখদের সিংগলসে জন নিটকম্ব (আসেইলিয়া), মেয়েদের সিভালসে শ্রীমতী বিলি জিন কিং (আর্মেরিকা), পরেষদের ভাবলসে ছিন্ত কোনাস (আমেরিকা) এবং ইলি নাস্তাপে (রুমানিয়া), মেয়েদের ভাবাদঙ্গে শ্রীমতী বিলি জিন কিং এবং কুমারী রোজমেরী ক্যাসলস (আমেরিকা) এবং মিকস্ড ভাবলসে শ্রীমতী বিলি জিন কিং জোমে-রিকা) এবং আওয়েন ভেডিডেসন ্যান্টেলিয়া)। প্রেখদের সিশালনে ১নং বাছাই খেলোয়াড় জন নিউক্ৰ (অস্টে-লিয়া) ইতিপ্ৰে' জিনবার সিংগলস খেতাৰ পোছেন-১৯৬৭, ১৯৭০ ও ১৯৭১ সালে। তিনি গত দাছর প্রতি-যোগিতায় অংশ গ্রহণ করেননি। গত বছরের প্রেষ্টের সিশালস চাচিপ্রান জান কোডেস (চেকো**শেলাভাকিয়া) এ** বছরের বাছাই তালিকায় ৬০১ পথান পেয়েছেন। গত বছর অনেক খ্যাতনামা থেলোয়াড় প্রতিযোগিতা বর্জন করায় তার পক্ষে এই সিংগলস খেতাব জর **इ**ट्य़ि**इन**। খুবই সহজ মেয়েদের সিজাসসের ১নং বাছাই শ্রীমতী বিলি জিন কিং ইতিপ্র ৫ বার সিংগলস খেতাব পেয়েছেন।

টেনিস খেলার পশ্চিত মহলের দড়ে ধারণা, এ বছর প্রেবদের সিংগলস

Ferri Sart Britania (1994) i di mangan kalanda dan Merda kanjalangan di menjadi kebada dan kebada

থেতাব জয়ী হবেন মস্টেলিয়ার এব নিউক্ষব এবং মেয়েণের সিণ্যক্রস থেতাব পাবেন আমেরিকার শ্রীমতী বি**লি জিন** কিং।

উইম্বলেডন টেনিস আসরে গত আই দিনের খেলায় (জান ইন্ন থেকে জালাই ১) মাত্র দুর্টি বড় রক্ষের ভাষ্ট্র মটেছে। পারাধনের সিংগ্রাসের তথ রাউডেয় থেকায় ১৮ বছরের তর্গে থেলে য়াড় ওনং খাছাই বলনি বল (সাইভেন) এবং চনং বাছাই আৰ্থার আচে (আর্মেরিকা) অবাছাই থেলে:-মাড়দের কান্ডে অপুতার্নিইভাবে **হে**রে গেছেন। গ্রিশরের ইসলাইল-এশ-সঞ্চি পেট্রট সেটে (৬-২ ৬-৩ জ ৬-১ গেমে) বগুলে আহ্রেছেন। বর্গ দাড়িয়ে দাড়িয়ে হেরেছেন জেতার কোন চেণ্টা করেনান। তার এই **পাত** খান প খোলা দেখে দশবিরা বিশ্বাস করতে পারেনান কোটে তারা যগের খেলা দেখছেন। বাগেরি এরকম খারাপ খেলার কথা নয়। এ বছর্ট বগ ইতালীস এবং ফেল টেনিস প্রতিযোগিতাল সিংগলস থেতার জয় করে উই-বলেডন টোনস আসরে খেলতে নেমে-ছিলেন। সকলেই এই স্থাসরে তার বিষয় ট সাফল্য আশা করেছিলেন। পার হদের সিশালসের বাছাই তালিকার ৮নং থেলোয় ড আর্থার আস (আমেরিকান নিগ্রো) স্বাদেশের অবাছাই থেলোয়াড় ৰসকো টোনরের কভে ৫-৭ ৩-৬ ৯-৬ ও ৩-৬ গেমে হেনেছেন। পরেষদের সিধালসের ব্যাক ১০ জন বাছাই খেলোয়াডেই - এবা দ্বাউন্টে থেলবার যোগান্তা ল'ভ করেছেন।

পার্যাহদের সিংগলসের খেলায় ভরাতের তিনজন খেলোরাড্ট হেরে গেঞ্ন—১ম আলক্ষ রাউন্ডের খেলায় অম তরাজ िभर ও যশস্তিৎ এবং দিবত হৈ বিভায ষাউন্ডের খেলাম অম তব কে। অ-েট্রালয়ার বিশ্বখ্যাত প্রবাদ খেলোয়াড় व्यवर अनर वाष्ट्रारे त्यन त्याक्षक्यात्मत कारह বিজয় অন্নতরালের প্রাঞ্ম মোটেই অগোরবের ভয়নি। বিজয় আডাই ঘন্টা লড়াই করে শেষ পর্যাহত ২🐞 ৭-৫ ৮-৯ 🥦 ১-৬ গেমে হেরে হান। "এথানে **উল্লেখ্য** বছর এই আসরে বিজয় কোয়ার্টার ফাইনালে গত বছটা

জ্ঞালপায়ন চেকেন্সেলভানিয়র জান কোডেনের কাছে ২-০ সেটো ছেরেছিলেন। কিজয় অমাতরাজকে নিয়ে এ প্রয়াক্ত মক ভিনজন ভারতীয় থেলোয়াড়ে উইল্বলেডন আসরে গারুমেনের সিক্সান্যর ক্লেয়াটার ফাইনালে থেলেছেন। প্রথম খেলেন গাউস্ ছাইনালে। তাবেন্দ্র ক্লানাওন ক্লম্বান উপ্রাপ্তর প্রহুত্ব (১৯৬০—৬১) সেমি ফাইন ল

ভারত সফরে ওয়েস্ট ইণ্ডিজ ক্রিকেট দল

আগ্রামী মতেম্বর মালে কটেড লয়েডের মেত্রতে এয়েস্ট ইন্ডিক কিকেট দল ১৯৭৪-এর সালের ভারত সফরে আসছে। ভাষ্টের মাটিতে এয়েশ্ট ইন্ডিজ ক্লিকেট দলের এটি এর্থা সফর। এর আরো ওয়েপট ইণিক্ষ ভাষত সহতে একেছিল। ১৯৪৮-৪৯ PERMIS INNE PERSONAL & KD-4066 ্লাটিতে ভার। তিনটি (1526 জিবিজেট বাবার জয়ী এয়েছে—১৯৯৮-৪৯ সালো ১-০ খেলার (জু ১) ১৯৫৮ ৫৯ সালে ৩-০ খেলায় (জু ২) এবং ১৯৬৬-৬৭ সংলে ২-০ খেলায (ছ ১)। এই ভিনাই টেম্ট সিলিজৰ ১৩টি খোলার ফুলাফুলাও ওয়েস্ট ইণিড্রেল জয় ড জারকের এয় ০ এবং গোলা ও ৭। ওয়েস্ট ইতিহাজ্যৰ মাটিতে ভাৰত ভিনৱাৰ কিতেওঁ अस्य दरवाक—५५४३-५० ५५५५-७३ ४/९ ১৯৭০--৭১ সংলো **ওয়েদ** ইশিচতের মাডিতে তিনটি টেমট সিনিসভার ফলাফলঃ ওরেষ্ট ইন্ডিজের পাবরে জয় ২ এবং **ছ**ংক্রের স্বাবার' প্রহা ১ (ডালিড ভ্যাপে-। (B) K ८२--०२८ । (B) ম হয়।

স্কৃতি কি সাংলু ভাষেত্ৰ ইণ্ডিজ সক্ষয়ে ভাষত প্ৰিটি টেস্ট খেলাতেই শোচনীয়ভাবে ফৈবে মাস। ভাষ্টেই কিড্ডেন মাজিতে টেস্ট খেলাৰ ফল্ডফল্ড খেলা ১৫ ভাষ্টেট ইণ্ডিজেন ক্ষা ৬ ডাৰ্ডেন ভ্ৰম ১ অবং খেলা ডু ৮। এ প্ৰাণ্ড এই দ্বী দেশের মধ্যে যে ইন্টি টেস্ট খেলা হয়েছে ১৫ ফল্যফল: ওরেন্ট ইন্ডিলেন কর ১২ ভারতের কর ১ এবং শেলা ছ ১৫। ওরেন্ট ইন্ডিলের নর ১ এবং শেলা ছ ১৫। ওরেন্ট ইন্ডিলের 'রাবার' কর ৫ এবং ভারতের রাবার কয় ১।

১৯৭৪-৭৫ সালের আসম ভারত সকরে এরেলট ইন্ডিজ জিকেট দলে যে ২৭ জন খেলোরাড় নির্বাচিত হয়েছেন তাদের মধ্যে নতুন খেলোরাড় আছেন চারজন। দল গঠনের আগেই গ্যারী সোবাস এবং মরিস ফাস্টার এই ভারত সফরে তাদের যোগেনের অসমতা জানিরে দিয়েছিলেন। রোহন কানহাই দলভুক্তই হৃননি। আহ চিট সিরিজে এমেলট ইন্ডিজের আহিনায়ক চিকেন।

নিৰ'ভিত খেলোয়াজৰ স্প

ক্লাইভ লয়েড (অধিনায়ক) তেবে জ মারে (সহ-অধিনায়ক) কিব বয়েস আথার বাবেট রয় ফেডাবিক্স লাক্স গিবস ভান-বার্মা হোক্ডার বার্মাড়া ক্লালিয়েন আলভিন বার্মাস কিকিউনেডো উইলোই এবং চারজন নতুন খেলোয়ড়ে—গর্ডান গ্রিনিক্স আলবার্ট গ্রাডাসার লিওনার্ড বেটান এবং ভিভিয়ান্ বিচ্ছিপ্সা

প্ৰথম বিভাগের ফটেবল লীগ

 ভাষকা উল্লেখ্যাগা। একগার ঘোষনবাগানের अवकाना जीन कामय भाष देखीतकाल प्रचाव (১৯৬১ ও ১৯৬৬ সালে) জাগ চাটিপয়ান হয়ে লোহনবাগানকে উপয় পরি ৫২% প্ৰথম বিশ্বাগের শীগ খেতাৰ ক্ষম করতে -- אות מטבל האמן שות בשבל ו הונאן ाहे जाहे रहात्वर अध्या तिलाशात काहेबल লীৰ প্ৰিয়েণ্ডলেয় গোচনবাৰান ভয়বাৰ লীগ চটাম্প্রযান হয় এবং বাজি দশ্বাব ইস্ট্রেপ্রল এমনভাবে লাগ চ্যাম্প্রান হয়. হার ফলে মোহনবাগানের পক্ষে উপয়'পেরি পাচবার জালি খেতার জয় সক্ষর হয়নি। সেই সময়ের জীগ ক্লাগ্র ভালিকা এখানে তলৈ দিলায় : ১৯৫৯-৬০ মোহনবাগান ১৯৬১ ইসটবেশাগ, ১৯৬২-৬৫ টেপয়'পেবি ধবার) মোহনবাগান, ১৯৬৬ **ইস্টবেংগুল** এবং ১৯৬৭ নহমেডান স্পোটিং।

উল্লেখযোগ্য লীগু খেতাৰ জয়

মোইন্বাগান ১৬বার সেবাধিক জমের জেকডা), ইন্ট্রেপ্সল ১২বার, মহমেডান স্পোটিং ১০বার এবং কালকাটা এফ সি ক্ষেমাল শ্রু ৮৮বার।

উপয় পৰি লাগ জয

মহমেডার কিপাটিং – ৫বার (১৯৩১-৩৮), ইস্টবেশ্যন এবার (১৯৭০-৭৬), রোধনবাগান স্বার (১৯৬২-৬৬), গ্লোহন-বাগান তবার (১৯৫১-৬৬) এবং ভারহাল্প এল আই তবার (১৯৩১-৩৩)।

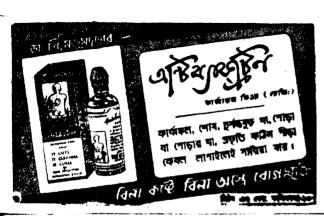
এশিয়ান সাঁতার প্রতিযোগিতা

মানিলায় আয়েছিত রম তাঁশারুন মানিলায় আয়েছিত রম তাঁশারুন মানিলায় কি থেকে ১৭ পথানত।
সাঁতার প্রতিষ্ঠাপিতায় গতবারেন চ্যামিশায় ন জাপান করেছে। তালি বর্তার করেছে।
ভাপান প্রেয়েছে দোট বর্তার স্কর্না করিছ করেছি।
দুর্বিশা ও ব্যাল ১০। প্রতিষ্ঠাপিতায় দিবতায় স্থান গালেছার। প্রতিষ্ঠাপিতায় দিবতায় স্থান গালেছার। প্রতিষ্ঠাপিতায় ব্যামিলার বিশ্বিক স্করেছ পদর জ্যাই হয়েছে। ভারত ধেবি পাঁচজন স্করেছ দিবতার, ম্যোদান ক্রেছিল।
ব্যামিলায় ব্যামিলায় ক্রেছিলা ব্যামিলায় বিশ্বিক দলে

১৯৭৩ সালের শ্রেণ্ঠ খেলোয়াড

পশ্চিম বাংলার সেখটেস জানালিকট জাবের বিচারে পশ্চিম বাংলার বিভিন্ন কেলাব্লায় নিম্নলিখিত খেলোয়াভ্রা ১৯৭৩ সালের জন। শ্রেউদ্বের সম্মান লাভ করেছেন।

ক্টেকা: সম্রেশ্ চৌধ্রী ইন্ট-বেশাল: জিকেট: গোপাল বস্ কোলীঘাট): ছফি: কুল, ভ্রালিয়া মোলব বাল): টেকা টোনস: গ্রীল্লী র্পা বালাজি: সাভার: কুলারী নাফ্সা, আল টেলভয়ান লাইছ সোভংস)





শুধুই কেন্টু তৈলে নয় একটি কেন্দ রসায়ন





অতুলনীয় গুণাবলীর জন্য যুগ যুগ ধন্ন সুবিদিত

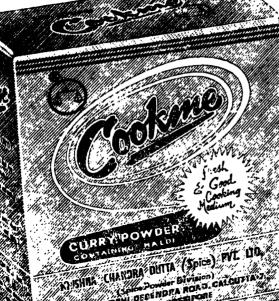
> भागनकीहे हेरात अवान छेशकत्रं

কেশের পৃটিটসাধন ও কেশমূল সুদৃচ করে। কেশের সজীবতা ও আভাবিক বর্ণ ফিরিয়ে জানে। কেশপতন ও অকালপকৃতা রোধ ক'রে ঘনকৃষ্ণ সুদ্দর কেশোশ্গমে সহারতা করে। যভিক রিংধ ও কর্মক্ষম রাখে।



সাধনা ঔষধালয় চাকা কলিকাতা ৫





হুণলো সেই আসল জিনিব ষার পেছনে রয়েছে ১২৫ বছারর অভিজ্ঞতা

আ। তহত।

১। সর্বাধুনিক মশলা প্রযুক্তি বিকার

ফল নতুন পানকে আরও উমত

ধরনের কুক্ষী ভাঁডা মশলা।

২। এর বেছনে রায়ছে দীর্ঘদিনের

ন। বেলাবের আসার ঐচেটা গুড়া ত। বাজাবের আসার ঐচা মশলা মশলা থোক কুকুমী গুড়া মশলা সম্পূর্ণ ভির স্থাদের ও গায়ঞ্জ ভরপুর।

WA 3128 CA

ব্রতকারত ক্রুম্ব চন্দ্র দত্ত (স্পাইস) প্রাঃ লিঃ

(ল্পাইস পাউডার ডিভিসন)

২৩৫, মছর্ষি দোবল্ল রোভ, কলিকাতা-৭। ফোন : ৩৩-০৯৯৫ ফ্যাইরী—কংশীপু

188/100.74

श्रादाधकवात मानाएमत

जानागर्ना स्वीतः

তর বৈঠক ২০ বকু লকথা ২০

खाकारणत मोभा नार्टे ७ अर्नाग्रम १

নিঃসন্থ পথিক 🤲 ১২॥

अभाख घर्तार्ग धर

८म<u>ा</u>ड्यान्त्र

সপ্রবির আলো

गर्जन्मकुमान मिरतन

UII

দীর্ঘকালের — চিরকালের বই

ছেলেদের আরব্য উপন্যাস ৬

॥ करत्रकि वहरत्रत भूगर्म ॥

বিভূতিভূষণ বদ্যোপাধ্যায়ের

শ্রেছঠ গলপ (৭ম মন্রণ) ১২্উদ্ধারণপর্রের ঘাট (১৪শ মন্রণ)১০ नीशात्रज्ञान भर्दण्यत আশ্তোৰ ম্থোপাধ্যয়ের

নব নায়িকা (৩য় মন্ত্রণ) ৭ হাসপাতাল (২য় মন্ত্রণ) ১৮ অচিন্ত্যকুমার সেনগ্রেকর

পরমপ্রর্ষ শ্রীশ্রীরামক্ষ ২য় খণ্ড (১য় ময়েণ) ১২ বিভূতিভূষণ বল্যোপাধ্যায়ের व्याभाभार्गा दस्वीत

অশনি সংকেত (২য় মরণ) ১০ ঝিনুকে সেই তারা (২য় মরণ)৯

नीशावतक्षन गर्भ्य

উমাপ্রসাদ মুখোপাধ্যায়ের

নিরালা প্রহর ৩় ॥ পকেট বই ॥ গ্ৰপ্তেশ্বর ৩ ভূগজোতকের — পরিবধিত পরিমাজিত

নিজের ভাগ্য নিজে দেখন ১্ভাগ কখন **খ্লবে ৩**;

॥ विस्मिष्ठ (चाष्ठ्या ॥

व्योगांची ১৬ই बागन्छे भर् क्रवाब, बाधारमंत्र कनिकांका ४७।১ महांचा शाशी जाएल्स िन्वजीय कांग्रेम्बेट्याद अथव घेटच्यायन वाचिकी छेन्नाटक क्रेनिन क्रिकांनाथावन 👁 भाष्यक विदक्षण वन्धानिक वे काछेन्टीत्व विरम्ब क्षिमन दिखा इहेरव।

মিত ও ছোম পাঃ প্রা: লিঃ, ১০ শ্যামাচরণ দে স্মীট, ৮৬।১ মহাস্মা গান্ধী রোড, কলিকাত। ফোন: ৩৪-৩৪৯২/৩৪-৮৭৯১

निय्यावनी

facer fautre

লেখকদেৰ প্ৰতি

- ১। कार कि स्कार का स्थाप क নমস্ত বুচনার বৰুল বেংৰ পাঠা-्यम । ब्रिमामीक ब्राज्यास वयद प्र-STEPS CON SPINIS FOR STEPS कामकाश्चे क्या পাঠান সম্ভহ নয়। জেখার নদের क्षान कार्कार्डेक्ड भारतस्था हा ।
- े হ। প্রেরিড রচনা কাগজের এক প্রেরীয় স্পান্টাক্ষরে লিখিনে হওরা আৰ-লকে। অস্পন্ধ ও দ্বোধা বৃদ্ধা-ক্ষরে জেবা প্রকাশের জনো গহীত হর না।
- 😊 । রচনার সংখ্যা লেখাকের নাম ঠিকানা ধা থাকলে অমতে প্রকাশের জনো গ্রেভি হর না

এজেণ্টদের প্রতি

এক্টেম্পরি নিয়ুয়াবলী এবং ক সংশক্তি অমান তথা ভাষাত ভাৰাল্যাক পঢ় আর জাত্তমা

গ্ৰাহকদের প্রতি

- 🔰। প্রাহকের ঠিকানা পবিবর্তনের জন্মে অত্তে ১৫ দিন আবে তাম্ভ कार्याम्यः अध्यापः प्रस्ताः व्यापः
- হা ভি পি-তে প্রিকা পাঠানো এর না। গ্রাহকের হালা নিম্নালাশত হাবে মণি অভারবোগে অমুত कार्या कार्य नाठात्मा व्यवनाक।

চীদার হার

ৰালকাড়া रकः क्या हीका २६-०० होका ७०-०० ৰাবি ক ৰা-আবিত क्षेत्र ३३.६० क्षेत्र ३६.६० লেগাপক होका ७-३७ होका ४.००

'ভামাড' কার্যালয়

১১/১, ज्यामक शाहीक दान, কলিকাডা--০ (本) (20-0 to (20 digu)

প্রতিমন্ত্র প্রকৃতির বিজ্ঞানিত প্রতি রোড, হাওড়া-১ नक्ष विद्वार मण्य दिशनाम

> পরবাসে । গণত টাকা "দাৰাশ্নির মাবোলাখি দাভিয়ে মাঝারত करत्रकष्ठि यावक-यावजीत कथा"

प्रभावत काराधाल **भीजाशन हाता : श**्ला २:00 गेका

রবীন্দ্রভারতী পত্রিকা আন্দেশ্বর ক্রিতীয় সংখ্যা

वंशक्तवन्त्री वर्ष ३५१ ह বৈশাখ---আষাত ১৩৮১

সম্পাদক ৰুমেন্দ্ৰনাথ মহিলক

লেখকস্চী। বৰীন্দ্ৰনাথ ঠাকুর (রাজা রাম্নেমাহন রায়) রুমা চৌধ্রী, (উপাসনা) दिवन्यस बाल्याभाषास (উপনিষদ ও রবীন্দ্রনাথ), ন্বজেন্দ্রলাল নাথ (রামমোহনের রাখানৈতিক চেড্না) হরপ্রসাদ মিত্র (বাদ্ধদেব বসা) হেরালা চ্ছাবতী (মৃণ্যালকাব্যে প্রে। গের প্রভাব) শিবপ্রসাদ ভট্টাচার্য (লোকায়ত জীবনের কবি মকেন্দরাম ও দুর্বারী জীবনের কবি ভারতচন্দ্র), জ্যোৰক্ষানার জান্ত্রক (রাখামাহন-সমাধির রিস্টলতীথে) অমলেননু বাগচি (এস্থেটিকসের কথা) দকিশারঞ্জন বস্ (মহর্ষির আঞ্চরিতে সমাজ্ঞচিত্র) ৰুমেন্দ্রনাথ মল্লিক (গণীতকবিতার আলোকে রামমোহন) ও স্থাংশ্বেমাহন ৰন্দ্যোপাধ্যাল (গ্রাম্থসমালোচনা)।

চিত্রসূচী। বিশ্বলৈ বামমোহন-স্মাধি ও রাজা রামমোহন গায় ত্রৈমাসিক সাহিত্যপত। প্রতি সংখ্যা দেড় টাকা

রবীন্দ্রভারতী বিশ্ববিদ্যালয় । ৬/৪ স্বারকানাথ ঠাকুর **লে**ন, কলিকাতা ৭

প্রকাশিত হল

PART NUE

গিরিশ রচনাবলী

সম্পাদনা : ७: दम्बी अमाम अप्रोतार्थ

তৃতীয় খণ্ড প্রকাশিত হবার শরে চতুগ্রণ খণ্ড প্রকাশিত হতে নানা অস্তু-বিধার জনো দীঘা সময় লেগেছে—এর জনা আমরা দুর্গেত। প্র প্রতিষ্ঠাতি অনুষায়ী গিরিলচন্দের সমগ্র রচনা চতুথা খন্ডেও সমাণত করা গেল না। পার্য খণেড সমাশ্ত হবে। পার্য খণেডর মানুণ চলছে। কয়েক মাসের মধ্যে প্রকাশিত হবে।

চত্র্থ খণ্ডের স্চী

॥ माञ्कायली ॥

তপোৰল । প্ৰস্তাল-মঞ্জ । ব্ৰীৱংস-চিত্তা । ব্ৰামের ব্যবসাস । ব্ৰক্তে । শ্বং•নর ফুল । নঙ্গীরাম । বিকশম÷গল ঠাকুর । সংদাম । রাণা প্রতাপ । भागावज्ञास । भाक्तवथ । भाजिक कि गानिक । शहकाकती । सहाश्राका । মোহিনী প্রতিমা । বড়দিনের বখশিশ । আনন্দরহো।

সম্পাদক কতৃৰে উন্ত নাটকাবলী সম্পকে আলোচনা সন্নিবিশ্ট नाहरता ध्वसः। रवार्षं वीशारे। घरनावस स्नारक्षे।

্ৰাজ্যে পশ্চৰ টাকা মাত্ৰ

[প্রাথম দিনতীয় ও ক্তীয় খণ্ড প্রতিটি পণ্ডিশ টাকা]

সা[†] হত্যে সংসদ ে ৫০ আচার প্রফলের রোড। কলিকাড়া—১



So Spell মলো ৫০ প্রসা

''डेल्डियान सरान्य वैन्डेल' निकेस रभशास स्थानकेथित अक्रमर[,]

Friday, 2nd August, 1974 শক্তবার ১৬ প্রাবণ, ১৩৮১ 50 Paisc

প্ঠা	विवय <u>्</u> य	লৈ থক
ಅ	সম্পাদকীয়	
٩	ৰ্ত্তের কেন্দ্রে (গ্লপ)	—শ্রীবীরেন্দ্র দত্ত
১৩	भ ुष्टेकृति	—জন আবদ ্দ হরিলামা
28	এই বাংলার খবর	— শ্রীদেবদন্ত
26	टक्ट्रम् विटक् ट्रम्	— শ্রীপ ৃশ্ভর ী ক
28	•ি••ডা (কবিহা)	— শ্রীবনফ্ল
>>	রাজার বাজা (উপন্যাস)	—এীপ্রভাক্ত দেব সরকার
২৪	बर्वक-बर्वें	—শ্রীকন ক মজ্ম দার
. ₹5	চিট্টিপর	
২৭	ৰাংলাদৈশে রাজনীতি ও	
	চিত্রকলার একশ বছ র	গ্ৰীঅত্লচন্ত্ৰস্
90	সাহিতা ও সং কৃ তি	শ্রীজরংকার্
৩ ৫	অংশক্তিক জল্মান (উপন্যাস)	শ্রীঅতীন বনেদাশাধ্যায়

ফেরারী অত

আশ্তাষ মুখোপাধ্যায়

স্মৃতি তুমি বেদনা-শূভা গাঙগুলীর মুখের দিকে তাকিয়ে রামকৃষ্ণ চক্রবতারি হ'দ্য আজ আলোভিত হয়ে উঠছে। জীবন সায়াহে। উপস্থিত হয়ে খ্যাতিমান লেখক রামকুষ্ আজ তার যৌবনের পেয়িকার সাক্ষাৎ পেয়েছেন। এই সেই শ,ভা? যার স,রে পাগল হয়ে প্রাণমন সমপণি করতে চেয়েছিলেন একদিন ? হ্যাঁ, সেই শুভা, যে শুধ্ ভালবেসে-ছিল সংগীতকে। এই সেই শৃভা যাকে ঘিরে রামকৃষ্ণের যোবন উদ্বেল হারছিল হারিয়ে যাওয়া অতীতের দিনগালি আজ প্রতি আজ বেদনা।

সাহিত্য-সংস্থা, ১৮সি টেমার লেন কলি-৯

দীপক দেব উপনাক প্রেমিক প্রেমিকাদের বৈর্মকে—৪ কলকাতা দেখেছি-ত

লিপিক। ৩৩।এ কলেজ বো

ৰাংলা সাহিত্তার বিশ্ব অবদান। বিশ্ব গুলী জ্ঞানী মণীষীদের সমাদ্ত শেখক (ভারতের ডক্টর রাধাকৃষ্ণান যাস্ত-শেটটের পর্যালটরাজ পারস্কার श्रीष्ठ कीय काल भीभारता छ है लिए जब রাজকবি মেস্থিল্ড) अन. मारपाशासार**स्**व

অপরিণীত মূল্য ১৮ টাকা উপন্যাস ৯৪৮ শৃষ্ঠা। বহং চিন্তাধ্মী সামাজিক উপনাস। প্রেম ও প্রাণের মহান প্রকাশ। যৌবনের ঘাত, সংঘাত ও প্রতিঘাত।

অঞ্জলি গীতিকাবা। ম্ল্যে **৫** ৩৫৪টি গানের সমাবেশ। রবীন্দ্র প্রতিভাদীপত সংগীতের ধারা। সংগতি সাধকদের অবশ্য দুশবৈ। রবীন্দ্রনাথের পরে এ ধরণের প্রস্তব্য আর বাহির হয় নাই। বই দুখান শ্লান্তর ও আনন্দ্রাজার কর্তৃক উচ্চ প্রশংসিত। সাধক ও মহাভারত এ দুটি ভাষাই বাবহাত হয়েছে। मि ब्रिक शांधेम, ১৫ कालक एकाशाय

কলিকাত্য-১১।

সারদা-রামক্ষ

ম:গাল্ডর—সর্ব'।গ্রস, শ্র श्रम्थानि भव अकार्य छरक्छ इहेशाहा। বহ চিত্ৰে শোভিত সংতম মাদ্রণ-৮-

গোৱীমা

গ্রীরামক্ষ-শিধ্যার অপুর **জীবনচরিত।** আনন্দ্ৰাজ্যর পাঁচুকা :—ই'হার। জাতির জাগ্যে শতাব্দীর ইতিহাসে আবিভূতা হন। বং, চিন্তসহ পঞ্চম মাল্ল-৫

দ্বগামা

শ্রীসারদাহাতার মানসক্রাার **জবিনক্তা**। বেতার জগংঃ--অপর্প তাঁর জীবনালেখ্য অসাধারণ তার তপ্রত্যা। বহুচিত্রসহ ৮

সাধ্ন-চত**্ন[©]**টয়

প্ৰামীকী-সংহাদ_ৰ মনীষী মহেপ্<u>ট</u>নাথ দ**ত** মহাশরের মনোজন রচনা।। পরিবাধিত দিবতীয় সংস্করণ-১-২৫

সাধনা

বস্মতী:--এমন মনোরম ফেডারগণীত-প্রুম্বক বাদালায় আর দেখি নাই।। পরিবধিত ধর্ঠ মন্ত্র--- ৬-

स्मीसीप्रायात्रमा नास्य ২৬ গোরীমাতা সরণী, কলিকাতা-৪ চারধারেই লভ্যাংশ কমবার কথা শোনা যাচ্ছে বটে

ইউনিট ট্রাপ্ট

কিন্তু আনন্দের সঙ্গে গত বছরের হারেই লভ্যাংশ যোষণা করছেন—

8-5%

ইউনিট বাস্তবিকই নিরাপদ ও নির্ভরশীল বিনিয়োগ— প্রত্যেকের সাধ্যের মধ্যে

ইউনিট ট্রাস্ট অফ ইণ্ডিয়া

স্চীপত্র

প,ষ্ঠা	বিষয়	লেখক
83	অবিধ*ক প্রস্থা	শ্রীশাশ্তিলাল মনুখোপাধায়ে
80	বিজ্ঞাপনের ভাষা	—शिभगामनी वस्
8¢	প্ৰভেচ	—শ্ৰীক্ষপণক
89	७० १ना	—গ্রীঅঞ্চলি চৌধুরী
84	রুপদীর খাতা	—শ্রীবরবার্ণনী
85	সংক্ষোভ (গ্ৰহণ)	—শ্রীকৃঞ্কানত মজ্মদার
de.	সেকালের সংগীত গ্ৰী	—শ্রীদিলীপকুমার ম ুখোপাধ্যা য়
ፍ ዞ	প্রেক্সাগ্ত	
৭৩	শতবংশের স্মর্শীয়	শ্রীকালীশ মুথোপাধ্যায়
98	महिनिक्यी क्वल मानगर्य	—শ্রীয্থিকা রায়
વહ	चिनाम कगरण प्राप्त	
্৭৮	बार्टन नेप्रक	—শ্রীবিপত্নে ব্লেয়াপাধাদ
۹۶	टचनाथ ्डा	—শ্রীদর্শ ক

দিবতীয় মুদুণ প্রকাশিত হ,ল

বেডসাইডশচীনভৌমিক

এ যাবং লিখিত যাবতীয় বচন ফকিরের কল্কে, কয়েকটি সাড়া জাগানে। গল্প ও ভিন্ন রসের ভ্রম্য রচনা নিয়ে বেরিয়েছে শ্চীন-সাহিত্যের এই অপ্রবিক্টেল।

ক্লাসিকাল বা পপ্ডন্ত দ্বজাতের পাঠকদের জন্মই এ-বই

প্রত্যেক সাহিত্য-রাসকের বেডসাইডে রাখার একমাত্র বই। ১৫০০০ লোকের জ্যার একখানি বহুপ্রশংসিত উর্দ্ধ অনুবাদ

শের শায়রী

২য় মন্ত্রণ ॥ দাম ৬.০০

নত্ন পৃষ্ঠক তালিকার জন্য লিখনে
বিশ্ববাদী প্রকাশনী ॥ ৭৯/১বি মহাস্থা গান্ধী রোড ॥ কলকাতা-৯

ভাং সেইলেভা ৰস্থ আন্তি জিও ডাং এস. এম. পাণ্ডে আনি কিএম বিষ্কৃতি কি কিছিল প্ৰান্ত ৰাক্ষণৰ জুলা ৬ ঘৌনবিজ্ঞানের রঙীনও বহুচিত্রে টিটিভ ডাডি আধুনিক সংস্করণ কোহন লাইবেরী ০০০ হুর্যালন জুটি আগ্রিম ৬.টাকা গাঠাইলে ডাকমান্ডল ট্র

গ্রহিনীদের রামার জন্য খাণ্টি খবর!

গৃহিণারা সবসময় রালায় আগমার্ক গুড়ো মশলাই বাবহার করন কারণ আগমার্কের জানষ ১০০% খাণটি হয়

'ভাটা গ'্ডো মশলা শ্ৰ্ আগমাৰ্ক ব্ৰুই নয় এৰ পেছনে ব্ৰেছে ভাষতের শ্ৰেণ্ড স্বশলা ব্যবসায়ী কৃষ্ণচন্দ্ৰ লন্ত (কৃষ্ণমী) প্ৰাঃ লিঃর চার প্রাংবের অভিন্তভা ভাটা গ'্ডো মশলা অভি আধ্নিক কারখানায় প্রস্তৃত হয় এবং গডল'মেন্ট ল্যাবরেটারীতে বৈজ্ঞানিক প্রখায় পরীক্ষিত হয়ে ৰাজ্যেং বিক্রের জন্য প্রেরিত হয়। কলে ভাটা গ'্ডো মশলা সৰ সময় খাটি ও উহতে মান্যুত্ত।

जागे।

গ্রু ড়ো মশলা রাল্লায় ১০০% নিরাপদ

बन्दार्थ श्रवाधिक विकास्त्री



পঠিং বইয়ের আকাল

পাঠা বইমের সংকট দেখা গিয়েছে সারা দেশে। বছরের আর্থেক হন্দ্রে গেল এখনও অনেক রাজ্যের ইম্পুলে ছেলেমেয়েরা পাঠা বই জোগাড় করতে পারে মি। আমাদের পশ্চিম বাংলাও বাদ বাদ নাম না সরকার যে-সমস্থ পাঠাবই প্রকাশ করেন তাও পৌজা পথে পাবার জাে নেই। সংকা সহায়িকা গোছের কোনো বই না কিমলে শ্বলসম্লোর সরকারী পাঠাবই পাওরা যায় না। অনানা পাঠাবই তাে ছাগাই হচ্ছে না। এই সংকটের মূলে রয়েছে কাগজের অভাব।

সম্প্রতি কেরলে এবং উত্তর প্রদেশেও পাঠাবইরের সংকট খুব তাঁর হয়ে দেখা দিয়েছে। কেরল সরকার দব পাঠাবই প্রকাশের দাছিছে নিয়েছেন। অথচ কাগজ নেই বলে জারা বই ছেপে বাজারে দিতে পারছেন না। উত্তর প্রদেশে পাঠাবইরের সংকট এমন তাঁর যৈ সরকারকৈ বাধা হয়ে সকল কলেজ আগমা ১লা আগস্ট প্রক্তিছাটি দিতে হয়েছে। বিধানসভায় বিরোধীরা শিক্ষামতাক্তিক সংক্ষী সাজনী করে ধরে ছিলেন। বলা বাহালা এর কোনো সংত্যক্তনক উত্তর শিক্ষামতা নিতে পারেন নি। বিক্তিশ্বস্থান প্রতিষ্ঠান কালে প্রকাশে সংকট দরে হ্রার কোনো আগা দেখা যাছে না।

কাগজ আৰু দৃশ্পাপা। এই সংকট যে আসবে সরকার আগে থাকাতে তা চিল্টা করলে অবস্থাটা এ রক্ষ দাঁড়াত না। গত দুই দুখাকে শিক্ষার প্রসার ঘটছে, স্কুল-কলেজের সংখ্যা বেড়েছে বিস্তর। শিক্ষাথানির সংখ্যাও বেড়েছে সে অনুপাতেই। এলের চাহিলা অনুযায়ী বইপত জোলানের কথাটা শিক্ষানিরামকদের চিল্টা করা উচিত ছিলা। রে জন্ম প্রয়োজন ছিল কাগজের ইংপাদন বাড়ানো। শ্নাকে আশ্চর্য হতে হল যে গত চৌল্প বছরে ভারতে একটিও নতুন কাগজের মিল তিনি হয় নি। বত্রানি বাগজের মিলগালোর উৎপাদন চাহিদার ভুলনায় নিতানতই কম। তার ফলে বাড়ারে কাগজের মিলগালোর উৎপাদন চাহিদার ভুলনায় নিতানতই কম। তার ফলে বাড়ারে কাগজের দিতো কাগজে বাড়ার বাজি কেন বাড়ার যাকে তার লাম এত বেশি যে প্রকাশকদের । এ বাসভেন হয়ে প্রডেছে। উত্য হাজে তার লাম এত বেশি যে প্রকাশকদের । এর আসভেন হয়ে প্রডেছে। উত্য প্রদেশের প্রকাশকর তো পঞ্জাশ শাতাংশ দাল বাজাবান দাবি জানিরেছেন। এই বাজাবে ছারান্ধ বিদ্যা বাড়িত দানে বই কিনতে হর তাহালে জানেক ছাতারই পড়াগোনান ইতি ঘটবে।

ভারতীয় প্রকাশক পরিষদের সভাপতি শামেলাল গংশ্ব এম-পি বলোহন গত এক বছরে কাগজের দাস আড়াই গুণে বেডেছে। তার সংশ্য পালা দিয়ে বেডেছে ছাপার কালি কভার পেপার ও বই বাধাইরের দাম। তাই তোদের দাবি পাঠা-পাল্ডকের দায় পঞ্চাশ শতাংশ থেকে ১০০ শতাংশ বাড়ানো হোক। প্রকাশকদের দাবি সাকের যাচাই করে দেখবেন। কিন্তু অফাদের আশংকা লয় যে, এই বাছতি দাম বই কিনতে ছলে এই গরিব দেশের গবিব বাপ-মারের ছোলালোদের পড়াশোনা বাধ হবে। ছার আস্থিতার সাড়বে পালীকার টোকাটাকি বাড়বে। কাগে সালা বছর ভাগের অনেকেই বই ডোখে দেখবে শা। প্রীকার সময় টোকাটাকি ছাকা গালাভার ভাগাকর না দাকের।

সব দেশেই পাঠা প্ততকের দাম খব কম রাখা হয়। আমাদের দেশে তে। তা আরও বেদি দরকার। সব জিনিসই অপিমালা। অধিবাংশ ছাটছাটী অপ্থিতিত ভুগছে। দু-বেলা ভাল খাবারের সংক্ষান যাদের দেই তারা বেশি দামে বই কিমবে এটা আশাই করা যায় না। তাই পাঠা পাতক নিয়ে খোলা বাজারের বাবশা করতে দিলে আমাদের শিক্ষা জগতে নৈরেছা জাসবে। সরকারের কাজে তাই নিবেদন কাগজের বাজার গ্রামাগলান। প্রকাশকদের নাখাম্লা কাগজ সরবরাহ করে নিধ্বিত মালো পাঠাবই প্রকাশে সহায়তা কর্ম। লক্ষ্ম লক্ষ্ম ছাত ছাত্রীর ভবিষধে এর সংগা জড়িত। পাঠা পাতকের কাগজেন কাগজোবাজারি দঢ়ে হাতে বন্ধ করতে বা পারলে শিক্ষা জগতে চরম সংকট খনিয়ে আসবে। এমনিতেই শিক্ষা নিরে ছিনিমিনি খেলা চলছে। পারীকার নামে চলছে প্রস্কান। তার ওপরে বদি পাঠাবই বাছার খেকে উথাও ছার বায় ভাছেলে পড়ালোনা যে কট হবে আ গাক্ষমবাটী ক এই ক্ষম্পার দিকে একটা শক্ষম ক্রেমার



'यके।'

را کی،

'ভ 'বা।'

.g. - 30 1.

'বউ গ্যো।'

'আহ্ এমন ছেলেমান্থি গাড় এতো ভাষৰার কি আছে: দেখো ঠিক ফিরে আস্থান কে

চমকে উঠাল অর্ণ। এতান নাক মাহাত নিক্পালক ছিলিয়ে ছিল নালিমার মথের দিকে। ছাত ঝাকে পড়ল নিগর লায়িত পরীরের কাছাকাছি। মাথ শাদা। তীক্ষা নাকের জলা একটা বেন বে'কে গোছে। দা ছোড়ক গোড়ায় বন্ধনার একটাকুও কল্পুক কেট। দাটি ঠোট শাক্ষনা। খাতনির নীচে ব্রুক বর্ধার ক্ষিটার মধ্যে নিগ্র মাথমান্ডল একটা দ্যাতে গাতে লাম্বে ক্ষেয়া।

ৰংকেৰ মধ্যেকার সমণ্ড রছলালী বেন মুহত্তে জড়িয় । বলা পাকিমে গেল অনুগের। শ্বাসনালী, দুটোখ জনালা করে উঠল। মের্দাড়া ধরে মীবা-রজভাল, প্রণত চাপা শিত্রণ।
নল্পায় টন্টন করে উঠল হঠাছ।

'অপিনি স্বোজা হয়ে দাঁজান' শাতিক শাস্ত এক কঠিক ওর ঠিক পিছনেই।

পিঠের ওপর মিন্টারের নরম হাত প**ড়ভেট লোজা হল** ওবংব। হলাল করে তাকাল নিন্<mark>টারের দিকে। জারকেল-</mark> হ[া]ন নির্বাক।

'কটার মারা গেছে?' ভিজনে ভরংকর ভেজে পাইকেও অবংগ্র কঠেশ্বর এ সময় অভি সাধারণ। গলার বেন শ্রকনো বাগ্রহ ধহার শব্দ।

, गई लक्ष्रे ब्राध्या.

'इंडोर?'

দিপেরে তো ভাল ছিল। জ্ঞান হয়েছে স্বাঞাবিক্তাকেই। তারপর হঠাং যে কি হল। নিস্টাকের গলার বৃথি মুহুভের জন্য কৈছা হতাশা, অসহায়তা। THE PROPERTY.

कार्य दकान कथा कार्ट भावन ना ব্যবিদ্যার বিছু নার সংখ্যা মিশে-রাওয়া লাস নার্ভার দিকে এখন ও পিছন-ফেরা। আরুল কি দেখতে বা ভাবতে ও নিজেই क्षाम मा गाम जकात्रल जिन्होत्वर निक काकिया पारह।

কাপনার আর কোন ভিজিটার এখনো জালেন নি ক্ৰি?

'থা।' অর্ণ বোকার মত তাকাল मिन्छे। दब्र व मिटक ।

সিম্টার কি ভাবল, বলল আপনি অখানে বস্ন! এ সময়ে বাডিব () **48** থ কুন সামনে। জনা বাবদথা পরে হছে। ছোট কাঠের ট্রেপটা এগিয়ে দিল অরুপের जायता

অর্ণ একবার নীলিমার ম্থের দিকে তাকাল। সিম্টারের যদ্যচালিতের মত চলে ষাওয়া দেখতে দেখতে বোধ হয় কেউ ওকে ঠেলে দিয়েছে—এইভাবে শব্দ করে '**বসে পঞ্জ ট**ুলটায়। আবার তাকাল मीनियात पिरक। श्थित निष्मां मान्ति। কৈবিয়ের সিলিং-এ ঝোলানো পারানো পাখাটা নিয়মিত গতিতে বিশ্রী শব্দ করতে क्रमां द्वाम क्षकते क्षकते करत मगरा ষাওয়ার ইপ্সিত দিকে। অর্ণ পাখার রেড়ে চিম্তাহানি দ ভিট বোলালো। তেতের প্রাণ্ডগালি একটা অসপণ্ট সচল বাস্ত তৈরী করেছে চারপালে। অর্থের দ্রচোথ পাখার কেন্দ্রে কয়েক পালক দিথার হয়ে সতে গেল।

একটা পরেই অর্ণের মা আসংব দেশতে। সংশ্র ছোট বোন দিদি-জামাই-বাব, ছোটভাই, ছোটকা নীলিমার বাভিন্ত কেই না কেই। সকালে মা ছোট বোন এসেছিল। খুব কথা বাসেছে নীলিমা তথন। ডাঙার বলেছিল আজ সংখ্যের মধ্যে হয়ে যাবে। এই খবরটা আফিসেই বাড়ি থেকে ফোনে জানিয়েছিল অর্পকে। অব্ন তারপর থেকে অফিসে থাকতে পারে নি। ছটফট করতে করতে বেশ কিছুটো আগেই क्रक क्रान्स क्रथाता जनामनक म्हि হাতঘড়ির ওপর থেকে সরে গেল। এখন ঠিক সাড়ে ভিনটে।

অর্ণ হঠাং যেন ভূলে গেল নীলিমা আবার নেই। তলাহার খাটের ধারে কন্ট রেখে অবার ঝাকল।

া....এড কেন ঘুমোও?'

'বউ।'

1°€°1′

'ও বউ শ

1 TE 12

'বউ গো।'

লক্ষ্মীটি ভূমি ওরক্ম কোরে না। দেখো ঠিক ফিরব। প্রথম বাচ্চা হতে গেলেই এত ভর পেতে হবে ৷ কে বল্ল তেমেকে ৷'

'রাচ্চা একটা গেলে আর একটা হবে। law and on-

আছা। কি বা তা বসছ? দেখো कामना माअपने प्रकरत। आयदा माअपने ৰে তোষার। ফিরতেই হবে। না ফিরজে **ख्यामात् व्यामात्र मृक्षत्नदेश स्थ कप्छ।** सान्त्री ভাবতেই পার্রছ না"

অর্ণ কেন যেন দীলিয়ার শ্রীর-ঢাকা ছাই বং চাদরতায় হাত দিতে যাছিত। চমকে হাত পরিছে নিল। সোজা হয়ে বসদ। পিছনে কেবিনের কাঠের নেয়ালে द्रमान मिन। এउ कर्ष्टे युक "वामनानी **যেন শ্**ঞ্জা আলভা ভেইন দেলার অরুণ একটা সিগারেট থেতে किन्यू ना अवण्ड हेटाइ क्याइ ना। यत्न সামনের কাঠের দেয়ালে চোখ রাখন। সিলিং-এর ক'ছাকাছি একটা বড গার্ড। ওপাশে বাইরের বারান্দা পেরিরে থানিকটা जात्ना, जाकाम वृत्ति इठाए इठ र कार्य পড়ে। অর্ণ স্থিয় ওই দিকে থাকল। কানে লাগছে বন্ধ হয়ে আসার মত পরেনো পাখাটার সেই ঘানের ঘানর

দ্দিন আগে অর্থের মা বোন নীলিমাকে এই ম্মিং েয়াব ভাষ্ট ভাষ্ট দিয়ে গেছে। কাল সন্ধোয় ওর সংগ্র শেষ দেখা। কোঁবন থেকে সকলে সরে গেলে অর্ণ বলল 'বউ তুমি ভয় পাছে না তে:?'

নীলিমা হেসে ফেলেল। তিমি ওরকম 'বউ' েলে না তো। শাইবে স্ব দীড়য়ে আছে। শানতে পাবে।

'কেন তুমি আমার বট না?'

'তা বলে যেথানে-সেথানে এভাবে ডাকবে?' নলিমার দুটোখে কুতিম ধমক। 'সতি৷ তুমি ভয় পাচ্ছ না তো?'

'একটুও না। বরং তুমিই ভয় পাছ। এখন যাত ভো।' নীলিমার ঠোটের কোলে মৃদুহাস।

'যাচিছ।' একটা থেয়ে নীলিম⊤র বিছানার কাছ থেকে স্থা যেতে যেতে আবার ডাকল, বউ। অরুণের সারা মুখ কৌতকে ঝকঝকে।

নীলিমা খিলখিল করে হেসে উঠল। 'কাল এসে। ধর্লাছ এখন হাও।' 1.30 অরুণের দিকে থেকে দৃণ্টি সরিয়ে দিকে মাখ ঘারিয়ে নিল ন্টাল্যা।....

অরুণ হঠাৎ তাকাল নিঃসাড় নীলিমার দিকে। এই মুখে কাল বিকেলে তিন বছর আগের নীলিমার সেই হাসি দেখেছে। খটি গ্রামের মেয়ে নীলিমা। স্কুটলর স্ব-চেয়ে উচ্চু ক্লালে পড়ছিল তথন। অর্গদের বাড়িরই পছল করা জব্থেব বউটি হয়ে এলো কলকাতায়—ওদের বাড়ি। বিষ্ণের একদিন দিন পনেরো কেটে যাওয়ার পর রাতে বিছানায় বসে নীলিমা জ্ঞানেন আমার ভীষণ ভয় করে।

'উহ*ু কথাটা ঠিক হল না। এখনো 'আপনি' কেন্দু সেদিন ভুচি বললে জার কোনদিন ভূল হবে না। আমি আর কোন কথাই শানব না" অর্ণ বিহানায় শায়ে नत्रा वाणिराम्य म्हीनक कुरम मृकादन करन नीजिया विकासाझ छेके बरमञ्जू । जार, বৰ্জোছ তো জাপনি আমার থেকে বছু। আমি 'ভূমি' বলতেই পারব না।'

क्षक्र किए ना मन्द्राठ शाखदाद जान করে ভাকিরে রইজ। মাথের কৃতিম কৃতিন शाम्खीरा ।

'রেকো গোকে?'

অর্ণ চেসে ফেলল। দেখতে দেখতে কি যেন মনে হল অর্থের। এই শোন। कामिटक जम। **'ξφ** ?'

'একোনা।' বলেই মাথার বালিশের দ্ব-প্রাণত থেকে হাত সরিয়ে নীলিমার হাত ধ্রে জোরে টানল বাকের কাছে।

'টঃ বাববা। বল' নীলিমা সরে এল।
'তোমার বিহুক্ত তাকিয়ে থাকলে আমি নিজেকে এত ভয় পাঠ কেন বল তো?'

নীলিমা সতিটে অব্যক্তর মত তাকিয়ে বইল অরাণের দিকে। কি যে সব কথা বল আমি তার মাথামা ড কিছাই বাঝতে পারি না'

'তুমি এত নিম্পাপ, সরল।' 'शोख।' स्ट्रीलिया यादा शक्कत एएकविम লজ্জা। এক সময়ে অরুণের চোথে চেন্থ রেখে বলাল ওতামারে একটা কথা বলব :

অমাৰে তুমি বিয়ে করলে কেন বল তো :'' 'কেন ।'

'তমি কত সান্দর দেখাত কল শিক্ষিত প্রচর প্রসা তামার বলতে বলতে কাকে পড়ল অংক্রের বি কি সান্দর কল । জ্যো কলকাতায় ভাল ভাল মেত ছিল ভোমা। জানা।

ভাল ভাল মেয়ে। মানে? সনেককে বিয়ে করাব কথা বলছ?'

'না সতি। জান আমি কতবার একথাটা ভেবেছি।' নীলিমা যেন অনাহানস্ক।

'ভাবছ বুঝি তোমাকে একদিন ছেড়ে পালাব?' অরুণ হাসল।

'যাঃ কি যা তা ব'লছা' নীলিমা অরুণের ব্বের মধ্যে গভীরকরে লুকোল। 'তুমি সে রক্মই নও।' নীলিমা মুখ ঘষছে অনুপের বুকে। 'এখন আ্যার, কোনদিন আর কারো হবে না হতে পর্চনা! একটা থামল অর্ণের ক্কের গভীরে মুখ ভোবানো নীলিমার। দম যেন বংধ হয়ে আসছে। আমি জানি আগেও তমি কানের না। তোমাকে দেখে আমি ঠিক ধরেছি।'

চাপা খাশীতে জারামে নীলিমার পিঠে হাত ঘ্রছিল অরুণের। হঠাৎ থেমে গেল। কেন যেন সারা শরীব ঠাডো শক্ত হয়ে গেল। কয়েক মহেতে অর্ণ নিঃসাড়।

কি হল তে মার?' নীলিয়া সোজা इत्य सनन। भारीय बाबान नागरह ?' আর্শ নীলিফার চেপে চেনুগ বাখল।
সেই বড় বড় চেনুগ মে চেপে ভ্রংকর
বিশ্বাস শৈশব-কৈশোর থেকে সহজ্বত হয়ে
আছে। সেই নিশাল চিন্ত, চিনা শই
প্রাণত থেকে সীমা বরাবর সেই এক অভ্তত
পবির প্রজ্ঞান হাসি, দ্যু-চেনুখের দ্ভিতে
ক্ষেত্র নিশ্তরণ্য পরেক্রের জলোর গভার

'কি দেখছ?'

'আমি থবে ভয় পাই নীলিয়া।' 'কেন বল তো?' নীলিয়া ভীত ক্ষসহায় শিশাব মত তাকিয়ে আংছে। 'জানি না।'

'আমাকে তুমি বলতে পার না?'

একট্র দমল নালিমা। পদ্ধো তেনের

যাই হোক আমাকে কগলে ভোমার সব

ভয় কেটে যাবে। কোনদিন তুমি নার ভয়
পাবে না।' নালিমা নিশ্লসক জনথইে

যাব্বে । হঠাৰ নেতে পাৰবেই না, আমি
জান।'

"কি কার।'

শোমি তো আর কোনদিন এসব জিজ্ঞানট কাব না ভা-টা

লিছত কথা ৰলছে নালিমা। রহসা-ময়। নালিমার কথায় বোধ হয় কঠিন ঘটিমান ছিল। অথ্য স্পার করে তাকিয়ে মাছে ওর দিকে। যেন সব কিছা উপোন্ধা বরতে পারে সহজেই।

মর্পের কি হল যেন হঠাৎ বলগ, ক্ষোম কিন্তু সাপৌ নীলিয়া।

े भौतिमी कलेकल करत रेश्ट्रफ - डेर्डल भारत १

িবয়ের মালে অনেক মেয়ের কাছে আমি গোছন

নীলিমার চ্যেথ বড়। সকোকুকে বলল হাত্যা: কলনাই তথ্যন, হাস্তো

বিশ্বাস করে। নীলিয়া। তাদের কোন দোষ ছিল না। স্ব আ্মার— অরুণ সহজ করে ন্যতে তেয়েছিল কেয়ন অভূত হয়ে গেল শ্বন্যলো।

ক্ষেত্ৰ ক-ঠবৰে নীলিয়া বোধ হয় কিছা হাবলা হঠাৎ বলস চুপ কৰে৷ তো, অমি সৰ বাঝি।

বিভাই বোন না। এরবুল এমন্
প্রিকোর হতে চাইছে নহালিমার স্থান।
সালা দেখালোর ওপর থেকে করেকটা
প্রেনো দাগ মধে মধে তুলে দিতে চাইছে
তিরকালোর মত। বালল কোন কোন মেয়ের
ক্ষতিও করেছি। গ্যাসার অভাব দেই,
ব্যস্তি ভারতের, মেয়েরাও চইত মাসাকো
তেই হয় হয় নহালিমা ভাষ্য বন্ধ হয়।
য়র্ণ দ্টি অন্দিকে ঘোরাণা কোথাও
যের গ্রাহার খাজিছে।

নালিয়া শ্নেছে মন দিয়ে। নিবেধি অসহায় ভণিগ ওব। এখনি কি বলবে ঠিক করতে পারছে না।

'তুমি অনুমায়, ফেজা করছ ?'

নীলিমা শ্লেন ভিতৰে কে'পে উঠল। 'কই না তো?'

'ক্লিভো'

পাতিয়া দীলিয়া হঠাৎ ক্ষমেরণত হেসে উঠল। 'আগের কলা ছেছে দাও।' এপট্র দুম_ুনিল যেন।' আগের ফাউকে ভালং সতে পার নি বলেই তো আমার কাছে এসেছ। পদ্ধত মতিজ্ঞা মহ গ্রামু হবর নীলিমান। বাইরের মাুখেন্ট্রোলে নোধাও সেই অভিজ্ঞতার বেখামাত নেই। স্থাম আমায় ক্ষমা করত তোঃ

হঠাৎ হাতের মাঠো দিয়ে অব্যান্তর মাঝ চাপল নালিকা। বি য়ান্তা বসত্ত স্থায়ি জানি তুমি এসব না বলগেও তুমি আর কোনিন্দ কাবোর কাতে যাবে য়া।

স্কান্ত-সমগ্র

স্কানত ভট্টামর্থার সমগ্র রচনার সংকলন

DO .O. BIN

বিশিশ্ট প্রবংধ গ্রান্থের সাম্প্রতিক প্রকাশন

সাহিত্য সমালোচনায় বঙ্কমচন্দ্র ও রবীন্দ্রনাথ

नरकान्द्रमाथ द्वाप

भरतमहत्त्व प्रकामकाव

भाग २०.00

সংস্কৃত ও প্রাকৃত ভাষার ক্রমবিকাশ

রবীনদ প্রদকার প্রাণ্ড গ্রন্থ

माभ २४.००

পালি ও প্রাকৃত সাহিত্যের ইতিহাস

ভাবিশ্লাশ বলেলাশাল

সংস্কৃত সাহিত্যের ইতিহাস

अक्रमात्रा नाविकल

শক্রস্তলায় নাট্যকলা

रक्षावरक्षमाञ्च वज्ञाः

H.00

F OO

ভারতের অর্থনৈতিক ইতিহাস

ব্ৰেশচন্দ্ৰ দত্ত

24.00

আধুনিক কবিতাঃ বিভিন্নতা বিশ্বদ্ধতা ইত্যাদি প্রসঙ্গে

ত্ৰ্পু সানাল

¥.00

8.00

8.40

সাম্প্রতিক ক্ষাইতা গ্রুথ

6.00

4.00

নদীর নিশ্চট ডোগেন্দ্র মিত্র

ইভিহাসে ট্রাজক উল্লাসে বিষ্ণু দে

রাজ্ঞানী ও সধ্বংশীর গাল জোতিরিক্স থৈত সংগ্রু বাইছে মার্ডিড

অর্ণ মিচ

.eoo **জামায় রড়ের দাগ** মণীনর রায়

देवनी मन

মংগলাচরণ চটে**নি**শ্বায় **পাবলো শের**ুদার ক্ষিতা

এরই নাম অন্য বাংলাদেশ তর্গ সামাল - ১

৩.০০ দশ . ৪.০০

(2)

সারস্বত লাইবেরুরী

২০৬ বিধান সরণী কলিকাতা—১ থত বিশ্বাস ? অর্ণ উঠে বসেছিল একটু আলে। দেরালে ঠেস দিরে বসল এবার। কিব্ছ জানো নীজিমা আমি ভোমাকে না বললে কিছতেই স্বস্তি, শাস্তি পাজিলাম না। এতদিন তোমার কাছে গোপন করতে আমার এত ভ্র।

নীলিমা কিছু সময় দিথর তাকিয়ে থেকে যেন ঝাঁপিয়ে পড়ল অরুণের ব্বে । 'তুমি আমাকে ভয় করতে যাবে কেন?' 'তবে?'

'একটাও ভয় কর না ত্মি আস'স খ-েউ-ব ভালবাসো তো তাই ভয়. নীলিমা একভাবে মাখ ঘষছে অব্ণের ব্যকে। দ্য-চোখে জল।

অর্ণ চমকে উঠল নীলিমার কথায়। হৈয়ত তাই।

'হয়ত নয় এটাই ঠিক।'

অবনে দুহাতের মুঠোয় নালিমাব ভিজে চিবুক ধরে সামনে আনল। অ্বসে তোমাকে খবে ভালোবংসি বলেই সব ভূসতে চাই। তাই ভো এমন করে ব্যস্তামা

'তুমি আৰু কোথাও যাবে না তো।' 'কোনদিনও না।'

নীলিমা দ্রচাখ বৃ্জিয়ে অর্ণের ব্যকে মাথা রাখল।

<mark>'নীলিমা'।</mark> অর্ণ কিছু পার িংস **ফিস করে ডাকুল**।

'উ'হা, নীলিমা নয়।' 'তবে?' অরুণ অব্যক।

'বউ।' নীলিমা ভিজে চোখে হেসে উঠল কলকলিয়ে। 'বউ।'

হোঁ। জান আমার বাবা মাকে বউ লে এখনো ডকে। মানের বিলো দলে এ সই আগোরদিনের মত দশ বছর বয়সে। সই প্রথম থেকে বাবা মাকে বট বলে লকে। জাজত একদিনের জনোও বাবা াবে মগড়া দেখিন।

'বউ' বাঝি থাব প্রমান্ত।

'থ-েউ-ব।' নীলিমা থামল। তোমাদের **১ই নাম ধরে** ডাকাটা বিভিছরি স্নতে। তেগা 'লেকে কিন্তু বলবে গ্ৰেইনে।' 'বলকুক। তুমি তো না?' 'একটাও না।' 'তবে?'

'বউ।' নীলিমার দুচোখ বে'জানো। ওর ঠোট সরিয়ে অর্ণ হঠাৎ ডাকল।

'উ**'**।' 'জ-বউ'

'উ*-উ* 'বউ গো।'

'উ*-উ*-উ*।' এবার ঝণার মত স্বচ্ছ সাদা ফেন্য তেনে উঠল নীলিন।.....

নীদিমা কি সাদের হাসছে। কেবিনের মধ্যে বসে চমকে উঠল অবান। হঠাৎ সারা পরীর ছমছম করে উঠল। একটা একটা করে কথন যেন ঝাকে পড়ছিল শায়িত নালিমার মাথের দিকে। যেন ধারক। থেয়ে সোজা হয়ে বসলা বাদিমার মাথেটা এমনহার অসহায় হয়ে পাতে এছি এইন দাহাতের মাটোর আলতা করে ধরে জঙ্গে দিতে ইচ্ছে করতে অবানের।

্রাধি-ভাব খ্যাছ: ভালভাবে শোও, ঘাড়ে বাথা করবে না।

আচ্চমক। হ্নে ভেংগে গ্রেড নাঁলিয়ে সোজা হয়ে শালো। সদা অফিস-ফেরত অধাপকে দেখল ও। 'এই ফিবলে?' 'এই মাত। কেন?'

'ন্ত এমনি বলছি।' একট, অন্যন্তক নীলিমা। তবু মূথে হাসি লেগে আছে। 'একট, আমার পাশে বোসো তো।'

অবংশ ঈষং বিদিনত। বসে বলস কিছা বলবে শানীলিমাকে তাকিয়ে থাকতে সেখে আরও থনিও হল। তুমি বৃদ্ধি তয় পাজাং

নীলিমা অর্গের হাতে হাত বোলাভিজন। হঠাং বলাল, পতাুমার কি ফিছা হাহাছে?

'কেন্

'কদিন কিংকম তান;মন্দ্ৰক যেন। এরকম কিল্তু কোনদিন দেখিনি।' ভিতরে চমকে উঠল অর**ুণ। স্থি**র তাকাল নীলিমার দিকে।

'আমার কথা খবে ভাবছ তো?' 'না' অরুণ গদভীর। 'তবে?'

অর্ণ মহেতে কিছা ভেবে নিল। হঠাং হেদে ফেলল। সে পরে বলব ভূমি হাসপাতাল থেকে ফিরে এসো।

কেন এথনি বল না।

অরণে অকারণ বেশী হাসল। কত মজার কথা আছে। তোমবা দুজন এক-সংশা ফিরে এস দুজনের সামনে গংপ করব। '

শরীরের মধ্যে সণ্ডান জন্ম নেওরার পর থেকে নীলিমার যেন একটা অভিমান বেড়েছ। হঠাং যেন অভিমান হল ওব। বল না। একটাখানি জোর দিয়ে খামল। বেশ ডাম যতঃ গোপন কর আমি কিন্তু ঠিক ব্যেতে পারছিং

অবাণ বল গ পারে নি। বলাত গিরেও সংতান থাং করে তাংগাং প নীলিমার নামনে কেন হোন অবাণ নীবব হার গিয়েছিল। ভেবেছিল সদাজাত শিশ্ আরু নীলিমা-নাজনাক একসংগ্রাস্থানে রেখে অবাণ সে বথা বলবে।

কিণ্ডু কি করে বলবে আর ? অরুণ হাংকর জান। নিংশালো লালাভার মাধা নীলিমার আনিত্ম মাথচ্ছবির দিকে এক পালক তাকিয়ে ইছল। স্নেন্দা—যার কথা কোনদিন ভোমায় বলতে পারিনি বউ দে দুদিন আগে আমার সংশা শেষ দেখা কারছে।"...

াক ঠিক করলে? সামননা ও গাড়ির মধ্যে বসে বলল। দা-হাতে ভিয়ারিং।

আমাকে ছেড়ে দাও ⁽ 'তুমি ভয় পা**ছ** '

'তোমার সন্তান কিছ্তেই আমার নর। অর্ণ গাড়ির মধ্যে যেন ভবিণ চীৎকার করে বাসতে চেয়েছিল তেমন করে পারল না। শব্দগালো নীচু সারে অব-লীলায় বেরিয়ে এল।

শাত সংযত কঠিন কণ্টস্বরে সানালা চমকাল। 'একথা তো সেই দেখা হওয়া থেকে বলে আসহ।'



अश्राकाम र्वाक शारेरको निः १६ को वीरे क्षेत्रकार

939

সম্পাদ্ধ জীতুমানকান্তি ঘোষ



সর্ফীন্ণ উপন্যাস

গ্রহণ

আশাপ্রণা দেবী
সতীকান্ত গ্রহ
প্রভাতদেব সরকার
অতীন বন্দ্যোপাধ্যায়
শ্রীলেখা বস্কু
দেবলদেব বর্মা
ইমদাদ্রল হক মিলন

প্রফল্প রায়
বীরেন্দ্র দত্ত
সমীর রন্দ্রিত
দৈলেন রায়
চন্ডী মন্ডল
নিমলি সরকার
শংকর দাশগ্রত

কামাল হোসেন

প্ৰবন্ধ ও আলোচনা

পশ্চিমবঙ্গ প্ল্যানিং বোর্ডের সদস্য পারাশাল দাশগংশ্ত লিখেছেন একটি বিশেষ নিবশ্ধ

অথ নৈতিক সংকটে ছায়াযুদ্ধ বনাম প্ৰকৃত্যুদ্ধ

অন্য যাঁরা লিখবেন
বিশ্ব মুখোপাধ্যায়
সরোজ বল্দ্যোপাধ্যায়
রণেন মুখোপাধ্যায়
শিবদাস চক্রবতী

শান্তমান জনশ্রির লেখক ক্রি জ্রীবারশিলনাথ দাশের ভালোবাসার মনকাড়া কাছিলী। শেষ লেগ্ন

অম্তের স্পরিচিত লেথক শ্রীষদ্ধীশ বর্ধনের রুন্ধশ্বাস গোরেন্দা কাহিনী নদ্ধী, নারী, নখ্

নতুন লেখিকা শ্লীমতী দৰিভা দেনগ্ৰেপ্তর অভিজ্ঞতা সম্প্ধ হ্দয় কাহিনী ছায়া আলোৱ নক্ষা

দাম তিনটাকা পঞ্চাশ প্রসা

্তা ছাড়া জামার লাব কিছ**ু ক**লার নেট।

সনেশা মধ্যে করে তাকাল অর্যুগ্র দিকে। আমি ভামাকে ছাড়া এখনো এক মাহাতে ভাবতে পাবি না।

'कृषि अरमरकत मरणा घातरत मन्त्रा।'

্তেয়ের সংশ্রে অনেক বেশী।

"তার কারণ তুমি নিজে।"

হোক ৩বঃ তোমাকে আমার বড়
নাইস লাগত। গাড়ির বেল মন্থর হয়ে
এলো। তাকত তোমায় বড় ভাল লাগে।
জান আমি তোমাকে নিয়ে স্টেলড হতে
চাই। লনোর হ'লত ছেলটো আক না।
জাকটার আল আমার তো। একটা অমন কলল, সে বাইরে থাকবে। কেট জামবে
লা। তোমার অস্থিবিধ কি? মনে করে
সেম্বিধ আলোক করে। তামাক করে।

কা হয় না। বলেছি তো আমি সাক্ষেত।

ভই প্রামের মেকের সংগ্য ছড়িয়ে স্থাবেন্ত ভাবতে ভাল লাগতে তোমার। গামের মেয়ে বউ, ওমাইফ। ইস! নামিন, ইলিটারেট ইডিয়াট ফাল, কম্পানিয়ন। স্থাক্টিকালি ইনট্লাবেবল।

থাক সামাকে নামিয়ে দাও।

এই শেষ কথা? গাড়ি থামাল সনেলা গুলার বাবেঃ



ক্ষরণ গাড়ি থেকে নামতে চেন্টা ক্ষরে নিয়ন্তর।

জনুপ, পার কদিন বাদেই বাইরে চলে বাজি চল আমার সংগা। প্লীক্র।

আৰু আমাণের জ্যোনীগন বেন দেখা না হয় স্বান্ধা। তথা হাতিতে পা রেখে আৰু কোনাদকে না তাকিয়ে সামনে সোজা হাটতে লাগল। কেট ব্যি ওকে তাড়া করছে। পায়ের নীচে নরম হাস।

রাণ। আবে একবাসু ভাবে।

न्त् ।

कुन्।

27 1

আমি একথা বলতে চাই তোমার বই। বিভ বিভ করেই জন্ম দুল্টি ব্যেলাল নীলিমার সাদা চাদর চাক। সারা শ্বেণ্র। মাথার ওপর পাখার পতি অনেক করে এলেছে। নির্মিত পতিতে একটা কাচি কাচি দাব্দ কানে লাগছে অল্পের। ব্বেক্র মধ্যে নিংশ্বাস ভারী। দম বন্ধ হ্বার উপ্রক্রম। নাগিয়া। তারণ আবার বেন ভাকল। বিশ্বাস করে। আন্নি তোমাকে কিছা মিধ্যে বলি নি আ্মি কোন পাশ করি নি। আমি সব বলেছি সব বল্ডসুম।

ক্ষেত্র আর কি করে বলব ভোমার?

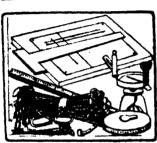
অর্প হঠাৎ উঠে দ্বিল। STIDE TO হাত্র্যান্তর ওপর থেকে দুণ্টি ছারে এল। এখন চারটে, কপালে বিশ্লু বিন্দু ঘার कत्मत्व । याष कम कम कत्र । भाषा जाता मा क्रीरिक्षिक एक्स भाकता। वाकत মধ্যে শ্বাস-প্রশ্বাসের বাহাস ভব্যে প্রাঞ্জা অনিয়মিত, আড়ণ্ট। কেবিনের বাইরে ষাবার দরজার পদটো নিখাত করে আড়াল করা। কেবিনের মধে। ছাই ছাই অন্ধকার। অর্ণ গোপন চাপ, এক আম্প্রভাগ এপান্ডপাশ পায়চারী করণ। একটা বা উত্তেজিত। মর্ল ব্রাংড়ে পারছে ভয়ংকর এক বংটকর উত্তেজনা অস্থিরতায় ওর এই মুহার্ডের भ :51थ लाला

এক সময় নিধার হল নালিমার দাণা ভিজে কাগলের ক্ষত নিশ্রাণ তাশল দ্বানের দামনে। নালিমার দা চোক বোজানো। চোক ধোলা থাকলে নালিমা কি ওকে দেখতে পেত? মতের চোক কি বন্ধ দ্বান প্রথমি মান্যের ভিজ্ঞা দেখতে পার? এখনি মান্যের ভিজ্ঞা দেখতে পার? এখনি মান্যের থিকত. অরুণ কি সেই চোখের দিকে তাকিয়ে সব পালার কথা বা কিছা গোলান করেছে এ কদিন বলাতে পারত:... ভূমি মতই গোপন কর আমি কিণ্ড সব ব্রুলত পার্লছ।...

না। অবুৰে বঙ্গে প্ৰভাগ ৰাজক দেখল নীলিমার মূখ চোখ নাক চিব্রুক ঠোট দেখাতে দেখাত অব্যাণৰ ইঞ্চে তল নীলিমার সারা শরীর দেখে এখন। জাবিত-মৃত-দুই নীলিমাই মাজা ম্বেত পাথ্যের মত পরিশ্বর পবিত্র। মারা শ্রার এখন শত্রু জমাট রছে সাদা। সেই উজ্জ্ব সরল পবিত্র অব্যোধন চির্কালের অন্তর্গন ঘলিও ফ্রন্থের নতিয়ে ওর क्षणं कथन द्वावा श्रद्ध शास्त्र। क्राय ঘন্টা প্রেই মাছে বাবে চরাচর থেকে। অর্ণের মধ্যে ছাড়া নীলিমা আর কোথাও থাকবে না। কেনিদিনত না। অথচ নীসিমা জানল না অর্ণ তার সম্পান আর স্তীর সামনে নতুন করে কি বলতে চিয়েছিল¹ অর্ণ এখন এক। পথে ব্যক্তিভে আফিসে বলধ্যদের সংখ্য বাবা-মা ভাই-বোন মাথের দিকে তাকিংয় অ বাহিত্বজনদের সৈ একা *একেবারে বন্ধহে*ীন নিঃস্পা। নীলিমা নেই। কার কাছে বলবে? নশীলমা! এবার সপাওঁ করে দেখাতে চাইল নীলিমার মাখ। কিল্ডু নীলিমার মাখ তে; THE CHANGE PHOME IT. লীলিমার ম.খ চোৰ নাক-চিব্ৰুক াথায় গোল সৈব সাদা কেন? বিভালায় নার্মিয়। নেই! ন্যালমাকে কি কেউ সদা কাচা বা নতুন কোন সাদা চালর তেকে লিয়েছে। এমন দাধের মত সাদা বহুসাখেয় চার্দিকে। অর্ণ ভাল করে ভাকলে। সাদা একটা পাথর শেয়ানো। নীলিয়া আনি বড় এক তেয়াকে যে কথা বলার ভা যে আর কাউকে বলতে পারব কা কোন্দিশ! আয়ার শেষ মিহা, শেষ গোপনতা পাপ দিয়ে এমন করে কোন্ ব্যক্তির মধ্যে রেখে গেলে ভূমি?

জনামানশক অব্যাবর চ্যোথের স্থানন ব্যাথ একবাল কুয়ালা। ভিতার ভ্রাংকন বংগণা জনালা। অব্যাবর দা চ্যোথের চাণ্য এবন্ধন ধরে ভ্রেস থাকা ঘন অপ্রার পদা ভিশ্নে গলে পড়াটেই ফোনবা উপ্রাক্ত প্রায়ের বাবের ভ্রম্ম কার্ডিছ প্রায়ের বা

মাহাতের সচেতন জন্তবে কর্ণের কানে এল, বাইবের কয়েকটা ইতস্তত সচল পদশৃক কেবিনের মধ্যে এসে হঠাব শতক্ষ নিধ্ব।



শ্বুল, কলেজ এবং ইঞ্জিনীয়ারিং

'' ও অফিলের জন্য শ্টেশনারী, কাগজ, সার্ডে, জুইং,
ইঞ্জিনীয়ারিং ও বাবতীর
উংকৃষ্ট ছাপার কাজের সলেজ
প্রতিষ্ঠান।

কুইক ষ্টেশনারী ষ্টোর্স

৬৩ই, রাধাবাজার স্থীট কলিকাডা—১

ঞান--- ২২-৮৫৮৮, ৬৭-৪৬৬৪; প্রায় ঃ জয়ার্ডিন--- হাওকা পোন্ট বঁল্ল--০৮, হাওকা



পশ্চমবঙ্গে প্রধানমন্ত্রী ও তারপর

১৬ই জ্লোই সন্ধার প্রধানমন্ত্রী শ্রীমকো ইন্দিরা গাংধীর হাওড়া ময়দানে বড়তা শানতে শানতে আমার তিন বছর অব্যান ১৯৭১ সালের ৩রা ডিসেম্বরের সংশার কথা মনে পড়ছিল। হাওড়া ময়দানে দাঁডিছে যে কথাগুলি ১৬ই তারিখে বলছিলেন ঠিক এমনি সারেই কথা বলেছিলেন '৭১ সালের ৩বা ভিসেম্বরের সম্পায়। সেদিন অবশ্য সভা করেছিল বিগেড পাাবেড গ্রাউদেড। ৰেদিনৰ শ্ৰীমাণী গাণ্ধী কোলকাভায় अध्यक्तिम भाग करतक घरते । তরা ডিসেম্বর ছটা বেজে করেক মিনিট। রাজভবনের দাৈতলা থেকে হুস্তভাবে নেয়ে এলেন। ভারপর দ্রতপায়ে গাড়ীতে গৈয়ে উঠাকেন এবং সংগ্য সংগ্য ছড়িয়ে পড়ল একটি সংবাদ : পাকিস্তান ভারত আরুমণ করেছে। দশদিন আগে ইয়াহিয়া খা বলেভিলেন, তিনি যুদ্ধে গাছেন। সেই ষ্মুশ্ধ শ্রু হলো ৩বা ডিসেম্বর। এই তরা ভিকেন্দ্র বিগেড পাকেড ময়দানে দক্ষিয়ে দেশব্দীকে সতকা প্রাহত হতে আহ্বান কানিয়েছিলেন। এবাবও হাওড়া মর্দানে দাঁড়িয়ে সেই একই কথা বলে লেকেন। ক্ষে এটা ডিসেম্বর মাস নয়, এটা জ্বাই মাস ডিসেম্বর আসতে প্রথমত করেক মাস দেরী।

শীক্ষতী গাম্পী এবার কোলকাতার একে যে কথা বালে গোলেন ভার সার মন^৫ इतना, जाबारमय चरत अंतर ताहरत महा अंतर এই শন্তু দিনে দিনে ভার নশ-দদত বিস্তার করছে। বাইবেদ শহু ভারা যারা ভারতের ভূগভান্থ পারমাণবিক বিজ্ঞারণে দুনিয়া জাড়ে হলা তুলেছে। লেমন হলা ভূলোছিল বাংলা দেলের , **ম**্কিম্পে চলাকাদে। সে স্ময় এক কোট্ট মানুষ ষধন ভারতের ব্রুক আছলে পড়ে হা-আর, হা-আর বলে কাত্র ধর্নিতে আকাশ-বাড়াস মণিত কর্মিল সেইদিন এইসব হলাবাজরা ভারতকে এক দানা খনে দিয়ে স্ভাবং ককেনি। আজ আ্বার স্থারত বর্থন নিজের পারে দাঁড়াবার দনে। বিজ্ঞান ও কারিকারি বিদ্যার বাবেসন্দির হবার চেক্টা করছে, তখন কেট ভারতকে সম্প্রসাগশবাদী করে कृश्मा संग्रेगा कর<u>ा</u>ছ। শ্চু শ্বুধ্ বাইরে নর করের শ্রু সম্পর্কেত্ত প্রীয়তী স্বাধনী আঞ্চল উচ্চ करत तमीबद्धा मिट्या तम्हरून । तम्हरून अहस्य পরিকারি ব্যাপ্ততকে ভেডে ক্রেন্সের

নৈরাজ্য প্রতিষ্ঠার যে চক্রাস্ত প্রশীবিতগ্রস্থ বাজানৈতিক নেতা ও বৃহৎ ব্যবসারী প্রজিপতিগোলনী করছে, সেদিকেও প্রধানমন্ত্রী দেশবাসীকে সভাক করে দিয়ে গেছেন। ১৯৭১ সালের সংখ্যা ১৯৭৪ সালের এই একটি মৌল ভফাং। সেদিন যথন পাকিস্তান এবং তার মার্ভিবরা জারতের বিরাশে চক্রান্ত কর্নিজন সেইদিন দেশের অভাশ্তরে এই প্রশিক্ষপতি বাবসায়ী এবং গণতুক্ত বন্ধার নামে নৈরাজ্য স্থিটকারী শক্তি স্থপাপ অবদ্যিত ছিল। কণ্ডেট এটা চলো একটা নতন প্রিণিথতি। জবে ডিসেম্বর মাস জাসতে এখনত সময় আছে। দেশের মান্দ প্রধানমক্তীর আহলানের কথা মানে রেখে লাবের শার্টের সম্পাকে আরও সজাুগ হবার স্ফোগ পাবেন।

প্রধানমন্ত্রীর এব্যুরের কোলকাতা আগমন ভাৎপ্যেরি বাপার হবে, এটাই ছিল স্কলের ধারণা। দরের এবং বাইরেব শর্দের সম্পূর্কে তাঁর যে সতকী করণ এটা নিশ্চয়ই ভিত্পস্প_ূর্ণা কিল্ড পশিচ্মবংগর মানুষ প্রধানমতীকে কাছে পেয়ে বিছঃ खाना कथा भागवात श्राट्यामाश क्रिका। আনুমাদের জাতীয় অস্তিম সাবজিলাম এবং স্বাধীকতার ওপর বে কোন আপাত একে পশ্চিমবংশার মান্ত্র যে ঐকাবশ্ হায়ে সর্বাহ্ন ভারাগে প্রাইড্ড, এ কথা আজ আর কোন প্রমাণের অপেকা বাথে না। ক্রায়েন্ট ক্লাতীয় বিপদ সুদি কোন্দিন অবসে পশিচ্যাবশৈগর মানকে ববার আংগ প্রধানমাক্ষীর পালে গোয়ে দড়িংবে, একথা অক্রানা নর। হরতে প্রধানম**ত**ীও পশিচ্যাক্রকার মান্সের এই মানসিকতা জুলনেন কলে অথবা কেলকাটার মান**ুমের** প্রতি ভূবি বিভাবেশী অপথা আছে ব্লেট ঘ্রের বাইরের শত্রদের সম্পর্কে नक्षतां है जना काथा है ना ताल কোককাভাতে (তাওড়া ময়দানে) र्तरभाक्ताः भ^रभठकातरम्भतं कामरम প্রসামসালীর এই বিশ্বামির আফ্রিয়ে প্রিকাশ ম্বাসা দেবে। কিন্তু সেই সংগ্ शनिह्यात्राक्तात् त्रशामाः निराम ,०तर <u>अभागस्त</u>त्त मरवर्षे निरत् <u>अधानगण्ड</u>ी किंद्रः फिल्डा-डामना करान अवर विकासाद আনুদ্রেন কেলান এই ভর্সা গাড় টার্সন্থিক श्रमाणवान्त्रीय कामाव्यास्य कार्यः।

পশ্চিমবংগাল ব্যক্তনীতি নিকে প্রধানবাদ্ধী কবিশ্যি কিছু বসংস্কান বা না বললেন, তা নিয়ে সম্ভন্ত কারও খবে বিশী মাথা বাথা ছিল না। পণিচ্মবংশ বাজনীতির উৎকট বিবহু বিকট ছিলন যা চলুছে চলুকে, বাবো নারকেল ডেবো বাজনের যাড় ভাঙুছে ভাগাক। পণিচ্মবংশ শাধা কেলের কাছ পোকে কিছু স্বিচার চেয়েছে খানা বিশ্বাং ও শিকেশ্ব জ্বেত্র। কেননা পণিচ্মবংশ আৰু চরম সংকটের মৃশ্ব।

প্রধানমতী শ্রীমতী পাদ্ধী কোলকা হায় এসে বাজা কংগ্রেস নেতাদের তাদের ঘরোয়া কগড়া ও কোন্দল সম্পর্কে একটি কথাও না বাসে চলে মাওয়া বেশ কিছাটা বিকারের স্তিট করেছিল। অনেকে ভাবছিলেন পশ্চিমবংশে পি ডি এ ভেষেছে কংগ্রেফের একমি দক সর্কার চালাতে গিয়ে চৌম্প দলের ম**ৃত্তুক্তন** আশেক। বেসামান ক্রসংগ্র পড়েছে অথচ প্রধানমধ্যী কোলকভোৱ এসের সেই সর সম্পরে টা শাস্ত্রী कब्रह्मान ना हकन? महुरवाम भाग मि এমন নর। ১৬ই রাতে রাজভবান কংগ্রেস रमणापन मान्या रेतर्रक कतार्छ भागर्छम्। এমন কি কোলকাণা থেকে হাওড়ার প্রকা পারাপারে সাব নেতাদের জিনি ইপিট্যারে পেয়েছিলেন। কিছত সেখানেও কোন কৰ নয়। সংগ্রিজে ভারে চা করে থা**উ**রো গেলেন। শ্রীষ্ঠী গ্রুমী মূখে খালালেন भिक्षीएर क काड़े जि जिन्स देवनेएकेव প্রাক্তরালে। শ্রীয়াড়ী গাল্ধনী প্রান্তরাকা কংগ্রেস নেত্যদের উদ্দেশ্যে যে উর্ন্ধি করেছেন তার পারাই শ্রীমতী গাম্ধীর মলোভার পরিকার হয়েছে। আর কংগ্রে নেখাদেরও বোধা উচিত পশ্চিমবশ্যের কংগ্রেস নেতাদের সংপ্রেশ প্রধান**মধ্যীত** মনোভাগ কি? প্রধানমকী বলেছেন নিকসন মাও এক হতে পারেন জার পশ্চিমবৃশ্পের কংগ্রেসীরা একদলের হয়ে-अक ऋत्मा छणटङ भारतम मा । कश्कारतम এট উপদলীয় বিবেশের সংখ্যাস কারী নিক্ষে, সে কথাও প্রধানসকী বলে পিরেছেন। প্রধানমন্ত্রী কলেছেন লাভবান ত্তে সি পি আই (এম)। এক কথার প্রধানমক্ষীর হঃশিরারী হলো ঋথনঙ मध्य जाटक साथः माययानः

Paintainen Spain

এই বাংলার খবর

খাদ্য উৎপাদন বৃদ্ধিতে বাধা

নেবার প্রধানমন্ট্রীর কলকাতা সকলে স্বটেরে চেম্থিপড়ার মতো ব্যাপার ছিল ইংগুড়া-আমতা-চাঁপাডাঙা রভংগজ
বেগ লাইনের শিলান্যাস। আর সেই সংগ্য জনসভা।
কিন্তু এটাই তার এই রাজ্যে আসার স্বচেরে গ্রেম্থেশ্বা
করেন নার। শ্রীমতী ইন্দিরা গাংধী সব সমরেই প্রধানমন্ত্রী
তবে সংপ্রতি তিনি কেন্দ্রীয় মন্তিসভার খাদ্য উৎপাদন
কামানির চেয়ারম্যানত ইরেছেন। এবার তিনি কলকাতার
এংস্থিনেন ব্রেটা না প্রধানমন্ত্রী হিসেবে, তার চেরে
বেশি ঐ ক্মিটির চেয়ারম্যান হিসেবে।

কেন্দ্রীয় সরকার সব রাজ্যকেই তাগাদা দিক্তেন—
থাদাশসোর উৎপাদন বাড়াও। পশ্চিম বাংলাকেও দিজেন।
উৎপাদন বাড়ানো তো দরকার বটেই কারণ পশ্চিমবাংলা খাদ্যশশ্যের দিক দিয়ে ঘাটাত রাজ্য। কিন্তু উৎপাদন বাড়ানোর
পথে কতকগালো বড় বাধা আছে। সেই সব বাধার কথা
রাজ্য সরকারের তরফ থেকে প্রধানমন্ত্রী ও তার সংপা
যোগ্য পদস্প বাজিরা এসেছিলেন তাদের সামনে তুলো ধরা
হয়। প্রথম কথা সারের অভাব। ঠিক মতো চাষ করতে

হলে দরকার দু লাখ টনের বেশি সার। গত বছর পাওয়া গিয়েছিল তার সিকি ভাগ। এ-বছর অতত ৯০ হাজার টন সার চাই। সেই সপো চাই ববেন্ট গমবীজ। সেচের ব্যবস্থার উম্নতিও দরকার। কিন্তু বিদ্যুতের আর্টাতর ফলে গভীর ও অগভীর নলক্পগালোকে প্ররোপ্তার কাজে লাগানে থাছে না।

প্রধানমান্ত্রী, কৃষিমান্ত্রী সরেরাধাম, আরেম সব কেন্দ্রীয় কর্তারা সকলেই রাজ্য সরকারের এই সব কথা শোনেন। ভানের জন্যে রাজ্য সরকারে একটি ন্যারকলিপিও তৈরি করেন। তাঁরা সেটা পড়েনও। কিন্তু তাঁরা কেউই বিশেষ আশার কথা শোনাতে পারেনান। বেশি সার বা বীজ পাওরা যাবে, এমন প্রতিপ্রত্বতি মোলোন। সার-বীজের টানটোনি দেশ জাড়ে। স্কুরাং কেন্দ্রের কাছে চাইলেই ঐ সব জিলাস পাওরা যাবে না। যা হাতে আছে তাই দিয়েই উৎপাদন বাড়ানার চেটা করার জন্যে রাজ্য সরকারকে প্রথমাশ দেওরা হরেছে। আগামা খারিক মুরশ্বেম ধান চাবের সমায় ছার্টদের কাজে লাগাবার প্রামাশত দিলির কাছে থেকে প্রথমা গেছে।

সামনের কয়েক মাসের ভাবনা

নতুন ধান উঠতে সেই অগ্নাণ-পৌষ। সে-চাষ কেনন হবে, সেই ভাবনা তো আছেই। তার চেয়ে আশা ভারনা হলো আগামী মাস পাঁচেক পি পিম বাংলার ক্রির্ভি হবে কী করে। একেই ঘাটতি রাজা তার ওপরে খনেদার বরাশ্দ ছটিটে করেছে দিলি। জেলার থবর মে কা রকম ভয়াবত তা মুখাম্কার সংকা বিধান্সভার সদস্যদের সাম্প্রতিক বৈঠকেই জানা গ্রেছে। রেশন ব্যবস্থা চালা রাখার জ্বনো দিলি থেকে মাঙ্গে ৯০ হাজার টন গম এবং ৫০ হাঞ্চার টন চাল পাওয়া দরকার। এ মাস থেকে গমের বরান্দ ২৫ হাজার টন কমিয়ে দেওয়া হয়েছে। চালের বরান্দও ২০ হাজার টন ছটিটে করার কথা উঠেছে। তাই যদি হয়, তবে শহর এলাকাডেই বিধিবৃথ্ধ রেশনিং টিকিয়ে রাখা দায় হবে, গ্রামাণ্ডলে আংশিক রেশনে আরো বৈশি খাদাশস্য তো দেওয়ার কথাই ওঠে না। এ-বিষয়ে কথা সলার জ্বানা খাদামালী প্রয়াপ্রকাশ্তি ঘোষ দিলি গিয়েছিলেন, কিন্তু কোনো নতুন প্রতিশ্রতি আদায় করতে **পারেন** নি।

শ্রীসরেজণ্যনের কলকাতা সফরের সময়ও তার কছে থেকে এ-বিষয়ে নতুন কোনো কথা শোনা গেল না। তিনি জানালেন, থাদ্য উপেদন বৃদ্ধির বাপারে কথা বলার জন্যে তাঁরা কলকাতায় এসেছেন। বেশনের জনে প্রস্নাজনীয় পরিমাণ থাদাশস্য সরবরাহ সংগ্রুত কাগজপত্র তালের সংগ্রুত নিই। স্তরাং এ-বিষয়ে বিশদভাবে আলোচনার স্কুর্যাগ নেই। রাজা সরকার তাদের দ্যিবর কথা জানিয়েছেন। তা নিয়ে দিল্লিতেই আবার আলোচনা হবে।

এদিক থেকে একটা স্থবর—পাঞার পশি-্য রাংলাকে
দশ হাজার টন গন, তিন হাজার টন ভূটা ছা: পাঁচ হাজার
টন চাল দিতে রাজি হরেছে। এর আগে পাঞ্জাব থেকে
বিশ হাজার টন গম পাওরা গেছে। কিন্তু এটা এই রাজ্যের
যাদা ঘাটতি মেটাবার পাক্ষে গথেন্ট নয়। পশ্চিম বাংলার
যে-পরিমাণ খাদাশাস্য উৎপান হর আর এই রাজ্যের সাজ্
চার কোটি মানবের জনো যে-পরিমাণ খাদাশাস্য প্রশ্নোজন
ভার মধ্যে ফারাক ১৫ থেকে ২০ লাখ টন।

অশান্ত শিক্ষায়তন

কলকাত্য বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রশীক্ষা নিয়ে গণ্ডগোল মোটেই কোনো নতুন ব্যাপার নয়। তব্ গত করেক দিন পরপর এমন করেকটা ঘটনা ঘটে গোল, যার ফলে এই প্রোলা সমস্যার দিকে আবার নতুন করে সকলের নজর পাড়ছ। বি কম পাট ওয়ান প্রীক্ষায় হখন বেপ্রোয়া টোকাট্কির অভিযোগ ওঠে তখন বিশ্ববিদ্যালয় কর্তৃপক হয়ত তেমন ঘাবড়ান নি। কিন্তু তারপর সরে হয়ে যার কলকাতা ও মকঃশ্বলের নানা কেন্দ্র হান্যামা—আস্বাবপন্ত ভাঙা আর উত্তরপ্র ছেণ্ডা। অভিযোগ, প্রশন্পর কঠিন কিশ্বা পাহারা দেওয়ার ব্যবস্থা বড় কড়া কিশ্বা বই দেখে
টোকাটনিক করতে দেওয়া হচ্ছে না। অনিবার্শ ভাবেই
ক্ষতিগ্রস্ত হরেছে নিরীহ ছাত্রেরা। তাদের **অভিবোশ,**পূর্লিশ হাজির থাকা সত্ত্বেও তাদের খাতা কেডে নেওরা।
হরেছে। কিংডু এ-সব কিছুকেই ছাড়িরে গেছে, প্রশাস্থার
ফাস হয়ে যাওয়ার অভিযোগ। অর্থনীতির দ্বিট প্রকাল
প্রারা প্রশাসত প্রীক্ষার দিন সকলে থেকে দিকে দিকে
ছডিরে পড়ে বলে শোনা যার।

এর দ্র দিন পরেই মেডিক্যাল প্রীক্ষায় (১৯৭২)

অক্তকার্য ছাত্রেরা সিণ্ডিকেটের সদস্যদের একটানা ছ ঘণ্টা আটক করে রাখে। তাদের দাবি, শতকরা পাঁচ নম্বর গ্রেস মার্ক দিতে হবে। পরীক্ষকের। এবং আণ্ডার গ্রাজুরেট কাউন্সিল এই গ্রেস নন্বর দেওয়ার জন্যে সম্পারিশ করেছিলেন। কিন্তু সিণ্ডিকেটের সদস্যেরা সেই সম্পারিশ অগ্রহা করেন। ইণ্ডিয়ান মেডিকালে আন্সোসিসেশন অবশ্য এই ধরনের গ্রেস নম্বর দেওয়ার বিরোধী। বিশ্ববিদ্যালয় কর্তৃপক্ষ ম্থির করেছেন, ফেল-করা ছাচ্চদের জন্যে সাম্বিশ মেডিকালে পরীক্ষা নিরে আরো যে-স্ব গণ্ডাগালের অভিযোগ উঠেছে সে-বিষয়ে তদেন্ত হবে। তদন্ত করবে একটি উচ্চক্ষমতাসম্প্রাক্রিটি। মেডিকালেন।

সেদিন সিনেটের সভায় হৈ-গণ্ডগোল হলো তার সংখ্যা অবশ্য কোনো প্রশিক্ষার সম্পূর্ণ ছিল না। সভায় আলোচনা হছিল কলকাতো বিশ্ববিদ্যালয়কৈ জাতীয় শিক্ষা প্রতিষ্ঠান হিসেবে ঘোষণা করার প্রস্তাব নিয়ে। অনতেম সদস্য অধ্যাপক নিমাল বস্ম এই প্রস্তাবিক্র তীর বিরোধিতা করেন। তিনি বলেন, দেশে যে এককেন্দ্রিক শাস্ত্রন চালা করার চেণ্টা হছে, এই প্রস্তাব তারই একটা অখ্যা। ঐ সময় ছাত্র পরিষদের কিছু সদস্য তাদের দাবি-দাওয়া জানানোর জনে সভার মংশাই দাভিয়েছিল। তারা অধ্যাপক বসুর এই মণ্ডবোর প্রতিবাদ করে। সেই থেকেই গোলযোগের স্ক্রপত এবং শেষ পর্যান্ত সভা ম্লাভ্রা।

বর্ষায় সি এম ডি এ'র কাজ

কলকাতার উন্নয়নের জন্য কাজ করতে নেথে সি এম ডি এ যতো না প্রশংসা পেয়েছে তার চেয়ে বেশি প্রেয়ছে নিন্দা। তার একটা বড় কারণ, সি এম ডি এ-র প্রায় সব কাজেই রাস্তা খোড়ার দরকার ইয়। আর রাস্তা ঐ রক্ম খোড়া অবস্থায় পাড় থাকে আনক দিন। তার কারণ হজতে আনক, কিল্ডু যার। এর ফলে আস্বিধেয় পড়েন তারা সব সময় ঐ সব কারণ নিয়ে মাথা ঘাসাতে চান না। রাস্তা খোড়াখাড়ির ফলে নাভোগ চরমে পেশিছয় ব্যায়া। এই দ্যোভাগার কথা মানে বেখেই গত ব্ছর এই মরশ্মের সি এম ডি এ অকতত সেই সব কাজ স্থাগিত রেখেছিল যার জনো রাস্তা খোড়ার খোড়ার দরকার হয়।

এ-বছরও সি এম ডি এ ঠিক করে যে, সাধারণভাবে বর্ধায় ঐ ধরনের কাজ বৃদ্ধ রাখা হবে। তবে যদি কোনো বিশেষ এলাকার জনসাধারণের তরফ থেকে অন্যুরোধ আসে যে কাজ চালিরে যাওয়। হোক, তবেই কাজে হাত দেওলা হবে। এখন দেখা যাতে, অনেক এলাকার লোকই চাইছেন যে, ব্যাতেও কাজ চলাক। সেই মরো সি এম ডি এ-র কাছে অনেক অন্রুরোধ আসঙে। অনুরোধ করছেন বিধান-সভার সদসোর। আবার কোহাও সাধারণ মানুষে স্রাসরি:

বলাই বাহলো, এর ফলে সি এর ডি এ-র খবেই সুবিধে হবে। করেণ, কাজ একটানা শেষ করতে পারলে ভালো তো বটেই তা ছাড়া সি এম ভি এ এমন কতকগুলো কাজ হাতে নিয়েছে যেকালো খবেই জবারি। তার মধে জলানিকাশের কাজ আছে। কাজ বতো ভাড়াতাতি শেষ হয়, কলকাভাবাস্থির ততেই কল্যাণ।

চুরি-ডাকাতি-সংঘর্য

টোন ডাকাতির সংখ্যা বৃণ্ধিই হোক, আর উল্পাধানদের সংগ্যা কুলিশের সংখ্যাই হোক—সব মিলিয়ে এই রাজের আইন-শ্রুখলার অবস্থা তেমন একটা ভালো বলা চলে না। পূর্ব রেলের হাওড়া বর্ধমান লাইনেপালাসট ফেলনের কাছে সেদিন আবার টেন ডাকাতি হলো। প্রকাশ একদেল লোক টোনের একটি দিবতীয় গ্রেণীর কামরায় উঠে যাতাদের জিনিস্পত লাঠপাট করে। তাদের প্রতিরোধ করতে গিয়ে দ্রেল যাতী আহত হন।

তার দিন করেক আগে শেওড়াফালি ও প্রীরামপার দেউশনের মধ্যে ডাউন তারকেশ্বর লোক্যালে বড় রক্ত্রের ডাক্ষাতি হার যায়। দ্বিতীয় প্রেণীর এক কামরায় উঠি একসল যাবক ২৫ হাজার টাকা ছিনিয়ে নিয়ে পালায়।

ট্রেন ভাকাতি ছাড়াও এমনিতে রাজ্যের অনেক জায়গার নাগারিকের। সব সময় নির্ভায়ে চলাফের। করতে পারছেন না বলে থবর পাওয়া যাচছে। কলকাতার জনবংলে রাসভাতেও দিনের আলোয় চুরি-ছিন্তাইয়ের ঘটনা গ^{বছে।}

এদিকে প্রদিশের সংগ উপ্রপাধনীকের আর একদ্যা সংখ্যা ঘটেছে বাটানগর রেল সাইভিংয়ের কাছে। চিংপরে থেকে বাটা বেল সাইভিংকে বেলকেনী বাহিনীর তদার্বিতেই
মালগাড়ি যাতায়াত করে। প্রকাশ, গর্টনার কিন একটি
ট্রেন বাটায় পেশীছবার পর একদল সশস্য লোক রেল-পুলিশাকে আজ্ঞান করে। একজনের রাইফেল ছিনিয়ে মেওয়া হয়। প্রলিশ বালি চালালে অক্রমনকারীদের মধ্যে লন-পাটিক আহাত হয়। এর দিন কয়েক আগো যাদবপ্রের হারিকালাতি এক প্রলিশ ক্যাস্ট্রকাল্য ম্রান্তা হাটে। • • •

-दमवम् छ

কলক তোর কাজনৈ পাকে প্রবারি দত্ত নামে এক যুরণকর মৃত্যু নিয়ে বেশ বিতক দেখা দেয়। সাম্বাজ্যবদ বিরোধী দিবস উপলক্ষে কাজন পাকে নাটক অভিনয়ের সময় গাডগোলের স্থিট হয়। প্রানিশের অভিযোগ, তাদের অভ্যাপ করা হয় ইট-পাটকৈল চণ্ডে। প্রানিশ কয়েক জনকে গ্রেণতার করে। কিছ্মিণ ধ্যুস্বাধ্যুতি চলে। যুর সাংগ্র তবল থেকে অভিযোগ করা হয়। প্রিশোর লাঠি চাজো প্রবীরের মৃত্যু হয়েছে। ম্যান ভ্রুণতে দেখা যায়, পারের তলায় পিন্টে চারে প্রশীরর মৃত্যু হয়েছে।

২৩-4-48



प्तर्भ विष्तर्भ

ি মথিল ভারত কংগ্রেস ক্রিটির বিন্দু দিনবাপী আগদেশন দায়ত আন্দুন্ত ক্ হয়ে গেলা এই অধিবেশনে যে রাজনৈতিক শিক্তাব সংঘটিত হয়েছে তাতে সংঘদীয় রাজিবহিভূতি ভ গ্রাস্ট কায়দায় বাংলা বাধনাকা বায় উপ্তেব্ভয়ার চেপ্টার নিশ্লা করা হয়েছে।

যদিও প্রস্তাবে শীরেপ্রকাশ ন্রেথাণর
কাম জৈল কণা হয়নি অথবা প্রস্তাবেও
তবি নাম দেই ভাতবেও নিমিল ভাবত
কাজেগ কমিতি সমিবন্ন এই প্রতাবেক
তিক ক্ষিত্রিকালে বিশ্বিকাশের
ক্ষেত্রিক ক্ষিত্রিকাশ্র বিশ্বিকাশির
ক্ষেত্রিকাশির স্থাব বিশ্বিকাশির

নহান্ত প্রদান প্রস্কৃতির স্থানিক স্থান স্থান কর্মনার নহান্ত প্রস্কৃতির স্থান স্থান স্থান কর্মনার স্থান স্থ ধাৰণা ভীষ সমালোচনা কৰেন। প্ৰধান-মন্ত্ৰী শ্ৰীমতী ইণ্দিলা গাণধী বলেন, দল-হীন গণতথা দিয়ে কোন দেশে কিছা কাজ হয়নি, হাবেন না।

আন্তর্জাতির পরিস্থিতির উপর যে
অধিবেশনে যে প্রস্তাব সহৌত হয়েছে
ভাতে অনাদন অনেক প্রসংগার উল্লেখ্
থাক্ষেত্র বিতরেশ্র মধে। প্রাধান। লাভ কর্মেত্র বিতরেশ্র মধে। প্রাধান। লাভ কর্মেত্র বিতরেশ্র মধ্যে প্রাধান। বাভ

অংলাচনার যোগ দিয়ে পরবার্থীমন্টী দরণ সিং থাব স্পাণ্ট করেই বলে দিয়েছেন যে, পাকিস্ভানকে সিম্না চুজির সায়দারিছ থেকে বেরিয়ে গিয়ে আবার ভারতের সংগে বিবাধ বাধিয়ে ভুলতে দেওয়া হবে না। শ্রীস্বরণ সিং ইতিমধো গোপান কাবালে কিয়েছিলেন, পাকিস্তান থেকে একদল আহম্মিয়া তীথ্যিটার বছালে ভারতের বিবাধ কাবালে কিয়েছিলেন ও তিয়ালি ক্ষেত্রাতে ভারতের্যে এসেছিল, ইন্তানি ক্ষেত্রাত ভারতের্যে এসেছিল, ইন্তানি ক্ষেত্রাত ভারতের্যে এসেছিল, ইন্তানি ক্ষেত্রা করে করে করিনানি নালিক্সতান প্রতির করে করে করি দেন যে প্রকিস্তানের মধ্যে হিন সানা ভারতক্ষে গেন নালিক।

অগণিনিত নীতি সংকাৰত প্ৰভাবে মৃত্যু কৰি কৰি কৰা প্ৰীত সৰকাৰি বৰেহথাপালিৰ প্ৰতি নিনিখল ভাৰত কংগুপ ক্লিটিৰ সম্প্ৰান জান্দ হয়েছে। অগণি নানী চাৰ্য অংশাস্থা কৰিছেন হৈ সংকাৰ ইতিমধ্যে হোসৰ ব্ৰেহণা অৰ্ণাম্বন কৰে। কৰাই সংক্ৰে কাৰ্যু কৰিছেন হোমানি প্ৰেৰ্ণি নাসেই মধ্যে কৰা পাত্ৰা খাবে।

কংগ্রেষের ভিতরকার কিছা সাংগঠনিক প্রদানিয়ে এবার নিখিলা ভারত কংগ্রেষ কামটির অধিবেশনে বেশ কিছাটা উত্তেজনা

रमचा मिरश्रोष्ट्र**म । कश्राधामन ग्रोम**ण्डा সংশোধনের জনা ফেস্ব প্রস্তার অধি-বেশনের সামনে রাখা হয়েছিল সেগা কি অবলদ্বন করে এই বিতক হয়। প্রচাক কংগেস সদসকে আরশিকভারে পরতে হবে ও কোন কংগ্রেস সদস্যই ম্বাপান করতে পার্বেন না দলের গঠন-তলের এই সব বিধিনিষেধের বিবাদেধ কোন কোন বকা তীর আপত্তি জানান। একজন বন্ধা বলেন যে খাদি পরার নিয়ম অনেক আগ্রহী বৃশ্ধিজীবীর কংগ্রেশে ডোকার বাধা হয়ে উঠেছে। মদাপান সংকাণ্ড নিষেধ সম্প্ৰে জিনি বলেন, আন। সর অসমতেরণ বৃদ্ধ দিয়ে শা**র** মদপানের ৈল্লেখ করা অথাতীন।

ভারত-পারিকিলান সম্পারেরি হৈ আক-মতি হারাছ, তার ছারা আনিবায় ভারেই নিখিল, ভারত কংগ্রেস কমিটির এই আধি-বেশ্যে উপল প্রভেছিল।

পাকিচতানের দিব থেকে সাবার চাটোঞ্জ আসতে পারে বলো হার্নিরারি দিয়ে কংগোস সভালীতে তঃ শংকরন্যাত্র শ্যা বলেন যে, পাকিস্থান দ্রাভ শ্রুত সক্তিত হচ্ছে। ছেড়েদেওয়া মুন্দরন্দীদের মধ্য থেকে পাকিচ্ছান নতুন ভিডিসন পাড়ে ডলেছে। সীমান্ত সে সৈন্ সমাবেশ করছে।

আর একটি কড়া বছতার প্রক্রেন্ট্রান্টরী স্বরণ সিং বলেন যে ভারতের সংগ্রে বিবোধ বাধিয়ে প্রক্রিন্তানর অত্যাত কোন ধারণা হয়নি এখনও জবে না ভবিষ্যতেও হবে না। প্রক্রিন্তানের স্মান একথাত প্রত্ত তল আ্যানের সংগ্রহণে বিবোধ মিডিয়ে নিওয়া। প্রক্রিন্তান যদি



তার আতাদতরীশ বাশানে আয়ানের টেনে দের তাহলে আমনা হাত স্টেটরে বলে থাকর না'

ইতিমধ্যে ভারতের প্রতিরক্ষা মার্যাশালারের একজন প্রাজন জনসংবাগ অফিনার কর্তৃক লিখিত একটি প্রাক্তর প্রবাশিত হরেছে। এই প্রকৃতিক দেখা বাজে ১৯৭৪ সালের মাঝামাঝি পাকিস্তান রে সীমার্যত সেনাস্মানেশ করে উত্তেজনা সালির মান্যাকরছে সেটা লেখক আগেই অনুমান করেছিলেন।

কর্শেল ভি লংগার তাঁর এই বইরে
আরও বলেছেন যে এই বছরের শ্রুতেই
পাকিংতান তার সামারক বাহিনীয় শাঁজকে
১৯৭১ সালের আংগকার স্তারে নিয়ে
গেছে। চীন ও অনানা দেশা থেকে সে
মারাত্মক অস্থান্য সংগ্রহ করছে এবং তার
সেনাবাহিনীর আধুনিকীকরণের জনা
বাজেটের অধিক অর্থ বায় করছে।

মাদ্রাক্ষীতি নিরোধের জ্বনা ভারত
সরকার আরও কতকগ্রিল বাবস্থা অবলম্বনের কথা ঘোষণা করেছেন। এগ্রেলর
মধ্যে আছে উচ্চ আরের লোকদের জন্ম
আরশির সঞ্চারে বাবস্থা এবং ভাজার
ঠিকাদার প্রভৃতি যেসব স্বয়ংনিবাজ মান্য
আয়কর এড়িয়ে যাজেন তাদের আয়করের
আওতায় আনার জনা বিশেষ বাবস্থা
অবক্রমন।

একই উদ্দেশ্যে বাজিকর বাটার হার ৭ শতাংশ থেকে বাড়িয়ে ৯ শতাংশ করা হয়েছে।

১৯৪৫ সালের পর এই প্রথম আবার ইউরোপের মাণ্ডিতে হংশের বাজনা বেজে উঠছে। এবাকার বন্ধেটা অবশা মত क्राका सम्बद्धा**रा** ভখান্ড নয় মতাদেশের অবস্থিত শ্বীপর্জায় সাইপ্রাসে। কিন্তু ঘটনাক্তমে এই বৃশ্ব মহাদেশেব জিতকেও ছড়িয়ে পড়তে পারে বলে আধাবন প্রকাশ করা হয়েছে। কাবণ অত্তত দৃশাত এই ব্ৰুম্ম বেধেছে সেই ন্যাটে শ্ভিগ্যোপ্ঠীর माडे गतिएकत प्रथा स्म स्मार्थनी रेकीं व करत-ছিল সম্ভাবা তৃতীয় বিশ্বয়ন্থে প্রতিপক্ষের বিরুদেধ জেট বাঁধার জন। ইড়িছ শেব নতুন অধ্যায়ে আজ যখন সেই দুই প্রতি-দ্বন্দ্রী শিবিরের নেতারা নিজেদের মধ্যে একটা বোঝাপড়ার সংখ্যন কর্জন তথ্ন সাত লাখ মান্যের ক্ষু সাইপ্রাস জীপে এসে দাঁজিয়েছে পরস্পারের ম্যোম্যি ন্যাট্যে গোল্ঠীর দুই সদসা-গীস ও ত্যুপ্র গ্রীসের প্রতাক্ষ অথবা প্রে^{ন্}ক প্রশায়ে সাইপ্রাসের নাশেনাল গার্ড বাহিনীর গুৰি অফিসাররা এক আক্সিক অভাখান ঘটিয়ে নিৰ্বাচিত প্ৰেসিডেটে আচবিশপ মাকেশ্রিওসকে দেশতাস করতে বাধা করে-ছেন আৰ অনুষ্দিকে তুকী বাহিনী যাই-প্রাসের উপর আক্রমণ চালিয়েছেন।

এটা অবশা বাহাক চিত্র। এদিকে
আচবিশাপ মাালাবিওস যে সংশেহ প্রকাশ করেছেন তা যদি ঠিক হয় তাহালে এই বাহাক চিত্তের অশতসালে নাটোর দাই শরিক আসলে একটি গাড়ীর ষ্ড্যশ্ করেছে। সেই ষ্ড্যশ্র হুজে এই যে, সাই-প্রাস্কে গ্রীকপ্রধান ও তুর্কিপ্রধান এলাকার বিভন্ত করা হবে আর তারপর্ব এ বুই অংশকে বথান্তমে গ্রীক ও তুগলেকর অতভুত্তি করা হবে। আচ'বিশপ মান্ডা-রিওসের নেতৃতে শ্বাধীন ও অবিভন্ত সাইস্রাপ যে ভোটনিকপেক্ষ নীতি অব-সন্দনন করে চলক্ষে সেটা এভাবে নাটো লোক্ট্রীর স্বার্থে উল্টে দেওরা বাবে।

তোরাইট হাউস এক সমার প্রেস-ভের নিকসনের প্রবীণতম সহকারীদে একজন বলে গণা জন ডি এর্থলখ্যান, আদালতের নিচাবে দোকী সাবাদ্ত চ্ঞার পর প্রেসিভেট নিকসনের ইমণিচ্যাটেট্র সম্ভাবনা আর্ড এক ধাপ এগিয়ে গেল।

এই ইমপিচ্চােশনৈ জন মাজাপ্যাশ সংগ্রহ্ব কাজ নিজ্ঞাল ধরেই চলজিল। সেই কাজ করছিলেন প্রতিনিধিসভার বিচারবিভাগীয় কমিটি। কমিটির কাজ এখন প্রাম দের হয়ে এসেছে। ওয়ালিটেনে প্রোমডেন্ট নিক্সনের ম্থেপ্রেই এখন প্রক-শ্রে স্বীকার কার নিরেছেন যে, কমিটি প্রতিনিধি-সভায় প্রেমিডেন্ট নিক্সনের ইমপিচামন্টের স্পারিশ পাঠাকেন।

ইতিমধে। সিনেটের ওয়াটারকেট কমিটির যে রিপোট প্রকাশিত হয়েছে তাতে কারও বির্ণেধ প্রতাক্ষণারে দোষরোপ না করেও বলা হয়েছে বে প্রেসিডেণ্টের অসীম ক্ষমতা আছে বলে ধরে নেওয়া হরোছিল বলেই ওয়াটারকেট সংক্রাহত ঘটনাগুলি এভাবে ঘটতে পেরেছে। ২০-৭-৭৪

-প্তরীক





তিস্তা

পাছাড়ী মদী ভিস্তা, দূরেক্ত দামাল। কখনও নিগ্ঢ়ে-রহুস্যে ঢাকা, কখনও প্রবল উচ্ছবাসে দিগনত-গলাবিনী। কথনও প্রগলভা কখনও কুন্ঠিতা. কখনও স্থালত-ছন্দা কখনও নৃত্য-পরা। অসংখ্য তাব ভাব-ভংগী অজস্ত্র তার লীলা। কেন জানি না কম্পনা করতে ইচ্ছে হচ্ছে এই বিদ্যোহিনী এই বন্ধন-বিমুখা নাতনী হয়ে এসেছে আমার ঘরে আমার চার দিকে তুফান তুলছে। সব সময় তাকে ঘিরে ধর-ধর-হা-হা সে কিন্তু কিছাতেই বাগ মানছে না কিছ,তেই সামলানো যাতে না **তাকে**।

SIDIS SIDIS

的复数形式的现在分词形式的现在分词形式的现在分词形式的

WWG 57-1-1-1

ৰালে গোলনাথ নেখেছে। ত্ৰীল পড়েছে কি বাস পড়েছে, কি প্ৰবিদালে গাৰ্থিত ছা'্ডেছে!

अधिका शर्दाका क्षणरहः? भट्टीलम् भट्टीक कार्किरह्मरहः?

সজ্জি না তো ছিলো? বান না কেৰে আন্ন গিয়ে—বিশ্বাস বা হয়!

ট্রাম-বাস বন্ধ হরে গেছে? ধর্ম তিলায় কোনো গাড়ি চলতে না?

পোলারালটো কোঝালু? হাণগালা গরের হলো ভি করে?

ট্টাল্ল লপট : লালা ছাত্রার আলার কারণ কি : কোনালাল লোক আপনি!

ভা কেন্দ্র স্থান জানে না। তবে বাজালে গান্ধ অনেক আগেই ভেলে এসেছে, দার থেকে, কাছ থেকে আগাপাণোর কোথাও থেকে ধবর ঠিকই পোছে গোছে। নেলা দ্রটো কি আভাইটার আগে থেকেই আগিস পাড়াটা ধ্যাংগ্রা করছে, স্বার শৃথে-ম্থে উপ্রেগর চিহ্নটুক ফ্রটে উঠেছে—

এখন হাণপালা যেখানেই ছোক, তা নিয়ে কথা নয়—আগিস শেষে খনে ফেরা সহজ হবে না, জেই নিল্লে যত দুভাবনা! টান-বাস নেই, গাড়ি-খেড়ো যুখ্ধ, তাহুলো।

ভাহ'লে আরু কি, হল্টন-

হোজা বোজা ভালা লাগে, না পাছতে কুলোক্ত ? সারাজিনের পার এইজাবে কুল্রতাল্কা হাললে-ভাল্কা কার ভালা লাগে মপাই?
কি পেকেছে সাব, ল একড আংডার ফালবে না?
দটোকজাকের জনো রাজার উলেট যাবে? কি মানে ক্রেছে সুব!

গ্রিল করে এদের শারেল্ডা করতে
পারছে না ? প্রিলাগ্রেলা কি ! ব্যন্তেতাই
মলাই ! রোজ রোজ একটা না একটা কাল্ড লোগেই আছে ! কলকান্ত শহরে বাস করাই
দার ! ভারপর কাল্ল শ্রেশ্রেল আগিস-ফেরং
এক কেরালীই হরতো প্রিলাশের গ্রিলাডে
মাল্লা পোছে, জি কোন শাক্ষ-স্বন্ধিওলার
ব্যক্ষে গ্রিলাগিরে গ্রেলাকার গ্রিলাভার
ব্যক্ষে গ্রিলা বি'ধেছে ! এই কেরল্লাডা শাহিতদ্রুলালাল নামে স্কার কলিন চলবে ?

क्रवादी विकितात आह त्मच शता ना। त्थ्रीत यूच, यसक मशक्तादा अत्यक আপেই আদন ছেছে জাপিস-করিন্তরে দায়িয়ে ভিড-কটলা ক্রছে। এখন একা-একা সিতে বসে মাথাঠান্ডা স্কারে কাজ করা অসম্ভব। ফাইল চাপা দিয়ে বিকাশও উঠে প্রজা সামনের দেয়ালে বিবর্ণ-মথে ঘডিটা বেন থেমে গেছে মনে হল। বিকাশ চোখ श्रदेख काल करेंब्र राज्य राजधान, मा क्लारक रवाध হর বড়িটা, দুটো উনপ্তাল প্রিনিট বড়ির মতেখ শেখা হয়েছে—হুংপিন্ডটা লুক্লিয়ে লংক্ষিয়ে কাজ করছে, মুখাবরণের গোল কৃতিটা ফ্রেফ্র্সের দুটো ছিন্তকে প্রতিভাত करतरहा करवकात चीक्र रक कारन किन्छ ওরট নিদেশে যেন আপিস্টা চলছে, দশটা প্ৰিটা ঠিক হছে ! সামনে বসলো ফেমন একটা নিঃশব্দ শাসন খেন বোধ করা খালু--আপিস শরে হয়, আপিস ভেঙে বায়, रहश्चात्र-रणेविन ज्ञाक कानवाजी नरफु-इटफ আৰাৰ দিখন হয়ে যায়া!

কোনদিন ভাবেনি, আৰু বিকাশ ভাষদে, কত কালের যড়ি, কতদিন ধরে দেওরালের ঠিক এই জারগাটিতে বসাল জাছে, গোজন মান্দটা বভুলাহেমের ভানলেলহান মানের মড শিবর নিশ্চিকত! ঐ বাজুতে কে দর দেব, কে গুটাকে দশটা প্রিটার নির্দেশ দিতে বলে! বাজি সর মেন মিঃশান্দ শালন!

দ্টো পঞ্চাশ। বিকাশ চেমার সন্ধির সামনে এগিয়ে গেল। আরে বিভ্রু ভলার থে-লোকটি স্বার আগো-ভাগে এসে ব্রুব্ধেন তিনি কোথায় গেলেন ? মানে বজু-বাব্, বার ওপর বিভ্রুর কার্যা মিলিয়ে করনা-দৈর আসা-বাওরা থবর নেবার ভার। ভারলাক গেলেন গেলেন বিভ্রুব্র পর্বার করেনিট্রের করেনিট্রের

বিকাশ চেশ্বার টেবিল ফাইল র্যাঞ্চ জার আলমারীর বেড়া পেরিরে একফারি চলসৈর

নারায়ণ সান্যালের

সর্ব প্রেষ্ঠ গ্রন্থ

মাপ করকেন, এ কোন **ভাষণদায়া** নর—এ প্রদন্তি বৈংশশভা**ভাদীর চল্লতঃ** গোরোল্যকাছিনী। কারণ ঃ

- অপহত সম্পত্তির মূলা দেড়েল কোটি টাকার চেরেও বেলী।
 মানব-সভাভার ইভিছাসে এর চেরে দামী কোন কিছু ক্ষমত
 অপহত হর্ন।
- অপরাধীর সন্দেহের ভালিকায় আছেন বিশ্ববিভাত ভেরজন বৈজ্ঞানিক বার ভিতর পাঁচজন নোবেল-গরিয়েট !

অবশ্য, একট্ **ছল বলেছি** গ্ৰন্থটি আদো গোৱেন্দা-কাছিনী নয়। দাম ঃ ১২·০০

বিশ্বাসঘাতক

শ**্ব প্রকাশ** 🐰 ৭৯/১মি মহামা গাগ্ধী রোভ, কলিকারা-১

পারে এলে পাঁড়াল। চোধ ছলে বড়িটার নিটক চাইলে মটো পশ্চাদের পর আর যেন এটা সরেনি, বড়িটা বন্ধি কথাই হরে গেছে! কর্মান উঠে দাঁড়িরে চালিরে দেবে? কিন্দু ক্লেক্ট্রাম কই? ক্রম্বন্সের গর্তা দাটো ক্লেক্ট্রাম গহর যেন, কালো অন্ধনার ঘাট-

শ্বন্ধকে দাড়িয়ে বিকাশের হঠাং মনে ইল, এতাদন চাজারি করছে, যাড়ের সজনা-সামান বসেছে, কিল্ডু কোনদিন বেন ঘণ্টা-বাজার গল্প পার্রান—১ং চং করে দশটা কি পাইটা কোনদিন বাজান। যাড়িটা বাজে না, টিক টিক শব্দ করে না, তব্ ওর সময় নিকেশে আপিস চলে। অন্তব্যব্ধ ঐরকন, জোন সাড়ালক করেন না, ঘাড়ার তলায় বসে টিক কাজা চালিয়ে হান—হাজিরাখাতায় ঠিক টিক বাসত্রে হান—হাজিরাখাতায় ঠিক টিক বাসত্রে হান—হাজিরাখাতায় ঠিক

অনশতবাব, ধেশি দুরে যাননি, বুড়ি-ভৌরা হয়ে দরজার সজনে দাড়িয়ে জিলেন, কান পৈতে কি বেন শ্রেছিলেন। ওদিকে করিডরে বেল জটলা হচ্ছিল। বিকাশ পাশ কাটাবার চেণ্টা করতে যেন খাকি করে কল্লড়ে দিলেন অনন্ডবাব্ল, এই যে কোণায় য জঃ সবাট চললে!

বিকাশ পিছন ফিরে দেখলে, সতি সেকশনটা একেবারে ফাঁকা হয়ে গোছ! সিটে কেউ নেই আপিস ছটি হয়ে গেছে যেন!

বিকাশ মাথা চুলকে বললে, কোথায় যেন গোলমাল বেধেছে ট্রাম পড়ছে!

এত জ্বংশ সব জেনেও খেন কিছ, জানেননি এমনি ভাব কারে অন্যত্বাব, বললেন, কে এমলি ভাব কারে অন্যত্বাব, বললেন, কে

সবাই বলছে। ট্রামবাস তো বন্ধ হয়ে গোছে! বেশ উম্পেগ আর উন্তেজনা প্রকাশ পত্ন বিকাশের কংঠগবরে।

অনণ্ডবাব; এবার মাতৃক্বির করলেন, টাম-বাস বংধ হয়েছে তা তোমার কি, যাও, বোস গিয়ে! রাষ্ট্রায় গোলমাল হল বলো অমান ধারর মধে। স্ব হ্,জুক, কাজ বন্ধ! স্থাত, যাও—

শানলেও প্রিম্থে যেন প্রথ করার দরকার আছে। তাছাড়া এসব থবরের উত্তেজনা বা উদ্বেক একশা-একলা অন্তেব করা যায় না। বিকাশ মাথা চুলকে বললে, একটা জেনে আসি সারে।

এই তো বৃশলে শ্রেছে, আবার নতুন করে কি জানবে: রোজ রোজ বেশ হ্রেজ হয়েছে! দ্রীম প্রভুছে গ্রাল চলছে, সংগ সংগ্র আপিনের কাজ বংধ হয়ে হাজে! আজ্ঞা ভামাশা পেয়েছে সব! অন্তবাবঃ বেশ মেজাজের সংগ্র বৃশলেন।

বিকাশ নিজের সিটো ফেরে এল। সবাই
হথন কাজ ছেতে উঠে গিরে জটলা করছে
সেও করতে পারতো কিছতু অনুস্তবাব্ব
হামনাসামনি অবাধা হবার সাহস হল, না'
ইতে হামুছিল, বলে, আপনি তাহলে দ্বজার
সামানে এসে দাড়িরেছেন কেন আপনিও তো

জেনেশনে কর্তব্যে অব্বেশা করজেন, আগনে বা গ্রিল বা বেলা তো আপনার মাধার প্রপর এসে পড়েনি, ট্রাম্বাস চলার নংশ্য জাশিন চলার কোন সম্বাধ নেই!... আমাকে ফেরাছেন, কই স্বেম্বাধ নুধীর প্রকৃষ বিনোদ এ'নের ধরে এনে সিটে বসান দেবি! তারা কথন উঠে চলে গেছেন সক্ষ্মান হেতে!

ক্ষা, তাদের কিছু বলবার সাহস নেই আন্তঃলাব্র। স্বাই সিনিরার। ও'দের মধ্যে দ্-একজনকে বেল ভয়-ভয় করেন বড়বাব্! সেনির তো খ্ব লেগেছিল স্থারবাব্য সংখ্যা লোট-মার্কা করা নিয়ে, বেল ভ্কাভার্কা—

সৈ তুলনায় বিকাশ অনেক ছেটি জুনিয়ার। সবে দুবছর আগিসে চাকরি করছে। এখনো আধ-পকাবা পাকা হয়নি।

সূধীরবাব তর্ক বরেন জোকটা খুব দেট্ট কাট স্পত্টাস্পণিট ! বিকাশকে কাজ দিথিয়েছে অন্যতবাব্র স্থেগ ক্ষাজ্ঞা করে তার ক্ষের কোটা কম করে দিয়েছে । নতুন লোক বলে স্থেগ নেন্নি আর পচিজনের মত ।

একে একে স্বাই ফিরে এল, বাইরে আপিসের চতুঃসাঁমার ওদিকে আর হেন কোন শব্দ উঠতে না, টায়ের ঘড়ঘড়ানি কি বাসের গোঁ গোঁয়ানি কিছু শোনা যাক্তে না—হঠাং অম্ভত একটা সভন্দতা যেন আপিস বাড়িটাকে ঢেকে দেয়।

কতক্ষণ পরে ফোন বিকাশের খেয়াল হয় চোথ তুলে দেখে অনতবাব, আপিস-ঘড়ির ভলায় সেই যেমন বনেছিলেন শুরুতে ভেমান বসে অভেন, সেই ঘড়িটা—

না, চলছে না বোধহয়। দুটো পল্যাদ। তা কথনো হয় এতকণ সময় কাটানোর পর কটা বেজেছে? বিকাশ যেন ভয়ে ভবে পদশে সহক্ষীকৈ জিজেস করলে।

সাড়ে তিনটে। কেন তাড়াতাড়ি বাড়ি যাবে? সহক্ষী যেন রহস্য করতে যায়।

আপিসের ঘড়িটা বৃষ্ধ বোধহয়। দুটো পণ্ডাশ মোটে—

তাই ডো! সহশ্মী বললে, কখন বন্ধ হয়ে গেল? বেশ মজা তে! অত বিজ্ঞ লোকটা যেন ছেলেমানুষের মত কগা বলছে, কখন বন্ধ হয়ে গেছে? যখন দুটো পণ্ডাশ হয়ে-ছিল! মজা আবাব কি, দম নিশ্চয়ই ফ্রিয়ে গেছে কাইভের আমলের ঘাঁড—গমগ্মত দম দেওয়া হয়নি, অবাক হবার কি আছে!

সেকশন শাংশ সব ইকে চকিত করে সহ-কমী বলে উঠলেন, বড়বাবা দেখছেন না? আপনার মাধার ওপর চেয়ে দেখনে ঘডিটা এক ঘণ্টার ওপর দৃশ্য হয়ে গেছে, দেখান দেখান।

তারপর হা-হা করে হাসতে শাগল প্রাণের মত।

অন্তবাৰ চোগ তলৈ স্মনে চাইলেন, অক্লিত করলেন, তারপর গৃদভীর হয়ে বললেন বন্ধ হলেজ জ হলেজ কি হ্যান চেন কেন? হাসির কি আছে ! নিজের কলে করুন। সহক্রী বুললেন, কাজ ডো করছি, কিল্ফু ঘাড় ঠিক না থাকলে কালের হিসেব হবে কি করে তারপর বাবার সময় আপনি বলবেন—

অনতবান, মাঞ্জু নিচু করে ফাইল দেখতে দেখতে রগজেন, আপনাদের তো ঘড়ি আছে, ভাষনার কিছু নেই!

সহক্ষ[া] সেই তক অনুড্লে, আপনি জো বলছেন ভাবনার কিছু নেই, কিন্তু ঐ আণিসের ঘড়ির মুখ না দেখলে তো আপনাদের চলে না—উঠতে বসতে ঘড়ি দেখান না?

বেশ গান্ডীর স্বরে অনন্তবাব্ বন্ধ-যাড়ির তলা থেকে বললেন, চুণ কর্ন। ডোণ্ট ডিসটার্ব আদারস।

স্থীরবাব বললেন, আঃ চুপ কর না প্রশাস্ত । বাও না কেয়ারটেকারকে বলে এস না, আপিসের ঘড়ি বন্ধ হরে গেছে। ঘড়ি বন্ধ হরে গেছে তো উনি কি করবেন।

প্রশাসত বললে, না ও'কে জানিরে রাখীছ, পাঁচ-দশ মিনিটে ও'র আবার মাধা গ্রম হয়ে বার কি না! বলবেন আমাদের বড়ি ফাস্ট!

া দে অনেক্ষন হয়েছে, আপিসের ঘড়ি শ্রেতে নাকি থবে তাড়াতাড়ি করে দশটা বাজিয়ে দেয়, কিন্তু শেষের দিকে নাকি বড় গড়িমাস করে, কিছতে পাচটা বাজতে চায় না। অনন্তবাব বলবেন আপিসের ঘড়ি ঠিক প্রশান্ত বজাবে নারেয়ারি!

স্থীরবাবা বগলেন, আজ আর ও কথা বলবেন না। গোলমালে কে কোথায় কেমন করে বাড়ি ফেরে ভার টে ঠিক, এখন ঘড়ির সময় নিয়ে ছেড়াজি ি এখন ঘড়ি চলকুক আর না চলুক কেট াথা ঘামাবে না।

যড়ি নিয়ে মথা না ছামালেও বাইরের ঘটনা নিয়ে সবাই মাথা ছামায়। কেশ বোঝা ষায় কেরাণী-পাড়ায় জীবন আর আগের মত নেই—শাশত সহজ সরলা! বেশ একটা যেন অসবচ্ছদে অম্পিকতা এসে গেছে।

বিকাশ শুনলে স্বাই নিজেদের মধ্যে সেই কথা বলছে, রোজ রোজ একি আনন্ড হল? আপিস করতে এসে কোনদিন বেলোরে প্রান যাবে! হয় প্লিশ, নয় জনতা কে কাকে কথন মারে তার ঠিক নেই!

ব্যাপারটা কি ? ট্রাম প্র্ডুলো কেন ? ব্যাপার আবার কি, বিক্ষোভ ! গ্রেমণ্টকে কেউ চাইছে না !

আবার তক'—কেউ চাইছে না মানে, কতকগালো লোক চাইছে না বল! আপদি চান না আমি চাই না?

চাইলেও এমনিভাবে আর চলবে না। যেমন গমে⁻ট—

অনতবাব্র কানে ধায়, তিনি সচ্কিত হয়ে বলেন নো পীল্টিকস। কাজ কর্ন।

কিন্তু কে কার কথা শোনে, আজ পলি-টিকস ছাড়া যেন কাজের কোন মানে নেই।

রাজনীতি আর প্রদানীত বেন এক। অনংত-बाब, के जब बाबारक भारतम मा। क्यांनीका বাইরের অসংস্থার নিজেরের করে জংকার घटमा बीबारमा कतरण हाता शुली स्थाबा श्रीक्यात्मत कात्रम यात्र कत्राक रहन्छे। करत ।

কোনো মীমাংসায় পেশছকার জাগে আশিলের ছুটি হয়ে যার। বড়সাহেবের ঘর শ্লেঞ্চ নিচ্ছেশ জালে, স্বাই যেন আচেত-আন্তে হৈ-বার মত সাবধানে বাড়ী ফিরে बाब-- ताण्यात दवन करेका वा दक्की जा करते। আর কেউ হাদি হোতে না চায় শেষ পদক্তি অংশকা কলে হেতে পারে।

ग्रंथीत्रवात् वनस्मत्, बार्थस्म, किन्छ টাঘৰাল ডো অলেককণ কথ कि खेलाइहा ? श्राक्ष दश्राक्ष ।

अमान्ड वनरम, यथा माख.....रह'रहेडे सास !

দ্:- মিনিটে আপিস ফ'কা ছয়ে পেল। বিকাশ বাইরে এসে দেখল রাগতার স্থার নিয়ে কাডারে কাডারে লোক চলছে, কেউ শিয়ালদা, কেউ হাওড়া, কেউ দক্ষিণে কেউ উত্তৰে কেন্দ্ৰ বা পাৰ্ব। যেল দিশাছার। ভীত স্প্ৰুত, উধ্বৰ্ণবাস জনতা! বিশ্বাস হয় না এরা কেউ কোনো পিন কোনো রাজনাতির প্রাচনায় অভাস্ত জীবনের পথ থেকে र्जानस्य जारम् माध्याची इत्य छेर्ना वारेस्य য়ত বিক্ষোম্ভ হাত আগ্নিকাল্ড হোৰ এ জীবন্-যান্তার বেন কোনোপিন অবসান ছবে না। **ভাঠাৎ নিকাশের ভে্লেবেশার একটা কথা মনে** পড়ে গেল-সে-ছবিটা বেন এই রকমই 🙎 পি"পড়ের সারটা বেশ বড়ছিল, কি খেয়াল ক্রেছিল কি, মাথায় দুখ্টসূণিধ চেপেছিল। লিকাশের--একটা ছোট টিল[ি] সেই পি'পড়ের সারের তপর ছাতে দিয়েছিল পি'পড়েন সারটা ছেতরে গিয়েছিল, কচেকটা পিংপড়ে মর্বোছ্ক কিংডু কিছ জাণের মধ্যে পিপতের नावती आवात माना त्व'र्थ डेर्ट्राइन !

বিকাশ চায় না ঐ প্রবংখান জনপ্রের্ডর সংক্রে ক্রিনে ক্রেডে। কেম্ম ক্রেম নিজের লবে সভেশার বোধ করে, মনে মনে কভাও পায়। জনে কি ভাৰৰায় ভাড়াভাড়ি পড়ি-কি মার করে বাড়ীজেরার কোন বানে হ_{য়া}না। সে যাৰক ভাৰ ভয় কি? প্ৰায় প্ৰতিদিন এই যে গোলমাল, এই যে প্রতিবাদের নামে অ≃িং≟ মনে যনে লৈ কি সম্থান করে না? লে কি চায় না বেভাবে চুলছে সেইভাবে আর চুলা উচিত ন্য়? সে কি কোনদিন ভার সমব্যুসী मन्भावान्भरमञ् मार्क्श खार्माहरू। धी ताक्षप किंक हमाह्य मा, आरमक बानगर আমেক অবিচার ব্রয়ে গেছে? কেবল কতক-গ্ৰানো বিশেষ লেক মজা লাুটছে, সাুখ জোগ করছে সাধারণের জীবনক।তা অসহা হয়ে উঠছে ? প্রতিকার চাই ?

কিন্তু তার চেহারা যে এমন হবে কোন-দিন বিকাশ বৃথি ভাষতে পারোন। আ=57 অভ্যুত, অভাষদীর সম্বটন্দ মেন মট্ছে, ৰোজাই প্ৰায় গোলাম ল কোথাও না কোথাও বাখাছ। প্রতিমাদের নামে জাগানুন জনদাছে,

karangan kalangan berangan peringgan pengangan pengangan pengangan pengangan pengangan pengangan pengangan pen

টার-বাস-রেল প্রেছে: প্রালম্পে - জনতার मध्यम् राष्ट्र । द्यामा-वाब्रात्न मन्द्राक् करुः

मा आकारम कामण्यात लेखाँक करन मा প্রতিষ্ঠিত সরকারকে ওল্টানো বাবে না বিকাল পাতিতবাদী নয়, কিন্তু লেগে এভাবে অশাহিত ঘটাক সে চার না। বংধারা ভাকে कार्कत बाल वटलाब कारवाम मार्ट्सिहात, বিক্রাকশনারি!

তা নৱ, ভবে ঠিক যে সে কি. ভ\ও ছানে ना। कारना मजवास्मत वा कारना ताज-নীতিক দলের সে সমর্থক এখনে। নয়। ভাছাজা ভাদের মাজ নিম্নমধাবিক গারের ছেলে मारम्ब धक्यात कौविका कलमरभणा छाटमत আবার পালিটিকস কি, দল বা মত কি!

কিল্ড ভোট দেবার সময় সে কোন দলকে अध्यान करत ? काटमा मलटकर स्वा । आज्ञ छ তার ভোটার লিকেট নামই এঠে নি-একুমা ৰছৰ তো কৰে পোৱহো গেছে।

ভাদকে গোলমাল বুলির পুলিরেশর আয়তে এসে গেছে, দ্ব-একটা বাস চলাচল করছে। ট্রাম বোধ হয় চলছে না। জনতার রাণটোট্রামের ওপরই বেশি দেখনা পেখ আগ্রান দিরে দেয়া! পরের দিল কাগজে ছবি বৈরয়--- ধর-পোড়ার মত ট্রাম পাড়ছে।

আগিস থেকে খানিকটা হোটে গেলে চার রাস্তার মোডে ট্রাম লাইন দেখা যায়-টেক্তর-দক্ষিণ পাৰ-পণিচম দৰ দিকেট টাম প্ৰা মাথার ওপর ভারের জালো শেশ শেক হয়, পায়ের নীচে লাইনের ওপর চাকার খড-ঘড়ানি রাখ্ডা ম্থর করে রাখে। অনেকারন সংশ্বর পর ট্রামের জন্মে অপেক্ষা করতে 🗲 তে ইঠাৎ চোখ তুলে বিকাশ কেমন জাবকে হাছে গেছে, একটা নীল মণি ষেন গড়িছে-গড়িরে তারের পথ বেরে চলেছে—আলো-অন্ধকারে অন্তত দেখায়!

প্রায় পরে বিকাশ এসে রুস্তার লোডে দাঁড়াল। রাস্তায়ে লোক ধরে না জল তাড়া দিয়ে পুরুরের একদিকে মাছ জড় করার মন্ত ম ন্ব-জন থিক থিক করছে—বাস নেই ট্রাম নেই, বাড়ী-ফোরার উপায় কি হবে ভোষে শেন লোকজন থমকে পাছিলে আছে, ইত্ৰুত্ত করছে—ইঠাৎ এক-আঘটা বাস আমতে মেখলা देशन^{क्}रवाटम घटाडे शिक्षा किछ क्**राह. भा-का**का দিয়ে এদিক-ওদিক লোক ফেলে দিয়ে ছৈ-ছত্রকার করে দিয়ে বাস চলে হাছে। অনুন্ত ট্রামের ফ'কা আদতানাটা পেরিছে ভপারে স্থা পাটে বসছে। এদিকে যানবাইন চলাচালের রামতাটা লোকে-লোকারণা হরে গোড়া গত-গত-প্রাণ মান্দ্রগ্রেলাকে বস্ত

শৈলজানন্দ রচনা-সংগ্রহ

অবিলম্বে ১০ টাকা জমা দিয়ে আপনার নাম **र्जानकाकृ**ङ कद्रान। धारकता २५[%] कीमगन

বীরেন্দ্রনাথ সরকারের

নতুন ভ্রমণ উপন্যাস

रगोती गङ्गा

শীর্ষেন্দ্র মুখোপাধ্যায়ের নতুন উপন্যাস

ঘরের পথ ৬ সুখের আড়াল ৫॥

আশাপ্ণা দেবীর নতুন উপন্যাস

ভালবাসার মুখ ৫্তরসহীন ৫

সৈয়দ মুস্তাফা সিরাজের

এক বোন পার্ল ৬ বনকরবী ৫॥

চিরঞ্চীব সেন

রাশিয়ান র্বাবর রহস্য ৭

সাহিত্য-সংখা, ১৮ সি টেমার লেন, কলি-৯

আবিশিক্তক দেখাছে। মন্ত্রতেটর চ্ট্রেড়াটা ক্রে অন্তেক উচ্চ হরে গেছে।

ু বিকাশ রাস্তা পেরিরে ট্রাম গ্রাটির কিন্তে চলে এল : ট্রাম আর চলবে না কালে, কব্ কারগাটা কাশকা, অপেকাকৃত কন-বিবল ! ইক্ষে আছে ট্রামলাইন ধরে বাড়ীর বিকে এগিরে হাবে—কালীঘাট আর কত দ্র ? এক আগে কতাদন সাধারণ ধর্মঘটে ট্রাম-বাস কর্মধ থাকলে হে'টে এলে আগিস করেছে—না, ক্রে ধর্মঘটি নার । ওস্ব হ্যকুকে সে বিশ্বাস করে না !

বিকাশ মনে মনে বললে, কাল কি পরশন্তি, তার পরের দিন সাধারণ ধর্মান্ট হবে বিশ্বন্তর শৈশকরেই—পর্যাল পরের পরার একেটা সাধারণ ধর্মান্ট কালার একেটা সাধারণ ধর্মান্ট না হরে হার না। কালা কালাজে সর্বন্ত্র না হরে হার না। কালা কালাজে স্বান্তর দরের ধর্মান্তর লাভানাকো কালাজ কালাজনাক কালাজন

প্রতিবাদ! প্রতিবাদ! প্রতিবাদ! গ্রেদ জান গেব নেই। সেই মাকি কবে তার জাকোর আলে থেকে চলাছে। জান হাত্রা থেকে বিকাশ দেখারে, দলে দলে লোক মারে-থারে বিকাশ দেখারে, দলে দলে লোক মারে-এর কাজারে চলারে, হাতে তাদের নামা রং-এর ঝাজারে চলারে এই মিছিলগুলো—ছেলেমের-বড়ে স্বাই প্রতিবাদে পদ্মায়্থ—চলারে না চালার মানতে হবে ইন্কিলার জিম্পানাদ্য কোনো মিছিলের শাস্ত্রা কালেও ব্যক্তা দেখার কালে মানতে কালে বিকাশ দেখানা কিছালের শেষ কোনদিন কিলানা মিছিলের শালেও ব্যক্তা কোনাদিন

অনেক আগে থেকেই ট্রাম গ্রামটিতে লোক জড় হয়ে আছে, অধীর আগ্রহে অপেক্ষ। করাছ-

ধারে কাজে একটিও টাম নেই টাম লাইন পাতা জায়গাটা মার-থেয়ে পিঠে কালাঁশার। দাটোর মাত দেখাজে। বিকাশের মানেই পাঙ্ না কান্দিন জায়গাটাকে এমন শ্নো দেশুম-জিল কিনা।

'কি ম্পকিল' টাম নেই বাস সেই মান্য এবার বাবে কি করে। কোথার হাজাখা ইকো তো অমনি টাম-বাস বংধ হয়ে গেলা! রোভ বোজ আছা মজা পেয়েছে।'

বক্তে বক্তে একদক ট্রাম প্রাটর আপিসের দিকে ছাটে গেল, আদপাদ গেকে আরে উত্তেজনা যেন ঝড়ের মুখে খড়েকুটোর মত এগিয়ে চক্লন, নিকাশ নাড়িয়ে দর্শজ্যের চক্ষের, কি করনে মা করাব যেন ভারতে পারাল নাড়ের জানে এব এ একটা ভারতার সারে হবে, প্রকাশ আসরে, গ্রুকী কি পাসে চক্রাব ভারতার—

ন আর অপেকা নয়—জন্মগাটা নিরাপদ মর বেশ ভিড় হরেছে অপিনের সামকে হৈ-হৈ দল উঠছে—জাহাজের কেকিনের মত আণিসটা বৃত্তি এখনি ভাতলে তলিরে বার।

ছুটা ছুটা ছুটা বলতে না বলতেই, ছুটাত ছুটাত বিকাশ শিহনে আগুণের শিখা দেখতে শেল. ফট-ফট শব্দ আর মার-মার আওয়াক হতে লাগল। ট্রাম গুমটির আশিস পুড়াতে—

'পাড়বে না তো কি। শালাদের স্ব বিজ্ঞাতি, ইজে করে হাররানি করবে! বঙা নেই কওরা নেই রাজতা থেকে রীল ভুলো নিলে! মর শালা তোমরা এবার! কেন। কুক্র-বেডাল পেরেছে?

কে কি পেরেছে বিকাশ অত ভেবে দেখোন, কিম্তু মে-ভাবে রোজ তাকে আগিসে বেতে-আসতে হচ্ছে তা কোন মতেই কামা নয়। নেহাৎ চাকরি করে বলে, নইলে—

নইলে? —না, কিছু নর, চাকরি ছাড়া সে ভার কি করবে? করবাবই বা কি আছে, বি-কম পাল কেন করেছে সে তো পাল করবার অনেক আগেই জেনেছে। ভার বাড়ীর সবাই জানতো—পাল করলেই বিকাল চাকরি করতে, ভারপর সে চাকরি পাক। হলে—

বিয়ে ? হর্টা! বাবার ইচ্ছে বিকংশ - ঠিক জানে না, মা কিন্তু এর মধ্যেই বলতে ভারেন্ড কবৈছেন পাকা নাই বা হলে প্রেণিট্র চার্কার কথনো সায় ? - এবার একটা স্করণ্য দেখে—

বিয়ের কথাটা এ, গুনো তেমন ছেল্বদ্র হয়ে ওঠেন মাত তেমন নলে বলে হার মাননার মত অবদ্ধায়ে এসে পেণীছায়না তবে, আজীয়দবন্ধন নদ্বাশ্বন সনাই জানে বিকাশ অভগের কোন ভাবদপার মধ্যে অনুপ্রশ্ম করবে — সেদিনের আর বেশি দেরী নেই, সান্ই মাহাক শাঁঝের শব্দ শোনা যাছে! বিকাশকে দেখলে সবার মুখে চোখে কেমন একটা ভাব যেন ফুটে ওঠে—বিকাশ লম্জা পায়, আবার মনে মনে নিজের সম্পূর্ণে কেমন যেন সচ্ছেন গবিত হয়ে ওঠে—চাকরি-করা, স্বাম্থানা বাঙলী যুবক ভবিষাধ তো জানা কথা! এ আবার নতুন করে কি বলবে লোককে!

কিম্তু চাকরি ছাড়া যেন অনা কিছা করবার ইচ্ছে ছিল বিকাশের। সে ইচ্ছে সংসারের চাপেই বাঝি কবে তলিয়ে গেছে। আৰু যেন আর খ'ুজে পাওয়া বায় না—

প্রথম কদিন চাকরি করতে এসে খ্ব খারাপ লেগেছিল। চারপালে অন্নো মান্ত্র-গ্লোকে কেমন যেন বিশ্রী লেগেছিল। যেনন মান্ত্রগ্লো ভেমনি চেরাব-টেনিল আল-মারী রাক বহু বাবহারে বিবরণ শ্রীহান হয়ে আছে, আপিসটা মনে হয়েছিল বহুকাল রং-পলেশ্ডারা না-করা একটা পোড়ো বাড়ি বেন। ভার বিশ প্রতিশ বছরের অভিজ্ঞভার সংগ্র একেবারেই মেনে না, ওঠা-বস্না-চলা-ফেরা কেমন যেন বাগাধরা, একটা অদ্যাধ রুক্ত ভেলে সুন্দ্ধ হতত-পারে বাধা। সহক্রমী নাতিব, শ শন্ক্রবাব, বেধি হর আর ক' কহনে অবসর দেবেন, নুজ্ঞা দেহ কীগদ্দি অবিক্রিয় বৈশ-বাস ওর্ধির আরু শেষ অকস্থার মত চেহুরুরটা। পাশে বসতে চোধ ভুলে বললেন, নভুন এল্লোছো বেশ বেশু! ডাপর?—

অনুক্ৰবাব, অনেকক্ষণ আর কথা বললেন না, কি যেন বলতে চাইলেন, তা ভূজে গেলেন বোধ হয়, নিজের কাজ করতে লাগলেন।

বিকাশ এদিক ওদিক চারপাশ চেয়ে
দেখলে, বেশীর ভাগ কেরানীই অনুক্লবাব্ব বয়সী ছেলে-ছোকরা কি যুবকের
সংখ্যা নগণ্য। যেন এক জাতের বাসি ফ্লের
মালা গাঁথতে গাঁথতে শখ করে কেউ দ্বচারটে জিল জাতের ভাজা ফ্লে গোঁথে
দিয়েছে। 'অখনত মন্ডলাকারং বাশেড'—

কে জানে আজ অন্কেল্বাব্যে কিজাবে বাড়ী ফিরছেন।—এই গোলমালে কেচারারা কি ছোটাছটি করতে পারণেন, না বোঘা-বার্দের এলাকা থেকে পালাতে পার্বেন? ভারা না হয় ছেলেছোক্যা—

না, এখন ছাটে পালানই ব্যিস্মানের কাজ ৷ আগনে বেশ জোর হয়েছে জিশ্ত জনতা বোলা ফাটিয়েছে, এবার প্রিশ এসে কাঁদনে গ্যাস্ নেটাবে, লাঠি হাঁকভূবে তারপব -

গ্রিশ ছা্ডলে মার বলবার কি পাকবে দু িক কাজই কারে শানিত-শুভ্যনা বজ্ঞায় রাখবার জন্মে ল এন্ড স্মান্তি !

তারপর কাল ব ার সরকারী বিজ্ঞাপত বের্বেঃ একদ। মারম্খী উচ্ছ্যুখল জনতাকে ছএখণা করতে প্রলিশকে পাঁচ কি প্রচশ বাউন্ড কাদানে গ্যাস ছান্ডতে হয়েছে, তাতেও কোন ফল না হওয়ায় প্রলিশ দর রাউন্ড গ্রাল ছোড়ে, হতাহত কেউ হয়ান। কিন্তু জনতা বিক্ষিণ্ডতাবে প্রশোধন ওপর ইটি-পাটকেল ছোড়ার ফলে দর্জন প্রলিশ আফ্সার এবং একজন কনস্টেশল আহত হয়েছে—তাদের হাস-পাতালে প্রানাশ্ভরিত করা হয়েছে।

একই ভাব, ভাষা এই বিজ্ঞান্তির, যেন হাশ্যামার শ্রেতে সেই কবে ছাপা হয়েছিল ভারপর আর বদলান হয়ন। জনতার যে ভাব প্রালশেরও সেই ভাব, সাত্রাং নতুন করে আর সংবাদ দেখার কি আছে। ছাপার ভাষা কি অক্ষর বদলে কি লাভ?

বিকাশ পিছন ফিনে মাঠের দিকে ছাটতে লাগল, টামগ্রেটি-পোড়া-আগ্ন বেশ লোলহান হয়ে উঠেছে, কালো ধোরা কেটো গেছে, সূর্বশিতর কথ্যে চৌরঞ্গী गाह्नामा त्यस्य त्यस्य क्रियाज्यस्य हरत स्थाप्य-संस्थातः मार्ग्य स्थारमा स्थार निरम्पर ।

केंद्रे । कर्षे । कर्ष्ट्र । विक न्यूनिन । कर्ष्ट्र रनटेंट कमिएन गाम्न इप्लब्ध । विकाल अक्ष्ये, शत्राक मार्ट्यत स्था मीक्राल नार्क्या रूक रक्ष्यत नामन कार्या । कमिएन नार्क्य नार्व, गर्दान स्थाय दक्ष-

মাঠের প্র দিকে আণিস পাড়ার
বাড়ীর দেওয়ালে দাব্দগ্রেরা প্রতিথানিক হরে
মাঠ পোরিরে বিকাশের কামের পাশ দিরে
চল্লে গোল। দাব্দ বেম পালি হরে তার ব্রেকর
মাবা তাকে গোল। বাধ্বিত্ব কামেন কামেন বিকাশে অকুল্যান হেকে আনক দাবে দিকবিশিক জান হারিরে চলে এল। অন্দেক
দার মহাত্বা গাল্বীর মর্মার্ডি ছার্ডিরেও—

গালি বা গালে ছেড়ির আর শব্দ কানে আসৰে না। বেন কোন শব্দই আর বিকাশের কণ্ণোচর ছচ্ছে না। সম্পা হর-হর ইরে মাঠেব সব্ভ কালো হরে গেছে আকান্দের নীল য়াছে গেছে।

এদিক-ওদিক চেয়ে বিকাশ খেৱাল করতে পারলে এই মাঠটাকেই ব্রিংগড প্যারেড গ্রাউণ্ড বলে। সৈনিকের প্যারেডের বদলে অক্সাল এখানে বড় বড় বড়ভাসভার আরোজন হয়, কাতারে কাতারে লোক জড় হয়, মিছিল করে বন্যার স্লোতের মত দ্রে দূর গ্রাম থেকে লোক আসে। চাকুরেবাব্দের খাব ভোগাদিত হয়, ঠিক আপিস হাটির পর হত মিছিল, শোভাষালা সমাবেশ ইন-কিলাব-জিন্দাকাদ। ট্রাফিক প্লিশ হিমসিন থেয়ে বার গাড়ি-বোড়া আর মান্ত্র সাম-লাতে। এক একদিন তো বিকাশদের চোর চোর খেলতে খেলতে বাড়ি ফিরতে হয়েছে এ রাশ্তার মিছিল তো ও রাশ্তার বাস ঘুরিয়ে দাও, ও রাস্ডায় গিয়ে দেখ সেই একই অবস্থা যত ঝাণ্ডা যত ফেস্ট্ন আৰ বত হাথা। শহরের খত লোক সধ শাইরে বেরিনেছে, বাইরের যত লোক त्याधिक गरस क्रान्स

বিজ্ঞানিক আগে এখানে একটা বিরাট মিটিং হ্যার কথা ছিল, কিল্ছু বেজাইনী ঘোষণা করে বেশবোরা যারখোর করে প্রিলণ নে বিটিং হড়ে সেরনি অসেক ধর্ম-পাক্ষ্যুও হরেছে।

বিকাশ বেশ আর হাটছে পারছে না, যেশ পরীর আর বইছে না। দেইের সংশা মন-নিকাল বেন কেবন হরে গেকে—এখন এইখানে এই য়াঠের রাখা বনে সে আগায়ী-কালির ভোরের জন্ম অপেকা কর্মে, আবার যুখন স্ব স্বভোবিক সহজ্ঞ হরে বাবে।

বিকালের বাবা হেলেকের অনেক আলে থেকে বলে এনেত্রন দেখা ভালা হালা চাও কথনো ভিক্ত কি মিটিং কি মিহিলের মধ্যে বাবে না। ও করে কিছে হয় না মার্থান থেকে গোনেবচারারাই প্রাণা দের। গ্রমীরের হেলে দেখাপাড়া শিশেষ, জকরি বাক্রির কর্ম, নিজের কিলে ভাল হয় ভার চেন্টা দেখ। না ডো অই সর কি ভন্দর্যলাকের কাল ?

কৈ জানে ছেলেমেরেরা কত অবনী-বাব্র কথা গ্লেছে। বিকাশ অবশ্য বাপের মতই সাবধানী সংসারী, নিজের ভালর কথাই ভাবে রাত দিন, কিসে জীবনে উন্নতি করতে পারে, কিসে—

গুলার শব্দটা বেন চেনা, কথাগালো মনে লাগার মত ৷ রেজ খবরের কাগজ পড়লে কিন্তু ব্রুডে পারা যার না দেশের অবস্থা এমন শোচনীর হয়ে এসেছে, যারা দেশ-চালাস্চে তারা কেবল নাকি নিজের ভালর চেন্টাই করছে, দেশবাস্থার কথা কেউই চিন্তা করছে না।

বক্তার সব কথা সতি না হলেও একশ ভাগের এক ভাগ সতি হলে সাধারণ লোকের দাঁড়াবার কোন জারগা থাকে না। বিকাশ বে-কাগজ শড়ে তাতে সম্পাদকীর প্রশক্ষে কিছু আলোচনা হয় বটে, কিম্তু এমন করে চোথে আঙুল দিয়ে বা প্রকাশ করে কিছ বলা হয় না। বোঝাও বার মা—কেমাশ বেন বোলাটে বোলাটে। তা-ছাড়া ভাববারই বা কি আছে, চারের সংক্ ব্যক্তির কালক একটা অভ্যাস—

বাদার কথা ঠিক নর-ভিটিং-এ কিছু ইয় না¹ বরং খবরের খাগাল পাড়ে কিছু হয় না! ভাগিসে সোদন ভাকে ভাল এক মুখীন সহক্ষী এক বক্ষ হরে মিটিং-এ এপেরিল, না হলে সে কিছু জানাতো বা; মুখ্যীরা এক-একটি কি, দেশুকে ভারা কোখায় নিরে বাজে, কেন দিন জিন জাক্ষর আসহানীয় হরে উঠছে, কেন সাধারণ সোক্ষর এত সংক্রাঃ

তবং সেদিন বিকাশ তক করেছিল সহকমনী বশ্বর সপো। অবেকি মিছে কথা বলে
উড়িরে দেবার চেন্টা করেছিল, মাটে-খাটে
বছতায় নাকি অমন করে সবার নামে বলা
যায়, কেউ কিছা মনে করে না। ওরাও বখন
বছতা দেবে তখন এমন করে মিছে ক্যা
বানিয়ে কথা বলবে। তুমিও যেমন, ওয়াল
পাসেনিট সভা হলে আর কেউ এমন ধারস্থার হয়ে বত্তা শ্নতা না, মার-রাজ
কাট করে বেরিয়ে পড়তো।

বন্ধটো গৃদভীর হয়ে বলেছিল, এ তারই স্চনা, সেদিনের আর দেরি নেই।

বিকাশ হেসেছিল। সব সতিয় হলেও

অসম্ভব। দিন যেমন চলছে তার তেরানিই
চলবে, বাবার খুব ভয় ছেলেরা ঠিক সময়
বাড়ী না ফিরলে অম্থির হয়ে পড়েম।
চিন্তার কারণ তার নানারক্ম—বিকাশকে
তাই কম বকুনি খেতে হয় আজও!

(ক্লম্খাঃ)





যোন শিক্ষা

ক্ষাটা লোশার স্থেপ সংগ্যই বেশ কিছ্ত প্রম্বীণ নাক স্মিটকে নিজ বিজ করেন, প্রকাম দেশটা গোলায় যাবে। বড সব বেলোলাশনা। ছেলে মেরেগালোর কচি মাথা চিনিরে-না খেলে আর চলচিল না।

প্রধাবরুদী খরণীদের নিজেদের মধ্যে কথে।পুরুষন 'এতকাল আড়ালে আবডালে আক্রোকা করত ছেলেমেরেরা এখন সামনা-সাম্মান করবে আর কেলে অরগল থাকবে না।

শুকুলে দোন শিক্ষা দেওরার ব্যাপার হলে বাণ্ডিডে ছেলেনেরেদের নানান প্রশ্ন লেগে থাকবে। দিদিমনি বা বললেন ভাল ব্রতে পারিনি, ডুমি একট্ব ব্রিরে দাও লামা।

কচি-কচারা ব্যাপারটা ভাল করে বৃশতে পারেনি। আসলে কী শেখানো হবে জার মধ্যে কী এমন রহুসা সেটা ওদের মাধার চোকোন। তবে বড়রা কেউ ধারাপ হবে বজতে কেউ ভাল বলভে—এসব শানে ওদের মধ্যে হরেছে নিন্দর্য জাটিল কিছু।

বেশ করেক বছর আগে, তঃ সুখালা নারার তথন কেন্দ্রে শ্বাস্থান্দরী। কথা উঠল, স্কুলে স্কুলে ছাত্র-ছাত্রীদের যৌন নিবরে শিক্ষাদানের উদ্যোগ নিলে কেন্ত্রন হয়? নানা মহলে গ্রেক উটলা। একদল এর পাকে, একদল বিপক্ষে। শারে ধারে সর আবার থেমে গেল। স্প্রতি, এই সেদিন আনাদের গাণ্চমবালো সর্কারের দ্বাস্থা স্পতর থেকে গাণ্চমবালো সর্কারের দ্বাস্থা স্পতর থেকে গাণ্চমবালো সরকারের দ্বাস্থা স্পতর থেকে গাণ্চমবালো সরকারের দ্বাস্থান কথাটা। চারপাশে আবার আলোপানেন কথাটা। চারপাশে আবার আলোপান কথাটা। চারপাশে আবার আলোপান কথাটা কলাল। ক হরের জাতে? বিদ্যাল তো এটা জলাভাত হলে মান্দ্র করি বাদের মাধ্যাপাথা সেই স্কুল এবং ছাক্রাটারা এ বিষয়ে কী ভাবেন দেখা বাক হ

প্রশাশতকুমার দপ্ত, সরে গোঁকের রেখা উঠ্ছে: কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ে বাণিজ্যের উঠা তাক জিঙ্গুস করল্যা, কেয়ন হর স্কুলে-কলেজে খোলাখুলি হোনিবিজ্ঞান পড়ানো হলে ?

প্রশালত বললো, ব্যাপান্ধটা আনেকখানি নিভার করে কিজাবে শেখানো হবে ছার ওপর। রামারণ আসলে একটাই। ছোটদের জনো ছোটদের রামারণ বড়দের জনে। গোটাটা। এরকম হবে, না প্রশাল শিকা দেওরা হবে সে সংশক্তে কিছু বলা হর্মা। ব্যাপকভবে কুম্পালস্থারি শিক্ষ নেওরা হলে মনে হরু না তা খ্ব একেকটিত হবে।

किएकन करनाम, की तक्या?

প্রশাশত জবাব দিলে, এই করেস এমন একটা বরেস, নিষরটাও এমন একটা বিষয় যে অনা সব ভূলে সব এইদিকে আকৃণ্ট হল্লে মেতে উঠবে। আফাদের দেশে সেকস্কে একেষারে আলাদা করে দেখা হর বলেই ভর হয় এর পরিমাণ কি হবে। ডাই পাশতির ওপরই জনেকটা নিভরি করে।

স্থিতি কলেজ বাপজি বিভাগের ছাত্র সভোল সরকারের মতে, বিদ্যালরে হোনশিকা চাল, করার আগে ক্ষেত্র তৈরি করা দ্রকার।

ক্ষেত্র বলতে জাপনি কি বলতে চান?

এই ব্যবস্থাটা একেবারে আচমকা এসে পাড়লে বিজ্ঞানিত আসবে। পাশ্চাত্যের কোন কোন দেশে ভো বোন-বিজ্ঞান পাঠভুরের অনতভূতি। স্থানে বে কারণে অস্ক্রিধ ডেম্ম হচ্ছে না, আফ্রাদের পক্ষে সেটাই হবে অস্ক্রিধের।

নেভানা শিক্ষারভনে দশর শ্রেণীর ছান্নী-- যাদবপুরের কম্পনা তপাদার বল-লেন, এটাকে একটি পৃথক বিষয় বলে না ধরে স্বাম্থা বিজ্ঞানে দারীরিক জ্ঞান-চর্চায় সম্পো শেখানো যেতে পারে।

এতে সমাজে নতুন কোন সমস্যা আসবে বুলে মনে হয়? মানসী চক্কবতী





श्चामक नास



সমস্যা তো সবেতেই আছে। স্বেতেই আসবে।

হাদবপার বিশ্ববিদ্যালয়ের কলা বিভাগের ছালী মানসী চক্রবতাকৈ জিজ্ঞেস করলাম, সামাজিক অবক্ষয় বলে যা বলা হয়ে থাকে তার সংগ্ণা এই শিক্ষাক্রমের কোন সম্পর্ক আছে কিনা?

—আমার মনে হয়, আছে। আমি
যোখানে থাকি সেখানে একটা ছোট মাঠ
আছে। সংখ্য হংল বাচ্চা বাচ্চা ছেলেমেয়েয়
জোড়ায় জোড়ায় সেখানে হাজির হয়ে যা
করে তা চোখ মেলে দেখা যায় না। এই
অবস্থায় আমাদের দেখে যৌনশিক্ষা কিভাবে
দেওয়া হবে তা নিয়ে সাবধানে ভাবা উচিত।
আমার তেমন গোড়ামি দেই। আমি মনে
করি এটাও প্রয়োজনীয় বিষয়। জানার বিষয়।

উত্তর কলকাতার বৈশ্ব সন্মিলনী শেনের বাসিন্দা বিদ্যাসাগর কলেজের তৃতীয় ব্যব্র ছাতী গোপা রায়।---

ে – এতে আনাদের খবে ক্ষতি হবে।

- **(**कन ?

—আমাদের অনেক সমসা। খাদা
বিশ্ব সব কিছুরই আকাল। শিক্ষা সমসা।
তো আছেই। ভার ওপর যদি নতুন করে
এ ব্যবস্থা চালা করা হয় তবে সে ভার
বহন করা ছাওদের পক্ষে সম্ভব হবে না।
শানিছি আমেরিক য় হোন-অপরাধের সংখা
বাদ্ধে। অথচ সেখানে যদি এই হাল হয়
আমাদের ভাহলে কি হবে ভেবে দেখান।

—আপনি াক কৈশোর-ভার্থাকে এই চটা থেকে বিমাধ রুপতে চান?

—হা-ঠিক ভাই। আমাদের দেশে এই শিক্ষা চালা করার আগেগ বহু বছর ধরে পরিবেশ তৈরি করতে হবে। এ বড়ি হতাম করা নারতো মানিকাশ হবে।

AND AMOUNT

গৃহবধ্র প্ত্রের কারখানা

দর্শাচরণ ডাঙার লেনের 'র্পায়ণের' দোতলায় উঠতেই আমি থমকে দাঁড়ালাম—দুটো ঘর জুড়ে শংমা পাতৃল আর প্রত্ল—সাভিত লা মেরে বেদেনা কৃষণ-রমনী নাগা-কন্যা সাজিলিং-এর চা-জুড়ানী এবং বাউল থেকে শরের করে অতি-আধানিকা কলেজ গালা প্রতি। রয়েছে ভারতনাট্র মাণপারী ও কথাকলি চং-এ ন্তারতা প্রত্লা ছুশো আর ছেড়া কাপড় দিয়ে তৈরী—কিংতু শিহপার হাতে এগালো যেন জাবনত হয়ে উঠেছে। দেখলাম এই পাতৃলের রাজে এক মনে কাজ করে চলেছেন বুপায়্বোর কর্ণানী শ্রীমতী দেব্যানী দাস্ত্রবং ছ-সাভটি হোয়ে।

বছর চারেক আগে ৭০ সালে এই বাড়িরই একটি ছোটু ঘরে শ্রীমতী দাস পাতৃপ তৈরার কারথানা সার্বা করেন। মার তিনপো টাকা পার্কি করে যখন এবাবসায়ে নেমেছিলন তখন জাতে সেলাই থেকে চণ্ডাপাঠ সর্বক্ছিইে তাঁকে করতে বাহেছে। সংসারের অবসরটাকু কাজে লাগিয়ে দা প্রসা আয় করার উপ্পেশ্য নিয়ে শ্রীসতী দাস এ বাবসায়ে নামেন।

ছোট্ট রাপায়ণ' চার বছরে অনেক বড় হয়েছে। এখন এই প্রতিষ্ঠানের তেরী পর্তুল দিল্লী বন্দের রাজার মাৎ করেছে— ভারতের বাইরে আমেরিকা অন্ট্রেলিয়াতেও পাঠনো হচ্ছে। শ্বীগের লভনেও হয়তো বংবে। এশিয়া ৭২-এর আন্তর্জ্বাভিক প্রদেশনীভেও এদের পর্তুল সক্লের দ্ভিট আক্ষণ করেছিল।

—বছরে কত টাকার পড়েল বিক্লী হয় ?
--গত বছর হাজার ছয়েক টাকার উপার
পাতুল বিক্লী হয়েছে। প্রচুর অভারে আদ্যো
কিল্পু সময়ের অভারে সব অভারে নিতে
পারি না। স্বামাপুতের প্রাতি কভারা অভাবে
সাংগারিক কালকমা সেরে যে বাড়াতি সময়ট্রু হাতে থাকে তা এই ভাবেই কালে
লাগাই। শ্রীমতী দেশ্যানী বললেন।

-- আপনি কি ব্যাক্তের কাছ থেকে লোম নিয়েছেন ? লোন নিইনি। করেকটি ব্যাৎক আমার কাজু দেখে নিজেরাই লোন দিতে এগিরে এক্টে ছিলেন কিন্তু আমি নিইনি। কারণ এক্ট ক'্কি অনেক-হিসেবপ্র রাধার ঝারোক্টিএ অনেক।

—প্রতুপ তৈরীর জন্য কি কি **জি**নিজ লাগে ²

—এর জনা এমন কিছু দারা জিনিক।
দরকার হয় না। তুলো ছেণ্ডা কাপড় কাগজেই
মন্ড লোহার শিক কাঠের স্টান্ড নকল গায়না
বাস। তবে স্বার উপরে প্রয়োজন শিংস্থীমন।

—কচিমালের কোনত অতাব হয় নাকি? —না, এখনত তেমন কিছু প্রবালম দেখা দেয় নি। কারণ হাতের কাছে ফা থাতয়া যায় তা দিয়েই আমার কাবস্থা চালানো যায়।

— মাসে অপেনার কত টাকা আয় হয়?,
—তা কম্চার দের মাইনে ও পর্ব রক্ষের খরচ মিটিয়ে মাসে তিনলো টাকা আমার হাতে আসে। তবে এই অঞ্চটা সহাজ হাজারে নিয়ে যাওয়া যায়। কিম্পু তার জানে প্রয়োজন আরও সময়।

--প. প্লের মাকেটি

ংগী, কলকাতা দিল্লী ও বংশবতে এই চাহিদা আছে। আত্মরিকা ও অপ্রেইনির্মার পাত্রপের থার ভাল মার্কেট। তবে ক্ষেট চার্ম্বারিকে ভাবে পাত্রপ্রায় দ্বাভাবিক ভাবে পাত্রপ্রায় দ্বাভাবিক ভাবে পাত্রপ্রায়

—পুতুলের ব্যবসাদে কি খবে ঝার্কিট প্রয়োজন ?

শর্ম করা যায়। এ জন্য এক্সাচ সেলাই করা যায়। এ জন্য এক্সাচ সেলাই কল ছাড়া আর কোনও মেলিনই দরকার হয় না। প্রীয়তী দেবহানী দাস মৃদ্ হেন্দে বললেন-সব বালগালী গাহধবাই অবক্র স্মায়ে পাতুলের বাবসা শুরু করতে পারেন। তবে দাটো জিনিস তাদের ছাড়তে হবে।

्रांखवानिता छ।द्र भवनिन्छ।।

ATE STATE

জন্ম ২৭লে আবাঢ় জ'লিখের ১০ সংক্রমে অন্ত শানুকার আজি নিশ্ম ৰাজে তে বালী বাজায়—লেখাটা লেখেই क्रीरेड छट्ट शकाय । त्याच शर्माकर-४४ क्रिकेट देन मिनस बदन बदन शास शास शास बद्ध हो রান গেরেছিলাম। আমি জানতাম আমিই আনের্প্রাদের একমাত ছাত্রী।

্ৰভাগাৰ মনে পাড় ইং ১০৫৯।১০ লালের কথা—মহারাণী হেমাতক্ষারী मारिए वहत पारमरकत अगत गाम निर्ध-ক্ষিলাম। দিলীপবাব, যদি তার জয়-জয়ক্তীর ওপর কিছু বিশেষ করে বলতেন ভাললে লেখাটা আরও উপ্রেগা হোত। পামিও এক সময় গানপাগল ছিলাম তাই कडे माखारत किया वाल मनते। य शालका

क्वरल ठाई।

শ্রীবিজয় সিং নাহারের ভাই শ্রীকে এস মাছারের পরিচালনায় নিখিল রঙ্গ সংগীত প্রতিবেশিতা হোক। একবার 🐧 পতি-রোগিতায় ১১০১ সালে ১২০০ সন ছেতে-ফ্রাস্থ্র কম্পিটিটনসদের মধ্যে আমি বেশ্ট ক্ষমণিটিটার পরেশ্বাস পাট। ঐ পাতি-যোগিতার অনুষ্ঠানের পর নানা ভাষগা থেকে বিখ্যাত গায়ক-গায়িকাদের নিয়ে এবটা জলসা হয়েছিলো ভাতে ঐ পতি-যোগিতাল কতকার্য শিল্পীদেবত ভেম্ন-হৈইশন দিতে হুংহাজুলো। আমিও খিলাম। মিঃ নাহারের কি মজি হোল প্রোগ্নে क्कारनम्प्रशास्त्रतः १८७३ আল্লেখ ঃ ম দিলেন। আমি তো অধাক। তাকৈ বললাম, ও কি করেছেন জ্ঞানবাব্র প্রেই আমি स्टिक উঠকে एक: इस काँका द्राह्य शाय-! الزاهلتين য়িঃ নাতার তেজে বললেন বেশ বেশ্টিং হবে, তই গা-না। আমার খাব মন শারাপ হয়ে গেল।

গ ইতে MINCHELL WILLIAM বসংক্রেন **গর্গেন ত**রি মন্মাতানো জয়জয়**ত**ী। হতবার কোমল গান্ধার স্পাশ করছিলেন তেতবার গালে কটা দিয়ে উঠছিলো, আতা আহায় হল ফেটে পড়ছে। মার ৮।১০ ন্মিনিট হয়েছে হঠাৎ কি খেয়াল হোল আনবাব, কেন্মত খাঁর হাত আর তবলা **'একসংগ্র চেপে ধরলেন অর্থার ই**িগত করবোন গান হয়ে গেছে উঠে পছে। স্বাই অবাক। অত্যতে পিপাসার সময় যদি কেট শামানা একটা জল দের তাহলে তার শা মদের অবস্থা হয় তাইই হয়েছিলো CHICICHA!

জানবাব, উঠে গিয়ে ছেডরেই একটা হৈছেও বসলেন, ভাবটা এই যেন ওংর হৈয়ায়াম হয়ে গেল। এইবার পাঠকরা লালে ছাস্বেন আমি স্টেজে উঠলাম। না इन कौका द्वारा ना. यहा भिन भक्त হৈলানা বায় এমন নিস্তেশ্ব। আখার খুব मार्क्ष म नागरक संस्कृत नतरक रे-रदीक्रिके द्यानी गाहेजाम-टमनिन ठे, तीहे गाहेनाम।

'বাৰ বেল কলে যখন চলে আসছি পাশ

खंदक हुठीर जामपाय, यहन छेठेरनम जामाद शहर एक शाक्रेटन ? शाहमात क्हरनाक कामान बिटक काला कि बिट्रम का कारणम । का मदाय: আয়ার ভেকে ভার বাড়ীর ঠিকানা দিছে আয়াক দিন আয়াক সময় বেতে বললেন।

আমি এডালন শ্ব: ন্বপ্নই দেখেছিলাম सहारमण्डारामते श्रेशांक भारतत् । स्मिनिन আ্মার শ্বান বাশ্তবে রপোয়িত হোল যোদন মহারালী কোনতক্ষালী ভটীটোৰ বাড়ীতে প্রথম বললেন আমার যা আছে সাব তোকে দিয়ে ধুলো আমার বয়স প্রন ৰোল সভেব ছবে-কৃত্সভাৱা প্ৰাধায় মাথা নত হয়েছিলো-সেদিন আর কোন কথাই शक्तरक भावितः

য়খনট য়েতাম তিনি নিছেই দর্ভা খালে দিজনে সার ভালতে ভালতে সাহসে ভর করে একদিন দটো কথা জিজ্ঞাসা করেছিলাম- একটা হোল--আপনি যে বলেন, মেয়েরা আবার পানে পানে বরে কি পান গাইবে সেইগুনো আপুলি মেয়েদের গান শেখাতে চান না! সেদন জলসায় খানলেন তো কাশীবাই আফ বেনারস কি করে কোন স্টাণিডং সূব তানপারা বা রাখ্যানিনাম ছাড্টে শারা মার এক সারেগ্ণী দিয়ে সারে ভরিয়ে দিয়ে গেলেন? কোন উত্তর না দিয়ে আপন মনে পান পান করছেন সভার বার কর বলান না বলান না করে বিরক্ত করছিত, তখন তেন্দেফ 'ডে বলে উঠলেন আবে োর ওরকম বয়স হোলে তই ওর বাবা হবি। অথপিং বলতে চাইলেন ওর চেয়ে ভাল গাইবো। আর একবার জিল্লাসা করেছিলাম পণ্ডিত কাতার্নাথ ১ করের খ্যাতি সম্বন্ধে-তার উত্তরে বসলেন আরে ও আমার চেয়ে দশ বছবের হত। ভোগাং বলতে চাইলেন তাঁর সাধনা ও'র চেয়ে দশ বছর বেশী) দশ বছর পরে আলি ওব বাবা হবো তার দশ বছর পরে Gব ठाकबमामा इत्वा।

कशादाहरी rerro खारमध्यभाषात বোঝা হোডো হে তিনি একদিকে যোগন প্রাউড ছিলেন অপ্রদিকে তেমনি ऍका-कानकी फिल्मसा धर्मीएस उन्नाक 7673 বলতেন-আরে, ভূমি টাকার রাজা অংমি गात्म हाजा। (ब.क हानए তোমার আছে লক্ষ্মী আমার সরস্বতা। একদিন তেয়ার লক**া**টি আমার কাছে এসে বলবে, আমায় মাও আমি ধনা ছই শ

রবীন্দ্রনাথের বেমন কবিন ও কাবা श्राबाश्याचि विरक्षा खारमञ्जूशनास्त्रत् সাধারণ কথাবাত্ত্রি ভেতরে প্রভাকে হা **शब्दारम् गान या मृद्यम् क्याः अक**निन

क्षेत्र रहे किया जा कानजात स्ट्राट गाँकरत বিশ্বট হৈছেলা জ্বাম ভাবলাম ফে'চাজে বিলাট বকবেন তা নৱ बणरमा भारे -त्य-मृत्स् ८५ छात्र काक्री कि व्यक्ता क्रीन ना क्ष्मिष्ट करते त्म छ छ।

একবার জ্ঞানেন্দ্রসাদের প্রী আমাকে বলেছিলেন দেখো ক্রাই তালেক বলার পর আমার (জানবাব) den't সেলাই-এর মেশিন কিনে দিয়েছে আমি সার্ট পাঞ্চাবি কেটে ट्रमम है 447.E শি**থেছি, একে** বললাম তোমায় পাঞ্জাৰি কাৰে দেখে। তামবাৰ বলেছিলেল ভাডাতাডি বলে উঠলেন হাা তমি আক্র আমায় পাঞ্জবি করে নেবে আব সেই পাঞ্জাবি পরে আমি রাজবাড়ী যাবো দরবারী বানাভা গাইডে"

একবার একটা জয়জয়ণতী স্কের একটা থেয়াল শেষবার সময় ঐ গানের একটা লাইন ছিল-উন বিন ক্যায়নে ভক্ দিল রে-এই গর'র ওপর বেশ সাল্পর একটা তান ছিল। হতবার গানটা গাইছিলাম তত্বারই ঐ বিশেষ জায়গাটা ছেতে দিছিলাম। জ্ঞানবাব্ ব্রেডে পেরে বললেন আছে৷ তোকে গাইতে হবে না আমি গাইছি তই শাধ্ৰ মানে যা-এই রকম শানতে শানতে দেখবি এক দন ঠিক বেরোবে। তাই-ই ছোল এফদিন। ঠিক তানটা বেরোলো। সেদিন তাঁব কি আনন্দ। বললেন, 'তুই লেখাপড়া শিখছিস? লেখা শিখতে কতৃক্ষণ যায়? —জারে সদা স্তা কথা বলিবে এইটুক শিখলেই হয়ে গেল বাস্'।

আর একটা ঘটনা বলে শেষ করবো---একদিন শিশ্পীদের সমালোচনা হচ্ছিলো। জ্ঞানবাব, বললেন--'এ ধরনের পায়ক আছে তাদের স্বৈহ ।দকে কোন নজর নেই। শ্বাহ্য ভবলা । বেল ফাইটা করহে। ডান হাতে তানপুরা ধরবে আর মুক্ডটা থাকরে থাঁ-দিকে তবলার দিকে আর করবে কি জানিস? হাত পা নেড়ে দুড়ুম-তাক-তা ধ্যা-আ-যা বেরিয়ে হা'-শোষে শবদ খা'জে না পেয়ে যথন বললেন 'বেরিয়ে হা' আমার সে কি প্রচন্ড হাসি—আমি খুব ছোরেই তাসি—ভবিণ তেসেই চপ করে গেছি-জানবাব, করেক মৃহ্ত আমার দিকে ক্রাকিয়ে বইলেন। আমি তো ভয পেয়ে গেছি, হয়তো জোৱে হাসার জনো বকুনি খাবো যা বাড়ীতে হরদম খেতাম। কিন্তু না বকলেন না বক্ষেন বা বে, তুই তো বেশ সারে হাসিস'-

আমার যা আছে তোকে সব দিয়ে যাবো'—একথা আজও সরে হয়ে মেল কানে বাজে বিভ্ত ভাষার ভাগ্যদেবী নেবার হাত আমার চিরকালের জনা ठे. प्रति करत जिल्ला अधावन यानगामा ঘরের ছিন্দু মেয়ে আমি, সংসারের অকল ত্তলে ভলিয়ে গেলাম।

यीण यमः হাওড়া-১



এদিকে ১৯১০-১১ নাগাদ স্দ্র পশ্চিম গগনে একটি ছোট কালো মেঘ দেখা দিল-প্রথম মহাযাদের প্রোভাস। দ্রেদশা वृत्तिभाताक रायास्त्र भित्क य' कर्नन। <u>ইণিডয়াম সোস ইটি অব ওবিয়েশ্টাল</u> আটের মনীষীদের ঘন ঘন রাজনৈতিক বৈঠক বসতে লাগল। দ্বয়ং স্ফ্রাট্থাহাদ্রে বংগভামতে পদার্পণ করে ভংগ-বংগ জ্বোড়া লাগালেন। কিছুদিন পরেই অধ্যাপক রথেন-স্টাইন জ্যোতিরিন্দুনাথ ঠাকুরের প্রতিকৃতি চিত্তের এক উচ্ছনুসিত প্রশংসাত্রন ভূমিকা লিখে দিলেন। প্যারিস ও লন্ডনে অবনীন্দ্র-িখ্যা-প্রশিষ্টদের ছবির লাথ ও তরি প্রদর্শনীর ব্যবস্থা হল-একটা পশ্চম-ঘেষি হ'লেও গুগণেন্দুনাথও ভাতে 2-2116 পেলেন। অবশেষে রবীন্দ্রনাথ নোবেল প্রাইজ পেলে আমরা প্রেমান্যয় বিমোহিত হয়ে শড়সাম রুগামণ্ডে খন ঘন করতালি শাুরু হল। এরপরে ভলতের নাট্মান্সর বাজনতি ও চিত্তকলা হাত ধরাধরি করে তালে বেতালে ন্তা শুরু করে দিল। 'অলমিতি বিদ্দর্গে— - চিত্রকল: প্রসংখ্যা ফিরে আসা

অ ট' দ্বলে চিরপ্ত*নস্থক্ত ছারশাসনদীতি নিয়ে অদক্ষ, পার্সি রাউনের সংগে
উপাধক্ষ অবনীন্দ্রনাথের মতানতর মনান্তরে
পরিণত হয়। ফলে ১৯১৫ ল অবনীন্দ্রনাম অভিযানতরে পদতাগ না তরি
ক্ষোণ্ড তথা নামজাল পতিকৃতি প্র
নিস্পতির শিক্ষী (পোটেট আন্তর্জ

बाल्यस्कृत ट्राहेकोह्र) केल्ककारी वर्णिनी-ध्रका भागाको सम्बद्ध विद्वार वर्णन नाम वाक्षक्रमवासाम क्रांच न्यांकार সংযোগ एगास बसाराय केरनाट्य जीमा तहेल ना। शास्त्र जीमनावेश चार्के क्रायमत्त्री ভিলেন-ফলে শিক্ষাপ্র দৈর মধ্যে আলম माहोत' अन्त्राच्या अक्षी न्यकान्क क शान्या জন্মায় এবং ভানের কঞ্চকর্মান্ত উল্লভ্জন হারে ওঠে। ৰুতত উনি হতদিন আটু স্কুলে ছিলেন (১৯১৬-২৮) তত্তিদন্ত শেষবারের মত বাশ্তবধারায় ভবি আকার কিছু নিশ্চিন্ত সংযোগ তর্ব শিল্পীরা পেয়েছিল। প্র-তন অধ্যক্ষ হ্যাভেল সাহেবের মত ভারতীয় অভারতীয় প্রণন নিয়ে অধ্যক্ষ পাসি রাউনের কোনো পক্ষপাতিত ছিল না হাদিও ভারতীয় চিত্রকলার উপর তার ক'খানি বই অঞ্চারটি আখান বোগা। তাঁরই অধাক্ষতাকালে (১৯০৯-১০ ভারতের বিখ্যাত মকলাল বসু মুক্ল দে অসিত হালদার र्याभिनी द्वारा কিতীন মজুমদার প্রমুখ বহু শিল্পী বিদ্যালয়ের ছাত্র ছিলেন। আট স্কুলের স্কুট্র পরিচালনা ও স্বজ্বন গতির সংখ্য ইণ্ডিয়ান সোসাইটি অব করেয়িদলৈ আট প্রতিতিত শিল্পবিদ্যালয়ত নদ্দলাল বস্ত তাঁর স্তীথদির তত্মবধানে মথেষ্ট উন্নতি লাভ করে। আপাতঃদ্ভিটন্তে সময়টা চিত্রচর্চার পক্ষে খ্ব অনুক্ল বলে মনে হওয়া স্বাভাবিক।

কিল্ক কালপ্রোত চিরকালই একট উপল-বাথিত গতিতে চলে। গুলালীমশায়ের নিয়োগের অলপ পরেই অবনীন্দ্রনাথের 'বড়াগা ও রবীন্দ্রনাথের 'ছবির অংগ' প্রবাধ দটি চিত্রকলাক্ষেত্রে বাস্তবধারা ও ঐতিহয়-নুয্যা ধারায় বিশ্বাসী দুই দলের মধ্যে এক গভার ফাটল ধরিয়ে দেয়। দাটি প্রবংধই বাৎসাায়নের একটি শেলাক ব্যাখ্যা করে লেখা। মূল শেলাকটি স্বাপভেদাঃ প্রমাণানি ভাবলাবলা যোজনম সাদ, শং বিবিকাভগ্গম ইতি চিত্রষড়পাক্ষা।। দুই মহামনীষী ব্যাথাক্রিই সাদ্শাং কথাটির ব্যাখ্যা করতে গিয়ে দ-শ্যমান প্রকৃতির রাপায়ণে সাদ্যশ্যকরণ কার্কমের অযথা কট্রাকা প্রয়োগ করেছেন। আশংকা হয় ও'দের দুজনেরই প্রকৃতিদেবীর কাছে আক্ষেপ ছিল - কেন তুমি মুতিমিতী হয়ে এলে রহিলে না ধান্ধার্ণায়'। সাধার্ণ-ভাবেই শেলাকটির ব্যাখ্যা হতে পারে খে 'রুপডেল' সমূহ ভাৰলাবল্য যোগে 'প্রমাণানি' সহ বণিকাভণের সাদুশাকরণ চিথের ছয় ভাল্যস্বর্গম্প**্রেভান্য পরোক্ষ** রা ধ্যানদ্ধিটপ্রসাত যে কোনো চিত্র রচনাই হোক না কেন। সত্তরাং সহজেই অনুমের যে প্রত্যাস্থ্য দ্বাল্টির প্রমাণানির সংখ্যা ভারশার্থন याग ना रत्न हिंठ अक्ष्मरीन हरा भफ्रत। অথচ প্রতাক্ষদ,িট সাদৃশকরণ দুজনেরই এত বিসদৃশে লাগল যে সেই ধারার শিক্সীদের উদেদশো वला इल 'अन्कृडि अध्यक्षामामा-কটি-পত্তগাসি নানা ইত্তর জীবকে আন্দ্র-গোপনের জনা অবলম্বন করতে দেখা যায় । অবনীঃদুনাবের 'ভারতশিলেপ সভ্তর্গা সাঃ ৪৩ দ্রঃ)। আশৈশব প্রকৃতির রূপম্বরু কবি-

াত বুৰী চনাখত ডাদের প্রকৃতির বাছালকা ভাবিকৃত বন্দশারী কলতে শিখা ক্রচেলন না। পাঠকবের যদি খটকা বাগে তবে এই স্টো প্রকৃষ্ণ দুটি ভাবার পাঠ করতে ভাবিকার করি।

বাদিও এই দুই মনীমীর প্রেণ্ট প্রিক্স কাব্যে ও চিটে, তব; ছবির জাদার্গ সম্বাক্ষ এ'দের মতামত যে আমাদের সংক্ষান্ত-ক্ষেটে প্রার শোব কথাবই সামিল জা সহজেই জন্মের। আক্ষেপের বিষয় এই যে মতবাদ প্রচাকে বহুবার বিপরীত কথা বলে রবীন্দ্রনাথ ভত্তবাদকে বিজ্ঞান্ত করেছেম (এই প্রবিশেই পরে তার মাজর দেব)। অবনীন্দ্রনাথ কণাচিং এরবার সংগতিত ছিল।

তার সংস্পাদে এসে যদি বিক্ ভাৰতীয় চিত্তকলার আধ্যাণিক S. Lealer প্রেক্টার ও তলনায় জড়বর্মী পাশ্চাত্যের নিকজীতা श्रुवात मा करत धरः भाग्वाका প্রভাব থেকে জোর করে মুন্থ হবার जानकारी ना करत न्यीय जानगीन शासी कि র পায়ণে নিযুদ্ধ থাকতেন তবে এতদিনে ভারত**ীয়** সংগতিকলার মড্ট ট্রাডিশান গড়ে উঠতে পারত। পরবতীকালে রবীন্দ্রনাথের অকঙ্গ্যাৎ উল্ভেড নৰ-আকাডেমিক ছবি বা পাশ্চাত্য স্ক্রিরা-লিন্টিক ছবি ভারতীয় নিল্পসোধের ভিতত্ত নড়িয়ে দিতে সক্ষম হত **না।**

ব্টিশ ক্টনীতির আন্ক্রের ভারতীয় ঐতিহাের চিত্রমারা ক্রের চাকুরী-সন্বলই হয়ে রইল। বিভিন্ন শিক্ত প্রতিষ্ঠানে অবনীলনোথের শিবা-প্রশিষালয় প্রথান আসনে প্রতিষ্ঠিত হন; তালের ক্রেট কেউ নিজন্ব আর্ট দুকুল ও শিক্ত প্রতিষ্ঠানও খোলেন। (দিলাতে সাম্মর উকীল প্রতিষ্ঠিত উকল দুকুল অব্রাট (১৯০০), ও পরে তার জাতা ক্রম্বীয় বর্ষনা উকীল প্রতিষ্ঠিত অল ইন্ডিয়া ক্রম্বীয় আর্টস আর্গত ক্রাফ্টেস সোল্টিয় ক্রম্বীয়

প্রস্থেগ স্তুক্তরের কর্মান কথাটির অন্য এক ব্যাখ্যাও করা আন্ত পারে—বর্ণিকান্ডভের ভাবলাবন্য করে সাদৃশ্যকরণই বাস্তবাদৃীর **প্রধান স্থানিত্র** বিষয়বস্তুর আপাত রুপায়াশ ভারা করেই গোণ। উদাহরণস্বর্প বলা বায় বে উপিজ্ঞ যৌবনা তর্গী কিন্বা লোলচর্মা কুলা ব্ৰুধা, বনমধ্যে চকিতা হ্রিপী কিন্দা স্বাস পথে ভারবাহী শুমক্লাত বহিৰ ক্রাক্রীক ফণ্মিনসা অথবা সংক্ষেত্ৰ কলছালতা ধনীয় বাগান বা বঙ্গিতর অব্ধগাল ইত্যানি বিল ভিন্ন বিষয়বস্তুর চিত্রস্তাই সাল্প্য বণিকাভগোর মাধ্যমে সমভাবে ক্রােলীপ হতে পারে। হাই হোক বিদেশী বাস্তব-ধারায় মুশ্ধ হয়ে যে স্ব শিল্পী চিত্রকর্ম করতেন তাদের অনেকরকণ কট্বাকাই শ্বনতে হয়েছে বললে অভুনিত হবে না। 'র্পম' পতিকার সম্পাদক ও সি গাংগ্লী মহাশর তো প্রচার করজেন বে ভারতের ঐতিহ্যান্থারা শিল্পকর্ম পরিভাগ করে



গ্রহণ 'দেশপ্রীতির বিরুদ্ধে THE PIE মহাপাপ (প্রস্কাত উল্লেখ করা যায় যে काक्कर सामीनामाथ का (भारत तहान **ক্রিল আকাডেমির আমে** সিয়েট। **য**খন বিদেশে ভাৰত হিসাবে খ্বই স্নাম অজন করেন তথ্ন এদেশে তার কাঞ্কর্ম নিরে কিছু নাদান বাদ হয়। ফণীবাব প্রমূথ শিক্ষণী যে পাশ্চাতা প্রভাবের ফলে দেশের শিক্ষাজগতে মহাবিপদ ডেকে আনবেন এট মরে বায় দিয়ে গাংগ্রামশাই দেশবাসীকে সাব্ধান করে নিলেন। দেশকালপারের প্রভাব সমাৰ উপলম্পি করে সাক্ধানী পঞ্জিক ফণী-আৰু আৰু দেশে ফেরেন নাই। শ্তাব্দীর গোড়াতেও শ্ৰী হেস ঐতিহ্যবাদীদের মতি-গুড়ি লক্ষ্য করে চিরকালের জন্য দেশত্যাগীই ছয়ে রইলেন। শৃশী হেদের আঁকা মহাহ' দেৰেশ্ৰনাথ ঠাকুনের প্রতিকৃতি বা যামিনী গাংগ্রালীর প্রগাবক্ষে উষার আসোঁ প্রভৃতি ছবি যদি খাব ট্রেড্যানের নাও হয়ে থাকে ছব**ু স**ূত্রকারের 'সাদাশাং' কথাটির তার্থ নৈশ্চর করে করে না। আজ যে 65বকলার সকল কোনেই প্রকৃতির বাস্তবরাপের 'বিকৃত্বমন' ঢলেছে তাতে আর বি^{সি}সত হবার কি!

খাত প্রতিখাত একটি নৈস্থিক নিয়ম—
কৈ জড়বন্ডতে কি সমাজজীবনে সর্বাহই
ভার প্ররোগ অনুস্বীকার্য। নানা দিক থেকে
আক্রান্ড কিন্তু জনসাধারণের বোধগাম ও
কৈলোগ্য চিত্রকলায় আন্থাবান, বাস্ত্রশারার
কিন্তু দির মধ্যেও এক নবচচনার বীজ অন্থারত হয়। আগেই বলা
ক্রেছে বে ১৮৯৭ খেকেই আট স্কুলে
আন্তর্মার উপযুক্ত শিক্ষাবাবস্থা বাহত
ক্রেছিল এবং যে সমুস্ত ছার এখনকার
ক্রান্ট্রন আট স্বিভাগ থেকে সসম্বানে
ক্রিরীণ হত তারাও কলারাসিকসমাজে
ভারতের ঐতিহ্যে অবিশ্বাসী পাণচাড়োর
ভারতের ঐতিহ্যা অবিশ্বাসী পাণচাড়োর

হাত্মিনী গাংগ্লেমিশায় আট স্কুলে যোগ দেবার পর এবং রণদা গাংশ্তর শিক্ষারাও রুমুখ চিত্রকলায় পারদশী হতে শুরু করলে বাঞ্জ আর অংকুরে রইল ন। দাত প্রতিখাতের প্রতি**রহায়** তার নানা **ভাল**~ পালা গাঁজয়ে উঠল। নেহাৎ বে'চে থাকবার ভাগিদেই সমাজে শ্বীকৃতিলাভ সেই স্থ ভর্বদের কাছে অপরিহার্য ঠেকল। সাজ্যবাদিকতেই তাদের ধারণা হল যে চিত্র-কলায় কার্কশলতার নিদর্শন স্বচক্রে দেখলে দশকিসাধারণ রসবিচারই করবে. ভারতীয়-অভারতীয় ছাপ দেখে বিদ্রাস্ত হবে না। এখানে বলে রাখা *দ্*রকার যে তখনকার দিনে (১৯০০—১৫) আর্ট স্কলে বা অন্য কোথাও চিত্রপ্রদর্শনীর ব্যবস্থা ছিল না। একমানু ভারতীয়ু পন্থায় যাঁরা ছবি অকিতেন ভারাই স্বকারী কলনভায় ওরিয়েনটাল আর্ট ভবনে ১৯০৭ থেকে চিয়-প্রদর্শনীর স্থায়েগ পেতেন। তথনকার নাম-করা মাসিক পর 'প্রবাসী' ও মডার্গ রিভিউ শ্যে তাদের ছবি ছাপেয়েই উচ্ছনসিত श्रमश्रमा करुछ। धरे जन्महेकारण त्नहार নৈস্থিক নিয়মেই নবীন শাখায়ও ফুল গ্রেট উঠল। রণদা গ্রেণ্ডের এক অভ্যুৎসাহী শিষ্য নববিবাহিত তেমেন মজমেনার ৰয়োক্তোষ্ঠ হামিনী রায়কে পুরোদ্ভাগে রেখে ইন্ডিয়ান আকাডেমিক অব আর্ট নামে এক শিলপীটক গড়ে তোলেন, এবং সামানা মানু মূলধন সম্বল করেই এই চকের নাজে একটি তৈমাসিক পত্রিকা প্রকাশের দুরুসাহসেও বতী হলেন। স্থামিনী বায় ছাড়ো এই চক্ষে দব সদসাই কুড়ির কোঠায় লেখকও ভার তান্যতম সদস্য ছিল। ভাগাক্রম 'হয্বর্ল' লেখক সাকুমার রায় ও লক্ষাবিলাস প্রেসের দ্বভাষিকারী নামমার মালের বুক্ত এ মালুগ-কার্মের প্রতিশ্রতি দেওয়ায় ১৯১৯ সালে পরিকাটি সংগাববে আত্মপ্রকাশ করে। धनक्य धक्रों। श्रीज्ञेस्त्र व्याधक्रों।

সামাজিক প্রবাহন বিলা ছা পরিকার काश्राकामा आकृताहे क्ष्मान कार्य । स्टब्स क्राया PHONE DE CHE BLE WIED'R-CHENTEN बाक एकामा अक्रमान्ति क्रिका मा। जनराजन असम्बाह्या रक्षरकहे नैसक्शीया छरिनम जिल्लाक लाकेटक महा काटनत। धारे लाहका मात्रकारक मारकारकारक मामिनी द्वास एकटमन अब्दुब्ब्ब्र लाखारमा कार्यम् व रेट्यान इश्कोर बहाबाएनोत काण्यत विनाहक कतमा-রকার বাদের ভালিম ও কাতকে প্রান্তাকের क्रमाणीय समाय महा जिल्लीहे समामाग्रहस्य কাছে প্ৰথম পৰিচিতি লাভ কৰেন। তব অচিরেই দেখা গেল যে পতিকাপ্রকাশ শংখ্ क्रिशाह अन्दान करतह अन्वत दश ना अकांग्रे নান্তম অথেবিও সম্কুলান হওয়া ভাই। অত্তৰ পাছাবিক কারণেই করেকটি मध्या। शकारमध भव भहिकाँहि **छे**छै शास (১৯১১)। अक्रीरे क.म काकारम बरत लाम। এই প্রস্কো বলে রাখতে চাই যে, শরবর্ড जीवान कानरकन वह, काश्रुशांत वह, नर्व-ভারতীয় প্রদর্শনীতে শ্রেণ্ঠ পরেশ্কার ও বাজা-বাজভাদের দরবারে বিশেষ সমাদর লাভ করলেও এই পতিকাপ্রকাশের মধ্যে দিয়েই ছেমেন মজ্মদার বাংলাদেশের চিত্ৰজগতে এক বিশ্মতপ্ৰায় ঐতিহাসিক ভাবদান রেখে যেতে পেরেছেন। এই সূতে তাকাতকমী বালাস,হাদকে শ্রন্থা জানাই। সেই সংক্র সমবল করি শিংপীচকের অন্যান্য বলধ্ৰের। এ'দের মধ্যে স্থামিনী রাহ্ এবং রণদাবাবুর শিষ্য স্তীথ যোগেশ শীল ও সভীল সিংহের সংগে লেথকের বিশেষ ঘনিষ্ঠতা গড়ে ওঠে। আর্ট স্কলের শেষ প্রীক্ষায় সস্মানে উত্তীর্ণ হবার গর (১৯১৮) অধ্যক্ষ পালি' রাউনের সামজের আসার সোভাগ্যও ভার হয় : এই প্রস্তাত-পৰে'ৰ ভিত্তিতে উত্তৰজ্ঞীনে লেখককে চিন্ত-রণগুমণে নানা ভূমিকাট 🗇 ত হারেছে। ফলে আনেক বার্থতা ও ্রের বোকা জামে थालबारक करें देकि क क्रमहें मान्याह र শ্বিধার স্থেগ্র লিখতে ভল।

প্রেলে, প্রসংগ্র ফেরা যাক। স্বভাবতই পত্রিকাটি বন্ধ হয়ে যাওয়ায় চক্রের সদস্যের। খ্ৰেই মুমাত্ত হয়। তাদের মুদ্রকাশের ও সমাজে স্বীকৃতিলাভের আগ্রহ কিন্তু ব্জায় রইল এবং ক্রমে তা একটি নিদ'লীয় সহ'-ভারতীয় প্রদর্শনীর পরিকল্পনার রূপ নেয়। সোৎসাতে ও নিংশঙ্কনিকে আধাক পালি ভাউনের কাছে এই পরিকল্পনা উপস্থিত তিনিও করা হল। **GD** : শু বই শম্প নহোগা यदन বিদ্যালরভবনেই প্রদর্শনীর প্রতিখ্রতি দিলেন। লেখকের আর উৎসাহের সীমা রইল না। অচিরেই দি সোসাইটি অব ফাইন আটস নাম দিয়ে একটি প্রতিষ্ঠান গড়ে উঠল। সভাপতি হলেন সরে রাজেন্ডনাথ अन्याकनी, अस्त्रामक धनीयात्रत विभिन्छे कित-কর ভবানীচরণ লাহা এবং সহকরী যান্ম-मन्त्रामक रवाराण भीम ६ मायक। व्यत्मक ব্যক্তিরাও এর সদস্য হন ৷ ১৯২১ সালের ২১৫ ডিসেব্র তারিখে বাংলার লাটবাহা-দূরে লড় রোনাল্ডসে প্রতিষ্ঠানের প্রথম

"Barangang Halangang Barangang Halangang Halangang Halangang Halangang Halangang Halangang Halangang Halangang "Barangang Halangang Halangang Halangang Halangang Halangang Halangang Halangang Halangang Halangang Halangang

क्रमणकीय च्याच केटच्याचन कटका । कार्यकांस-क्षांत्रकोत्र नेपार्क श्रीवरणक गुलकात विकारणा वायन्यास ७ माना ज्ञानामा व्यक्त रमणी-विक्रणी जिल्लीत खाललाज स्थानाहे-वित वाचिक श्रमण गीमानि वाक्ष आक्रम-श्रीन्यन इत्त बर्दाः। বৃদ্ধত ১৯০৪ সালে আট গালারী টঠে যাবার পর কলকাভার MANCH MENCIO জনসাধারণের পাঁজে চিত্ৰকলা 💌 ভালকৰে'ল সমান্ত্ৰা সংযোগ আর হয়ে ওঠেন। ভালের রস-विकारत्व भार गाउँ स्थान । शत्रवर्णीकारण य जनन निक्नी विश्ववराणि ला**ण** करतत्वन তাদের वाशिती অনেকেই—বেমন 212 দেবীপ্রসাদ চৌধারী-এই প্রদর্শনীতেই তাদের প্রতি-শ্রতির প্রথম স্বাক্ষর রেখে গিয়েছেন। লেখকও কাঠকরলার জাঁকা সার আশ্রেডোবের এক প্রতিকৃতি, 'দি বেশাল টাইগার' নামে ছবি প্রদর্শন করে প্রায় রাভারাতি নাম করে ফেশল'। পরের বছর, ১৯২৩ সালে, কল-কাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের একটি বৃত্তি পেয়ে বিলাতে ররাল অ্যাকাডেমি অব আটস-এ বছ, বিশিশ্ট শিল্পীর সংস্পাদে আসার সংযোগত তার ঘটেছিল। ইতিমধ্যে অবনীন্দ্র-নাথ ঠাকরও কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের বাগেশ্বরী অধ্যাপক নিষ্ধন্ত হওয়ায় (১৯২০) বেশ একটা সাড়া পড়ে যায়। তাঁর বক্তা শোনবার জন্য শোরভাণ্যা হলে তিল্মার সারগাও খালি থাকত না।

করেক বছরের মধ্যেই ভারতীয়-অভারতীয় প্রখন আট সকলে এক বিপর্যায় ঘটিরে দেয়। এর প্রতিষ্ঠিতা-অধ্যক্ষ স্ক সাহেবের আমল (১৮৬৪) থেকেই অধ্যক্ষ-কর্মানের মতাশ্তর-মনান্তর খেন এখানকার এক চিরম্থায়ী বন্দোবস্ত। এরই কবলে ১৯২৭ সালে পাসি বাউন বাধ্য হয়ে অবসর গ্রহণ করেন। তথন সবাই ধরে নেন্ধে ছারদের একান্ড শ্রন্ধাভাজন টেপাপক যামিনী গাণ্যাশীই অধ্যক্ষপদে বৃত হবেন। কিন্তু ইতিহাসের রুচি ও গতিপথ বিচিত্র। অবনীন্দ্রশিষ্য এচিং বিদ্যার পারদশী মাকুল দে মহাশয় রবীশ্চনাথের সন্পারিশে ১৯২৮ সালে আট স্কুলের অধ্যক্ষ নিয়ন্ত হন। নব-নিষ্ট অধ্যক্ষের কাজকর্ম দেখে ছাত্রদের

मूह शहना इस ट्य असाहरूद्वतः रखनातः कि जनास्ता होत जानमा दकारमा एकछार cat: will fam a sca eiger-ninel গালালীৰ প্ৰতি অবহেগাৰ ভাতে क्षाणेत्र । : **अ अन्यास शत**्राण्यकतः भाका कदाव कता न्दवर क्यॉन्समाथ ब्राप्त बाह्यकव কোনো জিকাসবাদ না করেই ভারতৰ ভাষার ভাবের ভিরম্কার করেন। ভারা ইত-বাক ও নিশ্তৰৰ হয়ে হায়। ছদি কারও সন্দেহ থাকে তবে স্বাংলার কথা দৈনিক পাঁচকাটিতে শৈকপ্রিস্থালয়ে রবীন্দ্রনাথ' চিঠিখানি পড়ে দেখবেন ভৌং ২৮শে ছাবণ. ১৩৩৫)। চিঠিথানি প্রবীণ শিল্পী প্রমোদ-কুমার চট্টোপাধ্যারকে লিখিত। ইতিমধ্যে সহজবোধ্য কারণেই আর্ট স্কুলে লেখকের একটি অস্থায়ী কাঞ্চেরও অবসান ঘটে। আবার তখনকার ডি পি আই স্টেপলটন সাহেব ছাচ বিকোভের কারণ অনুসংখান সাহেব ভার বিক্রোভের কারণ করে লেখকের পনেনি যোগের বাবস্থা করলে আট স্কল অণ্নিগর্ভ হয়ে ওঠে। ইতিমধ্যে अशंक बर्क्न ए विमानश्चत्व सामाहिए অব ফাইন আট'স-এর প্রদর্শনীর অনুমতি না দেওয়ার এবং কশকাতায় অন্য কোনো উপযুক্ত প্রদর্শনীকক্ষ না থাকার সোসাইটির কাজকর্ম বাধ হয়ে যায়। ঘটনাচক্তে দিল্লীতে ভাইসরয়েজ হাউস সাজাবার জন্য লণ্ডনের বাকিংহাম পালেস ও উই-ডসর কাসেল-এ রাজারাণীর ছবির অন্কৃতির জন্য লেথক ১৯৩০ সালে ভারত সরকারের নিয়োগে িবতীয়বার বিলাত গমন করে, আট স্কলের আবহাওয়া থেকে ম,ক্তি পায়।

এই সমশ্বেই কলকাতার টাউন হলে রবশিরনাথ একেবারে নন-আকাডেমিক সাল্লে চির্বুলমাণে আবিভূত হলেন। তথন প্রত্যক্ষ অভিজ্ঞতা অতিশায়ী বিমৃত্ পদ্ধী স্ব-রিয়ালিন আগ্রেই কবিগ্রের চন্দ্রভাজন অবনীন্দ্রনাথ ও নদদলালের ভারতীয় চিত্রকালার প্রনাজীশিন সাধনার কথা একবারেই বিস্মৃত হয়ে তর্গ শিশুপীন্দ্র ব্যাভয় দিরে আহ্যান জানালেন

"When in the name of Indian Art we cultivate with deliberate aggressiveness a certain bigotry, smother our souls under idiosyncracies unearthed from buried centuries. Let us take heart and make daring experiments, ventures out into the open road to take risks defying unboly profibitious preached by prudent little, critics.

আর্নত প্রশ্বতাবে তিনি অনার লিখেলের পুলি কি ভাবত চোশবালে ধানাবোগে দ্র্প-বার কথা আদি বলছি? আঘি এই চম-চকে দ্বেশবার কথাই বলাছ। চমচিক্রক চকি বলে গাল দিলে চকবে কেন্দ্র একে গালীবিক বলে তুরি বলা করবে এছ বড় লোকটি তুরি কে? আদি বলাই এই চোথ দিয়েই, এই চমচিক্র দিয়েই এইল দেখবার আছে, যা চরম দেখা। (ফ্রেম্মা শাতিনকেতন, পঃ ৫৫)।

রবীন্দ্রলাস্ত করতে গিরে আনংক্রের আর্ট-ক্রিটকদের আধানিকতম নন্দনতাত্তিক ভাষাই আশ্রম করতে হল বটে ক্রিত কথার ও কাজে ভাবধারার বৈধারা শান্তিনিকেতনে এক ঘূৰ্ণাবডেরেই সাঞ্চি কোনও তর্ণ শিক্ষী তো রবীক্ষ-নাথের আহ্বানে পথ ছুলেও বাস্তবপ্ৰা इर्ल हाइन ना, 'त्रावधानी अधिक'है इस्त গেল। একমার ব্যতিক্স দুঃসাহসী বামিশী রায়। ইনি যোবনে বাস্তবপদ**থাই ছিলেন** কিল্ড অবন শ্রনাথের বাণী, 'আল্লাদের শিক্ষা-কমে ভারতীয় ছাপ রাখডেই হবে'. कौर्यस मण्डन्तर्भ रुखा मछन। इस दिन স্জনশীল শিচসনৈপ্রেয়ের পরিচয়া দিয়ে বিশ্বখ্যাতিও লাভ করশেন। দুভাগাত তিনি যথন খ্যাতির শিশরে তখনই নানা এলোগ্লেল্যে প্রচারে ভার শিলপাজাবন যেন কিছটা বাহত হয়ে যায়। বিশ্বজ্ঞে ওরিজিনার ছবির চাহিদায় তখন তবি ছবিখনে ম্যাস প্রোডাকশন শ্রে হল, অর্থাগ্রমার হল প্রয়র। ক্রমে অর্থ-অনর্থ তুল্য হয়ে এই বৈক্ষম-জনোচিত ভব সন্দরপ্রারী শিক্সীর (১৮৮৮-১৯৭১) শেষজাবনে আর ব্রেমার অবৃধি রইশ না। আধ**্**নিকভার **প্টভূমিতে** হামিনী রার এককই রয়ে গেলেন কলা ক্ষেত্রে পাথকং হাতে পারলেন না। ভার উত্তরস্বীও এ পর্যাত কেউ দেখা দিল মা।

(আগামী সংখ্যায় সম পা)





আমেরিকার বাংলা লাহিতা ও সংক্রির প্রচার :

श्रीकामवन्त्र अवकारवय देवनारम वास्त्राव চলচ্চিত্র শিক্তপর একটি প্রতিনিধিদ্য **আমেরিকা গিরেছিলেন পা**শ্চম গোলাধের কোন কোন দেশে বাংলা ছায়াছবি প্রদেশনের স্যোগ-স্বিধা ও তার বাব সারিক সম্ভাবাত। সম্পকে অনুসন্ধানের জন্য। এ°দের অন্যতম বংধবের আশ**ু**তোর मार्लात स्मीकरमा भिन्देश्यर्थ स्थात प्रकामिक अविषे मश्वाम शांतका आभाव हारू अला। বংগ সংস্কৃতি সংঘের উল্যোগে প্রকাশিত. শংবাদ বিচিতা নামে এই পতিকাটির ২৯ জ্ঞানর সংখ্যাটি (৩য় বর্ষ ৯৯ সংখ্যা) পেয়ে আমরা আনন্দলাভ করেছি পদিচম-বাংলা তথা বাংলা'দেশ সম্পকে নানা সংখ্যাদ যেমন এটু আট প্ৰতীত সোণতাহিক 'অম্ত'-এর আকারে) কাগজে প্থান পেয়েছে তেমনি নানা সাংস্কৃতিক অন্-ত্রানের ক্মারকলিপিও এর শেস প-চঠায মালিত হারছে। গত ২০ জান নিউইয়াক कु रहा कि प्रामानित हैं। ।

গারের উদেবাধনের কথা আমর এই স্মারকলিপিতে জানতে পাবলাম। াছাড়া ঐ শহরেই ২৮ জালাই ডং জয়া হালদারের **জ্ঞাটে** মানিক পাঠাগারের উদ্বোধনের সংক 🕶 🕫 প্রচার কলা তাক্ষেত্র। দিনতি চৌধাুরীব ে পরিচালনায় দিশ্মহল (৪ থেকে ১০ वरभावत वामक-वामिकारम्य सना।-श्रव भरवान এবং ববীন্দ্র পাঠাগারের স্থান পরিবর্তানের সংবাদও আমবা দেখলাম। তাছাড়া দেখা শাল টোগার সোসাইটি অব নিউইয়কের উদ্যোগে रकोशिक भागार्वाद वाश्वा नाउँक करावकी ক্ষান্তর এব মঞ্চথ কবার কথা। এর থেকেই বোঝা বাচ্ছে যে আমেবিকা-প্রবাসী বাঙ্গলীগণ পর্ণোদায়ে সাগরপাত জ্লাদ্রাদ্র সংমিতা এ সংস্কৃতি প্রচারে বতী আছেন। তারা বাংগালীমানেরই ধনাবাদ-ভাজন সন্দেহ নাই। পত্রিকাটি সংযের পক ধেকে রুণজিতক্মার দতের সম্পদনার প্রকাশিত হয়।

কৰি বিভূতি চৌধুরী স্মর্থসভা ঃ

সরোজ সাহিত্য পরিষদের উদ্যোগি সংবাদপতের বেশীর ভাগ স্থানই দখল পারষদ ভবনে সম্প্রতি কবি-অধ্যাপক করে থাকে আন্তর্জাতিক তথা জাতীর

বিভূতি চৌধ্রীর স্মরণে প্রধানত নবীন **ध्मश्करम**त डेरमार्ग क्रकींटे बारनाहना-मङा অন্যাঠত হয়ে গিয়েছে। কবির সহপাঠী ও বৃশ্ব প্রখ্যাত সাহিত্যিক-সাংবাদিক দক্ষিণারঞ্জন বসঃ প্রধান আত্থিত আসন গ্রহণ করেন। শ্রীবস্ ভারাক্রা'ত চিত্তে বন্ধার ক্ষতিচারণ করেন। বহু, তরুণ লেখক এই অনুষ্ঠানে উপস্থিত হয়ে কারর বিভিন্ন কবিতা পাঠ করে সুধী-মন্ডলীকে আনন্দ দেন। ডঃ অশ্যেককুমার দে একট ভাষণে কবি জীবন নদদ দাশের রচনার সংখ্য কবি বিভূতি চৌধ্রীর ভাব कारा ए तहनारेशकीत माम्मा नित्र व्याला-চনা করেন। সভা_র সভাপতি ডঃ অজিত-কম'ব 'ঘাষ মমস্পিশ'ী ভাষায় কবি অধ্যাপক সমালোচক ও বালি ছিসেবে বিভতি চৌধ্বীৰ গুণাক্সীর কথা স্মরণ করেন। এই সভাষ কবি বিভৃতি চৌধ্রীব তিনটি অপ্রকাশিত কাবগ্রেম্থ থেকে এগারোটি নিবাচিত কবিতানিযে নীল সাল এ অন্যান্য কবিতা নামে একটি কাবা-সংকলন প্রকাশ করা হয়। এই সভায় বিভতি-শ্রুতি ব্রুতার পরিকল্পনা গ্রহণ কল হস। কলকাতা বিশ্ববিদালমেব আধানিক ভোবানীয় ভাষাসমাক্তির বিভাগীয় প্রধান ডং অসিত্কলার বন্দোপাধায়কে বিভৃতি-মালি বজ্তার পথম বস্তারপে অন্মান্ত্র জানবার সেম্ধানতও এই সভার গাহীত হয়।

তিশ-চল্লিশের দশকের প্রতিভাবান কবি
বিভতি চেটাংবীর মৃত্যুতে বাংলা নাবা-জগতের
অপারণীর কতি চারে গেছে সংদেহ নাই:
কিন্তু যেটাকু তিনি দিয়ে গেছেন, তার
মূলাও কম নয়। প্রতিভার সেই স্বতঃ
ফক্তি দানকে নানাভাবে সারণ ও
সম্মানিত করার জন্য এই অন্টোনের
উদ্যান্তাগদ বিশেষ প্রশাসার দাবী রাখন।

मकः प्यामा द्वितिक मर्यामणाः

র্জধানী বা বড়ো বড়ো শহর থেকে যে-সব সংবাদপত প্রকাশিত হর সে-সব সংবাদপতের বেলীর ভাগ স্থানই দথল হরে থাকে আ্তর্জাতিক তথা জাতীর গ্রেম্বপূর্ণ সংবাদ। ফলে দেখা যায় জেলা বা মহকুমা শতরের বেসমুস্ত সংবাদ. তা এই সব সংবাদপত্রে কর্তৃপক্ষের ইচ্ছে থাকলেও স্থানাভাবে পরিবেশন করা সম্ভব হয় না। অথচ যে কোনো দেশ, বিশেষ করে আমাদের দেশে এখনও জনসংখ্যার বৃহত্তর অংশ গ্রাম ও ছোট শহরেই বাস করে থাকেন। কাজেই ছিছাটো শহর বা গ্রামাপ্রালর জনসাধারণের নানা সমসাার কথার যথোচিত প্রচার একটা সমসা। হয়ে ওঠে। তার ফলে তাদের সমস্যা কদাচিৎ সরকারের দৃষ্টি আকষ্ণি করতে পারে। প্রধানত এই সমুদ্র সমস্যাব দ্বীকরণের জনা আজকের পূথিবীতে অনেক দেশে জেলা, এমনকি মহকুমা স্তরেও দৈনিক সংবাদপত প্রকাশের বঙ্গোবস্ত করা **হতে**। পশ্চিমবাংলায় এ ধরনের প্রথম উদ্যোগ 'দৈনিক চন্দ্রভাগা' সম্প্রতি তার প্রকাশের সহস্রতম দিবস পূর্ণ করলো। এই সংবাদ-প্রচি প্রকাশ করা হয় ে সপুর থেকে। এই অনুষ্ঠানে প্রধান অভিথির আসন গ্রহণ করেন প্রবীণ সাংবাদিক ও সমাজ-সেবী দাশরথি তা। তিনি তাঁর ভাষণে বলেন : মফঃ বল থেকে প্রকাশিত ছোট ছোট পরিকাগালিকে ছোট ছোট লোকদের ছোট ছোট সমসার কথা বড়ো করে তুলে ধরতে হবে। এই অনুষ্ঠানে ভাষণ প্রসংগ কেন্দ্রীয় সরকারের অনাত্য উপ্যন্ত্রী প্রণব মাথোপাধাায় ছোট ছোট সংবাদ ও সাময়িক প্রগালি সাক্ষরতা আন্দোলনের সংস্থা যুৰ হক—এই অভিমত বা**ৰ করেন।** বিভিন্ন বকা 'দৈনিক চল্ডভাগা'র প্রখী মনোহর সিং-এর দৃণিউভগা ও উদ্যমের ভয়সী প্রশংসা করে বছতা করেন।

माहेरतनीयानस्य काफीय मरण्या :

시민 이 스마트 바이트 사람이를 가고 됐습니다 일이 되는데 얼마를 했다.

সম্প্রতি ইনন্টিটিটট অব সাইরে-রীয়ালা নামে একটি জাতীয় সংশ্থা কল-কাতার সংগঠিত হয়েছে। গ্রন্থাগার-বিজ্ঞান সম্প্রেক বিশেষজ্ঞ সংধী ব্যক্তিগণ এই সংখ্যা গঠনের ব্যাপারে নানাভাবে প্রমার্শ ও উৎসাহ দিক্ষেন। মুখ্যমন্ত্রী শ্রীনিধার্থ- শংকর রায় শিক্ষামন্ত্রী শ্রীমত্যুক্সয় বংশালে
পাখায় ও কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের
উপাচার্য অধ্যাপক সভোগ্রনাথ সেন এই
সংক্ষার পৃষ্ঠেপোরক হতে সম্মাত হরেছেন।
রাধালার বিজ্ঞানে উপায়ন্ত বাছিদের শিক্ষত
করে তুলবার জন্য পশ্চিমবাকণ সরকার
সংক্ষাত কলেজে বিছাটো প্যান পিয়েছিল
এবং গত ও জনে প্রেকে নিয়মিত ক্রাপ শার, হয়েছে। এই সংক্ষা তাদের নিজকর
মুখপশ হিসেবে একখানি হৈমান্তিক
প্রথানার আয়োজনও করেছেন। আশাতবা
সংখ্যার ক্রমকেশ্র স্থাপিত ছয়েছে কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের আশাতো্য ভবনের
রাধ্যানার-বিজ্ঞান বিভাগে।

সাহিত্যিক পবিদ্ৰ গণেগাপাধ্যাল্ভের ক্ষ্যুতি সংরক্ষণের ব্যবস্থাঃ

কলোল যাগের আনাতর নায়ক সম্প্রতি পরলোকগত পবিত্র গঙ্গোপাধাামের স্মৃতি রক্ষাকদেশ সম্ভিরক্ষা সমিতি ১২ জ্লাই একটি সভার আয়োজন করেছিলেন। ভারতীয় সংস্কৃতি ভবনেব अखाज সাহিত্যিক বস্তাপতিত করেন। বহু প্রবীণ তথা নবীন সাহিত্যিকের উপ্তিতিতে এই সভায নিম্মলিখিক প্রছতাবগালি স্বাসন্থিকমে গ্রীত হয় ঃ (১) প্রিয় গাংশাশাধ্যের রচনার একটি পূর্ণাপ্য সংকলন প্রকাশ করা হবে। (২) একজন নবীন সাহিত্যিককৈ প্ৰিচ গ্লোলাধায়ের নামে একটি বাধিক প্রেম্কার দেওয়া হবে। (৩) তার নামে তার শেষ বাসভবনের নিকটে একটি রাশ্তার নামকরণের জনা চেন্টা করা হবে।

भवत्वात्क मात्र शांत्र ब्राप्ति इत्वेन :

কমনওয়েলথ প্রেস ইউনিয়নের প্রতি-ঠাতা স্যার হাারি ব্টেন গত ৯ জালাই ১০১ বছর বয়সে পর্লোকগ্রন করেছেন। ১৯০৯ সালে সার ব্রেন ইদিপ্রিয়াল প্রেস কনফারেন্সের উদ্যোগ করেন। এই কনফারেন্সই পরে কমনওয়েলথ প্রেস ইউ-নিয়ন নামগ্রহণ করে। ১৯৫৯ সালে এই সংশার সূবর্ণজয়ণতী প্রতিপালিত हाराकः। मीर्घा १० वश्मत शावः आतः वृद्धेन শ্বদেশের বহু দৈনিক সাশ্তাহিক ও পাক্ষিক প্র-পত্রিকা পরিচালনার সংগ্র যুক্ত ছিলেন। তার তিন খণেও প্রকশিত আৰক্ষীবনী সংবদশত তথা সাংবাদিত-তার ইতিহাসের একখানি व्यवगाना है। গ্রুপথ। সাংবাদিক হিসেবে সাার ব্রটেন ভারতসহ কমনওয়েলথ-এর প্রায় সব रक्टमंत्र मास्यामिक अश्म्यागर्गामंत्र अस्था বোগাবোগা রক্ষা করে চলতেন তাঁর মৃত্যুতে শাহিত্যিক সাংবাদিক প্রীতুষারকান্তি ছোব

শোকপ্রকাশ করে একটি বিবৃতি দিয়ে তার গাণাবদার উল্লেখ করেন।

नागात्मत नवीतक श्रक्षातिक नाण्डाविक:

অাকাহাতা (লাল খান্ডা) জাপানে সর্বাধিক প্রচারিত সাংতাহিক প্রিকা। এই পতিকার সম্পাদক তাদাও নিরাসাওয়া দাবী করেছেন বে তিন বছর থেকে নকাই বছর পর্যাত সমস্ত ব্যাসের পাঠকট ভার अवश्रामकाश প্রকাশিত প্রারকাটি প্রভান করে। এই পত্রিকার রবিবাসরীয় বিভাগে তিশক্ষন সহকারী সম্পাদক প্রথিবীর সমুক্ত প্রথম শ্রেণীর দৈনিক সাণ্ডাহিক তথা মাসিক পঢ়িকা নিয়মিত লক্ষা করেন এবং সে-সব থেকে নানা তথ্য সংকলন করে পাঠকসমাজে পরিবেখন করেন। ১৯৫৯ সালে এই পত্তিকাটি আত্মপ্রকাশ করে। প্রথম সংখ্যা ছাপা হরেছিল চিশা হাজার। আর বর্তমানে ধার প্রচার-সংখ্যা ₹₹,000001

প্রিকাতি জাপানের কমিউনিস্ট পার্টি পরিচালিত ছলেও, দেখের প্রায় সমুদ্ত रश्रामी स्वान्धकारी क्षातिक मामा एखा-म्लक ও न्यन्ध्या तहनाश नग्राप्त क्यास জনা সর্বদা সচেণ্ট পত্রিকাটির দৈনিক প্রচার সংখ্যা মাত ৫০,০০০ কাজেই : নাখা যাকে বে প্রধানতঃ মাাগালিন বিভাগের আকর্ষণেট এর রবিবাসরীয় সংখ্যাটি লক লক্ষ কপি বিজ্ঞতি হয়ে থাকে। এই প্রিকার রবিবাদরীয় সংখ্যার নিয়মিত ফীচার-গ্লালর মধ্যে নিন্দালখিতগালৈ বিলেইভাইই উলেখবোগা : রমারচনা-সচিত হাসা-কৌতক, শতুন নতুন বইরের কথা চিচ্ ও টেলিভিশন খেলাধ লা. কিশোর ও ব্রুথ সম্প্রেশ বিভিন্ন ক্ষকথ্য শিকার বিশেষ করে মংসশিকার ট্যাকস ত জগণ সংপাধে कठना। आत अकिंग विस्मत कौहात है।

১৩টি সচিত্র বিশ্ববিখ্যাত রহ স্ত কাহিনীর বিশ্বল সংকলন শালকি হোমস্ফিরে এলেন

কোনান ডয়াল/অদুশি বর্ধন। বড় আকারে নতুন মুদুণ বের চেছ্
টাঃ ১৮ (প্রাহকম্লা দাঃ ১২. ব্রু ক্লাবে টাঃ ১০, অগ্রিম টাঃ ৫)
আনা কোনো রচনাবলীতে এটি পাবেন না। কাগজ সংকটের জনা সীমিত
সংখ্যায় খাপা হচ্ছে। আবার মূল্য ব্দিধ হতে পারে। ১৪ই
জ্বান্তের মধ্যে অবশাই গ্রাহক চানা টাঃ ৫ পাতিয়ে দিন।
বুক ক্লাব সদস্য হতে হলে অতিরিক্ত টাঃ ২ ভাতি ফী পাঠাবেন।

বুক ক্লাবের সদস্য হয়ে বই কেনাই লাভজনক।

গড়ে ৪০% কম দামে বিভিন্ন প্রকাশকের প্রতিভাবান লেখকের বই পাবেন। একসংশা ১৫ টাকার বই কিনলেই ৫ টাকার বই ফ্রী বোনাস! কোনো মাসক/বার্ষিক চীদা লাগে না—কেবল ভার্তি ফ্রী ২ টাকা। ফাবের তালিকা থেকে বারো মাসে চারখানি বই কিনলেই আজীবন সদস্য থাকা বায়। প্রতি মাসে প্রশ্ব ক্রাচার প্রতিকা ফ্রী।

কয়েকখানি উল্লেখযোগ্যনোর্ম বই

ट्यायम् शिक्षा छे अनाम समा अक नाम हो। ड

বারব্রীণ্ড রালেলের গ্রন্থগান্ত শহরতলির শয়ভান টাঃ ৪-৫০

অধ্যাপক গোপাল রাজের উপন্যাস ফোটরা ছোট নর টাঃ ৪-৫০

जारक करफाजकरमा महे जारक । ननरे जफाबनीत क्या नरता ! जांत्रम हो २ फांक की नार्तिहरत विनाम विवद्यप ट्रकट्टम जिना । जाक्सरे ! कथीन !

অচিন্ডাকুমার সেনগ্রেভর উপন্যাস

বরশাশনী টাঃ ৩ প্রাচীর ও প্রাশতর টাঃ ৩

ভঃ অসীম বর্ধনের উচ্চপ্রশংসিত বাচতে সবাই চায় টাঃ ৩-৭৫ কেটে যাবে মেঘ টাঃ ২-৫০

व्यान्या-विधा

ৰকে ক্লাবের সদশ্য হয়ে বই কিন্ন ! ৫৫-১ কলেজ স্মীট কলিকাতা-১২

अर्थान्य है जिया बाब का हत्या कि स्थापकरम्ब सहमा। सामान मावियीत ুর্বেল্লা উল্লভ দেশবালিক অন্যতম। **Велго** वड: দ্বিক বিভিন্ন CHING! कार्यके जानाम संबद्ध গৈতে প্রাক্তেন। জালের ভাষাও অব্রোধ জানান ভরি क्षांत्राधिन विद्यारगत बना किए न किए আৰহার জনা। আমাদের দেশ তথা সব হৈছের পরিকা পরিচালকরগের গকেই ব্যাপার্টা ভাববার মতে সন্দেহ নাই। বে দাংস্কৃতিক সমাবর তথা বিনিময়ের কথা আল্লা স্ব'ক্ষণ মুখে বলে থাকি ভার হালতভ্য রুপায়ণের জনা এই পার্যতি अवनान्यम क्या हे बाक्ष्मीय राज्य अस्य इस् अर्डि-सम्म कि পঞ্জাল বছরের পরেনো ক্রীছভা অনুবাদ করে প্রচার করার চাইতে आरक्वांता है। हेका-है। हैका विरातमी व्यक्ति **জীবিগাণের ধ্যানধারণার সংগ্র পরিচ**য় পাঠকসমাজ ীদাভের সংযোগ পেলে উপকৃত হবেন সদেহ নাই।

-জরংকার,

शाहरकल मध्रम् मन शहारमणा

ধ্ৰুপদী সাহিত্য সংস্থা মহাকবি মুখ্ স্দল দত্তের জলেমর সাধাণত বংসর লুতি উপলক্ষা এক মহ মেলার আয়োজন করা হয়েছে। কলকাতা এবং মফুস্বলের বৈভিন্ন কথানে এই মহামেলা বিভিন্ন कान्शास्त्र आह्याक्रम क्राया शर्म्माताना জীবনের বিভিন্ন পর্ব নিয়ে এই মহামেলায় ুজ্মালোচনা করা হবে এবং বিশিষ্ট সাহিতি।ক শৈক্ষীদের সমাবেশে মধ্য ক্বির কত্কগালি माहित्कत्र काल्नियात वावभ्धा इत्व। स्मधन र ব্ধ কাব্যের নাট্যর্পও পরিবেশিত করা ছবে। মহামেশার প্রদ্তাবিত কমিটিতে সভা-পতি হয়েছেন স্নীতিকুমার চট্টোপাধায়ে। সহ-সভাপতিদের মধ্যে আছেন আচিন্ডা-কুষার সেনগুভত প্রেমেণ্ড মির প্রবেধ **সান্যাল বিশু মুখে।পাধ্যায় মণ্ডিদু** বায় ভবানী মুখোপাধায় সদেতারকুমার ঘোর **জাগরময় ঘোষ এবং স**্থিয় স্বকার। **স্থাল রায় হলেন মহামেলার স্থাদক।**

শ্বন্ধানী সাহিত্যবাস্ক হাওড়া রামরাজাঙ্কার সমবাধী সাহিতা পহিব র
উদ্যোগে সাহিত্য বাসর অনুষ্ঠিত হয়।
ক্ষানুষ্ঠানে আলোচনার বিষয় ছিল 'আধুনিক
ক্ষিতার বাস্তবম্খীতা।' অংলাচনা ও
ক্রেটিত সাহিত্য পাঠে তংশ গ্রহণ করেন
হাওড়ার ভূষণ ক্রিব। হাওড়ার্ম
ক্রেণু ক্রিপের জনা একটি মিলিটি
ক্রিবার মন্ত গেইবাড়ী প্রাপ্যণে নির্বাতিত



প্রথম প্রেম দিব্দীয় প্রেব (উপনাস)।
সুধাংশ্রঞ্জন ঘেষ। আধুনিক প্সঙ্ক প্রকাশন ৪০ সীত:রান ঘোষ ভৌট কলকাতা-১। ছয় টাকা।

কাহিনীটি প্রধানত তিনটি সংসারের
মধ্যে আবতিতি—রমানাথ - স্কুলতা - স্বাণী
কলাণ দত্ত মি: বোস—হৈমনতী বিজন ঘোষ
এবং বেকার সেন্ট্র, দেন্ট্র বাবা-মা প্রসংগ।
বিজন ঘোষ হৈমনতীর প্রেমিক সুমি
এদেরই সুখ্টান। হৈমনতী পাটিতে বায়
জাবন তার উৎকেন্দ্রিক। রমানাথ বাবসার
উর্বাতর জন্য দ্রী স্কুলতাকে পাটিতে নিয়ে
থেতে চায়। স্বাণী তানের কনা। হৈমনতীব
ছেলে পরিন্তাবের স্বংগ স্কুলতার মেয়ে
স্বাণীর বিয়ে দিতে চায় ব্যামাথ-স্কুলতা।

ৈত স্বাধী ভাষবদে বেকার সেন্টকে। তানের প্রথম প্রেম তা-ই: সালতার প্রথম প্রেমিক অধ্যাপক কল্যাপ দত্ত হৈমদতার প্ৰথম প্ৰেমিক বিজন ছোব স্বাণীর প্ৰথম প্রেমিক সেন্টা কিন্ত এদের জীবনে জাসে িবতীয় প্রুষ একমার স্বীণী ছাড়া। উপন্যাসের শেষ্দিকে কল্যাণ দত্তকে নিয়ে রমানাথের স্থাীর প্রতি সংশয় অন্তজ্বালা সংশয়ের নিরসন হৈমনতী মিঃ বেলের চরিত্র সংঘাত তীর ভারেছে কল্যাণ বহু শেষে বাইরে চলে হায় এদের সালিখা ছেড়ে। কাহিনীটি বেশ স্চিদিততভাবে গ্রথিত। চরিত্রগালি সাচিতিত। লেখক নিটেল প্রশ কথা ও চায়ত্রগুলিব মনস্তাত্তিক ঘাত-প্রতিঘাত দেখাতে গিয়ে সাথকি হয়েছেন। উপন্যাসটি সাধারণ পাঠকদের ধরে র'খবে।

মহামিলন (উপন্যাস)। হোগেশচন্দ্র মজ্মনর নিউ বীণাপানি শাইরেরী কাঁগি মেদিনীপুর। ছয় টাকা পণ্চশ পয়সা।

উনিশ শ পণ্ডাশ সালের প্রবিশের গোবিণদপ্র গ্লাম। সে গ্লেম বহিছিল পবি-ব্রের মধ্যে কে**দি**বামীরাই প্রধান।



জ্ঞাতির অধ্যুপতনের মৃলে যত সব নাহিতাকরা, এনের হাও থেকে জাতির নৈতিক স্বাস্থারক্ষার তাগিদে যে মারাত্মক অস্থাটির আবিভাব, তার নাম কামপরেল আইন। সমাজ আর রাত্ট কর্ণ-ধারদের মতে সাহিত্যে যৌনান্ভাতর প্রকাশ নিয়ন্ত্রণ না করলে বৈজ্ঞানিক আবিজ্ঞার আর বাপেক স্থিলেওপাদন ব্যাহত হওয়ার সম্ভাবনা। ফলে অপনিত কালজ্ঞারী লেখক আর কবিরাও একদিন রাত্ত্রের নীতিগত ভ্রেড়াট থেকে রেহাই

আজও এই শাসন এতটা জোরালো হোক বা না হোক ভালো; বই আর মন্দ বই সম্পর্কে অনেক মুর্তি আর অনেক গর্জন-ব্রহণ কানে আসে। কিম্চু আম্চর্ক ভালো বই আর মন্দ বইরের নিশ্চিত সংজ্ঞা আজ্ঞ প্রশৃত কেউ দিয়ে উঠতে পারেনি।

সেই স্দ্রকালা থেকে মোটামাট একটা হিসের করলে দেখা ধাবে প্রার পচি হাজার বই রাজবোষ, রাখ্টবোষ অথবা সমাজ রোঝে নিগ্রেতি হয়েছে। সেই সব বই সমাজালীন বিচারে বে নিজক ফল বই তাতে আর সংশ্রহ কি? কিন্তু পরবতীকিলের বিচারে এগ্রেলার থেকেই নেবেশ প্রাইজ পেয়েছে এমন নজি: বিরল নয়। আ: স্বাইতা বি**ট্রে** প্রভঃ সম্মান পেয়েছে এমন সংখ্যাও প্রচর।

কালের বিচারের একটি শাশবত-কালের হৃদয়বি ১ নজির এখানে অপ্রাসাংগ্রুক হতে না

ইংলান্ডে সর্বপ্রথম একখান বই বাজেয়াত এবং অফিনশ্য করা হ্যেছিল ১৫২৫-২৬ সালো।

বহুয়ের ভাপা ফ্রমণ ছ হাজার প্রকাশে। আগানে পর্নাড়য়েছিলেন চার্চের প্রদেশপ্রসার কিন্তু আর্থধ কাজ সংসম্পূর্ণ করার ব্যাপারে এরও চের আগে থেকে অনেক কাল্ড ঘটে গেছে। লেখক ইংলণ্ডে নিরাপদে বঙ্গে ডাঁর এই বিপ্ল স্থি সম্পূর্ণ করতে পারেনান। কারণ সেই বইয়ের গোড়ার কিছু অংশ তখন বাইরে থেকে ছাপা হয়ে এসেছে। আর সেটকু পড়েই ক্রোধান্ধ ধর্মযাজকরা সেটাকে নারকীয় বাভিচার আর মারাত্মক প্রাসামগ্রী বলে ঘোষণা করেছিলেন। ওদিকে সম্ভাট অণ্টম হেনরীও তেমনি ক্রুম্ধ ক্লেখকের গুপর।

হাওয়া ব্বে লেখক আগেই ইংলন্ড ছেড়ে পালালেন। কিন্তু আরম্ম কাজ সম্পূর্ণ করার মতো নিরাপদ জাংগা est Far Asia Sign

পাড়ার সেরা বাভি বড় মিঞা। বড় মিঞার এক ছেলে আবদাল মেরে ছাবেদা। বিশিন গোশ্যামীর সংগ্য বড় মিঞার অনেক দিনের বাধাত্ব। কিচতু দাগার সমর আবদাল ভার বনিষ্ঠ কথা শংকর অবাং বিশিন গোশ্যামীর ছেলেকে হভা করতে যার বাধা দের ছাবেদা—কারণ সে ভালবাসে শংকরত। এই নিরে কাহিনীর বাত-প্রতিবাভ। অনেক বাধা সরিরে দেবে ছাবেদা শংকর মিলিত হয়। উত্তর পরিবার ভা মেনে মের। কাহিনীই বলা হয়েছে কিচতু শিল্পাণ্ড অনেক কম। অতি-কথন মোলাভ্রমা সংলাগ ও গান্দা আড়ল্টতা বক্ততা ধমিতা এর উপরাসগালে নকী করেছে।

, আবি:জ্বনা (উপনানস)। ভোলানাথ শীল। সারবান ৪১ পরাশর রোড, কলকাতা ১৯। তিন টাকা।

ভোলনাথ শীল তাঁর অবিজেদা উপনাদসটিতে কাবিকে ভাষায় রতন-রতা। প্রদীপ - স্থেন - শামলদা—এই রক্ষ করেকটি বিশেষ মানসিক্তায় ভাঁবণ্ড রভাার সংগ্র প্রদালের কামহীন ভালবাসা র শাহতরিভ হারেছিল ভাইবোলে " गत्परमत यण्यः त्रचमक श्रेष्णीरशत यथ्यः। রভনের সংশা রভাগে প্রেম শেষে রভাগ চর অন্তঃস্ত্রা কিন্ত রোর এই অবন্থা যুখন তথ্য বত্তৰ কানেক দাৱে অসহায শায়িত। ভাল রোমাণিক সিচয়েশান জৈয়ী করে করিছপর্ণ ভাষা কোথাও বা সোজাস্তি কবিছা দিয়ে উপন্যাসের কাহিনী ঘটনা চারহচিত এমনকি সিংধাকত এ'কেছেন নতন ঔপনাসিক ভোলানাথ শীল। উপমাদের আজিকে কিন্তু পরীক্ষা করতে চেষ্টা করেছেন—আতি অতীত केलापि ব্রেমান জীবনবৌবন ভাবনা বিষয়কে ভিন্তি করে। সম্পূর্ণ হতে না পায়লেও লেখকের প্রয়াস বিভাটী মানতে হয়। গদে সাথো প্রবোগ বজ^নীয়। সংলাপে প্রচর আডফীতা আছে। এসব সত্ত্তেও অবিক্ষেদা উপনাসেটি লেখক ভোলানাথ শীলকে ভবিষাং উপন্যাসধারায় নবস্থিত পুরিভাতি দানে স্মধ্।

চরিত্রের চিত্রবুপ উপহার দিরেছেন। প্রেরণী পূর্মা (উপনাস)। দৈবাল চট্টো রজার সপো প্রদীপের কারহীন ভালবাসা রুপানতরিভ চারেছিল ভাইবোলে।' প্রদীপ রুপানতরিভ চারেছিল ভাইবোলে।' প্রদীপ

> বে মাঝি নিজেকে বলে জাতাত কোম্পানীর মাঝি বাকে লোকে জামে হাওঁয়াঝি বলে সেই দলভেম ফ্রাকিয় জীবনজাহিনী খানিবাছন শৈবাল স্টোপ भागात जाँव रभक्ती अन्ता देशसाहरी স্নাদেনের কাতিনীসারেই আন্স সেটান্ন-মাপ্টার মনসার সাতের মৌলবী সাভেম্ম रभारत तक तिलात आर्थका जानमा स्वयः राजा शकात्म मध्याच रिक्टीम विकास ক্তিনী মোর আব্রাসের ক্রম ক্রেটিরকার মাজে ইড়ালি লালে। এরই সালে সমানেটা ম্পিশ্ল বিষাতের ক্রতিনী স্ক্রিফাশ্র कालगीकामात अमीर्पाता केकारीक हरिया গাড়ে এঠে। বানিমা পার্বারাকার করি ভৌনকাল বনিতে। কোধাকের পক্তীক সক্ষ্ কাতিনীগ্রহান ক্ষমতা চরিত চিত্রশ্রীয় कातिकारि अगश्यकीसः।

লাল মানি নীল জনগা। গালিক দিন্তলী গাল্পানী পুকামনী। প্ৰিবাৰ্মজ্ঞ বাক সাহিত্য ৩৩ কালজ বো কৰ কাকা-১'। দান্ত-সাজে তিনে টাজা।

शाकात महित्रशाहि क्रांतिकात जारकाज राज्य शक्तानाका जाजारका अन्तर ताम करियन क्या मधाना-करिकेट प्रान्त्री राजाजारकात्रीयः स्थानात्राचाः राजासः लग । जिल्ला जासत्य गिया हाल संस्त ज्ञास्त्र । क्रम्याः ^{दे}राक्षक सम्रहाः क्रिक काल गाँधे हाँक साताना लीत्र कावार शास रासका किया कारा किया এক অসম : বিশ্বক স্থিয় স্ক্রান্স व्यक्त भागकात भागतीयात्रा स्वीताकाता है क्रिजामा । जीवा স্ত্রিস্থানি লিখা সাল সতিসাল বিস্তৃতি লাছক নিশিক সেম্মান্স বেশানে জন্মনাম সদং কালে 'কাদেশে-প্রাদার' जारमणाक कारमन प्राप्ता शाल-गान करते 🤏 মকলার সমর। শাহিত সিংট পাঠি कर्मक रम मधुनाय भगतम, आरम विकास मालक दन्हें। छोत कात्रात्राक्य शार्तकामा সমাদ্তে হোক!

কোথার? চাচের পান্তি ছুটোছে তাঁর বিরুদ্ধে, রাজপান্তিও। চাচের মতে জগবানের নামের আনরবলে বাভিচারের আনুশীলন চাকাছে ওই বইরে। আর্ রাজা অন্ট্র হেনের র বিবাহ বিক্লেদের বাগোরে রয়েছে নিজের বালিওা—ধর্মের আবরবে এই বিচ্ছেন্ট্র বাপক নোহড়া দেশছেন তিনি গুল্ঘটিতে। লেখক যেন বান্তিগতভাবে তাঁকেক্ট্র বাগোনিকধ্য করে চলেছেন।

অতএব দ্ভাগাভাভিতের মতো নহ জারগার প্রাণ নিরে পালিরে লেখক তাঁর কাজ শেব করলেন। পূর্ণে গ্রন্থটি আত্মপ্রকাশ করল। আর তারপর সেই বই পোডানোর অজাড়ন্দরে সমগ্র দেশের গালিক নডেচতে উসল। চার্নের সমগ্র দেশের অবিলন্দের রোগ্ডার করা হোক লেখককে। প্রাণ্ডার করা হোক লেখককে। প্রাণ্ডার করা হোক লেখককে। প্রাণ্ডার করা হোক লেখককে। প্রাণ্ডার করিছন। কিন্তু সর্বাহই তাু অসম্ভাবা।

দেবে ধরা প্রক্রেন তিনি।

বেলজিয়াতে জীল ভাটক করে হল। ভারপন ক্ষমাসক খেটিস বেশি দ্বাসকোধ কলে এবং জীবনত ভাগ্যিদণ্ধ করে হতা। কলে ভাক ভাকি।

কিন্তু ততদিনে পশাশ হাজারের ওপর গ্রন্থ চালা হায়ে গেছে। ভাগাহত সেই লেখকের নাম উই-লিয়াম চিনডেল।

আরে তাঁর সেই বইরের নাম? ধাইবেল।

বত্নানে ইংরেজি বাইবেলের অন্-নােদিত গ্রুথটি তাঁরই সেই অভূতপ্রে জনবাদের নিভাৱে রচিত।

সমগ্র মানবজাতি আজ ঋণী ওই মান্বটির কাজে। ইংলিশ রিফর্মেশন অধানের সেই উইলিয়াম টিনডেল আজ এক অননা শক্তি চিনেরে প্রীকৃত। সেই কাল আরে সেই দিনের বিচারের কথা চিল্টা করলে আমানের মূল রামারণ-মহাভারতের অন্বাদকরাও কি অব্যাহতি প্রতেব

বাক যত মজিরট দেখাই ভালে। বই আর মাল বইয়ের বিচার সর্বকালে আই কর্মান কিল কালন সাজে। লোলো বই মারে কোনো প্রথম নেই, সমারা তথা কিলে মাল বই নিরে। কিল্ড একখানা মাল বই পাতার আগত এবং প্রভাব সংপ্রের কৈছানিক বিশেলাম্বালন মাণো চাকলৈ আছিলত বা স্থাতিক বা সমালোচক এ হয়তে বা স্থাতিত প্রারেম।

সেটা পরের প্রসম্পর

—ह्यामाराजात कार्भामाध्य

বই\সংকলন\পতিকা

ক্ষিত্র বেকা। স্থানিবলেশন্ত বজনোনার। বিশ্বনারক ১২ নালন পার্কা কেলোকাতা বিশ্বনার বিদ্যানীকা।

Marinan Reinftra eigine Git-विकास क्षेत्र द्वारण विमाण्य क्षांत्रिक মাৰ ৰাম ভাবে বিভোগ লাগত অবিভার के अन्तरम त्मधाम व्यवस्थाना विक्र है एका क्षा क्षेत्र । एवं विकि स्कटम आणि अकरे क्षा मामग्रा । । इसमा यहन नमा ন্ত্ৰিক সৈতিয়া বাসঃ। কিন্তু তাতে বিৰয় নিন্দান প্ৰতি বধাৰোগ্য সন্মান দেশপুন **চ**িট থেকে যায়। তাই বলতে দঠা নেই রবীন্দ্রান্সারী এই কবির লেখার া জাম আমিই হেন। আমাকে বেণ্টন করে रिक्कारमन । मध्य गाहिनीयना वरका श्राहा-ম। বিশ্বা নিম হ'ই নারকেল । গ্রেকনা শ্রীল ভালো, আমার বোগনভিলা তিনরঙা ালে ফালে, সাল গাড়ে বাছে ভোল দাব্টামির াপ রেখে গেছে—র মতো মিটোল ফবি-াংশেরও অভাব নেই। ছাপা প্রশংসনীয়। 10 PG

মক্ষে ভজনজলি (গীত সংকলন)। ধ্ব চৌধ্রী ও শম্ভনাথ ঘোষ। লাশ ব প্রকাশনী ১৬৬ বিশিনবিহারী গাওগ্লী ফুটীট কলকাতা-১২। ছুমু টাকা।

িবংলা ভাষায় খুণ্ট সংগীত রক্সসংগীত লী কতিনি বৈফবদের রাধাকৃষ্ণ লীলা তিন গান ইত্যাদি ইতিপ্ৰে<u>ব</u> পেয়েছি। মক্ষা স্বত্ন একটি স্কল গড়েছিলেন লী সাধনার বিশেষ এক ভাৎপ্যপাণ भा करते। ताशकृतः स्वरः যেন এক শবকু বিশ্বত। সেই রামকুফাকে পুরেরুপে ননা করে সম্প্রতি রামক্ষ ভব্সনের গাতির পের সংগ্রহ আম দের হাতে अव्ह। शम्योर्ड छन्त्रिम नक *तञ्जा≥ताह*क त, रामना भए छशवान श्रीतामकृष स्माइ-ীমা স্বদা দেবী ও স্বামীজী বিষয়ক গুৰুষ রাগ-রাগিণী স্মন্তিত ভজন সংগীত ৰ। এতে বিস্তৃত স্বর্লিপিগ্লি রামকুক ধকদের অভাত ম্লাবান। সাধন স্থাতি লব্ধ প্রভথটি বিশেষ তাৎপর্যপূর্ণ। ছায়ানট

রাহকেনী তৈরবা ম্লাকানী রান্দাবলী সারং ইত্যাদি রাগে ও চোডাল তেওড়া কাহারাম ইন্যাদি, ভালে গেরু আলোন্ত ভরুন গানগুলি বলক ক্রিয়াগের।

সমাত্র নাম সাহনা। মহেল প্রস্কারী।
ক্রীক্রিকুলকার্কন তাপন আরম গৈলবাপ করেল রাম ভাগলগার (বিছ্যি)।
তিন টাকা।

ষ্ণপার বুকে শৈলাবীপে অকথা নাম সাধকদের তপস্যার সুবিধারো স্থাকন নাম সাধবা? প্রকাশিত হুদ্ধেছে। আলোচা শ্লাটর হিন্দু অনুবাদও প্রকাশিত হুরে সাধকদের মধ্যে বংলা সাধকদের মধ্যে বংলা সাধকদের শাহে তি কচন উন্দর্ধ তথা বালানা করে অন্তর্ক উপর্যাদিন সোক্ষর কুলানানাক্ষেন সাধকার অ্থান নামের সংকেত একাকাকালা সাধকার অথান স্থাকালা সাধকার অথা কাকাকালা সাধকার অথা কাকাকালা সাধকার অথা তান্ধে উপকৃত হুবেন।

আবন্তৰ। সম্পাদক জন্মত কুমার। ৩৩ চিন্ত-রঞ্জন এভিনিউ। কোলকাতা—১২। দাম বাট প্রসা।

নবপ্যায়ে প্রকাশিত ক্বিতার মাসিক্
পতিকা তান্ভব'-এর প্রথম সংখ্যা চাতে পেরে
ভালো শাগল। কেন কবিতা শীষক প্রাককথনটি বিত্তিতি হলেও বলিন্ট। রাম
বস্রে শাতিচারশার মধ্যেও কিছু কবিতা
সম্পর্কিত ম্লাবান বছবা আছে। তার
কবিতাটিও ভালো লাগল। আরও দুটি
ভালো কবিতা পড়া গেল পাতিকাটিতে।
স্কালি লিখেছেন গ্রেম্ব সম্বার্থ গোরিকা
ম্থ্যেপাধ্যায়। এ ভাড়া ব্রেছে গোরাক্য
ভামিকের নদার সময়, এবং নিজের বির্দ্ধেধ
যুদ্ধ নারে লাবাক্তথ দুটি সম্পর্ক কিছু
সুচিতিত মত্বা। প্রজ্ব স্ক্রের

প্ররাশ। সাংশাদক—বাসুদেব সরকার ও আলোক আচার্য। ৫৮ কক্সে দিবশুর রোড হাওড়া। এক টাকা।

হৈমাসিক 'প্রয়াস' পত্রিকার প্রথম বর্ধ দ্বিতীয় সংক্রম সম্প্রতি প্রকাশিত হয়েছে। ক্ষিত। পরিকাটিতে লিখেছেন সিক্ষার আঘিন্দ হক আনুদুক্ষামান হেলাল হাছিক নাহানতে হেলেন ব্ৰক্ষা বাহুবুছ হলোদ সৈম্প আহমেন হাজেক র্ষিষ্টন ইলোন প্রাংশ ব্ৰক্ষা সোভ্য চৌধুরী অনুপ্ বস্ব ইজালি। পরিকাটির ক্ষিড়ারালি ব্যাধ অধে উল্লেখযোগ্ধ।

কৰিছা। সংগাৰক সালেছ মুক্তিকা কালিক। ০৬ ব্যামী ধাৰা। ঢাকা।

্ৰিক স্থানের সনির্মিত কবিতাপর করিতার করেকটি কবিতা ভালো লাগণ। লেখা নির্বাচনের দিকে আরও বহু দেওরা প্রয়োজন।

স্ত্রীকেখা। গতিময় রাষ্ট্রা শাম বাধ । বান পুর বর্ধমান পঞাশ পয়সা।

অধিকাংশ দেখাই অত্যত দুৰ্বল। লেখা নিৰ্বাচনের দিকে মনোবোগ দেওয়া দরকার। ছাপাও পরিক্ষম নয়। সেদিকেও লক্ষ্য দিতে হবে। ভবিষাং সংখ্যাটি উন্নত হবে আশা করি।

আভিমান। সম্পাদক—দেবাশীব মজুমদার ও গোডম চৌধুরী। ২৬ ৷৩১ ৷২ কৈপ্কুর লেন হাওড়া। এক টাকা পঞ্চাশ পরসা।

গত জনুন মাসে কলকান্ডায় আনুষ্ঠিত
থক বিরাট কবি সন্দোলন উপলক্ষে 'অভিমান'
প্রথম সংকলন প্রকাশিত হয়েছে। লেথক
সন্টার প্রবীণ ও নবান কবিদের মধ্যে
আছেন সর্বাহী হরপ্রসাদ মির শিবশান্ড পাল
বীরেল দত্ত ধ্রুলিটি চাদ পলাশ মির অজর
সেন শিবেন চটোপাধ্যায় অমেতাভ চক্রবতী
শ্যামা দে স্কুচেতা মির কল্যাণ গতেগাপাধ্যায়
গোতম চৌধারী দেবাশীষ সংশাদার রাম
কানু গৌরাংগ ভৌমিক স্পান্থায় আচার্বা
অর্থশতী সেনগাশুল দে রায় ইত্যাদি।
গতিকাটির সম্পাদনা স্তিভিত্ত।

ক'ঠবর। (রবীংদজার-তী সংখ্যা) সম্পাদনা সভ্যরজন বিশ্বাস। ২ টেম্বার জেন। কোসকাতা। পঞ্চাশ প্রসা।

প্রভাগের চোথে সত্তরের কবিতা আন্দোলন প্রসংগ্য সৈয়দ মুস্তাফা সিরাজ এবং সদসীপন চট্টোপাধ্যায়ের সংক্ষিত অথচ মুলাবান বত্তবাগালি ভালো লাগর। ছাপা পরিক্ষর।

বিশিক্ষ। সম্পাদনা শিলপীমন। চিন্তরঞ্জন পাক'। নিউ দিল্লী

এই অভিনব প্রিক্টি প্রবৃদ্ধী বাঙালীদের শাহিত্য অন্ত্রাগ বহন করছে! প্রচুর পরিপ্রমে কিছু অংশ সাইকোন্টাইল কিছু বাংলা টাইপ করে প্রিকটি সাজানো। লিখেছেন, ইনদু ঘোষ অমালা-প্রসম গোশবামী প্রবেধ ঘোষ ফণী বস্থ এবং আরও অনেকে।

পাছাজেশ্বর। (নজবুল সংখ্যা) গোলাম নবী কালেরী। শুক্তাজপরে। বীরভূম। কৃতি প্রশা

গীতিকায় নজর্ল প্রেমিক কবি মজর্ল প্রকাশ বুটি ভালো লেখেছে।

श्रकाणिक राजा

প্রশাদতকুমার মির সম্পাদিত

বুদ্ধিতে যার ব্যাখ্যা চলে না 🏗 : ৬০০

এতে লিখেছেন — সুনীল গাংলাপান্থান, নারারণ গংলাপাধ্যার, পরিমল গোল্লানী, প্রেমাপ্ত্র আত্থাী, রুমেন্দ্র রার, ডঃ অভিডেকুমার ঘোর, আননন্দ বিভাটী, কালীপদ চটোপান্ধার, নজিনী ভদ্র, অর্পকান্ডি হোর, রেবা দাস, গোরী বল, আলা দেখী, গোপাল ভোমিক শেখর বন্দ্যোপাধ্যার জ্ঞানেন্দ্র কালচী অন্ত্র মধোপাধ্যার এবং আলাভের মধোপাধ্যার

विक्र शकाभागी है २०७, निवास मत्त्री, क्लिकाका-७ त्यास : ०৪-৪৬>२



(60)

স্থালি তিথিনস নিচে আর অপেকা করতে পারলেন না। ছেন্টবাব্রক সবাই মিলে ভাকাভাকি করছে। ছোটবাবা সরজা খুলছে না। দরজা ভাগার আগে সবাই এই হোমন ভেবিড এনজিন সারেও বংক জব্বার বার বার বলেছে ছোট দরজা থোল। তোর কি হয়েছে। এভাবে তই শেষ পর্যব্ত ভেণে পড়াল। ছে টবাব কোনো জবাব দিক্ষে না। স্যালি হিগিনস এক মুহুত এখন সময় নত করতে পারেন না। এনজিন-সারেঙকে শেষ পর্যতি ভোটবাবার দরজায় পাহারা রেখে ওপরে উঠে গেছেন। সব অফিসারসদের ডেকে পাঠিয়েছেন। স্বত এলে তিনি সাদা কাগজে পেনসিলে প্রথম বড বড ভিনটে দাগ কেটে ফেললেন। ষেহেতু সব চার্ট, ওসেনোগ্রাফি সংক্রাল্ড বই শগবুক সেকসটান চার্ট-রুমে থাকত অর্থাং ষা কিছ চালাবার পক্ষে প্রয়েজনীয় সব এখন সম্দুগতে —িতিনি কিছুমার বিচলিত বোধ না করে খুল সহজ-ভাবে দাগ কেটে জাহাজের অক্থান মোটা-**म**्हि निर्णाद्युत एक्टो कतात अम्मश वनातना আপনারা ব্রুতে পারছেন আমরা লয়েলটি দ্বীপের কাছাকাছি কেথাও আছি। জাহাজটা সম্ভবত লোকে ছেনে যাছে। এবং সম্ভবত দক্ষিণ নিরকীয় স্রোতে অহাজ ভুফটিং হচ্ছে। সামোয়া থেকে পোর্ট-মেল্বোর্ণের দ্রেড় ধরুন প্রায় দু হাজার তিনশ বিশ মাইলের মতো। জাহাজ পাঁচ দিন রান করেছে। সাড়রাং ভার্টেলিয়ার উপক্ল থেকে প্রার বারোশো মাইলের দরেছে রয়েছি ধরে নিতে পারি: ঝড়ে যদি সাউথ ইপ্ট ইস্টে কিছ্ এগিয়ে হাই দ্রত্থ ধরে নিতে পারি সামন্য বেডে গেছে। তাপনারা কি বলেন ?

চিক-মেট বঙ্গল—স্যার, কিছাই তো ব্রুক্তে পার্বাচ না

—কিছু না ব্যক্তে এ সমর চিফ-মেট আমাদের চলবে না। যথন আমরা ব্যক্ত পার্ছি জাহাজ থেকে নেমে পড়া বোকামি হবে তুমি ডেবিড কি ব্রুক্ত! সহসা কথা শেখ না করে জিনি ডেভিডকে প্রশন করলেন। ডেবিড বলল—মাথা সাার ঠিক নেই।

ছোৰ্ড বল্ল-মাৰ্ মাধায় কিছা আসছে না।

সালি হিগিনস বললেন—মানুবকৈ এ
সমরে সবচেরে বেশি শক্ত থাকতে হয়।
আছা ছেটবাব্টা কি। একে আমি ভেবেছিলাম এ সময়ে আমাদের বেশি কাজে
আসবে। থার্ড শুমি সব দেখছ ত?

থাড় মেট ফুকে বলল—হাঁ। শেষে বলতে চাইল হারামজাদা তুমি তবে জানতে সব।

স্মালি হিণিনস দক্ষার বইরে একণর ঝাকে কি দেখলেন, অথাধি জাহাজে কাজ-কর্ম ঠিক হচ্ছে কিনা কারণ এ-সমরে সবাইকে সবচেরে বেশি কাজ না দিরে রাখলে সবার ভাবস্থা ছোট্রাব্র মতো হয়ে হাবে।

ভথন ডেক-কসপ বড় বড় সব রঙের
টব থালি করে দিছিল তার মান্তে মান্তে
করতে
করতে
করতে
সে সোজা ডেকে টঠে নমান্তের ভণ্গীতে
দ্বিড্রে থাকল স্বালি চিণিনস ওপর বেকে
চিৎকার করে উঠলেন হাই। কি হাছে। কাজ
কাজ। ইম্বর্কে ডাক্সর আনেক সময় শাবে।
স্টার্টকে ডাকো ডেবিড।

স্ট্রার্ট এলে তিনি সম্ভীর পলায় বললেন-সব বের করে দিক তেঃ?

স্ট্রার সালাম জানিয়ে বলল—হাঁ স্যার। হাাম মটন বিফ টার্কিবা কিছে, স্টক আছে সব তুলে দিয়েছি গুশরে।

হিগিনস বললেন—স্যাবেজ কভটা আছে ?

—স্যার দটক ব্রুটা নিয়ে আস্ছি।

—নন্দেশ ! ভর। আরে এখন তোমাক আমি দটক মেলাতে বলছি না। বা কিছু খাবার আছে এক কোটা মন্ট হলে জাহাজ থাকে কোলে দেব বললাম।

--क्रात्तक कि इस्य अग्रह।

—তুলে চাও ধগরে কেটে স্ব শ্কোতে নাও। তথুন তিমু নুন্দুর বিশ্বি ছুটে এল। বলল—চরটা জারগা করী হরে বাবে মনে হয়।

-काथाइ काशाह करतह।

—দ্টো ফোর মাস্টের দ্ব পাজে। দ্টো মেন মাস্টের দ্ব পালে। —বাড়াতে পারম্ভ না।

—আর সব তে কাঠের স্থার। 👺 অ গাুন জ্বনলে কাঠের ডেক পুরুদ্ধ হৈ পারে।

—বোট-ডেকে বর কেবিনের পাশে এই জায়গা করতে পার।

একটা সে মৃহত ভল করে ফেলে মতে। বলল—তা স্যার ঠিক বলেছে ভা-ভারীদের বল যা বিফ আর মট্র আ যতটা পারে যেন বয়ে**ল করে ফেলে**। **বর** ঘরে তোমার কিছু রখা আরু ঠিক হ না। পচে হাবে সব। তারপর স্ট্রার দিকে তাকিয়ে বললেন-এক ট্রকল্লে খান নত হলে তুমি মারা পড়বে স্টুরাট । এ তুমি হেতে পার। তারপর তিনি চিফ্র-মে বললেন—ভবে এটা আহ্বরা ব্রুমতে পাং ফ্রাতের মুখে **হুরে না গেলে কোনো *ব**ী টিশ ঠিক পেয়ে হাব। আরু মনে হচ্ছে 🕽 কোনো জাতাজের সংগ্যা পেখা তথ্য আ শুধু ভর আমরা স্লোতের মুখে যুরে যাই। ল্লোভটা যদি সাউথ ইন্ট ইন্টে 🤫 নিয়ে যায় ভাগ্য আমানের স্প্রসার বচ হবে। চারপালে অজন্ম ন্বীপ**্রিপ**্র যব। শতি সাতশ মাইলের ভেতরই শে। খেতে পারি। চিফ-মেট কাপ্ডামের ক বিরুদ্ধে একটা কথা কলতে পায়ছে : বললে বেন লোনতো আপনার কি খারাপ স্যার। সমানে পাঁচ সাভেল যা চাটিখানি কথা। শ্বনে তো মনে হয় পাং একটা প্ৰীপ রুৱেছে। আহ্বা প্ৰ**ীপে**ং একেবারে নেয়ে যান্তি! কিন্তু স্টেমার মা প্রপর কথা বলার সাচস ভাব দেই। সম্ সম্ভতিদের মূখ দ্বীর মূখ ভেসে উ ভেত্তরে ভেত্তরে পাগল হয়ে বাকে ভ ক্ষাবাভান্ন কিছ, হুৱান মতো থাকতে হু

লৈ অন্তল তা স্থান পেয়ে বাৰ মনে হজে।

স্ত্রাং থ্য থাবড়ে বাবে না। আরে

আইলা তা সিউল বাংক। তোমানের

আইলা তিবি কেনেখেলা করবে মনে হল না।

আইলা নিয়ে তেনেখেলা করবে মনে হল না।

আইলা নিয়ে তিনি কেন বলনেন বলি থয়ে।

আইলা নিয়ে গানিতে পড়ে বাই তবে আল্লা

আইলা কাবলা নিয়ে গানি নিয়ে বালা। এটা

আইলা অবলা আলাল কৰা। আলালালী কৰা।

আইলা কাবলা কৰা তালালালাক পড়ে বেডে লাবি

আইলালা ক্ষম কৰ ভালালোকে বিজ বাবে বালার

ক্ষেত্ৰ পাছ আৰু হলে হাছে। পাখাপ।
সাংগ্ৰেৰ পাছৰ ছু পছা গেছে। সৰ আন্ধানুহি
কৰাবান্তা। স্নোতে আন কাহাল কডাট ঠেলে
কোৰো, কাহাল তো প্ৰায় নিখন দাড়িকে
কাছে মন হচ্ছে বেমন কাঠেন গাড়ি ডেপে
কাছে ডেমনি ডেপে আছে। একট্ নড্ছে
কাল ডেমন হচ্ছে না। চিফ মেট আপনিই
কাক সব কথায় সায় দিয়ে যাজেনন কলতে
পানছেন না বোট দিয়ে দিন আমনা নেমে
নাই। অংশত আন ভিছু না হোক বেটে
কামনা অনেকটা পথ এগিছে স্বেডে পানব।

বৈজন্মার বাছচা হিসাব শেখাছে। ডেবিড ১ংকার করে উঠতে চাইলা। ভারণরই সন্নে কল একজন ধ্বার্থ নাবিকের পক্ষে এত ইফ্লে ভেশো পড়া ঠিক না। দ্বর্ধা নিশ্বর মতে সে বাবহার করতে পারে না। জাইবাব্ একটে ভূমি এত ভেশো পড়তো। বাল মা কলা আমাদের চাই, দেশে আমাদের কট নেই। ভেন্দা ভূমি ভিন্দা কথা কেবে কটা কথা করে বাসে আছা।

স্যালি ছিলিমস কললেন, যাদ কোনো

স্থানি ক্ষান্ত বাদ সাটাৰ আৰ্থা স্টেন
ক্ষান্ত বাদ্যা বাদ তবে প্ৰাক্তান কৰা এবং

ক্ষান্ত বাদ্যা কৰা তবে প্ৰাক্তান কৰা এবং

ক্ষান্ত কৰা কৰা কৰা কৰা কৰা কৰা কৰা

ক্ষান্ত বাদ্যা কৰা কৰা কৰা কৰা কৰা

ক্ষান্ত বাদ্যা কৰা কৰা কৰা

ক্ষান্ত বাদ্যা কৰা কৰা

ক্ষান্ত বাদ্যা বাদ্যা কৰা

ক্ষান্ত বাদ্যা কৰা

ক্ষান্ত বাদ্যা বাদ্যা কৰা

ক্ষান্ত বাদ্যা বাদ্যা কৰা

ক্ষান্ত বাদ্যা বাদ্যা বাদ্যা বাদ্যা

ক্ষান্ত বাদ্যা বাদ্যা বাদ্যা

ক্ষান্ত বাদ্যা বাদ্যা বাদ্যা

ক্ষান্ত বাদ্যা বাদ্যা

ক্ষান্ত বাদ্যা বাদ্যা

ক্ষান্ত ব

এবং স্বাই নেমে গেল নিচে ৷ বেট-ডেক ধরে হটিার সময় ডেবিড বলল কি ক্রছেন সালেঃ

- नृत्का निर्माटे अन्छ। नज्ञकारनद बाजा। ওর ভরসায় থাকলে স্বাই মারা পড়ৰ। আআদের গোশনে বসার দরকার। এবং চারপাশে সমুদ্রের নীলাভ জল আর অত্তহীন निगरक स्मान ज्याहे क्यम हाहाकात केंग्रेस । एक्टरक केंद्रि आकार न त्वन क्रक दिन হলে আসহে ৷ সম্পূ কি ভর্ণকর কি হে শ্লাকা নিয়ে মাস কৰাৰ মডো উপাত হলে আছে। এই বছাপ্লোর ভেডর ওরা না कार्ति कक्षीमत टक्टन त्वकृत्व। अक्षे क्या আরু কেন্ত বলতে পারছে না। স্ক্রে মাথার ষ্ট্রপর উঠে জাস্তে। জাপন মহিমার তেমীন কিরণ দিছে। কি শাস্ত জলরাশি। ছোট ছোট স্ব মাছের ঝাৰু বড় চল্লাকারে স্ব কি ভেসে আসছে। যেন জাহাজটাতে মাংসের গম্প পেরে গেছে সমন্দ্রের অতিকায় সব প্রাণীরা। नव (श्राह्म जानगृष्ट् । एक वनादव अश्रहाएउ জনহাজটা কৈছে দোৱা সৰ সাম**গ**ো হাবিয়েছে। মধারাতে সমাদু শেববারের মতো ভাদের পণ্যা করে দিয়ে গেছে। স্মা<u>টের মহামহিম শাস্</u>ত জ্লরালি দেখলে এখন বিশ্বাস করা হার না তার কোনে। দুঃখ ভাথবা ক্রোধ আছে। বরং দুরুতে বালিকার ফতো ভারি মিণ্টি হাসি হাসছে। ছোট ছোট চেউ-এর ভেতর এমন সব সম্প্রের দ্রেন্ডপনা এবং উল্লেখ্য নীলভ জলে বর্ষার ফাড়ভের মতো উড়ে

তথন কা•তান বয় বলল আপনি জানেন না সাব!

—না তো!

--- এপরে থাকেন খ্রনতে পার্নান র

বনি বলল সত্যি ভ বতে পারিন। ছোটবাব্ এমন করবে আমি কি করে ভাবব।
সে তাড়াডাড়ি প্র.ম সবটা কফি একবারে
গিলে ফেলার মতো গিলে ফেলল। পারে
দিলপার গলিরে সে ছুবট নেমে গেল।
কোবনে গোপনে লুকিরে ছিল জারনায় লুখ
সেখে ব্রেছিল কিছু নখের আচড় ওর
মুখে শশ্ট। বাইরে বের হতে সংকোচ ছিল
ভার। এখন সব ভূলে নিচে নেমে গেল।
এনজিন-সারেও দৃড়িরে আছেল। সে ভখনও
সব কড কথা বলে বাজিল। একটা কথা
বৃষ্টেত পারতে বাজিল। বনি ফিলফিস
কলার ভাকল সাকেও। সাকেজসাৰ কাছে গেলো
বলল ও কি বলছে।

 পারে কথা শ্নল না। বেলার কেব ধরে চলে এল জাহাজে। আর আলার কি দ্মতি হল সাধ বাদ না নিরে আলতাম করের ছেলে করে থাকত আমার তো লাব কলকের জালী ছতে হত না।

এসৰ কথা ছোটবাৰ, খাুদছিল বছতৰ थ्यक । अत्र कारथ क्रम ज्या आजारक । जान কার সংক্ষা এতস্ব কথা বলছে। সভুং জনুলা এই বেৰদ লে ভেবেছিল পরিবারের এক পরি-মুক্তার ক্রেকা সে মানুব তার বাবা মা পাগল काक्षेत्रमाई मेणम जावाया कांच्या व्यवस् प्रानी-ग जाइ जमह खराना समना समा छार दा ব্ৰেশ্ব ভেডৰ কথনও হারিয়ে শুওয়া পাগল জ্যাঠামশাইকে খ'্জতে গৈয়ে কথনও নোনালি বালির নদীর চল্লে কথাত হাতীতে চড়ে সে আর জ্যাঠামশাই প্রিবী আর আকাশ তথ্ন কত বড় হয়ে যেত ভার কাছে কিংকা সেই অর্জুন গছে সে বে লিখে রেখেছিল জ্যাঠামশাই আমরা হিন্দু-স্থানে চলিয়া গিরাছি। ভার নির্দেশ্ট জ্যাঠা-মশাইর জন্য সে অজ ন গাছে একটা বাতা রেখে এসেছিল-স্ব অধিকার থেকে সহসা মনে হয়েছিল সে বণিত। একজন হত্যাকারী মানুষের জন্য হোন ওরা নয়। ছোটবাবু ভারি অসহায় বোধ করেছিল। সে কে'দেছিল। আর যা হয় ভেতরে সেই দাহ—বনি হেন তাকে কাঠগড়ার দ্বাঁড় করিরে দিয়েছে। বলছে—ছোটবাব্ তুমি খুনী আলামী। তোমার আরু কেনে পরিচয় দেই।

সারেওসাব তথনও অনগঁল কথা বলে থাছে, দেখুন সাব আপনি যদি পারেন। আগনিকে তো ভয় পায়। আমকে তো আর ভয় পার না। আমকে মালবই বা কেন। কর বললাম ছেলে ঘাবড়ে সালবার। আরা মাবারন। ওর ওপরে তো তার কলে ভয়ে মাধা থারাপ তার কলেলে হাসাহালি করেব না। লোকে হাসাহালি করেব না। লোকে হাসাহালি করেব না। লোকে হাসাহালি তামার সমান থাকে কোধার। ছই তো কিছু ব্রেলি না ছেলে, স্বাই মুখে রন্ত তুলে থাটছে ভুই এখন বসে খাকেতে গারছিস ছেলে।

ছোটবাব, আর পারছে না। সে বসেছিল দুহাতে মুখ ঢেকে। এত কথা কার সংকা বলছে চাচা ! সে হঠাৎ টেলে দরজা 🛛 খালে বলল, কি হয়েছে আপনার কেবল সেই থেকে बान बान क्याबन। जादाक जाव विन्तृयाह বিচলিত ৰোধ করল না। সরল হাসি মুখে ফ টে উঠল। কলল ছোটসাব পর্যন্ত এলে গেছে। ভূই চল ছেলে, ভেকে চল। স্থার ज्ञान शक्त मस् साम शक्त । सामार रनाना, जन्मप्री मानिक हवा। ऋत्का ऋत्का स्थाउँ-বাব্র ফের ব্রুক বেরে কালা উপলে 🖼লা: সোশা ছিল হোটবাৰ ছিল। এখন জাহাজে সৈ মান হয়ে গেছে। সালেওসাব পালে দ্যাঁড়িয়ে তখন বলছেন ছেলে ভোর কি হরেছে। এভাবে ছেলেমান বের মতো করিছিল কেন। আমরা স্বাই দেখবি বাড়ি ফিরে হেভে পারব। ছেলে আল্লার কাছে আমার এত গন্শাহ জন্ম নেই, সম্ভুন্তে জেকে আমার हाबाटक हटन ।

ত হোটবাৰ<u> বলল আপনি হান চাল আমি</u> वाकि। क्राप्टेबाव: बांसव नित्क क्राकान ना। र्कार्डवार रक्षक क्लम, खार्शन काम्टबन DISI I MINIS PO PLECE BISCHE ব ডির কথা মনে পড়ে গেছিল। কেন হে মাথাটা গোলমাল হয়ে গেল ব্ৰকাম না। आरहरूमान भिक्तिक हरण शास्त्र रहाहेगान মাৰ পাল হলে চাইল ক্ষেত্ৰে। সে বালিয় बिदक छाकाल ता लक्ष्मका बीत भारण बालारकरक क्षामाम भिन्न जात्व। तम क्षाप्तियादा भिन्क मारक मारक काल कुरम कालाटक । क्राविवाद न िक्षे बाक् मन्या हुन क्लार्फ मत्या । साम क्षिक् सा। अक्वाइड छाटक ब्रांच व्यक्तिता না ছোটবাব;। সে ভাৰল CHRIST क्षाप्रेमान, रकामान कि श्**रतहा किन्छ स्था**प्रे-जावात पूर्व त्वील जाहरी, द्वारेयार् **अकृति महका नक करब देखर दक्त हरह** বাবে। হারা জ্রামে কর্মার বড় বড় DH-H তৈরি করছে, ধারা কাঠের ঠেকা তৈরি করতে এবং যারা এখন প্রায় আস্ত গর, WWW. যাঁতের শারোরের হতে পারে ভেতরে লোহার শিক ঢুকিলে প্রাচীন বনা মান্তরের মতে ডেকে আগনে ভেলে ভেডা গর হলৈ মুরগী রোস্ট করার ব্যবস্থা করছে, অর্থাৎ সব মাংস প্রভিয়ে গ্রদামজাত করে রাখা कर्जामन এक्जाइक्क निज्यक्तिक धाक्टव आत-कार्रेवाव ७ कार्त ना क्रारेवाव शास्त्र সে-সবে হাত লগাতে। সকালে লে একটা সিন ক্রিয়েট করেছিল জাবতেই সে আর খেন স্কেন্চে পায়ে জোর পেল না:

ছে।টবাব; চলে যাছিল ভেডরে। বনি ভোটবাৰার হাতে হাত বাভিয়ে দিল। ভোট-বাৰ ভাৰাক্তে না। ছোটবাৰ একক ভেতবে রেখেছে, আর এক পা ষাইরে। বনি ওয় ডান হাত হোন ছ'ুয়ে য়েখেছে। কিছুতেই হাতটা আর টেনে নিতে পারল না। সে কেমন শক হয়ে দাঁড়িয়ে থাকল। বনি হাত ছেড়ে না বিলে ক্ষমতা নেই সে এখন কেবিনের ভেতর ঢুকে হাহা। এত সে দুর্বল হুহো বায় কি করে। কেখার সেই আশ্চর্য রহসাময়তা। ভেকে ভবিণ মাংসংগ্ৰেছতা গন্ধ উঠছে। ভেকে আগ্রনের ভেতর সব কাঠে ঝুলিয়ে মাংস শোজানো হতে। গর্ শ্রোর ভেড়া হাস মারগী পাঁচটা লোহার পিপের আগুন জনসভে আর লোহার শিকে পোজা প্রায় জাস্ত ঠাাং শিক কাবাবের মডো রেম্ট হতে সেব। ভেটাবাব্র হাত সামানা ছ'্যে আছে বনি। কি আখ্চব অধিকার। কিছ वनक्ष मा। कारमा क्या वनक्ष मा। स्नारमा আবদার অথহা অভিমান নেই। ভূমি যেখানে আৰু ছোটবান, আমিও সেথানে আছি। সা কিছু পাপ সৰ আয়াগ তোমার। ভূমি रक'राज भाभ रशस्य स्त्रष्टाहे हाहेरव स्त्र ন। ভোইদার । কামরা দ্রুনে মিলে পালের অধিকার বহন করব। সামানা হ।ড ছ'ারে বেখে বলি এজবড় কথা বলে - ফেললে ছোটৰাৰ এই প্ৰথম শনিকে টেনে ভেতবে নিয়ে প্ৰথম কৰে জড়িয়ে নিল। যজন বনি माष्ट्र किरोब विस् । याद्र फार्किश जानिकादन व्याजिनमध्य अटक्काट्स भागम क्टर विका । पुरम বৈতে খেতে কোথায় কিন্সাসে যে লাখিনের সব জাকাওকা কুটো এর ছোটবাল্ কানে না। সন্ত্যা বলি চিংকার করে উঠল, জোটবান্ ভিজ্ঞ নরবাটা বন্ধ করে উঠল, জোটবান্

ছোটবাৰ প্ৰাথাক। দ্বালা থোলা জিল।
সে ভাডাজাড়ি দ্বালা বুক্ষ করে বেই না জিলে
এক একেবারে কালালা মানুৰ। কেমন এক
কিন্তু আধা জল কেতে পারে সংকোচ কে
এটা কি ক্ষতে বাজিক। বিন বের জার কে
বাজিক। কালাকে মানো ন সব করতে
বাজিক। কালাকে মানো ন সব করতে
বাজিক। কালাকে কিছু বৃদ্ধি থাকে মা। সে
বিনর পালে চুক্জাল বাসে পারে বলল, বনি
সাজ্য কালার মানা কিক নেই। তুলি বালা কর্
না। ভারেশার নে ক্ষে হক্স বেলা। বামর
স্থানার ভালাক ক্রান ভারেশার ভূমি
আনাকে জারে কতভাবে ভালানা করবে। তুলি
আনাকে ছোটবাবু কি ভাবো....। অমার
কি কোনো লাম নেই। আমি এতই ধারাপা...

ছোটবাব্ বাইরে এসে অবাক। ওকৈ
আসতে দেখে জন্মার লফিয়ে লাফিয়ে
প্রার চলে আসছে। সারেঙসাব আসছে।
বংকু এবং কেট কেউ বাদের কাজ এখন
আগানুনে মাংস কলসে ফেলা এবং বারা হাডে

थातारका कानि स्तरभरक, शक्षम कथन गाकिक कलाजारना बारज जाबाना रकटडे बारब रकटन मिटक अन रकटन एन्स करन जानरक E বেশ একটা নতম পরিবেশ জাচাজে। .030 নিউল ব্যাংক দিশর। স্ব কেশ্ন জাতাকের जिक्क करत टक्स्ट्राट्स कान्याम । अस्त्रज्ञ जाबामा राज्य दवन कदत रणजा हत्त्वरक । आहे रब नव मार्ज बानरज बाचा स्टाइ कावन अन्यक शोरम अमादम ना साथाम जिल्ला उत्पास काबाटक मूर्णास्थ रहेका बारव मा। मू-साबीनस नवाहेटक टक्वका भारत ट्रम्टन बाकटक प्रदूर শংরোপারি। ভাশ্ডাকীগণ মড় বড় ভেক্সিট্র ব্যবস্থা পারতে মাংস খন্ড খন্ড করে ব্যবস্থা क्सरहा जा व का उन्न और अरमाधान সম্বে সৰ বড় বড় হালার কি যে জাইন ভারা ভাহাজের চরণাবে জড় কুর जमारतम जान्या स्मरम बार्ट्स जानम ভাসিয়ে রেখেছে ভারি মনোরম পৃষ্টা কেন্দ্ৰ জলে বড বড় কাঠে বাডি হাংগারের মাথার। চারপাশের সমারে বীক্ষা म्_रमा। अन काँक स्वट्स **क्ट्र**त स्व**छारकः। मीक्ट्र** রঙের পিঠ সালা রংয়ের শে**ট। প্রণীতে** মাৰে মাৰে উল্টে গেলে অভিকার সৰ মাছেই চবির থকে দেখা যাছে প্রণেড।



ক্ষমন সাতের বিলিক দেখলে প্রাণে আর ক্ৰিয়াৰ সাহস থাকে না। জাত জটাকে মনে হার সেই হাজার বছর আগের পালতেলা ক্ষান্ত মতো। কেবল সারা আকাশমহ এখন খ্য উশারণ হতে প্রকাভাবে। **জাবলে ভুলভে লেলিহান জিচ**ায়। তার হৈছতে সৰ মাংস কলসে তলে নেওয়া হতে। এটাবে মাংস প্রথমে গুলমজাত করে রখ **পরকার মতো রোদে শ**িকরে রাখা তেলে চৰিতি ভেজে রাখা অনা সব খবার যা আশ্ লক্ট হয়ে হাবরে কথা হেমন বাঁধাকপি ফাল-ৰাপ, কাল থেকে ডেকে বাঁধাকপি ফলকপি ক্ষিটে কেটে চিপালে ছড়িয়ে দেওয়া তবে ন্ত্ৰ শাক্তিয়ে যা কিছা খানার আছে তখন ্রিক্রল গ্রেদমাজাত করে রাখা। স্যালি **হৈণিনদের কোধহ**র মনে হয়েছে জাহাজে বি'চে থাকতে হলে এটা প্রাথায়ক প্রচোট। বৈত্রি ঘারে ঘারে । দেখছেন। কেন্ট্র আবাব দিহজেই ঝলসানো মাংস সরিয়ে ফেলতে পারে গীজনা স্টায়াট যা যা দিচ্ছে আবা তা স্ঠিত ফৈরত আসহে কিনা দেখে নিচ্ছে। কেউ কেউ <mark>ৰৈ চুরি করে এক দ</mark>ুখন্ড আলগা করে মাথে ैबर्ग एएरव--- धनडे भरधा नः हो। अकहा विजनात्ना ठेगाः অথবা মাংসপিত দৈখে সে নিক ধরে ফেলেছে। এবং রিপোর্ট সালি হিণিনস বলেছেন খৈতে দাও। একেবারে খেতে না দিলে চলবে कम्।

ছোটবাবার কাছে প্রায় অশ্বমেধ যুজের কৈতো ঘটনা। ফবোয়ার্ড' ডেকে অ ছে চিফ-অট ব্লেম ডেক জাহাজি তিনজন ফায়ার্ম্যান ঠিকজন কোলবয়। চিফ মেটের অধীনে দুটে জুন্ন। ফোর-মাস্টের দুপাশে। তিন খন্ত্ৰিক কয়লা বাকেটে তলে যোগান 13. ীখছে। বাংকরে আছে ছোট টিম্ডাল। িজন কোলবয়। এবং উইন্ডসেলের নিচে াকজন উইনচ চালিয়ে কয়লা বাংকার থেকে ুলে আনছে। হোখানে যত বয়লা লাপবে ্টার তদারকের ভার তিন নম্বর মিসিটর। ক্লাডেবাধ্র মনে হয়েছিল—যুখন জাহাজ মেচল সম্দু দিথর ভ সমান স্থের গ্নগনে আগ্রানে আফাল দ্বীণ্ডময় তথন শুধু 🖬 ওয়া আরু বসে থাকা জাহাজে। দূরবীনে 🔓 খ রাখা। আশ্চর্য সে-সবের কিছু নেই। কিট দেখতে না কেন কোথাও জাতাজ কিংবা ্<mark>টীপটিপ হাদি দুরে দেখা হায়। আর সে</mark> ু**ল্টো দেখছে জ হাজে**র যা কিছু খাবার সক ্রীত থেকে তুলে কেবিনগালোতে স্মাজ যে ীখা হচ্ছে। লাপেন্টার জলের পরিমাণ ্ত দেখছে। কেন্ট একদন্ড দড়িতে পারছে ী। অমান ধের মতো স্বার চোথম খ। শ্বার মেন মাস্টের নিচে আছে। এখানে ক্ষাশোলা করছে ডেবিড। সে ঠিক ঠিক শোহার বড়টা ঘ্রিয়ে সিক্তে মাঝে। াং আৰম্ভা হৃদপিন্দ্ত কলজে এবং হা কিছু ৰ ক্লছে আগ্নের ওপর। চবিংপাড়া ্তিৰ টে'ক' য'জে না। গোঁৱায় চোখ জনসহে ীবার 🕾 পাশাম স্বাই লাহাছে। মোপ 🛮 সালে। কামরে কেটি বেখে নিয়েছে কেউ। মাথার শটি। স্বাই শাশ নহাতীর মতো। হেন

উল্টে পাল্টে দিচ্ছে হাত-পা শ্রীর। ছোট-বাব্রে মাধা গ্রালিয়ে উঠল।

হেই ওখানে কেন? এস। হাত লাগাও। ছোটবাব কোনো রকমে বলল হাতি। এবং সে নেমেই জোরে একটা লোহার রভ ঘ্রিয়ে দিল বোধ হয় চবিরি ভাগ বেশী একটা বভ সাইন্ধের ভেডা প্রায় হাত-পা তার এখন লাল, ঘন সাদা আবার ফিনকি দিয়ে বের হচ্ছে যাবতীয় জমে থাকা বরফের খার কণিকা সব শ্কিয়ে কাঠ কাঠ মাংস দিন মাস গেলে চিবিয়ে জীবন ধারণ করতে হবে—সে কেমন সাহসী হয়ে গেল। একটা প্রেরণার মতো কাজ করছে বুড়ো মানুষ্টা। একবার খবরও নিচ্ছে না তার জাতক এ-জাহাজেই আছে কোথায় কি করে বেডাক্তে একবার দেখভে না। সে বলল, ডেভিড তমি বরং ঠা ভাষা গিয়ে বস। ডেভিড নডছে না। রোদে ডেক তেতে আছে এবং সংল্যে এই আগানের উত্তাপ প্রার ফার্ণেন্সে তাকে যাবার মতো। ডেভিড ছারি দিয়ে সামানা बाश्म त्करहे निम, त्मथ त्का क्रिएक मिरहा ঠিক মতো রোপ্ট হয়েছে কিনা?

ছোটবাবরে বেশ থিদে পেয়েছে।
ডাইনিং হলে আজও হয় তো নিয়ম
মাফিক খাবার দেওয়া হবে বয় বাব চিরা
বড় বেশী এদিকে আসহে না তব ুদে
একটু থেয়ে বলল, ঠিক ব্ঝতে পারছি
না তমি দাবিধা।

ডেভিড মাঝে মাঝে ছিণ্ড থেয়েছে। থেতে কটা হবে অফিসারদের কেউ জানে না। এবং জাহাজে কথন থাবার সময় পার হয়ে গেছে—জারা বিদ্যোগ্র থেয়াল নেই। থাওয়া-দাওয়ার কথা কারো মাখায়

থাড-মেটকে নিয়ে তিনি ঘরছেন জাহাজে। ডেভিডের ওখানে ছোটবাব কে দেখে বললেন ছোটবাব ভোমার জীবনটা খুব দামী নাহে। আর এতগ্রলো জীবনের কোনো 'দাম নেই। ছোটবাব**্** সংক্রাচে মাথা নীচু করে দাঁড়িয়ে থাকল। সে কি করে বলবে, স্যার আমাকে তেমন ছোট ভাববেন না। কিন্তু সে তো বলতে পারে না। সে ভো বলতে পারে না সাার আচিংকে আমি নিঃশ্বাস বন্ধ করে মেরেছি। বিশ্বাস কর্ন স্যার আচিক সামান ই দ্বের মতো মনে হরেছিল। মুখ বালিশে চেপে ধ্যার সময় মনে হ্যেছিল সামানা একটা জীব। ওকে সমুদ্রে ছার্ড দেবার সময় মনে হয়েছিল বনি আর কোন অশ্ভ প্রভাবে পড়ে বাবে মা। এত বড় একটা পাপ কাজের জনা বিশ্বাস কর্ন আমার এতটাকু অন্পোচনা হয় নি। তখন হিগিনস বললেন দীড়িয়ে থাকবে না। নিচে যাও। চার নন্বরের কাছ থেকে কাজ বুৰো নাও লো।

াস বখন এনজিন বুলো নেমে এল অবাক এত বড় এনজিনটা কিন্তাব চটি, মড়ে পড়ে আছে সব এলোপাখাড়ি কন-ভানসান ভারালিটিং পাশে সব গাড়ো গাড়ে হরে গেছে। বরকানেঃ ক্ষাক্ষ কিন্টার বকল কোথার সব ছিটকে বের হরে গেছে।
এভাগরেটারটা দুখে অকত আছে। সিন্দি
সব ঝুলে আছে। খুব সম্প্রমাণ নিচে দেরে
আসতে হরেছে। তেলের ড্রাম গাঁডরে ওপরে
তোলা হছে। সে ডাকলা! এই এনজিন কশস
চার নশ্বর কোথার?

আচি চকো যাওয়ায় এনজিন কলপ খুব দমে গেছে। সে বলল বয়ালায় রুমে। টল কেটে সব লাম্ফ বানচ্ছে।

ছোটবাবকৈ দেখে চার নন্দর বলল

তুমি টবগনলো গোল করে কেটে ফেল।
দুটো টব লোজ-নেদেট বসিয়ে দিতে হবে।
লম্ফের মতো জনলবে। যেন দূর থেকে
রাতে কোনো জাহাজ সমুদ্রে আমাদের
দেখতে পার। সারা রাত জনলবে। বাংকারে
দুটো লম্ফ আর সারেগুর ঘরে একটা
কম্পের কাছে গোটা তিনেক আছে।
বন্দোর সব ওপরে তুলে নিয়ে বেতে হবে।
এবং ছোটবাব্র সামান্য ঘ্রের গোল বলল,
ওদিকে যাবে না। সব আলগা হয়ে গেছে।
নাথায় পড়তে কওফণ।

— কিভাবে সব ল'ডভ'ড হয়ে গেছে। —তাই। চার নন্দর মাথায় সামানা ফাইলটা ঘদে নিল অথাৎ সামান তেল লাগিয়ে নেবার মতো সব তলে সে ফের ফাইল করছে। কেমন বিড বিড করে বলল জাহাজে সতি কিছু একটা অশুভ প্রভাব ছিল ছোটবাব**ু। যাবার সময় স**ব নিয়ে চলে গেল জাহাজের। বলেই 739 8579 টানল। মৃখ থম থম করছে চার নম্বরের। সৈ বাধ হয় কে'লে ফেলবে। অথবা নিশ্চিত মৃত্যুর মুখোম্বি মান্ত্রের যে অবস্থা হয় একজন হলছাড়া মানুষের মতো মুখ চোখ-চার ঠিক তেমন হয়ে গেছে। ংকের মাথায় সে কাজ করছে না। কে **প্রাধ্যে মা**ঝে বলছে আমরা সবাই মে থাব ছোটবাবু। আমরা কেউ বাঁচব না। মিরাকেল কিছু মা ঘটে গেলে আমরা কেউ বচিতে পারি না।

ছোটবাব, কিছ, বলল না। যত ভাবনা বনিকে নিয়ে। সে বকেতেই পারে না বার বার তার চোথের স্মনে কোনো ইতাশা ফুটে উঠলে কেন দেখতে পায় বনি কাতর চোখে তাকিয়ে আছে। একটা নিম্ভামান জাহাজে সে আছে। দেশের কত রক্ষের ছোট-বড় ছবি বেমন অনায়ালে সে হে শ্বণন দেখেছিল মাথায় এংকোরের ট**্রি**প সাদা নেভিন্ন পোশাক পরে সে ফিরে গেছে বাড়িতে বাবা-মা রাতে দরজা খুলে ল'ঠনের আল্যাতে একজন অপরিচিত সাহেব সংবো মান্যে দেখে অবাক-কে আপনি কাকে চান, তখন সে বেয়ন ভেবে-ছিল মা আমাকে তুমি চিনতে পারছ না. অমি সোনা। আমি তোমার মেজ হৈলে সোনা। তোমার নির্দিষ্ট স্তান। আমি এত বদলে গেছি মুখ দেখেও আমাকে চিনতে পারছ না। ছোট ছোট <mark>ভাই-বোনের</mark> মূখ, ওরা শীতের ভিতর ক'কড়ে কসে অণ্ডে সে তার দামী কম্বল দিয়ে ভেবে-ছিল যে সংসারের সর শীক নিবারণ করবে কিছুই পার ব্রিয় হয়ে উঠছে না-

অবস্ত এখন কোনো তার ন্যুখণও নেই— কেবল বনির কথা ভাবলে হাহাভার করে ওঠে কেন ব্যক্তা। সে বলন, ব্যুজা মানুহাটা বখন আহে তখন কোন ভর নেই।

চার কবের রোগা হাজা হাল্বে। ভারণ কত বাপরারণ। সে লেখেছে জাহাজে মালুবা নিঃশব্দে কাজ করে গেছে। বলনর একো সে কাজের পর শার্ম মাতাল হরে পড়ে থাককে। আর আশ্চর সে দেখে ভারত সকলে চার ক্রমর অস্ত্রুপ থাককে। ভিউটিতে আসবে না, কিন্তু সেই মানকে সকলকে সকলে সোকা আরা কি ভাজা শিস্কাদতে দিতে নেমে আসক নীচে যেন সে নাকে মাতাল না হলে গভার ব্যাহ্র প্রে ভ্রে পরেত না। গভার ব্যাহ্র না হলে সে অসুস্থ হরে পড়ত। সেই মানুবটা পর্যত বারড়ে গোরে।

ছোটবাব, এত দিনে এই প্রথম বলল, কে আছে দেশে?

—দেশে আছে। ছোটবাব, সবার বা থাকে আমারও তাই আছে। ছোট দটো বাচ্চা ফুটফুটে মেরে। বড়টা হটিতে পারে, ছোটটা মায়ের কোলে থেকে আমায় আদর জানিয়েছে। ভেবেছিলাম গিয়ে দেখৰ ছোটটাও হটিতে শিখে গেছে। ওদের দক্তনকে নিয়ে চিডিয়াখানায় যাব ভেবেছিলাম। বুড় মোরেটার খুব সথ হাতী বাঘ দেখার। কিছু বোধ হর আর হয়ে উঠবে না। ভাছাভা যেন বলতে চাইল দু-চার দিনের ভেতরই সর্বার খবর ছড়িয়ে যাবে— সিউল বাংক জাহাজের কোনো সম্ধান পাওয়া বাচেছ না। একে-বারে মাঝ দরিয়ায় চুপ মেরে গেছে। তারপর বা হয়, পতিকায় ফলাও খবল সামাশ্য ছবি ছেপে জাহাজীদের খবর শোষে সব খবর কেমন মানুষের অগোচরে চলে বায়। আমাদের কথা ছোট-বাব, কেউ আর মনে রাখে না। জাকারী হী খবর পাঠিরেছে ঘণীয়া যে জাহাজটা ঝড়ের সেই এখন অক্লে ভাসছে।

ছোটবাব, বলল, আমরা একটা এস-ও-এস পর্যকত পাঠাতে পাবলাম না।

চার নদ্বর সতর্ক গলায় বলল বুড়ো
মানুষ্টার কোনো আপশোষ আছে
সেজনা। কেছন মজা পেরে গেছে। অনা
কাশ্তান হলে মার্কান সাবের গলা টিপে
ধরত। কোনো এস ও এস না পাঠিরে কেন
স্টেখন লিভ করলে। কৈফিয়ত তলব
করত। তারপর একটা থেনে বলল কিছে
করল না। বুঝলে সব শার্ডানটা জান্ত।

-जानक भारत?

—জানত লা না জানলে এমন
নির্দিশন কেউ থাকে? যেন মজা পেরে
গেছে। জাহাজটা এখন আর কেউ জাাপ
করতে পারছে না। জাহাজ নিরে সামা
ভীবন সম্পুদ্ধে ভেসে বেড়াতে পারবে।

ছোটবাব, বলল, ওর ছেলে জাহাজে

্লারে একি মান্ব আছে? ও তো সারা জীবন জাহাজ চালিরে চালিরে একটা অভ্যুত জীব হয়ে গৈছে!

रक्षावेदाव, धा-मिट्स कथा रक्षा मा। जानदम हाबाद अवाद धारम देव छेट বাজে। এবং এটা স্বাভাবিক। বত দিন বাবে ওটা বাছবে। কাশ্চান তখন আর मीका मान्य बाक्स्य मा। दन अक्षा चान्छ শ্রতান হয়ে বাবে স্বার চোখে। আর বা মনে হলা যত দিন যাবে তত এই সব भान-त्वता करम व्यान-व द्रात केंद्रता गुचरिना घरा बाबात ग्राट्य टक्डे ब्रावण्ड পারতে না কি ভয়াবহ এই ভাসমান জাহাজে বে'চে থাকা। দিন বাতে আর ক্রমে টের পাবে খাবার যত ফরিয়ে আসবে তত টের পাবে, জল যত কমে আসবে তত টের পারে। এখনও যে জহাজে স্বাট মুখ বুজে কাজ করে যাছে সে কেবল তীরের আশায়। কোনো মিরাকেলের আক্রান্ত ।

দুটো মাস্কুলের ঠিক সম্প্রা সময় रकाक-टन**्टे न**ष्य कर्जान्त्य एम् उरा हन। বেশ বড় টবের মাথে হাসিল পরিয়ে দেওয়া হয়েছে। হাসিল সলতের মতো কাজ করছে। আগান ধরিয়ে দেওয়া হলে ষেন মশালের মতো আকাশে লম্ফ দুটো জ্বলতে থাকল। টর্চ সহজে কেউ ব্যবহার করবে না। সব ^{টচ¹} এখন কা°তানের জিম্মায়। চীফ-মেট সব বোট থেকে টেনে নামিরেছে। সিগনেলিং লাইট। থি সট থি লঙ আলোর সিগনালিংয়ে দূরবতী উপ্কৃল অথবা জেলে জাহাজ কিংবা কোনো কার্গোসিপ যদি যায় তবে ব্রত পারবে এস-ও-এস আসতে জাহাক থেকে। যারা সারা দিনমান মাংস কলসে গুদামজাত করেছে তারা এখনও করছে। সব রোশ্ট করতে বেশ সময় লেগে যাকেছে। আবা পোড়া হলেও যেন ক্ষতি নেই। দরকার মতো কাল আবার ঠিকমত ঝলসে নেয়া যাবে। এবং বাতে সেই গোল অশিনকুশেষর ভেতর মান্যের মুখ লাল আ্ভার ডুবে থাকলে স্বালি হিগিনস বুরাতে পারছেন জাহাজটা এখন এক দল ক্ষাত বনা মান্যের হাতে পড়ে গেছে। অভ্ধকার কেবিন থেকে তিনি সব দেখছেন। পোট'হোল খোলা রেখে চার পাখো যা কিছা আছে প্রত্যেকটা পোট'-হোলে পিয়ে দীড়াকেই দেখতে পাতেজন। দলে দলে এই সব বন্য মানুসেরা ভাগ, হয়ে এখন আগ্রনের ওপর উপড়ে হয়ে পড়েছে। মনে

হল সেই আগনের ভেতর জামা খালে क्रुट्य स्कटन निरम् स्कर्ण। ज्यानि दिनिसर्वे এত ওপর থেকে ঠিক ব্রুতে পারছেন না रक का मनाडे जागात्मत हाड भारम देखा कबरका जात लाकिहारक हारदमाना करत शरत कानत्है। अत नाम् बाल काग्रस প্রতিষ্ম হাততালি দিছে। এই বনা ইছে কোমো রক্ষে বেড়ে গেলে এখন লোকটাকে আগানে ফেলে দিয়েও তামাসা দেখাতে পারে। তিনি আর বিশ্যোর দেরি করলেন না। তিনি বোট-ডেকে বয় কেবিলের সামনে এসে দাঁডাতেই বিরাট এক প্রুষের মতো মুখ এবং চার-পাঁচ দিন माफि ना कामात्नात कना नामा माफि करक বেড়ে হাজিত্ব এবং তিনি সেই বেটে-ডেক দাড়ারে চিংকার করে উঠলেন-হাই। সংশা সংগে লোকটিকে ছেড়ে দেওয়া िशक्त दस्य লোকটি একেবারে উলগ্যা, সে भिरक **ब**्धेरक । तमा त्नाकग्रतना कास बारक ত্তি বাজাতে পারল না। আগ্রেল আভায় তিনি প্রায় যেন জনলে উঠলেন তাড়াড়াড় ডেভিড লোহার রভে 🗪 নরম পাছার মাংস গেণ্থ আবার দুটো ক্যুঠের ফাকে ঝালিয়ে দিল হিগিনসের সেই কঠিন চেহাদার আর একটা বেয়াদপী করার ক্ষমতা 100 নেই। সে বিনীত ভলু ভাল মাশ্ৰ ইত গেলা এবং বৃষ্ঠে পারছে একনি ভেনে পাঠাবে তাকে। হারণ তিনি ফিনে শালিক অন্ধকারে ৷ বেটি ডেকের অন্ধকারে ছবরিনে যাকেল। সে ভরে আর একবার তাকাতে প্যতিত পারল ল। চেখে 🛍 কয়সার ধোঁয়া এবং কাসিতে ছোপ কো দাগ, এবং মূখে হাতে পারে মনে হর ব কত দিন যেন স্থান না করে আন্ত সমাদ্রে ভয়ংকর ঝড় ছিল বলৈ এতাঁদ কেউ দাভি কামাবার সংযোগ পার কৈ ফলে সবার খোঁচা খোঁচা দাভি। ভেভিতে থ্তনির সামানা লাল দাভিত্র পা আগোছালো দেই খোঁচা খোঁচা দাড়ি কেঃ তাকে আরও বেশী জংলী করে তলেন বয়স মনে হয় বেডে গেছেও 785 ভিন্ডালকে নিয়ে এতটা মসকরা শা **কর**ে যেন ভাল ভিল। ওর চারটা বিবি। 🦒 নম্বর বিবি লিটল গ'ল'। বঞ্চা বর লিটিল গাল নিয়ে কি সাখ কেবং আসন রক্ষের ঠাটা তামাপা করার শ্পহো কেন



ক্ষিত্রক। সে বলোছল লিটল ক্ষিত্রকা বছসে প্রকাপ্ত কি করে? ক্ষিত্রকা বিক্রা হেসেছিল লাভ বাম ক্ষিত্রকার করা। শে গতি সোণার ক্ষিত্রকার করা, গতি বের করে ক্ষিত্রকার

ভোজত লাগুন উসকে দিয়ে বলেছিল তি মিঞা বিবিদে দাতে কামড়ে সংখ

ুঁ ডিজ্জাল আবার হেসেছিল। সাহেব বুর বিবিকে নিরে বেশ তামাসা করছে ুহোক। সেও বেশ মজা পেরে গেছিল। আছিল ভা পাই।

— তা হলে বাদশা তোমার ওটা নেই।

-alce i

-मा त्महै।

_জ্যান্ত সাব। —জ্যান স্যাথাও।

—তোৰা ভোৰা। ৰাদশা দৌড়ে পালাতে জীৱন।

्राच्याद अत्तान अत्तान क्षा प्रमान ব্লোরম্যানকে সে বলোছল দুজন গ্রীজারকে মতে পাকডো। আধা হিন্দী আধা বাংলায় হৈ দুটো একটা কথা বলতে পারে ্দর হড়ো বলে সে বলেছিল পাক্ডো। লকা হ্যায় না।এবং সংখ্যে সংখ্যে ওরাচার-ी उटक हा राजाना करत मित्रा এटन कि दा ীৰসিকভায়ৰ সেউনমাদ হয়ে পেছিল ুন জ্বালা পাণ্ট একেবারে খুলে সব গ্রীয়ানে ছাড়ে ফেলে সে উলংগ করে দিয়ে निश्चिम एकामार किन्द्रा लाहे मिथा। सन्द्रे হ বৃদ্ধতা ক্ৰায়। ভূম নিছাকতাবাম। অপ্ৰিৎ ধি হয় আমান্ধ লগবা ভোষার কিছ 🍃 भारता. कृष्टि २०८१माङ एकम निर्देश भारत ्वत्यकः। एवय कार्याद्रमः स्थलकः। मृद्रिक बरक क्रमा लाल क्रीमा जानाटम रक्टन किन्द्र शका त्यद करता राष्ट्र । **८**वर जगाणि निमन त्यम् । इत् द्वारे-एक्ट्रक मा पीकृत्य ্সাত্য অ'প্রেম ফেলে দিও কিনা ম নাঃ

জিখন বনি ছুটে এফো বলল—ভূমি এখন হ ভৌৰত। আমি ওখনে আছি। ভোৰত কলা কৰা ধৰ:

্লালার ছাটি: এশহর এশট্র জ্ঞান-ব ক্লান্ত পরিক্ষার হলে নাও। বাবা ক্লোন্তাক্র ভাবিতে ক্লাকেন্।

ু ভোঁৰত দি কৰৰে ব্ৰুছতে পাৱল না।

দু একটো ভাষানালৈ খুট্টোল জ্যাকের

চো নাৰাক্ত পক্ষে ক্যো আগানুনের

ক্ষে পাছ লগ গৈনিন সাজ্যির আকলে

দু বাজাপ চাল নবন। সে বললে—ভূমি

ধ্বে না জন্ম।

---अवा विकासि नावस्य सा।

-क्षेत्र (का कारकः

র ক্রেক্তি নলে ব্যক্তিক তথান দেখান ছোট-্র নেকে জাতারে: যাধার ক্রেটি কাথে ক্রেকা। সালা ক্রান্ত বের্টিনাব্র ক্রাণে ক্রেকানক ক্রিটিট সংক্রেক। আসাল ক্রিট্রেই ক্রাণ্ড রাকে এটা

को। क्रांशस्त्र क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस ভাকাতেই দেশল অভিকার দুটো বেন মশাল स्वार्क स्वाकारण। अञ्चल त्र क्रिड्ट খেরাল করেনি। সামনের প্রতিবিদ্ধ সম্বে ভাস্ছে: এবং এক জারগার স্পির হরে আছে প্রতিকিব। সে ব্রুতে পারল জাহাজ স্কালে বেখানে ছিল এখনও ঠিক সেখানেই আছে। এডটুক ভেসে যাজে না কোখাও। এবং আগুনের আভার মশলের আলোতে সে লক্ষ্য করন্ত চারপালে স্ব সাম্ভিক মাছ বড় হালার অকটোপাস উঠে এলেও বিস্ময়ের থাকবে না। এবং জাহাজটা যে এক সময় সব ধ্রত মনস্টারদের আডড়া হয়ে যাবে না কে জানৈ লে মরে চুকেই আকলঠ মদ গলায় ঢেলে অন্ধকারে দাঁড়িয়ে থাকল। বুক গুলা পুডে যাচ্ছে। আহা তবু এক আশ্চয় আরাম। সে দেয়ালে মূখ জেপ্টে দিল।--এবি তুমি এখন কি করছ। সে ছেলেদের নাম थरत जाकरण शाकल एणामता ज्ञारी कि कत्र, কিছা করতে পাৰ্ছ না, ভারপর কেমন নেশার ঘারে ফু'পিয়ে কদৈতে থাকল এবি আমাদের কি হবেন। আমরা স্বাই মরে হাব।

স্যালি হিগিনস অংথকারে দাঁড়িরে আছেন। হার। সারাদিন আগুনের সামনে ছিল তাদের এখন ছুটি: অন্যদল কাজ করছে। এখনও খেন দুদুশার গারুছ ভেমন-ভাবে কেউ ব্ৰুভে পাৰ্কেন। এটা হয়। পুষ্টনা ঘটে হাবার সংশ্য সংশ্য বুষ্তে পারে ন' আসলে কভটা ভারা বিশন্ন। ব্রুয়েভ সময় লেগে যার। দিন যত বাবে তত সবাই মরিরা হরে উঠবে। আফটার-পিকে এখন একজন জাহাজি অন্ধকারে চুপচ প বঙ্গে आरक्। उत्र कारक् द्रहरू जिलादनियः हेर्रः। সে বৃদি কেমন কাহাক কেখতে গায়। সে जन्मकादः अभन क्रीयग भक्तागः। मृ बन्धे शत शत किडी अन्तर वादव अवर सक्तान হলে ভিনি পাহারাণ রাশবেন জ্যানকে ' জ্যাক ডেবিড চিক্স-মেট থক্ত-মেট পালা করে সতক^ণ নজর কথাবে চার**লা**লে। ওরা দ্রবীণে যদি কেনা জেনে ৰাহাল অথবং কোনো মালবাছী জাতাজ ভেকতে পায় দুরে। স্বই দ্রালা। তবু ক্রে বিশ্বাস করতে ভাল লাগে স্কাল হুজের দেখতে পাবেন কেনো উপাদসার জাজজ্ঞ সম্পূরে জস কেটে রুক কেল খাসছে। তথ্য তিনি অনামাসে সব্ভাকে জিলাক্তর ভাল্যায় পেশছে **ब्रिट**७ श्राह्मदन ।

এবং জিনি এও জানেন এখন তাখা
ক্রুলিনী ছাড়া তানের বে'চে থাকর তার
কিছ্ অনুকাশন থাকর মা। থাকার দুটো
মান্ত্রন প্রশা কর জানেছ। সামান্য
ক্রুলিন এবং ক্রেলিক কিছা করে। করে।
করে এবং কেন করি এবং ক্রুলে জানের
ক্রিলিক অনুধা, মান্ত্রন অনুকাশিখা কবিছে।
ক্রেলিক ক্রেলিক মান্তর্কন করে।
ক্রেলিক ক্রেলিক মান্তর্কন করে।
ক্রেলিক ক্রেলিক করে।
ক্রেলিক ক্রেলিক ক্রেলিক করে।
ক্রেলিক ক্রেলিক ক্রেলিক করে।
ক্রেলিক ক্রেলিক ক্রেলিক ক্রেলিক করে।
ক্রেলিক ক্রিলিক ক্রেলিক ক্রিলিক ক্রেলিক ক্রে

সাম্ভিক মাছ। অব্ধকারে কিছু দেখা হাজে না। জলে মাহের শব্দ ওরা কোবছর জলে এমন একটা আজব জীব ভাসতে লেখে অবাক হয়ে গেছে। কেমন ঠাণ্ডা নবা ভূতুড়ে জাহাজ ভূতুড়ে আলো জনালিরে বেশ স্থির। তবে কি জাতাজ কোলো স্রোতের মুখে পড়ে হার নি। জল দেখে কিছুই চিথ্র করা হাতে না। আকাশের নক্ষা দেখে। তিনি বুঝতে পারছেন না কিছু ; প্রতিদিনের মতো একই নক্ষ্যালা আকালে দপ-नश करतः खन्मरूषः। धनः मस्म इराह আকাশের নিচে জাহাজের চারপাশে ররেছে সেই পাখিটা। ধোঁয়া এবং আগুনের জনা সে মাস্ত্রে এসে বসতে পারতে না। সমতে ভেসে রয়েছে কোথাও। পাখিটা মাঝে মাখে কক কক করে ডাকছে। তার শব্দ ভেসে আস্তে, আশ্চর পাখিটা সেই যে জাহাজের পেছন নিয়েছে সেই যে কেবল উড়ছে উড়ছে তো উড়ছেই সমলে থেকে যাকে ন। জীবনে তিনি কখনও এমন দেখেননি। এয়ালবায়ীস পাখদের দীঘদিন জাহাজের পেছনে উড়তে দেখেছেন। ডাঙ্গা এলেই তার্দের আর দেখা ষ্তে না। আবার হয় তো আর এক জেড়ো পাথি কিন্ত লেডি এ্যালকাট্রস একা নিঃসংগ যেন জাহাজটাতেই আ**ছে** তার প্রির্**জন।** ছোটবাব্র পোষ মানা পাথি খাবারের লোভে বুঝি পথিটা জাহাজ ছেছে যাজে না। এবং কেন জগনি এই স্ব বিশহ মানুষের সংগে সালি হিগিনসের মনে হচ্ছে পাখিটাও ভারি বিশল। ভারা ভাগার ফিবে যেতে না পারদে পর্ণখটাও ফিরে ষেতে পারবে না।

সকালে চিফ-মেট পু-থে হাসবে কি
কাঁদৰে কোনে পোলা না। এখন থেকে জাহাকে
সবার দৈনিক নেশন কি পরিমাণ হবে জাগ বাটোরায়ার সমর প্রত্যেক্তর মাণ বেং নিবাস লিখে রাখার মতো কাশ্ডান পাথিটোর নার এবং নিবাস লিখে কাশ্ডান স্বার খাদের ডাড় তালিক। মেদন হক্তরা দরকার ঠিক ডেমনি পাখিটারও একটা খালা জালিকা প্রস্থাত হয়ে কোল। চিফ-ফেট অভি দর্থথ ডালিকাটি লেখার প্রমান কাহেলে পাকল লা।

সালি হিগিনস আড়েচোখে চিফ-ফোটের মুখ দেখে সামানা বিল্লভ হলেন। লুথের উপর তিনি তাকে কিছু সলতে পাকলেন না। দ্ববীন নিরে বোট-ভেকে শেনে গেলেন। তাকে সতিয় ভারি লুঃখী এবং অসহায় মনে হজিল।

চিফ-মেট সহস্যা তখন লাফিরে নেমে গেল শেহনে। বলল—স্যার দেখেছেন।

স্যালি হিণিশস ৰূপ ভূলে দেখলেন চিফ-ছেটকে। ভীষণ ক্'কে আক্ । চিক্-নেট ঘলকে ।

-- की हास्त्राहः।

—বীপার মাতি দেয়ালে নেই।

—ভূলে কেখেছি। তিনি বললেন ন' ভটা কড়ের সমর পড়ে ভেলেগ গেছে। ভটা দেৱা।

(BUTTE)

ठक्षा लक्री

(२)

স্থিতার্থ :

উপাখ্যানটি হরত আশনারও জানা। তব্ব আর একবার শাননে আজকের প্রসংগর গটভূমিকা হিসেবে।

এক সমর এক অতি অমিতব্যারী রাজা ছিলেন। রাজা কিন্তু নিজেকে মোটেই অমিতবারী বলে মনে করতেন না। তাঁর জীবনদর্শন ছিল সেই চিরণ্ডন বাণীভিত্তিক, তলভার বল দীরতে—কা অপরক্ষে প্রদান করে নিজের কাছে ধরে রাখা হয় মার্চ তাই নন্ট হয়। অপরের —িকন্তু বিশেষ করে রাজার মুখ্যামাত্য বা প্রধানমন্তীর এই জীবনবেদের প্রতি বিশেষ প্রাণ্ডা ছিল না। তাই তাঁরা রাজাকে অমিতখারী ব্লেই মনে করতেন।

শেষ পর্যাক রাজার ব্যর-বাহনো দেখে

মুখ্যামাত্য এত কিচলিত হলেন হৈ কিছু

একটা না করে আর শিহর থাকতে পারলেন

না। কিছু কি করবেন? রাজাকে ত সোজা
স্জি বলা যায় না ঃ মহারাজ বায়সংকোচ
কর্ন, নইলে অচিরে রাজকোষ শ্না হয়ে

যারে।

শেষ প্র্যুক্ত মহামাত্য রাজার শোচা-গারে গিরে জিথে রাথজেন ঃ মহারাজ ! শ্রীমণ্ডের পক্ষেও সংস্বৃত হরে চলা উচিত। কাষণ চিয়ালিল কারও সন্মান বারু না।

পরের দিশ মহানাত্য কোত্হলবলে
গোঁচাকারে প্রবেশ করে দেখেন তার সতকবাপান নীতেই ভালার উদ্ধা : আনি বাদ শ্রীমাকট হই ভবে জামার আন্দাকার কারণ কোনার : ভার ভলার মহানাত্র আনার লিখনোন : শ্রীমাক্তর পালার কার্ম্ম আন্দ্রনাত্রী হে চপ্তলা তা ভূলবের না, মহারাক।

প্রের ফিন আবার রাজার পৌচাগারে তবেল করে দেখেন ছাজা এবার লিখেকেন ঃ সক্ষ্যীবেবী ক্রম শ্রীমতভক্ত পরিভাগে করেন ভক্ত ক্ষ্যিকার্য ক্ষিত্রাক্ত কর্ম সংক্ষ্য করা ছোক না কেন, সবই বিমণ্ট হর। মহামাত্য আর কিছ, লিখতে পারলেন না। কম্পাতন্ত ঃ...

উপাখ্যানটিতে রাজা তাঁর মহামাতাকে বে শিক্ষা প্রদান করলেন তা অন্যতম চিন্নকলন সত্যা, এবং এই সত্যা বিশেষ স্কুশণ্টভাবে বাখ্যাত হরেছে হিন্দু কলপ্তত্ত্ব।
সংক্ষেপে তত্ত্বটি হলঃ জাগতিক স্বকিছুই চক্লাকারে আবর্তিত হয়—উনিমালার
মত উখানপ্তনই জগক্ষীবনের বৈশিক্টা।
স্তরাং মানবজীবন—ব্যক্তিশীবন ও গোণ্টাকীবন উজয়ই—এর বাতিক্রম নয়। অনাভাবে
বলা যায়ঃ চন্দুলা লক্ষ্মী কোথাও চিরকাল
প্রতিশ্বিত ভাকেল না, তিনি বে চিন্নস্করমানা।

বেহেত তিনি চিরস্পর্যানা সেইহেত্ তিনি বরদার পে একম্থান পরিত্যাগ করে অন্য এক স্থানে অধিষ্ঠিত হন। স্তরাং একস্থানে শ্ন্সফত্তার সৃষ্টি হরে অন্য এক**স্থানে ওঠে ভম্মণা। যে**মন ওরাটারগেট কেলেংকারীর ফলে রাশাপতি নিকসন ও তার সহচরদের কেউ কেউ পাকে পড়লেও অনেকেরই খাটে কিন্তু জোরারের জল উচ্চ হরে উঠেছে। মার্কিন উপন্যাসিক ফিলিপ রোথ নিকসন প্রশাসনের ভীর সন্তাশোচনা करत ३৯৭६ आरम 'खाबारम्य मृच्छ मन' (আওরার গ্যাং) নামে একখানা বই লেখেন। বইখানির শ্বিতীর সংস্করণ প্রকাশিত হয়---নাম ছিল ওরাটারণেট সংস্করণ'। বর্তমানে বইখানির ভূতীর

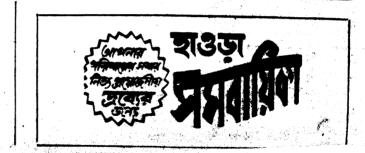
সংশ্বন্ধ বল্যস্থ—নাম ইমপিচম্রেন্ট সংশ্বন্ধ।
সংশ্বন্ধণটি প্রকাশিত হলে মোট মান্তিছ
কপের সংখ্যা ১০ লকে দীছাবে। একটি
সংশাদপরে মাত্রতা করা হরেছে : করাও
মান্তরই ভাগছেন, মারে মারে এই মুক্ত্রন্
এক-আধ্বন্ধন নিকস্পান সংখ্যা পোলে রোধরে
হলিউডের চিন্তানেকারাও ইবা করতে শ্রন্
করবেন।

রুপ্রত :

এইডাবে কোন্ গাঙে কখন বে জোলানি লাগে আগে থেকে তা অনুমান করা একরকর অসন্তব। বিপরীত লিকে আবার কোন্ গাঙ কখন শাকুতে শারু করে, জঙ টিক প্রোহো উপলব্ধি করা বার না। করেক মাস আগেও কে আশা বা আশংকা করেক্স

রেজিট্টি বিবাহ অফিস

মোট ১৬ টাকার রেজিপিট বিবাহ এন কে ঘোব, জে-পি ন্যায়েজ অভিসার ১২৭, ফেপফছ সেন প্রাট্ট ক্লি-১, জেল ঃ ৩৫-৩৫৪৮



হৈ চক্তনা লক্ষ্যী সভাতার পাঠিত্থান লিক্ষা-नवान्य जनगानिक त्रास्य छोत्र गायम खरामः ह्य कृत्व प्रवासीय जीक्योप वाता क्यायम।

সাহারা অশুলে প্রচলিত একটি কাহিনীর ठिकम् वााधा क्द्रा भागता देवा এ-বিষয়ে ইণ্সিত পাওয়া বেত। কাহিনীট इल धारे द्वार शाहा रचन वर्ताकान धदः स्मारम दाम कडदाइ करना मान्य স্থি করেন তখন তার হাতে শেষ প্রাণ্ড দ্টি কাদার ভাগ ও কিছুটা জল অবশিশ্ট ছিল। কাদার তুল দর্টি থেকে তিনি আবার গড়েন উট ও খেজার গাছ—বে দ্টি কছ মরুভূমিতে মানুবের জীবনধারণের পক্ষে অপ্রিহার্য, আর বাকী জলট্রু তিনি ঢেলে দেন মাটিতে। এতদিন প্রবৃত মনে করা হোত যে এই জল থেকেই স্বাভাবিক প্রস্তুর্ণগালোর সালিট হয়েছে হাদের সিবে গতে উঠেছে বিভিন্ন মর্মদান। বত্রানে কিন্তু বাখ্যা করা হচ্ছে যে সেই অবশিষ্ট জলই পরিণত হয়েছে তেলে, এরং মর,ভূমি হয়ে উঠেছে সভ্যিই রত্নপূর্ণ। বর্তমানে এই রভা বিশ্ব অর্থ-ব্যবস্থার নতুন সমীকরণের স্তি করে চলেছে। ফলে ধনী আরও ধনী এবং দরিদ্র দরিয়তর হওয়ার পরিবতে চাকা ঠিক বিপ্রতি দিকে গ্রতে শ্রে করেছে-এপ্রণত ধনী বলে পরিচিত অনেক দেশ গরীব হতে চলেছে এবং তৈল-সম2ধ দেশগালো হার উঠছে উত্তরেশ্বর ধনী।

मक्त मधीकर्यः

পরিসংখ্যানের সাহায়ে এই জোয়ার-ভটার জল কোথার কতটা উঠেছে এবং কোথার কতটা নেমেছে সে সম্বন্ধে একটা ধারণা করা ব ক।



এক বছরের মধ্যে অপরিশোধিত তেলের मुख्य क्षा क्षात्रात कृष्यत करण आहत राज्य-গুলো ও ইরানের কোবাগার কি রকম স্ফতি হরেছৈ তা ৰুম্পনাও করা বার না। ১৯৭৩ সালে মধ্যপ্রাচ্য ও পূর্ব আফ্রিকার আর্টটি ভেল উংপাদনকারী রাজ্যের তেল রংডানী হৈকে রাজনের পরিমাণ ছিল ১৭০০ কোটি জার (১ ভলার মোটাম্টি আমাদের ১ টাকার মতে)। ১৯৭৪ সালে ভা ৭২০০ কোটি ভলারে দড়িত্ব বলে অনুমাণ করা হরেছে। দাম যদি আর নাও বাডে তবংও মাল মধাপাচোর তেল রুতানী থেকে সংশিলাট দেশগুলোর রাজ্ঞ্ব বর্তমান দশকের মধ্যেই ৫০,০০০ কোটি ভলারে পেছিবে বলে म्या क्या इत्हा

তেলের এই বধিভ দাম মেটাতে গিয়ে এই বছাতেই ধনীপ্রেষ্ঠ মার্কিন সাক্রাটেইর বাণিজ্ঞা ঘাটাতর পদিমাণ হবে ২০০ কোটি क्रमात, देश्मारिका ५६० क्यांचे क्रमात ফ্রান্সের ৫০০ কোটি ডলার পশ্চিম লামানীর ও জাপানের ৬০০ কোটি ডলার করে এবং ইতালীর ৮০০ কোটি ভলার। আমানের বাণিজ্য - উল্বাহ্নেরও যে লোড খুরছে ভা এর দল্নই! ইতিমণেটে আমাদের এই খাতে বৈদেশিক মালা সভায় থেকে ৮০ কোটি টাকা বাহা করতে হয়েছে। সবচেয়ে অবস্থা খারাপ নাকি ইতালীর। তার বৈদেশিক মুদ্রা শগুর প্রায় ফ্রিয়ে এবার সঞ্জিত সোনায় হাত পভবে। শুখ্র সোনার দায় আরও বাড়বার অপেকা। সোদার দাম বাড়লে আর আর সবাই-এর বাই লাভকতি হোক ইতালী আপাতত বেক্ট বাবে। আমাদের অবশা **এখনও বৈদেশিক মাস্ত্রা সঞ্চর** থেকে বাহা করেট চলছে। কিন্তু এও ত দণ্ডিত আর্থের বিমাশ। উপাখানের রাজা ঠিকই বলে-ছিলেন : চণ্ডলা লক্ষ্মী অনাচ্ন গমন করলে সাঞ্জ অর্থ বিশ্ট হয়।

এট ভাবে ভেলকে কেন্দ্র করে বিশ্ব অর্থনীভিতে রে মতুন সমীকরণের স্থিত হতে চলেছে শেষ প্রশ্ত তার রূপ কি इत्य तम मन्यरम्य भूम्भणे शाह्रमा कहा এখনও সম্ভব হর্ন।

रक्रम निम ३

বিসত মধাপ্রাচ্য সফরের সহায় সাউদি আক্রের রাজা কার্ডকাকে পহিচ্যের ছলে রাশ্বপতি নিকসম বর্জেছলেন: ইরোর পর পরবতী मग्रास्थरों अहे स्थातत গত্তবাস্থলে পেণিছোবার জন্যে আমাদের তেলের দরকার হবে। আমি সেই তেলই আপনাদের কাছ থেকে চাইছি। তবে হা আমরা বাজার দামই দেব। বাজার দাম মানে ৰে দাম ব্ৰত্মানে বিশেব বৰ্তমান আহে বা ভবিষাৎ দিশের বর্তমান থাকরে। জাধকাংশ দেশাই—বিশেষ করে উন্নত দেশ-গ্ৰেলা—এই বাজার দামেই মধাপ্রাচা ও बसामा स्मानत एका किमाक हाईएक। करन জেতানের **মধেই** প্রতিযোগিতা তেলের দমি ---- असे को एका विम एउना

দিন বাচ্ঞার আ্থাদের মত দরিদ্র দেশ जन्म निरमहाता हत्त्र नरण्टहा

जनभारतम् विकृत्यन्। ३

ব্যক্তামাতি অভিনিক্ত প্রিক্তনি কটলে ज्ञवन्त्राम जल्म पास पास्टा मिल्ल विटनश कान, जिस्स हत, जात हरार शनी हरते केंद्र অনেক সময় বিশেব বিভাগনা ভোগ করতে ছয়। তেল রণ্ডালীকারী দেলগালো বত⁻-মানে এই বিক্তনাতেই পড়েছে। সমসা। : क्ष होता निरंत्र कि क्या बाता ज्याधान : পূর্ণাপা অর্থনৈতিক উল্লয়ন। অবশা তার करना जरनक किंद्र शहाजन-विस्थ করে শিক্সাগত কলাকৌশল বা প্রয়াল-বিদা। তাও এই সব দেশের নেই। অবশা এই উপাদানটি আমদানী করা যায় এবং এই ব্যাপারে সহযোগতাও সম্ভব। উপরুক্ত সমভাবা সহযোগীও অসংখা রাণ্ট খিলপ্রটোট ব্যক্তিগত ব্যবসায়ী স্বাই বলছে : আমরাই সব ব্যবস্থা করে দিছি আপনি শ্বের রূপেয়া দে কর খালাস-আপনাকে চোখে দেখতে হবে না। কিন্তু আরবংদর মাুস্কিল হয়েছে কিভাবে নকলের মধ্যে আসলদের বৈছে নেওয়া হবৈ ভা নিয়ে। ছোট শেথ রাজ্য আবাধাবির এক रहारा**ऐ**रलव भाक्तिक छेन्द्रि करते करता সাটেকেশ-রীফকেশ নিয়ে সারা দর্শিয়া থেকে রোজই নতুন নতুন লোক এপে হাজির হচ্ছে। মাত এক রাতের জনো ৫০ ভলার করে বিছানা ভাড়াও দিচ্ছে কিন্তু সিক বাজতে পাৰা যা**চ্ছে না ঐ সাটেকে**শে वीकारकरण ठिक कि जारह।

এই ভাবে শ্রয়ংবর সভার দময়স্তীর মত আসল নলরাজ্ঞাকে চিনতে না পেরে তেল রশ্তানীকারী দেশগালো দেশের বাইরে বিভিন্তালের কথাই বিশেষভাবে চিত্তা কর ছ। চিত্তার এই গতির অবশা আরও দুটি কারণ আছে ঃ টাকার পরিমাণ এত বেশী যে সবটাই দেশে বিনিয়োগ করা সম্ভব নয়। এবং থবে র.ড উলয়ন करिता स्वमात्रका ताक्रीनिक अधनात উप्टन হয়। তা ছাড়াও হয়ত বলা নায় সব ডিঃ কি একই ঝাড়িতে রাখা উচিত? অপ দিকে আবার বিদেশে বিনিয়োগের ঝাকং আছে। অত্তত বিভিন্ন মনোর বৈদেশি বিশিয়র হার বখন বিশেষভাবে তরং অবস্থায় করেছে তখন জেবেচিন্তে কা করতে হবে বৈকি রাশ্রীবশ্যব ইত্যাদি क्था ना इंग्न व्हर्एडे प्रथम राज।

क्रेनजरकान :

মোটকথা তেলকে কেন্দ্র করে বি অগনীতিকে আজ তাম্ব ভাগ গড়ার ক চলছে। যতক্ষণ প্রতিত এই র পাশ সমপ্ৰ' না হবে তত্কৰ ভবিষাৎ ক সন্বশ্ধ কোন ভবিষ্যবাণী করাই সম হবে না এবং ভতক্ষৰ বিশ্বজনীন বিদি অথবিনতিক সমস্যা বিশ্বকে প্রপী করতেই থাকবে। প্রত্যেক যুগদন্ধি **এह तकाई २व**।

मान्कियाम मद्भागा^मा।





আক্তবের বুগে আমরা সকলেই বিজ্ঞা-शतनत्र जारवण्डेनीत बहुश श्रुतशास शास्त्र। বে দিকে তাকাই বিজ্ঞাপনের হটা। বিজ্ঞাপদ, थक्रतत काशरकत व इमार्टन, मानिक नीतकात সিনেমার রেডিওতে চলত ট্রামে-বাসে ট্রেলে মিনি পত্রিকার রাস্ভার মেতে স্টেক স্করে রিকসাওয়ালার গোস্কতে, চটের **প্রকি**ড আকাশের ফান্সে। এমনকি গভের মাঠের মুক্তাকাশে তাকাতে গিয়েও দুলিটর পাক্তরা মনোরম বিজ্ঞাপিত স্তল্ভের স্থে। মন চলে যার রপগান আকাশ থেকে রং-বেরংরের কোন এক দৈললিক জিনিবের বিজ্ঞাপরে। মনে মনে দ্বগতোত্তি করতেই হয় জিনিস্টা সাজাই ভাল বা এটা আবার কবে হলো, পর্যধ করে प्रभएक हरत रहा-ना अक्षम कारता कक्ष कि।

বিজ্ঞাপনের প্রচণ্ড গতি আজ প্রার প্রতিটি মান্ত্রের দৃণিট মন ব্রার্থক আঞ্সাণ করছে। কিন্তু এই বিজ্ঞাশনের গোড়ার কথা জানলৈ ভাষতে অবাক লাগে কি আকর্ণীয় এর পরিবর্জনের কুমইতিহাস।

'এ্যাডভারটাই জিং' কথাটা ওসেছে ना धिन् मक आफ्रसातारात्रात क्षात्र । बाब क्यर्थ मन्दक दक्षान क्षक विद्याव मिदक चातार। সহজ্ঞতাৰ বলতে গোলে বিজ্ঞাপনের প্রধান **উल्म्बर्ग दक्क धक**ि छैश्याक्रिक वृत्कृ का दकाम काण्या नियस्त्रत क्षांच स्थानावास्त्रस्य द्वीनी

काकार कहा अबद्ध काब शतक द्वाकात मृतिके

কা। কাৰ্যনের বিজ্ঞাপন সম্পা একটি প্রগতিশীয়া দাভিতে পরিণত হরেছে। জনাল कामराबारभव बायराव बक्टे विकारिक बस्क्रांकिक दमान विकास सम्बद्धाः काला-बार क्रिकी बंदा। विकाशमून ग्रह्मा किन्छ किक अकारम रहाम । काम छेराजस मान छिन

नाग्रामक भावबादक दबक्र मरवार छ विकाशितम् ब्राधा अञ्चलके अकति वर्गाक तरहा मित्त मन्द्रम विका, कहा बाब। किम हाका द यहर आएग का कता मन्द्रच हिला हा। एथन ছিল সম্প্রতিক ঘটনাকে কেন্দ্র করেই বৈজ্ঞা-প্রের অক্টাঠে সা প্রার করা অপুণির বিজ্ঞান পত্ৰের মোড়াক সংবাদ। একট সাধ্যে সংবাদ এবং বিজ্ঞাপন। বলিও আছকের পাথিবীতে त्राधित गान नाका मन्त्राम किला।

व्यातीम विकाशतम्ब वर् छवा । ज्ञानमन्त्र र्गाउँमा शास्त्र स्थानकः विश्वय सार्ग्यमन ग्रीम च द्वारम्य मञ्जन्तराज्य प्रत्मावरम्य (वास्त्रः) कार्यमाद्यारत विस्तागरमञ्ज महात्रकः मक्त धर्मना नहा अत गुलाकः शाहीसकारमञ् जनः-ভাবিত হর। সেকালে বারসায়ীর। ভারের **ভ**তিবা বিষয় পাথরের এপর খোলাই হারে कर्तर में ताम्छात भारम द्वाधक। बारर थान শৃহক্ষেই পথচাবীর চোখে পড়ে। এ ছাড়া প্রভাবের জালা কোকও ভাষ্টা করা গড়ে। ভাস ক্রত্য রাজ্যার অল্ল-ছল্পাসির স্ট্রা गंगान क्षकांभ कर्ज प्राणिएकत रहता।

. निर्मित शासरम्ब ग्राटशन क्यारे विखा-भद्राक अधार बाबाब किया। क्या क कथा-A Min them forces form for the force of विकाशसम्बद्ध इतिम श्रीवता शहह। श्रीवता নগলীর ধ্রংস্ভর্ত स्टिट्न अवस्ति भाभावेतात्म व्यर्थ भाउता वाद ক্ষাতে এক বিশ্বীর ক্লামনাত তার প্রাণ্ড क्रीक्रमारमध् विविद्धा बामान क्राम्मरमा विकासार লিখেছিলেন। ভখনকার প্রতিস ও রোমের जिल्लिक वस्ट्रेल निर्माश्य विकाशस्त्र क्षेत्र स

1.1

প্রভাব দুই ছিল। অন্যানা জারগা থেকে. CANDA विकाशतम् छेश्यमः निम विका वाकरक থাকে। দেখারে দেওয়ালে অভিকতাকারে বিজ্ঞাপনের কথাও জানা ধার। ভাতে পাওয়া যেত বিজ্ঞাপন ও চারকেল র সন্মিলিজ নমানা।

এমণ বিজ্ঞাপন বিবত'নের পথে পা ৰাজ্যল : বিজ্ঞাপনের ইতিহাসে ব্লাল্ডকারী প্রবাচ আমলো সাইনবেডেব আগমন। পঞ্ ও রাজদাল পালাক্ষাীতে বিজ্ঞাপনের ক্ষেত্রে नाइनदरार्डित वावदाव कवार्य हजार नागरना। প্রাচীয় প্রীস ও রোমের লোকানপ্রভিতে দেখা ক্ষেত্ৰত বড় সাইস্ৰোভ

ইতিমধ্যে পঞ্চল শতাব্দাতে ছালাব্দার সালপাত। ফলে ভাপাকারে বিজ্ঞাপনের আবিভাব এবং প্রসার খাব সহজেট এলো। বিজ্ঞাপনগঢ়াল একবেরোম কাটিয়ে অনেক বেশী চিতান্ত ও ডিজাইনে স্কল্ডিড রূপ পেল। ছাপাথানার উল্লাক্তর স্থেল স্থেল সংৰাদপায়ের প্রভাব বাডলো এবং দ্বভাবতাই বিজ্ঞাপনের মাধ্যমে পরিকত চলোঃ প্রথম সংযাদপত বিজ্ঞাপন প্রকাশিত হল টংলাংল্ড। সম্ভবতঃ সেটা ভিল কোন একটি বজন প্ৰামতকের জাগমন ৰাজা। বইটি প্ৰকাশিত रश ^५७२७ मारमम् 🖫 स्थानुसासी मञ्जलः: এইভারে বিজ্ঞাপন কুলণ উপ্রতির পথে আঞ্জ-ক্ষেৰ স্তৱে এলে পেশীভেছে। ভারতেও বিজ্ঞাপনে এক নতন ধারা প্রবতনে দেখা লিয়েছে। আলালের বিজ্ঞাপন নীতি ল'ত লানিলে নিয়েছে বত্যানের বিজ্ঞাপন চিম্তাকে। ভার ফলস্বর্পে জনসাধারণ ও শেশাগত দিক দিয়ে বিজ্ঞাপন ভারতে সংপরিচিত হরে উঠছে।

আধ্নিক বিজ্ঞাপন কৌশলে ইলাস-रहेग्ट्रनत वाबशात এक मर्वीकत्तन । विश्वास करत প্রসাধনী ও পোরাকের কেরে একটি কেম্পানী জার একটি জেম্পানীর সংখ্য প্রতিযোগিতায় নেয়ে পড়ে কে কত বৈভিত্যের शासा निकात खेरणामध्यत स्थाप्तेष ७ न्याशिएक फेलाइतम ताबाटक भारत। व्यारम वदः महस्मत লুন্বা বাক্ষেপ্ত লাইন বস্তুনা করে বিজ্ঞাপন

দেওরা হতো। এথন বৈশীর ভাগ ক্ষেত্রেই ইলাসটেশনের ব্যবহার এসেছে সংগ্র অলগ্র সংখ্যক নিদিশ্টি বাক্য। তার ফলে পাঠক বে কোন বসতর বছবা সহজেই হাদরখ্যম করতে পারে। সভেরাং ইলামটেশনে একটা স্থকর দৃষ্টান্ত রেখে লহজেই পারক্তে উদ্দ**িত করতে গারে বিজ্ঞানিত অংশে**।

বিজ্ঞাপনের বাবহার মলেডঃ বারসা-ক্ষেত্রের প্রচার বলে। ত**ুও সমাজের** প্রতি এর কিছ, পায়িত আছে। তাই বিজ্ঞাপন পাতার কাছ খোলে আমবা বুল্ছনিক হারি-বাদী ও দিক্ষায়লেক বিজ্ঞাপন আশা কবি। আজকের দিনে বিজ্ঞাপন সাধারণের মতামত গঠনে হাথেন্ট প্রভাব হাড়ায়। তাই বিজ্ঞাপনের মাধামে এমন কিছু প্রচার কর। ম্রান্তসংগত নয় যাতে মানুষের নৈতিক ও শারীরিক ক্রতি হয়। সভেরাং জনসাধারণকে বিজ্ঞান্তি থেকে রক্ষা করার জনে। বিজ্ঞাপন সেনসাবলিপের প্রয়োজন আছে। বিদেশে কিছা সংবারণত যেমন নিউইয়ক টাইমস, দি শিকালো ট্রিবিউন ক্রিশ্চান সায়েক্স মনিট্র নিংঠার সংগ্র বিজ্ঞাপনের গ্লেগগুল স্বাচার করে তা প্রকাশ করে। সাধারণতঃ এ ক্ষেত্রে কঠোর নিসদ্যুগ নিজ্ঞার করে সংবাদপতের কর্তাপক্ষের সমাজ-চেত্ৰনার সঞ্জীবতাল ওপর,

সাত্রাং সমাজের প্রতি নায়িত হিসাবে আঞ্জকের বিজ্ঞাপনগালিকে ব্যাব্যভাবে সমীক্ষা ও পরীক্ষার সময় এসেছে। পাচীন-কালে যার প্রয়োজন ছিল না। কারণ তখন বিজ্ঞাপন-বিজ্ঞান তত জটিলতা ও প্রসারতা লাভ করেনি। বর্তমানে সমাজের ধারা গেতে বললিয়ে। বিজ্ঞাপন দিশ্বার নতুন নতুন মোড নিক্ষে তাই একেনা প্রকাশক ও বিজ্ঞাপন-দাভার উক্তরেরট াীয়ন্ত কম নয়।

বিজ্ঞাপা অথম আর শুধু ব্রেসাহী-ভিত্তিক নর। আজ সে বহু জনকল্যাপন্ন লক কাজেও ক্রড়িড। তাই আমানের সকলের कांगा विद्धालन ज्ञान्त्रे, त्राहिणील ও निर्भाट-ভাবে প্রকাশিত হোক ভা বেন মান্তকে श्रवक्रमा ও विभएशत भएष छोटल मा एए।।



জাবাড়ের পর এসেছে বর্ণস-মন্থর शासन । वाक्रिक्ट नवास त्मन शान । अहे প্রাক্ষের উপর কবিগুরু কভ বে পীত कब्ना कदरहरून जात देशका दनदे। भट्टन सहरू প্রাবণ ধারা প্রভাষে ঝরে', 'करणा खामात ল্রাবণ মেছের খেরাত্রীর মাঝি प्रावन-दिना नामनवता। श्रावीवरनव अधन्ध জনা' 'প্ৰাৰণ ব্যৱহণ পার হয়ে।কী বাণী चारम जे तरहा तरहा', 'शायन द्यारमत चारमक দরোর ঐ খোলা', ৩ প্রাব্ণের ব্রেম ভিতর खाश्यन खारक।' अर्थीन वामन मिरनद माना কথার ভরা কবির নানা অনুভূতি বাড হরেছে এই গাঁতি-কবিভাগালির মগো। ক্রিত অধিকাংশ ক্রেকেই দেখা দিয়েতে বেন একটি প্রক্রম বেদনার আক্রতি।

অভীতে এই প্রাবণের সংশা বছন বেদনার ক্যতি জাড়িরে আছে,—বহু, বিশিশ্ট, ক্রামধনা, প্রাপ্তার আছে,—বহু, বিশিশ্ট, ক্রামধনা, প্রাপ্তার, করি-সাহিত্যিক-সাধক ও কাডিমান বংগাবাসীর তিরোধান ঘটেছে এই প্রারণ। গোড়া থেকে ধরলে যতদ্রে মনে পড়ে, ৮ই প্রারণ (১২৯১) স্বাধীনচেতা, স্কোণক ও বাংমী কৃষ্ণাস্থাল পরলোক্যায়ন করেন। ১২৭৭ সালের ১ই প্রাবশ আর এক জননাসাধারক ইত্লীলা ধর বাঙালী মান্ত ২৯ বংসর ব্যাসে ইত্লীলা বর্ষ বাঙালী হাত ২৯ বংসর ব্যাসে ইত্লীলা বহু হাংলারতের রচায়িতা ভলারচেতা ও দানবীর কালীপ্রসাহ সিহুই।

আমারা এ স্থালে মহারতি কালীপ্রস্কা
সিংহের মহান প্রথম মহাভারত স্ববধ্ধে
প্রথাতি প্রাচীন গবেষক ও জাবনাঁকার
দ্বর্গতি মন্মথনাথ ঘোষ এম-এ, এফ-এসএম, এফ-আর-ই-এস বির্হিত 'মহাজ্যা
কালীপ্রস্কা সিংহ' নামক বহু তথাসংবলিত
মূলাবান প্রথম থেকে বন্ধ পরিজ্ঞেনের
মহাভারত' অংশটি আংশিকভাবে উন্ধৃত
করে বিছি। এই গ্রন্থান বাঙলা ১০২২
সালের ১লা আম্বিন প্রথম প্রকাশিত হয়
এবং এর সন্দৌর্ভ ভূমিকা রচনা করেন
ব্রগতি হেম্পেক্সমাদ ঘোষ। এই মহাভারতের প্রকাশ-প্রস্কাশ হোমন কোত্হলোক্ষ্পিক, ভেমনি তথাসমান্ধ।

প্রবৃতীকালে এই মহাভারত প্রকণ্মূল্যে বংগবাসী ও বস্ত্রতী সাহিত্য
মূল্যে কর্তৃক প্রকাশিত হয়। বর্তমানে
নিরক্ষরভা দ্রীকরণ সমিতির উদ্যোগে এই
মহামূলা গ্রুক থক্ত খুল্ড ভাবে সাধারণের
ইম্পুণ্ড হ্যার সুনিধা হ্যারে।

।। महाकातक ।।

অসর কবি দীন্নশ্ব 'স্বুরধন'। কাবো' লিখিয়াছেন s—

দ্দালী কালী সিংহ বিজ্ঞ সহাশার সভা সারক্তাশুনা যহিবে আলর পশ্চিতে পালন করে, আপনি পশ্চিত ভারতের' জনবাদ পশ্চিত সহিত, বিপাল বিজ্ঞা, সান অবনী ধনেল, কেনের কলাগে প্রায় করিয়াছে শেব, বহসা-কোডুক হাসি রাজক্তা-ভরা,



এই প্রবাশে বিদ্যোৎসাহী কালীপ্রসচের
দান্দীলতা প্রভৃতির হংকিণ্ডং প্রিচর
প্রদুত্ত হইরাছে। 'হ্ুতাম গেটা'রও সংকিশ্চ
প্রিচর আমরা প্রদান করিরাছি। এক্ষণে
আমরা কালীপ্রস্থার স্থাপ্রেট কীর্তিশতুম্ভ মহাভারতের বিষয় দুই একটি কথা
বিলব।

নহার্য কৃষ্ণবৈপায়ন বেদব্যাস বিরচিত সংস্কৃত মহাভারতের বংগভাবার অন্বাদ-প্রচারের বিরাট ক্ষণনা কির্পে কালী-প্রসামের মনে উলিত হইরাছিল, এবং কির্পে এই মহং কাষোর আরম্ভ হ্র, ভাহা নিশ্চয় জানা বায় না।

माना यादा कालीश्रमम स्वयः प्रश-ভারতের কিয়দংশ অন্বাদ করিয়া হ্রচন্দ্র ঘোষ মহাশারের নিকট সমগ্র মহাভারতের বংগানুবাদ প্রকাশের ইচ্ছা **প্রকাশ করেন**। হরচন্দ্র তাহাকে উৎসাহিত করেন. একাকী এর প ব হং কার্য সম্পাদ্দ করা সম্ভবপর নহে বলিয়া পশ্ভিতগণের সাহায়া গ্রহণ করিতে উপদেশ প্রদান করেন। প্রভানীয় উশ্বরচন্দ্র বিদ্যাসাণর মহাশয় তকুলোধনী প্রিকায় মহাভারতের অনুবাদ ক্রমণঃ প্রকাশিত করিতেছিলেন। এক্সণে কালী-প্রসন্ন তাঁহাকেই উপ্রভ পার বাথে এই মহাগ্রাথ প্রকাশের सन्। অনুরোধ করেন। বিদ্যাসাগর মহাশয় সময়াভাবৰণতঃ স্বয়ং এই অনুবাদকার্যা গ্রহণ করিতে অস্পীকৃত হইলেন, কিন্তু প্রমন্দেহভাজন কালী-প্রসামের অন্রোধ উপেক্ষা করিতে না পারিয়া উপযুক্ত পণ্ডিভয়ণ্ডলী জ্বারা মহা-ভারত অনুবানের ব্যবস্থা করিয়া দেন, এবং श्वास् के कार्यात्र छन्त्रायधान करहान्।

মহাভারতের অনুবাদ বখন আক্রত হয়, তখন ফালীপ্রসমের ব্রঞ্জন অন্টাদশ বর্য মাত। মহাভারতের উপন্যস্থেত ক্লানী-প্রসম লিশিরাক্রে—

'১৭৮০ শকে সংকীতি ও ক্ষাক্ষার হিতাদক্ষিন লক্ষ্য করিয়া । ব ক্ষাক্ষ্য সদস্যের সহিত আদি মূল সংক্ষান্ত প্রহা-ভারত বাংগালা ভাক্ষ্য অনুসক্ষ করিতে প্রবৃত্ত হই। তগর্বাধ এই আটবর্ষকাল প্রতি-নিবত পরিপ্রম ও অসাধারণ অধ্যক্ষান্ত করিয়া বিক্রাপত্তি কর্মান্ত্রিক অসার কুপার ভির্কৃত্তিক্ত কর্মান উন্থাপন ক্ষাণ সহাউনেতীর অভীনানপ্রেম্ব মুলান্নান সক্ষাণ অভিনার।
আন্বাদ ক্ষান্ব ক্ষান্ত সাধারণের হ্রেরারটি
ইইরাছে ভাছা প্রশাক্ত পারিপার ক্ষান্ত করিবা এই মাল বাগতে পারি হয়,
অল্বাদ স্থারে ব্লে মছাভারতের কোল ক্ষান্ত করিবা আই মাল বাগতে পারি হয়,
অল্বাদ স্থারে ব্লে মছাভারতের কোলাভ্রমণ
অল্বাদ কোন অংশই সাম্প্রেণত হয় মাই:
অথক বাপালা ভাষার প্রসাম্পুণ ও লালিভা
প্রির্মাণ ক্ষান্ত প্রশাক্ত স্থারিরার্মণ ক্ষান্ত প্রশাক্ত স্থারার্মণ ক্ষান্ত হয় মালাক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্

বরাহ্মগরকথ যে বাটোতে এই আন্থান কার্যা সম্পান হর, কালাীগ্রন্ম ভাছার, নমা দিরাবিশেন সোরাম্ভাগ্রেম ও প্রেগনগ্রেম কার্যালর' গ্রন্থানি মহারাগী জিরুটারিয়ার প্রগানামে উৎস্প হর। যে পরে মহারাগীকে এই মহারাগ উৎস্প করা হর, সেই প্রথানি পাঠ করিলে কালাীগ্রসমের দেশহিতসাধনেছা কিল্প প্রবেশ কির এবং হুল্য কত তৈ ছিল ভাষা স্প্রীন্মান হয়—
শরম ভাল্ডাজন

শ্রীপ্রীয়ন্তী মহারাণী ভিক্টোরিয়া । অভুল প্রশাসনক্রেন্---

মহারাজিঃ!

প্ৰিৰীয়ধ্যে ষ্থন দেশের লৌজাগ্য-দিবাকর সম্পিত হইতে আৰম্ভ ছুর, সে সময় তচতা বাজনকারী অবশাই পোন ना क्या अन्तर्भाशास महाचाएक अहांक्स-প্ৰেক আলিপান ভবিষা থাকেন। নৈস্থিকি নিয়ম এই যে, রুপ্লার টারভির সময় বিশাস্থ গাল্পালী প্রজাবংস্কা সন্ধ-পতিগৰ্ট মাজসিংহাসনে অধিনিটভ হুন। कामीन्यवसम्बद्ध विवादश्या कावसमूचित ভাগো একণে সেই শ্ৰেছিল উপন্থিত। हिन्द्र नाजनावज्ञास वयम माहारकात्र खन्छिन-কালে নিজ্য নাম্মপ্ৰাৰণ বিষ্টিনভাতি রাহ্ু-ान्छ मागवत्रमम्। स्वात्रकवाक्रवर्गय क्रवीक-কবলস্থিত ভারতবর্ষকে উন্ধান্ত ক্রিয়াছেন, একৰে দিনে কিনে তহিনা মালন মুখনী প্ৰেম্পুত্ৰি জন্মেন্ত্ৰ উল্লেখ্য কাৰ্ডিক ধাৰণ कविरक्षय अवर क्याक्यव प्रतिनाम साम्ब्राह अकृतिम राज्य । सन्दर्शनाम साम् स्रोतहा वानवानिक्षक वानाविश्व कृत्रविका मीतकार्य कान क्षतिकदर्गः

সেবি! আমি এই গ্রেক্তন্থ সন্দৰ্শনে স্থান্ত ভূট্না আনহাতিশালসহকালে মহার্থ নেক্ত্রানত প্রাণ্ডালাঞ্জনাল প্রাণ্ডালাল প্রাণ্ডালাঞ্জনাল প্রাণ্ডালাঞ্ডালাল প্রাণ্ডালাঞ্জনাল প্রাণ্ডালাল প্

জন্মনীত্ররের অপার কুপার অলা আমার সেই ভিরসংকলিত কটোর রত উদ্যাপিত হইল। এই আটবংসরের বহুপরিপ্রম ও বরসজাত সাহিত্যকুসমু অন্য কোন নিভ্ত মেখাতেম্পুলে বিনাসত করা কোন জমেই ব্রুলিসপাত নহে। বিশেষতঃ মহাভারত বেরপু অন্প্রম গ্রুপ্ত, উহনত ভারতেম্বরী মহারাজনীর নাম অধ্কিত না হইলে গোভা পার না। হোমন দেবতারা বহুপরিপ্রাম পরোনিধি মন্থন করিরা তদ্খিত প্রিক্লাত কুল্ম স্কুরনাল প্রদদ্রকে অপ্রণ করিরা-ছিলেন, তার্মপ আমি এই বহুমমুসন্থ বিক্লিত ভারতপ্রকল আপ্নাকে উপ্রার

ভারতেশ্বরি! আবশেবে জগদীশ্বর সমীপৈ আমার এই প্রাথশা বে, ভারতবর্বের রাজা বিক্রমানিতোর রাজ্যশাস্ন সময়ে বের্প

"মহাভারতের প্রথম খণ্ড 'প্রোণসংগ্রহ'
নামে প্রকাশিত হয়। ইহাতে বোধ হয় যে,
কালীপ্রসন ক্রমে ক্রমে আমাদের অন্যান্য
শ্বরাণ গ্রম্পাদির অন্যুবাদ্ও প্রকাশিত করিবার সঞ্জন্প করিয়াছিলেন।

কালিদাসাদি ভ্বনবিখ্যাত মহাকবিগণ জন্মহালদাসাদি ভ্বনবিখ্যাত মহাকবিগণ জন্মহালদাক্রিক সংস্কৃত সাহিত্যের উন্নতিসাধন করিয়। গিয়াছেন এবং মহারাণী এলিজাবেগের ইংল-ডশাসন সময়ে যের্শ সেরাশায়ার প্রভৃতি কভিপর সংপ্রাসাধ কবি জনমন্ত্রহণ করিয়া কবিশ্বশালর প্রাকাশ্ঠা প্রদাশনপ্রেক তহিরে শাসনকাল চির-শ্রন্থীর করিয়া রাখিয়াছেন, তদুপে আপনার শাসনকালেও হিন্দ্রশ্রন শত শত সংস্কৃত সাহিতাদীপের উম্জ্বলতা সাধন করিয়া লোকের মোহাশধকার নিরাকৃত ও এই বিশ্বরূপ বাসগাছ আলোকিত কর্ম। ইতি—

সারস্বভাশ্রম মহারাজ্ঞ ৷
শক্ষাম্পা ১৭৮৮ ৷ আপনার চিরান্দ্রগত প্রজা ও বিনয়াবনত দাস শ্রীকালীপ্রসম সিংহ'

কালীপ্রসাম বিনাম্কা মহাভারত বিভারণ করিরাছিলেন। বারসাধ। বিরাট প্রভারক এর্পে দাদের দৃষ্টাণ্ড বোধহয় বুলাদেশে প্রেম্ম আর কখনও দেখা বার বাই।

আদি পৰা সমাণত হইলে ১৭৮০
পালাৰে তলুবোধিনী প্রিকার' এই মহাগ্রাপ্থ বিতরপের বৈ বিজ্ঞাপন প্রকাশিত
হইলাছিল এবং বাহার প্রতিলিপি নিদ্দে প্রকাশ্ব হইল, সেইর্প বিজ্ঞাপন কি
এ প্রকাশ্ব কোনও প্রিকের মুন্নগোচর

বিজ্ঞাপদ। শ্ৰীবৃত্ত কালীপ্ৰসাম সিংহ মহেলক্ষৰবুকি গদ্যে অনুবাদিত বাংগালা মহাভাৱত

মহাভারতের আদিপ্শ তভ্যোধনী সভার বলে মুদ্রিত হইতেছে, অতি দ্বার মুদ্রিত হইতেছে, অতি দ্বার মুদ্রিত হইবে। প্রতেশক প্রকাশক মহালার্রাদেগের নিকট প্রেরিত হইবে। ভিন্ন প্রদেশীয় মহাভারা প্রতেক প্রেরণ জন্য ভাক গৌদপ প্রেরণ করিবেন না। কারণ, প্র্বে প্রভিজ্ঞানুসারে ভিন্ন প্রদেশে প্রতক্ত প্রেরণ করিবেন না। কারণ, প্র্বে প্রভিজ্ঞানুসারে ভিন্ন প্রদেশে প্রতক্ত প্রেরণর মাসলে গ্রহণ করা বাইবে না। প্রত্যক জেলার প্রতক্ত করা বাইবে, ভাহা প্রত্যক জলার প্রত্ক করা বাইবে, ভাহা হইলে সব্প্রথদেশীয় মহাভারা বিনাব্যারে আন্প্রতিবিক সম্পুদায় খণ্ড সংগ্রহ করণে সক্ষম হইবেন।

শ্রীরাধানাথ বিদ্যারত্ব বিদ্যোৎসাহিনী সভার স্পাদক।

ষে মহাপন্ডিতগণের সাহায্যে কালীপ্রসন্ন মহাভারত অনুবাদ করিয়াছিলেন,
বে সকল মহাপ্রাণ বাদিগণের নিকট হুইছে
তিনি উৎসাহ প্রাণ্ড হুইরাছিলেন, মহাভারতের উপসংহারে তহি।দিগের নাম
হুডজ্ঞতার সহিত উল্লেখ করা হুইরাছে।
এঙ্গলে তহি।দিগের বিষয় শুনরুক্লেখ করা
নিশ্পুরোজন। তানেকে মনে করেন যে,
কালীপ্রসাম স্বাং মহাভারতের কোনও অংশ
অনুবাদ করেন নাই। এ ধারণা সত্য নহে।...

মহাভারতের প্রথমাংশ প্রকাশিত হইলে সুপশিতত রাজা রাজেন্দ্রলাল মিদ্র সম্পাদিত বিবিধার্থ সংগ্রহে যে স্কুদর সমাজোচনা প্রকাশিত হয় তাহা এন্থলে উম্বারহোগ্যঃ—

'প্ৰেৰ্ব আম্বা দুটু তিন বাব শ্ৰীহাৰ-কালীপ্রসন্ন বিদ্যান্ত্রাগিছ সিংহের বিষয় প্রশংসা করিয়াছি। তদব্ধি উভ বাব, এক মহ ব্যাপারে নিব,ভ হইয়া তাহার প্রথম ফল-স্বর্প 'পরোপ সংগ্রহ' নামক প্রদেশ্বর প্রথম খন্ড জনসমাজে সমপিত করিয়াছেন। ঐ খনেড মহাবি কুক্টেবপায়ন বেদব্যাস-প্রণীত মতা-অন**ুক্রম**ণিক ভারতের আদি পব্বাদতগতি পৰ্বসংগ্ৰহ পৌষা, পৌলোম ও আস্ভীক পৰ্বাব্যি আদি বংশাবভয়াণিকা সভিত সম্ভবপশ্বশীয় ভারতসংগ্র লাকান্ডবেলা-অন্বাদিত হইয়া পাথান বণ্গভাষার বৈষয়িকজনগণের ভাষজার্থ স-বিধাস্ত স্থান্ট উপার হইরাছে। ইহার প্রে কাশীরাম দাস-কৃতক ভানাবাদ ভারভামত পারের একমার উপায় ছিল, এবং তাহা স্কোমল পস্তারে বিরচিত হওয়াতে এতন্দেশীয় অপর সাধারণ সকলেরট সমাদর্শীয় ছিল ফলতঃ উত্তর-পশ্চিমাণ্ডলে জলসীদাস-কার বামারণ বের্প সাপ্রসিদ্ধ বজাদেশে কাশী-ताब मारजब क तरु० Titleman of উভস প্রন্থকাশ্রে শুন শ্র আদর্শ রাক্ষ্যীক ও ব্যাসের উল্লি পবিহুদ্ধ করিয়া নানাবিধ লা লা কণোলকবিশত আধ্যায়িক আরা বাস্মীক রামারণ ও ব্যানের ভারতের প্রকৃত বর্থ জানিতে বাঁহাদিলের বাসনা ভারত দিলের शरक উল গ্রহণ কলাপি স্মাদ্দণীয় চুইডে পাবে मा। তল্মধ্যে বাঁহারা ভারতের তাংপর্যা জানিতে ইচ্ছা করেন তাঁহাদের নিমিত্ত কালীপ্রনমবাব্য উপযুক্ত হইয়াছে, বেহেড় তিনি অতীব সাবধানে সংস্কৃত মুলের অবিকল অর্থ বাল্যালা অনুবাদেতে রক্ষা করিয়া-এবং ঐ অনুবাদও এতাদুশ ছেন স্কোমল ও স্মধ্র হইয়াছে বে তাহা পাঠ মাতেই পরিজ্প হইতে হর। ইহা অবশাই স্বীকলবা সে, ব্যাসোর সংস্কৃত পদ্যের লালিতা কদাপি বাল্যালা পদ্যে প্রত্যাশা করা বায় না পরনত বহিারা সংস্কৃতে অনন্দিন্তা ভাষ্ট ভারতের প্রকৃতার্থ জানিতে ইচ্ছা করেন তাঁহারা উপস্থিত গ্রন্থ হইতে সদপোর অনারাসে প্রাণ্ড হইতে পারেন। কালীপ্রসমবাব্র বরঃরম নিতাতত তর্ণ, এই অবস্থার দেশীয় অপর ধনাটোর নায়ে ইন্দ্রিয় সেবায় বিরত না হইয়া তিনি যে মহৎ ও দুরুহ ব্যাপারে অভিনিবিক্ট হইয়াছেন ইহাতেই তিনি অবশ্য প্রশংসনীয়: তাধিকিছত ভাছাতে বের প কমতা প্রকাশ করিরাছেন, তাহাতে তিনি সমশ্ত বিদ্যান,বাগিদিণের ধনাবাদাহ হইবেন ৷'...

পশিভত রামগতি নারেরতা বলিয়াছেন স্ত্যন্তালে প্রজন ও স্বল তান্বাদ কালীপ্রস্কু শিংস্কুর মহাভারতই আদশান র্পে পশিংস্থিত ও সমাদ্ত হইরা থাকে শ

আমাদিশের বিশ্বাস বে এইর্প স্কালিত ও প্রসাদগ্রণীবিদিট অন্বাদ্যকথ বংশভাবায় আর নাই এবং বর্তাদন বংশ-ভাবার অন্তিড থাকিবে, তত্তিদন এই রন্থের সমাদর উত্তরোক্তর বৃন্ধি পাইবে এবং বর্তাদন তিহন্দানেনি তাস্তিভ থাকিবে, ইহা লক্ষ লক্ষ নরনারীর নিরাশ হ্লারে আশা, শোকস্বত্ত চিত্তে শাহিত ও সংশারাক্তর মান ভগবংপ্রেমের অম্ভবারা বর্ষণ করিবে।

১৮৬৬ খুন্টাব্দে কালীপ্রসক্ষের মহা ভারতান্ত্রাদ সন্পূর্ণ হর। ইহার প্র কালীপ্রসক্ষ চারি বংশরকাল মার জানিত ছিলেন। অপরিমিত দান ও সদন্তীনের নারে তিনি অপর্যুক্ত চইরাছিলেন। কেই কেই বলেন এক্যার মহাভারত প্রকাশ ও বিতরণে তাঁহার নানাধিক আড়াই লক্ষ্মার বন্ধ হইরাছিল।

রূপসীর খাতা



কেশ বিন্যাসের আলোচনা প্রসংখ্য একটা কথা মনে পড়ে গেল। কেল সৌন্দর্য শাবে যে কেশের প্রাচুয়ে কিন্বা লীলায়িত গকেই হয় তা নয়, যে গ্রীবা কিম্বা যে ঘাডের উপর সেই চুলের রাশি ছডিয়ে থাকবে ভাকেও তেমনই হতে হবে। বেণী বাধলে (লন্বা চুলের কথাই ধরছি) পিঠ ছাডিয়ে নীচে নামে, চুল যতটা লম্বা, ততদ;ুর পর্যত। এখন কথা হচ্ছে বেণীর শ্রেতে ঘাড়ের কাছে চুলের তও কেমন হবে। ঢিলে ন্ত্র, কি কবে শস্ত ভাবে বাধতে হবে সেটা নিভ'র করবে মাথের ছাদ ও ঘাড়, কাধ গলা ইত্যাদির গড়নের উপর। শব্দাটে মুখ হলে শ্রেতে চুলের গাচ্ছগর্নল বেশ কষে বেংধ নিচের দিকে নামবে। কাঁধ চওড়া বেশী হলে त्वणी ना वीधारे अवरहत् वाश्नीत। लाल ম্থ সর ঘাড় লম্ব। গলা-এসব কেটে বেশী ঢিলে করে চুল নরমভাবে ছড়িয়ে ছড়ির বাধতে হবে। শন্ধা তাই নয়, গলার বাঁপাশ ঘেষে ঘাডের মাঝামাঝি ফলে কিন্বা পাতা লাগালে ভাল দেখবে। তার ফলে মথ আর স্বাক্ত ফিলিয়ে বেশ ভাল দেখায়।

খোঁপার সম্বন্ধে তো আগেই আলোচনা করেছি। ছোটগুলা কিম্বা মোটা চওড়া খাড়ের মহিলাদের বলাউসের গলা পাশে বেশী **টওডাভাবে খোলা থাকলে তার উপর খোঁপা** হলে পিঠের দিকটা ভাল দেখায়। তাঁরা ষেন দ্যাশানের পালায় পড়ে কোন কারণেই ছোট গলা কিম্বা উ'চ বৃশ্ধ গুলার জামা না পারেন। আজকাল প্রায় সকলেই বড় গলার স্লাউস শরে থাকেন যার ফলে পিঠ ও ব্রেকর অনেক অংশ খোলা থাকে। কিন্তু এটা বেশ ভাল করে বিচার করে দেওয়া উচিত যে তেমন লাউস মানাচ্ছে কিনা। যাঁরা থবে রোগা শরদাড়া উচ্ছ হয়ে উঠে থাকে, কিন্দা যথেন্ট দেহারা নন্ত দের স্বাউসের গলা গোল ातर **एकाढे इ**ख्या काल। शला ख बाह्य नव्यारहे ान शनावन्य किन्या 💩 क्रमात प्रदशा সামা প্রজে **ব**্ব স্মাট[্] দেখাল্ল। কিস্তু দাধরণত আমরা আধ্বনিক ফাাশানের স্তোত্তে চালি, আর একই ধরণে একই রঙের বাহারে লতে থাকি। ফলে একজনকে সূত্রী অথচ সই একই পোষাধ্যে তাপরকে ভাল দেখায় ।। धामन कि नमज्ञ नमज्ञ मृत्विकेषे । जार्ग। াই আমার মনে হয় নিজেদের চেহরাও শভনের উপর কক্ষা রেখে চলা আমাদের वानम महकात।

শ্বে বড় মুখে যেমন নিরাট উ'চু খেপা শ্বি না, ঠিক তেমনি খুব ছোট মুখেও উ'ছু বড় খোঁপা অচল। এইভাবে প্রতিটি বিষয়ে সমুদ্ধ বিচার ও ব্লাষ্ট রেখে সাজা। ভিচিত্র।

আজকাল কৃত্রিম চুল ও খোঁপা প্রায় সবাই ব্যবহার করে থাকেন। কিন্তু আমার অনুরোধ, সেই চল বৈছে ও দেখে এমন কেনা উচিত যার ফলে নিজম্ব চুল খারাপ না হয়ে যায়। এছাড়ো এইসব চল, যদি ভালো জাতের না হয়, নিয়মিত ব্যবহার করাও ভাল না। চল কিনে তা দিয়ে খোঁপা তৈরী করে ব্রহার করা বেশী শ্রেয়। এমন চল কেনা উচিত যা নিয়মিত ধোরা যায়, আচ-ডান যায় ও তেল ব্যবহার করা যায়। ভার ফলে সেই চুলও আসল চুলের মতন দেখতে থাকে। এই কৃত্রিম চল সেনাগ্র সময় নিজের চুলের রঙের সংগ্রিখিয়ে না কিনলে ভা দেখতে থবেই খরান লাগে। এমন অনেক সময় দেখা গোয়ে যে আসল চুলের রঙ কালো আর নকলের রং খয়েরী অথবা লালচে। তখন দুই চুলের বিন্যাস হাস্যকর দেখায়।

আধ্নিক কেশসজ্জার সময় আজকাল দোকানে ও বাড়ীতে সব জায়গাতেই ল্যাকার আঠাজনতীয় এক রকমের জিশিস্ ব্যবহার করা হয়। চলকে সংযত রাথার জন্য আর পরিক্টার রাখার জন। এই ল্যাকার ভাল কোম্পানীর হওয়া একান্ত দরকার, না হলে চল থারাপ হয়ে হার। ভাছাডা আমার মনে হয় বথাসম্ভব কম স্যাকার ব্যবহার করা উচিত। এছাড়া ল্যাকার বাবহার করার পর চুল যখন থোলা হয় তখন চিরুনি জোর করে চালিয়ে আঠা ছাড়ান কিম্বা জট ছাড়াবার চেন্টা খবেই থারাপ। ধৈষ্ঠ ধরে আন্তে আন্তে চলের জট ছাডান জীচত। लाकात छेगातात कना वाहि करत करा निया আপাল ভিজিয়ে, আপাল দিয়ে আন্তে আন্দেক্ত চুলের ল্যা কার ছাড়াতে হয়। ভারপর খ্যুব সাবধানে চির্নুনি কিম্বা ব্রাণ দিয়ে চুল পরিকার করা উচিত। এরপর তোরালে ভিজিয়ে তা দিয়ে মাথা বেশ করে মংছে আঁচড়িরে চুল খালে শোরা ভাল। এতে চুল क्ष शास्त्र। अर्शपन भाष्ट्र करत काला দরকার। এত হাণ্ণামার জন্যই বলছি **খ**ুব দরকার না মনে হলে এসব ব্যবহার না করাই বাঞ্চনীয়।

এইখানে জেনে রাখা ভাল, চুলের ঐ জট স্থিট হর চুলকে উল্টো দিকে আঁচাড়িয়ে ডট জর বার তার ওপর চুল ভালানাবে আঁচাড়িয়ে ফোলানোর জনা কিনা উচ কবার কবা। এই ব্যাক্তার পথতি বেশী দিন ক্ল চাল্ট হয়নি, তবে এর বাবাই তার বাবহান কমে বেডে শ্রেট্ করেছে। করেদ এর করে চুলের আগো কেটে বাজ্য-বুল ভেগো দেটে বাজে ও প্রভারতই চুলের জাত কট হড়ে।

ঘাত গলা ও কানের পেছনের অংশগ্রেল বিশেষভাবে নজর রেখে পরিকার রাখা ব্যক্তার। অনেক সমন্ত অনেক সন্দরীরও মাড়ে গলায় মুয়ল। দেখতে পাঙ্কা হার, এবং তা তাদের সোল্যার্থ কমিনে দের। নির্মাতভাবে এই সব জায়গা পরিকার ও



নস্প রাথা বিশেষ প্রয়োজন। এর কলে
সৌন্দর্য প্রিরদের দৃশ্চি আকর্ষণ করা বার।
প্রতিটি ছোট বড় বিষয়ে একটা দৃশ্চি

রাখনেই স্কার হওরা বার। প্রকৃতির ব্রুক্ত কতো রঙ, কতো রস, কতো আলো হুড়ানো আছে। সেগ্লিকে ঠিক মত সান্ধিরে ওলতে পারলেই জন্মগত চেহারটার ওপর র প কোলুস আনা বার। এবং আনাই উচিত। নারী যে স্ক্রের প্রতীক ম

--वाक्षिक

বৃদ্ধ-বৃদ্ধা আর বর্তমান সমাজ

তিদ মাথা বার বাদ্ধ নেবে তার বাংলায় একটি চলাত প্রধাদ আছে অথাদ কোন কাজর জনা বাদ্ধদের পরামালাকে এট স্কাটিন। যে বাদ্ধদের প্রামালাকে এট গার্থ দেওরা হচ্ছে—আমাদের স্মাজে এট বা্ধ্বাক্ষাদের প্রামাকের স্থান

বৃদ্ধ হকে জনেকেই শিশ্যদের মত হতে ব ন—ভাদের সভাগ শিশ্য বরসের অচারভাচরণে একটা সাদৃশ্য পাওয়া বায় । শিশ্র
আবদার বা মজি শিশ্র বাবা-মারের।
সান্দের পালন করে থাকেন। অথচ বৃশ্ববাশ্যদের চ্যাহিশা বা আবদার মেটাভে ছেলেমেনি বা ছেলের বৌরেরা প্রায়ই উনস্পীন
নীরর। সেকাবংশই আজকাল বাধ বরসের
ভাবনায় আগের চেরে প্রোচ্রো বেশী

কথাটা শ্নতে আতি অপ্রিয় হলেও প্রেমনভোগী অথবা কোনবুক্ম আয়ু মাছে ব্ৰুধ্বের পরিবারে যে স্থান সম্মান থাকে জারাবহীন ব্লধ-ব্লধাদের অহাত লাটাই কিছত প্রধান প্রাপ। হয়ে দাঁড়ায় দিনকাল বটাটব পরিবতনে সবচেয়ে বড় কথা অথনৈতিক কারণে আমাদের যৌথ পারবারগালৈ ভেলেগ ষাজ্যে। দেখানে ছোট ছোট পরিৰ'রগালি মোটামাটি তিন চারজনের স্থ-স্বাদ্দদ চাওয়'-পাওয়া মেট'বার জনাই গড়ে উতেছে ¹ নিজেদের ছোট সংসারের জাডারজনের কথা ভারন্ধ পর আত্মীরঙ্কজন এমন কি নিংক দেও বৃশ্ধ বাবা মাধেদের কথা ভাবনারও ভাবকাল বা সারে গ তাদের হান ওঠে ন:। একালনভার্ট পরিসারে পাঁচ-সাভ পরস্পারের। মোটামটি সম্ভাব রেখে একে অপরের স্বোগ সাবিধা স্বাথেরি প্রতি নজয় রেখেই চলতেম সেখানে বৃদ্ধ বাবা-মাংসর সসম্মানেই বসবাস করতে <u>পার</u>ভেন। भव **भारतको अधार्माका**र्य नावा-भारतक मार्व-দুৰ্শিত বহন করতে বাধা থাকতেন। একারবর্তী পরিবারে বৃত্ধ বয়সের আক্ষার প্রতিপাশন কলা লামের সমারেট সম্ভব হাড়ে কারণ পুষ্ঠাত কোনোভারের কোন <u>প্র</u>ান একার্রনভী পরিনীর ভেপে বাওরার ফলে काडे दता चात्र भवनभव अक्जरभ रजनान करमन का बाल छोरल्य वास्थ वावा-भारतानन লাসভা দিন দিন অন্তাৰ্ড অসহায় হয়ে পাড়ার জীনের ছেলেরা বত উচ্চপদৃশ্য হোন বত क्षेशांका करा का एकन अकारिक छाडे ধাৰুতাই পিতা-মাতার দারণারিৰ কে কত न्मा जाव असते प्रक

অজ্ঞাতে বাবা-মাকে কাছে এনে র'খতে অক্ষমতা প্রকাশ করেন। কোন পতে হয়তো ভার স্থার চাকুরীর ছলছ ভাষ বাবা-মারের দায়িত এড়িয়ে বান শ্রমাত কিছা দিয়ে ' কেউ বা নিজেদের স্টাটোস বজার রাখতে বুল্য বাবা-মারের অবাচীনভাকে বেমানার মান করেন। কেউ বা বদলীর চাকুরীং অস্-বিধায় বাবা-মাকে সংগ্রাখতে রাজী নন। সেক্ষেত্র বৃদধ বাবা-মায়েদের পাত্রদের মজি মতো দানধানে কোনরকমে দিন কাটাতে হয় : তাছাড়া পিতার অবত মানে বাশা মা একলা পাডাপ্রতিবেশীদের সহারতার ভরসার এক मिनवाभन करतम <u>क चंद्रे</u>न जामारमत स्थान বিরল নয়। সাভরাং ভাগের বাবা-মাথের প্রায়শট গঙ্গা শাবার সায়েগ গোক ^{কে}বেড হন। ক্ষতাবান ভাইও আক্ষা ভাই-এর আক্ষমতার স্বোগ নিয়ে নিজেও বত কং সম্ভব বাব্-মাকে সাহ্যা করে নিজের দিন-ক'ল খারাপের কথা জাহির করেন। তথ্য তারা ভালে বান ভালের দিশা বয়স থেকে এট বাবা-মাই সবতে। প্রতিপালন করে বথায়থ শিক্ষা-শীক্ষা দিয়ে আজকের দিনে তাদের স**ুপ্রতিন্ঠিত হতে সাহার্য করেছেন। যে** বাল্ধ বাবা-মারেরা একটি মার সম্ভানের ভান দিরেছেন এ ব্যাপারে তারা কিছু কিছু বিপরীত ফল পান। অধিকাংশ সময়ই ত°র; প্রতির সংখ্যা একটো বসবাস করার স্থানাগের व्यक्षिकाती रता आवाद भारतत मर्का प्राजित्तांत सना विक्रित स्वीयनशाभाग्य व व्यक्ता नोहा रम। जातमा अकथा स्वीकार्य रव रहीथ श्रीत्रतारत वाता-मारक एक्यांत क्राह्मिक रवशाहा সব জেলে ও ড'লের বৌদের ওপর নাদত থাকতো দেখানে ভোট পরিবারে লোকাভাবেও आंतरक व मध-व मधारमञ कार्ड क्राम्स्ट्र আত্তিকত হন।

এই বাশ্বাসের মধ্যে বর্যজ্জন আন্তেনবাদের বাশ্ব বর্মেও কিছ, কিছ, আর
আন্তে। আর-এর জন্সট চোল ভাগবা নিশ্বেন
নিজেদের গবান চালান্ত সক্ষম বা আরের ভাগে
সার্টট ভোলে এবং ভালের বাৌ-এর লাভে ভালে
দেন বালাই পরিবারে ভাগের একটা বিশেশ
স্থানে থাকে। পরিবারের ভাগের এবং মানাবালা ভানেক সন্ধারেই ভারা আর্থার বিনিমানে
ভাগান্ত করতে সক্ষম হন।

পরিবারে বাল্প এবং বাল্পালের সান-স্ক্রান আল্রেক্স আনজন আল্ড রবি জীবা সংক্র পাকে সাক্ষ্ম আক্রেম িস্কোনের কার্ক ব্ন্ধা খাশ্ডেকি অনেক সময় ছেপের বৌরেরা নিজেকের কাছে রাখেন নিজেনের স্থ-চ্বাচ্ছেদেয়ের বিনিময়ে।

বৃদ্ধ বয়ুসে মানুষ একটা গলপ কমুঙে ভালবাসেন বিশেষ করে অতীতের ঘটনাবহনে জীবনকে বারবার স্মরণ করে তারা শা^{নিত} পান। কার কার অতীতের ঘটনা এমন ছেলেখেনের উল্লেখযোগ। যে বর্তমানের বিশেষ করে নাতি-নাতনীরা সব সময় প্রু শোনার জনা ভার্ট করে থাকেন। সেখানে বস্তা ও শ্রোতাদের নিজের শৈশবের দৌর_াস্থা কৈশোরের রোমাণ্ডকর অভিযাম হোকনেহ বীরত্ব নিপ্রভাবে বর্ণনা করেন। তার ওপর र्याप न्दरमणी आरम्पानत्नत् दकान महित्र वर्षन যুক্ত থাকেন তবে শ্রোতাদের সদপ শেনর বায়নার তিনি মাঝে মাঝে অস্থির হয়ে ওঠেন। আবার একথাটাও লক্ষাকরা মার কোন কোন বৃদ্ধ বৃদ্ধাকে দেখলে পরিবারের লোকজন বংধাবাদ্ধব এমন কি আত্মীয় স্বজন এডিয়ে যান। তবি গল্প শোনার ধৈর্য কারও থাকে না। হয় তাঁর গ্লপ্রলার দক্ষতার অভাব না হয় তাঁত জীবনে রেখাপাত করাব मा पाउँना किছा वाउँनि। এक এकरो मधर সকলের থাকে ার ছেলেমেরের বাপকথার গ্রুপকে নিজম ক্রুপনা তাবাস্ত্র বলে ভারতে শেখে স্বভাবতঃই তাদের এ গলপ শোনাব জার ধৈষ্য থাকে না। ভারা চার বাস্তবভিষ্কিক কিছা ঘটনা যাব মধো শাতি সাহস কিছু, আছে। সেকারণে রূপকখা শ্লিয়ে যে নাদ্-দিদিমা তাদের নাতি-নাতনীদের এক সময় মন জারিয়ে রাখতেন আছেত আছেত সে বয়স ছোটরা কাটিয়ে উঠলেই বৃশ্ধরা তারের সালিধ্য থেকে বণিত হয়ে আহাত পান।

বার্থকে মানুনের জীবনের পরিণতি একে এড়ানো কারও পক্ষে সম্ভব মর। আজ শারা ব্যধিকাকে অবছেলা করে উদাসীর অভেন্ট ভালের জীসনেও একদিন এই চরম বিদ্দাসারে। কেনিনের সেই চিন্ডার ও আজকের সক্ষােরা ব্যধাের প্রতি মন্তালম হবেন। তা ছণ্ডা সামানারা ভো আলাালের আগানাল জন — কালা সামানা কারো বা লালা নিশিকা। একদিন তারা আমাদের মন্ত জীবা আমাদের মন্ত জীবাশীজিতে ভ্রমণির ভিন্ন সম্ভ শারা কট্ দিন নিজেনে সম্ভ সমীরাস করেও সালার বাকেলা ও আগানিকালা তালের উৎসা্র বাধতে ক্রমণ করিতে গালির।

অবনীশের কোলে মাথা রেখে 취직장진 করে কেনে ফেলে শ্বেতা। উলগত কাহাব বেশা ভাপতে গিলে ঠোট দটো কেপে এট श्राय:। वाश ब्राप्त मा, श्राय श्रवंतक वीथ एक्ट्रिश লাল। অবদাশি ভেবে পার না এই মাহতে खाइ कि कहा देहिए। की वर्तन आम्प्रना मिदि।

八整件 为生态,

ফুলে ফুলে ক[া]দতে থাকে দেবতা। অবনীল কছা বলতে পারে না, মাথায় হাত यालाव नाथा।

कांग्र के कि मनगार अवहें शक्क কর্ক। শেষ থেকে যেখানে শ্রু জবিনের সব কিছুই সেখানে নিবহকি দুবিসিহ

জামাইব্বে; ?

আঠি একটা কথা বলবার সাংযাগ পায় অবনীশু দরদভুরা চোখে শ্বেতার মূখের

আমর এখন কি হবে জামাইবাব,? অবনীশের মাখের দিকে কর্ণভাবে তাকায় মের হা।

বিব্রত বোধ করে অবনীশ। চট করে এর **কী জ্**ৰাৰ দেবে সে। অথচ কৈড**়** বলা দরকর। এবাই হাতভোগ্র থাক। বংলাগৈ। শাসন হাত ধ্রাধ্রি করে জ্যোর ক্সমে इत्ते वात्रद्ध। इत्र्रां अक्टो किह् वनर्थ ঘটিয়ে বসবে এক ন।

নিজের কোন খ্যালক খ্যালিকা নেট বলে রীতার মাসভুতো বোন শ্বেত কেই আপন শ্যালিকার মহাদিশ দিয়ে **क**्नित्व এডাদন কিল্ড এ কি হল!

চা আর বিভিকট নিয়ে একে সরফার আছে দাভিয়েছিলেন অমিতাদেবী। মেয়ের অসহায়তা আর অনিশ্চিত ভবিধাতের কথা চিন্তা করে যেন পাথর হয়ে গিয়েছিলেন তিনি ভূলে গেলেন চা দিতে। নাঃ এখন আর এ চা দেবার কোন মানে হয় না, জুড়িয়ে क्षकम्म अन्य इत्स शिष्ट् । स्कत् शतम क्रि আনতে হবে।

ফিরে হাবার জনা পা বাডাতেই দেখতে পেয়ে অবনীশ বলে ওঠে আমি চা খাব না भागिम। यतः अक नित्य अक दि विविध আসি। বেড়াবে না ছাই যাবে ভকটর সেনেছ আসিং তোষে। এক পি একটা কিছা করা দরকার। মনোজবাব টা একটা স্পাট্রেড ল তুই না.....ছিঃ ছিঃ, এখন ছয়ে পালিরেছে।

শেবতাকেও বালহারি যাই ববা। আনর থা-ই ছোক তুমি তো কচি খুকিটি নও।

্যাক গোহা তবার হয়ে গেছে হা বলবাৰ নয় তাই-ই হয়েছে। এখন জান না বাচলেও মান বাঁচানো দরকার।

নাসিং ভোমের সামনে এসে দাঁড়ায় অবনীশ, সে ভূগ করেছে; এভাবে



অস্ত্রাটা কিছ হয়নি। তাকে পর্লেশে হ্রাল্ড-ক্ষাত্র ক্ষতে পারে। দুচার হা খাবার প্র প্রীমন। পরে ভুরত্তো বেল। সময় লাগবে। লৈ ৰ জানজানি হবে অফিসের কলিবরা मान किटन दान्दव। नाकानकनीता विदेकाति म्पर्व। बीका अरमक कर्दा छत्र अवस মন গারল হলে আর রক্ষে দেই। 6 F/W-

খুরে দাঁড়ায় অবনীশ, বিভিন্নত ভয়ে व्यक्त वर्ता कि इन सामाद्वेत्यः ?

মা—মামে আৰু থাক দেবতা কাল বরং আসব। অফিসের একটা কাজে মিঃ দ্যায় अर्क्ष कक्षींन करवात एमा करा अवकार। একদম খেরালই ছিল না আমার।

মিথো কথা বলে অবনীশ : মাহডে পড়ে स्वका। करव कि—करत कि हैनित कुछे क मिलान हा उ था क तिहाहे भावात अला এড়িয়ে যেতে চাইছেন।

এতকণ যাকে দেবতা বলে মনে হয়েছিল এই মাহতে তাকে মনে তক্তে একটা ভারত কাপরেষ। মনোজের চাইভেও জাবনা। ও তব্যহস করে দুর্ভিধ করেছিল, ভয়ে পেছোর্মন। কিন্তু মারের চাটে পালাতে বাধা হল। প্রেম প্রেমই। তা স্থান কল পার ভেদ কিংবা রাশি নক্ষর বিচার করে হয় না, হতে পরে না। হারা ভাবে ভারা ভঙ্গ করে যেখন তল করেছে--

থাক সে কথা। এখন ধস্ত চিট্তা কর্মার সময় নেই। অপরিণামদ্শিতীর ফল হাতে হ তেই ফলেছে।

তাবনীশ বলে, কাল আবার আস্ব কাল একটা ব্যবস্থা করবুই। ভেবো মা। ্য বে বের বার আগে ভোগাকে-

চোখের জল মাছে শেবতা বলে থাক, षाभनारक आंत्र कच्छे कत्र ए श्रव ना। रहन .





माहेन अयान त्थरक बाद रवनी नात्त्र আর্শনি হন।

শিউরে ওঠেন অমিতাদেবী, হয়তো ডকরে কে'দেই উঠতেন। তার একমাত্র মেমে-भारत अक्षात जन्दान स्थका। अक हत् বছরের রেখে ওর ধাবা মারা ধান: আব সেই থেকে কত কৰা করে থকে বড় করে তলেছেন অমিতা দেবী। ছালার সেকে-ভারী পশেও করিরেছেন। অবিশ্যি শেবতার পাশ করবার মালে হার অবদান সব চাইতে বেশী ভার নামোচারণ করতেও আছ ঘাণা বোধ ভয়।

অবনীণ বলে, তুমি ভল বুঝোনা শেবতা শোন। কাছে এগিয়ে গিয়ে কানে কানে যেন কি বলে। শেবতা বোধহুয় একট; আশ্বস্ত হয়, অপস্ত হয় মনের ক্লিয়া। অমিতা দেবী, আবিশা কিছা শানতে পাননি বাঝতেও পারেন নি কিছু। একটা চাপা দীঘ'নিঃশ্বাস ফেলেন

ৰদিন যাবং শেবতাকে নিয়ে দৌড়ঝাঁপ क्यात्र भवविद्या अस्ते स्वार्थ्य अस्त তাৰনীমের। বাভিটত ফিরে এক≒ সকল भकाल थ्यास्तरमा मास्य भएए हेर्ड इस।

রীতা বলে কদিন ধরে একটা কথা ঘলব বলব করে আর বলবার স্থোগ পাইনি। অবনীশ হেসে বলে, বলোনা জি

শ্বেতাকে নিয়ে এক মাতামতি কববার কোন মানে হয় না। হতসের আদিখোতা।

জ্ঞাহয় অধনীশ। তবশ বলে তুমি भाक्षाक भागा सह उत्पर्धाः -

থাক, বাধা দেয় স্বাতা ব্যক্তি কি আর না: সুব বুঝি। আমি পুরোনো হয়ে গোছ।

যেন ক'কিয়ে ৩৫১ অব্নীশ ছিঃ বীতা ছিলে মনটাকে অত ছোট কোব না।

কব্দার দিয়ে ভঠে গীতা, বলে মন আলার ছোট নয় মোটেই-একথা শাধ্য र्णात्रहे वलाल, खाद १४ डे वार्लान कानोपन। শেবত ভোমার ছোট বোল, শানতভাব বলে অবদীশ।

ছেটে বোন বজেই ছো শগ্রুতা করছে। निरक्षत्र भाष भाषितम्हर, धान्यत स्थान सर्

আমাকে তমি অবিশ্বস কর রীতা? ভবসা পাছিছ কৈ। দিনকৈ দিন তুমি ছেন की बक्ध इस्त शास्त्र।

প্রটা তে। মার মনের বাজিক।

क्थ बार्डा जात त्यगीमृत करशास मा। রীতা গৃশ্ভীর হয়ে যায়। অবনীশ্ভ আয়াস-কাছারি করে বেড়াতে যায় আর কম সময় ঘরে থাকে। সম্পেহ বেডে যয় গাঁডার।

দেহের কোন অংশে একবার বিষ ঢাকলে ভা ধারে ধারে প্রত্যেক অধ্য-প্রভাগের ছড়িয়ে পড়ে, মিশে যায় প্রতি রক্ত কণিক।য়। রতির মনে <mark>বিষ্ঠিয়া শ্যু হয়েছে</mark>, ফ্রনীক্ষেস সূত্র কাজে এখন খণ্ড গরে, रमाय रमरथ। यात्रा रुकारण रमच रमधा रमस।

লানা খাতে পাকছিল মড় থেকেও क्षत्रकात । अय किन्द्र जन्न कर्त्व मिटल भारत

थक महारक विशेष मत्म रह कर केटिए ভার গাতিবেগের জ্মনে শুবনীশা দাভাতে পাবে না সামান্য খড় কুটোর মত উভিয়ে নিয়ে বায় দূরে—অনেক দুরে:

আবার সৈদিন ছুডোনাভা নিয়ে খিটিমিটি শেষ প্রতিত চর্মে পেণ্ডোর। অবনীশ ক্ষিণ্ড হয়ে বলে ওঠে, ডমি নীচ জ্বন্য। কোন ভদ্রঘরের মেয়ে যে এত ত্রীন হতে পারে তা আমার জান ছিল না।

বাগে ফেন্টে পড়ে রীডা-কী. কী বললে ত্মি ? আমি ছে ট্লোকের মেয়ে ? রাপ তুললে

—ভুল করছ তুমি, আমি বাপ তুলিনি। —ঐ হল। যার নাম চাল ভাজা তার নামই মুডি। আমি নুন দিয়ে ভাত খই।

আবহাওয়াটা একটা হাল্কা করে দেবার উদেশ্যে অবনীশ বলে চডকডাংগা গিয়ে ক-দিন থেকে এলে পায়, বহুদিন তে।

দবদ যে উথলে প্র**ছে**. বলে রীতা। আমি বাপের বাড়ি গেলে ওকে সরাসরি এনে ওঠতে পার, নয়? •আডিসারের সাবিধে হয়! আমি যাব না।

বেশ, নাহাও থাকো৷ বিবয় হয় ত্ৰনাশ। আম কে জনুলিভ না।

এরপর থেকে দুজনার কথাবাতী এক-বকম কথ্ট বলা যয় খেণ্ক হয় তা ভাব-বাচো এবং বাচচাটিকে মাধাম করে।

প্রদিন যথালীতি অফিসে যায় অবনীশ্। চান সেরে কপড় পরতে পরতেই শ্রাভে পায় রীতা ছেলেকে বলেছে তোধ বাবাকে বল--ভাত দেওয়া হয়েছে। এক বছরের ছেলে যে শলতে পারবে না তা নিতা বেশ ভাল করেট জানে। তাই একটা আরে জোর বলে যাতে অবলীশ শানতে ্রা

মনে মনে হাসে অবনীশ, কী বিচিত্র এই নার্মিনাই এদের মনে, হিংসেটা বৈশহয় একটা বেশী থাকে। তা না হলে নেহাৎ সন্দেহ বংশ বটুমাট একটা অশাণ্ডির স্নাণ্ট করবার কোন মনে হয়?

অফিস থেকে ফিরতে সৈদিন বেশ একটা দেরীই হয়েছিল অবনীশের। ফিরুবার পথে একব্য়ে শ্বেভাবের য[্]ড় হায়ে এত্সতে। প্রর মার হাঁপানীর টানটা বড় বেড়েছে। থবর পেয়েও না যাওয়াটা অন্যয় হত। ফিরে একে দৈখে ছবের দর্জায় তলা ঝুলছে। ন্যাপার কি : রাত। কি চড়বডাংগা চলে গৈলে নাকি: কিন্তু একা তে যায় না কখনো। আৰক্ষলকার মেয়ে হয়েও চলা-ফেরায় অভটা পট্ট নয়। নশ-য়েজাল ভাগ না। **হয়তো লালের** বাড়ি **ুকটি ব্য**টাত গেছে। এত বাতে বেড়ানো তো ভাল কথা ময় । কিন্তু মা, ক^মা প্ৰভাগ যায়নি পাশের বাড়ি চাবি রেখে রাপের বাড়ি গেছে।

कारमील बत बाटन द्वारम तारहत यातात -वंदि-क्यकारी जाका प्रश्वता चाट्ट, भाष्म क क्लाम क्ला।

क्राक्रम् थ द्रात अक काण हा स्थरक देराक রছিল অবনীশের, কিন্তু উপায় নেই। রীতা । কোথায় কি রাখে তা জানে না অবনীশ। ীটারটা জনালিয়ে অনায়ালে এক কাপ চা লো যেত।

ঘরের দরজায় তালা দিয়ে কলোনীর मार् मम्ब स्नाकात शित्र धक काश हा ্যয় অবনীশ, আরু দুটো বিষ্কট। ভারপর ্লাভাডা মেরে **হরে ফেরে** রাত প্রায় সাডে শটায়। এসেই শ্রে পড়ে, খায় না কিছা। থতে মন চায় না। ভাবে দেখা হাক বাগ গদন থাকে। থাক না যত্দিন খুলি, কিন্তু নে খারাপ লাগে ছেলেটার জন্য।

এতদিন, দুদিন তিনদিন—রীজা আর ফেরে না-অবনীশ রালা করতে জানে না ন্ত-বেলাই হোটেলে খায়। চারদিনের দিন অফিস ফেরত অবনীশ গিরে হাজির হয় বেশ্যর বাড়ি, আবিন্যি একটা আগেই বেরেয়ে সেদিন। সেধে রীতাকে ফিরিয়ে আনবার জন্যে। এরকম করলে লোকে কি বলবে? াছাড়া ছেলেকে ছেডে থাকতেও প রে না সে।

চড়কডাশ্যা গিয়ে দেখে জগদীশবাব অর্থ ং অবনাশের ধ্বশার মশাই বলে ব্সে থবরের কাগজ পড়ছেন, আর কি যেন আণ্ডার লাইন করছেন। অবনীশ্বকে দেখে বললেন, ওরা কেউ বাড়ি নেই। হাবড়া গেছে। কখন ফিরবে কিছু ঠিক নেই।

একটা চেয়ার টেনে নিয়ে বসে অবনীশ। ফিরবে তো আজে তা সে স্বত র তই হোক। থেকেই যাবে না হয় সে। ভোরে উঠে ওদের নিয়ে চলে হাবে, নয়তো অফিস কামাই করবে কাল। অনেক ছাটি পাওনা আছে। প্রতি বছর নঘট হয়ে বায়।

প্রায় ঘন্টাদেড়েক বোকার মত চুপচাপ বসে থাকবার পর ওরা এলে: টের পেয়ে অবনীশ ঘরে ঢুকতে যাবে এমনি সময় তোথাচোথি হতেই জুকু'চকে যয় বীতাৰ বলে কাপড় ছাড়ব। অবনীশ বসতে যাড়িক —ছেলেটাকে দও। রতি। দুম করে पत्रकाही तन्थ करत रनशा

কিছুক্ষণ পরে শাশুড়ী এক কাপ চা জার দুটো বিচিকট দিয়ে যান, ভাল মাদদ कान कथाई वर्णन ना। भरत इल खन कान এক অপরিচিত ভদ্রলোক জগদীশবাবার কছে এসেছেন। নেহাৎ ভদুতার খাতিরে চা দিছে হয় তাই দেওয়া। অবন শৈ কিছ বলতে গিয়েও বলতে গারে না, নতুন ব্যবস্থায় একট্ট দমে যায়।

দ্বশ্রবাড়ির বৈঠকখানার বলে ধাওয়া অবনীদের এই প্রথম: এখানে বসে কোন স্ময় চা খেতে চাইলেও উনি দিভেন मा। सामाई वरत कथा। छा-छ ध्वक्णेमारा कामारे। वाहेरत्रव चरत वरन हा चारव रक्न? আৰু কিন্তু ঠিক তার উলেটা ব্যবস্থা।

চারের শেরালার মুখ ঠেকাতে পারে না कारमीन। এলোমেলো চিন্তা এসে মাখাং ভিড করতে থাকে। খবরের কাগক্ত থেকে মুখ না উঠিয়েই জনদীশবাব, বলেন, ভোমার মৌন क्षेत्र ?

কানে ভল শানভে না তো অবনীশ। এখানে এলে বিনি স্বচাইতে খুলী ছতেন, मत्नत यक समात्ना कथा উस्नात करत मिरक চাইতেন, চটে যেতেন থাকতে না চাইলো --বলতেন, এখান থেকে দুচারদিন আগিস কলো না। লোকে তো সেই বর্ধমান কিংবা ব্রুক্নগর থেকেও ডেইলী প্যাসেঞ্চারী করে। এ তো মাত্র সাত আটটা ভৌশ্রনর মামলা। কখনো কখনো কথায় এত মশগুল হয়ে বেতেন ষে শাশ্ভী অনেক সময় রেলে যেতেন। ছেলেটাকে একট, বিশ্রাম করতেও দেবে না নাকি? এলেই যত রাজ্যের কথা শরে হয়ে যায়।

পাষের তলার মাটি যেন এবড়ো খেবড়ো উ'চু নাঁচু মনে হয় অবনীশের। চোথ দেখাতে গ্রিয়ে ভাক'র্ম থেকে বেরুলে হে অবস্থা হয় ঠিক সেই রক্ম—সামনের রাস্তা অসমান আর অসমতল ঠেকে।

অবনীশ ঢোক গিলে বলে ওদের নিয়ে যেতে এসেছি।

अत्रा अथन शास्त्र ना এখানেই থাকবে : তুমি হাবে তো চল। আমিও ভেলনের দিলে

অবনীশের ইচ্ছে হচিছেল চলে যায়। किन्छ एक्टलहोदक न एमरण গুকে একটি: আদর না করে যেতে মন চায় না। পকেটে চকোলেট। আখার গিয়ে দেখে কইরে থেঞ ঘরের শেকল টানা, ঘরে কেন্ট নেই। রাম্রা ঘরে উ'কি মেরে দেখে শাশ্র্ড়ী রাতের থ বাবের জে।গাড় করছেন। অবনীশকে प्रयोख स्थान प्रयोजन ना। याप्त्रत मानायाक স্কাগ করা হায়, কিন্তু হারা ভেগে বুমে য় एएम् अकाश करा शास कथरम ?

রাগে তাপমানে মুখ লাল হয়ে ৩টে অবনীশের। কিছ্ একটা কড়া কথা শোনাতে

देखह रहा। किन्छ ना किए दल ना नौरक দাঁত চেলে দ্ৰভেগায়ে বেরিয়ে স্থায় বাইৰে शक्यकेत हरकारमहेशास्त्रा ह्याए रक्टन स्मा বাস্তার।

বাসায় ফিরে আসতেই একটা ছোভ এনে থবর দেয় দেবতার মা হাটাফেল করেছেন भक्ति दर्दछ स्टब अवनीमदक कि **आ**ढ़ क्या যায় অগত্যা--

কাজকর্ম সব চুকে বুকে গেলেও একটা সমস্যা এসে উ'কি দেয়। শ্বেতা এখন মাৰে কোথায় ? জগদীশবাব র বাড়িতে হে স্থান হবে না তার আভাস আগেই পাওয়া গেছে. অন্য কোথাও বেতে চাহা না শ্বেডা: জা ছাজা যাবার জারগাও নেই। রীতা বাঞ্চিতে নেই। ওদের কাজের সময়ও হায়নি। জগদীশবাব গিয়েছিলেন। হেতে হয় বলেই গিয়েছিলেন হয়তো। দু-একটা দরকাধী কথা ছাড়া আৰ কোন কথা বলেন নি, বলতে বে।ধহম চানত নি। এতেন অবস্থায় শ্বেতাকে নি**য়ে হাওয়া** সমীচীন কিনা সেটা ভাৰতে হবে বৈ কি! তব্ শেবতাকে নিয়ে যেতে হল নিকেৰ বাসায়। পাড়াপড়শীরা স্বাই ধরলে, विश्व ভেতরের খবর তো আর কেউ आদে ना। ওপরে থাড়ু নিকেপ কর**লে তা নিজের গারেই** এসে লাগবে। অবনীশ নিয়ে হায় স্বেতাকে। যাকণে, হোটেল মারার হাত থেকে ৰাঁচা রোল। রীতা ককে ফিনবে কে জানে ই

শ্বেতা সোমন্ত মেয়ে, বোন ব**িড়তে নেই** --ভালীপতি ব্যুসের ছেলে। পা**ড়ার কানা**-ঘুরো হতে আর দেরী হয় না। অবনীশ ও





২। গুল বাগিচা----৩৫০, ৩। কাব্য আমশারা--৪'০০ ৪। পুরের হাওয়া----২ ০০, ৫। ঘুমণাডানী মানীপিন্ধি--২০০

प्राश्त लाहेत्त्वी २०० व महर्गात्रम की है।

रम्बद्धारक मिरह अक ब्रायरबाहक काहिनी शरक बर्द्ध । राज्यकात मान्यरमध्य राजीका व्यवस्थ श्रास्क श्रामीन। न्त्रंथ्याक व व करमक्ती, किन्दू त्यन गर्बण्ड त्ना शासाः किंडि स्मर्य नतम जाना रणद ना। दवान बाजिरक स्नर्टे-कारतीर्णाक्षत्र काटक बाटक। यहराखाठी दशन की बक्य रमान्यात्मः। धरेन्द्रस्य ज्ञानातः।

দেবভা বিশ্বত বোধ করে, বলে আমাকে নিমে ভো আপুনি বিপদে পড়ালন হাছোক।

বিশদ আর কি! জান হাসে অবনীশ ৰলে ওদের খোঁতা মুখ ভোঁতা করে দেবার ওছ ধও জানা আছে আমার।

মনস্থির করে ফেলে অবনীস, রীত:ক চিটি দেয়। যদি ফিরে তালে তাহলে অবনীশ গিরে নিরে আসতে রাজী আছে, না এলেও বেন জানার; কিল্টু চিঠির কোন জন্ম জালে না। শেষে রেজিস্টি করে উক্তির চিঠি দেয়। তাও বিফিউজড মার্কড ছল্লে ফ্রিরে জালে। উপারাত্র না দেখে **একটা** দিন নেখে শাস্ত্রমতে বিয়ে করে CHARTER !

हिम बाब ताछ जात्म। बाङ काछ हिम হয়। খুবে হার প্রায় একটি বছর। আৰুবাশের মনের উৎসাহ দিন দিন কমে আ সে, মাঝে মাঝে অনামনস্ক হয়ে। পড়ে। শ্রীরও খারাপ হয়। উঃ কতদিন ছেলেটাকে श्रम्थ मा। निरमुद शरदा शिरमे करमक-খার। খোষবার ছে। বাচ্ছেতাই অপমানিত চতে হয়।





나 사이지 않는데 그리고 아내를 다른 생각시간 없다.

অব্নীলের ভাবগভিক লক্ষা করে খেবতা বলে, দেখতে যখন দেবেই না তখন আর অপম নিভ হতে যাওয়া কেন?

অবনশীল বিরক্ত হয়ে বলে, তুমি ব_ঝরে না দেবতা ও আমার কত দেনছের মাণিক।

না বাৰ্ব কেন শ্বেতা অভিমানের স্বরে বলে তোমার মন যদি ওখানেই পড়ে থাকবে ভাছলে আৰু আমাৰে লোক দেখানো বিশে না বরলেই হত ২ আমার ছেলেগলৈ হসে বোগহয় ওদের ভালবাস্তেও পরবে না।

আছত হয় অবদীশ, বলে সে সম্ভাবনা আৰু নেই।

মনে গভোঁ ওঠে দেবতা। কী বলতে চাও কৃমি? আমার কি ছেলেপ্লে হবে না

আমার হাতে নংশড়লে হয়তো হত। ভার মাণে ?

মানে অতি সোজা, আমিনা হওয়ের বাক্সথা করিয়ে রেখেছি।

দেবতা কি বোকা হুয়ে গেল ন[্]ক? किছ क्रम कान वाका क तक्षे हरा ना अब দেকের সমস্ত রভ যেন হিম হয়ে জামট বেধে গ্রেছে। নিজেকে সামলে নিয়ে বঙ্গে, আমাকে জব্দ করাই কি তাহলে তে।মার উल्मिना ছिन?

নিলি*িতভবে বলে অবনীশ, না বাঁচানো। একে কি বাঁচানো বলে?

তোমার বিবেককেই জিজ্ঞাসা কর।

गर्ताया श्रम ७८० स्थल, आकरे अव একটা ভুস্তানেস্ত করা দরকার। সাথে দিদি চলে গেছে! তীক্ষাম্বরে বলে, হে'য়'ল রাথ স্পণ্ট করে বল।

ডাঙার সেনের নসিং হোমের कत्रहे भरशा करन रशस्त्र ?

সে তো আমার জনা।

প্রথম দিন ফিরে এসেছিলাম ভা মনে তাছে?

আছে তমি ভয় পেয়েছিল।

স্লান হাসে অবনীশ, বলে হা ভয় গেয়েছিলাম বৈকি ! তাইতো পরের ভোমাকে সি'দূর পরিয়ে নিতে হল। সব দিক 'বজায় রাখতে গিয়ে শেষপর্যভত ভামাকেই কাকজা নিতে হয়েছে-মিথে कथा वटना

রাগে **ক'ুস্তে থাকে** শেবতা। সে রাত্তে আর কিছু খায় না অবনীশের সংগ্র কথ ও বলে না। মেকেতে একটা মাদ্র পেতে রাত ক। টিয়ে দেয়। প্রায় মান্যকে চেনা ভর। ভখানে টাকা পয়সাও দেয় বোধ হয়। তা, না হলে প্রয়েই টান পড়ে কেন?

ইনানীং দেবভা ভাবনীশকে এডি:য় इनाटक इन्द्र, दबकाटक दबंदबाय स्थल ज्यन। कथ्ता नामराकात व्यात्र कथ्ता वा मृत्र- ज्यानक मृत्या शामके ताक **करत रकरत**। क्रोर अकीमन अत्मारकत अवन मन्या हता যায়। প্রেমোশন হয়েছে তার। ফুল ফেলেড ভাষিকার। মনের আগল খালে বার দিলেনায় তখন বোক্ষী না করুলে ঘটনার গতি অনা-য়ক্ষ হস্ত এবং তা এখনো হতে পারে।

অবনীশ বাঞ্জিতে না থাকলে প্রায়ই আসে মনোজ, কত কি শকা-পরামশ হর বাড়ি থাকলে বেরের দেবতা। অবনীশ কিছ জিজেন করলে বলে সব সময় কৈফিয়ত ভাল লাগে না। অবনীশ চুপ করে বায়, কিন্তু লক্ষণ ভাল ঠেকে না মোটেই।

সিনেমার নাম করে বেরিয়ে সেদিন আর রাভি ফোরেনি শ্বেতা। পরের দিনও না এবং ভার পরের দিনও নয়। একটা অব্যস্ত বাথায় ব কটা টনটন করতে থাকে অবনীশের-একটা দুশোর পনেরভিনয়? যাকরে সাপদ 75:785

আশার হোটেলে খাওয়া, আশার একলা থাক। একটা বাড়ি আগলে। মেসেও বেডে পারে না, রীতা যদি-খাকগে ওসব অবাস্তর তাবনা ।

বিছানা ঠিক কুরতে গিয়ে হঠাং বালিশের তলায় একটা চির্কট পায় তাবনীল। তাড়া-তাড়ি চশমাটা চেথে দিয়ে এক নিঃস্বাসে भएए फाल्म मिठा-करमक्ठी भाव भन्म-आभाव খোঁজ কোর না।

বিত্রণ আসে জীবনে। হায়রে, দুনিয়ায় হার জন্য করি চুরি সেই বলে চোর? ধ্য তেনের।

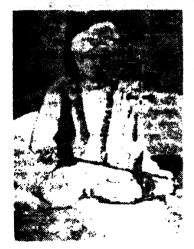
নি**জের** অজান্তেই নিজের ওপর অবিচার ও অত্যাচার চুলিয়ে যায় অবনীশ। প্রথমে তা টের পায় নি। কিন্তু টের যখন পেল তথন আর সময় নেই। হোটেলে খেয়ে আরু অনির্ম করে গ্রাস্ট্রিক থেকে গ্রাস্ট্রিক আ**লসা**র **এবং শর**্শরিণতি ক্যনসার। অবনীশ বুৰাত পারে তার দিন ফারিয়ে OTRIE!

বন্ধুবান্ধবের চেন্টায় যদিও বা চিত্ত-রঞ্জন ক্যানসার হস্পিটালে একটা স্বীট পেল তাত্রার কাজেল লগল না। বড়দেরী হয়ে।

খবর পেয়ে ছাটে আসে রীতা, বাস্চা-ট্রিকেও সংখ্যা নিয়ে আসে। কভাদন একে দেখতে গিয়ে ও অপমানিও হয়ে ফিরে I STEET

রীতার মান্যাবাও এসেছিলেন। কিন্তু ত্তক্ষণে সৰু শেষ। বুকের ওপর আইড়ে পড়ে ভুকরে কে'দে ওঠে রীতা। চীংকার করে কালে ওগো আভিমান করে চলে মেও না। তোমাকে জব্দ করতে গিয়ে আমিও ব্য ল পিত পাইনি। এই দেখ বতায়ার: বাৰয়ো। এখন বাবা ডাকত্তে শিথেছে—আয়ে কত कथा यत्ना

বাবুরা কি ব্রুগ সেই জানে। জাকে য -- বা। চোশের জন্মে ছেলেকে ভাড়াভাড়ি ब्रुटक एउटन बदब द्रीका।



স্বের কি সণ্ডরণ কি বিশ্তার এই সার্বল যুক্ত। গানের সংলগ একা**ন্ম** হয়ে আছে তার স্বের ব্যবকার। কাঠানাপার সংলগ সার্বলার স্বাবহার অংগালো মিলে গ্রেছ। তলা লাবে সংলাতবার স্কাবহার ত্রালায়া স্বের সংলাতবার ত্রালায়া স্বের সংলাতবার তারাকার তার সার্বলার প্রিপাণ করে দিক্তর।

কিন্তু সামনে থেকেও সারংগী যেন নেপ্থাচারী। বাইজী বা গায়েকের পাশে ধসেই সাবে সংগত করজেন তিনি। কথনো গীতামালপীর দাদৈকেই দাজন সারংগবাদক আছেন। বাইজীর গানের আসর ত সারংগী বিনা অংগাহীন। বাইজীর খেলাল টিংপা ঠাইরির সংগো সারংগর সংগত সাকের বানে চলে। তেমনি খেলাল গায়কের আসরেও। কিন্তু এমন সাকের ভাশারী সারংগবাদকেকত দেন স্বত্তর সত্তা নেই। শ্রোতাদের মনে নেই ভার জনো কোন উপ্যক্ত মার্যাদ্য এবং ধারণাও।

গানের স্থেগ সার্থেগ্র স্ক্রের সংগত নিরবচ্ছিল। সার্জগীর সারে বিরাম নেই। গানে সাময়িক বিরতি থাকে। গায়িকা কিংবা পায়ক বিশাম নেন কণেক। কিল্ডু সারের ধারা অবাহিত রেখে দেন সার**ং**গী। গানের প্রথম কলির মূখ তিনি কণ্ঠেরই व्यन्दित्त व्यन्द्रशम करत हरलएकम। भारा তাই নয়। কখনো আভাস দিচ্ছেন নব নব স্নৌন্দর্যস্থির। রংগর চলনে । নতন শংখর ্সম্থান। গানের সহযোগেও ফেম্নি কণ্ঠের ষাবতীয় কার্কম ফলে লীলায়িত করছেন। যে কোন তান বা বিস্তার হোক, তিনি তথনি তা দেখান স্রজে। এমন কি গায়ক গায়িকার গানের আবেগ পর্বক্ত। আয়ুদ্ধ এ যদের সাবের কি রেশ। পানধনশির ক্রিব্রু । ৩৬টি তরফের তারে স্ক্রু-কছরীর কৈ বিপলে পরিধি। মূল ভিন্টি

সেকালের সংগীতগুণী

(59),

স্বরের সঙ্গতিয়া সারঙ্গী

তাঁতে সঞ্চরমান অংগালি ও ছড়ের হণ্ণা। কিব্তু তার অনুধ্বনিতে ৩৬টি তারের ঝাকার। সারের কৈ সমারোহ সারংগা ধকে। সেই সারের কান্ডারী সারংগারি প্রতিভা কি কঠেশিশ্সীর চেরে নানে?

অথচ সার্বণী রখোচিত প্রীকৃতি অনেক সময়েই পান নি। সেক্লের সংগীতজগতে কও গুণী সার্বণণী হারিছে, গেছেন অথাত্তির অক্সকারে। অনেকের নাম প্রাকৃত বিস্মাতির অত্তোল লাণ্ড হারেছে।

আবংগারী কি अशह マーナスウ জিলেন? সংগতিক -1-4. সংগ্রকার প্রাণবদত, অবিদ্যান্ত রাখবার যন্ত্রী লাখ্য? না। তার চেয়েও বড় ভূমিকা ছৈল কোন কোন গুণীর। বাইজী কিংবা গায়কের সংগা ভিল্ল মিছাব আসবও 47.57.5 A স্বত স্ সারংগী। তেমনি व्यवस्थात्म কলাকারর পেই তিনি रक्षा क्रिशाहरून। আসরে তখন তিনি একক বাদাকর। অননা-নিভ'র সংগতি-গিলপী। তেখন তশ্ব সংগতকার হয়েছেন ভবলিয়া। আসরের মূল শিল্পী হয়ে তখন সাৰ্ণ্যী গুৰ্পনা দেখিরেছেন। তাবে তেম্ম প্রটাক্ত বিচপ। বেশির ভাগ সারপাই সারের সংগতকার। গানের সহযোগা বাদক। সেই রূপেই তশ্দের পরিচয়।

হয়ত তার অ**শ্তরাশে খেকে গেছে** ভাগের আর একটি মহৎ পরিচিতি। যার স্বারের সপাতকার হরে আসরে বলেছেন হয়ত সেই গতিনিল্পীর **ওস্তাদ ছিনি**। ভার শিক্ষাতেই সে কল্ঠশিলণী স**ংগতিকে**লে প্রতিষ্ঠা পেয়েছেন। তিনিই প্রস্তৃত করে দিয়েছেন সেই গায়িকাকে। আসরে বাইজীর গানে আনশে উচ্চনসিত হয়ে ভোতারা ভারিক করেছেন। কিন্তু বাইজীর শিক্ষক নামনেই রয়েছেন সংগতিয়া হয়ে। প্রশংসা-মুখর ল্রোভানের কাছে পরিচর্যিহীন। অনেক সময় সাবংগীদের নাম পর্যাত আসরে অজ্ঞানা থেকে বার। লোভাদের কোন আগ্রহ নেই ত'্রের প্রতি । বাইজীর প্রতিভার সাক্ষাৎ পরিময় পালে বলেও সারপারির বেন নেপথাবাসী। দিয়েও তাদের শিক্ষকতার জীবন ড আনো অন্তরালবভাী। তা শ্বে, চোবের আদেশুল নয়, জ্ঞানেরও বাইরে থেকে বার। সংগীত-

জগতে উপেক্ষিত ভারা। সংগতিচছাই ইতহাসে ক্তেনামা।

তেয়ান সংগতিলয়াকে প্রাক্তি স্মৃতিতেও জীবণত নেই প্রশাস্ত গোমিনী সংক্ষা মূল বিহুলা কালী ক্রডালের মন্ত্র

मृशामधः 4118W1 সেকালের किश्वा क्ष्मां प्रतीत वर्षा শ্বেডা শানী यात्रा क्षाट्रिक क्षाट्रिक आमार्ट्रिक शाम विक्रमा CARBY BIRT OF HISTORY STRING MICHEME कारमञ्ज्ञ मा रहा लाडीमञ्चरहर जिल्हारकहर शरफ फेरकेटच वारमात्र खडे महस्त्रम বাইজীর সংগতিজীবন। কুক্তামিনীকে ं भारताहरू के क ত'ার সহযোগী থেকেনে কনিষ্ঠ ভ্রাছা GFETH I CHAL বা কালী কাশিসপ্রসাদ ক্রালিমই বাই জীবয়াক -T.K. শ্বেত্যাপানী ও কৃষ্ডামিনীর BINTE গায়িকার দুলিকে বলেভেন সাকের সপাতিকা হয়ে। শ্রোতার ড'াদের অসেরে আসরে THE TOTAL (mixing সেই ব্ৰংগ করেননি ভাদের। আরু বিভাত হতেত্ত ত'ব্ৰের গ্ৰণপ্ৰাৰ কথা। ত'ব্ৰের সংগতি: জীবনের পরিচয় জানবার ভৌতত্তাও বোধ করেনীন।

কিন্তু গ**ুণের বিচ**ণরে গোরীশ**্বর** ছিলেন এক ছোও বলাবং। বাসসংগীতের वक्कान वाहाय शानीत वाहि। जलारिकी সারগাীরতেশ পরম নিজ'র বছযোগী। म्हातर गृथः मनाण्यात समः जिमि क्रेप्टाय**े** রাখতেন গায়নভিত্তীকে। আবার একক সারত্য বাদকের জাতরে জাসম নিজনী-সন্তার পরিচয় দিতেন। बाशिवसम्ब अवर निक्क काश्र रज्ञातकन नामनीयम् (ना স্পাতিকানের বিপরে পরিবি विक्रमण्डा । स्थाना हेन्सा केर्सि हैन-स्थाना থেকে কাজাৰ চৈতী লাউনী ইন্ডাৰ্টন দানা-প্রকার গালের শিক্ষাদাতা। তার শিক্ষার গঠিত হ'বে সামিকামা বিভিন্ন কীক্ষাতিকে পেশাদার জীবনে প্রকিঠাতা ছতেব निक माक्क गामक विस्तान दर्गावी লক্ষ্য। গাম ব'বের লেখাতেম মেনেই দেখিতে দিতেন। সাম ভিন্ন ভিন্ন গালে সপরও ছিল ছীর প্রচুর পরিবাদে। ज्ञकारमञ्जू रममामात्र गाविकारमञ्ज्ञ संग्रामकास गामहे भावगीमांनी एक रूका करें किंग দেশকাল। একটিমাত ব্রীতিতে গার্ন-ক্মতা नित्स अक्ताता क्यां शास्त्रम ना जाता তাদের ওপ্তাদরাও নানাম খীন গংগী হুকে। গোরীশংকর মিল্ল তেমান এক মিকপাল কলাকার।

একক সার্গাবাদক বলেও তশর সহস্মান পরিচিতি ছিল। শুধ্র কলকাতার नश वाश्वाय वाहेत्वत आगत्तल। ७००मि-জীর সুদীর্ঘ স্পাতিজীবনে কলকাত য় নানা আসরে তেশর একক বাদন শোনা ধার। তণ্য শেষ বড আসরও হয়েছিল জীবনের প্রায় অন্তিম পর্বে। সে অন্তোনও কলকাতায়। ২৫ জুলাই, ১৯৩৭ সালের ক্ষণা সেবার মহাআডাবরে কালকাটা মিউজিক এনুসোসিয়েশনের বাধিক উৎসব হরেছিল। দামোদরদাস খারার ১৭ বারাণসী ঘোষ শুটীটের বাড়িতে সেই कलाना। प्रमानन जिल्लीरम्य मरका हिएलम দানীবাব, নামে সংপ্রিচিত স্তীশচন্দ্র দত্ত (৪ পদ গান ও পাখোয়াক বাদন) रशारभावत वानगाभाषात्र (श्राभन), इरतन्ध-কৃষ্ণ দবল (খেয়াল) রামকিষণ মিপ্র (থেয়াল) খুশী মহম্মদ (হারমোনিয়ম). (বীণা) वीरतन्त्रकरभाव वासराध्यती প্রভতি। আর একক সারকা ব্যক্তিয়েছিলেন গোরীশ•কর মিশ্র। তার বয়স ৭২।৭৩ বছর। কিন্ত বাদন-শভি ও নৈপ্রণা প্রায় প্রায়ায় ছিল, কারণ তথনো স্বাস্থা ছেংগ হুলনি কেমনি একক অনুষ্ঠন তিনি করতেন উপযায় আসরে।

ত্যের ৫ বছর জনগে (১৯৩২) গোরী-ঋ্তকরের আদ একটি সড় আদর হয় কালীতে। কবীরচৌরা মহক্লায় সেদিন বিশেষ করে তুশর জনেটে সে আসর িত্তি স্থায়ীভগবে ত খন কলকাত বাসী। কাশীতে আর বেশি যাতায়াত হয় না। সেজনো ভাব একক বাদন একবার ভাল করে শানতে চান বারাণসীর কানা বিখাত গায়ক বাদক

> मार्थितिकात गान হেমাজা বিশ্বাসের গ্র সংগতের **স**१क ल त बीहार्जावनम् क्रीध्रजीत স্বরলিপি কুত

প্ৰাণ্ডিম্থান ৰ্কমাৰ্ক

অগ্ৰণীবুক কুনাব

u-5 करणक खुँचि शास्त्र ह ক সকাতা-১২

গ্রেক্টিরের। গৌরীশঙ্করের সে আস্থের উপশ্বিত ছিলেন—খেরাল টপ্সা কলাবং बर्फ नाममान दौशकान मिठाईलाल प्रविद्या মোলবীৰাম মিশ্ৰ গায়ক ও লারগানী ঠাকুরপ্রসাদ (গোরীশুক্রের **্লভাত**) তবালয়া ভিকক মহ রাজ (শান্তা প্রসাদের এশ্রাদ), ত্র্বলিয়া কণ্ঠে মহারাজ প্রমুখ। থানেকে। গোরীশংকরের সার্থ্য বাদনে প্রবিক্তেপ্ত তণরা সকলেই সেদিন करक्रकिरका ।

ভার আর একটি আসর হয়েছিল দিল্লীতে। তা আরো কম বয়সের কথা আর অন্য রুক্মের আসর। সেকখা বিশেষ করে বজৰার মতন। কিল্ড তার আগে তার স্পাতিকবিনের অন্যান্য পথিচয় দিয়ে রাখা বার।

প্রাশ গোরীশক্করের জীবনে বছরেরও বেশি অতিবাহিত হয় কলকাতায়। সেই দীঘ'কালে আসরে আসরে সারের সংগতকার বলেই তিনি স্প্রিচিত ছিলেন। দেবতাশিনী কিংবা ক্কভামিনীর গানের সালো নয় কেবল। বাংলার আর দ**ুজন** বিখ্যাত বাইক্ষী কিরণময়ী ও স্রমার সংগ্রু তিনি সার্গা বাজাতেন। ত^{শ্}রা ছিলেন দুই ভগিনী। কিরণম্যী ও সুর্মা অনেক সময়ে আসরে জ্বিতে গাইতেন গোরীশাংকরের সারকা সহযোগে। ওস্তাদ-জাীর সৈসেব পথম জাীবনের কথা !

পরিণত বয়সেও ত'কে নানা গায়ক-গায়িকার সংগ্য সংগতিয়ার পে আসরে দেখা গেছে। বারাণসীর প্রাসক্ষা ঠাংরি-গায়িকা বড়ী মোতি বাই তখন আসতেন কলকাতায়। এখানকার আসরে ত^{ার} গানের সংখ্য সেসময় গৌরীশংকরজী সারুপা বাজাতেন। ইন্দ্রালা এবং কৃষ্টন্দ্র দের সংগাও নানা আসরে সংগাত করেছেন তিন। মেটিয়াব্রুজের মিহি কণ্ঠের গায়ক পিয়ামা সাহেবের গানের সংগেও তিনি আসরে বাজিয়েছেন। গ্রামোফোন রেকডে'ও কিছ, চিহ্ন আছে মিশ্রজীর সারপোর। কিন্তু তা একক বাদনের নর। পিয়ারা সাহেব, ইন্দ্বালা কৃষ্ণচন্দ্র দের কোন কোন গানের সজো তিনি সার্জা ব্যক্তিয়েছেন গ্রামোফোন বেকডে৺।

তবে সংগীতীয়া, সারকাী হিসেবে লোরীশৃতকর সবচেয়ে খাতিমান হন গহর জ্বানের অসরের জনো। বাংলায় এবং भारत्व नामा अक्टना

তবে তওয়ারেফদের শীবসম্থানীয়া গহর জানের প্রধান সার্গাী তিনি। গ্রহক্ষান দুই সারপাী সংগতকার নিয়ে আসতে গ'ন শোনাতেন। তার বামে বলে বাজ্ঞাতন পাটনার এমদাদ খা এবং দক্ষিণে রোরীশাঞ্কর। সেকালের আসভের রেওরাজ অন্সারে ভাইনের সারংগ্রাদকের মর্বাদ্য বোশ ছিল। তিনিই অধিকতর সূণী বলে গ্ণা ছভেন।

জীবনের প্রেণ্ঠ পরে মধার্যসে গহর জানেঃ খাতি ছিল ভারতবাংপী। উত্তর ভালাত পায় ইনিহত সংগীতত্ত পাকে ক্রন্টকে মহীশার দরবারে প্রকিত তিনি মজেরে। করতে যেতেন। আর উত্তর দক্ষিণের

আসরে দরবারে তার প্রধান শারশাী হয়ে সঞ্চাত করে আসতেন গোরীশৃষ্কর। পাটনা বারাণসী এলাহাবাদ লক্ষ্যো রামপরে দিল্লী পাতিয়ালা কাম্মীর বোদ্বাই মহীশুর হারদ্যাবাদ প্রভৃতি সর্ব।

সমাট পণ্ডম জর্জের দিল্লী দরবারেও (১৯১১) গছর জানের গানের সংকা সারকা

বাজান গোরীশুকর।

এমনিভাবে দেখা বায়, সর্বভারতীয় ক্ষেত্রে তিনি একজন প্রথম সারির কলাবং বলে গণা হতেন। আর গহর জানের প্রধান সার্থাী-এই পরিচয়ও যথেণ্ট ছিল रमकारम ।

যোবনকাল থেকেট গোরীশক্র কতী হয়েছিলেন আবালা বারাণসীতে শিকা পেয়ে প্রথম জীবনেই যোগ দিয়েছিলেন বৃহত্তর সংগতিক্ষেত্র। যুবক বয়সে তুশর সংগীতভার বৃত্তি নেপ্লে রাজ্যে আরুভ হয়েছিল।

কলকাতায় স্থায়ী হবার আনো তিনি নেপাল দ্রবারেও কিছুকাল সারজাবাদক নিষ্কু ছিলেন। তবে তা গহর জানের সংগা নয়। গতরের সংগ তার বাদকজীবনের শরে কলকাতায়।

গছর জানের সংখ্য গোরীশঞ্করের স্ত্রীতিক যোগাযোগের প্রথম কারণ— গহরের অন্যতম সংগীতশিক্ষক **ছিলেন** গোরীশঙ্করের পিতা বেচ ওচ্তাদ। দিরত্বীয় কারণ-গোরীশঙকরের নিজম্ব গুণ, নিভ[্]রযোগাতা। এমন সূর-সংগতিয়া সে সগয় আর কজনই বাছিলেন।

সমকাজীন সংগীতজগতে তশর ছিল একটি নিদি । সম্মানিত । আর গুণীমহলে তিনি সকলের স্নেহধনা জীবন-যাপন করে গেছেন। সেকালের শ্রেণ্ঠ শিক্সীদের তিনি যে কত জনপ্রিয় ছিলেন তার একটি প্রমাণ তার জম্মান্টমীর আসর।

প্রতি বছর ভাষান্তমীতে গোরীশ•কর একটি ঘরোয়া 🐃 পান করতেন। সেদিন সন্ধাা থেকে সারাবাত গানবাজনা হত তার ব্যাড়িতে। জন্মান্টমীর সে জলসার তার সাদর আহ্বানে নানা শ্রেষ্ঠ শিল্পীরাই যোগ দিতেন। এমন কি মুসলমান গায়ক-গায়িকারা প্রশ্বত। পার্বদের মধ্যে যেমন সরদী করামংউলা খা, লছমী ওস্তাদ মৌজ,দিন প্রভৃতি তেমনি গায়িকাদের মধ্যে কলকাতা ও কাশীর কয়েকজন শ্রেন্ঠা বাইজী। যথা—গহর জান আগ্রাওয়ালী চলবুলাওয়ালী মালকা মাৰ্কা ও ন্রজাহান যাদ্মণি স্বমা কিবশম্মী কৃষ্ণভামিনী, শ্বেতা পানী নিব্যসিনী সংক্ষ্যার প্রসিধ্য নত্তী বাচুয়ার নৃত্যও হত। বারাণসীর বাইঞ্চীদের মধ্যে আসতেন বিখ্যাত গায়িকা হ,সনা বাই বড়ী মণনা মন্যা শই প্রভঙি।

কণকাতা ও কাশীর সংগীতক্ষেত্রকে গোরীশংকর নিজের জীতন যাত করে রেখেছিলেন। ত^ৰার জন্মাণ্টম^ৰীর আসর ছি**ল** ভার একটি সাত্রকার।

क्लाकार - नामी क्यामाहरू सामकास्था একজন তাষেই গোলীলংকর বাস করভেন। গ্রহ জান, শ্বেতালিনা কৃষ্ভামনী न बाबा कियनमञ्जी ও आह्या मामा बाह्यकीय नरका सक्तकाकाम जाजरत मात्रकारीय ला দেশা বৈত তাকে। কোন কোন জানরে এককও সার্থা বাজাতেন। সেকালের নামা রপামতে মাঝে মাঝে জলসা হত, তাতেও ছোল দিতেন গোরীখাকর। কোন কোন प्राप्त नार्टरका मध्यात राज्या साम्यकत ভাষিকা নিতেন। সারস্থিত করতের নাটকীয় পরিবেশে বিশেষ নাটাম, হ'তে^র। তশর গিল্পীয়ানবের এমনি অনেক দিক ছিল। অথ্য সেসৰ কারণে তার মাল সংগীত-চচ্চ রাগসংগীতের অনুশীলন বাভেত ভয়ন रकार्मानमः। जाद विश्वित्रासारव ফিনি কলকাতার স্পাতিকীবনের সংগ্রে অচ্ছেদা ছলে দীঘ্কাল বৈদ্যান ছিলেন।

মধাবয়স থেকেই একজন আচার্যের সম্মানে কলকাতার সংগতিজীবন যাপন করতেন গোরীশঙকর। শেবতাজিনী ও কৃষ্ণভামিনীর তুলা শ্রেণ্ঠা শায়িকারা যে ত্রীর ছাত্রী ছিলেন সেকথা আগেই উল্লেখ করা হয়েছে। তার সংগতিশিকা দানের কথায় আরো গোরব করবার আছে। যেমন বাংলায় স্ব্নামধনা গায়ক কৃষ্ণচন্দ্ৰ দে-ও গোরীশুংকরের কাছে তালিয় নিয়েছিলেন। ক্ষ্যাল্যের আরো একাধিক ওস্তাদ ছিলেন. কিন্ত গোরীশ্রুকরও তুশর অন্যক্তম সংগীত-শিক্ষকরূপে গণনীয়। মিশ্রজীর কাছে তিনি অনেক পেয়েছিলেন। ত'ার সংখ্যা কৃষ্ণচন্দের সংগীত জীবনের ফোল ছিল দীল্কালের। রুকচ্যের অনেক গানের আসরে গৌরীশ•কর সারঙ্গ সহযোগিতাও করতেন। তশর সংখা ও তাদকীর যোগাযোগ ছিল জীবনের প্রায় শেষ প্য'কত।

বিখ্যাত গাহিকা ইন্দ্রালারও প্রথম ওদতাদ গোরীশৃশ্বর। কলকাতার বাংলা গানের শিশ্পীরূপে ইন্দ্রলা বেশি পরিচিতি। কিন্তু বৃহত্তর সংগীতক্ষেত্র িন খেয়াল ঠাংরি প্রভৃতি রাগসংগীতের গায়িকা বলেও প্রতিংধা অজান করেন। বাংশার বাইরে উত্তর ভারতের নানা কেন্দ্রে দাকিণাতোর মহীশ্র দরবারেও তার খাতি ছিল রাগসক্ষীতের দিলপীর পে। সেই রাগদশাীতের তালিম তিনি প্রথমে গোরীশ করের কাছেট নিয়েছিলেন মিশ্রজীর শিক্ষাতেই স্কলব হয় তবি স্বরসাধনা ও ক-ঠপ্রস্তুতি। সে প্রসংগ ইঞ্দুবালা তাঁব মাতিকথার বর্ণনা করেছেন। সে বিবরণ থেকে বোঝা যায়, গীতিমত কঠসাধনাকে কতখানি গ্রেছ দিতেন গোরীশৃংকর। সংগতিশিকা দান করতে তিনি কিবকম নিষ্ঠাবাম ছিলেন এসব কথাই ইন্দ্রোলার ফাতিচারণ থেকে জানা যায়। ইন্দ্রালাকে গান শেখাতে ওস্তাদজ্ঞী সম্মত হন একটি অন্ত সতে । শিক্ষাথিশীকে সে স্ত্ শ্বীকার করে নিতে হয় গরের উপাবীত স্পূর্ম তাহল এস্তাদকী যত্দিন বিষেচনা করবেন তার নিদিন্ট পাষ্ঠিতত ছাত্রীকে শ্রধ্মাত সাগমি সাধনা করে যেতে হবে। কোন গান তখন গায়িকা গাইতে बाइरवह ना. द्यार्थनाथ करदन ना गुजुड কাছে। এইভাবে ছাত্রী মাসের পর মাস গ্রালাখনা করে গোলে। বছর খানের পরে ।
গোলীশক্ষর সক্তুট প্রজ্যে পারীক্ষা করে ।
ভালগর ইন্দ্রকাকে গাল দেবার জন্য
কানত প্রভা কালী ওসভানকে ব্যাহীতি
নিলে বিজেন। তথা ভাল স্পেরে জাতী
দেখলেন হৈ কোল গাল ভিন্ম ভালি
সমর্থ হয়েছেন। একনিস্ঠ ক্ট্যাথনার কল
তথ্য বাবকতে পালিকার বাবিকা।

ইন্দ্বোলার স্পাতিজীবনে সোরী-শংকরের স্থের সেই গ্রা;-শিধ্যার সংশেকের সূত্রপাত। তারপর থেকে সাদীর্ঘকাল ওশ্তাদজীর সংশ্য তার গায়িকা জীবনে সহযোগিতা ছিল। পরে ইন্দ্রালার গানের আসরে বহুবোর সারশো সভাত করেছেন গোরীশংকর। ইন্দ্রালা স্বাক ছারাচিত্রেও যোগ দিয়েছেন। প্রধানত অবভীগা হয়েছেন গায়িকার নানা ভূমিকার কখনো কখনো তার ওতাদকেও তার সংগা চিটো অবতরণ করতে হ**য়েছে। সেই পরে** टेन्म, वालात जन्देशाध्य छीत क्लान काम চিত্র সারপাবাদকের ভামকাতেই গোরী-माध्यात रमशा मिरतरहरू । रमास हेन्छे हेन्छिया किन्म कम्भामीत रण्डेश मानाम किंछ। अहे ছবিতে একটি বাইজীয় আস্তের লুগো সারজারিপে অবতার্ণ হন গোরীলংকর। শেই দুশা থেকেই এ প্রবধ্ধে মালিত

ক্রন্থান প্রতিকৃতিটি নেওরা ছরেছ। নতেং ত্রার চির অগ্রাপা হত হরত। ইন্দ্রোলার সংশো গোরীস্পুল থিয় মান্তাকেও এমিন্ন একটি স্বাক্তিয়ে ক্র্

ন্বেতাপানী, কুম্ভামিনী কুম্চন্দ্র দে केम्म वामा-अपनव मक्दमहे लाजिमान्स्त्रत কাছে শিক্ষা প্ন কণ্ঠসঞ্গীতে। আৰু কাৰ কাছে সারপোর তালিম পেয়েছিলেন দ্বেল। ত'ার সেই দুই শিবাই তার আন্ধার। বাঙালীরা সাম্প্রাদন শিকা করেন না। নচেং আগ্রহী হলে ৰাশ্বালী মিষ্যকেও সার্গা খোখাতেন গোরীশৃক্ষ। তার সেই বৃই সারণা শিষা ছলেন इस्तान जिल्ला का का जिल्ला महान्या कर् তিনি কলকাভায় গঠিত করেছিলেন এবং ত্রীরা ওতাদক্ষীর মতন কলকাতার সপাতি কেতেই যাত থাকেন। হয় লাল তশ্ব শালকপ্র। সামণা মন্ত ও গান म्रारम्ब कानिमारे किनि क्षण्ठात्मन कार्य পান। মধাবরস প্রতি সার্গাবাদক থেকে পরিবৃত বয়ুসে কংগ্রিকাণীডের পিলপীর্পে পরিচিত হম ছল্লেল। তিনি আজো কলকাতার বর্তমান আছেন। চাম, মিপ্র ছিলেন লোরীশাস্করের আতুস্তর। অপ্রেক তিনি চামাকে আবালা সমতে সারণগ্রাদকের



ing sols the feet के बाद महान हात. जिल कानाकरण विकास स्टाइस्टिन्ड (১৯৪०)। व्हाय. का सकामधाका जा पहेला साजका रजीवीभाष्यसम् श्रीक्षत्रीक् शतकाीकारनम मानी क्षापार मा व्यागासायके गास स्वरंगन

লোর শিক্ষরের শিকা প্রসংকা বাংলার দলৈছিত গ্ৰী অনামন্থ বস্তুত্ৰ নামও क्रियाना । दमझामा 🕳 ठेर्दात गायस्त्र क्रमायर ন্থনাথও ওস্তাদক্ষীর শিবাস্থাদীর। গোৰীলক্ষ্ম কাছে তিনি সংগতিতি नानाकाव अभरमण माछ क्राइटन। উপকৃত হুলেছে রাগবিদ্যার। ওচ্চাদ্ধা

क्ष्मिक कारण आया आस्त्रा व्यक्तिस्था। स्रोत गायम अस्त्राणिक कारण मुख्योखना गान्नभीय त्या रणांत्रीयका men Ties প্ৰশিক্ষাৰে স্পাটিক त्वानात्वान दिन। जनावमाव्यक निवास टन्स् कार्टन, निर्मानि निर्टन दर्गानी--

বাংলার এক সংগতিকতঃ (হার) ভীম্ম-म्प्य हर्द्धानायगान्त्रव क्या ख टामरना একবার উল্লেখ করা বায়। ভীতাদেব তখন কলেজের ছাত্র। গেরুরা পরিধেয়ের জনা যেমন চিহ্নিত তেমনি উদীয়মান উল্লেখিত কাঠগায়ক প্রতিভার্পেও। সে সময় তিনি গোৱীল•করভার কাছেত শিক্ষাথাবি-পে किए किए আসতেন। লেখেনও

CONTRACTOR OF STREET आरमार कथा। सार्वीमुख्या कथा प्रयोग-कारत अवर जन्मी एक। ७० वहत भार কলকাজনার সংগ্রাপ্তসমাতে STEEDA! অৰুজ্ঞান ক্ষতেন অকজন আচাৰ্যালুপে। সেট সময় তরুণ ভৌজনের ভার কাতে বাভায়ত कारकत्। छीन्त्रारमञ्जूषा निककत्रारभ नताना-नाथ पर अवर वामन भीत मात्रहे खतमा विश्क कि चित्रनाव ক্ষারণীয় । 26 / cit গোরীশব্দরও যে তার একজন ওস্তাদ ছিলেন একথাও নথিতক রাশা যায়।

লোৱীশাক্ষর শাধ্য সার্প্য সাধক ছিলেন না। তিনি গায়কও. হাদও গান গাইতেন না আসরে। প্রভাক ফটী বিশ্বে সার্গ্যী ত অধেকি গায়ক। গান তারা অস্তরংগভাবে জানেন। নাটং গানের অত স্ক্রাতম কর্কমের সংখ্যা স্থান্থা করতে অক্ষম হতেন তারা। তবে গোরী-শংকর তার চেয়েও অধিক। তিনি বালা কাল থেকেই পিতার কাছে রীতিমত কট সংগীত শিংখছেন। ধেমন অভ্যাস করেছেন স্বারণ্য ঘল্রে ঠিক তেমনি নিষ্ঠার সংগ্যা ভাঁদের ঘ্রানার এইটেই বৈশিন্টা। একাধাণে গান ও সারপোর অন্শীলন। সেজনোই যদ্বীর্পে তাদের হাতে সার আরো বসে। অজ্যালির স্পূর্ণ হয় বেশী সারেলা, স্থামিট। গানের চচার ফলে সংগতকার সারংগারিশেও আসারে তারা সফলতব তন। আবার গানের শিক্ষক বা ও*তাদ প্রেশ্বাদাব রূপেত বরণীয় হতে পারেন জীবনে। সেই কারণে এই মিশ্র ঘরের ধারায় যাঁরা সারক্ষীর বৃত্তি নেবার জনো প্রদত্ত হতন ত'দের প্রত্যেকই ব্যত্তিমত গানও শিক্ষা করতেন।

তার ফলে সারজ্গ এবং গান যন্ত সশ্গীত এবং কঠেসশ্গীত ওতপ্রোত ছিল লীভুজীবনে। সারুগী-গোরীশংকরের সঙের সহযোগিতা র~পে যখন ্নের কিংবা ' যথন করতেন াাসরে, অন্তোন করতেন তাঁর যবে তখন গানই বাজত। কংঠর যাবতীয় কৃতি—তান বিশ্তার ইত্যাদি শুধু নয়। কণ্ঠসংগীতেব আংবগ প্রশ্নত পরিস্ফুট অনুর্রণিত হত তার যন্তে। সারপোর এই বৈশিন্টা। অন্য কোন বাদাই এমন সংচাৰ ভাবে গানের সরে সংগতে সক্ষম হতে পারে না। কণ্ঠ-সংগীতের এমন একাথ হওয়া অন্য যলেব পক্ষে অসম্ভব। ৩৬টি ত্রফের জারহোগে সারকেগ্র 😅 এতথ্নি স্রপরিধিও अननाजा। माद्रतत अभ्वत्य यक्कारत वर्गाण সারশ্য বাদন। এ হাসের স্মৃত্ত প্রা বজার কথা তার সংগ্রতিজীবনের প্রসংগ্র বভাবতই মনে আসে।

সারশ্য বাদ্যধারার এক শ্রেণ্ঠ প্রতিভূ ছিলেন গোর**ীশ•কর শ্বিশ্র**। धंडे वामन-রীতির এক সম্প্র ঐতিহা তিনি বছন করে এনেছিলেন। বারাণসী থেকে কাতায় প্রসারিত করেছিলেন তার ধারা। তার স্পাতিকৃতির **企**奉 Œ উল্লেখনীয় ভূমিকা মিছ করের

चारका कार्काइक उदराव क्ष राज्य पाज बामा कामल शास्त्र सामित्र किल्लाल क्षालका । जातक

का स्वाध कासा साध

शिवनिक क्यान हेवटशरे वावहात कट्टान ध्वम प्रतादक प्रवाहिक व्यन्तेत्रात्र शक्ष्यम् स्टब्स् निर्म्टस्यः

য়া ব্যৱ প্রেম বেকেই আমি করভাল स करत चामकि । अवन चामान **परत्रय श्राप्त 'कृष्कि । श्रा**थमयात्र कत्रशांका ব্য**ন্তান ক্**যার সমস্ত, আমার মাড়ির কি<u>ছ</u> **ल्याबारकान फिल । अधन गर किंग्स्टर ११९६**, কোলো বাবেলাই নেই।--- **আগে আমা**র शास्त्र शेष ज्ञान कड़ान घटकार दिन ना । क्षि बदा, बाद्यं शक्काक्टमा कतात मनत ১-টা বাৰণেই আমার মনে গড়ে বেড জ্যুপমায়ের বিজ্ঞাপনে লেখা "একটি নতুন MANIA .- - - 441 i., (पांध) जन, विक्रिन, वि. हे. (हेटलहे.) शांक्याना

"---ব্দিও আমি ধূমপান করিনা, বছর থানেক আগে লক্ট্য করলায়- আয়ার है। छ हमार प्रत्य बारक । ---कामात वादा. বিদি গত তিরিশ বছর ধরে "ক্ষঞ্জাকা" वावशास करत जामरहम, जामारक पुषरशहे यमरम "क्षेत्रकाला वावश्व कत्र वाणि क्यारम्य---वान्त्री क्य श्रमात्र ! व्यास. च्यात्रात्र केल त्यम एक्या विविद-- विक ত্তেমনি। আমি শীকার করতে বাধা হচিত বে আগনারা আগনাদের অপুর্ব ট্রথপেট---**ক্ষ্যজ্ঞাল-এ বে সৰ গুণ আছে বলে দাবী** करतन-का मिछा ! व्यक्तक हैपरनरहेत माम बह क्रमार को श्वाहे— व व बन बाटकत कारकारकत देखती हुंबरशर्ड !" (412) an. an. syibila. an. a., colcumichin



(अहे श्रान्तागरावत श्राविक्ववि (क्रिकेशि) क्रिके मानाव

ভালোভাবে দাঁভের শন্ত নিজে ধলে বোজ রাজে জার স্কালে সমূহাল টুবপেট ও ক্ষেত্ৰিল ভূবল আকিশন ট্ৰুৱলে ব্ৰেচাৰ কিল্ম--- ছাত্ৰ নিত্ৰিক আপনাত্ৰ

Superior Programme 18	দীতের ভাজারের পরামশ নিব।
क्रिक्ट्रमार्थ क्यान्न बर्द	ন পুতিকা"আপনার হাত ও হাড়ির <mark>কা"ুএই পুতি</mark> কা পেডে হলে
े च्युक्तकः करत्र अर्थ कुणाः	নর সংক্ষ ২৫ প্রসার ভাকটিকিট পর্টোন, এই টকালার: ন্যা বুলো, পোট ব্যাপ নং ১০০৩১, যথে ৪০০০০১ ১
*14	<u> </u>
ট্রকালা	
	চাৰ তার নীঞ্জ দাগ কেটে দিন—ইংরিমী, ছিন্দী, ঘারটো, লো, অসমীয়া, ভাষিল, ভেলেঞ্জ, মালয়ালম, কানাড়ী।

THE PERSON NAMED OF THE PERSON NAMED IN COLUMN TWO IS NOT THE PERSON N

হলাক্ষীসক্ষালয় হোড বয়ুৰে আৰু এক সক্ষকা-বিক্সী কলকাতার সংগতি ক্লেৱে श्रीक्षका काल क्याहित्वन। क्रिमित शामी ৰাক্ষ্ এবং কৃতিৰ দেখাতেন একক অনুষ্ঠানে। তার নাম ছোটে খা। কিত্ किनि टर्मेन्नीभाष्करस्य जुन्म मृत्रिकान বাংলার সম্পতিজগতে স্বাক্ষর রাখেন নি। ভার কোল উভাসাধকও থাকে নি এই अत्मरण । ३৯६७ नावम व्हाटी चरिक কলকাতা ত্যাগ করে চলেও বেতে হয়। ভার অভ্যান ইলোবের নিকটে গোয়ালদায় বাল করেন ভারপর। আর তিনি বাংলায় ফিলে আসেন নি শেষ জীবনে। গোরী-শব্দর কিন্তু নাশাভাবে বাংলার সভাতি-कौरातत जर्ला जरक्ला जन्भरक वाड ছিলেন। আরু তাঁর দেহাদেতর পরেও তার একটি রেশ ক্ষীণ স্মৃতিরেখায় রয়ে যায় বাংলার সংগীতজগতে।

কাশীর এক প্রাচীন সাগণ্য-ধারার বাহক গৌরীশুক্তর। যৌবনকালেই সে সম্পদ নিয়ে তিনি আসেন কলকাডায়।

বারাণসীর সেই **िल**ाहे সম্প্রদারের এক মহাগাণবান প্রতিনিধি গোরীশঙকর। কবীর-চৌর সেনপ্রে রামাপ্রো প্রভৃতি এলাকায় বিশ্তারিত সেখানকার সেই কথক সমাজ। তাদের নালা শাখার মধ্যে আত্মীয়তাও বিদামান। পরস্পর সম্পর্কিত তারা। কঠসংগীত ও বল্দস্পীতের বিভিন্ন বিভাগে সেই মিশ্র উপাধিক স্ক্রীতসাধকরা বিশেষজ্ঞ হয়ে-ছেন। সমূস্থ করেছেন ভারতীয় সংগতি-চচ'াকে। ভারতের বিভিন্ন আগুলাকে করে কাদা ধারায় নিজের।ও প্রভাবিত হিকশিত ভূন। ক্রেক্রেই কোন কোন minell এসে क्रशाश ै-ভাবে বৃদ্ধ হয়ে পড়েন কলবাভার ৰাংলার রাগসপগীতচ**চ**াব अवगीलत्करत् । हीर्त्राच्य आयन करतन। যেমান-কণ্ঠ-স্পাতির নানারীতি ও বীণা ইত্যাদি প্ৰস্তাপ বন্দ্রসভাগীতে রামকুমার লছুমী শিউসহার। কণ্ঠ ও বলের নানা বিভাগে রামকুমার পশ্পতিদেবক িশ্বসেবক**া** ভবলার মৌলবীরাম নাম্মহায় প্রভৃতির ধারা। তেমনি এক সার্গা বাদক-গার্ক ধারার কথক বংশীর গোরীশ[ু]কর মি<u>শু</u>া

উনিশ শতকের দিবতীয়ার্থে এই প্রক্রিয়ার স্চনা। আর বিশ শতকের প্রথম জালে তার স্থেসিবাতি।

উনবিংশ শতাব্দীর মধাভাগ গেকে
ভাগতীয় সংগতিচচার কৈলে যে নবলাগতির পর্ব আরম্ভ এবং বাংলাদেশ
হর বার মুখপায়—কাশীর কথক সম্প্রান
গরের একটি উল্লেখ্য অংশের বাংলার
গ্রের একটি উল্লেখ্য অংশের বাংলার
গ্রের একটি উল্লেখ্য অংশের বাংলার
গ্রের এক আন্ট্রন অবার অধার। দেখা
রার এক আন্ট্রন ঐতিহাসিক বোগাবোগো
বারাপারীর কথক সমাকের কঠেসপাত ও
বার্লাপারীর কর্মাকের কর্মাকের বংশধার
ইল্পেনিক্স ক্রনাসেন্টে কর্মার ।

नामानामक मेहन हरू विकास संदर्भ जन्मीकामान प्रतिकृत संदर्भ रम्भ जन्मानी हरू गाउ

বাজালসীতে এই পদিবার প্রেরণ্ড্র ক্রম সারজ্ঞী গারলিখিকা । সের্বার-ক্রমের গিড়-গিড়ারহ সকলেই হিসেন্ ক্রমানে সাক্ষপান্তর ও গারক।

শংগারীশণকরের শিক্তবহু কুখনু রিপ্র বেকে এই বংশের নিশ্চিত বিক্ষণ পাওছা যার। বুখনু মিশ্র স্থাকণী-সারকরংশ একব্যেগে পরিচিত ছিলেন কালার সংগতিস্মালে। কবিরটোরা মহলার কবির মন্দিরের শিছনে তিনি বাড়ি কর করে বাস করতে থাকেন। সেই থেকে এই গরিবার কবিরটোরা নিবাসী।

वर्ष्यः मिरलक गृहे भूता व्यष्ट्र अण्डाम ও ঠাকুরপ্রসাদ। দ্রজনেই সারক্ষাবাদক ও ক•ঠস•গাতৈর সাধক। বু৽ধু মিলের কাছেই বেচু ও ঠাকুরপ্রাশাদ সার্মণা ও গানের তালিম পান। জ্ঞান্ঠ বেচু ওস্তাদের কাছে গান শেখেন কলকাতার গহর জান। বেচু ওশ্তাদের সময় থেকেট এ বংশের কলকাতার সংগীতকেন্ত্রে সংগ্র হোগা-যোগ ঘটে। তবে বেচু ওশ্ভাদ কলকাভার আসতেন সাময়িকভাবে। এ শহরে স্থারী বাসিন্দা হন নি। কনিন্ঠ ঠাকুর**প্রসাদ** ব্যরাশসী নিবাসীই থাকেন একজন নেত্-স্থানীয় সার্ধণী <u>ত</u> পায়ক হয়ে। তিনি অপূত্রক। তবে তাঁর দৌহির ছোটে রামদাস তারই শিক্ষায় বিখ্যাত গায়ক হয়েছিলে। ছোটে রামদাসজীর আসা-বাওয়া ছিল কলকাভায়। এখানে নানা আসরে তিনি

ব্যালা কুটো জা চিশা গলে গ্রেপালা ব্যালাকেন। ভাল ভাগিতে গতিত নামোনন নিচ্চ প্রতি বলের পরিক্তাতানীক দুরে অবলো কলেয়ার কলেয়ান কলেবার ব্যাতিকেরে । নাম্যানর হলেন ক্রে

গহর জানের অমাতন সংগতিশিক্ষক বেচু ওপ্তাবের কালাভার আনা বেচু ওপ্তাবের শিতা বাবসুরার বিজ্ঞান বেচু ওপ্তাবের শিতা বাবসুরার বিজ্ঞানের কনেক কিন কলকাভার বাস ও শিক্ষাবের কনেক কিন কলকাভার বাস ও শিক্ষাবের কনেক বিবরণ গছর বিজ্ঞানের স্থেও হরত বেচু ওপ্তাবের বাব একটি সন্দর্শ থাকতে গানে কলকাভার সংগতিকের সংগ্রা ভবে ভিনি কালী নির্দ্ধার বাবের কালের এক ওপ্তান বলেই ভার পরিচিতি ছিল পোলাগার মহলে।

বেচু ও্রস্ডানের গাঁচ প্রা: জানের
সকলেরই জন্ম কাশীতে। তারা হলেন
ল্যানাচরল গোরীশন্দর কনকা বুদ্দি ও
কালপ্রসাদ। তারা গাঁচজনেই শেশানার
গার্রক বাদ্দ হরে বাস করতেন বারাশসীতে।
স্থোনেই তার গাঁচজনের মধ্যে প্রথমে মন্ত্যু
হয়। বেচু ওল্ডানের আনা চার প্রথম
কলকাভার সংগাঁতজাত প্রতিতা লাভ করেন!
এই শহরেরই স্থামী নিবাসী ধাকেন
লীবনের শেব পর্যাকত। গাল্লক বা সাজগাঁ
বা ত্রালিরা কিংবা ওল্ডান্তর্ম্ব সাজগাঁ
বা ত্রালিরা কিংবা ওল্ডান্তর্ম্ব স্থানত্য আমত্যে বৃক্ত ছিলেন।

(appear)

নিমল আচার্যের উপন্যাস

७७ शिका त्यत् म्यां कामा वामा

বইটি সংশক্ষে **ভঃ স্নীতিভূমার চটো পাধ্যাদের অভিনত** ঃ
বইখানি বাহতেঃ উপন্যাস কিচ্ছু বাস্তাবিক পক্ষে উপন্যাসের চেরে **অনেক**কিছুর সমাবেস ইহাতে আছে। বাংলাদেশের একটি অভ্ত—অবহেলিত
হিন্দু সমাজের ইহা একটি তথাপ্শ চিত্রণ।

ইহা একটি Documentory তথা প্ৰতক। বাহার একটি ভিরত্ন ম্লা আছে।

ভাষান্শীলিক বিধায়—আমি এখনি ইহাতে ব্যবহাত খ্যিকাল লমক্ষের
মধ্যে প্রচলিত শব্দ সম্ভাবে সংগ্রহ সংপ্শ বাংলা অভিধানের পরিপোষ্ণের
জন্য বাছিয়া লইবার ব্যবস্থা করিরাছি। গ্রন্থলারের তৃতীয় লেকু বইধানি
বাস্ত্রিকই বাংলা সাহিত্যের একটি নৃত্ন জিনিষ হইরাছে। ইয়া প্রচায়
সন্দ্রপ্রসারী হইবেই। স্বাঃ— তঃ সন্নীতিকুমার চট্টোসাধ্যার

রক্ত শ্রাক্ষর পার্বালকেসনস্ । পার ধারেন ধর সর্বাট, কলিলাভা-১২ ফেল—২৪-৯৬৭৭

প্রাণিতস্থান নাপ স্থাপ্তি সংক্ষা কথা ও কাহিনী । কলিকাভা।



শ্রেফা গৃথ

मावी

অন্পকুমার
লোস্মী চট্টোপাধায়ে
রবি ঘোষ
অম্ল্য সান্যাল
বাসন্তী চট্টোপাধ্যায়
দিলীপ রায়
সমিত ভঞ্জ

মানসী মধাবিত পরিবারে মানুষ হয়ে সহজে কোট বিষয়ে পিছ, হটতে শেখেন। ওদের সংসারে আবিশা ছিল দারিদ্র এবং পারিবারিক নানা সমস্যা ছিল। বৈশীয় পিতা, বেকার ছোড্দা, দেনহময়ী ্ল এবং সহান ভূতিশীল বড়দা। এই বড়দাই কোনরকমে তার পরিপ্রামে সংসারটিকে বাচিয়ে রেখেছে, ধুনীদের অজ্ঞাচারে নিজেকে কর্তারত কর্পেও ছোট বোনটির (ফানঃ) গারে এতটকে আঁচ লাগতে দেয়ান। মানস্থি বাড়ীর সকলের মুখ রক্ষা করে ডিল্টিংকশন ভিয়ে বি-এ পাশ করেছে। কলেজের ছাত্রী থাকার সময়েই মান্ 'আচারিয়া ই'ডাস্ট্রাজের' মালিক মিঃ আচারিরার একঘার ছেলে সূবীরকে ভালবাসে। কিন্তু স্বীরের বা সর্ব্যা দেবী ধনী ও দরিতের মধ্যে প্রেম ও প্রশক্তের স্থান দিতে চান না। তিনি সুধীরের জনো মনে মনে হাইকোসাইটির ধনী কন্যা মিস্টার ব্যাপ্ডোর মেরে অনুপ্রাকে একরকম ঠিকই করে রেখেছেন। সে মেয়েটি নতে নতে বেমন তাখাড়, তেমন আধ,নিকা, এরকম মেরে মা স্থেকী হাইনোসাইটিতে মূখ দেখানে। হাবে না বলে ওর বারনা। ক্ষিত্ত সংবীর মাধ্যের তাগিদে অনুস্থার সংখ্য মিললেও कालवात्म मानमीत्म । मिन्छोत जालातिया । और सम् व्यासाहित्स शास्त्रहरून धार्यः स्टब्स्स भास्यामात सान्तरत वसः धार স্বীকৃতিই আছে।

আচ্যকাই স্থানীৰ খাবাৰ সাহাব্যে মান্সৰীকে ব্ৰেক্তিকিন্দ্ৰ মতে বিবাহ করে আছে। কিন্তু মা (ল্বমা) খনেৰ এই হেলেয়ান্বিকিক বিশ্বাস্থ্য বালে মানতে ব্ৰাক্তিনিন এবং মানতীয় প্ৰতি মিন্তীয় আচনিম্বান প্ৰস্পাতিকক মেটেই সহা কথাত পানেন না। বাধাৰক ক্ষাম্বীয় আহেত্ব প্ৰস্পাতিকৰ ক্ষাত্ৰী উল্লিয়ানুকে কালেন সে এখন বিশ্ব আচ্যানিয়াৰ প্ৰথম





এখন কোনমাতেই ভার পক্ষে বৃষ্ঠিতে, অর্থাং বৃদ্ধরবাড়ীতে ষাওয়া চলবে ন। এবং তাদের কারে। সংগ্রাকান লোগাযোগ ब्राशां ७ व्याप्त सा । जायह मान्य माना माना मक**ान ७**व বিব্যাহত জাবনের সংখ ও সাছেদ্যের জন্যে বাস্ত। তার ছোড়দাই কোনরকল্পে ও-বাড়ীর দারোয়ানকে পরে মানরে **থবর** নিয়ে যায়। আর এইভাবেই করে ও'রা জানলেন মান্ এখন একটি ফটেফটে ছেলের মা হারছে। শাশ্তী সরম। মানসী ও সাবীরের সংখের সংসার সহা করতে না পেরে চিন্তিত হয়ে প্রলেন, আর এই সংযোগকে কাজে স্বাগালেন ব্যাণ্ডা-দমপ্তি। ও'রা সর্থাকে প্রাম্শ দিলেন সংব্রীর যেন মান্তকে ডিডোস করে ও'দের একমার মেয়ে অনুপ্রাকে বিশাহ করে। এবং এরপর ভারা কাগজপর তৈরী করে মালস্টকে দিয়ে সই কবিয়ে সরমার সাহায়ে মানস্টকে চিরতরে উৎখাত করলেন। কিম্তু মান্য যা ভাবে সব সহার 'मिछा घट हे मा। दकारहे डि. श्रमाणिक इल जाएनो हिकील मायौत छ মানস্থির ডিভেপের কাগজপুর জন্ম দেয়নি, এবং মানস্থি তার শৃশাভ্রাড়ী থেকে ছেলেকে নিয়ে আস্কর সংপূর্ণ অধিকারিণী। কারণ সে মা, সদতান তো মার কাছেই থাকে। অভিনয়ে বিকাশ রায় (আচারিয়া) সর্মা (দ্বীপ্তি রায়) মান্ত্র মা (সম্পারাণী) বাবা (অসিত্ররণ) ছোড্দা (অন্তপ্ কুমার) বড়দা (দিলীপুরায়) স্বার (স্মিত ভক্ত) মান্ (মোস্মা) মিশ্টার বাণেডা (শেখর চটোপাণার) উক্লীক (রণি খোষ) এবং অনুপ্রা (রজনী গ্রেণ্ডা) নিবাচিত ভূমিকার সংশর অভিনয় করেছেন। ছলির সংখ্যাদ্বায় আছেন জমির মুখাজি, আলোকচিত গুড়াপ শুক্র ব্রুদ্রাপ্রাধ্যায়, সংগতিত অমল মুক্ষেপ্ধ্যার ও প্রিচালনার -কনক মুখোপ্ধ্যার।

(इंद्रावलन

জয়শ্রী রায়

s আটোলোক কিন্তে কেন্দ্ৰ ল'লে আপলার? —লভিয়েক্তৰ বজাৰো!

· favorit :

্—আটোপ্রাক্ষ টাটোগোক ছিল্ড জ্বামার মেনটাই জ্বাস কাৰে সা।

: आकृत्म तम्म त्सम :

্ন স্থিকিথা নলতে কি আমানের স্পার্কের মান্নান্তর একটা স্কুলন দাছলা আছে।
মলতে দেলে স্থাননের এই আনিট্ডটাই
আমানের তা সেটা। স্কুলনং তাকের নিস্পুর্করা তো চলে না অভিনয় করবো জনাপ্রায়
করা তো চলে না অভিনয় করবো জনাপ্রায়
ক্রাতের চাইবো জনার ম্বাননের চটাবন এটা কি করে হয়। স্ত্রাং ইক্ছেব

ঃ নিজের ইজের্ দমন করে জনোর সংগো জনপোষে ভাতকো জাপেনি ভারাজী নন?

্যটোগ্রাফ দেবর বাগণার আর আপোষ বাগণারটা বিশ্বু এক নর। ধর্ম কেলো সাংসারিক ঘটনা- যোগামে মতুভেদ হুছে কাষত সংগ্র আগার সেঘানে অপারপক আমার স্থি বিক সিক করেণ বেশিবর স্থানিস্ফাই বরতে পারেন নিশ্বই সেখপন আমি আপোষে রাজী। নিলা করেছ আমি বাগনার বাগীন করে আমার মত ভাগনার কান্ট বেশী—রাল জিলু না দুভভাই





ভালা কিল এবং দুছতা আন্তর্ন আছাত্র বিলাম কিল এবং দুছতা আন্তর্ন আছাত্র আ

: আপনি স্বচাইতে বেশী ভালসাসেন কাকে?

—বেশী ভালসাস টা কিন্তু একজনকেই হয়

না। বিশেষ করে আমার মত পারিবারিক
মানুষের পকে। করণ আমার হবামী আহে

মেরে আছে বাবা-মা তো অছিনই
প্রতাককই আমি সমান ভালবাস। কিন্তু
ভালবাসার আমিভিডটা আলান। মেরেকে

সভাবে স বিশিষ্টাত ভালবিস স্বামীর

ভিত্তা আমার আমিভিডটা আলান।

মানুষের

বিভাগের ভালবাসার কার্টিচুড শিক্ষাই

বা ন্যা ব্বান্যার কেরেও ভাই।

্ব ভাউট্ডেলের গেলে বাড়ীর কংকে আপনি স্বচাইতে বেশী মিস্বাব্রন্ত

--মৌ এর (মেমে) জনটে মনটা কেমন মেন বরে। তবে বেশীর ভাগ সময়ই প্রদীর কেনি। ত মৌ আনর সংক্র মাদা। এই কিনি আলে রামপ্রহাট বিশ্লেছিলাম দুটেটু ছিতি ছবির কাজে-প্রথম একং কেশমে এবার। ওদের জন্ম মাটা খ্রাশ লাগশেও ভাবি যে আমার সংক্র ওদের নিয়ে গেলে ওদেরই বাজ নাট। অবিশ্বা আমেক সময় না নিয়েও শ্রিবা।

ঃ শ্রেছি অপনি প্রেম বরে বিয়ে করেছেন।
প্রবীরবাব্র সংগে আপনার পরিচয় কিভাবে ট

—সে এক মজার ব্যাপার। (পালে টোল চেমলে সুস্কোন খানিক কিভাবে শ্রুর করেন বোধহয় সেটাই ভারলেন।) বয়স তখন খুব অল। ফেছেলি কোত্তল নিয়ে বংশ্লেপ সংগ্র ভ্রেনের নিয়ে আলাচনা করি আভ্রন মার: একদিন চঠাত এক বংশ্রুর দাদার সংগ্র জ্যাকে জড়িয়ে কথা উঠেছিল। বংশারটায় আমি আলগ কেইনি তেমন। একদিন চঠত সেনা দেশান সেই বংশ্রির দাশারটায় আমি আলগ কেইনি তেমন। একদিন চঠত সেনা দেশান সেই বংশ্রির দাশার। আমি হো এবাক! চিনিই না ভারে আমি। মধ্যে গুল্লবের স্মাধ্রনের শ্রু জ্ঞান ক্রেন্ডেল্ল



এলেন। পাছনে কেনেনের অন্ধেবন্ত করে।
আমিন গেলেন। বেশানিন নর মার দা মাল লোধ হয় এই যাত্যাবে করতে করতেই কখন সে গাজবান সনি। হয়ে গেল বাকতেই পারিন। ভারপরেই বিয়েং পাতাশান তাক জৈঠ গোলা। হায়ের সেকেজেরী প্রীক্ষাটাই আরু দেয়া হলে। ।।

: আপনাদের বিচে কোনো পক্ষর বাড়ী গেকে কোনো আ

ন্যা সের এ কোনো বংগার অটোন প্রথমত। প্রবারির রাজ ওাদের বোনো সংক্রার এই আর ভাষাদের বাড়ীর আর-হাওয়া একবারে ভাষাক্রম বাবান্যার আদার ওপর এত্থানি কাফিডেক্স ছিল ছে ভারা অমার কোনো কাফেট খুবু একটা বাধা দেশনি। বিসের বাংপারে তো মরুই।

ঃ মেয়ের। চায় সিকিওরিটি --স্থেম কি সেই পথ ধরে চলে?

—দুটো কথা কিংলু সমুশূরণ আগাদা খাদ্ ।
আপনি জুড়ে দিয়াছেন। সিকিঙারিটি কে
না চায়! আজকের এই হাজানে সমস্যার
মাথে বঢ়িরে স্বচইতে বড় হাট্ছার হো
সিকিঙারটিই! খাুখু প্রেম দিয়ে গেট ভারবে
না। কাজেই সিকিঙারটি খোজাটা খ্ব একটা
অনুচিত নয় বলেই অমি মানে করে। কিংজু
প্রেম সেই সিকিঙারটির বজা তেবেই চলে
এটা স্তা নয় গ্রুলাভ কোনো কিছা
নানে চলে না ভেবেও এগোয় না।
ঃ আপনার নিজের ক্ষেত্র বি ঘটছিল ?

—নিশ্চসাই ট্লাড! সিকিওরিটির কথা তথ্য আমি ভাবিনি। ওটা আমার আপদ:

्पार्क्ट अटन रशरह। श्रद्धितालय वास्त्रोत অক্সা খুৰুই ভালো।

: क्यान्त्र निस्त्रका मान द्यु ?

—তালাক লোক কথা বলভেন। (ভব क्'ठरक अवस्ति वायरमान काक्टरन अवसे খুলেই বান। খুব ছোটবেলা খেকেই আনি बात काला दरबारे मान्य। अक बा-बाता रवान अवस्थित जिल्लान। व्याम **एवं स्वा**नत ভিলাক। প্রার্থী কুলে যেতে শারতম না বরে यद्मिर्दे नेष्मानुद्रमा कराजाम। यादा हिस्सम জাৰ ক্লিকট বাসত থাকতেন ভয়ানক। পারি-বারিক বাবসাপর দেখাশুনো করতেন আমার যা। দিলা-দদ্র কাছে সময়টা আমার কেশী কেটেছে। সম্ভবত সিকলি ছিলাম বলেই কেউ আমাকে বিরক্ত করতো না। নিজের মনে ছবি আঁকতাম পড়তাম। ছোটবেল গেবেই এই একা থাকার ব্যাপারটা আর্মর চরিত্রের সংক্রে এমনভাবে জড়িয়ে আছে যে তাকে এখন আর আলাসা করা সম্ভব নয়।

জানেন আমি ভয়ানক হৈ-চৈ করতে ভালবাসি। আউউডোরে যে ইউনিটের সংগেই যাই না কেন-স্বার সংগ্রেজমিয়ে আমার খাব একটা দময় কালে না। কিন্ত रेश-रेष श्राह्मारकत মধ্যেও ^{ভেতরটা} কেমন হেন একা হয়ে **হায়**। ঠিক বোঝাতে পার্ব না!

ঃ আপনার এই ব্যবহারে ব্যামীর রি-অ্যাকশন কি রক্ম :

–•বাভাবিকভাবেই যা হ য়ে থাকে প্রথমটায় ভুল বোঝাবর্নিঝ তারপর সব ঠিক। আসল কথা হলো প্রবীর ভয়ানক কনাসভারেট এবং আক্রেমেডেটিংও। আমার ফিলিংস ও ব্ৰুঝতে পেরেছে সহজেই।

ঃ নিজের কাজের সমালোচনা আপনি সহা করতে পারেন?

—অভিনয়ের কথা বলছেন তো?

ঃ অভিনয় পারিবারিক কাজ দটোই বুলছি।

—আছো। আগে অভিনয় সম্প্রেই বর্লাছ। সমালোচনা অর্থে মন্দ-ভালোর আলোচনা তো! আমাকে নিয়ে তেমন কিছ, আমার চোখে পড়েন। ফান্মেল বা থবরের কাগজ শুধা প্রশংসাট করেছেন। একমার বাবা আর প্রবীর আখার কাজের न्यात्लाह्ना करवन। अवः वना वाद्रला তাদের আলোচনা আমার খারাপ দিক-গালো নিয়েই। তাতে আমার উপকা^{রই} তো হয় ক্ষতি কি? কাজ খারাপ করলে नभारलाइना इरव-अधे जहा ना कदाव कि আৰে }

পারিবারিক ব্যাপারে আমরা WITH म.कटम ब्रिटनार्ड गर काक कांत्र। कुन्कुटका ेगरात आमाप्तर गामपावर ।

প্রেন পুশন क्या के **व्याप्त**ान মতটা পালা ব্যক্তার চারিটে বিভাগ ও मा किंठि जल्लाक व्यवसाय कि सामना ?

—শেকস তে লাইমেটা একটা অঞ্চ भा छहा - ग्या क्या वकाव प्रक लाग महाचि व्यापके सम्बद्धाः नाईएका वात्वाः अवैः निक जाव्याक्त्य कि जाव ? ज्य जामा-रनंत्र राज्यमञ्ज क्षीबारक विद्यान करन्त्र क्रिक्नीरक **এই न्यास्त्रातिक वाानाकोत्रक निर्दा** स्व त्नारसाम्ब हजरूर स्व वयमा हजरूर रजसा থাবট ইরিটেটিং। লেক্স লাইক ভেলিক-मार्ग खारा नहीं कि जिस शास का कुछ शास ना क्ष्मिकि करता आग्रेप नवकात्र ।

ঃ ফিল্ম কাউনের বিশ্বাস করেন?

-কেনো গুজবেই আহি বিশ্বাস করি না। কাৰণ সতি। ঘটনা আন গুজুবের মধ্যে मृत्य **गाँक ध्याद होनात हा**हेएल विभी। তাছাড়া এই ফিল্ম লাইনের আজগানি গ্ৰন্তৰ কান দিলে তো কবেই বাইরে চলে বেতে হতো?

ঃ বেন আপনাকে নিয়েও ভেয়ন কিছে इटबट्ड माकि?

-- তেমন কিছু নর' কিন্তু সায়ানা কিছ-का इस्बोंडन कराउँ। मानात (क्रेस्टास्त्रात्त्र) नर्देश आधार मात्र छाए डे लाउन् वर्ष कि ধবর ফেরিয়েভিল কাগতে একবার : আমি ব্যাপারটা কানতার না পঞ্জিন। তাডিজন বেতে गामाडे जाबाट शक्का देशकारकार चकादित। व त्रक्काक्का आहरत बेमामा भारतमा वर्षेत रहत हुए हुएन WHA " TO NOT CHESTER! बनाय बर्जा ? बाई छाम राजान बाजी माकता किए जामान्डरे 20 FIRT > 8 4 1 क्षाकार कार्यको कि लाग कार्यक के जाना कार्यक्ष कारमः क-महिमान <u>स्थानीय</u> चारात मिक्रको अवसे अस्टान स्टारिका जाराश्यद य रबाडि अ-लाकेटन आकार स्मार्ट अप्रत चान्छना वि ग्राह्मस्य काम विस्त प्रस প রামা বাঝা। ভাবে এসব **ঘট**দার সার আমার পেছান বে ফিন্টকন আলোচনা भारत राज्यों के साम विकासिक राज्या शकनात्वं व्यक्षक्रमः हेरे हेर्न-টেট্রম মা ভেরি মাচ। বাদৈরতে দেখাবেদ शास्त्र राज्ये। का जानात सकाय म्भाकीम्मानी সব। আই লাইক দিস আটিচড।

—ित्रश्रं का बाब

AN UNUSUAL NOVELTY

I feel NAYA DIN NAI RAAT is an unusual novelty. According to learned pundits life is incomplete without its nine facets. These nine facets of a mahare SURPRISE, AVERSION, COMPASSION ANGER. DEVOTION ROMANCE. BRAVERY, FEAR. BLISS.

BRAVERY, FEAR. BLISS.

A very talented and intelligent actor of our country Sanjeev Kumar has portrayed these nine different facets of life in "Nava Din Nai Raat" with great understanding and competence. The Indian Film Industry has never before witnessed such a peerless example of an effort which deserves applaud and attention I hope you will like it."



পদ্মচালনা এ.ভীম সিংহ সংগীত লক্ষ্মীকান্ত পদ্মৱেলাল। অশ্বিকীর চিল্লাক্রম্প

নিউ এম্পায়ার মাাজেষ্টিক নাজ লিবাটি (0 4 2) \$25 0 4 2) (2; # 5# GH MI)

খালা কালিকা পারোমা ুল্ট ইন্টালী বিন্যাহিত গট লো (\$ & B) (\$-00 6-00 8-00)

🖦 किया (मून त्या) ७ ५०वे विद्याहरू



হামরাহী

হামনীছাঁ ঃ কাল্পনিক কাহিনীকে দিয়কাটা হাসির ছবি! (প্রয়েজনা ঃ সাগর অন্ট কপোরেখন)। কিমান হাসির ছবি তৈরী করবার ব্যাপারে বন্দের প্রয়োজকব্যুক যতনা নজর দেন, তত ও'রা কাল্পনিক কাছিনীকে নিরে হাসির ছবি তৈরী করেন, আর সেইসপো প্রয়োজনিকে হাস্য কোতুকের অনুপান হিসেবে আলানুভার দলকদের কনো প্রিবেশনা করেন নৃত্য গাঁত প্রেছ প্রায় আর কৃতিয় ধরনের জাইয়া।

বন্দের এক খাতেনালা ইংলক্টানক ক্ষোপনানী একটি বিশেষ পদের জন্যে দুক্লনকে ইন্টারজিট্ট দেশার ক্ষান্তে তেন্তে পাঠিরেছে। ওরা হলেন রমেশ এবং শাতিনা। চাল্লাল একটি অথক ভালা হোলা দুল্লন প্রাথীকে। রমেশ মনে ক্ষান্ত ভালা এই উচ্চপদের চাকরিটি পেলে অস্কুত্ব মানৈর বাদের বানের ক্ষানেসারের চিকিৎসা করাবে এবং একমান জ্ঞানুদ্রের বোনের ক্ষানেসারের চিকিৎসা করাবে এবং শাতিনা জ্ঞানুদ্রের বোনের বাক্তান ক্ষান্ত প্রত্যা করাক হাত ক্ষেক্ত প্রত্যান্ত ক্ষান্ত্রীটি পেলে প্রথমে তার ক্ষান্ত হাত ক্ষান্ত প্রত্যা ক্ষান্ত্রীটি পেলে বাধ্যা ক্ষান্ত ক্ষান্ত

রশধীর কাশ্রে

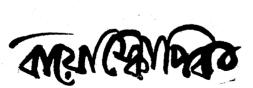


থেকে ভবিষ্যুত্তে ভাল চাকরি পাষার আশার রমেশকে অনৈক
ক্ষান্ত সাধ্যম ক্ষান্তত হোলা।
ক্রান্ত করালা
ক্রান্ত করালা
কর্মান্ত করালা
করালা।
ক্রান্ত করালা
করাল

এরপুরও রুমেশের সংকা ওখানকার এক প্রামের প্রধানের ছেকের চেহারার, মিল থাকার রুমেশ ও শালিনীকৈ নিয়ে গিয়ে আদরবছ করল তারা। কিন্তু সেই রালা সক্ষিকের আসেল উদ্দেশ্য অন্যরক্ষ। সে চেগ্রেছিল হেকেলা প্রথম পক্ষের পরিত্যাধা করা কুংসিত বৌরের সংকা সম্প্রমানক মিলিকে করতে। সেজনো তাকে আবার নতুন করে বিবাছসকার ব্যবস্থা করতে হোল। আর এবার প্রেনা বৌনএর সংকা বিবাহের স্বাস্থা বিবাহ দেওয়ার ব্যবস্থা হোল। किन्द्र अस्त्र आमल फेटलमा काला महा स्कटन विवादहर्त রাতেই শালিনীর সংখ্যা রমেশ পালিছে বন্দে চলে এবো। বাদবতে এল অবিশা ওরা ইন্টারভিউরের জনো। कि 🖷 এক কুচক্রীর পাল্লায় পরে শালিনীকে তাদের হাতে বাদ্দী হতে হলো। আসলে ওরা হোল আন্তর্জাতিক চান্ধা-কারবারের দল। ওদের ধারণা শালিনীর কাছে অনুক মুলাবান মাণ-মাণিকা হীরে-জহরৎ আছে। এরপর অনেক ঘাত-প্রতিঘাতের মধ্যে দিয়ে রমেশ পর্নিশের সাহাস্থ্যে भाजिनीटक छेन्धात कत्रत्या। अवश् अवादत मण कृत स्वास्त-ব্যাঝর পালা সাধ্য করে র'মেশ ও শালিনী মিলিত হেশে সাতিকারের বিবাহ কথনের মধ্যে দিয়ে। অভিনয়ের মধ্যে যারা উল্লেখ্য তারা হলেন-রুবধীর কাপ্রে (রমেশ) চন জা (শালিনী) স্কিতক্ষার (কুচ্ছী) স্থাগলার দলের প্রের (কে এন সিং) জালিরদার (শালিনীর শিস্তা) ডিঙ্কারী (आकार मार्नाश) कवर मीमाशा माध्यात (तरवर्गन वा) व र्षात्मानकात् भाकिमानात् छनाली हे महेन देशा शबस न्धाः नक्ताविका वाहकाम्माथः हिन्द्वाकियो क प्रश्मान-कुरुता प्रभाव किस्ताहित प्रशास कार्यस असिक्षाम्या सामाहित স্থাগার আলোকডিব গ্রহণ প্রেম সালার স্কর্ণজন্য ল**ন্ধর্** भाग এবং मण्योक भविष्ठामनाय -कलानकी ७ व्यानम्बरी







অত্তকে আমানের হ'ণপণ্ড লাফিয়ে লাফিয়ে উঠছে। একটা ভয়াবত পরিচিথতির ম্থোমাখি দাঁড়িয়ে আমরা। চারিদিকে গড় অন্ধকার। খট খট হোটালিক শব্দ আশে-পালে মাথার ওপত আটমেটিক মাাগাজিন हमाछ शब्द ताहैस्म्बन्द वहक स्मर्कार्ड माड **লার আনে**ক আগেই খ**ুলে াগছে। দেশ**তে না পেলেও ব্রুষতে পার্রাছ-প্রতিটি রাইফেল ভেটনগান আর লাইট মেসিনগানের ত্রিগারে আঞ্চাল ধারে ধারে চেপে বসছে স্কই এখন একটা মাত্র সিগনালের জনা অপেকা कराष्ट्र--काशान्।

आरक्ष नहे ऐसम जिल् महिमा द्वारत अरही-মেটিক রিভলবার বাগিয়ে সম্ভর্শনে এগিয়ে वाटक जागरनत त्वरूट कृति मिरक । मार्थ करिन শীতল একটি মাত নিদেশি—টেক কভাব লোলী চলেগাী...চলনা আজ বহুত क्तद्वरी ज्ञात...

চারিদিকে একটা অস্বস্তিকর নীরবতা। আমি সামনের দিকে এগোবার চেণ্টা করতেই প্রদূরীপক্ষার বাধা দিলেন স্পত্ত ভয় পাওয়া মানুষের কর্মসবর কোথায় যাছো?

—আ; ...ইয়ে দেখি মঞ্জ[†]দ কোথায় রামদা কোথার। একানি যা হোক একটা ভিসিশান নিতে হবে। উই কাণ্ট রান বিস রিস্ক প্রদীপদা.....

প্রদীপক্ষার খপ করে কাঁধ টেপে ধরলেন। —না তুমি দাঁড়াও। আমি একলা পড়ে যাব...

আমি আর প্রদীপকুমার তথ্ন প্রামের একেবারে শেষ স্বীমানায় তান্ধকারে একে-বারে অস্ইয়ের মত দাঁড়িয়ে। অব্রে বিভাষিকাময় চমবলের বেহড় এর কলে নেই কিনারা নেই। হেচিট খেতে খেতে এগিরে **ठलाइ त्यारहरा उन्हा इंडिट्स जिन्छ व्यमात**



দিকে ভিন্ড পার হয়ে রাজস্থান বড়ারের দিকে। খতরনাক বিলক্ষ খতরনাক।

মঞ্জা দে যথন বেহুডের এই গ্রামে নাইট শাটিং করবার অনুমতি চেয়েছিলেন ফিম্থ ব্যাটোলয়ান সিকিউরিটি ফোসেরি অধিনায়ক কর্ণেল শীতলে প্রথম সাযোগেই ইয়েস বলতে চুন্ন। সামান্য ইতুগতত করে বলেছিলেন---এব মধ্যে আবার নাইট শ্রটিং? একটা রিখিক হয়ে যাকেছ না?

—কিসের রিস্ক ?

মৃদু হাসি। —রিক্ক ডাকুদের। যে জ্ঞাে পত দশ্দিন আমি একটা আসত স্পেট্র আপনাদের সংখ্য সংখ্য ডিউটিতে পাঠাছি।

স্বেদার রামবিলাস সিংকে জর্বী তলব দিলেন কালে। ইয়েস বলবার আংগ্ তার রিপোট দেওয়া দরকার। আমি ইণিটলেজেকা কি বলতে চায় সেটা জেনে নেওয়া দরকার। কোন ডাকাতের দল বেহড়ের কোন এলাকায় এখন অপারেট করছে খবরটা এখন একমাত সিকিউরিটী ফোমের গোরেন্দা বিভাগই দিতে সক্ষম। আর সেটাই তাদের কাজ।

সাবেদার রামবিকাস সিং এসে বুটে বুট ক্লিক করে দাঁড়াল—হ*ুজ্র—

—মাধো সিং-এর দলের হাল খবর ? স্ববেদার জানাল—মাধো সিং রেওয়াতে একটা এন্কাউণ্টারে ফের্কেছিল গত সম্ভাহে ওর দলের একজন গারেব[†] তারপর থেকে কোন থবর নেই—

—মাখন সিং?

—গত প্রশ**্নে সালা মহকুমার দল**বল নিয়ে একবার ঘরে গোছ। মনে হয় মোরেনা জেলার **ভেতরেট** এখন সে व्यभारति क्रह्म---

-কান ডাকাতির ধবর?

কি যেন বলতে গিবে থমকে স্বেদ্র। আমরা করেকজন অপরিচিত হানুষ। কর্মেল ওকে চোখের ইপিতে

আশ্বন্ত করলেন। তথন সূবেদার কব্ল করল গতে সম্ভাহে আমানের এলাকাতেই পাঁচ ছ'টা জারি ডাকাতি হরেছে, দ্যৌ কিডনাটিগং হরেছে।

-coup ;

-হানজী।

কর্নেকা চাে্থ নামিয়ে কি ষেন ভা্বলেন সামানা তারপর বললেন—থায়ক ইউ স্বেদার ইউ মে গাে নাউ—

বুটে বুট ক্রিক করে সাবেদার আনুবাউট টার্গ, তারপর গট গট করে চলে গেল।

কণেপি বললেন-সৰ তো শ্নলেন এখন কি করবেন বলনে।

উপায় নেই। প্রদীপক্ষারের এ ছবিব জনো দেওয়া ডেটস ফ্রিরৈ আসছে। কাল পরশহর মধ্যে ওই দুশোর শুটিং না কর্পেই নগ। কলকাতা থেকে এত টাকা-পয়সা থরচ করে আসা-এখন আধা-খাচড়া অবস্থায় চলে যাওয়ার কোনই অপ হয় না। হাছাড়া মঞ্চে'র মত এমন সাহসী হোয়ে আমাদের দেখে বাশ্ভবিকই বিরল। উনি যে সাহস করে অভিশ°ত চম্বল-এর য়তুছবি করতে নৈক্ষেত্র –এটাই সংগ্রন্ট। ভারপ্র ষ্ট্রজনের একটা বিবাট ইউ'নট নিয়ে প্রায় হাজার মাইল পাড়ি দিয়ে এসেছেন চাৰ্লের ভয়গৰুৱ ডাকাত অধ্যাধিত এলাকায় ঙেলোহা এটো प्रान्ता प्रान्तात ভাৰলৈ এখনও আমার গা শির শির করে।

কামেল্যান রামানজন কেনগ্যত জন্মতা আমতা করলেন—তাই তো, সবাই যথন ইয়ে করছে তথন……

মঞ্জা দে হেদে ফেললেন—আচা সরবে শাধে অপুনি একাই ডো মরতেন না, আলবাও বাব সেই সংখ্যা শা্নছেন ডো প্রদীপ আর কিছুপ্তই একটেণ্ড করতে চাইছে না।

নার্ভাস হওয়ার কারণ ছিল।

কয়েকদিন অন্গে আয়ুৰ্ ন∷ধ′ম⁴ বৈহাড়ের প্রায় পশ্যাশ মাইল ভেডরে একটা পর্নালশ আউটকোভেটর কাতে <mark>করছিলাম। আমাদের ছিল ডাকা</mark>তের স্থীন। প্রশীপক্ষার শেখক চ্যাট্যক্রি^র, রবীন বানজি স্নীল ভট্টাচার্স প্রভাতদের নিয়ে প্রায়ে ত্রিশক্তনের একটা দলের গ**ু**লা চালনার দ্শোর চিত্তহণ করা হতিকল। শটের বিরতিতে আমর। মাঝে মাঝেই গাুলি গোলার আওয়াজ পাতিক্লাম। এখন আমাদের নিজেদের শাটিং-এ এত বেশী শব্দ হতিহল যে দার থেকে ভেসে আসা শবদ্টার ব্যাপারে কেউ বিশেষ থেয়াল করেন। খেরাল হল লাপ রেকের সময়। বৈছ্ড থেকে আম্লু স্বাই সমূদ্ধ উঠেছি ৰাণ্য থাৰো বলে হঠাৎ দেখি আমাদেই সিকিউরিটী ফেমুসের একদল একটা জীপের ক্রুছে দাঁড়িয়ে 2.2 উত্তেজিত ভিশাতে কি যেন THE ST. निकारमञ् अध्या जारकाहमा करार - स्व

জপরাজিকা/রঞ্জিত মল্লিক ও রাজন্তী৷ বস্ফু



মেক আপমানে শম্ভুর সন বাংপারেই একট্নান বেশা কোভাছেল। সে সরল মনে গিয়েছিল বাংপারটা কি দেখে আসবে বলে। আসতে আর পারেনি ওখানে এক বিকট চিংকার করে দড়াম করে পড়েই অজ্ঞান।

পারে জানা গোল সব। আমরা বখন
শানিং করছি ওখনই ডাকাতের একটা দল
ওই এলাকা নাকি পার হয়ে য়াজিলা।
আমাদের গালি-গোলার শানে ওরা প্রথমে
থারড়ে হার। তাংপর গোটা বাংপারটা না
বানে ওরা বোকার মত হঠাৎ সিকিউজিটী
ফোসকৈ তাগ করে গালি ছাজ্জত জারভ
করে। সিকিউরিটী ফোসের্ল জারা এই
রক্ষা একটা আক্রিছক অবস্থার জানে
তৈরী ছিল না। তারা এলেছে প্রধানত
আমাদের গাভা দিতে। ক্যাভেড জিলা
সিং। বাইনোক্সার দিয়ে দেখত গিয়ে
গালি চালাতে চালাতে বেডের গোলকধারার জানাত চালাতে বেডের গোলকধারার জানাত চালাতে বিজ্ঞান বিন্দ্র

ফায়ার! ডাকা্ডদের হাড়া করান্ত করতে এরা চার মাইল প্রাণ্ড হাড়েছে। হার মারে পাকা আমের মাড ফেলেছে ডিমটিকে। ফোসের একজন জণম হারছে। ছাকে জালৈ করে তংকালং মারেনার হাস-পাড়ালে পাঠানো হয়েছে। হারপর সমস্ত এলাকা ডেয় ডাল করে গাড়েজ এ প্রক্তি করে তিনটি লাকা খাকে পাড়রা গোট। এইনত খোলা চলছে যাদ আর কাউকে পাঙ্রা থারা

শানে, শানিং আলাদের যাথার।
এতবাড় একটা এন্কাউণীর হায়ে গেল—
আমরা ব্রুতেই পারলাল না। শেথল
চাটাজি বলকে—িক সর্বান্ধা আদিইং
করতে এসে শেষ পারল প্রাণ খোলার
নাকি? ও বঞ্জন মঞ্জা দেবীকে বজ্লা
এখনি পাক আপ করে চল বারের ছেলে
ঘার ফিরে যাই.....

রামানক সেনগাঁশত এমনিতেই সামাক খংগাঁতে, প্রকৃতির মান্য । তিনি শুরুষ চাটাজিকে সংক্ষা স্থান দ্বিত্র পরি হয় প্রেচিক পার্থ মুখোপাগার ব্যাপ্তা সোমা মুখোপাগার



পিপটা এসে খবর দিল—স্মানা আরও তকটা লাশ তেলেছে। টাকটারটার লোল-দের কী ফাুডি। আসলে ওরা বড় ইনাম পাবে খনেলাম। ডাকাত মারলেই নাকি কাশে বিওয়াডা।

প্রদীপকুষার নিজের বাভিগত দামী **একটা রাইফেল আর একটা পি**ত্তল এনে-বোদেব থে:ক। ও-সংটো সব মিকের স্থা, ওপা সংগ বাখাতেন। മ≱ ঘটনা শানার তিন পিশ্তলটি হাতে করে যারভেন। ভাগোটা নিঃসনেদহে কাছে এসে হামানন্দকে বললেন-নামবাব ্মান্টেও সংক্রিধের কলে মনে কিন্তু। এতগালোলাশ পাড যারাই পর ভেরেছেন ওরা সর পালিয়ে ওবা নিশ্চয় আশে-পাশে লাকাহ আছে। চান্স পোলই হিউবাক করবো দ্বাল্ব ভাকাত ওয়াতে ফেমাস আউট-ল। একের করণ করণ অসম্ভব दा,भाता

্বোল্বের মণি ভটুচার্য এর কিছ্,দিন আনুদ্র একেটিরনেম চম্বল এলাকায় মাটিং क्रान्त क्रीस्म-एमा **ছ**িব্র जारिक विशेषका । जारिक के स्वास्थान আর রেহয়। মোরেনার চম্পক ■ কাজৰ কৈক্টোর অধিবনী আমায় গালে कार तकाका एक प्रामाप्टे *ন*হার্শালে ওরা ^{द्ध}रहा अग्ल सम्पन्न-नमस्य कात् तमार राज ভিক্ত। _{ভালে} ভিক্তাপ করতে পারলে তো **ब्राप**्र काथ हेप्काय प्राप्तका। रचक्रेकीरहरू शहर রাশস্ম জাদার করা এথনকার ভাবাতির এক**় মাজবড় ক্লেওরাজ।** সেখানে ওরা- হিদ্যকৈ একবার তুলতে পারলেই তো নাম হাতে এক চণ্ডল স্বান জাবিনের রোজগার হাতের মুন্নীয়। কিন্তু ওদের রাজ লাক শেষ পার্যাত ওরা পারেনি। আফটার অল ওরা বোন্দের ফিল্ম লাইনের গ্রান্থলাক বাজাসে উল্লা গাংধ পেয়েই হাওয়া। রাত্রে সদলবেল ভাকাতি করতে ওসে ভাক বাংলোয় হাকে ওরা দেখে শাখা উড়ে গোছে। মাঝখান থেকে বেচারি চৌকি-লাবের জাবিনতা গেল। রাগের চোটে ওরা ওকেই শ্লোঁ করে মারল।

র্মোদন ওখানে দাঁড়িয়ে পর পর শোষানো চারটে রঞ্জান্ত লাশ দেখে আমার তা মাথাটাই বোঁ করে ঘুরে গেল! মধা-প্রদেশের গাঁয়ে-গঞে চাষাভূষোদের দেখতে যেমন হয়, এদের 'পোষাক-আশাকও অবিকল সেই রক্ষ। থাকি শার্ট মা**ল**-কোছা দিয়ে প্রামোটা স্তোর ধৃতি। সভেগ কাপডের একটা ঝো**লানো বাাগ**। তাতেই ওদের সর্বাস্ব—সম্পত্তিই বলনে বা যা-কিছু। একতাজা কারেন্সী নোট। এক-ত্রেল সোনা। একরাশ ব্রুলেট। বিভি গাঁলা দেশী-বিংলতী মদের বেড়েল। কিছু ত্র্ধপর। একটা জীপ রামায়ণ। খুচ্যো পয়সা। দেশলাই। .আর প্রতেদকরের সব্পো একটি করে দাম**ি রাইফেল। একজনের** ट⊺हें रक्षरक्ष অংকার একটা টেলিস্কোপ ज्याना तमा ।

সাজেণ্ট উধম সিং একদিন কণ্টেশ আমার গণপ কলৈত করতে বালছিল দারণে একটা কথা। চন্দাল একবার হৈ মান্ত্র কণীলল কলত কলে বৈহুড়ে নোমে বাব, আম্মিউনেশান কাউনীতে তার নামে जरका जरका अवसे। युप्तने देखी हस्त

অথাৎ প্রতিশের গ্রুণীতেই হোক বা ফোন কোন বিশ্বাস্থাতকের—একাদন বলেটে থাঝারা ব্যক্ত নিজে তাকে এই চন্দ্রলের রন্ত-পিপানা স্বাটিতে শেষ নিঃশ্বাস ফেলতে হবে। কি সাংখাতিক কথা ভাবনে।

সেদিম আর লাণ্ডের পর শাটিং কর।
সম্ভব হর্রান। আমরা তড়িঘড়ি লোকেশান
পাক আপ করে গোরেনার জিরে গিরেছিলাম চারধারে সিকিউরিটী ফোর্সের
পাহারার....

অন্ধকারের মধ্যে রিভলবার বাণিরে ঠিক বিভালের মত সম্তপ্ণে সাজেশ্ট উধ্য সিং এণিরে বাছে। মুখে বিভৃত্টিক কাভার গোলী আজ জর্বে চলেগী.. চলানা বহুত জর্বী হাার...

চোখের নিমেষে বেন ভোজবাজি হল একটা। আমরা ছবির মত সাজানো এই গ্রামে যখন এসেছি তখনও প্রেষেরা ফেরেন। ছোয়েরা কোতাহলী চোখে দুর থেকে আল্লাদের শধ্যে দেখেইছে। মঞ্জা দে রাম নদদ জোনপ্রাত আত আমি সালাদীরিটী গার্জ নিয়ে গ্রামে তোকার মুখে দাঁড়িয়ে। জোয়ানর। রাইফেল বাগিয়ে দকে দকে প্রায়ে চাকেছে ভোর-টা-ভোর সার্চ করেছে. প্ৰম করেছে মেয়ের নাকি দাপটের সংগট সে সর প্রদেশর জবাব দিয়েছে--লংকা করে না প্রামের পরেরেরা যখন মাঠে চারের কাজ নিয়ে বাসত তথন এসেছো সাচ कतरक रहायका मनद जा रक्तजाना । शाः थाः ' বেলা পড়ার সজো সংখ্য গ্রামের মানুবেরা একে একে ফিরে এসেছে। ভারা ভো क्षिआब्रे-मा स्ट्रा ^६हार्_{टी} ुत प्रश জ্ঞাক । ভিনদেশী ঘান্য ফলপাতি নিয়ে এখানে কি করছে? ওয়া গাঁও করে এসেছে। প্রশন করছে। উধয় শিল এনেত কালিসে সংগ্রহ আজ ভোমাদের এই গ্রামে বাঙালীবাবলো সিনেমার ছবি তুলাবে খুব মজা হবে---

সিনেমা ওরা বোঝে না অথবা ব্রেতে চার না সারাদিম হাজ্ভাগে প্রিত্যের পর ঘরে ফিরে কোথার একট • বিশ্রাম করবে তা নর—এ কোথাকার এক উট্কো উৎপাত কটে গোল? আঁ?

মোড়লকে ডাকা হল।
সে বললে—আমি একা কিছু বলতে
পার্ব ন। পঞ্চাতেত বস্কু।

বসল পঞ্চারেত। প্রচুর তকবিতক হৈ হল্লা করে ওরা বলল—ভোমাদের সংপা এবা এসেছে কেন?

- কাবা :

—এরা আমাদের দৃশ্যম। ...তোমরা চলে হাবে আব এক একটা নোক তের দল এসে আমাদের গাঁরে হামলা করবে কেনা করবে মারবে ধরার আটারে ক্রেম পালিখ একছিল বলে—তথ্য ইতথ্য আমাদের বাঁচারে?

কাহিনী ॥ সমরেশ বস্থ প্রযোজনা ॥ পিকস্পরিবেশনা ॥ মোক্ষা ফিশাস্ চিত্রগ্রহণ ॥ শক্তি ব্যানার্জী চলচ্চিত্র ॥ পূর্ণেন্ পত্রী



अजाबस १ ५वा जाशहै।

রী মা — প্রাচী জন্মের (বেহালা) — ফালমারা (হাওড়া) — ফালমা (গিবপার) — লামার (ক্রিফাটাউন) — ফালমা (বরাহনগর) — প্রকার (বড়াহনগর) — ক্রেফাটাউন) — ক্রেফাটাউন)





সাগ**ু ছু**ধিভিরে কড়চা জয়। ভাদ্যত**ী ও চিন্ময় রার**

স্পলে-বাংগ উধয় সং সর শকে আমার শরীর জনলাছ। শালা এরা ভাকু ানহাত্র প্রাহ ছাটেড়া হারামা •ই'ল অন্ত্রাচার করে 🤉 কাসাদের ওপর অনাথ'ক গাকাংছ বকো क्षांक ফেন্ডেনের ইন্ছাত নন্ট করে? খুন-খারাবী করে? আরে ভাদের হাতে রাইফেল আছে আয়ানেরও আছে আয় মায়ের দুর্ধ ছাদ খেছে থাকিস তো লড়ে যা শামনা-স্মানি কড়ে যা, বাহাদ্যবের মত কড়ে যা --লকাভ ডেচা একদিন হাবেই--

কাটেরশান কোনশানী আমবা এখানে জাক গোটা রাত থাকেন। দু মাইল আগুন্ পিছা সহরা স্পীকা করে দাও। একটা মার্চি বেরা প্রশাস না পারেই দেখি শাল। ডাক্রা কি করে নিন সাকেশ হয়ে আসকে আপনার। শুটিং শাুবা কর্নুম।

ভাষা-টকা মুহুতে সজাব হয়ে। ওঠেঃ চ্রিদিকে কডনিং হজে। পালা সু মাহল জাষাগা জাছে। প্রশেন থাকছে শ্পু
পশিচ্চানিকের বৈহুত। হৈছ কোষাটার রিপোটিং হচ্ছে ঘন ঘন এমন সময় বেতারে খারর এক— প্রদীপক্ষার কোকেশানের দিকে মাছে করছেন সংক্য সিকিউরিটি আগে সিকিউরিটী পেছনে। ক্যারী নদীর শ্ব দিকের ভালে যে রজ্তা প্রাভি ওখান দিয়ে নামবে...ওভার।

ভান্' গাংগালাীর বিরাট জেনাজেন এক সময় সশনে চালা' হরেছে। অনেকগালো বাতি জালো উঠে চির অদাক রে পতে থাকা বহুড়ের বিভাগিরকা থেরা এই গামটি আর হুসাং আলোর সনাার জেসে গোছে। শিক্ষাীর একে একে মেকআপ নিয়ে ভাকতের রূপ-সাক্ষায় ক্যামেরার সামনে এসে দাভিয়েছেন। শাসকলী অবনী চাটাজি সাউত্ত ভ্যামে বসে মানিটার' শ্লেছেন্ সটের বিহাসালি নিয়েছেন ক্যামেরায়ান রুম্দেক্ত প্রির্চালিকা নজা হৈ এরপর একস্বর টেক চেরেছেন। শুরু চুয়েছে চির্মান্ত্রের প্রাচ্

্রাইছা শুড়ারী রাই কৈ লাগে নিমে ভাকু সুলভাল নিহ ভাজত করিছে লাগে লাগে গুলুতে র শান্তর করিছে লাগা। বডের বেগে সুলত ন রিং সুলকারন রাজের আব্দরারে রামের উপর বালিয়ে পড়েছে চছাদিকে গুলী চলাছে সুলুক্ত গামবাসী ছোটাছাটি বর্ম পাণ্ডরে পিকট আত্নান করে কেন্দ্র সুলভান সিং জীঘালোর গাড়েরেও পড়েরে সুলভান সিং জীঘালোর হাং ছাং ছাং করে হাসছে ভারে সিটিয়ে গোড়ে শুভুলী বাই অব্দেহক ভার চাটায় কেন্দ্রে কল বেরিরে এসেছে এই রক্ষ এক উত্তেজিত মুকুতে—

হ্বিয়ার...হ্মিয়ার বালের মত ক্ষিপ্র গতিতে লাফিরে উঠেছে উপম সিং ওরাকী টকী সঞ্জীব হয়ে কিছা বলছে—চেক টু ইরোর গ্রাট জাং...ওভাগ।

উপম সিং চেচিয়ে উঠেছে নক্ষ করে। কোমপানী বি অন ইয়োর পার্ড— দুশ্মন নজদীগ হায়ে হু-শি-হা-র!

লাইট্র জফ লাইট্র জফ। ভাল, গাংগালী লাফিয়ে উঠে জেনারেটারের জেন দ্টির বংধ করতেই ধন শবেদ জেনারেটারের প্রেটাডেও একট কাকুনী দিয়েই নীবৰ হয়ে গেছে। কি...কি কি কি...কি। এখন শা্ধ্ কিটিয়র ভাক। আই মধ্যে পদ্ধি বহুছের দিব পেকে ভেসে আসা বাভাগ কিসেব শব্দ শা্কভে সাজেলিট্ট উধ্য সিং জ্জাপ্ট একটা কুলুরের ভাক শোনা বাছে না স্পুন্ন তোকা পাতে!

আমাদের হাদপিন্ত হোন লাফাকে প্রদাপক্সারের একটা হাত আমার কাঁচে শক্ত করে ধরা: স্বামত গ্রামটা নিশ্ছিদ্র অবশকারের নিশ্ছে করে চাছের মাধ্যে শাক্তরি হাত ধরা রাইফেলের নাল এখন সাম্বিত বাকা করে পাজের পাজের অবশক্ষানার মানিতে বাকা করে প্রজ্জিত অবশক্ষাকর এখন সেহাংগিন্ত হাট্য করবার জন্য স্বাগ্রহে অপেক্ষা করছে। হার ঈশ্বর্ম

ফায়ার !

উং কল্পনা বর্ন সে দুশার বল আক্রমনারের বৃক চিত্রে একটা নার্ম শব্দ — স্ট্টইইইশ ক-শাক-শাক আলোর রোপনাই ছুটছে তো ছুটছেই ক্রমলত টেসিং বুলোই খুলছে দুশামনকে অভিশাণ বেহাড়ের আলিতে-গলিতে সেই স্থান উল সিং-এর ইয়ে সাহার হ্লোভ হারে আল মরনাই হারে দেখ লো ইরে জিন্দেগা মোতেশের রে জিন্দেগা আজ ক্লমলে হে বাতা হারা.

ভোর রাতে অর্ধ'ন ভ আমন্ত্রা সবাই কো গাতিকে ফিরে এসেছিলাম মেরেনাতে অভোগ নিরীহ ফিল্ম টেকমিলিরান একং লিলে করোকজন ভারপর একদিন গরেই আমা কলকাভায়। হাঃ!

अस्त के निर्माण के निर



প্রিবীর ষেমন তিন ভাগ ছল এক
ভাগ স্থল, সাার নবক্ষের মাত্র পার্যাপ
কি সাইতিশ বছরের জীবনে তেমনি ভিন
ভাগ ষেরে এক ভাগ ছেলে। এ হেন নবকৃষ্ণ
ভাহলে তা কলির ইয়েই বটে। কেলেব ধরতে হয় না মেরেবাই কর কাছে ধর্না দিবে বসে থাকে। যেমন বসে আছেন সালভা নল্দী এবং জনৈকা। সংগ্রে সংগ্রে হরে গ্রেল : 'এসে গ্রেছে স্যার্ এসে গ্রেছে দক্তন।' বললে বিপাল ভার সেকেটারী।

দ্যালন সালোতা নশ্দী বল কি হে— স্যাব কেব্লোগন বড়ে করলেন।

বিপ্লে বিপ্লো এ প্থিবীর কটেকু জানি এ রকম একটা ভাব চোখে মুখে ক্টিয়ে শেষে মোলা কথাটা প্রকাশ করল: একটা বড় একটা কটি।

ক্তি। সারে একেব্রের লাফিয়ে ওঠার উপ্রকা করেছিলেন। কি ভেবে ডেসিং টেবিলের সামানে গিয়ে দক্তিলেন। নিজেকে অল্পাদমস্তক দেখলেন। নিজেকে রোমিতার মত্যে রোমালিটক ভাবলেন ভন জায়ানের মত্যে জ্যোলন ভাবলেন। তারপার আন্দের করে বলালান ঃ লাগ্রভন্ডার মারে। একট্ট স্থান্তক্তার মারে।

বিশালের মাথায় শার্ট সাকিও তায় বিশ্বর বাহরটি গেল ফিউজ হায়ে...আজে।

অত্য এ বক্ষম প্রিস্থিতিত কি
সমন্ত বাংপার বলে বোঝান যায় নাকি
বুঝিয়ে বলা যায়। এখন সাারের হৃদ্ধের
জেনারেটর (লোড লোডি এর জনা। থেকে
জনবরত বিদ্যুৎ প্রবাহিত হচ্ছে। প্রেত্ত সিংহ প্রমাণিত করার চেন্টায় মাথার ঘাম
পায়ে ফেলছেন। একটা ছোট কথা
জাপবিক বোমা হ্যে বিস্ফোরিত হরেছে
একট, জালেঃ কচি...কচি বললে যে।
মারো লাভ্যুত্তার মারো, ভাল করে
মারো লাভ্যুত্তার মারো, ভাল করে

এই ঘর লংকাকাণেডর জনা মোটেই প্রস্তৃত নহ। আংএর ছালা লিংলা লাজেলভার। সাার চিলপিং উট্উভারে ওপর জামা চাপিয়ে গলায় টাই ঝলিয়ে লাজালেন পোছন ফিরে। লাগভেল্য প্রে চলতে থাকে। সাার টাই এর নট লাগাতে



মহিলাদের মহিমা অনেক। চঙ্ভ দেখে আর বাচিনে। স্কেতা নগদী জানিয়েছেন তিনি আর পারছেন না "অনেকক্ষণ হয়ে গেছে। হণ্ডদেও হয়ে ছাটে এল যায়ক ওর্ণ। তার বক্ষরা হল এই একবার্মটি নাচে আসন্দ নার মাড়াম আপনার জনা অনেকক্ষণ ওয়েও করছেন। আপনার সংগ্রানা করে জলপার নাকামির বহর উপলাম্ম করে সারে একদম গাছ থেকে পড়কেন ঃ তাই নাক?

: অন্তের হা সার্ব। একর্নি চলুন।

একবার নিজের দিকে তাকিয়ে একবার
স্টেড-ব্টেড তর্নের দিকে দুন্দিপাত
করেই দুর্মিজনার। নাহা আর পারা যাবে
না। মেরেদের চ্টোখনায়েখ দেহের সবহি
দ্বিশাল। ত্যুদের সামনে এভাবে যাওয়া
যায় দাখি তর্নে এগর ব্যাপারে ভামনি...
ব্যুস্টিত মেন্ন কাঁচা ব্রিশ্রটাত তেমনি...

ত্রাণের মূখ হাঁ। একটা মাছি অনায়াসে সেখানে চারবার চক্কির দিতে পারে...পেন্ন সব বগপারে '

এইভাবে কোন মহিলার শামনে যাওয়া ধায়---

ঃ ঠিকই বলেছেন...সার মহিলা ঝাপারটাই বড় গোলমেলে অপুনি বরং তৈরী হল্পে অপুন...আমি ফডক্ষণে আমার ব্যক্তিত বাবস্থা কর্মি।

তথ্বের অণ্ডর্থানের সংক্রা সংক্রা সার্র নবকৃষ্ণ হ'লের ঘারে কেউ মূছা। বার কিনা জানিনা কিন্তু গোলমেলে কথাটার বারে মূছা বেতে দেখলাম একজনকেই। পাবভিত্তির এক ধারাছা দেবলাস ছারোদাস ছারোদাস হয়েছিলেন। লোলমোলে কথায় ধাক্কায় নবকৃষ্ণ যে বামকৃষ্ণ হতে চলেছেন। এইসব দুলা দেখে বিপ্রেলর মাথা ঠিক। খাক্কেন করে। সে প্রায় রেলে গিয়ে জিলোল করে ঃ কি হল বসলেন যে। এদিকৈ সাল্ব হত ভাবছেন ততই মনের মধ্যে হাক্সিকা মেন্তে উলি দিচে। ঠগ বাছতে গাঁ উলোড়। জভংপর কয়েক মাহুভূণ বামে গেলা। এক সময় ঃ আলবামাণ্ড। দাভে।

ঃ আগুলবাম i

म्बन दल्ला य यीम ग्रीनाद्य यात्रा

সারে নবক্ষ। সারে উপাধিটা এসেছে পার্বপ্রধনের দৌলতে ধারা একদা ব্টিশদের স্থানজরে ছিলেন। সেরক্ষ এক বনেদা বাড়ির এই নবক্ষ বিনি জাবনকে ইতিমধে। বাহামটা তাসের মত্যে ছিটিয়ে দেখে নিয়েছেন। তবে এখনো তিনি বড় জাসটা

সাগর সেনের পরিচালনায় রবির্দিমর

न्य नमाध्य

वर्गाम्य निष्यान्य

৯৪ই আগষ্ট রবীন্দ্র সদনে সংখ্যা এটা

॥ প্রখ্যাত শিক্ষণী সমস্যে ॥ প্রবেশ মূল্য—১০ ৭ ৫ ৬ ৩ ভক্তাতে পারেননি। দিশ্র আর ছোমটার ক্ষিকটা জানা হর্ননি তার। জাবনের অজ্ঞর জ্যোকার মধ্যে খাডেল বেড়ারে মধ্যে খাডেল বেড়ারে তেই জিনি নিঃল্ব হরে গেছেন। প্রাচুকের ক্লান্টিরে বাংকর মধ্যে জক্ষ্যে কেই জোন যার দিকে তাকিরে পারে নিয়ার ক্ষানি বাংকর নিয়ার নিয়ার ক্ষানি বাংকর নিয়ার নিয়

গালগতি জাবা হুমেছে কলোজর জানলে আনকো সায়িয়ার নাগর নার্কুক চরিত্রতির সংবাদের বিকর্ত্ব বিকর্ত্ব করেলাকে বিকর্ত্ব করেলাকে করেলাকালিকে করেলাকালিকের করেলাকালেলাকানি



ক্যালকাটা মাভিটোন শ্টেডিওতে তর্ণ পরিচালক বর্ণ কাবাদী ছাটির ঘটা ছবির মাটিং দেশ করলোন। ঐকাতান নিবেদিত ও ছবির ফাহিনীকার ও চিরনটোকার পরিচালক করেং। প্রধান নারী চরিতে র্শদান করেছেন মাধবী দের মধ্যে অত্তর ই কল্যোপাধায়। ও ছবির অনান্য দিশেপীদের মধ্যে অত্তর ই কল্যোপাধায়। জানেশ ম্থোপাধায় সতা কন্দ্যোপাধায় গাঁতা দে, নবাগত স্নাম শিপ্রা চক্রবর্তী

মিনাভা বহং, শনি : ৬॥টা বনি : ৩টা ও ৬॥টা

আনন্দরাজ্যর: প্রভাপতির আকর্ষণ
দশকের কাছে দর্নিবার।

ম্পান্তর: প্রযোজনা একক্ষথায় চমৎকার।
 দেল: নাটকের টিম-ওয়াক চমৎকার।

TS OF

কালা নানাকাঁ, নিমালকুলার, স্থেন দাস্ ক্লোনাকাঁ, বিশ্বা বিল্লু, স্থিতা সান্যল ব্যানাকাঁ, শিপ্তা বিল্লু, স্থিতা সান্যল মোনা, নীলিমা, স্লেকা চৌধ্রী এবং বিলাপ রাল ও বালনী নদদী। আলো ঃ তাপস সেন। নাটক : সমল ম্থাকাঁ। সান : স্বাম লাকাংতা। মণ্ড : স্তেশ ক্তা ন্তে ঃ স্তেল্ডা মণ্ড : স্তেশ মাহিনা। নাট প্রিচালনা ঃ মাহেন্দ্র মুক্তি ्रिक्षा स्मृती क कामाना जिल्ला



সনেশীতি দক্ত এবং দ্বৈজ্ব জাওয়াল।

শিশ্ব শিশ্বী মাণ্টার শাণ্ডমারে অভিনয়
এ ছবির অন্যতম আক্ষণ। সার
সংখোজনা করেছেন : তেম্বন্দ দেশথো কণ্ঠদান করেছেন : তেম্বন্দ মাখাজনী শ্যামল মিল্ল এবং অর্রতি স্বাক্রালায় ছবিটি আন্তিবিলন্বে মাক্তি লাভ করবে।

লগাতি পরিচালক নচিকেতা ঘোষ নিগত সংতাহে 'সম্নাসী বাজা' ছ'বর গান द्वकर्ण क्वतलान। शाहरतान : शहरा दम। अनीम मुक्कारतज्ञ श्रायाजनाम निम्भीसमान এ ছবিৰ চিত্ৰনাট্যকার পরিচালক : প্রীয়্ষ বস্:। নাম ভূমিকায় অবতীণ হয়েছেন উত্তয়কুমার। চলতি স**ত্তাহ** থেকে তৃতীয় পর্যায়ের শ্রটিং শ্রে 5.00 থিয়েটাস এক নদ্বর च्छे**ाँख क**ट्ट । नागाएं पण निन श्रात শুটিং চলবে। অনান চলিতের শিলপারা হলেন : তর্ণ-কুমার রসরাজ চক্রবত ী, কল্যাণী মুখ্রল কল্যাণী অধিকারী সংলতা চৌধারী. প্রমিজা তিবেদী রবীন বলেনাপাধায় এবং স্থিয়া দেবী। চিত্তহৰ করছেন : বিজয় टचाय ।

এ মাসেই 'অপশীশ্বর' ছবির প্রমান্ত্র শ্রুটিং ছবে টেকমিসিয়ানস म्हें पित्र জানালেন অন্যতম প্রয়োজক উপয় সামশ্য। প্রতিভা শিকচাসেব পতাকা জলে নিম্মীয়মান এ ছবির পরি-চালক অর্কবিশ্ন মুখোপাধায়। কাহিনী বনফ লেব। নাম ভূমিকার অথি ে ডাভার অংনীশ্বরের চরিতে রূপদান य शहर व पेखनक्ञात। मत्था बाद्यन शाधवी मृत्या-भाषास मृश्चिता स्राथाभाषास €त्र-কুমার সরেতা চট্টোপাধান অসীমকুমার, निकाण तास, भाष मादभाभागास वदश मानाक। अभावि भविष्ठालमा कदर्बन : रहंकन्ड गरुवानावाहा ।

কিছ-দিন 7有啊 পর পৌরাণিক বাহিনী নিয়ে **ভ**বি বাংলা নিমিতি হতে চলেছে। 'বিশ্বমপাল'। প্রি-ক্রবেন **Бाल**ना একক্:লের প্রযোজক গোবিন্দ রায়। সম্প্রতি রেকডি থের মাধ্যমে শুক্ত ম.হ.ত উদ্যাপন করা হয়েছে। সংগতি পরিচালক অনিল বাগচীর তত্তাবধানে লোবিন-নিম'লা মিখেব গোপালের শ্রেন্ত এবং গাওয়া একটি গান রেকড করা হল। জানা গেল 🦿 ্বর নায়ক সামতে ভঞ্জ নায়িকা াা দে এবং একটি বিশেষ চরিত্র এত করবেন শেখর চটো পাধ্যায় । চিত্রগ্রহণ করবেশ ঃ দীপক দাস।

পালা হাঁবে চুগাঁ খাতে প্রচালক অফল দত্ত 'আমান আনক' নামে একটি নতুন ছবির দ্যাগহণ শাবু ক্রেছেন। এ ছবির কাহিনী আজকের যুব সমাজকে নয়ে। বিভিন্ন চরিত্রে রূপদান ক্রছেন ঃ কলাপ চটোপাধায়ে পার্থা মহেখাপাধায় দেলী এর হাবেন দাল স্ত্রতা চটোপাধায় কেন্ত্রী গোম বিশ্বা বিশ্ব বিশ্বা বিশ্ব বিশ্বা বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্বা বিশ্ব বিশ্ব

ইন্দুপ্রি ক ডিওতে দুলিক ক্তের প্রিচালনার রাণগা রোদির শ্রিটিং ছাত্ প্রাণক্ষে হলেছে। রাণগা রোদি ক্ষেক্তের সংবিত্রী চট্টোপাধার। অন্যান্য চরিতে রুপ দিচ্ছেন ং শেথর চট্টোপাধার প্রজান দেবী গ্রহা দেবিকা অ্থোপাধার প্রজান দেবী গ্রহা দিকাশি রায়। চিত্র দিক্সী ং বিহুর দে।

শৈলেশ দে রচিত আকুনবাণানের মেরে চলচিত্তারিত ছচ্ছে- জাতিং এগির চলেছে। সলিল যেন ক্রুত ভিষ্ণাটো ছবিটি প্রিচালনা করছের মান্য সেন। বিভিন্ন চলিতের দিশ্দীরা হলেন ঃ উৎপল দত চিন্দার রায় র্বী মিশ্র রবি ঘোষ শীপণকর দেও বাজনী বৃদ্ধ চিচ্নগ্রহণ করছেন : মণীশ দাশগণ্ডে প্রবৃত্তক : শৈলেন সরকার।

অভিনেত সংঘ তাদের প্রতিগ্রুত পরি-কলপনা বেশোহাও কলতে আগেক কান ভালায়ে এলেন। সম্প্রতি সংখ্যের সভারা দাংক। শিশ্পী কলাকুশলী এবং দুগত মানুষের সাহাত্রার জন্য রহদান করলেন। এই পথ্য পর্বারে রম্বদান করলেন ঃ অনুপ্রুমার দিলীপ রায় দেবদাস দে অশোক মিত্র প্রণব নদ্দী দেবকুমার দাস সৌমিত চটো-পাধ্যায় গোবিন্দ দে সুখেন্দু চট্টোপাধ্যায় গৌর মালাকার পবিহকুমার চটোপাধাায় এবং নবকুমার দাস। বিভিন্ন পর্যায় আরও अत्नक मार्का तक मान कत्रवन। तक क्या थावर १५ ६ म १.३ १ १ १ । अक रहत প্রতিত রাখ্য যায়। দশ মাস প্রতিত দেখা कार-श्रीम कि.म. कार्या कार्या शक्ता ব্যাক্তকেই ড্যেনেট করা হবে সাধারণ মানব্রের সাহাযো। প্রেফারেক অন্যায়ী প্রথমে সাহাযা পাবেন সংঘের সভারা। অন্যান্য সিল্প জারপর কলাকুশলীরা।

কাহিনীকার চিত্রনাটাকার এবং পরি-চালক হিসেবে খ্যাতি অজন করে স্থেন দাস আবার নায়কেব ভূমিকায় অবভূমি^ন। 'লালভেল্ড' ছবির নায়ক মাস্টার স্থেনকে মনে পড়ে? আনার বড় বেশী করে মনে পড়ে। তাই জো অগীত প্রাত্যালো डेम्बन हाब ७१० भाराजा। मान भरक তাঁর ছিলভিল সংগ্রামী দিনগালির কথা। একে একে এতেরম করে নিজ্ঞাক পুত-ণ্ঠিত করেছেন সূথেন। এক জ্যেত্। সপ্রে সান্দর চোখ। মাথায় উত্তাল চেউয়ের মতা এক ব্রাশ কালো চুল। সহজাত সেই মিন্টি হাসি। সফল বাংলাছবি অচেনা অভিথিব কলার হিল্পী ভাসনি 'অনজানে মেহ্মান'-এর নায়ক। পাদে আছেন সমিত ভল। বাংলায় দ্বরূপ দত যে রোজে সোট করছেন সুখেন। সুখেন নিজের রোলটি দিয়েছেন সমিতকে। তিলিচত নাায়কার ভূমিকায় অনেক দিন পরে এলেন স্মিতা সান্যাল।

টেকনিসিয়াদস স্ট্রতিথাত তারে জেতা একটি সেটে কোনো পাহাড়ী অঞ্চলে একটি বাড়ি বেখানে নায়কের সংগ্রা নায়কার সাজাহ ঘটনে দেখানা নির্মান কিবার জনারকের সমসেনা অথচ কিছুই সে করতে পায়ছে না এ-রকম ভাব ফানতে হবে একসপ্রেম করতে হবে, পরিচালক জ্বানেশ মুখাল্লী একটা বিহাসালি চিট্টালন। কামেরার জোনের বাইবে দাড়িয়ে জাম্ব দাড়ি হেনে সমিত কিছু দিছিলেন। মটটা বেশা কামানা বেমান জমে থাকে সাধারণ ছিলি হবিত।

অসাধারণ হিলি ছবি করার বাসনা নিয়ে এ ছবি তৈরী হচ্ছে না। এখানকার ইনভাশ্যির সংকট মোচনের উদ্দেশ্যে
সংখ্যাগরিষ্ঠ দশ্ধিদের কথা ভেবে হচ্ছে।
তদ্যপরি এই ছবিতে বঞ্চা সংক্ষাতর প্রতিকলন থাকবে—গঙ্গেপ রুচিতে বঞ্জরা।
আগোর দিনে যেমন ছিল। সারা ভারতের
অর্গাণত দশকি সর সমগ্রেই যে স্বপ্পবাস
পরিহিতা নায়িকার নাচ-গান ভিলেনের
অবাসত্ব কাশ্ড-কারখানা স্বর্শান্তমান
নায়কের অবিশ্বামা বীরম্ব দেখতেই চান
দেটা সভ্য নর। যে কার্লে বুচিসদপ্তম

ভাল ভাল হিন্দি ছবি আক্সকাল বৰুৰ সফিস সফল। এমন একদিন ছিল বখন কলকাভার তৈরী হিন্দি ছবি সারা ভারত থেকে পায়সা নিয়ে আনত। এই ছবির মাধ্যমে সেই চেন্টা হচ্ছে। এবং একইভাবে শ্ধ্যাত বাংলা ছবির শিল্পী এবং কলকুশলীদের নিয়েই এই প্রয়াস।

> - न्हें फिंड नः बामनाडा ১৮।৭।৭৪

রংগরস আর রোমাঞের ভিয়েনে নতুন রসোমালাই



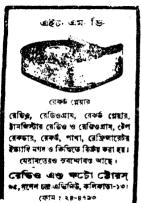
ম্ল-কাহিনীঃ রবি খোষ

উত্তরা ঃ ইন্দিরা ঃ আলোছায়া

ইলোরা (বেহালা) নিউ তর্ণ (বরাহনগর) পার্বতী (হাওড়া) মারাপ্রেরী (শিবপ্র) মীনা (পাণিহাটি) রুমা (বিরাটি) রুশাঘাট টকিজ (রাণাঘাট) নিমলন (হুগলী) জ্যোতি (চন্দননগর

মোসাম্মী এখনও বালিকা ব্রুটি হয়ে থাকতে চায়। বড হতে চায় না। বড হতে ভার প্রবল আপতি। একবার বড় হয়ে গেলে **ছবিব বাজ্যন্ত তেমন থাকে। মা হিচালে সা** সিরিহাসলি প্রেম করতে আনে। প্রথম প্রথম এরক্ম দুর্ঘটনা ঘটতে বৃদেছিল। কলকাতা থেকে হিরোটন আসভে বেশ ভাগর ভাগর চোখ দ্রটি-থবর পাওয়া মাল জিরোরা সব माहेन निर्माहन। किए मिलन माधार नारेन পাওল। যে যেদিকে পেট্রিয়া কোটিল। এ ব শামচন্দ্র। এ এতো বাচ্চা মেয়ে প্রেম । শৌম किम्न रहारस मा। स्वरण एकाद्य के कीरहन কে। কিন্তু হাল ছেডে দেবার পাত ষিক্ষেদ মানে বিনোদ মেহর। মৌশুমী যখন **"कृत्म भए**ए उथन थ्याक लाहेन । गांगासाह বেচারার যাই হোক সেই বিনােদ্যখন রেখার প্রেক্তে প্রভল ভেখন হোসাহাী বলল : রেখাটা বডট হিংসটে। রেখাবলল ঃ রাজা বাজা ইমেক্স নিয়ে আর কতদিন থাকবে, এখন তো সংসাধ হয়েছে। স্তরাং ওসব থেলাধ্লা ছেড়ে লক্ষ্মী মেয়ের মতো হল্ল কর ব্রুলেল





শোনা থায়

সে খার একটা আমলই দেয় না। মাডের বেল মাডেট ছিল তখন। নতুন ছবির নায়ক শামিলা ঠাকুর মৌসামীর ভাষরীর পাতার शास्त्र है बार्क आभारत एंट्रिकेट एक रोजिस पार्टिस एक्ट्रिकेट विकास के प्राप्त है। यानिश्वन-कि काक रक्यन आह? नासक প্রেম নালিশ। নীত ভাষাস বলেছে—ভাইঝির সংশ্র তামি তো প্রেম হার্যছিল সোচার। রাখী ছিলেন সচিয়া করতে পারবো না। সতেরং ছবির নায়িকা সেনের পক্ষে আর গলেজার চাইছিলেন বদল তে হুৰে। নায়ৰ যুখন প্ৰয়েভবেও টুক্ত শুমিলাকে নিতে। কিন্তু রাখী তো নাছে।ড কার্ড তখন নীত্রকে সরে যেতেই হংলা শেষ বান্দা। সেই দাগ ছবির সময় থেকে রাখী অব্দি।

ଆରେ ପ୍ରାୟିକ ଅନ୍ତର୍ଶ ମନ୍ତ ଅନ୍ତର୍ଜ । ଅନ୍ତ লেগেছে। সাম এক স্যাতি শেবটন বা তাজে প্রতিদিন ক-ব্যেতল স্কটল্যাণ্ডর জল অবশ্য স্থার জিনের কাছে স্বামীকে হার গড়াছে সেটার শেহন কোনো ছিসের নেই নানতেই হয়েছে। না মেনে উপায় কি? লৈপণীদের ভেট পাবারত তেমান কোনো

क्षेत्रील नाशिका मीए मिर शका कताल दिएमय तारे। अजाव अधारन । भाताने। প্রাত্ত বেশা। প্রক্রোক্ত নামুক কাউকেই নাকি চুয়াতর সালের ভাষারী ভাতি এনগেজভ লেখা प्रमुख देशक के देश के एक पड़ेर के एकी नवीन निकास अम्रास्थत। आएमत विश्वतीक থেয়ালিপনার ফল সে সম্প্রতি হাতে হাতে নায়শারাও কর্মতি যান না। রেখা প্রেল্ডালের কর্মটেল প্রটিতে নীতু বুকি যোগাল্যলী নীতু ্সিং ছেন্সা মালিনী

ল∸কি কাকু কেমন আছে শাস্ত্র গ্লেক্সাকের নম্ভুন ছাব স্থাবনর শারক। হানেবার নারকার করার আ ট ম স ফি রা র টা ই শিলপী হলেন কলকান্তার স্টিটা সেন। ছবি করার আ ট ম স ফি রা র টা ই শারের আপে এই নারিকা চিতেসকল নিয় नाकि दाशी भारतकारवत साथा महोत्रक শ্মিলার মন ক্যাক্ষির স্ত্রপাত। রাখী বালার-হাট চারদিকে যেমন অভাব আর এখন্ত তা বলন করতে পারেন নি। শ্বামীর ছবিতে শমিলাকে তিনি কাজ কিছাতেই করতে দেবেন না। শেষ পর্য^ত

—অভিজিত

একেই বলে তত্বীয় নয়ন ৷ আপনার জ্যানন কিনা জানি না সংগতি পরিচালক क्रकों क्रिकी क्रे क्रिक क्रकन अन्द्र हम इ.१७६ । क्यांबिका क्यांब राज्य । सार्वाधिक *भारतेता गाहा*क दिल्हा कल्याकेल्व ४५५%,म इतिह गान एके कतात मग्रास एपीय प्रानिक হঠাং উঠে দভিলেন। সংগ্রে সন্থ্যে সমন্ত ব্ৰাষ্ট্ৰত থেমে গেল। কি হয়েছে? গাই-ছিলেন আশা ছেসিলে তিনিও স্তম্ভিত। এ হেন পরিহিথ্তিতে এ≉জন মিউজি-িশয়ারেল নাম ধরে, ভাকলেন সেনিক। সে ৩খন ভয়ে থর থর করে কাপছে। কাপতে কাপতে সে তার দোষ ব্বীকার করল হা অান ঠিক জায়গাতে দাড়াইনি। তখন ে নিক হাত তুলে ওর জারগা দেখিয়ে নিলেন। অতঃপর গান রেকর্ড করা হল।

প্রায়াক্তক পরিচালক নবেশকুমার এক-টান। ব রোদিন ধরে লো জাসমুস ছবির সমুটিং করলেন। প্রচুর অর্থবায়ে একটি ক্লাবের সেট নির্মাণ করা হয়েছিল। এতে অংশ গ্রহণ করপেন ছবির প্রধান দাই অভিনেতা বাল বাপার এবং রাজেন্দ্রমার। এবা এ ছবিতে মানেচার ভিটেকটিভস। কর্মোড রেল। কে এ নারায়ণ রচিত্ত এই কাহিনীর স্থনান। চরিত্রালিতে র্শদান করছেন: ভাবন। ভার र्रथारणस्य जिद्गारक्षमः कामा कामा कामा व

ংল্যেকুন কু: এবং ভ্রেলক। সংগতি পরিচালকঃ দুজেন।

সংখ্যা সভাষ কাউলের মেসা মেশা বেড়েছে। মাঝে মাঝে স্তীন সাবা^র প্রেমা নারায়ণের সভেগ ছারছে। এদিকে 7170 ্রহেন্দ্র সাহার মন থবে থারাপ। ব্যাপ গুটাই বেশ দশনিশীয় কিন্তু বোধগনা হতেই না যে।

গ্যাম্বলার এবং প্রেমপ্রারীর লিখে বিখ্যাত নীরজ বদের ছে'ড় গেলেন। কাবণ তাঁর এখানে বনিবন। না। মোদ্যা কথা তিনি বন্দেবর কনভেনশন্ত্রী रम्हारीच । श्रीराहालकाम्बद्ध स्टब्स । १००० 🖰 कर्त बाक कराज भावतान ना। विक्षार, অ'ততঃ একজন হলেও তো কর্লানে।

কদিন আগে দেবানন্দের বাড়িতে চোর চাকৈছিল। ক্লাণ্ডি পরিস্রান্ত অবস্থায়। চুরি করতে করতে ঘর্নমধ্যে পড়ে ঘর্ম তক্তা পর সে চম্পট দেবার উদ্যোগ করে। আইরিশ भारक रमवासदम्ब वाष्ट्रि माना रतस्यरक्ष[ा] তারা নিশ্চয়ই জানেন কত উচ্চ প্ৰতিল। शानाता कि भटक कका धार्षेट ना। घर्ष টোর একেবারে হাতে নাতে ধ্রা পড়ল। পর্ মানধার হজম করার পর সে স্বীকার कर्मन गांधा धाकरें। करते मिरहा हि स्त् সাহেজের। শুর্মি ছোর নই, ফান।

विदेश हिंद

ক্যাচ ট্ৰুয়েণ্ট ট্ৰু

অতি সম্প্রতি কলকাতার মিনার্ভা চিত্র-গংহে যে উপ্লেখবে গা ছবিটি দা সম্ভাহ ধরে দেখানো হোল ভার নাম ক্যাচ উয়েন্টি ট্রা।

খুব কাছাকাছি সর্মায়ে কলকাতায় এমন একটি চিহিতে করে দেখার মত ছবি এসেছে

किना मानव।

ছবিট্র ঘটনাকাল শিক্তীয় বিশ্বস্থা।
প্রপার্থা বিমান বাহিনীর কর্তব্যবত
দৈনিক। শ্বান মর্ছেমির মত রুক্ষ পাহাড়ী
জয়না বার কছাকাছি নদী থাকলেও শ্যামলা
ভূমির তাশিত্য খবে কম। লোকালয় শূল্য।

এ ভবিতে গ্রন্থাংশ খান কম। বন্ধবা হল বন্ধ ও লাগিত, মানাবের মনের সহজাত প্রেম ভাগবাস্য এবং বিপ্রবীতে তার যৌন-লালস্য যাক কামনা বাসনা, মানাবের জীবন সম্পাক্ত সোগদ্য বাধ অথবা তার ভেতরের প্রাধ্ব প্রবাভি—এইই খণ্ড খণ্ড চিত্রর সম্প্রি এই কাহিনা। কাহিনী না বলে একে ব্যা তারত একটা টেল্ডেসরি আংপ্রপ্রাম্য

ঠিত তাভ নর, বস্তুত গণপ বলে এছবি নেঝানে। যাবে না। কথার পিঠে কথা, যাকর বিনিমার পালা যাকি, প্রদেব সংগ্য উত্তরের অস্প্রতি—যার স্বটাই মানবিকতার নিহাত।

য়া্রির দিক থেকে ছবিটি যাদেশর বিজ্ঞোধ্য এবং মানবিকতার স্বপদের কথা বাল্ডে

আশ্চর্য সভেজ এবং বৃলিষ্ঠ এর সংলাপ। এক এক সময় এর সংলাপ শানতে শানতে হাসিতে কেটে পড়তে হয় এবং পরক্ষমেই ভার সন্দর্শনেই বিশ্মিত হয়ে ভারতে ইয়। সংলাপের সজ্যে বিশ্মিত হয়ে ভারতে ইয়। সংলাপের সজ্যেই হাসি এবং ভারনা আমাদের বিশ্রাত করে সেয়। টি হাসিও সেই সংলাপ আমাদের মনেও প্রশান ভারতে। ছার্টার শারুর, হাসা দরে। তাহাটার শারুর, হাসা দরে। তাহাটার সংলাপ কিছু হাসাকর অথট ইডিয়টিক দ্শোর অবভারণ। থেকে ছার দর্শককে কথন যেন নিয়ে লেছে তার বঙ্গার গভারে। আর স্বর্তাই যেন একটা কেনার বেড়াজাল।

ছবিটিতে ক্ল্যালয়াক প্রণাতিত গলপ বলা। কিছ অংশে যান্দের মহড়া দৃশ্য ছাড়া (ম্থানে দ্বো যাক্লে ছবির ারক তা মানিরে নিতে পারোন, স্বীকার করে নিতে পারোন মারণাস্থ্য প্রয়োগের ব্যাপারটা) বাকিটা জুড়ে আছে একজন সুস্থা মান্দের বিপরীত পরিবেশে পড়ে তার মান্দাসক অম্প্রকৃতা এবং অন্তত্ত্বশ্বর। এবং তার মতিটি দ্বাই যেন নিবিণ্ট হার দেখতে হয়। এ ছবিতে কোন নাগিকা নেই। তাব নাগীর ছাম্বা আছে। যান্ন ক্মনা-ব্যুসনা

ব্টেনে সত্যাজং রায় সম্বাধিত



সম্প্রতি সন্তাজিং রাম থখন বিটেনে গিয়েছিলেন তখন তাকে দটি অনুষ্ঠান মারফং সম্বর্গনা জানানো হয়। প্রথম রয়েল কর্লেজ এটা তাকে অনারারী ডক্টরেট উপাধিতে তুরিত করেন। স্বিতীয়, গত ২৩লে জনে থেকে ১২ই জুলাই প্রয়াত লাডনের ন্যালনাল ফিফা থিয়েটারে বিটিশ ফিলা ইন্সাটিটিউট কর্তৃক প্রীরায়ের ছবি প্রদর্শন করে। আধানে তার ফোটামাটি সব কটি, ছবিই দেশানো ভয়।

ওখানে স্তামিং রারের ছান্ধ দশক যে বরাবরই বেশী এবং ব্যটনের লোকেদের কাছে যে সীরাদ্ধ বিশার মিনিতে প্রশাস পার্য এই অন্তান এবং সম্মান প্রদূর্গন ভ্রমি আর একবার প্রমাশ করছে।

ছবিটির গণপ্রার জোসেফ ছেলসেঁ, প্রিচাশক মাইক নিকলস (দি প্রাঞ্জেট খ্যাত) ছবিটি দেখার পরও অনেকক্ষণ ভান রেশ থাকে। কয়েকটি নিঠের এবং করেকটি প্রতীক দেশ্য মানক ভবিপ্তাব লাডা দেয়।

জভারে বুলা মান জাভাবেল পার্টক অবশাই দেখতে ভলবেন না।

একটি চেক ছবি

সরলা মেমেরিয়াল হলে দেখান হয় চেক ছবি টু থিংগদ ফর লাইন। ছবিটে রঙিন। পরিচক্ত জিরি হানিবল:

ভূবিটিতে বত্তমান যুক্তার সমস্যা ও মুক্তবার কথা বলা হয়েছে। তার সংগ্র আছে এ যুক্তার মানসিকতা ও আবেগের জম-বিকাশ।

এখড়াও ছবির গলেপর বক্ষা আছ একটি। ছবির নায়ক প্রথম পর্যারে উত্তর নোলা আন শুলর অস্কান্ড আন বিল্লা করে এক খানতে এক বছর স্বেচ্ছা-প্রমেব বিনিময়ে যে অর্থ পাবে তাই দিয়ে ফির গিয়ে একটি জ্ঞাট কিন্দের বলে।

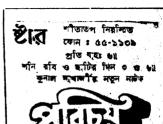
এক সময় ওথানেই সে একটি মোয়কে ভালোবেসে বিয়ে করে এবং তারই আত্মারের বাসায় বসবাস করতে থাকে। কিম্পু নিজম্ব গান্ডর অভাব নিয়েই প্রামী-ম্বার মধ্যে ক্রমে ম্নোমালিন্য হয় এবং নায়ক বেরিয়ে আসে সেখান থেকে।

ছবির শেষে নামক আবার ফিরে এলো অসম্ভাতে। সেখানেই সে অন্তব করল যে, ছবিনে দ্রিট ব্যাপার অপরিহার্য। প্রথম হোল কাজ করার, পরিশ্রমী ছবার ফেটা থাকা, যা জবিনে এনে দেয় সাথকিতা। এবং বিবৃতীয়ত কাজের মান্যর সংগ্র আরও নিবিতৃ অণ্তরংগ সংপ্রক গড়ে তোলা।

শ**ুৰ**ৰ্ষের স্মরণীয়

অবিনাশচনদ্র কর

অবিনশী মুনি ঋষি কবছে বনে ধানা—
গিরিশ্চন্দের 'লু-তবেনীর 'অবিনাশনী'
অবিনাশচন্দ্র করের আদি বাস-ও বাগরাজানেই
ছিল। স্থবার একাদশী বা কলিবাকীর
প্রথমাভিনয়ে অবিনাশবাব্ কোন ভূমিকা গ্রহণ
করেনান। লীল বতীর সময়ই তার বাতালাভ।
নালিপপণি নাটক নির্বাচন করে ভূমনক্রেছির
শিক্ষাধীনে রিহাসেলি শুখ্ হয়্— তথ্ব করেন বালা
সাহেবের চরিত্রে অবিনাশ কর্কে গিরিশচন্দ্রই
নির্বাচন করেন। টিকেট বিক্রী করে নীল-



পরিচালনা ঃ বাজ্জ্ম বেন তালো ঃ ভাগল সেন শোরণে ঃ বিজ্ঞা, হরিবন, সভীগ্র, আমরনাথ, গ্রামন এবং ব্যক্তিমা, ও শ্রিকা বিশ্বন

স্রশিশ্পী কমল দাসগাপ্ত

শ্রেটা সাক্ষরত ১৯০৯ সাল। স্বারং কাজী সাহেবের
ক্রেল্ল তালিমে ছাড়ুপার পেরে তরিই কথা এবং স্বার এইচ-এর-ভি
ভিন্তে গান রেকর্ড করলাম। কিংতু কোনো হানিবার্য কারণে
কে রেক্ড প্রকাশিক্ত হোল না। সম্পর্বত আমার দিক থেকেই
কোনো অসম্পাশক হোল না। সম্পর্বত আমার দিক থেকেই
কোনো অসম্পাশক হোল না। সম্পর্বত আমার দিক থেকেই
কোনো অসম্পাশক উপস্পাপনা হালত পারিনি। যাই ছোক
স্টি ইক্লাল মা ছাওরা গান শ্রেক্ট আমার সম্পর্কে কালা প্রকাশ
করে বসালেন সর্কার প্রীক্রল দালগতে। হাল তারিই উৎসাহ
এবং অন্যাক্রিকার প্রীক্রল প্রবাধ সাক্রিক তালক আমা।
ব্রগানের কলা ছিল গাঁকিকার প্রবাধ সাক্রেক আন সার ছিল সম্প্রেক্তা
কালা স্কাশকর্কার ভালি বিকাশ প্রবাধ সাক্রেক আমার তালক সম্প্রেক্তা
কালা স্কাশকর্কার হালিকার প্রবাধ সাক্রেক্তা
কালা স্কাশকর্কার হালিকার প্রবাধ সাক্রেক্তা
কালা স্কাশকর্কার হালিকার প্রবাধ সাক্রেক্তা
কালা স্কাশকর্কার ভালিকার সাক্রেক্তা।

তারপার থেকে অসংখ্য গান তামি রেক্ডা করেছি: আলার রেক্ডা-কর গানের অধিকাংশই কয়লবার র দেওয়া স্তে। তাঁর সংখ্যা একরে রেক্ডেও গান গোয়েছি। তাঁর সংখ্যা একরে গাও্রা প্রথম গান 'চিডন্লন দিল ধরা' গানখ্নাও কনপ্রিয় ইয়েছিল।

শ্ব কম ব্যাস থেকেই জীবনের ব্রিন র সভাবের নানিকে লিজিকে হ্রেছিল তাকে। মধ্যবস্থান বিবা মারা সান। সংবারর স্থানত লিজে নিয়ে কুট কলর ওপর। দল। ছেবেন স্থানারিটিট সংগীতিলিকবী এবং যালাবল শ্রীবিহল দালার্থত ছেলোপলার একার ক আমার বাবে বিভাগনার সংগ্রাক কলে ক্রিছেকেন। কিক্ত ব্রেকে তথ্য প্রত ভেলেম্ন্য ছিলার ব্যাব বির্দ্ধিকার পরে বির্দ্ধিকার ব্যাব বির্দ্ধিকার পরে বির্দ্ধিকার ব্যাব বির্দ্ধিকার পরে বির্দ্ধিকার ব্যাব বির্দ্ধিকার পরে বির্দ্ধিকার ব্যাব বির্দ্ধিকার বির্দ্ধিকার ব্যাব বির্দ্ধিকার ব্যাব বির্দ্ধিকার ব

ভালে। ছাত্র হাজ্বর সংস্কৃত্ত দাদার ওপর পড়ে যাওয়।
ভালাভাবিক আধিক চাপ কনাতেই বোল কার কমলবাবাকে
পঞ্জালোনায় ইল্ডফা দিডে হয়। কিন্তু অলপদিনের মবোই
সংসাবের হাল যিনি শ্রহাতে আকড়ে ধরেছিলেন সেই দাদাই

ভটিদর ছেড়ে চলে গেলেন। ক্ষমলবাধার ভাগোর আঁকানে ছনিরে উঠলো বিষয় ঝড়। এমনি ঝড়খাপ্টা জার উখান-প্রতমের ক্ষান্ত্র পর্মা দিয়ে এগিয়ে গিরেছিল তার জীবদ। সংগতিসাধনা কিচ্ছু দেশি খাকেনি। তারই মধ্যে পথ খাকে নিরেছিল। ভাবদা তাদের পরিবারের চারপাশেই বইও সংগতিরের হাওয়া: ভাইবেনি সকলেই ছিলেন সংগতিত বিদেশ আগ্রহী এবং প্রারদ্ধী।

সংক'ত গায়ক, নজায়,ল সংগাতের ভাল্ডার। সাথাক প্রশিক্ষক কথল দাশগুণেতর স্থারঞ্জান ছেল অসাধারণ। ভার श्रीमकाम कात्मा कि तकात्मा ह्या एक्सिस । कहेर क्रेस छ-८० যুখনই গাম রোকডা করোছ তখনই ডিনি বাড়ীতে এসে আন্তরিকতার সপ্পোই সেই গানের তালিম দিয়েছেন। তথনকার সময়ে অধিকাংশ বনেদ্" পরিয়ারের মে যুদ্ধ প্রেট নিয়ামত রেঞ্চ কোম্পানীর খরে গিঃয় রিহাসাল দেওয়ায় খোরতর আপত্তি ছিল। কারণ তখনই গান-বাজনা কিংবা সিনেমা-থিয়েটারের জগৎ এখনকার মতো সহজ্ব গড়ারাতের জারুগা ছিল লা: আল্লাদর এটো জনেক গায়িকারট আপতি ছিল সেট পরিবেশের মধ্যে বসে বিহাসীল দেওছার। সেই কালেণ্ট ডিনি আমারও অস্ক্রিধার কথা ডিন্টা করে আছার বাড়ীতে এসেই গানের তালিম দিতেন। তৈরী হয়ে যাওয়ার পর রেকড করার আগে হয়াতা সেই রিহাসালের সময কোমপানীতে গিয়ে রিহাসাল দিতাম। অংশক গাণিকার এই ধরনের অসাবিধার কথা চিক্ট করেট কমলবাব, মেয়েদের বিহাসাংক্রে জনে; কোমপানী ভ জালদে ঘারর ব্যবস্থা করেছিলেন।

য়িতব।ক এবং গদভীর প্রকৃতির য়াল্যে ছিলেন ক্ষলবারঃ। তার সার দেওয়া গান গাওয়ার পর ভালো হলেও তিনি কোনো দিন সামনে প্রশংসা করতেন না। ভালো হ'ল চুপ করে থাকতেন। আশান্রেপ্র ন বাবত গালে ই পে অভ্যা পান্য গিলু।

আনার সংগীতজীবনের যতটাকু খাড়িত বা যশ পোরিছি তার সর্বাকৃ কৃতিজই তার। তারই দেওয়া স্থাবন গনা গেনে অর্না প্রোক্তাদের হন ভরিকেছি। প্রেডোদের শৌকৃতি প্রেক্তি।

--याधिका बाब

লপালের আভিনর করার প্রস্তাবের বির্দুধে গারিলাটল হাখন দলভাগে করেন অবিনাগ-ছন্তু নগোলুনাখাদের স্থেপাই থাকেন।

সান্যাল ভবনে নীলদপুৰ অভিনয়ে **নোগ সাহেব আ**র খুণিত চরিত্রে অভিনয় জ্যবিদাশৰ ব্ Brik ারাধ্য সাহেব र्ज स्टब অবিনাশ অভিনয়:# 8745 क्य भाग वामा কোন্য ক্ষতিমেতাও স্থান স্বত্তে পারেনমি। তথিত আছে একবার নীলগপণিণ্র অভিনয় দেখে অবিনাশ-ৰ বুংৰাই বিদ্যাস্থার চটিল্যতা ভ্রতি হোরে-विदेशम-बार्थाकाः भवद्रायः स्या सामामा **थिरहरोरम्य भ**नाःसा गाउँक्ट काञ्जनश्च करत् অবিনশকাৰ লক্ষ্ অভিনেতাহাপে নিজেকে क्रांस र तथा नक्षा महामान থিমেটার দিব্ধাবিভয় ছলে অবিনালবাব थर्माका भारत्व भाका महानेनाका विद्याद्वीरवरे भएकम अबर अहे मरमात है।सार्या गाउँस राजा নীলদপাণ অভিনয়ে স্থীয় ভূমিকা এত্ণ स्टब्स् को कांचनता क्षत्रात वा विस्कृत मीत-লক্ষ্ম বস_{েও} বিভারপতি উত্তরেও সাহেত্বের পিতা মিঃ উভয়োগ উপচ্ছিত ছিলেন। কের- মণির ওপর রেগস্তেবের কক্ষান্রের দ্লো মিঃ উদ্ধোপ এতই উর্জেড হন যে দৃশকের আহ্নন থেকে পঢ়াকণ পঢ়ালিলা বলে চীংকার কবে ওঠেন রোগসাহেবকৈ সা**লে**শ্ডা করার জনা। শেষপর্যকত^{*} তিনি প্রকৃত **অব**স্থা উপলব্ধি করে শান্ত হন এবং অভিনয়ের ভয়সী প্রশংসা করেন। কপালকুঞ্ডলা ও धनामा अहिनद्य करत ग्रांका शना ग्रांकाश ন্য শনাল থিয়েটার দল স্ববিধা করতে পারেন না। ঢাকা থেকে প্রভাবতন করে। কালাতে হান। কণী থেকে প্রভাবত'ন করে গ্রেট मानगरन रशक्तान करतम कविमानगदः। গ্রেট ন্যান্তে ধর্মদাস স্থের সহকারী त्रा क क दात्रमा ১৮৭৫ भारतेरक धर्ममान স্তুরের নেভুরে গোট নয়শন ল ভিরেটারেয সংখ্যে দিল্লী লাহোর লক্ষেয়ী প্রভৃতি পশ্চিদের বিভিন্ন স্থানে অভিনয় করে সম্প্রদায়ের সংখ্যা কলকাভায় প্রজাবতনি করেন। নীল-দ্ৰপণ লীলাবতী স্তী কি কলাংকনী ভাৰত-মাতা নবীন ত্ৰা<mark>দ্বনী প্ৰভৃতি আ</mark>ৰো অপেনাধর্মী নাটক পশ্চিম সফরে অভিনীত इड कायर कविनामबाव, न्योग क्रिक क्रिका

করে দশ্কিদের প্রশংসাভাজন হন। মাল চরির ছ ড়া প্রতিজন শিক্সাকেই প্রয়োজন-বোধে একাধিক চরিতে অংশগ্রহণ করতে হতো। লাহোরে দলের স্থোম স্বচেয়ে বেশী হয়। লাফারিড সম্প্রদায়ক বিবাট হালগামে ব মধ্যাম হতে হয় নীলাদ্পণির অভিনয়ে। ক্ষেত্রভাজত সম্প্রদায়
করতে বাধা হল।

The set of the control of the set of the control of

क्टबान । जन्मानाया मिरम्यक्त जनान स्थाधन न्यार मानिरपोरे असर जनामन सफरा मानानत ज्ञादान्त्र वहाः देशनाः क्षाप्तनाः क्षाप्तनाः क्षाप्तनाः श्रम्भाष्ट्र मर्भाटकता , जास्त्रमहा सम्भवस्त । খীরে খীরে কেন্দ্রশির ওপর রোগ সাহেরের অভ্যাচারের দৃশ্য এলিয়ে আচে:। দ্বীয় ধ্য রক্ষাব জন্য ক্ষেত্রমণি (লক্ষ্যুটিমণি), রোগ্য-দ হৈৰৱ প্ৰী অবিনাশ কৰকে যুদ্ৰতে আৰু ঃ ও সাহের তুমি আমার বাবা মাই তোর মেয়ে ছেভে বৈ আমায় ছেডে দে। লোগ কিছাতেই ছাড়বে ন**া তোরাব এসে গুণা টিলে ধ**ললো রোগের। মৃহ্যুত হৈনকৈ কান্ড, খত ইংরেজ সৈনারা নাটক দেখাছল-লাফিলে মঞ্জে উপস্থিত। উদ্ধান্ত ভয়েসাল। মেরিড-দের শেষ কথে দেবে ৷ স্থানীগ লোকের, বাধা দিতে গিয়ে অনেকে আছত রভা। জপসিন कारशके नामिका - ফাড়িলেডটা **প**িল**শ** বাহিনী হেছেলছে এনজন ছবিন্দ্ বদেৱ হ্রাক্তর বিধেনা প্রমান সংগ্রাত স্বাস্ক্রার। ভিন্ন লিয়ে এড বেল্ল লালিল। বইলেন। অবিনাদ্যাব্যার প্রবেশ প্রবেশ বাদেরে পারবেনন হয়। বৈশ্বপ্রভারত সংগ্রিকরাইটো ভাগার্ম 🕸 প্রতিশ পত্রালয় এবং স্থানীয় লোকদের সাহ্বাহের স্পেট্শনে একে টেব লার স্বাই কল-কারাম আমেন : ভাবিনাণ স্থানে দেশ । আর মাজিকাল স্থারের তেনের সম্পর্ক কর্মন আর্থা বহু ঘটনা আছে। ১৮৭% খাল্টালে ল্যোপীচাঁদ শেঠ যখন নাশন্ত প্ৰণাটার জীল নেন্ত্ৰন হ্যানেজনে হ্ন তাবিন্দ্ৰাবা; মালেজার হলে ভবিনাশবার, থিয়েটারে বহর মতন প্রথার প্রশৃত্বন করেন। প্রথমে রবিধার পরে শনিবারেও তভিনয় প্রথ চলতে থাকে চ कारमानवाना नाधवादम् काध्यादान अधिमाना अधिका ঋরেন। শিল্পীদের নিয়ুমিত বেতন দেবার প্রক্রেটা অলভেমার মালে তাবনাশবাধাণ ল্যোপন্টিল শেষ্ট্রির স্বয়াধিকার্ট্রি সম্প্রদায়কে আভিনেদী য়ান। 1.1.4.5 মিছে: জাভিনয় করাতে খ্যাবহ প্রতিষ্ঠারকভার স্থানিট হয়। প্রত্যাবতনি করে ৰধ্মান বেটিয়া ব্যক্তিপার কাম্যী এলাহাবাদ কক্ষেণ্ট প্রভৃতি স্থানে সগৌরবে তাভিনয় করে ३५४० अन्हित्यारे कनकाडाहा প্রত্যাবত ন করেন। এই সময় প্রায় সাত মাস বিহার উত্তৰ পশ্চিম অন্তলের বিভিন্ন সংনা পরি-ক্রমণ করেন। গোপটিটাদ্ শেঠীর শিয়েট[্]র অবিনাশবাৰ, মধাহ দুই খটিকায় অভিনয়েৰ श्रावण्या अवर्धनं कात्रमः। विश्कृ विला २ ষ্টিকার অভিনয় জনপ্রিয়তা লাভ করে ন। কাই সম্প্রায়ই অভিনয় প্রগা চাল; পাকে। रनानीष्ठीम रनठीत थिएशहारतत भारतस त द्वात শ্ৰে গৈরিশচন্দ্র হাখন নাশনাল থিয়েটার শার্ডনানা করছিলেন তখন অহিনাশ করেব शाह कारव रक्षण कान्याती न प्रमान जानगकान जानग्राधमी नाउँक-



থানি মঞ্চথ করে তার বিষ্ণুগ্রাপ তার্থ আন্মান্তবার্কে প্রদান করেন। আনন্দ্রগানন প্রথম মঞ্চন্ত প্রার্থিক ২১শে নাজনবর ১৮৭৪ থাকীবেদ। এবং মঞ্চন্তবেও খ্রেই জনপ্রিয়ত অজনি করে। বিন্তু নাম্প্রনাল বিষ্টোর সেবৃশ্ব জনপ্রিয়তা অজনি করেন না।

অনিধাৰ্য কারণে বত্যান সংখার শ্রীনিমাই ভট্টাবের 'প্রভাজনী মাক্সি' প্রকাশিত হল না। আগামী সংখা থেকে নিয়মিত বেলোব।

ব্যোপটিচাঁদ দেউটা শেষণ্যান্ত থিয়েটার চাল্যতে, পারেন না। ১৮৮০ থাকটান্দে প্রচাপ জন্মী গিথিলচন্দের সন্মায়ভার থিয়েটার পরিচালন্ করেন।

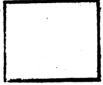
তাবিনালাচক কর আলানুমানিক ১৮৫২
থান্টাকে জ্বলাহ্ব করেন এবং নহান্ত্রল প্রিজমণাকে ক্লালাভাল প্রস্তাবিক্তন করার প্রস্তু ৯৮৮০ - মুন্টাকেল ১৮ বিক্সর ব্যবস্ মারা থান। অবিনাশত দুর বাবনা গশিশকীৰন মাত সাত বছর স্পাধারী করেছিল। এই আন্ধর্ণ-সময়ের মধ্যে বাংলা রংলামান্তর একজন শক্তি-লক্ষা অভিনেতার কুলামান্তর ভিনি প্রতি-তিন্তু করেছিলেন। ভালোধিক প্রতিভাসন্তর্মা ভবিনাশ্ত দ্বর মৃত্যুতে স্বাই ম্যাইত ক্রা

---कार्मील मृत्यानाकाष

ताक लिक

উট্টেম্ট্র প্রার্থনিক নাট্য সংক্ষার ৪৪ বংসর প্রতি উপাসকৈ নাট্টেইসর ১৫ই আগ উ—থিকেটার সেক্টার রক্তমীগাধা সংখ্যা ওটার ১৭ই সেপ্টেম্বর—ইনাক্টান্ট্র চাপাউপার সেকা সংখ্যা ওটার ২৬ সোপ্টেম্বর—মৃত্ত অপ্যাম— ইনি সোলিকে সংখ্যা ওটার অভিনয়ের ও দিন প্রথা বটার কাভিনয়ের ও দিন প্রথা ব্যক্তি ।

খেলার জগতে মেয়ে



শিখা সেন

শিখা প্রথমে শারা করে সাঁতার। বউ চাৰার ব্যায়াম সমিতিতে। এর মা লেলেন আমরা ভেবে দেখলাম প্রথমত াতিকেও বেশী সাফলা অজনি করতে শারতে না, কারণ বেলাক্ষণ জলে থাকলে লো বা কানে ঠান্ডা লেগে যায়। তব ।০-এ আগতে জন ও বচন । আমদ্য 🖟 কল জীজায় দিখা বাঙলার সাঁতার, দলে খ্যান পেয়েছিল। একশ দ্লে ও চার্ম মটার ফি স্টাইলে ফাইনালে উঠছিল। ক্ত লারীরিক কারণে সাঁতার ছেড়ে লাইকিং খারা। ৬৮র শেষ দিকেট মাস টেই অন্তেশীলন কৰে শিখা হিবালন্ম চুনিয়ার বিভাগে নেয়ে পাঁচণ মিটার গুরুমুমুমুমুলে ১৩ হয়। ওই ছিল বাংলার একমার মেয়ে প্রতিনিধি। ৬৯-এ দিলীতে ১৪ হছতের নীচেত বিভাগে ততীয় হয়। io-a কটকে জাতীয় আসরে দটি সোনার শদক জয় করে দিখাল নিজের ওপর মক্তা বেডে যায়। এই ব্যবই ফৈডাবাদে ছবিয়ার বিভাগে ৬ট থিয়াস দার্পদক পায়। সেবাবত জিখা এবলার মেয়ে প্রতিমধি। ক্রীলখপথ নয় এই ছোট নিজ দেশের মেয়েটি 95-4 কঙ্গকাত য টাসার্থ পাঁচদা হাজার, একক মান্টাস[∠] মিটার এবং **편**: %-মোস-ছটিতে **পেল প্রথম** ম্থান। ৭২-এ হায়দ্রবাদেও ১৪ বছরের অনুধ্রাদের বিভাগে শিখা পাঁচল মিটার ট ইম্ট য়ালে মতন রেকড' করে। ৭৩-এ পিঠে বাথা জনা তেমন জোবালো প্রতিদ্বন্দিরতা ক্ষণতে পাবে ন। তাই সেবার জনবলপাবে ওড়িশার প্রতিযোগিনীর কাছে হোর দ^{্বা} রৌপাপদক পায়। ৭৪-এ ণিবস্দ্রম জানিয়াৰ জাতীয় আসরে ১৮ বছরের কম রকেসীদের বিভাগে চ্যাম্পিয়ন হয়। আন্ডঃ-আন্ত ক্রিক আসবেও শিখাই চামিসায়ান আশো। লাভ করে। ৭০-এ ত্রিয়ানাথ ব্রাষ্ট্রাড অন্তির সর্বভাবতীয় আসরে ১৮ সল্পার অনাধ্যা বিভাগে দাটি সোনা ক সিনিয়াতে সে রেজ প্রক কর কাশন। سيع كالشيف للماليا العام الهالا والمال किन्ना का का का का किन्ना के किन्ना क्षां मार्थ । क्षेत्राम स्वाचार क्षां का नाम का বিষ্বধানীত অজাশনৰ স্বাংশ ছেণ্ট মেয়েটি মল প্রাণ ভাপার।

ও বলে, যদি একটা ভাল বেসিং সাইকেল সাই তাহলে আমার স্টাণ্ড ভ' আমও বাড়াতে পারি। এখন মোল ভোরে রেড রোডে দুই বোন ছেলেদের সংশা অনুশীলন করে। শিখা বলল আমার সাইকিং-এ হাতেখড়ি হয় স্বগতি জিয়াউর রহমানের কাছে। আর ছেলেরা আমাকে খাব সাহাযা করে। প্রশার সংগা উল্লেখ করল প্রবীণ রাজকুমার মেহরা, সাপ্রভাত চরবতী আর সর্গর শেঠের নাম। সাইকিং সংখ্যাও নানাভাবে শিখাকে সাহায্য করে সেকথাও ও'রা সবাই वन्तराम । श्राव मार्की मार्के क्रिकेट स्थाप्ता नग्दी চিন্তা সেন ভাঃ তপতী গ্রিচদের কথাও শিখা বলল। ডাদের অন্প্রেরণাও ওর এই ছোট জীবনে কম নয়। পত্ৰ-পত্ৰিকা ঘোটে তাদের বিষয়ে পড়বার খাব ঝোঁক এর। বর্তামনে ভাগতে মেরেদের সাইকিং-এর মান বেশ উচ। আর এখন নানা রাজ্যের প্রতি-व्यक्तिताम मध्याख व्यत्नक। मार्रीकर-धर আসরে দুর্ঘটনাও বৃদ্ধি পেয়েছে। তবে ইউরোপের মেয়েদের মান আমাদের দেশেগ ভেলেদের চেয়েও উচ। প্রসংগত বিশ্ব আসংবর শীবস্থানীয় মহিলা মিসেস दिन वर्गार्टेन ও छाँत कन्या क्यानन व्यार्टेस्ट्र কথাও শিখা বলগ। ডেলেনেরে মিলিযে বেলের স্থান বিশ্বতর্ণলকাণ্ড ত্তীয়। শিখা চায় এ বিষয়ে ভারতের দূর করতে। এদেশে রেসিং



সাইকৈল বা তার ফটাংশ পাওয়া দক্ষেণ বলে দিখা শিপ্তা দলেকৈ আফশোষ কঃলো। বলা প্রয়োজন শিপ্তা বিদ্যাসাগর কলেজের ছাত্রী। সেও কলেজের হয়ে স্ত্রাগ্রের আ্সরে নেমেছে। গত বছর থেকে ছোট বোনের সংশা সংশা সাইকিং শারু করেই তিবান্দ্রমে জানিয়ার জাতীয আসরে দু হাজার মিটাল একক পারসাটে স্বৰ্ণপদক পোৱাছ। শিপ্ৰাও বলে, ভাল রেসিং সাইকেল একখানা থাকলে খাব সাবিধা হত আমাদের দ্ভেনেরই। এর আংগ জাতীয় আসরে সিউ ভেংগে শিখা খার অস্থির্ধায় প্রেছিল। ডেলেদের কাছ থেকে সিট্নিয়ে তাই লাগিয়ে প্রতি-যোগিতায় নামে। বাবা-মারও ইচ্ছা মেয়ে সাইক্রিং-এ ভাপতের হাথ উৎপ্রাল কর্ক। সতি সমগুপবিবার খেলাধালায় অভি**ভ** এবং একনিষ্ঠ এলন বড়একটা দেখা যায় না শিখার আফশোষ দেশের ছেলেদের সাইকিংখির মান অনেক নীড় হলেও থাবা আন্তর্জনিত্রক আসরে যাওয়ার সংযোগ প্যাচ্ছ আৰু মেরোরা প্যাচ্ছ ল। শিখার হবি-প্রথম বড়বড়খেলোয়াড়দেল স্বিনী

পড়া। দিবতীয় ফটো তোলা। ফুলছাটী শিখার একাণ্ড বাসনা আণ্ডলাডিক অসেরে স্বীকৃতি লাক। শিখার এ সাকাশদা যেন পারণ হয়।

— अध्य

কোটে ররাণী ক্রিস

গত দ্ব বছর ধরে যে ফ্লের কুণ্ডিটি
প্রকাশের বেদনার ব্যাকুল হয়েছিল আজ
তা প্রস্ফৃতিত। আনোনকার ১৯ বছরের
দৌশিক্ষয়ী ছিপ্ছিপে মেরে ক্রিস ভোট
সদ্সমাশত উইশব্দেন প্রতিযোগিতার
বিছ্নিনী ক্রিস ক্রীড়া ক্রিডের ব্যাপার্থা
ফলের মতাই সমস স্কল্র।

দ্র বছর জাগে উইন্সক্তেজন লন টোনস প্রতিযোগিতায় প্রথম আ্রক্তার কিস বিশ্নয় সাভি করেছিল সেমিফাইনালে ইভান মলোগাং-এর কাছ থেকে প্রথম সেটটি ছিনিয়ে নিয়ে। তীর প্রতিশ্নিদর্শার পর গ্লাগাং পরের দৃটি সেট নিকেল ক্লান্ত জন্ম তারকাকে অভিনালত করেছিলেন। সাংবাদিক সমাকোচকরা সম্ভাবনায় উপ্তঃল সংভদশী ভিস্পঞ্জ ভার্যাং সম্পাকে প্রমাদ গালেছিলেন।

অনুমান মিধ্যে হছান। গছ ৰছার
মনুষ্ঠিত উইন্বলেডন প্রতিযোগিতায় দ্বিস
অঘটন ঘটিয়ে টেনিস কোটে ঝড় ছুলেছিলা কোরাটার ফাইনাল ও সোমফাইনালে দুহে প্রান্ধন শান্তশালী প্রতিপক্ষ
মার্গারেট কোট ও ইভান গ্রেলাগংএর
ললাটে প্রান্ধরের ভিলক একে দিয়েছল। চ্যান্ড খেলায় টেনিস সাম্বান্ধী আভিপ্র
বিলি জনা বিন্তান গ্রেলাস সাম্বান্ধী আভিপ্র
বিলি জনা কিব এন শিক্ষ কিবছ এই খেলায়
গ্রেলি গ্রান্ধিত হয়। কিবছু এই খেলায়
গ্রেলি গ্রান্ধিত হয়। কিবছু এই খেলায়
গ্রেলি গ্রান্ধিত করেছে।
বার মধ্যে কিব জিলেডছে চারবার। মরেল
ললা মধ্যে পারে গত বহর ছাছা বিলি
লন কিব ১৯৬৬ ৬৭ ৬৮ সালে উপ্যান্ধীন করেছে।
বার চাম্প্রান্ধ হয়ে উইন্বলেডল প্রতিব্রেলিতার ইতিহাসে নজির স্থিত করেছে।

ক্রিস ইভাট ফোরিডার ফোট শটার-ডেলে সেন্ট টেমাস হাইম্কুসের ছাতী। পাঁচ ভাই-বোনের মধ্যে দিবতীয় সম্তান। কোমল স্বভাব ও হাসিখালী ব্ৰহাগেৰ জনো জিস পরিতিভাষের কার্যে হার ছিয়া। এবসত সংঘ বই পড়ে। সাঁতার কাটে। সোঁখন রামা কলো বাহারী সেকাইয়ের কাজ করে। ত্ৰে স্কৃতিয়ে বেখা ভালৰকে টেডস ব্যাসকে। ব্যান হিল্পীত কম আগ হয়। সেও নিদির সংধ্যা নিয়মিছ জন,শাশীলন করে। টোনস কোটে ৰ ভীতে দিদির সংগী। টেনিস সন্ত্ৰাগী ববা দ্বোনের প্রশিক্ষক। ধ্যবা জিসদের বাড়ীর সামনে টেনিস-ক্টিগ্লের তথাবধ্যক। দিনের অধিকাংশ \$14.31 S. 1 থাকে বাবার সংস্থা। খেলে বিদ্রাম করে। ঠানভা। ভার মতা দেখাতো আমার চালভদনত মাণি তবি মই।

ব্যার সম্পর্কে জিক্সেস করলে জিস স্বলে ব্যা আয়াদের বংশা শিক্ষক অভি-ভারক। সকলেই বলে আমি ব্যান মত তার মত দেশতে। আমার চালচলন্ত নাকি তার মত।

গত দুর্ভর জাগে ধ্যাকতর মত ভক্ষমাৎ আবিভাগিব সাসাময়া সংভাদশী िन्त्र भवार प्रहार जाउन हो स्त्र আলোড়ন সৃষ্টি করেছিল ওখন করেকজন স্যাংবাদিকের এক প্রশেষর উত্তরে ক্লিস দাশনিকের মত চিম্পারণত হ'ব উত্তর **প**ূথিব**ি**ন দিয়েছিল — ফামি খেলোমাড় হতে চাই। গ্রীকৃতির সি^{র্গ}ড় বেয়ে ক্লিস এখন ভার স্বংগার শিখার। শ্বশেনর কথ্যা যেখানে সে অ্যা ভিনি কোনৰল থাকৰে কাছাকাছি। কোনল প**্ৰেয়াদ**ৰ বিভাগৰ এ বছগোৱ উইম্বালন চ্যাহিপক্সান। ইভার্ট ভার বাগদতা। আসম্প্রমী নভেম্বরে ওদের মিলন হরে। क्रिज हेकारणेन व्याना न्यामी। मुक्रव्यहे লোক্তম স্বাকৃতিতে ভূমিত।





কাজক ঢালি ইন্টবৈশাল গামলার্থীতে বসে সেনিল বিকেলে নির্দ্ধাণ করে নিজের করা বলছিলেন। একেবারে ঘরেয়া মেজাল। জহুং ভাব নেই এক রতি। কাজলের বয়স বিও। জন্ম কলকাতায়। কিন্তু আদি বাড়ী নোরাখালী (বাংলাদেশ)। বাবা মহেন্দুকুমার চালাঁ চাকরীর খাতিরে দীঘদিন হুধকে একার বাংলার বাজিন্দা। সংসার মা আছেন বাবা আছেন। কাজলের আরও দুটি ভাই আর একাট বোন।

'দাদা কলকাতা প্রতিশের সামেনিট (মাউনেটভ)। আমিও মোটামনিট ভাল চাকরী কর্মছ। সংসারে এখন খানিকটা স্বাচ্চণ্য এসেছে। জাগে অবলার এমনিট ছিল না। সংসার নিয়ে জনোর সপো আমাকেও দার্ন ভাবতে হোভ। বিশেষত হাবড়া থেকে বেহালার চলে আসার পর। আর্থিক ভাবনা চিন্তা এখন খানিকটা কমছে বটে তবে জন্ডে বসেছে আর একটা চিন্তা। বাড়ীর লোক ধরেছে—বিয়ে ক্বতে হবে কি যে করি! ক্ষেশ্ন, সময় তো করেও কন ছাত গুটুরৈ বলে থাকে না। আমার ক্ষেত্রেও তা নেই। দিনের পদ্ধ দিন বন্ধল তো বেড্রেই যাছে। থলার মানের ব্যেপারই ছোক বা মর সংসাধের ব্যুপারই ছোক আক্ষতে ক্ষথবা দুদিন পরে সেইল একটা ক্ষিনিস ক্ষামি মর্মে মনে অনুভব করছি আজ তা হোল সব কিছুই আমার একট্ লেটে হয়েছে। ফুটবলে প্রীকৃতি প্রতিশ্যা তার ব্যথন্ট কোটে হালে বা বিশ্বাস করি ইট ইক্স বেটার লেট দান নেজার।

কাজল দকুলে লেখাপড়া করেছেন হারড়া
দকুলে। কলেজে হারড়া শ্রীচৈতন্য মহাবিদ্যালয়ে ১৯৬৫ - সালে বি এস-সি পাশ করে
কাজল ল কলেজেও ভার্ত হয়েছিলেন। ঐ ল কালেজের ছার্র হিসেবেই আনতঃ বিশ্ববিদ্যালয়
ফুটবলের আসরে প্রবেশ (১৯৬৫)। কাজল এখন ইউনা নান বংশানানা বাবেজর হেড অফিসে সানাড়া বিভাগের কর্মচারী।

বিপলে ৰল্গোপাধ্যায়

काकन जानी

জংগাদার কাছে আমি সবচেরে বেশী স্কুতজ্ঞ সবচেয়ে বেশী ঋণী।

ভা হলে ইনসিডেন্টা বলি শ্নুন্দ ছেবটু সালের লেষের দিকে ভাষবা সাওবট্টির গ্যোড়ায় জংলাদা (ইন্টানেন্সলের পরিমল বে) একদিন আমাদের ওঞ্চানে সানে হাবড়ার বৈলতে গেছেন।

শ্রীঠিতনা বংগাঞ্জর হয়ে আমিও থেকালাম। থেকার দোষে জংলাদা আমার কাছে ডেকে নিয়ে জিল্পেস করণেন যে আমি কলকাভার কোন দলে থেলায় আগ্রহী কিনা। কভি কথা বলতে কি প্রশ্নটার পর আমি একট্ নাভাসি হয়ে গিয়োচলাম। তবে বাবা কলকাভাট সে বড় কঠিন ঠাই। ন পরকার নেই। হাকড়ায় আছি এই বেশ ভালা।

বিক্তু দিবরা, সংকোচ আনেক আকলেও
আনেকে শেহ প্রাক্ত আসতে হৈকে গড়ের
আঠে। বলতে গেলে একেনারে সংগ্রন
শ্রমান্দান পেরে সিনিয়ার ডিভিসন লীগের
ভাগরে নামলান জকা টোলাগেরে জাসা
গারে পিরে (১৯৬৭)। ৬৮ বেকে ৭০
সালে গার বিলাল বেক বিলাল বেক ৭১ সামেলান আনার্কালের বিলাল বেক ৭১ সালে আইনবালানে, বহন্ত মহামেভান জ্লোটিং বতন্ত্র আনার মেচ্নাবালানে। বহ সালে আমি ইন্টাবেলার লোফট ব্যাক।

ৰজতে পানেন আমি এলপ সময়েব মধ্যেই অনেকবার দল বদুল করেছি। কবাট মত্যি! কৈ না উপ্লতি চায় কবানে? ভাল খেলাহাডেদের সক্ষা বেলা একটা হিল্টারুক ইডেন্টের সক্ষা হলে আকতে কিহ্বা খ্যানমান্ত্রী কে না থাকতে চায়ে: স্ব ফোর্লিক ব্যানাক্রি) কে না থাকতে চায়ে: স্ব ফোর্লিক ব্যানাক্রি) কে না থাকতে চায়ে: স্ব ফোর্লিক ব্যানাক্রি) কে না থাকতে চায়ে: স্ব





রাশিয়া বসাম আলোটা

कावहात्म तानिका वनाम कालादिकात र्चिक व्याधारमधिकत्मत न्यामुना वान्त्रकातन ল্লালারা মোট পলেন্টের ভিত্তিকে স্নান্সিরান इत्स्टब् नाश्चिमात्र कार्षे अक्षेत्र के के विवर कार्यादकार ३२६। श्रास्त्र विकारण करा हाहारक कारवालिका ১०५--३०२ शरहारुछ । अश्रव जिटक कारसंदर्भत विकास वाशिया ৮৭-৫৯ প্রেটেট জিতে শের প্রকৃত हितादिकायानकी भ जाक करहें।

अगरकार् পরেৰ বিভাগে 5 P & & অলিনিপ্রের ১০০ ও ২০০ মিটার দৌড়ের ∍বন[্]পদ্ধ বিভয়**ী ভালেনী বোগজ**ভ (রাশিয়া) এবারও 200 মিটার দৌড়ে खर्थम क्योम भाग निष् इक्षेत्रक भारतम करे আসংগ্রতিনি শ্বিতীয় শ্রান পোর্ছিলেন এবং এ বছর পেরেছেন । কৃতীয় স্থান। এ বছর প্রেষদের ১০০ ও ২০০ মিটার দৌড়ে আমেহিকার আৰু জোল প্রথম খ্যান লাভের সূত্রে জাবলা বেভাব পেরে-ছেন। এবারও রাশিয়া বশী নিকেপে শীর্ষ পার নি। রাশিয়ার প্রতিনিধ অলিণিপ্ৰেণা বৰ্ণপদক বিজয়ী জানিস লংসিস তৃত্যীর স্থান সোরাছেন। এখানে উল্লেখ্য লাগিস রাশিয়া বনাম আমেরিকার এই দৈবত আছাকেন্ট্রিক প্রাঞ্জারে উপয পরি সাতবার পরে,মদের বর্ণা প্রথম হয়েছিলেন।

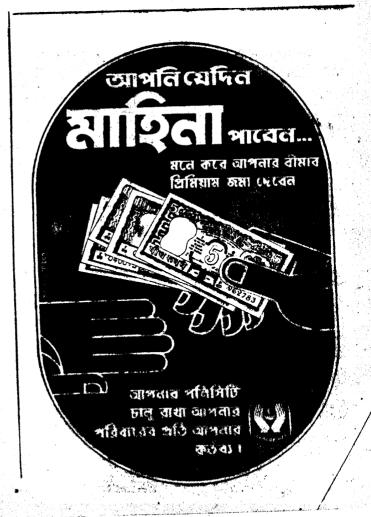
রাশিয়া বনাম স্থামেনিকার এই দৈবত প্রতিযোগিতার ল্লাথকোটিকস ३३६४ आखा क अवस्थ कड़े প্রতিয়োগতার আসর বসেছে মোট ১২ বার। মাঝে ৫ বছর (১৯৯৫, ১৯৬৬-৬৮ ও ১৯৭২) আসর বুলে ম। গত ১২ वात्वव कामध्य सार्पे अस्त्रकोत्र ভिত्তिए ग्राम्भियान इसाइ ब्रामिसा के वात साद्माविका २ वाकः ३३१३ मात्मद व्यामद्द म हे (मदमदे श्राम ममान (>HG-३४५) मोणादा श्राहर হৈন্ডাগে चादम् रावः। क्यान रक्ताक ৰায়। মহিলা 025 পথ্যম একট ट्याट्सर-व 75.44

स्तिमा ७ बाब (३৯५६ ३३५० ১৯৭৩) धवर बाद्याविका धक्ताव (১৯৬৯) একটি জাসহে মোট ২০০ পরেন্ট সংগ্রহ করেছে রাশিয়া ২ বার-১৯৭০ সালে and अद्रान्धे धारः ১৯९० ज्ञाप्त २३७

were force well. त्रामिकांक सर्वाचीकक क्या **लहा**क (NA 66 MINE) !

विश्वम कालेका कान

PAS MICHE FOR THE THE ENGLISHED WITH WHAT विन्य काश करा प्रकारका दक्ष व्यक्त Sacalcola Statut affe enferein Beceitene राज विषय काना सार्थी अप २ याम जामानी र सम अमेर Salation . COLUMN S MIT WAS SETTLED बाब । धन्त्री सका करेड विश्व याष्ट्रिक ফুটবল প্রতিষোধিতার প্রটি



१६५६ जाका चीनक स्वाप्ति। राज्यस्य स्थापन प्राप्तम

উন্ন্যে ৪ : আন্দেশিটনা ২ কেমিকাইনাল

আজেশিকা ৬ : আমেরিকা ১ উর্গদেশ্য ৬ : ব্লোদেশ্যক্ষি ১

শিক্তীর বিশ্ব কটেবল শ্বান ঃ ইড়ালী ।। আ-জনে ১৯০৪ ফুটনাল

ইতালী ২ : জাম নিশী ২ লেমিজ্মীন্ত ইতালী ১ : জমিয়া ০

ा किरकार का किया **५**

कार्यामी @

एकपित विश्व करवेवन न्यान झान्स ११ कर्न २५०४ कार्यनाम

হতালী ৪ : হাপোনী ২ কেমিকাইনাল

ক্রেমিকাইনাল ইতালী হ ঃ রেজিকা ১ হাপোরী ৫ ঃ সূইডেন ১

প্রতিকারণার ক্রেনিট্রি ক্রেনিট্রি আন্তর্গর স্থানীরা ৩—২ ক্রেন্স চুর সাংক্রাক প্রতিকাত করে কর স্থান

क्षेत्र विश्व यहाँका क्षेत्र हे केंद्रिका । झान-सामाहे ५৯७० प्रतिनाम

রেজিন ৫ : সইজেন ২ বেজিন ৫ : ফ্রান্স্ট্রেল

রে।জব্দ র র জাল ব সাইডেল ও ঃ পঃ লামানী ১ ওয়া ব্যান : জ্বাল ৬—০ গোলে পশ্চিম কার্মানীকে পরাজিত কলে ওর কান পার

ने पहुँच विश्व सहित्य प्यान : किल ।। व्यक्तिन ১৯৬২ सहित्याल

জ্ঞান ৩ : দেক : ক্লিক্স ৩ : দেক :

ভেজিল ৪ ঃ চিলি ২ চেক ৩ ঃ মংগাশল ভয়া ১ ৩ল শ্লাম ঃ চিলি ১—০ গোলে ব্ৰো-শ্লাভিয়াকে লগতিত লগত দেশ দায়।

अनीय विश्व क्रुप्टेबन न्यान : हेरलाइफ ।। क्रुप्टि ३५७७ स्थानना

িইংলাট্ড : পা লামনিনী ২

Principal Princi

ইংশাস্থ্য ২ ত পদ্ধাস্থ স প্ৰশিক্ষ জ্বাস্থ্য ২ জ অন্দিল্ল ১ তে প্ৰশ্ৰম জন্মস্থাস্থ্য ২ বানিকা ১

THE PROPERTY OF THE PARTY SAND

আজিল ০ জীবনার ১ ইডালী ৪ জালাদানী ৩ আল্বান : শ্বানাদানী ৮ : উন্নেজে ০

THE . " . WE AT !!

Transfer Sans

नाः कार्याम् २ ः इस्तान्छ ५ इस्तान्छ ५ ः दक्षण्य ०

ভেডিস কাপ

১৯৭১ বালের আত্তর্শতিক তেতিস কাপ লন টেনিল প্রতিযোগিতার ইউ-রোপানীর জোনেন সেনিকাইলাল কোনের এ' গ্রাপের সেনিফাইনালে প্রানিরা ৩-২ থেলার ফ্রামনকে এবং ইতালী ৪-১ খেলার উট্টেন্ডের ইউন্নাপীয় জোনের বিশ্ব গ্রাপের ফ্রাইনাকে ক্রানিয়ে গ্রাপের কাইনাকে ক্রাইনাকে ক্রানিয়া এবং সেকো-দেলাভাকিয়া স্বাগানলাভিয়া এবং স্ক্রান্দেলাভাকিয়া ক্রাপ্তা ৪-১ খেলার ক্রাণ্ডালাভিয়া এবং স্ক্রান্দ্রাভাতিক্রা ৩-১ খেলার প্রান্দ্র জন্মানিকৈ প্রস্কালত কবে।

এখানে উল্লেখা ইউদোপাল কেন্দ্র বি গণে সামিপ্রান বের্ণান্ত কথা সেকেশ্যলভালি মাল প্রতিকোশিতাদ অন্তর্গালক উল্লেখনাল ভাষত্ত্বের্থ সংলা গোলা এই গ্রেলাটি লাক ভাষত্বের্থান গাড়িলে। ইডিল্বের্ডিস কর্মান খেলার বাম্পান ক্রিক্ত্রের্থানি সামি ক্রেন্ডানিসাল বিশক্ষ্ণ ভাষত্বর্থাক কর্মনও ধেলারে ইয়ানি।

১৯৭৪ সালের ভেড়িস কাল ফাইনাল থেলা নিংসক্তে শিবহুনি যভা। কারণ এ বছারর ডেডিস কাপ খেলার কাইনালে क्रुणेनिया किन्दा कार्यातका रथकार्य मा। জায়োরকা প্রাথনির পদ্ধব্যের সম্কাষ ्वर ्वर কলে শিবসাৰ কাশ্ছ विभागन क्यान-कारेगाला. क्यानात्व कार्य ছেৰে গিছে ১৯৭৪ সালের প্রতিবাগিতা ভোকে বিদার নিষেত্র। বিক্তীর দহাব করে भावका करनाव २४ वहालक (১৯००-বৃত্), ডেডিল কাপের খেলার প্রাণ্টীলা धारा काणानिका काणान्यभूत भ काल मन राजीकाम् करका काम स्वताह्या काराबा विमान के प्र সন্দর প্রতিবেশিতার তার **প্রথম ব্যক্তিক** হ'ব।

The second secon





मदुक्यात, २० झावन, ১०४১ वन्त्राच्य (सूच्या

[18 वर्ग, 58 हरवा।]

হদিও বাবা কমক আগবাকে সাহাদিন এই অ সূৰ্যন্ত বিকেই কলতে ভিচাছ হাব। গঠাৱেও ই অপেৰলো সূৰ্য ভাগে কলাস সাবে। দেখা ডোকা, ভূসকুড়ি ও বকের কলাস অভান অনেক সময় এই সব কতগুলো ছবিত এই কাইরেরাধুলো-গোঁহা বা ভোচ

केद्याद्या

শ্বরজিত গ্র্যান্টিসেপটিক জকের পভীরে প্রবেশ ক'রে অংশঞ্চল



১০৮১ সালের মোচাক পঢ়িকা কর্ত্রক স্থারচন্দ্র প্রস্কার প্রাপ্ত শ্রীত্র্যারকান্তি ঘোষ রচিত ছোট বড় সকলের মনের মত বাংলা সাহিত্যের দ্ব'খানি আশ্চর্য কই

ৰিচিত্ৰ কাহিনী

শ্ৰীভূষারকাশ্তি যোষ

भ ना :- ठात ठाका

(সংতম সংস্করণ চলছে)

ছোটদের উপযোগী সরস রচনা বাংলা সাহিছ্যে খ্র বেশী লোখা হয় নি। বিশেষ করে নানাবিষ্ক্তের গতা ঘটনা অবলাবন করে ছোটদের খনের মন্ত বিচিত্র রোমাপ্তকর লেখা খ্র সহজ নয়। বিভিন্ন কাহিনী'তে লেখক সত্য ঘটনাগ্লিকে নিজের সরস মানিসয়ানা দিয়ে এমন জীবন্ড আর জাক্ষর্থ করে ভূলেছেন যে শ্রু খেকে শেষ পর্যন্ত প্রতিটি রচনাই জানবদা রস ও রোমাপে টইটাব্র । মোট পনেরোটি কাহিনী জিল জিল রাসের ফাল্যারার সিন্ত, বর্ণনার মনোমাণ্যকর।

'আরও বিচিত্র কাহিনী' বইটি কিলোর ও বরুক্তরের জন্য সমভাবে রচিত। লেখক দুখু ছোটবের জন্যই হল পরিবেশন করেননি, বড়রাও এই অন্ত আন্বাদন করে প্রেকিড হবেন। জনবদ্য রল রচনাশোলী এবং প্রতিটি কাহিনীর জিল জিল জিল আকর্ষণ চুত্তাকের লড পার্রককে টেলে লিয়ে বাবে। এই বইটিভে দুর্লাট বিভিন্ন রলের কাহিনী রবেত্রে এবং লেখক ভার কাহিলাভ অভিজ্ঞভার কাহিনীবালি এবন স্কুল্যভাবে রসব্তে করে উপন্থিত করেছেন জ্বা পার্রককে বিম্পুধ করনে।

আরও বিচিত্র কাহিনী

শ্রীজুবারকান্তি বোধ হুল্য ঃ—চার টাকা (চজুধা সংক্ষরণ চলছে)

बा जि जात्या जा:-छ जन्न शारेएको निर्मारीण, ১৪ गीन्यम हारोहका गोरि, गिनकाठा-১২ ४एकान ०**৪-১**९४४

শৎক্র মহারাজের স্মরণীয় গ্রন্থ

यधु-व्नाचित्रि(त्रमध) ००००

রজ-পরিক্রমার ওপরে রচিত সঙ্য়া ন'শ পৃষ্ঠার স্বৃহ্ৎ দ্রমণক হিনী। কুড়ি পৃষ্ঠা নয়নাভিরাম আলোকচিত, মানচিত, পথ-পঞ্জী ও বর্ণান্কুমিক বিষয়স্চীসহ তিন পর্ব একসংখ্য।

রজপর্ব ১০·০০ * বনপর্ব ১০·০০ * মহাবনপর্ব ১২·০০ যথারীতি পৃথক পৃথকও পাওয়া যাছ।

শ্রীহংস-এর নবতম উপন্যাস

नाम्हे उग्रार्ड

R.00

শক্তিপদ রাজগুরুর নতুন উপন্যাস

গোড়জন বধ্ব 💠

বিভূতিভূষণ মুখোপাধ্যায়ের সর্বশ্রেষ্ঠ উপন্যাস

नीलाञ्च्यतीयः मः ১२.००

নিখিলচন্দ সরকারের উপন্যাস

দ্যুঃখে স্যুখে বাঁচা 👓

নিগ্ঢ়ানশের উপন্যাস

হৃদয়ে নাবিক ৮০০

ভূপেন্দ্রকিশোর রক্ষিত-রায়ের

ভারতে সশস্ত্র

বিশ্লব

(২য় সং)

₹4.00

অমরেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়ের উপন্যাস

স, वर्ना भारत

20.00

নারায়ণ সান্যালের নবতম উপন্যাস

विश्व वात्रना

₩.00

চিরঞ্জীব সেনের নতুন রহস্যোপন্যাস

মিরাণজিয়ারহস্য

201

আশ্বতোষ ম্থোপাধদয়ের উপন্যাস

बार वक मार्क 👐

আবদ,ল জন্বারের

জনপদজীবন

₽.00

ফণিভূষণ ভট্টাচার্যের

নো-বিদ্যোহের

ইতিকথা

A.00

ম্ডির মন্দির-সোপান তলে কত প্রাণ হল বলিদান', তারই কাহিনী
সৈক্তিম্প দে'ব

আমি সমভাষ বলছি

হতীয় খণ্ড

প্রথম খাড (৫ম সংস্করণ ১৫·০০ * দ্বিতীয় খাড (২য় সং স্করণ) ১৫·০০
"আমি স্ভাষ বলছি" বইটির প্রতি খণ্ডের সম্পূর্ণ ম্লা আ প্রম পাঠালে রেজিঃ ভাকে বই
পাঠানো হবে। ডাক-মাশ্ল আমরা বহন করব।

রবীন্দ্র লাইবেনুরী ১৫/২, শ্যানাচরণ দে শাটি, কলি কাতা-১২ ॥ কোন : ৩৪-৮৩৫৬

আজ থেকে তিন বছর আগে ৯ই আগস্ট, ১৯৭১

দ্ব-দেশের জনগণের মধ্যে ২৫ বছরে রঘনি উ মৈত্রী ও স্বাত্যিক সহযোগিতার সম্পর্ককে চর্ডান্তর্পদিয়ে

স্বাক্ষরিত হয়েছিল

সোভিয়েত-ভারত শান্তি, মৈত্রী ওসহযোগিতাচ্ছি

আজ, এই ঐতিহাসিক চুবির তৃতীয় বাধিকী উপলক্ষে, সোভিরেত-ভারত মৈন্তী ও সংযোগিতার সুফলগুলি আমরা তুলে ধরছি।

- ঃ এই সহবে। গিতা ভারতকৈ তার রাণ্টায়ত্ত ক্ষেত্রটিকে প্রসারিত করতে সাহায্য করেছে, স্বাধীন অর্থনৈতিক বিকাশকে স্নি-চিত করে তার অধিকতর বিকাশের পূর্বশর্ত স্থিতিত সাহায্য করেছে।
- : সোভিষ্যেত সহায়তায় নিমিতি হতে চলেছে তেল, ক্ষলা, রাসায়নিক, আলিন্মিনিয়াম, তামা ও অন্যান্য বহু নতুন প্রকলপ। ৬০ লক্ষ টন শোধনক্ষমতাসম্প্র মধ্রে শোধনাগার হবে ভারতের বৃহত্তম শোধনাগার।
- : সোভিয়েত সহযোগিতায় নিমিতি ভিলাই ও বোকারো ইম্পাত কারখানার বার্যিক উৎপাদন ক্ষমতা বৈচ্ছে হবে যথাক্ষমে ৭০ লক্ষ্য টন ও ১ কোটি টন।
- : সোভিয়েত সহযোগিতায় ভারতে নিমিতি শিলেপাদ্যোগগ্যলিতে উৎপন্ন হয় মোট ধাত্বিদ্যাগত সাজ-সরঞ্জামের ৮০ শতাংশ, তা রী বৈদ্যতিক সাজ সরঞ্জামের ৬০ শতাংশ,
 তেল উৎপাদন ও পরিশোধনের ৫০ শতাংশ, ইম্পাতের ৩০ শতাংশ এবং বিদ্যুৎ শক্তি
 উৎপাদনের ৩০ শতাংশ। এই সব শিল্পা দ্যোগের মালিকানা ও ব্যবস্থাপনা ভারত
 সরকারেরই।
- ভারতের বিদান্থ শাস্তি সংকট কাটিয়ে ওঠার প্রচেণ্টায় সোভিয়েত সহযোগিতা অদ্বি-ভবিষ্যতে গ্রেক্সপূর্ণ হয়ে উঠবে। ১৯৭৩-৭৪ সালে ১৭টি নতুন ভাক্তেশ হাত দেওয়া হয়েছে ইরিন্বারের ভাবী বৈদ্যুতিক সাজ-সরপ্তাম কার্থানায় জেনারেটর উৎপাদনের ভিত্তিতে। এই কার্থানাটিও সোভিয়েত সহায়তায় নিমিত।
- ভারতের কয়লা শিলেশর বিকাশে সোভি য়েত সহায়তাও তাংশর্য পূর্ণ। ভারত-সোভিয়েত প্রকলপগ্রিতে ইতিমধেই উৎপল্ল হচ্ছে ৩০ লক্ষ্ণ টন এবং আশা করা যাচ্ছে নতুন প্রকলপগ্রি চাল্ম হলে ৯ কোটি টনের বেশী কয়লা পাওয়া বাবে। রামগড়ে একটি বড় 'ওপেনকাস্ট' খনি চাল্ম করার প্রকল্পে ইতিমধ্যেই হাত দেওয়া হয়েছে।
- : কলকাতায় ভূগভ রেলপথ নির্মাণে সোভিয়েত সহযোগিতা কলকাতার যানবাহন সমস্যা সমাধানের কাজে এনেকখানি সাহাধ্য করবে।

সোভিয়েত-ভারত সহযোগিতা উভয় দেশের জনগণের স্বাথান্গ এবং এশিয়ায় তথা সারা প্রিবীতে শাশিতকে স্রেক্তি করার গ্রেক্স্ণি উপাদান।

ভারত-সোভিয়েত মৈনী ও সহযোগিতা দীঘ'জীবী হোক!

--কলিকাভাগ্ৰিভ লোভিয়েত গ্ৰেণ্থানের বার্তা বিভাগ ১৪ বর্ষ



SR Remi मता ५० भवना

'উভিজ্ঞান আৰু ইন্টাৰ' নিউল পেপার লোলইটির স্বলাণ

Friday, 9th, August 1974 शास्त्राय २० शायन २०४५ 50 Paise

भ छो। বিষয় Carrelan

- সম্পাদকীয়
- ৬ সম্পাদকীয়
- ९ शामा

-- ই প্রকাষ সেত্র

পটভাষ

-- শ্রীজন আব্দলে হরি লামা

३२ अहे बाल्याम धवस ...

-- শ্রীদেবদত্ত

SR WENTERM

- --জীপ:ক্ষরীক
- ১৬ নয়নাভিরাম লীলে ভিন্ন প্রতিক্রিয়া (কবিতা) -- ব্রীবিকা দে
- ১৭ बारसारमध्य बासनीपि e
 - চিটকলার একল বছর
- -- শ্রীকত্লচন্দ্র বস

- ২১ ৰাজাৰ ৰাজা
- (উপন্যাস) --- শ্রীপ্রভাত দেবসরকার
- २७ म्बन-म्बजी

—শ্রীকৃকা সেনগা;প্ত

২৭ এরাও পিছিয়ে নেই

- শ্রীকনক মজুমদার

२४ विकिश्व

প্রকাশিত হ'ল

আশ্বতোষ মুখোপাধ্যায়ের

নতন স্বাদের রচনা

এই সেই শৃভা গাণগ্লী!

রামকৃষ্ণের বৃকের রক্তে তৃফান তুলেছিল যে যৌবনে। যৌবনের প্রেমিকাকে প্রোঢ় রামকৃষ্ণ দেখছেন নিনিমেষ নয়নে। কিন্তু শ্ভা কী উদ্বেল সেই ফেরারী অতীতের স্মৃতিতে? শৃভা-শ্ভা গংগুলী কী চোখে দেখছে রামক্ষকে?

मारिका मरम्बा,

১৮সি, টেমার লেন, কলিকাতা-৯

বৈতা।নক প্রিচালি । ৰৰীন্দ্ৰ সঞ্চীত শিক্ষাক্রয়

পাঁচ বংসর শিক্ষাণ্ডে ডিলেনামা সতোহে দাই দিন ক্লাস শিশাদের জন্য ৫ বংসরের শিক্ষাক্রম সংগোৱে একদিন কাস ভাত চলিতেছে বিদ্তারিত বিবর্ণের জনা यागायान कम्म देवकानिक 🚟

৪ এলগিন রোড ব্রিটিই০ প্রতি মুলাল, বহুদ্পতি ও বিবিধার সংখ্যা ৬টা ছইতে ৮৯ 🕡

নতুন উপ্ন্যাস - মনোরম প্রচ্ছদ। ट्यानामध्यक हरहे निवासाम

দিশারা

50,

একটি সাভা জাগান উপন্যাস मलब नामाल

ওরা ক'জনে

রিপার দহনে দৃগ্ধ নার্টীর মনস্তভুম্কেল কাহিনী চিক্তীপ চর

রোদ্দ্মরের স্বাদ ৬্

अन्यकात तथाक जात्माश উखत्रावत মনম শক্ষ উপন্যাস रबमश्रका रमगी

ব্যণীর জীবনজ্ঞারে সিন্থ কাছিনী रवर्षे अनाव बट्टबराभाषात्र

শিকারের

ছোট বড় সকলের রাখ্যবাসে প্রবার মত বই

কৰিতা---

रमयीक्षमाम मन्यमाशासाम

नौल সম্দ লোনাজল 0.60

जब अर्थका श्रमान ১২১সি, সাত্রাম ঘোষ স্ট্রীট, কলি-৯ ভি, এম, জাইলেরী—৪২, বিধান সরণী দে ব্ৰু ভেটাৰ্ল-১৩ বাংক্ম চ্যাটাজি শ্মীট माथ शामार्ग-->, नगमाहदन दन नहीं है

निवस्तित्व

PRINCE INDITED

লেখকাদৰ প্ৰতি

- অভাবে হাজানের জনে প্রের্থিত
 নয়তার সংগ্রাপ এক বৃহত পারীন
 বিবাহন বিবাহন করেন জনের জনের জনের
 বাসের জনের জনের এয়া অভ্যানন
 বাসির জননার স্বানান্তরের জনার সাক্ষর
 পান্তর স্বানান্তরের স্বানার্যার স্বানার
 ক্রানার ভ্রাজন আন্তর্গর স্বানার
 ক্রানার ভ্রাজনির স্বানার্যার
 ক্রানার ভ্রাজনির স্বানার্যার
 ক্রালা ভ্রাজনির স্বানার্যার

 রাজনার ভ্রাজনির স্বানার্যার

 রাজনার ভ্রাজনির স্বানার্যার

 রাজনার

 র
- ৯ ৷ প্রেটবছে রচনা কান্যান্তার এক প্রকান শশ্রে অন্প্রকার করার ব্যক্তা-লামে অন্প্রকার করাইনা গ্রন্থটা-লাম কর্মিক প্রকাশের ক্রাক্রে গ্রামীক প্রকাশের ক্রাক্রের গ্রামীক প্রকাশের ক্রাক্রের
- ত। রচনার সংক্রা লেখকের নাম এ ঠিকানা না থাকলে কামতে হাকাশের ক্লামা প্রতিভ হয় না

এक्टिन्तेरमन श्रीक

একেদ্দীর নিয়মাধলী এক দে দংশীকাড় অন্যাম তথা তথাতী কাধালাক পর আরু অংতব্য

श्चादकरमस প्रीक

- ১। গ্লাহাজের টেকানা পরিবর্তনের জন্মে। অস্ত্রে ১৫ দিন আবে। তাম্ভি' কাবাসিটে সংবাদ দেওয়া আব-
- হ। তে গোনতে পাঠক। সাঠানো বর
 না। গ্রাহকের হান্য জন্মালাপত
 থারে থাব-ক্রডারিবাংগ স্বাম্থ্য কার্যালয়ে পাঠানো আবদ্ধা

চলিত হার

বাধিক টাকা ২৫-৩০ টাকা ৩০-৩০ বাংমায়ক টাকা ১২-৫০ টাকা ১৫-৫০ ক্রিলা ১২-৫০ টাকা ১৫-৫০

'অমত' কার্যালয়

১১/১, আনক্ষ্ডাটাজি জেন, কালক্ষ্ডেশ্ত জোন: ৫৫-৫২০১ (১৪ লাইন)

স্বংন হল স্তি

মুখ জাল করে একটি অভিজ্ঞান্ত দোকাম থৈকে বের হয়ে আসতে আসতে চাষীর ছেলে উলওয়ার্থ দাতে দাতি চেপে প্রতিজ্ঞা করেছিল সে অপমানের শোধ নেবে। তাব স্বক্ষমণ কিভাবে স্বক্ষর ডেয়েও আশ্চমণ বাস্তবে পরিণত হ'ল ?

অনু : ধ্ৰেজ্যোতি লেন

আকাশ ছোয়া এনডেডেণ্ডার সিরিজ পের্র প্রাগতরে বিভাষিকার দেশে টাইনারের জণ্গলে লণ্ডডিভার রউ,দবীপ

র্থান্তিলাথ চটোপাধান মাজিবদেশ রণদা প্রতিটি দাই টাকা বালিভিন্নার ভাকে কিলোরদের জন্য

টিপি লকলিন ৬

অন্ঃ এণাক্ষী চট্টোপাধ্যায়

চালি চ্যাপলিন ৯:

চত্ৰ্থ সহযাত্ৰী ং

অশোক সেন

ভ্ত চত্দ্শী ৬্

একি সতিয় ৭

উজ্জ্বল ঘোষ

শ্রীভূমি পার্বলিশিং কোম্পানী ॥৭৯ মহাত্মা গাধ্ব রোড, কলিকাতা ৯

সচিত্র বিধববিখ্যাত ১৩টি রহস্য কাহিনীর বিপলে সংকলন



শার্ল কে হোম্স্ ফিরে এলেন

কোনান ডয়াল / অদ্রীশ্ বর্ধন বড় আকারে নতুন মাদুল বের,চেছ!

টাঃ ১৮ (প্ৰাহক ম্^{কা} টাঃ ১২) ৰুক ক্লাৰে টাঃ ১৫, কবিম টাঃ ৫

খনা কোনো রচনাবলীতে এটি পাবেন না। কাগজ সংকটোর জন্য সীমিত সংখ্যার ছাপ। ইচ্ছে। আবার মালা বৃদ্ধি হতে পাবে। ১৪ই জাগাভেটর মধ্যে অবশাই গ্রাহকচীলা ৫ টাকা পাঠিয়ে দিন।

বুক ক্লাবের সদস্য হয়ে বই কেনাই লাভজনক!

সতে ৪০ শতাংশ কম দামে বিভিন্ন প্রকাশকের প্রতিভাগন লেখকের বই
পাবেন। একস্পেন ১৫ টাকার বই কিন্সেই ৫ টাকার বই ফ্রী বোনাস!
কোনো মাসিক/বাধিক চাদা লাগে না--কেবল ভাতি ফ্রী ২ টাকা।
কাবের তালিকা থেকে বারো মালে চারখানি বই কিন্সেই আজ্ঞবিন
সদস্য থাকা যায়। প্রতি মানে গ্রুখ সমাচার প্রতি। ফ্রী:

নানা কক্ষের ভালোঁ ভালো বই আছে! প্ৰবই অভনবন্ধীয় কল বানে! যোগেয় টা ২ ভালি কা পাঠিছে বিশন্দ বিষয়ৰ চুক্তনে নিয়াঃ বাজই! এখনি! आक्रिका-विधा त्क इध्या माना स्टा वर्षे विकास । ८०-३ करनाव चौति, क्लाकारा-३२

স্চীপত

भाष्ठी

৮০ খেলাগ্লা

বিষয়

জেশক

> 2	সাহিত্য ও সংশ্কৃতি আথিক প্রসংগ অলোধিক জল্যান বিজ্ঞানের কথা সেকালের সংগতিগ্ণী আপুনি কৈয়ন আতেন	(উপন্যাস্)	শ্রীজরংকার শ্রীলানিতলাল মুখোপাধার শ্রীঅতীন বদেদাপাধার শ্রীঅসম্প্রমত শ্রীজ্মান মুখোপাধার শ্রীজ্মান মুখোপাধার শ্রীজ্মান মুখান্ শ্রীজ্মান মুখান্ শ্রীজ্মান মুখান্ শ্রীজ্মান্তলা তি মুখোপাধার শ্রীজ্ঞান্তলা তি মুখোপাধার
৪৯ ৫৫	জোনাকজনলা আলোম রূপসীর খাতা	(গল্প) (উপন্যাস)	<u>- শ্রীবরবার্ণনী</u>
ওও ৫১	C		— শ্রীসরল সেন
৬0 ৬২	ও রা বলেন ফোর থেকে বলাছ)	— ফট্রডিও সংবাদদ ্ টা
ა8 ც(৬ কাঁুড়িও সংবাদ∕এ¤-টিৰাস	्राप्तवन नामात्र -	
હુ વ		•	– শ্রীঅভিজিৎ —শ্রীরঞ্জন মজনুমদার
93	विरमणी ছवि		শ'র চ —-জীশকভিদ্র
91	ং সকঃভিনয় ৩ বিবিধ সংবাদ		
	S বাংলাদেশের ছবি ৬ জলসা		—শ্রীআ্⊼ ওয়ার 'অ:ইমদ —শ্রীচিত্র •গদ†
	্খেলার জগতে মেম		— শ্রীতময় —শ্রীবিপাল বন্দোপাধানুয

এক ভাগ্যহীনা য্বতীর বিড়দ্বনাময় জীবন কাহিনী

"জানের কে এবং কারা আমার সতীত্বকে বিস্করণন দিল, তারাই আবার আপনাদের সমাজের কর্ণশার। রাত্তির অধ্যকারে আমারই শাড়ীর আঁচলের তলায় মুখ লোকায় এবং স্থেডিয়ের সাথে সাথেই তারাই আপনাদের স্মাজের নির্মের কাঠামো তৈরী করে।"

---শ্রীদশক

প্রথম মূদুণ নিংমোশ্তপ্রায়। শ্বিতীয় মূদুণ প্রকাশের পথে। বাংলা চলচ্চিত্রে রুপায়িত হচেছ।

প্রীক্রণিনজিতের

विलीग वृषवृष ०००

(বাংলা সাহিতা জগতে আলোড়নস্থতিকারী অবক্ষয়ী নারী সমাজের উপর একথানি বলিষ্ঠ উপনাস)

শ্লীক্ষণিক্ষিতের পরবত্তী উপন্যাস

তিস্তার তট রেখায়

₽.00

ৰাণী প্ৰকাশ ॥ এ১২৯ কলেজ শ্বীট মাকেট, কলিকান্তা—১২

দীপক দের উপন্যাস প্রেমিক প্রেমিকাদের বৈঠকে—৪ ক্লকাড়া দেশেছি—৩ নিপক্ ৭৩ ৷ ১এ ক্লেজ যে৷

विमादिकम् मान-धरा

প্রথম ফোট। ফুল ৭.

জমাটি গল্প । চমংকার লেখা । বছটি অবলাই পড়বেন ।।

শৈৰ্যা প্ৰেকাশ্য

৮।১সি, শামাচরণ দে শ্রীট, কলিকাতা-১২

'ब्र्भा'त वरे

পরিমল গোল্বামী বনপথের পাঁচালী

দ্রমণ কথা । ৬-০০

তুই রহস্য তুই শহরের

গম্প ক্রম্ম । ৬-০০ স্কুলের মেরের

্টিপন্যাস । ৩-^{০০}

আমি

যাঁদের দেখেছি

মাতিকথা । ১২-০০

পত্রস্মতি

ক্ষাতিকথা । ২**২-**০০ **যথন**

সম্পাদক ছিলাম

म्बर्गक्रकथा । ১७-००

ইত**ে**শ্চতঃ

রুমারচনা । ৬-০০



রুপা জ্যাণ্ড কোম্পানী ১৫ বাংকম চাটোজা স্থাটি কলকাডাম-৭০০০ ০১২



সম্পাদকীয়

ভাষাগত সংখ্যালযুদের সমস্যা

গত সংভাবে সংসদে ভাষাগত সংখ্যাগখ্য কমিশনের বিলোচ নিমে এক দফা আলোচনা হয়ে গেল। ভারতব্যে বহাভাষার অসতত রয়েছে। এই ভাষা নিয়ে অনক রাজে। অনক বিবোধত হার গেছে। ভাষাভিত্তিক রাজা গঠন করে এই ভাষা বিরোধের অনসন ঘণানো যায়নি। দেখা গেছে যে, ভাষার ভত্তিতে পানগাঁঠিত মাজেরিও একাধিক ভাষার অসতত লায়েছে যার ফলে ভাষাগত সংখ্যালঘালের সমস্যা দেখা দিয়েছে নতুন করে। সংবিধানে স্বীকৃত ভাষা ছাড়াও ভাষতে বহা ভাষা প্রমায়ে বা বহালোকের মাতৃভাষা এবং যে ভাষার উৎকৃষ্ট সাহিত্তি রয়েছে। মৈথেলি, নেশালী প্রভৃতি ভাষা এই পর্যায়ে পড়ে। উদা সংবিধানে স্বীকৃত ভাষার অনাজম হালেও বেনানা রাজে, তা সক্ষারী পড়াই স্বীকৃত ভাষার কানাজ্য হালেও বেনানা রাজে, তা সক্ষারী ভাষাগ্য সংখ্যালঘালোক সামাতে প্রমায় কানাজ্য করা বিলাল সংখ্যালঘালা সামারিক সামাতির সামাতির বালালা মাজারাক বালালা বালালিক মাতু সরকার সাক্ষাত্তিক করা বালালা ধ্যালালা বালালিক করার কোনো বাধাবাদকতা নেই।

পশ্চিমবাংলার দাজিলিং জেলায় মেপালীভাষীরা তাদের ভাষার সাংবিধানিক স্বীকু তব জন্য দাবি জানিয়ে আসাছন। সম্প্রতি মেঘালর সরকার থাসি ভাষাকেও সংবিধানের অণ্টম তপ্শলৈভুক করার জনা দলবার করেছেন। অবশা সংবিধানে শ্বীকৃতি লাভ না করণেও ভাষা তাল নিজের জোরে এবং সাহিত্যিক উৎকর্মে বে'চে থাকতে পাবে। তাহলেও ভাষাগত সংখ্যালঘাদের এই দাবি উপেক্ষণীয় নয়। সংকার সিন্ধি ভাষাকে সাংবিধানিক স্বীকৃতি দিতে পার্লেক নেপালী বা খাসি ভাষার বেলায় তাদের অপতির কোনো হেতু নেই। এছাড়াও ভাষাগত সংখ্যালঘাদে। কঠিন প্রীক্ষা দেখা দেয় চাকার-বাকার এবং শিকার কেতে: তামিলনাড়তে মালয়ালীভাষী সংখ্যালঘ্য, কর্ণাটকে তেলেগ্রভাষী সংখ্যালঘ্য কংবা আসামে বাংলাভাষী সংখ্যা লঘ্টের সমসাধা বিষয় লোকসভার উঠেছে। এদিকে সরকারের দুল্টি আকৃণ্ট হওয়া উচিত একই রাজ্যে একাধিক ভাষাভাষী লোবেশ বাস "ব্ঞাবিক ঘটনা। কিন্তু ভাষাণত সংখ্যালঘু বলেই তালেঃ মাতৃভাষার অধিকার সংখ্যারিষ্ঠরা কেড়ে নিতে পারেন না। চাকরি কিংবা শক্ষার ক্ষেত্রে তাদের বিরুদের বৈষমাম্লক আচরণও গণত ত্রিরের্ধী। কেন্দ্রীয় সরকার এসম্পর্কে বিশেষ কিছু করেননি। উত্তরপ্রদেশে উদ্বুলিংখ্যালঘ্যাদর ভাষা। উদ্বুল্বান অভি মণ্ট এবং তার সাহিত্যিক উৎকর্ষ গাণীজনের স্বারা স্বীকৃত। অথচ এই ভাষার ক্ষেত্রে সাম্প্রদায়িক মনোভাব আমদান করা অতানত গহিতি কাজ। এই সাম্প্রদায়িক চিম্তা বা প্রাদেশিক সংকীশতা রাক্টো আদক্ষের পাকে কতিকর। অংশামে বাংলাভাষীরা এর জনা দীর্ঘদিন আক্ষোলন করে আস্থেন। ভাষা সংপ্রে বিশেষ করে ভাষাগৃত সংখ্যালয় দিশ সুম্পুকে সন্তকারকে স্কুপ্টে ন**িত গ্রহণ করতে হবে। এ নিয়ে দিবধা করলে তা**র ফল হবে মারাপাক।

সরকারী ভাষা হিসাবে হিন্দি নিয়েও এক শ্রেণীর অভাংসাহী হিন্দিশ্রেমী বড় বাড়াবাড়ি করছেন। ভারতব্যের মত্যে বহুভাষী দেশে সব ভাষাকেই সমান মর্যাদা দিভে হবে। কোনো ভাষা দমন করে ছোর করে হিন্দি চাপানোর চেন্টা জাতীয় সংহতির পরিপাথী। ইতিমধ্যেই দক্ষিণ জারতে, বিশেষ করে হামিলানাড়াতে হিন্দির বির্মাধ জনমত খাব তীর। সবভাগতীয় ভাষা হিসাবে হিন্দিকে গ্রহণযোগ্যা করতে হবে হিন্দিভাষীপের অন্যানা ভাষা বিষয়ে সহন্দীল হতে হবে। সকল ভাষার সমাধি ও সামাগ্রক বিকাশই স্বেছায় একটি স্বভারতীয় ভাষা গ্রহণের পথ প্রশাস্ত করবে। ভাষার ওপর দমনানীত সংহতির পক্ষে যে ভাষা জনসাধারণকে বিকাশই করে। জাতীয় সংহতি বা ভাষাগত সংহতির পক্ষে যে ভাষা নিয়ে ছিনিমিনি খেলার পরিপতি বিপ্রস্কাক করি ইতিহাসে তাল নজীকের অভাব নেই।



দরভার খিল খেলার শংদ বিকাশের যুম ভাগাল। মলু বেরিয়ে যুক্তে। অনাদিন হলে সে ব্যাপার্টা গুলুহার মধ্যে আনত নাং হর বাপিকে জড়িয়ে ধরে অংবা কিছুক্তর ভোগ বুজে পড়ে থকে বিকাশ। আজ পারল না। তেড়ে ফুড়ে উরে বসল। মলুকে একতে গিয়েও থেমে গোল। কোন রকম কু-সংগ্রার নেই বিকাশের। আজ তব্ ভোর-বেলা বের্বির মুখ্য মলুকে পেছু ডাকতে ওর বাধল।

বেলা বের্বার মান্য নজাক নেছ, ভালাত তার মান্যা।
কাবলা আমাস থেকে বাড়ি কিরে ডাঙাবের কাছে গিরেছিল বিকাশ। ফোরার পথে
কাবলা আমাস থেকে বাড়ি কিরে ডাঙাবের কাছে গিরেছিল বিকাশ। ফোরার করে শিথিয়ে
পাকে দুজনে কিছালাবের জনা বসেছিল। তথাই বিকাশ মঞ্জাকে অনেক করে শিথিয়ে
পাছিয়ে রেখেছিল। তথা, ওর ওপর আগণা কম। স্তাসিনীর সামান পাছে যদি বেষাসা বিকাছ বলে মঞ্জা বাপারটাকে শাব্রতেই ক্রিয়ে পেলা-এই আশাক্ষম খাট খেকে নেমে
পান্তুল বিকাশ।

বাবা দাদা বারান্দায়। রালাগরে ক্ষান্নী-বি। হৃড়িতে ভাত ফুটছে। বাবা খবরের কাগজ পড়ছেন। পানে নাদা। দাড়ি কাম চেচু। ওকে সকাল সকাল কাজে বেলুতে হল। সব্কিছু স্বাভাবিক। প্রতিদিনকার শতই। শুগু বৃণ্টিশেরের ভোশবেলাট্রীই যা আনারক্ষ। মাজিন। আলোর বড়ই অপ্রচুর্যা: মেঘচাপা রোফ্ পান্ত্র।

দরভার সাথে দণ্ডিয়ে বাধরামের দিকে চোথ পড়তে বিকাশের স্থান্তের ছিল চড়ল। সাহাসিনী বাধরামের দর্জা খালে কালবিকে নিয়ে বেরাজেন। ধর বহু চড়ল। সাহায়ের দাতে পড়তে শারা করেন করেনে দা-বাবার স্থোমাণি পড়ে গেছে মজা। দাধের দাতে পড়তে শারা বিজ্ঞান আজ এক বছরের ওপর স্থেল একই খাটে শোওয়া বিপত্তানক মনে করে বিজ্ঞানী আজ এক বছরের ওপর হুরে গেল কাম্মিরিকে সাহাসিনীর হবে চালান করে দিয়েছে।

বিকাশের বৃক্ত কোপে উঠা।
শাহাসিদা কি সব ফোন বলছেন মঞ্জুকে।
আইন সময় থাকে তেখা বাণি কোদে
উঠাত পারের তলায় মাটি পোল বিকাশ।
সে গালা চাড়ায়ে বলল, মা, বাণি উঠে
লোছে। শিগালীয় এসো।

দাতে রাশ চেপে কুয়োভলার চলে এল বিকাশ। কুয়াভলার ওধারে মশ্ত প্রপাদ। ওটাই বাদির সীমানা। তারপর রাশতা। রোদ মালনতর হচ্ছে। আঞ্চালের রাতিক ভাল নয়। মনে মনে আবহাওয়ার মাভেপাত করল বিকাশ।

চিন্থিমাথে জল দিতে হঠাং নক্তমে এল। মজা দাদার খবে। বৌদির সংশ্ব কথা বলছে। সেদিকে চোখ পড়তে রাগে গ্রজান করতে লালল বিকাশ। সকালবেলা বৌদির সংলা এত কি কথা থাকতে পাটো মজার যদি কোন কাশভজান থাকে। বড় আলগাস্বভাবের মেন্মেমান্ত্র। কোন বাপারে গ্রহা দিতে চায় না। নিমম্বেধ কু য়তেলা থেকে ফরে এল বিকাশ।

দাদ্র দাড়ি কায়ানো শেষ। কাবে
সামছা। করোতের দিকেই হাজে। মাতের
ঘরে সাহাসিনী। বাপিকে কোনো নিয়ে
বসে হার খাওয়াভন। এতকলে য়য়ার কথা
দেব হল। ও ঝায়বিতে হার ঘরে চুকছে।
বিকাল বাংগালায় উঠে হাক পাড়ল মাডির
মা. চা দিয়ে যাও।

থার চাকে বিকাশ বলল, একি, আবার বিছানা নিয়ে বসলো যে। বেরতে দেরী ছারে বাবে কিল্ড-বেডকভার নিয়ে বর্ণজন্দ চাপা দিওে দিটে রান্ট গলায় উত্তর করল মান্ত্র বাবে বাসি বিছানা ফেলে বেথে যাব নাকি —ডেসিং টেবিলের কাছে এসে চুলে চিরানী চালাতে চালাতে বলল বিক শ্ এডক্ষল বৌদিব সংকা কিবকবক কর্বছলে? —মান্ত্রার কি সব করাই জানা চাই না মানে তোমার কি সব করাই জানা চাই না মানে তোমারে কি সব করাই জানা চাই হল করে কি বলতে কি বলে ফেল।

বাইরে টিপটিপুনি শার, হয়ে গেছে। মজা বিকাশের কথার জবার ন দিয়ে আলমারী থেকে কাপ্ত নামাতে বাদত হয়ে প্রকা বাবাঞ্চায় মারে মার গলা শোনা বেল, ছোড্দাদাব্যুর, চান

বিকাশ বলল সংগা একটা শাড়ি নিয়ো কৈছে নজা খেপে গেল, ভা নিয়ে তোমাকে ভাৰতে হাব না।

মতিং মার হাত থেকে চারের কাপ ভূজে নিয়ে বার লায় বসলা বিকাশ। সে সূবে চারে চুমুক দিতে বাবে এমন সময় লাগজ থেকে মুখ ভূজে বাবা বলালে। কাবিল। পাড়ার মহ যদি কোন খবন থাকে। শুনিনা লাগ কাব গ্রেক্যাভার সংবাদ—

ন্ধত পাত শালানী ভারিত ফালার মত ধী করে হাখা পাথে যোভে নিকালের হাত কোনো উঠল। খানিকালৈ শাবন চা চলাকে ভার বাবে প্রভাগে সে সংখ্যা মখা কাকিছে চিড়া গালায় নলালা যা বলাছা আল্লামী মাল থেকে ভারতি কালাল লাখ কার কোনো—যোখ প্রিব্রে। সংস্থামিক খরচ-খরচার মধ্যে দৈনিক কাগজের টাকা জোগানোর দায়িত বিকাশের ভাগো পজেতে

বিকাশ মান্তাতিরিক চেচিয়ে ওঠার
দাই জ্রাকোড়া করে বাবা একবার তার
দিকে তীয়াকৈ তাকালেন। লভিজত বিকাশ
নিজেকে সংশোধন করার জনা বলল
শব্দের কারজেওরালাদের যত কাডে। ওরা
কি জ্ঞাক খবর খাজে পায় না — বাবা
নিজের কির্মিক লাকেবার জন্য ফের কার্গাজ
চোখ রাখালেন।

শ্নানশেষে দাদা কুয়োতলা থেকে ফিরে আসতে বিকাশ চণ্ডল হয়ে উঠল। এক নিঃখবাসে সে চায়ের কাপ শান্য করল। যে কলেই ছোক ন'টার ভেতর ভাদের পেণছ:তে হবে। বিকাশ উঠে মাঝের ঘরে চলে এল। খেলনা নিয়ে বর্ণপ খাটের মাঝখানে বসে আছে। সংহাসিনী সিংছাসনের কাছে। বাবার বিটায়ারমেটের পর থেকে স্হাসিনীর দেবদিব জ ভবি ক্তমশ্য বেড়ে যাছে। হাতে সময় বেশি নেই। বাশ্তসমূহত হয়ে বিকাশ বলল আমরা কিন্তু এথখুনি বেরিয়ে যাছি মা। -- স্ত্রাসিনীর ছাতে ছোট ছোট পেতলেগ थाना-रानाम। मान्छ शनाम रनतम, छुटे শান থাওয়া করে যাবি না?--ফের ছেত্-শ্না চড়া গলায় বিকাশ বলল, না-না। মঞ্জাকে অমলের বাড়ি পেণছে দিয়েই সামাৰে সন্ধিসে ছাউতে হ'ব।

কাল রাতে জাম প্রগত্ত করে। রেখে-ভিল বিকাশ। বলেছিল: কাল ভার বেলা মঞ্জাকে নিয়ে অমলের বাড়িতে যাব। ফিবতে কিন্তু সন্ধাা হ'য় যাবে ---স্তাসিনীবলেছিলেন ঃ অলল, সে আবের কে?--অসলকে ভূমি চিন্তে নামা। আয়েরা এক সংখ্য কলেজে পুড়তাম ভিত্তা বিকাশ বলেছিল ৷- জঠাৎ এর ব্যাড়তে সারাদিন নেম্বত্র নাকি : না. ওসব ন্য তেসেছিল বিকাশ আজ হঠাৎ ওব বউ বলতলায় পড়ে গিয়ে কোমবে চোট পেয়েছে --- সে কিরে, বউটি পোয়াতি নয় তে ? মাল বিপ্ছলক প্রশ্নটাকে কেন্ন রকমে বিকাশ পাশ ক্টিয়েখিল ঃ না-না। এদিন হঠাৎ পড়ে গেছে। ভীষণ বাধা। উঠে বসতে পারছে না। এদিকে ঘরে বাজ্ঞাকাচন, স্বামী।কৈ ওদেব রেখে খাওয়ায়। সমল কাল সকালে কৃষ্ণপরে যাবে। ওর মাকে নিয়ে আসতে। তাই ভাবছি ক'ল সকাল সকাল মঞ্জাক নিয়ে এর বাড়িতে যাব। যাতে র লাটা করে দিতে পারে।—বলতে গেলে পারো একটা অন্তেজন। বানিয়ে বলতে গিয়ে মোহের দিকে স্তুদ্ধরণিজ্ঞা বিকাশ। শেষ প্রথিত সাহাসিনীই ওকে সাম্লেছিলেন নিশ্চয়ট সাবিঃ এই স্যুক্তমার্ক--

বের্বের ম্লুভ্ সামরি বাহনা ধরে ছিল সালো যাবে। বিকাশ ধ্যাকে উঠে-ছিল। যালা কালছিল, মোহটাকে ও ভাবে কছ কেন। ছেলেমানুহ না।

প্^{ৰী}চৰ গাণ্ডায় এলে বাক থেকে পাৰ্য নামল বিকাংশর। একটা সিগায়েট

ধরাল সে। ফ্রেফ্স দুটোকে ধোঁয়ায় ত করে নিয়ে বলল বাক ভালয় ভালর বেগুনো গেল -কথাটা যেন কানে গেল না, এই ভংগীতে প্রশন করল মঞ্জা, কটা বাজে?—তাত্রভিতে চোধ রাখল বিকাশ আটটা পাঁচ। ঠিক সময়ে পেণছে হাব আমারা - কথাটা শেষ করে সে হাত নেডে অদ্রবত্রী এক সাইকেল রিকসাকে ডাকল। মজ্ বলল আবাধ রিক্সা কেন? বাস্ট্রপ কভটকে বা পথ---- বিকশ্য এলিয়ে এল। মেঘ পাতলা হতে **শরে** করেছে। বিকাশ এখন ভিন্ন মেজাভের। মজ্যকে খাদি করতে বাদ্ত। এর **কথাটা** গায়ে মাখল না। বলল ব্যাগটা আল্লাকে দাভা-এডচাড কাপড়ের ব্যাগটা **মঞ**্ বিকাশের দিকে এ গায়ে দিতে ওর সংখ্য চোখটেচাখি হল। একটা সাধারণ শাভি পরেছে মধ্য। তাড়াহ্মডায় ভাল করে চুল আঁচভাতে পারোন। প্রসাধনহীন মুখ। তবা অন্টলোড়ে মজনক দেখতে ভাল লাগছিল বিকাশের।

স্থিকল বিক্সায় উঠে বিকাশ বলল আসলে কি ভানে যা হাজ মাকোট মাজাকল এসক অকভাৱ ঘরে ঘরে হাছে তবু চাকটোল পিটিয়ে সকলকে জানান দিয়ে ধরেবার তে কোন নামেতিয় না

মজার চৌধ তথা গাইতার চলাচ্চেরে দিকে সে এক সময় উদ্মান বাল উঠল, বালিটা সারাদিন থার একলা থাকাবে।— ওব কাঁধ হাই বেখে সালাতো করে চাল নিয়ে শাম গালার বিকাশ বললা একটা বেলার তা লামলা, যা আছে ব্যক্তিত অন্ত ভাবহ করা।

দোতলং বৃদ্ধি। নামিং হোম এক তলায়। গেওঁ ঠোল ভেতরে তকেন্সে খামিকটা প্রদেশ্যে প্রেটারে ক্রেক্সে বাঁরে দেবজা। দিবলা দিয়ে তেতা চাক্রে বাঁরে ছোট একটা মাপান আফিসম্বর। তার ওপারে মপ্রবেশন ব্যা। টোম বর্জের। কবিভালের দাপান্সাকে াবিভ অক্সই। মাহাবের দিকে সিন্তি। দ্যোতনায় ভাঙার-ব্যার স্প্রিকার হারেন।

কাল সাধানে এখনে এখন মাজার ভয় খনেবটা কোট গিলেছিল। টাইলাস বিছননৈ যেকো। ডিসেটজন গৈছে লাভানে তথ্য কালে কালেছিল। কালেছিল সম্পানিক কালেছিল। কালেছিল সাধানি কালেছিল। কালেছিল।

ফেল্ড পাল মন্তা স্বেছিল ে বেশেশানে তা ভালই মান হল। ভালগাৰী
মান হল। ভালগাৰী
মান হল। ভালগাৰী ফোট পড়েছিল বিনাম : হাংছা এবার বাঝলে
তো। আমি তোম কৈ আন্তাবকে জাখানার

া মানপথ মান্তা পথান কালে হাংছা
মান আনু নালগালী কালে হাংমার।
কালেমাখ মান্তা ক্যান্তাটা গালাধ্যকশাল
কালিছিল বিকাম। আন্তাভ ভারেছিল মান
মান। হবার সঞ্চাত কারণ ছিল। আ্লাঞ্জালী

जहरतत कानार्ट-कानार्ट नारक्षत हाछाउ মত দালি's হোম থাজাল উঠছে। চটকদাব मांद्रेमत्वारक्षंत्र व्यक्तात्म व्यक्तिन কাংশই পাপ-ব্যৰ্গায়ের এক-একটা বড शीर्छ। शक राष्ट्रक जाङ्गतात क्रिक्क टम्बरनः ক্ষেত্ৰত কোথাও ড" মাৰলে অংথ⁶র সাপ্রয় হত। তবা সেপথ বিকাশ মাডায়মি। গড-বড কিছা একটা ছয়ে গেলে সারাজ্ঞবিন राक हानकारण इस्त. **अहे** रहरन। **अ**द्मक খেজিখবর নিয়ে তরে সে এখানে এলেছে। নামকরা ভাঙার। অনেকগালো বিলিতি ভিন্নী আছে। বড় একটা হাসপাতালের সংগ্ৰহ যাত।

ওলা পেণাছবার ফিনিট পনের বাদে चभारतभाम-प्राप्त रथाक मार्भ दर्शावस्य जन। गडकाम अडे गाम श्रमारक जातिन्छ करा-ছিল। ছাঞ্জার দিকে ক্রাক্তিয়ে শিয়ত ছাসল এসে গ্রেছন।—ধপধ্বে সাদা ইউনিকম[া]। ভরতত শরবর। চোখমখে উত্তরেল। বিকাশ ভারণ ঃ সাগাদিম নোংরা ঘাটে। তব্য, नामिंद्रत स्व सम्य उन्जान दिन्याश दिन्।

বিকাশ এলিয়ে গেল। ভাতা গলায় ভিজেল করল অপারেখন কথন হাবে?--অন্ভিপ্তেত প্রশেন নাগের চোবে বির্ভির ছায়া নামল। বলল নিবিকার গলায়, এই কিছাক্ষণের মধেই। আজ আর কোন কেস

আরো গিনিট পনের বাদে ডাঙার দৌত্লা থেকে নেমে এলেন। প্রনে একটা িলেচালা আছেল। বিকাশের সংকা চোখা-চোখিছতে তিনি আরো গৃদ্ভীর হয়ে গোলেন। গটগাট করে অপ্যরেশ্ন রামের দৈকে চলে গেলেন। পেছনে সেই নকেণিট। বিকাশের দ্রপা কাপছিল। নাস্থ ডাকল মঞ্জাকে আসান।-বিকাশের হাত থেকে কাপড়ের থলিটা নিতে নিতে রভখনে। মাথে মঞ্জা বলস মাই।—বিকাশ উত্তরে ্ৰৈছা সলতে পাৰল মা। তাল যাকের ভেত্র তথন খেন কেউ একটা চাকা খোৱাছিল

ভারপর কিছা সময় অস্থির উতাক বিকাশ। একল্যা বেণ্ডে রসভ্রে। একব্যর উঠি দড়িজেছে। বারবার সে হাতের পিঠ দিয়ে চিবাকের থাম মাছে ফেলছিল। একটা কাতগোঁজ, চাপা, হয়ত মঞ্ব। বালতি জাতীয় বিছা ঘোৱাত ঘসটে টেনে নিয়ে লোল যেখকম হয় সেই ছাতীয় শব্দ। ছুরি-কচির ধাত্র আওয়া^{ভা} সিগারেট ক্ষয়ে বিকাশের আঙ্বলের ভগা প্রাড়ে গেল একসময়। হুঠাৎ প্রাণের কেবিনে একটা বাচ্ছাগ্ন চিৎকার ভেগে इंद्रेल। विक भार ममध्यरयाश क्यां काल। এখানে ডেলিভারীও হয় নাকি? ভাবতে গিয়ে হবাৰ হল সে।

অফিস-ঘর থেকে একটা লোক বেভিয়ে এল। বিকাশকে ভাকল। অফিস-ঘরে চাকে ৈকঃ জন্ম দেবাৰ সময় হাত কেপপ সংভিত্ত বিকাশের। সে শাংশাল, ভারের किया, दसरे व्हा?--त्मावेगांदका शामहरू श्रान्तरह (लावद्री वलन, सा सा। प्राप्त सनायात

পাক। লাভ ।-- বিকাশ আবে। আধাকত হ'ত हारेन मा, ब्राह्म, जाबाच सराहेक चरा नाक्ष्मिक किया !-- त्याक्षेत्र विकारश्रद परक অধুপ্রভাবে ভাকাল। হাসল একটা धारक्षांशां विश्व स्तरे महिन्त जनस्वनाने। मक्तानामा क्रिक्टकाना निरम् क्रिक श्रीवण्यात्र कातम् ता आत्मको स्पष्टितकम আৰু কি

ন্ম সই করতে গিয়ে লেখা স্লাড়িয়ে शास्त्रिम विकाशमत । तमाक्षता अक्या मिल. किक् नक्षः कत्रधानिति त्मक भाषता वरफ नहें कतिया काथि।--विकास बाधा নাড়ক। ছাগতে চাইক বলল ভাগে বাটেই।—লোকটা, সইপর্য খোল হলে বিকাখের ছাতে একটা ছেসকিপদান श्रीत्रष्ट्व भिन्न, यान आहे अधासगास्ता छ्डेश्डे নিয়ে জাসন।

करम काम अभाकात घाषाक दिकारमध দেৱি চয়ে গেল। সূত্র ওয়্ধ-ইনজেকশ্ন এक मिकारम शाख्या लाम या। मात्रिश হোলে ফিনে জাসতে এক মাঝবলগী আয়া विकामत का उर्धारक खबाशगास्त्रा विका বিকাশ বলল অপারেশন ক্রায় গ্রেছ আয়া মাথা নাতল, হাা। এই প্রথম ধারি? -প্রশ্নটা বোধগ্যা হল না বিকাশের। সে वनन, भारत आभात मार्ड हैना आहा — শারার চোঞো দুল্টি ঘন হরে এল, ওঃ। সতি। যা দিনকাল পড়েছে। - গদগদ হয়ে বিকাশ বলগ, যা বলেছেন।

বিকাশ একবার অপারেখন রামের দিকে গোল। আ**ধতেজ্ঞান দৱজা**ধ ফাঁক দিয়ে ট'কি মাগল। টেবিলে শায়ে আছে মুজা। शका कांच्य आया हामरत एका। मा रहाय বৈশিকা। ভেক্তরে শহরত লাস্প ছিল। সে বিকাশকৈ দেখতে পেয়ে এগিয়ে এল। কৰ্মশা গলায় বলল, একি আপুনি এখানে . কেন। চলে সান। বিকাশ অপ্রাধীণ ভাগাীতে বলল, একটা কথা বলব ওকে। ল্লাস বুলস এখন কি কলা সুল্বেন। লেসেপ্টের তের সেম্সই ফেরেনি।

-- ওকে কথন গিলিজ করবেন?

—ভা, ভিনটে সাড়ে জিনটের আ**গ** ে নয়ই।

--খাৰারটাৰার কিছা জানতে হবে?

পোঁছাতন দৈওয়া ছয়েছে: আজ সলিভ কিছা খেলেই বন্ধি করে মেলবেন। - नार्भ यदेश्य इत्य देवेल ।

-- গরম দাুধ্যাধ ? - বিকাশ নাছোড়-

- দুধ, তা চলতে পারে। তাও মন্টা-তিনেক বাংদে বলেই নাস দরজা বন্ধ কথা

ছড়িকে ভথন পৌনে এগারটা। এইটা সময়, বিকাশ, কি করবে ভেবে পেল না। শেষভাষ নাসিপিতাম থেকে বেরিয়ে এল : দ্যু একজনকে ভিজেস কলতে পোদীঅফিসেন সংখ্যান পোয়ে গোলা

টেলিফেনের কাছে শাইন। अधान একটি খ্রেয়। মাথায় তালখোলা। ভি কাই वाक्रिका व्यान म्येगारभव नामणे वास्म व्यक्तिरहा পড়েছে। মূথে হাংকা পাউড় রের 📆 সামে ।

ক্রেমির তপ্রের পাতায় করেচের পাতা क्षेत्रम । **भाषाच्या संभावक कर्याक्ष्म** । এक सार्व्यस அரிசு பிரி மிரும் கேர் மூர்கள் क कार्रिक अवस र्यापास देशभामतन याज क्रम एक क्रित देशभाषे हैं क्रामा आहा। करमञ्ज कार्देव ? यहना कि। कहे बाल ক্রলে। ঠিক আছে বাব। সে-উল্লেখ্যাল ভান্ন- মেরেটি কলকুল করে ছেলে উঠতে खब क्योदश्च ब्रम्भ ब्रास्ट्रम १७७ अस्म स्माम । शत्में श्राप्ता प्राप्तम विकास भार शस्त्रा मा। টের পাবে একদিন। ভাল করে ফাসটা প্রভাক। বিয়েটা হ'ব লাক। ভারপর কালে কালে মর জারিজাগি মাচবে। रकाषात्र याद्य कार्ताद्धः। गामसः। सन्धा भाव्यः, সব দেখা যাবে।

रकान श्वाम समाग। अकट फिलाएँ-ह्यार के काल करता नमल रक- । आया । দেলক্ষা ভাঙল বিকাশ। -- আমি কে? নাঘটা বলান। —বিকাশ নাম বলতে কলা।ণ বলল, ও বিকাশাদা, ভূমি। কোখেকে ফোন করছ? –পেশুটাফিস থেকে। --বিকাশের কঠিতবরে জেন্ম এল না। ুকি থবর ধলো? --শুশবা^তত কলাপ বলল। -থকা কিছাই নয়। দেবী হয়ে গেল। ভাৰছি অফিসে যাব কিনা। —দেৱী ভাষেতে কো কি ভাষেতে। কলালে অব্যক্ত कराठे बसमा -ना घारन, चास्रक श्रीनदाइ किना। धाकडे हाफाछ। उन्न छम्। स्मिते। আয়তা আয়তা করল বিকাশ। সেইজনোই তো আসবে। গ্লিছিয়িছ একটা সি, এল नन्ते कात काछ कि--। कन्नान अम्भारमभा ব্ধণি কথা। -- সেক্থা হছে না। বক শ क्या रमध्य कतरह भादल सा। कलाल उक्काल লাইন ছেডে দিয়েছে।

অফিন্সে পেণ্ডুভে কল্যুণ স্বল্প, বগুপার কি বিকাশদা। চোখনার উসক-খ্যেক্ড-। কিছা না! এমিন। সক্ষেপ্ত দিকে বেহালায় এক আত্মীয়ের বাড়ি গিয়েছিলাম হাই। হাত নেড়ে **ক্ঠেন্**র পাভাবিক করতে চাইল বিকাশ।

भाष्या माध्या दशम निन्द्राहै? কল্যাণ প্রখন মহালা ন্ হাসল বিকাশ, যাই কাণিটন থেকে বিছা বৈছে আসি। हार्ग विक्तात भाषा के जामरक्ष्म ? - मा. টনি রাইটাসে ভাছেন। **সেখান খেখে**

নিশিন্তৰত ছাব বিকাশা। শিসা দিতে দিতে ৰামনায়েও দিকে চলে লেকা ভারপর। त्वं महात्व भाषात्व आरम चाष्ट्रमाद पिटक राभ कुनाव हगरक उत्रेल विकासी निर्वाक राह्नाहे शासक्ष ता । अभारहे भूरच नामान रशाहा तथाता माछि भाभक मामिन माछि কলোনের করেসাং হয়ন। দাই চেতের ष्ट्रीमध्य भएमा अष्ट । रहाद्वे । ऋतिगाञ्च हला হাত্যহাতি বিকাশ টাব্দ মালে যাথা নিচ্ কলে জানে মানে জন ঢালতে বাস্ফ হয়ে

অটুটির মালম ব্যবসান মিন্টেন্স মান্তা*লি* থেয় টি বিশ্বে শ্বেম্বাকে কলব কলবেন।

লাইংছোর ঠেলে চেম্বারের ভেতর ঢাকতে মিন্টার মুখার্কি বললেন আস্ত্র বিকাশ-বাবে: আপনার অপেকার আছি। বিকাশ শ্রেকা কেন স্নার > পাইপে ত্রাক ভরতে ভরতে মিশ্যার মুখাজি বললেন மனர் ভবারী কাজের জনেট আপনাকে ডেটে পাঠিয়েছি। আপনি সরচেয়ে এফিসিয়েন্ট ক্র্যাল্ড। একটা স্টেট্যোল্ট তৈরী করে দিতে ছবৈ। সোমবার আরলি আওয়াসে ওটা লাইটার্সে প্রতাত হবে। ঝালমশপায় কটকটে ডিমের কারি, তার সংশ্য কাঁচা প্রতিরাটি, ক্যাণ্টিন থেকে অখ্যাদা গিলে এসে বিকালের বাক জনালা করাছল। ভার ওপর নতুন দাঃসংবাদ তাগু মেলাজটা মাহাতে টকৈ গেল। তব্ চেণ্টাকৃত হেলে বলল ठिक व्याहा

অফিস থেকে বের্তে চারটা বেজে গোলা বাইরে তথন নতুন কথে তিপ্তিপ বাণ্টি শারত্ব হরে গোছে। বাদে প্রচণ্ড ভিড়া পাণানিতে ঝালতে ঝালতে গোটা কলকাতা শহর এবং তংসহ হিচাপ করতে করতে বিধাসত বিকাশ কোনজমে এসে পোছালা নাসিংহোমে।

কবিনে আধাশাওয়া হার আয়ার
সংশ্য গণপ বগছিল মল্ব। বাস থেকে নেমে
পালবেই হোটেল থেকে ভাড়ি কার গ্রম
দুধ নিয়ে ভেতরে চাকল বিকাশ। জিজ্জন
করল কেমন আছো? নাড়চড়ে উঠল মল্ল;
ভালই। একলহমায় ওকে জরিপ করে নিল
বিকাশ। স্থামকাতর মান্ত। স্বচেরে যেটা
কক্ষাণার, ওব চোথের উল্লেকভাট্টকু যেন
কেন্ত ছেকে ব্রব করে নিয়েছে।

নাও, ধরো। দাধের ভগ্ডণী মঞ্জার দিকে এগিয়ে দিল বিকাশ। খাবার দাধ কেন? ক্ষণিকদেঠ বলল মঞ্জা। চুপ করো দেখি। সারাদিন পোট কিছা, পাড়েনি। চাপা ধমকের সারে বলল বিকাশ।

ভাজামবাব, ছিলেন না। দুপ্রের দিকেই হাসপাতালে চলে গেছেন। অফিস ঘরের লোকটা সব ব্ঝিয়ে দিল। কথন কোন ওব্ধটা থেতে হবে।



মালুকে হাতে ধরে আরা পাতা প্রক্তি এসেছিল। খুলি হরে বিকাশ প্রক্তে একটা আন্ত পাঁচ টাকার নোট দিয়ে ফেলেছিল। মালু টাকাসর ভেতথা গিয়ে মালেছিল চিন্তার কিছু নেই মা। তিনটে দিন একটা ভারী কিছু তুলবে না, হাটা-চলা কম কথবে, আরু আগ্নের আচ লাগাবে না।

ট্যাকসি ছাড়তে বিকাশ মজার কাছে
সরে এল। একটা অপ্রিচিত ওঘ্রাধ্য গৃংধ
কাটে উঠছিল ওর শগ্রীর থেকে। মজা সাঁটে
হেলান দিয়ে চোছ ব্যুক্তে বিকাশ নিচ্
গুলায় জিল্পেস করল খ্র কল্ট হচ্ছে:
চোখ খুলল মজা: মলিন হাসল, না।
তিনটে দিন তো মোটে। মতির মাকে
বলব-বিকলের রামাট্য করত। তার
জানা ওকে না হয় কয়েকটা টাকা দেব।
—বিকাশ আশতে আশত বজল। মজা কিছ্
বলল না। ফের চোখ ব্লুল।

শ্লোলালীর শ্লোড়ে এলে বিকাশ বগল,
ভুষ্টভাব এখনে একটা গাড়িটা থামন।
—মঞ্চা শাটোগ এখানে কেন? —টাকিলি
থেকে নেমে যাবার আলে বিকাশ বলল,
বাশি আর ঝুমরির জন্যে কিছা পাড়লটাতল কিনব।

রংশ্বর মেলা। অপথানিত খেলনা।
কেনাকণী সারতে বিকাশের দেবী হল
না। ট্যাকসি গড়িয়াহাটের মোড় ছাড়ালে
বিকাশ বলল ডুলি সোড়া গাংব ঘার
ত্বেক পড়াব। কার্র সংলা কথা কইবে
না। আমি সব মান্তেক কংবে—। — মজা
তথন বাইবের দিকে তাকিরে। রুনত চোখে
ছাটাত বাভিডেজা শহরটাকে দেখছে।

বাধানদায় বাপিকে কোলে নিয়ে দাছিয়েছিলন স্তাসিনী। মধ্য ঘাবর ভেতরে চলে গোলা। ছেলেকে দাধােগালন স্তাসিনী, হাদিয়ে, বউটা এখন কোনন জাছে রে? —ভাল নয়। শারীরেং বাদিক অবশ হয়ে গোছে। ডাঙার বলছে—পারসিয়াল পাাবালিসিন। গডগড় করে বললা বিকাশ।

---আহারে। বলিস কি। কচি বয়স। কত কিই যে ঘটছে আঞ্জকলে।

খাটের বাজাতে হেলান দিয়ে বসেছিল
মজা। স্হাসিনী খরে তাকে ধলালন
তোমার জাবার কি হল বউ? মজা উত্তর
দেবার স্যোগ পেল না। বিকাশ বাল
উঠল, মাখা ধরেছে। একটা জাগেও
হয়েছে বােধ হয়। মজা তাকল, আয়
বাািপ। বালিকে ওর কোলে তাল দেবার
সময় সাহালিনী বলালন জাল হলে আল
বাাত আব তাত খেরে কাল নেই বউমা।
বালিকাদলার দিন—

ঝুমনি পালের বাড়ির মেরেশ্নর সপো খেলছিল। বাবার গলার অনুওয়াল পেরে ছুটে এল। বিকাশ বলল এই দ্যাখ, ভোলের জন্যে কত পুরুষ কিনে নিরে এসেছি। সুহাসিনী পাশের বরে চলে চালেন।
মাল্লু শানেলে তোর জেঠিমা কইরে
ক্রার্ল্লু কেবছি না নান্দ্রীর বলনা জেঠ্র
সংপা সিনেমা দেখতে গেছে। অনাদিন হলে
বিকাশ সংগা সংগা তেতে উঠত। দাদা-বৌদি বেশ আছে। এগারো বছরেও ওপর
হয়ে গেগ—ওদের ছেলেপ্লে হবার নাম
নেই। দিবা গায়ে ক' দিয়ে ঘুকে
বেড়াছে। আজ বিকাশ তেতে উঠল না।
বরং বাড়িতে বৌদি নেই জেনে আশ্বতত
স্তা।

বাসি মজার শ্রীরের সংগ্রামিশ গিরে আদর ধাছিল। বিকাশ কিছা একটা বলতে যাছিল মজাকে। এমন সময় পাশের ঘরে শাংখে ফালু বেজে উঠল।

রাতে আলো নিভিয়ে বিকাশ খাটে উঠে চাপা শলায় জিজেন কথন, এখন কেয়ন আছো মঞ্চাট

অন্ধ্ৰারে মঞ্জুকে দেখা যাছিল না। মাঝখানে বাপি। ওধাৰ থেকে মঞ্জু উক্তর কলল, ভালই---

বড় করে একটা নিশ্বাস ছাড়ল বিকাশ, যাক, ব্যাপাবটা নিবিঘেন চুকে গোছ কেউ টের পালনি।

মজার সাড়া শাওয়া গেল না।

পাশের ঘরে স্থাসনীর গলাধ আওয়াজ পাওয়া যাছে স্থানিনী অনেক গাত ঘাবদ জাগেন। বাবার রিটায়ার-মেনেটর পর মেনেক মার ঘুম বাম কাছে। আনেক রাত আমদ ঠারুছের সিংহাসনের সামান বাম থাকেন। কি কবেন কে জান। হাত সংস্থিত মাগেল কামনায় ঠাকুরের কাছে প্রাথনির করেন।

মঞ্চ, এই মঞ্চা, গামিরে পড়লে নাকিং—একটা হাত বাড়িয়ে অধ্যক্ষে মঞ্চি খালিল বিকাশ।

মঞ্বলল, কৈ, চে'চাচছ কেন?ু

না মানে, বল^{িচ}ান্ম, শগীর ভাল আছে তো? —ো্চেরা গলায় বলল বিকাশ।

হঠাং শিক্ষারর দিকের জানলাটা ঠবঠক শব্দে নড়ে উঠল। এক তবিত্ত ফোস ফোস্যুনির আওয়াল শোনা গেল।

বিকাশ ব্রুজ—আবার **কড়ব্ডি** অসহে।

থাক, আং ন্যাকামে। করতে হবে না। তুমি একটা জানোয়ার। একটা প্রাণকৈ খ্ন করে এখন সোতাগ দেখাতে এসো না।

বিকাশের ব্রেকর মধ্যে বেন ব্রক্তপাত হল। সে আন একটা কথাও বলল না। নিঃশাক্ষ শাহে পড়ল।

শ্যুমে পড়ে কাপিকে কাছে টানলা ব্যাকঃ মধাে নিয়ে এল। কাপিব হাংগিশেনত ধ্যুকপাকানির শ্যুদ শানুবার লাগাল।

এক সময় অবেণর ধারার বাধি
নামল। বাণি না নামলে টের পেতু মঞ্জা—
বাপিকে বাকের গড়বীরে টেনে নিরে তিনদ
আটার টাকা মাইনের এক আধা সরকার্য অফিসের কোনী বিকাশ সরকার কাশিপা ফাশিবে কাশছ।

मिट्टा

भार काम भागी याम भराम বেশী দেখায়, ভবে বহু ক্ষেত্রে সেই ক্রদক্ষে সন্দেহের চোখে দেখা হয়। পাশ্চমবংগ এই জাতীয় বেশ কিছু মাসী খাজ্যের সরকাপ ও মুখামান্তী শ্রীসিন্ধার্থ রাফ্রের সম্প্রের্ণ বা কংগ্রেস দল ও তাদের মন্ত্রীদের সম্পকে যে-জাতীয় দল্প দেখাছেন, তাতে এই মাসীরা আসলে বিদ্যাসাগর মহাশারের প্রথম ভাগে ভ্রনের মাসী কি-না সেই সন্দেহ ক্রমেই জোরদর হয়ে উঠছে। একদিকে চোরকে চুল্লি করতে সহায়তা চোরের হাতে সিপ-কাঠি তুলে নেওয়া, অপল দিকে গোরস্থাকে এসে বলে যাওয়া, চোর আসছে সজাগ থেকো। এই যে দ্ব'পক্ষকে কড়িয়ে দেবার তাল, এটা ক্রমই প্রকট হয়ে উঠছে। দিল্লীতে সদ্য অনুষ্ঠিত এ শাই সি সি বৈঠকে কি আলোচনা হয়েছে তা নিয়ে এবইভাবে এই লড়িয়ে দেবার তাল স্থির একটা নন্দ প্রচেট্য দেখা গেছে। দিলীতে এ আই স সি বৈঠক উপশক্ষ্যে প্রধানমন্ত্রী শ্রীমতী গ্যুষ্ধী স্ব প্রদেশের কংগ্রেস নেতাদের স্পে আলাদা আলাদা বৈঠক কংগছিলেন, একইভাবে পশিচমবশোর কংগ্রেস নেতাদের भारत्मक वाकरें। देवर्ठक कारतन। वाहे देवर्ठिक প্রধানমান্ত্রী কি বলেছেন সেটা নিয়ে ফগাও করে খবর বের ছলো। খবরের ম্ল কথা যা ছিল, তা হলো এই-পশ্চিমবংশা পি ভি এ ভাঙার প্রধানমক্তী খুবই ক্ষুকা হয়েছেন এবং প্রোক্ষে মুখামন্ত্রী সিন্ধার্থশানকর রায়ের ওপর দোষারে প করেছেন।

ত-খনর যেদিন কাগলৈ বের হলো সেদিন রাতেই সিংধার্থাশংকর রায় কোলকাতায় ফিরে হললেন, প্রধানমতী পিডিএ সমপকে কোনৰ কথা বাল্য নি বা পি ডি भागकी दामवं क्या বলেন নি। প্রধানমকী যা বলেছেন, তা^র মূল কথা ছলে। সি পি আই-এর সংগ অপ্রয়োজনৈ সংঘর্ষ এড়িয়ে পারেপরিক সমবোট্যা মধ্যে চলাই ভালে। শ্রীযোরের এই কথা প্রকাশ হবার পর দিয়নী থেকেও প্রধানমান্ত্রীর ঘনিষ্ঠ সাত ধ্বেকে প্রায় একট্ট কথা বলা হলো। প্রদিন দেখা গেলো আবণ খনর সে-খনর হলে এই--সিদ্ধাংশ শংকর বার নাকি অনেক চেন্টা ক্তে প্রধানমাতীর সাত থেকে ঐ থবাটি দের কবিয়েশ্যেন। এটা হালো হালের একটা নশ্চিত। স্থাণিত থকাকে সংগ্ৰে থকাক লাদিয়ে দাইপক্ষের মধ্যে ভাতন স্থিত করা। च्यांत्रत सिन्द्रा धवरत्त्र संदेश वाक्राप्त खेता द्यंगव जिनिज हालाव्हन, त्रंही नवरे हत्ना

একের বিব_শেষ অপুরক্তে কড়িয়ে দেবার क्षिक् मिन खारेश श्रुपामन्त्री শ্রীসিদ্ধার্থাশুকর রামের বাড়ীতে শ্রীনার श्रासाभारत अक देवहेटक मक्षीस किलासन সতেগ মিলিত হয়েছিলেন। পর্যাদন থবর ঃ একজন কংগ্রেস নেতা সেই বৈঠকে হাপ্রস নর্নে কে'দেছেন, আর একজন কংগ্রেস নেতা ঠাকুরের পায়ে মাথা কুটেছেন। এমনি আরও অজর নজির আছে যার মধ্যে দিয়ে দেখানো যায় সাম্প্রতিককালে এই জাতীয় ডজন ডজন থবন বের হচেছ যার মূল লক। धर्व संग्रं भाग लका इतना स्थाता शाला প্রশাসন চালাক্তেন বা যণারা দলীয় নেতা হিসাবে সম্মানিত ত'দের জনসমকে হেয় প্রতিপ্র করা তাদের সাধারণ যান হৈর কাছে খেলো করে তোলা। এইসব খবরের আরও একটা মজা হলো যে, এর প্রতিবাদ কথা চলে না, এবং প্রতিবাদ করলে আরও খেলো হতে হয়। যেমন বে-নেতার নামে খবর বের হলো তিনি হাপস নয়নে কে'দেছেন, ত'াকে প্রতিবাদ করতে হলে বলতে হয় দা অভিন ক'দিনি'। কাচাৰ থবারের চাইতে কপদিনি বলাতে গিবে নিজেকে আরও খেলো ছতে হয়। তব মুখ্যমন্ত্রী দ্রীসিন্ধার্থনিংকর রায় ত'ার বাঞ্চিতে যা যা ঘটেছিলো তার এক লংইন প্রতিবাদ করে বলেছিলেন, কাগজে যা বেরিয়েছে, তা সবৈধি লিখা। চাটনী-প্রিয় পাঠকরা খবলকেই বিশ্বাস করে.

প্রতিবাদকে নর। যেমন প্রধানমন্ত্রীর সত্রি থেকে পি ডি এ সংকাশত সংবাদে প্রতিবাদ করা হয়েছিলো। কিন্তু আনেকেই হয়তো ধরে নের এসব হলো শাক দিয়ে মার্ছি চাকার চেন্টা।

শাক্তবার ২৬শে শ্বলাই পশ্চিমবংগরর মুখ্যান্থী কোলকাতা প্রেল ক্রাবের প্রতিষ্ঠা বাবিক্ষী উপলক্ষা সাংবাদিকদেশ সংশ্যা কিছুবার মধ্যে কেউ এই জাতীর সংবাদ এই বছুবার মধ্যে কেউ এই জাতীর সংবাদ এবং সাংবাদিকদের সম্পর্কে থারই উপেবগ প্রকাশ করেন। তিনি দুটি উপাতি ও নাজর সাংবাদিকদের কাছে পেশ করে বলেন গনেপোলায়ন বলেছেন, এক হালাখ্য সংগীনসহ বংশাক্ষের চেইন একজন সংবাদিকের কলম শৃত্তিশালী আর সেই বেশা যুগেও চারহত্রনামর চেলার কিছাবে এক সংযোগীর মাতদেহ বেশাবাড়ীর

এক স্থান্ত্র ক্রেখ প্রয়ানের চেন্টা হলেছিলে
ক্রান্ত্রী আনলে বেলাবৈত্তীকৈ ক্রিকেই
নাবা গেছেন। মুখানতী প্রীকিন্দার্থ শংকর

রানের তাই অস্বোধ ছিলো, চারচহন্দের
চেণ্টা থেকে সাংবাদিক। দ্রে সরে ছার্ল।
মান্যামদটা কি বলেছেন, দেটা বড় কথা নর
অথবা সাংবাদিকরা এই জাতার কর
দ্বিট করে যে নজির ও প্রতিবাগিভার
স্থিট করেছেন সে সমপ্রকিও কোন কথা
করে এভিয়ার বা প্রধা
তবে সাবধান হওয়ার সময় এসেহে ল্টো
কারণে। একটি কারণ হলো এই.
পাশ্চাবন্গ সরকর ইতিমধ্যে একটি আইন
প্রধার কারভের বির্ণেধ
হথবার বাবাদ্য পরেছেন যে,
ধ্রারের বারভের বির্ণেধ
হথবারের বারভের বির্ণেধ

ভিডি করে মানহানির মামলা কর্মেল জথবা খেলাগতে দাবীতে মামলা কর্মেল তাভিযোপকারীর কোনও খরচা লাগবে মা। আগে ভিলো এক লক্ষ্ণ টাকার খেলাগতের মানলা করেল সেই টাকার জন্পতের কোট ফী স্টান্দেল লাগতো। কাজেই খালি মানো খেলাগরে মামলা করেও করার সাম থাকলেও সামো কুলাতো না। একজন সামলালককে লাগিতাবিধানের একজন সামলালককে লাগিতাবিধানের বাবেথা করেলেজন ও পাচি-সাতেটা কোটে মামলা চালাজেন। কাজেই যারা এই

স্ত্রিপত্রভাবে চরিয়ন্ত্রনের থেল য় মেডেছেন **「山松村寺** তেশুরা পল্লোকে স্বাধীন, সাংবাদিকতার পথে অব্যোধ স্থিত প্রায়েন। স্থাট করছেন। শ্বিতীয় কথা হলো শ্রীসিল্পাথশিকর রায়ের **করাও** मा हरा, गान देनखता रगटना। किन्छ अंबान নবীন এবং এখনও পর্যাত যাগা স্থে মাত বাজনগতিতে পাট নিয়ে প্রশাসনে নিজেদের ভালম দিজেন, ভীদেরও খদি धह छात्व हाऐनि बाका चवत नित्त माधा ৰাওমা কম তবে পশ্চিমবংশার ভবিষাং कर्बभाव काता द्रायम? किह्न काम आएम এই জাতীয় প্রবণতা রোধে এক বন্ধর সংবাদপত অফিসে কিছ, কিছ, হামণা হয়েছিল। এই লেখকেরই হাতের লোছা श्रीकरना त्कां हे त्मनाच कात्मा किटन क्राक्रकन् शतम त्मकाकी। बाह्य সংवातिक नारक छतित इमामत और रचनाम आकार्यन. তারা আসলে কি আবার সেই দিনে রাজ্যকে ফিরিয়ে সানতে চান ? স্বাদী **रक्ट**य स्मृत्या मृत्यात।

-कन जागरन श्रीक्रमध

এই বাংলার খবর

সরকারের অর্থচিস্তা

প্রতিম বাংলা সরকারের মাথাবাথার নতুন করিব রাজেটের ঘার্টাত। বাজেটের জন্ম-খরচের পর ঘার্টাত থেকে হাওয়া অবশ্য কিছ, নতুন ব্যাপার নয়, বরং সেটাই বোধ হ'ব রেওয়াজ। কিন্তু এ-বছর অন্যান্য রাজ্য সরকারের নাতা পাশ্চম বাংলা সরকারেরও ভাবনার কারণ, নয়াদিলীর মনোভাব। ব্যক্তেটে খার্টাত থেকে গ্রেকে তা নোট ছেপে সমলাতে হয়, ফলে বাজারে টাকার স্থোগান বাডে। তাই কেন্দ্রীয় সরকার নিজেদের বাজেটেও ঘাটতি নিয়ন্ত্রণ করতে নান আৰু কোনো বাজা সরকারের বাজেটে ঘাটতি থাকক তাও চার লা। কিছাদিন আব্দে পর্যাত রাজ্য সরকারের বাজেটে ঘাটাত পদ্ধলে বিজ্ঞান্ত ব্যাণক থেকে ওভারত্বাফট নিয়ে তা সদ্মশানে। স্থে। এখন সে-ব্যাপারিও কড়া নিবেধ।

এই যথন অবস্থা তথন পশিচ্য বাংলা সরকারের জন্মা থরতের হাজচাল মোটেই ভালো নয়। এই হালই যদি বঙ্গায় থাকে ভবে বছরের শেষে ঘার্টাত দাঁড়াবে ১৬ কেটি টাকা। অথচ মাচে থে বাজেট পেশ করা হয় তাতে চলাত বছরে কিছা উম্বান্ত থাকবে বলেই দেখানো হয়েছিল। এমনিতে ঘাটাত দাড়িয়েছিল পোনে বারো কোটি টাকা। রাজ্য সরকার নতন কর বাসেরে ২৪ কোটি টাকা ভুলবেন বলে চ্পির করেন। তাতে ঘার্টাত কমে গিয়ে সোয়া বারো কোটি টাকার মতো চাতে থাকার কথা। কিন্তু এখন দেখা বাকে, ঘার্টতি হবেই। অবস্থা কী করে সামলানো হায় তা নৈয়ে বাজ্য মণিকসভার বৈঠকে আলোচনা হলো। নয়াদিলী চাইছে. দরকার হলে আরো নতুন কর বসিয়ে ঘাটতি প্রণ করা থোক। কিন্তু রাজ্য সরকার আপাতত ঠিক করেছেন, বাজারে সবকারের যে-সব টাকা অনাদায়ী পড়ে আছে তা আদায় ক্ষরেই আয়-বায় সমান করবেন। অনাদায়ী টাকার পরিমাণও খাব একটা কম নয়। প্রায় এক শা'কোটি টাকা। সার আর বীক্ত কেনার জনো যে খণ দেওয়া হয়েছে তার মধ্যে ৪২ কোটি টাকা এখনও ফেবং পাওয়া যায় নি, জলকর বাবদ অনাদায়ী সাড়ে চার কোটি টাকা। কী করে এই সব[্]টাকা আদায় করা যায় ভার পথ বাংলাবার জনো একটি কমিটি তৈরি হায়েছে। সেই কমিটিতে আছেন ভিনৰীন মন্ত্ৰী এবং কয়েকজন পদস্থ আমলা। এ-ছাড়া অনাবশাক অনেক খরচ (সেল্লন পেট্রপ) বাচাবার জনোও মথোলন্টী নিদেশি দিয়েছেন।

জেলা কর্ডানিংয়ের পালা শেষ

রাজনৈতিক, অর্থানৈতিক, সামাজিক-যে-কোনো দিক एथक्ट एम्बान ना एकन विভिध क्षानात प्राथा धान-जाल চলাচলের ব্যাপারে কড় নং তুলে নেওয়ার সিম্পান্ত খবেই ভাৎপর্যপূর্ণ ব্যাপার। আগস্ট থেকেই আর এই কর্ডানিং থাকছে না। তবে বিধিবশ্ব রেশন এলাকা (কলকাতা, দূরণাপ্র-আসানসোল) ধিরে কর্ডণিং আগের মড়োই থাকবে। ১৯৬৫ সালে যথম এই রাজে। খাদাশস্যের রেশন ব্যবস্থা চালা হয়, সেই তখন থেকেই এই ছেলা কড[ি]ংও চালা, ছিল। আৰু ন'বছর পরে 'সই কড'নিং তুলে দেওয়া 5(et) (44)

রাজ্য সরকার অনেক যাত্তি দেখিয়েছেন। এক. এই ক্রডানিংয়ের ফলে ঘার্টাত জেলার চালের দর হা হা করে বেডে शक्ति। धान-हाम या अ-वहत शत अकहा कम शराह তা নয়, তবং দাম খ্ৰেই চড়া। ধান-চাল অবাধে চলতে দিলে ঘার্টাত জেলায় দাম পড়বে। দুই. এখন সরকারি ভান্ডারের শ্বনো ধান-চাল সংগ্রহের চেণ্টাতেও ইতি টানা হয়েছে<u>.</u> সতেরাং কডনিং না-থাকলে ক্ষতি নেই। তিন, জেল। কভনিংয়ের কাজে বহু, প্রিশ লাগছে। জেলা কভনিংয়ের দরিষ থেকে রেহাই পেলে পালিশ বিধিবন্ধ এলাকার চারপাশে পাছারা আরো কড়া করতে পারবে স্থারণ চোর-ডাকাত ধরার কাজেও আরো মন দিতে পারবে।

রাজনৈতিক দিক দিয়ে এই সিন্ধানেতর তাৎপর্য হলো, ধান-চাল সংগ্রহের ব্যাপারে বেসরকারি ব্যবসায়ী আর চালকালর মালিকদের সপে রাজা সরকার দোধ পর্যাত এখটে উঠতে পাবলেন না। ধান-চাল সংগ্রহের সংক্রার **চে**ণ্টা যে এখন সরকারিভাবেই পরিতার হলো, অর্থনৈ এক দিক থেকে তার গ্রেছ কম নয়। কথা ছিল পাঁচ লাখ টন সংগ্রহ হবে, হয়েছে এক লাখ আদি হাজার টন। রেশন বাবস্থার ওপর এর কোনো প্রতিক্রিয়া হবে কিনা, সেদিকে এখন নজর দিতে হবে। অন্তিদকে, সরকারের অন্যান অনুসায়ী যদি ঘটিত ক্ষেলায় এর ফলে চালের দাম কমে তবে এ সব এলাকার ভ্রান্ত উপকৃত হবেন। কড় নিং থাকার ফলে চোরাচালনেব কাজে বহুনারীপ্র্যাশশা, লিণ্ড হয়ে পড়েছিল। এখন যদি এই চোরাচালান বধ্ব হয় তবে একদল মান্ত্রের অপুরাধে লিশ্ত হুওয়ার পথ বন্ধ হবে, সামাজিক দিক থেকে এর গ্রেড गথেন্ট।

रघाला जल निरंत्र जल रघाला

কল এতদিন প্লাবঃকরণ করা হারছে তার কারণ অততে রীতিমতেই নেংরা-একেবারে খোলা। হঠাৎ দেখলে প্রির

কলকাতার মান্তকে পৌরসভা হৈ জল খাওয়ার তা সাদা গোখে ঐ জলের মধ্যে কোনো নোংরা ধরা পড়ে নি। কতোটা খুম্প, তা নিয়ে সংস্কৃত অনেকেরই ছিল। তব, যে ঐ কিন্তু করেকদিন ধরে পৌরস্ভা যে জল দিয়েছেন তা

পাংগা জংগর সংগ্র কোনো ফারাফ চোটার পড়ে না। এর ফালে আভাবিকভাবেই হৈ চ পড়ে রার। পৌরকভার কাশেরা বিভাগের অফিসার জানান, এ জল থেলে কেনো অপকার হবে না তবে ফাটিয়ে খাওরাই ভালো। উত্তর ভারতে বাণিট হরেছে জোর, রাংলার তেরন বাণিট হয় নি, ফাল গণগার জালের বোলাভাব কাটে নি। কিন্তু এই সব ব্যাখ্যা শানের উদ্বেগ খোচে নি: ভাই অবস্থা খাতিরে দেখার জানো পৌরমাধ্যী নিয়োগ করলোন এক তদ্যত কামিট।

কৃষিটি কিম্তু বৃশদেশ, জল যে কেন যোলা দে-ব্যাপারে তারা পলতা পাম্পিং ফৌশনের মুখ্য বিজ্ঞোধকের কাছ থেকে কোনো জতুসই উত্তর পান নি। অবশ্য ঐ বিশেষকের যুদ্ধি হলো, জল ঠিকুমতো প্রিম্কার হয়েছে

কিনা তা যে হাচাই করে দেখা হথে গবেষণাগারে সে-ইবর ব্যবশুখাই তো নেই। সেখানে বল্পাতি সব আদিকালের। ক্ষিটি স্পুলারিশ করেছেন, ঐ গবেষণাগারে নতুন ফল্পাতি বসাদো হোক, উপবৃত্ত লোকও নিয়োগ করা হোক। উবে কমিটি একটা বড় প্রটির লোকও নিয়োগ করা হোক। উবে কমিটি একটা বড় প্রটির লোকও নিয়োগ করা হোক। উবে কমিটি একটা বড় প্রটির লোকও নিয়োগ করা হয়। তাও রবিবারে হয় না, মাঝে মাঝে শানবারও বাদ গায়। কামিটির মতে এই পরীক্ষা শুরু প্রতিদিনই নয়, দিনের মধ্যে করেজ-বারই হওয়া উচিত। এদিকে অভিযোগ পাওয়। তেছে গলতাহা ফিলটার বেডে যতেটা বালি থাকার নিয়ম তা থাকার না। এখন জল পরিক্ষার করার জনো ফটারির দেশি মানানা হছে। কিন্তু সেটাও ল্বান্থেরে পক্ষে অপবারী হতে পারে।

প্লাবিত উত্তর্বঙ্গ

প্রায় প্রতি বর্ষায় যে দ্রেণাগ উত্তরবংশার মান্যের কপালে লেখা থাকে, এবারও তা থেকে রেছাই মেলে নি। বরং গতবারের চেয়ে এবারে বন্যার দাপট বেশি বলে মান্য হছে। উত্তরবংশার বাপেক এলাকা জলের ওলায়। ফুলো উঠেছে ছোট-বড় অনেক নদ্। জলপাইগ্রিড় আর কোচবিহার জেলাডেই ক্ষতির প্রিয়াণ বেশি। এক কোচবিহার জেলাডেই এ প্রথাক লাখবানেক লোক ভিটেমাটি ছাড়া হারেছেন বলে বর্ষাক প্রতির্ভাভ । বিপারদের লালে জেলাডেই প্রায় আদ লাশ লোক কভিরাজত। বিপারদের লাগের জনো হছে। তারা প্রায় দশ হাজার প্রবিধ্বরে ইন্ডিম্পেট উপ্থার করেছে। বিপারদের রাখার জন্যে থোলা হারেছে অনক শিবর।

প্রপ্র দিন কয়েক ব্যক্তি হওয়ার পর উত্তরবংশার স্ব নদীতেই জল বেড়ে হায়। তিস্তা, তেরসা, জলচাকা, রায়ভাক, কুমলাই সব নদীতেই বিপদ সংশ্বত দিতে হয়।
প্তিমু বিশালপুরে আহেয়ী ও পুনহ'বার লগত বিশ্বসালা
ছড়ির যায়। অনেক জার্গায় বাধ ভেঙেছে, রাশ্তা ভেঙেছে। দাজিলিং জেলার অনেক এলাকাও প্লারিত।
থেওিত মহানদ্দার জলে শিলিগাড়ি শহরের অনেক এলাকাও
পুনাত। শিলিগাড়ি-দাজিলিং সঙ্কের বিভিন্ন জার্গায়
ধস নামার সেখানে হানবাহন স্কালক বন্ধা। ঐ রাস্তা দুটি
সেক্ত ভেঙেছে। শিলিগাড়ি আর ক্লিম্পাংগ্র মধ্যা ভিস্তা
ভাগিল সভ্কত শতি স্বাত। বনাও এলাকা দেখার জনে।
ম্থানাতী, সেচমাতী, চাগমণ্ডী সকলে উত্তরবংশ গ্রেছন
গ্রামা চিলাচিংড়ে যোগাবার ব্যেক্থা হার'ছে। ব্যারের ব্যাহা
বরাদ্দ হরেছে বিশেষ অর্থ।

সাহিত্য পরিষদের দ্বরবস্থা

৮২ বছর বয়স একজন বাজির পক্ষে অনেক, তবে একটি প্রতিষ্ঠানের পক্ষে নয়, বিশেষ করে বংগীয় সাহিত্য পরিবদের মতো প্রতিষ্ঠানের পক্ষে তে। নয়ই। কিব্তু বাঙালির সাংস্কৃতিক জীবনে বিশিষ্ট এই প্রতিষ্ঠানটির অবস্থা বে এখন মোটেই কর্মাণীয় নয় তা স্পন্ট হয়ে উঠলো ৮২০য় বার্মিক সভার অনুষ্ঠানে। সাহিত্য পরিষদ থেকে একাবশ শতাম্পীর বে দ্টি বিক্যু মৃতি কিছুদিন আগে চুরি বায় মেন্টি আবার কিরে পাওয়া বাছে। সদ্বে আমেরিকা থেকে উপাত্ত করেছে। এই উটানার হয়ে ক্রিই চোরাই মাল আবার স্বাস্থা করেছে। এই উটানার হয়ে ক্রিই চোরাই মাল আবার স্বাস্থা করেছে। এই উটানার হয়ে ক্রিই চোরাই মাল আবার স্বাস্থা করেছে। এই উটানার হয়ে ক্রিই চোরাই মাল আবার স্বাস্থা করেছে। এই উটানার বায়া ক্রিই চারাই মাল আবার স্বাস্থা করেছে। এই উটানার বায়া বিলে ক্রিইটার হলো মূল্যবান ম্ব্রিট-পাম্পুর্লিপ চুরি বন্ধ্য করা। সেটা একটা সম্বাস্থা তে। বটেই, কিব্তু তরে

চেরাও বড় সমসা। বাধহর পাণ্টুলিপি ইডাদি রাখবার সদসা। বাবিক অনুষ্ঠানে রাজ্যপাল ডারাস পরিবদের বর্তমান দ্ববন্ধা দেখে রীতিমতো হতাল হরেছেন। মূলবান জিনিস্পত রাখবার জারগা নেই, সেই সর জিনিস্, সংরক্ষণের আধ্নিক বাক্ষারেও অভাব। সংকৃত মোনের জন্মে রাজ্যপাল দশ হাজরে টাকা সাহার্য রজরে করেছেন। কেন্দ্রীর ও রাজ্য সরকার এবং আগ্রহী জন্মানারা ধাতে সাহাধ্য করতে এশিরে আসেন স্কুলেও তিনি আবেদন জানিরেছেন।

0019198

—रमय मख



দৈশে বিদেশে

স্থাসদের অধিবেশন শ্রে হবে বিলোধী পলের অন্যুক্তা প্রত্যুব দিয়ে এটা একটা সাওয়াজে প্রিপত হ্রেছে। এবারকার বর্ষা অধিবেশনেও সেই সেওয়াজের বাতিক্রম হয়নি।

আৰাৰ সংকাৰণক অন্তৰ্মণ বৰাৰ মত বিশ্বত বিব্ৰুদ্ধ বিৰোধী পক্ষে অমা হয়ে-আল। বেলা ধ্যাম্বিট দমদের স্থাক্তি, নাসফাতি ও মালাবাদিধ সংসদেব অধি-বাদ্যাম্ব প্ৰাক্ত কাজনান্দ্ৰ জাবি যে সংসদেৱ প্ৰতি উপোনা ইত্যাস গনেকা বিষয়াই ভিলা বেগালি সম্পাৰ্কে বেলাৰী পাক্ষে ক্ষোভ প্ৰকাশেৱ সামোগ আল।

দি পি এয়াএর শ্রীজোতিমার বস্তু পি আই-এর শ্রীই-প্রজিং গড়েত বিসালিকট পাটিরি শ্রীয়ধু লিম্বে প্রভৃতি ই সুযোগের সম্বাবহার করেছেন।

কংগ্রেস ভেগ্টের জোরে এই সনাম্পা হার হারিয়ে দিয়েছে, কিন্তু স্টেন। ধই বোঝা গোগ, সংসদের এবানকাম ধ্রেশন বেল উভাত হাব এবং বিভিয় ন স্বকারকে বেশ কতকটা কেকায়ণায় তে ভ্রাবে।

स्योक्कार्य विद्याची प्रमान्त्रिक आवर्षी হিসাবে শালাপতি নিৰ্বাচনে প্ৰতিব্লিক্তা করার জন্ম আর এস পি নেতা চিদিব क्रीय भी प्रत्नानश्रमणें माथिन करहरूम। একমার সি পি আই বাদে প্রধান প্রধান चनामा शाहा मय चक्रश्वामी पन चौरक সমর্থন করতে পারে বলে মনে হছে। বড় পাতি গালির মধ্যে সি পি আই অবদ্যা তাদের মূর্ত এখনও জানায়ান। দলের ভিত্তে এ-বিষয়ে মতান্তর আছে বলে शकामा अकरा वर्म शिक्षातीक मध्यान করতে চান, অনা একটা অংশ কংপ্রেসের সংখ্যা সি পি আই-এর বিশেষ সম্পর্কের কথা মনে খোগেও দক্ষিণপূৰণী দলগালী স্পের হাত মিলিয়ে কংগ্রেসর বিরোধিতা করা উচিত হবে না। এই যাল্ডিতে রাশ্র-পতি নিৰ্বাচন থেকে বিয়ত থাকতে চ'ইছেন!

ইতিমধ্যে ভাষতীয় লোকদল নামে একটি নতুন দল গঠনের কথা ঘোৰণা করা হয়েছে। ভারতীয় ক্রান্তর পলা দল্যাটা, শ্রীবিল্প প্রান্তর প্রতিত পাটিই শ্রীবিল্প সংশাভ সমাজত কটি দল, শ্রীবলগাজ মাধোকের লোকতালিক দল, জ্বঃ রামস্ত্রতা সিংহেও ভারতীয় ক্ষেতিদার সংঘ ও হবিয়ানার হবিজন সংঘর্শি সমিতির সংঘ্রতিত গঠিত এই নতুন দল কংগ্রেগেও বিরাহিণ অক্যানিন্দ বিকল্প দাভি হিসাবে দাখ্যাবার ঘাষিত উদ্দেশ্য

এই সংখ্যতির সিংধাশত ঘোষত হওয়ার সংখ্যা সংখ্যতি ভাষতীয় জাশত দলে ভাতন দেখা দিয়েছে। যারা সংখ্যতির নিরোধাতিরা দলের চেয়্রারম্যান চরণ সিংকে অস্বীকার ক্ষরেছেন এবং শ্রী এম এন প্রক্রেক স্থান করারেনাল জিসালে বোষণা করেছেন। এই নিয়ে উত্তম্প্রদেশ বিধাননভায় ভারতীয় জান্তি দলের দুই অংশের মধ্যে মার্মাপ্টিও হয়ে গেছে।

*

বিহারী বিত্ততা

হিচ্ছানে প্রীক্ষয়প্রকাশ নারায়ণ ক্রেটান্টার, বেরোজগারি অউন মাণগাই-এর বিশ্বন্থে যে আন্দোলন চালাফেন সেই আন্দোলনকে একটি নতুন প্রান্ধে তোলার জন্য তিনি এখন প্রস্কৃত হচ্ছেন। তেরি এই করেজের ছারুদের ক্রাম ও পরীক্ষা বয়কট। এর পর তিনি কর দেওয়া বংশ করার জন্য আহান জানাবেন বলেছেন। ইতিমধ্যে একটি জনসভার প্রশিশ্ব প্রতি আহ্বান জানাবে বলেছেন যে, উপরওয়ালার কোন হকুম অন্যায় মনে করলে থারা বেন সেই হকুম অন্যায় মনে করলে থারা বেন সেই হকুম না মানে। কংগ্রেম সভাপতি ডঃ ক্ষান্ধ্রাল ক্ষান্ বীনারায়্লের এই বরবো তাঁর আপত্তি জানিরায়্লের।

শ্রীনারারণ একজন 'ভিকটেটব' হতে চাইছেন, এই অভিযোগ করে বিহাপের মুখ্যমন্ত্রী আবদুল গফুর বলেছেন, শ্রীনারারণ যদি বিধানসভা ভেঙে দেওলার দাবি তুলে নেন, ভাহলে তিনি মাংসর্লিছে ভাগে করতে যাজি আছেন। শ্রীনারারণ এর জবাবে বলেছেন, জনগণের দাবিতেই গফুরকে দরে বাতে হবে।

ছাত্তদের ক্লাস ও পরীকা বজনের আন্দোলন কোষাও কোষাও হিংসাঘাক বুপ নিচ্ছে: বিহার শরিফে একজন পরীকাষণী প্রীক্ষা দিতে গিয়ে খন



इस्त्राक्ष्म। अहेनव यहेना न्याना शिवह-প্রকাশ নারারণ ব্লাহন, এগারি হলে, ৰ্ণবাৰণত হিংসামক ঘটনা।

*

ওয়াটার গেটের শেষ?

আগে এক জন দ্ বস্তর ওয়াটারগেট ভবনে ক্টিতে গিয়ে কয়েকটি লোক যখন ধ্রা ওয়াশিংটনের ভাগের সম্প্রসাধ নাম বনা তথ্য প্রেসিডেণ্ট নিকসন তার সম্দূতীয়বতী কি বিচেকনের বাস্চবনে

অবকাশ যাপন করছিলেন। আর সেই ওয়াটাবগেট কেলেংকাবিশ জ্য ছাড়াতে ছাড়াতে হাউস অব বি প্রেক্ত প্রতিব্র বিচার ব্যাটি শেবপ্রতি প্রেসিডেণ্ট নিকসনকে ইয়পিচ করার জনা স্পারিশ করার সিখানত নিলেন, সৌদনও মহাসাগরে তিনি প্রশাত কাটছিলেন। শতাধিক বছরের মধ্যে এই শিবভায়বার যখন একজন মাকিন রাজী-পতিকে গ্রুতর অপলাধের অভিযোগে আইনসভার বিচারের জনা লোপদ কথা হতে বাজে, তথ্যত মাকিন যুক্তরাণ্ডীর ত দত্ম প্রেসিডেণ্ট গিচাড মিলহাউস নিকসন অহতত বাহাত অবিচলিত ভাব দেখাছেন। তার প্রেস সেকেটারির মাধকং তিনি জানিয়েছিন যে, তিনি প্রতা্গ করবেশ না, কারণ তিনি নিদেশির এবং অনুষ্ঠান বিচারে তিনি থালাস পারেন বলে তার বিশ্বাস আছে।

শেষপর্যত যাই হোক না কেন. হাউস অব সিপ্তেক্তাইডিড সর ১৮ জন স্দশ্ নিয়ে গঠিত বিচাৰ কলিটিত এমনকি রিপাবলিকান সদস্যেত্ত একাংশ যে ডেমোজা^{টাদর} সংশ্যে হাত মিলিয়ে

मिकनमटक देवीशिक क्याच वर्ण धर्म है অভিবোগ-ভাগিকা প্রকৃত করেছেন, সেটাই द्यांक्त य उत्रात्नीत मार्च अवात्मत केक ना सर्वामात शटक वटबच्छे कविक्सा।

সাইপ্রাস

দ্বশিত পরিষদের হণ্ডকোপে সাইপ্রাসে যুখন একটা আনুতানিক আন্তিত বুক্ বিয়তির অবস্থা চলছে, তথ্ম জেনেভার ব্টেন, গ্রীস ও ত্রচেক্ব মধে পাণিত আলোচনা শ্রুতেই জেল্ড ব্যওরার

উপক্রম হরেছে।

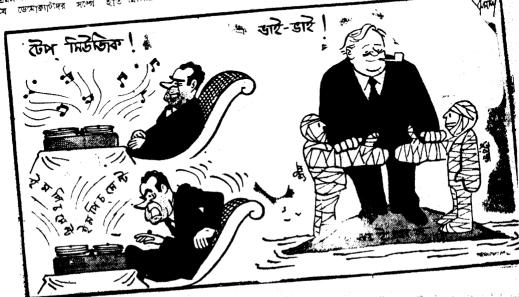
ইতিমধ্যে তীস ও সাইপ্রাস, উভয় দেশেই সমকানের পরিবর্তন হুরেছে। গ্রীসে সামরিক সরকারের পতন হরেছে। তাদের স্থালে নতুন অসামাদক সরকার প্রতিতিঠত হরেছে। সাইপ্রাসে সাম্মিক অভাষানের শ্বারা আচবিশপ মাাকারিওসকে সরিয়ে তাল স্থালে বালক রাত্মপণ্ডর আসনে বসাম হার্ছিল, সেই সংবাদপত-মালিক নিকো-লাস সাামসন পদতাাগ করেছেন এবং তার স্থালে রাষ্ট্রপতির আসনে বসেছেন সাইপ্রাস আইনসভার স্পীকার স্পাফকোস ক্লেরিভিস।

যু-খাবরতি খোবিত হওয়ার পরও তুক্ৰ বাহিনী সাইপ্ৰাসে যুখ চালিয়ে তুকণী সিপ্লিয়ট এলাকা বেল কিছ্টা বাড়ির নিরেছে। কিরোনিয়া বন্দর থেকে রাজধানী নিকোসিয়া পর্যতে যে সভকটি গেছে সেটি ভুকী বাহিনী নিজেদের অধিকারে রেখেছে। অর্থাৎ হোকান মৃহতে সম্ভূপথে সৈন্য ও রস্ত্র আমৃত্তি করে

হাজবানীর উপর চামলা করার ক্যতা ट्र निटलक जाहरू द्वारथ किटबट्ट। गुन्स-বিয়তির এক সংতাহ পরেও সাইপ্রাস ন্দ্ৰমাত্ৰ অভ্যাত নাত্ৰালা ভক্ৰী বাহিনীৰ সংগ্ৰা গ্ৰীক সিপিয়ট বাহিশীর ইত্তত লড়াই চলতে বলৈ থবা भाउमा बाव्ह।

এদিকে, ব্যক্তি প্রিবদের প্রত্তাবের ব্যাখ্যা নিবে মতভেদ দেখা দিয়েছে। এই প্রস্তাবে একই স্থো সাইপ্রাস থেকে বিলেশী সেমাবাহিশীর অপসারণ ও সেখানকার সামাধ্যক অভা্যানের প্রবিত অব'থায় ফিরে যাওয়ার কথা বলা হংরছে। अशह. नामात्रक अञ्चायादमद आत्म त्यात्रहे সংইপ্রাসে রারছে তুকা গায়ারসন এবং গ্রীদের মূল ভূথাত থেকে আগত গ্রীক সামরিক অফিসাবগণ। তাদের কি হবে, নে-বিষয়ে স্বন্তি পরিষদে স্পণ্ট করে কিছু বলা হয়নি। জেনেভা সন্মেলনে গ্রীক প্রবাশ্রমতী শুধু যুশ্ধবিরতি নিরেই আলোচনা করতে চাইছেন। অনাদিকে, তুক্ণী প্রন্থমন্ত্রী চাইছেন সাইপ্রাসের ভবিষাৎ সংবিধান নিয়ে আলোচনা হোত। তুরদেকর চ্ডোত লক্ষা হচ্ছে সাইপ্রাসকে বিভকু করা এই বিভাগ পরিকলপমায় তলে-তলে ব্টেন ও আমেরিকার সায় আছে বলে শোনা যাছে। সোভিয়েট রাশিয়া এতে প্রমাদ গ্নছে। তার আশুকা, বিভঙ্ সাইপ্রাসের দুইে অংশই হবে ন্যাটো বাটি। অলোচনার গতিব উপর নজৰ ক্লাখান জনা বাশিয়া জেনেভায় একজন পর বৈকক ম্যাকারিওসাক আচ বিশ্প ক্মতার ফিরিয়ে দেওয়ার জনা সে শার্থ-সংঘটে উদ্যোগী হতে বলছে। -প্তরীক

২৯-৭-৭৪





নয়নাভিরাম নীলে ভিন্ন প্রতিক্রিয়া ॥

—विकः दम

ামীণ উদ্বেগ তীর, মেঘ হাওয়া ছোটে প্রত্যহই, আমজাম ঝ'রে যায়। কিন্তু কী বিচিত্র ঘনশ্যাম রঙের বাহার আনে বেগের উল্লাসে চেথের নন্দনে আর স্বেদান্ত শরীরে আমাদেরই বিলাসী আরাম!

শহারের থকে কিন্তু সংবেদ্যতা কই?
কখন? কোথায় ব্লিট? মাঠক্ষেত ভাসে
অন্তত দ্ব'খনটা-টাক, লাঙল হাজির ধীরে ধীরে,
না্তাহীন আশা জাগে, — যদি বিধি নাই হন বাম।

নেঘের ঐশ্বর্শ দেখে ভিন্ লোকের ভিন্ন প্রতিক্রিয়া, কারো পেশা তৈরি হয়, কোনো যক্ষভাবে কোথা আয়তনয়না। ওদিকে পাহাড় যেন গ্রোণিভারাদলসশয়না ায়নাভিরাম নীলে কেবা যক্ষ কোথা তার প্রিয়া! আষাড়স্য প্রথম দিবসে, সূখ তাই দুখজাগানিয়া।

ভিজে হাওয়া ওঠে নামে, ক্যাপে, ছোটে মেঘ অবিরাম। মাঠে কেতে শোনা যায় ঃ বহুত বহুত আজ কাম।।





অতুলচন্দ্র বসু

(পূর্ব' প্রকাশিতের পর)

আবার প্রপ্রসংগ্রির। আশা ছলনা-মরী—সেই ছলনায় ভূলে সোসাইটি অব ফাইন আর্টাস বন্ধ হয়ে হাবার পর (১৯২৮) আবার সেই আদশেই জাতিশমানিরপেক শিক্সক্ষেত্রে একটি জগলাথধায় নিম্নাণের সাধ লেখকের মনে দেখা দেয়। ইতিমধ্যে ভাইস-ররেজ হাউস-এর জন্য তার আঁক। ছবি কর্তপক্ষের থবেই মনোনীত হওয়ায় তার আত্মবিশ্বাসে একট, আতিশ্যা দোষ্ট चर्णीक्न । यारे टाक, এই প্রদেশ্টায় মহারাজা প্রদ্যোক্তমার ঠাকুরকে উৎসাহিত করতে পেরে উল্যোগপুর্ব পরে। দরে হল। ১৯০৩ সালেও ১৫ই অগপেট মহারাজারই নেড়া সার রাজেন মুখারির সভাপতিছে ও বিশিষ্ট নাগারক ও কলার্নাসকদের সহ-যোগিতার ইণিডয়ান আকাডোম অব ফাইন আর্টস নামে প্রতিঠানের উদেবাধন হয়। এশিকাটিক সোসাইটির সম্পাদক যোহান ভানে ম্যানেন ও লেখক যুখ্যসম্পাদক নিবকে হয়। 'ভ্রেয়াংসি বহর্বিদ্যানি' কথাটির সারবতা প্রমাণ করবার জনাই যেন গারে-বাইরে প্রবল অসম্ভোগের আগ্রান ক্রাল **উঠল। আশ্**ৰক: হয় বাস্তবধৰ্মা চিত্ৰকণ **এ প্রতিষ্ঠানের সংখ্য একান্ডভারে সংশিক্ষ**ট शाकात सनारे व्यवनीन्छनाण व श्राप्तनस्त्राथ **দ্বাদেই** এতে যোগ দিতে অসম্মত হন। লখনা থেকে আসত হালদারও কিঞ্ছিং উত্তরে সংগেই প্রস্তাবটি অপ্রাহ্য করেন।

বশাবাহনো এই অসন্মতি বাংলাদেশের চিচকাল ভারতীয় কৌলিনা প্রখাপ্রতানের মনোভাবপ্রসূত, কোনো বারিণাত কারণে নর। অন্যদিকে কবাই-এর দৈনিক টাইমস অব ইণ্ডিয়ার সম্পাদকীয় স্তদেও বাংলাদেশে এট সর্বভারতীয় পরিকল্পদার প্রতিবাস তীরভাবে উচ্চারিত হয়। গিল্পক্রেকে বাংগা-বন্দ্রাট-এর বিভেগসালীর প্রধান হোডা স্যার জে জে স্কুল অব আটস-এর অবাক •लगाष्ट्रणांचा अलगमन अवश्चर **केलगावा** इता বাদেলাটের জ্ঞাতে দরবার জ্ঞারন। এতই যখন বিখা তখন কান্ধটি নিশ্চয় শ্ৰেষ্ এই বিবে-চনায় শিক্সীসম্পাদক ক্ষ্মাই দিল্লী ঘারে প্রধান প্রধান শিক্সীদের সভ্যো দেখা করে প্রস্তাবিত প্রদর্শনীতে তাদের যোগদানের প্রতিপ্রতি আদায় করতে সক্ষম হয়। অব-শেষে দাজিলিং-এর লাট-দরবারে বছ-ত্ত্ৰতিতিৰ পৰ বন্ধাই-এৰ মানবক্ষাৰ প্রতিক্রানটির নাম থেকে ইণ্ডিরান শব্দটি भर्तिस ७ कानकारो कृत्य मित्रा, नजून নাম হল আ কাডেমি অব কাইন আট'স क्रानकारो। ১৯८७ मालात २२१म ডिসেम्बत এর প্রথম প্রদর্শনীর স্বারোস্বাটন করেন বড়লাট লড উইলিংডন। নানা প্রদেশের রাজারাজভাদের বদান্তার এর যোটা 5 P তহ বিলে বেশ বাংলার বড়লাট ছেন্ট-লাটও ষথাক্রমে স্বর্ণ ও রোপাপদক উপহার দিলেন। ভারতীয়-অভারতীয় দলের প্রধান শিক্ষাদের নিদ্রশন আবারও জন-সাধারণের কাছে খ্বই স্মাদ্র পেল। আ্যাকাডেমির উল্পেখ্য সম্বশ্যে সংভাবা সন্দেহ দুর করার জন্য লেখক শাস্তিনিকে-তন গিয়ে রবীশ্রনাথ ও নন্দ্রালের অনেক হবি প্রদর্শনীর জন্য সংগ্রহ করতে সক্ষম

আপাত্রদূপিতে সংঠা ও স্বচ্ছন্দ মনে इला आकारकीमद अकृषि मान गावि वजा-বরই ছিল--সংসারক্ষেরে লেখকের বাস্তব-জানের অভাব: গণ্যমান্য নেতৃম্থানীয় লোকদের পারস্পরিক ঈর্ধা, 'অভাবে স্বস্থাব নত্ত শিক্সীদের রেষারেছি ইত্যাদি কঠিন ও বাসত্তব সমস্যার গ্রুড় উপ্লব্ধির বা সেগালির সন্নাধানের যোগাতা লেখকের কোনো দিনই ছিল না। এ পরিবেশে প্রতি-কানটির যাবতীয় সম্ভব ও অসম্ভব রুটির জন্য তাকেই দোষী সাব্যসত, ও প্রকাশ্য চরিত্রননের শিকার, হতে হয়। কোনো-মতে চতথ প্রদর্শনীর কাঞ্জ শেষ হলে যুক্মে-সম্পাদক দুজনেই ইম্ভকা দেন। বলা বাছুলা ভারতীয়-অভারতীয় শিল্পরাজনীতির বিব-ফোড়া ব্রাব্র রভ্যরাই ছিল এবনও আছে। কালকমে নানা বিচিত্ত পদপ্রিক্তমার পর প্রতিষ্ঠানটি এখন শ্রীমতী রাণ্ ম্থাজির নেহৰে সপ্ৰোত্তিত, একথা অনেকেই জতনন। এ এফ **এ-এর নিজম্ব তাট্যালিকায়** দেশীবিদেশী সমুসত পথেরই শিলপীদের জন্য এখন দুরার খোলা রয়েছে। যে আকা-ভেমি চল্লিশ কের আলো কলকাতার কোনো-মাত বহু সাধ্যার একটি বার্ষিক প্রদর্শনীর

আরেজন করতে পারত, এখন তারই
প্রদর্শনীককে বছরে একগোরও বেশী
প্রদর্শনী অনুভিত্ত হয়। রবীন্দরনাথ সহ
সমস্বায়ক শিলপীদেব আঁকা নানাধরনের
ছবিন্ধ ক্ষারী গালারী, চিচশিক্ষার কার
ক্ষারিক প্রদেশন ক্রাক্তিত অন্তর্গনকর্পা এখানে রয়েছে। তব্ স্নেহপাপাশাংক
আশাক্তা হয়। প্রদারীদের ক্রেলর ভারে
বিশ্বহুর স্বাধানিকর ক্রেলর ভারে
বিশ্বহুর সভাপা পাড়ে বারা।

িবতীয় মহায়ণেধর পরবতীকালে আমাদের শিলপশিক্ষাজগতে কিছু পরি-বড়ানের কথা এখানে লিপিবন্ধ করছি--আমাদের বিভিন্ন চিত্রভাবনার সূচনা তো স্বস্ময়ে আট স্কুলেই, তাৰ द्यान्यस्य दः সহ। ইতিহাসের ধারণতেই न(क्स বিবাদের ফলে অধাক দে অকালে তাবসর গ্রহণ মুকুল করেন (১৯৪৩)। কিছ্,দিন খালি থাকবার পর পাবলিক সাভিস কয়িশনের মিব চন-ক্রমে লেথককেই সে পদ পূরণ করতে হয় (১৯৪৫), হাদিও আট স্কলের পরিচালক-মণ্ডলী ও শিক্ষাদণ্ডর তদানীন্তন সহকারী প্রধান শিক্ষক (উপাধ্যক্ষের পদ মাকুলদের সময়ে বিলাপত করা হয় প্রবনীদর্শিয়া রমেন্দ্রনাথ চকুবতারি নিয়োগের জন্য বিলেহ আগ্রহী ও সচেন্ট ছিল। তাদের ও ছার মাস্টার অনেকের, ফাছেই লেখফ প্রায় অবাঞ্চি বাভি হিসাবেই গলা হয়, খবজে কাগজের সম্পাদকীয় স্তুমেন্ডর ভার প্রতি ধর্নন শোনা হায়। ঘটনাপ্রম্পরায় ভা অবশাস্ভাবী পদ্ভাগে (১৯৪৮) সংশিক্ষ বহুবারিই দ্বস্তির নিঃশ্বাস ফেনুসঃ রমেনবাব ও যুখায়থ অধ্যক্ষ নিযুদ্ধ হুম দ্ভাগতে বিদ্যালয় পরিচালনা জার ক্ষাং মাটেই নির পদুব হয়নি-শেষ পর্যাত বা অশাহিত ও বংধ্যান্তদের মধ্যে কাল-ডিন্তাপ করে তিনি ভংনহাদয়ে তাকালে মাজুদ্বর করেন (১৯৫৫)। অধাক্ষতাকালে ডি ऐस्कारे, जागाकाशांतिक अर्ज़ाङ श्रीकृष खाते এর প্রচলন করেছিলেন ছাত্ররাও জা উৎসাহী হয়। অকালে তাঁর ক্মার্কার যতি না পড়লে এই শিংপকর্মগর্মিক ডি আরও উলভ্যানে নিয়ে বেডে পার্চ भारतमञ्जाहे । तरमनवावात माकुरत भारत आह জন অবনীকুশিষ্য, আধুনিক পাশ্চা **ভा**न्कर्स्य कुमनी अ मीर्पामन न्यारि লপ্ডনের বাসিন্দা, চিম্ভামণি কর সং দলের অভিনক্ষন সহ ভাষাক নিয়ত : যদিও সে সোভাগা তার বেশাদিন স্থ হর্মন। যাই হোক অভিসম্প্রতি ডিনি ব কালেই অবসৰ গ্ৰহণ করেছেন। চিচ বিশেষত ভাদক্ষে' আধ্যনিক বিষ্কৃতিৰ শিক্ষাপ্রচলন তার সময়েই ঘটেছে। শা নিকেতনের শিল্পশিকা স্থান্থত দ্ব কথা এখানে অপ্রাসগ্রুক হবে না। নানা **७ भारबंद अभ्यामानद क्रमाई** ततीम्प्रमाश रि ভারতীর প্রতিটো করেন। রিম্ড চিত্র বিশ্বভারতীর কলাভবন প্রথমাবধি বি ঐতিহারাদর পঠিম্থান হিসাবেই প্রা এক সমরে তেলরংয়ে ছবি ং

ৰাইল। শিল্পী: হাহিনী রায় ১৯২০ খ্র



এখানে বিষয়ৎ পরিভাজা ছিল ছদিও ভাষ্ট্রাচর্চা পাশ্চাতা রুটিত অবলম্বন करतहे अधम स्थाक अधारत गर्फ छर्छ। इत्य त्रवीन्त्रमाथ व्यवनीन्त्रमाथ उ नम्मनाम এই তিম প্রধানের মধ্যে চিত্রকলার আদৃশ ও শিক্ষারীতি নিয়ে যথেণ্ট মতাণ্ডর দেখা দেয়া যদিও তা মনাদ্তরে কথনো প্রবিস্ত হয়নি। কালের গতিতে আভ অবদী শুধারা ক্ষীয়ম ণ 御門田司の神 আৰ_নিক্ডার নানা প্রশীক্ষা-নিমুশীক্ষ ও সেখানে চলছে। প্রতিহাতিপার্ণ তর্ণ শিক্ষীদের নেভয়ধীন শাক্তিনিকেতনের कारक जामारम्य कविवार जाना वरशन्ते।

সৰু মিলিয়ে আট স্কল স্থাপনের অভাধিক বংশর প্রে আরু আর্নিক শাশ্চাক্তা চিত্তধার যে চারিলিকেই প্রকট তা প্ৰায় বে কোনো প্রদশ্লী হুরে স্**পল্টে ^{চপান্}ট বোঝা যায়। সাধারণ** कारका कारह ध्रा निम्मनिन्द्रीन मरनकेंगरे দেশী মালিতে বিলাডী বীকের মরসমেী इ.सार हात्वर मण्डे छंक, न्यकःन्यर्ड টিপ্রেলা মটার না। শতাব্দীর লোড়াতেও FICHT PICE প্রসিয়ান মিনিয়েচার **প্রতিক ভারতীয় পর্শা**ততে অবিগভাষ ्शक्यात উशक्यात्रात कृष्ट्रांगकायभादि हत्त्र इन्छ। इत्स इत्स हिरुक्ता व्यक्त अमन ংক ভাষাীয় আলদের বিবয় হয়ে দ্যুক্তিয়েছে হা দুশ্বসাধারণের নাগালের
ক্রেক বাইরে। অথচ প্রদুশ্নীকক্ষে
আনেকেরই মনে স্বাভাবিক প্রদান ভাগে
কেনই বা গত তিরিশ-চল্লিশ বছর ধরে
উন্তেম নের প্রতিকৃতি বা নিস্কা চিত্রে
ধারা এত ক্ষীণ হয়ে আসছে। এ বিষয়ে
আমার একটি বছরা পেশা করছি।

সকলেই লক্ষ্য করে থাকবেন বিদাতে প্রকাশিত বহু শিশু বা কিশোর-পাঠ্য সচিত্র বই ও পত্রিকা আমাদের দেশে কতটা জনপ্রিয়। এগলের ছবি কোনো নামকরা শিলপরি আঁকা নয়-নান্নতম মান বজার রেখে বাস্তবধমী শিল্পী বা শিক্ষাথীদৈরই কাজ। জনপ্রির হলেও এগালো কারও চিত্রবোধে আঘাত করে না। রুড় খোনালেও একথা সভা যে व्यामात्मत घट्या अक्वन मामकता निम्भी छ নেই বিনি স্মান্য কিলাড়ী ইলাসটেটারদের মত্ই সাধারণ মানের বাস্তবধ্মী চিত্র র্-পায়ণ করতে পারেন। আচ্ছেপের কথা এই বে আমাদের পিলপবোধ বা কার-কুশনতা জগতে কারে। চাইতে কম নর। তবে জনসাধারণের উপভোগা চিত্তকমে এত বিভ্ৰুতেন সংকনই বা আসাধারণ হবার অসাধারণ দ্বালতা প্রকাশো জাহির করতে কেউই পিছপু নর?

কার'কারণ ছাড়া কিছাই তো ঘটে मा। भूमत्रीं करते वनकि गाएम थ्यांक क्_{रिमेन}नाटकत অনুজ্ঞার আমব্য চিত্রকলার "বতঃম্ফ,ত" গাদেপ্য ভারতীয়-অভারতীয় প্রদেন এতই ব্যাহত করে জর্জোচলাল যে. কোনো প্রাণবংত শিলপধারাট বে চিরকাল একই ছাপ বছন করতে পারে না, এই সহজ সভাটকও আম্রা বিদ্যাত কুলাম। বাংতবধার য যুখাহোগা চিত্রচর্চার নানেতম মানও আমরা চিত্তকলার বজার রাখি মি: এতদপ্রসংখ্য একথা বিশেষভাবে প্রণিধানযোগ্য যে এই-ভাবে বাধাপ্রাণ্ড না হয়ে এবং স্থানিয়ার নানা সাহিতাচিশ্তার সাক্ষং আমাদের সহিত্যস্থিট কতটা উল্লোখ্য নাটা ও চলচ্চিত্ৰও বত মানে উল্লেভিয়ামী। অন্যদিকে আমাদের সংগীত ও নভ্:-চচার বিলাতী প্রোপাগাডা অনুপ্রবেশ করে নি বলে তার জাত ও মান দুই-ই এখনও বজার রয়েছে। (তা নইলে হিন্দ্র বিরেতে আজ মাসলমানের সানাট আর বাজত না ৷) ভারতীয় চাব্দিলেপ যে প্রণ্-বশ্ত সংগীতচচী আমাদের একমার গোরবের বিষয় তাত্ত নান প্রদেশের বিভিন্ন ঘরানার পরস্পর আদান-প্রদানের সম্ভব্পর হয়েছে। ভাববার কথা আছে সুদূরে অতীতে পাশ্চাভাভাবধারার নিঃসংক্ৰাচ 215 (92) ফলেই গ্রুত্যুগের ভাস্কর্য সংগারবে প্রতিষ্ঠিত হতে পেরেছিল। মোগল-প্রান দংপতি কিংবা পার্রাসক চিত্রকলার স্বক্তুংদ প্রভাব তো সেদিনের কথা অন্যরূপে চিত্রকলাক্ষেত্রেও মাত্র একল বছর আগে বিনাব'ধার বিদেশী ুর্ধারার তান -প্রাণিত হয়ে বাংলাদেশের শিশ্পীরা বি প্রাদ্বনত কাজেবই না চিহ্ন রেখে গোজেন। (জ্যোতিরিন্দুনাথ ঠাকুর, রণদা গুশ্ত ও যামিনী রায়ের নিদ্রশনিচিত তিনটি দেখলেই তা বোঝা বার)। ব্টিশ যাদ্মলা এতটা ক্ষকিরী নাহলে গত পঞাশ বছরে এ'দের চাইতে বা শশী হেস; জলাধ মুখাজি যামিনী গাণালী হেমেন মজুম-দার বা লেখকের চাইতেও অনেক উলতে-মানের ছবিই আমাদের জাতীয় সম্প্র হতে পারত। মাঝখান থেকে বাস্তবধনী শশী হেস ফশী বোল দেশতাগ্যী আট স্কুলে হামিনী পালালী প্রথমে উপেক্ষিত পরে অপমানিত হয়ে প্রভাগ করলেন-क्षि केरुवाहां कत्रकात ना। ध व्यवस्थाय নেহাৎ জীবন্ধারণের জনাই প্রতিল্লভিপ্র যে শিক্ষকতার ুমকেন্ট্রীরা আপ্ররের জন্য বিস্দৃদ প্রতিযোগিতার শিল্পধর্ম বিস্ঞান দেৰে তাতে আর কি অনাদিক ভাপানান্দ क्ष्मिक्क भूग हक्ष्यकी द्वाराय भिक्षावितात

रका **न्तर्राधाननी कित्रकारि जारत**स्वर করতে হয়েছে: শেষ পর্যতে নগদ পরসার চাল কারবারে স্তা সেলসম্যানশিপ बाबात खरत रकरमस्य, रवीनश्रमी करणा-নিভ'র ক্যালি'রাল আট' স্তিলীলতা পুরোপারিই বিসঞ্জন দিরেছে। শিক্ষকমে विस्मारितव काट्ड आमार्टनत किन्द्रे শেখবার নেই' এই অশপ্রচারে ইউরোশীর শিলেশর যথায়থ ইতিহাসচচা, কি তার বিভিন্ন ঘরানার তুলনাম্লক বিচার কিন্বা বিভিন্ন আঞাকের বিদশ্য অনুশীলন কিছুট আমরা নিষ্ঠার সংগ্র পালন করতে পারলাম না। 'মানে' থেকে 'শিকাসো' তাববি বে ছেমিয়ান য-গা•তকারী শিক্ষা কৈব জীবনচ্যিত বা ছাপা-ভবিণ পরিচিডিট वाश्रचे प्राप्त इचा क्रज जवनीनाइकारे ना অধ্যক্ষ অসিত হালদাৰ থেকে চিত্ৰকল" লেখক আই সি এস অংশাক মৈন পশ্চিমের চিয়শালা বারে এসে একবাকো রায় দিলেন 'হান্দ্টিং ভ্রিমিখতং'।

Art is the efficience of civilization.

কথাটি ধরে পশ্চিমের সভ্যতা *।ক করে* স্বারিয়ালিক্ষ এ প্রতিপত হল তার এক সংক্ষিণ্ড বিবরণ দেওয়া বোধহয় এখানে অসংগত হবে না। প্রায় তিন হাজার বছর আগে গ্রীসে পশ্চমী বাশ্তবধারার স্ত্র-পাত। নানা পথপারভ্যার পর সেই ধারা শাচদা বছর আনো ইতালীতে রেনেশার যুগে এক প্নিরুক্জীবন লাভ করে এবং রাজারাজড়া ও ধনী ব্যক্তিদের প্রতি-পোষ্কতায় কতগুলি বিশেষ ঘরানার দান বাঁধে। ফলে শিল্পীদের মধ্যে একটা নিশ্চিত স্বাক্তন্য এসে পড়ায় যথাথ উল্ভেম্বনর কার্ক্য দিলুপবোধ বে ক্রমণ করুল হতে থকে। কোনো কোনে প্রতিভাবান শিল্পীর নিজম্ব শিল্পবোধ ও কার্কমে এর ব্যতিক্রম ঘটলেও সংস্কার-বৃশ্ব ঐতিহোর চাপে এবা কখনই বসিক-সমাজে সহজ স্বীকৃতি পান নি। চিত্তবলা ধনীপ হের বিলাসসামগ্রী মত্ত, এ রক্ম একটা ধারণা বংধমাল হয়ে দাঁড়ার, ছবিতে মানা ছলাকলা ও নিম্প্রাণ আগতকরপেরও প্রাদ্ভাব ঘটতে থাকে। মোড় ঘোরবার সচেতন প্রচেন্টা এল গত শতকের মাঝা-মালি বারবিক্ত" নামে পরিচিত মিলে, করে প্রভৃতি একদস ফরাসী চিতকরের ক্লে-ছবির বিষয়বস্তু ও অভিগ্রশংশতির মধ্য দিরে জনসাধারণের ঘনিষ্ঠ হবার প্রয়াসে। ত্রীবাই প্রথম উন্মৃত্ত প্রকৃতির পরিবেশে খেটে-খাওরা মান্ত্রের সহজ জীবনধারাকে क्षित्र त्राभमात्मत्र क्षण्डे। कत्रत्मन। **ख**ङ्ग-পর অকশ্যাৎ বনারে মতই এই সূত্র ধবে ৰছে এল বৰ্তমানে ইস্প্ৰেশানিজয় নামে বিশিত ছবির ধারা—বারবিজ' স্কুলের সহজ সমাজতেজন ব সংগ্ৰাহত চল নত্ন নাক্ষ্মিক চেতনা বা একটা নক্ষনতাত্ত্বিক বিশ্বর প্রাচীন অনুশায়তনের দরজায় একের পর এক আবাত পড়তে দাব, করন। প্রকৃতির প্রশারিত বিশ্বারের মধ্যে व्यक्ति प्रतिकृत्स स्वय आविष्यात करत ए

ाद मध्या फल्का कांकारहा, हमरश्रामानिन्छ । 15%-করেরা নতুন সতেজ চিয়ক্তপ স্থিত कत्रका भूदारिय कनामान्यस्य स्थान्यात चुटल मिट्य अल्ब नकुम छावधाता हारि-দিক শ্লাবিত করে ফোলল। তারশবের..... অধুশতাৰ্শীকাল চলল চিত্ৰে নবা ও ঐতিহ্যবাদীদের মধ্যে গৃহস্থে যা আভাষ গোডাতেই দিয়েছি। তথনকার যেস ভর্ব খিলপুর পর অনেক প্রেরানে। পথধাটই বিধনত করে দিলেন তাদের মধ্যে মানে সেঞ্জান ভ্যান গথ গণ্যার নামই সবাগ্র-স্ণা! এ'রাই পরবতী'যুগের স্বরিয়ালিজম এ পূর্বসূরী এবং এপদরই উজরসাধক পিকাসো নতুন নতুন পরীকা-নিরীকার ২ফ্র লিজ্য চারদিকে কুমানত ছড়িয়ে দেন। এই ক্লিপোর আলোয় পাঁচমী সভাতার এক নণনর প প্রকাশ পার। দেহমনে বিকারগ্রন্থ ভীতস্ক্রন্ত পশ্চিমী সভাতা ব্যভিৎস ক্ষ্তিপ্রাসায় কাত্র-স্রার্থ্য লিস্টাদের ছবি যেন ত্রই প্রতীক।

আমাদের ধ্যানমান সপ্রোচীন বট-श्राक्त श्राम निकल क जामभागा अपाठकम हेर्यकान त्थरक व्यवस्य कह नामाना ख्यावि উপ্ত্যাপ্ত করতে উপ্রের ইতিছাসিক রেখাচিত অকিলাম। প্রতাক ও পরেক অভিনতা ব্যাদ্ধে প্রাচা ও প্রতীক্রের वरल क्षत निरहा শা**ংবত বিশেষ লাম্**ল আনথ'ক আমানের চিয়কলা বিচিত হয়েছে। অঘচ প্রতাক ও পরোক অনুভূতি कात्रक्या मृश्चिकत्व मानववात मृति वहिश-প্ৰকাশ মায়-কোনোণাই প্ৰেণ্ঠ বিবেচিত হতে পারে না। স্বভন্ত বলেট এরা বিরোধী নয়, বরং বহু প্রেল পরস্পরের পরিপ্রক। অতএব চোঝে চোঝে দেখা ও মনে মনে দেখার যোগাত বা উচিতা কোনো ভৌগোলিক সীমার আবন্ধ থাকভে পারে না। প্রসংগত উল্লেখ করা বার ইংরাজি 'পার্সাপেকটিড' কথাটির চাইতে আমাদের ভাষায় একাল প্রডাক্ষ প্রোক ধ্যান ও দিবদেভিট কথাগালি কত স্পংট ও অথবিহ। ষাই হোক, ইউরোপে গত

—বিশেষ ঘোষণা—

গত দশ মাসে কাগজে ছাপা, বাঁধাই ইত্যাদির জন্য মূল্য বৃদ্ধি ঘটেছে দ্বগন্পের বেশী। স্তরাং রচনাবলীর দাম পরের মৃদ্রণে প্রতি থণ্ড ২০ টাকা করতে বাধ্য হব। মনোজ বস্থ প্রবাধে সান্যালের রচনাবলীর ১ম ও ২য় খণ্ড বেরিরেছে। প্রতি খণ্ড ১৬ থাহকদের জন্য ১২ ৮০)। প্রথম মূলণ শেষ হয়ে গেলে (১ম ও ২য় খণ্ড) ১২ ৮০ পরিবর্তে ১৬ টাকায় গ্রাহকদের কিনতে হবে। যারা আজও গ্রাহক হতেইচ্চুক অবিলন্দের M 0 অথবা অন্যভাবে সর'সরি টাকা পাঠান। প্রতিটি রচনাবলী আন্মানিক দশ খণ্ডে বের্বে।

মনোজ বস্তুর রচনাবলী

১ম খণেডর স্চী: ভূলি নাই, চীন দেখে এলাম (১ম) মানুৰ গড়ার কারিগর রাজকনা স্বয়ব্ব।

হয় থাকেল স্চী: নিশিক্ট্মন (১ম), চীন দেখে এলাম (২র) বালের কেলা

প্রবোধ সান্যালের

্রচনাবলী

১য় খনেতার স্চৌঃ আপুলা বাকা, বনহসেই, লছাজাখালের পাথে। ১য় খনেতার স্চৌঃ নিদ নদী, দেশকাখা ^হলালাল (১ম), দেশকার প্রাস ইত্যাসি গলেশ।

প্রতি খণেডর মূলো ১৬ । গ্রাহকম্কো ১২ ৮০। ৫ টাকা জনা ছিলে গ্রাহক জতে হয়।

দুটি রচনাবলারি : ৩য় খণ্ড খণ্ডাম্প

প্ৰথমভাশ, Co বেল্যল প্ৰতিশাল প্ৰাঃ লিঃ, কলিকাডা-১২

প্রচিশ বছরের সদাচ্যাল আলোড্নের মন্ড আহাদের ঐতিহাসিক চিত্রপটে কথনট ৰুগ শতকারী বিষয় দি ঘটো নি পেত্ন-2027/20 क्षकृत्व वन्ध्रत भन्नात भावक्या হর নি। এ শতকের গোডার শ্বা কত-গুলি অনাশ্তর ভারাবেলে চিত্রকাকেও প্রাচা-প্রভীদোর সভাতার আদশ্র নিরে ব্যা বাক্ষিত ভায় উপস্তাত হলাম, ফার জারপর ধ্যেকে এ পর্যানত পশ্চিম্নী পার্টাথর दर्गभाना फेक्टर्यात शाठे कात शाठेमाना মা্থরিত করে তলেছি। নতুন সম্পানে বেরিয়ে পড়া আরু প্রয়োজন। নিভ'ল বিচার বা নিধারণের কোনে দাবি কর্ছিনা চিদ্ৰক্তভগতের নানা ভূমিকা গ্রহণ অভিক্রেক্তার ফাল সভজবোধা প্রাথমিক করেকটি তথেদে মধ্য দিয়েই একটি বছবা তলে ধরে লেখাটি শেষ করতে চাই।

পরিদাশ্যান প্রতিষ্ঠ রাণ্ডেদ বহাধা-বিভর : (ক) রাম্পনার সাতটি রঙ অগণিত বর্ণাশ্ভরে দিকে দিকে উম্ভাসিত। (খ) ধরা-ছোঁহার স্পশাহ্যাগ। ছোট-বড বৃত্ত অসংখার পে চারদিকে সমাবেশিত। (গ) ভিন্ন ভিন্ন র_ুপভেদে আলোকপাত ও ছায়ার আবরণে দিন-রাত এব বিরাম-বিজ্ঞীন লাকে:চরি থেল। চলজে। (ঘ) সমস্ত রাপভেদই আবার দুখ্যা ও দ্লের দার্ভের ব্যবধানে ও দ্ভিট্রিপার প্রি-শতালে রূপানতবিত হয়ে হয়ে। (৪) সেব শোষে রাপমানত প্রতিমাহাত প্রতাক ও পরেক্ষে দৃশ্টিভাগীর মাধামে বিভানবত হয়ে চংগছে। নিতাৰতই নৈসাগ[া]ক এই তথাগালি বাশ্তবপদ্থী চিত্রকরের বর্ণ-মালা। এই বৰ্মাণা আয়ন্ত করে চিন্দ্রচপ্রলা: প্রকৃতি দেব ব आङ्गारन দিয়ে পরোক অভিজ্ঞতানিরপেক FI & প্রভান্ধ একটি ক্ষণিকাম্ভিন্নি চিত্রকলপ-র পায়ণই তার সাধনাপথের **প্রথম সোপান** : মুগ যাস ধরে পশিচামার শিংপী এই স্বাধনারই স্বাক্ষর রেখে ধনা হয়ে স্বো**ছন** ' ভখ্যার প্রথমেই এক প্রশ্ন ওঠে<u>ায়ে</u> সাত-ইভ বিতাশা ন্যুনছন দপদিদত করে । মাংক-ভাকাশে দেখা দেয়, মিলায় চকিচেচ, ভাকে কোন উপায়ে কোন পিঞ্চার ধরে রাখ্য যায় ? উপায় নৈস্থাক নিয়নেই নিহিত। একটি

CONTROL OF THE STATE OF THE STA

সূৰ্ণীয়ত বাভাৱনপথে প্ৰত্যক্ষ দুৰ্ণিতেই দেখা হার যে ক্ষাতিসাঞ্ড সংস্কারকথ সমস্ড প্রোক্ত রূপ্ডেদ্ট নিজ নিজ স্বাতন্তা বজার রেশে একটিট দাণ্টিগ্রাহা রূপে সংহত। কৈচিকেৰে মধ্যে ঐক্য কথাটির বাসতব্পস্থী চিত্রকর তার পথপরিক্রমায় এই ভাবেই ব্যত্ত ও বোঝাতে পারে। রাপ-বহুস্যে চিতুসন্তার সংধানে এরাই আলো অশ্বকার রং-বেরং ছোটবডার রাপভেদে দেশত চিত্ৰৰতা দেখে র প্রা, শ্ধ ব্যাণকাভ্যুগ্রের মাধ্যমে চিন্নফলকের ক্স উত্ (রং তাল কাগজ ইত্যাদি) মূভ করে চিতের চিমারর পের প্রভাক্ষ প্রভায় ঘটাতে পারে। ক্মাযোগের এই সাধনা সহজ নয়। তব যে রাপমাণ্ধ, সে তো অধরাকে ধরতে গিয়ে চির-অভণতই থেকে যাবে। একটি উদাহরণে 'সামিত বাড হণ' 'সংস্কারবর্ণধ পরোক-রূপ' কথাগন্নির অর্থ' হয়ত স্পন্ট হবে।

একটি ছোট জানালার মধ্য দিয়ে দারের পাহাড়, নীলাকাশে সাদা হোঘের খেলা, শসা-শ্যামলা ক্ষেতের মাঝখান দিয়ে আঁক শাঁডা নদী দরে ব্কেছেণী কুষ্কের কটিব, আট্রালিকা মন্দির মাঝে মাঝে দ্ব-চারটি তাগ বা নারিকেল গাছ স্বার্ট ছোটবড় আয়-ভূনের পরোক্ষর্প কেনদেপত্যাল একস-পিরিয়েক্স) রুপান্তরিত হয়ে একই সংকা প্রতাক্ষ দেখা যায় (পারসেপসুয়াল একস-পিরিয়েক্স)। অথচ একই সময়ে চেথে চোঝে দেখা ও মনে মনে দেখায় আমরা এতই অভাহত যে ধারণাই করতে পারি না কত বহুংধাবিভয় রুপ্ডেদ একই সংগ্নিবি-'রাধে প্রতিভাত হয়। পাহাত-নদী গাছপালা সবুই জানাশার থেকে ছোট প্রতীয়মান না হলে দেখি কি করে? মনে মনে এপের আপেক্ষিক আয়ুভনের ধারণা ঠিকই ্থে ক গায় অথ্য ভিস্যাল ইমেজ এর প্রতাক প্রমাণে মনে মনে বাধমাল ধারণার বিসজনি দিতে হয়। সকাইতে উ'চু যে পাহাড় ভাও নেবে এসে ধরণীতল ম্পেশ্ব করে ক্রমে উক্ত হয়ে দ্রেদিগতে ধর্ণীত্স এ চেংখের সমাশ্তরাল রেখায় , আকাশ ধরে ফেলে। এসব তথ্য সম্বশ্ধে বাস্তবধারার চিত্রকরকে রূপ য়ণকরে বিশেষ সচেতন গাকতে হয় যদিও আমরা হয়ত সবসময়ে এগ্রেলা সম্বংশ যথায়থ অর্বাহত নই! এগ্রালই ভার পর্থানদেশিক, যা তাত্তে চিত্র-भूटि देविहरहात भट्या औरकात सका । य्थाक পথন্ড হতে দের मा। অন্যদিকে পরোক বা ধ্যানদ্ভিত্ত অনুম্প্রেরণায় যখন চিত্রপট রচিত হয় তখনও রং রেখা আয়তনের হাবতীয় রূপ:ভদ যথায়থ বিন্যাসে . বহার য়ধ্যে একীভূত প্রকাশে সাথ'ক চিত্রকলেপ রসোভাণা হতে পদর। পথের তো অশ্ত নেই -- स्थ भक्ष्ये (नक्ष्या दशक ना कन, धकरे চিত্রপটে বিভিন্ন দ্থিউভগারি চিফ্ চিক্ ব্যলই কদেশর স্থিরর্প বিখিত করে চিত্রকরমাতেই তা বঞ্জন করে। পথ একবার বাছা হলে আর তা থেকে প্রন্থ হওয়া কিন্বা ধ্বিতিবিশরে পরিবর্ডান হলে না। তারা

স্বাই জনে য়ে সাথাকিল্টনা শেষণার্থত ভিপ্তেষী কার্কুশলতার উৎকর্মের উপরই নির্ভার করে—সদ্বেদ্দা বা গাড় ইনটেনশ্নই বংগণট নর । কার্ক্মের ভারতমা
বিচারের প্রশন্টা চিরকালের, স্টো থাকারই।
এখানে শা্ধা আমার একটা বিশ্বাস বারু করতে চাই ও কিছাদিন স্বাস্কুদ্দিটিতে প্রকাতর প্রতাক্ষপরিক্ষায় চিত্রসতার অন্ত্রাক্ষার করকে নতুন দিগদত খ্লেও যেতে প্রেল

চিনকলায় ব'ছতবতার যে প্রারা একশ ব্ডাব আগে আমাদের উদ্বন্ধে করেছিল, বারবার ব্যাহত হলেও তা একেবারে শ্রাকিয়ে হায়ান : বিপ্ল লোতসম্ভবা সে ধারা নানা রাজ-প্ৰিকল ও বিপ্থগামী নৈতিক খননে কত্গালি নতুন ধ্বনের হয়েছে আজ সংস্কারে আবদ্ধ হয়ে তা বিশ্বজল শয়ে রুদ্ধ হয়ে যাবার উপক্রম। এই ধারণা যুক্তি-সংগত মনে কবলৈ আমাদের ভবিষাতভ্রসা চিত্রকরেরা বাস্তব্ধারার উৎসম্পেই তার গতি পাণবাহী করে তলতে পারবেন। স্থির দুণিটবিক্দু-নিভার সালেট বাস্ত্রবাদী ব্রিট-গতভাবে বা জাতিগতভাবে ভিল চলে, বিভিন্ন চিনুকল্প রাপায়ণ করে পশ্যতিও তান,সরণ করতে দিবধা করে নং। আমি পাশ্চাতা ভারধারার বিশেষ পুকাশভংগীর আদৃশ পুচর করতি বলে মনে হতে পরে বলে এ কৈফিয়ং দিতে হল। শতাক্ষীর পর শতাক্ষী ধরে পাশ্চাতা শিক্সীরা ভাদের পথপরিক্রয়ে যে ব্যক্ষর গেছেন্ ু। ইতিহাসে চিরবিক্ষয়েব গ্রবাদে থাক্রে । বৃদ্ধ হয়েই .4.75 বিশ্বাসী নয় বলে কোনো ঐতিহাই বেশীলিন ধরে রাগতে পাবেনি। সার-বিয়ালজন-এর স্থ শতাক্ষীর সংগ্র হ*লে* ্রামেরিকার অধান ভয অ≉তারত হাণ্ডিক চিপ্রকশাং, ও কার্কেমে তার লক্ষণ প্রপাট। আমার নিশ্চিত বিশ্বাস প্রাশ্চাকা কোনো ৷শংপ্ৰম নয়, পাশ্চাত্য শিশ্পী-্রনের বিশেষ্ট্রই আমাদের আদশ হ'বয়া টাচত। প্রতাক দুণিটারন্দ, থেকে উৎসারিত ভবপুৰাত হোমন সংস্ক্রশ্ভথল মোচন করতে পারে তেমন নিজেকে উপলশ্ভাল সংহত বেগবতী স্রোতাদ্বনীর রূপও দান করতে পারে। সাবধানী পৃথিকের মত কোনো মতে বেংচে থাকতে অফ্বীকারু করে, কবি-গ্রুর ভাষার

Let us take heart and made daring experiments defying unbult prohibitions preached by presudent little critics'

এ বণী তর্গ খিলপীদের অস্ট্রুবর্প শোক। তাদের একটি অনুরোধ করে আমি বিদায় নিতে চাই। সমুস্ত মুড্মিত অগ্রাহ্য করে শ্বে চোথে চোথ রেপে মারের যে মুখ্যানি একালন ভাল দেগেছিল, মা থেকে মা বলে ডাকবার মত তারই একখানি প্রতি-ছবি যেন তারা একদিন রুশায়ণ করেন। মা আশবিদি করবেন, আমাদেরও পাপের শ্রাহান্ত হবে।

প্রভাতদেবসরকার ব্যাক্তির ব

(পূর্ব প্রকাশিকের পর)

আজ বাব খব-নাগ করছেন, এতজ্প কবার এসে টাল লাইনে প্রে গেছেন সাকে নানাভাবে জেল করছেন, বি তাকে কিছা, বলে গিয়েছিল কিনা কোনো বদশ্-টাগর্ব বাড়ী হাবে না ছুটির পর সোজা বাড়ী

আসবে ?

মা কিছ্ বগতে পানবেন না, বাবা বেশে
তেগে অফিগর হার উঠবেন তত। তারপর
গ্রম হার অসে থাকবেন যতক্ষণ না জানকাহণত ছেলেটি গ্র-প্রাগত হাক্ষ। তারকাহণত কোবে বনুনীর নামে গ্রাগ্রানান, বাড়াদুন্দ সপাই তিতি-বিরক্ত।

ঠিক সমান্ত বাড়ী না ফেরা ছেলেমেরের পক্ষে যেন অমান্তনীয় অপরাধ। বিকাশের এক কাকাও ঐ বকম ছিলেন, তার আলিও আন্তায়ন্ত্রক কাকাও ঐ বকম ছিলেন, তার ক্রান্তন্ত্রক, একটা নির্দিণ্ড সময়ে বাড়ী না ফিরলেই বকা-মকা মহামানির কণ্ডে হয়ে যেও। ছেট বড় নাবা-মক, সাবালক কোন বিচান বিবেচনাই কাকা করতেন না। আর স্কু-জ্ঞানের মত কি কান ছিল সে-কাকার- যে কেউ যথন কড়া নাড়কে, বলৈ দিতে পারতেন, অম্কুক্তা নাড়কে, বলৈ দিতে পারতেন, অম্কুক্তা নাড়কে, বলৈ দিতে পারতেন, অম্কুক্তা সাড়কে, বলৈ কিতে পারতেন, অম্কুক্তা নাড়কে।

সেদিনের সেই মিটিং-এর প্র আর বিকাশ এদিকে আসে নি। এগড়ের প্র শানত সম্পুদ্র মত মাইটা এখন স্তথ্ধ স্থির। বেশ বড় বড় ঘাস গজিয়ে উঠেছে, মুলো এরে বেলুছে।

1,

সেই যখন হে'টেই বাড়ী ফিরতে হ'ব তেখন তার মাঠের মধ্যে বলে থেকে লাভ কি। আর এই প্রথম নর বিকাশের চাকরি-জীবনে। তিসেব কবলে কত দিনের কণা মনে পড়ে এই হরভাল, এই মিটিং এই প্রিলের সংলি, এই বোমা- আল্নে।

অগিপাসর বয়াক প্রেণি সহক্রমীর। রোজহানির প্রকাশ করে বলেন, এর চেরে ইংকেলাই ভাল ছিল, অমন স্বদেশী আন্দোলনের সময় তাদের কথনো ভোরের মত ছোটে বা দৌড়ে কি পালিয়ে আশিস করতে হয়নি। আশিস আদালত ভিক্ চলেছে।

বহিক্ষবাৰ খুবই ইংকেল-ভল উল্লেশ্য ইতে তুলে প্ৰথম জানিয়ে বলেন, আনে বৰা,

কিসে আরু কিসে? তরা হলো রাজার জাত কেবল। তারা জানতো কি ভাবে শাসন করতে হয়—সাঁ-ফো-ও করবার উপায় ছিল না। আরু এখন দেখ ছু'চের কেতন আরুতে ইল্পাড়ে কে কাকে নাল্ডে কে কার কথা শ্লেছে। সবাই রাজা। থকালো ইংরেজ--

ছাৰে ছাৰে বাৰাও খেল ঐ কথা বলেন।
দেশের লোক স্বাধীন হ্বার যোগাতা অন্ধান
করেনি। কেবল কডকগলো স্বাধাবাদীর
স্বাধার জন্যে দেশে স্বাধীনতা এসেতে।
ইংরেজরা ভূল করে চলে গেছে, তানের ভয়

আম্লক— বাংকমবাবা কিন্তু বলেন, ভয় কি বলবো, তারা দয়া করে স্বাধীনতা দিয়ে গেছেন মজা দেখবে বলে। আবার তাদের ডেকে আনতে হবে দেখোনা।

আপিসে এই নিমে বিকাশরা ৩৭লোককে থ্ব কেপায়। খব রগড় করে।
বাঞ্চমবাবার ৩০ চার্চিপের বক্তুতার অংশবিশেষ মংখ্যুল বক্ষেন। চার্চিল লোকটা ঠিক
ব্যেতো। আই আম নট ট প্রিসাইড ওজর
দি লিকুইজেশন আফ দি বিটিপ
এম্পায়ার। মহাত্মা লাধ্যকৈ বলতে।
নেকেড ফ্রিয়া

অনেকৃষণ থেকে নিকাশ লক্ষ্য করছিল, মাঠের মরা আলোর মধ্যে মাতিটা যেণ ছায়ার মত নড়ছিল, উঠছে বসাছে কি চলছে ঠিক মেন ঠারে করতে পার্রাছল না। কিল্টু ডেখে গোধালির আলো-আধারে বড় আকর্ষণীয় মনে ছচ্ছিল, তার ম্বক মনে উৎসক্ষোধ

ত হাং ছোন কেমন করে মহোমানিথ হয়ে গেল, বিকাশ অসম্পুত হরে পাশ কটোবার চেশ্যা করণে। দ্ব পা এলোতে: ছায়ামাতি কায়াবিশিল্য নারী মাতি ধরে ব্ললে, একটা শ্লেবেন?

যেন গ্লিংগোলা বাহা আগনে প্লিয় বেল জয় পেরেছিল বিকাশ মেরেটিকে-স্কুলা সমীপ্রতিনী হতে দেখে ঃ ভূতে প্রেমার

্তেমনি ভবে ভবে আড়ণ্টভাবে বিকাশ বৃহত্যে, আমাকে বৃহত্তেম?

মেরেটি মেন হাসংগ, বেশ কথা গলছে ছেলেটি, এই নিজন মাঠে এখন নে ছাড়া

সামনে কাছে আর কে আছে থাকে সালাধন জনবে?

বেশ সপ্রতিত কতে মেয়েটি জিজেব করলে আপুনি কোন দিকে ধাবেন?

একটা ইড়খ্ডত করে বিকাশ বললে, কেন্ট্

হাত বাড়িয়ে সামণেটা নির্দেশ করে মেয়েটি বললে, তা হলে আপ্নার সংখ্য যেতুর। যা গোলমাল চারদিকে—

ব্যোগমালের ফনো সেও মাঠের এলিকে এসে পড়েছে নিরাপদ চেবে ছড়িপথে বড়ৌ ফরার মন্পথ করেছে। বিকাশ ভাবলে, থেকাটিও কি ভার ঐত ভীত, সংগ্রুত হার মাঠ ভেতে পালিয়ে এসে দিশাহার। হরে প্রচ্ছেও

বিকাশ বলালে, আমি সাউথে ধাব। স্থানিত। সপ্রতিভ নেয়েতি বলাল, **আমিত।** ভ্রমানীপুরে, এশালিস বোড-

কেন জানি না, এরপর আসনে কি চন্দন কৈ সংলে আসনে কোন কগাই বিকাশ বগতে পারলে না। মাঠ থেকে কিলেনে হে টে এসে পিচের রাস্টায় উঠে পিছু ফিরে চাইলো। বিনা আশ্বাস বা অভাগানায় মেয়েটি ঠিকই তার পিছা পিছা চলে এসেছে।

নিংশান্দে গ্রাস্ডা চলাতে চলাতে বিক্লানের মনে হবা, ঠিক আজকালকার মত আধানিক সাজে সাম্ভিত নার নেরোট স্প্রতিত রালেও কোণায়া বোন একটা কুঠিত রাড়তা আছে, প্রায়ের শ্রাদ বড় মূন্মিত

তারপর রাজপথে তালোর সংধা এসে হিকাশ ধরকে পিথন ফিরে দাঁড়িরে মেরটিকে স্পাট করে দেখলে বেশবাস বাই
লোক ক্লান্ত্রারের ক্লান্ট্রিক সহজ্জই
লোভ আকর্ষার করে, হানে হয় যেন কতবার
ক্লোহার বেন সে দেখেছে এই মুহুতে
মনে করতে পুরুদ্ধ বা।

হঠাই আন্তুত একটা রোমাঞ্চ সামুস্ত তেতনাকে আছ্টুম করে ফেলে বিকশি গদগদ দ্বরে কালে, এবাস কোন দিকে অন্ত্রেন? একলা বেতে পার্যেন তোঃ

অন্তৰ্ভাৱে নিজান গাঠের মধ্যে যে মেয়েকে ছাসাম্মী নান গাঠেছিল আলোকিত মুখুর রাজপুরের উপ্তে তাকে যেন বিবাদ- মরী মনে হর। বিকাশ খানিক ইতস্তত করে গ্রনিকে গোল।

ট্রায় এখনো চলেনি, বাসও ব্রাস্তাহ দৈখা বাজে না। রাস্তার ওপারে পথচারীর ছিড আছে, বেখা বোৱা বার আডঞ্জ धार्यामा स्वाप्ते मि। वैद्या नाहेत्सम अपिएसर ফটেশাপ্তট আলোকিড নয়, আলপাণেব আলোর সেটকে আলোকিত, ভার ওপর प्रत्मकग्रत्मा वस शाव बाम्सा ब्राह्म- इन्यूम হলদে ফালে ফাটপাত ছেয়ে আছে। পালিশের ভাড়া খেরে কতদিন হে'টে বাড়ী ফিরতে ফিরতে এই ফুটের ওপর থমকে দাভিয়ে বিকাশ ভেষেছে এত বড় বড় গণছে কি ফুল ইয়-নাম কি? মুঠো ভতি ফুল কড়িয়ে রাস্তার মোড়ে এসে মনে মনে আনক গবে-यंगा काराह, गिरीय त्रकृत मा खार किছ्,? তেমন উজ্জননও নয় যেন ফলেগালো, বাসি হলদে বাটার মত কেমন স্কান। হা ত্ত বাড়িরে ভোলা দায় না, ভা ষেন ফুলই নয়। विकाल महम महम वनहत्त्व, वक्त शाह नाम कान ছোট পাতা--পথ ছাড় বাড়ী হাও হাত পর।

এলগিন রৈডের মোড়ে এসে বিকাশ দক্ষিয়ে পড়ে পিছন ফিরে ভাকাল কই, স্থানিস মেয়েটি কোথায় গেল?

বিকাশ নাশত হয়ে উপ্নান দৃষ্টি মোল এদিক ওদিক সংগান ককলে, না কোথাও নেই। আশ্চন, হানে কোথায় মিলিরে গেল মেমেটি? অবাক কাল্ড?

ক্ষেত্র জানি না বিকাশ মনে মনে জারি ভর পেশ। যেন ভারই দেশে, দে অসভক ইরোছ বলে মানেটি হারিছে গেল, ভার শন্মনক্ষ অসাহধন্যভার--

না, রাণ করে বিকাশ ভাষলে, বড় কার্থ-প্র মেয়ে তো, বড় আগুর রহিলা—এতখানি ভরের পথ অভিক্রু করে না বলে সরে গোল আর দবকার কি, নিরপুদ স্পানে প্রেটিছ লেছে এস্ক্ট-এব মুখ্যপান্সভাই বা কি?

নিজেকে কেজন বেন প্রভানিত, নিন্দু মনে হল বিকাশের। অস্থানিতও—ছিঃ ছিঃ।

বুলাই মন্দের মধ্যে কোন্ড বেশ্ব করে,
হয়ভো কণি প্রত্যাধাও, বিভাগ গাঁচি গাটি
পা কেলে সক্ষনে এগারে চল্যা। সামনে
পানের দোকানে গণ্ডচারির ভিত্ত আছে,
হাজিব-ভি কি বেন সক্ষর কলকান্তার অবস্থা।
হাজিব-ভি কি বেন সক্ষর কলকান্তার অবস্থা।
হাজিব-ভি কি বেন সক্ষর কলান্তা,
ভারিমো বাছেন্লেনে এভিভাক তাড় প্রথম
আর এভানিকে এনে কড় কবা হালেহে, জাবতে
ম্বে নিজ্ঞান্য কার্যাহালিটা।

একটা প্রক্রিপর গাড়ি গোঁ গোঁ করে এগিয়ে গেল, পানের দোক্ষনের সামনে ডিড্টা সন্দাপ্ত হরে উঠল—ব্রেডিবর দকটো স্পান্ট লোনা খেল। তিজ্বপান্ত ক্লান্ডরক হস্ডেপা করতে প্রক্রিপর রাজিও কলিনে গালে ভৌজে প্রক্রিপর ক্লান্ড লা হওরার প্রক্রিপন। ব্যক্তিত গ্রেকি ভিড্কি, ক্লেট হতা-

প্লিলের গাড়িটা বোধ হয় দ্ণিন হাইরে চলে গেলে, পানের দোকানের ভিড়টা নালা মদতবা করতে লাগাল, 'মিছে
কথা। শরোরকা বাচ্ছা।...কেউ মরেনি?
চারকন মরেছে। শিরালদা থেকে হাটতে
হাটতে আসহি নিকের চোকে দেখেতি।
দালা ব্রেভিওর খবর সব মিখো। কম করে
চৌশ্ব রাউন্ড গ্লিল হ্লাড়েছে।'

আইন-শৃংখনা ভংগ। ল এগ্রন্ড অর্ডার রক্ষা করা সরকারের প্রধান কর্তব্য-শিগতিয়ে

সব সোজা করতে হবে।' কথাটা এক সহ-ক্ষমীর বেশ বরস হয়েছে জন্তুলাকের— ধর্ণোছলেন, তার হাতে ভার দিলে দু দিনে নাকি সব টাণ্ডা করে দিতে পারেন।

बारतस्य कारते अव-- .

বেংশ হয় বাংশারটা অত সহজ নয় ৷ য়ায়
কয় হয়৾ন, গাৄশিংগালাও কয় চলেনি—পাৄলিশ
হয়েলা বশতে বা বোঝায় তারও বাতিকয়
হয়িন ৷ তবা দিন দিন অবস্থা বেন কেয়ন
হয়ে আসহে, য়ানে হয় তয়৽কয় কিছে, একটা
হতে আয় দেয়ী নেই ৷ সব বেন কেয়ন অসহঃ
আয় উতাছ হয়ে উঠছে ৷ পালিশ দেপলেই
লোকে ক্ষেপে বাজে, হাতের কাছে বা পাজে
ভাই দিয় গাৄলিশ ক্ষেপাজে। কবে বে এর
শেষ হবে কে কানে—

অবলীৰ না রাস্তার মোডে শায়চার করছিলেন। প্রভাবনা তার ছোলরা এখনো বাড়ী ফরছে না কেন। উত্তর কলকাতার গোলমালের খনর খনেক আগেই এসে গেছে, সজি মিঝোর ৩। শার্মানিত হয়ে খনেনাকর তাজকনের ক্ষানে হয়ে হয়ে করিনাকর প্রিক্তি হয়ে হয়ে বানা ক্রিক্তি ভিক্তি চিক্তে।

বিকাশ শ্বে সংবধানী, হণ্টাগারার ছেলে হলেও অংকনীয়াব্রে মানে হছে হাংগানার মধ্যে জড়িনে পাঞ্চ কিছ্সোর অসমতন্স নর । সে বিন্নবাস-শাস্ত নিমন্তি কেকসাই মরো পাড়ে।

অগনীবাবা ইতিছালে অন্তত প্রভাগ জনকৈ ডেকে ডেকে জিল্ডেস ক্রেকেন, শানান, শানাম ওজিকে কি হজ্ছে মলাই? কিছু শানালম ? গালি চলেডে নাকি?

কেউ হয়কো দক্তিরেছে, কেউ হয়তো না দক্তিটেই পিছন না ফিরে জবাব দিয়েছে গোলমাজ ব্রু। স্কেল্ডা বেল্ডাটা প্রাম-স্ক্রে জাজ্যের জ্বেত্র জালমার স্বোহাল হরেছে, মালি গ্যাস কিছা বাকি নেই।

কাউকৈ হয়তো পাকড়াও করে অবনী-বান্ থানিক থায়িয়েছেন। চুলি চুলি জিজ্জান করেছেন, আসন খটনটো কি? হঠাং লোল-মাল কো? কি হল?

ভাগে বিধ হয় নিরাপদ স্থানে পোঁছে থেছেন কৈ নিজের ডেরার এসে নেছেন, প্রজ্ঞাক্ষণারি বিবক্ত দেবার মত সক্ষর ওকা হাতে করেছে হরতে। তিনি বা বান্দের তির হাতে করেছে হরতে। তিনি বা বান্দের তির হাতে করেছে করেছা আত্তিকেত উৎকান্দ্রিক হরে করেছা করেছা করেছার করে মাতে ক্ষরার করেন। করেন। করেনার করেন

নেথা যাছে ই তীত ছাত বিশ্ববিদ্ হল্লে বেন ফিরছে ছেলেটা। ফিছু না, বিকাশ নম্ম, অপর কেউ। বড় বেন হতাশ বিহন্ত মুহামান হল্লে পড়েন অবনীবাব, রাত্তা গুপার বসে পড়বেন কিনা কে জানে। নিজেবে বৃশ্বিয়ো পারেন না—ছেলে বড় হলেছে চাকরি কল্লে বৃশ্বিবাদনা যথেণ্ট আলে বিপদ্ থেকে নিজেকে জানার কোন মতে বিশ্ব নামু—মিছিমিছি ভাবনার কোন মতে হয় না। তব্ ভাবনা হয়, বিকাশের ভাল ফা নিয়ে বড় বিহন্ল হয়ে পড়েন কি কলবেন না কলবেন ভাবতে যেন আর পারেন ন অবনীবাব—মনে হয় এখনই হাল্মবিদারা কিছু একটা দেখবেন কি শ্নবেন।

রেডিওতে সংবাদ বলা শেষ হলো বথারীতি রবীতসংগীত শ্রেহ হল, অবনী বাবদের পাড়াটা ডিফ্ডেশ হয়ে এল। যে রোজকার মত ভিন্ত নির্শেষ্প নির্প্ত কবিন্যালা

রাদতা ক্রিকাশ এখনো বাবের বাড়ীতে একোন। নিকাশ এখনো ফেরেনি। সেই কো সকলে বেরিয়েছে চাকরি করতে, আটো বেলে কোল এখনো এল না। অসনীর মৃত তে চাকরি করেন, তিনি কথন ফিরেছেন—টার বাস নেই বটে, হে'টে আমনতেই বা কতক্ষ লাগে, এই তো গড়ের মাঠটা পেরুলেই—কত দার আর। তিনি আসতে পারপেন বিকা আসতে পারলান বিকা

না নিশ্চয়াই কোন গোলমাল হায়ছে, ি হা•গামাৰ মধ্যে পড়েছে! আজকালকৈ ছেলে-ছোকরাদের কোন বিশ্বাস নেই. সেখানেই আছে, रमभारत रिवासियाम ব্যাপারে মাতক্রি। ছেলেদের অবনীবাব কত ব্ৰিয়েভেন কি দ্যকার বাবা তোমাদের হাশ্যাম র मरका গিয়ে—যা 5 (10) হোক না, ভূমি আমি কি করবো আর বোকর মত জড়িয়ে পড়ারে ভোছাকে নিয়েই টানাটানি। দেখছো না বারা কলকাঠি নাজতে তারা করুন মরছে? হাাঁ, ওসফের মাধ্য থাকাতে বদি চাও-তো থাকান্ত মাজো থাককা, তা নক্ত শাুধাু ' শাুধাু—

বিকাশ অবৃশ্য ভেমন কাজ আজ পর্যন্ত কিছা করেনি, কোন গোলয়াল বা হালাারার मर्था तथा मि । यहात्मव जुननमा ज्ञान जात्नक ব্রেদার। এই তো সেদিন পাশ করতো, চাক্তিটা ভো নিজে থেকেই জোগাড় করলে। ভাৰদবিষ**্ট হেলের জ**ল্যে তানেক প্রাথরি ক্রেছেন, কিম্তু কিছ্র হয়নি। সেদিক পেকে **एक्स निष्ठश्चरे नारापदरी जारह—स्कान**े দিনৰ ভার কেনে কারো মাখাপেক্তী নয়, ঐ वार्शिक करक ब्राटन बारम ब्रकेटन मिला वा গড়ান্মেন্য করেছে ভাছাড়া আব কোন স্থাপারে ব্যাপক ব্যক্তিকাশ্ত কৰে মি। অনেক সময় ज्यम्भित्रः (दर्शात् व्यम रावरण भवका मि, কোমন যেক পরপর মনে হয়েছে, ঠিভ আর প্ৰতিটা ছেলের এন্ত সর বেদ বিকাশ ছেলে-रतना त्यायको । अक्यात विक व्यवस्य व्यवस जनगीवाच् विकामस्य पूर्व प्रार्काशमन শহর পালে। গরের দক্তের মত। সেদিন न्यबद्ध सरकेन सम्बद्ध भागान मि. पर्यान াব, ছেলেটাও পাঁড়িয়ে কাঁড়িয়ে বান খেরেছিল মুখ বুলে জাঁগাস নিকাশের বা এসে পাড়েছিলেন না হলে একটা রক্তানিত কাণ্ড হরে বৈত। খনা হেনে হকে হরুতো, একটা বিপরীত কাণ্ডই করে বস্তো, হয় বাড়ি ছেড়ে চলে বেত, নর বাপকেই সম্-ভিত শিক্ষা দিত, কি ঝোঁকের মাধান্ন আর কিছা করে বসভো।

অধনীবাৰ ব্যংগছিলেন, গাস্নটা বড় বোগ ছয়ে গেছে, বিকাশের মার কথাই তিনি মেনেছিলেন, মান্য কুকুর-বেড়ালকে আমন করে যারে না—অত বড় ছেলেকে তুমি অমন করে যারেলে । ছিঃ।

পরে অবনীবাব ও মনে মনে ব্রেছিলেন ছেলেকে, ভারপর কি ভাবে নিজের প্রুটিটা জানাক্রন, কি অপরাধ প্রীকার করবেন, ভেবে পান নি। খবে ভর পেরে গিয়েছিলেন, বিকাশ বদি কিছ্ করে বসে। বলা কি বার আজকাশকার ছেলে—

না বিকাশ কিছু ক্রেনি। দোৰ থাক বা না থাক গ্রেক্সন্পর শাসন মেনে নিরেছিল। অবলীবাব কাদন খ্রে ভয়ে ভয়ে সংখ্যাত এবং কৃষ্ঠাভরে কাটরেছিলন। ছেলের সংশা কেন্নন বেন একটা সম্প্র-হয়ে গিরেছিল। ঠিক অপ্তা-

তারণর বিকাশ বাড়ী পেণ্টতে আবনী-বার্কোন কথা জিজেন করলেন না। কেনল নানজের মনের আব্দির্কর আবস্থাটা মহুতে অপুন্ত হুল, নিজেকে খুব হান্জা মনে হুলা। বেশা নিশ্চিনত হুলে তালপর শোবার ঘরে বসে নিজের মনেই বলতে লাগলেন দিন দিন বা হুতে, আরু মনের বিবিয়ে বাজকমা করতে হুবে না মানকেনা বোজ আকটা না আকটা হাজালা লেকেই আহে । কি দলকণ্র ছিলা বাব্য ব্যক্তিক বাতিল করে বেশা ছিলা। যুক্তিটকৈ বাতিল করে বেশা ছিলা।

অবনীবাবঃ খনেতে পেকেন, বিকাশ
মাকে ৰোগাক্তে কেন তার বড়ী ফিরতে
এত দেরী ছলো, কত কান্ড করে তবে
এল। এসংকানেডের টাম-গ্রুমটিতে কাগনে
দিয়েছে, প্রিলশ গ্রিল চালার্ক্তে হেণ্ট আসাও মুশকিল। কোথার কথন কি গোলা-মাল ছল্প বলা বার না।

এ-ছর থেকে অবনীবাব, উঠে ওলেন, মা-ছেলের লায়নে পজিপেন, ওলা কথা কথা করে দিল অবনীবাব, মাথে তেলে ঘর ছেকে হেরিয়ের গেলেন। মনে মানী কেমন যেন কৌতুক বোধ কনিলেন।

বিকাশ বাড়ী ফেগ্যার কটকর অভিজ্ঞান তার কথা বললেও মাঠ থেকে একটি ব্বতী মেমে বে তার সংশা নিয়েছিল বে-কথা কিছু বললে না। বেবল, বললে যে-সব মেয়েরা চাকরি করতে নায় ভারাও আৰু খ্ব ভূগেছে। ইুস্-ল রি করে যে বাড়ী ফিরছে শব।

শ্বা বললেন, ওসব শাপের চাকরি এবার ব্যক্ত সবং আনে করে থ্র কভালেনী হাজে চাকরি করছি মালে মালে টাকা ভানারি করাছি নালে মালে সংক্ ভানারি করাছি প্রেছি প্রের্বদের সংক্ টোকাকা দিকিছা

আছকে স্লেক্লের চ্যুবার-করা নির্দেশ সবার ক্রিক এ-বলোভার বিন্যা বিকাশ আসে না, তবে লৈ বিশ্বাস করে ভার বানা রুড কেউ মলে করে না, বাং সহক্ষভাবে নেমে নিরেকে ছেলেনের পান্ধে বেলন মেরেনের পাক্ষের তেনন লোখাপাড়া শেবা বি চাকরি করা অবধারিত সভা, মানুব-ইওয়ার রুটাত বা পথ।

লা বললেন, নে আর দেরী করিবীর হাতমুখ ধরের খেলে নে। অনেক রাজ হলেছে।

विकास किरकार करना बादा स्थातक?

না, কেউ-ই খাৰান। তোর জন্মে বলতে ঘলতে মান যেন ছোট ছেলের কথা মনে পড়ল। বালত হল্লে নলনেন নল্টা আবার বোল কেওালা। উঃ এই ছেলেটাকে নিয়ে হয়েছে যত জনালা।

ক্ষেত্ৰ কি হয়েছে ? বিকাশ জিজেব কালোঃ

মা গ্ৰাক প্ৰকাৰ বললোন কোণাণ্ড) চুলোর গেল, রাত্যিক আইরে রাইরে টো-টো করছে। বাবুর নাইবার খাবার গদয় হয়

বিকাশ বললে ওর দোব কি. পড়া-দোনা করছিল স্কুল ছাড়িয়ে দিলে, এখন ওছাড়া খার কি কাৰে?

নচভুকে স্থুল ছ'ভানর কথার মা-র মুখটা কেমন ইয়ে লেল, ছলে আনে খুই বাংঘাত পেয়েছেন।

হা নিজেকে স্থানে নিহে বসলৈণ শ্কুল ভি জাহনা হাড়িরেহি, সা ও

হেতেছে সুই জো জানিস সব পড়াগোণা একেবালে হেতে নিলে, কি কাল্ড কালে তুই ত্যে কেনোছসা পেতে তেলে বাবা বাধ্য ছগো বৰ্মকা—

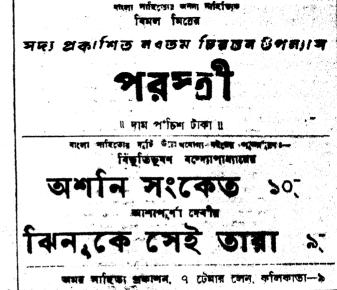
्राष्ट्रीये क्षारमा शक निरंहा कथाना अहार्य बना क्रिक दर्बन। रक्तना विकाश कारम सम्ब स्थम शकारमाना स्टर्णाहरू তখন ডালের সংগালের কি অবস্থা চলছিল, तावा अक्रमात सामगारम किंग्र-एक ठागाएक পারছিলেন ন্য বিকাশ্ত বিক্লা পাল করে একটা ট্টেশানিও জাগাড় বলেছিল--করতে পারেদি, কি ভবিব টালাটানি লে-সামায়। তোর ওপর নাকটা লেখাপভার एकाम नातिरक्षत किन मा री•शक-**गे**ंश করতে পারতো না—প্রতি বছর ज्ञारा काद्याकारि ! शरम भारतक 200 M সভারাং---

সন্তুর পড়াগোনা না হওরার অক্টেড কারণ আন্তে। ও মিকেই তার জনো দারী। বাবাকে হা সংস্তৃতকে লোব কেওরা অনাংর। ইচ্ছে থাকলে আর পড়াগোনা হর না। আগতে মন্তু পড়াগোনা করকে, না দল পাক্তির ওই জানে।

মা বললেন, ভূই-ও তো বলেছিনি পড়তে। শুনলে তোর কথা?

বিকাশ ভাইরের সম্বন্ধে আর কোন কথা বললে না। ম্পুলে নিয়ে ছার মনে কি বেন একটা কোর বা ব্যাব স্থানে।

ছঠাৎ বা বলকোন সংস্থাত পুট সেও না হলে ছেলেটা একেবালে করা বাজ বাতলিন বাইনে বাইনে কি যে কাক করে বেড়াকে কে কালে।



ক্ষাত্ত বিভাগ উদ্ভিত্ত হৈছে বলতে। জি আহাল কাতে। কত বটন ধাৰ্কলে অসুদ ক্ষাত সাধানক তেও

্ৰা ৰজনেন, তেন্ত আপিলে চুকিছে মে ন চেক্টা কৰে। চাক্তিন বাকরি কর্তে মাকা ঠাকা হয়ে বাবে।

মান কথা পুনে বিকাশ হাসলে চাকৰি কালে নাডুর মাথা ঠান্ডা হবে মর্মাথা হবে, বড ছেলের মত সংগার বিবা মাথা যামাবে—?

কিন্তু চার্কার ? মা কি জুলে গেছেন জার পাশ-কান ছেলেকে চার্কারর জন্যে কত কাঠখড় পোড়াতে হয়েছে, বাপ্-ছেলেকে কত লোকের পোরে দোরে যুরতে হরছে লগখাসত করে করে হেরে গেছে—সে-হতাশার দিনগালো সুঝি মানুর মনে নেই?

তাছাড়া খুব সাধারণ চাকরি ক্লতে গেলেও শিক্ষাগত বে-যোগাতো থাকা দরকার নক্তর তা নেই-স্কুলের গণিড্র সে পেরোর্যান। দ-তিন বছর পড়া নক্ট ছরেছে। এতদিনে লেগে থাকলে হয়তো একটা পাশ করে ডিগ্রী ক্রাংশ পড়তে পারতো। বিকাশের ঠিক ইচ্ছে ছিল না **নাক্ত পড়াপোনা ছে**ডে দিক, লবা কিন্ত रकः भ गिरह्मिक्टन--- भा भा क्रारमात रहकान्छे নয়, নশ্তুর চলাফেবায় বাবার সন্দেহ হয়ে-ছিল শব ভাতে নাকি মাতৃত্বৰ হয়ে केता व्यवस्था मान्यासमा**हामत मान्या** कर्क করে অপ্যান কাড়--আবার এরন অভি-বোগাও অন্নীব্ৰু শুনেছন বাতে তিনি আরো নিশ্চিত হারছেন যে ও-ছেলের किन्द्र, इरव ना भग्नमा चत्रहरे वाशा।



অবদীধাৰ সৰাইকে খুনিরে কলে। ছিলেন, বাৰু রাজনীতি করছেন পড়াশোনা করকো না মিধো ছিখো সকুলেব রাইনে প্লো-পার দিয়ে লাভ । তার চেয়ে জানলমুম শিক্ষাটা বে'চে পেল।

বিক্তপ বাবাকে বোঝাতে পারেনি নাল্ডুর মত ক্লাপ টেনে-পড়া ছেলে আ্বার কি প্রিটিক্স করবে। পরিটিক্সের ও বোঝে কি?

অবনীবাৰু বলেছিলৈন, গুর আৰাষ্ট্র বাকাব্যুক্তির কি আছে, দাদাল কর বলাকেই হলো! চোণ্টের সময় মিছিলের সংগে পরা ফটোলেই হলো! দেখিসটা আক্ষাল বিশিনবাব্যে ছেলেটা কত বড় মেতা হ'ব উঠেছ! ঠিক ঐ নতর মান, লেখাপড় হলো না এখন দল পাকাছে, পাভাগিরি করছে, মেখানেই গোলমাল দেব সেধানেই আছে—

বিকাশ তক' করেনে, কিল্ছু মনে মনে বাবার কথা মানেনি, লেখাপড়ায় স্বিধ হয় না বলে কেউ দল গাড়ে, কি, রাজনীতিত মাতে একথা ঠিক নর । বিকাশ জানে শিক্ষত প্রতিত লোক আছে এই সব দলে!

নত্ত সেদিন বলজ্পি, বিপিনবাবরে ছেলে অমর প্রাইভেটে নাকি বি-এ প্রাশ করেছে, প্রাটির কাজ করেও পাড়্যশোনায় মন আছে।

বিকাশ ভাইকে বলেছিল, তুই-ও ডো করতে পারিস—লেখাপড়াটা শেষ কর, তার-প্র না হর বা প্রাণ বার তাই করিস। জানিস তো বাবা প্রশংকরেন না।

নাগত কোন কথাই বলে না। একবার কেবল বলেছিল, তথন বিকাশ চাকরির জনো হনো হয়ে আছে,—কি হবে লেখা-পড়া করে, তুমি তো বি-কম পাশ করেছ, কি হয়েছে! চাকরি পাচ্ছ?

এরপর আংশা তক গলে না। পাশ করে চাকরি না পেলে সে পাশের ম্ল্য কি ? মিথ্যে পরিভাম শুনুন্ম, অর্থ নণ্ট, মনোকণ্ট!

তব্ তব^ত হয়। পড়াংশ নাটা কেবল বোজগারের জন্যে না ছেবে, পড়াংশানাব জনোই ভাবলে হয়। পড়াংশালার একটা আলাদা দায় আছে, মালা, আছে?

কি দাম? বেশ তক' করতে শিখেছে কাশ টেন শর্মাপত পড়া ছেলেটা। কি দরকার শাগে **জান্দনে? চান্দার ছাড়া অরা কি কাজ** হয়?—

বিকাশ রেগে গিয়ে বলৈছিল, বা হা তক' করিসন্দি বা ব্যক্তিস না, তাই নিরে কবা বলিসনি।

নন্তুর ভবিষাৎ সম্প্রকে বারা আশা ছেড়ে দিয়েছেন বিকাশও আশা ছেড়ে দিয়েছে। বা কেবল আকি-শকি করছেন। ছেটিশ্বলের ওপর দিন দিন যেন টান বাড়ছে। বতই উন্দেশ্য ভেডই ছেন স্নেছ বেশি প্রকাশ গাল্ডে। বিকাশ বৈশ লক্ষ্য করেছে, ন্যুক্ত্রেক দিয়ে ব বা কি সে যদি রাগারাগি বা বকার্থকি করে যা বেশ ক্ষ্মা হুন। অন্যায় জ্বেনেও নন্তুর পক্ষ মেন। বারা মাকে মাকে কেসে বলেন, শাওচা কথা করে দাও বাছিতে চুক্তে নিও ন অসম ছেলের সরকার নেই, কেবল খাওয়া বেলার বাতীর সংগ্রাস্থাপন বিরুদ্ধে যাত।

কিন্তু নদতু জানে মা ব্যক্তিন বেশ্চ আছেন ততদিন তার এ বাড়ির আন কেউ ওঠাতে পারবে না। আর বাড়ীর দরজাও তার জন্যে কোন দিন বন্ধ হবে না। বাবা এ মুখেই বলছেন।

মার জনে, বিকাশও ভাইকে কিছুন্
বঙ্গতে পারে না। ইদানিং তো কথাবাতাও
কিছু হয় না। কথন আসে কখন য়য়, কি
করে কোথায় থাকে নন্তু, বিকাশ কোনই খেজি
রাখে না। অগিপস যাবার সময় দেখে না,
আপিস থেকে ফিরে এসেও দেখতে পায়
না। তারপর কখন চুপিসাতে এসে খেয়া
শরের পড়ে বিকাশ টের পায় না। বাবাও
বাধ হয় জানতে পারেন না, মা আর নন্তুর
মধ্যে বাগারের সয়্কি আছে। নন্তুরে মান্ত্র
প্রাধারের আরের। খারাপ করে দিয়েছেন।

চাকারতে চ্কে বিকাশ দ্ব-একদিন ভাইকে বলেছে, নস্তু ঐ আন্তা দেওয়া ছাড়, পড়াশোনা কর—বাবা না দের আমি প্রসা ছেব ডুই চেতী করে একটা পাশ দে। স্কুলে না যাস, প্রাইভেটে পড়।

নশ্তু কোন উত্তরই দেয়নি। অনেক বলতে বলেছে, পাশ করে কোন লাভ নেই!

রালে আলাপাশতলা বিকাশের জনলে গিয়েছিল। বাব্যু এর মধ্যে সব ব্রেথ ফেলে-ছেন! পাশ করে কিছ্যু হবে না, পাশ না করেই যত বিজ্যু হবে।

বিকাশ দিকত করে বলেছিল, হা হা করবো তাইতেই মোক্ষ লাভ হবে ! যত সব্
গাঁরে মানে না আপনি মোড়ল জটে দেশের
বাংরাটা বাজিয়ে দিজে ৷ ২০ন্ডা মিছিল আর
বঙ্ডা দিয়ে দেশসেবা করছেন : কি হজে
শ্রনি ?

নণ্ডু কোন কং ্রান দাদার মাথের ওপর। মান মনে যেন হেসেছিল দাদার কথা শানে--চার্কার করছেন বলে পান্ধ হয়ে গোছেন! উনি আরি ভানেন মিছিল, বভূতা সভার কিছা হয়ে না!

তারপর একদিন ভাইকে বিকাশ বংকিয়েছিল, দেখ ওসব করে কিছু হবে না। ওরা তাদের মত ছেলেদের দিরে কাঞ্চ উম্পার করে নের, মার-ধোর-প্রশিশ-হাল্গামা তোদের ওপর দিয়েই হয়, ওরা ছভা লোটে। ওসব ছাড়।

নক্তু রাল করে বলেছিল, যা জান না তা নিজে কথা বোলেয় গা। চাক্তরি করছো কর!

নশ্চুর কথ। ইদানিং সে ছেড়েই দিরেছে, তার ভাবনার কোন স্রকার নেই। যে-বার ভাবনা সে নিয়ে থাকক।

হাক্ত-মন্থে গ্ৰাহ্ম খেতে বন্দে বিকাশ বললে, কই বাবার জাক্তনা করতে নাঃ বাবাকে দিলে নাঃ

মা বললেন, পরে খাবে বলেছে।

কেন অনেক ব্যান্ত তো হয়েছে, আরো পরে? বিকাশ ভাড়া দিলে। বাবাকে ডাক না?

कारक खाकारा, चरत चारह माकि। मा ভাজ শান্ততে শান্ততে শাস্তালন।

কোনায় গোল আবাৰ এত বাভিনে? विकास केन्द्रिम्न इस्से वन्त्रा

दक्षांश्रम खावात सम्हास श्रातासकामारक चा करक रमरक । नहमध्य शहर रम्रामध्यान क्याहरून, वाभ-मा-छाहे अवाहे अविटळ बार्ख्या-मार्ख्या यन्त्र करत् आरहा

श्राप्य श्रा-वादा बाहे वनान नन्छत करना ब्राप्त ब्राप्त बार डॉब्यान अ'ता मुख्यति । कान মানে হয় না রাতদ্পুরে দলপাকানো ছেলের আগমন প্রতীক্ষার রাস্ভার গিয়ে मंक्रालय। भारुया-मध्यम वन्ध करत मूर्गा साम क्रम कदाव । मान वे दक्स, मार्थ शामा-शाम ज़िला कि इरवे, अथन नम्ड बडम्मन ना ফিরে আসবে ততক্ষণ এ'রা মরবার করবেন, রাস্তার দিকে চেয়ে প্রতিটি লোকের মাথেকা দিকে চেয়ে নণ্ডকে খ', জ'বন।

বিকাশ নাথা নীচু করে খেতে খেতে য়নে মনে বলকো রাবিশ! যত প্র আদিখোতা!

খাবার কাছে বসে থাকলে কি হবে মা বেল অন্যমনুস্ক হয়ে উঠেছেন। বার বার দালানের প্রবেশ-পথটার দিকে লক্ষ্য কর-ছেন। মনে হয় কান পেতে আছেন।

খাওয়ায় বিকাশের রুচি রইল না। তার মনে হল, সে বড়, সে চাকরি করে সংসার সচ্চল করলে কি হবে, তার প্রতি বাবা-মার আগ্রহ আর তেমন নেই। এখন ছোট ছেলেই তাদৈর চিশ্তা-ভাবনা স্ব্যানি W. (U রেখেছে। তাকে স্বাই ফ্লে অবহেলা, উপেক্ষা করছে।

আধ-খাভয়া অবস্থায় বিকাশ উঠে পড়ল। মা হাতা করে উঠলেন।

ততক্ষণে বিকাশ তিন লাফে কলতসায় গিয়ে পেশছল, শব্দ করে মগ ছবুড়ে জল ফোলে আচিয়ে নিজের ঘরে গিয়ে গ্ম হয়ে বস্ল। তার মূলে হল, এ সংসারের সে কেট নয়-মা-বাবাও তাব আপনার নয়! তার কথা আর কেউ ভাবে না, সে ফালতু হয়ে গেছে। এখন নত্ই সব! নত্কে নিয়ে—

মা ছেলের পিছনে পিছনে এসে উন্বেগ প্রকাশ করে বললেন, কি য়ে খেলি না যে? ভাষন করে। বৃসে আছিস কেন? শরীর থারাপ হয়েছে? আপিসে কি থেয়েছিলি? রাক্রা ভাল হয়নি? কি রে---

বিকাশ রাক্ষ স্বরে বললে, কেন বকা वक् कर्त्रका, याख मा---

তব্মা কাছে এসে ছেলের মাথায় গায়ে হাত বুলিয়ে বললেন, অমন করছিস रकन, कि इर्फ़्राइ वन ना।

বিকাশ কি হয়েছে, কি বৰুৰে নিজেই क्षात्म मा।

্ৰালমাল একটা না একটা রোজ লেগেই আছে। আপিসে তাই নিয়ে খুট গালতানি। কলম পিষলে কি হবে, রাজ-নীতিক ঘটনা বিশেলধণে স্বাই খুব পটা থনে হয়। কেউ কম নয়। আপিসের কাজ धाषाम् स्ट्रा

বিকাশ চুপ করে সহক্ষাদির কথা শোনে আরু ভাবে আংচর্যা, সে এসবের

किस्ट्रे काटा मा। शाकाभाग व्य क्र के अन्य करताक अकता निर्वाहिक अवकारत शास्त्रिक करत रत कार्यास । करत कारक्या त्य দিন দিন যোৱাল হ'লে আসভে তা সে ब बार्ड शान्त्रह । जनाहे द्यान रक्यम द्वशरवाद्या खाव केरखीकल बरब केलेकिन। धरे अधारम जाशान अस्टन शास्त्रज्ञान ज्ञापारन स्वामा। ট্রাম-পোড়ান কি বাস-পোড়ান যেন একটা रक्ता। एक कात कथा रणारम। इतन्छ मिक्ति रवतराक् इत्रेंडान इत्रक्त, हेंप्रेश्विकन त्यामा क् प्राप्त भारतमा माना मानाक मा।

প্রতিবাদ! কিসের প্রতিবাদ? যে বছর বিকালের চাকরি হলো সেই বছরে যেন रवनी। मृत्य ७ थन रश्यकः। छात्र कश् वहत् আলের কথা বিকাখের হিসাবে কেমন গ্রনিয়ে হায়---

ববা বলেন স্বাধীনতার পর দেশের অবস্থা কোনকালে ভাল না হলেও এমন ভারান্তকতো কোনদিন ছিল না। একি! কথায় কথায় মার-ধোর, যা ইচ্ছে তাই!

এ নিয়ে আপিসের যার। তক' করেন. অবঙ্গা বোঝেন বলে জাহির করেন, তারা তো বলেন, অবস্থা কোন কালেই ভাল ছিল না। একদল লুটেপ্টে খেলে যা হয়!

চাকরি ছয়েছে, স্বতরাং বিকাশের কিছা বলবার নেই দ্যভাত না হোক শাক ভাত তার মারে কে! ওসব রাজনীতিক চাল লোক ক্ষেপিয়ে নাম করবার তাল ৷ পোক গ্নলোও তেমনি---

रक्षाप्रसा गालिका थि एनके मा करका रकाये शिक्षका मन्त्रीक नन्दे करत-परत-रहारत कामा सं मारीमाता 'दमस ?

अध्यक्षणी कश्चमी रामाता किन्छ रक्ष क्ष्मम की निर्देश करे गामवान, मिका क्षाणाम्बद्धक विकास करत मा। यस कारमञ् मार्थरहार्थ्य रेक्सम अक्षा क्रमारमा कार्य रहवा মায়, আভিনে কাডিমে অশান্তির সম্প্রান कथा वरण। कथावाकी मानरण प्रदेश हरा. रामानात रामानात करकेव समाव मार्का रहाता-হোগ আছে। সর পরিকল্পনা মত ঘটছে।

अटलव माथा जिल्लामा संभागाव^क भागवात् प्रका स्थाप्तक अकरमा कक आहे বয়স হ'বে, বিকালেরট বয়সী, সাভাগ-আটাল। তার কথায় বিকাশ নতন সর্বার গঠন হবার স্চনায় ময়দানে যে বভ মিটিং হয়েছিল তা শুনতে গিয়েছিল। মিটিং না জনসম্প্র! কাতায়ে কাতারে দশে দলে লোক আসভে, মানাষের আকাণিকত বস্তাটি বেৰ লাঠের মধ্যে ঐ সভাস্থলে সবার ঘণ্টবা করে রাখা হায়েছে। সাধারণ মানাবের আনক্ষ-উল্লাস খেন ধরে না!

দল-নেতাদের কথা শাসতে শানতে বিকাশের মনে হয়েছিল, এডদিন ভারা কি ভুলটাই না করে এসেছে, এতদিন ভাদের কি চক্রান্তের রাধাই না ফেলে রাখা হারেছে। সমাজতক্তের নামে তাদের গলার পা দিল্লে চ্বিয়ে রাখা হয়েছে দাবিদ্রোর মধ্যে অক্ষয়তার তিমিরে।

(事制可2)

প্রকাশিত হল

शिविष त्र ज्ञावनी

সম্পাদনা : ডঃ দেবীপ্রসাদ ভট্টাচার্য

তৃতীয় খণ্ড প্রকাশিত হবার পারে চতুর্ব খণ্ড প্রকাশিত হতে নানা অস্ত্র-বিধার জনো দীর্ঘ সময় লেগেছে-এর জনা আমরা দুঃখিত। পূর্ব প্রতিপ্রতি অন্যায়ী গিরিশচন্দ্রে সমগ্র রচনা চতুথ খনেডও সমাপ্ত করা গেল না। পল্প খণেড সমাশ্ত হবে। পল্পম খণেডর মান্ত্র চলছে ক্রেক মানেধর মধ্যে প্রকাশিত হবে।

চত্র্থ খন্ডের স্চী

॥ नावेका बल्दी प्र

তংপাবল । প্রভাস-যঞ্জ । শ্রীবংস-টিগ্তা । রামের বনবাস । ব্রুরেকত 1 श्वरण्यात कृतः । सभीतामः । विष्यमध्यात ठाकुतः । सस्यामः । द्वांना अकानः । মারাবসান । ম্যাকরেখ । শাস্তি কি শাস্তি । গ্রেলকট্রী । মহাপ্রেলা । त्माहिनौ श्रीष्टमा । वर्षामत्मत्र वर्षामण । श्रासम्मत्रदशः।

সম্পাদক কতৃকি উত্ত নাটকাবলী সম্পক্ষে আলোচনা সন্নিক্টি माहेरना शतक। स्वार्क वीधाहे। बरमानुद्र क्यारक्षे ।

म्हण्ड अकिन हेका मात

[প্রথম ম্বিতীয় ও তৃতীয় খব্ড প্রতিটি প্রচিদ টাকা]

अ। विका अरुपर ०३० जागर अस्त्रहम् (बाह्य क्रिकाफा--->

শ্ৰেম

শ্রেম কথাদির মধ্যে স্থাকিয়ে আছি
আমন এক সাংখাতিক আকর্ষণ বা কাউকে
কাণায় কাউকৈ দেয় প্রেরণা, কাউকে বাধা
করে গলায় দড়ি দিতে আবার কেউ
আলীবন সংলারে জলারালি দিয়ে বাউন্তর্গে
প্রাণাসম্যাস কীবন বেছে নের ৷ একটা
ব্যাংস প্রায় কাবাই প্রেমে পডবার জনে।
পাগল হয়, প্রেমে হাবাহুবা খেষে পাগল
করা বিরহু ভানালায় ব্যক্তি লগতে প্রাণাম
ক্রাভায়ার করে এলিয়ে
ব্যাহুতাল করে কিল্কু প্রেমের
ব্যাহুতাল করে কিল্কু প্রাণার
ব্যাহুতাল করে বিনার করে এলিয়ে
ব্যাহুতাল স্থাচারি করে এলিয়ে
ব্যাহুতাল স্থাচারিক করে না।

সৰ প্রেমেরই প্রভাতি থে অবাহ এমন কোন কথা সেই আবার প্র বিবাহেই যে প্রেমের চরম সাথকিতা এমন কথা কোন অভিনানেই লেখা নেই। যাগ যাগ থেকে প্রেমের ব্যাপানটো চলে আসতে, পা জ-পার্মি কথে দিনকাশ মিলিয়ে কেউ প্রেম করেন না। জোয়ারের কলা বালিয়াড়ি পেড়ি তা কেউ টেন্ন পান না। যখন টের পান তখন আধা-শাক্ষানা ক্ষতভোতেও কুজারীদের চোলেও নেলা ধরে। জুল করে কোই পা বাড়ান পা বাড়িয়ে কেউ ভূল কোকে, ভূল লোধবাতে পাবাগ্রও নতুন করে আটকা প্রথম প্রেমের অঠাকাঠিত।

হাল-আমপের তর্গুভার্গীরা প্রেমকে বীভাবে দেখন, অভিজ্ঞতায় তথারা কি ব্যুক্তেন বা আদে কিছু ব্যুক্তেন কিন্তু জাদের মনের কথা টেন বারা করবার জানেই আমার এই সাক্ষাংকার : প্রথম হাজির হল্ম মারলগীর বালাপ কলেছের কাছে। কী প্রান্ধ করের প্রদান করের প্রান্ধ করিছে মারলবে কিনা এ নিয়ে আমার নিক্ষেক্ত প্রভুল মার্কিন করের প্রান্ধ ভারত করে কিনা এ নিয়ে আমার নিক্ষেক্ত প্রভুল মার্কিন করেন প্রান্ধ ভারত জালা আমার ভারত ভিলা মান্ধ পাটা প্রদান আমার ভারত ভারত জালা মার্কিন কর্ম বালা কর্ম করেন ক্রিকার করের করের করের জিলোস করে বসল্ম আমার ভিলোস করে বসল্ম আমার জিলোস করে বসল্ম আমার জিলোস করে বসল্ম আমার জিলোস করে বসল্ম আমার জিলোস করে বসল্ম আমার ক্রিমে প্রেমি প্রত্তিহান বি

প্রথমটার ভরত্রী একটা ঘাবতে গেলেন, লাখ নিচ্ কণ্ডে কাপাড়ের খটেট ভিছেবণ্ডে লগালন নথ দিয়ে। কৃতি পাটিল লোকপাড়ের নিশ্বশক্তা। জামিও মাথ স্থাল এবং দিকে চাইতে পারীম্বলাম না। মে-কোন মহিলাই এই ধর্মনের প্রটানন উত্তর দিতে ইংস্তত কর্মেন রাঙা হয়ে উউসেন। তাই প্রখন নদলে আবার জিগেস করলাম, মান্দি প্রেম সম্পাকে আপুনি ভাবনা চিম্তা করেন তো

'তা করি।'

'ঠাকুদর্শির আমল আর হাল-আমল এ-দ্যায়ের মধ্যে কোন তফাৎ দেখতে পান?'

নিশ্চরই। জয়ন্তী যেন এবার বেশ কিছু কথা বধার উৎপাছ পেলেন। বাহিপতে বাপারটা এঞ্চনে আর পাচলানা প্রেম-ভালবাদার কথায় মুখর হয়ে উঠাত অবশা সবাধাই ভাল লাগে।

'ক বকম?'

ধরনে, খামার ঠাকুদী **যখন প্রেম** করতেন তখন তাঁর অবসর **ভিল প্রচুই**, সমস্যা ভিল কম। প্রেমে ঝাঁপ দৈতে পারতেন মনপ্রাণ দিয়ে।

'ভার মানে এখনকার তথাণ-ওর্ণীরা ঝাঁপ দিতে পারেন না বলতে চান?'

না তা ঠিক নর। আমি বলতে চাইছি সম্প্রণ মনোযোগটা দিকে পারতেন। সামাদের এখন অনেক সমসা।'

শ্রত সমস্যা থাকা সত্ত্ত প্রেম তো প্রেমই কাছে—তাই নাঃ'

তা ঠিক। তবে বাইরের মত, আমার মনে হয় মানুবেগত তেতরে ভেতরে বদশ হয়ে যাজে অনেক। আগেকার দিনে ইতিকোকার মানুবেল স্বরাশ অপ্রাধের



निका सम



ব্যাপার ছিল, গ্রামে তো ঠেকো করে দিত।
এখন অনেক লিবারেল হয়েছে স্থিত কিব্
সমসা আর এক জারগার বেড়েছে। মনে
হয় অথিক কারণেই অস্কেতাষ এত দানা
বেধে উঠছে। কথায় কথায় ভালবাসা মধ্যে
যাজে—কাড়াভাভি হচ্ছে ঘন ঘন।

'এর রেমেডি কি?'

তা ভাববার ক্ষমতা আমার নেই।'
মধা কলকাতার নিতা বায় বললেন,
'তোম-ট্রেম এখন জল-ভাত হয়ে গেছে। যে
যখন খুলি যায় তার সংল্য প্রেম করে
বস্তে-জার ক্লিম সরেই আবার দিবি।
ভূগে গিয়ে অন্য ভাতে গাট ব্ধিছে।'

এরকম হচেছ কৈ কি আমি প্রথন করি।

অম্পিরতা। ঘরেরাইগের জন্জামন্ত্রণার আমরা এখন দিশেহারা হয়ে আছি,
মন্ত্রণান একটা প্রেণ্ডে আসতে পা্রছি
না।

'আুপনি প্রেম ক্রেন?'

'क्षेत्रि।'

ক্ষীবনে ক'ৰার প্রেমে প্রেক্তর ?'
'একৰারই। আনুক্ষ দাট ইক ফাইনাতা।'
'ত্বে কি আপুনার প্রধ্যে অন্ধিয়তী দেই ?'

ভাছে। তবে ভালোবাসার কেবে আমি খবে হিসেবী থাকার চেন্টা করি।

ভিদেৰ করে কি ভালোবালা বায়— বিশেষ করে কাংশ্বত প্রেমকে: প্রশানটা করে বসলায় কালেকাটা উইয়েনস কলেজের ভাতী (প্রথম বর্ষ, কলা) স্নাল্য গোহক।

থাৰ সপ্ৰতিভভাবে স্নালগ কৌলন গ্ৰাম হিসেবে গ্ৰেক্স হবে তা অবলা অগল হেণ্ডক জানা চাই। বেমন ধৰ্ণ, আমি চাব্যুত্ত শাম একটি ছেলেক ভালোবাস। যে এখন বেকার। স্থানিক ছিসেব ক্রহি, এর একটা চাকার হলে কিংবা আমি একটা চাকার কলে সমান্ত্র

ইন্টিমেট লেদার ওয়ার্কসের চংগল তৈরির কারখানার একাংশ



দিকে সম্তার একখানা ঘর ভাড়া করে সংসার বাধব।

দেব পেনের মোহন দাশগাুত বলন্দেন আমি উইকে একটা করে মেরেকে ভালো-বাসি:

'কেন কর্মেন এরকম? কি সমুখ পান থতে?'

যদিন স্বাস্থ্য আছে, চেহারা আছে তদিনই তো লাইফ—তারপর তো ফাবা।' 'বিহে করবেন না?'

কাক করব? সব তো কোথাও না কোথাও ববিধয়ে বসে আছে। জামানা এখন বস্তু খারাপ।'

অস্থিকতা ও সময়ের প্রতি অবিশ্বাসই
শবে নয় দার্শ হতাশার স্থে টা লগজ
প্রিন্দ আনোয়ার শা রোডের কবার ভৌমিক
বললেন, কোন কোন মেয়েকে ভাগে:
লাগে বট্ট—তবে এগতে সাহস হয় না।

ভিয় কলে। শেষকালে সতি। যদি প্রেমে পড়ে যাই।

হবজুকি বারান জেনের অভ্যাদশী হুমারী চল এই বিশ শতকের শেষাধের মান্ব হয়েও প্রেমধে ঘ্ণা কলেন। বললেন, প্রেম আবার হয় নাকি এখন?

সৰ তো কেলেওকারি বাধায় । অপনার তো একদিন বিয়ে হবে কুমারী দেবী—সেদিন স্বামীল সংগ্র প্রেম করবেন না?

প্রশন্তী করে নিজেই ভাবতে লাগলাম বিষের পাগ প্রেম? তা কেউ করেন নাকি? তবে অনেকে বে বলেন বিষের পর প্রেম জোলো হয়ে বায়। খা থাকে তা যি জাটানোর পর নিচে পড়ে থাকা চনা।

প্রশ্নতা শানেই কুমারীর মাধখানা গভা হয়ে ওঠে। কোন কখাণ কবাব না দিয়ের এক-পা এক-পা করে তিনি ঘর ভেড়ে পালিয়ের যান।

স্কা সেনগ্ৰুত

এরাও পিছিয়ে নেই

बाढाकी कत्नाम हम्भरमञ्ज कातवान

ভর্পোককে চেনাচনা মনে হচ্ছিল।
হাত তুলে নমাকাম করে বানিপাড়ো বামনপাড়া লেনের ইণ্টিমেট লোলার ধরাকাসের ছিটের শাট আর পাজামা-পরা তর্গ কর্ণধার মন্ত্রেস বললেন, আমার নাম শান্বালাভিত্

বছর আতেক আগেও তিনি যুব
আন্দোলনের সংক্রা যুক্ত ছিলেন। এখন
উনি বিজনেসমান চম্পলের কাববারী।
একটি হালন্ফাশানের চম্পল প্রমত্তকালক
প্রতিটোনের কণধার তিনি। ইন্টিয়েটের
চম্পল বানিয়ে প্রায় শাদেডেক বান্দার বাজ বাজগার করছে—জনানশেক শিক্ষত বাঙাগী যুবক জীবিক্তা সম্ধান প্রেয় জীবনে স্প্রতিটিত হতে চলেছেন তিটা

'৭২-এর সেণ্টেম্বরে সরশ্বনার ভাঙা চালাঘরে যে-সংস্থার শ্রু, এক বছরে সেই নবজাতক সংস্থা সাড়ে পাঁচ লক্ষ টাকার চম্পল বিশ্বী করেছে। এখন প্রতি মাসে ৮০ হাজার টাকাণ চম্প্র সাম্পাই করছে একটি বিশ্বত জাতো কোম্পানী भव रक्षा । ভावरका वाहरत कानावारण মাসক্ষেকের মধ্যে লেভিস চম্পুল রুত্তানী ক্ষাবেন-মাসে সতে ই জার (B) 5001:010 অভপর পেয়েছেন व्यक्ता। জাপাদেও পাঠাবার কথাবাত্র চলছে-তবে এখনও ছড়িটা পাকাপাকি হয়ন। ই তিমেতের ১৬টা ইউনিটে এখন বিনরতে काक हनाइ:

অধাচ শানুবাব যে জুতোর ক্ষিবারী হবেন তা তিনি শ্বন্দেও কোর্ম্ড দিন ভাবেননি। বিয়েথা করেছেন। একটা কিছু আধিক সাম্ম না হলে আন দিন চলে না। চাকরি যে জ্টত না তা নর, বাবা চাতার্ড আন্টেটেটেন, অধ্যাপনা ছাড়াও নিজের একটা ফার্ম'ও আছে।
শালুবাবু সিটি কলেছে বি-ক্য পর্যত্ত পড়েডেন-ক্রেই শাতিনেক টাকার একটা চাকরি হয়তো কুট বেড। কিল্ডু ও-পথে তিনি গোলেন না।

শাস্থাৰ অন্তল্চাং না তেবে প্রচন্দ্র
শাষ্থিক ঝাকি নিমে সমান্নায় একটি
চলাধর জাজা করে সেখানেই শান্ত্র
করকেন ইণ্টিয়েটের ফারেটারি-কাম-অফিস।
সংলো বছল ও'র জাই মিলন। স্থার গরনাগাটি বিক্লা কলে কার্পিট্রাল সংগ্রহ
করকেন। শান্ত্রাব্র স্থাও তথন চাকরি
করকেন। এর মধ্যে কলেজ প্রাটির মাচিপটিতে প্রনরো ক্লা আ্রাপ্রেনিট্রালাপ
থেটে এসেছেন তিনি।

শান্বায় শেসব দিনের কথা শারণ কথ্যে বললেন, তখন মাঝনাত প্রক্ত জ্তো তৈরি করতাম আর দিনের বেলায় থলি কলে দোকানের দরজায় দরজায় গ্রত্যে। অর্জার বা পেতাম তার চাইতে টাকা মার বেত বেলা। ক্রমেই গ্রান্থেটেও হ'র পড়ছিলাম। আ্লােম সংধান দিলেন আমারই প্রাীর সতেবে লাহিড়া।

সংক্রোথবার সংলা ওপ পাঁকচয় বহুদিনের। মিঃ লাহিড়ী পেন্ট-টেকন্যেল লাজিট জামসেদপুরে গং-এর বাবসা আছে। জাঁন একদিন শান্বাব্র জাঁবিকার সংগ্রামের কথা শান্তানা মর শাহিন মিঃ লাহিড়ী শান্বাবাব্রে কার্যামের কথা শান্তানা সংগ্রামের কথা শান্তানা করে করা হল হবি বামনপাড়া লেনে ওপাই বাড়িটে। এরপার পাজার ন্যাশান্তা বাজে ঝানের দর্যাম্য করালা শান্বাব্য। '৭০-এর জ্বান্তাই মাসে ওবানীপ্রের গাজার ন্যাশান্তার করাতেন। শান্তাব্র টাকা ঝান মালান্য বাড়ক ৫০ হাজার টাকা ঝান মালান্য নামনান্য করেলেন। শান্তাব্র ভাষার ভাষার সংগ্রেম। আনিংক করেলেন। শান্তাব্র ভাষার ভাষার সংগ্রেম। করাব্র ভাষার ভাষার স্থানিক করাব্র ভাষার

শান্বাব্ এবার করেকটি সমস্যুব কথা বললেন। এখনও বড় রকমের অর্ডার তাদের হাতে আছে। কিন্তু প্রক্ষেত্র তাদের হাতে আছে। কিন্তু প্রক্ষেত্র অর্ডারের প্রনা কান্বাব্য বললেন, অনেন্টি শান্তির উপরই আমলা দৃণ্টি দিয়েছি। আয়ার একটি কথা, আমলা দৃণ্টি দিয়েছি। আয়ার একটি কথা, আমলা সকলেই ইয়ং— চলক্ষেত্র এই অংশীদারী কারবারে প্রত্যেকেই আমলা একই পরিবা্ত্রেক বলে

অমি ২বি, বামনপাড়া লেনের
ই'টমেট লেদার ওয়ার্কসের পার্টনারদের
য়াকের দিকে চেয়ে দেখলাম প্রেডাকালন
য়াক্লের অমিতাভ লাহিড়ী, আক্রাজশেকৈ স্বপন গালগালী, অফিস স্পার
স্বামন বস্তু, পার্কিং-ইন-চাভা নিস্তেজন
লাস-এদ্দের কারেগ্রই দাড়ি-গোটি এখনও
ভাল করে এঠেনি।

-- नक महारामात

रमकरमा मध्यीकरानी

অমৃত, ১৪ বর্ষ দশম সংখ্যার প্রকাশিত আনেলপ্রসাদ গোলবমারৈ জারনাতে ক্রিছ. ভাসংগতি চোখে পদ্ধর। ১। জানেশাপ্রসাদের মাজার দিন বহুস্তিবার নর, সোমবার। হ। 'নিৰুম সাতে কে বালি বাজার' পানটিব बर्धाया सक्ताल जनजी काठिती सन। ও। ছিল মান্টার্স ভয়েরের প্রকাশিত গান-গালির রচরিতা নজরাল হালেও যোগাফোনে হকাশিত রেকর্ডগালির অধিকাংশট ভলস লাহিডবির লেখা। ৪। ছলে ছলে নাচ নন্দদ্রাল' নটমঙ্গার (অনেকে গৌডমগ্লার बाजन) बाल गांधका नर्गबाल नम्। काना कि নজরাগের? কারণ মেলাফোলে প্রকাশিত इ.स्टिन । १ । श्रीतम्बद्धानी भागीत्रशीत ভাষণায় ভৌগ্মজননী ভালবিথী হংব। আময় বোলে না ভালতে বোলো না গানটিব ওতীয় লাইনে 'হোৱবারে কবি কত সাধনা' नक् इनना जाता

স্বশেষে একটি প্রদান-মেগাছোনে প্রকাশিত রেকড কি আছে তৈয়ের মনে তেয়ের ও দ্বপনে ব্যক্তি আংগা (প্রবী) কি গায়ক দুইবার রেকডিং করেছিলেন ২ কারণ রাগ ঠিক থাকলেও আমি দুইটি রেশনে গানগালির ভিন্ন রাপ্যাকরে শানেছি।

> অর্ণ সান্যাল খড়গপ্র-২

(2)

সংগতি শিক্ষীদের জীবনকাইন্দী সংক্রাতে রচনাগালি আমার অভানত ভালো লাগে ব্লাই হুখলে চৈত্র ১০৮০ সংখ্যা অমাত সাম্ভাহিক পতিভার গহর জান সম্প্রিতি শেখাটিতে রাধেকুক বোলা লান্টির বালী অভিনামত বৈধ করছি।

মারা গান্টি জানের অথবা হিন্দী
জানের তানের কাছে এই বিকৃতি অভানত
মন্দ সাগবে। তানা ছাপার ভূগকে দেগকের
ভূগ বলে মনে করতে পারেন। এই অনবদা
গার্নিট অংশগায়ক ক্ষেণ্ডর দে মহামামের
মুখেও তার রাউত্তে প্রেছি গ্রাম্লামের
ক্ষেত্তে পাতিত শ্রায়প্রার ব্যাসের মুখে
এবং সপ্পতি আর্গরে শ্রীম্বতী হারাবাইর
মুখে। বাণী এই লুপ ঃ —

রাগে কৃষ্ণ বোলা মুখ্যসে রাথে কৃষ্ণ বোল তেরো করা লালেলার মেল। হাত পর থেয়। মহি ছিল না দুমা বীস কোস নহি চলনা, কৃষ্ণ লিরে গঠি নহি ছটেনা, তেরী মনকা গাল্ডী খোলা। কেন বচন দে আয়া ইস মায়ানে ঘের গিরায়া, ইস মায়ানে মন বাজায়া, তেরা লাকাগা মোলা। নোরায়ণ রাজ বালের কররিলিপু থেকে এরক্সম পেমছি। শ্রীমতী হুবিবাবাইর এ গনে আরা কিছা আতিরিক পদ ছিলা, তা আমার মান নেই।) শানেরিও এ গালেনান আবদ্ধনা করিম খা সাহেবও গাইতেন। কিছু তার মাছে

हिर्दिश्व

শানবার সৌভাগ্য হয়নি। গানটির রচন্নিতা এবং সারকার কারা তাও জানতে ইছে করে।

ক্ষিক প্ৰসাদ লোচ্যামী কালিপদ পাঠক পিয়ারা সাহেব কৈ মালিক ক্কচন্দ্র সে. ও কারনাথ ঠাকুর কীতনীয়া গলেশ माम এবং প্রাম্যী দাসী গিরিজাশংকর ভীক্ষ-দেব ভারাপদ চরবভা জমির দিন্দ খা ইফ্লুৰালা আধ্যুৱহালা এপ্ৰাজী শতিস া খোপ ধ্যায় . रकमाबहुरम् वरम्यानाथाय (তবলা)---এশ্বর সদরকে বিশ্বাবিক জ্ঞালো-চনা করলে বড় ভালো হয়। এবং আবদলে ক্রিম গ্লোম আলি ও ফেলাল। অমব नां हेक 'द्यानियाता'त अन्तर्रहणी एवतकन्त्रे বাগচি সম্বংশ্বে আমার হাতো অনেকোর কৌত্তল আছে। তার বিষয়েও কিছ আলোচনা করলে থাব ভাল হয়। (ওপাবব शक्त भौतित साम त्तासङ होदेर्भ दस्या দিয়েছি তারা এখন জীবিত থাকলেও আসর থেকে বিদায় নিয়েছেন বলে বিগতদের দলে

লেখককে অভিনন্দন জানাচ্ছি এবং অম্ভ-র আগামী সংখ্যার জন্য সাগ্রহে প্রভীক্ষা কর্মছ।

> অজিতক্ষ বস, বলিকাতা-২৬

সা^র বাংলা কৰি সম্মেলন প্রসংগ

গত ৫ জুলাই অমাত পরিকার সাহিত্য ও সংক্ষতি বিভাগে জীক্তরংকারা তারি কলমে মাণিদাবাদের প্রবাহ আয়োজিত সারা বাং। কবি সক্ষেনের কথা পঠিক-পাঠিকদের কাড়ে তলে ধরেছেন।

প্রীজনংক নৃহয়ত সমপ্ৰ্থ ছলে গেছেন প্রেম্কৃত কবিদের কথা। না-কি এই নর ঘূটাব্যাপী কবি সম্মেশনে কবিরা শুণু কবিদের সংগ্যাপরিচিত্র হলেন?

এই কথাগালো প্রেল্টির তুলে ধরলে আমার মত সাহিত্যান্রাগী প্রবাসী বঙালী নিঃসংশিহে খুলী হতো।

> অমল দেব কানপ্রে-৮

ভারতের ভাকচিকিট

অর্থাতে প্রকাশিত আমার ভারতের ভাকটিকিট নামে প্রবশ্ধের একটি প্রতিবাদ প্রস্থা হরেছে। প্রটির কেখক শ্রীসারেশ-প্রসাদ নিরোগী সম্ভবত আমার লেখার বব্বা ধরতে পারেন নি। ভিনি সংখ্যা নিরে অষ্থা বিভক্তের সার্বাত করেছেন এবং সে ক্ষেত্রত ভিনি সঠিক তথ্য পরিবেশন্ করতে পারেন নি। শানক টিকিটো সংখ্যা (১৯৭০ সাল অৰ্থা) তিনি দেখিলেকন ৩১০। আসকে ঐ সংখ্যা হবে ৩১৯। (১৯৭২-১৯ একটি ৩ ১৯৭০-এ দুটি কল দেখিলেকেন)।

শ্রীনিয়োগা জিখেছেন কোরিয়া ইন্সোচীন লাওস কন্দেবাভিয়া ভিসেতনাম কপো
প্রভৃতি ক্ষানে অবিশ্বিত ভারতীয় সৈন্যবাহিনীর ব্যবহারের ভানো ৫০টি টিকিট
নবর্পে প্রকাশ করা হরোছ।' নিচের
তালিকা ভানুষায়ী উপরের সংখ্যাটিও
অসম্পূর্ণ।

ক্রেরিরা—১২ কলো—৬ গাজা—১ লাওস—১২ ক্রোডিরা—১০ ডিরেতনাত্র— ১৩ ইন্সোচীন—১ মোট—৫৩

এইসব ব্যাপার নিয়ে বাদান্বাদে প্রবন্ধ হতে চাই না।

> শংশেশ লাহিড়ী কলিকাতা-১০

পরিশোধ কবিতার নৃত্যনাটার প

কয়েকদিন আগে কলকাত্রার একটি স্পাতি সংস্থার সংগঠকেব 34**(**#51 'পারশোধ' নৃত্ত্রাটা প্রসংকা আয়াদে**র** আলোচনা হয়। প্রোক্তন P1410 কিছু ছবি সময়লী ভ প্রপারকর মতাম্ভস্কলিত একটি খাতা এবং পরিশোধ কবিভার ন্তান্টোর একটি স্কুলর প্রেণ্টত তিনি আমাদের দেখান। আমাদের বিশ্বাস যে শামা নত্নাটা স্থির আবে স্বয়ং রবীন্দ্রাথকত পরিকোধে'র পরে এদের প্রয়োজনাই প্রথম। সে ক্লেন্তে কলকাতার কয়েকটি পতিকায় প্রকাশিত অপর একটি সংস্থা আয়োজিত 'পরিশোধ' নৃতান্টা সংক্রুত বিজ্ঞাপত্টি আমাদের মনে খ্রেই বিজ্ঞানিত স্ভিট করেছে। শুধু ভাই নয় এই প্রয়েজনার নিদেশিক শ্রিচাগকও প্রেণ্ড প্রযোজনায় প্রদান ভামকায় লুপদান করেন। সে কেরে এই প্রয়েজনাতিক 'প্রিশোধ' কবিতা অবলম্বনে <u>প্রথম</u> म डामार्डे। श्राम मार्ची कहा आधारम्य कार्य খ্বই অ-শিল্পীস লভ বলে মনে হচচে।

> শ্মর জং দত্ত, নয়াদিলী—৫।

'विविध সংবাদ' প্রস্পো'

গত ১০ই জাবাচের (১৪৯ বর্ষ ৮ম সংখ্যা) অমুতে 'বিবিধ সংবাদ' নিরো মিনাক্ত! থিয়েটারে নামায় প্রকাশিত ত্রীত্বাপ্রকাশ্ভি ছোরের সম্বর্ধনা জন্য বণ্দার <u> কানেৰ</u> म इंडि POTE **क्रिकातका**न्छ (बाह्यक মহাৰা শিশিরকুষার বোষের একমার পুর বলে উক্সেখ করা ছয়েছে। সম্ভবত অভ্যত বলত এই ডাল্ড সংবাদ প্রিবেশন কলেন। ত'ার পরকোকগত গুই লোক ব্ৰতাৰ নাম ব্যাত পৰিব্ৰকালিত যোৱ ও ন্দ্ৰগতি নীহারকাণ্ডি ছোৱ।

আয়ুতংকুছার সিংহ, কলিক্ত্যান ১৬।



ৰণাণীর কবি পরিষ্ণের ব্যবিশ্ব জাইবেসন

Barbara a wallan in a

গাত ১০ ৬ ১৭ জ্যাল 👢 🦠 সেন্ট জেভিয়ার্শ কনভেতেইর সভাগ্রে বলগাঁয় কবি পরিষদের দশম বাধিক আধ-বেশন সাসম্পন্ন হয়েছে। বহা নবীন ও প্রবীণ সাহিত্যসেবী তথা সাহিত্যরসিক এই অধিবেশনে যোগদান কংগ্রিলেন। অধিবেশনের উদ্বোধন করেন প্রখ্যাত कर्णाभनभी वनक्ता। मु मिल छाउँ हार्रोटे অধিবেশন বলে। প্রার্মিভক অধিবেশন বাতীত-কথাসাহিতের অধিকেখন খিশা-সহিত্যে অধিবেশন ও কাব্যস্হিত্যের অধিবেশন। প্রবীণ ও নবান ক্রিডেন সেবাগণ তাদের স্বর্গচত রচনা পাঠে শ্রেত্যাত্রাত্রীকে মৃত্যু করেন। স্বাস্ত্রী মৃত্যুথ রায় শিব্যায় চক্রবতী অখিল নিরোলী কমারেশ ঘোষ, ফণীন্দ্রনাথ মুখোপাধাায়, সাকেন্দ্রণে নিজাপাই প্রমুখ কঠিতা দেবীগণ এই অধিবেশনের সংল্য **য**ুৱ 97.30

ৰড়িশা সাহিত্য পৰিষদের আলোচনাচল

নক্ষণ শহরতলীর জনপ্রিয় সাহিত্য
সংখ্যা বড়িছা সাহিত্য পরিষদের উদ্যোগ্য
সংখ্যা বড়িছা সাহিত্য পরিষদের উদ্যোগ্য
সংখ্যা বড়িছা সাহিত্য পারিষদের করের
সংখ্যা একটি জালোচনাচাক্রা অধিবেশন
হয়ে গেলা। জন্টোনো পৌরেচিতা করের
দক্ষিণ কলকাতা জাঞ্চলিক রবীন্দ্র সাহিত্য
সংজ্ঞানের সংপাদক শ্রীরাণগাচন্দ্র পোখালা।
এই অন্তেখ্যান প্রধান জতিথি ইস্পের
উপ্তিথত ছিলেন রাজা ধীরিশুনার্যাণ
রায়। বহু নবীন ও প্রবীণ স্যান্ত্যাস্বী
এই অধ্বেশনের সংপা খাছ ছিলেন এবং
তারা অনেকেই খবরচিত ক্যরা পাঠ করে
উপ্তিথত সংধীব্দেকে আন্দ্রদ্ধান।

বিশ্বভারতী প্রশ্বন বিভাগের প্রভাগ বর্ষপ্রতি

বিশ্বভারতী গ্রন্থন বিভাগের পঞ্চাশ বর্ষপৃতি উপলক্ষা ভালাই মাসের ভতীয় সম্পাহে শুগুরর শিলা ভবনে বিশ্বভারতী প্রকাশিত গ্রন্থ ও চিত্রের একটি সংক্ষর প্রদর্শনী হল্পে গেল। এই প্রদর্শনীর উদ্বোধন ক্ষরে আচার্য স্বানীতকুষার চট্টোপাধ্যার। তিনি তার

ভাষণে বিশ্বকবিকে পল কাটা হীরের সংখ্য তুলনা করেন। প্রকাশন খিলেপ নানা পরিবত নেম সংকা সমতা রাখতে গিয়ে বিশ্বস্ক রতারেও যে নান্য পালেতার স্থান্ত তিনি তার উল্লেখ করেন। তিনি আলো প্রকাশ ক'লন যে গ্রন্থন বিভাগের নৈপ্রণা मिह्य त्वीम्य तहनावनी अकारमंत एहं हो করা হবে। এর ফলে বহু, খিলপীও তাদের নৈপ্ৰা ক'জে লাগাবার স্বোগ পাবেন বলে আচাষ মাণ্ডবা করেন। বিশ্বভারতীয় উপাচার্য শ্রীপ্রভুল গণেত উপান্ধত বান্ধি-গণকে শ্বাণত জানিয়ে সংক্ষেপে বিশ্ব-ভারতী গ্রন্থন বিভাগের ইতিহাস প্রা-रमाहना करत्रन्। भगन्ता 🖒 SPORT বিভাগের সহযোগিতার ফলে প্রকাশনের স্বাশ্যন উল্লেখ্য ও ব্ৰীজ্য গুচনাবলীৰ ব্যবসায়িক সাফলেরে কথাও তিনি উল্লেখ করেন।

পাঠাপতেক মালুববোগা কাগজের সংকট

ভারতীয় প্রকাশক পরিষদের সভাপতি গ**ে**ত সম্প্রতি শ্যেমলাল **मिद्यी**एड অনুষ্ঠিত এক সাংবাদিক সম্মেলনে এর প আশংকা প্রকাশ করেছেন বে মানুগ্রোগা কাগাঞ্জন দৃশ্প্রপাতাহেত প্রকাশকগণ পাঠা-গ্রন্থকস্থ স্বভ্রেণীর প্রন্থকের বাছাতে বাধ। হাবেন। কেন্দ্রবিশোষ এই মলো ব্লিধ ৫০ শতাংশ থেকে ১০০ শতাংশও হতে পারে। সরকার **এ**তে সম্মত না হলে, কিম্বা বিকলেপ নিয়লিত ম্লো কাগজ সরবলাহের দারিত না নিলে रमनवाभी भागेभ्यू ग्राटक्त आकान मृन्धि হবে বলে শ্রীগ্ৰুড অধ্যক্ত প্রকাশ काताहन

চতুদিশ পদীর উচ্চাব্যকর রাড়ার বয়শক্ত বংসর

গত আঠগেই জালাই লা পছেলি
প্রিকার উদ্যোগে সনেটের অনাভ্যর
উদ্ভাবক ইতালায় কবি পেতাকার হয়
শতশত্ম মাতাবাহিকী উপালক্ষে এক
মনোক্স সহিত্যানান্তান হয়ে গেছে।
৪৯নং কার্মলা গ্লোভে, কনক বিভিন্তক

বিশিশ্ট স্তিতানুরগীর সমাবেশ ঘটে-ছিল।

ভারতীয় ইতিহালের বিকৃত ব্যাখ্যা

ভারতের প্রথম জাতীয় সংগ্রামক সাম্বাদীগণের দৃশ্টানত অনুস্রণ করে এমন কি এদেশীয় ঐতিহাসিকগণ্ড প্রধনিতার পর থেকে বহু; প্রতিষ্ঠারান ঐতিহাসিকের নব নব গবেহাণালয় আবিষ্কারের ফলে ঐ ভূল তথা যথাবোগা ^মবীকৃতি লাভ করেছে। তথাকথিত সিপাহী বিষ্ণাহ যে নিছক সিপাহীদেয় একটা ব্যাপার ছিল না সক্রেলীয় ভৰতীয় জনগণ যে ঐ সংগ্ৰামে সভিয়ভাৰে অংশ গ্রহণ করেছিলেন - সেকথা আছ प्रकल्पह श्वीकात करत भारकन। किन्छ এখনও বহু, ভুল ও বিকৃত তথা প্রচারিত दृश्य थाका स्थानि जिल्लाम् मा बर्ग মনে করবার কারণ আছে। এ সংশ্রে অনাতম হলো বিশেবর ইতিহাসের পট-ভূমিকায় ভারতের অবদানের কথা। স্তর্ভান্ত প্রাচদায় তিনজন বিশিষ্ট রাজ ঐতিহ হ'সৰ কে খানাতোনোভা, সি বনগাড় লেভিন ও ও জি কটোডাম্ক এ সমস্থাক লেখা একথানি বই-এর সমালোচনা করা হরেছে। বলা হরেছে বে বহুঃ ঐতিহাসিক এমন কি আজকের দিনেও ঔপনিবৌশক পট্ডমিকার ভারতের সব কিছুর বিচার করে থাকেন। তারা মনে করেন মে, প্রাচীন তথা জাসারিক ভারতের সামাজিক আর্থ-নৈতিক তথা সাংস্কৃতিক ব্ৰাস্ত বা আশকের দিনে বছঃ ঐতিহাসিকের প্রায়ের ফলে জানা গিয়েছে তার ভিত্তিত ভারতীয় ইতিহ সের নতুনভর পর্যালোচন। প্রক্রোজন হরে প্রফুছে।

যে কাজটা ভাষতীয় বুন্দিজীবীদের
করণীয় ছিল, সেই ব্যক্তীই যুল ব্যাদ্দি লীবীগণ করেছেন দেখে আমনা ভালের
নিকট কৃতজ্ঞ। কিচ্ছু সেই সলো এমন আশাও আমাগা করবো যে অচ্চত এখন এ সম্পর্কে এদেশে সন্ধিয় কেন্তু প্রচেট্র দেখা দেবে বার কলে ভারতের সর্বালানি সঠিক ইতিহাস জনগণ জানতে প্রচেধ।

一個有名中1年

মতুল ৰাছি

विक्रम् (कार) जर्धकार)। अनीन गर्धक। अभिनेत्रकार जीतक स्त्र ३००।२ वास। अभिनेत्रकार जरूरणी, सम्बन्धा-३। नासन

ুপাহায়েশ কাব্য সংকলন মূলত মণীপ क्रिकेट अटनके अश्वयन। अटनकेश्वानन কবি-সাহিত্যিক का करामा जनीयी নিজ নেতা ইত্যাদির নামে নামাণ্কিছ। প্রকি বিষ্ণু প্রেলাপাষ্ট্র জীবনানন্দ্র ব্যুদ্ধদেব লৈ লাখার কিং লাবংচনদ্র পন্তিতে সীমানত ক্ষী প্রমধ চৌবুরী নক্রবুল স্ভারচণর দ্বীশ্রনাথ বিদ্য সাগ্রর ও বিবেকানকের নাম হেশ করে রচিত। ববীন্দ্রনাথ ও সুদ্ধার-हिन्द्र साम फिर्म माहि करत अस्तरे तहना ক্ষেত্রেক কবি মণীশ ঘটক। স্থাপ ঘটক ্রীভিন্তিত 💩 প্রবীণ কবি ও উপন্যাসিক। াঁর কবি-ব্যক্তির অন্যান্য বিবিধ বিভিন বিভিত্ত বিশ্ব হাৰ হাৰ মহাদা দিয়েই সনেটে ক্রিক করেছে। শরংচন্দ্র পার্চ্চতের নামে লখা কবিতাটি সনেট নয়, অস্তামল দেওয়া াট চরণ ও দুই সতবকের কবিতা। সনেট-্লিতে প্রবীণ কবির প্রাক্তর জ্ঞাবন ভাবনা ও ভাশে ভাবনার যথায়থ স্বাক্তর আছে ৷ ক্থিটির কলেব্ব ক্ষীণ হালেও স্বাব্যুব কেশ পরিকল্পন অবশাই উক্লেখের দাকী तिथ द्वार व किमारास केमानामानामाना

র**ডার দীমানত গাকস মালা দালোর**পালে (একানক সংকলন)। বোদমানা বিশ্ব
নাথমা। প্রকাশক গ বি বাণা ৬২

নিমালা রোভ কলকাতা ৫৬। প্রথম দটির মালা পঞ্চা প্রসা শেষ্টির মালা এক টাবা।

'অন্তৰ্য স্বীমান্ত' একটি একাঞ্চ ংকলামা প্রচিতকা। টাকস্মান্তী এবং াশেত দপ্ৰেণ নাটা-পাশ্ভিকা দাটিও 'দত'ট এক'ভবর সংকলন। নাটাকার াম ন ব্যথনাথ্য গল্পকার 🧓 উপ-शिक्त वालाहा नाहे। श्राम्डिका छिन्छि তৈ নাটা-আত্তিয় পলিচয় বছন করে। শোর দপ'ণে নাটা প্রামতকাটি নাম-^{ক্রান্ত্র} ছাড়া আরও দ্বটি একাণ্ক আছে কড়িত হুদয়' ও 'একটি দাণি'। উল্লু সীমানেত'ব ভোলা ও অভালের নহ গ্যতা ₹*** <u>সীমান্তের</u> 4.350 পাই-এর বির্দেধ বিদ্রোহ ও স্বাকৌশলে হৈলে জব্দ করার কাহিনীটি সুত্রথিত। क्षान्त्रकारी हामित क्षान्यका व्यक्तिक लागा ক্রমি চরিয় টোকসমণ্টা দালাল গণহরি তেকট। কিন্তু নিমলি হাসির মধো **লাজিক অবাবস্থা ও বৈষ্ণার স্থা**র ক একেছেন। বাড়ির হ'দয়া একাংকর গুলান্ত্রের ভারে পত্রে এবং ডঃ রাহের क्षणानि अपानिकछ। नावेकवि जानकार म श्रीका दशक महाजामा महाहत भागीतक एवं ब्रुटन्य ब्रुज्यान्ड्स श्रह्मान्ति नाह्यस्त्र

বংগণ ক্ষাতার সংশ গুংকছেন। একটি ব্রেণির অফিসের কর্মাচারীর ও থানীর ব্রুক্সন্তর বেথি অন্দোলন ও কর্মাচারীর পানীর ব্রুক্সন্তর বিষয়টি সময়ানাগ ও নাটাক্ষার দাীপিত। দাশোর দপালে তিনটি মার চরির চুনচ্নিয়া বিদ্বেশ ও প্রণব সাআকৈত। প্রতাক্টি একাক্ষই নাটাক্রার বংশ করে।

্রমাণবর অধংশতন ও অনান্য বচনা (প্রথম্ধ) চিন্ত সিংহ। সক্রেনী ৬৭-৭ বেলগাছির: বেড, কলকাতা-৩৭। দশ টাক:।

শীচিত সিংহ একজন জরুণ কবি প্রবাহধনার ও চিত্রশিলপী। বত্র্মান গ্রন্থটি কমেকটি বিচ্ছিন্তভাবে রচিত ও প্রকাশিত প্রবাহধর একটি স্কুসংকলম গ্রন্থটি ১৯৬৮ পর্যান্ত প্রকাশিত যবরীয় রচনার মধা থেকে লেখক কিছু প্রবাহধ বাছাই করে তার পাঠকদের উপহার দিয়েছেন। প্রবাহধনার পরিচয় বহুন করে।

চিক সিংহ লিখিত প্রায় সমুহত প্রবংধই স হিতা সম্পাক⁶ত, কিন্তু কোন্টাই ছাত্র-পাঠা বা কোন বিশেষ গুল্থ ও গ্রন্থকার সম্পবি ত নয় : প্রবন্ধকারের কল্পনাপ্রবন্ ১নই বিষয়গুলির নিৰ্বাচক হুওয়ায় বিষয়ের মধ্যে বৈচিত্র। আছে। সে বৈচিত্র কথনো রম ভঞ্জি নিভার রোমাণিটক অন্ভাবনায় মাদ্যেবাদী হয়েছে হেমন কলকাতার কুয়ু শা আবার কিছু প্রকৃষ ব্যা পথ থেকে গভীরে কিছা তত্ত ও তথোব ভারতে সাহিত্যিক রস সরসভার উৎজ্ঞলা পেয়েছে যেমন ম্ল্যবোধের প্রশেন: স্থ্য নিরস্পতা 'সান্টি-চিন্ত' প্রতায়ের প্রকর ইডাদি প্রবন্ধে লেখক চিত্র সিংছের সাবজেকটিড' ভাব ও ভাবনার প্রভীয়-ভলস্থায়ী সিন্ধ চেতন্ত্র ও মন এবং জাবন সংপ্রিক্ত যথ থ' ম্ল্যায়নের পরিচয় মেলে। চিত্র সিংহের গুনা ভাষা কবির লেখার গদোর মত চিনকে হলেও প্রয়োজনে যুক্তি-চিন্ডার দুড়েতা এডিয়ে যয় নি । এখানই লেখকের প্রার্থিক স্কার্ अक्टा

বাংলারি জয় (কারা সংকলন। খেল্কবর মস্টার রহমন। জাকাবিয়া প্রকাশনী ৪২৯ বড় মল্বাজার চকা-২। সাত টাকা।

বাংলালীর জয়' বাংলাদেশের এর বাতেনাম দেশপ্রেমিক কবিব হাদ্য গাঞ্চা বিশেষ গ্রহণিত ভূমিকা অংশে বিদ্যারিত-ভাবে কবি গোন্দকার মস্দার রহমান তরি কাব্য বিষয় কবি ভাবনা ও দেশ-সম্পত্তি ত আবেশ-উচ্ছনি ও মনন সম্প্রেকি চিত্তা

উপস্থালিত করেছেন। ক্ষতিগঢ়ালতে লেই চিত্তাই লোক্সক রল-ভাষপ্রে লাভ कार्त्रहा इत्य काम मृजन्य मा श्राक्रकार ণ্ডেৰক বশ্বে আৰ্থনিক কোন প্ৰক্ৰিন মালকতার পরিচয় আন্পশ্থিত ইলেও মুস্দার রহমান তার কাব্য বক্তব্যে মুখেন্ট আন্তরিক। সহজ সরণ ভাষায় আপন আরেগ উদায় ও দেশ-ভাবনার আশ্তরিকৃতা अर्जार्भाव बालवा-विश्वहभी विदाल शहित হবর পাটকে টিহিত করেছেন। কবিতা-গুলি পড়ে কবি তার দেশ ও অত্যাচারিত মানুষের অসহায়তা এবং সে দেশের জন-মানসের স্থেগ স্ব'কাবেল স্ব'দেশের মানব-প্রাণীর সহম্মতি উপদক্ষি করি। এখানেই কবি খোণদকার মসন্দার রহমান রচিত বাংগালীর জয় কাব্য সংকলনের স্বাধিক সাথকিতা।

বই\পত্ৰ-পত্ৰিকা

রোশেনারা ক'দের (কাব্য সংকলন) নিমাই-কুমার ছেঘ। মোহন লাইব্রেরী ৩৫-এ, সূ্র্য সেন স্ফ্রীট কলকাতা-৯। চার টাক।

প্রথম কবিতার নাম 'রে শেনারা' কবিতার নাম 'কাদের'-এই মিলিয়ে নিমাই-কুমার বসূরে সম্প্রতি প্রকাশির ক্রে সংকলনের নাম বাশেনারা সমকালের বহু ঘটন রাজনীতি বিশ্লব সামাবদ ব্যক্তিস্ব-ভাবনা এইসব বিষয় নিম ইকুমার ^মসার কবিতার মূলে নিহিত। কবি বীর রমণী রোশেনারার প্রতি যথোচিত জানিয়েছেন আবার সমস্_ব আ ইনাচ বের বিরাদেশ গজে উঠেছেন। 🗀 আমিল গল্য-**চ**াদর কবিতাগ**ুলি** ্ৰান গ্লন্থটিকে বিচিত্র আহ্বাদ্-ক্ষমতা দান করেছে। যার। পব রকমের কবিতা পড়ে আনন্দ এ গ্রন্থ তাদের ুত করবে।

দ্মাত দরজায় কড়া নাড়ার শব্দ (কাবা সংকলন)—শ্লভ গ্রীরাম সিং। উল্ গা প্রকাশন ৩০ চিত্তরঞ্জন এভিনিষ্ট (আন্ডার গ্রাউণ্ড নং ২) কল্বাতা-১২। তিন টাকা।

শলভ রায় সিং একজন প্রবাসী হিশ্দী
কবি। কলকাতায় যে বাংলা কবিতা ও
বাংগালী কবি দল আছেন তার সংগে
শলভ রায় সিং-এর যোগ গভীর ও নিবিড়া
শ্রেমাত ভাষা ছড়ো যে কোন বাংগালী
কবির সংগ্ অলোচ্য কবির তেমন কোন
ব্যবধান নেই। ব্যবধান যে নেই এই ছিলে
বর্মাক কবির মোট একুশটি কবিতা
অন্বোদ করে উল্থা প্রকাশন আলোত্য ত্যালাভ বর্মাল করা নাড়ার শব্দ গ্রন্থটি
প্রকাশ করে প্রমাণ দিয়েছেন। অন্বাদক
প্রমাণ কিবি জয়াতকুমার। হাওড়া
তি জ সাব্যা কবিতার সিংখাতে কবি
বর্জারেন—দিকে দিক্তে স্বাধ্যর ENDIN ERCOI-THREESE MINISTER ক্ষেত্ৰ আহাৰ কালা শ্ৰুত হাৰ সিং-এই কৃষিতার নাটারস প্রক্রম কিন্তু অক্সা नामकीशाला नम यवर क्रशांत आकारण्या শিক্ষিল প্রতীকে ছটিয়ে-ছিটিয়ে কিছ সময় ন্বগত ভাষণের ্ব অন্তর্নগা গড়ীর ব্যোপন পরিবেশে কাল হাপন করেন। অবশাই সর্ব আত কাতি নীতি ক্ৰিয়ই এই প্ৰদান ধ্রানা। তব্ শলক রায় সিং আশ্চর্য সহক্ষ সরল ভাষায় শব্দ ছব্দ প্রতীকে কাব্য বস্তব্য রাশতে অভান্ত। তাই তার পাঠক-হুল সহজে বাডতে পারে। অনুবাদক हिलाद सम्राज्यभारत श्रमा कृष्टिक हम ক্ৰাণৰ কৰাম ছাতে আৰে বলেই কয়ণতকুমার आत अक कविटक मरमन्त्राह्य अविकारमन বাঙ্গালী পাঠকের সামনে আনতে পেরেছেন সাহিতা পথের এক সভীর্থকে। জন্মাদ সহজ সরল সাবলীল ছওয়ার কারণেই शान्त्रति हिल्लामा ।

গ্রামবাংলা। সদশাদক মকুল মালক।

নাললদপ্র। ২৪ প্রগণা। দল প্রাসা।

'একটি দোরেল দের লিখিলা উব প্রাসার

নালোপাধারের কবিতাটি ভালো সোণাছো।
ভালং যেন বছাদ্র থেকে গ্রানণাংলার
সোণা গাটির গাধ্ধ বাল্লভারণো ভোসে

এলা। 'রবীন্দুনাথের গানা একটি ভাবনা'
সদশিপ ম্থোপাধাগ্যের প্রবৃদ্ধিত উল্লেখ
ক্রার মতো। ছাপা প্রিক্সা।

লাগৰপাৰে। (রবীণ্ট ক্ষরণ সংখ্যা) সদস্যাদক ছির-ময় **ভটা**চাধ-। ১২২ বিশিম-বিহারী গাংগানুলী দুখীট, কোলকাতা-১২। এক টাকা।

'লাগর লারে' স্লুর ইংলাজের হাবালী বাঙালালের কাছে বাংলালেলের সাহিতের ছাওয়া বয়ে নিয়ে মার। দাইই লাহিতেরে ছাওয়াই ময় কোলকাডার 'লোডপেডিং' থেকে শারু করে সি এয় ছি-এর গতে থাকে। এই সংখায় লাথেছেন মৈতেয়ী বস্তু এগাকলী চটোপায়ায়, জায়লকা বলেলাপায়ায়, নাপেল্ডক ঘোর, জাহুন্ল ছালান এবং গতিকা ছিলালা। ছাপা পরিক্ষমা।

করা (আ্যাচ: ১০৮১) সম্পাদক: হাসান আন্তিক্স হক এবং আস্তব্যুব ছোষ। ২৭ আহ্যান আহুমেদ রোড। খ্লানা। দাল দু টাকা প্রাশ স্থাসা।

ভাগে কেল জার সমাজকে আমার।
ভাগাে করে ব্যুতে চাইছি কথাসাহিত্যে
জায়নায় তাকে প্রতিফলিত দেখতে চাইছি।

এই উদ্দেশা থিয়েই প্রিকাটির বর্তমান
সংখারে রচনাগালে মাটিত হয়েছে।
সাামারেল বেকেটের নাটকের আন্বাদ,
সনংকুমার সংহা, আব্ল কাসেম সাফ
জাহুমেদ এবং আব্ল কাসেম সাফ
জাহুমেদ এবং আব্ল কাসেম মাটকের
অপ্লোচনা আকে বিভিন্ন প্রস্কের বিভিন্ন বিভ্না
ব্যুত্তের প্রতিহামকার লেখা হালান
ভাজেত্বে করবে।

The second secon

নামে কেন্দ্ৰ কৰিছে। অনিনাজ স্থেতিৰ নামে কেন্দ্ৰ কৰিছে। অনিনাজ স্থেতিৰ নামে কৰি কৰিছে কৰে কৰি বাৰ্নাছ কৰিছে। এই স্থানক কৰা আছিল কৰিছে। আনি প্ৰকাশ প্ৰভাৱ কৰে আছে—বেনা কৰা। বিনালৰ ক্ষুত্ৰ প্ৰতিক্ৰ তিসম্পান আৰু নিন্দ্ৰ কৰি। এই প্ৰকাশ কৰু শব্দ প্ৰয়োগে ছনেন্দ্ৰ বৈচিন্তা স্থানিত চিন্দুক্ৰেনাছত প্ৰায় প্ৰতিতি কৰিছে। অবে সংকল্পান্তত প্ৰায় প্ৰতিতি কৰিছে। অবে প্ৰথম্ভান প্ৰকাশিক কৰে। সংকল্পান্ত কৰিছে।

জানালার বাবের মেরেটি (কার্ড সংক্রান)। নজর্ম ইস্ক্রম। প্রক্রাক সন্মীজং দত্ত চিবেণী ছুনালী। দুনু টাকা পঞান প্রায়া।

৯বপন-স্কুল্ববী। প্থিক। প্রকাশক--র্নেশ-চশ্রু রা ৯ নিবেদিত। লেন কলকাতা-৬। তিন টাকা।

পেশিকা নামের এই কেখাকের কোষা প্রস্থানন্ত্রারী বাজ্ঞতা পেথকের পরী কাষান্ত্রারী সম্পাকিত কিছা গঢ় দুশনি ভাবনা সমাপা করিছিল। বিদ্যানের বাজ্ঞতা করিছিল। বাজ্ঞান করেছিল। করিছিল বাজ্ঞানিক করেছিল। করিছিল বাজ্ঞানিক করেছিল। করিছিল বাজ্ঞানিক করাছিল। করেছিল। করিছিল কর্মা ভার্ম্বর বাজ্ঞানিক করার স্থাটি দিককেরমা ভার্ম্বর বাজ্ঞান করেছেল।

প্ৰশাপ্ৰণা। সংপাদমা মূণাল হ'স, এবং ইণ-দেব বিষ্বাস। ৭৯বি টিপ্তৰ্জন এতিনিট। কলকাতা-১ই। দাম এবং টাকা।

পদ্মাগ্রণার সাম্প্রতিক সংখ্যার প্রবাদ কিপ্রটেন অরেসাল্পকর রার এবং ভূপেল আচার্য। গুল্প কিপ্রেছেন আমাপ্র্লী দেবী বল্লরার বলাক ও রুগুলের বিশক্ষা একাড়া মুগাল বসার উপ্রমাস এবং কেল কিছু কবিতাও রয়েছে। ছাপা এবং প্রচ্ছদে মাজিতি মুদ্ধির ছাপ আছে।

সংখ। সালাদক আসিত চটোপাধ্যায়। কেনাদ ভটাবাৰ্য দেন। ইছাল্বে। স্বীটাগাছি। হাওড়া-৪।

আৰু পা সংগাদক গৈবাল মহাপান। ২৯।৪-১৯ চেতালা সোলাল লোভ। অকাৰাতা-২৭ দাস এক টাকা।

িকছা কবিতা গলপ উপন্যাস এবং হয়।
সচলা সিহের অন্তেপন বর্তমান সংখ্যাতি
স্কলাশিত হলেছে। উল্লেখ কথান সভ কোলো
কোলা চোখে গড়কা না। প্রজ্ঞানিত জালো।
সোধা চোখে গড়কা না। প্রজ্ঞানিত জালো।
সোধা চোখে

বিংশতি (কাল্য সংকলণ) ঃ স্বৰ্ণন বসং। প্ৰকাশক ঃ স্পিলস্মান বোল, ১৯৩ আটাৰ্য প্ৰকৃষ্ণন রাম সোড, ক্লাক্তি-৪১। দুটাকা।

দীয়াণত (নে-জনুম) সক্সাদক পাৰ্পে বঁচ এবং দ্বীপেন হায়। ৩১ ২, ছম্বত্তী বাগাম দেন, কলকাতা-৬। দাম দেও টাকা।

চিলির স্থানিক জাণ্ডার হাতে নির্বা
কবি পাবলো নেমাণা সকপতে একী
স্টিণিতত প্রবংধ লিংক্ডেম বিজন কের
আলিস সেনগালেও। কবিতা লিক্ডে
আলিস সেনগালেও। কবিতা লিক্ডে
আন্ত্রা ধ্ব, জনতে দাল, প্রশালত রাম এক আবা জনকে। কবিতার মই-এর জালী চনা প্রশাস সব থেকে উজ্জেখনাগা। এই জাতীয় গ্রন্থালোচনা প্রেন্থান মন্ত্রা প্রিচয় পতিকার কথা মনে প্রিচয় কের।

ছিল প্ৰজা এবং জৰাস (কাৰা সংক্ৰম)-চলন সেন। প্ৰকাশকা, কুমা বক, ১ 15 ব নাক্তলা, কুসকাতা-৪৭। ডিন টাকা।

চল্পন সেন তবি বিহুল প্রজ্ঞা ও প্রশা কাষ্য সংকলনে প্রথমেই রবীপ্রনাথকে স্কাল বলেন্দ্রেল জানায় ্ৰাকাঞ্চা-প্ৰশাস ্ত্ৰাম/কালনাত্ৰি মন্তে দাও খনে ও ৰাছিৰে এর পরের ক্রাবতাগালিতে ক্রাব আই করেছেন তার সাদ্র্যাতক আগেশকে আ মায়ের অতীত আঁত্তম, স্বাধীনভার মিন্দ্রন সাতের দৃশকের বাংলাদেশ, সময়-অসম দ্যুগমহা, পোরাপতা থেকে পিছপরেট বিরাশে ভার বছবা, ক্ষোভ ইভ্যাদ। 🕮 গালি সালিখিত, সভার অন্তানীর্ভ বা कार्यानक, भागवदायनाम विस्कानीम । अ স্বই গদা কৰিতাৰ দেবা কৰিছাগ্ৰ গ্ৰভাষী পাঠকদের কাধ্যমসভাৰশাম 🐔 एएएव वर्ण भारत व्या

আথিক ্ ত প্রসঙ্গ

বিচিন্তা

क्याना ।

অঅ'লৈডিক দ্ভিটেকেল থেকে সোনা বৈষ্ঠায় বিচিন্তাভ্র হতে পারে না, কারণ শতিমান দিনের গ্রেপ্পার্ণ অহানৈ তক বিষয় সম্প্রসারণ আয় क्श्राच्यात्रकात মাদ্রাম্ফীতি, সাদের হার, লোকের সাগা-জাবিনের সঞ্চয় ইত্যাদির সংশ্যে স্থোনার শব্দেই বললেই হয়। তব্ভে সোনার क्या वा व्यवस प्राप्तानिकाल वनार राज्य সোনার দামের কথা লোকের মাথে মাথে। সাধারণ লোকের কথা না হয় ছেড়েই দিশাম অথনিটিভবিদ্যাও সোনার প্রসংগ অভিনয় যেতে পারছেন না। এই সবস্থায় কেটনস্ৰ ফ্রেডেরই বাকি প্রতিজ্ঞা ছত? হয়ত তাম উপদেশ দিতেন : ঐ পীত ধার্জন মিথা মোহ থেকে মান্ত হও। এই উপদেশের মধোই কিন্তু রয়েছে একটি বিশেষ ্বীকৃতি : ঐ পীত শভুর প্রতি মানুষের অবিধ্য মিথ্য হলেও তার। অগ্র মিথ্যাই বা কেন, সোনার কি কোন উপয়োগ নেই? আড়েম স্মিধ স্তাব্শা অভিযোগ কর্মেছলেন যে উপযোগের ভুলনার পোনার বাজার দাম অংযা ক্রভাবে বৈশী সোনার কোনে বাবহাৰ-মালা এবং বিনিময়-মালোর মধো বিশ্তর ফার্ডাক। 77.0 উপভত্ত হ'য়েছে ম কাত তেখ न्याक्षाहम् ।

ঠিক এই পার্বাভকসের সমাধানে নয়।
বিশ্ব অধা-বাবস্থা স্থানিয়ানিত কংবাব কলে বিভিন্ন দেশা মানা-বাবস্থাকে স্বণ-দ্বিত্বক করেছিল এবং ফলে জল্মা নিয়েছিল শ্বদানা: আশা ছিল এব ফলে টাকা ছিলে জোলান ও মলাস্তলের মধো দ্বাহালী করিছিল পাষ্টিভিল্ন সাধিত ভূকো। এবং তা হয়েছিল মান্ত কয়েব দশক করে। এবং তা হয়েছিল মান্ত কয়েব দশক করে। এবং তা হয়েছিল মান্ত কয়েব দশক করে—শ্বদা মজ্বত।

বর্তমানে তা মজুনি ছাসের কোন প্রামাই নেই, আর মুলান্তর তা জমাগত উন্মান্থী। এ অবস্থার সোনার উপবােগ কি? উপামােগ তল স্থান্তর ভাতাব হিলেন। পা্ধা বালি না বিভিন্ন রাজ্ধন কি লিকে আনুবেকে বালিও ও মান্থি উভারেই স্বাম্পান্থ। এর ফল মুক্তমা মিলেকে স্যোন্ধা স্থানিক। া ব্যাপাকী হল এইরকম। বভামানে লোনার আন্তর্জাতিক দাম বা আন্তর্জাতিক দাম বা আন্তর্জাতিক দাম বা আন্তর্জাতিক আর্থাভানর (আই-এম-এএ)
নিধানিত দাম হল আউল্স প্রতি ৪২-২২
ডলার আর বাজারে দাম ২৫০--৩০০
ডলারের মধ্যে ওঠানামা করছে। (১ ডলার
-১-১০ টাকা) এর ফলো ফাটকা কারবারীদামে যদি ৫০ ডলারের তারতকাই অন্দেয়দামে যদি ৫০ ডলারের তারতকাই অন্দেয়লামে যদি ৫০ ডলারের তারতকাই হয় তবে
লেপক্লোলানের ক্ষেম্ন খাকরেই।

এত দামে সোনা কিনে সঞ্য সংরক্ষণ কি সম্ভব? হয়ত নয়। কিন্তু লোকে যদি শশু^সত হয় বা বিশেষ লোভী হয়ে ওঠে ভখন ঘটে তাদের বাৃদ্ধিছ্ম। অবশ্য সব স্বাধীন নাগগিকেরই অধিকার অংভে নিশ্রুত সঞ্জয় ধরংস কববার, কিন্তু গ্রন্ত-লৈভিক সংস্থা বা রাণ্ট্রেও কি সেই অধিক।র আছে ? প্রধনটি তলেছেন অধ্যাপক পল মানুয়েলসন। বিভিন্ন রাজ্যে মধে শ্বৰণ সম্বয়ের ব্যাপারে কাড়াকাড়ি পড়ে ষাওয়ায় সানাল দাম আরও বাড়ছে। শোলা মাজে অন্তজাতিক অথ্নিজ্য সোনার আন্তর্জাতিক ছালা প্রানিধা-রণের কথা ভাষতে। হয়ত প্রনিধিনিক লাম হবে আউপস প্রতি ১৪০—১৫০— ১৬০ ডলার। এই গ্রেজবের ফলে ব্রিখগত স্বৰণ সন্ধয়েল প্ৰবৰ্তা আৰুত ব্লিপ পেয়েছে এবং ফট্কা ক্ৰেবাৰীৰা হয়ে উঠেছে আগ্রন্ত সঞ্জিয়।

किंक का ठाः

THE !

আদতক্ষণিত্ব বাণিন্ডা তেলের পর কফির ম্থান-বছলৈ ৪৫০ কোট ভলাবের মত কফি আদতক্ষণিত্ব বাজ্যর বিজ্ঞী হয়। তেল উৎপাদনকারী দেশগালো তাদের তেলের দাম অবিশ্বাসভাবে বাড়িরে নিয়েছে এইবার কফি উৎপাদনকারী দেশ-গুলো-বিশেষ করে কলান্দ্রা, ব্যক্তিন আগ্রেলালা এবং আইভরী কোস-ভোট বেশগছে। কিছাবে কফির দাম বাড়ানে। মানুনার কফির দাম বাড়ানে। স্ত্রার কফির দাম বাড়ানে। স্ত্রার কফির দাম বাড়াবে এবং ফলে স্বচেরে ক্ষিত্রত হবে মাকিন ম ব্রাছ্র-স্বান্তর কফি স্থানন কিলাবী

চায়ের দামও বাড়তে খারু করেছে। সেদিন কলকাতায় নিলামে এক বাগাংনর চা কিলোগ্রাম প্রতি ২২০ কোটি টাকার বিক্রী হয়েছিল—খা স্বাসময়ের কেকডা। কিন্তু এ হল অধ্কারে এক বিদাং
বিলিকের মত—চা কফির ঘনিত পরিবর্ত
ধরা হলেও চা—এর দাম ঠিক কফির মত
উধ্প্রেমী নয় কাগণ ভারত, কেনিয়া,
বাংলাদেশ ও শ্রীলকা—এই চারতি প্রধান
চা উৎপাদনকারী দেশ এখনও শ্বতলভাবে
চলছে। কিন্তু জোট বাধার দিন কি
এখনও আসেনি? বর্তামানে পণের ভেলী
বাজারের দিনে আখরকাত ত করতে হবে।
যেমন কলি তেমনি চলি। অছাড়া মধা
প্রাচ্চা ভারত চারিবি সাংবার
আকা সাংব্যান্যার সংগ্রা গ্রহণ করাই
উচিত বলে মনে ইয়া

आक्रियः

শাধিমের নেশায় মার্কিন মুলুক কুমল বাদ হয়ে উঠছিল ৬ লক্ষেত্র ওপর কলেজের ছেলেমেয়ে নাকি এই নেশায় শাসক হয়েছিল। এই মান্তিব ৮০ শতাংশ শাসত তুগ্রুক থেকে:

ম্কিনে যুক্তগুণ্ড তুর্পককে চন্ট্রাধ কলে ঃ আপনারা অফিনের চাধ বংধ কর্ন আমরা অফিপ্রেণ করব। সংগ্য সংগ্য ১৯৭১ সালে ৩৫৭ কে[ি] লাগ অফি-প্রথের ব্যেম্থা হয় ং এঃ ফ্লে ম্কিনে যুক্তগুণ্ডের বাদক দুব্যুস্থানীর সংখ্যা নকি হাস পেয়ে ২ লক্ষে দাড়ায়।

সমপ্রতি আবার ত্রসক অফিন চার্মের সিম্পান্ত করেছে। কারণ ক্ষতিপ্রেবের টাকা প্রযাস্ত নয়—অন্দানি প্রের দান বেড়েছে। অতএব 'হাস্-হাসের চার করতেই হবে। তা ছাড়া অপ্রের কি লাভক্ষতি হল তা নিয়ে আ্যাদের মাধা ঘামাবার দলকার কি? উল্লিক্সেছেন ভ্রসক সরকারের এক মুখপত।

মার্কান যুক্তরাণ্ট অবলা সাহার। বচ্চেম্ম ভয় দেখিয়েছে। কিন্তু গ্রেডে যে ফল ফলবে তা মানে হয় না। যা হোক আণ্ড-জন্তিক আইন যেমন নিধিলাণ্ডের বিলয়ম্থান, তেমনি আন্ডেজগুতিক ফথানীতিও নীতিলাদের পার্মিষ বাইরে। কিন্তু এদিক দিয়ে ভাববার দিন কি আদেনি? পাথিবী দিন দিন ক্ষুদ্র বাইতে জন্মেত্র হাজে ফলে ধরংস থেকে বাচতে জন্মেত্র হাজে ফলে ধরংস থেকে বাচতে জনে প্রিকংশনার---



(65)

জাহাজ তথ্য সমৃদ্রে কুমাপত ভেসে रवर्जाक्त्न। त्कारम्मात् एक्टर क्राञ्चिति আর জাহাজ মনে হচ্ছে না। স্তি যেন কিংবদস্তির জাহাজ হয়ে গেছে। অশরীরী আহার মতে: সে মহাশানো হেন পাড়ি ক্লামহোকে।

--স্নার ওরা আপনার স্থেগ কথা বলতে

हारा

স্মালি হিগিনস কেবিনের ভেতর স্থ-চাপ বলেভিপেন। টেবিলের লম্পটা বাতাসে কখন নিডে গেছে, কখন চিফ-মেট ঘরে চুকেছে তিনি টের পাননি। তিনি মুখ না ভূলে বললেন কারা দেখা করতে চায়।

– সব জাহাঞিরা।

— এরা দেখা করতে চার বল আনুমি এখন দেখা করতে পার্ব না কোয়াটাব-মাস্টারকে বল লম্ফটা সেন জেনলে দিয়ে যায় ৷

চিফ মেট বলল ভাক্তথা স্যার ভাল না!

- —অবস্থা ভাল কে বলেছে! --- তথ্য বলভে জাহাজে থাকবে না।
- —शकरत ना त्वाशास शास्त्र।
- এরা বোটে নেমে যেতে চাইছে।
- —কভদ,র বাবে ?
- —হতদ্র সম্ভব।

- ব্তদ্র কি দশ-বিশ মাইল কি পন্মাশ একল প্রিল মাইল! সহসা উত্তেজিত গুলায় वनात्नम-किन-प्राप्ते नान्याति ज्यापान क्राप्त प्रिटक वटनांक मा!

গুলা বের করে চিক্স-যোট কোরটোর মাল্টার। ভারপর কোবনের ভেতর কের সেই অসহায় অঞ্ধকার। চোখের ওপর অন্ধকারটা সংর গেছিল বাইরে মুখ বের क्यूरण्डे अमृत्वत क्यारञ्जा छत्रः क्यकार চোখের ওপর ফলমল করে উঠেছিল এখন কেনিনের ভেতর সে কিছু দেখতে পাছে না। কেবল যুলযুলির হতো পোট হোল च्या म्हामा ज्यारमा प्राप्त वाम्यः। व्या

মনে হাজ্ব মানুষ্টা একটা ইজি-চেয়ারে চোৰ ব্ৰুক্তে পড়ে আছে। ঠিক লন্ফ না জনাললে সে বুঝতে পারবে ন। বাইরে সেই रक्षाक्ष-[स्ट्रिके श्रमान क्षान्त काराक्र সামনে পেছনে দুটো অভিকায় লম্ফ ক্লোফ নেক্টে ঠিক আগের মতো এবং কোথাও रशतक अक्षणेत्रक कारमा गण्डरभाग स्थान আসছে না। জাহাজটা সহসা ভার নিশ্চুপ। স্বাই ষেন জাহাল ছেড়ে চলে গেছে।

কোয়াটার সাস্টার কম্ফ জনাকিয়ে চলে গেল নিচে। স্মালি হিণিনস এবার চিফ-মেটের সিকে ভাকালেন। বলবোন—বোটে ভোমরা কতদার যেতে চাও।

চিফ-মোটের ফ্যাকাশে মুখ ভারও ফাকোনে হরে গেল। সে বলল-আমি ডে) স্যার জানি বেশি দরে বোটে য়াবে না।

—য়াওয়া বাবে না ঠিক না। হা ওয়া शास्त्र ।

মোটর-বোট ষ্থন বেশ কিছু নূর সেতে পারবে। তেল ফুরিয়ে লেলে পালে হাওয়া লাপুৰে। সূত্ৰই ভূমি জ্ঞান। কিছত চিফ-মেট সেটা কডদাল। কড়দিনে ভাগা পার না আহেতুর জাহাজ পাৰে হাখন ७! रभारक रही

চিফ নেট বলল-সাবে আপনি কিছু টের পাজেন না!

---কৈ বলছে টের পাজি না! সব টের পাই। ভেটার-রুম থেকে সুটো কনডেনসভ মিলক কে চুরি করেছে তা বলতে পারি। করন্ত বিবের প্যাকেট কে দেকড়ার কড়িরে রেখেছে এবং রাভে স্বাই ব্রমিরে পড়লে অধ্যকারে বলে খালেছ তা আমি অসমি সাতে। তুমি क्रास्त्रः हिक-टबर्हे!

किश-टबर्ट बनान-विक्**छ जााद ज**वाई नितः লড় হৰেছে!

-- निक्क बारन कार्ड राज्यकः।

-- हेप्सन नाम।

—ক্ষে! কেন কড় হরেছে! কোনো সাঞ্জন পালি শা তো!

—ওবা সারে বলছে জাহাজে থাকবে न। নেমে স্বাবে। চুপচাপ নিচে বসে আছে। --- द्यार वारत वनात्वह स्वयं कावता वाता। স্থালি হিণিনস এবার উঠে দাভালেন ইউ ছেল, গেট আউট, আই সে গেট-আউট ভোমরা থাকতে আমার কাছে আলে কেন! ভোমরা কি করতে আছু জাহাজে!

विक कार्ड एक विक अवर इस्स स्त्रीकत-অফিসার পর্যক্ত এসে গেল খের পর্যক্ত।--আপনি একবার বল্ন। ওদের সংশা কথা বল্ন। আপনি ব্ৰথিয়ে বললে ওয়া শ্লেব

স্যালি হিগিনস পোট-হেচল দীজিয়ে বলপোন্-ডোমরা কিছু শুনবে না ভেকিট তোমলা সব আগেই ঠিক করে নিয়েছ। 🦃

ধরা পড়ে গিয়ে আর মুখ থাকে লা ভূখন প্ৰায় কেপে হাবার হতো ভোরছ অনগ'ল বলে বেতি থাকল—না সাার ব্রুত শারছেন এভাবে দিনের শর দিন আরব ভাসতে ভাসতে কোথ য় যাছিছ! কেবল ক্ৰ কেবল আকাশ কেবল জল কেবল আকাল टकमल निगम्छ अंक**टे** न<u>त्तरण। व्यक्ति</u>ट ভাকাই সাার সমৃদ ঠিক একভাবে আমাদে খিরে বেশেছে। ভাগরা স্থার পাপ্স হরে বাল্লান এ স্থার আপনার বাবার ভাসা ভারপর সে একস্বিউজ মি বলে ক্লিটে কামত দিল এবং বৃদিকতা প্রারা আরু বিশ্বসার ভয়ভর নেই, সে যে এমন বর প্রথম জিভ ঝালিরে নিজে বোঝাই বাজিল কারণ প্রথমেই তো আর বেকসমার বাকা বনে আরুত্ত করা সায় না। বাবার ভাগা ীদ श्रातण्ड त्वलगात् वात्वा त्व रणव

खात त्यका স্যালি হিণিনস বললেন না ডেবিডের স্^{ৰেগ}।

ভেবিভ বেলন মরিরা হরে উঠাছ !-স্যার আপনি আমাদের জীবন পিরে ছিটি মিনি খেলছেন। আমরা আপনাকে অসক্ষা করতে চাই না। আমরা এতপ্রেলা লো একবিদ্যুক আপনি একা একদিকে। আমানে ্তিক কাপনাত কোন ইক্ষে ছাওয়া উচিত।

সামতে কাই একটভাবে জাছাজের মধ্য জাংলা । জনলছে। বোট-ডেকে স্কৃতিশি ক্ষাৰ কৰে। পৰ মানুৰের মূব ওরা বসে ক্ষাৰ সৈটাকৈছে। প্ৰায় হার-সংক্তিসের क्ष दिशास करण द्रमन यटन खाएक। अक्ट्री हर्में बनाइ मा। दशद् अव वाव वा क्षि । बाब बा क्रिक द्वण्डतन्त्र करत जामरव। ক্ষালের আলোতে আবছা ওদের বাধ দেখা क्षा अन्य काकात्म श्रुप । स्ट्रांकाय sce कार्यकारक स्थापन करत स्थापन कार्या on mile friences size aimine on লাৰে বেতেত তিনি জাতাজেৰ স্ব'দয় কথা किति हैं एक कदान अव दिखा अक्टा अक्टा के ক্ষম কন্তত পাৰেন ক্ষাইকে ভিনি জাতা^ত ক্ষাক্ত কেন নামিছে সিল্লেন না কি মে न्यांबर्ट क्रडनाटुमा समाम मिटरा क्रथम मण ४:७ कृष्णां अवस्था स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स আমত তিনি বেল মেন সমায়ে এক ক্ষকিকার ইখলার মেতে উঠেছেন—তার বিন্দ্নাত क्षाचमा महै।

্টিতখন ভোষিত রোলতে ক'কে চিকের কিরে বললে—তিনি আপনাদের মোকাবেলা ক্ষিতে চাইছেন নাঃ

ৈছে ট্ৰান্ড ছানেলের প'্ডিডে ছিল। লৈ ক্লান্ড্রি শিপণির যাও জ্যাক। বাজি ক্লাও, বুড়ো নিজেও মরবে। আমাদেরও ক্লাড

জনক নজল বাবা ভীষণ একগ্নে। নিয়াৰ কথায় ভাজনী হবেন না। ডুনি আংমার শেকা এক।

ছোটবাৰ এবং জ্ঞান প্ৰায় পানিংগ নাজি ভাগেতে থাকন। তেনিত ওদের দেখে নাজ—ভিনি কি কেবেছেন জ্ঞান তিনি কি ক্রেছেন জ্ঞানের এজাবে জ্ঞান্তে মবে ই। বছু জ্লাহাল চোধ ভোনতের। তেনিত ক্রেছে ছেত্তে উন্মান চ্বে, সাফেছ। পুন্ সাক্ষ্য ক্রেন, স্বাই। ছোটবাল ব্ধাল, ভেবিত ভ্রা ধারাক করবে না। দেকছি।

ক্ষে চাুর্ক বলকা—স্থার ওপের স্থেগ শ্বিন কথা বলান।

ু স্থালৈ ছিগ্নিস কেমন মরিয়া। তিনি গ্রেলন—তোম্বরা সব বিকঠাক করে এসেছ। গ্রাহাস্ক স্থাপে আমি কি কথা বলব!

় —বা স্থান চিক্টাক নেই। আপনি কথা ুল। কথা না বললে গরা ভাহাজে আগুন ুব্রে দেবে। আপনি একা কিছু করতে



शाहरक मा। अध्यक्षा भवादे अवाद त्याउँ हांबहा करह दन्य। त्वाहे नम्द्र नामित्व আহাজে আগ্ন ধরিরে দেব। জাহাজটা भारतीत्व वा सामान सामीवन विद আমালের এখন ভাই দেখা দৰকার। তালোকিক হলে জাহাজ এবং আপনি নিশ্চিত্র থে'চে হাবেন। আমগ্য আপনাদের কিছু করতে পারব না। আগ্রেন আগ্ররা धाणमाहस्य भाषात्व भाषात्व मान আপনি रह त श्चार्य । क्था कम म आहे। एता छाति अतुम अहम शामाचा विकास भारत्यात तरहा विकास विकास आहारक क्षेत्र शत स्थाद आवन जन वर्तेनात मध्याचीन इराष्ट्र, धारम जान कान्य्रकातचाला क्षात्मन शह क्षम ह्या खता छेन्द्राहमन महका কিছা করে ফোললে আপনি আহাদের বিচনাসং-धाकक कागरतान না। আলফো এটা কোনো 🐧 विश्वानचाळकका নয়। ওরা রিখবাস আপনার ওপ্র স্ব হারিয়ে ফেলতে বাধ্য হ'ছে। ওপের কোনো দোষ নেই সার। ওদের দিনের পর দিন জাহাজে আটকে রেখেছেন, বোট দিছেন না একবার, দোহাই আপনার ঈশ্বরের একবার কথা বলুন। ছোটবাব**ুর কথা**য় স্যালি হিলিন্স বোধহয় সামান্য ভয় পেয়ে গোলন। জ্বোরজ্ঞার করে বোট নামিয়ে চলে মাবার আগ্রে জাহাজে আগ্রন ধরিছে দিলে বিছা করার থাকাব না তারি চোখ-মাখ ভাষণ কঠিন এবং খাবার ক্রমে ফুরিয়ে আসভে বলে ওরা দুভাবনায় আর মানুষ নেই ' এখন এবা সূব কিছু করতে পারে। তিনি চোখ তুলে অপলন ছোট্রাব্রুকে দেখলেন। ছেণ্টবাবাকে ভীষণ অবিশ্বাস করছেন। কর্ক। সে এখন এছাড়া আর কিছু বলতে পারে না। সেন স্যালি হিগিনস ছোটবাবার আস্ল চেত্রা এতদিনে দেখতে পেয়েছেন। ছে।টবাৰ**ু পথ্**ৰত হাত মিলিয়েছে।

স্থালি হিলিনস বাইরে এসে রাজালেন। চিফ মেট লম্ফট হাতে নিয়ে আ**সছে। চার্ট**-ব্যুম, মার্থক আয়ুক্যাণ্ড এবং হাইক্স-রুম্ম- স্ব উড়ে গেছে বলে রেলিং ভারি ন্তৃবড়ে। **যে** কোনো সময় সালি হিগিনস সামান্য অসতক হলে উদেট নিচে পড়ে হাবেন। তা **জ**ড়া ভাকে খেন পথ দেখানো দরকার---চিফ্-মেট আগে আগে লভেদ্র আলোতে পথ দেখিয়ে নিয়ে পেল। সমূদ্রে ভীনণ क्रिशिक्षना। वास <u>रक्ष्याद्य</u>नात् सारमा না। তবুনিচে হারা **বলে** আছে ाना स्वोध दक्ष प्रत्य आध्यक्ष इत्ह भावत्य লক্ষেত্ৰ জালেতে স্বত্যি ভিন্নি মাধার **७ भरत मीफ़िरहा ७ इन्हर्ग अरध्या वनरह्**म। कि बनाहबन खता अब किस्सू तृथत्व भारत्व ना । दक्कांग्रेसान् । क्वांसान् द्वारियान् रामध्य--- भाराम प्राप्तेनातः माष्ट्रिक कार्ष्ट । कतः स्थापेनातः स् ংবেথ মিচ থেকে স্বাই ছাত **মাঞ্লা।**

আৰু কোটবাৰা দেখল, নিচ থেকে দুটো বাশাল জনিকিয়ে এনেছে ডেক-কৃশপ। ক্ষিকে দুটো মণাল ব্যাসক দিকেৰে সে। ক্ষোংসনায় অস্পত্য মুখ্যানে এবৰ স্পত্য ক্ষাংসনায় অস্পত্য মুখ্যানে এবৰ স্পত্য ক্ষাংসনায় অস্পত্য মুখ্যান এভাবে মুদাল ক্ষেত্ৰে দিলে ক্ষণতান সবাম ম আ আৰু দেখতে পাবেন। এতগালো নিষ্ঠার অভিগর ভার মুখ দেখনে তিনি जिल्ला विश्वादन कांत्र कांत्र भागतः शास्त्रक ना। धानश् समारमत मिश्रा सहिताला हरत হাতে আকাশে বভাসে। সমাদে এলন বখন বিলালতা আৰু জাহাতেৰ জিছ, নাৱিক ব,ভাৰ বিভাবিকা যখন এভাবে দেখছে তথ্ন স্যালি হিগিনস খুব ধীরে ধীরে বললেন-ৰ্ণ্যাপ্ত স্থামত্তা এক কঠিল পদীক্ষাৰ जन्म, श्रीम । काहास काठवा । थावात त्येष दृद्धा আলছে। যা থানার জাতে বড় জোর দ্ হণ্ডা। প্রারু ভিন হণ্ডা আমানা জাছাতে ভ্ৰেছে বেডাভি। এতদিন অপনাতা ধৈয় প্রবেছিলেন বলে আমার কৃতভ্রতার শেল নেই। ছোট্যাব_্ তাজের এবার স্বাস্ত্র বাংলায়

ব্লিমে নিক।

—আমরা বিশ্বাস করি বিশ্বাস ছাড়া
আমাদের এখন আর কি আছে! আমরা
বিশ্বাস করি সিউল-ব্যাংক আমাদের ঠিক

ভাৰগায় পেণকৈ দেবে। ছোটবাব, বুঝতে পারছে স্যালি হিগিনস বিশ্বাস কথাটার ওপর ভীষণ জোর দিক্তেন যার বার। বিশ্বাস কথাটার ওপর সেও वनात अभग विद्नम् रक्त प्रवाद क्रकी कदन। কিম্তু আশ্চর্য যতটা জোরের স্বেণ কাণ্ডান বিশ্বাস কথাটা উচ্চারণ করেছেন, সে যেন তেমনভাবে পারছে না। এমন নিরুদিটে বাতা প্রায় যেন এক আলোকিক কল্যানে এরা নির**্দেশে। প**াঁড জানিয়েছে। অথকা ভার মনে হচ্ছে আঙ্গলে খেন কেন্ট বে'চে নেই জাহাজে। এক ভানালোকে ওরা এসে পেছে। ঋড়ের রাত্তে ওকা নিচিত্ত হার শেছে সমৃদ্রের অভলে। ওরা স্বাই সেই সব মানাুবের প্রেভাক্ষা। এবং মানাুবের আকাৰ্ক্ষা মরে গেলেও শেব হয়ে বায়ু না---লৈ কাবার ফিরে আন্দে পাণিব**িড। আ**থবা ध्यम मृत्यप्रेनास संभग ग्राप्त एकः एका जनात्रे निकार निकार रेटकार क्या 🐃 🥱 विशिधकारक জানাবেই। ওরা দেশে ফিরে হোতে চর--এমন শব্সংধহীয় সমুক্ত 5,73 বেড়াতে **हारा** সেও বেয়ন ভাবত আচির ওপর প্রতিশোধ নেবে, মরে গিয়ে সে সেই প্রতি-শোধের কথা ভেবে থাকে জ্বার ভাবে ষ্ট্রন সতি সে আচিকি খুন কুরেছে। **ভা**সলে সে কিছ,ই করেনি। সবই এক আন্মালোকের ঘটনা সে মিথ্যে বিশ্ব স্কথাটার ওপর জোর দিক্তে চাইছে। কার এভাবে গুর সহসা স্তি रक्त हम महन क्षण रक्के स्वरूठ स्वर्थ । अका नवाहे बाल्ट्रव्य शक्ता। बरव किटम अक्टी ছারার মতো জাহাজে স্বাই ভেলে ররেছে। তিক যেমন জলের বাররাল জেনে প্রাকে স্মৃত্যু ভাষণত সময়ে মিশে বার সমুগ্র তেমনি তারা এখন দ্রুটিনা মুটে নামারু পর र्मन्दिमन भएक गामिनीय नामारम देवस्य

লৈ কোন সৰ প্ৰিয়ে ফেনছে। একটা কমা স্থিক প্ৰকাশ কৰছে শাবছে বা। স্যালি

বন্ধেছে। স্ময় হলেই জ্বারা : রাজ্ঞাসে লিংস

यादा क्लाका चार्च किल शास्त्रव मा।

দ্বাধীনতা সংখ্যা, ১৩৮১

979

সম্পাদক শ্রীতুষারকান্ডি ঘোষ

গ্রহপ



আশাপ্ণা দেবী
সতীকান্ত গ্রহ
প্রভাতদেব সরকার
অতীন বন্দ্যাপাধ্যার
শ্রীলেখা বস্
শৈলেন রায়
ইমদাদ্র হক মিলন
শান্তন্ দাশা
অমিতাভ দাশগ্রুত

প্রফালে রার
বারেশ্য দত্ত
সমার রক্ষিত
দেবলদেব বর্মা
চ-ভী ম-ভল
নির্মাল সরকার
শংকর দাশসং-ত
কামাল হোবেন

প্রবন্ধ ও আলোচনা

পশ্চিমবঙ্গ প্লানিং বোর্ডের সদস্য পাল্লালাল দাশগন্তে লিখেছেন একটি বিশেষ নিবন্ধ অথু নৈতিক সংকটে ছায়াযুদ্ধ বনাম প্রকৃত্যুদ্ধ

অন্য বাঁরা লিখবেন
বিশ্ব মুখোপাধ্যার
সরোজ বন্দ্যোপাধ্যার
শান্তিলাল মুখোপাধ্যার
রংগন মুখোপাধ্যার
শিবদাস চক্রবতী

সম্পূর্ণ উপন্যাস
শান্তমান জনপ্রির লেখক
শ্রীবারীন্দ্রনাথ দাশের
ভালোবাসার মনকাড়া কাহিনী

অম্তের সংগ্রিটিত লেখক প্রীজনীন বর্ধনের ব্রুক্ষবাস গোরেল্য কাহিনী নদী, নারী, নাগাী

নতুন লেখিকা শ্রীমতী দবিতা দেনগড়ের অভিজ্ঞতা দমুখ হারর কাহিনী স্থায়া আলোর নক্সা

দাম তিনটাকা পণ্ডাশ পয়সা

ছিলিক পর পর কি বলে হাজেন সে ইক্তে পারছে নাঃ এজপুলো নাল্বের কুমান্ডলে কেয়া কটিন চেন্থ এবং নাপালের কালেকৈ করা বেন স্থিত জার প্রবিত্তীর কৈট মার। সাম্ভুলে আগানের প্রজনিত নির্ধা হোন জালাশ এবং সম্লে ভাসমান। কিয়া কেন জালাশ এবং সম্লে ভাসমান। কিয়া কালকভালে ভাসের বৃধি এখন প্রতিবিন্দা ভাসছে। সে বলল—আজ আস্ন বলং স্যার ভাসরে। সে বলা—আজ আস্ন কালি জোলার। সে ভো নেই—সে পেলা ভাগিক।

স্যালি হিগিনস বললেন-ছেট্ৰাব এটা ফাললামির জায়গা না। ভূমি কিছ नगर मा। अक्षेत्र कथा कार मा। जात्क-वारक বৰ্ষ্ণঃ বেশি ভাজে-বাজে বকলে জাচ্যজ व्यदक इट्रांक काला त्या अवश व्हावेवाय म ক্ষেন সন্বিত ফিরে আসার মুখে কাল-স্যার আপনাম কি মনে হয় না আনক এক আলৌকিক জলবানে ভেঙ্গে ব্যক্তি। মনে হয় না **ভাগরা সভি**্কারের কেট বেক্ট নেই। মনে হয় না আমাদের যাত্রা জন্য কোনো গ্রহলোকে জ্ঞানর। জার পর্যিকীর মান্ত্র না। মরে গিয়ে প্থিবীর মানুত্র ভেবে সাক্ষা পাছি। সহসা জ্যাক ছুটে এসে ধনৰ তখন হৈটেব বু পিল্ড বি ভূমি আলে বাজে ৰক্ছ। তুমি কি স্বার মাথা থারাপ करत राजरत ।

ি ছোটবাৰ ু কেমন ফ্যাকালে মানুখে কলল--আমি স্বার মাথা খারাপ করে দিচিত।

্লাক কলল—দিক্ত না! ছমি ভাগিস লাবাকে বলেছ। এখন যদি বাংলায় বলতে ক্লিক ছত বলত।

ভাষন পচি নাম্বর এসে দাঁটাল। সে ক্রিয়াল হিণিনসকে মাধা নুইয়ে বউ করল।

একসকিউজ মি! এমন বলল। লাম্ম্যর ক্রাজোতে ভাবিত পাঁচ নাম্বরেম মুখটা ভূগে দেখাল স্বাহীকে। ভোবিত ওকে ঠেলে পাঠিরেছে। জোটবাব্র কথাপ্রেম বাংলার আখানি স্বাহীকে ব্যিক্র কলতে হবে। এমন বঙকা ভার পাওয়া ধাবে না।

্ পঢ়ি নামর তখন বলছে ছোট্র-ব**ু কি** বলছে গুনুষ্

ছোটনাৰ বলল —ছোটনাৰ কি কাছে — ছোটনাৰ ই বলবে ফাইড র...। —আপনাৰা লুনুম আদ্ধি কি বলেছি। পাঁচ মন্দ্ৰর লোগ, ছোটনাৰ বলছে...। ছোট-বাৰ ফলক আমান কথা অপনাল আমান লাছ থেকে প্নবেন না ফাইডারের বাঞ্ আৰু শুনুকো।

সৰাই হাত তুলে দিল। কেন্ত বোধ হয়।
বিজ্ঞ হয়ে হুটে জাসহৈ! কৈ জাসহে
কৌ! এনজিম-কশশ: সে এসেই একটা
বিজ্ঞানিত থেকে চিংকার করে ওপতে হুটেও
বিজ্ঞান হালিবার সেই মুখ্যাল হুটিও গতিতে
বিজ্ঞান ক্যান কের হুটেও দিবে
কাল এনজিম-কশশ জায়গারট জায়গার
ক্রান্ত বাবা গানা করেব না।

্তি ছোটপাৰ্থ ডিংকার করে এবার বলগ--বিশ্বাস সিটল ব্যাংকের ওপর বিশ্বাস জিতে আপনাদের করে কয়জেন। বিশ্বাস ্রান্তের আন্তর্মের আরু কৈন্তু থাকে না নুর্বাহ্রেন। জান্ত্রক্ষ অন্তর্গ, জান্ত্রকে থানার ফ্রানিরে এসেছে আনর: চানের জালা পাশিছ ন: আমাদের এখন নোংরা জালা পাশিছে পাশতে হল্কে। তিনি জাল পর্যান্ত রেখন করে দিক্তেন, সুবই কোনো না কোনো দিন আনকা ভাগপার কিন্তে রাখ বলে।

পাঁচ সম্বর বলগ—ছোটবাব্ ভূমি কিন্তু নিজের কথা বললে সাঁ।

পাঁচ সম্পদ্ধ ভারি ক্রন্যা মানুষ। ছোট-বাব্ৰে আৰও লখ্যা মনে হজে। ছেণ্ট্ৰাব্ कारना भाग्ये श्नाम आर्थे भरत जारह ! ामाना भीख जानद्वा । बत । इन अध्यस् মনে রম: সে তো কখনত দাভি কামায় না। ডেবিড এবং অন্য সবাই দাডি কামানো-টমানোর পাট প্রান্ন তলে দিরোছল। সকালে কাম্ভান পাইকারি হাতে স্বাইকে দাড়ি কামিয়ে ঘরে চাজিরা লিতে বলেছিল। সবাই লাভি কামিরে মুখ দেখিয়ে গেছে। স্যালি হিণিনস ঠাটা করে বলেছিলেন ভেমাদের সবাইকে জামাট জামাই লাগছে হে! বেকার মতো হেসে স্বাই বের হয়ে এসেছিল-কি বে কলেন স্যার! আর সেই লোকটার মূখ এখন কি নিষ্ঠার। প্রায় নিয়তির মতে: দাঁড়িয়ে আছেন মাপদ্ম ওপর। মনেই হয় না মান্সটা জীবনে কারো সংগ্ কেনো বুসিকতা করেছে।

পাঁচ নম্বর ফের বলল—ভূমি কি বলে-ছিলে একবার বল।

এনজিন-কাশপ ডিড্রের ভেতর থেকে উঠে দাঁড়াল। সে চিংকার করে বলল— আমরা শূনতে চাই।

এবং পাশ্-পাশি আর হারা ছিল ছোট-বাব[ু] অবাক স্বাই ব**লছে আ**দরা শ্-নতে চাই।

সে এমন কাউকে দেখল নাহে বলতে পাৰে না শুনতে চাই না। সে সাংক্ষেসাৰকে খ**ু'জছে। নিচে সব মুখগুলো সে একে** একে চিনতে পরছে। ষ্ডই বনা হয়ে যাক যুত্ত ভারা অমানুর হয়ে হাক সে সবাইকে চিনতে পারছে। কেন্ট উ'চু হয়ে বসে আছে। কেউ পা ছড়িয়ে দিয়েছে। কেউ স্ব জারিয়ে পেলে মানুষের হে মুখ যে উদাসীনতা অথাং মৃত্যু চারপাশে হ'ত ভুলে ন,ভা করে বেড়ালে তখন হোমন লাগে মান্তকে-চুবুহ সেই সব ছবি। ১-ডা ৰাজ্য সমৃদ্ৰ থেকে উঠে আসছে। ৰাজমুস জলের ফোজা গধ্ধ। জলে কোনে: অভিকার মাজের ভেসে বেডানোর শব্দ। অথকা দ্বে রাশি রাশি সব পারলট ফিলের ক্রীক। লিচে জাতাজের ত্রাড়েলে সূব জোলাকির মজো জোলা কিসেরা সভার কাটছে। এবং সামেরা मास्त्रत श्रवण जाडुमाल खाडारक्षत त्यांण এथन তি কিবিজি আহিলের মা**ছ হেল এক**টা। এড নড় খেলের কোণাও আর বিলামার জারগা रमहे त्राचार्ति कौक सरहाह। जात्माक माह ভোট পশোলর মজো নিজের আশ্রর ইতি-মধ্যে পুড়ে ভলেছে এবং ক্লমে সময় পাহ হরে গোলে ছোটবাৰ্থ মনে হল থোলের ইল্পান্ড

অভিকাশ কৰ্মনান্তা একসময় ক্লাচর প্রাণী হয়ে বেভে পারে বে ক্লোনো সময়। চারুণাণে जाना रका रूमाञ्च प्रदा जम् एवं अमनदे मरन हुन ভার। এবং সলো সলো সে হাত ভূলে वनन-वामात कथन्त अही स्कृत द्व मत्न द्रश আছবা বেন এক অলৌকক জনবানে ভেনে লাভি। যেন নিয়তির মতো এই বন। আমরা নিজেরা জানি না কোথার ডাকে নিয়ে খাব অথচ কি আশ্চর্য দেখ্য ঠিক কোষাও হাবার জন্য আমরা প্রত্যেকে বের হরে शर्फाय-लाहे करद श्वारक, त्यम त्मारे, आव्हा, আপনারা কেউ বলতে পরেন সেই কবে থেকে আমরা হানে চড়ে বেল্ল ছরে পড়েছি---कि मत्न कराउ शारास्म मा, अहे त्मीमन লক্ষ কোট বছর আগে...।

—ও হো ছোটবাব ভূমি জন্য কথায় চলে হাবে না। ঠিক ঠিক বলে হাও। কল্ফটা এবৰ পাঁচ নশ্বর ছোটবাব্র মৃথের সামনে তলে ধরত।

স্যালি হিলিন্স ঠিক ছোটবাৰ্র পালে
দ্বিদ্ধে আছেন। লন্দা বেলিং। তার পালে
চিফ-মেট ডেবিড এবং বেডিও-অফিসার।
দেলজ্বানো ফানেলের পাঁ-ডিকে বনি তেমনি
ভাকিরে আছে ওপরে। নিচে নেমে ছোটবাব্
এবং বাবা ভাবপর এই সব জাহাজিরা
কিন্তারে পালপর মেকাকেলা করবে সে ব্রুত্ত
পারছে না। সে ভবিল উদ্বিশ্ন চোখে-মুখে
প্রভাগার আহে, ছোটবাব্ ঠিক সব সামলে
দিতে পারবে। কিন্তু কেমন জল গোলা করে
কলছে ফাইডার। ওরা পরস্পর করার
কলছে বতােও ছোটবাব্রেক জপদমণত করার
জলর বাবে বি চাপ দিকে।

আর ছেটেবাব্ তথন আবার জাহাজি-দের উদ্দেশ করে কি সব বলে যাজে-আখ্যা করছে ছেটেবাব্ ওলের বলে দিলেই সে কের এই সব ইংরেজ অফিসারদের বৃদ্ধিয়ে বলবে।

ছোটবাৰ যা বা বজ্ঞে সব হুবহু বললে—পাঁচ নদ্ৰথ হৈ ১৮ বালিয়ে দিল— ভবে! ভেৰিভ ব্যুগত পাৰত ?

ডেবিড বলল—না। কিছু ব্যক্তে পার্বাছ মা।

পাঁচ নদ্বরই ইংরেজিতে বলল—সার। সে স্যালি ছিগিনস্থক উল্লেশ্য করে বলছে।

দ্য বাল্টার্ড! স্যালি হিগিনস ক্ষেপ্তে গেলেন। এই ফাইডানের এড রেয়াব! সমর ব্রুবে কললা নিছে। আর ছোটকাব্র কথা দনে স্যালি হিগিনস একেবারে ধরণর কানে কানছেন উত্তেজনার। — কি কি কলছ! এটা অলোকিক জলবানা ক্রুবার কেটে কেই! জামানের বালা ক্রুবার ক্রেবার আর প্রিবার নান্দ্র বা! নান্দর স্থালিক স্থালিক ক্রেবার ক্রেবার ক্রেবার আর প্রিবার নান্দ্র বা! করেকে। আর্বার ক্রেবার ক্রে

Enter the second second

পাইছে দিতে চার। এটা ভুতুতে জাহাঞ लहोद बाबा विक त्नर्-विक मा। अहा खात मनागे साहारकत घरला साहास खात मनागे बाह्यादक्षत्र अटका अह कल्क्या मुन्ही आहारकत मरका को भावारनाः भारतारमा शब्ध এর শরীরে আছে। এর ইম্পান্ত আর দশটা काष्ट्राद्भित कारा नामाना जागाना। कमनात्र সামান্য গভগোল দেখা দিত মাঝে মাঝে। আস্লে জাহাজটা সম্পৰ্কে এড বেশি প্ৰচাৰ ছিল এত প্রোন্যে স্ব খবর জাহাজিদের ঘরে হরে পেণিছে গেছিল যে ভাতাতে উঠলেই সব সমন্ত্র একটা অস্বস্থিতক্তম পরিবেশে পড়ে ব্যেত ভয়ে। শুধ**ু গাুজৰ** গাুজৰ এ काइ संगोदिक क्षमा क्षमणे खरकनाच राहरण দিয়েছে। ছোটবাৰ, ভূমি কী! ভূমিও ছোট-বাবা শেষ প্রশিত...ভোমার ওপদ খাব বেশি নিভার করেছিলম হোঃ হাতের লোব ভাসটাত কেডে নিলে!

ছোট্বাব্ ছডোধিক চিংকার করে।
বলল-ক্যান্টেম স্থালি ছিগিনস আপানি
আমাকে ভূল ব্ৰবেন না। এবং ভারপর
কাণ্ডানের স্ব কথার বাংলা করে দিলে
এনজিন-কলপ, ডেক-সারেও স্বাই উন্মন্তের
মডো লাফাডে ধ কল-খানি না। এটা
কাণ্ডান বাড়িরে বলছে। র্যাদ আর নশটা
জাহাজের মডো হয় তবে আমাদের এভাবে
ভাটকে রেবে কি লাভ। তিনি কি জাহাজে
রেবে স্ব ইকে মেরে ফেলতে চনা। শয়ভানির
একটা সীমা ছাকা উচিত।

ছোট্বাব্ বলল — স্যার ওরা বলছে আর দুপটো জাহাজের মতেটে বলি হয় তবে স্বাইকে জাহাজে আনটকে রেখেছেন কেন? বোট দিচেত্ন না কেন?

স্যালি ছিণিন্স এবার ধীরে ধীরে বললেন—বল্পুণ বোটের চেরে জাছ'জে বেশি অংশনার নিরাপদ।

ছোটবাব্ বলল—বোটের চেরে জাহাজে আপনারা বেশি নিরাপর।

ভেৰিত বলজ-জিখ্যা কথা।

স্থান হিসিমস ভীষণ ধনকে উঠলেম—-ভোৰত !

ভেবিত বল্ল আদরা তাৰে সান্ধ এভাবে বাস বলে নিয়াতিৰ হাতে নাৰ খাব।

—কোনো উপান্ধ নৈই। গিলজা ভিগেনভ অস স্ব কেট।

নিচ থেকে স্রগোল উঠছে। --বাংলার বলুন। বুলতে পারছি না কি কাছেন!

হৈ উন্নি বললা তেখিত বিশ্বস্থ কাছে লা জাছাক বেউটা তেন্তে বেভি নিলাগদ জারণা।

স্থান্থরে স্বাই চিংকার ক্রছে, অন্ধ্রাও বিদ্যাস করছি না। আনক্ষ সন্ধূরে নেনে থেতে চাই। আনরা সন্ধূরে সংগা পড়তে চই। সন্ধের হাতে বসে বসে আর পর ধার বা।

স্যালি ছিলিমস ছোটবাব্র মুখেল দিকে ভাকিলে ভাছেম। কথম ছোটবাব্র প্রকৃত কথা সূত্র বুলে বলবে। ভাটেকাৰ বলল-লার করা তো টিকট বলছে। গুরা বলছে বলে বলে নির্মাতর হাতে মার থাবে না। গুরা বেটে নিরে ভেলে শক্তে চায়। গুরা শততে চার।

अर्गान ছিলিবস দাঁডিয়ে থাকলেন। তিনি শিকপিং গাউন পরে আছেন। জেনানী রা**ওর দিকালিং গাউন। জ্যোৎস্মার ত**ার श्राबद्धा वर बरबार्छ। माछि ना कामारनात सन्। বেশ ৰক্ত লাভি মাধার চুল স্নানা বলে ভারণ প্ৰাক্ত পাৰ্যৰ মনে হতে। তিনি এবাৰ সন্ধি সাঁত্য জাহাজ সময় এবং এই সৰ নক্ষ্য-গালা সম্পক্ষে এজন খবর দেবেল বে স্বাই তাৎকর বলে হলবে। হোন এক নি বলবেন সমাদ্রকে তোমরা কতটাুকু চেন! সিউল-ব্যাংককে ডোমরা কডট্রে জান! ডোমরা হখন আহার চেয়ে বেশি জান না তখন আহার ওপর নিভ'র করা ছাড়া উপায় কি! কিল্ড তিনি তার কিছাই বললেন না। শুধা বললেন—আপনাদের কি মনে হচ্ছে না জাতাজ কোথাও যাছে। আপনার কৈ শ্রুপতে পারছেন না জাহাজ এক জায়ক্য নেই। বোটের কমপাল থেকে আমি ব্রুতে পার্যাত্র জাতাজ তার কোস্ পালেট ফেলেছে। চেরেশর ওপর মান হয় জাহাজ স্থিন-এত বড সম্ভে এ ছাড়া কিছে, বোঝারও উপায় নেই। তব্য বলাছ জাহাজ আমাদের ওয়েপ্ট-নথ'-ওয়েন্টে উঠে যাছে। জাহাজ তার কোস পাকে ফেলেছে রখন আঘাদের জর নেই। জান্দা এবার সামনে অসংখ্যা স্বীপ পেরে হাব। পাঁচ সাতল মাইলের ভেতর এখনে থাকবে অসংখ্যা স্বীপ। বলা কার না ভিকিতেও গিরে অমরা উপান্দিত হতে পাঁর। ভাগা বাদ ভেমন স্তুসাম না থাকে ভিতিলেবুতে বেতে পারি আরও ওপরে ফানক্তি—বিদ জাহাজ চোরাপ্রোতে কোরাপা সিতে চুকে ধার চারপাশে থাকবে নিও-ক্যালেভোনা, নিউ হেব্রাইটস রতুম, সাম্তা-ক্যালভোনা, নিউ হেব্রাইটস রতুম, সাম্তা-ক্যালভোনা, বিউ কোনে এলিস। স্বোন্ধান ব্রাবার স্বাব্রার থাকবার এবং বরে ফিরে হাবার স্ব্রাব্রার

বংকু বলল ভখন---- আ ছোটবাব, সাহেব এত কি বলছে রে!

অনিমেষ বলগ—জ ছোটবাব্ নাকে শীস্য গা'জে দাও। নাইলে খামবে না।

বাধা পেরে স্থালি হিলিন্স থেমে ছোট-বাবার লিকে ভাকালেন। ছেটবাবা বলক— সারে আগনি বলে হান। ওদের কথায় কান দেবেন না।

মনে হল স্ব ব্যুতে পার্ছেন জিনি। এই জাহাজিরা তাকে এখন অপমান করতে চার। তিনি জানেন তার কাছে হেছেতু এক মূল আপেয়াস্তু আছে এবং তিনি বেছেতু

স্দ্য প্রকাশিত : অধ্যাপক স্থাংশ্রুমার গ্রেডর

বিশ্বসাহিত্যের সের। গল্প

নোবল-প্রেম্কার বিজয়ী প্রীল পিরান্দেলো, ইভান ব্নিন, কারেল চাপেক প্রম্থ ইউরোপ ও আরেরিকার প্রথাও কথা-শিপনীদের বিভিন্ন পরাদের বাছাই-করা গাপের সরস ও স্বজ্বদ আন্বাদ। ভঙ্কী শীকুলার বলেরাপাধার লিখিত ভূমিকা স্বালিও। গ্রন্থথানি সাব্যে লাভীয় জাধাপক ভঙ্কী শ্র্মীভিভূমার চটোপাধার বলেন—"লেখকের উদ্দেশ্য সাধ্য এবং কতকগ্লি প্রেম ক্রাধ্যাকির মুক্তাকারের সভিত্ত একট্ পরিচ্য ছটাইয়া দিবার যে প্রশাসনাম চেন্টা তিনি বাগালী পাঠকের জনা করিয়াছেন খোহা আমি সম্প্রার্থিক আনুমোদন করি। ভাষা আবা সাবলীল, করেবের, পডিখা যাইতে কেলাও শানে না, ভাবাহণে ক্রেমেও অস্বাদা হয় না। জন্মান্কর প্রশাস করি তারার ভবা সাবলীল, করেবের, পডিখা যাইতে কেলাও বাং না, ভাবাহণে ক্রেমেও অস্বাদা হয় না। জন্মান্কর প্রেমি ইহা একটি বড় কথা। আদা করি বিশ্বসাহিতেরে আধ্ননিক একটি ধারার সপ্রেম্ব ইহার বইখানি বাংগালী পঠকগনকে পরিভিত ছইতে সহোগ্য করিছে।"

পরিক্ষার মারণ, মনোরম প্রকাশ। প্রিরক্ষাক্ত উপচার দিবার মত বই । পাঠাগারের পক্ষে একাল্ড অপরিহার্ম । সাজা তেকি টাকা

क्कार्किक्ट नग्दीव

সোনার ভোমরা

সদ্য প্রকাশিত সর্বাধ্বনিক উপন্যাস দাম: সাত টাকা

সাহিত্যলোক

৩২/৭, বিভ্রুদ শুটি । কলিকাতা—ও

তে কোন জাতাজিকে টেনে এনে ব্লেট্রে সামনে পঞ্জি কলিছে নিতে পারেন তিনি বোধ ইয় সেজনা আলো বিচলিত হজেন না। তার গলা মাঝে মাঝে চড়ে গোলেও অধিকাংশ সুমর মাথা ঠাপ্টা রেখে কাজ করে বাজেন।

—আর ছোটবাব তুমিও শালা শেষ পর্যাকত দালাল হার গোলে। বংকু লাফিয়ে রোলছের নিচে এগিয়ে এল। —িক বলছে সাহেব। ছোটবাব ফের সকটা বুলিয়ে কুসলে—এবার আর কেউ হেব হতুমন্ চিংকার চে'চার্মেচ করে উঠল না।

গুদের মৃখ দেখে স্যালি ছিগিনস কিছুট স্বাস্ত বোধ করছেন। তিনি কের গুদের জুল ধারণা মন খেকে মৃছে ফেলার জন্য কালেন—এস্ব স্বীপস্কা আমরা গাঁচ সাত্র মাইলের স্থেতর পেরে ব্যব আশা কর্মীট

তেবিশু তথন আর থৈব ধরতে পারল রা। সে চিংকার করতে করতে নেমে হাছে। সর তথিতা। আপনারা এর বিশ্ব-বিস্কৃতি বিশ্বাস করবেন না। চাছাই ইশ্বরের আপনারা ফাঁদে পা দেবেন না। তিনি মুখে হাই বলাল মনে কাহাজের আলোককছে বিশ্বাসী। তার বিশ্বাস জাহাজে তিক আমাদের পোণাছে দেবে। ও'র মনগড়া কথা। জাহাজে তে: আর পাবা গজারানি।

ছোট্রবাব" এখন কাকে কি বলবে বা্কতে পারছে না।

ডেবিড তখনও তারস্বরে চিংকার করছে। - এখনও আপনাদের সময় অত্ত। এই ছোটবাব ু তুমি ওকের বোঝাও। বাুড়ের হথোয় ওরা তো সব বুঝে ফেলেছে। দ্যাখো স্বাই মাথা ন<u>ুখে।</u> চলে **ধাচছ মতো।** এই এনজিন-কৃশপ কোথায় যাচছ! জাহাজের খাবার ফ**ুরিয়ো গেলে কি কর**বে। ফুরিয়ে গেলে! চিফ-মেট আপনি একটা কথাও বজবেন না জোহাজ এক ইণ্ডি নডছে মা এটাও বলবেন না। এবং এ-সময় যা চোখের **द**श ওপর 41.45 শত ব গাছপালা नही গ্রেব এবং গ্রিয়ক্তনেরা থেত। আর সেই সা, শেল মিছিলের মতো স্বরে সরে য়ায়া ' তথ্যই সে মরিয়া হয়ে বলগ—আমি থাকব মা এ জাহাজে থাকৰ না। সমূদ্র আনেক নিরাপদ কায়গা। জাহাজের অশুভ প্রভাবে থাকলে আৰম্ভ কেউ বাঁচৰ না। বলতে বলতে সে একেবারে বোটের নিচে হামাগুড়ি দিরে
সাজ্য সমৃত্য লাফিগ্র পড়তে যাছে। এবং
তথ্ন হে বার মাতা ছুটছে। ডেবিডকে
ধরার জনা। ছোটবাব্ তথন রিরক্ত মাধে
হেম না বলে পারল না স্থার কেন এদের
আটকে মাধছেন। এদের বেটে নিরে দিন।
বারা নেমে যেতে চার নেমে থাক।

স্যালি হিগিনস প্রায় গৈছিরতের সুরে বঙ্গলেন—ছোটবাব্ জাছাজ ডেসে থাকলে আমাদের চলে বাবার নির্ম নেই। জাছাজ ডুবে বেতে থাকলে উই কান এবান্ডান দা সিশা। কিন্তু সে তো আমাদের জলে ভাসিরে সম্পুল্র অভলে ছবে বাছে না। এর জন্য ভার প্রতি ভোমাদের একতক্ত্ব কৃতজ্ঞতা নেই।

ছোটব ব্ কেনা কোনা বনে গেল। কী আপত্রিক কথাবাতা ভরি। থার্ড-মেট বলস—স্যার দেশলাই অছে? লম্ভটা নিজে গেছে আবার। ডেবিডের পা কেট গেছে ছুটতে গিরে। বেনজিন লাগাতে হবে।

স্যালি হিগিনস পকেট বেকে নেশলাই বের করে লম্ফটা জনালালেন। অলপ অলপ বইছে। থার্ড-মেট হাতে হাওয়া হাওয়া वाँहित्स काटनातकस्म नित्ह स्नस्म रशनः। তুলো এনে এখন টুইন ডেকে বেনজিন জেরজার করে অষ্ধ লাগাচেছ। লাফিয়ে ছিরে রেখেছে কজন কাহাজি। সম্প্রে পড়ে গেলে কেলেৎকারি। মাস্তুলে লোড-এালবাট্রস বসতে পারছে না। সেখানে এখন আগান জনলছে। কাছাকাছি কোথাও সে সমান্তে ভেসে রয়েছে। ছোটবাবা নিরুপায় হয়ে এখন কেবল (ड्राइड**्र**) পাথিটাকে যেন খ',জছে। ফানেশের প্রাভতে বনি তেমনি শ্নাচোখে তাকিয়ে আছে ওপরে। সে ব্রুকতে পারছে না কারা ঠিক। সে বাবার পক্ষে না বিপক্ষে তাও ব্রুত পারছে না বোধহয়।

ডেনিড তথ্য খেড়িতে খেড়িতে আবার উঠে আসছে। সে সনার শেছনে দাঁড়িয়ে আছে। একটা মশাল সে নিজের মাুখের ওপর ধরে রেথেছে। এবং মশালের আলো তে ওর চোখ-মাুখ জ্লোছিল। সৈ ভারপর নিশাঁথৈ সবার মাুখের ওপর দিয়ে সেই মশালের আলো ভাসিয়ে নিয়ে গেল। এবং নাটকীয় পাল্ল-পাত্রীর মতো সে ভাবেল উঠছে।

সে কানে কীবনে দে আৰু কাহাজে কাঞ পাবে না যদি কোনো কারণে স্বাই ব্ৰহ্ম শেষে হায় সে জ্ঞানে তার স্ব রেকর্ড বিশ্বসংতার সব ইতিহাস নাছে যবে।--এমন কি শৃঙ্খলাভলোর দায়ে কারাগারে বঃদী জীবনহাপনও করতে হতে পরে। তব্ সে এবির মুখ সম্ভানের কথা ভেবে কেমন মশাল তলে নিচ্ছে ওপরে। বলছে আপনাবা ওট ল্কেনারের ডামিটাকে শুখ্ একটা প্রখন কর্ন। মার একটা প্রখন। তিনি ঈশ্বরের নামে শপথ করে বলবেন— সামোরা বন্দরে তিনি কেন অস্ক্রেথ হয়ে পড়েছিলেন। ছোটবাব, তুমি এদের ব্বিয়ে বল। বলে সে খৌড়াতে খৌড়াতে সব জাহাজিদের भारत श्रामक श्रामक श्रामक श्रामक । क्रिकेवर বলল-ডেবিড আজ না হয় থাক। ব্ৰুডেই পারছ আমরা কেউ ঠিক নেই। দ্র-একদিনে এমন কিছু হবে না আমাদের। আমাকে তোমরা সময় দাও ব্বিয়ে-স্ভিয়ে হদি মত বদুলাতে পারি। সে কিছুতেই বলল না চাবিকাঠি ভার হাতে। সে বনিকে দিয়ে কাজটা উন্ধার করতে পারে বলাল না।

ডেবিডের কথায় আবার ফেন স্বাই সাহস ফারে পেয়েছে। ওনা আবার আগের মতো গেল হয়ে দাঁড়াল। স্যালি হিগিনস এক পা নড়ছেন না। ঠিক আগের ম্থির। গীর্জার কোনো ফাদার সি^{র্}ডিতে বে-ভাবে মান্ত্রের শুভ কামনায় দাঁড়িয়ে থাকেন তেমনি তিনি দাঁড়িয়ে ঈশ্বরের নামে শপৰ গ্ৰহণ করবেন যেন এবার। তিনি সতি। সাজ্য বলতে আরম্ভ করলেন—ডেবিড আপনি হা ভেবেছেন তাই। আপনি স্বতী জোরগলায় প্রচার করতে পারেন—আমার কোনো দুঃখ নেই ্লার। আমি স্ব মেনে নেব। এবং এই 🤭 ा সন্দেবাধনে ডেবিড কেমন যেন অ**স**ুর ভেতর পড়ে গেগ। একজন কাশ্তাদের এ-ভাবে পরাজয় তাকে বোধহয় ক্ষতবিক্ষত করছিল। সে সহসা নতকান ুহয়ে গেল, স্যার আমাকে ক্ষম ুর্ন। বলে সে দ্রে স্মুদ্রের ভেতর তার মশালটা নিক্ষেপ করে অন্ধকরে নিচে নেমে গেল। সবাই হাঁ। বোট-ডেকে কতগ*ুলো* ছায় মার। তাদের জ্যের একদম হারিয়ে, ্গছে। ওপরে মাথা নিচু করে রেখেছেন স্যালি হিলিন্স। পাশে ছোটবাবা থড-মেট চিফ্ল-মেট এবং এইমার ভিন্ন নাবর মিস্তি গুপরে উঠে কেমন একটা স্তম্পতার ভেতর পড়ে গিয়ে আর সি'ড়ি ভাঙতে পারল না। স্বাই বেন ফ্রীজ হরে গেছে মহেতে।

এনজিন-কশপ সেই শত্ত্তত্ত্ত্তাকারী। সে বলল, ছেটবাব্ ভিনি ভেন ব্যামোতে পড়েছিলেন আমি বলতে পারি।

ह्याद्वेतावु এक्दो कथा वनन ना।

এনজিন-কশপ একর চার্শাংশর জাহাত্তি-দের কাছে গলা উ'চয়ে বলতে থাকল—তার গুলার রুগ ফুলে ব'ছে, সে হাতে একটা মশাল জর্মালিরে নিয়েছে। না নিলে দে যেন জোর পাজে না। স্বার স্বামনে বশাস ভূলে



হলক্ষে ভালা অহল হোন বলছে তালাৰ কৰ্ম ভালাৰ ক্ষা হাৰ তালাৰ ক্ষা ভালাৰ হাৰ তালাৰ তালাৰ তালাৰ ক্ষা হাৰ ক্ষা হাৰ তালাৰ ক্ষা হাৰ তালাৰ ক্ষা হাৰ তালাৰ ক্ষা হাৰ তালাৰ ক্ম হাৰ তালাৰ ক্ষা হাৰ তালাৰ ক্ষা হাৰ তালাৰ ক্ষা হাৰ তালাৰ ক্ষা হাৰ ক্ষা হাৰ তালাৰ ক্ষা হাৰ তালাৰ ক্ষা হাৰ তালাৰ ক্ষা হাৰ তালাৰ ক্ম

ফাইভার দেখছে বিকল্পতা লোকটো বন্ধক পারছে না গাছিরে। সে মুলালটা এবার হ'ত থেকে কেছে মিরে বারে দক্ষিতা। বন্ধা, ভূমি থানো মিঞা। বস্পেই সে জুকাল বপরে। ভারপর বলল, স্থিত কেল সাম্ম কৈর দুর্ঘটনাল্প যারা পেছেন; কিক?

आर्थित किर्वित्तान्त्र सुमाजाना-किन ।

জাহাজ দ্যাল করার দ্লিলপরে স্ট্ করার নিবিত গাড়িতে স্থনা হ্রেছিলেন?

-BORTECHT !

—বঙ্কুশতে তিনি রাজ্ঞার ছারা গেলেন।

স্থালি হিগিনস মাথা নুরে এস্ উল্লেখ্য বুলোঃ

—ভারপর রিচান্ত-ফেলের পালা।

হা তিনিও কহাজটা বিদ্ধি করে দিকত চেহেছিলেন।

পাঁচ নন্দর হেন মশালের জনলেন্তে সরাইকে একসংগ্রু দেখতে চার । সে নলল দের পর্যাকত পারেন নি। একমার নার লক্ষ্ শ্রু, একমার উত্তরাধিকার তার মরে কেল। দুর্ঘটিলার মরা গেল। রিচার্জ-ফেল গাড়ি করে যাজ্জেন। হল্ডাল্ডরের জন্য কর্গজ্পত সব রেডি। যাবার শক্রে ছার নিছা ছটল। গাড়িতে পুত্রব মতেনেই জ্যাবিশ্লার করলেন্দ্র-চিক?

ছোটবাবু এমন একটা ছল্পছ গটনা যেন এই প্রথম শানুনছে। আর জ্যোক্তনার সম্মুদ্র জাহাজ আকাশের সব নক্তামালা এবং চক্তেশাশের লব জানুষ ক্রেমন অকাশা আচেনা হরে য'ছে। ভীতিকর সব কথাবার্তা। জাহজটা যেন ফ'ুনছে নির্মতন্ত নিজের ভেজর। জাহাজটাকে আর নিজ্বত্তই দ্বাটা ছালের লভোজটাকে আর নিজ্বত্তই দ্বাটা ছালের ক্রেমনার মনে হজ্তে না। হিক্সিলাকে জোগেলার স্ক্রিলার সোলার চিনাকে পারছে, ফানেলের গা্লিডে দাঁজির অলক্ত্র তেমনিভালে। সে খ্র অসহার গলার চিক্রার করে ভাকলা, জ্যাক প্রশাল এল।

পঠি কৰের সেই সব কথাবার্তা একবার
ইংহেছিকত একবার বংগারে প্রার ধর্মপ্রকা
স্থানীর মতো বলে ম ছিলা। সে এবার খুর
স্থানী বলার বলা, ফোনে কথা বলতে
কর্মান পড়ে স্থানন। পঠি ক্রম্বর
প্রায় একজন উক্লিকর ছতো ক্রেমা করে
যাক্ষে। আরু বিক্লাকের ব্যাপার ছেন্টবাব্
স্থাকে ব উগোড়ার দক্ষিত্রে প্রার আসাক্ষীর
মধ্যে ছিলি প্রীবার্কেন্ডি করে থাকেন।

বোমছুর শীচ নশ্বর এক্ষানি ছারে হারে বলরে হিল্লার ইক ছা শরেল্ট।

ন্যতি ছিণিনস নগলেন, কাইবার শবহুটা আনার ভাল জিল না।

নিয় না। ঠিক কথা বলছেন লা।
ঠিক কথা বলুন। আনলা মহুনা খুকো
বলুন। এমন দিগালত-বাাণী সাদা জ্বোহনা
যখন, আমানা শথন সনাই সন্ধারের
বিজ্ঞীবিকার পাড়ে গোছি এনং য়ে কেনো
ন্তুকো জাহাজ নমানের আতালা ভাবনা
পালে, আললা আলা করব অধ্যালা। ভাবনা
আলাকর করেছ কেনো রহজা আর
গোলনা ক্রাব্যা

স্থালি ছিলিন্স ছাত্র শার্মেন না গুণু ছাতে রামার চুল ছেন্ডুল মত্তা ভিষ্ণার ফোট পঞ্চলেন রাইভার ভিন্ন, ভিন্ন অবাদ্রে কার উল্লেখ করনে কা

আর বার কোষার। এখন প্রাক্তরের মুধ্ধ পাঁচ নকার অধিক জিলার বালে উঠক, আপনি এত স্ব জেনে কেন কাগতেনতে সুই করকোন জবাব দিন! কেন আপনি এতকাবুলো মান্বেরের জানিক নিয়ে ছিলিমিনি খেলেছেন জবাব দিন! আপনি মধন জানতেন, জাহাজে ক্যাপেটন জাবনারের অনুভ প্রভাব আছে তখন কেন একবার ভার্তকার না, আপনার সই করার বিনিমার সর জাহাজিদের ক্ষাপনার বিশার সুত্র করার বিনিমার

শাুর্য রিজেন কথা আর শ্রীমনে জ্যাকের কথা ভারতোর : আলেকের কথা আপনার একবারও রনে জুল না আপনি স্বার্থপর, আপনি আপনি

হোটুবাৰ, বলল, ফাইডার আপনি গী সৰ কন্মান

পতি মুদ্দার এবার আগও জোর প্রান্থ **जिल्ला**य शक्ती जन्मान त्वम त्म साम नम्द्रद्वत विकार का का का का का का विकास সংক্রম পেশারে ছিলে চার। ভারণার প্রায় माहेकीश शनास हम च्या डेडन, ন্তৰ-গ্ৰা আন্তল্পা ব্যাত পাৰ্ছ 新年福 松 कार्न्द्रेश्वत शरणाक्त स्तामात्वव मिनिका माक्सक जिल्ला देवेदला निगरका। रक्तकमामीब कर्जनराष्ट्रिया खोटक भेरिकामकराशांत अस्त्रम करत विद्याद्य विनियास । क्यान्त वीष हीन **्डे सामान, काश्चारक कडामराम अपूर्णाय** एक बदद निहमत स्थित कश्या कारक भ रज्ञम क्षारकड कीव्यक कक्ष अक्षा कावरमान मा-अवरहत्व सामाक मार्ग क्री यु.एम यस्त्र राहात कि अध्य श्राटकाम विका বলেই কোণ র সেন কথাবাত য়ে পাঞ্চিকতি रशरक शारका-किक किन नवाई रखन श्रमाम कुरम अपूर्ति स्वाभाव मा सभावकात्र আল্লানে কাশ্ডানকে শাড়িয়ে মানছে না---কিয়াবে জার এইস্ব ঘটনা জোর গলাল বলা হেতে পারে—সে হরিয়া হুতয়া ফেস

देशनकानम् त्रामा सःश्रह

অবিলন্দের ১০ টাকা স্কামা দিয়ে আপনার নাম গ্রাহক তালিকাভুত্ত কর্বন। গ্রাহকরা ২৫% কমিশন পাবেল।

> বীরেন্দ্রনাথ সরকারের নতুন দ্রমণ উপন্যাস

গোরী গঙ্গা ১

শীর্ষেন্দর মর্থোপাধ্যায়ের নতুন উপ্ন্যাস

ঘরের পথ ৬ে স্বেশ্র আড়াল ৫॥

আশাপ্ণা দেবীর নতুন উপন্যাস

ভালবাসার মুখ ৫, তরসহীন ৫

्रिक्सीन स्मन

त्राभिगान बर्जीबत तरुमा भ्

वाहिका-मध्या, ३४ जि त्येवात त्मन, क्रीन-३

কাল, এখন কি দেখতে পাছি ? চারিদকে

কুল সমুদ্র। পুখ জল। আমনা
কুলতে পারছি না কোখার আছি । চারপন সে

কি কেনে বলল দেখান দেখান জাহাজটাকে
কোখান ভাল করে দেখান। এর মাদতুল
আফর কিপিক ফারোয়াড পিক ফারেল উইন্ডকোল হাল উইন্চ সব কেমন খেন কতাদন
পর হাপ ছেড়ে বেচছে । গেল্ট রেন্ট, রেন্ট।
মিছ্পিক্ম জীবন। ভাবনা নেই অমর। কেউ
ভাকে আরু নকে দড়ি সিম্মে টেনে নিরে
ব্রেনা লে মান্ত। সি ইঞ্চ ফুন ও।

ছে।ট্রাব্ দেখতে স্ব মানুখা লৈ চাল দেখতে আন মানুখা লৈ কালে।
লেল লোল চোখে সালি ছিলিনসকে দেখতে লালে লোকে পদ্ধ না সে ভয় পেরে ভাকল, স্থার আপনি কিছু বলুন।
দেহাই। দেখতেন না এরা কি হয়ে যাকে।
স্থার এ-ভাবে মাখা নারে দাঁড়িরে থাকার এখন সময় নর। আমারা স্বাই এখন ব্রুডিছ পার্ভেন গাঁচ নদ্ধরের হাতে পড়ে

পাঁচ নশ্বর এবার সিণ্ড ধরে ওপরে উঠে আলভে। আত চিংকার করছে। বেহেত্ সে পর্যোচন কলো প্যান্ট এবং খয়েরী बर्द्धात रंगीक स्कार्यमाह अव क स्का प्रयास्थ শুর পোশ্যকে কেউ খেন অনুন ধরিয়ে দিয়োছে এমনভাবে হটি-মাট করছিল---অর্থাৎ সয়ে-জীতিতে বেন সে ভেগেগ পড়াছে ৷ ত্রে চিংকার করে কি বলছে: স্ব देशकः शर्रकः सः। किन्दुः । ताकः शरकः। লেই কিছুটাই প্রায় স্বার হাংকশে এবে দিয়েছে। সে বলছে আমরা মরে কঠে। হয়ে প্রভাব-- কার্রেটন্ ব্যব । সেই অণ্ড অ মাদের পাশেই **न**ुटकमाञ्च এ-জভাজে বছাল তবিয়াতে সে ধুরে ছড়াছে। জাহাজের কলকজা স্ব উপড়ে 庵লেছে। একেবারে নিজের মতো চিরক লের ্রস্কটা আশুর বানিয়ে ফেলেছে। এত*ি*দ্ন লাকেনার সেই ফিকিরেই ছিল।

ছোটবাব্ বলপ, সার নোহাই আপনার লশকরের। সব, স্বাই পাঁচ এনবরের ম্থের লিকে তাজিলে আছে। ক্ষিত্ন বলনে, আপনাকে সার ওরা প্রিয়ের মেলে ফেলবে! আপন্নি বল্ন, একটাও সাত্য কথা নর! স্বাহিত্যা কথা বলছে ফাইভার! সব

পাঁচ নন্দর তখনও তেমনি চিংকার করছে,
একজন বিজ্ঞাপনদাতার মতে: মূখ পাঁচ
নালবের: প্রকাশ ছড়াবার গক্ষে হা বা
দরকার স্বা সে এবার বিজ্ঞাপনে হাজিব
করছে: সে এবার প্রার লাক্ষ্যতে বাকল,
করছে: সে এবার প্রার লাক্ষ্যতে বাকল,
কেন সাল্যা প্রবিদ্ধান আগুন ওর মাধার উঠে

পচ্ছেছে। সে বলল, এবারে থিও ফেন নর। বিচার্ড ফেলের শতে নর—এবারে বন্ধ্বপুৰ আমাদের পালা। আপনার তৈরি হোন। মহামানা কাণেটন এবার আমাদের ক্রকনারের হাতে তবে দিলেন। অজ্ঞানা সমুদ্রে চুকে গেছি। সমুদ্রে শুধু ভৌতিক আংনকান্ড দেখতে পাব না। এবন ক্কেনার অ মাদের আরুও সব ভয়াবহ ন সংশ্তার ভেতর নিয়ে যাবে। সোজা কথার জাহাজটাতে আমরা স্বাই লাকেনারের মতো মরে ভ্র হরে হাব। লুফেনারের মতো জাহাজটাও এতদিন সেই ফিকিরে ছিল। এওদিন পর সে আম দের বালে পেয়েছে। আর তথ্নই দুরে কক কক করে ডাকছিল। পাথিটা। সে ক্ষেত্র এবার ফিসফিস গলায় বলতে থাকল শুনতে পাছেন? ডকছে! কেউ ভাকছে! মনে হচ্ছে কেন্ট হাসছে, কেউ হালকে ! দা সি-ছেভিল হাসছে। আমনা কেট বাঁচৰ ন। আতংক পাঁচ নন্বর বলতে বলতে হাট্র মুড়ে বসে গড়ল।

সম্পুদ্রে ভয়ংকর শতব্দতা কি যে কঠিন শীতল হাহাকারে ভূগছে। কেট একটা জ্ঞান কথা বলতে প্রছে না।

ছেটেবান্ তথন প্রায় পাগলের মতো দু' হাত নড়ভে থাকলে স্যালি হিগিনসকে
—জ্যাক নিচে তুমি কি ককছ ব ওপরে এস দেখ তিনি কী হয়ে যাচ্ছেন! সে নির্পায় হয়ে বলল চিফ-দেট আপনি কিছু ককছেন না—স্যার স্যার! একবার আপনি প্রতিবাদ কর্ম। তা না হলে সবাই ভয় পেয়ে যাবে। ঘারড়ে যাবে। আম্বা আর আপনার ওপর বিশ্ব স্বাথতে পারব না।

স্যালি হিগিনস শুধু বললেন, ছোটবাব্ ওতে। ঠিকই বলেছে। ফাইভার তো ব্দিরে কিছু বলে নি!

—সার আপনি কী বলছেন: এ-স্ব আকগুৰী কথা সার আপনি বিশ্বাস করেন! এতাদনের বিশ্বসত জাহাজ! ফাইডের অযুথা দুর্নাম দিক্ষে, আর আপনি স্বার সামনে স্বীক্র করছেন! আমাদের সেব বিশ্বাস-টাকু এ-জ্ঞাবে নভট করে দিক্ষেন!

স্যালি হিলিনস বিশ্বসত কথটা বার নার উদ্ধারণ করতে লাগলেন। সিউল-ব্যাংক ভাবি ভাব অনুশত ছিল। এখনও আছে। জাই জাটার জন্ম তার সবস্ব বাজি রেখে জেবেছিলেন, তিনি স্যালি হিলিনস। পাঁচ মন্বর কত সহজে সব কেড়ে নিজে। তিনি ছাহাজটাকে অযুখা স্কুলবের হাতে ছেড়ে দিতে পারেন না। মনের দ্বলিতা প্রপ্রা বাজে ভেবে সোজা হতে চাইলেন। তিনি সোজা হয়ে দেখলেন চারপাশে কি নিদার্ণ জ্যোৎসনা, কি নীল আকাশ আর অক্টেক দরে যেন সেই মহাপ্রাণ-কক্ কক্ জাই ডাকেছে। তিনি সহস্ সক্রয় কর্জেন-কল্ আক্সহ্ ডাকেছে। তিনি সহস্ সক্রয় কর্জেন-কল্ আপ্সা মি ইন দ্যা ডে অফ্রে ট্রাক্স, আই

উইল ভেলিভাক্স দি এগ্লন্ড দাউ শালেট শেলাক্সিমট মি। তিনি এবাই দ্রুভ শেষে গোলেন। আর বলতে থাকলেন জাহাজটার প্রতি ভালনাজা কে বিশ্বস্ত বলান। হ্ ইজ ফোগ্লুল ট্লাকিপ। স্বাই আপনাবা মুসভারে দড়িন।

এবং ওপরে কেউ আর থাকল না। স্বাই বে বার মতো বোট-ডেকে মাস্তর দিলে তিন বলকেন—ইউ? ইউ? তাঁর আলখালার মতো লালা কোনা দলাপিং গাউন পাটাতমে লোটালে:। তাঁর কপাল ভাষণ ঘামছে। মনে শংকা তাঁর। প্রতেকের মুখের সামনে মশাল তুলে বলছেন—ইউ? নান! কেউ তাঁর স্বাপক্ষে নাই। তিনি কেমন ডেগেগ পড়ছেন! তথন ছে টনাব্র মুখ্ মশালের আলোতে প্রায় উদভাসিত—তিনি বলকেন, তুমি ছেটবাব্

ছোটবাব**ু বলল** মি ফে**থফ**ুল টু দ্য শিপ যাব।

আরে, আরে কে তিনি হোন ফের সাহস ফিরে পাছেন। জনক তুমি?

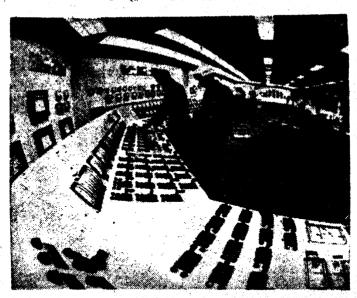
জ্যাক ঃ তুলে দিল। যেন বলতে চাইল ইরেস স্পথ্য ল ট্লা দিলে, ট্লা দিলে, ট্লা ছাটবাব্বে পাঞ্চতে চাইল। সব মিলে যেন ছোটবাব্ব বাংর পালে দাঁড়াবার মতো বলার্থ মান্ব। এবং একাবে সে আর বিক্ষুমান ভয় পাজে না জাহাকে থাকতে। বাবা ছোটবাব্বে, তার আর কিছু লাকে না।

তিনি তখন মশালের জালেতে বলে বলে যাচ্ছেন, আর আব কে? এনি মোর? এক হাতে গাউন সমলাচ্ছেন অনা হাতে মশাল ডুলে বাছেন—ইউ? নে ফেখ্! নো!...দেম... ইউ...ইউ?

—মি সাব ফেথফাল! এনজিন-সারেঙ হাত তুলে দিলেন।

আর কেট না। তিনি এবর ফিরে হেতে থাকলেন। আর কেন্ট জাহাজটার প্রতি বিশ্বস্ত নয়। তারা সহজেই তাকে পর্যুদ্ধর মারতে পারে। ভয়ে মুখটা ফ্যাকাণে ছরে গেলে তিনি সি'ড়িতে দ্রুত উঠে গেলেন। বেন ওরা ছুটে আসছে পেছনে। ওপক ধরবার জন্য হ∏হ। করে ছৢটে জাসছে। ওপরে উঠে পেছনে ভাকালেন। তিনি কিছুই দেখতে পাচ্ছেন না। কেউ নেই। তিনি একা। একা দাঁড়িয়ে আছেন। জ হাক্তে একটা কাক-শক্ষী নেই। অস্তহ্নীন সমৃদ্র আর আকাশ। জাহারটা সতির কাটছে সমৃদে। তিনি এবার ভীষণ অহ-কারী গলায় কলে উঠলেক আপনাদের ছ্টি। ক'ল স্কালে আপনারু সেল করবেন। ইশ্বরের আপ্নাদের সহায় ছোন।

(क्रमणः)



বিজ্ঞানের কথা

* বিশ্ব জনসংখ্যা বংসর

* পরমাণ্ন শক্তির শান্তিপ্রণ ব্যবহার

विश्व क्रनगरकाः, वरमञ्

লাভিসন্দ সংগঠনের পক্ষ থেকে
১৯৭৪ সালটিকে বিশ্ব জনসংখ্যা বংসর'
হিসেবে ঘোষণা করা হরেছে। এতলুপালকে
একটি বিশ্ব জনসংখ্যা সম্মোলন অনুটেউত
হতে ওলোহে রুমানিরার রাজধানী
ব্যারাফ আলাটী অগস্য মাসে।
সম্মোনার বিভিন্ন দেশের জনসংখ্যাগত
স্থাসন্ নিজে আলোটনা হবে এবং স্থাসার
স্থাধানের উপরে অনুস্থান করা হবে।

প**াচটি উ**পেশ্য নিয়ে এই সন্মোলন অনুস্থিত হ**তেঃ**

- ১। জনসংখ্যার কোক নিধারণের জন্য ভখা-বংগ্রহের ব্যবস্থা জনত ক্রা.
- ২০ জনসংখ্যালত সমস্যার ম্যোকাবিলা করার জন্বি প্রান্তেন সম্পর্কে সভেষ্ট্য স্থিত করা
- ভলসংখার বৃশ্বি গ্রেধের পর্যাত সক্রকে গণ-গিক্ষার একটি প্রান্তার উল্ভাবন করা.
- ৪। জনশংখার বিস্কোনণ এবং উল্লেখ্যাক ক্যুসচৌর ক্ষেত্রে

তার বির্প ফল সংশ্রুক আলোচনার উৎসাহিত করা, এবং ৫। জনসংখাগত সমীক্ষা ও গবেষণার ক্ষেত্রে আন্তর্জাতিক সমঝোতা ও সহযোগিতা বাড়িয়ে তোলা এবং উল্লেখনিল দেশস্থিত ক্ষারগরী শহারতা দানের ব্যবস্থা ক্যা।

জাতিসব্দের পক্ষ থেকে পরের একটি বছরকে জনসংখ্যান্ত্রিধর সংগ্রে যাত্র নতা থেকে বোঝা বাজে বিষয়টি কতখানি গ্রুভর। বিজ্ঞানীরা মনে করেন, প্রিথবীর জনসংখ্যা এত দুত হারে বৃশ্বি পেয়ে চলেছে এবং নিশেষ বিশেষ এলাকায় ভার এমন নাটকীয় সমাবেশ ঘটছে যে বভামান শতাব্দীর বাকি সময়ে এবং ভারপরেও এইটিই হয়ে থাকৰে প্ৰিয়ীর মানুহের সামনে একটি স্বন্ধয়ে বড়ো সমস্যা প্থিবীর জনসংখ্যা সাড়ে-ডিন্দো কোটিতে পেণ্ডিতে স্থায় কোগেছে দল লাভান বছরেরও বেশি কিন্তু এই জনসংখ্যার সংল্য আলো সাড়ে-ডিনশো কোটি সাম হতে সময় পাণালে আর মাল কেরিশানি বছর। ভূবে সম্ভবত জাগামী কাণ্ক^{টি} मन्दि छन्मर्था। वृष्टिश्च द्वाद शाक्षणे कशास পেরিবার পরিকশ্পার কলাপে। বিশ্বর জনসংস্থার বিশেবর জনসংস্থার বিশেবর জনসংস্থার বিশেবর জনসংস্থার বিশ্বর জনসংস্থার বিশ্বর প্রশাসিক বিশ্বর কারে বিশ্বর প্রশাস্থার কারে ৮৪ থেকে ৮১ শতাংশ মান্ত্র এবং ইউনোপের ও উত্তর ক্রিরার্কার অংশকাকৃত শ্বক্রল দেশাশ্লাগতে ১৬ বেকে ১১ শতাংশ।

ভারতে জনসংখ্যা বৃদ্ধির সমস্যাটি
বলা হরে থাকে আত্তবজনক। মাত কৃতি
বছরের মধ্যে ভারতের জনসংখ্যা "৬-১
কোটি থেকে বৃদ্ধি পেয়ে হরেছে ৫5-৬
কোটি। হিসের করলে দেখা বারা, বৃদ্ধির
এই হার বজার থাকলে আগায়ী কল বছরের মধ্যে জনসংখ্যা হয়ে দাভাবে ৮০
কোটি। এই বিশ্লসংখ্যক লাকুবের জন্য খানা ও বছর বোগান দেওরাটাই একল মান ও বছর বোগান দেওরাটাই একল মান ও বছর বাগান দেওরাটাই একল প্রিবারের ব্যাখ্যা ও স্থ জাতির বৈর্মিক সম্পাধি ও সাম্যাজক অভ্যতি আন্ত-কাতিক নিরাপত্যা ও সাক্ষি

একেবারে মতে কথাটি এই ই প্রাকৃতিক সম্পান বৈ পরিমাণে পাওয়া বাক্তে ভার সংপা প্রতিটি মানুহের সক্রিক্তা প্রক্রা জনের অনুপাত সংগতিপাণ কিয়া। জনা ভাষার, জামর উর্বরতা ও মানুহের সাক্রমধ্যতি তীব্রিকার সাধ্য সমতা থাকছে কিনা, বলা বৃহ্নী এই সমতা না আশা

कार महारा राज्यकी बनगरमहा गीकार महरून । व अक्षेत्र क्षेत्र शास्त्र गाप्त मा।



প্রাণ্ড জাতীয় সম্পদ বান্ধির সকল প্রয়াস ব্যথভায় প্যাবসিত হতে বাধ্য।

া বিশেষ করে যে-সব দেশের জনসংখ্যা अमीमारहरू व्यक्तांधक-यथा जावक वारमा-रमण हीन हेळाडि--रमशास क्रमप्रधा यान्धित উक्त हात गाताकत मधाला श्रा रश्या দিতে পারে, উল্লেখিত দেখাগালিকে জন-**जरभा** राभित होत अक्ट समिक स माभागपाएव बना इत्स्र भागः, दहे तमा-गामिएक 'स्नामश्थातः विस्मकत्त्रना प्रवेदहः। উল্লেখিক বিশেষারণ সভেও চীনদেশ থেকে ध्यक्षमा भवम्म भागाकात्वत कथा (गाना वासीस आधारमत रमामा-वातिसश्थानीशप THE WHITE PA য়তে--খালাভাল £ West **अवेषिक**ेबा किनाम (अश्रीष मुक्ते; दल्डेस्टर ব্যবস্থা পাৰলে তার পাওয়া বেছে কিনা अक्टब्रू), बार्शात्मान अम्बन्ध टाई, इटन अक्षाहराहमा न्वरका

िक्का अक्षान कथा एकछ योग कारबात स्थ कार्यकारभार क्षित्राहरू द्वार्क इन्हरूक (अर् अर्था **खेरभागाम नगर्मात व्याम पर्वारम एक्ट्य** भारत-खहरूका धकमन विकारित धारत. मामामा पूर्ण केवा इत्या श्रीया व्याम

আমাদের বাসভূমি এই সীমাবণ্ধ, অভএব এই সীমাবণ্ধ এলাকায় স**ীয়াহ**ীন বুণির কি**ছাতেই** সংভব নয়। সে-চেণ্টা করার অথাই হবে প্রকাভ একটি বিপ্রবিদ্ধা

নানা দেশের বিজ্ঞানী ও অনানা বিশেষজ্ঞরা মিলিড হয়ে এ-বিষয়ে লিখিত প্রতিবেদন পর্যান্ত উপস্থিত করেছেন। তাদের মতে প্থিবীর মানুহ একটি পরিবেশগড় বিপ্রয়ের সম্মুখীন তা রোধ করতে হুলে ১৯৭৫ সাকের মধো মান্ত্রের প্রজননগত বৃশ্বি ও উংপাদনগত यानिक द्वास स्वा सक्काता । स्मयक्तीन वृत्ति वाम विका थाकरू भारत ना, जीमाहीन मम्बा दान्य किह, नहा आमाहत करे গ্ৰহ নিতাৰ্ডই শীমাৰ্শ্য, সৰ ব্লিখনই CHE MICE!

धकाँ श्रीट्रावमस्न বলা হয়েছে. অভাৰ কাশা করি ছাল্য সিক্ষাকাত কলৰে ও জ্ৰহিত হান…**ম**াহে দুৰিভাকরণ ित्रकाल चारण क्रवर झानास्वत भरणा राण्य ल मरुवान-एकानाहक स्वर्गाध आका कामा कामा कामा न्धारते ७ मिक्कविद्यानां व्यवज्ञात अप्राहतः

SIN MINIS SINT PRET WHIST করা না হলে পুজরার গতন অনিবার बबर बाबीं कि नृषि न्यून्यात प्रत्याहै का

कार्यासम्बं और गाँधवीत सम्मारका कार के के अकारण कार्य याक्टक अरे **ভার বাজার পাকলে জাগানী তোরণ বছরের** श्रद्धाः भीतवीव सम्प्रत्याः स्वित्राय हाह কাৰাৰ কৰা। স্কতএব ধনে নিতে হর. উৰ্পাদনের ৰ্সিঙ সমহারে হয়ে চলবে भार का बद्धकी बाकरन। जाहरत গ্ৰহণ পার হবে কি? विकाशीका यमदब्स হ ওরারই না দৰ্মাৰনা, ভাৰ সাণেই প্ৰকাড একটি বিশব'র সবকিছুকে গ্রাস কর্তে: ত'ারা ৰলেদ প্ৰকৃতিৰ মধ্যেই করেছে সীমাবন্ধতা धाव रम्ह भौभानकाह। धारक्रम वजरू हाल মান্ত বে-উপারে সেই উপায়ের মধ্যেও সীমাৰশভা। গত একশো বছরে প্রবৃত্তি-বিদান বিশ্বস অঞ্গতি মান্বকে আশা-बामी करत कुरकारक मरन्मर रेनरे (शीम अ তা সংবৃত্ত অধিকাংশ দেশে বিপাল দারিলা। এবং সে অনায়ানেই ভাবতে পালে যে क्रानेश्वा व्यक्तिव हालिकाक स्म स्मादादिका कत्रदव क्षम् विविधा जिल्ला ह्रकारमा सम्भण যদি ফ্রিয়ে বায় তাহলে প্রাভিবিদ্যা তাকে সম্থান দেবে নতুন সম্পদের, ইতারি। তখন এই বিজ্ঞানীৰা বলেন এই ধারণাটাই ভুল পরিবেশগত বিপ্যায় এমন একটা আকার ধারণ করতে চলেছে যে ধরংসই সেখানে ভাবত্রা,

ব্নিধ ও প্রিকেশ নিয়ে হ'ারা অন্ত-শীখান করেন ত্রীদের মতে, ভ্রেগের বতমান হার যদি বজায় থাকে তাহলে আগামী ২৫০ বছর স্কল সম্পদের হোগান অবাহত থাকৰে। কিন্তু এই সংক্ৰ যাদ মনে রাখা বার যে প্থিবীব জনসংখ্যা ব্যাল্য পেয়ে চলাবে এবং 🕖 সংলা ছেলুগের মাতাও তাহলে সম্প্ে যোগান একলো तक्षां भारताहे निश्चमध इत रा कुशा। कश्या व्यात सर्थण्ये अतिबारण जात भावत। अक्रव रख ना. याण गामा मनवनार कप्राच।

जारे धरे विकारीया व्यक्त ग्रामायाक ব'iচতে হলে এখন দ'ৰ্শিড়য়ে পড়তে হৰে। আর বৃষ্পির প্রয়োজন নেই ন প্রজানান ना अवशामता। द्रिष ट्याक म्मामाहात-অথাং, বা আছে তাই থাকুক; তাহকো প্রখন করা যেতে পারে প্রিয়বীর বর্তসাম व्यवस्थाण कि भाव कामा? टकाबाब शाहर কোথাও অনটন-এই অসামোদ্ধ অৰম্বা! व्यामान्यरे नहा, हारे शती व प्रशिक्षत प्राथा সম্পদের भूतर्यकाता मन्भारता स्पोन এখন ट्या निकारकष्टे अकरशहरा। बाह्याविकात कथाहे अन माक-भाषितीत साने सन-সংখ্যার মাত্র ৫০৯ **স্বস্তাংশ রাজ জন**ে এই দেশে অথচ ভারা ব্যবহার প্ৰিৰীয় প্ৰাৰ্থায়ক কাচাৰালের প্ৰায় ৪০ শতাংশ ভোগ করে গেটো भार एक भागान ७० मराहम লিক্সালৈর ৩**০ প্রভা**শে। আরার এক্সান্তর্ব व्यक्तिविकान स्था श्रवाना स्थापन स्थापन स्थापन

উপজ্যের অধিবাসীর এক অংশের সংখ্ অন্য অংশের এখানতর বা ডভোধক বানধান। এই বিজ্ঞানীদের মতে বাশ্বর बाद्या न्द्रना स्वरच प्रतान प्रतान प्रतान धरा দেশের অভ্যনতার এক অংশার স্থেপ অন্য चरामात्र वावधान मृत कत्रात भागाती ম্মীমাংলা হতে পারে।

অথাৎ আমাদের এই প্রিবী নামক গ্রহটি যে নিতাশ্তই সামাবশ্দ, এই সতাটি ধরে নিয়ে সমস্যার বিচার করা চাই। গণ্ডগোল বাধে যদি ছিসেবের অন্তিদক কোনো সীমানা না থাকে। আমাদের এই প্ৰিবীতে ১৯৭০ সালে জনসংখ্যা ছিল সাডে-তিনশো কোটি ২০০০ সালে হ্বার কথা সভিশো কোটি। ধরা যাক কোনো अकि क कामारमा काहिमा अ वकात नहें টন এবং প্রতি বছরে এই চাহিদ্য দিবগুণ হরে যাচ্ছে। তাহলে পনেরে। বছর পরে এই চাহিদার পরিমাণ দাড়াবে ৩২,৭৬৮ টন কডি বছর পরে ১০৪৮৫৭৬ টন। সহজ্ঞেই অনুমান করা চলে, ১/হিদা যদি এই হারে বাড়তে থাকে তাহলে যোগানে ঘাটীত পড়তে বাধা--যেমন-তেমন নয় বিপর্ল প্রিমাণের ঘাটত। জ্যাল, মনিহ্ন সম্পকে বলা হয় বতামান চাহিদা যদি বছরে বছরে নাও বাড়ে তাহপেও প্রথমীর আলুমিনিয়ম সম্পদ আগামী একশো বছরের মধ্যে নিঃশেষ হবার কথা। কিন্তু প্থিবীর জনসংখ্যা বাড়ছে, সেই সংশ্ চাহিদাও ফলে নিঃশেষ হবার সম্ভাবনা আগামী একবিশ বছরের মধ্যেই। খাদ উৎপাদনের বেলায় অবঁথা আরও সংগীন। প্থিবীর জনসংখ্যা যদি বত্মান হারে বেড়েই চলে তাহলে ২০০০ শালের মধ্যে थामा উৎপাদনের জনো প্রয়োজনীয় জমি আৰ পাওয়া যাবে না।

আবার অনাদিকে এম্ন একদল আশা-বাদী বিজ্ঞানীও রয়েছেন যাদের মতে ভবিহাৎ মোটেই ভয়াবহ নয়। ত[•]াব বলেন, আসামী একশো বছরের ফলে প্রিবীর সমুহত জরুরি সুমুপদ সম্পূর্ণ ফ্রিয়েও যায় তাহলেও ইতিমধ্যে অন্য উৎসের সম্পান পাওরা বাবে। মান্ত্র জর করবে অনানা গ্রহ এবং সমপদ অভিবৰ করে আনবে সেই সম^তত গ্রহ পেকে। ^{যদি} এই সম্ভাবনাকে অবাশ্তৰ মনে হয় তাহলে এই প্থিবীর মদেটে প্রতিটি আ বিষ্কার নিঃলোষত সম্পদের বিকল্প কনতে পারবে। ভাছাড়া ^{বিরাঠ} :075 সম্পদের আধার সমূহ তো অক্ষত ভাক্ষাৰট রাস গিলেছে। ভেপাটের দিন-চতথাংশ জাড়ে থাকা এই সমাত থেকে বর্ণীক এক-চতৃত্বীপুলের আবেণ্ ক্ষিপ্রস্থানত জনসংখ্যাত প্রতিশালন चर सक वरन এই विकासीता भरत करतन।

প্রমান, শক্তির শান্তিপ্র ব্ৰেচাৰ

গত ১৮ই মে তারিখে ভারত বে ल्लाक सद्भक्ति म्हण्यस्य महम्मह अस्त्रम् প্রবল। ভারত বোষণা করেছে তার উপেলা नव्यक्ति साम्ब्रिकार्गः योग श्रद्धक स्मक्ष বার এই বোৰণা এখনা কবিকা মাধ তাহলেও এই মুহুতেে উপিকা হবার কোনো কাৰণ দেই। ভাগত যদি একাট প্রমাণ্ড বোষা বাশিয়েও বঙ্গে জাছলে সেখি निया जारक इदाका वरमहे बाकरक हारा। কেননা, লক্ষাক্তর ওপরে প্রয়াণ্ড-ব্যেমাটি निक्कण कतरेल हरेन जरूबरन अतमान्-বোমাটি বহন করে নিমে বাবার যে বিশেষ ব্যবস্থাটি থাকা দরকার ভারতে ভা অবত মান। এমন একটি ব্যবস্থা অদুর ভাবষাতে তৈবি হতে পাৰৰে এমন সম্ভাবনাত্ত না-ধাকার মডেগ । প্রধান ও করেছে জার নি**প্**ল Teles. ইণ্ডিয়ার কোনো বাতিল বোহিং বিমানে প্রমাণ্ড-বোমাটি ভোলা বেভে পারে কংবা বিমানবাহিনীর কোনো বোমার: বিমানে তবে ভাতে প্রতিবেশী কোনো দেশের উন্বিক্ষ হবার কোনো কাবৰ আছে বংল মনে হয় না। অংপাতত বেশ কিছকোল ভারতের এই নিউক্লিয়র বিস্ফোরণ শ্ধাই বৈজ্ঞানিক কৌত্তল চরিতার্থ করতে পারে মাত্র তার বেশি কিছু নর।

তবে যে কথা বলা হচ্ছে, শান্তিপূৰ্ণ উলেদখো নিউক্লিয়র বিস্ফোরণ ঘটানো হল তার কডদুর? ভারতের বত্মান অব্থা प्राप्त (अ-प्राप्त अवस्ता २५,000 शाना व বসত্তরোগে মারা বার) এ-প্রদেনর জবাবে চুপ করে থাকাই ভালো।

তবে, শান্তিপাৰ্শ উদ্দেশ্যে লিউল্লিখ্য শভির বাবহার কী হতে পারে, এপ্রদেশর জবাব নিশ্চয়ই শপত ভাষায় দেওয়া ৰেডে পারে।

তিনভাবে হতে পারে ঃ

- ১। উক্ত বিস্ফোরণ ক্ষমতার শালিক। পূর্ণ বাবহার।
- ২। শক্তির উৎসর্পে শাহিতপ্ৰা ব্যবহার।

ত। বিজ্ঞান ও প্রথারিবিদার বিবিধ ক্ষেত্রে শানিতপুশে বাবহাব।

विश्वकाषय क्यांका काट्य मुख्याच्या व्यटक नारक (क) भागक क्रम, जन्मारम ख क्रमहरून बाबर (व) बीध छ इकित्तिस्तार्थिर शकराना

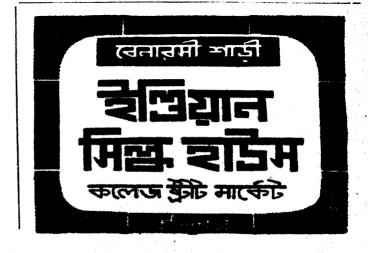
र्शनक वन्नग्यान ७ उत्तरत्र का হতে পারে নানা রকমের। এক উপরিশ্বিত বিপাল বোঝা বা পাখনের চাই একবোগে जमनात्रण कता। पाष्टे हाहेरश्चा-कार्यान मल्याधातव करना जन्यून करण्या जाति ed in s

চার ভক্তের আগনে নির্বাপিত করা।

নিউক্লিয়া বিশেষারণ ছটিলে বিশ্বে পরিয়াণ পাথরের চাই অপ্সারকের কাজ মাকিন ব্ভরাকের ও সোভিয়েত ইউনিয়ান थामिकछो करा इट्सॅट्स। जागालन त्यत्यक বিভিন্ন তামার খানতে ও কয়লার খানতে করার চেল্টা হতে পারে। তাছাড়া ভুগতের आगान आमात्मत त्मरनत स्त्रमा-चीम-প্রেলাতে বিরস ঘটনা ময়। ভ-তাপগত উৎস १८७ তে। नात अटना गारमन **উৎलाम**न বাড়িয়ে ভোলার সম্ভাবনাও প্রীক্ষা করে प्तथा व्यट भारत।

आभारतत रमरमत करशकां विश्वासम নিম'্ণকারে বিপ্লে খননকার করতে হয়েছে। দৃশ্টান্ত হিসেবে বলা চলে, ভাকরা বাধের ভিত্তি গড়ার জনো প্রার ৩০ লক ঘনগিটার খনন করতে হরেছিল। কেরদের একটি প্রকলেপ ৩৩,০০০ খনকট্ট খননের প্রয়োজন হ'তে পারে। দুধু মজর লাগিয়ে প্রচালত প্রথায় এই খনন করতে इरन शहर नधश ७ कराना नानास कथा। তেমনি স্ভুঞা বা খাল ইত্যাদ তৈরি করতে হলেও বিপাল খননকার চালাতে হয়। এই সম[ু]ত ক্ষেত্ৰ দিউ**ভিতৰ** বিস্ফোরণের সাহাযা নেওয়ার কথা অবসাই বিবেচিত হতে পারে।

CARL TOLL ইত্যাদি নদী দিয়ে বিশ**্ল পৰিলাশ**



The state of the s

শিক্ষাণার অধ্নায় পারসাবহিক থাসজ CHUR SANCA-ME BAPTITUTE BUT GLD! भ्यात्म कल-विमान **७ छाल-विमा**र्डन महिला लामा विद्या मिक्किक्क दिनदर हैर लाग क्षाता कामारक मिक्किक्स विमाद विश्वापरमा महा ६५० तमाक्ष्मार्छ। बाटना ५८० स्मान कार्ड छर गामरमा निर्कालमा गा कार्य-ক্ষার বিষ্ঠিত হতে রাজ্ঞানে ও তামিল-मनक्रद्रकः ८६० द्वाना बचार्णंत चारता धकाँचे ्रिकेष्ट्रिक्स शाक्ष्यात्र-न्यान्ते निर्द्धारमतं कथा इतक , केक्सशास्त्र । अहे अधाक निर्वेद्धिया প্রতিয়ার প্রাতে পারমার্ণবিক থানজ বার্থক জন ইউরোনিয়াম। কিল্ড বর্তমানে ৰে শ্ৰীত্যৰ ছব্লি তৈবি ছতে চলেছে তলত উট্রেনিয়াছের বদলে খোরিয়াম বাবহার করা বাবে। খোরিরাম আমানের দেশে প্রভুৱ। অভ্যাব আলা করা চলে নিউক্লিয়ার উৎসেদ্ধ ওপরে নিভারশীল আরো অনেক সাত্রার-তেওঁখান আমাদের দেখে নিয়াণ कता जन्छव इता नी-ठम्रवारनाम এकरि ফিউলিলর পাওয়ার-পৌলন মিমাটেণর দাবি रेका किक् निम शरबंड त्नाना मारक।

জাবা নিউলিয়ার বিসাধে নয় পেটল ইড্যানির বদলে নিউক্লির জনাসানীর ব্যবহার সম্ভব কিন্যু তাই নিয়ে বিজ্ঞানীয় द्विष्ठप्रदक्षके क्रिकाचावना भारतः करतःहन। रश्रेक भारता बाह्य क्रीजन क्रवानामी थ्याद রিবৃদ্ধ নিউল্লিয়র জনবানী থেকে। কিন্তু अब मारे अनामानीयह मध्यम भीमावस्थ। বিজ্ঞানীয়া তাই ভাবছেন ফিউজন বা একীভৰনের স্বারা নিউক্লিরর শক্তির যোগান পাওয়া সম্ভব কিনা। হাইছোজেন বোমার শাস্ত এই ফিউজন থেকে স্যেশ্ব তাই সেয়ের মধ্যে কেন কোটি কোটি হাইছো-ক্রেন বোলা একসপো বিজ্ঞোরিত হকে।। ফিউজনের মূখা উপকরণ হাকে হাইছোলেন, या जामगामत कहे शट च्या त्रमक भाउता বার। কাজেই ফিউজন পেকে ৰৈবাসপুৰে মাৰণ্ডা ক্ৰান্ত পাবলৈ শভিন अश्यके बरण चात किए, बारक ना।

ি নিউজিয়া পরির নারা চালিত জাহাজ ইতিমধ্যে জাপানে সোতিরেত ইউনিরনে ও জারেরিকায় তৈরি হরেছে। লোভিরেত আইসরেকার পোনিদ জাহাজটির নাম অক্সেসকো উজ্জেখ করা বৈত্তে পারে।

িচিকিবলা বিদায় এবং বিজ্ঞান ও ভাৰতিবিজ্ঞান নানা ক্ষেত্রে তেজাজ্যতার ব্যবহার জ্যে বাংশকভাবেই পুরু হজেছে।

श्राम १ काक्टक निर्वेष्टिक स्वयंत्र क नामप्राचीयक नीवन अधिक्षामग्रामिक स्वयं की ? क्यांबर्कि स्वायंत्र ? चानामी श्रामन स्वापन मध्ये गूर्विमीय सन्तर्भ निर्देशीयक कृत्य, विकासीया मध्य बार्विम प्रभाव समित्र गाँव दिवि दश्य मा। माना नामसाह सम्बद्ध स्टब्स गाँवी।



উত্তও 2 (১) ভাবা জ্যাটামক রিসার্চ সেণ্টার ট্রন্সের (মহারাণ্ট), (২) ফিজিকার্টা, রিসার্চ ল্যাবরেটার আ্মেলারাদ (গাল্লাটা), (৩) টাটা ইনস্টিটিউট অব ফাল্ডামেণ্টাল রিসার্চ বোশ্বাই (মহারাণ্টা), (৪) হাই আ্লাটিটিউভ রিসার্চ লাগ্ররেটার গালেমার্গ কেশ্মীর), (৪) সীসমিক রিসার্চ সেন্টার গোরিভিদ্যান্তর (কন্টিক) (৬) সাহা ইনসিট্টিউট জব নিউক্লিম্বর ভিলার্চ (প্রশিক্ষরবাংলা)।

সকলেই জানেন, জারতের প্রথম
নিউক্লির বিস্ফোরশটি ঘটানো হরেছে
সন্টোনরামের সাহাযো। নাগাসাকির
গরমাণ্-বোমাটিও ছিল স্নটোনিরামের।
এখন প্রদান স্বাটনিরাম কী?

উল্লয়: প্রত্যোগিলাম হলে স্থান্থের তিরি একটি ধাছা। একমার নিউক্লিয়ার দাবি উৎপাদদ করা ছাড়া এই ধাস্থর আর কোনো ভূমিকা আছে বলে মধ্যে হর না।

শ্বাটোনিদ্বাম তৈরি হল নিউদ্ধিন চুলিতে যেখানে জনালানী লিজেবে নামচান করা হয় ইউর্নেনিয়াম। ইউকেনিয়াম পাওয়া, বার দু-ধরমের। একটি থেকে (ইউকেনিয়াম-১০৫) নিউন্নিয়র পতি উৎপান হল জাপুরটি (ইউকেনিয়াম-২০৮) এক্তেতে কোলো ভাতে লাগে না। জিকু নিউন্নিয়র চুলিন এই বস্তাকের ইউরেনিয়াম বেকেই পাওয়া বার ক্রেটানের । একটি কতি কতিব কা তেনালের ১০ কাতে হয়। জাবতে এটি নাম্পর হর উদ্পর্ব ৫০ জাবাভালাট ভুলিতে। এবাদে বছরে আর ১০ কিলোয়াল ক্রেটানিয়ার উৎক্ষা-হয়ে বাকে।

ক্টেট্নিয়াল তেজকিয়া ও বিশ্বন সৰ্ভেল্ল বিবাদ পদার্থা দ্বিশিকাল জীবন্দ বাকে কাটেনিয়াল প্রমান্ত্র বিপজ্জনত বিজীৱন হাজার হাজার বছর ধলে চলতে পারে। এই বিজীৱন বেকে ক্যান্সার হক্ষা অসম্ভব নয়।

ইন্দের পাটোনিরাম-বিজ্ঞানীরা চার কটে পার কলিটের চুলরালের আড়ালে থেকে দার-নির্মিত্ত ব্যক্তর, সাহায্যে কাজ করেম।

व्याक मरवाम : अशानक नि अब अम क्रारको

৭৬ বছর বর্তে নোবেল প্রক্রান বিজয়ী প্রমাণ্-বিজ্ঞানী অব্যাপক প্যাটিক মোদার্ভ ন্ট্রাট ব্লাকেট-এর জীবনাবল্ন হল।

নোবেল প্রেক্সর তিনি পেয়েছিলেন
১৯৪৮ সালে—সহাজাগাতক বিকর্ণীরণ
সম্পর্কিত গবেরপার দ্রভগানী পারমার্গাবক
কলিকার গ্রমনপথের হাদিশ পরার উপার
হিসেবে উইলসন জাউড চেম্বার পশ্চতি
উজ্জাবনের জনে এবং নিউল্লিম্বর পদার্থবিদায় তারি আবিক্সারের জন্য।

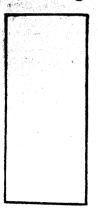
দিনত তার আনেই অধাপন র্যাকেট আনতজনতিক খ্যাতি অজনি করেছিলেন। ১৯০০ স্চান তিনি পজিটিত ইলেকটন বা পলিকা অধিকার কান। প্রমাণ্-বিজ্ঞানে তার গ্রো: প্রমাণ্-বোদা উল্ভাবনের সহারক হ্রেছিল।

অধাপক ব্লাকেটের মৃত্যুতে প্রধানদলী শ্রীষতী পাশ্বী বলেছেন, 'জারত তার এক অক্তিম বন্ধুকে হারাল এবং মানুদ্রের জানের জগত থেকে এক বিশিল্ট ব্যক্তি সরে গোলেন।'

অধ্যাপক ব্লাকেট সমরণীর হরে থাকবেল শন্ধা ত'ার বৈজ্ঞানিক অবদানের জনো নর বিজ্ঞানকে মানব-কলাগণে নিরোজত করার চেন্টার জরোও। প্রাথীন ভারতের বৈজ্ঞানিক মাতি নিধারণের বাশানে লওহবলাল কেছবু ত'ার সরামার্লা

প্রবড বিশ্বলৈ নেহর কাতি বছতা দেবত সন্মা তিনিই ছিলেন ভারতে প্রথম আমিলিভ বিজ্ঞানী। সে-সম্মা কলজাতাতিতেও এস্ফান্দিলন এবং ইন্ডিলান স্টান্টি লৈখে ইন্তিটিউটে অধ্যাপক মহলানিবিশের অভিনি হয়ে ছিলেন। কলজাতার বহু বিজ্ঞানী তান্তি সংগা প্রভাকভাবে প্রিচিত।

সেকালের সঙ্গীতগুণী



(পূর্ব প্রকাশিভের পর)

Carres শ্যামাচরণ হয়েছিলেন তবলা-গুণী। কাশীর বিখ্যাত তর্বালয়া ভগংজী তার প্রধান ওছত দ। পরে শামাচরল কল-কাতার লছমী প্রসাদের কাছেও তবদার তালিম পান: শ্যামাচরণ একজন নিভব-যোগ্য ভবলাবাদক বলে পরিচিত হন কলকাতার স্পাতিস্থাজে। তিনি উত্ত কলকাতায় জোড়াবাগান অণ্ডলের বাসিনা ছিলেন। তার সংখ্যেই বাস করতেন তাদের চতুর্থ প্রাত্য ব্রুলিদ মিশ্র। বেচ ওপতারের এই পত্ৰে একাধারে ভবলাবাদক ও গায়ক। 673 কলকাতার তেবলিয়া বলেই ব্যাদ্ যিত্র হ্রাছলেন। বেশী খ্যাতলামা ভার শিষাদের মধ্যে ভবলায় এখালে একজন হলেন স্প্রিচিত অন্থন্থ বসু :

তাদের শিবতীয় ছাতা লোরীশাকর এবং কনিষ্ঠ কালিপ্রসাদ প্রধানত সার্গাী। অবশ্য গানে ওদের দ্বজনেরই যেমন অভিজ্ঞতা, তেমনি সংগ্রহ। গান ও সারংগ পিত পিত্যিতের এই দুই মাধ্যমেই উত্তর্গধকার দুই সহোদর লাভ করে-**ছিলেন। পিতার ত**্যিলয় দ্*জনেই* পা^ন তারা। তবে বংশের অতিরিক্ত শিক্ষাও গৌরীশংকর গৌরীশৃত্করের কিছু ছিল। সারশ্যের ত্যালিয় পেরেছিলেন বাশীর বিবাই মিশিরের কছেও। ক্রীর্চে! ট নিবাসী বিবাই মিল্ল ছিলেন এক স্পরি-**চিত সার•গ্রী বংশের ঘরানাদার। ত**রি এক **শোস্ত পার্টনা বে**ডার কেন্দের সার*স*া বাৰকর্পে এখনো বর্তমান আছেন।

পারীজ্বার বাল্যকাল থেকে একই লব্দে পাল ও শ্রুগের চর্চা আরম্ভ করে- ছিলোম। আনু রেবিনাকানেই প্রশৃত হুন লোগানা অভিনেত্র কলো। স্বাকানি বৃত্তি নিরে প্রথমে জিলি রেপাল নুকানে কিছুনিন ছিলেন। জরগার স্থানী হুন কলবাভার স্বাভিন্নাকে। জীর জুন জিন ব্যভার্তিক প্রকে প্রশাসনাক্ষ স্বাভিন্নতে যোগ দেশ।

এখানে গোঁৱীশক্ষা প্ৰথম ভোষেট পছর বেজার সাংগ পরিচিত হর। স্বর্চের প্রতিপরিশালিনী বাইজীয় সহবোগিতা एयन स्थरकरे मान त्वरु अन्छारम्ब अरे উপবৃত্ত প্ত। অভিতয় পূৰ্ব মাছীপুর भवेताता छेन्या गान्य ताएन शहात छाम अछ-দিন কলকাতাবাসিনী ছিলেন গৌরীলক্ষ্য স্পাত্রিসরে তার সহবোগা ইরেছেন। কলকাতা থেকে উত্তর ভারতের প্রায় জাবং সংগতি কেন্দ্র আস্থ্র मनवारता। अज्ञान कि ১৯১১ সালের निक्की मनवास्त्रछ। গহরজানের পরম নিভার দক্ষিণের সাবংগী বরাবর থাকেন গোরীশক্র। তারও পেশাদার জীবনে এই হোগাহোগ একটি নিভরিতার বিধর চয়েছিল।

গোরীশংকর ক্ষাকাতার মধ্ম বাস করতে আরম্ভ করেন, তখন তাঁর বর্ষ ৩০-এর দা-এক বছর ক্ষা। আর তাঁর মাতৃতে অশীতিপর ব্যাসে এই শহরেই হয়েছিল। পূর্ণ ৫০ বছরের সংগীত-জীবন অতিবাহিত হয় এখানে। গৌরী-শংকরের জন্মসন আনুমানিক ১৮৬৫।

कानिक्र कानिश्रमाम গোরীশঞ্করের শিক্ষাও পেয়েছিলেন। তিনিও কলকাভার প্রসিশ্ধ হন কালী ও তাদ নামে। গোরী-আয় তা সংগতিজীবনের সহযোগী তিনি। দুজনে জনেক সময় একই ছাত্রীকে তাগিম দিয়েছেন। বেমন কুকভামিনী কিংবা ইন্দ্বোলাকে। আসরে একই বাইজবি দুদ্ধি **বঙ্গে** 7.0001 য়েমন করেছেন। সার্থেগ সংগ্ৰ দেবতালিনী স্বেমা কিরণমরী কৃষভামিনী প্রভতির গানের সপো। দুই সহোদর একটে জ্ঞোড়াস্পাকা অপলে অধিক চাৰদী যাপন করেছেন। শ্যামাচরণ ও বর্গিদ যেমন ভোডাসাকোর বাসিদা ্ডেম্মান জোৱী-শ্বের ও কলিপ্রসাদ ছিম্মন জোহা-সাকোর ১৫৮ কদরাম দে স্ট্রীট নিবাসী।

रशोरीसम्बद्धाः अश्वीतकोत्रामः स्वत्य क्याक्रम्सः। अभागः श्रम्बदे छिन् STREET STREET STREET STREET कर्माना रम्भीत कार्योक कर व कार्यक स्टूटन क्षीं जन्मीक्षा व्यक्ता र्शन्त्म काल स्वाकाला स्वाकाता रमरखन । सम्बद्धना मार व्यक्ति निरंपका मार्गीन Heritanier Contract of Asset नियानी इदह त्यामक बाबानमाँ अन्तिक অগতের সলেগ ভার আলাজেল CHAPTH छत्त मि। বিভিন্ন · · গারিকারা কলকাতার একে তিনি ভারের 76791 শারণের সহবোগিতা THE CO. আসরে। কথনো কথনো এখানে ভালের মুজরোর বাবস্থাও করে সিতেন। তার জন্মান্ট্যীর আসমে হোগ সৈতেন কার্থাীয় নানা প্রসিম্ব শিক্ষা, বিশেষ বাইজীয়াং বড়ী মোডি বাই হসনা বাই বড়ী মৰদা মনুৱা বাই প্রভতি প্রসিন্ধা বাইজীদের সং-গ তাঁর বাদকর পে বোগ ছিল। কাশীতে এবং কলকাভায়। বারাণাদী ও কলকাডার সংগতিকেরের এক বেশস্ত হয়েও থাকতেন গোরীখাকর।

সেকালে বাইজীদের গানের সংলাই
সর্গ্রস্থাত্তর রেগুরাজ ছিল। সেকরের
বাইদের সংগ্র তার সংযোগ ছিল বোল।
গ্রুর জানের গানে স্পাত ফরেই হয়ত
অনান্র বাইজীদের তিনি সহযোগা হয়েছিলেন। মোট কথা তার ম্করের নির্মার্
এবং বেশির ভাগাই হত গাইসীদের আস্বে
অংশীদার হয়ে। শিক্ষাত দেন বাইজী
দেরই বেশি।

মধাবরাস থেকে গোঁৱীলাক্ষরের
ওচত দজাবন আরম্ভ হয়। মেব্রুলাক্টারির কাজে। তালস্ব তিনি প্রোচ্জাবিশনা
ইল্পাবালা কল্টালন দেন। আরো পরে তার
কাছে শিক্ষাখনি হরে আলতেম ভর্মে
ভাল্মেনের। আর চামা মিল্লা গোরীলাক্টারের
ব্যাধারাক্র চামা মিল্লা গোরীলাক্টারের
ব্যাধারাক্র ভাল্মির মধ্যে ক্রেলাক্র লালা। ভাল্মের মধ্যে ক্রেলাকরির কালা মিল্লাভাল্যের লালা। ভাল্মের মধ্যে ক্রেলাকরির তারিকর কালানার ক্রেলাকরির তারিকর কালানার ক্রেলাকরির ক্রেলাকরিন ক্রেলাকরিন। অনানারাকর ক্রেলাকরির ক্রেলাকরিন। অনানারাকর ক্রেলাকরির ক্রেলাকরিন। অনানারাকর ক্রেলাকরির ক্রেলাকরিন। অনানারাকর ক্রেলাকরির ক্রেলাকর ক্রেলাকরির ক্রেলাকর ক্রে



া এখন ক্ষত কথার আনো তার গানের ক্সালা একট আছে। তাদের বংশে গা^ন ক্রার একটি বিশেষয়। পারিবারিক ধরোর **শ্রবং সংগীতাজ্ঞার ব্যাতির জনে। তাঁরা** পায় সমুদ্দ রীভিত্র গানে অভিজ্ঞ থাকতেন। সভাতকার সারকারিপে একমার ধ্রেপদ জিল বাইজানের আসরে প্রচলিত লানা श्चिक व नामः निका-अश्चन कहाउन- ए ता। বেরাল উপ্পা ঠারি দাবরা হোরি থেকে কাৰার হৈতী কাউনী ইডাদি সবই। क्षांस्त्र बद्धा छेन्सात विका विद्यान न्यान। बाहाशजीव जन्मीटर्मात ্টিশ্পালারে শ বৈশ্বদ সমূত্র ক্রিছা তেখনি এই মিল বরেও। লে'রীগান্দরও কাশীর সংগতিং লালার ট্রুপা সংগীতে অতিস্থপান গাণী **ছিলেন। আপান পরিবারে ভিন্ন হয়ত** তিনি বিবাই মিশিরের সারপা-তালিয়ে আরো লাভ करतम हे॰म भा मध्यदि । तातागमीहरू नामा সংগতি জীবন क्कावर केशावीकिउड অভিবাহিত করতেন। আর তলিও লিটপ্ৰীয়া কত দিক থোকে কিন্দ্ৰাবে যে সংগ্রহ করেন ভার হিসাব পাওয়া যায় না বাইরে থেকে। তেমনি ঘরের সংগ্ বাইরের স্তেও গোরীশ্বকর হয়ত ট্পার বহু সঞ্জ করেছিলসন। সে ব্ভাশত জা^ন। না লোলেও তাকে দেখা যায় টপনা প্রবাণ-कुरिता महारा शास्त्र स्था आतंत्रकारामस्य । ভার শিক্ষা পেয়েই টপ্সা টপ্রয়োল গানের অন্নন্ধ কলাবতী গায়িকা হয়েছিলেং কক-ভামিনী। উপ্পা আপোর সৈ বিদা। কুক-ভামিনীর কাছে কালিপদ পাঠক প্র পেরেছিলেন। গানে গৌবীশঙকরের উপ্পা-গাণের সাক্ষা হন ক্ফভামিনী। আর সাক্ষণো উপ্পার সাংল্পনা - ওপত দক্তী দেখান দিল্লীর সেই জলসার। মদ্মন খাঁ সার^{৬গাঁ}ব আসরে ৷...

ট-পায় কি ঐখব্যবান ছিলেন গোরী-শৃংকর। টিপার নানা মনোহাবী অলংক-কুপর যেয়ন রপেকার তেমনি উপ্পারীভিত্ত রাবোর পরিবেশনায় কুশলী। আর টম্পা আংশে বালের কি বৈচিক। টেপ্স সচরাচর করেকটি নিদিশ্টি বার্থই আমেরে শ্রেখ সাম। অংশক্ষাকৃত লগা হাল সেসবা দিপাই সাধানৰক প্ৰচণিত সেই সমস্ক বাগ ত গোরীশঙ্কারে ছিল্ট। বিস্তু এমন আনেক ৰাখাও তিনি উপা শোনাতেন এবং শিক্ষণ্ড দিয়েছেন স্বা আনা আনেক কলা-রক্তর কারে পাওয়া বেক্ না। সমন কোচিনী প্রিয়া জীমপলাদী নামারার মালকোর সাভানা মালতান ইত্যাদি রাগে।

টম্পার এমন সিহধ বলেই গোরী-**শংকর দিল্লীর সেই আস**্থার করতে পোরে-ছিলেন। পদ্ধা দিতে তাগয়েছিলেন মন্মন খার হত্ত সার্জার স্থো।

দেই লড়াইয়ের আসরের আগে গোরী-अक्करतम् त्यत व्यवास्ति वत्त प्रतिसा यास!

ল্যামবর্ণ এক**হারা চেহারার মান**্ব ছিল্লে ভিনি। আক্ষরেও ছেটখানে। পণ

প্ৰান্তাৰ মধ্যে তিনিই সবচেয়ে ক্ৰাকৃতি। তবে বৃদ্ধ বয়স প্রস্ত শ্রীর বেশ স্কুত ছিল। আৰু ফাশ সম্মান ভব। একাৰত সংগীতসেবীর জীবন। শিক্সীর পরিত্রিততে বেশ ব্রহ্ণের দিন বাপন কর্মাছলেন। বাংলার সংগতিজগতের সংগা विदेश शिर्दाकृतम् मृत्य-मृत्रस्य। तारणात স্রাশ্রণী সংগতকারদের সংখ্যা সংগীতের প্তিপোষকদের সঙ্গে আর্তরিক প্রীতির সম্বাদ্ধ গালে উঠেছিল। সংগতিকোরে পেয়ে-क्रिक्त अर्थालक आजन। फ्रेडाकांक्की ছিলেন না। তাই আর কিছ, অভাব বোধ कातम मि त्योतीना करा। भारा धाकरि ক্ষেত্র ছিল জীবনে। কারণ অপুত্রক ছিলেন ৷ তবে তা দিয়েও আর আঞ্চলায করতেন লা। একমাচ বর্তিল ভিন্ন ভারা চাৰ জাতাই ত নিঃসদতান। বাণ্দির দাই প্রের মধ্যে জ্ঞান্ঠ চাম কে সপত্তানের তালির দিক্তিলেন। গঠিত করছিলেন প্রতিভাবান স্কুদক্ষ সারপাবাদকর পে। खाक्रमामामा**र्ज**े तालक कार्य স্পাতিস্থে গ্রেপনা দেখাছিলেন। এজনো হৃত বোধ করতেন গৌরীশুকর।

এমনিভাবে ওচ্ডাদকীর জীবন এক-প্রকার শাহিততেই অতিবাহিত হচ্চিল। দ্বাস্থাত তবি প্রায় লিয়েশ দিল বাদ্ বয়স প্রশিত। কোন বিশেষ বার্ণিতে কণ্ট পেতেন না।

৭৩।৭৪ বয়স প্য**িত** প**ূর্ণ সক্ষ**য় ছিলেন লোবীশকর। আসরে হাস্পরে সার্বণ সংগত করতেন। তালিম দিতেন ভারেদের। সংগতিসমালে সকলের সংগ্র সপ্রীতি যোগ দিতেন। সিনেমায় যে অংশ নিভেন ভাও এই বয়সে।

একদিন কোনা আসর থেকে বাড়ী ফির্ভিজেন। বাড়ী সেই জোডাসাঁকোর ১৫৮ व्यवस्थ ए म्युनिति, खाधारम कमिन्छे কশ্ৰী ক্ষুত্ৰকে সংখ্য কাটিয়েছিলেন জীবনের আধেকি বাল।

মেদিন গাড়ীতে তাঁর সংকা ছিলেন গাহাক কুক্ট্রেল দে। আরো দ্র-একজন।

বলরাম দে প্রীটে পেণছে গোরী-শঙকর গাড়ী থেকে নামতে পারলেন না! অবশ হয়ে গোছ তাঁর শরীরের দক্ষিণ অংশ। ডান হাত ডান পা অক্ষা।

ধুরাধরি করে দ্যেতলার ঘরে তাঁকে নিংহা আসা হল। পক্ষাবাত। শ্যাশারী হতে র**ইলেন গো**রীশৃত্কর। **করে**ক হিকিংসা হাতে লাগল। সৈসময় অনেক বছ নিয়েভিলেন প্রনাম্ধনা গোবর-ক্ষা মল্লবীর **সংগ**ীতস্বেলী তলাবভাদের প্তিপোষক গোবরবাব, গৌরীশংকরের একজন গুণুমাণ্ধ। তিনি সেস্নয় ওচ্তাদজীর মানেকের বাবস্থাও করেছিলেন।

সে যাত্র অলেপ অনেকথানি আরোমা লাভ করলেন গৌরীশক্ষর। তবে আগেকার শরীর আর ফিরে পেকেন না। কুমে আসরে সারুপ্য হাতে দেখা দিতে

লক্ষন বাটে। কিন্তু প্ৰের ক্যতায আ্র বাজাত সক্ষ হন নি। কারণ আর एका म नक्ष थादक मि प्रक्रिय इन्छ। उर्द দীঘ'কালের সাধন ছিল। তাই কোনতার সংগতি**হার কত্বি।** পালন কলাভ লাগলেন আসরে। এছনিভাবেই কিছুকার গোল।

১৯৩৮ সালে প্রথম তার পকা্যাত হয়েছিল। লালাহাকার বাড়ীতে কালেবাট মিউজিক এসোসিয়েশনের সেই বড আসবে বছরখানেক পরে।

তখন কয়েক মাস অসমর্থ থাকবা প্র সৌরীনক্ষর সক্ষাবাতের প্রকোশ খানিক কাটিয়ে প্রসান সংগীতকগণ যোগ দিতে আৰুভ করেন পনেরায়। কিল भरतम वहरतहे प्रदाय न्य त्वरथ त्यन। जा ৪২।৪৩ সালে তার ফলে **ব**্ল্যাত্র দ্ভিক নিত্রদীপ বোমার আন্তম ইত্যাদি। কলকাতার সংগতিকের বিপর্যত হয়ে বেল। অন্যান্য পেশাদার সংগী^ছ শিল্পীদের মতুন গোরীশৃত্করের জীবনে দেখা দিল মহাসকটে। তাঁর আব দূর্যোগের ওপরে দ্বেশ্র। সেই দূর্দিশের श्चरता मान ক্ষেক দিনেক কালাজনৱে---স্পানিজীবনে পরম স্পেহের পাত **হাতে**-গড় ভবিষাতের আশাভরসা স্থল-চাম, মিলোর ২৬ বছরের জীবনদীপ নিডে গেল। সেই দার**ুণ শোকের ম**ধে। <mark>কলকাতা</mark>য় আবার ঘনিয়ে এল বোমার বিপদ। প্রা^প ভয়ে হাজারে হাজারে কলকাতাবাদীরা শাহর ত্যাপ করতে লাগাল। জনশ্না হয়ে প্রভল কলকাতা। তখন গোরীশক্ষরও সেই শহর ত্যাশের হড়িকে কলকাতা থেকে পার্বলিয়া চা গলেন। সেখানে বাস করতে লাগ ত চামার কনিষ্ঠ দ্যোদরের 347 6-51 t

সেই প্রেলিরাবাসের মধ্যেই প্রথম মাগী রোগের আক্রমণ হল। তথন অবের ত্ৰীকে আৰম্ভীয়েরা ফিরিয়ে নিয়ে কলকাতায়। এ রোগের দক্রেণি কৃদ্ধি পেতেই লাগল। কোন চিকিংসাতেই আর তিনি নিরাময় হ'তে পারলেন না। অবংশহে ১৯৪৫ সালে প্রলোক্সাত হলেন গোরী শৃতকর। সেই ১৫৮ বলরাম দে শ্রীটের বাড়ীতে। বয়স তখন তাঁর ৮০ পার হরে⁻ ছিল।

৫০ বছরেরও বেশী দিনের এক^{টি} সারশোর ঝঙ্কার চিরস্তন্ধ হয়ে গেল কলকাতার।

সেই সারভেগর সূত্র-রণন কলকাতা থেকে বোশ্বাই পর্যানত কত রাতের কত আসের কংকত মম্বিতে কবেছিল। সে সমস্ত ল্ভিকাতি লুভ হয়ে সহে **কৰে।**

শূধু একটি আস্তের কহিনী-কালের পাবাৰার উত্তীপ হয়ে ককা একটি আস্বের কহিনী-পেয়েছে। দিহাীর সেই আসর। সার্জা-নেওয়াল মুদ্ধন খার সংক্রা শাস্তশিশ্ট লোরীশাশ্বরের সেই প্রতিশ্বন্দিরতা।

কলতাত্ত্ব চিশের দশক ও তার আলে স্পরিচিত আর এক দারপাবাদক নন প্রাটে ধাঁ! তিনি একক অনুষ্ঠান তন। অধাং সংগতিরা সারপা নন না আসরে। ছোটে ধাঁর ওপ্তাদ নি সারপাশ্যা বলের ধাঁ। আর স্থার ওশতাদ ও মাতৃল তলেন ন ধাঁ। ক্লম্ম ধাঁও দিলীনিবাসী।

मात्रका वालानकारिक चाँक मानी न्तर क्रिटमान सम्बाम भी। फिलि स्माम राका-शास्त्रक क्रमाक्षकात उटल जानरत हात कि। अक्रम प्राप्तात बार्व स्थापना श्च मञ्जाचिकीबद्धाः नातः नानाचाता हात्थात सर्वापंत प्रतिक्ष कारवरक्षत्र । तमकाव লাকের তুলা জান হতাড়া বিশ্লার দানি তে বাজাতেনট সামপো। বীজাত MICHE SIMILE দেখাতেল। তার গালাপের জনো নতুন নকাম পার রপা-বালা। আরু একটি অভিনরণ মান্যান করেছিলেন। প্রচলিত আকারের চেরে হস্তর বন্দ্র প্রান্তভ করে আসরে বালাতেন দ্মি। সেই দীর্ঘাকৃতি সার্থের রাগের ালাপ থেকে শ্রু করে গং তান তোড়া रशङ्गानगरभ ज्ञान्द अतिहा ভানি নে তান সম্পূর্ণ করতেন! নিজেগ ত্রাকার সারকাষ্ট্রার মুদ্ধান ধা নাম পরেছিলেন - সারসাগর। ছড়ের টানে পুনে ভাতে সারের ভরণা ধর্মিত হত।

দিল্লীর সংগীতসমাজে তথন মধ্যা ধী অতি প্রসিদ্ধ কলাকার। আর নিজ দুগের বিশ্বরে সচ্চেত্র দপীতি।

সেবার দিল্লী এসেছেন খোরীশংকর। গছর জানের সংখ্যা কিংবা আলালা স্কুলন কলতে, জোলালা যার নি।

আপে মদমন ধরি কথা তিনি শ্রেশ-ছিলেন বটে। কিন্তু কথনো তেরি সংগা চিক্তুর পরিচন্ত্র হয় নি বা তার বাজনাও শ্রেম নি।

जनहे चट्छे टशन दर्नामनकाई काजदा ।

মান্দ্রাল থা ভার সেই স্রস্থানে মোলাতে জালালেন্ত্র অভালালচারি গং ভাল- কারি আর নাশা আলকার। অপর্প ভরি বাদনরীভিতে স্বলাগনে উমিশ্বালা তরশায়িত হতে লাকল।

আসাৰ দুলে পৰিক্ষা কৰে দিৱে বাজনা শেষ ক্ষমেন্ত মা লাহেৰ। তারপর নিজের দীর্ঘাদার সাক্ষমেন্ত দিকে দেখিরে এই মর্মে জানালেন এ বজে কেউ আমার মতন বাজাতে পাকবে? এয়ারসা কোটি হাার?

বিশিয়ত হলেন গোনীসকল : প্রজাপা আগনে কবান ধা এবন অক্সাক্ষ কেন্দ্রেন : গড়াইরের আরুক্ত কার্যক্র

ভার মানের মধ্যে শিক্ষী ক্রেমে **উঠন** হম হ্যার।

মান্দান পরি দিকে ভিত্র বেটারাশিক্ষার স্থিতিকারে ব্যালের কোশিক ব্যবস্থান ই

আপ? তার ছোটখাট শারামাটা চেহারা কেনে শংকাজুকে জিক্সেক করতেন

की. शी।

শিব হল সেই খ্রোভানেই আ্বনে সেইখানে কিছুদিল পরে আক্রমের ধ্রোনী-শংকর। সাজ্যান থার স্বাসাগারের আক্ষানের সার্বলা বাজিরে লে আসারে শোনাকরণ। নতুন বন্দ্র প্রস্তুত হলেই সংবাদ সেক্ষেম থা সাজেবকে।

দিক্ষীতে বয়ে গোজন জিনি। পরের দিনই মিন্দ্রী মহমার সংধান করে ধন্দ্র তৈরী করতে দিলেন। জ্যাদা করে নজুন সারঞা ঘরে আন্দোন করেকদিনের মধা। আরু বড় মাণের জে মন্দ্র দিক্ষামত বিশ্বাজ করতে লাখনোন।

ত্যুরপর দিল **শ্থিয় করে জান্**শ্লেন মুজ্যুম খাঁকে।

নিদিক্ত আদরে গোগীশক্ষর একেন। লোডাদের যধাে থী সাহেষের সংগে জাকাে প্রাটিকা উপস্থিত। বল্য বেধে বথন মিশ্রকী ব্যক্তনা আয়নত করতোন অম্পুত দেখাতে আলা। তার মাধার পাগড়ী ছাড়িয়ে উঠেছে মনসনে স্কাগেরের মাণে প্রকাত বল্টি।

ষিশত সংক্ষা হাতে গোণীখাকাৰ বাজাতে লাগলেনঃ আবালা সাবলা তিনি। লাকানের অন্ত্রিনা এই মাননের নিবালে শুরুত কমে নিরোকেন। তাঁর কেন তেপে গিরেছিল মজার বাঁর সাক্ষা আহ্রামে। নির্মার ক্ষাইরে হারব নাকি? কমি নেছি। বিলার ক্ষাইনে হারব নাকি? কমি নেছি। বিলার ক্ষাক বালা লাকী স্বাধ্যক্তার বৃদ্ধ সাবনের নাকি ক্ষাক্তার বৃদ্ধ সাবনের। নির্মার ক্ষাক্তার সাক্ষার বিলার ক্ষাক্তার। নির্মার ক্ষাক্তার সাক্ষার

Caleial States States

WIN STAND WAS CHOOSE WHEN AND

ন্তা লুবের কাইকারা সেরিটানকার বজনা দমিরে ক্লানের বজাসনা ক্রাকার আরু নিটাকরির কাশ করুত জ্যান ক্রিক ব্রির মত্তন। শ্রাক স্থাবার সর ক্রিকে শ্রাক অন্সতঃ।

বড় বাদ্যের বড় আওলাকে টিপা লক্ষিত্র কাজ দেখিলে সৈ আসল ভিনি হাং ক্ষম দিকেন। ৰাজনা শানে সহাই কচ্ছেরজড যালী হকেন।

ৰাজনা শেব হতে আবাৰ বৰ্মণ হল গাণীজনদেৱ ভারিক।

লোরীপ্রক্ষ নিশ্চ কোর ব্যক্তাক্ষর কর্মনান না। ভাহনার জালাক্ষেন না সকলে থাকে—উঠাইনে ও এগ্রালা ভাল আ্লাক্ষ্ স্বানারমে।

কিছ,ই বলতে হল না তাকে।

টিশা বাজে সকল সকল ধাঁ সকল হলে বলে রইলেন। এমন হার তাঁর জোল শড়াইরে হয়নি দিলাতৈ।

-- विजीवजूनाम म्हर्यानामाम





अल्पित्रक्रात

বিষক্রিয় খাদ্য

ATTION .

seet .

বিব্যার খাদা গলাধংশুরাল করে পার্নু-ভার অসাম্পর হওয়ার খবর মাঝে মাঝেই মাঝার বার। আঞ্চান্ত হুম কথানো নাজি-বিশেষ, কথানা একস্যুগ্গ আনেকে। সময় সাল্লর ভার পরিশতি কটে মার্শান্তক সাল্লস্কাতাতে।

ব্যাপানটো এমন কিছ্ অভিনৰ নয়।
অহপকার দিনে রাজা-রাজভা নগাববাদশাদের পাদাবদত্ত মাগে থাওয়ন হত
কীভলাস কিংবা কুকুর-বেড় লদের। ওপনের
ভিলা রাজনৈতিক গ্তেহতার ভয়। আমাদের কালো জ্ুটিছে ভেলাল খাদেরে
প্রাকৃতিখা। লক্ষা কিংতু আর একই মানে
ব্যক্তিভাগে। তবে পরিগতি আরও ভর্তকর
ভারত জ্বনা—অধাত বারত ভরতকর
ভারত জ্বনা—অধাত চারশ জন এবং
দেয়দেশে প্রাক্তিনেক মান্র ভেলাল
ভঙ্গা খারে প্রাধাতে আলাত হলোন।

জবন। নাল্ডবে দেখা গিয়েছে, খাদা বিষয়ে হওবার মালে ইচ্চাকৃত ডেজাগই একমান দারী নাম ভাছাডেও আছে নিজেদের অসাবধানতা এবং অজ্ঞাতাও। এইকম আন্দ্রাকৃত ক্রেটনা যাটে পাকে সামাজিক ভোজ বা শিকনিকের পর, বড় বড় চোটোলে ক্রিহেরা ছাল্ডবিলির চল্টবো। যাবে যাবে মুহস্থ ব্যক্তিত ও হয় না, তা নয়।

থাকা বিকলির হয় স্থারণত দ্ভারে— ১। রোগ বীজাগুল প্রভাবে, ২। রাসায়নিক প্রতিকাল।

শীজাশুঃ দূবিত খালোর সংস্থা ৰীজাণগোলি পেটের মধে। চাকে দ্রত বংশ-বৃদ্ধি করে এমন কিছু বিষ বা টকাসন মিঃসরণ করে বা শরীরের পক্ষে একাশ্ডই হানিকর। এরা প্রধানত সাল্যেন্টানেলা গোকীর **অব্যক্ত । স**ৃতি করে তীর উদ্বাহয়— বারবার বাম, পাতলা দাস্ত, অবসহতা। দ্যুক্ত বিশ্বন্ধিয়ার অপম্ভা গটাও অসম্ভা নয়। জন্মানা, ৰীজাণাও আছে---সেহন আছে ব্যেক্তাপুলী পটাকে ইলোকণ কাস। এবা बरमक्रीच क्वारक भक्तम करत हरे, भर्राकर, কল্টার্ড, মাংলের স্ট্রের মত খন বা আধা-ভরণ থালো। এদের বিষ্কির।ও সাল্যোনে-मान मछ। करणना योजानः अधानल कनवादी হতার মাহির পারে-পারে লেগে খেলা **থানাক্রক দ**্বিভ করতে পারে। স্ট্রাফাইলো হাওরাল ভেনে আঢাকা থাবারকে দ্বিত ক্ষতে পারে। সাগত্যানেলা সংক্রায়ত হয় तमारका शास, कृतिस करा, जाभाविकात वाजन, वर्षाव 'आवरणाणा रे'मृत हेलामि यायकर। প্রতিবেধের পথ হ'ল খাদাবস্তুকে ভাল করে থিরে ফটেন্ট জ্বলে সংস্পিপ করে নেওরা এবং নলকুপের বা কলের জলে কিংলা ফোটান জলে ধোলা বাসনে ঢাকা দিয়ে রাখা।

নটালিনাস নামে আর এক জাভীয় মারাজ্যক বজিলা কথনো থালে।
মিলো ভাঁর বিব স্থিত করে। এলের অবস্থান বিশেব করে টিনে-ভরা আ্যাসিডহাঁন থালের।
কোন থানারে গাঁজা বা স্যানের ব্দেবদ্দ দেশাল কিংবা বুলা টিন টোলা থোরে ফ্রেন্ট উঠলে গ্যাস সন্দেহে তা কেলে দেওরাই ভাল। বেহেভ্ বট্লায় স বজিলা বংগট লোপসং ভাই টিনের থানার অবতভঃ দশ মিনিট ফ্রাট্রে খাওয়াই নিরাপদ। ট্যাটো বা ফলে বট্লিনাস জন্মাতে পারে না

বীজ্ঞান, প্রভাবে প্রোচিন জ্ঞাতীর খাদ্য পচে স্থানিট হয় টোমাইন বিষঃ ধন ধন রক্ষা মিশ্রিড পাত্রনা দাস্ত এই বিষক্তিয়ার লক্ষ্ণ। অনেক সময় থালা-বাটিতে অদংশ্য প্রোচিন কণা লেগে থাকলে তা থেকে অথবা বাসি মাছ মাংসে টোমাইন বিষ সালিট হয়।

প্রজাবী কিছা কিছা কটিলা ও জিরি
খালা ও পানীরের স্পো গোণঠীর জনতত্ত হ
হয়, তেমান নিজেলের বিষ নিঃসরণ করে
বামি স্ভিট করে না ভারা। টাইফারড
বীজালা বিষ নিঃসরণ ব্যামি স্ভিট করলেও
ভাক্ষণিক বিপলের স্ভাবনা ক্ষা। এই
বীজালাও বহন করে জল এবং মাছি।

রাসান্ধনিক প্রক্রিরাঃ ডাল ছেল। মাট্র বাদাম ইত্যাদিতে বে ছন্তাক রুপ্যার তা ভীর বিবরির হতে পারে। বিশেষ করে সাব্ধান হওরা উচিত ছাত্যপড়া চিনাবাদাম সাধ্পরে বা সমানা সে'কেই পাওরা হর। আলাতে সব্দুক্ত কলা গজালে তাতে থাকে সেলানিন নাম এক ধরনের বিষাক্ত রাসান্ধনিক পলার্থ বা থোলে পোট রাখা বমি পাতলা দাশত ও অবসাদ হতে পারে। ব্যাপের ছাতা ও নানা রক্ষম আচনা লভাপাতার থাকতে পারে পিরকানন, অ্যান্ট্রোপন ইত্যাদি বিবরির পদার্থ। থাকা ভবের সমন্ত্র দরির প্রজ্ববাদীরা এইস্ব অথাদ্য থেয়ে বিবরিরার শিক্ষর হন।

খেসারির ভাল খেরে পঞ্চাবাত, সরবের সংপা দেশান পেরালকটা বীজের তেল খেরে এপিডেয়িক ত্রপ্সী হওরার কথা সকলেই কানেন। পেরালকটি বিব হিসাবে গণ্য হওরা সক্রেও এর চাব এবং সরবের সপো এই বীজের ভেজাল দেওরা আন্তও অব্যাহত

ভেক্তলর উপাদান হিসাবে সম্প্রতি আর একটি বিব্যালয় পদার্থ চালা হরেছে তার নাম ট্রাইঅংথ'-ক্রিলিশ-ক্রসকেট। ফল-শিলেপ বাবহাত এই তরল প্রদানটি সরবের তেলের সপ্পে মেশানর ফলেই মালনতে ও দমদমে সাত-আটশ মান্ত্র প্রকাশতাত বিকলাশে হরে পড়েন। অথচ হারা জেনে-শনে মান্ত্রের খাসে এই বিব ফ্রেশনে তাদের একজনেরও ফাসি হর্নি, ল্পীপাতরও

আন্তর্গল নানাক্ষম কীটালুন শক রাসায়নিক পদার্থ চাবের কাজে বাবহার হছে যা অসাবধানবশত খাবারের সংক্রা মধ্রে পিয়ে অনেক মর্মাণিতক দুখটনা খাটিয়েছে। ধলিজল খেরে অপাম্তার ঘটনা মারে মানেই শোনা বার। কিছু কিছু কীটালুনালা ও বাসনামালার গাঁড়ো দেখতে আটা ময়দ বা গাঁড়ো দুখল মত। বিষদ্ধ গাঁড়ো দুখল মানে মনেক মানা অসমেশ হরে পড়ার ঘটনা করেক বছা আগে এই কলকাতাতেই দটোছল। ছো। সংসারে রাসায়নিক সার বা কীটনাশা পদ পাঁডিনা বিশেষ বিশ্বদিতিক দিয়ে খান্সকল থান। উচিত।

রামার গ্রেড়া মশলার বা নানের সংগ্রামাট বা বালি ইড়াদি ভেজাল মেশান আজ-কাল সাধারণ ঘটনা হরে দাঁড়িরছে। এই রক্ষা অখাদে মশ্লা খাওয়ার কলে বড় রক্ষার কোন দুখাটনার কথা শোনা না গেলেও দাঁখিদন ব্যবহারে আল্ফিক প্রদাহ স্পিট ইওয়া বিশ্চিত্র নর।

আনেক বাভিত্তে স্বাস্থাবিধি পালন করার ইচ্ছায় শিশরে দর্ধ বারে বারে করের ইচ্ছায় শিশরে দর্ধ বারে বারে কেটোনর করেন দুব্ধর কাটে বিবক্তির হরে শিশরে উদরায়র স্থানি করতে পারে। চিংড়ি মাছের খোলায় অল্ডের প্রদাহ স্থানি হওয়া এবং নার বার বাথর্গে ছটেন্টি করার মত ঘটনা ঘটা সম্ভব। বিশেব করে বাদের চিংভিতে আলালা আছে ভাদের পজে তো বটেটিই। খোলাস্থানি হিংভিয়াছের বড়া বা চপ্পরে ভার উদরামান্তর ঘটনা বির্লাবর

বাভিন্ন কথা আলালা—তানবধানভান থান্য বিবাস্ত হওলা নিভাগতই আফালিক ব্যাপার। কিন্তু হেটেলো অথবা থানে-হল্টেলে রামা ও পরিবেশনের পূর্ণ রাষ্ট্রক বাদের হাতে নাকত খাকে, খন্দোর বিবাদিরা স্বাপ্তের ভালের সচেত্রন করার লারিত্ব ভোলা-দের। আর মানুবের থানো বারা বিব মেশার ক্রেই স্বাবিহান্ত প্রাণীকে তিকিব্রে রেখে লকে কাঁ!

--অধ্বনী সালত



নাক সতে চড়ে মনে মনে হ সল জয়।
নাব হাতবালে প্রেন দটো টাকাও কেই
অথচ দুম করে টাকসি চড়ে বসল। তারকর যাদ ভাড়া না দিতে পারে তথন। কী
হে হবে তথন সেকথা আর চিতা করতে
পারল না জয়। ওদিক থেকে মনকে সার্থ্য
আনবর চেণ্টা করতে থাকল। টানতে টানতে
চিক্টাটাকে আজ সকালের ঘটনায় ফিবিয়ে
নিয়ে গেল। মনে মনে মায়ের উিবগুলো
বারকার আওড়াতে লাগল জয়।।

শরীর ভাগ থাকলো কি কেউ শারে থাকে শুর্ শুর্ । মুখ ধুনোত চা থেবেছে । থেবেছে । থেবেছে । থেবেছে । থাকালার শারে পাঙ্গেছ আরার চিৎপাং হয়ে বিছলার শারে আরানার সাজনে উঠে গোছ। নিজেকে খাটিরে দেখেছে। শাড়িটাকে একট, সরিয়ে হাত, বাক সব দেখে নিজেছে লয়। ভারপার নিজের মনেই বলোছে, না এখনও চুপাসে রয়েছে গ্রীরটা। নিটোল হতে আরও কিছা দিন লাগ্র। ভারপার আবার বড়াস করে বিছনার গা এলিরে দিয়েছে।

আৰ ঠিক সেই সময় হা এসে চকেছেন ছবে। জয়ার ওপর এক নজর তাক্ষ্মে স্রা-

তারাজ্যোত মুখেপাধ্যায়

সারি ব্রেছেন, কীরে আবরি যে শ্রেষ পড়াল। বেরোব না। এইভাবে শ্রেষ বসে ঘুকলে চলবে?

ক্ষাগ্রেলা জ্যার মাথার মধ্যে যেন आर्जीक्षन स्ट्रेडिट्युट्स म्ह भाम द्वान एटारनर श्र आक्ष के मेन अकरें, अन्ध्य आहि करें।। এখনত শ্রীরের দ্বলিত। কার্টে নি। ঘরের प्राया मा ठावचाद शायाजीत कतत्व शाया थाता। ও অবস্থায় কারই বা বাইরে বেগেতে ইঞ্ছ করে। ইচ্ছে করলেও কি বেরেনে। উচিং। যাদ চলতে চলতে মাথাটা দমে করে ঘুরে হায়। তখন কে দেখৰে। এসৰ কথা কী মা একট্ ভেবে দেখেন না। না, ভার সংজ্য সম্পর্ক শা্ধা টাকার। তারপরই মার সাংগ্র म्-अंदर्रे कथा कार्तकारि इता शिक्षा सन गुल आरू अत्यक कथा गरिनाया मिलाक भारक। वालारं, मूथ प्रांच एठा खामाश्र होका দের না। যা দেখে দেয় সেটাই তো এখন রোগে খেরে নিরেছে। তাহলে আমি বেরিয়ে खाक्रशाक्के। करून की करत मानि ?

গলাবেশ ছেড়েই কথাণালো শ্নিক্ষেতিল নাকে জয়া। যোলা জানলা দিবে পালাপাদি যাড়র অন্যবনহলে চলে গিয়েছিল জন্ম উভিগ্লো। তাই না বেল বিশ্বত ছফে বর্গে-ভিলো, আঃ. জয়। একটা, আন্টেড

তাতে করা আরও চটে উঠেছিল। বলৈ-ছিল, আমি কী কাজ করি পাড়ার লোকের ভানতে কি আর বাকি আছে। বেশ্ করি করি। ওরা কী আমাদের থেতে পছতে ছেগ্

এরপর আর মার মূখ দিয়ে কথা বেরের নি। মূখ, ভেরেছেন, মেরেটা জেলী কিন্তু এমন উলু কথাবাতী তে। বলে না। কী হয়েছে কে জানে ধর আজ।

 ক্ষিত্র মান্টা বেশিক্ষণ বাবার ওপর থাকস
না। নিজের মনেই এক সময় বললে, আহা
বাবার কি দোব। পকাখাতে প্রপান মানুবেট
এ-পাশ ও-পাশ স্বাক্ত করতে পারেন না
ভারত এই, মানুবাই একদিন অসুরের মতো
ভারতের সংক্ষারের আনো। ভিন্ন ভিন্তটি
নোমর বিট্নে বিশ্বভোন। একটা বেলা থাকলে
সংস্থারের ভারতে ভারতে রোগাটা শেব প্রাক্ত এইসব ভারতে ভারতে রাগাটা শেব প্রাক্ত একে পড়েছে সামার নিজের ওপর। ফোরা মানুবা কাল্য পারের দায়িবটা তো স্লোগারই দেবরা উচিং। সেরের তো সাভান। ভারতের ভারতে বল্পা ভারতে সাভান।

এইসৰ ভাৰতে, ভাৰতে ডড়ান্ধ করে বিষানা ছেড়ে উঠে পট্টোছল জন্ন। বিশ্বীয়াই পড়া স্নায়(গ্ৰেণা তখন বেশ বেশ সটেজ হলে উঠেছে। একটা আগেল ক্লান্ডি গা ছেড়ে প্ৰালয়েহে ৪:ত এক উপাচলে।

ক্পথনৈ চাকে সাধানের ফোনা মাধিয়ে মংখটাকৈ একট্ ছিমছাম করে দেওয়া সর-কার। পাউডার পাফটাকৈও একবাম বংলিমে লিডে ছবে মাথে। ভাল দেখে একটা শাড়িও পরে লিডে ছবে। সুবই একে একে করেও। আরু ভারেপরই মারের পিছুডাকে কন না দিয়ে বেরিয়ে প্রেড জায়।

টাকি স্টাকে একটা বাড়ির সামনে দাঁড় করাল জয়া। আটিস্ট স্কলিল ব্যেসের স্টাডিও। দোত্শায় সির্ণাড দিয়ে উঠে প্রজায় টোকা মারল। আর স্বাই কলিং বেল টেপে। কিন্তু সলিলদার কাছে এটাই জয়ার নিক্ষম্ম স্বেক্ত।

—-আরে কয়া, কাঁ গবর। তোমার তো পাতাই নেই। শবারটা তো দেখছি টল থেয়েছে। ইস্কেড রোগা হয়ে গেছ। অসুথ কর্মেছে। শন্তাহিল্যা এক বাড়াবাডি অসুথ ডা জানতাম না।—একগাদা কথা বলে গেল সলিল বোস।

জন্ধ অভিমান করে বললে, শুন্ধেন জন্ম, জথ্য একদিন তো দেখতেও গেলেন্ লা লংকতে বাবো ভেবেছিল, কিন্তু এক কাজের চাপু বে সময় করে উঠতে পাছি দি। আর তারপর দেখ দা ভোনার উলো ক্ষেত্রটা কাজ ছেড়ে দিতে ছলো। ভারপর বিজে প্রেড্যা।

সালি বাস্থা কথাটা লেখ করতে সিল না কথা। খগলে, কাজের জনোই আমি এসেখি সালিলা।। কথাস বসে থেকে সংসালকে একেখারে হাড়জিরজিরে করে ছোট্টোছ। ডাই জোর করে বেরিয়ে পড়লায়।

সাঁলল খোল কেমন বিৰক্ত বৈধি কৰাণ।
বললে, মানে, কাজ তো এখন সেই করা।
বা কাজ খানে সে তো একটা নম্বুদ্ সেমেক দিয়ে সারাছ। এ মেরোটি নতুন মডেল লাইনে লেয়েছ। ফিলারটা ভাল।

করা করে হয়ে বললে, আমারও ফিগার ভাল একথা তো একদিন আপুনি বলেছিলেন স্টালান।

—হা ভাতো বলেছিলমে। কিন্তু এখন সৈ ফিলাব তো ভোমার নেই। আরও কিছু দিন মাক না। শরীয়টা ঠিক হেক। তথন ভেকে পাঠাব।

ক্ষার এখন মারশ্লা অবস্থা। বললৈ, আপুনি শিল্পী। বে ফিগার আপুনি দেখে-ছিলেন আমাকে সামনে বাসরে সেই ফিগার কি আপুনার ছবিতে ফাট্টিয়ে ভুলান্তে পার্কেন

. একথায় সাগাল বোস বেশ অস্ক্রিথের
পঞ্চা। মকুন মডেল পেয়ে গেছে অতএব
জয়াকে এখনি ভার প্রয়োজনও নেই। ভাই
একট্ব ঘ্রিয়ে বললে, ভোজাব কথা হয়তো
ঠিক কিন্তু মডেল একট্ব তরভার্জা মা হলে
শিবপার হাত ঠিকমত খোলে না। রাধনে
বতই ভাল হোক মালমণালা ঠিকছত না
হলে কা জাল রাধতে পারবে। ব্যাপারটা
এই।

এরপর আর কিন্দের আগায় বনে থাকবে জয়া। উঠে পড়ল। যাবার আগে একবার ভেতরটা উপি মেনে দেখে নিশ জয়া। গা-খেলা অংশখার মড়ন মেরেটি বসে আছে। জয়াকে দেখে কাপড়টা একটা, টেনে নিল। ক্রেরটির শ্রী আছে, স্বাদ্ধ্য আছে কিন্তু জয় বেন প্রেয়প্রির তা মানতে চাইল না। মনে মর্জে বুগলে, ও আর এমন কি। গোলাদোল স্মাটিক্রিটো। এ আবর একটা ফিলার।

A Section

দরজার নাখটার দাঁড়িরে স্থালিল বোচ বললো, কিছা মনে করো না জন্তা। আবাহ এসো।

উত্তরে জন্ম শান্ত একটিলতে ন্সাম হাসি ফোটাল ঠোটো। ভারপন্ন জার পেছতে না তাকিন্দ্র ভারতন্ত্র করে সিশীত বৈদ্ধে নেতে এল নীচে। টাফাসিন্ন দ্বজন খালে গাদির অপ্র গা এলিয়ে দিল। ছাইভার ঘাত ফোনতেই নিম্নোধনা প্রলম্ম বললে, চল্ল-পোকাস্বাস্থা।

শাধ্য ছাতে সজিল বৈদ্যাল পট্টিছেও থেকে সেয়ে স্থালার পর একটা দ্বিন্দ্র মাধার মধ্যে গেড়ে বাসবার চেপ্টা করছিল কিপ্টু ক্যাকে এখন মদ শক্ত করতে হবে কেটে পড়লে চলবে মা। ট্যাকালর মিটার ধাড়ছে। এই সময় তার মনের মিটার ভাউন হলে জলবে কেন।

পাক'সাক'দে রবীন মুখ্রটির দট্রডিও এর কাছেও করোকবার কাজ করেছে ভাষা এর কাজ কম কিন্তু নাম বেনি। এপর ছবি লাজে কলীম। প্লাভভাষ, জায়াভাব, কন্যাভ ব এইসৰ ফাটিয়ে তেনেন তার আকা ছবিতে গুল নিদেশি সেইরক্ম মংখর ভাব করতে ছয় মডেলকেও। গেশাক সাবেকি। সলিল-দার মতো খোলাখেল। ময়। সলিলদার হাত त्यातात अहीं परक भाका। कार कक्रे. বেশি অত্রক্ষতা শয়েছিল সলিলদার সংগ জয়ার। কর্তাদন 🔻 আঁকতে আঁকতে ক্লন্ত হয়ে তারই প' এসে শ্রয়ে পড়েছে স্লিলদা। শ্রেশয়ে তার শ্রীর নিয়ে ^{হা}ডাচাড়া করেছে খেলা**জ্বলে। এইস্ব** নাকি कत्र हम निक्नीरक वर्षाक ज्ञाननम्। জ্যানত জোনস খাটলৈ তবে তো ছবি জীবনত দৈখাবে শিল্পীর কুলির টানে ৷ তাই মঞেল ছাড়াও আশাদা একটা ছমিষ্ঠতা গছে উঠেছিল স্বলিগদার স্পেন। কিন্দ্র সেই अभ्यक होत्क काम त्यम काम्रणहें जिन म र्जााविन्हे अधिका (वाञ्चा सहैतिक) **अवश्यात कथा भद्रम, बिद्ध, ग्रेकाब रह** আগাম দিতে পারত। সেক্থা ভোলবার ग्रासाशके फिल मा अभिक्रमा।

আজ জয়ার ভাগাটো সভিষ্টি খারাপ রবীন মুখ্টির কাছেও স্বাধিধ হলো না। উনি বলালন খাপনার চেছারার তো' জোন কাজ নেই আয়ার হাতে। এখন আয়ার একজন ব্দার দ্বকার। অগিতম স্মারের জন্ম দিন গ্রেছেন এই জাবটা ফ্টিয়ে ভূলতে ত্বে ছবিতে। তা সেতে। আপনার মতে আপ্সর্কারী মেরেকে দিগ্র হবে না।

জয়া তথ্ ৰণণে, জাগ্লাকে সৈক্ষাপ্ দিয়ে বৃত্তি সাজিয়ে আঁকুন না।

রবলৈ মুখ্নটি জয়ার কথা শুনে ছেলে বললেন, ফেকআল দিয়ে অভিনয় চলে কিচ্ছ

일하다 가게 되었는데 하는 것이 없는데 얼마를 하게 하는데 하고 말을 했다.



শুকা, কলেজ এবং ইজিনীয়ারিং

ার্য ও অফিলের জন্য ন্টেলনারী, কাগজ, সাডে, প্রইং,
ইজিনীয়ারিং ও যাবতীয়
উৎকৃতি ছাপার কাজের গলৈড
প্রতিষ্ঠান।

क्रैंक (है मबादी (है। जें

৬০ই, রাধানাজার প্রটিট, কলিবাতা—১ ৬ইহ-৮৫৮৮, ৩ব-৪৮৯৪; প্রায়: ক্ষারিদন—হাওড়া গোপ্ট বর্ত্তী-ওচ, হাওটা আকা চলে না। এক একটা ব্যেসে এক

নকম রেখা পড়ে দেখের প্রতিটি অপো।
আপ দিয়ে তা । একা যান না। সেই্ট তো মডেলের দ্রকার হয়। নইলে
আমরা মন থেকেই আকতে প্রেত্ম।

হতাশ হয়ে উঠে পড়ল জয়া। বিদায় র সময় জয়ায় কর্মণ ম্থের দিকে কয়ে কি য়েন মনে হলো। রবীনবাব্র। ট্রিচনতা কয়লেন মনে মনে। তারপর লন, দিনদেশক পর একট্থবর নেবেন। ট্রিডগ্রে আলার কথা আছে। সেটা লাকে দিয়ে ভাল চলবে।

জন্না আবার ট্যাকসিতে চিড়ে বস্প।

দশেক প্রের কথা এখন না ভাবলেও

ব। তার সমস্যা আজকের। এই

তেরি। ট্যাকসির মিটার বাড়ছে। কিন্তু

দম তো এখনও একটা প্রসাও হলো

এখন কোথায় খাবে জয়া। আরও ্কজন আটিস্ট এর সংখ্য জানাচেন ছ জয়ার। তারা একট্লসদভর ভটিকট। রেভাগই নিল'জ ছবি আঁকে কোরা : ও কম দেয়। ইম্জতও যায় অথচ পেট না। আজা অবশ্য মান সম্মান ইচ্ছত র মাথা ঘামাবার মতো মনের অবস্থা জয়ার। এখানি তার কিছ, টাকা চাই। তু ওদের কাছে যেতে আহু ভরসা পাচ্ছে ্রাও যদি এইভাবে বিমুখ করে তখন াবে কোথায় : তর থেকে মার্থার কাতে ল হয়। ধার চাইলে কিছা টাকা পাওয়া 3 (আয়াংলো-ইন্ডিয়ান মেয়ে। জয়ার ় ই মডেলগাল[ে]। তবে জয়ার থেকে কাজ অনেক বেশি। বিলিতি কোম্পানীর লপনের বাজারে ওর নাম একচেটিয়া। ণর অঞ্কও হোটা।

ম্যান্ডান স্থানিটের ফ্ল্যান্টের দরজায় দান্ডিয়ে ং বেল টিপল জয়া। দরজা থুললেন রি মা। ভেতরে নিয়ে গিয়ে বসালেন। মর্থা কোথায়ু : উদ্বিশ্ন কন্টে জিজ্ঞাসা ল জয়া।

মার্থা বোম্বাই গেছে। এক সংতাহ পরে ববে। মা বলগেন।

কথাটা শন্দে জয়ার মাথায় যেন বাজ লা। মথে একরাশ আভৎক জড় থালো। রি মা তাই দেখে বৃঙ্গালেন, ভোমাকৈ মন যেন দুবাল দ্বাল লাগছে। রোটাও তো শকেনো শকেনো। তোমাদের দকে থবে নজর দেওয়া দরকার। মাখন, তা, বদাম খ্ব করে থাবে। নইলো শরীর কবে কেন। মাথাও ঠিক তোমার মতে। ছু খেতে চায়্ম না। কেবল চা আর ক্ষিণ মি জ্লোর করে করে। থাওয়াই। পেন্তা মি জ্লোর করে করে। আর্মাই। পেন্তা মি চিয়াতে চায়্ম না। আমি তাই সরবং র খাওয়াই।

এসব কথা কানে চুক্ছে না জরার। স্তা বাদাম খাবে জরা। ভাত খাবার। সো জনুটতে না। বললে, আজ উঠি। মার্থার মা শ্বে মাংশ ছাড়ালেন মা। পেশ্মীর সংগ্রেকাফ থাওরাজেন। থিদেও পেরেছিল জন্মর তাই আর আপত্তি করল না।

অন্যদিন হলে জয়া মাথা খুরে ওখনেই পড়ে যেত। একটা টাকাও এত খুরে রোজগার হলো না অখচ টাকেদির মিটার তো ১ড়ে বন্দে আছে। আন্ধ কিব্দু একটুও দমল না জয়া। নিজেকে নিয়ে এতজল জায়া খেলছিল। স্বদানেই হেরে বঙ্গে আছে। খুটি শেষ।

ট্যাকসিটাকৈ ঘিরে তথন শেশ ক্ষেক্ জনের জটলা শ্রে হয়ে গেছে। বেশিয়জাগ শোকের নঞ্চর তথন জয়ার ওপরে। স্বাই উকি মেরে দেখুছে। জয়া চুপচাপ রুসে আছে ট্যাকসির মধ্যে। মুখে কথা নেই কিন্তু একরাশ চিন্তা ঘিরে ধরেছে তাকে।

টাকসিওলা ভিড়ের দিকে কথাগালো ছড়িয়ে দিতে দিতে জয়াকে শ্রানিকে বললে, চল্লিশ টাকা গ্রিটারে উঠেছে। এখন বলছেন টাকা নেই। এই নিয়ে তিন বাড়ি ঘ্রালেন। তা অমার ভাড়া মেটারে কে।

জয়া উত্তরে বেশ শাশত স্বরেই বললে, টাকার চেম্টা তো কর্মশুম কত। কিন্তু পেল্মে না। কী কর্ম বলান। আপনার টাফা আমি মারব না। আজ্ব না পারি পরে দিয়ে দেব। বাভিটা দেখে রাখবেন চলনে।

টাকসিওলা লোক খারাপ নয়। তাই ভিড্রের পাদ কাটিয়ে একট্ এগিয়ে গেল। ভারপর একধারে গাড়িটাকে দাঁড় করিয়ে বললে, পরে দেবেন বললে কি আমাদের চলে। পেট্রল আছে, মোবিল আছে এসব তো কিনতে হবে নগদ টাকা দিয়ে। তা বাড়িতে গিয়েই না হয় টাকা দেবেন।

সোজা হয়ে বসে স্পন্টই বললে, বাড়িতে টাকা থাকলে কি আর রোজগারের জন্যে সেই থেকে টো টো করে ঘ্রছি। আজ বরাতটাই আমার খারাপ।

ট্যাকসির অ্যাসিদেটনট ছে।করাটি এডক্ষণে মুখ খ্লল। বললে, কিছু যদি মনে না করেন দিদি তে একট কথা বলি। ট্যাকসির ভাড়া দিতে হবে, বাড়িতেও কিছন নিরে থেতে হবে বখন তখন শ্বে হাতে
ফোরা ঠিক নর : হৈটে মুখে বড় কথা হরে
বাজে কিন্তু বাজের তো আমরাও ব্রি।
তাই বশভিনাম কিন্তু বিদ্যালয় কাম বিদ্যালয় কাম বিদ্যালয় কাম বিদ্যালয় কাম বিদ্যালয় কাম বিদ্যালয় কাম বিদ্যালয় বিদ্যালয

ইণিগড়টা ব্ৰুড়ে অসুবিধে হলো না
সমার । অন্য সময় হলে ঠাস করে ছেলেটার
গালে একটা চড় বসিরে দিড় জয়া । কিন্তু
ভাজ হাত উঠল না । আর কেনই বা উঠকে ।
যে প্রশ্ভাবটা ছেলেটা করছে তারই তো
কাছাকাছি তালের ব্যবসা । মডেলগালের কে
ভাল চোখে দেখে । কিছু না ক্রলেও
দ্বামের লন্বা লেজ তালের শেছনে খুল্পেই ।
তাই আর কথা না বাড়িয়ে শ্বু জিজালা
করল জয়া, মিঃ রায় কা করেন?

ছেলেটি একগাল হেলে বললে, ক্সমেন আর কা। বিরটে ধনী লোক। কাসক্রমা কিছ্ নেই। তাই আমোদ ক্তিতে ক্রেজাজটাকে সবসময় চুবিরে রাখেন। ভরের কিছ্ নেই দিদি। এমনিতে ভরির ভাল লোক। ওই একটা, আর কি।

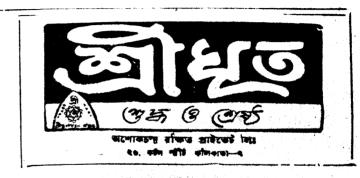
ছেলেটির সংগ্য ছিঃ রারের বেল জালা-গোনাই মনে হলো। এর আগে হরজো জরার মতো অনেককেই ওর হাতে তলে দিয়েছে।

ঘরে ঢ্কেতেই মিঃ রাম বেশ কিছ**্ল**ণ জয়ার দিকে তাঞ্জিরে সইলেন। **তারপর** বললেন, আছে। আপনাকে কোথার দেখেছি বলুন তো। খবে চেনাচেনা লাগছে।

জরা দ্দেশবের বললে, দা আমাকে কোথাও দেশেন নি। এর আগে আমি আম কাম কোথাও এভাবে আসি নি। এই প্রথম। তাও দারে পড়ে।

মিঃ রায় জিতে চুকচুক আওরাজ করে বগলেন, না না আমি সেকথা বলছি লা। মানে আপনার ম্থটা আমার খ্বই পরিচিত্ত লাগছে। যাক গে।

আবার কি থেন খাজতে লাগলেন জয়র মধ্যে। দ্টো হাত দিরে মথেটা ভুলে ধরে দেখলেন কিছ্মাণ। সারাগারে হাত বোলাতে লাগলেন। তখনও যেন ভয়লোক মনে করবার চেন্টা করছেন। তারপর এক



ক্ষার জনকে ন্তালন, আপ্নাকে আছার বাব কল লাগাছ। বজে জনার ইতি ধরে আদর করে কিছানার ওপর বসালেন।

বৈল টিপ্তেই বেজর। দ্বগোলাস দুখ দিহে গোল। উনি ভায়াকৈ বলজেন, নিন্ খেরে নিন্।

জন্ন জাপন্তি জানাল, না না এসব আৰার কেন।

ভর্মেকাক মিণ্টি ছেসে বললেন, আপনি ভাতিব। এটাকু না খেলে আমি কাল হাবো। নিনা চুমকে দিন।

জ্জার হাতটা নিজের মাঠোয় ধরে খবে আত্তরিকা আলাপ করলেন ভদ্রগোক। বছর পার্যারণ বরেস। শিক্ষিত লোক। কত ভাল ভাগ কথা বলছেন। তবে এ ছাতগতি কেন? निरुक्तक घरन काबरक नाशन करा। एथन আনেক কাছে টোনে নিয়েছেন জয়াকে। বড আলোটা নিৰে গ্ৰেছ। মুদ্ৰ বাভিটা ক্ৰলছে। নীলচে আলো। মাথা, মথে, বকে পা সব নীল দেখাছে। মনে হতে মেন প্ৰিল্ল রাতে সমাদের জল হ'াছে চাঁদের আলো ঠিকরে এসে পড়েওে গারে। সেই সময়টা মন অন্য এক জগতে চলে গেছে জয়া। সার্গদন নিজেকে নিয়ে জয়ো খেলতে খেলতে উটকো ঘ'টি লেকগ্যালত ভান ওঠাল। ভাই এখন আর মান ইংজ্ত, এসের কণা চিন্তা করছে না **কা**য়া। কেতার জানকে নিশ্চিত। এই নিশিষ্টত তাই সারাদিন খ'ডেজ বেজিলয়াত। হাজার মাথা খাঁতেও পায় নি। তাই এখন শিক্ষেকে এত থোলাখালি ছেন্ড দিয়েও একটা সংখ্ একটা সারাদেহ জোলা ভণ্ডি অনভেৰ করছে জয়া। বেশ লগিছে। আরও **হ'ত পা ছড়ি**য়ে গা এলিয়ে দিল জয়া।

কতক্ষণ পরে বড় তাগোটা ক্লালাভ তা টির পায় নি জয়া। এই ফ'কে হাবেল একটা ম ম দিয়ে নিয়েছ। চোথ রগড়ে উঠে বসল শ্রা। তারপর রাথরামে ঢাকে চোখে, নাথে, গাড়ে জলের ছিটে দিয়ে ভিজ্ঞায় নিজ। মান মনে ভারল কয়া সব বাবস্থাই আছে যখন গনটা সেরে নিগেই হয়। মান হওয়ার সাঞা সালা লাওয়ারটা ছেড়ে দিল। তারপর বেল করে সাবান ঘরে গা ধ্রেলা জয়া।

বাধরুর থেকে যখন বেরোলো জয়া তখন ও কে অনেক ফিওফাট দেখাছো। সারাদিনের প্র শরীরটাও বেশ করকরে লাগছে। মিঃ রায় এত্জাশ জয়ার জনেই অপ্সক্ষা করছিলেন।

টাকা বের করপেন মি: রায় । টাকাগালো হাতে দিয়ে বরমার পার্চার শ্বা করদেন । নিজের মান বিভাবিভ করে কি যোন সার বলতে বলতে একেবারে এসে দাভালোন জয়ার সামনে । ওর মাখের দিকে অবাক চাথে ভাকিসো থেকে খ্ব মিহি গুলায় বলতেন, ৫ তক্ষণে চিনতে পারলাম । কিম্পু একটা বেরা হয়ে গোল। খ্ব আগতে আতে কথা-গালো বলে একটা দাখিন্যাস ফেলনেন মি: রাজ। —নিদ ধন্ন। ট্রাকাস্টো জয়ার দিকে
আলিকে দিকেন।

টাকাগালো হাত বাড়িয়ে নিল জয়। দুশখানা একলো টাকার নোট। এতগালো টাকা মান্ত দুখেটায়ু রোজগার। অথচ জয়া পরপর তিনদিন সিটিং দিরেও আটিশ্টদের কাছ থেকে এর সিকি টাকাও আদায় করতে পারে না। তাই অজ্ঞানেতই বলে ফেলল, এত টাকা।

ীয়ঃ রার্ত্ত গশতীর স্বরে বললেন, জানেন না ডাই। জানলে ব্রুখতেন আপ্নার দায় এর থেকে অনেক বেশি।

মিঃ রায়ের কথার ইণিগতটা ধরতে পারজা না জয়া। সে একজন সামানা মাডেলগালা। দেহ ভালিছে রোজপার। তার মালা
আর কতটকে। কিণ্ড মিঃ রার যেন জয়ার
মধ্যে নড্ন কিছ্ খাজে পেরেছেন। তারই
জের টোনে একজোড়া চোখ দিয়ে জয়ার
সাবা খাবীরটাকে বারবার জরিপ করে
চলেকন।

মিঃ রাষ্য আবার শৃত্যু দ্বালেন। বলকোন লোননু জ্যাদেবী, আমি একজন দুশ্চরিত্র লংপটা রক্ত মাংসের মেরেরা কেউ আমার কাছে ছাড়া পার না। তাই আমি বিরে করি না। বিরে করলো আমার সতীর সংশা বিশ্বসাধাতকতা করতাম। ছেলেমেরেদের টোখে আমি হতাম এক লুলাংগার জ্মন-দাতা। সেই জনে সংসাব পাতি নি। জগতে ভামার ভাপনজন বলতে কেউ নেই। আমি ব্দরাকীস, ভামি লম্পট, আমি দুশ্চরিত্র। ব্দরাকীস, ভামি লম্পট, আমি দুশ্চরিত্র। বাংবার কথাগালা যেন একট্ উত্তৈজ্ঞত ইয়ে বলালেন মিঃ রাষ্থা।

জয়া অথাক হয়ে শ্নেতে শ্নেশত প্রদালকক সাম্পনা দেবার জন্মে বৃদ্ধার্থ বললে তাপেনি ব্যন্থাইস লাম্পন্ন। আপেনি থাব ভাগ লোক। ব্যন্থাইস লোক কথনও নিজেকে ব্যন্থাইল বলেও

মিঃ রায় মৃদ্যু ছেসে বললেন, আমি ছেলমান্ত্র নই যে এ মাকে যা থালি বালিয়ে দেবেন। আমি হা আমি এই। কিন্তু তব্ আমি একটা, সংসারে একট, চিড মাইয়ে দিলেন। ঝ্ব ক্ষাত করজেন অ মার। প্রথমে ব্রেডে পারলে ইংডে। নিজেকে সামলে নিতে পারভাম। কিন্তু বলন ব্রুডে সারলাম তথন আনেবটা এলিয়ে মেছি। আপেই তো আপ্লাকে বালছি মেহেদের নাগালে পেলে সংম্ম বলে আমার কিছ্ম থাকে না। আপানি যে অমার সেই সংসারের এককন।

কয়া বিশ্বরে হতবাক। এস্ব কী
বলছেন ভদ্রগোক। নিশ্চরই কার্র সংগ্র ভাকে মিশিয়ে ফেলে ভূল বক্তেন। এবার তাই কয়া একট্ স্পন্ট হলে। বললে মিশ রায় অমার মনে হয় আপ্নার বোধহয় কোথাও ভূল হুজে।

কথটো লেব হবার সংগ্রা সংগ্রা ক্ষার ক্যুতটা চেপে ধরলেন ভদ্রলোক। ভারপর ভাকে টানতে টানতে পাশের একটা খবে নিব্লে গিবে বললেন, আমার ভূল! চেবে দেখনে। নিজেকে চিনতে পারেন কিন। দেখন।

দেওয়াল ভাত তারেলপেলিটং করা ছবি। একটা দুটো, তিনটে, চারটে, পাচটা...। জয়া ভাকিয়ে থাকল পাঁচ নান্দর ছবির দিকে। তারই ছবি। আটিলিট রবীন মুখাটি এপকছিলেন। বধ্বেশে। সলক্ষ হালি।

মিঃ রায় আবার খারে ক্রকেন। বললেন, এই হলো আয়ার ছবির সংসার। এরা কেউ আয়ার কাকীয়া, কেউ আসিয়া, কেউ আমার কাকীয়া, কেউ আমার কাকীয়া, কেউ জিদি কেউ ছেউ-বোন। পাতানো সম্পর্ক দিয়ে আমি আয়ার চাবর সংসার গড়ে তুলোছ। জগতে আয়ার আপ্রকার কেউ নেই। এদের সংপ্রেই আমি কথা বলি। আয়ার মনের প্রাণের কথা। তুলি বদমাইস লম্প্র দ্বাক্ত দেবেনা। তুরি আমি আয়ার কেউ ঢ্কুতে দেবেনা। তুরি আমি আয়ার এই ছবির সংসারে আয়ার আই ছবির সংসারে খ্রুব

তারপ্রই হঠাং ঘারে দাঁড়িয়ে বল্লেন, জ্ঞানেন আপনার এই ছবিটা রবনীবাবাব কাছ থেকে কিনেছিলায় দশ হাজার টাকা দিয়ে। আপনার সপো একটা মধ্র সম্পর্কাও পাতিয়েছিলায়। বিশ্বু রম্ভ মাংসের আপনি আমার কাছে এসে সে সম্পর্কা ভেঙে দিলেন। আপনারা তো খেজি রাখেন না। মিজেদের মডেলগালা বলেই শ্যে জানেন। কিন্তু আমার মাতা কত লোক আপনাদের ছবি নিয়ে কোন স্বর্গো বাস করে তা যদি কানেরেন তাহলে নিজেদের একটা, আড়াল করে রাখতেন নিশ্চম

এবার জার সাভাই মাথা খারে পাড়ে হাবে। এ-লাইনে নামার পর থেকে চক্ষ্মগঙা খাচ গেছে কবে। কৈছা খানে শানে কান-জোড়া হারেছে বেহায়া। দ্রামি রটতে রটতে দেহ ছারেছে নিলাফা, কিংকু আজ এসব কী শান্ত ভদ্রালাকো মাথে। এ যে একেবারে নতুন খতাব।

কী ভাষে বিদায় নিগ মিঃ রায়ের কছে থেকে তাও মনে পড়ল না। কখন ট্যাকসিতে এ:স বঙ্গল তাও খেডাল করতে পারল না। বাড়িতে পেশীছে মার হাতে টাকাগালো দিয়ে নিজের ঘরে চাকে দরজা বন্ধ করে দিলা। ভারপর সটান খাটের পর পা ছড়িয়ে শাুয়ে আরামে নিশ্বাস টানতে লাগাল জয়া।

অকটা অণ্ডুত আগ্রেক্তে তথন জয়ার সারামন আছার। নিজের সংশ্যু থেন নতুন করে পরিচয়ের আনন্দ উপভোগ করছে। এক সময় একরাল ঘান এসে জড়েল চোধের পাতায়। অর ঠিক সেই সমর জয়ার থেন মনে হংলা ভার সারা শ্রুবীটা হাওরার গুলুতে দলেতে মাটি ছাড়িরে অনেক ওপরে উঠে যাছে।

রূপসীর খাতা



হাসলে এক বরা মুখাই বদি না বরলো তাহলে সে লাসে মেহেম্মী আবেল আসবে কোণা থেকে? ডাই স্থানী সংশ্র হ'ত হলে মুজো বরা বিজ্ঞাপনে নাভাবে নানা রক্ষের দাঁতের থাকি আমার কিন্তু কটো মনে রাখি বা কটো বাবহার করে আমার বিশ্বাস ভাল ভাবে দাঁতের যত। করকল দাঁত ভাল আবে দা্ধু তাই নয়, সৌদদ্ধের বিকাশ হয়

দতি প্রতিদিন দ্বার মালা উচিত। বাতে শোয়ায় আগে দাত বাস দিয়ে ও বেশ বিভূঞ্গ মাজনসহকারে মুরিয়ে মুরিয়ে মাজ: ভাল। তারপর । ^মুধ বেশ ভাল করে ধাুয়ে 'লিসটার্টীন' কিশ্বা 'ভেটল' দুই ফোটা এক ক্লাস কলে দিয়ে তাই দিয়ে বাগ কয়েক কুলকুচি করে তবেই মংখ ধোয়ার প্রোগ্রাম শেষ করা ইচিত। বাস তারপর নুন জলে ভিজিয়ে বাশতে হয়। সকালে মুম থেকে উঠে ওই নুন জব্দ ষেটকু লাসে লেগে থাকৰে তাই দিয়ে দতি একবার ঘষে নিরে ভারপর কোন ভাল লাতের গ'্ডো মন্তন আছে লের সাহায্যে দাঁতের উপর ঘষে দ্রুপে চেপে উপকারী माला जान। भवतिहास सान ६ প্ৰ নিম্দতিনে নিমদতিন। সকালের সাধুকে সবচেয়ে ভাল। এছাড়া প্রতিবার খাওয়ার পরে মথে ভাল করে কুলকৃচি করে খোষা আর আঙ্ক লৈয়ে মাড়ি ও দাঁত रहरून रहरून स्थाया मत्रकावः अन्न स्टब्स मोट সমান হয় আর মাড়ি স্থেও সংক্র হয়।

অনেকের দাঁত দিরে অধাং মাড়ির লোড়া দিরে বত পড়ে। তাদের একারে নিয়মিত দাঁতের বতা করে স্ফুল পেডে

দেখা গেছে। অবশা আনক কে'ত সমন্ত্র ভাতারের প্রামশ ভাড়া চলা নর। এভাবে অবদা যতা নিলে মা:বেও দুগণ্ধি হয় নাঃ তবে পেটের গোলমাল হলে কিম্বা লিভার খারাপ थाकाल মুধ্যে গদৰ হয় স্থা 🕆 ভাস্তারের স্থেগ মধ্য করে ঠিক করে নেওয়া উচ্ছ। এ-ও দেখা গেছে, পোটর গোলহাস বেশী থাকলে দাঁও অকালে পড়ে যায়: দাঁত প্রিকার ও স্বাল্ধ ম্থ 日本のう মহিলাকে অনেক বেশী অক্ষধণীয় করে তোলে ৷

এতাে তাল দাঁতের প্রাচ্থা। এবার
আসা বাক হাত ও পারের নথ সংবংধ
একটা অগুলাচনায়। হাত-পা স্কুলর
মুগ্ ভার সেই সংকা সংগর নিটোল
চকচাক নথ খাব স্কুলর দেখায়। ছকের
মানের সংকা সালো হাত ও পায়ের উপরিভাগের স্কুলরতা তো কুল্মি পায় কিন্তু
নথ? অনেক সমস্ত্র দেখা গেছে ন্থোগা
বিছিরী নথের জন্য অনেক স্কুলরীর
সোল্মর হাল পেরেছে। তাই দেখতে খ্র
ছোট হলেও নথের স্কুলগতার মূলা বে
জনেক ডা বলাই বাহালা।

হাতের নথ পরিকার ও সংকর রাখার জনো কতকগাল বিষয়ে লক্ষা রাখতে হবে। প্রথমত প্রদান হাতের নথ বড় রাখা হবে কিলা। কারণ নথ আঙালেলর ডগার পাল ধরে গোল করে কেটে ফেললে তাকে নির্মিত পরিকার রাখা আবশাক। বড় নথ রাখতে হলে মনে সাখা ভাল বে, সেই হাতে খাওরা ল্যাকেশার পাক্ষ ও নথের রাখের সংক ভাল নর। তাই বড় নথ রাখতে হলে চান্ত-নালী দিয়ে খাওরাই বালিবার। এর

শের আসা হাক কিন্তাবে পরিক্ষার রাখা ছবি
সেই প্রসংগ্রা ২ ।০ দিনে একবার কর্মে
উক্ত গ্রম জনে নথ ভিজিয়ে বাজামের দাঁত
মাজার দরম লাগ দিরে সাবান দিয়ে
আচেত আচেত পরিক্ষার করতে ইবো
তারপার তাতে ইক্ষামতন কর কার্যান্
বার বদি তাল লাগে। রঙ্গার্যান্
বাাণারেও কতকগালি বিষয়ে নজনা মাখা
ভালা। (১) রঙ কোনো ভাল কোলপানীর
হওয়া উচিত হাতে করে নথের উপারের
চবর্মক ভাব নথ না হয়ে যার। (২)
রঙ্গালাগানো হাত্র কোনো লিশের
উপালকা বা সাজের জন্যো কিনা। (০)
নিয়মিত রঙ বাবহার করা হর কিনা।

রঙ যদি বিশেষ উপলক্ষের জানা ইন্ম ভাহাল শাড়ী ও ম্যাথর মেকস্প্রিয় সীপা সামজস্য রেখে রঙ কর। ভাটার। তবে এ-ও দেখতে হবে ছাতের গঠ. कथार गामन नह न्यान श्रामन খ্য কালো হয় ভাহলে আমার বিশ্বাদ নাখল রঙ খাব হালকা লোলালী হওয়াই লেহা, যা নিজের জনবগত কৰের সালের মিলে কেবল একটা উত্তৰে ভাৰ ভানৰে। 76, ETA H.E রঙ চলে যদিতা সাজের বা শাভীয तरक्षत्र भरका मामकमा स्त्रस्य बावहात क्या হয়। বেমন, খাব উচ্চাবল কভের কালিক পরবে কালতে লাল রঙ বাৰ্ছ্ **ठळा किन्दा हानका शक्तती।** ক্ষেত্রানীর রঙের বহু শেভ পাওরা ষায়। ফৰ্সা কিবা উক্তরণ সামসা ক হলে বহু নত মানার। তবে স্বলা লক। वाश कान व्य वाकी गावक मरना का हनत्व किना। जाककान हक्करक माना त्म्बार्ड अ**६ इंग्डामित्र भून इक इंग्लिस्**--! किन्दू अगुरमा विम्नोप्नत शास्त्र जीवन मारकार भरणा वक्की भागान ডতগ্রহর ন। তবে খন আছ

লাফীর সংগ্রা এই লালা গুরুটা চলো। বিশেষ করে শাড়ীর বঙু নীলা লাজ শিক্ষা বেগানী হলে। আর ফুদি পাড়েরি মিশিয়ে প্রতে চয় बार्टिय जारका वर्ष ভাছদো দেই গ্ৰভ খাব ছালকা টানে দৈওয়া সেতে পারে। তবে এসব খার্থ कर्मा वा केप्सरम बरध्य संगति प्रवस्ता। অ " একটা কথা মনে রাখতে চবে। ভাস রুষ্ট তেলাক পালিশ প্রতিবার নথের বঙ বদ্দা বংগ্রে সময় বংবচার করতে তবে। একটা তুলোতে ভিজিয়ে তা দিয়ে নখ মান্তে ফেলে গরম জল দিয়ে ধান্তে ফেলাভে ছবে—ভারপর বড চামচের দটে চামচ দটে থাক কাপ কলে দিয়ে নখগালৈ তিভিয়ে बाष्ट्रण श्वाक्तांवक तक्षेत्रे धिन्द्र आह्म। यह ন্তের উজ্জানসভাও নত হয় না। এইভাবে ছাতের নথের বতা নেওয়া ভাল।

শা'য়র सरभद সম্বস্থেও বিশেষ সচেত্র হাওয়া সৌদ্দর্য প্রয়েদের পক্ষে জাল। পারের নম নোগো ও বড এবং ভাগ करह काणे नः इटल अद्य यादाश दियाहा পায়ের নথ পরিক্ষার রাখার জনাও হাতের মতো একই পণ্যতি। গ্রম কলে একটা স্ুন দিয়ে ব্লাক্রে পায়ের নথ প্রিক্রে করতে হবে। ভারপর বুড়ো আ ুলার নথ সামানা একটা, বড় রেখে **छाट्य** रशान करत् प्राव्यानहे। क्रवहे. ₹ 8 স্থেৰ কটেতে হ'ল। বাকী নখগচলিও গোল করে কার্টতে হার। তাতে নথের গছন সাংশ্র দেখায়। ভারপর যদি গ্রভ দিতে इस उद्धा भाषातम भागाना वा काला मा वा क्या क्या वा मार्ग का दे हैं जिल्हे मदाहास मान्यता थात कर्माताल अकरे স্বান্দ্রার করতে প্রাথন, তবে তার সংখ্য পোলাপ-লাল ও মেটে রঙও বাবহার **इ**तराह्य भिवस कत्रावन ना। भारतहः नाय्यव রঙ একটা বেশী প্রালপ দিয়ে মোটা করে क्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा

এমনি স্কার হাত-পা থাকজে বে-কোন রমণীকে সনেক বেশী স্কার লাগে: কাড়া প্রেম, কতো ফাকরণ ডো হাড কিমবা পা-এর দিকে চোথ পড়েই হয়েছে। পাণিয়ছণ আরু দেছি পদপশ্লব তো শুধু কথার কথা নর।

হাত ও পান্ধের মোটামটি সৌন্দর্য চক্রবি কথা তো আলোচনা করলাম। এখন আরোভ কিছা ভাবতে ও লিখতে মন চাইছে। আক্রকালকার মেয়েগ্রা সৌন্দ্র সদ্ব্যধ্ব সচেত্ৰ হয়েছেন ভাৰতেও ভাৰ পারে। পথে যাটে হুসন্তিত মেরেনের দেখলে মন খালি হয় এটা প্রত্যেকর সত। তাই যদি একটা বিশেষ করেই বর্তা নেওয়া ধায় তাতে ক্ষতি কি? পরোনো দিনের বহর শিল্প বহু স্জ-সম্জার পানর বিভাব আবার দেখা যাছে, তবে াতে রয়েছে শাুধা বত্মান কালের বিজ্ঞানের ছোঁয়া আর একটা বেশী স্ক্রা-ত্ত্ৰ প্ৰতি থোক।—যেমন ভাতে পায়ে 'চিহি' করা। আলতা রাঙা পায়ে মল পরে থাকা ও সেই আলতা দিয়ে কিবা ফালের রুস দিয়ে পান্ধের পাতার ওপর ফাল লভাপ ভা আৰু এক বিলেষ দিলপ ছিল। শকুতলার যাগেও এর প্রচলন দেশতে পাওয়া গোছে। হাতের তেলোডে আলতা দিয়ে রাষ্ট্রান কিবল ফুলের সাতা বেটে ভার রঙ লাগান, সৌন্দর্য বিকাশের একটা বিশেষ দিক ছিল।

ভারতবর্ষে বহু জাতির সংমিশ্রণ--অৰু তাই বহু, প্ৰথা ও বহু, কিছুৱ সংমিত্রণ ঘটে গেছে। মেহেদি লাগিয়ে মেরেদের হাত-পা শুন্দর কথা সাজানোর এই অপূর্ব শিক্ষ আজ বিহার অব র:জ্পানেই সীমাবন্ধ নেই বাংলাদেশেও প্রচলিত হয়ে গেছে। বাডীতে এরেয়া কাঠি দিয়ে কিবা শ্ব্যাগ্র আঙ্ক দিয়ে যে অপার্ব শিল্পচাত্যের নিদ্ধনি দেন তা না দেখলে ভাষা যায় না। প্রাপারশ বিশ্বে ইতাদিতে মেহেদী পরা অনেক अक्टल এक्ट्रें विराध श्रधाः किन्द् जास-कान माध्यत सना এह प्राटमी भवाता वह. জাতির মধ্যে এসে গেছে। বিষয়তে কিন্বা বিশেষ উৎসবে মেহেদী দিয়ে হাতে ও পায়ে আঁকলে ধবে ভাল দেখার। এই-ভাবেও দৌন্দরেশ্ব অনুরাগী বারা তারা স্কুকর হতে প্রেন। এটা অবশ্য নিজ নিজ র্চি ও ইচ্ছার ওপর নির্ভন্ন করবে।

হ তের পাতা নরম ও মস্ণ রাথার জন্য কতকংচুলি কাজ করলে ভাল হয়। वाक्कान प्रशिवाता वरभदानी प्रकलिए কাজ করেন। ঘণ্ডার ও বাইরের। কেউ সময় সময় বাসনও মাজেন। এসব কাজে চাতের পাতা অনেক সময় থরখরে 🔞 রাক্ষ হয়ে যায়, আঙ্কের ডগা নক হয়ে ফেটে যায়। এইসর ক্ষেত্র 'কাবস' বা হাতের দৃশ্তানা ব্যবহার করলে ভাল হয় আর যদি কেউ দেকানা ব্যবহার না কলেন, ভাত্তে কতকগ্রাল সাধারণ প্রক্রিয়া অভ্যাস কর ল ভাল। প্রতিদিন দুইবার। একবার দিনে-প্রামা ও মরের কাজ শেম করে হাতে ভার্গী করে সাবান দিয়ে ধরে একট অলিভ তেল কিম্বা খাটি নারকেল তেল বেশ করে ঘষে নেওয়া ভারপর ৫।১০ মিনিট পরে ছাতটা আৰাৰ ধাৰে একটা 'বেগৰোলীন' কিন্বা চার্মিস ক্রমি হাতে ঘাষ নেওয়া। আবাধ রাত্র—ঠিক এই একই জিনিস শোষার আগে করা। এতে হ'ত খবে নরম মস্প স্কর থাকে। এছাড়া যদি হাতের জনা যেশব লোশান ও জীম পাওয়া যায় তা ব্যবহার করতে পারেন তো আরও ভাল ফল পাওয়া বাবে:

এছাড়া হাতের আন্ধ একটা অংশ পরিব্ধার রাখা খুবই উচিত, তা হল— কলইে। বেসার ভাগ লোকেদের দেখা যায় হাতের কল্ই কালো ও চাপ-ধরা ময়লা, কোঁচকানো। সেসব ক্ষেত্রে দাত নাজার রাশ দিয়ে কলুইয়ে স্বানা ঘয়ে লেওয়া ভাল। এছাড়া পাভিলেব, কেটে তাই দিয়ে কলুই বেশ করে ঘয়ে নিতে হয়। পরে সাবান দিয়ে ধয়ে ফেল্লেই কলুই পরিক্লার থাকে। এই কান্ধটি সম্ভাতে এক-বার নিয়্মিতভাবে করলেই উপকার পাওয়া হাবে।

এসব ছেটিখাট বিষয়ে নজর রাখনে দেখা দেবে সর্বাণসমূদদর র পর জোলসুম। জলমগত র প সবার আন্দ না হয়ও না। জিনতু ষতটাকু আছে তার ওপর আরও চর্চা কমলে ও ষতা নিলে সৌনদর্য বাড়বে বই কমবে না: এমনও দেখা গোছ যে ব্যাচনিত্র করে অতি সাধরণ চেহারের মহিলারাও বেশ আসাধারণ সূন্দরীদের সর্বাহর একে গেছেন। রমণীর আ্র এক নাম স্কুল্মবী। তা নামের মর্যাদা গাখতে দিবধা কীসের?

--ৰত্তপিলী





(भाष शकामाख्य भर)

শেনে উঠেই মনে হলো ইলিডয়া আর দ্মেনে নেই। কাছে এসে গেছে। মাঝখানে বেইবাট। তামপুরই দিল্লী। দিল্লী মেলে দিল্লী থেকে হাওড়া জাসার সময় আদানসোল ছাড়ার পুর বার বার মনে হয় এসে গেছি। বধুশান পেরালেই তো হাওড়া। কলকাতা। ভানজা দিয়ে দেখতে দেখতে রোম দৃট্টির বাইলে চলে বেতেই আমারও মনের অবন্থা কিক ঐ বক্ষ হলো।

নো ক্ষোকিং তার ফ্যাসেন ইওর সাঁট বৈক্টের স্থেকত জলো অফ্ ছ্যার সংগ্ সংকাই এরারক্রফ্টিএর ক্যান্ডার জানালোন রোম ছোকে বেইল্টের দরেছ চোশনা পাছার মাইল। ট্-ছা ফোর-ট্ কিলেন্মিটার। ঘন্টা ডিনেকের পথ। পথে এথেন্স ও নিকোশিয়া পড়বে।

পড়ুক। ছােটখাট আবাে কত শহর পদ্ধে কিছুক। কা্টলের কেল্ কিছুই ছাে দেখাও পাবে না! স্তরাং কােল শতরের উপর দিয়ে উড়ে যাছি আ জেনে কি লাভ টিলের দাবার সময় শহরের একটা প্রাণ্ডকে অভত দেখা যায়। ভৌনানা থামলেও এসব দেখা যায়। জেনা না থামলেও এসব দেখা যায়। জেনা লাভা জিলা দিয়ে বাহারের দিকে তাকিলা এখন জানলা দিয়ে বাইরের দিকে তাকিলা অথ্য কিছুই দেখতে পাবে না!

জ্বান্ত আন্তে যত বেলি দিল্লীর কাছে
লাসছি মনের মধ্যে চিন্টা চালা তেত বেলি
লাসছি মনের বাস্টেন। মধ্য চিন্টা কাটি
তথন বিবেককে নিয়ে অনেক স্থান দেখেছিলাম। মনে মনে মোমার আব বিবেকের
একটা ছোট সংগার গড়ে ভূলৈছিলাম।
এখন সে স্থান দেখাত বিশাল
লালাছ। প্রনে হজে মা, মা অভ
ছেট আমি হতে পারব না। হথা
লাগ্য ক্লাহ্বাং বে কোন ক্লাব্রেণ্ট হোল

আন্ত্রি স্বামীকে পেলার না বলে কি জামান ব্ল-যোকনের পদরা নিয়ে বিকেনে কাতে পঞ্জা করব?

অসম্ভব। আমার পকে বল্পান্তীত।
একবংর মধন জ্যেন চড়েছ তথ্ন দিলী
যাবই। কদিন ওর ওখানে থাকব। কৃতব
মিনার, লালকেলা, পালিমিনট হাউস,
রুত্তিপতি ভবন দেখব। আর মন্তি সম্ভব
হয় তাহলে একদিনের জন্ম আগা িরের
ভাষ্মহল দেখব। এসর কিছুই অমি
দেখি নি। মখল দিলী যাজি তথ্ন এই
স্বোগে এইসব দেখে দেখের উভা্ন আর কোনদিন এ স্বোগ পার কিনা জানি
না। সম্ভাবনা ক্যা হিদ্য বিকেক ভাল ব্যবহার করে, আগ্রহ দেখায় তাইলে করেক চিনে বেলা থাকব নরত দ্বত্রকাদন থেকেই
চলে বাব।

ছঠাং নিঃসাণাতায় জনালা সহ। করতে না পেরে নিছক ভাবাবেগের তাড়নায় দিলী যাছি ঠিকই কিন্দু আমি কার্ত্তর কথাই বলা তিকা করতে পারব না। কার্ত্তর কলেত হয়ে থাকতে পারব না। ক বছর লাভনে কাটিয়ে নিজের আ্রমর্যাদা সম্পর্কে বেল সচেতন হয়েছে। ভারতবর্ষ ছেছে লাভনে লিয়ে জনেক কিছু হাগ্রেমহিকিন্তু পেরেছিও অনেক কিছু। তার একটি এই আ্রামহাদা।

ভাৰাকেলার তাড়নার দিল্লী ফাবাৰ সিদ্যালত নিলেও এই আতামাণ্লিবেশেব জনা বিটাৰ টিকিট কেটেছি৷ যেদিন বে ग्रहार्ड ग्राम हत्व मा, जान नागर मा, তখনই এয়ার ই ভিয়া অফিলে গালে রিটার্ল व कि क्रवा फिल याव जन्छन। शाला পালগামী করার জনা একজন প্রায় মন্ত্ৰ ছাড়া আৰু স্ব কিছুই সেখনে আছে। পাব। আমার খগবাড়ী, সংসার-অংছে (धर्म, ठाकवि-याकवि-अव विक्रि ব্যক্তলে খ্যাৎক খেকে প্ৰায় সূত্ৰ দীকা কুলে तिरमञ् अध्यक्ष होसम् माक्रेक महत्त আছে। খাদ' এক ল' পাউন্ভৱ তেক নিমেও ব্যাপে বাই তাহলেও ওরা ক্রিমে দেবে না। আন্তের আন্তে বাবি টাকা আমা দিলেই ওরা খুলী। ভাছাতা দুৰ্থক আস বাড়ী ভাড়া না দিলেও ইসলাম সাহিব কিছু বাড়বন না। এর উপায় আমান চাকরি জাছে। সুত্রাং বিবেকের মধ্যে আভা সিক্তার অভাব দেখা দিলেই ফিরে আসম। আছু যদি কোন কারণে বিবেক এইল-

रमार्ट मा जारम?

একট্ব ম্বাম্পিলে শক্তৰ বিক্ট কিছু
ভাৰে বেলি কিছু ময়। এমারপোর্ট থেকে
টোলফোন করে একটা গাঝারি ধর্মনর,
হোটেল ঠিক করে চলে বাব। ভারপার
সভব হলে নিজে নিজেই একট্ব ব্যার্থীর
যাব। শ্বামেছি ডাল একাপপ্রেস বলৈ
একটা ভাল টেল কাছে। লাভ্যম থেকে
লামান্দা যার্থীয় দিল্লী এসেছেন ভার্থীর
এই টেলে আ্লা গিয়ে ভাল্যছল দেখেছা।
যদি ভাল লাগে এবং স্বাধিন ছাল লাগে এবং স্বাধিন লাগে এবং স্বাধি

শ্যনিছি দিল্লী থেকে কগকান্তা যাবাৰ বেলেনা টিনিট পাওয়া থাব কথকা। দাওকজনৈর কাছে শানিছি ঘাৰ দিলে তিবাট পাওয়া যায়া কিল্ড আমার পারী। তবাল করে না। ছাল বেলের টিনিট লাই তাছলে শেলমই চলে যায়। জানান্ত বাচত একলা পাউণ্ডের ট্রান্ডেলার্স টেন ছাড়াও প্রায় প্রভাগ প্রভাগ আটিল্ড জাছে। তার মানে ইন্ডিয়ান কারিন্সীতে ভিন হাজার টাকা। মাস গনেক ছাটি জাটাবান প্রক্রেট।

শিবালীকৈ জানিরেছি আমি দিলী
হরে কলক'তা অসিছি কিন্তু ঠিক কৰে
কামন পেণছক্ষি তা জানে না। তবে
লিখেছি কলকাতার গিলে এর কাছেছী
থাকব। আমি করেকরার ওকে লিখেছি,
তোর স্বামী তো বেল মোটা মাউদে পানা।
প্রত্কেবল জাটিতে দিল্লী—সিমলা, বৈশ্বে
—মাল্লাজ না খারে একবার দুলনে চলেআল আমার কাছে। কান্দিন জনা ইলে-ও
কারার সেই প্রনো দিননালোর কালি
পাওয়া প্রাবে। উত্তর দিল শিক্ষালীর
ক্ষারী জাসনি দল নক্ষা জাটনির প্রতিক

क्षांक्षा स्वयं नृत्यं । न्याक्टना कीवन काडीएक्स करण कि चात्रारम्य रकान भवतरे क्षरका मा ? जामाराज मरना क्रकार्य मही না করে জাপনিই একবার চলে আসন। প্রেমা শিনের কলকাতাতেই প্রেমে क्रिक्स बामम भाउमा मन्डिया मन्डिय महान महा कार्या बारानात शमरमा मानत्व मानत्व আমি প্রায় পাণাল হবার উপক্রম। আসান। कॉमन जाशनारमध माह वन्धारक निरहरे मश्त्राच करत जीवन धना दशक।

আমি নিজাতে বিবেকের কাছে থাকার ক্ষম্য প্রেক্ত কর্জনে কাউকে সেক্তা বলি নি। সবাই জানে দা-একদিন দিলীতে বেভিনেই জামি কলকাতায় চলে খাব। বিভয়া আৰু গ্ৰীকানতকে পিয়াশীর ঠিকানা দিয়ে এসেছি। দরকার হলে ওরা ঐ ঠিক নতেই আয়াকে চিঠি দেবে। ওদেব म् क्रमांकर किंद्र किंद्र कारक जातिल দিয়ে এসেছি। সেসব সম্প্রে^ত নি^দ5মুই ভরা আমাকে চিঠি দেবে :

গত প্রশানিন রাতে বিশ্বরা থেওে বলেছিল। শ্রীকালতও ছিল। বিজয় কয়েকটা মুলিদাবাদ সিকের শাড়ী নিতে বালেছে। কলক:ভার বাঢ়াকে ওর বেশ ক্ষিত্ৰ টাকা আছে। আয়াকে চেক দিছিল কিন্তু নিলাম না। বলৈছি দরকার হংল জানাব। আমি জানি শ্রীকান্ডর অনেক দিনের স্থ প্জেল সময়, নব্বধের দিন গ্রদের পাঞ্জাবি পরে কিণ্ডু ওল নেই। আমাকে টাকা দিতে গোলেও নিতে পারলাম না। প্রতির খাওয়া-দাওয়া গলে গ্রন্ধবের পর শ্রীকান্তর গড়ীতেই বাড়ী ফিরণাম হড়ীর সমনে পেণছবার পর ভ বলগো, ইন্ডিয়ার ব্যক্ত ভোমার খো অনেক খনচ হবে। তাই বলছিশাম তুমি যদি কিছা মনে না কৰো তাহাল

এইটাুকাু বলেই কোটের ইনসাইও প্রকট জ্বোক এক গ্যোছা পাউন্ভের নোট বের করে শামার দিকে এগিয়ে দিল, গেখে भाख। इठार महकात इत्र भागा।

আমি নে দিয়ুলো ওর হাত থেকে নিযে আবার এর ইনস ইড প্কেটেই লেখে निमात्रा ।

र्गक इत्सा? नित्न मा?"

না। দরকার হবে না।

ছঠাং ত্যে দক্ষার হতে পাবে। দরকার না হলে ফিরে এসে দিয়ে দিও।

যদি তারিয়ে ফেলি স্বদি সুবি इट्स याज्ञ ?

श्रीकारक माधः वक्षामा, नितम कानको। নিশ্চিত হত্য :

ওর ঘণ্টাখানেক পাচাই বিজয়া আর ্রীক্ষত্র টোলফোন এলো। দুর্কনেই व्यामात्र कमका छात्र विकास कारत निमा আন্ত্রি বেল ব্যক্তে পাগলাম আচি টাকা-कांक मा जन्मास बता व्यानव्यात्मर

আলাপ-বালোচনা করে আমার ঠিকান জানতে চাইল তাইতো আমার মনে হয় ওয়া দুজনেই আমাকে কিছু ট্রা না প্ৰাঠিছে লাম্ভি পাৰে না।

कारके हरव। विश्वम-काश्रमध्य कथा কেউ বৃশতে পারে না। তাছভা এতদিন পরে কলকাতা গিয়ে কি পরিশ্বিতির মুখোমুখি হবো তাই বা কে জানে। ওদের है।काब आधि रकताकाही ना करत यान निरम्ब প্রয়োজনে বায় করি তাহকেও ওরা কিছ ঘনে কলবে না।

আজ খুব ভোরে উঠেছি। খনদেনের স্ব কিছু ঠিকঠাক ক্রাগ্ন পর নিজে ভেরী হুরেছি। কিছু খেরেছি। তারপর ইসলাম সাহেবদের বলে ভাবীঞ্জি কাছে চাবি দিয়ের টাকাসিতে এয়ার টামিন্যালে গ্রিয়েছ। সেখান থেকে হিপরো। তারপর সারাদিন ধরে এই ফেলন জানি। বডাঙ ক্লানত লাগছে। ডোখ দুটো বুজে আসছে। बि: अशान शापे शाम थाक अकी कार्रे ব'লিশ নিয়ে আমার মাথায় দিতেই ব্যক্তাম অমি ঘুমিয়ে পড়েছি। শাধ চোৰ হোলে তুলিবয় একটা হেসেই ওকে ধনবোদ জানালমে চেতিখ তথ্য এত ঘুম যে মুখে কেন কথা বলতে পাৰ্লাম न्।

খ্য ভালাল ওয়াল সাহেবের ডাকে, এক্সকিউজ মী, মিস বুগাু ফাসেন ইওয় সাটি রেলা। বেইরাট এসে গেছি।

চোখ মেলে ভাকরে দেখি নীচে দেও-য়ালা দীপাবিতার মত আলোল উৎসব। হ বলমে সতিঃ প্রথিবীর অন্তেম আনন্দ নিকেতন বেইবুট এসে গ্রেছ। তড়াতাড়ি কোমারে স্বিট বেল্ট জড়িয়ে নিলাম। হাক্ড বাংগা থেকৈ গ্রামালা বৈর করে ভোগমান্থ মাভতে সাছতেই আন্ভাব-কাবেজ বাগওয়ে টাচ করল।

বেইগাটে ।

কলকাতা থেকে লাভন যাবার সময় কায়রো হয়ে গিয়েছিশাম। বেইখাট এই প্রথম দেখছি। কি বিরাট ও স্কুদর টামি-ন্যাল বিভিত্। ইউরোপের বহু এয়ান-পোটেই এত বড় ও স্ফার টামিনাস বিলিডং দেখা যাবে না। কায়বো এয়ার-প্রেটার টামিনিগুল বিলিডং ভারী সাক্ষর। কেন জানি না জামার পশ্চিম এশিয়া মধ্য প্রাচ্যকে খাব জনগ্রসর অঞ্চল মনে হয়। অধিকাংশ ভারতীয়রই এই ধারণা। কায়বে বা বেইপ্রটের এয়ারপোট ট্রিনা্ল বিভিড়ে আর ওখানকার মান্ত্রগালোর প্রাম্থা দেখলে মনেই হয় না ওখানে অভাব অন্ট্র আছে।

টামিনাল বিল্ডিং-এর ভেডরে ট্রান-किंद्रे काष्ट्रिक्षत्र प्रथा अदि अदि साकान। ভিউচি ছব শবস। স্টুস ঘড়ি, জামান কগ্মেশ্যা, জাপ্নী ট্রাক্সটার টেপ বেকডার থেকে শ্রু করে দেবাননের গুণিবী বিখ্যাত বেকেড এমবর্ডারিক

সোলার গছনা, চামডার জিনিস ও আরো कुछ कि। आभारमंत्र राज्यस्य अव नाम्यनकार्य ঐ দোকানগলোর সামনে ভীড় করেছেন। रमधाभाना रकनाकाणे इराइ। **अ**रम्ब नवाब মত আমিও দোকানগালোর সামনে বারা-ঘার করে জিনিস্পর দেখতে গুরু কর্লাম। ভারপর কি জানি কি মনে করে পাঁচ भाष्ट्रेन्छ मिरा इठार धक्या बार्रा किननाम।

ফল ইওর বয় ফেলড. মিসংর_ণ∷? হাসতে হাসতে মিঃ ওয়াল জিজাসা

আপনি ছাড়া আমার তো আর কোন ব্যক্তেক্ত নেই। হাসতে হাসতেই আমি **एकः** पिनाम।

এই কথাটা খোনবার জনাই তো আমি জিজাসা করলাম

অংশৰ ধন্বাদ।

মিঃ ওয়াল আমার কাছে একটা খন হায়ে দাড়িয়ে কানের কাছে মূখ নিয়ে বল-লেন ক্লাইডের সংখ্য আপনার দেখা হলে আমর অল ইন্ডিয়া জয় করতে পারতাম

ও কথায় আমি হাসি। হাসছেন যে। আমি ঠিকই বলেছি। কুটেভ হোৱ ভত হায় গোগেও হা^{সতে} ্রাস্থত লাভন ফিরত।

আয়াদেশ বেইরটে বাসের এক ঘণ্টা মেরাদ শেষ হয়ে গেল। আবার যাত্র^{নভ} হলো। পেলনে নতুন কা। এয়ার হোগ্টেস থেকে ক্যান্ডার-স্বাই নতন। পেন টেক কু হৈ <u>করুছেই</u> নতন ভার ও ভার সহক্ষীদের শভেছা জান্তেন অ্মাদের। আর জানালেন দিলার দরেভ। দু**হাজার** মা' আট্রিশু মাইল। চাং হাজার পটিশ অন্ট্রাট্ট কিলোমিটার। এখাবে প্রায় ছ ঘণ্টাব পথ। লেহ । ছাড়া সিলিয়া, ইরাক, ইরান আফ্রানিন্থান পার হয়ে পাকিল্ডানকে পাশ কটাবার পরই দিল্লী। দামার্কাস, কার্মানশা কান্দাহার ছাড়ও অংরা অনেক শহুলের উপর দিয়েই আমরা উদেড় যাব।

> জ্যার ১ এক নি ডিনার সাভ করা হবে।

ডিনাল থেতে থেতেই মিঃ ওয়াল জিজাসা করবেন, দিল্লীতে পেশছই কি হ রিখে যাবেন?

शक्तिश याव क्ल?

দেখা হবে? কিচত আমি কদিন দিলী থাকৰ তা তো ঠিক নেই।

তারপর কোঞ্চার বাবেন? কলকাভায়। তারপর ?

কি উত্তর দেব? আমি নিজেই কানি ना रठा छरक कि वनद? दननाम जिल्लीएक म्-अर्कामन ना थ्याक किहा बनाक भाषांच

(संघणः)





ছলচ্চিত্র উৎসবে এবারের প্রভীক

আপামী প্রতিম রজত জরণতী উৎসবের প্রতিস্তুতি দিয়ে এ বছরের আন্তর্গতিক চলচ্চিতের বালিন উৎসবের সমাণিত যোগিত এই আশ্তৰ্জ ডিক এবারের চলচ্চিত্রের মেলায় একদিকে যেমন আগামী-দিনের বিশ্ব-চলজিয়ের গতিপ্রকৃতির রূপ-রেখার সংধান মেলে, অন্যাদকে তেমনি প্রধানত ইউরোপ-আমেরিকার মধ্যে সীমা-বৃষ্ধ এই 'আন্তর্জাতিক' উৎস্বের ভোগ-লিক বিশ্বতিও পুষ্টি এড়িয়ে যার না। চৌহাকতে মহাদেশ ব্যান্ত্র উৎসবের আফ্রিকা এখনো অনাদতে হলেও ক্রমণ বেশী সংখ্যার এশীর দেশগর্লি চলচ্চিত্র-শিলেপ পরিপঞ্কতার স্কেশ্ট ছাপ রেখে বেতে সক্ষম হরেছে। তাছাড়া দীর্ঘ চাঁহবশ বছরের বয়কট পরিহার করে এ বছরেই প্রথম সোভিয়েট ইউনিয়ন তার ছবি **পাঠিরেছে। আশা** করা ধরা, আগাম[ী] বছর ব্যাপ্রক্রমের সমাজত্যান্তক দর্হানয়া ব্যালানের চলচিত্রের রক্ত-জয়ান্তী আম্প্রভাষিত্র **छेरलंद स्थानमा**न कड़द्य।

বালিনের দীঘাদিনের অতিথি সতাজিং
রাল্ল অন্প্রিপ্তত, ম্ণাল সেন আসেন নি।
তাই ভালতীয় দিবির নিশ্পাদ হলেও বালিনে
তারা হে অলভীয় ছবির ঐতিহা স্পিট
করে গেছেন তার প্রমাণ মিলল অংকুর ছবির
প্রদর্শনে, ফাটবস্কের বিশ্বকাপের খেলা
সংস্থে হিস্কেল সংখাক দশকি সমাগেমে।
স্থাম বেন্দোল পরিচালিত হিস্কী ছবি
অংকুরা বোনের হাসি-হুল্লাড়ের ফিক্মী

জগতে যেন এক ব্যতিক্রম। প্রিচালক গ্রাম-ভারতের এক সামাজিক 'সমস্যাকে এই ছবিতে তুলে ধরার প্রয়াস পেয়েছেন, যে সমাজ দুত ভাঙছে কিন্তু ভোঙে পড়জা না। ধনী চাৰীর কলেজে-পড়ার: পূত স্বকে পড়াশাদায় ইস্তফা দিয়ে সম্পত্তি রক্ষণা-বেক্ষণের দায়িত্ব নিয়ের গ্রামে ফিরে আসতে হোল। তার ইচছার বিরুম্থে কিশোরী সার্র স্কো পরিণয়স্তে আবন্ধ হোল সে। নববধা বিয়ের পরেই পভিগ্তে বারা করন যৌবনে কুস্মিত হবার প্রতিপ্রতি নিয়ে। এদিকে গ্রাম্ নিজনভার একাকীছে বল্দী স্যু গ্রামের মুক-ব্ধির কুমোরের ধর্মপারী লক্ষ্যীর প্রতি আকৃষ্ট হোল। **কালর**শ্ম ভাদের অবৈধ প্রেমের সাক্ষ্য হিসেবে পক্ষাী ्टान जन्छान-मम्खना। ज्ञारसद वेखरकाद অপ্রাহ্য করে সূত্র্য এই জারজ সম্ভানকে দ্বীকৃতি দেবে কেম্ন করে! তাই লক্ষ্যীকে সে গভ'পাতের পরামশ' দের। **সক্ষ**ী সার

নৈয় বা। সামাজিক কৰাবাড়ে বিশ্ববিত বিবেক সূৰ্য এক -নাটকীয় মহেতে नक्षाति प्रक-र्याध्य भ्यावी किल्ड्सास्ट চাব্যকর আঘাতে কত-বিক্ত করে। লক্ষ্মী স্বামীর পাঁপে এসে দাঁড়ায়, রক্ষা করে তাকে। অন্তঃও সূৰ্ব্ ভাষা মন নিয়ে - অঞ্জন জীবনের বাংকি বদনগ**ুলোর দিকে ভাকিয়ে** থাকে। শ্যাম বেনেগল । এক্র ছবিতে সামাজিক নিগড় ভাঙতে গালেননি ঠিকই কিম্ছু গ্রাম-ভারতের একটি रेमनीन्पन जयजारक छ्रान श्राहरून। ছবির দ্বেলি গলেপর উপর ভিত্তি করে বোদেব-মারণ চট্টলভার আবকাল কিন্তু সেই চিরাচরিত পথ থেকে তিনি অনেকটা সরে আসতে পেরেচ্ছন, সেই কাৰণেই তাঁকে বাহ্বা দিকে হয়।

বালিন চলচ্চিত্র উৎসবে ছোগদানকারী সোভিয়েট ছবিটিও বিশ্সব-পরনত্ত্ত্তি সোভিয়েও ইউনিয়নের এক গ্রাম্য সমস্যাকে দশকদের সামনে হাজির করেছে। দ্যাম বোলগল যে সমস্যাকে প্রধানত মানবার প্রেমেণাথ্যান ছিসেবে উপস্থানিত করেছে

न्त्नाहिष्णिक त्रवसान त्वात्वव

বেলোয়ারী ঝাড়

लावं s 6-00

বাবা রীজ সিং' টি এম ও', 'এস ডি ও, সাহেব' আরু বিভরার অব এক্জিভিটিড' এই চারটি বলেবর একটি সংক্রম। বেম্ একটি রাণিনীর বাণী-বিশ্ভার-বালিডাম

প্রকাশক : জনালী প্রকাশকী, কলিকান্তা-৯
পরিবেশক : নহানারা অকি ভিশো ১২৮, কানিং স্থানিং স্থানি-কলিকান্ডা-১

শ্ৰেছৰ ইউ আল্ড উইদাউট ইউ' ছবিম প্রায়েলক রোভিন নাচাপেটত সেই সমস্যাকে সমাজিক-বাজনৈতিক পরিকর্তদের कृश्चिकात् विरम्कातम् कृद्धान्यमः। त्वाधिद्वस्य श्रांवरक 'रवीन सब, ज्ञाना स्रामदा' চাৰী ফেডর বালিছন কৃষি-ছামক ক্ষ্মুপরী পেটচাকে বিশ্বর করণ। ক্ষেত্তর कृषिट् अमनायस्य बिस्मार्थी। खश्रह एग्रेहा চায় যে, তার স্বামাী সম্বায় থামারে হোণ দিক। কেনুর বালিকেও ভারতীয় সংবের মতই গ্রাম্য নিজ'নতার একাকীথে বন্দী ক্ষিত্ত এখানে সংখাত বান্তি এবং সম্বাণ্টর মধো। স্টেচা স্বাহ্মীকে ছেড্রে খার, আস্ফ্রীরর। ভাকে দুরে স্থিত ক্লাথে। মানা সংখাতের মধ্যে দিয়ে ফেডৰ দেৰ প্ৰশ্নিত সম্বাদের মধ্যেই তার জীকনের নতুন অর্থ মান্ত্র পাল। এই ছবিকে পরিচালক রোডিন নাচা-লেটভ কেতাবী বুলিতে ভারাক্রণত করেননি। সামণ্ডতাশ্বিক সমাজ ভেঙে আজ থেকে শ্রণাশ-বাট বছর আগে সমাজতান্তিক সমাজে উত্তরপের পথে সোভিয়েত গ্রাম-জীবনে যে সামাজিক সমস্যার দৃণিট হরোছল, অভান্ত **দরদের সন্দে**। অন্ডত সাম্পর ফটোলাফ^{ার} চমক দিয়ে প্রিচাশক আমাদের সামনে णा जुरुन शरवर**क्ष**न ।



এক সংবর্ধনা সভায় সূৰণ ভল্লুকপ্রাণ্ড কানাডার ছবি দি আগ্রেনটিস্পাণ ক্ষফ ভাতি ভাতিভন্তর পরিচালক টেড কোট্ডেফ এবং বায়িকা মিডেলিন স্যাংকটি।



ভারতীয় ছবি অংকুর সাধু হোহার / শাবানা আজমি



বালিনি উৎসবে প্রথম পারস্কার সা্বণ ভুজ্ৰাক লাভ করেছেন কানাড়ার পরিচাশক টেড কোটচেফ পদ আপ্রেনটিসশীপ অফ ভাতি ক্রাভিচ' ছবির জন্য। মন্ত্রিল শহরের ইহু দি অধ্যুষিত মহলার ডাডি ক্রাভিচ ঐশ্বর্থ— অগাধ ঐশ্বধের পেছনে ছাটছে। কোন বাধাকেই সে মানতে রাজী নয়। সামাজিক মালাবোধের কোন মূলা নেই ভার কাছে। ভাই ৰড়লোক হবার ভাগিদে এমনকি তিয়-জনদের প্রতি নিষ্ঠারতায় সে আমান্য। জাল-জ্যোড়ার এমনকি নিজের ধানঠ বংধ্বকে প্রভারিত করতে, নিজের প্রেমিকাকে ষ্ড্যন্তের শিকার করতে সে বিন্দুমার ইত-×৩তঃ করে না। কাগরুমে ভাতি রাভিট অগাধ ঐদব্যের অধিকারী হয় চিকই, কিণ্ডু তথন আৰ্থায়না তাকে পৰিতাপ কৰেছে, বংধুহুনি সে, প্রেমিকা ইভেটে দ্বে সংগ্ োছে। ঐশ্ব্যের স্থানে বেরিয়ে প্রিথবীর শ্রেষ্ঠ ঐশবর্য সেনহ-প্রেম-ভালবাসী থেকে সে বঞ্চিত। ঐশব্যের গজদম্ভ মিনারের বাসিন্দা ভাঙি ক্রাভিচের কাছে এই প্রথিবী শালাতায় ভরা।

নিরানাগ্দরায় শ্নাতার বোঝায় ভারাচানত ইরানের এক গণ্ডগামের রৈলওয়ে গেটম্যান। লেণ্ডেল ক্রাশ্ব-এর চোইন্দিন ক্রেডর
দিয়ে দিনে মান দ্বিট টোন বায়। মিলিটারীতে
চাকরীরত থেলে ভাকে একবার দেখতে
আসে। বৃষ্ধ গেডেল ক্রাশ্বের গেটমামের
স্বালা বাছর্মাণতের আর কোন যোগায়োগ
নেই। কিন্দু যোদন দে বাধকাতেত্ আসাম
ক্রমায়া তির শবর পায় কিক্তর্ভাবিবিম্ব হরে
পাছে সে। একজোড়া বেললাইন ছাড়া
গ্রিবাটা ভার ক্রছে মিগুয়া। ইরানের তর্গত
গ্রিকার বার্তির এই গোটমামের
ব্রীক্রের ব্রাজিত এই গোটমামের
ক্রম্বিনের ব্রাজিত একক্রেরের ভারি য়ালিক্রের

চিবতীয় প্রধ্নাপ্রাণত 'নিটল লাইফ' ছবিতে। এই প্রসংশা উরোধযোগা যে, সালেম প্রতিষ্ঠিত অভিনেতাদের নিয়ে কেন ছবি করেন না। ছবির প্রয়োজনে সাধারণ আনুস্বর ভেতর থেকে বেছে নিয়ে তিনি অভিনেতার স্পিট করেন। এবারকার বার্জিম চলচিত্র উৎসবে রৌপা ভঙ্গক ছাড়াও এই পরিচালক জারো গাঁচটি বিভিন্ন প্রক্রান্থ লাভ করেছেন।

াল ওয়াচ-মেকার অফ সেখ্য পাউলা ছবির জনা ফরাসী পরিচালক সেবাটালাভ টাভেরনি রেগৈ ভল্ল কাভ করেলা। খানী প্তের জনা এক চনহাকা তার্কী আক্তি, অনাদিকে হভার বিরুপে ভার ধিরার। নেহ ক্যাম মান্ত্রিক ব্লাবেথের লংকাভ ঘড়িওকালা ডেসক্মব জবিনের নতুন ভাংপর্যা ভাবিকার করে।

এছাড়াও থালিনের চত্রিংশতিভ্য চলকির উৎলবে রোণ্য ওলুক লাভ করেছে
ওটোকার রুসজে পরিচালিত পণ্ডিম জার্মাল
ছবি ইন দি নেম জয় গিপ্সলা, হেকটব
আলভ্যের পরিচালিত আর্জেন্টিনার ছবি
দি রিবেলিরান ইন পাটাগোনিরা, ইংলভ্যের
চন্ত্রাট কৃপারের বিগলৈ রাল্ডেলেনা এবং
চাংকো রুশাট পরিচালিত দ্রেভ জ্যাত্ত
চিক্তেনা রুশাট

অন্যাপ্য বছদের হাত এবারেও সরকারী প্রতিয়োগিতার সাধাপ্যাদা বিভিন্ন বজ্ঞসাধী চিন্নামার্থাদের প্রচেত্যার কেনার আত ইয়াং ফিল্মস বিজ্ঞানে ক্রমাণ্য ছবির প্রকাশন হয়েছে। দংশের ক্লা এই বিজ্ঞান ভারত ছিল অনুপশ্ধিত।

> —সরল লেব বাসিম

pdababababababababababa

জয়া ভাদাডী/ সঞ্চীবক্ষার



ख्यिकाग्2

নয়া দিন নয়ী রাত

একটি পরিক্ষম ও উপভোগ্য হিন্দী ছবি (প্রবোজনা ঃ জন্ম পিকচার্ল)

বিত্তবানের কন্যা হয়েও সংস্থার মনে শানিত নেই।
কারণ সে বাড়ীর সকলের অমতে, বিশেষ করে বাবাংক
না ভানিরে তানিকদকে অভাবেসেছে। সংব্যার বাবার ইছর তার প্রকাশক পাতের সংস্থা ওর বিবাহ হোক। ভানহাদেরে মানা ম্বিত্তভার মধ্যে দিয়ে দিন কাটাতে গিরে ইঠাং স্থানা একিনিন দেশে আদক্ষের মতো এক্তন মুখ্য বরের

অন্যান বসে বিবাহ করতে যাকে: বন্ধাবান্ধর ও আখীয়-ম্বজন নিয়ে। অবস্থায় নিসেহায় সংব্যাও বাড়ী ।ছাড প্রাংভ গোল। পথে সে প্রথমে একদল গল্ভার করণে পড়ল। সেখান থেকে একজন দরদী মহিলা তাকে রক্ষা কর্তেন। তবে তিনিট স্বেমাকে নিয়ে লৈখেন তার নিজেব আখ্রার সেখানে পতিতা মোরদের দিয়ে তথাক থিত ধনী ব্যক্তিদের আনোরঞ্জন করবার বাবস্থা কথা হয়: স্থমাকেও বলা বাহুল একজন ধনী বাছির দিকে ঠোল দেওয়া হোল-এক দ্র্যা-পরিতার ধন্যী বাজির কাছে। উলি সাধ্যার সব দাংখের কথা শানে নিজের বাড়ীতে নারে গিয়ে আশ্রয় দিতে চাইলেন। উপ্দেশ্য আশ্বাস দিলেন তার ভাশবাসার। কিন্তু সে আশ্রয়ও নিরাপুদ মনে ছোল মা স্থার। স্তরাই নতুন আশ্রায়র স্থানের জন্যে আবার ছাটতে হোল ভাকে। এবার পর্নিশ ভাকে রাভের রঞ্জনী-সম্পা মনে করে হাজতে নিয়ে গেল। সেখানে তার কথাবতো শানে পর্লিশের মনে হোল, আস্লে স্থমার হয়তো গ্রাথায় প্রণ্ডগোল মটেছে। ভাই তাকে পাঠানো হোল শ্লেণ্টাস হসাপ্টালে। সেখানকার অধাক্ষ বৃশ্ব ডাক্সর ভার ভালেল রোগ কি তা নির্ণয় করবার আগ্রেই স্বয়মা আবার পালিয়ে গৈৰা। এবারও ভার মনে ছিল প্রিলশের ভয়। কে জানে যে কোন মাহাতে ওকে গ্রেম্ভার করা হতে পারে। এই সমন্ত্র স্থানার সংগ্পরিচয় হোল এক হত্যাকারী ডাকাতের শে কিছ্জেণ পূৰ্বে তার একলার ভাইয়ের প্রণাস্নীক পিডাকে হত্যা করেছে। কেন্টা সেই নিরপরাধ ভাইকে দারিটোর স্থোগ নিয়ে লাভিড করতে করে নি সেই লোক্টি, তার অপ্রাধ ছিল সে দক্ষি হারে ধনীর রাপণতী কন্যাকে ভালাবাসছিল। ভারপার <u>এল</u> একজন ভব্ভ সংলাদী হৈ দিনে সাধ্ ও সুক্ত, কিন্তু রচেত ভারতীয় দক্ষোপা মৃতিবারিস মান্দর থেকে অপ্ররণ করে বিদেশে বিক্রী করে এইর অর্থা উপার্কান কার, সেও সাহমাকে আলায় দিয়ে ভার পিকে কাল্যাত কপরিত হাত বালিয়ে দিল। সেখান থেকে গালিয়ে সংখ্যা এল এক খ্যাগুলির নামকের কাছে। ভাষদা উলি সাংখ্যাকে বোনের মাতো আদ্রয় দিটোন। কিন্তু ওখনকার স্তাগ্নের অর্থপশীকারী ব্যক্তি प्टारक तराज्य काना पानी काल "अग। माजबार থোকও প্রনিয়ে 'সাৰ্থাকে' খেতে হৈলে এক সাহস্থী শিকারী এবং পর্নিশ অফিসারের বাড়ীতে। ইনি দৈনিক পতিকার বিজ্ঞাপন মেথেও যোকা সেজে ছিলেন--স্যানার পরেবের বেশে পালিয়ে বেড়ানের ব্যাপ্তর। সংখ্যাগলতো তিনি আনফেবর পিতা এবং সুষ্মার পিডারের সংস্থাস भाठिता, विज्ञास्त्र अपन्त्र ज्ञिलासद बायम्या स्टब्स् मिरलास ।

অভিনরে—সংক্ষার ভূমিকার ভর ভাদক্টে (রজন্) এবং ভোনদা তথা আরো ৮টি বিভিন্ন ভূমিকার (রাভাল, ডাঙার, ডাকাত, কুপ্টরোলী, ক্ষাদলের নায়ক, শিকারী; ডন্ড সম্যানী) সঞ্জীব কুমারের অভিনয় সভাই প্রশংসনীয়। জন্যানা ভূমিকার—ডেভিড, সংলার, কেলব রালা, দিলীপ দত্ত পামা নাজনীন ফারিদা জালাল মনোরিয়া ও লভিডা সাধ্যার ও পিকটা চিত্রনাটানি হালী অভিনয় কারছেন। সাবিজ্ঞানার ও ভীমা সিং যাগেট মানিস্থানার প্রিচয় বির্মেজন। সংগতি প্রিচালন লগ জানন প্রেরারেলালের স্কুরে একানিক গান জনাপ্রয় হবাব ১০০০ বাবে।

-- (527.3

Chalen





प्पवताक ताग्र



ঃ কলকাতায় নাটা সালেদাসন কি সফল

নাসভ্যাই সহল। আমার ধারণা এই ব্যক্তরাভার বিভিন্ন ছোটপাটো দল নাটকের প্রভাগে ভাগেই কালে এই কালে বিভিন্নভাবে। প্রচুধ বিদেশী নাটকের আন্বাদ হক্ষে, লাহা আনুবাদ বাল কেন-অভিনয়ও হচ্ছে। এই কর্ম-চন্দ্রভাগ কালে। আচ্ছের্মী স্তুলাং শটা আলেলালা থেকে। গছে বা অস্কল বাল কি করে।

বাংলা নাটকের অভ্যানগে ও
বহিরংগা বিদেশী প্রভাব কি খুব বেশী?

 শুখমত বংলা নাটকে বিদেশী
প্রভাব খবে বেশী একথা জামি
বিদ্যাস করি না। বিদেশী প্রভাব
আছে থাকবেও। যে কোনো ভাষা
বিদ্যাস করি না। বিদেশী রাজ্যা
বিদ্যাস করি না। বিদেশী প্রভাব
আছে থাকবেও। যে কোনো ভাষা
বিদ্যাসী ভাষাকে আ্যাকরণ করে
নাটক বাদ প্রকল-বাাকরণ বিদেশী
প্রভাবিত হরেই থাকে তাতে কতি
ভোষার বিদেশী আ্লাকর লাইটিং
পৃষ্টিক ক্লেগাভিদ্যান প্রস্বা ভিদ্যান
ভাজ্যা বিদ্যাসী বিদ্যাসী ব্যাকরণ বিদ্যাসী
বিদ্যাসী বাদিনিক্ষা ভণ্গীতে বাংলা

বিদ্যাসী বাদিনিক্ষা ভণ্গীতে বাংলা

বিদ্যাস বিদ্যাসী আ্লাস্টিত বাংলা

বিদ্যাস বিদ্যাসী আ্লাস্টিত বাংলা

বিদ্যাসী বাদিনিক্ষা ভণ্গীতে বাংলা

বিদ্যাসী বাদিনিক্ষা ভণ্গীতে বাংলা

না^{টকে}র অপ্যাভূত করা **যায় ভাতে** লাভ ছাড়া লোকসান **লাছে কি?**

ঃ উত্তরকুমানের মত জমপ্রিয়তা কি আপুনার কামা:

—এখনও অন্ধি জনগ্রিয়তা ব্যাপার্টা নিয়ে ভাবছি না কিছু। অভিনর কয়তে ভালো লাগে তাই করছি। করছে। ছাত্র জাড়া নিজেকে তাগুল ভাবৰার মত মানসিক অংশল এখনও সাসে নি। সময় এলে ভাবা বাবে। আপাতত কাজ করে তো বাই।

ঃ আপনি তো আ্টানের ছাত্র, ইকন্তিস দৈশ্চরাই সাবজেকট ছিল। সাম্প্রতিক মন্ত্রেম্ফাটিত সম্পর্কে আপনি কি বলেন?

— আমি আর অথানীতির ক্তটুকুই
বা পাছেছি। মতামত দেবাল মত
ক্ষমতা আমার নেই। তবে শাদ্য চ্যোধা
বাট্কু দেখতে পাছিছ, ফিল করছি—
ত্যুত এটা মনে হছে ইনফোশন এখন
আমাদের জাতীয় অর্থনীতিকে এমনভাবে চেপে ধারছে বে, প্রচাত একটা
বিক্রোকারণ ছাড়া কোলো সমাধান
এখন স্বাইকে ছাড়িয়ে গেছে। বাজাবে
ভিত্তি কোকা বাড়াক

চিংকী মাছ, তাও উধাও। কান। কিন্দেন?

ঃ অবসর সমন্ত্র ক্রিলাব ?

—সাধারণ মানুবের সংগা মেলামেখার

আমি খবে আগ্রহী। কোনো কাজ না

থাকলে কখনও একা, কখনও বা

দ্-একজন বংধা মিলে বেরিয়ে পড়ি
কোথাও। আশ-পাশের লোক আমাকে
ভ্রানক আক্রমণ করে। পদের কথা
বলা, যাবহার কচি ইডাদি বাপারগালো বেশ খাড়িয়ে খাড়িয়ে পাক।
করি। এক কথার বলতে পারেন
অবজারভেশন আমার অবসর সমরের
থোৱাক।

ঃ আপনার জীবনের সবচাইতে আন্দেশ দিন কোনটা?

— আনন্দের ঘটনা আছে আনেক।
সন্তাজিৎবাৰ্ত্ত ছবিতে অভিনয়ের দিন
ম্পালবাৰ্ত্ত সংগ্রা কিছু
ঘটনা এমন আগত কিছু। কিছু
কিছুদিন আগে একটা দিন আনার
কেটেছিল অগের দান্ত মিরের সংগ্রা
চিন্ত্রছিলান সকল নটার, উঠেছি
আগৃইটে নাগাদ। এই দীর্ঘ নায়তী
আমি জীবনে কেন্দিন ভূকর না।
ক্রীক্তা এই রক্ষা। ক্রীক্ত-সন্দ্রে

আঞাদের বিসজনি নাটকে জয়াদিংা র চরিতে আমাকে দেখে শৃস্ভবাব, আমার বাবার মারফত ও'র স্থেগ আমার দেখা করতে বলেন। আমি তাই গিয়েছিল ম একদিন স্কালে। বেলা সাড়ে ন'া থেকে প্রায় আড়াইটে পর্যতি নাটক সিনেমা গ্লাজনীতি কি নিহো না व्यात्माहमा इत्यक्षः ७ व সংক্রে এই ম্যারাথন আলোচনায় আমার অনেক অজানা জিনিস জানা হয়েছে, অনেক জটিল ব্যাপার প্রাঞ্জল ত্রেছে আমার কাছে। ছেলের মত স্নেহ দিয়ে তিনি আমাকে ব্ঝিয়েছেন সব। অভিনয়-নাটক ভাগ কাছে সাধনার বঙ্ত। ভাবতেই পারি না পাক সাক্রিসর এক বাড়ীতে বসে একলা ভদ্রলোক কি স্কর ধানে মংন।

ঃ অভিনয়ে আপনি বাবা-মার ধ্রার। কতখানি প্রভাবিত? —আমি মাত **অফ** অনুকটিংয়ের কথা বলছি আর কি?

> —অভিনয় কাজটায় বাগা-মা'র প্রভাব খুবই বেশী এবং প্রাভাবিকও। বঙ্গতে ণেলে ছোটবেলা থেকেই এই থিয়েটার সেকীর হলের (যেখানে আমাদের সাক্ষাংকার নেওয়া চলছিল) স্টেজেই কেটেছে। সূতরাং স্টেজ ভীতি আমাগ বোনও দিনই ছিল না। কিন্তু মোড অফ আকেটিংয়ে আমি বাৰা-মা' শ্বারা আদৌ ইন্ফুরেন্স্ড কিনা বলতে পারব না। দশকিরা-অাপনারাই বলবেন আন্ধান অভিনয়ের বৈশিন্টা কোথায়--বাবা-মা'র সঙেগ আমার প্রকাটা কি রকম। তবে একথাও বলে রর্গিখ গা্গালাদ-টা্রালে আন্সার বিশ্বাস নেই। আমার মনে হয় কোনো অভিনেতার পরে অর্থে কোনো প্র থাক তে পারে না। দশকের রিআ্রকশ্ন লক্ষা করে সময়ের পরি-হতুন অনুযায়ী অভিনয়েরও পরি· বর্তন প্রয়োজন :

 সত্যজিৎ রায়-য়্লাল সেনের সংশ্য কাজ করেছেন, ঋত্তিক খাটকের ছবি নিশ্চয়ই দেখেছেন। এপদর তিনজনকে আপনার পছক্ষয়ত সাজিয়ে দিতে পারবেন?

—দেখন তিনজনই বিশ্ববিখাত পরি-চালক। এদের ছবিতে কাজও করেছি, ছবিও দেখি। কিন্তু প্রজন্মত সাজানোগ বাাপারটা গোলমেলে নয় কি? একজনকে অপরের সংশ্য জলন করতে না পারলে সাজাবে কি করে তিনজনের মানাসকতা তিন রকম। করে করার ভংগাও এক নয়। ছবিগ্লো তো আপ্রনিও দেখেন। বলান না ভলনা করা যায় কি? শ্রেণ্ঠ লোকদের ভুলনা চলে না।

ঃ বেড়ানো ছাড়া আর কীজাব দিন কাটে আপনার?

—বিষ্টোর সেণ্টারে নিয়মিত নাটক তো দেখিই সিনেমা দেখি। সিনেমা-বিস্কৌদ্ধ নিমে পঞ্চাশ্রেমাও করি হেড়া ভালাক রগজিং মাল্লক ও স্মিতা মুখার্জ পরিচালনা ঃ প্রেক্ত্র পালী





তপন সৈংহ পরিচালিত **লাগিনা** চিত্রে দিলীপকুমার ৴ সায়রা বান

অনেক সময়। সিনেমা মিডিয়মটা আমানে বড় ভাবায়, পারচালক হবো এমন কোনো ইছে নেই ঠিবই কিচ্ছু ছবি সম্পর্কে ফিলম মেকিং ব্যাপারটা আমাকে ভাবায়। সেই জনাই পড়াশনো করি সময় পেলে। আর একটা কাজ লাম করিলাম করি নাই পলো। আর একটা কাজ লাম করিলাম করি

ঃ তপন সিংহের রাজার রাজার চরিতটা তো করছেন। কেমন সাগছে? —এক কথায় দার্ল। তপনবাব্র সপো কাজ করার একটা আলাদা মজা জাছে। কথাই ব্রতে পারি না আয়ি

पालमा कार्मा । देखीनाकेटक कवते।

ফা্।মিলির মত মনে হয়। ভার **ওপর** বাজা চরিচটাও একটা প্রচ**ত** ভারনামিক কাারেকটার। কি হবে জানি না—কাজ তো করছি দিজের বাধ্যমত।

: 'গগীবি হঠাও' আনন্দোলন কতথালৈ সকল বলে আপনি হনে করেন?

—'গর্মীয় হঠাও' কি আন্দোলন, না
খেলালান: আমার ডো বলে হয়
খেলালান। তবে ফেলালানী খুব ক্ষা।
বিজ্ঞু কাজ কোথার: ফেলালান দিচে
কি কাজ হয়: আমালের দেশের
আমাল গরীবরা ডো সব হামো। কিজ্ঞু
হামের অবাধা দেখান। সমসাগ্র
আমের অবাধা দেখান। এ খেকেই
সমাণ হয় এই খেলাগান কি ক্ষমা
স্বাধ্য হয় এই



দৃশার্টা ছিল এইরকম। দিশভূর ওপর क'खन--देखकाँग्रीभशान. ACH. SINE H কানেরার কেয়ার দেকার, মেক-আপন্যান क्षे रमधेया कर रमधेया। भारधाभारीय कारस्यान-মান শক্তি বাড়ুকো এবং তরি দুই শিব। পান্তু নাম ও দিশীপ। কেউ তুড়ি বাঞ্জিয়ে शह कुलाइन। कि छन्छात्र आकृत, माथारी क्षत्रण भारत्रत्र भिरक क्षीशस्त्र मिरक्सन । रक्षत्रन মাদ্ নাক ভাকাছেন। বেলা তখন বারোট বাজে। এই দ্শা দেখার পর বলা যায়, তখন শ্বটিংএরও বারোটা বেজে গিয়েছে। সেটা >পূণ্ট হোন্ধা গেল বাড়ির লোডলায় উঠে। দেখি বিকাশ রায় টান টান হয়ে ব্যোচেন। বিরাট হল ঘরের চারদিকে বাদায়ন্য ছড়ানো। म्, निरंक म्, हि সেম্পা। একদিকে ডিরেকটর জগগোথ চ্যাটাজি ও মিউজিক িড়রেকটর স্থান দাখ্যাুণ্ড আজোচনায় রত। অন্যদিকে কয়েকজন যুবক। গশপ করডেন ফিশ ফিশ করে, অঞ্চভগণী করছেন, প্রচণ্ড **৯মাট** হুওয়ার रह•जे। 4400 -11

OB. CHCES शोधा राज । साथा वनास्त्रत मा सास साम । प्राप्ति मार्क संभक्ति, बाब ग्रंबरक्त । शक्तिया फ्टरण नराहारक् प्राक-काल-आ कार्ड वसरका ভাষণ উপাধাল কর্মছিলেন। কিল্ড উপার ক। নাচ ভবে, পাল ভবে-বভ বেগুলিক এই ट्रणीखरते। 40年 किरमानीत ক্মিশন্ত क्राफ ट्राटक নিতে যেট্র ছেরিছে রি **SILO** ₽¥. त्य भीवकान विकार উৎশাস 50 কলকাতা শহরতে এক বছরের আলোকিত করে রাখা বার-ভাগত কি যে হজে, সেই সকাল সাতটা কৃতি মিনিটে গিয়েছে, এখনো পান্তা নেই, মুন্তবা ক্যাতে করতে আক্ষেপ করগেন একজন। আমি কি আর করি, জগরাথবাব্র সংগ্রাদেখা করলমে। তথনও তিনি কথা বলে **5:अट्डन। এই अमाणक्र टमाकृति वट्**रिमन ধরে চলচ্চিত্র জগতের সংগ্রেছ। বয়স খাব বেশী নয় ভবে ভার চেয়ে অভিক্রতা অনৈক বেশী। তার প্রথম স্বাধীন চলচ্চিত্র প্রয়াস 'দরে'ত চড়াই'। উ**র ছবিতে** তিনি কলাকোদালে কিছু পরীক্ষা নিরীক্ষা করে-ছিলেন। কিন্তু দুভাগা, স্বীকৃতি পান নি । শ্রীচট্টোপাধ্যারের ভাষায়—নতুনরা এখানে মতন কিছা করলে রেকগনিশন পাওয়া খাব শন্ত ব্যাপার রেকগনিশন পাওয়ার জন্য অনেক লোকজন আছেন, তাঁরা একস-পেরিমেণ্ট করতে পারেন, ক্রার অধিকার বোধকরি ভাদেরই আছে।...

হঠাৎ অনেলা এসে গেল। হাাঁ, হঠাৎই একটা ইরাহ ু মারুলি গান বেজে উঠল।...
মৃত্যু, মৃত্যু, মহামারী... মৃতদেহ সারি সারি... প্রচণ্ড পরিষ্কাল... মৃত্যুক্ত ইতিহাস.. ফুলের বন শ্রা আজ... সোজন জ্বাটন্ত; হাইড্রোজেন।.. ধড়ুম্ড করে উঠে বসলেন বিকাশ লায়। টেকনিসিরাপ্দদের ছোটাছটি শ্রের
হয়ে গেল। নায়িকা মেক-আপ-এ বসলেন।
একেবারে সাজ সাজ রব। ক্যামেরা পজিশনে এসে গেল। দেখতে দেশতে শিশপীরা

व्य बाद नोबन्दा । काबाद ट्राई शाम कान्ट हमा जामा आम बहे नामीं निकासाहस कत्राक क्रमाक धार्कांचे मृत्या अल्लाचा शाय। द्यम कान कथा। शास्त्र निम्न निरक्तस रक? একজন অহাপাদী দাভিওয়ালা ছোকর। ভিরেকটর রিহার্সাল চাইতেই সে একেবারে क्षेत्रमाम मण *[न নাচকে নাচত্তে श्रीहाब **5105** (CG) ব্যক্তাতে পরিস্থিতি একেবারে ভোল-क्रांक्टन । আসলে ও করে রিচার্সাল-ফান অ্যাণ্ড ফিয়েস্টা কাণি-ভালের জন্য। নায়িকা তার বংগ্র, বাশ্ববী-দের নিয়ে প্রশ্তত হাচ্চলেন, এমন সময় বাপ**ী মানে বাবা**র আগমন। আদংরে গ্রেয়ে বাবাকে গান শোনাবার উদ্যোগ করে। বাপী গভীর আগ্রহে গান শ্নতে বসেন! কারণ গান সম্পকে ভাত ভর্নানক দুবলিভা আছে। স্থা ভালো গান জাকতেন। আজ বিচ্ছিল স্থাী কাছে নেই। তার গাওয়া গানের রেকডটিা আছে, সহজে রেখে দিয়েছেন। এই গান শননে তিনি একেবারে অভিথব হরে উঠলেন। ফলে গান থামাতে হল। না না এমন পান তিনি শনেতে চান নি। যেয়ে ছাটে এলো। ভাবটা এমন, বাপীকি হরেছে, বাপী কি হয়েছে ভোয়ার।...

অতএব সেই রেকড'টি বার করা হর। শেলরারে চাপানো হল। একটা ফিন্টি গান সমস্ত পরিবেশকে স্নিশ্ধ করে তুলল ঃ ভোষাতে আমাতে, আপোতে ছারাতে, এই লংকেছার খেলা শেষ হবে কবে মিলন উৎসবে, দুক্লনে ভাসাব ভেলা...

গান তথনও শেষ হয় নি। একজন রিমার্ক করলে ঃ টু টিমিল। অপরেকজন ঃ মর্রাবিত। আরেকজন ঃ এই ভরালট প্রিগ। আরেকজন : আঞ্চলের নিন্তার সময় নেই। চটপট আনক্ষ নিতে হ্বে। আনত সোহ হোৱাই আঞ্চলার সং ইজ হট। স্পীত, শুধ্ব ম্পীত চাই—এটা চাঁদে বাবার ব্বা।

ৰাপী সৰ্বংশৰে প্ৰশন করলেন ঃ ঠিক, মানুৰ চাঁদে চলে গেছে, আনেক উ'চুডে উঠেছে। সৰ্বই ঠিক। কিন্তু কত গভাঁৱে বেতে পেরেছে ব্যাত পার?



মহুরা রারচোব্রী
আর্ডি ভট্চার্য দেশনার রার ছবির নাম রাজা গ্রিচালনা ঃ ভশন সিংহ

প্রদেশর উত্তর আপাতত মুলত্বী থাক। এট ছবি 'শুভ সংবাদ' বেশ ্মেছে। স্তুপাত কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়। क्षाम अस्तिनका। धक्कम जातककतात নখন। পরস্পরের দিকে অবাক বিস্মারে গাঁকরে রইবা । একজন গোপা, শাশ্ত ধীর है देखी की है जर्मा जाता है থার পক্ষতির ্সির নিয়ে পর্ডছে। অনাজন র পা আশারত ফিলস্ফি নিয়ে াস্থির, முக்காவிக்கும் ভেছে। ভার কথা হ'তে চহারাটা ধার तास्म करवृत्स्म জাগিলে নামটা ধার दशाना. রেন মি: क्रू शाद দাভাতে गरफद अभारत ভাসচায় অবস্থা টেপলা খ রে রূপা মনে মনে লুঃ থিকে য় ক্ষয়া চাষ্ট। তোরপর থেকে राम्श्र छ । ারে ধারে জানাজানি হয়—একই জায়গায় কই দিলে একই সময় **अत्मर** াহলে? র.পা তার বাবার ছবি নিয়ে াসে, গোপা তার মা'র ছবি। নিস্তর্পা য়েকটি মাহতে। ঠিক হল রুপা গোপা বে, আর গোপা রূপা হবে, অর্থাং টার চেজ। গোল বাধে অতীন আর গতকে নিয়ে। কটিল ব্যাপার। জট খোলা হৈছ না।

আরেকট্ জানবন সোপা এবং রুগা, তেছ্মিকায় রাজন্তী। এখানে রুপা। বাগাঁ ধা বাবা : বিকাশ রায়। মার শিপ্তা মির। তীন এবং সংগত ধথাজন্ম : দীপুণ্কর দেনগাত নিমালা সেনগা্শত। কাহিনী ও চনাটা : স্বেবীর হাজরা। ইয়াহ্ম ধরনের নটাও লিখেছেন শ্রীহাজরা, গেয়েছেন মিতকুমার। রেকড্এর গানটা গেয়েছেন, জাতা মুখোপাধ্যায়। প্রশ্বাজনা : প্রণধ্মার বসু,। প্রিবেশনা : জে কে ফিলমা।

নিউ থিয়েটাস' দু'নম্বর স্ট্রাডিওর গরে ত্কতেই আরতি ভট্টাচার্য সাদ্র म्डादन कानारमन् আস্ন, এই হচ্ছে মোর হর। মানে রমলার হর। রমলা, জাকে ডেকে পর্নিসাছে, সে এলো বলে। রে এখন বদে আছে জয়া। না, জয়া মনিভাবে বসে থাকবে না। উঠে গিরে াজা খালে দেবে রাজা দরে এসে ঢা^{কলো}, াক এরকম এরকম পাঞ্চশনে দাঁড়াতে বিস্তারিক বৈ ক্যামেরা থাকবে এখানে, ্বিয়ে দিলেন স্বনামধন্য প্রিচালক তপন াহে। আলোকচিত্রশিলণী সেইমত আলো রতে, প্রধান সহকারী পরিচালক বলাই দম সেইমত রিহার্স করতে বাসত হলেন। জা হয়ে চুকে দড়িল। সে কিছা বলতে हेन, बांधाञ्चान्छ हन तज्ञनात काट्य। तथना দিবেল মহিলা। তার জ্বলন্ত চোৰ দ্বির মনে এই মহেতে পড়িবে কার এম্ব मा । ब्रह्माट्क दकाथां उ जानान मिए इस्त, জেন্য রম্পুল রাজার হাতে কুড়িটা টাকা জ্ঞান। রাজ্যা আনিজ্ঞাসত্তে সেটা প্রত্য করবা । বিশাস সর্পরাজনী বস্ স্ত সংবাদ পরিচালনা ঃ জগারাখ চটোপাধারে



জয়ার সরকা চোথ দুটির দিকে তাকিয়ে
চোথ নামিয়ে নিকা। জয়াকে পেশছে দেবার
দায়িছ গ্রহণ করকা। কিস্তু সে কি পেশছে
দিতে পারকা? শেষ পার্যক্ত পারকানা।
কিলোহী হল। প্রতিবাদ করকা সে এই ঘরে
দাছিয়ে। রমলা তখন ভেঙে পড়েছে। তব্ধ
তার ক-ঠম্বর তীক্ষা—কেন শারবে না?
তারেক তলা একদিন এভাবে হেঙে
হয়েছিলা। নিকেকে বিকিয়ে বেঙে
হয়েছিলা।....

এই অতাত রম্পার চরিত্রটিক প্রতিতিত করেছে। রম্পা, বেশ্যবাড়ির তথাকথিত মাসী নয়, বদিও তার কালকমা প্রায় একই। কিন্তু চরিত্রের চারপালে পরিবেশ, গভারতা, জীবনালি—স্ব মিলিরে মনে দাগ কাটে, তার জন্য সহাদ্দ্ ভতি জাগে, জীবনের ভিত্তমুখী সম্প্রসার আমানার প্রতিফলন দেখার অবকাশ থাকে। প্রতি মহুত্রে এই চরিত্রটিক, অনেক জিছু বলা না বলার মধ্য দিরে, তুলছেন শবিশালী অভিনেতী আননিত ভট্টাচার্য। এই পর্যায়ে **শাশালালি অভিনর** কর্মজন রাজার ভূমিকায় দেবরক্ত রায়, জয়াঃ মহুয়া রায়চোধুরী **এবং একটি** বিশেষ চরিয়ে সমিত ভঞা।

তপ্ন সংহের এ-ছবি স্থান্ধ: ডবি নয়—চিতে-বৈচিতে, শংল স্কৰেভায় অণ্ডরপো-বহিরপো সমস্যা বিভাগ সামায়ক জীবন: বিশেষভাৱে হুৰ কৰা। তার বলার আধ্যুদ্ধিক অত্যত শিক্ষাসচেতন এবং শিক্ষামনিষ্ঠ তার এই স্টাইল অফ विदेदमञ्चे वष्टिक श्रद्ध सम्बद्धाः STANSFORM ACM যার প্রকেপিত আলোর দি**তে চো**ম রাখেন। কারণ বৈশিদেটা এ-ছবি পৃশক্ষদের চেতনার ধমনীপ্রবাহে ঝড় ভুলবে, এই আছ আলংকর क्षीवदमक ग्रेमारभारकस्था श्रम्म মানসিকভার আনবার'।

-चेर्राक्ष भरवामगाजा

ববি/চিন্ময়



ব্র্থিতির ও সাধ্চরণ; দুই ছিতকে চোরে হলেও দুজনেই অনেকদিনের প্ররোদো বুলা; ছিতকে চোরেরা হ করে দিন কাটার ওরাও ভাই কারে, অর্থাং ঘটি বাটি হাতে কাছে যে আনবাবপাহই ওপের চোথে পড়ে ওরা সেপ্না কোপাট করে দের। ভারণর ধরা পড়ে, বেল কিছুনিন কেই কাঠিরে আবার ছাড়া পার। কিন্তু চুরির দেশা এরপই: আবার চুরি করার লারে কেনে বারা। এবং আবার রাষ পার। হাজার চেন্টা করেও নিজেদের সংলোধ করতে পারে না।

একবার জেল থেকে ছাড়া পেরে ওরা দ্রেকন এক ব ব্যবসায়ী (মিষ্টার ব্যানাক'রি) বাড়ীতে এসে উপস্থি হর। বুধিন্টির ও সাধ, ও'রা দ্রেনে বাড়ীতে চকে ব্রুতে পারলো হে একদল মহাচোর . একই উদ্দেশ্যে স বাড়ীতে এসেন। ওরা নিজেদের অভিতয় সোপন ডাকাতদলের স্পানের কাছ থেকে জান্তে পারলো বে ও° ক্লিটার ব্যানাজীর একশন্ত ছেলে ববিকে অপ্রকাশ করে লি **এসেছে। वाद्धीरङक চाक्य कार्यात्राम होत्रा विराम रक्ये** মেই। বারা আছে স্ব ক্মিরে পড়েছ। ছিড্ডে চোর স বংধু প্রথম দিকে মূল্যবান জিনিস ছবি করবার জে করে বার্থ হল। ভারপার খরে খরে বারে বারালো বিলা মদের সম্বাবহার করলো। এই সমর আঞ্চনকা আর এক। "মহাচোরের" আগমন বটে। তটে লেখে স আত্মগোপন করলো ওরা। ভাকাতরা ফুর্মের সহাব্যে অক্সান করে, মানের সন্ধ্যবহার কাবার STORY 1

क्षांबर्क राष्ट्रीय कर्णा वापनायात्र सरमा नामा

जाय य्रीधिक्ठेत्त्रत क्रुठा

বজ্রার বিশ্ব। আরু তাঁর স্টা. একটা পার্টিতে ধাবার জন্য রওনা হরেছেন। এই সংযোগ হেলার হারাতে রাজী নয় 15'0'al 7518 म करा মহাটোরেন ব্যক্ত আপ্তরণ THE PARTY অসাম্রাঞ্জিক ব্যক্তিদের অন্কেরণে 'মিলিয়ান ডলার' অথবা কক্ষাবিজ্ঞ টাক্ষা প্রবাহ স্বংশ বিভের। সংযোগে পেরে দ্রক্ষা ছি চকে চোর ব্যব্দে নিয়ে পালিয়ে গেল। গেল ওয়া হাধিনিউরের মাসভুতো বোনের বাড়ীতে। অবশ্য ওর বোন ৰাণী ফোল বা জোডোর তাথবা ছি'চকে চোরর পা প্রতিক্রকে কোন্দিনই ভালো চোখে দেখক না। কিন্তু ধারর জাতে **এক ফটেফটে ছেলেকে** দেখেই ু বোধহয় এবার আর याधिष्ठित्वत त्मीताचा मदा करत निम । यशहारशास्त्र प्रम शिम्तीत ব্যানাজ বিশ্ব মিথের কথা বলে এক লক্ষ টাকা পাবার আশাদ छो मरकाम करत हमाला मित्नत अत भिन किन्छ हालात उन्छो করে বিবিকে খ'্জে বের করতে পারলো না। ফলে লক্ টাকার শশ্ম আকাশ কুসায়ে প্রিণত হোল। ছিওকে চোর দ জানত মিশ্টার ব্যানাজীকে খবর দিলো ৫০ হাজানে ওংরা হবিকে ফিরিয়ে দিতে রাজী। ৫০ হাজার টাকা নেবার জনেই বাবকে মিয়ে ওরা ময়দানে "প্যাতন ট্যাঞ্কে"র কাছে উপ্থেত

হোল, ওখানেই ওদের গ্রেণতার করা হোল এবং পৃথিয়াবো রাণীর কাছ থেকে বিবিকে জোর করে অসাছরল করে নেবাদ সময় দলসমেত মহাচোজের দল প্রালিশ কর্তৃক প্রেণ্ডার ছোল। বিবিদ্ধ লেনাস্থ ও ভালবাসার জনোই দাই ছিচকে চেপ্র ছাল। পেল এবং রাণীও ববির নাসী' হিসাবে প্রিচিত ছোল।

শিশ্ব অপইরণ বিষয়ক কাহিনীর মধ্যে একটি জাপানী ও বিভিন্ন ছবিব ছায়া এসে প্রুগণও চিন্নাটাকার ও আনতা পরিচালক উন্নানার উট্টাবের চিন্নাটা ও অব্লাস সকলেরই প্রশংসা পাবে। প্রিচালক একজারা একটি সংকর হাসর ছবি উপ্রায় দেখার জনো সকলের সাধ্বাদ পাবে। ছবিবতে গানের প্রয়োজন খ্র একটা ছিল না। আবহস্পাতি রচনার অজ্যা দাসর কভিছ অন্যাবিকারণ। অভিনার রাভির্বেলে জয়া ভাদান্টা (রাণা), যাধিতির পা রবি ছোল কাভিন্ন রায় (সাধ্চিগণ কাল)। নিশ্ব রায়া (সাধ্চিগণ)। নিশ্ব রায়া কালিকাপী উৎপ্র কালির স্বার্থিকা প্রায়া এবং ব্যবক্ষী স্থান বাস্থ এবং আনার্থিকা প্রায়ার বাস্থিকা প্রায়ার এবং আনার্থিকা প্রত্যা প্রত্যান্তিত।





ত কৰিনিকল্প ক্ৰিড্ডেড বিশ্বমুপ্তাএর প্রিটিং পূরে, ই্রেটেঃ। শ্রেচিড
ভিন্নপ্টা ইনিম্বান প্রিচ্ডান্সন্ কর্ড্রম
একজ্বলের বিখ্যাত প্রয়েজকও। এই
প্রথম প্রতিক্র শান্তিংএ অংশ নিজেন
শেখর চটোগাগাল, পদ্মা দেবী এবং
নারিকা দোলা দে। এ ছবিহ নারক ব্যিত ভক্ত। ভিসমের, শিক্তানিদোলা ও
সম্পাননার দালি প্রেন্ডন্তান হ্যাত্তম
নারিকা দোলা বে। বিশ্বমান্তান্য ব্যাত্তম
সম্পাননার দালি প্রতিক্রান্তান্ত্রম হ্যাত্তম
লাগ্র দাল । ব্যব্দান্ত্রম লাহেন নার্বান্ত্র
লাগ্র দালা বিশ্বমান্ত্রমান্ত্রম ক্রেটেন হ
ভারীপ্রান্ত স্থাতি প্রতিক্রান্ত্রমান হ্যাত্তম ভ্রাত্তম হ
ভারিকা হ্যাত্তম

ব্যাহর ক্যাতনামা প্রেয়াজক-পরিচালক শতি সামানত বভামানে কলকাতার। তি এখানে এক্ষেম 'জন্মান্ত এর ভাবিং করতে। প্রোক্তামে অংশ নিজেন উত্যক্ষার, উৎপল স্প্র ও অলিল চ্ট্রেপ্রায়ে । এক ইল্লে আছে প্রেলাধ সময় অনন্ত:এই ইচ্ছে আছে প্রেধার সময় অখনেমা এর বাংলা ভাসন্ম বিলিক ক্রর। দেওয়ালীতে হিলিক জুপ্ৰস্থা বাংলা ভাৰণিয় স্ফল তাল শ্রিকার জাঁচরেই আপেকটি ভারল **डार्नाम भारा ... करात डिलाल: तत्र्यम**। क लाखा मकना दारणा कृति पटीच क्रिकिन টিতরাপ দেকেন। একট্ট সপো সম্ভব হাল আন্তেহটি হয়ল বংগোছবৈ গোৱা নেয়াই ছিলিন ডিছরাপ জোনন। সেবের্ডটি প্রয়োজনা কর্মেন গিথিকা সংযাত।

আগস্ট হাস থেকে র্পাশী পিকচাসের থিবতার নিবেদন জ্লেভ বুটল ভিন-এর শাুটিং শাুখা রুচব। হ্রিদ্রি স্নালের প্রবেজনার এ ছবি গ্রিচালনা সারিং বলেন্ডাপাধ্যয়। শ্রীক্লেস্পাধালয়র क्रीते स्थाप कदम न्यामीत प्रमान्त अहाना। তিনি দামাদ্দ ধরে পরিচালক স্লিক সেনের স্থকারী হিসেবে সিহার। আনা इक्, ज'व किवक्या स्वक्याकुल लाक शाकरत । निर्दार्क करवाहर राज्ये अक्षर **अकृति जाबर्गमम कृष्टिमी। कृ**रिमीकाश अक्टाबाधना विकास किन्नु विकास सामाहित सामाहित । कबरका नीत् <u> स्टब्स्स्स्स्या</u> ম**ারিজার চরিতে ব**্পত্ম ভত্রন বলিত बिक्तक धार्यः न्याक्ति बहुष्यान्यः। १६६-**হহণ কৰ্মন ঃ** দীপ্ৰ দাখা সংগতি व्यक्तिशास्त्र । विकिश क्कार्यम ३ बब्बानायात् ।

নিমাল্য-এর একটি দ্ল্য



এম-টি-বাস্কদেবন নায়ার

মালরালাম সাহিত্যে স্পুর্ণবিচিত শ্রী
এম টি বাস্দেবন নারার সংক্ষেপে এম
টি অজকের ভারতীয় চলচ্চিত্রজগতেও
একটি বিশেষ স্থান করে নিয়েছেন।
তাঁর প্রথম ছবি 'নিমালাম' এ বছর
সেরা ভবি হিসাবে রাজ্যসাতির স্বর্গপদক
পোরাছে। সম্প্রতি কলকাভায় এসেছিলেন
শ্রীনারার। প্রথম ছবিতেই এমন ভাভাবনীয়
সাফল্য তাঁর কেমন লাগছে জিজেস
করার সলকেন ছালাই লাগছে।
তার পরিচালক হিসাবে দারিছ বাড্লো
বলে ভস্তও হাছে একটা, আধাই।

দেই বছর কুড়ি বরুস থেকে সাহিত্যচর্চা; করে আসছেন তিনি। প্রথম
উপন্যাস নেল্কেট্র; (চার দেবাল) বথন
কেরালা সাহিত্য আক্রানেরীর প্রকলার
পেল তথন এন টি'র বরুস মাত তেইশ।
আর সাহিত্য আক্রানেরীর প্রেক্তার
পেলেছেন আলীলা বছর ব্রুসে কলাল
ব্রুলন ক্রান্তের
ব্রুলন ক্রেন্তের
ব্রুলন ক্রেন্তের
ব্রুলন ক্রেন্তের
ব্রুলন ক্রেন্তের
ব্রুলন ক্রিন্তের
ব্রুলন ক্রিন্ত্র
ব্রুলন ক্রিন্তের
ব্রুলন ক্রিন্তের
ব্রুলন ক্রিন্ত্র
ব্রুলন ক্রিন্ত্র
ব্রুলন ক্রিন্তের
ব্রুলন ক্রিন্ত্র
ব্রুলন ক্রিন্ত্র
ব্রুলন ক্রিন্ত্র
ব্রুলন ক্রিন্ত্র
ব্রুলন ক্রিন্ত্র
ব্রুলন ক্রিন্তর
ব্রুলন ক্রিন্তর
ব্রুলন ক্রিন্তর
ব্রুলন ক্রিন্তর
ব্রুলন ক্রিন্তর
ব্রুলন ক্রিন্তর
ব্রুলন ক্রেন্তর
ব্রুলন ক্রিন্তর
ব্রুলন ক্রিন্তর
ব্রুলন ক্রিন্তর
ব্রুলন ক্রিন্তর
ব্রুলন ক্রিন্তর
বর্তন
ব্রুলন ক্রেন্তর
বর্তন
ব

ফিচেম একেন কিভাবে তাহুলে প্রশন করম ডিমি বনজেন—এর্থন করেই। করভাব গালেন্য ছবি দেখান্ত দেখান্ত ভিজাবই এভালন ছবি কবান বাবনা চলো। পজ্জিলাক হিসাবে তবি গারা ভালালী পজ্জিলাক আভিছা যাুৱো শোরা। ভারতীর পরিচালকদের মধ্যে ঋত্বিক ঘটক সম্পর্কে তিনি উচ্ছানিত। ভার প্রতিটি ছবি এম টি দেখেছেন।

নির্মাল্যমা স্কশ্বে জানতে চাওয়ায়
বললেন—নিজের ছবি স্কশ্বে নিজে
কি আর বলবে।! দে ্ কথায় বলতে
পরি সমাজ ও ্রশ্বিষ্যাস্ কিভাবে
সামাজিক-শারিবারিক সমস্যা থেকে
আমাকের দার স্বিরে দেয়—অথচ এই
সমাসাগালের আমাদের আমাদের আমাদের
বিশান করে ভোলে, এমনকি কথানও
স্থান, সে-কথাই বলেছি ছাবভো। তিনি
আরও জানালোন ছবিটা বাতে কলকাভায়
আবার দেখানো হয় ভার চেন্টা ক্রবেন।

ফিল্ম পরিচালক হলেও মূলত এম-টি সাহিত্যিক। তাই আলোচনার মাথে শাহিত্যের কথাই আস্থিল ঘুরে কিরে। দেখলাম বাংলা সাহিত্য সম্পত্তে তার জ্ঞান ও প্রস্থা প্রচুব। এটাই ভার প্রথম কলকাতা সফৰ। তাই শহর ও শহরভালর যত্রতা দারে বেড়িয়েছেন, মালম্পলা কিছা পেকেওছেন। প্রবতণী द्यका हिटनाहै। **विकास** ্রগ্রাম । নিজেবই দেখা গ্ৰুপ। সাহিত্যিক এম-चि वाक्राणका गायणवड् **७**१ শিক্ষস্থা তাঁর অফক্সচেকন শৈক্ষ্ মানদের নতুন প্রিচর দেবে। নিয়ালয়ে। বুৰি তাৰেই প্ৰথম দুৰ্ভ প্ৰকেপ।

and the same of the same of

निक शिक्षिति धन मन्द्र के फिलाइ त्रभी बालाब नामिर हनाक । बानी FATTE THE REST COME OF THE অর্থ রাজে বিলেপ্লিয়ে ল্ক সূত্র HALL THE PROPERTY OF THE PERSON NUM TOTAL PROPERTY BETTER BANK ल मुख्या भारती स्वालका बाह्य तागीव श्रीकांका देवामा कि मना-कता रश्ची कार्यका हिम करता कशन विवादक कथन द वा न्येतर क হণ করেন ক্রম্পানী আলোকচিন-ী বিজয় যোষ ্ স্বর্চিত চিচ্নটো নি পরিচালনা করছেন প্রীযুষ বসু। हरा क्यारहर : अजीम सर्कात। তেলিপি ফিল্মসের 'যে যেখানে ছবির শুটিং শেষ করতে (साक्त्री স্দৃশ্বলে

PROTECTION NO.

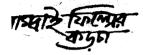
গোমরা অভিমাধে রওনা হরেছেন।
রমাপদ চোধারীর কাছিনী অবল্যকা বর্মাচত চিত্রনাটো ছবিশালৈ প্রিচালনা করছেন অল্লগামী। প্রশান করেকটি ছারিকা দিলপী: কাবেরী বন্ধু দক্ষিকার ছে বিশ্লা চক্রবর্তী, এন বিশ্বলাধন, জারো রাম্না চৌধারী এবং নবাগত ভাষ্ণর সেন। চিত্র-লাহক : বিশ্বি চক্রবর্তী। সুক্রমীত-পরিচালক ঃ শুক্তাদ বাহাদ্যে খান।

ন্ত্ৰণীপ কুললী মণ্ডল চন্তুৰ্ত্তীয় প্রচালনায় নিম্পান্ত্রিয়াল আমি লৈ ও পথার ভূমিকালিপিতে আবেকার নাম বুলে হল, আবাত ভট্টাচার্যা তিনি ও জ্বিকারিশের একার নাম বিলেগ একার নাম তিনটি চলিকের লিক্সাই কাবেরী বলু আনিল চন্টাপ্রামায়ার এবং উত্যক্ষার। অন্যান্য চিরিল্লে আব্দের হিন্দু

বাসৰী সন্দা, বাস্দা চেন্দ্ৰা, তথুগৰুমার গতি বে প্রকৃতি। পায়ুকা মির ও সাংশ্যন করিছা প্রকৃতি করিছা বিশ্ব করিছা বিশ্ব করিছা করিছা করিছা বিশ্ব করিছা কর

ন্দ্ৰীয় হোডাক্সকের জিল প্রী বয় প্রোমাক ছবিতে তথানার জার মানক চৌধুদ্দীন ল্যানে একো ন্দ্রেমান লায়। শ্রীষার এখানে এক শ্রেমান লায়। বিপারীতে পারী হলেন লায়ন নায়। একটি ককে লাতিং করনের সায়িত্বলার একটি ককে লাতিং করনের সায়িত্বলার নিলাপ বল্লোসাধায়ে।

न्द्रे कि व नरवानवाक



न्दर 'भा' धर जना नाशिकात करा ্নেছেন কথনো? শ্নুন ভাহলে, সায়রা বান্তে একদা মনোত্তমাগ বিতে কাপ্ট করেছিলেন প্রধানত এই া মনোজকুমারের প্রবল ইচ্ছা হিল কে নেবার। সবই প্রদের হল। লে না 'পা'। ফলে শমি'লা বাতিল। মার কেন, বন্ধের তাবড় তাবড় দদের মতে স্মারার সৌশ্ধরেরি रेश ना। यादक वर्षा नविशानान्मतः ফিগার, তেমনি ফেস। প্রসংগত বলেন : এইসবেই আমার স্বনাশ এতদিন ধরে দেখছি প্রয় সব ক্ই আমার লুপের প্রতি বেশী া রুপ নাশভাবে একসংলয়েট ান। সেজনাই আমার অভিনয় ^{চ আ্জো} একসংলয়েট করা হয়নি। ন আমি ভয়ানক সচেতন। ভাল েপলে সাইন করি না। বেশ ছবিতে কাজ করছি। তার মধ্যে গা বি আরু চোপরার 'জমির' ीन पखर पनश्रम रूप परश्रम'। । দুটি চরিত্র পেয়েছি। এছাড়া মুখাজিশ্ন 'চৈডালী' ছবি'ন বেশ ভাল। অভিনয় করে আনন্দ

কদিন পর জন্ত মুখ্যান্তি আবার ট্রটে এন্সেছেন। ইতিমধ্যে তাংকে নারক, প্রবেজক এবং পাঁচোলক-বেছি। নারকর্তেশ থানিকটা সফল কিন্তু প্রয়োজক-সারচালক জ্পাং ছবিদ নাম ত্যুসারা। বাদ্যা কিছুদ্দিন বিরতি কেন্দ্র এই উদ্ধান্ত কর্ম বজেন প্রতাদন জ্যাম ধার দেনা শোধ কংগছি। এমন অবংশা হরেছিল, ঘাট বাটি বিজ্ঞী করার উপজ্জা। হঠাং ভাগোর চাকা খুরে গোল। আমি পগিচালক হিসেবে ছবি করছি, ছলিরাবাবু নারেলগ খালা-জিনত আমনকে নিরে। —রাজেশ খালা-জিনত আমনকৈ নিরে। এই ছবি দুখানার পর নিভার করছে ভিয়েং। যে কোন একটা ছবি লোগে গোল আমি ছবির লগতে রয়ে গোলাম, নচেং শীঘ্ম শীঘ্ম বিদায় গ্রহণম, কি বুবলেন শাঘ্ম আর কি করব বললাম এই বে, আমি কিছু বুবি আর না বুবি আপুশিন সাধ্য ব্রেছেন।

বদের ছবির জগতে, নায়কাদের মধ্যে বিষের ধ্যুম পড়ে গিয়েছে। মুম্মু জার সিমির পর লাইনে আছেন ওয়াইদা এবং গরম হাওয়া ছবির নায়িক গাঁতা। অনক জল ঘোলা হওয়ার পর শিথা হয়েছে ওয়াহিদা বিয়ে করনে কমলাজতের মগে। সমরণ পাকতে পারে এই কমলাজত মেহবুর খানের স্ন জফ ইন্ডিয়া ছবিছে সিমির বিপ্রতিত কাজ করেছিলেন। ছবিঃ বিয়ে নয়, সভিবোলারের বিয়ে—হবে আগতে বাদের যে কোন দিন। গাঁতা বিয়ে বর্ষন টি ছি প্রোগাম আন্টেশ্সাই সাক্ষর করেক। বিয়ে হবে আগতে সিম্পার্থ করুকে। বিয়ে হবে আগতে সিম্পার্থ করুকে। বিয়ে হবে আগতে সিম্পার্থ করুকে।

যোগিতো বাদাীর সালো বিজ্ঞাকুমানের নামটা ইদানীং আর তেমসক্তারে জক্তাক না। মান অভিমানের পালা চলড়ে কিন্দু কে জানে। পুনের একসংখে সিনের। চলে দেখা বাতে লা, পার্টিতে দেখা বাতে লা। এমনীক শাটিং করতেও দেখা বাজে না।
যোগিতার বনিষ্ঠ বাক্ষবীয়া বলে কাজ
ফারিরেছে চলে গেছে। ও আলুলে
যোগিতার সংগ নিজের নামটা জাড়ে দিরে
গালিপ কলামে খাব পাবলিলিটি ফেরেছিল।
নেটা পোরেছিল বোগিতার সহবাণিতা
তেই। আজ সব ভুলে গেছে, নরকছারার।
কিরপের বনিষ্ঠ বংখারা বলে, জিলের
মেরেদের সংশে কেউ প্রোম্ন করে।
বার্রির টুকরো ছেলে আমাদের কিরপ।
দিল দিরে দ্বানিরেছে। দার্ন্স হরে
বৈচায়া স্ববিছা ভুলে গাকার চেল্টা
করেছ।

करहाकियन जारश अकटे। ছবিও जाउँछै-ডোর শাটিং-এর সময় বিন্যেদ খালা এবং নীতু সিং এর সম্পর্কটা বেল নিবিত হয়। অবদ্যা নীতুর বর্ষদেরই একটা গায়ে পজ 'বভাব। এজনা একবার দুই ভাইছে হাতাহাতি হয় হয়। রণধীর কাপুর আর राधि काश्चा अध्यक्षे राज नाए গিয়েছিল। ,রণধীয় इ.सि.क. नरमह করেছিল, হৃষি, রণধীরকে। আসলে দোবটা ছিল নীভুনই। এক্ষেতে মোলা ব্যাপাৰটা কি ছচ্ছে সেটা সন্তিক কেউ বলতে পারে না। নীতু বলে পর অবার হৰে ওকৈ আনাম ভাল লাগে তাই ওব সংখ্যে শ্ৰুটিং লেষ হলে বেড়াতে বাই। प्रतम्त्र करू कक्षा चीक...।' चित्रमाम बरका इ ल 'अन्द किन्न न् स्थ। द्यास्त्र । चान्न क्रीबन **हातिको। इरामाहिल्लास । स्रामाहल अन्या** लात । काकू वाल ए एक । अञ्चार्भी उत्वाक

MEN CANDAD

নাইকেল লেভেনবাগ আর গোজী ক্রেন্ট্রন নালে আমার প্রথম সাক্ষাং রাজ-ক্রিন্ট্রের লাভিডাপনিমান্টিত আর কে ক্রেন্ট্রের লাভিন হিল্পী ছবির শান্তিং ক্রেন্ট্রের রাজন হিল্পী ছবির শান্তিং ক্রেন্ট্রের একদল ছিলি ছেলেমেরে, ক্রেন্ট্রের প্রকাল করিল হেলেমেরে, ক্রেন্ট্রের প্রকাল করিল করিছেল। ক্রেন্ট্রের পাট্রের দট নেরা হলে ছবির ছিলো কেছেড় বিলেভফেডা, সেটে রিক্ই-ক্রিন্ট্রের বিলেশী ছেলেমেরেনেল সেটে রিক্ই-ক্রিন্ট্রের বিলেশী ছবেলেরেরেলেল সেটে রিক্ই-

কাক ভেকের পর ফ্যোরের বাইরের
ভর্তার দেখি দুটি ছেলেমেরেকে কেণ্দ্র করে
ছিলিদের একটা ছিড় জ্পেছে। এক্সেটা
লালার ইরাকুর সন্দেশম হাত-শা নেড়ে
ভব্দের কি-বেন বোঝাবার চেণ্টা করছে,
কিল্পু ছিলিমা বারতে চাইছে না। ইয়ারব
ক্রায় দেখে বলনে, দেখন সাহার, এই
লাকেরা কি থডরনাক আদমী, পারো
লাক্তালি থডরনাক আদমী, পারো
ছলে বাবে, পান আদ হওয়া প্রণ্ড
লাক্তাল না। বলনে তো, পানি আমার
ছলে বাবে কর্তান তো, পানি আমার
ছলে কথা কইবে, মেনে আমার চাম্ড।

সাইকেল সেভেনবার্গ বলল, আলবং বেৰে। ছুমি আমাদের ধেকি। দিছে, জামাদের ধেকি। দিছে, জামাদের বেলি। দিছে, জামাদি কলাল দিতে হতব, এখন জামাদি জলাল কিন্তু হতব, এখন জামাদি জলাল, অভএব আমরা নেই জাই। চার হণ্টা হত্তর গেছে, এখন আমরা চাল বাব-

ইরাকুর খাস্লো—ই-ই-ইঃ, বাও কেখি ভোলার কড বড কমতা:

্যুট্নেল মান্ হোলে কললে—তুমি আইল্যাও দেখি—, চলে এলো লোক্তী—

ভাৰা ভলে বাছে দেখে ইয়াকুব হ'জ-ভাৰ, ব্যাকুবের যাত এদিক-ও'দক দেখে মিল্লে ছুটাং উপ্শাবাদে ওদের পেছনে আন্তিন্নাই শাহেৰ, সাহেৰ—সাবে সতি।

. .

সতিটে চলে বাজ নাকি? আমি কিন্তু ভীষণ হাগগায়ায় পড়ে বাব। ভোমধা কাঠনিউটী আটিকি, প্রভ্যেক আটে ভোমাদের দরকার, এঃ—

মাইকেল বললে—পাঁচ দেবে তো-? ইয়াকুব তখন মরিয়া—দেব দেব, নিশ্চয় দেব, কসম।

মাইকেল বলল, তোমাকে বিশ্বাস নেই নগদ নগদ দিলে থাকা নইলে চলে ধাব।

রাগে কলিতে কলিতে ইয়াকুব ডেডরের প্রেট থেকে এক ভাড়া নোট বের কণে ভা থেকে গ্রেন গ্রেন কিছু টাক মাই-কেলের হাতে দিল। মাইকেল স্থেগ স্থেগ বলল —বাঃ, কল্লা দিলে কেন-?

--কোথায় কম?

—নিশ্চয় কম, জলার বাজারে বিজি করলে কত পাওয়া যায় জানো না ব্রিং? ন্যাকামো কথবে না—

ইয়াকুবের সে কথা শানে কি প্রচন্দ্র লোধ। দাতে দাত পিরে বলল—কম্ম, আর যদি কোনদিন ভোদের কাল দিই— বস্তুসক— বলে আগত কিছু নেটে তর হাতে গাংলো দিতে ত'ল ব্যাপারটার ফ্র-দালা হলো। মাইকেল জার বোলা হাসি-মাথে ফ্রোর গেল।

ইয়াকুব ফোস করে এক নিঃশ্বাস ফোলে বুগলে—দেখলেন তো সাহাব, কি রক্ম ডেএটো মাল এক-একটা, হিপিদেব মত গোলমেলে মান্য দুনিয়ায় খ্লে পাবেন না...

এরপর একদিন চার্চারটা তেলিল ওদের স্থেল দেখা। ওরা দল বেশ্র কোথার যেন যাছে। মাইকেল আছু রোলী ওদের ঝোলা খুলে কি-যেন করছে।

আমি ছেনে বললাম—কি কোণায় বাওরা হ**েছ**?

ওরা বলল-দেশলাই আছে তোমার কাছে:

দিলায়। ও হরি, ওলা গাঁলার কল্ফে ধরাল। সন্ধ্যে একটা ভুগভূগি। সেই ভুগ- ভান বাজেরে ভাতা ভাতা চিক্টার মাইকেল বলল/ দক্তিও এটা মণ্ডর পড়ি-ব্যোম শাৰ্ক্ত কাটা হবেশ টাবল, বিসাকা খানা উদ্বেদ্য পিনা-চর্ত্রতর মহাদেও-ভারপর করে টান, সাবাশ, কলেকয় ভক क्षक जाना कार्य अकाकात स्टब्स जाशाह ভোচক্র স্থিয়। আরে করে কি ভারপর পদম বদেকটা রোক্ত ব PNOTE হ'তে তলে দিয়ে পারা দেড-দ দয় আটকে পড়ে রইল মাইকেল। রোজীগত সমান ক্ষমতা: হ্যাঃ ক বৈক ফাটারার ক্ষমতা সাথে যেন **মে**য়েটা। অনেকক্ষণ পর ধোঁয়া ছেড়ে বলল---মন্তর্টা ঠিক ঠিক বলা

বললাম—প্রায় :..ইরে, তা এখন চলেছ কোথায় ডোমরা ?

গোক্তী বললা--আমরা আল নেপান বাহা করছি। ওখান থেকে অরও কয়েকট; ভায়রায় হাব। ফুলিড্ড ভূমি কেছে?

বললাম আমি ব্যায়াস্ক্রপের লোক

বললায়---না না আঘি তেখাদেও ফিম্মের কাজ দিতে আমি নি। সেনি আর কে: সট্ডিওতে দেখেছিলাম বলেই আজ কথা বলছি। কেন, রাল করছ নাকি?

ম ইকেশ ত|জিলেরে ভণ্ণী করল— নানা, সে গুকুম কিছু নয়। আমি সরে প্রকাম।

তথন ভারতে শান্ধ রাখি হিপি ছেলে-মেরে আসকে াধেনা বিশ্বার প্রচুর চোথে পড়কে কলে-মেরে অবলা চেনবার উপায় নেই এমনই বিচিত্র সব বেশড়্যা ভাগর। এক এস ডি মারিজারানা ভার সিম্পি-এসব নিয়েই মেতে আছে ওরা কেইবা ওলের উদ্দেশ-আদর্শ, কি-ভাবে দিন চলে, প্রশন করলে সদ্ভর পাওয়া বেত ব্যা

এমন সময় হঠাৎ একটা বোপাবোগ হয়ে গেল। আইভার মাচেল্টি প্রেডাকশন ভারতে একটা ছবি করছিলেন—'দি গুড়া', জেমস আইভার লে ছবিল পরিচাসক, ইস-माहेन भार्क् ने श्रादाक्क-हे, रहा निरम्भ সেপ্তরী করের ব্যালারে তোলা হাছেল ও'রা এদেশে কি ছবিটি ভোলা হচ্ছেতার ওপরই **এ**क्छि भार्षे विषय कन्नट्ड धनम्य कन्नट्यान । ই মেজ ইন্ডিয়ার শাণিতপ্রসাদ চৌধুরীর 77(05) তথ্য আয়ার হোগাহোগ ছিল, जामारको नारकचे कमरका मरका Most अक्टो प्रिम टेटबी इका। ट्वरम्बद् (FA বাশ্তিশ্তা, মাল্লাজের মশীন্ত রাও আর কলকাভার আমি। একটা বভুলোছের টি ভি ইউনিট। বাশ্ডিতা আহার বেভেডে साभावने विकर क्यानम, नि श्रृह्दं

কাজী নডারুল ইসলামের থ প্রল রাইয়াৎ- ই - ওমর থৈয়াম ---- ১৪:00 হা প্রল রাচাচা--- ৬:৫০. ৩৷ কাব্য আমুপারা--৪:০০

त्मारत लाँरेतिही

৩৫ এ, সূর্যসেম জীট ফান-৩৫-০৬৩৩ কলিকাজ-১ शत होत क्या हाका विस्तानी क्षेत्रिक त्तत क्रता अक्षेत्र न्यकत होत नामातन क्ट इट्ट काबटि अहे व्य मामि वामि িল আসহে তার সঠিক কারণ খালে ত করতে ছবে। আমি বললাম, তাহলে हिल्ल कि नियम निरंह स्व कि कर् ाव माश्चिष्ठ वन्नर मिखना दशक।

ত্রপ্রাম্ক ।

আমাদের প্রথম লোকেখান-বৈনারস। वत भाउता र्गान, वावा विश्वनात्वत हतरण ই নেবার জানে হাজার হাজাধ হিপি त रिभिनी नाकि उथान करका इस्तरह। বেন্যরসের এয়ালপোটে নামতেই াপাৰটা কিণ্ডিৎ মাল্ম পাওয়া বেল। াটেল থেকে গাড়ী এসেছিল। ভাইভার লেটি খাৰ চৌকস। বললে হ্যা থাবাকী তাং গোরা সমাসী আবু ইধর মে হায়ে। মঝমে নেটি আতা ক্যা মতলব---

সহকারী ক্যামেরাখনের জান্বলেরলকে -মতলব সোজা। নেশা-ভাঙ করার এমন গ্ৰগ তো চিতুবনে আর কোখাও নেই, তাই

সম্পোবেলায় চালসি গ্রেগরী নামে किं हिभित्र भरभा एम्था हल। ও वनर्ल, ন্মরা এখানে এসেছি মাছির স্বা ামণা মুভি চাই। আআর মুভি...

—বাস ?

—কেন, এটাই কি **ষথে**ণ্ট নয়? আ**লে** ঃকি, ওকি হচেছ? চালসি হা∹হা কমে ঠল, তোমনা ছবি তুলছ নাকি?

জান্বলে একগাল হেসে বললে— বলক্ষণ।

চালাস বললানা না, ছবি-টবৈ জামি भष्टका क्रिना। আংলোচনা হচ্ছে আলো-না হোক, তার মধ্যে হাট করে আবার ছবি-টবি কেন?

আমলা ব্ৰিয়ে বললাম—তোমাদেব এই যে মহৎ উদ্দেশ্য, এটা ফাতে স্বাই তাড়াতাডি বোঝে. <u>সেইজনেই</u> বাবশ্বা। আপত্তি করার কি আছে?

हार्कात्र मर्थरम वसरम--वाडानाव हर्ने-কোট দেখাছ ? আমি বাবা সব বংকি। তোমরা ট্-পাইস কামাবার জনো এটা ক্রছ। না বাবা আমি ওর মধ্যে নেই--

জ্বাদ্বলৈ বললে ড্ৰিম ভাল লিয়াল করতে পারছ নং ত্মি সর আমি এক্সনি **श्रेक कार क**रत रक्तिक।

বলল-চাৰ্লস সাহেব বলে ক্লাম্বলে গ্ৰাপী মুক্তর বোঝ ?

—হোরাট গ**্প**ী যশ্তর?

—करेक्क ? दरम शास्त्र भूता करें দেখাল। আর হাসি বেন ধরে না। চাল নের মুখে—নিশ্চর জানি, ইউ মিন গঞা?

—হাাঁ গাজা! জাম্বলে বললে— তোমার পারফরমেস্টা একবাব দেশতে **हाई कामता। त्रथा**त?

চার্লাস সহাস্যে তার থলে থেকে এক্তেক বেল করে তংক্ষণাৎ মণ্ডা পর্যে रक्तका । दातशत वनाल-**अहे**वात क्रीश्न-म्रद्भान--



জাম্বলে মহা উৎসাহে দেশলাই ভালিয়ে দিল কলেকয়, আমাদের ক্যামেরা ভতক্ষণে চালা হয়ে গেছে-জাস্ট দিস ইঞ দি ওয়ে ওয়ান হ্যান্স ট্রাস্ফোক, কিছু: কলের মধোই তুলি ভারশানা একটা মাগে যদিনা ওঠোতোকি কলেছি।

পুৰাস্ত্ৰোতা গঞ্গার ঘাটে তথন সবে সন্ধ্য নরেছে। হিপি আর হিপিনীরা টাউন ভ্রমণ শেষ করে। একে একে ফিরছে। খামেলিকান, ইতালীয়ান, জামান ফেও কানাডিয়ান ক্টিশ স্কান্ডানেভিয়ান।

ঞান্বলের ঠিকই নজর আছে। ব্যাটারী সাম-গাল লাইট ওদের দিকে পরেণ্ট করা আছে, আমাদের সৈগন্তে পাওয়া মাটই ক্লেনে দেবে, আর ওরা কেউ **সাপ ও** জানাবার আগেই দ্'-তিনশো ফুট একস-পোজ করে নেবে ক্যুগ্রের্মগুন মণীন্দ্র রাও। আমরা গোটা পরিকল্পনাটাই এভাবে করে রেখেছিলাম। হঠাৎ জাম্বলের वार्डनाम वामता उपन मिक छाप ফিরিয়েই খ'। আরে রাসচন্দ্র, একেবারে বিবশ্ব হয়ে ওরা ঝাপ ঝাপ করে নেমে পড়েছে গুণ্গার জ্লো।

डार्नातम्ब भागे निरम् त्मलमा इरसरह ততক্ষণে। চে^{ৰ্}চিয়ে ভাৰুণ—াব্ৰা, এসো মিট আওয়ার ইন্ডিয়ান ফ্রেন্ডস—

রো তথ্য ছলে।

চালুপ বললে ত্রা কানা ভয়ান, ইলিস-ভেন্টালী লি ইজ মাই হাজবাণ্ড-

'লি' কথার চমক লাগল জান্বলের।-रमिक, खा एक्स्म, ना प्राप्ताः?

--- रभट्य ।

— टामान शक्षवाणि कि करत हन? মেরে তো?

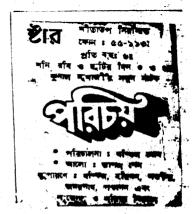
The first the second of the se

हार्नाम वन्दन- **७१ इट्स बानाम**। खरें के आधारमंत्र कि शिक्षेत्रम व्याप्त मान्त्र। পালুষরাই চিরকাল স্বামী ছবে? ছেল ই মেয়েরাও তো হতে পানে। জ্ঞা, ক্ষে ক্ষে, এটু আলাপ কর এদের সংগ্র

शास्त्रक माधिमात्र केठ बनान, सबनान. ও-যে নাংটো এখনে **অস**ং নাৰি?

-- आजवर जामत्व। जामक भाष्ट्रां আসংব। তোমাদের এখানকার প্রতিহার। रक्ष रहेर्पहेशा नहेर्त्य क्रहेंसक्य क्रकेंग् ग्रे. भकाम क्यान्ये. शतका तम्म, व्यथान्य গ্ৰেছ্য জামা কাপড় পরে সঙ্ সেবে रवक्षवात्र स्कान अर्थ द्या ना-

-- চালপে, তোমার গাল-ফেল্ডের **অট** নেব আম্বা?



—রো বীদ চার নিশ্চর দেবে। ওকে তোমকা কিছু অফার কর। ভাঙ, সিদিধ অনু-ত ফ্রেন্ডনিক্

काञ्चरक वनवा-विकास निकास

মণীকা বাও বাটো গলার প্রদন করত —লব টিক আহেছ ফোকিন সোলার ?

বন্ধনাৰ, উদাৰে ভৌ ছাই ওলের নেশেস টোলাভিলানে। ওলেল জাবাল গুলৰ নেই। বিলাজি ইয়নো এনেলে নেংটো ছুলে লালে কেনি ক্ষমে এনেলে। নিংটো ছুলে লালে। টোলেন । আমানেল ক্ষমে যদি ভ্রমে লাট ডোলেন গুলা, এলার বালা-ভেলানে বিলাজি আমেও নিশ্বক প্রদান ক্ষমে

ক্ষেত্ৰত বন্ধন ব্ৰে কৃছ লাখা। তথে বিলেকৈ অন্তেন্ত্ৰ প্ৰতি আনি কৃষি-প্ৰায়ী হন্ধ এটা ইপিকানের জামনা জান। নো সামত সেহেটি বোঁ কন্ধে জল থেকে জঠে অসিতেই মুলীপা গাওয়েব কান লাল। বললে, বন্ধ ৰাজাৰাভি হজে, চালান এনাফ আম ইট, প্ৰায় এবার প্ৰথম কাণড়চোপড় প্ৰতে বলা।

ওধানে কৈছা লোক স্পান করছিল।
এই দৃশ্যে চোৰে দেখে তারা ডাক্সার।
মূহদেতা ভিড় জয়ে গোল আঘাটায়।
মাইস্কোপ কা শাটিং চল গ্রহা হাায়, বডি
শাক্ষা কৈ বাং ভাই.. বেশ্বিশে কোন

জান্যদের কি হৈরীয়। —কেট জার্দেনি জাট কেট জার্চেনি। কেটে প্রভা

চালসি বলকে শাস্তা তাড়াছ কেন?
আমানের দেখবার জন্যে তেগ্রানের
লোকজন তো সবতিই ভিড় করে, কিছা
পালোও পাটে। সৈইজনা আমান কথনো
বিজ্ঞাবলি মা। দেখাক দেখাক।

আর ঠিক সেই সময় হঠাৎ মাইজেল জেভেনবাগের সংগ্য দেখা। আমায় দেখে হালু হেসে বলল, আবারে দেখা হল। তোমবা এখানে শ্রেণিং করছ নাকি?

বলনাম—হাাঁ, তবে গৈলাম সেই বোদের হিণ্দী ছবি নয়, এটা টোলিভ-লানের জন্য একটা দেপনাল ফিচার গেলা হক্ষে—হিন্দিস মানুষ্টিভ ইন্ডিয়া, ইচ্ছে ইয়ালে তুমিও ইন্টারভিট দিকে পার।



बाहेरकन शानन।

-- काथात्र भारता?

মাইকেশ বলক—ইউনিভাসিটি ক্যান্পা-সের পাশে লক্ষা নামে একটা জারুখা আছে, একটা ভাঙাচোরা বাড়ী ভাড়া করে আছি জামরা—

—তোমার সেই গালা ছেল্ড, সে জোগার ?

মাইকেল ছু-ভগা করল—রোজীর কথা জানতে চাইছে? নোজী এখন নেপালে। এছ ইচ্ছে ও এখালেই থেকে বাবে। —কো, কি ইল।

-রোজী ধূব টারাভ' ফিল করছে। কৈছুদিন লাগে এর একটা বালা হরেছে, এ লার আমার্গের সংগ্রহত পায়ত না

प्रावेदक्का बार्केटनर द्वारका : स्त्राकी रगेरेरमत । खता मामामहे मिनिकार । जीवान अब अक्षा महाल जात वधन मिलाक ভীৰণ নিঃসংগা, দাগুণ অথতিনি, স্ব কিছুর আক্ষণিকে বিজ্ঞানী বলে মনে হয়, তথ্য চঠাৰ একদিন কাউকৈ নিভ- না বলে বেরিয়ে পড়েছিল। মধ্যপ্রাচ্যে এসে রোজীর সংখ্যা ওলু দেখা। ভোগবিলাসের চড় হত করার পর রোজনী জাবনের প্রাকৃত অর্থ খাজতে বেরিয়া পড়েছিল अमञ्माद-हे अक्तिमा श्रम জীবনে क्रिकाम आमनाना श्रामक नाता ব্যৱস (4) আস্তৃতিত ছিল না। এল এস ডি 'জাব মালিজারানার নেশায় বাঁদ হরে **山(井町** ब्बर्क उत्माम भाषा यावशाह য়খন জীবদের একমাত্র কাজ-তখন शहेब शहरकात माना जत प्रथा।

TIN!

মাইকেল বলল-এসই ভোমাকে বলাছ কেন ছেই ভূমি কোই

আমি একজন খোডা:...বলতে তেমার্র একদিন হতই। আর গ্রোভা কেউ না কেউ একজন থাকতই। ধর গ্রাঞ্চ সেই গ্রোডা আমি—

—বটে।...তাইকো লোন, জায়ি শানে-ছিলার জাগতের একজন যোগাঁ, লাভনে সে একদিন মণ্ড মিটিং করে বললো, আমার সংগো চলা, জীবানের সবা অকৃতকা্যতিন জকৃতা্যাবার্কার, অকৃতজ্ঞতার সোধ দেখাব লায়ি, মান্তন একটা পারেন্টে দাড় কনিয়ে ক্ষে—, মান্তন জীবান শানা, হবে হৈ মানের স্বধান-কার্য জন—

জাশবাদের করে ক্ষেক্তিং মেলিন অন করেছে জন্তকালে, মলীকা রাক তার শজিশালী জায়ালিফা,কস সংগ্রের, মালোজিনের মধ্যে সেল্লাহাজের মিলত সমল দলে এবং শক্তিক সভ্তক্তিত সংক্র জাহল করতে শক্তি ক্ষেত্ত —ভাষণর একেন এবে দেখন।
বিগতি ব্লান্তি, লোকটা ত্রেফ ধাপা
কিলেছে অন্যাদের আসকো ও নিছেই লাক না একে। সমান আমানত আমি না আমান কোথায় বাজি—কোথায় আমাদের আমন জিন্তবল...

वाधि रम्पर्धा नशक्त ভামিধা क्रवीष्ट, जन्मात रंगई छण्नशृह न्द्रारम । कांड भागीकभाषि दलाह्यान द्वरवादमस्य নেশায় बाह्यकामन्या । साम বাশি জ্ঞানিত্র बाकारणः माठणः शहरभागाण मत्त्व, श्रमान मन्द्रच, हानद्र वन्त्रह বৌশক্তিয়া করছো জামরা বেল প্রিবী ब्बंदिक का कि प्रश्नि शास्त्री अकशक जानाम মানাৰের কৰি এই সাহাতে ইতিহাসের পান্তার, কিলেল ইমালপানে বেটা আন্চম বিশ্বক্তভার সংশে ব্যক্ত প্রয়ে যাছি यानामी जित्रम् सनामा स्नान सार्वमसारा करना ु...

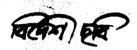
পরাদিন আমন্ত্রা সবাই বেনারদের পশা হোটেল তেন্টেল-দা- স্মারিসে!। ব্টেনে: ভগুনী চলচ্চিত্রাভিনেত্রী রীটা টুলিংহাট ইন্টারন্ডিউ দেবেদ। আনুর দেবেদ ব্টেনে: ক্ষমিপ্রা নায়ক মাইকেল ইয়ক'। গুলা অপদা: সেনের সংলা দেখা। উদি গারে চরির শ্রিং-এ এসেছেন, থ'র স্বামী সম্বাহ সেনপ্র এসেছেন। সপ্রয় আমান্ত্র অনেব দিনের বংধ্যা উৎপল দত্তর ইন্টার্রভিট দেশুয়া হল:

আমার। ফিরে আসছি। সংখ্যদিনের কাজ দেব। প্রদিন সকালে হা্রিকেশ যাবার কথা। ওথানে বিটল রাজা কলা হাজিসন এসে মহামি মহেশ যোগতি আলমে উঠেছে। শোনা গোল লোক সিন লার সলা ভালাক দেওয়া প্রী মিরা ফাবো-ও এসেছে। এক ভল টি, ভি ইটনিট নাবি ওথানে দ্যাপ্রম াটং করছে।

ছোটেলে এর দেখি, মাউকেল একট দিলপ রেখে গেছে। তাতে একটা ঠিকানা শেখা, তোমাদের এই ছবির একটা প্রিণ এই ঠিকানায় পাঠালে সংগ্রে সংগ্রেকী ছয়ে বাবে। ওলা কিনবে, কারণ আমার অনেকগালের মাতিশট ওর মধ্যে আমার নৈতিক অধংপতনের এমন খোলা-খুলি ছ'ব ইতিপ্ৰে' কখনও দেখা যায়নি যদিও আমার মত অধঃপতিত পরেহ প্থিবীতে দিবতীয় কেট নেই থলে আমাৰ নিক্ষের ধাল্পা। অন্ম, ' ' অভিজ্ঞা ছেলে। টাকা পয়ুসা মা^র পরিবারের প্রতিপতি কিছবেই অভাব মেই। আনু নেই বলেই আমি নিজের ওপর ভীষণ বিরক একানি আখাহত্যা করতে ধর্ণজ্ঞ মনে राष्ट्र अथन आषार आहे। रे अक्टी कश्च अट জিনিস। বাই।

আমি হ্'বিকেশে গিরেছিলায়। সহচ ঘটনার মাথেমিছি হুরেছি। কিন্দু মাটাকলের মত আর একটি ঘটনার কিন্দু পানগাবাধি হয়নি।

-विश्वन सक्त्रमगुर



উল্লেখযোগ্য সুইডিশ সট ফিল্ম

স্বাদ্ধি সাহীতিস শৃষ্ঠ ফিল্ম নানা কারণেই উল্লেখ্য। এতে সাহীতিশ চলচ্চিত্র প্রচেণ্টার তিনটি দিক ভূলে ধরা হয়েছে।

প্রথম তার নির্বাক যুগ, যার সময়কাগ প্রথম বিশ্বযুগ্ধ থেকে ১৯৩০ সাল পর্যতঃ

সেই সময়েও, যথন সিনেমার বিভিন্ন
দিকে আজকের মত এমন উমতি ঘটেনি,
মুইডিল নিবাক চলচ্চিত্রে প্রবৃত্তকৈ মরিছ
দিকার ও ভিকটর সক্ষপট্টম কামেরায়ান
জালেরাস জ্ঞানসন্দের সংগ্রুতার যেসব
বিক্ষয়কর নিবাক ছবি করেছেন তা দেখলে
বিক্ষয়কর নিবাক বাবছেন তা দেখলে
বাক্ষয়কর করেছেন তা কেথলে
তার আবেদন তার গঠন প্রবিপাটা একালের
দশকিকেও মুন্ধ করে রাখতি সক্ষয়।

ন্দিত্তীয় বাগকে বলা যায় স্টেডিশ চলচ্চিত্রের প্রথিয়া। যে যাগের প্রতী আজ-কের বিশ্ববিশ্যাত চিত্র-প্রিচাণক ইংগমার বেয়ার্মান।

এর প্রের প্রথারে ১৯৬০ সালে ফরাসী ছবিতে যে বিংলাবের স্চন। হয় তার জননি সারী বা প্রিপ্রেক ব্লে দেখা দের এক-শ্রেণীর নদ্রীম চলস্চিত্রগরের প্রচেটা। যারা সামাজিকতার বেড়া ডিগ্গিয়ে বাসতং এবং ক্যাশিয়াল ছবি কর্ম সিকে থাকে পড়েন।

এই সমস্কার দুজেন পরিগলক বো ওর ইডামবাল ও জেল গ্রিডের ছবি সাই ডেনের বাইরে অন্নিটত একাধিক চলচ্চিত্র উৎসবে স্বীকৃতি লাভ করে।

ৰাটের দশকেই হৈ সাইডিশ ছবি বিদেশে অথানৈতিক ক্ষেত্র সাথকিতার স্তুনা করে-ছিল এদের উপদ্থিতিতে সেটা আর্ বিদ্ভুত হয়

প্রথমেই নির্বাক যুগের ছবির কংশ-বিশেষ দেখানো হয়। তারগর আধানিক সাইডিশ ছবির নম্না প্রাপ্তনস এপ্ড, লাভ সিকস্টিশ্টেড, দি এপাত এ স্ইডিশ লাভ সেটার্ল দি বে বইট গেল ও হ্যারি মানেটর ছবিগালির অংশ বিশেষ দেখানো হয়।

কিন্তু নিবাক যগেব ছবি ছাড়া লট ফিন্স-এর রাধ্য সবচেয়ে বেলী আকর্ষণ করেছে জনি টোরেল পরিচালিত ফেট ইন দি রাপাল্যান্ড' ছবিটি। সম্পূর্ণ ভিন্ন স্বাদের ছবি এটি। এবং গলেপর দিক থেকেও স্বতক্স।

একজন নেডার লোক হঠাংই স্টুডেনের সন্দ্র উত্তরাগুলের এক নিজান জন্মান্বশ্রা চেটশনে টোন থেকে নেমে পড়্ল। তার কারণ জাবনে সে স্বাদিক থেকেই ক্লান্ত হরে পড়েছে। তাই সে একটা প্রিত্তান চার, তার মানসিক প্রাধানতার হাত থেকে কিচ্লুগের জনা হলেও নিচ্ছাত চায়। মূলক হবিটি বিশেষ একটি জন্তুতির ওপর ডোজা। আন্দেগ এবং কবিন বোধ যার মূলধন।

পরিচালক এমীন টুকুরো টুকুরে। আরো তিনটি ছবি তুলে—ফাট চারটে ছবিব সমুপ্রে একটি পূর্ণাপা ছবিতে তার এক বিশেষ বঙ্গা উপস্থাপিত করেছে। সে ছবির নম্ম-করণত ক্ষাণ্ডান—বিস্কেটা

ছবিটি দেখতে দেখতে আমার মৃশাল সেনের বিজ্ঞান্তর হবি জুবন জোদ-এর কথা মনে পড়ে গিরোছন। বানিও ম্লে সংগ্রি ছাড়া লুটো ছবিল মধ্যে আন কোন মালই নেই এবং সভাতে বালা কোই স্থাল সেনের ছবি এবং সভাত বালা কোন ক্রান কোন কি ভাব কটোয়ালী পার্কত।

সব'লেৰ একটা কৰাৰ কাইছিল বীৰছে আয়ানা বেসৰ ব্যাপান কাৰে জালাক, মধ্য নতুন নীতির নামে মেনি সংলেক বড়াবছিল বা এ ভাতনিয় অন্যভূতিক ব্যাপান্টা, এখালা প্ৰায় অন-প্ৰশ্বিত

এই বৈশবীতা তাৰণা লক্ষণীয়।

RELEASING ON 9th AUG!

As eternal as the universe As eternal as the sky So you are my wife eternal.

VIJAY ANAND · JAYA BHADURI · DEVEN VERMA



Direction Muble
ANIL GANGULY • KALYANJI ANANDJI

Based on the Story of ASHUTOSH MUKHOPADHYAY NOW CREATING A NEW SENSATION IN BOMBAY, DELYIL C.P.C.I. and other furitorees

ROXY — PRIYA — MITRA — MOONLICHT — CEM

M/s Musicol Films (P) Ltd.

Release

মণ্ডাভিনয়

শিশভতর कामना व জনবোৰনাৰ ঃ বিগত ২৫লে জলাই, জান্তল অপায়ণে অঞ্চল অনন্যা^{*} নাটকের ক্ষিত্রভাষ্ট্র ক্ষিন্ত্রেংসর এক মনোজ अविद्युष्टमा प्रथा प्रदेश चामाणित्र हर्गा। খন ঠানে সভাপতি ও প্রধান অতিথি-प्राप्त कावन राम अधिकायास्या अवकारत्त मार्ट मनीन नाच्येमकी मान्छ प्राप्यानाधान क श्राप्तील प्रकाशार्थ । सर्माश्राप्त सन्दर्भका छ কাণিকামকা জীত্তবাণকাণিত ঘোষ, খাদা-মান্ত্ৰী প্ৰীপ্ৰফাল্ডাৰ্ডা ঘোষ, লোকসভা नक्षाः शिक्षातकम क्षानग्रामी स कार्या **বহু:জনের উপন্থিত থাক্রার কথা ছিল।** জন-পশ্পিতির জনা তারা काम कारना শুভেক্স কামনা করে বাণী পাঠান।

बस है। উপেরাধনী সেনগ্রেত্র সংগতিত প্র রক্তমহল শিল্পীগোটার সম্পাদক জনপ্রিয় অভিনেতা অহর রায় উপস্থিত সাধীজনকে প্রাগত জানিয়ে श्राक्शीरशाव्यीय **म**ीर्घा भरनत সংখ্যাত্র-শালতাৰ প্ৰতি স্বাকাল এবং দশক-मधारकात जिल्ले অনুক্ষপূৰ্ণ ক্রবের। পরকোকগত বিধানচান্দ্র প্রতি MAN জানাতে বেয়ে শ্রীধায় বলেন, ডাঃ রায়ের হুস্ত্রাক্ষণেট আমরা আজ পর্যাত ১২ ৷১৩ বছর ধরে সমানভাবে রঙমহল রজামণ্ড অভিনয় করে যেতে পারছি । নানান বাধা-বিপত্তি এসে আমানের পথে দশীভারতে তব্য আন্নরা হতাশ ^{*}হুইনি। স্রকারের কাছে সহায়াও চাই নি। বিলয় বাংলার ঐতিহাদীতে রঙ্মহলকে চালা রাখতে আলা করি সরকার প্রয়োজন হলে এগিয়ে অস্পেরন।'

প্রধান অভিথিত্ত ভাষণে স্ক্রীপ্রদাণি ভাগিগ্য বলেন, নাটকটি আমি দেখেছি। দিশেশী এবং কমানিদের ঐকান্তিক চেন্টা অননার কলপ্রিয়তার মালে নিজিত রয়েছে। ২০০ শত শুক্রাী অভিজয় করে স্ফাননা এগিয়ে চলেছে। অননারে এই সাফ্লা বিজ্ঞান্ত্র অভিনেদনযোগ্য। শাক্ষমান অভিনেতা কহর গায় অননার প্রাণবর্প।



শিক্সীগোষ্ঠী তথা রঙ্মহলের সমশা সম্পর্কে সরকার নিশ্চয়ই ত'ার কন্তবা পালন করবেল। বাধারর সারত লাখো-পাধ্যায়েশ্ব হাতে এই বিভাগের দায়িক। এবিষয়ে সর সময়ই তিনি তংপর আছেন। সভাপতির ভাষণে শ্রীসূত্রত মুখোপাধাায় প্রাণ্ডমবাংলার তার আবেগময় ভায়স নাটাশালার C#7.0 অবদান সম্প্রেপ উল্লেখ কলে বলেন প্রমূপ র ষ श्रीशाह्मकाका चानीविभग्द वारमात्र नाणेभागा हिन्नीयम ज्याकाभागात ধাগৰ ও বাহৰ হিসেবে কাল করে এলেছেন। জাতির প্রতি, দেখের প্রতি নাট্যশালার যে গ্রুদায়িত রয়েছে সেকথা য়েন আমারা কখনও ভালে না মাই। কিন্তু অজ্ঞকাল কোন কোন মণ্ডে জাতীয় সংস্কৃতি বিরোধী চিত্রাধারার জনপ্রেবেশ সভাই বেদনাদায়ক। এবিষয়ে সরকারের হাতে কোন আইন নেই। জোগজবরদ্দিত করেও মান্যযের মনোজাবের পরিরতান সাধন সম্ভৱ নয়। ভাই আমি অনুরোধ কলবো মণ্ড মালিকদের—তপ্রা যেন শিক্ষাক নিছক বাবসায় পণেদা প্রমায়ে फॅल मा नामान। जन्द्राध कर्द्य कर्णक-সমাজকে দেখের যাবলভিকে এবিষ্য়ে সচেতন হয়ে উঠতে।

জ্বর বারের শবিষ্টার প্রশংসা করে শ্রীমানেশাধাকা বলেন, 'অসুস্থ শ্রীর নিয়ে কেডাবে তিনি অভিনয় করে যাজেন আমার কভে তা এক বিস্ময়। আমি তাঁট সাস্থ শীব্দ কামনা করি।'

প্রতিষ্ঠাবান শিল্পী ও কর্মান্দের বিভিন্ন প্রকল্পার জ্বিত করা হয়। প্রাপ্তকার প্রদান করে ছায়া দেবী। সমগ্র অনুষ্ঠান পরিচালনা ক্ষেন জহুর রায়। অনুষ্ঠান শেষে বধারীতি জননায় নাটক অভিনীত হয়।

কুনাল ম্পেশাধায় রচিত অনন্যা পরিচালনা করেছেন জহন রায়। অভিনয়ে আছেন জহর রায় অসীঘকুমার, স্বাধাপ দত্ত, ম্পাল মুখার্কি; ঠাকুখনাস মিত্র অজ্ঞিত চ্যাটাজি, ক্যালদাস গ্রাপ্তালী, কাম্ম্যার্থার্জি ক্যালী সেন বাধি গাশ্যাক্রী, সীমা দে অল্পাত প্রিচ্যালনা চন্দ্রকার প্রস্তি। স্পাতি প্রিচ্যালনা করেছেন চন্দ্রীশার বস্যু।

কর্মাধাক শালিত্যর ব্যানাজি ও বারম্পাপক প্লাশ ব্যানাজি স্ব সময় অতিথিদের প্রতি যদ্ধপর ছিলেন।

পাঁচচৰৰ্ণা দাতা দংশক্ষেত্ৰ উদেশকা বাতা সংসদেন বাতা উৎপৰ : পাঁচচাৰণা বাতা সংসদেন উদ্দোশন অপান্ধী . ২৪দো আগদট বোক ব সোপাঁকৰা প্ৰথত সভাজাতি অধ্যন পানৰোদিনবাগ্পী বাতা উৎসৰ আনুষ্ঠিত ইবৈ। মোহন ক্লেম্ব চনুত্ৰ বুলিও দ্বলি ক্ষিত্ৰ কাৰ লৈছে প্ৰক্ৰিক বাটা সংসলো পৰা বেকৈ এক সামানিক সংসলন আহনি কৰা হুলেছিল! ৰাজ উৎসব স্মাতির সক্ষাপক প্ৰক্ৰিক বস্মানিক সাংবাদিকদের সামান উৎসবের তাৎপথ বাাখ্যা করে নব্দতিত বাটা সংস্থেত ক্ষুপ্ৰতি দিন্দেশ্যৰ ক্ষেত্ৰ।

নট কোম্পানী, মঞ্জারী অপেরা, নিউ
প্রভাস অপেরা, জনতা অপেরা, মাধবী
নাট্য কোম্পানী, নররঞ্জন অপেরা, নিউ
রয়েল সাঁণাপ পি শিল্পভারতী
অপ্রগামী, শ্রীরামকৃষ্ণ মাপের, তপোবন নাট্য
কোং, সাুশাল নাট্য কোং, শিল্পীতীর্থা
দি কমলা অপেরা মোহন অপেরা এই
১৭টি যাত্রা সংক্ষা ১৪ দিনে ১৭টি যাত্রা
নাটক অভিনয় করবেন। জনানালারে একটি
করে এবং দ্ববির্ধার ২টি করে প্রদর্শনী
অন্তিত হবে। তাছাড়া এই সেপ্টেবর
স্কাণিত হবে। তাছাড়া এই সেপ্টেবর
স্কাণিত অধ্বর্ধারে স্বলিম্পনী সাম্বর্ধার
বাপালী যাত্রা নাটকের অভিনয় আ্রোজন
করা হরেছে।

এই অভিনয়ের বিজয়লম্ব মধা দৃঃশ্থ শিল্পীদের সাহায়ী ও একটি ম্থায়ী যাগ্রা-মণা নিম্নাণ তহবিলে মজতে গাখা হবে। নবগঠিত পশ্চিম্বংগ যারা সংসদ কিংটে কল'স্চী নিয়ে পশ্চিমবাংলার যাতা-শিশের সর্বাত্মক উল্লভিতে আত্মিয়োগ করেছেন। সাদীঘাকালের ঐতিভ্রেণিড্র প্ৰিচয়ব্যংলা্থ যাত্র্য শক্তেপর मश्राक्रम ७ विविध सम्भाग समाधारम পশ্চিমবাংলা সরকারের সহযোগিত; কামনা করে যোগাযোগ ভ্যাপন কর্ন্ন তথ্যভে। দেবে বতিমানে সংস্দের সামনে যাতা মণ্ড নিম্বাণ ও দঃশ্য শিশ্পীদের সাহাযাদানের সমস্যাই সর্বপ্রধান। উত্তর বা মধ্য কলকাত্রাথ কোন উপযুক্ত স্থানে সংসদ ম্পানী যা**তা মণ্ড** নিহ**ুণ**র কথা চিত্তা কাছেন। বর্তমানে স্বান্তর্গভনহোর যে বেওয়াজ আছে ভাত দেখা গেছে বছবে প্ৰপ্ৰতায় ভয় মাস নিয়মিত যাত্তিন্য অনুণিঠত হয়। **প**ৰভাৰতট বাকী **হয়** মান্সল বৈকারছের জন্য শিলপী কছণী ত স্বস্থাধকারীদের সামনে বিরাট ভাগিক अधामता राज्या जिल्हा शास्त्र । स्थारा शास নিমিতি হলে এই সময়ে পালাক্তমে বিভিন্ন फल काञ्चित्य कत्रवास সংখ্য পাर्यतः! স্থায়ী মণ্ড সংলগন একটি সংগ্রহশালা প্রতিষ্ঠাল পরিকলপনাও সংসদের আছে। ১০ লক্ষ্য টাকা ব্যয়-ব্যাঞ্জের একটি পরিং কল্পনা তৈরী লয় সংগ্রেল। কিল্প भरभंगान भएक वाकिशाल वर अधिरहासगार দলৈ বা যাল্ডিনয় থেকে অজিতি অগ ण्याचा बाह्यमश्कलान सम्बद कृद्य माः। जारे সরকারের কাছে অন্তত্ত ৫ লক্ষ্য টাকা সাহাষা চাওয়া হবে।

সাংবাদিকদের প্রদেশা উন্সার শ্রীবসা-দল্পিক জানান হে আসল উৎসার থেকে উৎসার কামিটি ৬০ IQO হাজার টাকার লাম আশা করেন। করে রবীপ্রকান্ত্র এই উংসার আনুষ্ঠিত ছলে ১ লক্ষ ২৫ লাধের বিশী সংগ্রীত হতো।
কাতা কর্মপান্দের নবিন্দ্রনাননে বাচা
দ্ব লান্টিত হবার অনুমতি না দেবার
াই সংগদ মহাকতি সদনে বাচা
দবর আরোজন করেছেন। পণিচমবলগ
া সংসদ মাজক, লিক্পী ও ক্মীনের
চার্নিধ্রমানক প্রতিষ্ঠানর্পেই গড়ে
ছে। ইতিমধ্যেই বহু যাতা প্রতিষ্ঠান
ং লিক্পীরা সংসদের সভাতালিকাত্ত

পশ্চিমবংগ বাতা সংসদের সভাপতি জন গ্রীতিনকডি গ্রহাইত। 17°51-পাদক হচ্ছেন দীনবৰ্ধ গুছাইত ায়ণচন্দ্র ভট্টাচার্য। উৎসব ক্লিটের আব সমপদক নিব'াচিত 1910 **इ**्थांक ্র্যেন হবপ্রক্ষার দিলীপ বস মক্সিক। 5.61-ধারে, স্বপ্নকুমার, মোহন চটোপাধায়ে াপ দেবনাথ এবং বিভিন্ন যাতা প্রদায়ের স্বয়াধিকারী, শিল্পী ারির অনুষ্ঠানে উপস্থিত ছিলেন। व थिटमुग्रेत

বিগত ১৮ জালাই বিকেপ ৪ ঘটিকায় বি থিয়েটারে সংগীতস্থাকর তারা টাচার্যের একক সংগীত পরিবেশনার দেটানে সভাপতিছ করেন শ্রীঞ্চার্ক্তমনের গানির রামপ্রসাদী ও অন্যান্য ভারুম্যাকর গীত দ্বাণী প্রোক্তমভানিক মন্তম্মুণ্য প্রাপ্তমান ভারুম্বাকর সমাক্ষে তুলো ধ্রাই ছিল বর্তমান ক্রানের উদ্দেশ্য।

किश्कार्देव विनश्च-वामना?भीरतम

কিংক,টের সদস্থা বহাজ নরেশ চরুবত ীর বিনয়-াইরেরী মণ্ডে गामन-मीतमा नाउँकाँ प्रकश्य करान। শ্টকের পারে যাত্র-জগতের এককালীন প্রখ্যাত অভিনেতা শ্বগাঁত পঞ্চান এবং বিশ্ব সমাজ সৰী ব্যাতা নমিতা দ্বের আত্মার উদ্দেশ্যে নীরবতা পালন করে হাদের ম্মাতির প্রতি এখা নিবেদন করা হয়। অনুষ্ঠানের সভাপতি ছিলেন শ্রীতারক পাল, প্রধান অভিথি অলপ্রণা সেন ও ম্ল বঙা শ্ৰীস হাদগোপাল দত। এই ভাৰণদভার ছোটু অনুষ্ঠানটির পর নাটক পরিবেশিত হয়। নিদেশিক শ্যান্থী রারচৌধুরী অবশাই কৃতিছের অধিকার্থী। প্রবেক্তনায় ছোট মণ্ডের অস্বিধা, দ্শাপট ও দুশাসক্ষাদ্য অভাব নাটকের ভাবমণ্ডল ব্যাৰ্থ গড়ে তুলতে না পারলেও দলগত অভিনয়ের দঢ়ে বাধুনী নতকটিকে সঞ্চীব পেরোছল। অভিনয়ে গভীর আশীৰ রাথেন চরিত্রতিরপের স্বাক্ষ্য ভট্টাচার্ব, শ্যামল বন্দ্যোপাধ্যার, অভিজ্ঞিত দাস, অজন ভটাচার্য, প্রেনীস সংখাজি भागमा बच्चकोगुत्री।

বিবিধ সংবাদ

SEMI ফিনাস্স क्षर भारतमा रसद সাংখ্যালক সংখ্যালন 🗷 চুসজিলোপনৰ---গত ২৬খে জালাই ফিল্ম ফিনাল্স কংলোৱে-শানের চেয়ারম্যান লী বি কে ক্রঞ্জিয়া কলকাতায় ফেডারেশান W216 fra Par সোসাইতিজ এবং করপোরেশানের ৰ ক উদ্যোগে চলচিত্রেংসবের পথিপ্রাক্ষতে উপলক্ষে 'রিছ আগমন কণ্টিনেণ্টাল' হে টেলৈ সাংবাদিক आग्यामा सर আয়োজন হয়।

সংবাদকদের শ্রীকর্রজ্ঞায়া 97500 100 I জানান--সাম্প্রতিককালে হছকর ফিনাম্স করপোরেশান ষেভাবে ঋণদানের করেছেন, ত্ত কলকা হায় ব্যবস্থা প্রযোজত ছবি বিশেষ করে বাংলা ছবির উপকার হবে। ইভিপাৰে অনেকেই করুপো রেশ্যনের 41.57 সমালোচনা করেছেন। অনেকেরই ধরণা ও'দের আঞ্চন বন্দবতে থাকায় কেবল হিন্দী ছবিকেই ঋণ দেওয়া হয়৷ কিন্তু বত্নানে কলকাতার ছবির জনো প্রায় ৪৮ শতাংশ, বদেবৰ তথা চিন্দী ছবিল জনো ১৪ শতাংশ, মাদ্রজ তথা দক্ষিণ ভারতীয় ছবির জন। ১০ শতাংশ এবং অন্যান। থানের এবং 'বভিল্ল ভাষাভাষীর জনে। ১৩ শতাংশ খাল দেবার ব্যবস্থা করা হায়েছে। গত বছরের এবং এ বছরের প্রথম ৬ মাসে ৪৬টি ছবির খাণের জনো দরখাসত আসে। এর থেকে বাছাই করে ১৫ জ্ঞান বিশিষ্ট বাঙালী প্রযোজক ও পরি-চালককে খাল দেবার ব্যবস্থা কথা ছয়েছে!

এয়াবং ম্ভিপ্তান্ত করপেরেশনেশ নের ছবির মধ্যে শতক্ষা ৮০ শতাংশ ভাগই বকস অফিসের ক্ষেত্রে সাফ্লালাভ করেছে। ভাগতীয় ছবি বিদেশে ব্যবসায়িক ভিতিতে পান্তানা, ভারতীয় চলাচেল্ডাংসবের দেশ ধেকেই বিশিশ্ট ছবিগ্লি আমদানী করবার দায়িছেও করপোরেশ্নেশ।

তাছাড়া বন্দের আধাদাবাণী প্রেক্ষালাহের মতো জাগতের প্রায় সর বড় বড় শহরে আর্থ থিয়েটার তৈরী করবার ইচ্ছা আছে এই সংস্থার। অনুষ্ঠানে শ্রীহান্তিকশ মুখোপাধায় ও নিতীন দোঠা প্রদেশর উত্তর দেন।

২৬ শে জ্বলাই সংধা থেকে মিনাতা সিনেমায় এক এক সির ছবির উৎসবের আয়োজন করা হয়েছে। এই অনুষ্ঠানের উন্দোধন করেন মুক্তানতী সিন্ধার্থাপ্তক্ষ রায়। এই জাতীয় উৎসবের সার্থাকতা প্রস্তোগ কেডারেলানের বিভিন্ন চলচ্চিত্র বিষয়ক কার্যাক্ষীর প্রশাংসা করেন তিনি। প্রকাশেক ভিন্ন ও স্বাধানেকা

দীপক দ্ধোপাধার জনহিন্ন চিত্র ও মধ্যক্তিনতা দীপক মুখোপাধার বিসত ২৪লে জুলাই ক্যুপনার দোগাকান্ত হরে মাদ্য জক্তেন।

श्राकारम को बद्दान हर्राह्म ८० वहता 5555 श्रेणीयम् ३50ल सन्ताहे मौत्रक মুখোপাধায় ক্লকাট্য करावत । क्षिप् , न्यक्तिक दसरवस्थानाक घाटचा-পাধ্যার। চার স্রাতা ও এক ভালীর মধ্যে দীপত ভিলেন স্বাক্তিন্ট। প্রখ্যাত পরি-ठानक अर्थानम् **ब्रां**चानायाम् मनेनक्यान्त ক্যাঠভুড়ো প্রাতা। প্রবেশকা পর্যক্ষর উত্তীর্ণ দীপকরাব নিগম করেছে পড়া-দান দার করেন। দেব পর্যক্ত বর্ষণার डे अंगीराजिश भिका अल्बान्ड लाट्य ১৯৪० थ्रांटिक शास्त्र स्वातामान करमन। र्यनाय नाम अध्य रश्यक मीनववादाय থাতি ছিল। তাই সেনাবিভাগে বেলাদান কবে অতি সহজেই তিনি জনপ্রিয় হয়ে ওঠেন। সেনাবিভাগে যুত্ত থাকা সমসে আন্ব্যলা, কাশ্মীর, জলত্ত্তর ভৈজপান মাপ্রাজ বন্দের বাশ্যালোদ্ধ কোচিদ সিংছল প্রভৃতি স্থান পরিত্রমণ করেন। ১৯৪৬ থ দ্যাৰেন প্ৰইন্ধায় জেনা বিভাগের কাল পরিত্যাগ করে চিচ্চাগতে বোগদান করেন।

অধেনি মুখোপাধার পরিচালিত পাব'র শ' ছবিতে দীপক **মাখোপাধায়ের** স্ব্পথ্য চিতাব্তর্ণ। এর পর থেকেই তদানীণ্ডন বহু ছবির নায়ক চরিটো দীপকবাব: খ্যাতি অ**জ**ন করেন। এরে যাত্ৰী ছবিতে দীপকবাব, নায়ক বত'মানের জনপ্রিয় শিল্পী উত্তমকুমার ছিলেন সহনায়ক। বাংশা চিত্তলাতে জনপ্রিয়তাজন করার পর দীপক মাখো-প্রধার বন্ধে যান এবং করেকখানা হিশ্দ ছবিতে অভিনয় করে প্রনশ্য বাংশা চিত্রজনতের সংগ্রেট জড়িক প্রাকেন। কিস্ত পরিবভিত্তি পলিবেশে দীপক মাধ্যেসাধ্যায় মণ্ডক্ষবিনে প্রবেশ করেন। উল্কা নাটকের অর্ণাংশা চরিতে অভিনয় করে দীপক बार्याभाषाय निरक्तक अण्डिकेट करवन এবং তথন থেকে মঞ্চলিক্সী হিসেবেই অভিনাদিত হন। মাতৃার পারে কিছাদিন যাতাভিনয়ের সংগতে জড়িয়ে পড়েন।

মিনাভা

ৰছঃ, শুনি ঃ ৬॥টা রুবি ঃ ৩টা দঃ ৬॥টা

- जानम्बद्धाद्धः आकर्षः स्ट्रीन्याद्वः
- ব্রাদকর : প্রবাজনা চমংকার
- দেশ : টিম-ওয়াক চমংকার

প্রজাপতি

কালী, নিমাল, সমুখেন, প্রেনাংশ, লে.লন অক্স, কং, মিক্ট্র, মন্ত্র, অংশাক্ত, লিজা সমুমিতা, সোমা, নিল্বীয়া, ছবি, জ্যোৎস্য

স্কাতা এবং দিলাগ ও বাসবী।
নাটকঃ সমন ন্যাজা আচলাঃ অপস সেন গানঃ স্থান সাম্পাদ্ভ মঞ্চ সংস্কেদ মন্ত নাট্য পরিচালনাঃ ক্ষেদ্ধ গা্ডিড ইয়াক "হাউস ফুল" আচুদ্ধ চিক্লিট কিন্দ

चाकाक बादी बाजसक





বেইমান নায়িকা কবরী







বাংলালেংশর চলচিত কি ইদানিং তার নিজপ্র পটাইল ভাগ করে জন্ম বোদ্বাই ভুলচিত্তের পটাইলে গড়ে উঠতে যাজে:

দেখেলানে ভাই মনে হওরাগাই ব্যান্তাবিক।

বাংলাদেশের চলচ্চিত্র সেক বা দেশনতা এখন ধীরে ধীরে জারগা করে

ৰোজ্যের খোলামেলা দেকস এদেশের

চলচ্চিত্র প্রেপ্রির আসতে যদিও দেরী হবে, তবে সেকস্বানগনতা যে কমণ হৃটি হুটি পা পা করে নিম্বীয়ন্থ ও মাজিপ্রাত কৈছে, কিছু ছবিতে ইতিমধা খাসন করে নিজে ও নিয়েছে তা বলাই বাহ্যসা

আ্বানের নারিকারা ইদানং মিনি লাড়ী মিনিকাট, পানট, লংগাঁ ও উর্কাটা মাকিলি লাউ প্রছেন। একদা 'আপন স্কাল' ছবিতে নাসিমা খান এবং 'দীকার খেলা' ও 'এখানে আকাশ নীল' ছবিতে স্জাতা, 'বং-বাজ' 'বেইমান' ছবিতে কবরী 'বক শাসল কে নকল' ছবিতে কবিতা মিনি চংয়ে শাড়া পড়েছেন।

মাসনে রাশা' ও টাকার থেলা' ছবিতে অলিভিয়া উর্কাটা মাাকাস প্রেছেন।

and the first of the contraction of the second of the seco

आसामा निकारिकमान क्षीवस आधी अ ्रविद्यान्त विभएतानी श्रीवाह कविद्या निया सिमान पास्का मागाव स्विद्ध कवरी माडे शर्व द्वितक, माजाका काम सिर्फ लचा स्विद्ध गाउँ भाग्ने भारतस्त्र।

क्वती क्वाक ग्रिवी हांबर ग्रामी अ क्राउक शहराक्ता

এ হাছা ভাকু মনস্র ছবিতে अक्षांबका अनामी खाल द्यम्य व प्राप्तित পর দিনা ছবিতে ববিতা, 'জেহাদ' ছাবতে 'বল্লে' ছবিতে কবরী নাজী त्था क्षेत्र अमित्रात आश्मावित्माय प्रिश्चारक्त ।

अगर हाणां कह किह मारिका ছবিতে উপী পরছেন।

ছবিতে 'সহনা'র জৌলুষ্ও বৃদ্ধি পেয়েলে—বা অভীতে কখনও এল প্রকট-ভাবে চোৰে পৰ্জেন।

নায়কর ও কিছু পিছিয়ে নেই। रभारतामानी, मूर्वे विकित धतरनद लामी পাঞ্জাবি, সোমেটার শার্ট এখন এখানকার ছবিতে নায়কের শরীরে লক্ষা করা বাচ্চে। এসৰ ছাড়াও ছবির কাহিনীতেও এসেছে বৈচিত্র। পরোনো ছকের বদলে ন্তন ছকের আমদানী হয়েছে। এখন প্রার ছবিতে 'নাচে'র বাছ,লা ও 'মার্গিটের' আধিকা লক্ষাণীয়। 'কাবোরে ডাম্সও' এখন ছবিতে দেখানো হচ্ছে অবাধে।

এসব দেখেশানে মনে হওয়া খাবই দ্বাভাবিক, আমাদের চলচ্চিত্রশিলপ কি ক্রমণ ভার নিজপ্র ঐতিহা ও প্টাইল থেকে সরে গিয়ে দিনে দিনে বোলের খেবা হয়ে PIWIE ?

व्यक्तित अनुस्कान

'বাংলাদেশ চলচ্চিত্র সাংবাদিক সমিতি' এবার থেকে 'চলচ্চিত্র প্রেকার' দেবেন। সম্প্রতির সভায় এ সিশ্বান্ত গ্রহণ করা হয়।

সিম্পান্ত অনুযায়ী ১৯৭২-৭৩ শলেকে এক ইউনিট তিসেবে ধরে প্রথম-বারের মত চলচ্চিত্র প্রেস্কার দেয়া হবে।

আগামী আগস্ট মাসে পরেকারের कनाकन चारणा कता इस वाल काना গেছে :

ब्रह्मभूश

রেভগপথ একটি ছবির নাম। এ ছবির পরিচালক মালিক মাজিদ। ছবির কেন্দ্রীর তিনটি চরিতে কারেস জাভেদ ও বাবর অভিনয় করছেন। কেন্দ্রীয় শারী চরিয়ে রাপ দিক্ষেন কবরী ও নবাগত কনক।

ছবির সম্ভর ভাগ সুটিং ইভিমধো সমাপত হয়েছে বলে জানা গেছে। ছবিটির চিত্রভাত্ক সাধন রায়। আগামী আগতের শেষ্টেশ্বি ছবিটি মুকি পেতে পারে।

fe-wer

শান আতাটর রহমান বডামানে ৰটিকাৰেগে একটি ছবি নিমাণে বাস্ত বহোছেন। ছবিত্ব নাম পানু-রম্ব। এক মাজে ছবিটি স্টিং দেব করে আগামী আগতে श्रीवर्णिटक माजि दमबात क्रफी खिनि **ज्ञातकत दरन काना जाता। 'क्र-ब्रह्म'व** বিভিন্ন চরিত্রে অভিনয় করছেন রাজ্যক খান আজা আশিসকুমার লোহ, খান क्षमान, क्ष्मव ह्याहे। क्षि क्षतासम्बा हक সরকার, करती, রোজী সামাদ প্রমাপ।

कृत वयन कांद्रत्या

র্ফিকুল বানি চৌধারীর ছবি ক্ষম যাধন ভাঙলো' গত ১৪ই জানে মাছ শানার কথা ছিল। কিন্তু সেৎসর বোডের ছাড়েন্ড না পাওয়ায় ছবিটি শেষ প্রতিক এ সপ্তারে মুক্তি পেল।

क हरित्र नाशक-नाशका नाष्क्राक-ববিতা। অন্যানঃ চরিতে আছেন আলতাফ, হাসমত খান জয়নুল প্রমুখ। সংগতি পরিচালনা রাজা লাম।

আয়াদের চলচ্চিত্র শিংক্পর বয়স নিতাশ্য কম নয়। কিন্তু সে তুপনায় আমা-দের চলচ্চিত্রে শিক্সীদের সংখ্যা হাতে গোনা নাত ক'জন।

ম্লতঃ মানু ক'জন শিল্পীকে মিরে বে আমাদের আজকের চলচ্চিত্র স্পিকেশর আম্ভিম অনকেখায় মাত ক'জন শিল্পীর জনা থে আক্তও আয়াদের চলচ্চিত্র ভারণ টিকে ব্যুছে ও স্ব'ক্ষণ আবৃতি'ত হচ্ছে থার প্রমাণ আঞ্জের চিত্রপারী।

গত কদিন ধরে 'চিত্রপরেটি' বিজনপরেটি शास वासास्था अपूर्णिर वन्धाः स्थान भागि।

এর কারণ রাজ্জাক মুস্তফা প্রমাথ য়াল কজন শিলপীর অনুপশ্ভিত।

কাষিন আংগ এ'দের একপল গেছেন মুকেনতে, অনাদল গেছেন ভাস্থপে--চিত্র" মেলায় যোগ দিছে।

তাই ব্লছিলায়া, আমাদের আজকের চলচ্চিত্র শিক্স নাত কজন শিক্সীর উপারই প্রেপ্রি নিভারশীল। যদি ভাই না হবে, ভাললে চিলপুরী বিজনপুরী হয়ে আছে किन? अधिर यथ किन? क्लांत भाष किन?

উম্ভল ভাবশা পা ভেল্যে শ্রাশায়ী রয়েছেন। মেসবাহও অসংখ। কিন্তু স্কুলা রেজী, ওয়াস্মি জাফর ইক্বাল ফতেহ লোহানী রাণ্ড সাইফুন্দীন হাসমত খান জয়ন্দ খলিদ শাবা৷ কবিতা স্কেরিতা প্রবীর মিত্র, সালমগার কাবেরী আলিভিয়া স্মিতা এককথার মাত্র কজনকৈ বাদ দিয়ে বাকী সবাই তো ঢাকাতেই আছেন। তবে? क्टर क्या किल्पूडी जास रिक्स्प्रूडी,

Mack at Pro-



এডাডাও চিত্র পরিচালক ও প্রয়োকক যারা ছবি তৈরী করবেন করছেন ভারা ছো আর ঢাকার বাইরে বিদেশে চলে থাননিব তবে? তবে কেন সাটিং বন্ধ? ফোর খালি?

তানা সহায় ফোর থালি না-থাকার কারবে স্তুটিং বন্ধ থাকে। কিন্তু এখন তো জোর পালি। তথে কেন সাটিং কথ?

বেজমানের নায়ক নায়িকা সাম্পাক ক্রবরী, 'ডাকু মুনসংরের' নায়ক নায়িকা ওয়াসাম শাবানা, 'অণ্ডরালে'র নায়ক-নায়িকা জাফর ইকবাল ববিতা, দুই পর্বের নায়ক-নারিকা রাজাক কবরী, 'জিঘাংসার নারক-নাায়কা ভয়াসাম ভাবা চৌধরী।

ইবনে মিজান বত মানে 'ডাকু মনসার' ণজঘাংসা' শেষ করতে বাস্ত্র রয়েছেন। ন্রেল হক বাচ্চ তার 'জীবন সাথী' নিয়ে বহিম নেওয়াজ তার 'আপ্নজন' নিয়ে এবং শিবলী সাদিক তার জাবন নিয়ে জারা 💩 মহসান তার 'বাদী থেকে বেগুম' নিয়ে বাদত রয়েছেন।

ছবিগালোর কাজ দ্রতে এগোছে। আগামী ২ ৷৩ মানের মধ্যে ছবিগুলোর কাজ শেষ হবে ও মারি পাবে বলে অনায়ালে আশা করা যায়।

এছাড়া আলা কাশ্যে খেষ লংন' রফিক চৌধুরা 'ভুল বখন ভালাগো', শেখ আলাউ-ন্দীন 'বাসর রাড', মোডালিব হোসের 'দালমন', হেদায়েত ইসলাম 'কে দল্লা সফদর জালী ভইয়া ভৌর ভালনা তেওঁ কামাল আহমণ 'উপহার' কৰীর ঢৌধ্রী 'অনেকদিন পর' এর স্বটিং নিয়ে বাস্ত রয়েছেন।

—আনওয়ার আহমণ

CAMA CACA

क्ष्मीस सर्वा क्यांनी ब्राह्म प्रस्तुि নিট্ন আলিপারে কালকটা মিউজিক সাকেল আহোষত এক সংগতিচাক্ত একটি একক **লেডার বাদনের আসরে শেনা গেলো গ্রা**য়তী ক্ষার্থী রায়ের সেভার। প্রকৃতির পট-ভাষিকার সংগে ছন্দসংগ্রুতি রেখে ধরলেন মিঞা কি মলার। সূমিত সংক্ষিত আলাপ। কিছে রবের রাপটি এব লচমায় যেন মাতে ছব্রে উঠল তাঁত রেখাব পণ্ডমের সংগে **কোমল গাম্ধারের আলতে: ছে ওয়ায়।** খারে ফিলে ঐ গান্ধারের অন্তর্গকে সিম্ভ সঞ্জল বিষ্ঠাবেদনার আভাস এক তাল পম কালা-**লোল্যের স্**থিট হয়েছিলে। গ্রেব **সংবোধ ভন্ন ও লগ**কিবীর সাজেনের চেগ্রে সাক মাধ্যে অনাহত রাখার দিকেই শিলপরি প্রশেতা ছিলো বেশা। রসের প্রপ্রেক্ষিতে বিচার করে দেখলে কল্যাণ্য শন্ত বসেই আচলনিকা রাগ্যের মম্ভিব বিজ্ঞাব হয়েছে তাই সহজ ও স্বতঃস্কৃত। শামল ৰসার ভ্রকা সংগ্র মাকে মাকে সেখ্য **ংশাছনর** আংগ বক্ষারী চন্দ্রভারণ অর-ভাবৰা করে চন্নক প্রদানার বৈচিত্র এলেছে:

মিঞা কি মলাবের পরই দেশ যেন একই জাবের বিহার বিনাপ। মলাবে যা ছিলো মণ্ড ও মধা সংগ্রেক মানু গাদভীয়ে সংযত—সেই না বলা বালী যেন উচ্ছপিত জাবের কর্পিয়ে পড়ে ও দত্রার তার জাভিমানের চড়াসুরে। মাপট তানের প্রতিটিইর ও টেকের স্পট্টা গুজনা সাম্বার ছবিটিটে থে পড়ে। খালার স্ম্রান্মারে অভত্তীন কারিক্ষালের মধা বানি প্রেতারে বিভাগর মাতিয়ে রেখেছে সারাজ্ব। সমাত্রির কলাবার জ্বাতিয়া ক্রেলা স্পাত্র কলাবার ছাত্রের কলাবার স্থাতিয়া রেখেছে সারাজ্ব। সমাত্রির কলাবার ছাত্রের কলাবার স্থাতিয়ার কলাবার স্থাতির স্থাতিয়ার কলাবার স্থাতিয়ার করার স্থাতিয়ার কলাবার স্থাতিয়ার কলাবার স্থাতিয়ার করার স্থাতিয়ার করার স্থাতিয়ার কলাবার স্থাতিয়ার স্থাতিয়ার করার স্থাতিয়ার স্থাতি

हमयाहरक नवस्य बहिना मांबिक नृजानाके।

শ্রীমতী প্রতি দত্ত পরিচালিত দ্বাদম মহিলা সমিতি নানারকম কল্যাণমূলক ধারে নিয়েভিত খেকে

তা: শ্বেহলেতা নস্ত্ৰ এন নি.১৯৯৩ তা: এস এন পাপ্তে এম নি.বি.এম আবিনেৱ বহুসা সক্তৰঘক্তদৰ জনা- দুলা ৬-যৌনৰিজ্ঞানের রঙীনেও বহুচিত্তে টিরিড অডি আধুনিক সংস্করণ-মোহন লাইব্রেরী ২০- ছুটানল কুট নিন্দান লাইব্রেরী ২০- ছুটানল কুট ক্রিছে ৬.গেক্য শাচাইলে জন্ময়নুল ট্র

প্রেক্ডাবে সমাজসেবাই করছেন করা হায়। সম্পূত রবীন্দ জল্লু ট্লালক টে সংখ্যা পরিবেশিত দুটি ন্তানাটো কিলোবী শিংপাঁদের ধ্যাধায়ণে এইদের স্থাশক্ষা ও শিলপ্টতার প্রশংসায়োগ্য হব ক্ষর ছিলো। শ্যামা নাত্রানাটোর পরিচালনায় ভিজেন **শীমতী দীপাবস_এবং ডিরক্মর সভাব** नाडेर्राज्यप्रभाकाः ঝারলা মিদ্র ও ক্লোকেন। অন্ত্রানের সভায়েরী প্রধান অতিথি ও বিশেষ অতিথিব্যুপ উপস্থিত ছিলে যথকুমে ডাঃ স্বমা থোষ, ভাঃ রমা চোধারী ও দ্রীমতী ওয়াতাবাদনীল। শ্রীমতী ওয়াহাব্দুনি সংস্থার ওহবিলে ৫০১ টাকা দান কলেন।

শ্রুতি নির্বোদত বাদ্মকী প্রতিজ্য ।

রবীণ্ড সংগীতের ক্ষেত্র অধান্তব্য বংশাপাধান্য এক উৎজ্যল ভারকা। কিন্তু নতানাটা পরিচালনা ও অভিনয়ের ক্ষেত্রত তিনি যে যথাখা প্রতিজ্ঞারও অধিকারী—
তারই পরিচয় মিলেছে এক বছর আলে বাদ্মকী প্রতিজ্ঞা ন্তেনাটো নাফ্রভূমিকায় তার অভিনয় দেখে। সেই
কান্ত্রাক্তিতা তাল প্রতিজ্ঞারবাদিন পরিবেশিত তার বাদ্মকার প্রতিজ্ঞান ক্ষিপ্রকার বর্ষান্দ্র পরিবেশিক জার বাদ্মিকারী প্রতিজ্ঞাদেখে। পরিবেশিক শ্রুতি সংস্থা।

প্রতিটি অধ্যামের গান্ধামের প্রজির প্রজির বিধাষ্থ আলোকপাত করলেও আলোকবাবকোর বাবকে মানিমেছিল বেশী ভাবাতকের বন্দের। সবের ওপর ছিল তার উদাও কার্ন্দের। গানের প্রস্কাছিল করনে দরেই কাছে — সম্পাতিকুল্লতা ছাড়াও লক্ষাণীয় কত ছিলো হ নিকা প্রজিলা অংগানের উপশ্বাপানার চরিই বজায় রাখার কতিছ। গানার মধ্যে হারিয়ে সোলেও আলিকের সাকনের এই স্টেডনতায় আলোকতির সাকনের এই স্টেডনতায় আলোকতির সাকনের ভারির বিদ্যান। এখানে ছণ্ডা ও মিল্পী মিল্লিমেণ এবাকার হরে গেছেন।

বালিকার ভূমিকায় সুমিতা সেনের
প্রতিভাষারী কনা ইবলুগা সেনের একাধান্য নাম গান ও অভিনারের বিক্ষারকর
কতির সিমার উল্লেখন দাবীদার।
সকলতীশালী গোরী ঘোষকে মানিরেছিল
সালা। তার মধ্যকারী আবৃত্তির অবদানত এ চরির সাভির সহায়ক হার ওঠি।
সালানীর ভামিকায় সানালা সেধানী ও
বিলেশে দোলের নাতা অনিকানারীয়। কীন্তত্ত কালানীর ভামিকায় সানালা স্থানিকার
কালানীয়া কালাক প্রত্তিভাগি বিশ্বন স্থান কালাক পাল রবীন বস্
এশ্বর প্রধান ভূমিকায় ছিলোন। ন্তা গচনা আঁলো ও মণ্ড পরি-কম্পনার কতির পাবেন ব্যাক্তমে অসিত চাটোজি তাপস সেন।

white section of the section of the

আক্ষানিশ্বান সরকারের আফলদ কথক নৃত্যালিশ্বী স্মিতা মিত্তকে: আফ-গানিশ্বান সরকারের পক্ষ থেকে এইবারই প্রথম বাখিক সাংশ্কৃতিক উৎপথ হচ্ছে কাব্রলে। এই অনুষ্ঠানে পশ্চিম বাংলার একমাত আনিত্তা শিল্পী শ্রীমতী স্মুমিতা মিত্রে ও বিভাগ ক্ষিত্তা সংখ্যা।

বাশীচক প্রযোজত ছায়াসংগীত ঃ
রবীন্দ্র ন্তান্টোর সংগে সংগে আর এক
গোষ্ঠীর অন্যান। বিষয়বস্তু অবলম্বনে
ন্ত :
হয়েছেন। সম্প্রজিবীন্দ্র সদনে বানীচক
১০ :
প্রচেট্টা কিছন্টা ক্ষুধিত পাষ্ণের
ছায়াবলম্বিত এই কাহনীর বচায়তা
ববীন্দ্র দাস নতা বচায়তা শুভ নর্গ।
সম্পাতি পাচালনার দায়িত্ব গ্রহন করেরালাক্ষ্ণি

প্রিকলপ্রার অভিনর্থ আন্ধ্রীকার্থ।
কিন্তু চিড্রি ব ি িক সাক বাব আনুষ্ঠান অক্যান দীর্ঘ না করলে এর আবেদন আবে রসো্ডীন হারোন উপ-ভুনাতা সভিত্য উপ আনের। উপ-ভোগাতার মাজা বাড়ত যদি উপযুক্ত সংগ্রেমা ধ্রান উপশ্রমণ আবে বাজনা-ধ্রী করা ধ্রেত।

তবৈ সকল অসমপূর্ণতা ভূলিয়ে দিয়েছে প্রান্থানা কিন্তু ক্রিয়ে সমাবেশে। নতা ও সংগতি উভয় ক্ষেত্রে। রামগোপাল ভট্টাচার্য ধ্রুটি সেন ও শম্ভু ভট্টায়েরে নতোর সামানা অবকংশেই তারা মর্নিসয়ানা দেখিয়েছেন যথেওট। মাধ্বী ও জামিনার চরিরচিয়েলে শিবানী রায় ও শামলী দাস প্রাণ্বত।

স্মিতা মিত ন'শশকুমার ও আরতি মজ্ঞানারের মত উচ্চ দরের শিক্সীদের নাচের প্রাচ্যে প্রতিটি মহেতে ভরে উঠে-**ছিল। নেপথেরে** গানগোলি শোনা দেলে भानत्वन्त्र रेगालन भाषां क्ष भक्षा दानां क অধীন বাগ্চণী তর্ণ বন্দোপাধায় তেমতে শুজা দেবীরপন সামালি সাহিত্য মজ্মদাগ। গজল অধ্নিক TORE 1851 সংগতি—সব রকম গানই ছিল। শিংপীরা গোয়েছেনও ভারী স্কের। সকল প্রেণীর জ্যোনের বাচিত্র পতি ল্ডনা সমুখ্য লাহ ও গানের ঢালাক ব্রেম্থা ছিল ব্রেছ শেষ পর্যতে প্রেক্ষাগ্রে দশকিব্নদ সমাসনি ছিলেন।

ভাষাপঠে আলো রপ ও মঞ্চমজ্জার
দাসিত পালনের জনা হারা ক্রাজিক পালনের
ত শ হলেন মাজতল, রায় সুদ্দিল দাস
ননী দাসগাসত ও দোভেন আহিছে।
সংলাপে ভিলেন হবপন মাখারি মানত
দাস কদ্না কল দিলপি বার ব্যর্থ
উরবতী ও গোতম বস্।

--- हिताध्शका

दथवात जगद्य स्यद्य

গ্রীর্পা বস্

গত মগ্রখামে ব্রাণসীতে সান্তিত দিবতীয় সর্বভারতীয় মহিলা ক্লিকেই প্রতিবাদিকার কিন্তু কিন্তু

উন্টোভংগা সি জাই টি কোয়াটাথে ব চারকলার জনাটে স্বংপবাক বিদ্যা স্বটিশ চার্চ কলেজের বি-এ পাট টার ছার্যী ক্রীর্পার কাছ থেকে তার ক্লীডা-ক্ষাল্ডার কথা শান্তিলায়। প্রার্পার বাবা অন্যোক বস্ম উনাবংশ শাক্ত ন্দীর দিক্সাল্ স্মাজনেতা বাজনায়াল বসরে



ত্তি শ্রীৰত নিজেও বিশেশতকৈ ইন্ট-ক্রিক্তিক হকি দলের নির্মানত থেলারাড় ক্রিক্তা সব'চরে বেশানী উৎসাহ পাস মায়ের ক্রেক্তা নির্পার বড় ভাই নগাঁচকে বাংকের নতুন আফসার। অন্য ভাই ক্রিক্তি কলেকেল ছাত্তা, এদের আদি বাড়ী ক্রেক্তিনা শ্রীজনবিদ্দ শ্রীবস্ত্র পিসভুডো

শ্রীর্শা কালকটো লালাস ভকুলের
ছারী থাকাকালে ৬৮তে হার্দরাবাদে এবং
কঠ-এ দিল্লাতৈ সর্বভারতীয় স্কুল ক্রাড়ার
নাউমিন্টনে বাংলার প্রতিনিধিত করে।
ক ছাড়া ১৯৭০-এ স্কটিল চার্চ কলেজের
নাউমিন্টনে আগতঃ বিশ্ববিদ্যালয় ব্যাডমিন্টনেও কললাতার প্রতিনিধিত করেছে।
লালতঃ বিশ্ববিদ্যালয় ব্যাস্কটরলেও
১৯৭১-৭২-এ বলকাতা দলে ভিলা
ক্রাডার আগবেও শ্রীরাপা বাংলাল ব্য-এ
কেচিয়ে আব্যাজিত লাভীয় ব্যাস্কটবলে
বিজয়ী বাংলা দলে শ্রীর্পা অন্যতম

বদস্যা। ৭২-এ প্রাক-এশীয় প্রতি-ৰোগিতাতে বাংলা দল চ্যাম্পিয়ান হয় এবং প্রান্ত রানাস²-আপ ত্রা। সাত্রাং कि कि अधिमा सिका श्रीताला वारक्षेत्रल প্রথম শ্রেণীর কলগী। বহুমানে থেলে करामकाणे दबक्राम प्रत्य। श्रीकर्ट्स শ্রীর পার ক্রীডাকখলতা উল্লেখ করার ছাত। পাৰ্টিকে বিশ্ব মহিলা ছবি কাপে খেলায় জন্ম ভারতের স্থে দল ৰাজ্যই হুগোছিল ভার পথয়া বাউল জানের মাধ্যে আয়াটোর এই মেরেটিভ তথান পার। ৭৩-এ ক্রিকেট দলে ভাক পভার শ্রীলাপা বাসেকট ছোডে ক্রিকেট खनः भीतात बार्या। स्वरंश प्रयाप खनभागिन-श्रीभक्ताना भन्न स्मार्केस्वान है।साम माह খেলা হয় এবং তাতে নিৰ্বাচকয়ণ্ডলী खाक्त मनामधी भारतानीय कावन।

জীর**্পা**় বলল, প্রথমদাকের স্বর্ণ-ভারতীর জাসেরে বাংলা হয়ে নি। কথন তের অনুযাদের ভিন্ন হৈত্যী হল মি। প্রথম-বারের বিজয়ী বোদবাই দলের সংল থেপতে নেমে কম রাণে ইনিংস শেষ তওয়াস আগ্নি একট- উন্দিশ্ন হছে পড়েছিল্যা। কিল্ড আমাদের দলের বেলিং আর ফিলিডং খাব ভাল হাওয়ায় জিতে যাই। তামিলনাড, এবং পরে ফাইনালে বর্ণাটক আমাদের সংখ্যা জোল প্রতিশ্বন্দিরতা করে। কিশ্ত একার আয়ার মনে একটা জোর বিশ্বাস এসেছিল যে আহর জিতবেটা বার্ণটিং অর্জার তৈদ্বীর ব্যাপারে ভারীয় প্রশিক্ষক ও মান্ত্রেজ্যর বাদল চাল্যব পরা-মশ নিই। তবে বেগিং-এর সময় ভাগি নিজ্ঞ কত বা পিলৰ কণি। প্ৰসংগত শ্রীর পা প্রায়ন রগন্ধ ট্রিফর খেলোয়াড वापन हुन्स स श्रीभक्त आगील भाषावारण्डा কথা ভোলে সংগা উল্লেখ কৰল। ত্ৰাম্ব প্রাক্তন ব্রীভিব গালেই দল সাফল্য অক্তন করছে প্রেছে স্থা न्यामा**ल । क वार्त्स्या किय्तरी एश्या** अध्याक শ্ৰীলাপাক ধাৰণা—ভাল কক্ষ অনুস্থালন ত প্রিক্ষাগর সাধাগ-সাবিধা পোল আল্লা অনেক দৈলতি কৰতে পাৰব। क्रिशान का वास्त्रात्कात (शतक आञ्चल) মালক ট্রফিন্তে শেলার ভাক এমছিল। ৫ व्यानाम्यं मुख्या । इवात क्या কিংত অন"-শালিবের বার্থান্য রাখান্য ঘটাস চলত দল ষার্থে লা। এখন মেষেদের অনেক ক্রিকেট क्रान भाष ऐकेल। क्रमकातात भागी कात-गालि योग खाञ्चगमतं स्थलका गाउँ प रमन कार्यक्ष भारत काला रूपा। खाउमांक यह-नर्व জান সালীকৈ কলকাভায় ভাৰীস জ ত ীস কিকট প্রিবেশ্যভার আসর ਕਾਮਰਾ ਹ কলা। সাত্রাং আয়োদের ভালভাবে তৈবী ठाक ठाम। स्वारत शहर कामाना (स्वाहेमारन ৪০ এড়ার) খেলা ছারাছ, এবার জা বেড়ে ০০ কি ৪০ জন্মর ছার। এই সংখ্য भीताका तरम जाशासित सम सूत शास ফার্কে অনাশীক্ষন কর্মণ ক্ষেত্রি হয়। অসকাগ্ যদি জন্মাদের টুল্ম-রণস ধ্রন্তথাল সাবিধা ক্ষার দেন, ডেডালে খার স্বচিত পাওয়া बारा मनकात रहा हैन्हा कतरमहे हैंग्डा-वंगम कनत्वामतन्त्र वावन्था कार्क भारत्र।

দৈ এ বি এবং প্রীপান সি কোলের অকুস্ঠ শাহাবোর কথা প্রীর্পা জানান। আর বলেন অভীতের ফুটবল কুশলী প্রীপারিয়ল উকীলের কথা। এই ভদ্রোক ওদের খেলা অন্দীলনে সমস্ত যোগাড়বর তৈবী বেখে সবাদ্যা সপ্রাধ্যে কুতক্ততা অক্সন করেছন।

বাংলায় মেয়েদের ক্রিকেট দল সংবাদ--পতের ভাষায় ষাকে প্রমীলা ক্রিকেট দল ৰলা হয়) গঠনের ইতিহাস জানবার জন্য দেখা বংগছিলায় প্রথাত ফাটবল প্রশিক্ষক প্রদাপ কলেটিছ'র সভ্রান্ন'গ[ু] শীহতী আরতি ব্যানভিত্র সংখ্য। নামী থেলো-হাডের যোগ। সহগ্রিণী শ্রীমতী আরতি कानारमन स्थायपत किरको पन गणा ইচ্ছা আমাদের কথেক জনের মানেই উ'ক দিচ্ছিল। এই সময় এক দিন কলক কো বিশ্ববিদ্যালয়ের অভ্নতিক আই দে-সর্কার কথাটা তললেন ক্রিন্দী অলকা উক্তি আনিলা ক্ষিত্ত নালিয়া সেন-গভেরাপাদ্যাস ভ প্রায়াকে লিখে একটি এজ হক কমিটি গঠিত হল। এল থেকে তৈরী হল পশ্চিমবাল মহিলা ক্রিকেট সংখ্<u>রা</u>র কাষ্ক্রী স্মিতি। সি এ বি ও ভারতীয় ক্রিকেটের দটে দিকপাল শীপন্নর ঘোষ 🔞 শ্রী এয় দ্রেরায়ত স্ক্রিয়ভাবে এগিয়ে এলেন। নী ঘোষ হ'লেন ক্লিটিল সভাপতি। হাজেরে কাঁড়া-পরিচালক ত পথ্যাত পান্ধর ক্রিকেটার শ্রীধার দাসত সদস্য ক্রমেন।

শ্রীয়তী স্বান্যালি^ত স্বল্লেন আয়্র মৈরিদের খেলতা আবেদন প্রচার করায় প্রায় তানত জন মেহে এল। তার থেকে প্রাথামকভাবে ৩৬ জনকে বেছে নেওয়া হয় থেলার ব্যাপাতে শ্রীবাদল চন্দ্র এ শ্বরাপ গতেঠাকরতা এবং সংগঠনে শ্রীমতী अनका हेकौल, अभिना मामग्राञ्जा अकिया দাশগণেতা অবং কুমকম দেব সংহায় কণতে এগিয়ে এলেন। শ্রীগতী উকলি এই সংস্থার সাধারণ সচিত্র, কুমকুম দেব ও শ্রীমতী বানাজি² হলেন স্থকাবী সচিব। অর্গথিক দিক দিয়ে এবং ফন্স্থীলনের স্ব রক্ষ বদপাবে এই সংস্থাকে স্বতঃপ্রবাস্ত হাষে সবচেয়ে বেলা সভাষা কাবন শ্রীনিতাই কেলে। কালীঘাট ক্লাব খেলার সরজাতা ও হাঠ দেয়।

নীমতী বাংলাতি বললেন কালীছাট মাঠি সন্মালন দেখে ২০ জনকে বাছাই কল হয়। এবা সানীল দামগাণেত্র কাছে নির্মানত প্রশিক্ষণ পেতে থাকে। বাংলাসীতে দল সংঠাবার জনা এর থেকে ১৫ জনকৈ চাড়াগতভাবে বাছাই করা হয়। এদেব দেগ্রী মনোমীত হয় জীরাপা আর সহাণেতী মনোমীত হয় জীরাপা আর

শ্রীমানী বান্যান্তি বল্পেন হেজাশ্রীলান নানা ক্ষেণ্ন সামাণা দিল্লী, বেন্দ্র ই,
মাদাকের গোকে পিছিয়ে নেই। ভিকেটেই
বা পিছিলা পারব কেন। বিভিন্ন সংক্ষা ও
ভক্ষিসগালির সংস্কায় পোল বাংলার ফার্মদের কিকেট দলও শক্তিশালী হয়ে
উঠবে এ বিশ্বাস আমার দুঢ়ে।

साराजारथा साराजारथा साराजारथा साराजारथा साराजारथा स्वध् क्राहि जाद्मान्द्र इंडेश्वे आह हिस्हिण जाह्यास स्वस्

BEE SCHROE®

Ф रे. मात्र पूरेव च तम वेनक(मात्राद्धीरक (मन्त्रिक) कुंग्रमार्थ ग्रावश्यकाचे साव्यक्तिमात्राक्ष अधिविधि क्षा. ति. नि. क्षा, स्थापकाक्ष्यक्र साव्यक्तिमात्राक्ष्यक्र स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्ष्यक्ष स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्ष्यक्ष स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्ष्यक्ष स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्ष्यक्ष स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्ष्यक्ष स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्ष स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्षिक स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्ष्यक्र स्थापकाक्ष स्यापकाक्ष स्थापकाक्ष स्थापकाक्य स्थापकाक्ष स्था

--

মাঠের নায়ক



শিববাত নাথ

শিবরত নথে। নামটা আজ গড়ের মাঠে শুংখা গড়ের মাঠেই বা কেন গোটা পশ্চিম বাংগার কান্ধই বা অজানা? আড় সংখ্যা কোন্টাইকার শিবরতের কিন্তু সেজনো একটাকু দেমাক নেই নেই অহংকারও। শিবরত ফালাড়ারে উন্নীর মত অবনত বিনয় হাচাগবিমাখ। নিজের কথা বলাওে তাই প্রচাড় অনীহা, অস্থাচিত আশার।

১৯৭০ সালে শিবরত লাভ হয়ে রোভাস খেললো বোশ্বাইয়ে গড়ের মাঠে খেললো পাওয়ার *ল*াগি। গলফ গাব ন্মোভ থেকে লিব, কালীয়াটে আমার बाफीत काटक यत काका निमा। ५৯,4001 বাংলার দলনেতা হিসেবে बार्निकाल कार्यवाम (कुक्तवाका)। 48 माजा रवस्ति जाणा कंप्रविकास निवद दन রক্ষাটি বেশতত পারবে না পারে ক্রিট चार्क बता करन से कार्न नास्त्री जा मिलाई दंगीनम जीत्मात त्थमात्रा निवः जीवन यानानत्व कार कदा पिटसटका काकाका, अवस्थ क्किं अफागानाव । जाभव श्रारवा ' क्विं हम्स करमाक स्थरक मिन् दिन**-१७ ना^{के} क्रमान** (क्यार्ग) निका । ठाक्सी अक्षि क्युरिट्र ভিত্তপজিক্যাল সাজে অব ইণ্ডিয়ায়। व्यवना हेन्द्रीन दक्क कान्येवज त्थाक अवगत এসেছিল। অফার এসেছিল একটি লাখ টাকার গড়া কাব থেকে। শিব, দৰ অফার আপাতত গ্রিকেকট করেছে কাশণ বাড়ীর লোকরা তো বটেই শিব নিজেও চার প্রভাষানাটা আর একটা চালিয়ে মেতে।

১৯৭০ সালে এশীর বাব ঘটেবলও
হয়তো শিবরতের নাম ভাগতীর দলে
থাকতো কিচ্ছু জলে থেকে কুমীরের সংশা
লড়াই করার অপান্য পাতিরালার
তালকণ শিবিয়ে গিমেও বড়বলের বলি
হয়ে তাকে খালি হাতেই ফিরে শাসতে
হয়েছে। পাতিরালার স্মৃতি শিবরতের
কাহে এক দ্যুন্থনা। এ দরেশ্বনক সহযেগী শিক্ষার্থীর সেই আস্টিনিক
ব্যবহারকে শিবরত কি কোন্দিন ভুলতে

-विभूम बरम्माभाषात



मर्भाद

ইংল্যাণ্ড বনাম পাকিস্তান

अथम रहेन्ड रथना

লিজসে ইংল্যান্ড বনাম পাকিস্চান্থে প্রথম টেন্ট ক্লিকেট খেলা অমীমার্গসভভাবে মের হয়েছে। ব্লিটর জনো প্রথম দিনে খেলা আরম্ভ করাই সম্ভব হয়ন। এই খেলাটি ছিল ইংল্যান্ডের ৫০০০ম টেন্ট খেলা। ইংল্যান্ড এবং পাকিস্চান্ডের মধো এই নিয়ে ২৫টি টেস্ট খেলা হল এবং খেলা। ফলাফল দাড়াল: ইংল্যান্ডের জয় ৯, পাকিস্তানের জয় ১ এবং খেলা জ

শ্রথমদিনে পাকিশ্তান প্রথম ইনিংসের
৯টা উইকেট খাইনে ২২৭ খান সংগ্রহ
করেছিল। মজিদ খাঁ (৭৫ খান) এবং
শাহর আশ্বাস (৪৮ রান) ছাড়া অপশ্র
কেট ইংল্যাপেডর বেংলিংগ্রের মাথে দাড়াতে
পারেনান। ৪থা উইকেটের জাটিতে
মজিদ খাঁ এবং জাহির আশ্বাস দলের
জাতি ম্লোবান ১০০ খান সংগ্রহ করে
দিয়েছিলন।

িবতীয় দিকে পাকিণ্ডানের প্রথম ইনিংস ২৮৫ বানের মাথায় শেষ হয়। শেষ ১০ম উইকেটের জাটিতে অগিফ মাশাদ এবং স্বফ্লাফ নওয়াজ ৫৮ মিনিটে ৬২ বান তুলে ইংলাগড়ের বিপক্ষে পাকি-ভাবের পক্ষে ১০ম উইকেট জাটির নতুন বেকড়া বান সংগ্রহ করেন।

শ্বতীয় দিনেই ইংল্যাণ্ডের প্রথম
ইনিংস ১৮০ রানের মাধার শেষ হলে
পাকিম্চান প্রথম ইনিংসের খেলায় কোল
উইকেট না খাইয়ে ২০ রান সংগ্রহ
করেছিল। ইংল্যাণ্ডের প্রথম ইনিংসের
১৮০ খানের মধার ৬৬৯ উইকেটের জাটিতে
স্পাক্রিকালে বি রুমি কোল বি রুমি
স্করেছিলাল কটি অল্লাবান বহু রান সংগ্রহ
করেছিলাল কটি ম্লোবান বহু রান সংগ্রহ
করেছিলাল কটি ম্লোবান বহু রান সংগ্রহ

্ততীয় দিনে পাকিশ্তানের দিবতীয় ইনিংস ১৭৯ রানের মাথায় পড়ে যায়। খেলার জরলাভের প্রয়োজনীয় ২৮২ ধান তুলতে ইংল্যান্ড শ্বিতীয় ইনিংস খেলতে নেমে ২ উইকেট খুইয়ে ৩৮ গান সংগ্রহ করে।

চতুর্থ দিনে ইংলাদেওর দ্বিভারী ইনিংসের রান দাড়ায় ২০৮ (৬ উইকেটে) এইদিন ইংলাদেও আরও ৪টে উইকেটে এইকেট) সংগ্র ২০০ বান বোল করেছিল। এবং করেশ বহ রান তুর্লাছলেন। এবং কর্ম উইকেটের জাটিতে এডারিচ এবং ফোচার করেশ বহ রান তুর্লাছলেন। এবং করা করেশ বান সংগ্রহ করে দিয়োছলেন। বেলার জয়লাভের জনো ইংলাদেওর ১৪ রানের প্রয়োজন ছল, হাতে জমা ছল ৪টে উইকেটে। ব্লিটর জনো বেলা ভাগগার নির্দিণ্ট সময়ের প্রায় আর্য্যাণ্ট আরো বেলা বাণ্ডার করে মায়া।

প্রভাষ অর্থাৎ শেষ দিনে প্রবল বৃষ্টি। জনো খেলা আরম্ভ করা সম্ভব হয়নি। ফলে খেলাটি অমীমাংসিত থেকে যায়।

সংক্ষিণত ক্ষেত্ৰ

পাকিশ্ভাৰ: ২৮৫ ৰান (মাজিত খাঁ। ৭৫, সংক্ষাজ নওয়াজ ৫০ এবং জাহিগ আৰ্বাস ৪৮ রান। আরনল্ড ৬৭ রান ত এবং ওপড ৬৫ রানে ত উই(কট)

ও ১৭৯ রান (মুস্তাক মহম্মদ ৪৩ এবং ইমধান খাঁ ৩৯ রান।

ইংল্যাড় : ১৮৩ রান (ডেভিড লয়েড ৪৮ রান। অসমিফ মাস্ফ ৫০ গানে ৩ এবং সরফরাজ ৫১ রানে ৩ উইকেট)

 ২৩৮ স্থান (৬ ইইকেটে। এছরিচ ৭০, ডেনেস ১৪, এবং ফ্যোচার নট আউট ৬৭ রান। সরফরাজ ৫৬ ফ্লানে ৪ উইকেট)

मानरमका क्राउंदन अভियागिका

অন্টাদশ মারদেকা ফটেবল প্রতি-যোগিতা বর্তমানে সেমি-ফাইনাল প্রযায়ে প্রেছি গৈছে। এ বছরের প্রতিবাণিতার লাতটি দেল অংলগ্রহণ করেছে। প্রাথমিক লাগ পর্যারের 'এ' গ্রাপে খেলেছে তিনটি দেল—গত বছরের চ্যান্দিরান মালরেনিয়ার, হংকং এবং ভারতবর্ষ। লাগের বি' গ্রাপে খংশগ্রহণ কমেছে তাইল্যান্ড, দক্ষিণ ক্যোরেরা, ইংলানেনিয়ার এবং সিন্পাপরের। সেমি-ফাইনালে উঠেছে—'এ' গ্রপে খেকে ফালরেনিয়ার ও হংকং এবং বি' গ্রপ থেকে ভাইল্যান্ড, দক্ষির ভারিরা।

'এ' গ্রন্পের কীগের খেলার মালয়েলিয়া
১০০ গোলে হংকং এবং ৪০১ গোলে
ভারতকে হারিয়ে শীর্ষপথান পেরেছিল।
ভারত এবং হংকংয়ের খেলা ২০২ গোলে
ড্রাছল। গোল এভাগেজের ভিত্তিত হংকং
শেষ পর্যাত সেমি-ফাইনালে খেলবার
যোগাতা লাভ করে।

লীগ প্ৰশান্ত্ৰের খেলা

	' @'	II.	7				
•	খে	B ?	<u>द्</u>	राव	*ৰ	ৰি	প
মালয়ে শিয়া	2					>	8
হংকং	₹	o	2	>	₹	9	۵
ভ∣রতব্ধ′	2	9	2	۵	ಲ	৬	۵
	'ৰি' গ্ৰন্থ						
				হাৰ	74	ৰি	9
তাইল্যান্ড	9	2	₹	О	5	٠	8
দঃ কোরিয়া	9	>	₹	0	₹	>	8
ইদেদানে শিখা	e	۵	۵		৬	₹	¢
সি×গাপ_র	•	0	۵	2	>	9	>

বিশ্ব ক্লিকেট কাপ

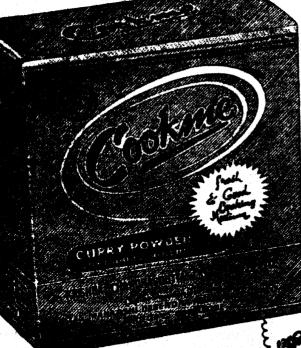
আগামী বছল ৭ জনে ইংসাডেই মাটিতে প্রথম বিশ্ব ক্লিকেট কাপ প্রতি-যোগিতার আসর বসবে। এই প্রতিযোগ-তার যোগদানকারী ৮টি দেশ সমান দু ভাগ হয়ে প্রথমে লীগ তথ্যয় খেলবে এবং প্রতি গ্রাপের প্রথম ও দিবতীয় ম্থান অধিকারী দেশ সেনি-কাইনালে খেলবার যোগতো লাভ করবে: সেমি-ফাইনাল খেলা এইভাবে হবে : (১) ১নং গ্রাপের বিজয়ী বনাম ২নং গ্রুপের বানাস'-আপ এবং (২) ২নং গ্রুপের বিজয়ী বনাম ১নং গ্রভূপের রানাস-আপ। লীগের প্রতিটি খেলাল মেয়াদ একদিন এবং প্রতি দল ৬০ ওভার করে খেলবে। সেমি-ফাইনাল এবং ফাইনাল থেলা হবে তিন দিন ধরে। कारैनाल (थला राव लर्फ मार्ट २५ 67.41

লীগ খেলার ডালিকা

য়ান 'এ' : ইংলা।'ড. ভারতবর্ধ, নিউজ-লা।'ড এবং প্রে' আফ্রিকা। গ্রাম 'বি' : আম্মালিয়া, ওয়েন্ট ইন্ডিজ, পাকিম্টান এবং শ্রীলম্কা।

শ্বমৃত্ত পার্বালশাস' প্রাইডেট জিল-এর পক্ষে শ্রীসাপ্রিম সরকার কর্তৃক পঠিকা প্রেস ২৪ আনংগ চ্যাটাজি লেন, কলিকাতা-ও শ্বাহিত ও তংকতৃত ১১।১, আনন্দ চ্যাটাজি লেন, কলিকাত:—০ হইতে প্রকাশিত।





হুণলা সেই জাসন জিনিব বার পেছনে রারাহ ১২৫ বছারর অভিযাত

ा प्रदास्थित सन्ता वस्ति विका स्व नेतृत नागर स्वत्य देव वस्त्र स्वती वं स सन्ता १ । स्वार्थित सन्ता

o i diminis mais distriction of the same o

STATE OF STATE S

wome has the single and the

(middle military follows)

tar, sele trem tore, officerent i trem : co-chies untill-untill

18.6 /4.65 /4







অপরাড়িয় কথানিন্দী

মার্চিত্রের

অভ-জ্নিদিন উদলাক্ষ

শরং-সাহিত্য-সংগ্রহ
শতক্রা ১৫০০০ কর্মিশনে

কিয়ের অদুর্য সুযোগ

শরৎ-সাহিত্য-সংগ্রহ

১৩খণ্ডে সমাপ্ত

५ ३७ हे लिए हेसर एटेए २ला अस्टावन वर्षक परे मुविधा वलवर थाकिस

সম্পূর্ণ ১৩ খণ্ডের মূল্য একতে ২৩৪ টা. এই সময়ের জন্য কমিশন বাদে ১৯৯টা

> প্রতি খণ্ডের মূল্যঃ১৮ 00 টা . কমিশন বাদে ১৫ ৩০ প

এম,সি,সরকার অ্যাণ্ড সন্স প্রাইভেট লিমিটেড ১৪,বজ্জিম চাটুজের স্থীট, কলিকাতা -১২

ফোন: ৩৪-১৭৮২

বিভূতিভূষণ বন্দ্যোপাধ্যায় জন্মজয়ন্তী

॥ वित्मय रघायना॥

আগামী ২রা সেপ্টেম্বর হইতে ১৪ই সেপ্টেম্বর পর্যত বিভূতিভূষণের জন্মদিন উপলক্ষ্যে বিভূতিভূষণের নিম্নলিখিত বইগ্লিও বিভূতি রচনাবলী খ্রচরা বা সম্প্রে সেট সাধারণ ক্রেতাদের বিশেষ কমিশনে দেওয়া যাইবে। ১ম, ৩য়, ৪৩, ৫ম. ৬৩, ৯ম, ১০ম, ১২শ খণ্ড এখন ছাপা আছে—মোট ম্লা ১৪৫। এই কয় খণ্ডের সম্পর্ণে সেট লইলে সাধারণ ক্রেতারা ১১৬ টাকায় পাইবেন। এজেন্ট বন্ধ্রণ কাউন্টার হইতে লইলে প্রাপ্য কমিশনের উপর অতিরিক্ত ৫ কমিশন পাইবেন।

পথের পণচালী (পেপার ব্যাক) ৬ অপরাজিত ১২ আরণ্যক ৭॥ আদর্শ হিন্দ্ হোটেল ৬ ক্শল পাহাড়ী ৫ দেবযান ৭॥ মেঘমল্লার ৪॥ শেত্রত গলপ ১২ ছায়াছবি ৪ নীলগঞ্জের ফালমন সাহেব ৪ দ্িট প্রদীপ ৭ অশনি সংকেত ১০ অন্সন্ধান ০ অরণ্য মর্মর ৭॥ আরো একটি ২ হীরা মানিক জনলে ৫

জবাস**ে**ধর ন্তন বই

ত্মেঘেরছায়া

া। আট টাকা ।।

বনফ**্লের** ন্তন উপন্যাস

আশাবরী

।। সাত টাকা ।।

প্রবোধব্যার সান্যালের

বনৃগ্ধতির বৈঠক

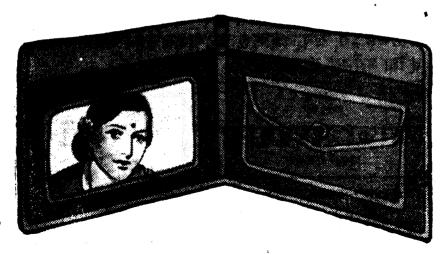
॥ দ্বিতীয় খণ্ড প্রকাশিত হ'ল॥

লেখকের ঘটনাবহাল ও বৈচিত্রাময় জাবিনের প্রতি পর্বে চলতি শতান্দির প্রথম চারটি মুখ্যকের ইতিহাল প্রতিক্ষালিত। দেশের অন্ত দংগণিত রাজনীতির সংবেশি উংপাড়িত নারণিলাজের আন্দোলান বিংল্ববাদ নতুন সাহিতা, জিল্প ও সংক্ষাতির জয়মাত্রা দারিটোর নির্দেশ আবিপ্রালি সংগ্রাম—এদেরই ভিতরে ভিতরে লেখকের বিভাশিত জাবিকের কাহিনা তার নির্ভূল বর্ণান ও অভাশত তথে সমগ্র পাট্টক সমাজ জন্ত্রাণিত। এই প্রনেশর প্রথম প্রকাশকালে রক্ষণশীল ও অন্দোর গোণ্টিতে যে অজতা বৈরিতা দেখা দিরেছিল—নিসেংশন্নে প্রমাণাদিস্য তাদেরই বির্দেশ লোখন তার প্রি-ভাবনে শাণিত তর্বারির বলক প্রকাশ করেছেন। এই প্রথম তার স্বালিত। পরিণ্ত। কথি আপন ঐশব্রে চিরায়ত স্থিতিত পরিণ্ত। পরিণ্ত।

—ক্রড়ি টাকা—

মির ঘোষ পারিশার্স প্রাঃ লিঃ ১০ শামাচরণ দে স্থাট কলি—১২ ফোন : ৩৪-৩৪৯২ ৮৬/১ মহাত্মা গান্ধী রোভ কলি—১ ফোন : ৩৪-৮৭৯১ ্রিল, ছাট সি. নীমাপত্তের মালিকগণের স্থার্থে প্রচারিত

আগतात उँउताधिकातीत ताप्त अथतरै उद्सिथ ककृत



এতে দাবীর টাকা দ্রুত মেটানো সম্ভব হয়

ৰীমাকাৰীর মৃত্যুতে বীমাকত টাকা কে পাবেন ? বলাৰাহুলা, উত্তৰাধিকাৰী হিসেবে বাব নাম উল্লিখিত আছে
তিনিই। যদি আপনাৰ নীমাপত্ৰে উত্তৰাধিকাৰীৰ নাম
এখনও অন্থলিখিত থাকে, তাহলে অবিল্যুত উল্লেখ
করে কেলুন।এখনওপ্ৰমুগ্ৰ আছে। বে কোন এল. আই. লি.
অবিল্যুত থেকে একটি মনোন্যনের ক্ষম্ব সংগ্ৰহ ককন।
আপনাৰ মৃত্যুতে বীমাকত টাকা আপনাৰ ইক্ষান্থমায়ী
আপনাৰ জী, সন্তান বা যে বাক্ষি পাবেন, তাঁল নাম বীমাপত্ৰে উল্লেখ ককন এবং সেটি এল. আই. লি. অফিন
আহিছেক। ৰীমাপত্ৰটিসম্পৰ্যে মাপনাৰ উত্তৰাধিকাৰীকে
অবহিত কৰে বাসুন।

আপনার বীমার দাবীর টাকা পেতে যাতে দেবী না হয়, তার কল্য আপনার এসবের দিকে দৃষ্টি দেওয়া উচিৎঃ বয়নের প্রমাণ দাখিল করুন এবং বীমাপত্তে সেটি প্রমাণিত করে রাধুন। ক্রিকানার প্রিবর্তন হলে এল আই দিকে জানান। সময়মতো এবং সঠিক অফিসে প্রিমিয়ার্ম ক্ষমা দিন।

আপমি যে এতেন্টের কাছ থেকে বীমাপদ্ধ মিরে-ছেম উার সাছায্য নিন—অথবা নিকটছ এল-আই. সি. অফিসের সজে যোগাযোগ করুন— বাছে আপনি নিশ্চিত হতে পারেন যে বীমাপত্রটি বর্ধায়গুডাবে ও চালু অবস্থায় থাকে।

লাইফ ইন্সিওরেন্স কর্পোরেশন অফ ইণ্ডিয়া



माथा ५० ম্লো—৫০ প্রস্থ

'টেণ্ডিয়ান আগ্ডে ইঞাণ' নিউ**ঞ্** পেপার স্থানটাটির স্থান্ত

Friday, 30th August, 1974. MANAGE SO WIE SOUS 50 Paise

স্কুচিপত্ৰ

প্ৰতা বিষয় COLUMN T ৬ সমপাদকীয় ৭ জোমাৰৈৰ দিন (252) ইমদাদ্রল হক মিলন ১২ ভৰ: ভাকে (ক্ৰিডা) শ্রীসমবেন্দ্র সেনগ্রুত ১২ সন্তার ভেতরে (কবিতা) শ্ৰীবাণিক বাষ ३२ माथ (কবিতা) গ্রীঅমরনাথ বস ১८ कनक का कनकाका **নী**শৈক্ষমিনী ১৪ এই बाःलाज ध्वज শ্রীদেব দত্ত 56 thenfachen শ্রীপু গড়রীক ১৭ নৰনিৰ্ণচিত প্ৰয় **ৰাখ্যপতি** ১৮ পটভূমি

১৯ নিঃসংগ পথিক নিকসন

২০ অলোকিক জলখান

২৮ সাহিত্য ও সংজ্ঞাতি

জন আবদ্ধ হার লামা

२> भवरहरम्ब बक्तरम्दभव क्रीबन শ্রীগোপালচন্দ বার (উপন্যাস্) শ্রীঅতীন বন্দ্যোপাধ্যার শ্রীকরংকার-

श्रीमिनी अक्सात स्याभाषां है

৩২ সেকালের সংগীতগালী ৩৯ বাজার বাজা (উপন্যাস) শ্রীপ্রভাতদের সরকার । 80 विख्यातम् कथा শ্রীঅয়স্করণত

> থারন্ড রবিস ভ ষাস্তব मक्षः श्री बाद्य সোৱীন ৰায় প্রথম খণ্ড 1 \$0.00

প্রাপতবয়সকদের এই বিশাল উপন্যাসটি সর্বাধিক পঠিত ও বিত্রকিত। কেউ অশ্লীল বলে নিন্দে করেছেন কেউ এর প্রশংসায় উচ্ছসিত। বাস্তবান,গ্, বলিন্ঠ, নিম্ম ও স্পণ্টভাষিত এই অনন্য উপন্যাসটি একবার শরে, করলে শেষ না করে থাকা যায় না। এর অন্প্রম দক্ষ ভাষা-তর রবিশেসর রচনা-শৈলীরই অন্রেণন।

প্রকাশক-প্রপত্তি পরিবেশক-কথাও কাহিনী ১৩বাক্স চাট্রের ক্রীট-১২

আৰু ও আগাদীভাল পিভিচ্চঃ

অপরিহার সম্পদ্-ভার্ক পাঠাগারের সমাজ-সচেত্ৰ ব্যক্তিমানেরট স্থাবখা সাঠ---

दश्य-प्रकृतास खत्राचनात्र-०८ বিশাৰ ও মারসমাজ দেকে

গোপাল হালদার-এর ৰাঙালির আশা ৰাঙালির ভাষা **b**.nn

क्रमिश्म मकाध्यक प्रतिका केशनहातिक : বল্প: আচাৰ -এর শালটি বুণ্টি-এমিলি বুণ্টি ৭ - ০০ উয়েদারিং ছাইটস'-₺.00

काराह्माहका केन्द्रात-अन्ध

সংস্কৃত কাব্যভাল্ডাবের বতা যোলালন কবির রচন। খণ্ডগাীতকাবারতেপ বাংসায় র পাদতরিত - শ্রীলন্দগোপাল লেলগ্রেড লিখিত ভূমিকা—

> शर्वाण बाम्यकोषास्त्री-स চিরায়মানা--9-00

চরশৈকত প্রেমের অপেরপ গীতিকাৰা- মাধ্যমিয়তার বোহাঞ লালত আলেখা

महारम्य जनकान-धन ा हरना गान-ডত মানুধে_য মহাবিশ্লব চেডনার রাহাত্রক কাব্যর্প-লোপাল হালদার ও অধ্যাপক সাবোধ ঢৌধারীর সভালোচনালহ

> महारम्ब महकान-धार আকাশ-মাটি---

9-60

গুৰুপায় তন ৮৬।৩৮বি বৃষ্কি আমেদ কিলোয়াই রোভ തിങ്ങയെ -- ഉര

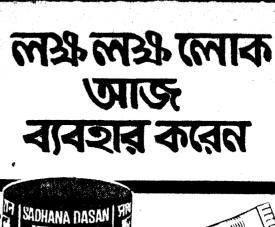
भश्रा

এक्थानि উল্লেখযোগা श्र^मथ ৬ক ৰ'ড) প্ৰতিৰ'ড (১ ৪, ৫) ৩-০০

প্রাণ্ডিপথান :

(2, 0, 8) 8-00

পতিকা ভৰন ৰাগৰাজ্ঞাৰ ও বিশিষ্ট প্ৰ-তকালয়



तक तक लाक काल সাধনা দশন ব্যৱহার করেন জ্ঞারণ অতি উৎকৃত্ট জাঁতের মাজন ৰ'লে এর সুনাম ও জনজিয়তা **উ**ভরোভর বেডেই চলেছে। অত্রনীয় তুণারলীর জন্য সাধনা দশন বছদিন ধরে मिल्ला अवंत अवंत अवंत अयान्त्र शास करने सामरहा। নাধনা উথ পেচ্টও বছ্ডগ-, विशिष्क विश्वय स्थापन उ क्रमाडी। बाह्या (शन्ते शहक क्रांबन क्रांबन क्रन्ताधर BES SEI BERGE SD-5/70 / 1

SAUHAHA

प्राधता प्रभत

সাধনা টুথ(পষ্ট



ञाधता ঔषधालग्न-एका

Sadhana TOOTH PASIF

কলিকাতা-৪৮

জ্ঞধাৰ্ক ডা: যেগেশচজ্ঞ ধোন্ধ এন,এ, জাৰ্বেদ-শাস্ত্ৰী, এক,সি,এন, (লওুন) এম,দি,এম, (জামেবিকা) জাগুলপুদ কলেজেৰ হসায়ন শান্ধের ভুক্তপুদ জ্বধ্যাপক। কলিকাতা কেন্দ্র ডাঃ নরেশচুক্ত ঘোর, এম,বি.বি.এস, (কলি) আহুবেঁকাচার

স্চীপত্র

	Las	
84	प्रकारत अक्षि श्रीतन	গ্রীমঞ্জিল সেন
Œ Q	बारक-बारको	श्रीकृष्ण स्थलक्ष्म
60	এ'রাও পিছিলে নেই	
69	চিত্রিপদ্ধ অপানা	शिकनक मझ्ममान
	ब्रह्मजीब भाषा	প্রত্যকলি চৌধরী
	**************************************	শ্রীবর্বগিনী
۵۵	ट्सकाग ्र	<u>শ্রীক পণক</u>
۵۵	बादबादण्याणिक	श्रीत्रक्षम् मण्डमात
6 8	विद्रमणी कवि	ही गाय ह
	श्चिमाग्र	চিত্রদহত
ଓ ସ	ওল্লা বলেন	
95	मकाचिनग्र	ক্রীনিম্ল ধর
୧୭	শতৰবেশ্ব সমর্ণীয়	द्यीकानीन भूरथाभाषाय
99	भारतेत नासक	গ্রীবিশ্বল বল্যোপাধ্যায়
96	ध्यमात्र सगर्य स्मरत	<u>ত্রীঅময়</u>
৭৯	শেলাধলো প্রজ্ঞ : তুষার সানাল	শ্ৰীদ ৰ্শক

দূিতায় মুদ্রণ প্রকাশিত হয়েছে।। আশ্বতোষ মুখোপাধ্যায়-এর

আজকের উপন্যাস

ঘর

.....সেই আতঙ্ক, সেই দঃ দ্বাদের বোঝা ঘ্যের মধ্যে এখনও দেবীর ব্রকের ওপর চেপে আসে।

ঘটনাটা ঘটেছিল বেশ কিছ্বদিন আগে। তারও অনেক আগের থেকে প্রস্তৃতি চলেছিল। ঝড়ের থবর সকলেই রাখে, ঝড়ের মুখে না পড়া পর্যন্ত তার আতঙ্ক ঠিক ঠিক অনুভব করবে কি করে?

এইরকম হাঁ-করা ঝড়ের মাথে পড়েছিল দেবী,
শংকর, অবনীভূষণ। ঝড়ের দাপটে ভেশে দামড়ে
মাচডে গিয়েছিল।

ঝড় থেমেছিল। কিন্তু ওরা কি স্ক্থ হয়েছিল? ভাগ্যা ঘর কি পেরেছিল জোড়া লাগাতে? ৭০০০

লেখকের আর একখানি গ্রন্থ

পিক পয়েণ্ট

9.00

দ্বিতীয় মন্ত্রণ প্রকাশিত হ'ল

বিশ্ববাণী প্রকাশনী॥ ৭৯/১বি মহাত্মা গান্ধী রোড॥ কলি-৯

स्थानामस्य हत्यानामास स्थिति ५०

ক্ষিত্রার আক্ষেম ক্ষরণার মত বই জন্ম পান্যাল

ওরা ক'জনে ১০

विकास संबद्धन कृष्य मात्रीय मनञ्जूषम् जरु स्वाप्ति

द्राक्टब्र शाम ७

অন্সক্ষার থেকে আলোর উত্তরণের মনমুখ্যকর উপন্যাস

সতী ৫.

র্মণীর জীবন জয়ের সিন্ধ কাহিনী দ্বোগুলাদ বল্কোপাধ্যমূ

শিকারের বিচিত্র ক্যাইনী ৮ ছোট বড় সকলের রুম্পেশাসে পড়বার

নৰ সাহিত্য প্ৰকাশ ১২১সি, সীভাৱাম হোষ শুটীট, কলি-৯

১০৮১ সালের মোটাক পরিকা কর্তৃক স্থারচন্দ্র প্রেডকার প্রাণ্ড শ্রীভূষারকান্তি ঘোষ রচিত ছোট বড় সকলের মনের মত বাংলা সাহিত্যের দ্'খানি আশ্চর্য বই

বিচিত্র কাহিনী

শ্রীভ্যারকাশ্তি ঘোষ

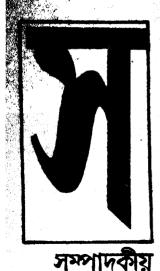
মূল্য :—চার টাকা (সংতম সংস্করণ চলছে)

আরও বচিত্র কাহিনী

শ্রীভূষারকাশ্তি খোষ

ম্ল্য :-চার টাকা (চতুর্থ সংস্করণ চলছে)

এম সি সরকার আপ্তে সংস প্রাইডেট লিমিটেড, ১৪ বিষ্কম চাট্ডেল দ্বীট কলি-১২ ফোন: ৩৪-১৭৮২



কিন এই আশাভণ্গ ?

বিদারণী রাণ্ট্রপতি গ্রী তি কি গাঁরি পত প্রাধানিতা দিবসের ভাষণে কত্রপালো প্রণাট কথা বলেছেন যা সরকার ও দেশবাসীর প্রক্ষে খাঁহ ভালভাবে অনুধারন করার দ্বকার আছে। সাউন্ধা বছর পার হয়ে গোছে। একটি প্রাধানি জাতির পক্ষে এই সময়টা নিতালত কম নয়। যাদ আশাভগ্য হয়ে থাকে ওবে জেন তা হয়েছে তা জনো আমাদের পক্ষে আজ খ্নিই জ্বেরি। কারণ, অয়গুত্তির পথে পদে পদে বাধা আসছে। বিদায়ী রাণ্ট্রপতি শ্রেম্ট্রস্কারত বাণী বিভরণ না করে দেশ্বাসী ও স্বকারকে স্তর্গ করে গেছেন। এজন্য তাকৈ ধন্যাবাদ।

দ্বশীত আজ সমাজের স্বাশ্তরে। এমনকি নির্বাচনেও আজ্বাল টাকার
ছড়াছ ড়। নির্বাচনে, জেতার জনা হারা টাকা ধর্চ ক্রছেন অতেল তারা হৈ দানখয়রাতির উদ্দেশো নির্বাচনে নামছেন না ডা বলাই বাছ্ল্যা। এই কালো টাকার
প্রভাব থেকে গণ্ডান্তিক সংখ্যাগুলোকে বক্ষা করার জন্য সমস্ত রাজনৈতিক দলগ্রোল মধ্যে প্রয়োজন সচেতাম সহযোগিতা। ডা না করা হলে সাধারণ মান্য
গণ্ডানিক ম্লান্যেধির ওপর আজ্ঞা হারাবে। দ্নশীতির স্ত্পাত্তই হল নির্বাচনে
কালো টাকার আশ্ভ প্রভাব থেকে।

গণতাত হবে নভার ও প্রধান। কারো ভারে বা কারো প্রসাদে গণতাত্ত্র নড়াড় হলে ভাগ প্রিণাম হবে মারাজক। জলতবর্ষ বৃহত্তম গণতাত্ত্বিক দেশের গোরবের অধিকারী। দ্বাধিতপ্রামণদের কাচ গ্রেরাং সকর ব্রার জনা এই গোরবের অধিকারী। দ্বাধিতপ্রামণদের কাচ গরতার্থ করার জনা এই গোরব ভারতবর্ষ জলাজাল লিভে পালে না। স্কুলাং সকর হবরে সম্মু এসেছে। দেশের সংকট বিদেশ্যর প্রশা বিদায়ী রাল্মপাতি নিভাপ্রয়োজনীয় কিল্পেসের ম্লাব্দি এবং মানুদাফ্রীতির উল্লেখ করেছেন। আজকের ভারতবর্ষে এই দ্বাটো বস্তুই জনসাধারণের মানের দ্বাহারের করের কারণ হয়েছে। প্রতি মানে জিনিসপ্রের দাম বাড়ছে। সাধারণ মানুহের পক্ষে ভার নাগাল পাওরা দ্বালায়। এর জনা সর্বানী শতরে কী ক্রেরার হারত ইলিজাড় দিয়েছেন। জীবিলি। মানুদাফ্রীত রোধের জনা স্বাক্ষার ইতিন্যাধারণ স্বাক্ষার বাক্ষার নিয়েছেন। ভার পাশাপালি করা দলকার খাদ্যপান বন্টনের স্বাবাক্ষা।

ভারতব্যের পাক্ষে থালে। ব্যর্গভার হ্বার পথে কোলো রাধা থাকা উচিত
নর। বংতৃত থাল্যাটিত বে আমাদের খ্ব বেলি ভা মোটেই ঠিছ নর। আসল
অস্বিধা স্বতি বলি ব্যবংশার। বংটন-বাবংখার গ্রুটির ভারটি দেশে প্রচুর ধাল্যাসার
উপের হওয়া সভ্তে জনলাধারণ প্রয়োজনমত থালা সংগ্রহ কান্তে পারে না। অসাধ্ ব্যবসাদী ও মজ্ভেলাররা খাল্যাসা ল্যুকিয়ে কোলে মার্যা তরিভ দায়ে ভা বাজারে ভাড়ে। এই দ্বাতির বির্ধেধ শ্রীগারি সরকারকে কঠোরতম বাবংখা নেবার নিদেশি বিরেভেন।

वाक्य द्रौकीशास हरक कामका ।

क्षाःकमन्त्र व **स्थाप्त** है गाउँ भ डे महिला। TARLY बाह, जावाद माटह । शास्त्र श्रांत्र हमकाम आकारमा बोट म टाल खन्ताः त्नाम घटका माट्स दाव जारक करम् । तालीच १८६१ वारकः। रा ५७ পড়ে ট্রপ ট্রপ শব্দে। আবার কমে বায়। গছপ লা বাতাস ছড র সো সো শব্দ। व्याकारभव काल व्याक काल्या तर स्वच के আবে। বাত সে সেই মেছ হালকা তুলোৰ মতে। थर्फ प्रश्ना काकारम। कात्र राजि सञ्च।

क्षवात्त्रत्त वर्षा चत्व हाच स्मरण जानत्व क्षि कोबार्स ।

খাল বিল উপক্র क्रीमारक । रहापा ज्यारमारचक चर्च स যাওয়া মাটি জলে জোকা পাট মত্যে কোমাল হুরে **উঠেছে**। মত্য আর্হুমার কাল লাভ এইক্য इ.स. भा[®]शरीरत । अवाग कवामा अर्द्धान, नौल स्वरम পার্টেনি -किश्वा बार्ट्स द्वना होन बाज त्यारम्मा व्यक्तीम वदावरत । ব-ভিট্নাক ছাল্ডে ভাবিবল।

केवकारमध्य बार्यक बाराज्य हाजा हम**्म क्**तरहा

कट्ठा इस स्मीता ক্রায়ণ র জায়গার যোটা কল নেমে আসকে হবের ছেতের।

একটা বড় মড়ো কটোর তলাত থালা পেটত বেখেছে পালা । থেমে ংকটিট পাছতে মেটার উপর। আর **छेटाइ क्रिक होने करते । श्रांतर द्यारक छ**िछा केंद्रेट्ड । जा कजार्ट नवस साहित भाषता वस माक ने परमा यहाँ পুরুল ছয়ে থেলে আস্ফে।

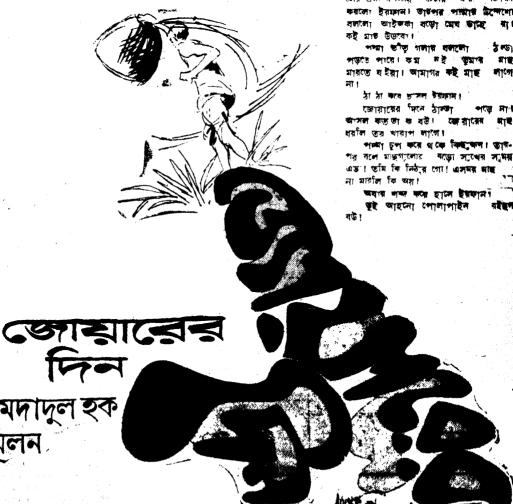
न्द्राकारमा के बनाचे। व शाव अपाता **डेगमाम** ।

थान्द्री इंग्लि व्यक्तिया 10777 **371?**8 अत्कः महाक्रम बाहरत हामान मीकृत आर्ग्नेस आकृत कि स्वास्ता रहेगेहो बाकात्मन न बारक नाबारक ভাষালো। জুপার ব্রজানক ক্ষেত্র কা ट्रांस फरकेट हार्चीनक। विमान সেনালী জিব দেখিরে। ভার धाम एकरक केर्राष्ट्र शास्त्राच करता काश्च-रक्त उना व निस्त रहेंद्रीय श्रम করলো ইরফান। ভারণর পারার টলোগো বলালা আইককা কড়ো মের ভারে

পদ্মা ভাতু গলায় বলুলো 7 00

পর বলে মাজ্গালোর বড়ো সাধের সাময় বার বংল কাজ । তুলি কি নিঠ্র গো! **এস্মর মাছ**

पृष्टे व्याहत्ना लालाभाष्ट्रेन



্তাবপর আধিগনাব শিচ্চন মটি দিয়ে হে'টে বার। পেছন থেকে কথা বজে পামা।

্তিজি হাজে আইখা পইরে। ক*ি* **নাইতে আর মাহ মরতি বাইতে পা^রবা** শাঃ

্<mark>রিকান কথা বলে না। ঠোঁট ছড়িয়ে ছামেন। তারপর আধিপনা ছড়িয়ে মাঠের। লিকে নেমে বার।</mark>

্ প্রকুর ডেবা টইট্নেবর হয়ে জল উপতে পড়ছে মতে।

ধান পাটের জনিতে গোড়ালী ভূবে বাওয়ার মডো জল। পট পাতা ব্ডিতে ভিজে খন সব্জ হয়ে উঠেছে হঠাং করে। নদী থেকে খাল বেয়ে জল আসছে গ্রামে। এ অঞ্চাটা নীচু। খাল ভোষার সংখা বৈশি। খবে অলপ সময়ে পুকুর ভেবা ভবে জল উঠে যায় মাঠে।

টুপ টুপ অনবরত ব্লিট পড়ছে জবের উপর।

ব তালে বিজামিলিয়ে তেওঁ কাটে। কন-কমে দটিত গড়ার। এসময় ধান প টের ক্ষেতে মন্থ পাওরা বাবে না। মাণ্ডেরা সব কলি করে রতের বেলা। উদ্দাম হুটোছাটি করে অলপ জলে। পাঁর ধরে।

মিয়া বাডিত পাক্ষণ থেকে জল নামত্রে পাশের নীচু জমিতে।

পাঁটি মাছ নেমে আসছে ঝাক ঝাক। পাুণীট মাছের শরীরের দা পাশ লাল বং সির পাছে এসময়। পোট ভাতি ভিম। আব শরীর কি নবম।

মিয়া বাড়ির ঘন গাছপু ছণালাব ভেতর ছারা। ছা গাছপ লা পাড়িরে ক্লমে। ঝিম মারা গাছপ লা পাড়িরে দাড়িয়ে ব্ভিতে ভিজে। সর সর একটানা শব্দ হয়। এক টুকরো কালো মেঘ ধারে ধারে উঠে আসে মধ্য আকালে। ক্ষধকার ঘনার।

মাঠে না গিলে মিরাব ড়ির দিকে ছটিতে লাগলো ইবফান। জারগাটা নিরিবিল। কিছু ঝোপ-ঝাড় আছে, লন্দা জন্বা আড় লি আর বাকসা ঘাস আছে। একব জংগলে সিংমাছ উঠার সম্ভাবনা। এ মাছগালো সব সময় উঠে। আট দৃশ্যটা একসংগ্য হয়ে থেলা করে। ক্রেণ স্যোৎ শত্তন করে। তথন টেটা নারনে একসংগ্য অনেকগ্রো গাঁথা বায়। গেটের ভেতর ডিম থাকে বলে কম জ্যোরী মাছ-গ্রো। অনারনে থাকটেতে তেলা বার।

মিরাদের আয়বাগানের ভেতর দিরে
হাঁটতে হাঁটতে আকাশে মেঘের গ্রেরগ্রের
তাক শ্বনলা ইরফান। ব কের
তাক আজ প্রথম এরকম শব্দে মেঘ
ভাকছে। আজ কই মাছ না উঠে যার না।
মেঘের এরকম ভাকে উচ্ছরলা বাড়ে
কই মাছের। জলায় থাকতে পারে না।
কাননো সংগৌর রগানের মতো বাবহাব
করে উঠে আনে ভাগার।

অথিলা বড চালাক।

পুকুর থেকে চারদিক দিয়ে क्र ইপচাতে দেখে ছোট মতো নলা কেটে দিয়েছে এক জামগ্রে। পারে জল ী 213 নেমে আসছে ওখান দিয়ে। সংগ্র মাছের ঝাঁক। অথিলা সকাল থেকে £0 টানা সম্পো প্রতিক্ত মাছ ধরে। মাজটে পশ্চি মাছ। বিক্তা কাডি थान है ভেশালের মতো করে ছোট জাল দিয়েছে নালার মাথে। জল গড়ায় গুটার ভেতর দিয়ে। মাছগালো আটকে থাকে জলে। লফাল্যফি করে রূপেলী শ্রীরে।

এসব ছোট মাছ ধরতে ভালো লাগে ইরফানের।

কলে ভাষিত পাটি নাছ নি তিলো পদ্মার জনা। সেই মাছ দেখে পদ্মা কিরকম আফাসোস বংলছিলো। পার্টি নাছের ল'ল শির দেখিয়ে বলেছিলো নাছেরা কামন শাড়ি সিনছে দাল। এইডা বড়ো খাশির সময় ওগর। এই মাছগ্লোনার ভ্যার যার।

ইর্ফান রাল করেছিলে।

তর মত সোরাগের কজা বউ। মাছের জালা স্ময় দেইবয়া অভরা গাছ গারমূল।

ইরফানকে দেখে দাঁত ছড়িয়ে হাসলো অথিলা।

উদোম গায়ে লাভিগ কীছা মেরে বসে মাছ ধরছে সে। গম্পরাজ ফালের মতো থোকা থোকা পাটুটি মাছ তুলে রাখছে
খালাইতে। অথিকার মোধের মথে। কাকো
দারীরে বৃদ্দির জল। গাড়াছে। হ সাতেই
অথিকার ঠোটের দিকে চোখ গেলো
ইগ্রনাকর লিন্দুল পোড় মাট্র নিন্দুল ধরেছে ঠোটের। সারাদিন বৃদ্দিতে ভিজে ভিজে মাছ ধরেছ বলে এমন এবস্থা উপিক মোল থালাইরের ভেতরতা

দেখলো ইরফান। কি রয়া অথিলার পো, কতডি প্টলি?

অথিকা তেমন করে। বাদেশো আবব। দুই খালুই থাইয়া আইচি। এইজা ভরলে যামুগা। ভারি দ্বিত করে মেবাই।

কথা বলার ফাঁকে ফাঁকে দত ঠাকে যায় অথিলার।

তালপ এংপ কাঁপে। তালে গ্রন্থর দিয়ে জল গড়ানোর দ্শ্য দেখতে দেখতে কথা বলে ইরফান।

পশুডি মাছ এত ধইবা কি করবি? হেরচে বাইতে গিয়া গুমা। ফুমে আইবো!

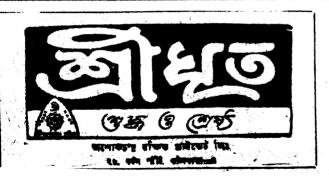
অথিলা কথা বলে না। হাসে। একটা মেটে সপ এসে চেথের পলকে জড়িরে বার জালে। পরে শারীরটা পাঁচাতে উথাল পাথাল করে জলটা। বহুছ জলের ওলাং পাটা করে জলটা। বহুছ জলের ওলাং পাটা করে জলটা। বহুছ জলের ওলাং পালার মাছগালো। ইরফান হিশা করে গালি আওড়ার। হুমেনিদর পাত হুপেই জালাই অব্যান পাঁচটা ছাড়াইল মা হাজার একবার পাঁচ ইয়া গালে সহজে ছাড়ান য্যুনা। জালাছিড়া যায়।

ইরছন কথা বলে না ালাটা ডিঙিয়ে দক্ষিণের জংলা মঠে জন্ম হল। এল লিল হাগালা আর বাকসা আসের জংগল। এলে জংগলের কিংক লিক লি লাহ আর বায় ইরছান। শব্দ পেলে মাছ ভুটে প্রত্যা সাক্ষান ক্ষান্ত লাভ হালান। মাছদের ইন্দির খবে সচেতন।

পারের কাছ থেকে এক জোড়া কোলা বাহে তাল কাল কাল । চমকে টেটা বাগিয়ে ধরলো ইরফান। তার-পর বাহে দেখে হেলে কেলেনা কিলেনা কোলা বাহেরাও ডিম ছাড়ে কেন্সমান অধা ছল আধা শ্লুকনের পড়ে থেকে ঘাছের ঘাছের একটানা ডাকে বাল্ডালা । বালিজ্জ পর পর কালে দানা ভিম ছাড়ে। ভালের ভেতা এলোমলো ছাড়েরে থকে ডিমাপ্রলো।

হ, হু করে বাতাস দেয়।

মিয়া বাড়ির গাছপালা সাপের মতো সে সো শব্দ ছলায়। তাক শেব তার কালো মেঘ এসে থির হয়়। বিদাবং চম-কায়। মেঘ ভাকে গ্রগ্র করে। বাড়িব তেড় বাড়ে। মাথলাটা এক হাত শাঙ্গে চেড় বিক করে ইরজান। হিজ্ঞা পাছের



Marie Material Company

ভলার দাঁজির ভারর থেকে বিভি আর দেরাগলাই বের করে। বুলি এবং বাজা দের আচ বাঢ়িয়ে কারদা করে বিভি ধরার। গলা ভাতি ধ্রা ছাড়ড়ে ছাড়তে স্মির্দের পুরুরের দিকে ভলার। পুরুরের প্রীট পোরাতি রেসেমানুভের মতে। ভরাট। সেখনে বৃতি পড়ে। মনে হয় যেনো অসংখা পোনামাছ পটে পটে করে ভাসতে পাকুরের জলো। একটা গাই লেজ নাডিয়ে জ্ঞানে ভালেভ সাতার কাঠে। হা হা বাভাস দের। বাভাসে কাকনে খাতি। আথলা জাল গাটিয়ে বাড়িচলে গেছে কথ্য।

বিভিন্ন টানতে টানতে বাঁটে ইরফান। বিভিন্ন ধোঁখা উত্তেজনা দেয় শ্রীরে। পারের তলায় শীতল জলের অভিতত্ব টের পাওয়া যায় শা।

কোঁপের সামনে একটা ছোট ইরফান অল্প ভাৰণ দ্র্গিড়ারে শড়লো ম্হ্তে W14: নডছে ঝেপিটা। হয়ে উঠলো দরকানের চোখ। এটা আড়ালির কেছাল टबर्गमा । ভেত্তরে দেবী করকো \$1.20° F1407 1 देशकान । आभाषा का दिया । जाना किता খচকরে। পিথ্র হয়ে গোলো ঝোপটা। বিভিটা শেষাণেষি চলে ATTEND তাচ লাগে। সুখটান দিয়ে বিভিটা ফেলে দিলো ইরফান। তারপর মতা করে টেটাটা প্রকাতে গোলো।

উরে বাপ্রো...

ভাজানেতই শব্দটা বেরিয়ে একো মুখ্ থোকে। টেটাটা জ্বল্প একটা টানতেই শ্রীর দেখা গেলো সালটার। কালোর ভেতর হল্প ডোরাকটা। বছ নৌকর ক্রিয় মতো মেটা। ছাকর, মুখের চেত্র জকটা পেট-হোলা বয়না মাজের অধ্যেকটা সোধে ভাষে। ঠিক ঘাজের কাছটায় টেটা বেপ্ছে।

টেটা ছেড়ে সরে এপো ইরফান। একটা নুরে দাড়িরে ভর পেতে লাললো। কি সাপা জাতটাত নয়তো! না, জাত সাপেরা যাছ খায় না। বোরা টোরা এবং

এরকম ভাবলে সাহস কাজ করল মানের ভেডর। সাধ্বানে ছে'টে এসে টেটাটা টেনে আনলো একট্ব। ঘাই হোক শলাভ লা করে গোখেছে। ছুটে এসে কামড়াতে শালসেনা।

সাণটা এভজ্জন প্রচন্ড দান্তিতে নিজেকে ছাড়ানোর চেন্টা করছে। পরেরা দারীরটা টেট র সংকা পার্টিয়ে উথাল-পাথাল করছে। কিন্তু নাজ হচ্ছে না। সাবধানে ঝোপের ভেত্তর থেকে ১টটাটা বের করে আন্সলো ইয়ানান। এবং চয়াকৈ উঠগো ভ্রীষণভাবে।

ইচ্ছে বাপা বা!...

আসলে ইরকানের ভাবনাই ঠিক। একটা প্রোনো কাল বোরা মাছ খেতে এসে তার টেটায় গোখে গেছে। কিন্তু এটাকে ছাড়ানো যায় কি করে! তাছাড়া বোরার মধ্যে এ-ভাতত বড়া ধারাপ। কামড়ালে বিপদ আছে।

স্থালেকাকত উচ্চশ্যেক মেখ ভাকলো ও সময়। চামলিকে ভাকিছে মানাক হলো ইয়কাম। মানা ক্ৰম নাকে। বাসু বাসু ক্ৰম-

কার জয়ে উঠেছে গাছগাছগাঁলতে। স্থাছে কোছাও গলা ছেন্ট্র ডাক্টরে শরে কারে

वाचि कत्म अत्मत्त्व।

মাঠের দিকটা এখনো ফগা। কিশ্ছু ক্রাথকার হুতে দেখা হুবে না। একটা কেলে ক্রাথকার ইবখান। একটা কেলে। ক্রাওক বাজিল দিকে হুটিতে দারা করলো। সাপটা যদি একা একা নিক্রেক ছাড়িয়ে নেয় তো ভালো, না হয় কাল সকালে এসে যা হোক যাবহুল করা হাবে। এখন এটাকে ঘটানো সাধিধের হবে না। ভালাভা সংখ্যা হয়ে আসকা বাজি ফিরে সংখ্যা রাতে ছোট্যাট যুমা দিতে হবে এনটা।

মাঝরাজে বিলে যেতে ছবে। প্রিচমের বিলে বেয়ালয়াক প্রিমের রাতের বেলা।

জ্যাতিলমার মাটি পাচে উঠিছে ব্তিটিত। একাকার বালা। পা রাখা বাঘ না। আঠালে মাটিল কাল কালতে ধরে প। পিতিল। কাটো। মাটিতে কেয়ম সোনা গণধ।

ইনফানতে শুধু খালাই হাতে ফিবতে দেখে অধান হলো পশ্মা।

যায়া এলেছিল সবে (প্রথম খন্ত) চ

(নেতাজনী ও রাজবিহারী বস্তুর বহু দ্মপ্রাপা ও বিস্কৃত প্রায় ছবি এবং ভগ্নেশ্বলিভ)

कप्रमा-कत्रा-देन्दिता १

(দ্বুদ্প্রাণ্য ছবিসহ তথাম্*লক জাবনী-রা*থ্য) প্রকাগিত হ'বার পর গ্রিম্*ল লিখ*ছেন

अफ़्ब अग्राहात शिंह अवश् आसम्

বেইটি নিভাপ্ক সাংবাদিকতার এবং সামালিক ও রাজনৈতিক সাক্ষ্য হেডমার এক সমকান্সনৈ তথামালক মালাবান রচনা হবে)

বিঃ মঃ—আমানের সদ। প্রতিতিত ব্রু টাস্টের সভা হ'য়ে অনেক কর দায়ে উপরিউল এবং প্রকাশিতর। বইগালি সংগ্রু কর্ম পড়ান এবং প্রির্জননের উপহার দিন। নিয়মাবলীর জন্য লিখনে ঃ—

মন্মবাণী প্রকাশন

২৪।২এ গিরীগ মুখারুল রোভ কলিকাতা ২৫

N THE PERSON

আগেকার বহু প্রশংসিত ''মর্ম'বাণী'' আবার শারদীয়ায় প্রকাশিত হচ্ছে

—লিখছেন জনেক প্রবাল-নবীন লেখক-সোধিকা। স্টেপারে থাকছে গাল্প, উপান্যাস কবিডা ভ্রমণকাহিনী, গোনেগদা-গাল্প প্রবধ্ব কথকথা এবং টিন-এক্সার'দের এক বিশেষ ফিচার। সংক্র থাকেরে র্টিসিম্ব সিনেমা-বিক্ষাগ বহু- চ্য়কপ্রদ কথা এবং এডিসার নামকুর। গিল্পানের ছবি নিমে।



তৈতি হাসি টেলে বললো, টেডা কো?

ইরফান সে কথার জবাব না করে বরের
সামনের ইট পুটোর উপর পাঁডিরে বদনার
জলে পারের কালা ছাড়াতে লাগলো। পদ্মা
থবে বেরে ক্লি জরালালো। এখন ব্তিট নেই। দমকা দমকা বাতাস দিছে। গাঙ্জপালার সোঁ সোঁ পদাল বাজে। যেন ভ্রমানক
তেলি কোন সাপ ফ'সডে থেনে থেনে।
যাবলাটা খুলে রাখে ইরফান। তারপব
গামাছার শরীর মাছতে মাছতে কথা বলে।

মনভায় কইছিলো হিংয়ের পাঁর
অ ইবো! টেডা মাগতেই দেখলাম ক লিবে রা
ও'রে বাপ্রাা! হালার প্তে পাচ আডের
কম না। টেডা ভাইণ্রা হালাইতে চয়।
হালাই খুইয়া আইয়া পড়লাম।

চোথ বড কবে ভয় খায় পদ্মা।

মাগো। তুমারে হাপেই খাইবো একদিন।

ঠা ঠা করে হাসে ইরফান।

দে ভাত দে।

মাটির হাড়ি থেকে ভাত বেড়ে দের প্রসা। গণাগপ ভাত থায় ইরফান। প্রমা তাকিরে তাকিয়ে দেখে।

কি মানুষ গো; ভর ভর নাই প্রানে। ইবফান পশ্মার মুখে তাকার। খাটিয়ে খাটিয়ে শরীর দেখে। হাসে।

তর শরীসভারও তো জোয়ার লাগ**ে**চ মনে অয়!

পদ্মা মাথা নীচু করে হাসে।

তুমি আবার এহগল দাহ নি!

তক ঢক করে জল থার ইরফান। বিভি ধরিয়ে টানে। বাহি রয়। দাহি।

তারপর টান হয়ে শুয়ে পড়ে হোগসার উপর। চিত হয়ে বিড়ির ধোয়া উভয়।

হারিকলভা আঞ্গাইয়া থো।

পুম্মা ঝামটা মারে। না, আইকা রাইতে আরু মাছ মারতে ধাইতে পারবা না।

ইরফান বিভি টানে। থকে থকে করে জালো

প্যাচাইল পারিছ না। আঞ্গাইয়া থে। ছারিকল্ডা। রাইতে আর তবে জাগাম্ম না।

পানা আর কথা বলে না। কৃতি
প্রিক্তার করে ক্রিপ্র সলতের হ্যারিকেন জনালায়। ইরফান শায়ে থেকে দেখে গোমড়া হয়ে গেছে পানার মূখ। বৃষ্টটা এরকারই। ্ৰকটুতেই বাজা মেনেৰ মতে। অভিযানী হলে এটো গলি ক্লিমে মুখ সৈমেড়া করে। কথা বলে না সহজে।

কৃপি নিভিয়ে হ্যারিকেনটা পাশে রাখে পদ্মা।

তাবপর শৃরে পড়ে ইরফানের গা খেবে। কিন্তু কথা বলে না। শব্দ করে দীর্ঘশ্বনে ছাড়ে। ইরফান আন্তেত করে জিভ্তেস করে, পঙ্গোড়া কই রাখছস?

উত্তর মেলে না সহজো। আবার জানতে চায় ইরফান।

কতা কর্না কা।।

এবার কথা বলে পদ্মা। গরুর গারে রাখচি।

তারপর আবার সব চুপ্তাপ। নিরেট নীরবতা। হ্যারিকেনটা থির হয়ে স্পান আলে। ছড়ায় থবের ভেতর। সে^ট সে্লি বাতাস দেয় বাইরের গাছপালা। বিদান্থ চন্নকায়। গরে-গ্রেমেছ ডাকে। অথচ ব্লিট হয়্ন না।

ইরফানের শরীরে ঘন হয়ে মিশে যায় পদ্মা।

घरत स्थाय देवकान।

গ্রমাইয়া পড় বউ।

পশ্মা সে কথা কানৈ নেয় না। ইরফানের পিঠে হাত রাখে। আন্তেত আন্তে হাত বুলায়

গুমাইলা:?

ক্যাঁ। অস্পন্ট শব্দ করে ইওফান।

বুক কাঁপিয়ে দীর্ঘশ্বাস ছাড়ে প্রায়। 'ছথিনার পোলা অইবো'!

हाहा ?

₹!

আগের মতো হাত ব্লায় ইরফানের শরীরে। আমাগ যদি একডা পোলী অইতো!

কথা বলে না ইরফান। ঘ্রেম চোখ টানে তার। পৃশ্মা কামা কামা গ্লায় বলে,

আমারে ইটুভি ন্নারা কর না জুমি! ইরফান খুনুনার ভান করে। প্রানা ব্

হাতে ছড়িয়ে ধরে তাকো। কানের কাছে মূখ নিয়ে ফিল্লফাসে গুলার বলে

আম বে ইটু আদর মবো না গো! আদর করনে আমারও পোলা অইব! এবার বিরক্ত হয় ইরফান। গজে উঠে ব্যাস।

চুপ কর মালী। খালি রপ্সের পাচাইল। রাইরে মাছ মারতে হামু। তব লগে শিরীত করতে শবিমু না অহনে। গমেইতে দা।

মুথের উপর চড় মেরে থামিয়ে দিলো হেন। থতমত থেয়ে গেলো পশ্ম:। তথন ঘ্মের ভেতর তলিয়ে যাছে ইরফান। গ্মরে গ্মেরে পশ্মা কাদে। সে টের পায় না।

দুশুব রাতে চট করে ঘুম কেটে গোল ইরফানের।

এ রর্কম অভ্যেস দাঁড়িয়ে গেছে কয়েকদিনে। গভীর রাজে ঘুমের তেতার থেকে

কৈট যেনো ডেকে যার তাকে। তিঠ ইরফান।
বিলে মাছ উঠছে। বোরালবা পারু ধবছে।
দানিয়া ভইরা গাছে গ্রাহে!

যুম কেটে যায় ইরফানের। বাঁশের বেড়ার ফাঁকে হু হু কার বাতাস আসে ধরের ভেতর। বাতাসে মাছের আসটে গাধ পায় ইরফান। সেই গ্রন্থ বিভিন্ন নেশার মতো কাজ করে।

হারিকেন্টা উসকে দিলো ইরফান।

উঠে বিভি ধরলো। পদাকে দেখলো কাত হ'বে হয়ে ঘুমুদ্ধে। হ্যাবিকেনের অবছা আলোয় কালাব তিহা দেখা গেলো পশার চোখে। ঘুমানোর আগে প্রছর কে'দেহে শমা বোঝা হয়। নিঃশব্দে হাস্লো। ইরফান। অহনতরি পোলাপাইন রইছে বউড়া।

হ্যারিকেন হাতে উঠে দাঁড়ালো ইরজন।
না পদ্মকে জাগাবে না। টের পেনে
বউড়া আবার আপতি তুলবে। এজলা
একলা ভর করে না আনার! কিংবা
'জোয়ারের মাছু ধইরো না তুমার আনার
কছম! এডা বড়ো ভালা স্থম্য ওগ্র!

এসব শ্নলে হাল পার ইরজানের। কি স্ব ছেলেমান্বী। মাছের। বাচচা দেবে তাতে ওর কি!

ঝাপ সরিয়ে বেরিয়ে এলো ইরফান।

বাইনর দাঁড়িয়ে সেটা আবার লাগিয়ে দিলে। ঠিকঠাক করে। ভারপর আকাংশর দিকে ভাকাংলা। ম্যাটমাট জ্যোদনা উঠেছে এখন আকাংশ্য মেঘ্য চলাচল আছে। আমাগাছের মাথ্য পাতলা শাড়িতে মুখ্ ঢাকা টকটকে মেয়ে মানবের মতেক দৈয়ে ভাদার টকটকে মেয়ে মানবের টেকে দেয়ে চাদা। তখন আবহা আবার নামে।

সাপের মতো শব্দে বাত।স দেয়। আপিনার পিচ্ছিল মাটি পা কামড়ে

শরে। গোলাল ঘরের দিকে যায় ইরফান। শরের ভেতর থেকে পশ্মার বিভাবিঞ্ কথাব শব্দ আসে। ভারপর কামার। ভাই শানে নিঃশব্দে ছাঙ্গে ইরফান।

বউড়া এছেন পোলাপ ইন রহছে! গুমের তালে কভা কয় কাদে!

গোরাস ঘরে পলো থেছি ইরফান। গর্গালো লেজ ঝাপটে মানা ভাড়ায়। বকনাটা দাপাদাপি করে। হ্যাবিকেনটা উদকে দের ইরফান। চালার কাছ থেকে



ন্দুল, কলেজ এবং ইলিনীয়ানিং
ার' ও অফিলের জন্য ন্টেশনারী, কাগজ, গার্ডে, জুইং,
ইলিনীয়ানিং ও যাবতীয়
উংকৃষ্ট ছাপার কাজের সংগভ
প্রতিষ্ঠান।

কইক ষ্টেশৰারী ষ্টোর্স

৬৩ই, বাধাৰাজাৰ স্থীট কলিকাডা—

मा- १९-४७७४, ७९-७७७८; श्राम : कहात्रीतम-दावका ट्यांके वज्र-०४, दावक

পলো টেনে নামার। বাতাস দের সোঁ সোঁ কৰে। কাছে কে:থাও ঘ্যাংগর ঘ্যাংগর ব্যাও ভাকে। এক হাতে খাডের উপর দিয়ে পিঠে পলোধরে রেখে অনা হাত হ্যারিকেন বালিয়ে মাঠে নেমে স্বায় ইরফান। বাকের ভেতর উর্জেনা চিব-চিব করে।

ইরফানের আজিলা ছাডিয়েই মাঠ।

গোড়ালি ডবে যাওয়ার মতো জল উঠে গেছে মাঠে। সেই মাঠ দিয়ে ছপছপ পঞ্ হে'টে যায় ইরফান। পশ্চমের বিল ছাড়। বোয়াল পাওয়া হায় না। ধান পাটের ক্ষেতে পার ধরে বোয়াল মাছ। একটা আন একটার গায়ে এমনভাবে লেগে যায় সে দ্রটোকে একটা মনে হয়। আরু সেকি শব্দ! মান্ব কাছে গেলেও পালায় না। যৌবন কি অণ্ডত ক্ষমতায় ভালিয়ে দেয় মৃত্যভয়।

টেটা দিয়ে পীরের বোয়াল মারা হায় না!

টেটা মারলে একটার বেশি গাঁথে লা। পলো দিয়ে আটকে দিতে হয়। কিন্ত ভাতে ভয় আছে। পলোতে বোয়াল আটকে সংগ্র সংশ্যা ভেতরে হাত দিলে কামডে থেয়ে ফেলবে। বৈয়োল মাছ এ সময় পাগল হয়ে উঠে। এ যেন দ্রুক্ত বিদ্রোহ !

এপর ভেবে হাসে ইরফান।

বোয়ালের মন্ত্র তার জানা আছে। পলোর ভেতর ঘণ্টাখানেক আটকে রাখনে নবম হয়ে যায় সছ। তখন ভয় থকে না। নিবিছে। তলে আনো।

ইরফানের প্রায়ের শলেদ ছোট ছোট মাছ ছাটে পালায়।

বাঙ লাফিয়ে সরে হায়। ঘাসবনে চুট-পটা শব্হয়। খোলা মাঠে জলো বাতাস গড়ায়। মরা জ্যোৎদনা থির হয়ে থাকে। প্রান্তরে বিদ্যুৎ চমকায়। মেঘ ডাকে। কিব্ বাণ্টি হয় না। বাদ্রি বড আশ্চর্যা গভীরতায়

দ্রের ছাড়াবাড়ির সামনে আলো দেখা যায় টিমটিয়ে।

কেউ মাছ ধরতে বেরিয়েছে। দেশ ভরে গেছে মাছে। মান্বরা সেই মাছ ধরছে। অথচ পশ্মা কি। জোয়ারের মাছ ধরতে নিষেধ করে।

ছাড়াব্যাড়িটা বায়ে রেখে বিলের দিকে এগোয় ইরফান।

বিলের প্রাণ্ড থেকে ক্রমশঃ জমট হতে শারু করেছে পাটকেত। খন আঁধার ঘাপটি মেরে বঙ্গেছে পাটকেতের ভেতর। পাওলা জ্যোৎস্নার অস্তির বুঝা যায় না। আস্তে আন্তে হাটে ইয়ফান। পা ছ'রের ছ'রেয় মাছ 6'@ याया। मद्म मद्म आकृत्मान कदत देवकान। টেডা আনকে কাম তাইতো। মাছে ভেইরা গ্যাছে।

পাটক্ষেতের ভেতর দিয়ে সর, আল পথ জলে ডোবা। ঘন পাট গাছের চাপে পথের আহিতত্ব বিলানি হয়ে গেছে। ত্বাও সেই পথে 🗕 চিনে চিনে হাঁটে ইরফান। এতো বিলে কেউ আসে না মাছ ধরতে। মান্ধরা ভর পায়। জোয়ারে বোয়ালের সংক্রা ভূতের আছর থাকে। ক্ষপালে সিদার রং টিপ-পড়া অতিকার বোয়াল মাছ মরিচিকার মতো পথ জুলিরে গভীর জলার ভূবিয়ে

মারে। এরকম প্রবাদ আছে। মান্বেরা ভা বিশেষ করে। হাসি পায় । ইরফানের। হ্যান্ধরা কি বোকা।

এখোন বাতাল নেই।

পাটকেত ঘুমের মতো মান। অথ কান পাতলৈ আদ্বর্ণ রক্ষার শব্দ পাওয়া যায়। আসলে মোনতার ক্রতরও শব্দ 0:1725 1

কিন্তু পাটক্ষেত এমন নিঃস্তত্ত কেন? বিশের মাথামাঝি চলে এসেছে ইরফান। অথচ বোয়ালের পরি কিংবা তার কোন আভাস প্য'তত পাজে না। মাছ কি হলো। দারের চটানে শেয়াল ভাকে।

আখ ক্ষেত্রে অলপ জলে শেয়ালদের চলাচল স্পণ্ট হয়। ইরফান নিশিপাওয়া মানাধের মতো হাটি। পায়ের কাছে চেলা-লাছ তির-তির করে। জ্বলো বাতসে টেঠে আসে বিল থেকে। বিভিন্ন নেশা পায়। কিল্ড বিভি ধরায় না ইরফান। প্রস্থার কথা মনে আসে। পশাষ যেন যে য়ারে মাছ! পীর ধৰতে চায়!

হঠাং খলখল শব্দ হয় পাটকেতের কেন্দ্ৰৰ।

সচেতন হয়ে উঠে ইরফান। দাঁডিয়ে পড়ে। বোয়ালের পার না হয়ে যায় না। কাঁধ থেকে প্লো নামিয়ে হাতে আনে ट्रेंद्रकारा श्रादितकरो। कुटले श्रद्ध विकारन মতো নিঃশবেদ এগোয়া শর্কের উৎস থেয়াল করে। কিণ্তু কাছাকাছি গিয়ে শব্দ পায় না। স্থির হয়ে দাঁডিয়ে প্রভে। কান খাড়া করে শব্দের জন্য। আশক্তো বাতালে পাটের

পাতা শরীর ছ'বো ছ'বো খেলা করে তাব। কাছাকাছি শব্দ হয় আবার। একটানা খিল ধালথক শব্দ। আগ্রের মরো এগিয়ে ইরফান : কিন্ত কাছাকাছি গিয়ে করতে পারে না কোথায় শব্দ। লাডিয়ে পড়ে। কান পেড়ে থাকে। ভৌক্ষা করে। এবার শব্দ হয় ডাল দিতে। সে এগিয়ে হায়। হাছ দেখে না। আবাৰ দাঁডায়। আবার শব্দ হয়। এবার পেখন। খুড়ে দাঁডার ইরফান। শেছন দিকে হাটে। কিল্ড মাছ দেখে না। উদ্মীব হয়ে দাডিয়ে

এক সময় সামনে গেছনে ডানে বায়ে অসংখ্য বোল্লালের খলখন শবদ পেলো **ट्रेड्सन । भिक-विकिक स्त्राम शाहित्य राम्भला** সে। এক পা সামনে এক পা পেছনে ভানে, বায়ে চারদিকে চরকবাজীর মতো ঘড়েতে শার করলো সে। অথচ একটা রাছ দেখলো না। শা্ধ মাছের 'অবিরাশ খলখল শব্দ তার ক্নায়, ভাডে চললো। এ সময় মরা চালের ক্রলায় ঘন কালো মেঘ এসে থির হলো। খাড়া হয়ে আধার নামলো বিলে। এবং মাছের শব্দটা এমশং সারে যোগত শারা করালো দারেও देशकास क्रिके मन्द्र (अशान कर्त्य क्राइला। কিন্দু সে হতে৷ এগোয় শম্পত ততো সয়ে যায়। নে**শাস** মতো কিছ, একটা কাল করে তার ভেতর। সে এগোর। শব্দ সরে যার। সে এগোয়। জল কুলশ গভীর হয়।

বাণী- প্রকাশের দঃসাহসিক প্রতেশ্টা বাশ্তবায়িত হল-বাংলা ভাষায় স্ব'ল্ল্ম প্রকাশিত হল: বিশ্ববিশ্বাত গ্রাথ ঃ

কাল্মাক্সের 'ক্যাপিট্যাল'

প্রধান সম্পাদক ও অন্বোদ क: अक्षाक भीष्य मामग्रा-क বিশ্ব অথনিশীততে আলোভন স্থিকারী সমাজতালিক দশনের ভিত্তি মূল হিসাবে সকল প্রণীর মান্যের অবশাপাঠা মহামূল্য প্রণ্ড। এই প্রণ্ডই মানামের চিন্তাগারা সঠিক পথে পরিচালিত করার তত্ত্বমূক, **তিওঁর। এ প্রশে** ছাড়া সমাজভাগিরক চিন্তাধারা অপ্রণাই থেকে বাবৈ। স্বান্তরের মান্য বইটি সংগ্রহ কর্ম। ৬ থাকে সম্পূর্ণ। গ্রাহক মূলা প্রতি খনত ২০:। 😜 দিয়ে গ্রাহ্ক হতে হবে। প্রথম খণ্ড গ্রাহকদের দেওয়া হচ্ছে।

ডঃ হরপ্রসাদ জির সংপাদিত

भाता । ামত সমগ্ৰ

तहनावली, देश्तकती श्रम्थ, क्षतम्य ७ वाय कीत्र वारमा बहनामह आहे द्वापन প্রণাধ্য রচনাবলী প্রকাশিত ইছে। এতে থাকবে জীবনী আরবী ফার্মী শব্দ वावशास्त्रत श्रायक जानिका, श्रान्थ शक्षी कि हेजाप्रिज्ञह मकुमक्य वह किहा। ২ খনেড সম্পূৰ্ণ। গ্ৰাহক মূলা প্ৰতি খনত ১৫° । ৫° দিয়ে ৩০ মতে স্থান गरका आहेक इंट्ड इरेंदे। भएकाब आएम श्रवम वन्छ देवजुद्दा। মনি অভান পাটানোকও প্রায়ক হবার লুভা কেন্দ্র ঃ

वानी अल्हाम अवध्यक्ष अर्थिक भारतने कांत्रनाका--> ३



ত্ব: তাকে॥

সমরেন্দ্র সেনগর্পত

গীপকা নৈই

অব্ তাকে কথা বলতে দাও।

সে বলুক কলের স্বজ্ঞ ভাষা
গোধতে পারলে লিখুক মেমের বে কোনো অন্বাদ।
তাকে পূধ্ বলা হোক

টেউ মনেই গভীরতা নব

নর সম্মুদ্রমাস্থ কোনো
অনিবার্ষ নদী;
গ্রামীণ রহস্য থেকে যাব বিশ্চুতি খালহে মহাদেশ।
সে রটনা কর্ক তার বাজিগত প্রাথমিক স্নান
প্য এবং শ্রীর ভোবানো, স্বশ্গাণী ফেদ ফেলে আসা।

গৈকা নেই
তব্ তাকে লিখতে দাও
আয়ুর নতুন অহংকার:
তার লবীর অস্ভূত বেড়িরে ফব্ক
লচেনা মানুষে
চেনা নিশ্বসের শব্দে;
প্রাশ
ভব্দপত্তনও গ্রাহ্য না করে ফিরে যাক
ভিয়েনাড়ী শৈগকের বভ্যাথা চিংকারের কাছে;
ভব্লের ভিত্র জন্দে
বেখানে রমণী আক্ষো
ভব্ননির রাত্যে এক রুখ গোখা নদী।

সতার ভেতরে॥ वीर्णक बाग्र

নির্দ্ধন যশ্রণা নিয়ে একা থাকা যায় না জীবনে, চোথের জলের গান পাাখর ওড়ায় ভেসে যায়— নিঃস্পাতা কারা তোলে দেহের গোপনে; কালা করে দেয় এই মাটির শ্রীর, জলের বিরহে মাটি চেয়ে থাকে নরম বিকেলে

নিবিড় সব্জ, আর মোরণ ফালের লালে চুলের শ্বাসের গদেধ ডুবে গেলে ফালের বাকের ত্জা জাড়ে থাকে সারা রাত, নীরব পাতার ফাকে নিপ্রীথিনী চমকে ওঠে— লোকাল টোনের আলো তেখ্টে যায় দারে

ঝবা পাপ'ড়ব নিঃসংগ বাতাস মাটি কামে েড়ে থাকে: ওপরে টেলিফোনের ভারে কাক, কা-কা . প, চড়ুই

দিবস বজনী নিঃসংগ যন্ত্রণ শুধু সতায় ভেত্তে মুখোমখি কথা কয়।।

সুখ্॥

অমরনাথ বস,

মংলাহীন জীবন নিয়ে বিংযে লাভ

দুখুখ দুঃখ দুঃখ কেবলই দুঃখ আমার
দিনভোর রাতভাব নিলাজ বেহায়া শরীর ভূবে যায়

চোথের কালোজলে
ম্লাহীন জীবন নিয়ে কিয়ে মালাবোধ!
কেউ তো কার্র কথা বোঝে না জানে না মানে না

শুধু নিবিদ্ধেই শেষকৃতা
বালা...কালা...কালা...কেবলই কালা আমার

ব্কের জমাট অংধকারে
আজ কাল বিংবা প্রশ্ হলেই শেষ পোশাকী জীবন
ম্লাহীন জীবন চিনে কেবলই অভিযোগ অন্যোগ

রভের ভিতরে রভেরই ক্রম আন্দোলন কণ্ঠনালীতে বেনবা গে'থে দের এক সংক্রম আলপিন

Amaplot, anaplot.

প্ৰেয়ের প্রতা কিচ্ছ

শৈকসপারার যে মহাকবি ছিলেন এটা বোজার জন্যে তার মোটা-মোটা বইগালো বটাবাটি করার প্রকার নেই, এমনাক রাজ জেলে নোটবই মুক্তব করাও বাহালা, তার দ্যুএকটা উদ্ভি কিব্যা বইপালা টের পাওরা যার। যেমন ধর্ম-অকলে অকলে অরল দাটে এন্ডন অরলে বাড়ালার বাড়িতেই এই মহাবাকাটি দেরাজে বেলা পোলটার সাইজের বরজ লোভান করারাজ লোকা। আনারাজ্য লোকারা জিচিত। কিব্যা ধর্ম — লাভ্যন কার্বরক্ত লাভ্যন ক্রাব্রক লাভ্যন ক্রাব্রক বিশ্বর বাড়ানিক ক্রাব্রক ক্রাব্রক লোকারাজ লাভ্যা আনারিত ক্রাব্রক ক্র

পঠিক লক্ষা করে দেখেছেন নি চনই, দুটি এগজানপল্-এই প্রেমিক কথাট কমন? না হয়ে উপায়ই নেই। প্রেমে প্রেক্তা মান্ব এমন বিগুলিভ অবস্থায় এসে পেটছা যে জলের মতো যেকোনো পাতে লেকাভই দিবিয় সেই পাতের তেহারা নিয়ে নেয়।

তা, কথাটা উঠল কী করে তা বিল। কিন্তু তার আলে ঐ ইংরেজি নামের একটা বাংলা করে নেওয়া যাক। বাংলারটা এইরকম দড়ি করালে কী হর—গ্রেমের পরিশ্রম পরিশ্রম কোটা একটা, থাটেমটো লাগছে। কিন্তু ওটা করতে হরেছে আলিটাবেলামের খাতিরে। শেশস্পীয়ার কেরম লাভস লেবারজ লন্ট বলে এলা-এ কর্লারী করেছেন, আরিম তেমনি শা কিয়ে পালবোর ক্রমিছলাম আর কি। কিন্দা থাকে। একেবারে প্রাক্ত বাংলার ভাষা পালে কেরা, বলা, বলা হাক, প্রেম করতে পালে ক্রেণ, বা

এবার অসেল কথায় আসা যাক।

সেদিদ তো তাইস পঠিক' বাল আপনাদের প্রেম করতে ডাকলাম তারপর সেক্তগান্তে নিজেই বেরিয়ে পড়লাম। একটু লম্জা-লম্জা কর্মজন বাট। ভা অমন ইয়।

্ৰ কটা क्राथाय त्वन क्षष्टे धवत्नव পড়েছি মুনে পাঞ্জে। জোনো क्रक গুলপুডেই হবে ৰোধকার CET TO tercut-ছিলেন কে যেন এক পরেলে পাপী যোগে অনেকবার প্রেয় াটয় করেছেন ভ্রচালাক ন্তুন করে প্রেক্তে পড়ে বেশ একট হীতাবনত হয়ে উঠোছদেন। দেশক মন্তব্য ক্রছেন, স্মেতি থেকে কোট কর্মি ---নায়ুক সর্বাট যাদ্ হাদ্ হাসিতেভিলেন। তা হাসিবেন নাইবা কেন? সিন্ধির সর্বং খাউলে অথবা জীবনে শুনীলোকেব আনিক্ষি ছটিতে পাকিলে ঐবাপট চর। না চাসিয়া তুখন পারা হাহ না। স্ক্রীবনে আমি আনেক এরাপ দেখিয়াভি: পাঁচ নংসর মেডি^{লেরক} নারীদেশতার সূক্^ক करमान भारत पाकारी নতুসাই যিত্রি কাটিয়া-কটিয়া বাটিয়া। ল'ুটিয়া দেখিয়াভেন কচিলকও জালি বিবাহের দিন টোপর-মাথার হাসিতে रप्रीशशर्मी छ।'

ব্যান একবার ব্যাপার। তা আফিৎ সেদিন কলকাতা নাননী নাগরীর সংক্র ক্রিণ্ডি আশানাই করার মানসে বেরিয়ে-ভিলাম। আকাশে সোদন চাঁদ ছিল কিনা দেখি। নি। কিল্ড বাস্কাখাটে নিয়ন আলোর আটিফিলিয়াল জেনংস্নার ঘাটতি ভিল সা। মনটাও বেশ একটা উড়-উড় ছিল আব জায়গাটা সাদান' এজিনিউয়ের ধার ঘে'বে হওয়ার ফলে ফাটপাথও বেল ফাকা ছিল। (প্রসঞ্চাত একটা পরোপকারের লোভ সাৱালাতে পার্বাছ না পাঠক এজনে করা করবেন। সাদার্ন এডেনিউরের ফটেপাল নেশ প্ৰশাসত কিন্তু একটিও বাপতি দোকান মেই। যদি বানে করা হর কে এখানে লেখন-জন কর আনাগোনা করে ভাতকৈ ব কাডে হাবে হকারদের মার্কেট সাডে নিগাড়ে নর ৷ *जाकव मिक्रवेटल अकारन क्षतः विद्याप का* व িকেলে শিশ্ভর লোক চলাচল করে। দোক্রাড়া আন্দেশালে গোকালয়ও কম সেই। উৎসাহী দোক্ষানেজ্ঞরা ভাড়াভাড়ি ভংপর হন এবং খালি ফাটপাথের অপ্রায় বন্ধ कहान !)

Section of the Control of the Control

্ডারপর কী চল বৃদ্ধ কি।
বুণারিন্দু দেশ কী আন্ধান্তা কিটা
সিজ্ঞিত রুখেশেজ পুশুলেল রিজিস স্ফাশেজ্জ ভাষাক বৃদ্ধান রিজিস স্ফাশেজ্জ ভাষাক বৃদ্ধান বিভাল কিটার ক্রিয়া একালাস বিশ্ব কৃতিকে ঠাতর ক্রিয়ার একালাস

কী পার্ছের রা কো ২ খুন্র স্বার্টা পার্ছ বার্ছির পার্ছির পার্ছির পার্ছির পার্ছির ক্রিয়া কাল্য ক্রিয়া কাল্য রাধার পার্ছির ক্রিয়া কর্মার বার্ছির ক্রিয়া ক্রিয়া ক্রিয়া ক্রিয়ার ক্রেয়ার ক্রিয়ার ক্র

হতিমধ্যে আরো মৃক্ষা কড়িরে পাঞ্চার আরুপথারের রাছান্যায় 'এনক্ষার টর্চালাটি ছিল, ভারই আলোর মেউট পোলাম

চাকানিহাীন থাঝারির গড়েতা পা-মান্তর পড়ে আছে এক বাহি এবং ভার হাছে গড়া সেভা দি কিং, আমার সেই হারাজিটি মানিবাগারি।

প্রেমের প্রজা কিস্তি এই **অব্য** রইজ

_}& VA



् नाःलात् भनत्

প্রকৃতির মার

উত্তর বাংলার প্লাবনের পর দক্ষিণ বাংলার ঘ্রণিওড়।
শ্বাধীনতা দিবসে এই প্রকৃতিক বিপ্রথারের প্রধান শিকার
ক্রেদিশীপারে। কিন্তু ২৪ প্রকৃণাতেও ক্ষরকাতির পরিয়াণ
ক্রম নয়। এক মেদিনীপারেই জন বারো প্রণ হারিয়েছেন
ব্রেদেশীপারের লাথখনেক লোক বারোপার হারিয়ে সর্বাধনীপারে লাথখনেক লোক বারাপার হারিয়ে সর্বাধনি প্রারে লাথখনেক লোক বার্বাড় হারিয়ে সর্বাধনা প্রারের বিশ হাজার বাড়ি ধঙ্গে গেছে। নির্লায় মান্ত্র
আপ্রের বিশ হাজার বাড়ি ধঙ্গে গেছে। নির্লায় মান্ত্র
আপ্রের ঘাজারেন উচ্ছ জায়গায়। শ্বুল কিবো ঐ ধরনের পার্বা
বাড়িতে। সরকারিজাবেই বাংলায় আবার করা হচ্ছে য়ে, এত
ভীষণ ঘালিক এই বাংলায় লাকার খ্র বেলি হয় নি:
বাড়ের সর্বাধনা আবার প্রবল ব্লিট, ফলে নদীতে জল ব্রেড়ে
সর্বাধিতেই।

একদিকে এই প্রকৃতির মার, তার ওপর দামোদর ভালি কপোরেশন ছেড়েছে জল। ব্লিপড়ের পর দ্ব দিন না প্রেরোতেই মাইথন আর পাঞ্চেত জলাধার থেকে ছাড়া হয় ৫০ হাজার কিউসেক জল। আর তারপরে আরো কিছ্ সব বিলিয়ে প্রায় সোমা লাখ কিউসেক। ফলে বিশেষ করে তমপ্রক আর ঘাটাল মহকুমার অবস্থা কাহিল হয়ে পড়েছে। প্রায় পেড় লাখ একর চাবের জনি জলে ডবে যায়।

এই বিরাট বিপর্যাহ্রর মুখে সন্তেরে বড় প্রয়োজন গ্রাণের ব্যবস্থা। কিন্তু সেই ব্যবস্থাকে মোটেই হথেন্ট বলা চলে না, যদিও সরকারের তরক থেকে বলা হয়েছে থ গ্রাণের ব্যাপারে কোনো গ্রুটিই থাক্রে না। একে তো ভেলা কর্তুপিক এত বড় একটা বিপ্রায়ের জন্যে তৈরি ছিলেন না, তার ওপর রাণের কাজ চালামোর মতো সাজসবলামাও তাদির

হাকে যথেক্ট নয়। যেমন দরকার যদি হয় দশ হাজান ত্রিপুলের, তবে তাদের হাতে হয়ত ছিল শ' তিনেক। রাজ্য সরকার অবশা বিশেষ সাহায্য বরান্দ করেছেন মেদিনী-প্ররের বন্যাকবলিত মানুষের জনো ২৫০ টন খাদাশস্য, দুহাজার করে ধাতি আর শাড়ি, দুহাজার শিশাদের পোহাক পাঁচ কুইন্টাল গ'ুড়ো দুধ। বলা বাহ,লা, প্রয়োজনের তুলনায় এই বরান্দ যথেন্ট নয়। ফলে ঐসব এলাকায় জিনিস্পরের আগনে দাম। সাহায্যের জনো কেন্দ্রীয় সরকারের কাছে দরবার করা হবে স্থির হয়েছে। যে-সব এলাকায় ঘ্লি'ঝড় হয়ে থাকে সেথানকার দুদ্শা লাখবের জনো কেন্দ্রীয় সরকারেরই একটি কমিটি নানারকম সম্পারিশ করেছেন। ঐসব এলাকায় আগে থাকতেই **যথে**ত থাদ্যশাসা, কাপড়টোপড় গ্রিপল ইত্যাদি মজতুত করে রাখার বাবম্থা করার জন্যে সংপারিশ করা হয়। কিন্তু এ-সব কিছুট হয় নি। আর গ্রাণের জন্যে কেন্দ্রীয় সাহায্যও চট करत পाउता शारव वरल भरत इय ना। উত্তর বাংলার वैभाग নিয়াল্যণের জান্য দিল্লী হাত উপাড় করতে ইচ্ছাক নয় বলে আলেই জানিয়ে দিয়েছে। অথচ উত্তর বাংলায় अनार्क्ट व्यन्त हमाह यमात जान्य । विदास प्रशननात বাধ ভেঙে জল এসে চ্কেছে মালদহ আর দিনাজপুরে। মুখামুশ্রী ক্রেকজন সহক্ষ্মীকে নিয়ে আবার বনাতে এলাকা দেখে এসেছেন। এদিকে বনার হাত থেকে ম্পিদাবাদও রেহাই পায় নি। এই জেলাতেও হাজার পদোর একর চাষের জনি জলের ওলায়: প্রারু আড়াই হাজার খরবাতি ধ্রংস হায়ছে। অথচ রাজা সরকারের হাতে ক্রাণের টাকা বাড়ে•ত। বাজেট বরান্দ ছিল সাড়ে পাঁচ কোটি টাকা। এর মধোই খরচ হয়ে গেছে সাত কোটি টাকার মতো।

আলো এবং অন্ধকার

যেদিন রেশনের লোডশেডিংরের থেকে অনিয়মকে বাগে আনার চেটা সূর্ হওয়ার কথা তার আগের দিনই বৃহত্তর কলকাতার ব্যাপক এলাকা অংশকারে ভূষে গেল। প্রথম দুঃসংবাদ এলো ব্যা**ভেলের তাপ্**বিদ**ু**ং किन्द्र थाएक। अधारन मूर्वि व्यक्तारात विद्धेत प्रथा मिराहरू ছিদ্র। ফলে দ্বতি ইউনিট বিকল। প্রায় একই সংক্র দ্বাপার প্রাক্তর বিভিন্ন বিভার একটি ইউনিট অচল। র্থাদকে সি ই এস স্থিত ম্লাজেড় কেন্দ্রে মেরাম্তির জন্মে বিজ্ঞানী উৎপাদন বন্ধ। রেশন চাল্ হওয়ার গ্রাথে একই मत्ना এই विभागं या. करन न्वास्त्रादिकसाराई भरम्बर प्राथा प्रश যে এর সপো কি কোনো নাশকতার ব্যাপার জড়িত নাকি अमे माम्हे भूषावाः किन्छ সরকারিভাবে কোনো নাশক ভার কথা স্বীকার করা হয় নি। বজা হ'ছে, ব্য়কারের এই বিশদের প্রধান কারণ থারাপ কয়সা। ভাপবিদ্যাৎ কেন্দ্রের करना व-धरानत कराना प्रतकात छ। इमानिर मिनाह ना বিশেষ করে কর্মলা থান সরকারের হাতে যাওয়ার পর। গুলিকে বাদেখনের চারটি ইউনিটকে একই সংগ্রহমাগত

চালানে ও দৃখিটনার একটা কারণ। বিদ্যুৎ ঘাটতি মেটাতে গিয়ে কোনো ইউনিটই নিয়ম অনুযায়ী বিশ্রাম পাচ্ছে না।

রেশন চাল্ত্ওয়ার মাথে বিপয়র বুদি রহস্কনক মনে হরে থাকে তবে তার দিন দুয়েক পর থেকেই অবস্থার নাট্কার উন্নতিকেও কিছ্টা "দাবোধা" বলে মনে হতে পারে। ধে-যোগানের ভিত্তিতৈ বিজ্ঞাী রেশন চালা হয় তার তলনার প্রথম দিনে ঘাটতি দেখা দের প্রায় ২৫০ মেগাওয়াট। কিম্তু স্বাধীনতা দিবসের পর থেকে যোগান রীতিমতো ভালো। ফলে লোডশেডিং একরকম , দরকারই হয় নি। দিনে প্রায় ৫০০ মেগাওয়াট বিজ্ঞলী অনেক দিনই বৃহত্তর কলকাতার কপালে জ্যোটেনি। কীকরে সম্ভব হলো এই "অসম্ভব" ? সব উৎপাদন কেন্দেই নাকি এখন প**ুরোদমে বিজ্ঞলী তৈরির চেন্টা চলছে** । তবে ব্যালেডলের मत्ना न्यांचेना अहे मृथाक त्य-त्कातना स्ट्राउटि वानगण করে দিতে পারে। এদিকে রেশন ব্যবস্থা অন্যায়ী যাতে मकः विक्रमी वावशात करतन स्मिन्दक नक्षत ताथात करना সরকারি কর্মচারীরা কল-কারখানা ও পাড়ায় পাড়ায় যাবেন বলে সরকার ঠিক করেছেন।

চान-िष्ठा

এই বাংলার খাণারবোর চড়া দার নিরে সকলেই উপিবন্দ, তব্ তার মধ্যে প্রদেশ কংগ্রেসের উপেপের একটা বিশেষ গ্রুত্ব আছে। কংগ্রেসের কর্মাসমিতির সপ্তার মুখামাণ্টা নিকেই বলেছেন, খাদোর অক্ষা জরাবহ। সরকারের হাতে বা খাদ্যালাল্য আছে তা দিরে বড় জোর সেপ্টেম্বর মাসটা রেশন বাবশ্বা টিকিরে রাখা বাবে। ফিণ্ট অকটোবরে দিল্লার কাছ ধেকে বাড়ভি চালা-গ্রম না পেলে চলবে না।

বিভিন্ন জেলার খাদ্যবিস্থা নিরে কর্মসমিতির সদস্যের। যে উদ্বেগ প্রকাশ করেন তা অকারণে নর। প্রচাধারণের চালের দায় এখন আশ্মা। এই সমরটা ঘাটতিরই সময় কলে প্রতি বহরই চালের দায় বাড়ে। কিন্তু এ-বছরেন মতো আশে কথনও বাড়ে নি। বকুড়া বা প্রেলিরার মড়ে। গাটিত এলাকাতে তো দায় চাড়াছেই প্রতি কিলে চার থেকে সাড়ে চার। দায় চড়াছে বর্ধমান-বীরভুমের মতো জেলাতেও, বেগালো উদ্বন্ত এলাকা বলে গণা হরে থাকে। ধান-চাল চলাচলে যে কর্ডান ব্যবস্থা চালা, ছিল ভা তুলে

দেওবাদ পরও অবশ্যার উমতির কোনো লক্ষণ দেবা বাছে
না। পুর্লিরা-বাকুড়া থেকে হে-সব খবর আসহে তা
ভরাবহ। ঐসব জেলার অনেক এলাকার মানুব বেল কিছ্
দিনের মধ্যে ভাতের মুখ দেখে দি। আটা জুটলে খাঙ্গে,
না হলে মাইলো।

ু প্রদেশ কংরেদের সভার সরকারের খাদ্দানীতির সমালোচনা শোনা বরে। ধান-চাল সংগ্রহে সরকারি বাপ্ততার কথা মুখ্যমাণীও শ্বীকার করে দেন। সভার অভিবোল ওঠে, জাতদার, মজ্তদার ভারে চালকলের মালিকেলা বিজে দিরারের খাদ্দা সংগ্রহের চেণ্টাকে বান্দাল করে দিরেছে। নিধারিত পাঁচ লাখ টনের মধাে চালকলের মালিকদেরই দেওয়ার কথা ছিল ভিন লাখ ৬০ হাজার টন। কিন্তু তারা দিরেছেন মানু ৫৬ হাজার টন। কার্কু তারা দিরে লাকোনো-খাদ্দালা উন্দার করা সন্দেবে বর্না দেইছিল্ন এ-ব্যাপারে ছাত্র্বেকদের এণিত্র আলতে ভাক দেন।

জাতীয় বিশ্ববিদ্যালয়

কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়কে জাতীয় বিশ্ববিদ্যালয় হিসেবে ঘোষণা কমার জন্মে একটি প্রশ্তাব শেষ পর্যশ্ত সেনেটে গ্রীত হজো। কিছ্দিন আগে দেনেটের বৈঠকে এই প্রস্তাব নিয়ে আলোচনা সূর্হয়। কিন্তু অধ্যাপক নিম্ল বস্ প্রস্তাবটির বিরোধিতা করতে উঠকে সভায় হাজির একদল ছার বিক্ষোভ জানাতে সূত্র করে। ফংল সভা পণ্ড হয়ে যায়। কিন্তু যে বৈঠকে প্রস্তাবটি গৃহীত হলে। সেখানেও বিরোধিতা কম হয় নি। অনেক সদস্টে চেয়েছিলেন, এই বিষয়ে আলোচনা আপাতত মুক্তুব থাকুক। বিশ্ববিদ্যালয় অর্থ মঞ্জুরি কমিশন কর্তৃক নিষ্ একটি কমিটি (গণি কমিটি) এ-বিষয়ে একটি রিপোট দিয়েছেন। সেই রপোটাটি সরকারিভাবে এখনও প্রকাশিং হয় নি, যদিও "বিশ্বস্ত স্তে" স্ব স্পারিশই জালা হরে গেছে। তব্ সেনেটের সভায় অনেক সদস্য বলেন হে ঐ রিপোর্ট প্রকর্মশত হওয়ার আগে কোনো প্রস্তাব গ্রহণ ঠিক হবে না। থকী ভারেক বিভকেরি পর প্রক্তাবটি গৃহীত হয়। সনেক সদসা যে এই প্রস্তাবে আপত্তি করেছেন তাং কারণ ডাঁদের আশাধ্কা, এর ফলে ক্লাকান্তা বিশ্ববিদ্যালয়ৈর শ্রাধকার **ক্ষার** হবে, কারণ কেন্দীয় সরকারের খবর*ন*ার বাড়বে। ক্লিন্ড প্রস্তাবের সন্নথ কের। বলতে গাইছেন, বলকাভাকে জাতীয় গ্রেছেপ্ণ বিশ্ববিদ্যালয় ঘোষণার মানে এই নয় যে এটি কেণ্দ্রীয় বিশ্ববিদ্যালয়ে পরিগত হবে। এর ফলে কেন্দ্রীয় অথসাহায়। পেতে তা সত্তেও কলকাতা দুবিধে হবে ঠিকই কিন্তু বদ্ববিদ্যালয়ের ওপ্র রাজা সরকার ্রান্ধয়ার বন্ধার থাকবে, এগ্রম ব্যবস্থা করাও সম্ভব। তবি পাৰ কমিটি তো শংধঃ কেন্দের কাছ থেকে বৈশি টাকা পাওয়ার পথই বাংলান মি। সেই সংলে বিশ্ববিদ্যালয়ের তে আন কাঠানো বদলেরও স্পারিশ করেছেন। সেই স্পারিশ প্রেটিত হলে কলকাতা বিশ্বিদালেরের এতিরার এখনকার তৃসমায় খাটো হবে ৷ উপাচার্য ডঃ স্তোল্ডনাথ সমূত ভাই চাল তার মতে, বিশ্ববিদ্যালরের আগ্রের মর্মানা ফিরিয়ে আমার**্সেটাই হতে পথ**।



ক বিনিয় শেষ ভাষৰ

মূর্চ জার্মান্ট প্রধানিক। ন্যাসর শ্রীকিডি জিল গোনে যে ভাষণ বৈষ্টাই ছিল এটাইস্বাহ্ন হৈসাবে শ্রীকারণ ভবি শেষ ভোষণ।

জ্ঞান এই ভাষানের একটা উল্লেখনোগ্য ক্লানিই যে, তিনি নিবাদনে টাকার খেলা ক্লানিই চলছে ভাগত উল্লেখ্য প্রকাশ ক্লানিই একটা বড়া টাকার এই ক্লান্ত তিনি বলোছেন। এর আরো আর ক্লান্ত এমন উচ্চ মহল থেকে নিবাদনে ক্লানিই প্রকাশ ক্লানিই প্রাচিত্র

্ শীশির এই ব্যাসারে হ'্নায়ার করে কিয়ে বছাছেন যে সন্ধান্ত রাজনৈতিক দলেও করে করাছেন থে সন্ধান্ত রাজনৈতিক দলেও করে হালে। করি করিছেন, এই সন্ধান্ত রাজনেবলা ইটকান্ত করা না হলে তালেক সম্পান্ত বালিত আন্তান্ত ব্যালিত আন্তান্ত হালিত স্থানিত হালিত বালিত হালিত হালিত

ন্ত্রীদিনি তরি এই ভাষণে কাল টাকাল ট্রোমনারকা ও মানুস্ফিতির বর্তুদ্দ কঠোর বারক্থা অবলন্দর্ভার আহ্মন জানিমেছেন। বাজার দদ্দ করাবাব জন জিন খাদ্দাসাসহ সমত নিতাপ্রয়েজনীয় দ্বার সাঠ্য সরকারি মানুন রাম্পা গড়ে ভুলান্তে বলোকেন। প্রামভারতেন স্পারি-ক্লিপত উম্মানের উপর কোল দিয়ে ভুনি ইলেছেন যে, দানিদ্রা ও বেকানির চ্যালেজেন অক্যান্ত উত্তর এটাই।

ক্ষেতেথানারে ও কলকারখানার কর্মান্ত ক্ষমরেডদের সাবোধন করে প্রীগারি বলেন ভারা ক্ষেম উপার্জাঝ করেন যে, দেখা বখন অথ্যিনিত্রক সংকটের মধ্য দিয়ে থাক্ষে তথন জিলোগ্য সংকটার মধ্য কান কান্ডাট্ট উপার্গাল্য সংখ্যার ধ্যাখিত বা কান-জাট্টট উপার্গালনের ব্যাঘাত ঘটারে ও আত্মঘাতী করে। মুলাফাতি ও উচ্চনাল্যের মিকুশেশ জ্বাহি করার ছাতিয়াগ হল জাবাহত ইংপালন, বিশেষ করে থাদাশস্য ও মনানা জাত্যবাধ্যাক প্রণার ।

্লালকেলায় পতাকা উভোলন

ি লালকেয়ার প্রাকারে ভাতীয় পতাকা উল্লোলম করে বাধীলয়া নেবসের অন্যতানে অধানকেয়া প্রীমতী ইন্দিরা গাল্ধী বলেদ বৈ পেশের কর্তমান অধ্নৈতিক সংকটে হতাশু মা হয়ে সমগ্র মাজিকে এই সংকটের বোজাকলা ভ্রত ছবে। ভাজাৎ রাণায়র দের জনা লাভ গঠনো লাভ যোগ দিতে ও রেশ্ব আনার অসলচেও জাভির প্রাণাগরি মন্ট ভরে দিকে দেইসন ন্যায় ও অসদা চারের ব্যুত্থে যুত্থে সামল হতে ভিনি বেশ্বর মানুর্যেন প্রতি আহ্বাম জানান।

নিতাপ্রবাজনার জিনিসগরের অভ্যাত মান্বরে যে কণ্ঠ হছে সেকখার উর্বেখ করে প্রধানরতী ব্যাসন্ত বি প্রশাসকার সামান্যালয় কর্তার আছে। বেসার জিনিস অত্যাসভাক নস সেগালি বাদ দিয়ে চলাব চেটা করতে হবে। অভ্যাত খাদাও বদলাতে হবে।

বিহালে বাজনৈতিক অনিশ্চরতা

বিহাণের মানার বখন বন্যার ভাসকেন ভথার সেখানকার রাজনৈতিক ভবিষাৎ নিয়ে এতন ক্রপনাকাপনা গরে হারেছে।

প্রচেশ , কংগ্রেস a Tibe 'বচাৰ **ুখভা**রে সভাপতি সাভালায় কেশ্রী अकारका श्राचामणी साम्मान क्षा र्म द বরোধতায় শেষে পড়েছেন। শ্রীকা**র**ভ নারায়ণ গ্লিপ্রেল অন্যোগ্লীলা আলে থেকেট त्रफारताक अवादक खेटमात्रणी अस्त्रीकटनाम কারণ ভারেন্দ্র আশংকা গ্রহারতে সরাতে না পাবলে ভিনিই হয়ত মন্তিসভা থেকে ভাষের প্রতিনিধিসের সন্ধিয়ে দেবেন। এখন শ্রীকেশগরীও ভাষের সংক্রে হাস্ত মলিয়ে বলছেন, পফার জয়প্রভাগোর আনেদালামের মোকাবেলা করতে ও বনাাত্রাণের সংগঠন গড়ে তুলতে বাথ হয়েছেন।

काण्यीदवव कविवार

শেখ আবদ্ধ্যা বলেছেন যে, কাশ্মীরের ভ'বষাং সম্পর্কে কেণ্ডের সংল্য বোঝাপড়া আলাদ্ধী সেপ্টেম্বর বা অকটোবর ছাসেন্দ মধ্যে সম্প্রা হুদ্ধে বাবে বলে ভিন্নি আলা করছেন

সংখ্যালঘ্-অধ্বিত জন্ম ও লভাখের প্রতিনিধিদের সংগ্র আলোচনা করার জন্ম শেখ আবদ্রো সংপ্রতি শ্রীলবরে একটি সন্সেলন লাহ্রার করেছিলেন। ঐ সন্মেলনের পর জন্ম ও কাল্রার রাজ্যে বেসব আটন চাল্লু করা হংগ্রেছে সেগ্রিল সন্পর্বিত আলোচনা প্রায় গেব হরে এসেছে। কেন্দ্রের সংগ্রাম করে করের স্বাধ্বিত আবাতা এবং এবং ও কাল্রের অবশা এখনও আলোচনা হর নি। নিরে অবশা এখনও আলোচনা হর নি। কর্ম নির্ভিত করে, করের করের করের করের করের করের অবশা এখনও আলোচনা হর নি। ক্রিটান করে, কেরালালন ক্রম করে অবশা এখনও আলোচনা হর নি। ক্রমা বিভান করে, কেরালালন ক্রমা ক্রমা হরেতে প্রবিত্ত প্রবিত্ত প্রবিত্ত প্রবিত্ত প্রবিত্ত প্রিত্ত প্রবিত্ত করা হৈতে প্রবিত্ত প্রবিত্ত প্রবিত্ত প্রবিত্ত প্রবিত্ত প্রবিত্ত প্রবিত্ত প্রবিত্ত প্রবিত্ত পরিত্ত প্রবিত্ত বিশ্ব বিশ্ব প্রবিত্ত স্থানি বিশ্ব বিশ্

প্রেলিভেক্ত কোতের অধিকান

ওয়াটারগেট কেলেখকারির কালিয়া গারে মেথে রিচার্ড নিক্সন হোরাইট হাউস খেকে নিজ্ঞান্ড হয়ে যাওল্লার পথ মার্কিন ব্যক্তরাপ্রেম্ব ও৮তম প্রেমিডোটের পূরে আঁক্রিটিক হয়েকের জেলান্ড ক্রেটের প্রেলিডেণ্ট হ ওয়ার পর কোড মান্দির বংগ্রেসের সামানে তার বে প্রথম আন্-ণ্টানিক ভাষণ দিয়েছেন ভাতে তিনি বলেছেন বে, নিকসনের অম্বাহন মান্দিন বুরুল্টা যে প্রয়ণ্টনীতি অম্বাহন করেছে তিনি সেট নীতিই অন্সর্গ করে বাবেন।

প্রেসিডেণ্ট কোডেন্দ্র ঘোষণা অনুযায়ী.
এই প্ররাণ্টনীতির কডকানুলি উল্লেখযোগ্য
উপাদান হল—(১) সে ডরেট গালিয়ার
সংগ্য বিরোধের অবসান সাম রক অন্তসক্তম্য প্রতিবোগিতা কর্ম করা। (২)
চীনের সংগ্য সম্পাক্তির উল্লিখনে। (৩)
পাদ্যম এলিয়ার ক্যায়ী প্রাণিত্য সংখ্যা।
(৪) এলিয়ার ক্যায়ী প্রাণিত্য সংখ্যা।
(৪) এলিয়ার ক্যায়ী ক্যানিয়া প্রাণ্ডা
স্থিত্যাতি প্রকা ও আর্থনৈতিক উল্লেখনেয়া
আ্যেবিক্ষার সম্প্রাণ

কোন কোন পথবৈদ্ধক কানে কথাকেন, এ পাল্লার বংশ্বব্রাপ্টবাল্লাল নিরাপজ্ঞা রজ্ঞার এই প্রতিপ্রত্নতি প্রান্ধার ঘোষণা লারে প্রতিপ্রত্তি প্রান্ধার ঘোষণা লারের পরিক্রাথনীভিটেড প্রতিশ্বতানের বে প্রান্ধার কানের পরিক্রাথনীভিটেড প্রতিশ্বতানের বে প্রান্ধার কানের পরিরাপ্টার কানের ব্যাহারের পরিক্রাপ্টার কানের বে প্রান্ধার কান্ধার কানের ভ্রাক্তিত স্থাকিতানের ভ্রাক্তিত সিলাপজ্ঞান প্রান্ধার প্রতিশ্বতার মার্কিন শ্বতারাশ্রের প্রস্কাশ্রমীভির একটি মলোবিরর ভিলা।

ভারতের পর্যরাদ্যানপ্রী শ্বন সিং
অবশ্য ফোডের এই ভারবের মধ্যে মিরাশ
ইওরার মত কিছা দেইখন মি। সংসদে তার
বিবৃত্তিতে তিনি বলেতেন, প্রেনিডেল ফোডের বঙ্গুতার তিনি ভারত-বিবোধনী কোন ইংগত দেখন মি। তিনি রক্সেতেন মে, মার্কিন যুক্তরাপ্তের সংগ্রু ভারতের সম্পর্কের উল্লাতির জন্ম তিনি চালিয়ে রাপ্তরা হবে। ভারত-জা ি সংপ্রেল উল্লাতি জোক শেট্কু স্বাধ্যা পাওয়া মানে স্মান্তর স্বিধা গ্রুহণ ক্রতে ভারত সর্জার ফোটার স্বিধা গ্রুহণ ক্রতে ভারত সর্জার

ना**रेशारनव व**्ष्य

ভূনশ্ব সাইপ্রারে প্রোক্তর দার রক্ত থি লবীংশর কলে ঐ লবীংশর পরিচ্ছাত আরও খারাণ ছরে উর্জেন্ত। তুকা সেনাবাহিন্দী ঐ লবীংশর উপ্রয়ংশ তুকা সেনাবাহিন্দী ঐ লবীংশর উপ্রয়ংশ তুকা আবাহিত অঞ্চল কার্যন্ত একটি পৃথক সরকার শ্রাপুন করার পর এখন রক্তানী নিবোলিয়াকে বিরু করেছে।

এনিকে প্রশিল নাটো থেকে ভার নামানিক বাহিনী সরিস্তে নিরো গেচের এবং প্রীলে প্রচুত মার্কিন-বিলোধী বংকান্ত দেখা দিরেছে। একদল বিকোলকালা এথেকে মার্কিন দ্ভাবাসে ভাষা ভিন্ন শেখাব্যার মার্কিন রুগ্রীদ্ভকে হ্ত্যা করেছে।

-91-98 9

নবনিবাচিত পণ্ডম

উনসন্তন বংসর বরুক্ত ক্ষর জিন আনি আহমেদ বিপুল ভোটাবিক্তে ভালতের পঞ্চম রাষ্ট্রপতি নির্বাচিত হয়েছেন। কংগ্রেসের প্রাপ্তী হিসাবে প্রতি-ব্যান্ত্রতা করে ডিনি ডার এক্সাচ প্রতিশ্বস্বা বিজ্ঞাধী দলগুলির মনোনীত প্রাপ্তী চিদ্ব চৌধুরীকে প্রাজিত করেছেন।

প্রীআহমেদ মোট বে বৈধ ভোট পেরেছেন তার মূলা ৭,৬৫,৫৮৭। আর শ্রীচোধানীর ভোটের মূলা ১,৮৯,১৯৬। অর্থাৎ শ্রীআহমেদ মোট ভোটের ৮০২ শৃতাংশ ও শ্রীচোধানী ১৯৮ শৃতাংশ পেরেছেন।

একমার ক্ষেত্র ছাড়া অন্য সব রাখোই শ্রীআহমেদ তাঁর প্রতিম্বন্দ্রীর চেল্লে বেশি ডোট পেরেছেন।

২০ আগত বিকালে এই নির্বাচনের ফল ঘোষিত হওয়ার পর ফকর দিন্ন আলি আহমেদ জাতির উদ্দেশে এক বাণীতে বলেছেন, বতমান সংকট থেকে দেশকে উদ্ধান্ত করার জন্য সূর্বপ্রকার চেণ্টা করতে হবে। আমরা একথা উপলামিধ করি যে, ভারতে প্রতিটি মান্য অহাতত দুর্দানার মধ্যে জীবনহাপন করছে। সরকার যা করছেন তা ছাড়াও আমাদের সকলেল সর্ব-প্রকার চেম্টার ম্বারা আমরা এই দুর্দুশা কাটিয়ে উঠতে পারব।' দেশের এই সর্বোচ্চ পদের মহাদা রক্ষার প্রতিপ্রত্নতি দিয়ে শ্রীআহমেদ বলেছেন, সংবিধানের মর্যাদা রক্ষা করে এবং ধ্যানিবপেক্ষতা, সমাজতত্ত ও গণতবের সংবিধান-নিদিক্ট আদশ-গ্রানির সম্পে সামঞ্জস্ম রেখে যাতে সংস্থাের কার্য পরিচালিত হয় সেটা স্নিশ্চত করাই তার প্রধান উদেদশ্য হবে।

নির্বাচকমণ্ডলীর মোট ০৭৯৭ জন
সদস্য এই নির্বাচনে ভোট দিয়েছিল্লেন।
২০২ জন ভোটদানে বিবক্ত ছিলেন। তাদের
মধ্যে ১৮৬ জন সি-পি-আই ২৯ জন
মান্দির লীগ, ৫ জন জন্ম ও কান্মীরের
জামাং-ই-ইসলামী ও ১৫ জন পশ্চিমবঙ্গা
বিধানস্ভার সি পি এম সদস্য।

গ্ৰন্ধরাট বিধানসভা ভেশে দেওয়ায় এই নির্বাচনে গ্রন্ধরাট অংশ গ্রহণ করে নি।

নির্বাচনের ফলাফল বিশেলবণে দেখা বার বে, প্রভ্যাশিত পার্টি লাইন থেকে ভোটের রাতিকম বিশেষ কিছু হয় নি। সি-পি-আই ও মুখিলম লীগ আগে থেকেই জানিমেছিল যে, ভাষা এই নির্বাচনে যোগ লেবে না। প্রীক্তাহেমেদ কংগ্রেসের ভোট ছাড়াও ডি-এম-কৈ, ভামতীর প্রাণিত দলেন ওবেনর গোড়োঁ ও কিছুনংখ্যক নিদালারি সদল্যের ভোট পেরেছেন। ভার প্র'ডম্পন্নী প্রীচৌধুরী নি-লি-এম, লোস্যাক্ষিত পার্টি আর-এস-পি, সংযুদ্ধ সোস্যাক্ষিত পার্টি সবজদ পার্টি, জনসভ্য, সংগঠন কংগ্রেস হাড়াত সমেত প্রার্ম সব কংগ্রেস।খরোধী দলেব ভোট প্রেচেম।

রাষ্ট্রপতি শ্রী স্তি ভি গিরর পাঁচ বংসক্রে কার্যকাল শেষ হওরায় শ্রীআহমেদ তার প্রলাভিষিত্ত হলেন।

অবসর গ্রহণের প্রাক্তালে শ্রীগিরি সংবাদ সরব্যাহ প্রতিষ্ঠানের সংগ্য এক সাক্ষাৎকারে ব্লেছেন বে, তাঁর মতে নৈতিক কর্তৃত্ব প্রয়োগ ক্রাই রাষ্ট্রপতির কান্ত এবং তাঁর কার্যকালে তিনি এই কর্তৃত্ব প্রয়োগেরই চেষ্টা করেছেন।

भीव अन्जीवस्त्र स्वीकांक

ফকর্দিন আলি আহমেদই দারতের প্রথম রাষ্ট্রপতি বিনি বিংশ শ্তাকানি মানুষ। ১৯০৫ মালের মে মাসে জক্ষাগ্রহণ করে পাঞ্জাব বিশ্ববিদ্যালয়, দিলির পিট্যেন

বিশেষ বিজ্ঞািত

সেই সব মানুষ

মনোজ বস্তু

বাংলার যশস্বী প্রবীণ লেখক
তাঁর সাহিত্য-জাীবনের এক
শ্রেষ্ঠ অবদান নিয়ে উপস্থিত
হচ্ছেন অম্তের পরের সংখ্যা
থেকে।



কলেজ ও কেন্দ্ৰিজে শিক্ষা গ্ৰহণ করে এবং স্দৃশিকাল জনজাবিমের সংশ্লা বৃত্ত থেকি আজ তিনি বাণ্টেল্ল সৰ্বোচ্চ পদে আঞ্চিতিত হাজান

ফকর্দিন আলি আহ্মেদ একজন প্রাত্ত জ্বাধীনতা বোষ্ধা। ১৯৩১ সাল থেকে তিনি কংগ্রেসে আছেন। কেশবিজ্ঞানের প্রাক্তালে বেসব জাতীয়তাবাদী মুসলমান নেতা অনেক দর্গকর্ণ সহস্ত করেও মুসলিম লীগের সংক্রম করেছেন ফ্রকর্দিন আল আহ্মেন তালের করেছেন ফ্রকর্দিন আল আহ্মেন তালের হয় তথন বেসব নেতা শ্রীমতী শাষ্ধীর সমর্থনে এগিয়ে এসেছিলেন তাদের মধ্যে তিনিক ছিলেন।

১৯০৮-০৯ সালে সোপাঁনাথ বড়দল্টেএর নেতৃত্বে গঠিত আসায়ের প্রথম বংগ্রেস্
মল্রিসভার ফকর্ দিন আদি আহ্মেদ বর্ত্তা
ও রাজদ্বমন্ত্রী হিসাবে বোগ দেন।
প্রবত্তীকালে সিনি আসায়েন একাইক মাল্রিসভার বিভিন্ন দেশত্বেব দায়িছ নিরে কাজ করেছেন। ১৯৪৬ সাল খেকে কিছুকাল তিনি আসায়ে আডভোক্টেজেনারেলের পদেও কাজ করেছেন। ১৯৬৬ সালে ভিনি স্বর্ণপ্রথম কেন্দ্রীয় মাল্যিসভার বোগ দেন।

প্রীআহ্মেদ স্বাধীনতা আদেশকে বেগগ দিয়ে দ্বার কারাদণ্ড ভোগ করেছেন ২৮ বছর তাগেগ তিলি প্রথম করেছেন ওরাকিং কমিটির সদন্য হন। সাল থেকে তিলি নিখিলা ভারত ক্ষেটি সদ্যা আছেন।

আগেই বলা হয়েছে, প্রীআহমেটে বয়স ৬৯ বছর। ত[ি]র শুরী বেগম আবিদ একজন চিত্রশিলপী। ১৯৪৫ সালে তাঁদে বিয়ে হয়। তাঁদের দুই পুত্র ও এক কমা

দ্রীআচ্নোদের খেলাধ্লার শথ আছে
তিন নিথল ভারত লন টোনস জ্যাসে
সিয়েশনের সভাপতি। বেশ বিভার বাবং তিনি আসাম ফুটবল অ্যাসের্থনির
শ্নের সভাপতি ছিলেন।



প্রমোদবাব-জ্যোতিবাব- আরো একখানা টেন্ন ছাড়লেন

कार्यभाष्ट मिर्गातम (गर शरता। अहे শিব্দিরে সর্বভারতবিভারে সি পা আই আৰু গ্ৰহণ কৰেছি। আৰু সি পি আই (बाह्य) नाता स्वाराट जारण शहन करतार भूम बाब अधिहमराका विश्वमण्डात कि नि व्यक्ति (अहा)-अह जमजाहा। जिल्लाहे खारण शहन करतान धारे कथा वरण व्य बरद्धमञ्चार्थी ककर भीन वाली काट्यह कराशास्त्र माकिनायां सी एक शावनी जार क्षीविषय क्रोश्चा प्रिक्शभाषी प्रत्येत বাহায়াপুন্ট প্রার্থী। অত্তর্র সি পি স্থাই নিৰ্বাচনে নিজেকে সাচ্চা বামপূৰণী প্ৰয়াপ 🌺রতে ভোট বয়কট করলো। সি পি আই (এম) ভিলো শ্রীচিদিব চৌধারীর প্রাথী-প্রদের অনাভয় সমগ্র । বিহত এই সমগ্র ছবেও পদিচমবংগ বিধানসভার সদসাদের জ্যেটাধিকাৰ প্রয়োগে ভারা এ গয়ে এলো মা। রাষ্ট্রপতি নির্বাচন কোন্_র বংস্নিত बढ़ेमा नद्य या दाङ्ग्रोनीत्तक कर्मकार-एव ভাংপ্যছীনত নয়। বিশেষ করে '০য়-এর স্বান্থপতি নিৰ্বাচন ভিলো সনেরপ্রসারী লাকনৈতিক সংগ্ৰাম ও লাভ সমাবেলে প্ৰকৃষি প্ৰতিক্ৰ'ছময়। এবাইই প্ৰথম একজন স্থারতের বামপ্রথী গণতাশ্বিক আন্দোলনের প্রথম সারির দেতা ও মাকসবদাী চিচ্ছা নায়ক রাষ্ট্রপতি পদে নিবাচন शाधी इद्योद्धलन। कान कन्यननगत्र নয়, আটপোরে ধরনের খিবর নয়, স্বাদরি কংগ্রেস্প্রাথীর সংগো বিরোধী বামপাথী প্রাথানির প্রতিশ্বন্দিতো এই প্রতিদ্যালনভায় কংগ্রেসপ্রাথী জয়ী হবেন এবিবয়ে কোনও সন্দেহের অবকাশ কোনও অবস্থাতেই ছিলো না। কিন্তু এই লড়াইটি ছিলো প্রতীকী, যে কার**ে** আগেই বলেছি শক্তি সমাবেশে গভাৱ প্রতিশ্রতিষয়: সেই লড়াইয়ে সার। ভারতে সুপ্রতিষ্ঠিত দুটি সর্বভারতীয় বায়পূর্ণধাদল, যার একজন রইলে নি স্কর 🖷 দীর্থ নিরপেকতার কবল মাডি স্পিয়ে, আর একজন, যার সবচেয়ে বড় স্থান্তলৈ ভিন্ন ঘাঁটি পশ্চিমৰণ্ডো, ভারা সেই পশ্চিমবণ্য ঘটিকৈ ব্যবহার করলো নাং শেৰোভ দল হলো সি পি আই (এম)। হিদ্**লি আই (এয়) '৭২-এর নির্বাচনের** পদ্ধ থেকে পশ্চিমবলা বিধানসভা বয়কট করে আসছে, রাষ্ট্রপতি নির্বাচন উপলক্ষেত্র নেই বয়কট অব্যাহত রাখা হলো, ফলে প্ৰিচুয়্বপোর বিধানসভার সৈ পি আই (এম) সদস্যা রাষ্ট্রপুতি নির্বাচনে ভোট एम मि। जब्ध नि भि चारे (धन्)

সদস্যান্ত্ৰ সংগ্ৰা এক ইউ সি ও ওল্লাকাস্ত্ৰ পাৰ্টিও ভোট সভে আসেন মি।

এই বে জি পি আর (এম) রাম্মপতি নিৰ্বাচনে বিধানসভাৱ সদস্যেত रखाकोशिकाञ्च <u>भारता</u>ण करारामा ना **এ**हारकहे বলাছ প্রয়োদবাব এবং জ্যোভিবার बारकार भ बचमीत्र बाजमी फरल चित्र ভাসবার আরও **একখানা টেন ভে**ডে লিকেন। রাজ্যপতি নির্বাচনের দ্বিদ্ধ পর শ্রীজ্যোতি বসা এক সাংবাদিক সন্মেলনে वामाछन ना. अधम_ख विशासमा द्युक्रे সিন্ধান্ত প্রজ্ঞান্তারের সময় আসেমি দ 'কম্ডু প্রদান হলো, কাবে এই সময় আসবে? গড় নিবাচনের পর থেকে পশিচ্যকণে সি পি আটু (এম) শংধা বিধানসভা বস্তকট করে ক্লান্ড নেই, আধা क्गामिक्ते भागत्म् प्राहा करत পশ্চিমব্রেগ পদ্ধায়ের নিব্রাচনেত অংশগ্রহণ করছে না। বাদত একই কংগ্রেস শাসনাধীন অন্যান্য রাজে সি পি আই (এম) লোকসভা বিধানসভা, পৌরসভা, পঞ্জারের সর্বাই বংখ্যাত্রণ করতে। অনেত গুলি নিবাচনে সি পি আই (এম) জুয়ীও হচ্ছে। এই তো সেফিন আসামের अक[े]हे ह्याकञ्चा हकरूप शासञ्चाहतत একট বিধানসভা কেন্দ্রে সি পি আই (এম) পাথা বা জ্বা কলেন। কাজেই ভারতের অনা দব রাজে৷ কংগ্রেসী শাসন থেকেন্তু সেখানে সি পি আই (এম)-এর ফ্র্যাস-ব্রাদের প্রত্রা মেট্ট ব্যুক্টর নেই ! কিন্তু প্ৰিচমন্ত্ৰণে বয়কট চলছে ও চলবে-এই হলো ধর্নন। রাজীপত্তি নির্বাচন এই ধর্নান প্রত্যাহারের একটা স্বোগ এনে 'দায়েছিলো কিন্তু সি পি আই (এম) বাজা নেত্ব্স সে সুযোগ গ্রহণ করেন নি।

তাই সততই প্রশ্ন ওঠে, জ্যোতিবাবপ্রমোদবাব্ রাষ্ট্রপতি নির্বাচনের টেনটা
ছেড়ে দিরে এখন কোন ট্রেনের অপেক্ষা
করবেন হে-টেন তাদের পাশ্চনবং-গর
সংসদীর গণতন্তের স্বাভাবিক পরিবেশে
ফিনিরে আনবে? সি পি আই (এম)
পরিষদীর গণতন্তের প্রতি তাদের
বা সংসদীর গণতন্তের প্রতি তাদের
বৈরাগা স্পিট হরেছে, এমন কথা মোটেই
সভ্য নর। কলের মধ্যে বানা হঠকানী বা
পরিষদীর গণতন্তে আম্বাহ্নীন, ভারা
১৯৬৮ সাল থেকে একে একে কল ছেড়ে
গেছেন। পশ্চিমবংগ সি পি আই
(এম-এম)-এব নামে জ্বনখনেক পাটি

তৈরী হরেছে, অনা রাজ্যেও তাই।
কাজেই সি পি আই (এই) দল এখন বাঁরা
চালাজেন, তাঁরা সংসদীর গণতক্ষের প্রস্থিত
অনা অনেক দলের চেরে বেখা আভ্যাদাল।
পশ্চিমবন্দো সি পি এই একটি সংস্ঠিত
ও প্রভাবশালী দল। কিন্তু সেই দল
সংসদীয় গণতক্ষে অংশ গ্রহণ না করার
পশ্চিমবন্ধের বিধানসভা বেশ ক্ষুটা
অংগছীন হরে রয়েছে।

রাম্মপতি নির্বাচনে দেখা পেলো পশ্চিয়বঙ্গ থেকে নিৰ্বাচিত লোকসভাৰ সদস্যরা ভোট দিলেন, কিন্তু বিধানসম্ভার সাদস্যরা নয়। তাই আবারও প্রশন করতে इत् क्र वहरतन बावधारन क्रमां ১১०७ সালে লোকসভার নির্বাচন। রাজলৈতিক পরিবেশ ও অবস্থাসমূত লক্ষ্য করে একথা নিঃসন্দেৱে বলা বাৰ বে. এ একই সমধ্যে সারা ভারতে বিধানসভাসমতের এ निर्वाहन इरव। कामण, ३५०७ मारण একবালু লোকসম্ভার নির্বাচন এবং ১৯৭৭ সালের সাধারণ নির্বাচন এই দুবার নিৰ্বাচনের ঝাকি নিশ্চয়ই প্রীম্মতী পাংধী त्तरका ना। मिन '०७ जारक भारत লোকসভাৱ নিৰ্বাচনই হয়, ভাছলে জ্যোতিবাব-প্রমোদবাব সেই নির্বাচনত कि वहाक्ते कतरवन ? बीम बहुकारे करतन তাহলে লোকসভায় তথা সৰ্বভাৰতীয় মণ্ডে সি প এম দলের বে প্রস্তান জা উবে বাবে। কাপণ, লোকসভান্ত সৈ পি এয় मरमत २७ क्य नम्या चारक्त। कात मरकन কেরালার, লুক্তন চিপুরার, একজন অংশুর, একজন আসামের, বাকী কুড়িজনই হুলেন পশ্চিমৰভেগর। ভাই লোকসভার পশ্চিমব্ৰপের কুড়িজন সদস্য না থাকার वर्ध कि रागे ना वनस्त्र_क स्वाका बाहा। লোকসভার নির্বাচনের এক বছর বাকী। ছ'মাস সময় বাড়তি বা আছে, ভা দেখতে দেশতে কেটে হাবে। তাই লোকসভার নিৰ্বাচনে অংশ গ্ৰহণ কৰতে হলে 🛪 পি এম-কে নিকট ভবিষাতে আনহা নাছতে হবে। আন গণতন্ত্র নেই, ক্যানিস্টরাক চলভে বলে রাশ্বপতি নির্বাচনে ভোট यहरू हे क्या हन। क्यांज भूज पन्त গেলো মতটা' বলে ভোটের আলরে মামা जन्छर इ.स. कि? स्ता<u>र</u>े जातगरे शास्त्र : রাল্টপতি নির্বাচনে অংশ গ্রন্থণের টেন ट्टए मिट्या क्याचित्रात्-अध्यानवातः अधन কোন টোন ধরবার আপোন্ধা করবেন?

-जन जान्यन श्रीत नामा 🦈

নিঃসঙ্গ পথিক

निकमन

विणीश बाणाकांत्र

নিক্সমপ্ৰথা নিউইয়ক' টাইয়স পহিলা লৈ মানে বড় বড় হলকে হাপ্ত, নিক্সম ইক এলোনা বিয়স্পা—একাৰী। নিউইয়ক' টাইয়স পাঁচকা বহুনাল নিক্সমকে সম্প্ৰম জানিয়ে এসেছে। গত মে মানে কেই পতিকাও নিক্সমকে পনি-ভাগ কলক। বোধহয় ভাগ কলতে বাধা হল। ভাল প্ৰধান কালপ এই সময়ে নিক্সমেয় নিক্সে লক্ষ্ম জোলা কিলাবিলিকান পাটিৰ একটি বড় অংশ ভালে ভাগ কলেছে। নিক্সমেয় প্ৰতি কলেছে। তা-ক্ষম নিক্সম পদ্যাগেয়ে দিন নিজেই বলেছেন।

আটই আগপ্ট মিঃ নিকসন পদত্যাগ করতে যাধ্য হলেন। তাগপ্রের দিন যখন ছোনাইট ছাঞ্চল থেকে বিদায় নিলেন সাচ্চানায়নে কোদিন ডিনি ছিলেন সাত্য নিক্রেণ একাশী। তার দলের নেতারা কোলিকো কালাতে আনেন্ন।। সেদিন কালিকোণিকা পোছে তিনি সে-কথাই বলেকেন, তিনি একাশী।

ৰ্ছণ শভিবলের অনাওয়া দ্বানিনি ধ্ৰুবাজ্যের রাজ্মণতির অংগ্রিল ছেলনে বিশেষর অনেক দেশেই গ্রাজনৈতিক ওলট-শালট বটে বার। তারই আ্জারা সি আই এ বা এফ বি জাই জী না করতে পারে। শেল শহালত তিনিই নিজের জালে কড়িলে।

সমুক্ত ব্যাগারটাই যেন নাটকীয়া। नागेरक्त नाम रमख्या व्यक्त भारत 'अज्ञाणीय रभुष्ठे दक्**रम**्कार्ती'। এই नाग्नेटक श्रथान চরিত্রগালো সবই বাজপরের। পাশ্ব-চরিতে দ্র-একজন নারী আছেন বটে তবে ভারা সেহাংই ছারা। প্রী-চরিত ব্লিড नाग्रेटकम अधान नामक न्यमर बान्धेर्शाण। ब्लाम बट्डा व्याद्यानम् वा बट्टगाश-ন্যালের ভেন্নের রোমছব'ক। প্রথম বেকে শেষ পর্যাক্ত সাসংগতের ভরা। এমন মজার रशास्त्रका मार्थरका जारिकार्टा इस्तन म् अन जन्म नारवामिक मिः वय छेष-ওয়ার্ড ও মিঃ কার্ল বার্লন্টাইন। দ্রেনের वसूत्र हिटलन रक्तिता । मृज्यस्य अग्रामित-हेम रमार्च्येक किरमार्थीका आरम्ब मरभा गारवाणिक थिः काक अन्छात्रमञ् विरमनः धक्या हु बन भवन अन्यानश्वाम कन्नट्ड লিলে এট দটে সাংবাদিক ওরাণীর গোট কেলেক্ষ্মীর সূত্র খ'কেল পান। কে'চো খ',ছতে শাপ বার হ্বার মতন বাাপার ষ্টাল হলৰ প্ৰ'ক্ড। গুৱাটাল লেট কেলেগৰারীর শাটকীর ঘটনাগারুলো নিরে একটি বই জিলে দুই সাংবাদিক বৰ ও কালা ইতিমধ্যে দল লাখ টাকা রোজগার কালজেন। ভবিহাতে স্থিতা সাঁতা সিমেয়া ও মিরেটারে নাটক হবে এবং ভাল জনা রয়ালটি বাবদ ওারা দুজনে কোটিখানেক টাকা পারেন। কিন্তু তার চেন্দ্রেও উলেশ-বোগা হল গলতদত ও সংবাদপান কালীয়ভাব কর্মান্তা। যাকিন যুত্তরাভৌগ মতম দেশেই তা সম্ভব। অমা দেশে তা হয়ত সম্ভব হত না।

এলাটার গেট কেলেঞ্চাবী সামলাল জাতিত পোসভেণ্ট নকসনের দুই আস্থা-ভাজন উপদেন্টা মিঃ চালডেম্বান এ মিঃ এরলিখয়ান সখন আদালতে নাজেছাল তথ্য ডিঃ এরলিখ্যার একসিম বলে-ছিলেম এবার ভাবছি সংবাদপদে লেখা শার করব। অবশা কথাটা তিনি বাল-ছিলেন সাংবালিকদের প্রতি বির্ভু ভারে। গিঃ এর*কি*খ্যান ছে'জি-পে'জি রাজ-কমচারী নন, বয়ং রাখ্যপতির ভাল ছাত আন্তানতরীণ ব্যাপারেশ্ব উপদেন্টা। তবি इ.क्टब कि ना हन्ना क्ष्म मारवाहिकता তাঁকে একটাও ভয় না কান উত্তৰ দিয়ে-ছিলেন হাাঁ আপুনি কাগজে লিখবেন বৈকি, ভবে জেলে বলে লিখতে চবে। ঘটলও ভাই। ওয়াটার গেট মামলাশ कार्षे वार्षे व्यक्तिकाला स्थान विकास हकः ছিল তথন এবলিখ্যান ইত্যাদিরা বেল মজা লটেছিলেন। তাদের ধারণা ছিল তাদের কেশার ছোৱার মতন ক্ষতা कार्यात ट्राइं। कार्यन, खीला न्यसर बाण्डे-পতির ভান হাত। যত অপকল্পই কর্ন ना टक्स जीटम्स विकास इत्व मा। स्व मन এরলিখমানের সাজা হল সেছিন চোখের करन निष्ठुण द्रांबृद्धिन शिः अवनिषयान।

ভ্রাটার গেট কেলেকারীর স্তাপাত
১৯৭২ সালে। রাত্মগাত নির্ভিনের
সমর প্রতিপক ভেরোকাট ললের কার্যালরে লাভি পেতে ওলের গাতিরিধিপরিকলপনা আনো থেকে জানার জনো
টোকাকান ও লোপনা কথাবাতা কলার
টোকাকান ভিলিটা কার্যান করাবাতা কলার
ভিলিটা টিলার কার্যান করাবাতা কলার
ভিলিটা টিলার কার্যান করাবাতা
কলার
ভিলিটা টিলার কার্যান
ভিলিটা টিলার
ভিলিটা বিশিল্প
ভিলিটা বিশ্বানি

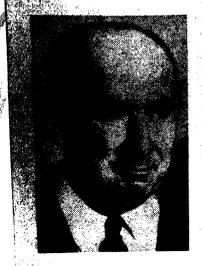


ক্ষাতা ও টাকা খনত কান জলেন মতন।
এই বে-আইনী কাজ কোনোদিন সম্বান কারান মাকিন যাভবাতের জনগণ-কোনো রাজনৈতিক দক্ষা। কারণ, ধ্যাত-ক্ষাধনিতা কথন বিশ্যাপ্ত-সাগতন্ত তথন সম্ভাৱ স্থিণত।

ওয়াটার গেট কেলেব্জারী আশালতে বার তখন জানা বায় বে. প্রোস্টেরনেটর সংক্ষা তার সহচরদের যথনই কোনো আলোচনা হত, তথনই সব আলোচনা টেপ শেকর্ড করা হউ। আদাৰতে বলভা যে কথোপকথন ও আলো-চনার টেপ চাই। নিকসন প্রথমে ওই টেপ্লালো আদালতকে দতে অংশক্ষিক করেন। বিশ্তু তীর আবদার টি'বল না। দোষ প্ৰয'ণত তাকে দি'তই হল। টেপ রেকডে'ণ বিষয়বস্ত আদালা তর • শুনানী সমেত স্বকার জ ব্রুকা ছেলে প্রকাশ কর্কোন গত এপ্রিশ মাসে। সে রা ব্যাকর প্রতী-সংখ্যা তেরশা পাত্য, দাম বাল ওলার। তেতিশ ঘণ্টার কথোপা-कथ्म छ आरमाहना निभवन्य इर्ह्मार বইতে। ভাতে ওয়াটার গোট GĐ কেলেংক প্রতিত জড়িত সবার নামধাম প্রকাশ পেল। শারা হল নৈকসম বিরোধী প্রচার। তাতে জানা গেল যে, নিকসন নিজেই বিরোধী দলের গ্রোপন তথা জানার कमा ख्याणात कि वक्ष्यत्त्व आक्रमा दास. णात्रभाव क्लाकाभी जामार्काच इटहा शास्त्र তা ধামা চাপা দেবার জনো তিনি আগী লাখ টাকা খুব দেবার প্রশ্তাব করেন।

ক্ল; বৃক্ত প্রকাশের পর মার্কিন প্রথিক সংক্ষার সভাপতি মিঃ মিনী মণ্ডবা করেন সব পানে আমার ঘেনা। ধরে গেছে। রিপার্বালকান সিনেটর মিঃ ছিউ স্কট বলেন, ছিঃ-ছিঃ রাপ্টপতির পদে ঘেকে দ্রীতি ব্যবস্থিত করা যায় না। ক্ষ্ম

আন্টেনি জেনাজে বিঃ জন মিচেল



নিকস্নের প্রধান উপদেশ্টা মিঃ জন এর্জিখম্যান



নিকসনের দিবতীয় উপদেশ্টা মিঃ এইচ আর ভালতেম্যান



চার্কাদকে ধিক-ধিক বব তথন আওরাজ উঠল নিকসনকে আদালতে যেতে হবে। আদালতে গোলে নিকসনের মান সম্মান সবই বেত। ভাই তার দলের নেতার। বেমন জন এক্ডাম্সন জর্জ রোমনি, মিন্টন ইয়ং বললেন মিঃ নিকসনের এখনই পদতালে করা উচিত। ভাহলে তার মান সম্মান লক্ষা

গত ম মাসে যখন ওরাটার গেট কেলেওকামী চরম পর্যায়ে পেণিছেচ তখন
নিকসনের নিজের দলের দুই নেতা মিঃ
গিচাডা শোয়াইটলার ও মিঃ নেলশন
রকিফেলার এমন সব মন্তবা করলেন যে,
ওই অবস্থায় কোনো রাণ্ডপতি বহাল
থাকতে পাগেন না। ঠিক সেই সময়ে জনমত
সমীক্ষা প্র তঠানগালো নিকসন সন্বংধ
ক্ষমত সমীক্ষা করে জানালেন যে মার্কিন
যাজনাতীর অধিকাংশ জনগণ যদিও
ওরাটারগেট কেলেভকামী সদবন্ধে পরিপূর্ণভাবে ওয়াতিবহাল নন ভাহালেও তবিশ্
বর্গাভার যে, এর জনো দায়ী নিকসন এবং
ক্রিডির অভিযাত।

মার্কিন যুক্তরাটেন্দ্র লোকসভার হাউস অব জুডিসিয়ারী কলিটির কেশিলুলি মিঃ জন ডোর বালজেন ১৯৭২ সালে ডেলোজাটি দলেন কার্যালয়ে আডিপাতার বল্ট বসানোর সময় থেকে মিঃ এরলিখনান জড়িত ছিলেন। তার পর গোপন তথা ফাস হবার পর ১৯৭০ সালে সব কেলেজ্বারী ধামাচাপা দেবল জনে মিঃ ডেলস ভিন সরাসরিভাবে ফড়িত। আর এক ভাত্তর মিঃ হাওয়ার্ড হাটিক দেওয়া হয় এব লাখ বিশা হাজান ডলালে। সেই টকার কিছু পাওয়া যায় হাগে তানী বখন এক বিমান বুলিলায় মালা যান। সেই থেকে স্টুপাত

অনুসম্ধানের। এই টাকাটা দেওয়া হয় য়া•ঐপতিব নিচেবেশ। এই নিকস্থার আরেক উপদেশ্য মিঃ হ্যালডে-মানৰ জড়িত। প্ৰথম দিকটাৰ ধ্যা পড়ে দুজন কিউবান। পথপুর যথন স্বাই অভিযাত হতে থাকে তথন নিকসন সব দায়িত তাদের ঘাড়ে চাপিয়ে দেন। তিনি নিদেশ্র থাকতে চেয়েছিলেন। কিন্ত যারা অভিযুক্তন শেষে তারা স্ব গোপন কথা ফাস করে দেন। প্রথম দিকটা তারা ভেবে-ছিলেন যে রাণ্টপতি তাদের রক্ষা করবেন তাই ভারা আদালতে মিথ্যা সাক্ষী দিয়ে-ছিলেন। শেষে যখন তাঁরা দেখলেন যে, নিকসন ত'াদের রক্ষা করতে এগিয়ে আসছেন না তখন তারা আদালতকে বশতে াধা হন যে তারা মিথাা সাক্ষী দিয়েছেন তারপর ভারা সভি ঘটনাগ্রেলা করে দেন। এর পরে নাটকের শেষ দুশারালো চন্নম পর্যায়ে গিয়ে পেশছর। করেকজন অভি-হারেল স্থারির সংবাদপরে অনেক গোপন তথ্য ফাঁস করে দেয়। তথ্যের সংগ্রীত হতে থাকে। মার্কিন রাজীপতি নিকসন রাজনৈতিক দ্ভক্ম নিজের <u> শ্বাথের থাতিরে সরকারের</u> লাখ টাকার অপবায় করেছেন। এমন কি গোপন সংস্থান এক কোটি টাকা তিনি কালি-যোগিয়ার বাশানবাড়ীতে খ্রচ করেছেন। কয়েক লাখ টাকা আয়কগত তিনি ফাঁক দিয়েছেন। সব মিলিফে সে এক এঘনা क्लाकाती।

গুয়াটার:গাট কেলেংকারী যখন চরম পর্বারে পেশছেচে তখন হোরাইট হাউসে চলে ক্ষমভার লড়াই। ১৯৭০ নভেন্বার আরকর কেলেংকারীতে জড়িত উপ-মান্দ্রপতি মিঃ ম্পিনো আাগনিউ পদত্যাগ

করলে মিঃ জেরাল্ড ফোড'কে উপ-রাজীপতি করা হল। তারপর এবার নিকসনেব পদ-তাগে মিঃ ফোর্ড হলেন রাণ্ট্রপতি। মিঃ ফোডের ভাগ্য ভাল তাঁকে কোনো নিবাচনে না দাড়িয়ে প্রথমে উপ-রাষ্ট্রপতি করা হল তারপর তিনি হলেন বিনা নিবাচনে রাজী-পতি এবং তিনি এই পদে থাকবেন ১৯৭৬ সাল প্রতি। যতদার জানা গেছে মিঃ ফোড উদায়নৈতিক। তিনি নিকসনকে ক্ষমা করবেন বলে আশা নেই। ভবিষাতে ভিনি নিকস্তুকে সম্থান জানােল না। তবে ইতিয়ধ্যে হোহাইট াসে ডঃ কিসিঞ্জের সংগ িঃ ফোডের যোগিতা শারা হয়ে গেছে। সম্ভবতঃ ১৯৭৬ সালে গ্রাম্ট্রপতি পদ প্রতি-যোগিতায় এই দুজন হবেন প্রধান প্রতিদ্বন্দ্রী।

মিঃ নিকসন নিঃসলা প্থিকই থেকে
গেলেন। এখন থেকে মার্কিন সরকারের
শ্বরাণ্ট ও পারনাণ্ট নীতির বদল হবে বলে
জানা গেল। নিকসনের আ্যালে ভারতবিরোধী যে সব পথ গ্রহণ করেছিল মার্কিন
সরকার এখন আর তা থাকছে না
ভারতের প্রতি সহান্ত্রি জানিরেছেন
বর্তমান রাণ্ট্রপতি মিঃ ফোর্ডে!

ওয়াটারগেট কেলেংকারী নিয়ে মার্কিন মিত্র রাজগালো অর্থাৎ পশ্চিম ইউন্সাপের সংবাদপতে যত আলোচনা হয়েছে তার সিকি ভাগ হয়নি র শ বা চীন সংবাদপতে। নিকসনের পদত্যাগ নিয়ে চীম কিল্ফু কোনো মালতাড় করেনি। যে চীন আলো মার্কিন যুক্তরাত্ম সম্বন্ধে একটা ভূতো প্রপানীই মাথার হয়ে উঠত এখন সে একবারে নীয়ব।



(5)

শাসংক্ত ১৯৩৩ খ্রীণ্টান্দের
ভাষারারি থেক ১৯১৬ খ্রীণ্টান্দের
থ্রীপ্রারি বহলেও বেশী সময়ের মধ্যে তিনি
মাত তিনবার ১৯০৭, ১৯১২ ও ১৯১৪
খ্রীণ্টান্দে তাফসে কিছুদিন করে ছুটি
নিয়ে বাশ্যালার এসেছিলেন।

শংশত চন্দের বেংগানের দুইজন খনিষ্ঠ বংশা গিরীক্ষন্থ সমকার ও বোগেক্দাথ সমকার ও বোগেক্দাথ সমকার ও বোগেক্দাথ সমকার থাকের নই দাটের নাম যথাকালে কেন্দার শাবহচন্দ্র। এবার জাড়া শাবহচন্দ্রের বেংগানের আর একজন বিশিপ্ট বন্ধা স্থীগাচন্ত দাসত শাবহচন্দ্র সমাধ্যের বাইটির নাম—স্থাই প্রতিভা। এই বইটি শারহচন্দ্রের জীবনী ধ্যাতে লেখা হলেও এতে শ্বাহচন্দ্রের ক্রীকারী ধ্যাতে জীবনের কথাই বেশা আছে।

শ্বংচদের গোগানের এই ছনিটে বংধাদের বইরো নেই এনন কিছু কথা, শ্বংচদের রক্ষ-প্রধাস সমাণিত্র লাল্পানুষ পার কলিকাতাবাসী ডঃ হালিতক্রার ঘোষ তার দাগাংচদেরের জীবনী ও সাহিত্যবিচার প্রদেশ লিখেছেন। অলিতবার এই বই লিখে কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের উচ্চতম সম্মান ডি-লিড উপ্যিধ লাভ করেছেন।

 धकरं, धकरं, खेनारु कातरे धनान कालास्मा कार्याः अकिट्यान, निर्मादम-

্যিক। भाजरहरू म्यून নীতি নয়য়ছ নি উচ্ছ । খল ও কল খিড। শ্রংচন্দ্র বথন অংখার চটোপাধারেশ্র গাহে ছিলেন, তখন হইতেই তহিরে চুলিট চিল্য মিয়া*ন कर्ते स-भावन তহিগ আতালিক সদাশাল ও অসংযালে ফলও ভাঁচাংক ভূগিতে হুইল। তিমি ব্ৰশাদাশ পেণীছবাৰ কিছুকাজের মধ্যেই অসংস্থ क्रवेशा भाष्या। भारतात्रम् बाबा माज्यस् নাথের দাদা মণ্টিলনাথ যথন আযোরনাথের ন্ত্ৰীকৈ সংখ্যা লাইয়া গোণগানে লোগছিলোন তখন শারংচ্চেরর এই উচ্ছ খেল জিলন-বালার কথা শানিয়া ভাঁছার প্রতি বিগার हरें हा कि जाना । म्रात्रकृति विभिन्न दिन 'চাট্ডেরালাই'রের মাডুল পর অন্প্রি তার পরী আমার দাদাকে (মণীপ্রনাথ) সলো করে জেলানে যান। সেখানে গিয়ে ভিমি শ্বংচনের সংখ্যে দেখা করতে পাণান নি। লোকের ছাথে শানেছিলের যে শরংচন্দ্র পর্যাভত হয়ে কোন হাসপাতাশে আছেন। তার এমন কোন অসুখ ধে अकरणेत्र अटब्ल रम्था करत्य ना । मामान जनन ধ্যপ্রিয়াথ মন, তাই তিনি দেখা ক্রাপ্র



শরৎচন্দ্র

আৰু তেতীছ খুলেল নি। পাছৰ সন্ধান তবি ধাহাৰা আনিটাই জাল ছমনি। নেচাই ন্বাজাবিক।

এই উন্ধৃতির মধ্যে স্বংগতের স্থান্তর ত্রিকার ভারা স্কের্নার হলের ভারাস্থানের স্থান্তর নাথ সংকার বার্নার, আর অব্যার উট্টেন্সার সংকার ইনি বেংশাদের একজন নারা এতভোকেট ছিলেন। শর্থকে এবং বাড়ীতে দ্বারুর ছিলেন। অব্যার বাড়ীতে দ্বারুর ছিলেন।

এখানে স্বেনবাব্র একট্ কেখা মহ অভিত্রার যা বলেছেন তাতে পরিজ্ঞার এই দক্ষিত যে শগংহনর বেংশান গিলেই হালানবার বাড়িতে থাক্কালে অতিকার মদপে ও বেশালের হালাছেলেন যার ফলে বিলা বোন-বাড়িতে অভানত হরেছিলেন তিমি বোন-বাড়িতে অভানত হরেছিলেন আভতবার নিজের বজুবার সম্প্রেক স্কোনবার্ন পেখাটা উন্ধৃত করেলেও, আনলে কিন্তু তিনি স্বেনবাব্র ই লেখাটা পড়েই নিজের বল্পা খড়া করেল ভান। পরে নিজের কথার সম্প্রেক বাল্পা ভান। পরে নিজের কথার সম্প্রেক বাল্পা বার্ন লেখাটা ক্থিয়েছেন। এখন আন্সাল স্কোনবার্ন এই কথাটাই সত্য ভিনা ভাই দেখা যাক—

অংথার চটোপাধ্যার যেমন বেশ্বাবের নাম্ভালা এডভেকেট ছিলেন তেমান হিনি নির্মিত বায়োল চচ্ ক দেহে অমিত শ্লিণ্ড অধিকারী ছিলেনঃ **এই অভারবার, সম্বন্ধে স্থারস্থানাথ গ্রেগা**ন পাধাায়ের একটা লেখার উত্থতি সহ আঞ্জ-नार्वाहे कींग वहेता जिल्लास्त्र-मानतमाहरमा ক্তগ্ৰীপত্তি कार्यात्रमाथ करते भागमञ् रव⁴⁷िटन अस्टरकारकारे **क्टिन्स । नक्**रिनरम् সল্লয় তিনি সপ্তিবাৰ কলিকাতাল আলিয়া লালগোহনের বাঞ্চিত উঠিতেন। ভিনি ছিলেন, অভিতে বলগালী এক বিয়াট দেই বজ কণ্ঠ প্রুষ। সংক্ষেদ্নাথ কপৌ-পাধারের 'শরং-পরিচয়' প্রদেথ অযোগনাথের একটা অভ্যতে সরস চিত্র পাওয়া যায় 📑

বিশ্বস্থাত বিশ্বস্থাত্তন— একদিনর
ক্ষিত্রতার হনে পড়ে। ভবানীপ্রকর
ক্ষিত্রতার হনে পড়ে। ভবানীপ্রকর
ক্ষিত্রতার বাজারের পালা একটা মল্লান
ক্ষিত্রতার বিজ্ঞাপনটা খ্ব বড় বড় বছরে
করঃ গাড়ি করে বেতে বেতে, সেই
ক্ষিত্রতার সম্ভিত ম্লাগান করে বে
ক্ষিত্রতার সম্ভিত সন্মান দান করে বে
ক্ষেত্রতার কালান ভাল কাছে চিডিয়া
ক্ষিত্রতার আন্দেল উপরোক্তর ক্ষিত্রতার কালার লাভার বিশ্বতার
ক্ষিত্রতার কালার বাভরার বিশ্বতার
ক্ষিত্রতার কালার বাভরার বরে
ক্ষিত্রতার কালার বাভরার বরে
ক্ষিত্রতার কালার বাভরার বরে
ক্ষিত্রতার কালার বাভরার বরে

্র্যুণি কিছু। ঐ মর্ন্য কেখার শ্রুলা নান ক্ষতিলাম মাচ। কেখা শ্রুণা দুটো আভোর বহুত প্রিমাণে ভাগে ক্রেন্টাডিয়ে কংগলন।

্ৰিছে; পরে কোচওয়ান ফিরলে-ক্লিমার গিছলে হে? প্রশ্ন।

্—এভেজ লাংগি বদলাতি। —কেন ছে'ডাছিল?

ু -এজে না।

—চল চল হাকিয়ে ব্যক্ত,—দেরি কোণেজে।

্ চট্টোপাধারে মুখাই জিলিপ'টিয়ানছে। তেইট' কোরতেন। তিনি ছিলেন প্রচ'ও প্রক্তিখনাাগ।

অজিতবাব, তাঁর বইরে স্থেন স্বাস্থ্য এই যে লেখাটা উপাত ক্ষেত্রে, এটা অতাতে সরস চিত্রা হলেও এব মধ্যে স্কৃতটা সতা আছে আগে তাই দেখা যাক—

কলকাত্রাহা অনেক ভিন্কানের স্টেন-ব্যেড়া প্রীক্ষা প্রাথানীয়, ব্রুপতিবার কাধ-প্রভাত লেখ্য জল বানান দেখা যায়। এইর প বোন সাইনবোডে ভুল - কাম্ন দেখে অঘোরবাব: যদি আং, যেব্ট ^ৰ জোককে ভূল বানান শেখানো হুছেভ-ৰলে হুত্ৰাৰ দিয়ে উঠাতন, তবা তার একটা অহুত্ৰিজ পাণ্ডয়া যেত। কিল্ডু একটা [‡] ময়দাও দোক নের বিজ্ঞাপনটা বড় *হ*রথে ী**হয়িভে বলে**, তাতে অঘন হংশকার দেবা^র ^ৰ কি যে থাকতে পালে ভাত বেকা গোল না। <u>'ভাই সফের হয়, অঘোরদার, সভাই কি</u> ^{বিছাত} ল জীতে করে যেতে খেতে পথে ুবিজ্ঞাপন দেখে ঐরুপ হ্রকার দিয়ে-, ীছিলেন। অংখ্রব্বি; যে কারণেই হোক হাণকার দিয়েছিলেন এটা ধরে নিশেও এবং ्<mark>डार्किफिटक दशाकायदमात कथा वाम मिस्</mark> **কিছ**ু কোক জমেভিল এটা স্বীকার কংচ ুলিকেও তেরি গেট কপ্রস্বার সেড়া দ্র্টো ভৱে কাপতে কাপতে পেচ্ছাব করেছিল এবং ্রুগরেজায়ানও ভায় বাগ ক্রাঞ্চাতে বাছো পেছোৰ কৰে ফোলছিল এ হোটেই বিশ্বাস। ্নির। তাই স্ফেনবাব্র বৃণতি এই হাহিনীটিকে অসতা বা অতিরঞ্জিত বলেই भूबाक दशा

টি যাই হোক, সাজনক বাক এই লেখা বৈধকে বোঝা গেল যে, সংঘারবাবা অতিশয় শক্তিশালী এবং অপরের স্থান্যতম চুটি বা অন্যায়েরও বিজ্ঞাধীছিলেন। তাই যদি হয় ভাইলে এটাও কিক যে, শরংচন্দ্র তার এ হেন মেলোমশারের বাড়িত এসেই অতিদিক পরিমাণে মদ খেতে এবং লুকির কোনায়াড়ি বেতে কখনই সাহসী হতেন না কাক্ষণ, শরংচন্দ্র এটা নিশ্চমই জানতেন অভ্যারেরার যদি কোনারকার একগা জানতে পারের, ভাইল তিনি তাল্পি শার্ম চড়ান্ড কাক্ষ্ণ, আ আছাড় মেরেই একেবারে শেব করে লাক্ষ্ণ, আ আছাড় মেরেই একেবারে শেব

অধ্যানবাব যে অভানত গাগী মানুষ ছিলেন, তাও ত স্কোনবাব লেখা থেকেই জানা বায়। স্কোনবাব লিখেছেন— অব্যাননাথের টাইফ'রেড হওরার, একটা বরকে এমন কিক কিরছিলেন যে তাই দেখে (পারংচন্দ্র) পেগতে গালিয়ে যান। মাস ছয়েক সেগানে থেকে বেণ্ডান ফিরে এসে মণি মিচ মহাশংক্রার চেণ্টার সরকার চক্তরিতে বহাল হন।'—(শারং-পারিতর,

অংখারবাব: টাইফায়ড রে।গের সময় ভার চাকরকৈ জোরে কিক করেছিলেন কিনা জানি না ভাবে সারেনবাবা যে বলেছেন, ঐ দেশে শ্রংচন্দ্র অস্ত্রেথ অঘোরনাথের শ্র্ ব্যজি ছেড়েই নয়, একেব্যাল রেপ্যান ছেড়েই ৪৫ মাইল দারে পেগতে চলে গিয়েছিলেন একথা সতা নহা। কারণ শ্রংচান্ত রেল্যানের বৃণ্ধা গির**ী**ণ্ডুনাথ স্রকারেব 'র্ভাদেশৈ শবংচনে' গ্রন্থ থেকে আহারা জানতে পারি, অংঘারবাবুনা অসুখের সময় শরংচনদু তাকে ফোলে পেগ্র পালান নি. আর শার্থচন্দ্র কবে কিন্তাবে পেগ: গিয়ে-ছিলেন এবং সেখানে কত দিন ছিলেন সে সম্বদ্ধেও গিরীনবাব, অন্য কথা লিখেছেন। একেতে স্কেনবাব্য কথা অপেন্সা গ্রীন-বাব র কণাই বিশ্বাসযোগতে কেন্না, এই স্টেরনবাবটে তীৰ বইয়ে অনেত্র আবার অখ্যেরবার্ধ অসংখ্যে সমার ভাবে ফেলে শ্বংচ্ট্রের চলে যাওয়া সম্বন্ধে অন কথা লিখেছেন। তিনি লিখেছেন **ল**াংচন্দ্ তাকৈ বলেছিলেন-- 'আমার ভুল হয়েছিল <u> हार्हे त्या जमाहित्य त्यायात्र । त्यन्यत्य विद्य</u> তা ব্ৰাফেও কোনগ্ৰহণ কাৰ্য সিন্দিল জন্য টিকেছিলাম। যত অংপ দিনে বলী ভাষা আয়ত করা যায় না। আর মনে কণতে পারি নিয়ে অত বড় সাজনি মণ্লোকটা ধ্র করে মরে হাবে। তাই ধথ্ন ব্রুজন্ম যে, বাঁচা সম্ভব নয়, তখনই সংগ্ৰ পড়লাম। - (শ্রং পরিচয় প্র ১৬৯)

সাবেনবাবার এই লেখাটা নিয়ে একটা আলোচনা নগাছ। সাবেনবারা লিখেছেন লগাচনা নগাছ। সাবেনবারা লিখেছেন লগাচনা নগাছ। আকথা ঠিক নয়। কেননা, শাবহচন্দ্র অভ্যোবারার সম্বাধ্ধ কিছ, বললে, অভ্যোবারারাক চাট্যো মশাই কখনই বলতেন না বলতেন—ক্ষেম্মশাই।

পশ্চিমবংশা বিশেষ করে হাওড়া হুগলী অঞ্চল শ্বংচন্দ্রের আমলে এবং আজ্ঞত কেউ কেউ বড় ভণনীপতিকে সম্বোধন করতে হলে, তার প্রবীর সঞ্চো মশাই যোগ করে সম্বোধন করে থাকেন।

স্কোনাবা তার বইরের যে প্র্চার অঘোরবাব, সন্বর্ণে শ্রুহেটেলা বলে ঐ উদ্ভিটি লিংখছেন সেই প্র্চাতেই আছে, শ্রুহেলা তার বড় ভান্নীপতির সন্বর্ণে বলতে গিয়ে বলেছেন—মাশ্রেম মাশাই। আর স্বেরনাব্রে অমারবাব্ সন্বর্ণে বলেচাট্রোমশাই। অভ্যারবাব্ সন্বর্ণে স্বেনঘার্র কাছে অঘোরবাব্রে চাট্রোমশাই ক্ষাই বলেন্নান।

দিবতীয়তঃ শান্তচাল্যের মান্ত্রে কথা বলে স্বেনবাবার যে লিখেছেন, স্থান ব্রে-লাম যে বাঁচা সাভ্য নরা...এটাও শাব্ত-চাল্ডর কথা নয়। কোনা, বাঁচা সাভ্য নর এই কথাটা লোকে সাধারণত নিজেগ সম্বাধ্য বলাত গোলাই বলে। অপরের সম্বাধ্য বলালা সময় বলে—বাঁচান সম্ভর্গ নয় বা বাঁচার সাভ্যাবনা নেই।

ভূতীয়াতঃ টাইকায়াডই হোক আর নিউ-মোনিয়াই হোক বড় লোকের অস্কুটে যথন বড় বড় ডাক্কার দেখানো হাছে তখন বাঁচা বা বাঁচান সম্ভব নয়, শাংচেরের একথা বলতে যাবেনই বা কোন সাহসে। আহোর বোরকৈ বাঁচান সম্ভব নয়, এটা যদি শবং-চন্দ্র ব্যব্ধে থাকেন তাত্লেও তিনি অঘারবার্যকে ঐ অবংথায় ফোল চলে হোতে পারেন না। এত বড় অব্ভল তিনি ছিলেন না। তাছাড়া তিনি এও নিশ্চয়ই জানতেন যে, ঐভাবে আঘারবাবকৈ ফোল চলে গেলে, যদি তিনি সেরে ওঠেন তাহাল সারা বহাদেশ খাজি তিলি (শ্রংক্রেক) বার কাবেনই এবং তথা আর তাঁকৈ আত্ত রালবেন না।

অ'ঘারবা হর াস্থের স্থয় তাকৈ ফৈপে শ্রংচদের। অক্তভের মত চলে যাওয়া ংশবংশ সারেনবার, এট যে দারেকম কথা বলেছেন, এল কোনটাই সভ্য নয় খাল আমার দ, চ ধারণা। আখারবাব্র মাত্রকাল প্র্যান্ত ভাল শ্রাল পাশের থেকে শ্রংচন্ত যে তাঁর সেবাশা, জা্যা করেছিলেন, তার প্রমাণ পাই গিরণিদ্রনাথ সমকারের **লেখার।** গিলীনবাব; লিখেছেন--'প্রিবার্বগ' নিকটে না থাকায় তাঁহাল (অঘোরবাবরে) **মড়ো**-শ্যায় সেবাশ শুখার ভার শরংচনদ্র ও আমি লইয়াছিলাম। দিনবাত কঠোয় পরি- শ্রম কবিয়া ভাঁহার (শ্রংচনের) **আখাংয়র** সেবা শ্রেষা করিতেন এবং থাতি জাগারণে বিশেষ ক্লান্ত হইয়া পড়িলে আমি তাঁহাৰ সাহাযা করিতাম। --রক্ষাদাশে শরংচন্দ্র

গিগ্নীনবাব্রে লেখা থেকে জাা যার যে মাসাধিক কাল শরংচন্দ্র ও তিনি রাভ জেগে অঘোরবাব্র দেবা কর্মেছিলেন। এখানে গিরীনবাব্র কথাই অধিকত্তর বিশ্বাস্থোগা।

(Bales)



(60)

সিউল সাংক এগিয়ে যাছে কি
অতিকার জনটা কাছে ছুটে আসছে
বোঝা যাছে না। সমুদ্র পাক হয়ে
দিগন্তের নিচ থেকে কমে প্রটা আকাশোর
বুকে বড় হয়ে যাছিল। যেন কেউ ওটা
ঠেলে আকাশোর গায়ে তুলে দিছে। সব
বশ্ছটা জনটার গা থেকে ঠিকনে বের
হছে কারণ ননে হছিল এক আলোমায়
জগত যেন অনেক স্থেগি দীপামান
আলো নিয়ে সে আকাশে জনল উঠেছে।
স্যালি হিগিনসে দেখতে দেখতে প্রায়
বিহন্ধা। তিনি বিড়বিড় করে বক্জিনে
নাই টাইম হয়েজ কাম। মাই টাইম
হাজে কাম। শি উলৈ সুন্ন সারাউন্ড নি!
এলেভ দিস ইন মাই ফেট।

ছোটবাব; নিচে দাড়িয়ে আছে। সে দেশছিল-বহুদ্বে প্রায় দিগতে কিছা দেখা যাছে। বিশ্ব মতো অপ্পত। কখনও অক্সস্র তেউ ছাটে গেলে কিছা আর দেখা সাচ্চে না। উত্নিচ্চেউএর ভেতর ওটা হারিয়ে যাকে। সে নিজের দ্যোপকে ভীষণ অবিধ্বাস করছে এখন। ক্রোজ-নেস্ট থেকে সে যা দেখেছিল---ডেকে, নেমে সে তার প্রায় কিছুই দেখতে भारक ना। कथन । विष्मुवर कारमा किए, দিগদেও উণকি মেরে সম্ভগতে অস্তহিতি হয়ে যাছে। যাসে এত কাছে দেখেছিল, কা সে ভেবেছিল প্রায় অকিশের মতো আতিবায় কি করে যে সে সহসা আবার विक्रम् वर कृष्ण (श्रम् । यम व्यवस মিরাকল !

তিনি বলকোন গ্লিরাকলা আল শনসেশ্স।

ছোটবাবা বগল, শাধা বিন্দাবং কিছা দেখা হাছে। একটা পাহাভিক মতো লসটা দেখেছিলাম। এখন কিছা নেই। একেবারে ফাকা।

িচলিনস আর একটা কথাও বলঙ্কেন না। তিনি দুতে নেমে আসক্ষেন। স্থাধং-

নাব পাশে দাঁড়িয়ে কি করে ছেবে পাছেন না। বনি চিফ-কুলের গাগিল থেকে মুখ বার করে রেখেছে। সে চাপাটি ওল্টেপাটেট দিছে। একট, এদিক ওদিক হলে পুড়ে যাবে। সে বের হরে আসতে পারছে না। চিংকার করে কথা বলছে—বাবা ওটা কি! কি দেখলে?

হিলিনস ডেকে লাফ দিয়ে প্রায় বৈষে প্রতান। খ্ব স্বাভাবিক গলায় বললেন –কিছু না। প্রধালের স্বীপ-টিপ হবে।

—আমরা ওখানে নামতে পারব বাবা।

ছেণিবাবু লাফা দিয়ে তথন ফেশ্ল দেখার জন্য সিণিড়তে উঠে গেগে থপ করে ছিপিনস ছাত ধনে কেলজেন। কণিনস্ ইয়াং ম্যান প্ৰিক্ত লিসেন্ ট্ৰীয়। ভেল্ট গো।

্ছাটবাব, বলজেন, কিন্তু সামি... চিলিনস বলজেন পিলা ইউ ফলো চি।

সালেং-সাব বললেন, আছি একব্র উঠে দেখব সাব?

হিগিনস বললেন কিছু আর দেখার নেই।

বনি দ্বাতে তথন চাপাটি একেট-পাকে দিছে। সে কিছুকেই বেণ হয়ে, কেন ডোবোবা কেজ-নেসা পকে চিংকার কথে উঠেছিল বাবা উঠে গলেম কেন আবার তিনি মেনেই বা একেন কেন

এ যুকোর অন্যতম স্বাদ্র মনস্তাত্ত্বিক প্রেমের উপন্যাস

त्रव फूल कितन नाउ

অতীন বন্দ্যোপাধ্যায়

দ্,'বছরের চন্দন ইরার প্রতিত্বন্দী। চন্দন টিপ্রে ত্বিতীয় স্ভা আর ইরা তার সব্যুক্ত ন্বীপ, তার নবলন্ধ আবিত্কার। ইরার জন্য উন্মাদ হয়ে উঠেছিল বলেই কী হারিয়ে গেল চন্দন? আবিত্ক ত্বতেম্ব ক্ষতিবক্ষত হতে হতে অবশেকে টিপ্যু একদিন আবিত্কার করল চন্দনের শ্নাভা সভা বেমন, তেমনি সভা ইরার প্রেম। টিপ্যু ভাই বেরিয়ে পড়ল ইরার সংধানে।

সাহিত্য সংস্থা, ১৮ সি, টেমার লেন, কলি-৯

असर अस्के कथा क्यें वजरह ना, वावा क्राम्बाबाटक क्रम जिला बाटक, अञ्च विकामा स्मर्ट भागत्व मा। त्म व्यक्ती भारती कुछ भारत किया निरहाक। जिल ৰত বাহুত বাহুতে তত উভাগ। বু তিন कार्या देखियाचा कानका भरपटा। माण्डर जर्म शास्त्रत काल क्षीतरह मिरकन। जानी वीच्छा निष्ण्या अयर तय काण्य সহায়তা শা করলে সে কিছু করতে পারত मा। ज्या व्याप्त कार्फ शिव्ह वनाव-रहाते বাৰ্ডিক কোঝার নিয়ে বাচ্চ বাবা ও কি कार्क कांबादक कांबरा विकास वाल ना লিকে মা পেরে সর উদান থেকে मामिन मू मारक बाईका द्वर इत्त जन। ৰ্ণাল, বাবা ছোটবাব্ৰুকে কোথায় নিয়ে **UNE ?**

ছিলিনস দেখলেন সভি ভিনি ছোটবারুকে প্রার টেনে নিরে থাকেন বেটভেকে। বেন কিছুতেই আন ভাকে ক্রোজক্রেকে উঠতে দেবেন না। ভিনি যে ভাকে
টেটনে নিরে বাকেন একেনারে খেয়াল
ক্রেকে। ভিনি বনিকে আখ্যাত করার জনা
বা বাকে পাছলেন না বোট-ভেকে আমাদের
ক্রিকান ক্রিক আছ্রেকা করার জনা
বা বাকে পাছলেন না বোট-ভেকে আমাদের
ক্রিকান ক্রিক আছ্রেকা

্ৰীন বলল, কি যে দেখলে তেম্বা!

्राच्या । का विकास विकास

্ৰোটবাৰ যে চিৎকাৰ করে উঠছিল শীক্ষ সৰ এণিয়ে আসংছ।

—কোঞার কি এগিরে আসংগ্র লগুমোনা। কিছু দেখতে পাছন বনি চাৰপালে খালি চোখে সতি। কিছু দেখতে পেল না। বলল, ছোটবাব, তোমাল ঠাটা করার শমর অসমর নেই।

ছোটবাৰ ভীষণ বোকার মতো ভূকিয়ে আছে। সেবলল সাক তবে আছি চাথে ভূল দেখেছি।

তিনি শাস্ত গলায় বলকোন, উই উইল নো শংগাল ওয়ানভার ইন দা ভারকনেস। তাড়াভাড়ি আমাদের হাতের বাকি কাজ সব করে ফেলা ভাল। সাালি িছিলিনস ফের তার পুরোনো **ম**জি সং**রোনা স্বভাব, প**্রোনো ব্যক্তির ফিরে পাজেন। ছেটবাব,কে কিছু বলার সময় পিছেন না। তিনি কি সব অজস্তা কথা বংশ **। সাংক্রেন বিভূ**বিভ করে। মাথাম**্ভ**সে কিছু ব্**ৰ**তে পাৰছে না। তিনি তাকে নিয়ে সামনের দিকে এগিয়ে যাকেন। এবং জাহাজের ফরোয়াড'-পিকে উ' ৰাবাল মুখে প্ৰায় সাথি মেরে একটা एका भारत रक्तमर्भन। এবং तलालन ইয়ার মানে, পিলক গে। ইন-সাইড। বলে অধ্যক্ষাকে ভাকে ঢুকিয়ে বললেন, পাংখা हैकि कि कार्ड खाइड। डिन बार्ड छात्र धारा किछ नम्या गय कार्ठ आहर द्वत करत एकन। **ছোটবাব, জা**নে এটা কাপেণ্টারের খল। লোলে ভেক-কশপের স্টোর-র্ম। সে যত

লান্দ্র কঠি লা্ছে ছোট বড় সব ডেকে
টেনে টেনে-বের করে আনছে। আর মাঝে
মাঝে বলছে, সার এড সব ভারি কঠি দিরি
কি হবে। তিনি ফিডে গজ দিরে মাপডেন। এবং পংশদেতো সব কঠিটেন
একপাশে বললেন, লাঠগালো সব জামান
কাঁধে ভুকে দাও ছোটবার।

ছেটবাব্ ভীষণ বিশ্রত বোধ কলছে।
—রাখ্না আপনাকে নিতে হবে না।
কোথায় রেখে আসতে হবে বল্ন, সেখে
আসছি। ছেটবাব্ বিশ্বত পলায় এ-সব
বলত গেলে ব্রুতে পারল স্টালি হিলিনস
ভীষণ ভাবে ভার দিকে তাকিরে আছেন।
সই চোখ যেমন সে ভাহালে উঠে প্রথম
দেখেছিল—যা দেখলে ওর ব্রুকের বছ
হিয় হয়ে ছেত। সে বলল, এসকিউল মি
সাার। আপনার কল্ট হবে ভেরুব বলেছি।
ছেটবাব্ ব্রুতে মান্বটার কাষে সব কটা
কাঠ তলে দিলে তিনি সোজা উঠতে
পাললেন না। প্রায় টাল খেয়ে পড়ে
যাজিলেন। ছেটবাব্ এবার ধরে ফেলল।
বলল, সাার আপনি পারবেন না।

তিনি তব্ কাঁধে সব কটা কঠি নিয়ে উঠে দাঁডালেন। এত ভালি যে তিনি নায়ে প্রজিলেন। তবু বেন হার মানবেন না-বিভবিভ করে বকছেন। কখনও ঈশ্বরকে অজন্ত গালাগাল করছেন-কবনও বোধ হয় ন্তজান,—যেমন তিনি এবার জোরে জোরে বলছেন লড বিংগ মি আউট অফ অল দিস টাবল, বিকল ইউ আর টু টু ইউর প্রমিসেশ। এয়াড বিকজ ইউ আর লাভিং এলাভ কাইনড ট্ৰিয়বলতে বলতে চলে বাজেন। ছোটবাব, পেছনে পেছনে যাক্ষে--যদি ওপাড় হয়ে পড়ে যান—তার আগেই ধরে ফেলতে হবে— এবং আবার তিনি বলছেন-কাট অফ অল অতিয়াৰ এনিমিজ এয়ন্ড ডেস্ট্রয় দেজে হু আর ট্রাইং ট্রু হার্ম আসে, ফর উট আর ইয়োর সাভে শ্টিস। যেন জপ করছেন উই আর ইয়োর সাভেন্টিস।

ছেণ্টবাৰ বলল, আমাকে কিছু দিন।
পড়ে গেলে হাও পা ভাঙৰে। তিনি একটা
কাঠ ওকে দিলেন না। বশলেন। কাঠগ্লো এবার সিংগ্রুক কাছে বেখে একটা একটা করে বেণ্ট-ডেকে তুলে নিয়ে গোলেন। সব কটা কাঠ তুলে ২০ব নেমে এলে ছেটিবাল্ প্লল, কোধায় যাডেন আবা!

— আনার সংকা এস। মাথে যে ছোটবাবার সামান্য বিবন্ধি ক্টে উঠেছিল
স্থালি হিসিনসের গলার ব্রুরে তা মিইটে গেল। সে তাঁল পেছনে মল্পণ্ড মান্ত্রে মতে হে'টে যেতে থাকল। আর একটা প্রান্ন করতে পারলানা।

ছেণিবাবুকে নিয়ে তিনি ফোর ডেক-কমপের ঘরে থকে তলতল করে থ'ুজভেন সব। পেরেক ছোট বড় মাপমতো বা পাজেহন ছোটবাব্য হাতে দিয়ে বলছেন, রাখে। লোহার পাতলা শেলট এবং কর। ত্রিপল টেনে বের করছেন। আর যেন এখন বরভতি আরশোলা পা বেয়ে মাথা বেয়ে উঠে যাচছে। আবার উড়ে যাচ্ছে কথনও। **কত অন্প্ৰ**ময়ে ওদের উপ্তব বেড়ে যাচ্ছে। এবং লং ডেক বাণিশের গণ্ধ। তিনি পাতলা কাঠ যা পাচ্ছেন টেনে বের করছেন। লোহার শিক টেনে বের করছেন। ছোটবাবা একটা কথা বলছে না। ভয় পেয়ে গেছে হলতো তিনি এবার টচেলি আলো অন্ধকারে ছোটবাবরে মুখে ফেললেন। সভসা আলো পড়ার সে মুখের ওপর াত তুলে দিলে সাচিল হিগিনস কেম্ব্রেমান্থের মতো হেসে উঠলেন। ব*াটিন* ছোটবাবা **ডুমি ভীষ্ণ** কাওয়াড । মুখ এমন করে রেখেছ কেন? আরে কিছা হয় নি। এই ছোটবাবা তুলি ক্রোক্তনেস্টে উঠে গেলে কিছা আর দেখতে পাবে না। কিন্তু আমি জানি আমরা কোথায় এসে গৈছি। তোমাকে ব**ল**গত পাৰি কিন্তু তুমি যা একথানা মানুষ।

্ষ্টবাবা শক গণায় বলল, স্থান খ্যার কোথায় এসেছি? কোন সম্প্রে!

-- ि वनर्ष्टन भार !

— ভা পাছ কেন? এই দাখো হাত থেকে দুটা তোমার জ্ব পড়ে গেল। তবে ভার একতে কর্মায় হ সাত দিনের ভত্তর আমারা আবাত কোরা পেরে শালাম। একেবারে সহজ স্বাভাবিক কথা।

—তখন কিউ-টি-জি চা**ইজেন না** কেন?

—চাইতে পারিনি। ভারি অসম্মানের বাপার। এই তুমি কিঃতু আবার বনিকে বলবে না।

-ना भारा

ন্বনিকে বললে সম্প্রেছ ুড়ে ফেলে দব। তিনি উঠেছ আলো কাঠের র্যাকলতে ফেলে যাজেন। জ্বেট ছোট পাকেট, স্ব সাধেকটে ঠিক প্রকারতা তিনি ওরাসার পাজেন না: দুটো বাদ। করতের ব্রেড হাত দিয়ে বাকিয়ে দেখলেন কটো ধকল সহতে পারবে। কাল করছেন লার অজন্র কথা বলে যাজেন। না ব্রুলেল হে, জারগাটা ভাল না। ক্লোজ-নেটে আর উঠবে না। কে কথন ঠেলে ফেলেল দেবে জ্বেজ-নেট থেকে।

ছোটবাব; বলগ তা হলে দুরে কিছ; দেখতে পেলেন! —দেখার আন্ত কিছু নেই। সব ঠিক হয়ে গৈছে।

The state of the s

—তা হলে সার আম্বাদ্ধ একদিনের ভেতর ভাশা পেয়ে যাব।

— যেতে পার। ছোটবাব্রে সম খ্লে বলতে ভীষণ কণ্ট হাছল। এমন দ্টো হাজা প্রাণ বিনন্ধ হবে। ভাষতেই চিকার করে বগলেন, হাালেল্লা। ছোট-বাব্র দিকে হাকিয়ে বললেন, ভিয়ার ফো-ড আই এাম প্রেইং দাটে অল ইজ প্রাল উইদ ইউ এাাভ দাটি বার বভি ইজ আছে হেলদি আজি আই নো রোর সোল ইজ...

ছোটবাব্ বলল, স্যার আমাকে ভয় পাইয়ে দেবেন না।

তিনি শুধু বললেন, এস।

এবং ওরা দুর্জন আরও ভেতরে চুকে থেতে থাকল। তারপর তিনি কশপের থরে হন্যে হয়ে কি ঝ'্জাত থাকলেন। এবং পেয়ে গেলে বললেন টচ জনালা।

বাইশের আলো ভেডরে ঢ্কতে পারছে না। ওরা অব্ধকারে যেন ভীষণ একটা গোপন জায়গায় চলে যাছে। ছোটবাব, ব্ৰুতে পারছে না ছিগিনস তাকে নিয়ে জাহাজের কোথার নেমে যাছেন। এতদিন সে জাহাজে আছে কখনও এদিকটায় আসে নি। হিগিনস কি ওকে নিয়ে একেবারে জাহাজের তলায় নেগ্রে যাছেন! অপকারে ওরা একটা সি'ড পেয়ে গেল। এবং টচ জ্বালিয়ে ক্রমে নিচে নেমে যথন ওপারে আলো ফেলল, তথন মাথার ওপরে ছাদ। পালেই এক নম্বর হাচ। ফসফেটের গন্ধ উঠি আসছে। ছোটবাব, ব্ৰতে পাৰছে না তিনি ভাকে এত নিচে কেন নিয়ে এসে-ছেন। ওকে ফেলে তিনি ওপরে উঠে গেলে সে যেন ঠিক পথ চিনে ওপরেও উঠতে পারবে না। হিলিন্স আর পার্থিব জগতের কেউ বিশ্বাস হয়েছ না। চোথ জনগছে। বোধ হয় তিনি প্রকনারের প্রেতাম্মা কোথায় লাকিয়ে আছে অথবা মনে হয় ভিনি তাকে বুঝি এখনি দক্ষ খুলে দেখাবেন-হিয়ার ইজ দা ডেভিল। তার শ্রেকনো অদিথাচমাসার কংকাল দ্যাথো এখনও কি যে বহাল তবিয়তে আছে। ছোটবাব্ চিংকার কলে উঠল, স্যার আপনি আমাকে কোথায় নিয়ে এলেন। আপনার कि डेल्ड ?

হিগিনস চক-খড়ি দিয়ে তথা
ইম্পাতের দেয়ালে একটা চার্ট একে
বলানে এই হচ্ছে কোরাল—সি। অপৌ
লিয়ার প্রেব উপক্ল থেকে প্রায় উন্তর এর আটল নটিকেল মাইলের ওপর বিক্তি আমনা আছি তারও ওপরে।
অবং জান্তা স্মাহা নিও-গিনি এখন
ভাষাদের পাশাপাশি অন্তর। এখানে

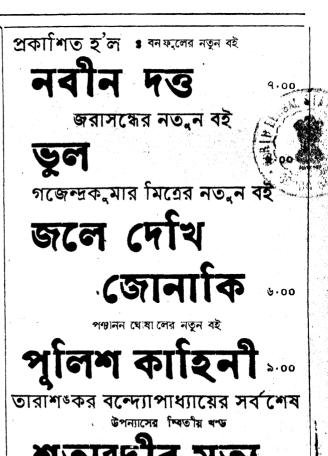
আছে অজন্ন প্রবাল দ্বীপ। পাঁচ স্বাত্তম মাইলের ভেতর ভানহীন দ্বীপ ভোমধা পেয়ে বেতে পার।

প্রার ভূগোলের নাশ্টামের মতো ছোট একটা দিটক দিয়ে তিনি কাছাকাছ ম্বাধ্যর দুরেছ কি হবে ব্রিয়েরে দিছেন। ঠিক কমপাসের কটি বরাবর চালাতে পারলে আর পালে বাভাস লাগলে আট-দুল দিনের ভেত্তর পেরে যাবে। যদি কোনো ভারণে দাখো পাছ না, তব্যত হবে—ত্মি ঠিক ঠিক বোট চালাতে পার নি। বলেই তিনি থামলেন, দুটো আরও ম্বাধ্যর মান্তর্ভাই তেনি থামলেন—বেশ বড় বড় আকরে যেন ব্রুয়তে ছাট্টবার অস্বিধা না হয়। এই হচ্ছে সান্তাকুছ ম্বাপ্যার ভারপর ফানা

ফুডি। তারপধ ওপরে তাকালেন। বোধ হয় গলা ছেড়ে কেউ ডাকছে। ছেতিবাই, কান পেতে বাুনতে পারল ডেকে বান গলা ফাটিয়ে ডাকছে। —বাবা, ছেটবাই, তোরারা কোখার গেলে। প্রায় ওর গলা কামার বুল্লে আসছে। সাংসংসাইও চেণ্চাক্টেন-ছোট ভোরা কোখার গেলি। ইলিনস তাড়াড়িড দু হাতে সই মধ্যে কললেন, ছোটবাই শিগাগির ওপরে চল। উঠতে উঠতে বললেন, তোমাকে একটা শন্ত হতে হবে ছোটবাই।

ছে বিশ্ব কেমন জেলি বালকের মতে। নিচে দাঁজিয়ে থাকল।

হিগিনস টচেরি ফোকাসে দেখলেন ছোটবাব্য ভেমন দাঁডিয়ে আছে। উঠে



मण्डन ब्रूक हार्केन ४२४/১, महान्या खुल्की द्वार । कनकान

জাসতে না। তিনি খুব সতক পদায় কালেন অথকারে তর পাবে ছোটবাব, দ শিকাগির উঠে এস।

্ৰেটিবাৰ বলল, সাৰ আপনি জালাকে দিয়ে কি কৰাতে চাইছেন। জালাকৈ চলে বান।

ছিলিমল ফের নিচে নেমে বললেন, প্রে বলষ। সব তোমাকে বলব ছোট-জাব্য ছুমি শিল্প মূখ গোমড়া করে ফ্রাথবে না বান টের প্রেল আমার কিছ, জার করার থাকবে না। আমাদের ওরা ধ্রাক্তে।

গালার ত্বর এত অসহার। এত তিনি
অসহার ছোটবাব যেন এই জাহাজে প্রথম
টের পোল। সে আর বিশ্বনাট দেরি করল
লা সিন্ত ডেগো ওপরে উঠে কমাপের
বরে এসে প্রথম সাড়া দিল আমরা এখানে
বনি কালালার করে তুকে একেবারে
বালিয়ে পড়ল বামার ওপর—কোথার
ছিলো টোবলে খাবার কথন সাজিরে
রেখিছ—ডোমাদের কারে পারা নেই।

ছোটবাব সকাল থেকে এত বেশি উদিবিশন ছিল, এত বেশি উত্তোজক ছিল বে, মনেই হয় নি সে নাত এক কাপ চা থেয়ে আছে। পেট জলেছে যেন দাবানল এবং সে আর একটা কথা না বলে বের হয়ে এল। কি মাক আন্দাশ আর সমার। জাহাজের ভেতর এমন ভ্যাবহ লব জায়গা আছে সে কথনও জানত না।

থেতে বসে হিগিনস বলগেন, বৃত্তে ছোটবাব্ গাড় শ্বেন ইট ট্ লিভ ব্যাড় শ্বেন লিভ ট ইট।

দ্টো চাপাটি দ্টো আলানেশ দ্পেন্বের লাও। ছোটবাব্ জলখাবারের মতো প্রায় গিলে খেরে ফেলল। খিদে একেবারে যাজে না। সে ঢকতক করে এক খাছিল—তখন স্যালি হিন্সিন্স তি ওর পাতে ভালাসেশ্য এবং একটা চাপাটি ওর পাতে ভূলে দিলেন। বলালৈন, খাও ছোটবাব্ । ছোটবাব্ বলল আপনি এ-সব কি আর্ম্ভ ক্রেচেন্স সার।

সারেডসাব ভেডরে একস্পেগ থেতে শুক্তা পাছিলেন। তিনি তাঁর খাবার ডেকে নিয়ে গেছেন। বনি একেবারে এরই মধ্যে যতটা পারা হাত্র সেজেগাজে এসেছে। সে পাশে বসে থাচিছলে। ছোটব বার হা শ্বীর ওবও ইচ্ছে করছে—ছোট্বাব্র জনা কিছু তুলে দেয়-কিন্তু সে জানে ছোটবাৰ হয়তো খাবার ফেলে উঠে চলে হাবে। বাবা দিয়েছে বলে বাত গাঁভে থেয়ে 🕏 ঠৈছে। এবং বনি দেখল ছোটবাবার মুখ ক্ষেমন ভারি শাকনো। ছোটবাবা যে কেন বাবা জ হাজে থাকতে এত দুঃশিচ্নতা করছে। শাবা কুমশ বোণা হয়ে যাচেছন এবং দেখ:লই বোঝা शास হাবা'ক আরু তিনি আগের মতে: নেই। চোথে ম্যথে আদিও হাসিটুর তেমনি আছে তব্ কেবার ত্রেল তিনি জোর হারিয়ে ফেলছেন।

ছোটব বু বোট-ডেকে উঠে আবাৰ সেই বিল্লুবং প্রবাজ ব্রীপটিপ ফুদি চোখে দেখতে পায়ু—সে এগিয়ে যেতে থাকল রেলিঙে ঝণুকে দাঁড়াল—িক কঠিন আব বিভাষিকাময় সমাদ ক্রমে ডেখে ইডগ্ডত পাক থাক্কে--কেল্লন সালনে দূলে উঠছে সব কিছা--সেই প্রবাল দ্বীপ অথবা ক্লস কিছাই দৈখা যাচের না। স্কল থেকে স্ব অসংলংন কথাবাত্রী বলছেন কাণ্ডান। কেন তিনি এ-সব বলছেন—আর থেকে থেকে চিৎশার করে উঠছেন-হ্যালেল্ডা অর্থাৎ হয় জগদীশ হরে! এখন ব্ডো মান্যটা চুপি-চপি সরেঙকে ডেকে নিয়ে গেছে। কি-সব স্লাপরাম্ম করনভূম। এবং সারেঙ-সাব য়াখন নেয়ে এলেন মুখ্ ফাকাশে যেন ও'ব ফ[†]সির হুক্ম হয়েছে। চোখ দিথর। অভিশয় চুপচাপ তিনি হে°টে যাচিছলেন। ছোটবাৰ ভাকল চাচা।

এখন হিগিনস ডাকলেন ছোটবাব; থাদকে এস।

ছোটবাৰ, দেখল তিনি সব কাঠ বিছিয়ে দিছেন। করাত সমাজেন। ছোটবারকে এकটि शामा भित्रा दमलन, जनाउ। भारतछ-সাব বোটে উঠে গেছেন—স্ব গিয়ার নিটে নামিয়ে র খছেন। এবং কাঠের লাইনিং সেরে দেওয়া হচ্ছে: আর হিগিনস কাজের ফাঁঞে ফাঁকে কথা বলে হাজেন। একজন ব্যুড়ো গানুষ যে**ভাবে তার স**ম্ভানসংততিকে তীথে যুবার আগৈ কথা বলে থাকে—তেমনি কথা বলে থাচেতুন। হোল মানা্মটা প্রব সে যাবার আগে বলে হাজেন ব্রুখলে হে—প্রপর প্রতি মান্ত্রের ভারি প্রণোভন। তিনি ক্রাতের কঠ ডিকে হরে যাওয়ার হাতভিতে ঠাকছিলে। ছোট্যাবার রাদিয়ে খসখস শব্দ হচ্ছে। হিগিনস এবার নারে হললেন ছেটবাব্য তুমি কি কি ধমাগেও শডেছ i

—রামায়ণ মহাভারত পড়েছি সারে।

—তে লাকে আমি সাইবেল দেব। তুমি পূড়াব। প্রত্যেক মান্যুয়র সব ধ্যাগ্রুথগগুলো পঞ্জে ফুলা উচিত।

সে বলল পড়ব স্যার।

স্যালি হিগিনস্থাকি বঙের হাফ-পান্ট পরেছেন। গারে স্যাপ্টো গেজি। এবং ভীয়ণ ল্ম্ম বলে আরু চোখে গোল চদ্মা বলে গালে সাদা দাড়ি বলে কখনও কখনও তাকে ভীৱণ ধুমিক মানুৰ মনে হজিল। তিনি ধ্যন রাতে দিলপিং গাউন পরে থাকেন বইলে তিনি অথ'ং স্মানে ইাডা বাতাস্ হ্যখন বেশ লম্বা পোশাক পদেন ভারে ₹: ভেবে शाशा লকাতাল না। তিনি এখন একটা কাঠ সোজা দাঁও করিয়ে কন্ডটা উ'দু দেখছেন। দেখতে দেখতে তিনি কিছু পাপ এবং লোভের সংখ ধললেন ভার পরিণ্ডির গলপ বল্লেন। তারপর সামান্য সময় কান থেকে পেনচিল বের করে প্র একজন স্ত্রধরের মতো কি ज्ञव त्त्रथा छोट्न काटका छाकारकन छ्यादेवाद् দিকে—এ-সৰ গ্ৰন্থ শুনে ছেটবাৰুর মুখে চোখে কি প্রতিক্রিয়া কাজ করছে বোঝার চেণ্টা করতে করতে এক সময় বলে ফোলনেন ডিয়ার ফেল্ড ভোন্ট লেট দিস বাড একজালেল ইন্ফ্রেন্স ইউ। ফলো ওনান হেয়াইট ইজ গাড়। রিমেমনার দাট দেজ ডু বোয়াট ইজ রাইট প্রভুচ্চ দাটে দেজার গাড়স চিলাড্রেন, এটান্ড দোজ হা কর্মার্টান্ট ইন ইভিল প্রভুলাটি দে আর ফার ফার ফার

চেট্র ব্যতে পরছিল চর্ম পরিণ্ডির ও তারা এগিরে যাছে। সে বলল সা এম ছবিতে বাইবেশের কিছু গচপ দেশভোগন। এবটা ব্যাপার ভাগি আশ্চর্ম জল—মাঝে মাঝে এটা আমি স্বান্থের উঠি বাজে। তাদের পিঠে অতিকার থকা ছবিতে এটা সেখে ক্থানও তার ভুল্ভে পারি নি। ভাল ব্রাভেও পারিন।

তিনি কর করে উঠলেন ফের— হ্যালেলভে াবপর কাঠে পেরেক ঠকেতে ্ত বললেন **সংফা**রিহস। ই:কৈতে ज्ञातिका भागवारेन्छ। তার স্ব ি 🚋 জন্য দায়ী সে নিজে। যা কিছ' সে াগা করবে লাভ লাভ ভার ওপর বর্তা ি সে নিজেই তার **রুস ব**হন করে নিয়ে ১৯৪। সে নিজেই রচনা করে তার ব্যাভাম। শৈশৰ থেকে হোবনে এবং হোবন-কাল পার হালে প্রোট বয়সে সে দেখতে পায়ু এডসিনের যা কিছা প্রয়াস স্বাএক স্দের্ল নীল উপত্রকাতে তার নিজের বল-ভাম তৈরিতে কেটে গেছে। জনগণেরা এবর ্তেতালি দিলে গলায় দড়িটা পরে ফেলবে। ভাপা সব শেষ—শাধ্য থাকে নীলবণের এক আলোর ভ্রথ-ড। ব্যুক্তে পারছ আমাদের ত হলে কিছুই নেই। এত সাখ এত দুঃখ স্বই তার। তিনিই সব। সোপেইজ দালড। হাট গড়ে ইট ইজ ট্ৰাসং হিল প্ৰেইজেস! হাউ ডিলাইটফাল, এচন্ড হাউ রাইট।

বনি তথন ওপারে উঠে এসেছে।

বাবাকে ভীষণ উৎফাল্ল দেখাকে। বাবা কাঠগুলো সব পালস করছেন। সারেং ছেটে ছোট সাব কাঠের জাইনিং মেরে দিচ্ছে যেটে ! সব ড্রাই ফ্রডের প্যাকেট ম'গ্লিয়ে রেখেছে। পরিচ্ছর নীল আকাশ। গ্রহ নেই তেমন। পরিচ্ছার আকাশের নিচে এখন একটা সময় পোয়ে গেছে বনি। সে চুল আভিডাচ্ছে। ওর স্কার নীলাভ চুলে ক্রিম ছসে দিচ্ছে। সামনে সে রেখেছে ছেট্ট আযন। সে ক[ে] ক্ষণে পোশাক পান্টাচ্ছে। বাবাকে, ছেটি-वादाक मृतः स्थरक मृत्यो अवने कथा वरम আবার চলে ক্রিয় অসাছে। মুখে धमाछ। कितिस्त्र अन्ध्कादा स्टामा किन्न দেখা যায় না বাবা ছোট-বাব, সারেং সারাদিন ক্ষেত্রণ বোট-ডেকে थ हो भारे करत कार्ध कार्धेख, स्मातक माहरू দিচ্ছে কাঠে এবং আশ্চর বনি স্কার

নেখল বাবা বেশ বড় দুটো ক্লস বানিরে দেশেছেন। ক্লস দেখে সে কেমন ভর পেরে গেল। বলন ব বা এ-দিয়ে কি হুবে?

ভিনি ছয়ে মেষের দিকে তাকাতে পারলেন না। তিনি গল্প ফিতে সব ভুলে বাখছেন। সামেডের পক্ষে একা কান্ধ দার কঠিন। এবার তিনি ছোটবাবুকে নিয়ে বোটের কাছে এসে দাড়ালেন। বনিকে তিনি ছেট্ বললেন না। অথবা কি বললে বনি আপাত শাশত থাকবে কি বললে বনি ব্যুস্ত

পারবে না দ্য টাইম হ্যাজ কাম—ডেবে ডেবে তিনি যখন দেখলেন বনি কিছ্তেই যাজে না তখন বাধ্য হরে বললেন, জায়গাটা ভাল না বনি। খারাপ জ্যুগা। শর্তানের প্রভাবে পড়ে যেতে পারি। ক্লুস দুটো ভাহাজের মাথায় দুট্ড করিয়ে দিলাম। এবারে দেখি কার কত সাহস!

ছোটবাব এখন লোহার সব্ জালের ওপর ত্রিপল ফেলে দিছে। বেটের ওপর হুড খোলা গাড়ির মতো এই ত্রিপল কাজ করবে। ঝড় ব্ বিতৈত হ'ড় তেনে দিলে প্রাস্থ নৌকায় ছই, সমুদ্রে বেট ভেসে গুলে ঝড়ব্ বিত সামান) আল্লয়। জাহাজ ড:ব সুতি। অগ্লন্ড প্রভাবে পরে বেতে পরে— বাবা ক্রস দুটো বানিয়ে ভাল করেছেন। রুস থাকলে জাহাজে অল্লুড প্রভাব ভিডতে সাহস পাবে না। সে খুব নিশ্চিতে গরে ঘরে আলো জ্বালাবার জন্ম নিতে নেস্ম গুলা। সে ঘরে খরে লম্ফ জেন্লে দিরে গলা।





লাক্তনে প্রীভূষারকাণিত ঘোষের সাল্ধানা

ब:एव প্রবাসী २० ब लाहे পরিকা 'সাগন সাহিত্য সাহিত্যিক-**উ**द्यारग FI-GO সাংবাদিক শ্ৰীভুষারকাশিত ছোষকে সম্বর্গগা क्षानावात क्रमा এक ध्याक्रमकात आखाकन করা হয়। ধর্ম ও সম্প্রদায় নিবিদেবে স্মদত শ্রেণীর সাহিত্যমোদী বাঙালী ন্ব-নারী এই ভোজসভায় উপস্থিত ছিলেন। পরিকাটির সম্পাদক হির্ক্ময় ভট্টাচার্য এই সভায় তাঁর বস্থতায় বলেনঃ বসিয়ে রসিয়ে গ্রহণ বলা এবং লেখা সাহিত্যের গুলু। এ দুটোই তুষারবাবার আয়বে। তিনি সাংবাদিক হিসেবে প্ৰিৰীতে খ্যাত হলেও মনে-প্ৰাণে তিনি সাহিত্যিক। সম্বর্ধনার উত্তরে ভুষার-কান্তিবাব সাগর পারের সাফলা ও দীর্ঘ জীবন কাল্লনা করে বলেনঃ আলার সম্বর্গেধ হা বলা হয়েছে বয়সটা হাড়া আর সব ভুল। আমাদের দেখে কাগজের অভাব তাই বড়ো বড়ো খবরকে কাটছাট করে ছোট করা আর এদেশে বিষয়বদ্য নেই অথচ इ र পাতার পর পাতা খবর।' ভারপর ভূষারকানিত ভার নিজ্স্ব সরস ভংগাতি रवेण विद्याकन शत्त भाषियीत नाना रनम ঘারে তাঁর যেস্থ বিচিত্ত অভিজ্ঞতা হ**রেছে** তার গল্প পরিবেশন করে স্বাইকে আনল নেন। এই ভোজসভায় লণ্ডন থেকে প্রকাশিত বাংলা সংবাদ সাশ্তাহিক ক্ষময়ত্ত'-এর স্ম্পাদৃক ওয়ালী আলরফঞ বস্কুতা করেন। ভারত ও বাংলা দেশের বহু বিশিল্ট নর-নারী এই ভোজসভায় উপপ্রিত ছিলেন।

এর প্রে ১৮ জ্লাই বেণগুলী ইনস্টিউটও দ্রীঘোষকে সম্পর্শনা জানান।

ভারতীয় সাংবাদিকদের একটি ভোজ-সভাগ প্রীঘোষ বিশেষ আমন্তরে নালাগান করেন। ৪ আগতট তিমি কেনসেল গ্রীনের সমাধিকেরে আরকানাথ ঠানুবের মাত্র বাহিকী অন্তানে বোলা দেন। এই অনুতানে ব্যাহকানাথের জাবনের কয়েকটি মুম্পেশার্শ করে একটি ভাষণ

रतम। बार्टम श्रेयाणी ভाराजीशामन নানী সমস্যা সম্পকে তিনি ভারতীয় <u>জাই</u> নেহরুর সংখ্য দীর্য ক্মিলনার শ্রীবি কে আলোচনা করেন। শ্রীঘোষ সরকারী তথা প্রতিষ্ঠানের বিভিন বেসরকারী নানা कत्कारमञ्ज बाज पना ব্টিশ ও কমন-ওয়েকথ প্রেসের কয়েকজন নেতৃত্থানীয় ব্যক্তির সংগে তাঁর সাক্ষাৎ হয়। তা ছাড়া আগ্রহাতিশথ্যে প্রসী বাংগাল দৈব শ্রীঘোষকে বহু ঘরোয়া বৈঠক ও মজলিশে এবং গ্রেপ্তবেশ প্রভৃতি অন্নানানত যোগদান করতে হয়। পক্ষাল নানা বাস্তভার মধ্যে লণ্ডনে কাটাবার পরে শীঘোষ ৫ আগণ্ট প্যারি**স যাত্রা** করেছেন। সেখান থেকে তিনি द्याध शहरता।

আহমনিকা ও ব্যেটনের বাংলা পত-পতিকা ও সংক্ষতি সংক্ষা

সংখী, আমাদের এই প্রবাস জীবনে বাংলা ভাষা ও তার সাংশ্কৃতিক ভাব-ধাণাকে বন্ধায় রাখার 🛽 শতে সংকল্প নিয়ে আমেরিকা যুম্মরান্ট ও বানাডার কিছা ব্যক্তির উদ্যোগে ১৯৭১ সালেশ্ব নভেম্বরে 'বাংগাসংস্কৃতি সং'ঘর' প্রতিষ্ঠা হয়। এই मर्ट्यत अधान काछ इत्या वाश्या ७ व्यनाना ভাষার কেখা বই ও পতিকা সমূপে অংথা গার প্রতিষ্ঠা সামাজিক আনন্দান, ঠান हेडापि। बहे मुक्ता गुशा छेल्लमा बक-প্রবাসী বিদেশের জিল পরিবেশে ৰাপালীয়া ষেন বাংলা সাহিতা ও কৃষ্টির আশ্বাদন থেকে বঞ্চিত না হন। দুই-অন্যান্য স্ংকৃতিক সংঘকে ভাব বিনিমায়ে উদ্দেশ্য নিয়ে আমাদের স্থেগ পরিচিত কর। ১৯৭১ সালের ১৫ই নডেম্বর থেকে আশ্তর্কাতিক এবং বিশেষভাবে ভাগত ও বাংলাদেশের সম্ভাবা সমুশ্র খবর পরি-ৰেশন করে সংবাদ বিচিত্র' নামে আম্মা একটি সংবাদপর নিয়মিত প্রকাশ করছি ।'..... এই উম্পতিটি নিউইয়কের বুলা সংস্কৃতি সংঘের পক্ষ থেকে ১৬৮১ সালের ১লা देवणात्थ नववसं छेललएक প্রচারিত প্ৰকৰ্ণট থেকে নেওয়া হয়েছে। সংবাদ বিচিত্রার তর বর্ষের ১০ম সংখ্যাতি (২০শে

জ্লাই, ১৯৭৪) আমাদের হাতে এসেছে।
আট প্রতার এই পতিকাটিতে প্রথম ছর
প্রথম ভারত ও বাংলাদেশের সামাজিক
অর্থনীতিক ও রাজনৈতিক গর্মেরিনিশ্ট
প্রায় সমাসত সংবাদেরই নির্বাচিত অংশ
শ্যান পেরছে। ৭ম প্রতায় আমেরিকার
বিভিন্ন শহরে বানা বাংলা নাটকের আভ
নয়, বাংলা বিভিন্ন প্রথমানী, বাঙালী
শিশপীর সংগ্রিনিশ্টান বাংলা বইরের
বিভিন্ন পাঠাব ববরে, বাংলালী শিশ,
ও কিশোরদের বাংলা, এমনকি বনভোজন
প্র্যাতিক সমাস করে উল্যামের করা জানা
ব্যাছে। এ বিক্রাটি সমশ্যাদনা করে
ব্যাকন রগা মার দত্ত।

ব্টেন ক প্রকাশিত দুটি বাংলা
পারকার কথা আমন্ত্রা জানি। এ দুটি
পারকাই ১৯৬৯ সাল থেকে প্রকাশিত
হচ্ছে। একটি মূলতঃ সাহিত্য পারকাশ সাগা পারেশ—এর সমপাদনা করেন হিরমেয় ভট্টাহার্য। অনাটি সংবাদ সাশতাহিক—সাশতাহিক জনমত— এটির সমপাদনা করে থাকেন ওয়ালী আমাব্য।

এই সমুহত পাঁচকার নিয়মিত প্রকাশে প্রতিষ্ঠিত বিশ্ব কর্মিক ক্রিক পোষকতা করে থাকেন তা' খেকে ম্পতি এই বোঝা যায় যে ব্রেটন ও আ^ম-প্রবাসী বাঙালীবা নিজেদের শাংশ্কৃতিক বৈশিণ্টা সম্পকে **দ্বীতিম**তো সজাগ। এটা খুবই আশা ও আন্টেদ্র কথা। সম্প্রতি লন্ডনে প্রবাসী বংগ সাহিত্য সম্মেলন-এর প্রথম অধিবেশন স্সম্পন্ন হয়েছে। আন্তর্জাতিক খাতি সম্পন্ন সাংবাদিক ও সাহিত্যিক, 'অমৃত' সম্পাদক শ্রীতৃষারক্তি ঘোষ বয়সের ভার ও শারীরিক অসাচ্ছন্দা ভুচ্ছক্তান করে বাটেনে গিয়েছিলেন এই **অধিবেশ**নকে সর্বত্যেভাবে সাফলামণ্ডিত করে তুলবা জনা। তার রে-প্রকেটা সফল হরেছে। ব্রটনের সর্বন্ধ বলা সংস্কৃতি চর্চার জনা নতুন করে উদাম দেখা দিয়েছে। এই সমস্ত প্রাসের মূলে ব্রেদ বা আমেরিকার প্রবাসী যে স্ব বংগস্তান রয়েছেন তাঁরা সকলেই

নভালী মাজেরই ধন্যবাদভাজন সংলহ নাই।

ক্লিলৰ দেশে বে-সৰ বাঙলানা ক্ৰাল্লন কৰাস
ক্ৰিন্তি কৰা ক্লিলেন ক্ল

ল শতবার্ষিকী পালনের জন্য কমিটি গঠন

গত ২ আগদট রাজ্যের সাহিত্যিকগণ ক্রম বিলিডং-এ মিলিত হয়ে আলামী ४२ जालात ७५ छाप त्याक वक वरअत-नी अध्यत कथागिल्मी मदर्गन्त ठाउँ-क्षात्यत क्ष्मण्डविकी शामात्रत सना क्यि क्षिप्ति केन करतरहन। ज्ञारकात मृथा-ী সিশ্বার্থশঙকর রায় স্বাস্থাতিক্যে ক্ষিটির চেরারম্যান দ্নোনতি হয়েছেন। ৰাসাহিত্যিক মনোজ বস্কায় ভারপ্রাণত ট্যার্য্যান মিষ্ট হয়েছেন এবং দক্ষিণায়গুন লৈ ভঃ অভিতক্ষার ঘেৰ e সাহিত্তিক ৰশ্ মাথোপাধায় সাধায়ণ সম্পাদক নিষ্ট ক্ষেছেন। এই কমিটির উপর দায়িত দেওয়া ংলেছে বছব্যাশী নানা কল্পাচীর প্রণাধ্য ूण रमयत कता। धहे धकहे छेटल्ला নজ্যের বিভিন্ন অণ্ডলেও আণ্ডলিক কমিটি টিন করা হবে বলে জানা গেছে। ক**ম** স্চীর ট্রনিকার করেকটি বিধর হলোঃ তিন ছেরের মধ্যে শরংচদ্রের রচনাবলীর স্কুলভ মুক্তরণ প্রকাশ করা ভারতের প্রতিটি ভার য রিংচদের জীবনী প্রকাশ কর ও তার हीवनत्क रकम्प्र करत क्रकीं गृज्यका हमास्रिय ভরী করা। শতবার্ষিকীর উৎস্বকালে শরং-प्रमानी भारत्रहरू अध्भट्क প্ৰক শিত ুত্তকের প্রদুশনী দেবানগদপুরে শ্রং-বাহিত্য মেলা নাটু।ভিনয় ও শর্থ বড়ত -মশার আছোজন করা শরৎচম্পু সম্পদের্ ন্তারে কর্মসাচীর সাংপারিশ করা কলকাত্র ছাৰ ও শর্বচন্দ্রের একটি মহালয়াতি স্থাপন দ্ধা শরংচন্দের স্মারক ভাকটিকিট প্রকাশের ন্য কেল্ডীয় সরক রকে অনুরোধ করা হবে। গ ছাড়া রাজ্য সরকারকে অন্যুর্ধ । म स्ता इरव महरुरस्त्र क्रम्मीमन्ति सामातन ্রটির বিন হিলেবে ঘোষণা করার জনা। ।ই উৎস্বকে একটি স্বভারতীয় র**্**প नवात सना विकिस इंटलाख कहें ऐएम्मरणा িমটি গঠন করা হচ্ছে বলে জানা গেল।

नवस्था मध्यक्षं मा

মহ্মা সাংস্কৃতিক সংস্থান পক্ষ থেকে
চন্দ্রতি ধ্বধানিকা লিবর ম চন্দ্রকাঁতে
বিটি সন্দ্রধানা জানানো হয়। ঐ একই
নেন্তানে সংগাতিশিক্ষা তঃ চিন্তালথ
সাধ্বীক্ষে সন্দ্রধানা জানানো হয়। বিধর
নি স্থান্তানজ্জার কটেলী জীবনে বিগত

করেক যুগ ধরে প্রচর ছাসিত খোলাড় অর্গিরেছেন শিবরাম। জর্লাহ্রীন বাংগা আৰ অবিমিশ্র কৌতুক হো-কোনো ভাষার সাহিত্যেই অপেকারত কম সৃষ্টি হয়ে থাকে আৰ বাংলা সাহিত্যে এর অপ্রভুলতা স্বভিন-স্বীকৃত। বিশাস্থ কলপ্ন শ্রয়ী নিছক আক্রণারি একান্ত বাহতবধ্মী-নানা জাতের ছেটো-বড়ো হাস্য ভরপুর কাহিনী রচনায় বর্তমান বাংলা সাহিত্যে শিবরাম বাধ করি অদ্বিতীয়। ছেটো বড়ো সব ব্যুসের পাঠক-পাঠিকার প্রতিই তার নজর থাকে। তাই সকলকেই তিনি সমানভবে খুলী করতে পেরেছেন। ব্যক্তি শিবরামকে হারা জানেন তার সাহিত্যের অন্ত্রনিহিত ৰখুৱা উপল্পি করা তাদের পক্ষে একটা ভাষতরশা অভিজ্ঞতা। কদাচিৎ এ-রকম একজন লেখকের দেখা মেলে যাঁর ম্থের কথা হাবভাব ঢালচলন আরু রচনা এমন অভিনে। স্বতঃস্ফৃতি আনদের কথাশিক্সী শিবরুম চক্রবতীকৈ भाग है।

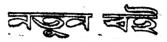
हाका किन्यविकासाध्यस मृत्य असम्बी

১৯৭৪-৭৫ শিক্ষা বৰ্ষক ঢকা বিদ্যালয়ের সমূৰণ অসমতী বৰ্ষ বলে ঘোষণা করা হ্রেছে। আগামী শীতফালে কোনও এক সময়ে একটি বিশেষ অধিবেশনে এই সমূৰণ জন্নতী সম্পর্কে সম্ভাছব্যাপী এক কর্মসূচী নেওৱা হবে।

'बारगारकम'-अत तष्ठकशी म्बारीनका मरशास्त्रत देखिहान :

শ্বাধ্যনভাগাজের অবাবহিত প্রেই
সেখানভার নৈতৃব্যুক্ষ
দার্য দিয়েছিলেন স্বাদেশের রক্তরা
ব্যাধানতা সংগ্রামের একটি প্রায়াণা ইতিবাস মচদার জন্য জাকা গেল ছে সে-কাজ
বর্তাহানে সমাত্ত হয়েছে আলা করা
বার যে. একাডেয়ির তজ্বধানে শীরুই
এ-ইতিছাস মুদ্ধিত হয়ে জাভাগালা

ARTE TIE



বিষয় পরবাধা : বীরেন্দ্র দত্ত : সাপ্রকাশন, কলেজ বাে কলকাতা ৯। দাম সাঞ্চ সাও টাকা।

ৰ্ণবয়্ম পরবাস' বীরেণ্ড দেংক্তৰ সাম্প্রতিক উপনাস। এর কাহিনীত তিকোণ প্রেমেশ আভাস আছে বটা কিন্দু এकि को निक विकाद खाम्भान । धवर লেথক ইচ্ছে করেই ওই ছতীয় বিন্দুটিকে অম্পর্ক রেখেছেন। কারণ, অম্পূর্ক হলেও क्या मृति विन्म् त याशमाध्याद द्रश्यिक ওই অম্পৃণ্ট বিন্দুটিই দুখ ও গভীর আক্ষণি সরপরেখায় যুক্ত হতে দেয়ান। ट्यारम्धेल-थाका, हार्कात्र-कत्रा मृहि व्यव्य-নন্দিতা ও বাব। নন্দিতার বিরে হয়ে-ছিল। তার স্থামী দাকাায় মারা রেছে। সে দাশতাজীবনের শারীরিক भ-प्रान् ভোগের মাতিও তার আছে। কিন্তু टेमर्गान्स्य कीविकाश ट्रम निटकटक, सिटक्स শরীর e যৌবনকে নন্ট হ'কে দিতে চার্যান। ভার আত্মপ্রেমট ভাকে বাঁচিয়েছে। জীবনের ভিত একবার পায়ের তলা থেকে সাথ গোলেও সে খ'ুজে নিয়োছ আৰু একটি धरामध्या । বচিবার আকাক্ষা তাৰ ज्ञा क्रमात्का ফারেয়েন। রাবর হোদ্টেল থেকে সে কিছুটো আপ্রহতির ब्राट्सा ट्रम्टे जाकाच्या भूतन करत ठिकहे কিন্তু স্বান্তাবিক সংখ্য বৌন-জীৱনে সে আগ্রহী বলেই অগ্নিতকে নে চার, নতুন ভাবিদে প্রেট্র ভূলে প্রেট্রা লাল্পতা-कीवरन्त चाम कितिया जानां का अधीत इता ७८७। किन्छू अवहे बताब सारित्रमा অস্প্ট্রোবনা সুবির অভিতপ্ত ভার মধো

প্রোট্ডের চোলা ছোতের গছীর টান ছিটে थाक। मान मान द्वीत्क जमिएक शार्म উপযুদ্ধ মনে করেও সে নিজের পলাত্র ছোরনকে ধরে জাখে ব্য়সে ছেট অমিতকে আগতে রাখতে চায়। অনুদিকে বুবিব हाला व्यक्षाय श्रवन आवश्रक्षा हाश मा বলেই নবিদভার পক্ষে অভিনেত পাওয়া भन्छन इत्स ७८छ। स्मथक सम्मिक्-कार्यस পারস্পরিক সম্প্রেশ্ব এই জটিল ও ধুসর प्रको**ं ब**ळान्ड कोमनी देश्मिट**ड राष** करतास्त श्रवामणः मानका मानामक देख-হ্যাসের ধার পরিবত্তানের ধাপগুলি कीवी व्यक्तप्रभा कीवरनत देशिका शान-সিকতা ও বিনাদন তাদের জাবি নর জ্ঞান সমস্যা ও স্থিতি-স্ভাবনাকে কোনো खेशनामिक इंजिश्रदर्व अधन अहि धर-क्यांत्म धरारक फण्डे। करवारहन किन्। कानि

দেষ প্রথিত সেই অংশত ক্রেণিত বিলম্টি জটিল জাল ছড়ালে। অমিতনিল্টার বিবাহিত লীপনে নিল্টা রথন
নতুন করে তার নিবতীয় যৌবনকৈ ধরতে
চাইছে ওখন নিল্টার মনে ঃনির ছয়ে।
পড়লো। নিল্টা তার অংলান যৌবনকে
লাল ধরে গাখতে পারে না। প্রেটাডের
লালীর ডাকে গাখতে পারে না। প্রিটাডের
লালীর ডাকে গাখতে পারে না। প্রিটাডের
লালীর ডাকে গাখতে পারে বিলম্পার বিলমে প্রশানী-বোধে
ক্রেনিকেকে কেবলাই ফাক্ষম ভাবে। জারা
লালিকেকে কেবলাই ফাক্ষম ভাবে। জারা
লালিকেনে কেবলাই ফাক্ষম ভাবে। জারা
লালিকেনে কেবলাই ফাক্ষম ভাবে।
লালিকেনে কেবলাই ফাক্ষম ভাবে।
লালিকেনে ক্রেটালা অন্তাম্প্রেটার
লালিকেনে ক্রেটালা অন্তাম্প্রেটার
লালিকেনে ক্রেটারা
লালিকেনে ক্রেটারা
লালিকেনে ক্রেটারা
লালিকেনি
লালিকেন

বিচৰণ তাৰ ব্যান, তাৰ উদাসীন কাৰত পাৰিতৰ অনুভূতি তাকে বেভাবে আৰা-বিনক্তিৰ পাথে নিয়ে গেছে, তাতে উপনাৰ্গিক বাধের প্রশাসন মন-বছাজ্বিক বোধের প্রশাসনা না করে গানী বাবে না।

কাছিনীটির বাইদের পারদাশ্য বর্ণনা অনেক সময়ই সাঙেকভিক, কিণ্ডু অনেক **শম্ম ব্যল্**নাহীন ও একট্ন দীঘ[ে]। নাদ্দতা धकारिकवार न्यन्त (मरथाए-भाठेरकत कार्ट এই সচেত্র উলেখ বোধহয় না থাকাই ভালো। স্বান-চিম্তা এবং কঠিন বাশ্তব-**ভাষার সম্পর্ক বোঝাতে লেথকের নিজ**ম্ব কোনো পাৰ্থকাস্চক হতি-চিহ্ন থাকাই ছালো। সেই যতি চিচাই বুকিয়ে দেবে ছব্লিত কখন চিম্তা থেকে ম্বংন স্বংন লৈকে কঠিন ভূমিতে এলে দাড়িরছে। সে ৰাই হোক, এই প্ৰবাসী-বোধ-পণীড়ত মান্দতার আত্মপ্রেম কীভাবে আত্মবিনাশের গান্ধীর নিঃশব্দ পথে ধারা করেছে তার বৰ্ণনা ও পরিক্ষম রচনার চেণ্টা সাম্প্রতিক উপনাসে मृति । এवः এই বিষদবোধ্য যে কঠিন সামাজিক ডুমি থাকে তা যে লেখক ভোলেননি এটাও প্রশংসনীয়। নান্দতার প্রেজীবন ও নেপ্রেগ্র সামাজিক প্টভূমি বচনায় তার প্রমাণ **অংভ**। তার নিঃশব্দ অপমৃত্যুর গভ**ি**বে হে স্মাজিক জটিলতা আছে দাব আভাসই উপনণ্সটিকে পথায়ী ভিতিভূমি দিয়েছে।

केन्छान अकाशमान

সেন এবং গোপালক্ষ মনুখোপায়।
প্রকাশভারতী। ১৩ রামধন গ্রের।
লেন।কোলকাতা-৪।দাম: পনের টাকা।
সারদশকের বাংলা গান' নামের

সংকলন গ্রন্থটি আধুনিক বাংলা গানের একটি প্রতিনি ধক্মলেক সংগ্রহ। এতে গত চার দশকের বাংলা গানের সংগ্রহ থেকে নিব'চিত কিছু গান সংগ্রহ করে আধুনক বাংলা গানের কলে পরহুপরায় ধারটিকে হাটিশানা দক্ষতায় উপস্থাপিত করতে পেরছেন। শ্রীমাথোপাধার এবং শ্রীমেন নিক্ষোই সংগতিক্রতা হওয়ায় আধুনিক বাংলা গানের পরিবর্তনে প্রতিটি ছত্তার তাদের সংধানী দক্তি ছিলা নেজেরা সংগতি-মচারতা হওয়ায় আরও একটা ছিনিস তাদের ছিল সেটা হোলা আধুনং কানের প্রতি একটা গতীর মমতা। এই কাহনেই সংকলনে তাদের আন্তবিকতা বিশেষভাব প্রবাশ পোরছে।

চারদশকের সময়সাঁথাকে নিথা ভড়াবে মানা হয়তো কোনো কোনো ক্ষেচে সম্ভব হয়নি—কননা, পেটা নেহাংই কঠিন কাজ। সেই কারণে চারদশক সময়সাঁথার ধারে-কাহেল কিছু, গান এই সংকলনের মধ্যে চারে পড়া অসম্ভব নয়। এমন ঘটনা যদি গাঠকের চোবে পড়ে ছা সহান্তিব সংশাই গ্রহণ করা উচিত। আ্থানিক বাংলা গানের বিবর্তনের ঐতিহাসিক জুমটিকৈ তুলে ধরতে সংকলনকারীয়া একেবারে আ্থানিক হাল আমলেরও কিছা গান সংগ্রহে রেখেছেন। পাঁতিকবি পরিচয় অংশটি বিশেষ আকর্ষণীয়। সব ফিলিয়ে সংশলন গুল্পটি একটি সাথকি প্রয়াস্ত ছাণা এবং বাঁধাই ভালো।

পত্ৰ-পত্ৰিকা

জাজিনক্স। (ডঃ সাধনকুমার ভট্টাহার্য স্মারক সংখ্যা)। সম্পাদনা দিলীপ বদ্দো-পাধ্যায়। ১৩১ হরিল মা্থালী রোড। কোলকাতা-২৬। দেড় টাকা। বাংলা নাটকের প্রসার-প্রগতির চিক্তা চেতনার যিনি আজীবন মণন ছিলেন সেই নাট্যপ্রেমিক অধ্যাপক সাধনকুমার ভট্টা চারেশর ক্ষমংশে এই সংখ্যার অভিনয় পতিকাটি প্রকাশিক হারছে। নাটকের মলে কথা এবং অভিনয়ের তাৎপর্বা সম্প্রেই যে তার গভাীর পাশিততা ছিল তাই নর তার মধ্যে ছিল ভিলপন্তি প্রকাশ, বা তার



ষে বংশাটির সংশ্য বাক্যালাপের
প্রসংগ্য এই কচনা তিনি একজন নামী
লেখক। প্রেটি। এখানকার সাহিত্যক্ষেত্র
অনেক কালের অভাচত বিচরণ তার।
রান্দ্ভাষী এবং মোটামাটি বিনয়ী
মানাষ। বাছাই করা তিনটি প্রকাশকের
সংগ্য কারবার তার। এই তিনটি প্রকাশকের
শক্রে মধ্যেও আবার এক নদ্বর দ্বান্দ্রর
তিন নদ্বর আছে।

কথা প্রসংগ্য বিভুটো বিমর্থ মুখে জ্ঞানলেন একজন ভালো প্রকাশকের খোঁজ ধরছেন তিনি খাকে সর্ব ব্যাপারে বিশ্বাস করা খায়—কারণ গুই এক নদ্বর প্রকাশকটির সংগ্রই এবারে সদ্পর্ক দেয় করে ফেলতে চান তিনি।

শ্বন আমি বেশ অবাক। জিপ্তাসা
করলাম কি ব্যাপার—টাকা পরসা নিমে
কিছু গোলখোগ বেংধছে কিনা। তিনি
জামালেন না তা নয়—টাকা ঠিক-ঠিকই
পেয়ে হাচেছন। তাহলো কি? বই ঠিক
মতো পুশা করছে না বিজ্ঞাপন ঠিক
মতো দিছে না? অন্য লেখকের আদর
বেশি বেড়েছে? স্বেতেই মাথা নাড়েন
লেখক বব্য—ওসব কিছুই না।

ভই বড় প্রকাশক সংশ্পার সংগ্ আমানও কিছু স্বাথের যোগাযোগ আছে তাই আমার জানার আগ্রহ। কিন্তু ক্রেরার পরে যা প্রকাশ পেল সেটা নির্দিণ্ট অভিযোগ কিছু নয়। লেখক বন্ধঃ বিরস্ত মুখ করে জানালেন অনেক বড় হয়ে গেছে ব্যবসা ছড়াছে—আগের মতো সে-রকম একাছা অন্তরণ্য ভাবটা জার নেই—কেমন হেন জাড়া-ছাড়া ভাব আগের মতো সে-কক্ম আর সন্ধ-দুম্থের সংগাীমনে হয় না ও'বের।

এই সামান্য ব্যাপারটোই আফ্রাকে এক বৃহৎ চিন্তার দিকে ঠেলে দিয়েছে। আমাদের দেশে প্রকাশনার চিয়াটাই

অনাবক্ষ। মোটামাটি একজন লেখক তার পরিণ্ড জীবনপরিক্রমার প্রান্তে এসে দাঁড়ানোর মধ্যে সত্তর-আশী একশখানা বই লিখে ফেলেন। অতএব আট-দশটির@ বেশি প্রকাশ-সংস্থার সংগ্র তার লেন-দেনের কারবার-এক প্রকাশককে ছেড়ে অনা প্রকাশক ধরার তাগিদ। কিন্তু পাশ্চাত্য দেশে যেখানে একখানা বই সে-রক্ষ উৎরে গেলে লেখকের জাঁব সংগ্রামের সমস্যা মোটা-মুটি মিটে াল –সেখানেও লেখকদে নিয়ে প্রবাদের প্রসার সম্মূখীন 🧳 হয়। আর সেই কারণেই বিদেশের ওই স্ব প্রকাশ-সংস্থা তাদের লেখকদের নিজ্ঞান করে ধরে বাথার সাফলটোকে দৃষ্ট্র মতো এক অন্-শীলনের বৃদ্তু মনে করেন। একজন ভালো-বিক্রীর লেখক বড় জোর আট-দশখানা বই লিখবেন-মনের অমিক ভিন এই স্ব লেখকদের এক প্রকাশককে ছেড়ে আর এক প্রকাশক ধরার প্রশ্নই ওঠে না। তাতএব লেখকদের এই মনের দিকে তাকানোটাই একটা বড আট কলে মনে করেন তাঁরা।

আমান ধারণা লেখকদের নিভূতের মানাসক দিকটা মোটামাটি সব দেশেই অভিনা সেথানেও অতি তুল্ছ কারণে প্রেথক বা লেখিকার তাঁর পারনে প্রকাশকক ছেড়ে যাবার নজির আছে। যেনন প্রকাশক হাতো তাঁর কোথক বা লেখিকার শেষের বইরের ছবি বা দেশিকার শেষের বইরের ছবি বা টোলিভিশন-আন্তান দেখেনি তাঁর বিবাহ-বিল্লেদের বাাপারে হয়তো আশান্র্বা সহান্ত্তির আভাস মেলেনি তার অসম্পথতার থবর রাখেনি বইরের সংস্করণ শেষ হ্বার পরেও তড়িছাড়ে প্নর্মাদ্রণের আগ্রহ দেখায়নি জন্য নজুন কোনো লেখক-লেখিকার প্রতি হয়তে তাঁর

অভিনয়চাত্ত্বের মধ্যে ধরা পড়ত। নাটক লেখা এবং তা অভিনয় করা সম্পূর্ণ পথেক ব্যাপার। দুটির সমন্ব্য একই খাজির মধ্যে বড়ো একটা দেখা যায় না। পাধনবাবরে মধ্যে এট দটেয়ের সার্থক প্রশ্বর দেখেছি। মাটকের বিষয় ETET G শিক্পতন্ত বিষয়ে তার গভীর পান্ডিতা क्षकारिक शस्त्र प्राथा क्रीफ्रा शरहाक। **এক**টা জ্ঞাপক সাধনকুমার ভটাচাবের দ্বাদ্বারিক পরিচয় সাথ^{কি}ভাবেই তলে ধরা ক্রেছ অভিনয়' পতিকার এই বিশেষ সাটিতে। সহক্ষী ও ছাতদের বালীতে ডঃ সাধনকুমার ভট্টাচাব শিরো-আর হিবন্ধর বল্দোপাধার, প্রশান্ত- কুমার বস্থাবিদ্যাকৃষ্ণ ভল্ল এবং আমর ঘোৰেণ সম্তিচারণা ভালো লাগল। অভিনয় পতিকার এই প্রয়াসে আগতীরক অভিনদন লানাজি।

মুভি মনভাজ। প্রলয় শ্রে সংপাদিত। ২৬ চৌর•গী রোভ কোলকাতা-১৩। দেও টাকা।

কালকাটা সিনে ইনিক্টিউটে:-এর তৈ-মাসিক পতিকা মাভি মনতালাএর সাক্ষতিক সংখ্যায় বেশ কয়েকটি চলচ্চিত্র সক্পতিতি রচনা উল্লেখ করার মডোএ সোমেন খোষের লেখা বাংলা চলচ্চিত্রঃ অপ্রগতি ও সংকট'—চলচ্চিত্র নিয়ে বাঁগ ভাবেন তাঁদের কাছে ম্লাবন বিবেডিত
চ্বে: আফ্রিকান চলচ্চিত্রকর ওসমান
চলন্দ্রনর কলে সাক্ষাংকারটিও ভালে!।
অনেক মতুন চিল্ডান্ড বনরে প্রতিষ্ঠান অংগ্
বির্দেশ কিছু বলিওঠ প্রশ্তাব রেখেছেন
দ্রভেন্দ্র দানাগ্রভা প্রবাহ উল্লেখ্য
কালের ক-উস্বাহ লেখাটিও উৎবেছে। প্রভাল
প্রেণ্ড্র। ভাপা পরিক্রম।

চিত্রকলণ। সম্পাদক প্রমে দকুমর বাহিড়ী। ২ চেরিংলী রোভ কোলবাডা—১৩। দুশুটুকা।

বাছিৰকুমার ঘটক একজন দ্বানত চিত্রপারচালক একথা অনিবার্যান্ত বেই স্বানির
করতে হয়। সম্প্রতি সিনে কব অফ
ক্যালকটার উল্লোগে থাকি ঘটকের চারখান
ছবির প্রকাশনী হয়ে লোল। দার্শাক থাকিকবাব্র শিক্ষাক্ষাকৈ নতুন ম্বানানে প্রতিটা
করার প্রস্থেকা জন্তব কর্মানানে প্রতিটা
করার প্রস্থেকা সম্প্রতি ভিলেজ্য করার এই
সংখ্যাটি কাছিক ঘটকের ছবিল আলে চন্ত্র
সম্প্রা এছাড়া আদান সংকেত ঃ ইতিস্বান্ত ব্যান্তিক
নব্যধ দ্টিও উল্লোখ করার মতো। পাঁচকাতির
সর্বা স্বাচির ছবিল অছে।

কলাপ। সমপাদনা বাদল সমাকার। ১৯৫, গান্ধী কলোনী টালিগজ। কোলকাতা-১০। দাম এক টাকা।

'কলাপ' রাত্রিমতো একটি পরিক্রমে
নাচির কাগজ। পরিক্রমতা এব অব্ধান্তর
নাচির কাগজ। পরিক্রমতা এব অব্ধান্তর
ভালা লেগেছে নতুন করিদের আরও
করেকটি কবিতা। একজন প্রতিতিক গ্রন্থন
লেখকের একটি কবিতাও আমাদের কবিত
দিরেছে। নামিরিয়া নতুন জবিনের ভ্রবন
নামের প্রবহটিও পটিকার মর্বাদা বা্ধ্রি
করেছে। প্রশাস্ত নারেয় ক্রেচিও জালো।
প্রতিক্রাভি (ভারাশক্ষর সংখ্যা)। সক্রাদান

রজেগদুকুমার জট্টাচার্য। বিসি কার্ণ রোড। কোলকাডা—১৯। চারাল পদসা। এই সংখ্যার লিখেছেন স্ফাল রার মানবেশ্র পাল বড়েশ্বর চট্টে গাধ্যার এবং বিশেবশ্বর রায়। তার শংকর বংলা পা ধ্যাকের একটি ছেট্ট অপ্রকাশিত ক্ষিক্তা আছে গান্তিকা। ছাল্য বিবাহর বড়া নেওব্রা

লামতী। সাপাদক কৃষ্ণপদ দত্ত। গ্রিপ্রে। সরকারের জনসংযোগ ও প্রতিন অধিশার থেকে প্রকাশিত।

তিগ্রার গণশ-উপনাদের গতি প্রকৃতি, তিগ্রার সোকি দেবনেবী প্রসংকা এবং চলচ্চিত্র প্রসংকা দ্বীর্থ লেখা তিনটি পালকার আকর্ষণ ব্যক্তি করেছে। লিখেছেন ফার্তিক লাহিড়ী জগদীল গণঠোধারী এবং সোমিচ চটো গাধার। আলা করব পরিকাটি জারও জাকর্ষণীয় হয়ে উঠবে।

বৈবেচনার একটু বেলি নজর দেওরা ইচ্ছে ইত্যাদি ইত্যাদি।

अस्तित कात्मा अक वस श्रकान-জাংস্থার ডিয়েকটর তার বোধা লেখকদের প্রসংখ্য ব্রেছিলেন আমি আমাত লেখক-দের কখনো আহা কখনো ব্যাঞ্কার কথনো ভাক্তার কথনো বা ট্রাভলিং প্রজেন্ট। তাঁর মোজা দেখে রাগ করে কথনো বা পাঁচ ডলার খরচ করে একজোড়া মোলা কিনে দিলাম অসুখের থবর পেয়ে সবার আগে ছাট্লাম তাকে হাস্পাতলে ভূতি করার তাগিদ নিয়ে। একজন নামী লেখকের ছেডে যাওয়া প্রসংগে তিনি মাত্রিক হেসে বলেছিলেন হঠাং দাবাবহার করে আমার এক সেক্টেটারিকে ক্রীদানোর ফলে লেখকের সংখ্যে আমার ঝগড়াই হয়ে গোলা। লেখকও রাগ করে চলেই গোলোন। অন্য এজেন্ট ফাঞ্চালে তাকে অন্য পাবলিশারের কাছে নিয়ে গেল। সেথানে তিনি ভালো ব্যবহার পেলেন মোটা টাকাও পেলেন। কিন্তু ন'মাস না হেতে ঝগড়া মিটিরে স্ভুস্ড করে আবার আমার কাছেই ফিরে এসে দ্বদিত্র নিশ্বাস ফেললেন। ঝগড়া হলেই কি প্রমো মা-কে ছেডে যাওয়া এত সহজ।

১৯১৬ সালের কথা। লাগ্ডমার্কার ইন ফ্রেন্ড লিটারেচারের স্ফল লেথক কটিন স্ট্রাচি সদা একথানা নতুন বই লিখেছেন— 'এমিনেন্ট ভিকটোরিয়ানস'। এ বই ছাপার বাাগারে তিনে শতাবিদ্য হলেন প্রখ্যাত প্রকাশক সংক্র্যা 'চাটো আগ্রুড উইনভাস'-এর ক্রাণ্ডা ইনভাসের বর্ষার্লা। কিন্তু তেমন লোনো সাড়া মিলল না। চাটো আগ্রুড উইনভাসের পাউন্ড আগাম পাঠানের ব্যাপারটা কির্কম করে ভূল হুমে গেল। মুন্ডাহের প্র সম্ভাহ কেটে মারা—ভূলটা আর ধরা পড়ে না। ওদিকে লেখক লাটনও নীরব কিন্তু অসম্ভূট ভো

শেষে অনেকদিন বাদে বঁটার বখন
আবার প্নম্নিনের সময় হরে এলো
চ্যাটো অ্যান্ড উইন্ভাসের মাধায় হাত।
এ কি বিভিকিছিরি ভুল করে বন্দে
আছেন তারা। তাড়াতাড়ি সবিনরে সেই
ভূল সংশোধন করলেন। তখনো এই
স্ক্রাচি তাদের কত টাকা এনে দেবের
কৈছ্ই জানেন না—কারণ সে-রক্ষম
কোনো প্রতিগ্রিত তথন প্রান্ত তারা
দেখেনান। শ্রুণ্ ওই ভূলের
প্রায়িন্ততের নিকে মন চেলে দিকেন তারা।

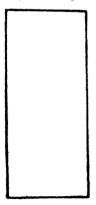
নানা ছল-ছুতোয় দেখককে তাঁরা বাড়তি টাকা পাঠাতে লাগলেন। নতুন বইয়ের কন্টাকট করে স্ট্রাচির আরে৷ তের বেশি জানিয়ে একাধিকবার সেই কল্টাই ভাগ করতে मान्यान्य । লেখক আপতি করবেন কি প্রতিবারেই তার প্রাপ্য বেড়ে হাজে! শুধু এই নয় তাঁর পছনদ এবং তান,মোদনের প্রত্যাশায় इरतक तकरशत कार्राटकरहेत्र सम्भा भारकहन ञ्डोर्गीठ ठाएँग व्यान्छ উইনভাসের পার্টনারদের কাছ থেকে কিরকল বাঁধাই তাঁর পছন্দ সেই খেজি আস্তেছ তার শছদের তারিফ করে তাভিনদনে পর আসছে তাঁর বইয়ের ছাপঃর কাজ দেখার আমণ্টণ আস্ছে ইনকাম ট্যাকস নিয়ে তাঁদের লেখককে কোনো ঝামেলায় পড়তে হচ্ছে কিনা সেই থবরও প্রকাশক সংস্থা স্বিন্ধে নিচ্ছেন তাদের অনুদ্ধোধ ঝামেলা উপদ্থিত হলে তীদের প্রিয় লেথক যেন অবশ্য জানান-ত্রি ম্থাসাধ্য ব্যবস্থা করবেন।

আর লীটন হ্ট্যাচি?

ওই সংশ্যা ছাড়ার চিম্তা দ্রে থাক যে পার্টনার বহুদিন রিটায়ার করে গোছেন-চিঠিপনে তরিও আম্তরিক কুমল সংবাদ নিতে ভোলেননি।

—আশ্তেষ ম্থোপাধ্যম

সেকালের সজীতগুণী



(SE)

বিশ্মত হারমোনিয়াম-শিল্পী

আল্যালে খেলিভেছে সাভটি সার সাতটি যেন পোষা পাখি। শুধু স্তটি কেন। সাতাত তে। শুল্ধ স্বর। ঠাংরি অংশ আৰু তেম্ন তেম্ন ধাগে বারোটি স্থত হতে পালে, কোমল কড়ি নিয়ে। মেমন ভৈরবী কিংবা পিলাতে। পোষা প্রাথিক মতেন কলম্বরে সেই সব স্থ रवरक উठेरकः ज्ञानस्मानियद्य कारमा भागा হাবির সাল্প। জার ওপুর চলম্ভ গোলাপী-গোরা আপটের কটি। বেন মেলায়েম ভুলিব টানে আসা যাওয়া করছে ভাষা। कात कार्यक श्राटक नामा कारणा शर्मा करें जनगर्न की नामा करन हरमाह । वी দিক থেকে ভাইনে। ভারা প্রায়ে ঘুরে धारम कावाब चाम शरह अन्त मन्छरक। সাংখ্য ভিন অবংটাভর বিস্তাব। আর সেই আভিন্তাবেশর পরেশ পোরে চাবির স্থার रबक्त क्या रहाते रहाते रहते काल शालहा रमहे भ्रान्त्र स्ट्रह हर्सरक् भाषत्र वर्गा-পদাৰ পদায়ে ৰাব**া হাব্দোলিয়মেৰ** তত কবিং এমন মোলায়েয় ওঠালায়া যেন একটিব গ্রহে করে একটি ছিলে লেভ। একটির সংক্র মিল্ছে আয একটি স্রাবেন মিডের কাজা ব্যর থেকে শ্বৰ শত্ৰে, আঞ্জেন্টি শশ্ৰা কৰে গাড়ায় কাম যাওয়া। প্রতির সাক্ষা **ভি**য়া আছে প্রেয়োনিযাল সদ্ধানি হাছ নাঃ তাবা বিলয়ের ক্ল হা**লৈ বভালুভ সম্ভব**। শিল্পীর অন্তর স্থে এত পূর্ণ ছাত এমন সাধনে দ্রুত যে চাবির গারে গারে মিডেল তল নেমে আগছে। আর ফত ভার চিকনভা। কথনো খিল্পী আশ্চর্য সাগটে কটি পদ্যি ছারে বাচ্ছেন ঘরণের ধরণে। আলু ত্রিস্কোনিরমে যেন মাশ্-এর কাল ফটে উঠক।

এমনি নানা জলাকারে, স্বরের নিষ্বিসে যেন কথা কইছে স্বাদ্যাধ্য বলটি।

মীর্জা সাহেবের সেই হারমোনিয়ম বাদন। সেকালের আসরে ছিল এক মহা-উপভোগের বন্যসলাতি। এই শাতকের তিলের দশকে, বিশের দ্সাক, আবা গাঁচ দ্সাবছর আগেও।

স্কের সপাতে ষেমন, এক আন্তানেও তেমনি। থেরাল অপোও মীলা
সাহের বাজাতেন। কি তৈরী সে বাজনা।
এমন এক একটি কতরি করতেন থা
অনেক গায়কের পক্ষেও অসম্ভব। ছোট
ভোট তান কিংবা টুকরো কিবং কিংহা
বক্মানি পান্টা, তিন গ্রামে পালা দিয়ে
খারে আসা বড় বড় তান সব পেখাতেন
পালাটি ভাবে। সাধা কাঠ তেয়াল
গানই বেন হাব্মানির্মে বেজে চলেভে।
কম্পের বদক্ষে বক্তা এই বাধা পাদার
বিশেষী যুক্ত ডড়ার সম্ভব তার ক্ষের
সীমা প্রক্ত জিল্পী দেখিবে দিক্তেন
সাবের বিস্তাল।

মীৰণা সংহ্ৰের ব্যজনা ডা এড প্রাণবদ্ত হ্যার কা্থণ, তিনি নিজেও গায়ক ছিলেন। তবে গান গাইতেন না আসরে। ছবেয়া ভাবে কথ্না গাইতেন। তা ছাড়া গানেব তালিম দেবাল সময়ও দেশাতিন গোয়ে। তখন শোনা যেত ভার স্কঠ। भारत अञ्चल ता शता স্বয়াল্য ভাল শিশ্পী হওয়া যায় না। প্রায় তাবং शाली दासकाम्बद्धे रमाधाकीवाम । शार्यम একিক জন গায়ক। অলকো সেই স্তা য়বলীর ছাতে স্রু সুভার করে। মীকা সাহেবও গানের চর্চা করেছিলেন ভাল ্চার ভাবে। শুধু থেয়া^জ নয়. স্বামপার প্রকারের বীণ্কার (অন্তরালে হুপদ হোটি ধামার থেকে ঠুংনি প্রশ্তে নানা রীতির গায়কও) উজ্ঞীর শার কাছে তিনি হোরি ধামার শিক্ষেত্রিকার নিজের ছাত্রদের হোরি ধামান খেলাল ঠুংলি স্বই দিতেন মীৰুণ সাহেব।

ত্তৰে আসাৰে তিনি ঠংনিই বেশি ব্যক্তাতন। একক অনুষ্ঠানে আৰু সংগাতিয়া অবৈধি । জাৰ মিহি কাৰ্ত্ত ছিল প্ৰাংকা প্ৰিয়া তাৰ মিহি কাৰ্ত্তম ভাৰ মিন্দ্ৰই তাৰ লাকলা তাৰ মনোহারণ ক্ষেত্ৰিকা। আৰু তাৰ প্ৰত্যায় মুগেব আবৈদ্যনা বেশ্ব বানিক্ষে ব্যক্তিয়ে ক্ষাণ্ড্ৰ বোল বানানা ঠাংরি। এই চালের ঠাংগির চচ্চাই জিনি কলেছেন। আসরেই তাই বাজান। এই বাজির ঠাংরিই তার প্রিয়।

গণপথ দাওরের ঠংরিও ত এই
ধরণেই। মীন্ধা দাহেবও সেই একই
ধারার শিশপী। এই প্রদা করা ধন্য
হাকমোনিরমে ঠংগি দ্বীতিতে তার
দ্বদের চর্চা। হারমোনিরম আর ঠংগি।
এই দুই নিরেই তার আসল স্পাতভাবন। ঠংগির মরমীয়া তিনি।

তবে গানে নয়, হারমোনিয়মে। আর আসবে সেই ভাবেই তাঁকে দেখা হার। চালিশ পঞ্চাশ ষাট বছর আনুগেকার কলকাতায়। তথনকাব আসবে আসবে।

ঠংরি গানের আবেগ আরু হ্ময়স্পশী ভাব তার হারম্মানিয়্মে মেতে
এঠে। এক একটি ঠংরি গানই যেন
কঠের আবেনন নিয়ে বাজতে থাকে তার
যক্ষের চাবিতে চাবিতে, তার আক্সালের
মব্মী ভোগায়ে। শান্ত আক্সালের বার্য হারম্মানিয়্মের প্রদা্য প্রদা্য
মেন নাতা করে চলে।

মাজিলা সাহোবৰ হাবলোন্যম বাজনা। এতদিন ধাবৰ এমনি ভাবে বাজনে এতজন ধবে বাজনে যে আপলালগালির এই বাজনে। ভণগা জনা সময়েও থেকে যায়। বাজাবাব ভণগামায় আপলালের মাখখান থেকে বাজান না, তখনো বাহাতের আপলালগালে অধ্যালাকার বাজনে থাকে। সোজা করা যায় না আরা সোজা করার চেটাও জিনি করেন না। এখনি হাতুর অব্যবহার দেয়া নিয়ে বাজ্র হাতবা অধ্যালাকার বাজনা ধারে বাজ্র হাতবা আরা হাত্র বাজনা হাত্র আরাহ হাত্র বাজনা হাত্র আলাকার মাধা বাজির বাজনা হাত্র আলাকার মাধা বাজির বাজনা বাজনে বাজনা মাধা বাজিরে বাজিরে

মাশা সাহেবের বাঁহাতের আংগ্লে-গ্লি বাঁকানো। কাংগ তিনি ভান হাতে হাথমোনিষ্মের বেশো কংগন। আর বাজান বাঁহাতে।

গণপং বৃত্তার গোণ্ঠীর জারা কছনেরই এমনি ব্যক্তানার দৃষ্ট্যুক্ত আছে। দ্বরং গণপং রাও বাঁ হাতে বাজাতেন। আর বেংলা করতেন জান হাতে। তেমনি তার প্রধান দিবাদেশ মধ্যে দৃক্তন-গ্রাহ গক্ষার ঝাঁ ও ইন্দোরের বাসর ঝাঁ গণপং ব্যক্তার স্বামা দিবাদেশর মধ্যে দ্বান সংখ্য বাজাতেন স্বামা দাবাদাবাল কেন্টো ইক্সাদ ।গারাব। সেন্টিটা প্রস্তুত ক্ষান।

মান্দা দাহেব গণপথ বাওয়েও দিবা লা হলেও তাঁও বিগাও হাগমোনিয়ম বাদক গোওঁটা একজন ছিলেন। গণপথ রাওয়েব প্রিয় দিবা শামিকাল ক্ষেত্রীগ সপো মান্দা সাহেবের অভি ছান্দিউতা ছিল সংগাতিব স্থে। আরু শামনালক্ষীর শীবান্ধানীয় and the state of t

গিলিজাশুক্ষর চক্রবাটীর তিনি অস্তর্মপা জিলেন। গিলিজাশুংকরের টুংরি গানেব প্রতিভা বখন পূর্ণ বিক্লিত তখন তার গানের সংক্র মালা সাহেবের হাম-মোনিরমা স্পাত হত নানা আমরে। কলকাতার বহু আছু বে গিরিজাশুক্ররের সংগতকাবী বাজনা শোনা বেত তার।

আরো অনেকের সংকা তাঁকে চার-মোনিরম বাজাতে দেখা বেত। বিখাতি গারক-গারিকা থেকে গার্হা করে অখ্যাত শিল্পীর সংকাত। মৌজাুদিন কিংবা আগ্রাপ্রাপী মালাকা জানের সংকা যোমন বাজিরেছেন তেমান আনাকেই তাঁক পেরেছেন। এক স্বান্ধ উপার ছিল তাঁর চারমানিরম শোনাব। সে তারে চবিত্রের একটি বিষম্ম দুব্লিতা কিংবা এক প্রধান বৈশিণ্টা।

ৰেখানে সেখানে, বাল তাৰ সংক্ৰ বাজিংল্লছন। তবা মীজা সাহেব একজন দক্ষমত গাণ্ণী। আৰু হালমানিলনে কলকাতার? একমাত্র শামলাল ক্ষেত্রী ভিল ?

গণপদ দ্বাওরেবই আর এক কতী শিষ্য জিগেন কলকাতায়। হার্মোনিয়ন বাদক ইরসাদ। কিবতু ইরসাদের সেয়ে অনেক ভাল বালিয়ে ত বসিলা থা বিখাতি বোলা দিকপাল জালাদিয়ার চাতুসপ্ত। কেই বসির থা বলতেন, মালা সাবহারসে আছো বাজা বাজাতা।

শামলালজী ত সোখীন অগণি অপেশাদার। মীজা সাহেব কিল্ফু অদ্পেল ফেরে পেশাপার হয়ে পড়ে-ছিলেন। শাদুও অগা সোখীন হয়ত বলা যায় ভাকে। কাবল বিনা মুক্তবেতেও বাজাতেন আসরে। ভবে জীবনের শেষ দিকে সে সোখীনতাও আর বিশেষ ছিল মা।

ৰে কোন আসদো যা হোক মাজনোয় ভখন দেখা যেত তাকে। হারমোনিয়ম নিরে বসেছেন। কখনো একক, কখনো সংগতকার। পদায় পদায় আংগালের খেলায় সারের লীলা ঠিকট আছে। কিম্ডু প্রথম জীবনে দেখা অনেকেই হয়ও চিনতে পাদবেন না ভাকে। এই বাংধই কি সেই মীজা সাহেব? মাখা খেকে পা একি পরিবর্তন চেহালায় ত হবেই। কিম্<u>জু পোৰাকে আশাকে ধন্ন</u> ধারণে? কোথার সেই সব লোমদার কি জারদার টাশির বাস্তার > সোখান পিরান চুল্ড পারকামা ? এই ন্তাপর আপ্রাক্ত **रकाशाज लाम क्यांक आ**र्डि? कार ভূলোর টিশ থেকে লাল্ডারির আতরের शास्त्र ? अथात किकन कुक एकमा ? एमड़े रंगानाभी रंगीत्रवर्ग जान माच-रहारगर চমধ্বার ছাঁদ শ্রু খানিক আছে। শরীর ক্রাকৃতি কলে হয়ত ভালোনি তেমন। কিল্ডু মুখে চিব্ৰে কপালে ফুটে উঠেছে বলিবেখা। বাঁকানো আংগালের মডন পান্টাবেশ কিছু কানুকে পড়েছে। আর উন্মান্ত পত্রে কেশ শুত্র জ্বা, গোর পেত্রের সংগ্যে আরে। করুণ বেখিরেছে ভার মলিন কেশ্বাস!

কে মীজা সাহেব?

আনুসরের অনেকেই হয়ত জানেন না সেকথা। শানবার কৌত্হণও হয়ত নেউ।

কিল্পু জানাবার মতন পরিচয় আছে মীকা সাহেবেল। নবাব ওয়াকেদ আলির এক শোলু তিনি!

সে বংশ-কথা বলবার আগে মীজ'। সাহেবের সংগীত জীবনের আরে। কিছু কথা বলৈ নেরা যার।

কলকাতার ভার আসর সচ্রাচর কোথার হত, গান কিংবা হারখোনিয়ান কে কে গিথেছিলেন ভার কাছে এই সং

মূলবা নিয়ে কিংবা বিনা মূজ-রোভে নানা আসমে তিনি বাজাতেন। সে সব সামায়ক আসর। কিন্তু নিদিক্তি কটি আসর তার ছিল। যেখানে তিনি নাকে মাকেই বাজাতেন। বেশির ভাগই একল বাদন। তা তার বশ্ব,বাগ্ধব বা স্পাতি জীবনের সহযোগী অনুরাগী, শিষা প্রভৃতিদের ঘারোরা আসহে। বল। বাহ্লা, এসব আসরে। তান অপেশাদার হয়েই যোগ দিতেন, গ্রেপনা দেখাতেন।

থামনি আসর তাঁল সবচেয়ে বেশি হ'ড শামিলাল কেত্ৰীর হাণিলসন বেডেল আবাসে। শামিলালজার সেই ১০১ সংখাকে বাড়িল্ল (সেন্টুলা এটিনিট ত কলেজ শ্রীটের মাঝামাঝি দক্ষিলম্খী) দো-তলায় সে ব্লের একটি সংলগতি তবিও ভিলা নানা সাপ্রসিম্ধ কলাবং কলাবতী-দের সংগাতিচচায় ও যোগাযোগের বেশস্ত্রালে ধনা হত কেত্রী মহাশবের সেই নিতা আসহ। মীলা সাংহ্রেরও আনক দিনের আন্তান সেখানে ধেকেই গিরিলাশ্যক্রের সলো মীলা সাংহ্রের অলাপের স্তুগাত।

মেছ্য্বাকালারে কিনোবীলাল চোধুরীর বাড়িচেও প্রায়ই তারি বাজনা হত। চোধুবীর সংলা বংধাছ জিল মিজা। সাহেবের। এখানে মাঝে মাঝে ভিমি শোকেই বেতেন। কিলোবীলাল জিলো পাট্বার লোক এবং মেকালের স্থাপাচিত ভোল্ল কিহাবা বাসায়ী। তিনি কলা-কাভার একজন সংগীতগ্রেমীব্লে বাড়িতে অব্লব বসাতেন। কলকাত্র মাজাণু বাহেবের মতন অনের গণেই লুধুনন কলেনার রাজা নব্য আলি, শারার সোনীজী প্রমান্থ বাজিও খোগ দিয়ে লেছেন কিলোমীলালেও আসরে।

মেছারবাজার অঞ্জাই কল্ফে মারা নামে তাঁর এক দোকের বাভিত্র মাজা সাহেব মাঝে মাঝে আসল কর্তেল।

প্রেমচাদ বড়াল স্থাতি কিষ্ণচাদ, কিষ্ণচাদ, রাইচ'াদ বড়াল প্রাভাবেশ আসক্ষেত্র বাজাতেন মীজণি সাহেব।

বা্ধাণসী ঘোষ শ্বীটের ছেটেকামালের গাহেও তাঁর আসর হত। ছেটকাশালের গাহে হলেন পরবতীকালের সংগতিত জগতে লালাবাব্ ন্যমে স্পরিচিত দামোদনদাস খামা। উচ্চনামের এবং মর্মা ভারতীয় সংগতি সংলোগন এ নানা সংগতিস্থান সংগঠিক ২০ বারাল্সী ঘোষ গাঁটি মাজা চিল্ল ২০ বারাল্সী ঘোষ গাঁটি মাজা সংগ্রেম্ব স্থান দিন্দের গাঁইর মাজা হিছে। ছেটকাশাল তাঁর এক-জন শ্বাহাও।



⊕ই আৰ ক্ষম ব সম উনকাৰ্পাকেটাছেছ গোলটাও প্ৰচলাৰ নামসংকালী মাইসেম্বান্ত প্ৰতিবিধি বস সি. পি- এল, ১ উচ্চাচ্চ-৪০-৪৯/বৈচ ইচ্ছ

প্রমান আনে, ... নাসবে মীৰ্লা সাহেংকৰ ছার্মোনিরহা লোনা মৈত। সকলের নামোরেখ নিপ্রয়োজন।

ছবি সাহা সংগতিকবিন কেটেছিল ক্ষাকাভায়। এ শহরের নানা ধরনের আলরে তিনি যোগ দিতেন। একবার একটি क्षक क्षणणा इस माणेशिक्ष श्रदेश। दारमात क्षा करानी जीवनहत्र मार्यानाशास्त्र शहराया बक्रनी हिटलद सम्काम। दन জ্বাৰ অংশ নেন হাফেল আলি ক্লান্তালন ধা প্ৰমাণ আনক বিখাত ক্ষাৰত। মীৰু সাহেবত সৌদম একক ক্ষানামর প্রান্রেছিলেন। সমবেত ক্রিকা একটি কটোলাক নেরা হয়ে-क्षा दम जानला। भीका जारहराक दन ীয়ার দেখা বায় । সেইটিই বোধহয় তার একলার প্রতিকৃতি।

এক সময় জ্বোসর' নামে একটি সমিতি হয় ২০. চৌরগ্গীতে। তার উদ্দেশ্য ছিল গাণী গায়ক বাদকদেশ উপবাস্ত দক্ষিণা দিয়ে প্রতি মাসে অনুষ্ঠান করা। কল-কান্ডায় তবলাচচার জনে স্পরিচিত মুক্তাপুনাথ গ্রেগাপাধ্যায় তার অনতেম প্রতিষ্ঠাতা। সেখানে পান মনমধনাথেবই धक न्यांक बक्रमीत मश्याम भाउमा याम। ১৯৩২ সাজের ১৭ই সেপ্টেম্বর সেই ভাশসার গান গোরছিলেন গিণ্ডিছাশুংকর চলবতা, তৰলা ৰাজিয়েছিলেন লক্ষ্যের ওগ্তাদ আনেশ হোমেন। আর সংগতি বিজ্ঞান পুরেশিক'র ভারার 'প্রসিদধ ও=ভাদ নীজ' সাহেবের হাবলোনিয়ম হাপনত লেপিন হয়েছিল।

এমনি নানাভাবে কলকাতায় সংগীত জাবিনে জড়িত ছিলেন হাজিন স্তেব।

ভার লিষ্যাপ্তলী বিরাট ছিল বলা याहा। आत कनकाणा बारेत वर्मत প্যাণ্ড বিশ্বত ছিল প্রবিপ্যের কোন काम स्क्रमा भवक्ष।

মীলা সাহেবর কাছে বারা নানা সময়ে শেখেন, তাদের করেকজনের নাম পরিচয় এখানে দৈওয়া হল :--

(১) তি**লজনার** সাহাব-দিদন। ইনি হারমোনিয়মে ভাল তালিম পেয়েছিলেন। ভাল বাজাতেমও মীজা সাহেবের BES !

(২) জানি সাব নামে পার্মাচত. তফজ্ঞা হোসেন। মেটিয়াব_ব জের विथाप ठेरांत मानता शकल देउतां नि গায়ক পিয়ালা সাহেবের পত জানি সাহেব কুতী হাল্মানিয়ম বাদক হয়ে-ছিলেন। তিনি গায়কও ছিলেন জমি-র্ণিদন খা কল্ডে খা প্রভৃতি নানাজনের তালিয়ে। কিন্তু হারমোনিরত জানি সাব শুধু মীজা সাহেবের শিকাই भागम ।

(৩) বৌবাজাগের ধ্রীরেন্দ্রনাথ দাসও মীর্জা সাহেবের একজন প্রিয় শিবা এবং ভার স্থাল ভালিম পেয়েছিলেন হার-মোনিরমে। কলকাডায় থরজ-পরিবর্তন-সক্ষম (কেবল চেঞিং) হারমোনিয়মের এক আদি নিয়াতা সংগ্রেশ্নাথ দাস হার-মোনিয়ম বাদকও ছিলেন। গণপং রাওয়ের শিষা বসির থা হলেন সংযোগনাথের হার-ম্যোনিয়মের ওশ্তাদ। স্কেন্দ্রনাথের হাগ-মোনিরমের বিপণি (৬৯ হারিসের রেডে) শামেলাল কেচীর বাডির মিকটেট ছিল। সেই সূত্রে সাংগীতিক যোগাযোগে শাম-লালজী ও তাদের গোণ্ঠীগ্র আনকের সংগ্রেই ঘনিষ্ঠ ছিলেন সংক্রেন্থ। হার-লোনিয়ম নিমাতা বলেও তানের সংখ্য মীজ'া ভার সহযোগিতা থাকত। ° কাছে আসতেন সাহেবও সারেশ্রনাথের হারমোনিরমের জনো। এমনি প[া]লচায়ের স্বেন্দ্রনাথের পরে ধবিনন্দ্রনাথ ঘীজা সাহেবের কাছে শিখতে আরুড কলেন এবং ১৭।১৮ বছর শিক্ষাথাঁ^c সমপ্র রাখেন ওস্তাদ্জীর প্রায় মৃত্যুক্তা পষ্টিত। মীর্জা সাহেবের এক যোগা শিখা <u> তয়ে ধীরেন্দ্রাথ দাস কলকাভার আস্থে</u> পিরিজাশ্বনর চক্রবড়ীর স্থেগত অনেক্রার ভাবয়োনিসম সংগ্ৰভ ক্রেছেম। কোন কোন আসরে গিরিজাশংকরের গানের স্থেগ এক পাশে বসে কলিয়েছেন মীজা সাহেব অন্য भारम धीरत्रम्बराध प्राम।

(৪) টোরটি বাজার অঞ্চলের আলি মহম্মার সাম্ভরিত মী**রু**। সাহেবের এক শৃগীরদ। অতি র্পধান ইরাণী আলি মহস্মদ সুস্তুরি ভার কাছে হারমোনিয়াম শিথতেন।

(৫) বারাণস্থী ঘোষ শ্রীটের পাক্ষ্মী-নার য়ণ গান এবং হারমোনিয়ম দু ই শেখেন गौर्का भारत्यत कार्ष्ट् ।

- (৬) **প্রিহট্টের ডংকালীন নবাবত্ত** তাঁর চারছোনিয়নের শিষ্য ছিলেন।
- किरणात्रीलाल (৭) মেছ রাবাজারের চৌধুরীর এতা রামনারায়ণ চৌধুরী এবং কিশোরীলালের এক পৌরও হারমোনিরম শিখতেন মাজি সাহেবের কাছে।
- (৮) ঢাকার কাজী হাউস নিবাসী মহা সোখীন জমিদার জালালুদ্দিদ আকবর কলকাতায় তাঁর কাছে হারখেনিরম কিছু किष्ट टमाद्रान्।
- म् भिनावादनम देशन किन (4) ম্বীজাকেও তার হারমোনিয়ম শিকা করতে দেখা ব ম। তবে আসমে তিনি ছিলেন मीक्ना जारहरवर्त प्रमा भूमो भूमोरभावक व्यथ-সহায়ক।
- (১০) বৌৰ জারের আবদুলে আজিজ খাঁ (সেতারী হাফিজ খাঁর ভাগিনা ও সেতার শিষ্য) মীর্জা সাহেবের কাছে হারমোনিয়নে তালিম পেয়েছিলেন।
- (১১) সুপরিচিত সংগীতজ্ঞ **গঠিচাদ** বডালও কিছুদিন হারমোনিয়ম শেখেন মীজা সহেবের কাছে।
- (১২) মটরবাবঃ পরিচিত मारक কোরি থিয়ান থিয়েট বের <u>हास्त्यानिश्</u>य ধাদকও মজিশ সাচেবের অনাতম শিকা।
- 🐿০) দ্র তা নওশেরওয়ান জ্বা'র পত্র লাড়লি ছীজাও তার কাছে হারমোনিয়ম শেবেন।
- (১৪) জেড়াস্যাকোর ছোটকামলও (লালাব(ব্র পিতা) মীজা সাহেবের হারমোনিয়মে অন্যতম শিষ্য।
- (১৫) ঢাকার নবাব গাবারের কাজাম সাহেবের এক পুরুও তাঁল াছে হার্মোনিয়ুম শিকা করতেন।
- (১৬) বড়বাজারের বিখ্যাত হুটরা-জহরৎ ক্রেস্থী বদিনাসের (যার নামে বিলিদাস টেম্পল স্মীট) কনিষ্ঠ পরেও হারমোনিয়ম শেখেন মীজা সাহেবের কাছে।
- (১৭) বডবাজারের ডেজপাল বালধান-ওয়ালাও হারমোনিরমে মীলা সাহেবের এক শিষ্য ছিলেন।
- (১৮) গড়পারের স্নুন্দ ছোরও ।ব।।র।মবীর বিকচ্চরণ ঘোষের অগ্রজা হার-মোনিয়ম শিখতেন তার কাছে।
- (১৯) বৌৰাজারের কাশীনাথ শীল (तार्रेशीन वजात्मात्र कामीत्र) हातर्यामिश्रया भीका मारहरवत कृष्टी भिन्ना हरहाइरनम।
- (২০) রাম্বাজাতলার (হাওড়া) মীল-রতন চটোপাধ্যায় (গোয়া**লি**য়রের **কলাবত**ী গায়িকা মঞ্জাবাঈয়ের শিব্যা গ্রীক্র্যা সাচ্ছেবের কাছেও গান শেখেন কিছ্কোল।

তাছাড়াও লাডলে জন্ম (হারমোনিয়মে) পংকজ সরকার (হারজোনিয়ন্তো) প্রভাতি मीका मार्क्स्य काव्ह আরো কয়েকজন

ক্ষর্জী মডারুমে ইসলামের প্রেম্ভ কাব্যগ্রন্থ

১। ক্লবাইয়াৎ- ই- ওমর থৈয়াম ---- ১৪'00

পুৰের হাওয়া--- ২:০০

হ। **গুলে বার্নিটা---- ৩:৫**০. ৩। কাব্য আমুপারা--৪:০০ ৫। चुप्तभाषांतो सात्रीनिज्ञ - २:00

মোহন লাইব্রেরী ২৫ এ দুর্বদেন জীট

পৃথিবীর সর্বপ্রথম ডিটারজেন্ট কাপড় ধোয়ার বার

THE RESERVE OF THE PROPERTY OF

युश्राज्ञ १११

श्रमञा बाँहात, (बन्धी आप्त कक़त



সুপায় ৭৭৭ বার — চুনিরাতে এর কৃতি রেই। এটি একটি রকুর কর্মনা। এতে রুক্তে বেশী কাপড় জরকে বেশী সালা করার, জরকে বেশী পরিকার করার ক্ষতা— এমবাকি তে করে সম্বাচনত একেবারেই কোন হয় বা, তেমর করে-এ। সাধারুব বারু সাবারের তুরবার লাম-ও কয়।

धारम त्थरक साम्बात कतरक एक क्लाब म्हूम बहरवत बात-प्रभात १५० विकासक मानक व्यासास बात !

shilpi home 6A/73 BEN

শিক্ষা করেছিলেন। তাদের সকলের নাম
জ্ঞানা বাজনিন। মাজনা সাহেবের জামাত।
ভূতিকান মানিশ দেবাদের ওচ্চাদ কাদের
কাশ্সের তালিমে গঠিত মজা সাহেব। স্কাট
লাক্ষ্যক মুলা সাহেব শ্বশারের সাংগীতিক
উক্তমাধিকার কারিছা লাভ করেন।

এই বিবরণ খেকে বোঝা বারা, মজি
সমস্থাব একটি বিশিল্ট ভূমিকা ছিল হারক্রেনিরাম চটার ক্ষেত্রে। এই যুগ্রের শিল্পা
ক্রিক্ত শক্তর রেথে বান। একক বাদনে,
কুলের সংগতকার হরে, ঠুংরি দাদরার
ক্রিক্তেন। কলকাতার রালসংগীতের
ক্রিক্তেন। কলকাতার রালসংগীতের
ক্রিক্তেন। কালকার বাদেন বাদ্যার আসরে এই বিদেশ বাদ্যার ক্রেক্তর ক্রেক্তের নালে

ইন্দালের ক্লকাতার স্পাতসমাজে বিকাশের স্পানিচত ছিলেন নাজা সাহেব। কালের হারমানিরামের পদার পদার পদার কালের হারমানিরামের পদার পদার কালের কালের কালের কালে। কালের কালা।

মীর্জা সাহেধের স্পাট্ডছীবন। তার প্ট্ডুমিণ্ডে ছিল সেকালের মেটিয়াব্র্ঞ— যোধান থেকে তার যাত্রা শারে হারছিল।

খিদিরপ্রের দক্ষিণ উপ্রক্তি, গংগাভীরে মেটিয়াব্রুজ। উনিশ শতকের
শ্বিতীয়াধে ইংরেজ সিভিলিয়ানদের গাডেনিমাট নবাব ওয়াজেদ আলির মেটিয়াব্রুজে
পরিণত হয়েছিল। এ মেটিয়াব্রুজ নাম
ভারও ডিনুশ বছর আগেলার। মহারঞা
৪৩লাপাদিতার রাজোর এক প্রভাত দর্গ ছিল এখানে। সেই মাটির পড়ের কাডির
বহন করত মেটিয়াব্রুজ নাম। মাটির
দ্বা কিংবা ব্রুজের কোন চিফুই তখন
ভ্রশা ছিল না।

ত্রে নবাব গুরাজেল আলীর জন্দে মেটিয়াব্রেডুজর আরেক তাংপর্য দেখা দিয়েছিল। লক্ষ্মোত যে নবাবীর উৎপতি, ভার পরিণটিত বা পরিস্মাণিত ঘটে এখানে।

संस्था ।

মীজা সাহেবের যথন মেটিয়াব্র্ডে জন্ম, তথনো নবাবীর রেশ ছিল। লক্ষ্যেতে নবাবী শারু করেছিলেন ওয়াজেদ আলি। তার অবশেষের প্রতির তথনো চলেছিল মেটিয়াব্রক্ষ।

উনিশ শতকের ৭৫ ৷ ৮০ সালের সেই মেটিয়াব্রভঃ

লক্ষ্যো থেকে নিব'াসিত নবাবের স্থায়ী আবাসম্থল সেদিনের মেটিয়াব্রুজ। আর नवाव अञ्चारकन यानी उथरना प्रत्यात वहान রেখেছেন। তার সেই ভারত-বিখাত সংগীতের দরবার। প্রথম শ্রেণীর কলাবংদের আসর বসে তখনো। 'রহস্মঞ্ল' জম-ঞ্মাট। পরী'দের নতাগীতে মথের। নবাব রচিত গাতিনাটোর মহা আডশ্বরে অভিনয় इश रुष्टे भए । सदाव मिरक छारण स्मन । পরিচালনা করেন। মরাবের খাস বাস-ভবন স:লতান थाना । তারই কাছি শাচ মঞ্জিল বৈতন ATTENTO हेर्लाम अपन। নবাবের বংগমণ্ড-রহ**স্মান্ত প্রেকাগ্**ত। নবাবের নিজপ্ব চি জিয়াখানা। এসবই ছেটিয়াব্যরাজের গুণ্যার ধারে সেই নবাবী এলেকা জুড়ে: সে চম্বরের পূর্বেদিকে লৌহ ফটক (যার শ্মতি এখনো রায়ছে 'আয়রন গেট রোড' মামের আডাগে)। আর পশ্চিমে অব্যারিত गुरुगात मुगा।

নবাবের সেই শেব বর্সে মীজ'। সাহেবের শৈশব।

নিব্যঙ্গিত নবাব তখনো সরকারী ব্যস্তি পান বাধিক ১২ লক্ষ্তন্থা। কিন্তু ছাসে মাত্র লাখ টাকায় ওয়াজেদ আলি শ'র কি করে চলে। বিশাল হারেম। এত বেগম। এত সম্ভান-সম্ভতি পরিজনবর্গ। দাসদাসী খিদমদগার। মাস মাহিনায় এত কলাবং গা**রক বাদক। রহস্মঞ**িলর নতকী গা**রিকা অভিনেত্রী বাঈজ**ীরা। আর তেকিম থেকে দক্তি প্রহত নানা পেশার বাধা সেবক। আশ্রিত জন বিভিন্ন প্রকারের। আরো আছে। বাগ বাগিচা। চিডিয়াখানা। মতবা-ই-স্লতানি : স্লতানের ছাপাথানা। শ্বাবের রচনা স্ব কেতাব বিখানে মাদিত इत वन्ध-वान्धव आजीत्र-न्वलमामत ग्रापा বিতরিত হ্বার জন্যে। এসব ছাড়াও নবাব-এর নিজম্ব আরো নানারকম থরচপর আছে।

মাসে লাখ টাকার সংক্রান কিছ্তেই হত না সব দিক বজার থাকত না নবাবের খাস কোষাগার না থাকলে। লক্ষ্যোতে ক'-প্রেষ ধরে নবাবদের সন্তিত ধনতা-ভার। সওরা শ' কছরের নবাবীর পরেও কি জমা তখনো। সোনাদানার চেরে জনেক দামী দামী হারৈ জহবং মুক্তো মানিক।

নবাব গুল্লাজেদ আজি সেই সব মণি নাবো জহবং তখানো ফ্রাতে পারেন নি। ভাই বজ্জা আছে তাঁর মেটিরাব্রেজের সব ঠাঁট। সংগাঁওপ্রাণ গুণাঁতে সমজ্যাট নবারের দরবার। তার শাখানক কলাবং কলাবতী-জের আসর। গান বাজনা নাচ। বাইজী েগম। ভোগ বিলাস। **খাই থিলাই**। দান খনরাং। খনচের হাজারো রাস্তা তখনে। োলা আছে।

টান পড়লেই নবাব হাত দেন সেই জানাতে। এক মুঠো ভূলে নিলেই আপাতত চলে যায়। নবাবের হারে জহরৎ কেনবার লোক কলকাতার নিদি^কট কজন। তাদের খবর পাঠান। তারা কিলে নিরে যা। নেটিয়ান্র্লা একো। খবে জর্রির হলে, কিংবা খেরাল চাপলে নিজেও বেরোন নবাব। সেই প্রকাভ ফিটন গাড়ির সংব্রার হন। পাকা আবের মতন হেছারার ফিছনের গদিতে বসে, মুখে তার রুপার গড়গড়া নল। মর্রলাক্তি দাজানো ম্বা-ব্লানা দারকলা। মর্রলাক্তি দাজানো ম্বা-ব্লানা দারকলা। বিশ্বনা

বড়বাজারের সেই পালা জহুরীর বাড়িতে আসেন নবাব। জহুরীর সংগ্রু তারি আত বিশ্বাসের সম্পর্ক। মণিরক ইত্যাদি নবাবের ইনি জিনেছেন, বেচে দিরেছেন। মেটিয়াব্রেজেও এই কাজে মাঝে মাঝে যান নবাবের তলব হলেই। নবাবের মান রাখতে জানেন। ডাই নবাব তার বাড়িতেও আসেন প্রয়োজনে।

নবাবকে খাতির জানিরে জহুরী গদীতে বসালেন। **গকে**ঃগির আতরের খস-বতে ভরে গেল কক।

তিনি জানেন, ন্বাব হাঁরে জহরৎ কিছ্ বেচতে এসেছেন। কিল্কু নবাবী কৈও। আলাদা রকম। যেন ক' করছেন জহরেরি কাছে। জহরেরিও সেই তন কথা বলেন। নবাবের ইন্ডাৎ বিভি জানতে চান— আজকের উধার' ব ্বে।

—দৈড় লাখ ন্থা।

শ্বহুরী উঠে গিয়ে কোন গণ্নত সিদ্দৃক থেকে একটা ভোড়া এনে নবাবের সামনে রাখেন।

তারপর দ্ব-চারটে আদ্ব-কার্দা আর বাক্যালাপের পর তসরীফ ওঠান নবাব। তোড়া নিয়ে চলে যান।

তখন জহায়ীর সম্ধানী দ্বিটতে পড়ে রঙীন রেশমী রুমালের একটি তোড়া।
নবাব যেখানে বসেছিলেন, গাদীর সেখানেই রয়েছে। যেজনেঃ এসেছিলেন, সেটি রেখে গেছেন নবাব।

শ্বালধী রেশমী ভোড়াটি জহুরী খুলে ফেলেন। খকমক ক্রুরে ওঠে সাকা হীরে মুকোর ছটা। বাচাই করতে থাকেন জহুরী। হিসেব করেন। এক লাখ বাট-পারবাট হাজার হবে জরুর। সভর হাজারও হতে পারে।

এমনিভাবে নবাব নগদ। র পিরা পেয়ে থান। হীরে জহরতের কারবারী উধার দেন এইভাবে। স্কুতরাং সে ঋণ পরিশোধ হবার কোন প্রশ্নই দেই!...

ওয়াজেদ আলী শা'র গ্রহা সেখিন জীবন-তরণী এথনি বিচিত্র বিলাসে ব্য়ে হার শেষ প্রথপত। সংগীতে, হারেনে, ব্রেগনে, প্রতিত, ব্যাবা-সাহিতো, গানে, গাঁতিনাটো, আসরে, ব্যবারে, রহসু মঞ্চিলে, ভোগো দারিছে, ক্ষত্রে বাহুলো, ভাজ্জন অন্-গত ভারণ-শোষণে স্বকারী ব্ভিতে স্থিত সম্পূষ্ণ উলম্ল ন্বাৰী প্রথারাজঃ

কিন্তু ভটার স্রোত্ত অলক্ষিত্ত তলে তলে বছতা ছিল। তাই ১৮৮৭তে নবাবের মৃত্যুর পরেই বালিয়ে এল মহাম্পারন। মেটিরাব্দুকের তাবং নবাবী এলেকা নিম্মিক হরে গেল। নীলামে উঠল স্কাতানখালা পাহ্মিজল রহস্মার্কার বাবা-মাজিল পাল্দা-মাজল বাইত্ম নাজাত চিডিরা-খলা বাগ-মালিচা ইত্যাদি মবাবের তামাম স্কাল কমাল। অন্কাল-স্কান্দনে গা্কারত স্পাতিত দ্ববাদ্ধ চিন্তু-নিশ্চত হল।

মীলা সাহেব তথ্য নিতান্ত বালক বরসী খ্রনেদ মীলা। বিগত নবাবের পথ্য প্র প্রিন্স, আসমন জার দশ্ম ও কনিউ প্রে।

নবাবজাদাদের নামমান্ত গ্রিন্স খেতাব রইল। নবাবী মঞ্জিল থেকে বিদার নিলেন ভারা। অনেকেই মেটিরাব্রুক্ত ভাগে করে গেলেন। অনার। অভাবিত অক্থার। কেই বর্সতি করলেন নিকটবভা খিপিরপুরে। কেই আর একট্ম দুরে ওয়েলেসলী অঞ্জল। ক্ষেট্ট বা মেটিরাব্রুকেই অন্য এলেকায় অন্তাবে বাস পত্রন করলেন।

ওয়াজেদ আলীর ২৪ জন প্র ^২১টি
কন্যা (প্রথম দুই পুরু তাঁর জাঁবিত্কালে
গভার্)। তাঁদের মধ্যে পাঁচ পুরু ও বারো
কন্যার জন্ম লক্ষ্যোতে। সেখান থেকে নবাব
নির্বাসিত হরে ১৮৫৬ সালের এপ্রিল মাসে
মেটিয়াব্রুজে আসেন। তারপর ২৬ মাস ফোটা উইলিয়্মে বন্দীজাঁবন বাপনের পর
১৮৫৮ সালের শেব থেকে ক্থারী হন
মেটিয়াব্রুজে। এখানে তার ১৯ পুরু ও
৯ কন্যার জন্ম। এই হিসাব অনুধারী সর্কারী শোনসমপ্রাশিত ইত্যাদি সুত্রে ক্বীকৃত।
তা ছাড়াও পুরু কন্যা হয়ত থাকতে পারেন,
বলা বার না। আর নবাবের বেগমদের
মধ্যা নিশ্চিতভাবে জানা প্রার অসম্ভব।

এখানে কথা এই যে, এমন সহান
সংগতিক পিতার এই গ্রেণ এত প্রেদের
কেউই লাভ করেন নি: পোররাও নন।
বাতিকম কেবল খ্রসেদ মীক্রা, প্রবতীকালের মীক্রা সাহেব। তিনিও পিতামহের
সংগতিগ্রের এক তুলনাংশ পান। করেণ
তিনি শুরু হারফোনির্মাশিলপী এবং গারক।
কিন্তু নবাব ছিলেন একাধারে বহুন্থী
গ্রেণী গারক সেতার-বালক ন্ত্রিদ, বহু
শরকার ঠংরি গানের রচয়িতা ও স্করকার
(গ্রেপদ্ধ রচমা ক্রতেন, ক্রেম্ম শুকু বেলাব্রে

শাভ সগম শাভ লগম ছত ধরাউ^ল ইত্যাদি), সংগতিতত্ত্বের রাণ্ডকার (শ্বনি প্রভৃতি), গাঁতিনাটা রচারতা ইত্যাদি নামা , সাংগাঁতিক পরিচর ওরাজেদ আলী শার আছে ৷

তব্ নবাবের শতাধিক পত্র-পোরদের মধ্যে সঞ্গীত-গংগের একমার উত্তরাধিকারী শ্রাসেদ মীর্জা--একথাও মদে রাখবার।

খ্রসেদের পিতা আসমান জার জন্ম লক্ষেয়াতে (আন্মানিক ১৮৫১)। মধাৰ ওরাজেদ আলী তথ্ন লক্ষ্যো মসনদে আসীন। তাঁর পদ্ধ প্ত আনমান জার জননী হৈ নবাব-বেগম, তাঁর নাম রসক্ মহল। নির্বাদনের আতা লক্ষ্যোতেই বেগম রসক্ মহলকে নবাব তালাক দিয়েছিলেন। মেটিরাব্রুক্তে আসেন লি রসক্ মহল। নবাবের অন্যান্য পরিবারবর্গের সভ্সে পাঁচ বছরের বালক আসমান জা মেটিরাব্রুক্তে আসেনিই তাঁর বসবাস।

আসমন জার ৭ পত্রে ০ কন্যার মধ্যে স্ব্কনিষ্ঠ হলেন খ্রসেদ মীজা। জন্মদ্থান মেটিয়াব্রেজ। তার বালাজীবনও এখানে অতিবাহিত হয় অন্তত ১৮৮৭ শর্যাত। ভারপর মেটিরাব্রুভের বিরাট নবাব পরিবারের বিপাল বিপ্রবারে মীজা খ্রেসেদ কোথার উংক্ষিণ্ড হন, কোন্ ধার্ম্ম তার জীবন্দ্রণ অগুসর হয় তার বিবরণ অপ্রাপ্য। অনেক পরে যখন তাঁকে আসরে আসবে তার্নোচিয়ম-শিল্পী তিসেবে হার, তথন আর তিনি মেটিয়াব্রুঞ্জের বাসিন্দা নন। তথন ক' বছর ছিলেন বেলে-ঘাটার এক বাসায়। ভারপর ৯।১০ বছর জেলেটোপায়, মগের পেছনে এক বসতিতে ! সে-সময় তার পাশের ঘরে থাকতেন ওস্তাদ বাদল থা এবং শ্রীজান বাইয়ের পতে খাদেন হোদেন। ম্বাজা সাহেব জেলেটোলার পর জবিনের শেষ ছয়-সাত বছর তাতিবাগানে (জোড়া গিজ'ার কাছে) কার্টিয়েছিলেন।

সেখানেই, তাঁর শেব নিঃশ্বাস পড়ে দ্বিতীর মহান্ত্রশের প্রথম দিকে। তাঁতিবাগান লেন ও আঞ্জান্ত্রমন রোডের কোপে সেই সোডগা মাঠকোঠার। বরস প্রায় ৬০ বছর হর্মেছিল।

মীজা সাহেবের দুই বিবাহ। বিত্তীর পক্ষ নিঃস্ভান। প্রথম পক্ষে দুই কন্য। কনিন্দার সংগ পরিষ্ঠিত ছন মালিলারানের স্পারিটিত গামক মজা সাহেব। মালিলারানের মাল নবার পরিবারের এক স্তাম মজা সাহেব। এসা ছাড়ো মীজা সাহেবের বাজিলীবনের অনেক কথাই অজ্ঞাত আছে। মেটিয়াব্রুজের পর কিভাবে তিনি জীবনারাতা আরম্ভ করেন সে ব্রোকতও দুম্পাপ্য। এমা কি ছবি স্পাতি-চর্চার স্কুনা ও পরিষ্ঠিত কি করে ইর্, সে প্রস্থাত উম্বার করা হারদি।

বেলেষটোর এক সধানা যালার ভাবে বাস কল্পান্তার আক क्षाबरमाभिक्रम-भिक्षणीक्षारण। **काम** काम हामक मात्र। व्यक्तिहाद कृत्यत्र अवासारगीत जामाना जतकातौ रणमञ्जल रणरख्या। **३५५३** দাল পর্যাত মাজিক ২০ টাকা। থেকে বুলিধ পেয়ে মালে ম তাকল পর্যাত। ছাত্রদের তালিম **क्रिट्स** উপাঞ্জন করতেন। মূলব্রো পেতেন 107 2724 আসর থেকেই। তা হলেও দরিদের তাঁর জাবিন হাপন চলত। কারণ जेगर আনুষ্ঠিগাক খরচ হত নিয়মিত। তেরশ रक्षमा अल्यादका मगरमद यक्षम के रमस्मर বাজিরে আসতেন ব্যাত্র। নিজেকে হুনি করভেন দেখে কোন হিভার্থী হয়ত অন্যোগ করতেন। কিন্ত ইন্দ্রির প্রুল-দূর্বজাচিত সংগ্রুমে অপারণ। नवाद उप्रतलम चानीत अक रनीवरक हात-হোনিরম-শিলপীর পে প্রথম দেখা হার বেলেছাটায়।

বেলেখাটার আর্নে কলকান্ডার **আরো** কোথার কোথার ছিলেন মী**র্লা সাহেখ**।

গোবিন্দ ভট্টাচার্যের কাব্যগ্রন্থ

পিপাসার দেয়ালে সব্জ

কবিতার দ্ব'হাতে আর্মান। একটিতে দ্শামান চলতি সমাজ, অন্যটিতে প্রতিফলিত আগামী। এরাই কবিতার হর সংসার। এদের নিয়ে কবিতার চাট্কারিতা।

4.00

প্রাইমা পার্বলিকেশনস/৮৯ মহাত্মা গাঁগধী রোড, কলকাতা-৭

জ্ব কথা জানী বার না। হেমন জানা বার্মনি ভিনি হারমোনিরতা শেখেন কর কাছে। এমন চালের বাজনা এমন মনোহারী শিক্ষকথা কলাবডের তালিম ভিন সচরাচগ ইর রা। ভারক এই প্রকার বিধিকখ জালাবিচালনার কারদা শিক্ষাসাপেক।

মীক্রা সাহেবের কোন কোন শিষ্টের মতে ওস্তাদকী হার্মোনিয়মের তালিম পেয়ে-ছিলেন প্রসিম্পা চম্দ্রভাগা বাইয়ের কাছে। কিন্ত এবিষয়ে সন্দেহের অবকাশ আছে। कार्यन मुख्यान्त्र भाषा कारणत् वाजाभक्षात्राः খ্রসেদ মিজর জন্ম ১৮৮০ সালের প্রে প্রায় অসম্ভব কারণ তাঁৱ জন্ম সন ১৮৫১। খ্রসের মিজার হার-মোনিয়ুম শিক্ষা আরুম্ভ সেই ছিসাবে ১৮৯৫-এর আগে ধর্তবা নয়। শেষে স্ত সময়ে চন্দ্রভাগার বয়স ৭০ উত্তীৰ্ণ। ভাছাতা খারসেদ মীজা তার কাছে শিখবেন কোথার? তিনি ত লক্ষ্যোব্যাসনী। আর পরিবারের ওয়াজেদ আলির সেকালে লক্ষ্মোতে হাতায়াত নিষিশ্ধ ছিল বিশেষ অনুমতি ভিল্ল। এইসব কারণে চলুজ্ঞার কাছে ম্বীজা সাহেবের তালম পাওয়া ৰোগহয় সম্ভব নয়।

তবে গণপৎ র ওয়ের- হারমোনিরমের সেই অপর্প দিল্পী গ্রপৎ রাওয়ের গোষ্ঠীভুক্ত ছিলেন মীজা সাহেব। চন্দ্র-ভ গারই প্র গণপং রাও (ভাইয়া সাহেব) আর ভাইয়া সাহেব হারমোনিয়নের তালিম ত জননার কাছেই পেয়েছিলেন। চাবিতে চাবিতে অংগালি চালনার বিশিষ্ট সেইস্ব নিয়ম আর কায়দা। সেই চালের বাজনা। সেই বোল বাজান ঠুংরি অনুসারী হারমোনিয়ম বাদন। আর গণুপৎ রাওয়ের শৈষারাও ওস্তাদের সেই ধারা অনুসরণ করতেন। গয়ার গোফাুর খাঁ আর সোনী**জ**ী। ইন্দোরের বাসের খা। কলকাতায় **স্নামলা**ল ক্ষেণী আর ইরসাদ। গণপৎ রাও কলকাতায় এফোই তার এই শিষ্যমুক্তসীতে ঘেরা श्राकरकत। আর তাঁর সংগো মীজণ সাহেবকেও দেখা যেত। অন্য সময়েও যখন ছ ইয়া সাহেব থাকতেন না বলকাত য় মীকণি সাহেব শ্যামলাল কেন্দ্রীর अरन्त्र



মিলতেন খাব। প্রায়ই শামেলালজীর ১০১ হ্যারিসন রোডের আসরে আসতেন ব জাতেন। তাঁর বাজনার চালও ঠিক এ'দেরই মতন। এমনি বুটিরে মনোহারী ঠাংরি। এই কায়দার অংগ্রান চালনা। আর ডান হু তে বেলো করে বাম হাতে বাজানো মীজা সাহেবেরও-গণপৎ রাও গোফার বাসের খাঁর মতন। শামলালজী ইরসাদ সেশীজী বা হাতে বাজতেন না বটে। তবে ডালেরই মতন আল্গালে আর ঠারি অল্গে মেজাজে চালে মীজা সাহেবের হারমোনিয়ম বাজনা। তাল লরের চেয়ে সুরের দিকে স্ক্রে কার্-কমেরি দিকে ঝোঁক বেশি। এই বাঁধা সারের পদ'য়ে যত মিহি কাজ করা সম্ভব তা দেখানো। সে স্বই এই ঘরের চাল। আর শ্যামলাল ক্ষেত্রীকে কেন্দ্র করে কলকাতায় গণপৎ রাওয়ের এই অন্যামীদের সংগেই মজিশ সাহেবের বেশি সাজগীতিক হোগা-যোগ। গিরিজাশ৹কর চক্রবভর্ণির সংগ্ৰ স্ত্রে তার অন্তরঃগতা আসরে আসরে একযোগে গান বাজনাও। শাধা গিরিজাশ•কর কেন গহর জ'ন মালকা জান ও'দের সংগেও। গহন জান মালকা জানও ত এই গোষ্ঠীর। গণপৎ রাওয়ের তাঁরাও শিষা। সেই সূত্রে গহর আগ্রাওয়-লী ম'লকা আসা য়াওয়া করতেন শ্যামল লজীর বৈঠকে। আর মীর্জা সাহেবও ষেতেন।

তাছ ডাও গহর জান মালকা
জান-দের সংগ্রে হনিন্টাতা হয় মীর্জা
দহেবের। সেসব তার যৌবনকালের কথা।
তখন গহর মালকার বাড়িতেও তার বাড়াথত ছিল। পানজোজন বিলাসা হেমন
তেমনি এসব দিকেও স্পার্গ করত তার

তথন ত এমন হাল হয়নি মীজা সাহেবের। চাল চলন সাজ পোষাক তথনো অনেকটা নবাব-পোলের উপযুদ্ধ ছিল। আর হোবনের সে লালতামর ক্রপ্তেরাজনের মে লালতামর ক্রপ্তেরাজনের গোলাপা গোরবর্ণ কালিত মুখ্টোই ভ্রেবনের ছিল নেকার চেহারা মীজার সেই হোবনে ছিল বৈতি। আর গহর জান তার কদর ক্রতেন। মীজার স্বেল বুলের স্বেলের তথন গহরের।

তারই একটি উত্তর-প্রসংগ এই শেষের কথায় বলে দেওয়া স্বায়।

কৈবিৰণী হোৰন বিলাসিনী গছর জান। আর ব্শসী বাইজী-বিলাসী স্পবান ভোগপরায়ণ ভরুণ।

কিন্তু সে স্ব মধ্ বাস্প্টী দিনের অনেক বছর পরের এই কথা। গছর জানের জীবনে অনেক নাটকীর আবর্তন বছু উপার্জন আর খ্যাতি প্রতিপত্তির দিনের এক উপসংহার কাছিনী। বর্ণাচ্য নানা দৃশ্য-শেষে দৃক্ষনেরই জীবন-নাট্যে পঞ্চমান্ক শ্রুর হয়েছে। এক আসরের হাজার টাকা মুক্তরো ছিল যে সেরা বাই সাহেবর এখন তার পালারহীন দুর্দিন। আয়নার সামনে বিগতকালের
সে র্শতন্ বেখার প্রতাশির হয়ত
আনমনা দাঁড়ান। জার বেদম-বিহরেল হরে
যান নতুম প্রতিবিদ্ধ দেখে। রম্বাণী দ্লিট
দিয়ে আপন দেহুলতা লক্ষ্য করেন। হয়ত
হাহাকার করে ওঠে অকতর। বাইরে থেকে
যা অলক্ষ্য প্র্ব কাঁচের সাহায্যে তা নিজের
কাছে স্কুপতা। বাহাত হয়ত অটুট দর্শন
গরীর। তবে প্র্কু চশমা ঘরে বাবহার না
করলে অনেক দৃশাই অসপতা থেকে বালা।

এ ভাষানা মালকা জ্ঞানের তাঁর একটি
গ্রু-কক্ষের। কলকভা-জ্ঞানিনের তথন শেষ
পর্ব গহরের। এখান থেকে চিরবিদার নিমে
মহীদার দরবারে চলে যাবার ঠিক আগের
কথা। সেই বিপর্যস্ত দিনে আনক কালের
বান্ধবী গ্রুবহিন মালকার অতিথি হয়ে
আছেন। আগ্রাভ্যালীর সেই ইন্ডিয়ান মিরর
্টীটের উত্তরমুখী আবাসে

সেদিনের ম্লান অপরাহ বেলা। দোতলার এক অন্বর কমরার বসে আছেন গইর জান। অনামনম্ক হয়ে কেম পরিচর্যা করছেন। নিতামত অম্তঃপুরের বেশবসে।

এমন সময় হঠাৎ হাজির হলেন কতিফ মালকা জানের সহোদর। সংশ্যে মীর্জা সাহেব আর তাঁর এক ছার।

কোন্কোন্? অন্দর্মে আ গিয়া। বিবস্তু কল্ঠে ধমক দিয়ে উঠলেন ক্ষীণদ্জি গহন জান 'বে আদ্ব্!'

লতিফ সান্তনার স্তে বললেন 'জেরা দেখিয়ে ত কৌন্ আয়া আশ্্ঞা পাস?'

লতিফকে দেখে তাঁর াাগবাসে ক্রেখশাস্ত হল গহর জানের। কোত্হলী হয়ে
পুরু কাঁচের চশামাটি শুদ্র খড়গ-নাসিকায়
ভূলে ধর্লেন।

সামনে ও কে দাঁড়িয়ে?

অনেক হিম ঋতু সে কেহ-সোভিবের ওপরেও কাল-প্রবাহে বয়ে গেছে। বহুদিনের অদর্শন। তবু চিনেছেন গছর জ্ঞান।

মীর্জা !' সে আকুল স্বরে প্রণকোছনেস্
না আও'নাদ ? নাকি প্রেরেই আন্দোর ?
আক্সিমকতার ভাবাবেগে উন্বেল পরিস্বিতি !
বাই সাহেবা আম্পাতা ছলেন। দেখে
তুমহারা গৃউহর্কি কেয়া হালাং হারি
কংঠ তাবর্থে হয়ে গেল অপ্রধারার !'

সেই গহর জান?
পরিণত-প্রোট মালিন মাজা সাহেত্তও
চেয়ে রইলেন। নির্বাক নিব্তর...। বাল্পাক্ত্য়

হারানো স্কের কণ্দন। হারমোনিরমের পদার পদার ওঠানো কোন ঠুংরির সকর্ণ কোশ হেন।.....

— निर्णी शक्यात भृत्याशायप्रव

উপন্যাস





(পর্বে প্রকাশিতের পর)

Self-risk 2. 194

বিকাশ একট্ আগে আগে হাটা ক্লিয়োছল। পিছনে মাইক-বাছত বছতার শব্দ ক্রমশ লাপ্ট হতে হতে ক্লীণ হয়ে এক, এক সময় আল কানে এল না। শহীদ মিনার ছেড়ে দক্ষিণে অনেকদ্মে এসে গেছে সামনেন্ গাণ্ধীর মমর মার্তি ফোকাশ কাইটে আলোকিত। হঠাং থমকে দিছিয়ে বিকাশ চোখ ভূলে দেখলে দেখলার মত না হলেও শণেগর মাঝে মাতিণীকে ব্যেখ বেন আভ্তুত একটা বিশ্নম স্থিট করা হয়েছে পথচারীর মনে।

বিকাশের মনে হল, হঠাৎ যেন দেখাল মত—এর আনে যেন থেরাশ করে দেখান, কি দেখালেও মনে বার্থান। ম্তিটা করেছে মণ্য নয় আর বেংখছেও বেশ জারগায় সাজিয়ে গ্রিয়া সব্জ বাস, মৌস্মী ফ্রা লোহার বেড়া।

বেশ যেন জীবনত মনে হচ্ছে, হাডেগ লাঠি কটিা স্টোপে আটকান গারের চাপর ন্যান্যায়, কটি-বেল-

গান্ধী মুমর মুডিরে বেদীতে ইংজেলীতে কি যেন লেখা আছে, পজা যাজে না। এর আগে অনেকবার পড়বার চেন্টা করেছে বিকাশ কিন্তু সর্টা পড়তে গারেমি মানেও পশ্ট হয়নি মনে—কি সব মুজুা, জীবন নিয়ে লেখা। মধুক গো।

বিকাশ ম্তিটা পার হয়ে মাঠের রাশ্তার পড়ক। ভান দিকে আথকারে কালো হরে আছে ওপারে মাতার বিজ্ঞারত আলোকরেখার হাটা-পায়ের সীমারেখা দেখা বার।

স্বামনে খানিকটা এগিয়ে আসতে একটা আলোর গৈলেই অকারণে হাসর মত মাঠের রাম্তা আলোকিত। আদা নেই আলোর বিকাশ চিন্টল, চিটিং-এর সেই মোরটি সেলিকের স্থিগনী ভীতা বঞ্জুচিতা সেই মেয়েটি—

선생님이 있는 소리 마음이 들면 들었다면 그 보고 있는데 그 그리고 있었다.

আন্ত কোন সংকোচ নেই কোন ভয় নেই। বেশ সপ্রতিভ মনে হয়, বেশ স্বচ্ছস্পতি—

থরথর পা চালিয়ে বিকাশ মেরেটির পাশে এসে দাঁড়াল, ম্দ্কেন্টে বললে মিটিং শা্নতে গিরেছিলেন?

হোরেটি যাড় যি খনে বরু দ্বিততে দেখলে, তারপর যেন হাসকে।

নিঃশনের পালাকালি হেন্টে এসে গাছ-পালা পেরিয়ে মাঠের ফাঁকা রাশ্চায় পড়ে বিরাশ তের্মান মানু লঠে বললে আপনাক আমি চিনতে পোরেছি আপনি হয়তো—

সামনে মূখ ধেথে আকৃশ্-মাঠের একাকার সীলারেখনে পা দিল্লে যেন মেয়েটি এবার স্থাপে ছাসালে।

অপ্রস্তৃত হয়ে বিকাশ জিজেস করলে, হাসলেন হো!

মূখ ফিরিরে মেরেটি বললে হ্যুডো কি বললেম না তো?

নিশ্চরাই গারে-পড়া ভেবেছেন। তা হলে তো এতক্ষণ এক সংগ্য হটিতেই পারতুষ না। কখন—

আবাদ খা:নকটা নারবতা। উভরেও পারের শব্দ শোনা যায় কেবল। নারবতাটা বেশিক্ষণ নয়। বিকাশ কললে কথম কি বললেন না তো?

কথম আবার কি, যেন ভাষতে চেণ্টা করলে সাংগানী মোরোটি ভারপর গাম্মীর হ'ব বললে চিহকার করতুম, লোক ডাকতুম।

বিকাশ তেকে উঠলো তা হলে আপনি তো চিনতে পেরেছেন।

না চেনার কি আছে! সেদিন আপনি খুব সাহায়া করেছিলেন খুব গোলমাল ছিল একলা যেতে ভুয় করিছল।

আৰু ? **টাম-ধাস বংধ** হে**ণ্টে হেণ্টে** বাড়ী ফিলডে হচছে!

ও আরু কি, সবাই ফিসছে। রাশ্তার বেশ লোকজন আছে। বেশ লোকজন আছে।

বিকাশের কিন্তু আন্দেপশান রাজভার লোকজন ভাল লাগাড় না। জিমন্ট শাক্ষা মালের মৃত চলার প্রতী যদি আ্রাজ্ঞ জন- শানা হরে থাকতো, আরেটি যদি এসে
সৌদনের রাজ সংল নেবার অভিপ্রার বার করতো ভাহলে বেন ভাল হতো— অপরিচরের রহস্টো সহজেই থলে বৈত প্রিচরেটা সহজ সাবলীল হতো।

আজ মোরাটি যারা নি, 'বকাশই থাগারে এমেছে। কত কথা ব্লবার ইচ্ছে করতে কিংতু কিছে যলতে পারছে না, 'ক বে সংকোচ তাও ব্যেতে পারছে না। বিভাগ ভাবতে চেটা করে তার সমবয়্সী করেও সংগ্রাহিদ পথের মধ্যে এর্মান মাক্ষাহ হতে। পূর্ব-দেখার সতে ধারা কি আ্যাপা করতে। সেই বা 'ক ভাবতো!

বিকাশ জিজেন কাবলে, <mark>আপনি স্থিতিং</mark> দোনেন: মিটিং শ্লাতে **এত প্রে** আসেন:

এখানে বাস্তার এপর একটা **শিরীষ**না কৃষ্ণচা্ডার ভালসালা **হড়িরে**বেশা অথবদার স্থিটি হ**রেছে পরের**আক্রোন্ত অনুপ্রবেদা নেই। **আ্লো থাকলে**বিকাশ দেখতে পেতে মেরেটির মুখ বেশা
গাম্ভীর হঠাং আকালে মেছা বরার মতা

বিকাশ আবার বলবে, মহাদীন মিটিং-এ আনুসম তা হলে।

না। বেশ গুল্ভীর বেন কঠেশর।

এর পর কৈ বলবে ভারতে বেন অন্তেজ্জ সময় নের বিকাশ। মিটিং-এ তেও বিজ-একটা আসেনা: এতথানি বর্জে এই দ্বোল না তিনবার মিটিং-এ এল।

বিকাশ বললে, না আসাই ভাল। কোন লাভ নেই। কেবল হৃত্ত্ত্ত

য়েয়েটি নে_শন উত্তর ছিলে না। পারে পারে এলগিন বোজেই হোড়ে **এ**লৈ পেছিল।...

...সম্ভূ কন্ত বাডে ফিনেছিল শিক্ষাপ্ত জানি মা। বাবা-মা মম্ভূর জানা অপেশকা করেছিলেন বাবা বাশত হারছিলেন জা গান্ডীর হারে বংশছিলেন, বিকাশ শিব্দ হারে বলেছিল, বেয়ন কে ভ্রেম টোয়ারা খেরে-দেরে শান্তর পড়। আদ ভারনার কি আছে খিদে পেলে ঠিক আস্কের। ৈ হঠাৎ খুম ভেঙে মেঝে বিছানায়
ভাইকে কুকিছি মেরে শ্যে থাকতে দেখে
বিকাশ বেন স্বস্থিতর নিঃশ্বাস ছোললা।
মাধে ষতই বল্ক, ভাই-এর রাত করে
বাড়ী কেরায় মান মান ান কম চিন্তিও
হল নি। আন্তর্গল নন্তু ক করে বোথার
ষায় কেনে চিক-চিকানা নেই। বললেও কালে।
কথা শোনে না। ভুতের মত খ্রে খ্রে
বেডার বাজনীতি করে।

মরদানের মিটিং-এ ভাইকে যেন দেখতে পারে বিকাশ আশা করেছিল। নংতু তাকি দেখে অবাক হয়ে যাবে। ভাগবে মুখে দাদা বাই বলকে, ভেতরে ভেতরে ভাকের সমর্থন করে সকল প্রতিরিয়াল বিব্দেশ—

বিকাশ উঠে আলো জনলতে নংত্রও মুম ভেঙে গেল। সোজা হয়ে শা্যে বললে, আলো জনলতে কেন?

্ আলো নিবিয়ে বিকাশ বলগে, কখন ফিরলি ?

অনেকক্ষণ। খে'রছিস?

্ছা। কোণায় গিয়েছিলি অত রাত পর্যাত? নাত্ উত্তর দিলে না। পাশ ফিরে শুলা।

জোন উত্তর নেই। সিকাশ আসোস জিলজেস করলে, যাস নি নিটং-এ? খ্য জোর মিটিং চয়েছে আজ!

ময়দানে মিটিং-এ গিয়েছিল?

ন্দ্ৰ বিরক্ত হ'বে বললে মিটিং-ফিটিং-এ আমৰ_ি বাই না।

জেরা করে বিকাশ বশলে, ডা হলে কোথায় যাস এড লাত পর্যক্ত? বা^ব্মা ভাবনা করেন।

নম্ভূ বললো, না ভাবলেই পারেন। কোথায় আবার যাব।

বিকাশ উপদেশের ছলে বললে বৈখানেই যাও বলে যেতে পার না? তেয়োর আদু কি বললেই হলো— না ভাবলে পারেন।

নাক্ কোন সাঙা করলে না। বিকাশও খানিক চুপ করে বইল। জানালার থাইরে যে দাতবা আলোর খাটিটা আছে আজ আনক দিন পরে তার মাখা পেকে আলো বুবছে, তারই কছে রেখা ঠিকরে খবে চুকেছে। যর অথকার হলেও খবে অপপট করে। নীচে মেনের বিছানার নাক্ত্রে প্রেণ্ড কেওাল ছেরে শারে প্রকাশ বাক্ত্রে তারে বিভানার নাক্ত্রে প্রকাশ বাক্তর্বা গাদাশাদি হরে আছে ভিদকে দক্ত্রাণী থিকা আটা।

আন্ধ বোধ হয় খুম আসবে না। কত দ্বান্ত হয়েছে কে জানে। ওপরে তদ্বাশোধের ওপর বিছানার বিকাশ উস্থুস করছে। মুক্তুও কি জেগে আছে?

বিকাশ ভাশলে, নকত এই-ই--উন্-ম্-নক্ত সাড়া দিলে। বিকাশ বললে, আৰু ময়দান খ্ব কথাৰ মিটিং হয়েছে সৰু পাৰ্টি মিলে বিচাট तानि करतोष्ट्रम, मन्भूत व्यक्त ग्रेम-न्भ तम्भ इत्य शिराधिम। छः कि लाम।

নম্ভূ নির্ভর। বিকাশ **নম্ভূ**র বি**ছানাটা** ঠাতর করতে পারে মা।

বিকাশ অবাক হয় পাটির মিটিং-এর
বাপানে নক্তর আগ্রহ নেই কেন। সে তো
ভেবেছিল মিটিং-এর কথা শুনে নক্তু খুব
আগ্রহ দেখাবে আর বখন জানবে দাদারও
আগ্রহ আছে, দাদাও ময়দানে মিটিং
শ্নতে ষায় তখন আগ্রা খ্লা হবে,
দাদাকে দলে টানতে চেণ্টা করবে।

সাগ্রহে বিকাশ জিওজস করলে তুই যাস নি? ভোদেইই ভো মিটিং ছিল রে!

বিছানার ওপরে নক্তু যেন ছিটকে উঠলো, না আমাদের কোন মিটিং নেই। মিটিং করে দেশের লোককে আমরা ভাততা দিই না! সব বাজে—

এ আবার নক্ত্র মুথে कি কথা? এতা দিন তো বামপন্থীদের পেছন পেছন খুরেছে লোক জড় করেছে খা-ডা নিরে চিংকার করেছে, কংগ্রেসীদের গাল দিরেছে বাড়ীতে তাই নিয়ে কত তর্ক, অশান্তি হরেছে। বিকাশের চাকরী হতে বাবা কত বলেছেন ওরে ওসব করিস নি—প্রলিশ রিপোট চলে বাক, চাকরীটা পাকা হোক তারপর যা পারস করিস। কিল্কু কে কার কথা শোনে! বিকাশেরও রাগ হতো বাবান্যাকৈ বলতো, নক্ত্র জন্যে তার চাকরী যাকে।

বিকাশ গদ্ভীর হয়ে বলে এখানে থেকে ওসব করা চলবে না। তোমার জনের সংসাধি সবাই ব্যতিবাদত হবে কেন? ভাল চাও তো লেথাশড়া কর লক্ষ্মী ছেলের মত ঘরে ধাক তা নয় শুধঃ শুধঃ গোলমাল—

ক্তু গম্ভীর হয়ে বললৈ, সে তোমাকে ভাবতে হবে না।

বিকাশ চিংকার করে উঠলো, হ'ব না মানে তুমি কি ভেবেছ তোমার মাখার ওপর কেউ নেই তুমি যা ইচ্ছে তাই করবে?

নৰত তেমনি গশভীর হয়ে বললে ওসব ব.জে বি বাৰক্ষায় মাখা গলিয়ে কোন লাভ নেই—আমরা স্ব কিছু ভেঙে দেব!

বিকাশ দেশৰ করে কললে খুব মাতক্ব হয়েছে। এক পয়সা বোজগাল করতে পার না এদিকে বোয়াব আছে কত। দুবেলা খাবার বাকথা না থাকলে বুকতে বিক্তাব করার মানে কি! আলো নিজের পারে দাড়াও তারপর বিক্তাব করো ব্রেলে? বুজো বাণের খাড়ে বসে বিক্তাব করো না!

নদত্বললে, ভোমাকে অভ ভাবতে হবে না।

বিকাশ আরো জেনুরে চিৎকার করে বজালে আলবং হবে! তোমার জ্বনো সংসার নন্দী হবে না কি? আমারও কন্টিবিউপন জ্বান্ত।

নৰ্ভু বৰলে, আমি ভোমার ধাই বা পরি না তোমার কথার ধা ধারি না— বিকাশ তড়াৎ করে তজাপোর থেকে লাফিরে পড়ে নল্ডুর পিঠে একটা চড় কবিয়ে বললে, যত বড় মুখ না ততবড় কথা শুরার কোথাকার।

national statement of the statement of t

নক্তু কিছু করার আগেই পট করে বনের আলো জুলে উঠলো—মা এসে দুই ছেলের মাঝখানে দাঁড়িয়ে বললেন, ছি ছি দাত দুপুরে এপব তো্না কি কর্মছিস? ভাইরে ভাইরে মারামারি ক্রছিস শেকটা।

কিকাশ মাথা নিচু করে ভক্তাপোষের ওপর উঠে গেল নন্তু মেঝের বিছানার ওপর চুপ করে বসে রইল। মা বললেন, তোর জনোই দেখছি গলায় দড়ি দিতে হবে! এত বড় হয়েছিস যে বড়-ছোট জ্ঞান নেই। দাদার গায়ে হাত তুলিস? হালাধ-জান।

নত্বললে বাবে আমি কখন হাত তললাম দাদাই তো আমাকে মাবলে।

মা বললেন বৈশ করেছে, আরো মারবে! দিন দিন যা করে বেড়াছে কোন দিন না স্বার ছাতকড়া পড়ে! বিকাশ আমি বলছি ওকে তোরা শেকণ দিয়ে বেশ্ধে রাখ।

বিকাশ কোন কথা বললে না। নন্তু বললে বাধা অত সহজ নয়।

নর মানে—মা ছেলের ওপরে ঝাঁপারে
পড়ে নিজেল আচলটা যেন বংশন রক্ষ্ করতে চাইলেন। নক্ষ্ যত ধন্সতাধনিত করতে লাগল মা তত ছেলেকে কোলের দিকে টানতে লাগলেন। তিনি ছেলেকে বাঁধবেনই।

ইতিমধ্যে কথন অব্নীবাব্ ঘরের মধ্যে এসে দাঁজিয়ে ছিলেন। গভতীর হয়ে বললেন, ছেজে দাও ও কি সাছে।

চ্ছেলেকে ছেড়ে মা কল্পি-আলিন হরে বললেন দেখ না নক্ত ক সব আল্লভ করেছে। বিকাশের সপো ঝগড়া করছে যা ইচ্ছে তাই কর্বে বলছে। ওর কি কোন শাসন নেই?

অবনীবাব বললেন, থাকবে না কেন সে ভো তুমি নভট করেছ — আদর দিরে ছেলেকে মাথার তুলেছ! এখন বললে কি সবে।

মা ভশ্নব্রে বলসেন, আমারই তো যত দোষ! আমিই ছেলেদের নদ্ট করেছি আমি ওদের আদর দিয়েছি! ওই তো আন একটা ছেলে আছে ওকে জিল্ডেস কর না।কই ও তো এর মত নর?

অবনীবাৰ বললেন সবাই কি সমান হয়। যথন পড়াশোনা গোলোয় দিলো তথনই বুবেছি—

মা প্রতিবাদ করে বললেন, ছাই ব্বেছো। তোমার আম্লারতে ও এমন হয়েছে বা-ও না ছেলে ছেলে করে রাম্ভার কর! আমি আদর দিয়েছ মা ভূমি আদর দিয়েছ ? একবার ফল করেল বলে পড়া

ছাজিরে দিলে কেন-না হলে তে। আর এমন হতোনা। তুমিই এর মাথা খেয়েছ—

অবনীবাব বললেন হোই খাক এখন হাল আর চারা নেই।

মা বললেন তা বলে ও ষা ইচ্ছে তাই করবে লঘু গুরু মানবে না? কোন শাসন

অবনীব্রু যেন শেশ্য করলেন, কি আর শাসন! ওসৰ ছেলে শাস্নের বাইরে।

. তা বললে তে চলবে না অ্যাদের থাবে প্রবে, আ্যাদের স্বন্দশ করবে। ওকে দরে করে বাও।

অবনীবাব; বলালেন অনেকবার বলাছি আর কত কাবো—নাড়ীতে যদি থাক ওসব লাজনীতি করো না, গরীবের ছেলে মারা পড়কে সবাইকে সেই সংগে মারবে! বিলাশও কতবার বলোছে, পড়াশোনা কর ভদ্তালাকের মত থাক তা নার যন্ত সব নানানের সংগে মালে তি-হৈ।

নংতু গছভীর কঠে বললে, আমার জনো জামাদের ভাবতি হ'ব না।

কি হলো অসমীবাব হঠাং ছুটে এসে নক্তর গালে এক চড় ক'ৰ'র বললেন আবার মুখ নাড়ছিস হতভাগা ভারতে হবে না—এত মাতক্ষর হয়েছ!

বিকাশ আর চুপ করে থাকতে পারলে না বংশকে সরিয়ে দিয়ে বললে, এ সব ভোমরা কি করছো? আয়াদের কথা নিয়ে ভোমরা কেন্ন মাথা গ্রম করছো? যাও বাও ভোমর; বাও—

অনশীবাব তৈমান গরম হয়ে বললেন, না বাব না আনে ও বলকে যা করছে আর করবে না, কোশো পলিটিকস-এ যোগ দেবে না পড়ালোনা করবে—

বিকাশ বলপে, সে আমি ওকে বোঝাব তোমনা এখন বাও।

তাের কথা ও শানবে মনে করিস? ওর দাদাঝা ওকে যা বলবে তাই করবে— মাথাটি একেবারে চিবিরে থেরেছে অত সহজ নর!

ন্দু গালে হাত বৃশতে বৃলতে বললে, ও ব্ৰেল্য়া শিকা বাবংথায় কিছু হবে না—আবো বোকা বনে বেতে হবে । বি-এ এম-এ পাশের কোন মূল্য নেই।

বত মূলা আছে ভোষাদের মত ক-খ-পড়া পন্ডিতদের। শোন বিকাশ ওর কথা শোন ওকে তুই বোঝাবি। বেশ বা কডক মার দে ওর পন্ডিতী ছেড়ে যাবে বুর্জোরা কাকে কলে বুকাতে পারবে।

হঠাৎ মণ্ট উঠে বাজিয়ে বজলে মাব দিলে এলে মার খেতে হবে—মার অত সোজা নর।

নশ্ভুর কথা শুনে সকলে শুভার হুরে সেলা। তাঁরা বা ভেবেছিলেন তা নর। নশ্ভু তাঁদেশ শাসনের বাইরে অনেক দরে চলে সেছে। সংসাকের লয়-সরে মানামানি কি তার শাসন বিকল্প এখন আর ওর হয়ছেব্ধ ক্রো নর। মানিবলে ব্যবা বলে বড় ভাই বজৈ সম্মান-ভব্তির ধারও ও আর বোধহর ধারে না। কে জানে আরও বেশী উত্তেজনায় নম্ভু কোন বিশরীত কানত করবে কিনা।

...ভদুনোক অনেকক্ষণ বাড়ীর সামনে করছেন। বিক্রাপের মা ঘোরাম্বর कानाना एथरक औरक स्मरश्रहन। किन्छ বাড়ীভে নকউ নেই যে, ভাকে rura পাঠাকেন জিজ্জেস করবেন কাকে চাই। অবনীবাব এখনো ফেরেন নি। কে জানে হয়তো ট্রাম-বালের গোলমাল হরেছে। ুরাজ্ঞই সাংগাল্লা লোগে। আছে। কেন্দ্র বাড়ো থেকে বেরলে ভাবনা হয় সংস্থ শরীরে অক্ষত অবস্থায় ফিনবে তো। দুগ্রি-দুগ্র বলে যেন মনে আর সাহস পাওরা বায় না। কি বিনকাল পড়েছে। উঃ সেই কবে থেকে শুরু হয়েছে এর বেন আরু শেব

অবনীবাৰ বলেন, শেষ হবে কি দেখতে পাচছ না নিজের ঘরেও শাসু হরে গোটা

স্বামীর কথাটা উমাল্পানী বোকেন ঐ জন্তা নৃত্যু কি করে বেড়াক্তে কে

ভদ্রলোক এসে কড়া নাড্লেন দুং বার যেন অক্ট্রেড অবনীবাব্র নাম ধরে ডাকলেন। উন্যাশশী কি করবেন ব্রুডে পারলেন না। ব্রুডির নাম ধরে ডাকলেও তার ভর হল বিদি কেউ নাত্র জানা আসে—পালিশের লোক হড়ে পারে। ডিনি তো সব সমর কেই ভর করছেন, নাত্র কের বাইরে বাইরে সাংখাডিক কাশভ করে বেড়াছে। পরশু থেডে প্রেডে বিকাশ জাবার বলেছে বাব্ আজ্বকাল জার দারি প্রাক্তরে সংশ্রেড বারে, না। বিক্লেব না কি করছে।

ঠাট্টা করে বললেও কথাট্ট সেই দিন থেকে মার মনে যেন বি'ধে গেছে। প্রতিশে এও ধরছে-মারছে জেলে প্রতে এতে কি বিশ্বব হচ্ছে না নক্ত আবার নক্ত করে কি করছে? সেটা না জানি কত সাংঘাতিক!

তার ওপর আরো একটা কথা বিকাশ একদিন বলছিল নেত্রা নাকি তেলেগানা না কোথার একবার কি হরেছিল এখানেও সেই রকম করবে। তাহলে তো আরো চিত্তার কথা ভাবনার মজাজ দেশালে ও ছেলেন্ডে নেই একটা কিছু করকেই হলো।

বিকাশের বাবা বলেন একাদন তিনিন্তীন করিছেল কর্মান করিছেলেন ক্রাণ আন্দোলনে বোল দিরেছিলেন। কিবলু তিনি এখন কি করছেন সামানা মাইনেন চাকরী করছেন, কিবলু ওবাই সন্দোল করেলে গিরেছিল কলে নেতাদের ধরে মাক্তবড়া সরকামী চাকরী করছেন। আক্র বীবা নেতা হারছেন তাঁদের করেকে বিকাশের বাবা এককালো

বংশ দ্রজার এপারে উন্নাশাশী মনে কলে যেন কঠিন হল্লে উঠলেন। ছোক প্রলিশের লোক তিনি ভর করবেন না মুখের ওপর স্পান্ট জবাব দেবেন। জিজ্ঞেস করবেন কার হুবুনে তাঁর বাড়িতে এসেছে!

না ব-থা আপংকা উনাপগীর। বরকা খ্লতেই কড়া-নাড়া ভললোক বৈন বেশ অপ্রস্তুত বেধ করলেন পাশে সারে পিরে আমতা আমতা করে বলেন অবদীবাশু বৃদ্ধী আছেন?

উমাশলী অস্ফুটে বললেন না।

ভদ্রলোক শিছন ফিরে ক্লালেন আছে। আমি শরে আস্বো। লেখ হর ফিল্পন্তে ভার দেরী হবে?

কি মনে হল উমাশশীর বলকের আপৌন থরে এসে বসুন এখনি আস্কেন—ফ্রেমবরর সময় হয়ে গেছে।

আন্দতবাবা বেন আরো অপ্রশ্নত বোধ করলেন ইউপতেও করে বললেন আমি বালে আস্ছি। বলবেন বিকাশের আপিস খেকে লোক এসেছিল।

উমাশশীর বৃক্টা হোন ধড়াগ করে উঠলো আবার বিকাশের আগিস থেকে লোক কেন? কি দরকার? সে তো আগিসে গিরেছে! এখনো ফেরেনি—

উমাশশা কিছা বলবার আগেই জ্লেক্ত-বাবা বলবোন বিকাশ আছে?

না, সেও ফেরেনি! **উদ্লাশদীকে বেশ** চিশ্তিত মনে হয়।

অনুষ্ঠ বাব্যু বললেন ঠিক আছে আহি যুৱে আস্ছি এদিকে একটা কাক আছে—



ক্ষাৰ স্থা কৰে বলসেন ভি

का कारणीवास्त्व काल व লালাক বা কান ভা। মানে আমি এলোছদান मार्थ प्राप्त केरलागांचे ज्ञान वाल कारल অন্ত ক্রেন্ড অভেতা যোধ করেন অন্তর্গত ভা**হুছতে** পারেন না লোভা-স**্থি শ্রুমার্টা করা উচিত ছবে কি না।** ্রাল হোরে সংবাদ করতে CHECK WICHE न्यासम्भ कारसंस्कृत য়ালিকে ডিমি পারের ষ্ট ছেমে এখন ডিমি মানাৰ ইপ্ৰকৃত পিতা। পালের বাবা-যার ক'ডে গ্ৰেন্ড বিনীত হতেই হবে প্ৰাথান श्वापको सदय ।

দ্বস্থায় দ্বাভিয়ে ভদুলোককে দেখে উমা-দেবীর কেমন রেন মারা হল। তার ভর-धावन व कान क बन साई साहार शास्त्र वा ভদলোক। চমতে কোন কাজে এসেছেন বিকাশকে বলেছিলেন সে হয়তো খুলে গেছে। বিকত্ত কাজটা কি মনে মনে আল্লাক করে ঠিক সিশ্বাস্ত করা যাচেছ ন'--কেলন বেন গ্রুলিয়ে হাচ্ছে—ট ক-পরসা জয়গা-জবি বাড়ীখর-না ওসৰ হবে কেন তারা ভো ক্ষোল কালেই ওসংবর কারবারি রল বাঁধা মাটনে ভাষা ৰাডি দিন-আমা-দিন খাওয়া এ-ছাড়া বিকাশের বাবা কি এমন লোক বে फीब कारक कटन शर्मा किएए शर्म ?

তা হলে? হঠাৎ অবার যেন মনের য়ধ্যে ভয় ছনিয়ে ওঠে-বিকাশকে নিরে অ শিঙ্গে কিছু, হয়নি ভো? বিকাশের বিষয়ে কিছু বলতে আসেননি তো? আপিসে কেন গোলমাদ হলো না কি ? কে জানে কোন্দিক থেকে কি বিপদ আসে ভার ঠিক কি?

উমা দেবী বললেন আপনি বলান আয়ি বলৰো' খন---

না আছো থাক আমি বরং একটা দারেই অসি এই অধ-ঘন্টা কি এক ঘন্টার মধ্যেই वाज्ञरता। वाज्ञण्यत् वः भा वज्ञालयः।

উমাদেবীর যেন আরো ভর হল ভাবলেন নিশ্চয়ই বিকাশের আণিসের কেন ব্যাপ র ভার কাছে ভাওছেন না হা বলব র कर्ण (कर्रे बनादन।

मत्मन एश्वे एक नृत करत होटल फिएड হোম উমা দেবী মরিরা হয়ে বললেন হা হলৰ র আপনি আমাৰেই বলুল আলিসের বিছ; হর কি-

নিজের মনে হেলে জনগতৰ বা সাংগ अव्या वनामा ना मा आभित्मत विक् महा। আলি এসেছিল্ম-একটা কথা-

क्थाहेः त्मव कत्रव व आत्महे अवनीयावः माश्राम क्षाप अप्रतान । श्रम्यक व्यनक्रवान्त মাখের দিকে স্থিপথ দ্ভিটতে চেল্লে বললেন कारक हारे ?

ভভক্ষণে উমা দেবী দমজার ওদিকে স্রে সেছেন। অনস্তবাব্ স্বিশেষ অস্তব্রিক চবার চেন্টায় বললেন আমি আপনার কছে **अध्यास्त्रका**म ।

चाकार्थमा करत अवगीयान वनारमम আন ন।

ভারপর পিছন পিছন এসে হারের মধ্যে বসে অনন্তবাব কেমন যেন নিজেকে অসহার -বোধ করতে লাগুলেন। মনে মনে কর্তা-গোলীর স্থবতের ন'না জ্বপনা-ক্রপনা করতে লাগলেন—কৈ জানে কি ভাবে তার প্রস্তাবটা এ'রা নেবেন। মনে মনে আপন আছাঙার গাুণাগাুণাট ও পর্বালে চলা করে নিলেন-লেখাপড়ে। খুব একটা কিছু না হলেও সংস্রে বেম্নান্ হবে না স্বভ্ব চরিত্র ইত্যাদি বিষয়ে আত্মজার ভূয়সী প্রশংনা করবেন-মানে বললেন আজক লকার মোয়ে-দের মত নয় নয় ধীর স্থির—কিন্তু রূপ? যদি তাঁকে দেখেই এরা ঠিক করে ফেলেন কন্যা আ দৌ মনে হারিনী নয় ঘরের বউ করর পক্ষে কন্যার হোটুকু গাত্রবর্ণ ন্যুন পক্ষে অবশাক তা নিশ্চয়ই নেই তা হলে অন্তৰাব্যু কি বলবেন? না মেয়ে ভার কার্জো নয় তবে ফর্সাও নয়-সাধারণ যা হয় বাঙালী ঘরে—স্পরী মাহেৰ কুংসিত কিছ্তে নর। তথন অনুভবাব, *নিজেকে* জোর দিয়ে বলবেন বেশ অংশনারা মিজের ঢোখে একবার দেখে আসনে; বিশ্বাস না হয়—তরপর অংশনাদের হা হত হয়—

জন#ভবাদ্ধ ক লো হোটা সেটা। পঞাশের ওপর মুখচোথের যে ভব হয় তেমনি মাথার চুল বিরুল এবং প্রায়ই পক্।

অবদীবানু ধললেন ভারপর বলুন---

অনেতবাল বললেন আমি অপনার বড় ছেলে বিকাশের স্বেগ এক অপিসে কাজ

এ খবরে নতুন করে উৎস্তিত হবর কোন করণ অবদীবাব খা'কে পেলেন না। অন্দর মহলে ভার করী তাঁকে সে কথা খলেছেন এও খলেছেন আপিসের ব্যাপার হলে যেন বেশ ভাল করে জিজাস্বাদ করে নেন। তার কেমন ভয় করছে।

আৰ্মীৰাৰ বলকেৰ আমি শ**ু**মিচি। বলুৰ এবার আশিক্ষে কি থবর আছে!

অলক্তর'ক্ হলজেল আপিলের থবর-টবর কিছু, ময় আমি ত্রপনর সংগ্র আলাপ করতে এল্ম।

ৰললেন বেশ বেশ: অবনীব ব আপনর অন্তারে তো বিকাশ কল করে?

অন্তত্ত্ব উৎসাহিত হয়ে বৰ্ণদেন হা ছেলে আপ্নার খুব ভাল কল-ক্ষাও খুব ভাল জুনিরর তা হক এর মধ্যে সব 'কজ বেশ শিক আশ করে নিরেছে!

অবনীব ব বললেল আপিলের কথা বিকাশ আমাকে কিছা বলে না তার মার जाएश या वर्ण करन कारन महीन... अ भनात নাম তো জানগতৰ বৃ?

অনুভব বুহেলে বললেন হী।

বিকাশ ভার মাকে, আপনার কাজের কথা খুব বলে শুনতে পই!

কল্প আরু কি করি হতটো পারি সাধা-মত চেন্টা করি। তা ছাড়া আক্রক ল ক জেব সে ন্টান্ডার্ডও নেই কবর নেই। হত দিন যাকে তত যেম কাজের মধ্যে সিরিরসনেকটা চলে যাকে! মনে তেমন আর রিলারেবিলিটি রেস্পন্সিবিলিটি ইনটেগরিটি কিছা নেই-তাই তো বিকাশকৈ বলি হা-হা হো হো 🛔 শা করে কাজ শিখে নাও নিজের কাজ করে যাও--আজক লক র ইয়ংলানদের মত ফাঁকি দেবার চেটা করো না তা হলে কিল্ড ফাঁকি পড়বে--

অবনীবাৰু মুখান ডকেন মূনে জাঁর-ও ঐ মত। যদিও আপন মত খটাবর পকে তার কোন সাহেগ খটেনি। তিনি কোন এক বেসরকারী আপিসে কেরাণী গিরি করেন।

অনশ্তবাৰ ু েশ উৎস্থিত হয়ে বলতে ল গলেন বিক শকে আমি তাই বলৈ ওয়াক ইজ তয়ারশিপ : করো কথা শ্নোনা নিজের কাজ করে বাড়ী যাও ভবিবাতে যাতে ভাল হয় তর জন্যে এখন েকে চেডটা করে যাও थाँकि मिल साँकि अल्ड इस्व।

অবনীবাব মথা নেড়ে সাল দিয়ে বললেন শানেছি আপনর কথা বিকাশের মার কাছে। আপান ওকে খুব স্নেছ্ করেন-

অনণ্ডব বু হেনে বললেন দেনহ আর কি নতুন আপিলে চ্কেছে ছেলে-ছোকরা এখন ওদের দিকে একট্র নজর রখডেই হর! তার ওপর ব্রুডেই পারেন সরকারী আপিস! এখন তো হরি যোষের গোয়াল! তবে বিকাশ খ্ৰ ভাল ছেলে জেরি অবিভিয়েন্ট ডিলিভেন্ট--

হঠাৎ যেন খের ল হলো কথার মাৰখানে অশুভব ব্ জিজেস করলেন

অবনীবাৰ; অনালনকের মত বললেন না।

একটা যেন উদিবান হায়ে আৰুতবাৰ বললেন এখনো অনুস্নে। আপিস ডে: তালেককণ-

ৰলতে বলতে বিকাশ বাইরে থেকে ঘরে क्टन हुन्द्रमा ।

(FX413)

বিজ্ঞানের কথা

- * লোহ আকর সম্পর্কে
- * ভারতের নিউকি ুয়র বিসেফারণ সম্পর্কে
- * ভারতে বিশ্ব স্বাস্থ্য সংস্থার গোপন কার্যকলাপ
- * স্যার জেমস চ্যাড্উইক

লোছ আকর আমাদের কি র°তানী করতেই হবে?

লোহ আকর রুতানী করে কৈদেশিক মাদ্রা উপান্ধনি করার খবর আমাদের দেশে বেশ বড়ো গলাতেই প্রচার করা হয়।
এমন কি সরকারী নিউজ রীলেও এ খবর
মাঝে মাঝে এমনভাবে দেখানো হয়ে থাকে
যেন ভারতের কোনো কুডিছের কথা বলা
হচ্ছে। প্রকৃতই তাই কিনা এ প্রশন অবশাই
ভোলা যেতে পারে।

সাংবাদস টুডে পত্রিকার জন্ম ১৯৭৪
সংখ্যায় একটি প্রবন্ধে এই প্রদনই তুলেছেন
আলিগড় মুসলিম বিশ্ববিদ্যালয়ের ভূতত্ত্বভাগের অধ্যাপক ও প্রধান ডঃ ফকর্মুন্দিন
আহমদ। তার প্রবন্ধের শিবোনাম : লোহ
আকর আমাদের কি রুশ্তানী করতেই হবে?

আগে আমরা রণ্ডানী করতাম পিণ্ড-লোহা আমাদের পিন্ডলে হা ছিল বিশ্বের বাজারে স্বচেয়ে শৃস্তা। তারপরে আরও ক্রেতা পাবার জন্য আমরা পিন্ড-লোহার বিক্রি বংধ করে দিয়ে সরাস্থি লোহ আকর রুণ্ডানী করছি।

প্রত কুড়ি বছরে আমাদের দেশ থেকে লোহ আকরের রুতানী ৫০ গুল বৃণিধ শেরেছে। ছিল ১৯৫১ সালে ৪০০১৪৫ प्रेम इस्साइ **১৯**৭৯-**१२ जाल २ कावि ৯**৪ লক্ষ টন। উন্নতি হয় নি? নিশ্চয়ই বে কোনো মাপকাঠি দিয়েই বিচার করা তেঁক না কেন। বর্তমানে আমাদের দেশ থেকে হতো খনিজ শদার্থ রুতানী হয় তার ষাট শতাংশই লোহ আকর (মোট রুতানীর ৭-৭ শৃতাংশ)। এই খবর নিয়ে উল্লাস করার আলে একটি বিষয়ে অবহিত থাকার প্রয়োজন ছিল। তা এই যে লোহ আকরের রুস্তানী বাডিয়ে আমরা আমাদের পিন্ডলেহা উৎপদন-লিলেশর স্ব্নাল ঘটিয়ে বসে আছি। কাতানীকৃত লোহ আকরের যাঁলা ক্রেতা আন্তাদের সেই উপকারী বন্ধুরা এক চিলে দুই পাথি মেয়েছেন—(১) মহাম্লাকান লোহ আকর লাভ (২) ভারতের শিল্ডলোহা **ेर्न्यमञ्ज निक्रम विज्ञाम। (वर्षमध्यिक ए**ड আহ্মদ তুলনা করেছেন বিটিশ আমলে ঢাকার তাতীদের বৃড়ো আঙ্কা কেটে নেওয়ার সংগ্রে বাতে ল্যাঞ্চাশার রের নিকট মানের বৃষ্ঠ অবাধে বিক্লি হতে পারে।)

এই নিয়ে কোনো সদিশ্যমা যাতে কোনো প্রশ্ন ভূলতে না পারে ভার জানোও আট্রাট বে'ধে রাখা হল। তৈরি হল ফলিত অর্থনৈতিক গবেষণার জাতীয় পরিষদ। তারই আওতায় একদল বিশেষজ্ঞ মতপ্রকাশ করলেন যে ১৯৬১-৮১ সালের সময়কালে আমাদের হাতে লোহ আকরের বাড়তি মাজলে এসে বাক্ষে ২৩২ কোটি ৫০ লক্ষ নৈ অতএব আগামী ৫০ বছর ধরে প্রতি বছরে অনায়াসে ৪০ কোটি ৫০ লক্ষ নৈ হিসেবে আনায়াসের। অন্রদ্দী এই বিশেষজ্ঞাদের মত বেদবাকোর শামিল হয়ে গেল।

বিশেষজ্ঞরা বাড়তি লোহ আকরের কথা বলছেন। 'বাড়তি' বলতে কী বোঝাড়ে চাইছেন তারা? লোহ আকর কি পাট বা চা বা মখনের মতো যা নিজেরা খরচ করতে না পারলে ফেলে বাখা চলে না-বছর খানেকের মধ্যে রুতানী করতেই ছয়? রুতানী না করে লোহ আকর ফেলে রাখলে লোহ আকরে কি পচন ধরে? লোহ আকর কি নত হয়ে যায়? লোহ আকর কি ওয়ুধ বা ফটো তে লার ফিলম কা ক গজের মতো এমন কোনো পদার্থ যা নিদিশ্ট তারিখের মধ্যে থক্ত করে ফেলভেই হয় নইলে সবটাই বাতিল? লোহ আকর কি ফ্যান বা সাইকেল বা পেতলের বাসনের মতো এমন কোনো পণ্য যা আমরা প্রয়োজনের অতিহিল উৎপাদন করে থাকি এবং এই অতিরিক্ত অংশ রুস্তানী না করলে আমাদের কিছু প্রমিক কর্মান্তীন हरा भाषात सम्बादना?

আরো একটি কথা জানা দক্ষকর।
চানিশ কি পঞ্চাল বছর আগে লৌহ আকরের
সম্পদ্ধে আমরা বভোটা ধনী ছিলাম এখন
আর তা নই। সে-সমরে আমরা প্রকৃতই ধনী
ছিলাম—তখনকার প্ররোজন ও লিলাখ
অনুবারী। বভামানে আমাদের খেলে মজুদ্ধ
দোহ আকরের পরিয়াশ ছিলাম খেকে

बुद्धान्द्र समा शहा ১०६० व्यक्ति र्खाज्य हेज्लाच छरलाइटनड कमा व है काक्स दुन्कामीत कमा व्य-शांत्रमाश लाडि আৰুৰ বছ'মানে আমাদের প্ররোজন সেই চিজেৰ মতো চললে ১৯৮০ সালে আমরা প্রায় দশ কোটি টন লোছ আকর থনি থেকে ভুলতে থাকব। ভার বাদে আমাদের মজুন लोड साकर मिर्दा जान गाम अकरणा वहर हमार्ट भारत । धारे मुन दकाचि वेरनव मध्य আম্ব্রা নিভেরা বাবচার করব প্রায় সঞ্চে-১ং কোটি টন আৰু রপ্তানী করব প্রায় সাডে পাঁচ কোটি টন। এই হিসেবের সংক্র আরে কিছু হোগু করা সরকার। খনি থেছে তোলার পরে লোহ আক্রের কিছুটা নক্ট ह्य किन्द्र वे स्टानानि हत वाक-----------------হিসেবে রাখলে আসলে আমাদের খনি থেকে ভুলতে হবে প্রায় ১২ কোটি ট**ন। ভার মনে** থরচের বর্তমান হার বজার থাকলে আমাদের মজ্ব লোহ আকর দিরে চলতে পারে আর মানু নব্বই বছর।

বাদ ইম্পাতের উৎপাদন আমাদের বাড়াতে হয় (ব ড়াতেই) হবে কোনো কেনো বিলোবজ্ঞার মতে ২০০০ সাল লাকাল আমারা উৎপাদন করব ১০ কোটি টুল ইম্পাড) আরু সক্রেম রাথতে হয় ভাহতের রাজানের মজানুদ লোহ আকর ৫০ কি ৬০ বছরের মধ্যে ফ্রারিরে হাব র সম্ভাকনা। ভাহতের ২০০০ সাল নাগাদ আমারা হয়ে গড়ব মজানুদ লোহ আকরের স্কানের মজানুদ লোহ আকরের স্কানের অক্রেমরেই নিঃসব।

এমন কি লোকু আকরের উৎপাদমণ্ড বাদি আমারা বন্ধ করে দিই এক ইন্পান্তের উৎপাদন বাড়িয়ে চলি ভাহুলেও ম**জুদ সোই** আকর ৬০ কি ০০ বছরের বেলি চুলুতে পারে না।

এই হিসেব আমাদের মজ্ব লোই
আকর ১০৫০ কোটি টন ধবে নিরে:
সম্ভবত মজ্বদের পরিমাণ আবে আবেক:
কম—হা ধরা হয়েছে তার প্রার অবেক:
তাহলে? তাহলে লোহ আকবেন স্পশন্ন
মাদের বাতে থাকছে আর রান্ত ৩০ কি ৪০
বছর। আমাদের দেশে লোই আকরের মজুন
কোনো খনির স্পশন পাওয়া ববে আমা

অতঃশর হাদ আছরা দেখি দেখি
আকর রশ্তানী করে আমরা কী দাম
শান্তি তাহলে বোঝা বাবে অবস্থা আরও
কচনান ভরাবহ। ১৯৫৫ সালে
কচনান ভরাবহ। ১৯৫৫ সালে
কচনান ভরাবহ। ১৯৫৫ সালে
কিনাল তিনিগছ, ৭৫৮ টাকা, রশ্চানীকৃত
লোহ আকরের জন্য নাম শেরেছি ট্রাপছ,
প্রার ৪০ টাকা। ১৯৭১ সালে
প্রথম কেন্তে দিরেছি ২০০০ টাকা, নিভার
ক্রে পেরেছি ৭৪ টাকা। নিভার
টাকার পরিমান সামাল বেটক বেডেই
তা নিভাকতই টাকার অব্যাসায়নের ফল।
ভলাবের ছিসেবে দেখলে ১৯৫৫ সালে

THE WAST TWO SET IN

L see wert with Crite A-LY BUTT कार कामा रणानी THE PLANE | 405 क्षानंत्र कामात भारत थ भारत कामात वह कारत हो। अन्याम हत्य त्लोह जाकर ক্ষ্মানা প্রকিটনে কৃতি টাকা क्षिकान विद्या इटलीक । नश्यान हरत ছালের সংখ্যা দেখানো হয়, দশ লৈ লোহ ভাকর নিয়ে কোনা জাতাত ভারতের বন্দর থেকে রওনা क्ष क्रियम धक्का कर्यामा रका इत ना स्य ট ভাষাল-ভাত গোহ আকলের সপো নাক টাকার একটি তোড়াও আমরা ল্ডুক, লিভি। এ বছর বদি আমগা दकारि हैन রণভাদী कताव থাকি मान निरम ভাঙালে যোট riva. পরিমাণ দীভায় slud al ্টাকা—ভারতের • লোট Grei-শংখ্যার হিসেবে মাথাপিছ, প্রায় এক

বিশ্বেন বাজারে যে-সর দেশ তেল मन्द्रामी करत छात्मत अविधि निकन्य নংগঠন আছে (অগ্নিইজেশন অব পেটো-নিয়ান একসংপাতিং ক্লিঞ্জ) সেই সংগঠনই তেলের দাম ঠিক করে দেয়। এই দামই মেনে নিতে হয় ভেলো: আল্লানীকৃত দেশগ্রেশক। এখন কি কোনো বৃহৎ শাহত এই দামের নড়াড় क्कारक भारत ना। विस्पद वाकारत लोह काकर के छानी करत थारक श्रधान छ हाति रमम-अल्बे नहा हाजिम छाउछ उ गारे-বেলিয়া এই চারটি দেশ মিলিত হয়ে অনুরূপ একটি সংগঠন কি গড়ে ভুজতে পাৰে না? ভাহতো আর কিছা না হোক অভততপ্ত নাবা দাম পাবাৰ একটা বাবশ্বা হতে পারে। এমন তো নয় যে লৌহ আক্রের মজ্ম রয়েছে অফ্রন্ত অভ্যাৰ যে-দায়াই পাওয়া বাক না কেন টা**লাও কারবার চল**ুক। আস্টোলয়া ও बाक्षिरलय प्रकान अहत, व्यक्तिकाश दशाला **লোছ** আক্রের নতুন ধনি আবিশ্রুত হতে শারে ভব্ত সব দেশকেই এক সময়ে অন্তব করতে হবে যে মজ্ল ফ্রিয়ে আৰাৰ মাথে এবং সংকট আসহ। সহয় ৰাকতে আট্ৰাট বে'ধে দক্ষিতে ক্ষতি কি।

ভাগগরেও ফিচ্ছু প্রশন থেকে বার ঃ
কল্ডানাই বা করতে হাব কেন - আম্রা
জারাদের দেশা থেকে সেরা মানের সমাত্র
রাজ্যাদার রুপতানী করে বলে আছি প্রচুর
ক্রিকাও। ধনী কেলগুলো এই মান্ত্রানীক কাইকা আমাদের কাছ থেকে কিনে নিয়ে
ক্রিকা করে কেবেছে এবং প্রয়োজন হলে
ভর্মতা আমাদের বিব্যুশেই ব্যৱহান কলাব
ভ্রমতা আমাদের বিব্যুশেই ব্যৱহান কলাব
ভ্রমতা আমাদের বিব্যুশেই ব্যৱহান কলাব
ভ্রমতা ভ্রমণ্ডে করেওতে টেলেকনিব
ক্রমতা তিলা করতে মাইকা লানে তৈয়ী ক্রডেও)।

जाजारम्य स्मृत्य देशिकादश न्यानिष्ठ কাৰধানাগালোতে ইস্পাত উংগল হতে शाद्य बहुद्ध ४३ नक हैन। शहर व के श्रीवस्थ्यनात मध्यकाटम धरे छेरशामनटक বাছিয়ে তোলা হবে ৫ কোট এ৪ লক हेरन। ट्रम्कुना थाह क्या हत्व ४,६०० কোটি টাকা। ডঃ আমেদ বলছেন, ইম্পাত উংপাদনের জন্য সব সমার প শ্চমের অন-করণে বড কারখানা স্থাপন করতে হবে 'ভার কী মানে আছে? বরান্দ টাকার কিছ जरभ वास करत किए, मरशाक मिनि-न्गानि স্থাপিত হোক না কেন, কামারশালা ধরনের যে উৎপাদন-পশ্ধতি আগে আমা-দের দেখে ছিল? এতে লক্ষ্য পাবার কিছ, নেই এই পদ্ধতিতে উৎপদ্ধ ইদপাত দিয়েই কুতুব মিনারের কাছে অংশাক স্তম্ভ তৈরী হয়েছিল। অবশাই, চাহিদা ও অকথা অনুবায়ী পৃশ্বতির আধ্রানকীকরণও চাই। তা অনায়াসেই হতে পারে। বৈদেশী মান্ত্র যদি অজনি করতেই হয় তা অজিতি হোক ইম্পাত রুতানী করে-লোহ আকর নয়।

ভারতের প্রথম নিউক্লিয়র বিস্ফোরণ সম্পর্কে ভারের কিছ: খবর

বিস্ফোরণ ঘটানো হুরোছল রাজ-স্থানের মর্ভাম এলাকায় পোখ্যান-এ। 'व'न्यातरनत न्थान त्थतक जाः छ-हाः কিলোমিটার দূরে একটি গুম্বুজ খাড়া করা হয়েছিল। সেই গাবাজের ওপরে দাড়িয়ে ৫৫ জন বিজ্ঞানীও সরকারী কর্মচারী বিষ্ফোরণ পর্যবেক্ষণ করেছিলেন। তারিংটি ছিল ১৮ই মে সময় সকাল আটটা বেজে পাঁচ মিনিট। বিশেফারণের পরে গম্বুজটি কেম্প উঠেছিল আব গ্ম-প্রম একটা আওয়াজ শোনা গিয়ে-**ছিল। দেখতে দেখতে চোখের স্ম**ান ফাকা জমির ওপরে গাস্ত্রে উঠেছিল উচ্ এক বালির পাহাড়। ভারপরে সেই ব্লির পাহাড ডেবে গিয়ে জৈনী হয়েছিল ১০ মিটার গভীর ও ২০০ মিটার চওড়া একটি গ্রহার ।

এই প্রকশ্প নিয়ে যথন কাজ হছিল,
লিখিতভাবে বিশেষ কিছা করা হয় নি।
প্রায় পারের কাজটাই হরেছে মাথে মাথে:
প্রকপের সপের জাভিত একজন বিজ্ঞানীর
ভাষায় বেলের মতে। বিশেষ বিশেষ
কাজেন ভার মানের ওপরে ছিল তাঁরাও
জানিতেন যা জি প্রকশ্পে তারা কাজ
করছেন। তবে অনেকেই অন্মান করতে
পেরেছিলেন।

পোশরান-এর শ্বানীর অধিবাসীরা বলে দু বছর আগেই সরকার থেকে জারগাটা দখল করা ও খিরে নেওয়া হ'র:ছল। তবে ১৮ই মে তাগিগ্রের সকালের আগে কেউ-ই অনুমান করতে পারে নি ক হাটতে চলেছে। আরোজন সমপার্থ হয়ে বারপথাতি টুকরো টেক্রাজন করিব ভারী হারাছিল উন্বের ভারা

বিক্ষোরনের কথানে এনে সম্মানত হরেছিল।
বার্কণাটি শ্বাপ্ত কলা হরেছিল।
ইরেলী হলফ এল-শ্রেলিরের মতো একটি
গতের মধ্যো। এল-শ্রেলের খাড়াই বাহুটি
ছিল ১০০ মিটার গালীর আর সমান্তরাল
বাহুটি ১৫ মিটার কালা। এই সমান্তরাল
বাহুটি ১৫ মিটার কালা। এই সমান্তরাল
বাহুরি ১৫ মিটার কালা। এই সমান্তরাল
বাহুরি হরেছিল সাড়েনার কিলোমটার
স্বার্র হরেছিল সাড়েনার। বিক্ষোরণ
বাব্র কালা সাইচ টেপা হরেছিল এই নির্বাণ
টাওরার ব্রেকে।

বিক্রেমারনের পরে তেজন্দ্রমতা খটে কিনা তা প্রথম কর্মার জন্য সর্ব প্রশান সাক্ষরা স্থান স্বজ্ঞামে সন্ধিলার সাক্ষরা স্থান তেজনিজর তিরী ছিল হেলিকপ্টার, যাতে তেজন্তির ভানম উপতে হলে তার পিছু ধাওয়া করা চলো। বিস্ফোরনের অবাবহিত পরেই এই দলগালো বিস্ফোরনের মধা হাজির হর্মে জন। আরপ্ত ৪০ মিনিট পরে একটি দল জানিপে করে চলে এসেছিল ২০০ মিটারের মধা। আরেকটি দল হেলিকপ্টার চেপে মাত ৩০ মিটার উর্গ্ দিয়ে উড়ে গিরেছিল। কোনো দলের কাছেই তেজন্তিয়তা ধর, প্রভা নি।

হিসের করে দেখা হয়েছে বিফোরণো माठा ছिल ১० किलाउँग्लंड । छकम्भन-যনের মাটির কাঁপট্রনর যে মারা ধরা পড়েছে ाक वना हान प्राचाली (शक कारामा) এই কম্পনে আলগা করে রাখা পদার্থ নড়ে যেতে পারে দাঁড়িয়ে থাকা গাড়ীতে বাঁকুনি লাগতে 🐇 া ঘুমুন্ত মানুষ জেগে উঠতে পারে. 🗝 ঘন্টা বাজতে শুগ্র করতে পারে বাস্তবে যা ঘটেছিল তাও वाका कम नहा। विष्ट्रकात नत न्यान शाक পণাশ কিলোমিটাল দ্রের প্রামেও মাটি কাঁপানি এত জোরালো ছিল যে জন্ত্-জানেয়ার ছাটোছাটি শ্রু কবে দেয় বাসনগত নড়ে ওঠে. মাটির ছাদ কাঁপতে থাকে: আশ্ব মানুষজন ভয়ে খোলা জায়গার আসে।

সাধারণত দেখা খায়, ভগভে পার-মাণবিক বিস্ফোরণ ঘটলে মাটিতে একট্র-আধটা চিড় পড়েই থাকে আর সেই টেড দিয়ে কিছ-না-কিছ, তেজ করতা বাইরের वास्त्रभुष्यान व्यक्तिसः व्यामः। পোश्रतासः বিষ্ফোরণের পরে বাইরের রায়,মন্ডগে বিৰদ্মান তেজাৎকর্তা টের পাওয়া যার নি। সম্ভবত পোখরানের ভুক্তরে^র বিশেষ গড়নের জনাই এটা **স**ম্ভব হয়েছে। বিস্ফোরণ ঘটেছিল ১০০ মিটার গভীরে এই গভীরতাল ওপরের স্তরে ছিল বালি, তার পরে ভাঙা ম্তিকা, তার পদ্ধ দেলট পাথর। তেজন্মিয়তাকে এই বে সম্পূৰ্ণ আবন্ধ রাখতে পারা এটাই বিজ্ঞানীদের কাছে একটা যুট্ছ যে পার-शानुनिक विरम्भातमाक मान्छिन्द्र के किरमारमा ব্যবহার করা মেতে শারে।

Mententaling whilest museling

बन्धीय विकास প্ৰিৰ্দ প্ৰকাশিক काम के विकास शतिकार क्षा मन्शासक ও জীববিজ্ঞানে মোলিক গবেষণার জনা দেশ-বিদেশে বাতি মিলোপাশচন কট্টা-ठावरिक गन्वर्यना काशास्त्र कार्याक्रम इत्स. এ খবরে স্বাই ভাগদিকত চবেন। বিগত PINI TEORIG অধিক কাল এটো क्रिक्टोहार्य वार्गाणावास वद् विकारमत टमथा जित्यरहान छ विद्याच करत महरमद ছেলে-মেরেদের মধ্যে বিজ্ঞানের প্রচারে বড় রকমের সহায়ত। করেছেন। তাঁর বিজ্ঞানের লেখা থেকে নিৰ্বাচিত একটি সংকলন शकारमात्र आस्त्राकन्त र एकः। विकारनत शहारत याता फेरमाडी जीव अवशाह धारे সমুস্ত প্ররাসের সংখ্যা সহযোগিতা করবেন। সম্বধানার জন্য গঠিত অভার্থনা সমিতির ঠিকানা : ১৮এ গোরীবাড়ী লেন কলি-কাতা-8। ফোন : ৫৫-১৯৪৩।

্রাওড়া বিজ্ঞান পরিবদ পরিচালিত প্রসাকবিজ্ঞান

এটি একটি মাসিক বিজ্ঞান পাঁচকা,
ক্লাই ১৯৭৪ সংখাটি সম্প্রতি প্রকাশত
হরেছে (১ম বর্ষ: ৮ম সংখা)। ভবল
কাউন ৮ পেজী সাইজের হয় প্রতীর এই
সংখাটির দাম কৃড়ি পরসা। কিছু টুকরো
খবর ও ভোরজুড় সম্পর্কে ধালাবাহিক
রচনা হাড়াও আছে পাঁখ ও সৌর ফাঁল
সম্পর্কে দটি ছোট প্রবংধ। আর অতে
পতিকার প্রজ্ঞান একটি প্রশ্নের অবতারণা :
করাই একটি প্রশেবর বন্ধ-পরীকার
বরাইলা ও বিশেষ করে বন্ধ-পরীকার
প্রস্ক্রেরাকাশীরতা। হাওড়া বিজ্ঞান পরিবদের
প্রস্ক্রেরাকাশীরতা। হাওড়া বিজ্ঞান পরিবদের
বিকারা হ ও শিব্দার রেড হাওড়া—২।
বিবাসা সংবাদ : জেমস চাড়েউইক

গত ২৫শে জ্লাই তারিখে বিটেশ বিজ্ঞানী স্থার জেমস চ্যাত্টইক প্রয়ত হয়েছেন। মৃত্যুকালে তার বয়স হয়েছেল তির্মানী।

ইনমান্ বিভাবনের ইতিহাসে জেমস চ্যাড়উইক এক অতিসম:জ্জান নাম। ১৯৩২ সালে তিনি যে নিউটন আ'বিজ্ঞান করেন তারই শাহাযা নিয়ে প্রবতীকালে প্রমান্র বিভালন সম্ভব হরেছে। এই আবিজ্ঞানের জনা ডিন ১৯৩৫ সালে দার্থবিজ্ঞানে নোবেল প্রস্কার লাভ

জন্ম ২০ অকটোবর ১৮৯১। শিক্ষালান্ত মানচেন্টার ও কেমজিল বিশ্ব-বিনালেরে, তংকর বালিনের শালোটেন-বৃক্ ইনন্টিটিউটে এইচ গাইনার-এর অধানে। ১৯২৩ সালে কেমজিল কাাভেন-ডিশ ল্যাবরেটরীতে সংকারী গবেরন কামজা ১৯২৭ সালে লাভারপুল বিশ্ব-বিনালেরে পাদার্থবিদারে অধ্যাপক। ১৯৪৫ সালে সার্ব উপাধি। ডেল্লেকভা ভান্ধবিদার সমস্যা সম্পূর্কে বহু

বিশ্বর আবহাওয়ার প্রতিক্র আরও উল্লিখ্য জন্ম ট্রাপ্ত আবহাওয়ার অনুস্থান

२२विं एएला हात हाकारतात कांधक विकासी के अंदर्शियन त्यांचा निरतरकम क्षेष्टे अविकाकारमः बाब नाम-देशदेशकरक रम्बादान আটমসফিয়া বৃক বিসাচ প্রোলামাস আটেলা উক্ ট্রীপ্রকাল একস-शिक्रामे (अरक्तान 'रमारे') वारमास 'यनव मान्य मान्यमा कम-স্চীর আটলান্টিক ট্রীপকাল প্রীক্ষাকার্ম। প্রিবীর আবহাওয়া व किरत शरीका करवार जमा असम बहुद स असम अधिक नहींका कार्य जारम कथाना इहान काणिमश्चात विकत कार्यक मरगठिएमा উল্যোগে অনুষ্ঠিত এই পরীকাকার্য শরে হয়েছে ৯৫ জনে जातिरथ हनस्य २० स्तरभीन्यम भयान्छ। हिल्लामा हे भिकान सम्म छ বার্মান্ডল সম্পর্কে এবং বিশেবর আবহাওয়ার ওপরে ভাগেল ছিলা সম্পর্কে তথাসংগ্রহ। অনুসন্ধানের এলাকা-প্রশাস্ত মহাসাসারের পরে, ল্যাটিন আমেরিকা, আট্লান্টিক মহাসাগর আফ্রিকা ভারত মহাসাগরের পশ্চিম। বন্দ্রপাতি স্থাপনের জনা বাবহাত হচ্চে ০৮টি জাহাজ ৬০টিরও অধিক বয়া ১০টি বিমান ৬টি কবিম উপগ্রহ ও বিভিন্ন দেশে প্রায় এক হাজার প্রাবেক্ষণ শৌলন। অনুসংধান চালানো তবে বাম মাডলের উপণিভাগ থেকে সমাপ্র ১৫০০ মিটার শন্ত্রীর প্রবিদ্ধ আশা করা হচ্চে প্রীক্ষাকারের ফলাফল থেকে বিশেবর আবহাওয়াল প্রভিত্তাস আরো ভালাভারে জানা যাবে এবং বিধ্বংসী ঝড স্থি হওরার কারণ আরো ভালোভাবে বোঝা হাবে।

গবেষণা-নিবদ্ধের লেথক। লভ রাদাণ-ফোড ও স্যার চালসে এলস-এর সহ-ঘোণিডায় লিখিত গ্রুথ ঃ তেজস্ক্রিয় পদাধের বিকীশণ (১৯০০)।

নিউট্রন আবিশ্বার করে প্রকৃতপক্ষে তিনির পার্যাণবিক বিস্ফারণের কাল স্চিত করেন বলা চলে। প্রমাণ্র আভাশ্ভারের এট কালকাটি এতকাল ধ্রা পড়ে নি যদিও বিজ্ঞানী রাদারফোড ১৯২০ সালে রয়াাল সোসাইতিতে প্রদত্ত একটি বক্তায় আন্তাস দিরেছিলেন যে নিউক্লিয়নের অভাস্তরে আরো একটি বিদ্যুং-নিরপেক কণিকার আস্ডম্ব থেকে লায়েছে বাল জাঁর মনে হয়। জেমস চ্যাড-কণিকাল অস্তিয় উইক-ই স্ব'প্রথম এই প্রমাণ করলেন। ১৯৩২ সালে দেখালেন বেরিলিয়ামকে আলফা কণিকা দিয়ে খা মারলে যে বিকীরণ ঘটে ভাতে অনাবিক্ট নিউক্লিরর কণিকার একটি ধারা পাকে। স্থাদারফোর্ড এই কণিকা সম্পাকে অনুমান করেছিলেন মার্ট্র, জেমস চ্যাডট্টিইক তাকে প্ৰতিশ্বিত বাস্তৰ করে ভুলভোন। আর তার নাম দিলেন নিউটন।

নিউটন বিদ্যাং-নিরপেক্ষ অত্তরত বৈদ্যাতিক জাকবানে বা বিক্রাংগ বিচ্নতি না হয়ে সরাসরি প্রয়াণ্ডাই নিউকিসেকে ভেদ করতে পারে। এ-কারণে নিউক্রিসেক রাপান্তরগের জনা নিউষ্টান্য হাত্যে বণিকার (বার ভার প্রোট্টোনের ভারেন প্রার্থ সম্মান) অভিসাত্তর প্রয়োজন ভিজা।

একালের এই স্বচেয়ে জরুরী আবি-

eকারের কৃতিছে জেমস চ্যাডট্টক ছিল-সমরণীয় হরে রইলেন। ভারতে বিশ্বস্থাপার সংক্ষার গোপন কার্যক্ষাপ

ভারতে বিশ্বস্বাস্থা সংস্থার Callein কার্যকলাপ সম্প্রেণ যে বিবরণ কলকাতার ইংরেজী পাতকায় প্রকাশিত STRUE. বাংলা অনুবাদে তা পাওয়া यौधा नाथा बारका भविका भएएस जौरमत কান্ত এই বিবরণ वास्त्रा ह रशहक সম্ভাবনা তাথচ এই হিবরুপ প্রভাষ ভারতবাসীর জানা দরকার त्वानमा क्षेत्र বিব্রুপে ভারতের क्रसन्त व য়ারী-সপার্ক 🔪 🧒 প্ৰাল-ছুম্ভাৱক হাম্পাস্ত প্রথ করে দেখার প্রাক্তিনী কার্য-कलार शत करहाक है पण्डी एक शकामा करा চ"বেল্ডি । ই তপ্ৰে বিজ্ঞানের कशार्थ करहाकति रमधाश फिरम्स छमात्रा रहाना प्रणा-বার গাছপালা নাট করার ও জীবজ্ঞত ধন্সে করাল মার্কিনী ভ্রপরভার কিছা বিবরণ আমনা দিয়েছি। ভারতেমাম ছেকে বিতাড়িত চবার পার আমেরিকানতা ভারতে ভর কর্ম ? মীনের বিবরণ পাড়ে भागेक्या निर्वादाते विकास क्याम खबर জিয়েতনায়ের পাস ভাবত হাড়ে আয়েরিকান মাল্লব্যক্ষর প্রশীক্ষাভূমি না চার করে সে জনা যেভাবেই হোক ভংপর হয়ে উঠন।

বিবরণে বলা চরোছে বিশ্ব স্বাস্থা সংস্থার নামে বে-সমস্ত গবেষণামালক প্রকশ্প একান্ড গোপনভাবে ভারতে চালিয়ে বাওরা হতে নেগালো সম্পর্কে ক্ষাৰ বিজ্ঞানীটাৰ কোনো কোনে। বান কালে জীপান।

A MARKANIA

বাই আনুষ্ঠ প্রকাশন খনত বহন
কর্মন বাংলাকিবা গতনামেন্টের করেনটি
ক্রিন্টা অবং বভদ্ধ বোবা বাচ্ছে
বাক্তিবা ব্যানকার সৈনাবাহিনী গবেবণার
ক্রিন্টাকনর প্রাক্তির সাকিন
ক্রিন্টাকন হাতে লি-এল-৪৮০ খাতে যে
বিশ্বন পরিমাণ অর্থ ক্রমা রমেতে
ক্রেন্ডাত ভা থেকেই সমস্ত ধন্চ নির্বাহিত

প্রকাশস্থানর সংশা অভিত রার্ছেন ভারতি সকা হ বিশ্ব স্বাস্থ্য সংস্থা মেডি-কিলা প্রেকশার জারতীয় পরিষদ কিংবা কিলাম কাশ্রা মুখ্যক। কিল্ডু আ্শ্রের্থ কাশ্রিক উল্লেখ্য মিরে প্রীকাক্ষ্ ক্রিক্তির এই প্রশ্ন বা অনুর্প অন্য কোন ক্রিক্তির কর্মেশ ভিন প্রাই স্পুর্ণ নির্মায় ক্রিক্তির কর্মেশ ভিন প্রাই স্পুর্ণ নির্মায়

Park septem সংস্থার পরীক্ষাকার্য क्षात्व का क्षात्र भारत अभ्यत् इरहाटक জিলার প্রতিক্ষানে—নর্মাদলীর মশক ইউ-निर्देश शक्तमभाष श्रीमानाग रक्तमा. व्यान्यादे-এর প্রাকৃতিক ইতিহাস সমিতিতে ও বোধ भूत्राव अगुरमिक्का निर्माणीयसम् प्रिमानः। क्षिड्राम्स क्षेट्रे स्मधात आंत्रका अध्यमितिक লাখ্য বৈশয় বলৈ উল্লেখ করব, শ্বিতীরটিকে প্রাপ্ত ভারতি ভতারটিকে শ্বা ভেটশন)। रक्त जाश्वास्थव नक्ता जारत मा वहर जाता. बचन अनाम इस्त भाष स्व स्कन्त **এখন সমূদ্ত স্থান্তনিক ছড়িনে প্রা**মের কুলোর জল বিবাস করতে বা ক্যাল্যার **आरम्ब जहात्रक धनर या ग्रांक्टन यात-**सार्व मिक्किन जात्रशत व्याक वर्ष প্রকলেপর কাজকরে একাতে গোপনীয়তা क्रका क्या इतक।

জেনিজার কিব ব্যাস্থ্য সংস্থার দুশ্তর বৈক্তের এই ইউনিটের কাজকর চালান ডাঃ
বাজকর পালা। তি নও কোনো কথা
বলতে রাজনী নন। গত যে মাসে তিনি
জ্বাতে একোছালেন। তখনো সংবাদপত্রের
প্রতিনিধির সন্দের কথা বলতে সময়ত হন
বি বিশ্ব স্থাস্থ্য সংখ্যার অধিকতার নাকি
ব্যাস্থ্য

ব্যাৰ মৃশ্যকের পদন্য কর্মাচারীরাও বিশ্ব ন্যান্য সংক্ষার প্রবলন সংগতে বোন বক্ষা আলোকসাত করতে সক্ষার পরীকাকারে প্রবাহ করে বাকে অতিপরিক্তিত সর প্রবৃত্তি ও অতিসাহানিক স্ব বৈজ্ঞানত বাক্ষা। এইনজ্ঞ মনে হতে পারে অন্-স্কার চলছে মধ্যক নিয়ন্ত্র বা গাখিব ক্ষেত্তান্তর বাহন বা আন্বংক্ত ক্ষার নারীহ বিজ্ঞার। কিন্তু এই একই প্রত্তীনা নিরীহ বিজ্ঞার। কিন্তু এই একই প্রত্তীকালার ভাকে জান্তর আন্তে বোগ-বহনকারী

কৈছা কোন বিশেষক মনে করেন কৈনিক বা কনিবে, বান্য চালাত হলে ক্লিক কা কনিবে, বান্য চালাত হলে কিব দ্বাস্থা সংস্থার অস্তত একটি
সরীক্ষাকার (পান্ধির দেশান্তর-সমল
সংপ্রিতি, সামিতির সহায়তায়) প্রবিতিত
হয়েছিল মান্তিন ব্রুজনান্টের আমন একটি
প্রতিস্টানের ম্বারা (মাইপ্রেটার আ্যানিম্যাল
সাথোলালিক্যাল সাভিত্য সংক্ষেপে মান্স্স)
বৈটি আসলে মান্তিনী সৈনাবাহিনীর
কৈবিক বৃশ্ব চালাবাল গবেষণার ভিভিন্ন।

কোনো কোনো বিজ্ঞানী মহল তাই সরাসরি প্রশন তুলছেন—এত যে চাপাচাপি ভারতের কোনো কাজেই লাগবে না এমন সব প্রকল নিয়ে এত যে মাতামাতি, তা থেকে সপ্রতই মনে হয় ভারতকে এমন সম্পত রাসায়নিক বা পার্থতির প্রকলিছাছা মরে তোলা হচ্ছে বা প্রকলিবারী দেশে চালানো একেবারেই অসম্ভব ছিলা মার্কিনী প্রতিরক্ষা বিভাগ সম্প্রতি কব্ল করেছে যে, ২ কোটি ১৬ লক্ষ ডলার বায় করে লাত বছর ধরে গবেবণা চালাবার পরে তবেই তারা ১৯৬৮-৬৯ সালে ভিরেতনামে মারী বৃষ্ধ খারু করেছিল।

এমন কথাও জানা গিয়েছে ভিয়েত-নামে গাছপাশা বিনণ্ট করাও যুক্ত মামাণ আলে মাকিন যুক্তরাণ এই বিশেষ মুখাল পারথ করে দেখেছিল লাভিন আয়েবিকায়।

বিশ্ব ব্যাপথা সংখ্যা স্থা ব্যা সাচপ্রতিক গ্রেষণাম্সক কার্ফিলাপ সচপ্রে কিছা বলতে নাগাঞ্জ তাই নয়। আগেকার কার্ফিলাপ সচপ্রেও নয়। ছেমন দৃষ্টাতে হিসেবে উল্লেখ করা চলে ১৯৬৯ সালে বোশবাইরে অন্তিত ফলিত জীবাণতেত্বের বিশ্ববাপে জিয়া সচপ্রিত সাজেলনের কোনো বিব্রণ পাওয়া বার না।

म्धः विश्व श्वात्र्थाः সংश्था नश्, মাকিন যাত্রাজের জন হপকিল্স মেডি-কেল কেন্দ্র ভারতের কলকাতায় ও নারাণ্যালে (পাঞ্জাব) গ্রোটাকতক প্রকল্প নিয়ে কাজ চালা**জ্য। ভার**তের মাটিতে জন হপকিপের জানার বিষয় কাঁছিল সে সম্পর্কে প্রশন করে কারও কাছ থেকে किছ्य काना शाय नि। नकरमहे निर्वाक। তবে ভারতের দেশাস্তরী পাখিরা কিভাবে শ্বোপের জীবাণা বহন করে ও ছড়িনা দেয় এ-বিষয়ে সমাক জানার জনা বোশ্বাইংয়র সম্মিতিকে ব্যবহার করছে বিশ্ব দ্বাস্থ্য সংস্থা। আর এই গবেষণার সমস্ত খরচ বহুৰ কাছে মাকিন সৈনাবাহিনীর উল্লিখিত সংখ্যা गान्त्र। क्याना, এই ম্যাপদ-এর ব্যাংকক থিত দ্রপ্রাচ্যে मण्डदा छाः अनिवर्षे এইচ माकिनस्टार কাছে স্মাস্ত্রি পাঠানো হুয়েছে দেশাতরী পাণির মাধ্যমে ভারতে রোগ **ছড়িরে পড়া সম্পর্কিত মোপন** রিপোটে'র চারটি কপি (নং ডবল-এইচ-ও-পি-এ ७४-७৯)। खनामिटक विषय श्वाञ्या সংস্থাत জনসংযোগ আফস্ক এন উইল্ড বলে-ছেন, এই বিপোটের কোনো কপি বিশ্ব म्याञ्चा जरम्यात्र मञ्जल जाहे।

কেন্দ্রটি শ্বাপিত হরেছিল ১৯৬৯
সালে। কেন্দ্রর প্রের্ খনচ বহন করে
মার্কিন ব্রুরাজ্যের জনস্বাস্থ্য স্যাতিস।
বিশ্ব স্থাপ্য সংস্থার মাধ্যমে আজ পর্যাত
খরচ করা হরেছে তিন কেটি টাকা।
প্রেরা টাবটোই এমন সমস্ত সম্মাক্ষাক্রারে বার সপ্তে ভারতে মাধ্বাহিত
প্রধান দুটি রোগ ম্যালেরিয়া ও ফাইলেরেরায় কোনা সম্পূর্ক মেই। তার বদকে
সংগ্রতীত গ্রেছ এমন এক জাতের মাধ্বাকর
প্রিবেশগত আচ্রণগত ও চাল-চলনগত
ভবা বা থেকে পীতজার হয়ে থাকে।

পতিজনধের বাহক এই বিশেষ

জাতীয় মণকের ডিম শাহক করা চলে।
ভারপরে সেই শাহক ডিম একটাকুলরা

কাগলে রেখে খামে পান্ধ প্রিবিটিন বেকোনো দেশে পাঠানো চলে। সেখানে
সেই ডিম থোকে বাচা ফাটে বেরোর।

অনা কোনো মণকের ডিম এভাবে শাহক

করা চলে না।

প্রীক্ষ্-নার্যের অত্যাতি কাজ হরেছে।
প্রথান্প্রেথ মান্টের তৈরি করেছে।
প্রথান্প্রেথ মান্টের তৈরি করেছে।
দিল্লী, ফরিদাবাদ ও শোনপতের চারদিকের এলাকার। সেপ্তের প্রীক্ষাকার্য
শ্রে হবার কথা ১৯৭৫ স্প্রেক্ষারেতে। সম্ভর এই প্রীক্ষাক্রয়ের্যার ফলাকল থেকে ও স্বরেও জবাব পাওরা
বাবে যে কেন তজ্বরের জীবাগ্রাহাী
মাশকের অস্থি ক্রি সত্তেও ভারতে
প্রতিজ্বর হয়

ভারতে প্রজ্ঞার না হওয়ার কারণ, বিশবজ্ঞানের ধরেণা, এমন কোনো বিশরীত জীবাণ্রে অভিডম্ব থাকা বা প্রতিজ্ঞানরের জীবাণ্রে অকার্যক্ষর করে। বিশেবজ্ঞার আলংখা পরছেন কেলের পরীকার্কার্যের তলে এই বিপরীত জীবাণ্রে আলতম্ব বিপার হতে পারে। তখন। তখন আর ভারতে পীতজ্ঞারর প্রকাশ ন্রু হতে কোনো বাধা থাকার কথা নর।

কেন্দ্রীয় স্বাম্থা মন্তকের সহায়ভায় বিশ্ব শ্বাশ্থা সংখ্যা মশক নির্মাণের আরে: কয়েকট পরীক্ষাকার চালাতে যোধপারে (ভারতে ভূগভেশি পারমার্ণাবক বিস্ফারণ যেখানে ঘটেছে তার কাছাকাছি)। এই পরীক্ষাকার্যে এরোপ্লেনের সাহাব্য কীটনাশক ছড়ানো হয়। প্রীক্ষাকার শ্র করা হয়েছিল হাইলানেড, শে**ব করা** হয়নি। তামপরে হঠাৎ অ**জা**ত **কারণে** আঠানো মাদ আগে শ্রে করা হয় ষোধপুরে, সম্ভবত পরীক্ষাকার্যের জন্য এলো জনও বাবহার করা হয়। অবচ এটি এমন এক এলাকা বেখানে এই প্রীক্ষাকার্যের প্রয়োজন খুব জর্মি ছিল ना। क्न अशानरे भरीकाकार भरत হয়েছিল আর কেনই বা আচমকা এখান থেকে বাজালোরে সরিয়ে নেওয়া হয়েছে তার কারণ কেউ জানে না।

আহেরিকা যুক্তরভেটর অধিবাসী কেন জিপেন পেশার ছিলেন আইনজাবী আর তার নেপা ছিল প্রথিগতৈ যত গ্রুভ ধনের কাহিনী মানবের পোচরে এলেছে তা নিয়ে গবেষণা করা। এ-বিৰয়ে ভিনি বিশ্তর পড়াশোনা করেছেন, নথিপরও ঘটি। ঘটি করেছেন প্রচুর। শুধু তাই নয় टराम क्याकीं उद्भाषतामा कृष्टिनी छ তিনি লিখে গেছেন। তারই একটি ছোল 'ল্য সেক্ষেন নিডলস'-বিকারকার এক क∱ছনী।

বিচিত্র স্ব উইল ভিপেনকে আক্র'ণ ক্রত এবং এটা ছিল তাঁর দ্বিতীয় গবে-ষণার বস্তু। ওই সূত্রে এমন এক আন্চর্ম উইলের সম্থান তিনি পেয়েছিলেন বার রহলা শতাবদীর রহসা হিসেবেই হয়ত व्यम् क्यापिक श्रदक वादन।

দিবতীর মহাযুদ্ধের ঠিক আগেই ছিলেন কিছুকাল মানিখে ছিলেন। चामकरो देशवाजरे दश्त जाती न्यानाकर फेटेन क्षेत्र सकात चारनः क्रिके न्कानात्वा मत्था शिवात धरार प्रमाणम মৈডলস'-এর গোপন যোগারোগের অক্তেত

জ্ঞল সেন

প্রমাণ। ব্যক্তে হবি জার্মাধার পরাক্ষয় बक्के करब किछेगारसस আব্দবাসা যে এক চকাল্ড গড়ে উঠোছল, 'সেলেন নিজ্ঞাস'-এই জন্ম সেট সংলে! পরবর্ত বিশালের বটনা নিঃসল্বেছে এই সংস্থাৰ আম্ভিৰ প্ৰমাণ কলেছে।

ৰাশ্ব তথন মিটে গেছে ভিগেন আর তার ভাই তলিউডে প্রায়ীভাবে বসবাস कारकृत। सूत्र सूत्र दिना श्रीतक शास्त्र शास्त्र वश्याचा आरमन, भारतात्ना भिर्त्नत कथात क्षांता क्षेत्रका इरहा छठेन। अक्षिम জিপেনের ভাই তার এক বন্ধকে নিয়ে এলেন। যালেশ্বর সময় ভালের পরিচয় চর্বেছল।

ভরুলোকের নাম ভাঃ লরেল মাাক-এলোর। । রিপেনের ভাই বে-বাছিনীতে हिटलम, माक हिटलम जातह अक्टम द्यालत। হাদেধর পেবের দিকটা জাহাদীর এক সাম্বিক হাসপাতালে তার কেটোরল।

* (ब्रिट्शन क्रेड वाहिनीत क्षीक्रवाह ब्रामह्मन -विरागम कातरण वर्षमात जारणा क्रांकुछ ৰাজিলের আসল নায়-বাহের সামানা অদলবদল ভিনি করেছেন।)



ক্ষিত্র ক্ষেত্র প্রকাশ করে। ক্রিপ্রের ক্রেপ্রের বিচার ক্রিপ্রের ক্রেপ্রের ক্রেপ্রের বিচার ক্রিপ্রের ক্রেপ্রের ক্রেপ্রের বিচার ক্রেপ্রের ক্রেপ্রের ক্রেপ্রের ক্রেপ্রের বিচার ক্রেপ্রের ক্রের ক্রেপ্রের ক্রেপ্রের ক্রেপ্রের ক্রের ক্রেপ্রের ক্রেপ্রের ক্রেপ্রের ক্রেপ্রের ক্রের ক্রের

ক্ষাৰ কৰাৰ গৃতধনের প্রসংগও ক্ষাৰ ক্ষাকোত্য ওই বিষয় ক্লিপেনের কৃষ্ণ প্ৰেক্ষার কথা বলতে ভ্লালেন না। ক্ষাৰ ক্ষাক্তে চাইলেন ক্লিপেন ক্লানীতে ক্ষাৰ প্ৰেক্ষা ক্ষাক্তনা কিন?

ছিলেন অনুনিখে চালু বছর থাকাকালে আকুলালভের নাথপাত খেটে বেল কিছা চন্দ্রকাল পদশ ও কাহিনীর আলমলালা করেছিলেন। তিনি উদ্যান সমুন্ত লাভাইবলের করেকাশ হাজার ভলার মানুলার আকুট, বার খোল কলেনক, বিনি নিশ্বীল করেলাকালির খান তার দেহের দ্লালীকে লিরেছিলেন বা আজও লাকালিকে এব কেই মানুরটি বিনি তাল বিবয়-কশতি উইল করে সেন্ডেন কিলেভিলেন সে-স্ব কাহিনীর ক্যা উল্লেখ্য কর্মানুরটা বিনি তাল

সেভেন নিজ্ঞসা!' ডাঃ ম্যাক বিক্যরোভ করে উঠকেন।

জিপেন একটু অবাক চারাই জিজেন করকোন এই ব্যাপারে ডাঃ ম্যাক কিছা কানে জিনা?

"ঠিক তা নর", মাদক কেন বাতমত থেকোন। মাদেন...ব্দেধর সময় একটা মটনার কথা আমার মনে পড়ে বেল।

সেতেন নিজনুস-এর বাপারে? ভিপেন প্রশন কর্মন।

আমি ঠিক নিশ্চিত নই মাৰ কৰ।ব শিলেন তাৰ যদি মিঃ এবং মিসেস বিয়ান আৰু মিঃ ৰাটন কিছু, মনে না করেন, তাবে আমি পাবে। ঘটনা শানতে ইছেক। হরত তা থেকে একটা সতে আমি পেতে পারি।

কেউই অব্যা আপতি করলেন না। সেন্ডেন নিডলসা কথাটাই সকলেন মনে কোড্ৰেল জ্বানাধ্য পক্ষে বাধাই বিশ।

যিঃ জিংশন ভার কাহিনী পারে,
কাশেন। এই অপ্তুত উইল বিনি লারভিলেন
ভান নাম অটো শকালজ—জামীন জাতেব
রালা ভাত সাধালল একটা নাম। জিংপন
প্রজন ১৯৫৭ শ্রেটাকে আনুলা এই উইলের
জালাভাত ভালে আসলা এই উইলের
জিলা ভা চলা উইলের শেষে একটা
জালাজ্যা। আন্যান্য কালো কটা বাই
দুদ্দির : সব প্টাপান এবং দায়-নার্য

মানুষার পর আমার স্থাবন-অস্থাবর
স্ক্রান্তির অর্থান্ডাংশ আমি স্ক্রেডন
নিত্তলাক দিরে গেলাম বদি ক্থনও
ভাষা গিড্ছান্নতে ফিরে এসে ভাদের
পরিচর নিন্দিধার প্রমাণ করে, তবেই
ভাষা আমার সম্পান্তির মানিক হবে।

উইলের এই অন্জেদের অস্ত ধারা ক্লিপেনের মনে কৌত্রল জাগিরেছিল। তিনি আগালাতের কেরাগতিক ওটার বিষয়ে প্রথম করেন কিম্পু জোম সদ্তের পার্থনি। তিনি উইলের একটা ফোটো ভূলে ওটা আবার বধাপথানে ক্লেখে সেন। (ম্ল কাহিনীতৈ ওটার কোটোপ্টাট কাপ ছাপা আছে)।

শেই নাতে জিপেন করেকজন প্রভাবশালী জার্মানের সংক্ষা নৈশন্ত্যক্তি মিলিত
হ্যেছিলেন। তিনি কথাপ্রসাংগ্য অটো
শ্বাক্ত এবং তার বিচিত উইলের কথা
উল্লেখ করেন কিন্তু উপস্থিত কেউই এবিষয়ে মাখ খালতে নারাজ সেটা কিপেন
কলা করকেন। নাংশী পাটি গড়ে তোলার
পিছনে বে পাঁচজনের অসামানা অবদান
ছিল শ্বাক্ত ছিলেন তাঁদের অনাত্রম।
এই পাঁচজন ছিলেন পাটির মাল সংগঠক।
স্কালজের সম্বাধ্ বিশেষ্ কিছান হালান
বার্মান। হিট্লার ক্ষমতার আস্মান হালান
কর্তিনি মাট্নিখেন কাছে তাঁর শহরতলীর জাঁঘদারীতে অবসর গ্রহণ করেন
এবং নিঃস্কা জাঁঘনযাপ্রন করতে থাকেন।

একটা রহুসের আঁচ পেয়ে জিপেন ব্যাপারটা তলিয়ে দেখার জন। উদগ্রীব হয়ে উঠকোন। পর্যদিন তিনি আ্বার আদালত ভবনে হানা দিলেন, উপেশা উইলটাকে খাটিয়ে খাটিয়ে করতে গিয়ে কোইলিং ক্যাবিনেট খেজি করতে গিয়ে চেট্রেল। কেথকোন। তিনি দেখলেন উইলটা অদ্শা হল্লেছে। সেই কেরালীকে জিজ্জেম করে তিনি জ্বাকে পারকোন মতে আটো শ্কালজের শোষ উইল আদালগতের হাকুমে বাজেয়াত হ'র গেছে। ওই দিন সকাপেই নাকি আদালত স্বালক্ষে উস্মাদ বলে ঘোষণা করেছে। করালী চুলি চুলি অনেকটা যেন উপদেশ দেখার জ্ঞগাতে বলল, জিপেন তার নিক্রেপ ব্যাপারটা বেন ভূপে বান।

এই ঘটনার সময় হল ১৯০৭ সাল
যথন নাংসী জামানী জমতার গাঁবি
গাধরে: বেদিন সকালে এই ঘটনা ঘটে,
তার দ্' বছর আলে কিন্তু স্বালজির মৃত্
হয়েছিল, স্তুলাং দীর্ঘ চিত্রিখা মাস পর
এদিন স্বালেই আগালত প্রেকে তাকৈ
উজ্ঞান বলে হার দেওরার জিপানে মান
লোর সন্দেহ জাগাল কিন মনে মান
সংক্ষপ করলেন স্কেভন নিজলসাভাবিন হাদ
এর পিছান কেটে যার ভাও কট। সোলা
জান না হালেও জানিনের আনক বছর
ভিনি এই রহ্মসাল পেছনে কার ক্রেন
ভিনি এই রহ্মসাল পেছনে কার ক্রেন

মানি থ এই কিছু বাংসারীর সংগ্রিক্তি কর্মানির কর্মানির হরেছিল বাংসা নাংসা নেতাগের এবং ওপর মহলের স্বকারী কর্মাচারীদের সংগ্রা হোলারোগ ছিল বিক্টা এই প্রসংগা ক্লিপেন এক প্রেন্থানার কর্মানীর স্বাস্থ্য নাম উল্লেখ করেছন, ভাদের আস্বাব্রের নাম উল্লেখ করেছন, ভাদের আস্বাব্রের নাম উল্লেখ করেছন, ভাদের আস্বাব্রের নাম করেছার ক্লানারী স্বাস্থ্য মানিখে হিট্লারের প্রের্বিক্তি প্রাস্থানার বিশ্বানির বিশ্বানির বিশ্বানির বিশ্বানির ক্লিলারের প্রেম্কুল এবং ভিট্লারের বাজিলার বিশ্বানির বিশ্বানির বাজিলারের একজননের সাজে ক্লিলারের একজননের সাজে ক্লিপেনা ওই পরিব্রের একজননের সালে ক্লিপেনার বেশ হালাভাত হয়েছিল।

প্রথম প্রথম সেই বৃণধ্যু অটো
দক্ষণজের বিষয়ে কোনরক্স আলোচনার
মধ্যে বেতে অনীহা প্রকাশ করেছিল।
করের মাসের চেটা এবং আনক গালেন
মানিধের দামী দুবার বিনিমায়ে জিপেন
ট্রুকরো ট্রুবেগ থবর জ্বোড়া দিয়ে আসল
ঘটনা আঁচ করতে পেরোছলেন। কেনই বা
দক্ষাজভ তার সন্পত্তি সেভেন নিডলসাকে
দিয়ে গিয়েছিলন, আন কেনই বা সাত
ভাড়াভাড়ি তাকৈ আদালত থেকে উদমাদ
বলে দোষণা করা হয়েছিল সেটা
কিপেনেন কাছে প্রিকাশ হয়েছিল।
সংক্ষেপে গটনা হা এই ঃ

ধাত আভলাকা বাচতে চেয়োছকেন। এই উদ্দেশ্যে তিনি তার হাজার হাজার অংশ অনুরাগী ও অনুচরের ভেতর থেকে माञ्जनरक वाषाई कर्दाष्ट्रलमः अवारमङ् হের "কাশজের ম্থা ভূমিকা কারণ হিটলার তবি ওপরই অসংশ্য অনুরাগী থেকে সম্ভাব সাতজনকে বাছাই করার পিরেছিলেন। যে সামান্য ক**জ**ন লোক চ্ডাম্ত নিৰ্বাচিত শতজনের নাম कानर्टन, श्कामक हरनम जारमद अकजन। এই সাজ্জনকে জাম্বিনীৰ বিভিন্ন স্বানে এবং সম্ভবত জামানীর বাইবেও হিট-বাংরের পরিকলপ্না সফল করার উপেশা বিশেষ শিক্ষান্ত হল্য ছড়িয়ে [मदा হয়েছিল।

শিক্ষা শৈবে তিন বছর পর এই সংস্কলকে ফ্রোরেন্ড সংগ্রা দেখা করার জন্য বের্থটেশগাভেনে জড়ো করা হর। সেই প্রথম ও দোৰ জ্বা এক সংশ্ মিলিত হ্রেছিলেন। হিটলার জার প্রকাষ্ট লাইরেজি ঘরে তাদের সংল্য দেখা করে ছিলেন। ঘরের একদিকে চ্লা থেকে উৎ-লারিজ গ্লগনে আলানে সৃষ্টি হ্রেছিল আরম-লার্ক পরিবেল। বাছা বাছ প্রহেকীয়া এই স্বাজ্জনকে ঢাকা গাঙ্গি থেকে হিটলাকের স্বাক্ত বাসভব্দের ভেতর তাজা হাজে করে তাকের দিসে-ছিল। হিটলার তাদের করে, এসেছিলেন সাধারণ নাগনিক পোলাকে জিন তাদের মনে এই ধারণ ই বক্ষম করেতে চেরে-ছিলেন যে তিনি তাদের গিতা, তারা ভাবি

ওই স্ভেজনকৈ যে কি মহং আ্থাত্যাগের জনা বেছে নেরা ছমেছে তা তিনি
অবেগক্ষিপ্ত কতেও ভাগের বংলছিলেন।
বংলছিলেন যে মৃত্ত থেকে ভাগের
নির্বাচন করা ভারেছে এই মৃত্ত থেকে
ভারা পিড্ভামর নাগ্রিকছ হারিরেছে।
লায়ে ভাগের পরিচাই লাভ তরের বায়
নি মানবাবা এবং প্রিয়েজনের স্পান্ধ
সম্পর্কাজন ছাড় ও ভবিষাতে কথনও
ভারানি বংগ নিজেনের প্রিষ্ঠাই দেবার
অধিকাইও ভাগের বঙানি করতে হবে।

নাটকীয় ভাবে একটু থেমে হিটলার দ্রাত পদক্ষেপে পাথিবীর একটা বিরাট ভূ-গোলকের দিকে এগিয়ে গোলেন। ওটাকে ভোবে ঘারিয়ে দিয়ে তিনি বললেন হিট-লামের সাতটি ছাটু (সেতেন নিভলস) এই পরিচয়ে ওই বাতে প্থিবীর খড়ের গাদার তাবা হারিয়ে যাবে।

কেন? বাদ জামানাকৈ প্রথম বিশ্ব-য**ে**ধর মত আবার পদানত হ'ত হয়, তবে একদিন না একদিন মাথা ভোলবাৰ জনা রাইখকে বাচিয়ে বাখতেই হবে। কারণ হিটলাও যত দিন বেশ্চ থাকবেন তত দিন জামনী তাদের পিতৃত্মি এবং নাৎসী পশানের মৃত্যু নেই। তাই সেভেন নিজ-লসের ওপর মহান হিউলার এবং গোটা জামান জাতির জীবন রক্ষার পবিত দায়িত নাসত বলা হল। বিপ্রস্থার যদি ঘটেই, ভবে তিনি তাদের যে কোন এক-करत्व कार्क हाल याद्वन धवर मधान থেকে গোপন প্রস্তৃতি গাড় চরম ক্রয়ের জনা আবার আঘাত হানবেন। সাতজনের কে পাথিবলৈ কোঞায় ছড়িয়ে পড়াব তা হিটলারই ঠিক করেছিলেন এবং সেই গোপন তথা তাঁর স্মৃতির মাল্কেঠায় কুলাপ দিয়ে লেখেছিলেন। িনি ছাডা আর কেউই এমন কি ওই সাত্তজনের একজন অপরের প্রতি নিদেশের সামানা-তম ইঞ্জিত পায়ন।

এই হল জিপেন তবি দীর্ব প্রোত্রিদের সংস্বাধন করে ব্রুক্তেন, সেভেন নিজলসংক্রাফ ক'হিনী। অবশা আ্নার বিশ্বাস স্কৃতিকের উইল কোন কভেষ্ট লাগে নি ক্রিণ আম্লা স্বাই জানি ছিট- লার এবং একা রাউনকে বালিনে তদির ব্ৰকারের (বিমান আলমণের হাত থেকে আশ্বরকার জনা ভূ-গভান্থ আরর কুঠারী) সুমুদে শৃত্ত করা হকেছিল।'

অত নিশ্চিত হবেন বা কিন্দ বিভাগের ভয়লোক রিয়াল কলে উঠালন, হিটলারের পরিকল্পনা বার্থ হয়েছিল তা মনে না কল্প কথেন্ট কারণ আছে।

একজন উচ্চপদ্ধ সরকারী কর্ম-চ্যানীর মুখে ওই মাণ্ডব্যু পানে স্বাই চন্নকে উঠালন।

আমি হিটলানের এই তথাকারত রুজ্নে ব্যাপারটা ক্ষিত্রে দেখেছি বিলাল বলে চললেন, রিটিল, ফ্রেন্ড এবং অংশেরিকান ইনটালিকেন্সে ইউনিট এ ব্যাপারে এক সপো কাল করেছিল। ভাবের সপো বলুর থাকার সেনিটোর সবাই এক মত ছরেছিল। একটার সবাই এক মত ছরেছিলেন ইউনিটের সবাই এক মত ছরেছিলেন বিশ্বর বাইবে যে দুটো দেহের ভন্মারশেষ পাওয়া গিরেছিল তা হিটলার কিংবা এইনি নাও হ'ত পারে।

তার বছব্য শানে প্রোভাদের মনে বে বিচিত্ত অনুভূতির সৃখি হরেছিল, তা উপ-লাখ্য করে রিয়ান মাদ; ছেলে বললেন, জামনিকা আ্মাদের বলেছিল হিটলার এবং এফার মৃতদেহ বুকাংগর কুঠুরী থেকে বাইরে বয়ে আনা হয়েছিল। চুলিল লিটার গ্যাসোলন ওই দেহ দুটোর ওপর তেলে आशान मागाता इस। भागान यथन निष्छ-ছিল, হিটলার আধু এফার জ্মাবলেব ছাড়া ভার কিছাট ছিল না। সনাত্তকরণ? জামনিরা বারবার বলেছিল, সনাভ ক্রার মত স্বকিছা চিহ্ন সম্প্ৰে ধাংস হয়ে গেছে। ভবে একটা কথা আমার ম্বে শ্ন্ন। সামারক গোরেন্দা বিভাগের काल्यान किलिन बाटनी भारता घटेना भाकात्मा वरण भरम्मर करतिक्रण। धक्कम বিকারগ্রস্ত সৈনিকের মূখ থেকেই সৈভেন নিডলস্প-এর ব্যাপারটা প্রথম সে জানতে পারে, আর সেই সূত্ররে তদনত নরে, करता भारता हिएेगारतत अवस्तत अकरा भाकतरक ठिक स्थापान शिकाषाय मार क्या इर्खाइक, प्राथाप्त खट्य इक्रिया निर्देश शाहितां नाम इविद्या व्यागान धितरश मिटरा-ছিল। অংগনে নেভাব পদ্ম শ্করটার দেহ বলেম কিন্তু কিছু ছিল সংপ্ৰা ভক্ষ হরে হারনি।

ক্যাপটেন মাংলা এই ব্রান্ত দেখিরেছিল যে, ব্ঃকারের ভেডর হের গোরেবলস
এবং তার পাধবারের লায়িত ম্তদেহের
বেল করেকটা ছবি জামানদের কাছে
পাওয়া গিরেছিল, কিন্তু হিটলার ও
এফার ম্তদেহের একটি ছবিও তাল প্রমাণ হিসেবে দাখিল করতে পারেছি। ওখানে সেই সময় কেউ না কেউ জোলার প্রমাণ ছিল। জাবনের স্বর্গজ্ঞাই ছবি ভোলার স্বোগ সে হুহলায় হামানে এটা বিশ্বাস্থোগ্য নর। জারও কিছু খ'ুটিনাটি তথা সাংলা সংগ্রছ করেছিল। বেমন একটা দাহকবলে একজন সানুবেদ্ধ দৈহ দাহ করতে হে তাংগর প্রয়োজন তা হল, ০২০০ ডি'র ফারেনহাইট এবং তা সংজ্ঞে হাজে ফারিয়োল এমন নিদ্দান বা চিচ্ন থেকে বাল্ক বা বিধাকে সিনাক্ষকরণ জসন্তব নর।

णाः भाकतरमावित कनारम कुलम रमधा দিল। পাইপ ধারুরে, সঞ্জানা ই**ভ**শ্তভ করে তিনি বশলেন, 'সেভেন নিডল্স' এই কঘটা জাল্পানীয় এক হাসপাতালে এক कि, काइरसंत्र अत्थ आत्रि श्रथम महस्त-ছিলায় (জি-আই কথাটার বাংলা সঠিক প্রতিশব্দ কি জানি না, তবে আমেরিকার সামরিক আইনে সমকার থেকে বালেক সেনাবাহিনীর জনা ভালিকাভুত্ত করা হয় **कारमबर्ग कि आहे बाल)। ब्राप्य अधिनिष्** পবিশ্রমে খুব খানাপ অবস্থায় তাকে হাস-পাতালে ভাত করা হয়েছিল। মজার ব্যাপার হল চিকিৎসা চলাকালে এক সময় সে শুধু খাঁটি জার্মান ভাষায় কথা বলে-ছিল। মিনে রাখতে হবে **আমেরিকা**ন নাগরিক ছাড়া আর কাউকে কি আই করার এছিয়ার মাকিনি সরকারের নেই)।

শ্বেদ্ধর সময়' ভাঃ মাক বলে চুলাকের আহতদের ভাড়াভাড়ি সক্ষম করে ভোলার জনা আমার। চিকিৎসা শাশ্বভিষ আম্ল গরিবভনি হটিয়ে সংক্ষেপে কাল সার্ল্ভিলাল। মৃত্যু অতিরিক্ত পরিপ্রতমে হাদের ক্ষেত্র ভেন্তে শক্ত আয়ে ভালের চিকিৎসার পাশ্বভি ছিলা দীর্ঘায়ানী এবং বিয়ঞ্জিয়া।



च्याचा विशव विद्याच वरामव केरकक क्षा के किया किया कि कि कि कि कि कि कि कि कि নাট্রকার ফল সেয়েছিলাম। এই ওয়াংধর আন্তাৰ একজন বোগাৰ মানসিক চিচ্চা-ৰাষ্ট্ৰ লেছিলে জনে নিদালুল যে আভিত্রতা ভার শরীর ও মনের ওপর বিষ্ণাট চাপ স্থান্ট করে ভাকে প্রতিত্ত 🖦 ভুলেছিল ধাপে ধালে তার ভেতর দিয়ে আৰাৰ ভাৰে নিয়ে মানসিক সভা শ্রিব প্রস্থার এনে ভাবে চাল্যা করে ভুলুতে स्तिक्षा कर्ताकता। धक कथात वना शास करे কুৰ্ৰ অনেকটা স্মোহক প্তির কাল ক্ষুদ্রিক ব্যব প্রস্তাবে নির্ভেক্তাল সভাবে लिंगी के बारनद मरण महत्तीय करत फूल অভিনৰ বৈজ্ঞানিক পাণ্ডাছতে নোগাঁৱ वित्रक क बामित्रक क्रम भाषत कहात Chechi THE REPORT OF THE PROPERTY AND PERSONS क्रिक्रमा जारीशक नक्ष्मक इंग्लॉइनाव।

ज्यानिक स्वत প্তম ঘটবার পর পর্চ A MINIS একজন রোগরি চিকিৎসায WINTER WIF পড়েছিল। ওটা আমার কেস ছিল না ভাই হা ঘটোছল ভার জনা আমি প্রয়োপর্যায় 2776 किनाध मा। यह tainaform সে:ডিয়াম পেনটাধস **देशकामान एवंदास भव मधादीं कि क्रमण एवटक** শিষ্ক দিছে অর্থাৎ নিকানন্ত্ আটানন্ত্ **अध्यादम शादम शादाम निर्दर्भ एक्ट्रा इ.स.।** এ সং ক্ষেয়ে যোগী যুখন খেমে পড়ে আর শিক্ষ দিকে গাুণতে পারে মা তথ্য তার মাস্ত্ৰেক্র অধিকতৰ নিব্ত কোৰ ঘ্যাত অবস্থায় আছে বলে ধরে নেয়া হয়। তখনই ভাষ অবচেত্র মনের সংক্র স্বাস্থি যোগালোগ সম্ভব হয়ে ওঠে।

ভাবার কিব্তু একটা অংশভুত বাংপার ঘটন। সৈনিকটির কংগ্রুবর যথন ক্ষমিও হুরে আস্থিত ডাক্সার তাকে প্রশ্ন শারে, কর্যকান। কিব্তু ডাক্সারকে শুনিভাত করে সৈনিকটি খাঁটি, জামানে জাহায় কথা কলতে শার্ করণ। আস্লাকে এবং ক্যাপটেন মালোকে ডাই ডাড়াভাডি এপালা দেয়া হুরেছিল কাবন জামান ভাষায় আমবা স্কুজনেই সুক্ত ভিলাম।

অমরা ওখানে শেশছে দেখলায় লৈনিকটি উন্মতের হাত অনগাল কথা

রেজিটি বিবাহ অফিস

মোট ১৬ টাকায় রেজিম্টি বিবাহ

এন কে ঘোষ জে-পি মাহেক অফিসার

১১৭, জেলব্ডকু বেন ক্রীট্ট ক্রীল-৯, ফোন ঃ ৩৫-৩০৪৮ বলছে; মার্লো ভাড়াডাড়ি তার সেই প্রলাগ খাতার টাকে নিতে লাগল।

প্রেনিকটি বা বপেছিল তার সার্থমর্ম হল সেভেন নিডলস্থার সে এবজন। অটো ফলালজের নামও সে উল্লেখ ক্ষেছিল। যুদ্ধের আলো মানুনিখে তার জাবনের কিছু কিছু ঘটনার কথাও সে বলেছিল। একটা বংশ বারণা তাকে আজ্ঞা করে ফোলেছিল তা হল যেমন করেই হোক তাকে যুদ্ধের জাবন থেকে বেরিরে এসে নিরিকিট নিরাপদ স্থানে ফ্রারারের অসে নামিক করেই হাব। যুতাদিন ফ্রারারের করে তার বিশ্ব নেতার রক্ষণ্যক্ষকার মহান দামিক বহন করেব ভতাদিন ফ্রারারের মৃত্যু নেই।

ভামেরা অবশা ওর কথার তেমন ম্ল্যু
নিষ্টান কারণ ও কিলারের ঘোরে ভূগছিল।
মালো লোকটির রেকরড পরীক্ষা করে দেখল
লেখা আছে ইংরেজী ছাড়া তুন্য কোন ভাষা
সে কানে না। তার ভ্রুমস্থান চুল
আমেরিকার কান্সাসে আর নাম ও নীল—
কন্ট পিতা এবং আইরিক্ মাতার সে
সম্তান। (রিপেন স্পদ্ট করে না বললেও
সৈনিক্টির পরিচ্য় যে ভূরো তা ধ্রে নেয়া
যেতে পাবে)।

ভাকে হাস্পাথালের সাইকোপ্যাথিক ওরাডোঁ পর্যক্ষেত্র ধন্য রাখা হল। আমি ভার কথার তেমন গা্মুখ দিহনৈ ভাই এই খার্টনা ভূজে বেতে আমার দেরী হয় নি। কৈন্তু মালোঁ ভূজল না। তার মনে ক্রৈনিকটির উন্মান্ত প্রলাপ গভীর রেখালাত করেছিল ভাই আমাদের মত হালকভাবে, বাপারটা সে নের নি। দু' সপ্তাহ পর এই সৈনিককে দেখাতে হাবার সহয় আমাদেক ভার স্বালী হাতে সেনু বালা।

ডাঃ ম্যাক নিতে হাওয়া পাইপটা আবাব ধরিয়ে করেক মুহুতে চিম্নার ডুবে গেনেন। খ্রোতারা অধৈযভাবে তরি পরের কথা-গুলোর জনা অপেকা করতে সাগুলোর।

'জার্পনি না গিয়ে খ্র ভূল করেছিলেন্' ক্রিপেন আর থাকতে না পেরে বলে উসলেন। আমি ভেবেছিলাম জার্পনি হয়ত এ-বাংগারে আগ্রহী হবেন।'

ভামি গিছেছিলাম ডান্তার জ্বাব দিলেন ভামাব আগ্রহ হরেছিল বৈ কি, কিপছ সৈনিকটির স্থাত্য আর আমাদের দেখা হয় নি ৷ ভিনি মিঃ বিয়ানের ভিশুক ভাকিষে বলালেন বিছনের চাদর পাকিয়ে স জ্ঞানালা দিয়ে জুলে পালাবার চেটা কবে-ছিল কিন্তু মানসিক ভারসায়ে ঠিক রাখতে না পারার চারভিলা থেকে পড়ে ঘাত ভেগো সে মারা হার।

্সাণ্টয়'! বিশ্বান বিশ্বাহোড়ি করকেন।
আপনি এই গটনাৰ সচুচ ধরে আনু এগ্রেন নি কিন্তা মালেন্দ্র স্থেপ্য যোগাযোগ্য চেণ্টা করেন নি ?

'না ও ব্যাপারে জামি আর এগাইনি তবে মালোর সংগ্যা ছটনাচক্তে আহার দেখা হরে-ছিল। ব্যুদ্ধের পর দেশে ফেরার জন্য

লিভারপাল বুলুরে আমি ভাছাজের অপেকা কর্মাছলাম। লন্ডনের শহরতকার এক জায়গা থেকে আমান বাপ ঠাড়দ্বি ভাগোর আন্থেরণে আমেরিকায় পাড়ি দিয়েছিলেন। আমি সেই স্থোগে আমার পিতৃপ্রুয়ের ভিটে দেখতে গিয়েছিলাম : যে হোটেলে আমি ছিলাম সেখানেই মালেরি সংগ আমার দেখা। তাকে চেনা তাবশা খুব সহস্ক ছিল না। ডাঙেল বিশাংখল চেতাবার একটি লোককে আমি খুণড়িয়ে খুণড়িয়ে বারের দিকে এগিয়ে যেতে দেখি। তার বাঁ চোর একটা কালো ঠুলিতে ঢাকা ছিল। খাতোক क्तमात भन्न व्यामतः अक क्विंवत्म दत्म भारतमा দিনের কথায় সেতে উঠলাম: ভার মাথেট गानमाम राष्ट्रा थातिक हान एम अवकारी काक থেকে অবসর নিয়েছে। ব্যক্তিগত একটা কারণেই নাকি জে চাকরির মেয়াদ ফুরোবার আগেই অবসর প্রার্থনা করেছিল।'

আশনার বান্তিগৃত কারণটা নিশ্চয়ই খাব সহজ ছিল মা আমি তাকে ভাল মত জানতাম বলেই ওট প্রশন করেছিলাম।

শালোর ঠোটের ফাঁকে সামান্য হাসি একটা কঠিনই বংগ চলে ফাটে উঠল। আপানি ঠিকই ধংগছন। এখন প্রতি সেই বংগোরে একটা চোথ আমি হারিষেছি। কাজ শেষ হ্বার আগে প্রাণটাও হাবাব বলে অপেক্ষা করছি।

মালো আমাকে বংগছিল সোয়েবল বাহিনীর মধ্যে একমাত সেই ওনীলের প্রজাপকে গ্রেছ দিয়েছিল। ওই স্ট থরে সে দেশন তেল আভিউ এবং সাহারা মর্ভুমি প্যত্ত অভিজ্ঞ কছে। স্ত্রিত তিশ্বত থেকে ফিরে ্ছে। প্রত্যক জারগায় বিপদ তার জ নপ্রেমা কর্মজন বার্ত্তিগত বিপদ ভার জ বনের ওপ্র আক্রমণ।

ভামি তরি দিকে অবাক বিস্থয়ে
তাবিরেছিলাম। 'ভক্' মালে' বলেছিল
আপনি অন্যদের মত হয়ত আমাকে পাগল
ভাববেন। মাসের শর মাসে আমি অবিশ্রাসা
পর কাহিনীর পিছন পিছন তাড়া করে
বেরিয়েছি। অপনি তো ঘটনার সাক্ষে গোড়া
নেই হাসপাতালে ওনালৈর বাপোরা
নিয়েই ঘটনার স্রপ্রোত। আক্ষ প্রস্কৃত ভাম গোটা প্রবিহী আমি চবে বেরিয়েছি
কিক্তু সমাণিতর ধাবে অভিন্তু
পারি নি। আপনাকে ভামি থাব পোপানে
ব্রাহিছি—আমি হিটলাবকে খ্যাকে বেড়াছি।'

আমি না হাস্বার চেণ্টা করলাম। মার্লে কি ভেবে চিণ্ডে কথা বলছে না। যাবেশব ভয়াবহা সব ঘটনায় স্নায়রিক পাঁড়ায় ভ্রছে?

মান গত মাসে মালোর কঠচনর থেকে যেন ভিক্তা করে পড়ল গোড়েন্দা বিভাগকে আমি বিশ্বাস করাতে পেরেছি হে হিটলার বে'চে আছে আর তা প্রমাণ করার জন্য আমাকে একটা আগত শ্বিক পোড়াতে হরেছে। 'আমি ততক্ষণে ভাষতে শার, করেছি মালোর মানাস্ক উত্তেজনা লাঘব করার জন্ম আমি একটা ওখাধ লিখে দেব ফিনা।

বন্ধাস কর্ন' টোবলে এক খুনিস মেরে মালো বলে উঠল এনীল বা বলেছিল তার একবর্ণাও মিথো নর সেতেন নিডলস্বের অস্তিত ছিল ছিল কি আজও আছে। মনে করে দেখুন আপনিও শ্রেছিলেন। তাদের মধ্যে সরজনের স্থান পাওয়া বৈছে।

মার্গো হঠাং থেমে আমার জামার আগতন মৃদ্ আকর্ষণ করে বলল 'আমি এতক্ষণ বা বললাম ভূলে হান। তেওঁট ডিপার্টমেন্ট ধরে নিয়েছে আমার মাখা খারাপ হরে গোছে ফলে বিদেশে খারার ছাড়পন্ত পেতে আমারে এখন যথেক দুভেগি পোহাতে হজে। ওরা বলছে যে সব জাকায় আমি হাছিছ শেষ পার্যকত ভার কোনও একখনে আমি হাছিছ শেষ পার্যকত ভার কোনও একখনে আমি বিয়েছে ছটিয়ে ছাড়ব।

আমি ব্যাপারটা গোপন রাখব' আমি
তাকে আশ্বন্ধ করে বন্দলাম। 'হিট্টলার হঞে
ভিনেমাইটের মত যদি সে বে'চে থাকে তথে
একটা বিধ্যুসেশী ভাদ্য ঘটাবেই। আমি আশা
করব যে আপনি তাকে খ্'লে বার করতে

আঃ! মালে বিলল 'আপনার স্থো দেখা হয়ে থাব খুশী হলাম ডক্। আমি লচ্চিন আমেরিকায় যালিজ তারপার নিউ-ইয়ক। যদি বে'চে থাকি তবে আপনার সংগে আবার দেখা করব। কাবু স্থোগ দান্দক মন খুলে কথা কাতে পেরে খুব আনকল হলা।

ক্ষমদুনি ক্রার সময় আমি তার সোভাগ্য নামনা কর্লাম। তারপর সৈ লেংচিয়ে লেংচিয়ে চাল দেখা। সেই শেষকা ভাকে আমি দেখেছিলাম। নিউইয়াকা সে পোছিছিল কিনা তা আমার জানা নেই।' ডাঃ মাকি চুপ ক্রলেন।

মিঃ বিয়ান বলে উঠলেন 'ডক্ আমার কাছ পেকে শ্নে ব্যথ্ন মালোঁ চিক পথেই চলছিল। তাপনানে সে কাহিনীর বাকি অর্থেকটা বলে নি। সেটট ডিপার্টমেন্টের আনেশে বিচার বিভাগ তার গতিবিধি ওপর লক্ষ্য তেখেছিল। সে এত ভাড়াতাতি এদেশ ওদেশ কর্বছিল সে এত ভাড়াতাতি এদেশ অসপন্ট থেকে গোজ। কিল্ত একটা কথা আন্দানের আমি বঙ্গাত পারি হ মালোঁ কিল্পেন্ডের আমানের বড় কর্তাগের কথে তাপনানের আমি বঙ্গাত পারি হ কাছে এই তথা প্রমান ক্রেছিল যে জামানির। দংধ বেহাবশেষ দুটি সম্বাধ্য যে বিশ্বাস

স্ত্রিত করতে চেমেছিল তা ঠিক নর। আমন জানি মালোঁ দেওেন নিডলস্বের অস্তিত্ব ও সভাতা সম্বন্ধে থ্রিয়ে থ্রিয়ে অন্-স্থান চালিয়েছিল। হতে ক্লালজের ঘটনালিপ পরীক্ষা করে বেবটেশগাডেনে ওই সাতজনের মিলিত হ্বার ঘটনা সম্বন্ধ সে নিংসংখ্যর হুরেছিল। সেই রারে ঘালা বিমানে জামানী ছেডেছিল তাদের নাম্ব সে থ্রেল বার করেছিল-মনে মাথবেন ওই রারেই হিটলার তার সাতজন অন্চরকে প্রিবীর চার্নিকে ছড়িলা লিয়েছিল। মালোঁর বিশ্বাস আভল্কের স্থানে বির্মান স্থাকে বার করেও পারবে।

হিউলার মাবা বার নি একথা বিশ্বাস করলেও সরকারীভাবে প্রমাণ না পাওয়া পার্থক্য আরবা সেটা নিছক অনুমান ছাড়া আর কিছু বলে মেনে নিতে পারি না। ডাই মালোঁকে বে-সরকারীভাবে সব কিছু করতে হচ্ছে।

বিয়ান ম্যাকএলোকির মুখের দিকে তাকিয়ে বললেন মার্লো নিউইয়াক' এসে-ছিল ডক্। গত বছর বড়াদন উৎসবের ঠিক আগে ভার সঞ্জে আমার দেখা হয়েছিল। বেচারীর বউ ওই সময় মারা যার। জার্মানীতে কর্মায়ত অবস্থায় সেনা বিভাগের এক প্রমাস,ন্দ্রী সেবিকাকে সে বিয়ে करविष्टम। भौशियी सार्क बारमात अहे অভিযানে তার স্মীও অংশ দক্ষিণ আমেরিকার বোগেটার (কলন্বিয়া) বিদ্রোহের সময় তারা সেখানে উপস্থিত নিশ্চিত বিশ্বাস ওই ছিল। মালোর সংঘর্ষ আস্লে হিটলারকে ওখান থেকে স্ত্রিয়ে নেবার জন্য একটা ধ্য়জাল ছাড়া আর কিছু নয়। বিদ্রেহীয় যখন শহরে আগ্রুন দিচ্ছিল সেই ফাঁকে ছিটলার একটা বিমানে স্বে পড়ে।

পরে ওর মাথেই শানছিলাম আলপদ পাহ ড়ে মিসেদ মার্লো কেমন করে ওার দর্মীর প্রাণ বাঁচিয়ে ছল। পাহাড়ী দর্মী এলাবার একটি গাঁয়ে সাত ছ্'টে'র একজনেব আশ্তানা এই থবর পেরে সেখানে যাবার জন্য ওরা একজন পথপ্রদর্শকের সাহাযা নিয়েছিল। ভূষারুশ্চাপের ফাটলের মাঝ্যান দিয়ে দর্মীয় ঝোলানো পথ ধর্ম তারা যথন এগাছিল তথ্য সুষ্যুর পড়াও শান্ত করেছে। ভাদের গাইত চঠাৎ বা্লাত রংজা, কেটে দেয়। মার্লো আভ্রেলের ভলা দিয়ে

কোনমতে একটা পাথর আঁকছে ধরেছিল आध कात्र ची नीफ भारतः अरगोहन। भारतात मा तका करत मामीय जाइ न হড়কে হাছে। তথান সে চীংকার কমে দ্বামীকে শেষ বিদায় জানিয়ে ছানি দিয়ে क्षांक ट्रकटडे जिटकारक ज्यामाशा करत रक्षामा। হাজার ফুট নীচে গভার খাদে তার দেহ आइट्ड शक्त। निरमत शान विशक्त जिला প্রামীর প্রাণ সে রক্ষা করে গেল। মার্কো কোনবৃক্ষে শ্বারীয়কে টেনে ছি'চড্ডে নিবাসন ত্থানে পেণতে এই গাইডের পিছ নিরেছিল। ভাগ্য ভার সংখ্য বিশ্বাসধাতকতা कटानि। किस् मृत्यं देन छात्क प्रकट प्राप्त श्रुणि करत । श्रुणि क्रिक सकारकम करतिहरू। মৃতদেহের কাছে পেটছে সে দেখতে শার प्रवास जारम त्राहे माहेक क्यात्वत क्या वक्षे व्यक्तिका किल (नारमी काम निष श्राक विका विकास

ত্বার বধার পথ ছাবিরে বক্তা দাহাবেদ্র কন্য আর্থ চীংকার করেছ ক্রাক্ত জ্বান হারিরে মাটিতে ব্টিরে পড়ে। জনা করেক পাহাড়ী ভাগালাম এই সমর ওখান দিরে বাজ্ঞা। তারা চীংকার গ্লে হুটা আসে। তাকে উত্থার করে প্রাথ্য নিজে বারা। করেকানন পর সে জানতে পারে এবারও তার অভিযান বার্থ হরেছে, পার্থ উট্টে

মালো এখন কেথার তা আমন আনি
না। মাস চানেক আগে আমাদের ক্রেছে
একটা উড়ো খবর এসেছিল। তাকে নাকি
বলিভিয়ার জুলালে দেখা লেছে। এই দুর্গার
অঞ্জ থেকে খুব কম শাদা চাম্মডার লোকই
ফিন্ন আসতে পেরেছে। হরতো মালো
ওখানকার উচ্চ আবহাওয়া, সংলামক রোল
বিহবা আদিবাসীদের রো-গান এড়িয়ে প্রাকে
বাচবে আরু আমানার রো-গান এড়িয়ে প্রাকে
বাচবে অরু বড়ালারানামার হিটলারের ধরা
পড়ার অথবা মাড়ার খবর পদা আই
হয় তবে সংগ্রামী মালোক দিকরই বন্বাদ
দেব আমার। সে জান হিটলার কোবাও লা
কোবাও আন্ধ্রাপন করে স্বেশ্লের
অন্প্রানা আছে।

মিঃ বিয়ানের চমকপ্রদ বক্তবা উপ্পিথত সবাই বিসায়ে গতন্তিত হরে বান। একটাই প্রশন তাদের মান উপিক মারে—তথ্য কি হিটলার আজও বেংচে আছেন। তার মায়ের ঘটনার অকটা সাজানো রটনা ছাঙ্গা আর কিছা নর।





হ পি মনোভাব

ক্ষিত্র করেক বছৰ আংগ বিভিন্ন সালের ক্ষান্তর করেক তলুগ-তর্গী সালা ক্ষান্ততা করে করে তলুগ-তর্গী সালা ক্ষান্ততা করে করে তুলস। এনেলের বেদা বিভিন্ন সালের, বিভিন্ন সালের, বিভিন্ন সালের, করা পড়েলেন। দেশতে ক্ষেত্রতার করা নাগী-নালা টপকে ক্ষান্ত অংশেও ত্বকে পড়ল। ব্দেশরা মানু ক্ষান্তনা আমাতা আমাতা আমাতা ক্ষান্তনা আমা কিলোনা-কিলোরীরা বেদা একটা মন্তান আমাত করিল।

িশঠ ব্যাবর পানা মুখ্য চুল, প্রায় চিম্ক প্রশিত পানা ফ্লীপ, হিটের কটকটে বছের ছামা, পারের সংগো লেপ্টে ছাকা টাউজার—এ চেহার। দেখতে এখন প্রার চোহাই রশত হয়ে গেছে।

তর্শীদেরও প্রায় তাই। শাড়ি বাতিপ হয়ে বেলবটম, ব্রাউজের কাপড় গেট করে আনার প্রতিযোজিতা। হাবেভাবে বেপ্রোয়া, প্রেটদের সংগ্রা সমান ভালে অন্ত আর্থনিক হয়ে ওঠার প্রডেটা।

এ দিয়ে দা, চারটে মানতবাত যে ঠিকার পাড়ে না, তা নর। কেও বাজান, তাস্ব প্রেড ছান, মজা লোটার ছেকা। বেও বাজান মানের সাথার থানা পারে ফেকে বাুটি রোজ-পার করতে হয় না, তাগের ব্যুর্পী সেজে মেচে বেডালে সংজ্ঞা

কিণ্ডু যে বর্ষেস বেসারায়া হাত মন
চায় ঠিকা সেই হানেসর এক ভ্রান তা
সেদিন একবাস লোকের সথে। ছিলিকের
কিন্তু বিশ্বতি বিশ্বতি
কিন্তু বিশ্বতি বিশ্বতি
কিন্তু বিশ্বতি
কিন্তু

হাওড়ার একটি নামকরা সালাস্কুলার একাদশ হোণার একজন ছাত্রার সংস্পা কথা হাজিল। জানাত ১ইলাল, আজকালকার ভরণে-ভর্মানিক জিলু মনোভাব, বেশ-ভ্রমা আশনার সোমন গালে ?

বশক্ষন, ভাইন তো নীতিয়ত সন্নথান ক্ষরি। হেরটোপ থেকে থেকে আমাদের মন্ধ্রকো পাতিয়া হয়ে যাক্ষে। ক্ষরিনটাকে ছাঞ্জে ছিটিয়ে হা খুলি তাই করবাব মানসিকভার আমি বিশ্বাসী। কি পোষকে, কি আচার-আচরণে প্রকার। কিন্তাপিতর বির্ম্পে বড় ভোলা দরকার। কন্ডাপচা সংক্রাবের মামাধলী গায়ে জড়িয়ে ভূবে ভূবে জল খাওয়ার আদ্দেরি প্রতি কোন সমর্থন মামার নেই। কী লাভ, কীসের আশার মাধ্যভার থামানের সংক্রারকে মেনে নেব?

তানগাল কথা বলে যেতে লাগুলেন ছাত্রীটি। মনে হল বহুদিনের চাপা ফোড যেন হঠাৎ পাড় ছোপো আছেড়ে পড়েল।

গভরমেশ্ট আট কলেঞ্চের ছার্ন্র স্বান্দ্র নাম্বান্দ্র আই আই স্বান্দ্র হিলে আই বিদ্যান্দ্র হিলে । বিদ্যান্দ্র হিলে আই বিদ্যান্দ্র হিলে আই হিল ছাড়িয়ে আছে। একম্বে দর্মান্দ্র। ঠোটে জ্বলন্ড সিগারেট। প্রমে বেলবট্য পাণ্ট—প্রেটির সামান্দ্র ওপরে দ্বান্দ্রান্দ্র অন্তি ফ্রেটির অন্তে চর্মান্দ্র অন্তি ফ্রেটির আছে সম্ভবত সিগারেটের সামান্দ্র অন্তি ফ্রেটির সামান্দ্র অন্তি ফ্রেটির সামান্দ্র অন্তি ফ্রেটির আছে সম্ভবত সিগারেটের সামান্দ্র অন্তি ফ্রেটির ক্রেটির সামান্দ্র অন্তি ফ্রেটির ক্রেটির সামান্দ্র অন্তি ফ্রেটির ক্রেটির সাম্ভবত সিগারেটের সাম্ভবত ও ক্রাক্ষম্যান্ত্র।

জিন্দ্রেস করলায়, আপনার পোশাকের দিকে ভাবিরে মনে হয় আপনি আধানিকভাষ বিশ্বাসাঁ। ওবে মনি কারো অভি-আধানিকভা মনে হয় আপনার বিছা বলার আছে? বেধে-হয় একটা কারেই হলান স্বাসাচী ঘোষ। বলালন "অভি-আধানিকভা আবার কী? আমি কি পোশাক পারব ভা আরবার দিউলি ভারার রাপার।

তব্ তো দেশ-পরিবেশের একটা ব্যাপার আছে সব্সোচীবাব্য?'



মিছির মন্তল



'দেশ, পরিবেশ কাল ওসব ভূরো কথার কান দিলে চলবে না। আমি চলব আমার ভাবনায়'

শেই পেয়ে প্রশন করলাল, 'জ্যাপ্নি কি ভাবেন একটা ব্লবেন :

'দেখনে সাল, বড় বড় চুল রাখলে বা বেশবটম প্রলেই জাতীয়তা চলে যায় না। আর এটা অপসংফ্তিও নয়। আমি একটা ইজমা-এর জনো লড়েই করছি।'

ৰ্ণক বক্ষা ?'

একটা থেমে সবংসাচী বললেন, নিজ্ঞব বলতে কিছা থাকবে না। আমি লোগঠী-তাক বিশ্বাস করি। এই ব্যক্তিক সভাতা থেকে মাঙি চাঠ।

্কিছা মান কর্থেন সা এবাসাগীবাবা, আপ্রথার এই ভাষনার সামা হ**িপ্রদের** কিছা, মিলা আছে যেন।

্হতে পারে। হিপিরাও তো **একটা** বুল্লে করেন মূজনেত করছে।'

ভাষার স্বামন্দিরতা গাধ পেতে পারে এ জন্ম টানি না।' কথার ধরনেই স্পত্ত স্বামীদেরতা শংশটি স্বামীরই প্রতি বিচাপা। কথাটা বলালন জনৈকা ঘোষজানা। চুপ্ত সচরচির তেল পড়ে বলে মনে হয় না। হাসলে ভারি চমুক্ষার দেখায়। ওকে ঘিরে বসে আছে আরও প্রতিভাজন প্রায় একই পোষাকের বাঙালী তর্গা। গাজকার গুম্পে ম্থানি ভবে গেছে। উল্লেখ্য আন্তর্গাধ্য করি। তব্লু বসে পড়ি ওদের কাহে। ম্থান আউট্রাম ঘাট এলাকায় এক্ ছিল্লেখ্য প্রবিবারের ছাউনি।

্তাপ্নার প্রামী এসিবে আপত্তি ক'রন ্

্কোন্ সবে ?'

'এই যে আপনি অধ্যকারে এভাবে ছেলেনের সংখ্যে---'

কথা শেষ হবার আগেই ঘোষজায়া হেসে উঠলেন থিল থিল করে। হাসতে হাসতেই বললনে, আপত্তি করলেই হল? चामात संदर्भ क करती। कि ? बद्ध कि ग्रंथ चारक ? टब्बारी, धामाय दिवसारीक मदसा— चारित सर्वित संदर्भ महाना प्रदर्भ

ক্টিপু ক্ল' ক্লেকের কৃতীর বর্ব' (বিকাশ)-এর ছায় বিহির ক্লেকে ক্লিকের ক্রি, 'এ ক্লিনে কিছু হবে না বলে আপনি বিকাস করেন ''

াঁক আবার হবে? ইকে গ্রেগতানি করি, বাড়ি ধাই। বাবার ব্যুনি ধাই। রোজ একখানা করে শোচিন, বাড়ি ছেড়ে দিতে হবে, হালোড়বাজি করে থাকা চলবে না।

আপ্রি কি উরব দেন?'

'একদম বোরা। বেশি বাড়াবাড়ি করলে বড় জোর কাঁচের প্লাশ বা কাপ ভেগ্নে নিরে ঘণ্টা করেকের জনো বাইরে উধাও হয়ে যাই।'

प्रामा कारतम ?

করি। বাংলুও টানি মাঝে মাঝে।

--ভাতে লাভ কি হয়?

—শালার যদাণা ভূলে থাকা যায়।

—িক যন্ত্ৰা?

--ভা কি আপনি ভানেন না পাবা ?

ওর শেষ জহাবে আমি নিঃশ্নেদ সঙ্গে আসি।

লম্বা চুল, স্যায়লালিত রড় বড় লেফি, গলায় রৌপাহান--লকেটে তে খাহিত, হাসি-হাখা মখেমনা দেখে মনে হল, এর ফুলুণার হাল অনেক গভারে। তার অনুস্থান সহজ নয়।

সিটি কলেত (সাট্থা-এর ছাত্রী শিপ্তা মন্ত্রিক শাড়ি প্রতি ভালোবাসেন না। ভার পোশাক নিয়ে শা্বা আছাীয়-প্রিজনের মধ্যেই নয়, বাধ্যবীদের মধ্যেও সমালোচনা জ্যেছে। জিক্ষেস করকাম, বাঙালীর শাঙ্গি ছেডে প্রাণ্ট ধরলেন কেন্?'

'আমার ইছে:' ক্ষান্ন হলেন মন্ত্রিনা। একটা গেমে তাবার জিড়েন্স কবি, 'না---মানে অপেনি এ পোশার ভালোবাসেন কেন ?'

এটা আমাকে এ যুগের মেয়ে বলে চিহ্নিত করে। যা চলে আসহে তার বির্ধেধ প্রতিবাদকে বুর্গিয়ে দেয়।'

ব্যুক্তাম, প্রচলিত ব্যুক্তথার বির্দেধ মাল্লকারও ক্ষেত্ত আছে। বললার, গিকুতু শোলাকেই কেবল বোঞানো যাবে মিসা মাল্লকা?

'প্রথম চোটে যাবে। এছাড়া আমাদের মনের জনালা তো আছেই।' কি জনালা;'

্ৰাধীনতার অভাবৎ অত্ণিত। বা চাই কিছাই পাই না—। অস্থা।'

আমি আর কথা বাড়ালাম না। ম্লিকাও বলতে চাইলেন না।

-कुका दमनगर्•७

এ রাও

পিছিয়ে নেই (৪)

वि-क्य बाजानं शासकता बाजाकत जातिकां शासकत

িশক্তিত বাঙালী ব্যবকরা কারিক প্রমে ভয় পায়-আছ আৰু ও'দের এ অপ্রান দেওয়া উচিত নয়। আশ্তত ভবাদীপারের वक्तवाशास द्याप्तव श्रात्वास म्याधिद क्का क कथा थाछ ना। भूर्गान्तः वहाम তর প-কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের িব~এ. বি-ক্ষম (অনাস'), একটি নামা कार्केट व আনকাউন্টেপ্ট সংস্থায় আটিকৈলত ক্সাস্ত হিসেবে কাজও করেছেন। কিল্ড 343 বিদ্যালয়ের তথ্যা এ'টে চাক রর জানো ভিক্ষার ঝালি নিয়ে কখনও দরজায় দরজায় ধর্ণা দেবনি-নিজের পায়ে দাডাবার জন্য প্রেশ্বির্বাব্ কটেপ্রথে জামাকাপ্ড ফেরি করেছেন, নিজের হাতে ধ্তি শাভিতে রং করেছেন -রক্মারী নক্ষা ভাপিয়েছেন।

কিন্দু প্রেন্দ্রোবার দিবারাচির পরিপ্রম বাথা হয়নি। আরু তিনি আব্দ্রাতিটোর
পথে। '৬৮ সালে মাত তিনজনকে নিয়ে
কাপড়-ছাপানোর যে ছোটু দোকানাট শার্র
করেছিলো আরু সেই ফান্দ্রেনী আনক
বড় হরেছে। বৃতি, শাড়ি, সিনক, নাইলন
ও তাত্বক্রের ওপর রক্ষারী নকশা
ছাপানোর বিপণি-ভালবেনীর মাধ্যে
শা্ম্ প্রেনিব্রাক্তিনন আরও সাজ্জন
তিদের পরিবারের ভরণপোষণ চালাক্ষেন—
এটা কম কথা নয়।

—কৃত টাকা নিয়ে ব্যবসায় নেমেছিলেন?? আমি প্রশন কবি।

—হাজার তিনেক টাকা সম্পল করে '৬৮ সালের ১লা বৈশাখ ফালেমী' দরে করি। তখন বকুপবাগান রোডের এই খরটা ভিল শোর্ম-কাম-ফাফেটরী। কম্চারী ছিল তিনজন। এখন এটা শোর্ম হিসেবেই ব্বহার করি। হালতুতে একটা বড় খর নিরোছ—ওটা আন্নার ফাকেটরী। ক্মা-চারীও বেড়ে গিরেছে—সাতজন কারিণর এখন কাজ করেছে।

-কেমন ইনকাম হয়?

—ভালই। দেখুন, নিজের সাত আট জনের একটা বড় সংসার তো চালাছি।

--বিষে করেছেন কি?

—না, কিন্তু সংসারের দায়-দায়িত্ব আমাত ওপর ।

-- त्लान निषयक्न?

—হার্বা, হাজার টাকা—বাংক অস ব্রোদা-র কাছ থেকে। আমার প্রশের উদ্ধে প্রেশ্নুবাক, বসকোন,—ক্তবে আরও বেশি টাকার প্রয়োজন। ক্ষেকটি বাধ্কের সংগ্ गुरुषांच्या बाधावा



যোগাযোগত করেছিলাম—কিম্পু লোন তারী
দেন নি। বাটক প্রিনিটং-এর দোকানের জন্য
সব বাংকে পোনের বাবস্থা দেই। কারণ
এবাংসায়ে কোনত দান্ত্রী ক্রেমিনালাকের
প্রয়োজন হয় না। সাধারণত, ব্রুষ্টার্যিক
ভাক প্রাংকের লোন দিতে স্ক্রিয়া হয়।
—এতে কোনত মেলিন দ্বকলা হয় কাই

না, খ্য কম টাকার **এই খাব্দা** স্বায় করা যায়। দুটো বারো **হাড লব্দা** টোবল দরকার, আম দরকার কারের কুক। চিংপারে অডার দিয়ে রকমারী **নকণায় রুক** তৈরী ক্রিয়ে নিই। ম্লেসমান কারিব্রুল। এ ব্যাপারে একসপাটা।

—আছা, আপনি ছো **এডদিন চাটাছা** ভালাউটেটট হল্লে প্ৰাক্তিস ক্লাডে পালতেন। ভা কল্পনানা কেন?

—দেখান সং পথে থেকে টাকা রেজিকাল করতে চেরেছিলাম। কিন্তু চাটাছা
আক্রাউটেট হলে হিসেবপশ্র ক বর্দ্ধ
ফাফি দিতে হয় তাই দিনরাত ক্লাকেন্টাকর
প্রামণ্ডিত হত।

—আঞ্চা, আপুনি কি সংপ্**ৰে ব্যৱসা** করতে পারছেন ?

– চেণ্টা করছি। কিন্তু এখন আনেটিট নামক শব্দটি অভিধান থেকে মাছে দেওয়া উচিত। আঞ্চলের সমা**ল এয়দ**্ধ**ক**টা জারগায় গিয়ে লেপড়ৈছে যেখানে THE প্ৰকেই জনেষ্ট থাকা সম্প্ৰ সম। থেমে বারো হাত সম্বা টোবলে ভটিভর কাপড়ের উপর একটি কাঠের ব্রক্ত সংলগ্নি চেপে কলকাড়া বিশ্ববিদ্যালভ্যে বি-ক্ষ णनार्भ भारत'ना स्थानि वनारमम् स्थाने. আগ্রাদের বংশে কেট কোনও কিন ক্রাক্তা করেন নি। কাজত বাবসা করছে গিলে আমার হয়তো ভুলপ্রাণ্ড হতে পারে। এবং হ্বাভো হয়েছেও। তব্ সংগ্ৰাম করে একটা বিষয়ে লেগে খেকে ফল হে পেয়েছি লেকুখা श्योकात कत्रखरे हत्व।

–क्नक वस्त्रकृत



(১)
শাস্ত্রতে পতিকার ব্বক-ব্বতী
শাস্ত্রতার সম্পদ্ধে জলকা বস্মায়কের চিঠিট
শিক্ষাক্ষাক্ত ধ্রতিশ্রণ। পচলোধ্ব জালাক্ষার ভালমান্দ নিয়ে বিস্তৃত জালাক্ষার ভালমান্দ নিয়ে বিস্তৃত জালাক্যা করেছেন। দারীর স্কুলু রাধার কনা বিজ্ঞানসমত বৌর্নাশকার প্রয়োজনীয়ত। সংগক্তে আমিও একমত।

আকটিই প্রদন্ পাঠক্তর তৈরী করার সমর খুব স্তক্ত থাকা দরকার। আম্মদের দেখে প্রচলিত শিক্ষাবারশ্বার অম্বলবদল করাত গিরে নতুন যে পাঠক্তর চালা করা হয়েছে ভা ব্যক্তিনভার হণেও শিক্ষাদানের শক্ষে বাশতবানাখা নর। যে পাঠক্তর স্কুলের ব্যক্তবানাখা নর। যে পাঠক্তর স্কুলের ব্যক্তবানাখা নর। যে পাঠকর স্কুলের ব্যক্তবানাখা নর। যে পাঠকর স্কুলের ব্যক্তবানাখা করানা বাবে না ভা আদাশের দিক থেকে যুত্তই উচ্চস্ত্রের হোক পড়াভে গিয়ে শিক্ষক-শিক্ষিকার। ধ্রেটিট থাবেন।

বোনশিক্ষার প্রিক্তম সম্প্রেক্ত একই কথা, প্রচুর জ্ঞানগর্ভ পাঠক্রম তৈরী করা হল কিণ্ডু আদতে তা ছাত্ত-ছাত্রীদের উপযোগী হল না। পাঠক্রম তৈরী করার কাজে বিশেষজ্ঞানের সংক্রা সাধারণ শিক্ষক-শিক্ষিকানের ধ্যুকু রাখা দ্রকার। হারা হাতে- কলমে শিকা দেন পাঠ্যসূচীর ভালমণ্য তারা ব্যবেন।

অজ্ঞতাকে দীর্ঘকাল জিইনে রাখা কোন দেশের পক্ষেই শাভ নর। এমন ঘটনাও জানি, অজ্ঞতা এবং অগ্য সংস্কারের শিকার হয়ে অনেক মহিলা ভাষারের কাছে পর্যণত জোন সংস্কানত বাাধি গোপান করে বান।

এখন প্রায় প্রত্যেক দকুলেট কাল্ট এইড শিক্ষা দেওরা হর। তেমুনি প্রাথমিক সেক্স এড্বেশন দেওয়ার কারও শিক্ষেত প্রধার কথা নয়।

মঞ্জুলী চক্রবতার জলপাইগর্জ্

এবারের খানুবক-খুনতা। ফিচারে ফিচার নিয়ে সাক্ষাৎকার ছেপেছেন। ফিলা এমনিতেই বিতার্কাত বিষয়। একটি ছবি সম্পর্কে বিভিন্ন দশক্ষের বিভিন্ন মত তৈরী হয়। যদিও থবরের কাগজের ভিন্তা সাধারল দশক্ষের মন অনেক্থানি তৈরী করে দের কিন্তু প্রকৃত শিল্পবোষ্ধা যাঁরা তাঁরা বাগ্যন্তর মতানতের ওপ্র খবে বেশি গ্রেভুদ্দর কি?

লেখিকা শীর্রা সেনগাণ্ড বলেছেন াবদেষজ্ঞর। দিলেপর থ'াটনাটি নিয়ে মাথা ঘামান, যাবসগ্লাজ কি ভাবছেন দেখা যাক। লেখ'কর কি ধারণা যুবসমাজের মধ্যে বিশেষভা বা শিল্প-বোদ্যা নেই সূতা যদি ভেবে থাকেন ভাহলে ভল ভেবেছেন। বিশ্ববিদ্যাশয়ের ইদানীংকালের ভার্মারা ফিল্ম নিয়ে যথেণ্ট প্রমানোলা করেন: প্রথম শ্রেনার ফিল্ম কাকে বলে এবং ফিংম বিচারের মানদ•ডই বা কি ভাও বেশ কিছ হাত্রছাতী ভালভাবেই জানেন। লেখিকা য'দের সাক্ষাংকার প্রেয়েছেন তাঁদের মতামত পাড় পাটকদের ধারণা হলে পারে যাব-সমাজের সিংহভাগ ি ছবি দেখার চটাল আনন্দ উপতে 🖫 ভৱা। হাব-সমাজকে এভাবে এক জাকেটে ফেলা ঠিক হবে কিঃ

প্রতিপ্রসন্গর' প্রভৃতি ছবি য্ব-সমাজকে আনন্দ দিতে পারে এবং অধিকাংশ বাংলা ছবি না পারে অনন্দ দিতে না পারে সিরিয়াস কথা বলতে— বাজে।

এ ধরনের মন্তব্য খুবই আপস্থিকর। স্বেণ্ডনাথ কলেজের ছাত্র অভিন্ধিং রায়কে যুণসম্মাজের প্রতিনিধি মনে করা কঠিন। এভাবে দুন-তিশজন যুবক-যুবভীকে বৈছে নিয়ে ফিল্মের মৃত একটি গ্রেপুপূর্ণ বিষয়ের প্রপর যুবশিকা ঠানা মানে ফিল্ম শিশেপর ওপর অবিচার করা।

আমি আশা করব সম্পাদক্ষাশাই ফিল্মের ওপর একটি ওপেন ফোরাম কর্ন—যাতে ওরাকিবহাল ছাত্রভারীর লেখার মাধ্যমে অংশগ্রহণ করতে পারেন। গৌতম বন্দ্যোপাধায়ে

গোত্ম বন্ধ্যোপাবায় বর্ধমান বিশ্ববিদ্যালয়

(৫) অমৃত: পহিকার 'ব্রক-ব্রেডী' ফিচারের শ্বিতীয় লেখা 'প্রেম' পড়ে বেশ

ৰাংলাদেশে। রাজনীতি ও চিত্তকলার একশ বছর

অমৃতে কটি সংখ্যায় প্রথাত শিল্পী জতুল বসার মুক্তাবান প্রথম প্রকাশ করার জন্য ধন্যাদ। বাংলাদেশে রাজনীতি ও ভিত্তকলা একশ বছর প্রবংধ শিল্পী বসা খন্ড অথচ স্তেবাহী ইতিহাস তুলে ধবে-ছেন। বিদেশ পাঠক ও তব্ গ শিল্পীরা এ ছেকে অনেক উপকৃত গবেন বংলই আনার বিশ্বাস।

আমি দিলদী নই কিংখা দিংসবোষ্যাও
নই। শহরে অনুষ্ঠিত তর্গ-প্রবীণ চিচদিংস্থানির প্রদানী দেখতে হাই, আলাত্ত
হরে করে আসি। দেটা ছবি বোঝার
বংশার জান আমার নেই বলেই। আলা
সামিত জান সম্প্রে সচেত্ন হরেই
বিনীত ভাবে আধ্নিক চিত্রিশ্লপীদের
কাছে একটি প্রদান বাছি।

সাহিত্যের মৃত্ত চিন্তুশিংপত কথনত এক সায়গায় খেমে থাকে না। বিভিন্ন পরীক্ষানিরীক্ষার মধ্যে দিয়ে তার ক্তি-পথ সদা বহমান থাকে। আবস্ট্রাকট আর্ট বলৈ অচলিত কথাটি এখন সকলের নাথেট উজারিত। প্রদশ'নীতে যে ছবির অ আ ক খ কিছাই বোৰা গোল না তাকেই একদৰ্শ বললেন আবস্থাকট আট'। সিল্পীর ভারনা.. চিশ্তার হাদিস আহাদের পাওয়ার কথা নয় কি**ন্তু প্রত্যেকটি ভাবনা**চিন্তার তো সকল পরিণ্ড श्राकात क्या। जस्मास्त्रस्मा ইমেজ্বৰ একটি আত্নিতিত যোগন্ত থেকে যায় যে সাত প্রে আন্দলেশক পেছিন সম্ভব। বলতে বাধা নেই হালের ক্ষাধিকাংশ ছবিভেই সে স্ত্র অন্ত্রাপ্রিত। क्रमा ग्रमा कृतिकाद नाभ ह्य निदाका চলেছিল সমকালের বেশ কিছা প্রতিভাবান কবির সাথকি স্থিটিতে তা প্রাণবৃহত হয়ে क्षंत्र ।

শিক্ষণী শ্রীবস্থর স্ব'শেষ মণ্ডবা স্কল শিক্ষণী সকল শিক্ষ্বোদ্ধার কাকে মুস্থান এবং হদেয়গ্রাহী। চোথে চোথ রেথে মায়ের থে মাখাথনি একদিন ভাল লেগেছিল, মন থেকে মা বলে ডাকবার মত তারই একথানি প্রতিক্ষবি যেন তারা একদিন র্পায়ণ

এর থেকে বড় কথা বোধহয় আর কিছু নেই। হাদয়ের গভীরে যে ছবি বেথায় ব্রেপ চির জাত্রত রক্তেব মধ্যে প্রবাহিত তার যথায়থ রুপায়ণ্ট তো সাথকি স্থিটি হতে

> আম্লেন্মির চন্দ্রনগর, চুগলী

लाथरकत्र निर्देशन

উপরোক্ত শিরোনামার অন্মান বছরা আপনার পতিকার মধার সাধারণের নিকট উপস্থিত জ্থার স্থোগ দিয়ে আপনি আমার কৃত্তভাভালন হয়েছেন।

কাগজ সংকট সম্বন্ধে বতমান অবহিত হয়ে আমি প্রকাটি সংক্ষেপিত করার যথাসম্ভব চেণ্টা করেছি। মান্তণের পর দেখছি, এল ফলে স্থানে স্থানে ঐতিহণসিক তথা ও তত্ত্বে পারন্পর্য স্ব'দা রাক্ষত হয় নি-অনেক কোত কিছু কিছু উদ্ভি অপ্রাসন্দিক মনে হচ্ছে। তা ছাড়া কোনও কোনও দরকারী কথা বারও পড়ে গেছে—সন-তাশ্বিথে মাদ্রকর প্রমাদও আছে। এ বিষয়ে পাঠকবর্গের নিকট হতে ন ন্য প্রশেনরও সম্মাথীন হাত হা**ছে**। এ কনা স্থিব করেছি যে শীঘ্রই সংশোধিত ও পরিবর্ষিতি করে প্রবন্ধটি পূৰ্ণস্তকা আকারে প্রকাশ করব।

সহাদর পাঠকবাগরি নিকট আমার জন্বোধ—তরিং ধেন তাঁদের বিচার বামাহক ব্যাত লাবেন।

অভুসচন্দ্র বস্

থানিকটা ভরসা পেলুম। জর্মী কর্মক পন্যবাদ। মুখে আমরা বত কথাই বলি না কেন, ছাপা হরে বেরুবে জেনে ব্যক্তিগও ব্যাপারে কোন কথা বলতে প্রান্ন সকলেই ঘেন উঠেন। বিশেষ করে মহিলাদের পক্ষে যেম নিরে সক্ষাহকার দেওরা খ্রেই অস্বিধের। বত ক্ষেই বলুন, ভব্ জন্মী দুভ কিছু কথা বলেছেন।

আসলৈ প্রেম পড়েননি বা পড়ে ছতাশ হন নি এমন মান্দ্রের সংখ্যা ছাতে গোলা বায়। ধর্ন আমি। প্রেম করার জন্যে বৃক্ ইকে এগিরে গোছি এবং বিরাস বননে প্যাতিগারনে ফিরে এসেছি বেশ করেকবার, তব্ প্রেম করার সাধ মেটে নি। একট্ হাডছানি পেকেই নেচে উঠি। কিন্তু বিশ্তাবিত বলতে পারব না। সেরকম তো স্বারই। খোলাখালি বলতে অনেকেবই জড়তা আমে।

এ প্রসংগ্র ইদানীং একটি বিশেষ প্রশন বারবার নাড়া দিছে। প্রেম্ন ভালবাসা আধিকি দক্ষিপালায় মাপ করা হচ্ছে।

আমি প্রে ঘাটায় তর্ণ হয়েও একথা বশাত বাধ্য হ ছিছু যে ত্র্ণ-তর্ণীরা অথিপ সংগতি অসংগতির ওপর স্থান্য সিম্মান্ত নিছেন। যার পারের নিচে চিক্রিথ মাটি শস্ত নর ভিনি প্রেম ভালবাসার ক্ষেত্র যুত্ত নিশ্চাবান্ হোন না কেন অপর প্রেম্ব প্রস্ত্রতা প্রেম্ব রা।

প্রত্যেক মানুষের মধ্যে কিছু না কিছু কেয়েলিটি থাকেই, যাতে একে অপরের কাছাকাছি থাকেই, যাতে একে অপরের কাছাকাছি হওরার আকষণ বাধ করেন। কিছু কোয়ালিটি এবং মনের গভীরতার থেকেও মথে হলে দড়িাক্ছে অথা। জানি কোয়ে নাই, বাগতব প্রথিত থেকে পরে বাটার প্রশাস্ট থেনা বড়া তব্তু মানুষের মনের যাটাই থেনা বড়া তব্তু মানুষের মনের মানুষ বাটাত গোলে অথা যেমন দরকার তেমনি দরকার মন দিয়ে মনকে প্রাবিত করেন মানুষ্ট যাদ খনে বরল তবে বাকীপ্রেলা নিয়ে মানুষে কর্তাদন বাটার জানুষে কর্তাদন বিচার আন্দেশর ইন্যুক বাধুর বাইরের জ্ঞান্ত্র ক্থান্ত্র বাইরের জ্ঞান্ত্র কথান্ত্র বাইরের জ্ঞান্ত্র কথান্ত্র বাইরের জ্ঞান্ত্র কথানা

আমলেশ মনুখোপ্যায় : রাচী

অমৃত প্রস্তেগ

আমি আপান্দের পতিকার একজন আগ্রহী পাঠক। সাহিত্য স্থিতির পর তা পাঠকের সামগ্রী হয়ে যায় স্তথাং অমাত প্রকাশত সাহিত্য রচনা সম্বন্ধে কিছু আলোচনা করার অধিকার পাঠক হিসাবে আয়ার আছে মনে কলি। অমাত যে পাঠকের বুচির প্রতি অধ্যালী গেণী ইলানীং অমাতের অলাকার গেখালাই বোঝা বাবে। নিতানকুন ভালির। আমারাও তা প্রেক অমাতের ভালের। আমারাও তা প্রেক অমাতের হাছে। একথা ভালাল করারে বাবে সাহিতা পতিকাকে নিকের দায়িত করাকের সচ্চতন হতে হবে। প্রগতিকালীর বালিভির্টি স্তি সাহিত্য প্রিকাশ

কর্তা। আছকে জনগুক্তান্ত প্র বিকৃত নাহিত্য দ্বিক ব্যা জন্ত নিংশক্তে একটি বাতিকয়। সেকেলে ভ্রমাকার্থক বার্থিকার সম্ভারে এখনো সে শরিপত হর নিংশক্তে একটি বহুদিনে আকালকত বহু ব্যক্তান্ত হার্পে । কালিকার কর্মাকার বিশ্বতার নালাক্তি থেকে বার্থক ব্যাক্তান্ত নালাক্ত এবং শ্লা কালাক্ত এবং ক্রমাক্ত ভার স্তিক প্রকাশক। এই ব্যাক্তার স্তিক প্রকাশক। কর্মাক্ত ব্যাক্ত ব্যাক্তান্ত ব্যাক্তান ব্যাক্তান্ত ব্যাক

> শমর দাশ শড়দহ, ২৪ প্রগণা

সারা বাংলা কবি সন্মেলন

৯ই আবণ শ্রেবাদের অমাতে সভানন্দ গাহ মহাশার সাধা বাঙলা কবি সংজ্ঞান সংবংশ ((চিঠিপত শ্রুন্ডে) বে অভিযোগ করেছেন সেই সন্ধংশ কিছ্ ব্লার প্রোক্তন বেধ কর্মিচ।

ভার মত পড়ে মনে হে;ল করি
সন্দেহনটা বড় নয় যতটা মানুবের নাম
বড়। ঐ দিন আমিও সকাল সাতটা হতে
বারি প্রায় নটা অবাধ উপন্থিত ছিলাম।
স্কালবেলায় সভাপতি প্রপান অতিথিকে
কেন একসপো আনা হোল। দুবেলা দুকেনে
এলে স্থাক্তার হোত। কেন? বিকালের
অধিবেশনে তো অনা সভাপতি এবং প্রধান
অতিথি ছিলেন। অধিবেশন দু ভাগে ভাগ
করা হয়েছিল। প্রথম অধিবেশন সেনাল
১০টা হতে বেলা ১টা) সভাপতি থিকলেন
প্রধান অতিথি ছিলেন প্রদেশ্য এবং
প্রধান অতিথি ছিলেন প্রদেশ্য বীমণীন্দ
ব্রধান অতিথি ছিলেন প্রদেশ্য বীমণীন্দ
ব্রধান অতিথি ছিলেন। ভাছাড়া বিকেপের
অধিবেশনে (স্পুর হটা থেকে ৮টা)

উপস্থিত ছিলেন শ্রম্যের শ্রীনাদগোপাল रमनग्रान्य धादः ज्ञारम्ययं कृति श्रीकृष्ण स्व। ध ছাড়া গুণীজন সম্বর্ধনায় উপস্থিত ছিলেন কবি দিনেশ দাশ। এবা সাহিত্য-কোতে কি কিছুমাত কম? কবি সন্মেলন তো সকাল থেকেই সবাব জন্য অবানিত বার ছিল। হরপ্রসাদ মিত প্রমাণ প্রেটী হিসাবে বাভিয়া শুখুমাত গ্রোত্য উপস্থিত ছিলেন। যার। গ্রাম থেকে এসে-एक एरिन्द कथा ना इश एकाश, कन-কাতার নামা কি কি করে অভিযোগ কথেন? তার বাড়ী কি কলকাতার বাইরৈ? প্রেম্কার নিতে আসার সময় হাড়া আরে ন্ঝি অসেতে নেই? এত বড় কৰি সন্দেশ্লন যে কডটা ঝাুকির ব্যাপার, যানা করেছেন তারাই জানেন।

শ্রীপ্রদীপ পার্ল
১ কড়ার পাকুর পোন হাওজা—১

*এই প্রস্কেগ আরে কোন আলোচনা
প্রকাশিত হবে না। আ, স,

মফ:স্বলের সংবাদপর

সংবাদ ভূলে ধরা, কিন্তু এই মকঃশ্বল সংবাদপ্রগালি বা জেলা সংবাদপ্রগালি লাকলে বাহৎ সংবাদপ্র উদ্ধ সংবাদপ্র-গালি থেকে প্রকট সমস্যাবিষয়ক সংবাদ-গালি সংগ্রহ করে ভূলে ধরতে পারেন দেশার থবর শার্মক বিভাগে যা সকলরী দাটি আক্রণের একটি উপায়: মক্ষাশ্বলে নিরপেক সংবাদপ্র অনেক আছে, বা সপ্তাহে একদিন বা দাই তিন লিন অক্তর প্রকাশিত হয়। কিন্তু অর্থানিক্লোর অভাবে অচিরেই ভাদের মৃত্য় ঘটে। বিভিন্ন জেলা সাংবাদিকদেশ্বও এ বিষয়ে অগ্রণী হয়ে ব্যুবস্থা করা উচিত।

> ् ४४म (म**्स्कास** स्वकृत्याः स्थानी।

সাহিত্য ও সংস্কৃতিম্বক সংবাদ
সংগ্ৰহাহ এবং বৃতিনিতত আলোচনা ও
মাতবং অম্ত পতিকার আবেশণকে
বাড়েয়ে তুলছে। গত ১০ সংখ্যা অম্তে
সাহিত্য ও সংস্কৃতি বিভাগে মফঃবলর
দৈনিক সংবাদপত শ্যিক সংবাদ ও
আলোচনা প্রস্কেম কয়েকটি মাতব্য
রাশতে চাই।

প্রথমে বলে নিই বর্তমান সংকার বিভাগিন প্রে মফঃদবল সংবাদপত্র প্রশাদ করা হবে বলে অভিমত জ্ঞাপন করেছিলেন এবং সেটা হবে প্রতি করিবান ঘটিলা জানি না। প্রামণ্ডলার সমসা; এবং তার সমাধান আজ্ঞ অবহেলিত। ব্ছং দৈনিক সংবাদপত্রগ্রালয় পক্ষে সক্ষর এই সম্মত্ত

তি বিশিষ্ট্রি এখনও সেই তিমিরে

শিক্ষা-দীকা প্রসারের সংখ্যা সংখ্যাই **নাকীরা প্রগতি**র দিকে দাত পা বাভিয়েছেন। শ্বন-কলেজ অফিস-আদালত with G স্বাৰীন ব্যবসাধ্যের ঝ'াকি নিতেও আমান্দ্র দেশের ছাইলারা আর ভাত নন। অনেক সময় ব্যক্তিগত প্রচেণ্টা ছাড়াও যোগ बारकार्यक खीवा शर्यको अध्यक्तालाङ कट-কেন। এছাতা বিভিন্ন উচ্চপদেও মহিলাবা **সগরে এগিছে চলেছেন। বাইরের জগ**েত্র **এই সাফল্য য**ত্ত স্বাধিত হোক না কেন প্রিষার অর্থাং সংসারে তাদের অধন্থার **উম**তি বোধহয় খাব বেশী একটা হয়ন। কারণ সংসারে মেয়েরা গাতবধা, জননী অথবা গাহিলী সাতবাং সংসারের স্ব দায়-তাদের। দারদাহিত লারিভুট y ed **क**दुर छ কিল্ড মহিলারা *****114-প্রিয়ারে এখনও নিজেদের আসন অর্থাৎ कामार्याय क्रिकेविक आमोध करत्व भारतन 141

কোন পানবাবে যাদ স্ব্যা স্থা **देक्टाई** अक्तीकादी दम एक्टाल भार्मतित শাৰীবিক ও মানীস্ক দায়িছেব বোঝা কত-শানি তা সেই পারবারের সকলে এলনক স্বামী জ্ঞালোকটিও তাদ্যুক্তাম কবতে পারেন ন।। মহিলাটি যথারীতি সংসারের যাবতাঁয় শ'ুটিনাটি ভদারকের ফাকেই ভেলেগ্রেয়েনের গভাশ্যা দেখিয়ে দেবেন। ভেলেকেন্ডের ডিলেকেন্ডের म्कृ'ल आमा-स्मध्याद माश्रिक्छ वर् नार्वि তার ওপরই নাস্ত থাকে। তার ওপর ছে। হাজার রক্ষের কাঞ্চ হার স্বট্রু ध्याचा वर्देष्ट १म अहे ब्रांटलाणिक धकारे। বাইরের কেউ বেড়াতে এলে যেমন অতিথিয় ভঞ্বধানের দায়িত তার, তেমনি বাইরে আক্ষায়শ্বজনদের সংক্যা কুট্রান্বতা রক্ষা করার সকল বোঝাও তার। অথ্য চাকুরীক্ষাবী বলে তার সময়সংক্ষেপ করেই সব কাজ সারতৈ হয়। এতস্ব বোঝা বহন করেও ছেলেমেয়ের পরীক্ষার অক্তকার্যভার কনাও দারী করা হয় গাহিণীদের। যদিও মাকে মাকে সংত্যাদেব অকৃতকার্যভা বা फें**क** क्यमार्थाय कता वावा आ केस्मादाह সম্ভাবে অভিযার হতে হয়। সাধারণতঃ উভয়ের ৰূপক আভিযোগ আনে বাইরের প্ৰিকলের কাম থেকে, কিন্তু ধরে? क्रमाप्तक श्रीय किन्दु अनाह_{्ण ।} श्र्वामी क्रम-লোক জেলেমেয়ের অকৃতক্ষতা, অসংযুত আচরণ সবের জনাই দায়ী করেন স্ফুটকে। ডিনি কিছ্ডেই ব্রুখতে পারেন না, যিনি গ্র-বার দুটো করেন, তার পক্ষে সব নাপারেই সব দায়িত্ব বংন করা সম্ভব নয়।

মেয়েরা কতগালি বিশেষ গলে নিয়েই ছামায়। রাল্লা করা ভার মধ্যে একটি বিশেব গাৰ। সংভাষের একটি ছাটির দিন একটা ধ্বতলভাবেই স্বাই উদ্যাপিত ক্রতে চায়। যদিও অথনৈতিক কারণে সর পরি-বারে আঞ্কাল তা সম্ভর নয়। তব্ত র্কমফের একটা ভালমণ্য রাহার জন্য ছাট্র দিনগালিকেই স্বাই হিসেবের মধে। রাখেন। সেখানে স্বামীর দাস্ট্ দ্রীর ওপ্র অধিকাংশ পরিবারে থাকে। চাক্রীজীবী স্থাও ছাট্র দিনটিতে নিজের স্বায়া ছেলেমেয়ে ছাড়া পরিবারের আর সকলেত র্নাচর একটা পরিবর্তন করতে চান খাদো নতুন কৈছা পরিবেশন করে। কিন্ত অনক সময় শারীরিক অসুস্থতারা একট বিশ্রামের প্রয়াসে সেস্ব ঝালেলার মধ্যে তিনি ইয়তো **ফেতে চান না সেজনা প**রিবারের সকলের সহান্ত্তি থেকেও বণিতা হন।

এই মহিলাই যদি এত পরিপ্রায়র পর প্রেথাক-আসাক সম্বদ্ধে সচেতন না হ্র চাহকেও তাকৈ সংতানের। অপ্রথম করেন। চাংমাতা টিপটপ থাকতে সকলেই ভালাকান, কিংলু ইচ্ছাসাত্ত যদি তিনি তা কৈবা পরিপ্রায় না করে উঠতে পারেন ছেলমেরের। অপ্রত এক ক্যাপেক্সাত্র ভালাকে নিয়ে হাসিঠাট্টায় বিশ্বত করে তোলে। মহিলাদের অশাহিত কম নয়। এমন হতে পারে প্রোচাতন না, সেগানে তো কথাই নেই ছেলেরেরোরা মায়ের সংগ্রা বাইরে বেরতেও সংক্রেটা বেরা করের।

অঞ্চাদের দেশে মেরের স্বন্ধার পর থেকেই কডগুলি বাকাবাণে ক্ষমিত হয়। শহরের মানুদের হয়তো দৃষ্টিভালা পরি-বভানের সলো সন্দো মেরেদের সন্দ্ধেধ ধারবার কিছু রুববদল হয়েছে। তব্যুত্ত আশিক্ষিত এমনকৈ অর্থাশিক্ষিত পরিবারে ধারবা মেরেদের শিক্ষাদীক্ষা দেখ্যা শাখ্য অথবায়ন। বিরের পরে মেরের থেকে অথা-নৈতিক কোন স্বিধা শাধ্রার আলা নেই। উপ্রকৃত্ব বিরের মত একটা ব্যাপারে নেই।ত মদ্দ ধ্রাচ নর। অথাচ মেরের ব্যা শিক্ষা দ^{্ব}দ্যা দেওয়ার জন্য হো অর্থা বায় করেন মেয়ের উপা**র্জ**নের স্বট_্কু দ্যবীদার বিয়ের পরে শ্বদারবাড়ী।

অহ' নিয়ে এ দক্তিলি মহিলাদের শ্বশরেবাড়ীতেও ভোগ করতে হয়। সেখানে অর্থাভার ঘটলেই প্রামীত্রলোক বিচলিত হয়ে দ্বীকে দোষারোপ করেন যে তিনি সংসাবে খবটের মানা €এত বাড়িয়েছেন যে. গোটা মাস আর ঢালানে। সম্ভব নয়। ভাছাড়া ঘনঘন অসুস্থতা হেছু যদি তিনি প্রিবারের সকলের সেবায়ত্র চান ভাইলেও পরিবারের সকলেই বিরক্ত হারেন। পরি-বারের সকলের বৃশ্বমাল ধারণা পুরিণী নিজেই অপুরকে সেবাহতে সক্রেম্ব করে তলবেন। উপেটা কোন রক্তম কাজের জনাই তিনি সকলকেই অপ্রসম করে তোলেন। শাশ্তী যিনি ছেলের বিয়ে দিয়ে সৌ-এর ২০ত স্থ**িক: সংপ্**দিয়ে নিশ্চন্ত হথে বসেছিলেন তাঁর অসনেতাহ সবচেয়ে বেশী। কারণ সংসারের স্বাক্তা ধকল ভাকেই তখন সামলাতে হবে। ভাছাডা আমাদের দেশে তো নেক শাশাভারই বে এর কাজে খ'তে ার একটা অভ্যাস রয়ে গেছে। প্রবাশ ি স্বাধ মঞ্জাদের চিন্তা-শাস্ত্র পরিবত্ন বা কাজের ধরণ-ধাবণ পালটানোকে হত্ বহু শাশাড়ীই সানাক গ্রহণ করতে পারেন না। ভাষ ফলেই নানা-ধ্রনের বিপত্রি উংপত্তি হয়।

এত অশাণ্ড বিঘাকে সহজে মানিয়ে নিয়ে ভারতীয় মহিলারা হাসিম্পুর্ব তাদির কাজ করে যান। অসীম সহালারি নিয়েই নিরতীয় মহিলারা জন্মান। একালবতী পরিবার নেই নেই করেও সব একালবতী পরিবার উক্রের টকেরো ইকারে পুরুক হয়ে মারান। একালবতী পরিবারকে শুলী করে এখনও ভারতীয় মহিলারা মিনি। কারে দিয়ে সকলের মান জর করে থাকেন। কারে বির্শ্থ অভিযোগ কিছা ধাকলেও তা অনেক সময়েই অপ্রকাশিত থেকে ধার।

এত সম্ভে কিন্তু মেমের। প্রান্থই তুদিন প্রান্থা মর্যাদা থেকে ব্যক্তি। এ ব্যাপ্যায় পরিবারের সকলের একটা সজাগ মজর রাথা উচিত। পরিবারের গাহিন্য যদি মনে মান সংখী থাকেন তাং তরি সব কাজেই একটা পরিপ্রিতা আন্দে।

्र-जन्नाम क्रोध्रवी

রূপসীর 'খাতা



এবারে হাত ব্রুক কোমর পোট উর্ ৬ নতন্দের সম্বধ্ধে আলোচনা করব।

লোজা হয়ে দুই-পা আলাদা করে গাঁড়াতে হবে। ডান হাত মাথার উপর সেলা। চলে রাখতে হবে, বা-হাত বংলিয়ে রাখতে ্বে শরীর ছারে ভারপর বাঁ-দিকে কাড তের আন্তেড আন্তেনীচ হয়ে মাটি ছোর্ল চন্টা করতে হবে। ভারপর হাত তলওে হবে। এইভাবে একবার ডার্নাদক ও অন। গর বাদিকে করতে হবে। এর ফলে কোনরে স্থান্দর ভাজ পড়াবে ও কোমর সর**ু** হবে। এরপর দটে হাত কাবের সমান সোজা দটে পাশে টান করে, দুই পা ভয়নং করে নাজ্যতে হবে। ভারপর আগ্রেড আগত মা**থা সোজ। রেখে একবার বাদিক, এ**কলার ভার্নাদকে স্বাক্তে হ'বে যতটা সম্ভব দারতে হবে। এতে কোমধ্যে চাপ পড়বে ও ক্রেমর সর, ও নিটোল হবে। আর এবটা কথাও বলে রাখা ভাল।

মহিলাদের, বিশেষত হাঁরা শাড়ী পড়েন ভাদের কোমরে পেটিকোটের দাভ বাধার দর্ম থাব বিভিন্ন কালো গভার দাগ হয়। এই দাপ দেশতে ভাল না, আর এর ফংশ চামড়ার চুলকানিও হয়। এই দাগ যাতে না হয়, ভারজন্য কয়েকটি কাজ করা যায়। বৈমন দতি কৰে না বাধা. দতি একটা হাচকা করে বাধা। এছাড়া নতুন এক ধরনের পেটিকোট তৈরী হচ্ছে মাতে দক্তি লাগানে হাৰ দিয়ে পেটের কাছেবাঁধা হয়।এর ফলে কোমার ও পেট চাপা থাকে আর দারা হয় না। **বাদের দাগু হয়ে গেছে** তাঁরা দাগ পঠাবার **চেম্টা কর**তে পারেন। একটা আলিভ তেল গ্রন্ন করে লেব্র রস দিয়ে তা ভাল করে দাগের ওপর মালিশ করতে হবে: ভারপর গরম জল ও সাবান দিয়ে পরে **খ্রে ফেলা। কাপড় পড়ার আগে বাৈরাল**ীন ও ভার ওপর পাউডার দিয়ে নেওয়া ভালে। এইভাবে একটি কণ্ট করলে ভাল ফল শাওরা ষারে।

এবানের আসো বাক পেটের পেশী পার করা ও চবিবিদ্ধ রাংসাল হলে তাকে কম করার চেন্টার প্রসংগে। প্রথম সোজা হতে হবে। তবে মনে রাক্ষতে হবে নকর বিভানার শুকে ভদকে না। স্থাধেতিত চাদ্র জাতীর বিভিন্ন বিছিয়ে কিংবা কাঠের টোবলের ওপর শোরা চল। সোজা শারে মাথা ও কবি ও অপর দিকে পা জোড়া করে দাইদিক আন্তেত আন্তেত জমি থেকে উপর দিকে তুর্গাত চেন্টা করতে হবে। এবং পরে যতক্ষণ সম্ভব এইভাবে থাকতে হবে। তারপর ্ব ধীরে ধবীরে মাথা ও পা আবার নামতে চবে। এই রক্ষম করার সময় আন্তে ভারতে হবে আর নামাধার সময় আন্তে

এছাড়া আর একরকম উপার হাছে
তাপতে তাপতে কোমর প্রশিত তুলে
পো সোজা জমিতে ঠোকায় রেথে,
আঙ্লোর ডগা হাত দিয়ে ছা,তে হবে।
হাত দুটি মাধার দুই পাল দিয়ে কাম
ভুবে থাকবে। এই রুকম করতেও মিঞ্লাস
নিয়ে ও প্রথাড় করতে হবে। এতে পেটো
পলীতে চাপ পাড় এবং বাড়াতি মোদ করে
যায়। এছাড়া সকলেই জানেন যে বহ,
বকমের যোগ বায়েম ইত্যাদি আছে যা
ভানা ভাল ও ব্যাহেথার উপ্কর্মনী। এখানে
এ-বিবয়ে এতা সবিক্তার আলোচনার
বলা বল তাই করলে ভাল ফল প্রেরা
হল তাই করলে ভাল ফল প্রেরা
হতে পারে। এতে সময়ত বেশাী যাবে না

পায়ের ও উর্র গঠন अपूर्णन क्रात ্রনা এবং পেশী শক্ত ও মজাবতে করার ভবাক্তকগুলি নিয়ম আছে। **গেয**ন প্রথমে সোজা শত্তে হবে। ভারপর ডান-পা ম**ুড়ে টেনে নিতে হবে নিভদৰ প্য**ণিত। ্।ত শরীরের দৃ্পাশে রাথতে হবে*⊞স*োজা করে হাতের পাতা দিয়ে মাটি ছ'্রে। তারপর আহেত আহেত বা-পা সোজা ভগরের দিকে তুলে শরীর থেকে ৯০ ডিগ্রি মতন করে রাখাত হবে.। হাট্র না ভেডে। ডান-পা সোজাভয়বই রাখতে হবে। পিঠ ও নিতুদ্ৰ জন্ম থেকে উঠাৰে না। এইভাবে একবার বা, একবার ডান, পা করতে হবে: তবে এই ঝায়াম খ্ৰ ধাঁৱে এবং যক্ত নিক করতে হবে।

নিত্ত সুংশ্র ও গ্রানাস্ট করার জন।
একটি সইজ ও স্থানর ব্যায়াগ্রাত তাতে।
একটি শক্ত চেয়ার বা উচ্চ আলন নিতে
হবে। তার সামনে সোজা হয়ে দ্বীড়াতে
হবে—দুই হাত দুপ্যাশ ঝ্লিয়ে। তার
প্র দুই-পা একের পর এক চেয়ারে খুলো

সোজা দান্তাতে হবে—আবার নায়টেড হবে आका हरता अवेकारन मण-बारता गाउ হলতে পারভাট কল পাওয়া বার। এছাড়া ात शक सकरमंत्र गालाम जारक या कतरन लक्ष व जा अप्रातिष्ठ व मक्षा र रहा। माध्यस्य क्रमाद्वी क्रमान्त्रं मा किन्द्र भेतनात ার্গা রাশতে হবে। ভান হাত দিরে ওটা গরতে হারে আর সোজা সাই-পা জোড়া করে ্রান্ডাত কোমরে রাখতে হবে। ভারপর বসার ভাগতিত পারের গালে ভাগেন ওপর বসতে হবে: তখন পোডালি মাটি ভাবে না। পারের পাডার বাকী অংশ মাটি ছ'ার থাকবে। এইভাবে বসার ভাষ্ণাত সোজা হয়ে যভক্ষ সম্ভব থাকাভৈ হবে। ারপর আবার উঠতে হবে আঙ্কে আগ্রেড। এইভাবে যতেবার সম্ভব করতে ভাল হয়। এতে পায়ের, উরুর ও নিডদেবর পেণী শাভ হয়, এবং সাক্ষর গঠন পায়া।

এই অতি স্থাবাল ও অতি সহজ ক একগ্লি ব্যায়াল আল্লান নির্মাল্ভাবের দদি করি, তাহলে শার্নীরক সৌন্দর্য বান্ধি হরেই। ভাছাড়া এতে স্বান্ধ্যাও ভাল থাকে। তবে এর সালো কভকগ্লিল কথা স্বান্দান রাখতে হবে যে, যদি কার্র ফোল রক্ষা নার্ভ-এর রোগ বা কোন বক্ষা শার্মীরক অস্পেভা থাকে ভাহলে ভাজারেক প্রাণ্ধান যা করে। এখানে যা বন্ধা হকে বা শেখান হকে তা লাটাল্টি সাধারণ ও স্বাভাবিক ক্ষান্ধ্যার করে।

আর একটি নাগারণ ব্যায়াছা আছে, বা করাল পেট, পা, উরা, ও কোনার মোটানার্টি সব্যক্তিরেই সৌন্দ্রের ক্লেন্তে ফল পাওয়া গেছে পারে। বৈমন সোজা শুরে ভান-পা উ'চ করে সোজা শরীরের বরাবর রাখতে ংবে। তারপর আঙ্কেগ্রাল জড়ো করে সামানের দিকে টান করে ধরতে হাবে। এর-পর পা পিরে গোল করে শুন্য আঁকডে হবে। একবার ভার্নাদক **থেকে** ভালার ব**িদক থেকে ডাল-দিক। এভাবে** ১০।১২ বার করতে रत। नाजिता সোজন রেশ্বে বা-ঠিক ওই একট জুলভৈ হবে। বাঁ-পা দিয়ে শ্ন্য আক্তে হব। এইভাবে ন**ুই-পা জলিাদাভাৱে করতে** হবে। ভারপর দুই-পা এফ **সং**শা **হরে** করতে হবে। এইজাবেও বেশ ১০।১২বার করতে হবে। এর ফল খ্র ভাল পাওৱা

ব্লু-সজ্জার এপার্লি বিশ্বের অস্থা।
বাপ শ্র্যা রুপ্তে নর, চেন্ত্রের অস্থানিত ও
ঠাটের কালো নর—রূপ শ্রীরের ভালে
ও গঠনের ক্যমায়তাত বাড়ে। —ভাই
দ্বেই রুক্ষের চচাই এক সাগ করা ভালা।

_वर्बाम'मी



আগেকার দিনে বিভিন্ন ধরানেব সাময়িক প্র-পতিবারা লিতে প্রারশই নানা প্রকার হাসির খোরাক থাকতে দেখা বেত। গলপ-উপন্যাস ও নাটকের মধ্যে, কবিতা ও গানের মধ্যে বা 'চাসা-কৌতুক', **'চুটকি'** চাটনি প্রভতি শিরোনামায় সেগালি বান্ধ হয়ে, পাঠক-পাঠিকাদের প্রভাত আন'দ' বধানের কারণ ছাত। এই হাসারস বং মধ্য क्षावाका शान्यस्य नागांविध अपनित्र শীক্তানর মধ্যেও হা কছটো দ্বলিত্র উদ্লেক ক্ষান্ত একথা নিঃসংক্ষতে বলা যায়। কিল্ডু অধ্যাত ধ্রনের প্রিকা বিরজ-দৃষ্ট। নিছক হাসা-কৌতুক বা হালকা রশারাসর পরিকা বলতে একলার কুলাগাল খেতি সম্পাদিত 'ফুল্ফিমধ্য' ছালে আন তেমন বিভঃ আছে কিনা আয়াদের জ্ঞান নেই। অথচ এককালো 'অন্ভার' ভস্তিকা ाक्षावेत्रःगः দিশিল প্রভৃতি সামহারক পাতকাগালিতে কাট^{েন হিত্ত ও হাসাবসাহাক গচনা **প্রচ**র} প্ৰকাশত হ'ত।

.. 🗴 धरानद्र व्यथकतः हेमागी-जनकावा খাৰ বহাই দেখা যায়। বিশেষক্ষাহে খাট্টিট্র দেখল, বিভূতিভূষণ মাুখোপাধগৃয় শিবলাম চল্লবহাঁ এবং অভিতক্ষ বস্ (অক্-ব) ছাড়া আর কার্রেই নাম যেন সহাজ মনে আমে না। কিন্তু এ বালেপায়ে অভীতের দিকে ভাকালে বসর্ভা আছ্ভেলাল বস্ু াবজেন্দ লাল বায় থেকৈ আগ্রন্ড করে ক'ব সভেন্দ্র-माथः नाजेकाते कृत्यप्रनाध वाभ्याः शक्यकात ও উপন্যাসিক কৈস্থা বলেদ্যপাধ্যায় অসমজ মুখোপাধায়ে প্রভৃতি অনেককেই আমরা পাই যারা নানাভাবে ঈশ্বর গালেতল সেই 'এত ভলা বলাদেশ তবা ধলা ভরা' ক্থাটিকে স্থাক কারে ভোগার চেণ্টা করে গেছেন। এই প্ৰেন শেষ জ্যোত্তিক ছিলেন रयम दनमञ्जूषे सामान्यत रुप्ता।

হালফিলেল করেকজন খাতন্ম।
লাছিতিকে তানের অসংখা কেখার মধ্যে
দ্বাচানটি হাসির গণ্প লিখ্সেও, হাসির কবিতা কেউই প্রায়ই লেখেন না এবং সে কবিতা কেউই প্রায়ই লেখেন না এবং সে করেণ হাসির কবিতা বা গাম কদাচিং নাম-করা পর-পত্রিকার মঞ্জবে পতে।

এই হালি সন্বান্ধ কবিশেষর ক্লিদাস লাখের একটি উপভোগা কবিতা এখানে নিল্লান্সবস্থা উল্লেখ করছি অতঃপর প্রাচীন আলপা পাতকায় প্রকৃষিত (মাবাফাল্ন্ ১০২২) কালীপ্রসায় দাশগুণ্ড রচিত সাম্ব্যক্তিক নাটক 'আলোকে ও আঁধারে এবং 'আক্তেক্ত্র' থেকে দু'একটি গান উদ্যাত করে দেব।

কালিদাস রায়ের কবিতাটি অথিক নরোগী সম্পাদিত বিলক নায়ক সংকলন রামের প্রকাশিত হয়। কবিতাটির নাম 'হাসির বিশিক্'। প্রতিগ**্লি হচে**—

দেশতা হাসি দাঁতেই মিলার হাসে না তার মুখ্ কাঠ হাসি কটে হাসা হাসে না তার বুক।

মাচকে হাসি মিলিয়ে যায়
কুচকে দিয়ে ঠোঁটে,
গাংপো হাসি, কৈয়ার মত
গোঁপো কোনে ফোটে।
অট হাসি হো-তো করে

কাঁপিয়ে তোলে দিক, হা-হা করে হাসি আংসে ভাকলৈ ফ্রা পিক।

হৈছি করে হাস্য আদের শাঁতি, পউস মান্দের শাঁতি, শাুকনো হাসি বের্গানের বোকার হাসিলু হিতে।

হাউই হাসি হা-হা কলে উপর দিকে ওঠি, শঠের হাসি হো-হো কলে পকেট সধার কোটে।

চাপা হাসি মাপেন হাসি বেদের শৃংধু চেনে, ফপিা হাসির ফান্স মান্থ পরসা দিয়েও ফেনে।

দমকা হাসি আটকিয়ে দম কাদিয়ে তবে ছাড়ে কাতৃক্তুর হাসিল কাছে সকল হাসিই হারে।

কলক হাসিল বলক ওঠি ছড়িয়ে ফেন্র রাশি, তীলের মত বেধে এসে কিলিক মারা হাসি।

'আককেল' রংগনাটা ধোপানী, গয়লানী প্রভৃতি চলিত আছে এবং এক ট দ্দো তাদের দ'ভানের দ'টি গান আছে। তার মধ্যে গয়লানী গেয়েছে—

বাব, দের রক্ষ দেশে হৈনে বাচিলে
বার নেই পরসা চেলের, সাহেবী চাল—
চলে না দিন চা বিনে।
নেইকো পিতল কাসা বারে,
চারের বাসন থার থার
সাজান তাকের পারে, হারা ক বাবুরে।
বাবের মালা গারম সকি-সকালে

বাব্র মাখা গরম সকি সকালে, দুধ বোগাতে দের হলে— আদ্ধ দাম চাইতে তলেই শোন —পাইন মাহিনে। মাইনৈ সৈ তো ক্ষুদের কণ্-

উপরি চুলি তাও তো সবার জোটে না।
ভত্ত বেতে ভার মাছ মেলে না—
ভেলের পেটে দুখ পড়ে না—
তব্ লঘ্বা ধানে রক্ষা বাহার জন্মী—
ব্রিদ্ধে

এই নাটকের মধ্যে স্থী-চর্মিচ বাস্ত্রী একটি সোহা্গ-ভগা মজার গান আছে[†] গান্টি হ'ল---

আমি তোমার রাইবিবি নাথ
তুমি যে শ্যামসাহেব মেছেন।
এই সাজান যার কুজ মোদের,
কলিকাতাই ব্দশবন।
(দেহি) কুজে ম্বোমনুথি বঙ্গে
চা করি পান ছেসে হেসে,
নববুগের শ্যামে গাইয়ে
কি স্ধাময় কুজে মিজন।
নাইকো বিরহেল জন্লা,
শ্ধুর গানে সংশাপানেই
দেহি খাসা কাটাই জীবন।

লাক কেন ভাই, ও **শামে ভিরার,** মিসেস বাই যে আমি **ভূহ্বে!** নববংগে কুজো বিহাব সঞ্চ তব কি অ**তুলন**।

অ্লোকে ও আধানোর গানগুলি ভারী মজার গুগারুসে ভগা। এই নাটকে স্থী-পারুই অনেক চরিচ ও অনেক গান আছে। নবভিবাকর সভার সভা মুক্ষথার মাখের একটি গান ভাগা--

বিয়েটা মাল ় তো দিনপালা যায় বেড়ে মজার! বিয়ে ছাড়া জীবন বেন— বাসার বামান সেখে থাওরার! একটা বয়েস-টয়েস হ'লে পরে বউটি যদি থাকল ব্যে— (তাবই) ভয়া ঘরে ভবা প্রাণটা— গড়েড় যেন মাছি লোটার!

বৃত্ত ছাড়া বে বর্ধার কেমম—
বোদে বৃত্তে রোদেই জিরোন—
(বেন) কোনও মতে গলার ঢালা
রোদে তাতা জন্ম বিশাসার!

বিরেটা যার হারে গেছে ঘরে সে বৈশ শাহের আছে (আল) যে শাকার কোটেনি সে বাইকে ক্ষে শশা ভাড়রে!

(বুঝি) বউ নেই জাই জীবনটাতে পাছি না ছাই আরাম যোও (যেন) লেপটি বিনে শারে আছি শীতের ঠাকটা বিছানার।

一年刊日本

এইচ জি ওরেলস সাহেব তার লখায় এক অত্যান্চহা টাইম ফোশনের কলপর্বুপ দিয়েছি জান। বায়োক্তেকপে সেই কাহিনীর চিত্রবুপ দেখে অন্নর। এই। তাজ্বে—বাপসা, বাস্তবিক এলন একটা মেশিন প্রদা করতে পারলে কত না মকার ঘটনা উল্লেখ করা হার। পরা সাক্ এই মৃত্তে পরিজিখিতটা সেইরকম, ইতাবসরে আস্কান টাইম মেশিনে দেপে আম্বা একটা পিছিলে আমান্দেধ কলকাভার বান্বাস্ক্রপের স্বাচরে বেশী মকা যে দৃশকে চলে বাই। কী?

ভেনে বাগনে, তপন সুদরে মারাজ থেকে প্রয়োজকরা দলে দলে কলকান্তার আসতেন তামিল তেনেগা, ভাষার ছবি তৈরী করতে। এখন ম্বানন অসমীয়া, পাত্রা, মানপুরী, মোগলা, নেজপুরী, ভাষাভাষী ছবি করতে ভারা সদলবলে এখানে আসেন, করা ছাড়া বড় উপায় ছিল না। মালনা দেবী কৈছে আমান এই দিন করালো এন চি স্ট্ডিওতে একই ভারর দ্বিনিট ভাষা। এন চি স্ট্ডিওতে একই ভারর দ্বিনিট ভাষা। এন চি স্ট্ডিওতে একই ভারর দ্বিনিট ভাষা। এব শুটির করেছি

-- মাদ্ৰাজ্ঞী ?

—হাতিভাত করেছি।

—কিন্তু করতেন কিভাবে? তাগিল আগ্রেয়েজ জানটেন?

মুট্ডিক হালি মজিলা দেবীর।

- ভায়লাগ খবে কমই থাকটো। তাছাড়া
তামরা ভিন্দেশী ভাষা কাগজে লিখে নিয়ে
মূল্প করতাম ভায়লাগ ট্রেনার থাকটেন।
ট্রেনার কাল কি, এখনও হিন্দী ছবির স্থে
ট্রেনার রেখে ভবে আনিইং করতে ২ই।
ফ্রেন্টক্যা, ভাষ্টার তুলতে পার্লাই
হল।

খাটি কথা। কলকাভার তন্ত্র এই একই নিয়নে পানের পার কতকগন্ত্রা বাংলা ছারতে অভিনয় করে গেছেন। বাংলাছেন্দী ঘিলিয়ে অগ্লাইং করেছেন বহা অ-বাঙালী শিলপী। আমাদের এখানকার নিল্ডা বস্ সংগ্রহ ছিনি দগরদপণ্ডা ছবিতে অভিনয় করাত কিছুদিন কলকাডায় এসেছিলেন, টান তামিল ছবিব একজনাম্মী অভিনেত্রী। ওখনে বেশ কিছু ছবিতে অভিনয় করে নিশ্ত। বেশ কিছু ছবিতে অভিনয় করে নিশ্ত। বেশ কিছু ছবিতে অভিনয় করে নিশ্ত। বেশ ক্রাভিন্য বিভিন্ন কলকাভার সংশ্রহ বাংলাভান। লিলি চকবভানি তলিগার বিশ্বাক্রন। তেনিনি এন বিশ্বাধান খাটি কিছুল ভারতীয় হয়ে বাংলা ছবিতে বা অভিনয় করেছেন। তেনিনি এন বিশ্বাধান খাটি কিছুল ভারতীয় হয়ে বাংলা ছবিতে বা অভিনয় করেছেন—দৈশে তাম্ক্রাই হয়ে।

মজিনা দেবী সহাস্যে বলবেন-ভাষাটা কিছু ন্ম ভাই, আসলে অভিনুম্নটাই বড়

MEN CAMPATO



অনজানে মেহগান / স্থিতা-স্থেন



कार्या वर्षे काल जनम ग्रीम टकर्क र उ कार्यक भारत, एव किया आधार रूप मान्य होत সামার আজিনার কারতে। পারে। আহারে তো क्षेत्र विश्वास

MAN WAR

জ্ঞা বলভিশাস, তপন মাদ্যক্রী প্রয়ো-কাল্যা এশানে আস্তেন তামিল বা তেলেগং विषे देखकी क्षांछ। अधान अधान जिल्लानीता **অবন্ধা সংখ্যে আস**্ভেম। ছোটখাটো পাটে'র म्माणीक क्लाक्क्सई य'श्'रे, अन्त्रहो इ'ला (५) क्यों देखी। अक्यान तहे बलहा जनती পার্কি একেছে, ছবিটি পরিচালনার স্টার্ড প্রেক্তার নীরেন (বেন্তু) লাচিড্রা, সংস্কৃতি minummen minue क ता इंड्स्ट्रिटी **प्रिक्रिक इ**निम मार्गिर स्थातकल हाला खालहा শ্ৰান্ত্ৰিক্ত ক্ৰেছিল। পোৱাৰিক কাছিলী। দীলো লোট লেটিং এর তাসম্ভব লালের। reit form sono formani

वर्षे ज्ञान कानएड ठारेजन-कि दक्का

मीलम लाहियाँ आमानन मण्डन विकेष्ठी मास्मामननारमञ्जा देक्षा आर्थितम विकास क्रमान । अक्टोना शतिन उथात जामात्त्र भारित कतारह इत्य बद्देशना, छाट्टे बहुत्व-महत्व कार्रिको हेन्द्रती कहारत्रने---

বভাষাল বাংলা চলচ্চিত্ৰে স্বচেয়ে প্রবীশ স্পিশ্স-নিদেশ্যক হাজেন এই ফেলাস বট্ সেন। ও'র স্লেডিটে প্রায় সাডে পরি: ছবি: সম্প্রতি ভ'র কম'কীয়নের পঞ্জাশ वधव भाष्ट्र क्रिश्नारका भारभा भारत সম্মান জামিয়েছেন। ইন্দ্রপরেই পট্ডিওর ব্রগোল সাউত ইঞ্নীয়ার জেডি देशभीत काना जिल्लामा का देशभीन अवकाती থেকে উনি কাল শিখেছিলেন সেই মাডোল-तित आमर्थ, दर्भावन नीत्तन माहिछीत क्या भारत खेन मानिहारक जान्यत करत कहा । অপাৰ্শ রাজসভার সেট তৈগী করেছিলেন। भाष्ट्राक्षीत्रा राज्य / रमस्य था । **अकट**क मानाः

প্রটক্ষি ক্লিয়ান তো? এবার আস্ন ान्दे तारकारम्कारम् **ए**टक भछा बाकः। भूगोकरा मकारम मौरहम माशिष्ठी नाहिर कराज धाम रुठेल कि बदन श्रवाब श्रवाक कारब श्रीकृत्य প্রক্রেম্ব

कांन्य दशास्त्रज्ञनाम स्नान्त मीरबन লাহিড়াকে চিনে সিয়েছিলেন। হঠাং ওংক

ভটভাবে রেক করে দীড়াতে দেখে সা কোতাহল আবার কি চলোস থিগোগার রংগা ?

তাপাং-াকছ গণ্ডগোল আছে ক্র शक्ते आह्य ।

নীরেন লাহিড়া পায়চাকী 282 कवर है कवाव फिल्मन क्यान 😘 अस মনস্প-নাথিং বং কল পাক ব

গ্ৰাদ্য বাঙালা আৰং দ্ব প্রেডিকশ্র কপ্রেলায়।

লাভিড়ৌর আহ্নাড় তিনি নীয়েন ২০৩৮০ত হয়ে ছাটে এলেন। সাকাং ক বিনয়ের অসভার। --কণী স্ব্যাপার স্বার

পরিচালন তাকৈ একপালে নিয়ে বিচ প্রথমতঃ ফোন-অর্থাৎ দীর্থবাস, ভারপ্র ভানকা-ঠ গাল্গীবাস্ WILL প্রেশ্টিজ যায়

— किन अक्षेत्र साकारती **क**ै ०

– ব্যাপার্থী গ্রেডর। ন্রীরেন লাছড় ন্ল্যেন গ্রিপান এত করে ভাবলায় ত্র্য আপ্নাকে কিলা হলোনা। **ইয়ে, আ**জ ল সেটে অভানী কিছা সভাপন্তিত লাগতে ा भागा भागार कारक?

– নিউপক্ষণ বিশেষণা। তিয়াপা সভা পা-ভত যদি দৰকাৰই পড়ে তো হে' হে ट्ट" € निरस আশ্চি ভাষবেদ থা। বেহিদকে পাটাছি। একটা ৰোগাড় করে আনছে।,,ইনে তা কট নাগাদ পেলে আপনার সুবিধা হর বুলান তো :

নীরেন লাভিড়েট ইন্তেইড করে জন্ম দিশেন ধর্ন লাগে**ন্ধ আ**রো।

ত ম...ক জন স্ক্রাপার্ড্ড প্রকার আশ-(ার }

—ভিনশো।

—আৰ্ট: ৰলেন কি? তিন্তেশা লোক 6টিট সাম্পীদাল্ডৰ চোহালে মালে হাৰ্ড माधिम अवहे हैसा शक्त स्था मा?

---किरहा ।

—না মানে ব্যাপারটা একং কঠিম হকে গেল কিনা ভাই বলাছলাগ্ৰ...চিল্ডাকুক ख्यारिक भाग्यांनानतंत्र **सन्**तिम्हि-एदि गार्दे তোক জোগাড় ও আমি আপনাকে কং যখন একবার দেব বলেছি নিশ্চিত থাকুম ्भारत बालना जीन जात्र-

यत्ताहे भाग्यीमानः योष्टाक्षक स्थानाको টান', ন'টবন লাছিড়া ছন্তাৎ একটা অস্কুট जार्टिनाम करत- ए भगाई द्यानाको এशन्छ

েশৰ হয়নি ছে---

भाग्धीबादः शहरतः मञ्जालन-भावछारतम ন বিনশ সাডে **ডিনশো লোক জো**লাড় ার দিভি আনি...

- मा माजा हाई माणा-

--কি নাজা >

-- প্রিক্স

--मारम ३

্টার সানে সভাপন্তি চাই -কৰে ৰাজ---

·--नेराजा? भाग्यीबायाचे अध्यक्त सामित - नाज़ा करत का_{र्}म हका कि कार**ं शरि**रहम দুভাপন্তিত **চাইছেন ভিনলো আনা** নাডা-ফাডো কি ?

নীরেন গাহিডীর সপ্রতিত তলা।

যাট্রোরের রাজবাড়ির ছেলে উমি। ব্যক্তির

লারো চেরে কম বান না। সামান্য কেশে গলা

লারো চেরে কম বান না। সামান্য কেশে গলা
সাফ করে বিষত ভগগীতে ফললেন এই তো
রললাম সভাপনিভতের কথা ওটা ঠিকই
লাছে কিন্তু মুফিকল হয়েছে কি জানেন—
মান্তাজের রামাহ্নসরা ন্যাড়া মাখার আবার ইয়াব্দ বড় টিকি রাখে; স্ভাপদিভত মানেটা এখার বুকে নিন—

নীরেন লাহিড়ী বাদতভার ভংগী করে
ক্রোরে চারের গোলন। আরু এদিকে গাদখীপতদ হবার উপক্রম। পরিদিশুভিটা বৃক্তে
করেক মাহাভি লোক চাই। শুধু নাড়া
হলেই চলবে না। সেই স্বেগ্ মাথার টিকি
থাকাও পরকার — মাদ্রাজী ভামহিনস্কের
করের বেমন দেখা যার।

বিত্রলক্ষেঠ কললেন একলে তিন্লো নাড়া এখন পাই কোখার বলুন তো? পাদা আজ দেখছি এক ভয়ত্বর নিকুই-জিশান আমার ধরিয়ে দিলেন...

নীরেন লাহিড়ী অমনি জারের ভেওর থেকে—গাম্বীবাব্ বাহালী টেকমিশিয়ানদের প্রেম্টিক আন্ধ সব আপনার হাতে। আসল কথা মাল্লাকী ফ্রেম্ডদের আন্ধ দেখিয়ে দিতে হবে—হ্যাঃ আমরাও এক ডাকে তিন দুখুনে হশো ন্যাড়া এনে ফেলতে পারি ক্যামেরার সামনে

গান্ধীবাবুর চুল খাড়া। বেলৈ মিন্তির
ও'র সহকারী। এতক্ষণ বাণ্টি মেরে ছিল।
এবার রণগমণ্ডে এল যেন।—ক্ষেণেছেন। এই
কলকাতা দহরে তিনটি নাড়া হাদ একতে
গান তো জানলেন আপনার কপাল ভাল
তিনগো শাকেন কোখার? নীরেনদার
যেমন কবা—

-ভাহলে >

—তাছলে নেই, এর মধ্যে তাহলে বলে কোন কথা নেই পাধিলা। লোকে ন্যাড়া ইর এক ছেরাম্পে আরু তেমুন তেমন সংগিনী পেলে—

—ব্রক্তাম, কিল্কু একটা উপায় তো
থ'কে বের করতেই হবে। কাজটা আটকে
গোলে তো ভালা কথা হবে না বেলি।
রাগিসনে। ভেবে-চিচেন্ত একটা উপায় বের
কর। তুই তো অসাধ্য সাধাতে পারিস—

বৌদে মিন্তির বিস্তৃত মুখে কললে— দাদা এ অসম্ভব।

গাল্যীবাবার আক্তি—বৌদে বৌদে মোটা কমিলন—। ছাতের লক্ষ্মী পারে টেলিস্নি বাপ্। চেতা করে দেখ—

তখন বেলি মিডির উব্ হয়ে বলে বিভি জনলিয়ে চিল্চার বলল। কি করে সমসারে সমাগান হল—ভাবতে লাগণ। বানধবীখনুও তবৈকচ। এর মধ্যে নীরেন লাহিড়ী এক চন্তুর খুরে গেলেন—জারে করিছ রাভিধনাম্, একটু চটুপট করিছ

শ্বর্থনাত্ত দ্বার্থনাত্ত ব্যব্ধ ক্রিছে ভাল এবং নাদ্দিতা বসত



হঠাং জন্ত্ত বিভি ফেলে বেলৈ মিজির লাফিয়ে উঠতেই গাম্পিবাৰ সালহে —পেলি নাকি কিছু;

—একটা ফাল্প এরেচে মাধার গাঁধিদ:— বলে গলা খাটো করে বােঁদে মিত্তির গান্ধিবাব্র কানে কিস্ব হেন বলল। শানে গান্ধবীবাব্ কালেন মণ্দ বলিস নি কিণ্ডু বেলৈ...ভাছলে দেখি একবার কপাল ঠাকে ভূই তাহলে এদিককার বান্দোবশ্ভটা করে ফোলা আমি বেলীকরে ঘুরে আসি—

ইন্দুপ্রী স্ট্রভিওর পৈছনে তথন ছিল পেলার এক বলিত। নানান দেশের লোকেরা স্বেখানে সহ্বল্থান করতো। গাংধীবাব্ স্বেখানে স্বালিচিত। এই বলিড্র কিছ্ন লোক প্রয়োজনে বিভিন্ন ছবির একস্ট্রার কাক্তও করত।

পাশ্ধীযাব্ যথন দেখানে পেশছালেন
গতির লোকজন তখন সবে র্জিবেজগানের ধানদার বের্বে বালে প্রদত্ত হাছে।
বেশীর ভাগই কুলি কামিনের কাজ তাদের।
গান্ধীযাব্কে দেখে তারা হীড় করে এল।
ছবির কাজে তো কোন কায়িক পরিস্কারটার
বেশ ভাল টিফিন পাংলা যারা, বাসে বানে
নাই-নাটাদের নানা মজা দেখা যায়। গান্ধীনাব্ একটা চায়ের দেখিবানের ট্লাটেনে
নাব্ একটা চায়ের দেখিবানের ট্লাটেনে
নাব্ তার উপর দাভিবে প্রথমে কিপিও
আন্যাজ দিলেন ফলে ভীড় যা জিল তা
নিমেবে তার উপর দাভিবে প্রথমে কাপিও
আন্যাজ দিলেন ফলে ভীড় যা জিল তা
নিমেবে তার উপর দাভিবে প্রথমে কাপিও
আন্যাজ দিলেন ফলে ভীড় যা জিল তা
নিমেবে তার উপর দাভিবে প্রথমে কাপিও

ওজান্দনী ভাষায় বন্ধান্টা মেটায়াটি এই
রকম ঃ অদ্য ইন্দুপ্রি চট্ছিততে বিমাট
এক যজ্ঞার আয়োজন করা হইরাছে। সেই
যজ্ঞে প্রদুর সভাপন্ডিড চাই। প্রত্যেক সভাপন্ডিতের বিদায়েরও স্ববন্দোবন্ড ছইয়াছে। প্রত্যেককে একটি টাকা একখন্ড
গামছা এবং পেটচুডি ভূরিভোজন। চলান্ন
বন্ধান্গ আজ সদলবালে কলিইয়া গাঁড়।

भारत त्याणात्मत्र मत्था विशुव हाणनाः रमथा रमग

দরকার তিনশো, গাঁপিরে **এলো চারগো।** গাল্পিবাবার **হ**ৃ**কার—তকাৎ স্থাও** লাইন দিয়ে দক্ষিত্ত—

নিমেরে সাইন হল। কিছু জোক হুঠাং তলি টিয়ারী শানু করে দিল— একে বাদ দের তাকে চুকিয়ে দের। পান্ধীবাবা লাইন দের তাকে বাদ শিক্তা করে বাদের তাকে বাদ শিক্তা করে বিলাম করে বিলাম বাদ পাড়কা তাকের আরু বাদ্ধার বাদ পাড়কা তাকের আরু বাদ্ধার বাদ পাড়কা তাকের আরু বাদ্ধার বাদ্

এবার মিছিল চলল স্ট্রিভর বিশে। এমন তাভিন্য ঘ[্]না ইভি^{*}্বে এখানে কেউ দেখেনি স্বারু চক**্তির**।

ভাদিকে স্ট্রভিত্তে বিহাসাল বা দেবার বাঁদে মিতির অংগই দিয়ে রেখেছিল। মিছিল মাঁহাতক স্ট্রভিত্তে দ্যোলা—স্ড্রাম করে সোহার গোট বব্ধ হয়ে গোলা দ্যোধন ইসারায়। তারপর শ্রু হল সেই ঐতি-হ্যাসিক ঘটনা। স্ট্রভিত্র ভোজস্মী শ্রোরান্নরা তারের লাঠিসোটা বের করে ्राष्ट्रिकाम् अस्य प्रत्याः।

विकारम् अस्य प्रत्याः

विकारम्यः

विकारम् अस्य प्रत्याः

विकारम्याः

विकारम्यः

विकारम्यः

विकारम्यः

विकारम्यः

विकारम्यः

विकार

ন্ত্ৰণৰ বেলি মিডিনের সংগ্রামত আন্তর্ভান জনত্ব সুদ্ধাতি অর : মাচালা জন্মত্বাত হতকত্ব : বাংশার স্থাপার বেশে আন্তর্ভা ক্রাপত ভালাবড়া : চলং বেলি নির্দ্ধিক মুক্তান ব্যক্তান্তান্ আতি নির্দ্ধিক বার !

ব্যার সংগ্য সাংগ্য সৈথা গোল ভজন-ব্যারের ব্যারস্থার বাটাট বেলিয়ে আসাহ একটা ব্যার কোনে। প্রত্যেকর হাতত একটা বর্তন ব্যারজো অনুর আর রালভার। বালভি। রুক্তি পশ্চিতের লগ বিষয় সংগ্যাস। হঠাৎ ক্রাইনের কোন:

ত্রাকৈ মিজিবের করিন নির্দেশ শোল জেল-কালিকে লাক।

ন্ত্রি কর্ম কর্মানের বল সোৎসাহে
এবং জীয় ক্রিয়ের তাসের কাজে গোগে গড়েল।
একজন করে ধরে মাধার জল চাপাড়ে সের
ভারশার চকচকে করে দিরে কিমানের মাধা
ভোগার, সাক্ত করে দের। ক্রেণে খাতে শাুণ্
একখনত চিকি।

দ্বেশ পরিভাগতের মধ্যে রান্তাকালা পাড়ে মারা-নাথারেরা মার্যের কর্মণ রবে অক্রান্তর মার্মারিক হরে ওঠে। পালাবার চেন্টা বারা। ভারিকে রান্ত প্রারোমের দল লাসি হাতে মারাকারেক বার্যুক্তর। পালার কার মার্মার। হাতে পার ধরাধরি—চাই না গো-- श्रामका, जेका जूनिस्ताम किन्कु गर मा, प्राप्त मार स्था

প্রকৃতিক পদ মিট্রকেট অন্যাহকে স্বাফ বিট্রকেট না নের বাবে পরেড সন্তাশনিকতের দুসনা মুট্টারট্টি কণাধে বেলির আন্তালন কার্যার উন্তুল বিকাবিতা করাছ বাটোনের ক্রেটা নিরে হতাবার উপাধার করাছ, কোবার মুখা হবে আনা পেকেকেটেই মালা...আই চোলারার মুখ্যের সল.....

একটা করে নাড়ো হয় প্রাস টিকি, মংস্ক্রের ডাকে ছাড়েলে থরে থেক-আপন্সান।
সে অনুথে থাবড়া ছেবে লেরে রং রাখিনে
ছাড়াড়েই থরে কেলে কল্ট্রামানি—সে শট্
করে স্ক্রাপন্ডিডের শোষাক পরিয়ে পের।
ক্যোরে লাইট রেডি হয়ে গোছে। পরিচালক
একে একে সব দেখে গাল্যীসাব্র ভ্রমী
প্রশংসা করে গোছেন—ভাড়ো দিরে গোছেন
আট্ ছাড চালিয়ে কাছটা শের ব্যরে ব্যাধি দা

रम्भिन रवना जार्फ् शरमाठी राजाम গান্ধীবাব্র নেওছে তিনশো দিলী সভা-পঞ্জিত প্রোলেশান করে হাজির হল তেলেগ র্ভাবর বিরাট রাজদরবারের সেটে। পরিভতদের জ্বজ্ব চাউনি। তারের মাথে আর ভাষা নেই। মাদ্রাক্ষী ভায়লাগ শানে যেটাকু আশা ছিল জালের মনে ভাতে আব্ভাই ভ। বেলা একটায়া আবাক কাদত ক্লাপস্থিক পড়ক স্বা বীতি: এখন ধনি কোন্দিন টেকনিসিয়াক্স ষ্ট্রাডিওড়ে হান একবার স্মারণ করবেন গান্ধ[†]-বাবাকে। বেশবিক্তাগ সময় ও'র ওখানেই কাটে। খড় করে পালে ব্লিয়ে বিগ্রাই দশকের চলাকিল নিয়াণ পাবের হৈচেত গলপ উনি শোলাবেন তা নিশ্চতই আশনার স্মাতিতে আহার হয়ে থাকবে। গাংধ[্]াব্ প্রসংগ লিখতে সিখতে আর একটা ঘটনার কথা

चारात वर्ग शक्या गरमान । चारात निरंतते कांक्सका स्रो। धर देन्द्रगती महेकिएउ ব্ৰছবিদাৰ ছবি উঠছে া বিশ্ববিদ্ধ বোলে থেকে এসে আমার বলে গেলেন ভাট ভাকাডের যে দলটা সিলেকশান করবে সোটা বেশ দেখে লাংশই করে। ছবিতে একটা চরিত ছিল শ্যামলাল নিষ্ঠার প্রকৃতির মান্ত ভতে তবে ভাকে, রীভিয়ত পেল্ওহানী, মাথা অবদাট ন্যান্তা হ'ব। আর সেই বিশেষ চরিত্র খ'্ডে বের করতে আমরা কঞ্চন হিমাপিয়া খেলে গেলাম। কলকাভার বড় পালোরান আছে মোটায়াটি সবাইকে দেখা ছল কিল্ড কেউই আর ন্যাড়া হতে চায় না। যারা চাইল ভারা আবার জ্যান্তিং করতে পাবে না। জামর। ুরাজাই শট্রাজওতে পালোয়ানদের ইঞ্টারজিউ নিই কিন্ত কিছাতেই আর প্রদেশ হয় না।

একদিন স্ট্রাডিওতে গিয়ে লেখি ক্ষমা-আণ্টেক পালোয়ান আমার ক্ষরে আশেকা করছে। সবাই বাঙালী। প্রত্যেকেরই কলিও চেহারা। ছাতি স্কুধারন চল্লিশ ফোলানে চুয়ালিশ। স্বাইকে প্রথমে চা কমি দিয়ে আশ্যারিত করা হল। তারপম ধারে স্কুঙে বেই বলা— আছে: মশাই আশ্মারা ন্যাড়া হতে শার্বেন তোঃ

— আৰ্গ নাড়া হতে হবে : স্বন্ধাশ— বৰ্ণনাম—চনিত্ৰে ওটাই হবে বিশেষ্য : আৰু শ্ৰু একবার নাড়া হলে চলবে বা ভব মাৰ ধৰে ছবিৰ বাজ চলবে ওই ছয় মাসই নাড়া থাকতে এবে : পার্বেন ?

শ্নে ভয়জন উৎসাহী পালোরান-আঞ্চলত তংক্ষণাও ভীয়বেগে স্ট্রেক সভুলেন বঙ্গে রইবেল মানু দুক্ষন। ভারে ভখনও আঞ্চলতেন্নি। একজন ভো সাক্ষেক্ট করলেন-আছা, স্যার যদি অজ্য দেন জো এটা কথা বলি--

---रक्ष-म ।

শালোর ন গেক গিলে বললেন—ইবে বাজাবে তো আজকাল কডরকম আটি ফিশিয়েল জিনিব বেরিয়েছে—টাক বা ন্যাড়া ইওয়া বায় যদি দেদিক বিরে ব্যাগারটা—

কলা হল--দেখ্য আটি কিশিকেল বাাণায়টার আমাদের আগতি আছে। তাথ তাছাড়া কামেরার লেলের সামদে তো কেন জারিক্ষি থাটবে বা ধরা পড়ে বাবে। বা ক-শালসারি ন্যাড়া হতে হবে মুশাই।

এতে ও'রা হা বোঝার ব্রবলেন। এবং মানে মানে সুরে পড়কেন।

অভএব চলেছে খেলিখ'লি। পদ্ধানন হন্ন ৰাউকে কাউকে। কিন্তু ন্যাড়া প্ৰসংগ এলেই দুশ্ধাড় গালিরে বার মান্ত্র। সে-এক বল্লা। আমরা ভানি—দেশের হুলোকি আই? সামানা ন্যাড়া অখচ ডাও হুডে চার না কেউ! অখচ বোলেহতে দেখ—শেঠি হলিউডে দেখ-



श्रीहेव क्ली: मायदी ए अंदे

্রাল রাইনার নার্যা হয়ে কেন্দ্র বাজরে প্রাং নহছে। ইদানীং জ্বালি-ই জ্যোল্ড ন্যাইলে। সাধার চুলের নামে জেনন বেলি

মই অথচ জ্বাকি একটা ইয়াৰ্ড আছেই। ত কৰে বাকে কে জানে।

আমানের তথ্ন মনিয়া তাকথা। শানুটিং-এর দন আগতপ্রাক্ত আৰু শামলালের চনিত্র আর লাক খানুক্তে পাওরা বার না। বিশ্বজিং বাক্তে থেকে টাকে দোনে আনালেন— চাহলে কি শেঠিকে নিয়ে বাব? ভাড়াভাড়ি ভাষরা কন্দার্থ করো—

আমরা বলি—আর দু একটা দিন স্ব্র লবো। কবিনাল আমাজি।

হুঠাং এক ভদুলোকের সংগ্যা দেখা।

দীনেন গাুণতর মার্কিনা আগদানা' ছুবিতে
তাজিনর করতে এলেছিল। দার্ণ চেহারা।
প্রোভাবশন ব্যানেকার ক্ষলাকে বলগান—ন্কর
বাধো বেদ পালিরে না হার।

ভদ্রলাকের নাম দাশু নাপ। ৩ই তো বিশাল ব্যারামবিলান্ট চেচ্রো কিম্পু এমন নিরীই মান্ত্র আমি ইতিপ্রের পেথিন। হাওড়ার কোন এক বাজারে নিজের একটি দোকনে আছে দুগাকমা ভাল্ডার ধরনের সংগর মধ্যে মাহধরা আর যাতা করে বেড়ানো। বাধা ভীম। কথনো-সখনো ভারনা কাজা। মাইংখালাজিকাল বাতায় বেশ নাম-ভাক আছে। পাশুবাবুকে ছবির প্রসভাব দিতে ভদ্রলোক তো লাফিয়ে উঠলেন-নিশ্চর নিশ্চর করব। বারোকেকাশে অভিনয় করতেই তে। এসেছি স্থা--

> —পারবেন ? —নিশিচত।

ক্ষল প্রায় বলেই ফেলেছিল। আমি ডাড়াডাড়ি ইনারা করে মানা করলাম। শ্র্ কালাম—ঠিক আছে। কাল দৃশ্টার এখানে আপনার শাৃতিং চলে আস্বেন।

দাশা নাগ স্ভীয়নে চলে। গেলেন।। ন্যালকে বললাম—বিজ্ঞান একজন নরস্কুর জেকে রেখো। দেখা বাক কি হয়।

– যদি রাজীনা হয় ?

— হবে। কায়দা করে রাজী কর।তে হবে। ছবির শাটিং তো আর আশমেট করা হায় না। কিবলিং আজ ইন্ডমিং গাইটে আসংছ বোশের থেকে।

শরদিন সরালে সাশ্নাল স্ট্ডিওতে বিশোট কর্কেন। কালাম—এঃ এত ভাড়াতাড়ি এলেন। শ্নুন একটা কাজ করতে হবে।

— ইয়ে, কট করে ন্যাড়া হতে পারবেন?

বিহ্নেল দুখি দাশু নাগের।—কেন বলুন ভো? আমি ভো বাড়িতে কিছু বলেও আমিন—

—ভাতে কি হ্যোছে। বাট্যছেলের অত কার্যাল কিলেব? আমরা পাটটা একট্ প্ৰেক্ষেত্ৰ কাৰে আহতি ভট্টাচাহ', শমি'লা বাল ও অ'ই বানোজি



বাড়াব ভাবছি ভীষণ ইম্পটাণিট ক্যানেক-টার তো, ন্যাড়া হলে চলিলটা দার্ব খ্লাবে—

— চিত্য করবেল না, এ বাবদ পরসাও একটা বেশী দেওয়া হবে। বান নাড়া হবে আসান—

-- (BEG...

—কোন কিন্তু নয় মণাই। ফিলে ওরকম এট: আটু করতেই হয়। কমল, একে নিয়ে যাও ভাই। নাড়া করে কণ্টান প্রিয়ে সোজা ফ্যোরে নিয়ে চলে এব।

ভারেলাক কিছু বলবার আগেই ক্ষুব ভার কাজ আরম্ভ করে দিলা নিমেরের মধ্যে নাথা বিলকুল সাফ। দাশ্ নাগের হওড়াছ ভারতী তথনও কাটেনি। বিড বিড করে ক্ষি-সর বন্ধতে বকতে কিছুক্লণ পর ক্ষোরে এলে হাজিল। বাঃ চমংকার দেখাছো। প্রহ্ কে আছ্, ওব হাতে একটা বন্ধাক ধ্রিক্রে দাও।

প্রদিন সকালে ভরলোক উত্তেজিত-ভাবে হাজির। এঃ আমাল বা স্বান্ধা ক্রলেন আপশারা...

ভদ্রলোক রাচে বাড়ী ফিগেছিলেন বেছান রোজ ফেরেন। দরজা খ্লে ও্রা দ্রী প্রক দেখে প্রথমে অবাক, পরক্ষে হাউমাউ কামাকটি—ওগো তোমার একি দশা হলো । ভদ্ৰগোক যাত সোজান, আরে এটা ছবির জনো প্রাীম মড়াজামা ভাতে আরও বাড়ে—ছবি-টবি মিথো কথা, তুমি নিশ্চর কিছা কর্মছ তাই ভোষার মাখা কামিরে দিরেচে, ওলো আমার কিছা লোক। তার বাবাকের ভিটেছল। তারা বাবাকের কিছাস—এমা বাবা ন্যাড়া ব্যবা ন্যাড়া। ধ্যক দিলেও গোটেন না। পাড়াগাড়াবার ছাটে এলোছল। পাড়াল

এই ছো গেল। মালখানেক পর দালা নাগ একদিন প্রতিত্তে একে একটা গশ্প বললেন হ বাজিলার কলেজ প্রীট দিয়ে বনাড়া মাথা। হঠাৎ মালমার লাকা দেখা। তিনি আমার দেখে প্রথমে ভাকি করে কেন্দে একলা। বললেন, হার্টেরে বিলিয়ে আমার তার তিন ভ রুল বিজেহারটা দিরে বাবে বলোছল, সেটা রেখে দিরেছিল ভো? বত বলে না না মালমার বড় ভালবাসভো নে, বিছেহারটা আমার বড় ভালবাসভো নে, বিছেহারটা আমার দেবে বলেছিল রে ও দালা মালার সেবে বলেছিল রে ও দালা

-- ब्रह्मन मक्त्रमान



গত মার্চ মা্দেশ শেষ সংবাহে সিনে ক্লাব অফ কালকাটা ও নয়াদিলাখিল ইরান সকলকের রাণ্টদ্ত অ ফাসর স্বংক্তিক বিভাগের যৌথ উদ্যোগে কলকাতার ইরানের করেকটি ছবি দেখানো হয় নিদিভিসংথাক দর্শক স্মানিশ।

ইরানেশ্র নিজস্ব চলচ্চিত্র নিমাণের বরস বেশী নয়। দিবতীয় বিশ্ববাদেধর প্রেব ইরানের শিশপীদের নিমে পাশী ভাষায় প্রথম ছবি তোলা হয় ভারতে। আর ইবানে ভোলা তাদের নিজস্ব ছবি ভৈরী ছব ১৯৭৮ সালে।

অতএব সেদিক থেকে দেখাতে গোলেও ইরানে তোলা ছবির সংখ্যা তেমন উদ্দেশ-ঘোলা হবার কথা নয়। কিম্ছ বিদ্যারর বিষয় চল চক্রণিলেপর ক্ষেরে তার ক্রমোয়তি ইতিফ্রাধাই বিদ্বর অন্যান চলচ্চিচাশিলেপ উন্নত দেশাগ্রির দৃষ্টি আব্যাণ করেছে।

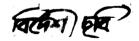
গান্ত ১৯৭১ সালে ইগানের ছবি ভোনিকে অন্তিনিক চকচিত চকচিত উৎসবে প্রকাত হয় এবং পরে ইরাণী ছবিব জাজনেতা চিবালৈয়ে জন্মিত আন্তর্গাতিক চকচিত উৎসবে শ্রেষ্ঠ অভিনেতার প্রক্ষার লাভ করেন।

নতুন ভাবনা লীতির ছবি তৈরীর প্রচেণ্টাও ইতিমধ্যে শরে হয়ে গৈছে ইরানে: এই জাগরাপর জন্য ইরানের চলজিত্রশিক্স যে তিনজন চিত্রপরিচালকের কাছে ঋণী তারা হলেন ধ্যাজনে ইরা হম গ্লিক্তা, ফারেকে বাফরি এবং ফেরিদ্কে রাহনেমা।

এর প্রণত্তী প্রশারে বেস্ব তর্ণ পরিচালক নতুন গণপ ও সম্প্রণ নতুন পুন্ধতিতে ছবি তৈরীয়া কালে এগিরে এলেন তাদের মধ্যে অনাত্ম মাস্দ্ কিমলেই ও ভারিউস মেহধক্টে:

মাস্চের "বসার" এবং ডেভিয়েসের দি কাউ' বলা যায় সর্বপ্রথম তাদের চমংকাবিষের জনা বহিবিশৈবর সপ্রশংস দ্ভিট আকর্ষণ করে।

এছাজা তর্ণতর চিত্রপ্রচালকদের
মধ্যে বাহরাম বেইজাইর ভাউনপোর' ও
দি স্পিং' 'পরীক্ষামালক ছবি হিসেবে
১৯৭২ সালের এপ্রিল মাসে অন্তিঠত প্রথম তেহলান আন্তেল কিফাম ফেন্টিভলে বিদেশী সাংবাদ্কদের
বিশিষ্ত করে।



উন্ধ উৎসবেই দাবিরাস মেহজ্প, নতুন ছবি দি পোষ্টম্যান আলাদাভ দেখানো হয়। এই ছবিটি একটা আল জামেজ গড়ে তোলে দশকিদের মনে।

এই সাথকিতার ফলে ইয়ানী চলা শিলেপর কোতে একটা আলোড়নের স্ হয় এবং নতুন ভাবনা চিহ্নিত ছবি ক দিকে ঝেকি আসে।

ফলে ১৯৭^২-৭০ সালে ট্রেমী হয় নাট তাগভাই পরিচালিত সাদেক দি কুদ ভোনিসে অনুষ্ঠিত শিশা চলচ্চিত্র উংগ আশাভ প্রিক্স প্রাঞ্চন্ত্র সাভ গ তাগভাইর শ্রাংকুল্লিটি ছবিটি।

শ্বতীয় বে ছবিটি নানা কার বিশেষভাবে উল্লেখ্যোগ্য তার নাম মোজালস'। দি মোজালস'-এর পরিচা পারতিক কিমিয়াভি।

e c

wie traffe writer and their course त्वान व्याव देवान्ट्रक व्यान्वत प्रवराद्य with frage

इराज अथन ध्यारे ३६वि कोलिक ावर **५०**वि खाबिर गुडेकित बाह्य। खरब নিৰ দেখাৰ বৰ্জি যে অন্সাতে বৈতে ললে এখালে দেই অনুসাতে ছ'ব ভৈন্নীয় एका ना बाह्या विकास विकास त्थातम चट्चके समितिहा।

এখানে ছে ছবিগালি দেখানো হয়েছিল চাল মধো উল্লেখ্য ছবি উলোপাৰ महिनीम् अधेमत्त्व दम्बन् द्यान।

हे.दनारीम

हेगा अवः ऐ त्रांति जन्मकिं छ। है। নাকও করত একট খামাগর। দ্বাজনের মধ্যে ্চধাণ্ড প্রার। বিষয় শ্ভাবে দলেমের াধা অনেক ভকাৰ। ইখা চটপটে এবং একরেখা কিন্তু ট্রেপাল আপাতে খজা মাজাজের ছেলে হলেও একটা কাব্যিক থবং উদাস। তার সনটা যেলন খ্ৰেই নর্ম ভেয়ান তার দ্ব'চোথের তারার কেঞ্স এক বেলের কার্পের ছারা ভাসা ভাসা ভাবে চারা ফোলাক্ত। এবং মেহোদের সমপ্রফে^তত ্স প্রায় নিরাস্কই ছিল।

किन्छ देशा देखिशासादे यात्राहतत নালনের অবিশ্হিতা মারকে ভালবা**ল**ভ गुबर करत्र मिरहविका।

একদিন খাছারের মালিকের সেই ফারটি বধন ট্লেলিয় নিজের হাতে খবংশাসের জনা তৈরী করা যরের ওপর বল হ'ুড়ে মাধাল তথ্য হঠাৎই টাুপোলির মাখার রক্ত চাঞ্চ পেল। ছাটে পিয়ে স মালে মে**রেটির গলা** টিকো ধ্রল। কিল্ মাল্লটি কোন রক্ষে প্রিলরে বেতে সমর্থ হওলায় টুপোলিৰ তখন থবে ভয় হোল

ঘটনাটা ইশাকে বলতে সেও খুব জয় পেয়ে পেল তার পারগতির কথা ডিস্তা

লেষ প্রতিক ভারের আত্তিক দুই ভাই-ই প্ৰাম ছেড়ে বেৰিয়ে ছটেতে আৰু বার দিল দিকবিদিক ভূলো।

হাটতে হাটতে ছামের শেষ প্রাণেতর নদ্বিটা পোলায়ে তালা এক লছরে এলে ্পণীক্ষালের।

তখন তারা ঠিক করণ লে, আৰু তারা গ্রামে 'ফাবে না। এখানেই একটা চাকরী व्यामान कट्स धारक बादन।

লের পর্যান্ত ভারা দ্রানেই চাকুরী ভাটিতেও নিল স্থানীয় একটি কাঠেছ कात्रयानासः।

धारे कार्रेस कातथानात मानिक जाकरे। এছনিকে দেখতে বেল **শঙ্গাধ** । अर्थर লাভাবিক মনে হলেও তার**্লা**ভ মনে সূত্র ছিল না। তার কারণ লোক⁶ট প্রাব্যহাম ছিল। ফাল জার স্থাকি দৈছিক সাথের অন্বেবাণ তাদা প্রাবেদ প্রতি ঝ'কডে হয়।

ট্যালোল্যা বখন ওখানে, তখন ছোরেটি পশ্লার মানেকারের প্রতি ু লোকটি ভাকে বিশেষ প্রশ্রয় म्बाना।

ফলে স্ঠান গঠন, উদাস উদাস চাহনিব্য ট্ৰাপালিল প্ৰতি তার সহজেই নক্ষর প্রকা। একদিন মেরেটি ভার ব্যামীর অম্পেল্ডির সুযোগে তাকে তেকে একদম নিজের শোবার যার মিরে উত্মতের মত বাবহাণ করতে থাকে এবং ভার সং^{কর} শোবার জন্য আন্নেয় করতে থাকে, তখন লে লেখেটির আসল উপ্দেশটো অনুমান করে রীতিয়তে বারড়ে যায়। আর ঠিক ভ্ৰমই কাৰ্যান্ত হান্ত্ৰাত সেখানে হঠাং উপস্থিত হতে ব্যাপারটা সেদিন আর বেশীদার গড়াতে পালেন।

কিন্তু সেই কথাটাই রং চড়িরে চাউর হারে হায় লগে চাচাদিকে। টাপোলিকে নিয়ে লোকে মাুখরোচক আলোচনা করতে থাকে।

কথাটো গোল প্রতিত মালিকের কানে ক্ষেণ্ডিক্ত সে প্রচন্ত সেগে সিয়ে টাপ্যোলর কোয়াটারে এসে তাকে ধরেই প্রচন্ড মার ছিলে থাকে। টুপো^{*}লকে অসহায়ভাবে মাল থেতে দেখে সহা করতে না পেরে ইশা তাকে প্রথমটা ঠেকাবার চেণ্টা করে। কিন্তু তাতে সে বাথা হয়ে ট্রেপালিকে উত্তেজিত করে তোলে উল্টে মাচা দেবার জনো। শৈষ প্রণিত ট্রেপালি আর কিছা না করে আৰাক্ষার জন্ম মালিকের হাতটা ধরে মচতে ভেগ্নে দেয়।

এরটু কিছুদিন পার একদিন ট্রপোল वसन बरमत माना छाउँ छाउँ बारमा है नाम ধরে মার্ছিল তখন হঠাংই সেখানে গিয়ে উপশ্যিত হোল মালিকের প্রী।

केट्रिश् बिट्फ निर्काटन श्राटश का व्यव আৰাৰ আদিন হ'য় উঠলো এবং সংখের আৰাংকায় ভাকে ব্যাতবাশত করে

টালোলির নরমা ভেলভেটের হাত চুল, ভার ভাষা ভাষা দ^{্ভি} স্কোন পোর্থ মহিলাটিকে উল্মাণ করে তুলেছিল।

किन्छ है, ल्यानिय छेपाम, काबाला "পা"কাতর অথ্য াবপরীতধ্যা" যন ভাতে সায় সেয়মি। তাকে কোন লালস:ই जाकार्थ कराज भागांग। स्टर म মতিকাতির উল্লাম বাধহারে অকসভয় সে উল্লেখিত হারে বোদ কিছা না ভেবেই হঠাব थ्याम करुत रामका खाटका

- श्वति। प्रामिट्यत काक टम्नेस्टर है स क्रिक्त द्वार कार्यकान समा मह क्रार्काही-त्तत्र मिरहा छैट्टभानि ७ देशास्त्र श्राम क्राट्ड

ইখা ব্যাপারটার পরিণতি অনুমান करत क्षेत्र है: भागित राजवाति देखिकाल হরে মালিক তার দলবল শূরে জাসবার পাবে ই একটা পিদতল বিশ্বে ভাটে পোল বানর দিকে এবং টাপোলিকে দেখা মাতই जारक गांकि करत शका काश निरक्तर শ্বেক্তায় উপ্মন্ত জনতার ছাতে ধর। 'দক।

এ কাহিনীতে আধ্নিক্তা বা মনস্তান্ত্রেশ বিভাষ স্পাদ্ধ নেই। ভবে অংশাতে মীভিক্ষার কলে মানে চলেও একটা হামসিকভার দশণ্ট ছোঁরা থেকে 'পায়েছে। বিশ্বীত শ্বভাবের নার্কের য়ানে হঠাং খান করার প্রবৃতি জেলে ওঠাই সেই ব্যানটিরক্ত্যে। আসেলে সাহালেরে প্রান্থাপা^ত্য ৰে বিপ্রীভূষনী একটা টেল্ডেম্মী বা কোন কিছা (সেটা যে কোন রাট বা নিটের ক্ষেত্র হতে পারে) করবে জ'টস মানপিকতা কান্ত কলে, এ গঞ্জে কেন্ 'সই কথাই খলা হয়েছে।

ছুয়িটি প্রাধা ভাষার তোলা। পরি-চালনা করেছেন রেজা মনিং লেভেছী।

श्रदान करतकां क्षेत्रकार कांस्मय করেভিন যথাক্রমে कुष्टारा स খে।শকান, মতেজা ও আখিল।

অভিনয়ে নাটকীয়তার ছাপ অসংগ্রন্ত কোন কোন কোৱে ছবিচি মনকে থুবই नाषा दमशा

ছবিটি সাদা কালের ভোলা।

সবলেষে একটি কথা ৷ আসমা ^আলা কথাৰো অদৃতি ভবিষ্টে আলো বাইবা, পরীক্ষালক এবং বতখান ইবানের প্রতিদিধিবল্পত ছবি (জোন উৎস্প মাগুফং) এসেলা প্রদশ্লের বাবস্থা করা

म्मा, ज्र, ह



কোরা কাগজ

সাম্প্রতিক্ষকালের হিন্দী ছবির হথ্যে একটি বিশিশ্ট প্থাম অধিকার করেছে।

(প্রয়োজনা : শ্রীজি ফিস্মস্)

ইদানীং বান্ধাতে একাধিক সফল বাংলা ছবির হিন্দী সংক্ষারণ হচ্ছে। অবশা সবাভারতীয় দশকৈ ও হিন্দী ছবির বন্ধ অফিসের ছথা চিতা কার এসব ছবিব প্রয়োজকগণ জলারণে নৃত্যাতি, হাসাকোত্ক পরিবেশন করে আশাতেবে চিতামানিকের স্বস্থাত করবার চেণ্টা করেন। কোরা কাণজেও লব্মাহতে এবং একাধিক গানের বারস্থা আছে। তব্ ভাষানা তথাকাছাত হিন্দী ছবিধ চেরে এ-ছবি প্রথক, সেটা সম্পূর্ণ ছবিটি প্রযাংগচনা করলে বোকা যায়।

অর্চনা ও অর্ণা দুই বেন খুব স্থা, কারণ ওরা বিকাস এবং নেশবাসাই মধ্যে দিয়ে লাগিত পালিত হচ্ছে। অভারে কা বস্তু সেটা ওাদর জানা নেই। বাবা সদাশিব হাতি। তিনি কালজের অধ্যক্ষ, সর্বাদা নিজের পড়াশোনা কিয়ে বাসত। মা তার নাসাইতি এবং ধনীপনা, অধ্যাৎ নিজেদের অতুল ঐশবর্ষ কোককে দেখাবার জনো বাসত। স্তরাং অর্চনা একজন মনের রাভা মান্তের অভাবে সর্বাদা মুন্মুরা হয়ে থাকে। ওর ভাই এবং ভাইয়ের কল্প এবং জ্ঞা বোন অরুণার মাধ্যমে বেটুকু হাস্য ও ক্রোভুকের ঘটনার অবতারণা করা হর, সেট্রকু অংশ্য অর্চনা উপ্ভোগ করে। ত্বে বাকী সময় ভবিষাতের জনো চিশ্তিত থাকে। এই পরিশিশ্তিতে বাসে এক অপরিতিত সাবেশ সাপারের ব্যক্তির সলো অর্চানার পরিচয় হয়। ভনুলোককে ভল বুঝে ভাঁব ওপর সে বিরভ হয়। এক পাটিতে সেই সুবেশ তরুপের স্তেগ আলাপ হর সাহিত্যের অধ্যাপক হিসাবে। তারপর বলা বাহ লা দিন দিন ওরা খান্ত হয়। ছেলেটির নাম স্কেশ। সংসারে বয়স্ক পিসিয়া ছাড়া তার আর কেউই শেই। অর্চনার মার ইচ্ছা ছিল আর্চনার ভাইরের সক্তন এবং সংল কথার সংগেই অর্চনার বিয়ে দেবেন কিল্ড বারার हेकार धर अर्धनार कछात्र श्रीकुकार करना अवस्माय मुक्कानत সংগ্র সকলের সম্মতিক্রমে অর্চনার বিরে হোল। পর প্রথম কদিন বেশ সূথে শ্বছদেই ওদের জীবন কাটলো। সংসারে সাকেলের ছিজেন একছার পিসিয়া, উনি সহজেই অচ'নাকে আপন করে নিরেছেন। এবারে এদের সংসারের দায়িত ব্ৰিয়ে দিয়ে কাশীবাসী হবেন ভিনি। কিণ্টু পিসিয়া ঘূণাক্ষরে বৃষ্ঠে পারেন নি যে ঘটনাচক্রে তাঁকে এত শীঘ্র কাশীতে চলে হৈতে হবে সংক্রেপ ও আর্চনাকে ছেডে। বিবেদ পর থেকে দারিলের স্বোগ নিয়ে অর্চনার হা স্কেশের পিসিমাকে অপ্যান করবার চেণ্টা শ্রু করে-ছিলেন। অর্চানার কন্ট হবে, তাই ওদের বাড়ীতে টেলিফোন এলো। এরপর পালাপার্বনে প্রায়ই ওদের আমলুণ হতে লাগল অর্চনার বাপের বাড়িতে। সেখানে আম্মীর-স্বজনদের কাছে কলাও করে অর্চনার হা অর্চনার ও স্কেশের নানাবিধ গ্লের কথা বলতে শার, করলেন। হৈছন-সাকেশ শীষাই থিসিস জন্ম দেবার বাবপথা করছে: তারপর সেই বিধায় বিশেষজ্ঞ হবার জন্যে লণ্ডন রওনা হচ্ছে। অথচ আসলে এর এক বিশ্বত সতা শয়। স্তরাং একদিন যখন এজাতীয় কথা স্কেশের কানে এল, সে দুড়ে প্রতিজ্ঞা করলো এর প্রতিবিধান করবে। তবে কিভাবে দেবে সেটা াঝা হার নি। এদিকে অর্চনা দৃঢ়ে প্রতিজ্ঞা করদ যে, এজত 🗆 অধ্যাপকের সংগ্র সম্পর্ক ছেদ করা ছাড়া তার আর উ ্ল নেই। ফলে হল ভিভোস'।

ছাড়াছাড়ি হবার পরেও আচ'াকে দেখে নীরব থাকবার চেণ্টা করে স্কেশ। তারপর এক তেঁশনে আছাক ওরেটিংর্মে দেখা হয়ে গেল সাশের ওদের। কুশল প্রদেনর আদানপ্রদান করতে গিয়ে ওরা ব্যল কেন্ট কাউকে ভোলে নি, বাইরে বিচ্ছেদ হলেও ভেতরে ওরা একই আছে।

"সাত পাকে বাঁধা'র কাহিনীকার আশ**ু**তোষ মুখো-শাধায়ের উপন্যাসকে চলচ্চিত্রায়িত করতে শিয়ে পরিবর্তনে পরিচালক আনিল গাংগালী পরিহার করতে পারেন নি। বাংলা সংস্করণের স্মৃতিত। সেন, সৌমিত চট্টো-পাধ্যায়, পাহাড়ী সাল্লালের সংগ্রে অভিনয়ের কোন তুলনা-म्हा विश्वासन मा करतर त्या श्रात् व्यक्ता त्भी खरा ভাদ_ড়ী, স্কেশ রূপী বিজয় আনন্দ এবং অচনার যা ও বাবার চরিতে অচলা সচদেব এবং এ কে হাংগলের অভিনয় সতিটে প্রশংসনীয়। অন্যান্য ভূমিকায় নাজনীন (ছোট বেন), গ দেবেন ভাষা (ভাইয়ের বংশাু), মেলোমশায় ও মাসার চরিতে রমেশ দেও এবং সীমা এবং ভাইয়ের চরিতে অনুস্ত রাঠোরেন অভিনয় যথাৰ্থ মন্ত্ৰাহাটা প্রিচালক আনিল গাংশলী ভাষ ক্রথম ছবিতে বলিষ্ঠতার পরিচয় দিরেছেন। সম্পাদনায় বহাক্তম প্রতিপ এবং অন্ত বাঠোর এবং স্পাতি পরিচালনার আনন্দর্ভা তাদের স্নাম অক্তা রেখেছেন।

—চিত্ৰদ্ভ

আডলরগালে, জনপ্রিয় কাহিলীও রুপ্রেপে এবং পরিচালনার গ্লে সকলের ক্তি আক্ষণ করবে। (প্রবোজনা ঃ রুপ্রি) ইণ্টাবনাপনাল)

তপ্ৰ সিংহেৰ প্ৰতিট হিন্দী ছবি "জিল্পেগী ञ्चरमगी" "कांगरकत खांखिक" बांबतई हिन्ही तुःभाग्छत्र, মিলনাণ্ডক কাহিনীর জন্যে খুব সাফলালাভ করে নি। এবার "সাগিনা" সাগিনা মহাতোর হিল্পী সংস্করণও বাংলা সংস্করণের মতো মনোরম হয় নি। হয়তো তপন সিংহ वटात किवन राष्ट्रामी मनकरमंत्र कथा शासन जि. अर्थ-ভারতীয় দশকদের কথাও ভেবেছেন। সেজনো হিল্পী **এটি**ম हरित गर्छ। माना बहुन कर्तिहरू। जिल्लीभक्तात हिर्म ব্যুব্র সূব ছবিডে খুব আছেত আছেত সংলাপ বলেন अनामा विवर्णानित भएका छोट्य दिसल ग्राड छक्तारम गरमान वीनेप्रदेखने। **कथ**ीर कमनात्रक दरमहे जारक राम াচংকার করতে হবে। অথচ "সাগিনা মাহাতো"তে এত উল্পামে ওকৈ সংলাপ বলতে হয় নি। হয়তো পরিচালক ছবির বন্ধঅফিসের সাফলালাভের কথাও চিল্টা করেছেন। সংলাপ রচনার বাংলা ও হিন্দী দুভাবারই সাহায়া নিয়েছেন। ইচ্ছা করলে তিনি বাংলার কথা না ভেবে কেবল নেপালী অর্থাৎ সাগিনা'র মাতৃভাষা ও হিন্দীর সাহাধ্য নিতে পারতেন। ১৯৪২-৪০ অর্থাৎ দ্বিতীয় মহাযাশ্র ভিত্তিক কাহিনী লিখেছিলেন রেপদশী কিন্তু ললিতা এবং অন্যান্য মারীচবিত্তর পোবাক পরিস্ফল দেখে বিটিল হাগের কণা মনে হয় না। তবাও একটি পরিচ্ছন এবং বাস্তবস্থাত ছবির জন্যে পরিচালককে ধনাবাদ।

১৯৪২-৪৩ সালে প্রেভারতের এক পার্বতা অপলে একটি রিটিশ কোম্পানীতে চাকুরী করত পাহাডতলীর সহজ ও সরল প্রমিকরা। তারা বৃষ্ঠিততে থাকতো। আর সাহেব ও উচ্চপদম্প কর্মচারীদের অভ্যাচার মাখ বাজে সহ্য করতো। কারণ কোম্পানীর বিরুদ্ধে তাদের হয়ে বলবার কেউই ছিল না। একবার এক বৃদ্ধের উপর সাতে কোম্পানীর উচ্চপদম্প লোকেরা এমন অত্যাচার করলো যে সে এবার গিয়ে প্রভাব প্রতিপত্তিশালী, সহজ সরল শ্রমিক দ্রদ্বী 'সাগিনাকে সর কিছু বললো। তখন বৃদ্ধের প্রতি अलाहारतेत कथा महात् इहाँ तन जालिया। उत हात्र কোম্পানীর সাহেবকে কিছা বলতে। কিন্তু ফল হোল বিশরীত, অর্থাৎ ওকে লাঞ্চিত হতে হল মালিকপক্ষের লোকেদের কাছে। কিন্ত 'সাগিনার' বীরনপ' দেখে শ্রামকরা 'সালিনাকে' তাদের নেতার্পে বরণ করে নিল। তানেকে এই অত্যাচার ও অবিচারের প্রতিবাদে শ্রমিকদের দিয়ে পর্যা-ঘটের হুমারু দিয়ে কোলপানীর কাছ থেকে প্রামকদের জনে। সংযোগ সংবিধা আদায় করে নিয়েছে। প্রান্নকদের বাদিত্তেই পাকে অপ্রে স্ক্রী কলিতা। এক অক্থাণ্য প্রমিককে বিয়ে করে শশিতার দিন কাটছে দুঃখের মধ্যে দিয়ে। 'বাগিনা' একবার বলিতার ওপর ওর দ্বামীর অভ্যেত্র দেৰে প্ৰতিবাদ না করে পারে নি। সাণিনা সেই থেকেই ম'নপ্রাণে ভালবাসে ললিতাকে, সে বিবাহিতা জেনেও। সাগিনার জীবনেও রোমানেসর স্তুরপাত হল এবং তা ললিতারই স্থিত। প্রমিকদের স্বাধের জন্যে স্থাগিনার

"সাগিনা" (হিন্দী)

আত্মত্যাগের কথা শন্নে কলকাতা থেকে এক বেঁড ইউনিয়ান লীডার অনিরূখ এলেন শ্রীক্ষের সাহাযা কম্পার জনো। তবি তারও একটা উদ্দেশ্য ছিল, সাগিনাকে ঠেড ইউনিয়নের কৃতথানি ক্ষমতা সেটা বোঝাদো। কিন্তু সাগিনা স্বকিহু ব্বেও কেবল গারের ক্লেরেই স্বক্তিছু দথক করতে চায়।

টোও ইউনিয়ন নেতার সংখ্যা যে ছহিলা সহথোক।
এসেহিলেন তাকৈ দেখে লালিতা ভুল ব্যক্তা। যিশেব কান সাগিনার সংগ্যা তাকৈ আলাপ আলোচনা করতে দেখে তার মনে ইবা হোলা। আচমকাভাবেই এর মধে। লালিতাকে খান করার চেলা হল, কিন্তু সাগিনার জনো সেটা সম্ভব হল মা। বাংলা ছবির মতো ও ছবিতে নিরীহ তর্গীর উপর এক কুচজীর পাশবিক অভাচারের দৃশা আছে। এই দৃশান্ত আরো শিল্পসম্মতভাবে উপস্থিত করা যেত।

টেড ইউনিয়ন নেতার স্পেগ কলকাতা যাওয়ার সংগ্র সংগ্রাই মালিকপক্ষের লোকেরা সাগিনার বিমুশ্যে অনেদ্ কিছু, কুংসা রটনা করে তাকে বিম্যাসঘাতক এবং কোম্পালীর দলাল বলে আখ্যা দিল। কিন্তু তাতেও তাকে দীমন্তে রাখা গেল না। কালক্রমে সাগিনা প্রমিক দলপ্তি থেকে জননামাক্ষ্ উল্লীত হল।

সাগিনার ভূমিকায় দিলীপকুমারের অভিনর অপ্রা ।
পালিতার্পী সায়ার বান্ টেড ইউনিয়ান নেতা অনির্পের
ভূমিকায় অনিলা চটোপাধায়ে ও'র সহবোগী রুপে অপ্রাণ সেন, গ্রামকদের কাছে টেড ইউনিয়ানের বাতোবাছক রুপে।
সেব, গ্রামকদের কাছে টেড ইউনিয়ানের বাতোবাছক রুপে।
স্বর্প দত্তের অভিনয় প্রাপ্তেমীয়া। অন্যানা ভূমিকায়
কি এন সিংহ, ওমপ্রকাশ ভাশো অভিনয় ক্রবার গ্রেষ্টা ক্রেছেন।

স্পাতি পরিচালনা এবং "শালা মাছিতো সাহের বলা গাছো" গান্টির স্কারোপে এস ডি বর্মণ তার স্কার অক্রে রেথেজন। বিমল মুখাজির আলোক্তির প্রত্থ স্বাধ বারের সম্পাদনা, স্বেলন, রারের শিল্পনির্দেশন্ত কাজ পরিক্রন।

-- विद्यम् छ

(इंश्वलिन

- **ভাষাৰ ধৰে দলাবৈদ্য** কাছে নিশ্চৱট साम्बद्धात्व क्षा के स्वता हे का किया है का किया है। कार्गात रहारोटक कक्षणील शहराव रहमा? হলালো ইমেড তৈরী হরেছে কিলা তাই আৰি না অস্নতঃ যদি হয়েও থাকে हैता की दिन कार्ड है वा कि जाता আহি তো সেখেছি দশ্বিরা আয়ার 'क्रमांक्क नहाक'. 'অপ'রচি**ড**'-ও নৈছেছে ভাষার 'এখনে পিলর'কেও **জ্ঞান্ত্রের করেছে।** স্তরাং আপুনিই বজান হৈ।ল ইয়েজটা দুখ কর। পৃত্ত **মরেছে আহি কি করে ব**্রবেও তবে **এটা ব্রুহতে** পারি দশকের কাছে আৰাৰ একটা পাল আছে আবেদনও ৰক্তে পাৰি।
- হ ইলেভেক চরিত ও প্রকৃত ব্রুগতে ক্রেভেক না মানকাম, কিক্তু হাইহোক একটা ইলেভে তো হ্রেভে। সেই ইলেভেক করিত করতে পালে এমন কাজ কর্মক আপরি করেছেন?
- আংশেই ভো বললাম ইয়েজটা ল কি—
 ভাই বথম জানি না। কাজেই তার লাভকাজির ব্যাপারটোও আমার চিশ্ডার
 বাইরে। মোশা কথা নানাধরনের চরির
 আমি করনের চেন্টা করি। প্রতিটা
 চরিত্রকেই ফোটাতে স্মান চেন্টা করি।
 ইয়েজের কাজিব্লিধন ব্যাপারটা খনে
 ধ্রকটা প্রান্ধ দিই না। তাবে আমার

- প্রাইডেট লাইফের বড় রক্ষের জোনো ক্ষতির আগভ্যা থাকলে নিশ্চরই তেমন কোনো ডাজ করব না। পাবলিক ইমেকের চাইতে বালিকড জীবনটা মিশ্চরাই আমার কাছে অনেক বেশী মলোবান।
- আভ্রা মাডান, তাহলে আসনার
 প্রাইতের আর পার্বালর সেলফের মধ্যে
 ভালাটো কোথায় করবেন?
- শত্যি কথা বলতে কি আমার বাজিগত ছবিন্ন আর প্রবিলক জবিনে মধ্যে খ্র একটা তফাৎ করি না। এই কিছালিন আগেও আমি বালে-টামে চড়েছ। এখনও অনেক শময় টাকিস করে সিনেয়ায় যাই। ন্টার ন্টাটান মেনটেইন করতে গেলে অনেক সময় ছোটখাটো আনেশ থেকে নিজেকে বিশুত রাখতে হয়। ধরুল মোটায় কোনো ভালো ছবি হজে। নাটট শোয়ে মারারও অস্বিধে। তখন যেতেই হয় মার্টিনি বা ইভিনিং খোয়ে। আআগালসকলের বাড়ীও এড়ানো বায় না সব শয়য়। ছরে ফানদের অভ্যান্তার বে একবারে হয়ে লাভাও বলবে। না সহ্য করে নিতেই
- ঃ ফানদের সম্প্রের্ক আপনার কি ধারণা? আপনি ভাদের চাত্রা-পাত্রাকে কি বংগ্রু গ্রুর দেন?
- ফানেরা ধখন আমার কাজের খাঁটিনটি আলোচনা করে চিঠি দেয় খ্রীব ভালো লাগে। খাধ্যমার প্রশংসায় ভরা চিঠি বিরক্তির। আজকাল আবার অনেক ফান ছবি চেয়ে পাঠান। কাজের চাপে প্রভাককে যেন আরে চিঠি লিখে উঠতে পারি না। সেকেটারীকে বলা আছে তিনিই ছবি পাঠিয়ে দেন। কছু দেন ছোল একজন ভদ্রপাকের কাছ পেকে মজার মজার চিঠি পাছি কিছু। তিন মনে উপ্রেদ্ধা দেন খেন রাত করে আমি তিন ক্রী। আমাকে নান উপ্রেদ্ধা দেন খেন রাত করে আমি কি প্রামার করে আমির ক্রিপ্রামার করে আমির প্রক্রিম আনি রাত করে আরি কি আমার মার বির্ক্তির আরু কি প্রামার সার বির্ক্তির আমার কি প্রামার সার বির্ক্তির প্রমার সার বির্ক্তির প্রামার সার বির্ক্তির সার বির্কির সার বির্ক্তির সার বির্ক
- ঃ সাংবাদিকদের সাক্ষাংকারের উত্তপ্ত আশমি কতথানি সং থাকতে পারেন?
- সাধারণ মান্রে দ্বিচারক্রর বংল কথা-বার্তা কলে, আলোচনা করে তথন প্রত্যেক বিবেচনা করে কথা বলি, স্বত্য হিংগা মিলিরেই গাকতে হয়। এমন অবস্থায় সাংবাদিকদের সলো বথা



বলার সমার ম্যাকসিমায় বঙটাকু সাঁত।
বলা যায় নিশ্চমই বুঁল। একবারে
উল্টোপালটা কিছু বাল না। উপদাশু
সিনেমা জগতের লোক আমারা, পাঠকাদশাকরা আমাদের ব্যাপালগুলো কাউটি
করে নাকি শ্নি। স্তুরাং নিজ্লা
মিণোট বা বলব কেন?

- ঃ অপনার সহঅভিনেতা বিশেষ করে নায়কদের সম্পকে আপনি কিছু বলতে রাজী আছেন?
- আমাদের ফিলম িড়াল্যি এতো ছোট বে এখানে সকলে । যথেকা কো-অপারে-টিভ না হা প্রাহলে কাজ করা প্রায় অসম্ভব। নায়ক-মায়ক; সহশিলপ পরিচালক প্রত্যকের সপো প্রত্যকের কো-অপারেশন দরকাব। আর আমিতো বেশীর ভাগই কাজ করেছি উন্তমকুমান আর সৌমিত চ্যাটালিরি সপো। ওখা বথেকা কো-অপারেচিভ। নইলে এত ছবি করছি কি করে একসপো।
- ে আপনার অত্যীত জীবনের কোনো ঘটনা কি আপনাকে ওখনও লভ্জা দের?
- ঘটনা থাকতে পারে, নাও থাকতে পারে।
 এটা নিডাহতট বালিগত বাপোর।
 বালিগতে জীবন সম্পরের্গ আমি জোনো
 কিছু বলতে চাই না।
- : সংবাদিকদের প্রদেশর উক্তর দেবার আগে আপনি কি খাব চিম্তা ক্রেম ? কেন?
- চিন্তা করেতো উত্তর দিতেই হয়। বে
 কথাগালো হাজার হাজার লোক পড়বে
 সেটাকে তো খাব কাজার্রালি দেওরা
 বার না। তবে আজকার তারাক কার্ছে
 সাধারণত বে ধণনের ইণ্টারভিট দিশত
 আসেন অনেকে (আপ্নারু এই ইণ্টার-



ভিউ সে তালিকার অবশাই প্রভ্ছে না!)
সেটা খ্বই একটা সেটল বাপোর বলে
মনে হয়। একথেয়ে লাগে। নিজেকে
নিয়ে আর আলোচনা করতে একদম
ভালো লাগে না। কতভাবে আর নিজের
ভালোমণ কথাপ্রাপ্তা আক্রারো।

- মা: তেমন কোনো লেখা আমার চোৰে शर्काम। बाज बार्य बर्धा ल्या इरहार -- छ। इसिक्टनकार्तिन। खाजाव साज जिल्हा মর। স্তরাং সেখানে প্রত্যাদ করতে পারিনি। তবে হয়নি, অনেক সময় আমান উত্তরগালো ভিতমত কোট করতে পারেন মা কেউ কেউ, ভল বোখাবাঝির দর্নই হয় বাাপারটা। তাও খবে একটা মারাশ্বক নয়। কিছুদিন আগে একজন लाश्याधिक वारला फिल्म हैन्छा महेल महाला। সম্পূর্কে আলায় প্রথম করেছিলেন। আমি থাব কাজায়ালিই বলেছিলাম 'ইন্ডান্ট্রির সমস্যার নিয়ে **মাথা খামা**ট মা বলব কি?' তিনি সেই কথাটাই ছেপে ভিয়েভিলেন। এইরকল হার আনে কিঃ
- ঃ ফিল্ম ইন্ডান্টিতে আপুনাকে কি প্রকম প্রতিযোগিতার সন্মান্তীন হতে হচ্ছে?
- ছোটু ইন্ডান্ট। ত্তিভ্যে ক্ষিপটিশন বোধায় নেই বজনে? আয়ার প্রতি-বোগিতা কালের সংক্রে অংপনি ব্লক্তে চাইছেন, নাম বলুন?
- ঃ ধর্ন স্প্রিয়া দেবী, মাধ্রী চর্ত্তী, অবিনী চ্যাউলি এ'দের স্থো।
- প্রথমত বাল এখা তিনজনেই আমার ধেকে খনে সিন্ময় এবং নিঃসংস্থেহ গ্রামী জিল্পী । এখনের সংক্র আমার

মিলান্তা খ্যু শ্না : ১৪টা

একটি বেলেশ

 শন্মরেশ মস্রের মতে ভার বতগালি

 উপ্নাস সঞ্চল মনেহে ভার মধ্যে এইটিই

 চলেউ :

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

 শন্মরেশ

প্রজাপত্তি

"राकेन क्राम्म" स्वकृष्ण गृष्टि करत गृष्टास शीकरक क्रमारकः। "गोतकानकः व स्वरूपः स्टूप्य स्वार्धः स्वरूपः स्वार्धः गिराम स्वरूपः स्वरूपः स्वार्धः गिराम गृह्मिक्षः स्वरूपः কোনো প্রতিযোগিতাই হতে পারে না।
আনি যে ধরনের চবিত্র করি সেখানেও
এবা আসের না কবিপ্রিশনে।

- ঃ ন্রাগতা শিশ্পীদের সম্পক্তে আপনার কি অভিমৃত?
- নতুনদের মধ্যে গুজনী বস্ব ছবিটা আমার দেখা হয়নি। সোমা দেখা একটা ছবি নেথেছি। ওার সাস্পোন্যালিও আছে খবে। ভবিষাতে দভিবে পারেন।
- ু ভালো অভিনেত্রী হুমানু প্রধান পরে কি?

 সোমা সম্প্রে এইমাত যে কথাটা
 বললাম—ক্রিম পাসোনালটি—ঐ
 জিনিপট্ট প্রধান। সাদা চেথে এমানতে
 কাউকে ভালো লাগতে পানে, কিন্দু
 সিনেমার পার্দায় আলো লাগা সাপারটা
 আলাদা। এবং ঐ জি নস্টাই হোল
 ক্রিম পাসোনালিটি। সেই সংগ্রে
 স্কুদর ভোরাত প্রয়োজন। আরু
 অভিনয় জিনিস্টাতে জানতেই হুয়।
 তব্তু বল্পে স্বার ওপ্র সেই ক্রিম
 পাসেনালিগিট স্বার ওপ্র সেই ক্রিম
- ঃ আথাদের এই সহাজ ব্যবহ্থায় উইমানস লিব (ক্ষী-ব্যাধনিতা স্ম্পেকে' আঞ্জান কি ব্যেক্ষ্
- শ্বাধনিতার গোড়ার কথা হোল অথ্নিতিক গ্রাধনিতা। সেই অথ্নিতিক গ্রাধনিতা। সেই অথ্নিতিক গ্রাধনিতা কি আমাদের দেশের মেরেদর করার আগে গ্রামনী বা বাবা মার কথা ছাড়া চলতে পারি না, তাই বলে আমি নিশ্চয়ই তাদের অমানা করতে বলছি না। তবে ধারে ধারে অথ্নিতিক গ্রাধনিতা আসছে মেরেদের। মেরেদের সম্পর্কে ছেলেদের ধারণা পাল্টাছে এখন। কিন্তু এটাও মনে রাখতে হবে শ্রানীনতা মানে স্বেছ্ছাচারিতা নায়।
- ত্য ব্যাধানতা মানে দেবছগোরতা নয়। ঃ জ্যোটানিক স্প্রেম আপান বিধ্বাস ক্রেন ?
- না। কেলটোনিক প্রেম কখনও হতে পারে না, কেলটোনিক বন্ধ্ হতে পারে। বিশেষ করে নারী-পরে,বের প্রেমের কেতে পারীরক বনি-ঠতা আনারে না এটা হতে পারে না। মান্দিক বনি-ঠতারই পরিগাম শানীরক বনি-ঠতা। কিল্টু বন্ধ্য বদি হয় লেখনে শামীরক সংপদ্ধ অসছে না। আমারই এমন কলে বন্ধ্য আছে।
- গ্রহ্ম করতে শিশ্পীর কিছু মানা-রিক্তর এসেই বায়—এটা মানেন নিশ্চয়ই। য়্যানায়িকয় কোনো কভি করে না?
- নালারক্ষম নিশ্চরই আমার আছে।
 কোপার বাড় ফিরিয়ে তাকালে কোপার
 বা একট্ টিক্ট আপ করে তাকালে
 ভালো দেখার আমাকে। অনেক দমর

সিচুরোশন—চরিত্র অসব ভুলে এগ্রে
করে ফেলি, প্রিচালকরাও বলে:
সাসল ব্যাপার কি জানেন—একের ও
এক ছবি করে যাচ্ছি। ম্যানারিজ্ঞাগ্রে
শাধ্ধান বেরার সাবোগা পাছে ন
তব্যুও আমি চেণ্টা ভ্রি নিজে

- ঃ সিগাটেট রাওয়া নিশ্চমই অভিনয় ক্ষ্মি রিচছ আপ্নার, তব্তুও যাত ক্ষেত্রি
- এপর বলে আর লংজা দেবেন ন স্পারেট প্রচম্ভ করিছে আর গলার। কিন্তু কি করব, হাড়তে পার না। দেখি যদি ছাড়তে পারি।
- ফ ফিন্মে কাজ করলে চরির ঠিক থাকে

 —এমন অভিযোগ আছে অনেকেন

 আপনি কি বলেন?
- -- একটা সময় ছিল যখন নাচিয়ে-গাইরে
 সদপ্রকেও একথা বলা হোড। ফিল সদপ্রকে তা বটেই। এটা অসত। এবতে
 - পাল্লব না তবে তথন এ-লাইনে গাঁৱা কাল বলতেন, তাদের মধ্যে শিক্ষিতেই হাব ছিল কম। এগালো বটতে তাই বেশা। এখন দিন পাল্টাছে। বদশম-গ্রেণাত চলে যাছেই আসত আসত। যাবেও। খামার প্রবৃত্তী ভেনাবেশনি বৈশব হয়তো আর কোন অভিযোগী নেই!
- ঃ অভিনয় কয়ার সয়য় আপনার নিজেব স্তা ও শিংপী-সতা কিভাবে কায় কয়ে ?
- থিয়ারে হলো দুটো সভাকেই পাশাপাখি রেখে কাল করা। চরিতের সংশা

 একাকার হয়ে গেল অভিনয় অভিনয়
 হয় না। আবার নিঞ্চের সন্তাকে

 লা পৃথালেও

 চলে না। আবার ওাই

 করতে চেণ্টা করি। কিন্তু জানি সং
 সময় পেরে উঠি না।
- ঃ অভিনেতীর আদশ[ে] চেহারা কি হওয়া দরকার?
- ছিপছিপে হলেই ভালো। সব ধরনের চার্যন্ত করার পক্ষে খুব সর্বিধে।
- ঃ আপনি কি মনে করেন স্থাপনার চেহার। ভাহলে আদর্শ অভিনেত্রীর চেহার।?
- না না, তা নয়া, আমার চেহারাতেও হুটি আছে।
- ः कि द्वां वि वनत्वन ?
- হাসতে ছালতে) আয়য়য় চেহারার য়^{টি}
 গ্লো আপেনার কছে বিভেল করবো,
 বেশ বলেছেন বটে?

—निर्मण वर

স্জাতা

মণ্ডাভিনয় ঘরে বাইরে

কহিনীঃ রবীদদন্য। প্রয়েজন।ঃ বহুরেপৌ। নাটারপে ও নিদেশিনা ঃ জণত মিত। নাম : কুমার রায়। আলো : দিলীপ সেন। আবহসংগতি: অক্সয় সিংহরায়। অভিনয়ে শৃথিলী মিল্ল—বিম্বাসা। উদয়-সিংহ—নিখিলেশ। নামতা মজুমদার---মেকবৌ। রমলা রায়—বডবৌ। আর্রাভ नाम-धारका। कालीश्रमान धार-मन्नीश। হতিয়া চ্যাটাজি--ক্ষামা। দেবতে ক্রত চোষ— ুল্ডনাথ। বলাই গ্ৰুক্ত--পঞ্চা র্মা প্রসাদ বণিক্ত--অম্ল্য। উৎপল ভটাচার্য--ত্লদা। আরিফিং গুহ-দারোগা। তাছাটো राह्या अत्यक्त। शक २४ महनाई वकाष्ट्रभी অফ ফাইন আর্ট'দ হলে নাটকটি অভিনাত হোল নব নাট্যাক্রেল্য আর গণ-নাট্যাদেনালন কথা দুটি যারা একই অথে প্রাণ করেন-ভার। সম্পূর্ণ দ্রান্ত। নাট্য শিক্ষপারের কেন্দু করে যেকেন আক্ষেত্রনই উৎসাৱিত হয়ে উঠাক না কেন--দ্র আজানেদালনের মাল কথাই হতে শিল্প-স্থিত। শিল্পস্থিত চিরাচরিত পথ বছান করে নবতম প্রকাশভাগাীর পথ-পার্রমার মধাই নৱ নাট্যাদেশলনের যথাথাতা। গণ-नाजात्न्याभन्य सर् नाजात्न्यामध्यत् अन्दर् स হাত পারে, কিন্তু কেবলমার গ্র नाजाएकालास्य मध्यक्षे स्व नाजाएकालन সামিত নয়। গণজাবানর প্রতিফলন যে নাটকৈ পরিন্তে হয় তাকেই গ্ৰন্ট বলা যেতে পারে। নিদিন্ট বিষয়বদকুরে কৈন্দ্র করেই গণনালের প্রকাশ। নাটকের বা নাট্য-স্থিতির নব্তম প্রকাশভংগীই নব-নাটোর দ্যোতক। বিষয়বস্তুই এক্ষেত একমাত্র মাপকাঠি নয়।

একনিন যিনি **ব। য**রিয় ন্য নট্যান্দোলনের প্রয়োখা ছিলেন, পরবতাী ব্লো শিল্পস্থির পরিবৃতিত ধারার সংক্র যদ তিনি বা তার। তাল রেখে চলতে না পারেন-তার তিনি বা তারাও পারাতনপাথী বলেই পারগণিত হবেন। আজকের নতুন আগামী দিনে প্রভিন হবে। বতামানের মতই নব কথাটির প্রমায়; সীমিত। য**তক্ষণ** ভবিষাং এসে তার পথান আধিকার না করবে—ততক্ষণই তার আয়ু। আজকের নতুন অর্থাং বর্তমান আগামী দিনেব নতুনের সংক্ষা ভাল রেখে নলতে পার্সেই স্বার নতুনবংগে জুটে উঠবে। না পারলে অতাত্তির পৃষ্ঠার তাকে প্থান করে নিতে হবে।

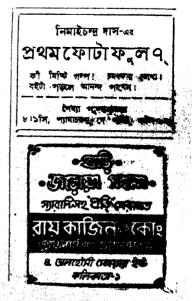
নীলদপুণি গুণনাটা। তাই বলে আজকের নব নাট্যানদালনের প্রতীক নর। বিষয়বস্কু প্রেলন হলেও নব নাট্যানার নালাকপুণি অভিনুতি হয়ে নতুনত্বের দাবী করতে পারে। আরো পরিক্লার করে বলতে লেলে বলতে হয়---যুগ বিবর্তনে যে নাট্যারাকে অনুনেরৰ করে পুরেনারিক ইয়ু সেই নাট্যারাকে অনুনরৰ করে পুরেনা বিষয়বস্কু সুন্বলিত



নাটক মণ্ডত হলেও তাকে নহ নার্ট্যান্দোলনের অন্তর্ভ্ত করা যেতে পারে। অবশ্য বিষয়বস্তু ও আংগিক দুইই যদি বিব্যানের সংখ্যে ভাষা রেখে য_গ উৎসারিত হয় তারে ত সোনায় সোহ।গা। এত কথা বল্লান এই জন্য যে, পথিক উল্বাগড়া, ছাড়া তারের মধ্য দিয়ে সে वह ब्राभीक कर नागात्मानतन भारताथा রূপে অভিনন্দন জানিয়েছিলাম—ঘরে বাইরে দেখার পর আজও তাকে সেই মর্যাদায় অভিষিক্ত করতে দ্বিধাবোধ করবো না। ১৯৪৭-এর বহরেপী ১৯৭৪ খুন্টাব্দেও নব নব স্থিতির উন্দাদনায় উদ্বেশ। বহুরপৌ অতীতের পৃষ্ঠার স্থানশাভ করে স্তির কেতে তভ্রহয়ে হায় নি। তার গতিও হয় নি রুম্ধ।

ঘরে বাইরে নাটকের পরিচালিকা তৃণিত
মিত্র তথা বহারংপীর এখানেই সাম্পর্কাত।
দরে বাইরের যুগা আম্ররা অনেকাদন
ভিগিলার এগেছি—কিন্তু সেই যুগকে
আলকের স্বাধ্যানক প্রকাশকভগাতি
মবিকৃতভাবে তুলে ধরে বহারংগী শিল্পন
দ্বির পথে যে প্রাভিশাতার পরিচর
দিয়েছেন, তাতে বিস্মিত ও মুখ্ হরেছি।
নাটারংশ প্রামতী মিত্র মবীক্ত স্থিছতে,
ম্বাচ্নাদনের সুবোগা দিয়েছেন। নাটকের

ধ্যালা্যায়ী বহিমান্থী নাট্য-সংঘাত এড়িছে গয়ে অনত্যান্থী বিদেশ্যণ ধৃষ্ণীভাষে**ই** এমিতী মিজের মান্দীয়ানা ফাটে উঠেছে।



অভিনয়ে বিমলা চরিতে শ্রীমতী লাঙলী হিচ অপুর' হাজনা _ত আবেগে এই ত্রামন চরিত্রতিকে ফাট্রে তলেছেন। क्रमें क्रिक्ट स्थाएं। क्थाह भाषमा धारम छए। का कारा कावाद विभाग वाशाकाल विशे करहे भवतः भी विश्वमात काम्ड वर्षणा भाषिमी মিয়ের অভিনতে ব্যক্তভাবে ফাটে উঠেছে। জ্ঞান্ত সংখত এবং আচড়রিক क्षक्रिनंदम् सिथिटमगटक हिट्स सटक कर्ण इस मा। याम क काली श्रमान स्थारकत नरमी श चारतास्त्र काम मागरव। मन्त्रील निर्वाहे নিজেকে প্রকৃতিত করেন-ভার অভিনয়ত जार**ाज । क वेल स्था** 'स्थिता हिंदरहर বৈশিপটা আনুধাবন করতে হয়। চরিচটি भगरकता देकातिङ सश्च। डारे कराकाधिक निविधासमास्य यांचा छभामिश कतहरू भागत्यम मा—'एडिंग সম্দেশীংপর চরিতা জন্মজার गमारिक्ट शक्त बाला भिट्ट हाहित्यम ।

মেজবৌ চামতে মমিতা মজামদার প্রদীণ্ড। নিখিলেগের প্রতি অন্তম**্**থী **स**ुष्थ ज्याद्यदशन বাহঃপ্রকালে শ্রীমতী মজ্মদার অপ্ত দক্তরে পার্চয় দিয়ে-ছেন। রমলা রায়ের বড়বোঁ ভার আর্ডার मारम्य श्रारका श्रीमृत था । भग्राह्म छन-প্রিয়ন্ত্র অঞ্ন করবে, কিম্তু সাম্ভিক व्यक्तिसमाता । ५८क विस्तान स्टार्म भएकटह আভি-নাটকীয়তার कल्यानाटक्व 37.13 1 W. Secon প্রধাসনীয় ৷ ভাষেত্রসংগীত লা^টকের স্থাবধয়া প্রকালে সহাহক হায়েছে। একটি মাত দাশপেটে সমাত নাটকটি আছে-ম**ীতু। ঘ**রে-বাইজের হারণ্ট প্রেরাপর্টের য, ইয়ে তোলা হয়েছে দ্ৰাপটিৰ মাধানে। ष्माः अध्यक्षमभ्याद्वयः भारमा मित्स अवह मृत्या-পথে বিভিন্ন ভাবে বিভন্ন করে কারে লাগানের সন্ধৃতিত প্রদংসনীয়। বহা-শ্ৰণীৰ দুটে সংমত স্মৃদ্ত মিত্ৰ আৰু তুলিত

মেয়ে নেই দ্রাক্ত হাসির নাটক। খনর পান নি?

নিউপোর্রগাড়ির হেডলাইট

ন্ত্রাজ রাহের লেবা । দ্রেশ্লো—০-৫১ এক্টে আর্মেটি বাংল মাটক মার্চিত বংগছে কিন্তুল ও ক্রেক্স স্টাতির নবপ্রণর কুটীরে।



মিত্রকে অভিনয়ে না দেখতে পেরে অনেকের আশাভংগ হলেও, বহুরে,পীব পরবত্তী সভারা যে বহুরে,পীকে বচিরে লাখতে পারবেন—তাদের সমবেত অভিনয়ের মধ্যে সেই পরিচয়ই পেরেছি।

কবি

বিশ্বত ৪ জালাই থেকে তারাশংকরের ফরি রঞ্জনা পোণ্ঠীর প্রশোজনার অবন্দ্রহাল অভিনাতি হছে। নাটকটি পরিচালনা করেছেন দেবনারায়ণ গাণ্ড। সংগতি পরিচালনা করেছেন অনল বাগচী। অভিনরে আছেন অভিত বানাজি পরিতারত দরে, নীলিমা দাস, বাসভৌ চাটোজি, গতি। ললে এবং আরো অনেকে। লাকণ থাকেই পারে, কবি ইতিশ্বে দৈবকীকুমার বস্ত্র পরিচালনার চিত্রপোলিত হয়। রভমহল করি প্রভাবনার চিত্রপোলিত হয়। রভমহল করি প্রভাবনার চিত্রপোলিত হয়। রভমহল করি প্রভাবার ব্যারশি প্রথম মঞ্চম্ম হার্মিক প্রথম মঞ্চম হার্মিক প্রদানার চিত্র পারিচ হার্মিক বানারাজিব প্রকালনার চিত্র পারিষ্ট হব্র মার্ভির দ্বিশ্বত। রঞ্জনার প্রচেণ্টা সাঞ্জি হের মার্লির দামবা ভাই কামনা করি।

—শীলভদ

न्यामान : रकान वाश्वनीशक निविद्य শ্ন ফ্লাবের সভারা তাঁদেল - বাংশক উৎসব উপলক্ষে ২৬ জ্লাই বিশ্বর্পা মতে দুমালুগ দেখ্যমা বিভাগ্ত 'কানোল' নাটকটি আভিনয় করেন। জোডুদার শিবশংকরের ভূমিকায় র্ণাল মাহা অপ্ব'অভিনয় কলেন। বাদ্ধ কৃষক নেতা। নহান মোডলেব ভূমিকায় সোমেন চক্রবতীর সমানভাবে পালা দিয়েছেন তার সংগো ২<u>০ী-চারতে</u> প্রেল চর্যতীরি অভিনয় সকলের মনে শেখাপাত করে। নাট্য-নিদেশিক অসাম হালদায় পূৰ্ণ অৰ্থাদাৰ সংখ্যা তাঁৱ দায়িছ পাল্য ক্রেছেন। আলোকস্পাতে ভান বিশ্বাসের কাজ কানাল সাথকি রূপ পেষেছে। বাউপবেশী সূত্রত মজ্মদারের পান্টি স্খাবা।

ভুত্তের বেগার: 'বিকৃতি'র আভিধানিক फारणर्य बाहे दशक जा रकन, नावेदकत एकरठ বিকৃতির স্প্রয়োগ ঘটাতে পারলে আনন্দ षाञ्चरभद्र भूरमाश बार्ष्क् देव करम ना। ब्रामाण्डवी मार्गारमान्त्री अपि त्याबारमान्त्राव প্রমাণ করেছেন তাদের সাম্প্রতিক নাটক ষ্টতের বেগার'-এর উপস্থাপনায়। ক্ষীরোদ-প্রসাদ বিদ্যা বনোদের রচমাকে সন্তাকার অংশরার ছাটো সালিয়ে পরিচালক জোছন দ্ভিতদার প্রয়াণ কর্মলেন থে, ছালায়সের উপাদান বহু তথাকথিত 'প্রোনো' गाउँक्य प्राथा प्रीफ्ट्य बाहर, প্রায়েক गाय **धारक भा एक एवत काल आय**्तिक स्वकारकत **উপবেলা করে র**েশাস্থ্রত করা। নাটকটির রঙ্গান্তাম এ।কাডেমি অব ফাইন আর্ট'স।

ন্তা, গাঁত, মনমাতানো অভিনয়—এই তিন ৰণ্ডুল সমাবেলে প্রেকাগ্তে এমন একটা একটানা হিচ্মানের সঞার হয় বে দশ্প সঞ্জা দুখ্টাকাল একটমে এই ঠাসব্দোট জানক উপজোগ করেন। এক কর মাহিমান্তিত গানুতে জানুত বিদ্যা পাধ্যায় ওরকে এটামতি বানাবছনীর ইংলেজ মনিবের আওতায় থেকে ধনী হবল ধনিকে এ জিরাকলাপের কথা রেন্টিরার প্রথায় দর্শক্ষকে আরো থাকতে জানিরে দেন। এটামতি ও তংশতাটীর ক্ষাঁকানত দেনে দুর্গাক তা মিলিক্সে নিরে প্রাণ খ্লেক তা মিলিক্সে নিরে প্রাণ খ্লেক তা মিলিক্সে নিরে প্রথামাল বেন্ত্র অস্তান। সাটেক্টির ঘটনাকাল বেন্ত্র আমানা সাতেক্ত্রের হুজুর মান্যাপ বাল ভাবতে হুজুর্টিটানকভাবে অভাশত ছিলামা কনীক্ষাক্সিদের ক্রুখ ভাবতীয় মন কর সহছেই চরির্টিরেশের মধ্যা দিয়ে প্রকাশত হুলে মধ্যে ভাবতে হুলার একটি লগাকোকে ভুলো মধ্যে ভাবতার একটি লগাকোক ভূবি বছর পরে তেবে আল বভ্র করে বিশ্বিত্রত হতে হয়।

জ্ঞাছন দক্ষিতদারের এনান্দ্র ও চ্না দক্ষিণারের এনান্দ্রকারের এনান্দ্রকারের এনান্দ্রকার করেন রাখরান মত। কুমারেল মুহ্যাপাধারে (নিভাই), কিখা রাষ (পান্ট), ক্ষাকিলার করেলা করেলা রাষ (পান্ট), রিক্ষানাথ বা কর (একেন্ট), রিক্ষানাথ বা কর (একেন্ট), রাজ্যালা সেনগান্ত, সনুষ্ক্রিত খোষ ও পার্থা করেলেন। স্প্রধারম্পী কাল্মীরার চর্ত্রন্ধ্রা সাঞ্চাক্ষ করেছেন। স্প্রধারম্পী কাল্মীরার চর্ত্রন্ধ্রাপা করেছেন। স্প্রধারম্পী কাল্মীরার চর্ত্রন্ধ্রাপা করিছেন। স্প্রধারম্পী কাল্মীরার চর্ত্রন্ধ্রাপান করেছেন। স্প্রধারম্পী কাল্মীরার চর্ত্রন্ধ্রাপান করেছেন। কর্ত্রন্ধর্পান করেছেন। ক্রিক্সপ্রধার্ণিক করেলেলানান্তাকে ক্ষান্দ্রকার্ণার বর্বা এই প্রসাধ্যা বিশ্বাসার করেলেলানান্তাকে ক্ষান্দ্রাপ্রধারণির করা এই প্রসাধ্যা প্রধারণার করেলে প্রধারণার ব্যাহিনিক ক্ষান্ত্রাপ্রধারণার করেলেলানার্ন্ধর ক্ষান্ত্রাপ্রধারণার করেলেলানার্ন্ধর ক্ষান্ত্রালান্ত্রার্ণার করেল প্রধারণার করেলেলানার্ন্ধর ক্ষান্ত্রারণার করেলেলানার্ন্ধর ক্ষান্ত্রারণারণার করেলেলানার্ন্ধরণারান্ত্রারণার্ন্ধর করেলেলানার্ন্ধরণারান্ত্রারণার্ন্ধর করেলিলানার্ন্ধরার্ন্ব

বিবিধ সংবাদ

०० जागन्हें माजिनाक क्याद

কৈ এল কাপার হিচ্চাস নিবেদিত এবং
সহাবেশ বস্থ প্রচিত বিকেলে ভোবের ফ্রা
ত০ আগণ্ট মুক্তিলাভ করবে র্প্থানী
মর্বা এবং ভারতী প্রেক্ষাগাহে। বুটি
বিশিষ্ট চরিত্রে অভিনয় করেছেন উত্থেক্ষার ও স্থানা মুগোপাধার। অনানা
চরিত্রে চরিত্রে অভিনয় করছেন রবি ঘোর
কলাল চটোপাধার, উৎদল দক্ত ক্ষয়ী
বন্দ্যাপাধার প্রভৃতি। সংগীত প্রিচালনা
করেছেন হেছাত মুখোপাধার। পরিচালনা
করেছেন হেছাত মুখোপাধার। পরিচালনা
করেছেন হেছাত মুখোপাধার। তালালাবিদ্যালা গ্রহণ এছবিব জনাউল সংগ্রা
বাহ্যাপারাহি প্রভৃতি। সংগীত প্রিচালনা
করেছেন হেছাত মুখোপাধার। প্রভালনা
করেছেন হেছাত মুখোপাধার। প্রভাল বিহুদ্বিদা গ্রহণ এছবিব জনাউল সংগ্রা
আলোকচিত্র গ্রহণ করেছেন ক্লাই দে।
সম্পাদ্যালা ইবাদানাথ চটোপাধারে।

দি এম ডি ও বিভিন্নেখন ক্লাব ঃ গত
২৩ জনোই সি এম ডি এ বিভিন্নেশন
ক্লাবের বিভাগ—৩-এর ২র বাখিক
সাংশ্কৃতিক অনুষ্ঠান ধণ্ণানা মুণ্টে জন্মতিত
হয়। সভায় সঞ্জাপতির আসন গ্লাহণ কবেন
সাহিত্যিক প্রীনাগারণ সান্যালা। এই
অনুষ্ঠানে সমবেত অভিভিন্নের ধনাবাদ
ভ্রাণন করেন সংখ্যার সভ্রাহাতি একসিক্রিট্রিভ ইজিনারার প্রীসভ্রাহা গ্রগান্ত
এই জন্মুরানে অফিক্রমণী হারাগারন মোক্রিট্রিভ বিজনীয়ার প্রীন্তিরা সক্রেলান
বিভিন্ন নাইক আরু অবা বিভিন্না সক্রেলান
ব্যান প্রশাস্ক

শ**ুৰ**ৰ্শ্বের স্মর্ণীয়

1321

ধর্ম দাস সুর

জাতীয় নাটাশালার স্বপ্রিথম
মণ্ডাধ্যক, মণ্ডমায়াকর ধর্মদাস সরুর
১৮৫২ খাণ্টাকে ব্যব্জারিই জন্মগ্রহণ
করেন। মাত ছয় বংসর বয়সের সময়
ধর্মদাসবাব্রে পিতা গাধানাথ সরুর মারা
বনা ম্যাকেজনিয়ালের একজন বিশ্বত কর্মী ছিলেন রাধানাথবাব্যা তাই
প্রতিষ্ঠানের ভারপ্রাক্ত সদস্য মিঃ ওয়াটসন
ধর্মদাসবাব্যাক্ত জন দেনা দুই ভাইরের
ক্যাক্তির বাবদ্ধা করে দেনা দুই ভাইরের
ক্যাক্তির বাবদ্ধা করে দেনা দুই ভাইরের
কর্মক্তির লিশ্ত হয়ে প্রক্তন এবং উম্লিভ
লাভ ক্রেন। ধ্যাদ্যবাব্যু ক্রিটে। জ্যাক

ন্টচুড়ামণি অংগ'ন্শেথর মাত্রুকী ছিলেন ধ্যাদাসব ব্রে প্রতিবেশী।
তাছাড়া ব্লাবয়স থেকে উভরেব মধ্যে
ছিল প্রগাঢ় বংধাড়া অব্যাদাসবাব্রে নাটা।ভনরের প্রতি আক্ষ্প করান। তথনও ধ্যাদাসবাব্র ক্রতার ছাত্র।
বয়স ১৪। ১৮৬৬ খাল্টাখ্যে অধ্যাদাসবাব্রে ক্রলায়টাখ্যে তদানাল্ডন বিছল্ল ক্রামা ভাষ্টায় নিয়ে
বান এবং সভাবের স্পেশ পরিচয়
বান এবং সভাবের সংশে পরিচয়
বান এবং সভাবের ধ্যাদাসবাব্রেকে কেন্তুরা
ইরা চন্দ্রবিলাসীর চিরুতেই ধ্যাদাসবাব্রে ক্রেরা
হরা চন্দ্রবিলাসীর চিরুতেই ধ্যাদাসবাব্রে ক্রেরা
হরা ভান্তুরিকে স্বাহ্নায় হাতেখি।

অক্কানিসায় ছোটবেলা থেকেই গোক ছিল। কুলে স্কুলর ম্যাপ অকিতে পারতেন। সম্মানতী প্রা ও অন্যানা প্রান্থানালিতে প্রতিমার চোকি, মন্ডপ সাজানো ও আলপনা দেওয়ার ধ্যাপিন বাব্র জুড়ি ব্র কয় পাধেরা বেড। ধর্মাদাসবাব্র অক্কান্ত সম্পর্কেও ক্রলাধার সম্প্রায়ের দৃশিট আকৃষ্ট হয়। পাওরা যায় ঃ বলিতে গেলে আগার দকুলের মাপে আফি; উল্লভির প্রথম ও সর্মবর্থী সাজা্না আ্যায়া উল্লভির দিবতীয় সোপান।

অংশকিদ্বাব্র আগ্রহেই ধর্মদাসবাব্র ব্যলাগাল সম্প্রদায়ে অভিনয়ের সংকা প্রেলাগাল সম্প্রদায়ে অভিনয়ের সংকা প্রহণ করেন। কয়লাগালার অভিনয় কয়েই হয়। কিবলু অভিনয় ও অবকানের নেশা ধর্মদাশবাব্রকে পোয়ে ব্যাহ ইতিমধা প্রকাত কালাকিফ প্রালাকের অর্থানাক্রলা শাক্তলা শাক্তলা প্রালাকের অর্থানাক্রলা হয়। ধর্মদাস্বাব্র একখান প্রবেশপত সংগ্রহ করে উর্থ অভিনয় দেখে আসেন এবং দ্যাপটাদির অবকান মুক্ষ হল। এ বেষয়ে আরো পারদাশিতা অর্জানের ডেকার্য থাকেন।

ইতিমধ্যে গশিশচন মংগন্দনাথের চেন্টার গড়ে ওঠে ব গণ্ডার আংমচার সম্প্রান্থ বিবেই হোগালেন এবং অনাতম প্রধান উদ্যোগ্য হিসেবে কাল করেন। সম্প্রদায় সংগঠন গড়া মন্দের অন্ত সাহিছে প্রতান কলেত চারার নিবাহিত হন পরে গভিনয়ে ধর্মাপাবার্ক আগ্রহ ছিল না।

একাদশীর পর कि हो। সধ্বার সভাদের श्चादमाः । <u> ততাশা</u> रम्याः দেয় আৰ্থিক এই হতাশার মূলে 180 ACOM I भ्रथमा। वर् भ्रममा স্হায়তার भागिक बाखन माद्यवं अवस्ति नण्डामाद्यव জনা সংগ্রহ করার মূল হে তা ছিলেন यम मामवाव,।

ধর্মপুলবাব তথন কব্লিটোল। ক্রুনে শিক্ষতা করতেন। চাদা তুলে যে স্থান্য টাকা পাওয়া যায় তাই দিয়ে



কাপড় বং প্রভৃতি কিনো নিজ বাড়ীতে সিন অকিতে থাকেন। এই সময় অর্ধাননুশেশ আনক সময় তাঁক হয়ে স্কুলে পড়িছে অসিতেন। একজা ইংগ্রেজ ভিচ্মুকের সংশো ধর্মদাসবাবার পরিচয় হয়। সে জাহাজে বং-এর কাজ কগতো। ধর্মদাসবাবা খাবার বিনিম্যে তাকে রপ্তের কাজে নিয়োগ কগেন।

শাম্বাগারের ব্নদাবন পা**লের গলিতে** রাজেণ্ড পালের বাড়ণিত **প্টেজ বেন্দ্র** দালায়ত্রীর অভিনয় হলে।

স্নাল ভবনের মণ্ড**্র ধ্যুদ্দাস্<mark>ৰাৰ্</mark> নিমাণ** করলেন। তদ্যি সহকার**ী ছিলেন** যোগেদদুনাথ মিত্র।

ন্যাশন্ত্র থিয়েটারে যে স্বাস্থা দেশ্য তাব মুখ্যে ভিল ব্যক্তিস্বার্থা। মগেন্দ্রনাথ, অম্ব্রুলার বস্মু এবং প্রেইজন্ত্রের মন্দ্রাপ্রবৃত্তিক দলে নিয়ে সম্প্রদ্রাম্য অংশনির হতে চেয়েছিলেন। ধমানাসবাম্ব্রুর প্রতিবাদ কলেন অন্যান্দ্রের কথা চিত্তা কলে। ফলে ন্যাশন্ত্র আর হিন্দ্রনাশন্ত্রে সম্প্রদায় দ্বধাবিভক্ত হয়। ধমানাসবার ন্যাশন্ত্র প্রেটারের অধিন্যুক্ররের দ্বিধাব্রুর স্বিধান্ত্রিক স্বিধান্ত্রিক স্বিধান্ত্রিক স্বিধান্ত্রিক স্বিধান্ত্রিক স্বিধান্ত্রের স্বিধান্ত্রিক স্বিধান্তিক স্বিধান্ত্রিক স্বিধান্তিক স্বিধান্তিক স্বিধান্ত্রিক স্বিধান্তিক স্বিধান্ত্রিক স্বিধান্তিক স্বিধান্ত্রিক স্বিধান্তিক স্বিধান্ত্রিক স্বিধান্ত্রিক স্বিধান্ত্রিক স্বিধান্ত্রিক স্বিধান্ত্রিক স্বিধান্ত্রিক স্বিধান্ত্রিক স্বিধান্ত্রিক



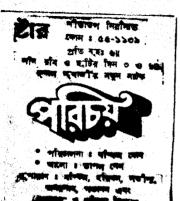
নৈত্রে নীলদপণি অভিনয় করে। খোড়াবাজাঃ রাজবাড়ীতে অভিনয় করে ঢাকা
বাস গাকায় লোকদাদ খেরে কলকাতায়
ক্রিয়ে জাদেদ। এবং পরে ভূবনমোহন
নিরোগীকে নিয়ে গড়ে তোলেন গ্রেট
দাাল্যকাল থিয়েটার। নংগল্যনাথ ব সভো
বাজায়কে এই নাটাগাহিত্তি ধর্মদাসবাব্রই গড়ে
ভোলেন। এটি ছিল কাঠের বাড়ী।

क्षके विकासिक প্রতিষ্ঠার TATA বিদেশীর শাহাব্য দেওয়া হয় না কেবলমাত জুল সিন ও দু একটি সিন गामिक मामक कट्रेसक मिलभीटक मिरश कांकारना इस्त इन। ताउँ माध्यमासन मार्टनकास दिलान वर्षतानवावः। ১৮৭৫ भ्रमीयम् नम्द्रमाद्भातं धनारमा नित्र छिन निक्री नाट्यास, काका अध्या श्रम्यन ক নপার প্রভাতি স্থান পরিভয়ণ করে याथण्डे भारिक अर्कान कतमः। कनकाषाः প্ৰত্যানত ম করার প্র ভবন'মাহন নিয়োগীর সংখ্যা মনোমালিনা হওয়াতে किছ मित जिल मृत्व थारकन।

তেওঁ নাগুলাল থিয়েওঁল প্রাবেশ্যাটন করলে ধ্যাগুলিবাব সব সময় সতক পাকতেন, ক্ষাগ্রে দুলাগুটের মধ্য দিরে পৃথকিদের চ্যাক্তে করবেন। আরব্যাগুলাক কাহিনী হাগুবাক, আলাবীন প্রকৃতিন কর্মনারম দ্যাপেটাদি প্রাথা ক্ষাপ্রাক্ষ কাহিন মনোরম দ্যাপেটাদি প্রাথা ক্ষাপ্রাক্ষ ক্ষাক্ষাক্ষ বিশ্বায় উৎপাদ্দ ক্ষাত্র।

গ্রেট ন্যাদান্তের বখন শোচনীয় অবন্ধা অথাব পদিচম প্রিক্রমন্ত্রের প্রের্বা করিছিল। আবাজন করেন। জারিলচন্ত্র বখন করেন। জারাদান্ত্র তথন করেন। জারাদান্ত্র তথন করেন। করিলচন্ত্র বখন বাল্লাদার্ভা তথন করেন। আবাজন করেন। আবাজন করেন। আবাজন করেন। আবাজনার অক্টি নাটকের ব্যাদান্ত্রা অক্টি

প্রতাপ ভাল,ভার ভিরেটাকে নাবল বধ সীতার কাবাস প্রভৃতি নাটকের দুখ্যা-



বলীতে ইন্দ্রজালের স্থিত করেন ধর্মাদ্বাসন ববে। এখানে শ্রীবংস চিন্তা নাটকে সম্প্রের দ্শা পরিবৃত্তি হয়ে বনের দ্শা ক্রিয়ে তোলায় ধর্মাদ্বাসনাব্র কৃতঃ মুল ব্যুগ ধ্যা কীতিত হয়েছে এবং হবে। বাংলা নাটকে এই সব্প্রথম ছায়োয়ায় প্রথতন করেন তিনি। ১৮৮৭ খ্টোকে ক্রারম্মতের আবিত বিকালীন দ্শো সর্ব প্রথম জোনিবাল ভারেরায়ার প্রবৃত্তন করেন।

গোপাললাল শীল গ্রেট ন্যাশনলে থিয়েটার কিনে নিয়ে এমারেলভ থিয়েটারের প্রতিষ্ঠা করলে ধ্যাদাসবাব্র ভত্তাবধানেই পিয়েটারগাহ ধ্রলিসাৎ করা হল।

হাতিবাগানে ১৮৮৮ খ্টালেদ খখন বতমিনে ভীরে গহে নিমিতি হর তার মালেও ছিলেন ধনদাসবাবা। এই নাটান-গহিটি মাত চার মাসে নিমিতি হয়।

বত মান মিনার্ভা গৈয়েটার ইখন গড়ে

তেঠে মানব্রথ নাটকতিলান্তন্ত্রের সমল ধ্মলিস্বাব, এখানে যোগদান করেন এবং বি রশচনের প্রতিটি নাটকের দৃশাপটাদির দায়িত গ্রহণ করেন।

নড়বিপুর আবিভাব শ্যানের্যা—সৃত্যু তেতা, ব্রাপর ও কলিষ্যুগের বির্তুন প্রদশন এবং কর্মোত বাঈ ন্টকে শ্রাম্বরকান প্যানোগ্যমার প্রবৃত্নি করেন ধ্যানাগ্রাব্য মেথানান ব্য ও লক্ষ্যের প্রত্যের দুশাবিলীয়ে অপ্যাব্য স্বারাজ্যকর কৃষ্টিক ক্ষেত্রিন।

কাসিক থিয়েটারে ও বংসবাধিক-4 (E) कर्जन ধ্য'দাসবাব:। ইউ নক থিয়েটারেল গঠনমালেও ছিলেন তিন। 2209 শ্টীকে কোহন্ত খিয়েটাতের মণ্ডেব দায়িত নিতেও ধম দাস-বাব কৈ দেখা যায়। কলকাজার ভদানীকতন কালের প্রতিটি নাটাশালার সংগ্রে জড়িত থাকেন ধর্মদাসবাব। তদানীস্তন রয়েল বেংগল থিখেটারে যখন গভনর জেনারেল লভ লিটন শকুণ্ডলা নাটকের অভিনয় रमभटक ज्यास्त्रत् धर्माभवाव हे वर्षभटकर অনুব্যাধে বিনা পারিত্রমিকে নাটকের न मानिहों निव निर्दाण पान विशेष मा बार कि ন্ত্ৰ নিমাণ কথেন। এই রথ দেখে স্বাই **इसमी अ**गश्मा करहता

বাংলা এই ছাবণ, ১০১৭ ইংরেজী ১৯১০ খ্ডীকো ধ্যাদাসবাৰ প্রনোক গ্যান করেন।

ধমদিক সার সম্পরে গিরিল্ডেড বলেদ ঃ শ্বগ্ৰীয় অংশন্দ মৃত্কী मण्डिमान ग्राप्त, माहन्सनान वन् कार्यक्र বেল (সম্ত মুখোপাধায়) চটোপাধায় প্রভৃতি জীবিত थ करन फेककर है वनर्टन, আম্বর করতা 🗃 পাইয়াছি প্রখংনা পাইয়াছ, See a ধর্মদাস অনেক সময়েই নেপথো।' কেহ ব। किकामा करियाणहर्म, the Marie देननाःनाः ?'-कामान मारननावाम नावेटका

দ্শাগানুলি যে ভাঁহার নাস্তব্দস্ত এ ননাভার অভিনাত চম্দ্রেশগ্রের দল্প যে ভাঁহার রংগালয়ের শেষ কায় ছায় তিনি প্রকাশ কলিতে পারেন নাই।

বেলন্ড মঠের মহোৎসবে তিন করে
বংসর উপযালিত ভগবান শ্রীগানকদের
বিংসর উপযালিত করিরাছিলেন
বার্
সংহাসন সক্ষিত করিরাছিলেন
বার্
সংহাসন করিলান
করিলান
বার্
আমি কৃতভাতার আবাধ
করনও অগ্রিয় করা শানি, নাই তার
করনও অগ্রিয় করা শানি, নাই তার
বার্ডি অগ্রার জীবনাগত প্রযাত লগ্ন

নটগুখা গিরিশচন্দের উপ্রেছ কয়েকটি জালা থেকেই বাংলা নাটাশাকা ইতিহাটো ধর্মাদাস স্থারের অবদান সংগ্রে অবাজ্যা হতে পারি।

भरश्नुलाल वम्



আম্তলাল (মুখেপাধ্যার), আর্ড লাল (বসু), মাতলাল (সুর), মহেণ্ডলাল (বসু)—এই চার লালণ ছিলেন বাংলী নাটাশালার প্রথম যুলের চার দিকপাল অভিনতা।

কর্ণবসাক্ষক অভিনয়ে মহেন্দ্রলালী বস্বাহিলেন অভিবতীয়া তিনি খ্রাফডিয়ান মহেন্দ্রলালা নামেই ছিলেন সম্পিত প্রসিদ্ধ।

আনুমানিক ১৮৫১-৫২ গ্রীকে
মহেদ্রলাল বসু ক্ষমগ্রহণ করেন। পিতা
বজবিহারী বসু ছিলেন মহামা কালীপ্রসাম সিংহদের সংজ্য আম্বীয়ত স্তে
জড়িত। ১৯০১ খ্রীকের মার্চ মার্সে
মহেদ্রলাল বসু মার্র ৫০-৫১ বংসল বর্গে
মারা যান।

সংহ্লেলাল বসুকে লিলিলচ্টই আবিকেন কলেন। এ বিব্ৰু লিনিলচ্চ্টে ভাবাতেই বলছি ঃ মাহ্ন্যলাল সংবা একাদ্দা অভিনয়ে প্ৰায়ই অভিনয়ের দিন

স্থিত হইতেন। তবে পরে ঐ সম্প্রদায় हैनावजीत' जिल्लाम केटमान करवा स्तरह য়ে মহেদুলালের সহত আমাধ প্রথম শা। কৈশোৰ কাল অতীত, ঘোষনে ্রাপত গৌরবর্ণ স্ঠাম কলেবর হুন্দ্রলাল ক এখনও আমি চলেল উপর থিতেছি। তিনি লীলাবতী নাটকে ৰটি ভূমিকাৰ (পাট[ে]) প্ৰাৰণী চইয়া াসেন। তংশ^{্বে} প্রায় ভূমিকাই বিতরিত ৰাছিল। **ভাচাকে ভোলা**নাৰ চৌৰাবীর মিকা দেওরা হয়। কৈলোর মাতি ভাব-নার্থ একটি প্রত্রেক্স গেডি দিয়া হেন্দ্রলালকে জমিদার স্কাইলায় ৷ কি পরিবতনি দেখিয়া আ্যাদের দল-ুম্ব আন্ত্রিক নাট্যোক্তিখনত ভোলানাথ াধ্যা বখন শ্রীনাথের সভিত কথোপ-পনে **মত্ত**ার ভগাীতে বলিতেন সে যে লে ভাই, তা আমি কৈ করবো।' সে ছিলাল মানিয়াছে কথনও ভূলিবে না। ভিনয়াণ্ডে দীনবংশ তহিংকে ভোশানাথ । বিশ্বী বলিয়া ভাকিয়াছিলেন।

অবৈতনিক ন্যুশনাল পিয়েটার প্রথম, বতার ও তৃতীর প্রায়ের ন্যাশনাল ধ্যেটার, প্রেট ন্যাশ্নাল বেলাল থিয়ে-ার মিনাভা মণ্ডে এবং মফঃ বলের ভাষ স্থানে স্তাধিক নাটকের বিলিন্ট গিয়ে অভিনয় করে **হাহেত্র**াল বস**ু** লক্ষেকে প্রতিষ্ঠিত করেন। এগ্রনির মধ্যে বংশবভাবে নাম করতে হয় : লীলাবডী - हामानाभ क्षित्री। नीमम्भाव --भागितमा<u>न</u> आबाहरून. পদ্মিয়ুরাণী : ভারতমাতা — মাতা। ম্বালনী — মানা। কুকুকুমারী - রানী অঙ্ক্যা। কপালকৃণ্ডলা — নবকুমার। হেমলভা — भग्नभा। म्यानिमी - दवित्रान् थिनसी। চোরের ওপর বাটপাড়ি — দারারণ। পশ্মিনী -- ভামসিংহ। করে।জনা --कर्गभातः। विववाक - जीना। महार्गम-निमनी - अभ्यान। श्रामीत मृत्य -निवाकरण्योगा द्यांचव --- देवब ७४। মারাতর — ভিত্তান: আছিলীপ্রতিমা — মহেল্র। আলাদীন — বাদশা। আশন্দ-सर्हा --- ज्ञातासर्गाज्ञश्हा सानग्यय --- जाकागा। সাভার বনবাস -- লক্ষাল। অভিযন্ত বৰ -- জয়দ্ৰথ ও আজন্ম: লক্ষ্যল বজান রামের কনবাস—রাম - mistelal 1 সাঁতাহরল — রায়। মাধবী কণ্ণণ ন্ধেন্দ্র পান্তবের ভাস্তাতবাস --वक् भः (यहमना)। जानसम्बर्धः - श्रष्ट्यन নিংছ। বসকত রার — উদর। প্রতব নিধাসন — লুফোধন। প্রতব্দ — রাজা শালীবাছন। বিবাদ — আলক। প্রাক্তা ও গালী — কুমারসেন। বিষধক্ষ — নগেশ্র। কুকুকানেতর উইল — গো বন্দ-माण। ब्रम्भी - माठीम्म । जादन वर् मानिक श्राहम्बनाम चालिमा करा श्रयाण

মহেলালাৰ বস্ 'চিতোর রাজমাতা পশ্মনী' নামে এইটি গোটনও বাসনা করেন। ३४९७ **एकीएकर ० बर्**गाई 'गाँजनी'

त्या न्यामनान विद्वतिक क्षिमीत हम। मक्त्रालात नम्मानाक्ष्य वह बास्त्र অনুষ্ঠিত হয়।

গৈরিশ্চন্দের সংকা ছভিত্রেশ্রের সময় मर्ट्स्टलाल वस् नःशन्तान्थ एएन् म्रट्स থাকলেও পরে ধর্মদাস সারের দলে যোগদান করেন এবং গিরিশচক্রের সংখ্য মিলিত চন।

১৮৭৫ খ্ভাবেল ধ্যাদাস সারের নেত্তে ছোট ন্যাদানাল সম্প্রদায়ের একটি অংশ পশ্চিম ভ্রমণে ষ্রা করলে অপ্র অংশ মহেন্দ্রলাল বস্তা নেত্ত কলকাতার भाग अफिनश कराक शास्त्र।

रवाहे मात्रमाम थिएएउएए जमानगरमय সংশ্যে মহেন্দ্ৰলাক বস্তুকেও প্ৰেলখ Colore to Dalis

১৮৭৭ খৃণ্টাবেদ গিরিলচণ্ট স্থান न्याभनाम थियापाद्यत अधिनायक, प्राटम्य-नान वज् शिविमहत्मुद्ध मृत्न धारकरा গোপতিদি শেষ্ট্রীর স্বর্গধিকারীতে ন্যাল-নাল থিয়েটার ঢাকা বকি পরে, পাটনা প্রভৃতি ম্থান যখন প্রিভ্রমণ করেন, তখন মহেদ্লাল বস্ সম্প্রায়ের স্থের যাত্ত ছিলেন। প্রতাপ ভাহারীর থয়েটারের সংবদ্য খেষ প্রবিত্ত জড়িত ছিলেন। ১৮৮৭ थ्राचीत्म्य श्रामण्ड थिताचेत्त যোগদান করেন। ১৮৯৪ খুণ্টাব্দে বেশাল কিছুদিন অভিনয় করে ১৮৯৫ খ্ণটাব্দের আগদ্ধ মাসে মিনাভায়ি খোগ-দান করেম। তখন গি রশচন্দ্র মিনাভাগ অধিনায়ক। এট সময়, গিরিশচন প্রায়-নাটকে মহেন্দ্রবালকে বোগেল চলিতে অভিনয় করাত বলেন। কিন্তু মহেপ্তলাল গিণিখাচন্দ্র অভনীত বোগেশ চরিচে অভিনয় করতে অংবীকৃত হন। গিরিশ-চন্দ্র মিন্তি পরিতাল করবেও মহেন্দ্র-नान प्रमार्खात माला गाइ शासन धार्यः **हुगौनान रम्**द्वत स्मङ्ख्य का<mark>ष्ट्रमञ</mark>्च परत्रम् ।

মহেন্দ্রলাল বসু শেব পর্যনিত স্বগতিঃ অমর দত্তের ক্লাসক থিরেটারের সংগা জড়িয়ে পড়েন এবং বিভিন্ন ন্টকে অংশ গ্রহণ করেন।

১৮৯৮ খুন্টাবেশ ক্লাই মানে ঘোষনাদৰ্ধ নাটকে লক্ষাণ চরিতে অভিনয় করেন। তথ্ন গিরিশচাত্ত ক্রাসকে। ক্লাসিকে মাকুল মাকালা নাটক আন্তৰীত इवात श्रावीर भारतमाना वन् अध्यानम् লেখালার সভেগ মিনান্ডা থিয়েটারে যোগ-দান করেন। সম্ভব্তঃ শেষ প্রশিত মিনাভাগতেই ছিলেন।

श्रद्धानाम अवस्त्र क्रम्सम् स्राप्त নেত্ৰ ছিলেন। মহেন্দ্ৰশাল সংপ্ৰেও ইতিহাসের প্রতায় খ্র বেদী মালমদালা নেই। এ-বিবরে মহেন্দ্রলালের লাম্বীয়-व्यक्तरापत ह्यागात्वाम कर्यास करा यसू-রোধ জানাই।

মতিলাল স্ক

महामाना विद्याप्टेश्वय केलाकाटनक অন্যতম মতিকাল সরেও সহেক্ষাল

ব্যার হাত পথবার একালদা বা আলৈ-नशारामा विकास ना। बाकाबाक कार्यमा नील वर्जी माग्रेरका मध्य होना मश्यक क অন্যান্য বিষয়ে কর্মতংপ্রভাগ পান্তর नित्व केरमाज्ञासम्ब जमाज्य करत कर्यमा নবগোপাল মিয় সম্প্রদারকে দি কালকাটা नाथनान बिरस्कात माध्य मध्या क कार्यन श्रभाग ग्रांडमान महस्त्र श्रम्डानकावर 'ন্যাশনাল খিয়েটার' নাম গছেটি ছব**া**

লীলাবতী নাটকে অক্তৰ্জো চৰিতে মতিলাল স্বের সর্প্রথম আজনম। লীলাবতীর অভিনয়ের পরই সম্ভালের प्राथा प्रकारकत रमका क्षेत्र विकास ম তথ্যতা সারকে তার বার্থ ক্ষিতা 'লুকুত বেণীতে 'সিদ্ধা মাখা মাজের হান' ক্র क्राक्टिक करतन।

সান্যাল ভবনে নীলদপণি নাটকৈ ১৮৭২ খুণ্টালের ও ডিলেলর রচিলাল স**ুর ভোরাপ, রাইচর**ল, গোপ ও ন**িশ্লালের** মোক্তারের চরিত্রে আত্মগ্রকাল করেন। অবিনাশচন্ত করের 'বোগা' সাহেৰের মত সারের তেরিবাপকেও কারো পক্ষে আম क्या अम्बद्ध इश्रांता अविनाभक्तम परश्रा লে:গ বিদেশীয়দের কাছে বেয়ন কভি-মাস্ত হতো, ভারতীয়দের কাছে ভিত তেখনি হতে। শিক্ষত ও নিলিক। আছি-লাল সারের ভোরাপ শ্বভাবতঃই ভারতীয়-লের কাছে হতে_। অভিনালিত। **অপ্রা**লি विटम्नीशता जहें किन्य स्टब्स केट्सिक इर्डिन। এक्षिक्यांत शास्त्राची इर् र्षाक्षमञ्ज वन्ध करत निरम्भाष्टम । अरक्राचि चर्चेमा ध-विषया हतम निममान।

সম্ভবালার প্রিকা ইণ্ডিয়ান ক্রেট্রী निकेश नवार च**िकाटना क्यानी अमेरिका** करतनः कांक्रमत काका अन्द्रामाध्यक्ष कांकाः रहतीन नातिहासमात्र योखनात्मार अधार न न्य रमदक बारम।

विविश्वकृत अवर सहाया विविध्वसूत्राधिक यागभानत गृह्यं मरश्यमाच । कामाजिः बायाद्य दक्षात करब भावक मानि महार क्रिक GCS | CHCCOM HOT HOSPITALMINE MINISTE मास्त्र नाम दशाय जानामा साम काम नाम न्याप नम्याप स्टब्स है स्टब्स् তেইলা নিউল প্রিকার এলন্সকিত ইও জান্যারী, ১৮৭৩ খুন্টাব্দের বিজ্ঞান্তীয় िर्गिष्ठास्य श्रीयमानस्याशाः।

म्यानमान विश्वपास नाममांग 😘 হিবস্ ন্যাশনালে শিক্ষাণিকত ছলৈ গ্রতিশালবার ধর্মদান সংক্রে স্তেশ। ন্যাশনাল থিয়েটায়েই থেকে ব্যক্ত। एडीब गर्जाध्य मानसम विका गेरदर क्राध्यात्रक इस क्राविकाका जुला। গম দানবাৰ আৰু নগোপনাৰ ভুকনসোহন নিবোগীৰ সংগদ গড়ে ভোগোন গোট मा नम्ब थियाणेतः

३४०० चणीत्वा व विकास विकरकार जामान स्थल श्रीविक केसेन নিজালানের পার অভিযাত ব্যাস নেয়েছ मामिनाम विद्यारीय ५४५% व्यक्तिका २० শৈল্পারী প্র'ডত গান্যাল ভবনেই অভি
কা করেন। এই সময় হেমগত। কমলে
কালিনী, নীলদপণি ম্ণালিনী নবীন
কালিনী প্রভৃতি নাটক অভিনীত হয়।

হেম্পতা নাটকে সত্যসখ্যাপ্র মতি-লাল স্মুর থখন বলতেন: ভাগতভূমি শ্রাধীন হবার প্রে প্রতাক ভারত-শ্রুমানি প্রার প্রে প্রতাক ভারত-শ্রুমানি ত হার উঠতেন।

দেষ পর্যশন্ত মতিলাল সার তেওঁ
মানুশন্তের ঘোগদান করেন এবং ১৮৭৫

শৃক্তীন্দে সম্প্রদারের সংশা দিল্লী লাহোর
লক্ষেত্রিত নীলদপ্র নাটবের তোরাপ
ও রোগ সাহেবের দশ্যে জিলত হয়ে
গোর সৈনারা মানুল্লী হয়। এবং দেষ
প্রবিদ্যান কলকাত্রা প্রভাবতান
করে। তেওঁ নাশনালা থারেটারের সংশাই
বৃদ্ধ থাকেন মতিলালবাবা। অনানাদের
সংশা সতী কি কলকিননী নাটক ভারের
সময় প্রতিশ্ব ত্রিক্তারে বরে।

গিছিশ্চন্দ্র যথন নাশেলাল থিকেটারের অধিনায়ক তথন এখানে যোগদান করে আগমনী, মেঘনাদ বধ বেতীমণ প্লাশীর যান্ধ বিবাদাগভি ও উদাসীন), দুর্গোশ্বনিদ্দনী বেংলা খা) প্রভৃতি নাটকে অভিনয় কলেন।

গোপীচাদ শেঠার ব্রহাধকারিছে পরিচালিত ন্যাশনাল খেয়েটারেও বিভিন্ন ন্যাকৈ অভিনয় কামে এবং চাকা, বাঁকীপাল, পার্টনা বেটিয়া প্রভৃতি খ্যানে পরিভাষণ করেন।

প্রতাপ কর্মীর থিয়েটারেও বি এন্চলের সংগ্ হামর, আননদ প্রে ভেমিলা; মাধবাকিকল (শৈলেন্বর) প্রভৃতি জালো বর, নাটকের বিভিন্ন চারত র্পারিত করে ভোলেন মতি সূর। কেলার চোর্মীর অধিনায়কত্বে স্পুত্রায়ের প্রভাপ, তরগলৈন বধে বাবণ চরিতে আক্ত ক্তিকের প্রিচন্ত্র দেন।

ংগাপাললাদ দীলের এনাবেও থিয়েটারে মতিকাল সার অভিনীত পাত্তব নিবাসন (ম্বিটিংর) নক্দীদায় (নান্দ) বিবাদ (মাধ্ব), লাজা ও বাণী (রাজা) অন্সানা (গোবর্ধনা) প্রভৃতিতে প্রশংসিত ইয়া

১৮৯১ থ্টান্দে মতিলাল স্ব মহেশু বস্ অতুলকুক মির এবং পূর্ণ

আলোড়ন স্থিকারী 'এছ-লে'র প্র রুগরস-এর

॥ न्वीकार्द्याङ्कि॥

নাটক/মণ্ট্র গণ্ডোপাধ্যার

• প্ররেলা/রণজিং মুখোপাধ্যার

• ই সেণ্টেম্বর ৭৪/স্থা ৭টা

ব্যানজ্গন/হলে চিকিট।

ঘোষ এমারেক্ড থিয়েটারের লেসী হন। ম তলাক সূর মানেজাল হন এই সময়।

১৮৯২ খাটাবেদ গ্রেন্ড বস্থা কেসী হন। কৃষ্ণকান্তের উইল নাটকে হরলাল চরিতে মতিবাধ্ অভিনয় করেন।

মতিলাল স্থা সম্পাকতি থ্য বেশী তথ্য পাওয়া যায় না।

ক্ষেত্ৰমোহন গাঙ্গুলী

বাংলার সাধারণ নাটাশালার গঠন
যুগের সংক্রা ধেসব নাটারথানের নাম
ভাড়িয়ে আছে, শ্বরণত ক্ষেত্রাহ্ন
গাশ্যালী ছিলেন তাঁদের অন্তম।
বেপবাবার মত ক্ষেত্রাব্র ছিলেন শ্বনচারিপ্র অপ্রতিদ্বাদ্মী। প্রোন নথিপত্র
থেকে যতটা জানা যায়, ওাতে মনে হয়
ক্ষেত্রাব্র চিকেন স্মাচিরিকের স্নিপ্র
কিছার সংক্রাব্রীস্কাভ্যা ফুটে উঠতো
নিশ্তভাবে।

বাংলা ১২৬৩, অগ্রহায়ণ মাসে বাগবাজারের ৪৯, রামকাত্ত বসা শানিটে জন্মগ্রহণ করেন ক্ষেত্রবাধী। বাল্যাশকা বাগবাজার ভান কুলা। কুলা। এখান তবি সহপাঠী ছিলেন বৈল্যাব্য পরবতী শিক্ষা আহিরীটোলার যদঃ পণ্ডিতেখ প ঠশালায়। ছাত্রবৃত্তি পরীক্ষায় উত্তীপ হয়ে উচ্চ শক্ষার জন্য ফ্রিচার্চ ইন্সিট-টিউশনে ভরতি হন। চিত্রা-কনেও তার পাবদশিতা ছিল। গ্রনমেন্ট আর্ট ম্কুলেও মিক্ষা**লান্ত করেন। ক্ষে<u>র্বা</u>ব**ুর পিতাং নাম ছিল মাধবচন্দ্র বালানেরী। नत्त्रक्तनाथ वत्न्त्राभाषात्त्रत अथमा ७ িবতীয়া কন্যা ধরাস্ভালরী ও রজ-अन्मारीत शहीभाषक हिल्ला कार्यादा।

ক্ষেত্রাব্র স্কার চেহারা দেশে
গাঁলাবতী নাটকের সমর নগোলনাথ ক্ষেত্রবাব্রক গিরিশচন্দের কাছে নিয়ে বান।
গিরিশচন্দ্র এবং নগোলনাথ উভরেই ক্ষেত্রবাব্র আবৃতি শুনে মুখে হন এবং
গাঁলাবতী নাটকে রালালকানী চারিকে নিব্দিন
করেন। রাজালকানী উক্তরাধ্যিত হয়।

নীলদপুল নাটুকে অভিনয় করেন স্বলা চরিতে। প্রয়ং দীনক্ষ্ মুদ্র নাাশনাল ভিয়েটারে লীলারভী নাটকে লীলারভী চরিতের অভিনয় দেখে বলেন : ভূমি আমার নাটকের নাল্লিকার জীবন দিবার জনা জান্মারাভো।

ক্ষেত্ৰাৰ অভিনীত নাটক ও চ'লৱগ্লির মধ্যে উদ্লেশবোগ্য হলো : লীলানতা—লীলাবতী ও রাজলক্ষ্যী।
নীলাপণি—সরলা। নবীন তপ্যিবাী—
ক্ষিনী। জামাই বাহিক—পাচিঝ। ক্ষকুমাগী—ক্ষকুমাগী। মণ্লিনী—
মনোগমা। কপালকুজনা—কপালকুজনা।
দুগোলক্সনানী—ভিলোকমা। নামদ্যা

বংশের;—নায়িক। হেনলতা—হেনলতা। নবনাটক, প্রণয় পরীক্ষা, রুদ্রপাল শহে সংহার প্রেম্বিক্স প্রভৃতি আরে বহু নাটকে ক্ষেত্রবাব, উল্লেখযোগ্য অভিনয়

কৃষ্ণকুমারী নাটকের অভিনয় দেং মাইকেল ক্ষেত্রবাবুকে মেভাবে অভিনদিত করেন, ক্ষেত্রবাবুর নিক্ষের কথাতেই ত্য এখানে তুলে দিলাম।

প্রতিন্ত্রতি ভিতরে আলিবা চিন গিরি বাংশীর নাটাপ্রতিভার ভূমনী প্রশংসা করেন। নগেন, অর্থেন্দ্র ও ভূবনবার্ত্ত (অম্তলাল) খুব সুখ্যাতি করেন। পরে আনাকে দেখিতে পাইয়া ক্ষক্মারী ইউ হয়ত ভান টু পারফেকখন। বলিয়া আমাকে কোলে করিয়া নাচিলেন।

ক্ষেত্রবাবার অভিনয় সম্পর্কে অবনাশ-চন্দ্র গন্ধোপাধারে ব্লেছেন ঃ কর্ণ বসাস্থক চরিত্রে ক্ষেত্রাবার অভিনয়ে চ্যোথ জল গাধ্য যেত না।

ন্দ্রাজ আম্তলাস লিখেছেন : মিণ্ট পার্টগালির অভিনয়ে ক্ষেত্রাব এবং একট বাজাল পার্টগালির অভিনয়ে বেলবাব অস্তলনীয় ছিলেন।

চাকার বেলিয়াটি প্রামের জমিদার
বিগতে প্রজ্ঞেন্ত্রমান রায় বেলিয়াটিতে
একটি সংখর থিয়েটার প্রাসন করলে
ক্ষেত্রাবাকে ১০০ টাকা মাইনে দিয়ে নিয়ে
বান। ক্ষেত্রাবা সম্প্রদারকে শক্ষা দিয়ে
গড়ে তোকো এবং নাদ্দারকে প্রভানতি
ক্ষেত্রশাল অভিনয় করান। প্রতিটি নাটক
ক্ষেত্রশালা লাভ করে। এখানে ক্ষেত্রাবা
দ্বাবাধ্যালি বিভান

১৮৭৫ খ্টাব্দে সমাট এডওয়ার্ড কমন ব্রুরাজর্পে ভারতে আদেন, বাঁকীপ্ৰেও তিনি এই সময় পদার্পণ করেন। ডাঁকে অভার্থনা করার জনা বিবাট এক প্যান্ডেল নিম্নাণ কৰা হয়। এই প্যাল্ডল নিম্বালের চুক্তি পেয়ে-ভালন দুগাগতি ब्राम्मामाथादाप সৌজনো বাগবাজারের ভবনাথ সেনমগার। ভৰনাথবাৰ ক্ষেত্ৰাব কে প্যান্ডেলের অংকনকায়ে নিয়োগ করেন। প্যান্ডেলটি সকলের প্রশংসাজন করে। দুর্গার ত বাবরে সংক্ষাংকরবাবরে পরিচয় হয়। ৰাকীপুরে ক্ষেত্রবাব্র দুৰ্গাগতিবাৰ, একটি নাট্য সম্প্ৰদায় প্রতিষ্ঠা করেন। এজনা প্রায় এক বছর ক্ষেত্র ব্যক্তি হার প্রাক্তে হর <u>।</u> পরে কলকাতার প্রত্যাবর্তন করলেও অভিনরে व्याशमान करतन नाः

চনিবাল বন্দ্যোপাধায় নামে কেত্র-বাব্র জনৈক আত্মীর সিমবার একটি চাকুরী সংগ্রহ করে দেন। এই চাকুরী নিমে কেত্রবার সিমবার বান। পাল তবি আর কোন স্থান পাঞ্জী বার্মি।

-कार्गाण बहुत्वानावााव

गाउँ इ नायुक



অশোক ব্যানাজি

ভাগোর ইণ্টকেশ্যনের দ্টপান। কলকারাছ চো বটেই, সারা ভারতমায় তরি মুনায় জ্ঞানো। অসাধারণ পাজসন জ্ঞান অফ্রুক্ত দা, নিখাজ টাকোনো এক কথার ফ্টুকেশ্র পারিপটের স্টেইনগান। মাঠে সভালে সহযোগী থেকোর ফার্ডকার সার্কি করে জাকো। প্রাক্তিব করে কালিলা তো বড় চাট্টিখানি জ্ঞানার করে কালিলা তো বড় চাট্টিখানি জ্ঞানার বিল্লা বিল্লা করে ক্রিম্বার করে সার্কির্বার বিল্লা করে বিল্লা করে বিল্লা করে করি স্বার্থিকার পারে পারিপির্লাকর দাবীকে প্রাক্তর বিল্লা করে। প্রিকির্লাকর দাবীকে প্রাক্তর বিল্লা করে। প্রিকির্লাকর দাবীকে প্রাক্তর বিল্লাকর আন্তর্গার বিল্লাকর সার্বার আন্তর্গার আন্ত

ক্রকাদ্ধর আবদা ভাগোক **এমলটি** । ম রি । অরেক প্রিরোজা অনেক সাধ্যায় **অনেক** লৈছেণার পথ বেয়ে ভাঁকে সংখ্যাত ইচ্ছ-নিভাবে স্থাতিক শীকো **উঠতে জলেটিল।** ভাইবের চনত মহাতা, পরিষয়ণ সাক্ত छ।रमारकत **फ**ुतिब**ल क**निर्मंद **कलाक्रम भागा**-মন। দাদ্ধ এককালের স্কৃতী পারণা ব্যাহাজ ^এই হাস্তা ধরে **অশোক্তে** ক্রব্যুত্র প্রভেল্ল মার্চে (১৯৬৪) নিজা **ক্রে** ভিত্তান । শ্যামনগর স্থেতে বেলে শেখালার তেনে বালে চেলে সোজা প্রায়ার ভারতে ত্যোলা তাৰাবাৰ বাছে। **গঞ্জে** ন্যেলার আন্তে তালোক ক্ষুট্থল স্কা আন্ত্রিক भागामाना पार्वात छाडीको जारुवा अके बार्टकार अक्षीक कलकाड़ा प्रदासायक, पार्णा रम्काम उ ভারতবে অনেক দিনেভেন। বেট পাল, পাঞা भनाकर विशे अत्यक्त अधिकार्यः মালুক শিশিব শামেরায় প্রমান্ত্রে ফাটকাল द्वादरबोक् के यूटभन अफीरक। शास करना CONTRACTOR CONTRACTOR शतुक्तिक रचरमार्थका । न**ामक भागीनाम स्वाधिक** पटला इट्सा क्री अर्थानम् पटलेट (डाल्डा) हाराहे 'केल आगल भारता के जिल्हा विश्वविद्यालम् कार्वेवल आर्थिकोश्च कार्यकार्यके প্রতিমিধিত করেন সংগ্রে। তাপেনকৈ বালে एक्स भाकाका कृष्टि।

STEMICAN SHILL PROP PAINTS SINT সারী মান্সে শ্রামানগরের নওয়াপারেকা 🖟 শিক্ষ-প্ৰিয়াহতৰ আদি বাড়ী মড়াটনেৰ স্থানিত-**ंश (शामाहस्र)। अमा अर्थाभावक समा** tacinous municipality intofer अपुरात (केन्द्रोक्ट रजन), रणकामधा सम्बद्धाना। धारेना करके कारनां क्यांक का देवटम मानुसान : मृत्यंत्र अवस्थातः वार्कावन्त्रेम**ः अवस्था** स्थान ए द असम क्यान रचनात्र अध्यक्ष भाग सा । सम्बद्ध भाग दिल्ल-बार्स्टीयनीय रेप्स्मायाह हिन्द्रश्लोतः ১৯৬৫ সালে অব্যেক পরিচার পেকে কেনেন াগাঁ প্রতিভা। পর পর দর্গট বছর ভারনেই भागरम्भा प्राप्तभक्षः विशेषक्षण्यः विशेषकेन्द्र राश्राक १५४ मारम स्मार्गक्रमहरू नाइ मिट्स क्रांक्स केव्यंद्रप्रशास क्राह्म । **स्वा**ह्म विकास गाका '95 आतम कान्य

ব্যক্তম অশোককে নিম্নে অনেক ইনাটানি
কলেছিল কিবলু নতুন জার্নি আর গারে
চালে নি। সভেতার র্টাফ তার্পার জাত্তীর
আক্ষার প্রতিনিধিত্ব সর্ব প্রথম করেছেন
১৯৬৯। ভারপর পেবে এ পার্যন্ত ব্যক্তেই
কলেছেন। এপীয় ব্যুব ফট্টবল খেলেছেন
ভিজ্ঞভান। এপীয় ক্রাব চ্যাম্পির্নশীপ
কট্টবল আই এফ এর ছারে ভেত্তান
খেলেছেন ১৯৭০ সালে। এ বছর মারদেবা
ফ্টেবলেভ অলোক ছিলেন ভারতের অনাত্র

জীবনের হামি আর কালার দুটি ঘটনা मण मा? श्राम्मही भट्टन टमम्ब्रील व्याज्य । याव ইভিডয়ার কলকাতার সদর দণ্ডরের বিল **সেকসনের** (খেসেবল) কাক[ে] ভালোক ব্যানাজ^ন **একট্র হেনে ফেললেন।** ভারপর মিনিট **ৈছেৰে নিয়ে ব**র্গা : কেট্ডের थात्नक ध्याक्षेत्र अवर भएकत मार्कत कृतिन रभाना-য়াড়ের মনে সাম দাঃখ বলে দোন পদার্থ এখনৰ আছে কি? হাটিটা জিডলৈ ভাল লাগে, ভাল খেললে ভাল সাগে। পালে বসা শক্ষর ব্যানাজিং, স্কুক্সার্ ঘোষদ্হিত্যার, প্রশ্ব সরকারের দিকে চেয়ে বয়েন ঃ ভেন্দিরই জিজেস কর্ন না, স্থে গুঃঘ কিছা, আছে কিনা হৈছিলৰ মত মাসের পর মাস থেলেই মাঞ্জি, থেলেই যাজিয় বিশ্রাম নেট. আরাম নেই। তব্ মারে মারে আনরেশর ছেছি।ও পাই। পর পর পণ্ড বার আমানের ইণ্ট্ৰেণ্যুল কলকাভার সিনিয়ার ডিভিসন শৌগ চ্যাদিশয়ন ধেলা, স্বাই অভিনদ্ধন कामारमन जानम्म रणनाधाः।

-विभाग बद्रमहाभागाम



● ८५ (काल नावकता क्यूर्यक्र

दक्षाकाटमके नाक्षा वास ।

খেলার জগতে মেয়ে

ওপেনিং ব্যাট—কেয়া শায়

বারাণসীতে মেয়েনের জাতীয় জিপেট প্রতিষ্ণোর্যভায় বাংলা দুলের <u>ड</u>ीनश्टभा গোড়াপত্তা করার দায়িত্ব পড়েছিল দমদুদের ক্রাইণ্টাচি হকুলের দুশ্য ভ্রেণীর ছাটী বেরা রাস্ত্রে তুপর, স্বামী ছিল 24:33 शकाशभारतः। कालाभागं भारते सन्तरेसन्दर्धः कारतः বেয়ার সঞ্জে দেখা হালে জিজ্ঞাসা করণায়ে, ক্রিটে খেলার ওপর তোমার কোঁক হল িই করে ২ উক্তরে শললে - পাগ্য বারারা আন ভানের কলা,দের সংক্রা থেকে খেলে অভাস করি। বাবা ভাষশ্য এ জন্য মূর । বকাবী করতেন। তার্ম স্টোব ছোট মেয়ে, তাই বাবা আমায় ভালত বাসেন খ্র। খববের বাগজে মেয়েদের কিকেট দল ভৈবীর খবয় বের হতেই বাবা এখানে নিয়ে এপেন। किशात बाबा व्हिन्सभारनत एकि क्ट्रीशाकात সংগীন - রায়া ভরা তিন ভাই, দু বেলা: अधारन करे যারা**ণুস**ীতে যাবার S1751 প্রাশক্ষক বাদল চন্দ্র এবং সালীল দাশগ্রেণতর কাচে জনাশীলন করে। এওদিনে প্রো-পারি একটা দলে - এভাবে পেলার সাংখাগ পেয়ে খবে ভান-দ হল। সেই সংগ্ৰ আশংকাত্ত হুচ্ছিল। ভাজানা বোলারদের বল কি একল হবে কিন্তাবে তার মোকাবিলা ধরবে, এই সব ভেবে। তবে, নিদেশ মত প্রথমে क्रिक्ट्रक्रम् कार्यस वल प्रत्य प्रत्य আছেত আন্তে স্থাত জমাবার চেন্টা কর্মেছ। ভারপর বলের তেল একট্ট; কমতেই সুংয়গ ঘত হোরেছি, বলে কেয়া। কেয়া বলে, খুক आयशास्त्र लक्षा करतीह तरलद रमस्य कि तरुम পড়ছে। থোঁচা-টোনা মারার চেল্টাই করিনি। ঘালি ভৌট ডাইভ করেছি।

শ্বুলের নানা শেলায় বেরা হোগ বের।

ব বলে, মেরেনের শ্বুলে শ্বুলে হাদি কিকেট
খেলার ব্যবস্থা হয়, তাহলে খাবু ভাল হয়।
থবরের কালজে ও পগ্র-পারশায় কিকেটের
নানা খবর, প্রবংশ পড়েডে কেয়ার খাব ভাল
কারে। অন্য খেলার খেকে কিকেটের ওপরই
খাগ্রহ স্বটেরে বেশা। ওর আশা, স্কুল
খেকে বি মুখন কলেজে উঠাবে তখন কলেজে
বলেজে ক্রিকেটের চচণা নিশ্চাই বেড়ে যাবে।

বারাণস্থীর প্রতিযোগিওার ফাইনাঞে ক্যোই দলের সবোচ্চ রাণ করে। প্রতি যোগিতার সব কাটি থেলা ফ্রিলিয়ে জ্যোট সবোচ্চ রাণ করার কৃতিস্থপ্ত কেয়ার।

বাংলা দল বাংগালোরে আমক্ষণম্কত ভিকেট প্রতিহোগিতার হোগালিত



বলে ঠিক আছে। এই দলে স্থান পাবার জন কেয়া শাব আগ্রহী। ভাল করে ব্যাটিং আ ফি:ডিং অনুশীলন করে নিজেকে বছই ন্দোর উপথান্ত করে জুলতে চায় কের।। তাছাড়া ঐ খেলার সাফলার সূরে আগর্ম বছর ফোরুয়ারীভে ভারত স্ফরাগত অংগু-গাঁয় মহিলা ক্রিকেট দলের বির**ুদ্ধে খে**লা^{র্} আশা রাখে। তার আগেই জান্মারণি মহিলা কলকাতায় স্বভারতীয় প্রতিযোগিতার অসর बामका अर्थ থেলার সুযোগ এখন **খুবই। সেই** সংগ আন্তারকভাবে অনুশীলন कतात्र माहिए আসকে।

জিবেও ছাড়াও কের। নাচ ও গান বিশহে। ওর হবি হচ্চে নানান দেশের ডাক-টিকিট আর মান্তা সংগ্রহ করা। অবসর সম্প্র রং ডুলি নিমে বসে ছবি আঁকে। কেরার বিশ্বাস, আমানের স্থল এখন স্বচেরে শক্তিশালী।

_933

Camam

ইংল্যান্ড বনাম পা^{কি}তান দিৰতীয় টেডট ছিকেট

লডাস মাঠে ইংল্যান্ড বনাম পাকিশ্বানের ব্যিত্বীয়ু টেচ্চ ক্রিকেট খেলাটি
অমীমাংসিত থেকে গোছে। এই ফলাফলো
জনো বৃণ্টিই সম্পূর্ণ নার্যী। ক্রেম পশুম
দিনে বৃণ্টির দর্মন খেলা আরম্ভ করা
সম্প্র হয়ান। খেলার প্রথম চার দ্ন যে
বৃণ্টির পাকিস্তানকে পরাজয়ের মাথে ঠেলে
নিয়েছিল শেষ প্রথত তারই কৃপায়
পাকিস্তান এ যাতা প্রাজয় থেকে খার
জোর বে'চে গেলা। খেলার নেয় দিনে
ইংল্যান্ডের জয়াভের জনো মাত্র ৬০ রান
জবার দ্বকার ছিল। খানের হাতে জয়া ভিল
১০টা উইকেট।

এখনে উল্লেখ্য, জিড্ডানে প্রথম টেক্টও
ঠিক এইডাবে বৃণিটাত কল্ডুল হরেছিল।
বৃল্টির ক্লানা থেলার ধ্যেয় দিলের খেলা
আবদত কথা বায়ানি। ক্লানাড্রেন করে।
ইংলাল্ডির ৪৪ রানের দরকার ছিল অবং
তাদের হয়েত ক্লানাভিক উইকেট।
স্কুডার দর্শনুবার ইংলাল্ডির
দেরবার থেকে ফিরে যেতে ছল।

প্রথম দিনে দুর্যোগপ্রণ আবহাওয়া এবং নিজেদের চরম অবংথার কথা ভেবে পাকিল্ডান ভাদের প্রথম ইনিংসের ১৩০ গানের (৯ উইকেটে) মাথায় খেলার সমা িত থোষণা করে। উদ্দেশ্য ভিজে পিডে देश्मात्काक बढणे कात् कता याहा देशमात्क খেলার বাকি সমরে প্রথম ইনিংসের একটা উইকেট শুইয়ে ৪২ রান তলেছিল। বৃণ্ট-ভেজা মাঠে পাকিল্ডানের প্রথম ইনিংসের रथनात जातन्छ छानहे इर्फ्राइन-कान **उद्देश** मा **च**्डिया ५५ वाम। अध्य धक-ঘণ্টার খেলায় তাদের ৫১ রান উঠেছিল। কিন্তু সাঞ্জের পর ইংসনতের অনুক্লে খেলা মুরে হার। তাদের ১১ বাদের মাথায় प्टा **इंट्र**क्के भट्ड-२इ. ७इ धर: ८४^८। ডেরেক আভারত্তিতের বল পাকিগতানের কাল, হলে পঞ্জিয়। মাত ২০ রান পিয়ে আন্ডারউড ৫টা উইকেট পেরেছিলেন। গ্রেগ শেরেছিলেন ৩টে উইকেট ২০ রানে।

িশতীয় দিলে ইংল্যান্ডের প্রথম

ইনিংস ২৭০ রানের মাথায় শেষ হল
ভারা পাকিশ্যানের প্রথম ইনিংসের ১০০
রানের থেকে ১৪০ রানে এণিয়ে যায়।
লান্ডের সময়ু ইংলানেন্ডর বান ছিল ১০৬
(৫ উইকেটে)। ইংলানেন্ডর ১১৮ রানের
মাথায় ৬প্ট উইকেট পড়ে হায়। দলের এই
দার্ণ সংকটে দাড়ভার সংগা খেলোছলোন
বম উইকেটের জ্বটি উইকেট কপার আলালান
ট (৮০ রান) এবং পেসু বেলান বিস্পু ওল্ড
(৪১ রান)। ভারা ৭ম উইকেটের জ্বটিতে
১১ রান তুলো ইংলানেন্ডর অন্ব্র্লে
খেলার গতি ঘ্রিয়ে দেন।

ওতীয় দিনে প্রাকিশ্তানের ন্বিতীয় ইনিংসের খেলায় ১৭৩ বান দাড়ায় ৩ উইকেট পড়ে। ফলে প্রকিস্টান ১৪০ বানের ঘাটতি প্রেণ করে ৩৩ রানে এগিরে বায়। তাদের হাতে জন্মা থাকে শ্বিতীয় ইনিংসের ৭টা উইকেট। অসমাণ্ড ৪থ চেনেক আন্দান্তিত পাকিম্তানের বিপক্ষে ২র টেন্টে ৭১ রানে ১৩টা উইকেট পান (১ম ইনিংসে ২০ রানে ৫ এবং ২য় ইনিংসে ৫১ রাণে ৮ উইঃ)



উইকেটের জ্বটিতে ম্পত্ত মহম্মদ (৫৫ রান) এবং ওয়াসিম রাজা (৪৪ বান) ৯৬ রান তলে অপ্রান্তিত থাকেন।

চইর্থ দিনে পাকিশ্রানের শ্বতীয় ইনিংস ২২৬ রানের মাথায় শেষ হয়। এইদিন ভারা বাকি ৭ উইকেটে মাত্র ৫৩ রান তুলেছিল। শ্বিতীয় ইনিংকের খেলাতেও পাকিশ্রানের ফাল হল্পে দীভ্যয়ে

স্বংন হল সতিয়

মুখ লাল করে একটি অভিজ্ঞাত দোকান থেকে বের হয়ে আসতে আসতে চাষীর ছেলে উলওরার্থা লাতে লাত চেলে প্রতিক্সা করেছিল সে অলমানের লাথ নেরে। তার দ্বংনসাধ কিন্তার স্বাংশকর চেয়েও আদচ্যা বাদ্যতবে পরিণত হ'ল ?

অন্: ধ্ৰেজ্যোত সেন

আকাল ছোৱা আডতজ্ঞার গিরিজ গেবনুর প্রাণ্ডরে বিভাগিকার দৈলে টাইমারের জগালে সংতডিভার রাজ্পীপ রাধীক্ষাধার চট্টোপাধ্যার

ন্ধশিক্ষনাথ চটোপাথ্যন ম্ভিন্থে দ্বপদা প্রতিটি ব্রী টাকা ব্যক্তিয়ার ভাকে কিলোরবের জন্য টিপি লকলিন ৬

অন্ঃ এগান্ধী চটোপান্ধার

চালি চ্যাপলিন ১

চত্ৰ সহযাত্ৰী থ

ভূত চত্ত্দ'শী ৬্

উম্জন্ত ঘোষ

একি সতি ৭ ব

প্রীভূমি পার্বলিশিং কোম্পানী ॥৭৯ মহাতা গাংধী রোড, কলিকাতা ৯

ছিলের আশ্ভারটভ। চতর্থ দিনে পাকি-স্কানের সাত্তি উইকেটের মধ্যে আন্ডারউড **একাই মাত্র ৯** বান 'দ্বে ৬টা উইকেট পৈয়েছিকেন, শিবতীয় ইনিংসে তিনি ৫১ कारम छो। छेटाकडे भाग। मारे हे नश्यम খেলায় আন্ডারউড মার ৭১ কান দিয়ে ১৩টা উইকেট পেয়েছিলেন (১ম ইলিংসে ২০ থানে ৫ ও ২ছা ই'নংসে ৫১ রানে ৮ ক্রিকেট্র। প্রতিক্তানের স্কুট্রেক মহাম্মদ একাই যা লড়ে যান। তুমি ৭৬ রান করে खाकुँ इन। 5कु**श** केंद्रे(करवेत क्रिंड ভ্রাসিয় রাজা (৫০ খান) এবং স্মুটাক য়ত্মাদ (৭৬ বান) দলের অভি ও সাবান ৯৯৫ রান তুলোছলেন। ইংল্যান্ড থেলাব ক্ষার্যাল ডের প্রয়েক্ষনীয় ৮৭ বান উপতে দিবতীয় ইনিংস খেলতে নামে এবং বাকি সময়ের খেলায় কোন উইকেট না খুইয়ে ২৭ বান ভূলে নেয়। জয়লাভের প্রয়োজনীয় ষ্যান্ত ৬০ বান তুলাতে হাতে। জন্ম। থাকে ५०मे हेड्राकडे जावर भारता जार्ममस्त्रेव খেলাব সম্ব।

শেষ প্রেল দিনে বৃণ্ডিব জানা খেলা জারণত হ্যান। ফলে খেলা অস্থানিং সং থেকে যায়।

अश्चिक•क दश्कान

পাকিশ্চান : ১০০ রাল (৯ টাইকেটো ভিক্রেয়াভা সাদিক মহম্মান ৪০ এবং মাজিল খান ওচ হাল। আন্ডাবউত ২০ বানে ৫ অবং গ্রেগ ২৩ নানে ৩ উইকেট)

২২৬ বান সেদিক স্নাহক্ষাদ ২৩, মাুক্তবি

সহক্ষাদ ৭৬ এবং এরাসিম রাজা ৫৩

রান। আক্তাবেউভ ৫২ রাণে ৮ উইকেটা

ইংল্যাণ্ড : ২৭০ রাম । সাংলান নট ৮০. ভুল্ড ৪১ এবং এড বচ ৪০ খাল। আসিফ গ্লাসনুদ ৪৭ রানে ৩ উইকেট) ও ২৭ রান (কোন উইকেট না পড়ে)

ভলভো টেনিস প্রতিযোগিতা

নিউ গ্রামশায়ার ভলভো টেনিস প্রতি-एं निकार भिन्तनम काईनाटन ५२० वाष्ट्राहे বড় কোন্তার (আন্টোলিয়া) ৬-৪, ৬-৪ ও ৬-৩ গেন্সে হনং বাছাই হ্যার্চ্ড স্পোত্সনকৈ ্মামেবিকা) হাখিয়ে প্রেগ্কার হিসাবে পেয়েছেন নগদ ১ চাঞ্চার ভলাব এবং একটি নতুন ভলভো ঘোটৰ গাভি। তাছাড়া ভাৰ্লস খেতাঃ জয়েৰ সাজে হিলি আনভ ১২০০ ভলার নগদ প্রেছেন। এখানে ট্লেখা, রড কেভাগ টেনিস খেলার ইতিহাসে সর্বাহক অর্থ উপার্জনকারী থেলোয়াড়। **আলোচা প্রতিযোগিতার এক**দিকের সেগিন ফাইনালে লেভার ৬ নং বাছা জন আলেক**ক্তা**•ডাধ্যকে (অস্টেট্রসিয়া) করেন। অপুর দিকেব সুস্মি-ফাইনালে গত **ন্তবে**র বিজয়ী এবং ও নং বাছাই বিজয় অমুত্রাজকে প্রতিসূক্তেন আমে^ররফার ওারতে স্লোখন। বিজয় অম্ত্রাজ গ্র বছর এই আসরে সিংগলম খেতার জয়েন পথে বড় লেভার, জন আসেকজণ্ডার এবং জিমা কোনস্কৈ তারিছে রাতাবাত আন্ত-ভাতিক খলাত লাভ করেছিলে।

আমেরিকান ক্লে কোর্ট টেনিস প্রতিযোগিতা

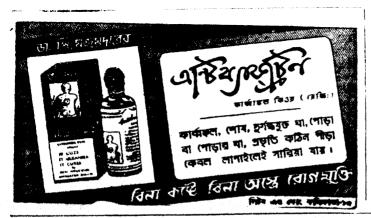
চায়েরিকার জাকীয় কে কোটা টেনিস পুতিরোগিতায় প্রিয়ারের সিধালমে জান কোনস এবং মেরোদের সিধালমে কোনসোর কাগ্যকত কুমানী ভিস্কভাটি চ্টান্সিয়ান তার্কেন। কোনসা এই সিধালস যেতার জার্ব সাতে নগদ ১৬,০০০ ভলার প্রেয়েজন।

এশিয়ান গেলস

ত্রেচখানে সংক্র এশিয়ান ত্রু ভালের জ্ঞানাম**ী ১লা সেটেম্বর বস**ছে 😖 ্রাস্থের ১৬ রক্ষের খেলার মাচ বক্তাল থেকায় অংশ গ্রহণ করবে চলা দলে পতিযোগী সংখ্যা ১৩০ জনঃ কম'কত'া, কোচ, রেফারী পুড়তর সংখ্যা ৩৮ জন। ভাবার , ১৬৮ জন সদস্যের দলই এমিয়াল ৫০ ভারতের সব থেকে বছ দল। এর ভারতীয় দলে যে **৭ জ**ন **ছো**লে ^{ুর্ন} হয়েছেন ভাদের মধ্যে কাল্যানী আ মাত্র একজন-জীব্রপা চ্যাটাজিল হ ট্রোখা, আাথুলেটিকস থে ২৮ জন 🕾 ২২ ও মেয়ে ৬) নিব্যচিত হয়েছেন 🕆 মধ্যে **শ্রীমতী রপো চ**টটাজ এব বাংগ্রাজী ঃ

বিভিন্ন বিভাগে নিবাচিত ভবং ক্রীড়ানিদদের সংখ্যা এইরক্স হ হ লেটিকস ২৮ জন (প্রেষ্থ ২২ ৮ মী ৮), থাক ১৮, ফ্রাটবল ২০, ভালবল : টেনিস ৩, ব্যাড্রিটেন ৫, বর্ষাসং সাই কং ৫, সমুটিং ৬, ভ্যাট্রিশালাল । ড়াস্ট ১৫ এবং ভারোকেলেন ১।

আসল ৭য় এশিয়ান গেমসে 🧦 एमाधारतस्य करल अस्तुष्केत्स्य शुप्राह ध নেভে গেছে। স্দীঘ্ ১৬ বছৰ পৰ ট আনত হ'বিত্ৰ <u>क्ष्मिला क्ष</u>ीरन করছে। স্থরাং ভাদের সাফলা স^{ুহ} আংগ থেকে কিছা বলা খাুবই শ্র: ⁴³ ট্রেখ্য ভাপান এশিয়ান গেমসের প্র চাসেরে প্রথম স্থান পেয়ে এসেছে। কোন দেশ জাপানের সভ্যে সমানে ^প দিতে পার্কোন। ১৯৭০ সালেশ জাৰ্যান গেমসে শী**ৰ্ষস্থান** অ^{হিক} ভাপানের যেখানে ছোট পদক সংখ্যা ১৪৪ (শ্বণ² ৭৪, রে)পা ৪৭ ও 🤚 ২০), সেখানে ২য় স্থান, আধি🕬 গ কোরিয়ার ছিল ৫৪টি পদ্পূর্ণী রৌপ। ১০ ও রোধ ২৩) এঞ্জি ৫ম দ অধিকারী ভাগতের মোট পদ্ৰ ছিল ২৫টে (স্বর্ণ, ৬, রৌপা ৯ ও রোজ ১ ভারতের পদক জয়ের খতিয়ান ঃ স্বণ স্বৰণ ৬ (আগথলেটিকস ৪. কৃণ্ডি > বকসিং ১), রৌপা ৯ (আন্থলেটিক্স কৃতি ১, হ'ক ১, ওয়াটারপ্রেলা ১ বৃশ্সং ১) এবং ভ্রেঞ্জ ১০ (জ্যার্জেট ৫. कृष्टि ७ श्रुपेयम ১ छ हैसा पेर ১)



Nero's BE-189-BE N poorooooooo

CONTRACT STATES OF STATES	এখাবে কাট্য

- আশালাকে বা করকে ববে।

 নিচের বেওরা চরটি বক্তবা সভা বা বিখো বিচার করে বেইমত নিবিট কারগার ৺িটিরু বসিরে দিন।

 ক্ষেত্রতার বিজ্ঞান বা ছিলিতে বালাক লাইটিং-এর সংক্ষে জনধিক ১০ শক্তের ভেত্তৰে একটি বাক্য লিখুন।
- मन्त्र्व अरवन शब्धि वाकाक बाइहिर कन्द्रोके (शाके वात्र मर ३०३६%, (बाचाइ हरू ००), हिकामाइ गाठाम ।
- ঘোষার তেত তত্ত, (কমানার শাঠাক। জাপনার অধেশপত কুল্ফার চলে বাজাল লাইটিং উৎপাদনের **বন্ধ আপনাতে** একটি ১০% ডিলকাউক্ট কুপন পাঠানো হবে।

सारम् गुल	। (संड	
अकाकः विशिष्टि	लाइहि	
फट्बद कला) सब काहि स		

	रक्षा	সত্য	বিখ্যা	टकरन है:ब्रांक या विकास याका नि ष् म
	>। বোটের ওপর সুরেদেন্ট টিউবের চেত্রে সাধারণ বাবে ধরচ কম।			
Į.	২। ৰাজ্যক্ষ বাৰ আৰু টিউব সাহা বিবের দেৱা জিনিবের সংজ্ব সমস্তাবে ভুলনীর।			
Gatta eife	 ১) ২৩- জোন্ট মেইন্স সাপ্তাইতে ২৩- জোন্ট বাৰ ব্যবহার করনে সবচেরে বেলি বক্তা অক্তিত হয়। 			वक् व्यक्तरह व्यक्त विश्व इ जाव
9	🗷 । বাজাজ নাইট ল্যাস্থে এক বঙীয়ে পুঞ্চ পাওয়ায় ধরচ হয়।			विकास
	ৰ। ৰাজাজের সাধা ভোটিং দেওয়া বাছ বিভি হোৱাইট নামে পরিচিত।			~ ~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~
Ĺ	🗢। ৰাজাজ কেবল লাইটিং উৎপাদন বিক্ৰেতা।			जी/नुसर

পুরকার

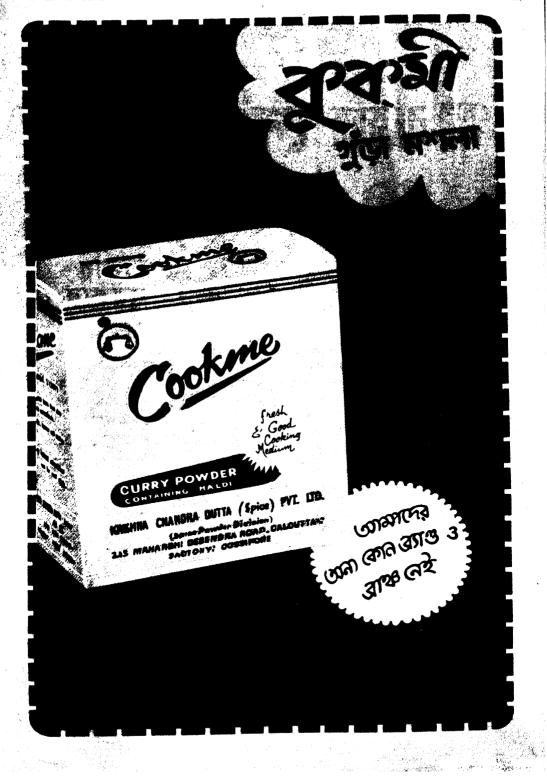
- L DE MERTE -- TIME SETE
- 8 रत भूतवात--नामाम कृष्टिर स्वक
- Lo on gamia-aimim einin Gonin (Blan ein)
- ১०० मान्नः प्रशास---वाकाक किलाक (अमार कुकार e.e निष्ठार
- वासास जाडेड सिंड न्यान्य-अध्य ५०० श्रादम नास्त्र कड

- ্ৰালাফ ইলেক্ট্ৰক্যালন্ লিঃ, ভাবের বিক্রেঠা ও এ৬ডারটাট'লং একেকের কৰ্মচারী ও আছীব্যক্ষম এই প্রতিবোগিতার অংশগ্রহণ করতে পারবেম বা।
- ক্ষতাবা ও আছারবলন এই আওবোনসভা আনতজন ক্ষতে সাধ্যের একজন ব্যক্তি কেবল একটিয়াত প্রবেশপত্র পাঠাতে পারবেন :

 প্রবেশপত্র হারিয়ে বাওয়ার, মই হবার বা বেরিতে গৌরুমোর কয় কেবি
- বারিত এচন করা চবে না। দর্বশ্রেষ্ঠ বাকা সক্ষমে বিচারকবের সিদ্ধান্তই চুক্তাত।
- नव्यात विद्यातात्वम काम्याम्बद सामादमा १८५।

শেষ ভারিখ ৩১শে আক্টোরর ১৯৭৪ distrib

Phone 55-5231 (14 lines)



সম্পাদক শ্লীভূৰাৰকাণিত বোৰ /

म्बा ६० भवजा

৬ সেপ্টেমর ১৯৭৪॥

क कार्याफर्निकेलियास

তেট কাশক্ (বায়ার কেক কমের সকারের তুনবায় ১২ জণ বেশী কাশক বেয়—স সে হল যে ধরণেরই ফেক।

त्मिर्क कामक् (प्रमुक्ति मार्केटान मारा निमा बीत — धा तमा महेत्व मारव तम्बन तमे तमा स्था क्षा बुद्धा वि अवि सम्बन्ध सारव महत्व बुद्धा वि

क्षेत्र-(क्षेट्रे हाग पुरत गतिकत कतात अवसारीका । गाउँठात, गतिका किंत्र क्ष्मिकत स्था।



ना क्यति जिल,ना भाष्यन् – बसत खखन एएऐन् ऐडक्टे ऐड्भाएत

Shilpi HPMA 5A/74 Ben

একলেটে অভিনয়োপ্যোগী স্বা-প্রকাশিত ক্রেক্খানা বভ-নক্ত প্রাণা নাটক	भूगान्त्र नहीक ॥
জনপদ वधद (६ नांती) ६-००	উমানাথ ভট্ট চাবে ^{ন্} র অণিনকোণ (২ নারী) ৩
	मामा कारमन ७-५०
অণিনমিত্রের	দিলীপ মজ্মদারের
~ ~	रंगानाभ कोंगेत भूकुर 💛 👯 🐠
পটভূমি দ্শ্যমান(১ नाती) ৫.००	সন্শীল সেনের
विद्वास सर्वे । जास	ভলপোন (২ নারী) ৩,
রবীন্দ্র ভট্টাচার্যের	কিবণ সৈত্তের
	শেষ কোথায় ? (৩ নারী) ৪
আমার জননী (২ নারী) ৫-০০	বৈদানাথ চক্লবত ^{্ৰী} র - আমি ক্লীতদাস (২ নারী) ৭
जानात्र अन्तर्भ । 🕔 🐃	
ATMIANIN POLICE	করেন্টে প্রেন্ড্রত একান্ফ রবীন্দ্র ভট্টাচংযোর
রাধারমণ ছোবের	চুপ সভিঃ বলছি
भाषावभी ते अमावली (5 नात्री) 8:00	সম্ভবামি ৫-০০
न्य भारत । स राया विद्या (আমায় বচিতে দাও
	भःवाम विद्यार्षे
র্ণ-দ্ব দ্ব ডি(১ নারী) ৫-০০	র জনকুমার খোষেব
J J	त्र अन्य भाग्न त्यात्वः त्रिकामहरमञ्जू केरण्मरमाः
রতনকুমার ঘোষের	भिष्ठ विहास (२য় সং)
A =	
এই দশকের মঞ্চে (২ নারী) ৪০০০	त्रभाम सम्भारम भाभ-भाग (५४ मध) ६-७०
*	11.12.16.10 (KM -14)
अकारमध्ये का करणा भारता है ।	সোনালী দৰ∘ন সময় প্ৰস্থা ৩-৫০
একলেটে অভিনয়োপযোগী আমাদের জন্যান্য প্রশিগ নাটক	च्याम अस्त्र।
রতনকুমার ছোছের মনেক্স মিনেক্স	পারখাটায় দাঁড়িয়ে
সকালের জন্য নেকড়ে (২ নারী) ৪্	त्राकात वाफि क्छन्त ८-८०
(৪ র্থ সং॥ ১ নারী) ৫, বাবাবদল (৪ নারী) ৩,	ঘৰনিকা পতনের জাগে
অম্তস্য প্রা: অণিন্মিতের	विव्यवस्था 📗 🐫 ६-६०
(২য় সং॥ ৩, নারী) ৩ ় নিজম্ব সংবাদদাতা (৩ নারী) ৪,	মহাকাৰ্য
ফেরা (২য় সং 11 ১ নারী) ৩-৫০ ফাদ (২ নারী ৫·০০	ত্তীয় কণ্ঠ ৩-০০
क्रिकेट (अर्ग चर १) व्यक्ति (४ नोगा) ७-५०	বাবলমু দাশগা্তের
्याहर जातु विवादश्य	ধ্ৰতারার আলোয়
	স্র যেখানে ছন্দ খোঁজে
	কেন এই অৰক্ষয় ৩-০০
	यथन वृष्णि नामन
ভোরের মিছিল (২ নারী) ৪্ নিছত নিয়তি (২ নারী) ৩	তপনকুমার বোষালের
দোহাই হাসবেন না (২ নারী) ৪্ চিতাভস্ম (৩ নারী) ৩-৫০	রভাত নগর
भा ^र नेप ्ट ल्ब	অন্য প্ৰিৰী
াবীন্দ্র ভট্ডেথেরি অন্ধকারের নীচে স্ম্ প্রতী মন ক্ষেত্র সম্প্রতীয় ব্রুক্ত স্থান্ত স্থানি	মনোজ মিত্রের
कार्य कर्म दुर्गास् स्वाम (२ गात्रा) ००६७	8-00
1110 G-11	हाश्युत्त हर्भ्युत
গ্ৰুগ পদ বস্ত্ৰ মলাটের রং মৃহ্তে (২ নারী) ৩,	অ:গ্রভুকের
শাচা (২ নারা) ১ ,	চলন্ত ভাণ্ডার
	भर्नवार् छ
א הני שיעש ורישורי	পর্যে বন্দের পাধ্য রের
निर्माणः (उन्ता) एक्ट देशवी शक्त न (उन्ताता) ए	উজান (সাতটি একা•ক) ৪-০০
S = 3 9	
রবীন্দ্র লাইবেব্রী ১৫/২, শ্যামাচরণ দে শাটি, কলি কা	তা-১২ 🏗 কোন : ৩৪-৮৩৫৬ 👚 📗
	3

निश्चभावली

विद्यान विद्याल

क्षिथकरम्ब श्रीक

- **३। राग्रास्ट सकारमद सामा दर्शाहरू**
- ই। शिवित्र तहत्व काग्रहात এक शुक्तात শকে। গ্রহপণ্ট ও দ্বোধা হস্তা-প্রকাশের জলে লহীত হয় না।
- O I রচনার সংখ্যা লেখাকের নাম ঠিকানা না থাকলে আমতে প্রকাশের জনেং গ্রেকি হয় না

এজেণ্টদের প্রতি

এভেন্সীর নিয়্যাবলী তবা লে अस्त्रीकोच सामग्रामा कथा सम्मार्थ

গ্রাহকদের প্রতি

- \$। গ্রাহকের ঠিকানা পরিবর্তদের প্রন্যে অস্ত্রত ১৫ দিন আরো শহরেক জাষালিয়ে সংবাদ দেওলা আৰ-न्ध्रीक ।
- । হ। ভি পি-তে শতিক। পাঠানো হয় নাঃ প্রাহমের হানা না- 'র'থান্ত হারে মাণ-অভারবারে অম্ড काराजिट्य शाहात्मा व्यवनाक।

চাদার হার

কলিকাকা ব্যবিক होका २० ०० होका ७०.०० টাকা ১২ ৫৫ টাকা ১৫.৫০ ৰা•মাষিক **টে**মালিক होका ७.२६ होका ४.००

> 'অম্ত' কার্যালয় ১১/১. ब्यानम्म ह्याहोस्ति दलन. र्यानकारा-0

ফেনে : ৫৫-৫২০১ (১৪ লাইন)

नाथ क অভিনয়ের জনা চাই ভাল নাটক नामका असकारमञ নীহাররজন গুলেতর বড়ো পিসিমা (হাসির) ৪০০০ দ্বই রাত্রি ₹.60 বাকি ইতিহাস 5.26 শম্ভ মিত্রের न्यीन मृत्थाभाषाहम् चारि 0.00 আজকের নাটক (হাসির) ৩০০০ कमिका बार्यन গল্প বল্ব (হাসির) ৩.৫০ চারানো চিঠি (হাসির) ৩.০০ তথাস্ত 8.60 গংগাপদ বস্ অমিত্রাক্ষর 03.0 ৩.০০ অন্ধকারের ব্.ও C.60 বাঁধ ৩.৫০ অংশীদার তোমার হোল সুরু 8.00 শৃশ্ভ মিত্ৰ ও অমিত মৈতের भ•दे, গ**েগা পাধ্যামের** ৩.০০ অমাবস্যার মৃত্যু কান্তনকুগ্গ 0.40 জীবন জিজ্ঞাসা ৰীৱেন্দ্ৰ পালচৌধ্ৰীৰ 9.00 আজ অভিনয় বৰ্ধ **২-৫০ নায়কের সন্ধানে** (একাজ্ক) ৩-৫০ - প্ৰ^{শ্}ণ তালিকার জন্য লিখনে --গ্রন্থপীঠ, ২০৯বি, বিধান সর্রাণ, কলিকাতা - ৬ ॥



১৪ বর্ষ

The state of the s



সংখ্যা ১৮ মলো—৫০ প্ৰস্

'ইণ্ডিয়ান জ্যান্ড ই ীণ' নিউজ পেপার সোনইটির সদস্য'

Friday, 6th September, 1974 "GFTM, 30 WIE, 3083 50 Paise

স্ক্রচিপত্র

भ्यो विवय

লোখক

৬ সম্পাদকীয়

৭ কাছেই কোখায় কোকিল

(গল্প) শ্রীশংকর দাশগ্রুণত

১১ कनकाका, कनकाका

শ্রীকৈমিনী

[>]२ **এই बाःलाब धवब**

গ্রীদেবদত্ত

১৪ পটভূমি

জন আক্রাক হরি লামা

১৫ সাইপ্রাস

১৬ प्राचित्राम

গ্রীপ_•ডর্বীক

২৮ আছে৷ কি. রেসকিউ পার্ট

(কবিতা) শ্রীনবনীতা দেবসেন

১৮ বোডাগালো

(কবিতা) শ্রীরত্যেশ্বর হাজরা

১৮ কালরাতে

(কবিতা) শ্রীশৈলেন গণেগাপাধায়

२५ स्मर्टे भव शानस्य

(উপন্যাস) শ্রীমনোজ বস

সারদা-রানক ফ

ৰাপালতৰ—স্বাভিগ্সাল্যর জীবনচ্বিত। গ্রন্থান্ত সাম্প্রকার উৎকৃত্য হইমাছে। ব্যাহিত শোভিন্ত সম্ভ্রম মন্ত্রণ—৮

গোরীমা

গ্রীবামকুক শেষার অপ্র জাবন্দ্রনিত আনন্দ্রবাজার শানুকা দেই হারা জ্রাতির ভারো শতাব্দার গতিহাসে আবিস্তাহন। বহালিকার প্রমান্ত্রনা

पूर्शामा

শ্রীসারদামাতার মানসকনাার জীবনকথা বেতার জগং:--অপর্প তাঁর জীবনাকেখা অসাধারণ তাঁর তপশ্চর্যা। বহুচিচুস্য ৮:

সাধ্ম-চত**ু ত**টয়

প্রামীজী-সংহাদর মনীবী মংহারনাথ দত্ত নহাশবের মনোজ রচনা।। প্রিবৃধিতি দিবতীয় সংক্ষরণ—১-২৫

সাধনা

বস্মতীঃ—এমন মনোরম স্তো**চগীতি-**প্রতক বাংগলায় আর দেখি নাই।। পরিবধিতি ষতী ম**ল্লশ—৬**-

सीसीमाव (एश्ववी वास्रम

২৬ গৌরীমাতা সরণী, কলিকাতা-৪

দ্বতন্ত্র আভিজাত্য নিয়ে প্রকাশিত হচ্ছে এবারের

শারদীয়া



থাকছে: ৮টি উপন্যাস, ৮টি বড় গল্প. ১৫টি ছোট গল্প, তিনটি চাণ্ডল্যকর সচিত্র ফিচার, '৭৪এর সর্বাধিক ব্যয়বহ^{ন্}ল ছবির আউটডোর ও পাতায় পাতায় চিত্রতারকাদের রঙীন ছবি, লিখছেন:

সমরেশ বস্
শক্তিপদ রাজগারের
চিরঞ্জীব সেন
ডাঃ বিশ্বনাথ রায়
তারাপ্রণব রক্ষাচারী
বোশ্মানা বিশ্বনাথম্
বিভূতি চক্তবতী
গান্ত

সৈয়দ মুস্তাফা সিরাজ অতীন বল্দ্যোপাধ্যায় তারাদাস বল্দ্যোপাধ্যায় শংকর দাশগ্রেত শেখর সেনগ্রুত দৈবপায়ন জয়ুক্ত দত্ত

মায়া বস

ডাঃ ভবতোষ গ্ৰ*ত প্ৰশানত চক্ৰবড়ী দীপংকর সেন সরসী সরকার অমিয়ধন ম্থোঃ প্ৰমীলা রায় চৌধ্রী অসীম চক্ৰবড়ী সবজিত বস্ব

সনংকুমার বন্দ্যাঃ
শ্রীতারাশংকর
জয়দেব রায়
শ্যামাদাস মুখোঃ
বারী দেবী
কালিদাস রায়
রঞ্জিত জ্যোতিষার্শব
কনিষ্ঠ পাশ্ডব

একটি চাণ্ডল্যকর অ্যাডভেণ্ডার কাহিনী লিখছেন **ৰীর, চট্টোপাধ্যায়** থাকছে অন্যান্য সিনেমা পত্রিকাকে অডিন্যান্স জারী করা দ_{ন্}টি ফিচার ঃ বেশ্ললী সেনিউমেন্ট ও বোশ্বাই ফ্যানটা স। দাম ই ছয় টাকা মান্ত ।। সীমিত সংখক কপি ছাপা হছে, এফেন্টাণ সম্বর যোগাযোগ করন ।।

কালিয় ।। সম্পাদিকা ঃ গৌরী গভেত ।। ২০বি, ব্লোবন মলিক লেন, কলিঃ-১; ফোঃ--৩৫-২১৩৪





व्यागलकी है हैशा

কেশের পুটিউসাধন ও কেশমূল সুদৃত্ করে। কেশের সজীবতা ও খাভাবিক বর্ণ ফিরিয়ে আনে। কেশপতন ও অকালপকৃতা রোধ ক'রে ঘনকৃষ্ণ সুন্দর কেশোদগমে সহায়তা করে। মস্তিক রিগ্ধ ও কর্মক্ষম রাখে।



সাধনা ঔষধালয়



স্চীপত্র

পষ্ঠা ਰਿਸ਼ਸ਼ ২০ চিত্রিপর ३७ वृतक-वृतकी ২৬ এরাও পিছিয়ে নেট ২৭ অলোকিক জলমান ৩২ সাহিত্য ও সংস্কৃতি ৩৬ সেক্তালের সংগতিগুণী ৪০ বাজাৰ ৰাজা ৫০ আৰ্থিক প্ৰসংগ ८३ अञ्जना ৫৪ র**্পদীর খাতা ८८ भवरहरण्डत इस्राम्या कीवन** G & 47.445 ७० व्यक्ति (क ? ৬২ জলসা ৬৩ পেশাগার ৬৫ জোৰ থেকে বলছি ७४ बान्बाई झिएल्स्स कड़ा ७३ फीडिंड अश्वाम ५० **७** श बर्जन ৭২ বারোকেকাপিক ৭৪ শতৰ্ষের প্রবণীয় १५ शारवेत नाधक ৭৯ খেলার জগতে মেয়ে

५० रचनाय मा

লেখক

শ্রীকৃষ্ণ সেনগ্রুত
শ্রীকৃষ্ণ সেনগ্রুত
শ্রীকৃষ্ণ মজ্মদার
(উপনাস) শ্রীজরংকার্
শ্রীজরংকার্
শ্রীজরংকার মুখোপাধার
শ্রীপ্রভাতদেব সরকার
শ্রীশান্তিপাল মুখোপাধার
শ্রীজ্ঞাল চৌধ্রী
শ্রীবর্বাণানী
শ্রীগোপালচন্দ্র রায়
শ্রীক্ষপণক

(গণপ) শ্রীরেখা বড়ুয়া শ্রীচিচাপ্রাদ শ্রীচিন্তাদ্ত গট্ডিও সংবাদদাতা শ্রীকভিথিং

> শ্রীনিম'ল ধর শ্রীরজন মজ্মদার শ্রীকালীশ মুখোপাধাায শ্রীবিপাল বল্দোপাধাায শ্রীবিপাল বল্দোপাধাায

প্রকাশিত হল সৈয়দ মুজতবা আলী-র

শহর-ইয়ার

বহু প্রশংসিত উপন্যাস

সৈয়দ মুজতবা আলীর অমর গ্রন্থরাজি

कूलनाशीना ३२००

শ্বনম ৮০০ অবিশ্বাস্য ৬০৫০ মুসাফির ৯০০০ কত না অশ্রুজল ১০০০ হিটলার ৭০০০ ধ্পছায়া দ্বন্দ্মধুর (রঞ্জনেরসঙ্গে)

ৰিশ্বৰাণী প্ৰকাশনী ॥ ৭৯/২বি, মহান্মা গান্ধী রোড ॥ কলিকাতা-৯

বাংগা ক্রীহতে বিশ্ব অবস্থান । বিশ্ব পূৰ্বী জ্ঞানী মণীবাঁলের সমাগ্রে প্রেক্তির ডক্টর রাধাক্তান ব্ৰ-শ্টিটো প্রিটনাজ প্রেক্তার প্রাপ্ত কবি কালা সংপিরে ও ইংল্ডের রাজ্যানির মেসীথলাজ) এব, ব্রেকাপাল্যমেন্ত্র

অপ √র্বীত ব্লা ১৮ টাকা উপনাল ৯৪৮ শ্ডা। বৃহং চিন্ডাগমী সামালিক উপনাল। প্রেম ও প্রাণের মহান প্রকাশ। বৌধনের ঘাত, সংবাভ ও প্রতিকাত।

গীতিকাব্য। মূলা ৫ তেওিট গানের সমাবেল। রবীণ প্র প্রতিকাদীণত স্লণগাতের ধারা। সণগীত সাধকদের অবশা দুন্টর। রবীণ প্রনাথের পারে এ সরণের প্রেক্তর বারা। বার্থির হয় নাই। বই দুখান বাগান্থের ও আনল্দবাজার কর্তৃক উচ্চ প্রথাক্তি বার্থির হয় নাই। বই দুখান বাগান্থের ও আলল্দবাজার কর্তৃক উচ্চ প্রথাক্তি বার্থিকাত হয়েছে। বিশ্বস্থাক বার্থিকাত ক্রিকাতা—১২।

১৩৮১ সালের মৌচাক পত্রিকা
কর্তৃক গৃহধীরচন্দ্র প্রত্কার প্রাণ্ড শ্রীডুাবারকান্তি ঘোষ রচিত ছোট বড় সকলের মনের মড বাংঝা সাহিত্যের দৃ,'খানি আশ্চয্ বই

বিভিন্ন কাহিনী

ইট্রত্যারকাশ্তি ঘোষ

াম্লাঃ—চার টাকা (সাংত্য সংস্করণ চলছে)

আরও বিচিন্ন কাহিনী

গ্রীতুষারকাশ্তি ঘোষ

মূলাঃ—চার টাকা (ক্রিতুর্থ সংস্করণ চলছে)

এম'সি সরকার অ্যাপ্ত সংস প্রাইভেট লিমিটেড, ১৪। বাষ্ক্র চট্টেজে খাটি কলি-১২

क्षाम ३ ०४-२१४२



সম্পাদকীয়া

ভারতের নতুন রাণ্ট্রপতি

প্রত্যাশিতভাবেই শ্রীফকর্ণিদন আলি থামেদ শতকরা ৮০ ভাগ ভোট লাভ করে ভারতের পঞ্চম রাণ্ট্রপতি নির্বাচিত হরেছেন। ১৯৬৯ সালে শ্রীপ্রির এবং শ্রীসঞ্জীব রে শুর মধ্যে প্রতিব্যাশদর্ভ ছড়ো এ প্রয়ন্ত রাণ্ট্রপতি নির্বাচিত হন পরোক্ষভাবের প্রতিব্যাশিতা বিশ্বাচিত হন পরোক্ষভাবের প্রতিব্যাশিতা বিশ্বাচিত হন পরোক্ষভাবে, সংসদ ও বিধানসভার সদস্যদের ভোটে স্বর্গই কংগ্রেসের এমন বিপাল সংখ্যাগরিষ্ঠতা যে অন্য কোনো দলের প্রাথানির পক্ষে এর কাছাকা ছ আয়াও কঠিন, ক্ষুলাভের তো পোনো প্রশন্মই ওঠে না। তা সভ্যেত বিভাগে সন্যাহাত কঠিন, ক্ষুলাভের তো পোনো প্রশনই ওঠে না। তা সভ্যেত বিভাগে সন্যাহার জানাবের জনা প্রতিব্যাশিত কার্নাবার জনা প্রতিব্যাশিত করেছিলেন। গণ্ডাধ্রিক প্রতিব্যাদিত প্রতিব্যাদি করেছিল প্রতিব্যাদিত করেছিলেন। গণ্ডাধ্রিক প্রতিব্যাদিত করেছিলেন। গণ্ডাধ্রিক প্রতিব্যাদিত করেছিলেন বিজয়ী শ্রীপ্রামানসকে।

এই নির্বাচনের মাধ্যমে কতকলুলো বিষয় বেশ দপ্ট হয়েছে। বিশ্লেধীরা প্রাথণী দিয়েছলেন, কিল্পু সমস্থ কংগ্রেসবিবেদ্ধীরা এই ব্যাপায়ে ঐকার্যন্ধ হতে পারেন নি। সি, পি আই কোনো প্রাথণীকেই ভোচ দেয়নি। কংগ্রসপ্রাথণীকে ভোট না দয়ে তারা নিজেদেন ধাত্তর ক্ষা করলেন আবার বিরোধী প্রাথণীকেও সমর্থন জানালেন না তারা নীতিগত কারণে। এতে সি, পি, আইয়ের প্রতি কংগ্রেস ও বিরোধী বামপ্রথণী উভ্যেই কিয়েপ। তা ছাড়া বামপ্রথণিকে মধ্যে ঐকাস্থাপন যে সহজ নয় এতে তাও বেশ ভালভাবেই বোঝা গেল। কংগ্রসপ্রাথীর বিবর্ধন হারা দাড়ালেন সংগঠন কংগ্রস, জনসংথ প্রভৃতি দলের সাহায়া নিছে। স্মরণীয় যে, ১৯৬৯ সালের নির্বাচনে এই বামপ্রথিন। কংগ্রেসমর্থিত প্রার্থী প্রাণারির পক্ষেই ভোট দিয়েছিলেন। স্কুতবাং তাদের বিরোধিতার আদ্বর্ধাত কার। মতাই আছে কিনা এ নিয়েও সার্বাহর মনে প্রশ্ন জ্বাত্ত পারে।

আরও লক্ষ্ণীয় যে, তামলনাডুব জি, এম, কে এবং আরা জি, এম, কে উভয়্ব দলই এটাখানেদকে ভোট দিয়েছে। ভোট দেয় ন সাম্প্রদায়বতাবাদী মুস্লিম লীগ যদিও এটাখানেদ একজন মুসলিম। মুস্লিম লীগে ভোট না দেওয়ার কারণ স্মুসপট। এটাখানেদ আজাবিন মুসলিম লীগ রাজনাইতর বিভাষের করেছন। ম্বিজাহিতত্ব প্রত্যাখ্যান করে তিনি গান্ধী-দেহরয়র আদর্শ অনুসরণ করে দেশের ম্বাধীনতা সংগ্রামে আজানিয়াগ করেছিলন। এটাখেদের নিবাচন ভারতের গণতান্তিক ও ধ্যানিরপেক বাংগুর আদর্শকৈই শক্তিশালী করল। আমাদের রাগ্রাবাস্থা যে কত্মজবুত, হার গণতান্তিক কাঠানোকে স্পর্শ ক্রার্থ শক্তি হে কারো নেই নিবিঘানিবাচনের মাধ্যমেই তা আরেকবানু প্রমাণিত হল।

প্রান্তন রাণ্ট্রপতি বিদায় নিজেন। নতুন রাণ্ট্রপতিকে দ্বাগত জানান হল। বস্তুত এর মাধ্যমে গণতান্তিক সংস্থার ধারাবাহিকতাই স্টিত। ভারতের রাণ্ট্রপতি ঠিক মার্কান রাণ্ট্রপতির মতো সমসত কার্যকরী শান্তর অধিকাশী নন। কিন্তু তিনি সমস্ত শান্তর প্রতিভূ। সংসদ ও মাধ্যমভার মাধ্যমে তিনি কার সাংবিধানিক ক্ষমতা প্রয়োগ করেন। তাদের পাশা কার্টিয়ে বা বাদ দিয়ে তিনি ক্ষমতা বাবহার বখতে পারেন না। কিন্তু তা হতেও রাণ্টের প্রধান হিসেবে তার কান্তিই, পরাম্বর্শ এবং অভক্তার মাধ্যমভার পক্ষে খ্বই প্রয়োজনীয়। তাই তার পদিটিকে শান্ত্র শোভাবধিক মনে করার কোনো খ্রিছ নেই। বিদায়ী রাণ্ট্রপতি শ্রীগরির কাছ থেকে সরকার এবং জাতি বিভিন্ন সময়ে অনেক প্রমাশা প্রেছেন। সাধারণ মান্তর অনুক্র বন্দা তার কর্তের ধ্রনিত হয়েছে। সরকার ও জনগণ উভয়কেই তিনি নানা বিষয়ে সত্রক করেছেন সংকট সময়ে। আম্রা আশা করব নতুন রাণ্ট্রপতি কংবিধানক পরিতা এবং জনগণের স্থার্থরিকায়ু তার বাছিছ এবং অভিন্ততা প্রয়োগ করতে কথনোই প্রশান্ত প্র

ফিলে আসার সময় পালাবির বুকে সেন্ট মাথিয়ে দিয়েছিল অবত্তী।

এখন ঝলমলে আকাশের তল দিয়ে ছাটে বাচ্ছে টেন। সারা দুপেরে বৃণ্টি গেছে। টেনের সংগ্য ছাটণত দুশাবলী, মাঠঘাট, গাছগাছালী, বাড়ীঘর এখন বিকেল পাটটার নতুন করে ওঠা বোদে ঝলমল। ঝলের জলে রোদ একমাক রুপালী মাছের মত। দেখতে দেখতে অনামনক হয়ে পড়ছিল শাভ্রময়। দমকা হাওয়ায় অবিনাসত তার একমাথা চুল। চোখের পাতা টানটান করে মেলে লাখতে হাছল ওকে। হাওয়ায় শাভুকারের বৃক্ত থেকে উঠে আসছিল স্বন্ধ।

শ্রেষ্টার দেখছিল, চোথের সামনে গ্রুত্বদলে থাছে দৃশা। দ্রের নারকেল গাছের ভটলা, এই ভাছে, চলেছে সংগ্ সংগ্রুত্বল, এই লেই! বয়ে যাছে কিলের রালমিল ছোত, বইছে, বয়ে যাছে, নেই! এমনিভাবে দৃশা। এর ঘটছে ঘরবাড়ী থেকে কলাবাগান, লোকালায় থেকে নিজনি মাঠ। শ্রুড্যায়ের ব্রুব্রে ভিত্তরত তেমনি থেলা করে ব্রুব্রে ভিত্তরত স্থানা লগায়ল অন্তর্বা সেই থেলায় যারবার তেসে ওপঠ এক মাথ। শ্রীমল প্রাথ্যা রহের করককে চ্রুত্ব্ টেটির পালে বানামী রঙের

কাড়েই কোথায় কোকিল শংকর দাশগুপ্ত



একলা ভিল হাসলে উর্ণকদেরা বাড়তি একটা দত্তি বরফক'চিত মত। সে মুখ অবৃশ্ভীর। শব্ধ অবন্তীরই।

িছ করছে এখন অবশ্তী ? নতন কেনা ক্তানপ্রাটার গলা সাধ্যে? উঠান জ্ঞাত কাঠকগরীর গন্ধ। ব্রণ্টভেজা ফাল ঝরে পড়েছে বাপান্দার কাছাকাছি। সারা দূপুর का निवेत आधारक स्वरक छठा जावनकी समेत ৰাডীর টিনের চাল এখনও মাদা কাপতে কি? কি করছে অবশ্তী? ব্ভিট্র বিকেলে নিশ্চয়ই ঝাঁপয়ে পড়েন সামনের টলটলে **প্রেরে। অকতী খ্র শীত?ভীতু।** ব্ণিট্র দাপুরে**ই** সে চাদর গায় দিয়ে গাড়িসাড়ি ছয়। কি করছে কবে ? র'টি বেলতে বসেছে काक्षाधात? উলোনের আঁচে यनभात माथ **অবন**তীর। বুটি বেললে হাতের রঙীন কাঁচের চাড় নেমে আস্তে ঠানঠান হাতের ক[্]জাতে। কপালের ওপর নেমে এসেছে চলের মার্লী। সরা আখালে সরাজে অবৃত্তী নারে পড়া কপালে চলের দ^{্ভা}মী। ক্লাভের ওপর ভালে বিচ্ছে রঙ[া]ন কাঁচের চুড়ি। मा, एम एका अन्यभाष्ट्र। এथम एका विद्यानी क्रावाय न।

শ্ৰুমায় যখন গিয়েছিল অবৰ্তীদের राष्ट्री उथन मृभुत। कात्रेव मत्रजाव धर्मक मिर् छेठान छेठारन भरूछ शाका काठेकतवी, উঠানের একোণ ভকোণে জমে থাকা শুণিটর দ্বল, জলে আকাশের ভাল্যাভাগ্য ছায়া'-এসব কৈছুৰ মধ্যে দিয়ে অবস্তীর ছোটু ঘণ্ড দেখতে পেয়েছিল শভেময়। 'অবংতী ^{কি} থ্য ময়ে আছে?' ভাৰতে ভাৰতে মাদ্য কড়া নেড়েছিল শ্ভময় অবশতীদের বংধ

দ্বজা **খ্যালো** অব•তীর ছোটভাই। ঘুড়ি সাড়াতে সাড়াতে উঠে এসেছে নীলন। হাতে গঙান কাগজের টাক্রো। বারান্দায় আঠার শিশি, ছে'ড়া ঘু'ড়ও দেখতে পেলো শু ভময়া

---নীলা, দিদি আছে?

—হ. ঘুম**ু**ছে:

ু-শ্ৰুলে যাওন, ছুটি?

—ছাট হয়ে গেছে।

—ব্রাণ্ডর জনা। কি যেন বলে--

---বেনী ডে :

---5111

্ —াদ'দ ঘ্ৰাহাছে?

--ব্যেধহয়। ভাকুন, উঠে পড়বে। বেশী যায় হ'ন

্নীলার কথাটা খ্ব স্কুদ্ধ লাগে স্ভেম্যের। ব্লিটন প্র শিশ্চেদ্ মুখ অংকে প্রিকু দেখায়। নীল্যুর একমাথা চুলে আঙ্জে 'দয়ে একট্র আদর করে শভুময়। তারপর উঠান পার হয়ে অবশ্তীর ঘরের দিকে পা কভ্ষা কাঠকরবী গাছের পাতা থেকে দ্বতকফোটা ব্লিট্রজল ট্রপটাপ করে পড়ে শভিময়ের চুলে, চুলুমার কাচে। যেন বহু দিন পর এই আসায় কাঠকরবী প্রশন करव प्रकार जारका है (क्या वारका है

অবৃশ্চীর ঘরে কাঠের দরজার মাঝখানে তারের জাল লাগানো। শভ্রমর ভালের মধ্যে মুখ ডুবিয়ে ঘরের ভিতর অবনতীকে থেকৈ। সারা দনই আৰু বৃশ্টি। জাল ঠাওা লাগে শাভয়য়ের নাকে। ঘরটা একটা অধ্যক্ষা কয়েক মত্ত অপেকা করে শ্ভিন্নয়। তারপর অন্ধকার তার চোখে সংয থায় একসময়। শৃভময় এবার ধীরে ধীরে দেখতে পায়, খাটের ওপর গলা পর্যণত চাদরে ঢেকে ব্ণিটর দ্পারের খাব আরামের ঘুর ঘুরাক্তে অবংতী।

'অবৃত্তী, এই' একটা জোরেই ভারে

আলু ঠিক এক ডাকেই, শভেময় দেখে চোথ থালেছে অবর্থী। ঘাড় কাভু করে কয়েক মাহতে দেখে অব্তী। একটা হাসে ঘুম-ঠোঁটে। তারপর গায়ের চাদর সবিয়ে উঠে পড়ে খাট থেকে। শাড়ী-টাভি ঠিক করে দরজান দিকে এগিয়ে আসে।

বন্ধ দরজার ওপাবে অবন্তী, এপারে শাভ্রায়। দবজা খালতে খালতে, নীচ হয়ে দরজান ঠাণ্ডা জালের ওপর রাখা শাভময়ের হাতের আঙালে কুটাস করে কামড়ে দেয় এবতত্তী।

চমকে উঠে শভেমর দেখে, অবনতার কালো চোখের ভারা দুখ্টামতে । ঝক্ষিক। কোন গুলাওলৈ নেই সে চোটেগ। শভেমন্ত বোঝে এএকণ ঘ্রাছিলই না অবনতী। ঘুমের ভাব করে চাদগ্র মাড়ি দিয়ে গ্রিস্টি শ্রেছিল। অবশ্তী ব্রেছিল শ্ ভগ্নয় তাসেছে ৷

দরজা খালে 'দয়ে নিজের খাটে পা বালিয়ে বসে অকতী। পা দোলায় মে**কে** ছ"ুরে ছ'ুরে। মুখোমাখি চেয়ারে শ্বভমর বসে। কিছ্ফেণ কোন কথা হয় না। অবণ্তীর ছায়াময় ধর দেখে শ**ুভ**ময়। কোণের দিকে নতুন কোনা সেই ভানপ্রা। দেয়ালে অব•তীর হাসিমাখের ছবি। দুগা প্রতিহার মাখ মাইকের সামনে ঘাড় ঈষং বেণিকয়ে লান গাইছে অবস্তী ফাংশানে ভোলা ছবি সব ঠিক আগের মত। দেখতে দেখতে, শ্ভিম্য দেখে, অব্•ত্ আর আগের মত পা ঝালিয়ে বসে নেই খাটে কখন থেন পা মতে, চাদ্র টাদর গায় জড়িয়ে, দেয়ালে হেলান দিয়ে বেশ আরাম করে বসেছে।

শ**ুভময়ের একট**ু শীত শীত বর্বাছল। ব্লিউটে একটা ভিজেছে ও। সে ভিজে জামা গায়েই শ্লিয়েছে। এখন ঠান্ডা হাওয়ায় একটা শীত শীত করে শভেময়ের। হাতে হাত ঘসে শীতের ভাব করস শ**ুভময়। অবংতীর দিকে চেয়ে ব**গুল 'তোমার কাছে যাবো?'

--কেন? ব্রেড যেন প্রশন করল

—এক চাদরে দাজন? শীতদীত করছে! শতিকাত্রে গলায় বলল শ্ভেময়। किक् ना वरण अवन्दी कार्य भाजन

অবশ্তীর খাটটা লোভীর মত দেখে শাভুম্য। তারপর। একস্মর বলল

—ত্মি ওকে বুকে নিয়ে রোজ ঘুমাও? দ_পারেও!

-- কাকে? ব্যেতে না পেরে অবাক গলায় প্রশন করে অবন্তী।

চশমার ভিতরে চোথ দুটো একটা ক'চকায় শ্ভময় তারপর ফাজিল গল্য

- ঐ কোলবালিশমশাইকে? আবাল চোখে শাসন আনতে চাইলে অবশ্ভী পারে না, হেন্সে ফেলে বলে

-জুমি না, দিনদিন একটা যা-ভাজ্যে যাচ্ছো অসভা!

শ্ভাগার চোখে পড়ে হাসলে অবনতবি সেই দৃতিটা স্পণ্ট দেখা যাহা ছোট স্ভদর একটা বাড়তি দাত আহে অব্নতীয়। ইঠাং দেখলে মনে হয় যেন বরফ খেলে গিছে দাঁতের ফাকে আওঁকে গেছে ছোট একটা বর্গের ক্চি। হাসলে ঝক্ঝকে দ্ভিগ্রলোগ মধ্যে বাড়তি এই দক্তিটাও 💆 审 দেয়। শ্ভিম্যের দার্ণ লাগে...

- অবন্ধী কাছে এসে। তে।।

- :00 ?

-छिंहि इनिक कहता अकहे। अकहे क्राप्त्रा (छ।:

— ওমা, কেন?

—ভোমার স্কুলর একটা বাড়তি দতি

স্বুদ্র ?

- ডিক বরফ কু'ডর মান্ত।

- তে কি হলো?

- আমি ভক্টা চুমো খাবো **অবস্থ**ী।

---ভুম মা।

– ছোটু একটা গরম চুমো খাবো তোমার ঐ বরহ-কচিদৃতিটাছ হে:

– গরম চুমো: ঠাডা চুমো? ছোটু চুমো : হয় নাকি :

—হয়। এখন গরম চুমো, ছোটু চুমো থেয়ে তে:মার বর্ফকুচি দাতিটা গলিয়ে দেবো। অনেক দিনের ইচ্ছে আমার অবশ্তী। - भाष, देखाः

—না লোভও।

প্রানো ইচ্ছে আর লোভের কাম্পনিক সংলাপগুলো আবার একবার এই অবহতীর ছায়াময় ঘরে বসে মনে মনে বলে যায় শভূময়। একলা একলই। অবেলী জানেও নাশ্ভিময়ের এই ইচ্ছেন কথা। ভাবতে ভাবতে আপন মনেই বোধহয় একটা হেসে ফেলে। সে হাস চোখ এড়ায় না অব*ভীর ৷

—এই কৃষি হাসছো কেন শ্বেং শ্বঃ? व्यवस्टी कृत् कृष्ठिक श्रम्न करत्र इहेरि।

क्त्र करत शिक्षा कथा वर्गिनत स्करण শ্রভার। অবস্থীর দিকে তাকিরে বলে —ভোষাকে দেখে।

একট্ ভুরু কুচকার অবশ্তী, বলল 'আমি আবার হাসির কি চলাম?'

এবার অস্পণ্ট হাসি টেঠে আসে শ্ভমদের গলায়, বলে, অবণ্ডী কি রক্ম হাঁট, মুড়ে বসে আছো, গায়ে চাদর জ্ঞানো তোমার টান-টান করে চল বাংখ। তাম রোজ বিকেলে, এখন তোমার চল খোলা।'

— ভাতে কি হল? হাসি পেলো? বিশ্বন্ত প্রথম করে অবস্তী

—তাতে নয় শাভময় অবশ্তীর প্রদেনর অবসরে কথা বানিয়ে বলে, তোমাকে কেমন ষেন লাগছে।'

- —কেমন ?
- —'যেন তুনি অবতাই নও।'
- —তবে কে?
- –খুব ভব্তিমতীর পোজে বসে আছো ভূমি হোন সাকাং শ্রীশ্রীমা।

—আর তুমি? প্রশন করতে গিয়ে একটন হেসে ফেলে এবার অবন্তী।

আমি ? কপট ভারির প্রায় বলে শভেময়—'আমি যেন আমি নয়।'

—কে? হেসে প্রশন করে অব÷তী।

– তোলার অনুগত সংতান, হাত জোড় করে বলল শ্ভময় পারের কাছে বথে. তোলার জয়ত কথা শ্নছি, আ-হা!' বলতে বলতে হাসি চাপতে পারে না শাভ্রয়। অবশ্লীও হেনে প্রায় গঞ্জির পড়ে।

এখন কি করছে অবস্তী? শভেম্যকে कानामात भारत निरंत **इ.८६ वार्ट्स** निरंक्त শেষের রেন। একটার পর একটা স্টেশন। ব্দলে খাছে চোখের সামনে দ্শা। ্নতুন ভানপারার গলা সাধাহে অবন্থী? চুলটাল বৈধে হয়কো হুটি বেলতে বলে গেছে রালা-ঘরে: মেবলা দিলে সম্বা হয়ে যাবে ভাড়াতাড়ি। একদিন শুভুময় খবে সাধারণ এক স্পোর মধ্যে অবস্থীকে ঋ্ব স্পুর দেখেছিল। ভূরে শাড়ী পরনে, টান-টান করে বাধা চল, জনলগত উনোনের কাছাকাছি বসে বুটি বেল ছল অবণ্ডী। মাথা ঈষং **ম**ুকে পড়ার প্রিকার সির্গপ্প দেখা রাচ্ছিল **ভারত**ীর। বারণার হাতের রঙীন কাঁচের চডিগালো নেয়ে আসহিল হাতের নীচের দিকে। বালবার আঙ্বল দিয়ে ঠেলে ভুলে িদ্**চিছল অবশ্**ণী। কয়েক মুহুত[ে] ভারপর আবার ঠনেঠান শব্দ আবার রঙীন চাড়র নেমে আসা। ভাগা দেয়ালের ছোটু রান্নাঘল, জ্বলাত উনোনে লোগে থাকা হল্য ডালের শ্ৰেনো লাগ, চেণিদুর মেঝে, ছোটু জানালা, ভার কেমণ **টাম**ং ঝ**ু**কে অবশ্তীর সেই বুটি কেলা চুড়িতে ঠুনঠুন, পরিজ্কার সিণিথ, উনোদের অধির অলমলে অগলতীর মাখ তুলে তাকানো-প্রিয় এক ছবির মত আজে৷ মনে আছে শ্ভমরের। আজ্ঞ স্পণ্ট।

অবস্তীদের বাড়ী বাওরার পথে বহু দন পর আজ কোকলের ভাল শনেতে শেরেছিল শুভমর। কলকাতা শহরে ঋতু বড অভিযানে চলে বার। বদিও এখন বসত্ত্বাল নয় তব্ কোকিলের ভাক ভেসে এবেছিল এই মফল্বল শহরের গাছগাছালির মাঝ থেকে। অবন্তীর বাড়ী থেকে ফেরার পথে আবার কোকিলের ডাক শুনঙে পেয়েছিল শভেময়। তখন শভেময়ের মন ভাল ছিল।

অবদতী এক সময় সহজ বলেছিক

—এট তমি অবত্তী

অবস্থা করেছিল শাভময়

-- সেদ্ন এক বিরেবাড়ীতে আলাপ হল। আহার নামের নাম, শুধু ভফাং আঘি বন্দ্যোশ্যযায়, ও সেনগ্ৰেত, তাই আলাপ कर्तमाम । त्यारसणेत काथमारणे करा जस्मको।

পাঠ্যপা্স্তক কলেজ

দৃশ্ল (Philosophy)

অধ্যাপক প্রমোদবর্ণ্য দেনগণেত প্রণীত

ভারতীয় দর্শন ১ম খণ্ড—৮ল সংস্করণ (Indian Philosophy)	12.00
ভারতীয় দ্র্পান ২য় খণ্ডত্যু সংস্করণ (Indian Philosophy)	8.00
পাশ্চাক্ত্য দর্শনি—৯৯ সংস্করণ (Western Philosophy)	12.00
পাশ্চার্য দর্শন (দর্শানের ইতিহাস সহ) এয় সংস্করণ	16.00
নীতিবিজ্ঞান—৮ম সংস্করণ (Ethics)	12.00
স্মাজস্পনি—৯ন সংস্করণ (Social Philosophy)	12.00
भरमाविम्।—७६५ সংস্করণ (Psychology)	22.00
Handbook of Social Philosophy - 2nd edition	16.00
পাশ্চাক্ত দশ্লের সংক্ষিণ্ড ইতিহাস—৩য় সংস্করণ	12.00
क्षणभून— (Philosophy of Religion)	22.00

শিক্ষা (Education)

অধ্যাপক স্বাতেশ্রক্ষার রায় প্রগাঁত

শিক্ষাভত্ত--ইয় সংস্করণ (Principles of Education) 14 00 ভারতের শিক্ষা সমস্যা– ৩র সংস্করণ (Educational Problems) 15.00

শিকা মনোবিজ্ঞান—৪৩° সংস্করণ (Educational Psychology) 22.00

শিক্ষক শিক্ষণ (B. Ed., P. G. Basic)

অধ্যাপক গৌরদান হালদার প্রণীত	
শিক্ষণ প্রশাস পাশতি ও পরিবেল (General Methods)	16.00
শিক্ষণ প্রসংগে অপ্নিডিছ ও পৌর্বিজ্ঞান	
(Economics & Civics)	15.00
ভারতের শিক্ষা-সমস্যা (প্রাচীন ও মধ্য হলে)	4.00
বিক্ৰপ প্ৰদৰ্শে ইতিহাস (History Method)	15.00

অন্যাপক হাজকার ও রায় প্রণীত

শিক্ষণ প্রসংখ্য শিক্ষার ইভিয়াল (Mistory of Education) 16.00 অব্যাপক বেদও হয়ে প্ৰণীত

भिक्त क्ष्माक्ष (Principles of Education) 16.00

অধ্যাপক দেনগণেত, ৰায় ও ঘোৰ প্ৰণীত भिक्त अनुरूप ग्रासाविद्यान (Educational Psychology) 25.00

শ্ৰীৰতী দীপিকা পাল প্ৰণতি শিশ্মনের সহজ কথা (Pre-Primary) 4.00

ञाक्-विश्व विमालाग्र ভক্ষিক্ষান প্রবেশ (৭ম সংস্করণ)—অবলপক চৌধারী ও সেন্গাস্ত ১০.০০

মাধ্যমিক ফাই নাল (ঐচ্ছিক) "কুল ফাইন্যাল তক"(ৰদ্যা---গ্ৰৱেদেন-ধ*ু* সেনগ**্ৰ**ণত 30.00



ব্যানাজী পার্বালশাস

েএ কলেজ রো. কলিকাতা—৭০০০ **০৯ : ফোন ৩৪-৭২৩৪**

তোমার মত। আনু তোমবা বিদাবা সকলে তে, আন্দীয়, ভাই স্তাৰ্কম, অবশ্তী সেনগণ্ড বোবহয় শ্ভেমর সেনগ্রণেতর ক্লেট্র তবেন্ট্রে?

শভেমর একটা দেখে অবস্চীকে তারণর ঠিক অবস্তীর স্থের দিকে তারিয়ে বলৈ— জামি কাতু এক অবস্চীকে চিনি, অবস্চী বন্দোশাধায়, সে কিস্কু কথা দিয়েছিল একদিন অবস্তী সেদগুস্ত চবে।

খ্য মঞ্চা করে বললেও শভুভায় দেখে অবন্তীর মাুথে দ্বেংগা ছায়া চোথ দুটোতেই। দুএক মাুহ্ত অবংতী মাথা নীয় করে করে গাকো, তরেপর এক সময় মুখ তুলো তাকায় শভিভায়ের দিকে দুটা একবার চোকের পাতা থিয়থির করে কালে অবংতীর বলে

—লৈ দোষ কি আমার?

কি বলতে গিরে থেমে যার শত্তুময়।
সতিই তো! একটা চাকরী প্রাণ্ট যে কোন
একটা চাকরী এখনও জোগাড় করতে পাজন
না সে। গত্ত মাসে ফাংশানে গেরে পাওয়া
টাকা দিয়ে সুন্দা একটা শান্তিমিকেকদী
বাগে কিনে দিয়েছে তাকে অন্ততী। অহ্
এড দেনে ভালবাসায় কোন উপহার সে
দিয়ে পারেমি অন্ততীকে। যা দও ভালবাসার অন্ততীর বাদিকেক পারেমি অন্ততীকে। যা দও ভালবাসার কান
বাসার উপহার ভালবাসাই, বলু নিজেকে
অন্ততীর এই প্রশ্নে গেয়া অসহায় আন
অপরাধী মনে হয় শত্তুময়ের।

—বঙ্গো ভোমার জন্য চা করে। শিয় জাসি। খাব নীচ গলায় বলে ঘটে থেকে চলে যায় অবশ্ভী।

রেজিষ্টি বিবাহ অফিস

মোট ১৬ টাকায় রেজিম্টি বিবাহ

এন কে ঘোষ জেপি মারেজ অফিসার

১১৭, কেশকদ্র সেন প্রীট কলি-১ ফোন : ৩৫-৩০৪৮ অবংতীর ছায়ামার মেখলা থারে বসে
নিজেকে হুঠাং কেমন একা মনে হয় শুভমার্ক্তরা, সাত সাতটা ইন্টারভিউয়ের বিগ্রেট
লোটার হেন নিহত পাখার মত পানের কাছে
মুখ থাবড়ে পড়ে। ট্রপটাপ দুশুর-বৃদ্ধির
জল নারে পড়ে কাঠবরবী লাছের দীঘল পাতা
থোকে অবংতীগের উঠানে। কোকিল ভাকে
না। রালাখর থেকে কাপভিসের টুবটাং
শব্দ তেকে আসে শুবট।

এক সময় অবনতী ঘরে চোকে। খোলা চুল কখন হাত থোপা বে'গেছে অবনতী। মুখে একটা ঘাম। চায়ের কাপ শেনট এগিয়ে দেয় অবনতী। শেলটের পাশে দুটো বিশ্কট।

—নীপ্রাড়ী নেই অবংতী বলে— ভোলাকে সিংগারা এনে ক্রিড পারলাম না । কথাটা শানে একট্ যেন কেপে এঠে শুভমার। অবংতী ঠিকু মনে রেখেছে শাভ-ময়ের প্রিয় জিনিসের কথা। হাত বাড়িয়ে চায়ের কাপ নিতে নিতে শাভ্তময় বলে—

—ভোমার চা?

—তুহি নাও আমি আমছি।

অবনতী রামাখর থেকে নিজের চা নিয়ে আসে। অবনতী খবে চা-খোর। কাপে-টাপে হর না ওব। প্রায় এক কাঁচের গলাশ চা নিয়ে অবনতী এবার জানালার ওপর বসে।

—আমার একটা চাকরী বোধহয় এবার হয়ে যাবে অবন্তী।

শ্ভাষের কথায় ম্থ তুলে তাকায় অবংতী শুভাষা বলে, আনাদের পাড়াব এবটা ব্রুলে, আপাতত লিভ ভাকেংসী একটা থামে শ্ভাষ্য—আমি খ্ব চেন্টা করতি থকাতী, কিংল বিশ্বাস্ করো—

— আমার কিস্ফালিমাম গাছে ইঠাৎ বলে অব-তী—বেটা তাম শিয়ালদার রথের মেলা থেকে কিনে দিয়েছিলে, জানো সেটাতে কুডি এসেছে, দুটো কুডি পাশাপাশি।

প্রথান ঠিক বানে না শুভনায়। তার মনেই পড়ে না কবে সে ফ্লের গাছ উপহার হিয়েছে অবংহীকে। তারপার এক সময় মনে পড়ে তার। অবংহতীর বড় শথ ফ্লেগাছের। গাত বছর রথের নেলা থেকে কিনে দিয়েছিল শভেম্য অবংহীকে তার প্রিয় ফ্লেগাছ। মনেই ছিল না শুভময়ের। এই কুক্ক বপ্রা হঠাং কেন্ন মন ভাল লাগে

শ্ভমরের। অবস্তীর এই মনে ক্রীরার দেয়ায় যেন অন্য কিছু ছিল।

—ভন্তলোক আন বোৰহয় ফিরবেন না। জোর দিয়ে বলৈ শক্তেমা।

—ফুল দ্টো করেক দিনের মধ্যেই ফুটবে। অন্যমনক্ত বলে অব্যতী।

—যে ভদুলোকের বদলে আমার চাকরীটা কংগ্রু। শতুহায় বলে।

—ফ্রেল দ্টো যদি ধ্বধ্বে শাদা হয়! অবনতীর গলায় খুশী উঠে আসে।

—চাকরীটা ক্রমশ পামানেশ্ট হয়ে বাবে। প্রায় নিশিচ্ছেত্র মত বলে শভ্ভময়।

—ফ্লে দ্টো ঝরে যেতেই আবার নতুন কু'ড়ি আসবে। ফিসফিস্ করে অকতী।

—চাকরীটা কনফার্মাড হ**রে গেলেই—** শূভ্যয় তা**কায় অবশ্তীর দিকে**।

—গাছমুয় ফ্**ল আ_র ফ্লে। অকতার** চোখ দুটো উল্লেক্ত হয়ে ওঠে।

এই ভাবে ছারাস্য কৌবলা থরে বসে
শৃত্যায় আর অবশ্চী স্বশ্ন শেথে। স্বশের মধ্যে কথা বলে। শৃত্যায় বোঝে তাঙ্গর ভালেসাসা প্রথম হলে কোটার মতু পবিত্র। অবশ্চীর অভিযান জন্মরের মত দংশন নয় সে অভিযান ফ্রে ফেটোনোর গ্রেজন শ্ধা।

ঝাঝা শব্দে ব্রিজ পার হয় শত্তে-মান্তের থ্রেল। ফিনে আসান সময় পাঞ্জানির বাকে সেন্ট মাখিকে দিয়েছিল অবশ্তী। ২নে পাড়

—দীড়াও।

—कि ?

—আমা_ব "মৃতি।

—কেন? ধাদ ভুগে যাই? ভয়? —না যাদ ভুগ বোঝো। দুঃখ।

শ্ভ্রায়ের ট্রেন শিয়ালদার কাছাকাছি এসে হায়। পাঞ্চাবর ব্কের কাছ থেকে উঠে আসে সংগণ্ধ। মনে পড়ে.....

—কিসের ভূল? অবংতী বংশ্যাপাধ্যার অবংতী সেন-গুশ্ত হবে না।

শ্ভেময় তাকায় অবস্তীর দিকে। সংলব একটা হাসে অবস্তী। বর্জকুটির মত বাড়তি গতিটা ইকি দেয়া কিকিনে ওটো। ব্যক্তর থবে কাছে সংগ্রেধর মাকথানে অবস্তীর হাসিম্ধ। শ্ভেময় ম্থে নীচু

গম গম শবেদ শিয়ালদা চেট্রনরে টোকে শ**ু**ভময়ের ট্রেন। মনে পড়ে-----

অবল্ডীর ঠোঁটে ঠোঁট ছোঁরালে কাছেই কোথায় যেন কোকিল ভেকেছিল।





হৰিবে বিবাদ

ভার্মহোদয়গণ, বলতে লংজা হয়.
খবরের কাগজে সব কথাই ফাঁস করে
দিয়েছে। এ আমাদের একটা ক্রাতীয়
দুর্ভাগা বললেও বাভিয়ে বলা হয় না।
আমরা অনেক দিনের চেট্টায়্রিস্তর কাঠখড় পাড়িয়ে একটা পরিকল্পন। আবিক্রার
করি এবং বাঙালির যান-যাল ক্রাতি
অলসতাকে পরিহাল্ম করে কাজেও ঝাপিয়ে
পাড় কিন্তু তার ফায়দা ওঠাবার আগেই
ডুতীয় অব্দ্ব গদা হস্তেও ভামের প্রবেশ।
আর্থাৎ কিনা স্বাক্সভুবাই স্নালল সমামি

উদাহরণ ? যতত হ জড়ানো রয়েছে। যেহান ধর্ন আজকে সকালবেলাকার এই নিটকা ধররটা।—

কলকাতা ও হাওড়ার করের জায়গায় হানা দিয়ে প্^{লিশ} স্কুল ফাইনাল আর হারার সেকেন্ডারী প্রীক্ষার কিছ্ জাল মারুশীটি ও সাটিফিন্ডে উন্ধার ক্রেছে— শ্নে কি বলব মশাই, আমার তো একে-বারে আক্রেল গ্রেছায় ত্রের ক্ষেত্

প্রকা কথা প্রিলশের কাল রাস্টা-বাটের গাড়িটাড়ি সামলানো, কিম্বা নিদেন-গক্ষে কোথাও কিছ্ হাণগামা-টাণগামা হলে ক্যা হ্রা, কা হ্রা ক্ষে পাণ্ডি রক্ষা করা। ভারা এইভাবে এডুকেশানাল আফেরার্শ নিব্রে মাথা ঘামাবে কেন?

দ**ু'নন্দ্র আর্শন্ত**, কুটীর[ি]শল্পে *হ*স্ত-**স্থেশ।**

ভেখন ভরমাহেদকশ্ব আনের প্রথম হলে আনের আমল থেকে আনের ব্যাই কলা হলেছে বাঙালির ব্যবসাক্তিয়া অভাব

নিয়ে। সেই সব বক্তা আর 'এমে কি
একেবালেই অসার : আরি অংতত তা মনে
করি না। বাবসা বাঙালিকে করতেই হবে
আর বাবসা করতে করতেই চাকরিরও
কেলপ বা ডায়ে যেতে হবে। আর দেখুন,
কলবাতা ও হাওড়ার ঐসব বংগসমতাবেরা,
(থারা কেন্ড সেকেন্ডারী বোড়ে চাকরি
করেন কেন্ড বা টিউটোরিয়াল হোমের
মালিক) তারা তো এই কাজটিই শ্রে,
কলেছিলেন মশায়। তাহসে আধ আপতিটা
কেবেল্যার বাঙালি যে পরশ্রীকাতের, এটা
একেবারে বার্ণে-বর্ণে সতিতা!

কিতৃ প্লিশ যদি একটা দ্বদ্দিসম্পন্ন হতো, কিন্বা অপ্ৰাধ্যটো থাছে
এটা টেব পাওয়ার পরও বদি একটা ওডাললকে করত (তা তো ভারা অনেক
বাপারেই করে থাকে, না হলে যজাতুদাবী
আনু বালোবাজাবী চলছে কী করে:)
তাহকে কী হতো?

হতো এই যে, আরো কায়েক সাজার ভেলেমেয়ে পৰীকা-সাগর সতিবে পার হয়ে বেতো, এবং তারা অনেকেই গিয়ে কলেজে ভতি হতো। ফলে কলেজ-গুলোতে বেশি-বেশি লেকচারার আপায়েণ্ট করতে হতো, এমগ্লরমেণ্টের ফেকাপ বাড়ত। ওদিকে সাটি কিকট মাান ফাক-চারংও বেশ জোর কদমে চলত, ফলে এমপ্লয়্মেন্ট দেকাপ বাড়ত। ভারপ্র বেসব ছেলেমেয়ের। কলেজে ভতি হয়েছিল, তার। বি-এ প্রীক্ষা দিত। তথন অবশাই সাটি-ফিলেকঃ ম্যান্ফাকচারিং-এর কলেজ বিজ্ঞাগ খুলতে হতো। তারপর এই প্রভিনার এম-এ। বসে, একবার এম-এ সালু করিরে নিতে ক্রান্টে কো করে। তথন সেইসব পাশ-হরা নতুম এম-এব্দ দলে দলে

গিরে আবার লেকচাবার হবে। ও দিকে
ব্রুবে ১ই পারছেন, সার্টিফিকেট মান্-ফারুচরিংও জোর করমে চলছে। তাতে আরো
হাজার হাজার ছেলেমেরে স্কুল ফাইনাস
আর হাজার সেকে-ভারী প্রাক্ষা পাশ করে
যাছে । ফলে কলেজ একবারে টইটবর্ব।
ভার সমানে নতুন পাশ কর। এম-এদের
অন্যেক্তর্ব করে নিছে। ব্যুন একবার
ব্যালেরখানা। একই পারিকল্পনায় পাশ
করছে, আর চাকরি পাক্তে-একেরারে সাইক্রেক অভাত্যে চলছে। আর সাংগ সংশা
ঘারট যাছে শিক্ষার প্রসার আর ব্যবসার
শ্রীধান্ধ।

া তারপর বরাত স্থাসর হলে অন্যানা বিশ্ববিদ্যালয়ের এছিয়ামেও নতুন নতুন এ ও খোলা বেতো। তারপর চলে বাওরা বেতো তানা প্রতিক্স। ভাতীর সংহতির একেয়ারে মৃত্যাত জনে হাড়া বেতো।

তারপর আহা ভারতেই রোমাণ্ড হয়।
আরোশই ওপন করতে পাশ গেছো—পিএইচ-ভি বিভাগ। দলে দলে ওকটারট করে
আরোদের এই ভকটারট মেড ইছি-ন বাহিত এতই ছড়িয়ে পক্ত লারা প্রিবীতে যে, এ-ব্যাপারে ভকটীর মো-হাউ আমানের ইবালেশিক মুদ্রাবন্ধ ক্রোহা করে দিন্ত।
ক্রিক্তি কিনা বলমে?

কিন্তু হায় হায়, ওত্বড় একটা সালা-নাবঃ ওক্ষাবপ্রাইজের কী গোচদীর সাহি।পাড়। ভেলের হে আঞ্ ঘোন্নছন দুর্নিন ভাঞ্জ আর সন্দেহ বি:!

—লৈমিদী

লারখবর

আইন-শৃঙ্খলা নিয়ে ভাবনা

এই বাংলার আ ধুন-ল্ভধলার অবস্থা নিয়ে সরকার যদি ভাবিত হয়ে পড়ে থাকেন তবে তা মোটেই অকারণে নর। সিম্বার্থাপুত্রর রাষ্ট্রর মন্ত্রিসভার একটা গর্ব এই থে অন্য কোনো ব্যাপারে হয়ত তারা তেমন চমক লাগাবার মতো কিছা করতে পারেন নি, কিণ্ডু রাজ্যের লোকের মনে নিরাপত্তা আর প্রক্তির ভাব ফিরিয়ে আনতে পেরেছেন। ভারকাতির দেখে মনে হাজ এখন ঐ গর্বটুক্ত বুবি বার্-করা। কলকাতা ইয়প্রাড়মেন্ট ট্রাল্টর তর্ব এলিনিয়ার। विकास बन्द्रात (लाइनीय क्षेत्रका नित्य भावते हेर है है है है 180 50 FE ट्यंटन গ্রু-ডা-বদ্দ্রারেসদের <u>ই।ইবার</u> একমার শিকার শুখে তিনিই নন। সরকারি হিসেবেই দেখা যাক্ষে, গভ বছর ভিনেকের মধ্যে শহরতকার ফ্রের প্রায় ২৪০ জন যাত্রী এইভাবে প্রাণ হারিয়েছেন। ডাকাতি-ছিলতাইরের ঘটনা ঘটেছে। আড়াই শার বেশি। আর সরকারি হিসেবের বাইরে এই ধরটোর কতো ঘটনা যে ঘটেছে, ভার সঠিক ছিসেব কেই বা রাখে: ব্যাপারটা এখন এড্ট উদেবগের হয়ে দাঁড়িয়েছে দ্বি, লোকসভার পশ্চিমবাংলা থেকে নিব'াচিত সদস্যরা প্য'ন্তা এ-বি**ষয়ে কেল্টার** সরকারের দ্রণ্টি আক্ষণি না করে গারেন নি।

অবশ্য নিরাপ্তার আভান শাুধ্ ঐনের যার্চাদরই নয়। সেদিন ২৪ প্রশাণা গ্রেল্লার হাবড়ায় সংগঠন কংলোসের এক শ্রেডা বাসের মধ্যে খুনে হলেন। খুন হয়েছেন স্পান

পূরে ইম্পাত ছাঁছকদের এক নেরোও। আর শা্বা যানো-খান নয় মেয়েদের মান-ইন্জতও আবার অনেক জায়গায় বিপদা: বালিগঞ্জ স্টেশন থেকে এক তর্গীকে অপহরণ করে নিয়ে গিয়ে কাছের এক পোডো বাডিতে ভার ওপর অভ্যাচার করা হয়েছে বলে অভিযোগ উঠেছে। পর্লেশ এখনত এ-ব্যাপারে কাউকে গ্রেণ্ডার করতে পারে ।ন। সাধারণ আইন-শাত্থলার যথন এই আরম্মা, তথন সত্তের খবর হলো নকসালদের ন্বিতীয় পর্যায়ের আন্দোলন হচভংগ হরে যাছে। নকসালরা কডিড আছে हिरमाश्रक प्रहेनात जरशा कह्य जानहरू। '९५ जाल धवदमब धर्मेना चर्छ २७०२ हैं, '१२ जारन ४८ हैं. '१० সালে ৫৪টি আর চলতি বছরে এ পর্যাস্ত ৩**৪টি।**

সাধারণ আইন-শৃত্থলার অবস্থা খারাপ গুওৱার উদ্বাদ হয়ে মুখামকা স্বরাণ্ট দৃশ্তর একা প্রাক্তানর বড় ক্রতাদের সংখ্যা ঘন ঘন বৈঠক করছেন। সেনাব্যহিনীৰ কত'রেও এই আলোচনায় যে।গ দিছেন। মুখ্যনশ্রী সংশিশত সকলকে হ'লিয়ার করে বলে দিয়েছেন, ১৯৭০-৭১ সালের দ্বংশ্বংশনর দিনগ্রালো যেন আবার ফিরে না-আলে কেদিকে নজর রাখতে হবে। আর দোষীদের ধরার সময় কংগ্রেসী-দেরও যেন ছেড়ে দেওয়া না-হয়। ট্রেন ছুরি-ছিনতাই-হত্যা বংশর জনোও মুখামলা কয়েক দিন আগে কড়া নিদেশ 阿根据可

রেশনে চাল ছ'াটাই

বিধিকতা রেশনের চার্রল আবার টান পড়লো। মাথা-পিছ; বরান্দ ২৫০ গ্রাম করের ছটিটে। বদলে মিলবে ঐ প্ৰিমাণ গম। ফলে চাল-গ্ৰ মিলিয়ে মোট ব্যাদটো থেকে গোল একই। পেট ভরাতে ১য়ত অস্ত্রিধে হাবে না। কিল্ড "ভেতো" বাঙালির মূখে এওে গন র,চবে কি: ভাই আশংকা, খোলা বাজার অর্থাৎ কাঞ্চোবাজারের চালের দিকে আরো হাত বাভাবে ভারা। ফলে সেখানে দর आता। किन श्रीए अहे धारमद वताम घाँगेहें? कादमंग হালা, কেন্দ্রীয় সরকাবের খাদাভাভার থেকে প্রয়োজন মতো । চালা খিলছে না। দরকার মাঃ‡স্ব⊙ হাজার টুন। অথ্ আগপেটর প্রথম তিন সাভাত্রহ পাওয়া গেছে মাত আট হাজার টি^{ল।} এক দিকে এই কম ট্রোগান, ভার ওপর রাজ্যের । খরা-বনা-ঘূৰিকড়প্ৰীড়ত এলাকায় গ্ৰেৰ জন্ম পাঠাতে 5 .00 ःतामानाञ्चा ।

গমের কোটা মোসে ৯০ হাজার টন। থেকেও কেন্দ্রীয় সরকার কিছ, দিন আগে : ha হাজার টন ছটিটে করেছিলেন। ফলে দেখা দিয়েছিল সংকট। আনক ব্ৰাৰয়ে-স্বাৰয়ে আবাৰ ২৩ গুজার টন দিতে রাজি করানো গেছে, গুই তা না হলে চাল ছটিটিয়ের ফ্রাঁক কি আরে 🔻 🕒 গণ দিয়ে যে দিয়াল প্রণ করা হৈতে? এই বাংলার রেশন বা যোগানের মূখ চেরি থাকে সে-কথা দিংনাহ জানে সবচেয়ে ভালো। তব, প্রায়ই চলে এই যোগান নিয়ে অবন্য পৃষ্টিমবাংশা সরকার যাদ নিজেরা ম্থেন্ট চাল সংগ্রহ করতে পারতিন তবৈ তালের এতটা অসহায় অবস্থা ১৫ছা না। হিন্ত ভারা তো নিদিপ্ট পাচ লাথ টনের মধ্যে পোনে দ্যু লাখ টনের বেশি সংগ্রহ করতে পারেন নি। শোনা ফল্ডে প্রকার খাদ্য সংগ্রহের ব্যাপারে নতুন ব্যবস্থা নিতে চলেছেন: হয়ত **সরকার** যে দামে ধান কৈলেন্তা বাড়িয়ে দেওৱা হরে। ফলে বাঞ্চার দরের সংখ্য ঐ দরের সমত। আস্তর। লাকোনো মক্ত উম্পারের জনোভ রাজা সরকার আসরে নামবেন। সংগ্র থাকবে কংগ্রেসের ছেলের। এই ব্যাপারে কংগ্রেসের সংশ্য হাত মেলাবে কমচুনিস্ট পার্টি।

বন্যা-ঝড়ে ক্ষতি

ঘ্ণিঝড়ের ক্ষয়ক্ষা হুর শবরটা ছেদিনীপরে থেকেই মুতে একে পেণিচিছিল। ২০) প্রগণ্ড যে একটা বড় ধাক্কা। যাছে ২৪ পরস্পার, তা বেশ ভয়াবহ।। ঝড় আরু বন্দ্যা খেরেছে এটুকু আঁচ কথা গ্রিছিল প্রথমেই কিন্তু ক্ষতির একদিকৈ হিতালগাল, কাক্তাপ পাথ্রপুতিমা জয়নগ্র

পরিমাণটা ঠিকমতো জানা যায় নি। এখন যে ছবি পাওয়া

মজিলপরে এবং অনা দিকে বসিরহাট মহকুমায় অনেক ভাষাগাতেই বাধ ভেপেছে। স্ফুদ্রবন এলাকায় বাধ-ভাগা নানা জল চাবের ক্ষেতে তাকে পড়ে ঘটিয়েছে সবনিংশ। এই মাসের গোড়ায় যখন খবে বুণ্টি হয় তখনই বাধগ্রেগরে অকথা কাছিল হর্মেছিল। তথন সেদিকে কেউ বিশেষ নজর দেশ নি। খড়ের সময় তাই সহজেই সেগ্লো ভেপে পড়েও এখন এইসব বাধ মেরামত করতে চার কোটি টাকা লাবে বলে অনুমান করা হচ্ছে। কিংতু এত টাকা আসবে কেংগা কেংব

এলিকে সাম্প্রতিক প্রাকৃতিক বিপ্রযায়ে এই বাংলায় ক্ষরকান্তির ব্যাপকতা সম্পর্কে একটা ছবি এখন প্রথম বাক্ষে। কম করেও লাখ পনের লোক ক্ষতিগ্রস্ত। তার নাগে উত্তব বাংলার জেলাগ্রেলা এবং মুশিদাবাদে ন লাখ, ২৪-পরণণায় চার লাখ আর মেদিশীপ্রের দর্বাখ। উত্তর বাংলা আর ম্শিদাবাদে ক্ষতিগ্রস্ত এলাকার প্রিয়াণ প্রায় এগার শ্বর্গান্তি মুনুস্তে ৭০ হাজারের বেশি। সাতে তিন

লাথ একরের বেশি এলাকায় শদ্যের ক্ষতি হয়েছে। শ্রেণ্
এই ক্ষতির পরিমাণই ১৮ কোটি টাকার কাছাকাছি। ২৮পরগণতেও তিন লাথ একরের মতে জায়তে শ্লেসার ফাতি
হয়েছে। মেদিনীপুরে ক্ষতিগ্রাহত গ্লামের সংখ্যা চর
হাজারের বেশি।

এই বখন অৰম্থা, তখন প্রকৃতির হাতে মান-খাওয়া লাখ মান্ধের গ্রাণের জনো কেন্দ্রীয় সরকাকের কাছ থেকে একটি প্রসাও পাওয়া যাবে না বলে জানা গেছে। এমন কৈ, বন্যাত এলাকা পরিদর্শনের জন্যে গিল্পী থেকে কেউ আসবেনও না। এই মনোভাব বদলের জন্যে মুখ্যমন্তী প্রধান্থাকৈ বিশেষভাবে অনুরোধ করেছেন। কিন্তু সেই তান্বোধে কতোটা কাজ হবে তা এখনও বোঝা যাক্ছে না। রাজ্য সরকার গ্রাণের জন্যে যথাসাধ্য করছেন, কিন্তু সেই সাধ্য খবে বেশি নয়। গ্রাণথাতে বরান্দের কেন্ধে খরেচ ইতিমধ্যেই বেশি হয়ে গেছে। ফলে হাত প্রভাচ উন্যায়ন খাতের টাকায়। সেটা মোটেই বাছ্নীয় নয়। কিন্দু উপ্রেই বা কী?

বনের বাঘ আবার বনে

মাস্থানেক ধরে অনিক নামেলার পর ২৫ আগস্ট মাকরাতে ঝডখালির সেই আত্তক শেষ প্যণিত যথন ধরা দিলে তথন দেখা গেল সে সতিটে বাঘিনী নয়, বাঘ। বন বিভাগের সাধের দেওয়া 'স্কেরী' নাম ভাই ভাকে মানায় **না: বয়স** দ**ু বছরও হয়নি। ল**ম্বায় প্রায় ন ফ্ট। সাণুগ্র-ক্ষের এ একাকায় বাঘটা সাধ্য কুকুর-মারগ্রণী-গরাই খারান **ভার থাবার চোটে এক ব**ৃষ্ধাও মারা পড়েন। কিন্তু ভারতের জাতীয় পশ্কুলের এই প্রতিনিধিটির রক্তম-সক্তম সম্প্রের্ণ খোজখবর করে বন বিভাগ সিম্ধানত আসেন্থে, এটি মান্তব্যকো নয়, স্ত্রাং এটিকে প্রাণে মারা ঠিক হলে না। **ভাছাতা বাঘের বংশ দ্রত শোপ পাছে**, এই সময় একটি বাথেরও ভবলালা সাংগ করে দেওয়া ঠিক নয়। তাই ঠিক হয় বাহটিকে ভালোভাবে প্রীক্ষার জনে কোনোভাবে বন্দ্রী করা হবে। এই কাজে রাজ্য সংকরেকে সংখ্যার জাণ্য এলেন মার্কিন জীধবিজ্ঞানী জন জিডেন্স্টাইকার। এই বীর্ণ-**দৈহী বিদেশী হাতে** ্রা**দ**্কে নিয়ে ঝড়থালিজে সিনের প্র **দিন (অথবা রাভের প্র রাভ)** কাটালেন। সংগ্র বইটেলন

বিশ্ব বন্যপ্রাণী সংরক্ষণ বোডেরি মিসেস জ্ঞান রাইট আর রাজ। সরকার বন বিভাগের কায়েকজন অফিসার। কিংত জিওনস্টাইকারের বন্দ্রক সাধারণ বন্দ্রক নয়, বনাপ্রাণীকে ঘুল পাড়াবার ওষ্ণ-ভাতি সিরিঞ ছেড়ার জন্যে ধ-দূক। শেষ প্যাস্ত ঐ সিনিঞ্জ গৈয়ে লাগলো কোলরে আর বাধাও *চলে* পাড়গো গ_্মের কোলে। প্র**িফ**ন করে দেখা গেল, না, বাঘটা মান্যখেকে। সভিটে স্থ কোনো রোগও নেই। ভালোভাবে শিকার করতে আগেই কোনোভাবে ছিটকে নিজের আশ্তানা ছেছে এসেখে লোকালয়ে। ভাই ভাকে খাঁচায় ভরে খেডে আসা হলো বাঘেদের জন্যে সংর্থিকত গোসাবার। অর্থেন বানের বাঘ আবার বনে ফিরে গেল, কিন্তু পিছনে রেখে গেল একটা প্রশন–বাব নিয়ে ক দিন ধরে এই ছৈ-চৈ'ষর পিছনে ভাবে কিছ**ু ব্যাপার ছিল না তে**ি ব্য **বিভা**রের অধিকাংশ ক্মাণী স্থান বাদ নিয়ে বাসত ভ্রুখন সেই তার্সরে কেউ সেশ্র-চালাল ইত্যাদিক কাজ গতুছিয়ে নিজিল না তো?

₹**9**•৮..98

—দেবদন্ত



কংগ্রেস-সি পি আই-নয় পার্টি আন্দোলনের প্রজা-সংখ্যা বের করছে

এবার পশ্চিমবাংলায় প্রাক প্রভায় বেশ কয়েক বংসর প্রে আন্দোলনের প্রা-নাম্বার প্রকাশিত চক্ষে। এই আক্রিলালনের প্রো-নাম্বার সম্পাদনের দাংগ্রম নিয়েছেন নয় পাটি জোট. ছটি বামপঞ্জী কুৰক সংগঠন, সাতেটি বামপাথী ছার সংগঠন। কংগ্রেস, সি পি আই ও পভিয়ে নেই ভারাত প্রো-দেপশালের জনো জোর প্রত্তিতে নেয়ে পড়েছেন। তবে কংগ্রেস ক সি পি আই⊹এ₁ প্জা-নাম্বার বুণ্ম সম্পাদনায় কবে, না আলাদা আলাদা সম্পাদনায় বের হবে, সেটা এখনও সিক হয়নি। এই প্রস্তাতির যে খবর ইতিমধ্যে পাওয়া গেছে, ভাতে দেখা যাকেছ সি পুএম সহ নয়-পাটি জোট গত ২২ই ও ১৬ই অগণ্ট দুটি বৈঠকে মিলিভ कार क्रिक करतासन (भारत कम नाजी নিরেছেন) তারা রাজ্যের খাদ্য ও অর্থনৈতিক সংকট মোকাবিলায় কোর আন্দোলন শাংগ্র করবেন। ১৪ই অগুস্ট রাজ্যের ছ'টি বামপাথী কুমুক সংগঠন এক বৈঠকে মিলিত হয়ে ঠিক করেছেন, ভারা **জবরদ**ত আন্দোলন করবেন। সাত ট বায়পদ্ধী ছাত্র সংগঠন গড় ১৮ট্ট অগস্ট পর্যান্ত একাধিক বৈঠক করে ঠিক করেছেন, গালো তারা জগণী ছার আন্দোলন খ্রু করবেন। যদিও এইদিন সাতটি ছার সংগঠন কোনত ঐকামতে আসতে না পেরে চারদক ও ^ততনদকে ভাগ হয়ে লেছেন, কিন্তু জল্মী আন্দোলনের কর্মস্চী ঠিকই আছে। সি পি আই বলতে গেলে আন্দোলন শ্বাই করে দিয়েছে। গঙ ২২শে অগস্ট মুখামল্যী স্ত্রীসিম্পার্থশংকর রায়েল কাছে এক সমারব দ্রপি পেচেশ্র शाक्षात्व आरम्भानातत भ्राप्तता करतासः। কংগ্রেস, সে-ও বসে নেই। গত ১৮ই অগণ্ট ও ২৮শে অগণ্ট দুটি বৈঠকে মিলিত হয়ে মজ্ঞ-উন্ধার আদেদালন শা্রা ক্রবার কল্পাস্টী প্রহ্ণ করেছে। এর মধ্যে আবালু কংগ্রেস ও লি পি আই নেতাদের গত ২২শে ও ২৭শে আগন্ট দুটি যাত্ত বৈঠক অনুন্দিত इरहारह । अडे रैनर्टरक श्रमान जारनाम ছিলো, আন্দোলন করা বার কি-না। ১৯৬৬ সালের পর রাজেরে বামপৃথীরা প্রাক্ত প্রক্রায় কোনও আলেলালনে নামের্নান।

অথচ ১৯৪৯ সাল থেকে ১৯৬৬ সাল পর্যক্ষক প্রকার আগে খাদা আন্ফোলন বাংসরিক ঘটনা ছিলো। প্রথম যথে এই আন্দোলন হুতো দুভিক্ষ প্রতিরোধ কমিটি ও খাদা অভিযান কমিটির নামে আলাদ। আলাদা ভাবে। পরে খাদা অভিযান ক মটি 🚜 দর্ভিক্ক প্রতিরোধ কমিটি এক হয়ে যায় এবং ১৯৫৭ সাল থেকে বাজনৈতিক দলগুলি দলের নামে ঐকাবদ্ধ মোচায় আন্দোলন কমেন। ১৯৬৬ সালে এই খাদ্য আন্দোলন প্রেটার অনেক আগে মার্চ-এপ্রিল মাসে শারা হয়ে যায়। বসিরহাটে পালিশের গালীচালনায় নরেল ইসলামের মৃত্যুকে কেন্দ্র করে, পরে কুষ্ণনগণের আনন্দ হাইকের মৃত্যুর পর এই जारमानन कुरुन उठि। ১৯৬७ সालाइ থাদ্য আন্দোলন রাজ্য-রাজনীতির পালা বদল করে দেয়। যার কারণে ১৯৬৭ সালে ক্ষমতায় আসে য**়**ওজ্বটে দরকার। '৬৭ সাল থেকে '৭২ সাল প্ৰ'ৰ্ড বামপুৰথী দুলগুলিক খানা আন্দেলন স্থির সুযোগ ঘটেনি। আনেদালন বা হয়েছিলো, সে হয়েছিলো যাৰফুন্ট সরকার পত্ন ঘটাবার প্রতিবাদে অথবা ডাঃ প্রফাল্লচন্দ্র ঘোষের মন্তসভা অপসারণের দাবীতে। '৭১ সালের নিব^{বাচনে} বামপাথীদের ভ্রাড়বি হয়। ফলে গত দু বছর তারা কোনও খাদা আন্দোলনের কথা চিম্তা করভেই পারেনি। '৭২ সালের মারে আহত শরীরে প্রলেপ দিতেই কেটে গেছে। '৭৪ সালে প্ৰার মাুখে এসে সকলেই ভাবছেন, এবার আদেদালনের প্রেলা সংখ্যাটা বেলু করা যাক।

নয়-পাটি তাদের আন্দোলনের হা
দ্যাটিজ ঠিক করেছেন, তা হলো এই,
আন্দোলন স্থিত পক্ষে পরিদ্যিত থ্রেই
অনক্লে। মানুষের জ্বীবনে বে সংকট নেমে
এসেছে, যে অভাব-অভিযোগ অকটোপাসের
মতো সাধারণ মানুষকে পিণ্ট করছে, তাতে
আন্দোলনের ডাক দিলে সাড়া পাওয়া
যাবে। ছাত্র-যাব, কৃষক-প্রমিক সর্বস্তরের
মানুষের বিক্ষোভ-অস্কোল-অন্দিশভা
বিহঃপ্রকাশের মাঝ খালুজছে। শাসক দলের
অত্তরিবিষাধ্র চড়াদত। তাই এ-হলো
সুবর্গ স্থাগা। ১৯৬৬ সালের খাদ্য
আন্দোলন শারু হরেছিলো কেরোসন

তেলকে কেন্দ্র করে। আজ ছাত্রদের কাছে শাধা কেরোচিত্র তেল নয় পাঠা-পচেতক কাগজ, পেশিসল, কালি-সবই আশ্নম্কাও দুন্প্রাপা। তাই ছাত্রাই আন্দোলনের মাখিয়া তবে। ভাতদের সংগ্রে থাকবে কৃষক-সংগঠন, শ্রমিক-সংগঠন। ছাত্র-কৃষক-শ্রমিক তিধারায় বিভক্ত আন্দোলনে মিলিত হবে নয়-পার্টির আন্দোলনের সংগ্রামে। আন্দোলনের লক্ষ্য হবে, সরকার ও প্রশাসক-যশ্রকে অচল করে দেওয়া। তার জনো আন্দোলনের প্রাক্ত বাপ যা নিজে হোক না কেন, নয়-পাটি⁶িপছ পা হবে না। নয়-পাটি বর্তমানে রাজেনর কংগেদ দল ও তার শাখা সংগঠনকে খাব বেশী ভয় ছবছে না। ভয় করছে না ম্থামনচী শ্রীসেম্পার্থ শংকর রায়ের পরিচালনায় সরকারের ইমেজকে। কারণ কংগ্রেস দল আজ ১৯৬৯ সালের গ্রন্থফুণ্টের চৌদ্দ দলের অবস্থা থেকেও শোচনীয **ময়ে**ছে, আর রাজেরে বৃত্তিান সরকার কোনও সমসাদ্র মৌলিক সমাধান করতে মা পেরে লেজে-গোবরে হয়ে নিজেদের শৃষ্ট সাকটেই হাব্ডুব্ খাছেন। প্রশন শ্রা খাদোর নয়, প্রশ্ন শ্বাহ্য ক্নগণের দ্বঃখ--দ্বাদা লাঘবেরও 🖙 নয়-পাটির কাছে বিশেষ করে সি িশ এম সহ প্রধান দ্যু-চাণ্ডিটি দলের অভিতত্ত রক্ষার প্রদন্ত জডিত। সি পি এল সহ নয়-পাটি এবার আসরে নামতে চায়। আসর দখলের সাবেশ মার আছে সামনের বারোটি হাস। অর্থান ১৯৭৫ সালের এই সেপ্টেম্বর অকটোবর মাস পর্য'ক তারা যে আবাদ করতে পারেবে তার ওপরেই নিভার করছে '৭৬ সালেন कमन। ১৯৭৬ ज्ञारम जनांकोड इर्द লোকসভার নির্বাচন। রাজনীতিবিদরা মনে করেন লোকসভার সংশ্যে বিধানসভার্ত্ত নিবাচন হবে। ১৯৭২ সাল থেকে রাজের বামপন্থী দলসমূহ যে দুঃসহ বেকার জীবন যাপন করেছেন ভার প্নরাবৃত্তি কোনও ক্রমেই মেনে নেওয়া সম্ভব নয়। সেই বেকারত মেনে নেওয়ার অর্থ আত্মবিল: তি। সেটা অচিত্তনীয়। তাই এবারের আন্দো**লন** অ'শ্তেম্বক্ষার আন্দোলন এবারের আন্দোলন আত্মপ্রতিষ্ঠার আন্দোলন।

—अन जान्यून हित नामा

জেনেভার সাইপ্রাস সমপ্রের বা খাদিক আলোচনা চলছিল তা ভেঙে যাওয়ার এক ঘণ্টার মধ্যে তক্ষী বাহনী যুদ্ধবিরতি চুলি ভংগ করে পূর্ব ভ্রম্যাসাগরের ঐ ক্লাদ শ্বীশের উপর ব্যাপক হামলা করার ফলে সাইশ্রাস পরিস্থিতি নতন আকার ধারণ কাৰছে। জেনেভার আলোচনা বৈঠকে সাইপ্রাসকে তক্বী ও গ্রীক এলাকায় বিভক্ত করার প্রস্কাবে গ্রীসকে রাজি করাজে না পেরে তরুক জেট বিমান ট্যাংক ও কামান ব'দ,কের সাহায্যে সাইপ্রাসকে কার্যকে বিভক্ত করে ফেলেছে। ৪০ ঘণ্টার মধ্যে সিরেসিয়া ও নিকোসিয়ার ঘটি থেকে ফামাগুস্কোয় পেণছে গিলে তক্ৰী বাজিনী এই দ্বীপের উত্তর-পর্ত্র এক-তৃতীয়াংশ অঞ্চল অধিকার করে নিয়েছে।

বিশ্বজন্মতকৈ সম্পূর্ণ অগ্রাহ্য করে ও রাষ্ট্রসংখ্যের যুদ্ধবির্জি প্রস্তাব অমান। করে তরস্ক এভাবে সামারিক শান্তর সাহায়ে। সাইপ্রাদের উপর তার নিজের সমাধান চাপিয়ে দেওয়ায় এই ক্ষায় দ্বীপের স্বাধীনতা ও মিরপেক্ষতা হরণের চক্লানেতর কিয়া প্রতিকিয়াল ব্তুটি সম্পূর্ণ চল। আজ ন্যটা গ্রীক ও তৃকণীদের মধ্যে বিরোধে পবিণত হয়েছে তার সার্পাত হয়েছিল গ্রীকের হু ীকের **34**[.*8] <u>বিবেচ্বর</u> মধ্য দিয়ে। অথবা সঠিকভাবে বলতে গেলে সাইপ্রামের সংগ্রে গ্রীসের বিব্রোধের মধ্য দিয়ে। গ্রীদের ক্যানিস্ট-বিরোধী সাম্থিক শাসকলোষ্ঠীর প্রধান ব্রিগেডিয়ার জেনারেল সাইপ্রাসের ডিমিট্রিস আয়েে গ্রিডের অবিসম্বাদী যেতা আচৰিম্পু লাকা-রিওসকে ও ভাঁল ঐকারণধ্ প্রাধান, ধ্মনিরপেক্ষ ও জোটনিরপেক্ষ নীতিকে বিশ্বাস করতে পারেন নি। গুদিয়োর সংগে আচ'বিশ্বপ ম্যাকারিওসের সাইপ্রাসের ঘনিষ্ঠতাও গ্রীক সাম্বিক জ তার প্রুদ্ধ হয় নি। জেনারেল আয়োমিডেস সিপ্রিয়ট বাহিনীর 347391 য় ক প্রীক সাম্মাণ্ডক অফিসারদের সাহাধ্যে আচ'বিশপ ম্যাকারিওসের বিব দেখ অভ্যাথানের যে চক্রান্ত প্রদত্ত করলেন সেখান থেকেই সাম্প্রতিক সাইপ্রাস-সংবাদের শ্বর্। জেনারেল আয়োমিডেদের ঐ চক্রাণ্ড শুধ, এই আথেই সফল হয়েছে যে, আচবিশ্প ম্যাকারিওসের সরকারের পতন ঘটেছে এবং তিনি নিজে দেশ ছেড়ে যেঙে বাধ্য হয়েছেন। কিন্তু যে 'এনেসিস' বা প্রীসের সংখ্য সাইপ্রাসের সংযুত্তির দিকে লক্ষ্য রেখে এই অভ্যুত্থানে পরিকল্পনা করা হয়েছিল গ্রীদের বাঞ্চিত সেই 'এনোসিস' হয় নি. ব**ং তুরণক বলতে** গেলে একরকম গ্রীসের গালে থাপ্সভু মেরে সাইপ্রাসের এক-৩তীয়াংশ কেডে নিয়ে গৈছে। শাধ্য তাই নয়, আচবিশপ श्चाकाविक्षमात्क छैश्था इ कतात अरे हुकारम्ख्य ধারায় গ্রীদের সাম্বিক শাসকরাই চিৎপাত সূয়ে পড়েছেন। সেখানে সাম্প্র শাসনের অবসান ঘটেছে এবং ৬৭ বংস্ফ বরুস্ক

সাইপ্রাস

কন্দটাণ্টাইন কারমানলিমের নেতৃত্বে নতুন অসাম্যারক সরকার প্রতিষ্ঠিত হয়েছে।

মাঝখান থেকে, তাংতত সামায়কভাবে বার্থ হয়ে গেছে গ্রীক-তুকণী বিনাধ ও বৃহৎ শান্তবার্গন বিনাধে থেকে সাইপ্রাসের কাধানীন প্রতাগ, জোটনিরপেক শ্রীপ রাষ্ট্রকৈ তফাতে রেখ তাকে নিজের সভার বিকাশত করে তোলার জনা আচ্বিশপ মাাকায়িন্তস ও ভার অন্যামী জাতীয়তাবাদী সিপ্রিয়টনের প্রয়াস। সাইপ্রাস না চাইলেও সে একদিকে থেমন গ্রীক-তুকণী বিরোধের সংগ্রে জড়িয়ে পড়েছে অনাসকে সে তেমনি বৃহৎ শক্তির বিরোধের সংগ্রে জড়িয়ে পড়েছে অনাসকে ক্রিক্তা পড়েছে।

এই গ্রীক-ড্ক'ী বিরোধ অবসানের একটা চেণ্টা হয়েছিল জেনেভাতে ছয়'দন-वाभी देवहेटक। এই देवहेक इस्माइन व्हाध्न তুরস্ক ও গ্লীদের প্রতিনিধদের মধ্যে। ১৮৭৮ থেকে ১৯৬০ সাল প্রণত সাইপ্রাস ছিল ব্রটেনের অধিকারে। ১৯৬০ মালে যে চক্তি অনুসারে সাইপ্রাসকে স্বাধীনতা দৈওয়া হয়েছিল সেই চুক্তি অন্যায়ীই ঐ 'জনটি রাণ্ট্র সাইপ্রাসেল হবাধীনতার অভি-ভাষকরতে নিদি^{ভে}। জেনেভাতে সাইপ্রাসের অভিভাবকদের এই বৈঠকে আক্ষালার প্রতিনিধি পরনাশ্রমতী তুলান গ্রেথে ধখন ত্বৰী সিপ্রিয়টদের আত্মনিয়ন্ত্রণের অধি-কারের দাবিতে সাইপ্রাস বিভাগের কথা তললেন তখনই এই কৈঠক ভেঙে শেল। এথেনের প্রতিনিধি পর্বাধ্যমতী জন্ত মাড়োস প্রশন তুললেন, সাইপ্রাসের ৬ লক ৪০ ছাজার আধ্বাসীর মধ্যে মার ১৮ শভাংশ যেখানে তুক'ী (গাকি ৮২ শ্ভাংশ গ্রীক) সেখানে ভুরুক মাইপ্রাসের এক-ততীয়াংশ দাবি করছে কি করে? তুকী পররা**ণ্ট্রমন্ত**ী পরিহাস কলে বল্লেন, ^{ভো}মবা স্টেপ্রাসের ৪০ শতাংশ পেলেও আজি হয়ে মেতে পারি। তার যুক্তি হল, যেতেও তৃকণী সিপ্রিয়টরা অধিকাংশই কৃষ্টিজীবী সেহেতৃ তাদের জনা ৩n বা ২n শ্তাংশ জুম চাওয়া অন।।য়ুনয়। গুলিস অতীতে সংগ্লি**ই সাইপ্রাস বিভাগের** বিরোধিতা করে এসেছে, কারণ তার মতে, সাংস্কৃতিক ও জ্ঞাতিগত দিক থেকে সাইপ্রাস গ্রীসেবই অংশ, তুক[া] সিপ্রিয়টদের সন্নস্য সংখ্যালঘ সমসারে বেশি আর কিছুনয়। কিত্ জেনেভা বৈঠকে গ্রীসও শেষ পর্যতি উপ সার নরম করেছিল। তবা, জুরুক যথন গ্রীক প্রতিনিধিকে তুক্রী প্রস্তান সম্পর্কের্ এথেকের সজে প্রামশ্ব কর্ত জ্না-৩৬ ঘন্টা সময় দিতে গুলি হল না তথন শ্রুনেতা বৈঠক ভেঙে গেল!

ত্বংক থা চেলেছিল সেটা
গান এদায় করে নিতে তার বেদি
সময় লগেল না। সাইপ্রাস থেকে ত্রুপেকর
দূরছ থেখানে মার ৪৪ মাইল সেখনে ঐ
দ্বীপ থেকে গ্রীপের মাল ভূখতে ৫২৫
মাইল দূরে অবশিতা। কি তুলনামালক
সমারিক শক্তি কি ভৌগোলিক অবশ্যান,
কোন দিক থেকেই গ্রীসের সেই সাবধা জিল না হাতে সে তুকী আক্রমণ ঠেকাতে পারে
অথবা ভূরপেকর উপর পার্ডা আক্রমণ
চালসে ভাকে বিপদে ফেলতে পারে।

বৃহৎ শতির বিবেধের স্টেড্রিকায় দেখতে গেলে, সাইপ্রাসের এই পরিশায় আমেরিকাকে খুশাই কলেছে। আমেরিকালা, প্রশারপুটে গ্রীক সামরিক সরকারের চক্ষতে বিপ্রতি প্রতিক্রিয়া স্থাতি করায়ু আমে-, বিকাল বিশেষ ফতিবৃত্তির হল মাসনা-রীন সাইপ্রাসের চেয়ে বৃতত্ত মাইপ্রাসই-আমেরিকার হিসাবে, মান্টারিপ্রসের শাসনা-রীন সাইপ্রাসের চেয়ে বৃতত্ত মাইপ্রাসই-আবিকতর স্থিবিদ্যালনক। কাবদ গেগেডুল্ গ্রীস ও ভূমাক উত্তর রাণ্টাই মানটোর, খান্ডভ্রি অভ্যান, স্বিধানিকন্ত্র মাইপ্রাসকের নাটোর প্রতিল্লারিটি আবন্ত স্থাবিক্ষত করা সত্ত্র হারে।

সাইপ্রাসে আহেরিকার **এই হিসাবের** কথাস অবসা কিছুটা লোকসানের অংকও ভলা পড়েছে। আহেনিকান অ**স্তস**ংজা**য়**া ম্ভিজাত ত্যাহক মুগ্ন আক্রমণ চালাচ্ছে, অথ্ আছে বিকা ভাকে নিব্তু করার চেন্টা কলছে। য়া এতে গ্রীকরা আমেরিকার প্রতি **ক্ষ**ুস্থা। প্রতাদে গ্রীস নাটো থেকে তার সামরিক বাহিনী সভিগে নিয়ে এসেছে। নিকে।সিয়ায় মাকি'ন রাণ্ট্রত্ত রজার ডেভিসকে ভ**রি** প্রাণ দিয়ে এই খেলতের মালা দিতে চামেছে। গুটিসের এই সম্পাদেন্তর ফলে ন্যাটো কিছাটা দাবলি **হয়ে পড়লেও**ং আহোরিকা নাটেটার স্টেগ ভরকেব দংখোগারেট অধিকতের মালো দেয়া কারণ, দ্যাহর দাদ্পনেলিস প্রণালী নিহাত্তণ করে ভার এই পুণালীই ধাশিয়া থেকে ভূমধা-প্রাণার ও আটেলান্টিক মুহাসাগনে বেরো**রার** একলার *কাল*। ভাছাড়া গুলি**স নাাটোর সংগ্র** ত্বিল লম্পক একেবারে ভিন্ন করে নি. শ্রেম্ব লাটো হৈছে তার চৈনবো**ছনী ক্রিয়ো** িলেন্ডে। বভাষনিং ফ্রান্সের মত্র গ্রীস**ও**ং নগটো_র ভিতরে করকটা *বড্ড**ে ভমিকা**শ িয়ে থাকতে চাইছে। আর তার 🐠 🕏 ভালিকাও, আহেবিকা আশা করে, নিতাইতই সামায়িক।

গত চিশ বছরের বেশি সময়ের মধ্যে দ্রাই উলোপ্যি দেশেন মধ্যে এই প্রথম নাম্প (প্রসংগত এই যাগ্র একদিক প্রেক্ট মধ্যমাগ্র কর্তান কর্তান কর্তান ক্রাইটা দেশ) ও তার ফলাফল এড্রাফল মোজিস্টি রাশিক্ষা, কতুকটা ভ্রমতে গ্রেক্ট লাগ্রে আগ্রেড বিশ্ব নাম্পান আগ্রেড শিক্ষারে নিজেকে জড়াতে শ্রেম্টি



রাষ্ট্রপতির কার্যভার গ্রহণ

রাশ্বপতি জবনে এক অন্প্রোনে গত ২৪ আগত ফকর্শিন আলি আহমেদ ভারতের পঞ্জম রাগ্বপতি হিসাবে শপথ গ্রচণ করলেন।

শ্বারতের প্রধান বিচারপতি তাঁকে শপথ-বাকা পাঠ করাবার পর একটি সংক্ষিণত বন্ধুতা দিয়ে শ্রীআহমেদ ঐকাবণ্ধ হয়ে ও উদ্যোগদান একাগ্রতা নিয়ে দেশের অর্থ- নৈতিক চ্যালেকের হোকাবিশা করতে আচনার জানিকাকেন।

ভিনি এই আশা প্রকাশ করেছেন নে এই দেশের রাজনৈতিক কাঠানো স্বকা, ভার জনগণ বৃশ্চিমান ও পরিপ্রমী এবং তর প্রাকৃতিক সম্পদ অজস্তা। এই স্ব নিয়ে ভারত অবশাই একটি ন্যায়পরায়ণ, সমুস্থ ও প্রগতিশীল সমাজ্বাবন্ধা গড়ে ভুলবে।

রাষ্ট্রপতি ভবনের এই অনুষ্ঠানে
বক্ততা দিতে গিয়ে ৬৯ বংসর বর্মান্ত সাম্প্র পতি ফক্তবুন্দিন আলি আহমেদ যখন তার এই সম্মানের জনা জনগণকে ধন্যবাদ দিচ্ছিলেন তখন আবেগে তার গলা বংধ হরে আসছিল। তিনি মনে করিয়ে দেন যে গাংধীজী ও তার অনুগামী জওহরলাল নেহর, সদ্গির পাাটেল, মোলানা আজাদ প্রভৃতির ম্বারা বে জাতীয় আম্দোলন পরি চালিত হয়েছিল তিনি তারই স্থিট। আবেগ কাতিয়ে বক্তা শেষ করার জন্য শ্রীআহ্মেদকে কিছ্কল ধামতে হয়়; সে সমরে তার পাদে বসে আবিদা বেগমকে ব্যাল দিয়ে চোধ মুছতে দেখা বায়।

শ্রীআহমেদের শর্প গ্রহণের পর বিদায়ী রাম্মুপতি গিরি এগিয়ে এসে তাঁকে আলিণ্যন করলেন, তারপর তাকৈ আসন ছেড়ে দিলেন। ৩১ বার তোপধনির ম্বারা ভারতের নতুন রাম্মুপতির কারভার গ্রহণের মৃত্তেটি ঘোষণা করা হল।

ঐ দিন বিকালেই শ্রীগিরি দিল্লি থেকে

বাংগালোরে রওনা হরে গেলেন। সেখানেই ভার অবসর জীবন বাগনের কথা আছে।

বিদাৰ্থী ৰাখ্যপ্ৰতি

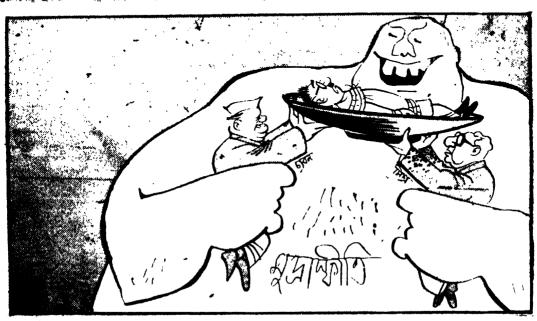
শ্রীগির বিদায় নেওরার প্রাক্তানে পালামেনেটর সেম্টাল হলে বিদার সম্ভাষণ জানিয়ে তাঁকে জ্বনতার রাষ্ট্রপান্ত' বলে অভিতিত করেন।

সংসদ সদস্যদের শক্ষ থেকে শ্রীগারিকে বিদায় অভিনন্দন জানিয়ে স্পীকাল জি এস ধীলন বলেন যে, শ্রীগার 'এই দুর্দিনে অবিচল পর্বতের মত দাড়িয়ে চার পাশে নারবে সাহস ও অনুপ্রেরণা জর্মায়েছেন।'

শ্রীগিরি তাঁর প্রত্যাভিভাষণে পার্লাথেকে ও রাজ্য বিধানসভাগানুলির সদ্মাদের
প্রতি আবেদন জানিয়ে বলেন যে, তাঁরা হৈহটুগোলা না করে জনসাধারণের সমস্যাধালি
সমাধান করার চেণ্টা করেন।

সংসদ সদস্যদেশ ধুধনবোদ জানিরে শ্রীগিরি বলেন আমার গলদগ্লির কথা আমি জানি। কিন্তু একজন সংক্ষী হিসাবে আমি সব সমরেই আমার সাধ্য ও বিচারবৃদ্ধি অনুযায়ী কর্তব্য করার চেন্টা করেছি।

শ্রীগিরি বলেন, জনগণের সমক্ষে তিনি অবাধেই কাজ করে গেছেন, এ বিষয়ে তিনি সংবিধানের স্ক্রা বিচারকে বাধা হরে উঠতে দেন নি। সেই কারণেই তিন্নি এত বার বার তাঁর মত প্রকাশ করেছেন।



শ্রীগিন্ধ বলেন, স্মাম বিশ্বাস করি যে, সরকারী কাঞ্চকমেনির ব্যাপারে আস্থান্দরালোচনা ও দোষতাটির নির্মাম উপ্থাটন হওয়া উচিত। একটি গণতা দরক সরকার কেবল তখনই শক্তিশালী ও প্রাণবন্ত হরে উঠতে পারে যথন তালু কাঞ্চকমেনির নিরণ্তর যাচাই হয় এবং যথন সতকা জনমতের স্বাবা উংখাত হওমার যথাকে।

ভারত-পাকিংতান সংখ্যান

আগামী ১২ সেপ্টেবৰ নাগাদ ইসলামাবাদে ভাৰত ও পাকিস্তানের মধ্যে
বৈঠক হবে বলে ঘোষণা করা হয়েছে। এই
বৈঠকে, আলোচা বিষয় হবে দুই দেশের
মধ্যে টেলি যোগাযোগ ও যাণুয়াতের
বাবস্থা পান্য প্রবাহান।

গত ১০ জন্ম তারিথে এই বৈঠণ হত্যাব কথা ছিল। কিন্তু ভাবতের পারমানাইক বিস্ফোর্লের ধ্য়ো তুরে পারিস্তানের
প্রাট্টক স্থাগত সংখোজল। পারিস্তানের
প্রবাদ্ট ও প্রতিরক্ষা মন্ত্রণালয়ের রাজ্মনতী
আজিজ আহমেদ প্রবাদ্টেমতী স্বাদ সিংকে
স্বাশ্বেষ যে পত দিয়েছেন তাতে দেখা
যাচ্ছে, ইসলামাবাদ ঐ আপ ও তুলে
নিয়েছে। ভারতের দাবী অনুযায়ী প্রাক্তন্ন ভারত-বিরোধানী প্রচাবত বিশ্ব করতে
রাজি স্থেছে।

काम्बीदात कविवार

শেখ আবদ্যা শ্রীনগরে হজরংবাল
মসজিদে শাব-এ মিনাক এন এক জমারেতে
বকুতা দিয়ে দাবী করেছেন যে, কাশ্মীরের
বাপারে নয়াদিল্লির সংগে কোন চুক্তি হলে
সেই চুক্তির জনাতম স্তর্গ হিসাবে কাশ্মীরে
নছুন নির্বাচন কগতে হবে। তিনি বলেছেন,
কাশ্মীর যে কাশ্মীরবাসীদের এবং একমার
কাশ্মীরীরাই যে নিজেদের ভবিষাৎ নির্ধারক
করবেন সে কথাটা প্রমাণ করার জন্য এই
নির্বাচন করতে হবে।

আগামী ২ অকটোবর তিনি কাশ্মীরে
শাসনক্ষমতা গ্রহণ করবেন বলে রটনা হচ্ছে
শেখ আবদুল্লা সেটা অস্বীকার করেছেন।
মংখামনতী সৈয়দ মীর কাশ্মিত এই সংবাদ অস্বীকার করেছেন যে, তিনি শেখ আবদ্লাকে মুখামনতী বাসবাদ বাসবাদ বাসবাদ লাভি

হাইলে সেলাসির ক্ষমতা হরণ

ইথিত পিয়ার সৈনাবা হনী সেদেরে
সঙাট হাইলে সেলাসীর ক্ষমতা হরণ করে
আরত কিছু ব্যবস্থা অবলদনর করেছে।
আদস আবাবা শহরের মধ্যস্থাল অবস্থিত
শেতপ্রতর্গনিমিতি জুবিলি প্রাসাদটি ছাড়া
সঙাটের আর সর প্রাসাদকে জাতীয় সম্পত্তি
রলে ঘোষণা করা হয়েছে। জাবি ল প্রাসাদত
তর্গ নতুন নামকরণ করা হয়েছে। উথিতপিয়ান জনগণের প্রাসাদ।

সামাজ্যের ১৪টি প্রদেশের অধি-কাংশেই সমাটের প্রাসাদ ছিল।

স্বশ্যিষ সংখাদে প্রকাশ যে, প্রিণ্নির প্রাচীনতম ক্ষমতাস্থীন রাজবংশন প্রতি-নিধি সমাট হাইলে সেলাস্থ্য এখন তার সৈনাবা হনীর হাতে গৃহস্পদী।

আফ্রিকা থেকে পতুর্গালের বিদায়

পর্তুগালের নতুন স্বকার ঘোষণা করে-ছেন যে, তারা আফ্রিকায় তাদিও উপনিবেশ গোন-বিসাউয়ের স্বাধীনতা স্বাকার করে নিয়ে সেখান থেকে সরে আস্ত্রেন।

আলজিয়াসে লিসবনের প্রতিনিধিদের সংগ্রে অফুকার স্বাধীনতা আফোলন-সম্প্রে প্রতিনিধিদের যে গোপন আলোচনা চলচ্চিল তাতে এই সিংধানত হয়েছে। প্থিবীর শেষ উপনিবেশ্বাদীদের আফিক্য থেকে সরে আসাব পথে এটা প্রথম প্রশংশা।

গিনি-বিসাউরের পর থাফ্রিবার মার যে দটি পর্যুগীল উপনিবেশ অর্বাশ্ব্ থাকল সে দটি হচ্ছে মোলান্বিক ও আপ্রোপোলা। এদেবত মাল এখন আস্কা

—প্তরীক

≥9-b-98





আছে কি, রেসকিউপার্টি ? ।

नवनीका एनवरमन

আছেচ্ছা, এমন কি কোনো ঈশ্বর আছেন আমার বিষয়ে যার কিছ্মাত আগ্রহ রয়েছে? আমার পাপের কথা যাকে কণ্ট দেবে আমার পূণ্যতে যার খুলি?

কোনো কোনো লোকে বলে দ্বীশ্বরকে খ'ুজে পাত্র। গেছে এবং সেই সংগে মুক্তিও।

আমার ঈশ্বর যদি খ'ুলে পান আমাকে কোথাও এই যে বিনণ্ট হতে, অবলম্পত আমাকে, কোথাও তবে তারে। মুক্তি মিলে যাবে।

তিনি কি সাব্ধানে রত

জরলে-শাওয়া আয়ার থনিতে শত্রাশাকার ভাসমরাশি দুট্টাতে দরিয়ে তিনি কি সংধানে রভ পালে পালো প্রগয়ে প্রশ্রের আয়ারি বিসমত মাধ?

তিনি কি চশমার কাচ খানুটে মাছে নিয়ে শানঃ পানঃ সরাচ্ছেন বাংসম্ভাগ দিম ... রাছি ... দিন ... বিক্ষত দাৃহাতে ?

रघाषाग्रन्ता॥ वरक्षम्बन राजना

নীল আস্তাবল থেকে ঘোড়াগালো হুটে গেছে খুব দুত বৈগে ঘোড়াগালো শাদা ছিল কালো ছিল হলাদ বৈগনি পিংক— মেলামেণি বঙ

এই সব দ্রতিগ্রেলা বিশ্রামও করেছে গোল ছাতিমের নিচে, ভার চিহ্নগ্লো পড়ে আছে প্রবাসের দিকে—পথে— কোথাও ঝোপের আশেপামে।

বিভিন্ন বয়সের এই ঘোড়াগ**্লো-আহ....** ওদের খারের মন্ত মেনকম-ঠিক সেই আকাশ তথন-।

বিশ্রামের পরে সেই প্রাণীরা আবার দুতে ছুটে গেল মধ্যাহের দিকে
মধ্যাহে গিয়েই তারা মূলেতানের শব্দ হল—বথন বিকেল
নামল বিকেলে—মাঠে। মাঠে শ্ধে ফাঁকা—কিছা, থড়ের সব্ভা
দ্পা্রের রোদ হয়ে পড়েছিল শিম্লেতলায়। শিম্লের
বর্গহান ফ্লেগ্নো মৃ্ট্রে মাড়িয়ে তারা চলে গেল
একদিন প্রবাসে প্রবাসে—।

ভীষণ সকালে উঠে মাঠের ওপাবে গেলে কিছা কিছা দাগ পাওয়া যায়— প্রতিবেশী ছাতিমের নিচ দৈয়ে আমাদের পোষা প্রাণীগলো আদর ভিত্তিয়ে গেছে—আদর অথাং কচিয়াস ভিত্তিয়ে বিবৰণ ঋড় কোথায় গুয়েছে হয় গো সেই দিকে গেছে— আমাদের খাব প্রিয় ঘোড়াগ্লো যায় মিল থেকে নীলে আর নীল থেকে আবেক নিশিকে…

কাল বাতে !৷ শৈলেন গংখ্যাসাধ্যায়

কালরাতে আমি যথন ছলাম না

তুমি বলেছিলে, মাঝরাতে ঝড় এসেছিল,
বক্ষে বৃক্ষে শিহরণ তুলে, এবং তাদের

সব্যুক্ত ঘন ছ্মে চংগ চংগ করে

দিকচক্রালে ঘুন্নে ঘ্রের

নদীতে কম্পন তুলেছিল।

আজ বাতে তুমি আমি
এক সংগ।
শোন, তোমার আকাশ-বাতাস
বৃক্ষ তৃণ্পতা—বিদাতের মত
গতিশীল;
কিল্পু আমি ক্ষামে অববৃদ্ধ
বাতাসের মত শ্লদশ্না,
গতিহুদীন।
তুমি বলেছিলে, বৃদ্ধ শিরার লোতে
কড়ে কন কন আনো।

উপন্যাস ক্রেন্ডি হ্যাল্ড ক্যু

আট বেহারার পালাঁক, গলা-ফাটানো ডাক ছাড়ছে। চরিদিক গোলপাড়। স্বাই জিল্লাসা করে ৫ কে চলপোন হে?

সোনাথড়ির দেবনাগ ঘোষ।
বাইবেবাড়ি পাল ক নামাল। ছেলেপ্লে দোড়জেছ। মেয়েখা থিড়কির দ্য়াবে উপক-ঋশুকি দেয়। ভাবনথ বোয়াক থেকে নেমে পালকিব পালে দাভালেন।

পালকি থেকে দেবনাথ বেবিয়ে একেন।
ধ্বধ্বে ফবসা বং মাথাজোড়া টাক পদ্বাচত্তড়া দেহ। বললেন গলায় বাদ দিয়ে
চেডিক্লি তেমাার বেহারাবা, কানে তালা
ধ্বিয়ে দিয়েছে।

ভ্ৰমাথ হাসতে লাগলেন। দেবনাথ অন্যোগের কটে বলেন, নাগরগোপে পালকি পাঠিয়েছ কেন দাদা? দেওকোশ পথ হটিতে পাবব না, এতদ্বে মথব হয়ে পতেছি?

ভবনাথ বলংলন, পারলেই <mark>হো হাটিতে</mark> হবে তার কোন মানে আছে?

ভূমি বড় ভাই হায়ে দশ কোণ পথ কসবা অবধি হাটতে পারে—ডা-ও একদিন আধাদন নয়, পাঁচ-সাত্রার মাসের মধে—

ভ্ৰনাথ বলেন, হাঁ.ট তো সেইজনেই। গাঁছ পালকির ভাড়া দিয়ে ফাইর হব নাকি? এক-আধাদন ইলে পালে হাঁটি না পালকি চাঁড় বিবেচনা ক্রওাম।

জাইরের উপরে হামকি দিয়ে উঠলেনং ঃ বকরকামি থামাত দিকি, বথট করে এলে, জিবিয়ে নাওগে।

সদ[্]ল বৈহারা কেন্ন মোড়ল কোমরের গামছা খাল যাম মাছছে। তাকে দেখিথে দেবনাথ বলেন, পালকির খোল থেকে উঠোনে নেমে পড়লাম—আমার কি ঋণী। কণ্ট ঐ ওদের। পায়ের কণ্টের চেকে বে শ্ কণ্ট গলার। সা চেটান চেটাছিল, গলা চিরে বস্তু কোর্বে ভয় হাছিল আমার।

পথে দেবনাথ মানা করেছিলেন ; ক্ষত্ত চেশ্চিত্ত না কেদ্ৰ।

কেদ্ বলল, জোগডাক ডাকতে হবে বড়কত বল দিয়েছেন। পালকি পাঠানেই সেইজনো, ছোটবাব বাড়ি আসভেন, দশে-ধমে জানুক।

চাকরিবার্কর করার আগে দেবনাথও গ্লামে ছিলেন দাদার সংগা কিছুদিন বিষয়-আগল্প দেখেছেন। ক্ষরতিত তেতে গৈয়ে-ছেন্ বারকরেক। দশ্য ক্রোশ পথ অবাধে তথন হটি চলত, এখন সামান্য দ্রের নাগরগোপ থেকে আসতেও পারে মাটি ঠেকানো চলবে না। চাকুরে ভাই চুপিসাড়ে বাড়ি আসবে সে কেমন কথা! পাইতরে হৈ-হৈ পড়ে যাক, প্রের্ডির আর সেদিন নেই। শহুজনে হিংসায় জন্লেপ্ডে মর্ক্ন

এইপুক্র চির্টা কাল। ভবনাথের ধরণ-शावन स काक्षकार अना जकरणव भएन वर्ष একটা মেলে না। বাপ মারা গেলেন, ভার অব্পদিন আগে বিয়ে হয়েছে, সম্তানাদি ত্যুনি, দেবনাথ মাবালক তথন। ভাসলেন ির্ভান সংসারসাগরে। স্বৈত্তক দুটো গাঁতি এবং কিছা খামারজাম সদ্বল-ম্বিকেরা गानान क्योंकला करन भागना जार्क दिला। দেওয়ানি-ফৌজদারি উভয় প্রকার। মামলা একটার ফারশালা হল গে। মন্তুন আবার দুটো জাড়ে দিল। ভিত্ন না ভ্ৰমাথ, কত জিলবন জিভিয়ে জিভয়েই ওংকে খংম কররে। মর্বিকেলা এই পণ নিয়ে বসেছিল। ভথৰ মা ছিলেন্ ভবনাথকে ডিলৈ কন্ত ববে বললেন, ভোৱ জেঠার পায়ে গিলে পড় ত্যতে অপমান নেই। কখনো না—ভবনাথ গুলু সূরে বসেছেন : মিথোলাদী ফোরেবলজ উনি আবার জেঠা কিসের গৈতক এক-কাঠান নণ্ট ভতে দেনান ভবনাথ, অধিকণ্ড ব্যক্তিয়েছেন। আৱ এখন তো পাথুৱে-পাঁচ কল ভাই মান্য হয়ে বাইবে থেকে প্রসাকীত আনহে। সংসার ভারী ইয়েছে, ছেলেমেয়েদেরত বিয়েখাত্যা হয়েছে কতক কতক। গোল শীত্রণলে বাগের মধ্যে নতুন পাকর বাটা ভায়েছে। কিন্তু যুখন স্বশোর অতীত ছিল এই সম্প্র—

দেবনাথ ভীক্ষাবর্ণিদ বাংলা লেখা-পড়ান্ত ভাল শিখেছিলেন। তথনকার দিনে দেওয়ানি ও ফোজদার কাষাবিদ শিখে উকিল ভত্যা সেত। দেবনাথ উকিল ইবেন। ভবনাথের বিশেষ ইচ্ছা ভাই—ভাই উকিল হয়ে যদি সদরে বসেন, প্রতিপদ্দের সাব মিটিয়ে নামভানাব্যদ করছে পাগ্রেন। বা ড় বনে আইনের বই-ট্র পড়ে দেবনাথ তৈথি হু স্লেক্ষ্ণে - কলকাতা ছোট আদালতে পরীক্ষা পাশ করলে সাটি[্]ফিকেট পেয়ে যাবেন। त्र बना इएकम कलकाडा (अर्ट प्रार्थ वेशका। ক্ষ্যোত্তকে পিট্যার চালা ইয়নি তথন, হশোরের পথে মোট্রবাস তো ল্রম্থান ছোড়ার-গাড়িও নেই। গোষান মাত সম্বল। কলকাতায় তাড়াতাড়ি পেণছানোর উপায় গোটো দুই নদী পার হয়ে ক্লোশ পাঁচ-ছয়

মাঠ ভেঙে নপাড়া া শেইশনে গিয়ে ট্রেন ধরা। শীতকাল বলেই সম্ভব এটা, বহা-কালে ভলে ভূবে মাঠ সমন্ত্র হয়ে থাকে। দেবনাথ নাপাড়াতেই যাবেন। এ-গ্রাম-সে-গ্রাম থেকে আরভ চারছন পরীক্ষাহা—একসংশ যাক্তেন। সকলে। তেনকালে ভবনাথ রাষ্ দিলেন ঃ জামা-তা্তে। যোল, যাভরা হবে

বৃত্তা•ত এই। স্কালবেলা কুয়াসার গুৰুষ্য ভবনাথ এজয়ালি বানা-পাকুরে গেছেন মূখ-ট্রক ধোবার জন্য। গলদা-চিংড়ি নজরে পড়ল-পাডের ঝাঁঝি-বনে দাভি ভাসান দিয়ে চপ্টাপ বয়েছে। ব**র্ষা**-কালে বিল আর পাকের একটালা **হয়ে যায়**. তুখন এই সন্নুস্ত[ি] মাত চোকে। ভবনা**থ** লাঠি নিয়ে দ্-হাতে করে জলের উপর বাড়ি দেন, চিংডি ডবে যায়, চাত**ড়া দিয়ে** ভুলে নেন সেটা। <mark>পাড় ঘ</mark>ুরে-**ঘুরে এই** কায়দায় মেরে বেড়াছেন। বেশ কওকগ**্লো** হল-ভিনটে ভার মধ্যে দৈআকার কত বছল ধরে বড় হয়েছে কে জানে। গল্পা-চিংড়ি কতই তো খায় লোকে, কিণ্ড খাওয়া পড়ে মুগুৰু এমন জিনিস কালেভয়ে কদাচিং চোগে দেখেছে। লাঠির **ঘায়ে মাথা** ফেটে একটার খিলা বেরিয়ে গেছে, বাটিছে ঘলা তলে রাখল—হাবহা **গ্রাধ্তের** চেহারা, বর্ণট ভর্গত হয়ে গে**ছে একেবারো।** প্রীক্ষার রাবদে ভাই এ-ক্লিনসে বঞ্চিত হবে, সেটা বেমন করে হয় ? হাকুম হয়ে গেলঃ যাওয়া তোমার হতেই পারে না

দেবনাথ আকাশ থেকে **শঙ্লেন ঃ ব্লান্ত** পোহালে প্রীক্ষা—বলছ কি দাদ্য

জ্বনাথ বললেন, প্রবীক্ষা ছ-মান্ন বাদে আবার হবে। পুকুরের মিঠাজলের জত বৃদ্ধ হিচ্চি আর মিলবে না। আমি তো দেখিনি, ব্রদাখুড়ো কোন আন্দাকালের মানুষ, তিনিত দেখনান বললেন।

হাতুম বৈড়ে বাদ - প্রতিবাদের
অপেকার না থেকে ভবনাথ কোন্ কাজে
হন-হন করে বেরিয়ে গেলেন। প্রবিদ্যিত
ভবনাথকে ডিঙিয়ে কিছু হতে পারে
তেমন চিণ্ডাও আসে না কারো মনে।
প্রীক্ষা বাতিল করে দিয়ে দেবনাথকে
অতএব চিংড়ি-ভোলনে বাড়ি থেকে থেতে
হল। ছ-মাস পরে আবার পরীক্ষা—হাইপাই
জনরে ভুগছেন তথন। কাজে একবার বায়

পিড়লৈ যা হয়—উকিল হওয়া তার ভাগে। ঘটল না।

উকিল হলেন না, তবে ভাল একটা
চাকরি হল। হুবিবালাল সম্পূর্বে দেবনাথের
কাভিন্তাই, সমব্য়সী। এক সময়ে দেশেমধ্যে থাকতেন, এখন কলকাতার বা সংলা।
একবার সোনাখড়ি এসোহলেন, দেবনাগকে
টেনেটুনে নিয়ে চললেন: চলো আমার
সংলা, জমিদারি সেরেস্টার চুকিয়ে দেবো।
ক্রামান লাশ্রুডির এসেটা। শ্বশ্রের নম—
শাল্রিড্র, মাভানহের জমিদারি পেয়েছেন
জিনি। একজন বিশ্বাসী আইনজ্ঞ লোক
শ্রুজেন, ডোমায় দিরে খাসা হবে।

চাকরি নেবার পরেও দেবনাথ মতলব शाहकर्मा। विषया भएए धाकरवन मा তিন উক্লি হয়ে সদরে এসে বসরেন। মাসে একবার-দ্বার বাড়ি যেতে পারবেন। মাত্য়াতের অসুবিধাও দুরে হয়েছে। সদর থেকে পায়ে হাটা কিন্দ্র গরের গাড়ি ভিন্ন উপায় ছিল না, এখন ঘোড়ার গাড়ি চাল হয়েছে মাদার ববস আর কাতিক ধরের তিনখানা করে ঘোড়ার লাড়ি আরও **ক'জনের একথনো করে। কলকাতার ট্রেপর মধ্যেছেন দেবনাগ, কাম্বিধি বইগ**ুলো बाजिया-बर्जनित्र निर्म्हन अवास्त्र भवीका দেবেনই। এবং পাশত হবেন নির্থাং। **কিল্ড আসলে ব**রবাদ বাংলা উকিলের বেওয়াজ উঠে গেল সেই বছরেই-এন্টান্স পাম্যের পর ভিলম্ভারশিপ পাল না তকে উকিল হওয়া যাবে না। সাধু অত্তাব ডিরান্তপু থাতে গেল, জালদারি চাক্রিতে (भवनाथ कार्याभ इत्य बहेत्यन।

চাকরির আগেই ভ্রানাথ প্রের বছারে ছাইয়ের বিয়ে দিল্লে বাব্বুগার বছার গলীকে লাই করে এনেছিলেন। একবার দেবমাথ বাজি এলে তরংগিলী এক কান্ড করে বসলোন। মোরো হস্ত্রেছে ভ্রুবন—বিমলা। মারার কলকাভার নানান আজব গলপ মানুনে মনে লোভ হয়েছিল এবং মতিলালাদের ভূগতে জনজবলানান ছিল চোগের ভূগতে জনজবলানা ছিল চোগের ভূগতে জনজবলানা করে বাছে বললেন, এককা প্রেছ থাকো—বাসা করে। না কেন বলকাভায়। আমি ব্রেশেবড়ে দিতে পাবন, বিমিন্ত যত্য হবে।

দেশনাথ বললেন ং হোমার থেছেব এবাড়ি বুলি যাত। নেই? খুবুই অনায়ে কথা। তেমাবত নেই শুকাতে পাবছি। তথ্য অলপ বয়স তুলংগিলীর ফল্মী বিদেশে পাছে থাকেন কতেত্বই বা বোকেন ভাকি। লালবে বফল খালে দিলেন এব দোৱ ভাব দোহা। অম্বুক এই বলেছিল, তুম্বুক এই কংগ্রিছা। শত্মুকে বলেজেনে,বাসা করার প্রক্ষেত্বতে যাদ স্বুলহ্য হয়।

চুপ করে শ্রেমিগ্লেন দেবনাল। অব-শেষে কথা বললেন, ১বে ১১ ডোমার ডিলাধ্য থাকা চলে না এ সংসারে। ঝালই অকটা এম্পার-ওম্পার করতে স্থ্যে। দেবনাথের স্বর অস্বাভাবিক রক্ষের গশভীর। ভয় পেয়ে গেলেন তর্রাজানী। কী কাত করে বসেন না-জানি ও-মান্যে।

তথন আবার সামলে নিতে ধান : তা কেন! নেগ্রটাকে কোলেকাংশ করতে পারিনে, সেই কথা বলছি। সংসারের খাটাখার্টান, সময় পাওয়া যায় না। দুরু খাওয়ানোর গরজে দু-বার-চাগরার নিয়ে আসে সেই সময় যা-একট্ব ধরতে পাই। বিনোর কোলে কোলে ঘোরে, দিদরও কেশ না। তারা কি আরে ফত্য-আদ্ধ ক্ষেন। তোমন কথা কলে বলতে যাব। তারাকি আরে ফ্রেন্সাদ্ধ ক্ষেন। তোমন কথা কলে বলতে মারের টান আলাদা, পুরুষ হয়ে সে-জিনিস্ব ব্রেবেেন।

হেন্দ্রে তরঙা করে বলেম, মতুন বর্নি ফটেছে মেয়ের—বা-বা বা-বা করে। দুর্ব বছর বয়ন হাস, বাবাকে চেনেই না মোটে। দেশল করে যে চিনবে?

তা যে শেষন কথেই বলো, ভবী ভোলবাৰ নয়। বালাখনের দাওয়ায় পরাদন পাশাপাশি দু' ভাষ্ট খেতে বংস্কে—মেয়ে-বউ সব রাধাবাড়া দেওয়া-থোওয়া নিয়ে বাসত। দেবমাথ বলালেন, দাদা, ভোট বউর উপর বাড়ির স্বস্থা বিষয় অভানার বর্জে।

স্তুম্ভিত ভ্রনাথ। বললেন, সে কি রে!

অন্ত্যাচার কি এক-আধ রক্ষ: তার হেনপথা, মেয়ের অধতা,—মোটের উপগ্র বাড়ন্ত কেউ দ্'চোখে ওদের দেখাত পরে দা। বস্ত ঘুম আসন্ধিল তথা সর কথা আমার মানে নেই। বসবাতার বাসা করে বাজে। বিব্ বাসা হলের বাউলে বাদ দিয়ে তো হবে না—আরহ-প্রতিপালা চাবর্নাইশার সকলক নিরে বাসা। জমিদারের নাইশার সকলক নিরে বাসা। জমিদারের হয়ে মাউলেই বাপের বাড়ি সামিনো তার চেয়ে ছোট্র-উরেই বাপের বাড়ি সামিনো থারে ভাল, মেয়ে নিরে চিরবাল আদ্বান্দারে করে করের বাক্ষ শিক্ষ ভিল মেয়ে বিরে চিরবাল আদ্বান্দার করের করের আর্ক মেরা

পামো—বলে ভবনাথ ভাইকে থামিয়ে জারংগিন্টকে ডকতে পাললেন ঃ মা, তুনা — তবংগিণ্ট দবজার আড়ালে এসে স্টাড়িয়ে ছেন। দেবনাথের কথা সব কানে গেছে, তিনি তো মানমে মরে আছেন।

ভ্রেমাথ ব্লালেন, আমার সংগে তো কথা ব্লাবে না মা। অস**ুবধের কথা শংলে** সম≽ত তোমার বড়লাকৈ বলো—

দেবনাথ বলে উঠকেন, সউদিদিই েন সভূ শত্র কার এ-বাড়ের মধ্যে? মোন দানা, তালিত্বি দিয়ে চালানোর অবস্থা আর নেই। দুর্গদনের তবে বাড় এসেছি -আমার ফানে প্যান্ত উঠিছে, ব্যুক্তন নাড় ঐ আমি যা বলসায়, ভাছাড়া শুষ্ধে নেই।

ভবনাথ হংকার দিয়ে ভাইকে নিরুত কর্মানে ঃ থাক্। মাতব্দার করতে হবে মু— চিববেলে মোটাবাুদ্ধি তোমার । বউমাকে এ-সংসাবে আমু এনেছি। দায়িত্ব আমাধ— যা কলতে হয়, আমি বাুঝৰ সেটা। বালের হাড়ি পাঠাতে হয়তো সে বড়বউকে। সে আগে এসেছে, বউমা পরে। কেন সে মানিয়ে গটছেয়ে চগতে পারে না।

ত্রংগিণী মনে মনে ভাবছেন ঃ বরে গেছে বাপের-বাড়ি যেতে। বললেই গেলাম আর কি! যিনি পাঠাতে চান, তিনি হো ফুর্তা নন। আসল কতা আমান্ত্র দিকে। খারু কলা!

এরপর ভবনাথ উমাস্বদ্ধীকে নিয়ে পড়কোন: মানিয়ে-গা্ভিয়ে চলতে না পারো তো সংসারের বড় হয়েছ কেন? মাথা আমার চেণ্ট করে দিলে।

ভয় পেয়ে উন্নাস্ক্রেরী বললেন, আনি কি করলাম?

যা-সমুস্ত করবার, করোনি তুহি? বাংপর বাড়ি তোমারই চলে যাওয়া উচিত। একফোটা মেয়ে এনে তোমার সংসারে দিলাম—দশ-দশটা বছরেও বাধ্যতে প্যায়ল না, চলে যাবার কথা বলে।

উলাস্থেনী চোখ মাছলেন। দোষ তাঁবই বৈশিষ্যতের কিছা নেই। এব পরে ভ্রহণিয়ার ভাক পত্ন। ভাসানের ঘণে গেলেন া তিনি, দবজার ষাইবে দাঁড়ানেন।

ভবনাথ বলেন, সর্বাং লক্ষ্যী-ঠাকর্পুনে খাঁজেপেতে ঘরে এনে প্রত্তী করেছি। সংসাধ উথলে উঠকে সেই থেকে। কিসের বাথা আমায় বলো মা। আমি ভোমায় এনেছি কুটের অগ্নিই বিজ্ঞান কবন।

चाफ् माफ्ट - उत्तर्शनी, दक्षान् वाधः दन्दे । देवान र । शान दनदे । देवान

দেশনানে, ব উপর ম ভ্রমানে দুণ চোথে ধানা গড়াজে। একটুকু এক কথা থেকে কত বড় ২ ৬ জাময়ে টুললের বাড়িল ময়ে।। লংজায় কাবো পারে তিনি সুখ ভুলতে পারেন মা।

নথানাতী বৃষ্ধ দেবনাথের সংগা।
বাহ্যিবলান্তেত্ত না, আন্টেপিণ্টে কাপড়
ভাড়িয়ে দেয়ে নিয়ে এক প্রান্তে দায়ে
থাকেন। কচিন বয়স তখন দেবনাথেব বারো মাস বিদেশে পড়ে থাকেন্, কয়েবট দিনের জন্ম বাড়ি এসেহেন, ভার মধ্যে এই বিপত্তি। তাত ধ্যে কাছে টেনে দ্যো খোশাম্মর কথা স্বল্যেন, উর্গ্যিণী

বিপাকে পড়ে দেবনাথ উমাপ্দর্নিক ধরলেন : ছি'চ্বদিনে নিয়ে মন্দেকিল হল বউঠান। উপায় কি বলো।

উমাস্থেদগীর রাগ আছে কথা থেতে ফেলে দিলেন একেবারে ঃ আমি কিছ্ লামিনে ভাই। কড়পির কাছে লাগানি-ভালানি করতে গিরেছিলে যেমম। এক বিছানার শুরে মেরেমানুষে অমন কত কি
বলে থাকে। আমরাও বলেছি। ভাইরের
বাছে পুটপটে করে পমসত বলতে হবে
অমন কথনো শুনিন। বলবার ছৈল তো
আমায় বলতে পারতে। ঘোড়া ডিভিয়ে
ঘাস খেতে গিয়েছিলে যেমন—হাতে ধরে
না হয় তো পা জড়িয়েয় ধরোগে যাও। আমি
জাননে।

প্রয়ানো কথা এমনি বিস্তর আছে। ভবনাথ আরু দেবনাথ রাম-লক্ষ্যুণ বলে গাঁয়ের লোকে তুলনা দিয়ে থাকে। সৌভাগ্য উথলে উঠছে। তরংগিণীর মেয়ের পর মেয়ে হতে লাগল—পর পর তিনটি। ছেলের আশা সকলে ছেড়ে দিয়েছিল তা-ও হয়েছে ছেলের নাম কমল-প্রায়ণ্ড ছেলে জ্ঞাের সংখ্য সংখ্যাই দেবনাথের পদাের্যাত, সদর-নায়েব থেকে ম্যানেজার। খরার সময় শারকী প্রাচীন পাুকুরের জল খারাপ হয়ে যায়-এবারে শীতকালে বাণের মধ্যে নিজেদের নতুন পারুশ কাটা হয়েছে। কিদিত্র খাজন কালেকচারতে জমা দিয়ে হাইকোটে র কিছু মামলা-মোকদ্মার কাজ সেরে থানিকটা নিশ্চিণ্ড হয়ে দেবনাথ বা ড এসেছেন। থাক্রেন কিছুবিদন, সারা জৈপ্ঠ মাস থেকে আম-কঠাল খেছে তার-পর যাবেন। ভাল ভাল কলমের চারা নিয়ে এসেছেন এক বিখাত লোকের বাগান থেকে—আম, লিচু, গোলাপ্জাম, জামবাুল সফেদা, বিলাতিগাব--গ্রহ্মাদ্ন বিশেষ। চারাগালো কসবা থেকে দ্বেখানা গরাুরগাঁড় বোঝাই হয়ে পরম হাত্রে আসছে। কাছারিব দুজন ব্যক্ষাজ সংগে এনেছেন্ ভাদের উপর চারা পেণছে দেবার দায়িত্ব সংধ্যা নাগাদ পেণছে যাবে তাবা। পাুকুরের তোলা-মাটিতে গাছ লাগালে ধাঁ-ধাঁ বরে বড হয়ে উঠবে—জ মদারিল শতেক কাজের মধ্যেও সে খেয়াল আছে। বাড়ির কথা দেবনাথ ভিলেকের তরে ভুলতে পারেন মা। বাড়ি কেন, সারা সোনাখড়ি গ্রাম তার নথদপ্রে। গাঁরের লোক প্রেল খণ্ডিয়ে-খ^{*}ুটিয়ে পড়শীদের খবরাখবর নেন। একটা এস্টেটের ম্যানেজার নাগরগোপে বাস থেকে নেমে উং-উং করে বর্গান্ন পর্যানত পায়ে হটিবে সে কেমন। ভবনাথ গতএব পালাকির ব্যবস্থা করলেন। খুবু একটা অন্যায় অপবায় নাকিঃ হয়ে থাকে হয়েছে প্ৰেবা ড্র বডকত্রি কারে। কাছে কৈ ফ-য়তেল ধার ধারেন না।

দ্বৈ মাহিন্দার আজ মাসখানেক ধ্বে
চারা গাছের ঘের বৃনেছে, বাদামতেলার
গাদা দেওয়া রয়েছে সেগ্লো, দারা বিকাল
ভবনাথ ও দেবনাথ দৃহ ভাই বাগান ও
নতুন প্কুরের চারি পাছে ঘ্রহেন,
মাহিন্দার শিশ্বর কোদালি নিয়ে সভেগ
মধ্যে আছে। আষাতে চারাপিনা বেচতে
আসবে, র,ই, কাওলা, ম্বেল, দে তো
ছড়া হবেই। ভাছড়াও এখানটা এই
কঠিলবাছের পাশ দিয়ে নালা কেটে বিলের
স্থেগ যোগাযোগ রাখা যাক। শিশ্বর

ক' কেদাল মাটি কেটে নিশানা কর দিকি জারগাটা। বিলের নিথরচার মাছ নালার পথে পা্কুরে এসে ঢাুকবে।

চারার গাড়ি এসে পেশছানোর পর কোন চারা কোথায় পোঁতা হবে, তারও ভাবনা-চির্ব্বা বিচার-বিবেচনা হছে। কোদালের কোপ দিয়ে শিশ্বর জারগা চিহ্নিত করে খাছে। সকাল থেকেই গত খাড়ে পোঁতাল কাজ আরম্ভ চারা কম নয়, এবেলা-ওবেলা সম্পত্টা দিন লেগে খাবে। দেবনাথ বললেন, গোলাপ্থাস দিলের ধারে দিও না দাদা। কঁচা থাকতেই জানে লালের ছোপ ধরে যায়—চাষারা লাভল দিতে একে, ঢিল আর এড়ো মোরে কাচা আর প্রকর্মী করিব করে কোলের কার আর স্বর করেব না। গোলাশ্যাস বাড়ির ধারে ধারে দাও, বরণ্ড গোপলাধোরা ওথানে। গোপলাধারা বিশ্বে গোকে গোলেও বোঝা যায় না, উপরটা কাচা থাকে। আৰু কাচিমিঠে বাগের ভিতরেই না, উঠোনের এক পালে। কাঁচা অবস্থায় থেতে হয়, পাকলে বিস্বাদ হয়ে যার।

সায়েন্স ফিকশন, ডিটেকটিভ পত্রিকার জগতেএকালেরসর্ব শেত্র উপ্রভাসংখ্যা



এতে থাকছে : ১টি প্রচ্ছদকাহিনী সহ

৮টি ভিন্ন ভিন্ন স্বাদের উপন্যাস, ৮টি উপন্যাসোপম গল্প এবং ৮টি বিশেষ প্রবন্ধ নিয়ে ৭০০

প্রতার পত্রিকাটিতে আর্ট পেল টে ছাপা প্ল্যানচেট ও একটো-প্লাজনের আত্মার রোমহর্ষক ছবি এবং টেক্সাস থিত্রলার ক্মিকস্।

याँ द्वा सिर्था । स

প্রেমেন্দ্র মিত্র, সমরেশ বস্ক্র, নীহাররঞ্জন গ্রপ্ত, আশ্বতোষ ম্বেখাপাধ্যায়, আশা-প্রণা দেবী, সক্রনীল গঙ্গোপাধ্যায়, জ্যোতিরিন্দ্র নন্দী, শক্তিপদ রাজগ্রহ্র, সৈয়দ মুস্তাফা সিরাজ, তারাপ্রণব বক্রাচারী, চিরঞ্জীব সেন, বীর্ল্ল চটোঃ, ক্শাণ্রবন্দ্যোপাধ্যায়, দেবীপদম্বখো-পাধ্যায়, ডাঃ অভিজিৎ দত্ত, সক্রনীল চৌধ্ররী, জগৎ বন্দ্যোপাধ্যায়, দৈবীশার্ণ, কনিষ্ঠ পাশ্ডব ও অদ্রীশ বর্ধন। এ ছাড়া বিশেষ আকর্ষণ জ্যেস হেডলী চেজ

শেষ সংকেত, ১২৪/১এ মাণিকতলা শ্রীট কলিকাতা—৬

নাৰ্ডান্ত উপান না থাকলে এ-আমের গাঁটিই কৈছে কেলৰে ছান্ত্ৰ বড় ছাতে দেবে না। কান্ত একককৰ একোছ খালা, বিশ্বন-টোলো— নামেই ভ্ৰমান চনক খেলেন, দেবনাথ ছিটিছিটি ক্লাকলেন।

ভব্নাথ বলেন, টোকো আন্সের অভাব জনছে? গঞাট খটনু ও আবার আনতে গেলে ফেন?

ি দেশ্বনাথ ৰজালেন, নামেই দাখে ুটক, ঋষানি টকের ভাজত নেই। জারি ছিল্টি জ্ঞাস

গাছে নতুন আয়ু ফললৈ পাড়ার লোকে
নাকি জিজাসা করেছিল ঃ কেয়ন আয়ু টক
না মিটি? মুখু ব করে মালিক জবাব
দিয়েছিল ঃ বিষ্মু টক: কোনো লোক
ভুলার দিকে আসবে না, গাছেল স্বকটি
আয়ু নিবিব্যু নিজেরা খাবে—ইয়ু ধবানো
নাম ভাই। ওাপুলরে অবল্য সব জানাজানি
হয়ে গেল আয়ের নায়ে তব্বু কলংক রয়ে
দেল বিষ্মু টোংগা।

চারা পেশছতে বৈভি রাত্রি হয়ে গেল ! ভা হোকগে, রোপণ তো কাল। যোগা-যোগটা ভাল, পাজিৰ মতে ব্যক্ষেপাণের भिन्न बरहे आलाभीकाल। विकास जिन्ही-পাঁচ থেকে ছাটা ছবুদা। এটেল সময়, তিন ঘণ্টাল্ল বেছি। স্কাল্যেলার দিকে গ্রু খোঁড়া সমাধা করে স্বাথবে। সেই গতে নিলিক্ট চারা নামিয়ে কিছা বঢ়ুয়ো মাটি ভিতরে ছড়িয়ে দয়ে পরের গতে চলে থাবে। বাকি সম>ত কাজ--গত ভরাট কথা, ছের বসানো মাহিন্দার দুজন শেষ করবে। ক্তির বুলনি গোলাকার ঘের বানে বেখেছে--চারা বেড় দিয়ে বসিয়ে দেশে. গ্রা-ছাগলে থেতে না পারে। চারা বড় হচ্ছে ওদিকে রোদ-বাণ্ট খেলে খেয়ে ছোরও জাীপ হয়ে হাছে। ভারপরে একদিন ভেঙে পড়বে--চালা তখন গাছ হয়ে গেছে ष्यदान जात श्रद्धाकन त्नदे।

গাছ পোঁতা এ-ও যেন এক পরব। কবি
মনোভাব দেবনাথের--ফে-কাভে হাত দেন,
কান্ধটা থেন আলাদা এক চেছুর। মিন্নে নের।
বাড়ির স্বাই বাগের মধ্যে এসে জুটেত।
ভবনাথ, দেবনাথ তো আছেনই, ভবনাথের



জিন ছেলে—কুকমার, কালীমার ও হিবলমার
এবং মেজে নিম্মালা, আল দেবনাথের মেরে
পার্টি। পাঁচ-বছরে ক্যান্সলোচনত পার্টির
হাত ধরে এসেছে। পার্টির উপারের হারে
চপলা শ্রশার্রাড়িতে, মছেবের মধ্যে সে
কেবল নেই। আর বউরা গিলারীরা আসতে
পালেন না বাইরের এত মান্বের সামানে।
ফাঁকা বাগে গাছ পোঁতার ব্যাপারে কেমন
করে আস্বেন?

দেশনাথ কাছেন, চারা পতে দেবার সমায় স্বাই একটা করে হাত ঠেকিলে দাও একমাঠো করে মাটি দিয়ে দাও গোড়ায়। কেট বাদ থাকবে না।

কমলের হাত নিয়ে চালায় ঠেকানো হছে, একট্রু হাত ছাুইরে গতের ফেলছে। দেবলাথ বললেন, সকলের হাতের পোঁতা গাছ। নিজের গাছ বলে মন্তা হবে, ডালখনা কাটতেও প্রানে লাগবে। এই কমলছাই এখন, কোন-কিছ্ বোঝে না, বিত্তু কছে সমাত শ্রেন গাছপালার উপর ভাগগতেনেক ভাগবে।

পাড়ায় চাউর হয়ে গেছে, ব্যানাবটা শধ্যে আনু প্রবাড়ির মধ্যে নেই। নি ত্রা-দিনের খাঙ্রা-পরার বাড়তি কিছু হলেই গ্রামের মানুষ ঝাকে এসে পড়বো। তাবিফ করছে সকলে সেবনাথের ৯ শানে যাও চেবে দেখা কোন কালে কি হবে মাধার ভিংলা সেই ততদিনের ভারনা। বিদেশের ভার ভালা মানুষের সংক্র ওঠা-বসার ফলে এমনি সর চিক্তাভারনা আছে।

বাসের কল্যব বাড়িত মধ্যে দক্ষিণে ঘব অব ধ এসেছে। জানলা দিয়ে তাকিয়ে দেখে ভর্মগোণীর দ্যোথ জলে ভরে গেল। কুক্ষময়ের বউ অলকা কি কাজে ঘরে এলো। ভর্মগোণী সামালারার সমন্ত্র পান্ত, দেখে ফেলেছে সে। বাছে এসে এখন করে ই ছোটনা, কি হয়েছে ?

কিছু হয়নি—কী আধার হবে ঃ ভূমি সংগ্

অলকা মড়ে না। নিজের অচিলে খুড়-শাশাভির চেথে মহিংয় দিল। বলে। কেন কালছা, বলো।

একটা জিনিস মনে উঠল। বলে, কাকা-মশায় কিছা বলেছেন নাৰ্কি?

ছবংগিণী ঝেড়ে ফেলে দিলেন : না না, উনি কি বলবেন। দেগট বা হল শেখায়া?

অঙ্গকাকে তারপ্র সামাল করে দেন : কাউকে এসব বসতে যেও না বউলা সবাই মিলে ওখানে আনন্দ করছে আনার চোথে কল। ধ্রই খারাশ সভ্যি।

ভেদ ধরে অলকা বলে, কী হয়েছে বলো ভৱে।

একম্হুতে নিঃশকে ত্ৰংগিণী ভাৰিলে শইলেন। ঠোঁট দুটো অকস্মাৎ কেশে উঠভা। বললেন, আমাৰ বিমি শাক্ষেক্ত বালে গিয়ে কত আহ্যান ক্লড।

ধৈৰ হারিছে হাউ-হাউ করে ডিনি কে'দে উঠলেন।

মাত বহরেনটি হয়ে মারা গিয়েছিল

তরংগিগাঁর প্রথম সক্তান বি'ম-বিষ্ণা।
কত কাল হরে গৈছে। চাক্রির থান্দার
দেবনাথ বাড়ির বার হার্নান তথানোওকালতি পড়েন আর লাদার ভাই হরে
বিবয়-আলায় দেখালানো করেন। আচমকা
কেন জানি বিষ্ণা বলাছিল, আছি মান্দ্র
গোলে মা তোমার উন্নান বাঠ ঠেলে দেবে
কে?

তরংগিণী বিষয় এক ধমক দিলেন: চোপ। একফোটা হেছে তার পাকা পাকা কথা গোন।

উঠানে কলাই শাকাতে দেওয়া আছে। আকংশ-ভরা মেঘ-ছড়-ছড় করে ব্ঞি নামল। ভাকাল বর্ষা। ভিত্তে গেল রে সব, ভিত্তে গেল। ও ব্রিম--

কোথায় ছিল বিমলা, ছুটে একে পড়ল। বাতাস বেধে রাডা শাড়িট্কে ফালে উঠেছে —পাথনা-মেলা পরীন মাইন উট্টে এলো যোন তবংগিণী কুনকে ভরে দিছেল, মোয়ে বয়ে বধ্বে ঘরে নিছে। মোজেম টেলে আধার কুনকে নিয়ে ভাসে।

কাথা দেলাই করেন তবংগিণী কাঁথার ডালা নিয়ে। পালে বঙ্গে নিমলাও প্রভুলোগ কাপড় সামান এক নাাকড়ার টকেরোর উপ্র ফাল তেলে।

সেই মেয়ের ভেদবাম। কবিরাজ জল বাদ করে গেছেন, আর বিমলা জল জল কবে আছাড়িশিছাড়ি খাছে ঃ দাও মা জল একট্রানি দাও। জবিধাল টের পারে না।

সামনে থাকলে এমনি তো কলবে অবিরত তরংগিলী একটা আড়ালে শিয়ে-ছেন, যোয়ে সেই ফাকৈ গড়াতে গড়াতে একেবারে জালের কলসির কাছে। কলস্পিত জল কোথা, খালি কলসি চন্টেন করছে।

ত্রংগিণ**ী** অবাল **হয়ে বললেন** ত্রুগোষ **থে**কে নেও গড়েছিস কেন বে? জল সাজ--

মেয়েক আল,গাছে আবার উপরে তুলে দিয়ে দরংগিণী বললেন, কণ্ট করে একট্ট থাক মা, মেরে ওঠ। কত জল খেতে চাস,

দ্মাল মেয়ে। মা দুর্নেফনে, আসেন আর গায়ে হাত দেন। ঠান্ডাই তো। চুপচাপ দ্মান্তে—তবে আর কি! বাগের মধ্যে কুয়োপাণি ভাকছে: কুব-কুব-কুব। অকক পথি ডেকে জানান দিল দুই প্রহর হয়ে গেছে। ইছুম ভেকে উঠল বদাম গছে খেকে। তবংগিণীর গায়ে কগৈ দিয়ে ওঠে। বিশ্বিপোকারা কদিছে কেন। জ্লোমান্ত আছে বছু বিশি।

হাত্ত-পা ঠান্ডা বে মেল্লের। লোক্চন ভেঙে এসেছে। সোনার বিমি অন্নার চোথ মেল 'মা' বলে ডাক একটিবার ভূই—

বিমালার দেছ শমলানে নিয়ে বাওয়া হয়। অসপ অসপ রোদ উঠেছে। মধেছে বিমালা, কে ৰূপবে। গায়ের ৯ং ঝিকামিক করছে। মৃথে হালি লেগে আছে। জ্যোকার ব্যবহা নেই, জল ভেন্টা পাজের মা আন্ত—

(ক্সম্পাঃ)

যুবক যুবতী

শ্রীমতী অলক। বদ্মাল্লকের বস্থানিও তিঠিটির জন্য ডাকে আমি ধুশ্যবাদ জানাই। অমার ব্যক্তিগত উচ্ছন্নসের কামণ আমি নিজে ভূকভোগাঁ এবং প্রতিষ্ঠ দশকের প্রথমধেরি একজন বিজ্ঞানের ছালীও।

নিতাশ্ত কচি ব্যুসে काठिका मिल পাঠকলায় ঘান্ধাভার আমলের ক-অভ্যাসের भीका अभारत्वत काह थ्यत्के नास्ट करत-ছিলায়। অভিভাবকদের কুঠা ও অসাব-ধানভায় কৈলোৱের ভয়-ভাবনার নিঃসংগ মুখটোরা দিনগালো কয়ে উঠেছিল অভাা-চাৰিত ও দক্ষেই। সৱবজীকালের পরিণত বোধলন্তির বলে বিদ্যালয়ে যৌল লিকার প্রোজনীয়তার কথা স্বডঃস্কৃতভাবে মনে কেগেছিল। প্রকৃতি-ভাত্তিত দঃসহ অবস্থা থেকে যেদিন মান্যবের গুড়া শৈক্ষা-সংস্কৃতির সাশের জগংটাতে বোধের উত্তরণ ঘটল সেদিন নিজের ভবিষাতের চিচ্টাও শ্বচ্ছ হয়ে গেল অনেকটাই। বুঝলাত্ম ব্রারার সংগ্ৰাম একক ভাবে চালগত হ'বে আমার বিভান্ত জীৱন দিয়ে আৰু কারো জীৱন বিড়াম্বত করা চলবে না। কিন্তু আমার সে সাধও প্রণ হবার নয়। প্রিবেশের সংগ্র সংগ্রামে আমি হেরে গেলাম। প্রগাংধর অধ্যকার নেমে এল। জানি আমার মা-বারণ আল্লাম পরিভাগে করতেন না। কিন্ত ভাদের শেষ বয়সের শানিত বিঘাত করার জনা ঘাৰ কার?

আসনে আমরা সেই চেণ্টা করি হাতে
শাস্থাবিধি শিক্ষার মুঞ্জ স্বভাবিক
ভাবে আমাদের স্কুলারমতি ছোট ভাইবোনেরা ধৌনান্দাভ পেতে পারে। কটিশুট হয়ে অকাল-বিন্দিটর সু-ভাবনামুর্
পরিবেশে সোল্দথে মাধ্ধে সফলতায়
ভাষা ভাদের জাবনস্ভুল সাধামত বিক্লিত
করার স্যোগ লাভ কর্ক।

-- গতি মোলিক কলি ৫১

(2)

সাশতাহিক অম্ত প্রকাশত খ্বকগ্রেডী ফিচারে খেনানকা রাপারটা নিয়ে
বেশ কমেকটা চিচিপত প্রকাশত হওায়
ত সম্বদ্ধে কিছু মণ্ডবা না করে পারলাম
না বারা বলেকে যা প্রিরেশ চাট তারা
তিদির বর্ধবার সমর্থনে স্মান্তির। স্বেম
রাধ্যকন তার সংশ্য আমি একমত। স্বেম
রাধ্যকন কর কশে আমি একমত। স্বেম
রাধ্যক মংশ্যা ক্রেম
রাধ্যক মংশ্যা ক্রেম
রামানের দেশের ক্রেম
রামানের দেশের ক্রেম
রামানের দেশের ত্রিজান্ন বা বার
বিভাস্তা কোবার প্রত্রে আ অশ্রশীল
সিনেমা, শান্তকা, বিভাগন বাং বাংরের
কল্যানে দেশের তর্ম্ব এবং বিশোর সম্যান
কল্যানে দেশের তর্ম্ব এবং বিশোর সম্যান



বিপথগায়াী ভাষ আবার এর পক্ষে হাঙ হয়েছে অর্থনৈতিক সংকট। এর উপর আবার এই শিক্ষা চালা হলে সমাজের কতটা মুখ্যল হবে ? যাঁরা বলতে চান হোন-শিক্ষা আমাদের দেহমনকে সঠিক এবং সাক্ষর করে গড়ে তলবে তাদেরকৈ আমার জিজ্ঞাস্য আমাদের মা-বাবা প্রভতিরা দেহে-মনে সকলেই কি অস্ক্রেথ ছিলেন? নি চয়ই না? কিন্তু তানের যুগে শিক্ষিতদের এখে কয়জন এই শিক্ষা সম্বদেধ সমাকভাবে ভয়াাকিবহাল? কিম্তু এই শিক্ষার অবদাই প্রয়োজনীয়তা আছে। তবে তার আগে দেশের অশ্লীল সিনেমা, বিজ্ঞাপন বই প্রভৃতি বন্ধ করতে হবে। প্রতিটো হবে সমাজতাশ্যিক রাণ্টের-ভবেই আসবে এই শিক্ষার উপয়াত পরিবেশ। কারণ পরিবর্ণীর কোন সমাজতান্ত্রিক রাজ্যে হোন অপরাধ দেখা যায় না ৰোধহয় এইজনেটে। আর আমাদের শ্রীর-মন যে অস্কের তার জনা কি নোংৱা সামাজিক পরিবেশ দায়ী নয়? কাজেই এ নোরে সামাজিক পরিবেশকে ধ্বংস ন্য করে থেনিনিক্ষা দেওয়ার জনা

প্ৰাথাৰাৰ কেন? মাকি ছৌনখিকা চালা ছালেই ঐ সামাজিক পৰিবেদ ধাংস হয়ে যাৰে? সংগ্ৰহক আংলাল চলচ্চিত্ৰ विकाशन वह व मान्यदक व्याव धरारमत দিকে মিলে বাজে এবং বাব সমাকের (य) निवकात चारेरक छ। वनारे वार्का। **এ**ই প্রস্থানের ১৫ সংখ্যা ভাষাতে প্রকাশিত তভিত্বাবার কথা উপতে কলে বলছি ভাবিয়া ক্ষরিও কাজ কাজ করিয়া ভাবিও ন। ভালৰ দেশের বিদ্যালয়ে হোমশিকা हा**ल**ु **इरहारह क्रियान्न अ**त क्**लाक्त्ल**त सुधा 5 হল। কর্ম। বেশিভান না থাকার আল্লাদের হা ক্ষতি ভারতে বর্তমান পরি-বেশে (য়া সহজেই যোনিগিকাকে কুপুণে নিছে যায়ে) এ শিক্ষার ফল হবে ভার [50a e esates |

> এজ নাশগ**ৃ**শত কলিকাতা-৫৪

প্রেম

আমাত পরিকায় খ্বক-ধ্বতী ফিচারে প্রেম সম্প্রেম সাক্ষাংবারটি পড়লাম। কালকাটা উইমেস্স কলেজের ছাত্রী স্বাদ্দা ঘোষ বলেজেন, ভালবাসাধ্র ক্ষেত্রে আমি খ্ব ভিসেত্রী থাকার চেন্টা করি।

সংনদদা ঘোষ ভালনাসা এবং হিসেবের বাপারটান্তে কি বলতে চাইছেন ব্বতে পারলম্ম না। ভালবাসার সপ্রো হিসেবের তথাং আকাশপাতাল। আমার মনেন হয় উনি আছারের দিনের আধিক সংকটের প্রসংগ্

সারা বাংলা কৰি সম্মেলন প্রস্থেগ প্রকাশিত চিঠির জবাৰ

আজকাল তৃচ্ছাতিত্বছ বিষয় নিয়ে সাহিত্যিকর। প্রায়ই সা^ততাহিক প্রিকায় লেখনীয**ুদ্ধ চালান। এ বিষয়টি গৌরবের** নয়। আমি খাবই দুঃ খত যে এমনি একটি অভিযোগ্যের ব্যাপারে আমাকেও জডিয়ে ফোলে একটি চিঠি 'অমাতে' প্রকাশিত ভূমিকটি হ হৈছে । 'অভিযোগ্⊄ারী'র ব্যক্তিগ্ৰভাৱে এ ডয়ে চলতে আমি যথাসাধ্য চেণ্টা করে থাকি, হঠাৎ একলা আমার নাম উল্লেখ করে তাই কোনো প্রকাশ্য অভিযোগ জ্পানোতে আমার যথেণ্ট রাচিণত আপতি আছে। এটা কোনো স্বাক্ষর-অভিযান তাল অনা কথা ছিল। কয়েক সংখ্যা আগের 'অমতে' শ্রীসত্যানন্দ গ্রহের চঠতে আমাকে উম্প্র করে যে একটি অভিযোগ আছে— আমি তার দায়িত নিতে প্রস্কৃত নই। আমার মের্থিক কথা উন্ধৃত করার আগুল তিনি বদি আমার অনুমতি বা পরামণ্ চাইতেন কল্যাণীয় সভ্যানন্দকে আমি 'এ প্রাম্প দিতাম না'।

আমনা বাড়ীতে ্সে কত কথাই তো বলি, ভালো-মণ্ন বাভিগ্ত কথোপকথন ও প্রকাশা মণ্ডবোর ওঞান ও দায়িত এক নয়। ব্যক্তিগত আলাপ যদি প্রকাশ্য ইন্টারভিউ-এর সমান হয়, তাহলে মেশে ছাড়া কথাই বলা চলে না। দিনের প্রতিটি কথা যদি সর্বজ্ঞনীনভার দায়ত্ব নিয়ে উচ্চারণ করতে হয়, তাহলে আমাদের জীবন প্রধানমন্দ্রীন মত দৃংখ্যায় হয়ে উঠবে। শতং বদ কথাটি তাদের ক্ষেত্র অচল। ক্ষিপ্র আমাদের মত তুক্ক ব্যক্তিদের ক্ষেত্র এ ধরণের সামানা স্বাধীনতাগালি ম্লোবান।

সেদিন মফং হলা কৰিবা অনেকেই
অচি-থাৰাব্ ও মণা শুবাৰ ক্ত দেখতে
পোলনা না বলে আগণোল কৰ্ছিলেন,
দ্নেতে পেরেছিলায়। কর্মকতাদের ক্তিরেল কেই।
অধ্যাপ্ত কোনোই জভিযোগ কেই।
অধ্যাপ্ত কাজে কিছু গ্রুটি, কিছু
বিশ্বপূলা (এবং কিছু মনোছালিনাও) হুরে
থাকেই। প্রশ্নানিই বেখানে অভিনেলনযোগ্য
ভুক্ত চুটিন্লির প্রতি দৃষ্ঠি আকর্মক না
করজেও আমাদের চলে।

नवसीया सम्बद्धाः क्याकासाः—३५।

^{*} চিঠিটি বিলদেৰ প্ৰাণ্ড। আৰু কোন চিঠি প্ৰকাশ কৰা সম্ভব হবে না।

বলতে চাইছেন। কাউকে ভালবাসলে য'দ ভার আথিক সংগতি না থাকে তাহতো সে ভালবাসা হর বাঁধার সহায়তা করে না। কিন্তু প্রশাহল, কে কীভাবে ভালবাসায় थाप्रैका भरक्त ता किति तिरक्षके कार्त्सन ना। কেট কারও বিশেষ গাল দেখে মাণ্ধ হয়ে ভালবাসেন কেট র পে. কেট বা মনের গভারতা করে। লাড় আটে ফাস্ট সাইট ৰাকে বলা হয় তাতে কোন যুবতীই তার প্রেরিকের আগিক সংগতি দেনে ওঠাব সম্মোগ পান না। প্রথম দিকে সেটা একে **অপরে**এ **পচ্ছে জান। সুদ্ভবত্ত নয়। পরবত**ি সময়ে স্বান্ধ্যতা বাড়নো আন্তে আন্তে সব জানা আছে। তাজকে ভালবাস গড়ে ওঠবার পর একজন প্রোমকা যদি বোঝেন জার প্রেমিক আহিক 'দক থেকে সলিভ নন, অঞ্জী তোল চাকরী বাকরী কি বাবসাপত্র করের না জখন কি তিনি প্রেমিকের সংগ্র বিক্রেম ঘটাবেন? শেটা বোধহয় সাঁত্যকারের ভালবাস। থাকরে। সম্ভব হয় না।

আমার তো মনে হয় কোন যুবতী ব দ কোন মুবককে সজিকার ভালবাসেন তাহলে আথিক অসংগতি নিয়ে বিজেদ না ঘটিয়ে বৌথভাবে চেটা করবেন চাকরী-বাকধীর এবং নিজেদের পারে দাঁড়ানোর। মনের মিল বাদ থাকে ভাহলে পথ একটা বেরুবেই। এবং যৌথভাবে আর্থক অন্টনের সংল্য লভাই ক্লার মধ্যেই ভাসবাসাব সাংর্শকতা। নৈবাদ্যা আসবে, কিন্তু তাতে ভালবাসার চিড ধরবে কোন?

তবে ইদানীং কালে ভালবাসার ধরন বদলেছে। তার সংখ্যাও খবে কয়। দানেছি অনেক যুবতী আগে-ভাগে তার আকাঞ্চিত মারকের ঠিক ঠিকানা, আথিক অবস্থার খেকি-খবর নিয়ে নেন। যদি দেখেন আকাঞ্চিত যুবকটি শাসিলো তবেই খুলে গড়েন নাহলে অনা কোথাও নজর দেন। যেখানে আকাঞ্চিত যুবকের পায়ের নীচের রাটি শক্ত, সেখানে গটিছড়া বাধার জনন প্রেম-ভালবাসাল ডেগ্ট চালিয়ে যান। কিন্তু ভাতে কি সকিকারের ভালবাসার অসহত খাকে ? মনের সেত্রণ্য হাসনা কি হয় প্রামার তো মনে হয় বাইবিদ্ধ জ্বালার ক্রেমি-ভালবাসাল স্কেট্টা চালিয়ে ক্রমিনা কি হয় প্রামার তো মনে হয় বাইবিদ্ধ জ্বালার করেই হাদের হাদ্য যোগ হয় না।

অনেকে ইয়ত বলবেন বাণ্ট্ৰভূলে প্ৰেমিকেন কাধে ভঃ করেই বা সাত ক। সাবা জাবন তো দাবিল্যের সংখ্য বোঝা-পড়া করতেই চলে যাবে। স্মৃত্য স্বাভাবিক জাবন কি গড়ে উঠবে?

আগেই বলেছি, অভাব-অনটন ভাল-বাসার ক্ষেত্রে অস্থিবদে সৃষ্টি করে সতি।, কিন্তু যৌথ প্রচেন্টায় আ থাক অস্থিবিদা দ্বি করতে হবে। একটা মানুষ্টিবকালই বেকার থাকলেই ভাকে বাজিল করতে হবে এমনটাত ঠিক নয়। উভারের যে কোন এক-জন চাকরী পেলেও সমসানু সমাধান হতে পারে। ভালবাসার ক্ষেত্র থৈয়ে এবং মানসিক প্রস্তৃতি বড় ফাকেটর। অভাব-অনটনে একে অপরের প্রতি হাদ সহান্ত্রসংপল না হন তাহলে ভালবাসা ট'কবে কি করে?

তাই বলছিলুম, হিসেব করে ভাগবাসা কথাটা প্রনতেই কেমন ব্যবসাদারের ছবি মনে আগে; পরিক্ষন্ত ভালবাসার ক্ষেত্রে হিসেবা কথাটি সূর কেটে দেয়। থাকে বলে আণ্ডরস্ট্যান্ডং, তা থাকলে ভালবাসা মরবে না। কাজেই হিসেন্দ্রে দাঁড়িপাসার ভালবাসাকে না ১ড়ার্ম্বরং মনের গভারতাকে বিশ্লেষণ করে দেখা ভাল। যদি দেখা যায় মন ভ্রছে না ভাহলে। অথেরি পাহাড়ও শান্ডি দিতে পাধ্রবে না।

স্ক্রিতা চট্টেপাধ্যায়, লখনৌ।

মনের খবর প্রসঙ্গে

একটি প্রচার (৯ প্রাবণ) লেখক
অর্ণচন্দ্র ভট্টাচার দিকতেন্ত্রেনিরা রোগ
সম্পর্কে খনের খনর'-এর লেখক তর্নচন্দ্র
সিংহকে আলোচনা করতে অন্যুরোধ কবেছেন। আমি আর একট্র এগিয়ে আধ্নিক
পা-চান্ত্রের একজন প্রতিপত্তিশালী মনোচিকিৎসক ড রোনাগড লেইভ-এর ঐ
চন্দ্র দ্রিদ্রা বিষয়ক মৃতামতকৈ তর্বচন্দ্র সিংহ কোন্ দ্র্তিতিত দেখেন, জানতে
চাইছি।

তার রচিত বহু গ্রণেথ প্রচারিত ডঃ লেইঙের প্রভাবশালী মতকে অন্য একজন লেখক সংক্ষেপে নিন্দ্রম্পে বিবৃত কবেছিন ঃ

খাদের পাগল বলা হয়, এবং তার ফলে যারা সমাজে অভ্যাচারিত হয় (এথা, বৈদ্যুতিক শক দিয়ে বা ট্রাংকুলাইজার এয়াধ দিয়ে, ইভাদি ভাবে) ভাদের আধকাংশের সাড়ি হয় যথন পরিবার এবং ভাগবা সমাজের একজনকে বলি দেওয়া অভ্যাবালক হয়ে পড়ে এমন একজন যে ভাদের সামাত্রিক ভাগবা সমাজের মধ্যে পরিবার এবং অথবা সমাজের প্রভোগ ক্রমার উদ্বেশ একটা বিশেষ ভাষতার পরিবার করে। করেতে সম্মত হবে, এবং কোমোভাবে ভার জনা বিশে ভাগবা বাজি করে। বিশিষ্ট বাজিটি পরিবার এবং/অথবা সমাজে রাম্ম বস্ত্রতে পরিবার

कामन्वत्री अञ्च

্অন্তের ১৫ সংখ্যা (১৩৮১) প্রেম্চ এর ২ংসামান্য প্রেম্চ সংখ্যেজন করতে চাই ঃ

তারাশক্ষরের কাদ্যব্রীর একটি
সংস্করণ আলি চল্লিশ-বিয়ালিশ বংসর
প্রেণ পড়েছিলান যেটা ছিল মাণলাল
গংলাপাধায় ও চার্চেন্দ্র বন্দ্যাপাধায়
সম্পাদিত। সেই সংস্করণের জনা রবীপ্রনাথ একটি চমংকার ভূমিকা লিখিছিলেন।
সেই উপাদের লেখাটি রবীন্দ্রনাথের কোন
বচনাবলীতে ম্বান প্রেছে কিনা জানি না।
বিশ্বভারতীর ক্রন্দান বিভাগের পেন্দাল ব্যব্ধি
স্থাতি বছরে) কতাবিদ্ধিদের দৃষ্টি এই
বিষয়ে আক্রবণ করছি। — স্নুনীলকুমার
চাট্টাপাধ্যায়, কলকাতা—২।

এবং অথবা সমাজ চিকিৎসকদের জড়িত করবে। ঐ রুশন ব্যক্তিক শিক্ষাল দেনিয়া রোগাজালত বলে চিহি ।ত করবার জন্য চিকিৎসকদের নিয়োগ করা হবে, এবং ঐ চিকিৎসকেরা মনোচিকিৎসা নামক দৈহিক ও সামাজিক প্রক্রিয়ার শারা সনুসংগঠিত ভাবে ঐ ব্যক্তিকে ধরংস করতে অগ্রসর হবেন।

ডঃ লেইছের এই মত আমি অনেক রোগাঁর ব্যক্তিগত জাঁবনৈ সতা হতে দেখেছি। ইংলান্ডের এই বিশিপ্ট মনো-চিকিৎসক ডঃ লেইছ এপ্রিল ১৯৭২-এ কাঞ্চাতায় এসেছিলেন: এখানকার মনো-চিকিৎসার সম্পু সংগিল্ট ত্রুণ্চান্ত সিংহের তার মতবাদ ভালভাবেই জানা সম্ভব এই আশায় এ বিষয়ে তাঁব যুক্তিপূর্ণা মতামত কবি ভালনাতে চাইছি।

> দীপক ভট্টাচা**র্য** ২৪ পরগণা

রূপসী াতা

অমতে এব। ব্পস্ট থাতায় ন্য
নিয়ে আলোচন করেনে ব্রবাশনী।
অনেক মেয়ে বড় বড় বড় বথ রাখেন এবং সেই
নথে রং লাগান। এতে সৌনদর্য কিছা খোলে
বলে আলা মনে হয় ন। ববং অস্ট্রেয়ার
স্টেট করে। সব সময় নথের দিকে সচেতন
থাকতে হয়, কোথাও টুকু করে লেলে না
যায়ু অনেককে কেখেছি অসাবধানে শাড়ির
মধ্যে নথ চাকে থেতে। তাছাড়া সাধ্যার
মধ্যে নথ চাকে বে থেতে। তাছাড়া সাধ্যার
মধ্যে নথ চাকির সব মেয়েদেরই কিছানা
কিছা সাংস্থানিক কাজ করতে হয়। সেখানে
এই ধরনের বড় নথ কি কাজের অস্ট্রিয়া
করেনা বড় নথ কি কাজের অস্ট্রিয়া
করেনা

স্বাদেশ্যর প্রসংগ্র তো বটেই। নথ ঠকমত পরিব্বার না রাখলে নথের ভেতরকার
ময়লা স্বাদেশ্যর ক্ষতি করে। যারা যক্ত নথ
রথবন তাদের কটিা-চামটে দিয়ে থেতে
হবে। মধ্যাসিত ঘরের কজন মহিলা নিম্নানিত
কমি-চামটেতে খান? তাহলে বড় নথ রাথা
কেবল বিশেষ এক শ্রেণীর মহিলাদেরই
স্যোদদর্শটোন্ত জনো? স্বর্গা ত থাকলেও
বিদেশটিদর মত অনেকে কটিা-চামটে দিয়ে
থাওয়ার থেকে হাত দিয়ে থেয়ে বেশা ভ্রিত
আনা মধ্যবিত ঘরে ভালেভত শাক্তরাটি
হাত দিয়ে থেলে যত ভ্রিত পাওয়া যায়
কটিা-চামটেতে কি তা পাওয়া যয় ২

তপতী ভট্টাহার্ফ কল্পাতা-ত



रथें रथें रथें रथें रथें रथें रथें रथें

দেশবংশা হকুলের অণ্টম শ্রেণীর ছার নবাংকু, দত্তকে থেলাধ্রেলা প্রসংগ জিজেল করতেই খাব বিশ্বর সমূরে বলজে ঃ থেলার কামগা নেই আমরা এখন খেলি না। ওর শ্রের গাঁভুমান। কার প্রতি অভিমান বর্ত্তর অগ্রুবধে হয় না। অভিমান ওর শরে বঙ্চ, তাদের প্রতি যারা মাঠে মাঠে ঘর-বা ড তুলে ওদের খেলা বধ্ব করেছেন, তাদের প্রতি। নবাংকুরকে প্রশন করি, তেই যে হামগার অভাব—তা কি দিয়ে প্রণ হরে হা

তা আমবা কি করে বলব ?' আর কিছু না বলে ও চপ করে থাকে।

জিকেট তব খ্য প্রিয় খেলা। প্রস্থা উঠাওই ও গাম্ভীর হয়ে গেল। ৪২ রানে ভাবতের সব উঠাকেট পত্নের মাতো এত বড় পাঁড়াগায়ক ঘটনা যে ক্রিকেট খেলার ক্ষাতে ঘটতে পালে তা ভিল তর ধারণার বাইরে। বললে, 'এখন খারাপ খারাপ বেক্ট' হবে।'

উনিশের দাঁখাগেরী ছাত্রী (বি-এ—১৯ বর্ষ) শিখা বন্দ্যোপাধ্যায়কে শ্লিজ্ঞাসা করলাম, থেলাগুলোকে জ্ঞাপনি ক্রখানি গুরুত্ব দেন:

'থ্যে বেশি।'

'प्रार्थित नित्**ल (थरल**न?'

'S 11 1'

र्गक रथरशन र

'ব্যাডমিনটন, বাস্কেটবল—সূহোগ পেলে হাঁক খেলার চেন্টা করি।' 'মেরেদের খেলাগ্লা বিষয়ক চিণ্ডা-ভাৰনা আগের তুলনায় অনেক বেশি লিবারেল হয়েছে, ডাই না?'

অবশাই। এখন আগ্লাদের তেগ্রন কোন বাধাই পেরোতে ছক্ম না। তবে স্পর্যাবিধে চল অন্য জারুগায়।

'কি রক্তা?'

'এদেশে থেলাখ্লার পরিবেশ তৈনি হচ্ছে না। এত অভাব আর দৈন্য এত উচ্ছ্যুখলতার এয়াটমসফেয়ারে খেলার মাঠকে পরিব্যার রাখা খুব কঠিন।'

নিজে থেকেই শিখা বলগ, মেয়েরা তাজ অস্মত্র আনতভেন্ধারে মেতে গেছে। এই দেখান না, চার-চারটে হোয়ে জবদেওল



তপন চৌধঃরী

শ্পা জয় করতে গিছে মানেই গেল। এটে কি
কানো শ্বাপ অভিযানের ইচ্ছে কয়েই ই
নোটেই না, বনং আনো বাড়বে। তবে দৃঃখ
করে শিখা সললেন, কর্ডপক্ষ এসব
ব্যাপার তেমন উংসাহ তো দেনই না—
বরং একটা বিরক্ত মেনা খব গর্ব করেই
শিখা টোবল টোনস, বাদেকটবল, ভালবল
ইওচার ক্ষেত্রে রাপা বানোটির, শ্রীর্পা
চাটালি কুঞা গুড়ু প্রন্থের নাম ক্ষে
বোঝালেন, মোরোরা এগিয়ে চলছে, ভার
ক্রোনা মেট্রক উদ্যাল ও মেয়েদেরই।

এটা খ্র দ্রুণের কথা যে, দুংখ আর সমস্যাঞ্জুরিত আমাদের দেশের তর্নীবা শেলতে চাইলেও প্রধেশ পায় না।'

দৃশ্ধিণ কলকাতা আই টি আই-এর ছার্র সংদীপ রায় নিজে গেলোয়াড়। ভালো ফুটবলার। তর আশা, ভবিষাতে আরো বড় খেলোয়াড় করে। বললেন, আত্মরা হা মনে মনে ভারতাস—মাঠে-ময়দানে সেইরকমটা আর নেই। এখন কিরকম হয়ে গেছে দেন।

র্ণিক রক্ষা হয়েছে ?'

'এবজন পেলাংবির সংশ্য **আনেকজন** পেলাংবের সম্পর্ক হয়েছে আটিফিসিয়াল। এবই চিমের থেলোয়াড়, **অথচ সমঝোতা** নেই।

'এরকরা ভাবস্থা হল কেন?'

'অত বলতে পারবো না। **তবে এইট্রু** বাসতে পারি, শ্না, খেলার **মাঠেই মন্সর** নায়গায় একই অবহধা।'

ভাগতীয় ক্রিকেট দল সম্পর্কে বলে-তেন, তেনত কলিখন বসানো উচ্চিড— এরধমভাবে হাতার করেণ ক্ষ্মী স ক্ষণিশ চার্চ' স্কুলের ছার স্থান্নর দাশ-গ্রুড বললেন, থেলার হারজিং আছেই, ভাই নিয়ে যারা চে'চামেচি করে, ভারা থেলোয়াডেই নয়।'

খেলার মাঠে প্রতিনিয়ত গণ্ডগোল ও
অপ্রীতিকর ঘটনা সমপরে সি ট কলেজলের (সাউথ) শিবতীয় বর্ষের ছাত্র সমর
চর্রবতীকে প্রদান করলাম। সমর বললেন,
'হবেই তো। একদিন আগে লাইন দিয়েও
ভিকিট পাওয়া মাবে না, অথচ ব্ল্লাক হবে।
বার টাকা আছে সে খেলা দেখনে, যার নেই
ক্রে আজালুল চুষবে—এটা কথনও সহা হয়?
ক্রিকেটের টিকেট পাওয়া তো শ্বনের মতো
হয়ে লাভিয়েছে। তারপর দেখনে, ঘরেবাইকে কোথাও শান্তি নেই। অর্ধেকের
হর্ষাল বই কিনতে পারিন। এক দাদা বেকার
হুর্মার আছে। ঘরে সব সময় অশান্তি। আর
আমার যথন খেলাদ্ধ মাঠে যাবো শান্ত হয়ে

হাব্ছা চৈতনা কলেজের ছাত্র তপন চৌশ্রী বললেন, পেলবট্রম আর বনি-ব প্রচন্দ্র প্রভাবে খেলার মাঠকেন্তু ভোবাড়ে বলেছে। আন্তকাল কেই সময়মতো মাঠে আসে না। প্রেম করছে ঘণ্টার পর ঘণ্টা, আদিকে অপুর দল ওয়াক-ওভার নিয়ে চলে বাছে। খেলাটা এখন গৌণ। দুরুখ লাগে। এ-অবস্থা যে কড্যান চলবে!

'এটা ভো একটা দিক—অন্য আরও দিক তো আছে—যে-বিষয়ে বলুন কিছ্;' প্রশন ক্ষরলাম।

'এটা মৃদ্ত বড় দিক। উচ্ছ্ৰ্থল হয়ে গেলে ইউখ পাওয়ার নণ্ট হয়ে যায়।'

'এর জনো তো কতগ'লো ফ্যাক্টর দায়ী—তাই না?'

নজেরা ঠিক হয়ে চললে কোন-কিছুই বাধা হয়ে দাঁড়াতে পারে না।

—কৃষ্ণা সেনগ[ু]•ভ

এরাও পিছিয়ে নেই

সাইকেল রিক্সা তৈরীর কারখানা

মফঃশবলের যাত্রী পরিবহণ ব্যবংথার
সাইকেল রিক্শা গ্রেহুপ্নে ভূমিকা প্রহণ
করে থাকে। অথ্য এই সাইকেল রিক্শা
তৈরীর বাবসায় বাংগালীর সংখ্যা ছিল
নগা। তবে ইদানীং এই অবস্থার পরিবর্তন হয়েছে। এই ব্যবসায়ে বেশ কিছু
বাংগালী ধারিগর চাকে পড়েছন। তার
কিছুল পরিবারের অন্ন-সংশ্যানও করে
দিক্ষেন।

ঢাকরিয়া র সাইকেল বিক্লা তৈরী ও সারাই কারথানা



ঢাক্রিয় বিজের পালে পপুতার সাইকেল শ্টোসে'র প্রফাল্ল সিকদারের কথাই ধরা যাক। প্রফল্লবাব্ বেশ কয়ের বছর আগে রিক্শা সারাই ও মেরামতের দোকান করে-ছিলেন। এখন তিনি নিজেই সাইকেল রিফ্শা তৈরী করেন এবং বাজাঞের তুলনায় স্পতা করেই তা বিক্রী করেন। বছর খানেক হল ইউ বি আই থেকে লোন নিয়েছেন-কার্থানার সম্প্রসার্ণ করেছেন-কারিগরের সংখ্যাত বাডিংহছেন। নিজের পার্বার ছাডা পাঁচাট্ট পরিবারের ভরণপোষণ চলছে এই স্ইকেল ফৌসেরি মংশে। গত মাস দশেকের ভেতর প্রফাল্লবাব্ প্রায রিক্শা তৈরী করেছেন। সেই F CMIT দুঃশা চালিয়ে আরও দুংশা পরি-বার জীবিকা নিবাহ করছেন সংক্রে সংক দক্ষিণ শহরতপাতে বেশ কিছা রিকাশা মেরামতের লোকানও পজিয়ে উঠেছে। আরও সাথের কথা এরা সকলেই বাশালী।

অথচ প্রফালবাবা যখন ব্যবসা শ্রে করেন তথন তাঁর সম্বল ছিল মাত হালার দুরেক টাবা। বর্মানারী ছিল একজন অথারি জাতে। সেলাই থেকে চন্ডালার স্বকিছ্ম তাকৈই করতে হত। গত সেপ্টেবর মাসে ছিল বাংকের কাছ থেকে ছ' হাজার টাকার তিভার-ড্রাফার নান। সেই থেকে এর ভাগা হিরে গেছে। এখন মাসে থরচ-বর্মাচা বাদ বিরে হাছে থাকে আটালা থেকে হাজার টাকা। ট্রাকা। ট্রাকার করে সাইকেল

িক্শা তৈরী কানে গ্রান্থনে, । এখন প্রায় ১৬ ছাজার টাকার ্লিখন খাটছে প্রক্রুন বাবুর কারবারে।

প্রজ্যেরাবা ু সব রিক্শা তৈরী করছেন আ বি ভি ববছেন ব্যাকের মাধ্যে। এর কলে রিক্শাচালকরা সকজেই রিক্শার অলিক হতে পাধছেন।

ইউ বি আই'র একজন অফিসার
ব্যান্তন্তন করে করা দিছে। অথচ আগে মহাজনদের দিতে হত আড়াই টাকা করে।
কিনিকততে শোদ হ্বার পর এখন নিজেরাই
গাড়ির মালিক হাছেন। আগের ব্যবস্থার
ভারা কিছাতেই মহাজনদের হাত থেকে
রহাই পেতে পার্ভেন না।

একজন রিক্ষাওয়ালার সংশ্ব ব্রা হাজ্জন। তিনি হ্যাসমুখে বললেন—এখন ভেইলি বাবে থেকে বোল টাকা ও'র রোজ-গার হচ্ছে। শ্বু তাই নয় পতি রবিব্র সন্ধায় উনি ও'র বউকে নিয়ে রিক্শা করে হাুরে বেড়ান। নিজে রিক্শা চালান আর ও'র ওয়াইফ' সেজে-গুজে ভ্যানিটি ব্যাব হাতে নিয়ে পেছনে বসে থাকেন।

-कनक अक्राअमान

(প্রের্থ প্রকর্মাশতের পর)

হিগিনস বােট থেকে চিংকার করে বললেন নাে নাে। সব কেবিনে লংফ জনালতে হবে না। এখানে একটা লংফ দিয়ে যাও। গাালিতে রাখাে একটা আর একটা বে!ট-ভেকে ঝালেয়ে গাথাে।

বনি নেমে যাবার সময় হঠাং দেখল তথন পায়ের কাছে দু তিনটে ফ্যাইং ফিস পাড় আছে। ওদের বৈধে হয় কোনো অতিকায় মাছটাছ তাড়া কংগছিল, উড়ে এসে ডেকৈ পড়েছে। ব'ম মাছল লো কুড়িয়ে নেবৰ আগে এমন চেচামেচি লাগিয়ে দিয়েছিল যে ছোটবাব, ভয় পেয়ে লাফ হোরে ছ:টেছে সেদিকে। গিখে সে অবাক। তিনটে মাছ।রাপোলি লম্বা, এবং বড় পাখন য়ালা মাছ। প্রায় পারশে মাছের মতো এবং খেছে বসে ছোটবাব, দেখছে এ-বেলাতেও হিগিনস অধিকাংশ থাবার তার পাতে তুলে দিচ্ছেন। মাছ ভাজা সে একটা আগত পেয়েছে। র্যনির কি বে প্রভাব হয়েছে। ওকে খাওয় তে পাগলে বাচে। আলু কেউ খাবে সৈ যেন মনে রাখতে পারে না। ছোটবাবা ব্যুঞ্জে পারছে না ব্যুক্তা বনির ওপর রাগ করে সব খাবার ওকে দিয়ে দিছে কিনা। সৈ ভেবেভিল বনিকে জ্বের ধ্যক দেবে--কিন্তু এখন হিলিন্স বললেন, ছেট্টব্ৰু ভূমি থাব ভাগবোন ছে।

ছোটবাবা বলল, না সদ্ধা এটা বাঝতে পারি বনির উচিত হাছে না।

হিতিনস বলল, ভারি মজা কি বল! ছোটবাব, বলল, বনি, স্বাইকে সমান দিতে হয়।

বনি, মাত মাথে সামানা মাছ ভাজা পারেছে লাম্ফের আলোতে ওর মাথ রহসাময়ী নারীর মাড়ো চোগে অপ্য বিক্রময় ছোটবাবা, সম্পক্ষে এবং হিগিনস কার্কি আছে সামান্য—তথন ছোটবাবা, কি যে বাজে বকছে। সে বলল, আমি কি বাবাকে কম দিয়েছি?

হিগিনস বললেন তোমাকে থাব হিংসে হচ্ছে ছোটবাবা।

বনি বলৰ, বাবা তোমাকৈ বলছি, এ-সৰ আমাৰ সহ। হয় না। ভূমি ওকৈ দিতে যাও কেন। ভূমি থেতে না পার ফেলে দেবে।

যনির মুখ অপুসালি থ্যাথ্য করছে।
ফোল সে কথা বললেই ব্রেমা করে কোদে
ফোলবে। সে মুখ নামিয়ে বেখেছে। খাজে
না। যেন কিছু বলতে পারলে এটা সে
অপুসানিত হাত না অথ্যা সে যদি বলতে
পারত বানা, তুমি একে আর কতিট্রু
চিনেই আমি ওকে হাড়ে ইন্ড চিনি। ও
নিজেকে ছাড়া প্রথিবীতে আর কাউকে
চেনে না। অ্যি এমন স্বাদ্ধর পোলার করে
ত আসতে, আমার পানা ঠিক দাড়ারে
ও আসতে, আমার পানা ঠিক দাড়ারে
বর্গ কলবে—কত কিছু আমি আনা করি
ওর কাছে—সে আসে না বানা। একবার বলে
না বনি ভোমাকৈ মেইল পোশাকৈ এমন
সান্ধর দেখায় জানতাম না।

কিছুখন সৰাই চুপচাপ। ছোটবাব, এখনও হাত নালিয়ে বেখেছে। হিলিনস বললেন খাও। বলিব ওপর গাল কর না। কি বাপোর! তোল্লরা কেউ খাছে না! এছে। ভল্লা হল দেখছি—ছোটবাব্ তোমাকে আমি থেতে বলছি। তমি না খেলে মেমেটা আলায় থেতে পারবে ভাবছ! ছে<mark>। উষাৰ্ ধানে ধানে মুখ নামিনে</mark> কটি। চামচ টেনে নিলে।

হিলিনস মের ব্লালেন, তুমি ভবিশ ভাগাবাদ হে ছােওবাবা। ভামাকে আমার হিংসে হচ্ছে। সাগাঞ্জীবন যা চেয়েছি, কভ সহজে তুমি ছােওবাবা, তা শেষে লেছ। এত সহজে তাকে নণ্ট করে দিও নাঃ

সন্তি হিলিনস ফের খেতে খেতে
বললেন আমি পাইনি। কত সহজভাবে
তিনি এখন কথা বলছেন! ডাইনিং ইলে
তেমনি সব বড় বড় তৈলচিটা। এখন আমি
ফালদানিতে কোনো ফাল কেই। অথধকামে
তাপণ্ট আলোর ভেতর সেইসব ফাল্ডানের
হবি কেমন অর্থাইনি। বড় টেবিল, সালা
চাদর, কার্কাথময় নাল্ফিন, সব আ্ছে,
মুখ্ সব মান্ষর্লেল একে একে তাকে
ছেড়ে গেছে। তিনি বললেন, ভোমাকে
হিংসে করতেও আমার ভাল লাক্ছে।
কি দরকার থাকে ব্যি না। তোমবা কগড়া
ক দরকার থাকে ব্যি না। তোমবা কগড়া
করলে আমার ভাষণ খালাল লাগে।

তারপর যেন ছোটবাবাকে বলাল ইক্ষে
ওতে মানবঞাতির অপোগণত তুমি ব্যাকে
পাবছ না, সব কিছু হারিয়ে সামানা একটা
ভাহাজের ওপর বাজি রেখেছিলাম।
ডেবেছিলাম, দেরার লাইজ এ ওরাইজ
এাশত প্রেলাম দের্গছি দাটি সিমস রাইট
কিন্তু এখন দের্গছি দাটি এপ্ডস ইন ডেছা।
কেউ আ্যাদের কোনো ভালার পেশছে
দের না ছোটবাব্। নিজেকে সতিকে পাল
হতে হয়।

সালি হিলিনস মুখ নাপ্ৰিকে হছে বললেন তেমরা খাও। আমি উঠছি। খেল ফলজ্ করলে খুব খারাপু হবে। ফলে তিনি উঠে গেলেন।

বনি বলল, কি দরকার **ছিল স্ট্রি** করার !

ष्ट्रावितानः यनमः स्वामः

সম্পি হিলিন্স এলিভয়েতে দ্ডিয়ে তেপেন চল্লেক দিলেন— আৰাগ্

দুভাই ভাষৰ চুপ্চাপ ফোল। কোনে। কথা আৰু কানে ভেসে অসছে নাং ভিসি भी जाम भाकामा। महत्र हे के कहाई में। শৌরজ্যেকে আর একটা নহন প্রবী তৈরি হাছে গোছে। দ.জনাই সমতে দড়িখা **शास्त्रकः आर्थात्र सहस् काशान अस्तराहर** আনুহ। তিনিভ ছিলেন অ জীবন সেই ভাগ্য খাজে বেডিয়েছেন। সামাণ্য আশ্রয় প্রেম। বিশ্বসেহীনভায় বে'চে থাকটে কথনও চার্নান। এথচ সংশয় সাদ্দ্র এবং এক মন্ত্র প্রভাব যেন কি করে এই এক মত্যভাবৈদে একে শ্যা মান তথ্য তিনি এবং ভার অভিতম এক মহামায়া, শেষ ভাই যাব। কোনো অলেবিক প্রস্থানর মাত্র भिन्दिम्बर्धे महारा अधिक आत्महे आहर কবিনপ্রবাহ াক ভাজা আর প্রিটা এত रक्षत्मक होत्र (कन अधन रहाय बालमा ४३) **ম সছে। ম**হা পুড়ে মাবেন চেয়ে তিন উপরে উয়ে ধ্যাক্ষন। অভ্যানত নিত দাড়িয়ে হাউ হাউ করে এচারে তিনি কাব **भ**ना कीन्द्रध्या दक १९८क रकर रमर्ट শ্বয়াৰ বাণী জোনা উঠে অসতে না কেন क्यादित क्यादित नाईएड श्राहरूबन ना, एका द श्रीहरूम् का आई खाप्त अन भाई उसा । অন্ত্রেষ্ট গলায় তব্ তিনি কোনোরকলে গ্রেজন, শ্লোপি হালেল্ডা - আই - তাম **খন মই ও**য়ে। কেউ দেখছে না, সাগুল হিল্মালস অধ্যক্ত সমান্ত ভাল্যা ভাই।জ-**ভেক্স** স্ট্রিক চার্ক চার্ক চার্ক अञ्. भार क कर्म धान अभरकारा बह শেষ সম্ভূত্যতা। তাক সব থেওে চলে থেতে হাজে। তুন ব্ৰুস্ব নিছু হুজ করে হাকলেন্ এলিস আমি বাণেলন স্কালি হিলিন্দ্ৰ বল্ড-শ্নাতে পাত। এলিস এ-অ্মাদের শেষ প্রবিত কোথায় শিয়ে এলে! কৈ গভে ভূমি! কৈ গভে ছেত্রার! এ লখ, ভগবানের দোহাই, স্বানা অশ্ভ প্রভাব থেকে বনিকে বাঁচাও। আমুম আর কিছ, চাই না এলিস। প্থিকীতে আমার আর কিছু ১ইবাল TOLE 1

গ্রহাম করে সেই অস্ক্রীয় অজ্ঞান সমায়ে স্মালি হিলিন্সর কঠেসরে ভেসে শাঞ্জি। দ্রদিরণত নাঁহাবকালে। ফ যেন তিনি তবি শেষ ব্যাপিনীয় দিছেন। ছেটবৰা, হন স্থেল স্কাত প্রছিল ন্দ সন্তাৰ হৈ গ্ৰহ কৈ থাই দাঁড়িয়ে এডাকে ব্যাসের হাতে। ডিংকার কর্মান্ত ভরা প্রম্ম নিয়ে কাহাজ ভাত ছাউছোট কচছে। কোহাম িনা প্রেট-ডিক কেই, আফটার-भाक स्ट्रें क्वांच करें। एटा कहा অস্পটি চিৎকার ভাষ্টের নাম্প্র হৈরে ফন উঠছে। সহ ও ভাব স্বার আলো হৈভাবে একজন আভা মানা্য দাবাভ তলে डिश्वाप क्यांट ब्राक-अर्टन हिनाम হঃমান এক মাহামান আভিনাদে ভেডেগ পাড়ছন: ছোতবাৰ তাকে শেব প্ৰাণ্ড ফরোয়ার্ড-প্রেক খাজে পেল। উইন্ড-ফেলের আভালে তিনি দাভিয়ে আছেন। পেই শাশ্ত হাম আব নেই। প্রনে সোনালি গ্রংয়ের রাচের পোশাক। একজন সমত হানাদের মতে দাড়িয়ে সমাদের সংশ্য "Bea a करत कथा वर्गाकन--यम कार्नि! রম্পরি চেয়েভ বেশি রহসাময়ী সম্ভবে চার জাবনের সা্থ দাংখ হতাশার কথা গোনাকেন। ভেনাংসনা রাতে সমান্ত্রের ভয়ংকর নিজারতার ভেতর বনি বাবার বাকে আবার ফালিয়ে পড়ল। বলল, বাবা কি হয়েছে তোমার! কি হয়েছে বুলা এমন কর্ড কেনা এভাবে এখানে দ্যাড়িয়ে কাকে কৈ বলছ! কি কথা বল না কেন! আহারা কি সতি৷ আর ফিরে যেতে পাৰৰ মা!

স্থালি হিলিন্স শান্ত কর্পে শ্রু বল্লিন হব হো জানিস্থামার মাথে এখন এমন হয়। তুই ধাবড়ে লেলে চলবে কেনা ব্র পাদর করে মেলের কলালে চুমো লেলানা চ্যুলের কর্পজন্ম যেন মুখ ব্রুক্তর ফোলান বানর চুপোর ভেতর। কি এঞা হাল চুলো এমন একটা ছোলানাম্থী করে ভিনি মেন আল লাক্ষ্যামায় ভুলাও চারিদেন মান ক্ষাক দার মুখ দেখাতে চারিদেন মান ক্ষাক দার মুখ দেখাতে

বাপ মেয়ে প্থিকীর যাবতীয় সূখ সংখ ভাল গৈছে ব্রিম। ওরা প্রুপ্র বি িবড় দৈনহা মহাত্যে প্রণ্পনকে। ভাড়িয়ে শেখেছে। ছে ট্রাবার কেন জ্যান ব্রে রেয়ে এই বৃদ্ধ মানুষ্টর ওনা কালা উঠে আস্থল। হাট্ গেড়ে প্রায় কোনো মধ্য যাগীয় নাইটাদের মতে তার বলার ইচ্ছে ুট্ডল, আপুনি আমার ওপর বিশ্বাস ্রাখনত প্রারেন। তারপর সেই ন্টকীয় শাসসংখ্য তার কর্নেই প্রায় ভেসে আসমিল স্যার সমাদ্র আর ঈশ্বরের নামে শ্পথ প্রতি। হেন্ত তর্বার থাকলে সে এক ন মাধান ওপরে দুলিয়ে অশ্ভি প্রভাব ङाइ : इत (कार्षे (कार्षे काला काला काल দিত। কে ন। প্রচীন ঐতিহাসিক যাবার মতো এই জেন্পেনা বাত, নিজন সমাধ, ক্ঠেব এসে আর আক্ৰের অভত্যীন নক্ষালা ছ'মে ভব মপথ বিভে হাঞ করছিল - আমি আছি, আমি থাকব। আমি েলি। পাপ কাজ করব না। কোনো অশ্ভ প্রভাব বনিকে পড়ে যেতে দেব না

স্থিত সাব দেশলেন ছেটবাবা জ্যাংসন্থ শ্রু সমূচ দেশছ। এবটা কথা বলছে না। তিনি হিলিনসংক বসলেন স্ব এনেক বৃত হয়েছে।

ভাগ তারপর নিঃশন্দে নেম আসছিল ভেকে। বেটি-ডেকে যে শ্ব মতো উঠে গেল। কেউ কোনো কথা বলল না। বেটি-ডেকে এখন স্বাই থাকে বলে, কাণেন ছার কোবান, বনি নিজের কোবান এবং সারবংসার খোলা ডেকে শ্রেম জভালন। ছোটব বাু শ্যে আ্বলা ভাসালোর বান বেবিনে। আর মধারতে মনে হল ভার, কেষ্ট ভাকছে। পোর্ট-হোলে দাঁড়ির ভ.কছে। নানা কথা ভেবে কি করুবে ব্রুক্ত পার্যছিল না। কিন্তু চোধ আলো সে দেখল— পোর্ট-হোল থোক টার্চার ফোকাস আসছে —সে বলগ, বান তুমি আ্যাকে পাগল করে দেবে দেখছি। আয় তখনই সামানা জ্যোরে কথা বলছে কেউ। বানর গলা মনে হল না। কাণেটন পোর্টাহোলে দাঁড়িয়ে ভাকছেন —সায়লি হিলিন্স বদাঁছ ছেটবাহা। ভারি সত্তপলি কথা বলছেন।

স্থাল হিগিন্স বল্লেন, ওপরে অস্ট্রিধ্ জাছে ছোটব বুঃ

— কৈন্দ্ৰ অসুবিধা হবে ন্। অপুন আসুন। আয়ুয়া বকে ব্যুট্ডেজ্বে নিচে বস। বনি ডাকলেই স্ডা দুহে প্রুধ। হিলিন্স বললেন, ব্যু ভালে জেলে

্হ-সনস বৃল্লেন, বৃণ । স্ব ত্র পাবে।

— চাচা ওপন থাকলে তিনি অমা-দেৱ হবর দেবিন।

সাধি হিলিনস থেন নিশ্ব,স ছেড়ে বচিলেন। ব্যান জন্য পাথেবাঁতে আর এক-জন তার চিরে কম দ্ভাবিনার থাকে না। তার ভাষণ ভাল লাগল। তিনি প্রায় ভেতণা পালক যোধ করলেন। এবং সেই ছেলেন,নুষের মতো পালকে প্রায় শিস্দতে যাঞ্জলেন। তথন ছেটিবাবু বলল, সারে অস্পন্য কেবানেও আয়রা বস্তে প্রা

সংলি হিজনস দাছিয়ে গেলেন। ছোটবাৰ এবং স্থেও দাছিয়ে গেলেন ওলেন ছায়া স্থিব। এবং মনে হজেছ জাল জটাকে বাত্তিস সংম্বান ভাসিয়ে নিজেছা বাত্তিক সম্প্রভাত এল বাজতে প্ৰছোনা। তবু এই মধ্যেত মান হজেছ জালাজটা যেন নিয়ত চলছে।

স্মালি হি'গুনস বজলেন, খ্ব সাব-ধানে।

ওগ এবার প্রায় চুপি চুপি উঠি
ব্লিক্তন থাবার সময় উচ মেন ছোটা বা লেখছে বনি সাদা চানর গায়ে ঘ্লিয়ে আছে। নীলাভ চুলে ওর মুখ প্রায় চাকা। এবং স্কার তন এই প্রথম সে ব্রুক্তে পারল ভবিশ ভারি হয়ে উঠেছে। নোধহয় ওর শরীরে রাতের পোশাকও নেই। ছোট বাবরে মাধা বিয়বিদ্য করছে।

সালি হিসিন্স ওপরে দাঁড়িয়ে আছেন। ছে¦টবাব্র দেরি দেখে বললেন, দ্যুখো তো সারেও ছে¦টবাব্য কি করছে।

সারেও ঘ্রে ও-পাশে নেমে গেলেই ছোগবাব সতক হয়ে গেল। উচার আলো নিভিয়ে দিল। বলল ঘ্রোছে। বাঁচা গেল। সিভিতে ওঠার মাধে খ্য আশেত বলল সার বনি অধ্যান ঘ্যোছে। আমরা নিশ্চিশ্তে এখন ব্সতে পারি।

স্থালি হিগিন্স এবার জম্ম জন্তির দিলেন। একটা বড় নীল রঙের চার্ট কো করলেন পকেট থেকে। সাদা সব দাগা। সেই দাগগ্লো বড় একটা কাগজে সোলা কেটে বললেন, ছেটিবাব, এদিকে এলে ভূমি বেসি। ভূমি দাঁড়িরে থাকলে কেন। বেসে।

সারেঙ-সাব বললেন, সাব ঠিক আছে।
ভোটবাব্ টোরলে ক'কে আছে।
হিলিনেস ক'কে আছেন। তিন কললেন,
খেণিবাব্ কাল তেয়ান্দের বোট দিয়ে
দেওয়া হ'ছে। তার আলো সব ব্রুক নাও।
—জাতাকে আরবা আকছি না তবে?

—তৈমিরা থাকছ **ন**া।

— তোমরা থ<u>কিছে</u> না। — আপেনি কি বলছেন।

হিগিনস সভসা ক্ষিত গলায় বললেন, চেচাৰে না। বনি দুমোছে। মাঝে মাঝে তোমাৰ হাব-ভাব আমার একদম ভাল লাগে না ছোটবাব্। তুমি চেচানে আমি জানভাম। এ-জনা নিচে নেমে বেতে চেয়েছিলাম।

ष्ट्राप्टे^बार्यु, यमन, किण्डू आहा।

---আংগ আমার কথা শেষ করতে দাও। আমার বলা শেষ হলে বলবে। কতদিন বলেছি কথার মাঝে কিছু বলবেন। আগে শ্নবে তারপর বলবে।

ছোটবাব বসে পড়ল। ছোটবাব, তুমি ভয় পচছ। তিনি

দাঁড়িয়ে গেলেন। ভোটনার নলল স্থান আক্ষর

ছোটবাব; বলল, স্যার আচেত। বণি ঘুমোছে।

হিণিতস বসে পড়লেন। ভারণর কপাল টিপতে থাকলেন। মাথা ধসাছে ব্রিথ। এবং চোথের নিচে কাল পড়ে গেছে। তিনি যেন কতদিন না খ্যিয়ে আছেন।

ছোটবাব বলল, ব্যেত আমন কৈ কে থাকছি?

—বলি এবং ভুমি।

--আপনারা ?

—আমর জাহাজে থেকে ব্যক্তি।

—সবাই নেমে গেলে হত না।

—এই রাশকেল, জাহাজটা তোষার না আমার। জাহাজের কাশ্ডান তুমি না আমি। কে নামবে, কে নামবে না তুমি কলবে, না অমি বলব।

ছোটবাব;র এটা ভাল লাগে না। মাকে মাঝে বুড়ো অহেতুক রেগে বায়। ভাল কথা বললেও ফেলে বায়। কেয়ন দিশেহ র মান্ধের মতো তখন আবোল-তাবোল বলতে থাকে। সে আর একটা কথা বলল না।

আৰু হঠাং কৈ বে হয়ে ৰায় হিগিন-সের। খিনি উঠে দড়িয়ে বললেন, সারেও, তুমি ওপারে থাকা। আমারা নিচে যাছি। বনি জেলো পোলে বলাবে, আমারা দেটার-বামে আছি। তিনি প্রায় দুখ্লাতিতে এবার নেমে যেতে থাকলোন। ছোলোবারুকে একবার কললেনও বা, তুমি আমার সপো এস। আথচ ছোটবার প্রায় দেজা তুলে বুুুুুঞ্জা মান্ধ-চির পোলনে ছাইছে। সিণ্ডি ধরে নিচে নামার সমর ওপরে উচ মেনে বললেন কি পায়ে জোব পাজা না? খুব জোয়ান। একটা বাড়ো মান্ধের বাড়ে চেপে থাকতে খ্ব ভাল লাগছে।

ছে।টবাবা বলল, সার সমাপ্রের জামি কৈছা জানি না।

হিগিন্দু বললেন, কেউ জানে না।
সবাই বড় বড় কথা বলে। সমালেক জানা
স্বাহ ইয়াকি:। বলে লাফ দিলে নেমে
পড়ালেন নিচে। তারপর হাত নেড়ে অল্পকাবে কোথায় যেন অস্পা হয়ে গোলেন।
ভোটবাবা বললা সালে টচ জানানা
কৈছা দেখাতে পাছি না। তিনি ফস করে
দেশলাই জানিয়ে লাফ খাছে বের কর-

এ যুগের অনাতম স্বাদ্ ম নস্তাত্ত্বিক প্রেমের উপন্যাস

त्रव फूल कित्न नाउ

অতীন বন্দ্যোপাধ্যায়

দ্ বছরের চন্দন ইরার প্রতিশ্বন্দ্রী। চন্দন টিপ্র শ্বিজীর সন্তরা, জার ইরা তার সব্জ শ্বীপ, তার নবলম্থ আবিশ্কার। ইরার জন্য উন্মাদ হয়ে উঠেছিল বলেই কী, হারিয়ে গেল চন্দন? মানসিক শ্বন্দের ক্ষতিশ্ক্ষিত হতে হতে অবশেষে টিপ্র একদিন আবিশ্কার করল চন্দনের শ্নাতা সত্য যেমন, তেমনি সত্য ইরার প্রেম। টিপ্র তাই বৈরিয়ে পড়ল ইরার সন্ধানে।

ৰীরেন্দ্রনাথ সরকার আশ্তোষ মুখোপাধায়ে গোরী গঙ্গা ৯-০০ ফেরারী অতীত

भीट्य नम् भूटथाभाशाग्र

ঘরের পথ ৬-০০ স্বথের আড়াল ৫-৫০ স্বীল গেগোপাধায়

তোমার আমার

তেমের ক্রান্ত্রের সাম্পর্ক

নীল লোহিতের চোখের সামনে অশাপ্রেশ দেবী

ভালবাসার মূখ ৫-০০ তরঙ্গহীন ৫-০০ চিন্ধানি লেন রাশিয়ান রুবির রহস্য ৭-০০

সাহিত্য সংস্থা, ১৮সি টেমার লেন, কলি-১

বেন্ত্র। গুটা কেবলে দেয়ালে টানিয়ে বিলেশ। প্রায় খাদের নিচে এখন দুজন মানুষ। দুজন যতই চেটাখিচি কর্ক, কেন্ট টের পাবে না। দুজন মানুষ আর দুটো ছারা যতকণ ছাকবে, ছাটবাবুর জর থাকবে না। কারণ একটা হয়ে গোলই ব্রুডে পারবে হিগিনসের কোনো ছারা নেই। সাহাজে হিগিনস তবে সাতা আগত শারতান। জাহাজেটার স্বই ভুতুডে। প্রজে ভনে ছোলা ছোটবাবুকে গাথে দিয়েছে হিগিনস। সে সব সায়া হিগিনসের ওচরে ভারার প্রতি নজর রার্থছিল।

ছিগিন্স বড় একটা কাঠের বোডে পেশেনে পাতে দিছেন। আব অজ্ঞ কথা, ছেটবাবা স্মাতে অধিনকাড দেখলে দিজের চোখে দেখেছ। কি কথা বল্ছ না কেন? আবে আমি মানুষ। শ্যুতান নই। ভোমার চোখ এমন হয়ে যুক্তে কেন?

—সারে বল্ন। অ∫মুশনছি;

— কী মনে হয়ে । জাহান্ত ভূবি
ভূক্ড বাপার — এমেরিকান অয়েল-টাংক গ্র ভূক্ত সেকে ভয় দেখাছে। বিছা না। কোথায় কি প্রাকৃতিক কারণে, টম্বরের ইচ্ছেয় কি হচ্ছে আমাক কানি না। আমান নানাভাব তাবে বিশ্বাস করতে ভাল-কাস। কিছু ক্ষিশ্বাস দেখাল ভূতটুত ভাবি। বাকে কথা। সব বাকে কথা।

ছেটিশ্য, কি বলতে যাছিল তিনি থামিয়ে দিয়া বগলেন শেষ করতে দাও।

তিনি এবার লক্ষের অংলাতে চাটের মাধার কি দেখালান - কাছে এস। নুটা দি ডিয়া তুমি কি দেখালা। এই দ্যাপো, ইন্দু তুমি বোজা নক্ষর তিতি ববাবব উঠে ষাভ্রমনে রাখবে পালে বাতাস পাবে দিজনপ্র আয়নবায়্র। তোমার হাল ঠিক থাকলে, যে কোনো দিকে বোটের মাধা দ্যাপার দিতে পাব —একমার সাউল-ইন্ট বাদে সব দিকে। জান আসের এখন মাধা-

মাঝি সময়। তুমি জুলাই অব্ধি এই বায়প্রবাহ মনে রাখবে। বাতাস উঠালই পাল খালে দেবে। আর সব সময় কম্পাসেব কাটা নব্ট ডিগ্রি বরাবর। পাঁচ-সাকেশা মাইলের ভেতর ত্মি দটো দ্বীপ দ'পামে भाष्क् यीम कातान कातान कुल, कुल इस्त्रा न्याञ्चारिक, वश्रः ठिक ठिक छेट्टे याख्या कठिन, তবে भूटों। स्वीःश्वत कौंक आवल ওপরে চলে যাক্ত মনে রাখবে। প্রায় তিনাশা তেতিশ-টেতিশ কবে দার্ছ এলিস দ্বীপ এ-দ্বীপ্রলোতে সূত্র প্রেমি-শিয়ানদের বাস। এছাড়া আশেপাশে অজন্ত দ্বীপ আছে ভয় পাবে না। তাতে দেড-দু,'মাস সময়। বায়াপ্রবাহ ভোলাপ অন্বক্লে। যা খাব্র আছে, যদি আধপেট খাও মাস চালিয়ে দিতে পার্বে। ভল যুত্টা দরকার নেবে। সুরু ফ**ু**রিয়ু গেলে ঘাৰতৈ যাবে মা। সামানিক সৰ লাভ দেখৰে বেড়াচ্ছে এবটা তলে এবটা স্থলসে খেছে নেবে। আর যদি দাখে। ঝডে পড়ে বোট-াস এংকোর ফেলে দেবে সামানে। ছোট্বাৰ্ ছানে বাখবে- ইট হয়াভ এ গাঁড সোল। জল, খাবরে ফারিছে গেলে মণীচিকা দেখৰে সৰ অম্ভুত রকামর, ভয় পাবে না। দেন প্রেজ দালভা। হৈ ইজ দা কেলা গ্ৰহণ হিজ পিপল প্ৰেইজ হিছা। -যোৱপণ <u></u> হিচান বালাকোন <u> इ</u>शिश লিসেন টামি এজ ইউ উড টা যোৱ ফাদার। লিসেন, এদাত গ্রো ওয়াইজ ফর আই স্পিক দে উথে। ভোগ্ট টান এওয়ে। ছেটিশাল: 9'র কথা শা্নতে শা্নতে কেমন অ_িবল্ট হয়ে গেছে। সে দেখছে স্না^{*}ল হিগিনস ভাগ মাথার ওপরে হাড রেখে যেন দাড়িয়ে আছেন। প্ৰিথীতে, এই জাহাজ বনি, সালেও-সাব এবং বু.ড়ো নান্যটা বাদে আর কোনো তাব। আহিত্য অছে--সে ছেটিবাব, নয়, সে অভীশ দ্বিপ্তের দেব্দমনিঃ, সে শীয়তে চন্দ্রাথ

েবশম'ন নামক ব্যক্তির জাতক—মা তার পরজায় বাতে শব্দ হলে ক্লেগে যায় আর মনে করতে পারছে না।

তিনি ফের বলাছন, লিসেন ট্রি, মাই সান। লাম ট্রিব ওয়াইজ। ডেভালাপ গ্রুড জাজফোণ্ট থ্যাণ্ড কমনসেম্ম। সম্প্র তোমাকে অথথা তবে ভয় দেখাতে পারবে না।

তিনি এবার ছারে দাড়ালেন—ছোট-বাব, এবাল দেখতে পাচ্ছে তিনি দাঁজিয়ে আছেন পেছন ফিরে। সে তার মুখ দেখতে পাছে না। তিনি কি পেছন ফিরে কদি-ছেন। তিনি তার সব সাহস হারিয়ে ফেলছেন। সে তাঁর সাহস ফিরিয়ে আনার জন্য কিভাবে যে কি কববে ব্যক্তে না। ভেতরে ছটফট করছে। এবং শংশ্বর অতীব অম্পণ্ট এক ক**ং**লে আলোতে ভাগাথিক আভিজ্ঞতা। সে কেম্বন গলায় তথন স্থালি তিগিনস্কে ঈশ্বরেশ্ব বলে হাছে। নিজেকে সে করতে পারছে না—সে^{\$} এভাবে বলতে পারে বিশ্বাস কথতে পারছে না-- সে বর্গছিল স্যার উই লিভ উইদিন দা স্যাড়ে অফ সা অলমাইটি, শৈলটারতে বাই দা গড 😂 🐉 এভার তাল গড়স। জনে আহানা ভয় পাব কেন। **যেখানেই যাই**, তাঁর কাছেই আয়ুর; থাক্র।

অাণ তখন হিগিনস প্রায় ঈশ্বরের নাম অল্লংপাতের মতো ছোটবাবাকে ছাটে এসে জড়িয়ে ধরলেন।। তিনি চিৎকার করে वन्तर्रह शाकरमान-भव वर्षेत्वरम्ब ভূমি জানলে কি করে! বলেই কেয়ন গলায় বললেন তোমাদের নিশিচভেত বোটে নামিয়ে দিতে পারতাম— স্মার বিশ্বাস ছিল, কেউ ভোমাদের জালি করতে পারবে ন। কেউ না। কিছু দেটবাব, আচিকে তুমি খুন করেছ। তিনি তোমাকে ক্ষমা কলবেন নাঃ আছ তারপরই ঘুরে ঘুরে প্রায় জাহাজভূবির গণপ যেন বলে যাচ্ছেন – শম্বে অতীব মায়ায় পড়ে গেলে মরীচিকা প্রায়, তেখ্যায় যথন বুক ফেটে যাবে মাঝে মাঝে সমাদ্র ডবে শান করে নিতে পার ছোটবাবু। ঘামে যা নুন বের হ'লে যাবে, শ্ৰীল ঠাড্ডা হ'লে তা লাঘব र्^{दि।} সামানা লোনা জল খেছে ফেলতে পার। ভারপরও দেখবে তৃফা যাতে না। চোথ বলে যাছে, গলা শ্ভ হয়ে যাছে কাঠের মতো। তখন যদি পায় কোনো মাছ শিকার করে য়ো ক্যান সাক হার রাজ**।** এবং মনে রাখবে যা হয়ে থাকে, তখন মান্য দিকবিদিকজ্ঞানশ্মা হয়ে সে পাশের লোকটির ওপর ফাঁপিরে তার গলা কামড়ে ধ'ল। তুমি বনিকে অনায়াসে ধনতে পার। ছুমি ভাহদে বে'চে যাবে।

ছোটবাব; ব্ৰুথতে পাৰছিল মাথা ঠিক রাখতে পাৰছেন না তিনি। মাধে নাধে ছোটবাবকে ভীষণ অবিশ্বাস কথছেন। তিনি তবে আদেন তিনি কানেন সে **ব্যাচিকে থুকি করেছে। সে কিন্তু কোনে**ন



পাপ কাজ করেছে বাদে মনে করতে পারে না। একটা হতাকাশ্ত এটা সে কেন বে ব্রুতে পারে না, শ্বাসরোধ করে মারা হত্যাকাশ্তের সামিল। অথচ বার বার সে আচির মাথ সামানা কটি-পতাংশার মতো দেখেছে। নিবেশি, অর্থাহীন বাদের চোথে যে মায়া থাকে, তাও পর্যাহ ছিল না। সে কোনো কটি-পতাংগ হত্যার মতো আচিকে হত্যা করেছে। হিগিনসের কথার সে সামান্যতম বাাকুল বোধ করল না। বলল দাশ্র, একটা কথা আমারা। যদি রাগা না করেন। অকটা বা

তিনি হাত উচিয়ে বললেন, নো।
আমার এখনও শেষ হর্রন। সব খ্রে মনোযোগ দিরে খানেছ আশা করি। আর
একটা কথা। খাবার ফ্রিয়ে গেলে সমুছে
লাংকটন পােই। ছকিনি দিয়ে তুলে
নেবে। শাাওলায় মতা সব্জ সংকা
কাচিহিন্তির মতো জেলি ফিস থাকবে।
সব অন্র মতো। ওগলো বেছে নেবে।
খেতে খ্র খারাপ লাগবে না। খাওয়ার
অভ্যাস হয়ে গেলে দেখবে, সমুদ্রে তোমার
জল এবং খাবার না হলেও চলবে। যতদিন বাট ভেসে থাকবে ভোমনা ততদিন
বেণ্টে থাকতে পারবে।

ছোটবাৰু আবাৰ হাত তুলে কিছু
বলতে চাইলে তিনি বললেন—না। আই
কোনো কথা না। তুমি কি বলবে আমি
জানি। তুমি আমাকে নিয়ে নামতে চাইবে।
সাবেপ্তকে আমি সব খলে বলেছি। সে
আমাকে ভেড়ে যেতে চাইছে না। সেই এক
অহুগৰার। জাহাজটাকৈ সম্ভি ফেলে
ডাপার ফিরে গেলে লাকে হাসাহাসি
করব। ব্যতে পারছ না জাহাজ না নিয়ে
আমাদের বলকে যাবার নিরম দেই। আর
সেই বা কি ভাববে?

তারপর তিনি থেনে থেনে বলতে থাকলেন—সিওল-বাঞ্চ আমাকে ছেওে দেবে না। আমি সঙগ থাকলে সব অশুভ প্রভাব তোমাকে বেডি উঠে বাবে। আমাকে কেউ ছেড়ে দেবে না। সিওল-বাঞ্চ এলিস কাপেন ক্রেলিস ক্

ছোটবাব্ আবার বিছা বলার চেণ্টা করলে চিংকার করে উঠলেন—যা বলাছ শোনো। এটা সেই সম্দু সেই আকাশ, সেই নক্ষ্যালা যাল নিচে এলিসকে আমি হত্যা করেছিলাম ছোটবাব্। এলিস মৃত্যুর পর আমাকে কোথাও ছেড়ে যায়ন। মাঝে মাঝে আমি ওকে দেখতে পেতাম ছোটবাব্। এখন আমার পাশে সেও নেই।

ভাকে আর দেখতে পাছি না। সে আয়াদের ঠিক ভার জারগার টেনে এনেছে।

কথা বলতে বলতে হিণিনস কেমন মির্মাণ করে বার্চ্নে। কর্ণ চোখ-রুখ। ভীতু মান্বের মতো ছোটবাবুর দিকে অপলক তাকিয়ে আছেন। আর যেন প্রায় দ্বীকারোভির মতো তিনি সর বলে ষ্টেছন। ক্রফটা তেমনি দপ্দপ করে জ্বতে ৷ ব্রুকে ছোটবাব, এলিস আমার প্রথম পক্ষের শাী। বনি আমার দ্বিতীয় পক্ষের সমতান। ব্যাভাবিক কাবণেই বনির ওপর তার আফোশ। এতদিনে ব্রুতে পারছি--সে সুযোগের অপেক্ষায় ছিল। সকালে দেখতে পাবে সামানা একথণ্ড জাম সমুদ্রে ব্রীপের মতো। ওপরে ক্রস। প্রবাল শ্বীপে হয়তো পলি পড়ে পড়ে ক্রসটা আহ্বও মাথার ওপরে উঠে এসেছে। আমার কেন জানি মনে হয় এলিস শংয়ে আছে তার নিচে। মমির মতো শ্রীর। সারাক্ষণ সমন্দ্র তার ওপর আছড়ে পড়ছে। তুমি ভুল দাখেনি। আমিও না। তারপং মুখ নামিয়ে নিলো। আর একটা কথাও বলভেন না।

ছোটবাবার মান হল তিনি আর কথা বলবেন না। সে এগিয়ে গেল। এবং ডাক্ষ্ণ, সার...! তিনি কেমন স্থির আর অস্বাভা-বিক রক্ষের ঠাল্ডা। —আর কথা না ছোটবাব। কি বলে ভিনি সংকটা হাতে নিলেন। চার্ট ভিনি ছি'ড়ে ফোলেন। এবং সি'ড়ি বেয়ে ওঠার সময় সহসা থমকে দাঁড়ালেন। ছোটবাব কলল কি হল সাকি?

—বুনি জানবে না। বুনি জানবে না, তোমাদের সমাদে আমরা ভাসিয়ে দিচ্ছি। তোমরা, কাছে কোথাও ডাঙ্গা অতহ সেখানে যা**ছে। দ**ু-একদি^ননর ভেতর লোক সয় পেয়ে যাবে—আমরা আছি জাহাজে। ভাগ্গা পেরে গেলে থবরাথবর প্রিথবীত পেশছে দেবার চেণ্টা করা হবে। তারপ্র ধ্রেসকিউ—আমরাও ফিরে যাচ্ছি তখন। মুম থেকে উঠে বনি চোথ-মুখ দেখে যেন টের পায় আমরা ভাল আছি। আমরা বেশ্চে আছি। কারো চোখে-ম্থে মরা মানঃবেল ছবি দেখতে চাই না ছোট-বাব,। তারপর ওপরে উঠে যেতে যেতে বললেন, আমার সামনে বনি ক্র্ণায় ত্কার মধে যাবে—অর আমি ভারতে পারছি না ছোটবাবাু। আশা করি তুমি ওকে ঠিক পেণছে দেবে। তাকে কোনো कब्दे प्राप्त ना। वनारक वनारक ছाण्यायुक पर হাত জড়িয়ে ধরশেন। মুখ তাঁর অন। দিকে। ছোটবাবা বাঝতে পান্নল, তিনি এখন বালকের মতো কাদছেন।

বিমল মিত্রের নতুন উপন্যাস

পরস্ত্রী

আগামী সংতাহে প্রকাশের সম্ভাবনা। দাম ৩**্**।

হ্ ক্রিনারায়ণ চট্টোপাধ্যায়ের নবতম উপদ্যাস

কামনার ধূপ ১০

ভূগ,জাতকের আ**শ্চয**িবই

হাত দেখতে শিখুন ^৪্

প্রেমেন্দ্র মিত্রের

অমলতাস ৫

আশ্তোষ ম্খোপাধ্যায়ের

সদ্য প্রকাশিত উপন্যাস

কাণ্ডন রাগিনী

আট টাকা

স্মথনাথ ঘোষের ওখানে পদ্মা এখানে গঙ্গা ৫

> শৃঙকু মহারাজের ভুমণ কাহিনী

গঙ্গাসাগর ৮॥

रेगटनम वरन्माभाधारमञ

বিশ্লবী বন্ধ্রর প্রতি ২॥

অমর সাহত্য প্রকাশন, ব টেমারলৈন, কলিকাতা - ৯



ক্ষাৰ স্বাদাস সম্পকে সোভিয়েত গবেষকের বচনা

মাদকা রাজা বিশ্ববিদ্যালায়র প্রকাশন বিভাগ সম্প্রতি হোডেশ শতাবদীর ভারতীয় হর্মে ভর সংব্রণস সম্প্রে একটি মূল্য-বাম রচনা প্রকাশ করেছেন। এ বইয়ের রছায়ক। নাটালা। সাজানোভা। তিনি মঞ্কো রাজা বিশ্ববিদ্যালয়ের একজন সহকারী অব্যাপিক। সোটিয়েত ভাৰততত্ত্বশারদ-গণের মধ্যে অধ্যাপিকা সাজানোভাই প্রথম বিহানি ধ্যায়ি পেরণায় উদ্দান্ধ হয়ে ভগবান শ্রীকৃষ্ণের নামের সংগ্রু ছাত্ত ভারতের বং মান্দ্ৰ মাঠ আশ্ৰম নৈতিকৈ ভক্ত ও ক্রীপালটীদে_র মতো পালে হেটে দেখতে ভাগতিকের মুজাবা বুজ্যাপন্ **ব্রাপন**ি এবং রাক্ষণায় ৬ হিমান্ত্রের পাদপেশের বহর অঞ্জ জিন গাবে মারে প্রতাক্ষ করেছেন। রজাদুমির বহু ব্যান্তর ব্যান্তিগত সংগ্রহ খেকে উপকরণ ও তথ্য সংগ্রু করেছেন, বুহা পণ্ডর সানের সাপ্য মত নিনিময় করেছেন এবং ভারশার নিজের সিম্পানেত প্রেণিছেছেন।

অধ্যাপিকা সাজানেতার বইখনি দুই भारत दिसका अंश्रेश व्याच कादमान्त्र, कार्याद ধাৰাবাহিক বিশেশ্যণ ও দিনতীয় পৰে ঐ ক্রাবোর বিবাহিত কংগ্রেড অন্যবাদ বিধাত। অধাপিকা সাজানোভা তাঁর আলোচনায কবির রচনা ও তাঁর জাবিন সম্পরের সমস্ত প্রধান রচনাগ্রিক্ত প্রালে।চনার পরে কবি সম্পকে তার নিজ্ঞান মতে ও ধারণা প্রাঞ্জন-ভাবে শিশিকশ ক্রেছেন। হিন্দী সাহিতোর ভ্যাবিকাশের ইভিহাসে কবি স্বদাসের নিক্সব স্থানটি কোথায় এবং তাঁ_ব অব-দানের যথার্থ ছাল। যে কি জে সম্পরের অধ্যাপিকা তাঁর নিজ্পর সিদ্ধান্তের কথা কা**র্ল** করেছেন। ফোড়েখ্ শতক্ষেত্রি ভারতের সামাজিক তথা সংস্কৃতিক ভাৰধারাৰ বৃহত্ বিচিত্র লক্ষণগোলত িকমা-পুড়িকিসাব ফলপ্রতিস্বরূপ ভবিপথে মবির যে ট্রপায় মান্য থাকি পেট্ছল তার প্রথিগে বিবরণ এ বইতে শাও্যা যাবে। লেখিকা বলছেন : াস হাজের করিবা লোক-ক্লা 🕏 काश्चिनी अवर 'लाकेमाणीएक मरहार छेथा-পান হিসেবে গণা করেই তাদের **বচন**ায় প্রাপ্ত হতেন। তাই দেখা যায় সে-যাগের কাৰো জনগণের ভাষাল্প (অথাৎ রক্তব্লি) স্বাভাবিক প্রভাব।

বহ: ভারতীয় লেখনে ও সমালোচক স্রেদাসের **জীবন প্যালোচনা ক**রেছেন। ত্র এ সম্পকে কোনও সাধারণভাবে দ্বাক্ত তথা পাওয়া কঠিন। যেমন সার্**ণা**স জন্মান্ধ ছিলেন কিনা--এ প্রশ্নটি। কেউ বলেন স্বদাস জন্মান্ধ ছিলেন কেউ বলেন -- ন। এ সম্পরে অধ্যাপিকা সাজানে। ভা সারসাগর বিশেল্যণ করলে লোক-ন্তোর যে বর্ণনা পাওয়া যায় বহরেণের যে সমুষ্ঠ পোশাক-আশাকের পরিচয় পাওয়া যায় ভা থেকে এইরপে সিন্ধান্ত করাই যুজিসংগ্র যে স্রেদাস অবশ্যই ব্রজভূমির গ্লামান্তলের গ্লো-পালকগণের ন্ত্রগতি প্রথম জীর'ন প্রজাক করেছিলেন। ভারণত পর-বতী জীবনে অব্ধ হয়ে পড়বে তিনি ম্যান্ত্রপান করে পরে অভিজ্ঞাতা কাজে লাগান। আ**জকের দিনে সরেসাগর-এ**র বিভিন্ন সংস্করণ দেখা যার যার কোন কেন্টিতে 'ধলাকের সংখ্যা কয়েক হাজার। অধ্যাপিকা সাজানোভ ক্বিত্ত মনে করেন रंग भौति प्राजनाभौ स्वारकत मरशा कान-মতেই এক হাজারের বেশী হতে পারে না। এ মতের সংশা হরত অনেকেই একমত হবেন না-কিন্তু তাতে সামগ্রিকভাবে তাঁর বইয়ের গ্রেছে কিছুমার কমে যায় না। অধ্যপিকা সাজানোভা ভল্ল-কৃতি স্বেদাসকে জনগণের কবি আখা দিয়ে বলেছেন তাঁব কাবা কেবল যে সমকালীন ল্যোকসংগীতের াম। ও ছন্দকে নিজ্ঞান কারে নিয়েছে তাই নয় সমসভায়িক দাশনিকভাব-ধারণারও আশ্চয় পরিচয় বাঁর **কারো** পাওয়া যায়। তাই দেখা যায়। ভ্ৰ-কবি স্রেণাসের কাব্য মহাদাশনিক বল্লভাচায়ের তত্দশ্ন ও সাধারণ মান্যের প্রাতাহিক ্রি'নর ভারাদেশ ও আশা-আকাংখার যোজক হিনেরে অমরত্বের অধিকারী করে তশে'ছ।

িবিভিন্ন যাগে এদেৰে বিভিন্ন কবি কৃষ্ণকে আদেৱ কাবা ও গীতির আশ্রের হিসেবে গ্রহণ করেছেন। এ সম্বাধ্ধ তাবং রচনার মধ্যে ভঙ্কবি ম্বেদাসের রচনা একটি বিশিশ্ট স্থান অধিকার করে আছে।
এর স্বারণ কি? অধ্যাপিক। সাজানোভা
ব্রুক্তেন্ স্রেপ্সের কার্য ও সংগীতের
অসাধারণ জনগ্রিয়াতার মূপে ররেছে শ্রীকৃষ্ণের
র্শ-কংপনায় তার অমনাসাধারণ প্রাণক্ত ভূপের্নিতি ও ঈশ্বরিক ৡবরাটছ সপ্রমাণের
এক্যিতক্তা। এ সব জিনিস স্বতঃই মন্দে প্রথে একটা জ্লাবিচনীয় প্রেবণ ভাগেন।
মান্ক্রের জন্য নিবিড় প্রেম ও সহ্শিরতা
্কাবীরীতির মূলে মধ্য ...জনতার কবি স্রেণাসের কার্যে স্বাভাবিকভাবেই মানবতাবাদ সম্প্রীতি ও আশাবাদ প্রাধান্য বাভ করেছিল।

চিরায়ত ভারতীয় সংস্কৃতির আনতম প্রবস্তা ভক্তকবি স্বেদাস সম্পাকে এই ধরনের একখানি গ্রম্থে রচনার জন্য অধান শিকা সাজ্ঞানেভাকে আমরা প্রাধা ও ধন্য-বাদ জ্ঞাপন কর্মছা:

কবি ও সমালোচক মোহিত্যাল স্মান্ত

বিখ্যাত সাহিতা সংস্থা অভ্রার উন্যোগে সম্প্রতি কবি ও সন্নামে।6ক মোহিতলাল মজনুমদারের সমরণে আলোচনা সভার অনুভান হয়ে গেছে। মার্বেল প্যালেস-এ অন্তিত এই অন্-^{•ঠানে} বহ**় বিশিষ্ট কবি সাহিত্যিক শিল্পী** ও সমালোচক উপস্থিত ছিলেন। বিভিন্ন বস্তা মোহিত্লালের জীবন তার কারিছ কাব্যশন্তি তথা সমালোচনার বৈশিষ্ট্য নিরে এই সভায় আলোচনা হরেন ও ভাষের धन्धा निर्दापन करत्न । **अ**ज्ञारकाठना-आहि*्*छ। মোহতলালের সভেনধমিতা প্রস্কো আলে:-টনা করেন অধ্যাপক বাণিকি রায় ও সনাত্র সেন। কৰি দীনেশ প্ৰেগাপাধায় এক কাহা-নিবশেষ মোহিতলালের চারিতিক বৈশিশ্টা বাক্ত করেন। অনুষ্ঠানের সভাপতি র্য়েশ চট্টোপাধাার তার ভারণে মোহতলালের সপ্তের দীর্ঘদিনের পরিচ্ছের ম্যুভি-চারণ করেন।

ভারতের প্রকাশন শিশ্প ও তর্গে লেখক সম্প্রদায়ের সমস্যা

সম্প্রতি প্রকাশিত এক পরিসংখ্যাত জানা যায় যে সাড়ে পাঁচ ক্রোটি সালালীয়

দেশ বটেনে গড়ে বংসরে ৩০ হাজার বই প্রকাশিত হয়। আর ব্টেনের দশগণে জন-সংখ্যার দেশ ভারতবর্ষের প্রধান ঘোলটি তাষা মিলিয়ে গড়ে বংসরে ব্টেনের অধেক বইও আত্মপ্রকাশ করে না। এর থেকেই বোঝা যায় যে আমবা নিজেদের আজ-প্রশংসায় যতোই মন্ত হই না কেন আসলে আমাদের সাংস্কৃতিক জীবন ব্রটেনের তুলনায় অনেক অপরিণত। এ-দেশের ব্যাপক নিরক্ষরতার একটা কথা প্রসংগতঃ উঠতে পারে। কিন্তু সে কথার গ্রুম্ব মেনে নিয়েও বোধহয় এ কথা বললে অত্যক্তি হবে না যে আমাদের দেশের শিক্ষিত নর-নারীদের মধোও বই কিনে পড়বার অভ্যাস নিতাশ্তই কম। অফিস সাইরেরী বা পাড়ার লাইব্রেরী অথবা বিয়ে-পৈতে জন্ম-তিথি উপলক্ষে পাওয়া বইই সাধারণতঃ আমরা পড়ে পড়া_র ক্ষ্যা নিবারণ করে গাকি: পিকিন্ত সমাজের এই অভ্যাস এবং মনোভাব দেখেই খাব সম্ভব্তঃ প্রকাশকগণ স্প্রতিষ্ঠিত লেখকগণের রচনা ব্যতীত আর কারো কথা বিবেচনাই করেন না। তর ল रम् था सारा হো লেখক সম্প্রদায়ের মধ্যে অনেক উদীয়মান এবং প্রতিপ্রতিসম্পন্ন লেখক তাঁদের রচনার প্রতকাকারে ম্দিত রূপ সারা জীবনেও দেখতে পেলেন না। বহা তরণে **লেখক**-লেখিক। আত্মপ্রকাশের একটাকু সাযোগ্যর অভাবে ক্ষাভে দঃংখ ক্লোধে লেখাই ছেডে দিরে:ছন। এ রকম উদাহরণও আমাদের দেশে থার বিরক্ত নয়। বাল্য বা কৈশেনের নানা দবংন ভরুগে বা ধাবা ব্যাসে এই যে পরিশতি লাভ করে এটাই সাহিত্যের একটা উপাদান হতে পারে। এবং সভি; কথা বলতে কি ভালো বা মন্দ যা হক লিখে চলেছেন লেখাৰ কয়বেশী লাতিক আছে এ রক্ম বে কোনো ব্যক্তি অনারাসে পাঁচ-দশজনের নাম বলতে পারবেন যাঁরা লিখতে পারতেন এবং এক সময়ে নিখাতনও ক্ষিত বতুমানে লিখছেন লা: অগাe <u>ক্ষেত্রের কেখা ছেড়ে পিয়েছেন লেখা</u> প্रकारमञ्ज भरताथ त्मरे वर**ल**।

থাতদিন সাময়িক প্রাদি এবং দৈনিক কাগাতাগালির রবিশাসগাঁয়তে আনক নত্ন নতুন লেখক-লেখিকা তাদের নানা বিচিত্র স্থিতীর মালিত রপে দেখতে পেতেন। ইদানীং নিউজ প্রিকট সংকটের ফালে তার সম্ভাবনাও লাংকপ্রায়। তর্মেল জেথক সম্ভাবনাও লাংকপ্রায়। তর্মেল জেথক সম্ভাবনাও লাংকপ্রায়। তর্মেল জেথক সম্ভাবনাও লাংক কর্মবেন? কেউ বাদি কল্টেস্পেট কিছ, টাক্টাকিড ক্লোভা ম্পের বাজের উদ্যানে একখানা বই ছাপানও সে সব বই সাধারণত বিলী করে। এক সমস্যা হরে দাড়ার। কাবণ প্রতিদ্বিত প্রকাশক্ষণণ বাত্তীত কারে। পক্ষে বিপ্রধানের মন্দ্রোবন্দ্র করা কার্যতঃ সম্ভব্য প্রকাশনার উদ্পেশ্যা সংগঠিত ক্রেকটি সংক্র্যা আছে—ম্ব্রমন ন্যাশনাল বুক ট্রান্ট্ সাহিত্য আকাদেঘ্রী এবং বিভিন্ন রাজ্য সরকারের সংশ্লিকট একেন্সিগালি। কিল্ড এদের ক্যাটশান-গালিতেও দেখা যায় কেবল সাপ্রতিষ্ঠিত লেখক-লেখিকাগণের নাম। তর্ণ লেখক-জোগানোর দায়িত লেথিকাদের উৎসাহ এ'রাও কেউ বহন চান না। তা এই যদি অবস্থা হয় তা হলে এদেশের তর্ণ লেখকদের ভবিষাং কি? প্রকাশন শিলেপরই বা দশ বংসর পরে কি দশা হবে ভাবা হায় কি? প্রত্যেক পেশাতেই 'নতুন রক্তের' প্রয়োনীয়তার গরেত স্বীক্রার করা ত্র এবং সেজনা যতাও নেওয়া হয় ভারারী এজিনীয়ারিং শিক্ষকতা অধ্যাপনা অভিনয় খেলাখালো-সৰ পেশার ক্ষেত্রেই কথাটা সতা। কেবল লেখকদের বেলায়ই এর ব্যতিক্রম দেখা যাছে। অবস্থাটার পরিবর্তন হওয়া পরকার। জাতীয় সংস্কৃতির দ্বাথেবি এটা প্রোজন। এজন প্র-প্রিকার কর্তৃপক্ সরকার প্রকাশন সংস্থা এবং সাধারণ শিক্ষিত মান্য সক্রেরই সচেণ্ট হওয়া প্রয়োজন।

প্রবীণ সাংবাদিক স্তার্জন ব্রুসীর সদর্ধনা

আমাদের দেশের সাংবাদিক ইতিহাসে
সত্যরঞ্জন বক্ষমী সংপ্রিচিত নাম। দেশের
স্বাধীনতা সংগ্রামের হারে দেশবদ্ধ চিত্তরঞ্জন ও বাঁর গ্রেমেস্কার রঞ্জনৈতিক
চিত্তাধাররে স্বাধীনতা ব্যক্তিতি জননাত থানে
ক্রার জন্য প্রীরক্ষমীর কৃতিছ স্বাধীনতা

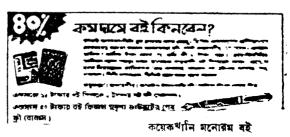
সংগ্রামের হাগে স্বাসাধারণের স্থান্ধ প্রীকৃতি লাভ করেছিল। দেশবংধার 'ফরোফার্ড' পারকার সম্পাদকর পে তাঁর সম্পাদকার গ্রুপ্তর্গালর সেয়াগে বাটিশ শ**্রুকল** র**ীতমতো ভয়ের চ'ক গেখ্যতা**। স্বাধীস নভার পরেও ব্যামি গরংচন্দ বস, প্রতি-তিঠতে নেশন ালিকার प्रभागतन्त्र और গঠনমূলেক সমাংশাচনা জনপাণর দাণিট আকর্ষণ করেছিল। সংপ্রতি সভীর্থ সংহতির বিশ্লব্য কমিশ্যি 🕞 বক্ষীর অণ্ট-সংক্তিকের জন্মবাহিকী পালন কারছেন এক গভীৱ আফ্রিক্তাপুর প্রিক্শে। এট উপলক্ষে তাঁকে খন্দ্রের ধাতি পালাবি চাদর ও ৫০০১ টাকার এগটি ছোড়া উপহার দেওয়া হয়। এই উপলক্ষে আমরাও শ্রীবকসীকে আত্মাদের শ্রুপা জ্ঞাপন করছে।

নিঃ ডাঃ বংগ সাছিতা সম্ফেলন-এর জাসাম অধিবেশনের আয়োজন

নিখিল ভারত বংশ স্থিত সম্পাদন

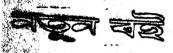
এর গোহাটি শাখার স্থাপ্ত
মণাজ্ম রাম্ব জানিকেলের না ব্যস্তা ডিক্সিডে
বংগ স্থাহিত স্থাস্থার আসাম বাক্স বংশ
স্থাহিত স্থাস্থার অসম্যাম বাক্স বংশ
স্থাহিত স্থাস্থার অসম্যাম বাক্স বংশ
স্থাহিত হবে। এ সম্পাক্ত আহাক্ষের
ভিতান : প্রমেশ শ্রাগ্যুক্ত
ক্রের্মিন ব্যাহিটি-ব

—শ্ৰীজন্তংকান্ত⊼



দেশবর্ণহা চিন্তরঞ্জনের জীবন-বেদ (জীবনী) হেনা চৌহরে টা ১২ ছোটরা ছোট নয় (কিশোব উপন্যাম) সধ্যাপ্ত গেশাল রক্ত ৪-৫০ বাঁচতে সবাই চার (মনোক্রমের আলেচনা ডং অস্পী বর্ধন ৩-৭৫ ভূষারপথের ইতিক্যা (হিমাসর হেন্দ্রামী) সংলাপ ৪ ৩০ ৩.াা এক নাম (স্ক্রেটি উপন্যাম) ক্রমী প্রেম্মের ছিচু ১ ০০ বর্বাণিনী





লাক। বাৰানেশী প্ৰথাল ভবন, ১০৬।১ জনহাতি স্থাতি, কলকাতা—১। কতি টাৰা।

হুমাটা প্ৰবীৰ ইতিহাসে টেনিল গড়ক জ্ঞা আন্ধাৰ উল্লাসের বুল-বিস্তৃত স্তিট-🖟 শ্বিদ্ধান বুল। এই মুলের প্রেক্তি বিশ্বান্ত রূপ লেখক দুস্তুয়েভাস্কর বাট বছরের জীবন বেন একটা ক্ম-প্রবাহিত **জাধ্বার বড়।** দৃহত্যেত্রাসকর সমবালে বৈশ্বর সম্পা র শাদেশে ভালাস্ত হিশ্ব পধ बट्ड शहीनक क्रीयत्म्य मध्या, प्रगटक्य বছ, দন আচুনিত বিশ্বাস এ লৈকেনার নিক্রেনার গভীর প্রভায়ভাম কে'পে উঠেছে ঠিক সেই সমসেই একটি বারিজীবনও তার বারিগত আচ্রুড্রিম ও মিলেশর প্রভায়ণিপাসায় खत्रक्षकार्य नत्य खेळाट्य। त्यञ्चलका अविदे জীবনকে নিয়ে শ্রীষ্ডেশ্বর রাখ একটি প্রায়-প্ৰশিশ্য জীৱনী প্ৰথম বাংলা ভাষায় উপতার দিয়েছেন।

দৃশ্ভরেভাঙ্ক আজ চিরকালের লেখক, শোটা প্ৰিবীৰ বহু বু⊨ধমান সচেতন লেখকের তিনি আজ পিতা, প্রেগ্রণার। স:ভরাং বাংলা ভাষায় তার একটি সম্পূর্ণ **ভা^{নি}না যালোপযোগী ও সাহিত্যি এ**বং সাহিত্যরস্পিপাস্টের 2(17) য়্যগুল প্রয়োজনীয়। 'লেখকেব লেখক দেওয়েফ্রাস্ক সেই প্রয়োজন মেটাবে। দদওয়েভাসক ফিওদুর মিখাইলোভিচের জীবন, কর্ম-তৎপরতা সাহত্যকর্ম, ব্রেড্মনের উল্লাস ও বিষয়তাকে চিত্ৰল বৰণেন্য উপস্থাপিত করতে গিয়ে আলোচা জারনীকার মোট পাঁচটি পরে ভার আন্দোচ্মানে ভাগ করেছেন। প্রথম পরের্ব জন্মকাল থেকে গাুপত রাজনৈতিক দলে যোগদানের জনা নিৰ্বাসন প্ৰসংগ, বিত্তীয় পূৰে বাইবেখিয়াৰ জেল থেকে প্রথম বিবাহ ঘটনা তৃত্রীয় পার্ব **প্রেমিয়া' পঢ়িকা প্রকা**শকাল থেকে তাঁব 'পাপ ও শাশ্তি' গুম্থরচনার সংবাদ্দান **চতুর্থ পরে দিবড়ীয় শ্রী ভারার স**ংখ্য नाकार ७ मध क्वीवरनत द्वेशनात्र आसाहना এবং পঞ্চম পর্বে ক্ষেথকের ভাষেত্রী রচনা श्चानन्त्र त्यातः मञ्जाशुक्षांत्रकर प्राक्षाधानेत्। উলিখিত হরেছে।

থ্রমম ক্মবিহুলে গোরেগনাগণের মত রোমাণ্ডকর লেখক-জাবিনকে যজেগবরবাব্ যেভাবে বর্গনা করেছেন, বে কথাসাহিত্তার রাজিতে সাজিয়ে একটি বিলাট নাজিছের উত্থান-প্রসার-প্রনের ট্রাভিক মহিসা ভিত্তি করেছেন, তা বাদ্তবিক অংথ্রি প্রশংসনীয়।

লেখনের রচনাকালে লিশ্চমার হাতের কাকে ছিল দংকরেভিন্দির ওয়েলী বিভিন্ন চিত্রিপার, দংকরেভিন্দ সম্পদ্ধিত বিভিন্ন লেখক ও ইতিছাসকারের সংগ্রুই তথা দি

ও উপন্তি। আলোচ্য লেখক সেগ্রুল

স্ক্রুকারে কাজে লাগিরেছেন। বইন

জাল্লগার দশ্তমেভাস্কর চিঠিপার ও
ভারেরার হ্রুহ্ বাংলা অনুবাদ জুড়ে

দিরেছেন, জনেক শ্বলে দশ্তমেভাস্ক

সম্পাকে তি কামকাল ও উক্তমকালোর

লেখকরা কি ভেবেছেন, বলোছেন, তারও

ক্রুকানা অন্নিত অংল, ক্রনেছেন, কিন্তু

লেছের ব্রেক্তম্বর রাল্প স্বাহ্ একজন
প্রতিভিত ঔপনাল্যক, স্তেরাং তবি

ওক্ত সংব্যেজন কথাসাহিত্যকের শিল্প-

কৃতিছেরই পরিচয় দের। লেখকের নিষ্ঠা সততা ও বর্ণনার্ভাগ্য এ প্রন্থের মৌলিক কৃতিছ। দশ্তরেভাগ্ন্সকে এমন সহজ্ঞপ্রাচ্য করা, সর্বজনপ্রাহ্য করা এবং সবেশিগরি বৃশ্বিমাদ যে কোন সংলেখকের অনুপ্রেরণা দৈওয়ার মত করে পজিবেশন করার চেন্টাটি

রাশিরার স্থিতাজগতে নানা বিশ্বখলার মধ্যে বংশ-বাশ্তরবাদের বিকাশ ঘটে। আকুসাকত ও ভূগেশিক খেকে শেখত এবং এমন কি গবি খেকে ব্নিন পর্যাত বংশ-বাশ্তরবাদীদের বিকাশ আশ্চর্যাজনত, ব্যাতন্ম্যাটিহিত। দশতরেভবিক এই বাশ্তর-বাদেকে এক অংশকানের দশগৈ আলোকিত



গালপ উপান্যাসের গোথকরা নানা পরিবেশের অভিজ্ঞানা থেকে ওাদের দেবা তিবাদান সংগ্রন্থ করেন। সেই অভিজ্ঞানার সংগ্রাম কলপনা করেশ, জিপি-চাতুর্য মেশে। লেখক বাদ নতুন হন, তার পাণ্ডুলি প পড়ে প্রকাশক তার বিক্রার সমভাবনা আচিক্রুণতে জ্বাপান কলেও হাত দেন। আর লেখক বাদ পা্রনা বাজে হাত দেন। আর লেখক বাদ পা্রনা বাজেই সোটা গিলে বাদে থাকেন, অথাৎ সোজা প্রেসে থাকেন, অথাৎ সোজা প্রেসে

শেষোক্ত ধননের বই ছেপে বেংধে আর চুটকাদার বিজ্ঞাপম দিয়ে বাজারে ছেড্ডে দেওয়া ভিন্ন প্রকাশকের অলা যিশেষ কিছা করার থাকে না। তারপর ভার ভারা আর কেথকের ভারা। গংগ্ ভপনাস সংপ্রকার স্বাস্থ্য এই এবই ধারা চলে আস্ছো।

কিংক আন্তকের সহিত্য বলতে েলে সাপ্টির সর্বাক্ষের বেণ্টন করে আছে। গলপ উপন্যাস ছাড়াও বিষয়গত অজন্ত্রকম চিত্রকর্ষক বইয়ের একটা বিহাট বাজার গড়ে উঠেছে প্রায় সর্বাত। এ-ধরনের বইয়ের আত্মপ্রকাশের সংখ্য প্রকাশকরেন্দ্রও একটা বিরাট যোগ থাকা সমন্তব কোখাকের মগজের চিম্ভাটাই এ কৈয়ে সব নাত্রতে পারে। কছা-দিন আগে আমার এক প্রবীণ জিও-ল'জদ্ট কথার কাছে একজন প্রকাশক এসেছিলেন। বৃদ্ধটির **লে**খার হাত ভালো। প্রকাশকের তার কাছে প্র**ণ্ডা**র আর্পান তো পাহাট্ডে জ্ঞালে ঘোরেন, আনেক দেখেছেন শ্রেছেন - আপুনার 'সাবক্ষেকট' এব প্ৰটিছ মতেই বেশ একটা 5इक्**ल**म वहै आशारक लिएश फ़िन सा।

ভিমি গ্রুপ উপনাসে চান নি, কিন্তু।

বেশ চমকপ্রাদ আর চিত্তাকর্যক কিছু চেরেছেন। আমি জ্র্যান, জিওলজ্ঞিত বংধ্যি তারপর থেকে খ্রুব সীরিয়াসলি ভাবতে শুলা করেছে।

এই প্রসংগ ধরেই এবারে একথান গ্রন্থ প্রকাশের বিচিত্র নজির দেখানো যেতে পারে। সা**ম্প্রতিক কালের বই**। গণপ বা উপনাল নয়, কিংতু অনায়াসে दिन्हें सिनास्त्र_से शर⁴ारत रहेना खर[©] পারে। বইটির নাম 📅 নেকেড এপ। ্লথক ডা॰ ডেসমন্ড ছবিস। *ছে*লকে স্ত্রাপায়ী জন্তদের চ ভয়াখানার কিউরেটালা বইটি মান ষের সংগা জাতু-জানোয়ারের আচরণে ৬ক কমপ্যারেটিভ ম্টাডি। দেখা গেল ্ন**ুছে বহ**ু **আচ**রণ যেমন প্রণয়, সু তাহংসা, আক্রমণাথাক মনোভাব, যুথবশ্ধ হয়ে বাস কথা ইত্যাদি বা ব্যাপারে অনেক জম্কুর স[া]ণ অন্ভত একটা বিশে**লখণ**গত মাল আছে। এই প্রসংগেই নজিরস্হ িবুস্তারিত **সবেষ্ণা**।

কিব্ দি নেকেড এপ' স্থিটিব মালে আসলে ভার দেখক নাকি কেশ প্রতিষ্ঠানের চেয়ারমাান ও চীক এ ডটর টম মাাশলার? মাাশলারের সপো ডেস-নণ্ড মারসের প্রথম দেখা এক পার্টিতে। ডেসমণ্ড মরিস এর আলো আরো খান-ক্ষােক গবেষসামূলক বই লিখেছেন, ভার কোনােটাই চার হাজার কলিব বেশী হয় নি। অথাৎ লেখক হিসেবে তারি কোনাই নাম্ন নেই।

ভ্রুলোকের সংগে আলাপু করে
মাাশলারের ভালো লাগল। বেশু দেশিলক
চিণ্ডাশীল মানহে মনে হল তাঁকে।
বেসমন্ড মবিসের পালটা লাপ্টের
তথ্যকাণে চিড্ডাখামায় গিয়ে তাঁর মা্থ
গেকে বালু কতক একটা শব্দ শানে
ম্যাশশার মাৃশ্ধ: ক্রুটো হল, দি শেকেড

कतार्थ क्रिकिटिनम्। क्रांत विष्ट मध्य विष्ट মিথা মিলিরৈ তার বিষ্টেধ বছ বিচার-রতিত্ত পক্ষপাত্তদ্বই অভিযোগ ছিল। স্টাক্ত স্পান্<u>টটি একসময়ে টলম্টরের</u> পাবরভার উপাসক এবং দৃশ্ভরেভাশ্ককে অগবিরভার मन्धामी बर्फ हिल्कि करब्रिडिटनम। मण्डासाकीकात अधकारम व्याप्तिक, सामिक, গনচারত ইজাদির হাত প্রতিষ্ঠিত লেখকর। ছিলেন। এই সমকালের পরিবেশ, দশ্তরে-ভাহৰণ বিষ্ফুৰে ও স্বপ্ৰেন নানা অভিযোগ ও খণ্ডন ইত্যাদির নিপাণ 'লেখকে কেটাপক সংবাদদাতা ωĒ দেশতরেক দিকা গাল্য। দেশতরেক্তালিক তথা সহার রুশসাছিভোর এপেশীর গবেষক, পাঠক

আঞ্জিব বে কোন সং বৃণিধমান লেখকের পক্ষে বজ্ঞেবর রাম্ন রচিত্ত লেখকের লেখক সম্প্রেক্ত প্রকাঠি অবশ্যপাঠ্য হবে বলেই আমন্ত্রা মনে করি।

জ্বানকর ও জীব্দরহৃদ্য-ননী মত্র।
প্রকাশিকা শ্রীমতী জ্যোৎখনা মত্র,
১২।১বি, গাংগলৌপাড়া লেন, বলকাডা

---২। চন্দ্র টাকা।

ভারতের জ্যোতিষ্ট্রতা প্রাচীনকাকে নানাভাবে নিষ্ঠার সংক্য হ'ভ। জ্যোতিষ্ণাশ্র বস্তু একটি চিররহসাযুভ বিদা। সেই রহসামন বিষয়কে অনেক্টা সহজ্ভাবে গরিবেশন করেছেন শ্রীননী সিচু তীর 'জন্ম-নক্ষর ও জীবনরহস্য' য়াকে। এই রাশ্বে রাশিচকৈ ক্ষানাক্ষরের ক্ষানা বি এবং তার ফল কাতবেদ ক্ষাবনে কিঞাবে দেখা দের তার সংকর সমূক বাখো করেছেল কোটেবনী লেখক। উথকাল নাক্ষাবালের কথা, পাণ্ডাতা মত, প্রাচার্যালার বৈশিক্ষা ইত্যা দণ্ড এ প্রক্ষে বিক্তৃতভাবে আলোচিভ হরেছে। সর্ব-সাধারণের বোঝার পকে জীমনী মিত রচিত জন্মনকর ও জীবনরহস্যা প্রশাট ব্যথেত ম্লারান।

বিজ্ঞাৰ সংগাৰে আটি (কবিতা)—বিজন ভটাচাৰা। কবিতার জনো ২৫ দিন-বাব্র গলি, বহুরমপ্রে, প্রাচ্ডবকা। একটাকা।

শ্রীষ্থান ভট্টাচার্বের প্রথম ক্রিভার বছ নিজ্ঞুন সংকাপে আমি'। মোট আঠানোটি লিরিক ক্রিভার সংকাদন প্রাপ্ত এটি। গালা ক্রিকুটার চলো লেখা ক্রিকুটার মারা প্রশান ক্রিকুটার মারা দিশ্রে ধরা দ্বোসারা নারা। শ্রেম, স্বাপন, ক্রাক্তানামা, সামলালে, আভাব-চেত্রাল-এই স্বাই ক্রিকে কারা সচ্চানার ক্রিকুটারিকার ভাটারারিক। প্রথম সংক্রামার ক্রিক্রম ভট্টাচার্য ব্রেম্বেট্ড। প্রভ্রমাতিকালপ্রা।

প্ৰেক্স বালমা—জগদীনচন্দ্ৰ দান। একো-সিয়েটেভ পাবলিশিং কোং, ২৮ বিধাম সুরশী, কলকাতা—৬। চার টাকা।

আধ্যাত্মিক ভাষভাষনাৰ গদা ও পাদা
সংকলিত হুয়েছে জগদীশচন্দ্ৰ দাশা রচিত্ত
পশ্দের বাসনা' গ্রাথে। মলেত গভীর
দাশনিক ভাষণাই পশ্দের বাসনা'র গেখকের
রচনায় বেশী ও একমাত ম্থান পেয়েছে।
বুদির, যুভি, ততু ও অভাততরে সাধনার
কৈছ্বকথাও এ গ্রামে বাছ। অনুরোগী পাঠক
এ গ্রামধপাঠে উপকৃত হবেন।

লেখা ও মেখা (অণ্টাদ্দ বর্ষ, তৃতীয় সংখ্যা)
সংগাদক: ডাস্কর মুখোপাধার।
মিলাগর, ১২ বিক্রম চাটার্জি কটাট,
কলকাতা—১২। দাম এক টাকা পঞ্চাদা
প্রসা।

বর্ত মান সংখ্যায় মানিক বন্দ্যোগাধ্যারের
গলপ নিরে মন্দাবাম আলোচনা করেছেন
রবীশুনাথ গ্রুড । মাকসিম গর্কির ক্ষেরেজ
গলস ট অন্বাদ করেছেন শাধন চট্টোপাধ্যার ।
অনা হারা লিভেছেন-কৃষ্ণ ধর, অমিন্তাজ
চট্টোপাধ্যার, দাচীন বিশ্বাস, জিয়াদ জালি,
রবীন স্ব্র, লিজীপ সেনগ্রুড করং
করেকজন।

লীয়াৰতথা পোকিস্চল বাব এবং স্থানিক চট্টেপাধ্যাল স্বাহণ দিও। ক'লা ফুট্র-ব্যার (বর্ধ'রান)। প'চিম পল্পসা। লিখেছেন স্থান **চট্টোপাথ্যাল দেব** ভট্টাহার্থ এবং স্থানীর গাঙগাপাধ্যার।

এপ'-জ্বতর আলোচনা প্রসংগে একা-হিকবার তিনি কথাটা শ্রনেছেন। এই नाह्मत अक्थामा वह श्रकारमत हिन्छा এলো চীফ এডিটর ম্যাশলারের মাথায়। এক বছর ধরে ডেসমণ্ড মরিসের সংশ্য লাণ্ড আৰু পাল্টা লাণ্ডেন্ড আমন্ত্রণের আদান-প্রদান চলল। ম্যাশলার পনকেও এপ' নামে বই ছাপার প্রস্তাব করেন আর ডেসমণ্ড মরিস বলেন, লিখতে হলে অনেক অনুশীলন আর গ্রেষ্ণা দুধকার, এখনো ডিনি প্রস্তুত নন। তিন বছর বাদে ম্যাশলার বললেন প্রস্তৃত আর তিনি এ-জীবনে হতে পারবেন না, তার থেকে শ্রে করাই ভালে। টোপও ফেললেন দি নেকেড এপ' লেখার জনা হাজার পাউণ্ড থেকে শ্রু করে দশ হাজার পাউন্ড পর্যত আগাম দিভে চাইলেন।

এবারে মধ্যিস লেখার বাপোর গুরুত্ব দিলেন। বেশী লোভ না করে তিন হাজার পাউড আডেভান্স নিয়ে কাল শুরুত্ব করেলন। মাাললার স্বংশ দেখেন তাল স্বং নেকেড এপা, কিন্তু বাইয়ের প্রথম খসড়া শেতে তিন বছর গাড়িয়ে কেল। তার মধ্যে বে কত লাভের বারশ্যা করতে হয়েছে ঠিক নেই।

পান্ডুলিপি হাতে পেয়ে ম্যাশলার উন্দীপনা আরু উত্তেজনায় ভণ্পরে। বিশ্ত রিভিশন আর ছোটখাট সংখোধনের জনা দেখক মারসকে আর বসাতেই পার**ছে**ন নাঃ আলো এক বছর কেটে হায়। চার হাজার কপি মার যার বই আগে বিক্তি হয়েছে ভার উৎসাহ আর কতটাকু হবে? এর থেকে ঢেনু বেশী প্রসা টোলভিশনের উপযোগী কিছু লখতে পারলে। লেখকের মন টানার জনোই এবাবে এক আশ্চর্য টোপ ফেললেন ম্যাল্লার। চেণ্টা করে তীকে দিয়ে ^{প্}দ নেকেড এপ'এর একট্র ছোট সার সংস্করণ লিখিয়ে আমেরিকায় ভার স্বস্থ विकी सदालन । किनलन शोक्य हिन প্রতিষ্ঠান, দাম দিলেন পঞাশ হাজার জলার। এবারে উৎসাহের অংত নেই লেখক চেন্সমণ্ড মরিলের। চটপট সংশোধনের কাজু সালকেন। কিংজু ম্যাশলার একবারেই আসল বইটি শ্রহণা করতে রাজি না, দানাতে কিলা ধারাবাহিকভাবে একটি কৈনে। পারিপ্রামিক দশ ছাজার গিন। ধারাবাহিক প্রকাশনার ফলে একট কৈন্টে পড়ে গেল। ভখনো আসল বই ছাপার আগে ম্যাশলার দেশে দেশে ভার অন্বাদ সব্দ বিক্রণ করতে গাগ্রহনা লেখকের হয়ে। তার স্বাহ্ প্রচার। হতেও লাখ দেশ্যত জ্বার ব্রে প্রাহ্বিদ্ধার স্থান বিক্রা করের ক্রে তারেও ক্রার ব্রে ক্রেন্সর স্থান ব্রেন্সর স্থান ক্রেন্সর স্থান ক্রিন্সর স্থান ক্রেন্সর স্থান ক্রিন্সর স্থান ক্রেন্সর স্থান ক্রেন্সর স্থান ক্রিন্সর স্থান ক্রেন্সর স্থান ক্রিন্সর স্থান ক্রিন্সর

এবারে আসল বই ছাপার তোড়ভোড়। বই ছাপায় পাঁচ মাস জাগে
থেকে মণনর্মণীর পিছন নিকের
ছবির পোন্টার ডিসপেল করা হল, দি
নেকেড এপ'। তারপার বহু ছেপে
বর্ত্তবার মাস দুই আলো বড় বড় গ্রাথবিক্রেতাদের এক কনফারেন্সে আমগ্রণ
কানিরে লেখক ডাঃ ডেসমান্স ফ্লা
চালিভান প্রোগ্রামত্ত করা হল ডক্সমবারেক । মাাশনারের সব-কিছ্র উপ্দর্শ।
পরিবেশ স্থিট।

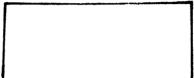
ভারপ্র? ভারপ্রের ট্রুইভিহাস।

শ্বরণীয় কালেলু মধ্যে এত বিকী খুব বেশী বইয়ের হয় নি। ইনকাম-টাকসের মানুষদের ডাড়া থেয়ে 'দি নেকেড এপ'এর লেখক ডাঃ ডেসরাল্ড মরিসকে এক বছলেলু জনা মালটার গিয়ে আত্মগোপন করে থাকতে হয়েছিল।

এতবড় এক স্থিত মংল প্রকাশক সংশ্থার চীফ এডিটর টম মাালবারের আইছিয়া: তার মন বলে-ছিল, 'দি নেকেড এপ ওয়ক জাস্ট রাইট কর ওকটন ওসমাভ মহিল আনভ ডকটর মহিল ওসমাভ মহিল কর দি দেকেড এপা

—आग्रिकां म्रिशाभाषाम्





মোজ্ব দিদনের উত্তরসূরী

(>>

'আরে ভাই, কি রেকড'ই করেছ'
। বীষ্ণবালন থা উচ্ছনিস্ত হয়ে বলে

ভিত্তিক্ষ আহার রেকড'টা ডেলে। কেল্ডে
নিক্ষে চচেচ।

ভাষাৰ্থনাথ বস্তখন বীতিমত উদীয়মান গাল্লক ধ্যমন তেমনি তবলাপণীতও। তবে গাদের জনোই নাম করছেন বেশি। বিশেষ গাদ্যা ঠুংবি গানে। তবি গলাতেই গ্রস্থাবারণ্ড আছে। তিনি ঠুংবি দাদ্যা শোনান আশ্চ্য মিহি ক্তেই। সেই অনাথ বস্কুবি ক্লিমব্দিন এইভাবে তারিফ

মেণাফোন থেকে তখন অ্নাথনাথের এই রেকডখোন বেরিয়েছে—

নাহি নাহি যানা সোতন গর সেখা কর জোর ত খেলি বিনতি করত হ'। আউর লাগ্য তোরি পাইরা।।

মিশ্র দাদরার এই গানটি ভারি ভাল গোগেছিল জমির্ছিদনের। অনাথ কস্ব সংগো দেখা হতেই তাই এমন প্রশংসা ফরলেন। এই একই গান তিনি নিজে আগো রেকর্ডা কর্তেচিলেন এইচ এম ভি'তে। সে রেকর্ডা কি ভাল হয় নি ? তা নর।

তবে আনাথনাথের গানখানি খুব টাংরেছিল। দরদী শিলপী ফানর্শিদ্ন তাই গোলের অভিনদ্দন জানিয়েছিলেন আর এক শিলপিনে। এমান দিল্-দরাজ শিলপী-স্থা হমির্শিদ্যেব। না হলে ঠাংরি লাদ্বরা তিনি কি কম গাঁলী? না কলকাতার আসেরে মাসরে বেভিভ্তে গ্রামেনেয়ন রেকডে গ্রাপ স্লাম-ডাক তবি? আর বিশেষ করে ঠুংরি গ্রাদ্বার জনোই তার প্রতিষ্ঠা বেশি।...

চিশের দশক তথন আবদ্ভ হয়ে গেছে।
হ্বাবহয় ১৯৩১-৩২ সালের কথা। কলথাভার সে সমম ঠংরি দাদরা গানের খুবই
এলন। তার আগের দশকেই বিদায় নিমেছেন
গ্রাক্র-মাভানো মৌজুন্নিন। প্রথমে কলক।তা
থেকে। তার এক বছর পরে ইহজগৎ থেকেও।
কৈত্ব কলকাভার ঠংবি দাদরা গানের আসরে
ভার শ্মাভি তখনো জীবন্ত হয়ে আছে।
থেকালও তিনি গাইজেন বটে। তাঁরই যোগাভাবে গাইজেন। কিন্তু স্বাই বিদি মনে
হাবেজ তাঁর দাদরা ঠংবি। বিদা শতকের
রপ্রয়ে দিক থেকেই তিনি কলকাভায়
থাকেছেন। দুলিচাদ শেঠের দ্যন্যায় আসর

থেকে দেখা দিয়েছেন নানা আসরে। ছার প্রতিভা জগদীপ মিশ্রকে **টেয়ে মহ তর** মুহাপ্রতিজ্বলনী জ্ঞান করেছেন। তখন শ্যামলাল ক্ষেত্রী প্রমুখের চক্রান্ডে জগদীপকে ত্যাগ করতে হয়েছে কলকাতা। সাদ্র নেশাল দরবারে চলে গেছেন। তারপর থেকে মৌজ, জিনের একাধিপতা কলকাতার। কাশীর সুণ্ডান হলেও ভার সংগতি-জীবনের বেশির ভাগত এখানে কাটে। পায় বিশ বছর-মাৰে মাৰে যেতেন বারাণস্থী কিম্বা অন্যায়। কিন্ত কলকাতাই তার সংগাত-জাবনের কেন্দ্র হয়ে পাকে। এখানে যত মুজ্রো পেতেন, যত বেশি দিন থাকেন এমন আব কোথাও না। আর তালিয়াও এক ফেন নি কোথাও। সে সবট তথনকার শ্রেকা বাইজ্বী-দের। আগ্রাওয়ালী মালকা জান, জখদন বাঈ চুলব্লাওয়ালী মালকা জান প্রভত্তি আরো ক জন। বাইজীদের সংখ্য মৌজাদিনের নিতা সঙ্গ ছিল। আর তার তালিম কিম্বা আসর স্বের মধ্যে প্রধান হয়ে থাকে ঠাংবি দাদরা। গণপৎ রাওয়ের ধারার ঠাংরি গানে তার প্রধান শিষা মৌজ-শিদ্ন তখন এই চালের উক্তম উদাহরণ। ভিনি বিদায় নেবার পরও তার গানেত বেশ কলকাতায় তাকে যায়। এমন মনোহারী করে তিনি গাইতেন আসরে। ভার ওস্তাদের ঠ্রংরির চাল মতে হত তার ককেও। শিষা না হয়েও তার স্বারা প্রভাবিত হন। কেন্ট্র পান প্রেরণা। কেন্ট্ সচেতনভাবে তাঁর অনুষ্ঠান থেকে সংগ্রহ করে নেন। এমনি নানাভাবে মৌজ পিদনের ঠাংরি দাদরার একটি ভূমিকা দেখা গেছে কলকাতায়। যেমন গিরিজাশ কর চক্রবত । বহরমূপারের সুক্তান তিনি। সেখানে মহারাজা মণ্ডিদ্র নম্পীর স্থগীত বিদ্যালয়ে অধ্যক্ষ রাধিকাপ্রসাদ গোস্বামীর কাছে ধ্র প্রস শেখেন। তারপর কলকাতায় এসে গিরিজা-শংকর পরিচিত হন শামলাল ক্ষেত্রীর সংগ্রে। শ্যামলালজীর হারমোনিয়ুমে ঠাংরির জগতের সংধান পান। আকৃষ্ট হন তাঁক সোক্দথে সেই আসরে এবং দুলিচাদের আসরেও তার দাতীমত দেখেন মৌজান্দিনের কমেঠ। বহুদিন ধরে ভার র পারণ লক্ষ্য করেন। ক্ষেত্রীজী ও মৌজ দিনের প্রেরণায় ও ধারায় চর্চা আরম্ভ হয় তবি ঠুংরি। পরে গিরিজাশাকর রামপ্রের ছম্মন সাহেণের কাছে ঠুংরির অনেক কিছ; পেয়েছিলেন। কিন্তু মৌজ্বদিনেরও ছাপ থেকে হার তাঁব ঠংরিতে। কিম্বা অনাথনাথ বসঃ। তিনি ত মোজ্ব দিদনের কাছেই কিছ্বিদন ঠাংবির তালিয়া পান। মালকাজানের বাডিত্তে করেক মনো তিনি যাতায়াত করে শিক্ষা লাভ করেন प्रोक्षन्त्रिका गत्र, जनाधनाथ ह्याटे थी,

বালদর মহামদ খাঁ প্রভৃতির কাছে ঠাংগিতে অনেক জ্ঞান লাভ করেছিলেন। কিল্ডু মৌজ-লনের গানও প্রভক্ষ নাথে তাঁর ঠাংগির গানে।

তেমনি জামর্দিননের জাবনে เคละก আরো বেশি বলা যায়। তিনি মৌজ দ্পিনের শিষ্যানা হয়েও নিয়েছিলেন তার সংবি দাদবা। নৌজ্ভিদনের সংগ্র জয়ির ভিদন বছাদন করেছিলেন। অনেক আসরে শ্নতেন তাঁর গান। মোজ্বান্দনের বাস্গাতেও যাতায়াত করতেন। ভাছাড়া মৌজ দিনের তালিম পাওয়া জানন বাই প্রভতি কোন কোন বাঈজীর সাৰ্থেরও হোলাযোল ভিল প্রথম জীবনে কিছুকল জমির:শিদনের। তিনি ছিলেন। গায়ক-সারংগবাদকও গায়িকাদের গানের সংশে সারের সংগতও করেছেন সে সময়ে। এমনি নানা স্তেই তিনি अध्य करान हेर्न मामना। भिन्नी व्य ক্তভাবে ক্তদিক থেকে সংগ্রহ করতে পারেন তা বাইলে থেকে ধারণা করা ঘাষ না: জ্মির্ভিদ্ন যে মৌজ্জিদ্ন প্রমুখের গান শ্বনে আকো নানা সূত্রে আত্মপথ করে ঠাংরি ইত্যাদি গানের কলাবত হন সে বিষয়ে সন্দেহ নেই। ^হংরি তিনি বিশেষভাবে শেখেন নি কারে। কাছে। আগে রীতিমত থেয়ালের তালিফ পেয়েছেন। তারও আগে শিখেছেন ধ্রপদ। দশ্তরমত কন্ঠসাধনা করেছেন। প্রস্তৃত হয়েছেন পেশাদার জীবনের জনো। মৌজ্বীদ্দন প্রমাথের ঠাংরিরাপে প্রেরণা পেয়েছেন। আকৃষ্ট ক্রয়েছেন এই রীতির গাঁতিতে। তারপরে চর্চা করেছেন ংরি। মনোহারী হৈংরি কয়ে ভাঁব চিতকে অধিকার করে নিয়েছে। তাঁর সংগীত-মানস্ পরিতৃশ্ত, বিকশিত হয়েছে ঠাুর্বর অবল্যন্তা: প্রাণের স্ফার্ডিতে ঠুংরি আসর করেছেন। নিজের শিল্পী-জীবন সাথাক হয়েছে, সেই সংখ্যে সংগীয় ামাজের স্বীকৃতি পেয়েছেন ঠুংরি দা।, গানে। জ্ঞানির্নিদন খ ঠংরি নাদরার শিলপী বলে জনপ্রিয়তা লাভ করেছেন। আসরে, জলসায়, রেকর্ডে বৈভাবে— সহত। আব এক কথায় বলাতে গেলে ঠুংরি তিনি শানে শানেই শিখেছেন বা সংগ্রহ করেছেন অন্তরের প্রেরণায়। সংগতি কর্ঠ প্রস্তুত হ্বার পর স্বভাবের বশেই ঠাংরি-শিল্পী হয়ে উঠেছেন। কাররে কাছে বিশেষ করে ঠুংরির শিক্ষা নিতে হয় নি তাঁকে।

জ্মির দিন নিজেও অনাধ বসুকে বলেছিলেন 'সবাই আমার ঠাংবির জনো নাম করে। ঠাংবিওথালা মেবা নাম হো গিয়া। কিন্তু ভাই ঠাংবির তালিম আমার নেই।'

সতি কথা। আসলে তিনি তৈরি হয়েতিলেন ওচতাদ বদল খাঁর তালিমে। দীবাঁকাল
নিয়মমাফিক তাঁর কাছে তালিম নিজেছিলেন। কিন্তু সে তালিম খাঁর কাছে ঠাুরিও ছিল বটো। কিন্তু ওা
রঙের ঠাুরিও ছিল বটো। কিন্তু ওা
রঙের ঠাুরি না, যে চালের ঠাুরির গানে
ছানির্শিদ্দ নাম করেছিলেন। ওচতাদ বদশ
খাঁর ছিল প্রনো ধরনের ঠাুরি।

一年 のままない

জন্মির, শিক্ষা তা কোনদিন শেখেন নি এবং

ভূতাদ গণ্পং রাও যে 'বোল্-বনাওকি-ঠ্ংরি'র এখানে প্রচলন করেন, কলকাতার
তা স্পরিচিত হয় মৌজান্দনের মাধামে।
গোমব্দিন অনেকখানি সেই খারাই অন্সরণ করতেন। প্রায় সেই চানেই গাইওেন
ঠ্বির দাদরা। মৌজান্দিনের সংশা তিনি
অবন্য জ্লনীয় নন। মৌজান্দিনের সে খাদ্র
ভূল না তার কঠে। তবে তিনি স্কুল্ট,
সরমী, শিল্পী-প্রাণ। অন্তরের প্রেরণায়
প্রেক্তেন, রসস্থি করে দিরেছেন গ্রেডারদের মনে। আলান্দিনের তুলা না হলেও
দের মনে। আলান্দিনের তুলা না হলেও
গানিত গান্ধী, কুতী শিল্পী ঠারি লাবরা
গানে।

এই শতকের প্রথম দিক থেকে বিশেদ্ধ দশকের প্রায় মানামানি শহতি মৌলালিন কলকাতায় বেশিল্প ভাগ থেকে গেছেন। তিনি যে ঠারের ক্ষেত্র প্রতত্ত করে হান, গরে ভার একদিকে দেখা দেন বিশিক্ষাশন্দকর চকুবহণী আর একদিকে ক্ষামরাশিন।

কলবাতার আসেরে মৌজ্বাদিদনের এক উত্তরসারী জমির দিন।

শংগ্ ঠাংরি দাদরা গানে নয়। সংগীতভবিনের তারা কটি দিকেও র্জনের মধ্যে
সাদৃশ্য দেখা যায়। তাঁরা দৃজনেই শুপদ
গায়ক পিতার সহতান। শ্রুপদ পিতার
দিক্ষার্থনিই তাদের সংগীতচচা আরম্ভ হয়।
দীবাকালের জনো না হলেও, শ্রুপদ ধারায়
কংঠ সাধনা ও তালিম। তারপর ধারালের
চচাও দৃজনেই করেছিলেন। থেয়াল তাদের
সংগীত-জবিনে ছিল শেষ পর্যাত। কিক্
ভারা ব্যভাবিক প্রক্তেম ট্রেরভেই বেশি
ফাতি লাভ করতেন। ঠাংরিই তাদের
প্রভার হোসন স্মাধিক বাহন হয়
ভারা ক্ষান্তান ঠুংরির জনাই তাদের
নাম্ন সমধ্যায় থাকে।

শিল্পী-জীবনের মতন মৌজন্লিদনের সংগ্র জামর্লিদনের বাজি-জাবনেও আছে ঐকা। একই বক্ষের চারত তাদের। একই প্রকাষ জাবন্যাতার ধারা। স্মর্চির, সম-প্রবাজের। মৃত্যুর কারণ্ড একই এবং প্রায় স্মাব্যুসেই।

তালিম দেবার বিষয়েও দ'্ভানের সধ্যে এক ধরনের বৈশিশ্চা দেখা যায়। মৌজ্লিদর বেশি শিথায়েছিলেন বাইজীদের। সেইস্ব গারিকাদের পঙ্গীতে তার অন্তর্গ যাতায়াতও ছিল বেশি। মৌজ্লিদনের প্রুষ্থ শিষা নাম্মান্ত। ভানাথানাথ বস্কুল্লিন মাল্কাজানের বাড়িতে এবং তারই অনুরোধে অনাথ বস্কুলিনের বাড়িতে এবং তারই অনুরোধ অনাথ বস্কুলিনের বাড়িতে এবং তারই অনুরোধ অনাথ বস্কুলিনের বাড়িতে এবং তারই অনুরোধ বলা বলা হলা কথানি ঠাবের দালি বলা মৌজ্লিদনের এক শিষা ছিলেন বার নাম সংগাতস্মান্তে তেমনি পরিচিত হর্মন।

ক্ষিব্যক্তিনের প্রসূত্র শিষাও আঁত অলপ। তরিও লোগেন গ্রামোফোন রেক্ডেরি জনো। এইচ এম ভি ও মোগাফোনে জাম-র্কিন তথন ভারপ্রাণ্ড শিক্ক। সে শর্মই

ভার কাছে জ্ঞান দত্ত, ধারেণ্দ্র দাস, কুফচন্দ্র দে ও আন্থাসউদ্দিন বেকর্ড করবার জন্য গান শেশেন। জায়ুর্ভিদনের কাছে বেশিদিন নিথেছিলেন ইন্দুরালা, আগুর্বালা, কমলা হরিমা, ছরিমতী, বীলাপালি প্রভাত গায়িকারা। ভারাও অবশা হিন্দী উদ্বিগান বেক্ড করবার জন্যে ভার আছে শেশেন। ভবে বেক্ড ভিনে সংগীতশিক্ষ কেউ কেউ করেজিলান ভারা।

শার্ভ শিক্ষাথশীদের মধ্যে জমিরাশিদনের अरश्य सक्तात्मव मध्मर्थ सामानि किन। স্বনামপ্রসিদ্ধ গাঁতরচায়তা কাজী নজবলে জাম্লা-ইসকায় জানাত্ম সংগীতশিষা ভিলনের। কাজী সাতের কিন্ত গায়ক হবার জনো জালার পিলনের কাছে ছাত্র হয়ে যেতেন ना। एवं किल काना केल्मणा। ननामाजी সাহিত্যিক তেনেজকমান বাহের প্রতিচারণে ভার বাহানত পাওয়া হায়। ছেমেন্দ্রক্সামের अल्य क्रिया प्रिया पर महाराज पर कारता है ভালাপ পরিচর ছিল ছনিন্ট। মধ্যবয়নে হেনেপ্রক্ষার প্রচুর পরিমাণে বাংলা গান क्रमा क्रमाज्य। जीत अप नद शास्त्र वरः रतकार्ण करवान क्रकान्य रम्। मानीनम् रामनावर्शान প্রমূপ আরো কন্ধন গায়ক-গায়িকাও হেমে-রক্মারের রচিত গান রেকডে^র গেয়ে-ছেন। মঞ্জের বহু, নাউকে (স্বীতা, কারাগার, গৈরিক পত্রনা প্রভৃতি) স্বাক চলচ্চিত্রে এবং অজন্ত রেকডেন্ত্র জন্যে তখন গান রচনা কর্তেন হেমেন্দ্রমার। সেইসব কান্য সংগতির রচনাকার বলে সে সময তার সংগতিজগতেও বেশ প্রতিটা। নজর্জ এবং জাল্লাপন দ্জনেই ভোষ্টেক্সারকে গান রচারতারতে সমাদর করতেন। সংগতিপ্রেমীরপেও তার গতে সমাগত হতেন তারা। সেসব দিনের প্রসংগ্র জামর দিননের কথায় হেমেণ্ট্রকুল পরে লিখেছেন, করেক বংসর কেটে বায়। জ্মিরুণ্দিনের দেখা বা সাড়া পাই না। এর-তার মাথে খবর পাই, অমাক আমাক ব্যক্তি জন্মির দিদনের কাছ থেকে সংগতি শিক্ষা করছেন তাদের কেন্ট কেন্ট আঞ সাবিখ্যাত হয়েছেন। একদিন শানন্ম নজার্ল ইস্লাম জামবের কাছে গান শিখছেন। নজবুল যে গায়ক ত্বার জন্য ভাৰ শিক্ষাৰ গ্ৰহণ করেন নি, একথা তথ্য তিনি বুখতে পারেন নি, কিম্তু আমি নিষেতে পেরেছিলম।

রামায়ণী প্রকাশ ভবন

১০৬/১ আমহাস্ট স্ট্রীট কলিকাতা-১

প্রকাশিত হল

জটিল জলস্রোত

দাম ১১ টাকা

সমীর রক্ষিত

বাংলা সাহিতে বাদের সামান্য টান আছে তারাই জানেন, কি প্রবল ভাবে সমীর রক্ষিত তার বিষয়বস্তু নির্বাচন করে থাকেন—উত্তর্বংশ্র সেই পাহাড়ী জমি জলার কথা, এবং দুর্ধ্বা সব মানুবের কথা নারারণ গংশাপাধায়ায় এবং আম্রাভ্বন মজ্মদারের পর তিনিই বুর্নি বাবলা সাহিতে আবার নভ্ন ভাবে হাজির করেছেন। এ উপলাসের বিভিন্ন চরিত্র বিজ্ রাখী প্রকল পশ্টু ধীরেল মানুসজার ররমাংসের অতি পরিচিত প্রামীণ মানুব। তিস্তার দু কুল প্লাবিত জলবেথার ভেতর উপাম প্রো এবং জিখাংলা, অথবা বলা বেতে পারে প্রলাজ্পতা কি করে এক অসহায় প্রেমকে জতি সহতে হত্যা করতে পারে তার এক কর্প ইতিহাস নিপুণ-জনের বিশ্তে করেছেন তিনি। অনেক্ষিদা পর আবার জমি জলার মানুব বালো সাহিত্য হিরে আসহে। সাহিত্যের পক্ষে এটা ভারি আশার কথা।

> শৈল নিন: সাংগ্টন পাৰ্ডিশাল কলনাৰ ৩, রমানাগ মজমেদার স্মীট, কলিকাতা-১

and the same of th

ভাষভিলে মানে ?' জগ্নির বললেন, 'উদ':
গানের সুরে আমার কার বাংলা গান বৈধে দিকে পারবেন ? আমি বললাম, 'তা পারব না কেম ? কিন্তু উদ্ধে গানগালি না দ্বালি তো সোই চালে গান লিখতে পারবো মা ৷ 'তিনি বলালান, 'বেশ, কালকেই আপনাকে গান শানিয়ে তাপেবা।'

্ৰতথা প্ৰস্কেগ জিজাসা কবলুম, 'নজবুল এখনো ভোমার কাছে গান শেহে কি?'

প্রবল মুস্তকান্দোলন করে জ্ঞার বললেন

'না। নজর্লকে আমি আরু কখনো সান লেখালো না।'

জিল্ঞাসা করলাম, 'হয়েছে কি, এব চটেছে। কেন?'

জিনি বললেন, 'দাদা না চটে কি **খাকা**যায় ? নজবল সাছাব কাছ খেকে গানের পর
গান শিখতে লাগলো। ভারপর মে কি
কবতো ভানেন? বাংলা গানে সেই সব
গানের সূত্র বসিবে এখানেই এসে শিখিয়ে
যোত লাগলো। বলুন, এর পরেও কি ডাকে

আৰু গান শেখানো চলে? শেষটা কি আমার অলু মারা বাবে?'

আমি ত্রেম বললুম, নজরুল খুর বেলি জন্যায় করেছে বলে মনে হয় না। সে তে। গায়ক হবার জন্যে তেমার কাছে লান নিগতে চায় নি। সে চেয়েছিল কেবল নতুন নতুন সূব শিখতে নিজের কাঞে লাগাবে বলে। এটা তেমার আগেই লোফা উচিত ভিল।' (যাদের দেখোছ, প্রা



রিয়মিত দাঁত রাশ করলে আর মাড়ি মালিশ করলে

মাঞ্চির গোলযোগ ও ঘাঁতের ক্ষয় রোধ করা যায়

দাতের ডাক্লাররা বলেন, মাড়ি মন্তব্ধ ও স্থা রাখার সমচেরে ভালো উপায় হল নিয়মিত মাড়ি মালিশ করা। আয়ু, বাতের অমুরোধ করার সকচেরে ভালো উপায় হল নিয়মিত রোজ রাজ্য ও সকালে এবং প্রতিবার খাবার পর দাতে ব্রাশ করা, যাতে কয় স্পাইকারী ক্ষত অব্যাহর কৃচি বেরিটে আহে বাত প্রিজ্যার করে যায়।

আপনার বাচ্চাকে ফরছাপের ক্ষােশ করান: নিম্মেতি গাঁত ত্রাশ করতে শেখান ফরছাপা টুগপেট দিয়ে—হা এক গাঁতের ভাকােবের তৈরী। আর দেখবেন, মাডি মালিশ করার ক্ষােশ ও ক্ষেম শ্ববহার করে ফরছাপা ভব্শ্ব আক্রেন জ্নিয়ার টুওবাশ।

যত ভাড়াভাড়ি ফরছান্স দিয়ে দাঁভের যত্ন নিতে শেখাবেন ততই ভালে।

সূহো, পোষ্ট ব্যাগ লং ১৩১, বথে ৪১ ঃ নাম	
विकास। • कमुश्रद्द करत रंग छात्रास हान छात्र मीरह माग रकटो मिन— ≷ःविकी, शिली, भावामे, प	



ইণর হুড়ান্ড্র টুখপেষ্ট দাঁতের ভাজারের তৈরী হেমেশ্যকুমারের সংগতি প্রসংশ্য এখানে একটি তথ্য যোগ করে দেওয়া বার। প্রথম জাবিনে তিনি কিছুদিন ধুপর গান শিথে-ছিলেন মাধ্তঠে ধুপাদী মহীন্দ্রনার তথ্য পাথারের কাছে। হেমেশুকুমার তথ্য পাথারিয়াঘাটা শুটাটের লৈটিক বাড়িতে বাসকরতেন। সেই অন্তলেই লালমাধ্র মুখাজা লোন নিবাসী মহালিনাথ ছিলেন তাঁর নিকট প্রতিবেশী। তাঁর গানও সেই যৌবনকালঃ হেমেশুকুমার বহুদিন শোনেন এবং রাগ্সশাতি বিষয়ে কিছু ধারণা তাঁর তথ্য গেকেই হয়েছিল।

ছামির্শিনের ঠংগী গানে তার একজন শিষা ছিলেন সংগোশুনাথ খোষ। কিন্তু তার সংগীতজগতে কোন ব্যাক্ষর নেই। এই পর্যাত ছামিশ্লিনের শিষ্য প্রসংগ।

তার শিক্ষাদানের ব্যাপারে একথা জানা যার যে, তিনি ছিলেন মৃক্তহ্সত। অকুপণ্-ভাবে গান চেকে দিতেম। প্রাণ ভার শেখাতেন ঠ,গের।

আসরেও তৈমনি ঠাংরি দাদরার প্রেমিক গায়কর্পে তাঁকে দেখা যেত। অক্লাকভাবে ঘণ্টার পর ঘণ্টা তিনি গান শোনাভেল দরদ্ দিয়ে। গ্রোভাদের সংগ্রানিজেও সংগীতে মেতে উঠতেন। জমির্শিদ্দের তেমনি দ্ব' একটি আসরের নাম করা হায় এথানে।

সেকালেও কয়েকটি ছরেয়ো আসরে উচ্চ মানের সংগীতচর্চা হত, গত শতকের জের ধরে। এক এক স্ণগতিপ্রেমীর প্তের আসর। কিন্তু সেখানে নানা শৈশাৰ।র কলাবংবাও গ্রপনা দেখাতেন। তাদের বেশির ভাগ ছিল উত্তর ও মধ্য কলকাতায়। एथाना धारमद मश्या विरमश जन्म जिल ना। তেমনি দুটি নিয়মিত আসরে মাঝে মাঝেই গান শোনতেন জামর দিন। একটি ছিল মসজিদ বাড়ি স্থীটের (এখন যে অংশট্রুর নাম হেমেন্দ্র সেন স্ট্রীট সে সময় তাও মসজিদ বাড়ি স্ট্রীটের অন্তর্ভক্ত ছিল সেই **जाराण) नारतम्प्रताथ वज्ञुत ख्वान अवर** বিখ্যাত মল্লবীৰ ও স্বগতিজ্ঞ গোবরবাব্য ৫২ বিডন স্থীটের সূহে। প্রথম আসরে ংশির অনুষ্ঠান হত তাদের মধ্যে সরদী করামং উলা খাঁ, তবলাবাদক দশনি সিং শরার হারমোনিয়ম-গ্রাণী সোনীজা, জমি-রাশ্যিন কুক্চম্র দে প্রভৃতির নাম করা যায়। গোবরবাবার আসরেও যোগ দিতেন ভারা। ভাছাভা হারমোনিয়ঘ-শিল্পী রফিক উল্লা পাঁও কলকাতায় এলেই বাজনা শোনাতেন গোৰর-বাব্র আসরে। এই দুটি আসরেই জমি-রুদিদ্নের গান হেসেন্দ্র্মার অনেক বাব শোনেন এবং তার বর্ণনা এইভাবে বিয়েছেন,---

সারাদিন এবাদতভাবে সাহিত্যচচার শেষে স্থার পর মন চাইতা থানিকটা ছুটি পেতে। তাই এখানে-ত্থানে যেখানেই গাম বাজনার আস্ব বসতো প্রায়ই সেখানে শিয়ে হাজরা দিয়ে অসাত্য। মনের ছুটিকে সাথকি করে কুলতে সংগীতের মতো আর জাত্রি দেই। ...আমার স্বগণীয় বন্ধব্র ন্রেক্সনাথ
বস্র দক্ষিপাড়ার বাড়িতে প্রতি শনিবার
সন্ধাকালে বসতো গান-বাজনার একটি
চমংকার বৈঠক। ...নারেক্সনাথের বৈঠকেই
সর্বপ্রথমে গায়ক জামার দিন খাঁও তবলাবাদক দর্শনি সিংকে দেখি।...তবলায় ওার
হাতের বোল স্টিট করতো অপ্র মাধ্যা।
ভিনি করমন্ত্রা থাঁ-এব স্বোদের স্বেগ এবং
ভামিন্দিন থাঁ-এর গানের স্পেগ স্কাত

্রাজমীর দ্বিনের রঙ্কটি কালো হলেও দেহথানি ছিল স্টোম ও মুখখানিও , সুদ্বান থবং স্বচেরে উল্লেখযোগ্য ছিল তাঁর ভাব-মধ্র চোথ দুটি—রীতিমতে। প্রেমিকের তোথ। গানের মারে সেই চোথ দুটির ভিতর নিয়েও দেখা থেকো বিভিন্ন ভাবেন অভিবাছি।...

....চমংকার ঠুংরি গাইলেন তিনি, ভিজিমে দিলেন মন স্রধারাপাতে। অপ্থ গানের গলা, গাম্ভীবে ভরপুর হতেও পারে, আবার পেলবভার ভরল হয়েও আসে। তান, মীড়, গিটকার কিছুরাই অভাব নেই। এবং অভিবাক্ত হয় উচ্চপ্রেণীর শিল্পীর দরদের ভিতর দিয়ে। হলুম মুম্প।.....

.....তারপর তার ঘন ঘন দেখা পেতে
লাগলুম আমার আর এক ঘনিষ্ঠ বন্ধা ও
বিশ্ববিধাতি মল্লহোম্থা শ্রীষ্টে বতীন্দ গৃহে
বা গোবরবাবরে বৈঠকে। সেখানে ঘাঁরা আসন
গ্রহণ করতেন তাদের অধিকাংশই স্বংগতি-

বিন, পালোয়ান বা অন্য গ্রেণীর লোক, সাহিত্যিকদের মধ্যে থাকতুম কেবল আমি ও প্রেমাণ্ডর (আতথী)।

্রণটার পর ঘণ্টা ধরে চলত জমার্নিধ্নের ও দর্শন সিংহার তবলা। রাতের পর রাত এই ব্যাপার। রাত মৃত গভার হয়, গান তত কমে ওঠে। ক্ষমারান্দিনের গানের ভাল্ডার যেন অফ্রুরণত, প্রতি রাতেই শ্রান ন্তন ন্তম গান—থেয়াল ঠুংরি টেপা গঞ্জ ভক্ষন। তাঁর কণ্ঠও যেন ল্লাণ্ড হতে শেখেনি।

......দিনে দিনে জমীর্ণিদনের সংগো
আহার আলাপ একট, একট, করে জনে
উঠতে লাগলো। তিনি বাংগালী ম্সল্পান
ছিলেন না, বাংলা বর্গ পরিচয়ত্ত বাধকরি
হারান তবে বহুগাল এদেশে বাস করে বাংলা
ললতে শিথেছিলেন। উদ্ভারণে কিছু
ভূপ হতো বাটে কিন্তু মনের ভাব বার করতে
ভার অস্ববিব হতো নাই।'...(মানের
দেখেছি, প্তা-১৬৫-১৬৭)

জামর্শিদ্দ খাঁর জীবনার সংক্ষিত রশেবেখা এখানে দেওয়া হল।

অন্প বয়স থেকেই জমির্ছাদ্ন বাস করেন কলকাতার। শিতার স্বান্ধন স্মৃত্র শালার থেকে তিনি বালাকালে এখানে এসেছিলেন। তাঁর তালিমের বেশির জাগাই শেয়েছিলেন এই শহরে। তথন থেকে জ্বিনের শেষকায়ণত তিনি কলকাতাবাসী। এখানকার সংগীতজ্ঞবিনের স্বান্ধ্য আয়াত্য

রামায়ণী প্রকাশ ভবন

১০৬/১ আমহাস্ট স্ট্রীট, কলি কাডা-৯

প্ৰকাশিত হল আক্ষণি

আট টাকা

বিমল কর

ত্যাকর্ষণ অসাধানণ আধ্নিক গুলো রচিত বিষল্প করের নতুন উপনাস। গদা রীতিতে সমকালে তাঁর তুলনা বিরল। প্রতিটি শব্দবিন্যাস এবং শৈলীতে তিমি প্রায়শই একক। এবং উপন্যাসের গ্রন্থনা সব সময় এমন এক বিশেষ জায়গায় নিয়ে বায়, যেখানে মানব মানের গড়ে রহসা প্রত্যেক্তক এক কঠিন জটিলতার মূপে দাঁড় করিছে দের। বিষল্প করের সর্বশেষ অবিশ্যাপীয় স্পৃতি।

খৌজ নিন : স্যাপটেন পাবলিশাস ক্রসান ৩ রমানাথ মজ্মদার শাঁটি, কলি-১ ত্রি থনিও সম্পর্ক ছিল। কলকাতার সংগতিকারের একজন বলেই তিনি মনে করতেন নিজেকে। তাঁর পিতাও কলকাতার দেষজাবন কাটিলে মানিকওলার কর্মেন হল। প্রাক্তিকাতার ৫৪, রিগন প্রাটে শিতা পান বাস করেছিলেন হাতেক্তিন।....

ভাষিক আদি নিবাস ছিল পাছাব প্রদেশের আদ্বালায়। সেখানে ১৮৯১ সালে কমিব্লিদ্বের জন্ম। পিতা মাসদ দার পেশাদার সায়ক বলে নাম ডাক ছিল। তিনি ছিলন আসলে ধুপদী। তবে থেংক টিপা রাতিও জনতেন। মাসদ থার ভালায়ে সংজ্পদেশ প্রভাত অঞ্জল গতিত ছান কোন কোন গায়ক-প্রায়ক। যেন্দ্র থ্যাজির খাঁও তালা বা। ধুপদ গায়ক ক্রেন স্ক্রীভচ্চা। বালক জনীর শ্রেই ক্রেন সংগীতচ্চা।

জ্মির্নিদনের স্কাতিশিকা কিন্তু এনই
ধারায় কিংবা স্বল্প পথে হয়নি। অবতও
প্রথম জীবনে। একটিকবারের ছেদ, স্কাতি
বীতরাল ইত্যাদি বিপতি দেখা দেশ তার্ক স্বাহারীকানি। উত্তরজীবনের বিলাসিতা বা প্রয়োদপ্রায়ণতা প্রথম পরেভি তার চিরতে ভায়ংখাত করেভিখা করেক বাবই বাহাত হল তারি স্বাহারীকানিব অনুবাতি। ভারবাদেশ হার স্বাহারিভাতি বিকাশের প্রথ

পিতা ভিন্ন জামব্দিদনের আঞ্চীন-সক্তমদের মধ্যে আবে সংগীতব্যেমারী ছিলোন। কেই সামক কেই স্থানগরাদক ইংলাদ। জামব্দেশনকেও বালাকালা থেকেই সংগীতবিক্ষা দিতে পাকেন মসিদ গাঁচ ভাষির শুন্ধ, ধ্বাস নম্বা, থেয়ালা উপলা ভোলনাও শিখাত শ্বা, কবেন দ্বা বছব এমান শিক্ষা চলে পিতার কাছে।

কিন্তু ভারপার জামার সংগতিশিক্ষার অমনোপোগী হয়ে পড়েন। পিতার অতিকিত্ আদরে সন্দাহিচচাতেই আলস্যা দেখা দেয় ভার। সন্দাহিত উপেক্ষা দেখিয়ে তিনি কড়িন কোঁড়কে মত হতে পাকেন। প্তান সেখানে আয়ুক্তে আনকৃত অপারগ হলেন মসিদ খাঁ।

বিছ্ দিন এই লবে নগট হালে জামরকে নিষে তিনি বলকাতায় চলে এলেন। এখানে আনা কোন ওচতাদের হেফাজতে প্রকে এবাই ভবি উদ্দেশ্য। নতুন জাগুগায় নতুন কলা-বতের কাছে তালিয়ে জমিব যেন প্রস্তুত হতে পারেন গায়কের পেশার জনো।

বদল খাঁ সে সময় শেঠ দুলিচাদের বাগানবাড়িতে ছিলেন। তাঁর কাছে জামবের শিক্ষার বন্দোবস্ত করলেন মাসদ খাঁ।

বদল থার কাছে জমির তথ্ন সারংগ্রাদন শিখতে আরশ্ভ করলেন। ছু মাস কাটল এমনিভাবে। কিন্তু তারপর জমি-মুন্দিনের বাবহারে আবার সেই অবাধাতা কথা দিভে লাগলু। সংগতি উপেক্ষা করতে লাগলেন আগের মতন। সারংগ্রাদন বাধা করে দিলেন। এমনকি মুক্তিকিও দান করলেন একজনকে। সংগতিকেও দান করলেন একজনকে। সংগতিকেও দান করলেন একজনকে। সংগতিকেও দান কর্মিন থেকে উঠে গেল। দ্বিনাতি উন্ত্ৰুক্ষল হলে উঠলেন জমির। বদল থাঁর ক্ষাতেও আর কিছু পরিব্রতনি হল মা। পিতার সমস্ত আবেদনত অগ্নাহ্য করে প্রো-দম্ভুর যথেচ্ছাচরে হলেন। এমন্কি, এথানেও আর স্টালেন না।

বদল খাঁব কাছে যাতায়াত শেষ করে
বিয়ো জািবলাপন্ন কলবাতাও ত্যাগ
করলেন। ফিন্তে গোলেন জন্মস্থানে,
আন্বালায়। মাসন খাঁ প্রাকে কিছাতেই
হববদে, সংগাঁওচচাব মধ্যে আনতে গারলেন
না।

আম্বালায় অতি পথ্ল আমাদ-প্রমাদে নিম্মিক্তিত হলেন জাম্ব্যাম্দন। সংগ**িতর** স্থেগ্র কোনু সম্পর্ক রাখলেন না।

মাস্দ ৰাও আন্বালায় এসেছিলেন সে সময়। কিন্তু প্তের মতিগতি শোধন করতে আক্ষম হলেন। বালো তাকৈ অষ্থা আদব দিয়ে যে ক্ষতি করেছিলেন আব তা গ্রণ হল না। পিতার শৈথিলো ছেলেবেলা পেকেই বিলাস্তি মক্জাগত হয়েছিল জমীরের। উৎপত যৌবনে তা অপ্রতিবোধ বিলাস্বাসনে প্রিণত হল। পিতার স্ব অনুস্থার উপেক্ষা করতে লাগলেন জমির।

তথন একমাত উপায় হিসেবে প্তেব বিবাহ দিলেন মাসদ। কিন্তু : আশান্ব্ৰ ফল বিছ কেলেন না। ছবছাবের বিশেষ পরিবর্তান কেথা গোল না জামবের। সংগতি-ছটে হয়ে তেল্লান আসক বইলেন প্রয়োদে বস্বনে। অবস্থাব অতিরিক্ত বিলাসিতা করতে লাগলেন।

ভাদের সাংসারিক অবশ্য তথন একেবাবেই অসচ্চল। কিন্তু জমিব দিনকে দেখে
ত। বলবে কো। পোয়াক-পারচ্ছদে দন্তুরমত সোধান। দামা জিনিস ছাড়। কিছুই তার
মনে ধরে না, ব্যবহার কেন না। কিন্তু
সেসব গাছে কোখা থেকেস চিন্তা। তার
কেই। সে দায়িছ পিতার।

নিবাপায় মসিদ নিজের জ্লের মাশ্ল দিতে লাগলেন। এইভাবে কটেল আরো কিছুদিন। মসিদ খাঁ কলকাতায় চলে এলেন। জায়র্দিন কয়ে গেলেন আম্বালায়।

একদিন সাজগোছ করে বেডাতে বেরিয়েছেন। চক্তকে জাতো, সুস্থা পায়জান। জারদার পিরাণ লোমদার ট্রাপতে ফিটফার জান্ত্রান্দন।

এমন সময় পথে জান মহন্মনের সংগে দেখা। তাঁর আজুয়ি জান মহন্মন। গ্লী সারংগ-বাদক আর প্রবীণ বরসীও। জান মহন্মদ তাদের অবস্থা ভালা করেই ভানতেন।

ভামবৃদ্দিনের আশাদমন্তক একবাব তিনি ভাল করে দেখে নিলেন। তারপর থিক্কার দিতে লাগলেন বেশ জমাটি ভাষায়, 'বাঃ বাঃ, তোকা আরাম্নে হায়। দিবিঃ বাব্লিরি করে দিন চলেছে। নিজেকে খুব ঢালাক ভেবেছ, নাং কিন্তু আসলে তুমি তা নতা সংগতি যে কত নামী তা বোকবার মতন মগজ তোমার নেই। তোমার বাপ এফার ম্পানী। আর তোমাকে লোকে কি বলবে ব বেকার ছোকরা একজন। হাম কোন গালু নেই, পরিচয় নেই অথচ তুমি বাপের নাম রেখে একজন কালোরাং বলে নাম করতে পারতে। কিন্তু এমন তোমার আহাম্মকি যে গান বাজনা বন্ধ করে বঙ্গে আছে। কাণ্ডেনী করে বৈড়িয়ে কি থাতির পাবে? লোকে পালটা হাসবে তেমার দেখে। কারণ তারা তোমার হাড়ির হাল জানে। রইস লোক তোমাকে কেউই ভাববে না, যতই না তুমি সাজ-পোষাকের বাহার দেখাও! এখনো শোধ্রাবার সময় আছে।

জান মহম্মদের তীব্র তিরস্নারে এবার কাজ হল। এমন মোক্ষম নাকো ভাবান্তর ঘটল জমিব্দিদনের। একটি কথাও জান মহম্মদকে বশতে পারকেন না। মনের মধ্যে ওলটপালট হরে গোল সব। নিজের গালাদ চোখের সামনে হোন জানজন্দ্র করে উঠল। কেমির্দিদন মাথা হেণ্ট করে চলে গোলান বিনা জবাবে।

সেই দিন্ধ কলকাতায় মনিদ খাঁকে চিঠি পাঠালেন। তালিম নেবার ষেন বাকস্থা করা হয় বদল খাঁর কাছে। এবার আরে কোন গলাতি হবে না।

মসিদ থা প্রপাঠ গোলেন বদল থার কাছে। বদল থা তথন মেছ মাবাজারে থাকালেন। তার কাছে মাফ চাইলেন প্রেব জন্মেন। তাকৈ তালিম দিতে গাজি করালেন। ভারে গান-গাজনার অমানামোগা ইবে না জনির। তার ভার যেন, একভাদলী দেন।

এবার কলকাতায় এসে কথা রাখলেন জামিব্লিদ্র। বসল খাঁর কাছে দশ্ভুরনত খেয়াল গানের খেলিম নিতে লাগলেন। কঠোর পরিশ্রমে বিস্তাভ আবদভ করলেন। বদল খাঁর নিদেশে চলতে লাগ্ল তাঁর খেয়াল।১৮(1)

এবার জালিব শিদ্দের একনিও তথাবস্থা দেখা গেল। এলনিভাবে া দশ বছর ডিনি তালিম নিলেন্দ খার। বালক বরুসে ধুপদী পতার কাছে বছর দুয়োদ শিবেছিলেন। তারপর এতদিন্ শিথকেন বদল থাকি কাছে।

এইভাবে জান্নর্গাদ্দনের সংগীতজ্বীবনের প্রস্তৃতি হল। বাংলাদেশে বিশেষ
করে কলকাড়ায় তিনি স্থায়ী হবার মনস্থ করলেন। তাঁর পিতাও এখানে বাস কর-ছিলেন আম্বালার ডেরা উঠিছে দিয়ে। জানব্দিন স্পরিবারে কলজাডাবাসী হলেন।

এখানে যখন তিনি ওতাদ বদক ধাঁর তালিম পাজিলেন ওখন সংগীতাসেরে বহু প্রসিদ্ধ হয়ে অবস্থান করছিলেন মৌজানিদন।

তাঁর ঠুংরি লাদরাও **জামর**্শিকন তানেকদিন শোনেন। তাছাড়া **মৌজ**্শিদ্দের তালিম পাওয়া জন্দন বাই কিংবা আরো শিল্পীদের ঠুংরিও তিনি শানতেন কল-কাতায়। তুমে জামর্রাশিক ঠুংরি লাদরা গানে বেশি মুক্ষ ও আকৃষ্ট হলেন। এই সুষ্মামরী প্রীতিরীতির চর্চা আরুছ্ভ করে-লেন বভাবের বশো এর্মান নানা সূত্রে স্পুত্রে আগন প্রেরণায় ও কেন্টায় জামির্ভিদ্দ ঠ্বের দাদরার গায়কও হলেন। ওতাদ বদল শ্রী থেষাল তালিমের অভিনিক্ত তার এই সংবি দাদরার চর্চা।

পেশাদাব জীবনের প্রথম দিবে কলকাতার বাইরে, বাংলার অন্যান। অঞ্চলেও
গুণুপনা দেখান। যেমন ঢাকা বা রাজশাহী
জেলায়। ঢাকার নবাব হবিণ্ডলা বাহার
তাকৈ স্বর্ণপদক দিয়ে প্রেফ্ডর করেম। ওই
জেলায় বলদার জামবার নবেন্দুনারায়ণ রাষচোধারীর স্বর্ণপদকও লাভ করেছিলেন
তিনি। গোজশাহীর। পাটিয়াব রানীব
দ্রাতার স্বর্গতিশক্ষকও কিছুদিন থাকেন।
পরবর্তা জীবনেও জামর্শিদন আসর করতে
তাভেন রাজশাহীতে। তাকবার পাখোয়াজাঁ
ভগবান দাসের স্মৃতি উৎসারে সেখানে তাঁর
বান গাইবাব ক্যাও জানা যায়।

তবে সংগীতজীবনে স্প্তিণিঠত হবার পর কলকাভাই হয় তাঁর শিল্পীজীবনেব বিচরণক্ষেত্র।

তিনি মুখন এখানে প্রতিষ্ঠা অঞ্জন করলেন, তার আগেই মৌজন্পিন চিক্রিপায় নিয়ে সোছেন। কালকুমে তাঁরই আস্ব পেয়ে গোলেন জ্লিবন্দিন। আগে গেবেই ত তিনি খেরাল অবেগর সংগ্রা ইচ্চী আবম্ভ করেছিলেন। এবার সুর্গর রাদ্ধরা অবলম্বনেই তাঁর স্থগীতজ্ঞীবন আগ্রে প্রতিষ্ঠা নাম নব সৌল্পেন্ স্থলিক্যে।

আসরের শিল্পী থেকে কমে গ্রামো-ফোন রেকডে আত্মপ্রকাশ করতে লাগ্রেল। রেকড জগতে প্রসিশ্য হয়ে আমাল্রত হলেন বেতার কেন্দে। কলকাতা বেতাব প্রতিষ্ঠানের প্রথম যুগ্র থেকেই জমির্শিদন একজন জনপ্রয় গ্রেক কলে পরিচিত হলেন।

আর গ্রামোলোনের জগতে জামর্থিদন একজন নেতৃপ্থানীয় হয়ে থাকেন। সংগীত-শিক্ষক ও সংগীদে-পরিচালকের ভূমিকা হয় ভার। নানা শিল্পীদের তিনি শিক্ষা শিয়ে গঠিত করে দিতেন। তার নিজেরও কিছ্ সংখ্যক গানের বেকভ হয়েছিল এইচ-এম-ভি ও মেগাফোন থেকে।

রেকড সক্ষীতের ভারপ্রাণত শিক্ষক ও পরিচালক থাকবার সময়েই ্জনিরান্দিনের সংল্যা সাহিত্যিক, গানরচায়তা হোমেন্দ্রমার রায়ের ঘনিষ্ঠতা হয়। এ বিষার হার স্মাতি-কথা থেকে আরো কিছু উন্ধৃত করা যেতে

জমির্দ্দার স্পাতি জীবনে আঁমে: ফোনের জগৎ উল্লেখ্য, স্থান অধিফার করে আছে।

একাধিক রেকর্ড প্রতিষ্ঠানে শিক্ষক প সংগীত পরিচালকের দায়িস্থপ্র পরে দেখা যার তাকে। একোয়েও তিনি একটি স্বকীর প্রতিভার পরিচর দিয়েছিলেন। তা হল তার স্বকাকের র্শ। বহু রেকর্ডের গানে, স্ব-সংস্থোকনার তিনি বিশেষ কৃতিত্ব দেখানা। আর ভাও দ্বিকিলা হাং- প্রায় দশ বছর। তার স্কাগতিজাবনে
সময়টি অলপ নয়। কারণ তাকেও অসপায়;
বলা বায় হেহেতু পঞ্চালের আগেই গত
হয়েছিলেন।। যাই হোক, তার আমোফোন
ভাবনে দুটি বিভাগ। প্রথমে তিনি আকেন
এইচ-এম-ভিতে ও পরে মেগ্রমেগনে। দুটি
সংক্ষাতেই তিনি স্রকার ও সংগতিশাক্ষা থাকেন। এক কথায় বলা যায়মংগতি-পরিচালন। অবশ্য এ বিষয়ে তিনি
ক্ষার ভারপ্রপত না হতে পরেন। তবে তার
বিশেষ প্রতিপ্র না হতে পরেন। তবে তার
বিশেষ প্রতিপ্র বার্যা।
হেমেনগুরুষার রায়ের প্রশিশ্ত বিবরণেও
তার আভাস পাওয়া যায়।

জার্যাদিন ১৯২৮ সাল থেকে এসে।
ছিলেন রেকডের জগতে। তারপরই এইচএম ভিতে তানাতম স্কুলার ও সংগীত
শিক্ষক হন। তাঁর শিক্ষায় এই সংগ্রা থেকে
রেকড করেন ইম্দ্রালা আন্স্রালা বাঁণাপালি আন্যাস্টান্দিন প্রভৃতি গায়কগায়িকা। তাঁদের সেসব গানই ছিল হিম্দী
ও উদ্বি।

কমির্ভিদন তাবশরে ১৯৩০ থেকে মেগাংফান প্রতিষ্ঠানে যোগ দেন। সেখানেও ভার একট ভূমিকা। সেই পদে থেকে অনেক শিল্পীর গান রেক্ড হয় তার শিক্ষায় ও স্বসংযোজনায়। মাড়ার কিছা-কংল আগেও জ্মির্ভিদন গ্রামোকোন সংস্থায় যুক্ত ভিলেন।

বেতার প্রতিষ্ঠানে তাঁর জনপ্রিয়তা শ্বের্ কলকাতা কেন্দ্রে সীমাবধ্ধ থাকেনি। এই কেন্দ্রের নিয়মিত শিল্পী হাসেও দিল্লী, লক্ষেয়ী ইত্যাদি কেন্দ্র গেকেও অন্ত্রান করেন্ধ্রেন তিনি। বেতারে ক্ষার্শিন খেয়াম ও ঠাইবি দাই বীতির গান্ট শোনাতেন।

আৰ সূথির দাদবার জনেই ত পাঁর বিশেষ জনপ্রয়া। আসংগ্রাদেরে সময়ে থাঁব মুল্লাদেহশানা হাবভাব। মনোহারী গামন রাঁতি। স্থিতি ককের মীড় ্ছেচড়ে স্কঃ কার্কমী। গতি-শিল্পী জামব্দিনের নামা সংগতিগালে শ্রেডারা মাধ্য জ্রেডা।

মৌজাপ্দিনের এক উত্তরসারী র, দিনন। শত্রত স্থগীতের ক্ষেত্রেই নয় বাল্ভ-জীবনে অথিং জীবনযাস্থতেও তার আছিন হাতি ধর্ণধারণ ছিল মৌজ পিনের মাতন। জ্যানর্শিদনের শেষ অধ্যায়ের কলায় সে প্রসংগ্র জানবার্যভাবে এসে হায়। আর মনে হয় কি সাথেরই হাত এমনি শাধা আলোবের ঝণ্গোরায় সে জাবিনে হবনিকাপ্তন হলে। ছায়ানটের আবরণ আর উন্মোচন করতে হও ন। পায় কর জীবন পরিণতি হাতে পারত অন্য প্রকার। হয়ত আরো দীর্ঘাখারী গৌরবে মহিডত। কিংতু শিল্পী জন্মির:-দিদনের দ্রোগা! সংগাতজীবনে এই প্রতিষ্ঠা, যাশ, উপাজনি ও সোভাগের অংডরালে আবার ফিরে আসে তাঁর প্রপথ যোবনের চরিচুলৈথিলা। কিংবা ছয়ত তালে তলে তা অলক্ষিত আকাবে ছিল। এখন প্রকট হয়ে উঠল প্রবায় সেই অসংযুত ইন্দ্রিতব্যতা। এবার তা পানদোষ ও অন্যান্য দুন্ট আনুষ্ঠিপাকের তার চারিত্রিক অবনতি ঘটাতে প্রাক্তে। প্রণন হতে পারে—সংগীতশিক্পীর সে অংশকার দিকের পরিচয়ে কি প্রয়েজন? শিল্পীর জাব্নকাহিনীতে তার অব্যাপের পসংগ কেন ?

তার কারণ সে তমসায় আচ্চন্ন চরে হার শিলগর্ম । তা এই শিলগর তাতাস প্রস্থানের উপলক্ষা। উত্তরকালের সংগীত-সেবাদের শিক্ষণীয় হতে পারে সে ব্যন্তালত। বিপরীতে প্রধান করা যায়—শিলপী কেন গোলন সংহাম পানেশ না সঞ্জনশীলতার প্রেরণা ? কেন বাহা উত্তেজন নম্ভুর প্রয়োজন করে বাহা উত্তেজন নম্ভুর প্রয়োজন করে না শিলপ স্থির পারক ? কেন বাহা উল্লেখন না শিলপ স্থির পারক ? কেন বাহা উল্লেখন স্থাবন হালগের না শিলপ স্থিতীর পারক ? কেন বাহার উল্লেখন হ

চিরস্তনী প্রকাশ ভবন

৪/এ হেমচন্দ্র নম্কর রোড, কল্কান্ডা-১০

্চির্নত্নী কিছ্ অসাধারণ কালে হাত দিয়েছে। মাল ভাষা থেকে
আধ্নিক বাংলা ভাষায় বিশ্ব-সাহিত্যে প্রপুণী রচনার অন্বাদের কাজ
বৈছে নিরেছে। বাংলা সাহিত্যে চির্নতনীর এসব ম্লাবান সংবোজন
প্রকাশনার ইতিহাসে এক গোরবোল্সাক অধ্যায় স্থি করতে বাসেছে।
চির্নতনীর প্রথম প্রবাস তিনটি নাটক একলে এক খণেও প্রকাশ। নাটক
তিনটির নাম প্রারক্তমে ঐরিপিদিসের বাক্ষাইণ সংবাজেন্সের রাজা
অইদিপাউস এবং কালনেে অইদিপাউস। ম্লা গ্রীক ভাষা ক্রেক
ভাষাভ্রের দায়িছ নিরেছেল রবের অগতোলান এবং ডঃ হ্রিকেশ ক্রেম।
চির্নতনীর বিভিন্ন প্ররাস প্রকাশী বিজ্ঞান্ততে আছে।

এ সব অম্প্রে গ্রন্থরাজির গ্রাহ ক হতে হ**তে প্রতি প্রেক্তরের জন্ত** ৫০ (পাঁচ টাকা) অগ্রিম নিন্দোর ঠি কানার পাঠান ব্যক্তর এবং এভাবে শতকর বিশ পারসেন্ট কমিশনে পাঠ কবল কবলেই কাভবাম হতে পারেন। সম্বর বোগারবাগ বাঞ্চনীয়।

থোঁজ নিন ঃ সাংগাইন পাবলিখার ক্ষরার্শ,
৩, র্মানাথ মজ্মদার স্ট্রীট, কলিকাতা-৯

্রীনির্দ্ধানিকের মতন্ত গতি-শিল্পীর বে ক্রিক্টি প্রতিক্রিকার এ-এব ভিজান মানে। কা ক্রিক্টি ক্রিক্টে ক্রিক্টিনিক।

ছাত্ত এব প্রায় অনুরাগী পুলব্চন-কর্ম ক্রম ক্রমেরকে ঘানাওচারে ক্রমেরক উদ্ভি কলেল বেতেন নানা আসারে ক্রমেরক জাক্তমানে সম্রাখাচন্তে—এই স্ব ক্রমেরক প্রায়ক্তমান

বা সাহার গলার না ঢাললে কথনোই
বাল বাইকে পার্কেন না। আসরে বাবার
বাবে হার বাজি থেকে খেরে যেতেন নার
বাবে হার বাজি থেকে খেরে যেতেন নার
বাবে বাজল সের বালাকত। প্রামোক্ষান
বাবে বাজল নিরে যেতেন। আরু ফিরতেন
কোঁট খালি করে। তবে তার এসব বালার
কাট টের পেত না। এমন কি রেভিওতে
পাইকে বাবার সমর
কালে তি বাবার সমর
কালে বাজল সকালে উঠে খেতে বসতেন
লোকে যেমন চা খারা। ওঃ খ্ব ভোগ কার
বোকেন। বাজিরে ত প্রায়ই বাজিও
ভাকতেন না। বেলির ভাগ কাটতা হেমনালিরীর সংগ্রা

'হেমানলিন' কে? গান শিথতেন তাঁর কাভে?'

শা না। হেম্মলিনী কোন গায়িকা নর।

শুইসৰ পাড়ার একজন নামকরা মেয়েমানার। চিংপরে রোড থেকে যে মসজিদ
বাড়ি স্ট্রীট আরুড হরেছে তার মধ্যে

চুকে ডান দিকে বাড়ি ছিল হেমনজিনীর।
শোধানে ধাঁ সাহেবের সংকা দেখা করতে
অনেককেই যেতে হত। ওসব দিকে খ্র হাওলা-অসা ছিল জানির্ভিদ্নের।

গুরা-আসা হেল আবা মাড়া হয়?'

্লিকার পচে ফেটে নিরেছিল। আনক পিনের অভ্যেস ত ছাড়েতে পারেন মি। ডাঙার বার বার সাবধান করে দেন। কিল্ডু কোম ফল হয়নি শেষ পর্যাত।

সাহিত্যিক হেমেন্দ্রকুমার রায়ের লেখনীতে জামব্লিদনের দোষেগুণে স্কুপণ্ট একটি চিন্তু- চন্তুল পাঙ্যা হায়। লামোফোন কাৰ্যা-লয়ে তাদের দ্রুনের কথা উদ্যুত করা হয়েছিল হে রন্দুকুমারের কাজে তার রচিত গান নিয়ে যাবার প্রস্থাে। সেই স্কৃত্র ধরে হেমেন্দ্রকুমারের স্মৃতিচারণের বাকি অংশ এনানে দেখনা হল প্রদিনই জালির আনো বাজ্যিত এপে ছাজির। আমাকে ক্রেক্টিউপুর্বান দোশালোন। গানের ক্থাগ্রেলি জালকে ট্রুকে নিয়ে আলি বলল্যুন হুম্তা-খানেক পরে এসে গান নিয়ে যেক।

ক্ষীর বগলেন আমি কেবল গান মিতে আসবো না সেদিন আগনাকে ভালো করে গান শ্নিয়েও সাবো। শ্নতে গাই আপনার বাড়িতে প্রান্তই গানের আসর বলে মাছলাল গাইয়ের আসেন বিম্তু কোন-দিনই তো আপনি এই গরীবভে স্মারণ করেন ।।

ক্ষমীরের কণ্ঠে অভিমানের স্র। বগদক্ষ ভাই বছ গাইলোদন আমেকেই ক্ষমার এখানে এসে গান গেরে যান বঠে ক্ষমার এখানে এসে গান গেরে যান বঠে ক্ষমে তাঁরা আসেন দয়া করে কেবল ভাশো-বাসার শাতিরে। কিন্তু তোমাকে ডাকি

ক্ষেদ্র করে উচিত-মতো দক্ষিণা দেবার ক্ষমতা তো আমাদ্র দেই।

ক্ষমীল বললেন কেন লালা আনিও কি
ক্ষাপানকে ভালোবালতে পারি না ? আমি
কি বেংল টাকার খাতিরেই গান গাই?
মনের মকো সমর্বার পেলে টাকার কথা
সামার মনেও ওঠে না। এবার খেকে আমিও
এখানে গান গাইতে আলবো। কেবল আমাকে
এক্ট্র রল্গীল করে দিলেই চলবে রল্গীন
না হলে আমার গান খোলে না।

তীর কথার অর্থ বৃষল্ম। তিনি চান সংবাদেবীর প্রসাদ।

আমি হাসতে হাসতে বলল্ম, বৈশ ভাট হবে।

তারপর থেকে আমার বাডিভে হতে লাগলো জয়ারি, দিনের খন খন আবিভাব। এক একদিন কোন ব্যয় না দিয়েই তিনি একে পড়তেম এবং সেদিন মিজেই কোন সভেগ করে भारता जनगरीक আসতেন। আসর বস্তো সন্ধ্যা**র সময়ে** এবং রাত দুটো কি তিনটেত আরে সে আসর থার ভাগেতো না। কোন ধোন দিন অন্যান্য গায়করাও থাকতেন এবং গ্রোতার সংখ্যাও বড় কম হতো না। আবার এক-একদিন শ্রোতা হতুম আমি একলাই কিন্তু ত্বু জমীরের উৎসাহের অভাব হতে। না কিছুমার। জ্যোৎস্মাপ জানিত গ্রেগ্র কল-কল্লোলের সংগ্য কণ্ঠ মিলিয়ে তিনি স্তৰ্ধ নিশীথের ব্রেক্র ভিতরে ঢেলে দিতেন গানের পর গানের ধারা। দ্বাত যত বাড়ে তত বাড়ে সরোর মাল্লা এবং তত বাড়ে তার গাইবার উৎসাহ। কিন্তু এ উৎসাহ মদ্যশের উৎসাহ নয় এ হচ্ছে শিক্পীর উৎসাহ। নিজেই তিনি ছবে যেতেন যেন গ্ীতরস্ধারার মধো। প্রচুর মদা পান করেছেন পা টলছে তবং কোনদিন কিছু বেচাল দেখিনি কোনদিন তাল কাটেনি ংলা বেসংরো বলেনি।

কিন্দু যে কোন শিল্পীর পক্ষেই মধ্য হচ্ছে দার ব অভিদাপেন মতো। বিশেষতঃ বাদের কন্টসংগীত নিয়ে কারবার তাদের তো মদ স্পূর্ণ করাই উচিত নয়। জ্ঞার-দ্দেনের যথেক্ট সংগীত প্রভিভা ছিল বটে কিন্দু সুরার বিষ নিশ্চরই তাঁর দেহের ভিতরটা জীণা করে দিছিলো ধীরে ধীরে।

একদিন শুপ্রেবেলায় তিনতলার বারালায় বসে রচনা কারো নিমান্ত আছি, হঠাং একতলা থেকে জমীরের গলার সাড়া পেলুম--লাদা লাদা।

আমি তাকে উপরে আসতে বলল,ম। তিনি উপরে এলেন কিন্তু কি ম্তি! অস্লাত চেহারা চক্ষ, স্ফীত প্রায় দড়িতে পারেল না এমন অবস্থা।

বিহিন্নত হয়ে বললান্তা, ব্যাপার কি জমার?

তিনি ধপাস করে বসে পড়ে বগলালেন কাল কাতে এবটা গড় মাইফেল ছিন্দ আমার মাতা বড় বেশি হয়ে গেল। তারপর

War S

স্থাল থেকে থাচিত এখন আপনার এখানে আবার খেতে এসেছি।

জামি বললুম মাপ করে। তাই জমীর তা হর না। দেশছ ত আমি লিখছি তোমাকে নিরে আমি এখন বাস্ত হতে পারবো রাঁ।

ৰাজির সামনেকার গঞার লিকে উপাস চোখে তাকিকে কমীর চুপ করে বলে রইলেন খানিকক্ষণ। তারপর উঠে দক্ষিত্র টলতে টলতে চলে গেলেন।

ভেবেছিল ম জমীর বাগ করে আর আমার বাড়িতে আসকেন না। কিল্তু আমার সে ধারণা ভূল। তা দুইে পরে আবার তার আবিভাব। ওপ্টাধারে মিণ্ট হাসি দুই চোধে প্রতির ভাব।.....

......তার অংপদিন পরেই থবর পেণ্ম জ্ঞার আর ইহলোকে নেই। এমন একজন উদারপ্রাণ শ্রেড শিল্পীর অকাল মৃত্যুর প্রধান কারণ যে অতিরিক্ত মদ্যপান সে বিবরে আমার সন্দেহ নেই।' (খাঁদের দেখেছি। প্র্টা ১৬৯—১৭২)

মৌজনিশনের এই উত্তরস্থীর মৃত্যু হয়েছিল ১৯৩৯ সালে। শেষ জাবনে থাকতেন রাজাবাজার অগুলে।

জমীর্শিনের একমার পরে আবদ্দ ক্রিমও চমুংকার গায়ক হয়ে ওঠেন। তরিও প্রতিভা বেশি প্রকাশ পায় খেয়ালের চেয়ে ঠংরি দাদরা গানে। পিতার তালিমেই তিনি গাসক কন। তাব ডাকনাম ছিল বালি। জমির্শিন ৩০ ম্সলমান পাড়া পেনে একটি সংগীত বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠা করে। ছিলেন। বালি ছিলেন তার পরিচালক। সম্প্র স্কুকঠের জনো বালিও স্লুম্ব হতে ভারেষ্ড করেন সংগ্তিগ্রগতে। কিক্টু তরিও একই করেন সংগ্তিগ্রগতে। কিক্টু তরিও

হে মেশ্চকুমার ও প্রতকে সে প্রস্কোও উল্লেখ ক কছেন যথায়থ ঃ জ্ঞার প্রায়ই আমাকে বলতেন দাদা আমার ছেলেও খ্ব ভালে। াইতে লিখেছে। বেটা বাংশর নাম রাখবে। আপনাকে তার গান একদিন শ্নিরে দেবো।

জমানের জাবিদ্দশায় তার পুতের গান আর শোনা হয়ন। কিন্তু বছর তিন আগে একটি আসরে তাঁর গান শানেছিল্ম। আনকটা বাপের মতাই চেহারা গলা ও গাইবার চং। অল্পাদনেই সে বেশ নাম কিনেছিল। কিন্তু দভেগ্যিক্তমে তর্মে বয়সেই সে পিতার সংগতিপ্রতিভার দ্বেশলতার উত্তর্যাধিকারশী হয়েছিল। অতিরিক্ত শানপানে সেও আজ পরপোকে। নাঐ প্রদথ পুষ্ঠা ১৭২)।

জমির,শিন তব্ ৪৮ বছর প্র^{তি}ত বে'চেছিলেন। কিল্ডু বালির আয়া শেব হয়ে

ষায় ৩০ বছরেই। এখনিভাবে পিতাপ্টের অম্ত ঠুংরি-বার: গরলে হারিয়ে গেল।

- पिटा भक्तात ब्रायानायाय

উপন্যাস



প্রভাতদেব সরকার

ি (পূর্ব প্রকাশিতের পর)

বাবার সামনে আপিদের বড়বাব্কে বঙ্গে থাকতে দেখে বিকাশ মনে মনে বিবত্ত হল। পাশ কাটিছে ভিতরে বাবার চেফটা করলে।

অন্তব্যান; আন্তরিক হ্বার বাসনার বললেন, এই যে বিকাশ, এই ফিরলে— অন্তব্যাব্র কথাটা ঠিকু যেন আপিসের আটেনভেস নেওয়ালু মত, দশটা না দশটা পচি তার কৈয়িবং এখানেও।

অনশ্তশানু জিজেন কর**লেন, কোথা**ও গিয়েছিলে নাকি?

আরে বিব্রম্ভ হল বিকাশ, ইচ্ছে কবলো মংখের ওপর বালে সে-খবরে আপুনাই। দরকার কি! উভিড্ডা কি কবতে ভাদের বাড়ীতে এসেছেন? কলা, যা যা বালে শেষ প্রাণ্ড তাই কি স্তিত হলা? কি নিলাম্ভি ভদ্যলোক স্তিত সংগ্র এসেছেন বিনা নিয়াকালে!

বিকাশ দ্বেত কক্ষে বলকে, হাই, আপিসেন্ন রাজীতে বিয়েছিল্ম-- মর্দানে মিটিং ছিল।

অন্তব্যব্ এর পর কি বল্পেন কে ছাবতে খানিক সময় নিলেন, ইতিমধ্যে অবনীবাবু কললেন, বেগের ছাপিসেও ছালী হয়, আমাদের দাবী মানতে হবে বলে মিছিল করে?

অন্তবান্ আক্ষেপ্ কর্লেন আর বলেন কেন, আজ্কাল স্ব আ্পিস্ট স্থান! ক্যায় ক্যায় আ্পিস্বশ্ন হ মিছিল, হৈ-হৈ চেচামেচি! জন্লাতন!

বিকাশ বললে, স্থাপনাদেরও তে।
ঘাবার কথা ছিল, আপনায়া কেন্টু শান নি,
দিবোন্দর্ব বলছিল বংড়োরা সব পেছনের
দরজা দিয়ে পালিয়েছে: সে কুলনার
আপনাদের বিশ্বস্থাবার ভাল, ভ্রমলেক
করেন, বিক্তু আপিসের মিটিং-এ ঠিক
এপোছলেন। বস্তুতাও দিয়েছেন।

সরকারী আপিসে দাবী আদারের জানা মিটিং যেন একটা মক্তার ব্যাপার, একটা ছেলে পেলা, অনশতবাবা রহসা করে কললেন বৃত্তিক দাস বস্তুতা দিয়েছে? বল কি! কি ব্লকে আন্নাদের বৃত্তিক ? ভালই বললে। বললেন বে-সব লোক আপিসের ইউনিয়নে যোগ দেবে না, বা বা পালিয়ে বেড়াবে তাদের চিনে রাখতে হবে—ক্ষাক সিপ! তারা ভানাক স্বার নত না চলকে সুমূহ ক্ষতি! দিন বদল হয়েছে!

कां कारम! जनग्रनाय**ू फेर्ल्ड**कर करके ननरनम, भावस्य मार्कि?

বিকাশ বললে, মার নয়, একদারে করবে বলেছেন!

অনস্ত্ৰান্ধে কে কললেন, কন্ক! কে একঘণে হয় তাই দেখা সাবে। সন্ধিক বললো আন ভাই অমনি ফললো। কড কাজেন লোক সৰু জানা আছে!

জনগীনালু ছেলেকে বললেন, তুই-ও ঐসৰ কর চস্নাকি? সেদিন যে বললি, জাপিসের ঝামেলার মধ্যে তুই যাস না?

বিকাশ কোন উত্তৰ দিলে না। অনকং-বাবে বললেন আমিও তো অবাক! কখনো ভাবিনি বিকাশের মত ছেলে এইসব এংজিটেশনের মধ্যে মানে! কি হে বিকাশ ভোমার ব্যাপার কি?

কিছুন্র। স্বাই ধাচেছ, আমিও বাচিছ, স্বাই শেলাগান দিচেছ আমিও দিচিছ, এতে দোধ কি হয়েছে ।

অন্তব্যব্ বৈশোষার মত করে বললেন, লা না ও-সংবর মধ্যে তুমি থেকো না। ভার চেয়ে সময় কবে আলিসের পড়াগোমা কর! যুহ সময় নাট কববে তাত তোমাণ কচি সময়ে না কবলে, আর কথনো আরবে না—সব জিনিসের টাইম-জাকটর জাসক জিনিসে।

অবনীবাব; জিজেস করলেন, কি হলো সিটিং-এ? ভোদেধ আবার কি দাবী!

বিকাশ বেন বিরম্ভ হল্পে বললে, সবার বা আমাদেরও 'ভাই বাঁচবার মত মাইনে, ভন্তালাকের মৃত সাভিত্য কণ্ডিখন।

অনসতবাব্ মনে মনে বিচুপ্ করে বজালেন, দাবীর কি দেব আছে! সময়ে আপিসে আসবো না, ইচ্ছে মত কাম করবো, বা করবো তার কোন কৈফিয়ং দেব না, বড়-ছোট মানবো না, মানে মানে মাইনেটা ঠিক নেব!

বিকাশ উত্তরে কি কলবে তেবে পেল না, ভদ্ৰপোক নিক্ষক তার বড়োতে এসেতেন, না হলে আল মুক্তেন-মত প্রনিয়ে দিও—

la salaka kangangan mengangan sebagai kemangan mengan sebagai palaka kangan jangan sebagai sebagai kelanga lab Salah mengan

দেবোচন ঠিকই বলে এইস্ব বড়োগ**ুলো** যত নাল্যাল করে, আফসারদের কাম কামডায়।

বিকাশ বললে, স্বিধে হলে তথন আপনাবাও ভোগ করবেন। ইছেছ মত কি, কারো হুকুম মত কাজ হয় তথন বুঝে নেবেন!

অবনীবাব; ছেলের নির্মেপ **মনোভাব** যেন ব্যুমতে পারলেন, তাড়ায়াড় ব**ললেন**, যাত্ত-ত্ত তুমি ভোজর যাত্ত, আমি এ**ন্ন সংগে** আলাপ সেরে নেই:

কি আলাপ সে তো বিকাশ আন্দান্ত কবতে পেরেছে। তবু সংকাচ ভরে কিছ্ব বলতে পারতে না। মেতে যেতে শুনুতে পেল, অনুভবাব তার বাবাকে বলভো, বিকাশ কিহু এ সবের মধ্যে ছিল না ওর বংগ্যালোই দেখছি এব মাগাটা থেয়েছো; মাকাষী আপিসে জনা করে জি হবে, মাকাষী থাপিরে জনাকরিছা;

অবন্ধীবাব বললেন আজ**নালকার** ছেলে-ছোকরা কি বলবে। বলনে: **দেশে কি** যে চেউ উঠেছে বলবার নয়।

আনত্রার বললেন, আমি **বাদ্দন** আছু বিকাশের অবলা কোন ভর নেই, বিশ্রু রেশি যান কিছু করে ওজন—

অবনীবাৰ জিভেন কৰলেন, **আপনা**-দেৱ আপিসে কি ছিল আৰু ?

খনশতবাব, উড়িলে বললেন, কিছে, নয়:!
কি সব ইউনিয়ন করেছে তার মহড়া ছচ্ছে
- কাদিন ধরে আপিসে টিকতে দিছে না,
টিফিনের সময় চেটিছে!

ভাৰনীবাব**ু ব্ললেন, সৰ জান্তগান** গলচগোল ! •

সন্তব্যক্ বললেন, ভাল কথা মনে পড়েছে বিকাশকৈ বারণ করবেন সে বেন এমাসে পে ব্রক্ত না করে! সারে পে ব্যক্ত করলে খাবি কি, তাও বাদ জানেত্র একেবারে ব্যক্ত করতিস, পরলা মাইনে নিবি না, দোসরা তো নিবি! সব জানো আছে কার কেমন স্বস্থা, এক তারিবেল পার দ্ু তারবেই কাবলীর , কাছে ভ্রতিত হবে!

জনশীবাৰা চুপ করে বইকোন মনে সন্দ এট ভোগে কংশ হলেন, আফসের এত ব্যাপার বিকাশ তাকে কোন্দিন কিছু বিদ্ধান বিদ্যালয় বিশ্ব প্রথম নাইনে বিদ্ধান বিদ্ধান আছে বাদ জাবাৰ হাত। খার মাত্র ক্রিকালার কি এইসব পদ্ডগোলের মধ্যে ক্রেকালার ক্রিকালার ক্রিকালার বিশ্ববিদ্ধান বিদ্ধান বিশ্ববিদ্ধান বিশ্বব

্ত্ৰণত্ৰাৰ বললেন, আপনি একট বুলিয়ে বলবেন, ভালপর আহা মানেজ বিটো বড়সাহেব লোক ভাল, আমার কথা শোনেন।

্ৰবনীবাৰ; বললেন, আপনাদেন সাহেব ক্ৰিকাঙালী ?

না, মারজে ! বাঙালী হলে ডে জারো

ক্রীকল হত ! বাঙালী ৷ তো আজি লাল

ক্রীকালী ল স্ব'নাশ করছে ! টোথের ওপর

ক্রীকাতেই পাজেন কি সব হচ্ছে ! দেশটাকে

ক্রীক্রীকার রসাতলে না দিয়ে ছাড়েবে না !

ক্রীক্রীকার তুল্ল-ভাজিলা করলেন !

আজ্ঞান প্রি কোলকাতাল কোন অক্টানী আপিসে বড়সংহ্র বাঙামী নন! ক্লিকালার বলুন দেখি?

জনক্ষাৰ মুখ এগিয়ে নিয়ে বললে।
বাঙালীদের বাবোটা বেকে গেছে! জল
ক্ষিত্রা ক্মপিটিশনে দীড়াতে পানছে না।
বাবা হতে গেলে মাথার মত যোগাতা
লাই ডো!

অবনীবার, চুপ করে গ্রহণেন। এ-সব আগিসের পলিচিকস-এর মধ্যে বৈশেষ ভিনি লোগ দেন না। চিল্লিশ বছর নার্টেন্ট আগিসে কাজ করে বা ব্রুছেন উঠেও ঐ মাঙালীকৈ যেন সবাই নিলে এক-ছরে করে দিতে চার—একটা অন্টোরত অসহযোগেল বাতা যেন চতুদিকে ছড়িয়ে দেওয়া হল্লেছে। বাঙালীর সম্ব্রেপ্ একটা মুগার কেছাদিও যেন আগিস পাড়ার মরে বেড়াছে। সরকাবী অগিস্য বেনকাবী আগিসস সর্বত এক কথাঃ বাডালী? কেবল আলমীত করে। কাজ করে না। এক কথার এলাখালোপ!

অনশ্চৰাৰ: বললেন, আক্ৰংলকাৰ ছোকরাদের তাই তো বলি, বাবা ও-সব ছাড় শিক্ষেয় কাজ কৰ, প্ৰবিকা দান্ত ওপৰে উঠে যাও!

সমমীবানু গদভীর হয়ে বলটোন আপ্নত্ত তো ফাপিলেন পর্যাক্ষ্য নিয়ে-ভিজেম :

অন্তরাধ্য মথে নীচু করে বললেন, ছা, কিল্পু আমাদের সময় এক দেবাপ ছৈল মা, বাদ করা অনেককে নাম থাকতে হয়ে-ছিল বিশ্ব বছর কলে এখন তেও অনেক দেকাপ, আপিস বাড়ছে, পাঁচ-সাত বছানেই অফিসার!

অনুশীবাব্ জিজ্ঞস করপেন, আপন্ধ বিটায়ার করতে আর কত দেবী আহে?

एक्षात वकर्ड भार केड रागा चार दवन दयन काक्स सर्थ अने ध्याद

বললেন, আর তিন বছর, তাই তো সাহেবকে মৌদন বলগ্নে—

কথাটা সম্পূর্ণ হলো না, অবনীবাব, উঠে অপ্যার দ্রজার কাছে গিয়ে হাত বাড়িয়ে চায়ের কাপ নিয়ে এসে অনত-বাবার সামনে রাখলেন। অনতবাব হা-হা করলেন, না না, এত রাডিরে আমার চা

অৰ্মীবাৰ গ্ৰাহ্য কৰপেন না, আৰ্থা হাত বা ড্য়ে খাবারের পেন্ট এনে সামনে রাখলেন। এবার অনশতবাৰ আলো আপজি করলেন না না, এসৰ কি করছেন! খাবাধ-দাবার আবার কেন!

অবনীবাব্ বললেন, কিছ্বু না সামানা, আনককণ – আগিসের পর—

अविध উভয়ের মধ্যে ভার্মতত যেন কেম্ব থমকে গেল। অন-তবাব ইত°ত্ত করলেন ভ্রলোকের সৌজন্য **হ**ুশ इत्लन। এবং আপা!য়নে মনে মনে ভাবলেন যে জন্যে এসেছেন তা अक्रम इत्। धथन क्रम्याश সহযোগে আসল কথাটা পাড়লে কেমন হয়। আপিস নিয়ে বিকাশের চাকরির ভবিষাৎ নিয়ে তো অনেক কথা বললেন_। হয়তো আত্মীয়তার শ;ভান্ধ্যায়ীর ভাবটা ঠিকই প্রকাশ করতে পেরেছেন মনে হল। এবার কাজেল কথাটা বলবেন কিনা ভেবে সিংগাড়ায় কামড় फिला।

অবনীবাধ্ বললেন, আপনি আছেন একট্ৰ দেখবেন, আপিসের পরীক্ষা বাতে

দেৱা বলবেন।
আমি তো রাত্ত-দিন বলছি, ওসব
বাজে কালে মাথা না ঘামিয়ে কাজের বাজ
কর বাবা! আমার শবশ্বাশাই-ও আমাকে
বলতেন, দেখ বাজে সময় নখ্ট না করে
আমিসের পড়া পড় কেরানীদের মত
ভাহলে মাছি-ভানি-ভানি করতে হবে না!
বলতে নেই একটা আগে থেকে যদি
দান্তম তাহলে এগাদিনে করে অফিসার
হয়ে যেতুম। সেই গগ্রীকা দিল্ম, পাশও
করল্ম, কিন্তু বড্ড লেট হয়ে গেল!
শব্দ্বিয়মাই দেখে যেতে পাবলেন না!

অবনীবাব**ু চুপু করে ভন্তর**োকের কথা শুনতে লাগলেন।

অন্তত্বাব্ বলতে লাগলেন, সব জিনিসের একটা সময় আছে, মানে সংযোগ কথনো ছড়েতে নেই! তা পর বরেস হরে গেলে সংসান্ধের কত ঝামেলা তখন কি আর একজানিন টেকজামিন ভাল লাগে!

অব্নীবাৰ, বলকোন, আলিসের কথা ও বড় একটা বলে না! কি হয় না হয় জান্তেও পারি না। যাহোক আপোন আক্রেন আলফ্রার ভাবনা নেই! দেখবেন।

্রে আর বলতে, আমি সব সময় ওয়াচ গ্রাথছি। বভুগাহেবকে বলে রেখেছি—

এর মধ্যে আধার বড়সাতেবকে বলবার হি
আছে অবনীবাবু ভেবে গান না। ভলুলোক
যেন নিকল্প সন্বাধ্যে অতি উৎসাহী ভাহতে
কি এই জনো এসেছেন, বিকাশের 'ওয়োগ উইসার' হিসেবে ব্লুডে এসেছেন আলিবের

বতমান আবহ ওয়ার সংজ্ঞাবেন ও না মেশে, গাজেনি হিসেবৈ তাল অবহিত হওয়া উচিত!

না, সে-স্ব কিছা নয়। অবশেষে আসল কথাটা অনত্ত্বালু বাস্ত করলেন। চা খেরে বুয়ালে মুখ্য মুছে বলগোন, যদি অভয় দেন তা হলে বলি, মানে আপনার কাথে আমার পার্গনি—

বেশ স্থিন জ্নিতা ধেন, অবনীবাব্ কি বলবেন না ফলবেন ভেবে পেলেন না। অনভবাব্ ঢোঁক গিলে বললেন, প্রাথনা মানে আলার বড় মেয়ের সংক্ আপ্নার বড় ছেলে মানে বিকাশ-আ-আ-শ্

অন্নতবাব্ প্রত্যাধী সম্পূর্ণ করবার আলে বাধা পেলেন বিকাশ উর্জেভতাবে ঘরে চাকে অবনীবাব্কে ডেকে ভেত্রে নিয়ে গেল। অন্নতবাব কেমন হয়ে গেলেন হঠাং হাত ফসকে কিছু পড়ে ধাওরার

জনসত্ৰাৰ অনেককণ অপেক্ষা ক্রকোন,
ঠিক ব্ৰুখতে পারছেন না ব্যাপারটা কি,
দরজান ওপারে কি ঘটেছে বার জনে
কড়ের বেগে বিকাশ ঘরে চাকে বাগিকে জেকে
নিজে গেলা। নাকি বিকাশ চারু না অন্যত্ত-বাৰ তার সংগে মেধ্যের বিবের ক্রেকে
কর্ন।

ু জবনীবাব্য ফিরে একেন। বেশ **সং**ভীয় গুম্ভীর মনে হল ভুদুলে বেশ

অন্তব্যব্ উস্থা গরে বললেন, আমি বলভিল্য আগ াদ্মত করেন তা হলে শুভ কাজা ত শীয় লেরে নেওয়া শয়—

অবনীবালু বলাে দেখা এ-সব
বাপারে আপনাকে এ কি মত দেশ
বলতে পারছি না, বাজুকালকার হেলে সল,
ওদের প্রথম আছি, বলাবে না বলাবে জানি না।
তবে আপনার কথা আনি বাজ্নীতে বলাবো
ভোলেকে বলাবে —আমার দিক খেকে কোন
কোন লাটি হবে না।

অন্তব্যব্ বলকোন, সে তো বটে, সে তো বটে! ওবে আপনার কথাই **থাকবে** সে আমি জানি, আপনি যা মত **করবেন**—

অবনীবালু ম্লান হেসে কললেন, না সেদিন চলে গেছে! আপনি আমি হা করেছি এরা তা করবে না!

অন্তব্যব্ ব্ললেন, তা যা বলেছেন, দিনকালই পালে গৈছে। তথন ব্যবা-মা বিক কল্লেই হতো, কানা হোক গৌড়া হোক কালো হোক, তাদের মতই ফাইনাল। আক্রণল মেরে দেখানর বাপোরটাও করে লং-ছন প্রদেশ ক্রমন্তব ব্যব্রা দেখল, মানে একটা পারেও আর কি বল্নে! উ:, মেরেকে কম জারগায় দেখিরে তবে প্রেদ্ধ ক্রম কারগায় দেখির তবে প্রেদ্ধ ক্রম্বা ক্রম্বা ক্রমন্তব হয়েছে, প্রেন্ধ ক্রিন্স আরো হেন ক্রিক হয়েছিব এসেকে, সমাজের

বকে চেপে বসেছে! শুধুকি পছন্দ, আন্ধনাল আরো দাবী-দাওয়ার কথা উঠোক।

অবনীবাব; রহুস্য করে **ৰলজে**ন, আফাদেল দাবী মানতে হবে!

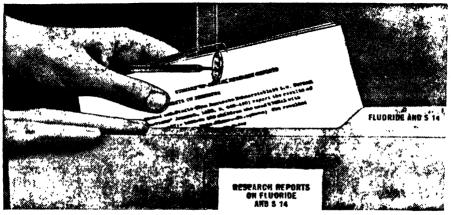
অন্তব্যন্ন হাসলেন, যা বলেছেন! একদিক থেকে আপান বাঁচোয়া—ভগবান আপ্নাকে মেয়ে দেন নি, দুটি ছেলে বাস-স! (আপান তো রাজা লোক!) ঠিক ঐ ইণিগতটা হয়তো অনশ্তবাব্ করেন নি, কিন্তু অবনীবাব্ কি ভাবলেন, বললেন না মশাই রাজ্য আমি হতে চাই না, যেমন গরীব আছি তেমনি গরীব থাকবো, ছেলের বিয়ে দিয়ে বড়লোক হ্বার বাসনা নেই।

অন্তবাব ভাড়াতাড়ি নিজের উত্তির সংশোধন করে বললেন, না না সে কথা আম বলিনি, বলছি মেয়ে থাকার অনেক জনলা! পাঁচ পাচ্টা মেয়ে কি বে করবো ভেবে পাছিছ না, চাকবির মেরাদও করিছে এসেছে, কি যে করি—

অবনীবাবনে একটা বেন মারা হল, বললেন, ঠিক আছে, আমি বংটান্তেও বলে দেখি কি হয়, আপুনাকে জানারো।

অনমত্রাব্ উঠে পড়লেন, হাত জ্ঞাঞ্ করে বললেন, দরা করে একট্ দেখাবন! মেরে আপনার অপস্থান্ধ হবে না, আপনাদেশ অযোগাও হবে না! লেখাপড়া খ্ব একটা না করলেও সংসারের সব কাজ জানে,

तपून जिन्नाल अर् कीका पानीरे करतना। **এই जांत्र अज्ञातः**



একসায় तতুत जिञ्ञत<u>्राल जिञ्ज जिङ्ग</u> परुभग्न अस्थित पूर्वत् स्वाध कव्रल शास

पाँछ **शक्कित क्लाब अवस्य अक तलूव मृल देशामा**रत

(পেটেউ নং ১১৪৭১৮ অনুসারে, নতুন সিগন্যাল একমাত্র ট্রপেউ বা পাঁও পরিকার করার এই অনন্য মূল উপাঢ়াদের মলে ক্লোরাইড সংযুক্ত করতে পাতে h আপনার গাঁতের ডাঞ্চারকৈ ভিজেস তক্তন

ভিনিই আপমাকে বলে দেবেন নতুন বিক্ষয়াকের পদ্ধীক্ষিত অসাধারণ উপভাবিভার কথা।

ক্লোরাইডের ওপর ভাকারী পরীক্ষা বৈজানিক কিনাকের এবং স্টোপ্ট বিশেষ্ট ছিচেছেন যে ফ্লোরাইড্যক্ত নতুন সিসনাল ব্যবহার করে ০০- লিওর ৩০% পর্যান্ত মন্তর্কন করে গেঙে। এস—১৪-র ওপর ভাকারী পরীক্ষা

(5-amino-1, 3-di (2-ethytheryl) hexe-hydro-5-methyl pyrimidine)) এস – ১৪ ভারতের ট্রংপেস্টে এই প্রথম স্বায়রত হল এবং পরীক্ষা করে দেবা গেছে (পরীক্ষা করেছেন মাসান্ত্রসূচ্য — এর এস লাবরেট্রার ভাইতেইড ছা: দিক) সাবহুরি করার ১৫ মিনিটের মধ্যেই মুখের ছুগ্রৈ ৯৫% ক্সমে প্রেছঃ

পরিকার করার যোগাত র বিরাট সাকলা :
নতুন সিগনালে ফোরাইড এবং এস-১৯ – দাঁত পরিভার করার
এক জননা মূল উপাধানের সক্ষে বুক্ত হরেছে, যার দরশ জাপনার
লাভ পরিসালত কাবে পরিকার হয়ে ওঠে। আন্য কোনো ইবল্পই
এমন সামারিক মিল্রপ (০গগাতে পাবে না। বিনাস্ক্রেড ইমক্থান ।
নাতের সম্পূর্ব পরিচ্ঠা। সম্পর্কে সচিত্র পুরিকার ক্ষত্তে এবাবে বিব্র হ

দ্বীতের সম্পূর্ব পরিচ্ঠা। সম্পর্কে সচিত্র পুঞ্জিকাট ক্ষতে এখানে নিশ্ব ঃ হিন্দুরান নিভার নির্মিটেড, দ্বিনিকাল ডিলাটনেন্ট, পোঃ যঃ কং ৩০৯, খ্যাত ৩০০০ আছিছ ভোক প্রচের ক্ষনো ২৭ পঃ ডাকটিনিট সলে পাঠাব্যেন।)।

आब यदा काता देशशङ्के कुतारेंड ३ ३३१-५८ पुडिवेशभा (क

(학교하기 SGF, 64C -140 BG 1

garagagagagakod sa sa Menore Kabad

সিগমাল স**প্তর্ক** গাংক**ী বিজ্ঞে**—

ferria feats

ব্যস্থ-শাশক্তি দেওর নন্দ সবার সংগ বিজে ছিশে থাকতে প্রক্রে, সে বিবরে উনি থুবাই শিক্ষা দিয়েকেন।

অধ্বনীধান, সদর দরজার গোড়া পর্যাত এলেন, জনাত্তবাব, ঘুরে দাঁড়িয়ে কাত্র কটেই ক্লালেন দেখন আমার ছেলে নেই, জামার অমান হেলের মত, আমার সাধ্য মত চেন্টা করবো—সাহেবকে বলানো আ ম বিটার্কার করকো বেন—

ইঠাৎ ব্ৰি ভদ্ৰনোক পায়েই পড়ে বাদ, অবনবিবাৰু দ্' পা পিছিলে এসে বললেন আহা কি করছেন, না না এ ভাবি

আনশ্চরার ভান স্বারে বললেন, আপনি কথা দিন, আনেক আশা করে এসেছিল্ম--ঠিক ঠিক আছে! অবনীবাব্ ভদ্লেশকে যালের বাইকে এনে বলগেন, আমি

ক্লাৰো! আপনি বাড়ী যান!
অনুক্তবাবা বোগহয় ব্যাকেন একটা
ক্লান্ত্রাড়ি হয়ে গেছে। আজকাল কেনা-ক্লোরাড়ি হয়ে গেছে। আজকাল কেনা-ক্লোর ব্যাপারট আর পায়ে-পড়া কি হাতে
ধ্রার আপেকা রাখে না। গলির মোড়টা ক্লো ছুট্টে পেরিয়ে এলেন অনুক্তবাবা।
ক্লিয়ন থেকে বিকাশেন উত্তেজিত কণ্ঠাবার।
ক্লোনা গেল, বাবা! বাবা!...

এখন নশ্তুকে নিয়েই যাত ভাগনা। তাগ একটা বংখা এসে খবন দিয়ে গৈছে আঞ্চ সে বাড়ী ফিববে না। কোথায় গৈছে, কি ভাগতে, বংখাটি বলতে পাবলে না। কেবল কলে গেল নন্তু বাড়ী আগবে না। এই সংবাদে নতুর মা বিশেষ উণ্বিশ্ন হরেছেন, বিকাশ বিরক্ত হয়ে মাকে বোঝাজে বাড়ী আসবৈ না যখন বলেছে তথন ভাবনার কি আছে। যা পানে কর্ক, গ্রেখানে খুলি থাকুক!

ছেটে ছেলের সন্বংধ ভারনাটাকে ঠিক ভ্রতাবে উড়য়ে দিয়ে নিশ্চিন্ত হওয়া যায় না। নাতে বাড়ী না ফেরার মানে-টা ভয়ংকর একটা দুন্দিনতার কারণ সে কথা উমাশশী কি কচা বোঝাবেন।

জেরা অবশ্য অবনীবাব, করেছিলেন
নাত্র পরিচিত ছেলেটাকে, কিন্তু ডাতে
নিভাবনা হ্বার কারণ বিশেষ খুশক
পান নি। ছেলেটা একেবারে বেহেড অবাধা
ছরে গেছে। কি এমন দরকার পড়ল খে
বাড়ী ফেরবার কথা ভুলে গেল। ও ছেলে
একটা কান্ড করে বসবে দেখছি! মনে মনে
জানলেও অবনীবাব্ সিগ্র হতে পারকোন
া বার দুরেক রাস্তায় এবে ঘ্রু গেলেন।
সেই গাছতলায় একে দুরিকেন।

এক সময় বিকশি রাগ করে বললে, শ্নালে সে ভাসেরে না, তব্ ভূমি বাটবে গিয়ে বার বার দীড়াচ্ছ কেন! এতে ৩ আরো পেয়ে বলে!

অধনীবাব্যন্ত গাণ করে বললেন, এ একলা কেন সব ই পেল্লে বসে! তুমিও কি কম করলে?

বিকাশ বললে, কেন আমি আবার কি করলমে?

অব্যাবিক্ত ব্যৱস্থান, আপিলে গোপামাল করটো, নিকের পারে কুডুলে মারটো! সে আবার কি! বিকাশ অবাক হরে

বড় হরেছ তোমাকে নতুন করে কি বোঝাব! ঐ ৮টাইক-মাইক প্রালী-কালী করা কি এখন তোমার উচ্চিত?

বিকাশ কোন সাড়া করলে না। বাপের সামনে থেকে সরে গেল। থেতে বসতে উমাশশী এক কান্ড করে বসলেন, বিকাশের হাত ধরে বললেন, বাবা তুই এ-সব কি কর সিস: তুই ই আনাদের আশা-ভরসা তেরে ওপর নিভর্মন

কেন কি করছি? মার হাত ছাড়িয়ে বিকাশ বির্তিব স্ক্রান্তনালে।

অপিসে াজীল বর্ষাচস, মিছিল করাচস! ঐ ে ভদলোক কি সব বললেন! বিবালন মধ্যে হেসে বিকাশ বললে, ভদলোক তো আসল কথা বলে গেছেন! তোমার বউ করতে এসেছিল!

ভাল তো! ছলছল চোথে উমাশশী বললেন।

নিলজ্জ বেহায়া কোথাকল, মুখের ওপর দরজা বংধ করে দিতে পাবলৈ না! মেরের বিয়ে! ননদেশ্স কোথাকার! বিকাশ মেন ফেটে প্রভল।

অবনীবাণ্ বৃদ্ধানেন, তোমাদের মত ভদুতা শিখিনি, তাই দুবজাটা মহেথল ওপর বৃশ্ধ করে দিতে পারি নি!

তা কেন, ওরি কি রাইট আছে আমা-দের বাড়ী আসবার! কে বলেছে ওকে আসতে? বিকাশের রাণ যেন কমে না।

শারদীয়



যুগের প্রেণ্ঠ রহস্য সম্ভার নিয়ে আবিভাব হচ্ছে

অমানিশার রাতে ভয়াল মাহতেরি কটাজাল বভখানি বিভীবিকামর ঠিক চাদনী রাতে তেমনটা কখনই সম্ভব নার। কিক্তু পাণিয়ার রাতেও বিনি ভয়ংকর ভয়াল মাহতে স্থিট করতে সিশ্বংশত রহসোর টোপাছের বেমাণ্ড-লোকে নিমেকে প্রেটিট বার করায়ত সেই

সমরেশ বস্কু'র

এবারের দেও বছল কাহিনী
আথানোরে মধা দিয়ে সাথকি সংগ্রামই
বোধ হয় বিশ্লব, কিন্তু সেখানে বাদ
সদেহ ও বিশ্লাস তথেগর কালো ছালা
নেমে আসে বিশ্লব তথন বিশ্লবায়ারী
হতে বাধা। আজকের দরকত করেকটি
তর্গ চরিত্র নিয়ে এমনি একটি বিলণ্ট

কিণি**ড**ক'র

বিশ্বাসমাতক

1

লগাংর গরাদের অব্ধ্যার দিগান্ডের পরেও আছে জীবন, আছে হাসি কারা, সীমন্ডিনার স্বশ্ন—সেই সব স্বন্ন নিয়েই বোধছর ওরা লোহ-কলাটের অব্ভরালে অব্ভরীণ হয়েও কোন অভেজন মনে গ্রাম মিরিডে চাছি না আমি স্থানর গ্রামে। সেই মর্মা চিচ্ন অব্জন করতে সক্ষম হয়েছেন যিনি সেই

জরাসন্ধ[']র _{এশরের একনার উপন্যাস}

পঞ্জা বছর পর আন্তিক বেলিল বে আলৌকিক ঘটনা ঘটবে তা এখানি জানিয়ে দেব। প্রভাগ বছর আগেই বে রোমাঘর্ষক রোমাণ্ডকর রহসামর

প্রিবীর সংধান পাবেন, ভার নাম আকাশ পেরিয়ে

ক্ষান চন্দ্র'র ধ্লান্ডকারী দালির প্রেড্ডম উপহার ইউরোপ আমেরিকার মত মহাদেশকে সেদিন তোলপাড় করে সিয়েছিল বে বই—যিনি সারা বিশ্বকে শলীক অম্লীসভার প্রশেন ঝড় ডুলেছিলোন পাপ পুরা ব্যাভিচার আর অপরাধ ও গৌনভার সেই দুঃসাহসিক সাহিত্য স্যাণ্ট

নবোকভে'র

লোলতা

শুধু রহসেরে ধাধা শঙ্গ, রোমাণের আকো আধারীতে কপ্সান চৰিত্র-গুকো ইনফিনিটির দিকে ছুক্টে ননের দুয়ারে যায়।ঞ'ল স্ভিট করে খিনি চমকে দিতে পারেন বারবার সেই

হরিনারায়ণ

চট্টোপাধ্যায়ের একটি বিচিন্ন ছবল্য উপন্যাস অবনীবাব_ু বললেন, বড় হও বুক্তে, মেশ্রে থাকলে আরো বুঝবে।

মার কিন্তু এসব আলোচনার মন নেই। ছোট ছেলের বাড়ী না-ফেনার জনো ডিনি বিশেষ আতৃত্বপ্রত উল্বিক্ন এবং চিল্ডিড। কোথার গেল নন্তু? রাত্তে কোথার রইল? কি দলকার প্রভা?

বড় ছেলের বউ-এর কথা ভারতে ভারতে আবার যেন, তার চাকরিব ভারবাতের চিন্তা তাকে শেরে বঙ্গে। এই ছোট ছেলে, এই বড় ছেলে, এই তার সংগালু সর যেন জড়াজড়ি করে তার মনের মধ্যে চেপে বসে।

উমাশ্শী এক সময় বললেন, তোর বৃদ্ধ চাক্রি বায়ু আপিসের সাহেব—

বিকাশ উড়িয়ে দিয়ে বললে, চাকরি
আর্মন সেলেই হলো! বড়সাহের কি করবে?
উমাশশী বললেন যাইহোক ভূই ডোক
বড়বাব্র সংগ্র প্রায়শ কভিস! ভ্রমলোক
বলছিলেন—

রাথ রাথ যক্ত সব দালালাদের কথা! মেয়ে গছাবার জন্যে মাতব্দরি কর্রছলেন! তোমখাও অমনি ভয় পেয়ে গেছ দেখ ছ—

অবনীবাব বললেন, ভয় কি আর সাধে পাই, ভোষাদের ধরন-ধাবল দেখে ভয় পেঙে হয়! সরকাবী আণিপ্রে চাকরি করচো সেখানেও গোলঘাল পাকাছে! অনন্তবাব, অদ্যার কি বলেজেন?

গোলমাল কৈ কেবল আমাদেল আগিসে, স্থ স্বকারী আগিসেই এয় জটেশন স্বে হয়ে গেছে। শৃষ্ সরকাষী বলালে তো আর কম্চারীদের পেট ভরে না! সেই রিটিশ আমলের মত আমলারা, ওপরে বদে শৃষ্ ঘুস আর শ্বজন-তোষণ পোষণ করছে! কেয়ানীরাই যুত্ত দোবের ভাগী হছে!

অসব কথা কোনদিন ছেলের মুখে গোনেন নি অবনীবাব। মনে করতেন ছেলে তার মাথা গ্রুজ কাজ করে, ডিউ টফ্লা! আফ এ-সব কথা কি বলাছে বিকাশ! অসমত-বাব্ব কথাই ঠিক, ছোকরার বংধুয়া ওর মাথা বিগজে দিয়েছে। নুক্তর সংগ্র তাহলে ভাষাণ রুইল কি, লেখাপড়া শিথে চাকরি করে সেই একই মনোভাব?

ষারা মিছিল করে দাবী জানায়, আণিস কারখানায় কাজ বন্ধ করে দেব, কথায় কথার মারধাবের (violence) ভয় দেখায় তাদের অবনীবাব পছনদ করেন না। ক বছরে বিশ্বিথলা ধেন কেবল বেড়েই চলেছে, মানা-মানি বাধাবাধি সব চলে গেছে, ছোটবড় উঠে গেছে। কি দিনকাল!

আর তর্ক' করে লাভ নেই! নায়-অন্যার বোধ এখন ভিনা। ছেলেনের একরকম, ব্যুড়াদের একরকম! গত তিন-চরি বছরে যেন অবস্থানে উল্টে রেছে। এই সেদিনের কথা, কোথাও কিছু নেই চার্যানকে দাউ নাউ করে আগনে জনলে উঠলো, কড জন্মভা সললে, পোস্ট-আফিস রেল ভছনভ হারে গেল। তার ফলন দেখা গোল কংগেস ক্ষমতা পোলা মা। সেই আগানিতর শান্ত্র, এর কবে যে শেষ কেউ বলতে পারে মা।

এই কি পরিবর্তন এই কি জাল-হওয়ার নমানা? স্ট্না?

অবনাবাব থেতে থেতে কেমন হেন আনামানক হরে গোলেন—নিতা অভাবের মধ্যে এই অলানিত কি করে সহা করবেন ভাবতে পারলোন না। আগিসের আন্দোলনে যদি বিকাশের চাকরি হার, কি ক্ষতি কিছু হয় সংসার চালাকেন কি করে বিকাশ কি সে-কথা একবারও ভাবছে না। নিশ্বন ইড ধ্ব-ও বেপরোমা হবে গেল।

কেম তোর ভাবনা কি? তুই তো সম্বন্ধনী
চাকরি করচিস, দ্ধে-ভাত না ছোক আলভাতের তো বাবস্থা হরেছে, চাই কি চেন্টা
করলে চাকরিতে উর্লাত করতে পারিস, তবে
কেন নিজের পারে বুজ্লে মারচিস? হুজ্লুক
নাডাচস? নাায়, অধিকার ইত্যাদির ভূয়ো
কথার নিজের স্বনিশি করচিস? তোরা
স্বকরা কমা তোদের কি আমনি সাধারণের
মত রাস্তায় নামলে চলে? না মা
ক্রাবস্থাবি ।

কপাগ্রালে। মনে মনে উচ্চারণ করনেও বিকাশের ম্বেশন ওপর অননাবাব^{*} কিছু সলতে পারলেম না। নারবে গিডাপার **খাও**য়া শেষ করে উঠে গেল।

সংসারের কাজকা চুকিরে উআশালী বিকাশের হরে এসে কোনে পড়ালেন ঃ তুই একবার দেখ ছেলেটা কোথার রাইল, ভি করলো ?

বিকাশ বিরম্ভ চরে বললে আমি কি দেশবো! এই রাজিরে কোথায় **জন্মবো**? কচি ছেলে নাকি?

২টি সন্ব্যং রহস্য নভেলেট লিখছেন

প্রেমেনদ্র মিত্র ও দীনেন্দ্রকর মার রায়

আশ্বতোষ মনুখোঃ, শিবরাম চক্রবতী, জ্যোতিরিন্দ্র নন্দী, নট্রাজন, তারাপ্রণব ব্রহ্মচারী, দেবল

দেববর্মান, অশোক সেনগর্প্ত, ভ্গাতক ভাষ্কর রাহা, লাম্ভকাশ্ত বংল্যাশারার, উনালাল মৈত্র, ডাঃ আভিজ্ঞিত লত্ত কশিল চৌধরৌ, অমিত মৈত কল্ল চৌধরৌ, কুমার লিত হ্যারিলা রাম

এবং সত্যজিৎ রায়

প্রতি বেলাইট সত্য ঘটন। 'শারদীরার বোনাস' পণ্যারংশতিকম বলাৎকারের নামক, আলামীর কাঠগোড়ার ছঃ ভূষারকাশ্তি আশা দেবী অপহরণ চক্লাক, কারো-ঘান-রত্তে ভিবেংনাল, ১০টি রতিন ছবিতে প্রীলার ক্মিক্স "অপারেশন গোকেজন সাল্"

an an light of the section of the se

প্রকাশিত হচ্ছে সেপ্টেম্বরের দ্বিতীয় সংভাহে

শালা: ৬-৫০ সভাকা: ৮-০০ অপরায় যা ১৬৬ কেশব সেন স্ফুটি কলি-৯



o will be

মা চোখা মুছে বললেন, তুই তো জানিস শোধার বার কার সংগ্যা মোণে—সেথানে কেশ নাং

না জানি না, সে কি বলে কোথায় হার কৈ করে। মাতব্বর হুয়ে গেছে: এখন অর খলতা নিরে চলে না! দেখগে হাওে কোথায় কালের সংগ্রাদে বিশ্লব করছে।

সে কি রে! কনের স্পোমিশছে, কই ভাই তো বলিসানি?

আমি কি বলবো, আমার কথা কি লোনে! সভা-সমিতি এখন বাবার পাছস্দ নর! মর্ক হা পারে কর্ক! তোমার এত ভাসনার কি আছে! কব্ক না বিশ্লব—টের পাবে—বাপ বাপ করে ফিরে আসেবে!

উয়াশশী খ্র কাদতে লাগলেন।

বিকাশ শেষপ্যশ্ত ভাইবে খ'ুলতে রাত **দুপুরে বাড়ী থেকে** বেরুল। পাড়া নিস্তব্য হয়ে গেছে, পথ-কুকুরগালে প্যঞ্জি চুপ হথে গেছে। মোড়ের মাধায় আলো জনলাই নিরানক পাহারাজার মড। নোড় পোরিয়ে খানিকটা এসে থমকে দাঁড়িয়ে পিছন ফিরে বিকাশের মনে হল যেন যুমের ঘোরে নত্ন কোন জায়গায় এসে পড়েছে। বই-এ পড়েছিল sleep-walking ! আশ্চয়', চেনা জাস্থাটা নিশ্বিথ নিস্তুম্ধতার মধ্যে কেমন অচেন; অচেনা লাগছে গা-ছয়-ছম ভক ভবান্ত ' প্ৰই সিক ঠিক চেন। যাকে তাবোলা-প্রিটিড পরিবেশান, তবা নিজনিতায় রাচির গভাবিসায় নিংসংগ্রায় ঘ্যাত প্রাণশ্রীর মার বহুসামার মনে হাজে। নিজেকে স্চেতন এবং সপ্রতিভ জনুবার শ্রুবা বিকাশ ফাটের গুণর উঠে লক্ষেপ পোষ্ট ছ'ুয়ে চোম ফিরিয়ে মনে মনে ভিসেৰ কৰলে, এই তো রাম পালের



কয়লার দোকান, ঐ পতিতপাবনের মুদিখানা
অম্লা শার বেশনের দোকান! মাংসর
দোকানটা কোখায় গেল ? মকবুল বোগহর
রাব্রে দোকানে থাকে না! পাড়ায় মাংসর
দোকান থোলা নিয়ে খুব হাপামা হার্মিছল,
মাংস্ব খেতে হিণ্দুরা ভালবাসলেও ম্ম্পামান মাংস্পলাদের সম্বন্ধে বিশেষ আছে
হিণ্দুদের! (সন্দেহ্ করে পাঁট-ছাগলের
দেকা। অথাদা-কুখাদাও ক্থনো ক্থনো চালান
দেৱা।

বাজারের কাছে এসে বিকাশ যেন বেকে দড়িল। না সে থাবে না—কেন থাবে? মা বললেই অমন হলো। সে-ই বা কম কিসে! মা-বাবার তার সম্বধ্ধে তো কই ভয় নেই? সেকি কোনদিন নম্ত্র মত বাড়ী না-ফেবার ভয় দেখাতে পারে না?

নকু নিজের দব বাড়াছে, দেখাছে কি বড় নেডা হয়েছে! বিকাশ মুখে ফ্ংকার দিলে! মুখ্খু চেড়ো বোথাকার! বাবা-মাকে ভর দেখিয়ে লীড়াবি ধবছে!

বিকাশ ফিবলো। কিন্তু, নতু, মাত্র শুন্দু শুন্ধু ভয়! আম্পেক ! গুলা ফেনসাংধ এবং সেই জনো অকারান ভীত! কি হোগাড়ো আছে সমাক্রবিরোধী বা রাণ্ট্রবিরোধী কিন্তু করার নহতর।

ববং সে ই কিছ্ করতে পারে। দিবোদন্
বলেছে আপিসের ইউনির্নে তাকে সাধারণ
সম্পাদক করে দেবে, নেক্সট ইলেকশনে
তাকে দাঁড় করোবে। দিবোদন্ হা বলে
তাই করে! মনে মনে বিবাদন হাউতে
আক্র মাঠের মিরিং-এ দিবোদন্ বেশ
বলেছে—সংখ্যাম আলোদের চালিয়ে হাতে
হবে, জ্বানুর ভ্য কাটাতে হবে কেবল
আ্যাত করতে হবে— strike!-strike!

উঃ স্নেকি উচ্চেজনা বোধ করেছিল। যেন নতুন এক জীবনে প্রবেশ বরেছে। বিকাশত ইউনিয়ানের একজন হতে চায়।

মানাথান থেকে অননতবাব টা এসে সব মাটি করে দিলে। কি দরকার ছিল তের মাভকার করবার। বয়ে গেছে তের মেয়েকে বিরে করার। আণিপের ছেলেগ্লো ঠিক বলে দাভ-কাক। গুরু মেয়েকে আমি বিয়ে করবো? নামঃ!

অনাদিন হলে মা নিশ্চহাই এই নিয়ে হন্ত কথা বলতেন। ভাগ্যিস নন্তু বাড়ী ফিব্লবে না বলেছিল। খুবু ফাড়া গেছে!

কিন্দু.....এবট, যেন নিজের মনে ইতাহত করলে বিকাশ। আজও মাঠে সেই মেরেটি এমেছিল, বিকাশ ঠিকই লক্ষা করেছে--সব আশিস থেকে এক এক করে মিছিল এসে মাঠে জড় হছে, মেরেটি পাল কটিরে ঠায় নীড়িরে আছে। করে বা। প্রতিদিন মাঠে আসা ওর একটা অভ্যাস লোহ্য।

বিকাশ ভেগেছিল মিটিং-এর পরে তার দেখা হবে না। ফিল্টু না, কি আশ্চর্য মেরেটি যেন তার জনোই অপেক্ষা করে এক-মান্ছ উটু একটা গাছতলায় পাঁড়িয়েছিল। দ্ব থেকে কি ভাবলে বিকাশ, চোখটো নাম্বায়ু নিলে পায়ের গতি মান্দ করলে। ভারপর যেন বাসের করে। অপেক্ষা করতে, ভাবা করলে।

থেনে ি এগিবে এসে বেন কত পরিচস এথনিভাবে বললে, বাস উথে বৃহধ পেছে। ঘাড় ফিবিয়ে চোখ তুলে বিকাশ কেমন যেন তয়ে গেল, মুখ দিয়ে কোন কথা বেরুল না।

মেয়েটি স্প^{িজ} কণ্ঠে বললে, **যাবেন** ক করে?

বিকাশ মৃদ্কেন্ঠে বললে, হেম্ট আর কি: মুশ্কিল!

আমাকে সংগ্র নেবেন? তেমান স্প্রতিভ মেরেটির কন্সপর।

বিকাশ না বলতে পারেনি, মশুমাণের মত সাথে সাথে পথ ছে'টে এসেছিল।

মেরেটির নাম মালবিকা, বাবা নেই, মা নেই উপপ্রিত বেকার কড় ভাই-এর আল্লয়ে আছে। কোগায় হোন এক কার্থানার ভাই কাজ করতো, সে কার্থানা আনকদিন পক্-আউট হয়ে আচেচ। ভাই-এর সম্পার আহে বউ আছে, দৃই ছে'লমেয়ে আছে ? কার্থানা কবে থ্লেক বে জানে ? এদিক প্রদিক থেকে দৃচার প্রামা বা রোজগার করে। তাতেই সংসার চলে।

কিংকু কি সে বোজপার, কেমন সে রোজ-গার! বিকাশ জিজেস করেনি। আরো কথায় বিকাশ যা বাকেছিল তাতে মনে করেছে। দাদার বেকাবতে হোমেটি পালিটিবাটি। খ্র সচেতন। ভাকে খলী মনে ক্য়েভে স্থা-ধ্বের মিনিংটী চলে যেতে। একটা কুলোট-পালোট আশা করছে।

আশ্চর্য নাথ করেছিল মালবিকার মুথে বর্তমান রাজনাতির কথাবাত। শানে! তার জামাশোনা কোন তব্দুবাকৈ দিকাশ এ ধরনের কথাবাত। বলতে কথানা শোনোনা। মেরেছলে হলেও কোন ব্যক্ত বা প্রেটাকে করা। মালবিকা বলেও বাজপাল তানায় করে একটা প্রতিষ্ঠিত স্বকারকে ব্রথহত করেছে, দেশে জন্দুবার মতকে অগ্রাহ্য করে রাজ্পপতির শাসন চালা করেছে।

বিকাশের মনে হছে যেন বর্তমান গরিশিবতিকে সংগ্রামের পথে চালিত করবার
জনো মালবিকা মাঠে-ঘাঠে ঘুনে থ্রে
বেড়াছে। বিকাশ জানে না আর কেউ তার
মত মেয়েটিকে লক্ষ্য করছে কিনা, তার
সাহিষ্য লাভ করে তার দুর্থের কথা
শুনেছে কিনা।

বেশ ঘণার সংশ্য একসময় মালবিকা বলেছিল, জানেন ইচ্ছে করে আমরা স্বাই মিলে সব পর্নিড্য়ে ছারখার করে দিই। কি দরকার আছে এই সমাজের যেখানে মান্ব কাল পায় না, খেতে পায় না, চুরি করে জোভনুরি করে—

বিকাশ হা ভেবেছিল মেরেটি একেবারে ভা নয়। সাহায্য হিসাবে টাকা দিওে চাইতে অসমীকার করে মালিবকা নালছিল, একদিন আমাকে সাহায্য করে আমার কি এবং আসনি ঘোটাকান।

িক বোষা স্বায়ান স্বেক্টিক, তবে েগেছে আবার কেলন সংলক্ত হরেছে, সেই দ্বহান দিনের সাক্ষাতের কগটো কানে এখনো বাজছে ; তাহলে আলি চে'টিয়ে লোক জড় করতম। বল্ডুল.....

কে জানে এমন কোন **জগারাচ**ত যাল্ভী লাগারচিত কোন যাবকের **সিলন্-মাগ্রকে** ৩৩বে বাল্গ করতে পারে কিনা।

কা, সাধাষ্য বিকাশ করতে চার কিংচু কিন্তানে তা এখনো তাকে ভেবে ঠিক কবতে কে। উপরের মধ্যে আরো দেখাসাক্ষাতের আশা রাখে সে।

ন-ভূকে খেজির চেণ্টা ছেড়ে দিনে নিজ'ন নিহত্ত পালে বাড়ী ফিরুতে ফিরুতে বিকাশের মনে তুল, মালবিশাকে বিজে করবে প্রথমের দিলে কেমন হয়, এ সাহাষ্য নিশ্চ্যই মালবিশ্ব। প্রাথমন করবে না!

বাড়ী ফিবে ভারপর নিজের ছেগে-মানুসী, আজগুবি চি•তার বিকাশ থানিকটা হেলে নিজে।.....

বোক অফিসের চিফিনের সমম আব ঘণ্টা করে গেট মিটিং আর দেলাগান দেওয়া হচ্চে। দিবোদেশুর সংগে বিকাশত বৃক্তা দিয়ে বর্তমান অসহনীয় অবশ্যয় কথা বলকে। তারা একটা সংগ্রামের জনো প্রস্তুত হচ্চে।

অন্তবাণ বিকাশকে প্রতিনিষ্ঠ কর-বার চেণ্টা করেছেন। বলেছেন এসৰ ছেলে-মানহী করে কোন লাভ নেই! দেলাগান মিটিং মিছিল সরকারী আগিসের জনো নর! বর্গাক্ষ এখনি কিছু বলছে না বটে, কিঃছু যুখন বলবে তখন আর ফেরান হাবে না। সব হেড আগিসে রিপোর্ট হছে।

বিকাশ কোন জবাব দেয়নি। আর কি বজাবে সে ভাগোককে—মুখের ওপন হয়ে বজাতে পারে না, আপনার দুভবিনার কোন কারণ নেই বা নিজের চরকায় তেল জিন। ব্যুড়োপের একজনও তাগের আজিটেশনে যোগ দেয়নি।

ভাষাড়া বিকাশের ভারি লগকা করে আনভবন্ধ ধ্বখন তার বিষয়ে উদ্দেশ প্রকাশ কল্পেন—বন্ধারা কি ভাবছে—এত লোক থাকতে ভার জন্যে ওর এত ভাবনা কেন? সম্বংশর ব্যক্তী বৃধ্যা জেনেছে কিনা কে আনে; উপ্তালাক আছো মুস্বিলে ফেলেছেন!

বাড়িতে অবশা অন্তব্যর মেরের সদ্বদেধ কোন কথা হয়নি। জন্দত্বাণু নাকি অবনীবাব্কে চিঠি দিয়েছেন, মেয়ে দেখতে যাবার জনো অনুরোধ করেছেন: উমাশশী এখন ছোট ছেলের ব্যাপার নিমে চিচিত্ত বলে বড়ুছেলের বিয়ে নিমে উৎসাহ বোধ উইছেন মা। অবলীবাবুকে থেয়ে সেথে আসতে বললেও কোন জেন করেনান। অবলী-বাবনু বলোছেন বিকাশের বিরে করার মাত না জানা পায়'ত তিনি অগুসর হ'বেন না। বৈনাশাশী চিঠি পাওন্নার খবনটাই স্লানিক্ষেত্রন বিশ্কু বিকাশকে পেডাপিড়ি কমেনান। নাত্তই সব গোলমাল করে দিয়োছে। সংসাবের ভার-সামা নাট করেছে!

বিকাশ লক্ষা করেছে এই কমাসে মা থেন কেমন নিজাবি নিক্সনাই জড় মত ছবে বেছেন। কোন বিভাবে সেন তার আর সেই আগের মত আগ্রহ নেই। নক্তু আজকাল প্রায়ই বাড়ী ফেরে না। বাবা মা-ভাই-এব সংক্য তার যেন কোন সম্পক্ত নেই। বিকাশ কিছু; বললে জবাব দেয় না।

আগিসের উত্তেজনার পর বাড়ী এসে বিকাশের যেন আর ভাল লাগে না। কোনরক্ষা থেমে-দেরে শুরো পড়ে, সকালো উঠে আবার আপিসে হাবার জন্যে প্রস্তুত হয়। অবনী-বাব্তে খাব গদতীর হয়ে ভাছেন, শেশ বাজা গায় ভেলেদের সম্পর্কে তিনি যেন হাল তেওঁ সংস্কিন। যা পারে এরা কর্জাঃ

ত্রাদকে নিজেন কাস্বিভাগে তাবং ভাব-র্গাতকে প্রয়ালোদনা করে বিকাশ যেন উত্ত-জন। বোধ করে। আপিসে যে ভয়-ভয় ভাৰটা ছিল এই কয়েকদিনের উত্তেজনায় তা একেবারে গেছে। নিজের মনে বেশ একটা আছসচেতন ভাৰ এসেছে। মনে হয়েছে এই জাবন, এই তার কর্তবা! এখন জাগিসের অনেক ব্যাপারে অন্যায় অবিচার সে দেখতে পায়! সেই প্রভাততোর সংপক হোন আশিসে ছোটবড় কলীরি মধ্যে! সাংহ্র নালে এখনো প্রেলা চলতে আপিলের বসবার জারগা বা আসেন ছোট্রভর পদ ভিসেবে তৈরী। যিনি বস্ত সংক্রেব তার **খ**রে ভিন্থানা পাথা, উঠে হেণ্টে শ্রের বসে থাকবার জন্যে অঢ়েল জারুগা, আর খারা কেরানী তাবের প্রতি দখজনের জনোও একটি পাশা নেই, বসবার জায়গাও দেড়-হাতের কম, ছোট ছোট টেবিল, ছাতলভাগ্যা চেলার : বডসাহেবের মাধার পাধা, পেছনে প্রা, <mark>পালে পাখা, টেবিল-টেনিশ খেলা</mark>র মাংপ টেবিল, অপুনতি চেরার, থকখনে আল-মারি সোকা-কৌচ জিলান দিয়ে সাজাম বর! দিবা-মিদ্রার জনো আরাম কেদারা!

নিবোলনু লোদিন খবুৰ বলেছে একজন অফিসারলে। আফিসারটি সেক্পানে এসে আবো নু-চারটি কেরামীকে গংকে দ্বোর চেন্টা করোছিলেন।

দিবোদনু বলেছিল, এসৰ কি পেরোছেন! দেওছাত জায়গার মধ্যে জারো লোক টোকাতে চান ? আমাদের কি মনে করেন সাুব,-ছার্যল ? হোগডতাল পেরেছেন, যত হৈছে মাধ্য গ্রেকায়েন।

and the Committee of th

্থাটা নিমে খ্ব চৈ-চৈ হরেছিল, সাহেবদের সার্থং বোধহুও বড় সাহেবের কানে শেশকৈছিল। কেয়ারটেবার ভূটে এনে কানে কাক্ষেছিল।

বিকাশের দৃশ্ধ করু তার সংগ্রা সন্দোভাবের কোন থবক পেল না, জানতে চাইল না, প্রয়োজনে বিকাশত রাজনানি করতে পিছুপাও না। চাকরি করে বলে। সো কারো দাস্থাং লিখে দের্নি! তার মধ্যেও বিলোক্তর জাগনে জানবাছে---

এই বছরখানের নাতু যেন হঠাং কোনা হরে গেছে। পার্টি নিমে সাধ হ'বছ কবে না—স্বসময় সূপ-চাপ থাকে। কে জানে ভতকে ও কি মত্তাব করছে। খ্রিয়ে ফ্রিরে নানকাবে বিবাধ আলোচনা করতে চেয়েছিল নকত সাভা প্রেনি।

বেশ সমস্ভীর হয়ে নাজু নাজে, কেশ্ছ-কাটে যে দাবী আদায় থার হোয়াদ বেশি-দিন নাম, আবার কাপতে হতে দাবী আদায়োর জন্মে, দাবীও নিট্রে না, কাদাও দাচবে না।

ডেনোক্রেস্টার এই তো পথ! আক্রেলানের অধিকার স্বার আছে তাকে কালা বলে না।

নণ্ডু জোবের সংগ্যাবদালে বালে। আজ গাঁচ টাকা চাইকো, কাল এ ছিচ্চকি, রে থাফেরালেন করে হয়তো তিন টাকা পাবে, কিংকু সত্যিকারের কোন আধিকার পাবে না! থাধিকারের জনো ক্ষমতা চাই সে ক্ষমতা থেমারেশি দেবে না! কেতে লিতে হবে থ্যমতা!

বিকাশ রড় ভাইয়ের বিজ্ঞায়য় **বলালে,** ডুই দি বলাহি**স**় ক্ষমতা কাড়ার **মানে কি** জানিক ?

নশ্তু বৰ্ণালে, যা জানি তাই জানি, ধর্ম-ঘট কর তার গো-শেলা কর, তোমাদের দাবী থবা কোনদিন মেটাবে না!

না বললেই অম্নি-ছুল! দেখে নিজ্ মেটার কিনা!

নাপত হাসলে, বিকাশ ভটে বিজ্ঞ কালে থ্য সাজস্ম হয়েছিল ব্যক্ত পান্ধীয় লোট কিছু থাকলে ভার এমনি কর কালি চাকভিস্না!

নাদত্ব বেশে বককো ভাজি কান্দ্রীজ্ঞা লিখেছ ভার ফল তো দেখাতে পাথারা বিজে! গণতন্দ্র গণতন্দ্র করে চীংকার করবো, এলিক সব ক্ষাক হয়ে ভাজা। তোলাদের তো লিখের আফোলান। এ গারেন্টিও থাকুক, ভোলাদের আফোলানও চলাকে!

আর ৪ড় মেনে কি গুলে শিবর ৯। শিরণ মত পানটান বানে না। বিকাশের পিথে নোড়া বিশ্বাস ভাট ওার সর্বনাশের পথে নোড়া গেছে, মাথান একেবারে স্থাফ হয়ে গিরেছে।

আর্থিক ্

অর্থনীতি ও রাজনীতি

শেষ বছালে শেলটো সথেনে উল্লিক কলে-হিলেম : দাশনিকর রাজা নন আন রাজারাও দার্শনিক হন না: উল্লিটির মুম্বার্থ হল: গার্ভপ্র রাজনৈতিক সিংধানত গুরুণের ভার হাঁদের ওপর তাঁরা কোনমতেই मानीसक-नयीग्रस्त वा तान्या सनः; অপ্রদিকে বাঁরা দাশানিক বা বোদ্ধা তাঁদের ওপর রাজনৈতিক সিংধানত গ্রহণের 41.8 কখনও অপিত হয় না। জাজকের সিনে হখন অভ্নাতি ও অগ্নতি পরস্পরের সংখ্য অংগাণিগভাৱে জড়িত তথ্ন হো-কোন রাজনৈতিক সিশ্বাদেত্র ভালপবিশতর অগ্নি-মৈতিক ভাৎপর্য থাকাত নাধ।ে ভাথনিতিতে ম্বন রাজনৈতিক অথ নটিত —পেটকটিকাপ ট্রামানবলে অভিত্তিত করা হাত তথনকৰে তায়ে বভাষানে এই তাংপয়েধি পরিমাণ ও প্রিটিশ আনেত বাহ্নি প্রেছেন করেণ, আজ্যকর দিনের অগ্নীতিট্র সতি। স্তি হাজামাতিক অথনিতি- বিশেষ্ট্রণ-বাবস্থা-মডেকের কোন দায়াই নেই যদি না রাণ্ট মেতাদের হপাদ্ভি আকর্ষণ করতে সম্মৰ্থ না হয়। আৰু সম্মৰ্থ হলে কিনা তা মোটামাটি নিভার করে রাজনীতির ওপর। **থানে রাপ্টানেভাবা ।**রাজা আর মেই দার্শানিক না হাজত দাশনিকমনা হাম উঠেছেন-অথানীতিবিদ্না ধ্লেও গ্র্থপ্ণ অগ্-নৈতিক সিম্পাণ্ড গ্রহণ করে চলেছেন। পরাম্লাদিভারে অভাব আবদা দেই, তাবে কোন বিশেষ, পরামশ, গ্রহণ করা হাবে সে, বিচারের - অর্থাৎ নির্বাচনের বিশেষ্টাধকার রাণ্ট্র-নেতাদেবই। এ যেন করেবজন মনোমত চিকিৎসককে ডেকে পৃথিক প্রক ব্রেম্থাপ্র भिरत धरार लाउंग्स भारत राष्ट्राध करत हिकिश-সার ব্যবস্থা করা। আবার <u>হে-ব্যব</u>ন্ধাপট্টি বৈছে নেওয়া হল তাও যে অপবিবতিতি থাকার এসার ফোন নিশ্চরতা নেই-রাজ নৈতিক প্রোক্তন বা চাপে তাব প্রায়ই রন্-रामका करा हाता शाक। এই काम्रावाउ অথ নৈতিক বাৰ্ডখাপনে লোক কিন কিন জান্ধা হারিয়ে ফেলছে—সন্দেহ করছে वर्गांध प्रावादशका मा इएए जिल्लामा हर 🖭 दशक्रमीत जावन्था ठिक जान्म 🕫 🖅

বিলম্বে হলেও আমানের দেশে সংকার বছমিন মুলাফীতির বিরুমে সভিয় হার উঠেছেন। কেন্দ্রীর অথমিদ্রী ইটিটাবনের ভাষায় ম্লোদফাঁতিকে সাঁড়ালির মত স্মৃ দিক দিয়ে আক্রমণ করা হাজে— একদিকে যেমল প্রয়োজনীয় দ্র্যাদির যোগান ্দির প্রচেকটা করা হাজে এবং অপর্বাদকে তেমনি টাকাকড়ির যোগান হ্লাসের দিকেও দ্রুলিট দেংয়া হচেছ। দ্বতীয়াক বাবস্থার অনুস্ববাবই পর পর তিনটি অভিনাচস ভারি এবং সংসদে অভিনিক্ত বাজেট সেশ করা হারছে।

বলা যায়, বিলম্বে হলেও সমস্যার স্থাশানে চিৰাচ্যিত ব্যবস্থাই গ্ৰহণ কর হুয়েছে। এই চিরাচরিত ব্যবস্থা বা পারেতন 'ধমে'র' (ওগড়টাইয় রিলিজিয়য়) উপাদ্দন ক্ষান্বয়িকতা, ঘাট্যতি এবং উদার স্ত রাহ্রত বাজেন্ট এবং টাকাকড়ির নিয়ণ্ডণ (মানেটারী রেসটেইনাটা)। এবের মাধ্যমে ধাঁরে ধাঁরে দুব্যাদি ও টাকাকড়িব গ্রিমাণের মধ্যে সমতা এনে দ্রামালো ফিথতিশীলত: আনবার প্রচেষ্টা করা। <u>হ</u>য়। ম্লাস্ফাতি বলতে যদি 'অতাম্প দ্রবাদির' পশ্চাতে ভাজেধিক টাকাকভিত ধার্যিত হওয়ার অবস্থাকে বোঝায় তবে চিরাচরিত ব্যবস্থা গ্রহণ করে একদিকে দ্ব্যালির পরি-মাণ বাড়াজে এবং অপরাদ্ধে টাকাকডির পরিমাণকে কমাতেই হবে। স্তবং প্রচলিত তত্ত্বে দিক দিয়ে প্রয়োজনীয় ব্যবস্থাই অনলভিবত হাছে--ভাৰতত অবলভিবত হাবে বলৈ আশ্বাস দেওয়া হয়েছে; তব্ৰে কিংতু আনেকেই সাম্পত্ন করছেন, এতে ফল ফলবে কি। সন্দেহের কারণ বিবিধ। অনেকের মতে, মূল্যক্ষীতি নামক অর্থা নৈতিক বার্যির প্রকারভেদ ঘটেছে। সত্তরাং পতুন দাওয়াই চাই। আর একটি অভিমত হল প্রোমা বাবস্থার প্রতিক্রিয়া সম্পূর্ণ বিরূপ হতে পারে-জাশকাজনক মুদ্দা দেখা দিতে পাৰে, মাৰ্কিন বৃত্তমাণ্ডৌ হা নাকি ইতিমধে।ই শ্বের হবের শেছে। কারও কারও আবার भरम्पर इन रव भद्रकात तातुन्था कार्यकतः করণে ঠিকমত অভস্ব হতে পারবেনই না, कार्य करमाधारे(एवं मधर्यम भारतम मा। রোগী যদি চিকিৎসা-পর্শাততে সহযোগিতা না করে তবে চিকিৎস্কের সাম্বর্থ, কতস্ত্র শেষ্ট্রের সাম্পের্ট বিশেষ্ট্রাবে দানা বে'থেরে क्दंइक्ि आस्ट्रांडिक चंदेमात्र ज्ञात्मा। त्राचा

লেছে ম্লাম্ফীতির বিরুম্ধে প্রতাবিত প্রতিবিধানের প্রতিক্রিয়া বিভিন্ন দেশে হরেছে সংগ্রাবিভিন্ন।

ম্প্রাক্তীতির রাজনীতি-জাশান

গত জ্লোই মাসে জাপানের সংসদের ন্বিতায় কক 'হাউস অফ সেউন্সিলারস্'-এর ২৫২টি আসনের মধ্যে ১০০টিতে নির্বাচন অনুষ্ঠিত হয়। অধিকাংশ দেশের সংসদের শ্বিতীয় কক্ষ বা সেকেন্ড চে**ব্যক্ষে মত** ভাপানের হাউস অফ কাউ*ন্সিলারস* ও মাধ্যমিক স্থানাধিকারী বা সেকেভারী। তব্ৰ কিন্তু প্ৰধানমূলী কাকুই তানাকর উদারনৈতিক গণতান্তিক বল (এল ডি পি) এই নিবাচনের ওপর বিশেষ গ্রেছ আরোপ করেছিল। ঐ কক্ষে নিরঙকুণ সংখ্য-গারিষ্ঠতার জান্যে উদারনৈতিক **গণতাশ্রি**শ **দলের পক্ষে ১৩০টির মধ্যে আন্তত ৬৩** আসনে জয়লাভু করা প্রয়োজন ছিল। দুরুটির পক্ষে কিন্তু তাও সম্ভব হয়নি-তারা মাত ৬২টি আসন দখল করতে সম্মর্থ হয়। এর থেকে বোঝা যায়, প্রধা**নম**কারি দলের জনপ্রিয়তা অনেকাংশে হাস পেয়েছে।

কারণ ভানাকা নিজেই ব্যাখ্যা ছিলেন। গত বছরে জাপানে মূল্যকীতির হার ছিল ২০ শ্তাংশ। শিলেণাল্লভ দেশ-স্মাহের মধ্যে স্বাধিক। এইটেই ছিল আছাদের স্বাপ্রধান সমস্যা" তানাকা ব্যাখ্যা করেছিলেন। লোকে তৈল সংকটেজনিত কারণে বিজ্ঞানিভাতে বিশেষ সদত্ত হায়েছিল এবং মূলাব্দিধর দর্ন তাদের জোধ প্রতি-ফলিত হয়েছিল ভোটদান-পশ্বতিতে।' মৃল্য-লাম্বর বির্ভূত্য অপনার সরকার কি প্রতি-বিধান অবসম্বন করেছিলেন এবং তা বিশেষ সাথকি হয়নি কেন?-ভানাশকে প্রখন করা হুয়েছিল: তানাকা 🚱 🐇 ि पिरक्षिक्रकानः মনদাব ভারে আমরা ালগালোভটাকে ঠিক চটাতে পারিনি আবার শ্রমবিক্ষাভের ভয়ে আমরা মজারি ব্যাণ্ধ বন্ধ-করণ (ওয়েজ ফ্রাজি: ইড্যাদির পাথেও অগ্রসর হতে পারিন। মজ বিব শিং বন্ধকরণের ব্যবস্থা যে করিনি তার 🖢 জনো শিলপপতিদের অনেকে আহাদের ওপর বিক্প হয়ে ভোট ভেগেছিলেন।

তাহলে দেখা যাছে মজ্বিক্শির কথকরণ ইত্যাদি সাধারদের অপ্রিহ বাক্শবা গ্রহণ
করলে হয়ত তানাকার দল নির্বাচনে জয়ী
হাতে পারত এবং আগে থেকে জানা থাকলে
হয়ত তাইই করত। ফোটকথা ম্লান্ফটিতরোধ মন্ধ, নির্বাচনে জয়ী হওয়াই হল আগল লক্ষা। তথাং অর্থনিতি হল রাজনীতির প্রিচারিকা।

কানাড়া ৫

ঐ জ্লাই মাসেই অর্থনীতিকে রাজ-মাতির পরিচর্যায় নিযুক্ত করে নির্বাচনে জয়ী হরেছিলেন কানাডার উদারনৈতিক দল ও তার নেতা পিলে ইলিরট চাডো। আলের সংসদে বুডোর বলের সংখ্যাক্ষিকতা ভিক না। তব্ৰে তিনি সংখ্যালয়িত সরকার পরি-চালনা করে যাজিলেন এখন হোমন লিটেনে করছেন গ্রামক দলের নেতা গ্রামণ্ড টেইগ-সন। শেষপথ্যত হাডোর সংখ্যাক্ষিত্র সর্বারের পত্ন ঘটলে নির্বাচন অনুষ্ঠিত হয়। প্রধান ইসা ছিল মালাস্ফারি। গত বছৰ (১৯৭৩-৭৪) সালে কান্ডোত মালা-হংগীতর তার ছিল ১১ শতংশ। আটান-ফ্লেডর নেতকে রক্ষণশীল এই মালাম্ফর্টিড দ্মনের প্রতিভাতি নিয়ে নিহ'চিনে অবতীপ্ হয়। ভাষের প্রদতার ছিল ৯০ দিনের জান্য দামব্ভিধ ও মজাুরীব্ভিধ বন্ধকরণ প্রাইস ज्यान्ड कराक धीक। निरान्त्र क बदान्त्र বাবস্থা এবং অর্থবাবস্থাকে শীতল করবার खाना अनामा भूषिविधान (इक्सीम्ब) क्रांतर हिंद्रकार्थाः । अतिकारतस्य ।

ওয়েজ ফুলিল কথা শ্নেই কানাডার ভোটাররা রক্ষণশীল দলের ওপর বির্প হ'য় ওঠে এবং এব সাুখোগ নিয়ে ব্যেতা ঘোষণা করেনঃ আমরা ওয়েজ ফুলিজর পথে কোনমতেই যাব লা। মার্কিম যুদ্ধনাথ ও রিটেনে এই বাবস্থার থল হয়েছে বিষ-মহা। সাুতরাং আমরা জিনিস্পারের হোগানে ব্যাশর দিকেই দর্নিট দেব। এতে হয়ত মাস্প্রমীতির গতি রুখ্য হবে না তবে শস্থা যে হবে তাতে কোন স্থেক্টই নেই।

মজুরীবৃণ্ধি থে বহিত করা হবে না, এই প্রচারের ফলেই নুডোর উদারনৈতিক দশ আগের চেয়ে তথাট বেশী আসন সংগ্রহ করে অটোরার সংগদে নিরুক্ত্যা সাত্তরাং তানাকার যুক্তি মেনে নিশে একেতে ম্লাক্ষাতির প্রতিবিধান সম্পর্কে করপ্রতিক্রমা ছিল জাপানের জনপ্রতিক্রিয়ার ঠিক বিশরীত ভালানের জনপ্রতিক্রিয়ার ঠিক বিশরীত ভালানের জনপ্রতিক্রিয়ার ঠিক বিশরীত ভালানের জনপ্রতিক্রিয়ার বিকর্পানের জনপ্রতিক্রিয়ার বিকর্পানের জনপ্রতিক্রিয়ার বিকর্পানের ভালানের দল হের্নেজ্বল ওয়েক্স প্রতিক্রিয়ার তাই বার্ক্তার বিরুদ্ধির বার্ক্তার করা হ্রান বলে প্রত্তিল ওয়েক্স ক্রিক্তার করা হ্রেন না বলে প্রতিক্রিত দিয়ে।

विपरेन :

গিটেনে গত বছর ম্লাণ্ফাডির হার নুই
কংখার পোছালেই তংকালীন রক্ষণালীল
হীথ সরকার মজ্বীনিলাল্ল নীতি গ্রহণ
করে। এব দর্মই শেষ পর্যাত জাতীর বান
গ্রামক সংখের (এন ইউ এম) সাংগ্য সংখ্য উপাদ্ধত হয় এসং যার প্রিণতি হিসেবে অন্তিইত হয় সাধান্ত নিবাচন, যে নিবাচন হবি সরকার ক্ষাণ্ডাত হয়।

जिल्लाग्द :

অশিয়ার মধ্যে জাপানকে বাদ দিকে
সিংগাপুরের মাণাপিছা লাতীয় আয় সবচেয়ে বৈশী—১ হাজার ভলাবেরও ওপরে।
কৈদেশিক মাদার সভয়ত বিশেষ উল্লেখধাগা—২০০ কোনি জলারের মত। রুভানী
থেকে সিংগাপুরের অহা হয় শহরে প্রায়
৫০০ কোনি ভলার। আর গত বছরু সংপ্র-

সারণের হার ছিল ১০ শতাংশ যা প্রায় স্ব দেশেরই ঈ্যাত বৃস্ত।

সিংগাপার অতি ক্ষান্ত রাখ্যা-জনসংখ্যা যোৱে ১১ লক্ষ্য এই ক্ষান্ত ব্ৰীপ ব্যক্তি স্থাক্ত: প্রোজনীয় জিনিস্ট আল্লানী করতে ভয়া এই কারণে সিংগ'শারকে আগ একটি জিনিস্ভ আমদানী করতে হয়েছে-ম্লোম্মীতি, যাকে বর্তমানে দিনের বিশ্ব-জনীন ভিলেম্যা বলে অভিহিত করা হয়। ডিলেল্যা বা উ ভয় সংখ্যাট শেল স উত্তর : গ্রোথ বা সম্প্রসারণের পথে চলতে গেলে সরকারী বিনিয়োগ-বাযের পারিয়:ল অব্যাক্ত রাখতে বা বাডিয়ে চলতে হয় এবং এর দর্নই ঘটে স্লাম্ফীতি। এখন যদি মালাক্ষণীতি নিমাল্য করতে হয় তবে লোকের আথিকি আয় কয়তে বাদ। সিংগা-পারে এর বিরাপ প্রতিক্রিয়া দেখা দিও বাধ্য, কারণ তার অধিবাসীরা স্বাধীনতার পর থেকে क्षेत्रस्या स्वत বধ'মান আছি'ক আংহাই অভাস্ত দাভিয়েছে शहदन **અનમ્લા**ઇ রক্ষ : লোকের ভাগিক আয়ু হাস না করে মালাস্ফুটিত দমন করা সুভ্র হবে অপচ এই পথে চলা স্বকারের বিপ্ৰজনক। তাই সিংগাপ্রের লী স্রকার कि**ड**्डे कदर्यन मा ठिक करवाद्यम । F21-সার্গের হার ঘতকণ ম্লান্ফণিতর হার্গে অভিক্রম করে ভতক্ষণ হয়ত মালাস্কীতাক **উপেক্ষা করা চলে**, কি∗ত গতি হালি পরি: বৃতিতি হয় তখন সভানাল কথা মিয়ে की अनुकान कार्यक्षा गा। शास राष्ट्ररेशीयक **দ্রেদ্শিতি। বলা হয়** ভাব বলপ**িত বিশে**খ-**७१व अ**वस्थाकार्यान ।

देशक्राव :

দ্ৰটাত্তগ্ৰো থেকে বোৰা ধাৰে ধে ম্লাত্মীভিকে নিয়ে যখন বিভিন্ন দেৰে রাজনীতির শেলা চলতে তথা প্রক্ষিনিরীক্ষার মাধ্যমে এর প্রকৃত প্রতিবিধানের সংখন করা সম্ভব নর । এই নিরে একটি বিধারত বিদ্যোত বিশেশী সাম্ভাহিক সংবাদপরে একটি চমংকার কার্ট্রনি বেরিরেছে। কাট্রন্সনে এইলকমঃ চক্ষ্রক্ষণ অবস্থায় সিহ্ছাসনে বলে আছেন রাষ্ট্রনায়ক। তীর সামনে দক্ষিণ হম্পের তালা প্রসাবিত করে দিয়েছে অর্থানের তালা ক্রামিন বিদ্যান ক্রামিন। তালাকে বাচ্যনা চক্ষ্রক্ষম মাধ্যমায়ক। ক্রামারক শোলাদ্বি হৃদ্ধেরধানিদের মাধ্যমায়ক শাধ্যমারক বিভান। চক্ষ্রক্ষম মাধ্যমায়ক শোলাদ্বি হৃদ্ধেরধানিদের মাধ্যমারক শাধ্যমারক বিভান। তালাকে

কাট্ন বিদেশী পরিকার। আঘাদের দেশের হলে বাংগাচিত্রার রাজনীয়াককে দিয়ে হয়ত ব্লাতেনঃ মাদ্লিটা লিভিছ্ পরে ফেল। ভাল দিম নিশ্চহাই আস্কান।

আর একটি বাংগচিত আগিস ইন

ংগাংডারলানত থেকে: গভার বনে আগিস

দ্জন খবাবার বাংধকে জিভাসা কলন হ

এ বনের বাইরে যাবার পথ কি: কোম

উত্তর না দিয়ে বৃংধ দৃজন প্রস্পারের দিকে

চেয়ে ম্চকি হাস্পোন মাচ।

বাংশচিচটিতে ধনটির গালে শেশ।
ইনজেশানা আর বৃশ্দ দুজেনের গালে শেশ।
ইকন্মিক)। ভাগাৎ মালাস্থাতির পানীর
বন পেকে শেরিয়ে আস্থার ক্ষেমা শথের
নিশানা চাইছে প্রালিস্ব, শী সাধারণ
বিক জ্যানশ্যে বা তাংশিতিসিকদের কাছ
প্রেক এবং বা ক্ষানশ্যের কোন উপ্তন্ধ না
প্রেপ পরস্পরের দিকে চেয়ে মুচার ছালাগ্রেছ

মন্চিক হাস। ভাড়া উগায় **ছি**ই মাদ্বিলতে বিশ্বাস মেই অগচ দেশছেন **হো** মাদ্বিল প্রামো হাছে তখন মুটাক **না হেংস** আর কি করবেন ?

—শাণিতলাল মুখোপাধ্যায় ২২-৮-৭৪



উন্ন আধ্নিকতায় আমাদের সমাজজীবন

আধুনিকতার সংখ্যে সংখ্যে দু" নৌকোয় **পা ফেলে** চলার একটা রেওয়াল বেড়ে গেছে। দু' নোকোয় পা ফেলতে গিয়ে যে প্রচণ্ডভার নৌকো দালে ওঠে ভার টাল **দায়ালাতে** সমাজকবিনে আবার যে কড় **উঠকে** ভাল তীর্ম ভ্যামকা বিবাহিত জ্ঞীবনে দ্বামী ক্রী উভয়ে উভয়ের প্রভূদ **অপদ্রুদ্**কে সেব্ছোগুই মেনে কেন; মানবেন যানসিকতা শিয়ে शक्षा অশ্বাকে গ্রহণ কর্মেন। এলনত বহাল দেখা যাত্র বিষেধ পর সর্বাহাীর ইচ্চাকে কাম করী কলের ক্রম স্থাী ভার অনেক ভালপাগ। কাজকে বিষ্ণভান দেন। অয়থা ঝায়েলা এড়ারে এবং সংসারেন শ্রাচ্ক বজায় রাখনেই স্থা ইন্দে করেই অনুনক কিছা অংখ্যাক বলে প্রকাশ ন্ত্ৰার পাছ•দ্দকে করেন। আবার স্বালীর স্ফত্রেও সেই ঘটনার শ্নধারতি দেখা যায়। এমন্ত বৃহতু দেখা না শোনা যায় স্বামী ভট্টোক ক্লাবে থেকা করে, আছ্যা দিয়ে একট, বাত করে। বাড়ী ফেরার দ্বীঘণিনের অভ্যাস দ্বীন আনিচ্ছায় গরিত্যাগ করেন। তিনি ক্লবে হান, খেলা করেন, আছা দেন শব বজায় রেখেও ্ ভাঙাগ্ৰাভ ব্ধারীত রাত না বাড়িয়েও **হা**ডি ফোরেন। যে প্রিকারে প্রস্পুরের সংখ্য এরকম একটা স্ফুন্দর ও স্কুঠ, বোঝাপড়া থাকে সেখানে ভাবনা বা অশাণ্ডির কিছু মেই কিন্তু তার বাতিক্রম প্রায়ই দেখা যায়।

আক্রকান ভেলেনেরের বেখাপড়া শখনত গ্রে ছোল বা বমস্থিলে হোক স্বৃত্তি একসংগে মেলামেশা কংগে স্থোগ পাছেন। এই মেলামেশার সংযোগের জন। ছেলে-সেয়ের। বিয়ের ব্যাপারেও অনেক সময়



নিজেদের নির্বাচন নিজের।ই করে নিজেন। যেসৰ ছেলেমেয়েরা নির্বাচনের কাজ নিজেরা করবার সংযোগ পান সেখানে প্রস্থারে ভালভাবে চেনা-জানা-বোঝার একটা সংযোগ থাকে। ভারা উভয়ে উভয়ের রাচি মানসিক চাহিদা সম্বশ্ধে এক মিল খ'ুকে পান যার জন্য বিবাহেণ্ডর জীবনের প্রস্তুতি আগে থেকেই অনেকটা হয়ে বায়। বহু মেলামেশার পরও পাশাপাশি বসবাস করার সময়ে দেখা যায় উভয়ের ঘানসিকভার আনেক কিছু জানার বাকি বা বিরাউ প্রস্পারের পত্তস অপছদের গ্রমিক।

বাবা যা কন্যকে পারুস্থ করার স্মাযে সমান সমান ঘর-বরই নির্বাচনের পক্ষপাতী বিহে<u>়ে</u> ভ দেন भगारत । অভ্যাশ নিক চেলেব 31,791 4.1 রুটির বিয়ে স্বল সাদা মেয়ের হয় না একথাও বলা য়ার না তব ও হওয়ার সংখ্যাটা স্বশ্প। কিন্তু মেহেদের শ্বনিব্ভিন্ত ক্ষেত্রে সমান ঘর-দেখানে মনের বয়ের কোন প্রশন নেই। মিলটাই স্বপ্রথম। ্ষেই মিলেও **আবেগ** কাজ করে অনেকটা। যে কোন রক্ষা প্রথায় বিয়ের আবেণের প্রথম ধাপ কেটে গেলে বাস্ত্রের কঠোরভার অনেক স্বামী-স্থার উভয়ের মধ্যে নানা বিরোধ দেখা বার। বার কারণ অথনৈতিক চলেও সামাজিক দিকটাকে_ও একেবারে উপেক্ষা করা যায় না।

বিষেত্র পর শ্বামীর ইচ্ছাকে র প দিতে গিয়ে বহ**ু শুনীকে আজ** পাটি কাল কাব প্রশা প্রকানক। অনেক সময় স্বামীকে ছাড়াই স্বায়ীর বন্ধাদের সংগ্রে বন্ধায় রকা করতে হয় স্থীকে বাধীনভাবে ছেড়ে দিয়ে খ্বামীর এই ইচ্ছা কভাদন কার্যকরী প্রাকে? বাস্তবক্ষেতে ভিনি কি আন্ত্রিকভাবে তার স্থান অবাধ মেলা-মেশাকৈ সমর্থন করতে শারেন যতই তিনি উদাব ও পশ্চিমী ছে'বা জন না কেন্ এমন বহুলে দেখা যায় স্বামীর এই ইচ্ছাকে কার্যকরী করতে গিরে বেসর স্থানা অবাধে দ্বামীর বা নিজের কুথ্বদের স্থেগ হৈ হালেডে মাতে থাকেন তাঁদের সংসারের লাক্ষণি এবং কংধন ক্তমণ শিথিল চতে গণক। সংসাশ্র প্রতি দ্বীর উপেক্ষাকে বোসাইটি ইচ্ছুক স্বামীও মেনে নিতে চান

না ভার ফলে সংসারের শ্রুথলা রক্ষা করা দায় হয়ে পড়ে। স্বতানেরা অবহেলিত হতে থাকে। বাবা খায়ের স্নেচ থেকে ক্রমণ বাণ্ডত হতে হতে তারাও একসময় বিদ্রোহী হয়ে ওঠে। মা-বাবাল অনাচার আদের রক্তে এমন-ভাবে দানা বে'ধে থাকে যে ভবিষাৎ জীবনে সমতানেবাও অন্যায় ফাডিডে ছোডে উঠতে পারে। স্বামী-শ্রীর দুজন না হয়ে একজন ধদি উল্লাধুনিক হন তবে অপ্রজনের থানসিক অবস্থাটা হয় দুবিবহ। একজন মহিলাকে জানি যিনি স্বামীর অনিচ্ছায় কথার ফ্লেঝ্রি ছাটিয়ে পার্টি ক্লাব্যন্ত্র স্ব স্থায় মাতিয়ে রাখেন ভাগচ স্বালীর মেলামেশায় তুরি দ^{্ভি}ট অত্য**ত** সজাগ। **দ্বাদ্বা** বেচার। স্ক্রার মান্ত অন্ত দাপর খাটোতে অভাসত নন: স্ব_{ীব} কার্যকলাপে কুস্তক্ষেপ বা বিধিনিষেধ কলাব ক্ষয়তা তাঁর নেই অথ্য তিনি মনে মনে এর বিরুদেধ অভাদত **ক্রথ।** এই ক্রথতার ফলে স্বামী-পরীর মধ্যে ব্যবধান কমশ্বতে চলেছে পরবর্ত**ী** পদক্ষেপে ও'রা যে আইনের শরণাপল হবেন না একথ, কথ্নই যার না। স্বামীল ইচ্ছাকে কার্যকরী করতে গিয়ে জনিচ্ছক স্থাকৈ বহু অনভাৰত কোমার দোলাকে হয ক্ষেত্রেও স্ত্রীর অসমেতার কর নহ।

ম্বামীর ইফো ছাডাও ব্যক্তিবাধীনতার ধ্রজা ধরে আধ্রনিক বহু "বামী-স্তাী আছেন হারা পরস্পরেল্প কার্যকলাপে কোন হস্তক্ষেপ করতে চান না। উভয়ে উভয়ে^র শ্বাধীনভাকে এত বেশী প্রাধান দেন যে সারাদিনে পরস্পরের যোগাবোশের কোন নি[']দ'ণ্ট সম্ভাবনা থাকে না। দ্ভানের অতাধিক স্বাধীনতার ফলে স্থাী ইক্ষেত্রত আজ এখানে, কাল ওখানে উপরুত্ আমোদ-আহ্মাদে এত বেছিসাবী হয়ে ওঠেন তিনি যে বিবাহিতা একথা কিছুতেই भारत दाश्रक भारतम् ना। जनःशा वन्धः-বাব্ধব, বহু সমাজসেবার কাজের নামে এমন হুলোড়ে মেতে থাকেন বে বাড়ী ফেবার কোন নিদিশ্ট সময় থাকে না। আমাদের স্মাঞে এধবনের স্থাদের সংখ্যা থ্ব সামান্য হলেও একেবারে বিরল নয়।

তাঁদের জাঁবনে সংগারেল কোন মাধার্ব নেই। শাধা স্তাতিক দ্বাধীনতা দিয়ে স্বামী ভদপোক খালাস নম। এই স্বাধীনতাকে নিজে প্রামানুরি ভোগ করার ভাগিদে

তিনিও যথেক্ষাচার করেন। কার্কেল **অবসর**-ট্র কে তিনি এমনভাবে বিনোদন করেন যে কাৰ পাৰ্টি ভাৰ জাবনের সংখ্যে অংগাংগাী-ভাবে জ ডয়ে গেছে। তিনি সংসারে অর্থ ঢেলে খালাস, পারো দায়দায়িত্ব **তলে** দেন অনাদের হাতে। এভাবে চলতে চলতে সংসামের দুর্গিয়ার পালন করার বোধটাক: িন কমশঃ তারাতে থাকেন। বাদ্ধ ব্রসে এ ধরনের লোকেরা যুখন ফার্ডি উপজোগ কবতে ক্ষমতা হাবিয়ে ফেনেন তখন অতীতের প্রলপদিনের সুখী জীবনের কথা রোমন্থন করেই দিন কার্টাতে তাঁরা বাধা। আমার এই বন্ধবা পাঠের পর "বভাবতঃই অনেকেল মনে এমন এক ধারণা হতে পারে যে আজকের দিনে শুধু থেয়ে পরে কোন-রকমে বাঁচার জনা লড়াই-এর শেখানে 🕶 ত নেই এ সময় এসব চিন্তা শ্ব্যু অবাশ্তব। ্বার আমাদের সমাজের এ সমস্যা একে-উপেক্ষণীয নয়। স্বাক্তনভাবে বাবেই ভাবন ধার্ণ করতে না পার্লে মান ুষ 'टोरमद **②||本の本にない** চরিতাণ পারেন না। কিংক বেশী क तारक ইল হব্ধনিতা আর অত্যাধিক সোসাই টকে রক্ষা করতে গি**য়ে** অন্তর্থে র

যে পরিবারে গ্রামী-**গ্রা উভয়ে-উভয়ের** স্বাধীনভাকে পথম আন**দেদ মেনে নেন**

সেখানে দক্তনের অভিযোগ হয়তো খ্ব বেশী থাকে না। থাকলেত কেউ কাউকে দোষারোপ করে কোনরকম অপ্রাতিকর ঘটনা ঘটাবার কোন হাতি নেই। তব্য সেই বুটি-হীনতার মাঝে ও ক্লান্তির মহাতে তিরি যথন শাহ্তি চান সেটা আর পান না। বর্ত্ত-শ্বাধীনভার চরম সমর্থনকারী এক দম্পতির দক্তনেই হার যাল নিজের বাধ্যদের সংগ্ আজ দিল্লী কলে বোলের হাজেশাই করছেন। দ্বান্ধনে যুখন প্রস্পরের সংশামিলত হন रूपम मिर्म कीवनहां स्थान माना। कार्या জনা কারোরই কোন সহান ভৃতি নেই। তাদের কলতে লানেছি 'মাঝে মাঝে ভূতে পার নেশাগ্রশ্ভের মত কি যে করি নিজের:ই জানি না কাৰণ চক্ৰ স্বাধীনতা মানতে গিয়ে আমরা কেউ ক্লারে ভালমণ্দে কোন कथा वनरा भाष्य मा। ब्रीक्ट वास।

সাধারণ খরে এ ঘটনা বিরল। দ্বামীদ্বী সাধারণতঃ পরক্ষপরের র্চিকে সদ্দান
দিরে চলতে বাধা কক্ষণ তাদের পারবেশটাও সেভাবে গড়া। কিন্তু আক্ষণল
সাধারণ পরিবারে অনেকের মধ্যে উচ্চসমাক্রের
এইস্ব আচ্চমক্র অনুসরণ কর্মন্ন একটা ইক্ছ।
আছে। ফলে সংক্ষারের কথ্যনটা আভগা
ব্যাহ্যকর্মন

বাবসায়ী বা চাক্রবীজীবী ভদ্রলোকের
স্থাীকে প্রয়োজনে অনেকসময়েই বাজার
করতে বা বাদকে চেক ভালাতে দেখা যায়।
ক্রামাকৈ স্থাী এবং স্থানে স্থামান সাহায়।
নাক্রামা কেন্দ্র যুদ্ধি নেই, কিন্তু স্থাী বা
স্বামাী একে অপ্রের উত্ত কোন র্চিকে
কার্করা করতে যাওয়াদ্র ফল প্রায়ই বিষময়
হয়। অপ্রের অপ্রথদ কলে যথন একজন
প্রস্থা তিসাবে বরণ করেন তথন তার ফলও
অতান্ত মারাজ্বক।

সংসাদ্ধে বাস করতে হলে স্ব কাঞ্চের মধেটি একটা নিয়মশ্ৰেথলা, সংযম রক্ষা করা অতান্ত প্রয়োজন। সেটা কেন্ট কাউকে শি খয়ে দেবার নয়, নিজেদের বর্টবোধেব তাগিদেই আমরা শৃঙ্গলা মানতে বাধা। অভ্যাধক আধ্ননিব চায় সুখ ককটা বজায় রাখা যায় সন্দেত আছে কিণ্ড মানানসই আধ্রনিকভাটাই আমাদের জীবনে স্থশানিত বজায় রাখতে সক্ষম সেটাই বত্মান আব-হাওয়া প্রতিমৃহ্যুতে সমরণ করিয়ে দেয়। একদিকে সংস্থার অপরদিকে বাইরের জীবনে বাড়াবাড় দায়ে প্ৰভে কোন ধ্ৰমই বক্ষা করা সম্ভব নয়। সেকেলে, প্রচৌনপদ্ধী হয়ে বক্সে থাবায় কোন হার' নেই নিশ্চ**য়ই তব** ও চরম আধুনিকতার শান্তি কোথায়?

—অঞ্জলি চৌধ্রী



রূপসীর খাতা



স্পের সংখ্ উদ্ভাব জাবন হৈরী **क्रांट हाल** अन ७ भाविभाभिन रिक्त Mr. of **শরীরেমত হাগেট** হাত। নেওয়া উচিত। আয়াদের দেশে (বিশেষ করে) নানান শারবারিক আর্থিক ভৌগোলক কারবে **ছাহিলারা খু**র ভাড়াতাড়ি ব্যুসের রেখা **ফ**্রিছে তেলেন। এমনও শোনা যায় যে বয়সের ছাপ ম। পড়লে কোন কোন ক্ষেত্রে মহিলারা লভিত হন কিম্বা তাদের ছোগ করে লড্ডা দেওয়া হয়। কিন্ত এই স্ব পঢ়া প্রোনো ধারণাগুলি থেকে বেরিয়ে কিছা মহিলা জীবন সুদ্ধনেধ বাঁচার সম্বান্ধ মধেষ্ট সচেতন কয়েছেন-এ খবর আজকের প্রগতির মূপে খ্রেই আনন্দের। বাঁচার **, ইড্যা স্বংগর্ট আছে— ভাতলে** বাঁচার মতন করে বে'চে থাকার মধ্যে আপত্তি কিসের ২ কোমরে বাথা হাতে পায়ে বাত শরীরের তাজে ভাজে কান্তির ছাপ-এবং চোখে মুখে বয়েসের কঠিন রেখা ন धाकाणें है कि बाक्सीय नश् ?

তাই ষ্টারা আজ সান্দর স্বাম্থা চকচকে চেহারা নিয়ে বয়সের সংগ হেসে লভাই কলে ৰে'চে আছেন বা থাকতে চান্ত চৈর প্রশংশা করা উচিত। সেই সংখ্যা তাদের **ক্ষক্ষ্যালি থবরও আর্বাশ্য জানাতে চাই।** শরীর ও রূপ কেমন করে রাখতে হয়---🎏 🏚 করা উচিত ও কেমন করে করা টৈছি। এর ভাগে কিছু কিছু আলোচনা শায়ামের কিছু নম্না লেখা হয়েছে। সেই সংশ্যে আর্ভ বিশদ আলোচনা করার শ্লুকিল্লাতিও দেওয়া ছয়েছে। আঞ্চল্ব আলোচনায় আজকের প্রথম বিষয় হচ্ছে--আমাদের জানা উচিত যে শ্রীনের কোন **জোল অংশে প্রথম বয়াসের ছাপ প**ছে। ভাৰপর আলোচনা করবো--সেই ছাপ বি करब मूत्र करा शहा

বর্দের সংশা সংশা প্রথম বে অংশে ছার ছাপ পড়ে তা হল পেছনের দিকটা জ্বণাং শিবদীভা ও নিত্রের দিকে। সালারণ্ড দেশা থার—চিলশারের মহিলাদের দিরদাভার নালা রক্ষের বাখা, হাড়েব ক্থানছাত হওয়া ইডাদি হয়—ফলে তাদেব ছটার ও বসার ভাগি বটান করা মহিলা এব করে বেশা দিবলা এব করা মহিলা প্রথমে দক্ষের মানিকির স্বাধ্য স্বেধ্য দিবলা এব করা মব চোলা আই বর্মের বেশা দিবলা এব করা মব চোলা আই বর্মের বেশা দিবলা এব করা সব চোলা আই বর্মের ব্যাধ্যা এক ভাবে জোড়াআসনে বঙ্গের আছা টোডে। এছাড়া হোলা ব্যাধ্যাম ব্যাধ্য

করতে পারকে তা সবচেয়ে ফলগ্রাদ হবে।

এরপর নিতব্বের কথা। সাধারক্তর ব্যস্তের

সংগ্র নিতব্ব ভারী ও নীচের দিকে ক্লে

যায়। তারজনা যে বায়েয়া প্রয়োজন তা
আগেই বলা হয়েছে। এছাড়া প্রতিদিন

স্কালে অথবা রাহে শোয়ার আগে গ্রেম

করে নান দিয়ে ফ্রিটির সেই জলে

নান দিয়ে ফ্রিটির সেই জলে

নার তিপকার হয়। স্টারবাধ নিতে

পারবা আবত ভাল।—বাড়ীতে স্টারবাধ

হথন একটা বাজ করা যায়। পাখা ব্যধ

করে কম্পল দিয়ে জড়িয়ে কিছাক্রণ শ্রের

থাবা এর ফলে ঘাম হয় ও মাদ গলে যায়।
ভারপর নান গরম জলে ম্নান করে নেওয়া।

দ্বিত্যি দ্বান হোখানে ব্যুস তার হাত বাখে তা হল গুলা। এর দুটি কারণ। বেশীর ভাগ মহিলাই গলা স্নব্দেধ যথেওী সচেত্র থাকেন না প্রথমে। অনেকে লোজ করেন কিন্তু শাুধ্ মাুঘটাকু কিন্বা ভাত বড জোর পায়ের দিকে নজর দেন! গলাকে প্রথমে আবহেঁশা করে থাকেন। এর ফলে প্রলার চামড়া কু'চকে যায় আর বেখা পড়ে। দিবতীয় কারণ থারাপ ভাল্পমায় চলা ফোর। করা। বহু রম্বা তাঁদের হাটা চলা ও বসার খারাপ ভবিগ্রার জন্য ঝোলানো হ তুনী কিম্বা গলায় বহু বৈখাৰ শিকাৰ হন। যেমন ধর্ন অনেকের অভ্যাস থাকে হাথা নিচ করে চিবকে গলার সংগে ঠেকিমে রাগতা দেখে চলা এবং এই করে গলয়ে ভাল ফেলে বসা। এছাড়া গলায় কোন ইকম মালিশ না করা। ভাল ভাবে সলায় মালিশ ও নিয়মিত ভাবে মুখের সংকা গলায় চামভার হাতা করলে বহু বয়াসেও বয়াসের রেখা ধরতে **পারে** না।

নয়সের আরুমানের তৃত্তীয় পদান হছে হাতের উপরি অংশ। বগল ও কুনুই এর মানের অংশ ব্যুসের হারুয়া দেখা যায় চামড়া নরম হয় ও একটু চিবাযুক হয়ে কলে পড়ার মতন দেখায়। এ পেকে মাজি পেতে হাল প্রতিদিন সামারণ কলেকাবুলি ব্যাস্থ্যের প্রয়োজন। যেমন প্রতিদিন ক্ষিত্র আরু ও একটি ব্যাস্থ্যের প্রয়োজন। ত্রু ভারত তিনি ব্যাস্থ্যের প্রয়োজন করে অন্তত্তঃ ৫ 1৭ গিনিট তুলে রাখা। এ ভাড়া আর একটি ব্যাস্থ্য আছে—সোজা দড়িত দুই হাত কিনের প্রেছন দিকে যতটা সম্ভব টান করে নিশ্য স্থান্থ্য তারপর আন্তত্ত আন্তত্ত সাম্বন্ধর দিকে নিশ্য আসা—। এভাবে বৈশ্ব তার্ডাই বার করা দরকরে।

চতুর্থ ও শেষ কেন্দ্র মুখ। মুখের
চামড়া স্বক্ষিবের নামে জল ধ্লো মারলার
শিকার হয় তাই মুখের চামড়ায় লোমক্পে
ধ্লো জমে আর লোমক্পের মুখ বর্ষ হয়
য়য়। জমে চামড়ায় গোটা বা দাগ হয় এবং
এতে চামডার মস্পৃতা নত হয়। চামড়া
মস্প ও চকচকে থাকলেই মুখ উজ্জল ও
সতেজ থাকে। সতেজ মুখে বয়সের হায়া
পড়ে না। মুখ সুন্দর ও সতেজ নরম
রাখতে হলে দ্রকার হল নিয়্মিত এর যতঃ
নেওয়া। এ সম্বন্ধে আগে আলোচনা
করেছি পরেও আরও বিশ্য আলোচনা
করবো।

শর্মীর ও চেপ্রারার জোলাসে রাখতে হলে র্শচর্চা ও শর্মীর চিনার সংগ্ সংগ্রাজন।
ক্ষার একটা কথা মনে রাখা প্রয়োজন।
ক্ষার একটা কথা মনে রাখা প্রয়োজন।
ক্ষার হল জ্ঞানদের ছাটা চলা বসা ও
শোয়ার মধ্যে স্কার ভণ্গি ও জ্বন রাখা।
জ্ঞানেক স্কান্দরীর হাটা চলা বসার ভণ্গি
এতো কুর্চির পরিচয় দেয় যে, তার সন
সোধ্যুতি মাটি হয়ে যান। শুবা মাট্র
ক্ষাত্ত কুল্লী লাগে এই নয় এতে শ্বীরেরও
ক্ষাত্ত হয়।

ষেমন চেয়ারে বসে ♦ প। ছড়িয়ে বসা কিশ্বা পা দিয়ের ঠেকে চেয়ার শাুন্ধ পেছনের দিকে ঝালে বসা বিকসায় বসে দাই শা দাদিকে ছডিয়ে প্র্যাল ভাগতে বসা। তগুলি দুন্টিকট্য। রিকসায় বা চেযারে বস্তে হলে স্ব স্ময় পা জোড়া করে, একদিকে একটা কোণাচে হয়ে বস। উচিত। একটা হাত যেটি চেয়ারের হাতলের কাছে, স্টো তাওলের ওপর রেখে অপর *হাও* কে:লের ওপর রাখ। ভাল। দুই হাত দাই হাতলে রাখলে ভাল দেখায় না। শোহার সময় আমরা সাধারণত কাত হরে দ্মাড়ে কিমবা দায়ের মতো হয়ে শারে থাকি। এতে লুটো অপকার হয়। যে দিক ফিরে শায়ে থাকা স্থায় সেই দিকের প্রতিরের ভেতরেও মাধ্বরালিকে চাপ প**্রাছা**ড়া দ্মতে শোষ্ণার ফলে শরীরের ভেতরেব যণ্যুগলিতে টোট পড়ে ও শিনা উপশিরাগালি সহজভাবে থাকতে পারে না। সবচেয়ে ভাগভাবে শোয়ার ভূণিক **হল চিত হয়ে সে**ঞ্চা শোরা অনেকটা 'শ্বাসনের' ভাজাতে। এতে দারীরের সমূহত অলাগালি সম্থানে থাকে। ফলে ভেডরের শিরা উপশিবা ও ঘ্রুগালিও মুখ্যাস্থানে শাস্ত ক্রস্থায় থাকে। তাতে সভিকোরের বিশাম হয় ও রক্ত দুলাচলে কোন ব্যাহাত ঘটে না। বস্তু চলাচলই শরীরের ভেতর ও বাইরের সাম্পরতাব প্রধান প্রহায়। ঠিক প্রতম বন্ধ চলাচল করার জন্য নিশ্লমিত ব্যামাম করতে হয়—ঠাণ্ডা ও গ্রম বাদেপর সাহায়ে। চামছা ঠিক রাখার ব্যবস্থা করতে হয়। ভাহলে চামড়ার বং ঠিক থাকে এবং সেই স্থান শ্রীরও সুক্ষ থাকে।

এছাড়া এমন কত্তবগালৈ অভ্যাস আছে হা ভাষাদের করা উচিত। থেমন ধব্ন চলতে চলতে হাতে থেকে কিছু পড়ে গেল।

<u>__ৰব্লৰ্বাণ'নী</u>



(প্রে প্রকাশিতের পর)



অহোরবাব্র অস্থের সময় তবি বাড়ী থেকে শরংচন্দের চলে যওয়া সনবলেধ শ্রংচন্দ্র নিজে স্কুরেনবাব্রকে যা বলেছিলেন বলে সার্থনবাব্য লিখেছেন, সে কথা এবং এ সম্পর্কে গিরীনবাবরে এই বিপ্রীত কথা, যা এখানে উদ্বৃতি করলাম --এই দুইই অজভকুমার ঘোষ তার বইয়ে উন্ধাত করেছেল। কিন্তু তিনি এ ব্যাপারে কোন মতামত দিতে পারেন নি। ব^{রং} িত্রি সারেনবাবার লেখাটাকে (যা শবংচন্দ্র বলেছিলেন বলে স্রেনবাব্য লিখে গেছেন) নিয়ে সে সম্বাধ ভূল মনতব্য করে লিখে-ছেন-শরংচনেত্র উপরের উক্ত হইতে ম'ন হয় তিনি অঘোরনাথের মত্যুর আগেই ঐ न्थाम হইতে চালয়া গিরাছিলেন।...অঘোর-নাথ সম্বদেধ শর্ৎচদের উপরের উত্তির মধ্যে যেন একটা শ্রম্থার অভাব লক্ষা করা যায়। কিন্তু শরংচন্দ্রের প্রতি আঘারনাথের অ শ্ব উপকারের কথ; পভীর শ্রুণ্ধা ও কৃতজ্ঞতার সংখ্যা সমরণ না করিলে অন্যায় হইবে। ... আত্মীয় স্বজনের অবজ্ঞাত নিঃ-সহায় শরৎচন্দ্র তাঁহার কাছে যে উপকার পাইয়াছিলেন, তাহার তুলনা নাই।'

স্রেনবাব্র কথা যে অসতা অজিত-বাব্ তা ধরতেও পারেন নি, অধিকদণ্ড স্ব্রেনবাব্র অসতা কথাণ্ডকৈ সতা বলে ধরে নিয়ে তিনি শ্রংচন্দ্রকে অবথ ্ অকুডজ্জরুপে চিন্নিত করেছেন।

(২)

অধ্যারবাব্র অসুথের সময় জাঁকে ফেলে শরংচাণ্ডর চলে যাওয়া সন্বংধ সন্বেনবাব্ যেমন দ্বারে দ্ব রকম কথা বলেছেন তেমান তিনি রেক্সানে তার দাদা দানবাব্ কর্থক শরংচদের থেকি নেওয়া সন্বংধও দ্বার দ্ব রকম কথা বলেছেন। তিনি এক জায়গায় লিখেছেন—শরংচাদ্র পাঁড়িত হয়ে হাসপাতালে আছেন এবং এমা এই শ্বনে ধ্বারিম্মুখ মন মানবাব্ নারংচাদ্রর সকলের সংগ্রা দেখা করেন মানবাব্ করেলন না এবং শরংচাদ্র সন্বেধে বির্বাধিক করেলন না এবং শরংচাদ্র সাক্ষ্মিক করেলন না।

স্রেনবাব্ তার ঐ বইরের অনাত আবার এ সংবংশ লিখেছেন— 'অব্যেরনাথের মাতুর পর শবহুচন্দ্র মনিমামা উপেন্দ্রনাথের দিনিক নিয়ে রেংগা্ন গোলে শহুচ্চন্দ্র থোজ করে জানতে পারেন যে, তিনি বাকি একটা চনিনা হোটেলে পাঁড়িত হয়ে আহুমা নিরার সংগতি দেখা সাক্ষাং করতে অক্সা (প্রে ১৪৭)

স্বোনববা এই দ্ রক্ম কথার মধ্যে
তথাপারী যা তা হল প্রথমতঃ হাসপাতাল ও
হোগেল দ্টা ভিম স্থান, কথাবই এক নয়।
দিল্টায়তঃ—জরজনালায় আজাকত হয়ে
কারও সংগে দেখা করতে অক্ষম হওয়া,
তার লক্ষালনক ব্যাধিতে আক্রান্ড ব্যে
লক্ষায় কারও সংগা দেখা করতে থেতে না
প্রায় দুটায় আকাশ-পাতাল প্রভেদ।

এখন কথা হচেছ, স্রেনবাব্ তার বইরে এক-একটা ঘটনা সম্বশ্যে এই যে প্রস্পরাব্রোধা এক-এক রকম কথা বলে-ছেন এর কারণ্টা কি:

এর কারণ আমার মনে হয়, স্রেন্থান্

র্থন এ বই লেখেন, তখন প্রথমতঃ বার্ধকাবলতঃ নানা ভূল করেছেন। দ্বিতীয়তঃ—
তখন এক সময় তার মাথায়ও একট্
গোলমাল দেখা দিরেছিল। ঐ সময় স্রেন্থান্
বাব্র নাথা ঠিক না থাকার কথা, আরি
তার জ্যেইপ্রে রবীদ্রনাথ গ্লোপাধায়রর
কাছে শ্লেছি। তাছাড়া আমি নিজেও
তখন প্রায় ঐ অকথায় তাকৈ দেখেছি।
এই কারণেই স্রেন্থায় তাক এই বইরে

যেয়ন কিছু কিছা উল্টোপালট কথা বলে-ছেন, তেমনি প্রজেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধায়, নরেন্দ্র দেব, রামকৃঞ্জ মুখোপাধায় প্রস্থাতকে একর্পে অকারণেই ব্যাংগ-বিদ্যুপ করেছেন। সাুরেনবাবার বইয়ে যে ভুল আছে,

সেকথা অবদ্য তিনি নিজেই তার বইয়ে



আৰু জায়গায় জিখে গেছেন। তিনি লিখে-ছেন, আমার তুল চানিত হ্বান ব্যুদ বৃত্তীয়ানে অবস্থা। আনুকালা ক্ষাবালাক ক্ৰাকে শুমুভুল মন্ত্ৰ, আছোনোকি কং। হ'ব হলেই মুঠন কৰি। পেড় ১৫৮)

শাধ্য এই মান, শরংচাল্ডর রেণান্ন করিনের কথা স্টেন্ডান্ডান্ত্র প্রথম জানা যে সাইজ নত্র, লেকখাত ডিটা তার বইগে লিখে বৈছিল। তিনি লিখেছেন তার জীবনের এই দ্বিটি (দেবানন্দপার ও রেণান্ন) যুগের কথা সংগ্রহ করা সহজ নয়। ...শগংচাল্ডর নিকটক্তম হবার অবসর পেয়েও ওমন শপ্যা নেই যে বলি তাকে ঠিক করে ফেনেছি।

এই জনাই হয়ত সাবেনবাবা - ক্রি सकेता मात्रश्राप्तत स्त्रप्तान श्राहात क्रकाल बरमम्ह ति। धर्यावयान्त्र वाजी -PIND SEE INDIE MYS PHONE MAN WINE শাস্ত্র হাতার পরে শরংচন্দ্র কোমার ছিল্লন - बाई मार्ड। कथा मा तक्षा करत् वला छाड़ा **স্নারেনবার** তার বইয়ে আর এক জায়গায় শ্বেষ্ট্রের বন্ধা-প্রাসের সম্যোধ বিসাধ শিল্ भूरे**ल**ेक्स--- भूत्रेश्वरूप स्थारित क्रिक्ति क्रिक्ति হংসর ছিলেন। এই কথাটাত তিমি দ্বার क्तिश्वरहरू । भारतम्यान्यत् कहे लिथाणे ७ इल । कार्त्व भवरान्छ ১৯०७ च्याणीरकार कार्ने हारी ध्यक्ति ३৯३७ मृथ्येत्यत् व्यक्ति स्थान्ड कक्तामान (इस्सम्। अल्प्यमधायात वर्षेप्य करें)-স্থাপ আরম্ভ থানক ভঙ্গ আছে।

माजायां आशासनाथ हरहोत्नायास्ट्रक



অকৃত্যজ্ঞর মত শর্পেনের ফোল চলে যাওয়া अस्त्रांश्य अहरत्रस्थानः हतः त्रक्य कथा वहारहारः, अधातवावाम अभव गामामानावी विवीत्मताथ अक्कारबाद रमाना त्यरक सामन तमर्थाष्ट्र धा-শাপারে 'সুরেনবারুর কোন কথাই স্টা নয়; ভেমনি আমার মনে হয় অংখারখানার মান্তার পরে সারেন্যাবার বর্গিত শরংচন্দের খোনব্যাধ্যে আক্রণত হয়ে হাসপ্তাপে থাকা বা অস্তেথ হয়ে চীনা হোটেকে পড়ে शका, ध्रत कान्छे।हे अंछा सद्या कातन. চাগোরবাবার মাড়ার পর শ্রংচন্দ্র কোণায় বিভাৱে ছিলেন সে সদবংশ অন্য কথা জানতে পারি, শরংচন্দ্রের রেংগ্রনের বংব্য দের লেখা থেকে। আর এদের লেখা থেকে এটাত জ্ঞানা ছাছা হো, অহেনধবাৰার নাতাব সময় প্রাণ্ড শ্রংচন্দ্র অঘোর্থাবর বাড়ীতেই ছিলেন।

भारत्रातम्ब को स्थानित वन्यापित के সেখা নিয়ে আলোচনা করবার আলে আমার শ্ধু _{একেটা} কথা এই যে সংঘার**বাব**ুর গাঁকুরে পুর শ্রংচন্দ কোথায় ছিলেন. সে अन्वरम्य भारतस्यान्त्र मृ तक्ष कथात श्र^{हरा} এकान्छई थांप (कामग्रेटिक शहर कराए इह. ভাতকে শরংচন্দের চীনা হোটেলে আস, ন্থ হায় থাকার কথাটাই গ্রহণ করাই সাহি-ষ্তু। কারণ প্রথমতঃ আমোরবাবার মৃত্রি পর তার চাকর-বাকররা নিশ্চয়ই তাদির ্বিষ্থাং স্মর্শেষ অভানত হতাশ হয়ে পড়ে-ভিল। বিশেষ করে অঘেরবাক্র স্থা ত্রখন রেঞ্গানে ছিলেন না। ফলে শরংচন্টের খাভয়ার, বিশেষতঃ সকালে অফিস ঘাভয়ার সময় ঠিক সময়ে খেতে পাওয়ার নিশ্চয়ই খাৰ আসাবিধা হয়েছিল। তাই তিনি হয়ত কোন হোটেলে গিয়ে উঠে থাকতেও পারেন। দিবতীয়তঃ অধ্যারবাবার অস্থার সময় দিন-রাত পরিশ্রম করে সেবা করায় এবং দাহকার্য ইত্যাদিরত প্রিপ্রমে হয়ত পরে শরংচন্দ্র নিজেই অস্কুন্স হয়ে পাড়ছিলে।।

স্বেন্দ্ৰন্ত গণোপাগায়ের 'শবং-পরিচয়' একটা ছোট বই। এই বইয়ে সেসব ছল ৫ এলাট-পালা কথা আছে তা কি আজিত্বাবনে সোগে পড়ে নি ? বেল্বে-শিয়ে মুখীগুলাথ গণোপাধায় কর্মক গবং-স্বেন্দ্ৰ থেজি দেখন সংক্ষেম স্ব্রেন্দ্র্যাব্ এই যে, দু হোরণান্ধ দু বক্ষ কথা বলেছন এ শেকে খারাপ কথাটা নিহেই ভানতবাবা শর্পচাইকে হেয় করে নিজের পদ্দ সম্বাধা চলীনা হোটোলে থাকা। যেটা বরং মানাবিধ সোটায় ভানিতবাবা কোণাও উল্লেখ প্রস্থিত করেন নি। এই কি একজন নিরপ্তেক লেখাকর কাল হয়েতে?

যাক, আমি যে বলেছি, আমারবারর মৃত্যুর পর শ্বংচন্দ্র হাসপাতালেও চিলেন মা, আর হোডেলেও ছিলেন মা, এখন সে সংবাদেই আলোচনা কর্মাং—

বেশপুনি একাউনেট জনারেল অফিসে
মরংচন্দের সহক্রী, তেগ্রেন্দ্রমিহন রায়—
টোন ৩২ বংশর একাউন্টেট জনারেল
ভাফিসে চাকরি করে ডপ্রাট একাউটেট জনারেলর পরি ভর্মীত হয়েছিলেন) লিখেছেন—আন্তর্ভী দি ডেগ এফ ফি এ চাটোর্জা, ডাল্ড চাটাজি মধ্যকতিন স্থানী সর্বা সাম টাইম উইগ লিং আমদাপ্রসাদ ভটি-চার্শ আন ভঙারীসন্ত্রীর ইন দি গ্রভণ্মিটি

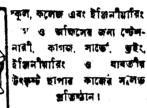
ভাৰ শ্বংচনের বেংগ্নের ব্যয় সভীশ-हरम मात्र क्षित्थत्कर- धाःचात्रवार्त्त मञ्जूते পর শর্থনা সহায়-সুদ্রলহীন হট্যা পাঁড-লেন। তথন রেজানে সালান বেতন-ভোগী দ্বোনীদের কোন সমাজ ছিল না**। ভ**িটা অভিনে চাকরি করিছেভিলেন বটে, কিংও হোটেলের খবচ যোগাইয়া তার উপরে নিজ খনচ যোগানার ক্ষমতা তথনো শবংদার জন্মে মি। অতিএৰ তিনি আডিট জফি:দুর পাণেট এক কামরা ছোট কাঠের ঘরে নিন যাপন করিতে লাগিলেন। এমন কি দিনের বেলা দু চার পেয়ালা ঢা খাইয়াই অনেক সমাম কাটাইয়া দিতে লাগিংলন। ক্লমাণ্বংম শ্বংদার পাশের প্রভারী বামানের সংখ্য আলাপ-পাঁরচয় হয়। এমন কৈ শরংদার শাৰ্ঘাৰ কৰ্ট দেখিয়া ঠাকৰ আগ্ৰহ কবিয়া শ্রংদার আহারের বলেন্ত নিজের খরে চারামান ঠাকরের অভনত প্রভাপীভিতে ও অভাব অন্টলে শরংদার প্রাণ কাণিয়া উঠিল। তিনি বাছানের ঘরেই भारत्रका बाहरत सामिता

কিছ্বিদ্য পরে এক নতুন রহস।
উন্দাটন হইয়া প্রিড্লা বাগ্নিনীর্ক্রের
প্রাচিকা ছিল, ঠাক্রের বিক্তা। ধৌনন
দৃষ্টনে ম্বোধার্থি কগড়া আর্মত করিল,
ধ্রণা ইট্লেন বিচারক।

ত্রৰপর সতাঁশবাধ্য শ্রেষ্টের সামান ধান্স্টাক্র ও তার রাজতা হরিষাতার বঙ্গার ত্রকটা বিবরণ দিয়েছেন। বিজ্ঞ ভাষার লিখেছেন

ত্র প্রশ্তই সেদিন বাক-বিক্তার কাটিয়া গোল। কিন্দু এখনেই অভিনয়েব সাংগ হইল না। এখান্বয়েই দিনের পর নিন্ ধর্মাটাট বাড়িয়া চলিলা এখন কি উন্নে হাড়ি চাল্যাল বাদ হইতে লাগিল।...

শ্রংদা এব-একদিন ভাত না থাইছা । খাইয়াই কাটাইতে লাগিলেন। কিন্দু ভাষাদা খাইতে রাজী হইভেন না। এখানে হাটে বাজাতে অলিতে গাঁলতে এমন কি



क्रक (हैं नवादी (हैं। में

৬৩ই, বাধাবাজার স্থীট, কলিকাজা—১

কোন--- র র-৮৫৮৮, ৬৭-৪৬৬৪; প্রায় : অরাবলিন-- হাওড়া পোন্ট বর-- ০৮, হাওটা

চায়ের দোকানেও ভাত তরকারী মাছ মাংস বিক্রী হয়। প্রসা থরচ করিলে হোখানে ইচ্চা থাওয়া যায়। কিন্তু শরংদা একমার চা-মুটি ছাড়া অন্য কিছুই থাইতেন না...

কিছু দিন পরে পুজোরী ঠাকুরের
সংগ্র শরংদার মুঝোমুখি দশ পাঁচটা
কথারও বাড়াবাড়িছ ইইয়া গেল। ঠাকুরও
হারমাতির থরচপ্রাাদি কথ করিয়া দিল।...
ইরিমাত অসহায় অনন্যোপায় হইয়া
শরংদার হাতেপায়ে ধরিয়া কদিয়া পড়িল।
শরংদা স্বীকার করিলেন, জাহাজ থরুচের
ঢাকা দিয়া কলিবড়া পাঠাইতে কিন্তু হঠাং
জার হইয়া চন্দ্রিশ ঘণটার মধ্যে হরিয়াত
ভারত করিল। ভাঙার প্রশীক্ষা করিয়া
বাল্যালন—প্রগা। ভাঙার প্রশীক্ষা করিয়া

শরংদা মহাবিপদে পুড়িলেন। তখনো রেগ্যুনে শেলগ মহামারীর ভয় কমে নাই।

মৃতদেহ সংকার করিতে ভয়ে কেইই অগ্রসর হইতে প্রীকৃত হইল না। অগতা।
মদাপানে বশীচুত করিয়। অতি কটে হারমতির মৃতদেহ সংকারের পর অপ্রেতিটিকিয়াও স্থাপন করিয়া মহাপ্রাপের প্রিচয়
দিয়া কারখানায় গোট বড় জাত বেজাতের
নিকটে দেবতুলা, হইয়া দাড়াইয়াছিলা।
সোনন হইতে শরদো জাত বেজাতের নিকটে
যে সম্মান লাভ করিয়াছিলান, আজও
ভাহাদের নিকটে দেবতার নাম্য চিরহমরণীয়
ভইয়া বহিয়াছেন।' (শবৎপ্রতিভা)

এথানে দেখা যাছে, হেনেন্চবাব্ বলেছেন—অধ্যাববাব্র মাতার পর শরংচদ্র অমাদপ্রসাদ ভট্টায়ের বাড়াতে কিছুদিন ছিলেন। আর সভীশবাব্ বলেছেন—
অধ্যাববাব্র মাতার পর শারংচন্দ্র তরি অফিসর পাশে একটা ছোট ঘর ভাতা নিরে ছিলেন।

এ সম্বন্ধে বলা যেতে পারে যে, হয়ও এ'দের উভয়ের কথাই ঠিক। অগোরবাবার মাজার পর শরংচার অসহায় হয়ে প্রথমে পরিচিত বা বংধা অয়দালসাদের বাড়ীতে কিছ্দিন ছিলেন, তারপর সেখান খেকে অফিসের পাশে ঘর ভাড়া করে বাস করেছিলেন।

সতীশবাব ত্রি লেখার যেদিন দ্জান মুখোমুখি ঝগড়া আরম্ভ করিল, শ্রহণা ইইলেন বিচারক'—বলে বাম্ন ঠানুর ও হরিমতির কগড়ায় যে বর্ণনা দিয়েছেন, সেখানে এক জায়গায় লিখেছেন—'এবার হরিমতি গরংলাকে লক্ষা করিয়া বলিলেন—'ক বাব্ তুমি যে মাসে মাসে প্লেইটা করে টাকা দিছে, এই টাকাল হলেই আমাদের একটোতা হবছন্দে চলে যায়। মিনসে এমন একটোতা হলি পড়তে না পড়তেই ছবুডে দেবে না। বল্বন ত, আমি খাওয়াই কেটাখেক ?'

এখানে হরিমতির মুখে বামুনঠাকুরঞে
নাসে মাসে শরংহণ্টের যে প্রেরটা কার
টাকা দেওয়ার কথা পাওয়া যাছে, তা থেকে
বলা যেতে পারে—পারংর রহসা জানবার
আগে প্র'ণত বা শাবংহণ্টের সামনে বামন
টাকুর ও হরিমাতর প্রথম খলড়া সানার
আগে প্র'ণ্ড শরংহণ্ট কম করেও অংশত মাস দাই নিশিচ্ছভাবে এখানে ছিলেন।

বজেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় তাঁর শবং-পরিচয় গ্রান্থে অঘোরবাবার শ্যালক উপেন্দ-নাথ গঞ্জোপাধ্যায়ের কাছে শ্রনে লিথেছেন-অথোরবাব্র মৃত্যুর দেড মাস পরে তার দ্বী অমপূর্ণো দেবী কলকাতা থেকে রেশ্যনে ফিরে গিয়েছিলেন। অলপ্রণা দেবী তার স্বামীর মাতার দেও মাস পরে যে রেখ্যানে গিয়েছিলেন একথা উপেন-বাব্যও ভারি এক প্রবাধ লিখে গেছেন। অমপূর্ণা দেবা তার ব্যামীর মৃত্যুর দেড য়াস পরেই যান বা তার আগেই **যা**ন. আমরা কিন্তু সতীশবাব,র লেখায় দেখছি-শ্রৎচন্দ্র তথন দিবি সুস্থ শ্রীরে অফিসের পাশে থেকে অফিস করছেন এবং এক দ্বঃম্থ পরিবারে মাসে মাসে টাকা দিয়ে নিজের আহারের বাবস্থা নিয়েছেন।

আর জেনেশ্রেছিন রায় যে বৃজ্জেনশরংচন্দ্র অযোরবার্র মৃত্যুর পর কিছুদিন
অরদাপ্রসাদ ভট্টাযোর বাড়ীতে ছিলেন-ঐ
কছু দিনটা যাদ দেড় মাসের মত হয়ভাহলেও বলা যেতে পারে, মণীন্দ্রনাথ
কলোপাধায় রেংলানে বিদ্যা হখন শরংচন্দ্রের যাঞ্জীতেই ছিলেন।

শরংচন্দের রেখ্যানের গিভিন্ন বংশার লেখা থেকে যেমন জানতে পারি অধাের-বাব্র মৃত্যুর সময় শরংচন্দ্র তার কাছেই ছিলেন তেমনি শ্রংচন্দের রেপানের বাধ-দের লেখা থেকেও বলতে পারি, কাছার-বাব্র মাতার পাই শরংচন্দ্র হাসপাতালৈও ছিলেন না বা হোটেলেও ছিলেন না। কারণ, হাব ভল-ভানিত হওয়ার বয়স হয়েছে যার পক্ষে শরংচন্দের রেজ্যানের তথ্য সংগ্রহ করা সহজ নয় যিনি নাথায় কিছাটা গোলগালেব বংশই একই ঘটনাকে ভিন্ন ভিনভাবে বংগ-ছেন, যিনি কোন দিন রেখ্যানে যান নি ভাগলপারবাসী সেই সারেদ্রনাথ গণেশ-পাধায়ের কথা অপেকা শরং১দের রেংগ্রনের ঘনিষ্ঠ বাধ্যদের কথা যে বিশ্বাস-যোগ্য একথা সকলেই স্বীকার করবেন।

এবার আবার অজিতবাব্র কথায় আসা

যাক। স্বেনগার্র বণিতি শংগংলুর

অসুস্থ হয়ে চনিনা হোটেলে থাকার কথাটা
এক ত অজিতবাব্ ইচ্ছা করেই গাদ

দিয়েছেন। শিবতীয়তঃ স্বেনধাব্র বণিত

যোনবাগিতে আজাত হয়ে লগংচন্দের খাস
স্তোল থাকার কথাটা যে ভূল আজিতবাব্

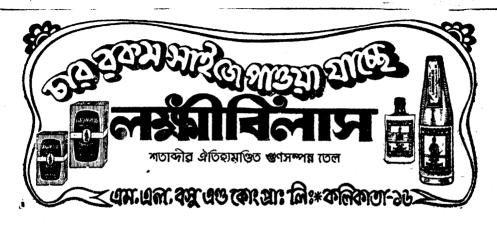
তা ত ধরতে পারলেনই না অধিকন্ত্

ঐ ভূলের উপরে নিজের আরও মনক্ত্

কথা দিয়ে শ্রংগণ্ডতে আরও হয় করলেন।

অজিত্বাৰ অংঘারবাৰকে বলেভেন---অমিত বলশালী, বিরাট দেহ বল্লক•স প্রেষ'। এ হেন কান্তর বাড়ীতে তার আগ্রিট ও পালিত, দূরে সম্পকের আত্মীয় কোন গরীব গলগুহ যুবক কথনই অতানত মদ্যাসত ও বেশ্যাসত হতে পারে না। তাই আনি নোগে হা বলৈছি সেই কথাই আবার বলছি--অঘোরবার যে প্রকৃতির মান্ত ছিলেন, তাতে তিমি শরং-চন্দ্রকে ঐর্প জানলে বাড়ী থেকে তাকে मृत करत प्रथम वा भार क्छ-नाशक नर. আছাড় মেরেই হয়ত একেবারে শ্রেষ করে দিতেন। অতএব এখন **বলা মেতে** भारत. স্বেনবাব্র ভূল বর্ণনার উপর ভিতি করে আজিতবাধুর ঐ বস্তব্যত সম্পূর্ণ অসতা।

(출자비:)





ক্রীভাহাত্তিক গবেষক ৫ ঔপন্যাসিক माम्बाह्तम् व वीत्मण्याः रमम वारमा व देशकारी काषाम कारत अन्य सहसा करनाकर **স্তুৰ্গান্তত ডঃ** সেনের এই স্কল গ্ৰহ দুকে ভুরসী প্রশংসাও করেছেন বহ ত স্থাজোচন। স্বাপেকা विकास আড়চতার বিষয় দীলেশচতের র্টনার বিশ্বস্থাকৰ বৈচিত্ৰা। তিনি যেমন বংগালাখা সাহিত্যর ইতিহাস রচনা করেছেন ভেম্ম কৃতিবাসী রামায়ণ ও কাশীদাসী **মধাভারত ও ব**চনা করেছেন। এতদবাত⁹ত লোক-সাহিত্যের উপর মৈমনসিংহ গীতিকা ভ প্রতিকার গাঁডিকার সংখ্যা বাংলার পারেনারী, সভী বেহুলো, ফালুরা প্রভতি অন্ধ্যালিও তার রচনার স্বাতন্ত্র বাস্ত করে। মোটের টেপর জাতীয় ঐতিহার উৎকর্য নিগ্রে তার অবদান চিরস্করণীয়।

ইতিপূৰ্বে ভিন্নপ্ৰসংগ্ৰে তার সম্পর্কে প্রান্দ্র মাধ্যে একবার আলোচিত **ছয়েছে। বন্ধামাণ সংখ্যা**য় ভবি একটি বিশেষ ধরনের বই যা স্ব'কালের নরনারী **তথা বিব্যাহত** নরনারীর প্রক্ষেত্রবশ্যপাঠ্য সে**ই প্রসংশ্যা এ**খানে আগ্ররা আলোটনা। **করব। এমন** একখানি সচিত্র বই দীনেশান্দ **য়ে জিখতে পারেন তা অনেকের কা**রেই আবিশ্বাস্য ছিল। বইখানির ন্ম 'গ্রেটী'। कशिकारात विथाए প: সতক-ব্যবসাধা গার্দাস চট্টোপাধায়ে এড সন্স কহ'ক ১৫২২ সালে এই গুৰুগ প্ৰথম প্ৰকাশিত **হয়। গ্রন্থখানির** প্রিশিক্টের মধ্যে তং-কালের কয়েকজন খ্যাতনালা ভাস্তার কবি-য়াঞ্চ ও বিশেষজ্ঞগণ কয়েকটি অন্যায়ে নবঞাত শিশ্বে প্রতি কতবি।, শিশ্পের পাঁড়া, ঔষধ, আকাশ্মক বিপদ ও সংগারের অবশা প্রয়োজনীয় নানাবিধ জ্ঞাত্ব্য বিষয় বিশেষ ষত্ন ও বিচক্ষণতার স্থেগ সংশিশট क्रंद्र भान।

এই গ্রাপেরে ভ্রিকায় দীদেশগুল লেখেন, বাড়ানি মেয়েদের ঘরকরণা স্থান্থ ক্তকগ্রিল উপদেশ দিতে ইচ্চা করিয়া এই প্ষতকের স্তুলাত করিয়ালিলায়, তথনত ইহা অন্তঃপ্রের সীমার বাহির ক্ষিয়া প্রকাশ করার স্থান্ত পাঁলি বাহির ক্ষিয়া প্রকাশ করার স্থান্ত পাঁলি বাহির গোল এবং ইহার অবয়ন দ্বালুর্নত একখানি বাহুর মত হইয়া গোল একল করেকজা করেকজা করেকজা করেক ক্রাভ্রে এই প্যান্তক প্রবাদি বাহির ক্রিয়াছি, শাস্ত ঘটিয়া শোলাকের ক্রিয়াছি, শাস্ত্র ঘটিয়া শোলাকের ক্রিয়াছি ক্রিয়া প্রান্তিরে ক্রিয়াছি

শৃহস্তীর স্চীপরের মধ্যে প্রধানতঃ
আমরা ধে পরিছেদগুলি পাই, ডা ইলগাঁহণী গৃহমুচাতে, দ্বী-শিক্ষা, শিক্ষা,
দিগের শিক্ষা, একামভুর পরিবার,
স্গাহণীর কডাবা, দাস-দাসীর প্রতি
বাবহার, গ্রেক্তনদের প্রতি বাবহার ও
অন্যান্য কথা, দাসপতা জীবন ও শেষের
কথা। অতঃশর বিভিন্ন রোগে, মুলতঃ
শিল্পান্ত আলপ্যাধি, হোচিত্রপাথি ও
কাবরাজী মতে চিকিৎসার বিষয়, ফ্রাইশারেকা, ভুডা ও কম্চারীদের বেডনের
হিসাব, ওজনের হিসাব ও সাংসারিক
আয়-বারের হিসাব এই গ্রেথের মধ্যে
স্চারব্রেপে সমিবিণ্ট হয়েছে।

দ নিশচন্দ্রের এই গ্রথখনি অধ্না দৃষ্প্রাপা হলেও, এককালে উপধ্পির এর করেকটি সংশ্বরণ প্রকাশিত হয় এবং একথা বলতে শিধা নেই য়ে, সম্প্রতিকালে ন্তন কোল সংশ্বরণ প্রকাশিত হলে চাইদার দিক থেকে প্রকাশকের দ্বিস্ভার বাবল হয়েন।

উদ্ধ গ্রন্থের দাশপত্য জীবনা শীর্ষক পরিচ্ছেদ্টির অংশবিশেষ আমরা এখানে আমাদের মা-বোনদের অবগাঁতির জনা এখানে প্রশ্ব মানুদ্রিত করে দিলাম।

।। দাংগত্য-জীৱন ।।

বিবাস জীবনের সর্বাপেক্সা বনে घटना। कारण विवाह गापा म्बामी ७ मधी স্থা বা অসুখা হন, এমত নহে-তাহা-দদর আজীগরা তহিনে সেই স্থ-দ্রেথের ভাগ পাইয়া থাকেন। বিবাহের পর কোন গ্রেড আন্তের্ড ছবির হাত গ্রেষ্টা দাঁডায়, কোণাও বা সমুদত দেনহুমানার চিতানল ত্রালয়া প্রেখনি স্বাথেরি একটা নর্ক হইয়া দাঁডায়। বিবাহের পর ছেলে ও মেয়ে হয়, ভাহাপের চরিত, ভাবী জীবন ও বাবহার অনেক প্রিয়াণে পিডায়াতার উপর নিভুরি করে। **সাত প**ুরু**ষ** পাৰেণ্ বংশের কোন বাজি বিবাহ করিয়া যে শ্ভাশ্যাভর স্বাণ্ট করিয়া গিয়াছিলেন এ প্রাণ্ডের সেই রংশ সেই ফলজেলগর তার এডায় নাই। আজ বিবাহের সন্নয় আলিগনায় যে শাঁথ বাজিয়া উঠিল, ভাহার ধ্রনি-প্রতিধ্রনি কভে যুগে চলিবে তাহার ইয়তা নাই।

এই ঘটনার স্রোভ যে কেন্দ্র হইতে ৰহিতে আৱন্ত কৰিল, সেই ব্যাপাৱকে শাুণা কৌভুক ও রজারসের বিষয় বলিয়া মান করা উচিত নহে: ইহা আতি গ্রেডর घটना। म्याभी भवीद ज्ञा माम्य कविरास्था এবং শ্রী শ্বামীর মুখখানি কেয়ন ভাহাই ভারিতেছেন, এই রূপ-লালসা অ্েক আদশ্ দাম্পতা-প্রেম মনে করেন। কিল্ড যিনি জীবনের স্থিমনী তার ষাহিরেব রংপের কথা ২া৪ বংসরের মধ্যে স্বামীর মন হইতে চাৰিয়া যাইবে, ভাঁহার চরিতের যে রূপ, তাহাই তথ্য ভারনার বিষয় হুইবে।... সংসারে প্রেরু আদর বেখাী ছব্যা উচিত। গুণবান ও গুণবতীর মিলন গুণহীন রুপ্রান ও রুপ্রতীর মিগম হইতে প্রোঠতর, ইহাতে সন্দেহ নাই।

ন্দ্রী সম্বন্ধে স্বামীর অনেক আশা-ভরসা থাকে, এবং স্বামী সদর্শের শূর্টার काम्मा अपूर्व विक तकस्मत आका स्थानवर्ष नहा संयोज मारे भाकतरे करेता भ वाहा-বাড়ি রক্ষের ধারণা থাকে, সেখানে **ऐक्टरबंध मन** क्रांकाबा बारेट भारत। দাম্পতা প্রেম ক্ষার ভিত্তির উপর দাভ করাইতে হইবে: কেবল তাজমহলের দ্বন্দ দেখিলে নিজের ক'ডে ঘরের উপর অপ্রশাস ভাৰ আসিতত পারে। কিন্তু আল্লানের এটা জানা উচিত হো, আমাদের স্বাস দেখিতা मःशात कता आधि **एल ना।** जामारम् ক'ডে ঘর হাদ সামান্য হয়, তব্ৰত সেই-খানেই আমাদের বাস করিতে ছইবে: বাশ ও বেতের বেডা না ভাগে। তাহাই দেখিঙে হউবে ততক্ষণ হাহারা সোনার থামের কল্পনা করিয়া দাঘা নিঃশ্বাস ত্যাগ করেন --ত'ভারা মোটেই সাখী ভাইতে পারিবেন

স্বামীই দ্বার স্বাপ্তকার অবলদ্বন। দ্বাহাণীর কথা, জুবী বেদি-কোরাণের মৃত মানিয়া চলিবেন, এইরপে কভকগালি চাণক্য-নীতি আমি প্রচার করিতেছি ন। কিন্তু হিন্দুর ঘরে যথন প্রামীর উপরেই ফাীর সাখ-দাঃখ সম্বাবিষয়েই নিভাব করে তখন তিনি ঠাকর-দেবতার স্থানীয় হইয়া আছেন সম্ভেত নাই। কিল্ড জীব-ত ঠাকরেব ব্যবহার খারাপ হটাল প্রভাবিক নিয়মেই স্থার শ্রুমা ক্রিয়া আসিতে পারে। প্রকৃত ভালবাসা কোন একটা বড় পদে বসিলেই দৌরাখ্য করিয়া আদায় করা যায় না। রাজক্তরে যিনি কসিয়াছেন, তিনি লোর করিয়া প্রজার সম্পশ্ব লইতে পারেন, কিন্তু একটা জায়গার উপন তাঁহার কোনই আধিকার থাকে না, তাহা প্রজার হৃদেয়, সে জিনিসটা সকল সময়ে সমুদত ক্ষতি ও ফুলাফুল অগ্রাহ্য কার্য়াও আখাদান কার্ত্ত অপ্ৰাকার করে।...

প্রষ্থ প্রবল, স্তরণ মনেক সময়
প্রামী অভ্যাচার কারতে পারেন, প্রী
প্রামীনা নহেন, সেই অভ্যাচারের হাও
ক্রেইবার জনা তিনি মিথ্যা কথার আগ্রেম
লাইতে পারেন; এই দুই-ই শ্বাভারিক।
লামীর অভ্যাচার ভাল নহে, শ্বনীর মিথ্যাচারণ্ড তদুপ্। প্রামীর মন ব্রিয়া ভাষার
অন্তল প্রথে প্রী চলিতে চেল্টা করিকেন,
যাদ কথানও পুল হয়, ভবে শ্বামীর নিকট
ভাষা গোপন করিবেন না: সভবেদিনা
মাদি শ্বামীর প্রথাতে পারেন, ভাষার সা
ভাজার তব্ বিশ্বাস, ভাষার ম্পে কুঠানাঘাত পভিবে।

স্থানি,কের একটা প্রধান কর্তা বাক্র-সংযম। দ্বানী যদি বিরক্ত বা ক্র্ম হটার কোন কথা বলেন, তবে দ্বামীর উত্তেজিত দ্বান্থা দেখিয়া দ্বীর নিরদ্ভ হওয়া উচিত। কেই যখন ক্র্ম হয়, তখন ডাহাকে ব্বাইতে সাওয়া নিজ্জা যখন খড় বহিতে থাকে, জখন বাধা দিলৈ উহা আরও স্কান্ধ হয়। স্ভারা দ্বা দ্বামী-দ্বী বালিকা নহে,—ক্রেছ কাহারও প্রতি যখন ভূশে হল—সেই সময় অপুর প্রেছর মৈর্গ অবসম্বনই শ্রেম্ব

মোটাম্টি ক্ষমা গালের উপরেই -সংলানের প্রতিত ও সম্ভাব স্থায়ী হটয়া शारकः न्त्रीरमाक न्याप्तीत नायकात नाष्ट्रता प्रित्र-व्यक्तिक्षिश्यः इहेर्द्यम् नाः शहा छ।व বলিয়া ব্ৰিয়াছেন, তাহা সংখ্যা লাখিতে কেবলই খ'্ৰাজ্বেন না, কাৰণ যত দোৰ খাজিবেন তত্ই পাইবেন। বেদেরা বেখান-সেখাল ছাত্তি সাপ বাহিত্ত কারে। সেই দোষগালৈ বাহির করিয়াও ছাতা লইরা৷ নাডাচাড়া করিয়া কি লাভ? ভারার শংশন-ক্রালায় নিকেরাই প্রতিয়া মরিবেন। যে সকল দোম-ম্থা দ্বালীর উপেক্ষা বা ভালবাসার চ্রাট--শা্ধ্র ক্রীরই কল্টের কারণ; সে সকল দোষ তিনি উপেঞা করিবেন, ভাহা দেখিয়াও দেখিবেন না। ভাহা লইয়া কলতের স্তিট করিলে সে নোহগুলি বাড়িয়া চলিবে। যাতা উপেক। ভিল ভাষা ঘাণায় পরিণত হইবে। ভাল-বাসার ভাধিষ্ঠাতী দেবী একেবারেই বস্ততা না, কেহ কহিয়া-বলিয়া ভালবাদেন কাহাকেও প্রেম শিখাইতে পারেন নাই। প্রামীর পাতি কর্লের তিনি নীর্রে করিয়া হাইবেন, কেহ ইন্ডা করিলৈ হাতে ৯০গ পাইতে পারেন না। ব্যামী হাদ সেরপ আদর না করেন, তবে ভগবানের আদরের ক্রনা লাল্যায়ত হাইবেন। তিনি প্রসায় ২ইলে হয়ত শ্বামী ধ্বীয় দোষ নি:জই ব্ৰাক্ষেক।

অনেক দ্বাী স্থিত্ধন্টিত। ব্যামীর চালবাসা যাদ মনের মৃত না পাল, তবেই সংদ্ধের কারণ উপাস্থত হয়। কিংপু সংদ্ধের ভাল নাই; কারণ, যাহাকে সংদ্ধু ব্যাহার চক্ষ্মীর কার না। সংদ্ধু অন্য তাহার চক্ষ্মীর কার না। সংদ্ধু অন্য তাহার চক্ষ্মীর স্থাত্বির । এইরাপে অনেক সম্য মাহা মিথা। বালয়া প্রমাণত হইতে পারে, সেই সকল আহ্মাণ উপাস্ত কারলে দ্বামী নিতা্দতই মুন্ধ ইইয়়। য়াইরেন। মার্দি বা কোনআংগ সেই স্থামী কিতা্দতই মুন্ধ ইইয়। য়াইরেন। মার্দি বা কোনআংগ সেই স্থামী কারনে সংস্কার অন্ত তাহার অন্ত তাহার মার্দিরেন। মার্দির বা কোনআংগ সেই স্থামী কারনে সংস্কার আর্থিক হার মান্ত বা কারনে আরক সংস্কারনা থাকে সংস্কারনা থাকের মান্ত বা আহ্বার বা কারিলে সে স্ক্তারনা থাকের মান্ত বা আহ্বার আরকের মান্ত বা আহ্বার মান্ত বা আহ্বার মান্ত বা আহ্বার মার্দ্ধের স্কারনে আরক স্কারনা থাকের মান্ত বা আহ্বার মান্ত বা মান

স্বামী সেন্ত্ৰপ ভালবাসেন, স্প্ৰীকৈ
মধ্যসম্ভৱ সেইব্লুপ চলিওে হুইবে: ৩০০
মদি ঠিক সম্পতি না হয়, তথাপি পতী যদি
ভাছাতে বিবন্ধির সহিত বাধা দেন, তুনে
অনেক সময় ৩০হা হুইতে আগ্ন জনলিয়
সংসারটি পর্টিড়া ছাড়খার করিবে। কোল কোন স্বামী অভ্যত রূপণ, তিনি সক্পই
মহা করিতে পানের, কেবল শায়ামিনের
অভ্যত্ত কুমুখ ও বিবন্ধ হু। নাহা মিতানত
দর্শরী ভাহা হুইতেও তিনি সংসাধিক
বিভিত্ত করিয়া রাখেন।...এখন কথা এই যে,
স্বামী যদি কৃপণ হন, তবে খারি কি কয়া
ভারা? প্রেই বলিয়াছি শ্রী বিবন্ধ
বা কুমুধ হুইয়া স্বামীকে বাধা দিলে

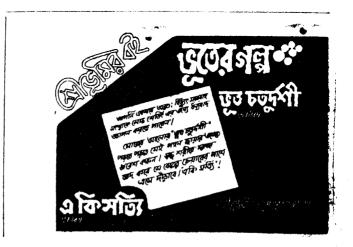
সংসারে নিতা-নিতাই কলছের স্নান্ট চইতে পাবে। চন্দ্রীর নিকাট ভারতে প্রাথশি। এই---চিত্তব ভান্ত-ভাষ্ণিং মনোর্মাং দেছি मातिनीय '- এখানে স্কেরী প্রীর জন্য কামনা নাট—তিনি ফোন আমার মনে প্রীতি জানাইতে পারেন, আমার মনের ভাব বের প ভালার প্রতি থেন তদন্ত্র হর, এই প্রাথানা। স্তরাং কুপণ প্রাম্বীর স্থাকৈ কাপ'লো খ্যাক্ষত হইতে ছইৰে-সংসারের সূপ ও গাঞ্চি যাহাতে থাকে.--ভালনা ভাষাকে সন্ধ্ৰিভোভাবে চেল্টা কবিতে হউৰে স্থামীর প্রতিক্ষে আচনগ ক্রায়য়া তিনি ভাষা কখনও করিতে পারিবেন নাঃ স্বামী যদি বোঝেন, স্থাী তাইছে অন্তর্ক,ল, তখন প্রণীত ফান্মবে এবং এই প্রণীতর करण भीरत भीरत भी स्वामीत कार्भाग সংখ্যোধন করিতে পারিবেন।

প্রামী যদি, চরিত্রান হল ইতা পারি পক্ষে সাংঘাতিক, সেই পরিবারের প্রাঞ্চ সংঘাতিক: কিন্তু বিপুদ প্রতিলে অবন্যই ভাজারক্ষার চেণ্টা করিতে ইইবে। থাঁহারা দিবারাহি এজন্য বির্ভিত বা ক্লোধ প্রকাশ করিবেন—ভাহার ফলে স্বামী কথনই (माधवादेखन ना। क्या वा भ्वाधीक क्र**ा**म ক্রিবার জন্য সরের নিকট নিন্দা প্রচার করেন। স্বালী-স্ত্রীর ভ্যাপারে বাহিরের লোক ভাছাস্থির ভিল্ল কিছু নহেন। স্ত্রী শ্বামীর নিশ্দা সাহিয়া এবং পরের সহান্ত্ ভতি আক্ষণ করিখা ধ্রামীর প্রেমণতে কবিতে পারিবেন না। বরং তিনি ভাঁচার মন হইতে ক্লেই দ্বে হাইয়া পড়িনেন। কোন কোন স্থা প্রামাণিক প্রতি করিবার জন্য অভিরিক চেণ্টায় নিজে অসংহত হইয়া প্রভেন। অসংব্রতের নিকট অসংযুদ্ -উহা আগানে ঘ্তাহ্তি মাত্র; উহাতে স্বাম্মীর চরি**রের দোষগ**্রান্স আরও বাড়াইয়া তলিবে। স্থার এ অবস্থায় তপ্সিরনীর মত হইয়া থাকা উচিত। আচারে ব্যবহারে সংযত হুট্যা স্বামীকে ক্ষেত্ৰে সহিত্ উপদেশ দেওয়া এবং আনা বাজি ভাহার

নিন্দা করিলে হ্যাসাধা তাহার দোৰ লাকিবার চেণ্টা করা--একলাত উপায় আমি জান।

কোন কোন স্বামীও অনেক সময় অব্যাহণ ক্রীকে সন্দেহ করেন হাচাব চিত্তবেশ প্রবল ও চরিত অতিবিদ্ধ পরিমাণে আগ্রহশীল ভাইার স্থী যদি ক্রকটা ট্রেপ্রভার ভার দেখান -- কবে চিনি হাসা দিয়াছেন, সেই পরিমাণে দেনত পান নাট বলিয়া ক্ষাব্য থাকেন। দ্বামীর সমেত নিবারণের একমার উপার, স্ত্রী স্বাম্যুর প্রতি বেশী মনোযোগ ও সেন্ড দেখাটবেন !... মিথাচরণ না করিয়া হার সম্ববিষয়ে খবালীর পুতি বেশী মনেযোগী হওয়া হায় ভবে হৰামী পতি হাইবেন। আনেত সমুৰ অপ্রের সেবার এবং স্বীয় উদাসীনভায় সময় বায় না করিয়া, যদি স্বামীর প্রতি যানে ও আদরে স্থাী আল্ডারিক আগ্রহ দেখান, ভাবে স্থামী বৈশী দিন সমিদত্ধ श्राक्टि भारतम् मा। अत्मद्धः रकाम अास्यव গুলোভন দেখাইয়া মান্ধকে বিপথে লইয়া যায় না যাঁচালে সন্দেহ করা হয় তিনিও ারপে কেশ প্রন-্যিনি সন্দেহ করেন ভিনিও সেইর্প। উভয়েই মনে মনে উহা ংইংত অবাহিছি লাভ করিতে ই**স্** করেন। প্রায়ার মনে হাদ এই কথাটা লওয়াইতে পারা যায় হয়, স্ত্রী সভা-সভাই তাহার অনারাগিন[্] ভবে সম্ভেত বেশীদিন িজিজ পারে না। ভাষা না **কবিষা স্চ**ী হলি অভিরিক্ত সাবধান ছইয়া লোককে ্যালাইতে থাকেন যে, তিনি ক**ত সাম্থানে** ১লাফেরা করেন **অথচ স্বান্নীয় সংস্কেহ** কিছুতে যায় না,—তাহাতে বিশেষ ফলোদয় হইবে না। তাঁহার হাদয় হটতে **উপেক্ষার** ভাব দার করিয়া প্রামীর প্রতি তিনি হেশী মনোযোগ দিন। তাহা হ**ইলে দেখিতে** পাই বেন তহিঃর *ক্*নহা**ম ভ-বহ**'ণে সংস্কৃত্র বিষ ধাইয়া গিয়াছে।

—**ক্ষপণ**ক





হেমনত শেষের সকাল। জানলার ফাঁক দিয়ে নকস্কাটা মিণ্টি রোদ এসে লাটিবে পড়েছে মাধবীর পারের পাডায়, কেরলর কাছে আর শাড়ীর আচলে। 🗈 সময়টা অংশ শীতের আমেজ তাই রেনেট্র ভালেটে লাগে। অঞ্জ স্কালেই বাবার চিঠি পেয়েছে। চিঠিখানা এবটা এবটা করে। পড়। কত কথা লেখেন বাবা ৷ মাধবী কেমন আছে স্বাধার বন্দ্রণাই। অত ঘনঘন হড়েছ কিনা। এছাড়াও কত খবর। মাধ্বীর পরিটা হোন কেথায় চলে গেছে শিউলির চারাটা আনক क्ष इसार्ष अनेत सार काल करेला। পঢ়াত কাট হয় अनुसही @क्अर्रश **সাধবার। ত**পুনক টাক, খনচ করে বারা ওকে এই হাসপাতালে রেখেছেন, বালাই থালি ওর জন্যে ভাবেন, মনে রেখেছেন **बाधवी नतम এक्**हा कारा दिल, त्य द्वारक्षक्रे—

কপালটো টিপ টিপ করে মাধ্বীর। লে জেলেটা 🍽 ? সে মেয়েটা কে? স্ব য়েন আবার এলোমেলো হয়ে যায়, তব, প্রবল চেণ্টায় নিজেকে বংশ আনতে চার ও। হাত দুখানা মেলে ধরে চোথের সামনে. নিজের বাহা ছাংল দেখে আলতো হাতে স্পূর্ম কাছটা ভারপর ্যন অপারণ হয়ে এক সময় নৃহাত মোচড়াতে शास्त्रः। भ्रतम् करणे छात्य जल कटम् शास् ধুকের মধ্যে একটা আর্ড পাখী যেন ডানা ঝাপটাতে থাবে। একটা পরে সমস্ত কণ্টটা গলে জল হ'য়ে দুচোৰ দিয়ে গডিয়ে মান্য আৰু ডাম্ড ভাৰসল মাধ্বী মাথ৷ বুথে সামনের ছোট টেবিলটার ওপর। একটা পরে দুখের **পলাস** সূত্রত নিয়ে অস্থবে আয়ে। এসে দেখনে সভেরো নশ্বর অসময়ে ঘ্রিয়ে পড়েছে। নু গালে শাুকনো গুচাথের জ্বলেব দাগ দেখে নাস্তি সানাবে সতেরো নন্তর আঞ্জ আবার কাঁদছিল।

সোদনত **কে'দেছিল মাধবী স**ুপ্তিয়র কাছে, মার কাছে দিদির কাছে। দিনি বলেছিল, ভোমার ছোট মেয়ের বিয়ে দাও মা, যে বয়েসের হা। সাত বছর বিয়ে হয়ে খুব গিলি হয়ে গিয়েছিল মালতী।

ভা সেই বিয়েৰ বাবস্থা ত হুংইই
বসেছিল। স্পিয় ধলত, কি বাপোর বলত,
ভোমার দেখছি কোন ভাড়াই নেই, আব
কাবকে মন দিয়েছ নাকি : অমায় বাপ্
সময় থাকতে নোটিস্ দিও। খ্য হাসি
খ্সামন্থ ছিল স্পিয়। সব কিছ্তেই
খালি হাসি ঠাটা।

— দিয়েছিই ত, তুমি এবার কেটে পঞ্ দেখি দুট্মোঁ করে বলত মাধবী। মূখু টিপে হাসলে গালে টোল পঞ্চ ওর। সুলিয় এবার শক্তহাতে চেপে ধ্বত ওর ডান হাতখানা।

—এই তোমার বাবাকে বলি এবার, গাড-ন্বরে বলত ও।

—আছো, আমি কে বলত ? হঠাং প্রশন করত মাধবী। — ভূমি আলার মাধ্বী, ওর হয়ত আর একটা চাপ দিত স্মুপ্রিয়।

— আমি মাধবা বিজ্ঞু সাধবী মানে

কি ? মাধবী মানে চিক কে ? হঠাং

স্থিয়ের চোথের দিকে লা-জত হায়ে হল

করে যেত ও। তারণর একটা থেমে যেন

কৈছিলতের ভিজ্জিতে বলত, জানো আমার

যেন কেমন সব মনে হয়—আমি কে, আমি
কেনল। থেকে এসেছি আমি মানে কি—আমি
চিক ব্যেতে পাবি না!

স্তিটে গোলমাল হয়ে মেত মাধবীর।
স্পুশ্র ওকে ভালোবাসে, ওকে বিয়ে করতে
চাম কিন্দু ও কে ভাত জানিতে চাম না,
ভাবেও না বোধহয় কখনও। মাধবীও ত
ব্যুত্ত পারে না ওব্ ভাবে। ভেবে ভোবে
কাত হয়ে এক সময় বানার ঘরে বিয়ের
গোঁডাও। কত বই বাবার ঘরে। বাবার পিঠ
গোগে চুপ করে দুর্ভিয়ে পাণত ও।

্কি মা, লিখতে তিখাংই বাবা প্রথম করতেন এক সময়।

---ছা'। বলা ?

— এছে। বাবা একট্ থামে মাধ্বী ছলি লোনো আমি কে সুমুখ তোপেন কৰে। একে এক পলকে দেখে নিয়ে কলেন, ভূমি নাধ্বী, আমার লফ্ষী মোখা।

কিল্পু বাবা, আমি কেন বৃশ্বতে
পারি না আমি কে, আমি মানে কি তুমি
ভামাকে ব্যিত্তর কলম আগে: থেমেছিপ,
এবার নামিয়ে রাখেন দশনের অধ্যাপক।
মেয়ের মুগ্রুব দিকে একটা সময় চেয়ে
১,কেন তার পর ধারে ধারে বলেন, এটা
কেন্তু কার্কে ব্যুক্তে দিকে পারে না মা,
এটা উপলাধের জিনিস, এ নিম্মে মান অধ্যা
মশাক্ত করো না। সময় যদি আসে হবে
একদিন ভূমি নিভেই এর উত্তর পেরে

থাকদিন ভূমি নিভেই এর উত্তর পেরে

স্বাধ্বা

স্বাধ

বাব্য কন্ত সহাজে ককে সাংখ্যা দিখেন সেদিন, কিন্তু সাধুৰী ত এত দিনেও দানিত পেলো না। আব বাত দিন কতনাল সে অপেকা কর্বে সেই এক দিনের জনান ও যে মার পাবছে না। কেইই তকে বোঝে না, ব্যুত্ত ছেলা করে না কেইই তকে বোঝে না, ব্যুত্ত ছেলা করে না কেইই তকে বোঝে না, ব্যুত্ত ছেলা করে না কেব ছাল। মা ভ্যু পায় করে না কেব মাকুলান করে দানি সাম্প্রা বাত করে মাকুলান মাধ্যা যাতে স্ব উচ্চ কথা কলে। গোলাপা বং-এর নত্ন কেনা তাত্তর গাড়ীখানা পরে সেদিন ভাব স্থুণ লাগছিল তকে। মূক্য স্থিধ তর খ্যু লাগছিল তকে। মূক্য স্থিধ তর খ্যু

—আমি স্কাৰ ? আমি ? আম্মার্টে যেন নিজেকেই প্রথম করেছিল। এই শানুহা তল পাললামী কি বৰছ—অসহিক্ষ্য সালিল ওব দ্যু কাম ধরে কাকানি দিয়েছিল জোকে। ওব নালী নালী লালা মুখেন দিকে চেয়ে ভয় প্রেছিল মাধবী ব্রুকের মুখে। সেই ছোটু পাখাটা যেন কেংলে উঠেছিল। ক্ষতন্ত্র। কেউ ব্যেম না বুৰতে চায় না।

দাপার গাড়িয়ে বিকেল হল। চল বাঁধতে লিয়ে হাত খেলে যায় আধ্বীর। আয়নার ছায়া পড়েছে। এত সান্দর ও। হত্তর চিবলে হাতেই বইল অবাক চোঝে চেয়ে থাকে মাধ্বী। এই कি आग्नि ? ও ফিস্ফিন করে বলে আক্সাল দিয়ে স্পর্ণ করে ওর ছায়াকে। আমি মানে কি ? এই চোথ এই ঠোঁট এই ছাত পা সব মিলে আমি ? শথে: এই আরু কিছু নয় ? তা যদি হয় তবে ম্যাহিকে পাই আগ্র 722 আহ্বা হৈছে ভটো ฮรัพธั ব্যৱ कामणात धारद्व अरम मुक्तिय भाषती। সংখ্য,খী 7150° दसारम সাইরে ম্পেগ্রালো কেমন ম্লান দেগায়। পেয়াবা গাছের ভালে দোল খাছে একটা টুনট্নি পাথী রাম্ভা দিয়ে হে'কে যাছে বাসন-ওয়ালা: সাবা পারিবী হলছে নিজেব ন্সিংত। কেন্দ্র মাথা হামাক্ষে না কেট জানতে চায় না শুধু মাধ্বী মরছে মাণ্য कर्ति। विक्छ ७८क छ ज्ञानरण्डे इरव ७३ उ নিশ্তার মেই এ প্রশেষর হাত থেকে।

— কিরে **কি হ**কছিস একা একা ?

अभिन्न रहारण हारा निमा

—আমি জানবই, জাগাকে জানততই হবে—জানলার গ্রাদ মুঠো করে চে.প ধরে ক্ষেম এক অপ্রান চোপে চাই মাধ্বী।

—মা. ভ্রম, শালগার একবার এটার্নক এস্ভ —ভ্রাত শোনায় মালভারি গ্রা ভারার দেখার মা মাধু কি পাগল হরে হাছে ? কেন্দ্র ফেলে মালভারী।

মাধবী কিল্পু তাবাক হয়ে যায় দিনির বালা দেখে। দিনিটা ভারী বোকা। মাও তেমান। কেন ওরাও ভাবে না। ওরাও ত ভাবলে পারে। স্থাই মিলে ভাবলে উত্রটা কবে বেরিয়ে হোত। মাধ্যী একনিন জিলোস করেছিল আছে। পিদি তুই কথ্যত ভাবিস তুই কৈ

—ক্রাম কে ? মালতী ভাষাক।

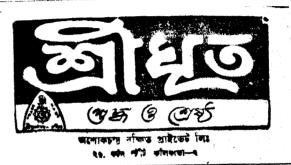
- ত্য়াঁ এই কে মাধৰী আলানিবত গ্ৰাম বলেছিল তুই মানে ত থালি ছোৱ এই হাত পালুলো শূৰু নয় এ ছাড়া---

্রি আবো-ভাবাল বকছিল, পাগল হলি নাকি ২ দমক দিয়েছিল দিদি সেধিন ভাবপর মাকে বলেছিল তব নিমে দাও না তোসার জায়াইও বলছিল তব ক্থাবাতী বাশু ভালো ঠেকছে না আনা। বাবা বলেজিনে মধ্যত ভাষ্ক
সক্তাবের মেষে, এবে স্বানিধ ব্রবে এনন ভেলেরই সম্পান করতে হবে। বিক্তু হায় র মাধবী নিজেই যে নিজকে ব্যুক্ত না হার কি ত্বে ব স্থিতত যদি ব্রুক্ত ভার । স্থায় বোকোনি। জনন হাসিম্পুনী মান্য শেষের দিকে মালি রার্ড সূত্র হ্যেজিস বলত মালা খারাপ হরেছে তামর তাই জনর উদ্ভট্ট ভিল্লান্যত সব পাসমিন্ন

এর পরত অনেব দিন এসেছিল সাঞ্জিয় শ্রুনো মথে বসে থাবত শ্রুলিয়া সচ্চারে। ভারপর আর আসেনি। স্ব<u>ং</u>র লভ সাপ্রিয়ত হাবিয়ে গেল মাধ্বীর হিসেব থেকে সুইল কেনল ও নিজে আর ক্রাকেন যাবা। বাবা এখনত আসেন মাসে অক্তেঃ ত্রকবার করে। তারেক ১ল পেকে গোছে ভাত প্রান্ত তাভ a.ঠার তব্ভাসের টিনি। €¢X155 চুপ করে সঙ্গে ହାର୍ଥ୍ୟକ୍ଷ कार दारशन भारति भाषाम् । ए**। स्थद स्मानहो**। চিকচিক করে দশানের অধ্যাপকের। আৰ্হিয় ভোকে কোন সভোষ্টেই করতে পারলান্ত্র না যা আমি বিভাট শৈমিনি ব্যক্তিনি ধে---

মাধ্বনৈ ব্রেব মধ্যে সে পার্থীট ভাষা বাপজীয় তার মুক্তবার কালা স্থান, বাব ধী শ্লাত পাল কাল পোড়ে শোনেন আর প্রথব গোনেন। বাবা এখন শ্লান অপেকাই ক্রেন কবে মাকু কালা উচ্চে মাবে পালীটা দ্র আকাশের ওপারে মেখাল পেকে ও ভারশেকে ভানিয়ে দেবে মাধ্বী কি মাধ্বী কে।







्रिक्किटिश्च बक्क अधुन्त्री छे**र**नव

সুরক্তীর্থ সংগাতি ও ন্তার্গ্রানর
ক্ষাক্ত হস্তুবা বর্ষপূর্ত উপলক্ষে রবীন্দ্র
ক্ষাক্ত ক্রিনির ক্রিনির

অনুষ্ঠানের স্ট্রা 'শায়া' দিয়ে।
বন্ধুসেনের ন্তাভিনয়ে সাদন গৃহ প্রণয়ের
ক্বনম্দিরতা এবং পোর্যদ্য'--উভর্
দিকটির প্রতিই আলোকপাত করেছেনপ্রশানতঃ কথাকাল আংগিকের ভিত্তিই।
ক্রামার ভূমিকায় পাল গৃহ তাল রাজনতাকার মতই দেহসোক্তর, নৃতালালতা ত
ক্রিকারির স্থ্যা দিয়ে শ্যামার ভাবান্তর,
ক্রেদ্র ও হ্রাম্যবেদনার ছবিখান হয়ে
ক্রিঠিছলেন।

আন্ধান উন্তর্গীর ? লাগিব আন্ধান্য রুপ্টির
মাধুর্থে ছবা তার কর্ণ-কোমলা
ম্থার্থ প্রতিফলন ঘটেছিলো স্বাদাশি
মাধ্যের করেক মাহত্তের না্ত্যমাঞ্চনায়। না্ত্যদক্ষ সিবলংকাম (কোটাল),
মট্য পালা (বংধা) না্ত্যাকোর সহায়ক হয়ে ভঠেন। বাজার ভূমিকায়





নিতাই ঘোষ মানানসই। প্রথম দ্ব্রে রাজ-সভায় ভারতনাটামের অবতারণায় নতুনত্ব স্ক্তির স্থানে পরিলক্ষিত কিবতু দ্বতিক দ্বির সামনে পরিবেশত ক্তি স্বভাবতই রাজার দ্বিলা বাইরে থেকে যায় (যিদ সামনাসামান নাচ দেখাকেই সঠিক দ্বিত-কোল বলে ধরা হয়)। এক্ষেতে রাজসভায় নৃত্য-দ্বোর কোনো অর্থ রাইলো কি?

বক্সসেনের গান গান্তরার দায়ি ব্যান্থার বিভাবে পালন ক্সেছেন্ন দ্বজেন মুখেন পাধায়। উত্তীয়ের গানগালির আবেগঢ়ালা পরিবেশনায় মুখ্যার স্থানি ক্রছেন চিন্মন্ন চট্টোপাবায়। জাবন-পাত উচ্ছালয়ার গভার বাজনার পদাই 'প্রহরী এগো প্রহরী-বিশ্ব অপ্রাধ্য সাজার অভিনয়ের মুধ্যেও স্ক্রো বেশনার রেখাটি জিল্পীয় প্রকাশভাগতে অনভেত।

কোটালের কয়েকটি গানেই উপভোগ্য পরিবেশ রচনা করেছেন দেববত বিশ্বাস। বন্ধার গানগুলি অমিয়াংশ্য মুখাজির কঠে স্যা-পানবেশিত।

কিন্তু অবাক করে দ্বিয়েছেন বাণী ঠাকুর দ্যামার গানে। বে-গানে ক গকার ইতিহাস রচনা করেছেন বললেও অভুটি হয় না, সে-গান তার উত্তরসংগ্রী হিসেবে বাণী ঠাকুর গাইতে সাহস কবেছেন এবং গোরে রসিকজনের প্রদাহসা আদায় করে নিয়েছেন-এ-থবর নিশ্চমই আনন্দের। তোমাদের এ কি দ্যাহিত' অথবা তেমার কাছে দোম করি নাই—দোষী আম বিধাতার করেছেন। উচ্চাংগ সংগতি দ্বিয়াণী পাল এবং নৃত্য-প্রিদশ্লে ছিলেন শ্রীম্বাতী বেলা অর্থ।

চিতাজাদা এবং বিদায় অভ্যান ক্ষবনে প্রচিত কচ ও দেববানী দাটি নৃত্যাক্তিই নায়কের ভূমিকায় ছিলেন সাধন সাহা। প্রোমক ও ক্ষতিয় খোণ্যা অজ্বা এবং কথেবানিন্দ ও ক্ষতিয় ছিলেন প্রতির নিশ্চে বর্দ্ধ। অনানা ভূমিকায় ছিলেন প্রতির নিশ্চে বর্দ্ধ। আনানা ভূমিকায় ছিলেন প্রতির নিশ্চা ক্ষতার পরিচয় দিয়েছেন সংয্তা ঘোষ চিনন্ধা গোশ্বামী কৃষ্ণা কর ও সোমাদ্র সেন (বড় ও ছোট দেবধানী) মধ্নী দাস।

কুল্পা ও স্ব্ৰুপা উভর চিতাপাদার গানেই দেতু গ্হঠাকুরতার মানুদকঠ কথনও বিক্ষায়ে মহার, কখনও রাপরিস্কৃতার বেদনায় কাতব, আবার রাপসম্ম্ম দোলপায় কাতব, আবার রাপসম্ম্ম দোলপায়ার ক্ষালকতায় বিষয়। সাবা প্রেক্ষা-ছেল। অভানে ভালনায় সত্তথ হারে-ছিলা। অভানে ভালনার গানে বাই সেন সোলব ক অখা। চ্যালনার।

4 634

কোটালের গানে যে দেব্রত বিশ্বাস ছিলেন শ্রুমাত কৌতুক রসপ্রভা সেই একই শিল্পী কটের গানের মনোহর-লালিতা স্থিত কলেছেন ব্বি তার বহুমাখীন প্রকাশক্ষমতার উল্লেখন নজীব রাখতে। দেব্রত বিশ্বাস এক্ষেত্রে স্টিট শ্বিতীয়রহিত।

দেব্যানীর প্রতিশোধ-কঠোর, অসহায়-কাতর দুটি দিকং গানে গানে মতে করে তোলেন স্থিতা সেন ভ বাণী ঠাকুর।

শ্র ও ছলে কিশেন কচের র্পস্টি করেন অর্থা সেন ও সংসীপ বল্দোপায়ায়। রাগ্সশ্যীত পরিবেশনায় কিলেন প্রস্কুর বলেনাপাধায়।

গানের ফাঁকগুলি রবাঁন্দ্রনাথের অন্পম সংলাপালাবণ্য ভবে দিয়েছেন পার্থ ঘোষ ও গোনা ঘোষ। ন্তাপ রচালনার কৃতিছ অসিত চট্টোশাধ্যায়ের। আলোকের দায়েছ দ্বাহিত হয়েছে কনিংক সেনের কালে।

প_রঞ্জার সন্ধ্ৰিতা असभारमध्य শুভাকরী : ১৯৭৪ সালে মাাগসেসে পাুরস্কারভূষিতা হলেন শ্রীমতী এম. এস. শাভিলক্ষ্যী। দেশ ও সমাজের নানান কল্যাণ্ম লক কাজে ইনি বহুবারই দশ লক্ষাধিক ছাবিশ্নী ডলার সংগ্রহ করে ্দ্রেছেন ভিন্তুস্থানী ন দক্ষিণী উচ্চাঞ্য সন্দারীতের এবং ভজনের অনুষ্ঠান দিয়ে। ট্রাপ্ট বোড জানগ্রেছেন স্বাধারণের হিতাথে ছাড়াও হাসপাতাল অনাথ বিন্যালয়, সম্পতি ও সাংবাদিক প্রতিভটান নিম্পাণাধে এবং মহাখ্যাজীর স্ত্রীর প্রতি সম্মান প্রদর্শনাথে পাঁচট একক সংগীতের অনুন্ঠানে অংশ গ্রহণ করেছেন। মহাত্মাজীর ৭৮৩ম জন্মদিনে (তাঁর মৃত্যুর কিছু আগে) শ্রীমতী শ্ভলক্ষ্যী তারই ইচ্ছেয় বিশেষ-ভাবে তাঁগই জনা ভজন গেয়েছেন। স্বৰ্গত স্বোজনী নাইডর ভাষায় শ্ভেপকাী গোলেডন ভয়েস্ ইজ আন ই-স্ট্রেন্ট অফ গ্রেট কজ'। শ্রীমতী ম*্ভিলক*্যুবি প্রস্কারপ্রাগ্ডিতে সেই মহত্তই সম্মানিত হয়েছে।

—हिवाध्शना

শ্রেক্ষাগৃহ

লাম্প্রতিক হিন্দী ছবিতে বিদেশী ছবির প্রভাব

কলকাতায় ম, জিপ্তাপত সাম্প্রতিক হিন্দা ছবিগুলির পর্যালোচনা করলে দেখা যায়, অধকাংশ ছবেতে বদেশী ছবিব প্রজাব আছে। কোষাও আংশক আবার কোষাও প্রোপশুলা। একমার বাতিক্রম হিসাবে ভি শান্তারামের গণিক্রণা, আনহা গালাগুলীর কোরা কাগজ্ঞা, ওপন সিংহের স্মালনা। অলোক রায়ের 'চোর মাটারে শোর'কে একটি প্রছেম হাসির ছবি সোবে মেনে নিলেও এ ছবিতে হেভাবে কাইম ও ভারোক্রেশ-এর দ্শাবিশা পরিব্রেশিক হ্রেছে, সেটা বিদেশ থেকে ধার করা বললে অড্যক্তি হবে না।

নলেন্দ্র বেদীর 'থোটে সিক্তে' ছবিটি रम्थवात नर्द्व धातना हिन् स्य बहा आत একটি ব্যাপ্ক ডাকাতি ছবির ভারতীয় সংস্করণ। কিন্তু দেখতে গিল্পে একে একে মমে পড়লো ক্লিণ্ট ইন্টউড অভিনীত একাধিক ছবির কথা। যেমন 'ফিউ **ডলা**রস য়োর, 'দি গুড ব্যাড আগলী' প্রভৃতি। এছাড়া আংশিক এ ছবির পরিচালক অনু-প্রেরণা পেয়েছেন একটি জাপানী ভাব থেকে প্রেছেন সাম্রোই' (ভারতের আন্তর্জাতিক চলচ্চিত্রোংসবে প্রদৃষ্ণিত। পরিচালক ছিলেন কুরোশোয়া এবং বিশিষ্ট ছবিত্রে অভিনয় করেছিলেন তোশিরে। মিফুনে। 'থোটে সিক্কে' ছবির নায়ক ফিবেন খান না হতে পেরেছেন ক্লিণ্ট ইণ্টউড না পেরেছেন ত্যোশিরো মিফানে, শুধু বার্থ ারা হিশ্দী অন্কল্পণে ক্লান্ত হয়েছেন। ছবিতে আকশন দেখতে চান ক্ষিপ্রগতিতে তারা হয়তো দলে দলে ভিড় কথবেন। আর অতিরিকু আকর্ষণ রেহানা সুলতান, যদিও ও'কে কেবল কয়েকটি দ্শোই দেখ। গেছে।

মদন চিনহা আলোকচিত্তাহক অর্থ^নং ক্যামেরাম্যান হিসাবে কলকাতায় বিখ্যাত



কীজন অলক প্রিচালনা ঃ দিলীপ মস্

শিষরা সম্খ্যা / শ্রীক্লমলাগ্র



রালী **ষ্টর জানী** জয় লালতা / জনিল গাওয়ান



ছরেছেন, তাঁর গিলিম ছবির কাজের মধামে। তার প্রথম প্রিচাজের ছবি উমতিহানা দেখেরে গিয়ে মনে হয়েছিল রি টল ছবি টা, সামে উট্থ লছ্ডার ভারতীয় সংস্করণ। অন্তর্গকে নায়ক ও জ্বনায়িকার চনিত্র স্টের সংস্থাবিদেশ্বী

ছবির মিল দলেক্যি নর। ছবির শেবে
গরেওলক সংবাদিকদের বললেন উনি
ক্রিভিতান ছবির অনুপ্রেরণা পেরেছেন
ভিনাট বিদেশী ছবি বেকে। সেগুলোহল টা
মার উইথ লভা অকুপেশানাল হ্যাজার্জা
এবং ওয়াকিং শিক্তা। অধ্যাশকে সরিপ্র

এসেছে টা সার উইথ লভা থেকে কিলাং চ⁶রত 'অক্সেশানাল জ্যাজ্যাড়⁶ ফেরাসী ছবিটি ভালতার আশ্রক্তাতিক চলচ্চিলেছ-সবে প্রদৃশি ১) এবং তম জান চরিছ কৈ ও করা হয়েছে 'ভ্রয়াকিং স্টিক' **থে**কে। কিন্ত আমা মনে ক্রয় অধ্যাপক ছাড়াও উনি ঐ ছালরই সাল্য অভিনীত চারর থেকে প্রকার চরির স্থিট ক্লেছন। ফ্রাসী ছ'বটি না দেখায় প্রিচালকের ব্রহ্বা সম্পর্কে মণ্ডবা করতে পার্বাচ না উনি ইচ্ছা কবলে ্তানকে না করে ছাত 🛞 মধ্যপ্রদের সম্প্রক দেখিয়ে আলে এফ ট ব সংগ্ৰু বাস্ত্ৰ ছবি তৈরি করতে পারতেন। সম্পূ**ণ** মহিন্দের গৃহীত আলোকচিত্রচুল বিশেষ ব্রে শরিকেশান্যায়ী গ্রন্তের প্রবৃত্তনের দুশাগ^{্ল}ল বিশারকর। কাহিনীর অবাস্ত-বতার জনে। উন সাথকি ছবি করতে কথে। E (MA)

ভাবণক্মাবের ভাবস ছবিটিত একাধিক হলিউডের ছবল বাহ' খন্করণ। এক মোহময়ী বিবাহতা ব্যাণী, স্বামীর কাছ থেকে কামনা-আসমার পারত্তিত মা পেয়ে সালের সাবেশা তর্গদের দেখলের ভালের সংগ পাবানু জানো নিজেকে ভংগগা করতে একটাভ সময় নিতেন ন।। এবা**নেই** পরি-চালক একটা কৈছু বলবার চেণ্টা করেছেন। কিন্তু পরে উনে গ্রন্থাতক ভিন্দী ছবির মতে। জাহুম নরে এসেছেন বৃক্স আফসের জনা। সংখ্যে নাড। গতি কাবারে এবং খেনাবেদন, অথাং ভারতীয় পদ্ধিবেশে অকাট মাকিন ছব প্রবেশত তভেছ। ছাবতে গিমিক ছাড়া আর কিছাই নেই। আর বেণ্দু ছাড়া আভনয়ে নিত সিং অনল ধাওয়ান সবাই বার্থ বলা চলে।

আজ বন্ধেতে স্বলত বিমল রায়ের মতো পার্থচাপকের প্ররেজন আছে। সম্প্রত শ্রীমতী মনোবীণা রত্ম (১৭মল রায়ের পদ্মী) এক সাংবাদিক সম্মেলনে জানালেন বিমল-বাবুর শাুরু করা টেডালাঁ' (আখাপ্শা দেবার ভাড়প্র' অবলম্বনে রাজে) বতমানে পাংচালনা কাছেন হুৰ্নিকেশ মুখাজি। ছ বর ।শৃল্পী ধ্রেশ্দ্র সায়ুরাবান, এবং অন্যান্যর কোনে। প্রারম্ভাত্মক নিক্ষেন সংগীতপারচালক লক্ষ্মীক স্ত প্যারেলাল এবং নেপথ্য শিল্পী লভা মুজেশকারও কোনো পারিশ্রমিক নিচ্ছেন ন। ভবিষাতে কো-অপারোটভ প্রথায় আরো পাত্রছল হণ্দী ছবি প্রবোজনা করার ইচ্ছা আছে শ্রমতী রায়ের। সম্ভব হলে কলক তায় তিনি বিমল রায়ের প্রনো সব ছবি নিয়ে এক পরিবেশন সংস্থা গড়ে তুলবেন।



এখানে উত্তমক্ষারকে চুমিকায় দেখা যাছে। ডাক্তার স্থের। মাবেকজন ডাঞার আছেন প্রশাণত আনিল নেটুপাধ্যায়। এ'দের দ্বন্ধর প্র ডঃ সে<u>ু তর্ণকুমারও উপাস্থত: বলজে গেলে</u> মাজ নিউ থিয়েটাস্ এক নম্বর স্ট্রডিওর এই ফ্রোরে ভারারদের ছড়াছ'ড়। সেণাই ুব স্বাভাবিক। কেননা সেট পড়েছে একটি নাসিংস্ভোগের— লাবেশ্স নাসিংহোম। এখনই এর ইনা-্রেশন হয়েছে।ডঃ বাস; সুস্কুীক এসেছেন ছজিট করতে। ড'ার প্রথম কথাই হচ্ছে নরেক্স নাসিংহোম বাঃ বেশ চমংকার নাম চা। জনৈক ডাঃ মৈত্র বলেন, জানো প্রশানত নাইটেঙ্গলের মধ্যে মা<u>র</u> দ**ুটি** ।ক্ষর লক্ষা করবার মতো এফ আর এন নে ফেম আর নেম—উনি প্রচার চার্নান।

তোষাদের আদর্শ বেন ঐ হয়। আদর্শের কথা থায়িরে ডাঃ বাস্ বঙ্গদেন, ওসব কথা শুনতে ভাষা বাস্তবে ওর কোন মুল্য নেই।

প্রশাস্ত: ঠিক বলেছেন স্যার।

প্রশানত মনে মনে খুব খুশী হয়। ও'র মানসিকতা বিশেষ আদুশেরি ধার ধারে না। লক্ষা টাকা রোজগার করা। যেভাবেই হোক। বিলেভ থেকে ফিরে এসে প্রশাস্ত কেমন খেন বদলে গেছে। স্থারের মনে পড়ে ফেলে আসা দিনগ্রেলার কথা। মৃহুতে সে ফিরে যায় অতীতে। সেই তার অন্ধকার জীবনে ৷ সুখীর তলিয়ে যাছিল। অলপ বয়সেই সে আলোর নিশানা হারিয়ে ফের্লেছিল। পাড়ার নাম করা গুল্ডা গোকুলের দলে গিয়ে ভিডেছিল। একবার এক ছবির ঘটনায় গোকুলকে সাহায্য ক্যার ব্যাপারে সুধীরের জেল হয়ে গেল। তাকে স্থানাস্তরিত করা হল। সাধারণ জেল এ নয় বহরমপুরের রিফরমেট্রীতে ছেখানে এই বরেসী ছেলেদের শোধরানো হয় অথবং শোধরাবার স্বযোগ দেওয়া হয়। ঘটনাচঞ্



স্থেন্-স্থিতা/জন্জানে মেছমান প্রিচালনা : জানেশ ম্থাতি



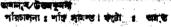


পাণ্থনিবাস পরিচালনা : মিঠু চাটাজি



भूदकम् हाडीक

শ্বশীর এলে পেনে গেল ভার স্থান্তবন্ধ প্রশাস্তকে। তার বাবা মাকে। সাক্ষায় যাৰ আড়াল করল সুধীর প্রশানতর বাবা এই জেলের স্পারিন্টেডেফট স্মেছের দ্ভিটেছ দেখলেন। প্রশাস্ত আর স্থারকে আলোদা করে ভারকেন না তিনি। স্বা হল স্থীরের নতুন জীবনে উত্রণ। সুখীরকৈ মান্ত করার সমশ্ত দায়িত্ব কাঁধে নিকোন দ্বীপেত্র-বাব, প্রশাস্তর বাবা। প্রশাস্ত আর সুধ্রীর একস্থেগ বড় হল। একস্পে ডাক্টারী পাশ করল। আগ্রায় বেড়াতে গিয়ে দ্রুলেই প্রেয়ে পড়েছিল। উভয়েই আকৃণ্ট হয়েছিল চন্দ্রাণীর প্রতি। চন্দ্রানীর বেশী ভালো লেগেহিল উচ্চল প্রকৃতির স্থীরকে। স্থীর টের পার প্রশাশতর দার্বপত্য নিজেকে স্বিয়োনেয় সে। শেষে চন্দ্রনীর সংগ্ প্রশাশতর বিয়ে হয়। বিরের পর প্রশাশতর বাৰা দক্ৰনকেই বিলেতে পাঠাতে চাইলেন। স্থীর এ'দের কাছে আর ঋণী হতে চায় ना। किছ, जकाण ग्रांड थाला करत स्म অবাহতি পেল। প্রশাস্তকে হেতেই হল।





প্রশাহত চলে যাবার পর দীশেতনবার মার।
গেলেন। তার ইল্লে অনুসারে শেহ প্রথিত
স্বারকেও বিলেত যেতে হল: বিলেত
থেকে একসংগে ফিরে এল সুই বলা।
এবার কি করা যায় কি এরা যায়—এই
ডেবে একটা আধুনিক নাসিশহাম খোলার
পরিকংপনা করল প্রশাহত।

র্পায়ণ তো হল। তারপার তারপার গলেপ প্রচণ্ড মোচড়। আদৃশোর বিরোধ। টানার প্রয়োজন অসবীনার করে না সাবীর কিণ্ডু প্রশাসতর মানাতিরিক লোভ আর আতি বাবসাধী মনোবাতির প্রতিবাদ জানায়। এর মধ্যে আবার দৈরেয়ীর আগ্যান ডাঃ বাসরে যাবতী স্থা। ভাঃ বাস্ব আগাধ টাকা পরাসা হৈরোধীর অর্থা গিপাসা মৈটাতে পর্যাণত বটে কিন্তু তার মত দেহসর্বাদ্ন নারী স্থাবির মতে। গাঁড সম্থা ছেলোকই খাজে নেবে এতে আর আদ্যা দিনেব পরা কিন নিব্যুত অভিনার করতে থাকে স্থার। অপেকা শাধ্য উপায়্ভ স্থোগের। অবশেষে সুযোগ এল আর সেই চরম টোরেয়ী বাসরে মুখোস টেনেম্ছ্রের্ড খ্লে ফেলে দেয় স্থীর।

মেরেয়ীর চরিতে র্শ্দান করেছেন
আরতি ভট্টাহাঁ। দেখলাম তিনি ত'ল
চাহাুনিতে কথা বলার ভাগতে এমন সাুদ্র
একটা ব্যক্তি বজার রাখছেন হাতে ত'লব
প্রতি মুহুতে জন্দেট বলে হ্য। চরিত
এইটাই ডিমান্ড করছে। ছোটু হলেও
চরিত্র যে কতখানি স্বুড্পার্ণ ডা সহজেই
অন্ধেয়া ডাঃ বাস্ এই চরিতে তর্শকুমার
নতঃস্মৃত্ত অভিনয় করছেন ত'লর চোথে
মুখে কথা বলার প্রেটাছের ছাল যেট
দরকার সহজেই ফ্টো উঠছে। স্থার এবং
প্রশান্তর ছ্মিকায় যথাক্তমে উত্মকুমার ও
অনিল চট্টোপাধ্যায় সন্পর্কে বলার চিত্র
নেই। এ ছবির নায়িকা চন্দ্রনীর
ভূমিকায় কাকেরী বস্থা।

আশ্তোষ মুখোশাধারের কিলা আছি সে ও স্থা। ব্রক্তি চিচনাটো পরি-চালনা করছেন প্রবীণ কুশলী মুকল নিমিত হচ্ছে। এস ডিব এস হচ্চেন শ্যামল মিত এবং ডি ব্রীপেন ভট্টাচার। বলা বাহ্নের ও ছবিব পাতি পরিচালক শ্যামল মিদ্র। গান থাকছে মাদ্র দুটি। একটি গেয়েছেন শ্রীমিদ্র নিজে অন্যাট হৈমুখ্য শুকা।

জোরজবরদৃষ্টি করে বিয়ে দিয়ে দেয় এই ভয়ে রঞ্জিত মল্লিক বাড়ি থেকে পালিয়েছেন। ব্যক্তিগত জীবনে এটা ঘটলে খবরের হেড লাইন হতে পারত কিল্টু না দোট হচ্ছে না। কার্ণ্ তিনি পালিরেছেন <u> প্রেফ 'রাগ অন্রোগ' ছবির নায়ক শংকর</u> रमत्त्रत **त्रामन्छा**रा। साहक **गादक ३ वर्ष्टै।** মিণ্টি মিণ্টি পান পায়। মেয়েয়া খনে পছক করে। তার মানেই তার বথেত পশ্লারিটি আছে। এ হেন শংকর সেন বিনা টিকিটে রেলে চেপে বঙ্গল। ভাও আবার ফার্ট ব্লাশে। কোনক্রমে ঠাই মিলল: এই কামরার চলেছেন এক এস্টেট রাজকুমারী। সৈ শংকর সেন্ত্ৰ চাক্ষ দৈখেনি অঘচ গানে পাগল। সেটা বোঝা গেল কথোপকথনে এবং টেশ ব্রেকড'ব্রে শংকর সেনের গান বাজবার পর। শ্বের নিজের নামটা বেমাল্ম চেপে



গেল। ট্রেন পথে ভালই কাটল। শংকরকে বিপদে পড়তে হল না। বিপদে পড়তে হল কালিংম্পং শহরে এসে। বন্ধ্র বর্ণের কাছে এসেছে সে! বিস্তারিত বলেছে। আর হায় কোথায়। বর্ণ এস্টেটের খবর নিয়ে আসে। গিয়ে সব রহসা ফ'াস করে দিতে চাহা। শংকর ওকে প্রাণপণে বাধা দেয়। একটা মজা করা যাক এইভাবে শংকর রাজকুমারীর কাছে বর্ণকে শংকর সেন নামে চালিছে দেয়। থাজিজল তাঁতী তাঁত বুনে...বরুণের মহা ঝামেলা হয়েছে। যখন তখন নাজ-কুমারী ডেকে পাঠায়। কত মধ্যে কথা বলে। বরুণ ক্রমশ নাভাস হয়। একদিন তো সংজ্ঞা হারাবার উপক্রম হেদিন রাজক্মারী নাছোড়বাল্য শংকর সেনকে এখনই একটা গান গাইতে হবে। কোনরকমে পাশ কার্টিয়ে সেদিনের মতো ছাড়া পেল বর্ণ। কিন্তু গান তো শোনাতেই হবে। রাজকুমার**ি**কে ইনভাইট করা হল। সমুশ্ত ব্যবস্থা পাকা। পদার আড়ালে একটা টেপ রেকডার রাখা হল। ইতিমধ্যে অনেক বারুরিহাস্থিল হয়ে গিয়েছে। বর্ণ রেভি। গলাটা একট- ঝেড়ে একট্ কেশে ঠিকঠাক কৰে সে আস্ম লড়াইর জনা রীতিমত প্রস্কুত।

রাজকুমারী এসে গেলেন। যথানিগিতি
পথানে বসলেন। ঠিক সময়মত ঘড়ি ধরে
টেপ রেকডার চালা হল। বর্ণ সাংস্বভাবে
লিপ দিতে থাকে। হঠাং কেথা থেকে কি
হরে গোল। টেপ রেকডার বেগড়বং।ই শ্রে
করল। এখন কি হবে? কি করে
ম্যানেজ করা বাবে? এ যে বেখছি হাটে
হাছি ভেশে বাবে...

হাটে হ'ডি ভেখেগ দিলেন অপ'ণা সেন রাজকমারীর বেশে। হোমন কাহিনীকার প্রাক বলেন্যাপাধ্যায় চিত্রনটাল কার শেখর চট্টোপ্রায়া এবং চিপ্রশিলপী দীনেন প্রশৃত। হার্নিস আর পানে ভরা এ ছবির অন্যান্য চরিতের শিল্পীদের মধ্যে আছেন অন্পুকুমার (বর্ণ) স্থামন্তা মানুখোপাধ্যায় শেখর চট্টোপাধ্যায় গ্রুত কণিকা মজ্মদার রত্যা ঘোষাল চিক্ময় রায় এবং রবি ঘোষ। ইন্দুপ_রী **৮ট্রাডণ্ডতে এ ছবির শর্টিং দ্রতে এ**গিয়ে **ध्रम्मार्ह्म प्राप्तथात्वक श्रद्ध श्रीत**हासक अपनावत्स কালিংম্পং শহরে। সোনালী প্রোডাকস্পের ব্যানারে নিমিতি হচ্ছে এ ছবি। স্পতি পরিচালনা করছেন হেম্বত মুখোপাধারে। ছখানা গান রেক্ড' করা হয়ে গিয়েছে। কল্ঠদান করেছেন আরতি মুখোপাধ্যায় এবং সংগীত পরিচালক স্বয়ং ৷

—ন্ট্ৰডিও সংবাদদাতা

সম্প্ৰতি প্ৰকাশিত হয়েছে

বর্ষ পঞ্জী ১৩৮১

(२४म वर्ष छलएइ)

দেশ-বিদেশের সকল তথ্যে প্র্ অভিনয় বাংলা 'ইবার-বৃক্ত'

চলতি দ্নিয়ার সংগ্র ঘনিত সম্পর্ক রাথতে হলে বর্ষপঞ্জী চাই-ই। শিক্ষত পরিবার, গ্রন্থাগার ও শিক্ষা প্রতিত্ঠাদ-সম্বের পক্ষে বর্ষপঞ্জী অপরিহার্য। ৮০০ প্রেটা, মুলা ১২ টাকা ৫০ পঃ, ভিপি থবচ স্বতক্ষা।

এস আর সেনগ[্]ত অ্যান্ড কোং ৩^৫/এ, গোয়াবাগান সেন, কলকাডা—৬



रवान्याहे किल्प्रस् रापुरा

জারতভর্ক জাড়াক বাজি এখন শিশারাও কাৰে কোৰাছে। সেবাবত প্ৰায় একই গ্ৰহ কটেন। সামা মানে মহাত্তলের সংক্রে বিশ্ হ্র হর। রূপ তেরা মুখ্তানার শাটিং প্রতিষ্ঠ তথ্য। মগ্র স্থের ছবিতে এগটা ক্ষাংখ্যাতক ইণিট্যেট দি)কাংগ্ৰু ছিল। এই সৰ ভাগোয়ে যদি কিছু বৰা যায়। 🖷 ভিত আথ্যে ফট করে ব্যাপি থেকে গেক। শুর তপন বাজার খ্যুব মানা। মাম্যুকে নিজের দ্রিপের কাছিলী শোনাতে শোনাতে প্রস্তাব করল হো। একই টেডের লোক রিকেশন গাব ভাল সাত-পাঁচ তেবে মুখ্য াজী হয়ে প্রেল। ব্লক্জামার শ্রারা মূদি এট্নশ্ উপকার হয় ভাহলে আমি কেন বরব না। কাস সংগো সালো কান্টেপন সারা হয়ে গোলা। সাংবাদিকর। স্ব মা্মাাকে ভিরে ধবল। সে ঝাৰ তিলে তিলে হাজনে শ্ব; ধবি মাছ না ছুণুই পানি এইভাবে কিছু প্রশেষ উত্থ দিন। কিন্তু এভাবে কত্রিন চালানে। যার। আন্ত্র জন্তন ভুটল। বচিতে চাইল। দাব -সুযোগ একে গেল জড়ির কাছে। জড়িত পাঁড় কি মার করে লণ্ডন ছুট্ল। ব্যাপার্টা **ৰাতে আনো** ক্ৰমে তাৱ - জনা চোটা এবং জ্ঞার্প বার করলা প্রচুর। কাগজেপটে ফলাও করে ছাপ। হয়ে গেল-- যেখানে মুন্ ক্ষেথনেই জাতু। গতিক স্বিধার নয় বলে ছয়েলু ল-জন থেকে বন্দেরতে ফিরে এসেই **ट्टाम** केनेफाएरका कटल। (प्रथानिष्टे अ स्थर) ভাষার জামিরে দিল - গাভেবে কান দেবেন **মা প্রেচ**ৰ ছভাবেন না। হেমার বিহয়ে ভটনা <mark>অবল্য বে</mark>শীদ**ূর এগোয়নি ৷ শ**ুরু হয় **স্থাস্থানে**ক আগে। হেমা-জীভেন্দ সেসময় গ্লকারের 'থাশব্' ছবির শ্টিং করছে।

এইড় এম ভি



-

জেওিক, দেভিওআন, দেকর্ক প্রেয়ার, ইানজিন্টার দেভিও ও বেভিওআন, টেপ বেকভার, রেকর্ক, পাবা, বেভিনারেটর ইডাাটি নদম ও কিবিতে বিকাশ করা হয়। ধেরাকভোও হস্মান্দাকত আহে।

তেতিও এও কটো ভৌরস্ ৬৫, পুনৰ হচ্চএডিনিউ, কনিবাভা-১৩। কোর ২ ২৪-২৭১৩ अववा बानः



সাগ্ৰা



দিলীপকুমার

এই ভবিতে হেমকে নেয়ার জন্য জীতর व्यवमास क्या सह। नुना खाट भारत रवसारम এটা ওয়া হোডাকদন। কলে হোৱা থানিকটা अविमाद महारेख 500 প্রোপোঞ্জালে সম্মতি দেক। এবং ভারণর त्यस्य अधानकार्य जातक्य कृत्य यात्। कृत्य ্রেমার মা খুর অস্বস্থিত বোধ করেন। টেলিফোন করে কাগজের লোকজনদের ডেকে এরকম একটা বিব,তি দেন: জীতেন্দ্র বাড়ির লোকজন আমাদের বাজিতে বেড়াতে এসে-ছিলেন তা থেকেই রটোছ। একদম ভিডি-হীন ৷ আমি এবং হেমা বুজনেই প্রকাশিত খবর তাথাহীন মনে করি।

বতালনে স্ট্রভিতর বাইরে বেশী শুটিং হজে। শুটিং হজে হোটেলের ঘর ভাড়া করে অথবা প্র্যাট্রাড়ি করে। স্টুডিওতে লোর ভাড়া না দিয়ে শিলপনিদে শিকদের কান্ত কাময়ে বাইরে जाग्डम् मा शहरावत काक हलाए । हलाए भारत রমরম করে চলছে। কিন্তু ক্তদিন চলবে ধলা মুদ্দিল। হোটেলের মালিক কিংবা স্থাটের **মালিকরা ব্রছেন ধ্**ারে ধারে। আশা হয় অচিরেই হোটেলের ঘরের ভাঙা **কিশ্বা প্রাটের ভাজা বাজবে। দেখতে দেখতে** স্ট্রাডও ফেনাংল্র ভাত ছাপিয়ে যাবে।

আমি রাকেশকে ছেডে দিলে কি তবে হ্বাকেশ মামাকে ছাড়ছে না। গ্রহ করে বুগে

মহেন্দ্র। আরো বলে এখন জার আমার একটও অসংবিধা হস মা। প্রথম প্রথম থবে হত। বাকের মধ্যে মোচড বিয়ে উঠত রাজেশ আমার রাজ আমাবেই ঠকাল। এস্ব নিয়ে ভেবে আরু কি সাভ। ভাবি না। কিম্তু ও বোধহয় ভাবে ঋব ভাবে আমার কথা। বোজ বাতে আমার করে একাই একখো হয়ে ছাটে আসে। বসান না একটা বসান স্বচক্ষেই দেখে যাবেন এক-সংগ্ৰেকশ রাজেশ থালা। একশোটা ই'দূর। বাগান থেকে প্রভাক রাতে আমার বিছানার চারপাশে ছড়িয়ে থাকে। কথা বলে ওরা ওদের ভাষায়। আমি ওদের সকলের নাম রেখেছি রাজেশ খলো।

বদেবর ছবিতে এখন 'সেকস' হ'টেছ প্রধান ব্যাপার। জনাণ্ডিকে শ্রকাম 'গ্রন্থ জ্ঞান'-এর অনেকগ'ল পার্ট হবে অর্থাৎ আলো বেশ কয়েকটা এ জাঙীয় ছবি হবে কেন না পরিচালক ত্যাদৃশ আমাদের আবার জ্ঞান দেবার উদেশে করছেন। বেট-ক বিয়েছেন ভাতে নাকি লাভ কিছু তথ্যি। দেশের মাণ্টিমেয় কয়েকজন দশকৈ বাদ দিলে আদশেরি মতে সেকস-এর প্রকৃত অগ্র কেউ বোঝেনি। 'গাু*তজ্ঞান' গাু*ত্ই থেকে গেছে। লাত যাতে না হয় ভার কুন; আরো ক্রোকজন প্রয়োজক এবং পরিচালনা উৎসাহিত হয়েছেন। শ্বভ সংবাদ।

—অভিজ্ঞিত

মহাশ্বেতা দেখীৰ লোমবাতি কাহনী অবলম্বনে যালিক গোড়্ঠীনতন ছবি খাব করছেন 'অধিকার'। চিত্রনাটা রচনা কংগ্র-ছেন পাথপ্রতিম চোধারী। শাটিং শ্বে হলছ চলতি সংতাহে কোয়ালিট পিল্ডাসের ব্যানারে। প্রথম প্রণায়ের শিল্পী তানিজ চটোপ্রধায়, সুব্রতা চটোপ্রধায় এবং নবাগত অর্থা বস্থা এ ছবিল নায়ক উত্তমক্ষার। প্রধান নাধী চরিতে অবতীণ হবেন খাব সম্ভবতঃ নান্দতা বস্ত। চিত্র-গ্রহণে আছেন : অনিল গ্ৰত। সংগীত পর-চালনার ভাষ নিরেছেন নাঁচকেতা ছোম। এ মাদেই গান রেকড করা হবে।

काल काणे ম_ডিস্টোন **च्ये**र्ज ७ ७८७ 'সম্ধ্যার সূর্ব' ছবিদ্র শর্টিং দুভে **এ**গিরে চলেছে। রুণ, নাহা প্রবোজিত এ ছবি-খানি পারচালনা করছেন : আরাজান্ত মিচ। নাম্বক-নায়িকার ভূমিকায় অভিনয় করছেন ঃ দেবরাজ রায়, রাজশ্রী বৃস**্ট। অন্যান্য চ'ন্মতে** আছেন: উৎপদ দত্ত, বিকাশ রাক্স এবং গীতা দে। চিত্রহণ 🌝 শিল্প নিদেশিনার আছেন যথাক্তমে সূবোধ বলেনাপাধাায় এবং বিজয় বস:। এ ছবির সংগতি প্র-চালক পি এন সালা।



(इंग्राविध्य

রণাজং মাল্লক

- হ জাপানন প্রথম ছবি 'ইণ্টার্নভিউ'তে এক জানসার বলেছিলেন আর্নি অভিনেতা নই।' জাল আপুনার সংগ্রামার এই ইণ্টার্রভিউল্লেকি বলবেন?
 - —আক্সন্ত আমি একই কথা বলব।
 আছিনেতা আমি এৎনও নই। ইপ্টারভিক্ত ছবিতে আমার সংলাপটা আমার
 জীবনেও সতি বলতে পারেন। আভমরের ডেফিনেশন কি তাই ই ঠক জান
 না অভিনেতা হবো কি করে? আসার
 মানুবের চারির স্টাডি করতে আমার
 মার ভালো লাগে। ভাতজীবন থেকে
 কাল করতে এসে আমার এই অভিক্রতা
 খ্যা করতে পাগাই।
- ভারতে আপনি কি বলতে চান যেসব

 চরিতে আপনি এখন কাজ করছেন—তার



- স্বগ্র্লোই আপনার চেনাশোনার মধ্যে?

 না, তা ঠিক বলতে পারব না। তবৈ

 ছেড্ডা ত্মস্ক'এর প্রভাত, 'রাগঅনুরাগ' এর শৃংকর, 'অপরাজিতা'র

 অর্ল মোটাম্টি আমার অভিজ্ঞতার

 মধ্যে পড়ে। 'দেবী চোধরাগী'র রুজেশ্বর

 বা 'হাতে রইল তিন' এর এক নোংবা,
 জায়গার দালাল চরিচাগ্লোকে আমাকে

 বৃষ্ধ দিয়ে, কলপনা দিয়ে তৈরী করে

 নিতে হুলোছে। স্ব চরিচ ক্রন্না।

 অভিজ্ঞতার মধ্যে পড়ে কি বলনে না।
- ঃ আয়াদের টালিগজে তো অভিনেতা কয় নেই, তব্ভ আপনার ফিল্মে আসার প্রয়োজন ছিল কি?
- শোনো প্রয়োজনের কথা ভেবে আর ফিন্সে আসিন। এসেছিলাম নিতান্তই কোত্ইলের বলো। এখন ছবিতে কাজের অফার আসছে, কাজও করছি। বাংলা ফিন্সে আমার প্রয়োজনীয়তা কতটুকু বা আলৌ আছে কিনা তা আপনারাই বলবেন, দশকিরা বলবে। তবে এটা তো স্তা আমি না এলে কি বাংলা ফিল্ম ইন্ডান্টি থেকে থাকভো, সিন্চর মা।
- প্রথম ছবিতে এক ইণ্টারভিউর দ্শো আপনাকে লিভেন্স করেছিল—'ববর' পড়ছেন, বিবর বাই সমরেশ বোদ। আপনি বলেছিলেন—'না'। এখন আবার আমি জিল্ডেস করছি—'বিবর' পড়েছেন বাই সমরেশ বোস বা মাত ভরে ব্ংশ্ট বাই বৃশ্বদেব বোস?'
- (হাসতে হাসতে) স্ত্রি বলছি এখন্ত ও দ্বটোর একটা বইও আমি পড়ে উঠতে পারিন। ইচছে ছিল: কিন্তু সুযোগ হয়নি। ভাছাড়া আমার একটা **ধার**ণা আছে। ধারণাটা হোল আজকের বই নতন কথা কি আর 'লখবে। আজকের সমাজ-সমস্যার কথাই থাকবে **বহুতে।** আমি নিজে যে সমাজে আছি, যার প্রতিটি কাপন আমি অনুভব করছি প্রতিটা মহেতে সে কথা আর নতুন करत 👺 १७३ वद्भ भूत्रात्ना फिरनत বই পড়তেই আনমার বেশী ভালো लार्ला। ब[्]ब्ब्ब्ब्ह्-भ्रदश्हन्तु रय नद्यस् লিখেছিলেন তথনকার একটা স্মার্জচিত পাওয়া বায় ভাঁদের রচনায়। আমার কাছে গুণালো খুব ইণ্টার্কেল্টং।



- প্রারা প্রিথবী জাড়ে সিনেয়ায়, চিত্র-কলায়, সাহিত্যে প্রায়ই মেয়েদের নংন করায় প্রবণতা খাব বেশী। ছেলেদের নংন চেহারা তেমন একটা চোখে পুড়ে না কন।
- স্ভির সময় থেকেই মেয়েদের শারীধিক গড়ন সম্পর্কে একটা লাকোচুরির ব্যাপার আছে। লড্জার নাম করে শারীরে আবরণ জভানো থেকেই এসেছে কৌত*্*হল। এবং এই কৌত হলই চলে আসছে আদিকাল থেকে। মেয়েদের শরীর তাই আকর্ষণের বৃশ্তু। মেয়েদের শ্রীর সমপ্রে স্বাভাবিক কৌত্তল প্রেবের চির্বাদনকার। তবে ছেলেদের নশ্ন করে দেখানো হয় না এটা সতি৷ বয়: পুরোনো দিনের বহু বিখ্যাত বিখ্যাত পেইন্টিংসে দেখবেন পুরুষের বংল ছবি। আর আজকালকার ছবিতে বিশেষ করে বিদেশী ছবিতে পরে,খদেরও জন্ম-দিনের শোশাকে দেখানো হচ্ছে।
- ঃ বলা হয়। 'সংখের থেকে দাঃখ বড়।' ▲ —এটা কি কোনো দশনি না নিছক মানসিক দাঃব*সতা?
 - সূথ জীবনে দীর্ঘস্থায়ী নয়.

 কণস্থায়ী। স্থের দিনের স্নেশ তাই
 বেশীদিন স্থায়ীও হয় না। সুখ আসে,
 চলে হায়। দঃখটাই বেছেতু দীর্ঘস্থায়ী
 তাই দঃখের দিননালো ধিকি ধি ক
 জ্লে ভেতরে। এই জনলুনিতেও আছে

 আনক্র। এ ব্যাপারটা দুর্বলান্তা বা দর্শন
 যাই বলা হোক না কেল ভলটো সাডাই।

 স্প্রিলান্ত হাজিবান্ত বা বা কিল
 - ্ আপনার হাসিটাটো গারনে, এই হাসি
 দিয়ে কাউকে' বধ করেছেল তথলও?
 (বালুণ হালি হেসে) মা দালা—তেমন
 কোনো সুমোগও আমোন। ঘুভাগ্যি
 আমান!
 - এই ফলকাডাতেই আপনার ক্রম্ম, এখনও আছেন এখানে, থাকবেনও। একবারও ভেবেছেন কি ক্র্যকাতার নাম কলকাতা হলো কেন?

A STATE OF THE STA

কাশিয়াং সান টারয়ামের সাহায্যাথে আয়োজিত লাগিনার জারিটি শো-এ পরিচাশক তপ্ত সিংহ, দিলপিকুমার, সূত্রত মুখ্যাঞ্জ অজিত শীজা, সাহরা বাদ, এবং আমিল চ্যাটাজি।



- এতো মহাবিপদে ফেললেন মুশাই! কলকাতার নাম কলকাতা হালো কেন---এটাতো কখনও ভাবিন। 'কলকাতার কড়চা' বলে নাকি একখানা বই আছে! দেখবো তো সেটা পড়ে।
- ঃ নিজের সমালোচনা আপনি সহা করতে
- হাা-হাা নিশ্চয়ই। কাজ যখন করছি সমালোচনা হবে এবং তা সহা বরতেও হবে। সন্নালোদনা তো আন্নার এগিছে যাবার পাথেয় বলকে পারেম। মিজের ভুলচুটিগংলো তো আমি দেখতে পাই মা! অন্য লোক কেউ যদি সেগুলো দেখিয়ে দেন তাতে কাত কি!
- ঃ নায়ক-নায়িকার নায়ে গজেব ছডিয়ে जाक्षकाम शहारतत रहकी इराहा वहाँ कि খ্ব ভাগো লাগে আপনার?

গুজব ছড়িয়ে পাবলিসিটি আমি চাই না। তাছাড়া গুজেব ছডাবার মত কাণ্ড-কারখানাও আমার কিছু খটোন : এ ক্যাপার ধরনের হালকা দিয়ে হৈ পাবলিসিটি সেটা কৈ খুব লাস্ট করে? আপনি-ই বলুন? কণ্ডে না? কখনই করতে পারে না। দশকিকে অভিনয় ভালো লাগানোটাই আসল ব্যাপার। লোকের মুখরোচক অলোচনার মশলা আহি হতে রাজনী নই।

- ঃ দেশবিদেশের ঘটনা সমস্যাপি সম্প্রের্ণ আপনি ক্তথান ওয়াকিবহাল?
- কাগজ পড়ে যতটাকু জানতে পাতি আর কি! তার চাইতে আর বেশী খবর রাখাতো আহ্বাধ্ন পক্ষে সম্ভব নয়! দেশের সমস্যা নিশ্চয়ই আমাকে আলাদা করে ভাবায়। কিন্তু অমার বা আপনার বকক প্রচেণ্টায় কি সমাধান হতে পারে বৃদ্ধান হৈ ক্ষেত্ৰ কাৰ্ড কাৰ্ড পাৰ্বলে সমস্যাল সমাধান নিশ্চয়ই হাতে পারে। কিল্ডু তাআর হচ্ছে কই! আর

- বিদেশের ঘটনা সম্পর্কে বিছা কৌত্তেল থাকেই। যেমন সম্প্রতি সাইপ্রাস নিয়ে হচ্ছে। কি^নত এসব বাাপারগালোতে আমি মানসিকভাবে রি-আকট কবি না। জার প্রধান কারণ ঐসব ব্যাপারে আমি কোনো সমাধান দিতে পারশ না। স্তরাং খবরটা জানলাম, দ্যাউস এনাফ।
- ঃ ফিম্মের নায়ক বলতে আপনার সামনে কি ধরনের ইমেজ আসে?
- ফল্মেন্র নায়ক বলতে একধরনের লালট্স চেহারা হতেই হবে-তা নিশ্চয়ই নয়। তবে স্পর ফিচার, চেহাখায় মথেণ্ট ব্যার্হছের ছাপ এবং অভিনয়—এই ভিনটে জিনিসই থাকা দরকার নায়কের। স্বাদর চেতারা না ১৩লও চলবে, কিল্ড खे शार्मामार्गिकि--फिश्न नां अवशाहे থাকতে হবে। বিদেশে এমন বহ; অভিনেতা আছেন যাদের অভিনয় এবং পাসেন্যালিটিটাই আসল কথা। কন্দর্প-কালিত র্পেন্যু।
- ঃ অতীত-বর্তমানের সকল শিল্পীদের জনপ্রিয়তা ছাড়িয়ে যাবেন, এমন আগা কি মনের গোপনে আছে?
- কাকে আহি ছাড়িয়ে শব না লব সে-ংকম কোনো বাসনা বা মোটিভ আমার নেই। কাজ করে যাচ্ছি, করবও। আমশ্র নিজের কাজ নিয়ে এ গয়ে যাব এটাই আসল কথা। এগোন পেছনোর ব্যাপার নিয়ে কিছু ভাবিনি। তবে ভালো শিল্পী হ্বার আকাঞ্চাতো আছেই। সে আকাণকার আর দেয়ে কোথায়া?
- ু আপুনার কাজের সংগ্র পারিপ্রামকের পরিমাণ কিভাবে নিভার করে?
- বে'চে তো থাকন্তেই হবে। আগে একটা মাঝারি গোছের চাকরী করতাম সেটাতো ছেড়ে দিয়েছি! সত্তরাং বে'চে থাকার জন্য অর্থের, বতদরে জানি প্রয়েজন। পরিপ্রমের দায়টাকু আয়ার পেলেই

- হোল। পেটে গামছা বে**'ধে তো আর** ছবির কাজ কগা যাবে না।
- s বিশ্ৰেলাই যেখানে শ্ৰেণালা, **সেখালে** বিশ্ৰেষণ না হওয়াকে কি আপুনি বোকালি বলবেন ?
- আজকের দিনে একথাটা অসত্য বলবো ना, किन्दु जानिहेत्सपेनि अट्डाइट सह ইয় বলৈ আমার বিশ্বাস, ধিশ্ৰথলা কখন এ শ্ৰেষ্ঠার জায়গা নিতে পালে না। এখন অবশা মানুবের সরলতা— সততাকে বোকামি হিসাবৈ টাম করা হতে, কিন্তু চিরদিন কি এখন থাকবে? থাকবে না, থাকতে পারে না।
- ঃ আপনি তো দিলী বদেবও ছারেছেন কলকাতায় আছেন ছোটবেলা থেকেই। কলকাতা শহরের কোন জিনস্টা व्यापनारकं अवरश्रकं भ्राप्त करतः?
- এখানে ফেলো ফি[']লংস ব্যাপারটা আন্নার ভালো লাগে খ্ব। প্রতিবেশী পরিজ্ञন-বৰধ্বাভধবদাের হৰ্ণগ এখানে সম্প্রান্তী ভয়ানক কডি'য়াল। জানি এখানে ঝগড়া-মারামারি কাটাকাটি দলাদ ল কম নেই তব্ৰে কলকাতা কলকাতা। হুম্বে-দিল্লীর সংখ্যা তুলনা চলে না। প্রাণের সাড়া পাওয়া সাম এখানে। জীবনটা এখানে এখনও সংগ্রিকাস হয়ে যা**য়নি।**

—নিম'ল ধর

রুপানার ৯ই সেপ্টেম্বর সোমবার ওয়টার মন্কুর ঃ

শেকাপি ারের

र्ध स त्ल है

शरित:-सम्मानम् करेक्स यारका जीकर शरका श्राम আলো-ক্রিক সেব वाावश्थाः नाम्काव नेन्द्री रता चिकित

ি দেবীটোব্রাণী স্টেজা সেব√রশধর চটোপাধায় ৯ পরিচাবলা ঃ দীনের গ্রুত



MEN CAMPAO

ফিলের অনাদি বাড়ুবোকে চেনেন?
পেশার হাস্ট্রাস প্রোডাকদন মানেন ভার; এই রজন হাড় ক্রলোনা তিকড়মবার মানুর আনি ফিলে লাইন ন্বিতীরটি প্রেথান। অথ্য ম্পেন্নিয় মাকান হলে দেখ্য আহা বত অমারিক ধনি-ক্রিথ দাত্রিশ্ট লোক, হেন সাত চড়েও ক্লান্টেই। দাত্রিশ্ট লোক, হেন সাত চড়েও ক্লান্টেই

জনাদ্ বালুসেকে তাই বলে ভাবনে
না— তেনেভালা; ওব মত রসিক মানুষ আচারনা পাওয়াই দাকের। স্বকা সেপ্স জক হৈ খান। জার এটাই এর চান্তের বৈশিল্পী। এই নিই হুঠিংই আগার বলক, জারি অপ্যান নিয়াট ওবলেম মাল্ডান ভিলাম— জানি জনাক — নাকি?

—আবার রাজি বি ? আলবং জিলাম। মোরনে এক ফলানি হাল কার যে কিছুই করতাম না। শোলালালাকে এককানে আন্নার মে বিনাট নামানার ভিক্—কৈ থবর রাখে।?

বলৈ অন্তাব মণ্ডাৰত আপেকা না কালী ব্ৰাক্ত ভাৰা সাংশাদকত কৰু অথচ এই থাসা খাৰমক্ত লাভানা মধ্য কাসনাই ভাৰাত

আনি কী। জনালি জননান এটা ভাৰতেই প্ৰাণ তথক ইয়ে গ্লান—। কিছু ভতকাৰ আনাৰি ধাৰ জন্মত্য নাজাত বাদ্যা অনাদ কৰবই। জনান কমতা নেই, ভাবে থামাৰ মা

—ব্ৰাকে, বৰ্ষকটা গোড়াগ্ৰতি ওই দিকেই ছিল। এত্তাম ছিলাবে পাড়াহ জাঠার

তখন বেশ নাম-ডাক হয়ে গেছে। লোক বেশ সমীহ করে কথা বলে। মাথের বাকাটি খুসালেই বেলু চা সিহেট পান্টা মালনায় পাওরা হায়। বেশ একটা ছোরের মধে। দ্বিগ্রেলা কাটছে আত্রার। আত্রল কাজের মধ্যে রোজ স্থিয়ের ছোকৈ পাড়ার মোড়ে मीं फुरंस अहें, आहें, 'रक्ता' करते. ভাতেই ভাল কাজ হয়, কম্মো হয়। অথ5 এই আমি বাডি চুকলে আমার ভিন্ন (চহারা। চাকরি-বাকরি বা প্রাণ**ু**নো কিছুই করি না। থালা থালা ভাত ওড়াই আর নিঃশব্দে গালমন্দ হজম কার া—ছি ছি িছ, ভদুখনের, রাউন্দের খনের ছেলে, তুই শেব প্র'নত গ্র'ডা-মন্ডান ছাল ? দ্র হয়ে হা। একটা পয়সা রেম্মগারের স্বর্জাতা নেই, দ্য বেলা পিশিক প্রিলতে ডেলা লকা করে ন। ?

বাস্ত্রবিক লংক্ষা করে। কিন্তু কি করি! চাকরী চাইলে পাওরা যায় না। একদিন এক বংশকে বলগাম—হানৈ, একটা চাকরী-বাকরী জোগাড় করে দে ভাই। বাড়িতে র আর টে'কা বাছে না, উঠতে-বন্তে বাছে-ভাই গাণীমদ্দ—

বন্হঠাং বললে—ক্রাব?

---আলবং করব।

—ডাছলে জমিদারের বড় তরকের চাকরিটা কর। আমি কথাসতো বলে দিছি— —ওথানে আবার কিসের চাকরী?

বংখা বলাল-নাম বালার সরকারের, আসলে চাকবাটা একটা অন্য ধরনের। জাম-দারের দ্বা ভাইরের মধ্যে মামলা চলছে। ছাইকোটে সম্প্রিক্তির পার্টিশানের মামলা চলছে। ফলে ব্যুতেই পার্কিস—শহুডাটা শুখু কোটের মধাই সীমানত্ব নেই, বাইরেও চলছে। ছোট ভাইরের ভাড়াটে গুল্ডারা সেদিন বড় তরফের ম্যানেঞ্চারকে ধরে ঠোঁওরেছে। সংশা সংশা বড় তরফও অন্যভাবে শোধ তুলেছে। এই-ই চলেছে গড চার-পাচ মাস্ ধরে। বড় তরফ এখনই ভাই একজন বিশ্বস্ত লোক খুজছে চাঁতবল ঘটার জনো। বড়ব সাংগা কোটো সাবে-আসবে, সোজাস্কি বডিগাডের চাক্রী। মাইনে এখন নগদ একশো টাকা। থাকাণ খাওয়া জী। পরে টাকা বাডবে।

অনাদি বাড়ুযো ভেবে দেখল, আপাত্ত এই মধেও।

বশলে—সিভু াছে, আমি রাজী। তুই বরং কথা বল—।

চাকরী এক কথায় হয়ে গেল। বড় এবার এক নজর অন্যাদ বাঁড়ুগেকে দেখে নিয়ে বল্লেন –ব্যুম্ভা আশ্। করি ব্যাপারটা? সঙ্যালটা ইব্লেডের।

অন্যাদ বড়িয়ে ছাড় কাং করে বহা-সম্ভৱ বিনরের সংগ্রেকল—ব্রেছি স্যার।

বিরাট জমিদার বাড়ি। ভাগ হয়েছে মাঝখানে একটা পাঁচিল দিয়ে। ব্যু তরফে পড়েছে ঠাকুরদালান। নাট্মণিদর। অন্টিদ সেই নাট্মান্দরেউ থাকে। ব্যায়াম-কসরং करत । भारत भारत छन-देवठेक भारत । भकारण পো-টেক ভেজানো ছোলা খায়। আগ সের-টাক কটো দাংধ সাটে। দাপারে বিভাগ জিংগাতে পারে বা এমন দু-থালা খোলভাত ওড়ায় আর ঠাকুর দালানের শতিল পাথনের মেৰের বাড় ফেলে ভৌস ভৌস শব্দে দিবা-নিয়া যায়। ভারপর বিকালে উঠে একট ঠান্ডা শরবং হয় – আহারে, এবং তারপর একটা ডিউটী ৮-সেটি কি ব্যাপার ? কিছাই না, ছোট তরফের দিকে মুখ করে বার-করেক হুল্কার ছাড্রতে হয়—সাবধান সা-ব-ধা-া, বেশী ইয়ে করলে প্রেঞ্জেডে रक्षणेत्। किएक वध कद्रव द्व भावतः छद प्रकाः এই সব ভায়লাগ আর কি।

বড় তরফ বেশ খাশি।—হ্যা: আ্যাদিশুন একটা ক'জের মত মান্য পাওয়া গৈছে ২টে!

অনাদি বাঁড়ুযো একদিন বড়ুর সংগ কোটে বেরোছে, পথে হঠাং বিনরের অবতার হয়েন বলল—স্যার এট্রা কথা বলব?

---वन ।

—আমায় ছেড়ে দিন সারে।

—কেন? বড় অবাক। ডেচায়ার বি এখানে কোন অসুবিধা হচ্ছে?

—আজে না, বাস্তবিক কোন অস্ক্রিথ।
ইছে না, কবে জানেদ তো সাবে মাবে মধ্যে একট দানা-দ্যক্রম না দিতে পালাল মন শ্বিব থাকো না। আভোগটা কড় খাবাপ করে কেলেছি। তা আপনাদের বা দেখছি, গভড়াগালের কোন লক্ষণই নেই। আমার ববং ছেড়ে দিন। জালের মাছ জালা ফিরে বাই— শনে গোফের ফাকে মার্চিক মার্চিক হাসলেন বড়। অ, এই বাপার? এক হাত লড়তে প্রছানা বলে দুঃখ;? ঠিক আছে। সে বাক্সথা হচ্ছে।

অনাদি বড়িবে। উৎসাহের সংশ্য বলল – হাা, খাহোক এটা বাবস্থা করুন তো। শ্রীংর মর্চেটা একবার ছাড়িরে নিউ। খেয়ে এটা ঘুমিয়ে পারীছুনা সাব—

বড় তরফ মৃদ্যু মন্দ্র হাসতে লাগলেন।
তারপর চনিবল ঘণ্টাও কাটে নি অনাদি
বাড়াখো যেমন নিতাকম করে, ডন-বৈঠক
সেরে, ভাট-তর্নার্থন উন্দেশে। হ্-হ্মকার
ছেডে সবে হিথা হয়ে ঠাকুর দালানে
বসেছে। একটা সিগারেট ধরার ধরার
ভাবানা, অথবা হাতে দুর্থের ক্সাস্ট নেব
নেব অবহুখা। হেনকালে কোথায় ছিল
ভালা-হটাৎ রে-রে গন্দে তেওে এসে পড়ল
কিঠানে। অনাদ বাড়াখো তে। অবাক—
কিঃ চা বাবা, এখারা আবার কোখেকে এলেন
গোভের ভাবধানা তার। ত্যা, নোকগালো

— হা, হায় তো কিনু কেন?
আর কেন--ব্যক্তে ভ্রিসকল, কথা নেই
বার্তা নেই, এই ছয়জন মিলে আমায় পটা
পট ঠাংগাতে শুরু করে দিল। উঃ, সে
কি ধোলাই। কংপনা করতে এখন আমার গ
শিন শির করে। উন্টে পাটেট, বসিয়ে
শুইয়ে—বাপস, এত কিসিমের যে ধোলাই
হয়, আমার ধারণাই ছিল কা। বাটোরা বাক্ষ
বোকে না। যত বোঝাই আরে এটা বং
দেখার গোনেই না। জ্ঞামা চাইলাম তাও
দিল না।

ত্রিপর সাংপাতে সাংগাতে ধণন আমার মথে গাজিল। ওঠার দ্বিশা, তথন আমায় থেড়ে দিয়ে এই শুকর-শাবকের দল পো পো করে হাওয়া হয়ে গেল। উহঃ।

আমার তথন এখন-বখন অবস্থা। দন দায়েক তো জনুধার ঘোটেই পড়ে রইলাম। ডান্ডার এসে ঘন ঘন ইঞ্জেন্দান করে তবে এটা চান্দা। করে তুললোন। সানুনলাম, বড় তবফ দৈনিক এসে আগায়। দেনে গেছেন এবং মাচকি মাচকি হেসেছেন।

্তার্রপর পায়ে একটা জোব পোটে, একটা দিন ম্যানেজারবাবাকে বললাম—দাদা, একটা ছুটি দেবেন ?

--ছ,টিং কেন?

—না মাহে<u>ণ জ</u>নো মন্টা কেমন কেমন করছে, একট_ু দেখা করে আসতাম – —তা যাও।

ব্যাস, এবপর আরু কেউ থাকে ভ-পাড়ায় ? চাস্প পেতেই টেনে দে হ-ওয়া। কুমোবটুল্লী থেকে গ্রিকে এখন এই বালী-

গঞ্জেই আমি পামানেকট। অমায় বললাম—তা এই গলপ নিয়ে

আমি কি কগ্ৰ?
অন্যদি বাড়ুগ্ৰে। অবাক হয়ে বললে—
ক্ৰেন্ড কহিনী লিখনে। ছাপটে দেবে।
আমি তাই হাতের বাইসেপের দিকে

ছেয়ে ভয়ে ভয়ে কলনাম তথা তু।

ারদীয় হিন্

2042

• **সেপ্টেম্ব**রে প্রদাণিত হয়ে

৬ টি উপন্যাস

বাংলা সাহিত্যে কোন খ্য তন ম। লেখকের এই প্রথম ব্যবজাবনীমূলক উপন্যাস। চলচ্চিত্র লে কের সংগ্য দীর্ঘান্তনের খনিষ্ঠতার বিচিত্র রোমঞ্চবর অধ্যায় লিখছেন—এ ব্যাহর আনাতম গ্রেণ্ঠ লেখক বিমানে মিত্র

হরিনারায়ণ চটোপাধ্যায় লিখছেন এক জনবদা বহস্য উপন্যাস, যা পঠককে চুব্বকর মত ধরে র থবে।

সংশ্বরন নিয়ে কেন দাঘ রমণায় লেখা এই দশকে হয়নি। এ রক্ষ একটি উপন্যাস লিখছেন **শাস্তিপদ রাজগ**ুর্

মেরিলিন মনরেরে পর সেক্স বদ্দ র পে খাত স্থান ডেনব গণ্ডর হট্ সেক্সি জাবনের বিচিত্র কাহিনী লিখছেন চিরঞ্জীব সেন

তারাদাস বলেদ্যাপাধ্যায় শুধ বিছতিভ্ষণের পরে নয় প্রথাক্ত পিতার সাথকি উত্তরসূরী নবীন লেখক। মধ্র প্রেমর একটি সংশ্র উপন্যাস তিনি লিখছেন।

এ বছরের শারদীয়ার সব চাইতে ওমকপ্রদ সংবাদ হল প্রখ্যাত লেখা
নারায়ণ গড়েশ পাধ্যায় এর একটি সবাধ্যানক উপন্যাস
ভাবতে।



• ২ টি অ—সা—ধা—র—ণ বড় গলপ '

বিমল করঃ স্নীল গঙ্গোপাধ্যায়

----ক্টেডিলেল বিল্**থভেন----**

সমরেশ বস্ব - জ্যোতিরিন্দু নন্দী - রমাপদ চৌধ্রী - নরেন্দুনাথ মিত্র - অতীন বন্দোপাধ্যায় - সৈয়দ মুস্তাফা সিরাজ - বরেন গণেগাপাধ্যায় - সমীর রক্ষিত - মায়া বস্ব - শিবরাম চক্রবতী

এক গ্রন্থে চিহতারকানের কালার ছবি - অধ্নিক ইড্পের কোবনের পিন-অপ ছবি বেম্বই চিহতাবকাদের চণ্ডলাকর গোপন থবর প্রিয় ভারকাদের সচিদ্র ফিচার এবং কারে। অনেক মাক্ষণ এই মালাবান সংখ্যাটির মালা—এ টাকা

---- E BIGI----

रिश्तारमात्र कत्म-- ১०७/১ व्यामशान्ते न्ध्रीते, क्लकाया-- ১

শ<mark>এৰৰ্মের</mark> স্মর্ণীয়

মহাত্মা শিশিরকুমার ঘোষ

কৰি নবীনচন্দ্ৰ সেন তাঁৰ আত্ম-জীবনীতে লিখেখেন ঃ যুশোহরে লিখিত জাল্লার থাত ক বঙায় ও 'পলাশীর যুগুধ' আধানিতার জনা যে নিশ্বাস ও মাজ-ভূমির জনা অল্ল বিসভান আছে তাহা কথান্দ্ৰং নিশাবকুমারের সংস্থানিত ভিশিক্ষার ফল। তিনি ও ভাহার পাঁচকাই প্রথম এই দেশে স্বদেশ ভাজর প্রথদেশক।

১৮৬৮ খণ্টোকে যমোচনে বাংনা সাগত্যতিক পুত্রকা তিসেবে তান্ত্রাকার পত্তিকাল প্রথম প্রকাশ। দেশবি ভাষায় প্ৰকাশিত সংবাদপতের স্বাধীন তার ত্রস্থাক্ষেপ করে উংরেজ সরকার আইন প্ৰথমন করলে আলাংবানোর কলকাতার প্রথানারত্বিত হয়—এবং কলকাতা থেকে ইংরেজনী দৈনিক প্রিকালপে প্রকর্মিত হাত ভাকে অধ্না বাংলা দেশসিথত বিধকর-গাছার চার মাটল উক্তর পল্যা মাগ্রা হাথে জন্মগ্রহণ করে। এলায়। শিশ্বিকলার থোষা লাভা অম্ভন্নীর নামান্সারে প্ৰায়ো আমে অন্তব্যসার নামে একট বাজারের প্রতিষ্ঠা করেন এবং প্রস্থা মাধারা প্রায় অমাত্রাভার নামে খাতে ভয়ে ভঠে। আমাত্রাজার পরিকার নামত্র অমাত-বাজন থেকে নামায়িত। সংবারপর সেবা, যাজনীতি চচািত সমাড়েসেরা, ধুমুিও ন নাতা **স্ব**্লিফরে । মহাঝা শিশিককুমারের প্রভার খাবণ দেশ ও জাতিকে নানা িক দিয়ে মহাম হমাণিবত করে তোলে। ফ**ান্মা**্লিশিরকুমার এচিত অগিয় নিমাই িত বাংলা সাহিতেরে অফালা সম্পদ। ৈ জাতি রচিত লাড গোরাংগা সহজ ভাষার **ভাব ভার•েগ** তর•গায়িত। যশোহরে

যখন সাংগ্রহিক অমাত্রাজার পরিকা নিয়ে সরকার ও স্মাটের সূর্ব অন্যায় ও অনা-চারের বিরুদেধ লড়াই করছিলেন শিশির-ক্ষার—সেই' বিপদ সংকল বণভাগতে দড়িরেও সংগীতের সাধনায় তিনি সিংধ-লাভ ক্রেব ছলেন। সংগীতের সমুস্ত বিভাগ্ট ছিল তার আয়তাদান। পাথোয়াজে তিনি ছিলেন সিধ্রুস্ত। বতিনি— কালোয়াত ও টপ্পা গানের তিনি ছিলেন আন্বিতীয় শিল্পী। মুশোহুরের বড় বড় রাজকর্মচারী থেকে স্বাই যেমন শিশর-ক্ষাবের নামে ভটম্থ থাকতেন, গ্রেমি তারি সংগীতে বিভোৱ হয়ে থাকতেন সংধ্যা থেকে গভানি রাত প্যশ্ত। বিভিন্ন গ্ণা-বলীর বিচিত সম্বেশ্ প্রিল্ফান হয় মতাআ শিশিরকমারের মধে। মতাআ



দি শারকুমারের প্রতি প্রথম নিবেদন করতে গিয়ে কবি নবনিচদদ্র সেন ভার আঞ্জাবনার ২৫ প্রতায় লিখেছেন ঃ আমি সেদিন হইতে সেই প্রথম পরিচয় হইতে তাঁহাকে ভক্তি করিতে দিখিলাম এবং পেই ভক্তি উত্ধান্তর এক জাবন বৃদ্ধ হয়। আজ তাঁহাকে — আমিয় নিমাই চারতের আদিণ্ট ও আবিণ্ট দিশিরকুমারকে,—আমি দেবতার মত প্রজা করি। তাঁহার পারে প্রভিয়া তাঁহার পদধ্লি গ্রহণ করে।

বাংলা নাটাগালার ই ওহাস গ্রেথ নাটা গ্রেবর্ধে মহাজা শিশিবকুনার ঘোষ সংপ্রেক মহতবা করতে গিয়ে আমি লিখেছি, ১৮৬৮ খ্টাব্দের, অম্ত্রাজার পাঁচুকার সংগ্য দৃশ্তর বাবধান। বাহাত যেন সম্পুটো অনুল জলরাগির সামনে ন্নের পাৃতুলা বিন্তু মূলতঃ তা নয়। সম্পুটার শা্রের পাৃতুলকে আদ্ধ্রাদী সাংবা দকের কাছে। সেদিনের অম্ত্রাজার আর তাঁর প্রভা নংন ফ্লিরবে জােন্ত্রাজার আর তাঁর প্রভা নংন ফ্লিরবে জােন্ত্রাজার বার তাঁর প্রভা নংন ফ্লিরবে জােন দিনই কােন কালে লােন জাল্পবাদী সাংবাদিক ভূলে বাবেন না দে মহাথা শিশিবকুমার ঘোহ প্রতিষ্ঠিত অমৃতবাহনর পরিকার প্রতিটি পৃথ্ঠায় লিপিবদ্ধ অনভ্য কাতীয় জাবনের স্ববাহাক ইতিহাস: জাতির সামাজিক ও রাণ্ডির চেতনার সংগ্রে কার্ডির সামাজিক ও রাণ্ডির চেতনার সংগ্রে কার্ডির সামাজিক ও রাণ্ডির চিতনার সংগ্রে কার্ডির সামাজিক কার্ডির সামাজিক ও রাণ্ডির কার্ডির সামাজিক ও সংগ্রেভির সামাজিক ও সংগ্রেকার কার্ডির প্রামা সম্ভব হুয়ান। যে গোন দেশের বে বেন নার্ডির বান। যে গোন দেশের বে বেন নার্ডির এক একটি অভাত পৃথ্ঠা থেকে আমাসের অভাত এক একটি অভাত পৃথ্ঠা থেকে আমাসের অভাত এক একটি সাভাত প্রত্যার বিষ্ট্রের বিষ্ট্রের

লোচ্চত ক্ষেত্রে বাংলা তথা হীরালাল সেনের আন্নকারের দাবী প্রতিষ্ঠা করা সম্ভ্র হতো না যদি খন ত্রাজলু পাঁচকার প্তিয়ে এ সম্পাকিত বিজ্ঞাণত প্ৰামিত না **হ**তে। বাংলার নাট্যশালার শত্র্যের **ই**তি-হাস ধোয়াটে ও অপূৰ্ণ থেকে স্তে যদি অল্লাভনাজনৰ পৰিকাৰ পৰ্মায় প্ৰক্ৰীয় মাট্যশালা সংপ[্]ক'ত তথান্দ প্ৰকাশত না ত্রো। স্বোপ্রি অম্ত্রাজ্য প্রিকার প্রতিঠানা গ্রহারা শিল্পকেষ্ট ঘোষ না থাকলে নটগ্রা গিরিশচন্তকে আমর। ফিবে পেতাম না পাদপ্রদীপের আলোকমালার সামনো বাগ্রাজারের বসিন্দা ছিলেন মুহাজা শিলিবক্যাব। স্ধ্বাল একাদশী নাটকের অভিনয়ের পর ·ল**ীলাবত**ী' নাটক নির্বাচন করে বাগ্যাজারের বখাট ছেলের দল খেন থিমিথে পড়ে। ইংছা থাকলেকে উপায় কেই। টাকা কোথায় অভিনয় ক্লার।

শেষ প্রয[্]ত চাঁদা তলে অভিনয়ের আয়োজনে মেতে ভঠেন। মহাত্মা শিশির-কুমার ঘোষ ও নবগোপাল মিত্র প্রায়ত এদের বিহাজালৈ আজতেল। নুলান প্রাল্প দিতেন। নানাভাবে উংসাহিত কাংতেন। ন্যাশনাল থিয়েটার নামগ্রহণ করে নগেণ্ড-নাথরা যখন টিকেট বিক্রী কলে আজনয় শান্ত বংকোন, গিরিশচনর দলত্যাগ করলেন। মহাত্মা শিশিবকুমার বিশ্বশ্চস্থাকৈ অনেক ব্ ঝয়েছিলেন কিন্তু গাবশচন্দ্র রাজী হন নি। গিরিশ্চণেদ্র যাত্তিকে অস্বীকাল করতে পারেন নি শিশিরকুমার। তাই তার যুক্তিকেও যেমন সম্থান করেছেন তেমনি নগেন্দ্রনাথদেশও উৎসাত্ত করেছেন। তাদৈর প্রচেম্টায় সব'সহযোগিতা করেছেন। দ্রেদ্্িটসম্পল্ল মহাত্মা জিলিরকুয়ার সব নম্ট বিশ্বাস করতেন—গিরিশচন্দ্রে মত প্রতিভার বিভিন্ন হয়ে থাকা নবগঠিত ন্যাশনাল থিয়েটারকে দরেল করে দেবে। স্ভারা ধ্রথন গিরিশচক্রের জ্ঞাব উপলব্ধি করলেন—তথন সভাদের অন্যুরোধেই গিরিশ-চন্দ্রকে ন্যাশ্নাল থিয়েটারের অনাত্ম পরি-চালকর পে যোগদানে সম্মত করান শিলিব-কুমার। ২২শে ফেব্রুয়ারী ১৮৭৩ খৃন্টালে नगमनाल थिएवछारत कृष्णकृषाः। नाग्रेत्कर ভীমাসংচ চরিতে অভিনয় করেন। গিরিখ-চন্দ্রে নাম বিভ্রাপিত হয় নি—তার

শীভাতপ নিয়ন্তিত ফোন : ৫৫-১১৩১ প্রতি ব্যঃ ৬॥ শনি রবি ও ছাটির দিন ০ ও ৬॥ কুলাক মাণাজীরি নতুন নাটক



পরিচালনা : বাধ্বিম ঘোধ
 আলা : তাপ্ত পেন
হাপায়াল : বাধ্বিম হার্থম, সত্থিত
আমরনাধ, প্রার্থম, ত্রাং
 মুজেন্যু ও দ্যিক্তা বিশ্বাস

ইচ্ছান, সারে জানৈক অবৈতানিক বিশেষ শিংশী হিসাবে তাঁকে তুলে ধরা হয়েছিল।

মহাত্মা শিশিরকুমার রচিত দুখানি নাটক সাধারণ বংগমণে অভিনাত হয়। শিশিবকুমারের নাটাপ্র ওভা সমপ্রকে জঃ সাকুমার সেন তাঁর বাংলা সাহিত্যের ইতিহাসা প্রতক্ত মনতারা করেছেন ঃ সাধান্দ দশক্রির মনোরগুনের জনা সমাজ্ব চিত্র সমসামায়িক ঘটনা লইয়া ছোট-বড় নাটক প্রহুসন বচিত হইতে লাগিল। এই ধরনের রচনার মধ্যে প্রথম এবং বিশিষ্ট হইতেছে শিশিবকুমান খোমের নয়শো বেপেয়া (১২৭৯)। ইন একটি ছোট্র প্রহুনেও রচনা করিয়্ছিলেন আজারের লড়াই (১৮৭৪)।

চই ফেবুয়াব ১৮৭৩ খুস্টাব্দে সানাজ ভ্ৰমে নাশনাল থিয়েটার কর্ভুক ন্যধা ব্রেপ্যা মঞ্চথ হয়। ছাড্লাল-অবে ক্রেণ্য মুদ্ভাফা, বঞ্জন-অন্তলাল বস্তু এবং স্বলা চবিতে ক্ষেত্নোহন প্রেণা-প্রায় হতিন্য করেন।

িন্দানিক মাণেনাল সম্প্রদায়
সন্মিলিতভাবে মাণালনী অভিনয় করাধ মালেভ ভিলেন শিশিংকুমার। ১১ই ফের হারী ১৮৭৪ খুস্টালে শিশিকুমারের বিচারে শুডাই মুক্তা ভারার প্রাই ১৪ই ফের্ট্যারীর ১৮৫৪ খুফ্টানে মান্লিনার অভিনয় অন্তাপিত হয়।

নাডিগত উংসাহ ও সহযোগিত। ছাড়া নাম্মান দেশ্যান হলে স্বা বিভেদ ভূনে নাটা সাধনায় এত বাক্ষার মৃত্তা অনাত্ম প্রোণা হিন্দে শিনিবকুলা। তাঁর এই সাদ্ভা দ্বানু ফলবতী হয়েছিল।

স্বীয় অনুত্রাজার পত্রকায় সব্
সময় নিরপেদভাবে নাটাশালা সম্পর্কে
সংবাদ ও মন্তবা প্রকাশ করেছেন। নাশনাল থিফেটারের গঠন-যুগের অনাত্র প্রতিপাষক
মহালা শিশিরকামর ঘোরকে কোন দিনই
আয়ার ভূসতে পারি না—পারবে না। ঠিক
এমনি ভূমিকা নিয়ে প্রবত্তী যুগে বাংলার
নাটাশালাকে প্রোক্ষ প্রতিপাষ্কভাষা
আবদ্ধ করেছেন শিশ্বকুমারের স্থোগা
পত্র অগ্রজ ভূষারকাশিত ঘোষ।

১৮৮০ খৃড়ীদেদ বেগল থিয়েটার ধখন অভিনেত্রী নিয়ে অভিনয় শার্ করেন
— তদানগত্রন কালের খৃত্যু পর-পতিবা
অভিনেত্রীদের বেশ্যা বলে অভিতিত করে
নিক্ষাস্চক অভিমত বান্ধ করেন। অম্তেরাজার পঠিবার ২৮শে আগল্ট ১৮৮০
খৃষ্টাব্দের এ সম্পর্কিত বিজ্ঞাপততে কোন
বির্প মণ্ডবা দেখতে পাওয়া শায় না।
অভিনেত্রী হিসাবেই তাদের অভিতিত করা
হয় এবং অভিনয়ের প্রশংসা করে নিরপেক্ষ
সমালোচনা করা হয়। জাতীয় নাটাশালার
মুলে মহাজ্যা শিশিরকুমারের অবদান
মুলে অহিতি করাই বর্তমান মচনার
উদ্ভেশা—ভার বিরাট জাবনের আলোচনা
এখানে করতে ভাই নি।

कालील मृत्यालाशास



খুব সংপ্রতি বোদেবকে ক্যানাডিয়ান ছ বর এক চলচ্চিত্র উৎসব করে গেল। উৎসবে সর্বমোট সাতটি প্রেণ্ট্রিমার ছবি কেখানো হয়। ছবিগ্রালির নাম যথাক্তমে ঃ 'ডেখ অফ 'এ ল্ম্বারক্যাক', ক্যামোরাপ্রা' 'দি ক্রিসমাস মাটি'রান' (শিশ্রচিত্র), 'রুয়োজং ইন হোয়াইট' উ। টান', 'রেজিয়ানে প্রাডোভান' এবং ইসাবেল'।

এই সাত ট ছবির মধ্যে চারটিই ব্যোজানটা চিলিত। সন ছবিগ্রালিট রগ্ধীন। এবং বলতে বাধা নেই প্রত্যেকটিই রপ্তের সুধ্য বাবহারে ক্যানাভার দীত ও প্রাজ্যের প্রকৃতিক সোদ্যা নয়নাভিগ্যার্গুপ প্রতিশ্ব করে আন্ত্রিক সেন্ধ্য করে আন্ত্রিক সেন্ধ্য

বিশেষ করে শিশাদের জন্য তৈরী ছবি বিদ কিসমাস মাটিয়ানের জনটোল্লাফী দশকদের মেন স্বংশবাজো নিয়ে যাহ।

ছবিগ্লি সম্পকে কিছু বলার আগে কানেডিয়ান ছবর গোড়াছরের দু; চারটে ২থা বলে রাখা বোধকরি অপ্রাস্থিতার হবে না। ডকুমেন্টার এবং এগানমেশন **হাজি** ক্ষেত্রে কানোডিয়ান চলচ্চিত্রের খাতি আছে। কিন্তু প্রতিদ্বাস্থা হবি সে তুলনাম্ব আছিছ অধিকারী নয়।

বশ্বত তার বরুস কম বেশী বৃহর ছয়েক। ১৯৬৮ সালে সবণারী আনুকুল্যে এই প্রচেণ্টান্ধ প্রথম সরেপাত হয়। ফলে এখন বছরে দ্বাভা বক ডকুমেণ্টারী ও এগানিমেশন ছবি টেবী করার প্রচেণ্টা ছাড়া প্রতিশ্বে ছবি তৈরী হয় ২০ খানা থেকে ২৫ খানা কানোভায় এই হবি ভোকার জনা দ্বাভিত্ত আছে মন্ত্রিল এবং টোরোল্টোতে। ছবি তৈরী হয় দই ভাষায়—ফ্রেণ্ড ও ইংরেজিতে। ফ্রাস্টা ভাষায় ছবি প্রাণ্ডত হয় কুইবেকে।

ব্যবসায়িক ভিতির দিব থেকে ফ্রাসী ভাষায় ভোলা ছবিগগুলি দাব্ল সাফলা লাভ করে। সেই সন্পাতে ইংরেজী ভাষায় ভোলা কালাভিয়ান ছবিগগুলি মার খায়। জ্ঞা প্রাাম কাবল ভোলা, হলিউড এবং বিটেন থেকে এত বেখা আক্ষালীয় খাব আন্তে বে কোলাভার ৯০ শতাংশ চিত্রগৃহেই এইসব ছব দেখালো হয়ে খাকে। এবং চলেও দাব্ল বাবসায়ক সাফলো। তার সংগ্রহানীয় খাব কোনাদক দিয়েই শেৱে ভবে না

তব্ৰ এবং ক্যানাডিয়ান প্ৰ**টিদ্ধোর** ছবি তৈরীর বয়স থবে বেশী না হ**লেও**



বাল্মীকি রামায়ণ

পশ্ডিত হেমচন্দ্র ভট্টাচার্য-কৃত মূল বান্সিকী-রামারণের আদেনপান্ত গদান বাদ। দৃই খণ্ড। ভূমিকা আচার্য প্রীপ্রবাধচন্দ্র সেন। চিত্রালংকরণ প্রখ্যাত শিলপী প্রীস্নালীন্দ্রাধ্য সেন। গ্রাহকদের জন্য মূল্য তিরিশ টাকা। অগ্নিম দশ্দ টাকা জমা দিয়ে বাকি টাকা প্রতি খণ্ড বই নেবার সময় দশ্দ টাকা হিসাবে দেয়।

কাগজ ও মনুদ্রণের নিত্য বর্ধমান দ্বর্মকোর জন্য বাল্যীকিরামায়ণ আমরা সামিত সংখ্যায় ছাপতে বাধ্য হাছে। অতঃপর
এই বইয়ের বিক্র কেবলমাত্র গ্রাহকদের মধ্যে সীমাকশ্য কর্মকেব
তাহক হবার শেষ তারিখ ১০ সেপ্টেম্বর, ১৯৭৪।

ভারবি ২০1১ বণ্ডিম চাট্জ্যে পিট্ট কলকাতা ১২ ম কেন ৩০০১১৫



कि निकास किनाहर किनाहर कि अर्थ विवसम्बद्ध निन्दाहर अर्थ कर्माहरू

विश्वासक क्षेत्रक कथात आजित

আন্তান ৰাভিগত মত : উৎসংকৰ দেৱা ছবি হোটদোৱ জন্য ডোলা দি বিসমাস মাটি হানা:

মালাল প্রতের অধিবাসীর সাজে স্লিক্ত मर्डि व्हाम्याय উড়াত চাকি চডে বিশ্বমালের উৎসব দেখতে বেলিয়ে হঠাং মাৰণামে সেই উড়েন্ড চাকি অর্থাৎ ইংরেজীতে হাতে বলে ফ্যাইং সসার, তার ৰশ্ব বিগড়ে যাওরায় এক জলার সামনে নেমে পড়ার গ্রামবাসীদের মধ্যে যে আত্রুক ছাড়িরে পড়ে এবং হার ফুলে পর্জিশ ফোসকৈ ঘটনাস্থলে ভীতচ্চিত্ৰ অৰুপ্ৰায় উৰ্ভেশ্বাসে দৌউতে হয় ব্যাপারটা সামাল मि अम्ब करना छाई निरंदर क्वित गम्म। ব্যাপারটা বিজ্ঞান ভিত্তিক এবং যেমন মঞ্জাদার তেমনি কোলে লাগ্দীপক। নিবিশট এবং মুশ্ধ হয়ে বসে দেখতে হয়। এমন ছবি এ দেশের ছেলেমেয়েদের অবশাই **दिन्यात्मा क्षिक्रिक**। डाइड अदमत स्थान कल्लमा-শাল বাজৰে, তেমনি তার কৌত্তলও নিব্ত হবে। শিশ্বো যেন এই ছবিটি দেখতে **দেখতে "বংশ্ন**র গাল্ডো চলে গাবে।

উৎসবে প্রথম যে ছবিটি দেখানো হয়

মিব ভাঁ ব্যং শনিঃ : ৬৸টা রবি : ৩টা ৩ ৬৸টা

• একটি খোৰণা •

শ্লমরেশ বসরে মতে তার মতগ্রির উপ্নার গ্রুপ্থ হয়েছে, তার মাধ্য এটাটাই প্রেডিট। শ্লমক্ষানার শ

সমরেশ বস্র

প্রজাপতি

শহাত্রসাধ্যের বের্ড স্ট্রিক সার্থিক। দ্বোর প্রিডে চলেছে।

পরিচালক : মহেন্দ্র গ্রেক
কালী, নিমল, স্তেন, প্রেমাংশ, গৈলেন
অক্তর, ধর্ মিন্টা, মনা, অপোক, শিপ্তা
দ্বাহ্যা, মিস কে, সোমা, স্লেভা
এবং দিলীপ ও বাসবী।

• त्ताक "शाउन क न" जात्न चिकिए निन ।



তার নাম 'ডেখ অফ এ লুম্বেরজাক':
ছবিটি ভারতীয় দশ্বিদের মধ্যে উৎসাহ ও
চাওজ্য স্থিত করে। এতে ধােন বাাপার
এবং নার্ভিট অথাং নম্পতা একটা প্রধান
ভূমিকা ভাড়ে থাকে। পরিচালকের মতে
(পরিচালক গিলোস কালোঁ) সেই সব সভ্য
মান্বের মাুখোল এই ছবির মাধ্যে খুলে
দেওয়া হয়োছে বারা স্মাকের উ'চু স্করে
বসে নারীদেহকে মথেছভাবে বাবহান করে
সেইসর মেরেদের পরবভান সময়ে মতের
ক্ষাছকিছি ঠেলে দের, ওনেন্র বেশ্চে থাবার
বাধাতাম্লক পেশায়।

ছবির করেকটি দৃশ্য রাজকাপারের চাঞ্চলা-স্টিকারী ছবি ব্বিত্ত করেকটি দৃশাকে মনে করিয়ে দেয়।

ওয়েডিং ইন ছোন্নাইট' ছবি টনু মধ্যে ভারতীয় সমাজ বাবন্ধা ও মান^সসকতার মিল খণ্ডেল পাওয়া হায়।

হঠাং ভাললাগা গ্রং দেহদানের ফলে যে বিপর্যায় নেমে আসে একটি ফালের মত স্থের কুমারীর ভবিনে তাই নিয়েই ভবির গণপ।

কামেরিকেন ছবিদ্ধ গংপ উনবিংশ শতাশার। একজন আমেরিকান ভারারের সংশ্যে এলিজারের টাসার প্রণয়োপাখান এর মূল বিষয়বস্থা। হ'বটিতে প্রচুর যৌন ও কিছু নকাদ্ধা থাকার ন্ধাকরের ১৮৮ চাল্যলের কারণ ঘটেছে। বলাই বাহালা।

চান্ডলের কাৰণ ঘাটেছে। বলাই যাহালা।

ইসাবেলা ও ঐ ধরনের কিছা কছা
দুশোর স্বাক্ষর থাকলেও গণ্প বলার গণে
রসোত্তীর্ণা। অভীতকে মুছে ফেলে সুখী
বিলাসী জীবন কাটাতে ঢোকাছিল একটি
মেরে, কিন্তু ভাগাচক ওাকে টেনে নিরে
গিয়েছিল বিপ্রতি প্রাণ্ডে এই নিরে

উ-টার্শ একটা আনা দ্বাদের ছ ব।
চার বছর আগে হঠাৎ দেখে ভাল লাগা
একটি মেয়ের অপের্য়ণে বেরিয়ে পড়া এক
তর্গ আইনজনীবার গলপ বলা হয়েছে এওে।
তেথ আছে এ লাক্ষেরজ্যাক হাড়া
উৎসনে প্রদর্শিত চরিগ্রিপা মরে। ২৪,
দিক থেকেই যে ছবিটি বৈশিওটান দাবী
রাখে তার নাল বেজিয়ানে পাডেভাল ন।
এই ছবিতে আধানিক ক্যানেল এবং স্বকারী
ও বেস্বলার প্রিয়িক্তি আছে সভা প্রিবরী
ও বেস্বলার প্রিয়েছে আছে সভা প্রিবরী
বর্গাহেন, পরিরাজক। করাপশানের বাহতব
অধ্ এই ছবিতে স্পত্তি করে বলা হয়েছে।

উৎসবে প্রদর্শিত ছবিগ্লির সংক্ষণত সামই কেবল দেওয়া হোল। আগামী সংখ্যার উল্লেখযোগ্য ভবিগ্লির (ফেনে ঃ তেথ ফর্ এ লাকোলেকলেক্ ওরেছিং ফন সোমটাই, ইসাকেল, উন্টালি-এই চারটি ছবি) কেপ বিদ্যালিকলেক সামানিকলেক বিহু ভার বাছকা আশা করি পাঠকদেব কেভি হল নিবাতে সহায়ক হবে।

সবশেষে একটি কথা। আমাদের দেশে এই ভন্যনৰ কান্যানিকাল নাৰিক। ব্যৱসাধিক প্রদর্শনের বাবন্থা করলে (সরকারী বা বেসরকারী পর্যায়ে যে ভাবেই হোক না কেন)
তাতে এদেশের দশ্ককৃল লাভবানই হবেন।
ববং আমার মন্মান দাতি বাবদায়িক
সাফলা আনবার। এবং ভার বিনিমরে
ভারতীয় ছবিও সে দেশে প্রদর্শনে ব্যবন্থা
করলে রাণ্টীক প্র্যায়ে বেমন দ্ব্রদেশর
ভাব ও চিন্তার বিনিময় ঘটবে সাধারণ
একটা আঘিক সংবোগ্র গড়ে উঠবে উভয়
দেশের মধা।

কাগে, একথা আৰু অনুষ্বীকাৰ্য হৈ,
সেল্লায়েড অখাৎ চলাজ্যাই হচ্ছে প্ৰিবীর সমুহত দেশকে সব দিক দিয়ে সহজে
বোধার এবত কাছাকাছি পাত্রার সবভাগ মাধাম। যার ভাষাই মাতু আরু কোন ভাষাই
এমন প্রবল্প ও সবভানতাতা নয়।

জানা গেছে, আগ্মীতে ক্যানাভারও ভারতীয় ছবিব এক উংসব অন*ুণঠ*ক্ত হবে।

—×¶. ₹. 5

বিবিধ সংবাদ

সাংক্রান্তক অনুষ্ঠান: গত ২০শে আগ্রহট প্রস্কারণ স্থাকারের সমাজ- মর্থ--নতি ও মালায়েল শাখা (কৃষি বিভাগ) সাংস্কৃতিক সংস্থান তত্যির বাষিক সাংস্কৃত িক অন-•ঠান থি.যুটার সেন্টার হ**লে অ**ন্ড-িঠত হয়ে পেল। অনুপ্ঠানে সভাপতি ও প্রধান অত্থ হিসাবে উপাস্থক ছিলেন যথাক্স প্রবীণ কর্ণী নীট ভ্রনোহন দত্ত এবং উপাকৃষি আধ্বা (পরিসংখানি) শ্রীদেবরও কারফর্মা। ১৯১৫ত এবং সংগ্র-সাংগীতে অংশ গ্রহণ করেন অংগম সাউ দেব; পটোন এবং দেবদাস রায় ও সম্প্রদায়। এরপর উক্ত অফিলের কম্চারিক্ত কতক প্রতি নাটা মঞ্জন। হয়। মহিলা কম্চারী-ব্ৰুদ কত্ক অভনীত জ্লোতু ব্ৰেদ্যা-প্রথায়ের মিলহার। ছন্দ নাটকাটতে ভংশ গুড়ুৰ করেন গ্রিগুট **গ**ুৰু **শিব**দ্ধী বস্ শিপ্ত। দাস, সুতপা বিশ্বাস, গোরী মুখাজ, ডিগ্রা দেব, ঝণ্ট- পাল, খুকু চঞ্চ-বত্ৰী এবং সংগা গোস্বামী। প্রেছ কর্ম-চালবাদ কড়াব অভিনীত **হারেন্দ্রক্ষ** ভদের 'মেস নং ৪৯' নাটক টক্তে অংশ গ্রহণ করেন তপন চট্টোপাধ্যায়, রঞ্জিত পাল, ননীপোলাল বায়টোধারী বারীন চৌধ্রী, স্মানীলক্ষাব যোষ, দীপক চন্দ্ গতিচিরণ মৃথাজি^ব, **অমল পাল, ফ্রপন দাস**, কালীপদ, শিশিষ ঘোষ রঞ্জ ব্স-, শানিতর্জন দে, স্বল চিতা দেব। প্রথম নাটকটি পরি**চালনা ক**রেন গেলা মুখাজি এবং দিবতীয় श्रीवरुष्टिमा करवन दावीन वा**श्राहां ध्रवी।** সবশেষে উপস্থিত দশকিবৃদ্ধে জলবোগে আপায়ণের তদারকী করেন বিজয়ভ্যণ নাগ, কিল্প দত্ত এবং সূৰীর ধ্ব। ধ্ন্যবাদ क्याचाल क्रीचाक्यक राज्ञ।

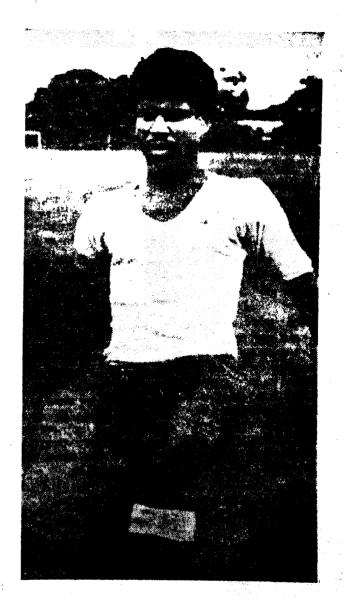
বিশ্বজিৎ বেরা

মাঠের নায়ক

গড়েব মাঠের বড় বড় কাবগুলির বন্ধমলে ধাবণা যে পুরেন চালই ভাতে বাড়ে।
৯টি মরা হাতি যদি লাথ টাকা দিয়েও
কিনতে হয় তাতেও রাজি। বলাবাহুলা
এই ধারনার ফলাছাতি হিসেবেই নামী
দামী জাবগুলিতে দেখা যায় প্রতিঠ
বেধবায়ভাদের ভীড়া বিভিন্নভাবে স্নামান্ত কাবিজ্ঞান ঘটালা ভাতে কাবিজ্ঞান আনকোর ঘটালা লাভিন্নভাবে কাবিজ্ঞান ঘটালা লাভিন্নভাবি লাভিন্নভাবি ভাতে

ময়দানের অল্ডিড প্রোণে মুখের মিছিলের মধ্যে মতিক মধ্যে যদি নতুন মা,পের হাসিল মোলে তার াচয়ে আনন্দের এবং আশ্বাসের বোধহয় আর বিভুই নেই। এমান একটি নজীর বি•বজিং বের। বিশ্বজিং বলতে গেলে একেবারে আনকোন মাুখা মুর্দান মূলে এসেই নিজের নিংঠা ও নৈপ্যবের সাহে একেবারে পাদ্দীপের সামনে এসে শীদ্রাতে পোরছে। প্রথম আহিভাবেই বলভে গেলে প্রায় নাম ভূমিকায়। পরিপাণ্ট ক্রহ, হিঘর চিন্তাশান্ত পরিবেশ মাফিক পরিচ্ছের। পরিকল্পনান্টপার বিশ্বজিংকে পরিপূর্ণ খেলোয়াড় হওয়ার পথ পরিক্রমায় সাহায়া করছে। বর্তমানেব ভই চরিত এই মেজাজ হানি সহতে৷ ধরে রাখতে পারেন তাছলে বিশ্বজ্ঞিং আচিরেই अधिकतामा इत्तन।

গ্রাম নাংগার ছেলে বিশ্বজিং বেরা।
আগতঃ জেলা ক্লে ফটেন্স এবং জেলা
ফ্টেন্স আসরের মাধামে মেদিনীপ্রির এক
অক পাড়া গাঁরের ছেলে উরাড়ার কর্মা-



ক্ষা নামারে পাছে স্থান। ফালে গাঁওরক বিশ্বীক্ষান্তর পরিভয় হাট কল্কাতার क्ष महिला। क्षेत्रक काण्ड्य अर्थ व्या व्या ৰ ক্ষিত ক্ষমৰ ক্ষেত্ৰ ভাবেনি-ক্ষাক্রাভার বেলবে। খেলবে উর্চ্চীর মত শীক্ষা সম্পন্ন ক্লাবে। দেশ বিভাগের পূর্বে कर दिसाकीय छणात वाश्मा धाणात वाश्मात কি নাম ভাকই ছিল। ফুটবলে ভারত জোড়া লাম আৰু বাঁদের তাঁদের কত জনেরই ন। शास्य थीक शराक देवाकी कारवा क्र क्रांव-জমক এখন আর নেই নেই ট্রফি জেতার জন্য हर्ला इवहा स्नरे भरतको एमख्या स्नख्यात ঢালাও কারবার উষাভীর। 'এই চরিত্র ধৈন্টোর জনাই বিগবজিং অনেক ভেয়ে চিক্তে প্রথম আত্মপ্রকাশের ঠিকানা ভিসেবে **এই** म्झारक्टे द्वाल निरम्राहन।

বিশ্বজিৎ যদিচ এপাব বাংলার ছেলে ত্ব একনা ওপার প্রতিধিত বাংলায় উয়াভূদি ঐভিহ্যের ইতিহাস ঐশেবরে'ব বিস্থারিত ইতিহাস ওর নথ দপরে। বিশ্বজিং জানে এই উয়াড়ীতেই দিকপাল বহা খেলেয়াড় হব-হব প্রতিভার আলোকে আ'লাকিত করেছেন। সর্বন্ধী ভেজেশ সোম পার্মা কেন এস রায় (থোকা) এ বস্ সংদেশ দত তাপস সোম অস্থাম সেমে সাশ্যত ঘোষ পরিজল দে সমরেশ চৌধারী শান্ড মৈচ প্রমতুষেরা কি প্রতিনঠাই পেয়েছিলেন ? প্রথম দুজান সবশ্য প্রাক **⊭বাধীতা পরে অনিভক্ত বাং**শ;—ঢাকায়। বাকী সব এপার বাংলায় খণ্ডিত ভারতে।

कारन বলেই ব 70110 পর্মপ্রায় জেনেছে বলেই বিশ্বজিং বেরার ভান্ত-শীলনের একাগ্রতা এবং নিণ্ঠ। এতো প্রবল। দ্রটি পা-ই সমান কার্যকর বিশ্বজিতের। হেডিং ট্যাকলিং পরিমালিত। কভারিং এবং ^২টপারের সবচেয়ে বড়গুলে ক্রায়গা নেওয়া (शिक्ष**मका**ल रूल) अवह समहे मरक्त छिविन-বিউসন নজর কাড়ার মত। শৃধু ডাই। নয়, বড় মেজাজও রয়েছে তার। ইংট্রেংগলই হোক মোহ্নবাগানই হোক বা মহামেডানই হোক-মাঠে নেমে কোন কমাণ্লকসে ভোগে না বিশ্বঞ্জিए। এবং ক্মপেলকস নেই বলেই... মেদিনীপুরের এই গাঁরের ছেলোট্র বিক্রমে আৰু বিশ্বাসে টান পড়ে না, ভাঁটা পড়ে না **टेश्जा**ट्यः

সন্তোষ বস্তু

যেরক ম আগনে লেগেছে তাতে মধাবিত, নিদ্ন মধাবিত, আত্মাদের মত ছা' পোষা পরিবারের সামানাত্ম সাধ-আহ্যাদট্রকও ডকে ওঠার জোলাড়। এই আহাদের কথাই ধর্ম না। ন্ম আনতে পাল্ডা ফ্রোয়। ছোটবেলায় দেখতাম চাল ডাল তেল নান আপতো ি**খড়**কির দশুজা দিয়ে। আজ দেখ**ছি** ঐ চাল, ডাল, তেল, মৃন, ক্যুলার আলোচনা নিয়েই সদর দরজা জনজনাট। তাহলেই ভাবুন আমাদের নিম্ন-মধ্যবিত ফ্যামিলির ছেলের৷ রেশনের ভাববো কথা कामास्त्र ? क्वंवरलव कथा ভाববো ना সংসার নামক জাহাজটার পেটে কয়লা জোগাবো ?

স্তুরাং ব্রুতেই পারছেন, সংসার চালাবা জনা আলাদের থাটতে হয় পড়া-শ্না করতে হয় এবং এরই ফাকে ফাকে সময় করে থেলার অন্শীলন করতে হয়।

নিজের কথা বলার আলে রাজ>থানের ত্রাণ গোলরক্ষক সম্ভোধ ক্ষার মাথে ঐ कशारे भाननाम। मरन्जाश कनकाणात मारहे এসেছে বছর কয়েক িককু ফাটবন অন্য-ধাগী মহলের নজর কেড়েছে এবারই। অবশা গত বছর জনমার বাংলা দলের হয়েও স্টেটাষ থবে ভাল খেলেছিল কৃষ্ণ-নগরে। এণিটাসপেসন বেশ ভাল নড়া-চড়ারও সপ্রতিভ। সট নেওয়ার আগে প্রতি-পক্ষের পায়ের ওপর ব্বকে সাহস্থনিয়ে কাঁপিয়ে পড়ে বল গ্রিপ করতেও অসাধারণ পট্র। এই পট্রছের, এই নৈপ্রণার দ্বীকৃতি হিসেবে সভেতাষের স্থান হয়েছে বাংলা (জ্বানমূর) দলে। বরদল্ভ ট্রাফডে कलकाला वन्यविमालश् अकाम्राम् अमन्ती আসরে আই এফ এ চিমে।

সত্তোবের জন্ম ১৯৫৪ সালের ৭ ফেরুহুদ্রী হাওড়ার রামকৃঞ্পুরে। বাবা শিবপদ বসঃ টেলিফোন অপারেটর। মা-বাবা, তিন ভাই, জিন বোন নিয়ে পেলায় সংসার, প্রায় জাহাজেরই মত। অভাব-অন্টন, নানা ঝড়ঝাপটা থাকলেও মা-বাবা দাদা বিমল বৃস্তু ছোটবেলা থেকেই খেলা-ধালায় উৎসাহ দিয়েছেন অকু-ঠভাবে। বলা বাহাল্য গোটা পরিবারের লোকজনই ্নভরিযোগ। একজন গোল-কীপার হতে সহযোগিত। করছেন। ফ্রটবল মাঠে-লাদ্ট ডিফেন্সের মত গ্রেত্বপূর্ণ পজিসনে দাঁড় করিয়ে দিহেছিলেন হাওড়া সন্ধানী ক্লাবের কোড মণ্টা সরকার। হাওডা সংধানী থেকে সভেষ্য এলে সালকিয়া ফ্রেণ্ডসে এবং ১৯৭৪-এ রাজ্প্রানে। রাজ-স্থানে আসাধ্র মালে পটানা ও সাবোধ রায়। পটাদাই এখন সকের তর ফ্রেন্ড, ফিল-সফার এবং গাইড কলকাতার বিচিত্র গড়ের মাঠে প্রভিষ্ঠার আগে ১৯৭১-৭১ সালে আনতঃ জেলা ফাটবলে এবং শেষোন্ত বছর ইম্ফলে জাতীয় স্কুল গেমতে বাংলা দলেব প্রতিনিধর কথেছে। ১৯৭০ সালে হাওড়ার হয়ে খেলেছে আনতঃ জেলা ফাট-বল প্রতিযোগিতায়। হাওড়াই '৭৩-এর চ্যাম্পয়ন।

সন্তেষের বয়স কম কিন্তু ঘা থেয়ে থেয়ে মাঠে এবং মাঠের বাইরে সে বীতিমত সিরিয়াস। সব সময়েই গৃশ্ভীর। মনে হর যেন মূখ-গোমড়া এক ট ছেলে। অন্থাক হাসে না, আবার অন্থাক কাদেও না।

বিপলে বল্যোপাধ্যায়



খেলার জগতে মেয়ে

শিরীণ কনট্যাক্টর

পাশ โพชาใเลส বোশ্বাইয়ে। - কিণ্ড খ্ব ছেলেবেল।তেই বাবা আহায় কলকাতায় নিয়ে আন্সেন। ভাউ স্কুলে পড়ার সময়েই আচিন লামসডেনের কাছে ছকি খেলার তালিম পাই। এই সপো বাশ্কেটবল আর টেবল টেনিস্তু খেলতে থাকি। আমাদের পরিবারের সকলেই প্রভাগোনা আর থেলা-ধলোহ উৎসাত্রী। বাবার আমাকে খেলায় উৎসাত দেন, আমি তার একমার কন্যা। কালীঘাট ক্লিকেট মাঠে সোদন শিলীন বলছিল। এই স্থান্তী লম্বা ভিপছিপে গড়নের মেয়েটি কলকাতাকেই মাড্ভূমি বলে মনে করে। ছাকি আর বাচেকটবল খেলতে শুগা করে ১১৬৪ সালে। প্রথমে ডাউচিলস দলে এবং পরে ক্যালকাটা পাশ্পীন দলে খেলে। চোদ্র ইংরেজী ছাড়াও চমংকার বাংলা বলে শিলীন। বলে, আমিত বাংগালীই। ১৯৭১এ লোরেটো কলেজের হারী অবস্থায় আনতঃ বিশ্ব বদ্যালয় টেবল টেনিসে কলকাখার প্রতিনিধিত করেছে সে। ১৯৬৯তে দিল্লীতে প্রথম এশীয় হাক প্রতিযোগিতায় শিশৌন ভারতীয় দলে খেলেছে। এর পর '৭০এ জোপান ও হংকং প্রধ্রেও ভারতীয় দলে ছিল। ভাপানে ভারতীয় দল স্থকটি টেস্টে জয়ী হয়।

ব্যুদ্ধেট্যুল্ভ শর্নীনের পট্ড কম নয়। এখন তো ও বাংলা দলে আধনেটী। কুয়ালালামপুরে তুতীয় এশবিয় ^{আসরে} ও ভারতের হয়ে খেলেছে। পরে বাংলা দলের হরে শ্রীলংকায় গেছে আমন্ত্রণমালক বাশেকটবল প্রতিফাগিতায় থেলতে। বাংলা ালে খেলছে ১৯৬৮ সাল থেকে। ৭০-এ ণারীরিক অসংস্থাতার জন্য জাতীয় প্রতি-যোগিতায় খেলতে যায়নি। ভিন্তয়ালায় প্রাক্ত-এশাই ব্যক্তের প্র **অন**্ধিঠত শ্রণীন বাংলা দলের পাক্ষ নেমে ক্রণড়া-গ্রত্থের ফলে ভারতীয় দলে পথান পায়। ভলওয়ারায় বাংলা দলই ভিতেছিল ৫ং মাণে ৭১-এ শিরীন কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয় न्त्वत् अधिनाशिका इत्स्थिन।

হকিতে ১৯৬৬ সালে বাংলা দলের হয়ে ভাতীয় আসরে খেলেছে। সেবার উদ্যোক্ষা কোফালিয়রের নিবাদের ফাইনালে তিন্ট গোলাই কবে শিরীন। তিবাদ্রমে গাতীয় ক্রনির আসরে শিরীন স্বতাহের শ্রুষ্ঠ কুশ্লী মুন্নোর্যত হয়।

শিরীন ক্যালকাটা গালাসে প্রুলের পাঠ শ্ব করে লোরেটো কলেজ থেকে স্নাতক হয়েছে। বতমানে 'ইউনিয়ন কাৰ**াইড'**-এ নাকরী করছে।

হিল্ডাস। করল্ম—হাঁক ও বাস্কেট
বলে তোমার আন্তর্জাতিক আসরের
অভিজ্ঞতা নিশ্চয়ই ভালনকম হ্রেছে? সে
উর্ব্বর দল—তা হ্রেছে। ছ্র্কিতে আমরে
ভারতীয় মেয়েনা খ্বই ভাল। পালাবের
কয়েকটি খেলোয়াড্রে বাজিগত ক্রীড়াচাছ্রা
উল্লেখ করার মত। এই ধারা বন্ধার রাখলে
বিশ্ব আসরে আম্বরা সহজেই শাবিস্থানে
থাকতে পালবে। প্রণিগলের মেয়েদের মধ্যে
হ্রিবর প্রচলন খুব বেশী ন্র। ম্ভিট্মের

কজন খেলে। বাপ্সালী মেয়েরা বেশী মানায় হকি খেলতে এলে আমার বিশ্বাস ফল ভাল চবে ধ

किंग्ड वास्किवेदाम भारतीन आधारण्य দেশের মেরেদের সম্পূর্কে খাব আশার কথা লোনাডে পদাল सा। জবৈ, প্রসংগত জানাতে एकारणिन रव जानााना रमरका कारठेत रकारठे[€] বাদেকটবল থেকা হয়। ভাতে অনেক সংবিধা। **জামারা মা**টির কোটে খেলতে অভ্যাস করি বলে আমাদের গতি যথেণ্ট দ্রত হয় না। এদেশে এইসব আধানিক কোট এবং প্রশিক্ষণ ব্যবস্থা চাল- না করতে পারলে বিশ্ব আসরে আম্বা পিছিয়েই থাক্ব-এই কথাই বললে শিরীন। বলল আপনাকে কি বলব, দক্ষিণ কোরিয়া, জাপান বা ফিলিপাইনের মেয়েদের দক্ষতা দেখে আমরা অবাক হয়ে গেছ। যেমন তাদেশ খেলার চাত্য, সপ্রতিভ দুত্তা, তেমনি ভাদের শারীবিক পট্তা আলার তো ধারণা আমাদের ছেলেরাও ওদের কাছে জিতকে বেগ পাবে।





দশ ক

ইংল্যান্ড বনাম পাকিস্তান তথীয় টেক্ট ক্লিকেট

ভভালে ইংলাণ্ড বনাম পাকিশ্তানের শেষ তৃতীয় টেস্ট ক্লিকেট খেলাটিও প্রথম ও দিবতীয় টেস্ট খেলার মন্দ অমীমাংসিত থেকে গেছে। ফলে ইংলাণ্ড বনাম পাকিশ্তানের ১৯৭৪ সালের টেস্ট কিকেট সি বছত অমীমাংসিত থেকে গেল। এখানে উল্লেখ্য, ১৯৪৪ সালে পাকিশ্তান তার প্রথম ইংলাণ্ড সফরে গিয়ে এই ত্তাল মাঠেই ২৪ রামে ইংলাণ্ডকে হারিয়েছিল। ইংলাণ্ডকে বিশক্ষে পাকিশ্তানের একমাত জয়। বতামানে এই দৃষ্টে দেশের টেস্ট খেলার ফলামলে দুট্টাল ঃ খেলা ২৭, ইংলাণ্ডর জয় ৯, শাকিস্তানের জয় ১ এবং খেলা জয় ১

পাকিস্তানের অধিনায়ক ইনিংখাব আগম আগের দ্বারের মত এবারও টসে জিতে প্রথমেই ব্যাট করার দান নিয়েছিলেন। প্রথম বিনের থেলায় পাকিস্তান ২ উইকেটে ৩১৭ রান সংগ্রহ করেছিল। ২য় উইকেটের জ্বটিতে মজিদ খা এবং জাহির আম্বাস ১০০ রান ভুলেছিলেন। মজিদ মান্ত সংই রানের জানো স্সন্ধারী করতে পারেন নি। অসমাণ্ড ৩য় উইকেটের জ্বটিতে ১৫১ বান ভুলে জাহির আম্বাস (১১৮ রান) এবং মুশ্তাক মহন্দ্দ (৬৭ রান) প্রথম দিনের খেলার অপরাজিত থাকেন। ওভালের পি৯ ব্যাটস্য্যানদের সহায়ক ছিল। পাকিশ্চানের ৩০০ রান উঠেছিল ৩২০ মিনিটে—৮৩'ও ওভারের শেলায়।

দিবতীয় দিনে পাকিশ্ডান তাদের প্রথম ইনিংসের ৬০০ রানের (৭ উইকেটে) এংথায় থেলার সমাণিত ঘোষণা করে। এই নিয়ে পাকিশ্ডান ইংলান্ডের বিপক্ষে জিনবার পার্চ শতাধিক রানের ইনিংস থেলাগো। পাকিশ্ডান প্রথম দিনের ৩১৭ রানের (২ ইইকেটে) সংগ্রু আবত্ত ২৮০ রান খোল করে ৫ উইকেটের শুইয়ে। তৃতীয় উইকেটের জ্বিত জাজির ও মাশ্ডাক ১৭২ রান তৃত্বীয় উইকেটের প্রত্যাক্ত করে। আগের রেকর্তা জ্বির নতৃন বেকর্তা করেন। আগের রেকর্তা জিল ১৫৬ রানের (হানিফ মহম্মদ্ এবং জাত্তেদ বাকি, ঢাকা ১৯৬২)

াদবর্থীয় দিনের লাপের সময় পাকিদতানের রান দৃড়িয়ে ৪০০ (৩ উইকেটে)।
খেলায় অপরাজিত ছিলেন জাহির (১৮৭
রান) এবং আসিফ (২১ রান)। ৪৫ উইকেটের জাহির জাহির পলের ১০ যোগ করেছিলেন।
জাহির ২৪০ রান করে আউ করেছিলেন।
তারি দিব্দীয় টেস্ট সেগুরী। এখানে উল্লেখ্য
তিন বছর আগে ইংল্যান্ডের বিপতে

বার্মিংহামে জীবনের প্রথম টেস্ট খেলছে নেমে জাহির ২৭৪ রান করেছিলেন।

দ্বতীয় দিনের ৰাঞ্চি সম্মের খেলার ইংল্যাণ্ড একটা উইকেট খুইয়ে ১৫ রান কবেছিল।

ততীয় দিনে ইংল্যান্ডের প্রথম ইনিংস-এর রান দাঁড়ায় ২৯৩ (৪ উইকেটে) খেলায় ইংল্যান্ডের <u>এপনিং ব্যাটসম্যান</u> ভেনিস আর্গিস ১৬৮ বান করে অপরাঞ্চিত থাকেন। টেস্ট খেলায় আর্মিসের এটি ৮ম সেঞ্জী অপর্যানকে পাবিগ্তানের বিপক্ষে ৩% সেলাবী: ২**য়** উইকেটের জাটিতে আন্ডার-উজ (৪০ বান) এবং আছিল দলের ১১৯ রান তলে দিয়ে খেলার ভিত শক্ত করেছিলেন। অন্যমিস এবং এডবিচের ৩া উইকেটের ফ্রান্টেডে ৬৬ বান উঠেছিল ৭২ মিনিটের খেলায়। চা-বিরতির সময় ইংলাভেডর ২ টেইকেটে ২০৮ বান দাঁভাষ। খেলাব অপরাজিত ছিলেন আগিয়স (১৯৫ রান) এবং এডরিচ (২৫ বান)। ততীয় দিনের খেলার শেষে দেখা গোল 'ফলো-অন' থেকে অব্যাহতি পেতে ইংলাদেডর তখনও ১০৮ রানের প্রয়োজন। হাতে জন্ম ৬টা উইকেট।

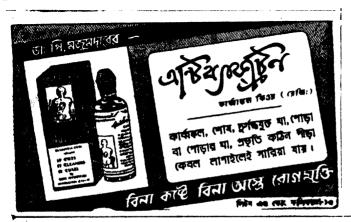
চতুর্থ দিনে ইংলাদেডর প্রথম ইনিংসের রাম দাঁড়ায় ৪০৮ (৬ উইকেটে)। ফলো-অন থেকে অব্যাহতি পেতে ইংলাদেডর ৪০১ রামের দরকার ছিল। বৃণিটুর জন্যে নির্দিষ্ট সময়ে থেলা আবন্ধ হয়। ভেনিস আগ্রিস তার ১৭৮ রামের মাথায় সরফরাজের বল হুক করতে গিয়ে মুখ্য দার্যে আঘাও পান এবং শেলা থেকে অবসর নিতে ব্যাহ হন। ভাশান বিরতির সময় ইংলাদেডর রাম দাঁড়ায় ৬৭২ (৪ উইকেটে)। থেলায় অপরাজিত ছিলেন ফোটার ৪৪১ গান) এবং থেলা (২৬ রান)। ইংলাদেডে বান প্রাক্তির বিরতির সির্দিষ্টি ১৯০ রাম পুনি হয় ৬০৮ মিনিটে (১২২ ওভারের থেলায়)

শেষ প্রথম দিনে ইংল্যাণেডর প্রথম ইনিংস ৫.৭৫ রানের মাথায় শেহ হয়। থেলায় ইংল্যাণ্ডের প্রথম দুটি সেণ্ডুরী করেন—ডেনিস আছিলে (১৮০ রান) এবং কিথ ডেচার (১২২ রান)। কিস ওলেডর ৬৫ রানও উল্লেখযোগ। টেস্ট ক্লিকেটে তার এই প্রথম অধা সেণ্ডুরী রান্ধ ফেল্যার দ্বার্থি ঘণটা ৪০ মিনট খেলেডার সেণ্ডুরী গ্রাণ ক্রেন্ম।

পশুম দিনের বাকি সময়ের খেলায় পাকিস্তান দিবতীয় ইনিংসের ৭৫ উইকেট খ্**ইয়ে** ৯৪ গান সংগ্রহ করেছিল।

ইণ্ডিখাবের ডবল

চতুর্থ দিনের খেলায় আলোন নটের উইকেট পাওয়ার স্তে পাকিস্থানের অধি-নায়ক ইন্তিখাব আলম টেন্ট কিকেনে ভাবল সম্মান লাভ করেন-্তাজাব রান এবং শত উইকেট। এখানে উল্লেখ্য, পাকিস্থানের খেলোয়াড্দের পক্ষে টেন্ট খেলায় এই ভাবলা সম্মান লাভ এই প্রথম।



त्योचत्त्रत्र जल्म जल्म यञ्चना खात करष्टेत्र वाक्षाठि आल्ज

জোৱালো আর নির্ভরযোগ্য অ্যানাগিন আপনার অসসয়ে ব্যক্তে আঙ্গে

खार्गित निम्म्बरे कलात्का कार्या छेश्त्रय (शंक याम श्कृत्व छान ना। श्रम्भ कलात्क (कार्या छात्री क्लिय (म्यार्या १एम् — जात्र खार्गित (कासरत्व युज्जा) खात्र अप्रजित्व मक्रण श्रात्व स्वागार्थी । अ (११ जप्तराञ्च खार्यम् खार्ममारक प्राराय कत्राय (कात्रात्वा खात्र विक्रत्यामा खार्याप्तिय ।

আ্যানাসিনের গুণ অনেক। এ বে গুণু যন্ত্রণা থেকে আরাম দেয় ভাই নর—যন্ত্রণার দরুণ যে হভাশভাব আসে ভাও দূর করে দেয়। আপনাকে চটপট আরাম আর থক্তি দিয়ে, আ্যানাসিন আপনার মুখে হাসি ফুটিয়ে ভোলে।





এই অসহায় দিনগুলিতে ষদ্ধণা আর অস্থ ভি ভোগ করে পড়ে থাকবেন না। আজ ঘুগ অনেক এগিয়ে পেছে। জোরালো আর নির্ভরযোগা আানাসিন আপনাকে চটপট আরাম দেয়, চাঙ্গা করে তোলে। আপনি অক্লেশে আপনার রোজকার কাজকর্ম করতে পারেন।

> মেয়ে হয়ে জন্মানো মাঝে মাঝে ঝঞ্চাট বলে মনে হয়। কিন্তু আজ এই অসময়ে আপনি আানাসিনের সাহাযো সে ঝঞ্চাট পুর করে—জীবনের সকল আনন্দ পুরো উপভোগ করতে পারেন। প্রয়োজনের জন্মে গ্রাওবাাগে সবসময় আানাসিন রাধুন—মত্ত বড স্থবিধে।

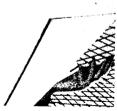
क्षित्रप्रात्मा छा ५० तिर्छत्र(या ग

णुरातात्रित्

जनारः गःथा-रागतात्रः उभयसकानी उष्यश्रामात्र सर्थाः प्रचलसः कतिक्रेष्ट

Regd. User of TM Cooliney Manages & Co. Lat.





Phone 55-5231 (14 lines)



0120

১৩ সেপ্টেমর ১৯৭৪॥

নাত ভিয়াত হাব। শরাহের আন ক ভালের স্থাব। দেবা দেবে কোড়ান আরু গুরু অবাজ্বন্য। অবেক সময় এই সত-গুরু বাই বাইরের মুলো-(এ)কা আনক্রমান

ALICA RELEGIONAL PROPERTY OF THE PARTY OF TH



অপরাজিয় কথানিক্রা

শরৎ চি প্রের

উত্ত-জিনাদিন উদলাক্ষ

শরং - সাহিত্য-সংগ্রহ

শতকরা ১৫০০ কমিশনে

কিয়ের অদুর্য সুযোগ

শরৎ-সাহিত্য-সংগ্রহ

उ । हे लिए हे स्टेश श्रेष श्रेष श्री अत्मावत नर्यक विश्रे सूर्विया वलवंद थाकित

সম্পূর্ণ ১৩ খণ্ডের মূল্য একত্রে ২৩৪ টা. এই সময়ের জন্য কমিশন বাদে ১৯৯টা

> প্রতি খাণ্ডের মূল্যঃ১৮ 00 টা. কমিশন বাদে ১৫ ৩০ প

এম,সি,সরকার অ্যাণ্ড সন্স প্রাইভেট লিমিটেড ১৪,বঙ্কিন্ন চাটুজ্যে স্থীট, কলিকাতা -১২ ফোন: ৩৪-১৭৮২ जिक्र धारष्टत जात्र এकि मणीत्रव तिरवस्त

সৈয়দ মুজতবা আলী व्यवनावनी

প্রথম ও দ্বিতীয় খন্ড একই সঙ্গে আগামী ২১শে সেপ্টেম্বর তাহার জন্মদিন উপলক্ষে প্রকাশিত হবে।

॥ मात्र श्रव्धि थ । कृष्टि है।क। ॥

কথাসাহিত্য-সমাট দক্ষিণারঞ্জন মিত্র হন্তমদারের সেই এক এবং অদ্বতীয়

ठाकु'भात स्राल

ন্তন ষড়বিংশতি মুদ্রণ প্রকাশিত হুট্রে

বাংলা লিখা সাহিত্যের এই সর্বল্লেট প্রন্থখানিকে সর্বাণ্যস্কের এবং প্রসক্ষা বজার রাখার প্রাণপণ এই দুল্পে-সভরা দিনে কাগজের দুখ্পাপ্তা ও দুর্শ্লাতা বাধাই সরজামের মহাঘাতা এবং ছাপাথানার কর্মকতির মধ্যে रमहे मान बकाम द्रांथरक शिरम बहेदित नाम वाफारक शरम्रक। आना कति आमारमन मामाकहि ও निमिकाहैन। सन्ध्या बहुक्ष সে এটি ক্ষমা কৰৰেন।

প্রবোধকুমার माना(लब অভিনৰ আঅজীবনী

বনস্পতির বৈঠক

প্রথম ও দিতীয় খণ্ড প্রকাশিত হয়েছে আত্মজীবনীর ইতিহাসে এ এক অত্যাশ্চর্য সংযোজন। ্যাঙ্গালী সমাজ-জীবনের এক মূল্যবান দলিল।

^{এথম খন্ড}– কুডি টাকা

শ্ৰতীয় খড- আঠারে। টাকা

মিত ও ঘোষ পারিশার্স প্রাঃ লিঃ

১০ শ্যামাচরণ দে স্ট্রীট কলি-১২ ফোন: ৩৪-৮৭৯১ ৮৬।১ মহাত্মা গাণ্ধী রে:ড কলি--৯

बत्राका मावात्विव जुनवाष्ट ५३ छन त्वनी काभज़ (भाग्र—ज एम अस (य ध्वापंत्रहे व्हाक । ডেট কাপড় ধোয়ার কেক

(कवन एड्टे लाना स्टब्स हुवान जात्र भूरा विन । এछि याभनात्र शक्त्र निम्मेश निम्मेश मान किया तीत — य कात मारेटक भारतत ডেট কাপড় ধোয়ার পাউডার

हाग धूरा भतिकात कतात अतखादेतपूज भाउँजात, मक्तिप्र किंगु क्रिकित तथ। ସ୍ତ୍ର-୭୫

₹

newi

Q.

Shilpi HPMA SA/74 Ben

ता कथता किन,ता शापतत— धयत खखना प्लांटेन छेऽक्षे छे९ भाएत

১৪ বর্ষ



সংখ্যা ১৯ ম্জ্যে—৫০ প্রসা

"ইন্ডিয়ান জ্যান্ড ইন্টার্ণ নিউজ শেপার শেসাকটির সদস্য'

Friday 13th September, 1974 শ্রেশার, ২৭ জার, ১০৮১ 50 Paise

স্ক্রচিপত্র

পশ্চা বিষয়

৬ সম্পাদকীয়

৭ জমিল

১১ কলকাতা, কলকাতা

३३ এই बारलाव थवद

১৪ मिट्याबिस्मरम

১৬ পট্ডাল

2 € 40 **€** 184

১৭ সেই সৰ মান্ৰ

২০ সাহিত্য ও শংক্রতি

२० प्रक-ग्राची

२৯ अब्राउ शिक्टम टनहे

৩০ চিঠিপত্র

লেখক

(গরুপ) শীহারিক বায়

শ্রীকৈমিনি

শ্রীদেবদন্ত

শ্রাদেশনত শ্রীপুশ্ভরীক

জন আবদুল হরি লামা

(উপনাস) গ্রীমনোজ বস্

গ্রীঙ্গরংকার,

গ্রীকৃষ্ণা সেনগ**ৃ**ণ্ড

श्रीकनक मञ्जूमेगात

আমি সি আই এ এজেণ্ট এর পর

চিরঞ্জীব সেন-এর

^আর একটি অসাধারণ বই

স্যাবোটাজ

এ সেই সি আই এ এজেণ্ট-এরই ইয়োরোপে আরু একটি দুঃসাহসিক অভিযানের কাহিনী। চাঞ্চল্যকর ঘটনার বিসময়কর ঘাতপ্রতিঘাত, রুদ্ধশ্বাস ইত্যাদি এইসব প্রচলিত শব্দ আমরা ব্যবহার করছি না কারণ বইখানি এতই উত্তেজনাপূর্ণ যে ঐ সব শব্দও বইখানির সঠিক পরিচয় দিতে অক্ষম। 'স্যাবোটাজ' পড়ে শেষ না করা পর্যন্ত আপনি উপলব্দি করতেই পারবেন না যে কি দারন্থ একখানি বই পড়ে চরম তৃপ্তি লাভ করলেন। বইখানি দীঘদিন আপনাক সমরণে থাকবে।

প্রকাশিত হয়েছে। ৯.০০

েশেতের আরও কয়েকখানি বই

যুদ্ধ আর যুদ্ধ ৮. আমি সি আই এ এডেপ্ট ১ ্ শিরায় শিরায় পাপ ৬ আমি কে জি বি এজেপ্ট ৭

॥ নতুন প্ৰতক তালিকার জন্য লিখ্ন ॥

বিশ্ববাণী প্রকাশনী, ৭৯।১বি মহাত্মা গাল্ধী রোড কলকাতা—৯

৬০ টাকার বই মাগ্র ৫১ টাকার শেলেশ দে'র আমি স্বভাষ

তিন খেনেড সম্পর্ণ প্রথম খন্ড (৬ন্ট সংস্করণ) ২০ দ্বিতীয়খন্ড (৩য় সংস্করণ) ২০, তৃতীয়খন্ড (১ম সংস্করণ) ২০,

- তিন খণ্ডের মোট মূল্য ৬০
 টাকার ছলে মার ৫১
 টাকায় আগামী ২১শে.
 আক্টোবর (আজাদ হব্দ
 বাহিলার প্লাতন্তা দিবস)
 '৭৪ পর্যন্ত দেওয়া হবে।
- * কেবলমার তিন খডের ক্রেতাগণই এ সুযোগ পাবেন
- নগদে অথবা ব্যাক্ষ-ড্রাফটে
 টাক। পাঠাতে হবে । বই
 টাকা জমা দেওয়ার সঙ্গে
 সঙ্গেই পাবের ।

রবীন্দ্র লাইবেরী ১৫ ৷২. শ্যামাচরণ দে শ্রীট, কলি-১২ ঃ : ৩৪-৮৩৫৬



ē

স্চীপত্র

লেখক	া বিষয়	প্ঠা
শ্রীদিলশীপুরুম র মুখোপাধ্যায় শ্রীপ্রভাতী গংল্গোপাধ্যায় শ্রীপোলালচন্দ্র রায় শ্রীজাপালচন্দ্র রায় শ্রীজালালচন্দ্র রায় শ্রীজালালচন্দ্র রায় শ্রীজালাল চোধারার শ্রীজালাল চোধারার শ্রীজালালালালালালালালালালালালালালালালালালাল	সেকালের সংগতিগালী ভিটো শরংচদ্রের রক্সনেশ্রে জবিন বিজ্ঞানের কথা মলোকিক জলান্দ অংগনা রুপেনীর খাডা রাজার রক্ষো কুডিগ্রামের ভাকবাংলো খেলার জগতে মেরে মাঠের নায়ক খেলাখ্লা শতবর্ষের সমর্থীয় প্রেক্ষাগাল্ ভবর্ম বিলেন কৈর বলাহি স্ট্রিড সংবাদ বাদ্বাই ফিলেমর কড়চা বিদেশী ছবি রুগ্য জগতের রুগ্য কথা মঞাভিনয়	
শ্রীশ্-র-চ শ্রীক লীখু মাুংখাপা≀	ুৰোশ্ৰাই ফিলেমর কড়চা , বুৰিলেশী ছবি ৬ রংগুজগড়ের রংগুকথা	90 48 48 49

भूकात कि नकुन नाधेक क्यालन? किस्तीभ सक्त्यमगरतत

জটায় নুসংবাদ ৪১

্ ১টি সেট, ১টি নারী চবিচ। প্রায়াজনে নারী চবিত্র বাদ দিয়েও জডিনা করা চলে, নজুন জাশ্যিকের নাটক। ডেক্টাডু বশ্বেদ্যাপাধ্যালের

পলাশেররঙ ৪•৫০

[5िंट लाउँ, 5िंगाती जीता।

লাভার্স লেন৩•২৫

[নারীচরিত্র বিশ্বত প্রশোপা হাসির নাটক ১টি সেটে!

> সমর মনুখোপাধ্যমের খেত নাটক

মৃতদেহ

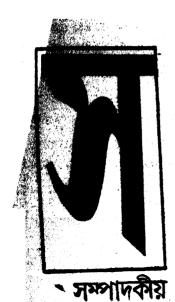
৩•২৫

[১টি সেট, ১টি নার**ী চরিত]** সংপ্রেণ নাটকের তালিকার **জন্য লিখ**নে

निभिका : ००¹>७ करनन ता, किन-३

এ সংখ্যার প্রজ্ঞদ : শ্রীনিতাই ঘোষ গত সংখ্যার প্রজ্ঞদ এংকেছিলেন : শ্রীইন্দাণী চৌধ্রী





জন্মপ্রকাশের আন্দোলন

শ্বিদেয় নেতা জয়প্রকাশ নারায়ণ ও তাঁর আন্দোল সম্পর্কে কংগ্রেস যেন ভালের মনশ্বির করেই উঠতে পারছে না। নিখিল ভালত সংগ্রেস কমিটির গত আধ্বিশনের প্রায় সবটাই জন্ত ছিল তাঁর এই আন্দোলনের প্রসংগা। সরাসরি শ্রীনারায়ণের নাম না করেও তাঁর নেতৃত্বে বিহারে যে আন্দোলন চলছিল তার বিরুদ্ধে কংগ্রেসর কমিটির ঐথিবেশনে যথেণ্ট বিরুপে মন্তব্য করা হরেছিল। এমনিক ইদানীং কংগ্রেসের মন্ত থেকে শ্রীনারায়ণের বিরুদেখ কিছু বাজিগত কটাক্ষপাত করতেও ছাড়া হয়িন। সম্প্রতি একটা সময় এসেছিল যথন জয়প্রকাশজীকে গ্রেম্প্রার করার কথাও নাকি চিন্টা করা হয়েছিল। কংগ্রেসের সাম্প্রতিক যুব সমাবেশের প্রতিনিধিদের উচ্ছাখল আচরু সম্পর্কে আলোচনাকালে সংসদে কেন্দ্রীয় স্বরাত্মমন্ত্রী উমাশ্বের দী ক্ষত অক সমরে একথাও বলেছেন যে, বিহারে জয়প্রকাশ যুবক ও ছাত্রদের যে উম্কানি দিছেন তর্গদের মধ্যে উচ্ছাখলতা তারই ফল। একদিকে যথন জয়প্রকাশ ও তাঁর আদ্দোলন সম্পর্কে কংগ্রেস থেকে এই মনোভাব প্রকাশ করা হচ্ছে তথন সম্পর্কে একটি ভিন্ন চিন্ত দেখা গোল সম্প্রতি তিনি যথন উত্তরপ্রদেশে গিয়েছিলন। লখ্নোর রাজ্যখনে রাজ্যশাল আকবনু আলি তাঁকে আপ্যায়িত করেছেন এবং সেখনে তিনি রাজ্যর মুখ্যমন্ত্রী হেমবতনিশন বহুণান্যার সন্ধ্যে ভোজসভায়ও মিলিত হয়েছেন।

প্রতিরক্ষামশ্রী জগজীবন রাম সম্প্রতি পাটনার জয়প্রকাশজীকে বে মহান দেশপ্রেমিক ও মানব্ডাবাদী' বলে অভিহিত করেছেন তার মধ্য দিয়েও কংগ্রেসের এই শৈষ্ত মনোভাব প্রকাশ পেয়েছে। তার এই বিবৃতি নিয়ে কংগ্রেসের ভিতর কিছাটা বিতর্কের সৃষ্টি হয়েছে। কংগ্রেস এম পি শ্রীশশিশেশর প্রীরামের এই বিবৃতির তীর নিক্সা করেছেন, আবার আর একদল এম পি শ্রীরামকে সমর্থন করে বিবৃতির দিয়েছেন।

জরপ্রকাশজীর আন্দোলন সম্পর্কে কংগ্রেসের এই শ্বধাগ্রস্কতার একটা সন্ভাব্য কারণ হল, কংগ্রেসের পক্ষে এই আন্দোলনকে একেবারে উপেক্ষা করা সম্ভব হচ্ছে না। এই আন্দোলনের মোকাবেলা করতে গিয়ে বিহারে গফার মণ্টিরসভাই টলমল করে উঠছে এবং বিহার বিধানসভার আয়ু ফুরোতেও আর দেরি নেই বলে মনে হচ্ছে। এই অবস্থায় উত্তরপ্রদেশের ছার ও যুবকরা জয়প্রকাশজীর আশীবাদ নিয়ে যে আন্দোলন আরম্ভ করতে যাছেন তার পারণাম কি হবে বলা যাছে না। অতএব শ্রীনাবায়ণের সংশ্যে বিরোধ আর না বাড়িয়ে তার্ম সঙ্গে একটা বোঝাপড়ায় আসার চেন্টা করাই ভাল, কংগ্রেমের মধ্যে এমন একটা নিবলীয় চিন্তা দেখা দেওয়া অন্বাভাবিক



কেবিনের পদা ঠেকে এরা চ্বাক্তর। তেতারে বারার আগে আড়চোখে বৈদেহী একবার বাইরেটা দেখে নিকা। সঞ্জয় কোন দিকে না তাকিয়ে একম্খ ধৌরা। ছেতে কোণের চেয়ারটায় বসে পড়কা।

—দেখেছো—বৈদেহী ওর পালে বঙ্গতে বসতে যেন চাপাস্বরে গঙ্গে উঠল।— আমাদের সেই লোকাল গাঙ্গেন বৃদ্যোটা আক্ত কেমন ভাবডেবে চোথে শাসন করছে।

—ও, করছিল বৃ্ঝি।—বেন কথার পিঠে কথার ঠেক দেবার জনাই সঞ্জয় বলল। আসলে ও তথন মেনটো ভ:ল কলে পড়-ছিল। থাবারের দাম আর ওর পকেটের রেছতর ওজন মাপ্ছিল।

—তোমার চোখে তো ও-সব পড়ে না।

একটু থামল বৈদেহী। তারপর ধঞ্জরকে
আসতো করে ধাককা দিল্লে অনুষোগ করল।

—কেন্ তুমিও ভদ্রলোকের দিকে দুদন
খারে তাকাও না, তাহলে নিশ্চর ওর

একক্ষ তাকানো কথ হবে। তোমার চোখে

কি কিছুই পড়ে না নাকি?

— কি করে পড়বে । মেন্ থেকে তাখ । ভূলে একগাল হাসল সঞ্জয়-া— দুচোখ । জন্তেই ভূমি কয়েছ।

—আদিখোতা। কথা খোষ করে আর একটা ঘন হয়ে বসল বৈদেহী।

কেবিনের ষাইরে বৃদ্ধ মানুষ্টির গলার শব্দ পাওরা গেল। একটু শব্দ করে তিনি গলা থাকারি দিলেন। সেই শব্দ কানে যেতেই সঞ্জর চোখ কুপে তাকাল বৈদেহীর দিকে। বৈদেহীর চিক্ক হল দৃষ্।

গলায় ৰাখ এনে চাপা গলায় বকল সঞ্জয়, বাপরে বাপ, কি জ্বালায় পড়া গোল। একটা জোরে কথা বলালেই বুড়োটা গলা থাকারি দেবে! ্রতান্নার ও একদন সহা হয় না। এর চেল্লে অন্য কোথাও গেলে হয় না। কলল বৈদেহী।

—কোথার হাবো?—বড় কর্ণ দেখাল ল্জাবর ঘুখ—এককণ আর কোন ছোটেলের কোবন জুড়ে বসে থাকা হাবে বল!—কথা লোহ করে সঞ্জয় তাকাল বৈদেহীর দিকে। দুজনের চোথেই ছলকে উঠল চাপা হাসে।

কৈবিনের বাইরে বাংশ মানুষ্টি সামনে এক কাপ চা রেখে অন্যমন্ত্রকারে দেও-রালের দিকে তাকিয়েছিলেন। আসলে এটা ভান। উৎকর্শভাবে প্রতিটি শব্দ প্রতিটি কথা গানুষ্টিলেন।

—হাকগে—সঞ্জয় বলল – পাতা দিলেই পাতা গায়। ওকৈ কোন গ্ৰুম ইম্পুটেন্স না দিলেই হল। মনে কর না ভারী পদার আড়ালে আর কেউ নেই। শুধ্ব আম্থা দু'জনে একা একা।

--- দৃশুক্তানে একা একা।

—তাই না? ভূজ ব্লেছি? সঞ্চয় কথা শেষ করে বৈদেহীয় নাক টেনে দিল।

कर्मा क्रिकामकाम् वरण केवेग, याः वरणा

কালে কালা। বাইছের বৃদ্ধ মানুবচিরও
কালে কালা। পদ্ধ ফিলিপারে স্মুনুহ করে
ভাল কালে পেশুলৈ পেল কালাটা। মাধার
কাটাপাকা চুলস্লোর মধ্যে তিনি আঙ্কা
চালাকেন এলোমেলোভাবে। নিঃশ্বাস পড়ল
ঘনবার। ভাবছিলেন তিনি, করছেটা কি
বারা হৈছা। বেয়ারাটাও তো যে কোন
সময় কেবিনে চুকে পড়তে পারে। সব
কালেও অমন কেছার মেডেছে ওরা।—
কোলা তো বটেই। নিশ্চর কিছু লট্যট
কালেছে। তা নইলে মেরেটা জসভা বলবে

বৃশ্ধর সামনে একজন মাঝবরসী লোক
এসে বসল। প্রেট থেকে সিগারেট বের
করল। বৃশ্ধের দিকে তাকিয়ে বলল, কাঠি
আছে নাকি? বৃশ্ধের চমক ভাগাল। জাবন।
টুকরো টুকরো হল। ঘড়ে নাডলেন। ভান
পকেট থেকে বের করে লোকটিকে দিলেন।
মস করে একটি শব্দ হল। লোকটি একম্ব
ধ্রো ছেড়ে একদিকে একস্টেট তাকিয়ে
রইলেন।

বৃণ্ধ মান্ত্রটির চোগও সেই দ্ভিতিক অনুসরণ করল। পদার নীচ দিয়ে বেথান- টার পেশীতে দ্ভিটটা আটকে গেল, সেখানে দ্ৰেকন ছেলেটির পা যেরেটির পারে ওম দিছে। ছ্যাঃ—মনে মনে বললেন তিনি, অথ্য ট্যোথ সরাতে পার্রছিলেন না। ওরা কেন পা স্বরাছে না, কখন পা স্বরাবে এই চিন্টার অভিধর ছচ্ছিলেন।

কেবিনের ভেতরে ওরা কিন্তু ছিল নিবিকার। ওরা পাশাপাশি বসে এ ওর পারের পাতার পা রেখেছিল, হাতে হাত বোলাছিল কখনও এলোমেলে। খাপছাড়া, কখনও শ্বন্দক্রা, কখনও বা হিসেবী ভালবাসার কথা বলছিল।

সঞ্জয় বৈদেহীর চুলে আঙ্কল দিয়ে আলতো করে হাত বোলাতে বোলাতে বলল—শোন, একটা কথা রাথবে?

—থামলে কেন, বলই না।—সঞ্জয়-এর বুকে বিশি কাটতে কাটতে বলল বৈদেহী।

– তমি আমাকে একটা......

বৃদ্ধ কান খাড়া করে রইলেন। হঠাং ওরা ঝলকে ঝলকে হেসে উঠল। বৃদ্ধ গলা-থাকারি দিয়ে নড়ে চড়ে বসলেন। সামনেব লোকটির দিকে তাকিল্লে হ্লেকটি হিসহিস করে হ্লাসল। ভাবছিলেন বংশ-ছেলেটা চাইলেম কি । মেনেটাই বা এমন উছলে উঠল কেন। কি ভয়ানক নিলক্ষি হয়েছে ওরা। এত ছানালা কিসের বারা। ধেন হোবন ছটফট করছে। অসহা।

সামনের মানুবটি ভাবছিলেন—এরা কেমন যেন। জোরে জোরে কথা বলে। সবই প্রকাশ করে। এ কেমনধারা প্রেম। এত সোচ্চার কেন। অন্টোর অস্কৃতি অনুভূতি কৈ?—তিনি ভাবছিলেন।

— अहे करहे। हो है करही हरन रहा ? देवर है वनन अक्षशर ।

—একটা হলেই হল। তোমার সব ফটোই আমার স্ফুদ্র লাগে।

--আবার বল।

—বলল্ম তো ভাল লাগে।

—শাুধাু ফটোই ?

সঞ্জয় বৈদেহীর কাঁধে হাত প্রাথল। বৈদেহীকে আবত্ত কাছে টেনে নিল। বলল --বাকি কথা কি আর বলতে হয়, ব্রুতে পার না। তোমাধন

—ভীষণ। বৈদেহীর গলা বজে এল।

আর ঠিক তথুনি পদ্শ তুলে বৈয়ার। চকেল। বেয়াড়া সময়ে এদে পড়াতেও ওরা বিরম্ভ হল না। থেমন ছিল তেমনটিই বনে রইল। মাথে বলল—একট্ পরে।

বেয়ারাটি বেরিয়ে এল। পদ[্]। তো**লার** সময় কেবিনের ওপর দিয়ে তাকিয়ে থাক-লেও বৃদ্ধ দেখতে পাচ্ছিলেন ওদের। বৃকে মুখ গ'বজে ভেজা ভেজা গলায় মেয়েটিকে কথা বলতে তিনি দেখেছি লন। দেখে এক বিষাদবোধ আ**ছেল** ল**াছল** ভাকৈ। ভাবছিলেন কই বিয়ের গরেওতো এমন-ধারা কারনি আমরা। প্রথম প্রথম তো ও এতটা ঘোমটা টেনে থাকত। ঘোমটা শোলার জন্য কন্ত সাধ্য-সাধনা করেছি, আমাকে অবশ্য সেবা-যত্য করেছে। অন্য সবও। কিন্ত এমনভাবে বাকে মাখ রেখে অন্ধকার ঘরেও তো এমন ভিজে গলায় কথা বলোন। বৃদ্ধ দীঘ্*বাস ফেললেন। পূলকে মনে পড়ল তাঁর মেয়ের কথা। মনে হল, কে জানে হয়ত সংধ্যাও এমন কিছ করছে। এ যাগের মেয়ে তে। স্বাই প্রায় এক-রকমেন। হয়ত উনিশ বিশ হবে। আবার একটি দীঘ'শ্বাস ফেললেন তিনি, হাত দিয়ে কপাল মূছতে মূছতে ভাবলেন-বালের হাওয়া। ঠেকাবে কে?—আব.ব তখুন মনে হল, না সুষি কথনও এমন কিছা করতে পারে না। অস্মভব।

সামনের লোকটি আবার বৃ**ললেন,** দেশলাই আছে? বৃদ্ধ মানুষ্টি ছাড় নাড়লেন। পকেট থেকে দেশলাই বের কবে টোবলের ওপর রাখলেন। ফস করে শব্দ হল। লোকটি একম্ব খোঁরা ছাড়লেন।

ধোয়ার সংগ্য সংগ্য ভদ্রলোক ভস করে। একটা দৃশ্বিমিশ্বাসত্ত ফেললেন। মেয়েটির একট আগের কথা তখনত তার কানে

আপনার কি আয়কর ও সম্পদকর দেবার কথা ?

যদি তাই হয় তাহলে আপনি কি থথা সমন্ত্রে আপনার ট্যাক্সের রিটার্ণ পাঠিনে দিরেছেন ?

মাদ না দিয়ে থাকেন তাংকো হয়তো আপনাকে ক্ষেচ্ছ হারে স্দু ও জারিয়ানা দিতে হতে পারে, অমন কি আদলতে অভিযুক্ত হতে পারেন।

ভৰে নিটাৰ দিবার জন্য আগ্রহণ কঠ পক্ষের কাছ থেকে কোনও নেটিৰ পাবার আগ্রেই আপেনি যদি শেষভায় রিটার্থ পেশ করেন এবং আপনার স্বালাট আগ্রেনিট সংশ্যের ব্যায়ণ বিবরণ খ্যে জানান, তাহলে আপনার ক্ষেত্রে দংখ্যের মাত্রা হ্রাস বা রপ কবার বিষয়টি সহান্ত্তির সংগা বিবেচনা করা হবে।

অতএব, **দায় করনে কেলা দের**ী হয়ে না যায়।

টাক্স বিটার্গ পেশ করা ও প্রদেয় কর জমা দেওয়া জাতির প্রগতি ও মুদ্রাফ্টীতি রোধের সংগ্রামে সহায়ক। এটা বেমন দেশের প্রতি কতাবা তেমনি নিক্ষেরও।

কোনও পরাদর্শ বা সহায়ত। প্রয়োজন হলে, আপুনার আয়কর নির্পেণকারী আধিকারক অথবা আপুনার নিকট্ডম কোনও জনসংযোগ আধিকারিকের নিদ্দোভ বিভাগের সংখ্য হোগাযোগ কর্ন।

ভিরেক্টর জঞ্ ইম্পণেকশান

(আর্ এস আগন্ড পাবলিকেশন) ইনকাম টাক্স ডিপার্টমেণ্ট মহার তবন, নিউদিল্লী

.—ডিএ ভি পি ৭৪।২০৩—

war generally allater in a same all make a flow work for the same a same and intermediately in a few

বাজছিল। চাপা হাসি খেলে গেল ভদ্ৰ-লেকের মুখে। মনে মনে কললেন তিনি গুহে ছোড়া, ভূমি একেবারে কাঁচা। আমার মত পোড়-খাওয়া বরস হলে বুকতে পারতে एकामान् शास्त्रत भारत ह्यार्य कहे वा कहे सत्रतात छेखत स्मारता एनस्। भिरस् शास्त्र। দিতে হয়। ভদুলোক আবার একম খ ধোঁলা ছাড়লেন, নাক দিয়েও গড়িয়ে বেলিয়ে এল এব কলক ধোঁয়া। মাদ কাশলেন তিনি। পকেট থেকে র্মাল বের করলের মুখ মুছলেন। তারপর বুুুুুমালের খাটের দিকে নজর হেতেই মাদ্য হাসি খেলে গেল তার মাথে। মনে মনে বললেন কত দেবে তোমাকে! রুমালে নাম লিখে দেবে, সংহাহে সংহাহে চিঠি দেবে, আফ-টার শেভ লোখন দেবে। সব শেষে দেবে হল্দ রং-এর নিমশ্রণের চিঠি-প্রজাপতি

এই অর্থি এসেই ভ্রুলোকের ভাবনা হোচিট খেল। ভাবলেন, না এমনটা তো নাও হতে পারে। আমি আমার সময়ের ক্যা ভাবলৈ তথন মেলামেশ্য প্রিলাগ্য হোছিল না। তথন প্রের ক্যা লাভলা যত না ছিল, তার প্রের ক্যা লাভল হাত না হিল কাম পড়লাম্ম। ক্যানিক হাত না হল নাম নাই। এদের হোদেখে মনে হয় আকঠে উপ্ভোগ্য করছে।

উপভোগ—সামনের ফুলদানিটা হাতের বুড়ো আঙুল দিয়ে সন্নাতে সরাতে ভদ্ত-লোক মনে মনে আর একগার আওড়ালেন—
উপভোগ। দড়িত না, যাদ্ব। আর কিছুদিন এমনধারা উপভোগ কর। স্তারপর
দেশরে উপভোগেন ছিপড়ে বেডিয়ে
পড়েছে। অবশ্য মদি চড়ামাগ্রার চুটিয়ে
নিতে পার তাহলে অবশ্য জাল তোমাদের
মাথার ওপরে থাকরেই।

এতকথা থাকতে জালের কথা মনে হতে চমকে উঠালন তিনি।— জাল হাট, তাই তো। জাল ছাড়া আবার কি ? রং ফুরেলেই দেখবে কথা পড়ে গিয়ে, কিংবা আটকে গিয়ে কিংবা ফে'লে গিয়ে কি ভুলই না কচ্ছে তোমরা। দেখবে বংশনার রয়ে স্তরা তোমের জগত আর প্রাহাণ শবদার। যাও রাছ্রাশনের! ব্যাসের কার্যাকর কি ভাষণা আর একটা সামানের দিকে যাও। তখা দেখবে মনে হবে, তোমরা কি ভীষণ বোকামীর খেলায় মোতেছিলে।

ভদ্রলাকের ভাব গা ভাঙল। সামনের দেশলাইটা ব্নধ ভদ্রলোকের দিকে এগিয়ে দিরে বললেন, আপনার দেশলাইটা। বৃশ্ধ ভদ্রলোকটি হাত বাড়িয়ে নিলেন। নিঃশ্বেদ প্রেটা রাগলেন।

বেয়ারা সামনে এসে দড়িল। বলস, চাদেব?

ন্তরা দ*্রজনেই* একটি করে আঞ্চাল ভুলালেন।

দেশ বিদেশের ভৌতিক গলপ

২ খন্ডে প্রকাশিত হচ্ছে। প্রতি খন্ড ১৫ টাকা। স্কর প্রজ্ঞান ব্যাবিলনীয় সজ্যতার আমল থেকে বর্তমান যুগ অবধি যত ভৌতিক গণ্প প্রকাশিত হয়েছে, তা নিয়ে এই অনবদ্য সংকলনটি প্রকাশিত হচ্ছে। এরকম সংকলন যাংলা সাহিতো আজু অর্থি প্রকাশিত হয়নি। গ্রাহক মূল্য ৫ টাকা।

মহালেরার আগেই বের হবে। এ ধরণের প্রচেতী। আমাদের দেশে এই প্রথম। ১০১টি সুক্ষ নিয়ে কিশোরদের জন্য অভিনব সংকলন।

জলছবি

সম্পাদনায় শচীন বিশ্বাস

পাতায় পাতার ছবি। বিভিন্ন রঙে ছাপা। ১০১টি গলপ মানে একশো একজন শ্রেদ্ঠ শিশু সাহিত্যিক। দাম ১০ টাকা। গ্রহাক ম্লো ৫ টাকা।

বাঙলা ভাষায় সব'প্রথম!! প্রতি গৃহে, প্রক্ষাণার ও বিদ্যাচর্চার কেক্টের জন্ম একখানি আবশিকে প্রশেষ ঃ

অথ'নীতি অভিধান

অধ্যাপক সমরেশ মৈত্র

বে প্রক্রের অভাব এতদিন অর্থনিতির ছার, শিক্ষক, ব্লিক্টাবি, সাধারণ পাঠক একাদতভাবে উপাধান্দ করেছিলেন এবং মাতৃভাষায় এতদিন যে অভাব মেটানেরে কেনে চেন্টার কেউ অগ্রসর হন নাই—আগবা সেই দুসোহসিক চেন্টার রতী হয়েছি। প্রশানির গ্রাহক ম্লো ২০ টাকা। এখন ১০ টাকা জ্লমা দিয়ে প্রাহক হয়ে।

প্ৰকাশিত হ'ল

फः इत्रश्राम जित्तुत कृषेत्रका

ডঃ হরপ্রসাদ মিয়ের ভূলিকা সংবাদক

ढेलञ्डेश

মোপাসাঁ

রচনাবলী । ৫ খণ্ডে—প্রতি খণ্ড ১৩ টাকা। রচনাবলী ৩ খণ্ডে প্রতি খণ্ড ১২

শেকস্পীয়র

চালসি ডিকেন্স

রচনাবলী। ৪ খণেড মোট মূল্য ৫০ টাকা। অন্বাদকমণ্ডলী: উৎপদা দত্ত। ডঃ হরপ্রবাদ মিচ। দশীন্ত বাব। দাশগ্ডে। অভিতে গণ্ডোপাব্যার। রচনাবলী। ৪ খণেড—প্রতি খণেডর দ্বাম
১২ টাকা। কেকসিনে বাঁধাই।
ডঃ হরপ্রসাদ মিতের স্পৌর্য ভূমিকা
স্বালিত মহালয়ার দিন প্রকালিত
হছে।

প্রতিটি রচনাবলীর প্রাহক মূল্য ৫ টাকা। প্রাহক হবার ও মানিজ্ঞারি প্রদ্যোর মূল কেন্দ্র জৈয়াতি প্রকাশন । ২০ নবীন কুম্ভু লেন । কলি-১। বেরারা কেরিনের সামনে এসে গলা খাঁকান্থি দিকা। ভেতর থেকে ছেল্টের গলা পাওয়া গেড দুকাপ চা দাও।

্তুমি না অন্তত। ঠিক ব্ৰুবতে পাব কথান বেয়ানা আসাছে। আমাছে তো হাই খেয়ালই থাকে না। বৈদেহী বলল সঞ্জয়কে। ছেলেটি কি সলল পশ্চ বোজা গেল না।

—আই আবার। বৈদেহীর গলা শোনা গোল।

বাইনে উৎকণ্ঠিত বৃশ্বটি ভাব হলেন, আবার কি করছে! ছা। ছা। ছেলেটালু মাথা কি একেবারে খারাপ চয়ে গেছে!

্রিকই তো বলছি। আমার কথা খেরাল রাখলে কোন ঝামেলা হয় না।

· - ও এই কথা। বৃদ্ধ স্বস্পির নিঃশ্বাস ফ্রেললেন।

- —এই পোন, ঝুমি না তোমার সপে আলাপ করতে চাইছে। দেখা হলেই তোমার কথা জিঞাসা করে। এই সলো না আলাপ করবে। বৈদেহী বলল।

্ — ক্ষিম মানে সেই চুল ফাপালো মাটি কাঁপালো ফেয়েটা। সঞ্জয় চোশ ছোট করে জিজ্ঞাস করল।

ি'--্যাঃ। কাকে কি বগছ ! কৰ্ম কি স্টেটা

্ব্ৰুম্পের সামানের ভদ্রসোকটি ভাবকোন, মোয়েটি কি বোকা! অথবা সরল। অভিনিত্ত সার্গা তো এ-যুগো বোকামিন্সই আর এক নাম। তা নইলে অত স্টুইট কোন মোয়ের সংগা ওর ইয়েকে আলাপ করিবে দেয়! আবে মার্থ? সিংহের সামনে কেন্ট্র মাংস এগরে দেয়?

্টপমাটা মনে হওরাণ্ড ভদুলোক মনে যুনে একটা কু'কড়ে গেলেন। ভাৰলেন মাংস গুলিলে আছি বলে আমান মনে বেমন মাংস গুলি। আছে এমনটা ওর তো নাও হতে পারে। একটা পারেই তার মনে হল, যদি ভাই করে তারে বলতে হবে ও বোকা। ঠিক গুছনো ব্যভাবের ন্র। একটা, অসংকান, কালি, এলোমেলো। — ভূমি বথদ ব্রলহ তথ্য আলাপ করব।
কিন্তু দেখো ঐ প্রব ব্যাটেনিরানের সংগ সিমেমালু বেন্ডে পারবো না। ওভাবে সমর কট না করে তোমার সংগা আভভা যারনে কছে দেবে। সঞ্জী বকাল বৈদেহীকে।

—বাৰ্ষাঃ, এতো! কিছু ধান্দা আছে তোৱাৰ মমৈ চল্লে।

---বলব ?

-- **48**1

—বেশ। সঞ্জয় বৈদেশিকে চাপা পলায় কি বলল শোনা গেল'না। বৈদেহণী বলে উঠল, ধাণি, অসভা।

আবার অসভ্য কথাটা কানে বেতেই ধ্রুরার করে উঠে পড়লেন বৃষ্ধ ভদ্রলোক!

সামদের লোকটি মৃদু হেসে বললেন উঠলেন কেন? আপনার চা এক্টন আসকে।

 ও, হ্রা। নিজেকে সামলে নিয়ে অনা-মশকজাবে বসে পড়লেন বৃদ্ধ মান-ঘটি।

—শোন, কাল ব্রেন্দের বাড়ীতে তুমি সাডেটা নালাদ চলে আস্বে। আমি ওথানে মিট করব। তারপরে সবাস্থ একসংগ বিয়ে-বাড়ী যাবো। সঞ্জয়-এর গলা ডেনে এল।

---বা্ব্দের বাড়ী! কে কে আছে
এখন। বৈদেহাীয় প্রশায় জিজনাসা।

—কে আবার থাকবে? ব্রু আছে আর ওর ছোট বোনটা আছে। সময়মতো এস কিম্তু। ওয়েট করতে হলে আমার মেজাল তিরিক্ষে হল্লে বায়।

অবাক হলেন মাশবরসী ভদ্রলোকটি। ভাবলেন, ছেলেটিও তো কম দুঃসাহসীনর। ওর এক বংধার বাড়ী একলা মেরেটিকে যেতে বলছে। এমন এক বাড়ী বেখানে কোন বরুদক লোক নেই।—ছেলেটির মড়ে-হাকে মনে মনে ধিককাল দিলেন তিন। —কেন, কলা লগুনুই তো একবার দেখা হচ্ছে আমাদের। বৈদেহীয় গলা আবার শোনা শেল।

—িক করে?

—বাবে, কাল আমাদের গঙনিং বাঁতর মিটিং আছে না। আমাদের কলেজ থেকে জি-বি-তে আমি আর সীমা যব। তোমা-দের কলেজ থেকে তুমি তো আস্কই—তথন দেখা করে।

ও, এরা তাহলে একসংগ্ ইউনিয়নও করে। ক্রমণ ভাল লাগতে শ্রু করে ছল মাথবয়সী মানুষ্টির। এরা একসংগ্ মিলে জালে সবই করছে তাহলে।বাঃ। মুদ্দ বি। ভাবলেন তিনি।

তাঁর সামনের বৃশ্ধ মান্ত্রটি নাকের ভগার হাত দিয়ে একদুর্টে টেবিলেন দিকে তাকিয়ে ভাবছিলেন, কি আদ্দর্য! কি সব জিবি টিবি বলল। মানেই তো ছাই বৃথ-লাম না। মনে হল বাজনীতিক কোন ব্রিল্ আন্তডলো।

রাজনীতি কথাটা মনে হতে আরও
চটে উলেন তিনি। নারনীতিই মানছে না
ভর সংখায় কেবিনের মধ্যে ছা ছা, আবার
রাজনীতি। একট্ পদ্ধে তবি মনে হল, এই
যে এত কিছু করছে, ছেলেটার সংগে ঘ্র
ব্রু করছে, হরতো রাজনীতিও করছে,
এসব কথা মনু থেকে মুছে ফেলাতে পারবে
অনা জায়গা্যু বিয়ে হ্বার পরে।

হঠাং মনে হল, ওদের তো বিষ্ণেও হতে পারে। সপো সপেই মনে ্ল, ঘোচু। বিষ্ণে হবে না ঘোচু। সবি লার শেবে আবার আমানেরই গলায় ঝুলবে। পার করতে হবে আমানেরই।

বেয়ারা চা নিয়ে এল। প্রথমে ভস্তলোক
দৃ'জ্জনকে দিল। তারপর কোবিনের পদ্দা
তুলে ওদেরও দিল। আর তথান বৈদেহীর
সংগো ব্লেধর চোখাচোখি হল। বেয়ারা
কাপ রেখে চলে যেতেই বৈদেহী বলল,
দেখেছ, ব্লেঘ এখনও তাকিয়ে আছে।

ছৈছে দাও না। ওদের সংগ্যাদের মেলে না। —চায়ে চুমুক দিতে দিতে সঞ্জয় বনকা

বৃশ্ধ ভদ্রলোকটি মাঝ-বয়েসী ভদ্র-লোকের চোঝে চোঝ রেখে খাড় নাড়তে নাড়তে বকলেন, ওদের সপ্রে আর্মানের মেলে না। মানা-গান্য লক্ষাবোধ সব বেম শেব হরে গৈছে।

মাকবরেসী ভদুলোক মানু হাসলেন। কললেন, ওদের সংগ্য আমানের মেলে না। চুরি বাওরা বরস্টাকে আরে তো ফিরিরে আনতে পারি কা।

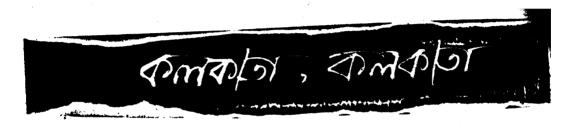


ব্দুল, কলেজ এবং ইজিনীরারিং
াম' ও অফিলের জন্য কৌশনারী, কাগজ, লার্ডে, ফ্লইং,
ইজিনীরারিং ও বাবতীর
উংক্লট ছাপার কাজের সলেড
প্রতিষ্ঠান।

क्रैक (ष्टें नवादी (ष्ट्रीर्ज

৬৩ই, রাধাবাজার স্থীট, কলিকাতা—১

द्रमत--११-४८४४, ७९-८७७६; आः - जहात्रीमन--राख्या त्नाचे सक-०४,राख्या



टिनिकात्मत्त्र छेश्त्र नम्धात्म

মেজদার কথা মনে আছে? শরংচন্দের 'শ্ৰীকানেত' বাণিত সেই ডাকসাইটে মেজদার কথা? তিনি একটা দিলপে ঘণ্টা-মিনিট লৈখে ছোট ডিনটি পড়ায়া ভাইকে থাখা ফেলা, জল খাওয়া বা বাইরে যাওয়ার ছাটি দিতেন, এবং দিলপের সংকা ঘড়ির টাইম গ্লিলয়ে একটা খাতার টুকে রাণতেন। অতি মহং। কেউ য়দি ধরান শুকুবারের সম্ধা সাতটা বাইশ মিনিটে জল থাওয়ার ছাট চায় অর্মান সোম থেকে বে>পতি এই চার্দিন সংখ্যায় ভার কী পরিমাণ জল তেন্টা পেয়েছিক তার একটা স্মীক্ষা করে তবে তাকে ছাটির সময় মঙ্গো করা হবে। বাশ্তবিক শ্ট্যাটিস্টিক্স ব্যাপাবটার এমন চলচেরা প্রয়োগ খাব কমই দেখা গেছে। এবং আমি অকপটে^ইবীকরে কর্রান্ন, কেন্ট যুখন কথায় কথায় স্টার্নাট্রসাটকস কোট করেন আমার তখন মেজদার কথাই মানে প্রভে।

সেদিনও ঠিক এই ব্যাপারটাই ঘটেছিল, যোদন কলকাতার টেলিফোন ব্যক্থার বিষয়ে নানারকম সংখ্যাতাত্তিক বর্ণনা শোনানো হল কর্তৃপাঞ্চের তরফ থেকে। আমাদের সেই চির্ভাবী মেজদাকেই আব্দের সংগারবে আসুনি দেখুলাম প্রেস কনফারেন্সের চেয়ারে।

কিন্তু সে কথায় আসার আগে গণ্ডারের কাণ্ডাটা আগে বলে নিই।

তখন ইংরেজ আমল। শোক গণনা চলছে। প্রতি গ্রামে মান্যুষের সংখ্যা তার মধ্যে ×ত্তী প্রুষ্ বিভাগ, হিশ্বু-মূসলমান-বৌ^{দ্ধ} ইত্যাদির পাশে একটি কলম ছিল গাহ-পালিত পশার জন্যে নিদিটে। তাতে গর, ্মাষ ছাগল ইত্যাদির সংখ্যা লেখার কথা। একজন গণনাকারী নাকি প-জেলার এক গ্রামে কার বাড়িতে দুটি রাজহাঁস দেখতে পেরে তাদের কথাও লিখেছিলেন। না, তিনি রাজহাস-ই লেখেন নি; লেখার কথা ইংরেজিতে, কাজেই তিনি নেসফিলেডর গ্রামারের ওপর নিভার করে লিখেছিলেন 'গ্যান্ডার'। এই রিপোর্ট ধ্রুন জেলা স্তরে পে'হিয় ডখন সেখানকার ভারপ্রাণ্ড ব্যক্তিটি গ্যাণ্ডার-এর প্রতিলে মিনিট দুয়েক মাধা-কটে শোষে দুৰ্গা বলে ওটাকে গণডাৱে হাপাণ্ডারত কয়েন এবং যেহেতু তিনি এক-জন স্ট্যাটিস্টিকস ভঙ তাই থানা বেসিসে

চিন্তা করে গোটা জেলার ওপর ওপটি গণ্ডার ধার্য করেন।

ষাহোক এই রিশেটে রাইটার্সে এল এবং সেখানকার করণিক, অধিকারিক, সাঁচর ইত্যাদির দ্বারা প্রসেসভ হয়ে মণ্ডী মহোদয়ের কাছে হাজির হল।

তারপর কোনে: এক শৃ্ভদিনে তদানীক্তন আইনসভার কোনে; এক সদস্যের প্রশ্নের খোঁচায় মক্তপ্রিবর সদ্পে উঠে ১টাটিসটিকস আওড়াতে শাুরু করলেন—

প-জেলায় লেকসংখ্যা ৯০৮) (ইত্যাদি) প্রুষ ৫১ (ইত্যাদি), নারী ৪৯ (ইত্যাদি) হিত্র ৭০ (ইত্যাদি ম্সেল-মান ২৬ (ইত্যাদি) গাহ্পালিত গ্রাদি পশ্ ১৩ (ইত্যাদি) গাহ্পালিত গ্রান তদটি—

বাস আর কথা নেই সমশ্ত সভায়
হাসির বোমা ফেটে পড়ল। গৃহপালিত
গণভার? প্রিবীর অভাম আশ্চর্যা একজন
সদস্য তংকণাং উঠে দাঁড়িরে প্রশুতার
করলেন, সমশ্ত জেলাটিকে এক্মনি ট্রিকটি
সেন্টার হিসেবে ঘোষণা করা হোক অন্য
একজন বললেন, প-জেলার অবিলন্দেব গণভার
বিস্তার সেন্টার খোলা চোক। কেই আবার
বললেন, মাননায় মালুটিক গণভারোলীজ্ঞর
ওপার থিসিস সাব্যিটি করার জন্তের
তর্গালৈর্ব ইউনিজাসিটিত পাঠিয়ে দেওয়া

তা গণ্ডারোলজি যদি সতিটে সেনিন চালু হতো দলে দলে আমরা অর্থাং প্রমিত্যবংগবাসীয়া স্নাতক হয়ে আমানের



পাছচমতে বিভিং ঘাতসহ করে নি পারতাম। বাক কী কথার কী কথা এজন গোলা।

সেদিন কলকাতা টেলিফোনের দিল্লীর বদ্রকতা এবং কলকাতার মেজকরত গা বললেন তার দটোটিসটিকস কলকাতার টেলি-ফোন ব্যবহারকারীরা সানন্দে প্রণিধান করেছেন। কিন্তু পরিতাপের বিষয় কথিত সতা আর ফলিত সতোর মধ্যে আসমান-ক্রমিন ফারাক। তারা বলেছেন ১০০টি কল করলে পাওয়া হার নাকি ৩৮টি। কিল্ড এই ৫৮টির মধ্যে কটি ভুল নদ্বর : এবং কটিই বা ক্রস কানেকশানে র্পার্তরিত হয় তার শ্রাটিসটিকস কি তারা খণ্ডিরে দেখেছেন? দোৱা বলেছেন এপিলের আগে পাওয়া কেড শস্তকরা ২৮টি এবং এই কয় মাস চেল্টার ফলে সেই সংখ্যা হয়েছে ৩৮টি। কিন্ড হোর প্রমাণ্ বলা বাহালা সেটা আছে মেজনার খাতায়। সেই যে সোম **খেকে** বেস্পতিবার ভার্যাধ কভোটা জলতেন্টা পেয়ে-জিল তার নিরিখে শকেবারের জলতেন্টা নির্ধারণের চেন্টা। অর্থাণ **এপ্রিলে** থাকলে সে থেকে জালাই এই ভিন **মানে** সেটা ১০ নশ্বর বেশি হয়ে হাওয়া উচিত। কিন্তু প্রশ্ন করতে ইচ্ছে বায় এই প্রক্রিকায় তিন মালে দশ-দশ করে বাড়তে বাড়তে একদিন অদার ভবিষ্যতেই কি ১০০টি কল ক্রলে ১০০টিই পাওয়া খাবে? আহা, সেই স্থের দিন যে কবে হবে?

কিন্তু কর্মকর্তাদের শুটাটিসটিকর সাংগাইরের পংশতি যে কতো নিভূপা (!) তা টের পাওয়া গোছে তাঁদেরই শ্বীকৃত একটি তথা থেকে। ডায়ালটোন মা পাওয় (শতকরা ৪ ভাগ) ভুল নম্বারে চলে যাওয় (হি ভাগ), ক্লম কানেকশানে হওয়া ('ও ভাগ ইতাদির স্টাটিসটিকল তাঁরা কোন স্টে পেয়ভেন ভাগটেসটিকল তাঁরা কোন স্টে পেয়ভেন ভাগটেসটিকর সাহাযো। তথাস্ত কিন্তু আবার প্রথন করা হল, ভুতুড়ে বিং থেঠে কী করে? উত্তর এল—মিটারের গোল মালের ফলে।

হার মিটার হার <mark>দৌটিসটিকার্ন</mark> অস্ত্রণত সূত্র। তোমার নিজের **উবিকা** তোমাকে পথে বসিয়ে দিয়েছে।

_হৈমিনী

্ৰ বাংলার খবর

জনতার ক্যোধের আগুন

একটাও সময় নাট না-করে বিচার বিভাগীয় তদভেত্র নিদেশে দিয়ে, তদতের জন্যে বিচারপ্তির নাম ভাষণা করে, ক্ষণত কমিশনের বিচার্য বিবয় স্থির করে এবং শ্নেন্নী শার্ করার এক মালের মধ্যে রিপোর্ট পেলের নিদেশি দিয়ে পশ্চিম বাংলার সরকার কোচবিহারের বিস্ফোরণকে যে দ্রাত আগ্নতে আনতে সম্ভল হয়েছেন সে-বিষয়ে সন্দেহ নেই: লেই স্থো কারক; বা সেমাব্যাস্থ্যীর ট্রুলও নিশ্চরই বেশ **কিছুটা সাহাজা করেছে। সর**কারি ব্যসের স্থো সি আর পির ভানের সামান্য সংঘর্ষ থেকে যার সত্রেপাত ভার যা পরিণতি ঘটলো তাতো দভোগাজনক বটেই। সংঘরের পর সি আর পি'র লোকেরা বাসের চালক আর জনকরেক যাত্রীর পুশুর চড়াও হয় বলে প্রকাশ। শ্রামীয় জেনকিন্স ক্রের ছাতের। তথন হাতীদের পক্ষ নিলে সূর্ হয় বচনা। এরই মধ্যে সি আর পিয় একজন গালি চালিয়ে বসে। সেই শ্বলিতে আহত হন একজন শিক্ষক আর একজন ছার। ভারপুরই ঘটনা মোভ নিক আন্দিকে। লৈ আর পির এই পর্বাল চালানোর প্রতিবালে ভালেরা এবং প্রানীয় জনসাধারণ ভেপ্রিট কমিশনার ও প্রলিশ স্পারের অফিসে গেল, কিন্তু সেখানে ভাদের কাউকেই পেল না। ভারপরেই ভারা থী অফিসের আসবাবপর ভছনত করে আর শেষ প্য'ত आगृत धतारे जूदी करत दरन अकाम । जूप के व्यक्तिलहे নর সাসরদীয়ে এলাকার যজো সরকারি অফিস ভিল সর কাল্নগাতেই এক শাপার বটে। পরের দিন আছত শিক্ষক শংকর রাশতীর ছাত্য এবং মাথাভাগ্যার সি পি এম নেতা রেবড়া জালৈপেরি পান ্তর্যাব স্টনাবে কেপ্লারে হাংগালা আরে: ছড়িয়ে পাড়বে শলে আশ্ব্যা দেখা দেয়, কিন্তু

সৌভাগ্য-বশত তা আর হয়নি। সেনাবাহিনীর টহল এবং অন্যান্য সরকারি বাবস্থাই তার কারণ।

কিন্ত অভিযোগ উঠেছে, ঘটন। হার খটে তখন থেকে বেশ কয়েক ঘন্টা কোচবিহারে সরকারি প্রশাসন বলে কিছু ছিল না। সংগ্যে সংগ্ৰামনীয় ক**্পক্ষ যদি ঠিকমতে**। ব্ৰখ্যা নিতেন তবে জল হয়ত এতদরে গড়াতো না বলে, অনেকের ধারণা। রাজা ক**্রসের দুই সাধারণ সম্পাদক** কোচবিহার ঘারে এসে যে-রিপোর্ট দিয়েছেন তাতেও এই ধরনের মন্তবাই করা হয়েছে। এখন **প্রশিত বে-আভাস** পাওয়া গেছে তাতে মনে করা হচ্ছে, কোচবিহারের এই গণ-বিক্ষোভ প্ররোপ্রিট্র ব্রুগের্ড (কানো রাজনৈতিক দলের যোগাযোগ এর স্পে ভিল না তবে বালপুঞ্চী দলগ্রনা যে এই ঘটনার সূত্র ধরে আন্দোলন পড়ে ভূপতে চাইবে, এটা মোটেই অস্বাভাবিক নয়। আর এস পি এবং সি পি এম সেই চেণ্টাই করে। তবে সরকারের স্কুড ব্যবস্থা এবং কংগ্রেসের দুই সাধারণ সম্পাদক আর মন্দ্রী সংখ্যাষ রায় ও ফজলে হকেব উপস্থিতি **অবস্থা বিশে**ষ ঘোরালো হতে দেয়নি।

বিচারপতি তারাপ্র মুখোপাদায়ে এখন ওক্ত করে দেখবেন, ২৭ আগস্ট কীভাবে এই ঘটনা ঘটলো, ক্ষরক্ষতি কতোটা হয়েছে, গলে চালানো ঠিক হরেছিল কিনা, যাঁদ ঠিক না হয়ে থাকে তবে তার জনো দায়া কৈ এবং দারী বাজির বিরুদ্ধে কী ব্যবস্থা নেওয়া হায়। ভাছাড়া অবস্থা সামলাবার জনো, খানীর কর্তপুল যথায়র বাক্ষ্যা নিয়ে-ছিলেন কিনা বিচারপতি গুরোপ্রধান তাও খতিয়ে দেখবেন।

আর এক (রহস্যজনক) আগুন

কোচবিহারে সরকারি নানা গাড়রে কীভাবে আগ্রান শাগে সেটা মনেকেই জানেন। কিন্তু কলকাতায় রাজা-বাহ্নারের ট্রাম্ম ডিপোয় যে ক্রী করে আগ্রন লাগলো আর দাঁড়িয়ে দাঁড়িয়ে মার থাওয়ার মতো একে একে ০৮টা ষ্টাম পুড়ে গেল ভা এখনও পর্যান্ড কেউ ব্যুক্তে পারছে না। কলকাছার কোনো ট্রায় ডিপোয় আগে<u>রে</u> কথ^নও আগান পাগেনি তা নয়। কোনো কোনো ^{*}রাজনৈতিক আন্দোলনেও ট্রাম পুড়েছে। কিন্তু এত বড় আগনে লাগার খটনা টাম কোম্পানির ইতিহাসে ক্সিন্কালেও খটেনি। সাব মিলিয়ে ক্ষতির পরিমাণ প্রায় পাঁচ কোটি টাকার মতে৷ হবে বলে আ^ল০কা। এত বড় আগ**ুনের উৎস কো**থার? কাজোন প্রিবহণমন্ত্রী জ্ঞামসিং সোহনপাল থোকে স্বে করে অনেক্ষের নভেট্র এই আগান লাগার ঘটনা রীভিমাতা রহসাজনক। এর পেছনে কি কোনো নাশকভার ব্যাপার আছে? সে-সম্ভাষমাও উডিয়ে দেওরা বায় না। হল-কাডার গোয়েন্দা প্রিল এখন এই রহসের তল পাওয়ার रक्षे क्र तरहन । क्र त्रनिमक विराधकाता । र्थाकथनत क्र रहन । কিন্তু নাশকতা না নিছক দুঘটনা, সেটা আপ্তেড জংপনার ব্যাপার। যে-ব্যাপারটা খ্বই বাশ্তব তা হুলা, এই মহানগরীতে াড় রক্ষের আগন্ন লাগলৈ তা নেভারার যথাযথ ব্যক্ষার অভাব। এই বছরেরই গ্যোড়ার দিকে যথন সেণ্টাল ব্যাক্ষের বাড়িতে আগন্ন লাগে তথনও এই অভাব বেশ ভালোভাবেই মাল্ম হামছিল। প্রথমে শোনা যায়, রাজারাজার ট্রাম ডিপোর মাগ্য আগন্ন নেভাবার কেন্সব মালুবাভি থাকে সেগালো নাকি আগন্ন লাগার সময় ছিল না। পরে খেজিখ্ব নিয়ে জানা গেছে, স্বগ্রেলা না হলেও অধিকাংশই সচল ছিল না। পরে খেজিখ্ব নিয়ে জানা গেছে স্বগ্রেলা না হলেও অধিকাংশই সচল ছিল। কিন্তু ভার যথাযথ ব্যবহার হুরনি বলে অভিযোগ উঠেছে। ভারাজা ঐ যতপাতি দিয়ে এত বড় আগন্ন সামলানোও যায় না। তার জনা দরকার দমকল বাহিনীর সাহায়া। দ্যক্ষল বাহিনীর ভালা দ্বার ভালান আগন্ন

আহতে আনে। কিন্তু তাদের সামনে প্রধান সমসা। হয়ে
দাঁড়ায় বংশেন্ট জল যোগাড়ে করা। বালি দিয়ে আগান্ন মেভাগার কথা ভাবা হয়। কিন্তু বালিও মেলে না। আগা ডিপোয় বালি থাকার কথা। আলাপালে কোথাও জলা না পেয়ে সেই কলেজ ক্ষোয়ার থেকে জলা এনে কাজ চালাতে হয়। রাষ্ট্রার হাই:ছুন্টগালো প্রায় সমষ্ট্র বাুজে এসেছে। তাই সেখানেও কল মেলেনি। এদিকৈ এই টাম পাুড়ে বাঁওরার ফলে বাচীলের অকম্বা আরে। কাহিল। একেই তো টুাম-বাদের সংখা যথেক নর, তার ওপ্র এতগালো টুাম আবার রাষ্ট্রার বেরোতে পারছে না।

তিন মাসের খাদ্যচিন্তা

এই বাংলার খাদ্য সংকট সামলাতে রাজ্য সরকার শেষ
প্রথাত ভারতবক্ষা বিধির শরণ নিক্ষেন। মজুত উৎধার
করতে এবং বেআইনীভাবে চাল বহন আর বিধিবন্দ রেশন
এলাকায় কর্জনিংয়ের আইন লঙ্খন রুখতে প্রয়োগ করা হবে
এই বিধি। একে সরকার নিজে রাজ্যের মধ্যে যুবেণ্ট চাল সংগ্রহ করতে পারেননি, তার ওপর কেন্দ্রীয় সরকার
দিয়েছেন চালের কোটা কমিয়ে। বিধিবন্দ রেশন এলাকায়
তব্যু হা-হয় দু মুঠো মিলছে কিন্তু গ্রামাঞ্জার অবশ্যা
ভয়াবহ। বাঁকুড়া, পুরেলিয়া, মুশিদাবাদ—নানা ফেলা
আমন তা উঠতে এখনও মাস্যাভানেক দেরি। এই তিন মাস
অমণ সামাল দেওয়ার জন্মই সংকার ক্ষেকটা ব্যব্দা
নিক্ষেন। মজুত উশার অভিযান ছাড়াও বিধিবন্দ রেশন এলাকায় খেলালা বাজারে চাল বিক্তি প্রমাণ কথা করে দেওলা ধবে, সামাজিক অনুষ্ঠানে অতিথি আপাামনে তিন মাল তড়েলজাতীয় থাদা পরিবেশন করা লাবে না, বর্ধমান নার-ভূম মালদহ আর পশ্চিম দিনাজপুর ছাড়া অন্যান্য জেলান্ত আংশিক রেশন এলাকায় ক'ও খ' প্রেণীর কার্ডথানীদের মাথা পিছা ৫০০ গ্রাম করে চাল দেওয়া হবে। সরকারি পরিমিট ছাড়া টেন-গ্রীব-শৌকো বা অনা কেনো মালা চাল বহন নিবিশ্ব হয়েছে ভারতকক্ষা বিধিবলো। মালা্ড উদ্যারের ফলে যে থাদ্যাশ্যা পাওয়া যাবে তা বিলি করা হবে পরিব লোকেদের মধ্যে। মজাুত উদ্যার অভিযানকে রাজ্য সরকারে খ্রিই গ্রেছ দিছেন। মুখ্যমণ্ডী বলেছেন, এই অভিযানের মাধ্যের ওপরই রাজ্যের আগামানী ভিমা মাধ্যের অবশ্বা খ্রুব বেশিরকম্ম নিভার করে।

ওষ্ধ মিলছে না

কলকাতায় থব্ধের খ্বই অভাব দেখা দিগেছে।
শ্ধ্ থব্ধেরই নয়, অল্পিলেন বা ইথারেরও। অবস্থা
গ্রমাই দাড়িয়েছে যে, নিতাশত জর্গুরি না হলে হাসপাতালে
আফ্রাপচার করা হবে না বলে দিখর হয়েছে। পেনিসিলিনের
বাবহারও নিয়ণিতত করার বারণথা হয়েছে। ইন্ডিয়ান
মোডকালে এপোসয়েশনের তরফ থেকে এই অবস্থার
রাজিমতো উদ্বেশ প্রকাশ করা হয়েছে। কেন এই ওব্ধের
অভাব রাজ্য সরকারের তরফ থেকে বলা হচ্ছে যে,
আসলে বাজারে কোনো রকয় ওব্ধেরই অভাব নেই '
অভাব বড় বড় কোনো রকয় ওব্ধেরই অভাব নেই '
অভাব বড় বড় কোনো রকয় ওব্ধের বলে কোনে
বর্ধের। লোকে ঐসব ওব্ধর প্রথম প্রকাশ করে। অন
কোন্স্পানির একই ওব্ধ ভির নাগে বিকোয় বলে লোকে
ভা কিনতে তেমন আগ্রহী নয়। এই অবশ্বার প্রতিকারের

জনো কেন্দ্রীয় সক্ষারের একটি ক্রন্ধিট ক্রুপারিশ করেছিলেন যে, সব ওষ্ধের ব্যাণ্ড নাম পুলে দেওরা ব্যাক । জ্ঞার বদলে ভ্রাধের গিশির ওপর মূপে ক্রেমনের শাস্ত্র ক্রাফ ক্রাফ হোর। এই স্পায়িশু আন্ত ক্রাক্তর হর্মন

একদিকে যথা ভিষ্ ধ প্রতি তথা আমি তা দুম্পাও হয়ে উঠেছে। আই এর আ অভিনেত্র করেছে, ওব্ধের দাম গাড়াবার অনুমেতি কেন্দ্রীর সরক্ষেই দিয়েছেন। ওব্ধ প্রস্তুত্তকারকদের যুঁতি হলো, কটি মালের বর হু হু করে বাড়ছে। সাত্রাং তারা আর কী করবেন? প্রধানন ওব্দের মাল উপাদান পেট্রাসাম। তা এখন খ্রই আরা। সরকার এখন নতুন নাতি করেছেন হে, বেসব কোম্পানি বছরে ৫০ লান টাকার বেলি ওহাধ বিক্তি করে দেশ্য তাদের ক্ষেত্রই মালা নিয়ন্ত্রণ করা ছবে।

পারমাণবিক বিদ্বাৎ কেন্দ্র

পূর্বে ভারতে, বিশেষ করে পশ্চিম বাংলায় যে একটা পারমাণনিক বিদ্বুৎ কেন্দ্র গড়ে ভোলা দরকার, এ-কণা উঠেছে অন্তত বছর দুয়েক হলো। কিন্তু দিয়নী এবনও সে-কথা কানে তুলছে না। সেদিন কেন্দ্রীয় বিদ্যুৎগালী আরো একবার জানিয়ে দিলেন, এ-দাবি আপাতত মানা হবে না। দিলী এবং প্রমাণ্ গত্তি কমিশনের যুক্তি হলো করলাখনি এলাকার খুব কাছাকাছি পানমাণবিক বিদ্যুৎকেন্দ্র ম্পাপনের চেরে সাধারণ তাপবিদ্যুৎ কেন্দ্র স্থাপন করাই বেশি লাভজনক। কিন্তু রাজা সরকার বলছেন, জনগালীন এলাক। থেকে ২০০ কিলোমিটার দারখে পারমালবিক বিদৃত্ব কেন্দ্র পথাপন করলে তার বিদৃত্বে উৎপালনের পড়তা খন্ত ভাপবিদৃত্বে কেন্দ্রের পড়তা থরচের সন্মান হবে। দিল্লী আগে বলছিল, এই দ্বের অন্তত্ত ৭০০ কিলোমিটার ছুত্রা দ্বকার; এখন বলছে অন্তত্ত ৫০০ কিলোমিটার। এ-বিক্সে দ্বাপক্ষর আগে এক-দখ্য আলোচনা হবে এ-মাসেক্ট্র্টের। দেশা থাক, দিল্লীর কতাদ্বের টলানের বাল্লু কিন্দুর



দেশকোডা খরা

ভারতে এবারকার বর্ষার গতিপ্রকৃতি
ইত্যেগের স্থিতি করছে। এখন পর্যপত্ত যেসব
ধর্ম পাঙ্রা গেছে ভাতে মনে হচ্ছে, এবার
ক্রম বর্ষা হরেছে এবং আগামী করেকইল্লেন মধ্যে অবস্থার উর্মাত না হলে
ক্রমারিকভাবে ফুস্লের সম্ভাবনা থবই
ইক্রমার্যক্ষক।

দেশের মধ্যে স্বচেরে বেশি ফস্ল কাবানে হর দেই তামিলনাভুতে এবার কাজাবিকের চেরে ৮৭ শতাংশ কম বৃতি ইরেছে। ভারতের আনানা বে ২০টি অগুলে কাল কলল হয় সেগুলির মধ্যে ১৫টিতেই এবার বর্বা ভাল হয়নি। এই সব অগুলে বৃদ্ধির ঘটিতি গড়ে ৬৪ শতাংশ। মাত্র পাঁচিটি অগুলে স্বাভাবিক অথবা স্বাভা-বিকের চেরে বেশি বৃদ্ধি হরেছে।

লখ্নো-এর খবরে প্রকাশ, গত করেক-দিন বাবং উত্তরপ্রদেশের বিভিন্ন অঞ্চল থেকে অনাব্^{ভি}তি ধানের ফলন নণ্ট হরে বাওরার উত্তেগজনক সংবাদ পাওরা বাক্তে। কৃষি দশ্ভরের রাণ্ট্রমন্ত্রী আহ্রাসাহেব সিশ্বে রাজ্যসভার বলেছেন, বেসব অঞ্চল বৃশ্বি কয় হয়েছে, সেগালির মধ্যে আছে গৃক্করাট, ওড়িশা, অন্ধ্রসেদেশের উপক্ল-বভাী অঞ্চল, উত্তরপ্রদেশের প্রেণিঞ্জ এবং বিহরে, মহারাণ্ট্র ও মধ্যপ্রদেশের কিছু, কিছু, এলাকা।

শ্রীসিশ্বে অবশ্য ফস্লের সম্ভাবনা সম্প্রকে সদস্যদের নৈরাশাজনক চিন্ত তুলে ধরতে নিষেধ করে বলেছেন আগামী আট-দৃশ দিনের মধ্যে খরার অবসান হলে থরিফ শস্যের অবস্থা স্বাভাবিক হবে।

আমেরিকার ভরসা নেই

এদিকে আমেরিকার সরকার কর্মচারীদের মন্তব্য উপত্ত করে 'গুরাশিংটন
শোষ্টা গরিকা লিখেকেন, সারা পৃথিববৈতে
এখন ফললের আশা মোটাটি ভাল হলেও.
প্রধান ব্যতিক্রম' হচ্ছে ভারত। মার্কিন
সরকারি কর্মচারির মনে করছেন, ভারত
আমেরিকার কর্মচারির মনে করছেন, ভারত
আমেরিকার কাছে খাদা চাইতে বাধ্য হবে।
কিন্তু 'গুরাশিংটন শোল্টাকে বাঁরা খবর
দিরেছেন, তাঁরা বলেছেন, ভারত চাইলেও
আমেরিকার তাকে খাদ্য দিতে পারবে না।
আমেরিকার কোন কোন অন্যলে খরার
ভূটার বে ক্ষতি হয়েছে, তাতে বিদেশে
মার্কিন খাদ্য সাহায্য গাঠাবাদ্য আশা

আমেরিকার একদল অর্থানীতিবিদ্ ও

অন্যান চিত্রাশীল হান্ত বলতে আরুভ করেছেন, আমেণিকা অভাবগ্রহত গুলিতে খাদ্য সৃদি পাঠাতে না পারে তাহলে তারা যাতে আরও বেশি খাদা উৎপন্ন করতে পারে সেজনা সার পাঠাতে পারে। আমেরিকার লন, গোলাপ বাগান গলফের মার্ম রাহতার ধারে উ'চ জায়গা ইত্যাদিতে যে তিশ লক্ষ টনেরও বেশি সার ব্যবহার করা হয়, সেটা খুদি ভারত ও সন্মান্য অল্লাভাবপীড়িত দেশগ-লির জন্য ছেডে দেওয়া হয় তাহলে অনেক বেশি কাজ হতে পারে। আমেগ্রিকার সার-খাওয়া জামতে এক টন সার থেকে যে পরিমাণ বার্ডাত ফসল পাওয়া যেতে পারে, ঐ এক টন সার থেকে ভারতবর্ষের মত দেশে আহলে বেশি ফসল পাওয়া যেতে পারে।

আমেরিকায় এই ধ্রনের আন্দোলনের কিছুটা ফল ফশেছে বলে মনে হছে। আমেরিকার ভিতরে সারের বহার কমিরে ভারত, বাংলাদেশ ও তা্ আমাভাব-গ্রুত দেশকে ঐ সার দেও জনা মার্কিন সিনেটে একটি প্রস্তাব তা চেণ্টা হছে। প্রস্তাবটি ইতিমধ্যে বিনামিকরের সমর্থন লাভ করেছে।

বিশ্বজোড়া দ ক ?

আন্তর্জাতিক গাতিসাশক্ষ দ্রেন বিশেষজ্ঞ বিশ্বজোড়া দুর্ভিক্ষিও আনাহার মুকুরে ভবিষদেবাণী করেছেন।



Carrianne qua anasciaminament esperior de la la

স্বাজ বিজ্ঞারের জনক বলে খাতে নরমান বোনলগ বলেছেন, আবহাওয়ার কারণে এবং সেই স্পেগ সারের অভ্যাবের ফলে এবাবে সারা প্রিবীতে কোটি কোটি মান্ত মারা যেতে পারে।

মি: বোরলগ বলেছেন, অধিকাংশ সারের প্রধান স্চু হল পেটোলিয়াম এবং অংশাধিত তেলের দাম যেভাবে বেড়েছে সেটা ভারতের মত অর্থনীতির পক্ষে বিশ্যারিকর।

ভারসিজ ভেভেলপমেনট কাউন্সিলের লেন্টার আর রাউন বলেছেন, মান্যের ইতি-হাসের বাহত্য খাদ্য ঘাটতি এখন এশিরায় প্রচাপ গাচেচ।

মিঃ রাউনের সংগ্র পরামশা করে মার্কিন কৃষি বিকাগ অনুমান করেছেন যে, আবহাওরা ভাল থাকলেও এবার এশিয়ার থাস্য মার্টভির পরিমাণ্ আগেকার স্ব হিসাথ ছাড়িয়ে ৫ কোটি টনে গিয়ে পাড়াতে

মিঃ রাউন বলেছেন, (পশ্চমী দেশের)
রাজনৈতিক নৈতারা এশিয়াকে তাসিয়ে দিশে
বলতে পারেন, এটা একটা অত্যুক্ত বিশ্রাট্র
ভূথক। তারা বলতে পারেন ঐ পশিয়ার
আদাশসা বাইরে পাঠিয়ে দেওয়ার যে প্রতিরিয়া মুল্লাক্ষণীতির উপর পড়ারে সেটা অসহ্নীয়। অথবা রাজনৈতিক নেতারা জনসাধারণের কাছে গিয়ো বলতে পারেন, থার্মোগ্রুটাই ফল্ড ছয় ভিল্লি নামিয়ে দিয়ে অথবা
সংভাহে একদিন খাদাভালিকা থেকে মাংস
বাদ দিয়ে অথবা সংভাহে একবেলা না থেয়ে
থতেইক খাদ্য বাচান যায় সেটকুক তর্না
২বীকার করার জনা তারা জনসাধারণের
কাছে আবেদন করতে পারেন।

নতন উপৰাশ্বপতি

প্রতিদ্বন্দরী প্রাথণী রিপাবলিকান দলের

এন ই হোরোকে ৫২১—১৪১ ভোটে

হারিয়ে ৬২ বছর বয়ন্দ্র কংগ্রেস প্রাথণী
বাসামপা দনামপা কেট্টি ভারতের উপরাম্ট্রপতি নির্বাচিত হয়েছেম। মফ্রুবলের
একটি ছোট শহরে উকিল হিসাবে জাইবন
আব্দ্রুত করে তিনি জামর্থান্ত নামক দেশী।
রাজ্যের প্রজা পরিষ্কে যোগ দিয়ে রাজ্যনীতিতে প্রবেশ করেন। পরে তিনি রাজ্যনীতিতে প্রবেশ করেন। পরে তিনি রাজ্যরাজ্যের শার্লাফেটার সেকেটারি, মহীশ্রের
মুখ্যুন্তী পন্তিটেবির উপা-বাজ্যপাল ও
ওডার রাজ্যপাল হন।

নতুন উপ-রাজ্পিতি সাদাসিধা স্বভাবের ভোটখাট মান্ষ। তিনি রাজনৈতিক লড়াইংর দক্ষ ও প্রশাসনিক অভিজ্ঞতার অভিজ

तिरतम्ब

অমতের বুচনা ধ্রুকেই আয়াদের অগাণত পাঠক ও পাঠপোষকগণ তাদের অকৃ-ঠ সহবোগিতা দিলে আমালের ধন্য করেছেন। গতে চৌনদ বছর ধরে আমারাও নিত্য পতুন রচনাসম্ভারে তাঁদের আনম্প क्रिक्ट महाको ब्रह्मीछ। অমাক আর কেবল বাংলার সমুহত প্রতিষ্ঠিত ও নতুন रमश्रकत भिन्ननरकम्प्रहे स्टा खाठ नि সাহিত্য ছাডাও সিনেমা খেলাধলে, সংবাদভাষা শিক্সকলা এবং সংস্কৃতির সমূহত নিকেট একটি প্রিক্ষেল ব্রচিশীল পারবেশ রচনাতেও অগ্রণী হয়ে উঠেছে। অমাতের পাঠকগণ আঘাদের নতন নতুন প্রচেম্টার প্রতিটি পরে তাদের অক্সংগ প্রতিও আনুক্লা দিয়ে আমাদের গ্ৰাইটে আছাবা উৎসাহিত করে চলেছেন অত্যশতই গোরব বোধ করি।

কিন্ত একথা আজ আমরা সকলেট জানি বে, জিনিবপ্র সর্বাক্তই এখন অত্যানত দুৰপ্ৰাপা এবং দুমলো হরে উঠেছে। আমাদের প্রধান উপকরণ কাগ্যােজর দাম গত এক বছরে টন প্রতি ১০০৫: णेका श्वरक ७७०° **लेका स्टब्र्स्ट अ**वर ভাপার দামও এই এক বছরে চার ক্রি বেডেছে। এর ফলে ভারতের সমস্ট ভাষার সবরক্ম প্র-পরিকারই বাডানো হয়েছে। কিল্ড যথেক ক্ষতি প্রীকার করেও পড় ²১৯৭১ সালের ফেরায়ারী মাস থেকে প্রায় চার বছর ধরে অম্তের দাম আহারা ৫০ প্রসাই রেখে এসেছি। কিল্ড এখন দুম্লোজ এমন **সতরে পেণিছেছে যে নিতাব্দ নির**পায় পরবত্রী সংয়ই আমাতের দা**ম** আমরণ २० जःशा (२० जा: धेन्यंत् ५०५६) থেকে ৬৫ প্রসা করতে। বাধ হলাম। অবিশিষ্ এ সাম্ভ যে অনুরূপ অন্যান পরিকার বুর্ভমান দায়ের চেয়ে অনেক কম তা বলাই বাহুকা। অমতের সহাদ্য পাঠক-পাঠিকারণ আশাক্রি আমাদের নির পায়তা এবং সংশিক্তট সমুস্ত দিক বিবেচনা করে আগের মতোই আমাদের পুতি আন্ক্লো দেখাবেন। আমরাও অমাতকে বিষয়বৈচিত্র ও সাহিত্যসম্ভাৱে অপ্রতিশ্বনদ্দী করে ভলতে বভাবান រាក្រភ រ

> সাকুলেশন ম্যানেজার, অমৃতঃ

বলে পরিচিত। শৈব ধর্মায়ত স্প্রদেধ তারে বিশেষ পড়াশাুনা আছে।

'बाहरमन्म क्लाब्कानी'

লোকসভার যে একুশ্রুন সদস্যের স্পানিশে ইরানাম ও মাহের সাতটি ভামকৈ আম্বানী লাইসেন্স দেও্য়া হ্রেছিল ত'দের নাম গত ২৭ আগণ্ট রাজ্যসভার একটি প্রদেব উত্তরে বাণিজ্যান্তী দেবীপ্রসাদ চট্টোপাধার প্রভাশ করে বেওরার শর থেক যে শত উঠেছিল সেটা এখন একটা কত

The same of the sa

রক্ষের কেলেংকারিতে পরিণত বলে মনে হুছে। এই সংক্রান্ড প্রথম লক্ষ্য ছিলেন বাণিজামকী পাধ্যায়। **লোকস্ভা**য় ও কংগ্রেস পা**ল**ির পার্টির মধ্যে ত'াকে এই বলে কোণ্ট করার চেণ্টা হয় যে, ঐ একঃশজন স**দলে** অধিকাংশই স্পারিশে স্বাক্ষর দেওখার কথা অস্বীকার করেছেন এটা জেনেও তিনি রাজ্যসভায় ঐ নামগুলি প্রকাশ করলেন কেন ? ২৭ আগণ্ট তারিখে খ্রীচটোপাধায়ে য়ে একশাসনের নাম করেছিলেন ত**া**দেব মধ্যে ১৯জন প্রাদন জোকসভায় একের পর এক - দাদিওয়ে উঠে বলেন স্পারিশপরে হাজি ভ'াদের স্বাক্ষর থেকে থাকে ভাতকে সেই স্বাক্ষর জাল। প্রশ্ন তোলা হয়, রাজ্য-সভায় লোকসভার সদস্যানের নামে এমন একটা অভিযোগ এনে সভার সম্মান হানি করেছেন কিনা।

এই নামগ্রলি প্রকাশ করে গিছে প্রীচট্টোপধ্যায় প্রধানমক্তী শ্রীমতী গাংধী। থমক বেরছেন এমন একটা সংবাদও বেরিয়ে চার। পরে শ্রীমতী গাংধী এই সংবাদ প্রশ্বীকার করে শ্রীমতী গাংধী এই সংবাদ প্রশ্বীকার করে শ্রীমতী গাংধীর এই সংবাদ

मध्यातम् विद्यार्थी अम्हासा **असम**् ব্যাপারে ক্তর্লি গভীরতর প্রথম তলেছেন ত'ারা বলছেন ঐ স্পারিশপতে বেস্ব ত্বাক্ষর ছিল সেগালি যে জাল সেটা ষ্টাই করে দেখা চয়েছে কি? সই যদি জাল হয়ে থাকে ভাতলে এই জালিয়াতির জন্য সামী কে? ১৯৫৫-৫৬ সাল থেকে যে ফার্মগর্নলব আমদানী লাইসেন্স বাজিল হরে ছিল ভাদের লাইসেন্স নতুন করে মঞ্জার করার জনা এম-পিদের স্পারিশের প্রাঞ্জন হস কেন্ যে একশজন এম-পির নাম প্রকাশিত হয়েছে তারা সকলেই কংগ্রেসের, তাদের মধ্যে তেরোজন বিচার ছয়জন উত্তরপ্রদেশ একজন মধাপ্রদেশ ও একজন কাশ্মীরের সদস্য। এবা সবাই মিলে পদ্ভিটে অন্তলের একটি কার্যকে লাইসেন্স পাইরে দেওয়ার জন্য উৎসাহী হলেন কেন? এইসং এয়-পিব মাধ্য আনকেই তৎকালী বৈদেশিক বাণিজ্যমন্ত্রী সলিতনারায়ণ মিল্রে গোষ্ঠীর লোক, এই যোগাবোগের রহস্যটা বাকি?

এইসব প্রশেনর উত্তর খ'লেজ বের ক্যা জন্য বিরোধী সদস্যরা একটি সংসদী অন্সুদধান কমিটি গঠন করতে চাইছেদ সরকার এই প্রশাহরের বিরোধিতা করে বয়ে ফ্লুন, সি-বি-আই এখন এ বিষরো যে অন সংগান করছেন তার ফলাফল জানা গোলে ¹ সংসদীয় অনুসদান কমিটি গঠনের বিষয় বিবেচনা করা দেখা হোতে গারে।

मिट्टू शि

মজুত উদ্ধার প্রকল্পনা

পশ্চিমবশ্যের খাল্য-সংকট क्रम्बार्शिक श्र्मावृष्यि, हात्नव समा ক্লাম-বাংলাম এট ছাহাকার, কিন্ত প্রাকৃতিক **ভাবেশগ বা আকম্মিক কোনত ঘটনা**র পরিপত্তি নয়। সম্মকারের বন্ধ্যা ও বার্থ খাদানীতি আজ সরকারকে এই বিপাকে ফেলেছে, মান্ত্রকে এই সীমাহীন **ए-एडीएनक भारका रफारमारक।** अनुकारनन চিমে-ভেডলা, গয়ং গচ্ছ খাদা-নীতির প্রাক্ষণিচত্ত কথাতে হচ্ছে রাজ্যের সাধারণ মানুষকে, তিন টাকা-চার টাকা কিলো দরে দলে কিনে। খাদা নিয়ে যারা ব্যবসা করেন, সেই চাল-কলের মালিক, আড্ডদার, কালোবাজারী ও গ্রামের ধনী কৃষক, জ্যোতদারেরা চালের বাবসায় এ-বছর ফালে,-ফেপে উঠতে পেরেছেন। সরকার ছাতে সংযোগত পেয়েছিলেন, সময়ত পেরেছিলেন, কিণ্ডু তখন সরকারের কথা ছিল, ধানের ফলন ভালো হয়েছে, অতএব খাদোর কোনও চিম্তা নেই। ঢাক-ঢোল পিটিয়ে খাদা-নীতিও একটা হয়েছিল, সংগ্রহের একটা লক্ষ্যমান্তাও স্থির इट्हाइन। शाँठ जन्म स्म प्रेक देन शामा সংগ্রহের জন্য সরকার ময়দানেও নেছেছিলেন কিন্তু বছুরের অধেকি চলে লেজ চাল-কল মালিকদের সংগ্রাদর ক্ষাক্ষিতে, খাদ্য কপৌরেশন ও রাজা থাদা দৃশ্তরের লড়াইয়ে। বছর শেষে দেখা লৈল, সংগ্ৰহ হয়েছে পাঁচ লক্ষ মেটিক উনের জায়ুগায়ু মাত্র এক লক্ষ ষাট হাজার क्षिकि हैन। এই সংগ্ৰহ यथन राष्ट्र इटना, তখন_ও কিম্তু সরকারে_র হ^{মুন} হলো না, হ'ল হলো না-ল্কানো ধান-চাল খ'্ৰেজ त्वत क्ष्रगात कना। বাজা সরকার ভাবছেন, কোনওঞ্জমে বাদ এক লক্ষ টান চাল মজুত উম্পারের মাধামে <u> শংগ্রহ করা যায়, তাহলে এই সংকট</u> কার্টিয়ে ওঠা হাবে। দশ মাসের চে^{ন্টা}য় বাঁরা এক লক্ষ ষাট হাজার মেট্রিক টন খাদা <u>শংগ্রহ করেছেন, তাঁরা পনেরো দিন-এক</u> মতেল এক লক্ষ টন খাদ্য চোরাকাশ্ববারী অভুতদারদের অংধ গহ্বর থেকে বের করে

আনবেন, সেটা বতমান প্রশাসন ও

ুলিখী ব্যবস্থা দ্বারা সম্ভব কিনা,

পরেছেন, তাতে মনে করেন, এখনও

নিপ্ৰন্যোগ্য দৃশ লক্ষ্য মেট্রিক উন্ন চাল

ভবে দেখা দরকার। সরকার যেসব তথ্য

ুকানো আছে। এই চাল বাজারে আসছে

ও আসবে, উচ্চ মুলো বিজির উপেশে। প্রথমেই প্রধান করতে হয়, সরকার যদি দশ লক্ষ টন বিপানবোগ্য চাল সম্পাকে নিঃসন্দেহ হন, তবে সবার আলে ধরা উচিত তাদের, যাদের কারণে এই চালের সবটা না হোক কিছুটাও সরকারের হাতে আসেনি। আদু বাদ সরকার বিশ্বাস করেন যে, দশ লক্ষ টন বিপানখাগ্য চাল লকোনো আছে তবে মজ্বত উপারের লক্ষামন্ত এক লক্ষ টন কেন শ্বিন বিশ্বাস

মজাজ উদ্ধার নিয়ে সরকার বৈশ কিছা চিন্তা-ভাবনা কলছেন। ইতিমধে। জরুরী কিছা কমসিটেতি ঘোষণা করা হয়েছে। প্রদেশ কংগ্রেস দ^৯তরে সরকারী দল কংগ্রেসের দ-'দফায় সভা হয়ে গেছে। সেই সভাতে আগামী খাদানীতি ও মজাত উদ্ধারের জরারী কর্মসাচী নিয়েও আলোচনা হয়েছে। মজতে উম্ধার কথাটা কিছু নতুন নয়। গত বছর যখন খাদানীতি রচনা করা হয়, তখন দু'একজন মশ্চী মজতে উন্ধার খাদানীতির আবশ্যিক অপ্য হিসাবে রাখবার কথা বলেছিলেন। সেদিন অবশ্য সেকথা অনেকের কানে ভালো লাগেনি। এই সেদিনত প্রদেশ কংগ্রেদ দণ্ডরে শ্রীসরেত মুখার্ক্তি, প্রদীপ **ভট্টাচার্য, ডঃ** জয়নাল আর্বোদ্ন এ^বং স্বয়ং খাদ্যমন্ত্রী গোপালদাস নাগ মজাত উত্থার সম্পকে যে মনোভাব বার করলেন দেখা গেল-জনাব আৰদ্য সাতার, জীশান্ডিমোহন রায় প্রমুখ এখনও বিপদের চিম্তায় রয়েছেন। মজ্বত উম্পাণ নিয়ে সরকারের মধ্যে এই ভিন্ন মত আজ থেকে নয়, শীপুফ প্লচন্দ্র সেনের আমল থেকে আসছে। ফল হয়েছে এই, কোনও সরকারই মজনত উত্থারেল মতো কঠিন তিত্ত ও ভয়াবহ-পরিণামী কাজে এক মন হয়ে নামতে পারেননি। অথচ এই মজ ত উদ্ধার কল্প'সচীর রপোয়ণ করতে বেমন চাই সাহস, ষেমন চাই উদারতা, তেমনি চাই ঝ'কি নেবার মতো দঢ়তা। সাহস চাই - কারণ-প্রিভাকে এই কাজে লগাতে হংব কঠোরভাবে। প**ুলশে**ন সংগ্ কালোবাজারী, জোতদার ও ম্নাফাথোরদের হ্দেয়ের বৃদ্ধন স্রকারেল সভেগ বাধ্যবাধকভার বংধন থেকে আরও বেশী দৃত্। শ্বনতে খারাপ লাগবে, কিম্তু একথা সত্য, গত দশ মাসে এই খাদ্য নিয়ে

প্রিলশের অফিসানধা অভেত যেভাবে স্ফীত হয়েছেন, তেমা ্ধোগ বহুকাল লাঁবা পান্ন। শেল**া**ঁ বেশ কয়েকজন অফিসার 'আর দালার নেই' বলে চাকরীতে ইস্তফা দিয়ে গেখেন। যা হোক, এখন মজ্জ উদ্ধান করতে হলে **অনেক বেশী** গভীরে প্রশে করতে হবে। কারণ ধান-চাল আর সাধারণ চোথে পড়ার মতো বা খ'্যজে বের ক্রবার মতো জায়গায় নেই। সেই গভার থেকে ধান-চাল খ**ু**জে বের করতে হলে পর্লিশকে কাজে শাগাতে হবে, যেম্ন মজুত উম্পারের জনা, তেমনি মানিত শ্বেলা রকাল জ্লা_। করেণ আজ মজাত উদ্ধার করতে গে**লে গ্রামের** চাষীবার বহুক্ষেত্রে লাঠি ধরবে এবং জোতদাররা, যাগা এই সব চাষীদেরই ঘরে ধান-চাল লা ক্যে রেখেছে ভালেরই কাজে লাগাবে। সাহসের সঙ্গে উদারতা চাই, কারণ, এই কা*জে শ*ুধ**ুমান্ত স**গুকারী দল নয়, বিরোধী দলকেও যান্ত করতে হরে। মূলতঃ য়ে-তিনটি জেলায় এখন ধান-চাল মজ-ত আছে যথা-বধ'মান মেদিনীপুর ও হুগণী, সেখানে কংগ্রেস দল একক চেণ্টায় মজ**ুত উ**ণ্ধার করতে পারবে কিনা বলা শস্তু, ভাই মজাত উম্ধার কান্নটিতে অন্য দল ও গণ-সংগঠনকে ঘাখতে হবে, যারা কাজ করবে, প**্রালদের** মাথায় বসে। অর্থাৎ মক্র-ত উদ্ধার কমিটির মানে প**ুলিশের জন্য থবর** সংগ্রহের কুমটি নহা। কুমটি থবর সংগ্রহ করবে এবং নিদেশি দিয়ে প্রালিশকে কাজ করাবে। প্রালশকে যদি মন্ধ্যুত উপ্ধান্থ কমিটির ওপরে রাখা হয়, তা**হলে দেখা** যাবে, মজতে উ°ধারের বদলে বহু- স্থানে লড়াই বেধে গেছে, বিচিত্র রূপে—যা দেখে সরকানকে বলতে বাধ্য হতে হবে 'ভিক্ষা চাই না, কুকুর ঠেকাও'। একই সংগ্র নিতে হবে ঝ'্লাক, কারণ গ্রায়োর জোতদাব-মহাজনদের চটিয়ে প্রাঞ্জন মুখ্যমশ্বী শ্রীপ্রফালচন্দ্র সেনের কি হাল হয়েছিল, সেকথা কারও অজ্ঞানা নয়। তাই ঝ'্বাক আজ নিতে হবে বিবাস্ত সাপের লেজে পা দিয়ে নয়, অথবা তাকে আধ্মরা করে নয়, ঝ"ুকি নিতে হবে সাপের বিষদাত ভাঙার।

-अन आन्तृत दींद्र नामा

উপন্যাস মনোজ বসৃ । তিন্তি হাৰি হাৰি

(প্রে প্রকাশিতের পর)

কত কাল গেছে তারপর।

দু বছর আগে এমনি ধারা বৈশাখ মাসের দিনে বাডিতে বহেং উৎসব। ভব-নাথের মেয়ে নিমি আর দেবনাথের শিবতীয় মেয়ে চণ্ডলার একট রাজে বিষে। ডোল কাঁসি সান্ট নিয়ে দেশি বাজনা, জয়ঢাক ব্যান্ড কনেট নিয়ে বিলাতি বাজনা প্রায় তোল-পাড়। লাড্মে দাড্মে গোটো কদকে ফাটছে ঘটবাজি সরাবাজি চরকি হাউই দীপক-বাজি হবেকরকমের। ভোজের পর ভোল চলছে, যেন তার মুডোলাড়া নেই। আননদ-সমারোহের মধ্যে কারো মনে পড়ল না এক-ফোটা বিমির কথা বে'চে থাকলে আগেই তার বিয়ে হয়ে খেত! পালহি করে কালে কাঁধে একটি-দাটিকৈ নিয়ে শ্বশারবাড়ি খেকে বোনেদের বিয়েয় চলে আসত সে। সবাই বিমিকে ভূলে গেছে, তর্বাধ্যণী সেদিনও থাব গোপনে চোথের জল মাছছিলেন-কেট টের পায় নি। আজকে হঠাৎ ধরা পড়ে গেলেন।

চারা পেতি সারা হতে প্রায় সম্পা।
নত্ত্র-পত্তরে তালের গুণ্ডির ঘাটে সেমে
দেবনাথ ডুব দিয়ে দিয়ে অবগাহ্ন-স্নান
করলেন গায়ের কাদামাটি ধুলেন। দেহ
কিন্তু ঠান্ডা হয় না। প্রুবের ধারে কাছে
গাছপাল; নেই। শুখু কয়েকটা নারকেল-চারা
পোতা হয়েছে আজ কদিন। সারাদিনেব
ঠা-ঠা ...রোদে জল একেবারে আগান হয়ে
আছে। গ্মেট-গ্রম, লেশমার হাওয়া নেই,
গাছের পাতাটি কাপে না।

পাঁচিলের দরজার জান দিকে তুলসাঁ ও।
দেবততুলসাঁ কৃষ্ণতুলসাঁ দুই রক্ষের ৃটো
গাছ, ক্ষুদে ক্ষুদে চারাও আছে। মাটি দিয়ে
গোড়া বাধানো, লেপপেছি। থক্ষক তক্তক
করছে। পালেপাবানে আলপনা দেয়। মাথার
উপরে ঝারিদ্বটো নিচু খাটি পাঁতে আড়ে
বোধে ছিন্তুল্ভ ঝালিয়ে দিয়েছে, কৃষ্ণেভর
ভিতরে জল। টপটপ করে অহানি দ্ ফোটায় ফোটায় তুলসির মাধায় জল পড়ছে:
জল এক ফ্র্রিয়ে যায়, কৃষ্ণ্ড পারপ্রা করে
দেয় আবার। সারা বৈশাধ ধরে তুলাস-দেব।
চলবে, তাপের ছোয়া এতটাকু না লাগে।
আদ্র পেয়ের শেরে গাছের বাড়-বৃন্ধি বিক্রা,
বড় বড়ু পাতা—পাতায় ভালে হ্যাকার
হ্রেভ্রেক্তির নিমি তুলসীতলায় পিশিদ্ম এনে রাখন, ধ্শাণ্নো দিছে। দেবনাথ চুকে পড়ে পিছনটিতে পাঁড়িয়ে পড়লেন। নিঃশাদ্দে দেখছেন: আঁচলটা গলায় বেড় দিয়ে মাটিতে মাথ। রেখে নিমি বিড়বিড় বরে কাঁ সব বলছে। মাথা তলে দেখল, দেবনাথ।

সংক্রেকে দেবনাথ জিজ্ঞাস। ক্রেন ঃ কী মনেতার পড়াছলি রে ?

শ্বনৰে কাকাবাবার শোন— হাসতে হাসতে বলে যাছে:

> তুলাসি পুলাসি নারায়ণ তুমি তুলাসি বাংদাবন তোমার তলাম দিয়ে বাতি হয় যেন মোর স্বংগা গতি।

পিছিলম দিয়ে সব মেষেই এই বলে থাকে, নিমিত বলেছে। দেবনাথের ব্রুক্তর মধ্যে তব্যু মোচছ দিয়ে উঠল। একমেনিটা মেয়ের ফ্রাটিন্টা—সংসার বিবিষয়ে উঠেছে। আগের দিন হলে কাকা-ভাইন্থিতে হাসি-ভামাসা হয়তো চলত—আজকে দেবনাথ আরু দভািতে পারলেন না, মুখ ফ্রিয়ে ছরে চলে গেলেন।

দ্ বছর আগে এমনি বৈশাখ মানের দিনে আগাস্থে বাড়ির দ্রৈ মেয়ের বিধে দিয়েছিলেন—দেবনাথের নিজের মেয়ে চণ্ডলা, আর ভবনাথের মেয়ে নিমি-নিমালা। এবই ভারিখে-নিমির গোধ্লিলগেন হল, আর চণ্ডলার এল দুষ্টা প্রিণ মিনিটু গ্রে।

চন্দলা শ্বশার্যাভিতে সাথে স্বাছ্যান আছে-এক দোষ, ভারা বউ পাঠাতে চাগ্র না মোটে। তর্রাপাণী বেয়ানকে দোখেন আর নাককালা কে'দে বেডান। নিমির বেলা উল্টো একেবারেই ভারা বস্তু নেয় না, এবং এংদেরও পাঠ।তে আপতি। ভবনাথ বিয়ের আগে শা**রে বৈ**ষয়িক থেজিখবর নিথ*্তভাবে* নিহেছিলেন কিন্ত খোদ পাতু নিয়ে তত মাণা ঘামান নি। কানে আপনাআপান কিছু এসেছিল তিনি উড়িয়ে দিলেন ঃ জ্ঞাত-শুরুরা ভার্গচ দিক্তে ওসবে কান দিতে জেনে পল্লীগ্রাফা কারোই কোনদিন বিয়ে হবে না। বাহিরটান একট্র-আঘট্র হাদি থাকেও-বেটা-ছেলের অমন থেকে থাকে, সে কিছু, ধতবি নয়-বিয়ের পরে শ্ধরে যায়। বাজিবাজনা করে বিস্তর আড়ন্বরে বিহের হয়ে গোল---আর দুটো বছর না যেতেই মেয়েটা যেন হোগিনী হয়ে বুরে বেড়ার। ঠাকুন-দেবভার উপর ভক্তি বেড়ে গেছে, নদবস্থান দেখলেই মাথা খেডি।

मालानकोठा एनवनारयत शहरम नह বাড়ি এসে খড়ের ঘরে থাকেন তিনি। পাত-পশ্চিমে লম্বা ঘর-নেয়াল অবশ্য পাকা, বিনক চাল খড়ের দ্বোঝে আচির। দ্রাদ্রেক দাওয়া আছে-দক্ষিণের দাওয়া, উত্তরের দ।ওয়া। দেবনাথ দক্ষিণের দাভ্যায় মান্ত্র বিছিয়ে নিয়ে বসলেন। নিমি কোন চিকে ছিল—ছুটে এস ধ্বধবে তাকিয়া পিঠের িদল। ভালপাতা-পাখা নিয়ে **পাৰ্শে** বঙ্গে বাতাস করছে। স্মানে উঠান আছে একটা, ধান উঠলে তথন এই উঠানের গ্র<u>ক</u> — মলা-ডলা সম্পত্ত এখানে। এখন স্থাস্থন হয়ে আছে। বাঁ-হাতে গোয়াল, ডাইনে কাঠকঠো বাখার চালাঘর আর সামনাসামনি এজমালি কানাপ কর। দাহো ও হোগলায় পাকর প্রায় আছেল, পাড়ের কাছে খানিকটা তাংশে জল পাওয়া যায় বাসন মাজাটা চলে সেখানে। গিলি-বউদের কাছকেশে **অংগ** <u>ধনানও সারতে হত, বাগের-পা্কুর</u> হয়ে সে দঃখের অবসান হয়েছে। বাতাৰ राधः कामा भाकृत-भाष्ट् । धानभाना-स्मनारमा প্রাচীন টারে আমগাছ, একটি পাতা নডছে না গাছের এখন।

থাত্রাদাত্যা সেবে এবং ভবনাথের সঞ্জে কিছ ক্ষণ গল্পগাছা করে দেবনাথ আবাৰ দক্ষিণের কাওয়ায় এলেন। মাদুর আকিয়া পাখা সেইখানেই আছে। ভিন্ন আবসক এখনি। হাৎয়া দিছে ডালপালা দুলছে। হবৈ 🧟 উঠে গেছে থানিক ভাগে। বসা নয়, **তাৰিয়া** মাথায় দিয়ে গড়িয়ে পড়লেন তিন। আহ নিশ্বিত এ ব্যক্তির বালাদ্বের পাট এখনো বোধহয় কিছু বাকি:তর্ডগিণী আসেন্নি। জোনাকি উড়ছে, গোয়ালের ধারে হাসন্হানার ঝাড়ে জয়েছেও বিশ্তর-ঞ্চনলছে আর নিভছে। টারে গাছের ছেটে ছোট আয় কিণ্ড যধার মতন **মিণি**ট ফলেছেও অফরুত। ক্তে হলে হবে কি --বফ নবম বেটি। হাওয়ায় ভব সয় না। হাওয়ায় তো পড়চেই, আবার বাদুড়ের মকি র্থাপ দিয়ে দিয়ে পড়ছে আমভালের উপর। ট,প-ট্রপ করে তলায় পদেছে আম কানা-প্রুরের জালের মধ্যে**ও পড়ছে। হাত্**ড়া দিয়ে **খেম**ন করে জালের মাজু হরে, शास्त्र मध्य त्नाम काल नकारल एडमिस्यादा হাতড়া দিয়ে পাকা আত্ম তুলাৰ। বিশাস व्यक्तातः शाह कामाश्रकद-शाहक-रवरमात

pr. (-)

্রু তরংগিণী ঘরে এসেছেন এদিকবর **দর্ভা**য়ে চৌকাঠে এসে দাঁগুলেন। ভাকছেনঃ **খনে আ**সবে না?

্র দেবনাথ তংগত হয়েছিলেন। ঘাড় ফিলিয়ে কললেন, আর একট্র থাকি। এসে। নির্ভাৱ ভারি চেহেগুরে।

ভরংগিনী একটুখানি চুপ করে থাকেন।
দেখাক্তন দেবনাথকে। ভানোর ব্বায়া আর
ভরংগিনার প্রায়া একরকম নয়—বারোমান
বিদেশে পড়ে থাকেন, দুর্গাভ বছতু। বয়স
হয়েছে কৈ বলবে—লন্দাওড়া দশাসই পাবুন,
ধব্যার গ্রের সং প্রশাস্ত লালাট মাথাভরা
টাক। টাকে যেন আবং ব্যুপ প্রভাগ ভ্যোগ্রার আলো কথালে এসে পড়েছে, আবদোয়া হয়ে আছেন—ব্যুন এ ক্রণতের নন
জ্যোত্যার লাক থেকে নেমে এক্রেছেন
দ্বিয়ার ক্রপরে।

নির্ভবে ভ্রতাগণী গুলের মধ্যে
খাটের ধারে চলে গেছেন। বছ পিলস্থেব উপর বেডির ভেলের প্রদীপ--এগটা স্লভেষ টিপ্টিপ করে ভ্রতাহে। কুমেতের গুড়া দোভ্যা মাটির প্রদীপ--উপরে ভেল-স্লাব, নিচের খোলাটা জলে ভ্রতি। নিচে জলে খাকায় ভেল নাকি ক্ষম পোড়ে। ক্ষম বিছো। হয়ে গুড়াভ্রে। মূপের কাছে প্রদীপ ঘুলিয় ভ্রহ্গিণ্টী দেখে নিলেন ভ্রকাপা। গুটি বছাগিয়ের কাছে শোয়। ক্ষমণ হবার স্বাহ ভ্রহ্গিণ্টী উঠানের অভিজ্ঞার গেলেন,



কাছে। সেই জিনিস্ই চলে আস্ছে, বড়-গিলির বড় নেওটা সে।

দেবনাথ বললেন, বোসো। হাত বাড়িনে তরংগিণীকে কাছে টেনে নিজেন একেবারে। কিছ্মুক্ত চুপ্চাপ। কেটাছনের নিক খেকে ওক্ষকের ভাক ভাসে : কটন-র-র-ভক্ক ভক্ষ। জ্যোহশার ফিনিক ফ্টেছে।

তরংগিণী বললেন, কুসমেপুর ধ্রি অমনি হারে আসতে—

্টুনে হাশোরে নেমে দেবনাথ খোডাব গাড়িতে নাগরগোপ এসেছেন। কুসামপর্র রোশ দ্টু পথ হাশোর খেকে—চঞ্চলার শুশারবাড়ি সেখানে।

আসল কথার পড়ালেন তরংগিব। এই-বার ঃ তুমি বললে বেছান কথনো 'না' করতেন না। মেয়েটা আম-কঠিলে খেরে তোমার সভেগই আবার ফিরে যেত।

দেবনাথ কললেন, জামাইয়-প্রীর সম্ম ভোড়ে এসে দিন চাবক গেকে যাবে, কথা ভূলতে গেলে বেছান ধবে পেটতেন আমায়। পুলি আমা-ক্রিলের অভাব মাকি ভাদেব ব্যক্তি? গাঙের ধারে প্রতি বিষেত্র উপর ফলস বাধান—চ্যুকে পঞ্লে পথ খাঁ্জে বেশুনো যায় না।

বগলেন, মেয়ের বিষে দিয়েছ—আদার মঙ্গে আছে এর চেন্তে আনকের কথা নেই। বেয়ানের এবটা ছেলে—নিতা মিতি তিনি কেন পাঠানে বলো। থলেন, একফোটা মোহে, আপনার—বিন্তু একতলা দোতলার এতা, লো মুর্ব একলাই যে ভরে থাকে। চার-চারটি নেয়ে—তাদের যথন বিষে হয়নি, তথনও অসা ভিলানা। বইমা না থাকলে বাড়ের মুর্বা ভিলানা। দায়।

তরংগিণী খুপ করে বলে উঠকেন আমার ক্যানের বিয়ে খাব সকাল সকল দেব।

সেই ভাল। ভাল বুলিধ ঠা*উরে*ছ এবল। ভাদের বই না পাঠাল তো ছেলে বিয়ে দিকে নিজ্পৰ বই এনে দিই।

শ্বীর দিকে চোয় দেবনাথ হৈছে । ০০বলেন : সেই ভাল। ভাল মেয়ে কাদের আছে
ভাষ্টি প্রিচিত লেগে যাই। শুনবছালে বর
ভাষ্ট নামান মাতা এক বছাবে কদে। হিন্তু
পাটি স্কলের আগে কমলের বিষে।
মাইনের চেয়ে উপরি-রোজগারের কদর বেশি
ভাষারির এপ্টেটের মান্যু আমরা সেটা ভাষ্
সভন জানি। পরের মেরে মাড়তে চাড়তে
পালে নিজের সেরে আতা মনেও গাড়বে
না। কির বৃধ্যি ঠাউরেছ ছোটবউ।

থ্য ভোরবেলা দেখনত অংশবার কাটোন। পাতলা ঘ্রামের মধ্যে গ্রামধ্যমী বিভিন্ন পান শ্রেম থাকে এখন। বৈশাধ্যম ভোর চলবে। করালের আত্রাজ পেয়ে প্রি বিছানা ধেকে লাফিয়ে উঠে চোখ মুছতে মুছতে মুছতে বুড়কোর ধরে গ্রিমে ক্রিমে দি-এক পর গ্রেম্ম চলে যাবে-এ মোহর তর সাম না। বৈরালী গাইতে গ্রহতে অসংছন। ঠালুর-দেবতাদ্বে গ্রান—হ্বিক্থা,

कारन निता हित्तत काकक्टा आतम्छ। বৈশাখে হতে এব পর আবার ক্রাতিক খ্রাসে-প্রস্তা তারিশ্ব থেকে সে-ও পরেরা মাস। বছরের বারো মসের মধ্যে দক্টো মাস এই প্রভাতী গান। বকুলফুল সারা। রাতির পথে ঝরেছে, ভারই উপর দিয়ে গাটিগাটি আস্ছেন। কী মধ্যুর গলাখানি, প্রাণ কেডে নেয়। আহ্মাদ বৈবাগী, দ্য-জোশ দারে হরিহর নদের ধারে মধ্যক্র গামে বাডি: সোনাথড়িতে এসে ওঠেন তথনো বেশ বাহি - আকাশে তার। ঝিক্ঝিক করে। আর গ্রাম-পরিক্রমা যখন শেষ হয়, রোদ উঠে ধায় দ**স্তুর্মতো। আহ্মাদের বয়স** বেশি নয়—কচি কচি মুখ, কি**তু সমঙ্গু চুল পে**কে গেছে, **ভ্ৰু** অবধি পাকা। অন্ধ—চোণ ন'জে পথ চলেন কদাচিত যখন চোখ মেলেন শানাদ ভিটা এক বন্ধা আগে আগে হাছেন --আভ্রাদ বৈরাগীর মা। ক্রাল বাজাচ্ছেন পিছনে বৈরাগী ঠাকর য়ায়ের দ্য-কাঁবে দ্য-ছাত রেখে গাইতে গাইতে চলেছেন। মা আরু অন্ধ ছেলে। ল্ডমার ভরে গান থায়াবেন না বৈরাগী চলনও 711 (h(sixt)(s) ভাল পথ 81°31 571 विवास চলেছেন —ভব ভার মধ্যে গোলফোনে কোন ঠণই করে দিক্তেন ঃ ভাইনে ৰ চহ সংগদি.....। কন্তাল বন্ধ করে ছোলের । গ্রাত ধ্রেছেন ক্যনো-বা এত স্বের মধ্যে গানের কিল্ড ভিলেক বির্তি নেই। প্রায়েব বাজি শেষ করে ফকিয়-রাস্তায় স্থম পড়বেন ংখাই পামবে।

উলাস্ক্রী সাত্রকাকে উঠেই লাদেশ্য নিয়ে গোয়ালে দুবে গোছেন। मार्शन शाहेमें वस ४ : नामार्गि কর'ছ শেষরাত থেকে। ্সাল্ নিভে ভাগগোকা 47. B (F-7,95) হয় খুব। কিম্বা কৌদা চাুকে গেল কন। গোয়ালে কৈ ানে, কদিন আগে খবে ফেউ ডাকভিল। গিয়ে দেশকেন, ওস্ম কিছা नश्-भानाम ভारती, याँहे महुर्घ हेनहेंग कराष्ट्र। নুলে-বছার খোয়াড়ে আটকানো সেইদিকে তাকাছেছ ঘন ঘন। বড়াগলৈকে দেখে তাম্বা ডেকে উঠল। গুলু হোক যাই হোক, মা ছোলটে। হটি ভুরা দুধু বাচনকে খাওয়াতে পারছে না। হামবা দিয়ে তাই সেন সকাত্র প্রার্থনা জানাল।

উমাস্দেবী বললেন্ উত্তলা হোসনে মা, একট্কেলু সব্বে কর। রয়ণীকৈ তেকে পাঠাছি—সকাল সকাল দুয়ের বাছার তেড়ে দেবো।

গান তখন উঠানে এসে পড়েছে। উমা-স্চল্পী বলেন, ছোটবাব্ বাড়ি এসেছেন। তোমানের মা-বেটার কাপড় এসেছে। ফেবার সময় নিয়ে যেও।

বৈধাগণী তো গান বন্ধ করবেন না. মা ৰগজ। কতাল থামিয়ে বজলেন, এখন কেন ঠাকবন্ন, মাস অনেত খেদিন বিদায় নিতে আসব, যা দয়া হয় তখন দিয়ে দেবেন।

বৈদাধ গিছে জ্যৈতিয়াস পড়বে, প্রভাতী গাঞ্জনা ভেখন বংধ। স্থা ভান ছেলে বিদান

নিকে বাড়ি ৰাতি দেখা দেবেন। প্রেনাথোওনা খারাপ নয়-বিছানায় শুরে শুরে পরোমাস পুণ্যাজন হয়েছে, গ্রেম্থরা বথাসাধ্য চালে ভালে সিধা সাজিয়ে দেয় নগদ টাকা দেয়। এ বাবদে কেউ বৈশেষ কাপণত। করে না।

ভাল গোণ্টম সাবেলাক্ট আরও সব আছে সোনাথডিতে প্রভাতী গাওয়ার দর-বার করেছিল তারা, চিরদিন এক মাখে কেন নাম শ্লবেন আমরাও তো প্রত্যাশী। কিন্তু কন্ত্ৰণা কাউকে আত্মল দেন নি : বেশ তো চলছে। ঠাক্তাদের নাম কানে যাওয়া নিয়ে কথা—আহমাদ বৈগাগই বা মন্দ কল কিসেও বাবালিয়া অনতে দেখানগে. আংধর অল্লভ্রে নজুর দৈতে আস্থেন না। বগল বোল্ডমা আর ছেলে আহমাদ যদ্দিন সম্বৰ্গ আছেন, আমাদের গাঁৱে কেউ চকেতে 9774 AL

স্বাই জানে সে দ্বুস্ত কহিনী-বুগলা বেল্ডিমী সকলকে বলেন, আন কপাল চাপ্ডান: মা হয়ে আনি হেলের স্ব'নাশ কক্ষে-মানই, রাক্সী আমি।

থাইনাম বভ ছাত্তর। সে কেংদে পড়ে ঃ **অম**ন করে বলবিনে ভূই মা। , **এল**ার **আদে**ছ_ি তুও তো ভালার তবে বাবদহা করাকা জানবি কেলন করে, আখাব भागति क्यान कागान काम होनेत्य।

ন্নাপার অসুত্র আহ্বানের। ভাষণ ফরণ। —ছিছে পড়ে খেন মাথা। কপাল ভিপে ধ্যে আবোল-উপবোল ব্ৰে। ভয় হয়, পালল না রুদ্ধে যায়। সের সৈমত এক তাশিকে ঠাকুর একোন ত্রিছরের ভূচিবতী **কাল**িকেছে। ঠাকবের পাহোর উপর বলগা বোলনা আছতে পড়লেন : বাচাত আলাও কেনেকে, মার আল্লাকেও। নয়তে। নারে বেটায় বিষ গেয়ে পদতলৈ এসে মরে থাকর। স্তক্ষারী এবং মার্ভ কলেকটা গাছগছেড়ার রক্ষে ভিকিৎসা এল কদিন— উপ্ৰয় হয় না তো শেষতা এক যোক্ষয় টি^{লিক্স}ে হাগাল পরেনে দি ভাগিলে আল্লোনে মালস: দিল তার উপর চাপিয়ে। কী আনুনিদ রোগীর--ধক্রে দেবে চামার মালস্ ফেকে দিল। ছটকট করছে কাজ-কুকুরের মতে। খানিকটা ভাং গিলিয়ে চুপ কৰে থাকাৰ বলে অভিনক কালভিলা ফুক্রের।

ধুম এসে গেল আহু মানের পালীর হয়। আনেকক্ষণ পড়ে ঘুম ভাঙল, কিংবু গ্ৰেছ কোলো বিজ্ঞাই যে পেখডেন না---

ও মা, মাগো, চে'দিকে অংধকার

কত রকম চিকিৎসা হল ভারপর। গা ব-ড়ি ভিক্সেক্সকে করে **दलकारा**त ডাক্তারকেও একবার দেখিয়ে এনেছেন। দ্ভিট ফিবল না। তুলধন কৈলাগির মেয়ের সংগ্ সদবংধ হ ছিল। ভাল অবস্থা চুলধারের---'নকের হাজ গরুতে ^{বি}শ বিছে জ'নির চাই। কিন্তু চক্তিনি পাতের হাতে কৈ মেরে

আভ্রাদ বলে এই বেশ দাল মা। বিষয়-ভোগে ঠাক-নাকে ভূলে থাকতাম। মাহে-পোনে কেমন এখন নাম গেরে গেরে বেডা চ্ছ।

দেবনাথের সংখ্যা দেখা করতে অসেন স্ব। বাংলা লেখাপড়াটা ভালই জানেন তিনি, ইংবাজিও জানেন না এমন নয়-অভ্যাত শিক্ষিত ব্যক্তি। এবং চাক্তি করে বাইরে খেকে টাকা-প্রসা আনছেন, প্র-বাড়ির অবন্ধা দেখতে দেখতে ফিরুরে হিসাবে ক্তীপুখুষ্ত ফেলেছেন--সে বটেন। যতাদিন বাভি আছেন, মানাষের আনালোনা চলতে থাকবে। শ্রা সোনাখডি বলৈ কি বাইবের এ-গ্রায় ও-গ্রাম্ক থেকেও

উত্তরের ব্যাতির যজেশ্বর এলেন গ্রামন একখানা মেটে আলা কলার খোটায় বেশ্ধ হাতে খোলানো। খণ্ডা খাড়ে যায়ে সকাল ধার মেটে আলা খাডেছেন গায়ে ও কাপভ টোপড়ে ধালোমাটি। বললেন আলভাপাত আল্-থেয়ে দেখো কী জিনিস। তলে আনার বড় বন্ধাও—গাছ মরে গেছে, মা টর নিচে কোথায় আছে হদিশ হয় না। আছে এইট.ক' জায়গায়, তলাট ক্লড়ে খাুুুুুুুুুুুু মরভে হয়েছে।

मित्रनाश तलालन, अक्षात्वेत मृत्कात कि ्रिक गुरुष्टाः

শাবে তুমি আবার বি । শহরে টে সোনাসাবর্গ খেষে পাক offer fa এসব জিনিস পাও না।

দেবনাথ হেসে ঘাড নাডলেন ও লো कान मार्थ थाका स्टब्सा खान-खास থাই। বাজার খুক্তলে আপনার হোটো আলাও মিলে যাবে। হেন জিনিস নেই হ কলকাতায় মেলে না।

শশধর দ্তকে দেখা গেস আঠ ১-ব ঠাক করে আসছেন। খানখানে বায়ে হলেও পলকে কান খাড়া হল। কলকাজা কথা হক্ষে—কলকাত। সদব্ৰেধ দত্তমশায় । বলবেন তাই শেষ কথা, যেহেতু স্থী বাপের বাড়ি ছিল কলকাতায়। এব ছেলে कानिमात्र मञ्ज श्याता क्षाकाना মেসে থেকে মার্চেট অফিসে চার্কাল করে খোলা গলায় দ্তমশায় বলে উঠলেন, উচ্ ঠিক বললে না বাবাজি: বাল, ভয়াকৰ পাত্র ভোমরা কলকাভায়?

क्रिकी करता आता वह कि। হা-হা-হা, ভয়াকলার গ্রভন জিনিস তাৰ চেণ্টা করতে হয়। বোঝ তথে যভেশ্বর-

এক চোট হেনে নিয়ে ব্যৱস্বরকো শালিস মানেন: কেমন কলকাতা বুৰে দেখ। ভরক্ষা কেই **খায় না—বীচেক্স** नाम पित्रा होत्न लिएक। वीवित्र छा

ত্তীয় খণ্ড প্রকাশিত হয়েছে শেক্সপীয়ার রচনাবলী

এট খন্তে আছে প্ৰাণ্ড আটটি নাটক ও প্ৰচৰ সনেট। প্ৰতি খণ্ড দশ টাকা। পাঁচ টাকা অথাম দিয়ে গ্ৰাহক কোন।

भेषात्रा तहनावली क्षेत्र

ভাৰধ্য এর উপন্যাস কোটিলা গণেড'র উপনাস বিশ্বাসের বিষ ১০্ ব্রুরোক্র্যাসী ১০্ ভারাশংকর বদেয়াপাধায়ের উপন্যাস शास्त्राथ अनुकान

কালরাতি ৮্রুপ-পসারিণী ১২

कुमात्रण त्याय-अब समाप काहिनी मुक्तिक 🐎 मसमस (थरक मासासा म (८

মায়া বস্ব উপন্যঙ্গ

केखमभूत्राम-अत्र केशनगत

पूर्ववशांश्रमो ए कीवास व थिल घत ठ०

নীহ[া]ররঞ্জন গ**্রেড**'র উপন্যাস

সূর্যমহল ৮ . ३ রা নকশালপ ছা কেন ? ১0

हूं शि-कर्जन : ५, वर्जिल रहा, कलकारा-४ तकाम ७०-१५४०

नामा नामा (काम (का) निवास की तम की कि दिल्ला की दिल्ला

कृष्ण कर्य जिल्लाक व्यापना प्रदेश बाक्स्यम सा । परनन, विकास क्षेत्र नार्व। यानमार्ग्य प्रतन्त्र ক্ষেত্ৰ হুই বৃশ্ব এসেছিল সেবার। क क्या श्वादक। कठिलागाटक वरे उट्टेंग्स. कि हे क्टबा टकरहे अहम बार्टन क्यु अभिन्द्रता खायाकः धा-७ थात्र नाकि? विवस्तात्मक शा आक कृष्टि करत छारमत भारक শার কোনো কো শিলিসরে মরে।

চলক ঐ কলকাতা নিয়ে। তার মধ্যে শ করে হাজেশ্বর বললেন, ভারণরে—হচ্ছে (A)

্দেৰনাথ ছেনে বললেন, হলেই হল। क्षमा त्राव्यक्त स्थन, ना इता छेलास चाहर ह কোন কছে, বুঝিয়ে কলতে হয় না। দরনাথ বাড়ি এলে গ্রামশুন্ধ মানুষের এক পাতে পড়বেই। ব্যবস্থা ভবনাথের। চাকরে চাইয়ের বাড়ি আসা সকলকে ভাল করে ছানান দিতে চ্বে বৈকি। নথুতো রামা-শ্যামা সাদো-মোখের আসার মতোই হয়ে যার যে। গালার মধ্যে ধানের উপর কয়েক কলসি ইংকৃষ্ট দানাগ্যন্ত রেখে দিরেছেন, পারেসে দাগবে। গোয়ালের পিছনে বড় মানকচু রাখা মাছে, মাছের তরকারিতে দেওয়া হবে। ক্ষতের সোনা মুগা কলাই ভেজে ডাল কর। ছাছে, নতুন প্রুরে রুই-কাতলা আছে। हक्नारशत अवहे रशाहारमा, रमवमाथ ध्यन क्ष्य नगम ছाড़ालरे रन।

যজেশ্বর নলতাভা জাগ্যদারি একেটটের চ্চশিলদার। বললেন, জণ্ঠর গোড়ায় চাছারির প্রায়হা। কটা জর্রি মামলার হারণে ছোটবাব্ সদর ছাডতে পারেন নি-প্রণ্যান্তে ভাই দেরি পড়ে গেল। তোমাদের কাজটা এই মাসের মধ্যে সেরে ফেল ভায়া, यन काँकिए भए ना याहै।

ভবনাথকে দেখকে পেয়ে দেবনাথ বলৈ, গড়াতাড়ি সেরে দেবার জনা যজে দা লেছেন। জন্তি পড়লে উনি কাছারি চলে াবন।

হোক তাই...। ভবনাথ বললেন। জোর নয়ে আবার বর্ষেন, হয়ে গেলেই ভাল--দুইয়ে রেখে লাভ কি। হাটের কিছু কেন নটা আছে। বুধবারে গণ্ডের হাট করব, সরর দিন খাওয়া দাওয়া। বিষয়দের রাতি-

দেবনাথ শুধালেনঃ আমার মিতে কাথায় এখন, কোন মেয়ের বাডি? তাকে ৭কটা থবর দেওয়া খায় না?

ব্কাণ্ডলি গাঁয়ের দেবেল্ছ চক্রবর্তীর ক্লথা বলাছন। শৈশবে দেবনাথ কাজেম-গাুর্া **পঠেশালায় পড়াওন, পাত্তাড়ি বগলে ঐ** ,চালটিও স্লাঠঘাট ভেঙে আসত, ভাবনাব ছেখন থেকেই। নামের থানিকটা মিলের দর্ন and a first Planting

দেবনাথ বলেন, বাডি এসেছি খবর এক পোলে মিতে হেখানে থাকুক, ছাটে

ভবনাৰ বলেন মিক্সানগরে ছোট মেরের বাড়ি ছিল তো জানি। ফটিককৈ পাঠাব কাল।

যজেশ্বর থাড় নেডে বলে উঠলেন, त्यारमध्य मान स्थान, विष्ठे भूदत वर्फ स्मारप्रव ব্যান্তিতেই আছেন। বছরের আবদেত টান यक त्थरकहे नातः करतस्त।

ক্রিছ অবাক হয়ে দেবনাথ প্রশন করে : দৈবজ্ঞের কাজকর্ম একেবারে ছেড়েছে?

यास्क्रन्यत रहरत वर्णन : এই তো काङ এখন,—হোয়েগ্রলাকে পালা করে পিতৃ-সেবার প্রশাদান।

শতকণ্ঠে তারিপ করে চলেছেন ঃ পাঁচ-প্রিটা মেয়ে বহাল তবিয়তে শ্বশার্থির করছে—দেবেন চক্রোত্তির মতন কপাল কার ? অশন-বসন হ'্কো-তামাক বাবদে কানাকভির খরচা নেই। এক এক ফেনের বাড়ি দ্ব মাস হিসেবে ভাগ করে নিয়েছেন ! দু মাস পুরলো তো দুগণি-দুর্গা বলে बखना-भाष्य ठींठे शुनाय हामस् वर्गाल পর্ণাজ হাতে কাদিবসের বাগ। ব্যাগের মধ্যে কাপডটা-আসটা—তাহাড়া জ্বন-গণ্ডি-পাশা আর জল শ্না থেলো হ'কো তামাক-টিকে বাতি-দেশলাই। এই মান্য কোন দুঃখে খড়ি পেতে এখন আর বিচার-আচার করতে হাবে?

দেবনাথ বলেন, আগের কণ্টটাও ভাবো হক্ষে-দা। এতগ্রালা হোয়ে স্পারে দিয়েছে, তবেই না সংখ্যতোগ এখন!

যভ্তেম্বর বলেন, সূত্র বলে সূত্র। মেয়েয় মেয়েয় অবার পালাপালি। বড মেয়ের বাডি দা-কাটা ভামাক শানে মেজ গ্রেয়ে সদরে লোক পাঠিয়ে বাপের জন্য অম্বর্তর ভূমাক আনাল। সেই মেজ মেয়ে র^ন বুটি দেয় শানে সেজ মেয়ে লাচির বাংগ:-বৃহত করল। ন-মেয়ে তার উপনে টেক্কা দিল—নিতা রা**রে ঘি-ছাত। ছোট** মেয়ে ভিন্ন দিক দিয়ে গেল। ছোট জামাই থেলে ভাল, দেওরটাও মোটামাটি চালিয়ে যেত পারে। চতুর্থ খেড়ি কোথায় আর খ'্জে বেডাবে—বউ হওয়া সত্তেও নিজে সে শিখে পড়ে নিয়েছে। এক মেয়ে থেকে অন্য মেয়ের বাড়ি হাবার পথে দেবেন স্বগ্রামে পাথর-হাটায় এক হণ্ডা দ্বংতা থেকে জমাজাঁয়ব তদারক করে যায়-সেই সময় সকলের কাছে সাথের গলপ করে, আর ছেসে হেসে খন হয়। মাডিশোড়া ডোয়াড়ে চেহারা ছিল, এখন নেওয়াপাতি গোঙের খাসা একখানা ভূডি নেমছ।

রাজিবপ্ররে পোণ্টঅফিস, পিওন যাদব রাড়্যের, রাল্লার তিনি ভারি ওদতাদ। বললে সোনা হেন নুখ করে ভোজের বানা রে'ধেবেড়ে দিরে ঘাবেন। কিম্তু বাড়ির মধ্য থেকে ঘোরতর আপতি: সামান্য একটা কাজে পিওনঠাকুর অবধি যেতে হবে কেন, বলি হাত-রত্ আগ্রা কি প্রিড়য়ে খেয়েছি? ভাকে ডেকা খেদিন পাঁচ গাঁরের পরেন সমাজ ধরে টান দেবে। গ্রাম্ব কটা মান বের

পাতে ভাত দেওয়া-কাজট,ক স্বচ্ছদে আমরা পাৰত। ৰাজণ নিয়ে সমস্যা—তিন বাম-ন-ব্যক্তি বোল আন। নিধে প্রাঠিয়ে দেওয়া যাবে। ভর্নিগ্রনীর রোখটা স্বচেয়ে বেশি!

शास्त्र करावेट विदान चात्र कलका। हत्त हाहे। न्हिरभामाध्य वाभाव नय, ग्रंप्याह সাদা ভাত।

উমাস্বাদরী বললেন, গ্রামের বিশ্বা কজনকেও বাদ দেওয়া হাবে না। ভোজের पिन नयः पद्भाष्टी पिन दाप पिटस—धारोकारी। সম্পূর্ণ সাফ-সাফাই হাঁয় যাবার পর। ছোট বউ তরাংগণী মিতিরজনর মেরে, অলকা বোসেদের। আর বিনো তো এই বাড়িরই। —ঘোষ বংশের। রালার মধ্যে যে তিন্দন স্বাট কলানের মেয়ে। কাপড-চোপড় 😢 🤠 শুম্বাচারে রাধাবাড়া করবে। কারো আপত্তি হবার কথা নয়।

না, আপত্তি কিংসর? বিনোই চক কোর দিয়ে সকলের গতামত ीसहरा

চাদারভাঙি গুংগাপ্রভারদের (জেলে কথাটা ভাল নয়, ওরা গুল্যাপার) সদার মাধ্র পাড়াইকে খবর দেওয়া হয়েছে। বাংশ জড়ানো দড়া জাল দুশুর মতো এক বোঝা —বাঁশের দাই মাজে দাই জোয়ানে সাড়ে নিয়ে আলে আগে হাছে, পিছনে অনের।। ন্তন প্রক্রের পাড়ে গ্রামের মান্যে তেওঁও এসে পড়ল।

আছড়াতলয়ে গা ছড়িয়ে বসেছে গাব্ব চ জ্ঞানো জাল থাকে আগত থান ইট বাধাছ জালের যে দিকটায় শোলা তার বিপরীতে ! শোলায় জালের উপরাদক ভাসেরে বাথে, ই'টের ভারে তলা অর্হাধ টান ্ন পাকে চতল মাগছে জেলের। আন্টে 🖟 তবনাথ হেসে বলেন পাকি এক ।র তেল সাবাড় কর্বাল যে থেটার ে একজন বলগ, ১৫ জ্ঞানা সেরের মানিখা তেল কেনে তে। এক প্রসার লা-প্রসাল-খাবে না লাখবের বাবার বাড়ি পেরেছে, বেদরদে মেখে নিচ্ছে।

তেল মোখে ব্যেপব্যুপ করে সব জগে পড়ল: মৃত্যকাল নামছে-পাড়ে ভাগের **40.8** 利 和東 খ্যা ওয়ার খান স সু:খ-শ্রা দেখতে ও ধ্রায় (5/3) সাথ থ্ব : কমল অবধি চলে এসেই ! বিনো কোলে করে আনছিল—কিন্ত বড় হয়ে গেছে সে? এত মান্ষেব্মধে। কোলে উঠে আসবে ছিঃ। নাময়ে দিয়ে বিনো হাত ধরেছে, পুরুরের একেবারে কিনারে যেত দিক্তে না। কমল টানটোন করছে 7301 বিনো ভয় দেখায়ঃ তবে খোকন বাজ নিয়ে যাবো ভোময়ে, মাঝের কেঠায় প্রের শিকৃষ্ণি তুলে দেখো। আর ক্মলের ক্থাটি নেই।

জাল আনক লদ্বা-প্রকুরের এ-গ্রেড়া প্র-মাডো বেড়ায় ঘেরা হয়ে গেল। আেড আন্তে টেনে ওপারে নিয়ে চলল—পাক্র ছাঁকা হয়ে যাছে। একটা দুটো চারা হাছ জালের বাইরে লাফিয়ে পড়ে, হই-হই করে ভঠে অম্নি মানুব। মাধব কলে, চে'চামিডি করলে মাত একটাও জালে থাকবে না, যিছে আমাদের থেটে মরা। জালের গা ছেখ্য ভূবের পর ডুব দিছে সে, জাল কোগাও গাটিয়ে গেলে ছাডিয়ে দিছে। জলতকে অদৃশ্য হয়ে থাকছেও অনেক কণ, ভড়ুড়াড काउँ ए । पूर्व भिरत भिरत क्या मुख्या स्वा-ফ**্রনর মন্ত রা**ঙা।

र्छेत रहेत जाम भारत कार अग्नह. আবার তখন চিংকার। দেবনাথের গসাই সকলকে ছাড়িয়ে যাছে। অথচ তার বাড়িতে কাজ-রাত পোহালে মাছের দরকার তারই। এত বড নরের মান্য, তা একেবারে ছেলে-প'লের অধ্য তথে গেছেন। দেবনাথ ধার্ময়ে দিলেন, তারপার স্বশাস্থ চেডাক্সে, পাকর-পাড়ে ডাকাত পড়েছে যেন। শ্রম ব্রথা যায় না - মাছ লাফাকে খোলা হাডির ফাউণ্ড ম্বরের মতন। রোদে রুপোর মতন ঝিক্মিক করছে। লাফিয়ে বেশ থানিকটা উচ্চতে উঠে লালের বাই'র পড়ছে বেশির ভাগ।

মাধ্ব বাদত হয়ে বলে, সব মাছ যে পালিয়ে গেল কতা।

দেবনাগ বলেন, লোকে কত আমোদ পাচ্ছ তা-ও দেখ। টানো না আর একবার---

মাধব স্তক করে দেয় : জেলমেচি না হয়, দেখবেন।

(पदमाध नालम्, এकहे, आधहे, इत्हे। এত মান্ধ এসেছে - তাম কি চাও, পুকুর-প্রান্ত এসে সব ধ্যানে বঙ্গে যাবে? টেনে হাত না তেমেরা---

হিমট্দ থাল উঠল, দ্বাটা-চারটে টান মা-হয় বেশি সাগরে। ভারী ভারী সব গতর িয়ে এসেছ—বাল গতরে কি আল্ল:-ক্ আজি খাবে? লোকে মজা করে দেখছে ২লই বা একটা কটা তোমাদের।

মাঝার এই তিন-চারটি রেখে চারামাছ জাল ছাল্ড দিল। বড হোক-এখন ধনকে না ওদের : যেগ্রেলা ধরেছো, ভা-ও ডাম্পায় তোলা ২বে না, কানকোয় দাড় দিয়ে খেটার সংগ্র বে'ধে জাল রেখে দিল। খেলা কর্ক দড়ি-বাধা ত্রম্থায়। কাজের দিন কাল সকালবেল৷ তুলবে, কোটা-বাছা হবে তথ্ন।

আবার জাল টালছে। পাড়ের কাছাকাছি হালই যথাপুৰে চিংকার। মাছ লাফাচ্<u>ডে--</u> কী স্ফের, কী স্ফের? টানের পর টান চলল দুপার অবধি। এরই মধ্যে এক কা-ড। হির্ধরে ফেলল—এত লোকের মধ্যে ভারই **শ**ুধ**্নজংর এসেছে। চাটোলে আমতলায়** ভালের মধ্যে শোলা কডু-বন- মাধব পাড়ই ঐথানটায় বড় বেশি বেশি ডুব দিছে। কোমর জল সেখানে—হটিছে জলের মধ্যে পা চেপে। হিরুতে-ঋন্টাতে কি চোখ টেপা-টেপি হল—ভাড় থেকে এক এক খাবলা তেল নিয়ে দ্জনেই মাথায় মাণছে।

टातः अतकात यान, जन प्रानास पटे-দই হয়ে গেছে—চান করবে তো নতুন বাড়ির भ्कूद्ध श्राद्ध।



সম্পাদক-শ্রীত যারকান্তি ঘোষ

এবার অমতের শারদীয় সংখ্যার সব থেকে বড টান তার বিষয় বৈচিত্রে।

পণচখানি উপন্যাস এবং একটি উপনাসে।পম জীবন কাহিনী

ৰুণিধদীণত সরসভাষায় রুম্ধনিঃশ্বাসে পড়ার মত অপর প रगारप्रन्मः छेभनरात्र প্রেমেন্দ্র মিত্র

উপন্যাসের মতো মনোরম বছৰ আগের পরিবেশে রচিত জাবন-काहिनी

वनक ुल

ফোটোগ্রাফ ও স্কেচ।

বত্নান জাধনের জাইল আনন্দ-বেদনাসম্ধ একটি শ্রেষ্ঠ উপন্যাস বিমল মিল

অনা উপনাসগুলি লিখেছেন সভীকানত গ্ৰহ মান্যজীবনের অনুদ্র আব্রেষণের রূপালেখ্য

প্ৰফুলে ৰাঘ आधुनिक मान्यवह न्यत्यस्थात रामप्र कारिनी

শতকর দাশগ্রিণ্ড

নতুন লেখকের খ্রিশ করার হাতো নতুন ফ**সল**

এবং আরো করেছে দেড ডজন গলপ, যার লেখকদের মধ্যে আছেন অন্নদাশক্ষর রায়, অচিন্তাকুমার সেনগর্প্ত, প্রমথনাথ বিশী, বিভূতিভূষণ মুখেপাগায় মনোজ বসঃ, আশাপ্রণা দেবী, আশ্রতোয় মুখোপালায় লীলা মজুমদার গজেন্দ্র-কুমার মিত্র, নিমাই ভটাচার্য, অত্তীন বলেদাপাধ্যায়, বুদ্ধদেব গুহে, শৈলেন ভাষা শ্রীলেখা বস্তু, অদুশি বর্ধন, জ্যোতিরিন্দ্র नन्मी. प्रशास्त्रका एमबी ७११ जारता जात्नरक। সংগে থাকছে একাধিক প্রবেশ আলোচনা এবং রভিন ছবি.

এই বহুমাখী পরিকল্পনায় সম্পুষ্ঠ স্বেচ্ছ সংখ্যাটির দাম কিন্তু থাকছে গতে বছরের থেকে মাত পঞ্জ প্রসা উদ্ধী। কাগজ এবং আনুস্থিপত সমস্ত রকম জিনিসের দাম ও থাত চতুর্গাল বেছে পেরেও অম্তের এই नातम जरकन्न गाएँ जार्गान्ड नाक्रेक ७ भाकित्यास्ट्राट क्यक्नेसेडात भासा থেকে উৎস্থের আনন্দকে বাড়িয়ে তলতে পালে সেডেডেট্র এবার দাম কম রাখা হল। আশা করি অমতে খাশি করতে পারবে আপনাদের।

> দাম ৬ টাকা ৫০ পঃ ডাক মাশ্ল ১.৫০ পঃ

অমৃত পাৰ্বলিশাৰ্স প্ৰাইভেট লিমিটেড ৷৷ কলকাতা - তিন

ক্ষান্ধ পোঁতা হাছ তুলে খণট্ চপাস করে সকলের মধ্যে ফেলল। আরে সর্বনাল, জী ভাকাত—সবাই দুখছে, যাচ্ছেতাই করে করে মাধ্যকে।

্র **দেবনাথ** এগিয়ে এসে বললেন, শ্যেত্ত **ছাডে চললে** কেন পাড়য়ের পো? মাছটা ীনরৈ যাও, খাবে তোমরা।

শাপিত না দিয়ে বর্থাশস? সকলে
প্রতিষ্ঠত। দেবনাথ বলেন, মাছ মারাই তো
মানুষ থাওয়ানোর জন্য। কন্যাদায়-পিত্সায়
- কোন বক্ম দায়দায়ার কারণে নয়,
মিতাশ্তই শথ করে মানুষের পাতে চাট্ট
ভাত দেওয়া। ভোজের পাতে হছে না তো
পাড়ায়েরা বাড়ি নিয়ে থাক নতুন পাকুরের
মাছনী

ভদ্রজনদের তব্ গ্রন সরে না ঃ রাজ-পা্রভারের মত্তন কার্জা---উঃ!

দেবনাথ মাধবকে ধলছেন আশা-স্থে রেছাছিলে—মুখেব জিনিস কাড়লে আমাদেব লেট হজম হাব না। জালে জাড়লে নিবে হাও—সকলে সমান ভাগ করে নিও।

ল্লাভ্ ধরা কারে বাজি ফিরতে স্থাপার শুড়িয়ে কেল। পাণুটি-কমল ছটফট করছে। এরপারে তো সমন্ গাওয়া—এবং তারও পার শোওয়া। বিকাশ হয়ে গোছে দেখোঁ শোওয়াট



বেনাথ হয়তো বাজিকই করে দেবেন। তাহলে সর্বনাশ—মোটা রোজগার মাটি। কাদিন
ভাই-বোনে এরা দ্পের্বেলা দেবনাথ্য
য়াথার পাকা চুল জুলছে। দর ভালই—
প্রসায় চারটে করে ছিল, এবারে বাজি এসে
ছাটা হয়ে গোলা। দেবনাথাই আপত্তি
ভালের : এক পায়্লায় এক গণ্ডা—বড্ড
ছালিয়ে। চুল এখন মেলা পেকে গোছে—
ভালের কাঁচা চোথে এক গণ্ডা চুল বের করা
কিছুই না, হাত ছোয়াতে না ছোয়াতে প্রো
কিছুই না, হাত ছোয়াতে না ছোয়াতে প্রো
ক্ষেম্বায় দশ্টা করে ফেলবি। এবারের রেট
পায়লায় দশ্টা করে ফেলবি। এবারের রেট
পারলায় দশ্টা করে ফেলবি। এবারের রেট
বিন্দিক প্রাক্তির পার ছাটায় এসে রাজা
হয়েছে—ছটা পাকাচুল জুলবে, এক পায়ন।
য়য়ল্রি।

প্রাট-কমলের আগে দেবনাথের নাথা নিমি-চণ্ডলার দ্বলে। রেট সাংগতিক তথন — একগাছি হল এক পরসা। দেবনাথ বৃষ্ণিয়ে বজেন, রেট দেখলে তো হবে না— মাথা-ভরা কাঁটা চুল যে তথন। একটি সাণা চুল বের করতে চোখের জল বের্ত, সায়ে বেলাও লগতে। চন্দলাটা বেশি বজ্জাত— একই চুল দ্বার ভিনবার দেখাত, দেহির পরসা আদায় করত। বৃষ্ণতে পেরবাথ নিয়ম বেংধ দিলেন, তেলাক মাভের চুলটা দিয়ে দিতে হবে— নিজে বাঘত প্রারবে না। ফাঁডি দেবার আর ভগন উপায় মুইল না।

মাধ্যে মধ্যে এরা ভ্রনাথের মাথার পারে গিয়েও বসে। তরি মাথা শনের ক্ষেত্রদেশের পাকা চুল তুলতে পারলেই হল। এন
অসুবিধা খাটো খাটো চুল তার মাথান—
ল্যু আগবলে এটি ধরা যার না বেও
তাতি সহতা—এক কৃতি এক প্রসা। কৃতি
করে খা্জতে হয় না বলে পাকাচুল তেলেও
মজাও নেই ভ্রনাথের মাথায়।

কোঁকল ভাকছে গাছের উপ্র ভাল-পালার মধ্যে। মাটির উপরেও তো ভালে, হাবহু কোঁকিলের মতো—একটা দ্টো নিং ম্নেকগুলো—এদিক সাদিক থোক। যত্ত বজাত ছেলেপালে কোকিলের ভাক ভাংচাছে।

কড়া রে'দ, ধ্সর আকাশ। এলোগেকে হাওয়া আদে এক-একবার—ধ্লো ও শ্**কনো পাতা** উড়ায়। বাতাসে যেন আগ**্**নর হতকা। মাঠ ফোটে চেচির। দুটো কুকুর গ্ৰামনুখি হা করে জিভ ক্লিছে ত্তিহা ক্রছে। গুরু ঘাস খায় না, আমতুলার শৃয়ে ঝিমোয়। নতুন প্রুরের জল আগান হয়ে যায় চানের সময় অধিনকুপেড নামছি। এছনি মনে হবে। কানা পর্কুর প্রায় শাুকনো, নামের নিচে অমপ জন থাকতে পারে। আশ-শগভড়া ভ'াট আর ক'টোখিটকৈ রাস্ভার প্রারের উপর ঝালে প্রড় খানিকটা অংশ একেবারে তাস্শা। একটা কোদাল ও একটা মেটে সরা নিয়ে কঢ়া ছেড়ি। ঐ জঞ্চালে নেমে পড়ল। জল আছে পুগারের আদৃশা ঐ-খানটায় এবং জল থাকলে মাছও আছে!

তংগল মলে দলে এদিকে আর ওদিকে দুটো আল দিয়ে নিল। সরা দিয়ে তারপর ভিতরের ফল সেচে আলের থাইরে ফেলছে। চাপ পড়ে সদা-বানানো আলে জল চোঁহাচে, এক কোদাল দুকুলাদাল মাটি কেটে সংখ্য সংগ চাপাচে সেখানো। জল সেচা হংর গিয়ে কাদার উপরে মাছ থলবল করে। হাছ সামানাই—পাঁচ-সাতটা নাটা ও কয়েকটা কয়-ভিয়েল। তাবই লোভে একটা মাছরাঙা এসে বসেছে অদ্রের শা্কনো সজনে ভালের উপর। মাছ না-ই থাক জয়ল কাদারাখা ও বাদা মাথানায়। ছেড়াল্লোর কোনটাকে কথা না বলা অব্ধি আলাদা করে চেন্বার জা নেই।

পাডার সকলের সারা হয়ে গেলে খাঁ-খাঁ দ_পারে কর্মাকার পাড়ার বউরা ঘাটে আনে। স্ব তাদের দৈরিতে। দুপারের খাওয়া নায় বেলা ডুব্ ডুব্ তথন। পুরুষরা হাটে হায় অন্যেরা যে সময় হাট করে ফিরছে। স্নান করে কর্মকার-বৃদ্ধ ভরা কলাসি নিয়ে ঘবে ফিরছে। হোজে মেজে পেতলের কলসী সোনার মতন কলফাকে হয়েছে: উপরে রোদ ঠিক্রে পড়ে। পথের বেলেমটি রোদৈ তেতে-পর্যত্র আগান। পা ফেলা যায় मा, **टम'**क लाएंग, भएत्छ रहाला एहात गाँकक। বউমান্য হলেও ফ'াকা ফাল্লাটা ছাটে পাধ ংয়ে বেশিতপায় চল হায়।জল কাপ্ড ছিজে গ্ৰাহিজে প্রের দল লাটিতে পড়তে না পড়তে শাুকিয়ে নিশ্চিয়া। পাড়ায় ঢোকবার নাথে প্রাচীন পর্টগার্ছ-শ্বিলাত্রা। কলস্ট নামিয়ে বট তাকটা জন চেলে বেয় যাক দেবতার পায়ের গোড়ায়। লাখা ভারিক পুণান করে আর বিভাবিত করে বলে ভা থাকো মা-জননী লো, ঠান্ডা খাকোন

উন্নদ্ধ চুলসাঁগছে মাথায় উপর ববা টাংগানে। চিত্র কুম্ভ থেকে ফুটো কেন্তে অবৈরত উপট্প জল করছে। সারা বৈশার মাস ভাঙে তুলসাঁসাকর দিবারাতি করার জলে মান করেন। বঙাা বরের দাওরায় কল্পী নামিয়ে তলসাভিলায় বউ গড় হয়ে প্রশাস করে। একট্যানি আড়ালের দিকে থেল, ভিজে কাপড় ছাড়ঙে।

নতুন প্রকৃষের জল প্র ভাল বুলে
চারিদিকে স্থাতি। বেলা পড়ে এলে কাথে
কলাস এ-পাড়ার সে পাড়ার ঝায়ের। এসে
বাবার জল নিয়ে যায়। আত দ্বের পাথাঘাটা গাঁ পেকেও এসেছে, দেবনাথের একদিন
নজরে পড়ল। দ্বের পথ বলে মেয়েলাক
নয়, প্রব্ এসেছে। কলাস একটা নয়, এক
জোড়া। কামের উপর বাকের
শিকেয় ঝোলানো জল-ভরতি কলসী দুটো
নচাতে নাছাতে নিয়ে চলে গেল।

(ক্রমুশঃ)



প্যায়িকে আমুড'-সম্পাদক সমর্বাধ ত

ব্রেন প্রবাসী বাঙাজীদের আমুদ্রণে দ্বনামধন্য সাহিত্যিক, সাংবাদিক ও অমত সম্পাদক ভূষারকাদিত ঘোষ জ্লোই মাদের শেষ সম্ভাতে সে-দেশে গিয়েছিলেন সাগর-পারে অন্তিত প্রথম বজা সাহিত্য সম্মেলন ও সংস্কৃতির মেলায় অংশগ্রহণের জনা। ব্বিতীয়বারের জন্য নিখিল ভারত বুল্গ সাহিত্য সম্মেলন-এর সভাপতি নির্বাচিত হবার পর থেকেই ভয়েষ দেশে এবং দেশের বাইদো যেখানেই কিছু বাপ্যালী বসবাস করেন-সর্বত্র বাংলা স্মাহত্য ও সংস্কৃতির প্রচার ও প্রসারকক্ষেপ যে প্রয়াস চালাচ্ছেন ব্রেনের বঞা সাহিত্য সন্মেলন ছিল তাবই প্রতাক ফল। ব্রেন-প্রবাসী বাঙ্গা**লী**রা নানাভাবে শ্রীঘোষকে সদবর্ধনা জানান। বহ বিশিষ্ট বান্তির উপস্থিতিতে ভোজসভায় তাঁকে আপ্রায়িত করা হয়। ক্তারপর ভিনি স্বদেশের পথে যাতা **করে**ন। এই যাত্রাপথে প্যারিসে এলে ফ্রাসী সাহিত্যিক সাংবাদিক ও চল চত্ত শিকশীরা তাঁকে বিপ্লেভাবে সম্বধনা জানান। অন্-ঠানটি মাসিয়ে জেমস বারনেট-এল কক্ষে স_{ুসম্পান হয়েছিল। সম্বধনার উত্তরে} গ্রীঘোষ ফ্রান্স ও ভারতের পারুস্পরিক সাংস্কৃতিক ও আথ'নীভিক সম্পকের ক্রমোহাতি বিষয়ে দৃঢ় আশা ব্যক্ত কথেন। তাছাড়া নানা বিষয়ে ভারত সরকারের নীতর ব্যাখ্যা করেও গ্রীঘোষ সকলকে थ्या करतमः धहे जन्छात्म क्रामा-श्रवामी বহু ভারতীয় ছাট, বিজ্ঞানী ও বাবসায়ীও **উপাস্থত** হিলেন: তারপর শ্রীমোষ স্বদেশের পথে রোম যাত্রা করেন।

সংশকৃত সাহিত্য পরিষদান প্রদশ্ব-সংগ্রহ দান

অধ্না বাংলাদেশের অশ্তর্গত ব বাল্লা জেলার কোটালিপাড়ার অধিবাসী, বিখাত শিল্পাপতি শ্বর্গত স্ভিদান্দদ স্ট্টাচার্য মহা-লয়ের সনুযোগ্য প্রচাণ সর্বস্ত্রী দেবেন্দ্রনাথ ভট্টাচার্য সম্প্রতি কলকাতার সংক্ষৃত সাহিত্যে পরিবাদ প্রশাসারে মূল্যবান প্রেছক বংগ্রহ দাম করেছেন। স্বর্গত ভট্টাব্য মহোদয়ের ভারতীর সংশ্কৃতি-প্রীতি ও বিদ্যোৎসা হতা সর্বজ্ঞদার্বাদত। তার এই সংগ্রহে দশনে, ইতিহাস সাহিত্য, সমাজ-বিজ্ঞান ও অর্থনীতি বিষয়ে প্রায় ২৫০০ থানা মাল্যবান বই ও পহিকা ছিল। সংশ্কৃত সাহিত্য পরিষদ-এর গ্রন্থাগারে স্বত্যে রক্ষিত এই প্রশুতক ও পরিকা সাধারণ গাঠক বাবহারের স্বোগ পাবেন। প্রক্রমান্তার ব্রাক্ত এই জ্ঞানভালার সর্বাধারণের শর্মে প্রাক্ত এই জ্ঞানভালার সর্বাধারণের শর্মে করবার জন্য শ্রণতি ভট্টাহার মহাশরের প্রকাণ শিক্ষা ও সংক্রিভির জ্ঞানী ব্যক্তিয়ারেই স্থাংগাভালন হিলা।

লোকসংস্কৃতি বিষয়ক প্ৰসিক্ষণ

আর্কাডে ম কব ফোকলার-এর উদ্যোগ্য এবং ককভাতা বিদ্যবিদ্যালয়ের ন্-বিজ্ঞান বিভাগের সহযোগিতায় বালিগঞ্জ বিজ্ঞান কলেজর জীবনবিজ্ঞান কেন্দ্রে সমপ্রতি লোক সংস্কৃতি বিষয়ক এক প্রশিক্ষণের আয়োজন করা হয়েছল। গত ওরা আগণ্ট থেকে চাল সম্ভাহের এই প্রশিক্ষণ কোশের উম্বোধন করেন ন্-বিজ্ঞান বিভাগের প্রধান ডঃ মীনেস্থনাথ বস্বা। বিশেষ অতিথি হিসেবে উপস্থিত ছিলেন বিশিণ্ট লোক সংস্কৃতি বদ প্রীগোপেন্দক্ বস্বা। উভারেই তানের ভাষণে আজকের সমাজে লোক সংস্কৃতি চচার প্রয়োজনীয়ভার উপর জোব দেন।

নিঃ ভাঃ ৰখ্যভাষা প্রসাদ্ধ সমিভিদ্ধ স্কল্ড ভারতীয় বিদ্যাভবনের হান

নিখিল ভারত বঞালায় প্রসাদ সমিতি সম্প্রতি বোম্বাইরের ভারতীর বিদ্যাভ্যনের নিকট থেকে কেশক কানাই-লাল মুস্পী সাহিত্য সংগ্রহা থেকে একটি আলমানীসহ পঞালখানা মূলাবান বই দাদ হিসেবে লাভ করেছেন। এই বই-গুলি গুলবাটি, সংকৃতা ও ইংকেলী ভাষায় রচিত। সমিতির প্রতিষ্ঠাতা-সুক্লারক শ্রীক্ষোভিষতন্দ্র যোষ আনুষ্ঠানকভাবে এই দান গ্রহণ করে ন্থাতি মানুষ্ঠান নানা গুণের কথা আলোচনা করে বলেন, মানুদানী ছিলেন ভারতীয় বিদ্যাভবন স্থাপনের প্রধান উদ্যোজ। ' এই প্রতিষ্ঠান গতে দাই বান গ্রহণাদি প্রকাশ করে ভারতীয় সং-ক্ষতির সেবা করে চলেছে। ভারতের বিভিন্ন ভাষা-বানে করে চলেছে। ভারতের বিভিন্ন ভাষা-বোল্টার মধ্যে সম্প্রীতি সানুদ্দে করা এই প্রতিষ্ঠানের অন্যতম লক্ষ্য। শ্রীবার ভাষা-বোল্টার মধ্যে সম্প্রীতি সানুদ্দি করা এই প্রতিষ্ঠানের অন্যতম লক্ষ্য। শ্রীবার্ষ কর্মাতির উদ্যোলার বাংলা ভাষা ও সাহিত্যে প্রতির কথা উল্লেখ করে

भागक्रीहेट्ड माहिक मुट्यम्न-अर बाट्यक्रम

মাসিক সাহিত্য পরিকা 'ন্রণিক্যা'র উদ্যোগে পানিহাটিতে সারা বাংলা করি-সাহিত্যিকদের একটি সন্মেলন-এর আয়োল জন করা হয়েছে আগামী ২০শে অকটো-বর। নীলিমা'র শক্ষ থেকে উৎসাহী লেখক ও লেখিকাগণকে নিচের ঠিকানার যোগা-যোগের অনুরোধ ক্ষানাজেন ঃ নেখ সদর-উদ্দীন, সম্পাদক, 'নীলিমা', সোদপুর ভেট্মন রোভ, পোঃ পালিহাটি ২৪ পুরুগ্য।

विकास सामनात छना भूतकात

ক্ষিবিদ্যালয় মঙ্গুরী কমিশনের একটি সাম্প্রতিক বিজ্ঞাপিততে জ্ঞানা গ্রেল, কমিশন আদরে ভবিষাতে আচার্য জ্ঞাদশিচান্ত বস্তুম নামে প্রতি বছর দশ হাজার টাকার একটি পরেন্দার প্রতি বছর দশ হাজার টাকার একটি পরেন্দার প্রতিকার ক্ষাবেন। প্রধানত মৌলা গবেষণা ও উচ্চভাবনের জন্মেই এই পর্নন্দার দেওয়া হবে। এ সম্পর্কে বিদ্যারিত উত্যাদি শীঘট প্রচামিত হবে। গ্লুক্তরাট হরিওর আদ্রম্ ঘেকে প্রাণ্ড অর্থে এই পরন্দারের ধনজ্ঞাতার গঠত হরোছে। সাহিত্য ও সংস্কৃতির নানা ক্ষেব্রে স্লুন্টা ও সাধকণালকে নানাজ্ঞাবে সম্মানিত্ব ও আ্থিক্তি দক

কাল পেকেই স্কৃত্রারেতে, বিলমের হলেও বিজ্ঞানের সাধকগানে, জনাও জাতীয় সত্রে অন্ত্রেপ প্রেকারের বারস্থা হওয়াতে দেশবাসী এগতেই খালী হবেন।

কবি ছেমচুন্দ্ৰ বাগচীৰ বচনা প্ৰকাশের উল্লোগ

করেলে থাবের শক্তিমান করি দাখিকাল করে অসন্থা। তাবে সম্পত প্রকাশত ও অপ্রকাশিত করতা, বহন প্রবাধ ও চিঠি-গত্ত দি একতা করে বচনাবলী আবেবের প্রকাশেব চেটা চলাছে। ক্লেনবং নদুবীয়া থোকে শ্রীসমারিবেধনাথ নিছে বার্য আবেদন ভানাকেন, কাবো কাজে কান্যে কোনা থাকলে তিনি যেন পণ্টান আনুলিন্ধি বেখে সেগালি আবার ফোল্টা দেওখা হবে।



প্রক্ষাভি: পরিমল গোস্বামী। পরিবেশক: র্পা আন্ড কোম্পানী ১৫ বিংকন মাটাজি স্থীট কলকাতা-১২। দাম— বাইশ টাকা।

প্রস্মতি পরিষ্ণবাব্র স্মৃতি প্রথির চতুথ রাজা এর পরে আরেও একখানি রাজ্য বেবাহাছ। কাতু প্রস্মৃতির মতো রাজ বাংলাভাষার সম্ভবত আর নেই। এর বিংলাভাষার সম্ভবত আন নেই।

ব্ৰীন্দ্ৰনাথ বেষৰ চিঠিপত লিখেছেন, তা স[্]চতা হ'লছে পরিমণগাযুও প'চাত্ত জন লেখকের তিন্দা' প্**ভা**শখানা প্<u>ত</u> বা পত্রাংশ ঘিরে যে স্মতি রচনা কংগ্রেম তা সাহতাপ্রাণ পেয়েছে। মত্তস্চিত্ত। পর-ম্মতি এক অভিনৱ স্থি। ভাগতে অবাক লাগে, পরিমলবাব আজীবন বত চিঠি পেয়েছেন, তা সে হুস্বট হোক কি দীৰ্ঘ জীবনের এই স্দীঘ'কাল প্য'তে সব স্বত্যে রক্ষা করেছেন-একটিমার ছতের চিঠিবৈও তিন অবজ্ঞা করে ভেলে দেননি। এবং এখন, এই প্রিণ্ড বয়েসে, পরেনো সব চিঠির ঝাঁপি খালে বাসছেন। চিঠিশ্লো তিন পড়ছেন আন বলছেন 'প্রোনা প্রিয় গান অনেক[্]দন পার **শ্**নেলে মনে অনেক সময় বিচিত্র আলোড়ন কোণায়। প্রোলো চিঠিও তাই। পড়তে গিয়ে তাই আনেক দেরি হয়ে গেল। কত স্মাত জেগে **উठेल এक-এक**थना हिर्क चिरवार

সমর্ণে

প্রমধ চৌধ্রী: বাঙালীর সাহিতা ও সংস্কৃতির ইতিহাসে সেক্টেম্বর লাস্ট বিশেষ উল্লেখযোগ্য। কাংগ্ৰেই মানে বাংলা ভাষা ও সাহিত্যের সেরায় জীবন কার্টিয়ে গৈছেন এইকয় ছয়জন শ্রেণ্ঠ বাংগালীর শুন্ম ও মূত্য তথেছিল। কাল নাক্ষিত বিচারে আমরা প্রথমের পাই বাংলার নতন গদারীতির প্রবর্জ স্পশ্ডিত ও স্রস্তি ক্ষেত্রক প্রমায় টোগারীকে (বারিবল)। পুরুষ চৌধ্রা পরলোকগমন করেন সেপ্টেম্বর মানের হরা (১৯৭৬)। তিনি কেবল তার মাসিক পত্রিকার (সব্জপ্র) সাধ্যম এক **मांडमामी अथक आर्थी अर्थि कर**्हे ক্ষণত হননি। নিজে তিনি যা সুভিট করে পোছেন, পরিমাণে তা স্বল্প হালেও গ্রেণ্ড বিচারে আজন্ত ও। অকুসনীয়। চার ইয়ার্ডা कथा, नीम रमाश्टिश कांड्नी ७ मतावे भेगामर क कथात आका रमस्य ।

বিভূতিভূবৰ : তেখাপুর আম্বা প্রেয়-ছিলায় বিভাওভ্যুণ ব্যালাদায়েরে। প্রের পাচালীর সুধ্যার জন্ম হার্যালল এ মাচেব ১১ তারি**রে (**১৮১৪)। িভৃতিভূষণের গল্প 🗷 উপনাসে বাংগালীর মধাবিত জীবন ও মানস্কিতার যে 5ির আফ্টা পেয়েছি 😇 🖰 खनना कातन क हिट्ट निमान्न टेमना-শ্বংশের মধ্যেও একটা অবাধ্যমসাগ্রেংর দেনহ প্রেম, প্রীতি ও পরিচ্ছলভার রাণ ष्याभवा প্रकाक कार्बाष्ट्र। भाग इत्याद्धः देवनाई সব নয়, তার পরও জীবনের অনেক কথাই থাকে, আনেক বিভাই আমারা জানিন থেকে আহবদ করতে পারি। নিঃম্ব কোন হাস্তিও দে প্রকৃতির ঐশব্যা ও ধ্যা আস্বাদ্দ করে ও তার সামিধ্যে পূর্ণ ক্রুত হাতে পাবে তা বোধকৰি একমাছ বিভৃতিভূষণই প্ৰমাণ कृद्ध शिरहास्त्रम् ।

শার্থচন্দ্র : আগরাজের কথানিবণী দারং-সম্প্রস ক্ষান্ত সমেছিল এ মানেই (১৮৭৬ र'अ'ो।'पर ५६ (अ(गोस्वर)) आशाधी तरमत ১৫ই সেপ্টেম্বর থেকে বছার্যাপী ভার জন্ম-শতবাধিকী পালনের নানা প্রকল্প-নার সংবাদ আহ্না এ বিভাগে পরেবি পরিবেশন করেছি। শরংসদু বিভিন্ন শ্রেণীর বাঙালী জীবনের কাহিনী রচনা করে গেছেন। ব্যস্তিক, পরিবারগত্ত তথা গোষ্ঠী-গত-নানা পংগ্রেপ্রাক্ষতেই তিনি নান্ত্র্ক বোঝবার চেন্টা করেছেন। কোন সামাজিক অবস্থাই ডিরম্থায়ী নয়। শবংসাহিত্যে যে স্মাজের রূপ আমরা দেখেছি বা পরি-বাংরে ব্যবস্থা পড়ে একসমূহে আমরা মৃত্যু হয়েছি, আজকৈর দিনে পরিবাব বা সমাতে ত। নয়। কিন্তু তব্ প্রক্ষতা অভিজ্ঞতার ফলে আমরা জান যে আঞ্জু শ্রংচন্দ্রে রচনা যে প্রিমাণ বিক্রী হয় সে রক্মটি অন্তর্ভ কথাসাহিত্যের ক্ষেত্রে আরু কারেন্ট্র হয়না। তাই মনে হয়, অবস্থার বহন পরিবতান ঘটে গেলেও শ্রংচনের স্ভ চণিত্যালির মধ্যে যে সাবিক্তার ছোঁয়াচ রয়েছে, তার প্রভাবেই আঙ্গও তিনি প্রতি-দিন আমাদের মনোযোগ আকর্মণ করতে

বতীদ্রনার : কব বতীশুনার চেনগণেত
এ মাসের ১৭ই ভাবিথে ইহলোর ভাবে
কমেছিলেন (১৯৫৪)। শেলাগভ্ডারে তিনি
ছিলেন একজন এজিনীয়ার। একজন এজিনীয়ার আবার কবিও, এটা দেখে সে-বুবে
অনেকেই অবাক হয়ে যেতেন। কিংতু তার
কাবোন বিষয়বন্দ্র দেখে। একটা মধ্যর
বিশাং অন্ভাতর প্রকাশ ঘটতো ভার
কাবোন বিষয়বন্দ্র দেখে। একটা মধ্যর
বিশাং অন্ভাতর প্রকাশ ঘটতো ভার
কাবোর হল্লে ছালেন্টিক সে রক্মাটি বেশ্হয় আর কাবো বচনাতেই আমবা পাইন।
এদিক থেকে বতীশ্রনাথ সেনগণ্ড কবি
হলেনে ছিলেন একসকভাবেই একক ও
ক্রেক্ট্রা

শিৰনাথ : রাহ্মসমাজের 🕻 মন্তর নেতা ও স্বনামধনা স্থাজসংস্কাবক প্রিভূপুর্ব শিবনাথ শাস্ত্রী যে বাংলা ভাষার একজন প্রথম খেলটির লেখকত ছিলেন, একগা হয়ত সাহিত্যের ছাত্রা পাঠক বাঙীত অনৈকেই স্মন্তবে হ্রাখন নি। প্রাক্তর চার খানা কবিতার বই তিনি গ্রেন করেছিলেন —নিবাসিঙের বিলাপ, হিছাছিক্সমূহ প্রুমার্জাল ও ছায়ালগ্রী প্রিন্যু: ত্রি ৰচিত উপন্যাস চাবেখনি -যাগান্ত: মেজ বৌ নয়নতারা ও বিধবদ্য ছেলে। প্রথাধর বই তিন্থানি—রাম্চন্ লাহিড়ী ও তং কলেখন বজাসমাজ, প্রবণ লী ও ধন'-জীবন। এসৰ বাতীত বনাগের আছ-চ্ৰিত, আজত আয়াকাণ কাৰ্ড চলাওয শ্রেষ্ঠ আত্মকাহিনীয়ালক বচনা ভিনেবে সমাদ্ত। শ্বনাথের মাড়া হয়েছিল সেপ্টে-শ্বর মাসের ২৩ ভারথে (১৯১৯):

বিদ্যালাগর : বাংলা গদের অন্যতম জনক গণিডত ঈশ্বন্যন বিদ্যালাগর ভারগ্রেহার করেছিলেন সেপ্টেশ্বর মাসের ২৬ তারিবে (১৮২০)। কেবল আন্যানের ভারা হা সাহিত্যই নয়—প্রকাতপক্ষ আন্যানের প্রয়োজ সংকৃতির আন্যানিকর প্রাথকরার আরু করেছের করেছের করেছের করেছের বিশ্বানার করেছের বিশ্বানার করেছের করেছের করেছের করেছের করেছের করেছের করেছের করেছের এক এক একের করেছের করেছের স্থাকিক এক আরু করেছের করেছের করিছের করেছের করেছের করেছের করেছের করেছের করেছের করেছের করেছেরার নাজের করেছেরার করিছেরার করেছেরার করেরার করেছেরার করেছেরার করেছেরার করেছেরার করেছেরার করেছেরার করেছের

এ'দের প্রভাগের সম্ভির উপেন্দ্র আমর। শ্রন্থার সংগ্রাপ্রণতি জানাই।

-खब्रकात्र

তর্ণ কবি অমিত চক্রবতার কাব্য-ভাবনায় যথেন্ট প্রতিশ্রাত আছে ইতুমতন্ত

বিক্ষিণত কবিতা পাঠে আগে তা মনে হছ.

বর্তমান গ্রন্থ 'আমি চলে যাব' ছাতে আসার পর সেই গোপন ধারণা ও প্রতায়

এখন স্থির হল। বৃহত্ত আলোচা সংকলন-

এর কবিতাগ লির বিষয়ভাবনায় ক্রমি

অত্যত্ত বলিন্ঠ। কিছে প্রজ্ঞা **বাংগ মেশানো**

সক্রেথ মানবিক বোধ কবিপ্রাপ্ত সক্রিয়।

কাব ব্ৰিফ চাপা কোন অভিমান কো কি

আত্মাভিমান-তাতেই মাজি পেতে চান-

আর ভারই জান। আতিরি নামাণ্ডর এক

বলিষ্ঠ ভিকা-ছেডে দাও শেকড দিয়ে

পা জড়িয়ে কে'দোনা এভাবে/আমি চলে

যাব সব কিছা গাছিয়ে ফেলেছি ইমজ এ

শব্দ প্রয়োগে কবি অভান্ত আন্তরিক।

সেই "ম্ভিগুলো ভিনি সুক্ষর করে সুদ্দা ফ্রেমে ব্যিথে প্রকাণ্য স্থানে টভিয়ে দিয়েছেন। রসিকজনেরা দেখছেন আর তণ্ড গভেন।

পারমলবার, যাদের চিঠি নিয়ে এই
ক্ষতি রচনা করেছেন তাদের অনেকেই
হয়তো খাতি নন, কিম্তু ক্ষতিপ্র ক্ষেত্রে
খাত-অখাত কথাটা সম্পূর্ণ অবাস্তর।
মনের খাতি-বিচারে সবাইকে তিনি সমান
মর্বাদা দিয়েছেন। সবার চিঠি নিয়ে বে
ক্ষান্ত তিনি রচনা করেছেন, তা ব্যক্তিগত
মর্মাণ্ডগত এবং তাবত অভিরিক্ত ক্ষেত্রত আছে কৌতুক, কোথাও বালগ, কোথাও
ক্ষেত্রত, আবার কোথাও-বা একট্ডানি
কিম্পুর্ব বেদনায় ক্ষপ্রা। পরিমলবার্ক
কৃতি সাহিত্যরেপ পরিপার। পরিমলবার্ক

এতে সাঁহত্য বেমন আছে আছে তাছে তেমনি ইতিহাস্তা। বিগত অধশিতাবদী যাবং বাংলার শিক্ষা সংস্কৃতি ও সাহিতেজ ক্ষেত্রে যাদের দান আছে, তারা থ্রমনে ও গরুবে উপস্থিত আছেন এই রাধ্বে। তাই

ভিন পৰী ছয় প্ৰেছিক (উপনাস)ঃ জ্যোতিরিক্স নগদী। জ্যোতি প্ৰকাশন, ২-এ, নবীন কুন্ডু লেন, ক্লকাতা-৯। পচি টাকা।

শ্রীযার জ্যোতিরিন্দ্র নদ্দী নর-নারীর সম্প্রা, যুবতী নারীর সংশা মুবক ও প্রোট্ মান্ত্রে সম্পকে তারতমা, সংক্র বৌনতাকে কেন্দ্র করে মানবমনের অব-চেতন ক্রিয়াকলাপ--এসব কিছেব্লে মান্বধের বাণ্ডব সংসারের দিনান দৈনিক অভাব-অভিযোগের সংগে, দুঃখ-বেদনার সংগে সমান্তত এক নতন জীবনকথা উজ্জ্বল উতরণের কথা বলতে নিশুন। তণর জীবন-ভাবনা এভাবেই একাধিক উপন্যাস ও প্রেপ ধারে ধারে গড়ে উঠেছে। তিন পরী ছয় প্রেমিক' উপন্যাসে সেই জীবন-অভিয়ত আর একভাবে উপস্থাপিত। এ-উপন্যাসে र्চावत रवभी घटेला रवभी, **मद्भन्न क्रिक** ভাবনার সক্রিয়তা জ্যোতি রন্মবাবু কাহিনী, ঘটনা, চরিতের মধ্যে রেখে স্পৃষ্ট করতে বেশী উৎসাহী। প্রকাশ চাট-জের তিন পথীর মত সংস্কী মেয়ে—লাকী, খাকী, टकामर्गक। अपने यथाक्ट्या मुर्गि कर्द्र প্রেমক — স্থেন-প্রণব, বংশী-সিখার্থ পরেশ-সাক্ষা রক্ষিত। বিহুগত তেলীভাগে স্থেন-বংশী-পরেশ অনেক নীচের। তুলনার প্রণব সিম্বার্থ সারদা রঞ্জিত অনেক প্রতিষ্ঠিত। অধিক-সক্ষ মানুষ। এই সমস্ত চরিতের ভিড়ে লেখক মন জটিল জীবন ও তার অমোধ স্বভাবকে স্ফার-ভাবে চিহ্নিত করেছেন। উপন্যাদের পেতে

ভাবীকালের ঐতিহাসিকরা এই গ্রন্থ থেকে অনেক টেপকরণ সংগ্রহ করতে পার্বেন। পাষ্যবন বাংলা সাহিত্যের গবেষকরাও। পরিমলবাবার ঐ ক্যাত কেবল তার নিজাব সম্পদ হয়ে থাকেনি, তার ওএর অধিকার ব্যাণ্ড হয়েছে গোটা মননশীল সমাজের। পরিমূলবাবার নিজের মনন্দীলতাও मार्के फेट्रेट्स कड़े शर्थ, याम काषा छ তিনি অনাবখ্যক এবং অতি রক্তাবে আছা-প্রকাশ করেননি। যেখানে যতেটাক দরকার দেখানে ঠক তত্টাকুই নিজেকে মেলে ধরেছেন তিন। এই সংখ্য বড়ো দ পভি। পরিমলবাব, এই দুর্লভি সংযমের অধিকারী হয়ে যে শিল্পিমনের পবিচয় দিয়েছেন. তার ভলনা মেলা ভার। তাল ভাষা সাবলীল, ভিশ্বি অন্নকেণীয়। তার দেখার মাঝে মাঝে যে সক্ষা মোচতগালো দেখা যায় তা বাশ্বির দীশ্তিকে জাজ্বলামান। পাল সাডে

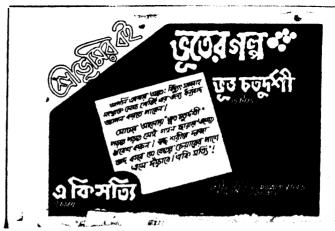
বৃশিধর দীশিততে জাজালামান। প্রায় সাজে । । । প্রায় সাজে । । প্রায় কর্মান । প্রায় কর্মান । প্রায় কর্মান । প্রায় কর্মান । প্রায় প্রায় কর্মান । কর্মান । প্রায় কর্মান । বিশ্ব কর্মান বিশ্ব কর্মান । বিশ্ব কর্মান বি

একাই এক বেনেসরি জন্মদাতা বললে বোধহয় অত্যু ছ হবে না। আমাদেশ দেশে থেমন চৈতনাবাজিছই যোড়ল লতকের বেনেসরি প্রতীক প্রতিম বাগোর যোগা, তেমনি লেকসপীয়ার সাগা বিশেবর বিশার। তাঁ জন্মদিনটির তারিখের সংল্য মাদ্রা বিবাহ হয়েছিল আঠারো বছর বয়সে, সাংগা আকর ব্যাসের আন হাগওয়ের সংগা এই ব্যাসের আন হাগওয়ের সংগা এই ব্যাসের আন হাগওয়ের সংগা এই ব্যাসের সাবা বাংলালা পাঠকরা আপুন করে পারার স্বাোগ সম্প্রতি মাধানে।

কছ্কাল আগে প্রকাশিত **হয়েছে** শেকসপীয়া সমগ্র রচনা সংগ্রহের প্রথম থাড। ইতিমধ্যে অন্যান্য **গ্রাম্থাবলীও** বোরয়েছে, কিম্তু বইন্মান রচনা সংগ্রহ

ট্রাম থেকে পড়ে গিয়ে লাকার মৃত্যু বর্ণনা থেকে শ্রু করে উপন্যাস্থির প্রতিটি পাতার লেখকের মনোরম বর্ণনাভাগ কার্মায় অন্যধ্প অথচ অশ্ভূত নিরাসত্ত এর গদ্যভাবাকে প্রিণত ভাব্যক্তার বাহন করে ভুলেছে।

ভাষি চলে হাৰ (কাব্য সংকলন)। অগ্নিত চক্ৰবৰ্তী। গণেগাতী প্ৰকাশনী, ৪।২ আফতাব মস্ভিদ লেন, কণকাতা-২৭। তিন টাকা।



সমুহত শেকসপায়ান গ্রাথাবলী থেকে
সমুশ্রণ ভিন্নধ্বনের। কেউ কেউ গলে।
শেকসপায়ার রচনাবলী বের করেছেন, কেউ
উপন্যাস আকারে কেউ বা সংক্ষিণ্ড করে।
কিংকু বৃত্তামান শেকসপ্রিয় সম্রাচ রচনা
সংগ্রন্থি এস্বরের স্বীমার্যধন্তাকে কা ট্রে
থ্রুকটি প্রশাস্য বহার্থ ভান্তান-গ্রাথব
মুম্বাদ্য প্রায়ত্ত যোগা।

আলোচা প্রথম খণ্ডের ভূমকাল্প ভঃ
শ্রীবৃত হরপ্রসাদ মিচ লোখত বাংলায়
শেকসপীয়র চচ্চা শাীরার মা্লাখত বাংলায়
শেকসপীয়র চচ্চা শাীরার মা্লাখান দ্বীত
ভবন্দ ও শ্রীবিন্দলাথ চটোপাধান, র'চত
শেকসপীয়র শরি চিতা ছাড়া প্রাউৎপল
দেকের ও ছিত সামার গাচইস ভূম ও
শেরমিও জালিরেউ: শ্রীমানস খোলের
বিকং ভনা শ্রীসমরেশ মেরের ভালায়াস
শীলারা ও শ্রীজাজত গাংগাপাধারের
হালারেলটে নাটকের অন্বাদ সংখোজত
হালারেলট নাটকের অন্বাদ সংখাজত
হালারেলট কর্তার করি শ্রীশাশিক রার এবর
শ্রীভ্রপ্রসাদ মিহা। ভনাস ও এভোলিকের
সন্বাদক করি শ্রীজামতাভ দাশগাপত।

ভূমিকা মংশে শ্রীগুরপুসদে মিংবে বাংলায় দেকসপারে ১৮। বাংলার দেকসপারে ১৮। বাংলার প্রথমি করিছিল। বিশ্বনাথ প্রথমির প্রথমির প্রথমির বাংলারেশের পারিকারে ক্ষান্তর্বা করা কেন্দ্রেশ্য প্রথমির প্রথমির ক্ষান্তর্বা করা বেন্দ্রেশ্য প্রথমির ক্ষান্তর্বা করা বেন্দ্রেশ্য প্রথমির ক্ষান্তর্বা করা বাংলারেশ্য বাংলার বাংল

শেকসপুষ্থিত বিভিন্ন সমুয়ে ক্রতি স্কেট ब्राज्या करवन्। ५७,८६ अस्तर्भ निष्य कावा-র স্কু এবং সমাজেচকর দীঘানির ধ্রে জ্ঞানা-কলপুরা করে এশেছেন অভ্যাধ্রীয়াক কাজ প্রতিত। শেবসংগ্রিয়াবনে সলেট পেরাক[ে] প্রবৃতিতি সানে^ত থেকে ভিন্ন ধ্বস্পাদী: ১৫৩টি সামটের মেউমেটি দান্তি ভাগ । ১০১২৬ প্রস্তু স্ফোর কোন প্রেয়ের উপেল কালাসত, ১২৭—১৫১ **সংমটগটুল কেদ নার্**তি ট্রেদা**শ** র্জিড়। আলোচা ধ্রেকস্পীয়াব বচনা সংগ্রাহ প্রথম ভাগের কিছা সনেট যাস্ত হয়েছে। বদহত কবি মণীশ্চ রার ৬ ক্রপ্রসাদ স্মত উভয়েই সনেট বচনায় সম্পত্ৰত এবং আসোড়া অন্যবাদে শেকসপীয়াবের মন ও শ্বেক্তাক এক ব্ৰতিকে ধথাৰত ব্ৰহমাণ্ডত করন্তে পেরেছেল। শেকসপ্তিকে প্রথম ক বৃহাতু নাম ওছনাস ও এডোনস 🔻 এর ট্রন্সাদান জড়িত্তর আটাম্যাক্সেস থেকে নেওয়। প্রেম এবং সেক্ষিয়ের দেবী ভেনাস ও ভুয়ার এজেনিকো প্রেম প্রভাগনান, মৃত্যু ও ভেনদের শেক ইত্যানি বিষয় রালিল্পে ও প্রনেসতি প্রভাবে ইচাকিক। এই কাষ্টিৰ অন্বাদ্ধ শ্ৰীগেমতাভ লাশগ্ৰহত আনিও যাত্র নিলে ভালো বজাকো। সর্বন্ত্রী উৎপুর দন্ত, মানস ছেন্ড চারুত গ্রেগ্যাস্থায় ও সম্বেশ হৈও নাটক

----- काकार्यस्थात्र ज्ञातेष्ठाश्चाद्

নিষ্ঠা এবং শেকসপীয়তে দুরুছ নাটক পাঠের উপযোগী মেজাজ রক্ষা নিশ্পকৃতিত্ব দেখিরেছেন, ত। বিশ্নায়কর।
শেকসপীয়র রচনা সংগ্রহেশ প্রধানতম
উদ্দেশ্য হল—তার কার্য, নাটককে বাঞ্যালী
পাঠকদের—তাঁও শ্বভাবছি হোন বা
সাধারণই হোল—একই সংগ্র মাজের শেতাজ
ও বাংলা দেশিকসপীয়র মাল্য বানা হেতাজে।
বর্তমান শেকসপীয়র মাল্য বানা উল্লেখ্যতার
রহমান শেকসপীয়র মাল্য বানা উল্লেখ্যতার
রহমান গ্রহ্ম উল্লেখ্যতার প্রক্ষাপ্রক্র

সংকলন\পত্ৰিকা

মধ্যাই; ৮৯ বধ', ৩৯ সংখ্যা সংস্থাকক--লোলেপ্লাথ বস, ৬ স্থান্ত চট্টার্যা। ৬৮ মহা্যা গাণ্ধী বেড়ে, কলি-৯। সঞ্চানকা

উচ্চমানের এই পারকটির বাংলাফেনের প্রগাতশাল ও বুল্ধজানা মহলে মহালাল সালে নিজের স্থাত্র কার নিয়েকে আতেই। ব্রামান সংখ্যাতেও অধ্যত্ত পতিকার তেও গোরৰ **এক্ষ**্ম **থা**করে। দলগৈক্ষাত মতে সাম্প্রতিক জায়ান্ত তাতক সম্ব ব্যালাপ্রাধারের মাধাল কোডার কালন উল্লেখ্য বচন্দ্ৰ। হনপ্ৰসাদ হৈও গোৱাংগ ্ভাষিক শ্রাদন্র ভট্টাচামন কবিতা মাল দাগ কারেট। দাটি সাংগর গলেপ - লাখাটেন দিলীপ মিত 🧓 স্বশ্নময় ১জবতী: জনান, কেন্কাদ্য রাধে স্থারণীয় স্বক চক্রবতী ও বিধান্ত্রণ কুল্ডু সনং স্থার শানিক্ষার হাধ শিকাজী গ্পত হরেণ ৯৮৬০ আছাত ব্যেটালী শ্লামাত ব্লিয়াপাশ্যাস্ ও কেওছ প্রে। ধরীর গ্লন্ডলের কেন্দ্র। থাকে। চৌধাবীর প্রক্রদ সম্পর আর্ফাদীয়া।

কৰিপত : সম্প্ৰেক : তুৰার চটোপ্ৰায় । হাল্ফ লত। প্ৰিচ ক্লেণ্ড্ৰেম। ২২ ব. প্ৰস্পোদত। প্ৰাছ, কলিক তা-২৬। দান এক দীকা।

কাসতা আন্দেশনের র : হাস[ে]টে জালী ন্থপদ্ 'কবিপর' সাহতাপানকের কলছ মুকুন পরিচায়ের অপেজ লাখে ন। এর ব্যাথপত্তির প্রতিতি সংখ্যক স্থাক শ্রুপ্সাঞ্জির হানুক্ট উ**চ্চ**ারণ: সম্প্রতি প্রকাশত এই পৃত্তিকার জাটাশ সংকলনটিও ঘট্টিতর দেই ধারাকেই বহন করেছে। ভিক্ত হত্য। ह्याम्स्**नग्रहे अन्**रवाद প्रवस्ति ভাগা লাগলো। ভাগো লেতাছ কবি ভূরণ সান্যাক্তে ক হতার এই কাইন-গুলে; যুকে কৰি তোমাৰ যুক্তী ভেমাৰট সংখ্যাসদেৱ কাছে নিতৰ্তই বাজিকা জ্বাচ ব্যবেশ মধ্যে ক্টকটার দীর্ঘ নিঃধ্বাস / জৌমার কাসে একবার ফিবে গৈছে / ওরই পালে ছে"ল সেবার জনা। অ হাঙাভ দাশ্যাণেত্র কবিতাটিও ভালো। माठीस नारमञ्ज शहरी है सब्द नाग कृष्य। 🛬

ক্ষিপ্রকণ্ঠ। সম্পাদক : কছিছিক সেদ-গ্লেক্ত। বালা,ড়িয়া (বারাসাক। ২৪ প্রগ্লা। দাম এক টাকা।

কাৰতান্ত্ৰ পাঁচক। কিন্তুবক-ও-এর আবাত সংকলন-এ বেশ কিছু ভালো কাৰতা পাড়া গোলা গোলাজা ভোঁছিক আহতাভ বানগালেও এবং সন্দং বানলা-পাধায়েক কাৰতা উল্লেখ করার হাতো। ভাপা পা থছকে।

আর্শ। শৈব ল মহাপার সম্পাদিত। ২১ াচ (১ চেতলা সেলীন বোড। কলকাত — ২৭ (এক টক.।

এবটি স্কশ্ৰণ উপন্যাস কথেকটি ছোট-থেশ প্ৰকথ এবং কবিতা বাহেছে জহাদ এব এই সংখ্যাটিছে: উল্লেখ কব্য ছাত্ত কোনে। কোণাই ডিকে পঞ্জে লা। কোন নিৰ্বাচনৰ বিহুছে মন্যাসে ক্ষ্মি এবছা সমুক্ষার।

শ্রীক্রীভা। সম্পাদক দ্বীপক কর এবং ধ্যমাপ্রস্থার ভূট্যের । ১২১ (২ ফাল্যা কভিটিট্য কলক কাল্টিড়া প্রস্থা সংস্থা

কিছ্ব এগল কাৰ্ড 🕻 পেল ছিছছেক। এই প্ৰিয়ণিত ।

ক্রিকা স্থাপ্নির্য প্রের্জ দুস্ট ছল্প্র নল্ড স্থাপ্রক্রন্তে প্রের্জ দুস্ট কা ছেপ্রির স্থিত বিজ্ঞাসক প্রিবর কাক্সিক দুম্পুত্রির সংখ্যাইতে লোভজেন স্থান্য স্থাপ্রতি বিজ্ঞান কেরেছ প্রের্জিকা কা

শ্রেষ্টে। সম্পানক প্রক্রাক দাস সংগ্রাভিকা নালদত।

লেখার মাধ্য বিজ্ঞাপন ন দিয় শেষর দিকে বজ্ঞাননথ ন একং করে ছাপ্টা ছালো হয়। ছাপায় দিও হত, দেওয়া প্রাক্তন।

লোক্যাক্তি: স্থপানক অনক্ষাৰ সেন-১২নিছ, শংকৰ হৈছি লোম ক্ষাকাউন্ডঃ দেও ঠাকা:

লিখিছিল ঃ সমান্ধাংকর রায়, নাচাকেই। ভালবাঞ্জ সংখ্যেক্তিয়া চ্টোপা্ধায় শংকার ঘোষ, পা্যাশাল লাশগা্ধিত এবং অন্তে ক্ষেক্তিন।

নাহিউ। ও সংকৃতি। সম্পাক্ত সঞ্জীনকুমার বস**়। ১০** কিরণশংকর বার স্থেত। কোল-কাল্য-১। দায় সেড নিকা।

বাংলাভান্য প্রকাশিত প্রবংশ প্রিকাশ মাধ্য স্থিত। ও সংগ্রাতির একটা বিশালী প্রিচ্ছ ধ্রেছে। প্রতি সংখ্যাতের একটা কিশালী প্রেচ্ছ থাতে সংখ্যাতির প্রকাশিত হয়। এই সংখ্যাতিরেও কালেকটি উল্লেখ্যাক্ত প্রকাশ বিশালী প্রকাশ বাংলাভানিক সাহিত্যা প্রকাশ সাহিত্যা কালি বিশালী পাতিরোধ কালি বিশাল মালাবালা বাংলাভানি বিব্রাচিত করে। প্রকাশকাশি লাগেত্রা প্রকাশ প্রবাধানীক সাহিত্যা প্রকাশ সাহিত্যা সাহিত্যা প্রকাশ সাহিত্য সাহিত্



লিব

নাবীকে আপন ভাগা জয় **কৰিবার** কেছ নাহি দিবে অধিকার----

'আমি এক তুর্ণ 'শৃক্ষ্টিটী, নাম বীণা ঘোষ রায়,' তাঁর কথা দিয়েই শরে, কর্মছা ববীন্দ্রনাথের প্রাইনটি নিজেবই থেদোক্তির মতো উচ্চারণ করে বৃস্পান, 'কথাটা বাণ বাণ সাঁতা।'

মেয়ে দের **শ্বাধ**ীনতা সম্পাকতি বিষয়টি নতুন নয়। বৃহ্কালের। একালে তো এটি *কাবেরে* প্রসংগ। বিশেষ করে বিশ শতকের ভারতথান থেকে দেশে দেশে প্রশাসনে, আইনসভায় বিশেষ বিশেষ উচ্চপদে, সাংবাদিকতায়, শিক্ষা ও থেকা-ধালায়—দিক্তেপ-সাহিত্যে মেয়েদের প্রভাব, অবশাই আপন খেলাভাবলে বেডে যাওয়ায় ম্বভাবতই এ-প্রশ্ন উঠতে পারে। কোন-দিকে যখন কম যাই না, তাবে আর প্রাধীন থাকা কেন্ সমপুতি মেয়েদের লিক' বা 'লিবাটি' সম্পাকিত ঝোডো প্রদেন একটি नाहरी अस्मालन दरस रगरह निर्केक्किमारन्छ। সন্মেলনের প্রশুহারগালি যদিও জানা যায়নি, তবে ব্ৰুখতে অসুবিধে নেই সদ্মে-

লনের স্থানটি খুবুই সরব ছিল। লিবাটি চাট রব উঠেছিল দেখানে।

এ-পিবার্টি কেমন লিবাটি, কি-ছু বা হওয়া উচিত, আর সব মেয়েই এ-ধ্বাধীনতা চায় কিনা কলকাতা ও উপ-কাঠের কয়েকজন ম্বতী মহিলা সংশ সংশা কয়েকজন ম্বতী মহিলা সংশ করলাম। বীলা দুত্ত নারী-জীবনটাকে নিয়ে বিরত। আপন ভাগা জয়ু করবার অধিকার পাক্ষেন না বলে ক্ষেধ। বললেন, বিয়ের পাক্ষ নতুন মানাষ্ট। আনেক বড় বড় কথা বলেন,। তারপুর ব্যাসময়ে স্টে একটি সক্তান উপাহার দেন তারপুর ভচুলোকের কিছু বায়-তাসে না মরি আন্রাই। বন্দী হয়ে যাই চার দেয়ালে।

জিজেস করলাম 'তাহুলে সংহান না এলে আপনি খাশী চন?'

তা বলছি না। তবে দায়টা কি কেবল আমারই ?'

অভঃপর বোঝা গেল, বীণা দুভূগায় প্রেম্ম মান্মানেশ মতাই স্ব অধিকার ভোগ করার পক্ষপাতী।

সদ্য বিয়ে করেছেন, অনশাস্থ প্রেম করে, এবং তা-ও দুখি ছা বছর এখানে-ওখানে গোপন সাক্ষাতের পর। বিষয়টি ওবা দুজনেই বেশ ধরে নিলেন। নালিমাধ্য দও আর ছার দত্ত-র মধ্যে রখিতমতো বিতক শুরুর হৈছে গোল। ইন বলেন, আমি আগে বল্যে। উনি বলেন না—আমি আগে। আমি অবশা বিনীতভাবে ছাপ্ দত্তকেই ফাস্টা প্রেমারেশ্যে দিও স্বাধীনতা বলংক অপনি কি বোদন হা

আমার শৈক্ষার পূর্ণ সনুযোগ, ইচছাব পার্থ আর ব্যক্তিছের বিকাশ।





ঝাবার প্রশা করি, পার্ভারর সংকা লবন্দেরে আশৃশ্র। এ-স্বাধীনতা আদায়ে কতথানি ?'

তা প্রুষ্ট জানেন। তবে ভারা এত ক্ষাকেলকস-এ ভোগেন যে সব ব্যাপারেই বিপদ দেখতে পান।'

ভাহলে উপায়?' আবার জানুৱে গাঁহ।

'উপায় নিজের জায়গায় **থেকে নিজের** ইচ্ছায় কাজ করে যাওয়া।'

্তাত যাদ বিবাহ-জাবনের স্থ ব্যাহত হয়?'

এবার একট্র থামলের ছবি দস্তঃ বেশ একট্র ম্পকিকে পড়েছেন বলে মনে ছপ। মাম ভাব ছা মাজনা চাইব কিনা, এছনি সময়ে বলে ফেললেন, ভিন্টি তো বিপদ।' এই ুদু বলেই থেমে গেলেন ছবি দক্ত।

ছবিব স্নাপ্তাণত প্রামীটি বল্লেন,
গম্বেশের স্বাধীনতা মানে একজন নাগাঁরক
তিপেবে তার শিক্ষা সংস্কৃতি ভার বাজিক
বিকাশের পূর্ণ সংযোগ দান। এটা কোন
প্থক ঘটনা হয়ে থাকতে পারে না।

প্রশন কবি, স্বামী ছিসেবে আপনার স্থাবিক আপনি ব্যথেণ্ট স্বাধানিতা দিতে রাজী আছেন?

ভাছি। তবে ৰথেণ অথে ব্যথেক্ষাচার না হলে। একজন ছেলেই ছোক আব মেয়েই হোক সে বলি শ্বাধীনভাবে নিজেব উৎকর্ম সাধন করে, তবে নিজেবেই নিজে নিয়াপে করতে গোথে। প্রাধীনভার যেখানে অভাব কেথালেই জীবনের বিকাল বি ছাত জাব এই অপাল চারচকে বা মান্সিকভাকে জোড়াতালি দিয়ে যুগোপ্যোগী ক্রতে নিয়াপ্রণর প্রয়োজন। সেই নিয়াপ্রণ চ্ব প্রয়োজন। সেই নিয়াপ্রণ চ্ব প্রয়োজন। সেই নিয়াপ্রণ চ্ব প্রয়োজন আমি আমার প্রার বা ক্রামী হিসেবে অমি আমার প্রার ব্রপর রাখতে চাই।



নীলমাধব দক্তাছবি দক্ত

জিলাৰ কৰি স্থাতি আপুনি সাবেকী বিশ্বি আপুনৰ অধীন এক নানী নায় ক জানেক, মা কথা, বলে মনে কৰেন ?'

বিশ্ব বাৰী ছা নিত'র করে গ্রী

ক্রী নিজের ব্যক্তির ও সজাকে কতেটুকু

ক্রীকার করিছে শেকাছে। সমভাবাপার না

ক্রেল ক্রাক্ত বালা বার না। জীবনের বিভিন্ন

ক্রিকারেলার অনেকগুলোকেই বালা দিরে
ক্রিকার্যার সংস্কৃতি

ক্রিকার সংস্কৃতি, রাচি ও চিন্তার ফারাক
ক্রিলা হয়।

বলনাম 'একটা বাধিরে বলনে, আপনি
ক্রি মাপনার স্থানিক স্থানি ইচ্ছামতো চলতে
ক্রিবতে দেওয়ার প্রথন ক্ষণালো তত্ত্ব দিয়ে
তেকে বাধতে চান?'

্রিশনটি করার সংগ্ণ সংগাই ছবি দও ছাড়তালি দিয়ে উঠলেন। অভিনদিত করলেন আনায়।

্ এর পরে আমি আন্ন কারে। সম্ধানে বৈথিয়ে পড়ি।

তালতলার মিন্তি দাশগংক হাসতে হাসতে বললেন, প্রেধের কত বড় ক্ষমত। আমাদের ইচ্ছেতে বাধা হয়ে দড়িয়ে?

প্রখন কল্পসাম আপ্রনাবা যে লিবাটি চাইছেন, পুরুষ ছাড়া তাতে বাধা দেওয়াব জাব কেট আছে বলে মনে করেন না?

ানি*চয়ই কয়ি। গ্লা-দিদিমা আৰ এক কাঠি গুপৰে। তবে আজকাল মেয়েৱা

রেজিষ্টি বিবাহ অফিস

মোট ১৬ টাকায় রেজিস্টি বিবাহ

এন কে ঘোষ জে-পি গ্লাবেজ অফিসার ১১৭, ফেলফদু সেন শ্লীট

কলি-৯, ফোন : ৩৫-৩০৪৮



অন্তের পর্যতা সংখ্যার অত্যানত চন্মকপ্রদ নতুন ফিচার

त्राद्यन्म धं धा

প্রতি সংখ্যার বিখ্যাত একটি গোরেন্দা উপন্যাসের ঘটনাগর্নাল থাকবে। এবং সেইসপে অন্য পাতার থাকবে তার উত্তর। পাঠকগণ এতে ধাধার মত্যে চিন্তা ও সমাধানের মজাদার আনন্দ পাবেন। প্রথম সংখ্যার

ষেত্রাবে সকুল-কলেজবিসববিদ্যালয় বা পথে-থাটো বকুতা দেয়, মিছিলে হ'টো তাতে তারা মোটামটিট একটা বফা করে নিয়েছেন। আন ভেলেবা?

শার্লক হোমসের গল্প।

'আগেই তে। বললাম, ওটা আমার কাছে কোন সমস্যাই নয়।'

-আপনি কি এমন লিবা ট'ৰ কথা ভাৰছেন যা আপনাকে সংঘৰে লিগ্ত কৰবে?' প্ৰণন কৰি।

অন্তর্গ থেকে বসং এ,শকিল। তবে আত্রি আফার বিয়ের পর কোনক্রেই আফার স্বানীদেবতার দাসী হয়ে থাকবে না। তার ইক্টের বিরুদ্ধে আফি যেফন ফাবো না, ভাকেও এলেট করবো না আফার ইক্টের বিবৃদ্ধে যেতে।

'দ_'ট ইচ্ছের মিলনেই তো দম্পতি— তার কি হবে?'

্ছে'দে। কথায় বিশ্বাস কবি না। ধ্ৰনে আমি চাই পলিটিকালে লিডাব হতে বা প্লিশে কাজ কবতে। স্বামী বাধা দিলে শুনব কেন?'

ভবাধীনতা বলতে কৈ আপ্নি এই-টাকুই বোঝেন?

'আপাত্ত আর^{িকছ}ু মনে আস্ছে

স্মরণ চটোপাধার (জরপ^{ন্}ররা কলেজ) বলেন, ওরা লিবটি চায় এ-প্রশন্টাই অবান্তর। আমি তো ব্রুত পাবছি না কে তাদের বাধা দিতে বাছে। আসলে নিজেদের তৈথি একটা সমুস্যা নিয়ে নিজেলাই ওরা তৈতি করে মর্ছে।

জিবাট মানে ইলিবা-সিরিমাভো বা গোগড়া মেহাবের মতো ক্ষমতার অধিকারী হওরার ইছা। আসলে এই তিনজনই এ-ৰূপে মেহেদের মাথা খলে দিয়েছেন। বলেছেন বিবাহিতা তর্ণী স্থিমতা গাহ। বালগিল সাক্লার বোডে এক বাড়িব দোহলার বারালা। থেকে তিনি বাইদের শোভা দেখতে দেখতে আরো বলনে ।
এটাই খুব দুঃখের কথা বে রেরের।
লিবাটির ধথা বললেই ব্যক্তিচারের কথা
ওঠে। আহার তো মনে হয়, আন্দোলনটা
হওরা উচিত এই ধারণারই বির্দেশ্ব।

জিজ্ঞেস করি, ইণ্সিরা-সিরিয়াছো বা গোগড়া মেয়াবন্থর মতে। হুছে গৈলে ওই বোগাড়াটকের প্রশন্টিকে এড়িয়ে চলা বায় ?' একট থেমে সংক্ষিতা বললেন বোগাড়া অর্জনের পথে বাধা দরে করার জনোই তো গ্লেয়েরা চংকার করতে।'

বাধা কিছু আছে বলে মনে কলেন?'
'ওপরে ওপরে দেখলে মনে হয়, নেই,
আসলে বেদা বাধা আছে। তা কেবল
আমুবাই বৃষতে পারি। রেজেকার
ঘতিপ্রতায়।'

বিভন প্রীটের তর্ণ শিক্ষক অসীম সামনত বললেন, 'সমাজ বা দেশ কি অবস্থায় চলছে অথাৎ সব মিলিরে গোটা অবস্থায় চলছে অথাৎ সব মিলিরে গোটা অবস্থাটা ভেবে দেখলেই দেখা বাবে মেরেদের লিবাটি আজ আপনা থেকেই হয়ে যাজে। বিশেষ দা একটা কোনে অনা-বক্ষা হলেও আজবাল ভেলের। চানা কোটেই আনেক বদলে গোছে। ঘরের বউ চাকার করবে, এইট্রেই অনেক শাশাছে চান না। কিন্তু ছেলের। চো চাকরি-কর্ষা মেয়ে ছাড়া বিশেই করতে চায় না। এব মানে কি এই নয় যে, মেয়েদের লিবাটির ক্ষেটি অবস্থাগণে আপনা থেকেট তৈরি হয়ে গেছে।'

বেথান কলেজ-এব (কলা) ছাত্রী প্রিয়া
মণ্ডল বললেন একেবাং বপবীত কথা।
তার মতে মেয়েয়া যদি আলাদা কোন
বাধীনতা পাওয়ার জনো দাবি ভোগে,
তবে আমি বসবো বাপোরটাকে বেশি প্রশ্রম
দেওয়া উচিত নয়।

'কেন?' জানতে **চাইল**ি

'ভাহলে আৰু দেখতে হবে না—নানী-পুৰুছে তহাৎ থাকৰে না। দুঃখজনক ঘটনা ঘটৰে?'

একথা বলছেন কেন?

সেরেদেখ শ্রীব ও মানসিকতার আলাদ। একটি সুষ্মা আছে, তাই নিয়ে সে গ্রহ্মার করে পুরুষ্ধে টানে। লিবাটির নামে পুথে নামতে দিলে বারোটা বেজে যাবে।

প্রয়া মুক্তল বলেন, হাই সোসাইটিতে এমনিতেই স্বামী-সূত্রী আলাদা হয়ে গেছে। মধ্যবিত পবিবাবে যেমন একাথা, ওরা তেমনি প্থক। মুলে এই স্বাধীনতা— আমাব ভালো লাগে না।

স্বপন সেনগ্ৰেত বললেন, 'মেডে'। হক্ষে
প_ব্যুহার এনাজি',—শক্তি। সেটা ওবা **ভূগে**গোলে চলবে কেন?'

লিবাটি'র সংখ্য ওর সম্পর্ক কি?'

'এত পাওয়ারফাল ফোস[্]এন আবার ওসবে মাথা ঘামানো কেন?'

ক্ষা সেনগতে

এরাও পিছিয়ে নেই



তর্ণ প্রাজ্বরেটের মোটর ট্রেনিং স্কুল

টালিগঞ্জের রসা রোড (সাউথ) ফাস্ট লেনের নিশান মোটর ট্রেনিং স্কুলের অফিস-যধ্যে পাদিতে এক দীঘদেহী সঠোম তরুণ আমায় স্বাগত জানিয়ে বল্লেন-আলিই নিশান মোটব ব্যানাজি'। পরনে প্রিক্স প্যান্ত্র শাংকর ক্লোড়ে সিগারেট পাঞ্জাবী-পাজায়া, ठाएउ চায়ের পেহালা। দেয়ালে ব্রীকুন্থের ছবি। টোবলের উপর বিপণন সম্মাক্ষা এবং বাবসা পরিচালন সম্পাকিত দুটি ইংরাজী বই। মোটর ট্রেনিং স্কুলের তথাকথিত প্রিন্সপ্যান্তদের সম্পর্কে আমার এতদিনে বে ইয়েজ গড়ে উঠেছিল, তার সংশ্যে এব হেন কোনও মিল নেই।

৩৪ বছরের তর্ণ শৃংকরবাব এ-मारेत य कि कत धानन छा निष्कु ঠিক করে বলতে প্রায়েননি। ' ৫৫ সালে ভক্তৰ ফাইনাল পাশ করে ধানবাদে বান **মা**ইনদে থান-ইাঞ্জনীয়ারিং পততে। এক বছর সেখানে পড়েনও। কিল্ড মম্ভিত্র থান দুর্ঘটনার জন্য শংকরবাব আবার কলকাতার চলে আসেন। ভাতি হ য়ে বি-কমও করেন। এছপর চাকরির জন্যে তাঁকে বথা-प्रकार प्रकार য_রতে ৫ কিল্ড চাক[ি]র জাটেল না। অবশেষে '৬৬ সালে তিন হাজার টাকায় খাবে করলেন विश्वास द्याप्टेर (प्रेरिश न्युक्त । अध्यक भारत একটি পুরানে। মডেলের ভরু ভ্যান। ভিনিষ্ট প্রিলিস্প্যাল, তিনিষ্ট শ্লেনার—সব-क्टि। अव ब(द) भावक्रावान,

মোবাইল ইঞ্জিলীয়ানিং-এ এক বছরের ট্রেমিংক শেষ করেছেন।

এখন मिमान यस हाराहा। कार्मातीत टबंटफटक-टर्डेनिश কলের TP STE কয়েকটি মোট্রগাড়ি ও লবি ৱাস্তাস শৃংকরবাব-ও ভৌৱ স্টিফ্লারং, অন্য বাজিয়েছেন। এক হাতে চালে বই-এভাবে আই আৰু এম ডবলিউ ৰি এম-এর তিন বছরের ম্যানেজমে-ট কোর্স সমপূর্ণ করেছেন। এখন এম-কমা'এর জনো প্রসতত হচ্ছেন। সম্প্রতি ইউরোপও ঘুল্লে এসেছেন খাব্দাবার। মোটর টেনিং স্কল ছাড়াও শংকরবাব বাড়তি সময়ে একটি বিশিশ্ট সওদাগরী প্রত্ঠানের ম্যানেজ-মেণ্ট-কনসালটেণ্ট ভিসাবে বাভায়াভ করেন।

—আপনার ব্যবসায় ক্যাপ্টাল কি? আমি পুশুন করি।

—ডিগনিটি অব লেবার। নি^{ন্}ব্ধায় শৃথক্রবাব আয়ার প্রদেনর উত্তর দিলেন। আয়ি বখন শিট্রারিং-এ বাস, তথ্ন আয়ি অস্ মান্ব।

—আপনি বথন প্রথম এ-ব্যবসারে নামেন তথন আপনার অাথীর-স্বজনের কাছ থেকে বাধা আসেনি?

— বাধা বে আদেনি তা নয়। আমার মনেও 'বৃহদ্ধ ছিল, কিম্চু আঞ্জ সব পরিক্ষার। একটা থেমে শৃংক্ষবাবা বল্লেন —লীর আর মোটরের প্রেমে পড়ে গেছি। এখন তো ওদের ছেড়ে চলে যাত্য যায় না।

-- মোটর মেকানিকস জানেন?

— নিশ্চয়। মিলের গাড়ি নিজেই সারাই। টেনার থাকলেও যথাসদত্ব নিজেই টেনিং দিই। এপ্য'ত শ'থানেক লোককে গাড়ি চালানো দিখিয়েছি। শব্দরবাব, বল্লোন—টেনিং শক্লোক সম্প্রশারণ করব ভাবছি। কিল্ড...।

—কিন্তু কি? আয়াধ্র প্রশন।

— কেশয়ার পাউ'লের দাম অসম্ভব বিড়ে গিরেছে। পেট্রোলের দাম তো জানেন? অথক গ্রুইশন-ফি বাড়ানো মুশকিল। কারণ বারা মোটর চালানো শিখতে আসে, তারা সাধারণত অভাবী গরীব পরিবার থেকেই আসে। কিম্তু বাঙালী ব্বকদের এ-লাইনে আরও বেশী করে আসা উচিত। কলকোর বে-কটি মোটর টৌনং স্কুল চলচ্চে তার প্রায়ে স্বকটিব মালিকই অবাঙালী, ব্যতিক্রম হয়তো একটি কি দ্টি।

শংকরবাব- পাঞ্জাবী ছেভে একটি ছিটের শার্ট গারে দিয়ে বল্লেন—এখনই আমি গাড়ি নিয়ে ট্রেনিং-এ বাল হব। লেখাপড়া শিথেছি কোনত কাজকেই ছোট বলে মনে করি না। আর এই চারচাকার গাড়িগলেই তো আয়ায় খাওরাছে—পরাছে…।

এ যুকোর অন্যতম স্বাদ্র মনস্তাত্ত্বিক প্রেমের উপন্যাস

সৰ ফুল কিনে নাও

অতীন বন্দ্যোপাধ্যায়

দ্'বছরের চন্দন ইরার প্রতিশ্বদ্ধী। চন্দন টিপ্রে শ্বিডীয় সন্তাল আর ইরা তার সব্তে শ্বীপ, তার নবলত্থ আবিজ্ঞার। ইরার জন্য উদ্যান হয়ে উঠোছল বলেই কী ছারিয়ে গেল চন্দন? মানসিক্শবন্দে কতবিক্ষত হতে ছতে অবশেষে টিপ্র একদিন আবিজ্ঞার করল চন্দনের শ্নাতা সত্য যেমন, তেমনি সত্য ইরার শ্রেমী। টিপ্র তাই বেরিয়ে পড়ল ইরার সভ্যানে।

সাহিত্য সংস্থা, ১৮সি, টেমার লেন, কলি-৯ 🖠

য,বক য,বতী

হিপি মলোভাৰ

শাপড়াহিক অমৃত্র ব্বক-ব্বতী
বিভাগতি থ্রই মনোগ্রাহী। বি তম র্ব সরাস্য নিম্নে প্রতি সপতাহে বে আলোচনা প্রকাশিত হয়, তার উপপথাপন আমাদের সহজেই আকৃণ্ট করে। ইতিপ্রেব যৌন শিক্ষা ও ফিল্ম সন্বদেধ বিভিন্ন তর্ণ-ভর্ণীয় মহামত পড়ে ভাল লেগেছে। এই সপতাহে (গ্রেকার, ১০ই ভার) হিপি মনোভাব সন্বদেধ তর্ণ-তর্ণীরা কি কি ভাবছেন তা প্রকাশিত হয়েছে। সে

বিভিন্নজনের মতামত পড়ে একটা বিভারে থবে আশ্চর্য থোপ করাছ। সেটি ছচ্ছে, প্রভোক বন্ধার বন্ধবাই হিপি মনো-ভাবের সপক্ষে। অনু তাদের বন্ধবা পড়লে মনে হয় যে, জীবনের প্রভিত হতাশ্বেধই তাদের এই মনোভাবের কারণ। বিশ্তু আমার ব্যক্তিসভা ধরিণা, সতামানে বাংগালী কারস্যাজের মধ্যে যে হিপি মনোভাব দেখা যায় তা প্রধান প্রভারত পায়কে বা কেলেই স্বাম্বেধ। চুল বড় বাখলে বা কেলেই প্রবেধী প্রস্তা প্রস্তা গ্রাম্বেধী করা করা গ্রাম্বেধী করা করা গ্রাম্বিধী করা করা গ্রাম্বেধী করা করা প্রস্তা প্রধানত নিজেকে আক্রমণীয় করে আলাই। জনাই এস্বের প্রতি যুক্সমাজের আলাই।

প্রসংগত হাওড়ার গালা ক্রুলের

একাদেশ শ্রেণীর ছাণ্ডীর শোলা অক্রাই।
উদ্ভি লক্ষণারীর তিনি পোষাক ও আচারকরেন। মনে ইয় তদ্মিধারণা পোষাকে
বিকল্ম অনুগেই সংক্রারের বেড়ালাল ডিঙেরানো সম্ভব। (মাধ্যানা আনুলের
সংক্রার তিনি ভাঙগতে চান—কিব্ছু নাম
প্রকাশে অনুভা।)

সবসোচীবাবু আবার দেশ-কাল-পরি-বেশ ভুলে নিজের মত চলতে চান। তরি মতে বড় চুল, বেশবর্টম, ইণ্ডাদি অপ-সংক্ষৃতি নয়। তরি কথা মেনে নিয়েও বলা হায়, অপসংক্তি না হলেও অনা দেশের সংস্কৃতিকে অপহরণ ন করে নিজে-দেশের সংস্কৃতি রক্ষা করার মধ্যেই তো সাথাকতা—তাই নয় কী! শাড়ী পরেও নিজেকে এ বাুগের মেয়ে বলে প্রমাণ করা দুঃসাধা নয় বলেই মনে ইয়।

জাসলে আমবা বতামানে হিপি
ছিপিনীদের মত পোষাক-আষাক পর্বাছ
ঠিকই কিছত হতাশাপাধই এ সবের মাল,
এ ধারণা ভাগত। আমরা এসব পর্বার কারণ
না ভেবেই। সব কিছুন পোছনে কারণ
খ্রুকতে প্রেলে খোর পর্যাত একটি উত্তর
পাওলাই স্বাভাবিক। মেনিট হচ্ছে হতাশাধ্রোধ। প্রচলিত সংস্কারের প্রতি কোড়
খালুক, তার জন্য প্রতিবাদের খড় উঠুক—



ক্ষতি নেই। কিন্তু সংস্কৃতি ও সংস্কারের লগাে পথিকা নির্দেশ করতে না পারনে। ্ংংরের বির্দেশ কড়ে তোলা অসম্ভব। চন্দ্রাণা ভট্টাচার্যা কলিকাতা-১।

আমৃত পৃতিকায় 'মুবক-যুবতী' ফিচারটি আগ্রহের সংগ্য পূর্ডিছ। গত সুপ্তাহে ফিল্মের ওপদ্ম সাক্ষাংকারও পুডলাম।

য্নেসমাজের ওপর হামেশাই একটা অভিযোগ গ'পয়ে দেওয়া হয়, চটুল হিন্দি সিনেমার ভক্ত হ'রে উঠছে ব্রসমাজ।

অভিযোগটি নিয়ে একট্ তলিয়ে ভাষা যাক। আজনের গ্রুসমাজের সামনে কী আদশ্ভি তার্লেন্দু স্বভাব মেতে ওঠা। মাতিয়ে তেলিন্ত হচ্ছে কিন্তু সেটা বাহি-গত বা দলগত মুনাফা তোলার প্রয়োজনে। প্রয়োজন মিটে গেলে উল্লিখ্ট শালপাতার মত তাদের ছংড়ে ফেলে দেওয়া হচ্ছে। এইভাবে বাবহুত হতে হতে বেশ কিছু তর্ণ পা
পিছলে পড়ছেন। বারা পড়ছেন তাদের
টেনে তোলবার দায় কালো নেই, বরং আরও
অপধ্রারের দিকে ঠেলে দেওয়ার মুরুন্ধি
আছেন বহু। একটা সমরে সেই দিশেহারা
তর্ণনা বিপথগায়ী হচ্ছেন। শিক্ষিত
তর্ণদের অকথা আরও ভয়াবহ। তারা না
পারছেন স্রোতে গা তেলে দিতে, না পারছেন
নিজের পারে দাঁড়িরে আছাবিশ্বাস অক্ষা
করতে। ফলে যে বরেসে প্থিবী মান্বজন সম্পর্কে সহন্ধ ধারণা গড়ে ওঠার কথা,
সেই বরেসেই তিক্ত অভিক্ষতায় নিজেদের
ব্ডো করে ফেলহেন।

আমার তো মনে হয় বিভ্রান্ত তর্ণ সমাজ হাতের কাছে কোন মহং আদশের ছবি পাচ্ছেন না বলেই হাক্কা সিনেমা হাক্ষা সইকে বেছে নিজ্ফেন মনের ক্ষতের ওপর প্রজেপ দিতে। সমাজের ওপরতলার মান্বরা একট্ব সচেতন, একট্ব সহান্ত্রিত-সম্পায় হলেই ভার্ণোর এই ক্ষয়কে মোধ করতে পারবেন।

হাক্ষা আনন্দ উপভোগ করে তর্নে-সমাজ যে খাব সন্তুষ্ট, স্বস্থিত পাছেন, এমনটা ভেবে নিলে ভুল হবে। তর্ণ-সমাজকে সতিকোর ভালবাস্বার মত লোক নেই, স্নেহভর। আগ্রহ্ম নেই। প্রয়োজনে মারের মত শাসন করতে আবাদ্ধ স্নেহ-মমতা দিয়ে মালিনা দ্বে করে দিতে না পারজে সে ছেলে মারের মৃথ চাইবে কেন! সমর বয়ে বায়ু নি, ফস্লে তোলার মত

পাঠ্য বইয়ের আকাল প্রসপ্গে

গত ২রা আগস্ট অম্ত পরিকায় পাঠা-বইয়েল আকাল শীর্ষক সম্পাদকীয়তে কাগ্রন্থসংকটের যে ভয়াবহ চিত্র তুলে ধরা হয়েছে তা খাবই নিলাশাজনক। কাগ্যন্তার আভাবে যাদ ছাত্রপাঠাবইয়ের প্রকাশ বিঘাত হয় তাত্তল আমাদের ছাত্ছাত্রীদেশ পড়াশানা বলা বাহুলা শিকেয় ওঠা ছ্বাড়া গভারতর নেই। এমনিতেই আজকাল শিক্ষাক্ষেত্রের নানা সমস্যা ও বিশ্ংখলার বিরুম্ধে ছাত-সমাজের অভিযোগের অতে নেই, তার ওপদ্ম পাঠাবইয়ের ঘাটতি হলে ত সোনায় সোহাগা। অজাহাত দেখানো হবে, নেই পড়াও নেই। অতঃপর দাবী উঠবে বিলা প্রীক্ষাতেই প্রয়োশন দাও**। ভাবতে** অবাক লাগছে যে এ ধরনের পরিস্থিতি আর কতাদন চলবে এবং দেশের ছার-সমাজেল ভবিষাৎ সম্বদ্ধে আমাদের শাসকদের কোনো মাথাব্যথা আছে কিনা!

ইদানিংকালে আমানের দেশ যে করাট প্রধান সমসারে সম্মাখীন বাগজসংকট তার ভোতরে নিঃসংশ্বাহ অনাতম। এই কাগজ্জের অভাবে প্রধান প্রধান সংবাদ-প্রগাজের কলেবর হাস পেরেছে। ছটাই করতে হয়েছে সংবাদ ুাল থেকে রবিবাসরীয় ম্যাগালিন কভাগ। যার কলে পাঠক চিন্তাক্র্যক রচনা পাঠে বলিও। কিন্তু অপরনিক তেথা যালে এই কাগজ-সংকটের ভেতরও অতি রহস্তজনকভাবে নির্মিত প্রকাশ পাকে নানান ধরনের কুম্নিচকর এবং অমলীল প্রতিবামারণ সেগলের উদ্দেশ্য হোল মোমেদের নামানার তিনেশ্য হোল মোমেদের নামানার তিনেশ্য হোল মোমেদের নামানার্থা স্থানার উদ্দেশ্য হাল ক্রেদ্যার্থা স্থানার পর দিন এদের কেছাব্যাহ্রনী বলাধ্যকর করছে শিক্তিত অধশিক্ষিত যুবক বল্লক স্বাই। কলকাতার প্রধান মাগালিন স্টলগালিতে একট্ব চাশ বেলালেই এর প্রমান পাওয়্য বাবে।

তাই প্রদা যে দেশে ছারপাঠাবই বা সংবাদপত ছাপাবাদ কাগজ জোটে না সে দেশে অদলীল ও সিনেমা পতিকা ছাপাবার কাগজ আসে কোথা থেকে দ এগালির প্রচার বন্ধ করে কাগজের অপচর ভি রোধ করা বায় না?

প্রমধ্যে স্ট্রাচার্য, কল্পনা এরিয়া, ভ্রনেশ্বর।

নিম্পাপ হাত এখনও বদি ব্ৰস্থাজ্ঞ টেনে নেয় তবে ভাগণ্যের উপ্পাম প্রস্রাচ পোড়ো জামতেই ফসল ফলাবে, এ নিশ্বাস আগ্রার আছে:

অমরেন্দ্র সেনগাঙ্ভ, রেণিনাীগরে।

যৌল-শিকা

স্থাৰক হাৰড়ীর পৰিকল্পনা ভাল। তবে আবভ চিন্তার অবকাশ আছে ৷ সাক্ষাৎকার প্রালি শ্ব সংক্রিণ্ড । হৈছেন ধর্ন সেকস এডকেন্দ্র। সাক্ষাৎকাবের মধ্যে সৈক্স এড়াকশ্যের বিভিন্ন সমস্যার গভীরে সাওয়া হতুনি। জেখাটি পড়াকে ধারণা হয় ^{খে}ন একটি জন্দল পাধর ভাত-ভাতীদের খাড়ে চাণিয়ে দেওৱা হাজে, ভার এজন সম্পরে কারার্ট কোন ধাবণা নেই ৷ কেউ মনে কৰছেন দাবাৰ ভাবি আৰাত কেট সোলায় মতে ভালকা। কেবলয়ার ভারি ভালকার ওপরং শাধ্যরত গ্রেণাগ্রের বিচার চলালা। শাধ্যরটি নি মাজ মাশল) দিয়ে। ইডলী এবং ওপে এক্রেকটাই বা কি ভা নিয়ে গভাঁৱে কেউ গেলেম না কিছু ভাসাভাস। মণ্ডব। দিয়ে সেকস এডকেশনের মত একটি বিরাট বিষয়ের বিচাস করা যায় না।

লোকেন বিবাহিত দুৰ্পতি হোন বি**ভা**ন পড়ে থাকেন। হারা না গড়েন ভানেক ীন্ত ভাষণাই পঢ়ো :

সামাদের দেশে সেকস এদক্ষেশনের সুংঠা ব্ৰহ্মা নেই বলেই বিয়াতিত প্রিছ-মতিলারাও অস্থিগায় পড়েন। বিবাহিত জাবিদ সাখের ভার্যার জনোও সেকস এড়কেশন খাব দ্বকার।।

মতিলাদের পণ্ডে নিজের এবং সম্ভানের স্বাক্রেণার **জানো** ছো বাটেট। গামের মহিলারা আমি বিজ্ঞান সম্পাকে একেবাবেট সঞ্চান নন। যদিও ছোটবেলা থেকেই গামের মেহের। শহরের ভুলনাম একটা বেশি পাকা। কিন্ত সেটা একান্তই ভাসাভাসা। ভাতে কতন্ত্র আরুত বেশিং কিছানা লালা, ভাল কিন্তু ভূক জ্ঞান। খাদে ভাল বি ১

পত্র সংখ্যার অজ্ঞান বস্ত্রাঞ্জকের চিক্তিটি ভাল। তিনি জ্বাস্থা এবং সেক্স এব ঘনিও সম্পর্ক নিয়ে ভাগেনাচনা করেছেন। আমিভ তাই বছাছি। সাস্থ স্বাস্থোর জনেই সেক্স এন্দ্রেশন দর্বার। ভোক রাভা করেল থেকেই। বৈজ্ঞানিক শৃষ্ট্যালিক সেক্সকে নেখলৈ আশালীন এওয়ার কোন কারণ মেই।

প্রক্রেটা অরশ্য পাঠাসাদী কর্ম নিয়ে। শাভকাড়ায় দেখা য়াল প্রিয়োগীৰ অনৈজ্ঞানিক শ্লিট্ভান্তির শেসাংভ ভাষ্ট-ভাগতীদের ফিডে কুম। স্তামাদের দেশে প্রত্য লিংশাস্ত্রক জার্ভেন--জীন্তা পরি**প্রায়** করতেন উপপাৰ পাইচনাচী বৈদ্ধী কৰাকেও পাৰেন। কিলত কাঁজানি। কাহ'ত চাহয় না। **১**২৩ তাঁটের চিন্তা ভাবনা এই ওপরের শতরের খে সাধারণ ভাগ-ভাগে তার নাগাল পাছ না।

ভাষ্ট বলভিলাম সাম্প্রভাবে ভাষ-ভার্নাদের ময়েসের কথা দেখে বিশেষজ্ঞরা য়াঁদ ক্লেক্স এডুকেশনের ওপর বিজ্ঞান্য হত পালকলো টুডরাই কবেন এবং সেক্সে এন্ডেকেশন চাল্ট করার আলে শিক্ষক শিক্ষকারের পাঠতের সম্পর্কে ভ্রানিষ্টাল করেন **ভালনে** ৮৫-ছত্তীদের কাতি তুওয়ার **কোনে সম্ভা**রনা

> শিপ্তা সিংহ রায় ا اعلى الحديات ال

সেকালের সংগতি-গর্মন

<u>শারাবাণ্ডক</u> আপ্রদার সাসভাবিতে পূর্বেশন্ত উল্লিখনপ্রয়ার মুখ্যোপ্রাধ্যয়ে ্সকল্পৰ সংগ্ৰহগুৰ্ভতে পায়ক ভ সভক্ষেত্র হা জামিনী আলোচনা করছেন থেমন ভিতাক্তাক তেমান জনতে। মতুপটে ক্লাই ড্তেই - মুধ্য হয়ে পভাছ : ভার লেখণীর বিশেষ বৈশিশকী হ'লে যে িটান ভাৰাবেশে আভিভত না হায় যা প্ৰক্ত হতিহাস ভাই লেখছেন। এইবাপ স্করীত ্লোদের ঠাত্তাস এখন বেশেষ ক্রয়োজন কারণ হারি৷ মেকেলেশ গুণীদের গাল শোগের টি ছামেন ক্লো সম্বর্ণের এখন বারণা করা কাঠিন। আছার পা্রাদ্র ভুদ্রনাথ বালনাপ্রায়ে মহাশন্ত্রের মৃত্যু হা শতুরে ভ রেবং ভার সংখ্যা কোন কোন আস্তে উপাস্থাত হয়ে গ্লেখনের গাল্ভ শ্লেডি বলৈ ব্ৰভে গারীছায় দিলীপ্রান্ত্র লেখনী আত ^{নিজ}ুত। আহার গার্ড গার্ড প্রমগ্রে মহাক্রাথ মালেপাধারে ভ্রন-কাল দিলে নহা, আসোৱা বিশেষ বিশেষ গঢ়া জন্মকৈ যে বিশেষভাৱে মাুণ্য করতে প্রতেম তার প্রিচয় বহু আসরে পাওয়া গিরেছিল। তার স্করের এত মাধ্য ছিল যে আসরের মধে, শ্রোভারা নিশ্চল হরে তার দ্বর্জনাস শ্বর্করে মাণ্য হতেন। র্শাসাহেরের কথাও সমভাবে প্রয়োজা। লালটাদ বড়াল মহাশয়ও চমংকার গান করতেন। তিনি খনেক **গাদ রেকড** করে-ছিলেন। তংকালান হিন্দু **মাদ্টাস ভরেনে**র বেকডের আকার তার জন্য বাধিত করতে इक्षांक्रम शामकाम् न्यती है ब्राज्याहे अर মূল্কাজা, তুলা সকলেই অভি **স্**মিন্ট শ্বারকা থিলেন ১০বং গাণোসমাজে তারা ষ্টুদুর স্থানভ প্রেছিলেন। মহাদুরশথ মানোপাধায়ের হাধনা প্রধা ভত্নাগ ব**্রপ্রাপাধ্যায় হাহ।শহের প্রভু**র পান শোনধার পৌ্টারার <u>আমার হারেছিল।</u> অবল গ্রেরাদ্র নিবাস্ট শীপ্রসাদকিলোর মাংশাপাণ্ডা মহাশহ তার সংগ্রাই। এক শনিষ্ট তেট্যখন ঠিক মান কই ১ জনাইবাটীর প্রান্ত দালের সদ্যানের। গাদ করাছিলান। আমি, আমার চালা গ্রু-ভারের ও পাড়ার লাকজন গাল পঢ়ান ছিলাম। উপন্তি গরেবুভাইদের হারে। একলে ভাষণ মান্ধারয়ায় আকাশভু হ'ত দ্বেই বংসর স্বাবং ভুগজিলেন্ কিন্তু স্পানীদের টাটো গায়ে কড়িছমত লয়র নিয়ে ান্ট আসতে টুপ্থিয়ত হন। অপূর্ণ গান্। স্থার সকলেও ম্পেলিলেক ভাল্ময় হাতে কেই সংগীতেৰ মেট্ডনা ছাতু মুদ্ধে গগ্ৰে জন্মুছৰ কর্রাছকেন। এক সময় তিনি স্কেনীর রচের ারপরর এল্লান কৌশলে প্রস্থাত করেন সে সভান্থ সকলেই ভাতে আশ্চয় ও মুণ্ধ রুদ আর আহার সেই মাজেরিয়া আরু। জুরু। ভাই শ্রীস্থাবিক্ষার মুখেল্যাধ্যায়র সেই যে দাম দিয়ে জনুর ক্রেডেছিল আজ অর্থাধ িতান আহার কাখন-ও জানুৱে চ্ভাগের লি। এখনত নির্ভান এই গ্রামেট ৬৭ বংসার ব্যাসে স্কেথ দেছে জীবিত আছেন। তাই ক্লেকার্লর গ্রাণীক্রনাদের স্ফাল্লে রাখার ক্রমা এট পর্যার প্রদেশ জীপুলাল নির্দেশ **প্রয়োজন**া। এর ছক। কংগে ই া ানকলার মারে। প্রাধায়ের এক ব্ ১০ জান জ্বাপ্রাক্ত 和政策(5- 18-14)是

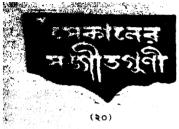
> প্রামক্ষার করে কলিকাতা-৫৭

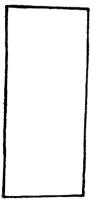
প্রেক্ষাগ্র প্রসংখ্য

শ্ব পর্ করেক সংগ্রা ভাষাত শ**ড়ার** গাল মাজে ভাল - কাশ্যন্তালীকৈ ব্যৱসা স্থা**ন**িটে চাষ্টান্তা, পানিজ্ঞান তান্তে: সিম্বোল সিচার-গ্রাস প্রেট আক্রম্প্রি। বিশেষ করে মালেক্ষরটাপল ভাষে প্রের বছা**ছ এবং** কুলে বলেনা কেলাবলীল কুকেন কিব্ত সভাৰে ভাল পালো। পাৰ মাণালোভাৰ। **ভাজাভা** প্রক্রেন্তরের সধ্যে দিয়ে ^{সিন্তুক্র}**পত্তর নতুন** জ্ঞাকালের প্রান্তর পাত্রের **সার্চ্ছের আ**ট্র াসনেধা *করাশেরই নম*্সাহণেকারের হাগে। থানাতেই সমাজ কাংস্কৃতি সমগতেক ি কিছা ন। কিছে, কণা সকলেছন। সেটাই জ্ঞালা। চিত্র-ভারকার হিলেখ ছালেভে আনজ্ঞাকর সন্নারে ভাষে ক': ভাষেন চন্টা জানাম্বভ সরকার 12:14.1

এনেবারে নড়া শিল্প^{*}ড়েছ **পরে**জ িচে রগটুলি জন্দ। জালগাদের **পরিনিতি** বাড়াছ। শিশেশীদের বিভিন্ন বাত্রিক আন পাছিত আহাবা। যে স্ব শিক্ষালা সাক্ষাৎকার নিজেন লাদের উদ্ধান মধ্যের বা**হালা নেট**। এবা নজেন, এব সংগ্ৰাহদি করেঞ্চ লাইনের লাউফ স্কেদ **থাকে তাহলে কেন্দ্র হয়** ই গ্ৰশাদীয় হলে ভাল লাগ্ৰেনা। আর নামকরা চিত্রভারকাদের প্রসুর আলোচনা শারান্তে, ওরা বলেন'-এর মধ্যে নভুন [্]শতক্ষিকে সাক্ষাৎকারই বৈশি **থাকলে ভালু**

> ভারবেশ রাজ্যক गरिविद्या, बीह्यपुर्व ।





অ'াধারে কিরণ

নিশাদেতর অরুণ রেখা হোন। আবার মেঘের আড়ানে চলে যায় সব গশ্মি। দ্বে থেকে ভেসে আসা গানের রুগ যেমন হাওয়ায় হাওয়ায় মিলিয়ে যেতে থাকে।

অন্ধনার পটে কিবলের কনক লোখা।
কথনো আঁধার নিবিত হয়ে প্রাস করে
অংশ,মালা। কখনো ধূনের ছারার ব্যক্তে
দাবিত ফ্রটে ওঠে। হারানো সার স্ফার্টতর
হয়ে রূপ ধরে গানের কলৈ। সংগতি ও
বিগ্রহ অব্দারণী এসে দাড়ায়। মাত্রিতী
সাদ্র অতীত।

অজ্ঞানা সে অধ্বক্তারের জগং। তার মধ্যে থেকে প্রভামরা একটি প্রতিমা কাগে। আলোরা জনো আকৃতি বেন। কিরণমারীর জীবন আলোরা। আলো-আধারির মারা খেলা। সে দিভিত ছারারু ছারার কোন অভ্যাল ভূবে যায়। আলোকে আধারে ঘেনা জাগাবিভূম্বিত। যদ অপ্যদেশ দোলার বিচিত্র জীবন।

সেই অথ্য জগতের প্রজ্ঞান ব্যাসিদ্যা।
কিণ্ডু শুগ্রেই সে ধানার ত প্রাণ ধারণ নর।
কালতকলা দেবীর সেবিকা। কলা-লক্ষ্মীব
আশবিদে ধনা জীবন। সংগতি গণে
আলোক-লতা। জ্যোতির তীরে উত্তরণ
বচেছে। গীতের আসরে রুপ ৬৫০ব আসারে। গানে গানে প্রাণপ্রতিকা। ছলে
কলে লীলারিত রুপ্তন্যা। গিলপ মানে
সাথক। গ্লোকারে রুপ্তন্যা। গিলপ মানে
সাথক। গ্লোকারে ক্রিভিতে কারণ সামাজিক
কলতরায়। কিরণম্য়ী বিগ্রহ আবছায়ার মুখ
চাকে, হরাড় অগলার ক্লা অলুক্তে রেশ।
ছালা গভীর হয়ে রুপ অলুক্ষ্যে হারার। র প্রতিষয় সভাগ মেলার সভাগিত।

শব্দেহীন পারাবারে অপফুট স্কের

গ্রেলবণ। ভটরেখা পার হয়ে প্রতি দের

কোন সাদারে।...

বিগত কালের স্বার-লোক। তার থেকে সে কলাবতীর কিছু কিছু বাতণ ভেসে আদে ধাড় বিজ্ঞিল করেকটি মানু সংবাদ বিস্ফাতির তল থেকে উঠে এসেছে। জন্মস্তে পতিতার পর্ণে বিবরণ ত অপ্রাণ্য। সেই কটি ছিল স্তেই গাঁথতে হবে বি ন স্তোর হার।...

সেদিন ভারাপ্রসাদ ঘোষের বাডিতে একটি বড আসর হয়েছিল। বিভন স্টাটের সংগতিপ্রেমী, দংগতিক্ত তারাপ্রসাদ ঘোষ। কিশোর বয়ুস থেকেই তিনি সংগীতে আগ্রহী, গুণী সংগ অভিলাষী। তথন বারাণস্বতিই ভার সংগাতি জাবিনের সতেপাত। কাশী প্রবাসী শ্রীরামপুরের ধ্পেদী রামদাস গোস্বামীর শিষ্য **হরেছেন।** সখেল শিক্ষা। অভিজ্ঞাত ধনী বংশের দলোল তারাপ্রসাদ। কাশীবাসিনী মাতামহীর সংকা থাকেন আদরের দৌছিত। রামনগরের রাজ-দ্যবারে আছেন তানসেনের পত্রবংশীয় বুড়ক মিঞা। সারখাণগারে ভারত-বিখ্যাত কলাবং। তাঁর কাছে শিক্ষাথ**ি হয়ে, শ্রোতা হ**য়ে যান ভারাপ্রসাদ, এক একটি মোহর দক্ষিণ। নিয়ে। প্রথম জীবনের এই সংগীতচচী উত্তরকালে সংগীতেও প্রেমবিলাসে পরিশত হয়। হেদুয়ার উত্তরেই প্রাসাদোপম ভবনে (शास्त्र करते नाना प्रश्नास्त्र नाना गुणीक्त--সেতার সারবাহারী এমদাদ খাঁ, ধাুপদী দৌলং খাঁ খেয়াল খিল্পী কালে খাঁ সারখগী ছোটে খাঁ প্রভৃতি। শ্নিবাল রবিবার সৈ ভবনে কত কলাবতের আসর **বশান**! 'ছিল্লা ইণ্টেলিজেন্সার' পরের প্রবৃত্তক-সম্পাদক, ইংরেজী কবিতা-রচয়িতা কাশী-প্রসাদ ঘোষের পৌত্র ভারাপ্রসাদ তখন স্পাণি সমাজে মহামানী ব্যক্তি। তাঁর আসরে শ্রোতা হয়ে আসতেন বনিয়াদী সমাজের অনেক স্পাতির্মিক। সেদিনও এমেছিলেন।

তথন আসর শেহে বাইরে আস ছলেশ শ্রোহারা। তাঁদের মধ্যে শোভাবাজারের সুগাঁরচিত দেব পরিবারের অসমিক্ষও ছিলেন। তথকো কুমার যোগে আখ্যাত হুছেন তাঁরা। রাজা রাজকুক্ষের চতুর্থ পাত্র অপুরক্ষের গোঁত উপেন্দর্ককের গুট অসমিকক।

অন্তোন শুনে ফটকের সামনে অসীম-কৃষ্ণ উপস্থিত হয়েছেন। সংশ্যে কিশোর বয়সী পত্র হারীতকুক।

এমন সময় একটি মহিলাও বেরিয়ে এলেন আসর থেকে বাইরে।

অসীমরুক্ত তাকে সামনে দেখে দে? হাত জ্লে নমন্দার করকেন।

মহিলাও প্রতি নমস্কার জানিরে গেলেন বাবার প্রে। হারীতক্ষ একটু আশ্চর হরে বললেন, বাবা, আশান ও'কে নয়স্কান করলেন কেন ? কে উনি ?'

প্রায়বালক হলৈও কিছু কিছু আসমে
গায়িকা প্রেণীর নামী দেখেছিলেন হামীতকৃষ। এই মহিলাকেও তাঁর কেমন মনে
হয়েছিল সেই ধবনের। তা হাড়া, সম্প্রান্ত
কিংবা সাধান্ত গছন্থ প্রাণ্ডনাকে এমন
প্রকাপা সমাবেশে দেখা ত সে ব্লে
অকসনীয়। তাই বিস্মিত হামীতকৃঞ
গিতাকে প্রশ্ন করেছিলেন।

কুমার অসীমকৃষ সরলভাবে বললেন, কেন নমুস্কার করব না?'

তারপর একটা সম্প্রমের স্থের জানারেন মহিলাটিকে সম্মান দেখাবার কারণ—'উলি লে আটিপটা দিরণ্মায়ী'

আর্টিশট কথাটা সেই প্রথম শুনলমে।'
তামাপ্রসাদ যোবের সদরে এই কথাবাতরি বিবরণ দিরে প্রায় পঞ্চাশ বছর পরে গণ্ণ করতেন হারীতক্ষ, 'বাবা সেদিন আয়ায় বলে ছলেন যে কিরণময়ীকে শুধু ওই একবার সেওছি। কংনো তাঁর গান শ্নিনিন। কিন্তু বাবা শ্নেছিলেন অনেকবার মেজনা বাবা যে ভাঁকে আটিস্ট বলেজিলেন মেজনা করণময়ীর গানের মান আন্দাল করতে পারি। কারণ বাবা গান বাজনা খ্ব ভাল ব্যুক্তেন।'

কথাটা সভা। সংগতির এক রচিবান বেশ্ধা ছিলেন অসীমকৃষ্ণ। নিজেও কিছ-কিছা চর্চা করতেন। ছাপ্রমোনিয়ম বাজাতে পারতেন খেরাল গালের সংগতে। তবে তা নিকাশ্তই স্থের বাজনা। পরিশ্রম করে র্গতিমত অভ্যাস রাখা নর। স্বভাবেই তিনি সংগীতের সমুঝদার। আর পারিবারিক পরিবেশেই সংগীতজ্ঞ। বহুং দেব বরাবর কল[া]দের আদর। বংশের জীবনচর্যাল তা কুলা সংগতিত্ব আসর। সংস্কৃতির এল চিহ্ন হিসেবে। সে যাগের এই পরিবারে সংগীতচচার করর ছিল। সেই আবহাওয়ায় মানুষ অস্থিক্ঞ। প্রাহান্ত্রমে পারিবারিক আসরে আত্মীয় বৃশ্ধবাশ্ধবদের আসরে উচ্চমানের স্পাতি শানেছেন। প্রিশীসত হয়েছেন রাণসভগীতে।

অসীমক্ষের প্রশিতামহ রাজা রাজকৃক্ষ
দেব। তুখন থেকেই বংশে রাগসংগতিক
সমাদর। মহাসোখনি রাজকৃক্ষের নানা
বিলাস ছিল। সংগতি তার মধ্যে একটি
প্রধান। তার বিরাট জলসাঘর ছিল
কলকাতার এক শ্রেণ্ঠ আসার। সে নাচ্ছর
বালকুক্ষেরই তৈরী করা। শিতা নক্ত্রকর
জলসা ঘর ত তিনি পান নি। শোভাবাজাকের
তাক্তর্বাড়ির সামনের দিকে নক্ত্রকর সেই
কাহিছর। বেখানে বাই নাচ দেখতে রবার্ট
কাহিছর-৪ এসেছেন। পারে বে আসারে মত্রব
আখড়াই গামের পস্তন ব্যান কলাই লেন,
নাধ্বাব্রের আঘারি। সেই প্রনান আয়ালের
নাচ্ছর পোয়াকরেন ব্যক্তরকর পায়াপ্রহ

লোপীয়োহন। সেমর কথাও এখানে একট বলে নেওয়া যায়। রবার্ট কাইডের মানসী নবর্ষ্ণ তার অনেক আগে পলাশীর ব শ্বে ভাগা ফিরিয়েছন। প্রাসাদোপম অটালিকা, ঠাকরবাড়ি, নাচঘর ইত্যাদি করেছেন শোভা-বাজারে। মহাগ্রজা হয়েছেন। ক্রিড সাতটি বিবাহ করেও পাত্র পেলেন না নবকুক। তথ্য দত্তক নিলেন দ্রাতৃত্পত্র গোপী-মোহনকে। কিন্ত ভারপর ১৮৮২-^{তে} একমার প্রে রাজক্ষের জন্ম হল। নবরুফের সে সময় ৫০ বছর বয়স। আগ রাজকৃষ্ণের ১৫ বছর বয়সে নথকৃষ্ণ প্রলোকে গেলেন। যথাকালে ভার বিশ্বন ম্থাবর অস্থাবর সংপত্তি নিয়ে মামলা বাধল সুপ্রতি কোটে। পোষাপুর গোপীমোহন ও প্র গাজকুফ দুই বিরুদ্ধ পক্ষ। শেষ পর্যাত মবকুফের বিষয় দুজেনের মধ্যে বিভক্ত হল স্মান ভাগে। নবক্ষ স্ট্রীট নামে প্র্টের উত্তরাংশের গৃহ সম্পত্তি গোপী-মোহন (রাজা রাধাকাশ্ত দেবের পিতা) পোলেন। আলু দক্ষিণভাগের উত্তরাধিকারী হ'লেন বাজেক্জ। নব্কুফোর আমলে জলসাফা গোপীলোহনের অংশে রইল। তখন রাজ**কু**জ প্ৰথম কৰে নিলেন ভৌল সেই বিবাট নাচ-ঘর। সংগীতপ্রেমী রাজক্ষা সৈ আসর ন্ত্রীতে ম্থর রেখে দিতেন। তাঁর আট পারের মধ্যে চত্তথ অপার্বকৃষণ সেই নাচহণ্ড অপুরেক্সের পুরে (উপেন্দক্ষ) পৌরাদি (অস্মিক্ষ) করে বতার। কিন্তু ত্থন তা আৰু জ্লস্মৰ নেই। অং**শীভূত** পারিবারিক কক্ষের রাপ নিয়েছে। পোতলার বিবাট নাচ্যন কালের গতিকে পরিণত হায়েছে অন্দরমহালের কৃতি কক্ষে। কিংকু বংশের ধার্য সংগীতের অন্রাগ ও অনুষ্ঠান তথনো অন্তর্ধান করোন। বিরাট দেউডির বাদিকে বৈঠকখানায় আসর বসান অস্থিক্ষা উপ্পা গায়ক বিহারীলাল বস্ সেখানে নিয়মিত গান শোনান। আরো **নানা** গালী আসেন মাধ্যে **নাঝে। টুম্পাচার্য মহেশ** ভুষ্টাদের শিষা বিহারীলাল সাধারণ রুংগমণ্ডের দেখা দিতেন। আর অসীমুকুঞ্জের আসরে তিনি ছিলেন মহার সক মুর্জালসী ব্যক্তি। সদা রাসকতার জন্যে তাঁর নাম হয় জাঠা বিহারী। যতীন্দ্রমোহন ঠাকুর একদিন তাঁকে বলেন, 'এ'চোড়ে পাকা।' বিহারী তংক্ষণাং উত্তন্ত দেন, পকল্ড মহারাজ, কোরার মিণ্টি। গতীক্রমোহন সেটি উপভোগ করেছিলেন। অসীমকুষ্ণের বৈঠকে জাঠা বিহারীর মতন আসতেন রসরাজ-নট নাট্যকার, নাট্যাচার^ত অন্নাতলাল বসু। গানের আসমের মতন মজলিসও তথন রসালাপে জমজনাট হয়ে উঠত। অসীম-ক্ষের সংখ্য তার িল সরস হুদাতার সমপ্ক'। অমৃতলাল তাঁকে নিয়েও যথন রহুসা পরিহাস করতেন; তিনিও যোগ দিতেন সহাসো। তাঁর ইতিহাস**চ**টা **আ**র নানা বিষয়ে খেয়াল ইত্যাদির সংক্রে চিরিত করে অম্তলাল এক প্রহসন লেখেন। তার নাম 'রাজা বাহাদুঝ'। স্টার থিরেটারে 'রাজা বাহাদার' অভিনয়ও হত। অমৃত- লালের আমশ্রণে তা দেখেনও অসীমকুক। তাকে নিয়েই হাস্যরাসকতা তিনি দশকিদের সপ্রে বেল উপভোগ করতেম। আর জানাতেন, বাঃ বেশ অম তলালকে লিখেছেন ত।'

मक्कांगती, अञ्चल, विमान वाशी जतीय-কুঞ্জ সংগতি প্র অনুরত ছিলেন না। সংগতি বিষয়ে ভার ছিল অণ্ডদ'লিটা রাজকুকের আমলের অন্যান্য অনেক কিছই লোপ পেয়েছিল। কিন্তু পরিণত, পরিপক সংগতিমানস ছিল অসীমুকুঞ্চের। আনু নানা শ্রেণ্ঠ কলাবং কলাবতীদের শোনা অভিজ্ঞ কান। নিজের বৈঠক থেকে বন্ধ্রাধ্ব আজাহিপবিজ্ঞান সকলের আসবে অজিত সংগীতজ্ঞান। তাই তাঁর স্বীকৃতি কিরণ-ম্য়ীর সংগতিগণের একটি বড় পরিচিতি মানে করা বাল।

কির্ণম্যীর গান যে অসীমক্তঃ শোনেন তা হল বিশ শতকের একেবারে প্রথম দিকের কথা। তখনকার গান-বাজনা হত বিশেষ ঘরোয়া আস**ে: কি**ম্কু সেখানেও বাইজীদের গান সচরাচর শোনা হৈত না। পারিবারিক আসরে তথনো লাতে ওঠেন নি বাইজীরা। কলাবংরাও বাইজীদের সংখ্য একাসরে অনুষ্ঠান করতেন না। ১৯১৮ সালের 'লালচাঁদ উৎসব'-এর আগে প্র্যুশ্ত

তাই ছিল রেওয়াজ। বাইজী ও পার্ मिल्भीरमंत्र बत्ना वालाना वाल्या किस्ता একট আসরে পায়ক দিন। বাইক্ষীদের আসর হত গৃহপ তর বাগানবাঞ্চে । তার বাসস্থল থেকে দরে। হাগানবাড়ি কথাটিরই একটি বিশেষ তাৎপর্যছিল। কিব্ৰয়য়ী তেমনি একজন গামিকা। কির্থময়ীও সেকালের এক क्षां जन्म বাইজী।

বাগানবাড়ি ভিন্ন কয়েকটি গ্রাসরেক বাইজীদের গান হত। যেমন জোড়াসাঁকোর দ**িন্যালাল শীলের ভবন। কিংবা তার** প্রাতৃত্পরে হরেন্দ্রকৃষ্ণ শীলের সময়েও। দ্নিয়ালালের সেই আসরে মুজ্বো করেছেন কিবণময়ী। ভারাপ্রসাদ ঘোষের আসংগ্র কিবণময়ীর গান একবার অনাথনাথ কল শ্বেছিলেন। তিনি সে সময় বাংলার ত্রুণ্ডম গায়ক। কিগ্ৰুময়ীর কর্পে অনাথনাথ শোনের উংকুটে টপ্পা ও খেয়াল।....

সেদিন ভারাপ্রসাদ ঘোষের আসরে কিরণময়ীর গান শোনেন নি. তাঁকে শাধ্য দেখেছিলেন অসীমকুফ্টের কিশোর প্রে। পাবত বিলালে সাহিত্য সংস্কৃতির জগতে সংপ্রিচিত হাগীতকুক দেব। সাহিত্যা**থী**

बारनामामाम् सर्व शः व्यवस्थान

বারণাড শ' সংকলন

বার-,তে ল' এর সমন্ত রচনা আমরা প্রান্তাক বাংলা ভাষাভাষী পাঠকের কাছে পেণিছে দিতে চাই। আট থক্তে সমান্ত। প্রতি থান্তর হলে। ২৫ । ২০ টাকা দিয়ে গ্রাহক হতে হবে। প্রথম সংস্করণ প্রাহক ছাড়া সরবরাহ করা হবে না। মুক্তাবাদ কাগজে কেক্সিন বীধাই। আজুট গ্রাহক হোন।

অসকার ওয়াইল্ড রচনা সংকলন

ৰাংলাল অনুবাদ। আট থান্দ সমাশ্ত। প্ৰতি থান্ডের মাল্ড ২৫ । ১০ টাকা দিয়ে গ্রাহক হতে হবে। প্রথম সংস্করণ গ্রাহক ছাড়া সরবরাহ করা

বছরের ভারতের ইতিহাস সংকলন

ভারতবর্ষ করে সামি হয়েছে কবে এর গোড়াপত্তন। পারে কি ছিল আঞ কি আছে এর প্রথম থেকে শের অর্থাৎ আদি থেকে অন্ত পর্যাস্ত। অভিনৱ সমণ্য ইতিহাস উনিক ক বছারে। বহু চিন্তসন্বলিত জংপ্রাপা রচনা দশ থা-েড সমাণত। প্রতি ধা-েডর ম.বা ৩০ টাকা। ১০ টাকা দিয়ে গ্রাহক হতে হবে।

অত্তল প্ৰসাদ গীতি মালণ্ড

অতৃদ প্রসাদের সমস্ত গানের স্বরাজাপ সহ সংকলন। তিন খতে সমাপ্ত। প্রতি খণ্ডের মলো ১৫ টাকা। ৫ টাকা দিয়ে গ্রাহক ছোম। আপদানের ঐকান্তিক সহযোগিতা প্রার্থনা করি। মনিঅর্ডারেও গ্রাহক হওর। বার। গ্রাহক হবার মূক কেন্দ্রঃ---

তর্গতা প্রকাশনী 🛭 ১০ কলেখ রো, কলিকাডা-১

en en en en en ekstygten blike er til til skap byg

শ্ৰমত তাৰৱীৰ এক প্ৰিয় পাত্ৰ, সংক্ৰমত দোষ্ঠীর অন্যতম, 'স্থুক্ত পাতার ডাক্ रमाधक, जनगीएक यस वानी वित्रक बाह्य-ক্রণণী হারীতকৃষ্ণ। তার সমরে রাজা রাজকুষ্ণের সেই নাচ্যরের এক ভণ্মাংশ শার্ষককে পরিণ্ড হয়েছিল। অহিবাহিত ছারতিকৃষ্ণ বৃশ্ধ বৃদ্ধতে কোন কোন দিন শ্ম ডিচারণ করতেন সেখানে বসে। এক পাশে অসীমকুকে_র সংগ্রহ ইতিহাস ক্রন্থাবলী। তাঁর প্রনো আমলের অলক্ষ্ত প্রভাষার। একদিকের দেওয়ালে সে ৰ দেশই একটি দেখাল। তার ওপরের দিকে মাজকুকের এক পোত উপেদ্যকুকের চিত্র। আরো ওপরে রাজকুজের আমজের সেট অ'ড ট্রান্ত নাচ্ছব্যের খনবঙ্গ কভিকাঠ। ভারই ক্রিটে স্থারীতক্তের মনোরম স্মৃতিকথনের অনেক্থানি জাড়ে থাক্ত-সংগতি। প্রাসন্পিক ভাবণ শুধু নয়। নানা গানও। পাইতেম নবাব ওয়াজেদ আলী খার রাজ্য ছারাহার সেই ঠংগি—'নিম্নক হানামে মলেক বিপাড়া/মেরা মাল ম্লাকা স্ব नार्छ निया...।' कथरमा स्नामार्टम भर ভট্টের দেওরা সুরে ঝাপতালে জ্যোতিরিন্দ্র-নাথের কাফি সংগ্ৰ গানখানি-ভার হে ভর্মা মম অকল পাথারে/আর কেই নাহি ৰে বিপদ ভৱ বাবে, আধারে বে তারে।।... কখনো জানাতেশ-তাঁর বালক বয়ুলে ফুল-বাগানের (গলিটির পরে নাম হয় হরেন্দ্রক দেব লেন) দিকে তাঁদেরই কোন সুরিকের আসর থেকে কেমন ভেসে আসতে তার এক বিখ্যাত বাইজী যাদুমণির গান । এমনি কোন সময়ে হয়ত কিরশময়ীর কথা তাগতিক্ষের মনে পড়ে যেত। হেদ্যোর সামনেকার ব্যাড়িতে আসরের শেবে সেই একবার দেখা। তারপর অসীমন্তব্দের মূখে করণময়ীল পানের বিষয়ে পোনা।

তেমনি আর এক বিবরণে কিরণময়ীর কথা পাওয়া যায়। তার সংগতিজীবদের কিছ্ব পরিচয়। তার গাওয়া কোন কোন গান, কি কি রাগ তিনি বেশি গাইতেম সে প্রসংগ। ব্যক্তিজাবিনের কোন তথা নয়, শুধু গানের কথা। গায়িকা করণময়ীর কিছে উল্লেখ। আর তার ওস্তাদের নাম পরিচয়। তা ছাড়া শোনা যায়--কিরণময়ীর সংশ্যে তীন ভাগিনী সারমার কথাও। কথনো ভালের শৈবতকণেঠ গান হত। স-দাপটে **খেয়াল** শোনাতেন ভারা। হারীতকৃষ্ণ যখন কিরণ-ময়ীকে দেখেন তার কিছে পরের কথা क्रमव । कित्रवस्त्रीत एम अस्य क्रकि व्यामस्य গানের মুজরো হত একশ টাকা। এই সত্ত থেকে জানতে পারা বায়-কিরণময়ী ও সরেমা দ জনেই থেয়াল টম্পা ইতাদির ভাল তালিম পেয়েছেন। তাদের ওস্তাদ হলেন রামকুমার মিশ্র। বারাণসীর প্রাসম্প মনোহর ধন্নাণার সেই বিখ্যাত কলাবং, লছমী **্রে**তাদের পিতা। কলকাতায় ক'বছুব থাকবার সময় বাঁর একটি বাঙ্গালী শিষা-মশ্চলী গড়ে ওঠে। সে তালিকায় সকলেই शासक। भूद, मृक्षत श्रीत्रवा-वित्रवारी छ

সুন্ধা। এর্মান কিছ্ ব্ভাল্ড হ্রিপাদ
চট্টোপার্যায়ের সতে প্রাণ্ড। রামকুরার
মপ্রক্রের এক শিশ্বা তুলসীদাস চট্টোপার্যায় (শেয়াল টপ্পা গাণা সভেকাড়
য়ালাকারের প্রথম সকাতিশিক্ষক, বেহাল।
খিক্পা, মানা ব্যবালিপ গাণ্ডকের রচিয়্তা
এবং গারক)। তার পানু হরিদাস চট্টোপার্যায় এবং ভিন্দুভ্যাম রেক্ড সংস্থার
অনাভ্রম কর্মকর্ডা। তার বংশপরিচরও
উল্লেখ কর্মার যোগ্য। কলকাভার আ'দ
র্বেশাচাম্প এবং যাল্ড ভট্টের স্বালীত্রগ্রহ
গালারায়্ল চট্টোপ্যায়ের (এক পোত্র
ভূলসান্ধান) অনাভ্রম প্রপ্তি হলিদাস।

করণময়ীকে ভরিদাস একেবারে কিশোর ব্যুসে দেখেছিলেন। তার গামও শানেছিলেন সে সময়। ত্রিলাসের বাল। থেকেই বাডিতে গানবাজনার পরিবেশ ছিল। নামা গায়ুকগায়ুকার গাম শোনবার তিমি স্যোগ পাম নামা স্চে। কারণ তাঁদের চারপারুরের সঙ্গীতক্ত পরিবার। **আ**র किनग्रहीत गान श्रथम क्रीदरन भागरमञ् मात्र (तारशिक्षामा। जासक अहरा केवाल শেষ জীবনেও সেস্ত স্মরণ করতেন হরিদাস। বতুমানকালের পটে সে যুগের সংগতি-মনন। বাভি লংগত হয়ে তথন শ্বাহা জেলে ওঠে গান। শিক্ষীসতা সভগতে গুলে দিতে থাকে। তারি স্মাতিধারায় ভেসে एक महत्रश्राट अनुवर्गनिक्षातिभी। कित्रभन् মরীদের কবেকার গাওয়া একেকটি গানের ক ল। তারও কিছু হয়ত বাতালে মিলিয়ে যার। কিছ প্রতিধর্নি করে কির্প্নয়ীর সংগতিস্মরণী। বিভিন্ন গানের ছিল্ল রেশ— বিলীয়মান পটে খণ্ডত কটি চিত্রাংশ

কলিতকটে সেই সুখরাই কানাড়াহ বাশী—

শধ্মতি কোরেলিয়া বোলে কে পাপিয়া নাচত মুখল বোলত...' কিম্বা হাম্বীরেয় একটি বিশম্বিত লয়ের কুমরা—

চামেলি ফ্লি চম্পা গুলাল গৌধেলা কেলা...' আর একখান **থ্যে**য়া ভালেরই জেলায়া--

চাদিনী মাতে,....' কিংবা বিজ্ঞানিত আড়া-ম বেহাগটি---'কমন ঢণা তেয়.....'

এইসব রাগ নাকি বেশি প্রিয় ছিল কিলণমানীর। বেশি গাইতেন সংখ্রাই কামাড়া, বেহাগ, হাম্মীর, কেদারা আর দ্ববারী কানাড়া, মালকোশ, দেশ, শংকরা ইত্যাদি !.....

হ'রদাস চট্টোপাধ্যাহোর বিবরণ এই শব^{ন্}ত।

কিরণমরী সম্পক্ষে অন্য স্তুত আছে।
আরো কিছু সন্নাচার। এখানে চিত্র অনৈকথানি স্পর্ট। স্বল্পকালের হুক্তেও কিরণমরী
এখানে যেন নিকটেই। গায়িকার আরো কিছু
প্রিচয় মেশে। কাছে থেকে দেখা যায়
কিরণময়ী সুহমাকে।

দুজনেই তথন নাম-করা বাইপ্রাণি বেরা গায়িকাদের মধ্যে কির্মানমার স্ক্রান্ত নাম। সংগতি-সমাজে আর বাইজীবিধানে নি সমাজে প্রসিংগ ভারা। গানের জন্মেই বোল। তবে াইজীদের বেমন দুক্তুল-নতক্রীও দুজনে। কথক ন্ত্যে পটিয়ুসী। আর এই পেশার চাহিদা যে বিশেষ সমাজে, সেখানে প্রতিষ্ঠা পেরেছেন। ভাল মাজেরো করেন সংগতিবিলাসীদের বাগান বাড়িতে। কিংবা নিজেদের ঘরের আসক্রে।

সিমলা সম্ভাৱ চন্দ্রমাধ্য স<u>ং</u>ধ্ লে**ন**। তার মধ্যে একটি দোতলা বাভি। নিচের বড় ঘরখানিতে নাচ-গানের আসর বসে। কখনো সন্ধায় কখনো নিশ্বীপে মুক্তরো করেন কিরণময়ী সরেমা। নপেরের ছঞে. তবলার বোলে, সার্থেগর ঝঞারে, কলকঠ গানে রাচি সচকিত হয়ে ওঠে। কিরণমারী সামাল গানের সংখ্যা সামগ্যা বাজান ওপ্তান গোরীশক্ষর মিশ্র আর কালী ওপ্তাপ। জন্মজ্যাট আসর। কিল্ড সাধারণের লেখানে প্রেশ শিরেধ। বিশেষ বিশেষ গ্রোতা আসাঙ পারেন, যাগা এক এক নতের মাসরো দেম। তাদৈর সংগ্রেথাকেন অণ্ডর্গে বংশ-বান্ধব। শংখ্য তথিকে সে রাতের জনে অতিথি। কিরণময়ী স্রমার গাল শানে নাচ দেখে আমোদ করে যান।

মুজরোর খনচ হাঁরা করেন সকলেই কি
সঞ্গীতের সমতদান? কে জানে! কিচ্ছ পেশাদান শিশ্পীন বিশেষ লাইজীর তা বাচাই করা চলে না। শেশান প্রয়োজনেই মোনে নিতে হয় সবাইকে! বাইজী জীবনের এই এক ট্রাজেড! প্রাক্ত শিশ্পীদের তুলনায় তা থনো আমো মমান্তিক হয়ে ওঠে। বাই উপায়হীমা।

এমনিভাবেই তথন রুমাধ্য **গো**নে কিরণময়ী স্রেমার দিন চলে।

সে বাড়িরই দোতলার বাস করেন দুই ভাগনী। সেখান থেকে সাইরেও মুক্তরো করতে যান। একতলাতেও আসর বসে কোন কোন দিন।

সে সময় বড়বাজারের একজন প্রায়ই আসেন। আহাীর পদবাীর এক ধনাতা বিলাসী। অশ্তরুপা বংধুদের স্পূপ্ত। নিয়ে আসেন। বেশ রাত পর্যস্ত থাকেন আসকে। কংনো একজন কথনো দুক্তন বাইজীর গাম শোনেম। নাচ দেখেন।

বাইজীর গানের সংগ্রে সর্বন্ধ বাজাতে আসেন ওস্তাদ গোরীশংক্ষর মিশ্র। দ্ববি ক নন্ঠ কালী ওস্তাদও সার্মণা বাজাম।

স্থোবীশণকর যেমন গছর জ্ঞানের
স্থাতিরা সারগানী, তেমনি করণমরী
স্কুমারও। বাংলায় আরু দুজন শ্রেণ্ডা
বাইজ্ঞাকৈ গোরীশাধ্বর গান শেখান। তার
হলেন দেবভাগিনা ও ক্রুভ্যায়িনা।
তানের সংগতকার হয়ে আসরে সারগাও
বাজান ওক্তাদক্ষী। কিন্তু ক্রিপ্তায়া
স্কুমারে তিনি গান শেখান বলে জ্ঞানী
বার্মান। এখানে মিশুক্ষা ক্রেণ্ডা বার্মান।
বার্মান। এখানে মিশুক্ষা শুন্ম বালক বলোই
শোনা বার্মা। তবে তার তুল্য ওক্তাদের কাকে

সংগতি বিষয়ে উপত্যত হতে পারেন তাঁরা, শিক্ষা না কমেওঃ

গৌরণিশ্বনের কাছে সেস্মার গান লিখছেন ইন্দ্রোলা। প্রবতশিকালের বিখ্যাত গায়িকা তিনি। কিন্তু তখন তার প্রথম জীবন। গায়িকা হিসেবে নামও হয়নি। ওপতাদজীর বালিকা ব্যুসনী এক ছাত্রী মাত্র।

ইন্দ্রালাকে গোরীশাক্তর একদিন কিরণ-মর্মীর কাছে নিয়ে হান। কিরণমার্মীর সংগো তাঁর পরিচয় করিয়ে দেন ছাত্রী বলো।

ওশতাদের সংগ্রে ইন্দ্রালা করেকবারই সে বাড়িতে গেছেন। কিরণময়ী স্বামার নাচ গান দেশেছেন দল্লেছেন কাছে বসে।

তখন সেই আহার বাজিটির জনো আসর করেম কিরণমার্শী সূরমা। চন্দ্রমাধ্য সূত্র স্থানের একতলার ঘরটিতে।

দুই বেনের চেহারায় কোন সাদৃশ্য নেই। দুজন অন্যাক্ষ দেখতে শ্নেতে।

কিরণমর্থী অভি র্পেসী। **কাণ্ডনবর্ণা** এবং মুখ্ছীতি স্ফুদ্র। মার্মার আকা**রের** গঠন। তুম্বী বলা যায় তাকে।

আর স্করা যেমন দীর্ঘাকৃতি, তেরান প্রস্থেত্তঃ বিশাল শামীর তার। আকৃতির জন্মে তাকৈ কিরণময়ীর চেয়ে জ্যোষ্ঠা মান হাত।

সূর্মা আগরে আস্বার সময় **একদিন** গোরীশিকের স্থাসো মণ্ডবা করেন, সামনে প্রোড় চল্ডি হুরি। হাম লোগ স্ব পেড় হাার:

বেশ ক্ষান্তিই ছিলেন গৌশীশংকা । তাঁর তুলনায় শ্রেমার আকারকৈ পাহাড় বলা যায় বহুস। করে।

ফিন্তু নাচে আশ্চরা নৈপাপ ছিল সরেমার: এমন সাবলীল তার ন্তাভিগ্যম নে দেহের বিভাউত্তের কথা দৃশ্বিদেধ মনেও থাকত না। সেই শ্বীগ্রেই অবাধ্যে ধথা ইছে। প্রদিনত দোলায়িত কগ্রেন স্বেমা।

কিরণমাধী সঞ্গাতে অতি পারদাশিলা।
স্ক্রমার চেরে অনেকাংশেও বটেই। শেল্লাল
ও টশ্পার বংলার এক দ্রেন্ডা গায়িকা
বলেই তিনি কীতিতি আছেন। ঘঁদও কঠ ভূগি ইষং চাপা, তাওরাজ কিঞ্ছিং কিল ছিল, কিন্তু অতি স্কুরেল। আন স্বাহ্নিট্টা গামে
গীতিসত কলাবতী কিরণমাধী। কিন্তু নৃত্যে তাঁর তেরাল পট্ডুছ লান।

সর্মার ওঠে বলশালা, অনেক দ্বে প্রশিত তাঁহ গান শোনা যেত। এমন দ্বাজ আওয়াজ বেশি ভিন্ন হা গারিকানের মধ্যে।

সেকালের বাইজীনেও যেমন দৃশ্তুর—
আসরে ভারা সর রাতির গানই গাইতেন।
থেয়াল উপ্যা সুংরি দানর। কিংলা কাজরী
ঠৈতী লাউনী ইত্যাদি। তারে আসরে রাগসংগাতির জনেই তিদের নাম ছিল বেশি
এবং সেসবই হিদ্দী গান। কিংলার্থানের
কথা তেমন পোনা যায় না—সম্বালীন
গায়িকা মানদাস্যুল্মী কিংবা বাইজাী
দ্বেত্যাগ্রনী কৃষ্ণভাহিনীর মতন।

স্বার্মার কিন্তু রাগস্পণীত ছিল আরো একটি সংগতি গুল ছিল। উৎকৃষ্ট কতিন গায়কাও তিনি। ভালভাবে কতিনি গান 'শংশছিলেন এবং প্থক কতিনের আসরে গাইতেন। কতিন গায়িকা বাল স্বামার এমন বিশিষ্ট প্রিচয় ছিল বে কতিনি গানের জগতে অপন্তিতিত থেকে বায় তাঁর খেয়াল টপ্পা ইত্যাদি গানের কথা।

চন্দ্রমাধ্য সার লেনের ব্যাড়তে সেই আছীর প্রভতিব জন্যে বেসৰ আসর হত তো কভিন গানের নয়। সরেমার কভিনের আসর ভিন্ন আলাদা। দেকম্যে খেল করতাল হারমো নহাত্র ইত্যাদি বাদকদেশ নিয়ে সার্যার ভিল্ল দল ছিল। প্রাধানি উপলক্ষ্যে তার কাতনৈ হত গ্রুহণ ব্যাড়িতে। সেকালে কীত্রণ গায়িকার চলন ছিল সাধারণ গতে, প্রাম্থ প্রভতি অন্তোনে। অথচ বাড়িতে বাইজীর আসর নিবিশ্ধ ছিল। কিন্তু সেই বাইজাই ছাড়-পত্র পেতেন কীত'ন গায়িকা-র পে। স্রমাও তেমনি বহু গৃহস্থ বরে কডিস পরিবেশন করতেন। বিখ্যাত গারিকা মানদাস-পরীও তেম্নি একজন। তিমি নত কীনা হালাও এই সমাজ *হ*হিভাতা শ্রেণরিই। তাত্ত কতিনের আসর সাধারণ বা'ড়তে হয়েছে কিন্দু রাগস্পাতির আসর নয়।

স্বরমার সংগতিজ্ঞানিসের এই শৈবত পরিচয়। বাইজা ও কণ্ট্রনীয়া। গ্লাগ-সংগতির আসরে থেয়াক টপ্পা ইত্যাদি গর্মিয়া এবং নতক্ষা। আর নিজম্ব দল নিয়ে কাত্রি গায়িকা।

তারে রাগসংগীতের গারিকা বলে দুই ভাগনীর মধ্যে কিল্লম্মীর নামই বেশি থেকে যায় প্রতুতি সম্ভিতে।

আর ভাল কীতুন গায়িকা হলেও
সরেমার নাম বাইজী ওলিকাতেই খুল্ল
থাকে। কাবণ কিবণমন্ত্রীর সংগা একাসরে
স্ক্রমাও দেখা দেন ভানেকদিন। কৈতকল্টেও আসর করতেন। ওছতাদ রামকুমার
মিশ্রের কাতেই তালিল্ল নিয়েছেন দেলায়ের
পেশাদার সংগাঁতজীবনেও দ্লেনের সহযোগিতা দেখা গেছে ভানেক সমরেই।
গ্রীবনের অনেকাশে তারা একর রাপন
ব্রাধনার তান্ত্র একই ব্যাস্ত দুই সক্ষপ
যান।

বাইজী জগতে এবং সংগীতের মজলিদে দুটি নাম একই সঙ্গো উল্লেখিড হারেটে। কিবলমামী ও স্কান। আরও ঘনিস্টে মহালে—'স্মার কিবল।'...

সেকান্সের ব্যংগালীর সংগতি জীবনে
একটি বাইজী-চিহিন্ত অধ্যক্ষ ছিল।
সংগিংশত কিল্ফু বর্ণবিহ্ন সেটি। বাংলার
সাংগীতিক ই তহাসে ওবাও আছে বিশিষ্ট দান। সেই বাইজী ধারার পটে কিরণমারী
সন্মান্তর স্থান কাল এখানে প্রান্তেনা
করা হল।

বাংলার বাইজীর। পশ্চিমের **ভুলনার;** সংখ্যাস অলপ। বাইজী অর্থাৎ **এলাধারে** নত[্]কী ও মারিকা। কলকাতাভেও **ভূলেন**

পশ্চিমাণ্ডলের বহু বাইজ্বী: আদ্যুদ্ত বৌবাজার স্থাটি ও সংলগ্ন অঞ্চল জাতে তাদের বিশ্বাট এলাকা। লক্ষ্মো দিল্লী আগ্রা কাশী এলাহারাদ প্রতাপগড়ে চুল-বালা ভাগলপার ইত্যাদি নানা অঞ্চ বৈধে নানা সময়ে তার। কলকাতায় এদেছেন। আর মধ্য কলকাটোয় গড়ে টোনৈত প্রতিয়ার বাইজী পল্লী। কলকাতার সংগতিপ্রেমী ধ্যাদির আন,ক্লা যেম্ম উত্তর ভারতীয়া কলাবতরা লাভ করেছেন, তেমান এই কল'-বতীরাও। কম পক্ষেও ভারা শতাধিক বন্ধা যায়। সে হিসাবে কিছু নাম চয়েছে এমন বাংগাণী বাইজী কয়েকজন মাত। যেনন বিশ শতকের প্রথম দিকে কস-ম বাইজী, সরলাস্থেরী বাইজী বস্ত বাইজী জ্ঞানদা ৰাইজা, হারা বাই প্রভৃতি করন ছিলেন বাঁলের গানের বেক্ড' চাহেছিল। তেমান আলো কয়েকজন নত'কী-গাহিতা क्रिकाम बदरे। विश्व वाश्वाकीरम्ब श्रासा मच-চেয়ে প্রসিদ্ধা বাইজা অ'রা অবশ্য মদ। উমিশ শৃতকের শেষ ও বিল শৃতকের প্রথম পাদকে শ্রেণ্ঠা বাংগালী বাইজা চার-পাঁচজন। প্রথম সাধির পশ্চিমী বাইজ দৈর সমুযোগ্যা যারা। তারা হলেন কিরণমহাী (এবং স্রেমা) শেবতাবিশনী ও ক্ষভামিনী। গানের সংগে নত্তাও পটিয়সী তাঁরা। কণ্ড শুধু গারিকা মানদাস্করী কিংবা শুর্ধ- নত কী লীলা প্রমূথের নাম এই তালিকায় দেওয়া যায় না।

থাপালী বাইজানি। প্রায় সকলেই উত্তর কলকাতা নিবাসিনা। চিংপ্রের ওই চিহ্নিত অগুলে আর কেন্টু বা সিম্লার। কিবল্যারী স্বায়াও অনেকদিন সমলা পঙ্গীতে থাকেন। তার আলে হাওড়ায়। তবে নামান্ডাক এখন হয়নি। সে প্রস্কুণ্য পরের কথা।

বাংলার সন্চেয়ে নামী এই ৪:৫ জন বাইলীরা প্রায় সমসামায়ক। তবে ব্যাসে ভারতমা আছে। বানুমাণর চেয়ে কৃষ্ণ-ভারতমা প্রায় ৩০ বছরের ব্যােক নিষ্ঠা। বানুমাণর একেশামে অস্তিম পরে কৃষ্ণ-ভারতী প্রতিষ্ঠা পরে। তবি সমকালীন নেতালিলা ব্যাস হিছে বড়। নেত্রাগণনেই ব্যাদ্মাণর নার্থানে কিবলম্যাই, সর্মো। কিছু ন্যােকোস্টো ক্রমভারতী স্বায়ার সংস্কা দেবতালিলাই কৃষ্ণভার্মী সর্মার সংস্কা দেবতালিলাই কৃষ্ণভার্মী বিশ্বাতি বাইজী ছিলেন একই সময়ে। তা হল্প এই শতকের প্রথম ২০।

পাঁচজনের মধ্যে সর্বজ্ঞানী বাদ্ধ্রণ।
তাঁর জন্ম আন্মাণিক ১৮৫৪ সালে।
প্রথম জনিমে যদ্মণিক ১৮৫৪ সালে।
প্রথম জনিমে যদ্মণাকে কে কিছে দিন্
গার্কা অভিনেত্রীত দেখা বার। সালোক
প্রেটা ন্যাদনাকের সেই বিখ্যাত বাঁটি প্রাটা
ক্ষতী কি কলাভিকনীতে (১৮৭৪)
বথন তিনি রাধিকা সাজতেন। তার দানার
বহর ভাগে হয়ত জন্ম হন্ন স্কর্মণ আর

কিল্লামরীর। তারপর দুইে সহোদ্বার চেয়ে

তাব বছরের ব্য়েকনিংঠা হলেন

হবেতাজ্যিনী। তেমান দেবতাজ্যিনীর কয়েক

বছরের কনিংঠা কুক্ডগ্রিনী।

Karaka .

্যাদুমণির মৃত্যু সন ১৯১৮।
ক্রেক্ডাঞ্গনীর দেহাত হয় ,১৯২০। ২৪
জালে। কৃঞ্জামিনীরও তার কাছাকাছি
সময়ে। সাক্রমা ১৯৩০ তেও সালেও
জানিত ছিলেন, এই প্যণিত শোনা যায়
তারি বিষয়ে। একেবারে অভিজম প্র
অজ্ঞাত। কিরণম্যার গ্রেমি মৃত্যুকাল
জানা যায়নি। তারের জীবনের অধিকাংশ
ফ্রেমন ছারায় আর্ত হলে আছে, ভেননি
শোষের সংবাদ্ও। বাংলার শ্রোঠা বাইজীদের
মধ্যে শাুরা, তারের সাজনেরই বিয়োল
পঞ্জী জানতে প্রায় যার্ন।

বাংলার এক প্রেণ্টা গাহিকা শিংপী

হয়েও লাপত গতিয়ে কিবংমারী। যার্মাণ

শেব্দাগিনী কুজ ভা মনীর সংগে গানের

হয়ে আছে। স্নাজও তাদেরই মতন
অপাংছেয় গতিতা। আগোরিত আসারর
রাইনে অস্থরাকে জীব। জীবনের এক
দিকে আলোর জগং, কালাদিক নিবিড্

হারা। সাথ্যিত ও আথাতিতে গড়া সে
দ্বাভাগ্য, স্মুখ্যিত ও আথাতিতে গড়া সে
জীবন বৃত্ত। তার বেশির ভাগই নেপ্থান

সেই আলো আধাৰির লগে থেকে ছিলু কটি জীবন-সাত্র নোক-লোচনে এসে-ছিল। এখানে দলে বেওয়া হল তাম অসমপূর্ণ কর্মিনী।

একশ বছর আগেবা কথা। কিশ্বমনী
স্কান জাবিন পট তখন প্রথম উপেন চন্দ্র হারেছিল। ঘটনাম্যল ব কটোটা নয় তবে আদ্পেই। ভাগীরখাঁর প্রশিচ্য পালে হাওড়া। ভাগী একটি প্রস্তিত। যেখান থেকে রামভ্যুগণুর আবস্ভ হয়েছে কটিগাীরও সচুনা সেইখানে।

গংগাভীবার হাওড়া একালে দের বৃহস্তর কলকাতাবই অংশ। নিব্যুক্ত সংযোগে অনিজ্ঞিন। শতাব্দ আগে তেমন ছিল না বটো। তব্ রাজধানীর সংগে তথ্যো যোগগোগ ভিল ঘনিষ্ঠে, দেবালের সেত্র মাধ্যম। ত্যাই প্রতি নিজ্ত অপ্রেল ধ্যি মধ্যে যেগুগের লীব্যয়ন্তা।

গুণার প্রিচ্ম তীর ধেকে নিবর্টেই হাত্ত মরদান। সেই মহানানের প্রাশ্ দিয়ে প্রাশ্ব টাবক রোড শিনপালের দিকে শোহ মারা করেছে। সে পথে বিভু দারেই একটি বাজার। সারাদিনের বিকিকিন শোহানে হয় মা। অপ্রাহে পর্যত তার ব্যুপ ব্যার। দিনের আলো নিজে এলেই সে বাজার সেন। আব বেসাতি চলে বাছি প্রথম বিভাগ প্রহার পর্যতি। পরিদিন সকাল থেকে স্থাদিত তার কর্মণিততা থাকে মা। প্রনিরার শাবু হয়ু সংধ্যা থেকে। এমনি- ভাবে দিনের পর দিন। তাই নাম তার সংখ্যা বাজার।

সেই শত্বর্গ আগেকার সংধা বাজারের পাশেই একট ছোট অঞ্চল। সকবীণ কটি গালির মধ্যে সারি মারি ছব। বেশির ভাগই বছটী। পাকা বাড়ির সংখা খুবই কম। সুবই একতল। এরই মধ্যে বিস্তৃত একটি নিষিশ্ব পলী। এখানে বাসিন্দানা সকলেই পসারিণী। স্বাই

সেখানেও সন্ধারে পর বেসাতি অরম্ভ হয়। কিন্ত সন্ধ্যা বাজারের মতেন প্রথম রাতে তার শেষ নয়। সারা রাতি সে যোগেই জুবিক্ত ভাটের সময়। র**জনী** জাগরণ। ঘ্**মশ্ত থাকে সারা** দিনহান । দিন সেখানে নিশাী থনা। ভার সার্যাসতর শেষে সবাই জেগে ওঠে। দেখা থায় নিবাসিনীদের। প্রদীপের কিংবা ল[্]ঠনের আলোয়। কোন কোন দরজায়। কোথাও অন্দরে। ওরই মধ্যে থাকৈ কিছা কিছা ভারতম্য। সমুস্তবের নয় স্কলে। ধরণ ধরণ রূপ গাল বাচি মালা ইত্যাদিতে নানা রকম। জীবনযাত্রায়ও। হবাই বারবধ[ু] বলে চিহ্নিতা। বেশির ভাগঃ সামায়ক নম সহচরী **থেকে বায়।** কিন্তু তার মধ্যেই কেউ এক বা একাধিক সংসংগ' জীবনযাপন করে চলে ঘরণী হয়ে। সমাজ সংসারের বাইরে ভাদের নবল প্রিবার গড়ে ওঠে।...

সংধ্যা বাজাবের সে প্রস্ত্রীতে ছিল এমনি এক শংগীর সংগার। তার চার কন্যা ওখন নিয়েকে শিশ্ব ও বালিকা বয়সী। এ কাহিনীর মানুর হয়েতে। তার ব্যাগিরী দুর্গালিনীর মানুর হয়েতে। তার ব্যাগিরী দুর্গালিকাদের নান হিরম্যারী, জ্যোতি-মধ্যা, বিভাগরী। ও স্বুরমা। শেষের দুর্গালিনা দুরিজনকেই স্পশ্ করেন ব্যাগিনা চারিজনকেই স্পশ্ করেন

চারটি পৃথকজিনীর কাছেই আলোকের বাংগ্রা এসেছিল। ভাগুজেমে, অভাবত ভাবে।

স্কান বাজারের অনতিদূরে আর একটি জন বসতি। এ লোবালারের চরিত্র একেবাবে বিপরীত। সামাজিক গৃত্স্থ প্রিহারের বাস এখানে।

হাতড়া-শিবপদুব সর্থাব বাদিকে সংধা বাজার। আর সেই পথ থেকে ভান দিকে বাঁক নিয়েছে খুবুট রোড। সেই দিকে। গেথানে পরে হয় কালীবাবনে বাজার, ভার পিছনে। মহিলক ফটক বলেও এলাকটি প্রিচিত। রামকুকপ্রও এখান থেকে বলা যায়। সেখন থেকেই আলোর আহ্রান আসে কিরণমুয়ী সুরুষাম জীবনে।

মালক ফটকের অশ্বাসে ছিল কৃষ্ণক্ষক।
ভট্টাচর্যের বাড়ি। শেই শৃতাব্দ আগেকার
কথা, বখন কালীবাব্দ বাজার গড়ে ওঠেনি। জনবিরল নিম্মবিল এলাকা।
সে সময় সপরিবারে তিনি সেখানে বাস

সাহিতা সংস্কৃতি জগতের সেকালে এক বহু, বিখ্যাত ব্যক্তি কৃষ্ণক্মল। প্রথমে পেসিডেন্সী কলেজের অধ্যাপক, পরিণত অধাক্ষ তিনি। বয়সে রিপণ কলেজেখ বন্দ্যোপাধ্যায়ের স্বনামধন্য স্কেন্দ্রনাথ অনুরোধে সাংতাহিক 'হিত্রাদী' পরিকার (১৮৯১) সম্পাদক হন কফকমল এবং ৩০ বছর বয়সী রবীন্দ্রনাথ তার সাহিতা বিষয়ে রবীন্ত-বিভাগের সম্পাদক। এ নাথের সমকালীন বিবৃতি পাওয়া যায়--'আমাদের হিত্রদী বলে সাংতাহিক সংবাদপত বেরোচ্চ। একটি বড রক্ষের কোম্পানী খালে কার্যে প্রবন্ধ হওয়া যাতে। ২৫,০০০ টাকা ন্লধন। কৃষ্ণক্মলবাব্যুকে প্রধান সম্পাদক আমাকে সাহিত্য সম্পাদক এবং মোহিনীকে রাজনৈতিক সম্পাদক নিয়ক্ত করা হংয়াছ। বাংকম, রয়েশ দত্ত প্রভৃতি অনেক ভাল। ভাল লোক লেখা দিতে প্রক্রি হয়েছেন। বিশ্বভারতী প্তিকায় (প্রাবন ১৩৪৯ উন্ধৃত পত্ৰ) সাধনা বাহির হইবল প্রেই হিতবাদী কাগজের জন্ম হয়। যাঁহারা ইহার জন্মদাতা ও অধাক্ষ ছিলেন তহিচাদের মধ্যে কৃষ্ণক্মলবাবু, সুংরেন্দ্রবাব, বড়ালই প্রধান ছিলেন। কৃষ্ণকমলবাব্যুও সম্পাদক ছিলেন, সেই পরে প্রতি স্পতাহেই আমি ছোট গ্ৰুপ সমলোল ও স্বিহর: প্রবাধ লিখিতাম। আমার ান্ট গলপ লেখার স্ত্রেপাত ঐথানেই।' (আতা প্রিচ্যু)।

বিশ্বমার্ণের বিশ্যাত পজিটিভিন্টে নানীধাঁ, তাঁক্ষ্মা পাড্ডে ক্রক্রমাস ভাটান্তার্থ আমি positivist আমি নাম্ভিক'—
এই তাঁর আত্মপ্রিচ্য়। জামান দার্দানিক কোতের দিয়া তিনি। ভারত্যি পহিকায় (শ্রাবণ, পৌষ ১২৯২) তিনি দুটি প্রবংশ লেখেন— 'Positivism কাহাকে বলে?' ও 'প্রামাণিক ধর্ম'। আর দার্শানিক মনীধাঁ শ্বজেশ্বনাথ ঠাকুর তার প্রতিবাদ করেন 'পজিটিবিজম ও আধ্যাত্মিক ধর্ম' প্রবংশ্ধ। শ্বজেশ্বনাথ দে সময় কৃষ্ণক্রমাস সম্পর্কে বলে, ভ্রুক্মাস বিশ্বেলন,

He is a terrible fellow. He knows how to write and how to fight and how to slight all things divine......

এ হেন কৃষ্ণকমলের বাস ছিল হাওড়ার খুরুটে রোডের সেই মলিক ফুটকে। সংধ্যা বাজার থেকে মিনিট পাঁচেকের পথ তাঁর বাড়ি। তাঁর গৈতিক নিবাস ছিল বিভন গুড়ীটে, মিনাভা থিরেটারের কাছে। তাঁদের বংশ পশ্ভিতের বৃত্তিজীবী। তাঁর পিতা ছিলেন বিভন গুটীটের এক পথিবারের গারু। তাঁরাই মুলিক ফটকে নিজেদের একটি বাড়ি ক্ষক্ষকালকে নাম্মান্ত মূল্যে বিজয় ক্ষে-ছিলেন। সেই স্বাহুই ভার রামক্ষপণ্রের বাস।

বাভিজীবনে মহাতেজস্বী ছিলেন ক্থ-কমল। নিজে বা নায় বিবেচনা করতেন, কারো কথায় তা থেকে নিব্ত হতেন না। সংকারের একটি বলিষ্ঠ সভা ছিল তার চরিতে।

কিভাবে জানা যার না সন্ধ্যা বাজারের সেই নবালিকাদের কৃষ্ণক্ষল গ্রেছ আসা-যাওয়া হত। হির'ময়ী জ্যোতিমহিনী তখন নিতাশ্তই বালিকা। আর কিরণময়ী স'ুরয়া

কৃষ্ণকমলের পত্যীও ছিলেন অতি দয়াবতী। প্রদ্রেংকাতর অত্তর তালু। তিনি বালকাদের প্রতি সদয় বাবহার করতেন। দ্বামী স্থা দাজনের কাছেই সাহাযা পেত মাতৃহারা চালু ভাগনী। আদের অসামাজিক ভবিষাতের কথা হয়ত কৃষ্ণকল্প ভেবে-ছিলেন। এই নিম্পাপ বালিকারা একদিন তাদের বংশগত গলানিময় ব্যবসায়ে লিণ্ড হবে, এই চিন্তায় হয়ত ক্লিণ্ট হয়েছিলেন তিন। বিদ্যা শিক্ষার মধ্যে তাদের মার্ভির উপারের কথাই তালি মনে হয়। **শাধ**ু অথ সাহায্য না করে ভাদের পরম মগালের জনোও সচে^ত হন তিনি। আর স্থিয় করেন, যেন তাদের ম্থান হয় স্ভুথ সমাজজীবনে। কুঞ্-উদ্যোগী হয়ে হির**-ম**য়াী জ্যে ভর্মারাকৈ সব ছেয়ে নামী বালিকা বিদ্যালয়ে প্রবেশ করিয়ে দিলে। কিংভ তাদের দিদিয়ার আদৌ মত ছিল নাওঁ ধিষয়ে। হিরণময়ী জ্যোতিমায়ীও বংশের পেশা নিয়ে থাকবে, উপার্জন করবে-এই ভিল তার একান্ড ইচ্ছা। কিন্তু কুফাক্মল 🧒 তাল পত্রী সাহায়া করতেন বলে সে নারী বাধা দিতে পারোন।

রুক্তমন্তের বাবস্থাপনায় সেই উচ্চ বিদ্যালয়ে শিক্ষা পেতে থাকে হিরণমাণী ও জ্যোতম'রা। এমনিভাবে কিছকোল যার।

ক্ষকমালের বতথানি ইচ্ছা ছিল, তেমন হলনা বটে। কিন্তু শিক্ষার আলো থেকে বিগত হরনি হিরন্মারী জ্যোতির'রী। আর তাদের অভিচাকিন আভিসন্ধিত চরিতার্থা হতে পারোন। দক্তেনে কেউই কিরে যার্নি সেই ক্যানিমার পেশায়। হিরশ্যারীর স্ব কথা জানা যায় না। কিন্তু জ্যোতির্মারী রাপন করোখন নিক্কস্থ সংসার জীবন।...

তালপর কনিষ্ঠা স্বুজনও একট্ বড় হল। তথন তাদেরও বিদ্যালয়ে দিতে চাইলেন রুফ্রকমল। কিন্তু এবার তিনি বার্থ হলেন। কিরণময়ী সংস্থাকে বাইলী হ্বার বাবস্থা করে তাদের দিদিয়া। ওস্তাদের কাছে নতাগতি শেখাতে থাকে। অন্প্রাক্রমেই প্রকাশ পার দুর্জনের সংগতিকঠ। আর
করী তদের পোশাদার গারিকা নর্ভকীর
জন্যে প্রস্তুত করে। বাইকী হয়ে তারা যেন
অনেক উপার্জন করতে পারে। লেখাপড়া
শিথে কি হবে? তিবাচরিত বংশের ধারা বেমন
ছিল, তেমনি চলকে। তাদের দিদিমার এই
একমায় লক্ষা ছিল কীবনে।

তথ্য কৃষ্ণক্ষল বিবন্ধ হুরে তাদের সাহাব্য বৃধ্ধ করে দিলেন।

কিন্তু তিনি জানতেন না একটি কথা স্বর্মা কিন্তুণ তাঁর পরিবারের দাক্ষিণা থেকে ব'লুড চুর্যান, নাচ গান শেখা আরুভ করেও।

কুক্তমাল পরে রামাক্ষণপুরে অনেক সময় থাকতেন না। বেশিরভাগ বাস করতেন করকাভার। বিভন গার্ডেনের দক্ষিণ পূর্ব কোণে একটি বাসায়। ভার তার ভাজাতে কিরণ স্বামাকে তার প্তাী সাহাব্য করতেন। মাতৃহ নিদের প্রতি তার দ্রা ছিল প্রবিং।...

এইডাবে সংখ্যা বাজানের নিষ্কিষ্
পক্ষীতে দটে সংগীত দিলপার জন্ম
হরেছল। পৃথক পদবল থেকে যেমন দেখা
দেয় কর্মালনী। অবজ্ঞাত জগতের
বাসিন্দা। তাই দে জাবিনের সংবাদ ক্ষপ্রাণা।
ক্ষেম করে সেই পারিখেদে দুটি প্রতিভারে
বিকাশ হলা কিভাবে স্কোনের সংগীতকাবনের সচনা বা ওপতাদ রামকুমার মিগ্রের
কাছে তালিয়ের বার্ক্থা হয়, ভারপন কোন
সময় থেকে সংগীতজগতে প্রতিষ্ঠা পান
কিরণমরী স্কুরমা—এসব তথ্য কছনুই জানা
যার না। করে কোথার কত বরুসে দুজনের
মড়া হরেছিল সে সব কথাও অজ্ঞাত। তাদের
ন্তোর ওপতাদের কিংব। স্কুমার কীতন
গানের গারের নাম প্রবিশ্ব পাওয়া যায়নি।

যে বিবরণ জ্ঞান গেছে তা অতি সামানা। হাওড়ার সেখান থেকে পরে ডারা কলকাতা-বাসিনী হয়েছিলেন। সব সময় যে দভেনে একত্র যাপন করতেন, তা নয়। তাল মধ্যে এক সময়ে থাকেন সিমল। অন্তলে। আর এক সমরে শ্যামবাজার দ্রীট ও শ্যামপ্রকুর শ্রীটের সংযোগন্থালে। এই বাড়িট নাকি সারমার নিজম্ব ছিল। এখানে তাঁর কাছে কিছুকাল বাস কগতে আসেন কিন্নগায়ায়ী। তা হল তাদের পরিণত বয়সের কথা। সারমার ব্যক্তিগত প্রসংগ আর কিছাই জান্য বারু না। কিন্তু কিনশমর্থীর কথা কিছে আছে। একাধিক ব্যক্তির আশ্রয়ে ও সংস্থেশ তিমি হিলেন বিভিন্ন সময়ে। এক কন্যা ও একটি প্রতের জন্নী হন। গহ্বধ্রে জাবনে প্রবেশ করেছিল কন্যাটি: আর কিরণময়াীর পাত্র সল্লাদী হয়ে বিশ্ববিখাত ধ্মীয়ি, সেৱা প্রতিতানে জ্বীরন উৎসগ[্] করেছিলেন।।...

আগেই বলা হয়েছে, দুই ভাগনীর মধ্যে গামিকা বলে কিরণমানী বেশী প্রসিম্পা হন। তার করেকথানি গান রেকড হয় প্রামোক্রেরের প্রথম বুগে। কিন্তু সেসব রেকডেপ তালিকা বা কোন পারেয় ও সম্পান পাওর যার না। সেকাপের প্রামোক্রেন জগতে মিস্কিরণ বলে এক গায়কা ছিলেন বেশ নামা বিভিন্ন রাগে তার অস্তত ১৫ থানি রেকড ভালিকা পাওরা বায়। কিরণমানীই কি মিস্কিরণ? এ প্রশেষ নিশ্চিত উজা সেবে কে: একথা জানবার কোন উপায় আছে কি ?

হোন মহাকাল।...

শ্বরণের পারাবারে কিরণমর্থার আ একটি কাহিনী ভেলে আসে। এক ৫ খণ প্রস্পা। ছিল্ল খিল একটি খটনারাদ্র। তা উল্লেখ না করতে পারলেই স্কুথ্ধ হত কিন্তু সে যুগে একটি তামস দিক, পতিত জাবনের এক মুমান্ত্রদ ট্রাজেভি আর এন প্রতিভাষরী শিল্পীর চরম আব্যানন দৃশ্টাত্তখনর বিষ্তুত্ব করতে হল এথানে।

৯১০৫।৬ সালের কথা। সেকালে
নাগদ সমাজের একজন প্রতিনিধি বলা হা
ভাকে। একাধারে ভিনি কলকাভার এক মং
ধনীদ্ধ দৌহিত এবং ধণোরের জনৈক মন্ত
উপাধিক ভূস্বামীর পোষাপ্ত। ভো
বৈলাসিভাই ভার জাবনকর্যায় প্রধান স্থা
নির্মেছিল। আর তার এক মূখা উপকর
ছিল—বাগানবাড়ি ও রক্ষিতা। সংগতিগাধে
ভানো না রপে যোবনের জনো, সৌভাগা কিং
দভোগান্তমে জানা যায় না—কিবলায়া ভখ
তার আশ্ররে বাস করতেন। বেলগাছিয়ার খা
পার হার্ম ভার দিকের একটি প্রথে বাগান বাড়ি। সেখানে ভিনি করণমন্ত্রীকে প্রাথেন
ভার মাঝে মাঝেই সেখানে ভাসতেন সংধ্যা
পরে। কখনো বাত্রিবাসপ্ত করে বেতেন।

একদিন অকম্মাৎ এসে দেখেন—নিচ্চ নিক্সককে কিরণম্যার সংগ্রহ আর এ ব্যক্তি:

বাইজার এত বড় চারচ্চতি সে ক্রেথ বরদাসত করতে পাধকেন না। আপন হাব দাসি দিলেন তম্পণেউই। চাবাকের জাঘারে কিলগমরীকে বাগানবাড়ি থেকে বিভাড়িত করে ক্ষাপত হলেন।

অচিনেই অবশ্য একটি রক্ষিতা এটে তিনি প্রণ করেছিলেন কিন্নগ্রয়ীর অভাব-জানা বায় একথা।

্কনতু জানা যায় নি ক্যাঘাটে জজারিতা কিরপময়ী সে রাতে বেলগাছিন থেকে কোথায় গিয়েছিলেন। কার দয়ার পাত হয়েছিলেন হস্তভাগিনী শিলপী! কিং কেমন করে, কস্ত দিন পরে তদ্ধি পুনর্বাক হয় তারপর।

আধো-আলো আধো-ছারার বেরা স্থ হলের প্রতিমা। জানা অজনার আলোহ আধারে ক্রিবণের লেখা।

-- रिनीभकुमान मृत्याभागात



প্রভাটে মামটা ওকে কে সংগ্রিক এবং **হে**ল দিয়েণ্ডল কেটে জন্মধাৰ জন্য ভৱ সাধা-মা-কেইই আছ ভাব বেশ্চ হাড় জনসাধ্র विश्व अधार ব্রুলালভাবিষ্ঠান্ড টিলে लक्स्याक्षिकाकाता किया ক্রাক্রের কিং ক্রাক্রের বের ওবং আন্নার্ ক্রোট্রেল কর্তুর কজে চিয়েছিল্ছ। এই ক্ষেট্র মহন্তবন শহরে আমার বি নিউ প্ৰথাক ভোটেল এন্ড বেপ্ট্ৰেন্ট মেল্টেই ক্ষাপন্য নম। স্পারে ও সংখ্যতে 🔞 বিক শালৈ পাওয়াই ভার তার ওপর ছাটিইটা আকলে ডে। কথাই নেই। এ রক্ত হোটেলে **৫ ছোক্যার সাতজ্ঞা**র MINE CALLE ত্তপস্থার ফল। বিষয় তার জন। একটা ক্ষুক্তক্রার আছে । গাডের কাজ পের হলেও **হাজ অনুস্ব পাওর**ে হাবে না[্]যাকে মনে **এবট গা-হাভ-পা টিলে দিক। বাজে**ট

কলেন্ত্ৰ) একটু, ভারাম পেডাগ্রা কলনত বা একটু সুবা ডেল মাজিল কাছে দিছে।

এই নিয়ে সারগের করা প্রায় COCCE? হিয়েছি কিন্তু য়তই ব্বি-বাক কাজক্ষ ভ ভালই করে। **ওত ভাঁড়ের চাণ সাম্পার** ৬ই এন ভিটে 'বয়' ধকতে ত্রেপার আছে বছর দশেকের এক ছোকরা। কিন্তু ওই পনের-যোগ বছর বয়সের ভিটো ভারেক-রক্ম খন্দেরের ভারেক-র**ক্ম ফ্রেমাস** নি করে যে সামলায় ভাবতে গিয়ে মাঝে মাঝে আমিই জাবাক হ'লে যাই। ওকে েডোলে আমার এই জারগায় ভাশ্তত দুটো াক রাখতে হবেং শর্চ বৈড়ে **খা**ওয়াই ৮য়ে তাই ওকে আর ঘাঁটাই না। কিল্ছ সংবাদিনের খাট্রনির পর ও ম্যা**স্ভে ক**রি অভারে হে আরামটা দিউ, সেটাও ভুলতে পর্বির রা। ছেকেরার একটা ব**মাজ্ঞানও** কি থাকাতে নেই? রাশ্ডার থেকে জুড়িরে এনে হে; তেবেক আগ্রন্থ দিক, থেতে ছিক, পরতে

দিলা, সেই অমদাভার একটু সেবা করনে কি তোর মহাভারত অশ্বরণ হরে হৈছে?

অনেকদিন পরে মতেইক চুকুতে দেখলাম হোটেলে; কেল বৈকে ছাড়া পেরেহে ভাহলে। ওর স্থেগ দ্বারজন পারিবদ সব সমরেই থাকে। ওদের আবার আলার থাতির করতেই হয়। য়া দিনকালা পড়েছে। একটু বুঝে চলাই ভালা। একমুখ হৈসে মটেকৈ অভাগনা করলামঃ

'कि गाता। करव कितरण ?'

একটা অখলীল বিশেষণ প্রয়োগ করে কালো কালো দতিগুলো বার করে মাল্টে-গুল্ডা বললো:

্শবশ্ববাড়ী থেকে ছাড়তে কি জার চায় ?

মাস্থানেক কাটিয়ে এলাম।'

তারপর সে স্বিস্তারে নিজের বাহাদ্বির কাহিনীর বর্ণনা দিতে শ্র করলো—ফিভাবে এক গাড়িওঃলাবাব্বে বেশ করে পিটিয়ে হাসপাভালে পাঠিয়েছিল। ব্যাটার। গাড়ী চড়বে আরাম করে, টাকার গ্রহ্ম আরু কি!

ভিটোকে চায়ের ফরমাস দিয়ে রাস্টার দিকে তাকিয়েই তীক্ষা একটা শিস্ত দিয়ে েখ টিপে একটা অম্লীল মান্তব্য করলো মণেট। সংখ্যে সংখ্যে স-পারিষদ হেলে গাঁডরে পড়লো। ওদের লক্ষ্যস্থলের দিকে ভাবিয়ে দেখলাম, আমার চোটেলের পাশের েলর কমলা। বোধ্তয় অফিস থেকে ফিবছে। ভৌলফোনে চাকরী করে মেয়েটি। বেশ সংখ্যর আর শানত প্রভারা। আলই মনে হয় দেখলে। মনেট্র শিস্থার সিন্তী হাসিতে বিরত হয়ে লখনা লখনা পা ফেলে ভাড়াতাড়ি গলিতে **ঢ**ুকে পড়লো কমলা। আশ্চয় সাহস ভিটোর। দা আনার কর্তে ও একেবারে মন্টের টোবলের দাঁড়িয়েছে। এ ছোক্রাটাও আডভাবাজ হয়ে উঠলো নাকি? মন্টে ততকলে টোবল চাপড়িয়ে একটা হিন্দী গান ধরেছে বিশ্রী হেংড়ে গুলায়। এ প্রিন্থিতি অংবচিত্রকর লাগছিলে। আনার। তাডাতাাড় ভিটেকে ধমকে উঠলাম। মনেট্র দিকে আর একবার তাক্ষা দুন্টিতে তাকিলে ভিটো ভিতর দিকে চলে গেল। চাউনিটা খুব মোলায়েম বলে আমার বোধ হল না।

কিন্দু আমার বোধহয় ভুল হয়েছিল। এরপর ভিটো মন্টের আনুরাগী হার উঠলো। মন্টে রোজ আসা শুরু করলো। আর কাবনে অকারনে ওর টেনিলের আশে-পাশেই ভিটোকে ঘোরাজেরা কনতে দেখভাম। মন্টে আর ভার শাদ্দ চরদের কথাবার্তা মনোযোগ দিরে শাদ্দাতা! আমার একটা ভার বার্তার করেছে মন্টে গ্রেলা ট্রিটি বরসের ক্রেক্টা হাল কাভকার ছেন্টে মন্টে গ্রুভি স্বরসের না মন্টের ভ্রো। কিন্তু করতে শালাবার তিত্ত করা মাইনেতে এত কেশী কাভ আর কাবনে মাছ শেকে শান্তম

্লামি ভিটো **আরু মণ্টের** ওপর চোর্য নাম্পান

দ্বি স্কুরেক সকটে আন্তেনি। ভারণর হথন এক শতুন এক বাহাল্যির কাছিনী लिया का देनानीर व्यायक्क कमना कर टिंग्स शरक शिद्धा बाकरव । क्यानारक कान:-স্রণ করে ওদের বাড়ী শর্মত বিয়েছিল क्यांक काल तारत। बाब ब्रागिरस तिज्ञास मान्छे সাক্রেদদের দেখাজিলা, শের অব্ধি কমলা কিন্তাৰে ছাটতে লাবা করেছিল। শেষে বললো দেখবি, ওকে বাগে আমি আনবই। একেবারে টাাকসিতে তলে হাওয়া হবো তবে আমি মন্টে সামন্ত। হ্যা হ্যা করে। ভাসতে লাগলো সে। আমি ভর পেলাম। वाद्यान्ति प्रधात्मात कत्ना मत्ये नर्वाकक्ष् করতে পারে। কোন মেয়েঘটিত কেলেওকারি আমার হোটেলে হোক এটা আমি চাই না। ভদুপাড়ার মধ্যে হোটেল। বদনাম হয়ে হাবে। কিম্তু আশ্চর্য আজ ভিটো। মনেট্র টোবলের পাদে একভাবে দাঁড়িয়ে আছে। **ाका करनकरन काथ मृत्यो प्रत्येत** মাথের ওপর। চা আনতেও ভলে গেল নাকি ?

ক্ষলার বাবাকে এরপর থেকে দেখতার মেরের সংগ্রা ব্যুদ্ধ মানুষ। লাঠি জর দিয়ে বাসস্ট্যান্ড পর্যাত পেণিছে দিয়ে আসতেন। বাবা-মেয়ের সংসাবে আর কোনো তৃতীয় প্রাণী নেই। ডিউটি থেকে ফরবার সময় কমলা বাস থেকে নামলেই ভিটোকে দেখতাম তাঁরের মতে ভূটে হোটোর থেকে বেরিয়ে হেতে। কমলার সংগ্রা চারক যেত। খুমন ফিরে আসত যথানীতি নির্বিক্ষর। ওর সংগ্রা হো কমলার আলাপ আছে ওর হাবভাব দেখে । বোধা যেতানা। কমলার হনত চাউটানটাও সেন ডানেকটা সহজ হায়ে আসে ডিটোকে দেখলে।

করেকদিন ধরে লক্ষ্য করছি ভিটো যেন কি রক্ম অন্যামনক হয়ে থেছে। কি চিন্তা করে, আব মাঝে মাকে চোথ দ্বটো জ্বলে ভঠে। মন্টেও আংসনি কংগ্রুদ্দন। এয়ে গমেরাদন শর মন্টে এক নতুন খবর নিরে এক। আমাদের শহরের উপকঠে যে ফিল আছে, সেখানে পানী শিকারে যান্ডয়া হবে। এই শীতের সময়ে অকন্ত পানী আসে সেখানে। এয়ারগান জোগাড় হয়েছে। ভার কেউ না গোলাও একলাই যাবে। ও যান্দা গোঁধরে, এই রক্মই করে। ইঠাং ভিটো বলে বস্লো আহাকৈ নেবেন? মটেই বললো, 'সতির জানিস?' ভিটো জানে বলার বললো, 'আহি আবার জানি না। হাকগে, ভালই ছল। মাগণ্ঠ বয়ে নিয়ে হৈছে পার্বার।'

ভিটো কখনও ছুটিছাটা নেয় না। ভাই বখন ও মাত একদিনের ছুটি চাইল অমত করতে পারলাম না। ওকে চটানো যায় না। বিশেষ করে মনেট যখন এর মধ্যে লড়িত। মনেটর স্বজারা কেউই লেল না। তাদের এক একজনের ইপাণ এক একরকম। সরগরম বালার ফেলো মনেটর সংলো পার্থী শিকারে যান্তরাটা তারা বোপতায় নাম্ধমানের কার বলো মনে করলো না। ভাই কোন না। কেন ছুতোয় ভারা কটিয়ে গেলা। কিন্তু মনে করলো না। তাই কোন না কেনে ছুতোয় ভারা কটিয়ে গেলা। কিন্তু মনেট শিকারা এই খেভাবের সাহাদ্ধির নেগুলার লোভে একলাই ভিটোকে মিয়ে রগুনা হলা।

সে রান্তিতে তিটো ফিরলো না। একট্র চিন্তিত হলান। ফিরলো না প্রদিন সকালেও। গাল্ডাটার সংগে হেতে না দির্দেই হতো। হাজার হোক মা-বাপ মর। ছেলে ছোট থেকে এত বড়ার আমার কাছেই হলো। বিশদ কিছু হলো না তো? মনটা খারাপ হয়ে গেল।

সম্পের নাগাদ প্রবিশের গাড়ী এল ভিটোকে নিয়ে। তাদের কাছেই শানেলাম দুর্ঘটনার কথা। ভিটো আনাড়ীভাতে নোকো বাইছিল। প্রকান্ত বিশের মাঝামাঝি চলে এসে এককাঁক পাখী দেখে মন্টে উঠে দ্যিভয়ে গুলি করতে গৈছে টাল সামলাতে শারোন। লোকে। উলেট[া] একৈবারে গভ**ী**র জলে। ভিটো সাঁতরে কোন**রু**মে কলে এসে উঠেছে। কিন্ত মণ্টে স্পাতার জানতো না। ভার দেহটা এখনও খাজে পাওয়া যার্যান। ভিটোকে কাদতে দেখে প্থানীয় লোকজন পর্নিশে থবর দেয়। বেচারী একেবারে ভেন্সো পড়েছে। তাকে জিজ্ঞাসাবাদ করার পর প্রিশ পেণছে দিয়ে গেল। এটা নেভাত্ত দুর্ঘটিলা। তাই এই নিয়ে আর **হৈ**ইচ **र्म सा।**

জাঁবন আবার আগের মতই স্বাভাবিক-ভাবে চলতে লাগলো। ভিটোও আমার হোটেলে যথারীতি মন দিয়ে কা**জকর্ম** স্বছে। শা্ধা ওর চাউনিটা আরে আলের মত তীক্ষা জবলজবলে নেই। অনেক কোমলা হয়ে এসেছে।





(0)

অধিতবাব, তাঁর বইরে লিখেছেন—
শারংচন হবন বংগান হইতে পেগতে
শির্মাছিলেন, তথানও তাহার উচ্ছাংগল জবিবন
বাটা পারেপারি বজার ছিল। রজেণ্ডনাথ
বংলাপাধার লিখেছেন—'তিনি তখন উচ্ছাশথল কবিন মাগন কবিতেছেন। শান হইতে
মণ্ডলাবার তাহাকে বড় একটা অফিনে
শাওৱা যাইত না—শাব-পবিচয়।

বজেনবাব্র শবং-পরিচয় গ্রেম্বর এই লেখাব মধ্যে হে জন আছে, অজিতবাথ; তা ধরতে ও পানেই নি, অধিকক্ত তিনি চক্তেমবাব্র কথার সংগে শরংচাক্র (পুণা হাওয়ার আংগ্র জাবিনটাও প্রাপ্তির উদ্ভেশ্যর ছিল বলে হোল করে দিয়েতেন।

শ্বংচন্দের পেণা যাওয়া, সেখানে থাকা

এবং সেখানে ভার চাকারর কথা, শরংচন্দের
রেগানুনের ঘনিন্ট বন্ধা গিরীন্দ্রনাথ সরকাব

ভার রক্ষাদেশে শরংচন্দ্র প্রক্থের একটি
অধ্যার বিশ্বতভাবেই নিথে গেছেন। গিরান
যাব্ব ঐ লেখার মধ্যে এমন কথা কোথাও

খ্যাক্ষরেও নেই যে, শংচ্চন্দ্র পেগাভে
উচ্ছিগ্রল জাইন হাপন করতেন। বরং ভার
কোথা থেকে এইটাই জানা যায় যে, শরংচন্
পেগাভে ভার বাড়িতি থেকে ভারতার

ক্রিন যাপন করতেন; আর কিছ্দিন একটা

ফ্রাকার চেন্টায়, গানর ব্যবসায় এবং উকিশ

হওয়ার আশায় কাটিয়েছিগেন। নাহিতা
চণ্ড করতেন।

গিরীশবাব্র বইতে দেখা যায়, শরংচাদ শেগতে গিয়েছিলেন গিরীনবাব্যর সংগাই। শরংচন্দ্র পেগাতে পিয়ে গিরীনবাবার সংগেই পি-ভর্বালাউ-ভি প্রথমে ছিলেন েশিগালুর বিভাগের আসিস্টান্ট ইজিনীয়ার মিঃ সি কৈ সরকারের ্বাড়িতে। মিঃ স্রকারের বৈৰ্যিততে কয়েকদিন থাকার পর শেগরে উকিল অধিনাশ্চন্দ্র চাট্টাপাধ্যায়ের বাড়িতে গিয়ে থাকেন। গিরীনবাব, লিখে ছেন—'শরংচন্দের স্ঠিত আলাপ-পরিচয়ে (মি: সি কে সরকার) বিশেষ আনন্দিত হুইলেন। মিঃ সরকারের আতিথ্যের উপর বিশেষ অত্যাচার হুইবে ভারিকা শরংচন্দ্র

একট্ সংকৃতিত হওরার আমি তাঁহা প্র অবিনাশবাব্র বাড়িতে রাখিয়া রেণ্ণান্ন সেলায় এবং পর স্পতাহে আবার পেণা্তে ফিবিয়া আসিলাম।' সি কে সরকার ও অবিনাশবাব্ এবা উভরেই ছিলেন গিরীন-বাব্র বংধা।

গিরীনবাব, তাঁর বইয়ে অবিনাশবাব্র বাঢ়ি কোথায় ছিল এবং কিভাবে তিনি শরংচন্দ্রকে গ্রহণ করেছিলেন, এ সম্বর্ণেধ किङ् ना तमान ७. এ तिसास आगि यः জেনেছি তা এই-অবিনাশবাব্র বাড়িছিল ठाना कामात देवमानाती शास्त्र। अडे देवमा-বাটী ও শরংচদের জন্মস্থান দেবানন্দপ্রের দ্রত মাইল বার। তাই পেগুতে সেই বিদেশের অবিনাশবাব শ্রংচন্দ্রকে নিজের प्राम्यत लाक हिस्मान माम्यत्रे त्रार्थाञ्चलन। শরংচ•দু অবিনাশবাবাুর বাড়িতে তাঁর 🔻 🖘 ছে ছিলেন পাঁচ ছ' মাসের মত। এই সময়ই অবিনাশবাৰু সি কে সরকারকে বলে ভার অফিসে শরংচন্দের একটা অস্থারী চাকরিও করে দিয়েছিলেন। সে চাকরিটা ছিল ছাস্ তিনেকের মত।

আবিনাশবাব্ এই সময় কঠিন অস্থে আক্রান্ত হওয়ায় কলকাতায় চিকিৎসা বরাবার জন, বৈদাবাটীতে চলে আসেন।



আসবার সমর তিনি তার বাড়িত ও সেরেক্তার প্রতিনিধি হিটাবে পেগার উকিজ ন্পেণ্ডকুমার মিল্লকে রেপে আসেন এবং ন্বংচদ্র প্রবিং তার বাড়িতেই থাকবেন, একথাও নপ্রেন্ডবির্কে বলে আসেন।

ন্পেনবাব; খ্রংচন্দের সংগ্র পরিচরে ও তার বাবহারে মূল্ধ গুল এবং তাকে নিজের ছোট ভাইয়ের মত দেখতে থাকেন। তিনি শবংচন্দকে বেকার দেখে তার চাকরির চেন্টা কিন্তু চাকরি না পাওয়ার 🗷 তাকে নাশালাবিনে নিজের খ্যুড্রুতো ভাই পি কে মিতের ধানের বাবসায়ে লাগান। ধানের ব্যবস্থ শরংচন্দের ভাল না লাগায় তিনি ফিরে আসেন। নপেনবাব, নিজ বাহে। শবং-চন্দুকে বমী ভাষা শেখানোর জনা একজন গাছশিক্ষক রেখে ভারির উকিল কর্বারও চেণ্টা করেছিলেন। কিন্তু শরংগন্দ তাত অঞ্প সময়ে বমী ভাষায় পরীক্ষায় পাল করতে পা<mark>রেন নি। গিরীন</mark>বাব্ তার বইয়ে এসব কথা পরিষ্কার করে লিখে গ্রেছন। গ্রিরীন-বাব, লিখেছেন-শবংচন্দ্র ন' নবাবার কাছে প্রার বছর খানেক ছিলেন

নাপালাবিনে ধানের বাবসা, পেগ্রেত চাকরি ও ওকালাত কিছুইে না হওয়েয় নাশেনবাব শাকে তাঁর অপর খুড়ত্তাে ভাই রেখগ্নের একজামিনার পাবলিক ওয়ার্কস আমকাউণ্ট অফিসের ডেপ্টি একজামিনার মনীশ্রকুমার মিত্রকে বলে তাঁর অফিসে শরংচ্চন্তের চাকরি করে গিরোছলেন। শরংচন্দ্র রেক্সনে শেষদিন প্যশ্ত এই চাকরিই করেছিলেন।

টা প্রতিভোগের আরোজন করেছিলেন ।

ই ভোজে অবিনাশবাব্ নিজের করেজ্ঞান

ব্বেও নিমাল্য করেন । সেই নিমাল্য

ভার অবিনাশবাব্র বংধা নি কে সরকার

লার মজার গংশা বলে স্কলকে খুব্

সিরোছিলেন । তার গালের পর প্রতির

শর্কারে মিশ্রির ভাক, বাল্ডের ক্লরের ও

ভিতর টাপুর টুপুর শব্দের মধ্যে স্রভাপী পরহাল্য তার স্বভাবস্তাভ মধ্রকেই করেকটি গান গোরে স্কলকে মাণ্য

রালেন । ভাবকে পরহালের প্রতাক গানটি

প্রাভাবের মান্যর পরহালের প্রতাক বানিট্রের

বিবাবা পরহালের গানে যারপারনাই প্রতি

রো তাকি তার বেংগ্নের বাড়িতে ধাবার

ন্যা নিমাশ্রণ করলেন।

অবিনাশবাব্ বংশ্বাশশব সহ শিকাবে বরোবার সময় শরংচন্দকে সংগা নিতেন। গ্রাছাড়া শরংচন্দ্র অবিনাশবাব্র বাড়িতে এতটা নিজের লোকের মতন হয়ে গিরেছলেন যে অবিনাশবাব্ সংগো না থাকলেও তিনি অবিনাশবাব্র বন্দকে নিমেই অনোরে সংগো শিকারে যেতেন। এসৰ কণাই গরীনবাব্ তার বইয়ে লিখে গেছেন।

অবিনাশবাব সুশ্থ হয়ে প্নরায় বর্মায় ফিরে গেলে, শরংচনদ্র তার এই উপকারী ও প্রথেষ কাধ্যর সংগ্য বরাবরই যোগস্ত রেখেছিলেন। অবিনাশবাবাত্ত শরংচন্দ্রকাহিত্য সাধনার জন্য সব সমরেই উৎসাহ দিকেন। এইজনাই ১৯২৫ খার ৮ই ফেব্রুয়ার তারিথে বৈদাবাটী ইয়ং মেনস্ এসোসিয়েশন বৈদাবাটীতে শ্রংচন্দ্রক যে সুম্বর্ধান জানিয়েছিলেন, সেই স্বর্ধানার উত্তর দিতে গারি তিনি সক্তজ্ঞ-চিত্তে বৈদাবাটীর এই অবিনাশবাব্যুর কথা উল্লেখ করে বল্লেজিলন —জলাধর সেন এবং অবিনাশচন্দ্র চাট্রোধান মত আমার পিছনে লেগে না থাকলে আমার মত অকস্ লোকের পক্ষে এত লেখা সম্ভব হত না।

শবৎচন্দের সেদিনের সেই ভাষণ বৈদ-বাটা ইয়া মেনন এসোসিংরশনের বারিকি বৈরুদ্ধির পাতায় আকও দেখা আছে। ১৯৫৮ ধ্য এই ইরং ফেলস একোসিনেশানের সূত্রণ জরকতী উৎসবের সমর হৈ ন্যারকজ্ঞ প্রকাশিত হরেছিল, সেই ন্যারক গ্রান্থর সম্পাসক বীরেন্দ্রনাথ গ্রান্থ গ্রান্থর ক্রান্থরিক। কর্মান্ত্রান্ত্র ঐ ক্যারকগ্রান্থের মুদ্রিত করেক্ট্রন।

ब्राक्तनतारः विद्यासम्मान्तरम् द्रमन्द्राहरू त्य अधिक कार्काव कार्याष्ट्रणन क्रांपान क्रांपान উপর্ওয়ালা ভিলেন প্রে'ছে মিঃ সি কে সরকার। সি কে সরকার হে। অবিনাশবাবার तस्य तका गतरहारमत् हार्कावतं आहा व्यक्ति পরিচিত সে কথা আগেই বলেছি। শ্রংচন্দ্র যাদ উচ্চ খ্যল জীবন যাপন করে শনি থেকে মংগলবার পর্যান্ত অফিস কামাই করতেন (বেটাকে অজিতবাব আবার গবেষণা করে বলেছেন, শরংচন্দ্র ঐ কদিন নির্মিত পতিতা-লয়ে কাটাতেন) ভাহলে সেকথা নিশ্চরই সি কে সরকার অবিনাশবাবাকে বলভেন। না বললেও অবিনাশবাব নিজেও জানতে তিনি পারতেন। আর ভারকো ঐর প উচ্ছ - थन नज्ञ नज्ञ नज्ज्ञ কখনই নিজের বাছিতে রাখতেন না।

অতএব এখন বলা হোতে পারে শবংচদেরর পেগার জ'বন সদবদেধ এখানে এই হে আলোচনা করলাম, এতে পরিজ্ঞার দেখা গেল
শরংচণ্ড পেগাতে আদৌ উচ্চ্-গেল জাবন
যাপন করেন নি এবং শনি থেকে মণ্ণাবার
পর্যত অফিস কামাই করে চাকরিও খোয়ান
নি: তার চাকরিই ছিল ক্ষেক মাসের
টেশপ্রাবি।

শরংচদের রেংগ্নের আর এক বংধ;
সতীশচন্দ্র দাসও তার শবং-প্রতিভাগ গ্রেথ শরংচদের পেগাব চাকরি জীবনের কণা কিছাটো লিখেছেন। শরংচন্দ্র পেগাবুতে গিরে উচ্চাংখল জীবন যাপন করেছিলেন, স্তীশ-বাব্ও এমন কথা তার বইরে কোথাও লেখেন ন। শ্ধের পেগরে কথাই বা কেন, পেগা বাওরার আগোও শরংচন্দ্র উচ্চ্ শ্বল জীবন বাপন কর্মান্তন, এমন কথাও গিরীনবাব সতীশবাবা কেউই কোথাও বালন নি।

অজিতবানু গিরীনবানু ও সতীশবান্র বই ভালভাবেই পড়েছন। কেন না প্রেলনারোধ তিনি এ'দের বই থেকে বহু উম্প্রিভ ভারে বইরে দিরেছেন। গিরীনবান্র সংগ্রাম্বরুক্তবার তার বইরে বিশ্তুতভাবে এই গিরীনবান্র বই থেকেই উম্পুত করেছেন। গরীনবান্র বই থেকেই উম্পুত করেছেন। গরীনবান্র বই থেকেই উম্পুত করেছেন। অবচ আদ্চার্মার বাগার এই যে, পেগুতে শরংচন্দের চার্মার ও তারে অবস্থানের কথাটো লেখবার সময় অজিতবাবু শরংচন্দের খানিষ্ট কম্মু গিরীনবান্র লেখা সম্পূর্ণ অজ্ঞাত কলকাতাবাসী ব্রজনবান্ত কাহিনীটি লিখে গোলন। সেখানে আর গিরীনবান্ত্র নামও উল্লেখ করেলেন না

রজেনবাব্র লেখা যে ভূপ ও অসত্য ভাজিতবাব্ তা ধরতে তো পারলেনই না, তাধিকত্তিনি ইচ্ছা করেই শর্পচন্দকে হের করবার জন্য গিরীশবাব্র কথা বাদ দিরে ব্রজেনবাব্র বণিত কথাটাই লিখে গেলেন।

শারণচন্দের প্রশার কার্বানের কথা লিখতে
গিরে রজেনবাব্ যে ভুসটা কারছেন, এখন
সেই ব্যাই কার্মিন রজেনবার ভোর শারণ
কর্মিন গ্রেন্থ ব্রামিনেশ শারণচন্দ্রের চাকরি
ভাবিকার মধ্যে প্রকালকা দিয়েছেন। ঐ
ভালিকার মধ্যে প্রকাশ্যম ছাওরার দ্-ভিন মাস
পরে অঘোরনান্দ্র ব্রাক রিলের ওডেন্ট জন
সাহেবকে অন্বরাধ করে ভার অফিনে
বর্ধান



ক্ষিয়া বিবেশ । ... কেলেনগাইর স্কুর তিন-চার মাস পরে পরংচল সাহত্তে সাহত্ কর্ম্বা কমিরা একেন্ট অফিলের চাকরিতে ইক্ষ্মা বিমাছতোন। ভিনি অভঃশন ভাল-সংক্ষাম বাগলেশে বেল্যান ছাড়িরা উত্তর ক্ষম গমন করেন। সেখানে আমহাণ্ট ক্রেলার ক্ষমা করেন। সেখানে আমহাণ্ট ক্রেলার ক্ষমা করেন। সেখানে আমহাণ্ট ক্রেলার ক্ষমা বিভাগে সম্ভর আলী টাকার একটি ইসার বিভাগে সম্ভর আলী টাকার একটি হিসাব বিভাগে নিক্ত দুই তিন মান্তের ক্ষমিকক্ষা প্রচল্য ঐ পদে খামী হইতে পারেন নাই। ভিনি তখন উক্সুখ্যা জীবন বাল্যান করিতেকেন। ইড্যালি

রক্তেমবাবু কিন্তাবে, কোপা থেকে ওবা সংগ্রহ করে শরংগদের রক্তাদেশের চাকরি কবিনের এই তালিকাটি তৈরি করেন, তা তিনি বলেন নি। শরংগদের পেগতে উচ্ছাত্থল ক্ষাবন যাপন করতেন এবং ঐ উচ্ছাত্থলতার ক্ষান তিনি বে শনি থেকে মংগলবার সর্বাধ্ বড় একটা অফিনে বেতেন না, এ কপাই বা তিনি ব গছ থেকে শনুনে কিথেছেন, ভাগ বলেন নি।

ব্রজেনবাব্র বার্ণত শর্ৎসক্ষের চাক্রি-ফ্ৰীৰনের সমস্ত তালিকাটিই যে ভুল তা শর চন্দের অফিসের সহক্ষীিও রেপা,নের বংধ্বাদের শেখা পড়লেই বেশ বেকা আন: এখানে শুগু একটা উদাহারণ โตโฮธ --বুঙে নবাব লিখেছেন- বয়া রেল ভ্রানর এক্ষেণ্ট জন সাহেনকৈ ধরে অখোরণাব; তরি আফসে অর্থাৎ এজেন্ট আফসে শরৎচনের এবটা চাকরি করে দিয়েছিলেন। ঐ চাকরিতে মাইনের কথাটাও বজেনবাবা পরিধ্বার বলেতে শারেন নি। রঞ্জেনবাব্যু বণিত শ্রহচ্চেত্র এক্তেন্ট অফিসের চাকরিটাকে, শরংচন্দের ালগ্নের কল্প: ও পরিচিত ব্যক্তিরা—মেম্মন ক্ষেণ্ডমেছন রায়, স্ভীশচন্দ্র দাস, বিচার-প্রতি এ এন সেন-কর্মা রেলভয়ের একাউ-एएको कृष्णकुषात वस्तु क भरत वर्षा जनसङ्ख्य হিসাব বিভাগের অস্থারী চাক্রি বলৈছেন।

এইর্শ আরম বলতে চাই যে ব্রজ্ঞেন বাবু শরংচন্দের গেগারে চাকরি জাবন সনবংশ কার কাজে শ্রেছিলেন জামি না তবে তিনি যার কাজেই শ্নেন মিথা সংবাদই শ্রোজ্ঞেন। কারণ, মৌলমিন ও প্রগ্



মোটেই আমহাল্ট জেলার অন্তর্গত নর। মোলামন ও পেগা এরা নিজেলাই পাটি পাথক জেলা এবং মৌলামন ও পোগা শহর। দাটি ব্যাহ্রম ঐ দাই জেলারই সদর শহর। এই দাটি শহরের দাবত শত্থিক মাইল।

রজেনবাব্ লরংচন্দের শেগুরু কথা
লিখতে গিরে ত'ার সংবাদলাতার কাছে
ক্ষেন্ন আমহান্ট জেলার অন্তগ্যতি মৌলানন
পেগ্র' এই মিখ্যা কথাটা শেলনে, তেমনি
ল্পান্' এই মিখ্যা কথাটা শেলনে, তেমনি
লান গেকে মঞ্জলবার পর্যান্ত বড় এফটা
কফিলে হেতেন না—এই মিখ্যা কথাটাও
লানেছিলেন। শ্রংচন্দ্র বে পেগ্রে উচ্ছান্থল
জীবন বাপন করতেন না এবং সেজনা যে
অফিস কামাই করতেন না সেও শ্রংচন্দের
পনিন্ঠ বন্ধ্্' গ্রীস্ট্রাথ স্রকারের বিস্তৃতভাবে বিশ্তি পেগ্রে জীবন কাছিনী পড়লেই
পরিংকার জনো হায়।

অজিগবাব্ লিগেছেন — প্রজাদেশে উচ্ছা পথল জীবন যাপানের সময় শারংচণ্ড যে অথিমাতার বেশাসেক হটয়া পভিয়াছিলেন, ভাহা সভা। বে পরিবেশে যেসব লোকেদেব সংকা ভিনি নিন কাটাইন্ডেন, ভাহাতে পভিতা নারীর সংস্পর্গ লাভ ওাঁচার জীবনে জনিবার্য ছিল। ব্রজেন্দনাথ বন্দ্যোপাধনারের একটি উদ্ভির মাধ্য বারবনিভালয়ে শার্ম চন্দের নির্মাত্ত দিন যাপনের ইণিবার্ত রহিয়াছে। শনি হইতে মঞ্জলবার ভাহাকে বভ একটা অফিসে পাওমা যাইত না।

শেগা,তে শবংগল উচ্ছ, শ্বাল জীবনের জন্ম
শনি থেকে মুখ্যালারর প্রাক্তি বড় একটা
অফিসের ব্যেতেন না, প্রজেনগার্র বৃথিতি এই
অসতা কগাটাকে নিয়ে অভিতরাব্ তান
অতি সহজ গবেষণায় সিন্ধাশত করেছেন
শরংচন্দ্র ঐ কদিন নিয়মিত বারবিণ্তালার
কাটাতেন এবং জ্যোর নিয়ে ব্যলভিন
উচ্ছ, শ্বল জীবন মাগনের সময় শরংচন্দ্র যে
অতিমান্তায় বেশাসক্ত ছিলোন, তাহা স্তাঃ

অখন প্রশন হচ্ছে- তা যে সতা, এবংশা আজিতবাবা আজ দা পাবায় পরে জানালার কি করে গ্রহণচালের রেপগুনের বনধাবা বার দিনের পর দিন, বছরের পর বছর পরহচন্দের সংগ্রা মাশাছেন, তারা ত কই তাদের বইরে এমন কথা কোথাও ঘ্ণাক্ষরেও বালন নি। আজিতবাবা শবংচদেন রেজগ্নের বন্ধান্ত্র করে হার করার জনাই হার বজেনবাবার ক্রিলা বর্ণনাট্য নিয়ে তার উপর আবার নিজের গ্রেমণা চালিয়ে এই বথা লিখেছেন।

ব্রংজনবাব্ না জেনে বা ভূল শানে শরংগদের পেগার জীবনকে উজ্ভেখন জীবন নককে শরংগল তখন যে অতিয়ালায় বেশ্যা-সক্ত জিলেন, এয়ন কথা কিব্তু বলেন নি। প্রজ্ঞানবাৰ্ বার্পত উক্ষ্ কথল জীবনা কথান প্রেকে টেনে অজিতবাব্ তার মতবার করেছেন। কিন্তু কেউ উচ্ছে কথা হলেই ভাকে যে অভিমান্তার বেশ্যা এই হং হবে ভাই বা কে বললে? উচ্ছ্ কথল বলতে— আনম্ভিচ্ছ, যথেজ্ঞাচারী বা স্বেক্তাভারীও ভ বলা বেতে পারে! আর বড় একটা অফিসে পাওরা বেভ না বললেই কি বলতে হবে, ঐ

রজেনবাদ্র না জেনে শারংচন্দ্রের পেগরে জীবনকে উচ্ছেগ্র জীবন বৃদ্ধতেও শারংচন্দ্র প্রত্যাদের মধ্যে বিধান করতেন, এমন কথা কিন্তু আদৌ বংশন নি! অজিতবাব্র রজেনবাব্র বর্ণিত শরংচন্দ্রের পেগরে উচ্ছ্ণ্থল জীবনেম ভূল কথাটো নিরে, তাকে আর শা্ধ্ পেগরে মধ্যেই সামাবন্ধ রাখেন নি, শারংচন্দ্রের পরবত্তীকালে ক্রেগ্রুণ মিস্ট্রীপ্রত্রীতে থাকার সময়বাল পর্যন্ত টেনে এনেছেন এবং বলভে চেয়েছেন মিস্ট্রীপরীতে থাকার সময় মিস্ট্রাদের মত্ত শারংচন্দ্রত মাকার সময় মিস্ট্রাদের মত শারংচন্দ্রত সক্তাহে নির্মান্ত চার

এই মিশ্চাদের কথায় অজিত্বার, তার বইয়ে অনাত্ত বলোছন—'তাহাদের (মিশ্চাদের, জনবন্ধারাত জিলা অভিমান্তর নগন ও কদ্শা…এই সব নিশ্দনীয় মানুবের সংগ্রা শরুৎস্থা নিজের জনীবন জড়িও করিবোন, কল্য ও প্রিক্রাতা হইতে ভিনিও মূর হইতে পারিকোন না…এই কুংসং প্রারীর কদ্শামান্ত্রমগ্রির প্রাত্তিন প্রতিতিন স্বান্ত্রমগ্রীর কদ্শামান্ত্রমগ্রীর কদ্শামান্ত্রমগ্রীর কদ্শামান্ত্রমগ্রীর কদ্শামান্ত্রমগ্রীর কদ্শামান্ত্রমগ্রীর কদ্শামান্ত্রমগ্রীর কদ্শামান্ত্রমগ্রীর কদ্শামান্ত্রমগ্রীর কদ্শামান্ত্রমগ্রীর ক্ষামান্ত্রমগ্রীর ক্ষামান্ত্রমান্তরমান্ত্রমান্

শরংচন্দ্র রেজ্যানে চাক্তরি করার স্ময় বোটাট্র- শা**জনতং অঞ্জলে মিস্ফীদের ম**ধ্যে ঘাকতেন এবং এখানেই তিনি তার রেলান জ বিনের অধিকাংশ সময় কাটান। গিরীন্দুনাথ সরকার' সভীশ্রদুদ দাস ও (भारतन्त्रनाथ সরকার-अन्तरहास्त्रत् स्वकार्तन এই ঘনিষ্ঠবণধ্রা ভাদের নিজ নিজ বইয়ে িশ্রীপল্লীতে শরংচন্দের অবস্থানের কথা এবং মিস্ফীদের কথাও বিস্তৃতভাবে লিখে গেছেন। মিস্মীপ্রার প্রসঞ্জে গিরীক্রনাথ সরকার ভার বইয়ে লিখেছেন—শহর হইতে शार्टका मूटे मूरत भत्रफम्य स्वराद्य धाकिरङ्ग, সে আনগুলির নাম বোটাটং ও পোজনডং। ...সকল মিশ্বী দলবাধ হইয়া এ অণ্ডল সপরিবারে বাস করিত।...শরংচন্দ্রে কোমরপে আ আয়াভিমান না থাকায় তিনি মিশ্রীদের সহিত অবাধে মেলামেশা করিতেন্ভাহাদের চাকরির দ্রখাসত লিখিয়া দিতেন, বিবাদ-বিসংবাদের সালিখ হইতেন, রোগে হোমিও-প্যাথী ঔষধ দৈতেন,

आश्रतात अल.आई. जि-त श्रिप्तियास जसयस्टा अ जिंक अधिक अधिक कसा फ्ति



श्रुष्ठ भावीत है। एक सिहारना महत्र इय

ধার্যা তারিখে জীবন বীমার প্রিমিয়াম জনা দেওয়া আপনার পক্ষে অবশা কর্তবা। বীমা-পত্রের নম্বরটি উল্লেখ্ করা এবং প্রিমিয়ামটি সংশ্লিষ্ট অফিসে জনা দেওয়া একান্ড প্রয়োজন।সবচেয়ে ভাল হয়,বিদি টাকা জনা দেওয়ার সময়ে প্রিমিয়াম নোটিশটি সেই সঙ্গে-জুড়ে দেন—তা না হ'লে প্রিমিয়ামটি সঠিক বীমা-পত্রের ধাতে জনা করা এবং যথাযোগ্য রসিদ ইক্ষা করা মুক্তিল হয়েপড়ে। এর ফলে মেয়াদ আন্তে কাবীর টাকা মেটাতে বিলম্ব হয়।

আপনার বীমার দাবীর টাকা পেতে যাতে দেরী না হয়, তার জন্মে আপনার এ স্বের দিকে দৃষ্টি দেওয়া উচিৎ উত্তরাধিকারীর থাম উল্লেখ করুন। বয়ুসের প্রামাণ দাখিল করুন এবং বীমাপতে সেটি প্রমাণিত করে রাগুম। ঠিকানায় পরিবর্তন হলে এল. আই. সি.কে জানান।

আপনি যে এজেণ্টের কাছ থেকে বীমা-পত্র নিরেছেন তার সাহায্য নিন — অথবা নিকটন্ত এল. আই. সি. অফিনের সঙ্গে যোগাযোগ করুন-যাতে আপনি নিশ্চিত হতে পারেন যে বীমাপত্রটি যথাযথভাবে ও চালু অবস্থায় থাকে।



লাইফ ইঙ্গিওরেঙ্গ কর্পোরেশন অফ ইণ্ডিয়া

RADEUS/LICIAS-2

जित्रका अहे मक्जा ग्रह्म चना स्थानकार को गुनुद मुक्तकार नतश्क्रमातक श्रह्मात कार्यकार कार्यकार

ক্ষান্ত শ্বন্ধনে অন্তিন্য সত্ত্য।
ক্ষিত্ৰ ক্ষান্ত ক্

'শম্মৎ-প্রতিভা প্রতের লেখক সতীশ্রুল मान निर्वास करे द्वालिए व्यक्तक शाकरण्य। তিনি রেপানে বিআই এস এন কোশানীতে স_পারিদেটতেওটের অফিসের কেরাণী ছিলেন। থাকতেন এখানে। তিনি প্রিখেছেন—শরংদা রেগানে **থা**কাকালে আমার সংগ্রে অন্ততঃ হয় সাত বছরের ব'ধ্ৰেডাব ছিল। এমন কি কিছুদ্নি এক-বাড়িতেও বাস করিয়াছ। বোটাটং অঞ্চলে ছিল আমাদের মেস। আমরা থাকতাম তিন-তলায় শরংদা থাক্তেন চারতলায়। অনেক সময় তিনি আমাদের মেসেই আসিয়া বসিতেন। আমাদের অনুমোধে কখন কখন দ্র একটা কডিনি গানও গাইতেন। শরৎদার নিকট সুইতে আমি দাবা খেলাও পিছিল ছিলাম।

বোটাটং-এ আধিকাংশ কারখানার মিস্ত্ৰীগণ থাকিত। হন ভাড়াও কম। সকলেই খেটে থায়, একতা আছে। এই ছোণীর লোকের ভিতনে এমন এক প্রাণের পরিচয় পাওয়া যায়, এমন ভালবাসার টান দেখা যায়, অমাদের সভ্য সমাজে তেমন পাওয়া খুবই কর্টকর। আবার সভাসমাজ এ শ্রেণীর ভিতর প্রবেশ করাটাও লজ্জাজনক বিবেচনা মিস্ত্রীরা শ্রংচন্দ্রকে করে। কারখানার ভাহাদের মধ্যে পাইরা দেবভার ন্যায় মাথায় ्रिक्शा काईका।

শরংচন্দ্র সভীশবাব্দের ঐ মেসের বাড়ী যখন ছেডে ধাম, তখনও তিনিন এ'দের মেসের অদ্রেই একটা কাঠের দ্বভাশ বাড়িতে গিরে বহুদ্দিদ ছিলেম। দেখা বাচ্ছে, শন্ত্চশ্রেল এই বন্ধারা কেউই এমন কথা কোথাও বলেন নি, নিল্মী-পানীর মিন্দ্রীরা অভাবিক বেশ্যালভ ভিজ এবং তালের সংস্পৃতিক শন্তিশ্রক্ত অভি-ক্রান্তার বেশ্যালভ হরেছিলেন।

বোটাটং-এ প্রকলের প্রতিকোণী হিনাবে সভীপবাবরে যত শিক্ষিত গোকট শুখু নর, হাওড়া কেলার আকভার স্কেশ্র-নার নম্মার মত ভয়, গৃহী, হরিভারি-শ্রারণ মিশ্রীও ছিলেন। সভীপবাব্ ভারি বইরে এর কথা বিশ্বতভাবে বলেছেন।

আর একটা কথা, শরংচনদ্র অতিমানার বেশানিক হরে শনি থেকে মুগালবার পূর্বত পতিতালারে পড়ে থাকলে তার নতুন চাকেরিটা থাকত? আর ওপরওয়ালা বদ্ধ্ এম কে মিটের ভাষে কি মংখ দেখাতে পারতেন?

অতথ্য শরংচন্দ্রের রেঞানুনের এই সব বংধাদের লেখা প্রস্থৃতি থেকে এখন বলা থেতে পারে যে, মিল্টাদের সক্ষেধ এখং ভাদের সংগ্য শরংচাদ্রের মেলামেশা সম্বন্ধে অজিতবাকু বে কথা বজেছেন, ভা সম্পূর্ণ অসত্য।

শানংচলের রেগ্রনের ঘনিষ্ঠ বংধ্বের কথা বাদ দিয়ে, ইচ্ছা করেই কালকাভাবাসী বে অন্তলবাব শানংচলুকে কোনদিন চোথে দেখেছিলেন কিনা সন্দেহ, তার ভুল কথাটা বেছে নেওয়া এবং সেই কথার উপার রেক্ত মণ্ডবা করে শারংচণ্ডকে এইভাবে হের করা. এটা কি কোন নিজপেক গবেষ্কের বা কারনী লেখকের কাল হয়েছে!

গিরনীনবাব; যোগেনবাব, ও সতীশবাধ; ছাড়া শরংচন্তের আর একজন রেপানুনের বন্ধর রুপানের বিশ্বর কথা এখানে বল্পব। ১৯০৬ খান্টান্দের কথা এখানে বল্পব। ১৯০৬ খান্টান্দের কথা এখানে বল্পব। ১৯০৬ খান্টান্দের কথা এখানে সামরিতে টোকার সমর ইনিও তখন ঐ অফসে চাকরিতে টান্দেনির তখন ঐ অফসে একই মরে পাশাপানির বসে কাজ করতেন। শানংচ্ছর মিশ্রুণীশারীতে বাবার আগে বখন মেলে কিছুদিন। ছিলেন, তখন সেই মেলে ইনিও ছিলেন।

বাড়ি হাওড়া জেলার বেল ড়ে। বেল ড় তেওঁশন থেকে শ্বংচলেরের ক্ষমস্থান বেল প্রের রেল তেওঁশন ব্যাতেজার দ্বের অলপাই। ভাই অফিলে সহক্ষী ছা প্রায় একই ফ্লারগার লোক বলে বি সংগ্যাবার্কর স্বান্ধ শ্বংকলের খ্ব ব

নগোনবাব, ছালা সমাজের লোক জি এবং রেজানে রাজা স্মাজের একজন চ স্থানীর ছিলেন। সেকালের সেই 'ভ কিন্তু বলব মা' প্রশাদের সভাবাদী নেতার মত ইনিও ছিলেন একজন আন আদশবাদী ও নীতিবাগীশ রাহা। জাবিমে ধ্কাশান করেন মি, চা খান মানুৰে নিক্লা টানে বলে কখনও বিকা চাপেন নি, ইত্যাদি। æ\$ মান্ত্ৰটিও 🕶রংচদের 🌣 মিস্ট্রীপঞ্জীর বচ বেতেন। যেঁমন—রাক্ষা সমাজে মায়েংসং স্থ্য রক্ষ্মাম সংকীত নের জনা একং একটা খোলের দরকার হওয়ায় নাগ্রের নিজে বৃধ্যু শরৎচন্দ্রের বাসার গিয়ে গোট **নিয়ে এসেছিলেন এবং নিজেই** আবার দি এসেছিলেন। এই কাহিনীটা আলি ন্ত বনারে জ্যোষ্ঠপতে ডাঃ অমিরকুমার লেড **শাছে শানোছি। আমিয়বাব**ু আরও বারেন **'শরংচন্দ্রকে রেজ্যানে আমাদের ব**র্নড়া বাবার কাছে আসতে, এসে গম্প ক্রডে এং বাবার সঙ্গো বেডাতেও আমি অনেক্র দেখোছ। শ্রংচন্দ্র **রে**জ্যান হেন্দ্র সং **এসেও ভ**াঁর ক্ষে**খা বই রেপ্যানে ব**্র কাছে পাঠাতেন।

নগেশবাব্র নিক্তীয় পাত আন্সক্ষা সেনেঃ কাছেও শবংগদের সঞ্চে ত্রি পিত বংবকের কথা আগেও শ্রেমিছ।

৭৭ বংস্ক া ব্যাধ অন্ময়বাধ এটা ৭৫ বংস্ক ২৯বক আন্তেশবাকু রেগ্যুম থেকে এসে বর্তমানে হ্রালী জেলায় বৈবন বাটীতে বাস করছেন।

নগেশবাধ্ যে অতাক্ত আদ্ধ্বাদ্ধ থানাৰ ছিলেন, একথা আমি নগেশবাব্ধ প্তদের কাছে ছাড়া তাঁর দোহিত কলকাতাগ বিধায়ত অহাপিডিক সাজনি তঃ সমীধ-কুমার গাুশ্চ এম-সি-এইচ, অর্থ লিভার-পুশা এফ আর সি এম (ইংলাডা এর কাছেও বহুবার শাুনেছি। সমীরশাব্ দুশ্লাবে মাড়া হারা হয়ে রেগানে। তাঁর এই মাডামহের কাজেই মানুষ হয়েছিলো।

এখনে এই আদুশ্বাদী ও ন্ত্রিতক্রণাশ রাজ নগেনবাব্র কংগটা এই জন্ম
বঙ্গলাম যে, শরংচণ্ড যদি আডিশয় নদাসক
ও অতিমাহার বেশাসের হতেন, তাহলে
এহেন নগেনবাব্ শরংচণ্ডের সংগ্র কথনই
বধ্যুত্ব রাখ্ডেন না বা তার সংগ্র অত মেগামেশাও করতেন না।



বিজ্ঞানের কথা

মহাবিশ্বের সংবাদ

আধ্বনিক কালের জ্যোতিবিজ্ঞানীদের
আশ্চর্য সব নতুন ক্ল এনেছে আর
সংগ্রেলার সাহায়ে। মহাকাশের অক্তেড সব
বশন্তর সংখান তারা পাছেন। জ্যোতিবিজ্ঞানের ইতিহাসে এনন উত্তেজনাপ্রণ
মহাবিশেবর যে-চহারাটি আধ্বনিক জ্যাতিবিজ্ঞানীরা উপশ্যিত ক্রছেন তাও সম্প্রণ
নতুন। জ্যোতিবিজ্ঞানে ও ক্স্মোলাজতে
এখন অনেক নতুন বারণা প্রচাত।

ভূপুণ্ঠে প্রাণিত দ্বেবীক্ষণ যদের অলোকচিনে, রেভিও টেলিসেকাপের ইলেক-ট্রানক সংকেতে, উপগ্রহ ও রকেটের সাহায়ে পৃথিবীর বাল্যমন্ডলেন উপরে প্রেরিত হাই-প্রতির খবরে জ্যোতির্বিজ্ঞানীরা মহাকাশের এয়ন সব বস্তুর সংখ্যন প্রাভ্রন, প্রথিবীর মানদশ্ড দিয়ে বিচার করলে হেগ্লো প্রকৃতই ভাশতত।

এমনি একটি কছু হাছে পাল্সার—
যাকে বলা যেতে পারে তার্কার দংগাবদের
ও ধরংসাবশেষ। এত খন যে তার এক খনইণ্ডি কছুর ওজন শত-কোটি ট্না অবিশ্বাস।
হালার গেগে বহুতটি ভারতিতি হাছে।

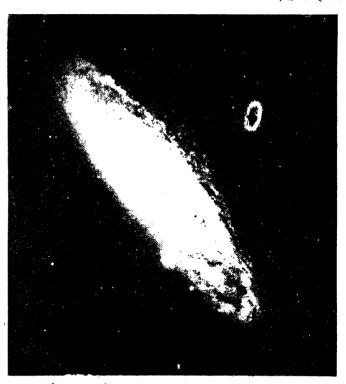
আমান আরেকটি হাছে ব্লাক হোল বা কালো বিবর। এই বস্থাটি পাল্মেণরের হেয়েও ঘন। বস্থাটি আম্মানক অগ্নেই অদ্যা, কেননা তার মাধ্যাক্ষণার কেটেট এতই জোরালো যে এমনকি আনতে পারে না। এমনি আরেকটি হাছে বেয়াসাব। বস্থাটি তারার মাধ্যা, কিন্তু মৃত্রেনটি স্থাবির চেয়েও উজ্লো। আর তা নেকে এমন বিপুলে প্রিয়াণ তেজ নিঃস্ত হণ্ছে যে একথ্যাপর কাছে তার রহস্য এবনো উন্ধান্তির কয়

বিষয়টি নিয়ে আরও আলোচনা করার আগে এতাদনকার জানা মহাবিশেবর সাধারণ চেহারাটি একবার চেচ্থের সামান ভূলে ধরা যাক।

সকলেই জানেন, নাটি গ্রহ নিয়ে আমাদের এই সৌরমন্ডল। এই নাটি গ্রহের মধ্যে আকারে আমাদের প্রথিবী মাকারি। যে সংযার চারদিকে এই গ্রহণ, লা ঘুরাত সেটি একটি ভারা, আরও যে কোটি কোটি ভারা রয়েছে ভালের ভুলনায় আকারে ও উজ্জানতায় মাঝার। স্থোর মতো পনেরে চাজার কোটি ভারা নিয়ে গড়ে উঠোছে চাকতির মতো আকারের একটি গালাকার্স বা ছারাপথ বা বিশ্ব। এমনি চাকতির মতো আকারের

কোটি ভাষাপথ বা, বিশ্ব ভিয়ে মুলাবিশ্ব। চাকতি বলা ভাকে বটে. িত বিশ্বর প্রী এক-একটি চাকতির বাসে হুছে প্রায় একলক আলো-বছর (আলো এখ-বছরে খডোটা পরত অতিক্রম করে তার মাপকে কলা হয় আলো-বছর। আলো প্রতি সেকেন্ডে অভিক্রম করে ১.৮৬,০০০ মাইল বা ২.৯৭.০০০ কিলোগ্নিটার ভাহলে এক বছারে অভিক্রম করে ৬.০০০.০০০.০০০.০০০ মাইল বা ৯.৬০০.০০০.০০০.০০০ কিলো-.035 क्राहरू দ রভের ω₹ এক আলো-বছর)। সর্যে রয়েছে আমাদের থিশেবর যোর নাম মিলাক ওয়ে বা আকাশ-গুংগা। কেন্দ্র থেকে চিশ হাজার আলো-বছর দূরে। দূই পাশাপাশি বিশেবর মাঝ-धानकांत मृत्य कार्ति-कार्ति खाला-वर्दत . লারো একটি বাপার, এই কোটি কোটি বিশ্ব প্রচণ্ডবেগে পরস্পর থেকে দুরে সরে যাছে। তুলনা করা চলে ফুট ফুট দাগ দেওয়া একটি বেলানের সংগা, এক-একটি দাগ এক-একটি কিন, বেলানটি যভেই সেলে দাগগ্রেলা ভাতেটি প্রস্কার থেকে দ্বে সরে বারা। মহাবিশ্বকে ভাই বলা হয় একস্প্রাধিক বা প্রস্কার

আধ্বনিক জ্যোতিবিজ্ঞানের আবিকারে
আশ্বর্টি হ ছে কোয়াসার। তা শ্বে
এ-পারণে নয় যে কোয়াসানের ধরনধারণ
সম্পর্কে বিজ্ঞানীর। এখনো স্পটে কোনো
শারণা করতে পারেননি। তার চেয়েও পড়ে
কারণ, বিজ্ঞানীয়া মনে করেন কোয়াসারগ্রেলা রার্ছে মহাবিদেবর একেবারে কিনার
ঘে'বে। কোয়াসারের আলে। ও রেভিওতরণা অন্যাখন করে এই বিশ্বাস পোগল
করার কারণ ঘটেছে যে কোয়াসারেই
বিশেবর শেষ, তারপরে আর কিছু দেখার
নহ। অথা ও মহাবিদ্বের বহিঃকিনারের
স্থানিট যেন পারো গেল, ও থেকেই জানা



আংগ্রেমিডার গ্যালাকসি এম ৩১। আমাদের সূর্যে যে গ্যালাকসিতে, মিলুনি ওরে, সেতিও বাইরে থেকে দেখলে এমনটিই দেখারে। প্রেরো হালার কোটি তারা নিরে গঠিত চাকতির মতো আকারের এমান গ্যালাকসি আমাদের এই বিশ্ব আছে কোটি কোটি।

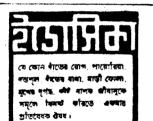
জোডরেল ব্যাণেকর রেডিও টেলিকোপ



পদ্ভব মহাবিশ্বর সামানা ও মহাবিশ্বর উল্ভব।

মনে হতে পারে জ্যোতিবিজ্ঞানীর এখন
গতুনভাবে ও আরো সঠিকভাবে বৃথতে
গারছেন, সদস্তবত ১০ শতকোটি বছর আগে
শুরু হয়ে বিবাতিভ হতে হতে মহানিশব
কিভাবে বড়ানা অবস্থায় পেশিছেছে।
ভারা আরো স্পর্গভাবে বৃথতে প্রান্ত্রে
বা গালোক্সির জটিল ইতিহাসের আরো
গ্রিণপ্রি ভারা পেবর গালাছেন।

আপ্নিক কালে ইলেকটানিকস ও রকেট-বিলার অগ্রগতির ফলে যেস্য শতুন যাত ওলৈর হাতে এসেছে লেগ্যুলোর সাহাযা না পেলে এতথানি আন কিছুতেই সুক্তর হত না। কিছ্কাল আগেও জ্যোতিবিজ্ঞানী-লের নিডার ছিল সেই সতেনো দশকে গালিলিও যা ব্যবহার ক্রেছিলেন মূলত সেই একই কুংকোলা। অথাং দ্বেবীকণ যালের মধ্যে দিরে তারা কেনে বিক্লাত আলো দেখা। কিল্তু দ্যামান আনো হতে জাত্ত-



শক্তিশালী গামা রাশ্ম থেকে বেতার তরংগ পর্যাকত বিশহত সমগ্র বিদ্যুহচৌদ্রক বণালীর অতি করে এক অংশ মার (আংগর একটি সংখ্যার জেসার নিয়ে আলোচনা করার সময়ে বিষয়টি নিয়ে আমরা আলোচনা করেছি। জ্বোতিবিজ্ঞানীর সম্পের পোষ ধরতেন যে মহাকাশের বস্তুপ্রে থেকে সম্ভবত এ ধর্বের বিকরিণও মিঃস্ত হয়ে গাকে। কিয়ত তাদের হাতে এমন কেন্টেন্ যক্ত ভিল না হা দিয়ে বিকরিণ ধরা সম্ভব

তারপরে ১৯৩১ সালে আমেরিকার বেল ল্যারবেটবির উল্লিয়ার কাল ইয়ান্সিক আবিকার করলেন, ভার বেতার গ্রাহকথনে (আনটেনাছ) এগ্রন সংক্রেড ধরা পড়ছে যার উৎস প্থিবীব বাইরের, বা মহাকা: । এমনিভাবে জন্ম নিল বেতার জ্যোতিবি-জ্ঞান (রেডিও আচ্ট্রনিম)-মহাকাশের বসত-প্রাঞ্জ থেকে শিংসাতে বেতার তর্পা তান্-শ**িলনের বিজ্ঞান। শিবভায় বিশ্বহ**াম্প শেব হ্বার পরে বেতার জ্যোতিবিজ্ঞানে বাাপ্ত চর্চা শার হয়ে গেল। আজকের দিনে সার। প্ৰিবৰী বিষয়ত বিরাট পিরীচাক্তি বেতার গ্রাহকষণের (রেডিও টেকিন্ফোপে) ছেরে গিয়েছে বলা চলে। এই সমস্ত বেতার গ্লাহক-যুক্তে মুহাকাশ থেকে আগত বেতার তরকা 🕶 পড়ে ও বিশ্লোবত হয়।

কিন্দু ভূপ্তেই শ্রাণিত বেডার গ্রাহকথক্তে সব িক্রারণট্ট কি ধরা পড়ে? না।
বহু বিকারণ ভূপ্তেও পোছবার আগেই
প্রিবার বালুমণ্ডল শুরে সের—হেমণ্
একস-শাস্ম, অতিবেগ্না (আলাইভারোলেট) বান্ম, অবহেলিত (ইনফ্রারেড)
রান্ম ইত্যাদি। এই বিকারণগ্লো ধরার
ভন্য মহাকাশ-গবেষণার যুগ প্রবিত অপেঞা

করতে হল। আজ্যকের দিনে ভূপুণ্ঠ থেকে অনেক উ ্ দিনে অজস্ত হৃতপাতি সমেত বহু উপাহে আরতিতি হল্ডে আর এই সম্পত বিকরিব তাতে ধরা পড়ছে। ফলে জ্যোতিবি জানে এখন একস্বাশ্ম-জ্যোতিবি জান বা অতিবেলুন বিশ্বিস্ক জান সভাবেশ্ধ হল্ডে।

আর প্রাণ্ড ক্রিটার সাহায্যে জ্যোতি-বিজ্ঞোনীর এউ ক্রিটার বহা, দুজ্রের প্রশের জধার ক্রেট্রেটা। তার মধ্যে সবচের কৌত্রকে জ্বিক প্রশান ও তার জ্বাবের বিষয় হচ্ছে মহাবিশের উপ্তর।

নিশ্ব যে প্রসারণদাল, এ-তথ্য নিজনানীদের গোণের আমে বিশের দশার্থ-আবিদ্ধারটির কৃতিত্ব আমেরিকাদ বিজ্ঞানী এডউইন পি বাব্ ল-এর: ক্যালিফার্টার্ব্য স্ মাউল্ট উইলসনে ২০০ ইপ্রি দ্রেবীক্ষণ থক্ত বাবহার করে তিনি আবিদ্ধার করেন হে, প্রায় প্রত্যেকটি তারা ও প্রত্যেকটি গ্যালাক্সি গোকে আগতে আহোয়ে যেন একটা প্রসারণ গটছে। আরু এই প্রসারণের মাহা সরাস্থিতি নিভার করতে প্রথিবী থেকে আলোর উৎসের প্রথিব ওপ্রে।

কেন এমনটি হয় তার বাাখ্যা **খ্**বই ইংস স্বক। তার 311771 আলোব প্রভিবর্গ থেকে (क्रा সংস্ একই ব্যাপার ঘটে মুখন কোনো ইঞ্জিন সিটি বাজিয়ে শ্রোতার কাছ থেকে দরে সরে যায়। তথানা সিটির শব্দের তরভো এমনি প্রসারণ, গ্রোতার কানে হা অনেকটা বিলাপের মতে। শোনায়। জোগিতবিজ্ঞানের ক্ষেত্রে ৩-ব্যাপার্টিকে বলা হয় 'রেড শিফ্টে' বা লাজ-অপসরণ। কেননা, বর্ণালীর যে অংশ চোথে দেখা যায় দেখানে লাল আলোর তরংগই দীর্ঘাতন। জ্যোতিবিজ্ঞানের নিয়ন অনুসারে. লালের অপসরণ যতো বোদ তার উৎস পূর্ণথবন্ধী থেকে ভাডো দারে।

এই সমস্ত থবর জোড়া লাগিয়ে জ্যোতিবিজ্ঞানী হাবাল যে হাবিটি পেলেন তা এক
প্রসালন্দর্শীল মহাবিশেবর যেন একটা বেল্নে
থা দিয়ে থালিলে ভোলা হল্কে। এমনি
একটি বেল্নের গারে কোনো একটি বিশ্ন থেকে কেউ যদি ভাকায় ভার মনে থবে, বেল্নের গারের তন্য সমস্ত বিশ্নু জমেই দরে সঙ্গে যাচ্ছে—যে বিশ্নু যতো দ্বে সেই বিশ্নু ভাতা জোরে। ভারা ও গালাক-সেব আলোর লাল-অপসরণ বিশেক্ষণ, করে জ্যোতিবিজ্ঞানী হাবল মহাবিশ্বকে দেখতে পোলেন এমনি এক ফ্রুনিরে-ফ্লিরে-ভোলা বেল্নের হাতো। অর্থাৎ প্রসারশশীল এক মহাবিশ্ব। কেন এই প্রসারণ? কী কারণে?

১৯২৭ সালে বেলজিয়ান বিজ্ঞানী লেমাটেব

১৯টি বাখো উপস্থিত করলেন। ব্যাখাটি

এইং ব্রু ততীতে মহাবিশ্বের সম্মত ক্ষত্র

১৯টি প্রেজ জন্মাই হয়ে ছিল—অর্থাৎ ফেন

এতিবৃহ্হ একটি প্রমান্ত্র (সাপারঅ্যাটম)। তারপরে এই ততি-পর্যাণ্য স্থাটন বিদ্যালন ঘটে। প্রজ প্রজ ক্ষত্র

১০টিবিকে ডড়িয়ে ছিটিয়ে ছুটিতে শ্বের

বর। এই প্রাপ্রাল্য থেকেই কালকনে

করে। এই প্রাণ্ডালে থেকেই বলগুল্লা তৈরি হারছে মহাবিশের তাবং গ্রালাকসি, তাবং তাংগ ও প্থিবীর মায়ে তাবং গ্রহ। আদি সেই বিস্ফোরণের ফলে প্রেগপুলো প্রচশ্ড বেলে ধাবমান ছিল। এ-কারণে মহাবিশেবর তাবং গণেলাকসি এখনো অবি-রাম প্রস্কার হৈছে দ্বে সরে যাছে। আদি এই বিস্ফোগণেকে বিজ্ঞানীর বিশেন বিশ্ব বাংগা বা বাংশালা

বিশ ব্যাপা বা বাংলায় বলা হৈতে পারে প্রচন্ত বিস্ফোরণ।

তাশপরে ১৯৪৮ সালে পাও্যা হোল প্রচন্ত বিদ্যালয় বহুর পাল্টা আরেকটি তই সালে বহু হয় স্টেডি সেটা বা সালা সমাবস্থা ততা। দুজন বিটিশ বিজ্ঞানী এই তারের প্রবর্তক—হোমান বিশ্বে এক মার্ট্রে সালাভ। কানো বিশ্বে এক মার্ট্রে সালাভ। কানো বিশ্বে এক মার্ট্রে সালাভার ভালা, একথা নত্ন এই তারে অপবীকৃত হল। তারের প্রবর্তকারা বালাভান মহাবিশেবর প্রসার্থ সমালাভাবে হারু চালাছে এবং নত্ন বাল্ট্র সমাভাবে উৎপার হার চালাছে। নত্ন বাল্ট্র সমাভাবে উৎপার হার চালাছে। একথা বাদ অবিশ্বাসা মনে হার চালাছে প্রবর্তকারা বালাভান, তাহালে অতি-প্রমান্ত্র বিজ্ঞানবাল, তাহালে অতি-প্রমান্ত্র বিজ্ঞানবাল্য সমালাভাবে অতি-প্রমান্ত্র বিজ্ঞানবাল্য সমালাভাবে অতি-প্রমান্ত্র বিজ্ঞানবাল্য সমান অবিশ্বাসা।

দ্বিট তত্তেরই পক্ষে ও বিপক্ষে ওকালতি চলতে লাগল ১৯৬৫ সাল প্রস্তি।
ভারপরে প্রিস্ট্র বিশ্ববিদ্যালয়ের দুজন
জ্যোতিবিজ্ঞানী একটি সরল মীমাংসার
প্রস্তাব করলেন। বললেন, প্রচুক্ত বিস্কোরণ যদি ঘটেই থাকে তাহলে ভার পর্বন
অর্থান্দ্রটি কিছু বিকীরণ এখনে। অতঃ
প্রবাহী থাকা উচিত। প্রায় সংশা সংগ্
বেল ল্যাব্রেটার, থেকে সমর্থনিস্টেক থব্র
পাওয়া গোল যে প্রকৃতই এমনি একটি
বিকীরণের অস্তিও রয়েছে।

এখন মোটামাটি ধার নেওয়া চলে, প্রচন্ড বিস্ফোরণের তন্ত^{্তি}ই রাহনে

অতঃপর আন্দোচনা চলছে সমান কোত্তভালদুশীপক আরেবটি বিষয় নিয়ে — প্রসারশশীল মত্যবিশেবৰ শেষ পরিবটিত কাঁ:

সম্ভাষনা দ্রি। এগটি ই বে
মহাবিশেষর প্রসাগণ চলাতেই থাকরে, চলতেই থাকরে: প্রাণাগিসিংকো পরশার
থেকে আরো দরে সবাতেই থাকরে, সবাতেই
থাকরে। এমনি হতে হাতে পর্যামি
মিলিরে যাবার সমভাবনা গ্রালাকসিম্বালার।
অপার সমভাবনা এই যে প্রসারণ করে
শিত্যিত হতে, সিত্যিত হতে হতে বাধ,

আইনস্টাইনের আপেঞ্চিকতার তন্ত থেকে কালো-বিবরের ধারণা পাওয়া গিয়েছিল



ভারপরে শ্রে হবে সংকোচন। শেবে? সংকোচন ঘটতে ঘটতে অবধারিত আরেকটি অভি-প্রমাণ্ড।

ত্তে, যাই ঘট্ক না কেন, পরিণতিতে পেশিহতে সমন্ত্র লাগবে হাজার হাজার কোটি বছর।

পরিণতি যতেই অবিশ্বাস্য ও অক্সা-নীর মনে হোক একটিকে ধলা নিকেই হয়। কোনটি? জ্যোভিবিজ্ঞানীয়া নলেন তা নিভার করছে অতি স্নিদিশ্টি একটি তথের ওপরেঃ

মহাবিশেবর মোট ভব। জ্যোতিবিজ্যানীরা বলেন, মহাবিশেবর মোট ভর ছাঁদ
একটি নির্দিণ্ট মাটার নিচে হয় ভাহাল
মহাকরের টানও এমন বংশুণ্ট হয় না হৈ
প্রসারণ বরুধ হতে পারে। কিন্তু মহাবিশেবর মোট ভর হাঁদ এই নির্দিণ্ট
মাচার বেলি হয় তাহলে প্রসারণ একসমরে
বাধ হবেই, সংকোচন শ্রেম হবেই, এবং
প্রারায় আরেকটি অভি-প্রমাণ্ডে ক্রকিছুর শেষ।

কিন্তু মুখাকিল হারেছে এই বে মহা-বিদেবর মোট ভব এখনো নিন্দুপদ করা সম্ভৱ হরমি। চেট্টা সমানে চলছে। মহাবিদেবর মোট ভর মিয়্পিও না হলে মহাবিদেবর প্রিণ্ডি সম্পর্কেও বলা সম্ভর্ম নয়।

তবে ব্রক্তিক সাজিরে ভবিষাশাণী
অবশাই করা বেতে শারে। এমনি ভবিষাবাণী করেছেম প্রিস্মটনের পদার্থবিজ্ঞানী
জন হাইলার। তিনি বলেন, মহাবিশ্ব
সংক্ষিত হতে হতে পশিণত হবে এক
তাতি-ঘন বন্দুতে বার নাম 'গাক হোল'
বা কালো-বিষর। এই কালো-বিষরের
কথা প্রথম বলোছিলেন আইমশটাইন, তার
আপে ক্ষকতার তক্তের স্তো। কথাটি এই
যে আলোর ওপরে মহাকরেছি জিয়া আছে,
অতএব অতি-বন বন্দুতে মহাকরের জিয়া আছে,
এতই বেশি হতে পারে বে আলো আটক

Programme in the first of the militar entranglight of the second of the field of the control of the control of

পড়ে যায়। আপেক্ষিকতার **ডভু অন্-**সারে, এমনি বস্তুই প্রকৃত অদৃশা বস্তু।

১৯৭০ সাল প্রশিত কথাটির ওপন্ধে জ্যোতিবিজ্ঞানীর। তেমন গারুম্ব নেননি। তারপরে হুইলারের একটি বৈজ্ঞানিক নিক্ষ প্রকাশিত হবার পরে জ্যোতিনিবর থালাটি ভিন্নু মার বিরল ঘটনা নয়। তারার জাবন শেক হবার পরে অবশান্ডাবী প্রশাত এই কালো-বিবর।

এমনটি যে হতে শারে তারার জবিশচরের দিকে তাকালে তা মানতেই হয়। এই
জবিনের শান্ততে হড়ানো ঠান্ডা গালা—
বিশ্বের বা শুরুতে ররেছে মহান্যালে—
বার বেলির ভাগটাই হাইড্যোজেন ও
শুরোর মহা তারপরে মহাক্রহর টার্মে
এই মেড জমটি বারতে থাকে। এই অকলার একসময়ে অভান্তরের চাপ ও উন্তাশ এঠেই
বেলি হয়ে বায় বে হাইড্রোজেন প্রমাণীর একশিভ্রন (ফিউসম) ঘাট্ডে শা্রা করে (বা ঘাট্টে ইট্যোজেন বেমারা) তৈবি হয় হিলিয়াম পর্যাল্ড বিন্তার করে।
বা ঘাট্ট করি বির্বাধন তিরার করে।
বা ঘাট্ট করি বার বার বার বার করে।
বা ভাল্ট কটি বারর ধ্রে এই তারাল করে।
না একসময়ে তারার হয়ালানী ফারিরে



ক্ষান্ত স্তেৰিঙ এই একই পরিক্ষান্ত স্থানিত স্থানিত ক্ষান্ত কৰে সাচিপত
ক্ষান্ত ব্যক্ত স্থান কৰিব ক্ষান্ত কৰে সাচিপত
ক্ষান্ত ব্যক্ত স্থান কৰিব ক্ষান্ত স্থান কৰে প্ৰিকাশিক, সম্প্ৰকৃত স্থান মধ্যে
একটা বিশ্বেষ্ণাৰ পানিত্যভিতে স্থান মধ্যে
একটা বিশ্বেষ্ণাৰ মুক্ত যাওৱাও অসম্ভব
নয়, কিছু কিছু বাতু মহাপ্ৰেন্য হিটকে
হাবে। ভালপুরে সংকোচন এবং সোটি
ভলতে ভলতে জ্যোভিবিজ্ঞানীয়া বাকে
ব্যক্ত লালা বামন'—ভাই। অপ্ৰাকৃত
উপ্তা ও অভিলয় যদ একটি পিন্ত।

কিন্দু দে-ভারার জর স্বেণর চেরে ১০ পতাংগ বেলি ভার পরিপতি কিন্তু আরারকম। বিজ্ঞানীরা দেখিরেছেন, লক্ষ্মায় একটি বিস্ফোরণের ফলে এই তারা জিমভির হরে বাবে। একে বল। হর স্পারনোভা বা মহাভারকা। এই বিস্ফোরণার দ্শা আমাদের গ্যালাকাসর অধিকাংপ এলাকা থেকে দেখা যাবে, আমাদের গ্যালাকাসর বাইরে থেকেও। ভারপরে জয়াট বিশ্র ভরবিংশও একাঠ বন্দু, যার নাম নিউটন ভার।

১৯৬৮ সাল প্রবণ্ড নিউট্রন তারার বিচার করে কেথার।
তারণরে রিটিল জ্যোতির্বিজ্ঞানীদের কাছে ধরা পড়ল বাইরের মহাকাল থেকে আগত অতি-তীর ও বিশ্মরকর রক্ষের নির্মাত হৈ প্রথমে ভাষা হরেছিল যে অনা কোনো সভ্য জীব বেতার তরপো, সংকেত পাঠাছে। তারপরে জ্যোতির্বিজ্ঞানীরা হিসাব করে দেখলেন যে বেতার করকের ইলা হসাব করে দেখলেন যে বেতার ক্রাক্তর উৎস হছে নিউট্রন তারা। এই নিউট্রন তারাকেই বলা হ্রাণ্যালসার' (পালসেটিং স্টার থেকে)।

দেখা গেল, মহাকাশে নিউটন ভার। হা পালসার রয়েছে ভল্পে ডজনে। তারা-গালো লাট্টার মতো পাক খার, মিনিটে সম্ভবত ১০০ বার পর্যাত।

পালসারের আবিস্কার থেকেই এসেছে কালো-বিববের তত্ত। ব্যাপারটির মধ্যে कात्ना कविनका त्नहे। इन्हेमान जीव নিবন্ধে বলেছেন, কী হবে তা নিভ'র করে আকারের ওপরে। ভারার ভের বাদ স্থেপ্র ভৱের চেয়ে ভিন ৰা চাধু গুণ বেশি হয় ভাছলে সেই ভারার জাবিন শেষ হয়ে আসার সময়ে তেন্দের নিঃসরণ ভিতরকার মহাকর্ষের টানের সংগ্রে সমতা রাথতে शास ना। भूभा इब्र अभिवार्य शरकार्रन, হতে হতে প্রথমে সাদা বামনের খনগ প্রাণিত, ভারপরে নিউট্রন ভারার। ভারপরেও আল্লো বেশি বনৰ-এতই বন বে তার মহাকরের টান ছিড্ডে এমনকি আলো পয়'ত নিজ্ঞাত হতে পারে না। ফল? क्ल-कारना-विवद ।

অনেক বিজ্ঞানী মনে করেন, মহাবিজ্ঞান থক বিরাট
কালো-বিবর। তার আলো 'গ্যালকসিগ্লো
পরসপরের সপো মিশে বাবে ও কমেই
সংবৃত্তি হতে থাকবে। অবশ্য প্রক্রিয়াটি
করে হতে, যদি প্রকৃতই হয়, আয়ে। শত
করে করেটি বছর দেরি।

কালো-বিবরেই কি মহাবিশেবর শেষ্?
না শেষ নর—উত্তরণ, একথা বলেছেন
কোনো কোনো জ্যোতিবি জ্ঞানী। এই
কালো-বিবরই ক্ষেচাণ্ডরে সাদা-বিবর। তাই
বিদ্ হ্র ভাহলে সেখান থেকেই আবার
প্রসালণ, এবং, বলা বাহুলা, কালক্তমে
আবার সংকোচন ও কালো বিবরের
গারসমাণিত।

কী হতে পারে কিছ্ই বলা যায় না। কালো-বিবরের অভিতত্ব যদিও টের পাওয়া গিয়েছে কিশ্ত অনেকথানিই এথনো রহসা।

তবে, কালো-বিবর যতোই আড়ত হোক, কোয়াসার এখনো পর্যাত বিরাট এক রহসা। ঘটনার স্ত্রেপাত ১৯৬২ आरम। कानिकारिक ইনাম্টাট্টট্ট অব টেকনোলজির দুজন জ্যোতিবিজ্ঞানীর কাছে ধরা পড়ল যে একটা গ পাছত বি ক্তারা অতি শারিশালী শেভিন উৎস হয়ে উঠেছে। কিন্তু লাল-অপ-সরণের সাহায্যে যুখন ভারা সেই দরেত্ব মাপতে চেণ্টা করলেন তখন দেখা গেল দুশামান বর্ণালীল বিন্যাসের সংখ্য তারা থেকে নিঃস্ত অংনার তর্জা খাপ খাচ্ছে না। অথনিং, দুরত্ব মাপতে তারা অসমর্থ হলেন।

সমাধান খ'ুজে পেতে করেক বছর
সময় লেগে গেল। তাঁর। আবিদ্ধার
করলেন, তারাটির লাল-অপসরণ অনেক
অনেক বেশি। এত বেশি লাল অপসরণ
এতদিন পর্যানত কথনো দেখা যাসুনি। তার
মানে, এই তারা প্রয়েছে অন্য সনার থেকে
আরো দুরে।

তথন করেকটি নতুন সমস্যা দেখা
দিল। এত দ্বের একটি তারা চোথে
দেখতে পাওয়া তথনই সন্তব থখন তারা
থেকে নিঃস্ত তেজ হয় আঁত বিয়৳—
কোটি কোটি স্বেশ্ সমান। আবার,
সম্তাহে সম্তাহে তারাটির উজ্জ্বলতা কম্বেশি হতে দেখা যাছে, তার মানে তারার
আয়তন থ্রই কম (বেশি হলে উজ্জ্বলতার
কম-বেশি হত না, সেক্ষেতে এক অংশের
কম জন্য অংশের বেশি দিয়ে প্রেণ হয়ে
বেতা।

এই আবিংকারের ফলে তারা টকে নিক্রুপর একটি শ্রেণীতে ফেলতে হল —ভারা বলতে যা বোঝায় এটি তা নয়, অন্য কোনো কিছুরে মতোই নয়। ভারাটিকে বলা হল 'কোয়া'স-স্টেলার স্মেডিও সোস^০। সংক্রেপে কোয়াসার।

আজ পর্যান্ত প্রায় ২০০টি কোয়াসার আবিচ্কার হয়েছে। তাদের লাল-অপসর থেকে বোঝা যায়, মহাকাশের অন্য তে কোনো বৃত্ত খেকে তারা দুরে: গ্যালাকসির লাল-অপসরণ 3 (N ০-২০, অর্থাৎ তার দুশামান আলো শতাংশ সরে গিয়েছে। সরচেলে न, (तुन् গ্যালাকসির লাল-অপসরণ **क**राज ০-৪০) কিন্ত অধিকাংশ কোয়াসারের লাল-অপসার্শ হয়ে থাকে ২-০ কোনো ক্ষেত্রে এমন কি ৩-৫। ভাল মানে আলোর বেগের আরো কাছাকাছি বেগে এই কোয়াসারগুলো প্রথবী থেকে দারের দিকে ধাৰমান। তাই যদি হয় ভাহৰে পাথিবী থেকে কোয়াসারের দুর্গ্থ ১২০০ কোটি আলো-বছর।

কোয়াসার হাড়িয়ে আর কিছু নেই।
কোয়াসার রয়েছে মুহাবিশেবর একেবারে
প্রান্তে। জ্যোতিবি আনীরা মনে পরেন কোয়াসার থেকে যে আলো পাওয়া থাছে
তা বৃহৎ বিস্ফোরণ ঘটার খুব বেশি
প্রেকার নয়। অর্থাৎ, কোয়াসার হছে
মহাকাশে স্বচেয়ে দ্বের ও সবচেরে
প্রাচীন বস্তু। অনেক জ্যোতিবিজ্ঞানী মনে
করেন, গ্যালাকসি গড়ে ওঠার একটি গোড়ার
দিকের পর্ব হছে এই কোয়াসার।

আবার অনেক জ্যোতিবিজ্ঞানী মনে করেন, কোয়াসার এমন একটা সম্পূর্ণ নতুন ব্যাপার যার ব্যাখ্যা বা হাদিশু আমাদের প্রাকৃতিক বিজ্ঞানের নিয়ম দিরে পাওয়া সম্ভব নয়। এজনা চাই নতুন বিজ্ঞান বিজ্ঞানের নতুন নিয়ম।

আনো একটি বড়ো শন—কোয়াসারের বিপাল তেজের উৎস । কেউ বলেন, কোয়াসার হচ্ছে গোটা । ধ কালো-বিবরের সম্মিটি। কেউ বশেন, তারায় জারায় সংঘ্রের অবস্থা। কিব্ কোনোটাই গ্রাহা হয়নি।

ব্যাপার দেখে অনেকে বলতে শুরু করেছেন, এই মহাবিশের অনেক কিছাই এখনো আগ্ররা জানি না। আগ্ররা কি প্রকৃ-ওই বলতে পারে। বস্তু ও তেজ কোখেকে আসে? হাজার কি দুেডু হাজার কোটি গছর অগ্রে সময়ের ঘখন শুরু ভখনকার তাবস্থা কেয়ন ছিল? সময়ের কি শুরু আছে? নাকি যতেই পিছিল্নে যাওয়া ঘাক সময় পিছিরেই চলে?

এমনি আরো অজস্ত্র প্রখন। ভবিষাৎ কী চেহারা নেবে কেট বলতে পারে না।

(এই লেখাটি 'আমেরিকান রিভিট' খন্ড ১৮ সংখ্যা ৪ গ্রীম ১৯৭৪ সংখ্যার প্রকাশত এডওআড নেডেলসনের প্রবন্ধ অন্সরণে লিখিত। আইনস্টাইনের ছবিটিও উদ্ভ পৃত্রিকা থেকে।)



(48)

বনি অহোরে মুমোছিল। হিগিনস ভাগ্যা হাখার হাতি টোবলে জ্যোডা লাগাকেন। সারেঙ পোট হোলে দাঁড়িয়ে আছেন। ফ্যাকাশে চাঁদ সমন্ত্রে ভবে যাচেছ। এবং অজন্ম চাদ এভাবে বেন হাজার লক্ষ চাঁদের প্রতিবিদ্ধ ভাসছে সম্ভে। ভারণর আৰুকার। কিছু দেখা যাচেছ না। সম্তের তেমনি কল-কল ছল-ছল শবন। ছোটবাব; হে'টে হাচ্ছে ডেক ধরে। সে শেষবারের মতো জাহাজটা গুরে গুরে দেখছে। সবই মনে পড়ছিল। যেন পালে দাঁডিয়ে মৈলন বলছে-কিরে ভোট ভোরাও চললি। সে পিছিলের রেলিঙে এসে ঝ'ুকে দাড়াল। ডাংগার কাছে এলে মৈত্রদা সে অমিয় জব্বাব মন্ দাঁডিয়ে থাকত। —িকরে ছোটবাব্য বিফ খেরেছিস বলে মন খারাপ। প্রিথ্রীটাবে এত ছোট ভাবিস কেন। আমি বাম,নের ছেলে না। আমার জাত নেই বর্ণি। অথবা যেন দ্বে বোট-ডেকে ডেবিড দাঁডিয়ে হাঁকছে, ছোটবাবা সামনে আটলান্টিক। এবার আমরা ভারত মহাসাগর পার হয়ে যাছিছ। অথবা হৈত্রদার দুটি একটা কথা, হে'টে হাবার সমর মনে করতে পারছে। গালিতে ভান্ডারিক্সাটার চবি ভাষা চার্পাটির গুম্ব একটা নাক টানলেই যেন পেরে যবে। সে পিছিলে এসে গেছে। কড জমজমাট ছিল জারগাটা। আন্মেষের গুলা হেন এখানি শানতে পাবে--সে হেন পায়ে ঘূংঘূর বেধে গাইছে—এলো সই লালতে হাক্তি আমি গলিতে। অথবা গানের সোমে ভার গলায় বাজছে—ছোট্রাব, ভৃত দেখেছে। সি⁴ডি ধরে নিচে নেমে গেলে অম্পকারটা আরও চাপ বে'ধে আছে। কোন স্প নেই। কেবল প্রিয়ারিং-এনজিনের পেনিয়ান এখনও বাতালে কক কক করছে। কাল তাদের ভাচাজ ছেড়ে সম্দ্র ভেসে পড়তে হবে। র্যান এত বড় বিপদের কথা বিন্দুমার জানে मा। वीन जायादा गुष्पातक।

অংশকারে কিছুই দেখা যাছিল

না। সব ফোকসালের দরজা বাধ। শুটো-একটি ই'দূরে ছাটে যাছে। আর এক শাপ সি^{বি}ড় ভেগের গেলে তার ফোকসাল। ক্ষাহ্যান্ড এটাই ছিল তার প্রথ**ম** আশ্তান:। সে টর্চ লেবলে এবার ভিতরে চকে নিজের ষাংকে কিছাক্ষণ বসে থাকল। হৈছেদা পাশেই আছে মনে হচ্ছিল। যেন বলছে, খাও ছোট-বাব, খাও। সমুদ্রে কারো বাবা-মা থাকে না। আমরাই আমাদের বাবা-মা। তেমনি মৈহদার বিছানা পাতা। আমর খানার আলে ওর বিস্থানাটা উল্টে রেলা গেছে। সব হাবহাু তেমনি আছে। ব^{৯ই} এখন সমতি। ভেবিড বংক, তানিমেষ, জব্বার কিভাবে সমতে বে'চে আছে কে জানে! চুপচাপ আধাকারে সে বসে থাকল। সে কিছা আর ভারতে পারছে না

চ্চোট্রাব্র এডাবে তন্ত্রর মতো এসে
গোছিল। তথন মনে হল সারেঙসাব
ডাকছেন। ছোট্রাব্ বুগতে পারছে সারেঙসাব
দরকার দাঁড়িয়ে ডাকছেন। হাতে একটা
লম্ফ। সারেঙসাবের সাদা পোণাক সাদা
ছল সাদা পাঁড় কোনো কিংবর্নিভর প্রথবে
মতো অথবা মনে হয় সেই শৈশবের ফ্রিনসাব যেন-হাতে তাঁর মুর্গকলাসান। একটা
শ্বাসা কব্দের ভেতর ফ্রেলে দিকেই তিন্তি
তার কথালে গেটি। টেনে দেবেন-ম্স্কিলাসান আসন করে-সেই মাঠে লম্ক

জনলিরে অধ্বকারে শৈশবৈ সে যেমন
দেখেছে একজন মানুষ উঠে আগছে, গাগায়
মালা তাবিজ গারে কালো কাপড়ের অজতা
ভালি মারা জোবা, হাতে মুসাক্ষাসানের
লাখ্য-ভিনি এখন তেমনি দরজা আগলে
গাঁতরে আছেন। বলছেন—কখন তুই এখনে
নেমে এয়েছিস। ভাবলাম ছোট ওদিকে
আমার দিলে ধ্কপ্ক ভার তোর পারা নেই।
ভামার দিলে ধ্কপ্ক ভার তোর পারা নেই।
আমার দিলে ধ্কপ্ক ভারে গেছে। নেমে
এলায়। এখনে তুই কি কর্ছিস!

সে বলল, চাচ। কাল তো আপনি আমার সংগে থাক্ষেন না।

সারেওসাবের মুখটা কালো **হয়ো গোল।** ছোট বললা, তখন এন্ডাবে কে দেশবে! কে গু°জে বেড়াবে আমি কোধায় আছি।

তিনি ওপরে হাত তলে দিলেম। যেন বলার ইচ্ছে, তিনি দেখবেন ছোট। তারপর বলজেন ওপরে চল। কতক্ষণ বঙ্গে থাকবি।

ছোটবাব**ু ছড়িতে দেখল চারটে বেজে** গেছে।

- --একটা ঘামিয়ে নে ছোট।
- अकाल हर्ष शालक। याम व्यामत ना।
- —তবং একটা গড়িয়ে নে।
- —শালে আর উঠতে ইচ্ছে করবে না। চণান গুণবে যাই।

আর ওপরে এস্টে ছোটবাবা **ডাঙ্জব।** সেই ক্রস, সেই আলো—প্রায় ফ্রমফ্বানের



মতে। নালা উজ্জনত বর্ণহার আলো ক্রস্টা থেকে
দিন্ত্র করে জনেছে। একেবারে সামনে।
মনে হর আধ ছাইলের ভেতর—কি আরুও
কারে, কি দ্রে, কতুদ্বে হবে—সে এবং
সালেকরাব ব্রুতে পারছে না। আর ফ্রস্করের জালো কবনও জনুলার নিভছে।
মন্ত্র আটিন মেলেসের সেই দেববাণীর
মার্ক্রা বেন রুস্টা বিধাতার কর্প অহানিক।
অব্যা অট্টাস্য করতে সাম্দ্র। ওরা ছুটে
হ্রেতে পারলা না। হাত-পা স্থাবির হয়ে
হাতে। তথাই কাত্তানের গলা। আমার সাল্যে

ছিলিন্দ্র হোতে নেতে সহসা সভ্তর্থ প্রসার শম্ভ দিলেন, তুমি ভ্রিকে কোগায় গিছেছিলে।

— ক্ষেক্সালৈ সাল।

কি সরকার এখন সেখানে সেখানে
হৈছোর।

—ামতে হাবার ভাগে...

্তশনত তেমান জনটা আকাশের নিচে
জনশন্তে। সমুদ্রে সামানা চেত আছে। বাতাস
কাশ জাবে বইছে। জাহাজটা উঠছে নামছে।
ভারে মান হচ্জিল কসটা উঠছে নামছে।
কণ্যত আকাশের গায়ে অতিশল্প হয়ে যাজে
কণ্যত সমৃদ্রের আড়ালে পড়ে ছোট হার
যাচেট।

ি ছিন্নি ওদের নিয়ে বেণ্ট-ডেকে টাঠ হাটেছন। কিছু ব্লাজন না। চুগচাপ। ছোট-হাব আরু না পেরে খ্র সভার গলার কলাক, আপুনি কিছু বলুন। আমাদের এ কোখার নামিকে দিজেন।

িন্তানিক্রম থ্ব সহাজ গলাম বলাগেন হস্কটা দেশে থাবাড়ে যাবে না। ভারপন বলাগেন সকাল হাফে যাজে। সভ সকাপ হাবে বহুটোর সব ওগোনে জালা নাল ফসফ্রাজ জ্বলা কমে আস্থেন দিনের জ্বালোক্ত কিছু বন্ধানে পানে বা। ব্যের হয় কোনো প্রনাজের পাহাড্টাছাড়ে সম্বাদ গেক ভোগে উর্বে জন্ম হয়েছে। আছু ক্ষিডেও রোগে ক্ষরে ক্রসে মাধাটা এক জ্বিভক্ত



হস। যতদিন বাচ্ছে তও এটা বড় হয়ে হাচ্ছে। বিশ্ব কছন আনে হা দেখেছিলান এটা প্রথম তার চেরে অনেক বড়। প্রমাণ এটা স্মানুদ্রর পাড়ান্ত গেকে এপনে উঠে অসমে হর্মিন। সারে তার অস্তত্ত সম্পর্কাস জোনাকির মতের অভালোপন একে আন্ত

এবং সতি। ছোটবাব দেখল বাং
প্রদিক কর্দা হলে যাছে, যত সম্দু তাল
তাকাল কুস্মা কুস্মা বং ধরছে তত কুসটার
বিচ্চ্রেল বিশেশত তার তালাটা পাহাডেল
মারিদেশ। একেবেশক ক্রমেথ মাতো। ক্লাড়ে
গারে চারপালে চানটা কালো। তল্ভ তার
তার ক্রমালে হানটা কালো। কালা প্রায়
মানত্রেলর মাতো উচ্চু রস। ছোটবাব্ বলল
ক্রমান ভ্রমা বিল্লেল স্যার।

—- এং দোষ কি বল ! ওতো উঠে আসতে চাইবেই ।

আম চোচামেচিতে বানত উঠে এসেছে।
সে বাব অবাক—ওরা তিনজন নাডিরে একটি।
কালো কুচকুচে প্রবালের খাড়া সাচাড় দেখতে
দেখতে কেন্দ্র কোনো কথা বলতে পারছে না।
সূম্দের চেউ আছাতে শত্তে। কাছে বৈ
জল চুউরে লড়েছে নিচে তাত দেখা যাজে।
সম্পুত্র চেউ পার্যাড়টারে মিশিচক করে
দিতে চাইছে।

বনি বলগ, করা জাহাজটা ওটার গায়ে গিয়ে আবার কারণ থাবে না তো।

কারণ তথ্য হো তাতাভাটিও যে বি কারণে তাটে যাকে বোনা যাকে না। কোন-দিকে যাবে—ওটার দিকে এগিয়ে মাকে না চারপাশ গভাঁর থাদে নিখিন্ট এক চোনা-ভাটে পাড়ে গেঙে প্রাত্তাভ বোনা যাকে না। তিনি প্রোকে উসলো। বনি তোমার থা কিছা তাতে ঠিক করে নাও। তোমারা নেমে যাবে। প্রভাটিন কেনে সব ঠিক যের ফোলেছি।

বিনি বলল বি ঠিক করে ভেড়ে

—তোমার যা কিছা আছে স্থ।

—কেন বাবা! কি **হ**বে!

্রকান্তে একটা শ্বীপ পারে। সেখানে তোলা সাবে। ভোটবাক্টকে আমি সব ব্রেক্তরে সিলোঁড়া ভোলার থবর পাঠাকে ভাষর কিক উপার পার। শ্বীপে মান্ত্র-জন আছে। একটা পেমে বললেন, স্বাইন জান্ত্রভ ছেড়ে যাওয়া ঠিক না। আমি আর সারেভ পাকলম।

বলি মাখামান্ড কিছা বাৰণত না। সে কি ঘুমের ঘোলে সানা দেখতে । ভাল নার চোম মাতে দেখলা, না সো সিক্ট দেখতে । বাবা ভাকে ভাষণ ভাড়াভাড়ি কগতে বলছেন । আর ভোটবাযুকে ধানা—এই ভোমাকে যে বললাম বনিকে নিকে বাও ভূমি কি ছে, এত ভূমি ভাড়াভান কাল্ড-জ্ঞান নেই কিছা। ব্যক্তা আর কাল্ড-জ্ঞান নেই কিছা। ব্যক্তা তা আর খেটা নেই, কবে দাম্ভা হয়ে গোছ। রাম ব**েল কভদার বার**্

—এই কাছেই। দ্রতিম সিনের ছেওর পোরে বাবে। সব বলে দিরোছ। কমপাদেও কটা কছে ডিগ্রাববব চালালে তেজরা দ্বীপটা পোনে বাবে তান্ত বলে দিরোছ। পাকে জোর বাচাস্থালাক্তর এক জাব দিনেক পোর বাচাস্থালাক্তর এক জাব দিনেক পোর বাচাস্থালাক্তর এক জাব দিনেক পারে।

বনি বলল কি মজা! স ছাটে প্রায় ৮লে মাজিল— কন্তু কি মনে চণ্ডবায় সে ফের ফিরে এসে বলগ একটা চা করে ভোমাদের খাইরে ব্যক্তি ধাবা।

হিগিনস বলাকেন, তা মধ্য লা, কি বল সারেও চা কলালে ভালই লাগাবে। বনি ভাজতি কাগাবে। বনি ভাজতি কাগাবে। বনি ভাজতি কাগাবে। এই রাসকেল—কি দীভিয়ে থাকলে কেন। হতে লাগাবে। বলে ভিনি কালে লাকে আমি নিক করে রেখেছি। সাব আমে এই একটা সংক্রেখেছি। কাগাবে। এই একটা সংক্রেখেছি। কাগাবে। এই একটা সংক্রেখেছি। কাগাবে। তাক নিরেখেছি। কাগাবে। কাজতানিরেভে ভাকটোলাকের কাভাজাবিক ভাকটোলাকের কাভাজাবিক ভাকটোলাকের কাভাজাবিক ভাকটোলাকের কাভাজাবিক ভাকটোলাকের কাজতান খালেনে, একজন খালাবারে একজন খালেনের

নিচে নেমে পেছে। জ্যোইনার বোটে উঠে এসেছে। সারেওসার ফিচ থেকে টেনে কলভেন। ভোটবাবা ভারে কাণতান স্ব স্থাজিয়ে জাল্ডে—য়েন হাতে যা সময় পাওয়া যায়—ভাটনাবাকে সম্ভূ সংপ্রে আর্ভ বিভূটা আছিও করে ভোলা। কান্স ব্রান্তে একেবারে ভেল্লে পড়েছিলেয়— মাখা ঠিক জিল না। এখন াত মাথা ঠান্ডা ব্ৰেখে কাজকাম করে হৈে া। বার-বাং তিমি সম্ভুদ্র সম্পকে 🖘 वारकान व बारम ছোটবাৰা খাবার ফা্ডি शाल भगारकारिक স্থাল প্ৰক্ৰিট্ ৈবাজাভাত ছ দ বক্ষেব্ট পাবে সম্প্রে এই সব অন্ পরিষ্কার্থার ভার ভারে বিভার। সেখে ঠিক সেখা যাতে না। এই যে দেখছ এটা ভোমাদের দিয়ে দিলায়। জলে ফোলে এই বিশ পাচিশ মিনিট পরে ভারতে সামান্য পাংকটেন টুই আসেবে। বেশ জন্ম করে গেলে প্রায় স্বর্জ কোলির মতে। কেবছে। জার মনে রাখা**রে জ**ল না থাকলে কোমরা কান্য মান্ত চিবিয়ে খেতে পাল। কুতে শেকটা দিনোৱাৰ হবে। আহ (শানো স্বস্ময় দ**্দার্টা যাড় ডলে ভেড্**রে গর্ভ করে <u>রাখবে</u> কিছাটা লালার **ম**তো জয়ালে চেটো থেলে তেন্টা নিবারণ কুরে। ভ্যাতার ভ্যাতার এভবিস্থেবেয়ার বাট নট क क्रम के खिलक चिला क्या। क्रेन्वंत दकायां क মানুষের আহার রাথেমমি চা ছতে পারে গা[†]কোলবিজ কিছ**় জানতেন না। ত**গি কবিতার নায়কের। মহিলচিকা দে**তেছে।** স্ব ৫৬ত হয়ে গোলে ভোমনা স্মৃদ্রকে কলা দেখাতে পারবে! একজন যুত্ততের পাঞ সমতে বেশ্চ থাকা খুব কঠিন না।

(द्वाचान्त)

OBAT

বহুদিন আগে আজারবাইজালের দোকিক প্রথা-পথাতির ওপরে পড়তে গিরে জেনেছিলায় সেথানে শিশুর শিক্ষাজারিনে স্ববিজ্ঞার শরে হতো বাবাকে প্রথা জানালার মধ্যে। বাবাকে না জানিয়ে কোন ছেলে কোন পারবারিক স্মাবেশে নাচতে বা গাইতে পারবে না, বাবার কোন কথায় স্বভারেরা থাকতে পারবে না। এমন কি বাবার সামনে জামারে বোভাম খ্লো কোন ছেলে থাকতে খ্রে কল্জা পায়।

আমার এক প্রতিবেশিনীর ছেলেকে
শাসন করার রীতি দেখে আমার আজারবাইজানের ঘটনা মান পড়ে গোলো। তিনি
সামানা কারণেও তাঁর ছেলেকে কিছুতেই
সামালতে পারেন না। অথথা হৈ-হুটুগোল
করার পর ছেলেকে শাসিয়ে দেন, ঠিক আছে
ভোমার বাবা ফিবুন তারপর এর বিচার
হবে।' ছেলে কিছতু বাবা শব্দেই একেবারে
শানত হরে যায়়। মনেই হয় না যে সে
একসময় মাসের অবাধাতা করেছিল।

ছেলেটির বাবা অফিস থেকে ফরে এলে ভনুমহিলা তাঁকে চা জলখাবার দেবার আগেই ছেলের দৃষ্ট্রিমর কথা এত জটিল করে বলেন যে ভদুলোক অনেপতেই উর্ভেক্তিত হয়ে ওঠেন। তিনি এবশ্য মহিলার মত অত **চীংকারে অভা**ণত নন। বাবার উপশ্থিতি টের পেয়ে ছেলে কিন্তু দিব্যি পড়ার টেবিলে মনোহোগ দিয়ে পড়া তৈরি করতে শার; করে দের। আসনে ভদ্রলোকের উপস্থিতিতে ছেলেটি কখনোই দ্যুরুতপনা সাহসী হয় না তার ফলে ভদুলোক ছেলেট্ৰিক প্ৰাপা শাহিত কথনোই দিতে পারেন না। এতে মহিলার অসমেতায দিন দিন বেডে যায় এবং তিনি সেই ছেলের সামনে এমনভাবে দাম্পতা-**ৰুলহা শ্রুকরেন হাদেখলে ছেলে**ও বিচলিত না হয়ে পারে না।

শ্বামী-শ্বীর কলছ হয়তো থবে
শ্বাজাবিক তব্ও তা স্বতানের অপ্রকাশ্যে
হওয়াই উচিত। স্বামী স্বতানের সামনে
শ্বীর মহাদা রক্ষা করবেন এবং শ্বীশ্বামীর মহাদা বক্ষা করবেন—এটাই
শ্বাজাবিক ক্রিচ হওয়া উচিত।

আমার প্রতিবেশিনার আচরণ স্মাণ্থি শুখক ধরনের। তিনি বিশ্বু সম্ভান শাসনে নিজের অক্ষমতা স্বীকার করতে নারাজ। উপস্পত্ত ছেলে অত্যাত দামাল এই কথাই প্রতিবেশীদের কাছে স্বস্থর শোদাতে

ছেলেয়েরেনর স্বসমরের তদার্হাকর দায়িত মায়েদের বেশী অবশ্য ছেলেমেরেরা sকুলে ভার্ত হলে কৈছু সময় তারা আছি-ভাবকের দ্রণিটর আন্তাক্তে চলে যার। মারের অবশাই কর্তবা সম্ভানের থবর নিতে মাথে মাঝে স্কুলে হাওয়া। স্কুল ছাড়াও বিকেলের সংগী-সাধীদের সংবদেধ খোঁজ দেওয়াও দরকার। স্কলে গিছে তিনি শিক্ষক-মিক্ষিকাদের কাল্ত থেকে ছেলের সম্বন্ধে কোন অভিযোগ থাকলে তা কোনে নিয়ে অত্যাত সহান ভূতি দিয়ে সম্ভানকে ব্যেকতে পারেন অহাথা বকাঝকার পরিগাম অতানত ভয়ংকর। বকাঝকা এডাতে ছেলে-মেয়েরা অভিভাবকের চোখের আড়ালের সংযোগে অপরাধ করতে থাকে। বাবা-মায়ের স্বস্ময় কর্তবা ছেলেমেয়ে হাতদিন ছোট থাকবে তত্তিন তাদের শথ আন্যোগী অনিচ্ছারও নানা চন্টবা স্থান দেখতে নিয়ে গিয়ে সে বিষয়ে কৌতভল বাডাডে माशस रहता । ব্যাদ হ'ওয়াব phiasi sitasi ছেলেমেয়েকে नहात-অন্যার সম্বন্ধে পরিধ্বার জ্ঞান দিতে হবে। অনেক অভিভাবক আছেন হাঁরা বাড়ীর মধ্যে ছেলেমেয়েদের বন্দী রেখে निरक्षता दक्नाकाहीस चन्हीव श्रद चनते काहीत। তাতে ছেলেমেরেনের দরেখের সভ্যে এমন এক মনোবিকার হয় যা দমন করা ছোটদের পক্ষে প্রায় অসমত্ব হয়।



তিনটি ভিয়ে তৈরি শেচা

স্কুতাননের সঠিক পথে পরিচালনা করা বারা-মারের উভয়ের বারিষ থাকলেও মারের সারিষেই সক্তানেরা বড় হরে ওঠে। স্কুডরাং নিজের অক্ষমতার কারণ না থাকে দাসন করতে হলে ছোটরা ঠিকপথে পরিচালিত হতে পারে না। অযথা চীংকার চেটার্মোট না করে সক্তানের ইচ্ছেকে সহালুভুড়িক সংগ্র বিবেচনা করে নিজের মেজাল সুংক্ত করতে পারেল। স্ব মা-ই ভালিক সক্তানানের স্কুণ্ড পারেল।

ট্রকিটাকী

ডিয়ের একটি পাখী তৈরি করন। মাথে-মধ্যে সব পরিবারেই ডিম খাওয়ালু রেওয়াঞ্চ আছে ডিম সেশ্ব না করে খবে যতা সহকারে বুসুম বার করতে হবে। ডিমের একপাশে যুত্তদার সম্ভব ছোট ফাটো করে ভেতরের স্ব জিনিস বার করে ফেলতে হবে। তারণর ভিষের সেই ফুটো দিয়ে একটা একটা করে যোমের ফোঁটা থেকে দিন। যোম দিয়ে ডিমের তেওর পরের। ভরাট করার প্রয়ো**জন** নেই। দুটি মুরগী ও একটি হাসের জিম পরিবলার করে ধারে নিতে হবে। প্রথমে अर्थाहे फिस नम्बाहात्व मोए कतिता मिट**ः** হবে। দ'াড়ে করানো ডিমের নীচের অংশকে এমনভাবে ভাপাতে হবে যেটা মাটির ওপরেই রাখলে কাড হয়ে। পড়ে লা **যায়।** এই প্ৰাভাবে দাঁড় কৰালে ডিমটির ওপরে ছবি অনুযায়ী একটি ডিম কাত করে রাখতে হবে। নীচের ডিমের ও**পরে যেখানে** হাঝের ডিমটি বসানো হলো সেখানে নীচের ভিমের কিছু অংশ অত্যান্ত যতা সহকারে ভাগ্যতে হবে। ডিমের ওপরে ডিম কিঃল্র সহজে বসানো যাবে না তা গাঁড়রে পড়বে। সেজনা আঠা দিয়ে পাত্ৰা কাগৰ ব্যাগ্ৰ ডিম দটো জোড়া দিতে হবে। এবার আর একটি ছোট ডিম সবচেয়ে ওপরে আড়াঝান্ত বসাতে হবে। এবারও ডিম বসাবার সময় নাকের ভিনের স্থেগ গুপরের ভিমটিও আঠা তার কাগজ দিয়ে জাড়তে হবেং

প্রতিটি ভিমকেই পরিকার করে পর পর বাসরে আঁকার কাজটা সামতে হবে। অভ্যক্ত যতেরে সপো একাল করতে হবে, না হলে ভিমের জোড়া খলে বাবার স্পভ্যবন আঁকে। ভিমের পাঁচা তৈরী হলে একার তা সালিবে বাখ্যা।

--জন্ধলি চৌব্ৰী

রূপসীর খাতা

আমাদের আলোচনা গ্রীব্যকালের ওপরে ই শুরু হোক। আমাদের ुल्ला গ্রান্সপ্রধান। তাই এই কালের বিশ্তার বেশী। খাুধা তাই নয়-এই কালে মাুশকিল যেম্ম অনেক স্বিধেও তেমনি প্রচুর। धाइ कामरक विराग्ध करत ना कानरम जाक স্থান্থ ধারণা পাওয়া শত। গরমের স্পো থামও প্রচণ্ড হয়। সেই জন্য সাজ নাট হওরার বা গারে স্পশ্ধ হওরার সম্ভারনা থাকে। বছাণী যতে। স্বন্দরই হোক গারে স্বান্ধ না ছড়ালে তার আকর্ষণ তো থাকেই না বরং বিরূপ মনোভাবের স্ভিট ক্রে। স্তরাং সাজ-সম্জার আগে গারের সম্বন্ধে হথেন্ট সচেতন হওয়া প্রয়োজন। ভালভাবে স্নাম বিশেষ গ্রম কালে, সকলেই করে থাকেন। কিন্তু ষাঁরা ঘরে ও বাইরে দুই জায়গাতেই শাজ থাকেন—ত্যদের অনেক সময় যতঃ নিয়ে সনান করা হয় না। এভাবে সনান করলে শরীর হয়তে। সাময়িক ঠাণ্ডা হয় কিণ্ডু একট[ু] লামলেই গণ্ধ<u>হয়। কিণ্ডু স</u>ে গৰুধ হাদি না থাকে বলং হাদি স্বাদ্ধ থাকে নিজের মনও সংস্রে থাকে। **এটা শৃ**ং আঘার বিশ্বাস নয় এ বহু, জনের বিশ্বাস। অনেক ক্ষেত্রে দেখা গেছে স্কুলরী সংবেশ ইম্বাঁও মনোরঞ্জন করা দ্রে থাকুক মনে বিকৃত ভাবে এনেছেন শ্বে মাচ দুশান্ধরি জনা। তবে ৫৩ দেখা গেছে *অনেকের* শারীরিক বিশেষ কোন অসংস্থেতার জনা যামে গণ্ণ হর। হেমন কিভার খারাপ থাকলে কিম্বা পেটে এসিড ভাষ বেশা থাকলে। সে সব ক্ষেত্রে অবশ্য ডাস্থাবের পরামর্শ নেওয়া দরকার। তবে সাধারণত যথেণ্ট থেয়াল না রাশার জনোও গারে গন্ধ হতে কেখা হার।

স্থানের সময় গারে ও শরীরের ভাল-গ্রিকতে ভাল করে সাবান মেশে ধ্রুরে নেওরা দরকার। ভারশর হাঁরা শৌখীন বেশী তারা আনের পরে কোন ভাল পারফিউয় কিবা শরীরের 'লোশান' বাবহার করে থাকেন। তবে সাধারণত স্বাই বডি করেন। গ্রীজ্মকালে ব্যবহার এগুলির প্রয়োজন খুবই বেশী। আর একটা বিষয়ে লক্ষ্য রাখা পরকার রাউক ও অত্তৰাস্থালি প্ৰতিদিন কাচা ও ধোরা। হারা খাব বেশী বামেন তারা হাদ নিজেদের সংখ্যা র মালের ভাঁজে বডি পাউভার রেখে দেন ভাছলে সময়ে সময়ে ব্যবহার করে নিজেকে পরিচ্ছার ও স্বাগ্ধী রাখতে পারেম। আর একটা কথা, প্রতি সম্ভাহে অংভত একদিন স্মানের শেষে এক বালতি करन अक्ट्रे एउँटेन निरंदा स्मिट कर निरंदा পা ধ্রে ফেলা ভাল। তাতে করে চর্ম রোগ থেকে বাঁচা হার ও সেই সংগ্রে শরীর ব্যর্থারে লাগে। যাঁরা শৌখান বেশা বা এই ব্যাপারের খাব বেশী সচেত্ন তারা শের এক বালতি জলে ওডিকোলন মিলিয়ে গায়ে ঢেলে মিতে পারেম।

বাহোক এবাব আসা বাক একট্ব অপ্রিয় কথার। বাঁরা সাজ-সম্পা করতে চান বা স্রাচর পরিচর দিতে চান তাঁদের উচিত বাহা্ম্স পরিক্ষার রাখা। অনেকে "শেন্ডে' করে থাকেন কিস্তু তাতে ওখানকার ত্বক কড়া ও সব্কে কিন্বা কলো দেখতে হয়ে বায়। এতে হাতকাটা রাউজ পরকো অশোহন দেখার। তাই ভালো দেশী কিন্বা বিদেশা হেরার রিরাভারা ব্যবহার করাই ভাল। তথে বাঁদের খাব কল্প তারা হদি ঠিক মতন করতে পারেম।

এখন আঙ্গা হাক পোলাকের ব্যাপারে। শোশাক একজনের শুধু মাত রুচির পরিচয়ই দেয় না ব্যক্তিত্ব প্রকাশ করে থাকে। অতি বড় স্ফ্রনিও হারিয়ে হার ्रभागात्यः । রুষ্টের ওজনে। পোখাক পরা উচিত কিল্পু শোশাক বেন শরীরের ও চেহারার উপর প্রাধান্য বিক্তার করতে না পারে। পোশাক হল আবরণ ওপরের যোড়ক সেই যোড়ক যদি সঠিকভাবে ব্যবহার না হয় তাহলে শরীরের সৌন্দর্যবিকশিত না হয়ে সেই সোন্দর্য ঢাকাও পরে যেতে পারে। কাল সমর ও কারণের সতেগ সামঞ্জস্য রেখে সাজ করাটাই বৃন্ধির পরিচয় দেয়। প্রচন্ত গরতাে স্তের্ব খরখরে তাপে হাদ কেউ প্রচার বংসঙে পোশাক পরে চলেন, তা পীড়া দেবে ফলে দেখতে ভাল পাগবে না। কথার বলে 'নিজের রুচিতে খাওরা আর পরের রুচিতে পরা'। অর্থাঃ আমরা বখন মেজে বেড়াই তখন অন্যেরা আমাদের দেখে। ভারের চোখে আমাদের সাজ পীড়াদারক না হয় এটাই সবচেয়ে আগে দেখাতে হুৰে। আজকাল হিম্পী ছবি ও আধ্যমিক কেতা মকল করতে গিয়ে প্রায় সকলেই ছিমাসম। এটা আমরা প্রায় অনেক স্কর ভূলে হাই হে রুপালী পদার হা মানার তা আমাদের পারিশাদিবকের সংগ চলে না। বারণ যে শোশাক পরা হবে তার সংকা বাকী সমস্ত কিছুর যিক থাক। একাদ্ত দরকার। যেমন মুখের মেকআপ চুলের কারদা ইড্যাদি। সেইজন্যে কোনো শোখাক পরার আগে কতকগালি জিনিস্ বিচার করে দেখা দরকার। যেমন—

১। বিনি পরছেন তাঁর নিজের চেহার। স্কর্মে মোটামুটি ধারণা।

২। গোলাকের মধ্যে আধুনিকতা বংশুল ধাকলে তার সপো বাকী সব কিছুই আধুনিক মাপ কাঠিতে করা উচিত।

৩। কোন ঋড়?

৪। সময়, অর্থাৎ সেটা সকলে স্থার বিকেল সন্ধ্যা না রাচি?

অর্থাৎ কেবলয়াণ্ড উপলক্ষা, বাড়ীতেই থাকা কিন্বা চাকরী করতে যাওয়া, কি বেড়াতে বা বিরের পাটির জন্যে। এগালি মোটামাটি নজর রেখে সাক করা উচিত। এমন অনেক সমর দেখা গেছে যে, আজকালকার মিনি বা মার্কিক ডেুস পরা হয়েছে কিশ্ব। কোন অভি আমুনিক ডিজাইনের হাউজ পরা হয়েছে কিংবা নাজির নিচে নিভফেবর ঠিক ওপরে শকুম্ভলা টাইলে কাপড় পরা হয়েছে অথচ চুক দিয়ে তেল গড়িয়ে সেই রাউল্লের গলা কালো হয়ে আছে বাহুমূল পরিজ্কার নেই নোংগ পেটিকোটের তলা দেখা হাঙ্গে কিল্বা পেটে বিভিন্নী দাগ ও থলখালে ছাংস বৈনিয়ে আছে। এসব ক্ষেত্রে া মহিলাদের হাস্য-কর লাগে ও লোকে ানর নিয়ে হাসাহাসি করে। তাই আমার মনে হর কোন পোশার পরার তাতে সব দিক দিয়েই যথেন্ট ওরাকি-বহাল না হ'ল আধুনিক হওয়ার চেল্টা না করাই উচিত। আজ্ঞকাল , ফ্যাশান প্রায় প্র স্তরের মধ্যেই ছড়িয়ে পড়েছে। স্কুংথ স্কুং এটাই বে ঠিক মতন সাজ করতে পারছেন না অনেক মহিলাই। তাই **আমার মনে হ্**রএ বিষয়ে আলোচনা করলে আমরা স্বাই স্বাইকে সাহায্য করতে পারি আর দিন দিন র্পলাবণ্যে পরিপ্র হতে পারি।

এবার বলি গ্রীষ্মকালের বিভিন্ন সমরের বিভিন্ন উপলক্ষে সাজের স্কর্পে। গ্রীর্থ এতুর বিশেষত্ব হল উর্জাপ আর উচ্জরজাতা। এই সময়ে তাই চাই ঠান্ডা পোলাক হার্ক্সা পোলাক আর নরম পোলাক। এই পোলাকেরই হেরফার হবে সময় ও উপলক্ষ অনুষারী। নাত্রে ও সন্ধাতে যদি নিম্মন্ত্রণ থাকে কিম্মা কোন বিদেশী প্রথার পাটি থাকে ভাছলে এর মধাই কিছু রভিন পোলাক চালানো যেতে পারে। তবে মধ্যে রাখ্যেত হুজারে যুকা ব্যাপার্য্যটা একই থাকরে।

अन्यक्षेत्र । अविभिन्न

MANAGEMENT AND SOM

উপন্যাস





(পর্ব প্রকাশিকের পর)

একদিন ধর্মাতলার মোড়ে জফিস-ফেরছ
বালের জন্যে অপেকা করতে ককতে বিকাশ
দরে থেকে মালবিকাকে দেখল। দ্ব-একবার
ইত্রুতত করল কাছে খাবে কি বাবে না,
ভাবলে। জনাদিনের তুলনার মালবিকাকে
হোন টিলর মনে হল, আজ সাজ-পোষাকটাও
ভাল। কি বাপোর।

দ্রে থেকে মালবিকাও দেখতে লোক্লেছিল নিজে থেকে কাছে এসে মাদ্র কাঠে জিজেস করলে বাড়ী ফিরছেন?

্তি তুমি? (বলেই যেন মনে হল তুমি বলাটা জন্মায়) বিকাশ জিজ্জেস করলে।

: আমি এই এখানে একটা এসেছি, কাজে! মালবিকা বললে।

্ৰাজ বোধ হয় মাঠে কোনো মিটিং নেই?

আমি বৃষি কেবল মিটিং শুনে বৈড়াই ? আপনি শোনেন না ?

না। বিকাশ অংশবীকার করলো।

্তা হলে তামাকে দেখলেন কি করে? বিকাশ হাস্পো, দ্জনেই শুনি তাহিলে।

প্রায় মৃত্ত-আকালের নীচে মাঠ-প্রাংগণে দেখা মেয়েটির সংগণা আজ যেন মালাবিকার মিলা নেই। মালাবিকার অমানিতেই সপ্রতিভা কিন্তু তার এই মুহাতের সপ্রতিভাতার মধ্যে একটা যেন হংগ্রিছা অলাবিকা ব্রে সরগ ব্যক্তি আলার নিজের সন্বর্থে বেশ সাক্রেক। আজ মনে হংল্লে মালাবিকাকে সেটিক চিনাক পারেনি, ওর মধ্যে কোন কিঙ্কি দ্যার দিনের আলাপ-পরিচয়ে বিকাশ বরতে পারেনি। ও যেন আগালোড্রাই রহসাবত।

িবিকাশ বললে, আপনি কোন দিকে হাবেন ?

মালবিকা হেসে বললে, আজ ট্রামবাদ চলছে আপুনাফে বাদত করবো না। দক্ষিণেই যাব—

্ৰিকাশ বললে, চললেও হিচুখ্ব— চলুন না এস্কট কৰে নিয়ে বাই! হটিতে হটিতে হাওয়া যাবে! আপতি আছে?

া মালবিকা বললে, না আজ আর হটিবো না, একটা, বসতে পাবলে হয়।

সংক্রা স্থেন বিকাশ বললে, আস্ন একটা চারের গোকানে বসি। তারপর না হয় কেথশানে, ভেবেচিন্ডে— মালবিকা রাজী হল, কিন্তু চোখম থের এমন ভাব কবলে যাতে মনে হল বিকাশের মনোভাবটা সে ধরে বেলেছে মানে সামিখ্য চান তো কুমারী মেরের!

বিকাল অপ্তসভূত বোধ করলে।

কেবিনের পদাটো টেনে দিরে বিকাশ বললে, বলান চায়ের সন্দো আর কি থাকে? গদতীর হয়ে মালবিকা বললে, শা্ধ; বসবার কথাই ছিল, কিছু থাবার তো কথ। ছিল না!

চারের দোকানে শাধ্য বসতে দেয়

তা হলে মাঠে গিরেই বলি চল্ন। বিকাশ যেন ফশিরে পড়ল। বললে, এসে সংশা সংশা উঠে যাওয়া ঠিক নয়। বেশ চাই খান!

মালবিকা হাসতে লাগল।

গশ্ভীর হয়ে বিকাশ বললে, হাস্ছেন যে! টা যথন চলংক না তথ্ন চা-ই চলকে!

হেদে মালবিক: বললে, আপুনি <mark>খুব</mark> দুর্ল।

এতে সরলতার কি আছে, না হয়

বংলাছ শাধু চা থান— মালবিকা আবার হাসলে চামে মুখে দিয়ে বললে, তারপুর আপুনার খবুর কি বলুনে? অনুকাদন আপুনাকে দেখিনি—

গোলমালটা এখন একটা কম আহে, অফিস ফেরং অর হাটতে হয় না! মাঠের দিকে গেলে তো দেখা হবে!

কি আশ্চয় দেখান আজ্বাল গোল্যাল ছাড়া মানুবের সংগ্রান্বের দেখা-সাকাং হয় না, আলাপ্ত নয়--

কথাটা খেন ভালই বলেছে মালবিক! বিকাশ বেশ বিদ্যয়ত বোধ করে। ঠিক এই ধরনের দাশ নিতাপূৰ কথাবার্থী মাসাবিকার পক্ষে সদ্ভব বিকাশ ভাবে নি। নেয়েটিকে প্রথম দিন থেকে ভাল লাগ্লেও ভার সন্ব্যান্ধ খাব একটা উচু ধারণা বিকাশ করেনি। লেখাপড়ার কথাও কি**ছ**ু দি**গ্রেস** করেনি। একটা অভাবী, স্বাধীন মেয়ে বংগই মানে। যুবতা মেয়ে বলৈ যত না ভড়েতাধিক ওদের সংসারের দরেবস্থার জন্যে বিকাশ टाक्क इसार्छ। भावरे शक्क करतरह कान-প্রকারে যেন ওদের সাহায়ে আসে। সোদন টাকা ফেরৎ দিয়ে মালবিকা কিন্তু বিকাশকে ভার সুম্বক্ষে আরে। বেশি স্ফেডন আর কৌত্ত্লী করেছে—বিকালের ধার্ণা গালেট্র লেছে।

বিকাশকে চুপ করে তার মুখের দিকে চেরে থাকতে বেখে মালবিকা অবাক হলো, বরং বেন আরো বেশি সপ্রতিভ কভে বললে, কেমন ঠিক নর ? সেদিন বদি ধনতার গোসমাল না হতো আপনাকে আমি দিন্তম না, আপনিও আয়াকে—

বলতে বলতে মালবিকা থেমে গিরে বললে, বারে আমিই কেবল বকচি আপুনি বেশ চুপ করে আছেন! কই, কথা বলুন।

বিকাশের যেন সন্বিং ফিরে এল, বললে কেন তোমার কথা শানি নাঃ বেশ লাগছে—

জুকুণিত করে মালবিকা বললে ধেশ মজা। আমিই কেবল বকে বাই!

তারপর দক্তনে খানিক চুপ করে রইল। চায়ের স'লা খাবারও এসেছিল, মালবিকার আপত্তি টেকেনি। লক্ষা করে বিকাশ বললে, বাং কিছে খান্ড না তোঃ? আমি একা খাব নাকি?

মার্লাবক। হাত লাগিনে বললে তা থাবার নাম করে এত থাওয়া কিল্ছু ঠিক নয়! শাধ্য শুধ্য—

বিকাশ বললে, থাবার যখন এসেছে তখন তার সদ্পতি করা বৃশ্মিমানের কাঞ ! থাবার সামনে কেখে বিচার-বিবেচনা চলে না!

িমত মুখে মালবিকা বৃশলে, তাই ভাবভি—

কি ভাবচো? খাবার দেখে এত ভাবন। তো ভাল নয়!

ভাবছি আজ কার মুখ দেখে উঠেছিলুম, অ্যাচিত—

বিকাশের যেন তর সইছে না **খাবারের** কিছু অংশ প্রায় হাতে গা**ুজে দিয়ে বৃশ্লে**, নিন্নিন্তারণত কর্ন!

নিজের কানেই কথাটা সাগ্রন। বিকাশ ব্যাহত পারছে না তার মুখ দিরে সম্বোধনটা কখনো ভূমি কখনো ভ্রাপনি। হয়ে থাছে কেন।

তারপর হাসি মুখেই মালবিকা খালঃ গ্রহণ করলে।

বিকাশ জিল্লেস করলে, ভোমাদের গ্রুর কি স্বাদার আপিস খুশালো স

প্লান হেসে মালবিকা বললে জামাদের আর ধবর। ও আর খলেছে না। বিকাশ বলগে, দেখ এবার যদি কিছু ইগ্ল! সদাশিবরা গেছে, নতুন বারা আসবে ভারা যদি পারে!

বৈশ কেন প্রতায়ের সংগ্য মার্লা<কা বললৈ, আমাদের বরাতে কিছু হবে না। গোলমাজই চলবে কেবল এরপর—

বিকাশের কেমন সন্দেহ হয় মালবিকা স্থাত্য ব্যক্তনাতি করে নাকি, যেতাৰে কথা

বলছে ভাতে শ্বনে হয়--অলাতি চিয়কাল চলতে প্রেনা। ইজেকশনে এবার নিক্ষয়ই ভৌবলিটি জাসবে।

গল্টীর হরে মাল্যিকা ব্রুটো দেখন।
বিকাশ আর কিছু বুলাল না, ব্যুত্তী
মাহতে দেশের রাজনীতিক অকশ্য সংবাদে
কিছু মাশ্চরা ক্রতেও ইচ্ছে হলো না।
৬/ছাড়া একটি ধাবতী মাশ্যীর সামিধ্য
রাজনীতির আলেচনার বোগা নয়।

বিকাশ ৰপালে, তোমার সাদা এখন কি করছেন? মানে একটা কিছু—

মালবিকা বলালে, কি আর করবেন, আলু বিক্তী করছেন।

বিকাশ স্থিপন্নহে ন্মালবিকার মাথের দিকে চাইলে। না, কথাটা সে কোন কোতুক করে বলোন। বেশ সিরিয়াস্!

স্তি। বিমান বিচিম্ত বিকাশ।

এবার মংশবিকা হাসলে ওর থেকে সুহজ বিছমু আর প্রিয়া হার নি। কেন কাজটা কি থারাপ:

না, তা বৰ্ণছি না, কিন্তু—



মালবিকার মুখের ভাষটা কেমন সেন হ কিন্তুর কিছু নেই। ও'দের আপিসের স্বাই মাকি এই রক্ম কিছু একটা করছেন, সেদিন দেখে এসেছি আপিসের যথ দরজার সামান এ'বা জেলেভাছা বিশ্লী করছেন।

বিকাল মনে মনে ভাবলে খ্র বেশ্চ গেছে, সরকারী আপিলে চাকরি করছে, মা হলে কে বলতে পারে তারও অমনি অবংথা ইতো না। তেলেভালা বিক্লী না কর্ক, খালমাডি বিক্লী করতো।

ু বিকাশ জি**জেন কর**লে ইউনিয়ন থেকে সাচায়া করে না?

্বত লোক্ষে সাহান্য করবে? সরকার বিছানা করবে—

সরকার এবং সরকারী কথাটার বিকাশের নিজেদের আগিসের কথা মনে পড়ে সেলা। কমাস ধরে কিছাবে না ভারা আক্রেলন করছে, কই কিছু হচ্ছে না তো। দিন দিন বছটোথ আরো রঙ্কবর্গ হরে উঠছে। আরুই তাদের ওপর হরুম জারি হয়েছে, টিফিনের সমর শেলাগান দেওরা চলবে না আপিসের পর আগিসের কেউ থাকতে পারবে না, আগিসের প্রেমিস প্রেমিসেরে গোলমাল বর্গাদ্ত করা হবে না।

বিকাশ বেন সায় দিয়ে বললে, সরকার কিছু করবে না। সরকার মরে গেছে— নিকেদের লড়তে হবে—আদায় করে নিতে ছার।

মালবিকার যেন এতক্ষণে মনে পড়ল জিজ্জেস করলে, আপ্নাদের আপিসে কি সম্মাদ্যাল চলচিত্র নাং প্রায় তো দেখি অ.পনারা মিছিল করে বেরন

হেসে থিকাশ ব্লালে, চলছে, চলবে! দেখা গ্ৰাক—

কি মনে করে মালবিকা প্রশন করলে, পারবেন আপনারা দাবী আদায় করতে?

নিশ্চরই! প্রত্যন্ত দড়ে কন্টে বিকাশ বশলে।

মালবিকা সপ্রশংস প্রতিতে বিকাশের মুখের দিকে চাইল। তারপুর তাদের আপিসের সংগ্রাম নিয়ে কি যে বললে নিজেই যেন খেয়াল করতে পারলে না।

মার্লবিকা হাত সরিয়ে নিলে না বিকাশ বেমন মেন মেনেটে ি, নুকলে, দেখবা কি করে ওরা আমাদের জব্দ করে। যেন ভারে ভারে মালবিকা বললে, যদি তোমাদের ঢাকরি যায় ? যদি ছাটাই করে তেনে

হেসে বিকাশ বললে, তেলেভাজা বিক্র করবাে! তা বলে সংগ্রাম থেকে—বলতে বলতে বিকাশ থেমে গেল একি মালবিকার জাঝে জল কেন।

্বেশ অপ্রস্তুত হয়ে বিকাশ হাত সরিয়ে নিলে।

সজল চেথে মালবিকা বললে, ওস্ব ভূমি কলো না। ওদের সংগ্রাতম্বা পারবে না।

বিকাশের পোর্বে লাগল, টেবিলে মুলি মেরে বলজে, কি বলটো আমর পারবো না! দেখো আম্বা পারি কিল পারি!

মাণবিকার অপ্রাসেক মুখটা কেমন যেন আকৃতিপূপে!

বিকাশ মনে মনে বললে, এতেই তুমি ভয় পেলে মালবিকা: অথচ তোমার সংগ্রু আমার কি বা সম্পূর্ক! তেমোর দাদার কথা কথ ভাবটো না তো!

ব্যাপারট কে লঘ্ করবার জন্যে বিকাশ বললে, আরে ধ্যাৎ তোমার ভয় পাবার কি আছে! অসহযোগ আহিংস আন্দোলন ভয়ের কিছু নেই। আর চাকরি—?

বিকাশ হাসতে লাগল তুচ্ছ-তাচ্ছিল। ক্ষা

বাড়াতৈ সালাবা আছ খুব খুণী প্রকাশ যেন। এনাদিন বিকাশের বাড়া কিরতে ইচ্ছে করে না, মানে হয় সব সময় বাইরে-বাইরে থাকে, এমন নিরানন্দ পরিবেশে করে মা-বাবার মুখের দিকে চাওয়া যায় না, তায়া হেন সব সময় গুয় হায় পাকে। বিকাশ বেশ ব্রুতে পারে বাবালা এখন নন্তুর চেয়ে তাকেই যেন বেশি লাকেন, আপিসের রাপার নিরে সংসা, ভাবনাকে আত্রেজ করে রাইনে।

আছ অনেকদিন পরে সংসারটা মেন বোগমক্ত হলে উঠেছে মা-বাবাকে আবার শ্বাভাষিক মনে হাজঃ।

না সামনেই ছিলেন, বিকাশের দেরীতে ফেরার জন্যে আজ আর কোন অনুযোগ করলেন না, বরং বললেন, যা ছাত-মুখ ধুনুর আসা।

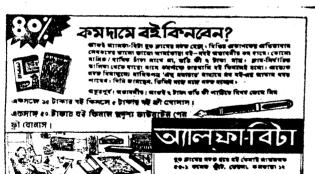
কেন? হঠাৎ হাত-মুখ ধোয়ার কথা কেন! ইদানিং বড় ছেলের সম্বাদ্ধ তার তো কোন ভাবনাই কংরন না, সংসারের ব্রাদ্ধ ছাড়া আর কোন বড়িত ব্রান্দের কথা বলেন না।

বিকাশ গদঙ্গীর **হয়ে বললে, বি** ব্যাপার?

মা বললেন, সারাদিন খেটেখুটে এলি— রোজই তো আদি, নতুন কি! বিকাশ সবিস্ময়ে মার মাথের দিকে চাইলে।

মা তাড়া দিলেন, <mark>যা যা. অনেক</mark> রাত হয়েছে।

তা তে হরেছে কিন্তু তোমার তাড়া কেন? মুখে অবশা বিকাশ কথাটা বলকে না।





The second second

ক্ষিণটো পরে জানা গেল। বাবা আজ আফিস ফেরং তালতবাবরে মেরেকে দেখে धारमध्यम्, अवर भावी भावन करतरहन । संग्रंक वर्गाक्य व्हरनेत्र ग्रंड कत्रावात साता।

শ্বনে বিকাশ ভেলে বেগানে জাল ইটালা। না সে কিছতে অনুস্তবানুর व्यक्तरक बिद्ध क्रम्पर मा। (गाना गानान, আশিলের ইউনিয়ন সম্পর্কে সব কথা বড अध्यक्त कारन करन निष्य कारम । अकानम SHORT STE-

আৰও অনুস্তবাব্ৰক কম কথা বিকাশ শেলায়নি। কিন্তু লোকটি এয়নি নিল'ল रव त्न-जव कथा व्यन शाव्हाई बात्यन नि। গা ভারের চহাড়া। আনার কত কথা, খোন শোল রাগ করতো কেন, তোমার ভালর करमारे काहि, यूव निविद्यान्-

বিকাশ চাংকার করে স্বাইকে শ্রনিয়ে বলেছিল, সে আপুনাকে ভারতে হবে না। আপনি সাব্ধান।

অন্তৰাব তেমান অমায়িকভাবে বলেছিলেন, তার মানে?

বিকাশ বিকৃত কণ্ঠে বলেছিল, মাটোটা क न नय। ज्याभनादक वरन मिकि ह्रकीन शास्त्रन मा।

ৰম্পতি প্ৰকাশিত হ**নে**ছে

বর্ষপঞ্জী ১৩৮১

(२४ण वस छल्टाइ)

দেশ-বিদেশের সকল তথ্যে পূর্ণ बारका 'वेत्राव - ब.क'

চলতি দুনিয়ার সংখ্য ঘণিত সম্পর্ক রাথতে হলে বর্ষপঞ্জী চাই-ই। শিক্ষিত পরিবার, গ্রন্থাগার ও শিক্ষা প্রতিষ্ঠান-সম্ভের পক্ষে 'বর্ষপৃঞ্জী' অপরিহার'। ৮০০ প্রতা. মলে ১২ টাকা ৫০ পাঃ, ভি পি খ্রচ ন্বতন্ত।

এস আর সেনগ্তে অ্যান্ড কোং ৩৫/এ, গোয়াবাগান লেন, কলকাতা-৬

আশ্চর্য অনুশতবাব, যেন মাটির মালুব, সে-কথায়ও রাগ করলেন না। কেবল वनत्नन, वम वम ! प्राथा ठान्छा कर।

বিকাশ তেমনি উর্বেজত মাথা আনার ঠান্ডা আছে। ফের হাদ স্থান আপনি **ইউনিয়নের ব্যাপারে আছেন তাহলে ভাল** হবে না বলছি।

আছা আছা। যাও নিজের সিটে। অনশ্তবাব, গশ্ভীর হরে বলেছিলেন, এতটা হয়তো উর্বেঞ্ডি বিকাশ হতো না, কিন্তু সহকর্মণী কথাদের কাছে লোকটির সংগ্র সম্পর্কাহীনতা প্রমাণের জনো থানিকটা क्रिकां करतिका। त्मथारक करतिका वक् वादा वरण कि इदा किछा वरण त्म काऊँक খাতির করে না। চা ছাড়া বন্ধুরা জানুক তাদের সম্পর্ক সম্বর্গেধ হা শুনেছে তা

কিন্তু এদিকে বাৰা কি করে এলেন : আর অনুষ্ঠবাব হা কি আপিলে এত কান্ডর পরও তাকেই জানাই করতে চান? বেমালাম অপমান, গালমাল চেপে গোছেন। কি নিশম্ভ লোক রে বাবা!

মাকে বিকাশ বললে বিয়ে আমি করবো ন। আর যদিও করি ওখানে কখনো নয়। মা জিজেস করলেন, নয় কেন?

যার সংগ্র একসংগ্র কাজ করি তার द्मारात्क विदय क्या याद्य ना।

কেন যাবে না? মেয়ে তো খারাপ নয়. দেখতে শুনতে হাল, একটা পাশ—

ওসব কথা হচ্ছে না! ও'র মেয়েকে আমি বিয়েই করবো না।

উনি কথা দিয়েছেন, বলেছেন— বিকাশ যেন ক্ষেপে উঠকো, কেন কথা দিয়েছেন, আমাকে জিজ্জেস করেছিলেন

উমাশশী চপে করে রইলেন। কি উত্তর দেবেন ভেবে পেলেন না।

বিকাশ চে'চিথে চে'চিথে বশতে লাগল, বিয়ে করবো আমি, আর তোমরা তার ঠিক

করবে * কেন :

ছেলের তাঁদের বড় -রপর কর্তৃত্বের জ্বোরটা যেন কথন চলে গেছে, উমাশশী এর উস্তরে কি বলবেন ভারতে পারছেন না। যেন নতুন কথা শ্নছেন ছেলের ম্থে।

বিকাশ বললে, বিয়ে বললেই অর্থান বিয়ে! দুবেল। পেট ভরে খাবার জন্য মাদের শিনরাত ভারতে হয়, চাক্রি করেও মাদের মাদের দশদির চলে না তাদের বিয়ের क्या कारा क्याता ! मेंका करत ना ?

ख्यमानी असन कार्य दनका. हिन কথা দিয়ে এসেছেন, তোর ভালর জন্ম বলেছেন, তাছাড়া ভন্নলোক নিজে থেকে বলালেন--

আরো হল কিণ্ড হয়ে ওঠে বিকাশ, বাব্যক্ত বোলো আহার ভালর জ্বন্যে কাউকে কিছ, করতে বা ভাষতে হবে না। ভদ্র-লোককে ও'র চেগ্রে আমি অনেক বেশি চিনি তোমবা হা ইচ্চে করবে তাই হবে না। এ বিয়ে আমি কিছুতৈ করবো না।

উমালশী ছেলের হাত ধরলেন, বাবা এবারটার মত, ও'র মুখ রাখ! মেয়ে খারাপ নয়, তই ব্যং একদিন গিয়ে দেখে আয প্ৰথপ না তয়---

হাত ছাড়িয়ে বিকাশ বললে, ওস্ব ছেলে-খেলা ছাড়! বাবা কেন আয়াকে না বলে কথা দিলেন, বাবা ব্ৰবেন! আমি সাফ বলে দিচ্ছি বিয়ে আমি করবো না আর করলেও ঐ লোকের মেয়েকে কখনো নয়!

উমাশশী আর কি বলবেন, ছেলের সামনে থেকে সরে গেলেন। অবনীবাব: পাশের ঘর থেকে ছেলের স্ব কথা শ্নে-ছিলেন। উমাশশী সামনে এসে দাড়ালেন. তার চোখ বেয়ে অল্লা নামল। বিকাশ যে কোনদিন তাদের এমনি অমান্য করবে তা স্বশ্নের অতীত ছিল। বিকাশের ওপর এখনো যে তাদের অনেক আশা, ভরসা!

আজ বিকাশের কথা াত্র নয় বাপ-মার প্রতি -JF41@ পেয়েছে। অবনীবাব, যেন এ অবস্থার জনো প্রস্তৃত ছিলেন না। মলান মাথে স্ফ্রীকে বললেন, কেন্দে ফি করবে! আমাদের যোগ্য শাঙ্গিত হয়েছে। ছেলে ছেলে করে নিজের ভবিষাৎ নশ্ট করেছি, ভালু ফল!

ব্যথিত অবনীবাব ভাবলেন, সংসারে এই ব্ৰি নিজেকে প্ৰকাশ করা দেওয়া! বে-বোঝা মাথায় করে চিরকাল বহা গেল সেই বোঝাই তাঁকে চেপে দিল! ছেলে বড় হয়েছে, রোজগার করছে, তা বলে বাপ-মালু ওপর এত কতৃত্বি! বাপ-মার কোন দাম নেই তাদের কথারও কোন মূল্য নেই? মনে इन निष्मरक स्थन भीग करत मन हेन्करता করে ফেলেছেন অবনীবাব, চেন্টা করেও অশ্তিমের সে শ্বিখণ্ডতা আর জোড়া লাগান যাবে না। এত স্বাধীনতা আজকালকার ছেলেদের! এত স্পর্ধা---

হা তার ভুল হয়েছিল, জেনেশ্নেও তিনি কেন গিয়েছিলেন ছেলের সম্বন্ধ করতে? এখন তার মান, মর্মাদা রইলো কোথায়!

and a lake and a le (BAME)

প্ৰকাশিত হইল

শব্রাম রচনাবলী

७३ थरण शास्क म्ला—०७; श्रीष्ठ थन्ड—३०; शास्क्रमत बना—>७; অগ্রিম ৭ টাকা দিয়ে গ্রাহক হম। প্রতি খণ্ড ম্যামলিখো কাগজে, লাইনো টাইপে, রেক্সিনে বাঁধাই, ভেতরে শৈল চক্রবর্তী ছবি সহ।

শিল্লাম চকরবরতির বই-এর দোকান, এম, টি, ৫৩।১, কলেজ জ্বীট মার্কেট — কলিকাতা—বারো



ক্রিড়গ্রামের ডাকবাংলোয় ॥ আশ্রাফ সিশ্কিনী

কুড়িগ্রামের ভাকবাংলোয় সেই করেকটি দিন মেঘলা রাতের স্বপ্নের মত এখনো ভেসে উঠে চিলমারীর বন্দরের পথে অচিন গাড়ীয়াল গানের ক'ল বাতাসে উড়িয়ে দিয়ে সেই যে চলেছে ধরলা নদীর পানি ক'ল ছাপিয়ে সেই যে বইছে দিগশত চক্রবালে ফেরারী বলাকার দল সেই যে উড়ছে মনের রুপালী প্রদায় আজ্বত যেন দেখতে পাই

কুড়িগ্রামের ভাকবাংলাের সব্দুজ ঘাসের সম্প্র আর কাশ-শিউলীল আলপনায় সেই যে কয়েকটি সকাল বিকেল আর হাত সে-যেন রপেকথাল মোহমদির মাহাত্ত (ধরলা নদীর পানি হয়তো কোনদিনই উজান বইবে না চিলমালীর বাদতে গাড়ীয়ালের গান শোনাত্ত জীবনে সম্ভব হবে না

তুমও হয়তো এই বয়সে থাকবে না)
কিন্তু প্রথম যৌবনের এই কয়েকটি দিন
তোমার স্লভ্জ উপস্থিতি
বাশীর স্রকেও স্লান করা সংগীত
কুড়িয়ামের এই ডাকবাংলোয়

বে'চে রইলো

জীবনে বহ**ু নাকাল বহু অসংগতি** কিম্পু কুড়িপ্রামের **এই ডাকবাংলো** সে-যেন জীবনের তিনটি **দিনের পরিপ্রতার**

কুড়িগ্রামের এই ডাকবাং**লোদ্ন**তোমরা একবার এসো
প্রাণ খলে মন খলে হেসো
কারণ জবিন তো শম্পাতে জল কুড়িগ্রামের এই ডাকবাংলোর তিনটি দিন তিনটি চুমোর মতই স্বশ্ন রচনা করে রাখলো জবিনে বহু নাকাল বহু অস্পর্যান্ত তবু তোমার বে'চে থাকতে হবে ঘানি টানতে হবে

এরি মধ্যে সময় করে শরতের কোন এক উদার আকাশের নিচে সব্জ ঘাসের সমুদ্রে কাশ-শিউলীন আলপনায় ধরলা নদীর কল-সংগীতে দিবপ্রহরের গাড়ীয়া**লের উদাস করা স**ূরে সরে ঘ্যু টিয়া আর রাঙা শালিখের কলোক্রাসে বিনা কাজে মুখোমুখী বসে বেও কারণ কুড়িগ্রামের ডাক্বাংলো তোমায় ক'ব করতে পারবে তোহায়ে শান্তি দিতে পারবে কুড়িগ্রামের ভাকবাংলোর দিনগালি কবিতার চেয়েও **মাদকতামর** কুড়িগ্রামেণ্য ভাকবাংলোর কী-যে হারিয়ে এলাম क्यान कदा र्याम।

—আমি ব্যাডমিন্টন, লাঠি ছ্রির প্রভৃতি থেলার সাধ্যালার ছেলেবেলা থেকে। পুণাতে যথন মেরেদের কিকেট মাচ হল, তখন থেকেই আমার উল্পেট বেডে গেল। ওরা যথম কিকেট খেলছে, তখন আমার বাংগার মেরেদাই বা কেন পিছিয়ে থাকর? আমারেরও কেন এ খেলার স্থানা আমার মাণায় হ্রতে থাকে। এসব প্রশ্ন নিয়ে আমার আপার হ্রতে থাকে। এসব প্রশ্ন নিয়ে আমার আশানাদের খ্লানান্তরের ক্রীড়াবিভাগে অনেক চিঠিও লিখেছি—

ক্যাগুলি বলছিল গতবারের ভারতীয় মহিলা ক্রিটে প্রতিযোগিতায় বিজ্ঞী পাচ্চম বাংলা মহিলা ক্রিকেট দলের অনাতম প্রার্থিক বোলার কুমারী রুণা বসু। গত বছর সেপ্টেম্বরে রুণার বাবার মৃত্যু হত্যায় শোকের সময় ও নিদিশ্ট দিনে বাংলা দলের নির্বাচনী অন্শীলনে আসতে শারেনি। তবে বিলম্বে এলেও বাংলার সংগঠনদের নজর কার্ডতে পেরেছে। কৈতেটকে আমি মন-প্রাণ দিয়ে ভালবাসি। किरक्षेत्रम गठेन इ.फ. मात्न कि जानम य হয়েছিল, তা আন কি বলব? তবে ছেলেরা আমাদের এই খেলাকে খাব গার্ড এখনও দিক্ষে না। আমি কিন্তু দাদা এবং পাড়াব অম্য সব ছেলেদের স্ভেগ প্র্যাকটিশ করি। মা অবশা আমাকে উৎসাহই দেন। তবে আমার পড়াশো:।তেও জোর দিতে হয়। বরানগর বি কে কলেজে আমি বি-এ ভূতীয় কর্ষের ছাত্রী। বাতাণসাতে আমার শৈক্ষা নিয়ে কলেজেও খুব হৈ-চৈ পড়ে যায় . থেয়েদের ক্রিকেট সারে, হাতে আলার আগ্রহ আরও বেডে যায়। মন দিয়ে দুই প্রশিক্ষক

আর এক ওপেনিং বোলার রুণা বস

খেলার জগতে মেয়ে



বাদল চন্দ এবং শ্রীস্পীল দ্যাণগ্রেত্তের উপদেশে স্থিংবল ফেলাও চেডা করি। বাতে চেডা করি। বাতে কেনা করিছ। '৭৩-এর নভেম্বরে স্ব্রুর্ হল আমাদের অনুশীলন। দল বছাই স্বন্দ্র্শাল ভাষার বারাণগাঁর পথে বলা হলাম। ভাষার বারাণগাঁর পথে বলা হলাম। ভাষার বারাণগাঁর পথে বলা ভাষার। একানের তিকার স্বর্ধান করিছ। একদানেই একেরারে স্বর্ধান করিছ। একদানেই একেরার স্বর্ধান ভাষার আসর। এতাদন কেবল লিভেট্ট শেলা দেখছি আর চিবিপতে খেলার নিয়ন্ত্রনান্ন—ট্রিটাকি লিয়ে লিখেছি বা সত্ব্ধানিক করিছে। তাই খ্রুব একটা আনিকিট উদ্বেগ চিয়ে বাবানসাঁ বজনা হলাম।

কিন্দু কার্যক্ষেত্রে অর্থাৎ গ্লাচের দিন-প্রলিডে বুলা ভার বেলিং কশ্লভা সপ্রমাণ করতে পেরেছে। বলের নিশানা ঠিক ছিল, লেংথও ছিল নিখাত। কাগজে-কলমে যেরকম পড়েছে বা প্রশিক্ষকদের কাছে যেনন যেএন শিথেছে মাঠে বুপা তা প্রয়োগ করার ভেটা করেছে যথাশাছ। মহিকা দলের উইকেটরক্ষক (বৃক্ষীয়নী?) ইজা রাখ-গুটাধ্রেটকেও আমি সেদিন কালাঘট মাঠে দলের বোলারদের বিষয় জিজ্ঞাসা করে-ছিল্ম। ইলাও বললে রুণার বল আউট স্ট্ং করে মাকে মাকে, তাছাড়া নিশানা ন্তিকেট লক্ষা করে। বলের ঘাতি ভাননোরে লিডিয়াম পেসেব শ্রেণীতে ফেলা যায়। ঐকান্তিক নিন্দা আগ নিজের ওপর স্ট্র আম্থা নিয়ে বুলাবল করেছে। ফলও পেয়েছে ভালই। সমগ্র প্রতিযোগিতায় বেদ্দাই গ্ৰেদ্লখণ্ড আমিলনাড্য হাউনাকে দশাটক দলের বিস্ফেদ জয়লাভের भएष हुन। छंडरकहे रभरमरङ । आहे रहालाहे। শ্রেষ্ঠ লোলংগ্রের হারের জন্য জোলামনুরা প্রতিযোগিতায় বিশেষ গরেশ্যন পেনেও সবোল্য উইকেট দহলের কৃতিও বিশ্বু রুণা ৰস্বই ।

রাণা বলে, এখন কলকাতায় মুদি বেশ কভুকপালি মোয়ে রিবেট রবে তৈরী হয়: ভাছলে আমরা স্বাছ্টের খেলার সাুযোগ পাই। কারণ, ছেলের। এখনও নানা জাইপান খ্যামাদের যে তুক্ত্-ত্যক্ষিলা করে তথন সেটা থমৰে। অনেক খেলতেই ঋগোনের মান প্রে উদ্ধু নয়। সতেরাং সেদিকে। স্বারই নজর দেওয়া দুর্কার। আমার টো মনে হয়, এই ভাবে খেলাখুলাব বিভিন্ন ও বিচিত্র আসব সারা দেশে ছড়িয়ে দিলে, ভাতে স্বাট **উপকৃত হবে। তখন আ**র একে অপরের থেলার মান বা যোগ্যতা নিয়ে ঠাটো তামাসা কৈ তুক্ত-চিক্তলা করতে ধারতে পারবে না : মেয়েদের বিকেটকে কিছ' লোক 'ভামাসা' নলায়ে ক্ষম দবরে রুণা তার হতামত व्यानाम् ।

রুণা বলে বারানসীতে আমাদের এই
চার দিনব্যাপী প্রতিযোগিতার প্রত্যেক রিন
সিপরা প্রেটিভয়ামে ১-৫০ পরসার টিকিট
কিনে বহু লোক এসেছে আমাদের থেলা
দেখতে। মেয়ে-প্রথ বাদ ছিল না। অনেক
মেরের মনেই যে এই থেলায় যোগদানের
আকাশকা স্কুত ছিল এবং আছে বিভিন্ন
থাজ্যের মেরের সল্যে কথাবাতা বলে তা
পুখতে পারি। ডাই মনে হয় শুরু বাংলায়
ময় সারা ভারতে শাভ্শালী মহিলা ভিকেট
দল তৈরীর সম্ভাবনা খুবই উক্জাল।

র্ণা সাধারণ বাংগালী মধাবিত্ত পরিহারের মেয়ে। এরা চার বানে, এক ভাই।
রাণাই স্বার ছোট ভাই মামের সাদর
উৎসাহ আর দাদার সন্দেহ সহযোগিতা
পাছে। এর সন্দেগ যুক্ত হয়েছে ওর নিজ্ঞশ্ব
আগ্রহ ও একাগ্রতা। বাংলার এই জিকেট
দলে যাবা রায়েছে তাদের প্রায় স্বাই এই
রবম সাধারণ ঘরের মেয়ে।

ব্ণার বাবা ছিলেন সেন্ট্রাল একসাইজের একজন স্পারিক্টেডেন্ট। তিনি স্বয়ং ভাল খেলোয়াড় এবং ক্রীড়ান্রাগী ছিলেন। চাকরীর খাতিরে তাঁর সপরিবারে কোচবিহারে থাকাকালে রুলা সুনীতি একাডেরী
খেকে স্কুল ফাইনাল পাশ করে। ওখানেই
ও নানারকম খেলার সুযোগ পায়। এখানে
এসে কলেন্ধে তার্থানীতিতে অনার্সা নিয়ার্থান
কিংজু খেলা আর পড়া একসংগ্য চালাতে
গিয়ে ভানার্যা হাড়তে হয়েছে।

প্রশিক্ষণের ম্বাধনেই আমরা এতটা সাফলা লাভ করবো এতথানি বোধহয় কেট আলা করেননি। প্রথমারকে তো মাটেই অমেক প্রায় বলাক আমাদের উদ্দেশ্যে টিটকারী দিরেছে। বলেছে এই সব বাছা-মেরে এরা কি শেলবে? নানা বাগজে ঠাটা মসকরাও কম হয়নি। কিন্দু যাই হোক সর্ব-ভারতীয় আসেরে প্রথম আবিভানেই আমরা বিকরী আখ্যাতো পেরেছি। বল্ন এ কি কম কথা!

রুণার কথার সমর্থন জনিয়ে ফিরে এক্সন। ব্যক্তম একালতা ও আল্প্রতালের ম্পানন থাকলে সাফলা অর্জন নিশ্চয়ই হয়। বিনায় নেবার স্থায় রুণাকে শ্তেক্স। জানাকে ভূলিনি।

---অময়





মাঠের নায়ক

শিবাজী ব্যানাজি

স্টেলে এগটা কথা চল**ু আছে না—** স্বাপাল কেট, সিমতী কা ঘোডা, **বৃহ মৌত্** ডোলোডা গোড়া

িশ্যাজনির স্ফাত ঐ কথাটা দেখে বৃশুক্তে বল, পত্তি পার। শিলাজী অথা**ং শি**ৰাজী ব্যানাজনী এখন বংগার প্রথম সারিব ফুটবল পোলক গার। হাল ঠিবানা—ছাওড। ইউনিয়ন। সামনের বছর আগতানা কোন তবিকে হলে তা সে নিজেও লানে না। মার তথা খনিডত ভারতে ঘটিদর ভাষা, ভারা কেউই শিবাক্ষার বাবা সংযোগ ব্যানাজনিক খেলাত দেখেন নি। यतः। ङाक्तेता महत्वाधवावहरू क क्षुवेवन आहे দৈখিছেন অসাধাৰণ একভান গোলকুক্ষকের কুমিকার। জ্বিলের সেরা সময়ট,কু তিনি कि छिटा छन कि की छाति । कारत । कारत असम् स्माहनवारा तक। एथ्सकात नितनत हैम्होब-নাশনাল । চাব্তবি বনাম ইউরোপীয়) মাত তো বটেই. ১৯০৮ সালে **চীনা** দলের বিষয়েদ্ধও তিনি থেলেছেন। প্রেটিছের গণ্ডী

পেরিয়ে সা্বোধবাবা এখন বার্ধাকে পা
দিলেও ফাটবলের নেশাটি প্রো দংত্র
বর্তমান। মাঠে আসা চাই বেজে, আর
ছেলের অর্থাং শিবাজনীর খেলা থাকলে তো
কথাই নেই। এমনও দেখা গোছে, অফিস
ঘারে শিবাজনী মাঠে আসার আনেক আগের
সাবোধবাবা, মাঠে হাজির। পিতা সা্বোধ
বাানাজনী কি প্র শিবাজনীর মধ্যে নিজের
ভবিটি দেখতে পান ? হর্তো বা পান, না
হলে এই বর্তেন কোন টানে বেলেঘাটা
থেকে গাডের মাঠে ছাটে আস্বেন?

সাত আট বছর বয়স থেকে শিবাজীকে
ফ্টবলে উংসাহিত করেন স্বাধান্ত্র
নিজেই। স্বাধন ছিল শিবাজীকেও নোলকীশার তৈরী করবেন। স্বাধন যা সাথক হাতে
করার উপার কি? শিবাজী স্বোধবাব্ব
ছাট ছেলে। স্বাধা ১৯৫২ সালের ২৬
নতেন্দ্র গ্রুব কল্লাভার ওদ্যা রাজ্য লেনে

ংবলেঘটো) মামা বাড়ীতে। **আদি বাড়ী** খঙলায় (বহুড়ান

ফটেবনে শিবাকীর হাতে থাড় বাবার কাছে। বংগ্রাসী শুকুলে ফাইভ-সিক্সে গড়ার সময়ই বাবার নিদেশি মত তিন কাঠির নীচে দাঁড়িয়ে গিয়েছিল। শরের ক্যা ভার নিজের মূথ থেকেই শোনা যাকঃ

দ্রাট্রেলায় বাবার মুথে অভীত
দিনের গোলরক্ষক আহ'ছিং পটার ভেডিস
মাণ ভাল্কদার ওসমান কে দত্ত প্রমান্তর্
গংপ শানেছি। আমার কাছে ভখন ঐ গল্প
প্রায় রপে কথারই মত। শ্নেতাম আর
ভারতাম স্থান দেখভাম—বঢ় হবো, বড়
হ'বা, আমশ্বং ওসমান কে দত্ত এবং
আমার বাবার মত বড় হবো। কিন্তু
পারলাম কোথায় ও'নের ছু'তে? স্কুন্ধে
পড়ার সময় শাধ্য ফাট্রেলাই খেলিনি, আমার
লাটিকসেও নেমেছি, ক্লিকেট হাড়েভে পারি নি, কিন্তু
ফ্ট্রেনা, ক্লিকেট ছাড়েভে পারি নি, কিন্তু

THE LAY SHOW SHOW

থলেটিকস শেষ পর্যাকত ছাড়তে হয়েছে! देशमा क्रिकार विकास क्याधान दिकाम রবাসী কলেকে পভার সময় কেন্দ্রীয় क्राधन्तक थि क्रोवज त्यांबारे आहि क्रिक्ट য়ছেলেন ভাষাকে। ১৯৬৮ সালে বংগ-ধা সকলা খেকে হায়ার **সেকেন্ডার**ী াীকায় গাশ করার পর ভতি হোলাম -এস-সি প্রায় জন্য **বপারাসী** কলেছে। মনে পর্বাক্ষা ১৯৭০ সাজে কলকাতা ¥ব্বিদ্যালয় দেপার্টস বোড়া পরিচালিত া-তঃ বলেড আথকেটিকস প্রতিযোগিতায দা বাহালা বংগ্রাসীর হয়েই নেমেছিলাম বং একশো মিটার দৌড, হা**ইজাম্প এবং** ডল**েপ াস্ট হয়েছিলার। ফাটবলে**র ত ক্রিকেটত খেলি সি এ বি সিনিয়ার লীগে। ুর্ করেছিলার জ্বীন্যার জীগে। গোডায় ্রাশনালে। তাবপর সিনিয়ারে এলাম ইউ-নয়ন দেপার্ট'ংয়ের হয়ে। ইউনিয়ন স্পার্টিংয়ের পর গুরীয়ারে খেলেছি খেলেছি স্টেবেলালে। সি এ বি নক-আউটে গ্রেবনের বির্দেশ **এই অধ্যের সেগ্যর**ীও আছে। আনতঃ দকল ক্রিকেটে প্রধা কলকাভার ালে খেলাল সময়ই কিকোটে ফাটবালের প্রভ াতিমত সিরিয়াস হয়ে উঠি। ভারি. ্টবলৈ বাবায় কাছ থেকে, কালীঘাটের মাংসালিদদার কাম থেকে, **সন্তারদার**, অমল-দার এবং প্রদীপদার কাছ থেকে যেমন সহ-যোগতা, সাহচয় এবং গাইডেন্স প্রেছি ফিকেটে তেমনটি পেলে হয়তো রণজি ট্রফিটে থেকতে পারতম এতাদনে।

'তবে ক্লিকেটই বলনে, আথকেতিকসই বল্ন, আমার সব কিছু ভেসে গেছে ফ্ট-ব্ৰোর ভালবিস্মায়, অবশ্য তার কল্পও রয়েছে। বাবা চান তারি। ভাউবলই সিরিয়াসলি খেলি, মা (উমা দানোলো), দিদি, ভামাইবাল ান আমি ফ ট্ৰলকেট তাঁকড়ে থাকি। থালার ইচ্ছেও <u>এই মোলা শিল্</u>ছারি ন্ত**্**র গেমেটো পড়া মেয়ে: যেলাধ্বায় ভীনৰ ইন্টারেলেট্ড।

মধোয়া সিনিয়ের ডিভিসন ক'ল চাউ শলে শিকাজনী প্রথম খেলেছেন ১৯৭০ সালে বাদার প্রোলে: ক্লাক কলেখিটে। এই ক্লাব থাকার সময় ১৯৭১ সালে আসামে আয়ে-জি**ত জ**ুনিয়ার জাতীয় ফুটবলে (জঃ বি সি রায় উফি) পৃশ্চিম বাংলার হয়ে শিবালী খেলেছিলেন। প্রের বছর শিবাছ*ীর স্*থান হয়ে চোল গোয়াধ সন্তোষ ট্রফি অর্থাং জাতীয় ফুটবুণ প্রতিযোগিতার আসরে। তখন তিনি হাওড়া হউনিয়নের গোলকীপার: এই ১৯৭২ সালই সম্ভবত **শিবাজী**র হত্তবল জবিনের সব চেয়ে উৎজনে বছর। শিবাজনী কলকাত: তথা বাংলার ক্রীড়া-র্রাসকদের নজর কাডেন ১৯৭২ সালে ইম্ট-तिश्तम ब्राप्ति मीतित अक्षि व्यमात बाधाव्य। পরপর প্রায় ১৪।৯৫টি ম্যাতে ইন্টবেণ্গল (নেবারের অপ্রাঞ্জিত চ্যাম্পিয়ন) করের ধারা অব্যাহত রেখে আঙ্গছিল। সেদিন প্রতি ম্বন্দ্রী হাওড়া ইউনিয়ন। লীগ কোঠায় হাওড়ার অভিতর ঐ সমনটায় মোটেই প্রতি

Bright and the state of the sta

করে বলার মত কিছা নয়। সার থেকেই ইশ্টবেশ্যল হাওড়া এগাকায় সূৰ্বাত্মক আরু-মণ চালালো। প্রতি মাতাতেটি গোল চয়, হয় ভাব। ইস্টবেংগলে খেলছেন: অর্ ব্যানাজি, সুধীর ক্মাকার, চল্টেম্বর প্রসাদ, অংশক ব্যানাজি, প্রবীর মজ্মেদার মোহন সিং, গোড়ম সরকার, স্বপ্ন সেনগণেত হাবিব, আকবর এবং সম্মেশ চৌধারী। বঙ্গতে গেলে গোটা সত্তর মিনিট খেলা হোল ইস্টবেশাল আর হাওড়া ইউনিয়ানের গোল-কাঁপার শিবাজী ব্যানাজির মধ্যে। এক সম্য রেফারী শেষের বাঁশীও বাজালেন। ফলাফল গোলশ্বা। সতি। কথা কাতে কি হাওাড়ক প্রেদিন বাঁচিয়েছিলেন অথবা ইম্ট্রেপালকে বিমাখ করেছিলেন একা একটি ছেলে, নাম খিবাজী ব্যানাজি। অতীতের সেট মারাঠা নায়কের বিক্লমেট সেদিন গ্রেক উঠেছিলেন শিবাজী। সেদিনের একটি ঘটনা শিবাজীর স্মাতিতে অম্লান। বেলা তথন দটো হবে। ওমদারাজা লেনের বাড়ী থেকে গ্লাঠের দিকে ব্যুলা ছাক্ষেল তাবা-মাকৈ প্রথম করে। সদর পর্যাপ্ত এগিয়ে এলেন সংবোধবাব;। চোধ-মাখ দেখে মনে হোল, যেন কিছা বলতে চান ছেলেকে। শিবালী শ্বোল : 'কিছ্ বলবে বাবা?' সুবোধবাব ছেলের মাথায় হাত রেখে বললেন : শিব, সভর মিনিটে দশটা পজিটিভ এটাক হয়তো হবে। সেই प्रभागे। यां क्र**ामनाधे क्रां** करत हात्थ पिट পারো তো কেলা ফতে'। বাবার পরামশ মত বেদিন কিছা করতে পেরেছিলাম কি না, আপনারাই তা ভালো করে জানেন!'।

হাওড়া ইউনিয়ন-ইফটবেংগলের খেলা-

॥ आधारमञ्ज প्रकामनात्र करम्रकथानि खनवम्। शन्थ ॥ নচিকেতা ভবস্বাজের

অচিন্তাকমার সে**নগ**েওর

অন্তপ্রেষ যীশা

যাশ; খ্রীভের পর্ণোপ্য জীবনী —বাংলা সাহিত্যে এই প্রথম। 'অম্ত সংহিতা ৫টি মহাদেশের ৮০ জন কবিব প্রেষ যাঁশ্রে সাহিত্যিক প্রসাদগণে ১১৯টি কবিতার সমগ্র খনীস্ট্রাবিন অন্তন্ত। এ জীব্নকাহিনী নীরস নয়, গাথা শিল্পখন্ধ সৌক্রে প্রিবেশিত। কথাসাহিত্যার মতই পাঠা, উপভোগা'। এটি একটি আশ্চর্য কবতার বই। বাংলা —দৈনিক যুগান্তর—১৬-০০ ভার পদ পালের

ভারতের সংবাদপত্র

ভারতের সংবাদপত্র ও সাংবাদিকতার উৎপত্তি ও জমবিকাশের ধারাবাহিক ইতিহাস। পরিচ্ছল ভাষার ভারতের সামাজিক ও রাজনৈতিক পটভূমিকার বিশেল্যণ করে লেখক সংবাদপতের অগ্র-গতির চমংকার বিবর্গ দিয়েছেন। একটি অপূর্ব গ্রেষণ ম**্লেক • গ্রন্থ** ।

—দৈনিক যুগাদতর—১৫-⁰⁰

गामन उक्वरीय

ভাপা হরফের হাট বাংলা সাহিত্যের পঠিম্পান কলেজ দ্বীট পাডার দেজশো বছরের ইতিহাস-

এই স্থেপ্টা রচনা পাঠকের হাদরে ইতিহাস ছাড়াও আরও কিছার স্বাদ যোগাতে পারবে। সাধারণ পঠিত বই-থানি থেকে বস ও তথা, হাদকের উত্তাপ ও তত্ত্ব দুই ই পাৰে'।

—তারাশংকর বন্দ্যোপাধ্যায়—৫-0°

मीनानि वाद्यव

व्याजार स्मा भर्ष

সকল শ্রেণীর পাঠকের মনে দোলা দিতে পারে এমন একটি অননাসংস্কর উপনাস। 'নতন একটি আলোকপাতে वक्रवार्षि अञ्चलकारव श्रीतत्कारे । शक्रवार মনে একটি আধান্মিক বা কৃপতা জাগে, व्यात अते शार्थनात मीर्शामधा । कर्री হাত থেকে সহসা নামিয়ে রাখতে ইচ্ছা করে না, মনে হর আরো একবার পড়ি।' --অচিন্ত্যকুমার সেনগ্রেত-২-৫০ এक मृजुः अनन्छ कीवन

অনবদা কাৰো অখনত খ্ৰীস্ট্রাবন সাহিত্যে তো বড়েই. প্রিবীর সাহিত্যেও এই ধরণের বই দালভ'--- विद्वकावनम् माः भाभाषाय- ३०-००

माधानक ठएवाभाषात्मव

অপ্রাশলা লেখ

(Tears on Tombstone)

দেশ-বিদেশের সমাধিলিপির আন্ত-জাতিক সংগ্ৰহ। ইংরেজী ও বাং**লা**য় শ্বিভাষিক প্রশ্ব। 'তাজমহলের মধা দিয়ে সাজাহানের বান্তিগত শোক বিশেবর সকলের শোক হয়ে উঠেছে। তেসনি সফাধি প্রদত্তরে উংকার্ণ অহালেখাও এই প্রত্তের মধ্য দিয়ে অল্পেক স্মৃতি-গাথায় মম্বিত হয়েছে'-

--রবী•রভারতী প**রিকা--১০-**০০ সন্তোষকমার অধিকারীর

লিজনি শিখর

বিশ্বয়াশেধর পটভূমিকায় **577** কেইনের বিখ্যাত উপন্যাসের বঙ্গান্বাদ 🖟 থাসির রোদে উম্জবল, চোথের জলিট সিত্ত, হানরের মর্মাঞ্চল ছবুরে যাওয়া অমর আবাদানের এক অনবদ্য কাহিনী —স্-ৃবি-দ—৫-০০_১

বিজন ঘোষের स्मिद्धमणी शक्स

বিভিন্ন দেশের সাহিত্যের সেরা-প্ গ্ৰুপ ও কাহিনীর সংকলনা একটি উংকৃত অন্বাদয়ক। পালপার্টার ভার-বস্তু অক্ষার রেখে সেখক বাংলার ভাব यथायब ब्राम्मक्त्र करत्रद्वन । हारे धान,वान-গ,লিতে লেখক সম্বস্তা ও শিক্ষাম পরিচর দিরেছেন'---

-खरानी मृत्याशायात्र-**6**:00

अथि। अरव ७६०, महाचा गान्नी खाड, क्लिकाडा-३ ट्लान : ०६-४४५३

টিকে কেন্দ্র করেই শিবকোঁ ময়দানে প্রতি-তিত হলেন। ভারত তথা এলিয়ার প্রথাত গোলক পার পিটার থাগারাক পারের বছর ক্ষকাতার ছিলেন তাণেকাদন। শিবজোক ইন্ট্রেপানে টেন এনে নিজের হাতে প্রায় মাস্থানেক ধরে ত্রিম প্রেম। স্মত্বতে ক্রারী জন্ম চিনেছিলেন। প্রারোজের এই एक्तिक बना भिवासी बाउछ । अनक स उन কিছা তিনি শিখার পোরছেন, জানতে **শেরছেন। গোল চ**নালাল ক্লোভ করা, ঠিক মত পশ্চিসন দেখন, হিন্দু করে গেলে লোভী করওয়াড় দর মাধার ওপর দিয়ে শ্ব ফিস্ট বা গ্রিপ করার টেকনিক অনেক সংশোধন পিটার থভারাক করে দিয়েছেন : পথেরাজের প্রতি ক'র প্রগাচ শ্রাম্বা। এখা আম্পা আরু ভালসাসং তরাপ কমার **ওপরও।** শিবজে^মর ভারার, ভেরাবের হাত মোলৰ পিৰ এখন ভাৰতে দেই হি ইজ ভৌক্ষনিরীল জি বেলা

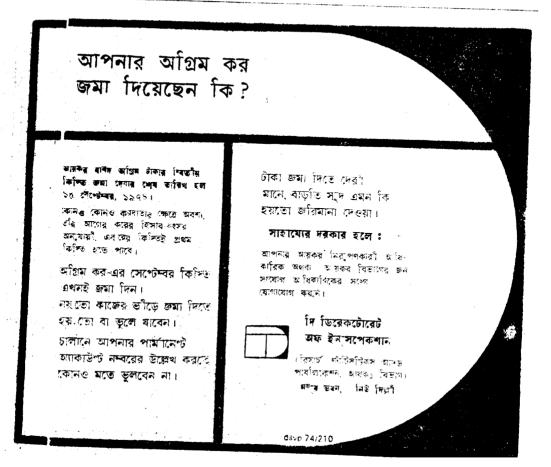
শিবাজী বাসাজি খলরাউডার। চারস খোলায়ড়। খুট্টল, হকি জিবেট ভাগ-লেটিকস বা ব্যাডালিটনের ভাসরে শাস্ত শক্ শরিন্ধিতির আলাকাতে সে খাডানত। বিলক্ত

সম্পতি সংসারের খেলাটা তাঁকে খনিকটা বেকাষদাহ ফোলেছে বাবা সাবোধবাবা কল-কান্তা কংশ্যাশেষের চাক্রী থেকে ভারসের ^{কো}ষেভেন≀ তাই সংসারের যাবতীয় দরি-প্রিম্ব চেপেছে ফার্টিপিট্রভার কপোরেশ্ন-এই চাকরে শিবাজী আর ভার দাদার ওপর: গ্রিকাকের পেনারির সারের সামানত সিবারী হেমন হাবড্রস্থান কোন*াল*ন ঠিক তেমনি ার্চাস হতান সংসারের ফ্রিট্রকাল প্রি-ିନ୍ନୀତ୍ର মঙ্গেছ। ହଂଶ ধାଣ୍ୟା ଓ । ଅଧାର (କନ୍ েই কোটের সামা পরিসামা দেই। গোরংক বৰ্ণীভাত করাত প্রারক্ষে সংসারের কামেলা চাৰে কম সায়: জামারা দু-ভাষে চোল থা বোজগার করি তাতে এখন প্রতি প্রব শ্ৰীভাৱেট কাণছে দ্বিষ্ঠাভ কৈ ধ্ৰ কানি না. যেনে জানি না কলকাতাৰ স্টেব্য নাটার ভারমায় চ

শান্তিক মান্তব বার্গমান চেচালা দেখা বে। কি বাস্থাত প্রবান হে, আগ্রেমী বাধ্য এখন দ কি হবে, প্রতিলিখি কোন্ত্রাত কোন্ত্রা হাওছাল পালা ভূলগো এই তো লবান্ত্রাক গোড়াক দিকে জালতুমা দুল্টা দকা নাজ্যক একটো উল্লেখ্য বিষয়ে প্রকাশ প্রভাবে কোন্ত শহর্ষিক সাম বাস্থানি পালার হাল্লেক। সংক্ষাক বৈর কোন প্রতিপ্রাতিই খোপে টিকলো হা স্তিবাং দ্টান্ডেড ভাল করবো, ভাল করে কোল শাধ্য বাইরে সোলগোল জুললে দ লাভ হবো খানিকটা বির্ভি ছিলিট্ট শিব হা বলকোন কয়টা।

গ্রাজনী সংস্পূর্য । রিকটকে গ্রেষ্ঠ । গ্রাপ্ট সংস্কৃতি । রীনাটনি চোপ্ত একলে তুলা, উকলো লক। পেলার আই ছোতু এক গ্রাপ্ট কি প্রাপ্ত করিছে । প্রাপ্ত করিছে করিছে প্রাপ্ত করিছে করিছে প্রাপ্ত করিছে করিছে করিছে প্রাপ্ত করিছে করিছে । করিছে করিছে প্রাপ্ত করিছে । করিছে করিছে প্রাপ্ত করিছে । করিছে করিছে নাম স্কর্মাণ্ড (এটেকটো ফিনিটার করিছে । করিছে নাম স্কর্মাণ্ড (এটেকটা ফিনিটার করিছে । করিছে নাম স্কর্মাণ্ড (এটেকটা ফিনিটার করিছে । করিছে নাম স্কর্মাণ্ড বিশ্বাপ্ত করিছে । করিছে । করিছে নাম বিলেই এই প্রাপ্ত করিছে । করিছে । করিছে নাম বিলেই এই প্রাপ্ত করিছে । করিছে নাম বিলেই এই প্রাপ্ত নাম বিলেই এই প্রাপ্ত করিছে । একরি নাম বিলেই এই প্রাপ্ত করিছে । একরিছার করিছে । একরিছার করিছে । করিছে নাম বিলেই এই প্রাপ্ত নাম বিলেই এই প্রেই এই প্রাপ্ত নাম বিলেই এই বিলেই

विभवन वरम्माभाषाय





WW a

সেৰাসৈৰ অবসৰ

বিশের সর্বাকালের প্রেণ্ঠ চৌকস টেশ্ট বিকেট গেলোয়াড় গালাফলড সোনাস্থা প্রথম প্রেণ্ড বিকেট গেলা থেকে ভার অবসর গ্রহণের সিংধান্ত ঘোষণা করেছেন চলাতি ১৯০২ সংগ্রহ ইংকাশ বিকেট অবস্থার শেষে তান প্রথম প্রেণ্ডার কিকেট থেকে অবসর নেবেন। সোনাস্থা ১৯৬৮ সাল থেকে নিউহ্ডামসায়ার কাউন্টি দলের প্রকেটিংডামসায়ার কাউন্টি দলের প্রকেশ বিটাটা বিকেটে থেকাছেন। বিকেটে বিককেট থেকাছেন বিজ্ঞান বয়স ৩৮। এই বয়সে একনাপাড়ে প্রেণ্ডালাই জিকেট থেকায় কান্দ্র তা আছেই তার বগর আছে ভার প্রিয়র সেই প্রবাধা ব্যথা।

১৯৫২ সালে ১৬ বছর বয়সে ওয়েস্ট ইণিডজ সফরকারী ভারতীয় ক্লিকেট দলের বিশক্ষে সোবাস বার্যাদোজের হয়ে প্রথম খেলেছিলেন। মার দটে প্রথম প্রেণীর ক্লিকেট খেলে ভিনি ১৯৫৩-৫৪ সালে স্বনেশের লাটিতে ইংলাডেডর বিপক্ষে মান একটা টেকেট আছত ভ্রালেকটাইনের শ্নোস্থানে বোলার হিসাবে দল্ভক্ত হয়েছিলেন। ক্ষীবনের এই প্রথম ে উল্ট থেলায় ভেনি ৮১ বানে ৪টে উইকেট পান এবং একটা ইনিংকে নটআউট থেকে মোট ৪০ ধান করেন। এমন কিছুই নয়। তবে রাতারতি আদতজ্বতিক খ্যাতি লাভ করেন ১৯৫৭-ও৮ সাকে পাকিস্ভানের বিপক্ষে স্বাদেশের মাটিতে টেস্ট সিবিজ থেলে। কংস্টনে পর্তিক্তানের বিপক্ষে এক ইনিংলে নট-আটেট ৩৬৫ বান করে তিনি টেল্টের এক ইনিংসের খেলায় সবৈণিত ব্যক্তিগড় রানের যে বিশ্ববেকড' করেন তা আৰুও আন্মান आह्य । अहै भितिरक छौत वाहिश श्रीवञ्गश्याच দাঁডাল- থেলা ৫. ই^{*}নংস ৮. নটআউট হ্বার, মোট রাম ৮২৪ এক ইংনংসে সবেক্তি বান নটজাউট ০৬৫, সেপালী ৩ এবং গভ ১৩৭-৫৫। ক্রেন্ট খেলায় সর্বাধিক য়োট বানেব ্বশব্রকড€ও কিলি করেছেন-৯৩টি টেট্ট মোট ৮০৩২ ধান। টোল্ট খেলায় দলভি ভাবল (১০০০ बान ७ ১০০ উইকেট) अस्मक বৈশকোরা**ডেই** পেয়েছেন। কিল্ডু কোন একটি দৈখের বিশক্তে টেস্ট থেলে এই 'ভাবল' খেতাৰ পোৱেছেন একমাত্ত সোবাৰ্স-কেবল हेरनाएनका विभएक एकेके स्थान जिल्ल सार्थ **৬২**১৪ বাল করেন ' এখং **উইকে**ট প্রল

५२० हिं। हैश्वारण्य विभागा व्यक्ति गोले খেলার পরিসংখ্যার দাড়িয়েছে: খেলা ৩৬, ইনিংস ৬১, নটজাউট ৮বার মোট খান ৩২১৪, এক ইনিংসে 3873 135 কান ২২৬ (বাব⁴াদোজ, ১১৫৯-৬৫), শেণ্ডারী ১০টি, ক্যাচ ৪০ এবং প্রভ ৬০-৬৪। বোলং--৩৩২৬ রালে ১০২টি **উ**≷८क्*रे। होत्ये प्राव*िक '**कानन' स्थ**णाव (১০০০ খান ও ১০০ ট্রইকেট) লাভের তালিকায় সোবাস মোট বান এবং মোট উইকেট পাওয়ার দিক থেকে শীর্ষস্থান পেয়েছেন-মোট বান ৮০৩২ এবং মোট উইকেট ২৩৫। চে×্ল ক্রিকেটে স্মা**রাসে**র পরিসংখ্যান : খেলা ১০, ই নংস ১৬০, নটআউট ২১বাল মোট বান ৮০৩২ (বিশ্ব-

Homeway a particular of the particular of the second of th

ক্ষেত্রত এক ইনিংসে সংক্রান্ত বান নট আউট ৩৬৫ (বিশ্বকেকড) সেল্কুরী ১৬ (বিশ্বকেকড) কেন্দুরী ১৬ (বিশ্বকেকড) থেকে ৩ট কমা এবং গড় ৫৭-৮৯। বৈশিক্ষ বল ২১৫৯৯, ছেডন ৯৭১ ছান ৭৯৯৯, উইকেট ২৩৫ গড় ৩৪-০০ এবং এক ইনিংসে দুটি উইকেট

বিশ্বটাউনে ১৯৩৬ সালের ২৮লে
শ্বাই সোবাসে জন্ম: তার বাবা
শিক্ষা বিশ্ববস্থে সোবাসের বাবা
সকলে মারা বান। পিছহীন সোবাস
নিজের প্রতিভা এবং অধারসায় গ্রে
জাজ সমাজের একজন গ্রামানা বাভিঃ
সারা বিশ্বজ্যে গ্রি নাম-ভাকঃ ভাব



নেতৃত্বে ওরেন্ট ইন্ডিজ্ঞ দল টেন্ট জিকেট থেলার অন্ট্রেলিয়ার বিপক্ষে 'ওরেল ট্রফি' এবং ইংল্যান্ডের বিপক্ষে উইসডেন ট্রফি জরী হয়। এবং তার নেতৃত্বে দান্তিশালী দেশাশ্রেলর বিপক্ষে দাবার' জয়ের সূত্রে ওরেন্ট ই'ন্ডিজ ভিকেট খেলায় বে-সরকারীভাবে এক সময় বিশ্ব খেতাব ক্ষয় করেছিল।

সোৱাস একজন সহজাত ভিকেট থেলোয়াড। কোন্দ্র কোচের কাছে তিনি ক্রিকেট থেলার পাঠ নেন নি। বার্বাদোজের ক্রিকেট থেলার অনকলে প্রিক্ত (যে-পরিবেশে বিশ্ববিশ্রত 'ডবলিটে वय़ी'- উইकम, अग्रामकरें धवः अव्यक्त আবিভাব) এবং বিভিন্ন দেশের বিপক্ষে ক্লিকেট খেলার সূত্রে বিরাট অভিক্লতা-এই দুই সম্পদ তার থেলোয়াড-জাবনে বিরাট সাফল্য এনে দিয়েছে। আত সাধারণভাবেই সোবাসেদ্ধ টেম্ট ক্রিকেট रथलाग्राफ-क्षीवत्मव भ हमा। हेलगार-छव বিপক্ষে ৬টা অস্টেলিয়ার বিপক্ষে ৪টে এবং নিউলিল্যান্ডের বিপক্ষে ৪টে-মোট ३६णे टबेन्टे शाह स्थरनक टबेन्टे **रम**कादी পারেন ন। তখনও ওয়েণ্ট ইণ্ডিজ ক্রিকেট খেলার আসলে বিশ্বখ্যাত 'তিন ডবলিউ'—উইকস ওয়ালকট এবং ওরেলের স্বর্ণ যুগ চলছে। পাকিস্তানের বিপক্ষে ১৯৫৭-৫৮ সালের টেস্ট সিবিজে তাঁর অসাধারণ সাফল্যের স্ত্রেই ওয়েস্ট ইণ্ডিজ ক্লিকেটের ইতিহাসে সোবাস'-য়াগেল সাচনা। পাকিস্তানের বিপক্ষে ১৯৫৭-৫৮ সালের টেস্ট সিরিজের ৩র টেল্টে (কিংস্টন) সোবাস ইংশ্যান্ডের লেন হাটনের টেপ্টের এক ইনিংসের খেলায ব্যক্তিগত স্বেচিচ রানের বিশ্বরেকর্ড (১৯৩৮ সালে প্রতিষ্ঠিত ৩৬৪ রান) ভেলে দিয়ে শেব প্ৰণ্ড ৩৬৫ মানে অপরাজিত থাকেন। তার এই প্রথম টেন্ট সেন্ডরে । এরপরই ৪৩° টেস্টের (জর্জ-টাউনে) উভর ইনিংসে দেগুরী কবেন (১२৫ ও ১০১ नहेकाछिए)। यहान एएस्पेस উপয**ু**পরি তিন ইনিংসে সেঞ্রী করার গোরব লাভ করেন-নটআউট ৩৬৫. ১২৫ ও নটআউট ১০৯ বান। পাকিস্তানের বিপক্ষে ১৯৫৭-৫৮ সালের টেন্ট সিরিজ তার ব্যাটিং পরিসংখ্যাল প্রাদ্ধার্শবেশা ৫ ইনিংস ৮ নটআউট ২বার আটে রান ৮২৪, এক ইনিংসে সর্বোচ্চ মান ৩৬৫ নটআটট, সেঞ্দী ৩ এবং গড় ১৩৭-৩৩! সোবাস' **২টি ন্যাটা খেলোরাড-বাঁ**

সোবাস হাটি ন্যাটা হৈলোরাড় বাঁ
হাতেই বাটে এবং বল করেন। বােলিংরে
তিনি এক নতুন ধারার প্রবর্তক। ইছামত
গণেট হিডিয়াম বেেলিং চার্নামানের
রূপান্ত রিত করতে পারেন—ব্যাটসম্যানের
কাছে সে এক ভেন্কির খেলা। এর ওপর
হাতের পাঁচ তার লেফট ছামেনিবন
বােলাং তা আছেই ৯ এক্টন্ট বােলারের

সোবার্সের টেম্ট পরিসংখ্যান

ৰি পক্ষে	ভেঁচট	≹िनश	নট শ আউট	क्या डे बान	এক ইনিংসে স্বেশ্চ রান		গড়	ক্যাচ
ইংল্যান্ড	৩৬	৬১	A	०२১८	२२७	20	8e-0e	80
অস্ট্রেলয়া	22	৫৮	٥	5650	>७४	8	80-28	২৭
ভারতবর্ষ	28	00	٩	>>>0	১৯৮	¥	bc-89	ર વ
নিউজিল্যাণ্ড	۵۶	28	>	508	১৪২	>	২৩-৭৬	52
পাকি>তান	ь	20	₹	৯৮৪	৩৬৫*	٥	A2-84	8
মোট ঃ	৯৩	১৬০	२১	४००३	৩৬৫*	২৬	¢9-98	220
							এ	ক ইনিংসে
্বিপক্তে		বল	মের	G A	ब्रान	देशे कि	গড়	৫ উই:
ইংল্যান্ড	1	ba & o	83	0	৩৩২৪	\$ 334	95-68	ی
অস্টেলিয়া	8	১৮৯৫	50	<u>د</u>	২০২৬	3.5	৩৯-৭২	₹
ভারতবর্ষ	8	3299	₹:	. હ	১৫১৭	65	રૂ હ-૧૨	>
নিউলিল্যাণ্ড	•	>>>9	50	5	७४२	>>	oc-68	o
পাকিস্তান	,	১৩৬৫	£	た る	১ ৫৫	8	220-96	0

H008

295

জীবনে বেলিংয়ের এমন সমন্বয় আর শ্বিতীয় নেই।

25569

মোট ঃ

অন্তের্যালয়ার শোফিল্ড শীস্ড এবং
ইংল্যাণ্ডের মা টভে সেংগ্রাল লাঙকাশামার
এ কার্ট্রীন্ট ব্রিকেট লাগিরে পেশাদান
থেলোয়াড় হিসাবে সোবাস্ খ্বই জনপ্রি
ছিলেন সোবাস্ ১৯৬৪ সালের প্রথাতি
উইসভেন ক্রিকেট বর্ষপঞ্জিকার বছরের
পচিজন থেলোয়াড়ের ভালিকার নির্বাচিত
হন। ১৯৭৪ সালের উইসভেন বর্ষপাজ কার সোবাস্ সম্পর্কে ৪০ প্রতাহ
পাজ কার সোবাস্ সম্পর্কে ৪০ প্রতাহ
স্বান কাল তার আ্লে এত পাতা কোন
থেলোয়াড় পান নি।

তদ বছর বয়সে সোবাস সস্মানে প্রথম শ্রেণীর ক্লিকেট থেলা থেকে অবসর নিচ্ছেন। তার থেলা আজ্ব অস্পান আছে। গত আগপট মাসেই ইংলিস কাউটি ক্লিকেট শীগ খেলায় তিনি তিনটে সেণ্যুরী করেন— ভাবিশায়ারের বিপচ্ছে ১৩০ সামারসেটের বিপক্ষে ১৯৮ এবং ল্যাংকাশায়ারের বিপচ্চে নট আউট ১৩২ রান। এর মধ্যে ভাবি-শায়ারের বিপক্ষে ৮০ মিনিটে যে সেণ্যুরী করেন তা এবছবের ক্লিকেট মরস্মে স্ব থেকে কম সময়ের সেণ্যুরী।

এশিয়ান গেমস

তেহেরানের আর্যামেহেব চেটভিয়ামে প্রত ১লা সেপ্টেম্বর এক বর্ণান্ত পরিবেশে ইরানের শাহ আনুষ্ঠানকভাবে ৭ম এশিয়ান গেমসের উদ্বোধন করেছেন। এশিয়ার ২৫টি পেশের তিন হাজাব প্রতিযোগী মার্চ-পাস্ট অনুষ্ঠানে অংশ গ্রহণ করেন। ভারতীয় দলের নেড্ছ করেন পারভিনকুমার। ক্রীড়ানুষ্ঠান শের হবে জাগামী ১৬ই সেপ্টেম্বর।

অন্টেলিয়া সফরে এম সি সি

90-0k

30€

আন্তামী শবিকালে মাইক ভেনেসের নেহছে ইংলাডের এম স দি দল অপেইলিয়া সফবে যাবে। এই এম সি সি দলে নীচের ১৬ জন খেলোয়াড় নিবাচিত হয়েছেন। অপ্রভাশিতভাবে দলভুত হয়েছেন অফলেক েনি ভেড টিউমাস্ এখানে উল্লেখ্য টেউমাদ ৬ বছরের বেশী কোন টেউ মাচ খেলোক নি

এখানে উল্লেখ্য ইংলাান্ড বনাম অস্ট্রে লয়ার টেট খেলাই পৃথিব^ন্ নাটিতে প্রথম টেটট ক্রিকেট খেলা—সাচনা ১৮৭৭ সালের মার্চ ১৫, অস্ট্রেলিয়ার মেলবোর্ণ মাঠে।

এপর্যন্ত ইংল্যান্ড বনাম অন্তের্ট্রন্থার যে২১৪টি টেস্ট খেলা হংগ্রছে তার ফলাফল: অন্ট্রেলিয়ার জয় ৮২, ইংল্যান্ডের জয় ৭০ এবং খেলা ড্র ৬২:

নিৰ্বাচিত খেলোয়াড়ৰ প

মাইক ডেনেস (অধিনায়ক), জিওফ বয়কট, ডেনেস আামিস, জন এডরিচ, কিও ফোটার টনি গ্রিগ ডেভিড লয়েড, জিওফ আনলিড মাইক হেনাক্রক পিটার লেভার জিস ওগড ফেড টিটমাস ডেরেক আণ্ডার-উড, বব উইলিস্ আলোন নট এবং বব টেলর।

াৰণৰ জন্নিয়র দাবা প্রতিযোগিতা

ম্যানলার অনুষ্ঠিত ১৩শ বিশ্ব জুনিগর দাবা প্রতিবালিতার ইংল্যান্ডের এন্টনী জন মাইলস বিশ্ব খেতাব জরী হয়েছেন। ইংল্যান্ডের পক্ষে তিনিই এই থেতাব প্রথম পেলেন। মাইলস শেফিল্ড বিশ্ববিদ্যালয়ের গণিতেল ছাত্র। বয়স ১৯ বছর। এবারের প্রতিযোগিতার ২৬টি দেশের খেলোরাড্রা অংশ গ্রহণ করে-ছিলেনঃ

শ্বত্তবৰ্ষের স্মন্ত্রণীয়

मत्नादमारन बन्द

১৮৩১ খ্ডাকের ১৪ই জ্লাই ্৪ পরগুণা জেলার ছোট জাগ**্রলয়া গ্রা**মে শ্মগ্রহণ করেন নাটাকার মনোমোহন বস্। ই গ্রামেই পরবত ক্রিলের ঘশস্বী ঃ মণ্ডাভিনেতা ছবি বিশ্বাসের আদি किन्। সম্ভান 2225 शक्रात्यम নোমোহন বস: পরশোকগমন করেন। ্যাশ্নাল থিয়েটার প্রতিষ্ঠার পরেব এবং ব্রে বাংলার নাট্যান্ডেদা**ল**নের ম-লে নোমোহন বস্থাক কোন মতেই আম্বর ফেলভে পারি না।

নালাকাল থেকে বাংলা রচনায় অভ্যতত ন। প্রভাকর তত্ত্বোধিনী প্রভৃতি পরিকায় বেশ্ব ও অন্যান্য রচনা লিখতে থাকেন। রভাকর নামে সাংতাহিক পারকা প্রকাশ রেন। মধ্যথ নামে সাংতাহিক পারকা মধ্যথ নামে সাংতাহিক পারকার মধ্যথ নামে বংলার নাটানেদালন ম্পাকতি বহু তথা লিপিবশ্ব আছে। মাভিষেক প্রণয়পরীক্ষা সভী নাটক রিশ্বলার নাগালামের অভিনয়, পার্থ পরাজয় স্বশীল। আনন্দমস্য নাটক রচনা করেন। লা থিয়েটার, পাঁচালী প্রভৃতিশ্ব জনা বহু না রচনা করেন। নামে একখান ইতিহাস রচনা করেন। বা থিয়েটার, পাঁচালী প্রভৃতিশ্ব জনা বহু না রচনা করেন। নাটাকার এবং কবি হসেবে সমান খাতে ভিলেন।

উদ্বর গ্রুপ্তর জনতেম শিষ্য কবি মনো
থাইন বস্থা তখন যাতা, আথড়াই, হাই

যাগড়াইর জন্য সংগতি রচনা করে ধ্যাতি

কোন করেছেন। বহুবাজার বংগ নাট্যালহের

উদ্যোজারা কবি মনোমোইন বস্কুকে নাটক

চনা করে দিতে অনুরোধ জানান। ১৮৬৮

শ্টাব্দে প্রমাভিষেক নাটক অভিনতি হরে

রসম্ভব জনপ্রিয়ত। অর্জন করে। এই

ম্প্রমাই ১৮৭২ খ্ল্টাব্দে সতা নাটক

গভিনয় করেন। এবং ১৮৭৪ খ্ল্টাব্দের

ব জানুয়ারী নিজন্ব নাটাগ্রেরে

বারোশ্যাটন করেন সতী নাটক দিয়ে।

রামাভিষেক নাটক এতই জনপ্রিয়ত। মজ'ন করে যে নাটকটি 'বপ' পরিচয়' যেম খ্যাভ চরে ওঠে।

লীলাবতী নাটকের অভিনরের সময়
নেনোমোহন বস্ব বাগবাজারের সভাদের
বহাসেলে প্রায়ই আসতেন এবং নামান
রপদেশ দিরে সাহাব্য করতেন। নীলাদপণ
ছিলনে উপপ্লিভ থেকে উংসাহিত করেন
বং ১৮৭২ খৃণ্টাকের ২৮ ডিসেম্বর
সারকের মধ্যতে পত্রিকায় অভিনরের
মধ্যসামুক্ত সমালোচনা প্রকাশ করেন।

মধ্যতথ পত্তিকা থেকে জানা বাছ বৈ ইংলিশম্যান পত্তিকার মণ্ডব্যে ভীত হয়ে প্রবৃত্তী অভিনয়ে কিছ্ অংশ বাদ দিয়ে নীলদপ্ণিক অভিনয় কয় হয়।

১৯ জানুয়ারী, ১৮৭৩ খ্লাজে পঠিত সালিশী কমিটির অনাতম সভ্য ছিলেন মনোমোচন বস্টা

১৮৭৩ খন্টাব্দের ৭ ডিসেম্বর সান্যাল ভবনে বার্ষিক উৎসবে মনোমোহনবাবার বঙ্কুতায় বহু: তথ্য পাত্তয় বায়। তিনি অভিনেত্রী নিয়ে অভিনয় কয়য় বিশৃশেধ তার অভিমত বাড় করে বঙ্কুতা করেন। অবশ্য তার পর্বেই এ বিষয়ে স্বীয় মধ্যতথ পরিকায় কঠোর সমালোচনা করেন।

১৮৭৩ খ্টাব্দের ১৬ আগ্রন্ট বেংগল থিয়েটার প্রথম অভিনেত্রী নিয়ে শুমিশ্চা নাটকের অভিনয় করেন। এ বিষয়ে প্রস্তু ত চলে জান্যারী থেকেই। মনোমোহন বস্ ১২ ফাশ্চ্ন, ১২৭৯ সালেশ্র মধান্থ পতিকার অভিনেত্রী নিয়ে অভিনয় করার বিবংশেধ কঠোর মন্তব্য করেন।

অম্তবাজার প্রিকা এ বিষয়ে উৎসাহম্লক মণ্ডবা প্রকাশ করলে, মনোমোহ্নবাব অম্তবাজার পরিকাশ বিরুদ্ধেও
বিরোণগারণ করেন। বাংলা নাট্যশালার
ইতিহাস-এর ২৭৬ শ্রীয় এ বিষয়ে
বিস্তারিত তথা পাওয়া যায়।

১৭ জান্মারী, ১৮৭৪ খ্টাব্দে রোট ন্যাশনালে মনোমোহনবাব্র প্রবল্প প্রীক। মণ্ডম্থ হয়। মনোমোহনের বেশীর ভাগ নাটক বিভিন্ন সৌখীন সংম্থা অভিনয় করেন। পেশাদার রুণ্গশালাতেও অভিনীত হয়।

হরিশ্চনদ্র নাটকে মনোমোহন হিন্দ্র মেলায় গবিত তার জাতীয় সংগবিতটির সংযোজনা কলেন। মনোমোহন ছিলেন রক্ষণশীল। তবু সামাগ্রিকভাবে তার নাটাপ্রীতি চির্নাদ্রন কীতিতি ক্রে। অনেকের মতে গিরিশচন্দ্রের ওপর মনোমোহনের গথেও প্রভাব পরিলক্ষিত হয়।

ন্যাশনাল থিরেটার সম্পৃকিতে বাজিপরিচয় প্রসংগ আপাতত বর্তমান সংখ্যারেই
স্থাগিত রাথা হলো। আগামী সংখ্যা থেকে
আমি ফিরে বাবো আমার মূল আলোচনার।
অং
শতবর্বের নাট্যশালার ধারাবাহিকভার।

क्षम नरदनाक्षम

বিগত ১৪ বর্ষ ১৮ সংখ্যার এও প্রতীন প্রথম কলমের শেষ অনুক্রেনে ১৮৭০ সালের জারামায় ১৮৮৩ সাল ছাপা হরোছ। এই অনিক্রাকৃত ব্যক্তির জব্ম আবরা দুর্গিত।

নৰগোপাল মিন

ন্যাপনাল পেশারের নবগোপাল মিচের
সঙ্গো ঝাগবাজারের সম্প্রদারের বংহার্থ
হালাতা ছিল। বিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর নবগোপাল সম্পূর্কে মন্তব্য করেছেন নবগোপাল একটা ন্যাশনাল ধ্রা ভূলিল। সে
খ্ব কাজ করিতে পারিত। জাতার
জাগরনে যেমন নবগোপাল মিচের আমার।
ভূলতে পারি না—তেমনি পারি না জাতার
নাট্যাশালা প্রতিষ্ঠার। হিন্দু মেলার তিনি
ছিলেন প্রবত্তি। ১২৭২ সালের চৈচ মালে
(১৮৬৬ মার্চ) নবগোপাল মিচের উদ্যোগে
প্রথম হিন্দু মেলা অনুষ্ঠিত হয়। গিগিশচন্দের জোষ্ঠা শালেক রজেন দেব মশার
ভার ঐকতান বাদ্ন নিয়ে এই মেলাতে
বাজিরেছিলেন।

বাগণান্তার আমেচার থিয়েটার সম্প্রদার লীলাবতীর অভিনয়ের সময় নতন নতুন সভ্যদেশ আগমনে যখন সম্প্রদায়কে নতুন নামে নামায়িত করতে চাইলেন, তখন নব-গোপাল মিত্র সম্প্রদায়ের নাম রাখেন 'দি कालकारी नाभनान थि(स्पेत:। प्राज्जान স্কুরের প্রস্তাবন্ধরে 'দি ক্যালকাটা' বাদ দিরে শেষ প্যশ্তি সম্প্রদায়ের নাম 'ন্যাশনাল থিয়েটার' গৃহীত হয়। এই নামকরণের জন্য বাংলার নাট্যশালা নবগোপাল মিয়ের কাছে শিরকুমারের ক্তজা। মহাআয়া নবগোপাল মির ব্যক্তিগতভাবে এবং ভার পৃত্তিকা মারফৎ নাট্যশালাকে নানাজ্ঞাবে উৎসাহিত করেছেন। তিনিও বিভিন্ন প্রয়োজনে নাটাশালার ভাকে সাড়া দিয়ে-'ন্যাশনাল পেণারে' সম্পর্কিত বহু বিজ্ঞাপিত ও ডব্ব্য পাঞ্ডরা

ন্যাশনাল থিয়েটারের প্রথম প্রবারের আভানতরীণ গোলমাল মেটারার জন্য যে সালিশী কমিটি গঠিত হয়—তালু অন্যতম সভ্য ছিলেন নবগোপাল মিহ। ১৯শে জানরোরী ১৮৭০ খৃন্টাব্দের এই জিলেন্দ্র সানাল ভবনে অন্তিঠত বার্ষিক উৎস্বেধ নবগোপাল মিহ উপস্থিত থাকেন এবং বক্তৃতা করেন। নবগোপাল মিহ নাটালালার প্রবেজনে সব সমরই সাড়া দিয়েকেন—তার উৎসাহ ও উপদেশে সভ্যদের উৎসাহিত করেন। মেই ন্যালনালের ভিত্তিপ্রসভ্র করেনেন স্ক্রাণ্ডিছ করেন নবংগাপাল মিহ।

—कामीन मह्मानामास



আমীর গ্রীব

প্রযোজনা: এম কে ফিন্মস

বন্ধ অফিস ফম্লায় নিমিত একটি আন্দল্যক চলচ্চিত্র! প্রয়েজক পরিচালক মোহনকুমার তার প্রথম ছবি আল কী পছাঁ! 'আপ কী প্রছাই', 'আয়ন', 'আপ আরে বাহার আরে! ছবিগ্লিতে নতুন কিছু দেবার চেন্টা করেছলেন, কিণ্ডু চিন্তামাদীদের অসহযোগতার জন্যে সবক্টিছলেন, কিণ্ডু চিন্তামাদীদের অসহযোগতার জন্যে সবক্টিছলেন, কিণ্ডু চিন্তামাদীদের অসহযোগতার জন্যে সবক্টিছলেন গ্রেলাক মোহনকুমার সকলের মানারগ্রনের জনো, কে এ নারায়ণকে দিয়ে একটি ফরমারেসী গলপ লিখিনে জলেন হার অনুত্ররা পেরছেন বিদেশী কাহিনী এবং তিনটি বিদেশী কাহিনীভিত্তিক ছারতীয় ছবিব নাম্দণকরণ থেকে। ছবিগ্লিল হোলা জানি মেরা নাম, 'জাল্বন', 'জাল্বন'।

মূলা, মনি বা মনিয়োহন, এবং বগুলা ভগং একই বারে। ছেলেবেলার অত্যাচারীদের অভ্যাচারে নিহত হয় ভারি পিতা. এবং মারেক কৃচন্তাবিন্ধিদের পালার পরে সর্বাস্থ্য ভাগে করে গ্রামে গিলে একটি অসহায় শিশ্বকালক নিয়ে থাকতে হয়। আর এই শেয়েটিই সোণি, হার পিতা ছিলেন একটি বিখ্যাত ফার্মের মালিক; কিন্তু ভার অনুপশ্বিভিত্তে

দেবান্দ্র হেমা **হালিনী**



তেকজন সাধারণ কর্মচারী লক্ষপতি হয়ে পড়ে এবং মনিবক তাত্তিয়ে দেয় তার একমান শিশাকনার কথা চিল্টা না করে। সামায়ক উত্তেজনায় শেঠ দেশিতরাম সেখানেই মারা হা^ল। এবং তাঁরই কন্যা সোনী (সোনিয়া) প্রতিবেশীদের সাহায্যে বড হতে থাকে। তর্ণী হয়ে তাঁর পালিতা মাকে সে নিজেব বোজগার করা. অর্থাৎ লোকের থকেট্থারের প্রসা দিয়ে কায়ক্রেশে সংসার নির্বাহ করতে থাকে। মনির বাবার মৃত্যুর সময়, সে প্রতিজ্ঞা করেছিল যে সে অত্যাচারীপের বিরাদেশ রুখে দাঁড়াবে এবং গর্মার ও অসহায় ব্যক্তিদের বিপদ থেকে বাচাবে। এখন সে তার পূর্ব প্রতিজ্ঞা রক্ষা করছে বুগলা ভগণ-এর ছন্মবেশে। অর্থাৎ সে রঘ; ডাকাড'-এর মতো ধনী শেঠদের অর্থ অপহরণ করে শ্রামক, মজুর এবং অংশ অনাহার দের সাহায়া করছে। এরপুর সে হুমুকী এবং ধমক দিয়ে গ্রীবদের অর্থ-সাহায়া, খ্যরাতি দান এবং বোনাস দেবার জন্যে মনমোহনকে 'বগলা ভগতের' নামে শমনও পাঠায়। মনমোহন এবং সোনা দুজনেরই একই ইচ্ছা মনমোহনের উপর পূর্ব অত্যাচারের প্রতিশোধ নেবে। ক্রাইম্যাক্ত এবং এ্যান্টি-ক্রাইম্যাকস্-এর মধ্যে দিয়ে জানা গেল যে সোনিয়ার মা আসলে মনি (মনমোহনের) নিজের মা এবং সোনার বাবা শেঠ দৌলতরায় একপা অত্যাচারী আজকের দেলৈতরামের ষড়য়ন্দের শিকার হয়েছিলেন। কচক্রী দৌলতরাম বগসা ভগৎকে শ্রেপ্তারের কাজে লাগাবার জনো সোনিয়াকে নিজের কথার কন্যা হিসাবে জনসমক্ষে উপস্থিত করলেন। সোনিয়া ও মনমোহনের আসল উদ্দেশ্য ছিল অর্থাপশাচ.



স্থালালার হত্যাপরাধী এবং ভাত এক কৃচকীকে প্রিল্পের হাতে ধরিরে দেওরা। প্রিলের হাতে ধরা পরে ওরা গেল কেলে, আর বিচারে বগুলা ভগতের তিন বছরের জেল হল। বন্বের চিরতর গুনারক দেবানিন্দ মনির ভূমিকার এবং সেনার চরিতে হেমা মালিনীর অভিনর খুবই উপভোগ। মনির বোনর্পী নাজিম, কৃচকী নন্জিংস্পী রনজিং, ওর দিদির ভূমিকার তন্তা এবং কৃচকী দেবিত্রামের ভূমিকার প্রেমনাথ এবং প্রিলা এবং কৃচকী দেবিত্রামের ভূমিকার প্রেমনাথ এবং প্রিলা স্বলাচিয়ার অভিনরকৈ অবাত্র বলা চলে না। আবহসণগীত এবং স্বরের মাধ্যমে অপ্রের সুরুর সংযোজনায় লক্ষ্যকানত পের স্বেলাক তাদের স্মান্র রক্ষা করেছেন। লতা ও কিলোরের গানগ্রিল খুবই

জনপ্রিয় হবে।

_Tearle



কাবেরী বস্তু



: সেই ১৯৫৬র তে। ছবির কাজ ছেড়ে দিরেছিলেন। আবার এলেন এণ্দিন বাদে। কোনো নতুন কিছা চোখে পড়ছে কি?

—না তেমন তো কিছ্ আমি শেখতে
পাছি না তাগেও গেমন ভাবে কাজ করতান,
এখনও তাই। মেকআপ রমে মেকআপ
করে দ্ধোরে যাওয়া, কাজ শোবে বাড়ী
ফেরা —এটাতো আমাদের রটিন মাফিক
কাজই বলতে পরেন। তবে ইন্ডান্টির
অর্থনৈতিক যেসব পরিবর্তন এসেক্ছে
সেগলির আঁচ এখনও আমার গারে লাগে
নি। হরতো আরও কিছ্দিন থাকলে
ব্যাতি পরব। আপাততঃ আমার কাছে
না স্কলা

্ এই দীর্ঘ টাইম ক্যাপুসের দর্শ আপ-নার অভিনরে কোনো অস্থাবধে, ...অস্থাবিধে ক্তিক নর পরিবর্তন এসেছে বলে মনে হচ্ছে:

ন্না, তাও না। আমার অভিনরে সেই ছাপাল নালের মেজাজই আছে। তার জন্য কোন অসম্বিধে হচ্ছে নাঃ

ঃ উত্থবাবার সজে আলে একাধিক ছবি করেছেন। এখনও দুখোনা ছবি (নগর দপনি ও আমি সে ও সথা) করছেন। ৩৬ অভিনয়ে কেনো পরিবর্তনি আপনার চোখে পড়াছ?

—হার্য, পরিবর্তনি তো হরেছেই, উত্তর-বাবরে একটা পরেরানো দিনের ছবি দেখনে জন আজকের একটা ছবি দেখনে— প্রথকাটা আপদারাই ব্যরুতে পারবেন,



ছবির গতিপ্রকৃতি এবং দগকের র্ভির তালে তালে উক্তবাব, এগিরেছেন এক পাও গিছিরে গড়েম মি। তাই ও'র অভিনয়ে ভয়ানক মাচ্ছিরিট এসেছে এখন।

ঃ পরের নো দিনের সহশিদপী-ক্ষশীদের কেমন লাগছে?

ন্দত্যি কথা বলতে কি প্রথমটার আমি
একট্ অনারকমই কেবেছিলাম, কাজ
করতে গিরে কিপতু ধারণ। ববলে গেল।
আগেও কোনো কারপেই কারও সংশ্য আমার বিটারনেস ছিলা এথনও কেই।
ইন্ডান্টির স্বাই-ই আমাকে বংগণ্ড ন্দেহ
করেন, ভালবাসেন। গ্রোজাকান বর থেকে
শ্রু করে গ্রোজিউসার প্রাক্ত। এখনও
দেখলাম এন-টি —এক নাল্বরের সেই বৃদ্ধ
গরোরান্ লাইটম্মান নার্মদশ্য, কাভিক্সা সঙাশদা সকলেই আমাকে মনে নেখেছেন। এই গো কিড্রানন আগে ফা মেখানে দাঁড়িছা আইটডোরে কাঞ্চ করে এলাম গোমিয়াতে। ওয়া সবাই-ই ছিলেন। একই ফ্যামিনির লোকের মত কেটেছে কটা দিন।

ঃ দশকিৰ গ্ৰহো কোনো চেঞা দেখনে পাচেছন ? ুুুুু

— থাকথিত ফ্যানদের চরিত্রে খ্রে একটা পরিবর্তান আসেনি বটে, কিম্পু সাধারণ দশকৈর মধ্যে বিরাট চেঞ্জ এসেছে: আজকের দশকেরা বিয়ালিম্টিক ছবি দেখতে চার। শ্ধ্যোর মেলোড্রামা নিজে ভারা আজ আর ভাশতে চারানা।

: আপনি এখন চরিত্র নেধার সময় দশকির এই পরিবতনৈর কথা মনে রাখেন কি ২

—হা হা নিশ্চয়ই রাখ। না রাধণ চলবে কি করে? নিজেও যথেণ্ট খা চরিত্রগালোকে বাস্তব করে তুলতে। তবে এ শর্মান্সত যে কাটা চরিত্র আমি করেছি যেমন—আমি সে ও স্থায় চন্দানী, নগর দেশাের শ্রীলেখা যে যেখানে দাড়িয়ের এজানি নিজেট চরিত্রই সম্পূর্ণ ভিরে ধরণের, প্রত্যেকটাঙ্কই প্রায় আমার চেমান্সাানা মান্যের ছাপ রয়েছে। তাই খবে অস্থানির ওছানা মান্যের ছাপ রয়েছে। তাই খবে অস্থানিরও হয়নি।

ঃ সত্তর সালের সেই ভয়াবহ দাজিপিলং-এর দ্বেটনা এখন আপনার কাছে দ্বেশ্ন না বিভীয়িক। ১

—আমার কাছে ঐ ঘটনা দঃ স্বণন্
বিভাগিকা দ্টোই। কিন্তু আমি মেদিনের
কথা ভূলে থাকতেই চাই। আমার বিবাহিত
ক্ষীবনের চোন্দটা বছরের স্কেন্দর স্মৃতি
রমেরে আমার মনে। কেন ঐ একটা দিনের
বীভংস স্মৃতিটাকে টেনে আনব বাব বার।
বা হবার ছিল ভাতো হয়েছেই ঠেকাতে তে।
পারিন। স্তরাং ওসব ভেবে নিজেকে
পাণ্য, করার কোনো কারণ আছে বলে মনে
ইর না। এজনা আমাকে ফেটালিন্ট বলতে
পারেন। সভিন্ন আমাকে ফেটালিন্ট বলতে

ঃ তব্ৰে মনের গতিকে কি আপনি রোধ করতে পারেন?

না, তা পারি না বটে। কিচ্ছু চেণ্টা করি। একাটেল ছেলেমেরেরও আমাকে বংশেট স্থোগ কিরেছে। বাবার মাত্যকে ওরা ধীরে ধীরে মেনে নিরেছে। তাছাড়া না মেনে উপারই বা কি?

ঃ শুনেছি দুর্ঘটনার দিন নাকি আব-হাওরা এর্মানতেই থারাপ ছিল। কেউ কেউ আপনাদের বৈজ্ঞোতেও বারণ করেছিল।

স্তরাং এ ঘটনার জন্য কি ভাগাকেই শল্পী করবেন না অন্য কাউকে?

নিশ্চরই ভাগ্য। ভাছায়া আর কি
করবে বলনে। কেউ কেউ বাংল করে
ছিল ঠিকই কিন্তু আমাদের গাড়ী বাবার
আগে এই রান্তা দিরেতা একাধিক গাড়ী
গেছে। আমাদের ওভারটেক করেও গেছে
কেউ। কই তারা তো দের্ঘটনার পড়ে
মি। আমারই পড়লাম। তবে আগোরেওটিল
ছাইভার দাবী মনে হতে পারে, কিন্তু
ভাগার ওপরে আর কিছু নেই।

- : আপনার কথাবাত্র্র খানে মনে হচ্ছে আপনি ভগবানে খাব বিশ্বাস করেন?
- হার্যা করি বৈকি ! তবে ভগবানকে আমি
 ম'দরের দেবত। হিসাবে মানি না।
 আমার কছে তিনি আমারই মত একজন মান্যে। পার্থক। শুধু আমি
 ক্ষমতাহীন আরু তার হাতে প্রচুব
 ক্ষমতা।
- দুর্ঘানির পর আপনি প্রায় অকর্মাণ্য হয়ে
 পড়েছেন শোনা গিয়েছিল—এন্ত ডাড়াতাড়ি সেরে উঠলেন য়ে!
- কিছ টা মনের জোর, কিছুটা আধ্ননিক চি কংসাবিদ্যার স-বাদে বলতে পারেন। বিশেষ করে দাজিলিংয়ে ভিকটোরিয়া হাসপাতালের ডাঃ পাল আর কল-কান্তার ডাঃ দে-র অক্লান্ড চেম্টা আর সেবার কথাইবা ভূলি কি করে! প্রথমটাল আমি যে ব্যভাবিক হবো কোনাদন তাই-ই ভাবতে পারিনি, হয়েছি নেহাৎ ভাগেদ্র জারে। অরণের দিনরাতি'র প্র খানভিনেক ছবিতে আমার কণ্টাক্ট হ্রেছিল। কিন্তু কি হোল জানি না এই আকসিডেন্টের খবর শোনা থেকে সেস্ব প্রোডিউ-সাররা আধু আমার কাছে আসেননি। বাজারে তো তখন জোর গুজুব—আমি क्षक्य'ना इता भएड़ीह, ह्यान्गेन सामान्य নেই...আরও কত কি!
- শিশ্পীর ফিলিংস না থাকলে তিনি
 শিশ্পীর ফিলিংস না থাকলে তিনি
 শিশ্পী হবেন কিডাবে বলুন? পরিচালক বা বলেন তা করতে পারার
 করান্ত কিতৃত অনুকৃতির প্রয়োজন।
 কারণ পরিচালক কি চাইছেন সেটা তো
 করণকে বুঝতে হবে শিশ্পীকে।
 সুতরাং বার অনুভূতিকমতা বত বেশী
 প্রবল, তিনি তত বেশী কুশলী
 শিশ্পী হতে পারেন। তবে এপ্রসংগ্
 একথাও সভা বে, ভেতুরের অনুভূতিকে প্রকাশ করার সঠিক উপারগুলোও আবদা জানা প্রয়োজন। একটা
 ব্যাতাকে আপিন চাবকে মেরে জের
 করে টেনে-হি'চড়ে জ্বের ধার প্রশিত



নিরে যেতে পারেন, কিন্তু তাকে কি জোর করে জল খাওয়াতে পারবেন ? কথনই পারবেন না। অভিনয়ও ব্যাপারটা তাই। পরিচালক আমাকে গাইত করেন, বাকিট্কু তো আমারই ধাবর

- ঃ পদ্ধনাগাঁটর ওপর তো মেদ্লেদের আকর্ষণ স্বাচ্চাবিক শোনা হায়। আপনার আছে?
- বিক্ষান না। পোবাৰ-আসাক, গ্র্নাগাঁট কোনকিছ্ই আমাল ভালো লাগে
 না। বে জিনিসটার প্রতি আয়ার প্রতুত
 আক্ষণ আছে, যেটা আয়ার খাউব
 ভালো লাগে, দুভগিগক্তমে আয়াব
 নিজেরই দে-জিনিসটা নেই। তা তোল
 চুল। লাবা-ঘন-কালো চুল আয়ার বেশ
 প্রকা। কিকু কি আর করি ব্লান!
- s বলা হয় 'লম্জা নারীর ভূষণ।'—আপ্রি একমত ?
- — ঠিক 'লক্ষা' শৃষ্দটা আহি বাব্চাব **হুরতে চাই না। ওর ব্**দলে ববং বলাভে

পারেন মডেন্টি—মানে সন্থাতা আর কি! সন্থাতা আচার-বাবহারে, কথা-বাতপার সন্ধাতা পোবাকে থাকা দ্যকার মোরোদের এবং এটা তাদের ভ্রণও বটে! একটা কথা—প্রেম্পের ক্ষেত্তেও রি এ-বাপারটা অপ্রযোজ্য?

্বনারীয় কি এবং আপনার কাছে নারীয়েশ ছলোই বা কতটাকু?

নানাবিশ্ব সঠিক ডেফিনেশন কি বলি বলুন তো! আমান মনে হয়, এই বে আংগছ বগলাম সভাতা। ঐ সভাতা বাগেনটার সংক্ বিক্ কেবাৰ কমতা, সহাদাঁতি, ও বিনয় নির বাগেনগুলো জ্যুডলাই নারীছেন একটা চেহানা পাওয়া যেতে পারে। মেয়েলের বে-গংপ্টা আমারা দেখতে অভ্যাত অবাধি লাত বিনহাই, কোমালখভাব—এগ্রেমা নিয়েই নারীছ। আর আমার কাছে নারীছের ম্যুগোর কথা জানতে চাইলোন না! ওসম্প্রেম নতুন কি আর বলবো! নারীছ এবং সভাতা—দাটো লিনিস্ট গ্রেমানু বিলি স্ক্রান্তালা লাগে বলুন!

আপাৰি ক্লান্ত ধ্রিকীৰ ছবি বেশী বিদ্যালয়

ক্টেরে বিশেষ বিশ্বনা প্রতি আমার ইপ্রিক্টিটির সর ধবিই দেখি। এই তো বিবিং দেখলাম। ছেলেমেরে সংকা ছিলা। ছেলের তো ববি শুব ভালা লেগেছে। কারব, এর কুলেই সাটিং হয়েছে তো হারর। আানি অফ খাউ-ভাগত ভেজা দেখেছি। বেল লেগেছে। তবে আজকাল আর বেলী ছবি দেখতে পারি না। সময় বভ কম।

ু ছেলে-মোরার ভবিষ্যং সম্পকে কি⊕্ব ভাবছেন ?

— এখন তো লেখাপড়া করছে ওরা। কর্ক না। ভবিষাতের কথা পরে। বড় ছবল ওরা যা ভালো ব্কবে, করবে। আমি ইণ্টারফেয়ার করব কেন?

-- निर्मात वह

মিলাভা ব্যং শীমা ধাটা মাৰ : ৩টা ৬ ১৪টা ত প্ৰভাব হাউস ফ্লের রেক্ত স্থি করে দ্বার পতিতে চলেরে

প্রজীপতি

কালী ব্যানালী, নির্মাসকুমার, সংখ্যা সাল প্রেনাংশ, বসং, শৈলের সংখ্যালী, অঞ্জ জং, মিন্টা, মন্, শিপ্তা মিন্ত, মারীকরা সাল্যাল মিস্কা সোমা, সাল্যা কৌইটারী

এবং দি**লাপি কাস ও বাস্থী নদটী।** মানি : সমস বাস্থালী নাম্পা**ঃ ভাগ্য মেস** মঞ্জ : শ্যাস্থালী নাম্পানী **মান্যান্ত**

– নাইংগরিচাকার ঃ **মহেন্দ্র গ্রেক্ত**



এখন এমন হয়েছে, লোড-শেডিং হলেই বিশ্ৰী লাগে: আলো জনুলছে পাথা চলতে, শ্রটিং হচ্চে ঘন্টার পর ঘন্টা-ভাবাই বার না। অস্বাভাবিক মনে হয়। সেদিন কৰণা স্বাভাবিক অবস্থা। ক্যালকাটা ফ্রাভি-আদ ক্রডিওতে চিত্রসেবীর চ্পী' ছবির শ্বভ স্ফল। এই পরিপ্রেক্ষিতে অনেক লোকসনের আগমন ঘটেছে। ছড়িয়ে ভিটিরে আড্ডা জমেছে। কোনো রক্ম সেন-সেশন নেই। আডডা হচ্ছে তো হচ্ছেই। স্বাই ধরেই নিয়েছিলাম যতক্ষণ না পাওয়ার জনে আডভা দিতেই হবে। কিল্ড না কিছ কণের মধ্যেই চিত্রসেবী কর্মার আলোকচিচ্ছিলপ্যী দান্তি বল্যো-পাধ্যার এসে জানালেন—আমরা এরই মধ্যে স্টেমা করব। মাভিতে সম্ভব হতে না সারক্ষেত্র ক্যামেরা আনতে ৰান্টারী রেডি কয়া আছে, এও যদি অসম্ভব হয় ভাহলে ন্টান ফটোগ্রাফীতে স্কুনা হবে। আহ্ব আপনারা সকলে ফ্রোরে আস্ন।

ক্লোরে এনে দেখি অতিথিদের জন্য আসন প্রায় পূর্ণ। প্রথম সারিতে জাসিয়ে বসে আছেন অনুপর্মার পাশেই মেক-আপ मिन्द्र अ इतिह माहिका अन्या हारा। भाउँ है জোনের মধ্যে এসে পড়েছেন নায়ক সমিত ভঙ্ক। জ্বোনের একপাশে টেবিল, চেরার---বিশেষ অতিথিদের জন্য। টেবিলে প্রুপ-শ্তবক। বিশেষ অতিথিদের মধ্যে মাণাল সেন **এবং পদ্মা দেবী**হে: দেখা গেল। তথনও সারলেন্ট ক্যামেরা এসে পে'ছিয় নি। দ্টীল ক্যানেরা স্টাাল্ডের প্র, তার গলায় স্তাবা ফ্রানের মালা। আনুষ্ঠান শারা হল। 'চিত্র-সেবীর পক্ষ থেকে ইলেকট্রিশয়ান দিলীপ ব্যানাজি মানাল দেনকে কিছু বলতে অন্-রোধ করলেন। গ্রালবাব উঠে দাভাতেই **্রেশারে আর্বসলিউট সায়লেন্স। তিনি ব্**শ-লেন-স্মানে আমাদের অনেক বাধা বিঘা ভব্ৰ এগিয়ে যেতে হবে। ভয়ানক কঠিন সময় আসছে তার জনা প্রস্তুত থাকতে रेज्। नाम्रजन्ते कारमहा अथवा म्हीन স্পারেরার হেভাবেই ছবির স্কেনা হোক না কেন আমি বলব প্রচেণ্টা যদি সং হয় ভাহলে 📲 হরেই। এইভারেই ছবি হবে। আজ **এর মধ্যে ররে**ছে প্রতিবাদের ভাষা। লোড-ৰোজং এর বির্কেষ তীর প্রতিবাদ: माहरणके अथवा न्दील कारमतास महना करत

কলাকুশলী গোঠী একটা নজীর স্থিত করছেন। একই কথা আবার বলতে হচ্ছে সামনে অনেক বাধা বিষয় আরও কঠিন সময়ের জন্য প্রস্তুত থাকতে হবে আমাদের...

ইতিমধ্যে প্ৰেদ্পুলা এসে উপ-দিখত। তাঁকে কিছু বলতে বলা হলে তিনি ছোটু করে বলে গেলেন—প্রচেডটা যদি সং ইয়, সকলের মধ্যে যদি আল্ডারিকতা থাকে ভাহলে সফলা অনিবাহা।

সায়শেদ্য ক্যাথেরা এসে গেল। ছবির নারক-নায়িকা ক্যান্সেরার ম্থোমর্থি এসে দাঁভালেন। ক্যাপমিটক দিলেন মাণাল সেন ক্যামেরার স্টেচ অন করলেন পার্শক পত্রী। ক্যামেরা অপারেট কর*লেন*—কানাই দে। শুধুমার এই শটের জনা। আসন্তে এছবির আলোকচিত্রশিল্পী শক্তি বলেগা-পাধার। শুধু তাই নয় তিনি এ ছবির কাহিনীকার, চিত্রনাট্যকার এবং একজন পার-চালক। চিত্রসেবী একটি নবগঠিত গোটেতী অভিজ্ঞ কলাকশলীদের নিনয়-শান্তবাব; ভার অগ্রভাগে আছেন। অনুষ্ঠান শেষ হলে তিনি আমাকে বিশ্তারিত করলেন : গলপু, হাত্রা **দলের প**উভূমিকায়। আমি এখানে প্রেন্দারী এবং আমেচার যাত্রা দলের যে বিরোধ—সোটা

দেখতে চাইছি। নায়ক, যাত্রা দলের বিত্তেক। নায়িকা, নায়কের শ্রী, সেও এক সময় যাত্রা-দলে যোগ দিছে। এই নিয়ে জটিলতা আরো বাড়ছে।... নায়িকার নামেই ছবির নাম 'চার্ণী'। ছবিতে আরেকটি গ্রেত্বপূর্ণ নারী চরিত্র আছে। সেটি রপোয়িত করবেন আর্রিড ভট্টাচার্য। এছাড়া অনুপক্ষার অজিতেশ বন্দ্যোপ্যধায়, পদ্মা দেবী প্রমূখ থাকরেন গ্রে.জুপুণ্ চরিলে। গান হবে এ ছবিব অনাতম মুখা ব্যাপার। এখনো ঠিক হর্মন কে সংগীত পরিচালনা করবেন। সম্পাদনা করবেন অনিল সরকার। শুটিং কবে থেকে চলবে?...আশা করা যাতে সেপ্টেম্বর মাস থেকে।...শাুটিং স্বটাই কি ইন্ডোর-এ হবে?...ইনডোর াবং আউটডোর মিলিয়ে হবে। বেশার ্ুাই আউটডোরে, অঞ্চ পাড়াগাঁয়ে।

দশ-বাঞ্জীজন তর্ণ একচিত হয়ে
ইচ্ছে করলে কি না কররে পারেন। মাত্র পার্চ
ঘণ্টার মধ্যে ডিসিশান নিয়ে সারা রাত
ফ্রীপ্ট লিখে প্রদিন সকাল থেকে শৃটিং
শ্রে করে দিতে পারেন। তা বিলক্ষণ প্রমাণ
করেছেন পরিচালক মিঠ্ছ চট্টোপাধ্যায় এবং
ডার সহক্ষণীরা। গত করেক মাস ধরে



চ্বি: সমিত ভজ-সন্ধ্যা রায়। ফটো অমৃত

जाननारमात भटकडेवात : क्रीत्यान

্রিকল্পনা করে মিঠ 'পৌকলেই দিন' নামে একটি ছবি স্টাট আানাউস্স করলেন। সেইমত শাুটিং-এর নির্ধারিভ দিন এসে গেল। প্রয়োজকের েলাও চালা হয়ে গেল। সেট রেডি, আটি স্ট রেডি, মহরৎ শট নেওয়া হল কিন্তু প্রোগ্রম ক্যান্সেল করা হল। বরং বলা ভাল প্রোগ্রাম ক্যান্সেল করতে বাধ্য করা হল। মিঠ, এবং তার সহক্ষণীরা ভাষণ হতাল হলেন। পরক্ষণেই উজ্জীবিত, শাুটিং হবে, তবে এ ছবি নয়, অন্য ছবি। এই সেটেই। কেডিয়েড প্রয়োজক পাওয়া শৃক। সমস্ত ঘটনা শানে একজন শুভাকাল্ফী এগিয়ে এলেন। ফলে 'পোষালী দিন'এর সেট র পাণ্ডরিত হল 'পাম্থানবাস'এ। গোল্ডি**স্মিথ-এর** একটা বিখ্যাত নাকটকে ম্ক্রীপ্টে রপে দিতে দিতে আরম্ভ হয়ে গেল শ্রিটং। পিতা তর ুণকুমার এবং পার শাভেদন চটোপাধায়ে মাথেমার্মি বসে আছেন। ক্যামেরা ট্রালতে। ধীরে ধীরে এগিয়ে গেল। জেগ্নে স্বাধ্ব দ্বটি মাুখ। কথা বলছে: 'তোমার' পর আমি অনেক আশা-ভরসা রাখি'— পিতার এই কথায় পুত্র খুবই স্বাভাবিক ঃ সে তো রাখবেনই।

পিতা এতটা আশা করেন নিঃ কারণ?

় পুত্র তংক্ষণাং হাবাগৎপারাম ঃ আজের ক্লোনিনাতো।

ি পিতা খ্ব খ্ণীঃ কারণ তুমি আমার ব্যাঞ্চ, তুমি আমার ইন্সিওরেন্স, তুমি আমার চিট ফাল্ড তুমি আমার সেফ ডিপো-জিট ভল্ট, তুমি আমার...

ু পত্ত এবার একটা ফাজলামো করে : ইন্ডিয়া গভগমেণ্ট।

্ পিতা লেটে বোষেন**ঃ হাাঁ...এ**র্যা, সা অভেটা নয়...র্যাক মানি।

দ্শাটি ভিজ্যালাইজ করলে এই আপুনাদের অবস্থা হবে আমার মতো। অর্থাৎ হেসেই খান হবেন। আলি খান হয়েছি তব জাবিত আছি কেন না এখনই জানাতে হবে এই ছবির মূল সূর হাছ কর্মোড। একট্ আষট্য ব্যজ্য থাকবেই। তাছাড়া, এ ছবি শেষ হবে হয়তো কিছু বলার মধ্য দিয়ে। এবং সেটা আশা করা খুব একটা অন্যায় হবে না। কারণ এ-ছবি তৈরীর ব্যাপারে সাংঘাতিক স্পিরিট কাজ করছে। একসংগ্র এতজন তর্ণ যখন... সেকথা তো প্রারন্ভেই বলেছি। বলাছ এই যে, এ ছবির প্রিপারেশন অনেকটা ভ্রাম। কাৰ্ডে। কাহিনা, ম্লতঃ নাটক। সেই হেডু পরিচালকের ইচ্ছে, সম্পূর্ণ ছবিতে একটা বিশেষ আবহাওয়া বজায় রাখা। যেটা শুধ্-মাত্র স্টেক্টেই লভা। ফলে এছবির আগাগোড়া শ**ুটিং সুভ্রতঃ** গটুডিও ফ্লোরেই সারা হবেঁ। এ প্যান্ত সাফলো দ্ব দিনের শাুটিং স**্সদশল হয়েছে।** দিবতীয় পর্যায়ের শাটিং আরম্ভ হবে অকটোবর মাসে। আশা করা যাছে এই প্রালে নায়িকার ভূমিকায় মহুয়া রায়চৌধারীকে দেখা যাবে।এ ছবির অন্যান্য চরিত্রের শিল্পীদের নাম যা জানা গিরেছে: অনুপত্মার, সতীদ্দ্র ভট্টাচার্যা,



ক্ষাৰ বনোপ্ৰায় এবং সত্য বন্দ্যো-

ি চিত্তন্ত্রটা রচনা করছেন ঃ অবিভাত চট্টো-প্রথায়া।

িচন্দ্রহণ করছেন ঃ দশিক দাপ।
ক্রিক্তির্বাহণ করছেন ঃ রবি চট্টোপাধ্যর।
ক্রিক্তির্বাহন প্রশাসনার
ক্রিক্তির্বাহন প্রশাসনার
ক্রিক্তির্বাহন প্রশাসনার
ক্রিক্তির্বাহন প্রশাসনার।

ন্দাতি পৰিচলক অজয় দাশ। এ-দানেই গান রেকর্ড করা হবে।

হবি নিমিতি হছে দুঃখিনী প্রোডাক-সম্পের প্তাকাতলে।

—ন্ট্ৰভিও সংবাদদাতা

,স্টুড়ি<u>ও</u> সংবাদ

বর্তমানে কলকাতায় দুখোনি হৈ কি হুবির শাটিং রমলম করে এগিয়ে **Eলেছে। সুখেন দাস নিবেদিত, গোলাগ** শিক্চানের 'আনজনে মেহ্মান' (পরিচালনা গু জ্ঞানশা মুখাজি ছবির শুটিং হচেছ শ্ট্রাডিও সাম্পাই কো-অপারেটিভ-এ, অধ্না স্বকারী স্ট্রাভিও। ট্রেন কম্পার্ট যোগ্টর ই**নটিবিশ্বরের সেট** পড়েছিল। ডাকাতি করার দৃশ্য চিত্রায়িত--হণ। অংশ গ্রহণ করলেন : সমিত ভঞ্জ, স্থেন দাস, অজয় বন্দ্যো-পাধ্যায়, র্যাব খোন, মিণ্টু চক্রবর্তা, স্বিতা-লত দত্ত এবং সত্তি ভটাচায । এ ছবির অন্যান্য চরিত্রের শিলপীরা—স্বতা চট্টো-পাধ্যার, পাম। দেবী, মেনকা দেবী, প্রেমাংশ বস্ত্র, মাস্টার পার্থা এবং জ্ঞানেশ মুখো-পাধ্যর। নারিকার ভূমিকার রূপদান কর। ছেন সূমিতা সান্যাল। সুন্ধ্যিতা অনেক দিন পর বাংলা ছবির নায়িকা^ত হয়েছেন। গ্লাবেং তিনি বোম্বাই প্রবাসী ছিলেন। 'আশীন'াদ' '**আনন্দ' প্রভৃতি ছবিতে** কাজ করেছেন। এ-মাসে বোশ্বে যাজেন, আমিডাভ বচ্চনের বিশরীতে একটি ছবিতে অভিনয় করতে। ষাই হোক, 'অনজানে মেহমান' ছবির কথায় আবার ফিরে আসা হাক। এই ছবি কল-কাতার শিক্ষী ও কলাকুশ্লীদের নিয়েই। নিউ থিয়েটাস আমলের পর এই প্রথম। স্মরণ শাক্তে পারে এমন একদিন ছিল স্থ্য কলকাতার তৈরী হিন্দি ছবি সারা ভাৰত থেকে প্রসা আনতঃ তথন অবশ্য



প্রেমের ফাদে দিলীপ বস্পানরাসভা শার্মালা দাস



এমন নোংবা প্রতিযোগিতা ছিল না। সেজণ্য বাজ্য সরকারকে এগিয়ে আসতে হবে। কর-মান্ত করে ব্যাপক প্রনশনীর সম্ভাবনা স্থিতি করতে পারেন এই রাজ্য সরকার। নিয়মিত হিন্দি ছবি তৈবী হলে এখানকার ফিন্মে ইন্ডাম্মির সংকট আনেকাংশে মোচন করঃ যাবে একথা স্বাপহ্ণীন ভাষায় বারবার বলেছেন রাজ্যুমন্ত্রী শ্রীসারত মুখোপাধ্যায়।

ক্যালকাটা মুডিটোন পট্ডিওতে প্রবোদ জক-পরিচাশক দরাশংকর স্লাতানিয়া চলতি সংতাহে কিতনে পাস কিতনে দ্রে ছবির জনা বিরাট ক্যাবারে নাচের দৃশ্য গ্রহণ করলেন। অংশ নিলেন বংশ্বর নায়িকা হিনা কোসর এবং কলকাতার নায়ক সমিত ভঞ্জ। প্রচুর অর্থবারে এই স্টেটটি নিমাণ করা হয় দিল্পনিদ্যাল বিজয় বিসর তত্তাবানে। কলকাতা খেকে নিমারিয়াণ এই কলার হিলি ক্রিমান দুটিং অনেকটা হয়ে গিরেছে। বিশ্বস্থারে জানা গেল এ ছবিতে অভি-নয়ের জন্য বন্দের গ্রেকে প্রাণ ও অশোক্রুয়র আস্তেন্ন

্র সাক্ষকেরে প্রিচালক প্রেপ্নে, প্রত্নী আমাকে জানিরেছেন বে, 'চৈডালা গ্র্ণী' (রচনা : তারাশঞ্চর বন্দ্যোপাধায়ে) আপাততঃ ড্রপড়। নতুন করে ভারছি। শ্রে হতে হতে জান্যারী মাস। স্ক্রীপ করতে সমর তে। লাগবেই। জন্যাধ্যক শোনা, শ্রীপতী মানিক বদেন্যাধ্যায়ের কোন একটি গলেপর ডিব্রুপ্র দেবেন।

প্রিচালক স্থাল হ্থোপাধার প্রাঃ
সিদ্ধা প্রেনিমাণ করতে চলেছেন। সব
বাবস্থা পাকা। শাুটিং শাুরু হবে সেটেনবর
মাসে। প্রধান নারী চরিত্র রূপায়িত করবের
মিঠা মুখোপাধার। নায়ক চরিত্রে রঞ্জিত
মাজক। একটি বিশেষ ভূমিকার অসিত
সেন-পত্র অভিজিপ্ সেনকে দেখা যাবে।

পরিচালক সরিৎ বন্দোপাধ্যার, হিন্ত্র সম্প্রতি বিনল মিরের কাহিনী অবলম্বনে হৈছে রইল তিনা নামে একটি ছবির মহরং করেছেন, তিনি আগেই অন্য একটি ছবি আরম্ভ করছেন—জরাস্থের মস্বীরেখা', অরবিন্দ মুখোপাধ্যার কৃত চিদ্রনাট্যে। মুখা নারী চরিত্রে স্থিরা দেবীকে ভাবা হরেছে। সেপ্টেম্বর মাস থেকে শ্টিং চলবে। স্থাতে রইল তিনা ভিস্কেশ্বর মাস থেকে।

সতাজিং রারের প্রতিত্বকর্মনী থাতে অভিনেত্রী কৃষ্ণ বস্ব এখন ক্ষাক্ষতার— ভ্রোবেরা রাত' নামে একটি ছবিতে চুক্তি-বৃষ্ণ হরেছেন বিপার্গতে নারক দীশুক্ষর দে। এ মাসের শেষ সুস্তান্ত থেকে চিন্তু গ্রহণের কাজ শ্রু হচ্ছে। পশিঃমবশা সরকারের আথিক সাহায়ে।
আনতিবিলন্দে দুখানি কাহিনী চিত্রের দুখ্য
গ্রহণ শুরুই হচ্ছে। তার মধ্যে একটি পরিচালনা করবেন পলাশ বন্দ্যোপাধ্যায়।
ভারাশকর বন্দ্যোপাধ্যায়ের বিখ্যাত ছোটচল্প প্রতিমাত চিত্রবাপ।

<u>ক্রেদেলতা</u>



জনত আমন বা জিন বেবী এতদিনে সার ব্যক্তেছে। ব্যক্তেছে এই যে, শুটিং-এর বাইরে নায়ক-নায়িকার মধ্যে স্ফুদর আন্ডোর-ন্টানিতং থাকা দরকার। এর জন্য ফ্রা মিকসিং একাত। এতে হয় কি অভিনয় করতে প্রদের সাড়া পাওয়া যায়। শ্বাভাবিক অভিনয় কর্যে ভারত ওঠা। জিনত স্পর্টই বোঝাতে চিয়েছে —আমি আমার নায়কদের স্বেগ অভানত সহজভাবে মিশিল। প্রেমের দ্পো মভিনয় করার আগে চুটিয়ে প্রেম ফ্রিটিটি করার হলেও করি...। এই পরিভিদ্ধতি করার হলেও করি...। এই পরিভ্রমিত একজন সাংবাদির প্রশান ও ফ্রিটিটি করার হলেও করি...। এই পরিভ্রমিত একজন সাংবাদির প্রশান ও ফ্রিটিটিটিটিটি করে সেটিটি কির আগেতালে প্রাক্টি করে সেবেন ও অহিন্দ্রিটি সাল করে সেবেন ও অহিন্দ্রিটিলাল করে সেবেন

বিদেশী ছাব দেখে গণেপা থেডে হিন্দি

ছবি অনেক হয়েছে, অনেক হবে। কিছুদিন আগে খ্ন খ্ন' নামে একটা ছবি এসে-हिल, गुर्ताह (मुठ) मांक 'छांठि' द्यारित' ছবি থেকে ফ্রেম ট্রফ্রেম মেরে দেওয়া এ-জনা প্রযোজকদের কম ভোগানিত হয়নি। কোট কাছাবি করতে হয়েছিল। এতেও শৈক্ষা হয়নি। এখনও এইভাবে ছবি হচ্ছে। এবারে ঝামেলা ংয়েছে অন্যরকম। একই গলপ চরি করে দুখানা হিশ্বি ছবি হচ্চে 'মজবার' কোনো একটা বিদেশী ছবি থেকে মারা, পরিচালক বি আর চোপরা একই ভারগা থেকে মের জন্মার' করছিলেন। জানতে পেরে চোপরাসাহেবের মাথায় ছাত। আপাততঃ জমীর শিকেয় তোলা হয়েছে। প্রা য়একই ঘটনা, ও পি রলহন 'পাপী' নামে যে ছবিটি ভলছেন তার সংখ্য সদা শাটিং সমাশত 'ভয়াধ্রনট'এর **যথেন্ট** মিল। একট গণপ। তাতে রলহন কিন্তু বিন্দুমান্র দুর্ভাষত নন। তিনি ছবি শেষ করবেন, রিলিজ করাবেন, ওয়ারেন্ট'এর পর। প্রমাণ করবেন একই সাবজেকটে বেটার ছবিই দুশকিরা নেবেল। তীর কাম্পটিশানই তাঁর কামা।

রীণা রামের বান বোরখা বডড উড়-ছিল। উঠেপড়ে গেগেছিল কি করে হিরো-নৈ হাওয়া যায়। প্রোডিউসারদের সংগ্র নহর্ম-মহর্ম শ্রুত্বরে দিয়েছিল যাতে তনেকেই বিশ্বাস করে ফেলেছিলেন ব্রথা নায়কা হাছে। সেগ্ডে বালি। ব্রথার সংগ্ ্থারাঘ্রি করে প্রোডিউসাররা জাসক নীণাকেই নিরেছে। আথেরে লাভ হঙ্গেছে নীণার। এখন ব্রখার মাধা থেকে ভূক নেহেছে। অনেক ভেবে চিচ্ন্ত সে নেমে পড়েছে বী আর ইখারার সন্দো। সহকরী হিসেবে। অবজাভা করছে, কাজ শিখছে, ভীষণ মন দিয়ে।

বিবার হিরো ঋষি কাপুরের শালার এখন খুব ভাশ। ভারতবর্ষের বিভিন্ন শুন্দ থেকে টিন-এজার মেরেরা লাইন ছিরে আস্ছে। ঋষির চার্মচা দুব্দন। ফার্ল্ট-এ চেক-আপ ওদের কাছে। প্রতিদিন নাকি একজন করে বরাদদ হয়। ঋষি নাকি চকে যায় জহুর কাছে একটা ছেটেল। হোটেলের লাউন্তে পাহারা দের চন্দান্তন। এসধ জানতে পেরে নীতু সিং বৃদ্ধত ব্দেশে

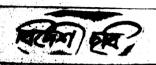
আশা সচদৰ ধ্য়েপান করে। কিলের

অনেক নায়িকাই ধ্য়েপান করে, এটা কোন
নতুন কথা নয়। নতুন কথা হচ্ছে এই আশা
সকলের সামনে অথাৎ ফোরে সতী সেলে থাকে। পনেরো মিনিট অন্তর সিগারেট অর লাইটার নিয়ে আড়ান্ডে আবভালে হায়। কিবে আসে মিনিট দশেক পর। এইভাবে প্রচিদ্যানিট সময় অপচয় কোন্ প্রথেকক কর্তিদ্যা ব্রদাশত ক্রবেন?

_অভিভিত



কোরাশ/শ্বভেদ্দ্র চট্টোপাধ্যার পরিচালনাঃ মূণাল সেন



जंबद्धाव रकाकाद्धा हर्माकत फेश्मव

গত মাসের শেষাধে লোকাশোর অন্-ক্তিত আশ্তর্জাতিক চলচ্চিত্র উৎসব নানা কার্যান্ট্ উল্লেখনোগা এইবারই বোধহর প্রথম অকটা চলচ্চিত্র উৎসবে ছবি প্রদর্শন নিরে গোটা দেশে সোচ্চার প্রতিবাদের ঋড়

উৎসবে এমন করেকটি ছবি দেখানো ইর (ছার মুখ্যে তিনটি মারাম্মক—গদপ এবং বৌনতা প্রকাশনের কোনে) বা দার্থ্য আপত্তি-করি নর, সুভ্যু চিন্তার ক্ষেত্রে কাতিবারকও বটে। বিশোর করে জার্মাণ ছবি 'ইমমরাল টোলস' বিশার স্ভ্যাস' এবং নরওয়ের হবি মুর্মন হাস'। এই সব ছবির বছবা এবং ভার অবাধ প্রকাল এত ক্লিস্ত ও অভাবনীর বে এর প্রদেশনের বির্দেধ তথাকার ধর্মাধাক্তক এবং জনগণ প্রচন্দ্র বিক্লোক্তে ফেটো পড়ে।

তাদের প্রশন এসব ছবি কি স্কুথ চিন্ডার লক্ষণে চিহিন্ত? বাস্ত্রতার নামে বিক্তি ও বৌনাচারের যথেচ্ছ ব্যবহার কোন শিক্ষার বাহন?

ছবিওরালারা বলেছেন এইসর্ ছবির
মাধামে শিক্ষিত এবং যৌনবাধিগ্রন্ত মানুহদের মুখোল খলে দেওরা হুয়েছে। সমাজের
বি ভার শতকের মানুহ, বথা লিকপী, ধর্মবাজক, বারবিক্তা ও ছালসমাজের মুধ্যে যে
ব্যক্তিয়ে মাতিরে তাদের মুখোল টেনে খুলে
ফেলে দেখানো হুয়েছে। সুন্থ সমাজের
পক্ষে এয়া কতিকর।

এই মণ্ডবা বেন ঘ্তাহ্তির কাজ কলেছে। সাধারণ মানুহের বছুবা, এ যেন সুন্থ সমাজ বাবস্থার বিরুদ্ধে একটা বিবাট চালেজ। সমকামিতা, প্রোগ্রাফীর বথেছ প্রয়োগ বিকৃত চিন্তার গ্রুপ এবং সমাজ বিকেলে ভোরের ফ্ল স্মিনা মুখোপাধায়



দেহকে চাব্যুক মালার নামে পদা জাঞ্ ব্যভিচারের দুশা ফলাও করে দেখান মার যাই হোক সাস্থ চিতাপ্রস্তি নয়।

এখনে দু থকটি ছবিল বছৰ। তুল দিজিন।

ইমমরাল টেলসাএ শিক্ষিত সমাজের
মধ্যে যে চ্ড়োকত , ব্যভিচার এবং নরনারীর
যৌনজাবিন যে কত ভ্রাবহু তাই বলা
হয়েছে। ছবিড়ে ক্সেকে চ্ডাোকভাবে
খাুটিয়ে খাুটিসে গ্রহার করা হয়েছে।
এমন কি এতে হোমো সেক্স, মান্টারবেটিং
সভোমি কিছাুই বাদ সায় নি। যার প্রতিরিল্লা গ্রেমাই হতে বাদ।

্বগার সংলাসে ছাব্তে এমন একজন প্রথাতনামা জাবিত শিশপীর চারত আকা হয়েছে যে ছেলেদের (অবশাহ তর্ণ অথব যুবক) খুব ভালবাসত। এবং এই ভালবাসার পেছনে তার প্রধান উদ্দেশ্য সমকামিত। এই সমকামিতা। এই সমকামিতার বিশ্বতি কতদ্বে প্রথণত নাচে নামতে পারে পদায় তা বিশ্তারতভাবে দেখানো হয়েছে। এবং তা এক এক সক্ষ দশ্কিদের চোল ও মনের কাছে মারাজ্যক প্রীভাদায়ক হয়ে দেখা দিয়েছে।

নরওরের ছবি 'মরস হাস' যেন উপ-রোক্ত দুটি ছবিকেও দংক্রাহাসকতা ও বক্তব্যের দিক থেকে ছাড়িয়ে গিয়েছে। এতে এমন এক মা ও সম্ভানের কথা বলা হয়েছে যার্মা যৌন বিক্তির ক্ষেত্রে গোপন জীবন হাপন করত। এমন নোংরা মানাব্তিব কথা আমরা ভাবতেই পাত্রিনা। এমন ভারনার তেয়ে মহাপাপ বোধহয় আর কিছা

৬ই সেপ্টেম্বর থেকে পরিপূর্ণ প্রেক্ষাগৃহে চলছে!



মিনার - বিজলী - ছবিয়র

नर्राञ्जा ११ तन्त्र १_१ श्रीतामभूत क्षेत्री**स ३४ मध्यमः १६ मध्याः** मीमा ११ क्षत्रश्रीला स्थानकातः **११ देनरावि निरम्धः** তিন পদী হয় প্রেমিক বিকাশ রায় জর্জী রায় এবং জহর

হয় না। সভা কেন, অসভা বর্ব মান্তর বোধহয় এমন চিশ্তাল দোবে দুটে নয়। অথচ একেই শিলেপর নামে সামাজিক ব্যভিচারের নামে লোক্ডক্ষার সামনে সগৌদ্ধবে প্রদর্শন করা হয়েছে। এবং তাতে কোনরকম শম্জার বেডাজাল না রেখেই।

(विन्मदात दाथा, উৎসবের উদ্যোজনাও এই ছবি গৌরবের সংগ্রেই প্রদর্শনের অন্-মতি দিয়েছে।)

व्यथा धरे छेरमदाहे हारणावी, গেরিয়া রাশিয়া এবং ভারতবর্ষ থেকে প্রেরিত উল্লেখযোগ্য ভাল ছবি দেখানো হয়েছে। এবং তা সাধারণ দশক ও সমা-লোচকদের স্বারা প্রশংসিত হয়েছে।

এছাড়া ফিন্ল্যান্ড ম্যাক্সিকো (ভাম-হীন মানুষদের মধ্যে উম্বৃত্ত ভূমি বন্টন এবং ট্র্যাডিশন ভাগ্গার কথা বলা হয়েছে ম্যাক্সিকান ছবিতে), সুইস, প্র জার্মাণ পোলিশ এবং আমেখিকান ছবিও উৎসবে প্রদর্শিত হয়। কিন্ত কার্র মধ্যেই এমন, বিক্ত ব্রচির পরিচয় পাওয়া যায় নি।

চৈতালী : পরিচালক থাষিকেশ ম্যথোপাধ্যাহ্রে স্ভৈগ সায়রাবান; এবং আস্রানী

স-ইজ্যারল্যান্ডের দশকিরা এদের ছবি সানভেদই গ্রহণ এবং উপভোগ কয়েছে।

দশ্কি সমালোচকরা একবাকো উৎসবের য়ে ছবিটিকে উচ্ছবসিত প্রশংসা করেছে ভার নাম ফেরোসাস। ছবিটি রাশিয়ার কিরথিজ বিপাবলৈক থেকে প্রেরিত। পরিচালক ভথিব (এবারের উৎসবের শ্রেষ্ঠ পরিচালক হিসাবে স্বীক্ত। এ'র ইতিপ্রে'_র ছবিতেও তিনি অনুরূপ অনুনাতার স্বাক্ষর রেখেছেন।) এ'র সম্পকে সমালোচকরা বলেছেন যে, চলচ্চিত্র মাধ্যমে বক্তবা তুলে ধরার বা গণ্প বলার ওপর ভথিবের আশ্চর্য দখল। ফেরোসাসের **মূল** চরিত্র একটি ছোট ছেলে। একে দিয়ে যেভাবে তিনি অভিনয় করিয়ে নিয়েছেন তা এক কথায় যেমন অবিশ্বাস্য তেমনি বিশ্ময়-কর। তথিকের এইসব গ্রুণ প্রিথবীর শ্রেষ্ঠ পরিচালকের পর্যায়েই পডে।

চলচ্চিত্র উৎসব সম্পকে সর্বশেষ এবং চমকপ্রদ থবর হেলে প্রথমে উল্লিখিত তিনটি ছবিব মাধ্যমে মানবতাবোধ ও মানবিক ম্র্যাদার মালে কুঠারাঘাতে ক্ষুব্ধ হয়ে উৎস্ব কমিটিরই কয়েকজন সদস্য তার তীত্র প্রতি-বাদ করেন এবং ঐসব ছবি উৎসবে ্দর্শন না করার জন্য তাপের অধিকার প্রয়োগ করেন। কিন্তু তাদের সেই আবেদন উৎসব কমিটিঃ ডিরেকটরের মনঃপতে না হওয়ায় তাঁরা উৎসব কমিটি থেকে বেরিয়ে অসেন।

নভুন স্থ< দিলীপ রায় - দেবিকা মুখাজি











অবস্টাই নাটক : সমিত ভঞ্জ - আরতি ভট্টাচার্য

রঙ্গজগতের রঙ্গকথা

भ्याचना सामी!

শ্নাল ভবনে যথন ন্যাশাশ প্রিয়েটার অভিনয় করছিল তথন প্রথাত এতিহাসিক স্যার ডবলিউ ডবলিউ হান্টার সাহেব প্রারই টিকেট কেটে অভিনয় লেখতে আসতেন। একদিন হান্টার সাহেবের সংগ্রাক ও অন্যান্য কেরেছেন নিয়ে লেখাতে তালেছেন এখান মেরেদের নিয়ে সেকে অভিনয় করে। এটাই ছিল তাদেব অভিনয় দেখার বড় আক্ষাধ্।

প্রথাত অভিনেতা ক্ষেত্রাহন গাংশাপাধায়ে অভিনয় করছিলেন লীলাবতী চরিত্রে। ক্ষেত্রবাব থেলন প্রিকাশিন ছিলেন তেমনি তাল মেয়েলাকান ছিলেন তেমনি তাল মেয়ালেন হিলেন ক্রেডিব সাহেবকে বলালান, তুমি অম্যাদেন মিছে কথা বলোছো। কিছুতেই কোন প্রিয় এইপুস হতে পারেন না। নিশ্চাই মেয়ে অভিনয় কর্তেন।

হাণ্টার সাহেবের কথা যখন কিছুটের মেমসাহেব বিশ্বাস কর ছলেন না ভখন হাণ্টার সাহেব বললেন ঃ বেশ্ ভোমানে মানির্মে নিয়ে যাবো।' যবনকাশের হাণ্টার সাহেব মেমসাহেবকে নিয়ে গ্রামর্মে এলেন। কেচবাব্রক খবর দিহে সামনে এলেন। তবু মেমসাহেবের বিশ্বাস হাজেল না। হাল্টার সাহেবের অন্বোরে কেচবাব্র খথন ড ক পরচুলা খলে কেললেন তখন কোলা শহেব হতবাক হয়ে আন উলোন এড্কেটেড বালা লেডী।' আর ভাকে একজন শক্তিভার লাভ মহিলা মনে করেছিলান।'

সবাই হেসে উঠলেন। দেশচালে অভিনয়।

মতিশাল সূর ছিলেন তথনকাই
একজন প্রথাত অভিনেতা। তিনি একশ্বার
তেনে কেবে ঠিক করলেন, দেবওা ও
রাক্ষনের চরিগ্রভিনয় ন্যানর চরগ্রভিনয়
থেকে প্রেক হওয়া উচিত। কী করে এই
পার্থক্য ফ্টিয়ে তুলাবন তা নিয়ে
চিত্রভাবনা করতে করতে ঠিক করলেন
ব্যায় এবং চলনে এই পার্থকা দেখাবন।

গ্রেট নাগনাল থিরেটারে অত্লক্ষ মিত্র 'আদুদ্ সত্" নাটক অভনীত হচ্ছে। স্বাবিটী-সভাবানের ক্ছিনী নিয়ে নাটকটি রচিত। ব্যাের চরিতে অভিনয় কর্মালেকচালের অভিনয় প্রথি প্রয়োগ কুরলেন। সদা কাধে নিয়ে জন্বা কনবা

ফেলে মতিলালবাব বখন মণ্ডে প্ৰবেশ সবাই মনে করলেন কোন রীরীল চরিতে তিনি অভিনয় করছেন। দেবকভেই কথা বলতে গিয়ে এমন এক সার করলেন যে, প্রথমে সবাই কেতি, হলী **টেঠলেন তারপর হাসাস্বরণ কর**া কন হয়ে উঠলে। মতিলালবাব হাস।-নিতে বিচলিত না হয়ে 'দেবচালে' ভিনয় করে যেতে লাগলেন। সেদিন স্বজন সাহেবও অ. ভনয সৈছিলেন। রসরাজ অমৃতলাল তাদিব হৈতা কথা ভতরে আসতেই বলে ত্রপালবাবা 'জ্ঞানা কণ্লোন : সাহেবর) লিয়া? অভিনয় দেখে বলল বি?

মতিল লবাবুকে নিয়ে একটা বংশা নার জন্য অম্তিলাল বললেন : মাসেলি বলেন নাম শেননি ? মসত বড় পণ্ডিত। লামান দেবচাসের অভনর দেখে সভিভিত য়েছেন। বললেন একটা জি নয়াস বটো। মতিলালবাব্ত মহাখানী! বললেন : দেশে আটি কজন বেলেন? গিরিশবাবু:

্রসংশ্রন্ধ অবশ্য শেষ প্যন্তি দেবচালের। কল লুসোম্বাটন করে দেন।

্রীল ভাল মাগলো ছেড়ে দিয়ে গেল!

ত্থনকার একজন থিয়েটাব স্বৰ্ণ 🙀 কার্মী 🐧 মানুট্টেরের এইনকা অভিনেত্রি **ললে ক্রিগত সম্পাক জাড়য়ে পড়ে**-ኪ লেন। অভিনেত্রীটি আবার ভালবাসতেন 📆 নৈক অভিনেত্রেক। গিরশচন্দ্র শিয়েটাথের অধক্ষে। ওই অভিনেতাকে 📆 হোতা কর্ব উপায় ছিল না। স্বয়াধ-綱রী সদেহ মন নিয়ে সতক থাকতেন। 🚅বার উত্ত থিয়েটারে এমন একটি নাটক **অভিন**ীত হলো যাল গধে সংশিলণ্ট 🧺 ভিনেতীকে এবাধিকবাৰ - মাত সদেবাধন ্রতে হবে। প্রয়োধকাণী এবার মতক। **েলেলে। বিহাসেকিল সময় আ**ব একখানী 🐞 নিয়ে উইংসের পাশে দাঁড়িয়ে পরীক্ষা 🚉 সেত লাগলন সংশিল্ড অভিনেতা ভাতানতীটকে মাত সমেব্ধনে সমেব্ধন ক্ষেন কন।

অভিনেতা পাৰে থেকেই সংযাধি-উপ্রাণ ব্য **451.3** ভারীর মনোভাব লৈরে ছালন। তাই মজা দেখবার জনা ীতনি মাত স্মেৰ্ধনের স্থা-গালি দিয়ে যাতিক লন। স্বহাধিকারী অভনেতাকে এবার মন্ত্রায় পেয়ে গ্রেনে উঠলেন এবং প্রথমে নিজেই একটা শাসিয়ে ঝড়ের বেগে সামান উপ্পিত হ'য়ে গিবিশ্বস্থান ্গণিশব[্]বু গি বশ্ববে, ম-বাবু 'সব ভাল ভাল মাগুলো' 'ছ'ড় দিয়ে গেল। আপুনি এখনই এর একটা ব্ৰেপথা কর্ন।

বাবশ্বা কি করবেন। গিরিশচন্দ্র এবং উপশ্বিত হারা ছিলেন সবাই হোলহো করে তেনে উঠলেন।

कालीम बारधानामाम

মঞ্চাভিনয়

Barter lives dilet. লিখিব কমাৰ লেন্স, নাসিং ও ক্যাডেট ডিডিস্নের ৩৪ডন ৰ;বিক্তি উৎসৰ : বিগতে ৩০লে আগণ্ট, ভাৰে থিয়েটার রংগমণ্ডে শিশিরকুমার ইনভিটিউট এগ্রাহ্বালেল, নাসিং ও ক্যাডেট ভিভিস্কের ্ওতম বাধিক উৎস্ব অনুষ্ঠিত হয়। অন্-পোৰোহতা করেন বিশ্ববঞ্চিত সাংবাদিক শ্রশেষ্ তৃষারকানিত যোষ আর প্রখন অভিথির্পে ভাষণ দেন ভারত প্রবাশ্রম সংক্ষের স্বামী নিথিলান্দ্র। ক্যারী এলনা মিতের উদ্বোধনী সংগতিত পর সেন্ট জন ওয়ামব্রেলস ব্রিলেড শিশিবক্সার ইনভিটিউট্টের এলব লেক্স, লাজি'ং ৩ঃ জাতেট ভিভিসনের সভা-সভ্যার **দ** বিশ্ব-দ্রুগের ভ্রমারকাতি হ ্ৰিদত সাংবাদিক ছে:হকে বিশেষভাবে অভিনদ্তি করেন। অভিন্ন্নটি পাঠ করেন মিহিরলাল গণেগা-পাধায় ডিভিশনাল প্রেসিডেন্ট সংস্থাব বিভিন্ন সেবাকার্যের উদ্দেশ্য করে বস্তুতা করেন। বিভিন্ন স্ভাদের প্রহ[ু]র বিভরণ করেন তিভিদ্নলে সুপাবিদেটভেণ্ট শ্রীপ্রভাত -ক্ষার বস্তু। প্রধান অতিথি স্বামী নিথিলানংক তাঁর বছতায় সংস্থার বিভিন্ন সেবা কার্যের ভ্যসী প্রশংসা করে বক্তা দেন। বত্রান বিশ্বেথসভার হাত থেকে দেশের মুক্তির জনা অধ্যাত্মবাদের মহান আদেশে উদ্বাদ্ধ হতে সভ্পতির ভাষাল প্রশেষ্য ছুৰারকালিত লোগ প্রামীলাকৈ স্মধনি করেন। শিশিন-ইনাণ্টাটউটের পক্ষ থেকে তাকৈ অভিনালিত করার জন্য বলেন আমি ত নিজেলের লোক। এই ভালাবেসে জামার বা নিজেলেন, তা মাথা গেতে নিজাম। প্রতিষ্ঠানের কর্মাত্রপারতা সংপকে স্বাই জারহিত আহেন। সেবার এই আদর্শে স্বাই জারহিত আহেন। সেবার এই আদর্শে স্বাই জারহিত আহেন। সেবার এই আদর্শে স্বাই জার্মাণত হবেন জাশা করি। কুমারী মাবেরী বোধের গাঁটার বাজনার পর রবীপ্রনাবের হব্ চক্ম রক্ষা ও গ্রু চক্ম মন্ত্রী এবং গৈলেল গাহে নিরোগীন গোস নাটক অভিনালি হয়। সম্য অন্তর্ভান গারচালনা করেন স্থামিছিললাল পালগ্রা। গাঙ্গালাক গোলাক গালাক

শক্তিক নির্মান্ত করে : ৫৫-১১০১ প্রতি বৃদ্ধ ৬৪ বানি নির্মান ৩ ৫ বার করে স্থান প্রতিষ্ঠান ত ও বার স্থান প্রতাশীত নতুন স্থানত



পরিকলনা ঃ কবিছা কার্য
 ভালো ঃ জাপনা লেন
র পালাণ ঃ কবিছল, বাজিলা, পত্যিক,
লগত পাল, পথ্যালা এবং
দ্রেলা, ও মালকা বিজ্ঞান
লগতে বিজ্ঞান

এবারের শারদীয়ায় অন্যতম শ্রে**ড**ঠ আকর্ষণ

প্রোন দিনের মর্মবাণী আবার প্রকাশিত হচ্ছে।

মর্মবাদী পত্রিকার বিশেষ শারগীয়া সংখ্যা প্রবন্ধ মহালয়ার জাগেই। জন্মকাল থেকে একমাত মেষেকে বাবা মা বাকে করে সংখ-দংশু দিন কাটান: তিলে তিলে সে বড় হয়। লিখিয়ে পড়িয়ে, বিলাস-বাসনে, আদরে-জনান্দ্র মান্য করা প্রিয়তমা দ্লালীকৈ এক সময়ে বিয়ে দিয়ে পরের ঘরে পাঠাতে হয়। বাধা-মা মনে করেন মেয়ে ৩ অনেক যয়েই মান্য করলাম; রালা জানে—সংসারের কাঞ্জ জানে আবও কত ি। শাঁগ অর উস্ধানির মধ্যে পাঁচ-জানে আগবিদি নিয়ে সে যায় স্বামীর ঘর করতে। অর, বর বিলি তাল ধ্য় ত ভাগবিদি নিয়ে সে যায় স্বামীর ঘর করতে। অর, বর বিলি তাল ধ্য় ত ভাগবিদ নিয়ে বোলা-মায়ের অদরের মেরেটিকে শ্বদ্রে বাড়ীর দুংশার বিলি ইতিহাস নিয়ে চোথের জলে ব্রক জালাতে হয়। আমানের এই মর্মানীকৈ বাবা-মার আদরের মেরেটির মতই অনেক জালাম জানের ছিন। মনে সাক্রনা মানাবাদির স্বাখ্যসম্প্রী করতে আমন্ত জানতঃ ত কোন হাটি করিনি...আর্থনী প্র হক, এজেন্ট প্রতিমিধি পক্ষ জাতাথে লিখুম।

মৰ্মবাণী প্ৰকাশন, পোল্ট বন্ধ — ১০০১৫ কলিকাতা—২৫

माञ्च-- ७.৫o

(আজই পাঠালে ৬ টাকা ক্রমড চেক পাঠান মর্মাবাণী প্রকাশনের নাজে)
বিঃ ছঃ—বেক্সর বংশক-ব্যবহাদের বিশেষ সংবিধা দরে একেন্দী বেক্সা বর্জি



বিশ্বাস এবং জারো অনেকেই অনুষ্ঠানে উপস্থিত খেকে উদ্যোজানের উৎসাহিত ক্ষােন।

व्याप्तक प्राक्षा शब्द्राम् अस्त्री :

নাটা-উপদেশটা : অসামরতন গা্গা্লা নাটার্শ ও মঞ্চ প্রয়োগ : সনং ম্থাে-শাধার ! সরে ও আবহ : সনিল মিত্র ও সম্প্রদায় । প্রহতাবনা ঘল্টমণ্ডাই : কুনাল-শাক্ত ঘোষ ! আলো : বিভাস ম্থােপাধার ! নেশথা কর্ষ্ঠ : অঞ্জনা মিত্র । অভিনয়ে : রাজা—সনং দে । মন্ত্রী—সোমনাথ ঘোর, দ্ভে—অর্শারতন গাঞ্চালী । জ্যােতাম্প্রী— সমর ভড় । বৈদাে- শিবনাথ দাস, ইংগ্রেল প্রভিত—আমিত মিত্র । ফ্রামী পন্তিত— ক্রিকং ঘোষাল । ব্রহ্মণ পন্তিত—কুর্বাল-কান্তিত ঘোষ । প্রহ্মীশব্যু—লক্ষ্মিরারার নন্দ্রি ৬ শ্রেন্তন্ত্র কোটাল।

কৰি গ্ৰেন্থ হৈ টিং ছট কবিতাক্লাক্ষে কৰ্চন্দ্ৰ রাজা গ্ৰন্থন মধ্যার
সংক্ষিত নটোর্প শৃধু শিশ্লেরই নয়
ক্তুনের কাছেও অপ্রা আক্ষান্ত্রে দেখা
দেয়। শিশ্ম এবং কিশোর শিল্পীরাই
ক্রিনের অংশ গ্রহণ করে। প্রতিটি ভূমিনা
ক্রিনির্বাচিত এবং প্রতিজন শিশ্পী উপদেন্টার
নিক্ষেশ প্রতিফালন করে আত্তত অভিনর

কৃতিকের পরিচয় দিয়েছে। সনং দে, সোমনাথ ঘোষ কুণালকান্তি ঘোর এর নাম থেব বিশেষভাবে উলেখযোগা। স্বচেয়ে উল্লেখযোগ্য দ্তের চরিচে স্বর্কনিন্ঠ সভা অরুপ্রতন গণেগাপাধ্যায়ের নাম।

মঞ্ আলোক-সমশাত, পোষাক পরিজ্ঞ্ব এবং আবহ সংগীত সমগ্র অভিনয়কে রস্থাকী করে ওলেছিল। শিশিবকুমার ইনাণ্টিটেট বড়দের না কাভিনয়ে যথেপ্ট দক্ষতার পরিচয় দিয়েছেন্-কিন্তু বডামান অভিনয় শিশ্ আমোদ-প্রমোদ ক্ষেত্রে তাদের এক উল্লেখযোগ্য অবদানসুপেই কাভিতি হবে।

काँम

পংঠপোষক—তুলসীকাছিত দে বিন্বাস ।
উপদেশ্টা : মিছিরলাল গংগোলাধায়।
নাটক—দৈশেন গৃহ নিয়োগী। পরিচালনা—
স্থীর মৃত্তাফাী। আবেহ সুজাতি ঃ
সলিল মিত্ত প্রতিশিলিপব্লদ। অভিনরে ১
স্থীর মৃত্তাফাী। মৃত্তুলকাভিত ঘোষ।
গোতম স্বকার। সুশাল ম্থোলাধায়।
প্রতাপ বায়চোধ্রী। অলেক মিত্তা বরুল্
দ্ভা তাপস মুখোলাধায়। গৈলেক মুখোল

পাদ্যায়। অচিনত্য মিয়। শেশুর নরে। গাঁতনী दनवी । त्रीका हरद्वीत्रायास्त्र । निनित्र हर्नाको টিউটের সভারা মহাত্মা শিশিরক্যাকে প্রের নামের মর্যালা রক্ষার বহু ক্ষেত্র নিজেদের যোগ্যতার পরিচয় বাংলার নাট্যান্দোলনের অন্যতম স্রোগ মহাত্মা শিশিরক্ষারের নামে নামাহিত শিশির ইনজ্টিউউট নাট্যাভিনয়ের মধ্য দিয়ে শিশিরকুমারের সমতি রক্ষার যে বিশেষ কৃতিছের পরিচয় দিয়ে দেশবাসীর প্রাধান্তান করেছেন সে কথা বিশেষভাবেই উল্লেখযোগ।। বিভিন্ন সময়ে বিভিন্নধমণী নাট্যোপহারে মধ্যেই সভ্যদের যোগ্যতার কথা নিহিত। কিছুদিন পূৰ্বে বৰ্তমান বছরেই টিপ্ স লতান' ঐতিহাসিক নাটক মণ্ডম্থ করে ভারা সনোম অর্জন করেছিলেন এখনও আমরা তা ভূৰে যাই নি। বর্তমানে ফ'্র কৌতুক নাট্যাভিনয়েও তারা সমান দক্ষতার পরিচয়ে আমাদের মুক্ধ করেছেন। টিঙ্গু স্কুলতান নাটকের পরিচিত প্রেন বহা শিলপীদেরই দেখা গোল বর্তমান নাটকে ভিল্লধমতি চরিত্রে। শিল্পীদের মধ্যে এমন বহু অভিনেতা আছেন—হাঁর হে কোন নাটকের যে কোন চরিয়াভিনয়ে যে কোন পেশাদার শিশ্পীকে টেক্কা দেবার মত ক্ষমতা রাখেন। স্বোপার সামাগ্রক অভিনয় গ্রন্ পরিচালন নৈপ্তা, আলোক-সম্পাত, মণ্ড-কৌশল ও অন্যান্য প্রতিটি বিভাগের প্রতি এরা এত স্তক দ্ভিট রাখেন খে. মনেই হয় না কোন সৌখীন অভিনয় দেখছি।

বর্তমান হাসির নাউকটির ক্ষেতে নাটা-গ্রেছ তাঁরা হাসির পরংগ তলে দশকিদের মাতিয়ে রাখেন। টকটির শরিচালনায় লক্ষ শিলপী সু∀ীর ম**ুত্তাফী যে**মন দক্ষতার পরিচয় দিয়েছেন তেমনি দক্ষতা ফাটে উঠছে ভার ডেপ্যটির চরিত্রাভিনয়ে : স্পরিচিত মুকুলকানিত ছোল (বিমান), অসীমরতন গঙেগাপাধ্যায় (সেমনাথ), সূখীল মুখোপাধ্যায় (সভাষ) সমান হাসিয়েছেন। গৌতম সরকারের কপিল হিণ্দুস্থানী সেপাইর্পেই ফুটে উঠেছে। শৈলেন মুখে:-পাধ্যায়ের অঘোর, প্রতাশ द्वाशकोध-द्वीद নবীনকুমার উল্লেখযোগ্য। অন্যান্য শিল্পীরাও ম্ব ম্ব চরিয়ে কুতিছের পরিচয় দিয়েছেন। গতিশ্রী দেবীর ডেপার্টি গিয়ি তরলার অভিনয়ের মধ্যে ডেপ-টি-গিল্লির ফ-টে উঠেছেন। রীতা চট্টোপাধায়ের সপ্রতিভ হওয়া উচিত ছিল। বিভাস মুখো-পাধ্যায় দুর্টি নাটকেই তার অপূর্ব আলোক-সম্পাতের ম্বোহজাল বিস্তার করে চমংকৃত করেছেন। ভূমিকা ও অন্যান্য পরিচিতির কথা বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য।

The second of the second

বিবিধ সংবাদ

জীলামপ্র বহিলা লিপ্পাঞ্চম—জন্তু ।
তির বিভিন্ন উন্নয়ন্দ্র মহিলা লিপ্পাশ্রম
তির বিভিন্ন উন্নয়ন্দ্রক কার্যকলাপ
লাথে শ্রীরামপ্রে রবীন্দ্রভবনে একটি
ল আয়োজন করা হয়়। সভার সভানেতী
লা বিনোদিনী বিদালিয়ের প্রধান
করা শ্রীমৃতী রেণ্ বাগচী সমিতিয়
ভার কার্যধারা সবিশেষ ব্যাথ্যা করেন।
তেনে ধন্যবাদ জানান শ্রীরাম্প্রের
ভার সমাজসেবিকা শ্রীমৃতী ম্পিনা
চার্যাণ

সভাদেত শ্রীরামণুর প্রিমধ্যেক মিউজিল আন্সোলিয়েশনের খিলিপ্র্দুদ সামাক নাউক জেব্ছ সাফলোর সপো মাউদ্ধ কন। প্রথম থেকে শেষ প্রমুগ্ত প্রতিটি কপীর সংঅভিনয়ে নাটকটির গতি রায়ন। তবে দু-এক দ্বেশ্য অতি-কয়িতার জন্য কিছ্টো গতিহান হয়েছে ল যায়। করেকটি চরিত্রে শিল্পীদের ইব রেরাপাত কলে। নাটকটি রচনা ও জাচালনা করেন শ্রীপার্শেদ ঘোষ। আলোক-বাত ও মডে—শ্রীরামণ্য মাঝি ও অজিত কাস। কুমারী চম্পা ভট্টাচার্শ উপ্রাধন

্লাণিতানিকেছনে মাইকেল মধ্স্দ্দ মহামেলার উন্বোধনী সভা

গত ৩০ জুলাই শাণিতনিকেতনে

থাইকেল মধ্যদ্দন মহামেলার এব উপোবাবনী সভা প্রেণিজ্ঞীতে অন্ ঠিত হয়েছে।

থাই মহামেলা যে অনুস্ঠানস্চুটী গ্রহণ

থাইছে তার কতটা শান্তিনিকেতনে কথা

থাইছে এই করা বিভার আলোচনা হয়।

থাইছিল হয়, মধ্যমুদনের বিভিন্ন নাটক

থাইছিল বাবীগণনার নাগী চরত অবজন্বন

বাবীগণনার নাগী চরত অবজন্বন

বাবীগণনার নাগী বাতনি-গানে প্রিক্শন করা হবে।

এজন্য শাহিতনিকৈতনে একটি সহায়ক কমিটি গঠিত হয়, এতে বিশ্বভাগতীর অধ্যাপকদের মধ্যে আছেন প্রণানহন্দ চট্টো-পাধ্যায়, অমিত্রসদেন ভট্টাত্রগ, গোপিকানাথ রাষ্ট্রেইবারী, জাবিন বংদ্যাপাধ্যায় প্রমুখ। মূল কমিটির পক্ষ থেকে উপস্থিত ভিলেন সঞ্জাবিক্ষার বস্কু, স্বত্রত গংশোপাধ্যায়, মমা বস্কু, বালী মিত্র ভপতী গংশোগাধ্যায়, মার্মার বস্কু, বালী মিত্র ভপতী গংশোগাধ্যায়, মার্মার সম্কু, বালী মিত্র ভপতী গংশোগাধ্যায়, মার্মার সম্কু, বালী মিত্র ভপতী গংশোগাধ্যায়, মার্মার

'শ্লাৰণ সংখ্যা' ঃ সমপ্রতি হাত্ড্ডা জেলার বাগানান থানার অবত্যবিত চণ্ডাপুর গ্রামে যান্তিক বিনোদন গোণ্ঠীর পরিচালনায় রবীশ্রনাথ ঠাকুরের বর্ষার গান ও কথিকার মাধ্যমে বিশেষ গাঁতি-আলেখ্য 'প্রাব্য সংখ্যা' অনুষ্ঠিত হয়ে গেলা। ঐ অনুষ্ঠানে ৰং নাম্বার স্থামত ভজ - নন্দিতা বস্থ প্রিচালনা/ ২ অমল বাল ভাব



শ্রীপার্থ ঘোষ ও শ্রীমতী গোরী **ঘোষের** আবৃত্তি অন্যতম আকর্ষণ ছিল।

বি এফ জে এ কার্যনিব'ছেক স্থামিত ১৯৭৪—১৯৭৫

গত ২৮শে আগ্রুট সাধারণ সভায় বি এম জে এর ১৯৭৪-৭৫-এর কার্য-নিবাছক সামিতির নিবাছন অনুষ্ঠান হর্ আন্দ্রবাজার পতিকার অফিসে। নিম্নালিণ্ড চলচ্চিত্র সাংবাদিকদের নিয়ে ১৯৭৪-৭৫-এর কার্যনিব্যহক পরিষ্ট হয়। সভাপতি ঃ শ্রীনিমলিকুমার ঘোষ, সহ-সভাপতি ঃ শ্রীকালীশ মুখোপাধায়ে শ্রীসেবা-ব্রত গ্রুত, সম্পাদক ঃ শ্রীবাগীশ্বর ঝা, কোষাধাক ঃ শ্রীজোপালাচন্দ্র পালা, সম্ভূ-সম্পাদক ঃ শ্রীজ্পোক মঞ্জুমদার এবং শ্রীজারিজিং সেন। কার্যানিবাছক সমিতির সদস্য ঃ শ্রীপশ্পতি চট্টোপাধায়ে, শ্রীজ্পধার বস্বায়, শ্রীধাবিন মহিক, শ্রীজ্পধার সাহিত্যালক্ষার, শ্রীপি এন উপাধ্যায়, শ্রীবৈত্যাল ম্থাক্ষ্যী, শ্রীবি এন

শ্রীত্বারকান্তি যোঘ রুচিত

ছোট-বড় সকলের মনের মত বাংলা সাহিত্যের দু;'থানি আশ্চর্য বই

বিচিত্ৰ কাহিনী

8-00

্সণ্ডম সংগ্রারণ

আরও বিচিত্র কাহিনী 👓

(চতথ সংস্করণ)

এম সি সরকার জ্ঞান্ড সন্স প্রাঃ সিঃ ১৪, বঞ্চিম চাট্রজ্যে স্ট্রীট, কলি:--১২

ं मन्त्राम् ज्या स्वयस्य तथा स राजनी



শা, শ্রীরেইস্উদ্দিন ফরিব[†], শ্রীরেইন্ডদ্দিন আহমেদ, শ্রীতাপস বন্দ্যোপাধ্যার শ্রীনির্মান ধব শ্রীম্বপন মজিক।

ষ্টাকে উক্ষা : রাধা স্মৃতি সংগ্র ব্যাধিক মিলনোৎসব গ্টার রগণামঞ্চ বিশ্ব উৎসাহ উন্দীপনার মধো অন্থিত হয়েছে।
সংগ্র সহ-সভাপতি ৩% স্কান্তি
হাজর। উদ্বোধন সংগাঁত পরিবেশন করেন।
সংগ্রিক, প্রধান অতিথি এবং সংগ্রসনাকর ভাষণের পর সংগ্রসভারা ভার
নীহাররজন গ্লেডর উক্রা নাটকটি
সাফলোর সংগ্রমণের পর সংগ্রম সভারা ভার
নীহাররজন গ্লেডর উক্রা নাটকটি
সাফলোর সংগ্রমণের পরিচার দেন পরিচালক প্রমাদরজন চৌধ্রী। সংগ্রিভ

নাটকটির প্রায় প্রতিটি চরিত্রই স্কুঅভিনীত। প্রদীপ ভট্টাচায় দ্বানেশ থোষ অনাথ মৈত ও মধেব সরকারের অভিনয় এক কথায় অপ্যা অনবদা। দেবাশীয় সরকার লতিকা বস্বু ও নমিতা গাংগ্রালী—এগদের অভিনয় ধরি চরিত্রালে অভিনয় করেন, তারা হলেন—দিলীপ পাল, অভিনয় করেন বার্ত্তির দাস্কুল নিত্র দুর্গাদাস্ট করেব ঘোষ, তারক পাল, সিদ্দেশ্বর স্মাণ্যার রথীন বোস, স্বুপন দাস ভ্রমণের বর্ণীন বোস, স্বুপন দাস ভ্রমণির

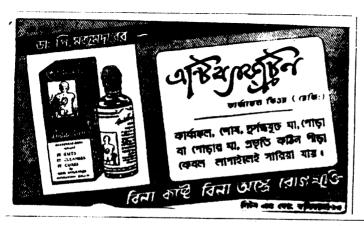
শ্ম আন্তর্জাতিক চলচ্চিত্র মেলা সম্পর্কে সংবাদিক সংম্যালন : আগ্নামী ২৭ ডিসে-নব প্রেক এই জান্যারী প্র্যুন্ত প্রারু দিনবাপী ৫ম আদতকাতিক চলচ্চিত্র উংনর
শুনুমু হতে চলেছে নরাদিক্সীতে। সুস্থাতি
উৎসব পরিচালক শ্রীজগৎ মরেরারী এসেছিলে
কলকাতার। তিনি সাংবাদিকদের সপ্তো এব নাকাংকারে উৎসব সম্পর্কে বিশ্তাধিং

এবারের উৎসবে ভিনটি বিভাগ থাকরে যেমন—মূল প্রতিযোগিতার বিভাগ, ইন্ফর, মেশন বিভাগ ও ফিলম মাকেট বিভাগ। বিভিন্ন বিভাগে সারা প্রিবী হ সেরা ১ জনপ্রিয় ভবিস লিই দেখানো হবে। উৎসং কতপিক্ষ চেণ্টা করছেন যাতে বিশ্ববিশ্বার কোনো পরিচালকের সব ছবিগালি নিয়ে একটি বিশেষ প্রদর্শনী করা যায়। এখনত প্যঞ্জি প্রায় ৩৫টি দেশ উৎসংবর নিম্নত্র সাড়া নিয়েছেন। শ্রীমুরারী জানালেন ছবি যতই আসুক এক নিৰ্বাচনী ক্লিট প্রতিযোগিতার জন্য মোট পর্নিচশখনি ছবি বেছে নেৰে। নয় সদস্য হিশিষ্ট বিচাৰ-মন্ডলীতে ভারতীয় সদস্য থাকবেন দুঞ্জ। বাকি সাওজনকে নেওয়া হবে ইউরোগ এশিয়া আফ্রিকা**ই আ**য়েবিকা প্রভৃতি দেশ থেকে। জ্বী বোডেরি চেধারম্বান হচ্চেন শ্রীসত্য**জিং** রায়। অংশগ্রহণকারী প্রতিটি দেশের তিন্দান করে প্রতিনিধি আস্থেন উৎসাব এবং কিছা বিদেশী সাংবাদিকত।

এই চলচ্চিত্র উৎসব যাতে সর্বাধ্যসন্থান হয় সেজনা শ্রীম্বারী কোম চুটি রংগছেন না ভাবতের বিভিন্ন স্থাপ্তলং চলচ্চিত্রান্বাগী পরিচালক প্রয়োজক পরি-বেশক - কলাক্শলী সকলের অংশ গ্রহণের গ্রহান প্রকাশ করেছেন।

কোল এমংলহিজ বিক্রিয়েশন ক্লাৰের নাটনে কান

গত ২১ আকার বিশ্বরাপা রুজামণে কোল এমপ্লাগ্মজ ... এয়েশান কারের উদ্যোগ্র বিহ্নিখা নাটকটি দালুণ সাফলেরে সংগ্র মন্ত্ৰপথ হায়। নাটকের প্রধান দুটি চরিত্র – বিলাসবিহারী ও সজেন সিনহার ভূমিকায় **য**ুগ্মভান আভন্য কবেন সভাবত णाठीक⁴। वला वाश्र्ला, भार् ুল্য ভাব সংগ্ৰে উনি এই চাইত দুটি মণ্ডে উপাস্থত কবেন। বিশেষ করে সমুজন সিনহাত ভূমিকায় সভারত চ্যানেজ'নি মম'-পশী অভিনয দীঘাদিন মনে রাখবার মত। এছ.তা এই নাটকের অন্যান্য চরিত্রে খাঁরা হাস্তবিক প্রশংসনীয় অভিনয় করেছেন, তারা হচ্ছেন স্বজী অমবেল্ গ্লুগ্ড, এন কুমার, বাস্-দেব নন্দী, এ আর মজমেদার এবং শ্রীমতী থমতা চ্যাটাজী ও শ্রীমতী যেনকা দাস। নাট্টটি পরিচালনা করেছেন fax a গাটাজ^ণ। নাট্যানুভ্যানে প্রধান অভিথি ভিসাবে উপস্থিত ছিলেন প্রয়ং নাট্যকার ডাঃ নীহাররজন গ্রুত। সমগ্র অনুষ্ঠানের সভাপতিত করেন শ্রীকে পি মুখার্ক্স।



জমতে পাবলিখার প্রাইভেট লিচ-এর পক্ষে শ্রীস্থির সরকার কর্তৃক পরিকা প্রেস, ১৪, আনন্দ চাটোজি লেন, কলিকাতা-৩ হইতে মুদ্রিত ও তংকতৃক ১১।১, আনন্দ চাটোজি লেন, কলিকাতা-- হইতে প্রকৃষ্ণিত।



जानवादक या चन्द्रक करने :

क्षारम कार्रम া বিচাৰ প্ৰেপ্তৰ চৰ্চত কৰে। পতা বা মিখো বিচাৰ কৰে বেইনত নিৰ্দিষ্ট আনহাৰ প্ৰেপ্তৰ চৰ্চত বক্তবা পতা বা মিখো বিচাৰ কৰে বেইনত নিৰ্দিষ্ট আনহাৰ প্ৰা

- কেবল ইংরাজী বা হিলিতে বাজাজ লাইটিং-এর সহত্তে অন্ধিক ১০ শক্তের ভেত্ৰে একটি থাকা লিখন।
- দল্প প্রবেশ প্রটি বালাক লাইটিং কনটেঞ্চ পোল্ট ব্যাগ নং ১০১৫৩, বোৰাই ৪০০ ০০১, ঠিকানার পাঠান।
- ত আপনার প্রবেশপত হতগত হলে বাজাল গাইটিং উৎপাধনের লয় আপনাতে নাম ১০% বিজ্ঞানীক মন্ত্র ক্ষিত্র স্থান স্থান

প্রাবেশ সূলা নেই

ग्रहात्रः विभिन्नी लाहे हिन পাচ্**নের জন্ম** ১ / ডিসক: ৬৭, भन व्यं कु मु केट्मानीर क

!	क्ष्मात ५०% । धनका फल्ट कूमन भागात्मा नरन ।					
Γ	रक्षा	সত্য	মিধ্যা	কেবল ইংরাজি বা ছিলিতে বাক্য নিপুন		
14 E 17 P. 1	> : মোটের ওপর সুবেদেন্ট টিউবের চেরে সাধারণ বাবে পরচ কম।					
	২। ৰাজ্যক বাৰ আর টিউব সারা বিধেন্ন দেরা জিনিবের নক্ষে সমস্তাবে ভূলনীর।					
	১। ২৩০ (ভাণ্ট মেছনৰ বাসাছতে ২৩০ ভোণ্ট ধাৰ ধাৰ্ছাৰ করনে			বড় অন্সরে স্পষ্ট করে সিগুন ঃ নাম		
	৪। বাজাজ নাইট ল্যান্সে এক ঘক্টার পৃত্ত পাওয়ার ধরচ হর।			विकास)		
	 । বাজাজের দাবা কোটিং দেওরা বাছ বিভি ছোরাইট নামে পরিচিত । 					
	🗠 : বাজান্ত কেবল লাইটিং উৎপাহন বিক্লেন্ডা :			खी/पुरुष वसन		
•		T 2				

TREIS

६ >म পुत्रकात---वाकाक कृतेक

८ २६ भूरकात---शकाक कृष्टिः (तक

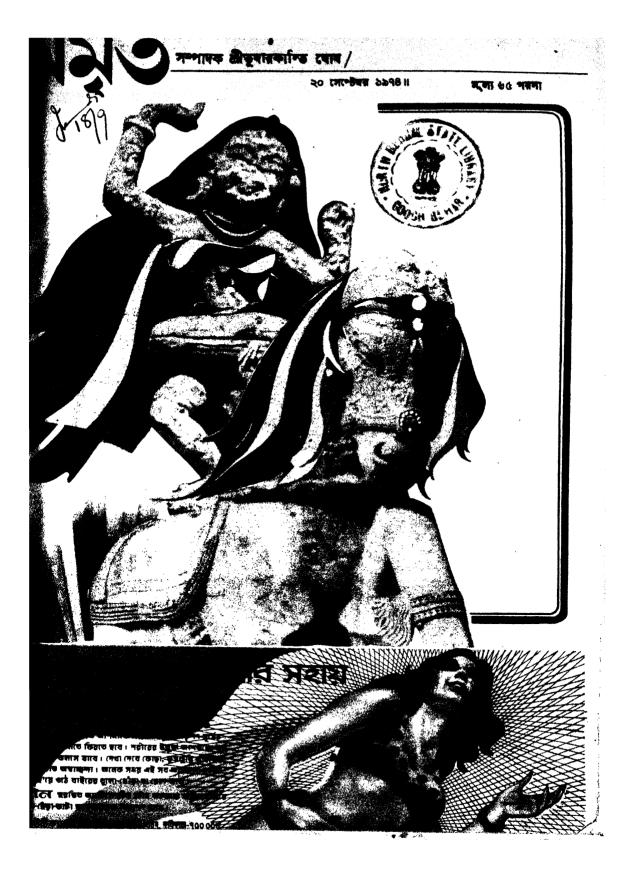
২০ তর প্রভার---বাজাক বাহার ডিলাল টেবিল পাথা

>०० गायमा प्रयोत---वाकाक किनाक (श्राम कुकात e.e जिहात ৩০০ ৰাজাজ নাইট জিট ল্যাল্স-প্ৰথম ৬০০ প্ৰবেশ প্ৰের জন্ম

- বাজাফ ইলেক্ট্রক্যালন্ বিঃ, তাঁবের বিজেতা ও এচতারটাইজিং এজেক্টের ক্ষিত্রতাৰ কৰিছিল কৰিছে বাৰ্ডিয়ে কিন্তাৰ আৰু ক্ষিত্রতাৰ কৰিছে পাৰ্যাৰ কাৰ্যাৰ কৰিছে বাৰ্ডিয়ে বাৰ্ডিয়ে
- লাভিদ এছণ করা হবে না। প্রত্যেষ্ঠ বাক্য পথকে বিচারকারে সিভাক্তই চুক্তার। প্রস্তার বিজেতাদের ডাক্সায়ক্তর কানানো হবে।

শেষ ठातिश ७५१म बास्टावत ५५१८ 🎹 🗀 ১৯৩৮ খেলে আলোর প্রগতে অনস্ক।







বিস্কৃট ও লজেন





ক্ষেম, জেলী, আচার, সস, ভিনিগার, স্কোয়াশ



নিৰ্মাতা ঃ কোলে বিষ্কুট কোম্পানী ⁴+ প্ৰাইভেট লিঃ কলিকাতা-৭০০ ০১০ সূভাষ সমাজদারের এক অবিস্মরণীয় সাহিত্য-সূষ্টি

গঙ্গা থেকে কাহিপয়ান ২০.

ভখন ১৫৭৭ খনিটাকা। দিল্লীর সিংহা সনে দেদি তপ্রতাপ নহামতি আক্ষর আর বাংলার দশ্জমুণের কথা রাজা টোডরমল। সেই সময়ে গোড়ের এক রে শম ব্যাপারী ভিখ শেখ ডিনটি জাহাজনোবাই মালদাই সিক্তের পসরা নিথে গিরোছল সদ্বে রাম্বায়র বাবসার উপ্পেশ্য। সেই দ্যুসাহসী বঙালী ধ্বকেব রোমাঞ্জয় বাণিজ্য-বাল্লার মধ্য বিষে বিদেশ লেখক সেই সময়কার ভারতীয় ও রুশীয় ব্যাপারীদের বাবসায়িক লেন দেন, ভাল-চলন, আচার-বাবহার—সক্ষেপারি ভারত-সোভিয়েত মৈহী বংশনের কথা ও কাহিনী মূত করে তুলেছেন। গণ্গা কণ্যা-কাল্লিয়ানের অবিরুমে জল্ধারার মত শত-শতাম্পীর সেই মৈহনী-বন্ধন আজও তেমুনি বহুমান।

চিরঞ্জীব সেনের নতুন ধরণের রহস্যোপন্যাস

মিরানজিয়া রহন্য ১০

শ্রীহংস-এর নতুন উপন্যাস

লাস্ট ওয়াড

শক্তিপদ রাজগুরুর উপন্যাস

গোডজন বধে ১২

আবদ,ল জব্বারের

জনপদ জীবন

অমরেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধায়ের উপন্যাস

সুবন্ শির

TTSI

নারায়ণ সান্যালের নতুন উপন্যাস

विश्व वात्रना ५०

বিভূতিভূষণ মুখোপাধ্যায়ের

नीलाझ्यीयः राज्यस्य

> 2

20

শৈলেশ দে'র অবিসমরণীয় গ্রন্থ

আমি সূভাষ বলছি (তিনখণ্ডে সম্পূর্)

্প্রথম খন্ত ষষ্ঠ সংস্করণ প্রকাশেত হল । মূল্য ২০-০০ দিতীয় খন্ত তৃতীয় সংস্করণ প্রকাশত হল । মূল্য ২০-০০ তৃতীয় খন্ত (সদ্য প্রকাশেত) । মূল্য ২০-০০

- তিন খণ্ডের মোট মূল্য (২০×৩) ৬০ টাকার পথলে আগামী ২১-১০-৭৪ পর্যকত ৫১
 টাকায় ক্রেতাসাধারণকে দেওয়া হবে। টাকা দেওয়ার সংগে সংশে কাউণ্টার থেকে বই
 পাবেন।
- কেবলমাত্র তিন খন্ডের ক্লেতাসাধারণই এই সনুষোগ পাবেন।
- বাঁরা ডাকষোগে নিতে চান, ডাকমাশ্ল ৪ টাকা সহ মোট ৫৫ টাকা পাঠাবেন (M. O. অথবা Bank Draft). রেজিঃ ডাকে বই পাবেন।
- শেষ তারিথ মনে রাথবেন ২১-১০-৭৪।

ı

রবীন্দ্র লাইব্রেরী ১৫।২, শ্যামাচরণ দে শ্রীট, কলি কাতা-১২ ॥ ফোন : ৩৪-৮৩৫৬



শুধুই কেশ্ তৈলে নয় একটি কেশ রসায়ন



অতুলনীয় গুণাবলীর জন্য যুগ যুগ ধর সুবিদিত

चामनकी है हैशाब अधान छेशकत्व

কেশের পুলিইসাধন ও কেশমূল সুণুড় করে। কেশের সজীবতা ও স্বাভাবিক বর্গ ফিরিয়ে জানে। কেশপত্যন ও জনালগকৃতা রোধ ক'রে অনক্রক সুক্র কেশোল্যমে সহারতা করে। মডিক রিম্ধ ও কর্মক্রম রাখে।



সাধনা ঔষধালয় চাক ক্লিকাডা-৫ **५**८ वर्ष



आशा ३०

''ইণ্ডিয়ান জ্যান্ড ইন্টাৰ' নিউক্ল পেপাল সোনাইটির সদন্য'

Friday, 20th September 1974 শ্রেবার, ৩ আশ্বিন, ১৩৮১

স্চীপত্র

विषय ৬ সাপাদকীয **५ कांट्रब झानाला** (গলপ্) শ্রীশানিত পাল ১৩ গোৱেন্দা ধাৰা শ্রীঅদীল বর্ধন জন আবদ্যল হরি লামা ১৫ পটভূমি **३५ को बालाद भवत** শ্রীদেবদর St cumacucu গ্রীপ-ডর্গক ২০ ভাস ভাৰং ভ্ৰন (কবিতা) শ্রীশাহিতক্ষার ঘোষ ২০ কছেলৰ ঘটোন সাক্ষাৎকাৰ (কবিতা) শ্রীঅমিডাভ চক্রবতী ২০ ভালৰাসা নীল নকত সিন্ধাৰ শৰীৰে (কবিতা) শ্ৰীঅজয় সেন २३ (महे मब धान, ब (উপন্যাস) শ্রীমনোজ বস্ত ২৫ সাহিতা ও সংস্কৃতি শ্ৰীজবংকার-२४ भावरहत्त्वत सम्मात्मात क्वीवन শ্রীগোপালচন্দ রায় ে২ যুৰক-মুৰতী গ্রীকঞ্চা সেনগণত ৩৩ এরাও পিছিয়ে নেট শ্ৰীকনক মজ মদাব

প্ৰদা কি নদুন নাটক করবেন? দিলীপ মজ্মেদারের জটায় ু সংবাদ ৪১

্রিটি সেট ১টি নারী চরিত। প্রয়োজনে নারী চরিত বাদ দিয়েও অভিনয় করা চলো, নতুন আম্গিকের নাটক।

क्लाक बरम्माभाषात्म्र

পলাশের রঙ ৪•৫০

[५िंदे स्मर्वे, ५िंदे गाती हाँत्रहा

লাভার্স লেন৩•৭৫

[নারীচরির বিজ্ঞত প্রশাংগ হাসির নাটক ১টি সেটে]

त्रमञ्ज मृत्याभागारमञ

শ্ৰেষ্ঠ নাটক

ग्राठिएर ० १ १ ६

(১টি সেট. ১টি নারী চরিত্র) সম্প্রে নাটকের তালিকার জন্য লিখনে

जिणिका: ७० । ১ अ करलक द्वा. किल-১



नियमावली

fecula lamba

क्षापकरत्व श्रीप

- ৯ । অমাতে ভালনে ভানে। প্রেরিভ শিক্ষান্ত ইট্রার রক্তা রেবি পারীন বেল । অলালীতে রচনাত থকা বান লালের কথা ভালার গড় অয়ালন ক্রীভ রচনা ভালারকারী ফেবং পারিক নাজর বার ভাগার নাজর ক্রোল ভাভারিকার পারিকেন বার।
- ই । প্রেকিন্ত রচনা কাগালের এক পান্টার পানীক্ষারে বিপ্রকিন্ত রক্তরা আন-বাক্ত। অসলক্ষা ও লাবানি চল্ডা-ক্ষারে কোলা প্রকাশের জন্যে বাক্তীত বহু মা।
- ি বিদ্যান সপো লেখকের নার ৩ বিদ্যান। না থাকলে অনুস্থা প্রকাশের জনো গ্রহীত হর নাঃ

একেণ্টনের প্রতি একেণ্টার নির্মানন্তী এক ক কণ্টার্ডত অমানে করা ভয়ন্তা কর্মানাক করা আন্তর্গার

প্রাহকদের প্রতি

- ঠ ভাষকের বিজ্ঞানা পরিবভানের জনো অসম্ভ ১৫ জিন আংলা ভারতে কার্যালয়ের সংবাদ দেখার। আব-
 - । তি পি-দ্ভ শৱিকা পাঠালো বয় না। প্রাহনেক চাদা নিন্দালীকত হায়ে বনি-অভান্মবোলে অন্ত কবিভিন্নে পাঠালো কবেশাক।

ठीनात कात

ক্ষিকাভা প্রভাগ্রন বাবিক টাকা ২৫-০০ টাকা ৩০-০০ বাগ্রাবিক টাকা ১২-৫০ টাকা ১৫-৫০ ইয়াবিক টাকা ৬-১৫ টাকা ৮-০০

'ভাল,ড' কার্যালয় ১৯/১, আনদ্য লাটাভি' লেন, কলিকভা—৩ টুড়ান : ৫৫-৫২৩১ (১৪ লাইন)



এ মালের ক্রেড রহস্য সম্ভার নিছে আবিভাগি হয়েছে এ বছরের প্রেড শারদীয় সংখ্যা

এতে লিখেছেন :

সমরেশ বস্ক, স্ক্রনীল গলেপাধ্যায়, জরাসন্ধ, ক্ষাণ চন্দর, হরিনারায়ণ চট্টোপাধ্যায়, অনীশ দেব, সত্যাজিৎ রায়, শিবরাম চক্রবতী ও আরও অনেকে।

দাম : ৬-৫০ * স্ভাক ৮-০০

অপরাধ ॥ ১৬৬ কেশব সেন স্ট্রীট্ কলিঃ--১।

মহাত্রা শৈশিবক্ষারের

—करमकथानि উল্লেখযোগ্য গ্রন্থ

অনিয় নিমাই চারত

(৬৩ খণ্ড) প্রাত খণ্ড (১, ৪, ৫) ৩০০০ (২, ৩ ৬) ৪০০০

কালাচাঁদ গীতা

৪র্থ সংস্করণ ৩-০০

নিমাই সন্যাস

(बाहेक) ३व नश्चकत्र

>.00

নরোত্তম চরিত

ON 可你等項句

5.00

लर्ज रगोताञ्च

(২২টি খণ্ডে) (ইংরাজী) প্রতি খণ্ড

o.00

নরোত্তম চরিত

(হিন্দী)

₹.00

প্লাণ্ডস্বান ঃ প*ক্রিক। ভবন* -বাগবাজার ও বিশিষ্ট পৃত্তকালয়

স্চীপত্র

বিবয়

৩৪ চিঠিপত্র

•िक्रा

৩৬ আথিক প্রসংগ

৩৯ অলোকিক জলমান

৪৯ চন্দ্ৰকেক গড়ের থাকণী

Sa तम भाषात जुन

৪৯ জগানা

৫১ রপেসীর খাতা

৫২ রাজার রাজা

৫७ मण-विम्हण्य थ्या

৫७ व्यक्तान कशक्त स्मरम

६४ रगारमञ्जा शंथात्र ज्ञाशान

७० मार्टिस नामक

७३ रचनाश्ला

৬২ জললা

৬৪ मण्डार्यंत्र न्यद्वनीय

७७ श्रिकाश्रह

৬৮ ৰায়োম্কোপিক

48 खेंबा बरमन

৭৬ ফোন থেকে বলছি

५ व क्रिक मानाम

9 विस्मृती कवि

৭৮ ৰোপাই ফিলেয়ৰ কড়চা

45 बारमारमस्मन स्वि

F 787 th C

শ্রীশাণ্ডিলাল মাথোপাধায়ে (উপন্তম) শ্রীঅতীন ব্লেচাপাধ্যায়

শ্রীনিমালেন্দ্র ন্থোপাধায়

(গল্প) শ্রীগিরিধারী কণ্ড

শ্রীঅজলি চৌধারী

শ্রীবরবণি'নী

(উপনাস) শ্রীপ্রভাত দেব সরকা

শ্ৰীপশাণত দাঁ

নী ভাগ্যয

শ্রীবিপলে বন্দ্যোপার্যভার

গ্রীদশ'ক

শ্রীচিত্র।গ্রান

শ্রীকালীশ মূখোপাধার

ঠা চলদ ত

শ্রীরজন মজ মদার

শ্রীনিম'ল ধর

ণ্ট,ডিও সংবাদদাতা

श्रीभा, ज, ह.

শ্ৰীঅভিজেৎ

আনোয়ার আহমেদ

প্রচহদ : ত্রীতৃষার সান্যাল



धाः अनव वर्णमानावात्मव আধুনিক চিকিৎসা একমান্ত নিভ'রশীল হোমিও বই

ম্ল বিজয়কেন্দ্র - আমাদের কলি-কাতার চিকিৎসা কেন্দ্রন্বর ও হেড তাহিচস। विकिश्ना किन्द्रन्वम : ১১৪७ আশ্যতোষ মাুখাজি রোড, কলি-২৫ बादर ६० त्त्र महीते, कांम-७ হৈড অফিস :৩৬বি শ্যামাপ্রসাদ মুখাজি রোড কলিকাজা-২৫।

পাইকারী ক্রেতা / বিক্রেতাগণ হেড অফিসে যোগাযোগ করিবেন

অবকলি

অভিজ্ঞাত হৈমাসিক সাহিতা পত্রিক। নত্ন স্বাদের শার্দ সংকলন মহাল্যাব बार्लारे देवताला शाला-वक हैका। প্টলে থেকি কর্ন অথবা লিখান : সম্পাদক - শীননীধ্যোপাল দত প্রাট—জিন্ত এল আই জি ৩৭, বেলগাছিয়া রোড কলি-৩৭

দম্প্রতি প্রকাশিত হয়েছে

বর্ষপঞ্জী ১৩৮১

(২৮শ বর্ষ চলকে)

বেশ-বিষেশের সকল তথ্যে পূর্ণ 'ইয়ার - ব্যক' बाःसा

চলতি দুনিয়ার সংখ্য ছনিত সম্প্র রাখতে হলে বর্ষপঞ্জী চাই-ই। শিক্ষিত পারবার, গ্রন্থাগার ও শিক্ষা প্রতিন্ঠান-সমহের পক্ষে 'বর্ষপঞ্জী' অপরিহার'। ৮০০ পশ্রে মলো ১২ টাকা ৫০ পং. ভি পি খরচ স্বতন্ত্র।

এস আর সেনগ্যুণ্ড আণ্ড কোং ৩৫/এ, গোয়াবাগান লেন, কলকাতা-৬

সারদা-রামক্ষ

नगानिनी जिल्लाका सक्कि।

ৰ্গাণ্ডৰ—সৰ্বাণ্যস্ক্র জীবনচারত। शम्बर्गात प्रवास्त्र हेरकुट हर्देशहरू। ব্যুচিতে শোভিত সংভম মান্ত্ৰ—৮

গোরামা

শ্রীরামকুক্ষ-শিষ্যার অপার **জীবন্দ**িক সম্যাশিনী জীলুগ'লাতা ব্চিত। बर्फ शहरपत कार्यन्था वरेटकरम ॥

দ্বগামা

শ্রীসারদাঘাতার মানসকনাার कौरतकथा শ্লীসরেতাপরের দেবী রচিত। বেতার জগংঃ--অপরাপ তাঁর জাবনালেখা অসাধারণ তাঁর তপশ্চরা। বহাচিত্রসহ ৮

সাধনা

বস্মতী:--এমন হানোরয় স্তোর্গণীতি-প্ৰেতক বাংগলায় আৰু দেখি নাই।। পরিবলিভ ক-ঠ মাল্ল---৬-

सीक्षीत्रात्रप्रस्ते लाह्यस **২৬ গোরীয়াতা সরণী, কলিকাডা-৪**



সম্পাদকীয়

লংসদের শাদ্রম

কোনে। নার্দণ্ট সংজ্ঞার বাধিন মানতে যে-সব বিষয় আজন্ত নাবাজ, তার মধ্যে আমাদের সংসদের বিশেষ অধিকারের ঠাই একেবাদে গোড়ার দিকে। ব্যাপারটা যে সাঁতাই কড়োটা ধরা-ছোঁরার নাইরে ত. আরো একবার প্রণুষ্ট হলো গত কয়েক দিনের ঘটনায়, একদিকে দেখা গেল, সংসদের সম্ভ্রম গ্রন্থার চেণ্টার সূত্র ধরে বিরোধী পক্ষেণ্ড জনকয়ের সদস্য লোকসভায় এমন কাণ্ড করলেন যাতে আর যাই হোক অক্তত সংসদের সম্ভ্রম বৃণ্ধি পেল না। অন্যাদিকে দেখা গেল, যে-সংসদ বিশেষ করে যে-সরকার পক্ষ সাধারণত নিজেদের অধিকার ও সম্ভ্রমবাধ সংপ্রকে রুগতিমতো সজ্ঞাগ বরং একট্ব বেশিই সজাগ, সেই সংসদ এবং সেই সরকার পক্ষই চরমতম গালমণদকেও একয়কম ক্রম করে ফেলতে প্রস্তৃত।

কোনো পত্রিকা যাদ সংসদকে চোর আরু দালালের আন্তা বলার পথা। দেখায় তবে সেটা সংসদের পক্ষে নিতানত মর্যাদাহানিকর। এই মন্তব্য ক্ষ্যুন্ধ হয়ে সদসোরা বে-বিষ্মাটি অধকার রক্ষা কমিটির কাছে পাঠাতে চাইবেন তা মোটেই অপবাভাবিক নয়। এর তুলানায় অনেক নিরীহ ও মোলায়েম মন্তব্যর জনো সনেক সম্পাদককে সংসদের কাঠগড়ায় দাঁড়াতে হয়েছে। আর সেই সব উপলক্ষে সংকার আর বিরোধী পক্ষ অনা সব মৃতভেদ ভূলে গিয়ে হাতে হাতে মিলিয়েছেন। কিন্তু জক্ত ফার্লান্ডেজ সম্পাদিত প্রতিক্ষকের বরাত দেখা গেল তয় রক্ষা। সরকার পক্ষ এই পত্রিকার মন্তব্য সম্পর্কে ততোটা ক্লুম্থ হয়ে উঠলেন না। বিরোধীদের গলার জার বতো বেলি ভোটের জোর ততো নয়। তাঁদের কার মাধ্য কি সরকার পক্ষের সাহায্য ছাড়া কোনো বাকথা গ্রহণ করবেন? তাঁদের সেই বার্থাভার পরিগতিত লো, কার্যায় ছাড়া কোনো বাকথা গ্রহণ করবেন? তাঁদের সেই বার্থাভার পরিগতিত হলো, ক্ষাজ্য মঞ্চের কিকে ধাওয়া করা, তাঁকে ঘেরাও করে মাথা এবং মাইক কেডে নিয়ে বভার কাজ অবৈধ ঘোষণা করা। এই ঘটনায় সেদিন নাকি সংসদে নতুন ইতিহাস তৈরি হলো। কি হলো কি?

তবে ইতিহাস যদি সত্যিই তৈরি হয়ে থাকে, তবে তা অন্য কারণে। প্রতি-পক্ষের্থ এমন একটা অশালীন মুক্তব্যের জন্যে যে তার সম্পাদককে সংসদের কাছ থেকে कात्ना माञ्जा পেতে হলো না, এক ট সামান্য নিম্দা প্রস্তাব ছাড়া সংসদ পরিকাটির যিন্যুম্ধ আরু কোনো ব্যবস্থাই নিল না, আসল ইতিহাস তৈরি হলো সেথানেই। ঐ পত্রিকাটির প্রতি শাসক দলের বিশেষ অন্তরগের কোনো কারণ থাকার কথা নয়। তব্ ৰে সরকার পক্ষ তাকে অনেপ রেহাই দিলেন, তার কারণ তাঁদের ভয় ছিল অধিকার ভ্রত্পের কে'চো খ'ড়তে গিয়ে 'লাইসেম্স কেলেংকারির' সাপ না বেরিয়ে আনে। প্রিডেটেরর সাতটি প্রতিষ্ঠানকে আমদানি লাইসেন্স দেওয়ার জন্য ২১ জন কংগ্রেদী **এম-পি স**ুপ্রিশ করেছেন বলে অভিযোগ উঠেছে। সে-বিষয়ে সংসদীয় তদদেত্র দাবি তুলেছেন বিশ্লোধী পক্ষ। সরকার পক্ষের সন্দেহ 'প্রতিপক্ষের' বিরুদ্ধে অভি-ৰোগটি অধিকার রক্ষা কমিটিতে পাঠালে সেখানে ঐ লাইসেন্স সংক্লান্ড অ ভ্রমোগটিই ভিন্নভাবে তোলার চেণ্টা হতো। সে-চেণ্টা ব্যথ' করে দিয়ে সম্মকার পক্ষ নিশ্চয়ই বিড়ম্বনার হাত থেকে রেহাই পেলেন। কিন্তু সংসদের সম্ভ্রম আর অধিকারের ক্যাপানটো হয়ে উঠলো আরো দুর্বোধ্য। সংসদকে 'চোর আর দালালের আন্ডা' বললেও ৰিদি তার অসম্মান না হয় তবে হবে কিসে? অতঃপর কি অন্যান্যরাও সংসদ সম্পর্কে ঐ ধরনের বেশবোরা মুন্তব্য করতে উৎসাহিত হবে না?



থাত লগার ছোট ছোট সিপঁড় বেরে
থাপথ। করে উঠছে ব্যান্ডটা, বাচচূত্
থান্রপূপ লাফাবার ছাল্যাতে উঠছে ওব
পিছন পিছন। ব্যান্ডটা কালো পার্শতর মতন
গোল চোখ বার করে হথাসাধ্য সত্তর্থ
থাকার চেটা, করছিল। ভালিমের গান্ডের
নীচে বাধানো বেণিগতে বঙ্গে রছিন পাম
বুনতে ব্যাপা সব্ করে ঢাকাল
একবার বাচনুর দিকে।

—ছি, আমন শব্দ করে শাহাতে চাই বাচ**্**।

বাজ্যুর পারে মোজা, ভারী লা। স্বালে বাগানে বেড়াবার সময় ভাসের জিলির পথে পারে লাগে। এমনি জুতো পারে কি করে নিংশকে লাফাবে, এক মুহুর্ত দাঁড়িয়ে চিন্তা করল বাজ্যু। গলার ক্ষ্মটারের ক্ষেন্টা দাঁতে কার্যভাতে গিরেও মারের ক্ষিতে চেন্তা থ্যকে গেলা। এ স্বায় দুর থেকে

ভেসে এল সেই ট্রেনের বাশীটা। ভার-र्यमाकात अथम रव भारमञ्जात रहेन अथानकात স্টেশন ছ_ন্মে হার। ভারী আ**=চর্য লাগে** বাচচুর। মাত্র করেক গজ দুরে দুরে এই বাডীটার প্রায় তিন দিক বেন্ট্রন করে মস্প ণতিতে ট্রেনটা চলে যার। বাগানের ঠিক ্ব কোন্টায় প্ৰীড়িয়ে থাকলে জানলার ফাকে আবছা প্রায় যামুন্ত মুখ, দরজার इंडिन भरत माँखादना करब्रकीं छेनान छहाता त्वम प्रभव्दे करते हे कार्यः मद्धाः ज्याम्हरा প্রতিটি কামরায় প্রায় একই ধরনের মান্ত্র, ষে কোন খোড়া জেরা বা উটের মতন স্বাই এক রকম দেখতে। এটা কেম্ন করে হয়. এরা প্রতিদিন কোঝারা কোন কাজে নির দেশেশ **इत्ल** शास्त्र, कावरक कावरक वाक्त्र रहत्स् थाःक। শীত-ভোরের শিরণিরে ছাওয়ায় অসমতল যুক্ত বিশ্তীপ প্রান্তরের মধ্যে দিয়ে গুম্ভীর গমগম শব্দ ভুলে দ্রের দিকে ছাটে থার

Salaran de La Maria

টোনটা, ভারপর নিক্ষান কুরুপোর মধ্যে ট্রেলি-গ্রাফের শোষ্ট জার রেজালাটন পড়েছ পরিডার, বিবয়, উলাদীন। সে বাচ্চ রও কোনা মন অরাপের মানুল মনে কার্য হ বসভূত বাচ্চ; তার সাড়ে পাঁচ বছরের জীবনে এই প্রথম রেলগাড়ী চড়েই বেশ জার্ণির পর এরকম একটা নতন বেভাবার ভাষগায় এসে পড়েছে। এবং দিনের মধ্যে বহু খার এই ছোট্র বালানট কতে দ্রীভিয়ে কতবার ক্তর্কম টোনের আসা-যাওয়া দেখছে। বিশেষ করে ভোরের নরম জ্ঞানো যথন কুয়াশার ওপারে চিথর দ্যাভিত্তে প্রত চারিদক শাল্ক নিজনি নিরিবিলি, লাইনের भाग मिर्श क'कम रहकात क्रम्साक वा बहिला মন্থর পায়ে জন্মণ করে খান, কচিৎ বাজারের দিকে প্রতিগামী ব্যাপারীর স্রাগত চিৎকার थारम- रह...हे. रत्र अभग्न प्राप्त हुन्नू - ब्रुक्न खान समाप्त मिन ज्ञद जमम फाट्स ना। बाक्ट

মেললাইনের ওপর থেকে শব্দটা তথ্নো মিলিয়ে ধার নি, বাচচু চিকন গলায় নিজের নাম শানে ডানে পালে ফিরে তাবাল। গেটের ঘাইরে মুমি। এই বাগানের বাজে মালি শিউশ্বলের নাডনি। মুনির গারে ভেলচিটে সুতীর চাদর হাঁটার ওপর পর্যক্ত ফুল ছাগা ফ্রক, তারশার ধ্লিগ্রসিত নিরাবরর দুটি রোগা রোগা পা। মাথায় রক্ষ থাঁকড়া হুল, ব্লি দেভুত খ্লীতে হাস্ভিল চোথের ইশারার কাছে ভাকল বাচচুকে। বাচচুবড়বড় উল্লানিত পা ফেলে গেটের কাছে থাগিরে লোভ্বে ছিটকিনিটা খুলে দিল। মুলির দ্ব-হাত চাদরের নীচে জড়ো করা। পা দিরে গেট ঠেলে ঢুকে এলো মুলি, শিশির ভেজা ঘাস মাড়িয়ে লেব্ গাছের ঝেপের নিকে সরে গেল। বাছতুও এগোল সম্মোহিতের মতন ওর পিছা পিছা।

—তুমহারে লিয়ে বজিয়া চীজ সামা,
চাদরের অভানতরে মানির হাত দুটো ছটফট
করতে থাকে। বাচনু ওর দেহাতী টানের
কথা পরিকার বোঝে না তব্ ওর লাকেন
চণ্ডল হাত ও খুশী খুশী দ্দিট দেখে
আদাজ করতে পারে। অবেখা উপহারের "
আশায় অসমি আগ্রহে হাত পেতে দেয়।

মুনির ছোট ছোট মুঠোয় ধরে না.
এত বড় আকারের দুটো পেরারা আবিভক্ত
হল ওর তেলচিটে চাদরের তলা থেকে। সদ)
গাছ থেকে পেড়ে আনা। সাররোতের হিসে
মাখামাখি এখনও, সতেজা স্বস। বাচ্চার
চোথ চক্চক করতে থাকে, পরম হতে ছোটছোট হাতে বুকে জড়িয়ে নেয় পেয়ারা দুটি,
ঠান্ডার বুক্তকে থাকা হাতের চামড়ায় হিমা
সক্ত পেখারাগ্লো আরো ঠান্ডা ছড়ায়।
এ-বকম ঠল্ডাও বন বল ভাল লাগে বাছরে।

বালিগঞ্জে ওদের পাশের বাড়ীর ফ্রিক্স থেকে
বার করা ঠানতা ফল ধরে দেখেছে বাজু।
বোশক্ষণ হাতে রাখা যায় না। তেতর থেকে
কেমন একটা পা শিবশির কনকনানি শিরাউপশিরা বেয়ে সারা শ্রীরে ছড়িয়ে যায়।
ওর ভালা লাগে না সেই হিম শাভিলাতা।
তার চেয়ে এই ভেজা ভিজা সক্ষা পেয়ারা
বাচানু দাঁতে কামত ভাষা একটা—আঃ কি
দার্ণ। মুলি দাঁতিয়ে এর ভিলা
দেখে, খুশাভিভাতে যায় চোখ দুটি।
বাচাকে ওর বড় ভালা লাগে।

—কোথায় পেয়েছিস মুলি? **শাচ**ুর ছোট ভোট দাঁতে হাসি।

—আমাদের গছের, পিতা**জ**ী আভি পেড়ে

—ভোর বাড়ীতে একদিন নি**রে যাবি** তো আমায়? বাচ্চ, চাপা **ফিস্ফিস্** গ্লায় বলল:

—জনুর, মুলি চক্তকে চোথে **আশ্বাস** দেয়।

—বাচ্চ্যু, ভালিম গাছের নীচ থেকে আড়্যোড়া ভেকে দাঁড়িয়ে থঠে গোপা, বাচ্চ্যুকে ভাক দেয় প্রাদক ওাদক থাকিছে।

বাচ্চ্যু হঠাৎ নিম্পান। এখনো আধ্যানা পেয়ারাও শেষ করে উঠতে পারে নি। ঝাই পাতার আড়ালে মায়ের দোলানো আচিন দেখতে পেল।

--বাচ্চ্র, গোপা আন্দান্ত করে এসে পড়ল কাছাকাছি, আগেই দৃষ্টি গেল মুন্নির ওপর। মুনিভ থতিয়ে গেছে।

— কি করছ এখানে, গোলা স্বাভাবিক গম্ভীর স্বরে বলভে বলতেই পেয়ারা দেখতে পেয়ে গোল, আর তৎক্ষণাৎ দ্র**্কে**পে উঠল তাব।

এ কি, সাত সকালে পেয়ারা গি**লছ যে** বড়! এটা নিশ্চয় ফল খাবার স্ময় কয় তোমার!

—মুনি নিল, বড় বড় ভরার্ড চোথে মারের দিকে চেরে বাচ্চ্ দোষশ্থালনের চেটা করল।

—দিশেই থেতে হবে? আশ্চর্য! গ্রেক্সা চোথ সর্ব করে টেনে টেনে উচারণ করল, তোমাকে কতবার বলেছি, স্ব কিছুরই একটা নির্ম আছে। মারের এই টালা টালা দাঁত চাপা আপাত নিরীই উচ্চারণের কথাগালোকে বান্তে বড় ভর করে, শুনু বাচ্ছু নর্ম, সুলভবত ওর বাপিও, লা হলে কতবার বান্ত্র স্পান্তনে মারের এই সর্চাহথের দ্ভিটর সাক্ষরে ক্ষমণ বাশির হাচিত্র্য বিষর্শ কন্দেশ্তীর আগ ভাবলেশছনি হয়ে উঠেছে: গলালর কাছে দীর্শনাস চেপে নিথর পাড়িরে থাকে কাত্য, এ সময় মুলির দিকে চোধ গড়ল গোলার।

—এই মেয়ে, ভোকে বংকছি না, রখন তখন বা তা জিনিস ওর হাতে এনে দিবি না, ওর সবকিছু সহা হয় না।

বাচনু আড়চোপে চেরে দেখে মামির সদ্য-মাকালে। ফালো ফালো কালো মাথ এখন ফ্যাকালে। মাথা নীচু করে দাঁতে নম্ব কাটে মারি। বাচনু হঠাং দেয়েকাল পেরারা অনেত হাত পুটো বাড়িরে দের এর দিকে, মারি আলগোছে এর হাত বেকে কস্কোন

The second of th

২৮শে ভাদ্র বিভূতিভূষণের জন্মদিনে প্রকাশিত হয়েছে

ব্যশিক্ষীবী সম্প্রদায়ের বিচারে 'পপ্লোর' এই অপরাধে অভিযুক্ত অপরাজের কথাগিকণী বিনি ক্ষাঁবদ-শায় সরকারী বেসরকারী কোন প্রেসকার পাননি, কিশ্ব বে'চে থাকতে তার কোন কাহিনী ফিল্মে চিচ্নায়িত হয়নি অথচ মৃত্রে পর দিন ৰত খাচ্ছে জনপ্রিয়ত। আর ফিল্ম, নাটক, বিশেবর বহু ভাষায় তার সাহিত্যের অনুবাদ ও দ্বাঁকৃতি ততেটে বাড্ছে—সেই বিভূতিভূষণ ৰজ্গাপাধ্যাক্ষিৰ জাবন নিয়ে বিশেববগধ্মী অথচ উপন্যাসের মতো আক্ষানীয় গ্রাধা

গোরীশঞ্কর ভট্টাচার্যের

অপ্রুর পাঁচালী

বিভৃতিভূষণের ছোট ভাই-এর মতো অলতরণা গোরীশংকর ভটাচার্য বিভৃতিভূষণের সাহিত্য ও জাবনকে আণ্চর্যভাবে একাল্বিত করেছেন এই প্রশেষ।
ঠিক এই জাতের বই বাংলার এই প্রথম। অবচ বিদেশে শেলার ভাবন নিরে 'জাবিরেল' আছে, আছে ভলটেরার, ভানগগ,ে তুল্ম লোন্তেই-এর জাবন ও।
শিক্ষের জালারমহলের গাভার ও বিচিত্র পরিচয় উদ্যাটনের বিশ্যাক্ষর ব্যাবাদি অপ্রাক্তি বিদ্যালয় বিদ্যালয় তেমনি গরেষণার চৌহ্লিদ ছাড়ানো অন্শ্রাটিত উপাদারে সাহ্ম। বাজা গরেষণার জাবা। বিভৃতিভূষণের জন্মপক্ষে আমাদের ভাউতীর থেকে কিনলে ভেতারা শতকুর। ২৫ টাকা হারে কমিশুন পাবেন।

হিমানীশ গোস্বামীর

লণ্ডনের আডায়

লক্ষ্য বাবার মত জারগা, থাকার মত জারগা, ব্যামিত জাবন-বাপন এবং আভা দেবার মত জারগা। এমন জারগার পড়াশ্যনার নাম করে খেতে হর—নইলে জারি মুল্ফিলা। ভাটনগর, স্বেগ্ স্থজ ইত্যাদির অভ্ত অভিজ্ঞতা, হাল্যকর এবং কর্ণে ঘটনাগ্রিল সাধারণ অভিজ্ঞতার পর্বারে পড়ে না। দায় । ইয়া চাকা।

भू चक अकामनी- ४२ 15, बराचा शास्त्री द्वाछ, काल S

ভুলে নিলে বাচ্ছ আর তাকার না, সটান শেষন ফিরে বাগানের ভেতর দিকে হাঁটতে থাকে। এমন সাম্পর সকাল ভার গ্রাখায় তথন অনবর্ত গৃল্ভীর শব্দে হটুগোল শারা করে দের। সদ্য রোদের ছোঁয়া কাল্যা সোনা রং আকাশ তার সামনে বিমর্ষ কয়াশার আড়ালে দলেতে থাকে: পেটের মধ্যে সকালের ডিমেব পোচ আর ওভালটিন বৃদ্ধি হাছে বেরিয়ে আসতে চায়। এ-স্ব সময় বাজ্যুর বাশির कारक अकारे शाकरण देखक जरा। নি:সাজ নিম্পন্দ হাত্থানা পিঠের ওপর পেতে ইচ্ছে করে। কিন্তু বাচ্চ্য বাপির ঘরেব দিকেও হায় না। পিছনে মায়ের উপস্থিতি টেব শেহে সোজা চলে হায় বাগানের অনা প্রাণেত আর পিছনে না তাকিয়েও ও যেন দেখতে পাহ মুলি হে'টে হাছে অনাচ্ছাদিত পায়ে ধূলিমলিন বাঁধানো রাস্ডার ওপর দিয়ে ওর मृश निषक्ष, मृण्डि अकला। एउलाहरहे हामस्तत এক কোণ ঝালে পড়েছে গোড়ালির ওপ্র, মালির পান্ধে পারে অনেক দরে চলে যাতে বাচ্চার প্রথম ভোরের নিমলি খ্লীটাকু।

এখনো হলদে বঙের চিকণ রোদ ছোট ছোট গোলাপ গাছগালির মাথায় জড়িত আছে : চারিদিকে ঘাস লতাপাতা আর নান:-রক্ষা পাখীর ভাকের মধ্যে বেশ একটা স্ভেজ লফ্ডি'র ভাব। শীতের অপস্যমান দ্েপ্রের দরম আবো মাঠ প্রান্তরে বিমেবিাম করে। ক'চের জানাল। দিয়ে বাইরে তাকালে প্রথমে সাজাশো বাগাল তারপর বাগানের পর্ণাচল তার ওপারেই অমস্থ উচ্চনীচ হল্প প্রাণ্ডর। কাছাকাছি দিয়ে টানা চলে গেছে রেললাইন, ওপারে বেশ কিন্তু; নারে ভোট ছোট রেলওনে কে:হাটশর তৈরী হচ্ছে কিছ এখান খেকে ঠিক খেলাঘর মনে হয়। ভানপাশ দিয়ে সোজা নদীর দিকে চলে গেছে পীতের রাস্তা, ভার দুপাশে বড় বড় স্কুসজিড বালানবাড়ী যেগুলি শীডের কটা মাস জমজনাট থাকে ভারপর বছরের অনা ঋতু-গুলিতে থাকে জনহীন পরিভার কেবলমাত্র একক নিঃসঞ্জা দেহাতী মালির দেখাশোনার ওপর নিভ'রশীল। কাচের জানলা দিয়ে বাইরের এইসব দল্যের দিকে তাকিয়েছিল সময়। তার সামনে টেবিলের ওপর মোটা একটা বই, ধেশরা ওঠা চারের কাপ। সঞ্জয়েব দৃশ্টি দ্রেমনস্ক। বিদেশে বেড়াভে আসার এই কাদনের মধ্যেই সে এখানকার নিঃশব্দ রুক্ষ গশ্ভীর অবাধ প্রকৃতির মধ্যে নজুন मिरकटक আবিকার করেছে, পাখীর म् भू एव অকেনা ডাক শ্ৰতে শ্ৰহত অথবা ঘনিয়ে আসা সন্ধ্যার ক'লা আলোর জীবনটা বেন অনেক বিস্তৃত মনে হয়, অনেক তুক্ত লাভ-ক্ষতির ওপরে টেনে মিরে যেতে পারে নিজেকে, এখানে আসার পর থেকে সঞ্জায়েব মুখে তাই স্বস্ময় একটা মৃদ্ অপরিচিত राणि दलारा भारक।

—িছ হল, তোমার এখনো চারের কাপ তেমনি পড়ে রইজ, হণতনত গোপা হাতুতর ক্ষজিয়াড়ি চোথের সামনে ধরেই খরে ঘুকল।

সঞ্জয় কমাহাত চেয়ে রইল তার সভ্জিত মাধের দিকে। বতা করে সাজকে গোপাক এখনো সেই আগের মতই ভাল লাগে। বয়স ওর শরীরের ওপর তেমন ছাপ ফোলতে পারেমি।

ল্যোপা বলস—দেখছ কি, বেরোবে না?

—আমরা কোথার বাচিচ সেটাই তো জানলাম না এখনো। সঙ্গয় ঠোটের ফারে হাসল।

—বিদেশে এলে প্রতিদিন কোথাও না কোথাও বেড়াতেই হয়, মুখ ভার করে প্রে বলো থাকলে নিজেরও কণ্ট, অন্যেরও অস্ক্রিধ। গোপার গলায় ঝাঝ, হাতে প্রে চঞ্চলতা।

—তব্ গৃহত্বাস্থাদের নামটা জানা থাককে স্বিধে হয়, সঞ্জারর স্বর অধিকতর শাস্ত, ভাগ্যতে অলস শৈথিকা।

গোগার প্রসাধনের আড়োলে মুখ কমণ লালচে হচ্ছিল। জু জোড়া গন করে এনে সামান সময় ভাবল সে, ভারপর থেমে থেমে বলল

--্র্নর হাটেতে হাটতে নদীর ধার প্রত্ত গেলাম, বিভাক্ষণ বিলাদেন কাল ফিরে একাম আবার, এই তো আন্দদ এর আবর গ্রহতা কি। —অভি হাতে না?

—নিশ্চরাই, ও ছাড়া বিদেশ বিষ্ণুগন্ধ সাহস করে একা বেরোবে কে?

—তথে তো ভালাই, ও একাই সব দক্ষ ম্যানিজ করতে পার্বে। আভিজিত আছে যখন, আমার বাবার পরকার লাগবে না।

—ভার মানে তুমি যাবে ন: ` লোপার বিশ্যাবিত চোথ ফ'্সে উঠল, আ্মানের যে কোন আনন্দ বেডানো, চারিদিক দেখা-শোনা, কোন কিছুতেই তুমি পার্টিশিরপেট করবে না।

—কিছ্ যার আসে না গোপা। সঞ্জয় সাক্ষার স্বে বজল আসলৈ তোমাব চার বাচ্চের জনোই এই বিদেশে আসা, তোমানের ফা্তি আন্দেই আমার স্থ।

—থাক, গোপা ঝুগ্কার দিল, যুদ্ধি না দেখালেও চলবে পেছন ফিরে গোপা দেখল বাজাকে হাত ধরে নিয়ে চলে এল ডাকে গরেন নাইনে নাচারে খানাপ লাগছিল, ডার নিজের মুখে নলতে ইচ্ছে করছিল একদরে নাগিকে, নাপি ডাদের সংক্রে নেডাতে গেজে তার ভীষণ ভাল লাগে। কিন্তু মারে রাগ্র দ্বাহার দেকে চেয়ে নাজ্য ইচ্ছাট দমন করল। দলাবারু দনায় খালাই এনা দেখার ভাজিকক বার্থ স্মার্ট সেজেবাকে গ্রেক্তি

দিল্পীপকুমার রায়ের প্রথম গরল সম্তির শেষ পাতায় দাম ঃ ১০-০০ নতুন উপন্যাস ৮-০০ নিমাই ভট্টাচার্যের **কৃ**ফ **ধর**-এর क्यामध्य-द উইংকমান্ডারমস্কোথেকেদেখা আশ্রয় দম মাদ্রণ ৩-৫০ ্থ মাদুৰ ৬-০০ बम्माना नाग-धन त्राक्रिय রামমোহন **जजूनश^मार रम**न স্রেশ চক্রবর্তী সম্পাদিত 50-00 পর্টখন্ন প্রিচয় ¥-&0 नातावण्डा हण्य শ্যাপার বহুতর 6-00 ওঞ্কার গ্রন্থ क्षवस्त्र ७ जन्माना टेनराम या क्षांख्या व्यानी 🚶 माज्ञासन शरणगानावराटबब रेजसम् अरूकका निवास-प्रत আলোকপণা উপানবেশ অসবণ তর খণ্ড একতে ৮-৫০ ২য় ম্লুণ ১০-০০ माम ३ छ-०० कान्द्रकान ब्राट्यानान्।एक्ट তিন তরঙ্গ শুখু কথা নত**ুন ত**্বালরটান তর ম্দুণ ৭-০০ ২য় ম্দুণ ৩-৫০ 8र्थ म्ह्रन q-00 পৌষ ফাগনের পালা ৫ম মাদুণ ১৮.০০ ॥ গজেন্দুকুমার মিচ নিশিপন্ম ৪·৫০ ব্যর্থ নায়িকা ৪-০০ ॥ তারাশুকর বন্দ্যোপাধ্যার ৰাক্-সাহিত্য প্ৰাইছেট লিমিটেড ৩০ কলেল নো, কলকাডা-১

পাছে পান্তচারি করছে। তার কাবে ফ্লাকস, ক্লাকেরা, মবে সিপারেট। গোপাকে সংথই কারাকাছি এগিরে এক, চেথের ইপারার ক্রিকের করে ক্রিকের এক, চেথের ইপারার ক্রিকের করে ক্রিকের প্রকাশ করেক, তারপর করে বিরুদ্ধি প্রকাশ করেক, তারপর ক্রেকেই ১ঠাও ছোটু পদ্দ প্রকাশ হর্পতাবেই করা আলাম-প্রদান বল ওপ্রেক, এবং দেটা বাচ্চু সামনে ধাকার দর্শেই। বাচ্চু এক মুহুর্ত ভাকিরেছিল ওপ্রেক্ত দিকে, তথান ভার মনে পড়কা মুনিরর তো যাবার কথা ছিল ওপের ক্রেকে। মুনিররও তো যাবার কথা ছিল ওপের

সামানা বুরে ছোট একটা টিলার মতন, ভার ওপরে নরম হলুদ পাতা সাজানো ন্যালপাতি গাছ, মুলির গাদুর হাতের পোণা পাছ, মুলি সেথানে অপেকার স্থির স্পাড়িরেছিল, তার হাতে ছেট্র নাইলনের ট্রুকরি বাচ্চু জানে এর মধ্যে মাংসের সিঞ্চাড়া আর প্রডিং আছে, না আন্ধ্র সালা-স্কাল যতা, করে তৈরি করেছে।

শাশবেলার পড়স্ড রোদ চিকচিকে গংশ্রের গর্নড়ো সোনার মতন ঝরছে চারিপাশে। কাঠটোকবার ভীক্ষা শব্দ সহসা ভেন্সে আসে,
নিজনিতার মধ্যে দিয়ে গমগম শব্দে মালপাড়ী
চলে বারা শতিকে ব্পের শরীরের চারপাশে
মধ্র আরামে বিমানম করতে ধতেও ।
অভিজিত আর একবার সঞ্জারের ঘরের দিকে
তিহাকি তাকাল, ভারপার গোপার সংমান্য
ঘনিষ্ঠতার সত্তে একে, মাথা শাকিস্থে বলগ,

—रमिठे'ञ म्होर्ड नाखे।

—উইথ শেলজার, গোপা হাসিম্থে সার দিল, তারপদ ওদের দিকে তাকিয়ে খুশী খুশী গলায় বলল,

. — আর বাচনু, আর মুদ্রি দেখিস বাচেকটো বেশী দোলাসনি যেন, সব একাঞ্চার হল্লে যাবে ও:হলে।

মানি মাথা নেড়ে সায় দিল, তারপর বাচ্চুর পাশাপাশি চলতে লাগল। মানির গারে ফরসা সব্দ্ধ ফক, তার ওপরে বং চটে থাওয়া সোরেটার, আচিড়ানো ুলে লাল পরেনা ফিতে। মানি কানিই তাকে এই যাতায় সকরী করা হয়েছে। তব মানি বাচ্চুর সংলা যেতে পারছে এই আনন্দেই গোপের প্রতিক তক্তা বাচ্চুর ওপর এই কদিনই তার কেমন মারা পড়ে গেডে। ওরা বরাবর এখানে থাকবে না, অন্যানা চেপ্লারপের সকরী নিদিপ্ট সম্ম ফুরিয়ে সেলে বাচ্চুর চলে যারে এক্ঞা ভারসেই মানির কালা পার।

দ্বশাশের বড় বড় বাগানবাড়ীগ লেডে ছায়া-নিবিড গাছের সারি। তার মাঝখান পিয়ে ধ্লোয় ডুবে যাওয়া পাকা রাস্তা। ধ্লো-বালির পূর্ আদতরণের ওপর গরুর গাড়ী আর সাইকেলের চাকার দাগ। এ পথে অনা যানবাহন চলে না। কি রক্ষ আশ্ভুড় নিঃশ্বদ শথটা, চারিদিকে হাওয়ার নিবিবিজি ফিসফিসানি আর দুরাগত পাখীর ভাকে নিজনিতা আরো ঘনিষ্ঠ হয়ে জড়িয়ে ধরে। গোপার গায়ে পায়ে ছুটির চণ্ডলতা। একটা ছোট খ্ৰিয়াল পাখীর মতন চঞ্চল পায়ে প্রায় লাফিয়ে চলেছে গোপা একটা আগেও জ্কেচিকানো, লালচে সেই মূখটাকে এখন আর চেনা যাচেছ না। অনর্গল হাসছে, কথা বলছে অভিজিতের স্থেগ। অভিত্র হণ্টা চল। মেজাজী, হাসিখুশী, মুখ, গোপার দিকে কেমন নিবিড় চোখে তাকায়। এটা অনেকদিন থেকে লক্ষ্য করেছে বাচ্চ, প্রায় তার জ্ঞান হৰার পর থেকেই। আগে আগে অভিকার বেশ কিছুদিন ছাড়া ছাড়া আসত তাদের বালিগঞ্জের বাড়ীতে। অভিকাক এলেই মা কিরকম খ্লেটিভ রণিগন হয়ে উঠত, এত কখা বলত না তখন, মার কেটা দ্বাভাবিক প্রবণ্ডা সেই উপ্সাল ভাব থেকে হঠাৎ রাড়ামায়ী হংয় উঠত। অভিকালুর সংগ্রান্তপ্র ফ'্ডে **ফ**াকে বাপি মাকে ডেকে পাঠাত, চা. জল:-থাৰার চাইড অভিকাক্র স্পের গ্রুপ কুরুছে ণলত। অভিকাক নানান রক্ষ খাওয়ার বা তাস খেলার বায়না ধরত। এই তাস খেলা थ्याकरे भारतत जातक कार्ष्ट्र हरन अन क्रांस তাকু। রুমাল সিনেমা থিয়েটার জ্বলসা ছবি ভোলা ইত্যাদি ইত্যাদি সমস্ত স্থানিকতার ফারপগালি ঘটে বেভে থেকেছে। আর আশ্চর্য া বালি কেমন ক্রমণা সারে গেছে ওদের কাছ थ्यक । श्राप्त केळ्यान, क्रेन्साम देश इत्साफ न्त কিছ, থেকে নিজেকে অতি সাবধানে প্রতির নিয়ে নিজের সেই নিজ'ন-বিলাদের মধ্যে एक स्थानक न बाकना कान नाक ? ं सीवय वर्णाक । बाटन अक्रवात प्रकास संस्थित कालका वार्ष वास्त्र वास्त्र वास्त्र THE RESERVE THE RE

'প্ৰকাশিত হ'ল

চিৰঞ্জীৰ সেন অন্দিত

দেওয়ান জারমানি দাসের

মহারাণী

বইখানি পাড়ে আপনি বলবেন এ বই কেবলমানু প্রাণ্ডবয়স্কদের জনা চিহ্নিত হওরা উচিত। জারমানি দাস প্রেখানরে যে দেশীয় রাজা-রাণীদের সেবা করে এসেছেন। মহায়াণীদের অফারমহলে বাধাবন্ধমহীন উপাম লালসার যে স্লোভ নিরন্তর বইতে থাকে ভার কাহিনী লেখকের জানা। বইখানি ভারই প্রভাজদশীর বিষয়ণ।

৮০০

অতীন বন্দ্যোপাধ্যায়ের

লালিক আভি প্রেত্মার প্রাণ্ড উপন্যাল

नग्रम्यान् र

সমূলমান্য নানা করেণে বাংলা সাহিত্যে বিশিণ্ট পথান অধিকার করে আছে। এক অভিশত নাবিকল্পবিনের ইতিহাস্কে কেন্দ্র করে এর মূল কাহিনী। পড়তে পড়তে অভিভূত হ'তে হয়।। ১২-০০ লেখকের অন্য বইং প্রেলে অপ্রেলে ৬-০০ নীলক্ষ্ঠ পাশির খেলি ১ন ১৫; ২য় ১০;

অম্লা সেনগ্লেডর ভ্রমণকাহিনী জ্যোতিরিলু নন্দীর উপন্যাস >०-०० विश्वकीश' विश्वारी W-00 কুশান্ বলেরাপাধ্যাহোর রহতেরাপন্যাস শেখর সেনগংশতর **6-0**0 रज्ञित देखन विवरत **৬-০**০ ভোজন र्जिनिक्स कारस्त्री স্মীল সংল্যােশ্যামের উপন্যাস 9-¢0 ৫-⁰০ সৌরীন দেনের भूत्रस नरबन्द्रानाथ बिरहास क्रेननगरन दहनाम् न W-00 ৫-০০ জপরিচিতা প্রতিশর্কান B-00 অসীল সোল স্পাদিত कान्द्रकान बद्धानामात्रकात छननाम ७-৫० हमान्सम्भा sistefatile . \$6-00 क्रिय जन्म जनगरस ं नाव ठटहोनाबारहान y-00 N-00 कार्ड मार्डम हाना

Constitution of the state of th

চুবার, অবশাই সাংসারিক সর কর্জবা সেরে, বাছতু মনে মনে ছিমজির হয়ে বার তখন, কথনো পুরি নতি হয়ে ওঠে সে, সে সুন্তর অবশা অভিকাকুই ভোলায় ভাকে : মাটের ওপা আভকাকুর স্নেহটাকেও সে অস্বীকার করতে পারে না, কতরক্য উপহার খেলনা ও মাজে গল্পে ছারিল্লে দেহ আবে মাজে মনে হয় বাছার প্রাত তার কালার প্রতি তার কালার প্রতি তার কালার প্রতি তার কালার প্রতি তার কালার

—ঐ বাব তার নিজের কাকা ? মানি
ফিশফাসরে জিজেস করল বাচ্চার কানে
কানে। একটা চমৎকার বাগানবাড়ির গেটের
বোগেনভোলয়ার ঝড়ের নীতে পণড় কার্রের
তথ্য অভিজত গোপার হাঁতে কুলাছল
অভিজতক মানি চানে এখানে যে বাড়াগতে
বাবাই কবছর আরে কিনোছলেন। "স কার্রের
প্রতি সজকে একবার করে অভিজিত দেখা
শানা করতে আরে এখানে বশ্ববাধ্য নিয়েও
আলে, এবার এনেছে বাচ্চান্তর বিষয়ে

অভিকাক বাচ্চুর নিজের কাকু কিনা
এ বিষয়ে থাচ্চুকে চিন্ত করতে হল
খানিকটা তভক্ষণে আরে খানিকটা পথ
নদীর দিকে এগিয়ে গেল ভারা গোপ মার
অভিজিত সামনে পিছনে ঘারি আর বাচ্চু।
বাচ্চুর জুতো ধলো।
রু বর্ণহান মুলি গতেব
টুকুরি সাবধানে দোলাচ্ছে বাচ্চুর এক সাকু
খাকে কানাভায় মাঝে মাঝে বাচ্চুর নাম লেথ
চিঠিতে। বাচ্চু ভেবেচিন্ত মুলিকে উরর

—নিজের কাকু না, বাবার কথ্ব।

ম্লির কপালে ভাজ পড়ত শুনে। ওব দাদ্ শিউশরন বলে, ছোটবার, বহুৎ দিঃদার আদমি। সেই ছোটাবার্ ব চচুকে মাকে নিয়ে এমন লোফালাছে থেলে কেন কে জানে করম যেন ভাষার কথা বলে ওরা, কি দুশিটতে ত কায়। এর মধে। একদিন মারি দেখছিল, গোপার রাউজের হাত থকে একটা সাতো বাগতিল বহুমালে সেটা হঠাৎ এক টানে ছিগতে নিশা কভিজিত, দেখে মানির গা শির্দার কবে উঠেছিল কেন কে জানে। মুলি তো নিজের বারের আব্লুক গা, এমনকি পিতাজার সামনে ও কেবতে জালেক। ক্রেক্তির লোকার বাহুকে আভিজিকের আপ্রান্ধ ক্রেক্তির সামনে ও ক্রেক্তির মধ্যের ক্রেক্তির বাহুকে একনার মধ্যের ক্রেক্তির সামনে ও ভিজিকের আপ্রান্ধ ক্রেক্তির সামনে ও ক্রেক্তির ক্রিলেন সামন শানুকে একনা ক্রেক্তির ক্রিলেন সামন শানুকে একনা ক্রেক্তির ক্

—এস বাচচ, এবার তোমাদের প্রজনের একস্থেগ ছবি তুলাং অভিজ্ঞিত বাচচুকে এনে গোপার কাছে দু'াও করালা, গোপা সামান, নীচু হয়ে জড়িকে ধরল বাচচুকে জীবণ জাল লাগল বাচচুর ছবি তুলতে এত কম সমব লাগে কেন, ভাবক সে।

র্নোপা বলল পথেই ৫৩ সময় নাট কর্তে নদীর ধারে পেশিচত কবন।

—আমানের শক্ষা বোধহর সমনের পেশছনো তাই এত দেকী হক্ষে আভি উন্তর্গ দিলা রহসং করে।

নদীর ধারে যেতে থেতে আকালের রং **লালচে হয়ে এল। তীরের কাছে অনেকখানি**

A STATE OF THE PROPERTY OF THE

বালির চড়া নুহে তরগাহীন দীণিক্সান্ত নদার জলে কুসুম রঙ থিরথির করছে। সমসত পদিচম আদাদো বিশাল রঙের মহোংসব। চরাচর জুড়ে সে এক আদ্চর্য বিকেল। অভিজ্ঞিত বজল

—অনেকদিন জোমার গান শানিনি গোপ: একট গোনাবে?

স্মানাক্ষণ নীর্থ থাকণ গান্ধ।
ভারপণ সেই ধর্ণজ্ঞটার মাঝখানে আন ভোগ, 'ক্ষের মত বসে উলাগ গলার রাইল, 'আন কেন দলিত সু. ১৯ বংধে বস্তুক্ত সম্বীবণ।'

কথা ভাল ব্যেছিল না বাক; তব্ সার শানে ভার কেমন মন থারাপ হয়ে উঠল মনে হয় মার খন কোথার দক্ষে চেডা করজেও সে লাগেবে কথনো ভাটুরে দেখতে পাররে না। মা গাইছে, অভিকাক নিনিয়েম দেয়ে তাভে লাল সংখ্য ছিলে। অভিকাক্র মাথে-চোপে লাগেব ছোপ সেই এবাল বাজনে বাবি লোভ চানং বাচ্চার মনে হয় অভিকাক খোর ক্চঞী, পরস্বাগহরণকারী। আর তার হঠাৎ মান পড়ে গেল বাপ একলা নিজনি বরে বনে আছে চারদিকে সিশাল বিশ্বিং শ্রাক্ত বড়ে, শেউশরণ হয়তো নালানের থাতিয়ার শট্রে ব্যিষ্টে পড়েডে হয়তো নালির দরে আলোটা প্রতিশ্ব লালানের চাক্ত করেনি। ভারতে ভারতে চঠা বাক্ত গ্রাক্ত করেন। ভিটাল, মা নাড়ী সারে মা-সাংখা হয়ে

ভার রাতে খিলাবিপ বৃদ্ধি হয়ে গেছে গোলাপ বাগ্যমের সারি সারি এক মাপের গাড়গালি খান এইগার লামি এক মাপের গাড়গালি খান এইগার লামে জারুর পাপড়িতে এখনে। জলের ফোটা বিক্রম করছে আন্ত ভারের ফোটা বিক্রম করছে আন্ত ভারের ফোটা বিক্রম গাছের মাটে বাধানে। বেলিওে লাম বাচাবে পাহারা দেবার প্রদ্ম আন্ত না বাচাবে আন্তর বাচাত বা প্রদ্ম আন্ত না বাচাবে বাব্রম বিবার প্রদ্ম আন্ত না বাব্রম বাব্রম করিন্তিক্রম সক্রমানী আরো যেন মনোরম্ম নিগ্রনিস্পান

কোন ঝামেলায় না গিয়ে বিদেশে আপনার প্রিয়জনকে

শংকর-এর

यिখान ययमन

উপহার পাঠাতে পারেন

ইউরোপ আরোরিকা যারে এসে দেখা শংকর-এর সাংগ্রতিক বই ক্ষেয়ান যেমন অনেকেই বিদেশে বসবাসকারী আখীর কথাকে উপহার পাঠাছেন। পাঠকদের অনারোধে শামন বই পাঠানার বিশেষ করেম্পা করেছি। টকা এবং নাম ঠিকানা পাঠালে আমন বিমান প্রা কারাজ ক্লম বই পাঠাকা এবং কেই সন্দোধা মিলাপ উপহারদতার নাম ঠিকানা জ্লম ক্লেজ শংকর-এর এপার কালো কপাক বাংলার মাবই প্রথানে ক্লেজ ইটী বিদেশে বাঙালী সমালে পালা ক্লোড়ালের মানি সালাভ। মার চার জানুষ্

		-	कराक लाक्ष	
भरकत -এव		U.K. er U.S A.	Ū.K	U.S.A
ह्यचार्न व्यञ्जन				
एक क्षेत्र ॥	20-00	20-00	₹७-೧०	\$5-00
क्षान-क्षान्।				
AB BEG #	20-00	20-00	₹0-00	₹ ≯- ι.∪
আখা-ভাকাজ্ঞা		1	1	
১২ শ মাদুৰ য	۲-00	22-00	\$2.00	29-00
তিনটি বই একটে	\$ A-00	06-00	68-00	A2-00

নতুন প্ৰেতক তালিকার জনা লিখন। বিশ্ববাদী প্ৰকাশনী য় ৭৯/১বি, মহামা গাখা রোভ য় কলিকাভা-১

আকাশ এখনো পরিংকার নয় কয়।শার পদা ছিল্ড আলো এপ্রক্ত প্রথর হাত পার্কোন। ব গানের এককোণে রঞ্জালান্ত। बाट्डिय मीटि माणि व्यालका कडाइल मिडे. শরণ। সেদিকে একবার চেয়ে আসেত আন্তে বাইরে এল বাচ্চ্য ভারবেলাকার প্যাপেঞ্চার টোনটার বোধহয় এখনো যাবার সময় হয়নি, দারে কালো কালো পাহাডের সীমারেখা এখন কুয়াশায় ঝাপসা। রেল-শাইনের ধারে একটা শিল্প গাছ ব্যাটা রুপে নিয়ে পাঁড়িয়ে। বাচ্চ, বেড়াতে-আস। গম্ভীর মান্ত্রগটেলার মতুন ধীরে-স্টেথ পায়াচারি করতে শারে করেছিল। এ-সময় मात्र (शास क्यांस ब्राह्मिक, मान् निके শরণকৈ ঘ্রা ভেঙে উঠে একবার দেখা চাই মালির। শীতের হা-হা হাওয়ায় চাদর মাজি দিয়ে মানি হাজির হল।

ল্বাইরে কি কর্নছিল, বচ্চমুট মন্তি প্রথম কর্পা।

—একটা সেড়াছি। বাচা হঠাং শ্বাধীনতা অভান করার মতন গবিংত প্লায় বলল।

—তোর মা কোথায় ? মালি এনিক-ওদিক চেয়ে ফিস্ফিস কলায় বলল।

—মার জার, ব্রানার শারে আছে।

—আজ ভোরে আন্নানের ছালনের একটা বাক্ষা হয়েছে মাজির গলা দাব্দ মানী হানী। বাচাকে খবনটা দেবক করে। সৈ এতক্ষৰ হাঁপিয়ে উঠেছিল সম্ভবত।

—ছাগলের বাচ্চা! বাচ্চা চোথ বড় বড় করল, খার সান্দর না? কড় বড় রে?

—এতানা, মানি ছোট ছোট দা-হাত কিছটো প্রসারিত করে দেখাল, সাদা-কালো রঙা মানির বলার ভীজা খাব লোভনীয়। বালা নিজেকে সামলাতে পারছিল না। মানির বাসর মানিন চাপরের কাছে খাব ঘন হয়ে এসে চুপি ছুপি বলান

— আমাকে দেখাবি? —ভূই হাবি? মহিল অবিশ্বাসের সূত্র জিজ্জাসা করল।

—আনেক দুর ভোদের বাড়ি?

— এই তো. একট্থোন, মালি উৎ-সাহিত গলার কলল—তুই তাজাতাড়ি ছটিতে পার্বাব তো?

মুনির চেন্টা করে টেনেটেনে বলা ছিলদী-বাংলা মিশ্রিত ভাষা বাক্তু ভাল জরে বােৰে না। তবু এর চােথের উক্তালিক আহ্বানেই এর পিছল পিছন এগিরের চলল। অতি সাব্যানে রেললাইন পেরিয়ে মুনি বাক্তুকে নিয়ে চলতে লাগল। এ-সমর বাক্তুক প্রতি ভার দারিক-বােল প্রথম। ঠিক হােট ভাইটির মতন কাক্তুর ছােট চাভটি নিজের হাতে জাভিয়ে রেটপ চলছিল মুনি।

শীতভোরের বৃণ্টিতে রাশ্তামর সাতিসেকত কালা। ভামপাশে রেলের কোলাটাল, বাজারের পথ-সবই এখনো কোলা হুমের জড়তার হাখামাণি হরে চারটি ঘরবাড়ি ছাড়িরে মেটোপথে এনে পড়ল ওরা ৷ মাটির চালাঘর, পাতকুরা ে.... লহেনে) শহাজা লাকভা জড়ালা ছেলেনেয়ে লুপালে এসর অপরি-চিড লাশা দেখতে দেখতে বাচা হঠাং ভর পেয়ে মালির হাত ছড়িয়ে ধরল, বলল—

—মালি আমি বাড়ি ধাব, এত্নারে এসেছি জানতে পারলে মা বকবে।

—এই তো, আর এবট্রখনি গোলই আনাদের ঘর। এখনি তোকে বাড়ি পেণিছে দেন। মালি অভানত প্রত পারে বাছ্যুক্ত টেন নৈরে চলছিল ছাগলের বাছাটা ভকে না দেখানো পর্যনত ভক্ত জামাজতো পেরা চেবা বাছাল কিবে সদা আন-ভাগলা চেবে চেরে চেরে দেখাজল আনসাম্পানের বাছালালা, বাছারেও দার্শ আবাক লাগজিল চর্দাকের হাত্তী অবশ্বা দেখে এ-সময় টোনের বাশী শোনা গেল দার থেকে। বাছা বলে উঠল,

—স্যুত্তে ছাট্য বেজেছে, অভিকাক উঠে বাগানো খাজ্জৰ অনুষ্যা। এ-সময় মুনি আঙলে ধেখিয়ে বলল

—এট তো আমাদের ক্ষেতি, জাব ৬ইটা আমাদের ঘর।

মেলা সকালের ঘন্তক আলার ডানপাশে বিস্থীপ ক্ষেত্র দেখতে পোর বাছা। মুলি ওকে বোঝাল, কথাক স্থাক আলুলাভ কপিটোমাটো ইথাক গাছগুলিরই বা সীমানা কভদ্যে এসব মুলি চোল বাজে দেখিয়ে দিওে পারে বংজা এক জনেশা নতুন বিরাট জগাতে মুলামানি এসে হা করে চেলি বইবা থানিকক্ষণ, তান মুলি বললা—এ-পাশে আয়ু এখানে ভান্তার ভাগলের ঘর।

ক্রমণাল খোজে। গরে এখনো একজন বিচারী প্রিয় ছাপল ও তার শাবকরিব পরিচয়ায় বাশত। বাচ্চ দ্রে থেকে বেংল গানিকর্মণ, এই লোকটির জনা কাছাকাছি যেতে সাহস করছিল না। মুলি চেচিয়ে বলল,—পিভাজী, বাচ্চ, আরা।

বলিষ্ঠ চেহারার লোকটি সম্প্রত ওর নামের সংশ্য পরিচিত, ওর দিকে তাকিয়ে হাসক।

— আৰু মে যাও বেটা।

বাচ্চত্র পারে পারে সরে এল নিকানো পরিক্ষম আছিনার কাছে। মর্হায় একজন বোষটো টানা স্থালোককে দেখাল,

—মেরা মাই, বলে কাছ যেতে বলে বলে পাঞ্জা ভার। বালে, তথান আর একটা লালা কোলে । বছর দেড়েকের একটি বালা কোলে শারের আছে মামির মারের স্বার করের দার্থ আর মারের আছে । পালার কাছে কি রক্ষ থেন একটা ভুকা দলা পাকিরে উঠল ভার। এভাবে মারের কোলের মানে হাত কেপেও কারের বালার কারের নামে হাত রেখে শোমার বিল্লা কারের গারে হাত রেখে শোমার বাড় থাটোর বালা বাড়ার আটা বাত্রি বাত্রিদান কারের পালা ছোট আটা বাত্রিদান কারে আলাক্ষা কোলার জন্মে নির্দিশ্য কারে আলাক্ষা কোলার জন্মা নির্দিশ্য কারের আলাক্ষা কারের আলাক্ষা কারের জন্মা নির্দিশ্য কারের আলাক্ষা কার্যার জন্মানার জন্মা নির্দিশ্য কারের আলাক্ষা কার্যার আলাক্ষা কার্যার জন্মানার জন্মা নির্দিশ্য কার্যার কার

মারের ব্রে একবার হাত রাথবার স্বাধীনতা
স্মৃকতদিন আগে যেন হারিয়ে ফেলেছে।
মানি বা ভার মা তার দিকে চেরে কি ক্থা
বর্গছিল, ভা কানে চ্রেকছিল না ভার, তার
সামনে সর্গত কিছা ধ্যুসর, মেবলা আকাশের
মত ব্লহীন মনে হাছিল, এ সম্ম পেছনে
প্রিচিত গলা শ্রেন আতিকে উঠল বাজু।

—এই তো, এখান না বলৈ চলে আলা হয়েছে, দুখে ো, গোপা এসে তার কাধের কাডে জন্মান্ত ধরল।

ভারে ন'ল হরে গেল বাচ্চা। মা এই
তার গারে উঠে ভাকে খাঁজতে বেরিয়েছে,
সংশ অভিকাক্কেও আনে নি। শাুধ্ প্থ
দেখাবার জন্যে শিউশরল একেটে চড় দিল
মানির গাণে, দেহ।তী ভাষায় একটনা
কুনিন লাগাল, বাচ্চাকে না বলে নিয়ে
আসার জনো। মামি মার কোলে মা্থ গাঁজে
ফালে ক্লো। মামি মার কোলে মা্থ গাঁজে
ফালে ক্লো। মামি মার কোলে মা্থ গাঁজে
ফালে ক্লো। কাদিতে লাগল।

— ওকে মারছ কেন শিউশারণ, গোপা ঠান্ডা গলায় বাগল, আমার নিজের ছেলেই চরম অবাধ। আর অসজা। গোপা থ্র ঠাড়া গলায় বলাশ ক্থাগালো, ওারণর সকলের ভীত চকিত দ্ণিটর সামনে নিশে মাথ্র পায়ে বাচায়ের হাত ধরে নিয়ে চলাল।

সারাটা পথ গোপা কোন কথা বলগ না। বাচ্ প্রতি মহেতে একটা কিছা শাসিত্র আশ্বকা কর্মিল, মনে হাচ্ছল মা ভাকে মারকে, বকুক, চুল টেনে ছি'ডে দিক তব্ গোপার সেই জনরতপত লালচে থাখগে ্থ থেকে একটা বহান প্রয়ণত ছিটকে এল না। নিজেদের বাসায় এসে নিশ্চুপে বাগান, সদুর, দালান পোরয়ে সোজা শোবার ঘরে এসে থামল, বাচ্চুর হাত ছেড়ে দিশ এবার। বাজ্য বিল্লুড় অবস্থায় কালসাখা অত্তো পায়ে ঘরের মাঝখানে স্থির দাঁভিয়ে রইল। গোপা ম্লান মুখে সরে গেগ কাচির জানালার কাছে। ভেজা ভেজা গোলাপ গাই-গালির দিকে চেয়ে চেয়ে অনগলি জল পড়তে থাকল ভার চোথ থেকে। বাড়ীতে এখন বাপি নেই, অভিকাক নেই, হয়তে। বাজারে গেছে দুজনে। সেই নিজন বাড়ীতে এক। দাডিয়ে নিঃশব্দে কদিছে रभाभा वाक्रात সামনে। দেখে দেখে বাচ্চার ভেতরটা গগে যেতে থাকল মোমের মত। তার মনে হ^ক মাবড দুঃখী। মা চিরকাণ ছবির মত গর্বাছয়ে রাখতে চেরেছে স্বাক্তর। তার বাগিকে, তাকে, সবাইকে মনের মত করে সাজিয়ে রাখতে ঢেয়েছে, চিরকাল চেরেছে এমনি কাঁচের জানলার ধারে বলে স্বাই গোলাপের বাগানের দিকে চেয়ে কিম্পু তা কখনোই আর ঘটে উঠন না। বাপি রইল ভার নিজের ভৈরী করা জগতে. আর বাক; সুযোগ পেলেই সর ছাড়ে ফেলে কোথাও উধাও হতে চায়। মান্ত্রের সোনালী স্ব স্বংন ভেলে-চুরে হার প্রতি মহেতে এমনি করেই। আর মা আফশোবে অভিমানে নিজেকে নিয়ে ছেলেখেলা করে। বংকের ভেত্র নিঃশ্বাস চেপে বাচ্চ, নিজেই কাদামাটি মাধা জনতোটা খুলতে বলগ।

०भएमार्डाका

তিনজন ছার ॥ শার্লাক ছোমস ॥ স্যার আর্থার কোনান ভাষাত

্লিক ক হোমস রেগেকেগে বলন—'আনার জকসম সমূল নেই।'

কি-তু হিলাটন সেমস নাছোড্বালা।
ছবিনি পাইতে লাগলেন। আজ বাদে কাল
প্রীক্ষা: মোটা টাকার সকলারশিপ। প্রশন্পত্র
ছবি এখনি ফাস হারে যায়, কেলেংকারীর
শ্ব লাকবে না। বাজে ছেলে সকলারশিপ
লটে নিয়ে যাবে, হিলাটন সোমস তা হতে
ছবিন না। শাল্পি হোমস হখন রয়েছেন
টাউনে, তথন শাল্পি হোমস হখন রয়েছেন
টাউনে, তথন শাল্পি হোমস হখন রয়েছেন
টাউনে, তথন শাল্পি হোমস হখন সংসাতে

্ব্যাপারটা ক[া] হ খাবই গ্রেখর। ছিলটুন সামস যে কলেজে পড়ান্ সেখান থেকে



টো টাকার সকলারলিপ দেওরা হর ফি । কাল সেই পরীক্ষা। আজ প্রশাসত ছিল ছাপাথানা পেকে বিকেশ তিনটের কো।

প্রত্থের কাগজগুলো যথন টেবিলের

ব. তথন ভারতীয় ছাত্র দৌলত রাম

বার ঘনে এসেছিল বটো একই বাড়ীতে

ন গ্রু শিষ্টা। নীচের তলার সোম্ম।

লার গিলভাইনটা ভালো ছাত্র, ভালো

য়াড়া ছারের ট্করো হেলে। তিন
কৌলত রানা ইন্ডিয়ানা, ব্শিষানা

লার মাইলস্ ম্যাকলারেনা দাব্রা

মী। কিন্তু ভাষণ ফাকিবাড়া। সোমস

হ করাছন একেই।

প্রকৃত। আস্থার শগ্র চা খেতে খন্টা-ক্রিক জন্ম বেহিছেপেন সোমস্থ্রে চারি দিয়ে। হিন্তুর একেন পাশের গেট দিরে। একেন দেখলেন, দরজায় চারি লাগানে। বরেছে। অব্যক্ত ছলেন দেখাস। বাকলেন, ভার চাকর বার্যানদ্যার ভুল করে চারি লাগিয়ে রেখেছে দরজায়।

চমকে উঠলেন ডেলনে চাকে। প্রাচেন বাগজ ডিনটেন একটা স্টানিকেন প্রান্ত দিনজীয়টা মোজন ক্ষর। তৃতীয়াট জানজার কাজে।

নিয়েকে সাকলেন, কেটা গৰে চাকে প্রফাদেহছিল। বেঁটিবলেন এপন পেলেন একটা কাঠেন গাণিয়া ছিলোমা ছাটিব কেকোলা নিকরো, ...জানলারে কাজে ছোট বেঁটিবলেন গুপর কত্তকর্লো পেলিকল কাটা কাচা। বাদ বিশিলের হাত্য ক্যেত্টেও পালালা অটিকে ইলি কিনেক বিশ্ব গেছে। একটা ভাগা শিক্ষক পাড়ে ফুলোটে।

প্রথমে সংক্রের হাল বাংলিনিক্তে। কিব্রু সৈ প্রাক্ত নিবে কি কর্ত্তে লগতে তাক নিম্নেন ভাকে। কাবে প্রথমিক ক্রিকার ক্রাম্থনি ক্রিপাকে ক্রম্পাতে ক্রে প্রভক্ত ক্রাম্বনির সাম্পন্নি ক্রাপ্ত ক্রম্পাত ক্রেকার ক্রাম্বনির

সোমান বাসকোন চাবটা। ক্রাপ্তরার বিবা শিক্ষার একজানের কাঁতি। বিনিন ক্রিরিয়ে মাধ্যার মিনিট কাবাছির মধ্যেই গারে চাকোছে। পাড়বত আকোয় ক্রাপ করতে স্বিধি হাবে বলে স্লামান টোবিংগ নিয়ে গোছে। ভাভাভাভি লিখাতে গিয়ে পৌল্যালর শিষ্ণ ভেগে। ফেলেছে। পৌল্যাল কেটে নিয়েই ফের লিখাভ বসৈছে। পাল্লী ছেলেটাকে আফাকেই ধরতে চক্ষ সোহার। কালকে তাকে পরীক্ষার বসাভ দেকেন না। নুইলে গোটা পরীক্ষারাই বাসভূবী রাখতে সুবে। বসাতে বলতে ভীষণ উত্তেজিত ছুরে পড়াসেন হিলাটন সোহার।

শাল'ক হোমস্-এর কৌত্তল ভত্তকণে কেন্দ্র উঠেছে। উঠে দাঁড়িরে কোট গারে দিয়ে বললে—ব্যানিস্টার এখন কোবার ?'

ম্হামানের সভ বন্দে আছে দেখে **৫০ে** এনেছি। মিস্টার হোনস, আমা**ছে বঢ়িন**! কলেজের স্নাম অসমূল লখেলে।



'চল্ল। কেসটা সাত।ই ইণ্টারেশ্টিং t এসো হে ওয়াইসন। একট্যু মাধার পরিপ্রম করে আসা যাক!

হিলটন সোমস-এর বাড়ী গিয়েই এক কান্ড বনল শালাক হোমস। পরজার দিকে না গিয়ে ডিঙি মেরে জানলা দিয়ে উনিক-ব্যক্তি মারতে লাগল করের মধ্যে।

ভাই দেশে ছিলটন সোলস বললেন— খালোকা সময় মন্ট করছেন। জানলার এন্টা কঠিই ভাঙা। মান্য ঢাুক্তে পারে বা ওখান দিয়ে।...'

ভাই নাকি! তাই নাকি! ব**লে অভ্**জ ভাবে হেসে উঠল হোমশ। নিজের মনেই বলল—সাবাস!

ঘার ঢাকে কা'কে পড়ল মেখের ওপর। খা'নিক দেখল কাপেট। মাঃ, পারের ছাপ-টাপ কিসসং মেই।

For PENGUIN BOOKS

লেখক সমবায় সামাত গ্ৰন্থ বিপাণ ই৯২ কলেজ শ্ৰীট মাৰ্কেট, কলিকাতা-৭০০০১২

By courtesy: RUPA & CO.

্ৰাৰা মুনৈ হাৰহান পৰ ব্যানিস্টার ইম্পান নিকাৰে ভিন্তা ব্যেহিণ, মিশ্টার জ্যান্ত্রিক স্ক্রিকার হৈন্দ্র।

্ৰীক্ষণাত্ত্ব গালে একটা চেনার দেখিয়ে বিক্ষণা হৈছেল।



अध्यक्ति **अस्त्रिन्त**



চটপট আর নিশ্চিত **আরাম** দেয়

TTT ecuation[®] earabhaí chemigale private limited

া কিছু বুলি ও সাহ ইবাকাশ্যান্তেইছে। ক্ষেত্ৰীত ট্ৰেন্ডৰ নাৰহাকল্ড। আইসেনপ্ৰায় প্ৰতিৰ্বিধ জন সি. দি- এল, Shilpi-SC-SA74 দেখি প্রুষের কাগজগুলা। বেশ, বেশ।
একটা একটা কাগজ নিয়ে গিয়ে জনলার
নামমে নমে ট্রুলিফাই করেছে ছোকরা।
কেই সংগ্র নজর রেবছিল মেন বেটে—
কিন্তু জাসনি ফিরলেন গাগের গেট দিয়ে:
আঙ্গেরে ছাপ নেই। তালো। একটা শিহও
ডেগেছে। দেখি পেন্সিল কাটা কাঠের
বিটোপ্রো। চমংকরে। মিন্টান সোমস দেড
কিও লংবা একটা সফট পেন্সিল ভিনজনের
কার কাছে আছে খেজি করবেন? পেন্সিলের
বং ঘন নীল গায়ে র্পোলি চরফে মেকারের
নাম লেখা আছে। একটা ভেতি। ছবিও
খ্লেবেন।

হাঁহরে গেলেন হিলটন সোলস—'সব তোব কলাল। কিঃড্ পেফিলটো যে দেও ইণিঃ লম্বাতাবকুলেন কি করে।'

শ্বে সহজে। ওয়াটসন, ত্রিও চাথা থানাও। কাঠের কচোগালোয় কি লেখার শয়েছে ই NN মানে কী? Johann Faber নামকরা পেশিসাল কেকার। NN হল Johann -এর তাংশ। তার মানে পেশিসলটা ইঞ্জি নেড্রুক বাকী আছে আর।

বন্ধতের কাট্র দার্গটা খ্ণীট্রের দেখল লোমস। তারপর ত্রকল পাশের শোরার মরে। এমনভাবে চ্কল হোন থাক্কা লাগতে পারে কারও সংগো। আড়ণ্ট হয়ে গেল ভাষিণ লম্বা দেহটা।

কিন্তু খনে কেউ নেই। আছে শ্ধ্ৰ আৰ একটা ভেকোণা মানির চেলা—কাঠের গ[্]ড়ো লাগানো।

ব্যানিষ্টারকে ডাকল হোম্স্। একথা সেকথার পর জানতে চাইল, ঘরে চুকেই সে দাঁড়িয়ে পড়েছিল পরজার কাছে। কিন্দু যাথা ঘ্রের উঠতেই স্বচেয়ে কাছের চেয়ারটার না বসে দুরের এ চেয়ারটার বসভে গেল কেন?

আমতা আমতা করতে লাগল
ব্যানিকটার। শালাক হেমেস এরপর
ওপরতলার তিনজন ছাত্রের স্পান্ধা করে
এল। নানা অছিলায় দেড় ইণ্ডি লাখ্যা নানীল
পোলসল খাজাল। গিলক্রাইসট আর
দোলতরামের ঘরে। পোল না।

সবচৈয়ে খারাপ ব্যবহার করল মাইশস মাকেলারেন। ঘরে চাকতেই দিল না।

পরের দিন ভার হতেই কলেজের খেলার মাঠে হাওয়া থেরে এল হোম্স। তারপর ওয়াটসনকে নিরে গেল সোম্সরের গরে। বাগনিস্টারকে ডেকে বললে—জানি সব জানি। খালে বলো কাল কি হয়েছিল এ-বরে।

যেন আকাশ থেকে পড়ল ব্যানিস্টার। কিছুই জানে না সে। বলবে কী?

শালাক হোমান তথ্ন দরবার সাজিয়ে বসলা ব্যানিস্টারকে দাঁড় করিয়ে রাখল হরের কোণো থবর পাঠানো হল দিল-কাইস্টকো। ওয়াটসন আর সোম্স্কৈ নিয়ে বসল চেয়ারে।

গিলকাইস্ট ঘরে ঢুকতেই হোমস্বললে—"বস্ন। আপনার সব কাতি আমি জেনে ফেলেছি।"

ব্যানস্টারের পানে চাইল গিলকাইস্ট। চোথে নীরব ভংসন।।

তংক্ষণাং প্রায় আ াদ করে উঠগ ব্যানিস্টার—"আমি ব'ল নি…আমি বলি নি।"

গিলন্তাইস্টকে সামনে দাঁড় করিয়ে
দালিক হোমস বর্ণনা করে গেল, কি-কি
ঘটেছিল গতকাল বিকেলে। গিলন্তাইস্ট
দ্বীকার করল, হাাঁ, সব সতিয়। ভবে
পরীকার করল, আর বসছে না। ব্যানিস্টার
তার মন যুরিয়ে দিয়েছে। রোডেশিয়ার
াকরী নিয়ে দে চলে বাছে।

কিন্তু শাল্পিক হোমস জানল কি করে গিলকাইন্ট-ই অপরাধী এবং ব্যানিস্টার কাঁচা মিথ্যে বলছে?

আপনারা চিত্তা কর্ন কিছ্কণ, ভারপর স্চীপ্ত দেখে সমাধানের প্রোর যিসিয়ে নিশ।

[উरुत ६४ भर्फा सम्बन]

[সমাধান: পৃষ্ঠা ৫৮]

-- जप्तीन वर्धन



শ্বুল, কলেজ এবং ইজিনীরারিং

ত অফিলের জন্য ভেঁগনারী, কাগজ, সার্ভে, ভুইং,
ইজিনীরারিং ও বাবতীর
উৎকৃষ্ট হাপার কাজের স্বাক্ত
প্রতিষ্ঠান।

কুইক ষ্টেশনারী ষ্টোর্স

৬৩ই, রাধানজার স্থীট, কলিকাভা—১

म्बर्ग -- २२-४८४४, ७२-८०७८; श्राम: चत्रातीतत--- दावका द्वान्डे यत्र--०४. हा**वका**

বিষ্ট্রেশ কড়া ব্যবস্থা নিতে ছবে। বারা লেভি বিজ্ঞান না তালেরও বেক্টাই দিলে চলবে না। ছালকিং বেশিনের কেন্দ্রেও লেভি এথা চালা, করা হোক। চোরচালান বলে নিওয়া ফোক কড়া ব্যবস্থা।

এদিকে ব্র কংলেদের তরফ থেকে শ্রু হারেছে মঞ্জুত উম্পার অভিযান। উন্টাডাপ্সা এলাকার হানা দিরে যুব কংগ্রেসের ক্ষীরা আটক করেছেন এক লাখ বস্তা ভাল। করেকজন ব্যবসায়ীকে কোমরে দড়ি দিয়ে খোরাবার পর তাদের প্রিশ্লে হাতে জুলে নেওয়া হয়। কিন্তু মুখামন্ত্রী বলেছেন, মজনুত উপ্রায়
আজিয়ানে কারো পক্ষেই নিজের হাতে আইন তুলে নেওয়া ঠক
হবে নাঃ বে-আইনী মুজনুত, উপ্রারেম কাজে
প্রিলিকের সাহায়া নিমে এগোটাই হবে সঠিক পুখ।
আয়ানিকিট পার্টির উলাটেগও চলে একটি উপ্রার অভিযান। এই
অভিযান উপলক্ষে নিজা অব্যোধ করাম, স্থাতিয়ালে কলকাভার
৬৬ জন ক্যানিকট নেতা ও ক্যানিকেতার হন।

কাগজের অভাব

নানা অভাবের মধ্যে এই রাজ্যে কাগজের অভাবও একটা।
একৈ তো আগনে দাম, তাতে মেলে না। মিললেও কালোবাজারে।
প্রপতিকার অবস্থা তো কাহিল, প্রকাশন ব্যবসাও রীতিমতো
সংকটের মুখে। তবে সবচেরে অস্বিধের পড়েছে জ্কুল-কলজের
হারেরা। তাদের পাঠাপুস্তক ছাপা হচ্ছে না, লেখার কাগজেও
ছাকের দাম কাগজ তৈরির কটা মালের দাম চড়ছে, তাই
কাগজের দামও আগন্ন। কাগজ প্রশ্ততকারকেরা বিজ্ঞাপন দিছেন,
বেশি দাম দিয়ে কাগজ কিন্নের লা। কিল্তু নাছ্যা দামে মিলাও
কট ? স্কুল-কলেজের পাঠাপুস্তক বা লেখার কাগজের জনো
মোট উংপাদনের একটা অংশ প্রথক করে রেখে দেওয়ার ব্যবংথা

হয়েছে। কিন্তু সে খাতে যে প্রিমাণ কাল্য মিলছে ভাতে এই রাজ্যে চাহিদা মোটেই মেটে না। বই ছাপার কাজ যদিও ওলে হাজার হাজার প্রকাশ চাহিদা মেটাবার বাবগ্রা মোটেই হবে না। অবশ্য মুখামান্তী ছার পরিষদের নেডাদের আশ্বাস দিয়েছেন থা, ছারদের প্রতি মাসে এক দিন্তে করে কাল্ড হোগোবার ব্যবস্থা হচ্ছে: কর্প থোকে কেরোসিন যোগাবার জনোও চেন্টা হবে। বিশেষ করে প্রামান্ত করেরাসিনের অভাবে পড়ুয়াদের খাবই অসম্বিধে হচ্ছে। প্রস্থাত উল্লেখযোগ্য, ছার পরিষদ এবং ছার ফোরেগন কলকাতায় যে ছার আন্দোলন করলোন তার একটা দাহি ছিল সম্ভান্ন কাল্যক্ষ ও কেরোসিন যোগাতে হবে।

বন্যা ও গ্রাণ

উত্তৰ বাংলায় আৰার প্রবল বৃণ্টি এবং আবার বন্য। কোলবিহার, জলপাইগৃড়ি, দিনাজপুর আর মাশদহ সর্বাই আবার বহু এলাকা জলেব তলায়। সেই জুন থেকে চলেছে উত্তৰ বাংলায় বনাব পালা। বৃণ্টি পড়ে, নদীর জল বাড়ে, দু কলে ছাপায়। তারপার বৃণ্টি কিছু দিন বন্ধ থাকে, নদীর জল কমে, লোকে রেহাই পায়। তারপার আবার আসে বনার পালা। এইভাবেই চলাছ উত্তর বাংলার গত কয়েক মাস ধরে। আগস্ট মাসের শেষাধ্যিই উত্তর বাংলার পাচিটি জেলা আর ম্থিদিলাবাদে বনায় ক্তিকেত মানাক্ষর সংখ্যা দাভিয়েছিল না সাখ। নতুন বন্যা থাকে। কিছু লোককে বিপুদে ফেল্লো।

এটা বাজে। বন্ধার ধ্যংসল্মীলার দিকে দিল্লীর দৃশ্চি আক্রণেব চেণ্টা ক্রেডেন রাজেরে কংগ্রেসী এয় পিরা। প্রধানমন্তীর কাছে এক স্ফাল্কডিপিন্ত তারা অন্যরোধ করেছেন, বন্ধার (এবং খন্ড) ফলে রাজ্যের যে ব্যাপ্ত ক্ষমকতি হয়েছে তা সরেজমিনে দেখার জন্যে একটি কেন্দ্রীয় সম্ক্রিক দল পালানো হোক। এই প্রসংশ্য উল্লেখ করা যায় যে, এ-বছর বনাতিদের হাগের জন্য কেন্দ্রীয় সরকারের কাছ থেকে কোনো সাহায়াই ফিলছে না। মণ্ঠ জার্থ কিলনের স্পারিশ জানুযায়ী প্রতাক রাজ্যকে বনা নিয়ক্তার জনা কিছে বেশি টাকা দেওয় হয়েছে। সেই টাকা থেকেই তাগের কছে গালিয়ে নিজে বলা হয়েছে। অর্থ ক্ষিশনের মতে, রগের রাজ গালিয়ে নিজে বলা হয়েছে। অর্থ ক্ষিশনের মতে, রগের বনা নিয়ক্তারে পাকা ব্যবস্থা করাই ভালো। ভালো যে সে-বিষয়ে সালের নিছা নিছা করা ক্ষা তাই থাতে আর টাকা দেবরা আছেই। অন্ত রাজ্য সকলারের হাজে এই থাতে আর টাকা নেই। সাক্ষের সংগ্রাক করা আছেই। সংগ্রাক সংলাদ, দিলা একটি স্থাক্ষিক দল পাঠাতে রাজি সাগ্রহে।

বাঘের পর হাতী

দক্ষিণ বাংলার প্রদেষ তার বাথলালা সম্বরণ করার পর এখন উত্তর বাংলার ব্না হাতী খববের বার্গজের শিরোনামায় ঠাই করে নিয়েছে। অবশা উত্তর বাংলায় ব্না হাতীর উপদ্র এবনর করে নিয়েছে। অবশা উত্তর বাংলায় ব্না হাতীর উপদ্র এবনর বাবে অভিনর ব্যাপার নয়। গত মাস ক্ষেক ধরেই ওরা ভ্রাস্থ এলাকার মান্ধের মনে হাসের সপ্শর করে হলেছে। আর ওদের ভূগজেরের ভূলনায় বভূথালিতে 'স্ক্রেরর' কান্ড-কারথানাকে নিতাশতই অকিন্তিংকর বলতে হয়। 'স্লেবর' থাবার ঘারে বিয়োনে মাত্র একজন বান্ধার মাত্র হরেছে, ব্নো হাতীর হাতে বো পারে) সেখানে মারা গোছে অনতত জননবারো লোক। অবস্থা এমনই খোলালো হয়ে ওঠে যে রাজা সরকারের বন-বিভাগ চারটি হাতীক যেরে ফেলার হ্রুম দেন। ভার মাধ্য একটি মারা পড়েছে আর একটি জ্বায়। বন কেটে জ্যাগত বসত করার জ্বলই হাতীর

পাল তাদের প্রাভাবিক বাস্পথান ছৈছে গোকালায়ে চ্কে পড়ছে বলে বিশেষজ্ঞাদের ধারণ। তাছাড়া বলের মধ্যে তাদের খাবারও মিলছে ন। কেউ কেউ বলাছন, বুনো হাতীর সংখ্যাত বৈছে খাছে, তাই তাদের মারার ব্যবস্থা করা উচিত। তার সংখ্যা স্বিটাই বাড়ছে কিনা বলা ম্মিকল। কারণ হাতীর সংখ্যা নিনায়ের কোনো চেন্টাই আল অব্ধি হয়নি। অনেকের মতে ওদের সংখ্যা বরং ক্যাছে।

এদিকে 'স্কুলরের' মৃত্যুর কারণ এখনও সঠিকভাবে জানা বায়নিঃ এখন দাবি উঠেছে, 'স্কুলরের' মৃত্যুর কারণ খালুক বার করার জন্যে তদশত হোক। তবে সেই ভালতা বিভার বিভাগীয় হতত হবে। এমন দাবি এখনও কেট করেন নি।



निक्टमं नक्न मर्यापा

আছিত রাজ সিকিমকে ভারতের সৈহরোগী রাজান সম্পাদ ক্রেড্রার তিন্দুলা সংবিধানের ৩৬জন সংশোধন করা হয়েছে। সিকিম আহ্মান্তাবে এই সংশোধন করা হয়েছে। সহযোগী রাজা হিসাবে সিক্ম থেকে নির্বাচিত একজন প্রতিনিধি লোকসভার সদস্য হবেন এবং সিক্মি আইন-স্কা থেকে নির্বাচিত আর একজন প্রতিনিধি লোকসভার সদস্য হবেন এবং সিক্মি আইন-স্কা থেকে নির্বাচিত আর একজন সাম্পা রাজাস্কার সদস্য হবেন এবং সিক্মি আইন-স্কা থেকে নির্বাচিত আর একজন সাম্পা রাজাস্কার স্বান পাবেন।

সংগদে এই সংগোধন প্রচন্থ আলোচনার সময় সংগঠন কংগ্রেস ও সি লি এম
বাদে জন্য সব গলেব সদাবাই এই প্রদিতার
সাধারণভাবে সমর্থান করেছেন। সংগঠন
কংগ্রেস এই বলে আপার করেছে যে এই
সংশোধনের ফলে সংবিধানের যুক্তরাগাঁর
কাঠায়ো ক্ষাভ্যান্ত হবে। ছারতের সংগ

সাক্ষেত্র সংশক্ষ সেদেশের রাজনৈতিক পরিবর্জনের পরার প্রভাবিত হবে। জারতের আইন সিক্ষে প্রতানিগিরা ভারতের প্রতি প্রহাজ্য রাজনিতিক কারিকরের প্রতিনিগিরা ভারতের প্রতি প্রহাজ্য আইন রচনার্য জংশগ্রহণ করবেন, এটাও একটা অসংগত বাংগার। সি পি অম-এর বরুরাঃ তাড়াহাড়ো করে এভাবে সিক্ষিকে ভারতের সংগ্রহ করে সিক্ষিকের জনগণের অভিপ্রাণকে বিকৃত করা হচ্ছে। ওারা ভারতের এই সিংধান্ত এলেশের সমাপোচক-দেব ভারতের বির্দ্ধি তিলাবি মনোভাবের অভিস্থাপ আনার স্ক্রোগ করে করে এবং কর্দ্ধি প্রতিবাশির ভারতের স্বিক্ষিকের স্বার্থিক স্বিক্ষিকের স্বার্থিক স্বান্ধির ভারতের বির্দ্ধির ভারতের অবহার্থিক প্রতানিশ্ব ভারতের প্রত্থাপ আনার স্ক্রোগ করে জেভিস্কির স্বিক্ষিকের স্বার্থিক স্বিক্ষার স্বার্থিক স্বিক্ষার স্বার্থিক স্বিক্ষার স্বার্থিক স্বান্ধির ভারতের স্বান্ধির ভারতের স্বান্ধির ভারতের স্বান্ধির স্বান্ধির ভারতের

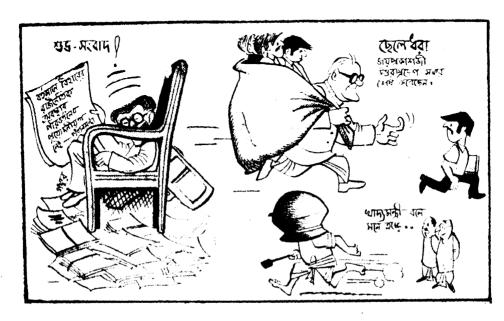
শ্বরাজ্যমন্ত্রী শ্বরণ সিং কিন্তু আন্থাস দিয়েছেন যে, সিকিয় ভারতের সভ্যোগী বাজা হলেও ভাব প্রত্যু সতা আ্বা হয়ে না। সোদেশের জনগণের প্রতিনিহিন্দের ইচ্ছা অনুস্থায়ীই এটা করা হয়েছে এবং এর ফলো এই প্রতিবেশী রাজের জনগণের সংগো ভারতের সম্পর্ক ইনিষ্ঠিতর হবে। সিকিয়ের মজির দেখিয়ে ভবিষাতে কম্মীর বা অন্য কোন রাজ্যন্ত সভ্যাগারী রাজনে মহানি নারি কবাতে পারে এমন আশ্বকা অম্যুলক বলে পরবার্থায়ন্টী উভিয়ে দেন।

ভারতের এই সিন্দান্তকে চীন স্কুনজরে দেখেনি। সে এটাকে ভারতের সম্প্রমারণ্যানী নাতির প্রকাশ হিসাবে। দেখেছে। নেশানেব রাজগানী কাঠমান্ডুভেও বির্ণ প্রতিভিয়া দেখা দিয়েছিল। সেখানে ভারতীঃ দ্ভাবাস আঞ্চত হয়েছিল। কিন্তু নয়াদিলী প্রতি-বাদ জানাবার পর নেশালের স্বর নরম হয়েছে। নেশাল সরকার বলোছেন এ বাাশারটা তার। সুংশ্বেশ্প ভারত আর সিকিমের ব্যাপার হিসাবে গণ্য করছেন।

ক্রদিকে, সিকিন্তের চোরিয়াল ভারতের ক্রই সিন্দানেতর বির্দেশ প্রতিবাদ জানিয়ে-ছেন। তিনি বলেছেন, এভাবে সিকিন্তের বাজন্য লোপ করার অধিকার ভারতের নেই। তাপবপক্ষে রাজা জনগণের ইচ্ছার বিরোধিতা করছেন বলে তাঁকে ক্ষমতামৃতি করার দাবি তুলেছেন মুখ্যমন্ত্রী কাজী লোনভূপ দোর্বাজ।

খবার সংক্রেড

মৌস্মী বৃদ্ধিপাতের সর্বাশেষ যে
থাবর পাওয় হাছে তাতে মনে হছে আরও
একবার থ্বায় আনাদেব পরিক্র ফসলের
গার্ল কতি হবে। ওটিনা, উত্তরপ্রদেশ
রাজ্যুলা মানাপ্রদেশ ও মাহাবাশ্যের বিভিন্ন
অন্তর্গ থেকে আনাক্তি ও প্রায় পৃতিক্রিলা
বর্ণনার সংবাদ পাওয়া যাছে। লোকসভার
তাধারশনে সন্তর্গনা এ বিষয়ে উপেবগ
প্রকাশ করেছেন। নীমির্ দন্ডবতে সেমাজওদ্বী। তার নিজের রাজ্য মহাবাশ্যের
অবদ্ধার প্রতি লোকসভার দাণ্ডি আকর্ষাণ
করে বলেছেন, রাজ্যের চার্ডি অন্থলের মাধ্যে
তিম্যি অন্তর্গরু প্রচার কর্ষণে পড়েছে।



was from a market suggest succession and the off Section of

প্রীলক্ষালার্কার পান্দে (কলকর) বলেছেন, মধাপ্রদেশের ছিলিপাড় অঞ্চলে দৃশুক্তি মানুর নিজেন্দের সদতানদের বিক্রিকরে দিছে বলে ধরর পাওয়া যাজেছ। শ্রীহরিরসাদ (কংগ্রেস) বলেছেন, রাজস্পানের ছাতহাসে এই প্রথম সারা রাজ্য ধরার কবলে পড়েছে। শ্রীপ্রাসাদ্ধার মহতা (সংগঠন কংগ্রেস) গ্রুজরাট পানীয় জল খাদাশা ও গ্রাদি শশুর খাদ্যের তীর অভাবের কথা উল্লেখ করে বলেছেন, এই সম্পা স্থানানে রাজ্য প্রকারের যৃত্টা তংপরতা দেখা যাজে না।

পশ্চিমবংগ্রের একদল সংস্থা সান্স ইতিমধ্যে প্রধানমধ্যী শ্রীমভৌ ইন্দির। গাল্পার স্থান্য দেখা করে এই বলে হাুশিয়ার করে দিয়েছেন যে, খাদ্যাভাব পশ্চিমবংগ্রে এবটা বিস্ফোরণের মাুখে এনে দ্যাড় করিয়েছে।

খাদা ও ক্লাব বিভাগের রাজ্বমণ্ডী আহাসাহের সিদের রাজ্যসভাষ স্বীকরে করেছেন যে বনা ও শর্মব ফলে অবন্ধা সংগান হয়ে উঠেছে। কিব্দু আমর একটা বিশ্বস্থায়ের কিনাবার এসে পড়েছ একখা মানতে তিনি রাজি নন। তিনি বলের যে, এক পঞ্চকালের মধ্যে হণিট হলেক স্বাভাবিক কসল পান্ধেয়া যাওয়ার আশা আছে।

भःभाष्टिक वर्षा **अधि**विभन

সংসদের এবারকার যে বর্ষা ভাষিবেশন সদা সমাত্ত হল ঐ তাধিবেশনে বিরোধী পক্ষ যে প্রচণ্ড বাধার স্থান্ট করেছেন অতীতে আর কথনত তেমন হায়ছে কিনা সন্দেহ। বহু, দলে বিভক্ত হয়েও ও ভোটের ছোর খ্ব নামান্য হলেও বিরোধী পক্ষ সরকার পক্ষকে এবাব বিশেষভাবে নাশ্ভানা-বুল করতে সমর্থ হয়েছেন। কাষ্যবিধি সংক্রান্ত প্রশ্ন তুলে ত'ারা একাধিক অর্থ বিল সামায়কভাবে আটকে দিতে পেরেছেন। আর ভারা স্বচেয়ে বেশি সভেছেন ·नाइरमञ्ज रक्तनकारितः সংक्रान्टः छान्न १ 'পন্চিচেরির সাতটি ফার্মাকে আমদান লাইসেন্স মঞ্জ করার ব্যাপারে লোকসভার ২৯ জন কংগ্রেস স্পস্যের নাম জাতিয়ে হাওয়ার ঘটনা সম্পর্কে বিশ্তারিক তদকের জন্য সংসদের সদস্যদের নিয়ে কমিটি গঠনের জনা ত'বে ককের ভিতরে হতরক্মভাবে ম্ভব চেণ্টা করেছেন। অধি-কার রক্ষাব প্রদ্ভাব মূশফুবি প্রশ্তাব ও অনাণ্ডা প্রভবাব তুলে স্পাকারের আস্ন ষেব্রাও করে, সংসদের আলোচ। বিবর্ম,চী প্রণরনের কমিটিতে অচলাবস্থার সূত্রি করে दिरताथी जनजाना अवात जरमप्तक व्याध-

শেষ দিকে প্রায় প্রাতদিনই প্রসংগটি ভলে সংসদকে সর্গানয় করে বেশেছিলেন। বিবোধী সদসায়া অবশ্য শেষ পর্যাতি প্রস্থাটিকে সংসদীয় তদন্তের আওভায় আনতে সমর্থ হনান। কারণ সরকারের মতে শ্বেহেত বিষয়টি নিয়ে এখনও সি বি আই-এর তদ•ত চলঃছ সেহেত এ সুশ্রকে সংস্টের মাথা ঘামাবার সময় এখনও আসেনি। সরকারের এই মতই লেষ প্রধানত কংগ্রেস দলের সংখ্যাগরিক্সতার জোরে সংসদকে দিয়ে অন্ত্যাদন করিয়ে নেওয়া হয়েছে। ডথে বিরোধী সদসারা সংভবত জনসাধারণের মনে এই ধারণাস স্থান্টি করতে সমর্থ হয়েছেন যে লাইসেম্স কেলেডকারি ব্যাপারে কিছা নোংরা জিনিস ঢালা দেওয়ার চেণ্টা করা হচ্ছে। কংগ্রেস দ্লোক কিছা সদস্য যে প্রথম সংসদীয় তদ্ধ্তের দাবিতে সামিল হয়ে পরে সরকারী মতে সায় দিতে বাধা হল এটাও আর চাপা থাকে নি বিরোধী সদসারা বিভকটিকে টেনে নিয়ে যাভয়ার ফলো।

মোজান্বিকে ধেৰতাপা বিদাহ

শকুণাল - ভার আফ্রিকান উপনিবেশ্ মোজান্বিককে শ্বাধীনত। দেওয়ার কথা ঘোষণা করার সংগ্য সংগ্য এই উপনিবেশের সংখ্যালাঘ্ শেবভাগ্য অদিবাসীরা বিদ্যার ঘোষণা করেছেন। লুমানা ছুক্তি সংস্থা লিগ্রন সরকার মোঞান্বিকের মুক্তি সংস্থা ফালিয়োলা হাতে ক্ষমতা অপনি করার য়ে সিন্ধান্ত ঘোষণা করেছেন দ্বেভাগ্র বিদ্যাহারীর সেই সিন্ধান্তের বিরোধী। ভায়া বেভার কেন্দ্র সঞ্জালিয়ার কেন্দ্র করেছেন। হারা আফ্রিকার দৃষ্ট সংখ্যালঘ্নবেভান্স-শাসিত দেশ রোডেশিয়া ও দক্ষিণ আফ্রিকার সম্প্রান চেয়েডেম।

গিস্বন স্থকার এই দক্ষিণ্পঞ্গী বিদ্রোহ ব্যানের স্থককণ ঘোষণা করে জানিজেছেন যে জাসাক। চুক্তি তার কথনস্থ খেলাপ করবেন না।

812196

--প্তরীক

দেশ বিদেশের ভৌতিক গলপ

২ খণ্ডে—প্রতি খণ্ড ১৫ । ব্যবি লনীয় সভাতার আমল থেকে ব্রত্মান যুগ অবধি ধত ভৌতিক গণ্প প্রকাশিত হয়েছে, তা থেকে বাছাই করে এই মনবদা সংকলনতি প্রকাশিত হজে। এবকম সংকলন বাংলা সাহিত্যে আছে, অবধি প্রকাশিত হয়নি। গ্রাহক মূলা ৫ । স্কের প্রজ্ঞান শোভিত হয়ে প্রকাশিত হজে। গ্রুছাপা হজে। সরুর গ্রাহক হোন।

মহাজ্যার আগেই ধের হবে। এ ধরনের প্রচেণ্টা আমাদের দেশে এই প্রথম। ২০১টি গ্রুপ নিয়ে কিলোবদের জন্য অভিনয় সংক্রমন।

জলছবি

সম্পাদনায়-- শচীন বিশ্বাস

পাতার পাতার ছবি। বিভিন্ন রঙে ছাপা। ২০১টি গ্রুপ মানে একশো একজন শ্রেও শিশা সাহিতিক। গ্রুহক মানে ৫টি। বহা বছরের প্রছেদ উপস্থেবর উপ্রোগী। মান্দ্র দশ টারা।

খাংলা ভাষায় স্ব'ল্পম!! প্রতি গ্রু, প্রন্থাগার ও বিদ্যাচ্চার কেলের জ্বনা একথানি আংবানি আংবানি সংখ

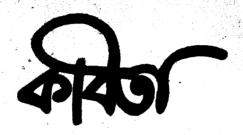
অথ্নীতি-অভিধান

অধ্যাপক - **সমরেল মৈত্র**

্ষ প্রদেশর অভাব এতদিন অর্থানীতির ছাত, শিক্ষক, ব্যাঞ্জীবী, সাধারণ পাঠক একাণতভাবে উপলন্ধি কর্মাঞ্জন এবং মাতৃভাষায় এতদিন যে অন্তার দেটানোর কোন চেন্টায় কেউ অগ্রসর চননি--আমরা সেই দ্বাংশাংশিক চেন্টায় রতী হয়েছি। গ্রন্থাটির গ্রাহক ম্লা ২০্টাকা। এখন ১০্টাকা জমা নিয়ে গ্রাহক হোন।

গ্রাহাক হবার ও মনি অভার পাঠানোর ঠিকানা ঃ

জ্যোতি প্রকাশন ॥ ২০, নবান কৃত্ত লেন ॥ কলিকাতা-১



ত্মি তাবং ভ্ৰেন।

শাকিতকুমার ঘোষ

ভূমি তাবং ভূবন গড়তে-গড়তে বাজাসের মতো ব'য়ে চলেছ... দেবতাদের শ্রীর থেকে বেরিরে-আসা তেজোরাশি একঠাই হ'য়ে নিয়েছে জন্মত পাহাডের র প। তোমার ত্ব একটি তুলে নিতে কি দহন করতে পারে—সাধ্য আছে কার উচ্চু হিমালয়ে নৌবশ্বন ক'রে ভূমি বঢিয়েছিলে ∘লাবনেব থেকে, সেখানকার শ্ববনে নবজন্ম হ'ল আমাদেখ।

বলীয়ান হ'য়ে আমরা খেতি করেছি গাঁও বসিয়েছি শাথর কেটে -পাতাড়ের গায়ে;

তুমি যেন তেনো না খর দুলিট সে সবের উপর— রাতের অধ্যকারে ছুলে নিয়ো না শ্রেষ্ঠ ঘোড়া কি মুমুখ্ত সম্তাশন্দ্র এই সত্তর দুশ্বেও তোলাকে ব্রি না, তাই অব্যা আনি সালাদ্রক —কত আর রোদন করাবে মান ্বকে।

অমিতাত চক্লৰতী

কতদিন ঘটেনি সাক্ষাৎকার এথচ দেখা হওয়া আবশাক ছিল। কেন্না ব্যার পর শরৎ এবং সব শেষে শীত, আমার আঙিনায় — জানালায়, উধাও শ্নাতায়. চুপি-চুপি পাইন্-ব্দের অরণ্য দেখেছিল!

এখন মনে হয়, তুমি বন্ধ্যা বৃক্ষের মতন, প্রতিবেশীর নব-জাতক সম্ভানের প্রতি ঈর্ষা, লার নিজের র**ভাত** নারী**ছে**র প্রতি ঘ্ণায় পারনে হাদরটাকে জড়িয়ে ধরা শিহরিত লডা--এক, কিংবা মাত্রির শেব প্রহারের বীভংস চিৎকার!

বহু,দিন পর এই সাক্ষাংকার ঘটেছিল, আকৃত্যিক যোগাযোগ, দৈবী ঘটনার সারিবৃদ্ধ বিজ্ঞাপন দ্যের নৃতদেহ দাহ-দেবে রাত্র মুজাহীন হাছাকার!

ভালবাসা, নাল নক্ষ্য भिन्नद्वं **भ**तीद्व ॥

হতচকিতের মত আছি; স্মৃতি যেন ফেটে পড়ে পুরুত্ন বীজের মত ছড়িয়ে যায় চতুদিক—ঐ নীল নক্ষরসিন্ধার দিকে।

কতদিন ঘটেনি সাক্ষাৎকার ॥ দেখে নত তোমার থেকে পরাসরি কিভাবে সরে থেকে থাকি াশ্য ক্রবাজির দিকে

যেহেতু তুমি সবাজ প্রেমিকা আমার—টা াহাজের মত রহাসাম্য হিলে

্ৰু এই শেষ বসভেত শিখিয়েছো হতপতি ছলচতুরতা আমাকে. এই যুথবন্ধ নীল পিট্লীগাছ াজন্ত অলোকিক সাক্ষী—

তোমারই সভেগ কিশোর সকালে ছিলো গঙানি প্রাতংরাশ. ঐ দেখ, হল্দ সংর্ঘ ক্ষেত্তে ওড়ে তোমার ভালবাসা

এই সতিতাল প্রগণায়—এজ: দক্ষিণের এই খবে তুমি থাকো, সারাদিন খোঁলো তামা ও বসংত্কার বোঝ কি? আরো এক উন্দানত সবলে উড়ে বায় লালবারান্দার দিকে? ভোমারই জন্যে অব্যুঝ আমি, হাবিয়েছি দিক-নিদেশিক

এই সত্তর দশকে।।

উপন্যাস



সোনাখড়ি গ্রামের ভবনাথ ঘোষ আর দেবনাথ দুই
ভাই। ভবনাথ বড়ো। অম্প বয়সে বাবা মাধ্য মাওয়ার শর
ভ্রাতিদের চক্রান্ডকে উপেক্ষা করে ভবনাথ সংসারের, হাল
টেনেছেন, ভাইকে মানুষ করেছেন। ফলকাতা বাবেন দেবনাথ
ছোট আদালতে উকিল হওয়ার পরীক্ষা দিতে। সব ঠিকঠাক।
যওয়া হোল না। পরে নারবীর চাকরী নিলেন বিদেশে এফ
ভাসদারী দেবেদভায়। পরে কম্দিকতায় হলেন ম্যানেজার।
দেই কৃতি ভাই দেবনাথ আট বেহারার পালকিতে সোনাখড়ি
ফিরল.....।

(পার্ব প্রকাশিতের হার)

্রিক বিকালে ঘনঘটা আকাশে। দেখতে তে কড় উঠল। কাল বৈশাখী। য়স্তেহ-বের ছেলে জ্লাদ ঐদিকে থেজারতলি হুছুর মাথায় অল্লাদের সর্বন্ধণের সাথী লাও আছে কংখকটা ভাল নিচে। কী ফগন হার এবার গাহুটায়, ফলের ভারে ডাল হারেশে পড়বার গাঁতক। ছিদ্র-করা শামুক জাদের গাঁটে, কাগজের মোড়কে নান। দো-উপর পা ছডিয়ে জত কোঁচড়ের কাঁচা **জারে ব**সে **লাম**কে কেটে কেটে নুনু মাথিয়ে থাচেছ। লৈডে লেভে ঢারি, সারি প'্টি আর শিলেদের খাকি বেউলাতলায় ছাটে এলো। স্থারি তাহন্দ খোদামোদ করছে জল্লাদকে: 🐝 ত কণ্ট কেন করিস রে। ডালের উপর 🛮 🔏 রীদয়ে ঋ'।কুনি দিয়ে দে—আম তলায় পড়বে, **শ্রেটিতে কেটে নুনে-থালে** জারিয়ে এনে ্ষ্ট্রদবো। একটিপ চিনিও দিতে হবে, চিনি না পলে গড়। করিকম তার হবে, দেখিস देशहरा ।

জ্ঞাদ দোলা-মোলা-আম-জালাবন সভিয় সতি দেবে না হুণিক দিয়ে আম পাড়িয়ে কৈজে: ভাবখানা ব্ৰেথ নিয়ে চারি বলে, দিয়ে দিকে। একদিনের দিন তো নয় —ফুণীক দিলে কিমান কথনো আর দিস্যে—

জন্মদ দিত নিশ্চর শেষপর্যত—দেরি
করে একট্ মান কাড়াচিল। কোনকিন্ত্র
করকার নেই, ঝড় উঠল কাউকে লাগবে না আর
এখন। চিবঢাব করে আম পড়াছ এ-তলায়,
দে-ডলার মেয়েগলো ছুট্টাছ্টি করে
কুড়োচেছ। ধামা ঝড়ি নিয়ে অরও সব অ অলায় আসছে। চারি বুড়ো আছুপ আন্দোলিত করে জল্লাদকে দেশচেছ গোল বিজ্ঞান আম জারানো দেখিরে বাব, এই কলা, এই কলা।
আম জারানো দেখিরে দেখিরে খাব, এক কুচিও
দেবো না। চাইলেও না।

ভালপালা বিষয় দলেছে। স্পারি-গাছগুলো এত নারে গড়ছে—ভেঃই পড়ে বানি-বা। পদা সড়াক করে ভূরি নেমে গেছে। জ্বানের ভরডর নেই, নামবে কি—মজা পেথে গেছে, বেয়ে বেষে আরও উ'চুত উঠছে। লোল গাবে। স্বির বয়স এদের মধ্যে বেশি, সে চে'চামেচি করছে; নেমে আয় ওবে জ্বাদ, পড়ে থে'তে চারে চারা বানি—

দ্যেড়ে দৌড়ে মেরেগুলো এ-ওলায় মেতলায় আম কড়িয়ে কেড়াছে। চল বাধা হয়ান
এলাছল উড়ছে তাদের। আচলও উড়াছল,
বেড় দিয়ে কোমরে বেগধ নিয়েছে। পাতা ঝুর
বরে করে মাধায় ঝরছে পুন্দব ছার মাতন।
দুম করে বেউলার পিঠে কে ঢিল
আহা পিঠ বাকাতে বাকাতে বেহ্লা আহা
ভূড়ির নিল। কে মারছে ভ্রমিদ ছাড়া কে
আবার! ঘাড় তুলে নিরিখ করে দেখে, তা-ও

নয়। মেরে যদি কেউ থাকে সে এই পাছ। জলাদ নয়। জলাদকে এখন নতুন খেলায় পেয়ে গেছে, উঠে যাকে সে উপরের মগডালে ফনকন করে। থড়ের সংগ্য দূলবে। যটগাছে দড়ির মতন সর, সর্ খুনি ঝোলে, তারই কয়েবটা গেয়ো দিয়ে দোলনা বানির্ফো নেয়। খুনির দোলনান বসে একজনে দ্-স্তাতে শঙ্গ করে ঝুনি ধরে, তান্যো দোল দেন। এই আকাশে উঠে আবার এই দেমে এলো ভূ'য়ে। বড়ের কিম্ভু ভারি স্বিধা, দোল দেবার মান্র লাগে না। মড়ই সে কাজটা মহা বিক্রমে করছে। দে দোল, দে দোল—

তরাসে স্বি ওদিকে সমানে চেটাছে । পড়ে মরবি রে হতভাগা। নেমে আয়ু—

জ্ঞাদের দ্বেপাত নেই, দাব্য । একথানা ভাল কড়িয়ে ধরে আছে। ঘোর বেগে ধ্রেন ঘোড়া ছুটিয়ে হাচ্ছে—মজাটা সেই রক্ষ।

স্থারি স্কর্ণে কন্টে বঙ্গে নেমে আরু রে, ব্যাগ্যেতা করছি। লকপকে ভাল ভেঙে পড়ল বলে। হাত-পা ভেঙেগ তুইও মারা পড়বি।

স্থির ছটফটানিতে ভাসের উপর জল্পাদ হি-হি করে হাসছে। চেণ্টারে জবাব দিল গ পড়ালে তো পাতা স্থে ভাল ভেঙে নিবে পড়াব। তাতে লাগে না। দিবি। হেন গাঁদিতে শুরে দেমে এলাম, সেই রক্ম ঠেকে।

कशक वीद्धार मार्चन आहादांब

B.T এবং B.Ed ছাত্র ছাত্রীদের অপরি**হার্য প্রক্**থ

আধ্বনিক শিক্ষাতত্ত্ব ১৮

শিক্ষার পটভূগম পণরবেশ পর্কাত ১২

প্রজোয় ভ্রমণের জনো আমাদের গাইড :

হিমালয় ভ্রমণ ও গাইড

স্বীল চৌধ্রী । ২০-০০

ভারত ভ্রমণ ট্রারস্ট গাইড

हिंह देशमें । ५०-००

ৰেজল পাৰ্বালশাৰ্স প্ৰাঃ লিঃ, ১৪ বি কম চাট্টেজ স্মীট, কলি-১২

নির্মাণ করে আন্দেশ্র, করি এবকন নির্মাণ করি। এইন ল্যান থেপে বৃণিট করি। করেন থেপে ব্র্নিট করি করি। চারজনে আবার করি করি করেন করেছ আসাছে, পালাজে করি করে। ভালারে করেল পড়ে গোল, ধারা-করি রাজনি উপরে। ছটুছে দ। আর্, হগতে হাজে থরে মনের স্থাতে ভিজতে ভিজতে ব্যক্তি। কথা বলাহে কলকল করে—হাওলায় ভক্তি কথা উভিয়ে নিয়ে বার, এবকণ কানে শেষ্ট্র কথা উভিয়ে নিয়ে বার, এবকণ কানে

स्थित हरे मा हर दिश्वी-वाध्य अद-बाद्ध स्था श्रम । देव बन्दि अवे आला राजानगार करत जुलाहिन । न्य आकारम बन्द हण्म राज्य मिरदार किरक जिल्लाहुनात हारिधिक हण्म राज्य मिरदार किरक जिल्लाहुनात हारिधिक स्वारह अध्या हण्या आला भर्दि किरक भारत क्रिकेटिक कर्दछ । होरोस क्रम भीडिस श्रह । क्रिकेटिक कर्दछ । होरोस क्रम भीडिस श्रह । स्वार्थ करत क्रिकेट कर्तित श्रीय करते हिल्लाहुन स्वार्थ मिर्ग हरिस हिल्लाहुन स्वार्थ स्वार्थ करते हिल्लाहुन स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ करते हिल्लाहुन स्वार्थ स्वार्

न्यादेका रकाथा स्त्र ?

তার এক মহিন্দান তালৈর পোঞ নিক্ষেন ভবনাথ ঃ জামতলার আলো ঘুরতে —জাটলা ব্যথি ?

অমতিপরে হাতে সংঠম কাংধ খাড়ি অওল এন্দে বোরাকে উঠল। চৌখাপি কাঁচের লাচন, ডিডারে ট্রেমি। বাড়ি ইরতি কাঁচা আন হড়াস করে চেকে দিয়ে বড়ি খালাস করে নিল। আম ছড়িয়ে পড়স। ভবনাথ হায় হার করে উঠাসন। পাকা আম খেতে দেবে না আর এবার। সেই বোল হওরা ইণ্ডক অপথাত চলেছে। কুয়োর করলে পড়ে গেল এক দকা কলেব ডিটারে গাঢ়ি সব জখন করে দিবে কলেব। যা বাকি ছিল মা্ডিয়ে শেষ করল আজ। উনাস, দেরী কিন্তু খুশী। জাকে বলছো, সরবে কোটো এবারে ছোউইট। ঠাকুরণো বাছি এসেছে এন্দিনের মধ্যে পাতে একট, কাস্কুন্দি পদল না। বউ সরবে কোটা বলে বলে থাখি তো মাধার কিটকি নাড়িয়ে দিল। গাছের কাচা আম প্রাণ ধরে পাড়তে পার-ছিলাম না, আর ভোমার ভাসনুরও তাহলে রাজ রাথতেন না। কালবৈশাখী গেড়েবেড়ে দিয়ে

পাথপাথালির ভাকে স্কাল হয়। বেলা বাড়ে কাজকমের মধ্যে পাথিব ভাক কৈ আর শ্লুমতে যাবে। এক রক্ষের ভাক কানে কিন্তু চুক্রেই—এ ভাক বড় বেশি আজকাল। ছেলে-প্লেরা পাথিব সংগ্য হবেহ, সার মিলিয়ে অন্তর্বা করে : বউ সরবে কোট, বউ সার্বে কোটা। ভালপাতার মধ্যে ভালকা থেকে গ্রহণবউদের পাথি মনে কার্যে কিছে : আনের গাতি বেশা-বড় হয়েছে, সরবে-কোটার স্বায় এখন। আনে পাক ধরকে এর পরে আর

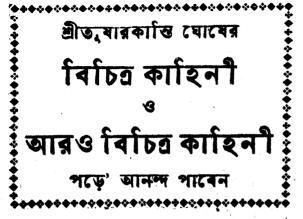
বিকালের দিকে রেজই আকাশে ছেডা রোঘের আনাগোনা। হেঘ জমজন্মটে হয়ে চারি-দিক অ'াধার করে তোগে। ঝড় হয়, বালিট হয়। ক'ল আম পড়ে জামর ল পড়ে ডাই হয় ত্লায়। কলাবাগানে **এক**টা ভাষ**্ড** পাতা নেই শতক্তিল হয়ে ডাটোর গারে ুাকিডার ফালির মতন এডে। শিলাব্দিট হল এর্বাদন—জলের মধ্যে ছাটোছাটি করে নেয়েগালে। শিল কডোক্ষে। হাতে রাখাত भारत ना हाल हिम हास जारम। कुछिन्। মুখে ফলে, আর নয়তো আঁচলের কাপডে রাখে। একদিন এর মধ্যে বভ বেশ জোরালো রকম ঝড হ'ল দেশর বলাগাছ ও সংগারিগাছ ফেলে গেল। চলক্ষেত্র এই। সারা দিনমান কড়া রোদ, আপ্রনের হব্রা-সম্ব্যার নাথে মাঝে মাঝে ব্রণিট-বারাস। আর সকাল হতে া হ'তে পোড়া পাথি গাছে গাছে চেণ্ডিরে মন্ত্রেঃ বউ সর্বে কোট, বউ সর্বে কোট।

ৰাডি বাড়ি ক্ষুক কুটছে, কাস্ক্ৰি বানাকে। এ-ও এক পরব। এক 📶 সকালে বাসি কপ্রস্কাপ্ত ছেডে গ্রাস ওলাসর জল ছিটিটে হোল আনা সাংগ্র हात होत्रकम अपना कुल्हीन्तन कारक हा कि. भारत अर्थना। दर्जानीत होसाम्सर्वित ম্ল-কারি**গ্র, বলা যায়। অল**কা-বট পান भिक्क-काँठ काँठ बाडा **अवत्य ला**उँहेव शहर ত্রংগিশী এলে দিক্তেন। কাচাআম চাকা हाका करत रकरहे अर्थित स्कटन **डिमा**म अर्थ थागाय करत निरंश कालन। नत्रास (कार्ष হয়ে গেল। তো আম কোটা এবারে। আরুর সব জিনিসপর বিনো বহে বয়ে আনছে। ভলানবরণ নতন তে'তল বাচি বের করে ভাতে করে রেখেছে সেই তে'তলের ভাত একটা। বেটে সাইজের ছোট ছোট কাসানিক ঘট কমোরেরা এই মরণামে গড়ে তাই গোটা ত্যাধেকৈ। হশদেগ ড়ে। ক কাগ ড়ে।। পাথরের খোরা পাথরের থালা পিত্রফার কডাই, পিতলের কলাসতে জল। বওয়া-বাঁয়র কাজাটা বিনো পাবে ভাল। তে'কিখালের চালের নিচে এই চারজন— বাইরের কেউ না উঠে পড়ে দেখো। অনাচার লাগবে। তেখন অবস্থায় কাস্মান্দ, বিধবা কি সাভিক শোকের পাতে দেওয়া হারে না।

উমাসান্দরী এক হাতে বানক্ষেন তাব তিনজনে জোগাভ দিকে। চেপকশালের উন্নে জল ফুটিয়ে দিল। ফটেন্ড জলে সরবে গুলে প্রিমাণ মাজা হলাদগণায়ো ও লংকাগণুড়ো মিশিয়ে ঝালকাস্ট্রনির। তার সংগে কোট আম মিশাল দিলেন-হল আমকাস্থিন। প্রেশ তার সংস্থা তে^ক্ল চৌকে দিয়ে তে°তুল কাস্থিদ। মুখে বলজি আর চট করে অমীন হয়ে গেল—অত সোজ: নয়। **উপক**রণের কল্লার্কাশ এবং মাখার কায়দা-কৌশলের উপর কাস্সান্দর ভালমন্দ। সৰ হাতে কাস্মান্দ উত্ত**্না। এ বা**বাস প্রবাডির বড় গিলির নু আছে. মাথা কাস্ত্রনিদ সকলে তারিপ করে থায়। বাজনে নিশালে একেবারে নতন স্বান। আলকাস্থি আম-কাস্থি বৈশি দিন থাকে না, ছাতা ধরে বাবে। ভেত্তলকাস্ট্রন ধীরে সাম্পে অনেক দিন ধরে খাওয়া চলবে, আত্মীয়-কুটাম্ব বাড়ি হাবে। আমকাস্থান্দ ও তে'তুলকাস্থাল বড়গিলিল ঠেসেগ্রেস কয়েকটা ঘটে ভরলেন। বললেন সিকেয় ভূলেপেছে রাখা এগুলো। আট-দশ দিন অন্তর রোদে দিতে হবে, খেয়াল থাকে মেন। কাসঃন্দি ঠিক রাথা চাটিখানি কথা নয়।

কাস্থিদ হচ্ছে দেখে নিমি-পণ্টি ভালা নিম শাক তুলতে বেরিরেছিল। খাটে খাটে একরাশ ভটিশাক তুলে ফিনল। শাক-তেল-শাক হবে। শাক-ভাতের সংগ্র থাক-তেল-শাক হবে। শাক-ভাতের সংগ্র

নতুন বাড়ির হৈজ ঠাকস্ন বিরাজবালা দেবনাথের কাছে নিয়ক্ত্র করতে একেছে। দেবনাথকে নয়, যে দ্বজন ব্যক্তপাজ নিয়ে এক্সেড্ন তালেয়। বলজেন, আমার ওখানে রেক্ত্রেড্র থাবেন ওবা। আমি তো চিনি



লৈ ছুলি ফল-করে লাভ ঠাকুরংগা। নেবলাল্ল হেনে ব্যেলন, ওলের ভাগি। ন্যুলল, আরু জন্মেরাই বাদ গড়ে গোলাম

আছ তো ক্রতিয়াস অবণি—বাদ কেন পড়বে ভাই। ও'দের ডাড়াভাড়ি—কবে রওন। হয়ে গড়েন—

দেবনাথ বলালেন, প্রশা হাবে। বাংলা-দেশের এ রক্ম গা-গ্রাম দেখিনি কখনো। বলামা, করেকটা দিন থেকে যাও তথে। নরতো তালোই চলে যেও!

মেজটাকর্ন ধরে পড়লেন: পরণ্ নর, আরও একটা দিন থেকে যান। যাবেন ভরশু। কাল দ্পুরে একজনে থাবেন, আর একজনে প্রশু। খাওয়া-শওয়া স্বার করে ভার পরে পরশু। উলো যেতে পারেন ভারার অসবিধে নেই।

দেবনাথ বলেন, প্রশ্ন কেন আবার? কলেই একসংখ্যা দুজনার হয়ে যাক না।

উ'হ্—বলে ঠাকরশন ঘাড় নেড়ে দিলেন ত কেন হবে? এনেছ অবিশ্যি তোমার নিজের কাজে, আমি ফ্কিডালে দটি বামানুন পেয়ে গোলাম। পেয়েছি তো দু দিনের দায় সেরে নেবো। একস্থেগ খাইয়ে দিলে । এক দিনেরই কাজ হবে আমার।

দেবনাথের গোলমাল শাগছে। বলংলন, ব্যানতটা কি খালে বলো বউঠান।

এই বোশেষ মাস জুড়ে ব্রাহ্মন-সেরা।
নিত্রি দিন একটা করে তিরিশ দিনে
তিরিশটা। এত বাননে, সাই কোথা বলো
দিক। হতছাড়া গারে ধান্চালের আকাল
নয়, বাশুনের আকাল। তিন ঘর আছেন
ভারা কুড়িয়ে-বাড়িয়ে কত আর হবেন।
সেই খলেনেড়ে গ্রুডাঃ, রাজনিপার
অবাধ নেরুতর পাঠিয়ে হাতে-পারে ধরে
দ্বান ক্ষিণা কর্ল করে আনতে হয়। না
এনে উপায় নেই ঠাকুরপো, সংকর্প নির্বাহ
ব্যান করে হোক চালিয়ে যেতে হবে।

দেবনাথ বসিমে দিলেন একেবারে ও বরকদন্যজর তে। বামুনু ন্য় বউঠান। একজন ছব্রি আর একজন গোয়ালা।

ঠাকব্ন সভূমিভাত। তারপ্র বললৈন, ভূমি মুসকরা কঞ্ছ ঠাকুরপো। লন ক্র-ভিলেন, গলায় তথন এই মোটা সৈতে দেখেছি।

পৈতে তো আনাদের কাষশ্বরাও কত জায়গায় নিজে। নাখামশায়গাও পৈতে ধারণ করেন। তাই বাল বামান হয়ে গেল নাকি? হয়তো ভাল। তেমন বামান মানে তিরিদ কৈন, তিনশজনকে ধরে ধরে খাওয়াও না।

বিরাজনালা সাতি বিপাদ প্রভাছন।
বৈশাখী ভাজনের রাজাণ জোটানো দিনকে
কিন মুশ্রকিল হয়ে উঠছে। হালের ছোকেলা
ইসকুল কলেজে পড়াছ—শোনা যায়, চাপানারে শহরের হোটেলে চুকে মুরণি মারে,
কিম্তু রাজাণ-ভোজনের নিম্মণন রকায় গররাজি তারা—ভোজনালেত হাত পেতে দ্বৈজানা দিক্ষণা নিড়ে ঘোর আপতি। ভোজন
অবশা মেজঠাকর্নের বাড়িতে পোলাভ
কালিয়া নয়, সাণামটো ভাল-চকড়ি-ভাতা
বৈধ্বাবালিতে মানুষ পুণ্যের লোভ মোল-

আন্। আছে, কিন্তু পরচার উলোটানি। ভা সে গা-ই হোক, এই সোনাখড়ি গানের তিন রামাণ ব্যাড়তে উপবীতধারী যুজগালি আছেন, স্বাইকে এক একদিন করে খেনে বেতে হয়। আপত্তি করলে ঠাকরনে পা জড়িরে ধরবেল—একফোটা বালদেরও শা ধরতে বাধা নেই। বয়স কম হঙ্গেও রক্ষণো কেউ খাটো হায় না-কেউটে দাপ বাতা হলেও প্রেদেশ্রর বিষ থাকে। ঠাকর নের হাত এ-তাবত এডাতে পার্রেন কেউ--উহু, একবার কেবল, আনল ভটচাজের नाभ न्यातिक ७७७।क श्रमातित त्यना। दाकि হয়ে গিয়ে দিনের দিন ভটচাজমশায় শা খলে বসলেন। কেন. কি ব ভাতে? জন্ব ইয়েছে কাল রায়ে, নরভো কেন আর খাব নাবলো। হাচিত্তো ফিংবছর। কিন্তু ফিবছর আর এ বছরে ডফাত আছে, ছানেন মেজঠাকগুন। অব্যক্তপের ব**িড় অলা**চার চলবে ন। সম্প্রতি কথা উঠেছ-ম্বারিক ঠাকুর হয়তো বা তার মধ্যে গিয়ে পড়েছেন। বিরাজবালাও সহজে ছাড়ার'পার নন্দেপ করে শ্বারিকের পায়ের উপর আছডে প্রভালন : কি করি এখন ঠারুরমশায় ? আপ-নাব কথা পেষে অনা কাউকে নেমণ্ডল কর: স্থান-বত পণ্ড হয়ে যাখে। একহাতে দ্যারিকের পা জাতিয়ে রয়েছেন অনা হাত ্রালয়ে ভাল করে আন্দার্জনিছেন। ঈধং গ্ৰাম বলে ঠোক-ইতেও পাৰে জাৰ। ্ররপরে ম্বারিক ভটচাজ 'গুঠো মা' বলে হাত ধরে তলে দিলেন, তথন আর সদেবং রইল না। জারেট বটে, ঠাকর ছাতো ধরেন नि। तीना प्रक्षास्ति धरह स्थए स्मिप्तन কাজ সমাধা হল। কিন্তু মনে মনে নেজ-ঠাকরান শাসিয়ে গেলেন : ছাডছি নে

গৈকুর। করে বাস বিছানায় ক্রিন প্রত্থ থাকতে পারে। দেখি। বেলেশ্থ শেষ হতে এখনো বাইশ দিন বাক-চোজান না বাস ক্রায়া বি

তক্কে তক্কে রইলেন, যাছে বাল কৈছি পা জড়ির পড়বেন। কিচ্ছু কালনায় পাওয়া গোল না. জনাবিকারে পারিক প্রারা গোপেন বোপোগের ভিতরেই। আটু তারিশ্ব অস্থ্য করেছিল—তার পার্যানাটা আনে সেরে রাখলেই জালন সেই বছর অন্তন্ত ফারি দিতে পারতেন না।

বাশ দ্বীন্ চকোনি ভোজনে ধরে সাশ্বনা দিয়ে বগলেন, আর চারটে-পাচনী বছর পরে অস্থিয়া থাকরে না কট্যা; প্রায়ের ভিতর থেকেই বিশ্বর পারে।

আঙ্কের বর গ্রে হিচাব করছেন হ আমানের হার আল অভুল, ভটচাজনভির রম্মা নিম্মু জান গোবরা, আর চাট্যুজানের লামাপাদ এতগ্রেশার উপান্যন হয়ে বালে। ধর্মস্বাটা আনকোনা রাজাণ গাঁরের মানে। ভারপ্রেও হা নারাই থাকদা, এত গ্রাম্ গ্রেড হবে না, শ্যু এক রাজিবপার গ্রেডই হয়ে বাবে।

বিরাজবালা কিম্তু ভরঙ্গা পান না। জন্ম মেমন ছয়টি পড়ছে, খরচাও এর মাধ্য কত্পালো হবে কে জানে। ঐ স্বাধিক ভট্টাজের মাটো! বছস খোলাবত কম ধ্যা না দানি ঠাকুর—আরও প্রচিটা বছর ভূমি নিজে টিকে থাকবে ভো বটে।

রাজিবপুরে বাইকির গ্রাম, বিস্তর ঘর রাজ্যপার বস্তি। হলে হবে কি—বৈশাধ নাস সেখানেও, এবং নিত্যাদ্দের এছন্দ্র সেবী জনআন্টেক অন্ততঃ আজেন বিরাধ-বালার মতন। তার হাধ্য আবার চৌধ্রী-

প্রকাশিত হয়েছে

নিমাই ভট্টাচার্যের

োন্যাণ্টিক শায়রীর মতোই প্রেমের উপন্যাস

শেষ পারানির কড়ি

এই উপন্যাসের কাহিনী ও তার বিন্যাস এমনই এক অপর্ব অভিনবহে ভরা, যার অন্পুম আবেদন মনে মিদ্টি-মধ্র এক আবেদ রেখে যায় । ৭০০০

জেমস হেডলী চেজ

অদ্বিতীয় এবং অভিনব এক শ্রেষ্ঠ রহস্যোপন্যাস

এখানে জিঘাংসা

স্ট্রিক্ট্লি ফর ক্যাশ/ভাষান্তর**ঃ মনোজত লাহিড়ী ॥ ১**৪٠০০

প্রকাশক প্রপটে/পরিবেশক কথা ও কাছিলী, ১০ বণিকম চাট্রাক্তা স্থাটি-১২

n fally self strategy **भा. करियाक अवस्त्र स्वा**वित करह स्ट क्रिक द्वाक्तात क्याक्त। क्रीकृति क्र আৰু সম্মান্তি যোৱ বাল্লাপালি। ইনি আৰু ক্ষোছ খণ্ডালেন তো নিখাত টুনি ক্ষাল প্ৰালাচিংডি খাওয়াছেন ইনি পায়েস **খন্ধাদান তো উনি দই-রসগোলা।** প্রতি-

ব্যেগিতার দক্ষিণার বেডে বাচ্চে-দ্ আনা रभएक क्रेडाक डेंडेएठ होकता त्मांट्र त्माट्डा बाह्य सका सिएए जानिकाद्वामी कान इच-ভাগা বামুন গ্রীক্ষের চড়া রোদের যথ্যে 🔫 ক্রোশ পথ ঠেপিয়ের সোনাখড়ি অর্বাধ যেতে হাতে ?

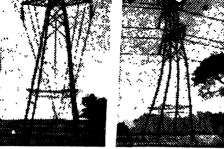
এই তো অবन्धा। দেবনাথের কথা শ্বনে শেকোঠাকর্ম কিম হয়ে আছেন। यत्रकामान मृत्यां भूजाक शाम छव-देशाए সংস্তৃত সাজ্যকার বামান নয়। ছবন্ত লোকের

তুল চেপে ধরার মতন তব্ একবার বললেন, गंजकदा दक्दा ना शकुबट्गी कर्छ करत्र जारतीष्ट्र व्यक्ति-

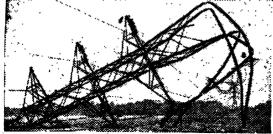
দেবনাথ বৃদ্দেনন, মিথ্যে বজে ভোমার প্রাণ্য বরবাদ করব, তাই কি ভাল

আছো, কা জাত আমিই ওদেয় জিজ্ঞাসা করব--বলে আশাভগোর আঘারে भिजातिकत्न भूष थितिया हता शास्त्रम्।

তিক সাজ-সরঞ্জাম



ব্যবস্থাই বানচাল





লোড-শেডিংয়ের ফলে আপনার তুর্ভোগ যেখানে মাত্র কয়েক ঘণ্টার, দেখানে এ ধরনের উৎপাতেরু দরুন আপনার ভোগান্তি কয়েক সপ্তাহ ধরে চলতে পারে। বিত্যাৎ পর্যতের যন্ত্রপাতি দেশ ও দশের সম্পদ। এই সম্পদ রক্ষায় সচেষ্ট হোন। নগদ পুরস্কার ছাড়াও উন্নত বিচ্যাৎ ব্যবস্থা চালু রাখতে সাহায্য করুন।

শশ্ভিমৰঙ্গ ৰাজ্য বিস্মৃত্



জাতীয় সমপদ রক্ষায় সাহায্য করুনু



ভরপে সাহিত্যিকদের সাহাজ্যের আহ্নাল চ নিঃ ভাং ৰণ্য-সাহিত্য সংক্রেলন-এর বার্।পূসী অধিবেশনে শ্রীভ্যাবলাতির ভাষণ

গত ২৫ ও ২৬ আগুছট পাল বারাণসীতে নিথিল ভারত বংগু সাহিত। সংখ্যলন-এর পরিচালক পরিষদের একটি অধিবেশন হায়ে গেছে। সমেলন-এর সভা-পতি সাহিত্যিক ও সাংবাদিক শ্রীত্যার-কান্ডি ঘোষ এই অধিবেশনে উদ্বোধনী ভাষণ দেন। আজকের দিনে তর্ণ সাহিত্য-সাধকণণ যে কঠিন স্বস্থার স্ক্র্যান হয়েছেন, গভীর মুমুতার সংগে তিনি সেলিক সংখিলাণ্ট সকলের দ্রাণ্ট আক্ষাল করে বলেন যে : কার্মন খার্টাতর স্কন্য সবচেয়ে বেশ্চি অস্ত্রিধার সম্মুখীন হফেছেন নতুন সাহিত্যিকরা। সংবাদপর-গালি তথা সাংগ্ৰহিক বা ছাসিক পত্ৰিকা-গালি এই তর্ণ লেখকগণকে ইচ্ছে থাকা সংহত যথেষ্ট সাহাছে। বরতে পার্ছে না এখচ এই তর্ণ প্রতিভার বিকাশ না ঘটলে আলাদের ভাষা ও স্মতিতার উল্লেখ ^{হন্তা}টি ব্যাহত হয়ে প্রতে ভট জীফের बाश्ला आर्रिटारक अर्थे अध्कर्ण ह्यातक तथा। ক্রবার জন। আহলন জ্বান্তে সলেন গ্রে স্মাহিতাকে ঘারা ভালোবাসেন এমন অর্থা-সংগতিসম্পন বারিবগোর উচিত ভর্ণ লেখকদের সাহায়া করা ও উৎসাহ দান করা, যাতে ভাদের স্মাহত। প্রতিভাব ধ্যারণ হতে পারে এবং মানব কল্যানের কাজে তা লাগতে পাবে।... তবিটে সংকটেন शास्त्र व्यक्ति आधिसारक साधारक शास्त्रसा এটি ছিল শ্রীযোষের প্রথম প্রস্তার। উপস্থিত স্কলেই প্রস্তাবটি সমর্থন করেন।

শিলভাঁর প্রশ্ভাবে খ্রীথোষ বলেন ছে ।
বাংলা সাহিত্যের সে-সমন্ত পুরনো অল্ট
ক্রোন পাৃহত্তবাদি আছে সেগ্ল উন্ধার
করে যেন সেগালের পনেরমান্তবের বারশ্র।
করা হয়। এ প্রশুতারটিও স্থাবের সাল্লাভি
করে। তারপর তিনি ত্রি সাল্লাভি
ক্রোন্তরের কর্যা আলোচনা করে বলেন
বে, ব্টেনে হো সব বাঙালারা বর্তমানে
রাহেছেন ভারা স্বলেই নানা প্রকার কাজকর্মে লিপ্ত। কিন্তু তারই মধ্যে তারা

হে ক্ল নিষ্ঠার সংখ্য বৰণ স্চাহ্তা ও সংস্কৃতির সেবা করে চলেছেন তা স্থিতি প্রধাননায

নিখিল ভারত বধ্ব সাহিত্য সংমোলন-এর এই বারাণস্থী জ্বাধ্বেশনের আহ্বায়ক ব্যোগ্যক্ষে ভটাচার্য অধিবেশনে আগত গর্ভনিং বড়ির সলস্বাংদর স্বাগত জালান। मारे मित्रत करे अधितमाता प्रकाशीए 6 করেন শ্রীযোষ। বিশারা সরকারের আমন্ত্রে সাড়া দিয়ে সংশ্লেশনের বাহিক অধিবেশন অল্যামী ২৬, ২৭ ও ২৮ ডিসেম্বর বিশ্বা রাক্ষেই অনুষ্ঠিত ছরে বলে সিখ্যানত লৈওয়া হয়েছে। বাংলার বাইরে ছে সব বাঙালারা রয়েছেন তাদের সাংস্কৃতিক ও অংশনৈতিক জীবনকে সাফলামন্তিত করে ভলবার জনা স্বাক্তিয় ব্যে**চ্ছা** গতুল করা <u>এ</u>বে वर्ष जिल्हा है तिस्या है हो। क्लक्ष्णा एवं एक দাক্ষণারঞ্জন বস্তু, তমকাক থেকে বারিন্দ্র-নাৰায়ণ রায়, কক্ষ্মো-এর দিবজেন্দ্রনাথ সান্যাল, পাটনার বস্তক্ষার বল্যোগাধ্যায় এবং निश्चीत महीम्बलाम ह्यास अस्थालस्त्रत বারাণসী অধিবেশনে হোগদান করে তাকে সাফলামদিউত করে তেলেন। প্রচীন ভাবতের শিক্ষা, সংস্কৃতি ও ঐতিহোর মার্ড প্রতীক মতামহোপাধ্যার <u>প্রোপী</u>াথ কবিবাজ মহোদয় বৃহ্কাল হাবং কাশ্ বাসী। ইচ্ছে থাকা সত্তেও বাধকা হেত্ তিনি বারিপতভাবে স্ফোলনে হোগদান করতে পারেন নি। তবে এই **উপল**েচ লচিত তাঁর একটি নিষ্কা পঞ্চানন চটেটা-পাদ্যায় এই আধিবেশনে পাঠ কলেন।

য়ানিভালি**টি ইনল্টিটিউটের** ৮৪ত**র** প্রতিত্তা বাধিকী

সামাদের দেশে সামাজিক, রাজনৈতিক, শিক্ষাণের ও সংস্কৃতিক গিবতানের ইতিচালে কলকাত। মুনিজাসিটি ইনস্টিটিটটের একটি বিশিন্ত ভূমিক। স্বজনস্বাক্ত। কলেজ স্কোরারের নিকটে এই
সংস্থার প্রেক্ষাগাহটি বজার ভূমিকার কথনে।
দেখা গোড় সামিতা স্মাট বাংক্ষাচানী
বিশ্বক্রি ব্লবীন্দ্রনাথ, জসরাজের কথালিত্থী
শরংচন্দ্র উট্নোধ্যায় কিন্দ্র। মুন্টোগ্র

গেছে সার আশুভাষ নেতাজী সাভারbeg, गाञ्चाश्रामान छ: विधानbeg, छ: बाक्षाक्रयःत এম এন রাম পশ্ভিত জওগ্রলাল বা ভি কে क्षण्यानारक। तक कशाश वना हाल हा करे প্রেক্ষাগ্র বিগত কয়েক মুগ ধার্ট প্রভাক যাতে সেই কালের প্রেণ্ঠ কঠেশ্বর ধর্মনত ছবোছে। শিল্পী জাতিতা সংক্ষাতি ত সামাজিক চেতনায় মানায্তক উপাশ্ব করবার খনেক প্রচেগ্নির ইতিহাসই এর চার দেওরালের মধ্যে পুণম অব্বরিত কুরেছে। াছাড়া অসংখ্য সাহিত্য-সভা, নভ্য-গণিত তান জ্যোনের আয়োজনও এই প্রৈক্ষাগ্রেক আমরা হতে দেখেছি। বিগত ৩১ আরু-ট এই সংস্থার ৮৪তম প্রতিন্ঠা বার্ষিকীর উপেরাধন করেন রাজেরে অর্থন্নকরী শংকর খোষ। কলকাতা সাইকোটের পধান বিচাল-পতি শংকরপ্রসাদ মির এই অন্তেঠানে ভারি ভাষণে সমগ্ৰ জাশির স্বাথে ইন্ডালাগ্রগত ছার্চ সামাজকে সংহাত ও সংগঠিত করবার জনা দেশবাসীর নিকট আ**বেদন জান**ান। প্রিচয়বৃশ্য মধ্যমিকা প্রবিদর সঞ্চাপত্তি অধ্যাপত সভোগদুয়োজন চটোপাধ্যায় 🕬 অন গোনের প্রধান অতিথি হিসেবে তার ভাবৰে শিক্ষাকে ভাবিনয়াখা করার প্রচেটায় ্নিভাসিটি ইনস্টিউট ভার প্রথায়েলা দারির পালন করবে বলৈ আশা প্রকাশ

কলকাতার ভাতিভয়ান মিউজিয়ম'-এব স্থাদিন

কলকাতার 'ইণিডয়ান মিউলিয়ম' ভাষাঞ এই শ্রেণীর সংস্থাগর্লির মধ্যে প্রাচীনতা ও সংগ্রহ-বৈচিয়ে অন্যতম শ্রেষ্ঠ। **খি**ল্ল পাণাতত্ব ও নাতত্ত্ব এই তিনটি শাঝায় বিভক্ত ই স্বত্ত সংখ্যা স্বাধানতার সময় পর্যত ভারতের বিভিন্ন অপল থেকে এমন কি ভারতের বাইছে থেকেও প্রাচীন তথা সংশক্তে আয়হী বাহিত্যগরে আকুল্ট করে এ**ল্ডেছ। এটা** হণাধাভাবেই সাল্খারের সাবাশা মাুগ ছিল। নিতানতুন দুণ্টকা যুস্তুর সংগ্রতে ও সে-প্রের म्बद्धकान क्रान्ट्रश्या याम्द्रीयक शाक्क रशाहि अभियार एक यह यह सहस्र अरम्बाग्रीमा ब्रह्म অনাত্য এই হিসেবে প্রীকৃতি জাত कार्राष्ट्रल । किन्हें कार्यानरात अह स्थान

্র ক্রেন্ট্র সরকারের প্রতাক্ত পরিচালনাধীন धारे महम्भाषित गामिन माता हत अवर विकास शिक्कानीं अक्ट्रा , नात्न अर्थ-अन्यर्देश भरमा काला नास्त्राहा ५५१२-१० কলকাতার ইণিভয়ান भाषक वस्त्रात বিভান্তর পরচপর বাবদ ১-৬ লক টাকা বেল্টার সাকারের নিকট থেকে লাভ प्रकृतिका । किंक अकरे जमस्त्र मित्राच শ্রমা**শ্রমাল বিভটিভারম**' লেরেছিল ২২-৫ লক্ষ क्रिका विकास सामग्राहे के जिए जिल्हा कि সংলহ-বৈচিত্যে এবং লোকজনের ত্রিলেবে কলকাভার মিউভিয়মটি অপেকা ্র করের হোট। এর প্রধান কারণ এই যে ী কাজধানীর মিউজিয়ুমের কম্চাবীরগের ्राप्तिक कार्य ক্টাকাতার মিউজিয়মের ক্যাচারীবরোব ভলনার অনেক বেশী। ১৯৭৩-৭৪ আর্থিক वश्यद्व फिल्ली भिक्किस्म अहिठाननात सना २०-७ मेक होका प्रश्नात कता इत्साइ धरः এই সময়ে কলকাতার মিউজিল্লমটির জনা বরান্দ হয়েছে মাত এগারো লক্ষ্ণ টাকা। '৭৩-৭৪-এ নতুন সংগ্রহের জন্য পেয়েছে তিন লক্ষ্ণ টাকা. আর কলকাতা মানু ৫৬,০০০ টাকা। এই ধরনের অনাচারের মধ্যে ব্রুত্র দ্রেগার বীজ নিহিত আছে বংলই কৃণ্টিবান ভারতীয় মাত্রেরই এ-সবের বিরাদেধ অবিলম্বে প্রতিবাদে সোচার হ ওয়া প্রযোজন।

সাহিত্যিক সরোজকুমারের স্মাতি-তপ্র

সরোজ সাহিতা পরিষদের উদ্যোগে সংগ্রতি ধ্বগতি সাহিত্যিক সরোজক্ষার রাঘ-টোধরেীর ৭৩তম জন্মতিথি পালন করা হয়। সভায় পৌরোহিত। করেন ডঃ প্রাপ-চন্দ্র চন্দু এবং প্রধান অতিথির আসন গ্রহণ করেন জর্নাপ্রয় নাট্যকার মন্মথ রায়। সভাগ উদ্বোধনী ভাষণে কবি-সাহিত্যিক প্রেমেন্দ্র মিত্র বলেন যে, স্রোজক্ষার ছিলেন একজন ঐতিহাবাহী শিল্পী, তাঁর বচনাই তাতে তিবঁজাবী করে রাখবে ৷ মনম্ম রায় তণার ভাষণে সবোজকুমারের জীবন ও সাহিত্যের নানা উল্লেখনীয় দিকের উপর তাঁর অভিয়ত ব্যক্ত করেন। সাহিত্যিক শিবরাম চক্রবত্ণী সরোজকুমারের সমুহত রচনা শীঘা প্রকাশ করার উপর জোর দেন। 'বাংলা সাহিতে। সরোজকুমার' শীর্ষক আলোচনার স্থপাত করেন লেখিকা মহাশ্বেতা দেবী। **ভঃ** হৰপ্ৰসাদ মিরুডঃ জেলতিম'র হোষ ও অসিত গৃংতত এই আলোচনায় অংশ গ্রহণ করেন।

न्'हि माहिका भूतन्कात

সরোজকুমারের ৭৩তম জল্মাতিথি
অন্তেটানে প্রণাতে কথাসাহিত্যিক গ্রীজ্যোতিরিক্ষু নন্দীকে তাঁর জনপ্রিয় উপন্যাস
প্রেমের চেয়ে বড় বচনার জন্য সরোজ
শাহিত্য পার-কার প্রদান করা হয়। এই
এক্ট অনুভানে নাটাকার অরান্ ম্থেশপার্যারকে মারীচ সংবাদ নাটকটি রচনা ও
কাদেশনার জন্য দেওরা লক্ষ্মণ বন্দেয়া-

পাধ্যার স্মৃতি পুরুকার'। দ্রিট প্রস্কারই
১৯৭৪ সালের জনা দেওরা হয়। প্রস্কার
দ্বিট বিতরণ করেন প্রেমেন্দ্র মিত্র।
জ্যোতিরিন্দু নন্দ্রী ও অরুণ মুখোপাধ্যার
তাদের সংক্ষিত ভারণে প্রস্কারের জন।
ধনাবাদ জ্ঞাপন করেন।

'शहबी' পরিকার উল্যোগে কবি সন্মেলন

করবী পাঁচকার উন্যোগে ১২নং ক্লপ্র রোড় দমদমে স্বত্তীত এক কবি
সম্মেলন হরে গেছে। এই স্মেলনে
দিগিগলুচন্দ্র বন্ধোণাধার, বিরল মুখোপানায়, কল্যান সাহা, বিমলেন্দ্র চক্রবতী
স্বাবাধ সাহা অনির্মণ্ড ভট্টাচার্য কিরণ
বাগচী সভাষ চক্রবতী প্রমান কবিগন
গোঁদের হব-রচিত কবিতা পাঠ করেন। এই
সম্মেলনে সভাপতিত্ব করেন প্রখ্যাত লেখক
মণি বাগচী।

श्रिक्तक्यात हेर्नाक्**रे**डिडे

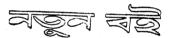
শিশিরকুমার ইনশিউটিউটের নাসিং ও ক্যাডেট বিভাগের ৩৪তম বাহিক সম্প্রতি পালিত ह्यास्त्र । अहे উৎসবের প্রধান অতিথি ভারত সেবাশ্রম সংগ্রেব ব্যামী নিখিলানক তার ভাষণে বলেন : 'বতমানে দেশের চারিনিকে যে বিশাংখলা চলছে তার কারণ ভারত তার সংস্কৃতি হারাচ্ছে। ভারতের সংক্রতি, ত্যাগ ভ ধ্যকৈ আজ আমরা নিভেরাই করে চলেছি। দেশকে আবার প্রোতন ময'াদায় ফিরিয়ে আনতে হবে। ভারতের শাংবত আদশ সকলংক আগামী দিনের মান ষকে শেখাতে হবে। তবেই শামরা উহাতি করতে পারবো। এদেশে অনেক মহামানব জন্মেছেন। তাঁদের আদেশে আমরা নিশ্চয়ই আবার বড হতে পার্বো।' অনুষ্ঠানের সভাপতি শ্ৰীত্যাৰকানিত ঘোষ বলেন • প্ৰশিল্পক্ষাৰ ইনসিটটিউট এমন একটি সংস্থা ঘাঁৱা দীঘ্কাল ধবে মান-ধের সেবা কবে আস্তে: এদের একটা সেবার মনোভাব রয়েছে 🕆 সংখ্যার সভাপতি সাধীর বসঃ টিউটের আদর্শ ও ঐতিহা ব্যাখ্যা করে नशक्कि॰ इ. कारन एका। इस्ताक्त्रास्त्र **अ**वसम्ब .ই**নস্টিটিটটে**টন প্ৰতিপোষক সাহিত্যিক-সাংবাদিক শীত্রাবকাদিত ঘোষের ৭৫ বংসর পদার্শপের জনা অভিনক্ষন জানানো হয়:

'খাসী' ভাষাৰ স্বকাৰী শ্ৰীকৃতি লাভের সম্ভাৰনা

'মেঘালয়' বাজ্যের পাঁচ লক্ষ্ণ মান্যের কথা ও লেখা ভাষা 'খাসীর জনা সরকারী ধবীকৃতি লাভের চেত্টা করা হচ্ছে বলে জানা গেছে। সাহিতা আফালেমী হে-কোনও ভাষার সরকাষী ধবীকৃতির জনা নিন্দর্প শতা আরোপ করেছেন: (১) গঠনের দিক খেকে ভাষাটি শব্যংস্পূর্ণ কিনা, অর্থাং তার নিজ্প্র লিপি ও ব্যাকর্ণ আছে কিনা, (২) বংগুল্ট সংখ্যক নরনারী ঐ কাষায় কথা বলেন কিনা এবং সাহিত্যের বাহন ছিসেবে

ভাষাটির উপযোগতা কতথান; (৩) ভাষা য়ে রাজ্যের সেই রাজ্য সরকার তার দ্বীকতি দিয়েছেন কিনা এবং কোনও বিদ্যু বিদ্যালয় কর্ত্ব সেই ভাষাটিকে একজ্ঞান শ্বীকৃতি দেওয়া হসেছে কিনা; (8) ভাষাত্রি ধারবেছিক ইতিহাস আছে কিনা (৫) ১ ভাষাটি কিন্তু সংখ্যক বাছির কথা ভাগা তাও বিবেচনা করে দেখতে হবে। খাসী ভাষা এ-সব কটি শভাই প্রথ করতে সহম বলে জানা গেছ। প্রসংগতঃ উল্লেখ করা বেতে পারে দে কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ই প্রথম খাসী ভাষার স্বীকৃতি দেন— ১৯১৯ সালো ন্থ-ইণ্টার্ণ হিল মুনিভা-সিটিও খাসী ভাষাকে প্ৰীকৃতি দিয়েছ বলে জানা গেল মেঘালয় বিধানসভাব স্পাকার ও খাস্বী ভাষার স্পরিচিত লেখক অধ্যাপক আর এস লিখ্যাদ খাসী ভাষাতে পার্ব ভারতের প্রাচীনতম ভারাগালির অনাত্ম বলে দাবী করেছেন। তিনি আশা প্রকাশ করেছেন যে নথ'-ইপ্টার' ফিল হানিভাঙ্গি শীঘাই খাসী ভাষাকে স্নাতকোত্তর পাঠা-স্চীর বাহন হিসেবে স্বীকৃতি দেবেন। বি-এ শ্রেণী পর্যান্ত এ ছাষাকে তারা পাৰেই প্ৰীকৃতি দিয়েছি**লেন। সা**হিত্য অংকাদেমী খাসী ভাষাকে অদ্র ভবিষয়ে <u>গ্রীকার করে নেবেন বলে অধ্যাপক</u> লিংলার কামা প্রশাস করেছেন।

—জরংকার,



পরবাসে (উপন্যাস)—শংকর মির। গোত্ম-ধারা ১০।১, জি টি রোড, হাওড়া-১। ছয় টাকা।

শ্রীশংকর মিল হ ্র কবি একাধিক কবিতা গাপ উপন্যাস, প্রবাধ গ্রনেথর লেখক। 'পরবাসে' শ্রী মতের সম্ভবত দ্বিতীয় উপ্নাল। **এই** উপ্নাসে লেখক কয়েকজন ধূৰক ধূৰতী_র প্রেম, তার মন'তত্ত্ এবং তার সর্বাবয়র জীবনকোন্দ্রক সাথ কতা নিয়ে কিছা বন্ধবা ধাখনে সভেন্ট। নায়ক রত্নাকর, তার জীবনে আসে প্রধানত দর্ঘট নারী—তীরু আর রিটা। তীরু বস্নাক্রের গভীর গোপন ভালবাসার মনে এক মুক্তি নীল পরিচল্ল আকাশ। রিটা তা নয়। তার আকর্ষণ দেহকে ভিত্তি করে আর এক ভালাসার জগত। এই 'দ্বর্মুখী ভালবাসার আকর্ষণ-বিকর্মণে আঙ্গে নায়ক-নায়িকার পাপ পূণা বোধ জীবন ও জীবলতিশারী বোধের দিক নিজ'নতা, না-পাওয়ার স্মৃতি হয়ত বা সবশেষে স্ক্রু রোমাণ্টিক রোম-ব্যনের দিক। রত্বাকরে_র অসহায় বেট্ধর পরিণতি, তীরঃর বৈবাহ, সম্তান-সম্ততির সংসার,—সমস্ত কিছ্মই যথার্থ লেথকের শৈলিপক ন্যায়বোধে নিয়ণিত। 'প্রবাসে' উপন্যাসটি শ্রীশংকর মিতের

বলিংঠ শিল্প-মানসিকভার পরিচায়ক নিঃসন্দেতে।

নিব,শার মনের জাকাশ (উপনাস)। গোরী
শংকর ভট্টাচার্য। রামারাণী প্রকাশ
ভবন, ১০৬।১, রাজা রামায়োহন
সবগা, কলকাতা-৯। ছ' টাকা।

শ্রীগোরীশংকর ভট্টাচার্য এখন একজন প্রতিষ্ঠিত কথাসাহি তাক। তাল পানব পায় মনের আকাশ' গ্রন্থটি বাস্তবিক অথে তীর পরিণত মন ও জীবন অভিজ্ঞতার দ্বাক্ষণ দেয়। শ্রীভট্টাচারের প্রান্নক অণ্ডল ও নিয়ে লেখা 'ইম্পাতের স্বাক্ষর' আম্বা পড়েছ, বাংলা সাহিত্যে তার একটা ম্বত্রু মুর্যাদা ম্বীকত হয়েছে 'নরপায় মনের আকাশ সেই শ্রমিক জীবন, পরিবেশ এবং ভারই মধ্যেকার এক অসহায় যাবতী নীপা রায়ের কাহিনী। এখানে **শ্রমিক**-জীবনের বিস্তৃত গ্রাপের থেকে লেখক বরং এক অসহায় ব্লিজা শ্মিক প্রিবেশে ব্লিগ্রা নারীর মনের খবর দিয়েছেন। সে-খবর শ্রমিক-জীবনের প্রেক্ষতেই দপ্পে বিদিৰত মাথেল মত স্তা ও স্পণ্ট হয়ে উঠেছে। উপন্যাসের আহ্নিক একটি দীর্ঘ পত্রে-সে প্রতিকেও লেখক কৌশলে অনা এক মগ্রজ প্রতিষ্ঠিত লোককে শেখা চিঠির মত করে উল্লেখ করেছেন। আঞ্চলিক জীবন ও চরত নিয়ে শ্রীভটাটার্য এ-উপন্যাসে যথেগ্ট দর্দী এ শিল্পী-জনোচিত সহদেয়তায় আংতরিক। নীপা ভাষা যাকে ভালবাসক ভার কাকার বংশ: আহিতাত এবং রোজিনিট্র করে বিয়েও করল, এই নীপা হায় আধানিক যাগ-যাত্ৰাকে প্রতাক্ষ করায়। প্রতিমক-কন্যা নীপা রায়ের জীবনে অনেক প্রুষ আসে! শেষে আমিতাভগ মত প্রিমকে পেয়েও সনাত্র ঐতিহো বুশ্বাদী নারী-আখ্যা সেখানেও অধংকর কান্তা দেখে। নীপা রাষ্ট্রিত স-লিট লেখকের পরিবত জবিন-উপ**ল**িধর क्रिक्टा:

ৰংগ-চিত্তে—লৈথক -- প্ৰ-ল-দেশপাণেড। প্ৰকাশক-প-ভ-কুলপাননী। পুণা বিদাপুণী গৃহ-প্ৰকাশন বিভাগ। ১৭৮৬ সদা শ্ব শেঠ। পুণা-পুণা--S১১০৩০। দম ২০ টাকা।

বহু মুখী প্রতিভাসংগল বিধাত মাবাঠী সাহিত্যিক 'প্-ল' (পুরুষেওম লক্ষ্যুণ দেশপাদেও) কয়েক বছর আগে প্রশাসম-বাংলাতে, বিধার করে শাহিত্যিকেতনে বেশ কছুকাল কাটান। উদ্দেশ্য ছিল বাংলা ভাষা কত করা, রবীশ্লন্য বাংলা সাহিত্য ও সংক্তি আরও ভালভাবে জানা।

প্রস্কারণে থাকে ফিবে এসে বন্দের প্রধান মাণ্ডাঠী দৈনিক মহারাণ্ট্র টাইমস'-এর রবিবাসবীয় সংখ্যায়—বংগ-চিচে নামে ২৪টি দীর্ঘ রচনা প্রকাশ করেন বংগ সংক্রি সাহিত্য ভাষা ও বাংগালাদৈর সন্ব্যাধ, নিজ্পব দুণ্টিভগানী দিয়ে বিচন্ত্র থক চিত্র ভূলে ধরেন এই প্রবেদধ-মালায়ে, ভার অনবদ্যা গটাইল ও হিউমাধ্র দিয়ে। এইসব লেখা এখন প্রব্ধিত ও পরিবৃতি আকারে তার নবতম পুশ্তকে প্রকাশত ছল, বিগত ১৫ই আগত। প্রকাশক—প্রা বিন্যাপ্রী গৃহ্ণ—এক বিদ্যালারের প্রকাশন বিভাগ ব্রায়। এই প্রকাশক বিদ্যালারের প্রকাশন বিভাগ ব্রায়। এই প্রকাশক বিদ্যালারের প্রকাশক ব্রায় ভ্রেব। তা এই বিদ্যালারের ক্রাপ্রকাশক ব্রায়ত ছবে। বিদ্যালারের ক্রাপ্রকাশক ব্রায়ত ছবে। বিদ্যালারের ক্রাপ্রকাশক ব্রায়ত ছবে। বিদ্যালারের ক্রাপ্রকাশক ব্রায়ত ছবে।

শাশ্তিনিকেতনে বাংলা সাছিত। চ্চান্ধালে স্থোগ পেলেই, প্র-ল ক্রমণ করছেন আনোপাশের গ্রামাঞ্চলে, অন্যানা কেলার কলবাডার। তার নানান সব অভিজ্ঞতা, বাঙগালী শীবন তিনি যেভাবে দেখেছেন সে সব সম্পন্ধ নানান খাটিনাট ছোটবড় সব বর্ণনা রয়েছে। প্র-ল নিজে প্রথম শেলার সংগতিভাগে সংগতিভাগের পালাকীতান, যাতা আউল গান ইত্যাদি সম্বাধ্যে থ্ব সমন্ধদারীর সংশ্যে আলোচনা করেছেন, যা পাঠকাদর মানুধ্য করবে।

প্-ল বেগা-চিত্রে মাধাঠী প্-ত্রকটি উৎসর্গ করেছেন তার বংশ্ব অমাত্রাজার পত্রিকাগোষ্ঠীর বোশবাই প্রতিনিধ সলিল ঘোষকে। নিজ্পর বাংলা হাতের লেখায় ব্রক্তরে উৎসর্গপত্রে প্-ল বংগানেন-প্রিয় বংশ্ব সলিল ঘোষকে শিন্ন আমার সংশ্ব লা থাকলে আমার জীবনে আমি কথনত বংগাভাছা ও বংগা সংস্কৃত্র সংগ্রা অভ্

র্ঘানষ্ঠ পরিচয় লাভ করতে পারভাম না। —প্:-ল'।

এই বইটি বাংলায় অনুবাদ হওয়া বাছনীয়।

সংকলন\পত্রিকা

ভাঙনের ভিঙা কিংবা ছবিবের চোখ (গাপে সংকলন)—কুক মাওল। প্রকাশ র একাল, ২৪, ইন্দু বংশাস রোভ, কিলকাতা—৩৭। পঢ়িটাকা।

বেশী বড় নয়, ছোট ছোট তেবোটি গ্রেপর সংকলন গ্রন্থ হল ক্ষা মন্ডল ওচিক ভাঙনের ডিঙা কিংবা ছবিলের চোথ[া] প্রতিষ্ঠা চেহেছিল জীবনে যে বাছবিলা সেই রাজীবদার অণ্ডিম পরিবাত লেখক দৈথিয়েছেন খামের ওয়ার খেরে আত্মহননে। অ'দত দ্ব সংকটকে কাব্যময় ভাষা ও উপমা প্রয়োগ করে চিত্রকল্পকে যথেক বাবহার করে আলোচা লেখক নাম্বলপত্তি উপতার দিয়েছেন আমাদের। ততের দি**কে** ঝেকৈ বেশী। গদ্যে 'সাথে' ব্যবহার কল্পে গদাকে অমাজিতি করেছেন বলে পড়তে খারাপ লাগে। তব্ বত্মান গণপ**লেখকের** যে কলপনাশক্তি ও কাব্যিক মন আছে তা তবি বচনার প্রতিগ্রাতি বলেই অন্য কয়েকটি বাচনা বেশ ভাল লাগে:

্প্রকাশিত হয়েছে

রেভারেন্ড ফাদার জেম্প্লভের

CALCUTTA AND ITS NEIGHBOURHOOD

History of Calcutta and its people from 1690-1857
কলকাতা ও তার পাশর্বতী অঞ্চলের ইতিবৃত্ত এবং জনজাবনের চিত্তাকর্মক ন কাহিনীর তথ্যনিত্ব ইতিহাস। কলকাতা যিষয়ক আধ্নিক চিত্তা, বিটিশ্ল অমলের শিক্ষা ব্যবস্থা, পাদ্রী লভের জীবনী ও তার রচনাবলীর প্লীসহ শ্রীশংকর সেনগ্রেত্র দীর্ঘ ভূমিকা সম্বিত তথ্যসমুখ্য চম্বের গ্রহণ। ৩ই

— রেডা জেম্প্ লাডের অন্য বই — 500 Questions on the subjects requiring investigation in the social condition of the people of India

ডঃ মহাদেবপ্রসাদ সাহা সংপাদিত, শংকর সেনগ্রেতর ভূমিকা। দ্বীনৰখ্যু বিত্তর 'নীলদপ্রি' নাটকের ইংরেজা তভ্যা

> Nil Durpan or the Indigo planting Mirror Fd. & Pub. by Rev. J. Long

শাংকর সেনগ্রেক সংপাদিত ও শতাধিক প্টো ভূমিকা সাবাগত। নাটক সংপক্তি মামলার সুমপ্রে ধারাবিবরণী ও বহু জ্ঞাত্বা তথো সম্মে গ্রন্থ। ২৫-

— জন্মন্য বাংলা বই — ডঃ ধাঁৱেন্দ্ৰনাথ সাহার — কাড়খ প্টা লোকজাবার গালে ৬ ডঃ প্রশাস্তকুমার দাশগ্রেত্র — গাঁজগোঁবিন্দ ও জয়লের গোজী ১২ শুপ্তর সেনগা্তের — বাজলার ব্য আলি লেখিরাছি ২০ সুনীল চকুবভাঁরি — লোকায়ত বাংলা ৮

Dr. Mahapatra's The Folk Cults of Bengal 25.00 Dr. Sur's Dynamics of Synthesis in Hindu Culture 10.00 Sengupta's (Ed) The Patas and the Patuas of Bengal 25.00

वैक्षिशास शार्वासाक मस्य ०. विशिषः होष्टितान ग्रेषे

WISSERIA CONTROL TO STATE OF THE PARTY OF TH

(8)

আজিতবাবু লিখেছেন— '১৯০৮
শাদ্টাব্দের ২২শে ফেরুয়ারি তারিখে শরহচন্দ্র ক'হার বালাবংশ বিভৃতিভূষণ ভটুকে
একখানি পরে লিখিয়াছিলেন—বুনিতে পাারক্রে আন্তর্মীর বন্ধু-বন্ধিব সকলেরই আমি
দ্বাদ্র পায়।.....জানি বিশ্বাসের কোন
দ্বাদ্য আমি রাখি নাই। চিরপ্রবাসী, দ্বেথা
দ্বাদ্য আমি রাখি নাই। চিরপ্রবাসী, দ্বেথা
দ্বাদ্য ক্রি আচার আহারো সম্মুথে
দ্বাদ্র হইকে শারিব না।....সার্
সাজিতেছি না ভাই—এত প্রিকল জীবনে
সাম্ব্রের ভান খাটিবে না।

শারংচন্দের নিজের লেখা চিঠি থেকে
আশির্কবাব এই যে অংশটা উদ্ধাত করেছেন এই উদ্ধাত অংশটা নিয়ে আলোচনা
করবাব আলো, এই উদ্ধাতির আগের ও
শবের কিছা কিছা সহ চিঠিটা হল এইবা্প-শব্ম কলালোর শান্টভারা

.....এমনি অদুংট আমার যে এওদিন বোশহয় মাস চারেক কলিকাতায় থাকিয়াও তেমাদের দেখিতে পাইলাম না।.....এখন মনে হইতেছে যে কোন্দিন কোন কালেও দেখা হইবে কিনা! একবার আশুরে সহিত ও একবার একই তোমাদের কভিত্ত ঘাইতে উদাত চইয়াছিলাম, কিন্তু বিরেকম লংজা লগজা কবিতে লাগল—আনু গেলাম না।

প'্ট্ বড় হতভাগা জীয়ন আমার।
এমন অথাহান নিক্ষল নীরস দিন মাস ক
বংসরের সমন্টি যে কেন গহিয়া বেড়াই তিছি
কৈছাতেই ভাবির। পাই না। ভগরান বাক্ষ বাদ দিয়াছিলেন, একট্ সবে দি দিলেট ত প্রারভিলেন, একট্ সবে দি ভিলেট ত প্রারভিলেন হিদ্দেশ ত এত ভাল-বাসিতে শিক্ষাইল্লাছিলেন কেন ভালবাসিবার একটি মান পার আমাকে দিলেই কি এই বিশ্বরাকো তাহার লোকের অভাব ঘটিত।
জ্বানি না কেন্দ্র বিন্তার।

বৃথিতে পারি যে আগারি বনধ্বানধ্ব
প্রকলেরই আমি ঘ্লার পার। এ বোঝা থে
কত এম্বানিডক উচা বানকে লোকে বিধ্বাস্
করিবে না। কিছে পাট্র সর্বাই কি
আমার নিজের চাতে গভা। আমার ঘড়িণ
কাচ্চ ভার নাই আমার তাবির মাথায় ফল্য
লাই আমার নেকিয়ে চাল নাই এলন
সমাজা চলিতেছি না বলিয়ে বে বিজ্ঞার দিয়ে

দুহাত দিয়া ঠেলিয়া দিতেছ, তাহার স্বটাই কি আমার দোষে?.....

বুড়ির সংবাদ্ও পাই, মনে মনে কত যে আশবিশান করি, কত গোরব অনুভব করি তাহা আমিই জানি। সে হাহা লেখে একটা খানি অংশ আমি মনে মনে অশাহ্য করিয়া নদীর ধারে জেটির উপর বসিয়া পরিপাক করি এবং কামনা করি যেন বাচিয়া থাকিয়া বিশেষ একটা ভাল জিনিহের শ্লাদ গ্রহণ করিতে পারি।.....

আমার ইতিহাস একটা শানিবে? মধ্যে এই রেখগুনে দাম্পত্য-প্রেম চর্চা করিছে গিরা হয়ে দেখিলাম প্রে গতাই হইরা পড়িয়াছ। দেড় বংসরের মধ্যে সেই ত্রেমীম অগাধ প্রবার-তলা দেখি নাই।... যথন শানিলার তিনি রঞ্জ-কনা। তথন কান মলিথা, এক হাত নাক-বত দিয়া করবতীতে স্বার্থীয়া আসিলায় মাসুদ্ই মদ খাই নি। আর হদি না খাই তো শারীর বেশ সরিয়া মাইবে।

এই চিনির মধ্যে—এত ভালবাসিতে
শিখাইয়াছিলেন কেন্দ্র সোজা চলিতেছি না
বলিয়া সবটাই কি আমার নোবে ইত্যাদি
এই যে কথালুলো আছে, এ থেকে বেলে;
যায় শব্দেচন্দ্র তার প্রথম জীবদের এক
নালবাসায় পর্যোর কথা বলেন্ডেন এবং সে
ভালবাসায় ভিনি নথে হুয়েছিলেন।
বিকৃতিবাব, এসব কথাই জনতেন। আমার
শবহুতন্ত্র সম্প্রত—শবহুক ১ মুখ্যত—গ্রেকটি হুদেয়
সোবিলোর কাহিনী অধ্যায়ে এ সম্প্রত আমি বিস্তৃত আলোচনা করেছি।

গিবীন্দুনাথ স্বকার তার স্থান্দেশে
শ্বংচন্দ্র গথে লিখেছেন—গালর ভিতর
কর্নটি প্রাতন কাঠের রাজীতে শবংচন্দ্র
বাস্ করিতেন। এই শল্পার রাজালী
মিহলারা বহুকাল হইতে এখানে রাস্থাকরে।
ভিতাদের সকলেনই বিবাহিত দুলী সংগ্রান কার্থানি
থাকিলেও, এখানে আপোষের মধ্যে বিবাহাদির আদান-প্রদান করিয়া সপ্রিবারে বসবাস
করে। চট্লাম্বাস্থা বাংগালী হান্ধান্গর এই
সকল বিবাহে পৌবোহত। করিত।

ফিশ্চী পঞ্চীতে যুক্ত-যুক্তীদের মধ্যে এই যে আপোষে বিবাহ হত এই বিবাহে জাতি ও কুলের ঘ'ুটিন্দটি থে'জে বড় একটা কেন্তু করত না। আলার অনেক জ্ঞাত ভণাড়িয়ে নিজেকে উ'চু জাতের বলেও পরিচর দিত। শরংচণ্ড মিস্পীপস্লীতে থাকাকালে এই-ংশ আপোধেই হয়ত বিয়ে বর্ষেছিলেন এবং পুরে জেনেছিলেন তার ব্যুটি রজককনা।

শরংচন ১৯০৬ খৃত্টান্দের এপ্রিল মাসে একজামিনার পাবলিক ওয়ার্ক্স একাউন্টস তাফিসে চাকার পান। চাকরি পোরে তিনি প্রথমে তেপটি একজামিনার এম কে মিন্তের বাতীতে কিছুদিন থাকেন। ভারপর সেখান থেকে বন্দ্য বংগচন্দ্র দের মেস থেকে খান ঐ মিস্ট্রপিপ্লতিত।

এম কে মিত্রের বাড়িতে এবং বঙ্গাচন্দ্ দের মেসে শবৎচন্দের অবস্থানকালটাকে অরপদিন বলে ধ্রলে এবং নিম্পরীপল্লীতে হাবার কিছুদিন পরেই দাম্পতা-প্রেয় ১১% আরম্ভ করলে ১৯০৭ খান্টাম্পের সেপ্টেম্বর ভাকটোৱৰ 9121 F. শার্ভিন্নের প্রেয় **চ**চ″ায CHE বংসবার চি ঠির পাওয়া যায়। শ্রহচন্দ্র कथारक अला वरल धरात्म प्रभा शह हो जाठीत-গাস্ব্যাপী দাম্পতাপ্রেম **চর্চা**য় তামীম অগাধ প্রব্যের কোন্দিন তল; দেখেন নাই। অতএব বলায়েতে পারে এত গভীর দামপত্য-প্রোমের মধ্যে সপ্তাতে চার্যাদন করে বেশ্যাবাড়ীভে গিয়ে নিয়মিত পতে থাকার কথা আসং ১ই পারে না।

শ্রংচ-দুকে অতিমান্তায় বেশাসেক্ত দেখা
বার জন্য অজিত্বাবা ত'ার সম্মাধনে শরংচন্টের যে সমন্ত্রকার লেখা এই চিটিটা
উপত ববেছেন, সেই সময়ের হিসাব ধরেও
বলা যেতে পারে, শরংচন্দু তখন কি একথা
ভাবেন নি—এইভাবে অসিস কামাই করে
বেশাবাড়ীতে নিয়মিত পড়ে থাকলে উপরতয়ালা ও উপকারী বন্ধ্য এম কো মিগ্রব
কাছে মুখ দেখাবেন কি করে? আর ছেত
কামাই করলে তার নতুন চাক্যিই বা
ভাবের কি করে?

শরণচান্ডের এই চিঠি থেকে ত'ার নিজেব থলা যে দুটো কথাব উপর অক্তিবাকু জোর দিয়েছেন তাহস ক্র কুর্থসত আচারী' ও প্রবিজ্ঞানী

কংসিত-অভাবী ও পঞ্চিত-জাবন বলগেই তাকে অতিরিভ বেশ্যাস্ত হতে হবে ভাই বা কে বললে? মদ্য পান করা এবং রজক্ষকরাকে নিরে দাম্পত্য-প্রেমচট্যা করা এও ভ হতে পারে!

অতএব অঞ্জিতবান হে বলেছেন বেশা।-স্তু মিশ্চাদের সংগ্রামিশ শ্বংচন্দ্র অতি-মানার বেশাসন্ত হয়ে বেশাবাড়ীতে পড়ে থাকতেন একথা অসতা।

অজিতবাব্ লিখেছেন—'কানাই দোধের
শরংচদন্ত' নামক বইন্তে শরংচদের বিভিন্ন
গতিতা সংস্পোর চমকপ্রদ বর্ণনা রহিরাছে।
কানাই ঘোষ লিখিয়াছেন—মাসের মাহিনা
হাতে পোলেই বন্ধানের সংকা পাতি
একট্র আধট্ট আনদদ লাভের আশার।
নিদিশিই স্থানের কোন সীমা ছিল না, যথন
বেখানে শাসী দল বে'ধে যেভেন, কে'ঠে করে
রাত কািট্রে দিরে আস্তেন বাসার।

ভাজিতবাব, গ্রন্তেনবাব,র বণিতে শরৎচপেরর পেগ্রে জীবনের একটা স্থল কথা নিজে তাকে শরৎচপ্রের রেগ্রেন গ্লিক্টীগুল্লীর জীবন প্রাম্ভত্ত টেনে এনে বলেছেন—শরৎচন্দ্র প্রতি সম্ভাগ্রে মিদন অফিস্স ক্যাই করে নিয়মিত প্রতিশ্রের কটিতেন।

এথানে অজিতবান, শ্বংচন্দ্রকে তাবিমানায় বেশ্যাসকা দেখাবার জনা ত'ব সমর্থনে কানাইবাবার যে লেখাটো উম্পাত করেছেন, তাতে দেখা মাক্তে—শ্বংচন্দ্র প্রতি সংতাতে নিয়মিত চারদিন না, মাসের প্রথম মাত একবার ত্যান্ত্র লাভের আশায় পাড়ি দিক্তন।

কিন্তু এখন কথা হচেত্ ¥[রংচ*দ অংশেক্ষা বয়সে প্রায় পঞ্চাশ বছারের ছেণ্ট কানাই যোৱ কলকাভায় বসে শ্বংচ্যেদ্র বেশ্পানের জীবন স্বদেধ এই কথাই বা জানলেন কি করে? ডিনি বেংগানের বস্থাদের কাছে শানে একথা লেখেন নি। একথা তীর নিজেরই ঘনগুল। তাই কানাইবাব্র বইয়ে দেখি, শরংচদেরুর দ্র রকাপ্রবাসের কথা ত দুরের কথা, শরংচ≠দু রেখগুন থেকে ফেরার পরে বাজে শিবপারে খখন ছিলেন, তখনকারই কথা লিখতে গিয়েও তিনি কত অস্ভত আলগানি কাহিনী বচনা করেছেন। হোমন একটা উদাহত্ত দিভি। কানাইবাৰ, লিখেছেন-

শ্বংচন্দের ভাগ্নতে খিনপারের নীলরক্তন মৃথোপাধাায়, ভানুর্পেনারায়ণ চটোশাদায় প্রভতির উদ্যোগে একনান শিবপারে
ববীন্দ্র জান্দেশের হয়। সেই উৎসবে
ববীন্দ্রনাথ নিক্ষে গিয়ে সারাবাত ধরে লক্ষেরী
থোক আনা এক বাঈজার নাহ স্থোছলেন।
সেই বাঈজার নাচে তবলা নাজিরেছিলেন
নাবংচন্দ্র। পরের দিন বিকালে নাশ্বনাথ
নিজে সভার এসরাজ বাজিলে
প্রাক্তনার ক্রিলেন বাজারাজ্ব বিজ্ঞান
এসরাজ বাজানোর পর ভিন্ন শ্বংসন্দ্রের
বলন—এ রস্কে ব্যাধক্রির ভূমি বজিত ?

শারণচন্দের ফ্লিড মধ্র হেসে বলালন এ অভাগার কিছুক্ত বঞ্জা নেই ভারতী।
.....অদার্শ এক নদের এক্স একট্ এনে
দান ভো

ভানা্রাপ কয়েক গিনিটেন চপেন চিত্র এলেন। ভিনি দেট্নুকু গলাধ-করণ করে

and the first of the first of the second of the second

এসরাজ কোলে তুলে নিলেন। ঘটটা মুহু নায় ভবে উঠল। বহু ক্লণ পরে প্রথং লেন্দ্র সেতারখানা থামিয়ে রাখ্যেলন। কিল্ডু লোভবগোর কার্ড তথন্ত চমক ভাঙে নি।

ভারতীর তথ্যস্ততা কটিল বহাক্সণ পরে। তিনি শর্লচ্চেন্ত্র হাতথানা নিজের হাতের মধ্যে টেনে নিরে বল্লেন—স্তাই তুমি স্বাধ্বতীর ব্রশ্রেই বটে।

কানাইবাযুর বৃথিতি এই কাচিনাটি সদবদেশ আয়ার বন্ধুপা এই—স্বনীগুরনাথ নিজের জংশোৎসব সভায় গিয়ে সারারাত পরে বিকালে সফায় এবং পরের দিনেও পরে বিকালে সফায় এবং সারাজ্য বাজালের জারু শরংচন্দ্রও ববীগুরনাথের সায়নে বস্পে মদ থেলেন—এসব কথা কোন্ন স্বাহ্ম ঘণিতকের লোকট বিশ্বাস কর্বনে না । ব্যঞ্জালের বালিক জারাক্র বিশ্বাস কর্বনে না । ব্যঞ্জালের বালিক জানাবার ও শর্মার্ক্তিশার নাক্র বিদ্যারা ও ক্র কাচিনাটির সভাবিনা এ স্কর্বনে এই কাচিনাটির সভাবাব্র ও শ্রম্ভালের বিশ্বাস কর্বনে স্কার্ম বিজ্ঞাসাও ক্রেছিলাল্ল। তারা বলাল্লন—এ ক্রেছিলাল্ল। তারা বলাল্লন—এ ক্রেছিলাল্ল। তারা বলাল্লন—এ ক্রেছিলাল্লা এর্পুপ্রেনা সভাই চ্রামা।

অজিতবাব্ নিজ পক্ষ সম্পানে একেন বই থেকে যে কি করে উদ্ধৃতি দিকোন সেইটাই আদ্দর্শ।

অজিত্বাব্ লিখেছেন— শ্বংচনেদ্র উল্লেখিয় জীবমানাটোর সমাণ্ডিকালে রচিত ক্রান্তের প্রথম পূর্বে শ্রীকান্তের মাধ্যম প্রকৃতিদেরই জার্মকথা আনকাংশে বিব্ত ভ্রুমায়ে শ্রীকাত বলিয়াছে আজারি আনাজীয় সকলের মাধ্য একটান্য ছি ই শ্রীমার নিজেও নিজের জীবনটাকে একটা মহত ডি ডি ছি ছাড়া আরু কিছুই আবিঙে পারি নাই।

শ্বংচনদ আবাহিদ্দক্ষাদের কাছে বালা কৃত্যাইরাছিলেন এবং ভাঁহার নিজের ধ্বাকারোজিত্তেই পশ্চিকালা প্রাথাতে যে এই নিদা ও গালা ছিনি নিজেপ প্রদাকি ও চাচবাধ্ব প্রায়া অজনি ক্রিয়াছিলেন।

শ্রীকান্তকে সর্বচন্দ্র প্রেট বর্ণাছ, তাজিতবাব যে বলালন শ্রবচন্দ্র নালনার বাজি করেন্দ্র নালনার নালনার করেন্দ্র নালনার বাজি করেন্দ্র নালনার নালনার বাজিব করেন্দ্র নালনার বাজিব নালনার বিভাগে করেন্দ্র নালেন্দ্র নালেন্দ্র নিজের করিবানিক ভিডি শারেন্দ্র নালেন্দ্র নিজের করিবানিক ভিডি শারেন্দ্র নালেন্দ্র

ানগবের রাল্ড এই ছি জিন রাধা নিজ্ঞা থাকাছে পারে কিন্তু লাধা ছে রাও **পাকাতে** পারে। কাল কাজানা কাল্ডিবালা <mark>কিল্ডু</mark> প্রয়োজনে শীকাল্ড প্রেক্ত যে বাকাটি উপত্ত করে এই চি জিন করা ক্ষেধারাছেন, ঐ নাল্ডের ফিল পারে সাকাটিছেই জে জ্ঞাজ্ঞিত-বাল্ডের বিশ্বি শাবনগান্তের প্রশীকারোছির।

প্রকাশিত হল স্পেডাম যোগের অসাধারণ নড়ন উপন্যাস

গুড্-বাই ক্যানিফোনিয়া ২০

জ্ঞান্ত্রেক সংশ-সমাজ আজ বিচা গত উচ্ছাংগল জাসন প্রবাহে আজ জারা পথকাট, কালিফোর্গিয়া আমে রকায় নতুন ব্রের স্ত্রেশত করেছে।..এই সর্বপ্রথম বাংলা সাঁ চ্ডে; ওখনেকার যুন্ত-স্ক্তীরের নিয়ে উপন্যাস লিখিত চলোচ বাংলা লী নায়ক স্মার্থ রয়ের প্রশ্ন নায়িকা লাসিয়াকে—সেকোর চেয়ে বড আর কী আছে । ভাবই স্মাধ্ন এই স্বৃত্ত উপন্যাসের সর্বাহ খা জ পান্ত্রা হাবে। বাংলা সাহিত্যে এ বিষয়ে প্রে কগনো লিপিবশ্ধ হয়নি।

শার চটোপাধ্যায়ের নক্ন উপন্যাস শারিশদ রাজগ্রের উপন্যাস দল্পান একাকী ৫ বনে বনাস্তরে ৭ হারনাজ্যেশ চটোপাধ্যায়ের উপন্যাস স্বর্গ মৃগ্রা ৪ এই জীবন ৫ নহরেশীর হাস্যানস শাহিনী

নহার শার হাস্টেরন শাহনা লোকিকতার পরিবর্তে ৭ একটি শিশির বিশ্ব ৫ ক্রিড সিংহর আলো জন স্থান্টকারী কাছিলী

চারজন রাগী যুবতী

প্রি প্রকাশন: ৮এ, টেমার লেন, কলিকভা--৯ 🕫 জেলঃ 🕫৪-৯৫৯২

खेळाडी अविकारकाहि प्राथित । त्यक्षे वाकाछ।

বিশ্বত কি করিয়া হো জীবনের এই
মূনে বিশ ছি-ছির জুমিকা চিহ্নিত হইবা
বিদ্যাছিল, বহু বালাণতরে আজ সেইসব
শহত ও বিশ্বত কাহিনীর মালা। গাগিতে
কাসমা বেন হুটাং সন্দেহ হইতেছে, এই
ছি-ছিটা যতবভ কগিয়া স্বাই দেখাইয়াছে,
ছয়ত ঠিক তত বতই ছিল না।

শরংচরেন্দ্র (শ্রীকান্তের) এই প্রবীকারোক্তি থেকে দেখা যাক্সে—শরংচন্দ্র অতিরিঙ্গ বেশ্যাসন্ত ভিলেন এবং সেজনা তার আত্মীসক্ষকারাও তাকে নিন্দা ও ঘূলা করও --অজিত্যাব্যুর এই মনগড়া উদ্ভির কোন কথাই তারে শ্রীকাল্ডা থেকে উন্ধৃত উদাঙ্গরেগর মধ্যে কোথাও নেই।

আথাম-প্রজনরা শ্রীকাল্ডকে কেন্ সে
ছিছি করত তারও সেন একটা আভাষ পাই,
শ্রীকাল্ডরৈ ঐ অংশেই। মারংচন্দ্র লিখেছেন—
শ্বনে হইতেছে, হয়ত ভুগানান যাচাতে
ভাষান বিচিন্ন স্টের ঠিক মাঝখানটিতে
টান দেন, ভাহাকে ভাল ছেলে হইয়া একজ্ঞামন পাল করিবার স্বিধান্ত দেন নাই।
বৃশ্ব হয়ত ভাহাকের কিছু দেন, কিন্তু
বৃশ্ব হয়ত ভাহাকের স্বৃত্তি বলে

এ থেকে বরং ধলা হোতে পারে—ভাল ছেলে হয়ে একভামিনে পাস না করা এবং বিষয়ী লোকের মত স্বৃন্ধি আর্জন করতে না পালার জনাই আজ্ঞীররা ছি-ছি কবতে। ভগবান তার বিচিত্র স্থিতির ঠিক মাঝখান্টিতে

রেজিষ্টি বিবাহ অফিস

মোট ১৬ টাকায় রেজিস্ট্রি বিবাহ

এন কে ছোহ জে-পি ম্যারেজ ছাফিসার

১১৭, কেশৰচন্দ্ৰ লেন প্টীট কলি-৯, ফোন ঃ ৩৫-৩০৪৮ টেনেছিলেন বলেই তিনি এসব গ্রাহাও করেন নি। ভতএৰ অজিভবাব- শরংচন্দ্রকে হেভাবে চিত্রিত করেছেন, তা না হরে বরং দেখা গেল শরংচন্দ্র ভণ্যানের ইচ্ছাতেই আঘভোলা, অবিষয়ী হয়েছিলেন।

এখন আর একটা কথা শ্রীকাশ্তের ১ম পর্বে শ্রংচন্দ্রের নিজের জীবন অনেকাংশে আছে বলে, ভাজতবাব, যে ঐ ছি-ছিম্ন উপর এতটা জোর' দিয়ে শরংচন্দ্রের ন্বীকারোভি বংশাছেন—এটা শরংচন্দ্রের নিজ জীবনের শ্রীকারোভিই বা হতে যাবে কেন?

শ্রীকাণ্ডের প্রথমেই ত শ্রংচন্দ্র লিখে-ছেন—আমার এই ভব্যুরে জীবনের অপ্রাহা বেলার দণড়াইরা ইহারই একটা অধ্যায় বিলাতে বসিয়া আক্র কত কথাই না মনে দড়িতেক্কে।

'ভারতবর্ষে' শরংচন্দের শীকাদক ধণন প্রথম বেরোর তথন সভাই কি শরংচদের ফীবনের অপরাহ্ন বেলা ছিল ২ তথন তৌব বয়স ছিল মাত ৩৯ বছর।

শ্বংচন্দ্র জনেক সময় ব্যুলে। হওযার আগেই নিজেকে বাজে বলাতেন, জানি— কিন্তু সেও ভূমিথা। বলা।

আরপ্ত একটা কথা। জ্রীকানেতর প্রথমের ঐ ছি-ছিটা টেশন্যাসের ভূমিকা ক আরণ্ডে বানানো অমনিই একটা কথার কথাপ্ত ত হতে পারে। এ সম্বশ্বেধ একটা উদাহরণ দিক্তি—

শ্রীকান্তে শারংচনেদ্রর নিক্ষের **क**ैनत আছে, কবি কালিদাস রায়ের ાકે প্রশেশর উত্তরে শরংচন্দ তাঁকে বলে-ছিলেন—'তা কিছ বৈধি । জালের উপন্যা**সে** বাণত কোন স্থায়ের ঘটনাই যে আমারও জীবনের সেই একটা সময়েরই ঘটনা তা ন্য়। জ**ীবনে**র বিভিন্ন সময়ে, বিভিন্ন ক্ষেন্তে বেখা খন্ড খন্ড অনেক ঘটনাকেই লিখবার সময় এক সময়ের একটি সম্পূর্ণ ঘটনা করে লিখেছি। কোন কাহিনী ৰা খটনাকে সাহিত্যের প্যায়ে আনতে গেলে, তাকে হয় কলপনা দিয়ে নয়ত অন্যান্য খন্ড খন্ড ঘটনা বা কাহিনী নিয়ে পারণ করে, সম্পার্ণ করে জলতে হয়। তোমাকে দিয়েই একটা উদাহরণ দিচ্ছি : শিক্ষকতা করছে। ধর ভূমি একটি

ভেলেকে তার নিজের গ্রাম সম্বন্ধে একটি বচনা লিখতে দিলে। মনে কর ছেলেটির গ্রাম নদ্দি নাই। করে করে ছেলেটির গ্রাম নদ্দি নাই, এমনিক একটি দেবমান্দির পর্যাপত নেই। ছেলেটিকে এখন রচনায় নদ্দর পেতে হলে তার আনপান্দের গ্রামে দেখা নানী, দেবমান্দ্র প্রভৃতির কথাও তার নিজের গ্রামের সভাগ খাপ খাইয়ে লিখতে হবে। তবেই তো তুমি তাকে নদ্দর দেবে, না কি? সাহিতোর বেলায়ও তাই। একটি প্রশিণগ কাহিনী বা চরিত্র স্থিতি করতে হলে এর্শুই করতে হয়।

কালিলাসবাব ত'ার শরংচণ্ড সম্পকীর একাধিক প্রবংধ এই ক্লাগ্রিল লিখে গেছেন।

ভাল নদ্বর পাওয়ার জন্ম, ছার্টার নিজের প্রায় সদ্ধন্দে ঐ রচনা লেখার মত্ শর্ভচন্দ্র তার শ্রীকান্ত উপন্যাসের মুখবন্ধকে স্করের আক্রমণীয় ও স্কুশাস্ত করবার জন্ম ঐব্ধ মিথ্যাও ত ব্লভে পারেন। তাই এটা তার নিজের জীখনের ঘটনার স্বীকারোতিই বা হতে যাবে কেন্ত্র

অতএব তাজিতবাব্যু শরংচদ্রেরে অতি-মারায় বেশ্যাসকু দেখাবার জন্য তার স্বপক্ষে শরংচদ্রের নিজের স্বীবারোক্তি বলে এই ছি-ছি-র যে সাক্ষ্য দিয়েছেন, এখানে এই আলোচনার ভারে দেখা গেল যে, অজিত-বাব্যুর মন্গড়া ঐ উত্তি ও যুক্তি আদৌ সূত্য নয়।

এখন পরিশেষে আমার বছপা এই যে,
শরংচন্দ্রকে সাধ্ু সাজানো কং া এ উদ্দেশ্য
নয়। আমার কথা—হা স্তা, তাই
প্রচারিত হোক। শরংগুদেরর রেণানের
স্থা-সামায়ক ঘনিন্দ্র বংগুদের কথা
উড়িয়ে দিরে, আল দ্য-তিন পুরুষ্
পরে, যা আমারা কেউ জানি না সে সাক্ষেধ
আহেতুক কলপনা দিয়ে একটা কাছিনী খাড়া
কলা, এবং সেই কালিজ্ব কাছিনীর স্মর্থনে
অসত্য সব ষ্কৃতি দ্বিয়ে শরংচন্দ্রকে অকারনে
হেয়্ম করা একটা অপারাধ।

অতিমাত্রায় বেশ্যাসক মান্যকে যে সর্বকালের এবং সর্বনেশের কোন মান্যই প্রশংগ
করে না. একথা অজিতবাব্ ভালরকমইভানেন। ওব্ও তিনি সঠিক কিছু না জেনে
অপরের করেকটা অসত্য কথাকে নিয়ে,
তার উপর আবার নিজের বান্যুদ্দে কথার রং
চড়িয়ে অত্ত্ক—লুক্রুদেশে শরুংচণ্ডের জীবন
ছিল কল্হিত, তার চরিগ্র ছিল কল্হপাংক নিমান, ইহা সত্য যে তিনি ছিলেন
অতিমাত্রায় বেশাসেশ্য ইত্যাদি বলে শরুংচন্দ্রকে
হারপরনাই হেয় প্রতিপান করেছেন।

আশ্চয়ের কথা এই যে, আজিতবাবরে এই বই ভারত সরকারের প্রবস্ত টাকায়



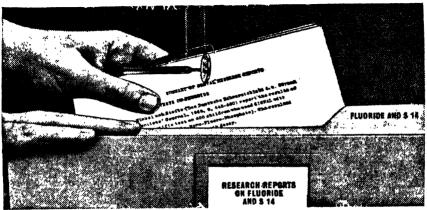
প্রকাশিন্ত এবং হৈ কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় শরকাশ্যকে ডি-লিট দেওরা প্রয়েজন বোধ করেন নি, সেই বিশ্ববিদ্যালয়ই তার পদিওত বিচারকদের শ্বারা বিচার করিয়ে এই বইয়ের ক্রমা অজিতবাব্যুকে ডি-লিট উপাধি দিরেছেন।

এক বিশ্ববিদ্যালয়ের অধ্যাপকের জেখা এবং আর এক বিশ্ববিদ্যালয় থেকে ডি-লিট দেওরার জন্য এই বইটি ইতিমধ্যেই ছাট, অধ্যাপক ও পাঠক-পাঠিকা মহলে বেল প্রচারিত হয়ে শরংগন্দকে ব্যেণ্ট হের করা হয়েছে। তাল উপর আবার এই বইরের ঐ কাহিনী নিমে র্যাদ সিনেমা করা হয়. ভাহকে তো আশামর সংশাধারণের কাচে শরংগদ্ধক শেষ করে দেবার ব্যাপারে সোনায় সোচাবা চবে।

চিত্রায়ন সংস্থা পৌর মানের মধ্যেই র্যান ছবিং কিছু দৃশা তুলে থাকেন, তাহলে ব্যোধ-করি এতদিন তারা আন্ত আনেক দৃশাই তলেভেন। গড় ৩০লে জ্বন (১৯৭৪) ভারিবের্ বিভিন্ন সংবাদগঢ়ে আবার দেখলায়—পাঁচ্ছা-বংগা স্বকারও আস্ত্র শ্বং-শতবার্ত্তিবাটিভ শ্বংক্তের জবিনী নিয়ে একটি তথাচিত্র তৈরি কর্বেন। এ'রা জারের কার কেখা কাছিনী অবকাবনে ছবি তৈরি কর্ত্তেন কে জানে।

কি সাহিতা আর কি ছাবাচিতে হতটা সম্ভব প্শাণণ অবিকৃত ও মিছুল শরং-জীবনী প্রচারিত হোক, এইগাই আমবা চাই।

त्वत जिम्ताल अर् कीका पानीरे कराता। विद्यार्थः



একমায় নতুন সিগন<u>্যালু সতির সতির</u> দন্ত্যগয় ও মুখের **দুর্গন্ত,** রোধ করতে সারে

पाँछ পরিষ্কার করার অবব্য এঞ্চ বতুব মূল উপাদাবে

(পেটেক মং ১১৪৭১৮ অনুসাধে, বড়ুব লিগল্যাল একমাত্র টুখপেট বা গাঁভ পরিমার করার এই অমধ্য মূল উপালানের সজে ক্লোরাইড সংযুক্ত করতে পাবে)।

আপনার শাতের ডাজারকে জিজেস জক্ষর ভিনিই আপনাকে বনে দেবের নতুন সিগবাজের প্রীক্তি অসাবারণ উপভারিতার তবা।

क्राजाहरखन अनन कालानी ननीका

বৈজ্ঞানিক কিনকেল এবং কৌণ্ট বিপোর্ট দিয়েছেন বে লোবাইডবুছ মতুন সিগনালে বাবহার করে ৪০- শিশুর ৩০%পর্যান্ত ব্যক্তন করে গেছে।

এস—১৪--ছ ওপৰ ডাক্ডাড়ী পদীক্ষা (5-amino-1, 3-di (2-ethytheryl) hexe-hydro-5-methyl opyrimidine)) এল – ১৯ ভারতের চুখপেঠে এই অধন বাবজত সন্ধান্ত বাবীকা করে দেখা গেডে (প্রীক্ষা করেছেন ম্যাসাচ্চেট্

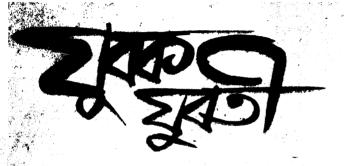
চুল এবং পাইজা করে দেখা লেছে (পাইজা করেছেন মালাচ্চেট্র তার এস আই এ এস লাব্ডেট্রীর ডাইডেট্র ভা: লিও) বাবহার করার ১৫ মিনিটের মধ্যেই সুধ্যেক চুগক ৯৫% করে পেছে। প্রিছার করার বোগ্যভার বিবাট সাকলা হ

নতুন সিগনালে ফোরাইড এবং এন-১৪- গাঁত পরিভার করার এক জনমা মূল উপাগানের নজে বুকু চংগ্রাছ, বার গঙ্গন আপনার লাভ স্বাস্থানত ভাগেল পরিছার চার ওঠি। জনা কোনো ইবপেনী এমন সামান্ত্রিক মিল্রাপ (বাগাতে পারে না। বিনাসুলো। উমক্র ইছ। লাভের সম্পূর্ণ পরিচার সম্পাক্তি স্বৃত্তিকার কলো এবানে নিগুন : ভুম্পুলন নিভার নিমিটেড, সিনিকাল ডিলাইনেট, পোঃ বা না ৪০১, বাবে ৪০০-০০১।

(ভাৰ বহুতের অন্যে ২০ পঃ ভাৰটাকট সামে পাঠাবের ৷)। ব্যৱস্থা সামেত্র ক্রামানো বিষয়েরটেই ক্রেয়াটেড ও এসি-১৪ দ্বাটোই ব্যৱস্থা নেই

Market and the contract of the





কফি হাউস

প্রায় সকলেই, তা তিনি বিশেষ কোকে।
কাজে নিরোজিত থাকুন আর না থাকুন
কাজের মানুষ হোন আর অকাজেই ছোল
প্রত্যেকই এমন একটি দ্বান গোলেন
ক্ষেত্যকেই এমন একটি দ্বান গোলেন
ক্ষান অবসর সময়টুর নিবিদ্যা কটোনা
কার। যথান আর পাতিকানের স্বেম্প বাজা
নিরালায় আলাগেন চলে। আর লে ম্বাটি
ইদি নানা ধরনের মানুষের ক্ষিড়ে স্বা
ক্ষাজ্ঞাট থাকে বা হলে একসকে মান্দা
ক্ষাজ্ঞাট থাকে বা হলে একসকে মান্দা
ক্ষাজ্ঞাট থাকে বা হলে একসকে ছারাতে প্র
মানুষ প্রথা স্টেই একসকে ছারাতে প্র
মান্দা বা আর ক্রাকে ক্ষানত হেলা
আছে, ভারা একে ক্ষানত হেলায় ছারাতে প্র
স্থারর বা

্রান একতি স্থান, কলেও দ্বীটোর কিছি হাউস। ১৯৪২ সালে কভি হাউস হখন তৈরি হল তখন বৃটিশ সরকার-এর একটাই উপদশা ছিল, তা হল কভিনে জনপ্রিয় করে ডোলা। লিখিডেই সে উপদেশ্য সফল হয়েছ নইলো এক কাপ কফি, তা-ও দুজেনে ভালাভালি করে গণ্টার পর ফলী এই কফি হাউসে কাবার করে দেন কেন্দ্র

১৯৪২ থেকে ১৯৪৭ এই দীম্ব সময়ের হিংধা কৃষ্ণি হাউসের প্রশাসনে হা অনার যতই পরিবতনি হ'য়ে থাকুক না কেন, একটি क्षाइगाइ क्रिक आछে। डा इल. नानान कार्टड. নানান ধাতের, নানান পেশার মানা্ষের ভিড় এখানে একটাও কমে নি। কলেজ দৌই-এর ক্ষি হাউস ঐতিহাও মহান। শ্যাস্বাজারে ইউনাইটেড ক্ষি হাউস উটো গেল। বস্কী িসনেয়া হাউদের দৈতিশায় ক্রফি ছাউস জাছে গটে, আভাভ হয় মেখানে, স্কিন্তু কলেজ স্ট্রীটের মতো এমন জনজনাট কাফ হাটস শহরে আর দিবতীয়টি নেই। বাদ্ধ-বৃদ্ধা, প্রেটি-প্রোটা, তব্ব-তর্গী সকলেই জ্ঞাসেল এখান। কেউ অগান্সনা করেন, সংগতিকার কেউ ছবি আক্রেন ক্ষিতা কেখেন আল ম্বক-স্রতীর একটা **২ংগ্রে অংশই ছার।** নয়ভো বেকার।

্ ইদানিংকালে সমাজ-বিবৃত্তি এবং সমস্যা ব্যাশার সংগ্ণ সংগ্য সব্ভিই বাইখে-ভেতারে কিছা বদ্বদল হয়ে গেছে এখং ইট্টুছেও। কফি হাউসের একটি টেনিংল ইত্তের কন্ই এথে এঞ্চাকী ছিছি হনে शास्त्रमः, काम्रास न्याने, भरेकु रमहोक्ति । सरम इ.स. छाष्ट्रस्य किन्द्र्यः तो स्वर्ते स्वर्ते स्वर्ते । तो स्वर्ते स्वरत्ये स्वर्ते स्वरत्ये स्वर्ते स्वर्ते स्वरत्ये स्वरत्ये स्वरत्ये स्वरत्ये स्वरत्ये स्वरत्ये स्वर्ते स्वरत्ये स्वरत

হয়। শশ্দটি উন্ধানণ করতে গিংরও করলেন না শ্বনংগোপালা। ইঞ্চত্ত করে বললেন, ভারে মানে ভানেটি লাগে। এই দে ভাষার সামনে কতবকল লৈভি লাগে। এই দে হাটভেন বেয়ারাকে ভাকছেন, তা একখনে দেখতে আল্লাল বড় ভালো লাগে।

্ৰিক মালে হয় এ'দেন দেখে।?' 'আনেক কিছাই মানে হয়।'



न्यम्दर्गामान उत्सदरी



'বলনে না !'

'আছার মতে হয়, একদল আগেন, ধ্রির সতি সতি কাজের লোক। কিন্তু কতজ্ঞর আর কাজ করতে ভালো লাগে? ভারপার যে ঘরে ফিবনে, সে উপার ভারের কেই। দর ভারের কাছে সুখের আনাস নয়। ভাই এখারে এসে সং ভূলে থাকতে চেন্টা করে। একেট্র বেণি করা বলেন। চিংকর ক্রাংন অক্রমণ।

'তারপর ?'

'আর একদল আছেন, বিশেষ করে তর্ণরা, তাদের সমস্যা আছে ঠিকই, কিণ্ডু মতটা না আছে ভাল থেকে বাড়িয়ে দেখানো, মুখখানা বিমর্থ করে বসে থাকা বা দাশনিক-এর চত্ত-এ কথা বলা রত্ত করের এখানে।

'আপনি আসেন কেন্দ্ৰ?'

জ্ঞাম জ্বানা ব ধ্রের সংগ্রালিত হতে আর চোধ-কান্ খ্রেল মানুবের হাট দেখতে-শ্নুনতে।

ত্তিত সান্যাস, বছর দ্বারেক আগে বি-এ পড়তে পড়তে লথাপড়া ছেড়ে দিমেকন। তবে কফি হাউস ছাড়েন নি। কিকেস করি, খদ্টার পর ঘদ্টা এখানে ভাগো

'দাবনে ভালো লাগে। ইখাকে, হান্ধান সকলের সংশ্যা ভার হয়ে গেছে। যুত্রার জল চাই দিয়ে যায়। এয়নকৈ এখানে টোলখেন একেও জেকে দেয়া।'

ওেখানে ঘটেছে এমন কোন হিংশব ঘটনাৰ কথা বলতে পাৰেন?' কোৰাই ছালেছ বিচাহ ঘটোঃ প্ৰেছ-বিৱহ মারামারি সবই ধটে। বিশেষ কিছু মনে রাখার মতো নেই।

জিজ্ঞেস করি, আজকালকার তর্খ-তর্গীদের সমস্যা সমধানে কফি হাউস সহারক হয়?

'ওভাবে বলা মুস্কিল। তবে একটা বিরাট পরিবেশ। হরেকরকম মানুধের ইফেকরকম কথার মধ্যে দিয়ে শেখা বার অনেক। এই তো বছরখানেক আলো, এইখান থেকে এক ধনী লোকের সংগ্যে আলাপের সতে আমাদের এক জানাশোনা বংধুর চাকরি হয়ে গেল।'

'এথানে হারা আসেন **তাদের কে**মন

ভালো-মন্দ মিশিয়ে লাগে আর কি! রপো ঘটক বললেন, হ্যাংলামিটা কমে-এখানে প্রায়ই আসেন সৌমিত চটোপাধায়। রাশ্ডায় হলে স্ব হুমড্ডি খেয়ে পড়ত, এখানে স্ব নিবিকার।

'এখানকার লোকগালো বড় আর্টি-ফিলিয়াল। বে ভংগীতে কথা বলেন তাতে গা জনলে যায়। সকলেই নিজেকে একটা কেউকোটা বানাবার চেণ্টা করেন।' বলপ্রেন গোপাল বন্দ্যোপাধার। সেলস রিপ্রোস-নটেন্ডিভ তমাল সেনের কাছে প্রান্টি হল পার্টি ধরার কেন্দ্র। বললেন, 'আধের গোছাতে কৃষ্ণি হালুসে আদি।'

কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের সাহিত্যের ছাত্র নবাঙকুর দাশগা, ত, 'মেয়েদের নিয়ে বংস প্রটিটা কথা বলাব সেফ জায়গা কৃষ্ণি হাউস। আজকাল তো নিরাপদ জায়গা নেই বললেই চলে।'

মিনতি সেনগৃংত বলনেন, 'ক্রিফ হাউসটা উঠে গেলে অনেকের আসন্ধ রপেটা বেরিয়ে পড়বে। জারগাটার আন্চর্ম ক্ষমতা, লোকজনকৈ স_িয়োগ করিয়ে দিতে পারে। আসলে বেশির ভাগ লোক মেকি— থার্ড ক্লাশ।'

অজয় দাশ বলেন, দেশক-শিক্সীকে দেখতে পাই। কত আলোচনা কানে আসে। কফি হাউসের প্রতি আমি কতজ্ঞ।

—কুঞা সেনগ**ু**ণ্ড

এ রাও পিছিয়েনেই

বেতের জিশিসের কুটীরশিশ্প

কলকাতার উণক্তেও তরা থাকে অথচ ওদের সপর্কে আমরা কডটুকুই বা জানি! দক্ষিণ শহরতলীর যাদবপুরে এলাকার "দাসপ্দী"র বেত-শিস্পীদের কথা বল-ছিলাম। এই পুরার বাদিস্দার সকলেই বেতের জিনিসপর বানিয়ে জাবিকা নির্বাহ করে। বাড়তি সমন্ত্রে এরা প্রাপার্ড্গনে চাক বাজিয়ে বাড়তি টাকা উপার করে। এরক্ষা সতরেটি প্রিবারের কস্বাস

এই সেদিন ওদের হাতের কাল দেখতে গিরেছিলাম। এরা এক সময় ছিলম,ল উন্দাস্ত চিনেবে ভাগ্যাবেরণে ভণার



থেকে এখানে এসেছিল। তথন এদের কোনও আশ্রর ছিল না, ছিল না আর্থিক সাশ্রয়ও। কিন্তু এখন এরা সর্বাকছ্ট পেতে চলেও— ঘর সংসার জীবন ও জীবিকা।

কথা হচ্ছিল শাগনি দাস, বাসুদেব দাস, স্বারেশ দাস, নকুল দাস ও যজেশ্বর দাসের সংগা। এরা সকলেই বেতের মেড়া, স্টেকেস, ধামা, চেয়ার টেবিলা ইত্যাদি রক্মারি জিনিস্পর্ন তৈরী করে সংসার চালায়। এক ব্যাক্তরর ক্ষান্ত বাবসা উন্নয়ন করে। ক্ষিক কলকাতা শাখা সম্প্রতি এদের ঋণ দিয়েছেন, তিনশো থেকে প্রচিশো টাকা করে। এখন এদের আয় হয় মাসে প্রচিশো থেকে এক হাজার টাকা করে। এ

অর্থট এক সময় এই বেত-শিল্পীদের অবস্থাটা ছিল দুর্বিরহ। লাভের গাড়ুড় পি'পড়েয় থেয়ে তেত, অর্থাছ সর্বাক্তর্কুই যেত মহাজনের পেটে। মহাজন বেত কিনে দিত—বেত-শিল্পীরা ফ্রেনে কাজ করতে। লভ্যাংশে ওদের কোনও অধিকার ছিল না।

কিন্তু এখন দিন বদলে গেছে। হত কিনবার জন্য ব্যাৎক ঋণ দিছে। ক্যারিগ্ররা গেরেছে ন্বিগ্রে উৎসাহ।

তবে এখনও এদের সামনে আছে বহু সমস্যা। বেতের তৈরী জিনিসপত্র বিস্তাও সম্ভাদরে বেত সংগ্রহর সমস্যাটা তলিয়ে না দেখলে সব পরিকপেন্ট রস্ভিলে যাবে।

ব্যান্তের একজন মুখপাত বললেন, বেত-বিশ্পীরের নিয়ে এবানে একটি

শীর্কাত গঠন করা হবে। সুস্তাদ্ধে ক্রচিয়াল সংগ্রহ এবং ন্যায়ামুল্যে বেজের তৈরী জিনিসপত বিকার ব্যাপারে এই সমিতি স্বরক্ষের সাহায়া করবে। বিদেশেও যাতে ১প্তানী ইয়া সেদিকে এই সমিতি দুর্গিট দ্বে। একটি গ্রামও তৈরী করার কথা ইছে।

জল-কাদা ভেঙে সেদিন যখন দাসপ্রােতি পেশিছ্লাম তথন বেলা দদটা—
বিশ্তাপ এলাকা জুড়ে কর্মযক্ত চলছে।
উঠোনে বারান্দায় পরিবারের সকলে মিলে
ক্রেমার জিনিসপত্র তৈরী করে চলেছে।
এপের একজন বাবল্ দাস, বরুল ১৯,
পতীয় বার্ষিক বি-এ রামের ছাত্র। বাবল্
দাসর তিন প্রমুখ বেতের কাজ করে
সংসার চালিরেছে। ওদের পরিবারের ওই-ই
প্রথম ক্লিকে যাজে। কিন্তু বাবল্র মনে
কোনও অহন্কার নেই। ও বি-এ পাশ করে
বৈতাশিলপী হিসেবেই প্রতিষ্ঠা চার।

বাৰ্ল্ বলল কলেজের পড়া শেষ করে বেডের জিনিসের বাবসা সূত্র করল বস্তু আকারে। বাংলার বাইরে এমন কি বিলেকেও এ জিনিসের চাহিদা খুব বেশি।

বাবলা একটা বেভের আড়া এগিরে দিয়ে আমার বলল—দেখান, এ কাজে আনদ প্রছে বাকে বলা মার ভিরেটিভ শেকভার। এ ধংনের কাজের জন্য চাই আটিনিক নাক'। আমার খুব গারু লাগে।

-THE BEST

नवश्वराम्यत बचारतरमत्र कविन

্ৰিছ্ডি' পঢ়িকার গত দুই সংখ্যার निर्देश - রক্ষদেশের জীবন **अंत्राभागकन्त्र शहा एवं जाएगाइना गान**् ক্রেমের তো আমি দেখেছি। গোপালবাব, महिक्क मन्त्रक वात्रक वार्टिक करार्टिक करार्टिक क्राक्रमा इस्तर्रात्मत क्रीवनगर्द जनगरक ক্ষাত্র নৃত্য তথা পরিবেশন করছেন আলাভ পায়তে ভার লেখা পভতে ক্রেছিলায়। কিন্তু দঃখের বিষয় ক্ষা কর্মান যে, তিনি বেন আমাব শ্রেক্তক্রের জীবনী ও স্তিত্তিবসর केल्स्स्मीन अग्राह्माठना करावाद ग्रांचा छिल्ममा মিবেট আলোচনা চালিয়ে বাছেন। আমার ব্ৰহৈতে তথাৰত কোনো ভুল থাকলে নিশ্চয়ই পরকর্পী সংস্করণে তা সংশোধন করব ্ৰিকণত যা আগি বলেছি তো বকুত করা িকিংবা যা আমি বগতে চাইনি আ আমার গৈছি বলে উল্লেখ করা আমার প্রতি একটা व्यक्तिम वल्टर भारत कत्व। भारतिराज्य জীবনী গুচনা কর্ষার সময় আমি সম-आर्थाक च नक्ते वा अपन विवतन, उरकालीन সংবাদপত ও স্থায়িকপতে প্রকাশিত ख्या प जनः नतरहत्त्वत हिठिभावत छभात প্রধানত নিভার করেছি। যেখানে দুই প্রশাসরাবারাধী মত দেখেছি সেখানে উজয় মতই উদ্ধাত করেছি এবং আঁত সতক-ভাবে বথাসম্ভব নিরপেকভাবে বিচার-বিশেলষণ করে নিজম্ব মুম্বো প্রকাশ कर्त्त्रीक्ष

আমার বইতে আহি লিখেছি শ্বংচন্দ্র यथम् आर्थात ५८ऐ। शासारम् । १८२ - व्हिल्सन ভখন হইতেই ভাহার চারিত কল্মপাণেক নিম্ন ছিল। তাঁচার আতা তক মদাসে জ ও অসংযমের ফলও তাহাকে ভগিতে হুইল। তিনি রক্ষদেশে পে^{ন্}ছিবার বিভান কালের মধ্যেই অসাস্থা চইয়া প্রভেন। শারংচান্দ্র যৌনবর্যাধ্যতে আক্রান্ত হয়েছিলেন, এ-কথা আমি বলিন। গোপালবাৰ আছেল **हर्**देशभाक्षारम् गाउँ भावरहम्स सम्हासक হরেছিলেন আমাব এই উক্ত অবিশ্বাসা বলতে চেয়েছেন। কিল্ডু শাুধাু সাুরেন্দ্রনাথ গঙ্গোপাধায়ে মন অনেকেই তো এই কথা বলেছেন। ভাদের উত্তি অন্সাল করেই আমি এই মত প্রকাশ করেছি। ব্রক্তেন্দ্রনাথ **ষল্পোপাধ্যার ভার 'শরৎ-পারচ**য়ে' কিথেছেন, **অবোরনাথের পীড়ার সময় তিনি যে খো**র **পানাস্ত হইয়া** উঠিয়াছিলেন, সে সংবাদ ক্ষালকাত্যে ভাঁহার মাস্মার গোড়ের **আসিয়াহিল'। স্বয়ং** গোপালবাব_ুই তার **ভারংচন্দ্র' নামক** প্রক্রেম বিশেষেন ভারংচন্দ্র রেকানে গিয়েও মদ থেতেন (প্: ৭১)। भवश्वरहरमुत উচ্ছ । धन कौदनवाश्रन সম্পর্কে গোপালবাব্ বিভিন্ন গ্রন্থে অনেক আলো-हुन। করেছেন। নরেন্দু দেব তার প্রণেথ (भारतरामा) जिटश्टहर, 'किए'पर जिन



অত্যন্ত উচ্চ্ থেল জীবন সাপন করেন।'
পিরীন্তনাথ সরকার 'শাবৎচন্তনে 'সমাজবিরোধী' উচ্চ্ থেল যুবক' বলেছেন
('রক্ষদেশে শাবৎচন্তা')। গোপালরোর, অমৃত পতে লিখেছেন, 'মেসোমশাইয়ের বাড়িতে এমেই অতিরিক্ত পরিমাণে মদ থেতে এবং ক্রাক্রের বেশারোভি যেতে কথনই সাহস্ট হতেন মা।' এভিজি ভার ধারণা অথবা অন্মান মাত্র। কোনো তথোর ব্যাণা সমাথিত নমু এবং অন্যানা জীবনীকার ও ভার প্রের প্রকাশত মতের বিরোধী।

অঘোরনাথের মৃত্যুর সময় শুগুৎচন্দ্র কোথায় ছিলেন সে স্পকে গিরীন্দুনাথ সরকার ও শ্বংচন্দ্রে মামা সুপ্রেন্ট্রাথ গ্রহণাপাধ্যাহৈর মত পরস্পর-বিরোধী। গিলীন্দ্রনাথ লিখেছেন শরংচন্দ্র অংলারনাথের মাভার সময় ভার শ্যাপোশ্বে শাল্যারত ছিলেন, আর সংরেল্পনাথ লিখেছেন যে, শ্রংদ্রন্দ তার কাছে বলেছিলেন, তিনি অঘোরনাথের মৃত্যুর আগেই তার আশ্রয় ত্যার করে ছলেন। আমি এই দুইটি মত িগ্ৰী•দূনাথ সরকারের করে উম্পত উল্লিকেই অধিকত্র নিভাগ্যোগা বলেছি। আগ্নার বইজে আমি লিথেছি, 'শরংচনের উপরের উক্তি চইতে মনে হয় ডিন অঘোরনাথের মৃত্যু আগেই ঐপ্থান হইতে চালয়া গিয়াছিলেন। কিম্তু শ্রংচন্দ্র স-বন্ধে গিরীকুনাথ সরবার এবং অন্যান্য বহ লেখকের উভি হইতে মনে হয়, াত্রনি অংঘারনাথের মৃত্যুর সময় তাঁহার শ্যা।-পাদেব'ই ছেলেন'। গিরীম্দ্রনাথের উল্লির সম্প্রতিন আমি পাদ্টীকার মণ্ডব্য করেছি (প: ৮০), বিচারপৃতি এ এন, সেনের উল্লিভেও ইহা সমৃথিতি হয়, 'অঘোরবাবনে মাতা পর্যান্ত তার কাছেই বসবাস করেন। আমার আর একটি উল্লিতেও আমি আভাস দিয়েছি যে, অঘোরবাব্র মৃত্যু প্রণত শরংচন্দ্র তাল আলায়েই ছিলেন, শরংচন্দ্রের রেপণ্ডন আসিবার ঠিক দুই বংসর পরে অঘোরনাথের মৃত্যুর ফলে শ্রংচন্দ্র নিরালয় হুইরা পড়েন।' আমি স্রেন্দ্রনাথের উত্তি উপ্ত করেছি কিন্তু সমর্থন করেছি শরীন্দুনাথ সরকান্ত্রে উন্তি, অথচ গোপাল্-বাব্য ৬ই সেপেটম্বরের সংখ্যায় 'কাছাড়' পতিকায় লিখলেন, 'সংলেনবাৰ্র কথা ৰে অসতা, অঞ্চিতবাহ, তা ধরতেও পারেননি,

অধিকণ্ডু সংশোনবাব্দ্ধ অসন্তঃ কথাটাকে
সত্য বলে ধরে নিয়ে জিনি শ্রুপ্তচন্ত্রক অবথা
অকৃতজ্ঞরংশে চিত্রিত করেছেন।' গোপালবাব্দ্ধ আমার উল্লিকে 'ভূল', 'মনগড়া কথা',
সম্পূর্ণ অসত্য' প্রভৃতি নানা মিন্ট-মধ্রে
বিশেষণে বিশোষত করেছেন। গোপালবাব্দ্ধ এ-ধ্যানের মান্টব্য সম্পূর্কে আমি
কিছ্ই বলাব না কিন্তু উপারের দুটি বিষয়ে
অন্তত আমার উল্লিকে যে কোনো অসংগাত
ও অসত্য নেই তা আশা করি, আমার বই
হিনি পড়েছেন, তিনিই প্রীকার করবেন।

অভিতকুমার বোদ কলকাতা—৬।

(\$)

্মম্ভ' ৩০ আগস্ট সংখ্যা থেকে গোপালচন্দ্ৰ নায়ের 'শবংচন্দ্রের ফ্লাদেশের জাবন শ্রে হয়েছে। পুন শর দ্টি সংখ্যাস গোপালবাব্ ডঃ অক্রিড ঘোষের লেখাকৈ নস্যাৎ করতে চেয়েছেন।

কিব্ মজার ব্যাপার হল, গোপ্তেরাব্র কোথাও প্রামাণা প্রকাশিত এবং স্বর্জন-সমাত তথোর ভিত্তিতে ভাই করতে পারেননি। তিনি তংক । ঘটনাবলীর বিশেলমণ এবং অন্মান ৬ স্থোনা কথার ওপরই জোর দিয়েছেন।

ডঃ ঘোষের শরংচশ্রের জীবনী ও সাহিত্যবিচার প্রশাটি আমি পড়েছি। সরা বইটির মধ্যে ইচ্ছাকৃতভাবে কোহাত শ্রং-চন্দ্রের চরিত্রকে ক**ল**িকত ধরার প্রয়াস নেই। वतर भागात भागरहत्स छ भागभी भागरहत्स A দ্যোর অপুরে বিশেল**ষণ ক**রা হারেছে। আছাড়া যে কোন স্রাটার জীবনের স্টেট দিক আছে। স্রন্টা যথন সৃষ্টি করেন তখন তিনি শ্বতীয় বিধাজা আর স্ভী বখন মান্ষ তথন তিনি দোষে গুণে একরকম। একজন প্রভীর ব্যক্তিগত চরিত্র হোরা তুলস্পাতা হতে হবে এমন কোন মানে নেই। কিন্তু লেখকের ব্যক্তিগত চরিত নিয়ে ज्ञाशावाशा करत नाम कि! जन्ते भारतते জীবন বিচিত্র হয়। বাঁধাৰরা ভূপচে ছোকা-रमना क्या किश्वा क्याना काग्रीता क्याक्त মানসিকতা নয়। কোনো লেখক <u>ব্যক্তি</u>রত জীবনে যতই অনিত্যারী, হোন না কেন र्णात माणिएक याम ब्लीवन कार्ड खर्फ সেইটেই আমালের কাছে গুর্ণাবাগা। শন্তচন্দ্ৰ ৰাষ্ট্ৰ অভিশয় মুদ্যানত ও অভি-

াছার বেশ্যাসক হয়েই থাকেন ভাতে গাপালবাব্র ফেটে পড়বার কি কারণ ঘটল ্বাতে পারছি না।

সংরেমবাব্র প্রকশিত বইদ্নের তথাও
াপালবাব্ মানতে চাইদ্রেম না। তঃ ছোবের
শ্বটির তথা তুল এটা প্রমাণ করবার
ক্রোই গোপালবাব শেষ পর্যাক
ক্রিকে গাগল প্রমাণ করতে চাইদ্রেম।

লোপালবাব লিখেছেন, আমার মনে সুরেনবাব বখন এ বই লেখেন তখন আছত বার্ধবাবশত নানা ভূল করেছেন। ভালত তখন এক সময় তার মাধানত ভালত তখন প্রকাশ করা দিরেছিল। এ সময় ক্রেনবাবর মাধা ঠিক না থাকার কথা দির ভালত করেছেল। এ লাভাত বা কোডেপ্লা

গোণালবাব শোনা কথার ওপর নির্ভার রে ডঃ ঘোরের তথাকে ভূল বলছেন কি রে? সুরেনবাব্র বইয়ের তথা ঠিক নয়. । ঘোর দীঘ প্রিলুম করে বিভিন্ন মাণা তথা থেকে যা উখার করেছেন তা কি নয়। গোপালবাব্ কি বলতে চান তার নে হওয়াটাই স্বৈবি স্তা? গোপালবাব্ মাণা, প্রকাশিত তথা দিয়ে প্রমাণ বলে।

> অমলেন, রায়চৌধ্রী কুচ[ি]বহার।

कमल नामगरिक अन्यदिश

স্রাণ্ডপী কল্ল দাশগাুণ্ড সন্বশেষ
প্রীমতী ব্রথিকা গারের গেখা ট অমাত'-এব
১৬ই প্রাবণ সংখারে পঞ্জান । কমল দাশগানেতর জ্যোতিলাতা প্রখাত স্রাণ্ডশী
বিষল দাশগাুণ্ডের নিজেট প্রীমতী
ব্রথিকাকে সংগা নিয়ে তাঁর পিড্দের বেলি
ব্রেলিকান আলি সেই দন বিমলবাব্র
গানেত্ব প্রথাত ছিলাম । মৃথিকার বাবা
আক্রেপ করে বিমলবাব্রে বলেভিলেন—
বহু চেন্ডা করেছি, তব্ ন্থিকান গান
বেক্ডা করবার কোন ব্রবশ্য করেও
প্রকাম না।' বিশ্বলবার্ হিন্তু মান্টার্স
ভরেল ও টুইন কেন্ডা তিন্তিলাকে জনপ্রির
ক্রিণিকালী । কর্ত্পজ্রের তিন্ন বিশেষ প্রির
ও বিশ্বসভ্জেন ব্রির

বিমলবাদ্ধার খ্যাতি ছিল, তার কাছে কান গায়ক-গায়িকা ধদি একবার অনুরোধ জানাতেন, তারা রেকতে গান করতে উৎস্কুক, বিমলবাবা তাদের সমুখোগ দিতেন, সাহায্য করতেন। তিনি লৈ অনুরোধ কথনো প্রত্যাভ্যান করতেন না বত্ত বিমলবাবার আগ্রাপ্তে ও সহায়তায় বহু নত্ত দিলপী বেকতজ্পতে তাদের যথোপ্রোগী প্রান করে নিতে পেরেছিলেন।

শ্রীমতী ব্থিকাকে বিমালবাণ্ একটি গান কথতে ব্লালেন। গান শ্রুমে বিমালবাণ্ খুবই থুশি। ব্লালেন, 'এমন মিণ্টি গলা। এ মেয়ের গান রেকর্ড হবে না কেন্ প্রকাশে ক্যালাকে বলালেন, কুটু (ক্যাক্ট্রন্থ ক্রাক্ট্রান্থ ক্রান্থ ক্

শ্রীমতী ব্থিকার প্রথম দুখান গান—
আমি ভোরের যথিকা আরি সাঁকের তারকা
আমি দুই তর্ণ গাঁতিকার প্রথম রায় ও
স্রানিপৌ কমল দাশগাপ্তকে রেকর্জ
লগতে স্প্রতিষ্ঠিত করতে সাহাব্য
শ্রেছিল—একথা বললে অতিশরোভি করা
হবে রাঃ

ব্িথকার ক'ঠমাধাবে তাঁর প্রথম গাত্রা এই দুটো গান অভাবনীর জনপ্রিয়তা অজ'ন করেছিল।

সারকার বিমাল লালাগাুণ্ড উলার গাুণী বাজি। তার সহায়তার উল্লেখ শ্রীমতী থাথকার উত্ত লেখার কিন্তু বাল পড়ে গেছে। প্রমোদসভার কাশ্যাুণ্ড,

কলকাতা---১১।

য়্বক য়্বতী

ফিল্ম প্রথমেই 'অমৃত' প্রিকায় একটি

দেশ ফিচার 'য^{ুধক-য}়বতী'র জন্য কুরু। বিকৈ জানাই আমালু অভিনন্দন। ৩০শে বণ সংখ্যায় এই বিভাগে 'ফিল্ম' সম্বন্ধে য়েকজনের সাক্ষাংকার ছাপা হয়েছে। আমি ভিজিত বায় ও স্মীরচন্দ্র মুখাজিব াবোর সামানা প্রতিবাদ করতে বাধ্য ছব্ছি। অভিজিতবাব: কলেছেন, 'অধিকাংশ ংল। ছবি না পারে আনন্দ দিতে না পালে ারিয়াস কথা বসতে।' সভািই কি ভাই? শান সংকেছে' পদাতিক 'কলকাতা ৭১' বং এই ধরনের অজন্ম বাংলা ছবি কি ারেনি কোনো সিরিয়াস কথা বলতে? ামান প্থেনীরাজ', 'গ্রিপ গায়েন বাখা য়েন', 'সাধ্র যুট্ধিষ্ঠির কড্চা' ইত্যাদি ণের বাংলা ছবিগুলোকি পারে নি াঁককে আনশ্দ দিতে? ভাই যদি হয় তবে উনি 'আন্দে' এলতে কি াঝাতে চাইছেন? অধ্পত্তি, নোংরা অবাস্ত্র ছু হি'ল সিনেমাকে কি? উপরোভ ভতে তিনি যদি 'বাংলার' জারগায় ণিদ' বলতেন তবে প্রতিবাদের **কিছ**ুই कट्टा ना।

সম্বিরাধ্য বলেছেন, ভাল ছবি লোক মন দেখতে যাবৈ না কারণ ভালো আর বেড় কথা শানে লোকেরা এখন ক্লাক্ত । ভবে কি লোকেরা এখন খারাপ কথা দোনার জন্য খারাপ ছবির পথ তেয়ে বসে আছে? আর বড় বড় কথা থাকলেই কি ছবি ভালো হয়? সভিকোরের ভালো ছবির কি আজকাল কোনই দাম নেই? এই সম্বন্ধে আমি জনসাধারণের দ্বিট্ন আক্ষণ কর্মছা, ভট্টেশগা, হাওড়া।

প্রেম

অমৃত প্রিকায় ব্রক-যুবতীতে প্রেম সন্বদেধ ক্যালকাটা উইমেস কলেজেন ছাতী স্নুনন্দা ঘোষ যা বলেছেন—ভালবাসার ক্রেতে আমি খ্র ছিসেবী থাকার চেণ্টা করি।' দেখে বিজ্ঞাত হলাম।

স্থানদা দেবী সম্ভব দখাকের একজন ব্রত্নী। এই দখাকে যেথানে আমাদের সব কিছুই হিসেব করে বলতে হছে, ক্যাতে হছে, ক্যাতে হছে, কোনে তিনি হয়ত ভালবাসাটাকেও ছিনেবের মধ্যে ধরে ফেলেছেন। কিশ্রু ভেল ও জল যেনন কথনও একসংগা মেশা না, ভালবাসাও ঠিক ভাই। তাই হিসেব বলতে তিনি কি বোঝাতে চাইছেন তা ঠিক স্পট্নর। আর বদি হিসেবেটা ব্যবসার্ভিত্তিক হয় অর্থাণ বেখানেই মাছ সেখানেই ট্রোপ্রেক্সার মত, ভাইলো তিনি জানাবেন, বাবসাদারিতে ভূল-চুক হয়েই থাকে। ভার বাবসাদারিতে ভূল-চুক হয়েই থাকে। প্রাপ্র সেই ভ্রাক কথনো ব্যবসার্টাকে পথে মাছিরে দের। ভাই থাকে ক্টেই ভ্রাক্সাসার

The state of the s

টোপটো গেলাতে চাইবেন সেও যাঁদ পাকা বাবসায়ী হয়ে থাকে, তবে কিন্তু সোই ভালবাশটা হবে কস্মেটকস-এল মত। তাতে থাকবে না ভালবাসার অভিতর্থ থাকবে শ্যুই জৌলাব।

তাই বলছিলাম, ভালবাসার কোন জাত নেই গোচ নেই। ভালবাসা হচ্ছে স্বাপনীর। আব সেই ভালবাসার হিসেব এনে ভাজে স্বাধ্বা দেবী কলাজ্বিত করতে চাইছেন।

আভাব-অনটন, নৈরাখ্য প্রভ্যেকের ভাবনেই এসে থাকে আবার সমরে চলেও বার। কিপ্ত, ভালবাসার এপ্লো আদৰে কেন : আর ব্রুক্তের আভারলটাণিতং আইছ ১জনের বোঁণ প্রচেণ্টার এই সক্তর ল্রে করাই তো ভাগপাসার সার্থকিতা। ভাই লোহাই তাঁকে, ভিনি বেন ভালবাসার হিসেব এনে কলভিকত না করেন।

স্থানিক। চটোপাধায়কে আনাপ্ত আন্ত রক ধনাবাদ। লেকে স্থানিক। দেবীর কথা দিয়েই শেষ কর্মছ—ভালস্থানা কেকে ধ্যের এবং মাদসিক প্রভত্তিই বড় ফ্যাকটর'।

আশা করি মান্নীর সম্পাদক মহাশর, এই লেখা পরিকার প্রকাশ করে থারিস্ত কলবেন।

> আজিত হয়, বেদিয়াশাড়া, কলকাডা-4ং

আর্থিক ্

আবার ম্যালথাস

বিশ্ব জনসংখ্যা বছর : রবীন্দ্রনাথের চতুরকো জ্যান্তামশাই বোবনে ম্যালথার স্থিতিক জ্যান্ত বিশ্ব পথে বাড়ান মি। কারণ পরিবাকৈ জ্যান্ত জনভারে ভানান্তালক না করাই সমাজ-স্তেতন ব্যক্তির ভাগা বল তিনি মনে করেছিলেন। বল্পত্ত গ্রমান্তাল (১৭৬৬—১৮৩৪) উল্বাহ্বন্ধনকে ক্যান্তাল ব্যাস্ত্র বিলান্তির করে অন্তত ব্যাস্ত্র বিলান্তির

কুমানেশ খোনের বই...
ইত্যাদি ৩-৫০
কলকাতা কলকাতাই ৩-৫০
হাস্যকর গদপ ৪-০০
ফোঁটা ফোঁটা গদপ ৫-০০

.গুল্ফ-প্ল চ

हर्त. ज्रांत भारत २.६०

४०. कल्ल खोरे बारक है किन-३३

করে জনবিক্ষোরণ নামক প্রকৃতির প্রাত-শোধকে এডাবার নিদেশি দিয়েছিলেন। প্রাচীন রোমকদের সময় থেকে কৃতিম উপায়ে জন্মশাসন বাবস্থা ব্যক্তিগতভাবৈ অন্ন্ত হলেও ম্যালথাসের সময় পর্যাত তা সামাজিক ব্রীকৃতি এবং ফলে ব্যাণিত লাভ করে নি। এমনকি সেদিন পর্যাত ফ্রেও শেটার বা অনুরূপ কিছুর ব্যবহারকে বাছবিচারহীন <u>বোনসম্ভোগের</u> (প্রমিস-কিউইটি) নিদ্র্শন বলে ধরে নেওয়া হত। আজ কিন্তু এই সব ব্যবস্থাকে সামাজিক হাতিরেখ ও নিরাময়ের অব্দ্র বলেই গণ্য করা হচ্চে। করণ অতি সরল: সকলে চিন্তাশ্রীল 🖣 ব্যক্তিই আজ এই উপলব্যিতে উপনীত হয়েছেন যে.. म, ष्ठ ₩**7**-পরিকলপনা করতে সমর্থানা হলে ধরংস অনিবার্য। এই উপলব্দিই 57 5598 **াবশ্ব জনসংখ্যা** <ছব বক্ষে ঘোষণার ফালে প্রেরণা এবং এই প্রণয়নের উদ্দেশ্যেই গত মাসে (আগণ্ট) ব্রখারেণ্টে ১২০ দেশের প্রতি-र्निथ्यन्त्र এक मृष्यमन अन्तृष्ट्रिट द्या।

মালথাসের সময় এই উপলবিধ ছিল একমাত্র ভারই। অবশ্য তার প্রতিপাদ্য বিধার, প্রচার লাভ হরে বেশ কিছুটা চিন্তার খোরাক জ্বাগিয়েছিল, কিন্তু দানা বে'পে
ঠিক বিশ্বাসে পরিণত হরে আসন করে
নিতে পারে নি। আর পারবেই বা কি করে:
তথন ত জনবিস্ফোরশ-সমস্যার অফ্ররও
দেখা যায় নি। স্তরাং বাস্তবের সপ্রে
সংগতিবিহ'ন ওত্তকে লোকে বড় এবটা
গ্রেছ দেরনি। বিষর্গটির ব্যাথারে জন্ম
কিছুটা পটভূমিকার অবতারশা। করা যেতে

ম্যালখাসের তত্তের পশ্চাদপট্ট :

প্থিবী নামক এই উপগ্রহের বয়স কত? দশ লক্ষ্যিশ লক্ষ্যাএক কোটিবছর ব তারও বেশী হতে পারে। সে যাই হোক, ম্য লথাসের মৃত্যুর চার বছর আগে-১৮৩০ সালে-প্ৰিবীর চেট জনসংখ্যা ছিল মা ২০০ কোটি। এল ক ৩২ বছর আগো---১৭৯৮ সালে *্* স্থাসের প্ৰকাশিত হয়ে তথন প-থিবীর সংখ্যা ছিল শিচ্যই আরও কম देशमान्स आमःका कर्ताष्ट्रम क्रम्भः शास्त्रः বিখাত ফজক-সংক্ষারক উইলিয়াম পেলী বিলাপে ভি করেছিলেন : রাজ্যের নামে যদি কিছ্ম অকল্যাণ থাকে তবে তা হল জই-শক্তির ক্ষয়...এবং অন্য যেকোন রাজনৈতিক উন্দেশ্যসাধন ম্লতুবী রেখে এদিকেই প্রথম দ্যাল্ট দেওয়া উচিত। এর কিছুদিন পরেই প্রধানমন্ত্রী ইয়াংগার পিট জনসংখ্যা বৃণিংর উল्परमा भार्मास्मर-हे प्रतिष्ठ-हान विक छेथाभन করেন। বিলটির ব্যবস্থা ছিল যে, প্রত্যেকটি সণ্ডানসণ্ডতির জন্যে দরাজ অর্থ সাহায্য করা হবে।

এর কিছুদিন আগে (২৭৯৩) প্রকাশলাভ করেছিল উইলিয়াম গড়উইনের বিখ্যাত
গ্রন্থ পোলিটিক্যাল জাস্টিস', সাতে বর্তমানকে বিশেষ হের করা হলেও ভবিষাতের
জন্যে এক স্বর্গরাজ্যের কম্পনা করা
হয়েছিল।

অনেক দিন ধরে এই স্বর্গারাজ্য বা ইউ-টোপিরাই ছিল ইংল্যান্ডের অভিজ্ঞাত সম্প্র-দারের বৈঠকথানার অন্যতম প্রধান আলোচা



লব্। এই বৰ্ষ এক বৈসক্থানা ভিন कारिक्टरण ग्रामधान मास धक्का कार्माह লালেকের। ট্যাদ রলাট[ে] মালেপাস ভার**ই** শৈলে। বাধ মালখাস রবাটাকে প্রারই ক্রিক্তন আলোচনায় স্বোগদান করছে। ক্লালোচনার ফলে দেখলেন হৈ, পত্র 💇টোশিয়াল ঘোটেই বিশ্বাস করে না বরং विवार अभवत्म जात गातला हैनतामाबादन লয়া। প্রের প্রতিপাদ্য বিষয় ছিল : মান্য জ্যোদ্যতিল পথে ছোটেই এগাছে মা: **শ্ৰ**ণ্ডীত পাক্ষ বংশ ব্ৰিধৰ সভ্যাত জনপ্রচার দর্খ বিরতিবিভানি জীবন-লংখানে লিণ্ড ছবে আছে। প্রকৃতির স্কান্ডার क्रिकेट टगाँक भा कि तत्ता दशक मा स्कन. ক্ষুদ্দেশ্য বৃদ্দির সন্ধ্য লোড প্রতি-ক্ৰাণিতায় খালোৰ বোগান সৰ সমধেই শিছিয়ে পাকবে। ফলে বাড়ুডি জনসংখ্যা অধাহার দারিদুজনিত কাৰি জ্যাদি কবলিভ হয়ে নিশিচ্ছ। হয়ে যাবে। আই হোল প্রকৃতির প্রতিশোধ—অত্য**াধ**ক ্রারে বংশবৃদ্ধির প্রতিশোধ।

শ্বগরিজ্যের কল্পনা থেকে হঠাৎ বদি

ইই ধরণের চিচে ফিরের আস্তে হর ওবে

ইনের অবস্থাটা কি দাঁড়ার ওা সহজেই

স্বল্মের। স্তেরাং ম্যালখানের প্রন্থ পাঠের

স্বান্ধ কালাইল যে অথনিটিতকে নৈরাশ্যবাদী

কাল (প্য ভিসম্যাল সামেন্দ্র) বলে অভি
ইত কল্পনে ভাতে আর আশ্চর্ধ কি?

স্বান্ধকর দিনের পট্টেমিকা:

আজকের দিনের পার্ভামকাও হলে এক #বগ'রাজ্য—'মনতভ প্র'ব্তী' দশকের দেশ্ব শহ'েত অথ'নীতিবিদ্ধ র'ণ্টনেতারা জন-সাধারণের সম্মান্থে এই চিত্রের ওপরই ্রুছাগত বং চড়িয়ে গিয়েছিলেন। অর্থনীভির ভাষায় চিচ্চিট হল সম্প্রসারণ ও উল্লয়নের —অফ গোৰ এনেড ভেডেলপমেন্ট। অপাং **হারণা ছিল যে, জাতীয় আয়ু পর্যাণ্ড ছারে** ৰাড়তে থাকলে সকল দিকে কাম্য অথনৈতিক পরিবর্তনি স্টির হবে। এই কালা অর্থ-নৈতিক পৰিবত'নকেই তেতেলপমেণ্ট বা উল্লেখ্য আখ্যা দেওয়া হয়। পাশ্চাতা ধরণের শিলপায়নকেই এই সম্প্রসালগ ও উলম্বনের মাল যাকা বলে ধরে নেওয়া হারেছিল। এবং এই ম্লমন্ত জপ করেই উভয় পোলাধে বিভিন্ন দেশ আত্তপূৰ্ব এবং অকল্পিত অথকৈতিক উলয়ন সাধন কৰেছিল। দ্ৰটাণ্ড স্বর**্প পণ্ডিয় জায়েনি**ী ও জ্লাপানের উল্লেখ কৰা যেতে পানে।

এই ধর্মাচরণের ফলে তৃতীয় বিশেবর অচততৃত্বি দেশগুলোচেও অনেক কেন্দ্র উদ্বেখযোগ্য সৃশ্পসারণ ঘটেছিল কিচ্ছ উক্ষর্যান্ত্র ফলা কোনসাতেই সমানুশাতিক হ্যানি—এমনকি কাছাকাছিও পেণিছোয় নি। ব্যাখ্যা কৰে ৰলা স্বায়া, এই সৰ দেশে বে
প্রিয়াংশ মোট জাতীয় আলু ৰাম্প শেষেত্রে
স্বান্দে সংগ্রাহার বা প্রেয়ের সাপকাঠি বন্ধে
ধরে নেওলা ছ্রা) জনসাধারণের লীক্ষয়ার্থার
মান সেই পরিয়াণে কথনই উন্নত হুল মি।
কারণ শিব্রিধ : (ক) জনবিস্ফোরণহেণ্ড্র
এই সব দেশে য়াখ্যাপদ্ধা দ্রাভায়া আদ বিশেষ বান্ধি পালু নি, (খ) সংগ্রাহারের
ইউডের প্রেণ্ডারা আলোর ফল জাতীয় স্বান্ধের।
উডডের প্রেণীরাই দেশী ভোগ করেছে।
ফলে ধনী-দীর্ষারের ব্যবধান আরও ব্যান্ধি
প্রেয়েছে। অর্থানীটির দ্রান্ট্রেলাল থেকে এর
অর্থা হুল আর্থিক কল্যান্তের হ্রাহা

উভন কারণেই আবার এইসব্ কেন্দে কায়া সমাজনেরাম্লক কায়াণির—বেয়ন শিকা, ব্যাংগ্রা নিরোগসংখ্যান সামাজিক নিরাগতা ইতার্গিদ—প্ররোজনীয় সম্প্রস্থান ঘট নি।

এডিদিন পথ্যতি মোটামাটিখাবে পরে
নেওয়া ছত যে সম্পি-কার্থাং লোট লাভীয়
আয়ের পর্যাণত বাংশ ঘটলেই জন্মছার ছাস
পেরে জনসংখাবাংশ নিয়ন্তিত হবে।
সংশ্রতি এই তত্ত্ব যাখাথ সংবংশ সন্দেহ
প্রকাশ করা হছে। জারণ, দেখা হাজে সে
জাতীয় আয়ের বাংশ সন্তেও জনসংখাবাংশ
খোটেই নিয়ন্তিত হছে মা এবং শরিবার

পরিকল্পনার প্রচেণ্টা সড়েও জনবিংস্কারণ
বাট চলেছে—তাও আবার অব্যাল প্রাক্ত।
তাতএব সম্প্রসারণ এবং পরিবার পরিবার
কংশনার রাংগা সংগা প্রয়োজন হন সারাজিক
ও কর্মানিকিক প্রগতি (প্রোডেন)। বিশ্বত বাখারেন্টা সংশোদনের এই ছিল আন্যাভয় প্রতিশাদ্য বিষয়।

দীব্ৰকালীন ডিজিরতে জালনা স্বর্গট নিনেনর সংগণিটে স্থান্তরালীন বিবেশীর ক্ষেত্রে। এখন এই স্বল্যায় বিজেই দ্বিতি-পাত বরা ধাক।

कविवादका हित :

নেখা গেছে ১৮০০ সালে প্ৰথিবীৰ হোট জনসংখ্যা ১০০ ফোচি। প্ৰভাৱতী প্ৰথম বছবের মধ্যে এই সংখ্যা শিক্ষায়েও দিউটা পৰিচাৰে কৰে কৰে কৰিছে এবং প্ৰথম প্ৰথ

নীহাররঞ্জন গণ্ডর

সয়্ত্র মহল (লাজ্ম) ৩ বজেনু বাজে ব'াণী ৪ বিমল মিলের

বিমল মিলের

সরস্ত্রী ২৬ কামনার ধ্প ১০ আশ্তোষ ম্থোপাধ্যায়ের

কাণ্ডনরাগিনী ৮ অগ্রিকন্যা ৪ নীহাররগ্লন গণ্ডর

কিরীটী অমনিবাস

১ম-১৫ গ্ল-১৫ ৪শ-১২ ৫ছ ব্রুক্তর
ভগ্লোককের

হাতদেখতে শিখুন

क्रमत नारिका अकानन, १ लेबार जान, क्रीनकाछा-১

অতএব দেখা যাতে যে আগামী
শতকের শূর্তেই প্রিবার ও আয়াদের
ছারতের জনসংখ্যা প্রার দিবগুণে প্রশাহরে।
থা.লখাসের তত্ত্বে এই ছিল প্রতিপাদা
বরর প্রতিপ্রিক মহামারী ইত্যাদি স্বাভবিক
পজিতিভ চেকস) কারণে জনসংখ্যার একাংশ্
দশ্চিহ্য না হলে ১৫-৩০ বছরের মধ্যে
নসংখ্যা দিবগুণ হয়ে ওঠে। এই ভছ্তুত্বর
বর্ণতা প্রতিবোধের জন্মে মান্থাস প্রতিরাধমান্ত্রক ব্যক্তা (প্রিভেন্টিভ চেকস)
যবলন্বনের নিদেশ দিরোছ্লেন। বর্তমানে
য় পৃথিবীর সুর্বাই পরিবার পরিকল্পন্



ত্যাদি নামে ব্যাপক প্রতিরোগম্পক ব্যাপথা অবজানিক হরেছে তব্ধে কিন্তু নালখাদের সেই আতংক-উংপাদক তাজ্য কোন প্রকার-ভেদ ঘটে নি কেন? কারণ হলো মানুষ জনসংখ্যা নিয়ন্দ্রগের খ্যাভাবিক কারণ-সমাস্থ্য অনেকটা নিয়াল্যিত থবে ফেলেছে।

প্ৰাভাষিক ও প্ৰাক্তবোধ্য সক ব্যবস্থা :

গত মাসে বিভিন্ন বিদেশী পদ্ধ পাঁচকার ভারতে—বিশেষ করে বিহার রাজ্যে বসল্ভের প্রকাশের ওপর নানার্প টিশ্পনী কেটে সংবাদ প্রশালিক হারেছিল। একটি বিখ্যাত সাশতাহিক পাঁচকার সংবাদটির শিরোনাম ছিল মা শীতলার সফার নী—মা শীতলাগ র্ম। সংবাদটির সংগে একটি বাংলাছিল ছল ও তাঁর বাহন রাসভে ভারোহণ করে মা শীতলা সফার্জনী সঞ্চালন করে চলোছেন। তিনি অদ্শা কিন্তু সক্ষার্জনী যাদের আঘারে করছে সেই জনসাধারণ সংগ্রিক্ষা। সংবাদটির শোষে টিশ্পনী কটে হরেছে: এখনও ও দেশের লোক মালিতার সক্ষার্জনী থেকে নিজেদের বাঁচাতে সাহীবার সক্ষার্জনী থেকে নিজেদের বাঁচাতে সাহখনি।

कां. इरमञ টি॰পনীটি কঠেন্ত ও অনেকাংশে স্ভি। উন্নত দেশ থেকে বসক্তকে সমপ্র নিম্লি করা হয়েছে। অনুর্পভাবে অন্যান্য স্বাভাবিক কারণকেও দমন করা হয়েছে। আমাদের দেশেও যে কিছু করা হয় নি তা নয়। কিল্ডু একদিনে যেমন স্বাভাবিক কারণকৈ যত পরিমাণে দমন করা হবে অপর্লিকে ডেম্নি প্রতি-রোধমাুলক ব্যবস্থাগ্রেলানে জোরদার করে তলতে হবে। নইলে নীট ফল কিছুই ফল্যে না। প্রায় সমগ্র বিশেব এই না ফলার কারবারই চলছে। আলাদের দেশের দৃষ্টান্ত থেকেই বিষয়টিকে পরিস্ফাট করা বেতে পারে।

ভারতের শৃষ্টান্ত : .

নুখারেক্ট স্লেকানে কেন্দ্রীয় স্বাস্থ্য-মংনী ভক্টর করণ সিং ঘোষণা করেছিলেন যে, মার বিগতে পাঁচ বছরেই-—অথাবি চতুর্থা

পরিকাশনাধীন সময়ে (১৯৭০-৭৪) ভারত প্রতি হাজারে জন্মহার ৩৮ থেকে ৩৫০ নামিরে আনতে সমর্থ হরেছে, এবং এর श्रांने ५ क्ली दे व नक की देन स्माह करा-সংখ্যার হোগ হর নি। সুতরাং পরিবার পরিকরশনা প্রকরণ সাথাক হরেছে। কিন্তু কভটা? এখনও **জন্ম**তার হল ৩ শতাংশের ওপর। বৃদি 'মা শীতলার দয়া' ইত্যাদিতে অপসারিত করা কামা বিবেচিত হয়—সভা লীবনের মানদণ্ড বলে ধরা হয় জবে এট জন্মহারে জনসংখ্যাব ক্রির হার ২ শতাংখ্যের ওপরে পাক্ষে, এক্সন কি আমাদের লক্ষ্য য়ে আগামী ১০ বছরে জন্মহার প্রতি হাজারে ২৫-এ নিয়ে আসা, তা সাধিত হলেও क्षानभ्रशाविष्यत हात क्यार ना वल्हे মনে হয়। কারণ স্বাভাবিক কারণ্ণালো আরও নিয়নিত্ত হবে বলে ধরে নেওয়া ষেতে পারে।

थनी अ क्तिष्ट रम्म : \$

মার্কিন ব্রুবাণ্টে জন্মহার প্রতি হাজারে
১৫। বভামানে ঐ দেশে গড়ে দুই শিশার
সংসারের (ট্রাইলড় ফ্রাহাল) আদর্শ প্রচার করা হচ্ছে। এই প্রচারে হাঁদ বিশেষ
ফলও ফলে তব্তি কিন্তু ঐ বেশে জনসংখান ব্যানর বিশেষ হাস ঘটরে না-ভিক্তিসাবিদা। ও পরিবেশ ইনার্নেন ফলে লোকের গড় আরুশ্কাল আরও বেড়ে যাবে।

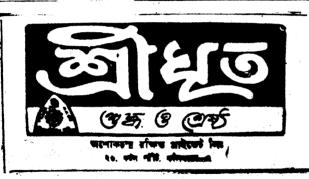
জবে মাকিনি সাস্ত্রাণ্ট ইত্যাদি সম্প্র দেশের সমস্যা অন্য প্রকৃতির ও মোক'-বিকার যোগ্য আফ*েন*য় মত ভতীয় বিশেবর দরিদ্র .৭প**গ***্রে***ন্**র সমস্যার কি ? প্ৰিবীর কোটি লোকের মধ্যে প্রায় ৪৫ শতাংশই দারিদ্র সীমার নীচে তাদের বাহিকি মাথা পিছ, আর ১৫০ ডলারেরও কম। জন-বিস্ফোরণের জনে।ই তারা যে পরিদু তা নয়, দারিদ্রাও তাদের জনবিদেফারণের কার্ণঃ সূতরাং ভারা সূর্রাভক্ষা চক্রে পতিত।

উभज्ञरहातः

এতদিন শর্ষিত মনে করা হোত যে.

কিরাচরিত পাশ্চিতে সম্প্রসারণের—অথাই
শুনির্দ্র শ্রনির শিল্পারনের মাণানে এই
দারিদ্র দ্রীকরন সম্ভব। এই পাশ্চির
কাষ্কারিতা বে বিশেষভাবে সীমাবাধ বর্তমানে তা স্মুপদট্ হয়ে উঠেছে। তাই
উঠেছে জন্যান্য দাবি ঃ বিশেবর সম্পদের
ন্যায়্য বণ্টনেব বিশ্বজনীন জনসংখ্যা পরিকল্পনার ইত্যাদ্। পরবর্তী বংখ্যার প্রথম
দাবিটি স্পদক্ষে আজোচনার ইচ্ছা রইল।

- नान्छनान मृत्यानायात





[প্রে' প্রকাশিতের পরা

আসলে ভিনি ছোটবাব্যক সাচস দিচিছলেন। সমান্ত সম্প্রেক্ হাতট। জ্ঞান গাঁঘা আছে—যা তিনি পড়াশোনা করে-ছেন-এবং কিছ দিন আগে কনটিকি অভি-যানের সব প্রিবী ভোলপাড় করা খনর তিনি জানেন এবং স্ব ঘটনা, অংগং মহাসম্ধে সামানা মান্ধেরা ভেলায় চড়ে হাজার হাজার মাইল পাড়ি দিলে কি কি অভিজ্ঞতার সম্মুখীন হতে হয় তার একটা নিদারঃণ ছবি তিনি ছোটবাব্যকে দিতে পারতেন-কিন্তু ইচ্ছে করেই দিলেন না। কেবল বললেন, যদি কোনো অতিকায় হাঙর দেখ পেছন নিয়েছে—তাকে অনিণ্ট করার চেণ্টা কববে না। সমুদ্রের কোনে: জীব অহেতৃক হত। করবে না। প্রয়োজনের অতিরিত্ত মাছ সম্ভূর থেকে তুলবে না। ছোট ছোট সৰ ক'কেডা এইসৰ কাশ্তীয় সমালে ভেসে বেডায়। খেতে বেশ স্থাদা। ভোছাদের সংগে জল, কয়লা, এবং এই দ্যাখো লোহার উন্তন, একেবারে পাটতনের সংশ্যা কিট করা সব-সম্ভের দ্রশ্নিতে যেন কিছা আবার ছিটকে পড়ে না গায়।

় কাল সারাদিন কখন যে সারেংসাব সব করে বেথেছেন! তিনি এতটুকু সময় নাট করেন নি। থেতে প্রতে যা লাগে স্ব তিনি তুলে এনেভন বেটে।

বনি উঠে আসছিল। চা-এর ট্রে হাতে।
কাপ উপ্ত করে সভতপণি উঠে আসছে।
কালো এপ্রণ, সাদা দুক এবং সে পলায়
বেশ সাদা পাথ্যের হালা পড়েছে। নীলাভ
চোখে কি দাঁপিত। ছেটেবাব্ ইশারা করে
বলল, আসছে।

স্থেগ সংশা হিগিনস প্রায় লাফ দেরে
নাম্মজন নিচে। ছোটবাব্ও নিচে নেমে
গোলা। ওরা গোটে হেলান দিরে চা খেতে
খোতে তখন কত রক্ষমের কুথা বলতে
থাকল—বনি, বাবা এবং ছোটবাব্র দিকে
তাকিয়ে আছে। শ্বীপ্টার কি নাম, শহরে
ক পাওয়া যায় কাশ্ডান সর্বানিয়ে বনিয়ে

বলৈ যাচ্ছেন। সব আম জাম নারকেল 'গছে আর লেব্র জগাল-আনারসের হেত— ঠিক সামোয়ার মতো দেখ্ডে—সামনে তার দিগ্ডে জোটবাব্। খ্র সাবধান আমাদের কথা গায়ে ভূলে যাবে না। তথানে পোটছে প্রথমে তোমরা খবরের কগাতেজার অফিসে দেখা করবে—তোমানের কথা বলাবে— আমাদেব কথা বলাব—মিসি জাহাজটায় তোমরা ক্রেলে। কাতান, র্ম্প সারেপ্ত জাহাজটায় রের গেছে। ওদের জন্ম রেসকু চাই। তিন্টে বোট ভেসে গোছে— ওরা ঠিক ঠিক…...

বনি বলল, আমার ভাল লাগছে, না বাবা! মনটা আনার কৈমন করছে!

—দ্র বেকো সেয়ে—স্যালি ছিলিনস সংসা যেন মুখ ফিলিয়ে সমুদ্র সংক্ পড়লেন। বললেন ছোটবাবু বোটে একটা ক্রস ছলে নাও। অন্য ক্সটা এস এদিকে এস। তিনি কাপু বনির হাতে দিয়ে এগ্রেড থাকলেন।

र्नाम तनन, रामा क्षत्रहो रक्त?

—ব্ৰতে পারহ না, সন্তে 夜透 রকমের অপদেরতা থাকে। শয়তাল থাকে। আশাভ প্রভাব থাকে। তাদের হাত থেকে তোমাদের রক্ষা করতে হলে আর কি দিয়ে পরি। জসটা মাকখানে থাক্রে। তিনি বলতে চাইলেন মহাসম্ভের অন্তহীন এই যাতায় মাজু প্রায় অনিবায—তব্ শাভ প্রতীকের মতো অথবা ইশ্বরের সেই অমোৰ বাণী খোদিত আছে যেন কুস্টার গালে সেই কঠিন বিভীষিকায় ভেতর মৃত্যু ৰত আনিবাৰ্য হয়ে উঠবে—তত এই ক্রস সর আশাভ প্রভাব থেকে মাক রাখবে বনির মৃতদেহ—তথাৎ তিনি যেন জানেন, বোট ভাসতে ভাসতে কোথায় চ'ল সাবে--অয়থা পালে বাড়াস জগালে সাক্ষিম ক জানে এবং যখন কিছু জানা নেই সংস্থ অনিবাৰতির সামিল এবং সেভিভ কেস্টোম কঠিন মাড়ার সাশা, চোখের ওপর াদ্ধান ভার সাহস নেই ছোটবাব্বে দিয়ে দুৱে পাঠিয়ে তিনি এলিসের জ্বতার ছাত থেকে ব্রহাই পেতে চাইছেন। সংগ্লে একটা কস থাকলে কবর ভূমির ওপর কোনো দিন কেউ ধদি বনির জসটা পু'তে দেয়। অথবা কসের নিচে শুয়ে আছে বনি।

তিনি বনির দিকে এখন তাকাছেন না।

যতটা দুত সম্ভব ওদের নামিরে দিতে
পাবলে তিন বেশ্চ বান। জাহাজ এবং
সেই পাহাড় মাথোমাখি দাড়িয়ে আছে।
অথবা সেই অতিকায় কসটা—প্রায় দুটো
বাঁড় লড়ার মাথে মনে হয়। এবং আকাশে
থত থত যোয়। সাবেং সব তুলে বা
যেখানে দক্ষরার বেখে দিছেন। কাশ্তান
কসটা হ'দে বাভালেন। কসটা মাঝানে
দাইয়ে রাখা হল। আনা কসটা ছোটবাব্
এবং কাশ্তান মিলে জাহাজের মাথায়
পাশ্তে ওটাকে ভাহাজে দাড় করিয়ে কিছটো
ভরা থেকে মাড় হবার মাড়ো তিনি বিহুকার
করে ভাকলেন—সাবেং।

সামেং কাছে এসে দাঁড়ালে **ভাকলেন** যনি!

বনি কাছে এলে বসলেন, সৰ ভুলে দিয়েছ।

বনি ফের কেবিনে চাকে ওর जन्दन मृद्धा वर्गा श्रवः जन्निम्हन সিলেম্ভার ভূলে দিল বোটে। বললেন, খাব রোদ উঠলে হাড দেবে। নিচে দ্বজনের মতো **লোবার** ক্রায়গা আছে। হ'ত খুলে দিলে জায়ণা তাও দেখিয়ে দিলেন। কি রেখেছেন বনিকে व् बिएत मिरक्ट्य। काशीय अन्तर कार्क्स द्वावे-कृक, न्याश्रम वारकणे रवनामा अन रहेरन रहेरन रहेरन राजिस्स দিকেন। কল্পাস, কুড়োক জ্যান্স ম্যাক্তেস काथारा किछारव सिर्धारक न्यूबनएकहे प्रिश्च मिलास। भारतक सामकृत কিনানায় ক্তিয়ে নেৰে। তবে কিছুটা ट्यारम्ब **कार्**मा इस्त। स्वर्णेसम्हरूक ग्रहत्व व्कालम् धरे मार्था अभाव प्राप्त

শাক্ষা মাথাদ্র লি-এংকোর। গালেরের মতো
প্রনিকাল-করেল রেখে দিরেছি। হাতকরিপ কেরোদ্র রাখানার আরার। তান
করের প্রায়ানর গেছনে উ'কি দিলেন।
করের পাহাড়ে আর কাছে আসাছে না
নাথার রাহান্তের রুস তুলে দিয়ে তিনি সব
আশার ভার থেকে মৃত্ত লী দিয়ে তিনি সব
লাভিদেক তিনি খ্লাছেন যেন। -এই তে:
হাত-শংশা এই হল্জে নিক্রেটর টিন, রালি
চিন্নি সব যোল আউনেসর মতো করে
আছি। এগ্লোতে প্রথমে হাত নেবে না:

্ছে।ট্রাব্য দেখল স্মালি হিণিনস নিজের কথায় নিজে ধরা পড়ে যাবেন। সে ভাজাতাড়ি বলল সারে সিগনালিং টুর্চ কোলার, রোখেছেন।

সারেও বললেন তপরের দিকে আছে ! এই দ্যাথ বলে তিনি সিগনেলিং ট্র্চ-বুকেট-প্রায়াস্ট্র ফ্রাস্কাইট স্ব এক এক এখানে ফাণ্ট-এড . कारत करका रमभारका। अन्यता दशारे नारतेत বাকসের ভেডরে রেখেছেন, কোরামিনের ফাইল। জাবন ধারণের শেষ পুয়াস এটা শ্ব যতে,ব স্থাংগ কাঠের বাকসে স্থান্ত্রের আন্সার মতো বৃদ্ধী 'কারে রেগেছেন সারেও। তিনি त्यारहे के १६ के १६ के आफिल्लिस वरण, रवाई দুটো ডেবিডের মাপায় বেশ দুর্জাভুল<u>,</u> ডৌবড দুটো কাত করে নিলেই বোট নিচে হ**ুলে পড়া**বে। ভারপর উইনচ চ্যালিয়ে শাুশ দাত ছেতে দেওয়া। কণিকলে কান্সে থাকা ৰোট ধারে ধারে নেমে যাবে। গাল তিনি মাস্ডলে পরিয়ে একেবারে ঠিকঠাক করে শেষবারের মতো নৈমে এলেন। এখন বোধহুর বোট নামিরে দেওয়া হবে।

সারেঙ-মার ছে।টুনার,কে বলজেন, তোর আর কিছু পড়ে থাকল না তো।

মহিমচনদ্র শর্মা প্রেকায়স্থ অন্নিত

श्रीम्रम्डग वम् भी छ।

भ,जा-54-00

ম্যাপলিথে কাগজে, রেক্সিন বাধাই। বিশেষৰ :--ভীকা চিপনী সহ ম্ল সংস্কৃতের পালে পদ্যে প্রাঞ্জন ব্যাখ্যা। জিপিকা--৩০ ১১ কলেজ রে। কলি-১



ছোটবাবু ভেতরে ভেতরে অঞ্পির হয়ে পড়ছে। সে দোখ ভূদে ভাকাতে প্রত পারছে না। এই ছোট বোট নিয়ে এখন অকুল সমৃদ্রে একা ভেসে পড়া—িক যে ভয়াবহ —ভার হাত পা যত ংহিন আব স্থায় এগিয়ে আসছে তত যেন ঠান্ডা মেরে হাছে—বনি প্রায় অবলার মতো—এবং সে এका थाकरम एवं माग्निए क्य-निरक्षत करा চিহতা-ভারনা তার তত নয়, এই মেরেটা कुरकात करला भात कर्रते ब्ला स्मरतको कारम না, সামনে কি নিদারাণ সমাদ্র হ^{† করে} আছে। তার ভেতর চুকে গেলে । শ্রথিবীর কোনো মানুষের সাধ্য নেই ফের তাকে ত্যাবিকার করে-তথন কিনা সারেঙ-সাব তার কি আর পড়ে আছে জিল্পাসা করছেন---সব জেনে কেন এমন করছেন তাঁরা। বি হবে কিছ**ু পড়ে পাকলো। সে দাঁত** চেপে থেকে, সামনে থেকে বলগ সর্ন এখান সরে যান! সরে যান বলছি! আপনারা আমাকে কি পেয়েছেন।

স্থালি হিগিনস তথ্য কথি হাত রাখনেন ছোটবাব্র। তাকে খুলেটর গ্রণ শোনালেন। বললেন, ছোটবাব্ স্টাগল ইজ দাংলেজার। এত সহজে ভেগেগ পড়ালে কোনে বিন আসছে। তিনি মৃহ্তে গলার স্বর পালেট ফোলনেন। সতক হয়ে গেলেন খ্র। ছোটবাব্কে টিপে দিলেন। ক্যেপ্টন এবার হাকলেন, বনি! বনির দিকে তাকিরে তার একটা কথা বলছেন না। বনি কিছ্তেই বাবার মুখ দেখ্যে

—ওপরে উঠে বসো।

পাচ্ছে না। সে বকল, এই তো আ্লি।

---ছোটবাব ু!

—দৃতি ধরে নেমে হাবে। আমরা দুক্রণে বোট হারিয়া করতে পারব না। শিথর এবং ভারবণ গশ্ভীর গলা। বান আর একটা কথা বলতে পারক না। মে লাক কিয়ে বোঠে উঠে বসল। পাটাজনে একটা মার্টেস পেতে নিতে পার। তিনি বানিকৈ হোন বলছেন না। আনা কাউকে। বান এখনও বাবার মুখ দেখতে পাছে না। সে সেই দুঃসমারের সাবতা, মু চলে হাবার পর হেমন অসহায় গলার ভাকত, বাবা, তেম্মান ডেকে উঠল

কিন্তু স্থালি ছিগিনস্ তথন জেবিজের গোড়ায় গিয়ার খুলে প্রায় ছোটবাবার সংগ্র সংগ্ জেবিজের মাধা এগিরে ধরলেন্ ছোট-বাবা তথন চিংকার করছে, বান দক্ত করে ধরো, না হলে পড়ে খাবে—বোট ভাষিণ দলুলছে। বান বোটের একটা দিক ভাষিণ জোরে চেপে ধরে আছে। বোট দলে দলুলে

যায়। এবং উইনচ ছেড়ে দিলে হড়ছড করে বোট নিচে নেমে বেডে থাকল। বনি তখনত তাকছে বাবা বাবা! তুমি আমার সংগ্ কথা বলভ না কেন! আমার ভাষণ ভ্র कत्रकः अवः क्लाउँदावः क्ष्मण त्वारं करम নেমে গেছে সে তাড়াভাতি দড়ি ধরে ঝুলে পড়ল নিচে। দড়ি বেরে বৈরে নেমে খেতে থাকল। বোট সরে যাজিল--আর সে किश्कात कतरह र्वान प्रीफ स्टेस्न ताथ। आहा পড়ে লাব সম দে। বনি তখনও চিংকার করছে বাবা, তাম কোথায় ? তোমাকে দেখতে পাচিছ না কেন! বনির খেয়াল নেই বোট নিচে নেমেই জাহাজের পালে থাকছে না। ভেট খেয়ে ছিটকে দরে সরে গেছে। ছোটবাব তেম্নি দডিতে ক'লে ডাকল বনি র্দাড়ে টেনে ধরে। **িলজ। কি করছ তুমি**! তোমরা স্বাই মিলে আমাকে কি পেয়েছ।

বনি এবার কেমন নিচে ভাকালে দেখল ভোটবাবা দড়িতে কালে আছে। পা প্রায় কিছ্টা সম্দের জলে ভূবে গেছে। দেউ এলে ওর স্বটা ভূবে যাবে। সে ভাড়াভাড়ি এবার দড়ি টেনে ধর্মুলা বোট ছোটবাবার কাছে এগিয়ে গেল। ছোটবাবা বোটে লাভ দিয়ে পড়লে বনি অভি কর্ণ গলায় ভেকে উঠল বাবা ভোমরা আমাদের কোথায় পাঠিয়ে বিছং! বাবা আমি ভোমাকে জার দেখতে পাছি না কেন্!

ছোটবাব, আর বিষ্ণান্ত দেরি করন না। সে বোটের গ্ডাতে মাণ্ড্র বাসিয়ে দিল। তারপর স্ব রিং পরিয়ে পাল টানিয়ে দিল বোটে। লাল বংশ্বের শালার তেকোণা পাল, ছাড়ার মড়ো হাওয়ার টান ধরদেলই নিমেষে লোট চণ্ডল হয়ে উঠল। ছোটবাব এক হাতে, দড়ি সামলা আছ, খন্য হাতে বোটের হাল ধরার জনা 😜টো হাচেছ। পালের দৃড়ি আলগা বলৈ এল দিকে বোট একেবারে হাওয়ায় কাত হয়ে। গোছল। এবং সে ও দিকে বেখল কনি প্রায় ছিটকে PITE গেছে। এরং এখন ওর এ-সব দেখার সমত্র নয়। ভীষণ দুতে সে দড়ি বোটের হুকে বে'ধে দিভেই এবার বোট সোজন *হ*য়ে গেল। আর তখনই জাহাজ ডেকে সাংশি হিগিনস প্রায় দ্' হাত আকাশে ভূরে চিৎকার করে উঠলেন, এগমানুয়েল আমাদের সহিত ইদ্বর। ব্নির গুলার সেই অসহায় স্বর আরু তিনি শুনতে সেন্না। বোট হাত এগিয়ে হাছে, দুৱে সারে বাতে উত তিনি চিৎকার করে হে'কে হাজেন-এমমান রোল আমাদের স্থিত ইণ্রক এমমান য়েল, আমাদের সৃহিত ঈশ্বর বলড়ে বলতে কালায় ভেলেগ পড়লেন। তিনি ছাঁট মৃত্যু রেলিভের ধারে বলে পড়লেন জারপর হা হা করে হারিয়ে হাওয়া ছোট্ শিশ্বে মতো মাঠে বসে কালা। স্ব হারিরে তিনি হা হা করে কদিছেন। সারেং সাব পাশে মাথা গ**ুকে** বলে আছেন। তিনি কি বলে मोब्द्रमा रमस्यम बन्दराङ लिक्सिन गा।

(क्यानगर्भाः अर्थासः नक्षांना)

निम दलानम् म्द्रशानायाम्

স্থাচীন চন্দ্রকেত্রাড় আজু আর পরিচরের অপেক্ষা রাখে না। মাটির গভীরে আবিক্ষত প্রাকালের মানব-বস তর আচর্ষক্ষনক বেসাতি নিয়ে গড়চন্দ্রকেত্ বা বারাসাত মহকুমার বেড়াচীপা অঞ্জ চিব্দা প্রগণা তথা নিম্ন-গাণ্ডেগ্য বংগর প্রত্যতাত্ত্বিক গবেষণায় এক অফ্রুরন্ড

িবগত অগ'শতকের বিভিন্ন সমারে এজন্মল আবিদক্ত হ্যেছে দাঁঘা অন্তর্গ বিস্তৃত প্রাচীন গড় ও সম্'শ জনপদের বিশ্ববাধেষ, তথাকথিত গ্যু-তুম্গে নিমিতি বিশাল মন্দিকের ভিত্তিভূমি, প্রাচীন কালের অজন্ত বাঞ্চনায়য় মৃদ্রা, বিচিত্র বর্ণ ও আকৃতির কোশল ও মালাদানা, বিভিন্ন মোটিক্যুক্ত অসংখ্য পোড়ামাটির মাতি প্রতৃণ ও ফলক।

গড়চন্দ্রকৈত্ ও সন্নিহিত অঞ্চল আবিক্ষত অসংখা মা টল্ল মুটি পাতুল ও ফলবগালির মধ্যে সবচেরে আক্ষণীয় হল বিভিন্ন পরিচয় ও পরিসরের দেবী-প্রতিমা হাক্ষণী মুটিগালি। বিচিত্র সুলালিত করর বিন্যাস, সলিল-ব্লচ্ছ অংগা-ররণ, মেখলাভাবে উল্ভাসিক যৌরন্দ্রমা রকণ, মেখলাভাবে উল্ভাসিক যৌরন্দ্রমা অলংকার-চিক্রে সমাবোহে প্রোক্ষরে আ সকল অনুপমা অস্সবা বা যুক্ষণী মুটি-গালি গড়চন্দ্রকেতুল প্রাচীন সমাভ ধ্যা ও শিল্পবাধের এক অননাসাধ্যাণ অভিবাত্তি।

প্রকল অপ্র স্কামাণ্ডত থাকণী মাতি ছাড়া, এ-অগলে আবিক্তত হয়েছে করেবটি খ্রই গা্র্ডপ্ণ স্পাচীন মাড্কা মাতি ও টেরাকোটা কলকে উৎকীণ বিভিন্ন কমণ-ভবিগমায় সমেভাগরত অজস মিখুন-মতি । কোন কোন গবেষকের মতে অসংখ্য বিক্ষণী মতি কৈ সংগ্য এসকল মান্তকা মৃতি ও অজস্ত মিগুন-ফলকো আবিকার সে ধ্সের অভীতে নিম্ন-গাগেল্য বংগর নবসমাজে যবিদণী উপাসনার গ্রেছে।

চন্দ্রকেতৃগড়ে বিভিন্ন সমগ্রে আবিংকৃত যকিণী মাতি গালি দেশ বিদেশের বহা সংগ্রহশালার গৌরব বাশ্ধি করে চলেছে বিভিন্ন সংগ্রহশালায় গ্রন্ফিত এসকল অপ্রে স্বমামণ্ডত বিক্শী মৃতিগালির পরিচয় নিশ্য বা আজিলক সৌষ্ঠেব বিশেল্যকের বিশেষ কোন প্রচেণ্টা আজও হয়নি। আনশ্রক্ষার স্বামী, শিলো কাছারিশ জন-স্টন প্রম**ুখ প**ুরাত্ত্ববিদরা কয়েকটি স্মার্টাশ্তত প্রবাদ্ধে দেশ ও বিদেশেশ সংগ্রশালার রাক্ষত করেকটি যাকিলী ম্ভি'র উপর কিছা কিছা আলোকপাত করেছেন। কিন্তু অন্যস্থান করে দেখা গেছে, চন্দ্রকেতুগড়ে প্রাপ্ত অজস্র হাফিণী ম্তি অধিকাংশই রয়েছে কিছু কিছু গবেষক ও প্রোবস্তু-সংগ্রহকারীল বা ভগত সংগ্রহশালার। এসকল মৃতি^বর মধো কত-গালি অতানত দ্বেপ্রাপা।

চন্দ্রকেতৃগড়ে প্রাণ্ড যদিকণী উৎকীপ অপারে স্বনামণ্ডিত ম্বন্ন ভাসক্ষণার্গ স্বা-কৃষাণ যুগের শিক্পশৈলীর অমাতের মিদশনি বলে অনেকে মনে করেন। জনৈক প্রত্যতত্ত্বিদের মতে (দ্রঃ অতীত্তির সমাধি চন্দ্রকেতৃগড়--শ্রীপ্রেশচন্দ্র দাশগণ্ড ঃ গড়-চন্দ্রকেতৃ কথা, প্রঃ ৪২-৪০) মৌর্থ-





হাক্ষণী-মোহবিক্স







भक्तक सम्बद्ध

afmill-arm arm

यामधी स्वाधा

ভালকবের নারী মুডিরে বেশভ্যায় যে প্রতিফলিত হয়, তা এসকল সংক্রা বসনেব আবদণে ও মেখলাভাবে উল্ভাসিত সুখ-সংশ্র**ীদের র শহাধ**ারিত অন্পাস্থত। ভাষাতা, ভিনি মনে করেন চন্দ্রকেত্গড়ে প্রাণ্ড ধেরাকোটা ব্যক্ষণী ও অপসং। মতি-গ্রালার শিলপ্রীতি র বিশেষ করে কব্নী-বিন্যালে এক ট স্বভিত্তীয় দ্ভিভগাীর পরিচয় পাওয়া বার। উপরত্ত তার মতে র্ণবিভিন্ন স্থা-পরম্পরায় এই প্রেরণায়, বৈচিত্ৰা দেখা দিলেও মাল অনাভতিটি ছোন সর্বাট অব্যাহত। তবে চন্দ্রকেত্-গভের জিলপক্ম আলোচনা প্রসংগ্য তারি প্রম্পরবিরোধী দুটি মুক্তরে প্রকৃতাভিক গ্রেষণায় অভাশ্ড বিশ্রান্তকর ও বিপক্ষনক। তিনি মনে করেন, চণ্ডকেত্-গড়ের ধাক্ষণীদের রূপায়ণে প্রদাশত হয়েছে দিবা সৌন্দর্যের অপাথিবিতা ও প্রতিফলিত সয়েছে এক কন্সাহীন শ্রুণা ও অভীপ্সা'। কিশ্ত আশ্চয়েনি বিষয়, একই আজোচনার অনার তিনি অনামান করেছেন হো, এসকল মুডি শিকেপ্র তাহিগকগত বিবত'নে ও সংখ্লিত সৌন্দ্যান্ডতিতে প্রভাল আছে অভীতের বিলাসিনী নাগরিকা-দের শিক্সমানস ও প্রগতিশীল জীবন-বোধ।'

চণ্ডকেতৃগড়ে প্রাপ্ত টেরাকোটা যক্ষিণী ম্বিগ্রালির খিলপ্যীতি ও সহায়কাল নিশ্বি সম্পর্কিত আগোচনা প্রসংগ এ-সকল বংধম্ল ও বিভান্তকর ধারণাগ্রিক ভথাগত আলোচনা প্রয়োজন।

চন্দ্রকেতুগড়ে আবিংকুত সকল যক্ষিণী মুডিটে সুজা-বুগের কিনা তা আজ হলফ करत वना हरन मा। जीधकारण प्रांडिनीन স্ভগ-কুষাণ য্তার হলেও, এ-অঞ্লে প্রাণ্ড যাক্ষণী মাতিগি-লিনু কয়েকটিতে য়োষ যালের নিম্নাকৌশল ও শিল্প শৈলীর চিকু স্মূপণ্টা চন্দ্রকেতুগড়েং স্ক্র বসনাবতে যৌবনভার বিকর যকিণী ম্তিগালির রাপায়াণে তথাকথিত মৌহা-ভাস্ক্রের নারীম তরি বেশভ্যায় প্রতি-ফালত 'ময়'াদাবোধ' ও 'সংরক্ষণশীল পারিপাটা' ব্যাহ্ত হয়েছে এমন কথাও ভরসাকরে বলা চলে না। দেব-দেবীর ভাব-ম্তিরি বাস্তব রূপায়াণে নগন বা নগন-श्राज्ञ एमङ्क्षां°ठेर श्राप्रभ€त्नत घरंशा घर्यामा-বোধের ও সংবক্ষণশীসভার অপ্রভুলতার সংখ্যান লাভ করা, ভারতীয় কাহিত-চেতনার বিকৃত উপলব্ধির নামান্তর মারু। চন্দ্র-কেতৃগড়ের হাকিণী মাতি গালির র্পারণে विष्णव करत करवीविनारम, भास मात मर्व-ভাৰতীয় শিল্পাণীতৰ প্ৰভাব বয়েছে কিনা তা বিশেষ গবেষণালাপেক। চন্দ্রকেতুগড় ख्या मिन्न-शारम्य बरम्गत अन्याना अज्ञा-न्यम , इतिमाद्मभदत, त्याकृत, जाउँचता, ভ্ৰম্ম ন নেউলপোতা প্ৰভৃতি স্থানে বেশ सहक्ष्मपे बाजानता श्राफ्ट जाविक्कक हरहार, त्यम जिल्ल कमनी विमादि न्नार्थकाव सामक क्र मिनवीस सोविय প্রভাব লক্ষণীয়। তাছাড়া এসকল অ্ণালে
প্রাণ্ড তেঁরাকোটা যুক্ষিণী মুডি রুপারণে
মুগভারতীয় বা মধ্যপ্রাচ্যের দিশেরী তর
সকল অন্কর্মকে অবদ্যিত করে মুডিদেহের আগিলক সৌন্তর অংগাবরণ ও
অলংকার চিহ্নে প্রকটিত হয়েছে বাংলার
নিজ্পব শিশেরীতি। চন্দুকেত্গাড়ে প্রাণ্ড
যুক্ষিণী বা অসমরা মুডিগ্রালির রুপারণে
দিব্য লৌন্দরের অপাথিবতার সংগে
বিলাসিনী নাগাংকাদের দিশেমানম ও
প্রাতিদ্যাল ক্ষীবনবোধের, অথবা যক্ষিণী
মুডির রুপারণে কুন্সাহীন শ্রুমান প্রভিন্তরের সংগে
সহাবিশ্রান অহিন্দ্রক হিন্দীর মৃত এক
উদ্ভট ফ্রম্লো।

ভারতীয় ধুমুচেতনায় যক্ষিণী উপা-সনার উপ্ভব নিয়ে পশ্ভিতদের মধ্যে মত-পার্থক। থাকা অস্বাভাবিক নয়। তবেঁ অধিকাংশ বিশেষজ্ঞের মতে যফিণী মৃতি-গুলি প্রজননের অধ্টোতী দেবীবা উ^{ব-}রতার প্রতীক। কোন কোন মৃতিভিত্ত-বিশারদের মতে (দঃ জিতেন্দ্রনাগ্রাহাণ বন্দ্যো-পাধ্যায় — 'পঞ্জোপাসনা' — প্র ৬-৮) প্রাচীন ভারতীয় সাহিত্য ও প্রভত্ত অন্দীলন করে সহজেই অন্তিমত হয় অন্যান্য ব্যাত্র দেব-দেবীর হাও বিফাণী মাতি গালিও ছিল ইত্র সাধারণ জানেশই ভক্তি বা প্রভার পাত। বৌশ্ব ও জৈন গ্রাম্থসমূক্তে অবৈদিক দেব-দেবীকেই সাধা-রণতঃ 'বাস্ত্র' দেবতা বলে উল্লেখ করা **তারেছে (দঃ দেবতত প্রাথমালা ১**ম খণ্ড---'সরস্বতী' -- শ্রীআম লাচরণ বিদ্যাভ্ষণ সংকলিত)। প্রাচীন ভাগতে অন্যান্য 'বাশ্তর' দেবদেবী উপাসনার সংখ্য যক্ষিণী উপাসনারও ব্যাপক প্রচলনের প্রচুর প্রত্য-তাত্তিক নিদর্শন আবিশ্বত হয়েছে। আন্ত-মানিক খুন্টপ্রে দিবতীয় বা প্রথম শতকে নিমিতি ভরহুতি, সাঁচী প্রভৃতি স্ত্পে-रवन्तेनी गाता छेश्कीम एमय-एमयीत म्हार्जन মধ্যে বেশ কয়েকটি যক্তিও আছে। খুন্টীয় প্রথম বা দ্বিতীয় শতকে র্যাচত 'মহামায়নৌ' নামক বৌন্ধ গ্রাথ অন্-যায়ী ভগবান তথাগতের উপাসনা প্রবত্নের পর অন্যান্য ব্যাহতর দেব-দেবীর সংখ্য যক্তিণালৈও বাংধপ্জক হিসাবে ক্তিগত হত। ভাতর আদিম রূপ ভাষস ভারেরে উল্লেখ ভগবদ্গীতার পাওয়া যায় তার উল্ভব খুব সম্ভবতঃ যক্ষ-বিক্লণী, নাগু-নাগিণী প্রভৃতি ব্যুক্তর দেব-रमवीरक रकमा करहरे। ज्ञान्त्र-क्यान गुर्ग উত্তর ও উত্তর-পূর্ব ভারতের বিস্তুত অন্তলে ব্যাপকভাবে যক্ষিণী টপাসনা প্রচলনের মির্জরবোগ্য প্রয়াণ আবিষ্কৃত হরেছে। ভাব ও গ্গেডেদে বিভিন্ন প্রকার বিভ্না মতির উল্ভবের পরিচয়ও এ-সময় পাওয়া হার।

নিন্দা-গালেগর বংশার ইতিহাসের সে ধরের অভীতে চলকোরুগড় ও অন্যান্য প্রভাগরের সংখ্যানীর মানবর্গমাজে এক-কালে বিক্ষা উপালনার যে বছুরা প্রচলন

দেখা দিংগ্রিক তা নিয়েও বিশেষজ্ঞা নানা যুদ্ধির অবতারণা করে থাকেন। কান কোন গ্রেষ্কের মতে তংকালীন বাংলার শোকবস্থিত স্বল্পভার জন্মে মিল্ন ফলকগ্লির মত যাক্ষণী মূতি উৎকীণ ফলকগুলিং ব্যাপক প্রচলনের পরিচয় পাওয়া যায়। ভাদের মতে (দ্রঃ চাদ্রকেত-গডের মিথ্ন ভাসকথ—গোরীশংকর দে গড়চন্দ্রকেত্র কথা 🤲 (১৫৭) বাংলার ঘরে ঘরে যক্ষিণী ক্রাসনার ব্যাপক প্রসার অকারণে হত্তনি প্রজননের দেবী বক্ষিণীর উপাসনায় 'সংতান-সংতাত বাজিধ পারে জাগতিক উল্লাভ হবে এই ছিল সেকালের যামাধের বিশ্বাস।' কিল্ড সেকালে জন-সংখ্যা বৃশ্ধির এই সালাজিক কালনার দ~বে^নধ্য মৌনতা অবলম্বন কলেছেন।

প্রাক-খৃষ্টীয় কাল থেকে খড়িীয দিবতীয়-তৃতীয় শতক প্যশ্ত নিদন-গাংগায় উপত্যকার বিভিন্ন অঞ্চলে বধিকা নুগর-সভ্যতার সম্প্রসারণের বিস্তৃত নিদ্ধনি মাটির গভীরে আবিক্বত হয়েছে। বিক্ত অণ্ডল অরণামার কন্মে নগর-সভ্যতার এ-সমপ্রসারণকালে কি জনসংখ্যার স্বল্পন্তা বিশেষভাবে অনুভূত হয়েছিল ? অথবা সম-কাল্মীন মাগধীয় রাজনৈতিক আধিপতা বিস্তারের বির্দেধ, দীর্ঘস্থায়ী ও কার্য-করী প্রতিরোধ সংগঠনে বিপাল জনসংখ্যার প্রয়োজন ডিজ ? কিংবা সম্পদ ও খাদা-প্রাচুযেরি পটভূমিকায় নিছক ধনেজনে-পারেপোরে' জনজনাট সংসারের কল্পনায় প্রজননের দেবী যুক্তিণী জন্পিয়তা অঞ্ন করেছিলেন ও তেওলে বেশি ও জৈন ধমেরি প্রসারের সঙেগ সঙেগ যক্ষিণী উপাসনার প্রসার হওয়াও বিচিত্র নয়।

বর্তমানে কোন কোন গরেষ্কের মতে চন্দ্রকেতৃগড় প্রভৃতি অঞ্চলে প্রাণ্ড যক্ষিণী মৃতি ও মিথুন ফলকগালি পরস্পারের मरभा चीनके अम्भुक त्र है। छौरमत शहर. এরা একই সামাজিক উদ্দেশ্য ও উৎস-প্রস্তুত এবং এসকল গ্রাতি বা ফলকের সাধারণ লক্ষণ হল 'যৌন অকপট্ডা' ছেঃ চন্দ্রকেতৃগড়ের মিথনে ভাস্কর্য - গৌরী-শংকল দে)। এসকল গ্রেমকগণ মনে করেন, 'হাক্ষিণী মাডিপি কি উবরিভার প্রতীক, প্রজননের আধিষ্ঠানী দেবী। তাই u'ता किलान रमकारमत वारमात ग्रामनी। স্তান বৃদ্ধির কামনায় প্তুম্প এশ্রেম প্রেলা করতো। আর মি**খ**্রন ফলকগ^{ু লর} উদেদশা হয়ত হিল যৌনক্লিয়া তথা সম্তান-উৎপাদনকে উৎসাহিত করা।"

কিন্তু বিংশ শতাক্ষীর নিবতীর মহাসমরোজন হাতোর তথাকথিত অপসংক্ষতিব
প্রেক্ষাপটে আন মানিক খুন্টীর প্রথমনিবতীয় শতকের এসকর বিক্ষণী মুর্তি ও
মিগান ফলনের উন্দেশা, উর্থম ও লক্ষণের
সমীকবণ বতট ক্যান্ত্রাবিক করে মনে হোক
ক্ষান্ত্রীস প্রাক্ষিক করে ক্যান্ত্রীস বা
সেনিক্রিক ক্যান্তিকার করে সমর্থন
হীন ও বিক্ষিণত চিক্তার ক্যান্ত্রসমর্থন

পাওরা যাত্র কিনা তা বিশেব গরেষণা-সাপেক।

চম্দ্রকৈতৃগড়ে প্রাণ্ড বক্ষিণী মৃতি ও মিথ্ন ফলকগুলি একই সমোলিক উদ্দেশ্য ও উৎসপ্রসূত অথবা এসকল মাতি বা ফলকের সাধারণ লক্ষণ যেন অকপটতা, এমন কথা বোধহয় কোন প্রতিষ্ঠিত যাত্তি তথোর উপর নিভার করে বলা চলে না। বক্ষিণী মাডিলিলি উবরতার প্রতীক. প্রজননের অধিণ্ঠাতী দেবী--এ-বিষয়ে িবসতের কোন অবকাশ নেই। কিন্ত সেকালে বাংলার গাহুস্থ শা্ণামার সহতান্-বৃশ্ধির কামনায় এ'দের পূজা করতো এমন কোন অকাট্য শাদ্বীয় বা প্রত্যভাতিক প্রমাণ আজ প্রতিত পাওয়া ধার্যান। উর্বেশ্বতা বা প্রজননের প্রভীক বলতে শ্যেমায় সংগ্রন উৎপাদনকেই লিদেশি করে না। সকল প্রকার স্থানীম্লেক শ্তেকেও চিহ্নিত করে। পদকালের নাংলার **গ**ৃহ-দেবী'র উপাসনায় শ্বেগ্নার কি সম্ভান-সংখ্যাই বুণিধ হত না ধনে জনে পরিপ্রণ সংসাথের কামনায়, সকল অকল্যাণ প্রতি-বেধে প্রভেদ্প দেবীপ্রভিন্ন সন্ধিণী আরু-ধুনায় রতী হতেন? যক্ষিণীর উপাসনা শ্ধামার সম্পদ ও সম্ভান ব্লিধর কামনা-তেই হত এঘন কথা কি ভর্মা করে বলা জলে ? তিনি ছিলেন খাব সম্ভবতঃ সাম্ভি-ধ্রাী মননেরও অধিশ্ঠারী দেবী। ভারতীয় দেব-দেব**ী ম**ৃতি কল্পন্থ বিবৃত্তি যক্ষ-যক্ষিণী প্রভতি 'কালেটব' লালবোন ভূমিকার কথা নিদেশি প্রসংখ্য আন্দক্ষার দ্বামী মনে করেন যে গণেশ কাতিকেয় সর্বতী, ইন্দ্রাণী প্রভৃতি বিগ্রহ যক্ষ-যাক্ষণী উপাসনা হতে আহ্রিভ হয়েছিল। মিশুন ছলকের মত চেনুকেতুগড়ে প্রাণ্ড অসংখ্য হকিণী মৃতিলিয়লির 'সাধারণ লক্ষণ 'যৌন-অকশালৈ এমন কথাও ভরসা করে চকে না। নকা বা নকাপায় হাকিবী মৃতি-গালি দেবীপ্রতিম যদিগার উপরিভা ও প্রজনন শ্রির স্মপ্র ভাবমাতিরি বাইতব র পাণ্ডর লার। দেখীসহিমার সাথকি বাস্থ্য র পাহাণের জন্য দেবী বিগাহের বিশেষ অধ্য সমহ প্ৰট ও বিশিষ্ট বাপে চিহিত হয়েছে। দুণ্টিভগার অস্বচ্ছতার দর্শ হাতিকিলার এই সিম্বলিক একসংগ্রেশনটার 'বৌন অকপটতা' রূপে দ্যিত হয়েছে। ছক্ষিলীদেতের প্রীবর প্রীনন্দর ও প্রাংশ ভ্রমনা কোন অকপটতা'কে প্রকটিত করে না। পীবর পীন্ধবয় প্রাণপ্রাচুর্য 🕫 প্রাল জহনা মাতৃত্ব উব্রতার প্রতীক-

"The large hips denote maternity, fertility and the breasts the bounty of life".

(E: Zimmer — Art of Indian Asia, Page 69).

তা ছাড়া, চন্দ্ৰকেতৃগড়ের মিখুন ফলক- ডংকমতার লক্ষণ প্রাইফালড়, ছবেও চন্দ্ৰকেতৃগড়ে প্রাপ্ত মুক্তি বিশ্বে গুলির সংখ্য হাকিনী উপাসনার মত ম্তিটির স্থেগ মধ্রার প্রাণত ও বত্রান মন্ত্রাক বা পার্টালিপারে প্রাণত প্রাক্তি সামাজিক উপোদনে উৎসাহিত করার কোন আরক্তিক ইনভিয়ান টেরাকোটাস-এ কে কেন্দ্র গণিত বা লক্ষা করা আরু ছেল-প্রভাক সংযোগ আছে কি না তা সংশেহ। কুমাকবামী : মার্গ ১৯৫২) একটি ম্তিপ মিখুন ফলকের মূল উপোশ্য ছিল কামভাব খ্রই নিকট সাদৃশ্য বিশেষ লক্ষণীয়। তবে নিকট সাদৃশ্য রবেছে।

বৃদ্ধি করা ও দেহ-সন্ভোগকে চুড়ানত প্রায়ে পরিণ্ড করা। এ স্কলের সংগে সকলেন উপেদ্ধান করেন উপেদ্ধা প্রভাক ভাবে কড়িও নর। চলুকেতুগড়ে প্রাণ্ড রিক্ত রুচির রমণ-ভিল্মান প্রিণ্ড পাওয়া হায় যা যে। টেই স্টেলমান পরিণ্ড পাওয়া হায় যা যে। টেই স্টেলমান নর। এ সকল আসানগ্রিল নিভান্ডই বিকৃত কামাবেলের পরিপ্ত। চল্ডকেতুগড়ের করেন্টি মিথান ফলকে 'রেপরিন্ট্র' প্রথার নিবদান পাওয়া বেগ্রে (৮: চন্দুকেতুগড়ের জিথান ভাদকর্য-বেগরিশাক্ষর দে)।

চন্দকেতগড়ে আবিশ্বত বিভিন্ন পরিচয় ও পরিসরের অসংখ্য টেরাকোটা র্যাফলট মাতিগিচাৰ খাৰ সম্ভৰ্তঃ শাধামাত কাৰী বিগহরূপে অর্চনার জনাই বাবহার হত না ক্ষেক্টি যাক্ষণী মূর্তি উৎকার্ণ ফলকের শীর্ষদেশে বা উভয় পাদর্প্রান্ত ব্রাকার ছিল-চিক্ত বভামান। অন্তমান কর। সায় এ भक्त रहेतारकाही कलक्शानि इश्च रकान-প্রকার ভীক্ষা শলাকা শ্বারা দেয়ালগুরে দ্বারবাজ্ব বা শতশভগালে সংস্থাপিত হত। একদিকে এ সকল স্ভেদর ফলকগালি যোগন গ্রালংকরণের উপকরণ রূপে ব্যবহাত হত তেমনি অনাদিকে এগালৈ ছিল সকল শাভ ও প্রাচ্যেত্রি প্রভীক টেরাকোটা ফলক ছাড়া, চন্দ্ৰকৈত্গড়ে আবিষ্ক্ত অসংখ্য বিভিন্ন ও বিভিন্ন মোটিফযুক্ত টেরাকোটা ক্রীড়ণকের মধ্যে কতকগালিকে অন্যান্য দেব-দেবীর মাতির মত যদিলী মাতিতি উৎকীল দেখা যায়। খ্র সম্ভবতঃ এককালে যদ্ধিণী উপাসনা সমাজ-জীবনে যে বাংপক ভাবে প্রচলিত ক্রেছিল ও মুখেন্ট ক্রাপ্রতা অজনে করেছিল এ সকল তারই নিদশ্ন।

সাপ্রাচীন চন্দ্রকৈত্রভে আবিগ্রুত অসংখা টেরাকোটা যক্তিগা মাতিগালিল মধ্যে কতকগঢ়ীলর বিচিত্র পরিচয় ও আজিগক সোষ্ঠিব যে কোন গরেষককে বিশ্বিত 🧓 মুক্ষ করে। এ স্কল ম্ভিগ্লির সংগ্ খ্ৰেই প্ৰাচীন একটি মূতিৰ নিমাণ কৌশল ও আহিগক সৌন্ঠবৈ মৌয় শিংপ-রীতির প্রভাব স্মুখণট। সুদু রক্ষণ গ্রিপরিস্বাকৃতির s) হাক্ষিণী ু **ম**্ভিটি সন্ধালনে নিমিত। দিকপণীর অংগ্রান্ত মুডিটির স্চাগপ্রায় পীনোরত বক্ষ ম্ল-দেহকান্ডের মাত্তিকা উল্লোকনে গঠিত। কিন্ত মাতিটির কণাভরণ, কংঠহার, মদ্ভকের প্র্চাংদেশে এলায়িত কেশ্দাম ও কণ্ঠহারের উভয় প্রাদেত দাটি মংস্য চিহ্ন অভিতিক ন্তিকা সংযোজনে নিমিতি। পশ্ভিতদের মতে মংস্য প্রজননের প্রত্তীক। অর্ধভণন বাহ শ্বরের গঠনে মনে হর হুস্তদ্বর প্র স্ভ্রতঃ মৃতির কটিলেশে সংস্থাপিত ছিল। মূভিটির আজিক সৌন্ঠবে কিঞিং উৎকর্মতার লক্ষণ প্রতিফলিত ম্তিটির স্পো মথ্রায় প্রাণ্ড ও বত্রান त्वान्हेन हात्कला अश्शहणानाम् र्वाप्कछ (अ আরকাইক ইনডিয়ান টেরাকোটাস-এ নে कुमायण्यामी : मार्थ-১৯৫२) अकीर माहिल भूबहे जिक्छे जामूना किलाब क्रांकरीय । एउन বোণ্টন সংগ্ৰহণালায় রক্ষিত মাতি টির ক-ঠ-হারের প্রাচেত কোন মংসা চিত্ত নেই। তাই কোন কোন বিশেষজ্ঞ ঐটিকে আততত মাতৃকা ম্তির্তে চিছিত করে থাকেন।

চন্দ্রকেত্গড় ভাগলে প্রাণ্ড ছিল্ল পান-চয়ের অন্য এক যক্ষিণী মাডি'র নির্মাণ-কৌশল ও আহিলক বৈশিন্টাও মৌহ'হাগের ট্রেরকোটা শিলেপর প্রভাব সঞ্পত বলে মনে হয়। শ্বিপরিস্রাকৃতি, অধ্ভিন এ ম্তি'দেহে অলংকারের প্রা<u>চ্য' অন্মান্থত।</u> যক্ষিণীদেহের সুডোল বক্ষদেশ সম্পূর্ণ ন্দা। উভয় স্কুশের বাস্তাম্প থেকে প্রলাশ্বত অতি সাক্ষয় উত্তরীয় চিক্লং মার্ভিন দেহের সামান্য ভাগংকারের **মধ্যে কণ্ঠছার** ও কণাভরণের চিহ্ন স্পেন্ট। অর্থ-বাহাকার কণ্টহারটি সাপ্রশস্ত ও কার্কের্ড-বিহুলি। ক্লাভবল্বয় কঠিন উ**ল্লাক্তির।** মাতিটির সর্বপ্রধান আক্রমণীয় **ও গারাছ**-পূৰ্ণ বৈশিশ্টা হল বিচিত্র কেশসকলা। মণ্ডকের অংশণ্ড এলাগ্রিভ কেশদামের উদ্ধের উভয় পাশের ক্রীব্রেধযান্ত বড়ালাকার কল্ড বা 'ঢাকতি' শিল-ভূষণের শোভা বধন করেছে। মদতকের উভিয় পাশ্বাদিগত ভাকতি হ'তে দ্যোদাল্লামান গাল সম্ভবতঃ এক এক গ্রহ্ম শ্রসাদানা ও মংসা। যাক্ষণীর ক্রিয়ত আন্নে উম্লাস্ত হয়েছে অপ্র' শাস্ত সিন্তা এক স্বগীয় মাধ্যা । **লিরোভ্রণের** প্র্চিন্দাকৃতি স্দান্য অলংকারের রুপ-নাধ্য মেন শান হয়েছে **চন্দ্রপ্রা** श्रीकशीत हान्द्रतपन विवश्यकार । क देशम ভালদালকালের বিদ্যার রূপের জোশক্তম---থক বলে শার্দশশী সে মর্থের তুলা। পদ-নথে পঢ়ি বার আছে কন্তগ্রনা।। চন্দ্রকেড়-গড়ে প্রাণত তান্রেপ শিরৌভ্রণসূত্র একটি টেরাকোটা নারী মাতির চনকপ্রদ**্রক্তল** বিলাসে আক্ষট হয়ে *স*োক প্রা**ভত্তিল** ১১।০৩বা করেছেন---

"....a faseinating terracotta head of a female, attired in fantastic discs around the head, which the ultra Parisian deme-mondes sporting latest fashions in coffure may envy" (Archaeological Discoveries in Lower Gangetic Valley" — D. P. Ghosh: 'Science & Culture', Vol 23, 1957).

চন্দ্রকেত্রতে প্রাণ্ড এ বান্দ্রণী ম্তিটির সংগ্র ডালাকে প্রাণ্ড একটি টেরাকেটো মান্দ্রণী ম্তিরি অবলারর ও অলংকার-চিলের কিছু কিছুল সাদ্দা আছে দেউলা কার্দ্রকিল—আটি আফ ইন্ডিয়া প্রাণ্ড আল্মানিক মোর্মার্থির সংল্য (এ ক্যান্ডিরে কার্মানিক মোর্মার্থির সংল্য (এ ক্যান্ডিরে কার্মানিক মোর্মার্থির সংল্য (এ ক্যান্ডিরে কার্মানিক মান্দ্রার্থির সংল্য (এ ক্যান্ডিরে কার্মানিক মোর্মার্থির সংল্য (এ ক্যান্ডিরে কার্মানিক মোর্মার্থির সংল্য (এ ক্যান্ডিরে কার্মানিক মান্দ্রার্থির সংল্য (এ ক্যান্ডিরে কার্মানিক মান্দ্রার্থির কার্মানিকর মান্দ্রার্থির কার্মানিকর মান্দ্রার্থির সংল্য কার্মানিকর মান্দ্রার্থির কার্মানিকর মান্দ্রার্থির কার্মানিকর মান্দ্রার্থির কার্মানিকর মান্দ্রার্থির কার্মানিকর মান্দ্রার্থির কার্মানিকর কার্মানিকর মান্দ্রার্থির কার্মানিকর কার্মানিকর মান্দ্রার্থির কার্মানিকর সান্দ্রার্থির সান্দ্রার্থির কার্মানিকর সান্দ্রার্থির সান্দ্রার্থির কার্মানিকর সান্দ্রার্থির সান

পাত চল্ডাকত অপাল আবিশ্বন বিভিন্ন श्रीबाटतम रहेजारमाहे। स्रोत्क्रभी माजिन्हासन बह्मा व्यक्तिमण्ड इस ल्याक्षिक असुरुक्त ना দশচ্ভ হাক্ষণী। সালক-দ্বন্ত বসনের कार्यात्रात्र जार्यात्र हार्यात्रात्रकारात भौजात भौजानम्, ऋौगर्काहे, भाषाना क्रथमा উच्चा ना किम्बन: अक्टेरशानी--. अहीभाका বিভিদ্ন অলংকার চিতে প্রেটিভাল ও ঘোষলা-ভাবে উল্ভাঙ্গিত এ সকল দেখীপতিয় যুক্তিশী মাতিপালি সংগ্কথাণ কালের মাল্যয় क्षान्याचार्य आविशक देविशको। ए दशीवनश्रानः-ভাভন্ন বিশিষ্ট নিদ্দান। কন্তল বন্ধনের শিভিল ও বিচিন র্টাতি অলকচাৰের চার-**সলাবেশ, স্বৰ্ণ**গড়, প্ৰুম্পণট্ চুৰণীবৈভিত্তে বাৰা প্তনার সংজ্ঞায় মোহিনীয়ায়ী এ সকল ম তিশিলের স্বচেয়ে উলেখ্যোগ্য ও আন্তৰ্ণীয় বৈশিষ্টা হল অভিনৰ কৰ্মী বিমানে মাধ্যায় মহতকের এক বা উভয পাদেব পাঁচটি বিভিন্ন আয়াুধের আকৃতির ক্ষদ্রে কাল চাড়ে বা কটার সংগ্রাপন। কোন ক্ষোন প্রাতাত্তিক (দঃ অতীতের সমাধি চন্দ্রকেতৃপড়-শ্রীপরেশ চন্দ্র দাশগাংত) এ আছাধগালৈকে তরবারি, অঞ্কণ, কুটার ৰাণ ও বিদন্তী বলে চিহ্নিত করেছেন। শাশ্রীয় পঞ্চাম্পের সভেগ এ চিট্ট্রুক্ত কর্মনের একট্ট্রু পার্থক্য লক্ষ্য করা আর্থ্ ভরবারি, পতি, ধন্ঃ পরশু ও বম - এপালি হল শাশ্রসমতে পণায় ধ। ইবে পণাচ হ औ র্দশচ্ড যকিণী মৃতিগালের শিরোদেশে সংখ্যাপিত এ আয়ু পূর্ণীস ুস্পোহন, উন্মাদন, গোষণ তাপন স্ফান্ডনেই প্রতীক व्यक्षीद सम्माम्यवर् भाष्ट्रात मा बारम्स श्राप्टीक হওয়াও আশ্চরের কিছু । নয়। তল্পাক বা প্রাচীন ভাষালি িততে প্রাণ্ড একটি পঞ্জ চ্ড বিক্লপীর অন্র্পু শিরোভ্রবের বিচিত্র আর্থগ্লি অধাণক জনতটন যথাক্রে অংকুল, কুঠান' বিশ্ল মকুলা সংলু মনে करतम (अञ्च क नरान्तकील्श्वानि म्काननान वक राजान, गुः ३३११

ध ध्रास्त्र भक्ष ए वा नगर छ माहिङ টেরাকোটা থাকণী মুডিগালি নিংন-গাংশের বংগার বিভিন্ন প্রজ্নখন হবনারায়ণ-পরে, বোড়াল, আটঘরা প্রভৃতি স্থানেও আবিশ্বত হয়েছে। তথ্যকে আবিক্ত u भवरमत जान प्रानिक श्रमेश्व क्विश শতকের একটি যান্ধ্রণীমূতি বত মানে ইংগদেন অক্টেড ক্রিগ্রহশালায় সমূতে ৰশ্চিত আছে। অধ্যতিপ্ৰা পিলা কাম্যিক ম্ডিটিকে মহাভারত ও প্রাবে ব্রিত সম্ভাৱে মঞ্চনে উথিত পশ্চন্ত অপস্যা বলে সমার করেছের (আলি ফ্রালপচার অফ বেংপ্ল -এম কে স্বান্বতী প্র '১০১! ক্ষিত্ত অধ্যাপক জনশ্টনের মতে অধ্যাপিকা ক্রারশের সনাতকরণ নিতাশ্তই ভিতিহ্রীন। ভারি মতে অস্সরাদের দেহ নিরাবরণ। কিন্তু আলোচা মাতিদেহে সনিল-ম্বক্ত অংগা-बरार्वत रिक्ट म्हन्याचे। यथात्रक अन्यव्हेदार মতে প্রেই এই১ জনতন এ টেরাকোটা किंग्फ आहे सम्बंधाएं -कार्नाम व्यव नि कर कार्यामें काम क्षांवायग्रीम आहे-

6871-30, 3582, 41 38-305) ্ৰ ধৰনেৰ বিচিত্ৰ আয়াধ চাড্ৰােডিড ৰেখী-প্রতিল নালীলাতি গালি সালালীমকাল ছতে নিমাট প্রাচোর বিচছতে আপলো প্রচলিত মাতৃকান্তির একটি বিশেষ বলে হওয়াও বিচিত্র নয়। তিনি এ অনুমানের সময়ে দাটি মালাবান তথের প্রতি আমাদের দাভিট আকর্ষণি করেছেন। অধ্বদোষ বির্টিত ट्योक्पातकम ऋदिता 'श्रीशा' ७ भारिशतारम 'ছাইয়া' নামে এইটি ভারতীয় মাতকা দেবীর বর্ণনা পাওয়া যায়। অধ্যাপক জনদটনের গতে ই'হারা অভিন্ন। প্যাণিরাসের 'মাইল্লা' ছিলেন গাগেয়ে উপতাকায় উপাসিত বুলি ও উর্বরভার দেবী। গুণগায় প্রবল বান আনয়নের জনা তার কর্মণা প্রাথনা করা হত। জনৈক বিশিষ্ট প্রোতভূবিদের মতে (এস কে সরদব্তী-আলি স্কালপ্টার অফ নিন-পাঙ্গেয় বেংগল, প: ১০২) উপত্যকায় এ ধরনের মাতৃকা উপাসনার জনপ্রিয়তার যে প্রচুর প্রস্ততাত্ত্বক নিদৃশ'ন আবিষ্কৃত হয়েছে, তা অধ্যাপক জনস্টনের মতের অনুকলে। কিন্তু বিচিত্র আয়ুধে চাড শোভিত দেবীপ্রতিম নারীমূতির উপাসনার প্রচলন শ্বাহাত নিম্ন গাবেলয় ব্রেগই অচলিত ছিল, এমন কথা ভরসা করে বংগ চলে লা। লাচী স্তপে বেল্টনীর উত্তর্গদকের প্রেশ্য ভোরণ গালে, ব্রুখগরার স্তুর্গাহাগে দিমিত বেশ্টনী প্রাচীরে এ ধরনের যক্ষিণী মাতি উৎকাণ আছে। কোলবাতে প্রাত e বত্রিমন কলকাতার ভারতীয় মাদ্দরে রক্ষিত একটি টেরাকোটা নারীম্তির কেশ সম্ভায় একই ধ্রনের আয়ুধ চ্ডের मरण्याभारतम् श्रीमध्य भाउमा रशास्त्र ।

চন্দ্রকৈত্যতে প্রাণ্ড অন্য একটি যক্ষিণী মাতির কেশ সম্ভায় সাম্পত্তিবে মিশ্রীয় কৰনী বিন্যাসের রীতির প্রভাব লক্ষণীয়। প্রাচীন গড়ের ধ্যাসংভাপের আদ্ধ্রে সান-পুকুর প্রাঞ্জর ভাষী, পরিবারের জনৈক কিশোরের কাছ হতে বর্তমান লেখক এটি সংগ্রহ করেন। ব্রছালয়ণের আবন্ধ এ টের'-কেটা মাতি পাতুলটির ঘন উল্মান্ত কেল-तामि, क्ले अ वकरमाम द्याम् नामाम विधित অলংকার ও মথেমন্ডলের গঠন বৈচিয়ো গিশ্রীয় প্রভাব যে কোন গবেষককে বিভিন্নত করে। ভবে মৃতি'টির সবচেয়ে উলেখযোগ্য বৈশিষ্টা হল মিশরীয় রীভির অনুপাম্বী কেশসভা। একটি 'ফিতে' *বারা **উল্ল**ক্ত কেশরাশি ললাট হতে মুস্তকের প্রশাসভাগ প্রথ'ণত বেণিটত। আদিগ্লগার ম্<u>কা</u>গ্রের তটে অর্বাস্থত নিন্ন-বংগার প্রস্থান ব্যাড়্যনেও এ ধরনের একটি কিংত বীধা যক্ষিপী মতি আবিন্দৃত হয়েছে। মৃতিটি বৰ্তমানে কলকাতা 'বিশ্ববিদ্যাস্থ আশ্ৰতোৰ সংগ্ৰহশালার সকলে রক্ষিত। তবে বোড়ালৈ আবিক্তে ম্ভিটির মুখ্য-জলে বিজাতীয় ভাব খুব সামালাই প্রকৃতিত।

, চন্দুংকত্মান্ত প্রাপ্ত টেরাকোটা ফ্রন্থক-সংলির দ্বাঞ্জান্ত জভান্ত ফুল্পান্য অধ্ব-ম্পা ষ্টিনীম্ভিত উৎক্ষি দেখা বারা দ একটি বস্তাভ ক্ষিত্র অধ্যান্থী স্কৃত্

নিয়াণৰ কৌশাল ও গালেন ্তিত'ল ্রিকতে মোল যাগের শিলপ্রাক্তি ভ बिद्यांश कोशामंत छोल मुम्नामे। व्यक्तित्व হ বিকা সংখ্যেকান গঠিত অলম্কার ভাষত মধ্য শারীদেশ্রের ESP Carl সংগ্রাপিত। অস্বন্ধের জগ কেন ড ফেন্মাণ প্রভাতিও আছিরিক মারিকা সংযোজনে গাঁওত। পাটালীপাং, বৌশ্ধগ্ৰহা সাচী প্রভৃতি স্থানের প্রস্তর ক্ষান্কয়ের এ ধরনের অধ্রম্খী সক্ষীর নিদ্ধনি আরি হক্ত হয়েছে। আনন্দৰ্গার স্বামী বোচনা हाता करना अश्हार भागास अोकाल ४८ शास्त्रहा উপত্যকায় প্রাণ্ড - 🗟 ধরনের একটি আছি প্রাচীন টেরা ব্রাটি মাক্ষণী মৃতির প্রতি আলাদের দ্বিতি আক্ষণ করেছেন (পুলান-দ্বাল্লী—'আকাইবা, ইণিডয়ান টেরাকোটাস— রাগ'—১৯৫২ খঃ)। বৌশ্বজাতকে (দঃ জাটাকা ৪৩২) আশবদাখী ঘশদীর একটি আক্রমণীয় কাহিনীর উল্লেখ পাওয়া যায়। প্রাকালে বারাণসীর রাজা রুক্লান্তর দৈৰ্শাচারিনী প্রধান মাইহী জীবনাৰসানের পর অশ্বর্থী মৃক্রিপে জন্মলাভ করে মন্ত্র সংহারে প্রাত্ত হন। পরবর্তী সময়ে শক্ষী প্রেমাণিও হয়ে এক স্কেশন রাক্ষণ-তনমকে পতিরতে। গ্রহণ করেন। তাদের গ্রিন্সনের ফলে এক বৌশ্ব জাতকের আৰিভ'াব হয়।

এসকল দুশ্পাপ্য পরিচয়ের ছাক্ষণ্ট-মাতি ছাড়া চন্দ্রকেত্গড়ে আরও করেকটি আৰম্প হৈ টেবাকোটা হাজিগীলাভি আবিষ্ণুত হয়েছে। কলভাতা বিশ্ববিদালয় আশ্তোৰ সংগ্ৰহশালায় স্থ্পে রাক্ষত (ডাঃ এ কৈ স্ব—হিচিত্র আনত কালচার তফ द्यक्शन-अणि क्लिए) क्रांतिकार्य, क्रांति-ময়না, স্মিতবদনা মেখলাভাবে উচ্ছালিত একটি যক্ষিণীম্ভির দেহসেকিব ও ভাব মাধ্যে যে কোন গুসিকজনের ছানোচন্ত্রণ করে। থক্ষণীর কৃষজন্দেশম উল্পায় কেশ্বাল লেও ্সকল পৌরাবের তেজস্বীয়ভাকে আবিণ্ট ক্ষরে এ যেন 'তোমার মাতকেলের পালেখা म् काश् कार्माम (अवीक्साध)। এলোকেनी যকিণীয় ডি ছাড়া চন্দ্রকতগ্রে একপ্রসায় বিভিত্ত পাগড়ী পরিছিতা মারীলার্ড আবিষ্কৃত হয়েছে। পাগভৌ শীরেণ মংসা। কোষ্টা প্রভৃতি অস্পণ্ট চিচ্চ বিদ্যমান। খাব সুস্তবতঃ তিতি ছিল পরিচয়ের ছক্ষিণ্-ম্তি। তাহাড়া রেডাচাপায় প্রাণ্ড হ'ণ্ড-ম্ব্ৰুতকে দন্দায়মান যাক্সনীমাতির (আলি *কালপ্টার অফ শে:শল—সরদ্বতী, শে**ন**ট ৪৩) ভরাতের স্তাপনাত্রে টংকীর্ণ খাঃ প্র প্রথম শতকের কুলাকোকা নাম্বেয়া দেবী-ম তিরি গভীর সাদ্ধা রয়েছে। চন্দ্রকত্পতে প্রাণত 'টিয়াপাখী হাতে' গ্রিকণীয়টিব স্তেশ মৰাবার স্তম্ভ গাতে উৎক্রি (জিলার আট অফ ইণ্ডিয়ান এশিয়া আট ুপট এন-৭৫ (ডি)) একটি রক্ষীম্তির ভাবগত সদ,শ্য অস্থীকার করা সায় নাশ

(আলোকচিত্র: গ্রহন-গাণেগর উপত্যক ইতিহাস অধ্যানধান প্রকল্প এব বেজিনো প্রাণ্ড)



ক্ষিতি স্বাস্থ্য তল্পনার্থক চার ।

রে নিজে স্থান ক্ষেত্র । জন্ম

ক্ষেত্র তালা গালে হাত না

ক্ষেত্র তালা উৎকাশ্য মানান ভেডারে

কাই স্থান বেচার।

্বিশেষ পাছক ও ক্ষার যথন হরেছে,
ক্ষান বুলুর ওপন আর কটা দিন নজর
ক্ষান ক্ষান তলা ক্লেট বাতে কেন্ডে না নর
ক্ষোন্তাপারেও ক্ষান রাখতে হবে কর্নেন
ক্ষান্তাপারেও ক্ষান রাখতে হবে কর্নেন
ক্ষান্তাপারেও ক্ষান রাখতে কর্ন্তাপারেও
ক্ষান্তাপার বাবনা

ভূমি আমার ওপর মিছিমিছি রংগ করে না। এবার থেকে হোগাহোগ করব। ভোমাকে জানার।

ুক্থাগুলো কানে পেছিতে অংশুমান মুখ তোলে সামান্য। এতকান সে রুণ্যুব কথা গভীরভাবে চিদতা করছিল। গভীর ভাবে কিছু ভাববার সময় থা চোখ দুটো অন্দর্ভর রক্ষ ছোট হয়ে আসে। অংশুমান মুখতে পারল, কাহির রুণ্যুর কথা বলওে চাইছে। থরা সমান কাসে পড়ে। অংশুমান অবশ্য চার কাসের উদ্ ছাত্র। তব্লু রুণ্ডুকে পাবার কথা ভোবে রেখেছে সে।

সেদিন জাহিত্ত-ট অংশ্যানকে একা শেয়ে কানিটীনে বলছিল।

— অংশুদা, ত্রি আজকেও গিলেছ ?
ক'খানা? মাথটোথা খারাপ করতে নাকি ?
মুখটা কেলন ফ্যাকাশে ফ্যাকাশে। সকলের
মুখে আনকল, তোমার মুখ-ই শুদ্ ফ্যাকাশে! চোখে কি রক্ম গ্রুম মুখ ভাব!
কি হয় এসৰ কেশ্য বড়ি থেলে?

কোন উত্তর দেয় না <mark>অংশ,মান।</mark> আবার জাহির বললে।

- এই ত. এবার বাল হাসে গেল তোরাব।

ত্যা ব্যক্তন না জাহিব বৃষ্ঠে না!
কাল তিনখানা মধনতেুকস গিলেছি। বালকের
মেশাটা এখনত বঙ্গে আছে মাথায়। তাই
মাথাটা কেয়ন একট্ বিমানিম করতে:

बाराक्ष वाला जो बाराज आर्थिक नावा बार्थ कार्यक रक्षण ?

্তিন্দানা বেরেছ' বাইরে চলে ছাও। বোন এবার জন্তার একেনটের ঠেলা! বাও হোল্টেলে গিরে শুরে পড় গে। তুমি অসুস্থ।

—আমাকে বাইরে চলে খেতে বলছ জাহির! মোটে-ই জামি অস্কুম্ম নই। বেশ স্কুম্ম। মাথাটা-ই যা গুল্ডগোল করিরে দিছে। সমানে খুলতে চাইছে প্লোক-এর মত।

অংশুমানের কথাগুলো কি রক্ষ বিধাংকরুণ মনে হয়। গলার স্বর ভীষণ ভাগো। বেশা একটা জড়ানো। নেখা করলে কথা বলার ধরণ বেমন ছাড়া-ছাড়া, টানা হয়। তেমনি। মানজেকদ এতো সম্ভার নেশা। এক মত হভাশার অন্ধর্কারে বসে থাকা, আঘাত পাওয়া ছেলের ক্ষ পয়সায় নেশা করার মোক্ষম জিনিস। সভি নেশা হব এন্সব টাবলোটে লালাক মনে দুঃখ তৈরী করে নেশার মধ্যে আখ্রক্ষা করার অহেভুক চেটা!

জাহির জোর গলার বললে।

—বিশ্বাস নৈই তিনশ্বনো টপাকেছো।
ভাবার হয়ত রুণ্যু রুণ্যু করে সেয়েদেব
আনটীনের দিকে পা বাড়াবে। নয়ত রুণ্
আনাকে অপেক্ষা করতে বলেছে, এই বলে
সেদিনের মত রাষ্ঠার রুণ্ঠার ঘুরুতে
দুর্গু করে দেবে।

জাহির আরো কি বলছে, তার দিকে হ্'শ নেই অংশ্মানের। কলেজ ফাংশানের কথা মানে করিয়ে দিতে ওই দিনের সব দ্'শা ছবিব পর ছবি হয়ে আবছা অ'বছ। মনে পড়ে।

সৈদিনও অংশ্ব নেশা করার বাঁড় পেটে ফেলে কলেজে এলেছে। ওর একাণ্ড চিন্তা-ভারনাগালো মাধার ভেতরে ধ্রুরপাক খাজিল দর্বি হরে। এমন সময় রাশ্বেক ও দেখতে পেল। বোলাটে চাউনির মধ্যে অসপত দেখা নাজিন কাৰ নিজ্ ই। তবু এক কলেজের নেরে বুশুকে চিনকে কুল করে নি। মনের ভেতরটো একট্র কেশ্প উঠে আবার ঠাকত। হয়ে গোলা বুশুর বৌশার স্বান্থী ফ্ল গোলা। কুলোর নরর হলকে পাতারা একট্র চক্চকে। বেশ ভালা। বেনি, স্বেমার কোন গাছ যেকে ছিড্ডে এনে খোণায় গ্লেক

অংশ্বাদের দিকে রুশ্ব আসছে।
ভেবেগ পড়তে চাওয়া শরীরকৈ আনেক কড়ে
দাভ করিরে রাখে অংশ্ব। রুণ্ব অংশ্বর
শরীরের কাছ খোরে দাভিরে গড়ে ঝরথরে
ভাবে বলে উঠল।

—ও অংশাসা, বন্ধ থিকে পেরেছে। বি-ছা থাওয়াবেন চলান। ক্যানটানের দিকে ঘুত পা ফেলে এগিয়ে মেতে দেখে সেও পেছন নের।

ছোট টেনিলের ওপর থাকে থাকে বিভিন্ন ধরনের থাবার সাজানো। রুণা বয় গোছের ছেলেটার দিকে তাকিরে চলের গানে আলতোভাবে আঞ্চান্ধ ছোঁয়া অধ্যথান বলে ওঠো।

-এটা কিন্দের চপ?

्राहल्लाहा_, यनारम ।

় —ভিমের চপ।

—ডিম দিয়ে তৈরি! ডিম-মাংস আমি শাই না হে!

উত্তর দিয়ে দেয় অংশ্যোন।

—ভাহসে এই থে টোস্ট্ আছে। ভাছাড়া কলা, কমলাগেন, চা। এসব ভূমি থেডে পার।

णाकु मूर्ग मदश अर्पः वनदन।

--তাই খাব।

— ডিম্ন মাংস খাও না কেন? এতে প্রোটিন আছে। থ্যোটিনই জাঁবন। এসধ না থেকে শরীর ভেগের পড়াবাং শরীর ভাগেলে ডখন আর নিজেকে ∀া স্বার সামনে মেলে ধরতে পারবে ন বে!

বাছাবাছি না করে শেলটে দ্ব পাঁস্ মাখন-মুটি আরেক শেলটে কলা কমলালেব, ডলে নিয়ে মুণ্য বললে।

—চল্ন ওই ঘরে। ওখানে কেউ নেই। একদম ফাকা।

কথা বলতে বলতে রংশ, এগিয়ে হার
সামনের ছোট খারের দিকে। এ পাণের খার
দ্ব-চারটে ছেলে। নিচু হয়ে নিজেদের মধ্যে
কথা বলছিল। এরা সবাই অংশ্-কুণ্লুর নিকে
কোত্হল-ভরা চোখে তাকাল। সামানা
হাসল। এই মহেতে ওদের হাসির অর্থ
বোঝার চেন্টা করে না অংশ্যোন। শরীর
গ্রির ছেলেগ্রেলা আবার নিজেদের কথায়
ছবে যায়।

র্ণ, আর অংশ্মান যে ছরে একে একটা থালি বে'ও বসল সে ছরে তৃতীর কেউ নেই। খেতে শ্রে করে দিরেছে রুণ। জিগগেস করে অংশ্মান।

—ভূমি আয়ার নাম জানলে কি করে?
—একট অাগে আপনার কথা হাছিল।
সারতদার কাহে শ্নেলাম আপনি খ্ব একা
কো যোরেন। আপনি ত সাুরতদাদের সংলা
পড়েন?

বারো দলের বারোয়ারি রাজনীতির দাবা-পাশায় দেশ আজ শেষপ্রায়; চিতায় চড়তেই বাকী যেট্কু। দেশের দশের দৈনন্দিন দ্বদ্শায় মুখর রঙগবস্থোর অপূর্ব স্বাদের অভূতপূর্ব গ্রন্থ

श्रहाम बाक्ताभाशासूत्र

आशाप्टित

এই রাজার রাজ্ত্রে

नाम ॥ शांठ ठाका

পা-ভূ**লি**প

৯৩, মহাত্মা গান্ধী কোড, কলকাতা-৭

—সত্তেই! কোন সত্তেই

- भटन अवाक रुत वात्कन महा रहा! হ্যা স্তেতদা। আমাদের কলেকের জি-এস। আছা, আপনি আমার নাম ছামেন ?

--

—না বলতে লানে চমতে গোল केंद्र माथ मार्थ जरणामानाक हिंतर प्रात् व স্থারিরাস মনে হয়। কলেজগুল্খের সকলে ব্রুবর নাম এখন-তথন জপ করে, আর व्यश्नामा अत्र नाम कारन मा। व्याष्ट्रश्च इरकार বিশ্বাস কিছুতেই করতে চাইল না সে! অন্যন্তেকর মতন বললে।

—আপান কোথায় থাকেন?

—হৈইন হোপ্টেলে। তমি ত লেডিস हात्म्पेटल थारका। छाई भा?

পাঁউর টির অবশিণ্ট অংশট্রেকু ম্থের ভেতর ঠেলে দিয়ে র্ণ্র পালটা জিগগেস

—বেশ মজা ত! আপনি আয়ার নাম জানেন না, অথচ কোথায় থাকি সে-খবর ঠিকই জানেন দেখছি

একটা থেমে অংশ্মান বললে।

—আমি জানতে চাইছিলাম তোমাদের নিজের বাডি কোথায়?

--দেশের বাজি বলতে বসিবভাট। তবে যাদবপ্রেই থাকেন স্বা দেখ্ন না--বাড়ি থেকে এখনও টাকা আর্সেন। তাই ধার করে চালাতে হতে এখন।

খাব আগ্রহ দেখিয়ে অংশ্যান কলে (स्थान)

—তৈয়ার কত টাকার প্রয়েজন? আমি দিলিছে। আর এখনই টাকার কথা **ভাবছ** কেন ? এখনকার খাবার ত আমিই খাওয়াচিছ।

কথা বলাশেষ হতেই কয়েকটা দশ টাকার নোট্ ওপরের বৃক্ত পকেট থেকে বার করে রুণ্যের চোখের সাল্লানে মেলে ধরটো অংশ্যান। অমনি বললে রুণ্ড।

—না না। আপনি দিতে যাবেন কেন? কাল হয়ত টাকা এসে যাবে। একি, আপলার চা যে ঠাম্ডা সরবত হয়ে গেল! নিন, চায়ের কাপ হাতে তুল্ন।

काम्हौत्रत एकाही कथन अस अस চায়ের কাপ রেখে গেছে তা লক্ষাই পড়ে নি। টা**কার প্রস্থা** ও আর ভোজে না।

অংশ্যমান রুণার মহেখর দিকে তাকিয়ে থাকল উ-মাথ হয়ে। রুণার চোথ দাটো ভীবণ **উच्छान्ता। ग्राथि। जायाना शामाकृ** । काला ঈবৎ চত্ততা ভুরুজোড়া চোথকে সরু চাঁদের জাতিয়ে রেখেছে ওপর থেকে *এসে*। গায়ের রং যদিও বা সামান্য কালো. তব নাভিন্ন অনেক নিচে শাডির বেড় দেওয়ার গাঢাকা তলপেট আন্ডত স্নের দেখাচ্ছিল ওখানকার গায়ের রং বেশ ফরসাই। আংশিক শরীরের অনাব্ত যা কিছু দেখল সেখানে, গা-ই **আকৃল করে** দিশ ওর মনকে।

থোঁপা থেকে ফ্ল খসে পড়াবে মনে তে রুপ্ন মাথায় হাত রাখে। এই ফুল ্টোকে ভাল করে আবার গ'লে দিয়ে হাত াবয়ে নেয়।

न्द्रभाषी कानकाकी मृत्य भारतका সোজা শরীর দাঁড করিরে দেই আর :

बर्गस्त गासा अक्वास जागूम दः नाग রাউজ। পশ্টে ভরাট আকর্ষক ব্রুক। রাজ ञामा तः माम-त्रःशा बाउँक्वत छन्त कर् উঠতে চাইছে। সৰ মিলিয়ে স্বিতা এক ফুল थान कहाता।

माता श्राप नाम जाड़ा नक्काश रहर লাল হয়ে উঠেছে। আরম্ভ ওই মুখ ঝাঁকয়ে अश्मामानक जाक है।

— धरे जरभामा! कि त्मश्राह्म अङ?

অংশতে ঠিক লব্দা পোল এ কথায়া আধা নেশাগ্রহত চোখ দুটো রুণার শ্রীরের তপর থেকে ফিরিয়ে নিল। ভাগ্না ভাগা ক পি গলায় জানাল।

-किन्द्र ना! धरे क जन दुरि एमधी इनाय।

--- 25-64 !

—হা¹. ওই যে ভোনার খে'পায় স্ম'-মুখী ফুল গোজা, ওগুলোই দেখছিলান

্লাপনি ভাষণ মিথাক। ফল ত মাণার ওপরে রয়েছে। এদিকে হাঁ করে তাহলে কি দেখছিলেন অমন? চলনে এবার । होता

বলেই নিজের ব্বের কাছটায় তাকায আর তারপ্রই হাত বাড়িয়ে অংশ্যোলের ম্থ ঠেপে দেয় অন্যদিকে।

সেই থেকে নেশা ধরিয়ে দিল রুণ্য মাজানের উজ্জনল শরীর। চল আর চেউ এই দ্বে ভরা ওই শরীরে চিন্তায় ডুব দিয়ে রইল মন। রুপুকে পাবার জন্যে একটা বড तकरमत युम्ध विभाग समादन।

শরের দিন অংশরে সংগ্র দেখা করবে কথা দিয়েছিল রুণ্। রুণেকে ও দেখতেও পেয়েছিল। কিন্তু যে ওর মনে গতকাল একাকী সামনে বসে থেকে নেশা ধরিয়ে-ছিল, সেই রুণুই এখন চুটিয়ে গুল্প করছে অপূর্ব জার ওর বংধ্দের সংখ্য। মাঝে মাঝে

व्याप्तक अकारणह शत्रण क्षीरण प्रकल्प । क्षरानक হসিধাশিভরা এই ভাবভালা অংলামানের (b)थ अंद्रा कराज भारत जा। श्रीलक हार-भाग घारत कात्रणा मा एभरत अकरो। एक হাত বাড়িয়ে রুণুকে সরতে বলে গা ঠেকিয়ে বদে পড়ে। অমনি বিশ্বর হওরা গুলায় আরেকজন বললে।

—রংগ্র তুই বারণ কর। তোর গায়ে হাত লাগিয়েছে ও।

–হাত লাগিয়েছে ত ফি চল? আমেড সময়[®]য়ে হাত ধরে অনেকে! **আসলে**, কি বুলব, বুলা?

বেশ, আশ্চয় হয়ে ছেলেটা বলে এবারঃ —হাত লাগা এত সহজা?

অপরে সংদর ওই দাই চোখ জলে ্ৰত বলে দেয়।

—আগ্নে লাগে নি কিচ্ছ! এবার ছেলেটা বলে।

—হাণারে তুই বর্ধমানের বউ ত্রিছচা! র্ণঃ, তুই আমার বউ হবি না? गांशा नाविता तात्थ त्र्ग्।

-- এ কি লংজা করছিল ?

একদতে সবই দেখল অংশ্যান। বাল সংপ্ৰে^ক ভিক্কভায় ভূৱে উঠল মন। এজ সহজে বিকিয়ে দিছে র্ণ্টু নিজেকে? একটা শরীর খিরে এত লোকের আনাগোনা:

ইশারায় কান্টীনের ছেলেটাকে ডেকে পানেটর কোমরের কাছের গোপনীয় ছেট্টে পকেট থেকে স্থাদা রাংতায়ু মেড়ো **ভিনখা**না ট্যাবলেট * বার করে হাতের ভালার ওপর সাজাল। তারপার এক ঢোক জল ম**াথে রেথে** পটাপট গিলে ফেলল। মাানডেক্**স-আবার** সেই নেশায় ব**ু**র হয়ে থাকার **দাওয়াই।**

বাণারা সব একসংগ্রাইরে এসে भारक्ष्यका भिर्व हरण राजा। याः ग्राम अक মনে রাণার চলে যাবার পাথের দিকে চেয়ে সিথারেটের পর সিগারেট শেষ করতে লাগল।



क्रीक क्या बिक्काक, जरणबाराज स्थान क्या व्यार का काला जीवन जनवर गाउँ हुन्। बुना जान क्या क्रम वान्यरी स्थानका राजे राजित स्वीतत स्वाकः।

আন্ধার করে পিছু নিল। খব তাড়াতাতি হৈটে বাকে নুশু আর ওর বাকেবী। পা
কাশছে অংশুমানের। উর্তেও কোন ক্রিরতা কেই। উর্ত্ত কাশছে। হাত-পা গোটা শরীর লাভে ক্রম্বন নি। ও জানে নেশা করা দেহে লাই সাই করে চললে পর ভূগোলের ক্রেরতে একটা ঘ্রিরে দিলে অবাধের মতন বেমন ঘ্রতে থাকে সেটা তেমনি ওর মাখাও ঘ্রবে। এমনিতে এসমহ পরীর টোনে নিমা বাওরা কি কটা। এত্সব তেবে তাংশু ধীর পারে এগিরে বেতে থাকে।

র্ণুরা পার্ক সাবীস ময়দানের দিকে
চলে যাছে; শীতকালের রাড । সমস্ত রাস্তা
জ্বুড়ে নিঃঝ্ম নীরবতা। রাস্তায় ভীবণ
ধোরাঞা। ওদের মুখ অম্ধকার । বড় বড়
লম্বা মাধা মুড়োনো গাছপালা স্থির !
এখটা পাতার গায়েও কোন ক'পন নেই;
পিচমোড়া রাস্তায় গাছের ছোপ ছোপ তাম্ধকর পড়ে রয়েছে শ্রেণু।

গাছের ধার ঘে'বে মিশে যায় ওরা।
সামনের ধে'যাশার ভিতর কি তাড়াতাড়
হারিয়ে ফাছে।..তব্ অংশ্মান আনকটা
দ্বাধ রেখে ওলের ওপর চাউনি ফেলে ওলিয়ে
চলো। ওর গায়ে কোন গ্রম পোশাক নেই।
ছলেই গোছে শতিকালে গ্রম জামা গায়ে
চাশাব র প্রয়োজনের কথা।

বৈশ জোরে জোরে হাতের ফিল্টার সিগারেট টেনে চলেছে। অথচ ফিল্টারটাক मृत् वृहे क्षेपके व्यक्ति कारक व्यक्ति। जामस्मय नितंक क्षात्रक काणीय त करण बारक का बहुक्क स्मय, तक्षीत्रक करमृत स्वयक्ति उन्ते धोरक।

এর মধ্যে রাস্তা পার হতে গিরে জানৈত গাড়িচালকের বিশ্রী ভাষার গালাগালি শ্রুরতে হল। গাড়িটা হ্ডমাড় করে কথন রেক করে দাড়িরে পড়েছিল তা ও দেখতে পার্যন।

পার্কের দেহালের সীমান ছারের এগার্কেই অংশা দেশে—র্লারা জন্য ফাট-পাথে দাঁডিয়ে কার সংশা হেন কথা বলছে। অংশারান ঠিক চিনকে পারল না ছেলেটা কে? আর ওদের পেছনে না ঘার ঘার করে সোক্ষা ফিরে এল বালার হোস্টেলের কাছে। ও জানে, একসময় না একসময় রাশুকে এই পথ ছারে ফিরে আসতে হবে ঘ্যোবার জন্যে। এছাড়া যে এখন উপায়ুক্তর নেই।

দেয়াল ধরে পায়ের ওপর পা রেখে নতুন করে সিগারেট ধরায় অংশ্যান।

্—একি ! তুমি এখানে।

জাহিরের হঠাৎ উপস্থিতি একেবারে অভাবিত ঠেবল তাংশ্বানের কাছে। তব্ ভাঙা গলায় বগলে।

— ৩ আমাস কথা বিয়েছে আস্বে। ভাই অপেকা করছি। হাসতে থাকে জাহির।

ক! রুণ্ট কথা দিয়েছে তোমাকে? এত সকলকেই এরকম কথা দিরে ঘোরায়। না! জুমি দেখছি, রুণ্টু রুণ্টু করে গাগল হয়ে থাবে। এখন রাত দুটো প্রায়। ভাগিসে, অমরেশদা আমাকে তোমার খোলে গাঠিয়েছে। তা লা হলে রাভগের করেও ভূমি একইভাবে দাছিল। থাকতে। চলো এবার হোভেটল শোরে। এখানে হুলে কি করবে আর:

তাংশা কি কারণে যেন নেশার টাবেলেট টপকরানি পরের দিন। জাহিরের কাছে আগামী, পরীকার নিন-কাণ জানা ব্যাপারে বাসত। এমন সময় রাণ্যু সোজা ওদের কাছে এসে বসে পড়ে।

—তাংশাদা ?

ড ক শ্নতে পায়নি এ<mark>মন ভাব দেখায়</mark>

—ও তাংশুদা—গিলজ, দাদা আমার রাগ করছেন কেন! কালকে আমার স্যাতাই মনে विका मा जानमाद अर्थन का नाटत दम्भा कत्रव नाताविका

রুণ্ অংশরে গারে গা ঠোকরে দের।
ভান কামের ওপর ওর মরম হাতখানা কিছুকা ছুইনের রাখে। অংশ্মানের ভেতরটা
রুণ্র উত্তব্ধ সাথে। গাংশা গরমে প্রভাত
আনুশ্চ করে বিল আমীন। গাড়কালের অস্কৃতি
ভাজিমান উচি মেরেও পালিরে গোল বেন।

—ঠিক আছে কি খাবে বল?
—সরি - সরি । কিছুই খাব না
আমি। এই মাল হোস্টেল থেকে খোর বেরিরেছি। আছা অংশাদা সবাই কলছে— আপনি নাকি কাল আমার জন্যে সাররেত শীতের ভেতর রাস্ত্য অপেক্ষা করেছিলেন ইস্ কি অন্যায় করে ফেলেছি বলনে ত!

আংশুমানের ভিজে গলার স্বর আন্ত আন্তে নেবে আন্দে।—সে স্ব কালকের কথা। যা হ্যার হয়ে গেছে। আজ আর নাইবা মনে করিয়ে দিলো।

—এই রুণ্ ?

তর সেই কাশবাঁ যে কাল ওর সংগ্ পার্কের দিকে ঘুরছিল সে-ই এখন ডাক্তে এসেছে। কানে কানে মেফোটা কিছু বলসে অমানি বুলু কানিটানের দরজা প্রোপ্রি খ্রেল চলে গেল।

—এই অংশুদা অমন মাথা গ'়ন্ত রয়েছ কেন যাড় ভেঙেগ হাবে হো।

চিম্তার রাশ আলগা করে দের জাহরের এই ডাক। ঝানেক পড়া মাথা তোলার চেড়ী করে ছবংশ্যান। না, ঘাড়টা ওর সড়ির সার্ডা প্রচম্ভ বাথা হয়ে গেছে। অনেকক্ষণ মাথা ভাজ করে রংশ্র কথা ভাবছিল ত! জাহির না ডাক্লে, বলা হাহা না আর কড় সময় ধরে ও রংশ্র চিম্তায় তার থাকত।

অংশ্বর চোল এউনি স্পিড়র কাছটার পড়ে।

জাহির বলে ওঠে তক্নি।

বাইরে বেরিয়ে আদে অংশ্মান। ডার্ফ দেয় ছেটু করে।—এই রুল্—রুল্বু! দাড়াও কথা আছে।

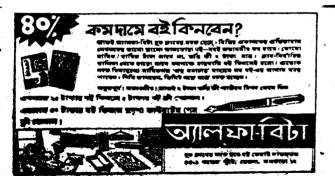
রুশ্ শুনল, ফিরে দণ্ডাল। তারপরই খিলখিল করে হাসতে হাসতে সারা শরীরে বংয়ের বাহাদ ছড়িয়ে অপাশ্বর এক হ'ত নিলের হাতের ভেতর আপন করে চলে পিলে।

আংশ, ভাবল—এখন আর রুণ্ডে প্রত্যোশা করাই অন্যার! জাহির অংশরে ক ছে চলে আসে আবার। গা খে'হে পাড়িয়ে থেকে বলে—

—চলে গেল রুণ্ অংশুণ, পাথিতে প্রাই কথা বলাতে পারে? না—পোষ মানাতে পারে!

এই মৃহতে তাংশ্ম নের মাধার মাধা বেন কেমন সব হয়ে হার।....তক্র ওর চোথ অদুশা রুলুর পারের ছাপের ওপরই পড়ে থাকে।





অরুণা মুখাজির

আৰুন লগতে আজকাল মেলেলা অভানত াহভরে এগিয়ে গেছেন। ছবাও বারা __ চটিল কথছেন তেমন অনেক মহিলাদের ম্বেই শুলি এ-জগতটা এত নিয়ন্ত্রান্ত্র আইনের বেড়াজালে ঘেরা সে কোর্টের কাঞ্ শেষ হলেও এ-ভাবনা নিয়ে আলাদের সংসার জীবনৈ ফিরে যেতে হয়। সেখানে ফিরেও এক-একটা কেসের জ্ঞাটিল চিচতা মন থেকে সামান্য সময়েও জনাও সরানো যায় না, তখন মনে হয়, আইনের স্বগতে মেনেরা একবার চাকে পড়াল সংসার বোধ-হয় ভেম্ম আৰু सन फिरश क्या यश मा। কেউ বা ৰাজন আইন শৃধ্ পুজেই জানা याहा ना। माक्रिकछातन-काष्ट्रातन्त्र शहराहारणत ফলেই সাইন সম্বংখ ধারণাটা পাকাপোর হয়।

মহিলা আডেভোকেট দ্রীছতি অবংগা মুখাজিৰ কাছে তাই একদিন উপ্থিত হয়ে ছলাম কতগলো প্রশন নিয়ে।

প্রঃ আছে। আপুনি কত বছর প্রাকটিশ করছেন ? আইনজগতটাকে নিজের জীবিকা হিসেবে গ্রহণ করতে কেটু কি আপুনাকে অনুপ্রেরণা দিয়েছেন ?

উঃ ধ্রুন প্রাকটিশ কথছি এক মুগ হবে। ভবে এতদিন ধরে আইনজগতে যা শিক্ষালান্ত করেছি ও বহু বড় বড় মামলাতে বেখানে ক্মাপ্লকেটেড কোন্তেন অফ ল প্ৰতিত, সেসৰ মাললতে আইনের কটিল রাখ্যার সার্থাশুকা বা অভিক্রতা ছরেছে, তার জন্মা আমি সংপ্রীয় কোটেন একজন विभाष्ट्र मिनिशास कााक्टलाटका शिक्टबलाक्ट মত মহাশক্ষের কাৰে ঋণী। তিমি আহার াবার **নিদ্দেশ বৃংধ**ু।

প্রঃ এত বছর আগে নিশ্চয়ট আপনার াতো মহিলা আডেভোকেটের সংখ্যা জল্প হল ভগন জাপনার এ-ধরনের কালে ।কটা ভল্ল বা দ্বভিচ্তা ছিল কি?

উট প্রথম প্রথম এ-লাইনের পকে আমি ক উপাত্ত কিনা সেগ্ৰহম একটা চিতা न्त्र काबादा शाकित्यंत भ्रत्रक विश मानका मृश्विक्का। धर्मन विक्रम एन-র-ভাবনা শ্বনকে কথনও ভাবিয়ে ভোগে ं मान कान जश्मम् । तरे। भाग निकास S THE भारत रकान व्यवधा स्माद्धे। রেন্ট্রের নিরেও সহুজ্ঞানে ডিল করতে রি বেটা প্রথম দিকে আমার একটা দারণে नता किया।

তঃ আপনি সাধারণতঃ কি দ্রণের কেস TON WINE?



তার্কা মাথোপাধ্যম

উঃ প্রধানতঃ আন্পেল্টে সাইড-এতে চাইকোটে নানা ধরনের কেস কংগ্রছ। এর মধ্যে আছে মন্ত্ৰিমে নিয়াল কেল অথাং দ্বামী-স্থার রধ্যে বিবোধ জাল্ল বা ঘরবাড়ী সংক্রাণ্ড গ্রাগলা পাটিশিন সাটুট্, ট্রইবের প্রোবেট নিতে গিয়ে অপুর শক্ষের আপস্থিত भिताराध ठाडेरकार्षे याशीन अस्कान्छ মাখালা, আটিকল ২২৬ অব দি কল্পিট-গ্রিউশন অব ইণিডয়া-র উপরে লাখনা, ভাছাড়া কয়েকটি ফৌলদানী আপীলেন মামলাও করেছি। এ-লাইনে বহু মানুৰেগ সংগে পরিচয় হয়েছে সতি ভবাও মান্ত্রের জীবনের ঘাত-প্রতিঘাতের একটা প্রায় প্রশাংগ চিত্ত যেমন পেয়েছি, তেম্মন লোধহয় অনা কিছ পাওয়া দুশভ।

অঃ আপ**িন আইনজ্ঞ** ভিষেতে নিজেৰ জীবন কাটাবেন এমন ভাবনা কোথা থেকে এলো ?

টঃ আইনজীবী, চবার ইচ্ছে य-এ भाग क्यांत भएत हिला है। महा इरहा লেখাপড়া শিখে নতুন কিছ, একটা করছো। ঠিক আর পার্চজন মেরের মতে। গড়াব্র-গতিক জীবনের ছালে, কোন আনন্দ কোন-দিনই পাইমি। তবে বারবার মনে হজে সমাজের এতসব মেয়ে নিযাতিতা হতে দিমেল পর দিন তানের জনা অততঃ সাধা-মত কিছা করবো। এই কিছা কররে বাসনায় সঠिक कि कत्रदन्ध भारत, उथस क्लाम सामगा किल सा। निश्क थि-ता भारमत भन सामा-শিক্ষ ক্লালে ভডি হয়ে মলে হল আইন পত্রে কেম্ম সমু আইনেল সাচাল্যা आ श आभारमेत रमर्भत किछ किछ स्मार्क्क सम्बन्धः किए **উপकात क्यारः भा**ताता। **शु**ष्ण भारत क्थित करत निर्माध आधि आहेनछ करता। সাংবাদিক্তায় ছেলেমেয়েনেল মধ্যে কার্ল্ড क्राज किकाब ७ मासास्त्र मधा कञ्छ दार्स-किलाधाः । प्रारम् भारत् दनभागं ज्याञ्चल ददरस्य दनस्य । এখান করে আখি আইন অগ্রান স্মাণ্ড ক্লি

প্রঃ আইন পড়ডে গিয়ে বাডীর কোন আপ্তির সন্মানীন হয়েছিলেন কি?

ট্রঃ সদচেয়ে বেশ্যী আপত্তি এপ্রেছিল আখাল মাহোর কাছ থেকে। তিনি আভংকিত হয়েছিলেন এত শিক্তিত সেয়েকে পালম कता हा भाका हात रखरहा। निर्देश शताब असम मंत्रि छ जानन रेक्स निरंश मद शक्ति-ব-ধকতা সরিয়ে দিয়েছিলাম।



প্রতিপাদির হিন্দু আর্থার করেন আহন বিশ্ব বিশ্ববাহ বেশে এক ধারনের অংকতের

প্রাঃ এ-লাইন ফ্রেরেরে পক্ষে কতটা উপরোগদী?

ক্টঃ আজকাল কোন লাইনই মেরেদের উপবোগী নর এ-কথা বলা যায় না। তব্ত বালতব কিছা অসুবিধা আছে মেরেদের পক্ষে বৈশ্বৰ্থ কৰ্ শাল্পটোলন কৰতে গিয়ে জনেক সময় বাড়ীয় বাইকে নেয়েদেব অনেককণ কাটিয়ে ৰাভ করে কিয়তে হয়, তাতে বিশাহতা ভি অবিবাহিতা সকলেন পক্ষে দাৰ্শ অসুবিধা। দাশপতাজীবনে অনেক ভুল বোঝাব্ৰি ও জাটিল অবস্থান সুক্তি হয় এতে।

প্রঃ এখানে স্থা-পূর্বে মেলামেশার অবাধ সংবোগ ররেছে তাতে কি বিপথ-গামীর কোন ভর বরেছে?

তঃ স্থান-প্রাধের প্রবাধ মেলামেশার স্বোগে সপ্থে ও কুপথে চাজিত করার ক্ষমতা প্রত্যেক মেরের হাতেই আছে তব্ও বলবো এই পেলাতে অনেক মেরেই স্বপেত্রভরা মার্নাসক জারিলতার দিন কারান। অনেক সম্মর মনে হরেছে না হতে পেরেছি প্রস্থাবির ছেলে কিংবা মেরেঃ মাথে মাথে মাথে আইনের কাঠিনাকে ব্রহার রাখতে নারী-

সূত্রত ক্ষেত্রকাতা ক্ষেত্রার রাগিরে বরে। মনে

ক্রের, ব্রুত্থে সেরো ক্রিরে ক্রুত্রের করের

রাগতে সূত্র্যার ব্যক্তির ক্রুত্রে ক্রুত্রের
প্রমাজত প্রপ্রা চলবে না। তানে এই শেশা
থেরেন্তের প্রানামক ব্রুত্রিকাতির বিশেব
স্কারক ও বাইনের জনতের চলাফেরার
ভাকি স্কাল ও সচেতন করে তোলে।
সেজন; এই সেলাকে মনে হুরুত্রে এক
বিশেব, ধ্রনের ইন্টেলেক্চিউর্যাল

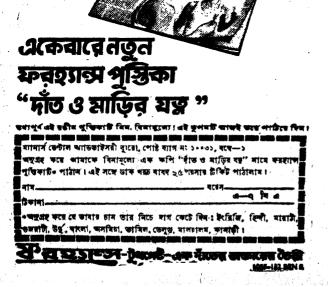
প্রঃ আর্গমি ঈশ্বর বিশ্বাস করেন? কোন কলস হাতে নেবার সময় ঈশ্বরতে কি কারণ করেন?

উঃ ঈশ্বর্থ বিশ্বাসী মন আমার তাই
মনে হয় সবই ঈশ্বরের প্রেনিদিশ্চ পরিকলপনা। ছুটিছাটার দিনে একট, সময়
পেকেই আমি ঈশ্বরে উপাস্বা করতে
ভালবাসি।

প্রঃ আপনার অলপ সময়েও কোনরকম্ নেশাকে চরিতার্থ করতে পছক্ করেন?

উঃ এই পেশাতে পড়াশ্নার অন্তাধক চাপ তাই সময়ও অলপ। ছোটবেলা থেকে মাহিতাচচা করতে ভালবাসি। জার্ণালিজম পড়া শেষ করেছি। স্তরাং সামান্য অবসর বা ফাঁক পেলে সাহিতাচচাই আমার একমাত নেশা করে ওঠে। নানা পরপরিকায় আইন-বিষয়ক লেখা দিয়েছি। আসাম, এলাহা-বাদের প্রকাতে অসমীয়া ও হিন্দী ভাষায় আমার লেখা প্রকাশিত হয়েছে। আইন পেশা হলেও সাহিতার নেশাকে আমি কোনাদিনই ছাড়তে পারবো না।

শ্রীমতি মুখার্জি দীং বন আইনজ হিসেবে কাজ করকে কোর্টেশ্ব বাইরে বাড়ীতে তাঁর আর এক জীবন। অস্প কয়েকজন মান্য নিংয় গড়া ভার ব্যক্তিগ্ত জ্বীবনে সকলের সংখ্যা একটা মধ্যুর সুম্পক আছে। আডভোকেট হবার এক বছর অ'গেই তিনি মাজ্দেনহ হতে বণিতা হন। তাঁর বাবা বৃটিশ যুগে ইনকাম ট্যাক্স-এর আাসিস্ট্যান্ট কমিশনার ছিলেন—এখন তিনি স্বাধীনভাবে প্রাকটিশ করছেন। এছাড়া তার প্রিবারে রয়েছে দাদা-বৌদি ও একজন ভাইকি। কোটেরি বাইরে শ্রীমতি মুখার্জি ঘরোয়া হৈ সামান্য সমশ্বের অবসরে সাহিত্যচচৰ ছাড়াও গলস করতে ভাল-বাসেন। এই গলেপর ফাঁকেই এক সময় বললেন, 'এ-লাইনে অর্থ উপার্জন সকলের ভাগ্যে কিন্তু সম্ভব নয়। তাই আথে≥র জোর বাদের খাকে অথবা হাদের ওপর क्षि निष्यानीम् नश्च अयन त्यात्रापत अक्ष् এ-কাজে এগিয়ে আসা সবচেয়ে বেশী मृतिया कारण এ-लाहेत्न कान निर्मिणी जार নেই।



बिताशुल्लाः

- अर्थान क्वांन

রূপসীর খাতা

এবার গ্রীমকালের স্কালের পোলাক সন্বশ্বে আলোচনা খ্রু করব। সাধাপুণ্ডঃ वाळाली घटन बाखीटक अकटल अर्थातन्त्रात थात्कर। किष्ट्रां। चत्त्रत काक्षकर्म कताः জন্য আর কছুটা অন্ত্যাসে। আ⁵ছ এমন মহিলাদের দেখেছি যারা বেডাতে গেলে খুব স্বেক্তে হান অথচ বাড়ীতে আধ-ময়লা কাপড় পরে অযতে। নিজেদের গাথেন। এর ফলে শুধ্র যে তাকেই দেখতে খারাপ লাগে তা নয়, বাড়ীর শোভাও নণ্ট হয়। মহিলা-দের বাড়ীর লক্ষ্মী বলে বলা হয়। তাদের অপ্রিকাল হয়ে থাকাটা অলক:ীর পরিচয় নয় কি? বিলিভি কায়দায় বা আধুনক কায়দার অনেকেই বাড়ীতে কাজকমে ব জনা ও কাপড় নৃষ্ট না করার জন্য হাউস কোট' বা 'ডাপ্টার কোট' ব্যবহার করেন। এটা আবার তথাক্থিত বাঙালী মহিলার; মিলার দুল্পিতে দেখে থাকেন। এটা কিল্ড ভল। বিদেশীদের খারাপ জিনিস করে যদি এগালি বাবহর করা যায়, তাহলে ভালঠ হয়। ত্রে যদি কার্র এসব পোশাকে আপত্তি থাকে ভাইলে ভাঁগা বান্ধি করে একটি কি দটি প্রোনো শাড়ী রাহ্না ও ঘর-সংসালের কাজের জন্য রাখতে পারেন। সেই কাপড়ের ওপর বড় ঝাড়ন কিম্বা তোয়ালে বে'ধে রেখে কাজকর্ম করলে ভাল কাপড় নতি হয় না, আর তেল-হল্প ও লাগে না।

সংসারের কাজকর্মের বাবশ্বা আমাদের আলোচনার বিষয়বদত্ব নয়। তবে এপ্রসংগ আসার কারণ এই যে পরিক্ষমতারে কী করে থাকা যায়—সেইটে বলে নেওয়া।
ভারশর স্নান সেরে ঘরে শাড়ী পরে থাকার বা কোনো হাকো রঙের শাড়ী পরে থাকার বিদ্যালয়। গ্রীক্ষমতারের কাজে বান, তাদের কথা আলাদা। গ্রীক্ষমতারের কাজের বান, তাদের কথা আলাদা। গ্রীক্ষমতারের কাপড়ের মধ্যে স্কালের কিন্তুলের চ্বিক সিক্ত, জরেতিই বা কোনা ভারী কাপড় চলে না। স্তেটির তাপড় হাকো ভরেতের স্কালা গাড়ী, কোটা ইতাদি বাইরের তাপের স্বালগ স্কালার:

ষারা বাইরে বান তাঁদের প্রসংগ আলোচনা করবো এখন। গ্রীক্ষের সকালে মধ্যাং ৯টা থেকে ১০টার মধ্যে কেরেতে কে কাপড়ের রঙ ফিকে আর হাল্চা হওয়া গ্রাল। এবং তার সংগ সামজ্ঞান্য মেখে তি কাপড়ের রাউজ। অনেকে দেখা বার বিশ্বের সকালে কিন্বা দৃশ্পুরে লাল্ ালো ব্যুক্তী রুডের খাড়ি পরে যাকেন ও দেই স্থেগ প্রেম সিংক টারেটা কিবা এই জাভীয়া কোন ভারী কাপড়ের ব্লাউন নেপালি চোথের পক্ষেই শুবু মার পীড়া দারক নর, শ্রীকেও ক্ষর্যান্তি ঘটার; লালা, কালো, গাঢ় হলুদে ও ক্রগ্ননী রঙ্গালী গরম হরে বার, আর বিনি পরেন তরিও দারীর গরম হয় এবং বাম হয়। ফলে সাজের সব সোণ্যাই নতা হয়ে যায়। সাজের ব্যাপারে সবচেয়ে লক্ষণীয় হল রাহিবোধ। দার্মী বা কম দার্মী প্রেদাকের জ্না কিছু আসে-যায় না। আসল দ্যাকার স্থুদ্র র্ভিসংগত সাজ। বাই হোক সকালে কিবা দ্পুন্তের দিকে বেরোতে হলে রঙ সংবধ্ধে গরেন সংবা ভীষণ দরকার।

গ্রীম্মের বিকেলে বা সম্পার একটা বিশেষত্ব আছে—তা চল ফুল। বেল জুণুই ইত্যাদি ফ্লের স্গুকেধ বাতাস মাদ্র থাকে। সেই সংগণ্ধ নিজের অংগে জড়িয়ে নিতে পারকোভালই তো। সামনে একটা कंटन किन्दा कुलाव बाना बुलाला ए কভোটা বাড়াতে পারে তা বলা বায় না। গ্রীজ্মের সন্ধায় আকাশী নীক চাকা বাদামা, কচিকলাপাতা সবঃস্থা, আর স্বার উপরে শাদা শাড়ী, যার গায়ে বুটি কিন্দা স্থান চওড়া জ'র পাড় অথবা নকসা পাড়। শাদা শাড়ী সকালে বা দুপুরে সাধারণত সবাই পদ্ধে থাকেন। কিন্তু ঢালা শাদা ইত্যাদি মোটাম্টি পরলেও সকালের চেয়ে এই ধরনের স্বাদা বিকেলে কিম্বা সংখ্যাতে পরজে স্বচেয়ে ভাল দেখায়। সকালে বা দুপুরে রোদের শাদাটে উজ্জনল রঙ শাদা কাপড়ের উপর পড়ে भौधाः। এ-वक एकाच ठाका करत विकास কিম্বা সমধ্যায়। হালকা স**ুদ্র প্রি**ণ্ট অবশ্য দ্ব'বেলাভেই চলে। তবে দিনের আলোতে প্রিণ্ট বেশি ভাল দেখায়। একটা বড় প্রিণ্ট কিম্বা গাঢ় প্রিণ্ট পরতে হতে স্থেধা বা রাত বেছে নেওয়াটাই যুক্তিযুক্ত হবে।

সম্পোর প্র অথ্বা রাচে কোনো বিশেষ উপলক্ষ বা নিম্মতণ থাকলে সাধারণত উজ্জাল বিদুদ্ভের আলো ধ্রুয়ানে আস্তে বেতে হয়। মহিলাদের একটা বিশেষ প্রবণতা আছে শোশাকে **बक्रस**े बा छात्र अवर्षे 5छ। बढ श्रवाय দিকে। কিন্তু একেতে বিশেষভাবে মনে রাখা তৈতিক বে, আমাদের সাজার মুখা উদ্দেশ্য দেখতে ভাল লাগা, এবং অবশ্য সেটা অপ্রের ट्ठाट्य। किन्छ व्यामान চোখকে বাদ তা কণ্ট দেয়, ভাইলে সাজন সাথকিলো কোথায় ? গ্রীকোর মিক্রস্ব তাপ তো থাকেই তার ওপর আলো, ভিড. শোশাক গছনা সব জিলরে যে তাপের সৃষ্টি হয়, সেখানে পোশাক বদি সেই অনুপাতে ঠাড়া না হয়, তাইলে দ্র্মকদের स्वाराधेके खंग नारण ना । कारे तक **ख** পোশাকের কাপভ বাছার সমস্ত বিশেষ খেয়াপ রাখা দরকার। রাতে যে রঙ্গালি এসব ক্ষেত্রে পরা বায়, তা হল--গোলাপী নীল, টিয়াসবৃ**জ, হাল্কা বেগ**ুনী চীপা। বারা বা কালো রতের ভক্ত ভাঁদের গ্রনে রাখা ভাল যে, এই রঙগ**্রাল শা**ত-কারে পক্ষেই সবচেয়ে ভাল। আরুর একটা কথা, পোশাক খ্ৰ ভারী কাপড়ের না হলে শরীর হালকা লাগে ও গরম-ও কম হয়। যেমন, সিঞ্ন মটকা কোটা (দামী), ও সিংক পরতে হলে মর্নিদাবাদ ও কাশ্মীরী শাড়ীই ভাল। কারণ এই জাতীয় সিল্ক ন্রম হয়। বিয়েবাড়ী বা বড় ধরনের কোনো ভোছে বেড়ে হলে বেনারসী বা.এই জাতীয় মাদ্রজী ভারী সিলেকণ্ড শাড়ী প্রার প্রবশতা আমাদের মহিলাদের খুব বেশী। অবশ্য ভেবে দেখলে বোঝা যায় আমাদের গ্রীক্ষপ্রধান দেশে তাহলে তো ভাল ভারী দা**ঘী শাড়ী** পুরাই মুশ্বিল। তব্তু ষ্তুটা সুদ্ভব এই জাতীয় শাড়ী খুব ভরা গ্রীশেম না পরাই বাঞ্চনীয়। সে জারগায় যদি থবে দামী টাশ্যাইল পরা যায়, তাহলে আমি পুরুষ কংগ দেখোঁত স্বার মাঝে আনেক স**ুন্দর লাগে। ভবে** কোনো কোনো ক্লেচে আগ্রহের ঝোঁক বেশী থাকলে আমার অন্যোধ ভাৰত রঙ সম্বাদেধ সচ্চেত্রন হওয়া ভাগ। এবং শাড়ীর ভেতরে আতি-শিক্ত জংলা কাজ াবা হোগীয় ওজান না থাকাই ভাল : এইভাবে সাজ ও পোলাক সম্বন্ধে একটা সচেত্রন হলে, একটা নজর রাখলে সৌন্দর প্রচুত্ত পরিয়াণে বেড়ে যাবে-এ-বিৰয়ে আমি মিদিচনত।

--বরবণি ন



উপন্যাস



প্রভাত দেব সরকার



্তিবলীবাব্-উমাশশ্রীর সংসারে কোন বৈচিত্র। নেই। দিনপুলো কোন্ বার কোন ভাপ না রেখে। বড় ছেলে বিকাশ চার্কার পার। ছেটে ছেলে নন্ডুগোপাল রাজনৈতিক ক্ষার্থকাশনে কাড়িরে পড়ে সংসারে এক আন্দিচরতার স্থিতি হয়। বিবালের সংগা পারচর বটে মালবিকার। ক্রমে ঘনিস্ঠতা ।।ড়ে। অফিসের ইউনিরন করতে গিরে বিকাশের তান স্বর্পে দৃষ্ট হতে থাকে। উপার্জনক্ষম ছেলের বিয়ের সম্বাধ করেন আধনীবাব্। আর সে পার্টী হল বিকাশের অফিসেরই বড়বাব্র মেরে। এ সংবাদে কিণ্ড হয়ে ওঠে বিকাশ।..]

(পূর্ব প্রকাশিতের পর)

নিজের দার-পথিগ্রহের কথা মতে পড়ে। মনেটু পড়ে না আপন ইচ্ছার কড়টাকু সে-ব্যাপারে সঞ্জিয় ছল। বাবাই সেখানে ছিলেন। উভয় পক্ষের অভিভাবকরাই সাক্স <u> হখনকার</u> বাবস্থা ছিলেন, হতে পারে কিংকু জার এখনকার ব্যবস্থা এক নয় জ বৈন ⁶ক ভোর ব্যাক্তাত, পারিবারিক জনে। একেবারে বদলে গেছে? নাকি 511-ছেলে-মোর্ব সম্পক্ বিপরীত হয়েছে?.....

দ্বটো ছেলেই যেন কেমন হয়ে গেল। নদ্যু আজকাল প্রায়ই বাড়ী ফেরে না, ফর-

কারো সংগ্রাকন দেয় না--যেন তার সম্বাধন্ত মেই। বিকাশ ঠিক অতটা না হলেও আজকারদ সংসারের চেষে ভার আর কোথাও বেশি ৷ অন-তবাব, ব্যৱন-ছিলে: তাতে ভয়ের য়পেণ্ট কারণ আপিসের ইউনিয়ন নিয়ে বিকাশ জা কো খ্ব মেতেছে। অনুভবাব, বঙ্গেছেন রিং ফিডার আবশা সেই স্থেত মভয়ও দিয়েছেন, তিনি বতদিন আপিসে আছেন প্রকৃত ভয়ের কো_ন কারণ নেই। (ক্রিন ওয়াচ করছেন-এয়েল উইশার হিসেবে কর-गौश अन किছ कत्रतन।

লেও বেশিক্ষণ থাকে না কোন কথাৰ জবাব

এই তো আজহ আগিসে ত্কতিক ছোট-বড় নানা কথা হয়েছে। অনাতবাব, মনে মনে খাবই কুম্প হয়েছিলেন, কিন্তু বৈবাহিক সম্বাধাটা স্বারণ করে এবং অবনী-বাবকে ইঠাং বাড়ী বয়ে আসতে দেখে সব ভূলো গোছেন। হল, জায়াই এর ঔপতা মনে র খেননি বরং ছেলেমান্ত্রী মাখা গরম ভেবে উড়িয়ে দিরোছেন। মনে মনে ভেবেছেন বিয়ে হয়ে গোলে ওসব কিছ্ থাক্রেব না। ভালয় ভালয় বিরেট। হয়ে যাক। ভারপ্র—

মারের মুখের ওপর ঠক ওভাবে কথা বলবার ইচ্ছে বিকাশের ছিল না। বিরে সে এখন করতে চায় না, বিরে করার অবস্থা ভাগের মক এই কথাটা বোঝাতে গিরে কেমন বেন হরে জেলা। বাবা খুবুই মনকলুর দুঃখিত হরেছেন। কদিন ভিন বিকাশের সামনে আসহেন না। সংসারের কোন কথার মারো থাকতে চান না। এ সভিমান না কে.ছ ? ছেলেমেরের ওপর আধিপত। নাশের বোননা?

হিকাশ আবার নিজের দিক থেকে বাপোরটা, সহজ করবার চেণ্টা করেছে বাবার রাগ বা দুঃখ করার যেন কোন মানে হয় না। তিনি এড বোখেন আর এটা ব্যুত প্রক্রেম না বে ছেলের বিয়ে দিরে দিলেই তাঁর কর্তবা শেষ হয়ে যাজে না। এবা
সামাজিক সম্পর্ক এত সহজে স্থিত কা
ক ঠিক ? এখনো কি তাদের কাল আহে
তা হাড়া তিনি তো বিকাশকে ভেকে বল
পারতেন জনশ্ভবাব তাঁর বাড়ীতে আ
থেবে তিনি এক রক্ষ স্থানই করে রেং
ছিলেন ঐখানেই বিয়ে দেবেন, বিকাশ যে
জনমত্ত না করে।

আন্তবাবা খবশার হবেন, কথাটা ভাব তেই বিকাশের কেন্দ্র ধ্রেলা করে। আন কো হরে বিকাশ হয়তো শিক্তীয়বার চিন্ত করে দেখতো সংখ্যা সংগ্যাপ্ত প্রভাবে প্রভাবার করতো না। আন্তবাবাকেই ভার অসহা ভা খড়া—

ন। রাবাকে তেকে এসৰ কথা বর্গ বোঝান বাবে না। তিনি क বাকেছেন বৈ জানে, ছেলেদের সম্বংধ হঠাৎ কেফা নির্হসাহ, নিবংসাল হয়ে লেছেন। ব্ একদিন ইচ্ছে করে প্রী করে বাড়ী ফিন্ বিকাশ দেখেছে ব আর তার খবর নিংছ ঘর-বার করেন দ চ্প-চাপ নিজের ঘর এসে বসে থাবে

সেঁচ থেকে শ্রীরটাও যেন অবনীবাব্য ভাল গচেছ না। আপিস করে। এলে শারে পড়েন, ভাগপর একঘুনা হয়ে গেলে উই কোনরকমে থেয়ে আবার শারে বিকাশ শক্ষা করে মনে মনে কেয়ন রাধ বোধ করে কি দরকার ছিল নিজে মতটা ও'দেল মাথের ওপর বাস্ত করে. চু' করে থেকে ভারপর মাকে বর্নঝুয়ে ব্যাপারটা এত গ্রেত্র হয়তো বাবাও নিশ্চয়ই ব্রুতেন। এখন তো গ্রে আরো অশাদিত, ম'থে কিছ' না ব্যুমতে কাণ্ডো বাকি নেই—ছেনেমেরে অবাধাতা কোন অভিভাবকট ভাল মনে নে না। উপায় থাকলে, তারা উচিত শিকাও দেন কখনো তিরস্কার করে কখনো বা বাড়ী থেকে বহিস্কান করে সম্বাধ কাটছটি করে। একদিন আপিস থেকে ফিরে বাড়ী

এক দেশ আ পুসু থেকে কিবে বাড়ার বাড়ার ডুকেই বিকাশ বেশ ভয় পোরে পেশ। পাড়ার কালশিতান্তার ঘর থেকে বেরিয়ে মাজেন। কি ব্যাপার ? কালশিবাব্ব বলালে। একটা, হাটেবি ক্যাপেনা হরেছে। ভাববার কিছু নেই ওযুধ দিয়ে গোলামা, কদিন রেস্ট নিলে ঠিক হার যাবে।

ভাড়াভাড়ি বাবার লগে চার্কে বিকাশ কেমন কেম **ভর পেরে গেল। ব্**রে চোথ



বৃজিরে বিছানার শরে আছেন মা তুরি পারের দিকে বিষয় মথে দাড়িয়ে আছেন, ভারাপের প্রেসজিপশনটা বিছানার ওপর উড়ছে বিকাশের বৃক্টা শ্যা হয়ে মনে হল, বাবা যদি মারা যান ? তাদের কি হবে ? কে দেঁথবে—

ত স্ফুটে মা বললেন, আপিস থেকে ফিরে বললেন বুকটা কেমন করছে ?

বৈকাশ মনে মনে প্রমাদ গুলুগলে, তা হলে ধাবার সেই ভর্গকর অস্থের স্টুন চল যা আত্মীয়-শবজনকে রোগীর চিকিৎসা করবর সুযোগ দেয় না—হঠাৎই গলা চিপে ধরে মুহুতে সব শেষ করে দেয়?

বিকাশ বজলে, ভাস্তারবাব্ কি বজলেন? মাও বোধইয় বিশ্বাস করেননি বজলেন, ও কিছু না—ওবাুধ খাওয়ালে সেরে যাবে।

ডাঙারদের তো তাই বলতে হয়, রোগীর অবস্থা যতই খারাপ হোক তাঁরা কথনো হতাশ করেন না।

বাবার হাটের গোলমালের কথাটা বিকাশ, মার কাছে চেপে গেল। মাথে বললে, ভূমি বাও, আমি দেখছি।

বিকাশ বাবার পারের কাছে বুসে পারে হাত বুলতে বুলতে কবার অস্ফুটে ভাকলে, বাবা। বাবা। বাবা।

অবনীবার, বোধহম চোখ খোলবার চেণ্টা কবলেন, শাগলেন না। বকাশের ইচ্ছে করল এখনই যেন বলে, বাবা তুমি আমার ওপর রাগ করো না, আমি ভোমার অবাধ্য হুইনি। ভোমার অসাখ্টা সেরে যাক তখন তুমি যা বলবে ভাই শানবো!

কাত্ৰ শ্বনে আবার ডাকলে, বাবা! বাবা! বাবা!

সেই ছে ট্রেন্সায় ব্রিঝ এমনি করে ডাকতো ধখন-তখন যে কোন কারণে তারপর যৌবনে ঘরি কচ্ছা পেয়ে তেমন করে আর বাবা-ডাক ডাকে নি। জীবনে মাকে যাত্রার ডেকেছে বাবাকে কি তুর্তবার ডালা ডেকেছে কারা! কত নিশিচ্নতভা, নভরিভা আছে এই ডাকের মধ্যে আজতু যেন বিকাশ মন্তব্য করতে পারে।

কদিন সেবাশ্ শুষ্য বিকাশ নাইবার
থাবার সমস্য পেলে না। তর্মশ পর, পাল্য কোন কিছরে রুটী রাখলে না। বাবাকে ভাল করে তুলবেই এই যেন তার এক ভোদ চেপে গেল। বাব। ভাল হয়ে উঠে বুলবেন, বিকাশ তার অবাধা নয়, থাবই বাধা, কতবিশেবায়ণ ছেলে ত্রি!

ভোর হতে বোধ হয় দেখী ছিল না, কাকের কর্মণ দবর গোনা যাচ্ছিল। মার উপ্তক্তিত কাঠ্যদবরে বিকাশ ধ্ডম্ড কবে বিছানায় উঠে বসল। হঠাং মা এখন বাস্ত হয়ে ডাক্ছেন কেন কি হয়েছে।

উমাশশী রুদ্ধ কণ্ঠে বললেন, ফুগ-মীশ্ব আন, উনি কেমন করছেন। কি হয়েছে? উছপোষ থেকে নেমে বাস্ত-ভাবে ঘৰ থেকে বিকাশ বেৰিছে এল।

উমাশশী বললেন, কি জানি, এই বেশ্ মুমজিলেন হঠাং—

বিকাশ দেখলে অবনীবার কথা বলতে পারছেন না কেবল উঠছেন, বসভেন অব্যক্তি বোধ করছেন।

বিকাশ কাছে এসে বার কয়েক বাবা বাবা বলে ডাকলে, অবনীবাবু চোখ তুলে চইলেন, কিল্তু কোন কথা বলতে পাললেন না। বিকাশ আবার জিজ্জেস কললে, কি কণ্ট হচ্ছে?

অবনীবাব কান উক্তম করকেন না ছেলের মুখের দিকে সম্মান দুনিতে তেরে রইলেন। উনাদার্শী কদিতে লাগুলেন। বিকাশ ঘর থেকে ছুটে বেরিয়ে গেল। কণ্ডু যথন ডাছালু নিয়ে বাড়ী ফরলো ওখনন্দর গেষ হয়ে গেছে।, পুবে আকাল বেল্ ফুটেরাজের আশার গৃহস্পবাড়ীর চালে বলে তেলাফাচি দাবুর করেছে। গাটনাই ছাগলীব করতে চলেহে

বাবানু মৃত্যুটা যে এও চঠাং আসবে বিকাশ ভাবতে পারেনি। অপরাধ বাধের মত তার কেবল মনে হতে লাগল, হয়তো ভার জনোই বাবা মারা গোছেন। বিরেব বাপার নিয়ে চোডামেচি না করে চুপ করে থাকলেই হতো। কি দরকার ছিল নিলাভিদ্ধর

বাব শক পান ন তো ? বিকাশ হাজার বার নিজেকে প্রশন করেছে, আবার নিজে নিজে ভার উত্তরও দিয়েছে— না না, শক পাবেন কেন, ধ্যু সে তো কিছু বলেনি। ববং এই মতলববাজ লোকটার মেয়েকে বিয়ে কববে না বলেছে—বাবাকে সে সময় মত অনশতবাব্র চিত্র সম্বাধ্র বলতো এ লোকটা একেবাবেই স্বিধের নম। সব ব্যাপারেই কেবল মতলব—

তবা বার বার মনে হয় বাপের মাত্রার জনো সে-ই দায়ী। ইদানিং প্যয়ের কতবি।ও সে কিছা করেনি। বাপ-মাকে সুখী কর র কথা কোনদিন চি-তা করেনি। তাদের অভিত্যের কথাত কিছা যেন ভাবেনি। বাবা কি তার জনো দায়থ পেয়ে যাননি? মাত্রার পরে কথাগালো বিশেষ করে মনে হজেঃ বাবা হয়তো বড় ছেনের কাছে থেকে আন্থেতা প্রশা সমান ভক্তি আগা কর-তেন। একেই ব মথি-চাওয়া বলে? কে

মা এমনিই ছেলেদের সম্পূর্কে কোন কথা বলতেন না নিজের মত কিছু খাটা-তেন না কেবল ভালবাসা, দেনত আরু মায়ায় জড়িরে থাকতেন, আলু ভিনিও বেন কেমন হরে গেছেন। মাকে দেখলে বিকাশের বর্ড় কট হয়, থেন ভার একটা মস্ত অবলবেন চলে গেছে, তিনি আরু চলতে ফরেড উঠতে বসতে পারছেন না। তাবনীয়াব খাবতে ছোটছেলে; সম্বন্ধে নানা উপেরা আঞ্চম্মা প্রকাশ করতেন, এখন একেবারে চুপ। নম্ভু এখন কদিন বড়েটিত আছে, মনে হ্র প্রক্রু প্রাম্থ প্রস্কিত থাকবে। বিকাশের সংল্প বিশেষ কথাবাতা হয় না। স্ব সল্প্র

থাদকে অনুষ্ঠবাব খাব সহান্ত্রিত-প্রায়ণ হয়ে উঠেছেন আপিলে বিকাশের ভ্রটির বাবস্থা করে প্রায় দ্বেলা এলে থেজি-থকা নিয়ে বাজেন। উল্লাল্ডীক সময়োচিত সাজনা দক্ষেন। বির্প মনো-ভাষাপর হলেত যিকাশ ভদলোকের সহান-ভতি সাংখনা আম্বীরত অস্বীকার করতে পারেনি। যাকে বলে বিপ্রের সময় করা এ-ও যেন তাই। বিকাশ সংশয়েব মধ্যে शास्त्र । ভদ্রলোক ক দেখলে কেমন যেন मन्द्रदश्य বিকাশের বাধ বাধ মনে হয়, বাবা **কথা** দিয়েছিলেন, কি নাম খেন অন্তব্যব্দ হৈহের সরমার সংখ্যা বড় ছেলের সিয়ে দেবেল। কৈ জানে ভদ্যােক সেই আখাছ তাদের এই সময় করছেন কনা। সব গ্রেন ক্ষেন গোলমাল হয়ে যায় প্তহীন হয়ে— মত, পথ, ইচ্ছা এক এক সময় বিকাশের মনে হয় যেন বড় অসহায় হয়ে পড়েছে, অর যেন তার কোন কর্মক্ষমতা নেই আপিসের সংগ্রাহ ইত্রাদিব ব্যাপারে মনে (अ-रक्कार्यक (यन रनहै।

ত। হলে জাবিত বর্তানান পিতাই কি প্রের সকল উৎসাহ এবং কর্মক্ষমতার উৎসাহ পিত্তান অতি হতভাগা । পিতাই কি শুরুকে সকল বিপদ থেকে অলুভ থেকে আড়াল করে রাখেন। পাহাডের আড়ালা কথটার অর্থ এই



আগিসের বাপোরে প্রের মত উৎসাহ উদ্দীপনা সে বেয়র করে না বিক শ ব্রুত পারে। পিড়হান হয়ে কেয়ন হেন ভড়ভবোর করে। প্রতিদিন ঘুম ভেড়ে কেয়ন যেন ফাঁকা-ফাগল শানাতা বোধ হয়। আগিস হোট ইছে করে না। সে-সংগ্রামী মনোভাব কোথায় গেল? কোথা থেকে কেয়ন করে একটা বোঝা যেন মাথার ওপর চেপে বঙ্গেছ।

ন্দভূকে বিকাশ একদিন বললে সংসার দেখার দায়িত এখন আমাদের দাজনের ৷ তোমাকেও কিছা দায়ত নিতে হবে ৷

নন্তু যেন কথাটা গায়ে নাথলে না।
বারা বেন্দ্র থাকতে দে সংসারের জন্যে কি
করেছে যে এখন তাকে দায়িত্ব দেওয়া হচ্ছে।
বিকাশ বেগে বলেছে, আন্নার বয়ে গেছে
আন্তিও কিছ- দেখতে পারবো না।

ন্দতু কোন উত্তর করেনি। বিকাশ লক্ষ্য করেছে, মা কিন্তু আর তাদের মধ্যে পড়ে বিবাদ মেটাবার চেণ্টা করেনি, একেবারে নিশ্চেন্ট, নীরুব হয়ে আছেন।

ভাইকে শ্রনিয়ে শ্রনিয়ে বিকাশ বলেছে, আমি কারে। দাজি নিতে পারবে না আমার কি—মার্কে নিয়ে আমি অলানা ধাকবো।

তাতেই বা কি, নাতুর কোন হেলগোল নেট ৷ 'বাপের প্রাদ্দশানিতর পর তাকে আত্র দেখা গেল না। কোথার ক:উকে গোল **উ**टम्मना কিছ, বিকাশ বলে গেল ना । ভেবে-ছিল মা তাকে বলরেন নব্তুর খেজি-খবর করবার জ্বা-যেমন আগে ব্লভেন বে'চে থাকতে।



কিন্তু না, উমাশশী কোন কথা জিজেস করলেন না। তেমনি মাহামানা নীরব হয়ে রইলেন। বেশ বোঝা গেল প্রামীব মাড়ার সংগা সংগা সংসার সংবধ্ধে তার সকল আগ্রহ, উৎসাহ চেত্তনা যেন লোগ পেয়েছে। বিকাশ কিছু জিজেস কর্মলে বলেন, তুমি হা ভাল বোঝা কর, ভৌমরা বড় হয়েছ এখন ভোমরাই স্বাকর্মব।

কিন্তু তোমার ছোট ছেলে >

মা কোন উত্তর দেননি, বিকাশের ম**ুথের** দিকে অসহায়ের মত চেরেছিলেন। অর্থাৎ তার আশা আর কেন?

ত্বুবড ভাই হিসেবে মাঝে মাঝেই নিজ গ্রুজের কথা বিকাশ ভুলতে পারে মা। ভাবে হয়তো বড হিসেবে তার কতবা ভাইকে ফিরিয়ে আনা, আরু পাঁচজনের মত সংসারম**্থী করে মান্য করা।** নদ্ত্ তার আগেই রাজনীতি করছে গ্রান্তনীতিক পাণ্ডাদের সংগ্র চেনা-পরিচয় শোভাষাতা মিটিং বা ঝান্ডা নিয়ে এগিয়ে যাওয়া শেলাগান দেওয়া ওর অনেক দিনের অভ্য স। কিন্তু ইদানিং ও আর ওসবের মধ্যে मिट्टे, लाभास काशाश कि कराह क जाता সরকারী চাকরীতে বহাল হওয়া পর্যত বিকাশ নদ্ভুর কার্যকলাপকে ছেলেমান্ত্রী वर्ष्ट इत्न कर्त्रा, वावा हान क्यूटन वनर्ता, একটা কিছু তো করতে ছবে, না হলে পেটের ভাত হজম হবে কেন! ও অপনিই একদিন চলে আসবে, যথন ব্ৰবে চে'চা-মেডিট সার!

অবনীবাবাত বিশ্বাস করতেন, এসব ছেলোমানামী: নেতদেশ্য কেবল অলপবাংশি ছেলেদের দিয়ে নিজের নাম জাহির কর। যা আছে তা-ই চলবে। বিধান রালু ঠিকই বলেছিলেন, আরু পাঁচিশা বছর কংগ্রেস রাজস্ব চলবে।

কিণ্ডু না তা চলেনি, আনু সেই জনোই তাঁর ছোটছেলের সুম্বদেধ ভয় ছিল।

বড় ছেলের রাজনীতিক চেতনা সংব্ধে অবশ্য অবনীবাব্র কোন ভয় ছিল না। ঢাকরী যথন করছে এক্রকম করে চলে যাব। তালিপানা গোপামাল সংব্ধে যা শ্রেছিলেন, তাতে বিশেষ ভয়ের কিছা নেই । কেন না ও জিনিস এখন সংক্রামক ব্যাধির মত সর্বাই আছে, ধম'হট, মারধোর, লক-আইট ছাড়া অধ্যু ক কথা দল বাধার জানো নানা দলাবিল। ব্যাধ্যাধির উপায় মাত্র।

নিজের জীবন একভাবে কেটেছিল ছেলে দুটোর জনো অবনীবাব্র যত ভাবনা ছিল। নক্ত তো ঐ বিকাশ আবার চাকরী করতে করতে কিছু না করে বদে। আপিনে গোলমাল হুলেই গালনীতিক কোনো দল এলে আবার মাতব্রি না করে। আদিসে সংক্রমী বন্ধুরা একদিন বিকাশকে ডেকে জনুযোগ করলে ইননিং বিকাশ অদিসের বাপেরে নিরংসাহ, নিরংসাক নিজনি হয়ে পড়েছে, কেমন যেন আড়-আড় ছাড়-ছাড় আপিসের ব্যাপারে। তারা করা করছে পর পর কটা গোট-ছিনিটান, কটিট ছিটিং-এ, আলোচনা সভার বিকাশ অন্প্রিথত। এই পরশ্ ছিন্ন বিকাশকে ভা্জ পাওয়া সায় নি

দি কি জিজেস করাল, কি ব্যাপার হঠাৎ হেন মন-মুরা হার গেছে।

বি ্ল তাস্হায়ের মত স্বর মুখের ুক চেয়ে বললে, আমার বাব মারা ে ু।

মন বা নির্বসাহ হওয়র
পক্ষে কারণ ঠিকই, বিশ্ব
সংগ্রামী এর পক্ষে স্বাটা বোধ রয়
তা নয় খারা ভিল্ল অর্থ করতে;
স্নীল মুখের ওপর বললে, বারা
মরেছে ইউনিয়ন ছেড়ে দেবে, না
আন্যা েল, এওলব আছে ?

কথাটা বিকাশের খুব লাগল, বেশ বুক্ষ শ্বরে বললে, অন্য মতলব মানেট কি মনে করেছ!

দিবাসন্থামিয়ে দিয়ে বলগে,
যাক্ষাক, সানীল কথাটা তোমার
ওভাবে বলা উচিত হয় নি। হি হিছ মোরনিং—

বিকাশ রেগে বৃজলে, আই এটা নট্ এ কাওয়ণ্ড'! দিবোলনু গায়ে এট দিয়ে বৃজলে, মা না, ওকথা ভাব[া] কেন। ও হয়তো ঠাট্টা করে বৃলেছে।

ঠাট্টার একট**্সম্য আছে**। ^{জাজ} একমাসও হয় নি আমি পিতৃহ^{ীন}

বলতে বলতে বিকাশের ক'টেবর বাদপাকুল হয়ে উঠলো, চোথ দিয়ে থেন জল বেরিয়ে এবা; বাধ্বদেব সামান নিজেকে কেন্দ্রন অপ্রস্তুত্ত বো বোধ করলে—নিজেকে পিত্হীন বাদ বর্ণনা করাটা কেন্দ্র যেন এ জেত্র কাপ্রেয়েচিত।

ব্ধব্রা ভাপ্তস্তুত হালা। দিবেলে, বললে, এদিকে ব্যাপার শ্নেছ তো আমর শ্রীইক নোটিশ দিছেছি আগা^{নী} কাল কমিটি মিটিং হবে, তুমি এস।

(ক্রমশঃ)

বেকেনবাউয়ার



স্কাল দেখে, সার্গদিন ক্ষেমন মাবে এখন হয়ত স্বস্ময় সঠিক করে নিশ্ব করা হায না। কিন্তু বেকেনবাউয়ায়ের ছেলেবেলার কীড়াদক্ষতার সম্ভাবনাময় আলোকজনল ভাষীকালের এক খেলোয়াড়ের স্পণ্ট ইণিগত ছিল।

বেকেনবাউয়াদের জন্ম ১৯৪৫ খাঃ ১১
সেপ্টেন্বর। বাবা জার্মানার গিসিং-এ মিইনিম্ম ওয়ার্কিং শলাস ডিন্ট্রেক্ট পোস্ট অফিসের একজন সামানা কম'চারা। বেকেন-বাউয়ার তথন প্রাথমিক শ্রুলুর ছাচ, শড়া-শুনার চেমে পেলাধ্যামা অফিন অনুরাগী। জাশোর ছেলেরা যথন টিফিন করত বেকেন-বাউয়ার তথন শুলের চন্তরে ফটবল পায়ে নিয়ে ড্রিকাং করত। ফ্টবল খেলার সে ছিল শ্রুলের সেরা ছেলে।

প্রাথায়ক <u> স্কুলের পড়া শেষ্</u> ক্রে বেকেনবাউয়ার চেয়েছিল উচ্চ বিদ্যালয়ে ভৰ্তি হতে। কিন্তু ক্ৰীড়াপ্ৰতিভা চালিত করল তার ফানিন্স আশার জার্মানীর এক দিকপাল ফাটুবল খেলোয়াড় বেকেনবাউয়ারের ক্রীড়ানেপ'ুল্যে মুক্ত হ যে তাকে ১৯৫৬ খঃ মিউনচেন ফাটবল কাবে নিয়ে হায়। এই ক্লাবের পক্ষে খেলায় তিনি নিয়মিত অংশ এহণ করেন। এইভাবে বেবেনক উয়াবেক ভাল্য নিধারিত হয়। এরপর তিনি আর কোন স্কুল কলেজের বিন্যাশিক। গ্ৰহণ করেনন।

প্রকীয় ক্রীড়াদক্ষতার কারে বেকেনবাউরার মিউনচেন ক্লাবে বিশির্ম জারগা
করে নিয়েছিলেন। মিউনচেন জার্মানীর
বিখ্যাত ফুটবল ক্লাব। এই ক্লাবে অংশ
কিছুকোলের মধ্যেই বেকেনবাউরার জনপ্রিয়তা
অর্জনি ক্রেছেন। এবং মাদ একুশ বছর
বর্মনে জার্মান ফুটবল প্রতিয়োগতার স্ববীত
বিভাগে অর্থাং ফেডারেল লাগো অংশগ্রহণ
করেন। এই সময় জার্মানীর জাতীয় ফুটবল
প্রকিন। এই সময় জার্মানীর জাতীয় ফুটবল
প্রকিকক ত্রেলমুটের অভিজ্ঞ চোখে বেকেন-



বাউয়ার ধরা পড়েন। তিনি ধ্বাণ্যতার চলচেরা বিচারে বিচার করে বেকেনবাউয়ারকে জাতীয় ফুটবল দলে গ্রহণ করেন : ১৯৬৬ সালে ব্রিটেনে অনুষ্ঠিত বিশ্বকাপ ফুটবলে বেকেনবাউয়ার যোগ দেন। চাড়াম্ছ খেলায পশ্চিম জার্মানী অবশ্য ইংলন্ডের ,বির্দেধ ৪-২ লোলে পরাজিত হয়। ১৯৭০ মেকসিকোতে অনুষ্ঠিত বিশ্বকাপেও বেকেন-বাউরাবের উল্লেখযোগ্য ভূমিকা ছিল। তাছাড়াও তিনি দেশ ও বিদেশের মাটিতে বিভিন্ন সময়ে জামান জাতীয় ফটেবল দলের অনাতম সরিয় সদস্য ছিলেন। ১৯৭২ সালে প'চিশটি দেশের সাংবাদিকদের এক বিচারে বেকেনবাউয়ারকে ঐ বছরে ইউ-বোপের শ্রেষ্ঠ ফাটবলারের সম্মানে ভূষিত করা হয়।

শ্বদেশে অনুষ্ঠিত চলতি বৃহত্তে বিশ্ব কাপ বেকেনবাউয়ারের থেলোয়াড়ী জাবিনের সমরণীয় বছর। কারণ পাঁচম জামানা এবার বিশ্ব কাপ ফুটেবলে বিজয়া। এবং বেকেনবাউয়ার দলের অধিনায়ক। বিশ্ব-বিজয়ী দলের অধিনায়ক হ্বার সৌভাগা কজনার ভাগ্যে জোটে! সিন্ধান্ত গ্রহণে থপস্থিত বৃদ্ধিতে, গল পরিচালনায় ও

সব্দোপরি ক্রীড়ানৈপ_ণ্যে বেকেনবাউয়ার যোগ্য অধিনায়কের ভূমিকা পালন করেছেন। মাঠে তিনি আত্মপ্রতায়ের সংশ্য প্রতিপক্ষের আক্রমণ প্রতিহত করেছেন। আবার নিজের দলের আক্রমণ व्रक्ता व করেছেন। আক্রমণকারী সংগীপ্রাদের তিনি নিখ[ু]ত পাশে মাপা বল বাড়িরেটেন। সতি৷ কথা কলতে কি লামান দলের অগ্রভাগের দুই স্কম্ভ বিশ্ব বখাতে र्थालाबाक बार्फ मालाव छ केलि द्राञ्चलक व्याक्रमन वर्गात एकरा जत्मकारहेक অধিনারকের ওপর মিভারদাল ভিলেন। ফাইনালে দভিদালী হল্যান্ডের পশ্চিম জামানী ২-১ গোলে করে। এখানেও বেকেনবাউন্নারের श्रमार गर्यागा। এই वहत निर्म বাউয়ার তিনবার বিশ্ব কাপ ফ উবলন থেলার সোভাগ্য অজন করলেন। জাতীয় দলে বিভিন্ন খেলার প্রান্ত আশীবার নিয়েছেন বেকেনবাউয়ার।

বেকেনবাউয়ারের গ্রো নাম ফ্রানর্জ বেকেনবাউয়ার। দেশের মান, বের গাছে কাইসাব ফ্রানজ: নামেও পরিচিত। ফ্রানজাএর ক্রডিখাতি এখন দারা প্থিবীতে।
নানান দেশ থেকে মোটা অংকের বিনিমরে
দলতাগের আহান আসহে। দেশের ফ্রান্তি
বেকেনবাউয়ারের মমন্থ অপ রসীমা টাকার
অংক যতই হোক না কেন তিনি দেশ
ত্যাগের কথা ভাবতেই পারেন না। মনেপ্রাণে
খাটি বেভাগিয়ান।

ক্রানজ বৈকেনবাউয়ার কর্তবানিষ্ঠ। ত্রার সারাদিন কাটে ছকে বাধা ব্টিনে। নির্মাত্রত অন্ত্রানিক হাড়া অবসর সমান্ত্র বার লাইরেরিতে। সেখানে পড়েন প্রিবীশ্বনানা দেশের পর-পারকার খেলাধ্বানা সংক্রান্ত প্রদান কি করে আরও বিজ্ঞানসম্মত্রখলা যার তা নিরে চিন্তা-ভাবনা করেন। পরে চলে তার প্রয়োগ। আর দল বামরা-ওরালা গিলিং-এর বাড়ীতে দরদী হটী ও তিন ছেলেমেরের সামিধ্যে বিশ্ববিজ্ঞানী ফ্টেন্স দদেশ অধিনায়ক ফ্রানজ বেকেন-বাউয়ার সে শ্রুণ হালে ভাজনে বিক্রমী

-প্ৰশাস্ত দ

্**র্লপ্রী** নাফিসা আলী 'ব্রবারাণী'

খেলার জগতে মেয়ে

গতি ২৫ অগ্লেট তথ্যক্ষেম্পর প্রভিমবংগ ক্রীড়াসাংবাদিক ক্লাবের বাংস্করিক প্রেম্ট ক্রীড়া-কুশলী বরণ অনুষ্ঠানে বর্বপ্রেম্ট (৭৩) স্টারন্থ পরিচয় ক্রাবার সম্মা রাজ্যের মুখ্যমন্ত্রী শ্রীট্রাক্ত ক্লাবের বাংলা রিলেক-শনে ভারতবর্ষণ গ্রুপটি পড়েছি। সেই গলেপর লেথক তেস, ওয়াজেদ আলীরই গোটী নাজিসা বর্ষের শ্রেন্ড সতির্বা স্বেক্টার পাজে।

নাফিশা কিংকু পিতাম্বের লেখা প্রেই
ট্রাডিশন স্থানে চলছে, কথাটি গ্রিথা
প্রমাণ করে দিছেছে নিজের কৃতিছে। হ্লেলী
ডেলায় তারুপুরের খানদানি পদানসীন
ম্সলীয় পরিবারের গ্রেয়ে। শিশ্কাল থেকেই
নাবা আমেদ আলীর প্রেরণায় বাড়ার
প্রেরুরের জলে সভার শেখার স্থাযার পেরে
উত্তরকালে কলকাতা তথা পশ্চিমবাংলা এবং
ছারাত্র স্তিকিত করে দিয়েছে। নাফিলা
বিদ্যাহে হত্যিকত করে দিয়েছে। নাফিলা
বল, বাবা কিংজু ঠাফুনিব নামে প্রিচিত
হবার চেয়ে নিজের কর্মকীতিরি কুশলভার
ভারিত হবার ওপ্রই বেশ্যী জোর দেন।
ভিনি আমাদের দুই ছুটবোনকে সেই শিশ্বাই
দিয়েছেন।

নাফিসার বাবরে সংশ্য দেখা করে একদিন সাক্ষাতের বাবস্থা করেলাম। দুপ্রের
প্রবল বর্ণ মাথায় নিয়ে নির্ধারিত সগরে
কাউতলা রোডের কোনর সমান জল ঠোল উপ্স্থিত হলাম ওচনং বাড়ীর ফটফো নাফিসার মা শ্রীমতী আলী দরজা ব্লে
স্বাগত জানিয়ে নিয়ে গেলেন ডাইনিং হলো।
স্ক্রাজত ঘরে বলে আস্তে আস্তে কথাবাড়ী শ্রু করলাম। শ্রীমতী আলীও মারে
মারে যোগ দিছিলেন।

শ্রীমতী আলী দেখালেন, নানা প্র-প্রকায় নামিসার স্তার কুললতার অজস্ত্র সংবাদ আর তার নানা ধরনের ছবি, এর সাত মাস বয়সে ধবা আমেদ আলীর হাতে বাসে, নামিসা দেশের রাডীর প্রুরে প্রথম হৈদিন জলের শশ্প সোয়, সে ছবিও। নামিসা দ্বেল কোন লা থেকেই জলে নামছে। - জলে হ্রেটাপাটি বরতে কথনও আমার হর্মা। আমা ছোটবেলা থেকেই জলে কাম্যায়ের দেটিভাটেও পারি, বলে নামিসা। প্রথমির লাফিরে দাফিড়াহেও পারি, বলে নামিসা। প্রথমে এই হাসাম্যুর্থী মেরেটি খ্রু সংক্ষেপেই প্রাদ্যান্তর দিচ্ছেল; সাক্ষাহ সংলাপ ও



হাসিঠাটার পরিবেশ হাক্রা করার পর দশম শ্রেণীর ছাত্রী সংতদ্ধী নাফিসা সানাংদ কথা বলতে শ্রে করসো।

ত্রামার এই ক'বছরে সাঁতার জীবনের
কোন একটি কারণীয় ঘটনা বা দিনের কথা
বলতো ?

থকট্ ভেবে নিয়ে নাফিসা বগল, মান্রজে '৭২এ ফাডীয় সাঁতারে প্রথম আবিস্থাবেই ২০০ মিটার বৃক্ক সাঁতারে জাতীয় রেকড ভাগোর বাপারটাই জালার কাই সবচেয়ে সাংগ্রীয় ঘটনা। আমি এ ফেকড ভাগাত পারক; একথা ভাবতেই পারিন।

তবে কয়েক ধরনের প্রিকায় আপ্তৃত মতব্য আর ফাঁপানো ফোলানো ঘবর দেখিয়ে একটা বিরক্তি প্রকাশ করে নাফিসা।

— ওরা লিখেছে এই বিরাট বপু নিরে এ মেরে যার প্রী হরে, ভার প্রাণ হরে ওংঠাগত। দেখনে, আমার বরস এখন সতেরো কবির প্রসার ১৭ ইলি, লাবার ৫ ফ্ট ৬ ইলি, কাঁরে বিদন্ধেকে হাতের আগত্বা শ্বণিত ২৯ ইলি। হাসির দাঁপিততে ঘর হারিয়ে দিয়ে বলল, দেখুন তে। লাবা-৮ওড়া লেও আমি কি বেচপ্

—আমার মা-বাবা, বিশেষ করে মা মামার প্রাম্থ্য ঠিক রাখার দিকে সব সময় াযত্র নক্ষর রে:খছেন। আমি যেখানেই যাই ারা আমার সংখ্য থাকেন। মা বলেন, সাতার াক কঠিন কঠোর এবং সাধনার বিষয়। সেই েশ পড়াশোনাও নিয়মিত চালাতে হবে: ^{মু}র্মিত অনুশীলন করতে হয়। দিন শততঃ সাত হাজার মিটার সাতার কাটি। বিশ্বন না আমার বিষয় লিখতে গিরে একটি াঁতকা বলেছেন, দৈনিক ২৫ কিলোমিটার াঁতার না কাটলে চলবে না! তাকি সম্ভব? েতই সময় পাছিছ না। সারা হয়ে বাছিছ . াফিসার মায়ের পূর্বপূর্য এদেশে এসে-ালন স্কটল্যান্ড ও আয়র্ল্যান্ড থেকে।) নেক প্রপ্রিকা হড় বাজে কথা লেখে বলে িফসা ক্ষোভ্র প্রকাশ করে। বলে, দেখুন না ামার জিল্মে নামার ব্যাপার নিয়ে কিরকম জে বাজে গলপ ছডান হল। অথচ আমার 🌤 এখন সভাির আর পড়া ছেড়ে ফিন্মে লি দেওলা মোটেই সম্ভব নয়। তাই মা-



বাবা ও-প্র⊁তাব সন্নাস্থির ব্যতিল করে দিয়েছেন।

জলপরী নাফিসা 'বর্যারাণী' আখ্যাও
জয় করেছে। গতেরর কালকাটা স্থেমিং
ক্রাবের বার্যিক অর্থারাণী' সৌন্দর্য প্রতি-মোগিতায় ও শীয় ম্থান লাভ করে এই
আখ্যা পায়। অধ্যান্ত ব্যাক্ত প্রথাও
প্রপূপ্ত করেনি নাফিসা। মনে তার এখনও
কিশোরীর চাপ্তা রয়েছে।

ড্রিল করার ভংগাতে দুপালে দুহাত প্রসারিত করে নাফিসা বলে, জানেন এই হংত দুটো লিরে আমি নানা জিনিস ভাগির আর গতি।

—তাই বুঝি কমাগত সাতিবের রেকর্ড ভেশে চলেছ?

হাাঁ, এরি মধ্যে বেশ করেকটি রেকর্ত নাফিসা ভেল্পেছে। প্রথমেই উপ্লেখ করতে হর ১২ বছরের প্রোনো রাজা রেকর্ড ভাগ্যার

কথা....১৯৬১ সালে সম্পা চন্দ্র ১০০ মিটার ফ্রিন্টাইল সাভাৱে ১ ফ্রিন্ট ২০'১ সেকেও সময় নিয়ে যে রেকড প্রতিন্ঠা করেছিল, ১৯ বছর পরে সেই রেকড' ভাশো নাফিসজ ঐ হাতেই। নাফিসা নতুন রাজ্য রেকছ করে ১ মিনিট ১৮'৫ সেকেন্ড সময় নিছে। এ ছাড়া '৭২**এ** ক**লদেবায় ভারত-সিংহণ** সাভার প্রতিযোগিভার বাংলার এই জলপরী ২০০ মিটার বুক সাঁড়ারে ৩ মিনিট ২৪'১ সেকেণ্ড সময় নিয়ে স্বভারতীয় রেকর্ড গড়ার নঙ্গাঁর সাভিট করে। **এছাড়া রাজ্য** সভাির একশ মিটার ফ্রিন্টাইল রিলে টানার সনয় নাফিসা সময় নিয়েছিল ১ মিনিট ২৬'৫ সেকেন্ড। নাফিসা বর্তমানে ফ্রিন্টাইল (২০০ মিঃ সময় ১ মিঃ ১৮'৫ সেঃ) বাটার ফাই (১০০ বিচ ১মিট ৩৫সেঃ), ব্ৰুক সতিয়ে (मृन भिः ठीभः २८'असः उ वक्न भिहात) একক মেডলা (২০০ মিঃ ৩মিঃ ১৯'ই সেঃ ও ৪০০ মিঃ বামঃ ১৮'৮'সঃ) বিভাগে নোট क्षि ताकरक्षत्र व्यक्तिना । ग्राक्ति क्र**ा**

নামালেই প্রতিশ্বনিক্রতার উত্তাপ কমে ওঠে।
সর্বভারতীয় ক্ষেপ্ত এখন নাফিসার নিকটতম প্রতিশ্বনিক্রনী হচ্ছে মহারাশ্টের স্মিত।
দেশাই। ক্ষান্তেরার স্মিতা আর নাফিসা
শ্বণিপাক পার। প্রস্থাত নাফিসা বলল,
ওদের অনেক রক্ম স্মেণ্য স্মিব্যা আছে।

তবে নাফিসা তাঁর প্রশিক্ষক আনিশ দাসগৃদেতর প্রশংসার প্রথম্প। উনি আহার সংবিধা অসংবিধা সহজেই ব্রুতে পারেন। এমন প্রশিক্ষক পাওরা ভাগোর কথা, বলে নাফিসা, বাবার কাছে সাতার শেখার পর থেকে বহুদিন ও সাতারের সনুসাগ প্রান।

'৬৭-৬৮ সালে ক্যালকাটা ক্লাবের প্রীদেব আমার স্থাতার কুশলতা দেখে প্রীদাশগণেতাক আমার প্রশিক্ষণের ভার নিতে অন্ত্রেষ করেন। তথন থেকেই আমি ইন্ডিয়ান লাইফ-মেভিং-এ (লেকে) সাঁতার অন্শালন করি। এই সময় লা মাটিনিয়ার প্র্লার ছাত্রীর্পে নাফিসা দক্ল সাতারের আসর মাৎ করে দেয়। তারপ্রই আসে রাজ্য সাঁতারের আসরে। ১৯৭২এ প্রথম তারিভাবেই আসর মাধ। জরের পর জন্ম-সাফল্যের সিড়ি বেরে এগিয়ে চলেছে নাফিসা। ৭০-এও গ্রাহ্য চার্যাম্প্রান। এ-বছর ইতিমধ্যে করেকটি ান্ত্র নিজের গড়া রেকড ভাগতে স্থান্ত্র করেছে। গত বছর জয়পারে জাতীয় সতিরে
এর আসরে নাফিসাই ছিল বাংলার মহিলাগলের অধিনায়িকা। দুশে মিটার ব্বকসাতারে স্বর্ণপদক ছাড়াও আনেকগালি
পদক এসেছে তার সংগ্রহ। ব২এ কয়েক
মাস প্রশিক্ষণের পরই মাদ্রাজে জাতীয়
সাতারের আসরে বাংলার হয়ে প্রথম হোল
নিরেই নাফিসা পাঁচটি পদক সমেত দুটি
বিভাগে স্বর্ণ সংগ্রহ করে। আর এই সংগ্র সংবাদ শিরোনামায় তার স্থানিদিটি গণান
করে নেয়। বাড়ার আলমারী অজস্ত পদক
আর কাপে ভাতা। এর মধ্যে এথ্যেটিকসে
প্রেয়া প্রস্কারের সংখ্যাও কম নয়।

আনতঃ স্কুল এথলেটিকসে লা মার্চিনিয়ারের পক্ষে গতবার এবং এবার নামিসা
ভিসকাস, হাইজান্প দুশে মিটার দেড়ি ও
বর্ণা ছোড়ার প্রথম হয়ে চ্যাম্পিয়নশীপ
অর্জন করে। স্কুলের বাস্কেটবল দলেও
নাফিসা আছে। ও বললে, ওগুলো আমি
তেমন সিরিয়াসলি নিইনি, এমনি খুসী হয়
ভাই—এথলেটিকসে নামি। ভাইভিংটাও
করি, তবে ওটাতে এখনও ছোর দিইনি।
মন ভরগনে হয়ে আছে সতাবের ভিন্তায়।

কিছাবে আরও **উর্লাভ ক**রা যায়। সাঁতার ছাড়াতে হলে তথন বাপেকটবল স্বব টেনিটো মন দেব।

হালকা চট্নে ভংগীতে বলল, জানে, এরি মধো আনার তানেক গ্লেম্প ছাছ গ্রেছ। কেউ কেউ আবার আনার কাছ চিঠিতে বিষের প্রশাসক দেয়। আর তানে তো আসে অজস্র। কিশোরী মনে এসর বেশ কোভুনের খোলাক যোগায়। ভাইবোনে এই নিয়ে মজা করে। নাফিসা বলল, আগের স্ব ছবিতে দেখালে মাথায় আমার কত বড় চল ছিল। ভালারের স্মাবিধার জন্ম জন্ম স্কুল প্রশাসক ছাইতে হল। সালারের জন্ম কি না করছি বৃশ্নে!

বিদায় দেবার সময় বলল, আমি এই
কুকুর চারটে ছাড়াও একটা বড় ছাগল আর
ক্ষেকটা কাঠবিড়ালী পাুসাছি। বেড়ালঃ
আমি ভালবাসি কিন্তু আমার এই কুর
চারটির জন্য পাুষতে পারছি না। আমার
হবি ফটো তোলা আর রগগীন ছবি অফা।
মধ্র হাসি ছাইরে বলে—আর সাঁলবে
রেকডা ভাগো। সাঁতারই আমার প্রথ
প্রেমিক।

--- ভাষা

গোরেশ্যা ধণাধার সমাধান

জানলার কাছে দাঁড়িয়ে শাল ক হোমস দেখল, কত্থানি উচ্ছ হলে জানলার ওপর দিয়ে টেবিকা রাখা প্রহুণ দেখা যায় বাইরে থেকে। হোমসের উচ্চতা ছ' ফাটা কিপ্তু ভাকেও ডিঙি মেরে দেখতে হরেছে প্রক্রক। তার্ক্তান এমন একজন চাললাব বাইলে থেকে প্রমুণ দেখেছে, যে মাথার ছ' ফাটেরও উচ্চ। গিলকাইন্টই নিশ্চর সেই লোক। সেঁ মাথায় ডাঙা, লাফায় কাঙার্বর মন্ত।

পরের দিন ভোরবেল। খেলার মাঠে গিয়ে প্রমাণ পেরা হোমস। কাঠের গ**্**ডেড়া মিশানো মার্কি রয়েছে লঙ স্কাম্প প্রাকটিসের ভাষগায়।

্পরের অংখায় : 'আন্ডে মেট্রোপলি-টানের হারি-মাণিক জার'। হারকুন পঞ্জটা। আলাধা ফ্রিনিট্র সমন্ত ঘটনাটা মনে মনে ছকে ফেলল সেই মুহতেই।

গিলব্রাই#উ খেলার মাঠে প্রাকটিস করে ফিরছিল হাস্টারহ্মশায়ের ঘরের পাশ দিয়ে দেখেছে প্রফে বয়েছে টেবিলের **্রপর**া **ভারপে**র দেখল, ব্যানিস্টার ভঙ্গ করে দরজায় চাবিলাগিয়ে গিয়েছে, লেভ अवस्थारक शांतम ना। चरत एएक ठाए-ভাজি ট্রেক নিতে লাগল প্রধনপত। হাতের কটি। বুটজোড়া যো শঙ্জাম্পে পরতে হয়। রাথল বনাত-মোডা টেবিলে। *লাভস রাথল জানলায় সামনে টেবিলের পালে চেল্লারে। হঠাৎ সেজ্স ফিরে এলেন পাশের গেট দিয়ে-সামনের গেট দিয়ে নয়। প্লাভস নিতে ছেলে গেল গিল-ক্রাইন্ট । বটেক্সোড়া তুলে নির্দ্ধৈ**ই** সাং করে **ত**াকে পদের শোবার ছবে। হ্য'চক। টানে ব্ৰেট্ৰ কটিজা ক্ৰাত কোট গেল—শাট দাগটা ফেরানো রইল শোবার গরের

দিকে। বুট থেকে খসে পড়ল কাদামটির ভেলা টেবিলের ওপর আব শোঝর ধরে। সূত্র ছড়িয়ে বইল ঘরময়—বুঝো সাধ্যে জান লক্ষণ্

সোগস্ ঘরে চুরুকেন। কিন্তু ভানলার পাশে ছোন টেবিলের পাশের থেনার কাড্রু দুটো দেখলেন না। বাানিস্টার কিন্তু ঘরে চুকেই তা দেখেছে এবং চিনেছে। গিলকাইস্টকে বাঁচানোর জনো নাথা ঘোরার ভান করে গিয়ে বসে পড়েছে ঐ চেয়াবেই লাভসের ওপ্র। সোম্স্ হন্তিনিব করে শালকৈ হোমাসের কাছে দৌড়োতেই গিলকাইস্টকে বের করে দিরেছে শোবার বর থেকে।

সমরেশ চৌধুরী

ক্যাণ্ডেনকে চান সোজা এইটথ ক্ষোর— সেন্ট্রাল ভেসপাচা। বিস্পোসনের নির্দেশ প্রের পত্রপাঠ লিফ্টের বাকসবদী হয়ে গ্রান্তন্ড ক্ষোন্য থেকে ডেসপাচড হয়ে চলে গেরার ক্যান্ডেন সমীপে।

ক্যাপ্টেন—সমরেশ চোগ্রী। একে বোট হাউস স্থাটের ইউনাইটেড ব্যাংক মর ইলিডয়ার পেলায় বাড়াটায় ইলটবেলারের অধিনায়ক সমরেশকে দেখলাম তার সহক্রমারির স্বাই ক্যাপ্টেন মালাই ভাকেন। সম্মেশত নয়, পিণট্ও নয়, স্পর্যেশতর ক্যাপ্টেন। স্বার্শ উচ্চারন করার মত মালাই বটে, কারন উপ্পোদ্ধি পাল স্থাইবার ঘরোয়া লাগৈ চানিশ্যন ইস্টবেশ্যের ক্যাপ্টেন ব্যাস্থান ক্যাপ্টেন ব্যাস্থান

ভংড কোট হান্স স্টাট্টর আকাশ্র ছোরা ঐ প্রাসাদটি যেন সমরেশের জীবনেরই এক প্রতীক। বেনথা থেকে কোথার যে উঠে গেল সমরেশের ভিত্তেত ভাবতে এক এক সময় সমরেশের নিজেন্ট আক্ষম লাগে। তথাক্রনগরের সেই উপ্রাহত অবস্থাইত অক্তস—আর কোথার এই ইন্দ্রপ্রী। কিন্তু কে আনলো কে পেণিছে দিল অখনে ই ফটেবল হা নিশ্চরই যাট্টল। ফটবল না হলে আল নিবলন চোধ্বীন তৃতীয় পূ্ত কোথায় থাকতোট

ইস্ট্রেপ্সল কাবের কাণ্টেন সমবেশ চৌধুনী তাঁর অফিসের কাণ্টিনে আমার মাথোমুখি বসে নিজের জীবনকাহিনী শোনাছিলেন। আশেপাশে দ্চার্জন সহক্ষী ঘোরাখুরি কর্যসূত্রন বোন কিছা বলার ইচ্ছে নিয়ে। চেয়ার খেকে উঠে গিয়ে দাঁডালেন স্কুক্মীনের মধে।

ণিক ডাকস্ কান্, দা।খ্তাছো না কথা কইত্যাছি। টিফিন বাকসে কো এটা কি আনহস্'। পিণ্টুদা, কইছিলা না শাটুকি মাছু খাবা, বাড়ী থিকা বোরে দিয়া রাখ্যীইয়া কইয়া আইছি চাইখা। দেখা। কথায় স্বেহ, ভালবদা টেইট্টুদার করছে যেন। সামানা শাণুটকি মাছ, ভাগতের প্রাদ পেলেন যেন ওক ভেতর সমরেশ। সর্বাই স্কারেশের এই মাচক্র। স্বার সংগ্ন মাটের বাইরে ঘরে কিংবা অফিস্সে একই ধ্রান। ছেলে থেলে জীবন্টা কাট্ডিয়ে সাও দ্বিন বৈ ভো নয়!

অথচ ১৯৬৬ সালে লয়দানে ৰখন বেনিয়াটোলাব হয়ে খেলালে তখন কি মুহুটের জনাও পিণটু চৌধুরী (পমরেশের ঘুরোয়া নাম) ভেবেছিলেন জীবনে শ্বীকৃতি মিলবে, মিলবে প্রতিষ্ঠা, কিংবা প্রক্রার। অথবা ভবিবাতের ইতিপ্রতি মনে হয় জীবনের স্বটাই বেন শ্বামা (রেলপ্রেন্ডা), পাঁচ ভাই, তিন বেন

মাঠের নায়ক



ক্ষিত্র নির্দ্ধ সংস্থার । প্রাক্ষণার শ্রু বাবার ।
ক্ষাণাবাশতরে রাখার প্রশান প্রকাশ আক্ষাণন
ক্ষান্ত বিশ্ব প্রতিকৃষ্ট । স্কুলার ও বরের
ক্ষান্ত প্রতিকৃষ্ট প্রকাশ প্রকাশ প্রকাশ করের
ক্ষান্ত প্রকাশ করের ভারতে পারেন ?
বাফ্টার স্বাছি বলতেন : পিণটু চুইপট পাশ
করে, একটা চাকরী বাবরীতে লেগে যা।
সংসারের ভারনা একটা, ভারণা বাতিত্রম
ছিলেন বড়ালা নিংখলেন। স্পিন্টুরে উংসাহ
দিতেন তিনি। টনাটানির সংসারেও প্রথম
বট কিনে দিয়েছিলেন দালাই। দাদা ৬৩
সালে বেদিন বুট কিনে দিলেন সেশিন
পিণটুর সে কি আনশ্য সে কি উল্লাস।
উর্জেনায় রাতভোগ্র চোথের প্রতাই এক
চেলে না।

কলকাত্যর মহাদানে সমরেশকে যাঁরা থেলতে দেখেছেন, ভণারা একবাকো স্বাকার করেন যে তিনি একজন পাক্তা ফটুটবলাগ্ন। প্রথা প্রকরণে নিস্টায় এবং মিণ্টতায় নিথান্ত। মড়বঞ্জায় কিংবা উত্তেজনায় তাঁর মেজাজের রাশ কথনও হাতছাড়া হয় না। অসাধারন বল কণ্টোল নিথাতে প্রিসান জ্ঞান, পরিপূর্ণ আস্থা জেলালো সট সহযোগীদের প্রতি কবইন দেলকের আদর্শা ফুটবলার হিসেবে নিটোল করে প্রতেছ ভ্রেছে। স্বাক্তিত দিয়েছে থ্রের মাঠে, প্রের মাঠেও।

কিন্ত ঐ প্রতিষ্ঠা, ঐ স্বীকৃতির জানা সমরেশকে कि कथ्वें होरे ना कत्र ह हाराह ? আজ বারা সমরেশকে দেখে দ্রেত তুলে নাচেন, ক্যাপ্টেন, ক্যাপ্টেন বলে নিজেদেরই কুতার্থ মনে কংখন, তারা কি সমরেশের ভাইরার পাতা একটা উল্টে দেখেছেন > সেঠ आदिवंद সেণ্টাল এভিনিট্র 3366 আশ্তানায় মেঝের ওপর শ্বাধ্ চাদল বিছিয়ে শুনু রাত কাটানো, ব্টবাজার মেসের বাট মাপা ডাল ভাত তরকারী নামক বিশেষ একটি মিশ্র পদার্থ গলধংকরণ—সবই েতঃ আজকের সমবেশের সম্তির পাতায क्षावणकातमः कत्रकः।

ফুটবলেব হাতেখডি হয়েছিল অশোক-নগরে স্কুলের শিক্ষক স্ঞীব রায়চৌধ রুলা কাছে। স্কুলের থেলা তো বটেই, আগোক-নগর হায়ার সেকেন্ডারী স্কলে পড়ার সময় সমরেশ ডাঃ বিধানচন্দ্র রায় ট্রাফ্রতেও থেলেছে কলকাতায় এসে ববীন্দ্র সরোবর স্টেডিয়ার্মে। বছগ্রখানেকের মধ্যেই সঞ্জীব-বাব্যর চেন্টায় বাংলা স্কুল দলেও স্থান হোল সমরেশের। সেবার সর্বভারতীয় শারংকালীন স্কুল ক্রীড়ার আসর বর্সেছিঙ্গ শিলং-এ। থ্রায়ালে এসেই দলে চাল্স হয়ে গেল। বাংলা চ্যাহিশয়নও হোল। তাপুপর সেই ১৯৬৭ সাল। কালো মেঘের পাশে র পোলী রেখার ত্রদিশ মিললো। বাঘাদার (তেন্দো সোম) চোখে পড়ে গেলেন मञ्जूतका ।

বামাদার কথা বলতে বলতে অমন ভাকসাইটে লিংকয়ান, ইস্টবেশল অধি-নায়ক সম্বেশেন চোৰ আহাটের স্কল্ভরামেঘ टारा **ऐत्रत्मा।** अता धता शनाष्ट्र दन्तत्मन. 'বাছাদ। আমার কাছে ভগবান। অখন লোকে व छात सात. काए छेन काए छेन कड़े छा গালারী গ্রম করে, বাঘাদা না থাকলে তার কিছাই হইতো না। বাঘাদা আমারে পোলার মত দ্যাথেন, আমি বাঘাদাকে দেখি বাপের মত। দাইজনের মধ্যে কইতে গ্যালে প্রায় বাপ-পোলাহ্য সম্পর্ক'। বাঘাদা আমার জন্য কি কণ্ডেন নাই? থাকা খাওয়া থিকা আরুভ কটরা ট্রেনিং বেবাক করছেন। ভল করলে বকাছন ভাল করজে বুকে জভাইয়া ধরছেন। উনি আমার গুরুর গুরু মহাগ্রে:। ১৯৬৭ সালের কথা শোনেন। উয়াড়ীতে ঢাকছি। প্রাকটিশের লইগা। খাব ভোৱে অশোকনগণ থিকা কইলকাভায আইতে হইতে। দিন কয়েক চালাইলাম। পরে দেখি আর পারি না। ভয়ে ভয়ে কইলাম একদিন ৰাঘাদারে অস্ববিধার কথা। চুপ কইরা শোনলেন বাধাদা আমার কথা। ব্যস তার পরেই ঠিক হইয়া গেল বউবাজারের মেস। মেসে খাইতাম ঠিকই। থাইতাম আবার বাঘাদার বাড়ীকেও। বাঘাদার বাড়ীতে আমার জন্য ছিল রোজ মাংসের ব্যবস্থা। বাঘাদা কইতেন ঃ প্রিশ্রম করতাছস, একটা মাংস খাওন লাগবো রোজ। না হইলে শ্রীব থাকবো না, দুর্বল হইয়া পর্ডাব'।

ইতিমধ্যে বড় কাবের চাথ প্রে
গিয়েছিল সমরেশের ওপা । সবাই হাত
নাড়ছিল ওর চোথের সামনে। বাঘাদা
বল্লেন : 'না না, আরও মাজাঘষা হাউক
পরে যাবি'। পরে অর্থাৎ ১৯৭০ সালে
বাঘাদার ব্রুক্তরা আশীবাদ নিয়ে সমরেশ
চলে এলো ইন্টবেংগলে কাবে লাল হল্দ
জামা তুললো গায়ে। ইন্টবেংগলে ডেকেছিলেন জ্যোতিষ গুহু। ইতিমধ্যে ৬৮ সালে
জ্বলপ্রে অন্তিটত জাতীয় জ্নিয়ার
ফুটবল থেশা সমরেশের হয়ে গেড়ে।
ও তথ্ন বাংলার স্টপার। ৬৮ সালে
হায়াদ্যাবাদে আন্তঃ বিশ্ববিদ্যালয় ফুটবলেও
সমরেশ ছিল কলকাতার রক্ষণভাগের

উপর্যাপার পাঁচ পাঁচবারের ঘরোয়া
সিনিয়ার ভিডিসন ফ্টেবল লগি চ্যাম্পিয়ান
ইম্টবেশল দলে সমরেশ অনাতম সদস্য।
এক বিরাট সাফলাের সাথাক সহযোগাঁও
বটে। তদ্পাির শঞ্চনবারের অধিনায়ক।
শবহাবতই এই সাফলাের লনা তিনি গবিত
হতে পারেন। কিম্তু:সে গর্ব এককভাবে
নর, দলগভভাবেই। সমরেশের ভাষায় ঃ

ইন্ট্রেলাল কংনও একলনের জন্য জেতে মা, এগারোজনের জন্যেই জেতে। আচাব চাত্তের প্রগারোজনের সামাগ্রিক গলেন্ট। हेम्प्रेटवण्गरम विष्यात रकाम जला ताहै। বিষ্ণু মিলে সিন্ধুই হোল ইঞ্বৈজ্বল। निक्ति पटनत कथा तन्छ तन्हरू संग्रहाभाव 'र्रा.फे' काल भिरामित । मालव स्थान कालक পম্য অনেক স্যাক্রিফাইস করতে হয়। এই তো দ্যাথেন আমাকে—টিমে যুখন মোহন জিল তথন মোহন, গোত্ম ছিল লিংক্ষান তাার আমাকে খেলাইতম অন্যভাস্ত পঞ্জিসন —লেফট আউটে। কিন্ত কি কলম বাইলো। আমার একক কোন অণ্ডিত নাই--টিয়ের ইণ্টারেস্টই সব থিকা বড়ঃ টিমের কথাই ভাবতে হইবে। খেলার হারজিৎ আছেই জিতলে আনকে লাফালাফি করি, <u>হার</u>লে মাথা গ্ৰইজ্ঞা বইসা থাকি কিন্তু মাথা গ্ৰুম কলি না আফিতনও গটোই না। সবটাই মেপার্ট সম্যান স্পিরিটে মানতে হ'ইবো। এই তো দার্থেন ৭১ ৭২, ৭০ সালে সন্তোষ টুফি খেলছি. ৭১এ রাশিয়া গেছি ইন্ডিয়া টিমের হইয়া, ৭ই-এ রেংগুনে প্রাক-ওলিম্পিক খেলছি, ইন্ট্রেণল লগে হংকং গেছি, গেছি বাংলাদেশে কিন্ত এবার এশিয়ান গেমসে যাওয়া হইলো না। বাড়ীতে অসুখ বিসাখ। ভগবানের ইচ্ছা না, আমি হাই। এইটাকেও আমি একটা থে**লা ম**নে করি ভাগোর খেলা। হাঘাদাই নিষেধ কর্মছলেন। কই ছিলেন : 'বৌমার শ্রীর খারাপ। এই সময় তুই বাইরে যাইস না (সম্প্রতি সমরেশের একটি মেয়ে হয়েছে। নমরেশের স্ত্রী সমৃতি চৌধ্রী (পাল) মেয়ের নাম রেখেছেন পিংকি, পাপিয়া । রাঘ্যদার কথা আমানা করতে পারি নাই। ্রিনং কাচ্সে গেলে হয়তো চান্স পাই । থাইতাম। কিন্ত বাঘাদার কথা অমানা কগা হইতো। তিনি দ্বঃখ পাইতেন আনু গাঁরে কংট দিয়া আমিও সুখী হইতাম না'। নায়কোচিত কথাই বটে। স্ত্র-নায়ক, প্রকৃত খেলোয়াড়ী মনোকৃত্তির জন্য সমরেশ তাই এবাল পশ্চিমবংগ ক্রীড়া সাংবাদিক সংস্থা বছরের সেরা খেলোয়াড়ের স্বীকৃতিতে চিহিত করে অম্তবাজার পত্রিকা দিয়েছেন। সমরেশকে খেলোয়াড় হিসেবে গত বছরও স্বীকৃতি দিয়েছিল ভেটারেন্স ফ্টবল ক্লাব। তারও আর্টে সেরা স্কুল ফুটব্লারের স্বীকৃতিও তিনি শেয়েছেন। কিন্তু এত প্ৰীকৃতি, এত প্রশংসা, এত পাওয়ার মধ্যেও সুমরেশ কিন্তু বিনয়ের মধ্যেই ডুবে রয়েছেন এক হাতে বাঘাদা এবং আর এক হাতে প্রদীপদাকে (পি কে ব্যানাজ্রি) আঁকড়ে थर्द्ध ।

विन्द्रित बल्हानाशाय



দশ ক

এশিয়ান গেমস

তেতেরানে ৭ম এশিয়ান গেমস শৈষ হাতে এখনতে সাত্রাদন বাকি। প্রত আট-দিনের (সেপ্টেম্বর ২ -৯) খেলায় স্বর্ণ পদক প্রেয়েছে এই আটুটি দেশ-ছাপান ৫০. চীন ১৮. উত্তৰ কোলিয়া ১৬ দ'ক্ষণ কোরিয়া ৯, ইয়ান ৮ ভাইল্যাণ্ড ২, রশ্বাদশ ১ এবং ইস্রায়েল ১। স্বর্ণ পদক জয়ের এই বর্তমান তালিকা দেখে খবে জোর দিয়েই বলা ধায় জাপান বিরাট ব্যবস্থানে চাড়াক পদক জ্বাহর ভালিকায শীর্ষাধ্যান পাবে। ভাগত এপ্যান্ত ৪টি পদক পেয়েছে -গোপা ২ এবং ভোঞ্ল ২। ভারতের সংসদ সদস্য ডাঃ কানি সিং ট্রাপ স্মাটিংয়ে রৌপা এবং দিকট স্মাটিংয়ে রোজ পদক পেয়েছেন। ব্যান্ত্রিয়ণ্ট্রের দলপ্ত বিভাগে ভারতে ৩--০ খেলাল পাকিস্তানকৈ হারিছে রোজ পদক জয়ী হয়েছে। প্রেষ-দেও ১০,০০০ মিটার দেন্তে ভারতের পক্ষে বৌপা পদক জগ্ তথেছেন শ্বন্থ সিং।

লৈ কৈ *লৈ*

লোপান ১৯৭০ সালের মত এবারও সাহারে দবল[ে] পদকের সিংস্কৃতাল পায়েছে। সাঁতারের মোট ২৫টি স্বর্ণ পদকেল সধ্যে ছাপান একাই পোষেছে ২২টি ২বর্ণ পদক। বাকি তিনটি পেয়েছে দক্ষিণ কোরিয়া (২টি) এবং ইস্লাইল (১টি)। ১৯৭০ ুসালের সাঁতার প্রতিযোগিতায় মোট ২৮টি র্ম্বরণ পদকের মধে। জাপান ২৫টি এবং দক্ষিণ কোরিয়া ৩টি ছবণ পদক পেয়েছিল। ১৯৭০ সালের স্থিতারে ভ্রাপানের মোট পদক সংখ্যা ছিল ৪৭টি স্বর্ণ ২৫ রৌপা ১৮ এবং রোগ্ধ ৪। এবারত জাপানের স্কল-ক্ষেজ-বিশ্ববিদ্যালয়ের ছাত্ত-ছাত্রীরা সাঁতারের খ্যাড় ঝাড়ি রেকর্ড ভেন্সে স্বদেশকে সর্বাধিক পদক ভ্রয়ে সাহায়। করেছেন। জ্বাপানের ২১ বছরের কলেও ছাত্রী ইয়োসিমি নিশিগাওয়া ১৯৭০ সালের সত এবাৰও সাত্যাগ্ৰের পাঁচটি প্ৰণ পদক জয়ী হয়েছেন। এশিয়ান গেমনের একটি আসরে কোন একজনের পক্ষে প্রচিটি স্বর্ণ পদক জ্ঞায়ের মজির অপব কারও নেই। এবার ক্যাবী নিলিগায়া সতিবের এই পাঁচটি বিষয়ে নতুন রেকড সম্বে ১০ প্রক জয়ী হয়েছেন ঃ ১০০ মিটার ও ২০০ মিটার ফ্রিস্টাইল, ২০০ মিটার হাছিলত মেডাল, ৪০১০০ মিটার ফ্রিস্টাইল এবং ১৯১০০ মিটার মেডলি বীলে সাঁহারে।

ন্যুটিং প্রতিযোগিত।

সাটিং প্রতিযোগিতার মোট ১৮টি
প্রব পদক চারটি দেশ এইভাবে পেয়েছে ঃ
উত্তর কোরিয়া ১০, চীন ়, ছাপান ৩ এবং
তাইলানত ১। মোট পদক ভারের
তালকাতে উত্তর কোরিয়া শীষ্ঠপান প্রেছে। উত্তর কোরিয়া শীষ্ঠপান প্রেছে। উত্তর কোরিয়া লক্ষাবিদরা ৮টি এশিয়ান বেকড ভাগেন এবং একটি বিষয়ে এশিয়ান বেকড ভাগেন এবং একটি বিষয়ে এশিয়ান বেকড শুগেন এবং একটি বিষয়ে ভানাটি উত্তর কোরিয়ার ২৫ বছরের ছাত্র হান ডং কিউ।



ইয়োসিম নিশিগাওয়া জোপান। এশিয়ান গেমসের সাঁথারে ৫টি স্বর্ণ শদক জয় করেছেন।

उद्याणेख ट्रकाटका

গুরাটার পোলোতে ৭টি দেশ খাউ ত মোবিন প্রথার খেলেছিল। ইরান হবগাঁ, চাঁন রোপা এবং গতবারের চ্যান্পিয়ান জাপান রোগ্ধ পদক জয়া হয়েছে। গতবারের রোপ্য শদক জয়া ভারতবর্ধ ৬৬১ মথান পেয়েছে। ইরান, চাঁন এবং জাপান—এই তিনটি দেশু ১০ প্রেণ্ট করে সংগ্রহ করেছিল। নোর পর্যান্ত গোলোর গড় দিরে চড়োন্ড মামাংসা হয়।

: কাইছিল

ভাইভিংয়ের চারটি ছবল পদকই পোয়েছে চীন। তাছাড়া তারা দুটি করে শেপাঁ ও রোজ পদক পোরেছে। জাপান পোয়েছে চটি পদক (রোপা ১ ও রোজ ২) এবং দক্ষিণ কোনিয়া একটি রোপা পদক।

িমন্দেশিটকস

জিমনাণিটকসে চাঁন প্রথম এবং জাপান বিব্
ক্রিন্তার স্থান প্রেয়েছে। ব জাপান তাশের বিব্
ক্রিন্তার জেলীর দল নিয়ে প্রতিযোগিতার নেমেছিল। কাবণ তানের প্রথম প্রেনীর বেলারাড্রা আব্র কিম্ম জিমনাশিকস প্রতিযোগিতার ভাষা তেরেরানে যেতে

চীনের তিকিং বিশ্ববিদ্যালয়ের হ্ব বছাবে ছাত্রী চিয়াং সাত্র হৈছেদের গাঁমাতিত অনুষ্ঠান এবং ব্যক্তিগত বিভাগে ততি স্বণ্ডিকত পেরেতেন

চ্ডাত পদক তালিকা

கையிலிக்க

	ક્યાન	देगेश्रा	রে জ
₽ ₆	ь	₽ •	. 2
জাপান	8	១	₹.
দঃ কোরিয়া	`₹	0	ર
উঃ কোৰিয়া	2	. 9	વ

Milit:

The second second	⊁বণ	<i>ा</i> ीशा	ব্ৰেজ
উঃ কেনরিয়া	50	8	•
5ীন	8	•	9
ভাপান	٠.	, S	8

বিশ্ব পিণ্টাথলন

নকোতে থায়োজিত ওয়াগড় মডান পেণ্টাথপন প্রতিযাগিতার রাশিনার আথলাটরা তিনটি পদক্ষ পেবা রৌপা, ও রোজ জয়া হয়েছেন। স্বর্ণ সম্কটি পেরেছেন প্যাভেগ লেডনিয়ন্ত (প্রেণ্ট ৫,৩০২)।

Sand Called Control

ক্ষাৰ দানগা, ত কাৰণে প্ৰায়োজ্যেল কোম্পানী

্জাবিস্পরণীর স্বরন্তটা স্বগতি কমল কাশগুণ্ডর প্রতি শ্রুখা জ্ঞাপনাথে গত ২৯ আগদ্ট সংধ্যার গ্রামোধোন কোদপানীর সক্ষ থেকে এক শোকসভা আহ্বান করা হরেছিল কোম্পানীর সতীন মুখার্জি রোজের রিহাশ্যাল রুমে। সভাপতি ও প্রধান অতিথির আসন গ্রহণ করেন যথাক্রমে সংগ্রোক্রমার দে ও গোরীকেদার ভট্টাচায়।

ক্ষণবাৰ দীঘ্লিন ধরে বাংলাগ সংগতিজগতকৈ সমাংধ করেছেন গ্রামো-ফোন কোম্পানী বেতার ও চিত্রেগতের মাধ্যমে। তার স্তীঘ্র, সহক্ষী ও শিধ্য-শিষ্যাদেরত্র অনেবৈ উপাস্থার ভিলেন। জনিবার্ধ কারণে উপ স্থিত থাকতে না পারাদ্র জন্য গোকবার্ডা পা ঠয়ে ছলেন পংকজ মালক, রাইচাদ বভাল, প্রিভেম্ भौत, भश्रभम श्रांस्क, कार्सस एकी, श्रुांश्का বার ও স্রাচিতা মিত। ধর্মিকা রাম জানিয়ে-ছেন, দীঘ[়] কুড়ি বছরেরত্ত বেশী ইনি ভার কাছে সংগীত শিক্ষা নিয়েছেন এবং গ্রামোফোন কোম্পানীন লেবেলে ভার সব রেকড'ই কমল দাশগ°তর সারে ও ভাষায়। সংগতিজগতে তার প্রতিষ্ঠার মালেও ছিলো কমলবাবার অকুপ্রণ অবদান।

স্বর্গত কমলবাবা সাধ্য স্থানতাবই ছিলেন না, তিনি স্থায়ক, সংগতিনিদেশিক এবং বহা হিন্দী ও বাংলা গানেল রচিয়তা। উদা ভাষার ওপরত তার অসামধারণ দ্থল ছিলো। কমল দাশগুণ্ডর গাড়া সংগতিবসিকের কাছে এক অপ্যোশীয় স্কৃতি।

স্বাকার, রচিয়তা, শিল্পী ও সমালোচকদের পাঞ্চ থোকে স্বগাত দিলপীর জাবনদর্শান, সংগতি—ভাবনা ও প্রতিভাবে দ্বর্গাত ভাগের প্রতিভাবে দ্বর্গার ভাগের প্রতিভাবে দ্বর্গার ভাগের দেন—হেমন্ত মুখোগায়ায়, পাবির চট্টোপাধায়া, সমালাম মহা, প্রবিধারা, দ্বামান মহা, দ্বামান মহানা, স্বামান মহান মহানা, স্বামান মহানা, স্বামান

কোমপানীর পঞ্চ থেকে শ্রীবিহান ছেই জানান, তার স্বের গানগুলি সংকলন করে কয়েকটি এল পি ডিচ্ফ প্রকাশত করবার প্রিক্সপন্য কোম্পানীর আছে।

শ্যালকাটা মিট্ট কৰু সাৰ্কেলের সংগীত সম্মেলন : কলামান্দ্রের স্থান্দ্রিত মঞ্জে ক্যালকাটা মিউভিক সাকেলের পাঁচ দিন-বাাপী সংগীতিংসেব শুরু হরেছিলো শ্রীমতী সুপোচনা যজ্ঞবেদীর গান দিয়ে। প্রথম রাগ পাবী। শিল্পীর সাল্ভীর আওয়াজ, ধ্রুপদী চং এবং বোলবিস্ভার গানের অস্থায়ী অল্যকে ভরিয়ে তুলোছল তানের অধ্যে সাপট তানের প্রাধানাই বেশী। ভানবৈচিত্র না থাকলেও যে-তানকতবি প্রদর্শন করেছেন—খবট তৈরী। মণ্ডসপতকে এশ্র কণ্ঠ ভরাট ম্বচ্ছন্দ। কিন্তু ভারসংত্রকে একটা কম-জোরী। ম্বিতীয় হাল ছিলো সোঁডুমলার ভারপন্ত দাদরাত গেয়েছিলেন। তবে দাদরার চেয়ে খেয়ালেই তাঁর কণ্ঠ বেশী মানানসই। শ্রীমতী সংলোচনার সংগে মেজাজী তবলা-সংগত করে কেরাম্থ খাঁ সাতের এ অন্-ষ্ঠানকৈ হিন্তাকয়ক করে ভোলেন।

আলা ঘ্রাণার প্রবীণ নিংস্ট্রী সভাফং হোসেন থার কলেঠ রবিগলা আজিগকের এক প্রামাণা গায়কবীর ছবি শান্তয়া গোলো। কর্নেঠার দাপট, রাগার্পের প্রান্ত্রী করিবলিতান স্ব মিলিয়ে সিংস্ট্রী পরিবেশিত মেঘ ও গোড়মল্লালু অনেকাদন মনে থাকরে।

ত্রপুণ শিশুপী শ্রীজগদীশ প্রসাদের গোরথকগাণে আজ্প্রতায়, রাগস্বচ্চতা ও মেজাজ কোনোটারই অভাব ছিলো মা। শুখু আম একটা মাধ্যসন্ধারের দিকে যদি মন দিতেন, আরো প্রাণখুলে প্রশংসা করা যেগে।

হিন্দুস্থানী সংগীতের একটি প্রাচীন ধারার ছাবকে মেলে ধ্রলেন ওস্ভাদ মালিকাজব্ন মনসন্ত্র। এখা গাওয়া বিহাগড়া, রইসী কানাড়া পানিড্ডা ও আবেগের ভারসামাভার এক শ্বরণীয় নজার।

গজলের বেগম বেগম আখভারের ঠাংবা কাজবা, গজল ও দাদরা গানও সভেজ, সবজে ভ চিত্তগ্রহা ম

ষণ্ডস্কাতি শোনা গেলো দক্ষিণ ভারতের কুশলী বেহালাবাদক পান্ডিত গাল্ডেটী জয়রামেন স্মরণীয় অনুষ্ঠান। ইনি পরিবেশন করেছেন মগান্তমে হংসধ্বনি বেগম), বালাচি কুল্যাগ্রুত্ম, চার-কেশী ও ভৈরবী (ভলানা)। স্বদ্পপরিস্কের মধ্যেও প্রতিটি পরিবেশনার গাীভিকাবিক সৌন্দর্শ ও সাবলীল বন্ধব্যে শিল্পীর গান্ডিতা ও শিল্পবোধের স্পূর্ণ অনুভুত্ত। রাগরজক স্বরসম্প্রর, বিশেষ সঞ্চার, অপূর্ব প্রয়োগ তার সম্পদ্স তার মুক্ষকারী। মুদ্ধেগ তাকি থথাযোগ্য সহায়ত। দিয়েছেন অ নাম্বর্ধন। চার্কেশীর আলাপন যেন স্বের অ নন্দাসন্দ্র, আশ্বন। হয়ে উঠেছিল।

সরোদে আমজেদ আলি খার হাতের
দক্ষণ ত প্রদেশর অতীত। এবাবে তরি
রাগচিএনের কুশলতা আনো পরিণত ও
চিতাশীল। ইন্নন-কল্পুণের আলাশে কিছু
ইতসত্তভার থাকা সংস্কৃত রাগের ওজন ও
গাঙলীশ আনাহত ছিলো। কিছু আরো
নিটোল ও লাবগ্যসামুখ্য হরে ওঠে
সোভোগী রাগের গং। কিষ্কৃ মহাশাজের
তবলাসপাতে ব্যক্তার মানা ভাই,মনশ্রী
স্থিতি করেছে।

ইন্দ্রনীল ভট্টাচার্যের সেতার ফলসংগীতের আর এর উল্লেখযোগ্য হান্ট্রান।
ঝিঞা-কি-মল্লার রাধের আলাপ ও জেড়ের
গুপদী কাঠামোয় আলাউদদীন ঘাণার
অতিহী স্রোক্ষর। এরপ্রই কন উন্ট ভাবের রিলিফ নিয়ে এলো প্রাণক্ড জনসংস্থাহিনী রাধের মহার গত্টি। দক্ষিণ
ভারতীয় চলনের বৈভিত্য হিন্দুখানী
সংগীতের হিন্দুর সৌন্ধ্য সঞ্চারর ইন্দ্রমান্ট্রার সাস্ক্র ক্রিল্ডার ক্রিয়র স্ট্রানী
সংগীতের হিন্দুর সৌন্ধ্য সঞ্চারর ইন্দ্রমান্ট্রার সাস্ক্র বিশ্বাস নিক্র ক্রিয়র মান্ট্র।
মান্ত্রসাদের তবল নাত যেন স্ক্রের
নাচনে সারা আস্ব মাবিয়ে তোলো

বাকাৎ অনি থাঁর চোলক ও শাস্তা-প্রসাদের তবলার যুগলবংদীর উত্তর-প্রত্যুত্র কয়েক লহমায়ু এক আননদ্মীথুর প্রিবেশ, স্থিত করে।

প্রবীশ ধুশদী সংবধনা : পাথারিয়াঘাটার মন্মথনাথ মালক স্মৃতি মন্দির এক ভাবগণভার আর্থনা মান্দির হয়ে উঠেছিলো যথন প্রবীণ ধ্যাপদ্যার্ সংগতিচাহার্থনাগেশ্রনাথ বংশ্যাপ্যায়ের ৮৪তম জন্মবাধিকী উপলক্ষেত্রি উপ্ত ও শিক্ষাশ্রাক্রণ এক সান্ধা আস্তের আয়োজন করেন তাকৈ প্রক্ষাধারি দিরাবৃদ্ধ এক সান্ধা নিবেদ্ধের জন্ম।

প্রীব্দের।প্রধায় দীর্ঘাদন ধরে ধ্পদ্সাধনা শিক্ষাদনে এতা থেকে ভারতীয় সংগীতের এই প্রচান ধারাটিকে প্রবাহিত রেখেছেন। সেই পার্লেজিতে এ আসরের এক ট বিশেষ মর্যাদা আছে এবং এ আভিজ্ঞাত্য উদ্যোগ্রাদের নিস্টা ও আন্তরিকভায় সুশ্রিকাকিত হুরেছে।

द्राध्यम भागायमण सम्पर्शास ৮৪% প্রদীপ অনুসালো হয়। ভারপর সংগীতা-চার্যকৈ একে একে মাল্যদান করেন তার শৈষ্যবৃশ্ব সংগতিজগতের বিশিষ্ট বারিব প

এছাড়া শৈকাথী দেৱ তরফ '১৯৯১' টাকার একটি তোদ্ধা স্থ্যাত পাখোরাজী রাজীবলোচন দে ব্যক্তিগতভাবে ১০১: টাকার একটি তোড়া এবং ভ্রানীপরে সংগতি সম্মেলনের পক্ষ থেকে শ্রীবিয়াল ৰন্দ্যোশাধ্যায় ১০১ টাকা অপ'ণ কল্পেন। এ অনুতান সমাণ্ড হয় তাঁব খিয়খিলা পরিবেশিত 'গারাবন্দনা' শীর্ষ প্রাপদাংগের সংগতিগকে দিয়ে।

অনুষ্ঠানে পোরোহিতা করেছিলেন স্বামী প্রজ্ঞানন্দ। ধ্রুপদের এক নিষ্ঠাবান পজোরীকে সম্মান প্রদর্শনের জন্য উদ্যোক্তা-দের অভিনন্দন জানিয়ে ইনি বলেন— নিষ্ঠার সংগে এই অনুষ্ঠান পাসন করে এ'রা যথাম্থভাবে সংগীতরসিকের দায়িত্ পালন করেছেন: সংগে সধ্যে তিনি ক্ষাভ প্রকাশ কমেন এই বলে এ উৎসবে উপ স্থত থেকে সাজগাতিক দায়িত পালন করা উচিত ছিলো যাদের তারা অনেকেই আসেন[্]ন। এই প্রসংখ্য এথানকার সংগীত সম্মেলন-গুলিতে ধ্ৰুপদ অবহেলিত হচ্ছে বলে দ্বামীকী দুঃখ প্রকাশ করেন।

এরপর সংক্ষিপত স্ফার ভাষণে সংগতিচাযের প্রতি শ্রন্থা নিবেদন করেন সর্বন্দ্রী কেশব বন্দ্রোপাধ্যায়, মন্মথনাথ ঘোষ এবং বিমল বলেদ্যাপাধ্যায়।

সকলের বিশেষ অন্নয়ে যোগীনবাব: প্রাপদ গেয়ে শোনান। স-রা হোলো সেদিনের বর্ষামঞাল পরিবেশের সংগ্যা সংগতি রেখে 'জলা সমুদ্র ভবানা যাতে'—মি**এঃ**া-কি মল্লার রাগে। দাগলবাণী শৈশীর শ্রুম্ব সরল ভেশ্পীতে বর্ষার ছবিটি ফটে ওঠে স_{ুগম্ভীর} মহিমায়। এই রাগের সঞ্চেই সংগতি রেখে প্রিবেশন করেন পরবর্তী রাগ বদশ। এবং শেষ করেন গেড়ি দিয়ে 'ব্যারে ধ্যা রংগ বাদর'। বন্দেজের অভিনবত্তে, গায়কীর পাণ্ডিতা ও শিল্পীয় আবেগের চিবেণী স্থ্যমে এ অনুষ্ঠান উপভোগ্য হয়ে ওঠে। শিশ্পীর সংগ্রাকঠ-সংগতে ছিলেন তাঁর পাত জ্যোতিম^বয় বদেদ্যাপাধ্যায়, বিশ্বা তপ্নকুমার চক্রবতী এবং পাথোয়াজ সংগতে চণ্ডল ভট্টাচার্য।

সংগীতান-তানের স্কার প্রস্মাণিত घण्टम श्रीभारवाधाःअस्य एतत्र नत्रवाती कामाफाः ষাগের শ্রুপদ দিয়ে। প্রাকটের আবেগ क िख्रश्रमी श्रीतर्वभन तहना करत्।

নজর লগীতির রেকড : গ্রামাফোন কোমপানী প্রয়োজত নজরুল গতিগুচেছর ডিস্ক সিরিজে এবারে সর্বাপেক্ষা উল্লেখ-যোগ্য হোলো সংপারসেভের ডঙ্গেক ৬ থানি ন্ত্রনুলগাঁতির সার : বাজি:য়ছেন কবিপার **কাজী জমির, শ্র**। কবি-সারকারের সংগীত-মানবের বিভিন্ন দিকের প্রতিফলন ঘটেছে যথাক্তমে পথহারা পাখী, জানি জানি প্রিয় ্যুক্লো পাতার, অরুণকান্তি, মোর ব্যুখারে

kacha di Nacada kacamatan di Kabupatèn di Kabupatèn di Kabupatèn di Kabupatèn di Kabupatèn di Kabupatèn di Kab

अनर हास ननानी भामगानिएक। कवित्र साम ও স-বের সভ্যো উপরিপাওনা ফ্রিসের ना बता रमारना कविन एवत जिल्लीहिस्ति । ৰে ৰে পদ'ার আল্যাল পড়েছে সেই পদ'া-ग्रं म मात्रव जम्द्रश्त क्षेत्रम् आकृत हर्त फेटोटर । त्व भिक्शी क्रिक्षामत्त्व क्रमा <u>क्र</u> গেলেন দ্ভির বাইরে, প্রভিতে তিনি রইলেন অমর হয়ে। এইখানেই রেকডের সাথকিলা।

खनामा স পারসেভেমের 107 MT मानद्यन्त मृत्याभाषात्त्रत्र गाल्या হু পানি গানই স্বাদ্ধৈ চন্তা বহন করছে। এ গান সচরাচর শেনা যায় না। তাই এর স্বাত্তর অনুহ্বীকার্য ।

আর একটি সংপারসেভেন ডিকেক ছ'থানি গান গেয়েছেন জনপ্রিয় কোৱা ক भिक्ती अने भ शासाल। भ्रान्तीका কয়েকটি গানও ইনি গেয়েছেন। **জা**ন গোল্বামীর গানটি পরিণ্ড মানের হয়ত নয়, কিন্তু সেই বিরাট্টি শিল্পীকে মনে ভ ক্ষিয়ে দিয়েছে। এইখানেই এসব গান গাওয়ার সাথ কতা। অন্য গানগালি তার প্রভাবান গ প্রাণোচ্চলতায় পরিবেশিত।

কিন্তু সুপারসেভেন ডিচেকর তালিকায় ष्पञ्चील मेर्ट्याणाधारस्त्र नाम हे युद्ध ना হওয়াটা একটা আশ্চর্য ঘটনাই বলব। কারণ নজর-শসংগীতে তাঁধ জনপ্রিয়তা ও ম্বিসয়ানা প্রশেনর অত্যিত। এস পি ডিলেকর চারখানি গানে ইনি কবির গানের স্র ও ছব্দ দুটি দিকই উল্ভাস্ত কগেছেন।

সন্ধ্যা মুখাজি গীত চারখানি গানেই শিক্ষীর উচ্চমান বিযোবিত। এছাড়া আছে দা'জন শিশপীর একটি করে রেকর্ড। এরই একটিতে আছেন সর্মিতা বাহা ও অধীর বাগচি। শ্রবীন্দ্রস্পাীতের শিল্পী ছলেও নজর-লগীতিতেও স্বীমন্তার যোগাতার শ্বাক্ষর বহন করছে 'কে ত'ম দ্রের সাথী' ও 'আজি এ শ্রাবণনিশি'।

অধীর বাণাচির সানাম অকল্প আছে

'আগের মৃদ্ধ আমার ভালে' ও 'চুদের কেনো' नाम भ्रातिक।

शहरी पर मान्त्रत शास्त्रका फाल्य दन्ता' ७ 'आद्या द्याउँ ना'।

्र श्रीका लालाग्रुव्य 🔞 भारकतलाल श्राट्या-পাধ্যায়ের কটে লোনা বায় যথাক্তম পিউ পিউ বোলে', 'রেশমী চডির' 'সংখ্যামালতী যবে' ও 'ঝরা ফলেদলে।'প্রসংগত উলেখা क्या कामान वह अव्धाय भारावदा है রেকড[ে] হোলো। এর আগে_শ রেকড[ে] ছিলো ডাঃ অঞ্চলি মাথোপাধায়ের, তারও পরেসিরে ছলেন বহু আগের সুবিখ্যাতা গায়িকা শ্রীমতী ছবিমতী।

নতিখ দত ধার গেরেছেন বনে চলে वनमाली' ख 'जला खे यमन्छ'।

কাজী প্রসোচীর কন্ঠে চার্থান কবিতার আবৃত্তি শোনবার মত।

প্ৰেল বেকডি':-এর বভ খবর

এবার প্রক্রোয় স্বচেয়ে বড় থবর--লভা মশ্যোশকর ও কিশোরকুমার প্রোয় গান পরিবেশন করছেন একে অনোর সারে। এইচ এম ভির বোদবাই স্ট্রেড-ডে ইতিমধ্যেই লওা মণ্ডোলকর দুটি পান तिकर्ष करतरहर वना बाह्या, किन কিশোরকুমারের সারে এই প্রথম বাংলা গান গেকড' করলেন। তেমনি কিশোর**কুমার** প্রজোয় গান রেকড করছেন প্রজা মঙ্গেশক । চত্তগ্রহী সাবে। সম্ভবত এবারই সর্ব এথম লতা সংগীত পরিচালনা করলেন। বর্তমান কালের এই দুট অপ্রতিবন্দরী কণ্ঠনিব্পী পরস্পরের সারে যে গান গেয়েছেন তা সংগীতজগতের পর্য সম্পদ হিসেবে গণা হবে। গানগ**ুলি** ালখেছেন বিখ্যাত চলচ্চিত্র পরিচাঞ্চ গীতিকান মতুকা দত্ত।

শিল্পীদ্বয়ের অপ্র কণ্ঠয়াধ্র এবং मानदेदि विकास भरीमधाल त्य भीनकान्धन সংযোগ হয়েছে তারেকড অসামানা জনপ্রিয়তা এনে দেবে।

—চিচাপাৰা



ध्नामगरम् द्वाशीम्ब्रमाथ वरम्यानाथारमञ्जू

শ**ুৰ**ৰ্মের স্মরণীয়

বিগত- ১৪ বর্ষ, রুষ্ঠ সংখ্যার (১৪ই জুন, ১৯৭৪) বাংলার সাধা ল াগালার ধারাবাছিক আলোচনা ১৮৭% খুণ্টাব্দ প্রশৃত্ত বিশেষ করেজন নাটারথীদের সলো পাঠকসাধারণের পরিচয় করিয়ে দিয়ে প্রনাম ১৮৭৭ স্টোব্দ থেকে ধারাবাছিক আলোচনায় আমারা ফিলে যাছি। নটগ্রুর্গিরিশচন্দ্র, নটগেষর অধ্বান্দ্র মুক্তাফ্রির্লিজ চল্টাপ্রান্ধ্র অধ্বান্দ্র অম্বান্ধ্র অধ্বান্ধ্র অম্বান্ধ্র অধ্বান্ধ্র অম্বান্ধ্র অধ্বান্ধ্র অম্বান্ধ্র অধ্বান্ধ্র অম্বান্ধ্র অধ্বান্ধ্র অম্বান্ধ্র অধ্বান্ধ্র অম্বান্ধ্র অম্বান্ধ্য অম্বান্ধ্র অম্বান্ধ্র অম্বান্ধ্র অম্বান্ধ্র অম্বান্ধ্র অম্বান্ধ্য অম্বান্ধ্র অম্বান্ধ্য অ

১৮৭५-৮০ ।। न्याभनान थिसाहोत

তখন কলকাতার ব'কে দুটি প্থায়ী মান্দ নিয়মিত অভিনদ চলছে। শহর এবং মধ্ন বেল চলছে সৌখন অভিনয়। কল বিভিন্ন পথানে আমণিরত হয়েও অভনয় করে আস্ভেন। পেশাদার প্রথায় মফপ্রলে অভিনয় করার রেওয়াজও শ্র- হয়েছে। ভবনমোহন নিয়োগাঁর পক্ষে গ্রেট ন্যাশনাল থিয়েটার পরিচালনা করা সম্ভব হলো না। কুক্ধন ব্যানাজি গ্রেট ন্যাশন্সে মণ্ড লীজ নিয়ে কিছুদিন চালিয়েও স্বিধা করতে পারলেন না। গি^{*}রশ্চন্থে তালুভুত্লা শ্যালক রজেন দেবের মৃত্যু হয়েছে বহুই প্রেই। ক্রিণ্ঠ ব্ররকানাথ দেব থিয়েটার भविष्ठामनाश्च आश्चरी इतमा। शिविभ्रहन्त्रक আথিক দক থেকে সাহাষ্য করতে প্রতি-আতি দিলেন দ্বাগ্রকানাথ। গিরিশচন্দ্র নিজেকে জানতেন। নিজের ব্যবসায়-বু; শ্বর ওপর নিজেরই বিশ্বাস ছল না। তাই এ-বিষয়ে আঁর একজন উপযুক্ত যাত্রির সংখানে ছিলেন। ঘটেশবরের জামদাল কেদাল চৌধারী এসে দাঁড়ালেন গিরিশচন্দের পাশের। গ্রেট मामगोल प्रक निक गास नीक निरंश नाम-নাল 'থয়েটার' নতুন নামে নামাকরণ কর্বেন। কেদার চৌধুগুরী ছালেন প্রারিচালক। এট ক'বছরই গিবিশচন্দ্রপলন্ধি করেছিলেন শে, থিয়েটার পরিচালনার জন্য থেয়ন ব্যবসায় দুভিট্সমপ্তা ব্যৱিত প্রয়োজন, ে≱ন প্রয়োজন নাটকে≥ আর উপযুক্ত শিংপীর। তিনটি বিষয়েব প্রতি **স্তক**ি দুল্টি বেখেই গিরিশান্ত নতুন বাপে न्।भागान थिएश्वोत निरंश आध्यक्षतम कतलन।

বেশ্যল থিয়েওলৈ থেকে বিলোদনী এসে হোল দিলেন। বংগপার অন্নত মিতক আবংকার করসেন। রায়তাবদ সানালে, বেল-ফাব্যু ফ্রিলাল সূর, মহেন্দ্রলাল বস্তু, কাদ্দ্বিনী, ক্ষেত্রমাণ—আরে। অনেকেই মুইলেন শিক্ষী সম্প্রদায়ে।

লিখলেন আগমনী নতুন নাটক।
১৮৭৭ খৃণ্টানের ৬ অকটোবর আগমনী।
মুক্তম্ম হলো। জুলাই মাসে গ্রেট নাাদনালা
খিয়েটার লাজি নিয়ে অকটোবর মাসে
বাবোছঘাটন করলেন। সংগীত পরিচালনা
ছাড়া গিরিখাজ চবিত্রে অভিনয় অভিনয়
করলেন রামতাবণ সান্যালা। বিন্যাদিনী
করিব অব্যান্তর সান্যাল। করেছিন
চবিত্র আত্যান্তর করেছিলেন বেদার
চবিত্র আত্যান্তরাশ করেছিলেন বেদার
চবিত্র আত্যান্তরাশ করেছিলেন বেদার
চবিত্র

১০ অকটোবর গিরিশ্চন্দের 'অকাল-বোধন' নাটকে 'গরিশ্চন্দ শ্রীরামচন্দ্র আর মতিকাল সন্ত্র ইন্দ্র চরিদ্রে অভিনয় কবেন।

১ ভিসেম্বর মঞ্চথ হলো গিরিশ্চন্দ্র নাটা-বংপারিত মাইকেলের মেঘনাদ বধ'। মেঘনাদ বধ নানাদিক দিয়ে সাড়া জাগায়। বেশুল থিয়েটারেও মেঘনাদ বধ অভনীত হয়ে জনপ্রিয়তা অজনি করেছিল। কিরণ্ডম্ব বেলাপাধ্যায় মেঘনাদ চরিত্রে অশ্ভূত কৃতিভ্রেপ পরিচয় দেন।

নাশেনালে মেঘনাদ আর প্রীরামচন্দ্রন্পে অভিনয় করলেন স্বয়ং গিরিশ্চণ্ট। পরহতীকালের প্রখ্যাত অভনেতা অমৃত্
মিএকে দেখা গেল রালন চরিত্রে। লক্ষ্মণ—
কোনার চৌধারী, বিভীষণ—মতি লার্ব।
প্রমীলার্পে অভিনয় করলেন নাটাসমাজ্ঞী
বিনোদিনী। আরো ক্ষেক্টি চরিত্রে অভিনয়
করেন তিন। আরু মূখ্যাপাধ্যায়, লক্ষ্মীমান্ বসন্তক্ষারী, কুস্মকুমারী থেখাদি)
আরা অনেকেই রইলেন অন্যান্য চিনিত্র।
মেঘনাদ বধা স্বর্ণীয় নাট্য-নিবেদ্নর্পে
অভিনন্দত কুলা।

৫ জান্যারী, ১৮৭৮ খুণ্টাব্দে মঞ্চশ হলো গিনিশ্চণ্ট নাট্যব্দারিত নবীনচণ্ট সেনের পলাশীর যুন্ধ। মেঘনাদ বধ আর প্রাণীর যুন্ধ। বাংলা সাহিতো তথন আলোড্র স্বান্ধ করেছিল বহুদিক থেকে। বাংলার শিশ্বনাটাধালাও এই দুইখানি সাহিতা-কীতিকৈ নাটকের মধ্য দিয়ে ইপম্থিত করতে বিশ্দুমাত গৈছিলাও।

গিবিশ্বচন্দের ক্লাইভ সব-শ্রেণীর নাটামোদীদের অভিনদনে অভিনিত্ত হয়ে
উঠলো। কিন্তু মতিলাল স্বের সিগোজদেদীলার অভিনয় কোন কোন মহল থেকে
বির্প সমাচেনায় ধিকৃত হলো। ভেঙে
পড়লেন মতি স্ব। গিরিশ্বচন্দ্র তাকৈ
নানাভাবে ব্যুক্তিয়ে শাশ্ত করেন। শেষ
থাটাভিনায়ের ক্লেচে প্রবত্তী শিশ্পদির
কাছে আদশা হয়ে ওঠে। বিনোদিনী
অভিনয় করেছিকেন ইংলন্ডের রাজকক্ষ্মী
চরিচে।

মেঘনাদ বথে গিরিশ্চন্তের অভিনস দেখে সাধারণী পত্রিকা বংশ্বর গ্রারীকর্পে তাঁকে অভিনদিদত করেন। আনশ্দ বাহা, দোলকালা অভিনীত হ্বার পরে গি শশচ্দুর নাট্যর পরিত্র বিশ্বমচন্দ্রের বিশ্ববৃক্ষ মুক্তুর্গত হলে। এ মার্চণ নগেল্নাথ্বব্বে গিরিশ্চন্ত আর কুল্নান্দ্রী।

২২ জনুন মঞ্চ হলো গিরিশচন্দ্র
নাটাব্পায়িত বাংকমাচন্দের দ্বগেশিনাদিনী।
প্রথম রঙ্গনীর অভিনয়ে কেনার চৌধ্রী—
জগং সিংহ, মতি স্বে—কতলা থা, কিবন
বদ্যোপাধ্যায়— প্রসমান চিন্নতে আত্মপ্রকাশ
করেন। পরে গিরিশ্বচন্দ্র জগভান্য করেন।
প্রসমান চিরতে আত্মপ্রমাশ করেন।
আয়েষা চিরতে আত্মপ্রমাশ করেন।
বিনোদিনী। ক্লিউন্তম্মা চিরতে ভান
অভিনয় কর্বতেন।

দ্বেশিনন্দিনীর প্রেই গিরিশ্চন্দ্র থিয়েটারের লীজ ছেড়ে দেন। লেস্ট্রাইন কেদার চৌধারট।

বেগগল থিয়েটারেন্দ্র ইতপ্রের্ব দ্যুগেশনাব্দনীর অভিনয় জনগ্রির্ভাজন করে। শবংচন্দ্র সিংহ অশ্বারেত্রে মঞ্চের প্রথম করে চমংকত করতেন। কিল্তু নামানালেন্দ্র দুয়োগানাকানীর প্রশাস্থ হয়ে উঠলেন। বেল্ডাল আব ন্যাশনালে তথন তীর প্রতিযোগিত। কে ককে হারায়। গি রশাচন্দ্র মেখনাদ্র বধ্বন বেশলের শশ্বতিকে অন্যুস্বল না করে ভিল্ল প্রশ্বতিকে অভিনয় করেন।

দুই নাটামত প্রশাকে বিভিন্ন প্রধান এর মধ্য দিয়ে ব্যাংগাঘাতে জন্ধবিত করতেন।

বেংগল থিয়েটারের আমিগ্রাক্ষর ছন্দের অভিনয়-রীতিকে বাংগ করে গিরিশচন্দ্র লিখলেন ঃ

'হাত ছ'ড়ে না পা ছ'ুড়ে না ধীৰ সংয

ধর্ম হয়ে চলে।

ব্রাণ্ক ভাস পড়ে যেন

নদ**ী**র স্লোত জলে।

ইন্দুনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়ের মত সমা-সমালোচক না।শনাল তথা গিরিশ্চন্তের অ মত্রক্ষর অভিনয়ধারার ভূরসী প্রশংসা করকোন।

বলতে গেলে গিরিশ্রিশের বিভিন্ন মুখীন নাটা-প্রতিভার উদ্মেষ ন্যাশ্নাল থেকেই স্টোত হয়। প্রবৃত[ে]ী কালেব নটগ্নিরু ন্যাশানালের মধা দিয়েই আম্বাদ প্রকাশ করেন।

দ_গেশিননিদনী অভিনয়ের স্থায় মঞে বিদ্যাদিগগজের খিচুবীতে পা পিছ'ল গিরিশচকু আহত হুন এবং প্রায় ডিন মাস অসুত্থ থাকেন।

কেদার চোধারীর পক্ষে ন্যাখনাল থিয়েটার পরিচালনা করাও সম্ভব হলো না। ১৮৭৮ খুটাব্দের শেষভাগেই তি লীক হস্ভাস্তরিত করতে বাধা হন। এব থলেন গোপীচাদ শেঠী। এই সময় ন্যাশ্যা নালের ম্যানেজ্বার অবিনাশুক্তর কর।





১ জানয়ারী, ১৮৭৯ খাল্টাব্দে মঞ্চথ হলো কামিনী কুজ গাঁতিনাটা। সমগ্ৰ নাটকে পানের মধ্য দিয়ে প্রশন এবং উত্তর দেওর। হবে। গাতি নাটকটি রচনা করেন গোপালচন্দ্র মাথে।পাধ্যার। রামতারণ সান্যাল স্বস্থিতৈ এবং নায়ক (কৃষণ) চরিতে খুরই কুতিছের পরিচয় দেন। নায়কা **চরিত্রে অভিনয় করেন ব্নবিহাণিণী।** বিনোদিনী ছিলেন রাধিকা চরিতে। ৮ **জান_য়ারী অভিনী**ত হয় প্রমোদ কানন। ২৬ মে নন্দনকুসুম। জন্ধ এবং ইন্দুমতীর का इसी निद्या नन्मन कानन तहना करतन দেশবংধ্য চিক্তরঞ্জনের আত্মীয়স্থানীয় মনো-রঞ্জন দাস। ১৯ এপ্রিল ১৮৭৯ খাল্টাব্দে মঞ্চম হলো হেমচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়ের ব্ত-সংহার। এই সময় স্লভ সমাচারে মহাত্মা **কেশবচনদ্র সেন** নাটাশালার দুন^{শীতির} বিরুদ্ধে অভিযোগ করে কির্প মণ্ডবা क्षकाभ करतन।

আম্তবাজার প্রিকা কোন সময়েই কোন বির্প মণ্ডব্য করেননি। অধিক্ষত্ অভিনেত্রী নিয়ে অভিনয় করেন। প্রকলন প্রথম থেকেই সমার্থনি করেন। একজন নিষ্ঠাবান সমাজনেবী হয়েও মহাখা শিশিক্ষ্মার খোবের এই উদারতা চির্মাদন নাটোতিহালে কীতিত হবে।

বাৰ অতিনাশ্চন্দ্ৰ কর ম্যানেজার হযে
করেকটি নতুন প্রথার প্রচলন কলেন।
প্রথমে শনিবার অভিনয় হতে। তারণর
ক্ষোকা। অভিনাশবাব্ রবিবার ২টার

অভিনয় প্রথার প্রবর্তন করেন। শেষ
পর্বশ্ত ২টার পরিবর্তে এই অভিনয়
সংধ্যার অন্থিতি হতে থাকে। রীব্রারের
অভিনয় খ্বই জনপ্রিয়তার্জন করে কিল্ডু
ন্যাশনালের জনপ্রিয়তা দিনদিনই হ্রাস-

আগস্ট মাসে অবিনাশবাবু ন্যাশ্নাল সম্প্রদায় নিয়ে ঢাকায় অভিনয় কলতে বান। কিম্তু সেখানেও প্রতিবন্ধকতার সম্মুখীন হতে হয়।

ই তৃপ্বে ন্যাশনাল এবং হিন্দু
ন্যাশনাল নামে যথন (ঢাকায় অভিনয় করতে
বান, তথন অভিনেত্রী নিয়ে অভিনয় করার
রেওয়ার ছিল না। এবার পবভাবতঃই সংপ্রলায়ের স্পোলার অভিনেত্রীরাও ছিলেন।
প্রেবিগণ রংগভূমি' মণ্ডে ন্যাশনাল
থিয়েটার অভিনয় করবেন বলে প্রিকৃত
ছিল।

q আগস্ট ঢাকা কলেজের অধ্যক্ষ মিঃ
পোপের সভাপতিতে এখানেই অনুষ্ঠিত
হলো অভিনরের সমর্থকও ছিলেন। কিন্তু
তব্তীর বিরোধিতার মধ্যে অফিনাশবান্
অথিক দিক থেকে স্বিধা করতে
পারলেন না ঢাকা থেকে প্রত্যাবর্তন করে
ন্যাপনাল সংপ্রদারের বক্সীপ্র বেণ্টিয়া
ভড়িত স্থানে অভিনর করে স্বান্ম অর্জন

১৮৭৯ খ্টাব্দের আগস্ট মাস থেকে ১৮৮০ খ্টাব্দের গেড়ের গিকে ঢাকা, বাঁকীপ্র, বেণিয়া, কাশী, এলাহাৰাদ, লক্ষ্মী প্রভৃতি স্থানে প্রদক্ষী দিয়ে ন্যাদনাল সম্প্রদায় কলকাভায় প্রভাবতশি করলেন।

গোপীতাদ শোঠীর পক্তে থিরেটার পরি-চালনা করা সম্ভব হলো না। ভিন্ন লীক **ए**टए निर्मा कान्य कान्य प्राप्त कामीमाञ्ज भिष्ठ ১৮৮० शृष्टीदम्हे साभसाम থিরেটার লাজি নিলেন। ক্ষিত্র জিনিও মাসদশেকের মধ্যে লীজ ছেড়ে দিতে বাধ্য হলেন। যোগেণ্ডনাথ মিগ্ৰভ কালীদাস্বাব্র পর কিছু দন থিয়েটার চালাতে চেল্টা করেন। কিন্তু তিনিও বার্থ হন। এই সমস্ক্র-কার মজার বিষয় হচ্ছে—দর্শকদের মধ্যে এই সময় আংটি ইয়াবং, চশমা, রমোল, গন্ধদুব্যাদি, সাবান প্রভৃতি বিভরণ শুরু করেন। এমনকি শেষ প্রশিত ফলমূল, তরিভরকারী বিভরণ করেও দশকিদের ভিড় বাড়ানো সম্ভব হলো না। গ্রেট ন্যাশনাল থিয়েটারের মালিক ভূবনমোহন নিয়োগী হতেসব'প্ৰ ক্লে পড়েছিলেন। গিউনিসি-প্যা লটির ট্যাকস বাক্রী প্রভাষা। ২৫ हाकात **टोका एम्मान भारत रहा**छे ना**भनान** थितारोत नीमास्य विकित्य स्थल।

১৮৮০ থাটাবেদর শেষভাগের প্রভাপ জহুমী প্রেট ন্যাশনাল থিরেটার কর করেন। এর পরই শার্ হলে। গিরিক্টাল তথা বাংলা নাট্যশালার গেরিবময় ব্রেক্র অভ্যাদর।

কালীল মংখোপাঞ্চায়



অঙ্গ সে অঙ্গ লাগালে

সতীশ কাউল / শীভল

প্রযোজনা : শিবকুমার প্রভাকসংস ভবাতত কাহিসীকৌত্তক এবং ব্যাসাকের কলাকোভাকমাখ ভবি ইলানিং বোলবাই ছায়াজগভের অনেক পরিদ্রালকেরই 'রো হুট বো কোল্ড' ছবির অনাকরণে প্রায় নগন এবং উত্তেজক খ্যাদ্শা দেখানোর প্রবণতা দেখা দিরেছে। সাধারণত এই ধ্রদের দ্শা-গ্লিতে ক্যাশির্মাল ছবির দিলশীদের পাওরা বায় না—দেকারণেই ভাক শড়ে পুনা ক্রিক্স ইল্লিটিউটের ছারছারীদের।

এ ছবিভেই ডাই-ই ঘটেছে। অপ্তরণ্য এবং প্রাদৃশ্য দেশনের প্রয়োজনে প্রিচালক জিলম ইন্লিটিউটের স্পাতক এবং কৃতী আলোকাচ্যান্দিশী স্তীশ কাউল এবং ১৯৭১ সালের গিন ইন্ডিয়া প্রেমা নারারণের সাহাব্য গ্রহণ করেছেন। সেন্সর বোডের বিধিনবেধ সাতৌ আমানা না হর সেন্দিকে জ্বা রোধেই প্রাচিত্রক বাধার ছবিভা বাবেন্দ্রনা লাক্তর বিধিন ক্রেমা স্থাতির ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রিজন মধ্যে দিয়ে চট্ল মৃত্যুগীতের
উপদ্থাপুনা করে বিশেষ ধরকের দর্শ ক দের আনদদ দিয়েছেন! অবশ্য বিদেশী কাছিনী এবং বোমতাকে পরিচালক গারুহার করলেও পারতেন।

ব্যাপালোটার এক বিখ্যাত ব্যাক্তের ক্যাদিয়ার রাজনারায়নের কোন্টীতে ছিলা—প্রতের মূখ দেখলেই তার মূড়া হবে। ঘটলও তাই। প্রেরর মূখ দেখতে হাসপাতালে য়াওয়ার প্রকেশায় ছালা-পাতালে নিরে যাওয়ার হল তাকে। তাকা নিরে যাওয়ার হল তাকে। সেখানে সম্ভানের মুখ্য দেখালে কিনি—ভারপারই সেই চরমা নির্মাতি নেমে এল।

ছেলেবেলা থেকে আশা দেবী থাজেশকে এমনভাবে হালুছ বারেছিলেন দেন সে মান ইচ্ছান বিন্তুদ্ধ কোন ভবুশীকে বিজে না কাম বদে। আলা দেবী জানতেন ছেলে তার কলেজের
সহপ্রাঠিনী নীলাকে ডালোবালে এক তাকে বিয়ে করেই সংসদাী হতে চায়।
মা সব জানতেন বলেই নীলার সংগ্ রাজেগের বিয়ের মত দেন না। গ্রাজ্বেটে হওয়ার পর ছেলে নীলাকে বিয়ে করতে পাসে এই আশ্বনায় চাকরী শেরে স্বাবলন্দ্রী হয়ে ছেলে যাতে নীলাকে বিথয় করার কথা চিতা করে এমনি ইণ্গিড দেন।

ইতিমধ্যে রাজেশ াবার ব্যাপেকই মানেজারের চাকরী পায়। তারপর একদিন মারের সংগে পরিচর করিবের দিতে নীলাকে নিরে যায়। আশা দেবী রাজেশের মৃত্যুল করেণ তার ছেলে— এ কথা জেনেই বিয়েতে মৃত দিতে পারেন না। এই নিয়ে নীলার জ্ঞায়ইবাবুর স্থেগ রাজেশের মার একটা তিক্ততার সৃথিও হল। দ্বং পরিবারের মেলামেশা বন্ধ হয়ে গেল।

রাজেশ এক পার্টিতে এক মডেল গালের সঙেগ পরিচিত হল। তার মনে তথন প্রচণ্ড দঃখ। উন্ভিল্লযোবনা তর পাটি নানা ছলাকলায় রাজেশকে ভোলাবার চেণ্টা করে বার্থ হল। শেষে মায়ের মত নিয়েই রাজেশ-নীলার বিয়ে হল। কিন্তু সন্তান হওয়ার আশংকা ্রাধ করতে প্রশানরোধক ব্যবস্থার সাহায্য িল। এন্তে আঘাত লাগলো রাজেশের মনে। জামাইবাবুকে বুঝিরে 'অপারেশন' করিছেও নীলা নিকৃতি পেল না। একদিন 'মা' হলো। এক সময় রাজেশ ভার ছেলেকে বাঁচাতে গিয়ে নিজেই মুধ্যে পা এক জলুপ্রপাতের পিছলে পড়ে বায়। আহত হওয়ার পর তাকে হাসপাতালে নিয়ে আসা হল। **एक्टलत मृ**कु। कामनात्रेरे तारकण दि क ওঠে। এইভাবেই সে কোষ্ঠীর ভবিষাৎ-বাণী মিথ্যা প্রমাণিত করল।

কাহিনীর দুর্লতা এবং অবাশ্তবহার কারবেই পরিচালক লিবকুমার
শিলপীদের একক অভিনয় এবং ছবির
টেকনিক্যাল গিমকের ওপর নিভার
করতে চেয়েছেন। নীলা এবং রাজেশের
ছিমকায় প্রেমানারায়ণ এবং সতশি
কাউল চরিত্রান্যায়ী অভিনয় করেছেন।
মডেল গালের চরিত্রে শীতল, জামাইবাব্র চরিত্রে অভার্ন বকল্যালার
চরিত্রে জলাল আগা চিত্রনাটের দ্বি
মিটিয়েছেন। স্পাতি রচনায় কৃতিছ
দেখাতে না পারলেও আবহসণগীত এবং
ভারেকাট্রজেসানে প্রদীপ রায়চৌধ্রী
কৃতিছ দেখিয়েছেন।

আলোকচিত্রশিক্ষী অর্থনিদ লাড আলোকচিত্রশিক্ষী অর্থনিদ লাড এবং সম্পাদনায় মোহন রঠোর অনেকেই প্রশংসা পাবেন। এ ছাড়া অনাানা বিভাগের কালন্ত পথিক্সে।



ইমতিহান। বিংশ:

MEN CANDAS

আমাদের কলবাথের ছিলা পাইনের মান্বজন বলতে স্বই তো কোনাল্যতি:
দিনে একবার টালগিঞ পাড়ায় পা কিলেই সকলের সংগ মাুঝাহাখি দেখা-সাঞাধ হয়ে বাবা, কে কি করছে আর না-করছে—সব খবলই টাটঝা পাড়বা বারা। আগে আবে একটা রেওলাল পদ্মর্যাদা অনুসারে ক্যান্যার বড় চোগে পড়ে না। ব্যাপারটা মধাহাুগাঁয় ব্যবে পরিভাক হয়েছে অনুমান করি।

একদিল, আমার বেশ মনে আছে, ইনাই দিলোগ জুলা উলেটা দিকের সমূট্পাতে আদাদের বলাইদা মানে তপান সিংহ মাশাদের বলাইদা পরিচালক বলাই সেন একটা টাকাস করে হালাক আমি এক ছুটে গিমাই সেই চলাক টাকাসকেই গড়িসার করে উঠে সঙ্গানা করাছেন। আমি এক ছুটে গিমাই সেই চলাক টাকাসকেই গড়িসার করে উঠে সঙ্গানা কলাইদা অবাক। আমি অপ্তণ্ড ভাবটা কাটোবার জানা ভাছাড়া কলামা—স্বান্ধ বলাইদা অবাক। বাংলা কাটিদা আমেকজ্ঞান বলে দাড়িছেই আছি । অংক জ্বান্ধ বাংলা ভাছাড়া আমি কিন্তুই লাই, ভাই আৰু

বঙ্গাইদ শুগু হাস্কোন। কিছু নাল্লেন না। ভারণার পানের জানতা নি**ছে বাই**রের দিকে স্মাক্ষে রইলেন, মীরবে।

এখন ব্যাপানটা এখন বিক্লিরিকারে
আনিই ঘটিরে বাসেছি যে নিক্লের খাব লাজা ক্রাছিল। হাট কার দৌড়ে এসে এইলাবে প্রায় চরাত নার্নাসিতে ওঠা । আতিহাত ছেলোনান্তী। তার ওপর বলাইদার নীরবতার আরও ভালবিত হ্চিছা। তাই আর না ঘটিরে হুগচাপ বাস বটুলায়।

কিছ্যুক্তগের মধ্যে রাস্বিহার্টির আড়ে এসে গেল।

্তামি টাকাস ভাইভাবকে বললাম, ভাই বাঁনিক করে একট্মোনি শাড়াল খে, আনি নামব---

গাড়ী দীড়াতে আমি হুত নেগ্ন বন্ধনাম—হে° হে', আগনাকে টাবলা দিলাএ বলাইনা, কিছু মনে কবৰেন মা—

জাণ্টছ, এবারও বলাইরা নীরব, মুচ্চান হেলে মুম্মটি ঘ্রিয়ে নিলেন। ট্যাকলি



বেরিয়ের গেল। এঃ, তখন নিজের এও খারাল বাগজিল যে কি ব্যব্

কারপর সম্পোর কোঁকে কোকে আহি রাস্বিহারীর আন্ডার মঞ্দ। এটা द्याप्त-সিলিউট আয়াদের ফিলেনর লোকেদের আন্তা। সেদিন হঠাং বলাইদা এসে হাজিও : ভ'কে দেখে সৰাই খ্ৰ হে-চৈ কলে কিছাল্ডবের মধ্যে ত'র পকেট আলৈ করে দিল। ক্যামেরাম্যাম মণীপ দাপগ্রেত অনাকে ট**ুলি পরাতে বিশেষ শারনদ**ি ও যে ছবিতেই কাজ করে-দেণ্টা করে সে-ছবির নারিকার সংগে প্রেয়ে পড়তে। পড়েও ছিল নাকি কয়েক্ষার। এখন সে-সব ব্যাপার রেফার করলে শুগুর হালে। বলাইলা সেচিন কৃষ্মি ক্লোধ প্রকাশ করে ধলালেন-মণীপ্ মান্ত্ৰকে চোট দেওৱাটা ভোৰ স্বভাবে দাঁড়িয়ে খাছে। এটা বদলা--

ভা মণ্টিশের বছৰা, বে-সব হিরোইন ওর বুকে চোট দিলে গেছে বদাই বেন এই আনটা ভাদেরও একটা দের--- °

এইস্ব নিৰে বেল মানকর হছে, বলাইদ্রা ভোলা প্রজাজে সেদিন। আগচ বিকেপে ভাষার সংক্র বাকালাপ করলেন মা—কি দ্যাপার ভাই > মধীলকে সর খালে বলতে সে একচোট হোসে নিরে বলকে— হুমেছে। তুই ভাল ভিক্তিম হুয়েছিল—

- किरमत जिक्कि ?

—ট্টেইন। আহির টাঞ্চিপ ও শাল্ট না, আনাই। তুরা যুমুজ ভাই। তুই শাল্ডিস না বুর্কিন,

ভাষার গো সেই আকাশ থেকে শঙ্র অব্ধরা। তথ্য ব্লগীদা সংগ্রাস্থে বলবৈদ্দ কানাই ভাই ইছে করেই কথা বলে নি। বললে তুমি পাতে আরও লংভা পাও সেটা নিবেচনা করেই আর কি—

এছাড়। আর্ও দ্' জোজা সমস্থ আও আমানের ফিলেম। কানমোরামনের বেজা আব ভার ভাই। সে ভদ্পেশ্রের নাম আন্দ এজানের এই ফেদিন পর্যক্তের গান্ডগোল যোগ্রেছে, এগন দেখছি ওরা বেশ কেয়ারছাল, রেজার ভাই একটি প্রেভিট্ন প্রেফ রেন সম্প্রতি আমাদের যেন ব'চিফেছে। আর এক কমণী বাঁরেন গ্রেহ কিলেম লানেরের্টনি কমণী বাঁরেন গ্রেহ কিলেম লানেরের্টনি বিরিন্দের কেস্টা জারও করিল, বাবন ওবা থাকে টালালিকের খোদ শুট্ভিও শাড়াতেই। কলে ওদের নিয়ে প্রায়ই ভাষাদের ক্ষেত্রি অয় একরা-এ ভ্গতে হয়।

একদিন ক্যালকাটা মুক্তিটোন পটাজিওতে মা' নামের একটি ছবির শুটাই চল্লছো। পবি-চালক চিত্র বস্থা। হাসপাতালেও সেট। ভা সেটের বিকুইজিশান মিলিয়ে নিতে গিয়ে সুহকারী পরিচলক হঠা। আবিষ্কার করল, আসল জিনিস্টাই নেই। অর্থাং কবল। রোগী কবল গারে দিয়ে শুরে ধারবে, ডাভার এসে তাকে পরীকা-ট্রীকা করবেন—দৃশাটা ছিল মোটাম্টি এই রক্ষ।

স্থাকারী পরিচালক সক্ষাত হরে তাড়া-ভাঙি প্রোডাক্শন ম্যানেসার কাল্ক ভারে ধরল—কি ব্যাপার কাল্ক কব্স আনো নি ? এটা না পেলে হে শট-ই আটকে যাবে—

কাল; স্ব'দাই নিম্পাহ। একটা উদাসীন ভূপানী করে বলল—আন: হয় নি তো কি হয়েছে? একনি এনে দিছি।

—তাই দাও। এর পাবের দাউ হচ্ছে ক'বালের। কম্বল না পোলে চিন্তদা কিচ্ছু ১টে ফায়ার হয়ে যাবেন—

কাণ্ তাচ্ছিলোর ভংগী করে সাইকেল

চপে গেল পরিচিত এক শুদ্রলাকের বাড়ী।

কংবল আছে? তারা বললেন, না নেই।

কাণু বগল, বেশ ভাল কথা। তারপর গেল

বাবেন গৃহ বিংবাসদের বাড়ী। দেখে বারিনা

ববাং ববাংনায় বিছানা করে একটা কংবল

চপা দিরে শ্রে আছে পরিকোর ম্যালেরিয়া

স্লেছে। কংবলাটি কাল্য থ্বে শছনদ্

(গা।

স্থিকেল থেকে নেমে কাল্ আব কোন ম্যা নয় ধ্র করে কম্মকাটি টেনে নিছে দুড়াপটা বোগী হত্তমুদ্ধ। এভাবে কেট গরো গানের কাবল নিয়ে প্রায়ে মাণাভেও ভাসে না।

মাহ্্তে থবরটা বটে গেলঃ কাজা বাল্যীর গায়ের কম্পন উপড়ে মিয়ে নটকেটো দেখো শালা কোয়ে স্ট্রীভঞ্জে চম্মে করছে।

কালা, ততকলে কন্ত্রা সহ্ সন্থিত ৪০ত কাজিছে। আর কন্সানত একেওব মাজিছে। আর কন্সানত একেওব মাজিছের কারে ৮০০ কেরে গা এই রক্ষা একটা নায় বারেন নিজে একটা সাইকেলে চেশে দ্বিভিত্ত এসে স্কির্ন রাগে অভিনামা চ্বান কালার একেন বেমারখার শিক্ষা মাজ এটা দিতেই হবে।

বাঁরেনকে সাইকেল চেপে স্ট্রাজ্ঞা কেতে দেখে কাল্য থার তৎক্ষণাৎ স্যাকৈ গড়ারই কথা সে বলং থামকে দাঁড়িয়ে পড়ল। বাঁরেন সাইকেল থেকে নেয়ে কাল্যকে

বাজেন সাহকেল থেকে নেয়ে জালাকে বিজ্ঞান কৰিব কৈ কৈই তৈরই হয়েছে, ভালা নিকে থানিয়ে দিয়ে বলালা—তুমি জানে কি কি কাছিলে না ?

বীরেন ব্লল—সেটা আমি না—

কাল্য বত্তব্য--কেন চেপে বাজ গ্রু চীয় কবল চাপা লিয়ে কপিছ পেখেই তে শ্বল নিয়ে হাও্যা দিলায়, জানি ইচ্ছে ফেলেও তুমি আধায় ধরতে পার্ফে নং, শুড় সেই ভূমি কি কল্লে উঠে এলে? চুক্তিব ব্যাপার ভাই--

ৰীরেন বলে, তরে শালা সে আমি নই। দুসৰ পরে হবে, এখন কম্বলটা গাও र्भञ्जसमान्ध्रमी अर्जिका । क्रेन्स



কাল্ তত উৎসাহ পায়—নাত্ ৰীরেন, কম্বল এখন জ্মান্তি গৈটুর কণিটানিউটী হয়ে গেছে, কল পাবে, সম্প্রে কলপের নাথা ভাজাত পাবে, সে সব অলরাইট, ক্লিডু এটা ভাষা কি করলে, সামান্য ভাজার লোভে রোগ-শহায় ছেতে ভূমি সাইকেল চেপে চলে এপে? ভূমি কেখ্ছি আছে। পারন্ত—

কথা শ্রেন বীরেনের সে কি কোধা --শালা এখন তমি আমাহ জ্ঞান কৈছে? আমি পাষ্টত : লংজা করে না একটা **নো**গ্রি গাংগকে কুমল কেন্তে আনতে?

—আহা সাক্তরিক তো তৃত্রি সোগী নতা। --আত্রি না হতে পারি—, ওটা আলার ভাই—

কালতু উগরা। গুরুত্ব সন্দিশশ কর্মেই, তা মাত্র আবারো গালে ব্যক্ষ ।

বীরেনের মাথায়া তখন ধেন খানীর রক্ উঠে গেছে—কালা় মাখ সামেকে, ক আমার যমজ ভাই--

কাল্ গতিক খারাণ দেশে সে-যারা রংগ ভংগা দিয়ে বাঁচে আর কিং পরে জেনেছে; খাঁরেনরা বাঙ্গবিকই যমজ, কুলনটা সে বাঁরেনের ভাইরোর গা থেকেই টেনেছিল আরে ভিঃ'

এই হাজে প্রোভাকশ্য কথেলার কাল; বোস। এই বক্ষা উপজিপত থচবানো ব্লিথ, ফিচলেরো কালড-কারখানা এক কাল দ কোনা কাল্ডেছি, ভা আন্ধাবিন কাল আমি স্থপত

একটা মুক্তার ঘটনা উল্লেখ করি এই প্রসংগ্য

এ রকম হয় না, দেজনেই প্রাণের কলার অথচ কথায় কথায় আচিকা-আচিকি লেগে আহাহে। এ সুযোগ শেলে একে ভংকণাছ

The state of the s

এটে দিচ্ছে আবার ও সা্যোগ পৈলে একে
এটি দিচ্ছে। রেবারোর আর ফেল্ডাপিগ ওদের
যাগপিও লেগেই আছে। একজন হচ্ছে কালা
আর একজন বরেন। দাজনেই ফিলেমর কর্মাী,
কালা, প্রোভাকশনের, বরেন সম্পাদনার।
একচিন কি একটা স্মানা কথা নিরে
দাজনের মধ্যে তুমাল একটোট হরে গেল।
কালা, বপালে—বরেন, তোকে একদিন এমন
কাল করা যা আর আমার সংগ্রাদার না

তারপর দিন স্বায়, হঠাং পরিচালক একাদন কাল্যকৈ জেকে বলকোন, এছে বাল্য, চাটাজগীবার্কে খবর দাত, ছবির বিলিক বন্যকাম হরে গেছে, তাড়ভাড়ি এডিভিং করে ছবিটা রেডি করে ফেলডে হবে---

বরেনের পাল্টা ভার্মার।

কাল্ ছাড় নেড়ে বেরিয়ে গেল। তারণর শ্ব হল প্রোগমে কাজ। বরেন আবার সে-ছবির সহকারী সম্পাদক। মেসেটিও ব্যাল্যক্তবে দ্যির প্রধানতঃ ভার। কাল, কাল দেস্থন দিয়ে কাজকমেন করিস বরেন, ভূট তো আবার ভালকান।—

বরেন তথন ওকে বৃহৎ বৃহৎ বাৰ।
দেয় কাল্ থিক থিক হেলে কেটে পড়ে।
আসলে বরেনকে রাগিরে ঘোটাকু সামুখ!

এদিকে ছবির মৃত্তির দিন প্রত থনিরে আসংই। অথচ হাতে তখনও প্রচ্ন কাল, ছবি বাতি করতে হলে আরও প্রতেশভিতে বাভ করতে হবে নইলে নির্মাদিত দিনে ছবি বিলিজ কয় যাবে মা। ফলে উদ্বিশ্ম প্রয়োজক স্বাইকে ছেকে থললেন—মা মাণাই, আরও শাতির দ্বালার। আনও শাতির দ্বালার। আগএলে আমি কাল কর্ন। বাছতি খরচ হা লাকে আমি চন্দ্র বরং—

পরিচালক বললেন, অগ্রান

্**ক্রীজনে পাল ক্রীজনে গুরে হ**ীনা কৌসর। ভানপেকুমার



থবার শ্রে হল তে-নাইট শিফট।
থকটা ছবি বেভি করা --সে তে। সোজা
ব্যাপার নায়। পরিচালকে ব্যেলকে তেকে
বললেন, কদিন তোমার আর বাড়ী যাওয়া
হবে না। কাল খবনটা তোমার বাড়ীতে বরং
দিয়ে আসাক।

কাল, বগলে—তাই যাবো না হয়। বাতে এখানে বরেনের থাকার কোন অস্ক্রীবধে নেই, ও তো আর বিয়ে-থা করে নি—

সেদিনই সংখ্যবেলায় কাল ঠিকান খুলি খুলি বরনের বাড়ী গিয়ে হাজির। কড়া নাজতেই এক বিধ্বা মহিলা বেরিয়ে এলেন। কাল্য দেখেই ব্যক্তন, ব্যানের মা।

দরজা খালে সামনে একজন অপারিচিত মানাবকে পেখে বজেনের মা অবাক। —কাকে চাই >

মতলব এটেই গিরেছিল কালা। এক-গাল হেসে বলল—আমার নাম কালা, আমি বরেনের সংগে কান্ধ করি মাসীমা। বরেন বড়েডিও আছে?

--না তো। বরেন সেই কোন সকালে উঠে স্টাভিত্তে সেছে, এখনও ফেরে নি---



কাল্ যেন কত অবাক।—সে কি? বরেন তো আজ প্রতিত্তে যায় নি। সেই জনোই তো আমি ওব খোজে এলাম। ওর জনো সবাই আমধা বসে খোজ।

মা উদ্পিক হলেন। —িক জানি বাবা, আমায় তো বলে গেল স্ট্রভিত্ত হাচ্ছি---

কালা, বলল—দেখান ওর আক্রেল। ছবি রিলিজ, এখন এইভাবে কেউ ত্ব মারে ২ ওর কাছে আলমানীর দবি করেছে, মালাপত সবই আলমানীর মধ্যে, ও না গেলে লো কাজকর্ম সব বল্ধ...

মা হোন দায় পড়লেন। —বটেই ডো। তা ও না ফেরা পয়'ণত তো কিছাই বুঝতে পারভি নে বাবা—

কাল; বিরক্ত মুখে বললে, মাসীমা ফেরা মার বরেনকে স্ট্রিডেরতে পাঠিয়ে নেবেন। ও মেন এক মুহুতি দেরীনা করে। বলবেন স্বাই জামবা হাত গাটিয়ে বসে আছি।...দেখ্ন ওে৷ কি রক্ম লে-আক্রেল। মান্ত্র..., এখন চলি মাসীমা, আপনি কিন্তু প্রকে খালো পায়েই.....

রাত ন'টা।

্ বরেন্দেব বাড়ীর সদরের কড়া নড়ে উঠ**ন**।

মা দরজা খালে দেখেন কালা নামক সেই লোকটি আবার এসেছে।

হতাশ ভংগী করে হা বললেন্ না বাবা খোকা এখনও ফেরে নি—

রাজ্যের দুশ্চিচতা মুখে, কাল্য, বললা, কি কাল্ড, ছি ছি ভি, আমরা স্বাই নিজ্জমা বংস আর বরেন এই রক্ম ল'লে ভূবিরে বিসে..... মা বললেন—আমি এলেই তকে পাঠিয়ে দেব বাবা—

—তা না হার দেবেন, তিন্তু কোচপানীর যে মালিক—তিনি ভীষণ ক্ষেপে গেছেন। চাবি দিয়ে এভাবে গা-ঢাকা দেবার কোন মানে হয়। আজ-বাদে-কাল ছবির রিলিজ ভদুলোকের লাখ লাখ টাকার কারবার, এ তো সেই ইচ্ছে করে লাটে তোলার বারক্থা—িক করি বলান তো মাসীমা। এবার না স্বশ্লুশ আমাদেরও ঢাকরী হায়!

মারের তো অথৈ জলে পড়া। তিনি আমতা আমতা করে বলেন, কি জানি বাবা কিছুই তো বন্দতে পারছি নে, তবে বরেন তো আমার এ রকম ছেলে নয়, কখনো তো এ রকম শানি নি—

—সেই তো হয়েছে বিপদ—কাল তুণকণাৰ পানপূৰ্ব করে—ভীষণ দায়িত্বজ্ঞান প্রক করে—ভীষণ দায়িত্বজ্ঞান প্রক করে তা দেখছি প্রকে কিফু আজ যে হঠাং কি হল। আছো কোন বন্ধর বাড়ী-টাড়ী সায় নি তে? গিথে হয়ত আছন দিক্ষে। ভাস-ফাস খেলছে।

মা অজ্ঞানতার ভ[ি]গু করলেন।

কাল, বলল—শনিবার হলেও না'হয় একটা কথা ছিল ব্যোতাম যে মাঠে গেছে, কিং! আফ ো শ্যুক্ত্রবার—আজ তো কোন রেস-টেস নেই।

শানে মা'র চক্ষাস্থির। কি স্বোনাশ, ছেলে রেস থেলতে যায়?

কাল, ব্যাপারট। হাল্কা করে দেবার চেন্টা করে—মানে মাঝে মধ্যে যার-টার আরক। সে আর আপনি কি করে ঠেকাবেন ছেলে বড় হয়েছে, ব্রন্থি-পূর্ণিধ হয়েছে। তা সে যাই হোক দে-সব পরের বাসার এখন আমরা কি করি বলনে তো গ আছে। চারিটা বাড়ী ফেলে যারনি তো দেখবেন একট্র— চারি পারার কথা লা পাওয়াও গেলনা।

তথন কাল; হেন কত মরিয়া বলণ, মাদীমা আমি যাচিছ। ও এলেই ওকে আপনি ইয়ে কলু মানে প্রপাঠ পাঠিয়ে দেবেন—

মা'র তখন ভয় ধরে গেছে, বললেন তাই দেব—

কালা, এলো ল্যাবরেটরীতে। বরেগে সঞ্জো চোখাচোখি হতেই সে চোখ নাচাল— কিরে?

বারণ বলল এখন সিরিয়াস কাজ হচ্ছে কাল, অতএব ইয়াকি না মেরে কেটে পড়।

কাল, বলল—তোরা রাভ জাগবি তা রাতের খাবারের মেনটো কি করব; চাইনীজ আনবো?

ব্যরণ বলল—সে তাে খ্যে ভাল কথা। দেখনা প্রোডিউসারকে একবার বলে—

কাল, বলগ— বলতে হবে না। আমি চাইনীজেন বাবস্থা আগেই করে দিয়েছি। সংগ একভাঁড় ঠান্ডা দৈ আনতে বলেছি—

বরেণ মুখ ভেংচে বললা, কালা, তুই বাস্তবিক একটা পঠি৷ নইলে চাইনীজের স্পে একপাতে কেউ দৈ দেয় ? ছোঃ!

তারপর কালার সেই বিখ্যাত থিক থিক খানে বীতপ্রাপ্ত বরেণ তংক্ষণাং সরে পড়ল নিজের কাজে। বরেণের বস্তব্য, হাসিটা গার্মি বিজ্ঞির মর হানিটা রীতিকত অপালীম। ওটা একমান্ত কালনেতেই মাঞ্চি পোডা পার। রাজ সাডে রারটা।

ক্ষেণ্ডের সদরে কড়া মড়ুডেই সোডলা থেকে এবার ক্ষেণ্ডের বাবার গভ্টীর ক্ষ-ঠত্বর ডেলে এল—কে?

—আৰো আমি কাল।

্ৰকাল । তা কি চাই এত রাক্তে। —আক্রে ব্রেগকে। আমি স্টাড়ি

—আজে বরেণকে। আমি স্ট্রাডিও থেকে আসছি।

থাবার সদর দরজা মাতে বারণের নাদ। বেরিরে একেন চাক্ষার।

—আ। আপ্নিই **তাহলে এর আ**ণে বোর বসেছিলেন, ব্যেলেক শোকে ২

শ্বার এসেছিলেন। বরেণের থেজি ।

—আক্রে হার্ট। মানে আমাকে স্ট্রিড
থেকে পাঠানো চায়েছে—মুখাসম্ভর বিনায়ের
সংখ্যা কাল্য নিবেদন করেল। দাদাটিকে
ভয়ত্বর রাখ্যী মনে করে তার

-কিন্তু সে এখনও বাড়ী ফেরেনি-

কালা, যেন আর্জনাদ খনে উঠলো....জেকি এখনও ফেরেনি? তাহলে আমাদের কি হবে? আমাদের চাকরী শেষ প্রযুক্ত বরেশের জনাই কি নট চবে?

ক্ষািনকপ্টে দাগা জানাতে চাইলেন— আপনি আমানু মা'কে বলে গেছেন— মন্ত্রেণ বেসা খেলে ২

—এটা, না মাত্রে ইয়ে ব্যাপারটা হচ্ছে—
কাবা আমতা ভামতা করে বোঝাতে চাইল যে
বেজনা অত কঠিন আপনারা হবেন না সথ
করে থেলা তো, মথ ফসকে কথাটা আমাও
নেহাং বেরিয়ে গেছে নইলে ছেলে ছিমেবে
বরেণ খ্রই খটিটা।

—আর কিছা করে কিনা জানেন?

—আভের, তা তো ঠিক বলতে পারব না।
তবে—আভা-ফাল্ট দিং গিয়ে যদি কখনওসখনও— সে যাই হোক, এখন আলমারীব
চবি না পেলে আনাদের অবস্থাটা মানে
ব্রেতেই তো পার্ডন দাদা—

দাদা কটমট করে কালত্রে দিকে তাকিয়ে রষ্টালেন।

কাল্য বললা— দেখি এবার খংশুল । আন্তা ছেলে বাহোক। সনে হল কোথাও দেশা ভাগা-টাপা করেই পড়ে আছে। এত রাতির হল অগচ বাড়ী ফরছে না, হুট্ভিওর দেল না— নিআধি ফোনেত লোগাও। খাবার কিনিম খাবি না কনত নিশাস খাবি। তাবলে খেয়ে বোহেড হয়ে কোথাও পড়ে থাকবি এটাও তো ভাল কথা নয়—

দাদা সাঁড়িয়ে দাঁড়িয়ে দানছেন, কাল্য যেন স্বগোড়ান্ত আড়ছে এগ্রান কারদার কথা-গুলো বলেই সাইকোলে উঠে দে-পিটুন: দান কিছ্কো গ্রাহ্ম হোলে দাভিত্য বইলেন! ভারপার একটা চাপা ছুন্দ পঞ্জন করে সশান্দে রজা বন্ধ করলেন।

রাত ভোর হচেছ।

কাশ্য বলাশ-জন সংরূপ সংগ্রিওতে লক্ষ্য একটা বাত ক্ষেত্রত শেল অবস্থা ক্ষাইশা। বাং বাড়ী বা নাম্পিক্ষা শাড়ি-নিষ্ট কেটে জালাকাগড় বদলে আৰু। শ্বীকানোরি স্থিতা কাথালি। অন্প্রান্ন শ্বীকাশনা এ আনেল ক্যারি



বরেণের চোথ লাগ চুল উদ্দেশখনে সম্পাদক সহাসো বললেন—তাই বাও বরেণ, আমিও বরং এই ফাঁকে বাড়ীটা ছরের আসি। আজও আবার রাত জামার কাঞ্চ

সম্পাদক চলে গেলেন। অতএব বরেণও গেল।

বাড়ীর কড়া নড়তেই পাণা প্রসং নেছে এলেন। পরতা খুলাথেই ববেন পাশ কাচিয়ে চলে সাচ্ছিল দাদা খপু করে কাঁধটা ধরজেন— বলি যান্ত কোথায়?

বরেণ বংপরনাসিত অবাক। —কেন্ ভেতরে!

—ভেতরে —দাশ যেন বোমার মত ফেটে পড়ালন—হারামজাদা ছেলে তলে তগে তোমার এত গগৃগ হুদেছে, আটি?

ভয়ে ভয়ে বরেণ জানতে চাইল—কেন্ ব্যাপারটা কি:

কিন্তু তার আগেই তার মধে হঠাৎ
আছড়ে পড়ল পাদার হাতের এক বিরাট
থাপপড়। —বৈস খেলা হচ্ছে, মাল টেনে
বৈহ'ণু হয়ে গাখা হচ্ছে তার রান্দের লোক
তোমার খোঁজে ছোটাছটে করছে— বলি
ভেবেছা কি? আ!?

হততন্ত বরেপের তথন কাতর প্রতিবাদ — একি তুমি আলার মারছ কেন? নাল টানা বেস খেলা কি বা-তা সব বলছ আমি কিছুই ব্যাত পার্যাছনে—

দাদার গজনি বদমাশ আবার চং করা হচ্ছে, আমি সব থবর পেটেছি। **ফাল রাচে** তুমি ফোখার হিলে?

— শ্টাবিভাগত। সারা রাভ ওপানে কাল হয়েছে আমানের— — মিথো কথা। কাল ত্রি স্ট্রিডেএতেই বাওনি। কালনোব, তানেকবার তোমার গোঁজে বাড়ী এসেছে আরু গারেছে। লামার পাবন্ড কোলার। গোঁউ। গোঁউট। গোঁটি। তোমার আরু মুখ্যগান্ত্র করতে চাইনে আয়বা.....

—কাল: বলেই ব্রেণ্ডের হঠাও একটা চীংকার—বাটা কাল এখানে এসেছিল আমার খেজি করতে ২

দাদা বললেন—'নশ্চরই এসেছিল। তার মুখেই তো তোমার সব গ্লের পরিচর দেলাম—

আৰু কি ব্যৱপের সে কি প্রচণ্ড চীংকার
—আমি ওটাকে আজ ফোণ্ড ফোগন টকেরোটকেরো করে ফোলন ওকে থান করে আমিআজ ফানি- যান-একটা লোভার রভ সংগ্রহ
করে বরেণ পহি পাই ছাটল। —ট্যাকান
ট্যাকাস...

ট্যাকসি। ল্যাবরেটনী। দ্বারোয়ান দেখে বিরাট এক ডাণ্ডা হাতে বরেণবাব ট্যাকসি থেকে নামছে। দেখেই সে সোজা হাওয়। বরেণবাবরে একেন চেহারা ইতিপ্রের্ণ সে কখনও দেখেনি। গোটা লাবেটেইনীতে হলেন্ডেল ভোলপাড় কাণ্ড। কিন্তু কালুকে পারে-কান্তে কোখাও পাওয়া গোলনা। একজন দ্বারিকারিত চোগে স্বা দেখে আমতা করে বললা—ইনে কালুবাব আমার বাবার আবো বলে গেছেন ও'ব শ্বারিটা ইদানিং ভাল বাচেচ না কলে উলি দিনকভাকের কলো প্রামী বাচেন, বলে গেলেন বরেণবাব প্রকাই বেশ কথাটা ভাকৈ বলে দেখেয় ব্যা

-नश्चम अस्त्रिमगाव



দেবী চোধ**ু**রানী

প্রযোজনা: স্থায়তা ফিল্মস্

স্চিত্তা সেনের অভিনয়সমূত্র একটি পরম উপডোগ্য চিত্ত!

স্কৃতিকা সৈন ৰঞ্জিত মল্লিক স্কৃতিকা স্কুত্যাপায়

দর্শ কদের 🕙 অনেকেই আক্রকের ব্যুক্তমচন্দ্রের অহার টেপন্যাস भारत काल व्यक्तिकत्र पार्वी को धाराणी (পরিচালনা: সভীশ দাসগ্রুত) এবং তার নামভূমিকার স্থামিলা দেবী, রজেশ্বর এর ভূমিকার প্রদীপক্ষার ও ভবানী পাঠকর প্রী নীতিশ মুখোপাধ,ায় প্রভৃতির অভিনয় দেখেননি। যাই হোক আজকের দুর্শ কের কথাই বলি। তাদের দেবী চৌধুরাণী'র আধুনিক সংস্করণ ভালো লাগবে। শ্রীমতী সর্হিরা সেন যে বিশেষর অনুন্যা অভিনেতী তার পরিচয় দিরেছেন ভগবান শ্রীকৃকটেতনা এবং সাভ পাকে বাঁধা' ছবির মধ্যে দিয়ে। আবার দেবী চৌধুরাণীতেও তিনি আবার প্রমাণ করদেন বাংলার চলচ্চিত্র জগতে এখনও উনি মুর্মী অভিনয়ের মাধ্যমে সকলের দৃণ্টি আকর্ষণ করতে পারেল। স্বান্ধরা দেবীর পরে এই ভূমিকার অন্য কাহাকেও কাপনা করা যার কা।

অসামান্য রূপবতী অখ্য অনাথা তরুণী প্রফার দিন কাটে কণ্টের মধ্যে দিরে। কণ্ডবত রূপের জন্যেই জ্লিদিয়ে হুরব্য়ন্ত তুরি **এ**লং ু **প**ুত্র *ব্রেজ*শবরের সংখ্য 'প্র**ফাল**' বিবাহ দেন। কিণ্টু বর্ষানীদের মনমতো খাও্যাতে না পার্জ অন্যে গ্রামের ব্রাহ্মণরা রাগ করে বিবাহ-বাসর থেড়ে চলে যায়। তারা প্রফারর মায়ের নামে 'কুলটা'র অপবাদ আনে এবং প্রফালকে বাগদীর মোয়ে হিসাবে পরিচয় দিয়ে যায়। গ্রামবাসীদের কথা বিশ্বাস করে জ্ঞমিদার হরবল্লভ প্রফালক পরিক্যাণ করেন। এবং রজেশ্বরের আবার বিবাহ দেন। দারিদ্রের জনালা সহা করতে নাপেরে পাঁচ বছর পরে প্রফল্ল মাকে নিয়ে শ্বশারবাড়ীতে আসে তার অধিকার আদায় <mark>করে নিতে।</mark> হরবল্লভ 'বাগদী মেরে'কে প্রেবধ, হলেও আলু আশ্রয় দিতে রাজী নন প্রয়েজন হলে চুরি ডাকাতি ডিকা করে জীবন নিবাহ করতে উপদেশ দেন প্রফক্লকে। শাশ্দীর অনুরোধে ^{সে} রাত্রের মতো প্রফর্রা থেকে বার. রজেশ্বরেলু স্পে সাক্ষাৎ করবার আশার[।] তার সতীন সাগুরের' সা<u>ছা^{রোই}</u> রজেশ্বরের সংখ্যা রাতি কাটানোর সংযোগ পায় সে। স্বামীর কাছ থেকে স্বীকৃতি লেয়ে শ্বদ্ধের আদেশে তাকে ফিরে আসতে হয় হামে। ফিরে এলে দেখে তার মা মারা গেছেন। এর পর প্রক্রালর একাকীছের সুবোগ নিয়ে কুচরী সুবল তত্ত তাকে অপ্তর্গ করে পথে ডাকাতের ভয়ে ফেলে পালায়। প্রফ্ল গহন বনের মধ্যে এক ভাঙা বাড়িতে জনৈক মুম্ব বৈশ্বকে কল দিয়ে তার প্রতিদানে তার কাছ থেকে কৃড়ি ঘড়া মোহরের গ্রুণতথ্ন উপহার পায়। মোহর ভাশিংর জিনিস-পর কিনতে গিয়ে প্রফাল ভবানী পাঠকের সাক্ষাৎ পায়। তিনি 'প্রফাল্ল'কে পদশরতে' দীকা দেন। 'শকাদীকা শেষ করে কৃতিত্ব অজ'ন করবার জন্যে প্রফল্লকে ভবানী পাঠক চৌধরোণী' উপাধি দেন। ভরুরা ও প্রজারা তাঁকে 'মা' বলে ভাকত। ইংরেজদের অভ্যাতার দমন করবার জন্যে ভবানী পাঠকের অন্যতম শিষ্য রুগারাজ ও অন্যান্য ডাকাত্য়া নিজেদেল মধ্যে পরামর্শ করে 'দেবা'র নেত্রীছে ইংরেজ-দের উপর ঝাপিরে পড়ে। পরে একদিন যথন হলবল্লভবাব, প্রেঞ্জারের লোভে **भिवीत्क भीतदा भिवात करना इश्तक** কৃঠিয়ালদের নিয়ে 'দেবী'র বছরা আক্রমণ করলেন তথন দেবী তার গারু ख्वानी शाठेरकत कथा ना प्राप्त भामा পতাকা' দেখিয়ে আত্মসমপ্ৰ করার ইচ্ছা প্রকাশ করলেন। আমলে কিন্ত কৌশলে ইংরেজ কুঠিয়ালদের বন্দী করবার জনোই এক নতুন চাল চেলেছিলেন प्ति व हाटन देश्टब्रक्क्प्रत वन्ती ক্ষ্যেতি ইজেম্বরের প্রেমের বাধনকে অস্বীকাল করতে না পেরে আবার নতন করে স্বামারি ঘরেই ফিরে হাবার সি**খ্যান্ত** নিলেন দেবী। এর পর তারি জীবন শুদ্ধ হল আবার প্রফলে হিসাবে।

প্রবিত্তী ছবির অভিনয়ের সংখ্য कान कुलना ना कारत वना हल 'एनवी চৌধুরাণী'র ভূমিকায় শ্রীমতী স্টেরা সেন অপ্র অভিনয় রজেশ্বরের ভূমিকায় গণজিৎ মল্লিক চরিত্রান্প অভিনয় করেছেন। ভবানী পাঠকের ভূমিকায় বসত চৌধারী এবং সাগরের ভূমিকায় স্থাতির অভিনয়ও বলিষ্ঠ। মুপারাজ-এর ভূমিকার **এ ছবিতে খাব সাম্পন্ন অভি**লয় করেছেন। অন্যান্য ভূমিকার " কালী বন্দ্যোপাধ্যায়, সত্য বন্দ্যোপাধ্যায় হান্ধাধন বন্দ্যো-পাধ্যায়, ছায়া দেবী, পদ্মা দেবী, নীলিয়া দাস, মঞ্জ ভট্টাচার্য, গাঁতা না^ল, কাজন গতে চিত্রনাট্যের দাবী মিটিয়ে-ছেন। স্থাতি পরিচালনার মান্বেন্দ্র মুখোপাধ্যার তার স্নাম অক্র রেখেছেন। আলোকচিয়গ্রহণ এবং অন্যান্য কলাকোলালের কান্ত পণ্মিত্র। অপ্তর পরিচালনা বৈশিশ্টাপশে।





শনে থেকেই শাস্ত্র করি, কি বশেন! বাংলা ছবিতে কাজ করতে করতে হঠাৎ ম্যান্ডাস গেলেন কেন ম্যান্ডার ?

প্রথমটার তথা আমি অবাকই হয়ে-বিদান। মালয়ালাম ছবিতে আমি অভিনার কাবো কি করে? মালয়ালাম ভাষার মাও প্রথমিক প্রথমিক ভদ্রবোক কিন্তু

নান্দতা বস্



আমায় ভাষণ পছণ করে ফেলেছেন।
ও'র চোথে আমার আগে প্রারেশে নাকি
দার্ণ বাংগলীয়ানার ছাপ আছে। ছবির
চরিচটাও এমন একটা চেহারা চায়।
স্তারাং তিনি কিছুতেই ছাড়বেন না।
ভাষার অসু বধের কথা ব্লতেই

বললেন—'ও ব্যাপাঞ্জ আপনাকে কিনছ, ভাৰতে হবে না। জাৰিং করে নেব সহ। আপনি শ্ৰেদ্ধ ভাষালগণ্লো কোনরকঃ উভারণ করে অভিনয় করে বাবেন। একক্ম একটা আগসন্তবেক্স পেয়ে আগ বাজনী চয়েছি।

এ প্রসংগ্য আন্তর একটা কথা বলছি
আপনাকে। ছালগ্নালাম চিপ্রগারের
স্বচাইতে জনপ্রিল্প যে অভিনেত্রী, বিনি
ছ-ছবার উর্যাশী প্রস্কার প্রেমেনে
সেই সাললা ই এখনও ভাবিং করে বল করেন। অস্ট্রের মেয়ে ভিনি। বাইছের, এখন অব্দা ভাষাটা মোটামন্টি গ্লন্ড
করে নিরেছি।

ঃ সাউত্থে আপনার প্রথম ছবি কি?

পানিতি রাজ ভেড়া (অসমাশ্ত বাড়া)।
পারচালক ছিলেন সেতু মাধ্বন। এ
ছবিটি জেরালা রাজ্য সরকারে
প্রক্ষার পেরেছে, রাণ্ট্রপতি প্রক্ষাও
প্রেছে এট ছবি।

- চাঁ, তি। বলতে পারেন। তবে গচ বছুবের 'দ্বংনম' ছবিখানা আয়াকে ফিল্মফেয়ার প্রেশ্কার এনে দিয়েছে। এ ছবিটাও আয়ার অভনয়জ্বীবনের একটা উল্লেখ্যোগ্য ছবি।

ঃ এ পর্যাপ্ত দক্ষিণে ক'খানা ছবি করেছেন, যদি নামগ্রালো বলেন কাটাভলি?

্ হিন্দীতে কোনো কাজ করেন নি কেন?

--হা, হাণ, হিন্দীতে করেছি তে । আয়ানা
ভি হোতা হ্যায়া নামে একটা ছবি
করেছি। আয়ও দ্যুতিনটের কথাবাতী
চলতে।

থ এতগ্রেলা মালয়।লাম ছবিতে অভিনয় তে করলেন, ছবি ও ছবির চরিতগ্রেলা আপুনার কেমন লেগেছে?

-- মালয়ালায় ছবি সমপ্রের্ক একটা কথা
বলি দ্বা বাংলা ছবির সংগণ ওদেব
এক জায়গায় মিল আছে। রিয়ালিটাকে
নিয়ে ওরা ছবি করেন সামাজিক ও
বাদতগজনীবন ওপের বেশীর ভাগ ছবির
বিষয়বদত্য। ফলে হয়িক ছবির চরিন্দে
গলেও জাবিদত হয়্য, ন্যাচারল হয়া
অভিনয়-ধায়তেও রাংলার সংগো খায়ার
খ্যে একটা অস্থিবিধ্ হয়ন। ছবিগ্রেলা
এত বেশী বাদ্রুব হয়ান। ছবিগ্রেলা
এত বেশী বাদ্রুব হয়ান। ছবিগ্রেলা
এত বেশী বাদ্রুব হয়াবে সংলাগঙ্

থাকে খুব কম, অভিনয় হিছে ম বোঝাতে হয় সবটা। সেজন্যই বোধহয় ভালাগাছে মালয়ালাম ছবিতে কাল করতে। ভাবিং করে করলেও চালাগালো বাদ ইন্টারেন্টিং, উল্ভট নয়।

ম্যাড্রাস ছেড়ে আবার কলকাতার এলেন কাজ করতে, কি ব্যাপার?

এটাও যোগাবোগের ফল বলতে পারেন। গড়ে রছর মেহের স্কুলের ছুটিকে म्हिर प्रथएक একচিন এসেছি স্ট্রভিওতে। পরিচালক দিলীপ মুখাজি (যাহিক) নাকি 'लगात मगरिवास জন্য আমাকেই খন্জাছদেন। আমাকে হাতের কাছে পেয়ে আর হাছতে গইলেন না। আর আমারও প্রচল্ট ইক্ষে ছিল বাংলা ছবিতে কাজ করার। মাত-ভাষায় ছবি করতে কার না ইচ্ছে করে বল্ন! আমিও সুযোগের অপ্বাবহার চরিনি। তারপর 'নগরদপ'ণ' শেষ হতে না হতেই দিলীপবাব্দ্র পরব্ত[ে] ছবি 'মোমবা ত'র জন্যও তিনি আমাকে বললেন। এখনতো 'বং নাম্বার'-এর সেটে বসে কথাই বলছি বলা বাহুলা এ ছবিরও নায়িকা আমি।

কলকাতার চাইতে দক্ষিণে আপন্ত জনপ্রিয়তা অনেক বেশী এবং কাজও করেছেন বেশী, তাই প্রশনগলো আমার দ[ং]ক্ষণকে কেন্দ্র করেই হচ্ছে বেশী। আচ্ছা, আপনি ওখানে কি ধরনের প্রতিযোগিতার সম্মুখীন হচ্ছেন?

প্র তথ্যোগতা কোথায় নেই? সব জায়গাতেই কৃম্পটিশ্ন। মালয়ালাম ছবিতে নায়িকা বলতে আছেন জয়া ভারতী সারদা, আর আমি৷ স্বতংগং ক[ি]ম্পটিশন আমাদের তিনজনের মধ্যেই। তবে কোনো নোংরামি নেই—এটাকু বলতে পারি।

মাপনাদের পাশুস্পরিক ির**লেশ**ন कि वक्य ?

একসংখ্য কাজ করতে গেলে রিলেশন থারাপ হলে চলে কি? রিলেশ্ন ালোই। জয়া ভারতীর সংশ্যে আমি ছবিও করেছি। সারদার স্ফো এখনও সংযোগ আর্সেন। অনেকে বলেন দারদার সংখ্য ফিচারে নাকি আমার ধ্ব মিল আছে। একবার স্ট্রভিওতে দ্রেদার সঙ্গে পরিচয় হয়েছিল। খবেই লম্যাল ছিল ব্যাপাশটো। কিন্তু জয়া ভারতী অত্যাশ্ত উচ্ছল মেজাজী **াহলা**।

শেলে জনপ্রিয়তার বিভৃশ্বনা সহ। তে হয়েছে কখনো?

বিশ্বনা ব্যাপারটা, স্থিতা বলতে কি, ক্ষানে নেই। ফ্যানরা আত্মাদের ভালো-नन द्याचा करतन, ह्याच्यत हम्या हम्यान নী আকুলি-বিকৃলি করেন, কিল্ডু रिथर्व राज भएकन ना कथरमा। अक्यात ছৈছ কি ভিবান্দ্ৰমে আমি গেছি একটা



দোকানের শুভ উদ্বোধন উপলক্ষে। তথন এখানে আমার দুখোনা ছাবও যেম ন Parce : দশ্করা জানতে পেগ্ৰেছেন আমি ঐ দ্বৈদানে আছ অমনি দলে দলে লোক এসে হাজির। আমাকে তুলা দেখবেন। বাইরে কখন প্রচণ্ড বৃণ্ডি। আমায় না দেখে তাঁরা যাবেন না। ভিজে_ও তাঁরা অপেক্ষা করছেন। সাত্রাং আমাকে দেখা দিতেই ट्शल। वालकीनरक अस्त भवादेख অংমার নম্মান্দার জানাতে ত'ারা স্বাই চলে, গেলেন। কোথাও কখনও ক ্রকাটব্য বা মণ্ডব্য কিছু শুনিন। এটাই ভালো जाःग ।

- : কলকাতা মাড়াস -- কোন শহরটা আপনার ভালো লাগছে, আর কেনইবা
- ভা**লো-ম**ন্দ লাগা ব্যাপারটা স×প**্ণ** নিভার করে মানাসক অবস্থান ওপর। আমার তো দুটো শহবই ভালো লাগে। প্রথমটায় যখন ম্যাড্রাস গিয়েছিলাম, বেশীর ভাগ সময়ই একা থাকতাম। বাড়ীটাও একবারে সম্প্রের ধারে। আন্তে আন্তে সয়ে গেছে ব্যাপাশটা। আমার মনে হয় দবার ক্ষেত্রেই এ ব্যাপারটা ঘটে। তবে কিনা কলকাতায় সব আত্মীয়স্বজন বন্ধ:বান্ধব রয়েছে, মনটা অনেক সময় এখানেই পড়ে থাকে।
- ঃ কয়েক বছর বালে তো কলকাভায় এলেন। কোনো পরিবর্তন চোখে পড়ছে কি?
- –পরিবর্তন তো হয়েছেই। আপনারা তো কলকাতায় সবসময়ই আছেন পণিবতনি আপুনার চোথে লাগছে না? আমার ঢোখে তো আর_ও বেশ্বী লাগছে। **জীবন** এখন আরও জ টল হয়েছে, যাশ্রিক হয়ে গেছে সমস্যা বেড়েছে প্রচুর।
- ঃ অভিনয় করছেন বলেই শাুধা নয় দক্ষিণের বাসিন্দা হিসাবে ওথানকার

মানুৰগলৈখা বিশেষ কোন আশনার মন কেডেছে?

– ও'দের ধম[্]বাশ্বাস ও আর নি**রুত্র** সংস্কৃতির প্রতি ও'দের আচ্চরিক সাউও ই শুরানদের ধর্ম-বিশ্বাসকে অনেকে গোড়ায়ির পর্যায়েক ফেলতে পাণ্ডান। কোনো জায়ুগায় र्भागत या उपयक्ता माठाकात कथा भारतकार **७'ता श्रमा कतरक भारत् करतन।** जामता, वादानीया कृषि वृश्यि । मृत्य क्रीश्रक्त জন্যও ক'তত ভাব। _{প্র}'দের সে यानावटी मार्ट। अवक्रम विकास भारताचे আমার ছো মনে হয় খারাপ নয়। আর निकारत गर्न्य जिल्ल हा क्ष्मान अवा ভালোবাসেন তা ওছাৰ ছবি দেখল ंक्युडी जान्सक कारक शास्त्रन। रगानाक-वाजाक, कार्बा गास्त्रकाल जन-क्षा कामाल करक प्रिक त्थारक निरक्तान्त्र देशिक्क जात এতিহাকে ওপা তলে ধরতে লন। দুঃত্যে কথা আমরা বাঙালীয়া আৰু বোধহয় সেই নিষ্ঠার অভাবে শেষকে পড়ে বাজি

- ঃ সাউথ ইন্ডিয়ানদের রানাবানায় তো টক ঝান্তের পরিমাণ্টা বেদ্রী ৷ অস্থিধে হয় না খেতে? ওপদান কোন্ খাবাণটো আপনার খ্রে পছনে ?
- নসম চাটনী দিয়ে ধোসাটা থেকে কো খারাপ লাগে না। ভালোই তো: **হংব** বাড়ীতে কি আন সবসময় সাউৰ ইন্ডিয়ান থানা থাই। সেখানে ভাজ য়াছই খাই। সুটিংয়ের সময় মাঝে চথো বাড়ী থেকে খাবার আঙ্গে। বাইনে স্টিং কাতে গেলে ইউনিটের সকলকে এক-সংখ্যা বসে থেতে হ'ব। এবং খাবারও স্বার এক: এটা প্রান্ধান নিয়ম। কারও জনা আলাদা খাবার বিদেশ্য কোনো হোটেল থেকে আসে না। তথন সকলের সংখ্যা বদেই খাই। অস্থাবি**রে** ক ?
- ঃ আপনার হবামী তো শুরেছি সরকারী অফিসার। আপুনার অভিনয় করার ব্যাপারে তার দান বা সহযোগিতা কতট্টকু ?
- তিনি খোর সংসারী মান্রে হলেও আমার অভিনয় করাকে কখনই খটো চোখে দেখেন না। **ব**ংং আয়াক্ত ইনস্পায়ার কলেন। মালার্লাম ছবিতে কাজ করার ব্যাপারে তিনিই জামাকে সবচাইতে বেশী উৎসাহ দিয়েছেন। বাংলা ছ বতে কাজ করছি—কর্ব--এটা তো তিনি সব সমূই চান।
- ঃ বিবাহিত জীবনের আলক অভিনত সমপকো আপনি কিছু বৃশক্তে চান কিই না. ব্যক্তিগত জীবন নিয়ে কথনই কিছু व्यारमाठना आंध्र कतिन कतरह हाहै। না। অভিনয় কৰ্ণছি—কৰ্ব-এটাই প্ৰথম এবং শেষ কথা।



মিঠাকে একদম গাইয়া দেখাছে। মিঠা, মিঠা মাখাকী উনিশ কিন্বা কডি. ভাগব काशत माहि रहाथ, वाश्ला र्जे देखे **ভ**বিব মাহিকা আদ্বাব সাম্বে এখনট **ভূতদুপ**ূর্ণ ×ট†ডিও-র মেক-আপ রকো। ভাডাভান্দি .. গ্ৰেমৰ থেকে ভাক শভেছে ভালোকালি। কিন্ত ভালোভান্তি কি করে **হবে-- চল নিয়ে নাজে**গ্ৰাল, বেচার**ি: পাক**ি **স্ট্রীটের নাম্নী দোকানের দানী হো**য়ার-ডা এই গ্রমে হ'াফ ছেড়ে ব'চড়ে চাইছে। দ্র বাবা আর পারি না। এই বলে মিঠা চল-গালো গোছাবার চেটা করল। উচ্চ ঠিক না। ছটে এলেন মেক-আপমান আরে করেন কি, করেন কি—গ্রামের চোয়ে আপনি, শাদপ্রকরা বোকা গোলে আমি তো মারা যাব ম্যাডাম। চল থাকরে পরিপাটি তেল চপচপে, মা লক্ষ্মীদের যেয়ন 20730 1 মিট্র এই শাসন হেসেই ক্রটিপাটি পর্শ भटनरङ्गः। भा-लक्त्रीतत्व रयमा शास्त्र। दशा रें जिस्तिक हम अथन कि हरन। इस स्व কিছ তেই বাগ হানে না।' হাছে হাছে আপনি একটা শিশার হয়ে বসনে তেনে ভাদকে যে পরিচালক মশায় আগৈয়া 377

क्षेत्रहरू । .. जीवा रहा... और रमध्यम धारक-बारत श्थित। अक्टें क मणीक मा।...इन डिक कटक करफ क्रिके इनाहान डॉबरतब झरमा हरजा क्षेत्र। बाम भ्रत्भा भ्रत्भा धानामन्द्र । त्रिष्ठ कथा बनात उत्तर त्रास ना. नामा जिल्लास ছালি ছালে। জোনে পা দিয়ে পরিচালকের कार्ड करन रशम स्मामा। अक्यरत गरन निम लारक कि कि कत्राक इरव। धन गरिंग्रेश काम-ज। मानका है यदटे । রাজাবাস, এসেছিলেন চন্দ্রীর বিরাশেধ দশন করজেন নালিগ জানাতে এসে সাক্ষাং লক্ষ্মী প্রতিমা। চটপট জোল ভাব মাথায়। লাহিত চৰম শাস্তি দিতে হবে। **স্বালী** কবিরাম ভয়ে তার হারে রাজবাবার আগ্যান। বাদ্র হোলোটার জনো। শাহিক নিশ্চয়ই হবে, মাথা পেতে নিতে 5741 ক্ষিরাজ গ্লাহার জীগ ক্টিরে রাভাবাব্য তাংগাকার ঘোষিত তল-'আমি আপন্রে कन्मारक वन्नी करत द्वाथरक हारे ज्ञाता জীবন। জামি ওকে পত্রবধ্য করে। জামার ঘরে নিয়ে যেতে চাই। রাজাবাব, মনে মনে হাণ এই ভ্রেমে ভাষার অশানত পাত্তকে শাহোসতা করবার জনো এই হক্তে উপ**য়ন্ত মে**রে।' কবিভাজ বিশ্বাস ণরতে চাইলেন না। কি করে করবেন। রাজাবাব্রে প্রবং হবার যোগাতা কি তার খেরের আছে। বাদর মেয়ে। আৰু এর বাগানের আম পেডে আনে, কাল ভৱ বাগানের। অনায় করলো নিজ হাতে শাহিত দেয়। শিশাদের নিয়ে বেশীর ভাগ সময হশগ্ল পাকে মাসে মাসে শিশ্সভা করে। বাড়িতে থাকে না স্ক্রোটেই। গেছো মেরে। ফলে প্রতিদিন্ট কবিরাজ মশায়কে নাল্প শ*ুন*তে হয়। নালিশা শুনতে শা্নতে ভ'ার কান কালাপালা হয়ে গেছে। রাজাবার, সময়

অপচর করেন নাঃ তিনি মেয়েকে আদীবাস करत स्वादक काम। मार्गादबात सन् जिल्लान ইড্যাদি-মহাস্মারেতে আশীর্ষাদপ্র লে एम। ज्यान धामाद्य राज्य। धरेवार वीम শ্নেৰ ছবিৰ নাম হচেত -क्यडार् जिल्हा পরিচালনা করছেন সুশীল মুখোপাধার। **ম্মরণ থাকতে পারে এই নিয়ে ইতি**গার একাধিকবার ছবি হয়েছে। সাতরাং পান, নিমাণ বা বি-মেক বলাই লেয়। প্রায় বিলত হাবে মানলাল বন্দেরাপাধ্যায়ের এই রচনাত চিচ্যুপ দান করেছিলেন নট্রেখ্য নরেন মিত। নায়িকা সেকেভিলেন দাঁণিত বায় · তার অভিনয় আজে৷ তানেকের স্মৃতিপটে এক্ষম হয়ে আছে। নতন প্ৰয়ংসিদাল নায়ক রাপ্ত মল্লিক এবং থল নায়ত মভিজিৎ সেন্—ব্দেবর অভিনেতা অসিড সেনের পাত এবং পাণা ফিল্ম ইন্টিটেটেট ভিশেষামা হোলভার। সেসময় নায়ক **চ**রিতে বাপদান করেছিলেন গ্রেদাস এবং থল নায়**ক শিবশঙ্কর। ভারোর কি ত্**ভেড পরিহাস সেই গ্রেদাস নতন পর সিভাত আছেন পাশ্ব'চারতে। তিনি এই প্রাঞে শানি-এ তাংশ নিলেন। আব অংশগ্রহণকারী শিংশীদের মধ্যে করালী কবিরাজের ভারিকায কালী ব্যানাজী রাজাবাব্রে ভূমিকার সভা ব্যানাজী ছায়া দেবী, বসরাজ চুকুবরী ভালু ব্যানাজীকে প্রভাতকে দেখা গেল : চিচ গ্রহণ করছেন কানাই সে। শিক্ষণ নিদেশিনার আছেন প্ৰসাধ হিছে।

ভারসরে শ্রিডালকের সংক্রেকথা হল। তিনি জানালেন আগের প্র সিং-এর নংখা এই ছবির জামল সামানাই। শার এবং শেষ্টা নতনভাবে ভাষা হয়েছে। শ্বেটা দেখানো ২কেছ মোহোটা FIG TOU কাহকিকাপ রাভিন্ন রোমাণ্ডকর। ন্ত্ৰান্ত ু কিংড 400 7 মেয়ে ৷ (51/4) 37 (577.0) **€**श्रीश **ত**েকে সংগ করে না। রাখ দ'ড়োয়। এই ভার ধ্বভাব: বিষয়ের পর মেয়েটির পরিবতনৈ দেখানে। পরিবতনি *হছে* ধীরে ধীরে। শেষে সৈ তার নিজম্ব মাতি ধারণ করছে: অন্যা**রে**র বিরুদেশ তীর প্রতিবাদ জানাছে: কাইমাকস কৰে। কিডনাপিং ফাইটিং--বদেবর ছবিতে যেমন থাকে। আশ**্**তেষ দশকিদের মাথের দিকে ভাকিয়ে নিজে জাবন এবং জীবিকার কথা ভেবে এই ছবি তৈরী করতে এগিয়ে এসেছি আমি। চিচনাটা হচন্ করে আমাকৈ সাহায়্য করেছেন #17**মিল গ**েশ্ড।

চিত্রাঞ্চলি প্রয়োজিত এই ছবির সংগতি পরিচালক নচিধেতা ঘোষ।

একটা শিশ্ভল। তার ওপার হার্ট রাখলেন দিলীপ রায় এবং স্থানিটা মাংশা-পাশার। দর্জনে দর্জনের দিকে চেয়ে পাকলেন অল্কাণ।নীরব করেকটি মাহুত্ এখানে অবশা চোখের ভাষাই প্রধান। সামলেন্ট শট টেক করলেন পরিচালক ভাষাক্ষির মাধ্যেয়া, জ্বান্টিক্রম ছবির



অধিকশ্বর / দিলীপ রায় ও স্মিতা মুখেপাধায়। পরিচালনা ঃ **অ**রবিক মুখেপাধান্ন ফটো ঃ অম্ত

থিয়েটাস' এক নম্বর শট্টডিওতে সোট পজে-ভিল তথ্য দেখেছিলেন সভেদা ভাষার অণিন্ত্রের কাজে এসে রব্ণিদ্নাথের ঘবে-বাইরে বইটা রেখে সেল। বইটা পড়ে তার গুলে খাড় উঠেছিল বোঝা গোল আনেক পাব স্থন সে তার নাম যুক্ত করেছে কোনে। রাজনার্টতিক দলের সংগ্রে ম্রাক্তকামী গজনৈতিক দল। স্বাধীনতার জন্ম লডাই করৈছে ভারা। লড়াই করতে করতে সবসাদত তায়ছে। এবের মধ্যে সাছনদা একজন। সে নিজেকে নিংশেষ করে ছল দেশের সেবায়। দলের জনা সে বিশাংখল জাবিনহাপন শারা করেছিল। অবৈধ জনিন...। মতো বরণ করে-ভিল ভাকার তাগিন•ববের কাছে এসে[†] অস**্জ্**থ অব⊁থায় স**্ভ∗দা ডাঙারের কা**ছে ক্রকটা টিনের বাকস্তাগে বলে প্রয়োজন হ'লে খালে দেখতে পাদেন। এটা আপনার

কাছেই বেখে দেখেন। কিছাদিনের খানে

মাগেন মাগে এক যাবক ভাসেবে নিয়ে থাকে

বাকসটা। স্ভুক্তার মূরার পর ভারতার খালে

দেপেনীন। গণেন এলো। একদিয়া বাৰস্থী।

নিয়ে হোতে। তথ্যই থোকা হল। আগোছাল

বিচা জিনিস্পত। তার মধ্যে একটা পিদতল, এক^{া ছবি}, ভাৰতে ত্তিন্দবরেক্ট আকি।।

একটি মেহে:-২।ত দুটি ধ্যা। অভ্যাচারিত,

ল*ি*পত তার মৃখ। বিধেন পিস্কলার জেলে

PART MENT

ভরা। ক্রডিও সাংলাই কো-অপরেটিভ-এব विवाद कार उरकालीन कलका छा। রপ্তিত মালক , নিঠ, মুখালি ফ্রিরিপাপাড়া, বর্ণনা করলেন অনাত্য প্রিচালনা : সাশীল মালক । ফটো : অহতে প্রয়েক্ত উদয় সামন্ত। এখানে সমাজের আধঃপাতিত মান্বদের বাস। আমার প্রশন क्यांक तास्वादाम् तत्त स्मरस माहण्या स्थल আসে? উদয় বললেন : আপনার স্মারণে আছে নিশ্চয়ই কিছ'দিন আগে নিট

সিকসাট প্রসেশ্টি ভুঙার। পরবর্ত**ী পথ**য়ে ত্র মাসেই। গান প্রিচারাইজ করা হবে। দিলীপ ভট্টাসহোৱ সংবে তেমকত নুখাজাী তবং মালা দেৱ গাভ্যা দাটি গাল।

এখন এখানে আছেন বাস্বী নশ্বী, সহারা রায়াচৌধারী, ভারাবনাথ মাথোপ্রায়, শালেন তুরুণক্ষাব য়া, খোপাধ্যায়া, (अस्ति। ্ৰাপাধ।ায় সামবা বস: এবং চৌধ্যুৱী-ছবির জন্মান্য চাকরের শিক্ষীন। চিত্রভাত্ক : বিজয় ঘোষ। এই পর্যায়ে পানও পিকচারাইজ করা হঙ্গেছ। নচিকেন্ডা শোষ

ক্যাল্কাটা মাজিটোন পটাডিওজে ভার্ব পরিচালক অমিতাক মিছ इतित ग्रांग्रें कतास्त। श्रास्त्रास्ताः স্ত্রীয়তী রুণু রাহা। এ ছবির প্রধান দ্টি চরিত্রের শিক্ষ্ণী : দেবরাজ রার এবং রাজনী বিকাশ রায়, গাঁডা াদ প্রভৃতি। চিত্রাশ্রুপ ! 🕏 সাবেশি ব্ৰেদ্যাল গোহা। শিল্প ভিন্তা শক্ত 🙎 নিজ্য বস্ । সৃষ্ণাভ্র পরিচালক : পি এন

anishi : Alain (alsi

ANTINA MAINE WAS

न्द्रकार् । जांत्रका किनाम

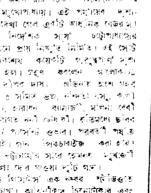
स्थान । वरिक्**मा**, बोक्सम, माजीनक

■ হাটিছ দিন c ত bi

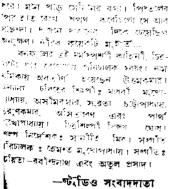
প্রেমের গণপ, কাইনীকার একং পরিচালক নৰাপ্ত অহল রায় খটকা টিল্লাটাকার : ভাজন মাুখোপন্ধায়। এই পহাঁয়ের । দাংচ গ্রহলে দেখা গেল একটি আধ্নিক বেডর ছা। শিল্প নিদেশিক সাম্ চটোপাধারের তজাবশানে প্রায় নিখু'ত নিলিভি। এই সেটে ভাগর বিলেয় ক্ষেক্টি গ্রাথণাণ নাশ্ গাছীত হল। গ্ৰহণ করপেন সংলাক 👊 শিক্পী দুৰ্ণিক দাস। অভিনায় এংশ গুরুর করলেন ৪ স্মিত ভঞ্জ, ন'ন্দ্রা বস্তু, কলী ব্যালাজন হার্ধন বালাজা মালনা বেৰী ত্রং মধাগত ননী চৌধ্রী। ছত্তিমধে ছবিব

নিট গিয়েটাস এক নম্বর স্টাডিভাত প্রমাই চোখা। কাতিনাকৈরে চিম্নাটকের এবং পরিচালক স্থিত দত্ত। তথ্যস্থ প্রধান ভবিত্রে শিল্পী উন্সৰমার। ক্ষিত্র সেটে অনুপ্রিত। এখন তার অংশ গ্রহণ নেই। "阿克"云 ম্বাপাপাশ্য,

স্রাবে।পিত মালা দে'র গাওয়া গাম। বস্ত। অন্যান্য চরিত্রে আছেন : উৎশব্দ দত,







न,ना प्रिया COTO 1 কো-অপারেটিভ-এ ছবির চতুথ শহা হৈয়ের শ্বাটিং इस्मार्टिक इन्होत्नाननात्मत्र श्वि।

(बाष्ट्राके किल्प्रत

কোঁট মির্জা নমে একটি পাশ্রী মেয়ে ক্ষেব্রতে দার্থ হৈ-টে ফেলে দিয়েছে। এসেছে সদা লভ্ন থেকে। এতানন মডোলং করেছে। শ্লেবয় পরিকায় ওল নাড ছবি ছাপা <u>তয়েছে। আপনাদের নিশ্চ</u>য়ই জানা আছে শেল-ব্যু সারা পাণিবী থেকে জোগাড় ফরা স্করী মেয়েদের ন্যাত ছবি ছেপে বাবনা চালায়। কোট ওদেনই কালেকশন। ভ্যানে কাজ শেষ করে সে ভারতে এসেহি সিনেমায় নামবে, এই তাতিপ্রায়ে। হিন্দ **থা**নে তাই হে হোজা বান্ধতে এগে উঠেছে। এসেই বদেবর ব্যাহ্রমে কয়েকটা সিনেমা পঢ়িকাস ব্ৰু খোলা, উলু দেখালো প্রায় নয়ত ছবি ছবিপয়ে কালেডেন স্বাণ্ট **করেছে। ফলে বন্দে**রর অন্যত্ত ওয়োজকর **লাইনে দাঁজিয়ে পড়েজন। কেউ অহনে** দিয়েছেন এক সংখ্য চারখানা ছবি কেট বা একস্ক্রাসভ কন্টাবট। কেন্ট্রি এখনত কোণে ডিসিশানে অসকে পাবে নি। ইলিমগো ইঠাৎ তার লাগায় চলক্তে সতী সাবিদ্যা মার্কা ভারতীয় নরৌ সাজতে হবে। সে বক্স রোল চাইছে। প্রহোজকরা ভারতেই পারছেন না। বিন্দু কিশ্বা ফারিয়ালের সাব্ধিট্টিট ভাবা যায়-জিনত কিম্বা পার্ভিনের নয়: কেটিকৈ কে বোঝাবে একথা ভার ধারণা কাপত চোপত থোকা অবস্থায় তাকে ভাগো দেখাবে না কারণ ফিলার তাতা ভাল নয়। **धर्दै क्या भारत दाङ्काशक जन्मता क**रतरहर : ফিগারটা কেটির কাছে কোনো ফ্যাকটরই **নয়। ওসব পরোলা** করে না ক। টাকা রোজগারের জনা কিনা করতে পারে। প্রসংগত জানাই লও্ডনে রাজের সংগ্র কেটির खालान अवर म्डतम् भ्रष्टनम् । रक्ति यान : **७४म ब्राह्म कारक ला**ति बान धाल हाहि काकारी स्वयं व्यापन भाराभ स्वयंस्त्रका

বেখা একই সংগ্যু প্রস্থানের সংগ্যু সমান ভাগে প্রেম চালিয়ে বাছে। এর চককরে পড়েছে দ্রেই প্রেম সিংহ—বিনােদ মেছ্যা এবং কিরপ্রমার। দ্যুভানেই লড়ে হাড়ে রেখার জনা। রেখা মাঝে মাঝে বিনােদের পর রেখা মুখ্রছে। বিনােদের তার জন্যু মুক্তি না: সে শুট্ডিছে থেকে শুটিং করতে করতে মাঝে মাঝেই পালাভে তারা শুট্ডিওতে হেখানে রেখা শুটিং করতে। একীদ্দ রেখা এর সংশ্যু ব্যারাণ ব্যবহার

with the work of the forest was the street of the street o

যে ছেখানে গাঁড়িয়ে দীপ**ুকর দে এবং কা**বেরী বস্তু



করে বিনোদ চার-পাঁচ বার চেণ্টা করে দেখা পাল মা। সম্প্রতি বদুলা নিয়েছে বিনেদ। সে আচ্চা করে টাইট বরেছে বেখাকে। মোহন স্ট্রতিরতে ছবির শ্চিং করছিল বিনোদ। কছেই নটরাজ স্ট্রতিরতে রেখার শ্রিনাদ দেখা করলো না।

আই এস জোহন-এর মেয়ে জানিক। জোহর বিখ্যাত হ্বার জন্ম বাড়ি ছেড়ে দেটে ভাড়া বরে আছে। প্রচার করেছে বাবা-মা বাড়ি খেকে বার করে দিরেছে কেনা ইনানীং সে একট, বেশী নোশ করছে। বেশী রাত হছিল বাড়ি ফিরতে। তাই স্বাধীন জীবন বাপন বরতে সে বাড়িছেও সেনেছে। ছেড়ে আসতে বাধা হরেছে। দেখা বাছে জান্বকর, বিখ্যাত হ্বার করেছে। দেখা বাছে জান্বকর, বিখ্যাত হ্বার করেছে। সেখা রুছে করেছ করে ফেলেছে। সেটা জারো স্পট্ হবে আই এস জোহরের ফাইত বাইকলস ছবিতে।

অশোকক্মারের মেয়ে শুণা প্রত্যাগত প্রণিত গাঞালী বদেবতে বর্তমানে দাগটের সাণে অভিনর করছে এবং প্রেমন্ড করছে। সে ভিন্নতর চরিত্রে অভিনর করছে। প্রেম করছে দিল্লীর এক চরিত্রনান হারকের সকো।

—অভিভিত



ক্যানাভার ছবি নিয়ে ইতিপ্রের এক সংখ্যার ভারতে অন্তিত ফোটাউভেলের ছবি-গ্লি সম্পর্কে আলোচনা প্রসঞ্জে জানিয়ে খিলাম যে, উল্লেখযোগ্য ক্ষেকটি ছবিষ ক্যাহিনী আগামীতে পাঠক পাঠিকাদের

এই সংখার সেই সব উল্লেখযোগ্য ছবির কাহিনীর সারাংশ নিবেদন করছি। যার মধ্যে ভারতীয় এবং আশ্তঙ্গাতিক মেজাজ লক্ষ্য করা যাবে।

क्ट्यांकः देन ट्यानाहे हे

ছবিটিতে ম্লত পারিবারিক পটছমিতে তোলা এক সামাজিক বিপর্যার বিধ্যুত হরেছে। এর মূলে সুরের সংগ্য মানসিকতার দিক থেকে ভারতীয় সমাজ-বাবন্ধার কোথার বেন একটা অলুশা সুরের মিল খাজে পাওয়া যায় এবং আমাদের শরংচন্দের কাহিনীর বেন খ্রই কাছাকাছি এর গ্লকাংশ।

अतिकिर हैन रशताहर शत शतनाह करन

वस्त्र अकृषि क्यानी त्यद्वत मूर्वन याहारज्य ভ্লের ফলে তার জাবনে যে বিপর্যয় নেমে এলো এবং সমাজ ও লোকলজাত্র ভয়ে তাকে নিয়াটি ইয়াইয় ব্রাডনক হতে হোলা ভাই নিয়ে।

মেরেটির ভাই মিলিটারীতে কা**ল** করে। একদিনের ছাটিতে সেই ভাইমের সংখ্য তার এক দৈনিক বঙ্ধ,ও বেড়াতে এলো তাদের ব্যাভিতে। সেখানই ছেলেটির সংগে মেরেটির আলাপ ও ঘনিষ্ঠতা এবং তারই মধ্যে এক ৰবেল মহাতে মেয়েটি ছেলেটির কাছে দেহ मिल। फाल किছाकाल भारते थे यहा भएन व মেয়ে ত্ৰভয়েকা। স্থাপাটট ধন্য প্ৰচেত মেরে ির মা দ্বিচনতাগ্রনত হয়ে পডল আর তার পতা রাগে উত্তেজনায় আর কিছা ভেবে না প্রেমে মেয়েকে ধরে প্রচন্ড প্রহার করল। কিন্তু সেটা তো বিপদ থেকে উন্ধারের পথ নয়।

তখন ছেলেটিকেও ধরা সম্ভব নয়, কারণ সে তথ্য কোন্ প্রাক্ত কোন্ রণাকানে। ফলে পরিবারের লোককে অনা পন্থা ভবৈতে হোল। ঠিক এমনি সময় তার পিতার এফ বৃদ্ধ বংল, এগিয়ে এসে তাদের এই লভ্লাকর বিপদ থেকে উদ্ধারের নিমন্ত মেয়েটিকে বিয়ে করতে রাজী হোল।

ছবিতে সৈনিক জবিনের উচ্চাপ্পলতা সমাজের মাথাওলা বাডিদের সম।জ রক্ষার নামে ক্ষাভ পরিবারের সামাজক ম্যাদা রাথার জন্য যে খেসারত দিতে হয় বাধ্যতাম লকভাবে তাই বলা হয়েছে। ঘটনার সময়কাল ১৯৪৩ সাল।

এই সমাজবেষ্টনীর হাত থেকে কি নিজ্যাতি আমরা ভারতীয়্রাই আজও পেয়েছি?

উ-টাৰ্ন

ফার্জা কা**ক**ফোন্ডারের ছবি 'উটার্গ'ও একাধারে কৌত্তলোদ্দীপক ও জাল্মশীয়। এই ছবির নায়ক তর্ণ আইনজীবী। সে খ্'জতে যেরিয়েছ এমন একটি মেয়েকে যার সংশ্যে চার বছর আগে এক ফেরীঘাটে তার দেখা হয়েছিল, এবং এক নজরেই তাক ान**्द्रभोष्ट्रक**।

এই চার বছরে ছেলোট বহু মেয়ের ালিখ্যে এসেছে কিন্তু কার্ত্তর মধোই তার নের মান, বটিকে খ'্জে পার্যান। এইপব ায়েনা তাকে তার সম্থান দিতে পারেনি। া মেয়েটি ডাকে সাঁতা সতি ভালবেসেছিল, বং বিষয় করতে চেয়েছিল ভাকেও নায়বা বিহেলা করেছিল সেই চারু বছর আগের চুক্তের লেখা মেক্সে*ট*কে ভূলতে না পারার

তর্ণ আইনজীবী দারক অনেক বিচিত্র ক্ষেত্ৰতা এবং বিলম্মন পেরিয়ে গোর পর্যানত कात काममाना स्थरप्रिय मन्धाम रुपन েৰ একটি সম্ভান নিয়ে বৈধৰা জীবন न क्वरह এक ছোটু দ্বীপে।

নেই চাৰ বছর আগের রোমাণিক শ্বপ্ন व्याक कालीं मान मान श्वह नितान ৰ এক সময় মেরেটিয় সপো পন্নসাম ত হোল। কিন্তু সেই প্রকার প্রামী হোল না। একদিন তাই সে ব্বীপ ছেডে ফিলে চলল ভার নিজেব ঠিকানায় যেখানে একটি কুমারী মেয়ে তার পথ চেয়ে বসে আছে"

গণপটা থেমন কাৰাম-িডত তেমনি হাদয়-ম্পশী। মূপে হয়ে বসে দেখতে হয়।

-- भा. स. ह



कलकाका ध्यक बन्नमीगम्था

'এক গোছা রজনীগদ্ধা' ফাল বাংলাদেশে পাওয়া গোল না। শেষ প্^{যুক্}ত ক**ল**কালো থেকে বিমানে করে এ ফাল এনে "সারোগ दौंधन' र्घायत भाष्टि नाकि भावतः इत्ला!

সহিত্য রজনীগণধাল কি কপাল! জানা গেছে, ঐ এক গোছা বুজনীগন্ধা ফ্রলের জন্য উক্ত ছবির স্যাটিং বন্ধ ছিল। কিন্ত প্রদা, বাংলাদেশের কোথাও গুজনাগন্ধা ফাল নেই?

অথ স্টেলা কথা

না, নিখেতি 🕶 াচালক জহীর বায়-হানের শ্বিতীয় আঁচনেতী স্বাী স্চন্দ। রায়হান অভিনয় ছাড়বেন না।

জিনি আবদ্ধ নতুম করে অভিনয় শ্রে कत्रत्वस वृद्धम् स्थाना दशर्काः

কিছাদিন আগে এক ঘোষণায় সাকদা ভানিহোছদেন, না, আর ভাভিনয় করব ন।। এবং এ ঘেষণার শর জনেক পশ্চিচালক প্রযোজক চেণ্টা করেও নাকি ভারে নিয়ে আর নতুন কোন ছবিতে সং কলাতে ભાલમાં મા

ন্যাবার কিন্তু অতি সম্প্রতি স্কল অভিনয়ের জনা মানসিক প্রস্কু'ড নিলেন বলৈ জানা গেছে।

তিনি জানিয়েনে, 'সানি অভিনয়ে মনোখেল দিচিছ।

তিনি জানিয়েছেন এখন খেকে তিনি नाकि व्यटक व्यवक हैं वह स्तर्वन अवर অভিনয় করবেন।

ভারতের চলচ্চিত্র উৎসবে वारणाटमभ

আগামণী ডিসেম্বর মাসে ভারতে আছত-अभिक 'व्यव'महात' हनकिह उदनय अन्-ষ্ঠিত হবে।

के काम् कारम वारमाम्मान्ड অন্যান্য বহু দেশকে অংশ গ্রহণের আহ্বান জানানো হরেছে বলে জানা জেছে। জানা গেছে বাংলাদেশও উত্ত অন্-

कीरन वश्य स्नर्दा।

কিংত প্রদন্ অভীতে ভারতে, ভাসখনে ও মদেকাতে অন্ত্ৰিক্ত বাংলাদেশের চলজ্জিত উৎসংয়ে ছবি ও চলজ্জিত প্রতিনিধি নিবাচনে কড়'পক যে 'একচোখা' শ্ৰী'ত গ্রহণ করেছিল, এবলাও কি ত্রেমনটাই গ্রহণ করা ক্রথে ?

ट्डिमनेटी एवन मा हुन्न, क्लाइ बाब्साटनम চলচ্চিত্র মছল কড়'প্রকের ক্ষাছে আশা

करीत ट्रांथ तीब अक्तबक'न

মিমিভি হ'তে লেনা राइक्षात्म (भा কয়েকটি ভাল ও পরিঞ্জ ছবিশ্ব একটির নাম পারশম্বি।

আজ থেকে ছ' বছর আলে ক্র ভিত্ত চৌধ্যুরী পরিচর্গকত 'পর**লম্মান**' काश्ला-रमस्मय प्र_{विश्व} अस्तिस्त समाकारमञ्जूष प्रतिस्त বিষ্ণিত এবং আশাবাদী করে তলভোও শীন' ছ' বছর জহির চৌধারী। 12.00 কোন ছবি পরিচালনার সংযোগ পাননি। সম্প্রতি, ডিনি দীর্ঘ ছ'বছর পর আশীব^ৰাদ' নিয়ে দশক্ষেদ্ৰ সামৰে वाञ्चन ।

ক্রিক্তি ক্রিক্তি প্রতিভাগিত প্র

সমরেশ বসর

ক্রা ব্যানজন কিটা কুলা, স্থেদ দাস্ গ্রেনজন কয়, বিশ্বেদ ম্থাকট অজয় ব্যানজী, কং, মিন্ট্, মন্, অশোক শিলা মিনু, স্থিতা সাল্যল, মিন্ কে ट्रमामा, नीनियो, म्हलका क्रीयद्वी अवर मिनीश तारा छ शाल्या सम्बी।

मार्थेकः जनसम्बद्धाः जातमाः **जानमः हिं**न भक्ष : अ(ध्यूष मृख, दात : ग्रू**शीन** मृत्यिक्तिः

शास्त्रका : कार्य **र स्थान** नित्रभाना । मर्यात्र शर्



रेकारि नगर क विकित्त विकेश कहा यह। व्यविष्यक स्थानक नाह्य। **८वस्थिक अंक पट्डा दक्षात्रम** ৬৫, গশে চন্ত্ৰ-এন্ডিনিষ্ট, কলিকাড়া-১৩ট

(WIN : 14-15)

অণ্ডরাল ইকবাল / ববিতা



পরশ্রমণ বেহেতু একটি পরিজ্ঞর ও একটি বলিপ্ট বন্ধব্যের ছবি, সেহেতু ছবিটির প্রশংসা করলেও ছবিটি 'আর্থিকা সক্ষপতা' অজ'নে দ্ধেণ্ডাবে বার্থ হ্রে-ছিল:

্লাফল, জহাীর চৌধারণীর দীখি ছা বছা ুলচাপ হাত গাটিরে বকে থাকা। নাইভেগতে ফিরে যাওয়া। দীবা হা বছর পরে তিনি আবার আন্নালের মাকে। ফিবে আসাছেন্ চিত্রকলা প্রোডাকস্বেন্ প্রথম থাঁব আপাবিশিদের মাধামে।

'আশ্বীবানি'র শিশপটি নির্বাচন

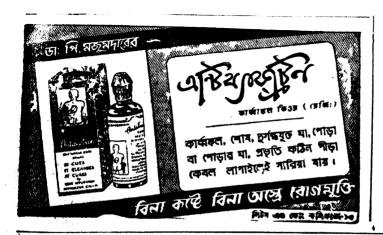
চ্ডান্ডভাবে এখনো হয়নি বলে জান। গেছে;

ৰাগিলের বিবাহ

ना, विरश् नश, विरक्षन।

গত ১৮ই এপ্রিলে গোপনে চিত্রনাত্মকা নাগিদ ও ভাষত্ম সেলিমের বিয়ে হয়ে-ছিল। কিন্তু নাগিদেন বাবা জামাল উদ্দীন মোল্লা এ বিয়ে শ্বীকার করলেন না। তানেক কেল্ডবারীর প্র নালিদ্দ কামধালের বিয়ে বিচ্ছেদে রপে নিল।

--আনওয়ার অঃহ্মদ



বিবিধ সংবাদ

ছাজারীবাগে সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠা সম্প্রতি হাজামীবাগে দরিট সাংস্কৃতি অনুষ্ঠান হয়েছে। প্রথম অনুষ্ঠান রব পাঠচক্র-র প্রযোজনায় বর্মাসংগীত ও গ আলেখা। 'গীভাজালি' সংগীত শিক্ষায়ত শিল্পীরা একক, শৈবত ও সন্মিলিধন্ বিভিন্ন প্র্যায়ের ১২টি বর্ষাসংগীত গ বেশন করেন যেগ্রিল বিশেষ প্রাণুষ্প হর।

শ্বতীয় অনুশ্চান প্রখ্যাত চি প্রতিশ্চান মাউণ্ট কারমেল স্কুলের । জয়স্তী উপলক্ষো ২৭ জনুলাই সাংস্কৃ অনুশ্চানে ডম্ভালিকা' ন্তানাটার কয়ে সংপরিবেলিও দৃশা। প্রধান উদ্যোগ্য ছি শ্রীমতী ক্ষা মৈয়। সংগীত ও ন্তা গ্রালা ক্ষা ব্যাল্য

কীর আবণী: 'গ্রাবণী' শী গতি ভুগারি পশ্চিবেশন করলেন উদ্ শিক্ত ভুগারি ১৮ আগণ্ট সম্প্রায়। : অনুভাটি পরিচালনা করেন গৈলেশ ৭

প্ৰবাসে ৰাংলা নাটক প্ৰতিহোগিত বেশ্লী ক্লাব ও যাবক স্মিতি, ল কর্তক আয়োজিত প্রকাশচন্দ্র ঘোষ স্থ স্বভারতীয় পূণাখ্য দ্বাদ্দ বাষি বাংলা নাট্য প্রতিযোগিতা অন্যান্য বছ নাায় এবাগ্রেও ক্লাবের অতল নাট্য ঃ গন**িঠত হবে। আগামী ৭ই** ডিসে ৭৪'এ প্রতিযোগিতার শাভ সাচনা দিং শেষ্ঠ প্রযোজনার পরেম্কার ৫০১ ট শ্বিতীয় শ্রেণ্ঠ প্রযোজনার ২৫১ টাকা ও তৃতীয় শ্রেষ্ঠ প্রযোজনার ১০১ তাছাড়া অন্যান্য প্রস্কারও আছে। প্রা যোগিতায় আবেদন পাঠাবার শেষ তা আগামী ৩১শে অকটোবর '৭৪। ভারা যে কোন নাটা দলই প্রতিযোগিতায় টে দিতে পারবেন। নির্মাদির জনা যোগাং ক্রানাং সম্পাদক বেংগলী 1 ও যুবক সমিতি, ২০ শিবাজী মা नक्षा ३२६००३ व्यान १ २१३२०।

মজিলপ্র দত্তৰাড়ীর জন্মান্টমী উৎস্ব

প্রতি বংসরের নায় এই বংসরও মার্ছ পর্ব দন্তবাড়ীতে ভগবান শ্রীকৃষ্ণের জন্মান্ট উংসব গোপালজিউর প্রাণ্গণে পালিত হা

এই উপলক্ষ্যে প্রথমদিনে কলকাত (রসরংগ) সভাগণ কত্কি শ্রীমা কাঁচানগাঁ অভিনর হয় ও স্থানীর জয়নগর মজিলণ, সংগাঁত স্মাজ কত্কি মন্মধ রার কারাগার' অভিনীত হয়। দ্বিতীর্দাধ শারংচদ্দের দ্বেদাপাওনা অভিনয়ও হয়।

